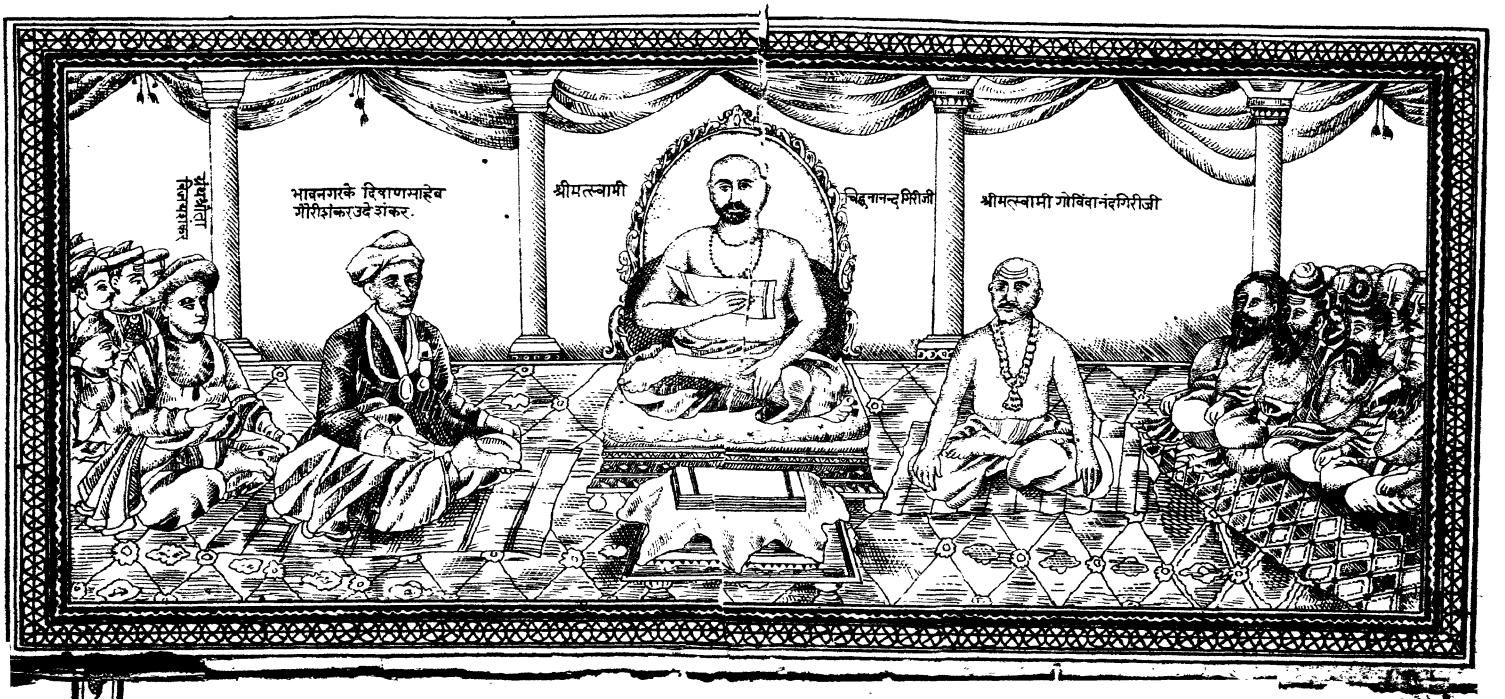
UNIVERSAL
LIBRARY
OU_186838
UNIVERSAL
LIBRARY
186838

Tight Binding Book
Text Cut Book

TEXT FLY

॥ अथ आत्मपुराणभाषाप्रारंभः ॥

सब हक यन्त्राधिकारीने स्वाधीन रक्खा है ।



अब या प्राकृतआत्मपुराणग्रंथके उत्पत्तिकादेश तथा निमित्त वर्णन करेहैं।

गुजरातदेशविषे समुद्रकेतीरऊपर एक "भावनगर" नामाशहरहै॥ताभावनगरशहरविषे नागरब्राह्मणजातिकरिकेयुक्त देसाईगुलाब राइकेपुत्र देसाईविजयशंकर रहैहैं ॥ सोविजयशंकर पुर्वलेपुण्यकर्मकेवशतैं यासंसारकेव्यवहारतैं उपरामहोइकै केवलवेदांतशास्त्रकेश्र वणविषे तथा विचारविषे तत्परहोताभया ॥ तथा ऋग्वेदादिकोंकेऐतरेयादिकउपनिषदोंका निरंतरपाठकरताभया ॥ ताविजयशंकरनैं एकबार संस्कृतआत्मपुराणकाश्रवणकऱ्या॥ताआत्मपुराणविषे सर्वउपनिषदोंकेअर्थकूं श्रवणकरिकै ताकूं या प्रकारकीमनविषेइच्छाउत्प न्नहोतीभई जोयहआत्मपुराणग्रंथही हमारेकूं तथा सर्वमुमुक्षुजनोंकूं सर्वदा विचारकरणेयोग्यहै ॥ परंतु व्याकरणादिकसाधनोंतैंविना संस्कृतग्रंथविषेप्रवृत्तिहोणी अत्यंतकठिनहै ॥ तथा वृद्धअवस्थाविषे व्याकरणादिकोंकापठनकरणाभी योग्यनहीं है ॥ यातैं यह आत्म पुराणग्रंथ जोकदाचित् भाषाविषेहोवै तौ हमारेकूं तथा सर्वमुमुक्षुजनोंकूं विचारणेविषेआवै ॥ ऐसीशुभइच्छाकरतेहुए दैवयोगतैं श्रीस्वामीचिद्घनानंदगिरिजी तीर्थयात्राकेनिमित्त श्रीकाशीजीतैंनिकसिकै श्रीरामेश्वरादिकतीर्थयात्राकरिकै श्रीद्वारकानाथकेदर्शनकर णेवासतै ताभावनगरविषेआवतेभये ॥ तास्वामीचिद्घनानंदगिरिकेसमीप दर्शन करणेवासतै सोविजयशंकर जाताभया ॥ तथा कोईआत्मविचारकाप्रसंगचलावताभया ॥ तास्वामीकीब्रह्मविद्याविषेनिष्ठादेखिकैएकदिनविषे किसीप्रसंगपाइकै याप्रकारकीप्रार्थना करताभया ॥ हेस्वामिन् हमसर्वमुमुक्षुजनोंकेहितवासतैं आप कृपाकरिकै या संस्कृत आत्मपुराणकेप्राकृतकरणेकाश्रम अंगीकार करो ॥ ताकेप्रार्थनाकूंअंगीकारकरिकै सोस्वामीजी ताविजयशंकरके विश्वनाथमहादेवकेमंदिरविषेनिवासकरिकै ता आत्मपुराणके भाषाकरणेकाआरंभकरतेभये ॥ संवत् १९३१ शके १७९६ वैशाखसुदी ६ रविवारकूंआरंभकऱ्या ॥ संवत् १९३४ शके १७९९ कार्तिकशुदी ११ शुक्रवारकूंसमाप्तभया ॥ ताभाषाआत्पुराणग्रंथकी सर्वत्रप्रवृत्तिकरणेवासतै श्रीस्वामीजीकीआज्ञातैं देसाईविजय

शंकरने प्रथमवार प्रसिद्धकर्‍याथा॥ उसीको अब तीसरीबार श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीमत्स्वामी चिद्घनानंद गिरिजीने शुद्ध करके ग्रंथ तथा छापनेकी आज्ञादीनी सो श्रीमहाराजकी आज्ञासे हमने छापके प्रसिद्ध कर्‍याहै ॥

उक्तस्वामीजी महाराजने अपने बनाये आत्मपुराण भाषा तथा श्रीमद्भगवद्गीता गूढार्थ दीपिका भाषाटीका और तत्त्वानुसन्धानके छापनेकी आज्ञा "श्रीवेङ्कटेश्वर" यंत्रालयकोही प्रदान कर चुकेहैं ।

इस कारण कोई महाशय उक्त ग्रंथोंके छापनेका इरादा न करें कि, लाभकी आशासे इन्हीं महाराजके गीता छापनेवाले लोभियों की भांति हानि उठावें ।

मुमुक्षुजनोंका कृपाकांक्षी--

खेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेङ्कटेश्वर" यन्त्रालयाध्यक्ष-मुम्बई.

श्रीमान्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीस्वामीचिद्घनानन्दगिरिजीका जीवनचरित्र ।

श्रीमन्निखिलगुणगणालंकृतविद्वद्गण शिरोवतंस श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य पूज्यपाद श्रीमत्स्वामि चिद्घनानन्दगिरिजी महाशय महोदयका जन्म किस संवत्में और कहांपर हुआ था इस बातका कुछ पता नहीं मिलता । हां इतना अवश्य मालूम हुआहै कि, इनका शरीर सिंधुदेशका था ! यह बातभी स्वामीजी महाराजके मुखसे विदित नहीं हुई किन्तु उस देशके रहनेवालोंके कहनेसे जाननेमें आई है । इन्होंने प्रथम ब्रह्मचर्यावस्थामें हरिद्वारके निकट 'कनखल' तीर्थमें कुछ काल पर्यंत व्याकरणादि ग्रंथोंका अभ्यास किया॥ फिर श्रीकाशीपुरीमें आकर "न्याय-वेदान्त" शास्त्रादिकोंको पढ कितनेही समयतक अधिकारी छात्रोंको पढाया । तदनन्तर मानुषानन्दसे लेकर हिरण्यगर्भ लोक पर्यंतके विषय सुखको विषवत् परित्याग कर अर्थात् इस असार संसारको छोडकर परमपूज्य ब्रह्मविद्वरिष्ठ श्री १०८ श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीस्वामी उद्धवानंदगिरिजी महाशयके चरणकमलमें प्राप्त होकर संन्यास आश्रमको धारण किया और कितनेही काल पर्यंत स्वस्वरूपावस्थान रूप निर्विकल्पक समाधिमें स्थित रहे अर्थात् इनकी चित्तवृत्ति स्वस्व रूपसे उत्थान भावको प्राप्त नहीं होतीथी । फिर संसारके दुःखरूपी सूर्यसे संतप्त प्राणियोंके पुण्यपुंजकी प्रेरणासे श्रीस्वामीजी महा राजके मनमें रामेश्वरादि देवदर्शन करनेके लिये कुछकाल पर्यंत पर्यटन करनेकी इच्छा हुई । तदनुसार वह श्रीकाशीपुरीसे प्रस्थान कर गौतमीतटको और फिर गोदावरी तीर्थको गये । पश्चात् शनैः २ अन्यान्य तीर्थोंकी यात्रा करते हुए श्रीरामेश्वर क्षेत्रको गये । वहांपर श्रीरामेश्वरजी और सेतुका दर्शनकर श्रीद्वारिकापुरीकी यात्रा करते हुए काठियावाडके अंतर्गत भावनगर राजधानीमें पहुंचे । वहांके दीवान श्रीगौरीशंकरजी और विजयशंकरजी नागर जो अपने अनेक जन्मोंके उपार्जित पुण्योंके प्रभावसे बडे शुद्धान्तः करण विवेकादि साधन सम्पन्न और परम प्रीतिमान् थे स्वामीजी महाराजका आगमन सुनकर बहुत प्रसन्न हुए और हाथ

जोडकर इनकी शरण आये। इन्होंने स्वामीजी महाराजसे प्रार्थना की कि, महाराज हमलोग अनादिकालसे वारंवार इस जन्ममरणादि महादुःखरूपी संसारसागरमें निमग्न होरहे हैं। इस कारण जिस वस्तुको पानेसे यह प्राणी जन्म मरणादिके खेदसमुद्रको तर जाते हैं उसीका कृपया हमको उपदेश दीजिये। परम श्रद्धालु गौरीशंकरजी प्रभृति अधिकारियोंका ऐसा वचन सुनकर परम करुणानिधि श्रीस्वामीजी महाराजने उनको उपनिषद्रत्नालय रूप आत्मपुराण श्रीमद्भगवद्गीता और तत्वानुसंधान, तथा शारीरक भाष्यादि ब्रह्मविद्या प्रतिपादक ग्रंथोंका श्रवण कराया। इनके सुननेसे ये अधिकारीवर्य प्राप्तव्य वस्तुको प्राप्तकर परम कृतार्थ भावको पहुंच गये। इन्होंने विनय किया कि "भगवन्! इस जगत्में मंदमतिवाले मुमुक्षु बहुत हैं जिनकी संस्कृत ग्रंथके श्रवणादिमें प्रवृत्ति नहीं हो सकती उन लोगोंके लिये आत्मपुराण गीता और तत्वानुसंधानादि ग्रंथोंकी प्राकृत भाषामें व्याख्या कर देवें तो अति उत्तम कार्य हो, क्योंकि इन ग्रंथोंके मनन करनेसे बहुतेरे मुमुक्षु जन परमकल्याणको प्राप्त होंगे और आप महानुभावोंका शरीर केवल जिज्ञासुजनोंके हितार्थही उत्पन्न हुआ है।" उक्त अधिकारियोंकी प्रार्थना सुनकर परम कृपालु श्रीस्वामीजी महाराजने भावनगरमें १२ वर्ष पर्यंत स्थित होकर "आत्मपुराण, गीता, तत्वानुसंधान और न्यायप्रकाश" इन चार ग्रंथोंकी हिन्दीभाषामें व्याख्या की। पश्चात् काशीजीमें पधारकर मोहल्ला टेढीनींबमें परम पूज्य श्रीमत्स्वामी उद्धवानन्दजीकी धर्मशालामें निवास किया। यहांपर श्रीस्वामीजी महाराजका ११ वर्षतक विराजना रहा और संवत् १९५४ की कार्तिक शुक्ला १ को अनुमान ६५ वर्षके वयमें यह स्थूल शरीरादि उपाधिका परित्याग कर निर्विशेष स्वस्वरूपको प्राप्त हुए। अब इन महाराजके स्थानमें इनके शिष्य मंडलीश्र श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीस्वामी गोविन्दानन्दजी महाराज विद्यमान हैं॥

प्रकाशक—खेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेङ्कटेश्वर" मुद्रणालयाध्यक्ष—मुम्बई.

आत्मपुराणग्रंथके अध्यायोंकीतथाउपनिषदोंकी तथासंवादोंकी अनुक्रमणिका।

अध्यायः	वेदसहितउपनिषद.	ऋषियोंकासंवाद.
१	ऋग्वेदकाऐतरेयउपनिषदर्थवर्णन.	सनकादिकमुनियोंका वामदेवादिप्रजाकेप्रति उपदेश.
२	ऋग्वेदका कौषीतकीउपनिषदर्थवर्णन.	देवराजइंद्रका प्रतर्दनराजाकेप्रति उपदेश.
३	ऋग्वेदका कौषीतकीउपनिषदर्थवर्णन.	राजाअजातशत्रुका बालाकिब्राह्मणकेप्रति उपदेश.
४	यजुर्वेदका बृहदारण्यकउपनिषदर्थवर्णन.	दध्यङ्ऋषिका इंद्र तथाअश्विनीकुमारोंकेप्रति उपदेश.
५	यजुर्वेदका बृहदारण्यकउपनिषदर्थवर्णन.	याज्ञवल्क्यमुनिका आश्वलायनादिकब्राह्मणोंकेसाथसंवाद.
६	यजुर्वेदका बृहदारण्यकउपनिषदर्थवर्णन.	याज्ञवल्क्यमुनिका जनकराजाकेप्रति उपदेश.
७	यजुर्वेदका बृहदारण्यकउपनिषदर्थवर्णन.	याज्ञवल्क्यमुनिका मैत्रेयीस्त्रीकेप्रति उपदेश.
८	यजुर्वेदका श्वेताश्वतरउपनिषदर्थवर्णन.	श्वेताश्वतरऋषिका संन्यासियोंकेप्रति उपदेश.
९	यजुर्वेदका कठवल्लीउपनिषदर्थवर्णन.	यमराजाकानचिकेताकेप्रति उपदेश.
१०	यजुर्वेदका तैत्तिरीय नारायणीयउपनिषदर्थवर्णन.	वरुणऋषिका भृगुपुत्रकेप्रति उपदेश.
११	जाबालादिकएकादशउपनिषदर्थवर्णन.	वैराग्यादिसाधनोंसहित परमहंससंन्यासकानिरूपण.
१२	सामवेदका छांदोग्यउपनिषदर्थवर्णन.	उद्दालकऋषिका श्वेतकेतुपुत्रकेप्रति उपदेश.
१३	सामवेदका छांदोग्यउपनिषदर्थवर्णन.	सनत्कुमारभगवान्का नारदमुनिकेप्रति उपदेश.

१४	सामवेदका छांदोग्यउपनिषदर्थवर्णन.	प्रजापतिका इंद्रकेप्रति तथाविरोचनकेप्रति उपदेश.
१५	सामवेदका केनउपनिषदर्थवर्णन.	ब्रह्मविद्यारूपउमादेवीका देवतावोंकेप्रति उपदेश.
१६	अथर्वणवेदका मुंडकउपनिषदर्थवर्णन.	अंगिरामुनिका शौनकऋषिकेप्रति उपदेश.
१७	अथर्वणवेदका प्रश्नउपनिषदर्थवर्णन.	पिप्पलादमुनिका सुकेशादिकषट्ऋषियोंकेप्रति उपदेश.
१८	अथर्वणकानृसिंहतापिनीयईशावास्य उपनिषदर्थवर्णन.	प्रजापतिका देवतावोंकेप्रति उपदेश.

इत्यनुक्रमणिका समाप्ता ।

ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः काशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ अज्ञानतिमिरांधस्यज्ञानांजनशलाकया ॥ चक्षुरुन्मीलितंयेनतस्मै श्रीगुरवेनमः ॥ १ ॥ शंकरंशंकराचार्यंकेशवंबादरायणम् ॥ सूत्रभाष्यकृतौवंदेभगवंतौपुनः पुनः ॥ २ ॥ अथपरमकृपालुजोपरमेश्वरहै ॥ सो सृष्टिकेआदिकालविषे ॥ जीवोंकेमोक्षवासतै वेदोंकूंरचनाभया ॥ तहाँ प्रथमकर्मकांडविषे ॥ जीवोंकेचित्तशुद्धिकेवासतै वर्णाश्रमकेधर्मोंकूं निरूपणकरताभया ॥ दूसराजोउपासनाकांडहै ताविषे जीवोंकेविक्षेपकीनिवृत्तिवासते नानाप्रकारकेउपासनाकूं निरूपण करताभया ॥ तीसरा जो उपनिषद्रूपज्ञानकांडहै ताविषे कर्मऔरउपासनाकरिकेशुद्धभयाहैचित्तजिन्होंका ऐसेजोमुमुक्षुहैं तिन्होंके ब्रह्मभावकीप्राप्तिऔरजन्ममरणकीनिवृत्तिरूपमोक्षवासतै जीवब्रह्मकेअभेदकूं निरूपणकरताभया ॥ या कहनेतैंयहसिद्धभया ॥ संपूर्णवेद जीवब्रह्मकेअभेदकेप्रतिपादक है ॥ जीवब्रह्मकेभेदकेप्रतिपादकनहींहै ॥ काहेतैंजीवब्रह्मकेभेदकूंदेखणेवालाजोपुरुषहै ॥ ताकूं वेदविषेभयकीप्राप्ति कहीहै ॥ किंवा ॥ जीवईश्वरकेभेदकूंजोवेदबोधनकरै तोवेद अप्रमाणहोवेगा ॥ काहेतैंजीवईश्वरकाभेद मैंईश्वरनहींहूं या लोकोंकेअनुभवकरिकैसिद्ध है ॥ लोकोंकरिकैनहींजान्या ॥ ऐसाजोफलवालाअर्थ ताकेबोधनकरिकैहीं वेदोंकूंप्रमाणता शास्त्रविषेकही है ॥ जीवब्रह्मकाभेद लोकविषेप्रसिद्धहै ॥ और भेदज्ञानतैं मोक्षरूपफलकीभीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ उल्टा जन्ममरणरूपदुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं भेदकेजनावणेमें वेदोंकातात्पर्यनहींहै ॥ ऐसाजोपरमेश्वरकातात्पर्य ताकूंनजाणिकरिकै भेदवादिजैनैयायिकादिक हैं ॥ तेसंपूर्णवेदोंका जीवब्रह्मके भेदनिरूपणविषे तात्पर्यवर्णनकरतेभये ॥ ताजीवब्रह्मकेभेदकूंनिश्चयकरिकै जन्ममरणरूपदुःखकूं जीव प्राप्तहोतेभये ॥ ताजीवोंकूं दुःखी देखिकरिकै परमकृपालुजोश्रीशंकर हैं ॥ सो श्रीशंकराचार्यरूपअवतारकोंधारिकरिकै उपनिषदोंका औरश्रीव्याससूत्रोंका भाष्यकरतेभये ॥ ताभाष्यविषे भेदवादियोंकाखंडनकरिकैसर्वउपनिषदोंका ॥ जीवब्रह्मकेअभेदबोधनविषे तात्पर्यनिरूपणकरतेभये ॥ ताभाष्यतैं उपनिषदोंकेअर्थजाननेमैं जिनोंकिबुद्धिसमर्थनहीं है ऐसेजेमुमुक्षुहैं तिनोंपरि कृपाकरिकै स्वामीशंकरानन्द जोजोवाक्यमुमुक्षुकेमननमेंउपयोगीहैं ॥ ताताउपनिषदोंकेवाक्योंकाअर्थ आत्मपुराणविषे निरूपणकरतेभये ॥ ता आत्मपुराणविषेभी लोकोंकेप्रवृत्तिकूंनदेखिकरिकै

पंडितकेकाराम तापरि टीकाकूंकरतेभये ॥ ताटीकासहितआत्मपुराणतैंभी व्याकरणादिकोंकेअभ्यासतैंरहितजो हैं भाषाकेपठनकरणे वालेमुमुक्षु हैं ॥ तिनोंकूं श्रुतीअर्थकाज्ञानहोवै नहीं ॥ यातैं तिनोंकेवासतैं जोजोउपयोगीटीका हैं ताकूंमिलाईके संपूर्णमूलकाभाषाकरै हैं ॥ तहाँप्रथमअध्यायविषेऋग्वेदकाजोऐतरेयउपनिषद् है ताकेअर्थका निरूपणकरे हैं ॥ ताविषें गुरुशिष्यकेसंवादकरिकै प्रथमअधिकारीका लक्षण निरूपणकरैं हैं ॥ पठनकरैहैंवेदजिसने ॥ औरगुरुनैंकह्याजोअर्थ ताकेधारणमें समर्थहैबुद्धिजाकी ॥ और कृपाकरिकेयुक्तहैमनजाका ऐसाजो कोईमुमुक्षु है ॥ सोपंचप्रकारकेभेदज्ञानकरिकै भयकूंप्राप्तभयाजो जगत् ताकूंदेखिकरिकै एककालविषे विचारकरता भया ॥ सोपंचप्रकारकाभेदयहहै ॥ जविईश्वरकाभेद १ जीवोंकापरस्परभेद २ जीवजडकाभेद ३ ईशजडकाभेद ४ जडजडकाभेद ५ अबताविचारकेस्वरूपकूंकहैहैं बडाकष्टहै॥ संपूर्णजेदेहधारीजीवहैं तेयासंसाररूपशूलकरिकै जन्ममरणरूपदुःखकूंप्राप्तहोरहेहैं॥ कैसायहसंसाररूपशूलहै॥ कामक्रोधादिरूपकाकोंकाहैवासजिसविषे ॥ औरस्त्रीरूपवृककरिकैसुखकूंप्राप्तभया है ॥ यद्यपिस्त्रीरूपवृक याकेसुखकाकारण नहीं है ॥ उल्टा याके दुःखकाकारणहै ॥ तथापि जैसे मार्गकेचलनतैंपरिश्रमकूंप्राप्तभयाजोपुरुषहैताकूं दुःखकाकारणजोपादोंकाप्रहार सोभी सुखकाकारणहोवेहै ॥ तैसे विषयोंविषेहैप्रीतिजाकी ऐसाजोपुरुषहै ताकूं दुःखकाकारणजोस्त्रीहै सोसुखकाकारणप्रतीतहोवेहै ॥ ऐसेसंसाररूपशूलतैं सबप्राणियोंकूं यालोकविषे भयकाहेतैंनहींहोता ॥ ऐसाविचारकरिकै बुद्धिमान्जोमुमुक्षुहै ॥ सोअपणेगुरुकूंपूछताभया ॥ हेभगवन् यासंसारशूलकूंपरित्यागकरिकै किसउपायकरिकै पुरुष मोक्षकूंप्राप्तहोवै ॥ कैसायहसंसाररूपशूलहै तीक्ष्णहै ॥ और अज्ञानरूपलोहहैकारणजाका ॥ और सत्त्व रज तम येतीनगुणरूपशिखाकरिकेयुक्तहै॥ इसप्रकार शिष्यकरिकैपूछाहुआ कृपाकासमुद्रजोगुरुहै ॥ सो शिष्यकेप्रति कहताभया ॥ हेशिष्य अज्ञानकीनिवृत्तिकाउपाय एकज्ञानहीं है॥ और कर्मउपासनादिक अज्ञानकीनिवृत्तिकेकारणनहींहैं॥ शिष्यउवाच॥ हे भगवन् मैंनें संसाररूपशूलकीनिवृत्तिकाउपायपूछाहै॥ और आपनैं अज्ञानकीनिवृत्तिकाउपायकह्या॥ यातैं हमारेप्रश्नकेसमान उत्तरनहींभया ॥ श्रीगुरुरुवाच॥ हेशिष्य कामक्रोधादिरूपकाकोंका औरस्त्रीरूपवृककाहै निवासजाविषे ॥ ऐसाजो संपूर्णसंसाररूपशूलहै ॥ सो परमेश्वरकीमायाकरकेउत्पन्नभयाहै ॥

ज्ञानतैंमायाकीनिवृत्तिहुए ताकाकार्यजोसंसारशूल ताकीभीनिवृत्तिबनहै ॥ जैसेतंतुकेनाशतैंपटकानाशहोवे है ॥ शिष्यउवाच ॥ हे भगवन् पूर्व आपनें ज्ञानकरिकैअज्ञानकीनिवृत्तिकही ॥ और अब ज्ञान करिके मायाकीनिवृत्तिकही ॥ यातैं पूर्वउत्तरकहणेकीविरोधहोवे है ॥ ॥ श्रीगुरुरुवाच॥ हे शिष्य माया और अज्ञान येदोनोंशब्द एकहीअर्थकेवाचकहैं ॥ जैसे घट और कलश येदोनोंशब्द एकहीअर्थकेवाच कहैं ॥ यातैंविरोधनहीं ॥ शिष्यउवाच ॥ पूर्व आपनें ज्ञानतैंअज्ञानकीनिवृत्तिकही सोबनैंनहीं ॥ काहेतैं घटपटादिकपदार्थोंकाज्ञानतो लोकोंकूंहै ॥ परंतुकिसीकेअज्ञानकीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य वेदांतशास्त्रकेश्रवणतैंउत्पन्नभयाजोज्ञानहै ॥ सोई अज्ञानकानिवर्त्तकहै ॥ तिसतैंभिन्नजितनेज्ञानहैं तेसंपूर्ण अज्ञानरूप हैं ॥ यातैं तिनोंतैं अज्ञानकीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ जैसेसन्निपातकरिकेभ्रमकूंप्राप्तभयाजोपुरुष ॥ तानैंकह्या मेरेकूं भेरीकाशब्द श्रवणहोवैहै ॥ ताज्ञानकूं लोकविषेभीकोई यथार्थमानतानहीं ॥ यातैं मैंब्रह्महूं ऐसा जो वेदातकेश्रवणतैं और गुरोंकीकृपाकरकै उत्पन्नभयाज्ञान ॥ सोईही मोक्षकेप्राप्तिकामार्ग है ॥ तातैं हेशिष्य संसाररूपशूलकापरित्यागकरिकै ब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपजोमुक्तिमंडपहै ताकूंप्राप्तहोवो ॥ और अपणेस्वरूपकेअज्ञानकीनिवृत्तिवासतैं मैंब्रह्महूं याज्ञानकूं वेदांत श्रवणादिकोकरिकै अवश्यसंपादनकरो ॥ और आत्मज्ञानतैंभिन्न देहरूपबंधनकेदेणेहारे जेयज्ञादिककाम्यकर्म हैं ॥ तिनोंका परित्यागकरो ॥ सोआत्मज्ञानकैसाहै ॥ संसाररूपशूलकाकारणजोअज्ञान ताका नाशकरणेहाराहै ॥ और भेदतैंरहितजोआत्मस्वरूपब्रह्म ताकी प्राप्तिकरणेहारा है॥ यातैं आत्माकाज्ञानहीं सबतैंअधिकहै ॥ अब आत्मस्वरूपब्रह्मविषे देशपरिच्छेद १ कालपरिच्छेद २ वस्तुपरिच्छेद ३ यातीनोंपरिच्छेदोंकाअभाव है याअर्थकेजनावणेवासतै प्रथम घटादिकअनात्मपदार्थोंविषे तीनपरिच्छेदोंकूंदिखावैं हैं ॥ अत्यंताभावकीप्रतियोगिताकानाम देशपरिच्छेद है ॥ जैसेभूतलविषेरह्याजोघट ताघटकाअन्यदेशविषे अत्यंताभाव है ॥ ताअत्यंताभावकाप्रतियोगिपणा घटाविषे है ॥ ताका नाम देशपरिच्छेद है ॥ प्रागभावऔरप्रध्वंसाभावकीप्रतियोगिताकानाम कालपरिच्छेद है ॥ जैसे घटकीउत्पत्तितैंपूर्व कपालोंविषे घटकाप्रागभावरहै है ॥ औरघटकेनाशहूए ताकपालोंमें घटका प्रध्वंसाभावरहै है ॥ ता दोनोंअभावोंकाप्रतियोगिपणा घटाविषे है ॥ ताका नाम काल

परिच्छेद है ॥ अन्योन्याभावकीप्रतियोगिताकानाम वस्तुपरिच्छेदहै ॥ जैसे पट घटनहींहै याप्रतीतितैं घटकाअन्योन्याभाव पटविषेभासै है ॥ ताअन्योन्याभावकाप्रतियोगिपणां घटविषेहै ॥ ताकानाम वस्तुपरिच्छेद है ॥ इसरीतिसैं सर्व अनात्मपदार्थ तीनपरिच्छेदोंकरिकैयुक्त हैं ॥ और आत्मस्वरूपब्रह्मविषे तीनपरिच्छेदोंकाअभावहै ॥ काहेतैं ब्रह्मव्यापकहै यातैं देशपरिच्छेद ब्रह्मविषेनहीं ॥ और उत्पत्तिनाशतैंरहित है यातैं कालपरिच्छेद ब्रह्मविषे नहीं ॥ और सर्वकाआत्मा है यातैं वस्तुपरिच्छेद ब्रह्मविषे नहीं ॥ याअभिप्रायतैंही श्रुतिने जीवब्रह्मकाअभेद कथनकऱ्या है ॥ और आत्मस्वरूपब्रह्मकेप्राप्तिकासाधनज्ञान है ॥ यातैं ज्ञानकूं श्रुति ब्रह्मरूपकहतीभई है ॥ और जैसे ज्ञानकूं ब्रह्मरूप श्रुतिविषेकह्याहै ॥ तैसेज्ञानकूं सत्यरूपभी श्रुतिविषेकह्याहै काहेतैं सत्यब्रह्मकी प्राप्तिकरणेहाराज्ञानहै ॥ यद्यपि अज्ञानके निवर्तकवृत्तिज्ञानकूं ब्रह्मरूपओसत्यरूपकहणा बनैनहीं ॥ काहेतैं श्रवणादिकोंकरिकैज्ञानकीउत्पत्ति शास्त्रविषेकही है ॥ तथापि सत्यब्रह्मके प्राप्तिकासाधनज्ञानहै ॥ यातैं ज्ञानकूं ब्रह्मरूप और सत्यरूप कह्या है ॥ जैसे आयुष्कीवृद्धिकरणेहारा जोघृत है ताकूं शास्त्रमैं आयुष्कहे हैं यातैं ब्रह्मशब्दऔरसत्यशब्दका मुख्यअर्थ ज्ञाननहीं किंतुगौणअर्थ है॥आत्माही ब्रह्मऔरसत्यशब्दका मुख्यअर्थ है ॥ अबसत्यकेलक्षणकूंक है हैं ॥ आदिकालविषे और अंतकालविषे औरमध्यकालविषे जो अपणे स्वरूपकूंनहींत्यागे॥किंतु तीनोंकालोंविषे एकरसहोवै ताकूं सत्य कहे हैं ॥ ऐसासत्यस्वरूपमैंहूं ॥ मेरेतैं अन्यअनात्मवस्तु सत्यनहीं ॥ इसरीतिसैं शास्त्रकरिकै सत्यशब्दकाअर्थकह्या ॥ अबलोकप्रसिद्धितैं सत्यशब्दकाअर्थकहे हैं ॥ जोवस्तु अस्तियाज्ञानका और अस्ति याशब्दका विषयहोवे ॥ सोलोकविषे सत्यशब्दकाअर्थ है ॥ काहेतैं वंध्यापुत्रविषे 'वंध्यापुत्रोऽस्ति' याज्ञानकीविषयताहै नहीं ॥ यातैं वंध्यापुत्रकूं लोकविषे औरशास्त्राविषे कोई सत्यकहै नहीं ॥ शिष्यउवाच ॥ हे भगवन् घटः अस्तिपटः अस्ति यारीतिसैं अस्तिशब्दऔरअस्तिबुद्धिकोविषय घटपटादिकभीसत्यहोणेचाहिये ॥ औरसिद्धांतमैं ब्रह्मतैंभिन्न कोईसत्यपदार्थनहीं ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य सत्चित्आनंदरूपब्रह्म मैंहूं यातैं मेरीहीसत्यता सर्वअनात्मपदार्थोंविषे प्रतीत होवैहै॥यातैं आत्मातैंभिन्नकोई सत्यनहीं ॥ तासत्यस्वरूपआत्माकूंविषयकरणेहाराजोज्ञानहै ॥ ताकूंभी सत्य श्रुतिने कह्याहै ॥ जैसेलोकवि ॥ २

षे सत्यअर्थकूंबोधनकरणेहारा जोविचारवान्पुरुषकावचनहै॥ तावचनकूं सत्यकहे हैं ॥ यातैं सत्यशब्दका परमात्माहीमुख्यअर्थ है ॥ और ज्ञान सत्यशब्दका गौणअर्थ है ॥ अथवा शत्रुतैंरहितजोहिरण्यगर्भ है ताकूं श्रुतिविषे सत्य कह्याहै ॥ तैसे अज्ञान और अज्ञानकाकार्यप्रपंचरूपशत्रुकानाशकरणेहारा ॥ आत्मज्ञान है यातैं ज्ञानकूं श्रुति सत्य कहे है ॥ शत्रुतैं रहितपणा ज्ञानविषे तैसेहिरण्यगर्भविषे समान है ॥ शिष्यउवाच ॥ हेभगवन् ज्ञानकाशत्रु जोअज्ञान और ताकाकार्यप्रपंच ॥ ताकूं आपनें असत्य कह्या सोबनैनहीं ॥ काहेतैं तीनकालविषे जाकाअभावहोवै सो असत्यकहियेहै ॥ अज्ञानऔरताकेकार्यप्रपंचका तीनकालमैं अभावहैनहीं॥ यद्यपि ज्ञानकालमैं अज्ञानकानाशहोवैगा ॥ तथापि वर्तमानकालविषे औरअतीतकालविषे अज्ञान विद्यमानहै ॥ काहेतैं अज्ञान अनादिहै ॥ औरताकाकार्यप्रपंचभी वर्तमानकालविषेहै यातैं अज्ञान औरप्रपंच असत्यनहीं ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य जोवस्तुकिसीकालविषेहोवे ॥ और किसीकालविषेनहींहोवै ॥ सो असत्यकहिये है ॥ तीनकालोंविषे जाका अभावहोवै सोईही असत्यहोवैहै यहनियमनहीं है ॥ यातैं अज्ञानकातो भविष्यतकालमैंअभावहै और प्रपंचका भूतभविष्यत्दोनोंकालोंविषे अभाव है ॥ यातैं अज्ञानऔरप्रपंच दोनों असत्य हैं ॥ जैसे वंध्यापुत्र भूतभविष्यत्कालविषेहैनहीं ॥ यातैं वर्तमानकालविषेभी ॥ ताकूं सत्यकोईकहैनहीं यातैं आत्मातैंभिन्नसर्व वंध्यापुत्रके समान असत्य हैं ॥ काहेतैं जैसे वंध्यापुत्रका अपरोक्षज्ञान नहींहोवै है ॥ तैसे कार्यसहित अज्ञानकाभी अपरोक्षज्ञानहोवैनहीं ॥ यातैं दोनों समान हैं ॥ शिष्यउवाच ॥ हेभवगन् आत्माकेप्रकाशकूंपाइकरिके कार्यसहितअज्ञान भासैहै ॥ और वंध्यापुत्र भासैनहीं ॥ यातैं वंध्यापुत्रतैं कार्यसहितअज्ञानमैं विलक्षणता है ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य मुमुक्षुकूं यद्यपि वंध्यापुत्रतैं अज्ञानमैंविलक्षणता प्रतीतहोवै है ॥ तथापि ज्ञानीकूं दोनोंसमानहैं ॥ यातैं आत्माकेसत्ताप्रकाशकूंपाइके अज्ञान भासैहै औरवंध्यापुत्र भासैनहीं यहकहना बनैनहीं ॥ काहेतैं जोआत्माके सत्ताप्रकाशकूंपाइके अज्ञानकूं सत्यमानोंगे तो वंध्यापुत्रभी सत्यहोणाचाहिये॥ जैसे लोकविषे परधनकरिके कोई धनीकहैनहीं॥तैसे आत्माके सत्ताप्रकाशकरिके अज्ञानकूंसत्यकहना बनैनहीं॥यातैं कार्यसहितअज्ञान औरवंध्यापुत्र दोनों ज्ञानीकूंसमान हैं॥ और मुमुक्षुकीदृष्टिकूंअंगी

कारवारिकै आनंदरूपआत्मा॥विषे अज्ञानकूं रज्जुसर्पकीन्याईं कल्पितमानैं ॥ तौभी भेदबुद्धिमिथ्याहीसिद्धहोवै है ॥ काहेतैं कल्पितवस्तुका अधिष्ठानतैंभेदहोवैनहीं ॥ और अनेकजन्मोंकेपुण्यकरिकै मैंब्रह्महूं ऐसाजाकूंबोध उत्पन्नभया है ॥ ताकूं अन्यकोई अनात्मवस्तु जानणेयोग्यनहीं है ॥ काहेतैं जीवब्रह्मकाअभेदज्ञानहीपरमानंदकीप्राप्तिकरणेहारा है ॥ तातैं परमानंदकीप्राप्तिकरणेहारा वेदांततैंउत्पन्नभया जोज्ञान ॥ ताकापरित्यागकरिकै जन्ममरणरूपबंधनकाकारणजोकर्म है ताकूं मुमुक्षु नकरै ॥ और सत्चितआनंद सर्वकाअंतर्यामीअद्वितीय आत्मा कूं जेजेजीव परित्यागकरतेभये ॥ तेसंपूर्ण तामसीपश्वादिशरीरोंकूं प्राप्तहोते भये ॥ परमेश्वरकेउत्पन्नकरेवेदोंकूंनमानणा यहही परमेश्वर कापरित्यागहै हेशिष्य याकोविषे पुरातनइतिहासकूंकहैं हैं॥कैसाइतिहास है ॥ मोक्षकेसाधनकूंजनावणेहारा है ॥ और सनकादिकऋषियोंका औरप्रजाका संवादहैजाविषे ऐसेइतिहासकूं तुम श्रवणकरो ॥ सृष्टिकेआदिकालविषे ब्रह्मासनकादिकोंकूं उत्पन्नकरताभया कैसेहैंतसनकादिक ॥ पुरुषोंकेतर्ककानहींविषयजोवेदकाअर्थ ताकूंजानणेहारे हैं ॥ और चक्षुआदिकजोबाह्यइंद्रिय औरमलरूपजोअंतरइंद्रिय तिनोंकूं जिनोंनैं वशकियाहै ॥ और यथालाभकरिके संतोषकूंप्राप्तभयेहैं ॥ और शीतउष्णादिकजिनोंनैंसहनकिया है और आत्मज्ञानकरिकेयुक्त हैं ॥ और लोकोंकेकल्याणवास्ते जिनोंनैं शरीरधारणकऱ्या है ॥ ऐसेजेसनकादिकहैं ॥ तेप्रजाकूं मोक्षकेसाधनआत्मज्ञानतैंरहित देखिकरिकै और विषयोंमैं आसक्तदेखिकरिकै कृपाकरिकेकहतेभये॥हेप्रजा आत्मज्ञानहीं तुमारेकूं सुखकासाधनहै ॥तातैंभिन्नसर्व दुःखकेसाधनहैं॥ऐसा सनकादिकोंकावचन श्रवणकरिकैभी पूर्वसंस्कारकेवशतैं मोहकूंप्राप्तभई सोप्रजा तासनकादिकोंकेवचनोंका अनादरकरिकै विषयसुख वासते कर्मोंकूं करतेभये॥ताप्रजा विषेभी अधम मध्यम उत्तम यहतीनप्रकारकी जो तामसीप्रजा है ॥ तेपापकरिकेयुक्तहुए वेदकीआज्ञाकूं नमानते भये॥और पूर्वमलिनसंस्कारतैंउत्पन्नभईजोबुद्धिताकरिकै शब्दस्पर्शादिविषयोंकूं सुखकासाधनमानतेभये ॥ ताशब्दादिविषयोंमैंसुखसाधनबुद्धितैं तिनोंकेमनवाकूशरीरविषे दोष उत्पन्नहोतेभये॥ताविषे परधनादिकोंकीइच्छादिक मनकेदोषहैं ॥ कठोरवचन और मिथ्याबोलना यह वाकइंद्रियकेदोषहैं॥और चोरीसैंआदिलेके शरीरकेदोषहैं ॥ तिनोंदोषोंकरिकै तीनप्रकारकेशरीरोंकूं पावतेभये॥तहाँकोईआकाशमें विचरण

हारे पक्षीआदिक होतेभये॥कोई भूमिविषे वृक्षादिक होतेभये॥कोई सर्पादिक होते भये॥ कैसेपक्षीआदिकशरीरहैं॥मनुष्योंकरिकैभोग्यहैं ॥ और नाशकरणेयोग्यहैं ॥ और छेदनकरणेयोग्यहैं ॥ और हस्तपादवागादिकइंद्रिय जिनोंविषेनहीं हैं ॥ और सुखसैंरहितहैं ॥ अतिसैंकरिकेदुखीहैं ॥ तिनोंविषेभी पक्षी हस्तोंतैंरहितहैं॥और वृक्ष ज्ञानइंद्रियऔरकर्मेंद्रियोंतैंरहितहैं ॥ यद्यपि पंचज्ञानइंद्रिय पंचकर्मइंद्रिय पंचप्राण मनबुद्धि या सतदशतत्वरूपलिंगशरीर वृक्षोंविषेभीहै ॥ यातैंइंद्रियोंका वृक्षाविषे अभावकहना बनैनहीं ॥ तथापि जैसे मनुष्यादिकोंकेइंद्रिय प्रसिद्ध हैं ॥ तैसेवृक्षादिकोंकेनहींहैं॥ किंतु सूक्ष्महैं ॥ यातैं न हुयेसमानहैं॥और ग्रामऔरवनाविषेरहणेहारे॥जेपशुहैं॥तेस्पष्टवाणीतैंरहितहैं॥ काहेतैं तिनोंकीवाणीतैं अर्थकाबोधहोवैनहीं ॥ और सर्पादिक पादादिकोंतैंरहितहैं॥यहवार्तासर्वलोकोंकूं प्रसिद्धहै॥याप्रकार तामसपुरुषोंकी गतिकही ॥ अब सात्विकपुरुषोंकेगतिकहणेवास्ते प्रथम राजससात्विकपुषोंकेप्रकृतिकूं दिखावे हैं ॥ दूसराप्रजा आत्मज्ञानकापरित्यागकरिकेवेदने बोधनकरेजेयज्ञादिककर्म औरअग्निसूर्यवायुआदिकदेवतावोंकी उपासना तिनोंकूं सुखकासाधनमानिकरिकै करतेभये ॥ और भिन्नाभिन्नफलकेबोधकवेदवाक्योंकूंदेखिकरिकै कर्मउपासनाकरणेहारीप्रजाका दोप्रकारकाभेद होताभया ॥ तहाँराजसीप्रजा स्वर्गादिसुखवासते कर्मउपासनाकूं करतेभये ॥ और सात्विकप्रजा इसप्रकार परस्परविचारकरिकै कर्मउपासनाकूंकरतेभये ॥ ताविचारकेस्वरूपकूंकहैं हैं वेदोंकूंजानणेहारे जेसनकादिकहैं ॥ तिनोंनैं हमारेकूं पूर्व मोक्षकासाधनआत्मज्ञान कह्याथा ॥ ताज्ञानविषेअबीहमाराअधिकारहैनहीं ॥ काहेतैं जाकाज्ञान सुखकासाधनहै ॥ ऐसा जो त्वंपदकालक्ष्य साक्षीकूटस्थ ॥ और तत्पदकालक्ष्यपरब्रह्म ॥ तिनोंकूं हमोंनैं देहादिकोंतेभिन्न नहींकियाहै ॥ और वेदोंके जानणेहारे ॥ जेपूर्वहमारेपितादिकथे ॥ तिनोंकेवचनोंकरिकैभी सोपरमात्मा हमोंनैं नहीं जान्या ॥ और अपनीबुद्धिकरिकैभी सोपरमात्मा हमोंनैं नहींजान्या ॥ और मनकीप्रवृत्तिमैंकुशलजोहमहैं ॥ तिनोंने मनकरिकैभी सोपरमात्मा नहींकल्पनाकऱ्या ॥ और यादेहरूपमंदिरविषे सोपरमात्मा घ्राणइंद्रियकरिकैभी हमोंने नहींजान्या ॥ और चक्षुआदिकइंद्रियोंकरिकै स्वप्नविषेभी सोपरमात्मा हमोंनैं नहींदेख्या ॥ और श्रुतिवाक्योंकरिकैभी सोनिर्गुणपरमात्मा हमोंनैं नहींजान्या ॥ और हमोंने आपणे

श्रद्धावान्नशिष्योंकेतांईभी कभीनिर्गुणपरमात्मा उपदेशनहींकऱ्या ॥ औरस्थूलशरीरतैंभिन्न औरकर्त्ता पुण्यपापकेफलकाभोक्ता आत्मा है ऐसा आत्मकास्वरूप हमोंनें जान्याहै ॥ और श्रुतिनैंभी आत्माकूं श्रोता द्रष्टा विज्ञाता कह्या है ॥ और वाक्प्राणकेव्यापारविषे परस्परलयचिंतनरूप अंतर अग्निहोत्रकूं जानणे हारे कवषमुनिकेपुत्र जैसे बाह्य अग्निहोत्रतैं वैराग्यकूंप्राप्त होते भये ॥ तैसेयज्ञादिककर्मोंविषे वैराग्यकूं हम प्राप्तनहींभये ॥ यातैं गुरुके समीपजाइके आपणेस्वरूपके निर्णयकरणेविषेभीहमाराअधिकारनहीं ॥ और जोहम ता परमात्माकूंनजाणिकरिके स्वर्गादिकोंकीप्राप्तिवासतैं कर्मोंकूंहींकरेंगे ॥ तो हमारा जन्म निष्फल जावेगा ॥ काहेतैं सर्वज्ञीवोंकाशरीर परमात्मानें निर्गुणब्रह्मकेजानणेवासतेरचाहै ॥ विषयभोगवासते नहींरचा ॥ याकारणतैंहीं श्रुतिविषे पादकेनखाग्रतैंलेकरिके मस्तकपर्यंत उरू उदर हृदय आदिकस्थानोंविषे ब्रह्मका प्रवेशकह्याहै ॥ तिनों देहोंविषे भीगुरुशास्त्रआदिकसाधनोंकरिकेयुक्त पुरुषकादेहही स्पष्टआत्मज्ञानवासते है काहेतैं श्रुतिनें यापुरुषशरीरविषेहींआत्माकाअपरोक्षज्ञानकह्याहै ॥ और पूर्वसनकादिकोंनें हमारे तांईं श्रुतिकरिकेसिद्धऔरमोक्षकासाधन आत्मज्ञानहींतुमारेकूं करणेयोग्यहै ऐसाकह्याथा ॥ और सनकादिकोंनें कह्याजो आत्मज्ञान ताकेसंपादनमें आपणेसामर्थ्यकूंनदेखिकरिके और याज्ञानविषे हमारेकूं किसप्रकारअधिकारहोवेगा ऐसीचिंताकरिके मौनकूंधारिके हम इहाँआवतेभये हैं ॥ तातैं विवेकादिकसाधनचतुष्टयरूपअधिकारकीप्राप्तीवासते कर्म औरउपासनाकूं हमकरैं ॥ ऐसाविचारकरिके प्रजा उपासनाकूं औरकर्मोंकूं फलकीइच्छातैंरहितहोइके करतेभये ॥ ताकर्मउपासनाकरिकेशुद्धभयाहैमनाजिनोंका ॥ और शमदमादिकसाधनोंकरिकेयुक्त ॥ और आत्मज्ञानतैंरहित ॥ ऐसेजेमुमुक्षु हैं ॥ ते पुनःसनकादिकऋषियोंकूंप्राप्तहोइकरिके ब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिवासतैं तिनोंकेतांई अपणासंपूर्णअभिप्रायकहते भये ॥ तिनोंकेवचनकूंश्रवणकरिके कृपाकरिकेयुक्त सर्वज्ञसनकादिक आत्मज्ञानकीप्राप्तिवासतेतिनोंकूं कहते भये ॥ सनकादिकउवाच ॥ हेप्रजा वाणीऔरमनका आत्माविषयनहीं है ॥ काहेतैं जाति गुण क्रिया करिकेयुक्तवस्तुकाही शब्द बोधनकरैहै ॥ जैसे घट यह शब्द घटत्वजातिवालेघटकूं बोधन करैहै ॥ और नीलघट यास्थानमें नीलशब्द नीलगुणवालेका बोधनकरै ॥ ॥ ४ ॥

औरपाचकयहशब्द पाकरूपक्रियावालपुरुषकूं बोधनकरैहै ॥ इसरीतिसैं किसीधर्मकूंग्रहणकरिकेही शब्द अपणे अर्थकूंबोधनकरै है ॥ और आत्माजातिआदिकधर्मोंतैं रहित है ॥ यातैं शब्दकी आत्माविषे प्रवृत्तिहोवै नहीं ॥ इसरीतिसैं मनवाणीकाअविषय और सत्चित्आनंदरूप आत्माकूं यद्यपिहम कहणेकूंसमर्थनहींहैं ॥ और तुमभी जानणेकूंसमर्थनहींहो ॥ तथापि निर्गुणपरमात्माविषे जगत्काआरोपणकरिके ताजगतकानिषेधरूप जो अध्यारोपअपवाद ॥ ताकरिकेसिद्ध जोभागत्यागलक्षणा ॥ तालक्षणाकरिके परमात्माकूं हम अब तुमारेतांईकहतेहैं ॥ दृष्टांत ॥ जैसेसोयेहुएराजाकूं बंदीपुरुष जगावतेहैं तैसे वास्तवतैंशुद्ध और अज्ञानरूपनिद्राकरिकेसोयेहुएपरमात्माकूं वेदांतशास्त्र भागत्यागलक्षणाकरिके बोधनकरै हैं ॥ प्रजाउवाच ॥ हे भगवन् पूर्व आपने कह्या शुद्धआत्माकूं वेदांत बोधनकरै हैं ॥ सो बनैं नहीं ॥ काहेतैं आत्मा अहंकारआदिकोंकरिकेविशिष्ट है ॥ यातैं प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकेसिद्ध है ॥ सनकादि उवाच ॥ हे प्रजा आत्माविषे जो साकारपणा है ॥ सो मायाकरिकेकल्पित है ॥ यातैंमिथ्या है ॥ और सर्वकल्पनाकाअधिष्ठानवस्तुही आत्मशब्दकाअर्थ है ॥ अब याअर्थकूं स्पष्टकरिकेदिखावै हैं ॥ हे बुद्धिमानप्रजा ॥ शास्त्रसंस्कारतैंरहित जेलौकिकपुरुष है ॥ और शास्त्रकेजानणेहारेजेवादीपुरुष हैं ॥ तिनोंनें लोकविषे दो प्रकारका शब्द और दोप्रकारकाज्ञान निश्चय किया है ॥ और ताशब्द और ज्ञानका विषयरूपअर्थभी दोप्रकारकानिश्चयकियाहै ॥ तहाँ अहं याशब्दका और अहं याज्ञानका अंतरआत्मा अर्थ हैं ॥ और न अहं याशब्दका और न अहं याज्ञानका बाह्यअनात्मवस्तु अर्थ है ॥ तहाँ अहं या शब्दतैं और अहं या ज्ञानतैं आत्मरूपअर्थ भिन्नहै ॥ और न अहं या शब्दतैं और न अहं याज्ञानतैं अनात्मरूपअर्थ भिन्न है ॥ इसरीतिसैं परस्परभिन्न जे शब्द ज्ञान अर्थ ॥ तिनोकूं एकरूपजाणि करिके भ्रांतपुरुष आत्माकूं अहं याशब्द और अहं याज्ञानका विषयमानैं हैं ॥ और अनात्मपदार्थोंकूं न अहं याशब्दका और न अहं याज्ञानका विषयमानैं हैं ॥ यातैं अहं और न अहं यह सर्वव्यवहार भ्रमरूप है ॥ इसरीतिसैं घट ऐसेशब्दतैं और घट ऐसेज्ञानतैं घटरूपअर्थ भिन्न है ॥ ताविषे घट ऐसा जो लोकोंका व्यवहार है ॥ सोभी शब्द औरज्ञान औरअर्थ रूपहै ॥ यातैं भ्रमरूपहै ॥ काहेतैं लौकिकपुरुषतैं किसीनेंपूछा यहकौनवस्तु है

तब घट यहउत्तर लौकिकपुरुष कहैं हैं ॥ और कैसाज्ञान तुमारेकूंभयोहै ऐसाकिसीनें पूछा तबभी घट यहउत्तर कहैं हैं ॥ और कौनशब्द तुमनैं श्रवणकऱ्या ऐसाकिसीनेंपूछा तबभी घट ऐसाउत्तर कहै हैं ॥ इसरीतिसैं परस्परभेदवाले शब्दज्ञानअर्थोंकूं एकरूपकरिकेजान णा भ्रांतिसैंविनाबनैंनहीं ॥ यातैं सर्वलोकोंकाव्यवहार भ्रमरूप है ॥ और यहलोकोंकाव्यवहार युक्तिकूंभी नहींसहारता ॥ यातैं भी भ्रमरूपहै ॥ काहेतैं वाक्इंद्रियविषे शब्दरहै हैं ॥ और हृदयविषे ज्ञानरहैहै और अर्थजोघटादिकैहै सो भूमीविषेरहैहै ॥ ताअ र्थकूं शब्दऔरज्ञानरूपमानणा यह पुरुषोंकी भ्रांतिसेविना बनैंनहीं ॥ किंवा ॥ शब्द ज्ञान अर्थ यातीनोंकूं एकमाणेमैं व्याघात दोषभी होवैहै ॥ काहेतैं जब शब्दऔरज्ञान प्रकाशकहोवैं ॥ और शब्दज्ञानकाजोअर्थ सो प्रकाश्यहोवै ॥ तब शब्दज्ञान औरअर्थ दोनोंका परस्परभेदहीसिद्धहोवै है ॥ काहेतैं लोकविषे प्रकाशक और प्रकाश्यका परस्परभेदही देख्या है ॥ जैसे किसीपुरुषनें पिता और पुत्र एकस्थानविषे देखे होवैं ॥ और दूसरे देशमैं तापुत्रकूं देखि करिकै ताके पिताका स्मरण तापुरुषकूं होवै है ॥ यास्थानमैं पुत्र प्रकाश कहै ॥ और पिता प्रकाश्य है ॥ तिनोंकाभेद लोकविषेप्रसिद्ध है ॥ तैसे प्रकाशक जे शब्द और ज्ञान हैं ॥ तिनोंका प्रकाश्यरूप अर्थसैं जो अभेदमानोंगे ॥ तो आपणैंतैंआपणाभेदरूप व्याघातदोष प्राप्तहोवेगा॥ अब पूर्वकह्याजो अर्थ ता अर्थकूं सिद्धांतविषेजोडे हैं ॥ इस प्रकार व्यवहारकालविषे अहंयाशब्दका और अहं या ज्ञानका लोकोंनैं आत्मा विषयमान्या है ॥ और न अहं यां शब्द और ज्ञानका अनात्मवस्तु विषयमान्या है ॥ तहां अहं याशब्द और ज्ञानकापरित्यागकरिकै तिनोंका जो अर्थ भेदतैं रहित बाकीरह्या ॥ सोईही भेद तैंरहित सर्वशक्तिसंपन्न परमात्मा जगत्कीउत्पत्तितैंपूर्वहोताभया ॥ और लोकप्रसिद्ध जेशब्द औरज्ञान और अनात्माहैं ॥ ते पूर्व नहीं होते भये ॥ दृष्टांत ॥ जैस अंधकारका विरोधी सूर्यभगवान् अंधकारकी निवृत्ति करिके अंधकारतैं और ता विषेविचरणेहारेपिशाचादि कोंतैं रहितहुआ प्रकाशैहै ॥ तैसे परमात्माभी आपणाकार्यप्रपंच आपणेविषेलयकरिके अद्वितीयरूपतैं पूर्वस्थितहोवै है ॥ अब याअर्थकूं स्पष्टकरिके दिखावै हैं ॥ दिन दिनविषे जैसे सूर्यविषे अंधकार लयकूं प्राप्त होवै है ॥ तैसे सत्य आनंदरूप आत्माविषे यह

संपूर्णजगत् लयकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जैसे संपूर्णरात्रियोंविषे सूर्यकाआच्छादनकरिके अंधकार अविद्यातैंउत्पन्नहोवै है ॥ तैसे सत् चित्आनंदस्वरूपआत्माकूंआच्छादनकरिकै आत्मासैंविरुद्धस्वभाववाला असत् जड दुःख अनात्मस्वरूप जगत् उत्पन्नहोवै है ॥ अन्यदृष्टांत ॥ जैसे सर्पकीउत्पत्तितैंपूर्व रज्जुहीस्थितहै ॥ और सर्प आपणीउत्पत्तितैंपूर्वनहीं है ॥ तैसे अनात्मजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्वआ नंदस्वरूपआत्माही स्थितहोताभया ॥ और अनात्माजगत् आपणीउत्पत्तितैंपूर्व नहींस्थितहोताभया ॥ प्रजाउवाच ॥ हे भगवन् सृष्टितैंपूर्व आपनें अद्वितीयपरमात्माकह्या ॥ सोबनैंनहीं ॥ काहेतैंसृष्टितैंपूर्व यद्यपि कार्यरूपप्रपंचकाअभाव है ॥ तथापि सर्वजगत्का कारणरूपमाया विद्यमान है ॥ सनकादिकउवाच ॥ हे प्रजा आत्मातैंभिन्नहोइके माया प्रतीतहोवैहै ॥ यातैं मायाकूंसत्यमानोहो ॥ अथवा प्रमाणकरिकेमायासिद्धहै ॥ यातैं मायाकूंसत्यमानोहो ॥ तहाँ प्रथमपक्ष बनैंनहीं ॥ काहेतैं जैसे सुषुप्तिकूंप्राप्तभयापुरुष जाग्रत्स्वप्नकेअनंतसंस्काररूपगर्भकरिकेयुक्तअविद्याकूं देखताहुआभी आपणेतैं ताअविद्याकूं भिन्ननहींदेखता ॥ इसप्रकार माया वाला महेश्वर आनंदरूपआत्माभी संपूर्णजगत्रूपगर्भकरिकेविशिष्टमायाकूं देखताहुआभी आपणेतैंभिन्न ताकूं नहीं देखता ॥ सुषुप्तिविषे और प्रलयविषे संस्काररूपहोइके जगत् अज्ञानमैंरहै है ॥ तहाँदृष्टांत ॥ जैसे वर्षाकेनिवृत्तहूए मंडूकोंकेसूक्ष्मअव स्थारूपसंस्कार भूमिविषेरहैं हैं ॥ और वर्षाकेहूए पुनःतिनोंका प्रादुर्भावहोवै है ॥ ऐसे संस्काररूपतैं अज्ञान विषेरह्याजोजगत् ताका सृष्टिकालमैं प्रादुर्भावहोवै है ॥ और माया प्रमाणकरिकेसिद्धहै यातैंसत्य है ॥ यहदूसरापक्षभीबनैंनहीं ॥ काहेतैं मायाहैऐसीजा मायाकीसिद्धिहै ॥ सोभी मायातैंहीमायाकीसिद्धिहै ॥ प्रमाणतैं मायाकीसिद्धि विवेकीपुरुषोंनें अंगीकारकरीनहीं ॥ तहाँदृष्टांत ॥ जैसे सुषुप्तपुरुषकीसुषुप्ति सुषुप्तिकरिकेही सिद्धहै ॥ किसीप्रमाणकरिके सिद्धनहीं ॥ और जोप्रमाणअंगीकारकरे ॥ ताकूं यहपू छैं हैं ॥ तासुषुप्तिरूपअविद्याविषे प्रत्यक्षप्रमाण है ॥ अथवा अनुमानप्रमाण है ॥ अथवा शब्दप्रमाण है ॥ अथवा इनोंतैंकोईभिन्नप्रमा णहै तहाँ प्रत्यक्षप्रमाण है याप्रथमपक्षमेंभी सुषुप्तपुरुषकेप्रत्यक्षप्रमाणकरिकेसिद्धहै ॥ अथवा अन्यपुरुषकेप्रत्यक्षप्रमाणकरिकेसिद्ध है ॥ यह

दोनोंपक्ष बनैनहीं ॥ काहेतैं इंद्रियजन्यज्ञानकानाम प्रत्यक्षनैयायिक मानैं हैं ॥ सुषुप्तिविषे इंद्रियोंका लयहोवे है यातैं सुषुप्तपुरुष प्रत्यक्षप्रमाणकरिके सुषुप्तिकूंजानतानहीं ॥ तैसे जागताहुआजोअन्यपुरुष है ॥ सोभी अन्यकेसुषुप्तिकूं प्रत्यक्षप्रमाणतैंजानतानहीं ॥ काहेतैं जैसे एकपुरुषकेज्ञानका दूसरेपुरुषकूं प्रत्यक्षहोवै नहीं ॥ तैसे अज्ञानरूपसुषुप्तिकाभी दूसरे पुरुषकूं प्रत्यक्षहोवै नहीं ॥ यातैं प्रत्यक्षप्रमाणतैं सुषुप्तिकीसिद्धि बनैनहीं ॥ शंका ॥ हे भगवन् यद्यपि प्रत्यक्षप्रमाणतैं सुषुप्तिकीसिद्धिबनै नहीं ॥ तथापि यहपुरुष सुषुप्तिवाला है इंद्रियोंकीक्रियातैंरहितहोणेतैं ॥ या अनुमानकरिकै सुषुप्तिरूपअज्ञानकीसिद्धिबनै है ॥ समाधान ॥ इंद्रियोंकेक्रियाकाअभावरूपहेतु सुषुप्तिकासाधकबनैनहीं ॥ काहेतैं सुषुप्तिरूपसाध्यकेअभाववाले जेस्वप्नऔरसमाधि ॥ तिनोंविषेभीइंद्रियोंकेक्रियाकाअभावरूपहेतु रहे है ॥ यातैंव्यभिचारीहै ॥ साध्यकूंछोडिकरिके जोहेतु कभीरहै नहीं ॥ सोहेतु साध्यकीसिद्धिकरै है ॥ यातैं अनुमानप्रमाणभी सुषुप्तिकासाधकनहीं है ॥ शास्त्ररूपशब्दप्रमाण सुषुप्तिरूपअज्ञानकासाधक है ॥ यहतीसरापक्षभी बनैं नहीं ॥ काहेतैं पुरुषोंकरिकेरचाहुआशास्त्र अविद्यारूप सुषुप्तिविषे प्रमाण है ॥ अथवा अपौरुषेयवेद तांविषे प्रमाण है ॥ तहां प्रथमपक्षतो बने नहीं काहेतैं प्रत्यक्षादिप्रमाणोंकरिकेसिद्ध पदार्थोंकूंही पुरुषोंकरिकेरचाहुआशास्त्र प्रतिपादन करै है ॥ प्रत्यक्षादिक प्रमाण अविद्याके साधक हैं नहीं ॥ यातैं लौकिकशास्त्रभी तांविषे प्रमाण नहीं ॥ और वेदप्रमाण है यह दूसरापक्षभी बनै नहीं ॥ काहेतैं फलवाले अर्थ विषेही वेदप्रमाण होवे है ॥ फल नाम सुखकी प्राप्ति और दुःखकी निवृत्तिका है ॥ ते दोनों जीवब्रह्मकेऐक्यज्ञानतैं होवे हैं ॥ अविद्याके ज्ञानतैं होवे नहीं ॥ यातैं अविद्याविषे शास्त्रप्रमाण नहीं ॥ शंका ॥ वेदविषे माया और अविद्याके बोधक वाक्य और अविद्यातैं जगत्की उत्पत्तिके बोधकवाक्य बहुत देखते हैं ॥ तिनोंका क्या अभिप्राय है ॥ समाधान ॥ फलके अभाव होणेतैं अविद्याके बोधन विषे शास्त्रकातात्पर्य नहीं ॥ किंतु अद्वितीय आनंदरूपआत्माकेजनावणेवासतैंहीं अविद्याका औतातैं जगत्की उत्पत्तिका वेदविषेकथन है ॥ साकैसीअविद्या है ॥ जैसेदीपकरिके अंधकारकाज्ञानहोवेनहीं तैसे प्रमाणकरिके अविद्याकाज्ञानहोवेनहीं॥किंतु अविद्यातैंही अविद्यासिद्धहै ॥ इसप्रकार प्रलयका

लविषे परमात्मा कार्याकारपरिणामकूंनहींप्राप्तभई जोमाया तामायाकरिकेविशिष्टभीहै तोभी परमात्मा मायातैंरहितकह्याहै दृष्टांत ॥ जैसे सूर्यभगवान्अंधकारकाकारणजोअज्ञान ताकरिकैविशिष्टभी है॥तोभीदिनविषेकार्यरूपअंधकारतैंरहितहै॥ यातैं सूर्यअंधकारतैंरहित कहिये है ॥ इसप्रकाररस्थितहुआपरमात्मा सृष्टिकेआदिकालविषे ऐसाविचार करताभया ॥कैसाहैसोपरमात्मा॥पूर्वपूर्वकल्पोंविषेसृष्टिकूंविषयकरणेहारा जोमायाकावृत्तिरूपज्ञान तातैंउत्पन्नभयेजेसंस्कार तिनोंकरिकेयुक्त है ॥ औरजीवोंकेपुण्यपापरूपअदृष्टकरिकै प्रगटहुएहैंसंस्कार जिसपरमात्माके ॥ सोपरमात्मा विचारकरताभया ॥ अब ताविचारकेस्वरूपकूंकहैं हैं ॥ मायाउपहितमुझपरमात्माविषे पंचभूत औरताकाकार्यब्रह्मांडसंपूर्ण सूक्ष्मरूपहोइकरिकेरह्याहै ॥ यातैं इसप्रकार स्पष्टकरिकै स्वर्ग औरआकाश औरभूमि यातीनोंलोकोंकूं रचों ॥ यहाँ स्वर्गकरिके ऊपरिकेसर्वलोकोंकाग्रहणकरणा ॥ और भूमिलोककरिकै नीचेकेसर्वलोकोंकाग्रहणकरणा ॥ इसप्रकार विचारकरिकै सत्यसंकल्पजोपरमेश्वरहै ॥ सो ब्रह्मांडकूंरचताभया कैसाब्रह्मांडहै ॥ विराट्रूपभगवान्काशरीरहै ॥ औरहिरण्यगर्भका शरीररूपजोपंचसूक्ष्मभूत तिनोंविषेस्थितहै ॥ और भूरादिचतुर्दशलोकोंकरिकेयुक्तहै ॥ और चेतनकीसत्तातैंभिन्नजाकीसत्तानहीं ॥ और नाम रूप क्रियाहैं शरीरजाका ॥ तहाँ नामकरिकै शब्दरूपप्रपंचका ग्रहणकरणा ॥ और रूपकरिकै अर्थरूपप्रपंचका ॥ ग्रहणकरणा ॥ और क्रियाकरिकै नामरूपकाकारणजोकर्महैं तिनोंका ग्रहणकरणा ॥ इसप्रकार सर्वज्ञऔरसर्वशक्तिमान्परमेश्वर संपूर्णजगत्कूंरचिकरिकै ऐसाविचार करताभया ॥ दृष्टांत ॥ जैसे असुरोंकाबालक रागद्वेषतैंरहितहुआ आपणीमायाकेबलतैं पदार्थोंकूंरचताहै ॥ तैसे परमेश्वर जगत्कूंरचताभया अब ताविचारकेस्वरूपकूंकहैहैं ॥ येजेपंचभूत हैं ॥ और जलहैप्रधानजिनोंविषेऐसेपंचभूतोंविषेस्थित ॥ जोयहब्रह्मांडहै ॥ और ताब्रह्मांडविषेस्थित जेयहचतुर्दशलोक हैं ॥ यहसंपूर्ण अचेतन हैं ॥ यातैं क्षणमात्रविषे नाशकूंप्राप्तहोवेंगे ॥ दृष्टांत॥जैसे स्वामी तैंरहितगृह नाशकूंप्राप्तहोवेहै ॥ और जैसे प्राणतैंरहितहुआशरीर नाशहोवे है ॥ ऐसाविचारकरिकै पिताकीन्याईं पालनकरणेहारा जो परमेश्वर है ॥ सो पूर्वआपणेआपणेसत्त्वगुणादिककारणोंतैं उत्पन्नभये जेसंपूर्णइंद्रिय और देवताआदिकजगत् ताके प्रगटकरणे

वासत. ताअंडविषे नानाप्रकारकेछिद्रोंकूं करताभया ॥ तहाँ मुखछिद्ररूपगोलककूंप्राप्तहोइके शब्दव्यवहारकरणेहारा वाक्इंद्रिय प्रगट होताभया ॥ तावाक्इंद्रियतैं वैदिकयज्ञादिककर्मोंकी सिद्धिकरणेहारा अग्निदेवताप्रगटहोताभया ॥ और नासिकाछिद्ररूपगोलककूंप्राप्त होइके घ्राणइंद्रिय प्रगटहोताभया ॥ ताघ्राणइंद्रियतैं गंधउपाधिवालावायुदेवता प्रगटहोताभया ॥ और अक्षिछिद्ररूपगोलककूंप्राप्तहो इके चक्षुइंद्रिय प्रगटहोताभया ॥ ताचक्षुइंद्रियतैं भगवान्सूर्यदेवता प्रगटहोताभया और कर्णछिद्ररूपगोलककूंप्राप्तहोईके श्रोत्रइं द्रिय प्रगटहोताभया ॥ ताश्रोत्रइंद्रियतैं संपूर्णदिशा प्रगटहोती भई ॥ और संपूर्णदेहविषे अतिसूक्ष्मजेअनंताछिद्र हैं तिनोंतैं सर्व शरीरविषेव्यापक जोचर्मरूपत्वचा है सोप्रगटहोतीभई ॥ तात्वचारूपगोलककूंप्राप्तहोइके लोमऔरकेशसहित स्पर्शनइंद्रिय प्रगटहोता भया ॥ ता स्पर्शनइंद्रियसहितलोमऔरकेशोंतैं संपूर्णऔषधिआदिकस्थावरप्रगटहोतेभये ॥ और स्थावररूपउपाधिवाला वायुदेवता प्रग टहोताभया ॥ ते कैसेस्थावर हैं ॥ सर्वजीवोंकेउपकारवासतैं दिनरात्रिविषे जिनोंनें आपणम कलेशकूंधारणकऱ्या है ॥ और मांसका कमलरूपहृदयगोलक उत्पन्नहोताभया॥सोहृदयकैसा है॥पंचछिद्रोंकारिकैयुक्त है॥और अंतरआकाशविषे जाकानिवास है॥ताहृदयरूपगो लककूंप्राप्तहोइके मन प्रगटहोताभया ॥ तामनतैं जगत्केआनंदकरणेहाराचंद्रमादेवता प्रगटहोताभया ॥ और नाभिछिद्ररूपगोलककूंप्राप्तहो इके अपानवायुप्रगटहोताभया॥कैसाअपान है दुःखसैंसहनकियाजावे है॥याकारणतैंहीं प्राणायामकूं शास्त्रविषेअतिसेकठिनकह्या है॥और मुख द्वारतैंप्राप्तभयाजोअन्नऔरजल तिनोंकूं नीचेदेशाविषेलेजावे है ॥यातैं याकूं अपानकहै हैं॥ताअपानतैं महानमृत्यु प्रगटहोताभया॥कैसामृत्यु है सर्वप्राणियोंकूंभयकेदेणेहाराहै ॥ अपना मृत्युकाकारणहै ॥ यहवार्ता लोकोंविषेभीप्रसिद्धहै॥ काहेतैं अन्नकेदोषोंकेविना किसीस्थानविषे भी प्राणी मरतेनहीं॥ किंतु अन्नदोषोंतैंहीं सर्वत्रप्राणी मरतेहैं॥आर अनादिकोंकूं यह अपानवायु ग्रसे है॥याकारणत अपानतैंमृत्युकाप्रगट होनाकह्याहै॥और उपस्थछिद्ररूपगोलककूंप्राप्तहोइके वीर्यसहितउपस्थइंद्रिय प्रगटहाताभया॥सोकैसावीर्य है ॥ जरायुज औरअंडज देहोंकूं विस्तारकर्त्ताहुआलोकविषेभी प्रसिद्ध है ॥आर पंचमआहुतिकासाधन है॥यहवार्ता आगेकहैंगे॥और षट्कोशोंवालाजोशरीर ताका कारण

हैं ॥ तिनोंविषेत्वचा औररुधिर औरमांस यहतीनकोश माताकेअंशतेंहोवेहैं ॥ औरनाडी अस्थि मज्जा यह तीनकोश पिताके अंशतेंहोवे हैं ॥ और वीर्यसहिततउपस्थइंद्रियतैं जलहैप्रधानजिनोंविषेऐसेजेपंचभूत हैं शरीरजाका ऐसा जो प्रजापतिदेवता सो प्रगट होता भया ॥ इसप्रकार ऐतरेयउपनिषदविषे इंद्रियऔरातिनोंकेदेवताओंका प्रगटहोणाकह्याहै ॥ अब बाकीरहेजेदेवताऔरइंद्रिय तिनोंकाभीश्रुतिविषेस्थित जेवाक्औरअग्निआदिकशब्द तिनशब्दोंकीलक्षणातैं ग्रहणकाप्रकार दिखावेहैं ॥ पूर्वकह्याजो मृत्युकाकारणअपान सो गुदाछिद्रतैंस्प ष्टहोवेहै ॥ याकारणतैं सोअपानवायु देवतासहितपायुइंद्रिय होवेहैं ॥ तात्पर्य यह ॥ अपानकरिके देवतासहित पायुइंद्रियकाभी प्रगट होणाग्रहणकरणा ॥ और घ्राणइंद्रियकूंप्राप्तहोइके गंधतैंरहितभीवायु गंधवालाहोवेहै ॥ याकारणतैं घ्राणइंद्रिय पृथिवीहै ॥ यास्थानविषे गंधसहितवायुकरिके पृथिवीदेवताकाग्रहणकरणा ॥ और पूर्व त्वचातैंलोमोंकाप्रगटहोणाकह्या तेलोम कंपकरिकेयुक्त हैं ॥ और लोमोंविषेकंपवायुकरिकेजन्यहैं ॥ यातैं ऐसानिर्णयहावह ॥ लोमऔररूपस्पर्शनइंद्रियकरिकेयुक्तत्वचारूपगोलकतैं वायुदेवता प्रगटहोता भया ॥ और आवरणकाविरोधीअवकाशरूपलक्षण ॥ आकाशऔरदिशाका समानहै यातैं पूर्वकहीजेदिशा तेआकाशरूपहैं ॥ और पूर्वहृदयविषे मनकाप्रगटहोणाकह्या॥ तहाँ मनकेप्रगटहुए बुद्धिका और अहंकारका और चित्तकाभी प्रगटहोणाजानिलेणा ॥ काहेतैं श्रुति विषे मनकरिकेही सर्वजगत्कीउत्पत्तिकहीहै ॥ और पूर्वमनकेदेवताचंद्रमाकाप्रगटहोणाकह्या ॥ ताचंद्रमाकरिके बुद्धि अहंकार चित्तके जेदेवता ब्रह्मा रुद्र महेश इनोंकाभी प्रगटहोणाग्रहणकरणा ॥ आर पूर्व अपानकाप्रगटहोणाकह्या ॥ ताअपानकरिके क्रियाशक्तिवालेसर्व प्राणोंका ग्रहणकरना ॥ और पूर्व मुखरूपगोलकविषे वाक्इंद्रियका प्रगटहोणाकह्या ॥ और ताकेदेवताअग्निका प्रगटहोणाकह्याथा ॥ तहाँ वाक्इंद्रियकरिके मुखरूपएकस्थानविषेरहणेहारे रसनइंद्रियकाभी प्रगटहोणाजानणा ॥ और अग्निदेवताकरिकै वरुणदेवताकाभी प्रगटहोणा ग्रहणकरणा ॥ इसप्रकार अनंतप्रकारकेछिद्र अंडविषेरचिकरिकै दोहस्तोंकूं औरदोपादोंकूं परमेश्वर प्रगटकरताभया ॥ और हस्तोंतैं इंद्रदेवताकूं प्रगटकरताभया ॥ और पादोंतैं उपेंद्रदेवताकूं प्रगटकरताभया ॥ इसप्रकार विराट्भगवान्केदेहमैं जेमुखादिकछिद्रहैं ॥ तिनों

छिद्रविषे जैसे श्रुतिविषेकह्याहै तिसप्रकार संपूर्णदेवताओंकूं औरसंपूर्णवाकूंतैंआदिलेकेइंद्रियोंकूं परमेश्वर प्रगटकरताभया ॥ जभी कर्मऔर उपासनाकरिकेप्राप्तभया जोदेवशरीर ॥ सोभिदुर्लोकारिकेयुक्तहै ॥ तौ अन्यशरीरका क्याकहणा है ॥ इसअभिप्रायकरिकेताविराट्शरीरकूं समुद्ररूपकरिकेवर्णनकरैहै ॥ अनंतकोटियोंकूंअनंतकोटिवारगणनाकरैसैं जोसंख्याहोवै इतनैंयोजनविस्तारवाला विराट्कोदेहरूपसमुद्र है ॥ यद्यपि समुद्रकेसंख्याका शास्त्रविषेनियमलिख्या है ॥ तथापि प्रलयकालविषेनियमनहीं है ॥ काहेतैं प्रलयकालविषे योजनोंकीगणतीकर णेहारा कोईहैनहीं ॥ यद्यपि ईश्वर प्रलयकालविषेभी है ॥ तथापि ईश्वरकूं गणतीसकोईप्रयोजनहैनहीं ॥ यातैं योजनोंकीगणतीकरै नहीं ॥ और जैसेसमुद्र देखणेकरिके सर्वप्राणियोंकूं भयकीउत्पतिकरै है ॥ तैसे सर्वात्माविराट्मैंहूं ॥ ऐसाजोविराट्काज्ञान तातैं परिछिन्नदृष्टिवा लेअज्ञानीपुरुष भयकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ और पंचमहाभूतरूपजलहैजाविषे ॥ और चतुर्दशलोकरूप तरंगमाला हैं जिसविषे और जैसे समुद्र शुक्तिऔरशंखोंकरिकै शोभायमान है ॥ तैसे यह विराट्भगवान्काशरीरभी जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज याचारिप्रकारकेशरीररूप शुक्तिऔरशंखोंकरिकै शोभायमानहोरह्याहै ॥ और कामक्रोधादिकरूपमगरोंकाआश्रय है ॥ काहेतैं जैसेसमुद्रकेमगर आपणेतंतुवोंसेपुरुषकूं बांधिकरिके समुद्रविषे गिरायदेतेहैं ॥ तैसे कामक्रोधादिकभी वासनारूपतंतुवोंसेबांधिकरिके यापुरुषकूं संसाररूपसमुद्रविषेगिरायदेते हैं ॥ या तैं मगरकेसमान हैं ॥ और जैसे समुद्रविषे नानाप्रकारकेबंधनकरणेहारे हैं ॥ तिनोंमैभी कोईतौ समुद्रकेपारजाणेमैंप्रतिबंधक हैं ॥ जैसे हनु मान्केछायाकेग्रहणकरणेहारेराक्षस हैं ॥ और कोईक समुद्रविषे तरणेकेप्रतिबंधक है ॥ जैसे जलौंकेभ्रमण है और कोईक बाहरनिकसणे मैंप्रतिबंधक हैं ॥ जैसे ग्राहोंकेमुख हैं इसप्रकार बधनकेकरणेहारे संचित और क्रियमाण और प्रारब्धकर्म हैं जिसविषे ऐसा विराट्भगवान् काशरीर है ॥ और त्वचाआदिकधातुवोंकरिकेदुर्गंध है ॥ और विष्ठामूत्रमलकाआश्रय है ॥ यद्यपि दुर्गंधादिकअन्नकेदोष ॥ विराट्शरीरावि षेकहणे श्रुतिसेंविरुद्ध ॥ तथापि व्यष्टिशरीरद्वारा ताविषेजानणे ॥ स्वभावतैं ताविषे दुर्गंधादिकनहीं हैं ॥ ऐसेविराट्शरीरविषे प्राप्तभये जेवागादिकदेवता तेक्षुधाऔरतृषाकरिव्याकुलहुए और विराट्शरीरकेतृप्तकरणेयोग्य अन्नऔजलकूंनदेखते हुए आपनापिता जो परमेश्वर है

॥ ८

ताकूं कहतेभये ॥ हे भगवन् संपूर्णजगत्जाकाशरीर है ऐसा जो विराट्भगवान्का शरीर आपने उत्पन्नकऱ्या है ॥ याशरीरतैंभिन्न कोई अन्न और जल देखता नहीं ॥ और या शरीरविषे हमारेकूं भोजन करणे योग्य अन्नादिक नहीं देखते ॥ और पान करणे योग्य जल नहीं देखते ॥ तातैं हे भगवन् ! हमारे सुख वासतैं थोडे अन्न और जलकरिके जाकी तृप्ति होवै ऐसाकोई शरीर उत्पन्नकरो ॥ जिसविषेस्थि तहोके हम अन्न और जलकूं प्राप्त होवैं ॥ इस प्रकार वाकादिकदेवतावोंकरिकेकह्याहुआ सोपरमात्मा गौकेदेहकूं रचताभया ॥ तिसगौदेह विषे वाकादि देवताओंकी प्रीति न होती भई ॥ काहेतैंगवादिकशरीरोंविषेपूर्वकऱ्या हुआ कर्मही भोगता है ॥ नवीन बुद्धि और कर्मका संपादन होवै नहीं ॥ इस प्रकार गौकेशरीरविषे तिनोंकी प्रीतीकूं नदेखिकरिके परमात्मा पुत्रोंकी प्रीति वासतैं अश्वकूं उत्पन्नकरताभया ताअश्वविषेभी तिनोंकीप्रीति नहोतीभई ॥ काहेतैं अश्वविषे हस्तोंका और ज्ञान कर्मोंके साधनोंका अभाव है ॥ इसप्रकार पुत्रोंकीप्रीति वासतैं परमेश्वर चौरासीलक्षदेहोंकूं रचताभया ॥ परंतु किसी शरीरविषेभी तिनोंकी प्रीति न होतीभई ॥ तापश्चात्मनुष्य शरीरकूं परमे श्वर रचताभया ॥ तामनुष्यशरीरकूं उत्पन्न हुआ देखिकरिके देवता तिसशरीरमें प्रीति करते भये ॥ और हर्षवान् होके परमेश्वरके प्रति कहतेभये ॥ हे पितः यह मनुष्य शरीर आपनेही साक्षात् रचा है ॥ किसी द्वारा नहीं रचा है ॥ यातैं हर्षकाकरणेहाराहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे बुद्धिमान् तक्षादिक जो आपणेहस्तसेंवस्तुरचैं हैं ॥ सोरमणीकहोवै हैं ॥ औरजोआपणेभृत्योंसेंवस्तुकरावैं सो रमणीकनहींहोवै है ॥ यह लोकविषे प्रसिद्धहै ॥ और यामनुष्यशरीरविषे साक्षात् ईश्वरकाकार्यपणा युक्तहै ॥ काहेतैं यह मनुष्य वस्तुकूं जाणिकरिके कथन करैं है ॥ तात्पर्य यह ॥ ज्ञानइंद्रिय और कर्मइंद्रिय करिके युक्तहै ॥ यद्यपि वानरादिकशरीरोंविषेभी चक्षुआदिकइंद्रियोंसैंज्ञानहोवेहै ॥ यातैं मनु ष्यशरीरविषेतिनोंत विशेषता बनै नहीं ॥ तथापिमनुष्यसेभिन्न वानरादिकोंकेइंद्रियोंका वस्तुकेसाथसंबंधहुएभी सर्वप्रकार अज्ञानकी निवृत्ति होवे नहीं ॥ और घटादिकअर्थके साथ इंद्रियोंकेसंबंध हुए बहुतस्थानमें मनुष्य अज्ञानतैंरहित होवैहै ॥ यातैं वानरादिकोंतैंमनुष्य श्रेष्ठहैं ॥ और कैसा यह मनुष्य शरीरहै ॥ इस लोकके जे सुख और सुखकेसाधनतिनोंकूंजाणताहै ॥ और स्वर्गादिकलोकोंकेजेसुख और

तिनें केसाधन जेयज्ञादिककर्म तिनोंकूंभी शास्त्रसेजाणेहै ॥ और अतीतकालविषेजोहुआकार्य औरआगेहोणेवालाजोकार्य है ताकूं जाणेहै ॥ और सुखकी प्राप्तिके और दुःखकीनिवृत्तिके जे साधन हैं ॥ तिनोंकेजाननेवासतैं साधनोंकेजाननेहारेजेमहात्माहैं तिनोंके समागमकाप्रकार भी यह मनुष्य जाणे है ॥ और महात्माओंके समागमहुए यह मेरेकूंकरणेयोग्य है यहनहींकरणे योग्य यहसंपूर्ण प्रमाणसैंजानताहै ॥ और या मनुष्यशरीरविषेहीं वेदवाक्योंतैं आत्माकासाक्षत्कार होवे है ॥ ऐसेमनुष्यशरीरविषेही संपूर्णदेवता संतोषकूं मानतेभये ॥ इस प्रकार हर्षकरिकेयुक्तहुएपुत्रोंकूं पिता आज्ञाकरताभया ॥ हे देवतावो याव्यष्टिशरीरविषे आपणेआपणेगोलकरूपस्थानविषे तुम प्रवेश करो ॥ ॥ शंका ॥ हे भगवन् इंद्रियोंकेरहणेयोग्ययास्थानविषे ॥ हमारा प्रवेश बनैं नहीं ॥ काहेतैं हम व्यापक हैं ॥ और यह अल्पस्थानहै॥किंवा इंद्रियोंकरिकेही अर्थकीसिद्धि होवैगी ॥ हमारे प्रवेशका कछू प्रयोजनभी नहीं ॥ समाधान ॥ हे देवतावो तुम्हारेसंबंधीजेइंद्रियहैं ॥ तिनों विषे भेदभावकूं छोडिकरिकै एकताअभिमानकरिकैप्रवेशकरो ॥ दृष्टांत॥जैसे सांचेमेंढालेहुएताम्रादिकधातूवां एकभावकूं प्राप्तहोवैं हैं॥यहाँ यह अभिप्राय है ॥ एक दूसरेकीअपेक्षाकूं न करिकै जेआपणेआपणेकार्यकूंकरै ॥ तिनोंका एक अधिकरणमेंरहणाहोवैनहीं ॥ इंद्रियऔरदेवतावोंकूं परस्पर अपेक्षा है ॥ काहेतैं चक्षुतैं विना प्रकाश रूप सूर्य सिद्ध होवे नहीं और सूर्यतैंविनाचक्षु इंद्रियसिद्ध होवै नहीं ॥ काहेतैं सूर्यतौंविना चक्षुइंद्रिय रूपादिकवस्तुवोंकेज्ञानकूं उत्पन्नकरे नहीं ॥ या कारणतैंहीं अंधकारमें रूपका चक्षुजन्यज्ञानहोवेनहीं ॥ औररूपादिकवस्तुके ज्ञानरूपकार्यतैंही चक्षुइंद्रियका अनुमितिज्ञानहोवेहै ॥ काहेतैं इंद्रियोंका इंद्रियोंकरिकेप्रत्यक्ष होवे नहीं ॥ यातैं यह सिद्धभया॥ सूर्यहोवै तभीरूपादिकोंका प्रत्यक्ष ज्ञान होवै ॥ ताज्ञानरूपकार्यत करणरूपचक्षुका अनुमिति रूप ज्ञान होवै ॥ इस प्रकार परंपराकरिके सूर्य चक्षुइंद्रियका साधक है ॥ इस प्रकार संपूर्ण इंद्रिय और तिनोंकेदेवता परस्पर अपेक्षा करैं हैं ॥ यातैं इंद्रियोंसैंमिलि करिकै देवतावोंका व्याष्टिशरीराविषेप्रवेश बनेहै ॥ इस प्रकार परमेश्वरकरिकेकहेहुए संपूर्णदेवता तैसेही करतेभये ॥ तिनोंविषे अग्निदेवता पूर्वउत्पन्न भया जो वाकूइंद्रिय तासैं एकताकूं प्राप्त होकरिके मुखरूप गोलकविषे स्थितिकूं प्राप्त होता भया ॥ और जलोंका पति जो वरुण है ॥ सो रसनइं

द्रियके साथ एकताअभिमानकरिके जिह्वाकेअग्रभागरूपगोलकविषे स्थितहोताभया ॥ और गंधविशिष्टवायुदेवता घ्राणइंद्रियकेसाथ एकताअभिमानकरिके नासिकाछिद्ररूपगोलकविषे प्रवेशकरताभया औरसूर्यदेवता चक्षुइंद्रियाविषे एकताअभिमानकरिके अक्षिरूपगोलकविषे प्रवेशकरताभया ॥ और दिग्देवता श्रोत्रइंद्रियकेसाथ एकताअभिमानकरिके करणछिद्ररूपगोलकविषे प्रवेशकरताभया ॥ और स्थावररूपउपाधिवालाजोवायुदेवताहै ॥ सो लोमसहितस्पर्शनइंद्रियविषे एकताअभिमानकरिके त्वचारूपगोलकविषे स्थितहोताभया ॥ और चंद्रमादेवता मनकेसाथ एकताअभिमानकरिके हृदयरूपगोलकविषे प्रवेश करता भया और मृत्युदेवता पायुइंद्रियकेसाथ एकता अभिमानकरिके गुदाछिद्ररूपगोलकविषे स्थितहोताभया ॥ और प्रजापतिदेवता उपस्थइंद्रियकेसाथ एकता अभिमानकरिके शिश्नछिद्रविषे प्रवेशकरताभया ॥ इतनेदेवताओंकाप्रवेशश्रुतिविषेकह्याहै ॥ इसरीतिसे दूसरेभीदेवता अध्यात्मइंद्रियोंविषे और अधिदैवोंविषे वर्तमानजोभेद तासेरहितहुए और इंद्रियोंकेसाथएकताअभिमानकूंप्राप्तहुए आपणे आपणे स्थानविषे प्रवेशकरतेभये ॥ या प्रकार व्याष्टिशरीरविषे प्रवेशकरिके अधिदैव अध्यात्म अधिभूत यह त्रिपुटि सिद्धहोवैहै ॥ तहाँ सूर्यादिक अधिदैवहैं ॥ और चक्षुइंद्रियादिक अध्यात्महैं ॥ और रूपादिकविषय अधिभूतहैं ॥ यहरीतिसर्वइंद्रियोंविषे जानणी ॥ इसप्रकार परमेश्वररूपपिताने सर्वदेवतावोंकूं यथायोग्यस्थान दिये ॥ तिसतैंअनंतर अशना और पिपासादेवता आपणे सैवृद्धसर्वदेवतावोंकूं स्थानकीप्राप्तिदेखिकरिके परमेश्वरतैं स्थानकूंयाचतेभये ॥ ताअशनापिपासादेवतावोंका पूर्वपूर्वदेवतावोंकेस्थान सेभिन्नस्थानकूं नदेखिकरिके परमेश्वर अध्यात्मआधिदैवरूपदेवतावोंकेविषेही तिनोंकूं स्थानदेताभया और परमेश्वर कहताभया ॥ हेअशनापिपासा ॥ इनोंदेवतावोंकीतृप्तिकरिकेही तुम्हारीतृप्तिहोवेगी ॥ इसप्रकार परमेश्वरने तिनोंकास्थानकऱ्या ॥ सोअबीभी ऐसा दीखताहै ॥ सूर्यादिकदेवतावोंकेताईं घृतादिरूपहविषदियेहुए तिनदेवतावोंके अशनापिपासाकी शांतिहोवै है ॥ और अध्यात्मइंद्रियोंकेप्रति रूपादिकविषयरूपहविषदियेहुए किंचित्काल तिनोंकेअशनापिपासाकीशांतिहोवै है ॥ यहही तिनोंकीतृप्ति है ॥ इसप्रकार तिनदेवतावोंकूं

स्थानदेकरिके अन्नप्राप्तिकीइच्छावान्जो देवता हैं तिनोंके उपकारवासतै तिनदेवतावोंकरिकेनहींकह्याहुआभी पिताजोपरमेश्वर है सो ऐसाविचारकरताभया ॥ दृष्टांत ॥ जैसे लोकविषे पिता पुत्रोंकरिकेनहींकह्या हुआभी तिनोंका अन्नऔरवस्त्रादिकोंसे पालनकरै है ॥ यहजे इंद्रियऔरदेवतारूपहमारेपुत्र हैं ॥ ते क्षुधाकरिकेयुक्त हैं ॥ यातैं इनोंके वासते मैं अन्नकूंरचों ॥ ऐसाविचारकरिके परमात्मा नानाप्रकारकेउपायोंकरिके पंचभूतोंतैं बहुतप्रकारकाअन्न रचताभया ॥ काहे तैं एकप्रकारकेअन्नतैं सर्वप्राणियोंकीतृप्तिहोवैनहीं ॥ जैसे मनुष्यादिकोंका व्रीही और तृणादिक स्थावररूपअन्न हैं ॥ और सिंहादिकोंका मृगादिरूप जंगम अन्न है और सर्पादिकोंका वायु और मूषकादिक अन्न हैं ॥ इसप्रकार अन्नोंकेउत्पन्नहुए याअन्नकूंतुमग्रहणकरो ऐसेपरमेश्वरकरिकेकहेहुएभी संपूर्ण देवता अपानवायुसे विना ताअन्नग्रहणेमें नसमर्थहोतेभये ॥ याकारणतैंही श्रुतिविषे सर्वदेवतावोंका ईश्वर और अन्नाद अपानवायु कह्या है ॥ अन्नकूंजोदेवे सोअन्नादकहियेहै ॥ यद्यपि यह अपानवायु हमारेतांई अन्नकेदेणेहारा है ऐसामानिकरिके सर्वदेवतावोंनैं ताअपानवायुका आश्रयणकिया ॥ तथापि सोअपानवायु सर्वव्यवहारकेसाधकअंतर्यामीआत्मातैंविना अन्नग्रहणकरणेकूं नसमर्थहोताभया ॥ दृष्टांत ॥ जैसे चेतनपुरुषतैंविना कुठार छेदनरूपकार्यकरणेमैं समर्थनहींहोवै है ॥ ऐसादेखिकरिके परमेश्वर तिनदेवतावोंकरिकेनहींकह्याहुआभी विचारकरताभया ॥ यह अधिदैवादिरूपजगत् प्राणवायुकरिकेयुक्तप्रगटभयाभी ॥ तौभी प्रकाशरूपमैंपरमात्मातैंविना यहजडजगत् किसीप्रकारभी सिद्धहोवैनहीं ॥ याकहणेतैंयहासिद्धभया ॥ जोजो जडवस्तुहैं॥सोसोप्रकाशकीअपेक्षाकरै हैं ॥दृष्टांत॥जैसे यहअन्न भोजनकरणेयोग्यहै॥ और यहशब्द कहणे योग्यहै ॥ और यहरूपादिक देखणेयोग्यहै ॥ याप्रकारकेज्ञान भोक्ता वक्ता द्रष्टा रूपप्रकाशकआत्मातैंविना सिद्धहोवैनहीं ॥ तहाँएकही आत्मा प्राणविशिष्टहुआ भोक्ताकहियेहै ॥ और वाक्इंद्रियविशिष्टहुआ वक्ताकहियेहै ॥ और चक्षुविशिष्टहुआ द्रष्टाकहिये है ॥ यारीतिसे श्रोतादिकभीजानणे ॥ यहशास्त्ररीतिसेदृष्टांतकह्या॥अब लोकप्रसिद्धदृष्टांत कहैं हैं ॥ जैसेप्रकाशविना अंधकारविषे रूपवान्घटादिपदार्थोंकूं यह लोक नहीं जाणै है॥शंका॥हेभगवन् पूर्व आपने यह नियमकह्या॥जो जो जडवस्तु है॥सो सो आपणीसिद्धिमें प्रकाशकीअपेक्षाकरै है॥

सोनियम यद्यपि घटादिकोंमेंतो बने है ॥ तथापि अंधकारविषे तानियमकाव्यभिचार है ॥ काहेतैं अंधकार जडतो है परंतु आपणीसिद्धिमें प्रकाशकीअपेक्षाकरैनहीं ॥ उल्टा प्रकाशतैंनिवृत्तहोवै है ॥ समाधान ॥ अंधकार यद्यपि सूर्यादिकप्रकाशकीअपेक्षानहींकरै है ॥ तथापि चक्षुरूपप्रकाशकीअपेक्षाकरै है ॥ याकारणतैंही चक्षुसैरहितपुरुष अंधकारकूंनहीं देखै है ॥ अंधकारकूंप्रकाशकीअपेक्षा है याअर्थ कूंअब अनुमानप्रमाणतैंसिद्धकरैं हैं ॥ जैसे घटादिकपदार्थोंकेज्ञानविषे घटादिकोंतैंभिन्नसूर्यादिकप्रकाश कारण है तैसे अंधकारतैंभिन्न चक्षुकाप्रकाश ता अंधकारकेज्ञानमें कारणहै ॥ अनुमानकाप्रकारयह है॥ अंधकार जोहै सो प्रकाशकीअपेक्षाकरै है ॥ काहेतैं जडहोणेतैं जैसे अंधकारजड़ है ॥ यातैं चक्षुकेप्रकाशकीअपेक्षाकरै है ॥ तैसे चक्षुआदिकभीजड़ हैं ॥ यातैं तिनोंकाभी दूसरेप्रकाशनैंप्रकाशकरीता है सो चक्षुआदिकोंकेप्रकाशकरणेहारा आत्मा है ॥ शंका ॥ चक्षुकाप्रकाशक आत्मा आपनेकह्या ॥ सोबनैंनहीं ॥ काहेतैं सूर्यकरिकैही चक्षुकाप्रकाशबने है ॥ समाधन ॥ जैसे विषयरूपघटनें सूर्यकाप्रकाश नहींकरीता ॥ तैसे विषयरूपसूर्यमेंभी चक्षुकाप्रकाश नहींकरीता ॥ याकहणेतैं यहअनुमानसिद्धभया ॥ चक्षुआदिकजेप्रकाश हैं ॥ ते आपणीसिद्धिमेंदूसरेप्रकाशकी अपेक्षाकरैं हैं ॥ काहेतैं जडहोणेतैं ॥ जो आपणीसिद्धिमें दूसरेप्रकाशकीअपेक्षानहींकरैं है ॥ सो जडभीनहींहोवै है ॥ जैसे स्वयंप्रकाशआत्मा किसीप्रकाशकीअपेक्षाकरैनहीं ॥ यातैं जडभीनहीं है ॥ किंतु चेतन है ॥ शंका ॥ हेभगवन् पूर्व आपनें यहकह्या ॥ जो चक्षुआदिकप्रकाश जड हैं ॥ यातैं दूसरेप्रकाशकीअपेक्षाकरैं हैं ॥ सोबनैंनहीं ॥ काहेतैं चक्षुआदिकप्रकाशजो हैं ॥ सो आपणीसिद्धिमें दूसरेप्रकाशकीअपेक्षाकरैनहीं ॥ काहेतैं प्रकाशरूपहोणेतैं ॥ दीपककीन्यांई ॥ याअनुमानकाविरोधहोवै है ॥ समाधान ॥ जैसे दीपक सजातीयदूसरेप्रकाशकीअपेक्षानहींकरै है॥तैसे सर्वप्रकाश सजातीयदूसरेप्रकाशकीअपेक्षानहींकरैं हैं यह नियमनहीं ॥ काहेतैं मणिआदिकप्रकाशोंविषे प्रकाशरूपतातो है ॥ परंतु सजातीयदूसरे प्रकाशकीअपेक्षाका अभाव नहीं है ॥ किंतु अपेक्षाही है ॥ यहसर्ववादियोंकूंसंमत है ॥ शंका॥ हेभगवन् प्रकाशपणा मणिऔरचक्षु आदि कसंपूर्णोंमें समान है ॥ परंतु कोईकप्रकाश दूसरेप्रकाशकीअपेक्षाकरै है ॥ और कोईप्रकाश दूसरेप्रकाशकीअपेक्षानहींकरै है ॥ यामें क्या

कारण है ॥ समाधान ॥ हेशिष्य प्रकाश्यपणा औरप्रकाशकपणाविषे परिच्छिन्नपणा औरव्यापकपणाकारणहै॥जोजो प्रकाशकपरिच्छिन्नहै ॥ सोसो प्रकाश्य है जैसे दीपककीअपेक्षाकरिके मणिआदिक परिच्छिन्न हैं ॥ यातैंप्रकाश्य है ॥ और जोजो व्यापकप्रकाश है॥सोसो प्रकाश कहे ॥ जैसे मणिआदिकोंकीअपेक्षाकरिके दीपादिकप्रकाश व्यापक हैं ॥ यातैं मणिआदिकोंके प्रकाशक हैं ॥ याकहणेतैंयहसिद्धभया ॥ जो व्यापकहोवै और प्रकाशस्वरूपहोवे ॥ सोईही दूसरेपरिच्छिन्नप्रकाशकूं प्रकाशै है ॥ सोप्रकाशपणा औरव्यापकपणा मैंकूटस्थविषेहै ॥ यातैं मैंहीं सर्वप्रकाशोंकाप्रकाशकहूं ॥ याकहणेतैंयहअनुमानसिद्धभया ॥ आपणेतैंभिन्नसर्वका प्रकाशकरणेहारी ॥ जोबुद्धिहै॥सो मुझकूट स्थकरिकैप्रकाश्य है ॥ काहेतैं परिच्छिन्नहोणेत॥ दृष्टांत॥जैसे व्यापकऔरप्रकाशस्वरूपबुद्धिकरिके सूर्यऔरघटादिरूपजगत् प्रकाश्यहै ॥ जाकाप्रकाशकरिये सोप्रकाश्यहोवेहै॥पंचभूतोंकेसत्त्वगुणकाकार्यहै॥ यातैं बुद्धिप्रकाशरूपहै॥ और हिरण्यगर्भकाउपाधिहै यातैं व्यापकहै॥ इसप्रकार श्रुतिने कथनकरीजोआत्माकीव्यापकता॥सोव्यापकता असंभावनाआदिकदोषोंतैं बुद्धिविषे आरूढहोवैनहीं ॥ यातैं तिनदोषों कीनिवृत्तिवासतैं तीनपरिच्छेदोंकाअभाव आत्माविषेदिखावैहै॥जैसे गोव्यक्तिरूपएकदेशविषे गोत्वजातिरहैहै ॥ अश्वादिकोंविषेरहैनहीं॥तैसे मैंपरमात्मा किसीएकदेशविषेस्थितनहींहूं॥काहेतैं जोमैं किसीदेशविषेनहींहोवों॥तौ तिसदेशकेपदार्थोंकी सत्ताऔरप्रकाश नहींहोवेगा ॥या तैंम सर्वत्रव्यापकहूं याकहणेतैं देशपरिच्छेदकाअभाव आत्माविषे दिखाया ॥ और जैसे भूत भविष्यत् वर्तमान पदार्थ किसीकाल विषेहैं और किसीकालविषेनहीं हैं ॥ यातैं कालपरिच्छेदवाले हैं ॥ तैसे मैंपरमात्मा किसीएककालविषेनहींहूं ॥ किंतु तीनोंकालोंविषेहूं ॥ याकहणेतैंकालपरिच्छेद काअभाव आत्माविषे दिखाया ॥ और जैसे अस्तियाशब्द औरज्ञानका विषयभूमि घटतैंभिन्न प्रतीतहोवैहै॥और नास्ति याशब्द और ज्ञानका विषयवंध्यापुत्र घटतैंभिन्न प्रतीतहोवैहै ॥ यातैं घटादिक वस्तुपरिच्छेदवालेहैं॥ तैसे मैंपरमात्मातैंभिन्नअस्ति नास्तियाशब्द और ज्ञानका विषय कोई है नहीं ॥ काहेतैं मैंहीं सर्वका आत्माहूं॥ याकहणेतैं वस्तुपरिच्छेदकाअभावआत्माविषे दिखाया॥ तीनोंपरिच्छेदोंकेलक्षण पूर्वनिरूपणकरिआयेहे हैं ॥ यातैंयहांनहींकहे हैं ॥ अब अद्वितीय आत्माकीसिद्धिवासतैं प्रपंचकूं मिथ्यारूपकरिके

निरूपणकरैं हैं ॥ मुझपरमात्माविषे यह संपूर्णजगत् कल्पित है ॥ कैसाजगत् है ॥ देश और कालादिक हैं स्वरूपजाका ॥ और नाम रूपक्रियाकरिकेयुक्त है ॥ दृष्टांत ॥ जैसे रज्जुविषेसर्प कल्पितहोवै है ॥ तातैं मैंपरमात्माही सर्वत्रव्यापकहूं ॥ मेरेसेभिन्न कोई वस्तु नहीं है ॥ शंका ॥ हे भगवन् ! जगत्काभद आत्माविषेमतहोवै ॥ परंतु जैसे घटविषे रहेजे रूपादिगुण ॥ तिनोंतैं घट भिन्नहो वै है ॥ तैसे सत्चित् आनंदधर्मोंतैं आत्मा विषे मत होवै ॥ यातैं वस्तुपरिच्छेद आत्माविषे है ॥ समाधान ॥ सत् चित् आनंद यह जे धर्म हैं ॥ ते मैं अंतर्यामी परमात्मात जो भिन्न होवैं ॥ तो आपणे सत्चित् आनंद स्वरूप तैंही रहित होवैंगे ॥ काहेतैं व्यापकमेरेतैं जो आनंद भिन्न होवै ॥ तौ वस्तु परिच्छेद वाला होवैगा ॥ जो परिच्छिन्न है ॥ सो आनंद रूप नहीं होवै है ॥ श्रुतिने व्यापककूंही सुखरूपकह्या है इसप्रकार सत् जोमैं प्रकाशस्वरूपआत्मातैं भिन्नहोवै ॥ तौ असत् होवेगा ॥ और चित् जोमुझसत्स्वरूप आत्मात भिन्न होवे ॥ तोअसत्होवैगा ॥ काहेतैं मेरेतैं भिन्न इनोंकी कोईसिद्धिकरणेहारा है नहीं ॥ यातैं सत् चित् आनंद आत्मास्वरूपहै आत्मातैंभिन्ननहींहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् सत्चित्आनंदधर्म जोआत्मातैंअभिन्नमानोगे ॥ तौ आत्माधर्मी है और सत्चित् आनंद धर्म हैं॥ यह धर्मधर्मीव्यवहार नहींहोवैगा ॥ काहेतैं भिन्नोंकाही धर्मधर्मीभाव लोकविषेदेखाहै ॥ समाधान ॥ हे शिष्य अत्यंतभिन्नोंका और अत्यं तअभिन्नोंका धर्मधर्मीभाव होवैनहीं ॥ काहेतैं अत्यंत भिन्नोंका जोधर्मधर्मीभावहोवै ॥ तौ गौतैं अश्व अत्यंत भिन्न है ॥ यातैं अश्व गौकाधर्म होणाचाहिये ॥ और होवै नहीं तैसे अत्यंतअभिन्नोंका जोधर्मधर्मीभावहोवै तौ घटऔरकलशका अत्यंतअभेद हैं ॥ यातैं कलश घटकाधर्म होणाचाहिये और होवै नहीं ॥ यातैं परस्परभिन्नऔरअभिन्नस्थलविषेही धर्मधर्मीव्यवहार होवै है ॥ शंका ॥ हे भगवन् एक अधिकरणविषे एकवस्तुकाभेद और अभेद विरुद्ध है ॥ समाधान ॥ एकसत्तावाले भेद और अभेदका परस्परविरोध होवै है ॥ भिन्नसत्तावाले भेदऔरअभेदका परस्परविरोधहोवैनहीं ॥ तस यहाँ सत्चित्आनंदधर्मोंका आत्मातैंअभेदतौ पारमार्थिकसत्तावाला है औरभेद कल्पितसत्तावाला ह यातैं तिनोंका परस्परविरोधनहीं ताकाल्पितभेदकूंअंगीकारकरिकेही धर्मधर्मीभावव्यवहार सिद्धहोवै है ॥

दृष्टांत ॥ जैसे किसीराजाने दूसरे राजाकूं बंदीखानेमेंराखिके पश्चात्छोडदिया ॥ और एकग्रामदिया ताग्रामकूंपाईके सोराजा संतोषकूं प्राप्तहोवे है ॥ तैसे कल्पितभेदकूंहीअंगीकारकरिके धर्मधर्मीभावव्यवहार सिद्धहोवे है ॥ सत्यभेदकीअपेक्षाकरेनहीं ॥ औरकल्पितभेदकरिके द्वैतभीहोवैनहीं ॥ यातैं मुझपरमात्मासेकल्पितभेदवाले ॥ जेसत्चित्आनंदधर्म ॥ ते रज्जुसर्पकीन्यांई भेदकूंउत्पन्नकरेनहीं ॥ और परमार्थतैं तो सत्चित्आनंद मेरास्वरूप है ॥ बातैं व्यापक औरप्रकाशस्वरूप मैंपरमात्माकेही सूर्यादिकऔरघटादिकसर्वजडप्रपंचका प्रकाश युक्त है ॥ और सर्वकेप्रकाशक मैंपरमात्माका दूसरेवस्तुकरिकेप्रकाश युक्तनहीं है ॥ दृष्टांत ॥ जैसे घटकरिके सूर्यप्रकाश होवैनहीं ॥ और संपूर्णयाजडसंघातकी मेरेअधीनसिद्धि है ॥ इसीकारणतैं असत्जडदुःखरूपयादेहादिकोंकूं आपणेतादात्म्यअध्यासतैं सत्चित्आनंदरूप करणेवासतैं याकलेवरविषे मैंहींपरमात्मा प्रवेशकरोंगा तासंघातविषे जोपरमेश्वरकाप्रवेश है ताके दोप्रयोजनहैं ॥ एकतो भोगकीसिद्धि है ॥ और दूसरा आपणेस्वरूपकाज्ञान है ॥ तहाँ प्रथमप्रयोजनकाविचार पूर्वकह्या ॥ अब दूसरेप्रयोजनकाविचार निरूपणकरैं हैं ॥ इसप्रकार चिंतनकरिके पुनःयाप्रकार परमेश्वर चिंतन करता ॥ यासंघातविषे ज्ञानशक्तिरूपबुद्धिवालेमैंपरमात्माके प्रवेशका कौणद्वारहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् जिसीकिसभिमार्गकरके प्रवेशकरो ॥ यामैं विचारकाक्याप्रयोजन है ॥ समाधान ॥ यासंघातविषे पादकाजोनखहै ताकेअग्रभागरूपमार्गकरिके पूर्व प्राण प्रवेशकरताभया है काहेतैं प्राण क्रियाशक्तिवाला है औरज्ञानशक्तितैंरहित है ॥ यातैं यासर्वतैंनीचेमार्गकरिके प्राणका प्रवेश युक्त है और मैंज्ञानशक्तिपरमात्मा सर्वतैंउत्कृष्टहूं ॥ यातैं प्राणइंद्रियादिकभृत्योंकेप्रवेशकाजोमार्ग है ॥ तामार्गकरिके हमाराप्रवेश बनैनहीं ॥ और मैंचैतनतैंविना ॥ यासर्वजडोंकी चेष्टाहोवैनहीं ॥ यातैं मैंइनोंतैंश्रेष्ठहूं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे चेतनतैंविना रथविषे चेष्टाहोवैनहीं ॥ इसप्रकार प्रवेशकेमार्गकाविचारकरिके ॥ पुनःपरमेश्वर दूसराविचार करताभया ॥ जातैं मैंज्ञानशक्तिवालाहूं ॥ तातैं आपणेईश्वरस्वरूपकूं नविचारकै कैसेप्रवेशकरोंगा ॥ किंतु आपणेस्वरूपकाभीविचारकरिकैही हमाराप्रवेश युक्त है ॥ तहाँ आपणेस्वरूपके बोधनकीइच्छाकरिके परमात्मा ऐसाविचारकरताभया ॥ शंका ॥ हेभगवन् अनात्मरूपकरिके देह प्रसिद्ध है ॥ यातैं विचारकाकछुप्रयोजननहीं ॥ काहेतैं

अप्रसिद्ध वस्तुकाहीविचारहोवे है ॥ समाधान ॥ यद्यपि शास्त्रके तात्पर्यजाननेहारेजेविद्वान् हैं ॥ तिनोंकीदृष्टिविषे देह अनात्माप्रसिद्ध है ॥ तथापि मंदबुद्धिपुरुषोंके उपकारवासतैं देहकीअनात्मता दृश्यत्वादिकहेतुवोंकरिकै आत्मज्ञानी पुरुषोंनैं जनावणेकूं योग्य है ॥ यातैं विचार सफलहै ॥ याकहणेतैंयहअनुमानसिद्धभया ॥ यहदेहजो है सो अनात्मा है ॥ काहेतैं दृश्यहोणेतैं ॥ और परिच्छिन्नहोणेतैं ॥ और जडहोणेतैं ॥ जो अनात्मा नहीं है ॥ सो दृश्यपरिच्छिन्न जडभी नहीं है ॥ जैसे आत्माहै ॥ और देह अनिर्वचनीयहै ॥ यातैंभीअनात्माहै ॥ अबयाअर्थकूं विस्तारतैं निरूपणकरैं हैं ॥ अनुभवकाविषयजेवस्तुहैं ॥ तिनोंविषे कौणदेहहै ॥ शंका ॥ हे भगवन् संघातकानामदेह है ॥ यहलोकोंकूं प्रसिद्धहै ॥ समाधान ॥ हे शिष्य केवललोकप्रसिद्धितैं अर्थकीसिद्धि होवे नहीं ॥ जो केवललोक प्रसिद्धितैं अर्थकीसिद्धिहोतीहोवै ॥ तो देहभी आत्माहोणा चाहिये काहेतैं विचारहीनबहुतपुरुष देहकूंही आत्मा मानैं हैं ॥ यातैं प्रमाण औरयुक्तितैंअविरुद्ध लोकप्रसिद्धितैंही अर्थकीसिद्धिहोवैहै ॥ और विचारकरिकेसंघातकूं देखिये ॥ तो देहकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ काहेत समानधर्मवाल्योंका जो परस्परसंबंध है ताकानाम संघात है ॥ तेसंघात बहुतहैं ॥ तिनोंविषे किस संघातका नाम देह है ॥ तहाँ श्रोत्र त्वक् चक्षु घ्राण रसन यह पंचज्ञानइंद्रियोंकासंघातहै ॥ १ ॥ और वाक् पाणि पाद पायु उपस्थ यह पंचकर्म इंद्रियोंकासंघातहै ॥ २ ॥ और प्राण अपान व्यान उदान समान यह पंचप्राणोंकासंघात है ॥ ३ ॥ और त्वचा रुधिर मांस मेद अस्थि मज्जा रेत यह सप्तधातुवोंकासंघात है ॥ ४ ॥ और कफ वात पित्त यह तीनदोषोंकासंघात है ॥ ५ ॥ और विष्ठा मूत्र यह दोनोंकासंघात है ॥ ६ ॥ और कदाचित् उत्पत्तिवाले स्वेद पूय यह दोनोंकासंघातहै ॥ ७ ॥ और केशलोमादिकोंका असंख्यात संघात है ॥ ८ ॥ यह जो भिन्नभिन्न अष्टसंघातोंकासमुदाय ॥ तिनोंविषे किससंघातकानामदेहहै और संघातकूंजोदेहमानैहै वादी ॥ तासैं यहपूछाचाहिये ॥ पूर्वकहेजेअष्टसंघात ॥ तिन संपूर्णोंकाजोसंघात ॥ ताकानाम देहहै अथवा एकएक संघातका नामदेहहै ॥ यहदोनोंपक्ष बनैनहीं ॥ काहेतैं जिससमुदायकूं तुम देहमानोंहो ॥ सोसमुदायही निर्वचनकरणेयोग्यनहीं तहाँ पूर्वकहेजेअष्टसंघात तिनोंका जो समुदाय सो महासमुदाय काहिये है ॥ और पंचज्ञानइंद्रियआदिकोंका भिन्नभिन्न जो समुदाय सो अवांतरसमुदाय काहिये है ॥ यह दोनोंप्रकारकेसमुदायका निर्वचन

होवैनहीं ॥ काहेतैं सोदोप्रकारकासमुदाय समुदायियोंतैंभिन्नहै ॥ अथवा तिनोंतैंअभिन्नहै ॥ तिनोंविषे प्रथमभिन्नपक्षतो बनैनहीं ॥ काहेतैं समुदायियोंतैंभिन्न समुदायका स्वरूप युक्ति करिकैसिद्धहोवै नहीं ॥ और दूसराजो अभिन्नपक्ष है सोभी बनैं नहीं ॥ काहेतैं महासमुदायका नामदेहहै या पक्षमें महासमुदायके समुदायी जे अष्टअवांतर समुदाय ॥ तिनोंसे जभी महासमुदाय अभिन्नभया ॥ तभी एकएक अवांतर समुदायविषेभी महासमुदाय व्यवहार तथा देह व्यवहार होणाचाहिये ॥ और होवै नहीं ॥ किंवा अवांतरजेअष्टसमुदायहैं ॥ तिनोंविषे एक एकसमुदायका नांम देहहै ॥ या पक्षमें अवांतरसमुदायीजे एकएकइंद्रियआदिक तिनोंसे जभी अवांतरसमुदाय अभिन्नभया ॥ तभी एक एकइंद्रियआदिकोंविषे समुदायव्यवहार तथादेहव्यवहार होणाचाहिये ॥ औरहोवैनहीं ॥ यातैं अभिन्नपक्षभी बनैं नहीं ॥ यहाँ समुदायके घटकानाम समुदायी है ॥ महासमुदायके घटक अवांतरसमुदाय हैं ॥ यातैं ताक समुदायी हैं ॥ तैसे अवांतरसमुदायके घटक एक एक इंद्रियआदिक हैं ॥ यातैं ताके समुदायी हैं ॥ शंका ॥ हे भगवन् पूर्वआपने समुदाय समुदायियोंसाभिन्नह और अभिन्नहैं यादोनोंपक्षोंविषे दोषकहे॥यातैं दोनोंपक्षोंकूं हम अंगीकारकरैंनहीं ॥ किंतु पूर्वकहेजेइंद्रियआदिक ॥ ते संपूर्ण मिलेहुए समुदायहोव हैं ॥ यातैं यापक्षविषे दूषणनहींहै॥समाधान ॥ हे शिष्य यापक्षविषेभी पुनरुक्तिदोष होवैहै ॥ काहेतैं सबसमुदायियोंका एक बुद्धिकरिकैविषयकरणारूपजोमेलन सो समुदाय है यह सर्वशास्त्रकासिद्धांतहै ॥ संपूर्णमिलेहुए समुदायहोवैहैं याकइणतेयहअर्थसिद्धभया॥मेलनरूपसमुदायकरिकेविशिष्टजो है सो समुदायहै ॥ जैसे देवदत्त धनी उत्पन्नभया है ॥ यास्थानविषे विशेष्यजोदेवदत्त ताके विषे उत्पत्तिकाअन्वयहोवैनहीं ॥ किंतु विशेषण जोधनहै ताकेविषे उत्पत्तिकाअन्वहोवैहै ॥ तैसे मेलनरूप समुदायाविशिष्ट जो है सो समुदाय है या स्थानाविषेभी मेलनरूप जो समुदाय सो विशेषण है ॥ ताकेविषे जो समुदायका अन्वयकरिये ॥ तौ समुदाय समुदायहै यहप्रतीतहोवैहै ॥ जस घट घट ह यहाँ पुनरुक्तिहोवैहै॥ तैसे समुदाय समुदायहै यहाँभी पुनरुक्ति स्पष्ट है ॥ यहाँ अन्वयनाम संबंधकाहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् मेलन विशिष्टोंकानाम समुदाय है यापक्षविषे आपने दोष कह्या ॥ यातैं यहपक्ष अंगीकारकरणेयोग्यनहीं ॥ किंतु इंद्रियादिकोंकाजोपरस्परमेलन ता मेलनकाही नाम समु

दाय है ॥ समाधान ॥ हे शिष्य मेलननाम संबंधका है ॥ सो तादात्म्य संबंध है ॥ अथवा संयोग है ॥ अथवा समवाय है ॥ तिनोंविषे प्रथम तादात्म्य पक्षतौ बनै नहीं ॥ काहेतैं भेदकूं संहारणे हारा जो अभेद सो तादात्म्य संबंध काहिये है ॥ तहाँ निरपेक्ष जो अभेद है सो तो वास्तव है ॥ और धर्मीप्रतियोगीकी अपेक्षाकरणे हारा जोभेद है सो कल्पित है यह सिद्धांत है॥ यातैं वास्तवतैंअभिन्नवस्तुवोंकामेलन कहणा ॥ मेरेमुखविषे जिह्वानहीं है या वाक्यके समान है ॥ इस रीतिसे प्रथमतादात्म्यपक्ष बनैनहीं ॥ और संयोग संबंधकानाम मेलन है यह दूसरा पक्षभीबनैनहीं ॥ काहेतैं दोद्रव्योंकासंयोग संबंधहोवै है॥ सो संयुक्तदोद्रव्योंतैंभिन्न प्रतीतहोवैनहीं ॥याकारणतैंही ॥ प्रभाकरोंनेसं योगकूं विकल्पमात्र कह्या है ॥ और समवाय संबंधका नाममेलन है यहतीसरापक्षभी बनैं नहीं ॥ काहेतैं गुणगुणीआदिकोंका ॥ नैयायिक समवायसंबंधमानै हैं सो समवाय आपणेसंबंधी जेद्रव्यगुणादिक तिनोंविषे संयोगसंबंधकरिकै रहै है ॥ अथवा समवायकरिकै समवाय रहै है ॥ तहाँआद्यपक्षतोबनैनहीं ॥ काहेत दोद्रव्योंका संयोगहोवै है समवाय द्रव्य है नहीं ॥यातैं ताका संयोगबनैनहीं॥ और समवायसंबंधक रिकै आपणेसंबंधियोंविषे समवाय रहै है यह दूसरापक्षभीबनै नहीं ॥ काहेतैं जासमवायसंबंधकरिके समवायरहै है ॥ सोसमवाय प्रथमसम वायतैं अभिन्न है अथवा भिन्न है तहाँप्रथम अभिन्नपक्षतो बनैनहीं ॥ काहेत आपणीस्थितिविषे आपणीअपेक्षारूप आत्माश्रयदोष प्राप्तहो वैहै॥औरभिन्न है यहदूसरापक्षभी बनैनहीं॥काहेतैं सोदूसरासमवाय आपणे संबंधियोंविषेकिससमवायकरिकेरहैहै ॥जोतो प्रथमसमवायकरिके दूसरासमवाय आपणेसंबंधियोंविषेरहै ॥ तो अन्योन्याआश्रयदोषप्राप्तहोवैगा ॥ काहेतैं प्रथमसमाय दूसरेसमवायकरिके आपणेसंबंधियोंविषे रह्या ॥ और दूसरासवाय प्रथमसमवायकरिकेआपणेसंबंधियोंविषे रह्या ॥ या दोषकीनिवृत्तिवासते दूसरा समवाय तीसरेसमवाय करिके आपणेसंबंधियोंविषे रहै है यह अंगीकारकरोगे तो सोतीसरासमवाय किस समवायकरिके आपणेसंबंधियोंविषे रहैहै ॥ जोतौ प्रथमसमवाय करिके संबंधियोंविषेरहै ॥ तोचक्रका दोष प्राप्तहोवैगा॥ काहेतैं प्रथमसमवाय दूसरेकरिकेरह्या ॥ और दूसरा तीसरेकरिकेरह्या॥और तीसरा पुनः प्रथमकरिकेरह्या ॥ यह चक्रकीन्यांईभ्रमणहोवै है ॥ जो तीसरेसमवायकेस्थितिवासतै चतुर्थसमवाय औरचतुर्थवासतैपंचम याप्रकार

समवायोंकीधारामानोगें ॥ तो अनवस्थादोष प्राप्तहोवेगा॥यातें समवायसंबंधरूपमेलनकानाम समुदायनहीं॥किंवा॥जो संयोगऔरसमवाय संबंधरूपमेलनकानाम समुदायहोवै॥तो वृक्षोंकाजोसमुदाय सो वन कहिये है॥यास्थानाविषे वृक्षोंका परस्परसंयोग औरसमवायसंबंधहैनहीं॥ यातें समुदायव्यवहार नहोणाचाहिये और समुदायव्यवहार होवै है ॥ यातेंभी संयोगसमवायसंबंधरूपमेलनकानाम समुदायनहीं॥किंवा ॥ संबंधकूं जोवादी समुदायमानै है ॥ तासैं यहपूछाचाहिये ॥ संबंध यहाँ दोपद है एकतो सं यहपद है ॥ और दूसरा बंध यहपदहै॥तहाँसंप दका क्या अर्थहै ॥ और बंधपदका क्या अर्थ है ॥ यहवादीनें कह्याचाहिये॥ शंका ॥ हेभगवन् सं याशब्दका सम्यक्पणाअर्थहै ॥और बं ध याशब्दका बंधनअर्थ है ॥ समाधान॥हेशिष्य यहअर्थ तेरेवचनतैंविना किसीभी संसारसंबंधीवस्तुविषे हम देखतेनहीं ॥ किंतु तेरेवचन विषेही है ॥ अब याअर्थकूं स्पष्टकरिकेनिरूपणकरैं हैं ॥ जोवस्तु तीनकालविषे नपरिणामकूं प्राप्तहोवै ॥ सो सम्यक्कहिये है॥और यहसं पूर्णजगत् जड है यात रज्जुसर्पकीन्यांई परिणामकूं प्राप्तहोवै है॥और श्रुतिविषेभी आत्मातैंभिन्न सर्वजगत्कूं मिथ्याकह्याहै ॥ यातें आत्मा तैंभिन्न किसीवस्तुविषेभीसम्यक्पणा बनैनहीं ॥ तैसे बंध यापदकाअर्थजोबंधन सोभीबनैनहीं ॥ काहेतें लोकविषे बंधायमानजेवस्तुहै ॥ति नातें बंधनभिन्नदेख्या है ॥ जैसे बंधायमान जेदोगौहैं ॥ तिनोंतैंरज्जुरूपबंधन भिन्न है॥किंवा ॥मूर्त्तवस्तुही लोकविषे बंधन देखाहै॥ और अमूर्त्तवस्तु बंधनहोवैनहीं ॥ याकारणतैंही अमूर्त्तआकाशनैं घटपटादिकपदार्थ नहीं बंधीते ॥ तैसे यादेहविषे इंद्रियआ दिकोंके परस्परबंधनकरणे हारा और इंद्रिय आदिक सर्वसंघाततैंभिन्न रज्जुआदिकोंकी न्यांई कोई मूर्त्त पदार्थ नहीं देखीता ॥ यातें संबंधपदकाअर्थ कोईप्रसिद्धहैनहीं ॥ इसप्रकार संघात देहहैयापक्षकाखंडनकऱ्या ॥ अब संघातकेघटकजेइंद्रियआदिकहैं तिनोंके अनात्म ताकूंनिरूपणकरैं हैं ॥ मुमुक्षुकेआत्मबोधवासतैं एकएकइंद्रियआदिकोंकेअनात्मताकाभी विचारकरणेयोग्यहै॥और विद्वान्पुरुषोंने इंद्रिय आदिकोंकीआत्मता कहींभी नहींअनुभवकरी॥काहेतें सर्वतैंजोअंतरहोवै सो आत्माकाहियेहै॥और इंद्रिय बाह्यहै ॥यातें घटादिकोंकीन्यांई अनात्माहै॥इसप्रकार विद्वान्केअनुभवप्रमाणकरिकै इंद्रियोंकीअनात्मताकही॥अब अनुमानप्रमाणतैंभी इंद्रियोंकीअनात्मता सिद्धकरैं हैं॥

वाकादिकंइंद्रियांजेहैं.ते अनात्माहोणेकूंयोग्य हैं ॥ काहेतें दृश्यहोणेतैंऔर परिच्छिन्नहोणतैं॥जोजोवस्तु दृश्य औरपरिच्छिन्नहोवैं हैं॥ सोवस्तु अनात्माहीहोवैं हैं॥जैसे देहहै॥शंका॥हेभगवन् कर्ताकानाम आत्मा है॥यहशास्त्रविषेकह्या है ॥ और स्वतंत्रकानाम कर्त्ताहै ॥ सोस्वतंत्रपणा आपणेआपणे व्यापारोंविषे इंद्रियोंकूंभी है ॥ यातें इंद्रियही आत्मा हैं ॥ समाधान ॥ जोजोस्वतंत्रहोवै है ॥ सोचेतनहोवै है ॥ चेतनतातौंवि ना स्वतंत्रपणारहैनहीं ॥ जैसे अग्नितैंविना धूम रहै नहीं॥यातें मुझपरमात्माचेतनतैं विना संपूर्णइंद्रियोंविषे चेतनकाअभाव है ॥ याकारणतैं अचेतनइंद्रियोंकी किसीआपणेव्यापारविषे स्वतंत्रतानहीं है ॥दृष्टांत॥ जैसेअचेतनरथादिक चेतनअश्वआदिकोंतौंविना स्वतंत्रगमनकरैंनहीं ॥ और ज्ञानइंद्रियऔरअंतःकरणके जेज्ञानरूपव्यापार हैं ॥ और कर्मइंद्रियऔरप्राणोंके जेक्रियारूपव्यापार हैं ॥ तेसंपूर्णव्यापार मुझपरमात्मा केसमीपताकरिकेंही सिद्धहोवै हैं ॥ यातें स्वतंत्रपणा चेतनआत्माविषेही है ॥ जडइंद्रियोंविषे स्वतंत्रताहै नहीं ॥ अथवा ॥ वाकादिकइंद्रि योंकी शब्दका उच्चारणादिक जे आपणे आपणेव्यापार हैं तिनोंविषे स्वतंत्रताहैभी ॥ तथापि अन्यव्यापारोंविषे इंद्रियआदिक समर्थ हैं नहीं ॥ यातें तिनोंविषे आत्मता बनै नहीं ॥ अबयाअर्थकूं स्पष्टकरिकैनिरूपणकरैं हैं ॥ शब्दकाउच्चारण वाकइंद्रियकाव्यापार है ॥ और ग्रहण हस्त इंद्रियकाव्यापार है ॥ और गमन पादइंद्रियकाव्यापार है ॥ और मलकापरित्याग पायु इंद्रियका व्यापार है ॥ और आनंद उपस्थ इंद्रियका व्यापार है ॥ जैसे राजा आपणे आपणेकार्योंविषे भृत्योंकूं जोडता है ॥ तैसे मुझपरमात्माने आपणे आपणे व्यापारों विषे इंद्रियादिक स्थापन करैं हैं ॥ तात्पर्य यह ॥ जड इंद्रियोंके व्यापारकाजो नियम है ॥ सो मुझअंतर्यामी आत्माकूंबोधनकरैं हैं ॥ काहेतें चेतनतैं विना जडोंकी नियम करिकेप्रवृत्तिहोवै नहीं ॥ किंतु वायुकरिकैचलायेहुये सूके पत्रकी न्यांई नियम तैं रहित प्रवृत्ति होवै है ॥ यहरीति ज्ञान इंद्रिय प्राणादिकों विषेभी जाननी ॥ और रूपादिकोंका ज्ञान शब्दज्ञान गंधज्ञान रसज्ञान स्पर्शादिकोंका ज्ञान यह क्रमतैं चक्षुः श्रोत्र घ्राण रसन त्वक् या पंचज्ञानइंद्रियोंके नियम करिकै व्यापार हैं ॥ पूर्वंकही रीतिसैं इनव्यापारोंका नियमभी सर्वांतर्यामी आत्माकूं बोधन करै है ॥ और प्राणोंकाभी इंद्रियोंकी न्यांई नियम करिके व्यापार है ॥ काहेतें अन्न और जलकूं सूक्ष्मनाडीछिद्रोंविषे

स्थापन प्राण करे है ॥ यातैं प्राणोंका एकतो यह आश्चर्यरूप क्रिया है ॥ और दूसरा वागादिक इंद्रियोंके स्थितिकीकारणतारूपजीवनभी प्राणोंका कार्य है॥इन दोव्यापारोतैं विना अन्यकिसी व्यापारका प्राण कारण है नहीं॥और संकल्प निश्चय अभिमान स्मरण यहचारों क्रम तैं मन बुद्धि अहंकार चित्तके नियम करिके व्यापारहैं ॥ अब पंचभूतोंके और विषयोंके व्यापारोंका निरूपणकरैं हैं॥जैसे पात्र घृतको धा रण करै है ॥ तैसे जगत्का धारण करणा पृथिवीकाव्यापारहै ॥ और क्लेदन जलकाव्यापार है ॥ और तंडुलादिकोंकूंपकावणा तेजका व्यापार है ॥ और संकोच विकासरूप क्रिया वायुकाव्यापार है और स्थितिमैं चलनेमैं अनुकूल जो आवकाशता सो आकाशकाव्यापार है ॥ या व्यापारोंतैं भिन्न पृथिवी आदिकोंका कोई व्यापारहै नहीं ॥ और श्रोत्रादिकइंद्रियोंका जीवके बंधनकरणेका जोस्वभाव है ॥ ता स्वभावका प्रगट करना यहही शब्द स्पर्श रूप रस गंध विषयोंकाव्यापार है ॥ काहेतैं विषयसंबंधतैं विना केवलइंद्रियोंविषे बंधन की कारणताहै नहीं ॥ या कारणतैंही श्रुतिविषे विषयोंकूं अतिग्रहकह्या है ॥ शंका ॥ हेभगवन् इंद्रियादिकोंविषे स्वतंत्रका अभाव है ॥ यातैं आत्मा नहीं है ॥ तौभी ज्ञानशक्ति होणेतैं सर्वज्ञपरमात्माकाउपाधिजोबुद्धि सो स्वतंत्र है ॥ यातैं बुद्धि आत्माकाहेतैंनहोवै ॥ समाधा न॥ बुद्धिविषे सर्वज्ञपरमेश्वरकाउपाधिपणा यद्यपि प्रसिद्धहै ॥ तथापि सोबुद्धि आत्मानहीं ॥ काहेतैं बुद्धिविषे जो सर्ववस्तुकेविषय करण कासामर्थ्य है ॥ सो मुझपरमात्माकी समीपताके अधीन है ॥ स्वतंत्र बुद्धिविषे नहीं ॥ ईहाँ यह अभीप्राय है ॥ सर्वजागतेप्रकाश करणे द्वारा एकचेतनज्ञानशब्दकामुख्य अर्थ है ॥और जैसे जलआपणेसंबंधकरिके अस्वच्छघटादिकपदार्थोंविषेसूर्यादिकोंकेप्रतिबिंबग्रहणकरणेकी योग्यता प्रगटकरे है ॥ तैसेबुद्धिभी आपणेसंबंधकरिकेघटादिपदार्थोंविषे चेतनकेप्रतिबिंबग्रहणकरणेकीयोग्यताकूंप्रगटकरै है ॥ और आवर्ण कीनिवृत्तिकरै है और आपभी बुद्धि चेतनकेप्रतिबिंबकूं ग्रहण करै है॥यातैं बुद्धि ज्ञानशब्दकागौणअर्थ है॥ याकहणेतैं यहसिद्धभया ॥ जैसे सूर्यके प्रतिबिंबकरिकेयुक्तहुआ दर्पण भित्तिआदिकपदार्थोंकूंप्रकाशे है ॥ तौभी दर्पण आपप्रकाशरूपनहीं ॥ तैसे चेतनकेप्रतिबिंबकूंग्रह णकरिकेबुद्धि सर्वअर्थोंकूंप्रकाशे है ॥ तथापि बुद्धि आपप्रकाशरूपनहीं ॥ यातैं मुझपरमात्माकीसमीपताकरिकेही बुद्धिविषे सामर्थ्य है ॥

और मुझमात्मातैं विना बुद्धिविषे सामर्थ्यहै नहीं ॥ जैसे श्रीकृष्णभगवान्केसमीपतातैंही अर्जुनविषे सामर्थ्य है श्रीकृष्णतैंविना अर्जुन विषे सामर्थ्यहैनहीं ॥ यातैं बुद्धिआत्मानहीं ॥ और मुझव्यापकपरमात्मानैं तोबुद्धिकीजडताभी निश्चयकरीहै ॥ काहेतैं बुद्धि विषयाकारपरि णामकूंप्राप्तहोवै है ॥ जो परिणामकूंप्राप्तहोवे है ॥ सो जडहोवै है जैसे मृत्तिकादिकहै और चेतनपरिणामकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैंभी बुद्धि आत्मानहीं ॥ अब पूर्वकहीजोप्राणोंकीअनात्मता ताकूं श्रुतिप्रमाणतैंसिद्धकरैहै ॥ यद्यपिप्राण जीवनकाहेतुहै ॥ और इंद्रियोंकीअपेक्षाक रिकेअंतरहै ॥ तथापि मुझपरमात्माकी सामर्थ्यतैंही जीवनविषे प्राणहेतुहै ॥ और श्रुतिनेभी कह्याहै ॥ प्राणकरिके और अपानकरिके कोई प्राणीनहींजीवै है ॥ किंतु प्राणऔरअपानकाआधिष्ठान जो आत्मा ॥ ताकरिके प्राणीजीवते हैं यातैं प्राण आत्मानहीं है ॥ याकहणेतैंयह सिद्धभया ॥ पूर्वकहेजेवाकूइंद्रियसेआदिलेकै ॥ तिनोंकूं कितीप्रकारकीभी एकएककूं आत्मतानहींहै ॥ काहेतैं जो संपूर्णवाकादिकोंकाप्र योजकहोवै ॥ सो आत्माकहियेहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जो आपणीसमीपताकरिके वाकादिकोंकूं आपणेआपणेव्यापारविषे प्रवर्त्त करावै ॥ और जिसकेवासतैं यहवाकादिक प्रवर्त्तहोवैं ॥ सो आत्माकहियेहै यह आत्माकालक्षण वाकूइंद्रियआदिकोंविषे है नहीं ॥ काहेतैं वाका दिक सर्वअर्थकेसाधकहैंनहीं ॥ किंतु आपणेआपणेव्यापारकीसिद्धिकरैहैं ॥ यातैं आत्मानहीं ॥ और वाकादिकसंपूर्ण मिलिकरिकेसंघात रूपहैं ॥ यातैंमैंपरमात्माकेअर्थ हैं जैसे गृहादिकपदार्थ मृत्तिकाकाष्ठादिकपदार्थोंकासमुदायरूप हैं ॥ यातैं गृहीपुरुषकेअर्थहैं ॥ और जोजोपदा र्थ परकेवासतैंहोवै है ॥ सोसो अनात्माहोवैहै ॥ जैसे गृहादिक अनात्माहै यातैं मेरेसुखकेसाधन जेवाकादिक ॥ तिनोंविषे मैं परमात्माकी आत्मता कैसेहोवै ॥ तात्पर्ययह ॥ तेवकादिक आत्मारूपनहीं है॥औरयहवाकादिकसंपूर्ण मिलिकरिके आपणेवासतैंनहींहैं ॥ और एकएकभी आपणेवासतेनहींहै ॥ किंतु मैं परमात्माकेवासतैंहैं ॥ यातैं यह संपूर्णवाकादिक मेरास्वरूपनहीं ॥ जभी संपूर्णवाकादिक मिलिकरिके मेरा स्वरूपनहीं भये ॥ तभीएकएकवाकादिक मेरास्वरूप कैसेहोवैंगे॥ किंतु नहींहोवैंगे ॥शंका॥ हे भगवन् यह संपूर्णवाकादिक आपईश्वरकेभृत्य हैं॥यातैं आपकीप्रेरणातैंविनाहीं तुमारीभयकरिकेशब्दकेउच्चारणादिक जेआपणेआपणेव्यापारहैं तिनोंकूं करैंगे ॥ दृष्टांत ॥ जैसे राजाके भय

करिके भृत्य आपणेआपणेकार्यकूंकरै हैं ॥ यातैं संघातविषे तुम्हारे प्रवेशका कोईप्रयोजननहीं हैं ॥ समाधान ॥ यद्यपि यहवाकादिक मेरे भय करिके आपणेआपणेव्यापारकूं करैंगे ॥ तथापि मुझपरमात्माकूं त्वंपदका अर्थरूपकरिके यहवाकादिक नहींजाणते ॥ और सर्वजगत्काकारण जो मैं तत्पदका अर्थ ॥ ताकूंभी यहवाकादिक नहींजाणते ॥ जभी त्वंपदार्थकूं औरतत्पदार्थकूं यहवाकादिक नहींजाणते ॥ तभी तिनोंकेएकताकूं केसेजाणैंगे ॥ किंतु नहींजाणैंगे ॥ यातैं मैंपरमात्माही यासंघातमेंप्रवेशकारिके मैं कौनहूं ऐसाविचारकरों ॥ यहाँ वाकादिकइंद्रियोंकेसाथ तादात्म्यअध्यासकरिके मैं शब्दउच्चारणकरूंहूं औरमैंदेखूंहूं याप्रकारकाआभिमानही परमेश्वरकाप्रवेश है ॥ याही कूं प्रतिबिंबवाद औरअवच्छेदवादकरिके शास्त्रविषेकह्याहैं ॥ शंका ॥ हे भगवन् जिसआपणेस्वरूपकाविचार आपणेकरणाहै ॥ सोविचार याशरीरकेप्रवेशतैंविनाहींकरो ॥ किसवासतैं यादुःखरूपशरीरविषे प्रवेशकरतेहो ॥ समाधान ॥ जैसामेरास्वरूपहै तैसाहोवो ॥ इसकाल विषे आपणेस्वरूपकीचिंताकरिकै कछुप्रयोजन सिद्धहोवैनहीं यातैंसंघातविषेप्रवेशकरिके इनवाकादिकोंकूं सुखकीप्राप्तिकरिके आपणे स्वरूपकानिर्णयकरोंगा ॥ यहांवाकादिकोंकूं सुखकीप्राप्ति और आपणेस्वरूपकानिर्णय यहदोप्रयोजन प्रवेशकेहैं ॥ इसप्रकार परमात्मा चिंतनकरिके आपणेस्वरूपकेचिंतनकूंपरित्यागकरिकेशरीरविषेप्रवेशवासतैं द्वारकूंविचारताभया ॥ सो सर्व देवतावोंका पितापरमेश्वर आपणे भृत्योंकेप्रवेशके जे मुखादिकद्वार हैं ॥ तिनोविषे आपणीयोग्यताकूंनदेखिकरिके आपणीसमीपताकरिके मूर्धसीमाकूंभेदनकरिके या शरीरविषे प्रवेशकरताभया ॥ तहाँ शिरविषे जे वाम दक्षिणमध्य यहतीनकपालहैं ॥ तिनोंकेमध्यभागकानाम मूर्धसीमाहै ॥ सो केशोंतैंरहितकूंशपुरुषके मस्तकाविषे देखैहैं ॥ अथवा स्त्रियोंकेकेशविभागकीजोरेखा सो जहाँसमाप्तहोवै तास्थानकानाम मूर्धसीमाहै ॥ यह सर्व पुरुषोंकूंप्रसिद्धहै ॥ औरजैसे प्रसिद्धद्वारकापुरीविषे प्रवर्षणनामापर्वततैंकूदिकरिके आकाशरूपउपऊर्धमार्गतैं श्रीकृष्ण प्रथम प्रवेशकरताभया ॥ तैंसे यामनुष्यशरीररूपपुरीविषे कृष्णस्वरूपपरमात्मा ऊर्धमार्गतैं प्रवेशकरताभया ५ यातैं सर्वमनुष्योंकाशरीर द्वारकापुरीहै ॥ यहाँ मनुष्यशरीरविषेही आत्मसाक्षात्कारकीयोग्यताहै ॥ यातैं मनुष्यशरीरविषे प्रवेशकह्या ॥ तामनुष्यशरीरकरिके सर्वशरीरोंका ग्रहणकरणा ॥ शंका ॥

हे भगवन् श्रुतिऔर स्मृतिविषे नवद्वार प्रसिद्ध हैं ॥ यह मूर्धद्वार प्रसिद्धहैनहीं ॥ यातैं याद्वारकरिके शरीरकूं द्वारावतीपुरी केसाकह्या ॥ समाधान ॥ जिस कारणतैं परमेश्वर मस्तककूं भेदन करिके याशरीररूपपुरीविषे प्रवेशकरताभया ॥ यातैं मस्तककेऊर्ध्वभागविषेजोद्वारहै सोद्वार उपासकपुरुषोंने विद्वाति यानामकरिकेकथनकरीताहै ॥ और लोकविषेभी मस्तकाविषे कटुतैलकेधारणतैं कटुताका बुद्धिमानपुरुषोंनैं अनुभवकरीता है ॥ और मूढपुरुषोंकरिके श्रीकृष्ण और ताकाद्वार दोनों जाणनेकूं अशक्य हैं ॥ यातैं परमेश्वरकेप्रवेशकाद्वार अप्रसिद्ध नहीं है और वाकादिकभृत्योंकेप्रवेशकेजेनवद्वार ॥ तिनोंकेसमान यह परमेश्वरकेप्रवेशकाद्वारहै नहीं ॥ यातैं तिन नवद्वारोंकेसाथ॥याद्वारकी श्रुतिस्मृतिविषे गणतीनहींकरी॥और जाकारणतैं योगीपुरुष॥याऊर्धद्वारतैंनिकसिकरिके ब्रह्मलोककी प्राप्ति द्वारा मुक्तिकाकारण जोदेवयामामार्गहै ताकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ ताकारणतैं यह ऊर्ध्वद्वार नंदनहै॥ जिसकरिके आनंदकीप्राप्तिहोवै सो नंदनकहियेहै यद्यपि इंद्रकेवनकानामनंदनहैतथापि नीचेपतनकीभीतिजन्यदुःखकरिके इंद्रकावनयुक्तहै॥यातैं तादिषे सुखकीकारणताका॥संशयहै ॥ अब याऊर्ध्वद्वारकीनंदनवनकेसमानताकूं कहैहैं ॥ जैसे स्वर्गविषेप्राप्तभये जेकर्मीपुरुष तिनोंके सुखकाकारण नंदनवन है तैसे यहऊर्ध्वद्वारभी ब्रह्मलोकद्वारामुक्तिरूपसुताकाकारणहै॥इसप्रकार जीवरूपकरिकै परमात्माकाप्रवेशकह्या॥अब उपाधिकेअभिमानकरिके तापरमात्माकूं संसारकी प्राप्तिका निरूपणकरैहैं ॥ प्रसिद्धजेनवद्वार और नाभि और ऊर्द्धद्वार यह एकादशद्वारहैंजाविषे ऐसे शरीररूपपुरीकूंप्राप्तहोके अग्निआदिकदेवतावोंकाप्रभुजोपरमात्माइंद्र सो आपणेनिवासवासते तीनग्रहोंकूं करताभया चक्षुइंद्रियकेरहणेकाजोगोलक तागोलकविषे प्रथमनिवास ॥ और चित्तकाजोस्थान हृदयकमलकेदलहैं तिनदलोंविषे दूसरानिवास ॥ और हृदयकमलकेअंतरआकाशविषे तीसरानिवास ॥या तीनग्रहोंविषे अहंकाररूपसिंहजाऊपरि चैतन्यपरमात्माकेप्रतिबिंबरूपगर्भकूंधारणेहारी जोज्ञानशक्तिरूपस्त्री ताकेसाथशयनकूंप्राप्त होके इंद्ररूपआत्मा जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति रूपतीनस्वप्नोंकूं देखताहै ॥ शंका ॥ हे भगवन् स्वप्नतो यद्यपि स्वप्नरूपहै ॥ तथापि जाग्रत्औरसुषुप्तिकूं स्वप्नरूपताकहनी बनैनहीं ॥ समाधान॥यहइंद्रियरूपजीवात्मा आपणेस्वरूपज्ञानतैंरहितहै॥यातैं जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति यहतीनों याकूं

स्वप्नस्वरूपहैं ॥ काहेतैं जो जैसावस्तुकास्वरूपहोवै तैसाहीहै ताकूंदेखे याकानाम जाग्रतहै ॥ और यहजीवात्मा अद्वितीयआनंदरूपआपणे स्वरूपकूंभुलायके दुःखी कर्त्ता भोक्ता आपकूंमानेहै यातैं अज्ञानरूपनिद्राकरिकै जोजोवस्तुदेखताहैसोसर्व स्वप्नहै ॥ तहाँ प्रथम जाग्रत्‌रूपस्वप्नकूं निरूपणकरैं हैं ॥ वास्तवतैंशुद्धपरमात्मा शब्दस्पर्शादिकबाह्यस्थूलभोगोंकीप्राप्तिवासतै अनादिअज्ञानकरिके भोगकाकारणधर्म अधर्मकूं जिसकालविषे अंगीकारकरैहै ताकानाम जाग्रतहै ॥ तिस जाग्रत्‌कालविषे वामदक्षिणदोनोंनेत्रोंविषे भगवान् स्त्री पुरुष यादोनों रूपकरिके प्रगटहोवैं हैं ॥ तहाँ दक्षिणनेत्रविषेरह्याजोरूप सो आधकप्रकाशरूपबलवालाहै ॥ यातैं भोक्तापुरुषरूपहै ॥ और वामनेत्रविषे रह्याजोरूप सो अधिकप्रकाशरूपबलवालानहीं है ॥ यातैं भोग्यस्त्रीरूपहै ॥ यारीतिसैं भोक्ता और भोग्यरूपतैं परमेश्वरकीउपासनाश्रुतिविषेकह्याहै ॥ इसप्रकार व्यष्टिशरीरकेअभिमानकरिके आपणेकूंपरिच्छिन्नमानताहुआ भगवान् वाकादिकसर्वइंद्रियोंकूं अंगीकारकरिके कर्मकेफलकास्वीकाररूपभोगकूं प्राप्तहोताभया ॥ तहाँ बाह्यनानाप्रकारकेभोगोंकूं निरूपणकरैं हैं ॥ जिसतैं मैंउत्पन्नभयाहूं यह मेरापिता है ॥ और यह मेरीमाताहै ॥ और यह मेरेभ्रताहै और यहमेरीभगनियां हैं ॥ और यहमेरेबांधवहैं॥ और यह मेरे भृत्य हैं॥ और यह मेरी स्त्रियां हैं ॥ और यहमेरेपुत्र हैं ॥ और यहमेरीपुत्रियांहैं ॥ और यहमेरेमित्रहैं ॥ और यहमेरेशत्रु हैं ॥ और यहमेरेउदासीनहैं ॥ मित्रऔरशत्रुभावतैंरहितकानाम उदासीनहै और यह मेरेनियामककहैं ॥ धर्ममर्यादाविषेजोस्थापनकरैताकूं नियामककहैं हैं ॥ जैसे पिता गुरु राजादिक हैं ॥ और यहमेरेऋत्विक्‌हैं॥यज्ञकेकरावणेहारेब्राह्मणोंकूं ऋत्विक्‌कहैंहैं॥ और यहमेरेगुरु हैं॥ औरयहस्त्री है॥और यहपुरुष है॥और यहनपुंसकहै॥ इसप्रकार चेतनशरीरविषे भोगोंकूंकह्या॥अबजडोंविषेभोगोंकूंकहैं हैं॥यहग्रहमेरेहैं॥और यह भूमिमेरीहै ॥ औरयहअन्नमेरेहैं ॥ औरयहसुवर्णमेराहै और यहपशुमेरे हैं ॥ और यहवस्त्रमेरे हैं ॥ और यहभूषणमेरेहैं ॥ यहसिद्धजामेरीहै और यह सुंदरहै ॥ और यह असुंदर है ॥ यहे अधिक है ॥ यह थोडा है ॥ यह समीप है ॥ यह दूर है ॥ अब ज्ञानकर्म इंद्रियोंके विषयरूपभोगोंकूं निरूपणकरैहैं ॥ यह शब्द हैं ॥ और यह स्पर्श हैं ॥ और यह गंध हैं ॥ और यह रस हैं ॥ और यह रूप हैं और यह शब्द कहणे योग्य हैं और यह हस्तोंकरिकैग्रहणकरणेयोग्यहैं ॥ और यह पादोंकरिकेचलनेयोग्य है ॥ और यह आनंद है ॥ और यह मलादिकोंकेपरित्याग हैं ॥ अब जिसकरिकेविषय बंधनपुरुषकूंकरैहैं ताभोगकूं कहैं हैं ॥ यह हमारेसुखकेकारण हैं ॥ और यह हमारेदुःखकेकारण है ॥ अब विषयोंकेफलरूपभोगकूं कहैं हैं यह सुखहै ॥ और यह दुःख है ॥ अब कालभोगकूंकहैं हैं ॥ यह पूर्वहोताभया ॥ और यह वर्तमानहै ॥ और यहआगेहोवैगा ॥ इसप्रकार ॥ आपणेविषे स्वामीपणेकाअध्यासरूप जेबाह्यभोग हैं ॥ ताकूं कथनकऱ्या ॥ अब तादात्म्यअध्यासरूपशरीरकेभोगोंकूं कहैंहैं ॥ मैं पुरुषहूं ॥ और मैं स्त्रीहूं ॥ और मैं नपुंसकहूं ॥ और मैं मनुष्यहूं ॥ और मैं पशुहूं ॥ और मैं जरायुजहूं ॥ और मैं स्वेदजहूं ॥ और मैं उद्भिजहूं ॥ और मैं अंडजहूं ॥ इसप्रकार शरीरविषेस्थित जेअन्नकेपरिणामसंपूर्णविकार ॥ तिनविकारोंकूं अज्ञानरूपनिद्राकरिकैसोयाहुआआत्मामायाकरिके आपणास्वरूपमानेहै ॥ और वास्तवतैंतौ देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहितहै ॥ अब शरीरकेधर्माकाअध्यास निरूपणकरैहैं ॥ मैं बालकहूं और मैं जवानहूं ॥ और मैंवृद्धहूं ॥ और मैंरोगीहूं ॥ और मैंरोगरहितहूं ॥ और मैंरूपवान्‌हूं ॥ और मैंकुरूपहूं ॥ और मैं शास्त्रविहितआचरणवालाहूं ॥ और मैं शास्त्रनिषिद्धआचरणवालाहूं ॥ याप्रकार देहकेधर्मोंकूं आत्माविषे अज्ञानकरिकैमानैं हैं ॥ अब चारिवर्णोंका और चारिआश्रमोंका आत्मविषे अध्यास निरूपणकरैं हैं ॥ मैंब्राह्मणहूं ॥ और मैंक्षत्रियहूं ॥ आर मैं वैश्यहूं ॥ और मैं शूद्रहूं ॥ और मैं ब्रह्मचारीहूं ॥ और मैं गृहस्थहूं ॥ और मैंवानप्रस्थहूं ॥ और मैंसंन्यासीहूं ॥ याप्रकार वर्णआश्रमकेसाथ अध्यासहुये पश्चात् तिसातिसवर्णआश्रमके जेअवांतरजातियां और धर्म और तिसतिसदेशके आचार यहसंपूर्णदेहधर्मोंकूं अज्ञानकरिकै आपणेविषे मानता है ॥ जैसे ब्राह्मणत्वजाति दशप्रकारकेब्राह्मणोंविषेरहै है ॥ और एकएकब्राह्मणविषे रही हुईजेगौडत्वद्राविडत्वादिकजातियां ते अवांतरजातियां हैं ॥ और दक्षिण देशविषे मातुलीकन्याकेसाथविवाह ॥ औरगुजरदेशाविषे मरेसैंपीछे सर्वसंबंधियोंकामिलिकेभोजन ॥ और मारवाडमैं चर्मपात्रकेजलकाग्रहण ॥ यह देशोंकेआचारहैं ॥ अब इंद्रियोंकेधर्मोंका अध्यास आत्माविषे निरूपणकरैहैं ॥ मैंअधिकदृष्टिवालाहूं और मैंमंददृष्टिवालाहूं ॥ इत्यादिक इंद्रियोंकेधर्म आपणे

विषे मानताहै ॥ काहेतैं मैंअंधहूं मैंकाणाहूं मैंबधिरहूं इत्यादिकवचनोंकरिकै अंतरअध्यासकूं प्रकटकरै है ॥ इहां यहतात्पर्य है ॥ जिस वस्तुकूं मनकरिकेध्यानकरता है ॥ तिसवस्तुकूं वाक्इंद्रियकरिकैकथनकरै हैं ॥ यहनियम शास्त्रविषेकह्या है ॥ और यहपुरुष मैं अंधहूं मैंकाणाहूं ऐसाकथनकरै हैं ॥ सोकथन चक्षुइंद्रियादिकोंकेसाथि आत्माकेअध्यासतैंविना सिद्धहोवैनहीं यातैं मैंअंधहूं इत्यादिककथन पुरुषोंकेभीतरअध्यासका अनुमानकरावै है ॥ यहरीति सर्वअध्यासविषेजानणी ॥ और व्यापकआत्माकूं परिछिन्नमानणा यह देहादिकअध्यासतैंविना बनैनहीं ॥ काहेतैं यहपुरुष एकदेहकाअभिमानकरिकै दूसरेदेहकाअभिमान नहींकरता ॥ जैसे मैंब्राह्मणत्वजातिवाला ॥ और क्षत्रियत्वजातिवाला मैंनहींहुं और ॥ ब्राह्मणत्वजातिवाले जेदूसरेब्राह्मणहैं तेभीमैंनहींहूं ॥ किंतु मेरेसैंभिन्नहैं ॥ यहपरिच्छिन्नपणाभी देहादिकोंकेअध्यासकूं बोधनकरै हैं ॥ और अहं याशब्दकालक्ष्यार्थ शुद्ध आत्मा है ॥और अहं यावृत्तिज्ञानका विषयभी शुद्धआत्माहै ॥ सो आत्म अहं याशब्द और ज्ञानतैं वास्तवतैंभिन्न है ॥ काहेतैं शब्द और ज्ञानतैं अर्थ भिन्नहोवै है इस प्रकार आत्माके बोधकअहंशब्दका आत्मसाक्षात्कारतैंरहितपुरुष देहादिकअर्थ मानैहैं ॥ और आत्माविषयक अहं याज्ञानकाभी देहादिकविषयमानैहैं ॥ याकहणतैं यह अर्थसिद्धभया ॥ अन्यवस्तुकेवाचकशब्दका अन्यवस्तुविषे कथनकरणा यह अध्यासतैंविना होवैनहीं ॥ जैसे रजतरूप अर्थकेवाचक रजतशब्दका सन्मुखशुक्तिविषे यह रजतहै ऐसाकथन रजत अध्यासतैंविना होवैनहीं ॥ तैसे यहपुरुषभी आत्मकेवाचक अहं शब्दका देहादिकोंविषे अहंगौरः ऐसाकथनकरैहै ॥ यातैं शरीरादिकोंविषे अहं शब्दकाकथन मैं गौरहूं याप्रकारके ज्ञानोंकी भ्रमरूपता सिद्धकरै है ॥ इसप्रकार देहादिकोंकै साथि तादात्म्य अध्यासकरिकै आत्माविषे भेद ज्ञानका निरूपणकऱ्या ॥ अब ताअध्यासकरिकै बाहरिवस्तुवोंकूं विषयकरणेहारे भेदज्ञानकूं निरूपण करैं हैं ॥ यह पिता मेरा है और यह माता मेरी है ॥ इनतैं भिन्न कोई मेरा पिता और माता नहीं हैं ॥ और ये देवताओंके मंदिर और नदीतीरसैं आदिलेकैवस्तु सर्व लोकोंकेवासते हैं ॥ इसतैं आदिलेकै भेदोंकूं अज्ञानरूप निद्राकरिकै सोया हुआ आत्मा स्वप्नकी न्यांई देखता है ॥ और किसीस्थानाविषे

विनाहीं कारणतैं शोककूंप्राप्तहोवै है ॥ और किसीस्थानाविषे हर्षकूंप्राप्तहोवै है ॥ अब प्राणोंकेअध्यासकूंजनावणेहारा ॥ जो प्राणोंकेधर्मो काआत्माविषेअध्यास ताकूंनिरूपणकरैं हैं ॥ मैक्षुधावालाहूं और मैंतृषावालाहूं ॥ याप्रकार प्राणोंकेधर्मक्षुधापिपासाकूं आत्माविषेमानै है अब मनकेधर्मोंका आत्माविषे अध्यासदिखावैं हैं ॥ काम संकल्प संशय श्रद्धा अश्रद्धा धैर्य अधैर्य लज्जा वृत्तिज्ञान भय यह श्रुतिविषेकहेजेमनकेधर्म्मते आत्माविषेमानिकरिकै यहपुरुष तपायमानहोवै है ॥ और वास्तवतैं तो आत्मा असंगहै ॥ और निर्गुण है ॥ औरदेशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहित है ॥ और आनंदचेतनरूपहै ॥ सोयहीआत्मा आपणेस्वरूपकेअज्ञानकरिकै आकाशादिकपंचभूतोंविषे औरताकेकार्यप्रपंचविषे यहवस्तुसमीचीनहै ॥ औरयहवस्तुअसमीचिनहैइसरीतिसैं नानाप्रकारकी भेदबुद्धियोंकूंकरता हुआ नानाप्रकारकेसुखऔरदुःखोंकूं इसलोकाविषे प्राप्तहोवै है॥यह भेदज्ञानका अवांतरफल है और मुख्यफलतो श्रुतिविषेकह्याहुआ जन्ममरणकाप्रवाह है॥और पूर्वकहेजे ज्ञानइंद्रियऔरकर्मइंद्रियोंकेव्यापार ॥ और आकाशादिकपंचभूतोंकेव्यापार॥ और भूतोंकेकार्यप्रपंचके व्यापार ॥ तिनसर्वव्यापारोंकूंअज्ञानकरिकै आपणोविषे आत्मामानै है ॥ औरपूर्वकहेजितनेजाग्रत्अवस्थाके ज्ञान ॥ तेसंपूर्णअध्यासकरिकै व्याप्तहुये हैं ॥ यातैं सत्चित्आनंदअनंतरूपआत्माका जोयहजाग्रत् है॥ सोसंपूर्णस्वप्न है ॥ काहेतैं प्रबोधकाजहाँअभावहोवै ॥ और मिथ्यावस्तुकाजहाँदर्शन होवै ॥ ताकानामस्वप्न है॥ यह स्वप्न कालक्षण जाग्रतविषेभीघटै है॥ काहेतैं अज्ञानअवस्थाविषे आत्मज्ञानरूप प्रबोधकाअभावभी है और ॥ मैंब्राह्मणहूं मैंक्षत्रियहूं औरमैंअंधहूं याप्रकार अनात्मदेहादिकोंकेधर्मोंका आत्माविषेआरोपणरूपमिथ्यादर्शनभी है ॥ यातैं जाग्रत् स्वप्नरूप है ॥ अब याअर्थकूं लोकप्रसिद्धितैंभीस्पष्टकरैं हैं ॥ जोपुरुष चक्षुइंद्रियसैंआदिलेकैजितनीप्रत्यक्षज्ञानकी सामग्री है तिससामग्रीकरिकैयुक्तहोवै ॥ और सोपुरुष जभीघटादिकवस्तुवोंकूं घटादिरूपकरिकैनजाणै ॥ किंतु घटादिकोंकूं पटादिरूपकरिकैजाणै ॥ ताभ्रांतपुरुषकूं जाग्रत्अवस्थाविषेभी लोक सोयाहुआकहैं हैं ॥ यातैं यालोकव्यवहारतैंभी विपरीतदर्शनकानामस्वप्नप्रसिद्ध होवै है ॥ सोलक्षण जाग्रत्विषेभी पूर्वकहीरीतिसैंघटै है यापप्रकार यहआनंदरूपआत्माभी विपरीतदर्शनकरिकैविशिष्टहै यातैं ताका

॥ १८ ॥

जाग्रत्भी स्वप्नरूपहै यद्यपि स्वप्नविषे इंद्रियोंकाउपरामताहोवै है ॥ सोउपरामता जाग्रत्विषे है नहीं ॥ तथापि मिथ्यादर्शनरूपधर्म जाग्रत् स्वप्नविषेसमानहै ॥ यातैं जाग्रत्भी स्वप्नरूप है॥इसप्रकार मिथ्याजाग्रत्अवस्थाकानिरूपणाकिया॥अब स्वप्नअवस्थाकानिरूपणकरैं हैं ॥ याप्रकार जाग्रतअवस्थाविषे नानाप्रकारकेस्वप्नोंकूंदेखिकरिकै इंद्राणीसहितपरमात्मारूपइंद्र दूसरास्थानजोहृदयकमलकेदल हैं ॥ ताविषे प्रवेशकरताभया यहाँ आत्माविषेकर्ताभोक्तापणेकीउपाधिजोबुद्धि है ताकानाम इंद्राणी है ॥ तास्थानविषे इंद्रऔरइंद्राणीकेसमीप पूर्वपूर्वक र्मोंकेअनुसारकरिकै नटकीन्यांई अनतप्रकारकेआपणेरूपोंकूं मन दिखावै है ॥ तात्पर्ययह ॥ सो मन ज्ञानाकार औरविषयाकार परिणामकूं प्राप्तहोवै है ॥ और अनंतजन्मोंविषेउत्पन्नभये जेपदार्थोंके संस्कार ॥ तिनोंकरिकैमनयुक्त है ॥ याकारणतैं मनविषे ऐसा सामर्थ्य है ॥ प्रसिद्धजाग्रत् तैं स्वप्नविषे इंद्रियोंकाउपरामतारूपविलक्षणता दिखावैं हैं ॥ तिसस्वप्नअवस्थाविषे मनकरिकैउत्पन्नकिये जेनानाप्रकारके कार्यरूपस्वांगहैं ॥ तिनोंकूं परमात्मरूपइंद्र देखै है॥कैसापरमात्मा है॥ ज्ञानकर्मइंद्रियोंतैंरहित है॥और जाग्रतकेसंस्कारकरिकैविशिष्टहै ॥ और स्वप्नभोगकेदेणहारेकर्मोंकरिकैविशिष्ट है यास्थानविषे दोप्रक्रिया शास्त्रविषेकही है ॥ स्वप्नविषे मनहीं रथादिकविषयाकार और ज्ञानाकार परिणामकूंप्राप्तहोवै है ॥ ऐसा कोईकग्रंथकार मानै हैं ॥ औरकोईग्रंथकारतो ॥ मनविषेरहीजेवसाना ताकरिकैविशिष्टअज्ञानही स्वप्नविषे रथादिविषयाकार औरज्ञानाकार परिणामकूंप्राप्तहोवै है ऐसा मानैं हैं ॥ अब जाग्रततैं दूसरीभीविलक्षणता स्वप्नविषेदिखावैं हैं ॥ तास्वप्नअवस्थाविषे द्रष्टा आपणेस्वरूपविषे और दृश्यपदार्थोंविषे स्वरूपनियमदेशनियम कालनियम कारणनियम इनचारिप्रकारके नियमोंकेअभावकूं देखताहै ॥ अब दृश्यपदार्थोंविषे स्वरूपनियमके अभावकूं निरूपणकरैं हैं ॥ स्वप्नविषेप्रतीतभयाजोहस्ती ॥ सो क्षणपीछे वृक्षहोईकेप्रतीतहोवै है ॥ और सोवृक्ष क्षणपीछे पर्वतहुआप्रतीहोवै है और सोपर्वत क्षणपीछे तृणहुआप्रती तहोवै है ॥ इसप्रकार स्वप्नविषे दृश्यपदार्थोंकेस्वरूपका नियमहोवैनहीं ॥ अब द्रष्टाविषे स्वरूपनियमकेअभावकूं निरूपणकरैं हैं ॥ इसप्रकार स्वप्नविषे ब्राह्मणद्रष्टा क्षणसैंपीछे आपकूं शूद्रहुआदेखै है ॥ और क्षणसैंपीछे आपकूंपशुहुआदेखै है ॥ और कहीं क्षणसे पीछे

आपकूंदेवताहुआदेखै है ॥ और कहींक्षणसैंपीछेआपकूं महाराजाहुआदेखै है ॥ याप्रकारद्रष्टाकेस्वरूपविषेभी नियमका अभाव है ॥ अब स्वप्नविषे देशनियमकेअभावकूंदिखावैं हैं ॥ सूक्ष्मजेस्वप्नवहनामानाडियां हैं ॥ तिनोंविषेस्थितहुआद्रष्टा तासूक्ष्मस्थानविषे समुद्रकूं और सुमेरुपर्वतकूं और सप्तद्वीपोंकरिकैयुक्तपृथिवीकूं देखै है ॥ यातैं स्वप्नविषे देशनियमकाभीअभाव है ॥ अब कालनियमके अभावकूं दिखावैं हैं ॥ सिंहजांऊपरिस्थितहुआयहपुरुष रात्रिविषे सूर्यसहितदिनकूंदेखै है ॥ यातैं कालनियमकाभी स्वप्नविषे अभाव है ॥ अब कार णनियमके अभावकूं दिखावैं हैं ॥ याभारतखंडविषेस्थितहुआपुरुष यापुरुषशरीरकरिकैही सूर्यचंद्रमाकूं स्वप्नविषे भक्षणकरैहै॥औरभक्षण का कोई कारणहैनहीं॥काहेतैंवस्तुकेभक्षणमैं तीनकारणहोवैहैं।एकतो भक्षणकरणेयोग्यवस्तुकामुखकेसाथिसंबंध॥औरदूसरामुखकीअपेक्षा करिकैवस्तुविषेस्वल्पता॥औरतीसराभोक्तापुरुषकासामर्थ्य॥इनतीनोंकारणोंकाअभावहै ॥ तोभी स्वप्नविषेपुरुष सूर्यचंद्रमाकूंभक्षणकरै है और स्वप्नविषे रथकेकारण तक्षा काष्ठ वास्यादिकोंका अभावहै॥तोभी संकल्पमात्रतैं रथकूंउत्पन्नकरैहै॥यातैं कारणकाभी स्वप्नविषेनिय मनहीं ॥ इसीवासतैंमायातैंविना स्वप्नकाकोईकारणहैनहीं ॥किंतु मायाही ताकाकारण है॥यातैं श्रुतिकेतात्पर्यजानणहारे व्यासभगवान्आ दिकोंनैं स्वप्नकूं मायामात्रकह्याहै ॥ अब सुषुप्तिअवस्थारूपतीसरेस्वप्नकूंनिरूपणकरैहैं ॥ सोईंद्ररूपआत्मा स्वप्नकूंदेखिकरिकै अथवाजाग्र तूंकूंदेखिकरिकै इंद्राणीकरिकैसहित ॥ तीसराजोहृदयकमलकेअंतरआकाशरूपस्थानहै ताविषे प्रवेशकरताभया ॥ यहाँयहतात्पर्य है ॥ जाग्रत्तैं उत्तरकालमैं स्वप्नहोवैहै॥ और स्वप्नतैंउत्तर सुषुप्तिहोवैहै ॥ यहनियमनहींहै ॥ काहेतैं कभी तो जाग्रत्तैंउत्तरसुषुप्तिहोवैहै ॥ और सुषुप्तितैं उत्तरस्वप्नहोवैहै ॥ और कभी जाग्रत्तैंउत्तर स्वप्नहोवैहै॥और स्वप्नतैंउत्तर सुषुप्तिहोवैहै ॥ और तिसहृदयआकाशविषे भोग्यरूप इंद्राणीकूंआलिंगनकरिकै ताइंद्राणीकेसाथि अभेदकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तात्पर्य यह॥तहाँ भोक्ताभोग्यपणा भिन्नहोइकेप्रतीतहोवैनहीं ॥शंका॥हेभग वन् ! सुषुप्तिविषे यद्यपि अज्ञानकाकार्यरूपभोग्यनहींहैं॥तथापि अज्ञानरूपभोग्य तहांहै॥यातैं भोक्ताभोग्यकाअभेद बनैंनहीं ॥समाधान ॥ सुषुप्तिविषे आवरणरूपमायाकूं यह द्रष्टा देखताहुआभी नहींदेखै है ॥ यहाँयहतात्पर्य है जसे दीपकसैं अंधकारकाज्ञानहोवै नहीं ॥ तैसैं

किसीप्रमाणसैं अज्ञानकीसिद्धिहोवै नहीं ॥ किंतु साक्षीचेतनकरिकैही अज्ञानकीसिद्धिहोवै है॥ सो साक्षी सुषुप्तिअवस्थाविषेभी है ॥ यातैं द्रष्टाचेतन सुषुप्तिविषे अज्ञानकूंदेखै है ॥ और सुषुप्तितैंजाग्रत्हुआपुरुष मैं कछुनहींजाणताभया ऐसाअज्ञानकास्मरणकरै है और जोजो स्मृतिज्ञानहोवै है ॥ सोसो पूर्वअनुभवकरिकैजन्यहोवै है यहनियम है ॥ यातैं मैं कछुनजानताभया ऐसा जो जाग्रत्विषेअज्ञानकास्मरण है ॥ सोस्मरणसुषुप्तिविषे अज्ञानके अनुभवकूं सिद्धकरै है ॥ यारीतिसैं सुषुप्तिविषे सामान्यतैंअज्ञानकूंदेखताहुआभी स्पष्टकरिकै अज्ञानकूंनहीं देखता ॥ यातैं सुषुप्तिविषे भोक्ता और भोग्यका अभेदकह्या है ॥ शंका ॥ हे भगवन् जबी अज्ञानरूपआवरण सुषुप्तिविषे स्पष्ट नहीं है ॥ तबी प्रतिबंधककेअभावहोणेतैं यहपुरुष आपणेस्वरूपकूं सुषुप्तिविषेजाणैगा ॥ यातैं सुषुप्तिमात्रकरिकैही सर्वजीवोंकामोक्ष होणाचाहिये ॥ समाधान ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे यहद्रष्टा अद्वितीयआनंदरूपआपणेस्वरूपकूं जाणतानहीं ॥ काहेतैं सुषुप्तिविषे विशेष ज्ञानकाअभाव है ॥ तात्पर्ययह ॥ सुषुप्तिविषे प्रतिबंधकका यद्यपिअभावहै ॥ तथापि शास्त्रऔरगुरुसैंआदिलेकैज्ञानकीसामग्री तहाँहैनहीं यातैं सुषुप्तिविषे मोक्षकासाधनआत्मज्ञानहोवै नहीं ॥ और सुषुप्तिविषे आपणेस्वरूपकाअज्ञान विद्यमानहै॥ याकारणतैं आत्मासाक्षात्कारकेअभावहोणेतैं और साक्षीभाष्यमिथ्याअविद्याकीविद्यमानताहोणेतैं सुषुप्तिस्वप्नरूप है ॥ ऐसा श्रुतिविषेकथनकऱ्या है ॥ काहेतैं प्रबोधका जहाँअभावहोवै ॥ और मिथ्यावस्तुकादर्शनहोवै ॥ सो स्वप्नकहिये है ॥ यह पूर्वकह्यास्वप्नकालक्षण सुषुप्तिविषेभीघटै है ॥ इसप्रकार जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति यहतीन हैं स्वप्नजाके ॥ और चक्षु हृदयकमल और हृदयकमलके अंतरआकाश यह तीनहैंगृहजाके ॥ अथवा पिताकाशरीर और माताकाशरीर पुनःपिताकाशरीर यह तीनहैं गृहजाके ॥ और याशरीररूपद्वारावतीपुरीविषे स्थिति है जाकी ॥ और देहादिकोंविषे है अहं मम अभिमानजाका ॥ और अहंममअभिमानरूपजन्मकूंप्राप्तभया ॥ ऐसाजोपरमात्मादेव है ॥ सो गुरोंकीकृपा करिकै अज्ञानरूप निद्रातैंजाग्रत्हुआ ऐसा विचार करता भया ॥ वास्तवतैं उत्पत्तितैंरहित मैंपरमात्मा जिन पंचभूतातैं विशेषरूपकरिकैप्रगटभयाहूं ॥ तेयहआकाशादिकपंचभूत मेरेपरमात्माकेउपाधिरूपकरिकैउत्पन्नभये हैं ॥ कैसे यह पंचभूत हैं ॥ २०

शरीरादिकभेदकरिकै अनंतप्रकारकेहैं ॥ और संक्षेपतैं दोप्रकारकेहैं॥ कोई जडरूपहैं और कोई अजडरूपहैं ॥ तहाँ भोग्यरूपकरिकैजड हैं ॥ और भोक्तारूपकरिकैअजडहैं ॥ अब भूतोंविषेभोग्यपणा औरभोक्तापणा स्पष्टकरिकैनिरूपणकरैहैं ॥ तहाँ बाह्यआकाशादिकपंचभूत स्थावरजंगमोंकरिकै केवलभोग्यहैं ॥ और वृक्षादिकस्थावरोंका तथामनुष्यादिकजंगमोंका परस्परभोक्ताभोग्यपणा नियमसैंनहीं है ॥ कभी स्थावर भोक्ताहोवैहैं॥और जंगम भोग्यहोवैहैं॥और कभी स्थावर भोग्यहोवैहैं॥और जंगम भोक्ताहोवैहैं ॥यहाँजोउपकारकरै सो भोग्य काहियेहै॥और जापरिउपकारकरियें सोभोक्ताकहियेहै॥जैसे मनुष्यादिक जलकासिंचनरूपउपकार वृक्षोंऊपरिकरैं हैं ॥यातैं मनुष्यादिकजंगम भोग्यहैं ॥ और वृक्षादिकस्थावर भोक्ता हैं ॥ और वृक्षादिकछायाकाष्ठफलादिकोंकीप्राप्तिरूपउपकार मनुष्यादिकोंऊपरिकरैं हैं ॥ यातैं मनुष्यादिकजंगम भोक्ताहैं ॥ और वृक्षादिकस्थावर भोग्यहैं ॥ यह सर्वजनोंकूं प्रसिद्ध है ॥ इस प्रकार भोक्ता रूप और भोग्य रूपसैं दोप्रकारका प्रपंच है यह पूर्वकह्या ॥ अब विचारकरिकेदेखियेतो मेरेचेतनविषेही भोक्ता और भोग्यपणा घटताहुआ मेरे आद्वितीय ताकूं बोधनकरैहै याअर्थकूं निरूपणकरैहैं ॥ जडवस्तुवोंकूं भोक्तापणा तीनेकालविषेबनैनहीं ॥ काहेतैं जो कर्ताहोवै है ॥ सोईही भोक्ता होवैहै ॥ जडवस्तुवोंकूं भोगरूपक्रियाका कर्तापणाहैनहीं ॥ यातैं भोक्तापणाभी जडवस्तुवोंकूं बनैनहीं ॥ यहाँ यह तात्पर्य यह है ॥ यह वस्तु मेरेसुखकासाधनहै ॥ यह वस्तु मेरेदुःखकासाधनहै ॥ या प्रकारकेज्ञानकानामभोगहै ॥ सो चेतन आत्माविषेहीघटैहै ॥ काहेतैं सर्वजडस्तु चेतनआत्माकेसुखकेसाधनहैं ॥ जडवस्तु जडकेसुखकासाधनहोवैनहीं ॥ यातैं भोगकाआश्रयरूपभोक्ता आत्मा है ॥ और भोगरूपक्रियाकाकर्ताभी जडवस्तुहोवैनहीं ॥ काहेतैं स्वतंत्रकानामकर्ताहोवैहै ॥ सोस्वतंत्रता आत्मातैंभिन्नजडवस्तुम बनै नहीं ॥ यातैं कर्ताभी आत्माहीहै ॥ याअर्थकूंपूर्वनिरूपणकरिआयेहैं ॥ अब जडवस्तु भोग्यभीनहीं याअर्थकूंनिरूपणकरैहैं ॥ यह वस्तु मेरे सुखकाभासाधनहै या अंतःकरणकीवृत्तिविषेआरूढजोफलचेतनताकीआश्रयतारूपभोग्यताभी जडवस्तुविषे बनैनहीं ॥ तात्पर्य यह ॥ चेतनजडकेसंबंधकूंकरणेहाराजोअज्ञानहै सो विचारकालविषेनिवृत्तहोवै है ॥ यातैं यह वस्तु मेरेसुखकासाधनहै या अंतःकरणकीवृत्तिविषे

आरूढजोफलचेतनरूपप्रकाश सो मैं आत्माहूं ॥ मेरेतैं भिन्न कोईप्रकाशरूपनहीं ॥ और अंतःकरणकीवृत्तिविषेजोप्रकाश है ॥ सोभी मेरेपरामत्माकेसंबंधसैं है ॥ स्वतंत्र अंतःकरणकीवृत्तिविषेप्रकाश नहीं है ॥ जैसे सूर्यकेप्रतिबिंबकूंग्रहणकारिकैंही दर्पण भित्तिआदिको कूंप्रकाशै है ॥ सो दर्पण आपप्रकाशरूपनहीं है ॥ तैसैं बुद्धिभी परमात्माकेप्रकाशकूंपाइके प्रकाशै है ॥ यहपूर्वकहआये हैं ॥ यातैं समष्टि व्यष्टिदेहोंका मैंपरमात्मा प्रकाशकहूं ॥ और संपूर्णदृश्य मेरेअधीन हैं ॥ जैसे महाराजाकी सभाविषे राजाकी आज्ञाके विना कोई पुरुष स्वतंत्र वचनउच्चारणकरै नहीं ॥ तैसे मुझपरमात्मा कारिकै रहित ॥ कोईदृश्यवस्तु स्वतंत्र वचनकूं नहीं कहै है ॥ अब आत्मातैंभिन्नसर्व अनिवर्चनीय है याअर्थकूं निरूपणकरैहैं॥तीनपरिच्छेदोंसेरहितमुझकूटस्थविषे भोक्ताभोग्यस्वरूपप्रपंचकल्पितहै ॥ काहेतैं मुझपरमात्माके अज्ञानकरिकै संपूर्ण जगत्उत्पन्नभया है जैसे रज्जुकेअज्ञानतैंप्रतीतभया जो सर्प सो कल्पित है ॥ तात्पर्य यह ॥ मेरेतैं भिन्नकरिकै किसी वस्तुकीसिद्धिहोवै नहीं ॥ यद्यपि श्रुतिवचनतैंहीं प्रपंचविषेमिथ्यापणासिद्धहै ॥ तथापि असंभावनाकीनिवृत्तिवासतै प्रपंचकाक्यास्वरूप है ऐसा युक्तिसैंभीविचारकन्याचाहिये ॥ तात्पर्य यह ॥ श्रुतिऔरगुरुनैं बलात्कारसैं मेरेकूं प्रपंचमैंमिथ्यापणा अंगीकारकरायाहै ॥ ऐसा जो वादीकेचित्तविषेपश्चात्ताप ताकीनिवृत्तिवासतै युक्तिसैं अवश्यप्रपंचमैंमिथ्यापणासिद्धकरणा ॥ तहाँ प्रपंचका क्यास्वरूप है ॥ नाम रूप क्रिया इनतीनोंकेसमुदायकानाम प्रपंचहै ॥ अथवा एकएक नामादिकोंकानाम प्रपंचहै ॥ तहाँ प्रथमपक्षबनैनहीं ॥ काहेतैं सोस मुदाय नामरूपक्रियातैंभिन्नहै अथवाअभिन्नहै ॥ तहाँ भिन्नपक्षताबनैं नहीं ॥ काहेतैं नामरूपक्रियातैंभिन्नसमुदायकास्वरूप दीखै नहीं ॥ और दूसराअभिन्नपक्षभीबनैनहीं ॥ काहेतैं एकएकनामादिकोंविषे समुदायव्यवहार और प्रपंचव्यवहार होणाचाहिये॥ औरहोवैनहीं॥याअर्थ कूं देहकेखंडनप्रसंगमैं विस्तारतैंनिरूपणकरिआयेहैं॥यहाँ नाम यापादकरिकै शब्दकाग्रहणकरणा ॥और रूप यापदकारिकै इंद्रियजन्यज्ञान केविषयभूतअर्थकाग्रहणकरणा॥और क्रिया यापदकारिकै कर्मकाग्रहणकरणा ॥ अब नामरूपक्रियाकेसमुदायकानामप्रपंचहै याप्रथमपक्षवि षेदूसरे दूषणकहणेवासतै विकल्पकूंकरैं हैं ॥ सोनामरूपक्रियाभी नामरूपक्रियास्वरूपहै॥ अथवानहींहैं॥तहाँ अंत्यपक्षतौबनैं नहीं ॥ काहेतैं

नामरूपक्रियाकूं जो नामरूपक्रियास्वरूपनहीं मानोगे तौ नामरूपक्रियाकूं अप्रपंचरूपता प्राप्त होवैगी ॥ तात्पर्ययह ॥ प्रपंचस्वरूप नामरूपक्रियाकूं प्रपंचसैंबाह्यमानणेमैं एकतौ व्याघातदोष प्राप्तहोवै है ॥ और दूसरा श्रुतिसैंविरोधहोवै है ॥ और नामरूपक्रिया नाम रूपक्रियास्वरूपहैं ॥ यहप्रथमपक्षभीबनैनहीं ॥ काहेतैं नामरूपक्रियाकूं एकएककूं नामरूपक्रियास्वरूपता है ॥ अथवा एकएककूं एकएकरूपता है॥ यादोनोंविकल्पोंकातात्पर्ययह है ॥ एकनाम नामरूपक्रियास्वरूप है ॥ और एकरूप नामरूपक्रियास्वरूप है ॥ और एकक्रिया नामरूपक्रियास्वरूप है ॥ अथवा नाम नामस्वरूप है ॥ और रूप रूपस्वरूप है ॥ और क्रिया क्रियास्वरूप है ॥ तहाँ प्रथम पक्षतौबनैनहीं ॥ काहेतैं एकएकनामादिकोंकूं नामरूपक्रिया यहतीनरूपतावि षे अनुभवकाअभावरूप प्रथमदूषण है ॥ तात्पर्ययह ॥ एकनाम नामरूपक्रियारूपतैंप्रतीतहोवैनहीं ॥ तैसे रूप और क्रियाभी नामरूपक्रियास्वरूपतैंप्रतीतहोवैनहीं ॥ और एकएकनामादिक नामरूपक्रियास्वरूप हैं ॥ याप्रथमपक्षविषे अनवस्थादूषण है कारणजिनोंका ऐसेजे प्राग्लोप विनगमनाविरह प्रमाणापगम यहतीनदूषण हैं इनसर्वदूषणोंकासमुदायरूप दूसरादूषणभी प्राप्तहोवै है ॥ अब तिनदूषणोंकानिरूपणकरैं हैं ॥ भेदकूंसहारणेहाराजोअभेद ॥ सोतादा त्म्यसंबंधकहिये है ॥ सोतादात्म्य दोप्रकारकाहोवै है ॥ एकतो द्रव्यऔरगुणका क्रिया औरक्रियावान्का जातिऔरव्यक्तिकाअवयव और अवयवीका विशेषऔरनित्यद्रव्योंका समवायसंबंध नैयायिकमानैं हैं ॥ तासमवायसंबंधकेस्थानमैं वेदांतशास्त्रविषे तादात्म्यसंबंध मानैं हैं ॥ यास्थानविषे द्रव्यगुणादिकोंका अभेदतौ वास्तवहोवै है ॥ और भेद कल्पितहोवै है ॥ यह वार्तापूर्व काहिआये हैं ॥ और पूर्वकहेजेद्रव्यऔर गुणादिक ॥ तिनोंतैंभिन्नस्थानविषे दूसरातादात्म्यहोवै है ॥ जैसे दूरदेशविषेस्थितभिन्नभिन्नवृक्षोंका पुरुषकूं तादात्म्य प्रतीतहोवै है ॥ यास्थानविषे वृक्षोंकापरस्परभेदतो वास्तव है ॥ और अभेद कल्पित है ॥ यादोप्रकारकेतादात्म्यकहणेतैं यहअर्थसिद्ध भया ॥ नामरूपक्रियाएकएककूं प्रथमतादात्म्यसंबंधकरिकैतौ नामरूपक्रियास्वरूपता है नहीं ॥ किंतु दूसरेतादात्म्यसंबंधकरिके नामरू पक्रियास्वरूपता है ॥ यातैं जैसे वाक्इंद्रियविषेस्थितनामका बाह्यघटादिकोंकेसाथितादात्म्यविषे नामऔरघटादिकोंका परस्परभेद

वास्तव है ॥ और अभेद कल्पित है॥तैसे नामाविषे नामकातादात्म्यअंगीकारकियेहुयेभी प्रथमनामसेंदूसरेनामका वास्तवभेद अंगीकारक
रणाहोवैगा ॥ और तादूसरेनामाविषे तीसरेनामकातादात्म्य ॥ तीसरेनामाविषे चतुर्थनामकातादात्म्य मानणाहोवैगा॥याप्रकार अनंतनामों
कीधारामानणेंमें अनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ इसप्रकार रूपक्रियाविषेभी अनवस्थादिकदोषजानणे ॥ जो अनवस्थादोषकूं वादीअंगी
कारकरै ॥ तौ उत्तरउत्तरनामोंकारिकैहीं अर्थकाज्ञानरूपव्यवहारकीसिद्धिहोवैगी ॥ पूर्वपूर्वनामोंकीव्यर्थतारूप प्रागलोपदोष प्राप्तहो
वैगा ॥ और अनंतनामोंकरिकैविशिष्टघटविषे किसनामनैं घट याव्यवहारकूंउत्पन्नकऱ्या है यह विनगमनाविरहरूप दूसरादूषण हो
वैगा ॥ अनंतअर्थोंविषे एकअर्थकासाधकयुक्तिकानाम विनगमना है ॥ विरहनाम अभावका है ॥ और एकवस्तुविषे अनंतनामोंकूंविषय
करणेहारा कोईप्रमाण है नहीं ॥ यातैं प्रमाणापगमरूप तीसरादूषण प्राप्तहोवैगा॥अपगमनाम अभावका है ॥ यातैं एकएकनामादिकनाम
रूपक्रियास्वरूप हैं ॥ ऐसीवादीकीकल्पना प्रत्यक्षादिकप्रमाणतैं औरश्रुतिप्रमाणतैं रहितहै दै ॥ काहेतैं प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकै एक
एकनामादिकोंविषे नामरूपक्रियास्वरूपता दीखैनहीं ॥ और श्रुतितोसंपूर्णजगत्कूं नामरूपक्रियास्वरूपकहै है ॥ एकएकवस्तुकूं नामरू
पक्रियास्वरूप श्रुतिकहैनहीं यातैं एकएकनामादिक नामरूपक्रियास्वरूपनहीं यहासिद्धभया ॥ और नाम नामस्वरूप है ॥ और रूप
रूपस्वरूप है ॥ और क्रिया क्रियास्वरूप है ॥ यादूसरेपक्षविषेभी पूर्वकहेअनवस्थादिकदूषणोंकीप्राप्तिहोवै है॥ यातैं असंगत है ॥ किंवा ॥
नामनामस्वरूप है ॥ यहनियम बनैनहीं॥काहेतैं श्रोत्रइंद्रियजन्यज्ञानकाविषयहोणेतैं नामोंकूं रूपस्वरूपताभीबनैं है ॥ इंद्रियजन्यज्ञानकोवि
षयअर्थकूं रूपकहैं हैं॥यहपूर्वकाहिआये हैं और नाम कभीतोनामस्वरूप है॥और कभीरूपस्वरूप है॥यहअनियमभी बनैंनहीं॥काहेतैं नाम
कीनाम स्वरूपतैंहीं प्रतीतिहोवै है ॥ रूपस्वरूपतैं नामकी कभीभीप्रतीतिहोवैनहीं ॥ याकहणेतैं नामरूपक्रियाकासमुदायप्रपंचनहीं॥यापूर्व
कहेपक्षकाभी समाधानजानणा॥अब दूसरेप्रकारतैंभी प्रपंचकीअनिर्वचनीयता निरूपणकरैं हैं॥सोरीतियह है॥ नामरूपक्रियाकेसमुदायकूंप्रपं
चकहैहैं ॥ तहाँ नामरूपक्रियाकेस्वरूपकी जभीसिद्धिहोवै तभी ताकासमुदायरूपप्रपंच सिद्धहोवै॥ सोनामरूपक्रियाकेस्वरूपका निर्वचनहो

वैनहीं ॥ यातैं तिनोंकेसमुदायरूपप्रपंचकाभी निर्वचनहोवैनहीं ॥ याअर्थकीसिद्धिवासतैं प्रथम विकल्पकूंकरैं हैं ॥ नामरूपक्रियाकेसमुदाय
कूंप्रपंचकहैहै ॥ यास्थानविषे नामका क्यास्वरूपहै॥और रूपका क्या स्वरूप है ॥ और क्रियाका क्यास्वरूपहै ॥ तहाँ शब्दकूं नामकहैहैं॥
ऐसाजोवादी कहै ॥ तावादीसे यहपूछाचाहिये ॥ शब्दकाक्यास्वरूप है ॥ ताशब्दकेस्वरूपका तुम निरूपणकरो ॥ तात्पर्य यह
लक्षणऔरप्रमाणकरिकै वस्तुकीसिद्धिहोवैहै ॥ शब्दकूं नामकहै हैं ॥ याप्रकारके केवलकथनसैं वस्तुकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ यातैं शब्दकी
सिद्धिवासतैं ताशब्दकेलक्षणकूं तुम कथनकरो ॥ तहाँ वादी शब्दकेलक्षणकूंकहैहै ॥ शंका ॥ शब्दकूंविषयकरणेहारे शब्दऔरज्ञानका
जोकारणहोवै ॥ सो शब्दकाहिये है ॥ जैसे घटकूंविषयकरणेहारा यहघटहै ऐसाजोशब्दऔरज्ञान ॥ तादोनोंका घटकारणहै ॥ तैसेशब्दकूं
विषयकरणेहारा यहशब्दहै ऐसाजो शब्दऔरज्ञान ॥ तादोनोंका शब्दकारणहै ॥ याशब्दकेलक्षणकूंअतिव्याप्तिदोषकरिकै सिद्धांती खंडन
करैहै ॥ समाधान ॥ जोलक्षण आपणेलक्ष्याविषेभीरहै ॥ औरलक्ष्यतैंभिन्नअलक्ष्यवस्तुविषेभीरहै ॥ सोलक्षण अतिव्याप्तिदोषवाला होवैहै ॥
जैसे शृंगवालीगौहै ॥ यास्थानविषे शृंग लक्षणहै ॥ और गौ लक्ष्य है ॥ सोशृंगरूपलक्षण आपणालक्ष्यजोगौ ताविषेभी रहैहै ॥ और
लक्ष्यतैंभिन्नजोमहिषादिकअलक्ष्य तिनोंविषेभी रहै है ॥ यातैं सो शृंगरूपलक्षण अतिव्याप्तिदोषवाला है ॥ तादुष्टलक्षणतैं वस्तुकिसिद्धि
होवै नहीं ॥ तैसे यहशब्दकालक्षणभी अतिव्याप्तिदोषवालाहै ॥ काहेतैं जैसे यहशब्दहै याप्रकारके शब्द और ज्ञानका शब्द कारण है ॥
तैसे बंध्यापुत्रहै याप्रकारके शब्द और ज्ञानका बंध्यापुत्रभी कारणहै ॥ यातैं यादुष्टलक्षणतैं शब्दकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ अब दूसरेलक्षणतैं
वादी शब्दकीसिद्धिकरैहै ॥ शंका ॥ सत्य अर्थकूंविषयकरणेहारेज्ञानका जोकारणहोवै सो शब्दकहियेहै ॥ बंध्यापुत्रहै याज्ञानका यद्यपि
बंध्यापुत्रकारण है ॥ तथापिबंध्यापुत्र है यहज्ञान सत्य अर्थकूंविषयकरैनहीं ॥ किंतु असत्यबंध्यापुत्रकूंविषयकरै है ॥ यातैं बंध्यापुत्रविषे
यालक्षणकी अतिव्याप्तिनहीं ॥ और सत्यअर्थकूंविषयकरणेहाराजो घटहै ऐसाज्ञान ॥ ताकाकारण घट ऐसा शब्दहै ॥ यातैं यादोषरहित
लक्षणतैं शब्दकीसिद्धिबनैहै ॥ याप्रकारकेवादीकेलक्षणकूं अव्याप्तिदोषकरिकै सिद्धांती खंडनकरै है ॥ समाधान ॥ जो लक्षण आपणे

लक्ष्यकेएकदेशावषरहै और एकदेशविषेनरहै ॥ सो अव्याप्तिदोषवालाहोवैहै ॥ जैसेशुक्लरूपवालीगौहै ॥यास्थानविषे शुक्लरूप गोकालक्षणहै सो नीलरूपवालीगौविषे रहैनहीं ॥ यातैं अव्याप्तिदोषवालाहै ॥ तैसे सत्यअर्थकूंविषयकरणेहारेज्ञानकीकारणतारूपलक्षणभी भेरीआदि कोंकेध्वनिरूपशब्दविषे हैनहीं ॥ काहेतैं भेरीशब्दतैं किसीपुरुषकूं अर्थकाबोधहोवैनहीं ॥ यातैं अव्याप्तिदोषवाले यालक्षणतैं शब्दकीसो द्धिहोवैनहीं ॥ अभी ध्वनिरूपशब्दविषे अव्याप्तिदोषकेनिवारणवासतैं अन्यलक्षणतैं वादी शब्दकीसिद्धिकरैहै ॥ शंका ॥ वर्णोंकेसाथिता दात्म्यसंबंधकरिकै जोअर्थज्ञानकीकारणताहै सोशब्दकालक्षणहै ॥ यालक्षणकी ध्वनिरूपशब्दविषे अव्याप्तिनहीं ॥ काहेतैं ध्वनिकूं वर्णोंका अभिव्यंजक मीमांसक मानेहैं ॥ यातैं ध्वनिका वर्णोंकेसाथितादात्म्यसंबंधहै ॥ जोवस्तु जाकीप्रतीतिकरावै ॥ सोवस्तु ताकाअभिव्यंजक होवैहै ॥ यहाँयहतात्पर्यहै ॥ जैसे नैयायिकोंकेमतमैं घटत्वादिकजाति सर्वत्र रहैहै ॥ तौभीजातिकी सर्वत्र प्रतीति होवैनहीं ॥ किंतु घटादि कव्यक्तिविषेही घटत्वादिकजातिकी प्रतीतिहोवैहै॥यातैं घटादिकव्यक्ति घटत्वादिकजातिका अभिव्यंजकहै ॥ ताघटादिकव्यक्तिकाघटत्वा दिकजातिकेसाथि तादात्म्यसंबंधहै ॥ तैसे मीमांसक वर्णोंकूंनित्यमानेहै ॥ तानित्यवर्णोंकी सर्वदा प्रतीतिहोणीचाहिये॥याशंकाकीनिवृत्तिवा सतै ध्वनिकूं अभिव्यंजक मीमांसक मानेहैं ॥ ताध्वनिका वर्णोंकेसाथेतादात्म्यासंबंधहै ॥ औरवर्णोंकाभी वर्णोंविषे तादात्म्यसंबंधहै ॥ यातैं जैसे वर्णोंकेसाथितादात्म्यसंबंधकरिकै वर्णोंकूं अर्थज्ञानताकीकारणताहै ॥तैसे वर्णोंकेसाथितादात्म्यसंबंधकरिकै ध्वनिरूपशब्दकूंभी अर्थज्ञा नकीकारणताहै॥यातैं यादोषरहितलक्षणतैं शब्दकीसिद्धिबनैहै॥ अब यावादिकेलक्षणकूंखंडनकरणेवासतैं सिद्धांती वादीसैंपूछेहै॥समाधान॥ वर्णोंकेसाथितादाम्यसंबंधकरिकैसंपूर्णमनुष्योंकेज्ञानकीकारणता शब्दका लक्षणहै ॥ अथवा जिसमनुष्यकेइंद्रियसैंशब्दकासंबंधहोवै तामनु ष्यकेज्ञानकीकारणता शब्दकालक्षणहै ॥ तहाँप्रथमपक्ष बनैनहीं ॥ काहेतैं वर्णतादात्म्यशब्दभी नियमकरिकैसर्वमनुष्योंकेज्ञानका कारण होवैनहीं जाकारणतैंबधिरमनुष्यविषे और सुषुप्तिवालेविषे और मूर्छावालेविषे और प्रमत्तमनुष्यविषे और रोगीविषे अर्थज्ञानकूं शब्द उत्पन्नकरैनहीं ॥ यातैं यह लक्षण असंभवदोषवालाहै ॥ जोलक्षण आपणेलक्ष्यविषेरहैनहीं ॥ सो असंभवदोषवाला होवै है ॥ जैसे

एकशफवाली गौहै ॥ यास्थानविषे एकशफरूपलक्षण किसीगौविषे रहै नहीं ॥ किंतु अश्वादिकोंविषेरहै है ॥ तैसे सर्वमनुष्योंकेज्ञानकी कारणता किसीशब्दविषैहैनहीं ॥ और वर्णोंकेसाथितादात्म्यवालाहोवै और जिसमनुष्यकेइंद्रियकेसंबंधवालाहोवै तामनुष्यकेज्ञानकीका रणता शब्दकालक्षण है ॥ यादूसरेपक्षकेअंगीकारकियेहुये ॥ यद्यपि पूर्वकह्याअसंभवदोषनहीं है ॥ यथापि पर्वतविषेवह्निज्ञानकेकारणधूमा दिकोंविषेअतिव्याप्तिरूपदूषणतैं यालक्षणकीभी रक्षाहोवैनहीं॥यहाँ यहतात्पर्यहै ॥ शब्द और अर्थका परस्पर तादात्म्यसंबंधहोवैहै ॥ धूम यावर्णोंसैं धूमरूप अर्थका तादात्म्यसंबंधहै॥और चक्षुइंद्रियकेसंबंधतैं पुरुषोंकेवह्निज्ञान कीकारणतावालाभी धूमहै॥ काहेतैं धूमकूंनेत्रोंसैंदे खिकरिके पर्वतादिकोंविषेवह्निकाज्ञान पुरुषोंकूंहोवैहै ॥ यातैंयाशब्दकेलक्षणकीधूमविषे अतिव्याप्तिहोणेतैं यालक्षणतैं शब्दकीसिद्धिहोवै नहीं ॥ अब धूमविषेअतिव्याप्तिदोषकीनिवृत्तिवासतैं वादी अन्यरीतिसैं ताक्षलणकरिकै शब्दकीसिद्धि करैहै ॥ शंका॥वर्णोंकेसाथितादात्म्य संबंधवालाहोवै और जामनुष्यकेश्रोत्रइंद्रियकेसंबंधवालाहोवै तामनुष्यके अर्थ ज्ञानकीकारणता शब्दका लक्षणहै ॥ यालक्षणकी धूमविषे अतिव्याप्तिनहीं ॥ काहेतैं धूमका यद्यपि पूर्वकहीरीतिसैं वर्णोंकेसाथितादात्म्यभीहै ॥ औरनेत्रइंद्रियकेसंबंधवालाहुआधूम मनुष्योंके वह्नि ज्ञानकाकारणभीहै॥तथापि श्रोत्रइंद्रियकेसंबंधवालाहुवाधूमज्ञानकाकारणनहीं॥और शब्दतो श्रोत्रइंद्रियकेसंबंधवालाहुआ ज्ञानकाकारण होवैहै ॥ यहाँ श्रोत्रकासंबंधश्रोत्रइंद्रियजन्यज्ञानकीविषयतारूप जानणा ॥ अब याशब्दकेलक्षणकूंभी शब्दत्वजातिविषे अतिव्याप्तिदो षकरिकै सिद्धांती खंडनकरैहै ॥ समाधान ॥ पूर्वधूमविषेअतिव्याप्तिदोषकोनिवारणवासतै लक्षणविषे श्रोत्रइंद्रियकासंबंधकह्या ॥ सोसंबंध भी शब्दकेसिद्धिकाकारणनहीं ॥ काहेतैं शब्दविषेस्थित शब्दत्वजातिका वर्णोंकेसाथि तादात्म्यसंबंधहै और श्रोत्रइंद्रियकेसंबं धतैं ज्ञानकीकारणताभी ताशब्दत्वविषेहै ॥ यातैं शब्दत्वजातिविषे लक्षणकीअतिव्याप्तिहोवैहै ॥ यद्यपि गुणहोवै ॥ और वर्णोंकेसा थितादात्म्यसंबंधवालाहोवै ॥ और श्रोत्रइंद्रियकेसंबंधतैंज्ञानकाकारणहोवै ॥ सो शब्दकहियेहै ॥ याप्रकार गुणपदकेनिवेशतैं शब्दत्वजा तिविषे अतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ काहेतैं शब्दत्वजातिविषे गुणत्वधर्महैनहीं ॥ तथापिगुणका आगेअकाशनिरूपणविषे खंडनकरेंगे ॥

यातैं यालक्षणतैंभी शब्दकी सिद्धिहोवैनहीं ॥ शंका ॥ लक्ष्यतैंभिन्नवस्तुविषे जोलक्षणरहै ॥ सोअतिव्याप्तिदोषवालाहोवै है ॥ और पूर्वकह्यालक्षण यद्यपि शब्दत्वजातिविषे रहे है ॥ तथापि सोशब्दत्वजाति लक्ष्यशब्दतैंभिन्ननहीं ॥ काहेतैं जातिऔरव्यक्तिका तादात्म्यहोवैहै ॥ यातैं शब्दत्वजातिभी शब्दकेलक्षणका लक्ष्य है ॥ समाधान ॥ शब्दत्वजातिकूं जोशब्दस्वरूपमानोंगे ॥ तो शब्दकास्वरूप रूपभावकूं प्राप्तहोवैगा ॥ तात्पर्ययह ॥ इंद्रियजन्यज्ञानकाविषयजोअर्थ सो रूपकहियेहै ॥ यहरूपकालक्षण शब्दत्वादिकजातिविषेभी वर्तै हैं ॥ यातै संपूर्णजगत्कूं नामरूपक्रियास्वरूप कथनकरणेहारीश्रुतिविषे जातिआदिक रूपकेअंतर कहैहै ॥ अभी शब्दत्वजातिकूं जोशब्दरूपमानोंगे ॥ तो नामऔररूपक भेदसिद्धहोवैगानहीं ॥ शंका ॥ शब्दत्वजाति संपूर्णशब्दोंविषेरहैहै ॥ और सर्वत्ररहैनहीं ॥ यातैं शब्दत्वजातिका औरशब्दका भेद प्रसिद्धहै ॥ समाधान ॥ जैसे संपूर्णककारोंविषे कत्वजातिरहैहै ॥ और संपूर्णशब्दोंविषे शब्दत्वजातिरहैहै तैसेसंपूर्णघटादिकअर्थोंविषे शब्दकासंबंधभी प्रतीतहोवैहै ॥ यातैं सर्वत्रअनुगतपणा शब्दत्वजातिविषे और शब्दविषेसमान है ॥ तात्पर्ययह ॥ किसीप्रकारकरिकैरूपतैंनामकाभेद सिद्धहोवैनहीं ॥ इसप्रकार नामकेअनिवर्चनीयताकूंसिद्धकरिकै अब रूपऔरक्रिया विषेभी अनिर्वचनीयता सिद्धकरैहैं ॥ जैसेनाम किसीप्रकारतैं सिद्धहोवैनहीं ॥ तैसे रूपऔरक्रियाभी किसीप्रकारतैं सिद्धहोवै नहीं ॥ काहेतैं अल्पमुख औरबडाउदर यह घटकास्वरूपहै ॥ सो घटतैंभिन्नहोइके जैसे प्रतीतहोवैनहीं ॥ तैसे क्रियाभीरूपतैंभिन्नहोइके प्रतीतहोवै नहीं ॥ यातैं जैसे रूपरूपतैंभिन्ननहींहै ॥ तैसे क्रियाभी रूपतैंभिन्ननहीं है ॥ अब नामतैंभिन्नरूपकीआनिर्वचनीयताकूं दिखावैहैं ॥ जाकारणतैं संपूर्णरूप नामके अनुकूल ज्ञानकूंउत्पन्नकरैहै ॥ यातैंरूप वास्तवनहींहैं ॥ किंतु विकल्पमात्रहै ॥ और श्रुतिविषेभी सर्वविकार नाममात्रकहैहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे मनुष्यविषे तीक्ष्णहैअग्रभागजाकाऐसाशृंग असत्य है ॥ तैसे रूपभी असत्यहै ॥ शंका ॥ असत्य वंध्यापुत्र औरनरशृंगविषे वंध्यापुत्रहै और नर शृंगहै ऐसाज्ञान होवैनहीं ॥ और घटादिपदार्थोंविषेतौ घटहै पटहै ऐसाज्ञान होवैहै ॥ यातैं वंध्यापुत्रकी और घटपटादिकरूपोंकी तुल्यता होवै नहीं ॥ समाधान ॥ नरशृंगविषे औरबंध्यापुत्रविषेनरशृंग है

औरबंध्यापुत्रहै ऐसाउत्पन्नभयाजोज्ञान ॥ सो किसीकरिकै निवारणहोवै नहीं ॥ काहेतैं सांख्यशास्त्रवाले विकल्पज्ञानकाविषय बंध्यापुत्रादिकअसत्यपदार्थ मानैं हैं ॥ और नैयायिक आहार्यज्ञानकाविषय मानैं हैं ॥ जास्थानविषे जिसवस्तुका अत्यंताभावहोवै ॥ तास्थानविषे तिसवस्तुकाज्ञान पुरुषकीइच्छातैं जो उत्पन्नहोवै ॥ सोज्ञान आहार्यकहिये है ॥ जैसे जलविषे अग्निका अत्यंताभाव है ॥ और जलविषेअग्निकाज्ञानमेरेकूंहोवै ऐसीइच्छा जभीपुरुषकूंहोवै ॥ तभी ताइच्छातैं जलअग्निवाला है ऐसाज्ञान तापुरुषकूं उत्पन्न होवै है ॥ याज्ञानकूं नैयायिक आहार्यज्ञानकहैं हैं याकहणेतैं यहसिद्धभया ॥ जैसे घट है पट है याज्ञानकेविषय घटपटादिक हैं ॥ तैसे बंध्यापुत्र है और नरशृंग है या आहार्यज्ञानकेविषय बंध्यापुत्रऔरनरशृंगादिकभी हैं ॥ यातैं दोनों समान है ॥ शंका ॥ घट है और बंध्यापुत्र है याज्ञानोंकी समानता नहीं ॥ काहेतैं घटादिकोंकाज्ञानतौ इंद्रियतैंजन्य है और बंध्यापुत्रकाज्ञान इंद्रियकरिकैजन्यनहीं ॥ समाधान ॥ संपूर्णइंद्रियोंकरिकै घटादिकोंकेज्ञानजन्य हैं ॥ यातैं बंध्यापुत्रकेज्ञानतैं विलक्षण हैं ॥ अथवा एकएकइंद्रियकरिकैजन्य हैं ॥ यातैं बंध्यापुत्रकेज्ञानतैं विलक्षण हैं तहां प्रथमपक्षतौ बनै नहीं ॥ काहेतैं गंधज्ञानका एकघ्राणइंद्रिय कारण है ॥ चक्षुआदिकइंद्रिय कारण हैं नहीं ॥ तैसे रूपज्ञानका चक्षुइंद्रियकारण है ॥ अन्यइंद्रिय कारण है नहीं ॥ तात्पर्य यह ॥ जैसे धनकेवृद्धिकीइच्छाकरिकै व्यापारविषेप्रवृत्तभयेपुरुषके मूलधनकीभी हानिहोइजावै ॥ तैसे बंध्यापुत्रतैं घटादिकोंविषेविलक्षणताकी सिद्धिकीवासतैं सर्वइंद्रियजन्यज्ञानकीविषयतामानणैमैं गंधादिकोंकूं बंध्यापुत्रकीतुल्यताही प्राप्तहोवै है ॥ काहेतैं गंधादिकोंमैं सर्वइंद्रियजन्यज्ञानकीविषयताहैनहीं ॥ और एकएकइंद्रियजन्यज्ञानकीविषयता गंधादिकोंविषे है ॥ असत्यनरशृंगबंध्यापुत्रविषे है नहीं ॥ यातैं विलक्षण हैं ॥ यहदूसरापक्षभीबनैनहीं ॥ काहेतैं गंधादिकोंविषे एकएकइंद्रियजन्यज्ञानकी विषयतारूप विशेषताकूं जोअंगीकारकरोगे ॥ तौ तुमारेमतविषे नरशृंगादिकोंकाज्ञान मनरूपइंद्रियकरिकैहोवै ॥ याकोविषे कोईप्रतिबंधकहैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ याविशेषतातैंभी बंध्यापुत्रतैं गंधादिकोंकीविलक्षणता सिद्धहोवैनहीं ॥ शंका ॥ मनकरिकै बंध्यापुत्रकाज्ञान होवैनहीं ॥ काहेतैं नेत्रादिकइंद्रियोंसौंविना

मन किसीज्ञानकूं उत्पन्नकरेनहीं ॥ औरनेत्रादिकइंद्रियोंका बध्यापुत्रकेसाथि संबंधहैनहीं ॥ यातैं मनकूं इंद्रियोंकीअपेक्षाही बंध्यापुत्र केअज्ञानविषे प्रतिबंधक है ॥ समाधान ॥ संपूर्णज्ञानोंकीउत्पत्तिविषे इंद्रियोंकी अपेक्षा मन करे है यहनियमनहीं ॥ काहेतैं नेत्रादिकों केअविषय जेसुखदुःखादिक ॥ तिनोंका जैसेमनकरिके ज्ञानहोवेहै ॥ तैसे मनकरिके बंध्यापुत्र औरनरशृंगके ज्ञानविषेभी कोईबाधकहोवैनहीं ॥ तात्पर्य यह ॥ नेत्रादिकइंद्रियोंसेविना सुखदुःखादिकोंकेअनंतज्ञानोंकूं मनउत्पन्न करे है ॥ तामनकूं इंद्रियोंसेंविना बंध्यापुत्रकेज्ञानकूं उत्पन्नकरणमैं कोईभारहोवैनहीं ॥ शंका ॥ मनकरिके असत्यवस्तुकाज्ञान लोकविषेप्रसिद्धहैनहीं ॥ समाधान ॥ जैसे वैरिविषेरह्यादुःख सुखरूपकरिके बंध्यापुत्रकीन्यांईंअसत्यहै ॥ तोभी तावैरिकेदुःखकूं सुखरूपकरिके पुरुष जाणे है ॥ यहलोकविषेप्रसिद्ध है ॥तैसे असत्यबंध्यापुत्रनरशृंगकाज्ञान मनकरिके बनेहै ॥ अब लोकप्रसिद्धितैंभी रूप नामतैंभिन्ननहीं याअर्थकूं निरूपणकरेहैं॥ घटादिकपदार्थोंविषे पुरुषोंकी प्रवृत्तिहोवेहै ॥ सोप्रवृत्ति इच्छाकरिकैजन्यहोवै है ॥ काहेतैं इच्छासेंविना किसीवस्तुविषेप्रवृत्तिहोवैनहीं॥ और सोइच्छा ज्ञानकरिकेजन्यहोवैहै ॥ काहेतैं अन्यदेशविषेस्थितपदार्थोंकेज्ञानकाअभावहोणतैं तिनपदार्थोंकीइच्छा होवैनहीं ॥ यारीतिसैं प्रवृत्तितैंपूर्वकालविषे इच्छाद्वाराप्रवृत्तिकाकारणज्ञान शब्दतैंविना विचारवान्पुरुषोंकूंहोवैनहीं ॥ किंतु शब्दकूंविषयकरताहुआज्ञान अर्थकूंविषयकरैहै ॥ यातैं एकज्ञानकेविषय नामऔररूपका अभेदहीसिद्धहोवै है ॥ याप्रकार युक्तिसेंनिरूपणकियेहुये नामरूपक्रियासिद्धहोवैनहीं ॥ अब पंचभूतोंविषे युक्तिसेंअनिर्वचनीयता दिखावैहैं ॥ तेपंचभूत नामरूपक्रियातैंभिन्नहोइके किसीस्थानविषे रहैंनहीं ॥ यातैं अनिर्वचनीय हैं ॥ तिनपंचभूतोंविषेभी प्रथम आकाशका क्या स्वरूप तुम मानोहो ॥ शंका ॥ अवकाशस्वरूप आकाश है ॥ यह सर्वलोकोंकूंप्रसिद्धहै ॥ समाधान ॥ अवकाशस्वरूप आकाशहै ॥ यातुमारेकहणतैं आवरणकेअभावकाजोअधिकरणहोवै सो आकाशहोवैहै॥ यहआकाशकालक्षण सिद्धभया सोयहलक्षण बंध्यापुत्रविषेभीरहै है ॥ जैस आकाशविषे आवरणकाअभाव है ॥ तैसे बंध्यापुत्रविषेभी आवरणकाअभावहै ॥ असत्यवस्तुविषेभी अभावकीअधिकरणता शास्त्रविषेकहीहै ॥ यात जसे आकाशकूंअवकाशस्वरूपतैंनैं मान्याहै ॥ तैसे

बंध्यापुत्र अवकाशस्वरूप काहेतैंनहीं ॥ किंतु बंध्यापुत्रकूंभी अवकाशस्वरूपतावनेहैतात्पर्ययह ॥ आकाशकेलक्षणकीबंध्यापुत्रविषेअतिव्याप्तिहोवै है ॥ यातैं यादुष्टलक्षणतैं आकाशकोसिद्धिहोवै नहीं ॥ शंका ॥ जो शब्दगुणवालाहोवै ॥ और अवकाशस्वरूपहोवै ॥ सो आकाशकहियेहै ॥ बंध्यापुत्रविषे यद्यपि पूर्वकहीरीतिसैं अवकाशस्वरूपता है तथापि शब्दगुण तोविषे है नहीं ॥ और आकाशविषे शब्द गुण हैं ॥ यातैं बंध्यापुत्रतैं आकाशका भेद है तात्पर्य यह ॥ या आकाशकेलक्षणकी बंध्यापुत्रविषे अतिव्याप्ति नहीं ॥ समाधान ॥ शब्दगुणकरिकैभी बंध्यापुत्रतैं आकाशका भेद सिद्धहोवै नहीं ॥ काहेत सो शब्द गुण आकाशरूपगुणीतैं भिन्न है अथवा अभिन्न है ॥ तहाँ प्रथमभिन्नपक्ष बनै नहीं ॥ काहेतैं जैसे घटतैंपट भिन्न है ॥ यातैं घटका पट गुणहोवै नहीं ॥ तैसे आकाशरूपगुणीतैं शब्दगुणकूं जो भिन्नमानोंगे ॥ तो आकाशका शब्द गुण नहीं होवैगा ॥ और शब्द गुण आकाशतैं अभिन्न है ॥ यह दूसरा पक्षभी बनैं नहीं ॥ काहेतैं जैसे गंधगुणका गंधतैं अभेद है ॥ तहाँ गंधका गंधगुणहै ऐसाकोईकहै नहीं ॥ तैसे आकाशतैं शब्दगुणका अभेदमानोंगेतो ॥ आकाशका शब्द गुण है या अर्थकी सिद्धि नहीं होवैगी ॥ यद्यपि शब्दका और आकाशका कल्पितभेदमानणतैं गुणगुणी भाव बनै ॥ तथापि जैसा यक्ष होवै है ॥ तैसाही ताकाबली होवै है ॥ यारीतिसैं कल्पितभेद कल्पित आकाशकीही सिद्धिकरैगा॥कल्पितभेद तैं वास्तवआकाशकी सिद्धिहोवे नहीं ॥ शंका ॥ गुण और गुणीका तादात्म्य संबंध होवै है ॥ भेदकूं सहारणहारा जोअभेद सो तादात्म्यकहियेहै ॥ सो भेद और अभेद दोनों वास्तव हैं यातैं वास्तवभेदतैं वास्तव आकाशकीसिद्धिबनैं है ॥ समाधान ॥ विरुद्धस्वभाववालेपदार्थ एकस्थानविषे रहैंनहीं ॥ जैसे उष्णस्पर्श और शीतस्पर्श एकवस्तुविषे रहैं नहीं ॥ याप्रकारकीयुक्तिसहित बुद्धिरूपनेत्रकरिकै समानसत्तावालेभेद और अभेद कहाँ दीखैं नहीं ॥ खोटाआग्रहकरिकै ॥ वास्तवभेदऔरअभेदकेअंगीकारकियेहुए पूर्वकह्याजो भेदपक्षविषे और अभेदपक्षविषे दोष सो बलात्कारसैंप्राप्तहोवैगा ॥ यातैं वास्तवभेद और अभेद एकवस्तुविषे बनैं नहीं ॥ किंवा ॥ जाभेदऔरअभेदसैं वादी गुणगुणी भाव सिद्धकरै है ताभेदऔरअभेदकास्वरूप विचारकियेतैं सिद्धहोवैनहीं ॥ काहेतैं शब्दादिकगुण और आकाशादिकगुणीका भेद और अभेद

जोवादी मानै है ॥ तासैं यह पूछा चाहिये ॥ सो भेद और अभेद शब्द और आकाशादिकवस्तुतैंअभिन्न है अथवा भिन्न है तहाँ प्रथम अभिन्नपक्ष बनैं नहीं ॥ काहेतैं जो भेद और अभेद वस्तुकास्वरूप अंगीकारकरोगेतो॥यह भिन्न है और यह अभिन्न है और यहदोवस्तु हैं याप्रकारकाकथन असंगतहोवैगा ॥ तात्पर्य यह ॥ जैसे घटघटकूंलेआवो पटपटकूंलेआवो या प्रकारका शब्द किसीस्थानविषे विद्वानोंनैं उच्चारणनहींकरीता काहेतैं यह शब्द पुनरुक्तिदूषणसहितहै ॥ एकवारउच्चारणकरे शब्दका फेरि उच्चारणकरणेकानाम पुनरुक्ति है ॥ तैसे भेद और अभेदकूं वस्तुकास्वरूपमानणेमैं यहफल वृक्षतैं भिन्न है यहघट मृत्तिकातैं अभिन्नहै और यह दोवस्तु हैं याकथनविषेभी पुनरुक्तिदोषहोवै हैं ॥ यातैं भेद और अभेद वस्तुकास्वरूप नहीं ॥ भेद और अभेद वस्तुतैंभिन्नहैं ॥ यहदूसरापक्षभी बनै नहीं ॥ काहेतैं भेदवालेकूं भिन्न कहैहैं ॥ भेद और अभेद वस्तुतैं भिन्न हैं ॥ याकहणेतैं वस्तुकेभेदवाले भेद अभेद हैं यहसिद्धहोवै है ॥ तहां दूसरे भेदविषे तीसरावस्तुकाभेद मानोंगे ॥ तीसरेविषे चौथाभेद ॥ या प्रकार भेदोंकीधारामानणेमैं अनवस्था दोष प्राप्त होवै है ॥ या दोषकी निवृत्तिवासतै और प्रथम भेद और अभेदकीसिद्धिवासतै दूसराभेद वस्तुकास्वरूप जभीकहोगे ॥ तभी यहतेरावचन बकबंधनकीन्याईं होवैगा ॥ जैसे बकपक्षीकेबांधणेकीइच्छावाला कोईपुरुष या प्रकारकाउपाय चित्तविषेकल्पनाकरै मछलीविषेहैचित्तएकाग्रजाका ऐसा जो आतपविषेस्थित बकपक्षी है ॥ ताकेमस्तकविषे माखण जाइकेमैंराखों ॥ सोमाखण सूर्यकीआतपकारिकैद्रवीभावहोइकै याबककेनेत्रविषे पडै ॥ तामाखणकेपडणतैं अंधहुयाबककूं मैंबांधों ॥ ऐसीचित्तविषेकल्पनाकरिकै तैसाहीउपायकरै ॥ जैसे तापुरुषकाउपाय व्यर्थ है ॥ काहेतैं बककेसमीपगयेविना ताकेमस्तकऊपरि माखण राख्याजावैनहीं ॥ जभीताकेसमीपगया ॥ तभी ताकालविषेहीं ताकाबंधन बनि सकैहै ॥ तैसे प्रथमभेद और अभेदकूं वस्तुतैंभिन्नमानिके॥तिनोंकेसिद्धिवासतैं कल्पनाकऱ्याजोदूसराभेद ॥ ताकूंवस्तुकास्वरूपमानणेमैं केवल व्यर्थप्रयासहै ॥ यातैं शब्दगुणकी किसीप्रकारतैंभी सिद्धिहोवैनहीं ॥ शब्दकीअसिद्धिहुए आकाशकी बंध्यापुत्रतैंविलक्षणता सिद्ध होवै नहीं ॥ जैसे आकाशकाशब्दगुण युक्तिसैंसिद्धनहींभया ॥ तैसे वायुकास्पर्शगुण और अग्निकारूपगुण और जलकारसगुण पृथिवीका

गंधगुण पूर्वकहीरीतिसैंसिद्धहोवैनहीं ॥ तिनस्पर्शादिकगुणोंकेअभावहोणेतैं वायु आदिकभूतोंकूंभी बंध्यापुत्रकीसमानता है ॥ किंवा ॥ अवकाशकूंजोदेवै सोआकाश ॥ स्पर्शकूंजोकरै सोवायु ॥ अन्नादिकोंके पाककूंजोकरै सोअग्नि ॥ तृषाकूंजोनिवारणकरै सोजल ॥ लोकों कूंजोधारणकर सोपृथिवी ॥ याप्रकारकेलक्षण आकाशादिकोंकेलोकप्रसिद्ध हैं ॥ तिनोंतैंभीआकाशादिकोंकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ काहेतैं तेआकाशादिकपंचभूत सर्वलोकोंकेतांई अवकाशादिकोंकूंदेवैं हैं ॥ अथवा जिसकिसप्राणीकेताईं देवैं हैं ॥ तहाँ प्रथमपक्षतो असंभवदोष करिकैयुक्त है ॥ काहेतैं वातपित्तादिधातुवोंकीन्यूनअधिकताकरिकै जडभावकूंप्राप्तभयेप्राणियोंकूं आकाश अवकाशकूंनहींकरै है ॥ और वायु स्पर्शकूंनहींकरै है ॥ और अग्नि पाकादिकोंकारणनहीं ॥ और जल तिनोंकेतृषाकी निवृत्तिनहींकरै हैं ॥ और पृथिवी धारणनहीं करै है ॥ याप्रकार अन्यधर्मोंविषेभी सर्वत्र अनुगमकाअभाव है और आकाशादिकभूत जिसकिसप्राणीकूं अवकाशादिक देवै हैं ॥ यह दूसरापक्ष मानणेतैं आकाशादिकभूतोंका मिथ्यापणाहीं ॥ सिद्धहोवै है ॥ काहेतैं जैसे स्वप्नकेपदार्थ जिसकालविषेप्रतीतहोवै हैं ॥ तिसीका लविषे हैं॥प्रतीतितैंपूर्वउत्तरकालविषे हैं नहीं॥यातैं मिथ्या हैं॥ तैसे आकाशादिकभूतभी जिसजिसपुरुषकारकै प्रतीतहोवै हैं॥तिसतिसपुरुषकेप्रतीतिकालविषे हैं॥प्रतीतितैंपूर्वउत्तरकालविषेहैनहीं॥यातैंमिथ्याहैं॥ जभीआकाशादिकपंचभूतहीअसत्यभये ॥ तभी तिनभूतोंकाकार्य प्रपंचसत्यकैसेहोवैगा किंतु सोप्रपंचभी असत्यहीहोवैगा ॥ दृष्टांत ॥ जैसे असत्यबंध्यापुत्रका पुत्रभी असत्यहीहोवै है ॥ सत्यहोवैन हींतैसेअसत्य पंचभूतोंकाकार्यप्रपंचभी सत्यहोवै नहीं ॥ यातैं आत्मातैंभिन्नपंचभूत ॥ औरताकाकार्यप्रपंच बंध्यापुत्रकीन्यांईं असत्य है यहसिद्धभया ॥ अब आकाशादिकप्रपंचकाकारणमायाकी असत्यरूपतानिरूपणकरैं हैं ॥ तहाँ कार्यप्रपंचकीमायातैंविना अनुपपत्तिरूप अर्थापत्तिप्रमाणतैं मायाकीसिद्धि है॥ अथवा श्रुतिप्रमाणतैं मायाकीसिद्धि है ॥ अथवा अनुभवप्रमाणतैं मायाकीसिद्धि है ॥ तहाँ प्रथमपक्ष बनैनहीं ॥ काहेतैं जैसे असत्यबंध्यापुत्रकी मायाकरिकैभीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ तैसे पूर्वकहीरीतिसैं प्रपंचकूं असत्यहोणेतैं ताप्रपंचकी मायाकरिकैभीउत्पत्तिसंभवैनहीं ॥ शंका ॥ लोकविषे असत्यकीभी मायातैंउत्पत्तिदेखी है ॥ जैसे भूमिविषेस्थित ॥

मायावीनट आपणीमायाकरिकै आकाशविषेस्थित असत्यआपणादूसरास्वरूप दिखावै है ॥ तैसे असत्यप्रपंचकीभी मायाकरिकेउत्पत्तिव
ने है ॥ समाधान ॥ तास्थलविषेभी निमित्तकारणरूपमायाकरिकै सत्यमायावीपुरुषकाही नानारूपकरिकैप्रादुर्भाव देखा है ॥ तात्पर्य
यह ॥ आकाशविषेस्थितस्वरूपका परिणामीउपादानकारण मायानहीं ॥ किंतु मायाकाविषयनटकाआत्माही तिसतिसस्वरूपक
रिकै प्रतीतहोवै है ॥ यातैं असत्यवस्तुकीउत्पत्तिविषे माया कहाँभीसमर्थनहींदेखी ॥ याकारणतैं माया परतंत्र है ॥ स्वतंत्रनहीं ॥
और माया श्रुतिप्रमाणकरिकैसिद्ध है ॥ यहदूसरापक्षभीबनैनहीं ॥ काहेतैं मायाकूं जगत्केउत्पत्तिस्थितिनाशकीकारणता यद्यपि श्रुति
वाक्योंनैंकही है ॥ तथापि सोजगत्कीकारणता ॥ मायाकूं है नहीं ॥माया आपहीअसत्य है ॥ असत्य किसीका कारणऔरकार्यहोवैन
हीं ॥ और मायातैं जगत्कीउत्पत्तिकूं बोधनकरणेहारीश्रुतिका अद्वितीयब्रह्मकेजनावणेमैं तात्पर्य है ॥ मायाकेबोधनमैं तात्पर्यहैनहीं ॥
काहेतैं फलवालेअर्थकूं श्रुति बोधन करै है ॥ सोफलकीप्राप्ति अद्वितीयआत्माकेज्ञानतैंहोवै है ॥ मायाकेज्ञानतैंहोवैनहीं ॥ और माया
अनुभवकरिकैसिद्ध है ॥ यहतीसरापक्षभीबनैनहीं ॥ काहेतैं जाकालविषे अविवेकीपुरुष आपणेसत्चित्आनंदस्वरूपकूंनहींअनुभवकरता॥
ताकालविषे यहपुरुष मायाकूं मैअज्ञानीहूं याप्रकारकेअपरोक्षज्ञानकाविषयमानैं है ॥ दृष्टांत ॥ जैसेसोयाहुआबालक आपणेदेहकूंराक्षसमा
निकरिकै भयकूंप्राप्तहोवै है ॥ तैसे आनंदस्वरूपआत्माभी सतचित्आपणेस्वरूपकूं विस्मरणकरिकै आत्मस्वरूपकेआवरणकरणेहारीमा
याकूं आपही कल्पनाकरै है तात्पर्य यह ॥ विचाररहितभ्रांतपुरुषकैअनुभवकरिकैतौ मायाकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ काहेतैं भ्रांतिज्ञान जोवस्तु
कीसिद्धिकरै ॥ तौ शुक्तिविषेरजतकी और रज्जुविषेसर्पकीभी सिद्धिहोणीचाहिये॥और विचारसहितअनुभवकेउत्पन्नहुये माया ठहरैनहीं ॥
जैसे सूर्यकेउदयहुये अंधकारठहरैनहीं ॥ यातैं माया अनुभवकरिकै सिद्धनहीं ॥ इसप्रकार किसीप्रमाणकरिकै मायासिद्धनहीं ॥ यातैं
मुझअद्वितीयआत्माविषे मायाहैनहीं ॥ शंका ॥ जोमाया चैतन्यआत्माविषेनहीं है॥तौ मैअज्ञानीहूं यहअनुभव किसकूंविषयकरै है ॥ समा
धान ॥ यहमाया मुझपरमात्मातैंभिन्ननहीं है ॥ किंतु मेराहीस्वरूप है ॥ जैसे बालककेशरीरतैं राक्षस भिन्ननहीं ॥ किंतु आपणेशरीरकूंहीं

राक्षसमानिकै बालक भयकूंप्राप्तहोवै है॥तात्पर्ययहहै ॥ यथार्थज्ञानकाअविषय आत्माकास्वरूपहीं माया अज्ञानअविद्या याप्रकारकेशब्दा
करिकै कहीता है॥ यातैंमाया स्वतंत्र नहीं ॥शंका॥माया अविद्या अज्ञान याप्रकारकेशब्द और ज्ञानके बलतैं चैतन्यआत्मातैंभिन्न स्वतंत्र
मायाकीसिद्धि काहेतैंनहींहोवै ॥ समाधान ॥ जोशब्द और ज्ञानकूं प्रमाणताहोवै ॥ तौ ताकेबलतैं मायाकीसिद्धिहोवै ॥ सो शब्दऔरज्ञान
प्रमाणरूप हैं नहीं॥काहेतैं वस्तुकेअसत्यहुयेभी शब्दऔरज्ञान होवैं है ॥ याकारणतैंही असत्यबंध्यापुत्राविषे बंध्यापुत्र है याप्रकारकाशब्दऔ
रज्ञानदेखीताहै ॥यातैं शब्दऔरज्ञानकूं आपणेविषयकेसिद्धकरणेकासामर्थ्य नहीं॥ तहाँ शब्दकातौ पूर्वनामकेविचारविषेखंडनकरिआयेहैं॥
अब ज्ञानस्वरूपबुद्धिकाखंडनकरैं हैं ॥ सोबुद्धि क्यास्वरूप है यहप्रथम विचारकियाचाहिये ॥ तात्पर्य यह ॥ सोबुद्धि बोधरूप है ॥ अ
थवा अबोधरूप है ॥ तहाँ अबोधरूपबुद्धि है यह दूसरापक्ष बनैं नहीं ॥ काहेतैं जैसे अबोधस्वरूपहोणेतैं ॥ घटादिक स्वतंत्र नहीं हैं ॥
किंतु परतंत्र हैं ॥ तैसे अबोधस्वरूपहोणेतैं बुद्धिकूंभी स्वतंत्रतासिद्धहोवै नहीं ॥ और बुद्धि बोधस्वरूप है याप्रथमपक्षविषेभी सोबोध
धर्मरूप है ॥ अथवा सर्वकाअधिष्ठानधर्मीस्वरूप है ॥ तहाँ धर्मस्वरूपबोध है ॥ याप्रथमपक्षविषे बोधकूं जोधर्मरूपतासिद्धहोवै ॥
तौ बोधस्वरूपबुद्धिसिद्धहोवै ॥ परंतु विचारकियेतैं बोधकूंही धर्मरूपता सिद्धहोवै नहीं ॥ और धर्मीस्वरूपबोध है ॥ यादूसरेपक्षविवि
षे बोधकूं अधिष्ठानमैंपरमात्मासैंअभिन्नहोणेतैं बोधरूपबुद्धि स्वतंत्रसिद्धहोवै नहीं ॥ याप्रकारकोनिर्णयकरणेवासतै प्रथम बोधके
स्वरूपकाविचारकऱ्याचाहिये ॥ बोधकेस्वरूपका निर्णयकरिकैही बोधस्वरूपबुद्धिकाभी निर्णयहोवैगा ॥ तहाँ प्रथम धर्मरूपबोध है
यापक्षविषे विचारकूंकरैं हैं ॥ सोबोध घटपटादिकविषयोंकाधर्म है ॥ अथवा ज्ञानकेकारणचक्षु आदिकइंद्रियोंकाधर्म है ॥ अथवा आत्माका
धर्म है ॥ अथवा बुद्धिकाधर्म है ॥ तहाँ विषयकाधर्मबोध है॥ यहप्रथमपक्ष बनैं नहीं॥काहेतैं जोबोध घटादिकविषयोंकाधर्महोवै ॥तौ घटा
दिकविषय चेतनहोणेचाहिये ॥ जोजो बोधवालाहोवै है ॥ सोसो चेतनहोवै है ॥ यहनियम है ॥ शंका ॥ घटादिकविषय चेतनस्वरूप हैं ॥
यह हम अंगीकारकरैं हैं ॥ समाधान ॥ घटादिकोंकूं जोचेतनस्वरूप मानोंगे ॥ तौ घटादिकोंकूं आपणेज्ञानमैंअन्यकीअपेक्षानहींहोवैगी ॥

काहेतैं चेतन स्वप्रकाशहोवै है ॥ जो आपणीसिद्धिविषे अन्यप्रकाशकीअपेक्षानकरै ॥ सो स्वप्रकाशकाहिये है ॥ और घटादिक आपणी सिद्धिविषे अन्यप्रकाशकी अपेक्षाकरै हैं ॥ यातैं घटादिकविषयकाधर्म बोधनहीं ॥ किंवा ॥ जो घटादिकविषयकाधर्म बोधमानो गेतौ ॥ भोक्ताऔरभोग्यकाविपरीतभाव प्राप्तहोवैगा ॥ तात्पर्ययह ॥ भोग्यरूपकरिकैप्रसिद्धघटादिकविषय भोक्तास्वरूपहोवैंगे ॥ और घटादिकविषयोंतैंभिन्नभोक्ता भोग्यस्वरूपहोवैगा ॥ काहेतैं बोधवाला भोक्ताहोवै॥यह भोक्ताकालक्षणहै ॥ और घटादिकविषयोंकूंभोक्ताकहणा अनुभवविरुद्ध है ॥ यातैं घटादिकविषयकाधर्म बोधनहीं ॥ और इंद्रियोंकाधर्मबोध है यहदूसरापक्षभी बनैंनहीं ॥ काहेतैं जो जाकाधर्महोवै है ॥ सो सदैव ताविषे प्रतीतहोवै है ॥ जैसे अग्निका उष्णस्पर्शधर्म है ॥ किसीकालविषे अग्नि उष्णस्पर्शतैंरहित प्रतीतहोवैनहीं ॥ तैसे जोबोध इंद्रियकाधर्महोवै ॥ तौ जहाँजहाँ इंद्रियहोवै ॥ तहाँतहाँ नियमसैं बोध प्रतीतहोणाचाहिये ॥ औरनियमसैं बोधप्रतीतहोवै नहीं ॥ किंतु कभीतौइंद्रियेकहुवे बोध प्रतीतहोवै है ॥ और कभी नहींभी प्रतीतहोवै है ॥ यातैं इंद्रियोंका धर्मबोधनहीं ॥ अब नियमकेअभावकूंनिरूपणकरै हैं ॥ शब्दकाविद्यमानहूयेभी बधिरपुरुषकाचक्षुइंद्रिय शब्दकूंजानैनहीं ॥ तैसे रूपकेविद्यमानहूयेभी अंधपुरुषकाश्रोत्रइंद्रिय रूपकूंजानैनहीं ॥ और जिसकालविषे मनसावधाननहीं ॥ ताकालविषे सन्मुखदेशविषेस्थित अथवा पृष्ठदेशविषेस्थित पुरुषकूं चक्षुइंद्रिय जानैनहीं ॥तैसे श्रोत्रादिकइंद्रियभी शब्दादिकविषयोंकूं जानैनहीं ॥ जो इंद्रियोंकाधर्मबोधहोवै ॥तौ जहाँ इंद्रियहोवैं॥तहाँ अवश्यबोध प्रतीतहुआचाहिये॥और सर्वत्रबोध प्रतीतहोवैनहीं ॥यातैं इंद्रियोंकाधर्म बोधनहीं॥किंतु बोधका उपकरणइंद्रियां है तात्पर्ययह ॥ अंतःकरणकीवृत्तिविषे आरूढचेतनकानामबोध है ॥ सोवृत्ति इंद्रियादिकोंतैंउत्पन्नहोवै है ॥ यातैं इंद्रियोंबोधकेउपकरण हैं उपकरणमानणेमैं पूर्वकहेदोषोंकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ किंवा ॥ इंद्रियोंविषेस्थितजोबोधहोवै ॥ तौ तिनइंद्रियोंकाधर्महोवै ॥ सोबोध किसीइंद्रियविषे प्रतीतहोवै नहीं ॥ किंतुघटादिकअर्थविषेस्थितहुआ बोध प्रतीतहोवै है ॥ तात्पर्ययह ॥ स्फुरणकानाम बोध है ॥ सोबोध घटस्फुरणहावे है औरपटस्फुरणहोवै है याप्रकारकेअनुभवतैं विषय विषेस्थितहुआ प्रतीतहोवे है ॥ किंवा॥परोक्षज्ञानकेविषयभूतइंद्रियोंविषे

बोधहै॥याविषे कोईप्रमाणभीनहीं ॥ शंका ॥ जैसे नैयायिकोंकेमतमैं आत्मविषेस्थितबोध घटादिकपदार्थोंकूंविषयकरैहै ॥ तैसे इंद्रयोंविषेस्थितबोधभी घटादिकोंकूंविषयकरैगा ॥ बोधका घटादिकविषयकेसाथि विषयतारूपसंबंधनैयायिकोंकीन्यांई यहाँभीबनै है ॥ समाधान ॥ जो अन्यवस्तुविषेस्थितहुआबोध अन्यवस्तुकूं प्रकाशकरताहोवे ॥ तो तादात्म्यसंबंधतैंघटविषेस्थितहुआबोध पटकूं काहेतैंनहींप्रकाशकरता ॥ जैसे इंद्रियोंविषेस्थितबोधका घटादिकविषयकेसाथि विषयतासंबंध तुमनैं अंगीकारकऱ्या है तैसे घटविषेस्थितबोधका पटादिकोंकेसाथि विषयतासंबंधभी किसीतैंनिवारणहोवैनहीं ॥ यातैं इंद्रियोंकाधर्म बोधनहीं ॥ किंवा ॥ जो चक्षुइंद्रियविषेस्थितबोधकरिकै घटादिकोंकाभान अंगीकारकरोगे ॥ तो तुह्मारेमतविषे चक्षुइंद्रियका जैसेघटकेसाथिसंयोगसंबंध है ॥ और घटविषेस्थितरूपकेसाथि संयुक्तसमवायसंबंध है तैसे घटविषेस्थितरसादिकोंकेसाथिभी चक्षुका संयुक्तसमवायसंबंध संभवै है ॥ यातैं जैसे घटकारूप चक्षुइंद्रियविषेस्थितबोधविषे प्रतीतहोवै है तैसे घटविषेस्थितरसादिक चक्षुइंद्रियविषेस्थितबोधविषे काहेतैंनहिप्रतीतहोते ॥ किंतु प्रतीतहोणेचाहयें ॥ और हमारेमतविषेतौयादोषकीप्राप्तिनहीं॥ काहेतैं रूपाकारवृत्तिविषेआरूढ चेतनरूपबोधका तादात्म्यरूपविषयतासंबंधरूपविषे है रसविषे है नहीं ॥ और चक्षुइंद्रियकरिकैरसादिकोंकीप्रतीति होवैनहीं ॥ याकहणेतैं यहसिद्धभया ॥ अन्यपदार्थविषेस्थितहुआबोध अन्यपदार्थकूं प्रकाशेनहीं ॥ जो ऐसाअंगीकार करोगे ॥ तौ घटविषेस्थितहुआबोध पटकाभीप्रकाशकरेगा ॥ याअतिप्रसंगदोषकी प्राप्तिहोवैगी ॥ और जोघटादिकोंविषे धर्मरूपतैंबोधरहै॥ तो घटादिकोंका बोधकरिकैप्रकाशबनैं ॥ परंतु घटादिकोंविषे धर्मरूपकरिकै बोधरहैनहीं ॥ जो घटादिकोंकाधर्मबोधहोवै तौ घटादिक भोक्ताहोणेचाहिये ॥ यह पूर्वकेहिआये हैं ॥ यातैं इंद्रियोंकाधर्मबोधनहीं ॥ और आत्माकाधर्मबोध है ॥ यह तीसरापक्षभी बनैंनहीं ॥ काहेतैं अन्यविषेस्थितहुआबोध अन्यकूंप्रकाशेनहीं ॥ यादोषकी यहाँभीप्राप्तिहोवै है ॥ यातैं मुझ आत्माविषे धर्मरूपतैं बोध रहैनहीं ॥शंका ॥ आत्माविषेस्थितहुआबोध घटादिकोंकूं मतप्रकाशकरै ॥ तौभी आत्माकेप्रकाशवासतैं आत्माकाधर्मबोधहम अंगीकारकरै हैं ॥ समाधान ॥ जो मुझ आत्माकाधर्मबोधहोवै तौधर्मतैंधर्मीकूंभिन्नहोणेतैं बोधतौंभिन्नमुझआत्माकूं जडता प्राप्तहोवैगी॥किंवा जैसे

घटादिकनकूं बोध प्रकाशेहै॥तैसे मुझ आत्माकूं बोध प्रकाशैनहीं॥काहेतैं घटादिकपदार्थ बोधविषे कल्पित है ॥यातैं आधिष्ठानस्वरूपबोध तिनोंकूं प्रकाशे है ॥ तात्पर्ययह ॥ घटउपहितचेतनमैं घट कल्पितहै॥जाकालविषे अंतःकरणकीवृत्ति नेत्रद्वारानिकसिकै घटाकारहोवै है॥ ताकालविषे घटउपहितचेतनकेसाथि वृत्तिउपहितचेतनरूपबोधका अभेदहोवैहै ॥ काहेतैं चेतनमैं परमार्थसैं तौ भेद हैनहीं ॥ किंतु उपाधिकरिकैभेद है तेउपाधियौं जबपर्यंत भिन्नभिन्नदेशविषेस्थितहोवैं हैं॥तबपर्यंत चेतनकाभेदकरैहैं॥और जभी उपाधियाँएकदेशविषेस्थितहोवैहैं ॥ तभी ताउपाधिवालेचेतनोंका भेदकरैनहीं ॥ किंतु तहाँ चेतनोंकाअभेदहोवै है ॥ जैसे मठतैंभिन्नदेशविषे जभी घट रहै ॥ तभीतो घटाकाशका और मठाकाशका भेदहोवै है ॥ और जभी मठकेभीतर घटकूंलेआवै ॥ तभीमठाकाशकेसाथि घटाकाशका अभेदहोवैहै ॥ यारीतिसैं घटउपहितचेतनकेसाथि अभेदभावकूंप्राप्तभया जोघटाकार वृत्तिउपहित चेतनरूपबोध ॥ ताबोधविषे घटादिककल्पितहै ताक ल्पित घटादिकनकूं अधिष्ठानस्वरूपबोध प्रकाशेहै तिसप्रकार मुझआत्माका कोई अधिष्ठानहैनहीं ॥ किंतु मैंही आपणीमहिमाविषेस्थित हुआ सर्वअनात्म वस्तुकाअधिष्ठानहूं ॥ औरजोबोधकूं मुझआत्माकाअधिष्ठान मानोंगे ॥ तौ सोबोधही आत्मासिद्धहोवैगा ॥ काहेतैं सर्वकाअधिष्ठान आत्माहीहोवै है ॥ और मुझआत्मातैंभिन्नबोधकूं जोप्रकाशस्वरूपमानोंगे ॥ तौ ताबोधकरिकै मुझआत्माकाभान होवैन हीं ॥ जैसे पुत्रकेपंडितहुयेभी पिता पंडितहोवे नहीं ॥ यातैं आत्माकाधर्मबोधनहीं यहसिद्धभया ॥ और बुद्धिकाधर्मबोधहै यहचतुर्थ पक्षभी बनैनहीं ॥ काहेतैं सोबुद्धि बोधतैंभिन्ननहीं ॥ बाधेकसोथ तादात्म्यभावकूंप्राप्तहुईबुद्धि ज्ञानपदवीकूं प्राप्तहोवैहै ॥ अंतःकरणका परिणामरूपबुद्धिकूं स्वत ज्ञानरूपता है नहीं ॥ जभी बोध बुद्धिकाधर्ममानोंगे ॥ तभी बोधतैंभिन्नहुईबुद्धिज्ञानपदवीसैं रहित होवैगी ॥ किंवा ॥ जोबुद्धिकाधर्म बोधहोवै ॥ तौ बोधतैंभिन्नहुईबुद्धि क्यास्वरूप है ॥ बोधतैंभिन्नहोणैतैं बोधस्वरूपतौ होवैनहीं किंतु अबोध स्वरूप बुद्धिअंगीकारकरनीहोवेगी ॥ और सोअबोधस्वरूपबुद्धि घटादिकोंकीन्यांई मुझआत्माविषेकल्पितहोणेतैं मुझआत्माके अधी नहै स्वतंत्रनहीं॥ यातैं बुद्धिकाधर्मभी बोधनहीं यहसिद्धभया ॥ अब बोधकूंअनंतहोणेंत बुद्धिभी बोधस्वरूप है याप्रकारकी वादीकेशं

काकीनिवृत्तिवासतै और बोधकूंएकआत्मस्वरूताकोसिद्धिवासतै बोधकेस्वरूपविषे अन्यविचारकूंकरैं हैं ॥ सोबोध जगत् विषे एक है ॥ अथवा अनेकबोध हैं ॥ तहाँएकबोध है यहप्रथमपक्ष बनैनहीं ॥ काहेतैं जोएकबोध होवैतो ॥ संस्कारोंकाभेद और प्रमाणोंकाभेद और प्रमाज्ञान औरस्मृतज्ञानऔरअप्रमाज्ञान इनोंका परस्परभेद न होणाचाहिये ॥ तात्पर्य यह ॥ नाशअवस्थाकूंप्राप्तहुवेज्ञानतैं संस्कार उत्पन्नहोवे है ॥ तासंस्कारोंकाभेद ज्ञानकेभेदतैंविनाबनैनहीं ॥ और प्रत्यक्षअनुमान उपमान शब्द अर्थापत्तिअनुपलब्धि यहषट प्रमाणोंकाभेदभी प्रमाज्ञानकेभेदतैंविना बनैनहीं ॥ यातैं एकबोधनहीं यद्यपि आगे बोधकीएकताहीसिद्धकरणी है ॥ तथापि ताएकता कीदृढतावासतै एकताखंडनकाविकल्प प्रथमकऱ्या है ॥ और बोधअनेक हैं यादूसरेपक्षविषेभी यहविचार कऱ्याचाहिये ॥ जैसे स्वरूपतैं घटपटकाभेद है ॥ तैसे बोधोंका परस्पर स्वरूपतैंभेद है ॥ अथवा जैसे घटाकाशऔर मठाकाशका महाकाशतैं घटमठरूपउपाधिकरिकै भेद है ॥ तैसे उपाधिकरिकै बोधोंकापरस्परभेद है ॥ तहाँ स्वरूपतैंबोधोंकाभेद है यहप्रथमपक्ष बनैनहीं ॥ काहेतैं बोधस्वरूपता संपूर्णबो धोंविषे समान है ॥ यातैं एकबोधविषे दूसरेबोधकाभेद रहैनहीं ॥ जैसे घटविषे घटकाभेदर है नहीं यातैं स्वरूपतैंबोधकाभेदनहीं ॥ और उपाधिकेभेदतैं बोधोंकाभेद है ॥ यहदूसरा पक्ष हमारेकूं अंगीकार है ॥ काहेतैं जसे घटमठरूपउपाधियोंकेभेदकरिकै आकाश नानाहो वैनहीं ॥ किंतु घटमठरूपउपाधिविषेस्थितभेदका आकाशविषे आरोपणहोवै है तैसे अबोधस्वरूपअंतःकरणकीवृत्तिकेभेदहुयेभी सोभेद बोधविषे परमार्थतैं है नहीं ॥ किंतु वृत्तिरूपउपाधिविषेस्थितभेदका बोधविषे आरोपणहोवै है ॥ ताआरोपितभेदकरिकेही प्रमाज्ञान अप्रमाज्ञान स्मृतिज्ञान याप्रकारका भेदव्यवहारहोय है ॥ और बोधकेउपाधिवृत्तिरूपज्ञानकेभेदतैं संस्कारोंकाभेद औरप्रमाणोंकाभेदभी बनैं हैं ॥ और जैसे कल्पितमृगतृष्णाकेजलकरिकै पृथिवी गीलीहोवैनहीं और जैसे कल्पितसर्पकरिके रज्जु विषवालीहोवैनहीं ॥ तैसे आ रोपितभेदकरिकै बोधविषे नानापणासिद्धहोवनहा ॥ किंवा ॥ बोधोंका जोपरस्परवास्तवभेदमानैं हैं ॥ तासैंयहपूछै हैं ॥ तेबोध परस्परअ पेक्षावाले हैं ॥ अथवा परस्परअपेक्षातैंरहित हैं ॥ तहाँ अंत्यपक्षमानणेमैं बोधोंकाभेद सिद्धहोवैनहीं ॥ काहेतैं अन्यबोधकीअपेक्षातैंरहित

एकबोधकरिकैही सर्वव्यवहारकीसिद्धि बनिसकैहै ॥ अनंतबोधमानणेका कछुप्रयोजननहीं ॥ और बोध पररूपरअपेक्षावाले हैं ॥ यह प्रथम पक्षभी बनैं नहीं ॥ काहेतैं जो बोध आपणेप्रकाशवासतै दूसरेबोधकीअपेक्षा करताहोवै ॥ तौ अबोधस्वरूपहोवैगा ॥ जैसे घट आपणेप्रकाशवासतै बोधकीअपेक्षाकरैहै ॥ यातैं अबोधस्वरूप है ॥ याकहणेतैं बोध एकहै यहसिद्धभया ॥ अब बोधकेस्वप्रकाशताकीसिद्धिवासतेअन्यविचारकूंकरैहैं ॥ सो बोध अज्ञातहुआ सर्वव्यवहारकाकारणहै॥अथवा ज्ञातहुआ॥तहाँ अज्ञातहुआबोध व्यवहारकाकारणहै॥यहप्रथमपक्ष बनैनहीं॥काहेतैं ज्ञानकीविषयताकेअभावकानाम अज्ञाततताहै ॥ सो अज्ञातता दोप्रकारकीहोवैहै ॥ एकतौ स्वप्रकाशतारूप ॥ और दूसरी जडत्वधर्मावाशिष्ट चेतनकेसंबंधकाअभावरूप ॥ तहाँ बोधविषे स्वयंप्रकाशतारूप प्रथमअज्ञाततताकूं सिद्धांतरूपता आगेकहैंगे ॥ अब दूसरी अज्ञाततताकूं खंडनकरैहैं ॥ जैसे घट अज्ञातहुआभी जलकीआधारतारूपकार्यका कारण है तैसे यहबोधअज्ञातहुआ किसीकार्यकाकारणनहीं ॥ और जोबोधकूं अज्ञातमानौंगे ॥ तौ बोधभी जडहोणेतैं बोधसैंरहितहुआ घटादिकोंकैसमान होवैगा ॥ और बोध ज्ञातहुआ व्यवहारकाकारण है ॥ यहदूसरापक्षभी बनैनहीं ॥ काहेतैं ज्ञानकाविषयजोवस्तु सोज्ञातकहियेहै जो बोधकूंविषेयकरणेहारा दूसरोबोधमानौंगे ॥ तौ बोधकूं घटादिकोंकीन्यांई अबोधरूपता एकदूषण प्राप्तहोवैहै ॥ और दूसरा अनवस्थारूपदूषण प्राप्तहोवैहै ॥ काहेतैं प्रथमबोध दूसरेबोधकाविषयहुआ व्यवहारकासाधकहै सोदूसरा बोध जो अज्ञातहुआ प्रथमबोधकीसिद्धिकरैगा ॥ तो अज्ञातपक्षविषे जितनेपूर्वदूषणकहैहैं ॥ तिनदूषणोंकीप्राप्तिहोवैगी ॥ यातैं सोदूसराबोधभी तीसरेबोधकाविषयहुआही प्रथमबोधकीसिद्धिकरैगा ॥ सोतीसराबोध चतुर्थबोधकाविषयहुआ दूसरेबोधकीसिद्धिकरैगा ॥ या प्रकार बोधोंकीधारामानणेविषे अनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवैहै ॥ शंका ॥ बोधकूंसाधकरणेहारा कोईबोधहैनहीं ॥ यातैं अनवस्थादोषहोवैनहीं ॥ समाधान ॥ बोधकासाधक जो बोधनहींमानौंगे ॥ तौ जगत्विषे अंधताकीप्राप्तिहोवैगी ॥ तात्पर्य यह ॥ किसीभीवस्तुकीसिद्धिनहींहोवैगी ॥ यातैं यहबोध बोधतैंरहितनहीं ॥ शंका ॥ बोधअज्ञातहै यापक्षविषेभी दोष पूर्वआपनैंकहे और ज्ञातपक्षविषेभी दोष पूर्वआपनेकहे ॥ यातैं तिनदोषोंकीनिवृत्तिवासतै बोधकूं स्वयंप्रकाशता हम ॥ ३० ॥

अंगीकारकरैं हैं ॥ समाधान ॥ विचारकियेहुवे सोअद्वितियबोध स्वयंप्रकाश है ॥ याप्रकारकाअर्थ जोतेरीबुद्धिविषे आरूढहुआ है ॥ सो हमारेकूंभीइष्टहै ॥ बोधकीस्वयंप्रकाशता हमभी अंगीकारकरैं हैं ॥शंका॥ बोधकूं स्वयंप्रकाशतामानणेविषे तुमारेकूं किसलाभकीप्राप्तिहोवैहै समाधान ॥ सोस्वयंप्रकाशबोधस्वरूप मैंआत्माहूं॥मेरेतैंभिन्न बोधनहीं तात्पर्ययह ॥ जोबोधमुझआत्मातैंभिन्नहोवै ॥ तौ घटादिकोंकीन्यांई मैंआत्माका दृश्यहोवोंगा ॥ और दृश्यवस्तु स्वयंप्रकाशहोवैनहीं ॥ किंतु अन्यकरिकैप्रकाश्यहोवैहै ॥ और बोधकूं अन्यकरिकैप्रकाशमानणेमें पूर्वकहे अनवस्थादिकदूषण प्राप्तहोवैहैं॥यातैं सोबोध मुझआत्मातैंअभिन्नहै ॥बोधकूं आत्मस्वरूपताहुवे भूमाआनंदकीप्राप्तिहीलाभहै ॥ शंका ॥ भूमाआनंदकेप्राप्तहुयेभी ताकेरक्षाकीचिंता तुमारेकूं प्राप्तहोवैगी ॥ समाधान ॥ अनित्यवस्तुकीरक्षाहोवैहै ॥ नित्यवस्तुकीरक्षाहोवैनहीं ॥ औरसत्यस्वरूपमैंआत्माकूं अनित्यताहैनहीं ॥ यातैं मुझ आत्मासैंअभिन्न भूमाआनंदकूंभीअनित्यतासंभवैनहीं ॥ भूमानाम व्यापककाहै अब आनंदस्वरूपआत्माविषे अनित्यताकेअभावकीसिद्धिवासतै तीनपरिच्छेदोंकेअभावकूं निरूपणकरैं हैं ॥ जोवस्तुआदिकालविषे औरअंतकालविषे नहींहोवै ॥ सोवस्तु अनित्यकहियेहै ॥ और मैंआनंदस्वरूपआत्मा तीनकालविषे विद्यमानहूं॥यातैं आनंदस्वरूपमैंआत्मा अनित्यनहींहूं॥किंतु नित्यहूं ॥औरमेरेतैंभिन्न कोईवस्तुहैनहीं ॥ किंतु मैंहीसर्वत्रहूं॥ याकहणेतैंवस्तुपरिच्छेदकाअभावआत्माविषेदिखाया ॥ और जोवस्तु किसीएककारणविषेरहैहै॥ अथवाकिसीएकदेशविषेरहैहै॥अथवा किसीएककालविषेरहैहै ॥ सोवस्तुतिसआपणेआधारतैं और जगत् तैंभिन्नहोवैहै॥ताभेदकरिकैतिसवस्तुकूं आनित्यताप्राप्तहोवैहै ॥ काहेतैंजोजो भेदवालावस्तुहोवैहै ॥सोसो अनित्यहोवैहै॥याप्रकारका नियमव्यासभगवान्नैं सूत्रविषेकह्याहै ॥ जैसे घटपटादिकपदार्थ भेदवालेहैं ॥ यातैं अनित्यहैं और घटपटादिकनकीन्यांई मैं आनंदस्वरूपआत्मा किसीकारणविषे अथवा किसीदेशकालविषे रहतानहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ संपूर्णदेशकालादिककल्पितवस्तुका मैं आनंदस्वरूपआत्मा आधारहूं मुझआत्माकाआधार कोईकल्पितवस्तुहोवैनहीं ॥ यातैं मैं आनंदस्वरूपआत्माकूं किसीप्रकारभी आनित्यतानहीं ॥ याकहणेतैं आत्माविषे देशपरिच्छेदऔरकालपरिच्छेदकाअभाव दिखाया ॥ किंवा ॥ देश औरकाल औरतिसदेशकालकरिकै

उत्पन्नभयाजोवस्तु औरतिसदेशकालविषेस्थित जोसत्यअसत्यस्वरूप जडवस्तु ॥ यहसंपूर्ण मुझ अधिष्ठानस्वरूपआत्माविषे रहे हैं ॥ और मैंसर्वकाअधिष्ठानआत्मा किसीअनात्मवस्तुविषे रहतानहीं ॥ किंतु आपणेमहिमाविषे मैंस्थित हूं ॥ अब नानाप्रकारके प्रपंचका अद्वितीयआत्मा आधारहै याअर्थकूं अनेकदृष्टांतोंकारिकै स्पष्टकरैं हैं ॥ जैसे मालाकेमणिके सूत्रविषेरहैहैं ॥ तैसे यहस्थूलप्रपंच मुझसूत्र आत्माविषेरहैहै ॥ और जैसे पृथिवीकेसूक्ष्मजकणिकेहैं ॥ ते पृथिवीविषे रहे हैं ॥ तैसे यहसूक्ष्मप्रपंच कारणस्वरूपमुझईश्वरविषे रहैहै॥और जैसे गंगादिकनदियोंकेजल आपणेनामऔररूपकापरित्यागकरिकै समुद्रविषे स्थितहोवै हैं ॥ तैसे यह अव्याकृतरूपकारण मुझब्रह्मविषे स्थितहोवै है और जैसे अग्निविषे धूमरूपअंधकार रहै है ॥ तैसे सृष्टिकालविषे आनित्यजडदुःखरूप यह प्रपंच सत्‌चित्‌आनंदस्वरूप मैं आत्माविषे रहै है ॥ आर जैसे वायुके आधार गंध और तृण रहै हैं ॥ तैसे यह प्रपंच स्थितिकालविषे मुझ आत्माविषे रहै है यहाँ गंध करिकैगंधकाआधार पृथिवीकेसूक्ष्मभाग लेणे ॥ और जैसे शरदऋतुविषे आकाशमेलयभावकूं प्राप्तहुये मेघ रहैं हैं ॥ तैसे प्रलयकालविषे यह प्रपंच मुझपरमात्माविषे रहै है ॥ इसप्रकारआत्माकू तत्पदार्थईश्वरस्वरूपता करिक जगत्‌की आधारता कही ॥ अब त्वंपदार्थजी वरूपताकरिकै कर्तृत्वभोक्तृत्वादिकप्रपंचकीआधारता आत्माविषे तीनदृष्टांतोकरिकैदिखावैं हैं ॥ जैसे सुहृदपुरुषविषे दुष्टता कल्पित हैं ॥ और जैसे दुष्टपुरुषविषे साधुताकल्पित है ॥ और जसे बालककेशरीरविषेराक्षसभाव कल्पित है ॥ इसप्रकार मुझआत्माविषे संपूर्णजगत् कल्पितहै ॥ कैसामैंआत्माहूं ॥ स्वयंप्रकाशहूं आर सुखस्वरूपहू ॥ और मुझआत्माविषे लेशमात्रभीदुःख नहीं ॥ शंका ॥ हे भगवन् ! संपूर्णजगत्‌काआत्मा ॥ आपहो ॥ ताजगत्‌विषेविद्यमानदुःखकेसाथि आपकासंबंध काहेतैंनहीं ॥ समाधान ॥ आद्वितीयआत्मस्वरूपकेविचाराकियतें याजगत्‌विषे कभीभीदुःखहैनहीं ॥ काहेतें जोजोवस्तु उत्पन्नहोवै है ॥ सोसोजड़होवैहै ॥ औरदुःखकीउत्पत्ति सर्वप्राणियोंकूं प्रसिद्धहै ॥ यातैं दुःखभीजडहै ॥ और मुझचेतनआत्माविषे जडवस्तु परमार्थतहोवैनहीं ॥ यातैं जडदुःखस्वरूप मैं नहीं ॥ शंका ॥ जैसे दुःख उत्पन्नहोवैहै यातैंजडहै ॥ तैसे सुखभी उत्पन्नहोवै है ॥ यातैं सुखभीजडहै ॥ और जडवस्तु परमार्थतैंहोवैनहीं यहपूर्व

आपनैंकह्याहै ॥ यातैं सुखस्वरूपताभी आत्माकूं नहा होवैगी ॥ समाधान ॥ जैसे दुःख उत्पन्नहोवै है ॥ तैसे आत्मस्वरूपहोणेतैं सुख कीउत्पत्ति विवेकीपुरुषोंने अंगीकारनहींकरी ॥ किंतु सुखकूंनित्यमानैं हैं ॥ औरमूढपुरुषतो आनंदस्वरूपआत्माकेप्रतिबिंबयुक्त अंतःकरणकीवृत्तिकूं सुखरूपमानिकै ताका उत्पत्ति और नाश अंगीकारकरैं है ॥ शंका ॥ सो अंतःकरणकीवृत्तिही मुख्यसुखरूप काहेतैंन हीं होवै ॥ समाधान ॥ अंतःकवणकीवृत्तिकू सुखरूपमानणा ॥ श्रुति और युक्तिसैं विरुद्ध है ॥ काहेतें श्रुतितो व्यापक आत्माकूंहीं ॥ सुखरूपकहै है ॥ और परिच्छिन्नवस्तुकीसुखरूताकू खंडनकरैं है ॥ और अनुमानरूपयुक्तिसैंभी वृत्तिकूं सुखरूपतासिद्धहोवैनहीं ॥ काहेतें जोजो उत्पत्तिवालाहोवैहै सो सुखस्वरूपहोवैनहीं ॥ जैसे दुःख उत्पत्तिवाला है ॥ यातैं सुखरूप नहीं ॥ तैसे अंःतकरणकीवृत्तिभी प्रसिद्ध उत्पन्नहोवै है ॥ यातैं ॥ सुखरूस्वपनहीं ॥ अब आत्मसाक्षात्कारकाकारण जो वैराग्य है ॥ ताकीउत्पत्तिवासतैं विषयजन्यसुखविषे ॥ दुःखरूपताकूं निरूपणकरैहैं ॥ विषयतैंउत्पन्नभयाजोफल सो सुखरूप है अथवा ताफलकेसाधनाविषयहीं सुखरूप हैं ॥ तहाँ प्रथम पक्ष बननहा ॥ काहेतें विषयतैंउत्पन्नभयाजोफल सो तीनकालविषे सुखरूप नहीं ॥ किंतु दुःखरूप है ॥ शंका ॥ जो विषयजन्यफल सुख रूपनहोवै ॥ तो विषयतैंहमारेकूं सुखउत्पन्नभया है ॥ यहलोकोंकाकथन असंगतहोवैगा ॥ और सर्वलोक ऐसाकथनकरैं हैं यातैं विषय जन्यफलही सुखरूप है ॥ समाधान ॥ विषयतैं सुखरूपफल उत्पन्नहोवै नहीं ॥ किंतु दुःखरूपफल उत्पन्नहोवैहै ॥ तादुःखविषे पूर्वपूर्वभ्रम जन्यसंस्कारोतैं ॥ पुरुषोंकूं सुखबुद्धिहोवैहै ॥ सोदुःखविषेसुखबुद्धि भ्रमरूप है ॥ काहेतें अन्यवस्तुविषे अन्यबुद्धिकानाम भ्रांतिहै ॥ यातैं विषयजन्यफल सुखरूपनहीं ॥ और विषहीसुखरूपहै ॥ यादूसरेपक्षतेखंडनवासतैं प्रथम स्त्रीरूपविषयविषे सुखरूपताखंडनकरैं हैं ॥ ताकेखंडनहुवे सर्वविषयोंमें सुखरूपताकाखंडन होवै है ॥ जैसे संपूर्णमल्लोंविषे जो प्रधानमल्लहोवै ॥ ताकेजयकियेहुए संपूर्ण मल्लोतैंजय होवैहै ॥ तैसे संपूर्णलोकोंने सर्वविषयनतैं अधिकमान्याहुआ जोस्त्रीरूपविषय ॥ ताविषे जभी सुखरूपताकाखंडनभया ॥ तभी सर्व विषयनमैं सुखरूपताकाखंडन सिद्धहोवै है ॥ यातैं प्रथम स्त्रीरूपविषयाविषेहीं सुखरूप ताकाअभाव कह्याचाहिये ॥ जैसे मृतकमंडूक

फूलिके उदरतैंफाटिजावै ॥ सो दुर्गंधीवालाहोवै है ॥ और अधिकमांसवाला होवै है ॥ और रुधिरविष्ठा मूत्र करिकै युक्त होवै है ॥ और कोमलस्पर्शवालाहोवै है ॥ और स्निग्धहोवै है ॥ ऐसे दुर्गंधमंडूकचर्मविषे और स्त्रीकीयोनिविषेविचार कियेतैं किंचित्मात्रभी भेद नहीं ॥ किंतुदोनोंसमान हैं ॥ तथापि कामीपुरुषोंकूं जो दुर्गंधमंडूकचर्मतैं स्त्रीकीयोनिविषेसुंदरताप्रतीतहोवै है ॥ सोकेवल भ्रांति करिकैप्रतीतहोवै है ॥ और रोमोंतैंरहितस्त्रीकेदोनों स्तनविषे और पुरुषके कटीभागकेनीचे स्थितमांसापिंडोंविषे विचारकियेतैंकिंचित् मात्रभी भेद नहीं ॥ तथापि अविवेकीकामीपुरुषोंकूं जो भेद प्रतीत होवै है ॥ सो केवल भ्रांतिकरिकैप्रतीतहोवै है ॥ और रोमोंतैंरहित पुरुषोंकेमुखविषे और स्त्रियोंकेमुखविषे विचारकियेतैं किंचित्मात्रभी भेद नहीं ॥ तथापिअविवेकीकामीपुरुषोंकूं जो भेद प्रतीत होवै है ॥ सो केवल भ्रांतिकरिकैप्रतीतहोवै है ॥ और नपुंसकोंका और स्त्रियोंकाभी विचारकियेतैं किंचित्मात्रभी भेदनहीं ॥ भ्रांतिकरिके अविवेकी पुरुषोंकूं भेदप्रतीतहोवैहै ॥ तैसे पुरुषोंकेशरीरविषे औरस्त्रियोंकेशरीरविषे विचारकियेतैं किंचित्मात्रभी भेदनहींहै ॥शंका॥ पुरुषशरीरविषे औरस्त्रीशरीरविषे प्रसिद्धभेद लोकोंकूं प्रतीतहोवैहै॥तिनदोनोंशरीरकूंअभेदकहणा अत्यंतविरुद्ध है ॥ समाधान ॥ पुरुषशरीरविषेऔरस्त्री शरीरविषे तत्वोंकेभेदतेभेदहै ॥ अथवा आत्माकेभेदतेभेदहै ॥ तहाँ तत्वोंकेभेदतैंभेदहै यहप्रथमपक्ष बनैं नहीं ॥ काहेतैं पंचकर्मेंद्रिय पंच ज्ञानइंद्रिय पंचभूत पंचप्राण चारिअंतःकरण याचौवीसतत्वोंकासमुदायही स्त्रीपुरुषादिकप्राणीमात्रका शरीर है ॥ यहवार्त्ता पूर्वदेहकेखंडन विषे कहिआये हैं यातैं तत्वोंकेभेदतैं स्त्रीपुरुषादिकशरीरोंविषे भेद सिद्धहोवेनहीं॥और आत्माकेभेदतैंभेदहै ॥ यह दूसरापक्षभी बनै नहीं ॥ काहेतैं स्त्रीपुरुषादिकसंपूर्णप्राणीमात्रकेहृदयदेशविषे सत्चित्आनंदस्वरूपमैं आत्मा स्थितहूं ॥ कैसामैं आत्माहूं अहं याज्ञानकाविषयहूं ॥ और अहं याशब्दकालक्ष्यहूं॥और सर्वत्र व्यापकहूं॥ और आधारतैंरहितकूं ॥ इसप्रकार स्त्रीशरीरविषे और पुरुषशरीरविषे चौवीसतत्वोंकी तथा आत्माकी समानताहुवेभी कामरूपपिशाचकेवशहुवे पुरुषऔरस्त्रियां यहस्त्री है यहपुरुष है याप्रकारकेभेदकूंकल्पनाकरिकै मुखतैंउत्पन्नहुईलालाओंकूं परस्पर पानकरैंहैं॥और स्वेदादिकमलोंकूं ग्रहणकरैंहैं॥और जैसे मेष परस्पर शरीरकाताडनकरैं हैं ॥और जैसे महादेवकी

प्रसन्नतावासतैं पिचाच परस्पर शरीरकाताडनकरैं हैं॥तैसे स्त्रीऔरपुरुष कामकरिकउन्मत्तहुवे परस्पर शरीरकाताडनकरैं हैं॥ याप्रकारका व्यापारकरतेहुवे तिनोंकेअंगोंतैं वीर्यरूपहोइकै अतिहास्ययुक्तपुरुषकीन्यांई काम निकसै है॥और कभी नहींभीनिकसैहै॥तात्पर्ययह ॥ जैसे महाराजाकीसभाविषे स्थितपुरुषोंकूं किसीनिमित्तसैं अतिहास्यकावेग उत्पन्नहोवै है॥जभी ताहास्यकेवेगकूं नहींसहारिसकैं हैं॥तभी सभातैं बाहीरनिकासिजावैं हैं॥और जभी सहारिसकैं हैं॥तभीसभाविषेहीस्थितहोवैं हैं॥बाहरिनहींनिकसैं हैं॥तैसे शरीरकेभींतरिस्थित जोदेवतावोंकी सभा॥ताकेमध्यविषेस्थितहुआकाम जैसे महादेवकेविनोदवासतैं नाटककूंरचाथा॥ तैसे नाटककूंरचै हैं ॥ तानाटककरिकै विपरीतआचरणकूं प्राप्तभये स्त्रीऔरपुरुषोंकूंदेखिकरिकै हास्यकेवेगकूं नसहारासताहुआकाम वीर्यरूपहोइकेबाहरिनिकसै है ॥ याकहणेतैं यहसिद्धभया ॥ मुखकेलालादिकोंकूं अधरामृतरूपकरिकै कथनकरताहुआ कामशास्त्रकाभी पुरुषोंकेवैराग्यउत्पत्तिविषेहीं तात्पर्य है ॥ जैसे लोकविषे आपणेविपरीतआचारणकूंश्रवणकरिकै ताविपरीतआचरणतैं पुरुष निवृत्तहोवैं हैं ॥ तैसेकामीपुरुषकेविपरीतआचरणकाकथनरूपउपदेशस्यकूं करताहुआकामशास्त्रकाभी ताविपरीतआचारतैंनिवृत्तिविषेही परमतात्पर्य है॥तात्विपरीतआचारणविषे तात्पर्यनहीं ॥शंका ॥ तामैथुनधर्मतैं यद्यपि सुखकीप्राप्तिरूपपुरुषार्थ होवैनहीं॥तथापि कामकीशांतिरूपदुःखकीनिवृत्तिस्वरूपपुरुषार्थताकरिकैप्राप्तहोवै हैं ॥ समाधान ॥ मैथुनधर्मतैं दुःखकीनिवृत्तिभी होवैनहीं॥उलटा क्लेशकीप्राप्तिहोवै है॥जैसे पिशाचादिरूपग्रहकरिकेयुक्तपुरुषताग्रहकेबलतैं विपरीताचित्तहुवे परस्पर सन्मुखहोईकै अथवाविमुखहोइके आपणेकटीभागोंका ताडनकरैं हैं ॥ तातैं अतिक्लेशकूंप्राप्तहोइकरिकै पिशाचरूपग्रहतैं नहींछूटेहुवेभी तेपुरुषमुखीपुरुषकीन्यांईपूर्वव्यापारतैंरहितहुवे स्थितहोवैं हैं ॥ तैसे कामरूपग्रहतैं नहींछूटेहुवेभीकामीस्त्रीपुरुष पूर्वव्यापारतैंनिवृत्तहुवेसुखीकी न्यांईप्रतीत होवै है यातैं कामकी निवृत्तिरूपदुःखकीनिवृत्तिभी मैथुनधर्मतैंहोवैनहीं॥ और जैसे घृतकाष्ठादिकोंकरिकै अग्निकीशांतिहोवैन हीं॥किंतुउलटा वृद्धिहोवै है ॥ तैसे मैथुनधर्मकरिकैकभीभीकामकीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ उलटा ताकरिकै कामकी वृद्धिहोवै है ॥किंवा॥प्रथम जावस्तुविषे पुरुषकी इच्छा होवै है ॥ तावस्तुविषे पश्चात् तिसपुरुषकीप्रवृत्तिहोवै है ॥ यह नियम है यातैं इच्छा कारण है ॥ और प्रवृत्ति

ताकाकार्य है ॥ और कारणतैंविना कार्यहोवैनहीं ॥ यातैं कार्यत कारणकाअनुमान होवै है ॥ जैसे नदीकेजलकीवृद्धितैं वर्षाकाअनुमान होवै है ॥ तैसे स्त्रीऔरपुरुषोंकेकामकी जो निवृत्तिहुईहोवै ॥ तौ पुनःमैथुनधर्मविषे प्रवृत्ति न हुई चाहिये ॥ आर दिन दिनाविषे इनोंकी प्रवृत्तिहोवै है ॥ यातैं ऐसाजान्याजावे है ॥ इनोंकी कामकीनिवृत्तिनहींभई ॥ शंका ॥ जैसे मैथुनधर्मविषे प्रवृत्तिरूपहेतुतैं स्त्रीकेतथापुरुषके कामकाअनुमानहोवै है ॥ तैसे मैथुनधर्मनिवृत्तिरूपहेतुतैं कामकेअभावकाभीअनुमानहोइसकै है ॥ समाधान निवृत्तिरूपहेतुतैं कामकाभाव सिद्धहोवैनहीं॥काहेतैं जोकामके अभावविना निवृत्तिनहोतीतौंनिवृत्तिरूपहेतुतैं कामके अभावका अनुमानहोता ॥ सोनिवृत्ति कामकेअभावविनाहींहोवै है॥यातैं निवृत्तिरूपव्यभिचारीहेतुतैं कामकेअभावकीसिद्धिहोवैनहीं॥यहाँ यह तात्पर्य है॥मैथुनधर्मतैं जोस्त्रियोंकी तथापुरुषोंकी निवृत्तिहोवै है ॥ सोनिवृत्ति सुखरूपफलकी प्राप्तितैं नहीं काहेतैं फलकीप्राप्तिहुये पुनः साधनकीइच्छाहोवैनहीं ॥ और यहाँ पुनःसाधनकीइच्छादेखीती है ॥ यातैं सुखरूपफलकीप्राप्तितैं सोनिवृत्तिनहीं ॥ तैसे कामकेअभावतैंभी सोनिवृत्तिनहीं ॥ किंतु जितने पर्यंत स्त्रीतथापुरुषोंकूं शरीराविषे श्रम उत्पन्ननहींभया ॥ तवपर्यंत मैथुनधर्मविषे परस्पर प्रवृत्तहोवै हैं और जभी श्रमयुक्तहोवै हैं तभी तातैंनिवृत्तहोवै हैं यातैं केवल श्रमकरिकैनिवृत्तिहोवै है सुखकीप्राप्तिकरिकै अथवाकामकेअभावकरिकै सोनिवृत्ति होवैनहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे परस्परयुद्धकरतेहुवे दोनोंमल्लोंकी युद्धतैंनिवृत्तिहोवै है ॥ सोनिवृत्ति सुखरूपफलकीप्राप्तिकरिकै अथवाकामनाकेअभावकरिकै होवैनहीं ॥ किंतु केवल श्रमकरिकैसोनिवृत्तिहोवै है ॥ यातैं निवृत्तिरूपहेतुतैं कामकाअभाव सिद्धहोवैनहीं ॥किंवा॥ बांयेकेबाह्य निकसणेविषे किंचिन्मात्रभी सुखहोवैनहीं ॥ उलटा दुःखहोवै है ॥ तथापि तादुःखकूं भ्रांतिकरिकैसुखमानै है ॥ और ताभ्रांतिसिद्धसुखतैं अधिकसुख विष्ठामूत्रकेपरित्यागविषे होवै है ॥ काहेतैं वीर्यकेपरित्यागहुयांपीछे पुरुषोंकूं पश्चात्ताप तथा बलकीहानि होवै है ॥ और विष्ठामूत्रकेपरित्यागहुयांपीछे पश्चात्तापादिक होवैनहीं ॥ उलटा प्रसन्नताहोवै है ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे समीपकिसीवृक्षाविषे ॥ जभी मधुकीप्राप्तिहोवै ॥ तभी मधुकीप्राप्तिवासतै पर्वतकेऊपरिजाणा व्यर्थ है ॥ तैसे वीर्यकेपरित्यागजन्यसुखतैं विष्ठामूत्रकेपरित्यागजन्य अधिसुखके

नित्यप्राप्तहुवेभी वीर्यपरित्यागजन्यसुखकीप्राप्तिवासतै पुरुषोंकायत्न व्यर्थ है ॥ शंका ॥ जैसा रततैंसुख उत्पन्नहोवै है ॥ तैसा विष्ठामूत्रके परित्यागतैं सुखहोवै नहीं ॥ समाधान ॥वीर्यकेपरित्यागविषे जैसे तैंनें रतशब्दकीअर्थता मानीहै ॥ तैसे विष्ठामूत्रकेपरित्यागविषे रतशब्दकी अर्थता किसदूषणकेभयतैं तैंनें नहींमानीती॥किंतु मानीचाहिये ॥ काहेतैं सुखके अनुकूलव्यापारत्वरूप रतशब्दकेप्रवृत्तिकानिमित्त वीर्यकेपरित्यागविषे तथा विष्ठामूत्रकेपरित्यागविषे समान है किंवा शब्दसहित अपानवायुकेपरित्यागविषे जोसुखहोवैहै ॥ सोसुख संपूर्णदेवांगनाकेसंयोगविषेभी होवैनहीं ॥ यातैं जैसेभ्रांतपुरुषोंनैं देवांगनाजन्यसुखकीप्राप्तिवासतै यज्ञादिककर्मकरीते हैं॥तैसे अपानवायुजन्यसुखकी प्राप्तिवासतै यज्ञादिककर्म काहेतैंनहींकरीते ॥ तात्पर्ययह ॥ तृणादिकतुच्छ वस्तुकीप्राप्तिवासतै जोपुरुष चिंतामणिका परित्यागकरैहै ॥ तावुद्धिहीनपुरुषकूं चिंतामणिशापदेवैहै ॥ तैसे अपानवायुके निर्गमनजन्यसुखतैंभी अतिनिकृष्टजोदेवांगनाजन्यसुख ॥ तातुच्छसुखकी प्राप्तिवासतै चित्तशुद्धिद्वारामोक्षकेसाधनयज्ञादिककर्मोंकूं जोपुरुष करैहै ॥ ताअल्पबुद्धिपुरुषकूं यज्ञादिककर्मभी शापदेवैं हैं ॥ किंवा जोवादी विषयजन्यसुखकूंमानैहै ॥ तातैं यह पूछाचाहिये ॥ तासुखका स्त्रीकाशरीर तथा पुरुषकाशरीर कारणहै ॥ अथवा तिनदोनोंशरीरोंकासंबंध कारणहै ॥ अथवा प्रजाकीउत्पत्तिकारणहै ॥ अथवासमानजातिवालीप्रजाकीउत्पत्तिकारणहै ॥ तहाँ स्त्रीकाशरीर तथापुरुषका शरीर सुखकाकारणहै ॥ यहप्रथमपक्ष बनैनहीं ॥ काहेतैं जोशरीरविषे सुखउत्पन्नहोताहोवै ॥ तौ सुखकीप्राप्तिवासतै स्त्रीपुरुषकेसमीप गमन करैहै ॥ सो नहोणाचाहिये ॥ तैसे पुरुषसुखकीप्राप्तिवासतै स्त्रीकेसमीप गमनकरै हैं ॥ सो नहोणाचाहिये ॥ काहेतैं सुखकासाधन अपनाशरीर दोनोंकाविद्यमान है ॥ यातैं देहविषे किसीस्त्रीकूं तथापुरुषकूं सुखहैनहीं ॥ और स्त्रीपुरुषकासंयोग सुखकाकारणहै ॥ यह दूसरापक्षभी बनैं नहीं ॥ काहेतैं जो स्त्रीपुरुषकासंयोगही सुखकाकारणहोवै ॥ तोमैथुनधर्मतैंअनंतरभी तासंयोगतैं सुखहोणाचाहिये ॥ और सुखहोवै नहीं ॥ उलटा पश्चत्तापहोवै है ॥ इसीकारणतैं महात्मापुरुषोंनैं कह्या है ॥ श्लोक ॥ भोजनांतेश्मशानांते मैथुनांतेचया मतिः ॥ सामतिःसर्वदाचेत्स्यात् नरोनारायणोभवेत् ॥१ ॥ अर्थ यह ॥ भोजनक अंतविषे तथाश्मशानभूमिविषे तथा मैथुनकेअंतविषे

जैसी पुरुषकूं दोषदृष्टिहोवै है ॥ सोदोषदृष्टि जोपुरुषकूं सर्वकालविषे रहै ॥ तो यहपुरुष साक्षात् परमेश्वरस्वरूपहोवै ॥ परंतु ऐसीदृष्टि सर्वदारहैनहीं ॥ १ ॥ यातैं स्त्रीपुरुषकासंयोगभी सुखकाकारणनहीं ॥ और प्रजाकीउत्पत्ति सुखकाकारणहै ॥ यहतीसरापक्षभी बनैनहीं ॥ काहेतैं जोप्रजाकीउत्पत्ति सुखकाकारणहोवै ॥ तौ मत्कुण औरकीट तथायूकादिक प्रजाकीउत्पत्तितैंभी हमारेकूं सुखहोणाचाहिये ॥ और होवैनहीं ॥ उल्टा दुःखहोवैहै ॥ यातैं प्रजाकीउत्पत्तिभी सुखकाकारणनहीं ॥ और सजातीयप्रजाकीउत्पत्ति सुखकाकारण है ॥ यह चतुर्थपक्षभी बनैनहीं ॥ काहेतैं लोकविषे पुत्रादिरूपप्रजावालेभीपुरुष पुत्रादिकोंकरिकै दुःखीदेखीतैंहै ॥ तात्पर्ययह ॥ प्रतिकूलपुत्रादिकतो प्रसिद्ध पितामाताके दुःखकेकारणहोवैहैं ॥ और अनुकूलपुत्रादिकभी पालनपोषणकीचिंताद्वारा पितामाताके दुःखकेकारणहोवैहै ॥ तहाँ पूर्वग्रंथकरिकै स्त्रीरूपविषयविषे सुखकीकारणताखंडनकरी ॥ अब रसनइंद्रियकेविषयरसादिकोंविषे सुखकीकारणता खंडनकरै हैं ॥ जैसे स्त्रीरूपविषय यापुरुषके सुखकेकारणनहीं ॥ तैसे अन्नऔरजलभी याके सुखकेकारणनहीं ॥ काहेतैं भोजनकियाहुआअन्न तथापानकऱ्याहुआजल उत्तरकालविषे यापुरुषके दुःखकेकारण प्रतीतहोवैहैं॥तात्पर्ययह ॥ भोजनकरिकैतृप्तहुयेपुरुषकूं जभीकोई अन्नपरोसैहै ॥ तभी ऊँचेस्वरतैंनिवारणकरैहै ॥ यातैंयहजाण्याजावैहै ॥ यापुरुषका अन्नविषेद्वेषहै ॥ और जो द्वेषकाविषयहोवैहै ॥ सो दुःखकासाधनहोवैहै ॥ जैसे सिंहसर्पादिक हैं ॥ यातैं अन्नादिक सुखकेकारणनहीं ॥ शंका ॥ जोअन्न औरजल सुखकेकारणनहोवैं ॥ तो सुखकी प्राप्तिवासतै अन्नजलविषे लोकोंकीप्रवृत्ति नहींहोणीचाहिये ॥ और सर्वलोकोंकी अन्नजलविषे प्रवृत्तिदेखीतीहै यातैं अन्नऔरजल सुखकेहीकारणहैं ॥ समाधान ॥ अन्नऔरजल सुखकेकारणनहीं ॥ किंतु अन्नजलतैं किंचित्काल क्षुधातृषाकीशांतिहोवैहै ॥ जैसे प्रज्वलितअग्निविषे पायाहुआकाष्ठोंकासमूह क्षणमात्र ताअग्निकीऊंचीज्वालावोंकूं निवारणकरैहै ॥ और जैसे जलकरिकैगीलीपृथिवीकूं वायु रूक्षकरैहै ॥ तावायुकाअनादरकरिकै जलकासिंचन क्षणमात्र तापृथिवीकेरूक्षताकूं निवारणकरैहै ॥ इसप्रकार शरीरकेभीतरस्थित अग्निऔरप्राणभी अप्रतिबद्धहुवे प्राणियोंकेक्षुधाऔरतृषाकूं उत्पन्नकरैहैं॥तहाँ प्राण क्षुधाकूंउत्पन्नकरैहै ॥ और अग्नि तृषाकूंउत्पन्नकरैहै॥ और पुरुषोंनैं

शरीरकेभीतरपाया जोअन्नऔरजल ॥ ताकरिकै किंचित्काल क्षुधाऔरतृषाकीशांतिहोवै है ॥ तात्पर्ययह ॥ अन्नऔरजलकेपडनेतैं प्राणाग्निकानिरोधहोवै है ॥ तानिरोधतैं क्षणमात्र क्षुधातृषाकीशांतिहोवैहै ॥ ताक्षुधातृषाकासहनरूपशांतिविषेहीं अल्पबुद्धिभ्रांतपुरुष सुखकूंमानैं हैं ॥ यातैं रसनइंद्रियकेविषयअन्नादिकोंविषे सुखकीकारणतानहीं ॥ याप्रकार शब्दादिकविषयोंकेप्राप्तहुवेभी पुरुषोंकूंसुख उत्पन्नहोवैनहीं ॥ किंतु क्षणमात्र इच्छाकीनिवृत्तिहोवै है ॥ तात्पर्ययह ॥ शब्दादिकविषयोंकीइच्छाकरिकै प्रथम चित्त चंचलरहै है ॥ तेशब्दादिकविषय जभी प्राप्तहोवैं हैं ॥ तभी क्षणमात्र चित्तकेचंचलताकी निवृत्तिहोवै है॥ ताचंचलताकीनिवृत्तिरूप चित्तकीअवस्थाकूंहीं मूढपुरुष सुखरूपमानैं हैं ॥ और ज्ञानीपुरुषतो ऐसेजाणैं हैं ॥ चित्त भूतोंकेसत्वगुणकाकार्य है ॥ यातैंनिर्मल है ॥ तथापि शब्दादिकविषयोंकीइच्छाकरिकै चलायमानहुआचित्त आनंदरूपआत्माकेप्रतिबिंबकूं ग्रहणकरैनहीं ॥ और ताशब्दादिकविषयोंकी जभीप्राप्तिहोवै है ॥ तभी किंचित्काल इच्छाके निवृत्तहुवे चित्त स्थिरहोवै है ॥ तास्थिरचित्तविषे आनंदरूपआत्माका प्रतिबिंबहोवै है ॥ जिसआनंदरूपआत्माकेप्रतिबिंबकरिकै दुःखरूप चित्तभी सुखकीन्यांई प्रतीतहोवै है ॥ सोबिंबभूतआत्माहीं मुख्यसुखस्वरूप है ॥ याअभिप्रायतैंहीं शास्त्रविषे विषयप्राप्तिकालविषेभी ज्ञानीकूं नित्यसुखकाअनुभव कह्या है ॥और अज्ञानिकूं क्षणिकसुखकाअनुभव होवै है ॥ यातैं शब्दादिकविषयनतैं किंचित्मात्रभी पुरुषोंकूं सुखउत्पन्नहोवैनहीं ॥ किंतु दुःखरूपअंतःकरणकेपरिणामविषेहीं भ्रांतपुरुषोंनैं सुखबुद्धिकरी है ॥ किंवा ॥ विषयजन्यअंतःकरणकापरिणामरूपफलविषे उत्पत्ति और नाश तथापरिच्छिन्नता रूपदोषरहैं हैं॥यातैं ताविषे बुद्धिमानपुरुषोंकूं सुखबुद्धिकेसेहोवै ॥ किंतु नहीं होवैगी॥ काहेतैं श्रुतिविषे व्यापक आत्माकूंहीं सुखस्वरूपकह्या है॥किंवा ॥ व्याकरणकीरीतिसैं सुखशब्दकाअर्थकरिये॥ तौभीअंतःकरणकेपरिणामकूं सुखस्वरूपतासिद्धहोवैनहीं ॥ काहेतैं जाकरिकै इंद्रियोंकेगोलक प्रसन्नहोवैं हैं सो सुखकहिये है॥और विषयजन्यसुखकेविचारकियेतैंउलटा दोपचिंताकरिकै हृदयरूपगोलक तप्यमानहोवैहै॥यातैं जितनेविषयजन्यसुखहैं॥ते संपूर्ण दुखःरूप हैं ॥ और पूर्वकहीमुक्तितैं किसीकारण करिकै सुख उत्पन्नहोवैनहीं॥किंतु सुख नित्यहोवै हैं॥और जो उत्पन्नहोवैहै॥सो सुखरूपनहीं॥यातैं ऐसानित्यसुखस्वरूपमैं आत्माहूं॥पुनःकैसानैं

आत्माहूं ॥ सत्चित्अद्वितीयस्वरूपहूं ॥ शंका ॥ सत्चित् आनंद याप्रकारकेशब्दोंकेभेदतैं आत्माकेस्वरूपकाभेद काहेतैं नहीं होवै ॥ समाधान॥ बुद्धिमान्पुरुषोंकूं सत्यादिकशब्दनकेभेदतैं सत्चित् आनंदरूपअर्थोंकीभेदबुद्धि कभीभीउत्पन्नहोवै नहीं ॥ काहेतैं शब्दोंकेभेद हुयेभी अर्थकीएकता लोकविषेदेखीहै ॥ जैसे एकहीपुरुषव्यक्तिविषे पिता पुत्र पति भ्राता या प्रकारकरके भिन्नभिन्नशब्द पुत्र पिता स्त्रीभ्राता दिकोंनैं क्रमतैंकथनकरीहैं॥तथापि ताशब्दोंकेभेदतैं पुरुषव्यक्तिकाभेदहोवै नहीं ॥ तैसे मुझआत्माविषे सत् चित् आनंद परिपूर्ण या प्रकार के भिन्नभिन्नशब्दशास्त्रनैंकथनकरे हैं तथापिसत्यादिकशब्दोंकेभेदतैंमुझआत्माकाभेदहोवैनहीं ॥ अबजानिमित्तकूंग्रहणकरिकैसत्यादिकशब्द आत्माकूंबोधनकरैं हैं तानिमित्तकूं दिखावैहैं॥जैसे वंध्यापुत्र असत्यहै॥तैसे मैंआत्माअसत्यनहींहूं।किंतु असत्यतैंविलक्षणहूं।ताविलक्षणतारूप निमित्तकूंग्रहणकरिकै सत्यशब्द मैआत्माविषे प्रवर्तैहै॥ और जैसेघटादिकजडपदार्थ अन्यकरिकैप्रकाश्य हैं ॥ तैसे मैं आत्माअन्यकिसीकरिकै प्रकाश्यनहींहूं॥यातैं मै आत्मा जडनहींहूं॥किंतु घटादिकजडपदार्थोंतैंविलक्षणहूं ॥ ताविलक्षणरूपनिमित्तकूंग्रहण करिकै चेतनशब्द मुझ आत्माविषे प्रवर्तैहै॥ और जोवस्तु प्रतिकूलहोवैहै सो सुखशब्दकाअर्थ होवैनहीं॥किंतु दुःखशब्दकाअर्थहोवैहै जैसे सिंहसर्पादिकहैं ॥ और जो वस्तु अन्यकाशेषहोवै है ॥ सोभी सुखशब्दकाअर्थहोवैनहीं ॥ किंतुशब्दकाअर्थहोवै है ॥ जैसे स्त्रीधनादिकहैं ॥ ऐसा दुःखरूप मै आत्मा नहींहूं ॥ किंतु दुःखतैंविलक्षणहूं ॥ यातैं ताविलक्षणतारूपनिमित्तकूंग्रहणकरिकै आनंदशब्द मुझआत्माविषे प्रवर्तैं है॥ यारीतिसैंहीआत्म शब्द एकशब्द अद्वितीयशब्द अस्थूलशब्द अनणुशब्द भेदरहितसच्चिदानंदरूपमैआत्माविषे प्रवर्तैहैं ॥ यहाँ यह अभिप्राय है ॥ आत्मा केप्रतिपादकशब्द दोप्रकारकेहोवैं हैं ॥ एक विधिमुख औरदूसरेनिषेधमुख॥ तहाँ विधिमुखसत्यादिकशब्दतो प्रथम आत्माका बोधनकरिकै पश्चात् असत्यादिकोंतैंव्यावृत्ति बोधनकरैं हैं ॥ और निषेधमुखअद्वितीयादिकशब्दतो प्रथम साक्षात्व्यावृत्तिकूंबोधनकरिकै अर्थतैं आत्मा कूंबोधनकरैं हैं ॥ व्यावृत्तिनामभेदका है ॥ यातैं सत्यादिकशब्दोंकेभेदहूवेभी तिनोंकेअर्थकाभेदनहीं ॥ किंतु एकहीआत्माकूंसर्वसत्या दिकशब्द बोधन करैं हैं यहासिद्धभया ॥ अब युक्तितैं सत्यादिकशब्दोंकेअर्थकाभेद निरूपणकरैं हैं ॥ तहाँ सुखतैं प्रकाश भिन्न नहीं ॥

काहेतैं जोसुखतैं प्रकाशाभिन्नहोवै ॥ तौदुःख तथादुःखकेसाधनसर्पादिकोंकीन्यांई प्रकाशभीप्रतिकूल होवैगा अथवा सुखकेसाधनस्त्रीतथा धनादिकनकीन्यांई अन्यभोक्ताकाशेषभूत होवैगा ॥ और अनुकूलतमहोणेतैं प्रतिकूल तथाअन्यकाशेषभूत प्रकाश है नहीं ॥ यातैं प्र काशसुखतैंभिन्ननहीं ॥ तात्पर्य यह ॥ सुखकेसाधन जेस्त्रकचंदनादिकविषय ॥ ते अनुकूलकहियेहैं ॥ और तिनाविषयोंकेसंबंधतैं उत्पन्नभ यी जोअंतःकरणकीवृत्ति ॥ सोअनुकूलतरकाहियेहै ॥ और तिनोंकाप्रकाशकआनंदस्वरूपआत्माअनुकूलतमकहियेहैं।यातैंप्रतिकूलतातथा अन्यशेषता दोनोंप्रकाशविषेबनैंनहीं ॥ तर तम यहदोनोंशब्द अधिकताकेवाचकहैं ॥ शंका ॥ प्रकाशऔरसुखकापरस्परभेदमतहोवै ॥ तथापि तिनद्वेनोंधर्मो तैं आत्मारूपधर्मी भिन्नकाहेतैंनहींहोवै ॥ समाधान ॥ यहआत्मा प्रकाशस्वरूतैंभिन्ननहीं ॥ काहेतैं आत्मा सर्वअंतःकरणकीवृत्तियोंका प्रकाशकहै ॥ और जोप्रकाशतैंभिन्नहोवैहै ॥ सो सर्ववृत्तियोंकूंप्रकाशकरे नहीं ॥ जैसे बुद्धिआदिक है और जो आत्माप्रकाशतैंभिन्नहोवै ॥ तो अप्रकाशस्वरूपहोणेतैं घटादिकोंकीन्यांई अनात्मस्वरूपहोवैगा ॥ और घटादिकोंकीन्यांई अनात्मस्वरूपता आत्माकी वादीकूंभी अंगीकारनहीं ॥ यातैं प्रकाशतैं आत्मा भिन्न नहीं ॥ किंतु प्रकाशस्वरूप है ॥ और जैसे सुखतैंप्रकाशभिन्ननहीं यहपूर्वकह्या ॥ तैसे प्रकाशतैं सुखभीभिन्ननहीं ॥ काहेतैं जो प्रकाशतैं भिन्नहोवै है ॥ सो अप्रकाशस्वरूपहो वैहै ॥ और अप्रकाशमानसुखकूं सुखरूपता बनैंनहीं ॥ शंका ॥ जैसे दीपकरिकै घटादिकोंकीप्रकाशमानताहोवैहै ॥ तहाँ घटादिकोंतैं दीपकभिन्नहै॥ तैसे सुखतैंभिन्नप्रकाशकरिकैभी सुखकीप्रकाशमानताबनै है॥ सुखप्रकाशका अभेदमानणा निष्फल है ॥ समाधान ॥ जैसे रज्जुआदिक व्यावहारिकपदार्थ औरसर्पादिक कल्पितपदार्थ आपणेतैंभिन्नप्रकाशकरिकै प्रकाशमान होवैहैं ॥ तैसे आपणेतैंभिन्नप्रकाश करिकै सुख प्रकाशमानहोवैनहीं ॥ किंतु आपणेतैंअभिन्नप्रकाशकरिकै सुख प्रकाशमानहोवैहै यातैं सुख औरप्रकाशका अभेदहै ॥ यहाँ यहतात्पर्यहै ॥ रज्जुआदिकदृश्यपदार्थचेतनविषेकल्पितहैं ॥ यातैंतिनोंकी भिन्नप्रकाशकरिकैप्रकाशमानता संभवै है ॥ औरआत्मस्वरूप सुख कल्पितहैनहीं ॥ किंतु सर्वकाअधिष्ठानहै ॥ यातैंभिन्नप्रकाशकरिकै ताकी प्रकाशमानता बनैंनहीं ॥ और जैसे प्रकाशतैं आत्मा

भिन्ननहीं ॥ तैसे सुखतैंभी आत्मा भिन्न नहीं किंतु अभिन्नहै ॥ प्रकाशस्वरूपसुखतैं जो आत्मा भिन्नहोवै॥ तो घटादिकोंकी न्यांई अनात्मा होवैगा और आत्माकीअनात्मता अंगीकारहैनहीं ॥ यातैं प्रकाश सुख आत्मा यातीनोंका अभेदहै यहसिद्धभया ॥यहाँ प्रकाशशब्दकरिकै चैतन्यकाग्रहणकरणा ॥ औरसुखशब्दकरिकै आनंदकाग्रहणकरणा और आत्मा आनंदप्रकाश यहतीनों सत्तातैंभिन्ननहीं ॥ काहेतैं जैसे सत्तातैंभिन्नहोणैतै बंध्यापुत्र असत्यहै ॥ तैसे सत्तातैंभिन्नहूवेआत्मा आनंद प्रकाशकूंभीबंध्यापुत्रकीन्यांई असत्यताप्राप्तहोवैहै ॥ और आत्माकीअसत्यता कोईअंगीकारकरैनहीं ॥ और जैसे आत्मा आनंद प्रकाश यहतीनों सत्तातैंभिन्ननहीं ॥ तैसे सत्ताभी यातीनोंतैंभिन्ननहीं ॥ काहेतैं जो आत्माआनंदप्रकाशतैं सत्ता भिन्न होवै ॥ तो घटादिकोंकीन्यांई अनात्मादुःखजडस्वरूपहोवैगा ॥ और अनात्मास्वरूपहुईसत्ता बंध्यापुत्रकेसमान असत्यहोवैगी ॥ तात्पर्ययह ॥ आत्मानाम आपणेस्वरूपका है॥ आपणेस्वरूपतैं जभी सत्ताभिन्नहुई ॥ तभी बंध्यापुत्रकीन्यांई असत्यहीहोवैगी ॥ यातैं सत्ता आत्मातैंभिन्ननहीं ॥ सो सत्चित्आनंदस्वरूप मैंपरमात्माहूं ॥ औरदेशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहितहूं ॥ यातैं मैंपरमात्मा अनंतहूं ॥ और जैसे रज्जुविषे सर्प कल्पित है ॥ तैसे मुझअनंतआत्माविषे सर्वप्रपंच कल्पित है ॥ और कारण कार्य देश कालादिकोंकेवाचक सर्वशब्दोंकातथासर्वज्ञानोंका मैंपरमात्माहीं विषयहूं ॥ याकारणतैंही वेदांतवाक्योंतैं तथावेदांतवाक्यजन्यतैं परिपूर्णआत्माकूंभी मैंदेखताभयाहूं ॥ यातैं मैंकृतकृत्यहूं ॥ तात्पर्ययह ॥ जिसआत्मस्वरूपकोनिश्चयकरणेवासतै यादुःखरूपशरीराविषे हमनैं प्रवेशकियाथा ॥ सो आत्मसाक्षात्कार अभीहमारेकूं प्राप्तभया है ॥ यातैं किंचित्मात्रभी हमारेकूं अभीकर्तव्यनहीं रह्या॥ औरयहपरपात्मादेव गुरुऔरवेदांतवाक्यजन्यज्ञानतैं अपरोक्ष आपणेस्वरूपकोदेखताभया ॥याकारणतैंही "अयमिंद्रः" यानामकूंप्राप्तहुआआनंदआत्मा ब्रह्मरूपहोताभया ॥ काहेतैं ब्रह्मकेजानणेहारेकूं ब्रह्मरूपता श्रुतिविषेप्रसिद्ध है ॥ और ताइंद्रनामापरमात्माकूं अग्निआदिकदेवता तथादेवभाववालेमनुष्य इंद्र यापरोक्षनामतैं कथनकरतेभये ॥ जाकारणतैं यहदेवता प्रत्यक्षनामग्रहणतैं द्वेषमानैंहैं ॥ जैसे लोकविषेभी महान्पुरुषोंकूं आचार्यादिकपरोक्ष नामोंकरिकै जोबुलावैं हैं ताऊपरितेमहान्पुरुष प्रसन्नहोवैं है और जोदेवदत्त तथायज्ञदत्त

याप्रकारसाक्षात्नामकरिकैमहान्पुरुषोंकूं बुलावैं हैं ॥ ताऊपरिद्वेषकरैं हैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जभीदेवता तथाशिष्टपुरुषभीप्रत्यक्षनामग्रहणतैं द्वेषकरैं हैं ॥ तभी परमेश्वर प्रत्यक्षनामग्रहणतैं द्वेषकरैं है याविषेक्याआश्चर्य है और इंद्रनामा परमेश्वरकूं इंद्रनामकरिकै यहदेवता कथनकरैं हैं ॥ और आपभी प्रत्यक्षनामग्रहणतैं द्वेषकरैं हैं याकारणतैं विवेकीपुरुषोंनैं परोक्षप्रिय देवताकहे हैं ॥ और यालोकविषेभी सत्मार्गविषे विचरणेहारे जेपुरुष हैं ॥ तेदेवताकेसमान हैं ॥ तिनोंविषेभी देवतावोंकीन्यांई नियमकरिकै परोक्षनामग्रहणतैंहीं प्रसन्नतादेखी है ॥ याकारणतैंहीं पितातथाआचार्यादिकोंके साक्षात् देवदत्तादिकनामोंकूं बुद्धिमान्पुरुषकथनकरै नहीं ॥ तैसे स्त्रियाँभी आपणे पतिआदिकोंके साक्षात् देवदत्तादिकनामोंकूं कथन करैं नहीं ॥ किंतुस्वामीतैं आदिलैकेजेपरोक्षनाम हैं ॥ तिनोंकरिकै व्यवहारकूंसिद्ध करैं हैं ॥ याप्रकार सनकादिक ऋषि सात्विकीप्रजाकूं आत्माका उपदेश करिकै कहते भये ॥ हे आत्मज्ञानविषे अधिकारी प्रजा ॥ तुमारेतांई अध्यारोप अपवाद करिकै आत्माका स्वरूप अवपर्यंत हमोनैं कथनकऱ्या ॥ सोकैसाआत्मा है ॥ महा वाक्योंका तथा महावाक्यजन्य वृत्तिज्ञानका विषय है ॥ तथापि तुमोंनैं घटादिकोंकी न्यांई स्वरूपतैं आत्मा विषय रूप नहीं जानणा ॥ किन्तुवेदांतके तात्पर्यज्ञानद्वारा अविषयरूपकरिकैही आत्मा जानणेयोग्य है ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे शृंगकूंग्रहणकरिकै गौ दिखाईजावै है ॥ तैसे आत्माकूंदिखावणेमैं कोईसमर्थनहीं है ॥शंका॥ हे भगवन् आपसर्वशक्तिसम्पन्नहो ॥ यातैं गौकीन्यांई साक्षात्आत्माकूंहमारेतांइ बोधनकरो ॥ समाधान ॥ अधिकारीप्रजा ॥ अध्यारोपअपवादरूपमायातैंविना कौणपुरुष ऐसासमर्थहै ॥ जो अद्वितीयआत्माकूं कथनकरिसकै ॥ औरश्रवणकरिसकै ॥ किन्तु अध्यारोपअपवादीकरिकैही आत्माकूं गुरुशास्त्र कथनकरैं हैं ॥ औरअधिकारीश्रवणकरैंहैं ॥ याकारणतैंहीं तैतरीयश्रुतिविषे आत्मा मनतथावाणीका अविषयकह्या है ॥ और केनउपनिषद्विषे यहकह्या है ॥ तत्त्ववेत्तापुरुषोंकेमतविषे आत्मा अविषय है ॥ और जेअविवेकीपुरुष बुद्धिआदिकोंकूं आत्मा मानैं हैं ॥ तिनोंकेमतविषे घटादिकोंकी न्यांई आत्माभी विषयहै ॥ और कठउपनिषद्विषे यहकह्याहै ॥ वाणीकेअविषयआत्माकूं जो कथनकरैंहैं॥सो आत्माकावक्ताभी आश्चर्यरूपहै ॥ और इंद्रियकेअविषयआत्माकूंजोश्रवणकरै

है ॥ सो श्रोताभी आश्चर्यरूपहै और मनकेअविषयआत्माकूंआचार्यकेउपदेशकारिकै जोसाक्षात्करै है ॥ सोलब्धाभिआश्चर्यस्वरूपहैसाप्रत्वि
कीप्रजाइसतैआगेआत्माकेस्वरूपकहणेकूंहमसमर्थनहींहैंकिंतुदिशामात्रकरिकैआत्माकाउपदेशहमोनैंतुमारेताईंकऱ्याहैआगेतुमसर्वयुक्तियोंकूं
जानणेहारेहो ॥ और वेदशास्त्रकूंभी भलीप्रकारजाननेहारेहो ॥ यातैं आपणीबुद्धिकारिकैविचारकरिकै तिसआत्माकूं तुम प्राप्तहोवो ॥
दृष्टांत ॥ जैसेरामेश्वरकीप्राप्तिकीइच्छावान् किसीपुरुषनैं किसीसैंपूछा ॥ किसमार्गकरिकै रामेश्वरकींहमारेकूं प्राप्तिहोवैगी ॥ तभी तापु
रुषनैं दक्षिणदिशा दिखायदी ॥ आगे जाणेवालापुरुष आपणीबुद्धिकरिकैहीं रामेश्वरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे हे प्रजा ॥ आत्माकूंदिशामात्रक
रिकै हमोनैं तुमारेताईं कथनकऱ्याहै ॥ आगे आपणीबुद्धिकरिकै तुम आत्माकूंजाणो ॥ वशिष्टभगवान्नैंभी रामचंद्रकूं यात्रकारकऱ्याहै ॥
॥ श्लोक ॥ उपदेशकमोराम व्यवस्थामात्रपालनम् ॥ ज्ञप्तेस्तुकारणंशुद्धा शिष्यप्रज्ञैवकेवला ॥ २ ॥ अर्थयह ॥ चतुष्टयसाधनसंपन्नमुमुक्षु
श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुकेसमीपजाईकै वेदांतश्रवणकरै ॥ यहश्रुतिनैं आज्ञाकरीहै ॥ ताआज्ञाकेपालनवासतैंहीं गुरुका शिष्यकेप्रतिउपदेशहै ॥
और आत्मसाक्षात्कारकातौ शिष्यकीशुद्धबुद्धिहींकेवलकारणहै ॥ अशुद्धबुद्धिवालेपुरुषकूं ब्रह्माकेउपदेशतैंभी आत्मसाक्षात्कारहो
वैनहीं ॥ याकारणतैंहीं ब्रह्माकेउपदेशतैं विरोचनकूं आत्मज्ञाननहीं भया ॥ और हे सात्विकीप्रजा ॥ वैराग्यरहितपुरुषोंकरिकै यहपरमात्मा
जानणेकूंयोग्यनहीं ॥ किन्तु वैराग्यवान्पुरुषोंकरिकैही यहपरमात्माजाननेयोग्य है ॥ यातैं हेप्रजा ॥ आत्माकेसाक्षात्कारवासतैं तुम
वैराग्यकूंसंपादनकरो ॥ शंका ॥ हेभगवन् वैराग्यकाकौणउपायहै ॥ जाकरिकै हम वैराग्यकूंसंपादनकरैं ॥ समाधान ॥ हे अधिकारिप्रजा ॥
वैराग्यकेप्राप्तिकाउपाय ॥ तुमारेताईं हम पूर्वकहिआयेहैं ॥ सुखकेसाधनस्त्रीपुत्रादिकोंविषे सर्वदा दोषोंकूंदेखणा यहही वैराग्यकेउत्पत्ति
काकारणहै ॥ याप्रकार अधिकारीप्रजाकूंउपदेशकरिकै लोकोंकेशोककूंहरणेहारे जैसनकादिकमहात्माहैं ॥ ते पुनःप्रश्नकरणेकीइच्छावान्
अधिकारियोंकाअनादरकरिकै तहाँअंतर्धानहोतेभये ॥ और तिनसनकादिकऋषियोंकेगयेहुये दुर्लभगुरोंकेलाभतैंप्रसन्नहैमनाजिनोंका ऐसेजे
संपूर्णअधिकारीप्रजा है ॥ ते परस्पर याप्रकारकेवचनोंकूंकहतेभये ॥ हमअधिकारियोंके अहोभाग्य हैं अहोभाग्य है ॥ जाकारणतैं सनक,

दिकऋषि हमारेगुरुहोतेभयेहैं ॥ ॥ कैसेसनकादिकऋषिहैं ॥ सर्वप्राणीमात्रविषे जिनोंकीसमानदृष्टिहै ॥ और कामक्रोधकरिकैरहितहैं ॥ और
जैसे वायु बाह्यभीतर विचरैं हैं ॥ तैसे सर्वपुरुषोंके अंतरिबाहरि विचरणेहारेहैं ॥ आर परकेउपकारविषें जिनोंकीनित्यप्रीतिहै ॥ और आप
शीतउष्णादिकोंकूं सहारेहैं ॥ और परदोषोंकेकथनविषे जिनोंने मौनधारणकऱ्याहै ॥ और आपसर्वदोषोंतैंरहितहैं ॥ और आत्मज्ञान
कारिकै संपन्नहैं ॥ और जैसे शरद्ऋतुकासमुद्र क्षोभतैंरहितहोवै है ॥ तैसे क्षोभतैंरहितहैं ॥ और निश्चलहैं ॥ और निर्मलाजिनोंकामनहै ॥
और पूर्णिमाकेचंद्रमाकीकांतिकेसमान जिनोंकीकांतिहै ॥ऐसेसनकादिकऋषियोंनैं हमारेहितवासतैं आत्माकाउपदेशकऱ्याभी ॥ तौभीहमारे
वैराग्यकेअभावतैं तिनोंकासर्वउपदेशव्यर्थताकूंप्राप्तहोताभया॥दृष्टांत॥ जैसे बधिरपुरुषकेसमीप गीतगायनकऱ्याहुआ व्यर्थता कूंप्राप्तहोवैहै ॥
और सनकादिकोंकेवचनतैं हमारेकूं आत्माकाअपरोक्षज्ञान उत्पन्ननहींभया ॥ किन्तु परोक्षज्ञानमात्र उत्पन्नभयाहै ॥ जैसे विद्याध्ययन
कालविषे सामान्यतैं अर्थकाज्ञानहोवैहै ॥ तैसे आत्माकापरोक्षज्ञान हमारेकूं भया है ॥ और सनकादिकोंकेवचनतैं यज्ञादिकोंकेकरताभी
काहम अद्वितीय आत्मस्वरूपनहींहैं ॥ याप्रकारका महान्संशयहमारेकूं उत्पन्नभयाहै ॥ तात्पर्य यह जैसे गुड मधुररसकेअनुभवका यद्यपि
कारण है तथापि सोगुड पित्तरोगवालेपुरुषकूं कटुताकेअनुभवका कारणहोवैहै ॥ तैसे सनकादिकऋषियोंकावाक्य यद्यपि यथार्थआत्मज्ञान
केकारणहैं ॥ तथापि हमारे दोषतैं तेवाक्य संशयकूंउत्पन्नकरतेभये हैं ॥ और सनकादिकोंकेवचनोंविषेहमाराज्ञान स्थितहोतानहीं ॥ काहेतैं
सनकादिकोंनैं हमारेकूं अद्वितीयआत्मस्वरूपकह्या सोबनैनहीं ॥ काहेतैं हम कर्मकेकरताहैं ॥ और कर्मकेफलकेभोक्ताहैं ॥ यातैं अद्वितो
यआत्मस्वरूप हम कैसेहोवैं ॥किन्तु अद्वितीयआत्मस्वरूप हम नहींहैं ॥ और सनकादिकोंने पूर्व अहं याज्ञानकाविषय तथा अहं याशब्दका
लक्ष्य आत्माकह्याथा॥सोभी बनैनहीं ॥काहेतैं अहं याज्ञानकीविषयता हमारेविषेहैनहीं ॥ तथा अहं याशब्दकीलक्षणाभी हमारे विषेहैनहीं ॥
यातैं हे अधिकारियो ॥ हमारेकूं आत्माविषे दृढअसंभवना उत्पन्नभईहै ॥ इसीकारणतैं हमारीअसंभावनाकूंदेखिकरिकै हमोनैंनहींपूछहुवे
अभी सनकादिकऋषि आत्मज्ञानकी प्राप्तिवासतै हमारेताईं वैराग्यरूपउपायकूंही कहतेभये ॥ और पदार्थोंविषे दोषदृष्टिरूपवैराग्यकाउप,

यभी हमारेतांई कहतेभये॥तातैं हे अधिकारियो ॥हमसर्व मिलिकरिकै पदार्थोंविषेदोषोंकूंविचारकरैं॥तहाँ प्रथम याशरीरविषेकौणदोषहैं ॥ ऐसा विचारकऱ्याचाहिये ॥ ऐसा चिंतनकरिकै अग्निहोत्रकूं करणेहारेअधिकारी परस्परामिलिकै दोषोंकूं विचारतेभये ॥ तहाँ गर्भदुःखके निरूपणकरणे वासतैं प्रथम कर्म केशवतैं जीवोंका स्वर्गादिक लोकविषे गमनकूं तथा आगमनकूं दिखावैं हैं ॥ सायंकालविषे तथा प्रातःकालविषे हवनकरी जे आग्निहोत्रविषे आहुतिदो ॥ ते कैसी दोनों आहुतियां हैं ॥ जल प्रधान दुग्धादिकोंकापारिणामहोणेतैं जल जिनोंविषे प्रधान है ॥ और होमतैं अनंतर अग्नितैं सूक्ष्मरूपकरिकै आकाशकूं प्राप्त होवै है ॥ पुनःकैसी आहुतियांहैं ॥ कर्मकूं करणेहारे जेहमप्रमाता हैं ॥ तिनोंकाव्यापकजोजीवात्मा ताकरिकै सर्वदायुक्त हैं ॥ या प्रकार अंतरिक्षलोककूं प्राप्त भईजे सायंकालकी तथा प्रातःकालकी दोनोंआहुतियाँ ॥ और शरीरकेदाहकालविषे स्वर्गकीप्राप्तिवासतैं दईजोतीसरीआहुति ॥ यह तीनोंआहुतियाँ हम कर्मी पुरुषोंकूं ग्रहणकरिकै प्रथम स्वर्गलोकरूपअग्निकूंप्राप्तकरैं हैं ॥ तहाँ पुण्यकर्मकूंभोगिकरिकै तातैं अनंतर मेघरूपदूसरीअग्निकूंप्राप्तकरैं हैं ॥ तासैं अनंतर वर्षाद्वारा पृथिवीरूपतीसरीअग्निकूं प्राप्तकरैं हैं ॥ तासैं अनंतर अन्नद्वारा पुरुषरूपचतुर्थअग्निकूंप्राप्तकरैं हैं ॥ तहाँ जीवकास्वर्गलोकतैंमेघद्वाराभूमिलोकमैं आवणेविषे इतनाभेद है ॥ पुण्यपापकरिकैयुक्त जोकोईकजीव है ॥ सो पुण्यकर्मकेउदयतैं प्रथम स्वर्गसुखकूंभोगिकरिकै पुण्यकर्मकेक्षयहूवे तास्वर्गतैंगिडे है ॥ पुनः पापकर्मकेउदयतैं नरकदुःखकूंभोगिकरिकै तानरकतैं भूमिलोक विषेगिडे है ॥ तागिडणेकाल विषे जैसा जैसा या जीवकाकर्म उदयहोवै है ॥ ताकर्मकेअनुसार पराधीनताकरिकै यह जीव नानाप्रकारजंतुवोंकीयोनियोंकूं प्राप्तहोवै है ॥ और केवल पुण्यकर्मकेउदयतैं यह पुण्यवान्जीव स्वर्गलोकविषे संपूर्णपुण्यकर्मकेफलकूं भोगिकरिकै नरककीप्राप्तितौंविनाहीं वर्षाद्वारा या भूमिलोककूंप्राप्तहोवै है ॥ कैसाभूमिलोकहै ॥ औषधियोंकरिकैपूर्ण है ॥और मनुष्यशरीरकाकारण जे पुण्यऔरपापहैं ॥ तिनोंकरिकैयुक्तहुआ औरमूढअवस्थाकूंप्राप्तहुआ ऐसा जो पराधीन जीव ॥ सो अन्नकेसाथि एकरूप होइकरिकै पुनःपुरुषकेशरीरविषे प्रवेश करै है ॥ जैसे रज्जुकरिकेबांध्याहुआघट कूपविषेप्रवेशकरै है ॥ तैसे कर्मरूपरज्जुकरिकैबांध्याहुआजीव पिताशरीरविषेप्रवेशकरैहै ॥ अन्यदृष्टांत ॥ जैसे

शृंखलाकरिकैबांध्याहैशरीरजाका और हरणकऱ्याहैधनतथाबांधवजाका ऐसा जो दोषवान् पुरुष है ॥ सो राजाकेभृत्योंनैं बंधनग्रहणकूंप्राप्तकरीताहै ॥ तैसे कर्मरूपशृंखलाकरिकैबांध्याहुआ औरबांधवोंतैंरहित एकाकी यहजीवभी इंद्रियादिकोंकेआभिमानी देवतावोंनैं पिताशरीरकूं प्राप्तकरीताहै ॥ और सोपिताशरीर अंधकूपकीन्यांई भयकाकारण या जीवकूं प्रतीतहोवै है ॥ कैसा पिताकाशरीर है ॥ सर्पोंके समान भय करणेहारे जे कृमिगणहैं ॥ तिनोंकरिकै व्याप्तहै ॥ और जैसे धनकेहरणेवासतैं राजाकेपुरुष लोकोंकूंसंतापकरैं है॥तैसे अन्नद्वारा पिताके उदरविषेप्राप्तहुएजीवकूं पिताकीजठराग्नि संतापकरैहै और जैसे हिमालयपर्वतविषे व्याधिग्रस्तबलहीनपुरुषकूं महान्वायु शोषणकरै है ॥ तैसे पिताकेउदरविषेस्थितयाजीवकूं पिताकाप्राणवायु शोषणकरै है ॥ यद्यपि पिताशरीरविषे यह जीव मूर्छासहितहोवै है ॥ यातैं दुःखकाअनुभव संभवैनहीं ॥ तथापि वैराग्यकेउत्पत्तिवासतैं दुःखका अनुभव कह्या है ॥ और जैसे योनिद्वारा माताकेगर्भाविषे यह जीव प्रवेशकरै है ॥ तैसे मुखरूपयोनिछिद्रकरिकै पिताकेगर्भविषे यह जीव प्रवेश करै है ॥ और जैसे कामकरिकै पीडाकूंप्राप्तभईस्त्री गर्भके धारणेकी इच्छा करै है ॥ तैसे क्षुधातृषाकरिकै पीडाकूं प्राप्त हुवा यह पुरुषभी जीव युक्त अन्न रूप गर्भके धारणकी इच्छा करै है ॥ यातैं जैसे माताकेशरीरविषे यह जीव गर्भ भावकूं प्राप्त होवै है ॥ तैसे पिताशरीरविषेभी गर्भ भावकूं प्राप्त होवै है ॥ शंका ॥ जो स्त्रीकेसमानहीं जीवरूपगर्भकूं पिता धारणकरता होवै ॥ तो जैसे स्त्रीकेगर्भाधानविषे पुरुषरूपापिता और ताकामैथुनरूपव्यापार कारणहोवैहै ॥ तैसे पुरुषकेगर्भाधानविषे भी पुरुषरूपापिता और ताकाव्यापार कह्या चाहिये ॥ समाधान ॥ अन्नद्वारा पुरुषशरीरविषेप्राप्तभया जो जीवरूपगर्भ ॥ ताका लोकविषे प्रसिद्धजोपिताहै सोतो माताहै ॥ काहेतैं जोगर्भकूंधारणकरैहै सोमाताकाहियेहै ॥ और मायाविशिष्टईश्वररूपपुरुष याका पिताहै॥ और ईश्वर कातथापिताका संयोग मैथुनधर्मकीन्यांई या गर्भका कारण है ॥ यातैंभी पिताके तथामाताके शरीरविषे समान गर्भ भावकूं यह जीव प्राप्त होवै है ॥ और यह जीव माताके गर्भविषे जैसे दुःखकूं अनुभव करै है ॥ तैसेहीं दुःखकूं पिताके उदरविषेस्थितहुआ यह जीव प्राप्त होवै है ॥ तहाँ अन्नके साथि एकरूप हुआ यह जीव प्रथम पुरुषके मुखकूं प्राप्त होवै है ॥ तहाँ दंतोंकरिकै ताकाशरीर भेदनहोवैहै ॥ और

मुखकेदुर्गंधकरिकै नाकाघ्राणइंद्रिय व्याप्तहोवै है ॥ या प्रकार पिताके मुखविषे अनंतदुःखकूं अनुभवकरिकै पुनःदुःखकरिकै कंठछिद्रकूं प्राप्तहोवै है॥तहाँ अल्पमार्गकंठाछिद्रविषे यह जीव कृमिकीन्याईं चेष्टाकरैहै॥और कफकरिकेव्याप्तहोवै है॥और व्याकुल जाकी इंद्रियाँहोवै हैं ॥ और शक्तितैंरहितहोवै है ॥ और अतिशयकरिकैदुःखीहोवै है॥याप्रकार कंठविषेस्थितहुआ यहजीवदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै दृष्टांत॥ जैसे गरुडके मुखविषेप्राप्तभईमछली सर्वओरतैं चलायमानहोवै है ॥ और गरुडकेमुखतैंछूटनेकीइच्छाभीकरैहै ॥ तथापि छूटनहींसकैहै ॥ तैसे यह जीव कंठछिद्रविषेरुक्याहुआ अनंतदुःखोंकूंअनुभवकरैहै ॥ याप्रकार कफकेस्थानकंठदेशविषे अनंतदुःखोंकूं यहजीवप्राप्तहोइकै ॥ जैसे योनिद्वार तैंनिकसणमें दुःखहोवैहै॥तैसे दुःखकरिकै कंठस्थानतैंनिर्मुक्तहोवै है॥ पुनःयहजीवहृदयदेशमेंस्थितापित्तकूंप्राप्तहोवै है ॥ कैसापित्तहै विष्ठाद्रव केसमानजाकाआकारहै ॥ और जैसेत्वचाकूं उतारिकरिकै किसीपुरुषकूं तप्ततेलविषेपाइये ॥ तातेलविषेपडनेतैं जैसा पुरुषकूं दुःखहोवै है ॥ तैसे दुःखकूं अनुभवकरताहुआ यहजीव कफस्थानकंठतैं पित्तकूं प्राप्तहोवै है ॥ तहाँ हृदयदेशविषे पित्तकूंप्राप्तहुआ यहजीव अनंतदुःखोंकूं प्राप्तहोवैहै ॥ सोकैसापित्तहै ॥ प्राणवायुकरिकै मर्कटकीन्याईं चलायमानहै ॥ और जठराग्निकरिकै तपायमान है ॥ ऐसेपित्तविषेप्राप्तभया यहजीव कभीनीचेजावै है ॥ और कभीऊपरिजावैहै ॥ और कभीपित्तविषेहीं चारोंओरतैंभ्रमणकरैहै ॥ जैसे ततातेलविषेप्राप्तभयाजलनीच ऊपरिभ्रमेहै ॥ तैसे यहजीव पित्तविषेभ्रमैहै ॥ या प्रकार पित्ताशयविषे अनंतदुःखोंकूंअनुभवकरिकै पुनःवातकाआश्रयजोवायुहै ॥ ताकूं यहजीव प्राप्त होवै है ॥ कैसाहैवायुहै ॥ पुरीततिरूपकोटकेमध्यविषेस्थितहै ॥ और नाभिरूपपर्वततैंजाकानिर्गमनहोवैहै ॥ पुरीततिनाम आंद्रकाहै ॥ और जैसे तृण वायुविषेप्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे यहजीव वाताशयवायुविषे प्राप्त होवै है ॥ और जैसे तक्षा काष्ठकूं वास्याकरिकै छेदन करै है ॥ तैसे प्राणवायु अन्नमिलितयाजीवके सर्वअंगोंकूं छेदन करै है ताछेदनकरिकै याजीवकेइंद्रिय व्याकुलहोवैं हैं ॥ पुनःसोकैसावायु है अग्निकेसमान जाकाउष्णस्पर्श है ॥ और रूक्षहै ॥ और दुःखकरिकैसहन किया जावैहै ॥ ऐसेवायुविषे स्थितहोइकै किंचित्काल तहाँदुःखकाअनुभवकरिकै पुनःजठराग्निकूं यह जीव प्राप्तहोवै है ॥ तहाँ जठराग्निविषे जीवमिलितअन्नकापाकहोवै है॥तापाककरिकैभी यह जीव

आरब्धकर्मकेवशतैं मृत्युकूंप्राप्तहोवै नहीं ॥ तापाकतैं सोअन्न उत्तम मध्यम अधम भावकूंप्राप्तहोवै है ॥ तहाँ अन्नकाउत्तमभाग मनभावकूं प्राप्तहोवै है ॥ और अधमभाग विष्ठाभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ और अन्नकेमध्यमभागकेसाथि एकरूपहुआयहजीव त्वचा रुधिर मांस मेद अस्थि मज्जा याषट्धातुवोंकूं क्रमतैंप्राप्तहोवै है ॥ तहाँ समाननामावायुकेबलतैं पूर्वपूर्वधातुकूंप्राप्तहोइकै पुनःउत्तरउत्तरधातुकूंप्राप्तहोवै है ॥ तहाँ एकएकधातुकेप्रवेशविषे याजीवोंकूं अनंतदुःखप्राप्तहोवैं हैं ॥ जब एकधातुकेप्रवेशविषेभी जीवोंकूं दुःसहदुःखोंकीप्राप्तिहोवै है ॥ तब षट्धातुकेप्रवेशविषे दुःसहअनंतदुःख याजीवोंकूं प्राप्तहोवैं हैं याकेविषे क्याकहणा है ॥ तहाँ प्रथम त्वचाकेप्रवेशविषे जीवके दुःखोंकूं दिखावैहैं ॥ यहजीव अन्नकेमध्यमभागकेसाथिएकरूपहोइकरिकै नाडीद्वारा प्रथमत्वचाकूंप्राप्तहोवै है॥तेकैसीनाडियाँहै॥केशकेअग्रभागकूंशतभाग करिये॥ताएकभागकेसमान सूक्ष्महैं॥और बहत्तरि७२००० सहस्र जिनोंकीसंख्याहै॥और हृदयदेशतैं जिनोंकानिर्गमनहुआहै॥ ऐसेसूक्ष्मनाडीमार्गतैं यहजीव त्वचाकूंप्राप्तहोवैहै ॥सोकैसीत्वचाहै॥सर्वशरीरविषेव्यापकहै ॥ और केशतथारोमकरिकैयुक्तहै॥ऐसेसूक्ष्मनाडियोंकेप्रवेशविषे वेतथानाडीमार्गकेगमनविषे तथातेननाडियोंतैंनिकसणेविषेतथा नाड़ीद्वारात्वचाकीप्राप्तिविषे जेजे जीवोंकूं दुःखहोवैहैं ॥ तेस्मृतिविषेप्राप्तिद्वैहैं ॥ तिनदुःखोंकेकहणेतैंभी हमारेकूं मोह प्राप्तहोवै है ॥ इसप्रकार त्वचाविषे अनंतदुःखोंकूंअनुभवकरिकै तात्वचातैं पुनःरुधिररूप द्वितीयधातुकूं यहजीव प्राप्तहोवै है ॥ सोकैसारुधिर है ॥ लाक्षाकेरससमान जाकारक्तवर्ण है ॥ और जाकेदेखणेकरिकै भययुक्तपुरुषोंकूं मोह उत्पन्नहोवै है ॥ ऐसेरुधिर विषे अनंतदुःखोंकूंअनुभवकरिकै पुनःतारुधिरतैं मांसरूपतृतीयधातुकूं यहजीव प्राप्तहोवै है ॥ सोकैसा मांस है ॥ अतिसघनहै ॥ औरशाल्मली वृक्षकेपुष्पकेसमान जाकावर्ण है ॥ ऐसे मांसविषे प्राप्तहुआ यहजीव कभी मूर्छाकूंप्राप्तहोवै है और कभीभयकूं प्राप्तहोवै है ॥ और कभी इंद्रियताकीव्याकुल होवैं हैं ॥ इसप्रकार मांस विषेअनंतदुःखोंकूंअनुभवकरिकैपुनः तामांसतैं पतनहुआ यहजीव अग्नितथाप्राणवायुकरिकैचलायाहुआ मेदरूपचतुर्थधातुकूं प्राप्तहोवै है ॥ जैसे अग्निकरिकैतपायाहुआ घृत चूर्णविषेप्रवेशकरै है ॥ तैसे यहजीवमेदविषेप्रवेशकरै है ॥ कैसासोमेद है गोधूमकेचूर्णसमान जाकाशुक्लवर्ण है ॥ ऐसे भेदविषे

अनंतदुःखोंकूं अनुभवकरिकै पुनः तामेंदर्तं अस्थिरूपपंचमधातुकूं यहजीव प्राप्तहोवै है ॥ जैसे मृत्तिका काष्ठसमुदायकूंप्राप्तहोवै है ॥ तैसे पुरुषकेगर्भविषेस्थितयहजीव अस्थियोंकूंप्राप्तहोवै है ॥ तेकैसेअस्थिहैं ॥ शरीररूपगृहकेस्थूणा हैं ॥ और तीनसौसाठ ३६० जिनोंकीसंख्या शास्त्रविषेकही है ॥ ऐसेअस्थियोंविषेअनंतदुःखोंकूंअनुभवकरिकै पुनःताअस्थियोंतैं मज्जारूपषष्ठधातुकूं शनैःशनैःकरिकै यहजीव प्राप्तहोवैहै ॥जैसे काष्ठविषेस्थित हुआजलशनैःशनैःकरिकैकाष्ठविषेप्रवेशकरैहै॥तैसे यहजीव मज्जाविषेप्रवेशकरै है॥सोकैसीमज्जाहै॥अस्थियोंकेभीं तरस्थितहै॥और साररूपवीर्यकरिकैयुक्तहै ॥इसप्रकार मज्जाकासाररूपहुआ कोईकाल यहजीवरहैहै ॥ पुनःस्त्रीसंबंधरूपनिमित्ततैंपिताकूं जब कामरूपअग्नि मनविषेउत्पन्नहोवैहै ॥ तब सर्वओरतैं मज्जा वीर्यरूपसारकूं परित्यागकरै है ॥ जैसे अग्निकेसंबंधतैं घृत द्रवीभावहोवैहै तैसे कामाग्निकरिकै मस्तकतैंलेकरिकैपादपर्यंत सर्वअंगोंतैं मज्जाकासारनिकसैहैसोमज्जाकासाररूपवीर्य पिताकरिकै सहनकियानहींजावै है ॥ याअर्थकूं चारिदृष्टांतोंकरिकैदिखावै हैं॥जैसे दशममासविषे प्रसवकालमैं स्त्रीकरिकै यहगर्भ दुःखकरिकैसहनकियाजावैहै ॥ तैसेकामाग्निकेउत्पन्नहुवे पिताकरिकै यहवीर्यरूपगर्भ दुःखकरिकैसहनकियाजावैहै॥और जैसे आर्द्रवृक्ष आपणेकोटराविषे अग्निकूंनहींसहारिसकै है ॥ तैसे पिताभी वीर्यरूपगर्भकूं ताकालविषे नहींसहारिसकैहै और जैसे किसीपुरुषनैं शत्रुकेनाशवासतैं श्येनयज्ञादिरूपकर्मकिया ॥ ताकर्मकरिकै तिसशत्रुकामन कभीभीस्थितहोवैनहीं ॥ तैसेकामाग्निकेतापकरिकै पिताकावीर्य स्थितहोवैनहीं ॥ और जैसे पारद देहविषे स्थितनहींहोवै है ॥ तैसे कामाग्निकरिकैद्रवीभावहुआमज्जाकासारवीर्यकभीभी देहविषेस्थितिनहींकरता ॥ यद्यपि माताकेउदरतैं गर्भकूं प्रसूतिकाकारणवायु बाहरिचलावै है ॥ और पिताकेशरीरतैं गर्भकूं कामाग्नि चलावै है ॥ यातैं दोनोंकीसमानता संभवैनहीं ॥ तथापि जैसे माताकेशरीरविषे यहजीव गर्भरूपहोइकेस्थितहोवै है ॥ तैसे पिताकेशरीरविषेभी गर्भरूपहोईके स्थितहोवै हैं ॥ और जैसे प्रसवकाल विषे माताकूं यहगर्भ व्यामोहकरै है ॥ तैसे पिताकूंभी यहवीर्यरूपगर्भ व्यामोहकरैहैं ॥ यातैं दोनोंविषे जीवकीगर्भरूपता समान है ॥ अन्यवस्तुविषेअन्यबुद्धिकानाम व्यामोहहै ॥ तहाँ वीर्यरूपगर्भकोनिर्गमनकालविषे पिताकेव्यामोहकूं दृष्टांतकरिकैदिखावै हैं ॥ जैसे कफ

दोषतैं निंबादिककटुवस्तु मधुरभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ तैसेकामाग्निरूपदोषकेउत्पन्नहुयेतैं याकामीपुरुषकूं दुःखकासाधनभीस्त्रीशरीर सुखकासाधनप्रतीतहोवै है ॥ और दुर्गंधजलकरिकैयुक्तस्त्रीकामुख यद्यपिविचारकियेतैं ग्लानिकाकारण है ॥ तथापि कामदोषतैं कामीपुरुषकूं चंद्रमाकीन्यांई सुखकासाधनप्रतीतहोवै है॥ और मलकरिकेयुक्तस्त्रीकेनेत्र यद्यपि विचारकियेतैं ग्लानिकेसाधन हैं ॥ तथापि कामदोषतैं कामीपुरुषकूंकमलकीन्यांई रमणीकप्रतीतहोवैं हैं ॥ और स्त्रीकेनेत्रोंकेकटाक्ष विषयुक्तबाणकीन्यांई संपूर्णनरकोंकेकारण है ॥ तथापि कामदोषतैं कामीपुरुषकूं सर्वदा पुष्पकेसमानप्रतीतहोवैं हैं ॥ और श्लेष्मकेनिकसणेकामार्ग ॥ जोस्त्रीकीनासिका है ॥ सो यद्यपि विचारकियेतैं ग्लानिकाकारण है ॥ तथापि कामदोषतैं कामीपुरुषकूं दुग्धकीन्यांई मधुरप्रतीतहोवैं हैं॥और पायुइंद्रियकेसमानजोस्त्रीकेअधर हैं ॥ सो यद्यपि विचारकियेतैं ग्लानिकेसाधन हैं ॥ तथापि कामीपुरुषकूंकामदोषतैं अमृतकीन्यांई प्रतीतहोवै है ॥ और अंधकारकेसमान स्याम जेस्त्रीकेकेश हैं ॥ ते यद्यपि नेत्रकीशक्तिकूं हरणेहारे हैं ॥ तथापि कामदोषतैं कामीपुरुषकेनत्रोंकूं हर्ष उत्पन्नकरैं हैं ॥ और मांसकीग्रंथि जेस्त्रीकेस्तन हैं ॥ ते यद्यपि विचारकियेतैं ग्लानिकेकारण हैं ॥ तथापि कामदोषतैं कामी पुरुषकूं अमृतकरिकेपूरितसुवर्णकेकलश प्रतीतहोवैं हैं ॥ और अधिकमांसकरिकेयुक्त जोस्त्रीकाउदर है ॥ अथवा मांसरहितजोउदर है ॥ सो सूकरतथाश्वानकेउदरसमान है ॥ और विष्टामूत्रकास्थान है ॥ सो यद्यपि विचारकियेतैं ग्लानिकाजनक है ॥ तथापिकामग्रहकरिकैपीडित कामीपुरुषकूं आनंदकाकारण प्रतीतहोवै है ॥ और पायुरूपनदीकेतीररूप जोस्त्रीकेस्फिज हैं ॥ सो विष्टामूत्रकरिकेलेपित हैं ॥ यातैं विचारकियेतैं यद्यपि ग्लानिकेकारण हैं ॥ तथापि कामदोषतैं कामीपुरुषकूं रमणीकप्रतीतहोवैं हैं ॥ कटीकेनीचेमांसपिंडोंकानाम स्फिज है ॥ तिनहींकूं जघनभीक हैंहैं ॥ और भगंदररोगकेसमान और मूत्रगंधकरिकैदूषित जो स्त्रीकीयोनि है ॥ सो यद्यपि विचारकियेतैं ग्लानिकाकारण है ॥ तथापि कामदोषतैं कामीपुरुषकूं स्वर्गकेसमान प्रतीतहोवै है ॥ और ऊरूतैंलेकरिकैपादपर्यंत जोमांसयुक्तअस्थिरूप स्त्रीकी जंघा हैं ॥ सो यद्यपि विचारकियेतैं ग्लानिकेकारण हैं ॥ तथापि कामदोषतैं कामीपुरुषकूं स्वर्णकेसमान तथाकदलीके स्तंभसमान

रमणीकप्रतीतहोवे हैं॥इसप्रकार कामदोषकेबलतैं कामीपुरुषकूं जैसे स्त्री अमृतसमान प्रतीतहोवै है॥ तैसे कामदोषकेबलतैं स्त्रीकूंभी पुरुष अमृतसमान प्रतीतहोवै है ॥ यहाँयहतात्पर्य है ॥ कोईकदोष कार्यकाप्रतिबंधकहो वै है॥ जैसे नेत्रविषेस्थितपित्तदोष शंखविषेश्वेतज्ञान रूपकार्यकाप्रतिबंधक है और कोईकदोष विपरीतकार्यकूंउत्पन्नकरै है ॥ जैसे अग्निकरिकेदग्धबेत्रबीज कदलीकाआरंभकरै है ॥ अथवा जैसेभस्मकरोगकरिकैदूषितजठराग्नि बहुतअन्नकूंपचावै है इसप्रकार कामरूपदोषभी विपरीतकार्यकाआरंभक है ॥ तथा कार्यकाप्रतिबंध कहै ॥ तहाँ स्त्रीकेमुखादिकअवयवोंविषे चंद्रमादिकबुद्धिरूपविपरीतकार्यकीआरंभकता कामदोषकूं पूर्वग्रंथकरिकैदिखाई ॥ अब सर्वज्ञा नोंकीप्रतिबंधकता कामदोषकूं दिखावै है ॥ इसप्रकार कामीपुरुषके कामाग्निजन्यवीर्यरूपगर्भकेज्ञानहुवे ॥ तिसकालविषे यहकामीपुरुष शास्त्रप्रमाणतैं धर्मकूं नहींजाणै है और अधर्मकूंभीनहींजाणै है ॥ ॥ और रात्रिकूं तथादिनकूं नहींजाणै है ॥ और आपणेकूं तथापरकूं नहींजा णै है ॥ और मुख्यदकूं तथामित्रकूं नहींजाणै है ॥ और स्त्रीकेअवयवोंविषे नेत्रकीकिकीदोषोंकूंदेखताहुआभी यहकामीपुरुष कामदोषकेबल तैं अंधपुरुषकीन्यांई नहींदेखै है ॥ औरदोषकूंश्रवणकरताहुआभीयहकामीपुरुष बधिरकीन्यांई नहींश्रवणकरै है ॥ औरघ्राणइंद्रियकरिकैदुर्ग धकूंसूंघताहुआभी कामीपुरुष घ्राणदोषीपुरुषकीन्यांई नहींसूंघै है ॥ और रसनइंद्रियकरिकै रसकाअनुभवकरताहुआभी रसनरहितपु रुषकीन्यांई नहींअनुभवकरै है ॥ और त्वक्इंद्रियकरिकै स्पर्शकरताहुआभी यहकामीपुरुष त्वक्इंद्रियरहितपुरुषकी न्यांई नहींस्पर्शक रै है ॥ इस प्रकार ज्ञानइंद्रियकेशक्तिकीप्रतिबंधकता कामदोषविषे दिखाई॥अब कर्मइंद्रियोंकेशक्तिकीप्रतिबंधकता कामदोषविषे दिखावै है ॥ कामदोषकेबलतैं पंडितभीयहपुरुष जडकीन्यांई भाषणकरै है ॥ और यहकामीपुरुष हस्तइंद्रियवाला है भी ॥ तौभीहस्तइंद्रियतैंरहित पुरुषकीन्यांई वस्तुकाग्रहणकरै है ॥ और पादइंद्रियवालाभी यहकामीपुरुष है तौभी पादरहितपंगुपुरुषकीन्यांई गमनकरै है ॥ और मलपरि त्यागकीइच्छाकाजनकजोउदरकाफूलना॥ताकेहूवेभी रोगरहित यहकामी पुरुष मलकापरित्यागनहींकरै है ॥ अथवा मलकापरित्यागकरता हुआभी नहींपरित्यागकरै है॥तात्पर्ययह॥शरीरकेमलदर्शनकाफल शरीरविषे वैराग्यकीउत्पत्ति है॥सो मलदर्शनतैं जभी शरीरविषेवैराग्यउ

त्पन्ननहींभया॥तब मलकापरित्यागकरताहुआभी नहींकरै है॥ अब बल ऐश्वर्य प्रभुताकी प्रतिबंधकता कामदोषविषे दिखावैं हैं॥यहकामीपुरु ष बलवालाभी है तौभी बलरहितप्रतीतहोवै है॥और ऐश्वर्यवालाभीहै॥तौभीदारिद्रकीन्यांई प्रतीतहोवै है॥ और प्रभुतावाला राजाभीयहकामी पुरुष है तौभीभृत्यकीन्यांईप्रतीतहोवै है॥ अब चतुष्टयअंतःकरणकीप्रतिबंधकता कामदोषविषेदिखावैं हैं॥यहकामीपुरुष बुद्धिमान्भी है॥तौभी बुद्धिरहितप्रतीतहोवै है॥ और मनसहितभीहै॥तौभी मनरहितप्रतीतहोवै है॥और अहंकारवालाभी यहकामीपुरुषहै। तौभीअहंकाररहितप्रतीत होवै है॥और चित्तकेविद्यमानहूवेभीचित्तरहित यहकामीपुरुषप्रतीतहोवै है ॥ इसप्रकारकामरूपज्वरकेवशहुआवीर्यरूपगर्भकेधारणकरणेहा राकामीपुरुष त्रिवेकीपुरुषोंकरिकैनिंदित औरपश्चात्तापकाविषय जोपूर्वकहीअवस्था ताकूं प्राप्तहोवै है॥शंका । कामदोषनैंस्त्रीतैंभिन्नपदार्थोंवि षे सर्वइंद्रियोंकेव्यापारकीप्रतिबंधकता किसवास्तैं करीती है॥तत्राज्ञान॥ कूटस्थआत्माकूं मोहरूपफाँसीसैंबांधिकरिकै महामोह स्वतंत्रराज करणेकी इच्छाकरै हैं ॥ सोमहामोह विवेकतैंभयकूंप्राप्तहुआ कामकूंप्रधानमंत्रीकरताभया ॥ सोकाम आपणेप्रभुमहामोहकूं ऐसा कह ताभया ॥ हेमहामोह आप विवेकतैंकिंचित् मात्रभी भयनहींकरो ॥ काहेतैं जिसपुरुषशरीरविषे विवेककीउत्पत्तिकीआशा है ॥ तापुरुष शरीरकूं सर्वइंद्रियोंसहित निंदितस्त्रीशरीरविषे मैंप्रवर्तकरोंगा ॥ ऐसीप्रतिज्ञा कामनें महामोहकेआगेकरी ॥ ताप्रतिज्ञाकेपालनकरने वासतैं अन्यत्रइंद्रियोंकेव्यापारकाप्रतिबंधकरिकै स्त्रीविषेहीं सर्वइंद्रियोंकेव्यापारकूं काम प्रवर्तकरताभया ॥ इसअभिप्रायतैं कामीपु रुषकेसर्वइंद्रियोंकाव्यापार स्त्रीविषे दिखावैं हैं ॥ सोकामीपुरुष कामकेउत्पत्तिकालविषे नेत्रोंकरिकैस्त्रीकूंहींदेखै है ॥ और एकाग्रमनहुआ सोकामीपुरुष श्रोत्रइंद्रियकरिकै तास्त्रीकाहीश्रवणकरै है॥ और घ्राणइंद्रियकरिकैभा तास्त्रीकूंहींसूंघै हैं ॥ और रसनइंद्रियकरिकै वारंवार तास्त्रीकेरसकूंहीं आस्वादन करै है ॥ और त्वक्इंद्रियकरिकै आदरपूर्वक सर्वअंगोंकरिकै तास्त्रीकाहीस्पर्शकरै है ॥ अब स्त्रीविषयक कर्म इंद्रियोंकेव्यापारकूं दिखावैं हैं ॥ सोकामीपुरुष वाक्इंद्रियकरिकै तिसस्त्रीकूं प्रीतिसुखकाकारणकहै है ॥ और हस्तइंद्रियकरिकै आदरपूर्वक वारंवारतास्त्रीकाहीग्रहणकरै है॥ और यहकामी पुरुष पादइंद्रियकरिकैभी देवता तथागुरुके समान तास्त्रीकेसमीपहीं गमनकरै है और पायु

इंद्रियकरिकै मलकापरित्यागरूपव्यापारकरणेकूंभी यहकामीपुरुष प्रवर्त्तहोवै है ॥ परंतु पायुइंद्रिकाव्यापार स्त्रीविषे अशक्य है ॥ यातैं तिसतैंनिवृत्तहोवै है ॥ याकहणेतैं कामीपुरुषकेउपहासकूंदिखाया ॥ अब स्त्रीविषे चतुष्टयअंतः करणकेव्यापारकूंदिखावै है ॥ जैसे विवेकी पुरुष मनकरिकै देवताकास्मरणकरै है ॥ तैसे यहकामीपुरुष मनकरिकै तास्त्रीकाहीस्मरणकरै है ॥ और जैसे योगीपुरुष बुद्धिकरिकै आत्माकूंनिश्चयकरै है ॥ तैसे यहकामीपुरुष बुद्धिकरिकै तास्त्रीकूंहीनिश्चयकरै है ॥ और जैसे शुद्धबुद्धिवालेविवेकीपुरुष रात्रिदिनविषे चित्तकरिकै विष्णुकूंचिंतनकरैं हैं ॥ तैसे यहकामीपुरुष रात्रिदिनविषे तास्त्रीकूंहीं चित्तकरिकैचिंतनकरै है ॥ और यहकामीपुरुष कामादोषकेबलतैं तास्त्रीकूंहीं आत्मामानै हैं॥जाकारणतैंतिसस्त्रीकरिकैताडनाकियाहुआभी तिसस्त्रीकूंहींअधिकमानै है ॥ अब स्त्रीकीअधीनताजन्यपुरुषकेदोष कहणेवासतैंप्रथमलोकप्रसिद्धस्त्रीकेदोषोंकूंदिखावैं हैं ॥ सोस्त्रीभीस्वाधीनहुवेकामीपुरुषकूंजैसेमर्कटकूंपुरुषनचावै है तैसेनचावै है ॥ तात्पर्ययह आपणेअभिप्रायकेअनुसारहीं सर्वकार्यकूं करावै है ॥ अब स्त्रीकेअन्यवास्थितस्वभावरूपदोषकूं दिखावैं हैं ॥ कभी सोस्त्री अनेकप्रकारकी सेवाकरिकै पुरुषकूं सन्मानकरै है ॥ और कभी तीक्ष्णबाणसमानवचनोंकरिकै पुरुषकूं निरादरकरै है ॥ और कभी सोस्त्रीपतिकूं ऐसाकहै है ॥ हेनाथ तुम हमारेकूं देहतैंतथाप्राणोंतैंभी अधिकपियारेहो ॥ और कभी ऐसाकहै है ॥ तुम किसकेपतिहो ॥ मैं तुम्होरेकूंजाणतीभीनहीं ॥ और कभीसोस्त्री पतिकेसाथि वचनउच्चारणकरै है ॥ और कभी वचनभीनहीं उच्चारण करै है ॥ और कभी सोस्त्री पतितैं धनकी याचना करै है और कभी सोस्त्री पतिकूं आप धनदेवै है ॥ अब स्त्रीकेनिर्दय तारूपदोषकूं दिखावैं हैं ॥ कभी सोस्त्री परपुरुष विषयासक्तहुई सोयेहुयेआपणे पतिका नाशकरै है ॥ और कभी अन्यपुरुषकूं काहिकरिकै पतिकूंनाशकरावै ॥ इसप्रकार साधुस्वभावली भीस्त्री आपणेअनिष्टकरणेहारेअन्यपुरुषोंकूं आपणेपतिकरिकै तथाभ्रातादिकोंकरिकै नाशकरावै है ॥ और व्यभिचारिणी स्त्रीतौ स्नेहतैंरहितहुई ॥ आपणेपति तथापुत्र तथापितादिकोंकूंभी अन्यबलीपुरुषोंकरिकै नाशकरावै है ॥ और कभी सोस्त्री शिष्टपुरुषोंकीसभाविषे साधुपुरुषोंकूंभी मिथ्यावचनकरिकै उपहासकेयोग्यकरै है ॥ और कभी सोस्त्री आपणेस्वल्पकार्यविषे पिताकूं तथाभ्राताकूं

तथापुत्रकूं तथाविद्यासंपन्नब्राह्मणकूं नाशकरै है ॥ यह वार्ता सर्वलोकविषे प्रसिद्ध है ॥ इसप्रकारकीस्त्रीविषे आसक्तपुरुषकूं इसजन्मविषे निश्चयकरिकै दुःखप्राप्तहोवै है ॥ और परलोकविषेनरकप्राप्तिहोवै है ॥ यातैं कौनऐसाविवेकीपुरुषहै जोस्त्रीविषेआशक्तिकरै है ॥ किंतु मूढपुरुषोंकीही आसक्तिहोवै है ॥ यहाँयहअभिप्रायहै ॥ राजादिकतौ स्नेहतैंराहितहुये पुरुषोंकानाशकरै हैं ॥ और डाकिनी स्नेहयुक्तहुईनाश करै है ॥ और स्त्रीतौ स्नेहयुक्तहुई तथास्नेहतैंरहितहुई दोनोंप्रकार पुरुषकानाशकरै है ॥ सोस्त्रीभी दोप्रकारकीहोवै हैं ॥ एकतौआपणीस्त्री ॥ दूसरीपरस्त्री ॥ तहाँ स्नेहकरिकैयुक्तहुईभी आपणीस्त्री पतिकाअन्यस्त्रीकेसमीपगमनदेखिकरिकै ॥ क्रोधकूंप्राप्तहुई विषदेकरिकै तथाअन्यकिसीमंत्रादिकोंकरिकै आपणेपतिकूंनाशकरै है ॥ और जब परस्त्री अन्यपुरुषाविषेस्नेहयुक्तहोवै है ॥ तब सोपरस्त्रीकिसीनिमित्तसैक्रोधयुक्तहुई तिसपरपुरुषकूं आपणेपिताद्वारा तथाभ्राताद्वारा नाशकरावै है ॥ इसप्रकार आपणीस्त्री तथापरस्त्री पुरुषविषे स्नेहयुक्तहुईभी दोनों लोकोंविषे भयका कारण है ॥ और जब आपणीस्त्री यापुरुषाविषे स्नेहरहितहोवै है ॥ तब सो स्त्री एकांतस्थानविषे कामज्वरकरिकै पीडितपुरुषकूं कठोरवचनोंकरिकै ताडनकरै है ॥ और ताकेसमीपभीनहींजावै है ॥ अथवा किसीकार्यकेबहानेकरिकै इसकामातुरपुरुषकूं परित्यागकरिकै अन्यपुरुषके समीप गमनकरै है ॥ और जब पति स्त्रीकापरपुरुषकेसमीपगमनकूं जाणे है ॥ तब सोस्त्री जोबलवतीहोवैहै ॥ तौ रात्रिविषे पुरुषकूं आपहीनाशकरैहै ॥ औरजब सोस्त्री बलहीनहोवैहै॥तब अन्यपुरुषोंकरिकै पतिकानाशकरावैहै ॥ और जबपरस्त्रीअन्यपुरुषाविषेस्नेहरहितहोवैहै॥तब सोस्त्रीतौ तत्काल यापुरुषकेमरणकाकारणहै॥एकांतस्थानविषे यहपुरुषमेरेकूं याचनाकरताथा ॥ ऐसेआपणेसंबंधियोंकूंकहिकरिके यापुरुषकूं नाशकरावैहै ॥इसप्रकार आपणीस्त्रीविषे तथापरस्त्रीविषे अनंतप्रकारकेदोषहैं ॥ तेदोषकामीपुरुषोंनैं रात्रिदिनविषे सर्वदा अनुभवकरीतेहैं ॥ और जैसे कामीपुरुषकेदुःखकाकारण स्त्रीहै॥तैसे कामयुक्तस्त्रीकेभी दुःखकाकारण पुरुषहै॥ यातैं यहसिद्धभया ॥ कामहीं सर्वदुःखकाकारणहै ॥ स्त्री तथापुरुष दुःखके कारणनहीं ॥ जोस्त्रीही पुरुषकेदुःखकारणहोवै ॥ तौ कामरहितस्त्रीभी पुरुषके दुःखकाकारणहोणीचाहिये ॥ और कामरहितस्त्री पुरुषकेदुःखकाकारण होवैनहीं ॥ और जोपुरुषही स्त्रीकेदुःखकाकारणहोवै ॥ तो काम

रहितपुरुषभी दुःखकाकारणहोणाचाहिये ॥ और कामरहितपुरुष स्त्रीकेदुःखकाकारणहोवैनहीं ॥ यातैं कामकेउत्पत्तिहूवे दुःखकीउत्पत्ति ॥ और कामकेअभावतैंदुःखकाअभाव ॥ याप्रकारके अन्वयव्यतिरेककरिकै कामकूंही सर्वदुःखकीकारणताहै ॥ इसप्रकारदुःखकाकारण काम रूपशत्रुकूंजाणिकरिकै बुद्धिमान्पुरुषताकामकापरित्यागकरै ॥ याकेविषे विद्वानोंकाअनुभवकहैहैं ॥ श्लोक ॥ कामकिंकरतांप्राप्यजनोनोकस्यकिंकरः॥एकंकामंपरित्यज्यजनोसौकस्यकिंकरः ॥३॥ अर्थयह ॥ एककामकेअधीनहुआयहपुरुष सबकादासहोवै है और एककामकाजब परित्यागकरैहै॥तब किसीकाभीदास नहींहोवैहै॥३॥अब कामकामूल तथाताकेनिवृत्तिकाउपाय दिखावैहैं॥ यहनारीरमणीकहै॥ऐसीबुद्धितैं कामउत्पन्नहोवैहै ॥ और रमणीकबुद्धिसौंदर्यादिकगुणबुद्धितैं उत्पन्नहोवै हैं ॥ यातैं गुणबुद्धि रमणीकबुद्धिद्वारा कामकाकारणहै ॥ ताकेनाशविना कामकानाशहोवैनहीं ॥ और तागुणबुद्धिकानाश पूर्वकहेजेस्त्रीविषेदोष तिनोंके ज्ञानतैंहोवैहैं ॥ और दोषोंकेदर्शनतैं गुणबुद्धिका कारणमोहभी नाशहोवैहै ॥ सोकैसामोहहै ॥ जगत्कूं अंधकरणेहाराहै ॥ और सुंदरतागुणरहितनारीआदिकोंविषे सुंदरताबुद्धिकाकारणहै ॥ तात्पर्ययह ॥ आवरणशक्ति और आक्षेपशक्तिकरिकै युक्त है ॥ पुनःसोमोहकैसाहै ॥ अतिविस्तृतकामरूपवृक्षकाबीजहै ॥ यातैं तिस मोहकेनष्टहूवे क्षणमात्रविषे काम आपहीनाशहोवै है ॥ जैसे मूलकेनष्टहूवे वृक्ष नाशहोवैहै ॥ और इच्छास्वरूपकामकेनष्टहूवे क्रोधभी तिसीकालविषे नाशहोवैहै ॥ काहेतैं इच्छारूपकामका जभी कोईपुरुष निरोधकरै है ॥ तभी सोइच्छारूपकामही द्वेषरूपक्रोधाकारपरिणामकूं प्राप्तहोवै है ॥ और जो पुरुष इच्छातैंरहित है तिसकूं किसीनिमित्तकरिकै क्रोधउत्पन्नहोवैनहीं ॥ अथ कामकेतथाक्रोधके निवृत्तिकाफलवर्णन ॥ श्लोक ॥ विवेकवह्निनादग्धे कामक्रोधेसमूलके ॥ संसारेभगवानेष आनंदात्माप्रसीदति ॥ ४ ॥ अर्थयह ॥ महावाक्यकारिकैजन्य आत्मज्ञानरूपआग्निकरिकै मूलअज्ञानसहितकामक्रोधकेनाशहुये इसीशरीरविषे महावाक्यका अर्थरूप आनंदआत्मा प्रादुर्भावहोवैहै ॥ ४ ॥ याअर्थविषे स्मृतिवचनकूंभीदिखावैहै ॥ श्लोक ॥ कामजानामितेमूलं संकल्पात्किलजायसे ॥ संकल्पेतुमयात्यक्ते कथं त्वंमयिजायसे ॥ ५ अर्थयह ॥ हेकाम तेरामूल मेंजाणताहूं॥संकल्पतैं तुम उत्पन्नहोवोहो ॥ सो संकल्प हमनैं परित्यागकऱ्याहै यातैं ॥

किसीप्रकारकरिकभी हमारेविषे तुमारीउत्पत्ति संभवैनहीं ॥ ५ ॥ इसप्रकार कामविषे सर्व अनर्थकीमूलताकूं तथाकामकेनिवृत्तिके उपायकूं यहकामीपुरुष नजाणताहुआ और वीर्यरूपगर्भकरिकैयुक्तहुआ औरकामरूपग्रहकरिकैव्याकुलहुआ औरसर्पकीन्याईंउपस्थरूप सर्पकरिकैदंस्याहुआ ऐसाजो कामी पुरुषहै ॥ सो ताकालविषे किंचित्मात्रभी नहींजाणता ॥ औरकामरूपग्रहकेप्रवेशतैं तथाउपस्थरूपसर्पकृतभक्षणतैं यहकामीपुरुष वीर्यरूपगर्भकरिकैक्षीणहुआ तावीर्यरूपगर्भकेत्यागकीइच्छाकरैहै ॥ सोकैसावीर्यरूपगर्भहै ॥ शरीरकासारभूतहै और सर्वअंगोंतैं पृथक्काकियाहुआहै॥ ऐसेवीर्यरूपगर्भकूं जब यहकामीपुरुष नहींसहारिसकैहै॥तब नारीकीयोनिविषे ताका परित्यागकरै है ॥ याप्रकारमैथुनधर्मतैंपिताकास्वल्पस्वरूपजोवीर्यरूपगर्भहै॥ सो स्त्रीकीयोनिकूं प्राप्तहोवैहै॥और जैसे भारकरिकैदुःखीहुआपुरुष भारकेत्याग कियेतैं सुखीहोवै है॥तैसे वीर्यरूपगर्भकेत्यागतैं यहगर्भीपुरुष सुखकूंप्राप्तहोवै है॥ औरजैसेपिशाचादिकग्रहकरिकैआविष्टपुरुष दुःखकूंप्राप्तहोवैहै और ताग्रहकेनिवृत्तहुवेतैं सुखकूंप्राप्तहोवैहै॥तैसे यहगर्भीपुरुष वीर्यरूपगर्भकेनिकसणेतैंसुखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यहाँ वीर्यकेनिर्गमनतैं सुखकी प्राप्ति लौकिकदृष्टिसैंकहीहै ॥ औरविचारदृष्टिसैंतौ वीर्यकोनिर्गमनाविषे पुरुषोंकी महाहानिहोवैहै॥ जैसे जीर्णभावकूंनहींप्राप्तभयाजोअन्नहै॥सो प्राणांतदुःखकूंउत्पन्नकरिकैनिकसैहै॥तैसे यहवीर्यभी प्राणांतदुःखकूंउत्पन्नकरिकैनिकसैहै॥ और जैसे पुरुषोंकेबलकानाशक अजीर्णअन्नका निर्गमनहै॥तैसे वीर्यकानिर्गमनभी पुरुषकेबलकानाशकहै ॥ और जस अतीसाररोग पुरुषोंकूंसर्वतेजकूंहरणेहाराहै ॥ तैसे वीर्यकाबाह्यनिर्गमनभीपुरुषोंकेसर्वबलकानाशकहै॥याप्रकार वीर्यकेबाह्यानिर्गमनतैं पुरुषोंकी महाहानिकही ॥ अब तावीर्यकेनिरोधतैं पुरुषोंकूं महाफलकीप्राप्तिदिखावैहै ॥ पुरुषोंकरिकैनिरुद्धकऱ्याहुआ जोवीर्यरूपसप्तमधातु ॥ ताकी ओजनामा अष्टमीदशाहोवैहै ॥ हृदयदेशविषेस्थित औरपीतवर्णवाला जोजीवकेनिवासकास्थान ताकूं ओजनामकरिकै योगवाशिष्ठमैंकह्याहै ॥ ताओजनामादशाकरिकै यहजीव तेजयुक्तहुवा जीवैहै ॥ और यावीर्यकेनिरोधकियेहुवे पुरुषोंकूं विरूपकरणेहारीजराअवस्थाभी शीघ्रनहींप्राप्तहोवैहै ॥ और मृत्युभी शीघ्रनहीं प्राप्त होवै है ॥ और बलभी तापुरुषका नाशनहींहोवैहै ॥ और वीर्यकेनिरोधकरणेहारेब्रह्मचारीपुरुषोंकूं परलोकाविषे ब्रह्मलोककीप्राप्ति

होवैहै ॥ और इस लोकविषे महाकीर्ति ताकीहोवै है ॥ यातैं वीर्यकेनिरोधतैंही ब्रह्मचारी पुरुषोंके दोनोंलोकसिद्धहोवैं हैं ॥ और वीर्यकेपरि
त्यागतैं कामीपुरुष दोनोंलोकोंतैंभ्रष्टहोवैं हैं ॥ और वीर्यकेनिरोधतैं योगीपुरुष आकाशविषेगमनकरणेकूंभी समर्थहोवैं हैं ॥ और अणिमा
दिकअष्टसिद्धियोंकूं प्राप्त होवैं हैं ॥ इसप्रकार वीर्यकानिरोध महाफलकाहेतु है ॥ तावीर्यकेपरित्यागतैं कामीपुरुष महाहानिकूंप्राप्तहोवै हैं ॥
जैसे इक्षुकादंड पीडनतौंनिःसारहोवै है ॥ तैसे यह कामीपुरुषभी स्त्रीकीभुजावोंकरिकै पीडनतैं साररूपवीर्यतैंरहितहोवै है ॥ और कामरू
पअग्निकरिकै सर्व अंगोंतैंनिर्गमनभयाजोवीर्य है ॥ सोकैसावीर्य है ॥ आयुपूऔरबलके वृद्धिकरणेहारा है ॥ ऐसे वीर्यकूं यहमूढकामीपुरुष
अज्ञानकरिकैआवृतहुआ स्त्रीविषेपरित्याग करै है ॥ इसप्रकार स्त्रीकेयोनिस्थानविषेप्राप्तभयाजो जीवमिलितवीर्य ॥ ताका पुरुष शरीरतैंनि
र्गमनरूप प्रथम जन्म कहीताहै ॥ और तायोनिविषेप्राप्तभयायहजीव नानाप्रकारके सहस्रअवस्थावोंकूं प्राप्तहोवै है ॥ ते कैसी अवस्थाहैं ॥
एकएकअवस्थाभी दुःख तथा शोकोंके सहस्रों करिकै व्याप्त हैं ॥ और गर्भ उपनिषेद्विषे ते अवस्था विस्तारतैं निरूपणकी हैं ॥ और
वीर्यरूपगर्भकेधारणकरणेहारा यह पुरुष स्त्रीकेउदरविषे गर्भरूपकारकै प्रवेश करै है ॥ याकारणतैं पुरुषकेवीर्यरूप गर्भके धारणकरणेहारी
सोस्त्री पुरुषनैं सर्वप्रकारकरिकै रक्षाकरणेकूं योग्य है ॥ अब तारक्षाके प्रकारकूं दिखावैं हैं॥वस्त्रोंकरिकै तथा अन्नकरिकै गर्भिणीस्त्रीकारक्षण
पुरुषनैं करणा ॥ तथा धनकरिकै रक्षणकरणा ॥ और चतुर्थमासविषे हृदयदेशविषेगर्भ स्थितहोवै है ॥ तिसकालविषे जिस जिस पदार्थमें
स्त्रीकीअभिलाषाहोवै ॥ तिसतिस पदार्थोंकी प्राप्तिकरिकैभी स्त्रीकारक्षण करणा ॥ तापदार्थोंकेनदेणेतैं बालककूं दुःखकी प्राप्ति सुश्रुतग्रंथ
विषे कहीहै॥तहाँ यह प्रसंगहै॥चतुर्थमासविषे चक्षुइंद्रियकेविषयजेरूपादिकपदार्थ तिनोंकी जोस्त्रीकूंअभिलाषाहोव ॥ और तापदार्थोंकी
प्राप्ति स्त्रीकूंनहींहोवै ॥तब बालककेचक्षुइंद्रियाविषे पीडाउत्पन्नहोवैहै ॥ तैसे रसनइंद्रियकेविषयजेरसादिकहैं ॥ तिनोंकिजब स्त्रीकूंअभिलाषा
होवै ॥ और तारसादिकोंकीप्राप्ति होवै नहीं ॥ तब बालककूं रसनइंद्रिय विषे पीडा उत्पन्नहोवै है ॥ इस प्रकार जिसजिस इंद्रियकाविषय
गर्भिणीस्त्रीकूं नहीं प्राप्त होवै है ॥ तिसतिसइंद्रियविषे बालककूं पीडाहोवै ॥ यातैं सर्व इंद्रियोंके विषयोंकी प्राप्तिकरिकै पुरुषनैं स्त्रीका

रक्षणकरणा ॥ और नानाप्रकारके रथादिकोंकरिकै स्त्रीका रक्षण करणा ॥ और स्नानकरिकै तथा सिंहजांकरिकै तथा आसनादिकोंकरिकै
पुरुषनैं स्त्रीकारक्षण करणा ॥ और गृहकेव्यापारकीनिवृत्तिकरिकैभी स्त्रीका रक्षणकरणा और औषधादिकोंकेसेवनतैं स्त्रीकी रक्षाकरणी ॥
तथा अपथ्यवस्तुकीनिवृत्तितैं स्त्रीकी रक्षाकरणी ॥ इसप्रकार गर्भिणी स्त्रीकापालनकरणा पुरुषकूंउचितहै ॥ काहेतैं लोकविषे यहमर्यादाप्र
सिद्धहै ॥ जोपुरुष उपकार करैहैं ताऊपरि दुर्जनपुरुषभी उपकारकरैं हैं ॥ और सज्जनपुरुष उपकारकरैंहैं याकाक्याकहणा है ॥ तैसे यहनारी
भी पुरुषकेवीर्यरूपगर्भकेधारणतैं पुरुषऊपरि उपकारकरै है ॥ तात्पर्य यह ॥ पुरुषकेदुःखकाकारणवीर्यरूपगर्भ यास्त्रीनैं आपणेविषेधारण
कऱ्या है ॥ यातैं कृतघ्नतादोषकी निवृत्ति वासतै पुरुषनैं सर्व प्रकार गर्भिणी स्त्रीकारक्षणकरणा ॥ किंवा ॥ वीर्य रूपगर्भ विशिष्टपुरुष
गर्भरूपकरिकै स्त्रीविषेप्रवेशकरै है ॥ और पुनः नवीन होइके तास्त्रीविषे उत्पन्न होवै है ॥ याकारणतैं पुरुषकी स्त्रीजननी है ॥ यातैंभी रक्षा
करणे योग्य है और गर्भाधानकाल तैं लैकरिकै जब पर्यंत योनितैं जीवका निर्गमन होवै है ॥ तब पर्यंत स्त्रीके रजके साथि तादात्म्यभा
वकूंप्राप्तभया जोपुरुषका अंश ॥ ताकू यहस्त्री आपणेशरीरकी न्याईं धारणकरै है ॥ यातैंभी पुरुषकरिकै स्त्रीरक्षाकरणेकूंयोग्यहै ॥ तहाँ
पूर्वग्रंथकरिकै पुरुषकेशरीराविषे प्रवेशरूप प्रथमगर्भकरिकै जीवकू दुःखोंकी प्राप्तिकही ॥ अब स्त्रीके शरीर विषेप्रवेशरूप द्वितीय गर्भ
करिकै जीवकूं दुःखोंकी प्राप्तिका निरूपण करैं हैं ॥ योनिद्वारा जोविषेप्रवेश होवै ऐसा जो स्त्रीकाउदर है ॥ सोकैसाउदरहै॥ कृमितथाविष्ठा
दिकोंकरिकै दूषित है ॥ ऐसे उदरविषे अनंतदुःखोंकूं जीव अनुभवकरिकै पुनःयोनिद्वारावाहरिआवै है ॥ यागर्भदुःखकेभयतैंही सर्वमु
मुक्षु ब्रह्मज्ञानकी इच्छा करैं हैं ॥ और ब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिवासतैं आलसतैं रहितहुवे शास्त्रउक्तानिष्कामकर्मोंकूं करैंहैं ॥ सोकैसागर्भ दुःखहै ॥
जैसा मरणकालविषे पुरुषोंकूंदुःखहोवैहै ॥ जैसा नरकविषेदुःखहोवै है ॥ तिसदुःख तैंभीकोटी कोटी गुणितअधिकदुःख योनियंत्र विषे
जीवकूंहोवै है ॥ और जैसे मरणकालविषे जीवकूं पीडाहोवै है ॥ तातैंशतगुणअधिकपीडा योनियंत्रके प्रवेश विषे तथा निर्गमन विषे
जीवकूं होवै है ॥ और माताकेउदरविषे जो जीवकानिवासहै ॥ सो नरकके निवासतैंभी अधिक है ॥ और तिसमाताके उदरविषे देहध।

रीजीवोंनें अनंतदुःखोंकाअनुभवकरीता है ॥ जे दुःख कथनकरे हुवेभी हमारेकूं विह्वलता उत्पन्न करैं हैं ॥ और विष्ठामूत्रका गृह जोजननीकाउदरहै ॥ ताविषेनिवासतैं दुःसहदुःखकूं यह जीव प्राप्तहोवै है ॥ सो माताकाउदररूपगृहकैसाहै॥ पूयऔररुधिरकरिकैलिप्त है ॥ और नानावर्णयुक्तजेकफवातपित्तधातुवां ॥ तिनधातुरूपचित्रोंकरिकैयुक्त जेमांसमयभित्ति ॥ तिनभित्तियोंकरिकैयुक्त है ॥ या कारणतैं दुःसहहै ॥ और उदरकेकृमिरूप जे सर्पोंकेसहस्र तिनोंकरिकै युक्त है ॥ और व्याधिरूपजेवृश्चिकहैं तिनोंकरिकैपूरितहै ॥ और माताकाजो महान्प्राणवायुहै ॥ तिसकरिकै चलायमानभये हैं नाडीरूपरज्जुजिसके और जाकेभींतर सर्वदाआग्निरहै है ॥ याकारणतैंहीं अर्द्धदग्ध है ॥ और सकुंचित है गर्भकाअवकाशजिसविषे ॥ ऐसेमाताकेउदरविषे दुःसहदुःख जीवोंकूं प्राप्तहोवै हैं ॥ सोगर्भदुःख विवेकीपुरुषोंकूं प्रसिद्ध है और विशेषकरिकै योगीपुरुषोंनैं गर्भकादुःख स्मरणकरीताहै ॥ इस प्रकार गर्भविषे अनंतदुःखोंकूं जीव प्राप्त होवै है ॥ सहस्रजन्मोंकूंधारि करिकै जोगर्भदुःखोंकीगिणतीकरिये ॥ तौभी गिणेजावैं नहीं ॥ यातैं किंचित्मात्र गर्भकेदुःख तुमारेकूं हमनैंकहे हैं ॥ और गर्भउपनिषद् विषेभी याप्रकार किंचितदुःख कथनकरैं हैं ॥ गर्भकेसर्वदुखकहणेकूं कोईभी समथ नहीं यातैं प्रधानप्रधान जेगभकेदुःख हैं ॥ तिनोंकूं हम कथनकरैं हैं ॥ तागर्भविषे अष्टमासपर्यंत जीवोंकूं मूर्छारूपअज्ञानरहै है ॥ सोकैसाअज्ञानहै ॥ सर्वदुःखोंकाकारणहै ॥ और गर्भविषे जीवकूं आपणीक्षुधापिपासाकरिकै अथवा माताकेक्षुधापिपासाकरिकै अतिसंतापहोवै है ॥ और शरीरविषे असमर्थताहोवैहै ॥ और नवम मासविषे जीवकूं अनंतजन्मोंकेदुःखोंकीस्मृतिहोवैहै ॥ तहाँ दुःखोंकास्मरणकरिकै याप्रकार कथनकरैं हैं ॥ श्लोक ॥ आहाराविविधाभुक्ताः पीताश्चविविधाः स्तनाः ॥ मातरोविविधादृष्टाः पितरःसुहृदस्तथा ॥ यदियोन्याःप्रमुच्येयं तत्प्रपद्येमहेश्वरम् ॥ ६ ॥ अर्थ यह ॥ नवममा सविषे पूर्वदुःखनकास्मरणकरिकै यह जीव ऐसाकथनकरैहै ॥ चौरासीलक्षशरीरोंविषे मैंने आहारभी अनंतप्रकारकेभोजनकरे हैं ॥ और अनंतप्रकारके मैंने स्तनपान करे हैं ॥ और अनंतप्रकारके मातावोंकूं मैंनैं देखाहै ॥ और अनंतप्रकारकेपितावोंकूं मैंने देखाहै ॥ तथा अनंतप्रकारकेसुहृदोंकूं देखाहै ॥ अभी इसयोनितैं जब मै निकसोंगा तब परमेश्वरके शरणकूंप्राप्तहोवोंगा ॥६॥ इसप्रकारण पूर्वदुःखोंकूं

स्मरणकरिकै गर्भविषे याप्रकार जीव कथनकरै है और माताकूंभीपीडाउत्पन्नकरै है ॥ याप्रकार उदरविषे नानादुःखोंकूंसहनकरिकै परिपूर्णहुआ जोबालक है ॥ ताकूं प्रसूतिकालकावायु माताकेउदरतैंबाहरिनिकासै है ॥ सोकैसाबालक है ॥ कलिलादिअवस्थाक्रमकरिकै जिसके सर्वहस्तपादादिकअवयवपूर्णभये हैं ॥ यहाँयहतात्पर्य है ॥ प्रथमरात्रिकरिकै कलिलअवस्थाहोवै है ॥ और सप्तरात्रिकरिकै बुद्बुद् होवै है ॥ और अर्द्धमासकरिकै पिंडहोवै है ॥ और एकमासकरिकैकाठिन्यहोवै है ॥ और दूसरेमासकरिकैशिरहोवै है ॥ और तीसरेमास करिकैपादहोवैं हैं ॥ और चतुर्थमासकरिकै अंगुली उदर कटीदेश होवैं हैं ॥ और पंचममासकरिकै पृष्ठदेशहोवै है ॥ और षष्ठमासक रिकै मुख नासिका नेत्र श्रोत्र होवैं हैं ॥ और सप्तममासकरिकै जीवकासंयोगहोवै है ॥ और अष्टममासकरिकै सर्वअंगोंकीपूर्णताहोवै है ॥ और नवममासकरिकै ज्ञानकीपूर्णतातैं पूर्वजन्मोंकीस्मृतिहोवै है ॥ याप्रकारगर्भउपनिषद्विषे बालकेअवयवोंकीपूर्णता माताकेउदर विषेकही है ॥ पुनःसोकैसाजीव है ॥ त्यागकियाहैगर्भासनजिसनैं ॥ गर्भविषे याप्रकारका आसनहोवै है ॥ पृष्ठ तथाग्रीवा कुंडलीकृत होवैं हैं ॥ और हस्तपाद संकुचितहोवैं हैं ॥ और कुक्षिविषे जाकामस्तकहोवै है ॥ पुनः सोकैसाबालक है ॥ प्रसवकेसमीपकालविषे जरायु रूपपटकरिकैरहित है ॥ और माताके उदरविषे मंडूककीन्याईं जहाँतहाँ धावनकरै है ॥ और हस्तोंकरिकै तथापादोंकरिकै तथा शरीरकीक्रियाकरिकै माताकेउदर भेदनकरणेवासतै उद्यमवालाहुआ है ॥ और कदाचित् सोबालक माताकेकुक्षिदेशाविषे धावनकरै है ॥ और कदाचित् हृदयदेशविषे धावनकरै है ॥ और कदाचित् योनियंत्रविषे धावनकरै है ॥ जैसे मर्कट एकस्थानविषे स्थितनहींहोवै है ॥ तैसे यहबालकभी माताके उदरविषे कदाचित् स्थितिकूंनहींप्राप्तहोता ॥ पुनःसोकैसाबालक है ॥ आपणेशरीरकेमध्यदेशविषे मस्तककूं धारिकरिकै कियाहैनीचेमस्तकजिसनैं ॥ और अनंतप्रकारकेक्लेशोंकरिकै जननीकूं क्लेशकरै है ॥ यातैं अतिनिंदित है ॥ और जैसे सर्पके ग्रसणेतैं मंडूक पुकारै है ॥ तसे यहबालकभी पुकारै है ॥ याप्रकारकेबालककूं प्रसूतिकालकाप्राणवायु माताकेउदरतैं बाहरिनिकासै है ॥ जैसे मूषककूं सर्प निकासै है ॥ और काष्ठकेभेदनकरणेहाराजोकुकच है ॥ तिसकेअग्रभागकेसहस्रोंतैंभीअतितीक्ष्ण जोस्वल्पयोनियंत्र है ॥

तातैंनिकासिकरिकै कीटकीन्यांई यहबालक भूमिविषेप्राप्तहोवै है ॥ ताबालककेनिकसणेतैं स्त्रीकूंभी महा पीडाहोवै है ॥ जैसे कृमिक
रिकैयुक्तव्रणकेकोपहुये पुरुषोकूं पीडाहोवै है ॥ तिसपीडातैंभीअधिकपीडा योनियंत्रविषेबालककेप्राप्तहुवे स्त्रीकूं होवै है ॥ और जैसे
उदरविषे व्रणकेहूवे तथासर्पकेहूवे अस्मदादिकपुरुषोंकूं पीडाहोवै है ॥ तैसे गर्भकेधारणतैं गर्भिणीस्त्रीकूं पीडाहोवैहै॥ और पूयकरिकैपूरितव्र
णकेभेदनकरिकै तिसव्रणतैंकीटोंकेनिर्गमनहुये जैसे अस्मदादिकपुरुषोंकूं सुखहोवै है ॥ तैसाहीं सुख गर्भकेत्यागकिये स्त्रीकूं होवैहै ॥ और
विष्ठामूत्रकेनिरोधतैं अस्मदादिकपुरुषोंकूं जैसा दुःखहोवै है ॥ तिसतैंभीअधिकदुःख गर्भकेधारणविषे स्त्रीकूं होवै है ॥ और चिरकालके
निरुद्धहुये जेमलमूत्रादिक ॥ तिनोंकेपरित्यागतैं जैसे अस्मदादिकपुरुषोंकूं सुखहोवै है ॥ तैसाहीसुखगर्भिणीस्त्रीकूं गर्भकेत्यागतैंहोवै है ॥
अब अभूतउपमाकारिकै स्त्रीकेदुःखकूं दिखावै हैं ॥ वीसअंगुलपरिमाणदीर्घहोवै ॥ और विस्तारकरिकै तथाविशालताकारिकै वित
स्तिमात्रजाका परिमाणहोवै ॥ और अस्थितथाश्वासोकरिकै युक्तहोवै ॥ ऐसाजोकोईकजंतुविशेष ॥ सोअस्मदादिकपुरुषों
केउदरविषेस्थितहोवै ॥ तिसजंतुकरिकै जैसा अस्मदादिकपुरुषोंकूंदुःखप्राप्तहोवै है ॥ तैसाहीदुःख स्त्रीकूं गर्भधारणतैंहोवै है ॥
और पायुद्वारतैं तिसजंतुकेनिकसणेकरिकै जैसा अस्मदादिकपुरुषोंकूं दुःखप्राप्तहोवै ॥ तैसाहींदुःख गर्भिणीस्त्रीकूंगर्भकेत्यागतैंहोवै
है ॥ और षोड़शअंगुलपरिमितहैमध्यका अवकाशजाका ऐसाजो वर्तुलाकारकचकच ॥ तिसतैंनिकसणेविषे जैसा अस्मदा
दिकपुरुषोंकूं दुःखहोवै ॥ तैसाहींदुःख बालककूं माताकेउदरतैंनिकसणेविषेहोवै है ॥ इसप्रकार माताकेउदरविषेप्रवेशतथाउदरतैं
निर्गमनाविषे मातासहितयाजीवकूं अनंतदुःखप्राप्तहोवै हैं ॥ तेकैसेदुःखहैं ॥ लोकप्रासिद्धदुःखोंकीउपमातैंरहित है ॥ इसप्रकार पिता
काआत्मास्वरूपपुत्र लोकोंकेप्रवाहकेअविच्छेदवासतै माताकेउदरतैंबाहरिनिकसताभया ॥ सोकैसापुत्र है ॥ आपणेदर्शनकरिकै पिताकूं
आनंदउत्पन्नकरै है ॥ और उत्पन्नभयेपुत्रकूं आपणेअंकविषेस्थापनकरिकै अथवाभूमिविषेस्थापनकरिकै प्रसन्नमनहुआपिता जन्मकालके
संस्कारोंकूं करै है ॥ और जन्मतैंपूर्व गर्भाधानतैंलेकरिकै जोजोसंस्कार पुत्रविषे पिताकरै है ॥ तथा जन्मतैंउत्तरकालविषे जोजोसंस्कारपि

ताकरै है ॥ तेसंपूर्णसंस्कार आपणेकूंहीं पिताकरै है॥ काहेतैं सोपिता पुनःपुत्ररूपतैंनवीनहोइकरिकै स्त्रीविषेउत्पन्नहोवै है ॥ और पिताका
कार्यजोसंततिकाप्रवाह ॥ तिसकूं पौत्रादिकरूपकारिकै यहपुत्र विस्तारकरै है ॥ और सत्मार्गवर्तीपुत्र पिताकेस्वर्गकाभीकारणहोवै है ॥
और इसमनुष्यलोककाभी साधकपुत्र है ॥ काहेतैं पुत्रादिकोंकरिकैहीं मनुष्यलोक वशवर्तीहोवै है ॥ याकहणेतैं यहसिद्धभया ॥ इसलो
ककी तथास्वर्गादिकलोककी प्राप्ति पुत्रकरिकैहोवै है ॥ परंतु मोक्षकीप्राप्ति पुत्रकरिकैहोवै नहीं ॥ काहेतैं श्रुतिनैं पुत्रधनादिकोंविषे
मोक्षकीसाधनताकानिषेधकरिकै केवलत्यागकरिकैही मोक्षकीप्राप्तिकही है ॥ और पूर्व अन्नद्वारापिताशरीरविषेप्रवेशतैंअनंतर वीर्यद्वारा
पिताशरीरतैंनिर्गमनरूप प्रथमजन्म जीवका कह्याथा ॥ तिसजन्मकीअपेक्षाकरिकै माताकेउदरतैंनिर्गमनरूप द्वितीयजन्म याजीवका
होवै है और पुनःअन्नद्वारा पिताशरीरविषेप्राप्तहोइकरिकै वीर्यद्वारानिर्गमनरूप तीसरजन्मकूं आगेनिरूपणकरैंगे ॥ और सत्कर्मवर्ती
पुत्रकेजन्मकरिकै पिताकूंभी स्वर्गकीप्राप्तिहोवै है ॥ यातैं चौरासीलक्षशरीरोंविषे मनुष्यशरीरही अतिशयकरिकैदुर्लभ है ॥ ऐसे मनु
ष्यशरीरकूंपाइकरिकै पुण्यकर्मोंकूंहीं पुरुषनैं संपादनकरणा ॥ और यामनुष्यशरीरकीप्राप्तिकूं देवताभीसर्वदाइच्छाकरैं हैं ॥ तात्पर्य
यह ॥ देवतादिकशरीरोंविषे तथापश्वादिकशरीरोंविषे नवीन पुण्य तथापाप संपादनहोवैं नहीं ॥ किंतु पूर्वमनुष्यशरीरविषे कियाजो
पुण्य तथापाप ॥ ताकाफल सुख तथादुःख भोग्याजावै है ॥ और तिसमनुष्यशरीरविषेभी भारतखंडविषे विवेकादिकसाधनचतुष्ट
यरूपअधिकारकेसंपादनयोग्य जब याजीवकाशरीरहोवै है ॥ तभीहीं अष्टदोषोंकेनिवृत्तिकाउपाय ब्रह्मविद्या संपादनहोवै है ॥
ब्रह्मविद्यातैंअन्यउपायकरिकै अष्टदोषोंकीनिवृत्तिहोवैनहीं॥तात्पर्ययह ॥ भारतखंडविषे अधिकारीमनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोइकै ब्रह्मात्मज्ञानहीं
पुरुषोंकूं संपादनकरणेयोग्यहै॥काहेतैं आत्मज्ञानहीं सर्वअनर्थकीनिवृत्तिकासाधनहै॥और सर्वयज्ञादिककर्मोंकेफलकाभी आत्माज्ञानविषेही
अंतर्भावहै॥अब अष्टदोषोंकानिरूपणकरैहैं॥इच्छा१द्वेष२भय ३मोह४श्रुधा ५तृषा६निद्रा७विष्ठामूत्रजन्यपीडा ८यहअष्टदोष सर्वदेहधारीजी
वोंकूं होवैहैं॥और आत्मज्ञानविना अन्यउपायकरिकै नाशहोवैनहीं॥किंतु आत्मज्ञानकरिकैहीं नाशहोवैहै ॥ अथ इच्छाअनुगमनिरूपणम् ॥

सात्विकपुरुष मोक्षकीइच्छाकरैं हैं॥ और राजपुरुष मोक्ष औरविषय दोनोंकीइच्छा करैं हैं॥ और तामसपुरुषकेवल विषयोंकीहीइच्छाकरैं है या तैं इच्छातैंरहित कोईभीदेहधारीजीवनहीं॥ अथ द्वेषअनुगमनिरूपणम्॥ सात्विकपुरुष विषयोंविषेद्वेषकरैं हैं॥ और राजसपुरुष वैरियोंविषेद्वेषकरैं हैं॥ और तामसपुरुष वैरियोंविषे तथामित्रोंविषे द्वेषकरैं हैं यातैं॥ द्वेषतैंरहित कोईभीदेहधारीजीवनहीं॥ अथ भयअनुगमनिरूपणम्॥ सात्विकपुरुषोंकूं प्रमादतैंभयहोवै है॥ और राजसपुरुषोंकूं यमतैंभयहोवै है॥ और तामसपुरुषोंकूं केवल राजादिकोंतैंभयहोवै है॥ यातैं भयतैंरहित कोईभीदेहधारीजीवनहीं॥ अथ अज्ञानरूपमोहअनुगमनिरूपणम्॥ सात्विकपुरुषकूं आत्माकाअज्ञानहोवै है॥ और राजसपुरुषकूं शास्त्रविद्याकाभी अज्ञानहोवै है॥ और तामसपुरुषोंकूं सर्ववस्तुविषे अज्ञानहोवै है॥ यातैं मोहतैंरहित कोईभीदेहधारीनहीं॥ अथ क्षुधातृषानिद्राअनुगमनिरूपणम्॥ क्षुधा और तृषा तथानिद्रा यहतीनों सर्वदेहधारीजीवोंकूं समानहोवै हैं॥ और विष्ठामूत्रजन्यपीडातो वृक्षादिकस्थावरोंकूंछोडिकरिके अन्यसर्वदेहधारीजीवोंकूंहोवै है॥ अथवा विष्ठामूत्रजन्यपीडा स्थावरजंगमसर्वदेहधारीजीवोंकूं होवैहै॥ याकारणतैंहीं वृक्षादिकभी आपणेचिक्कणरसका परित्यागकरैं हैं॥ जारसकूं लोकविषेगूंदकहै हैं॥ इसप्रकार अष्टदोषसर्वदेहधारीजीवोंविषेस्थित हैं॥ और सत्त्व रज तम यातीनगुणोंकेअभिमानका नाशकरणेहारा जोआत्मज्ञान है॥ तासैंविना किसीउपायकरिकैभी अष्टदोषोंकानाश होवै नहीं॥ एकआत्मज्ञानकरिकैहीं नाशहोवै है॥ और अंडज जरायुज स्वेदज उद्भिज यहचारिप्रकारके जेदेहधारीजीव हैं॥ ते अष्टदोषोंका परित्यागकरिकै कभीभी स्थितहोवैनहीं॥ और यहमनुष्यशरीर ब्रह्मविद्याकरिकैअष्टदोषोंकेजयवासतैं परमेश्वरनैं प्राप्तकऱ्या है॥ तामनुष्यशरीरकूंपाईके ब्रह्मविद्यातैंशून्यमूढपुरुष उलटा अष्टदोषोंकेवशवर्ती होवै हैं॥ तहाँ प्रथमबाल्यअवस्थाविषे दोषोंकाअनुगम दिखावै हैं॥ माताकेउदरतैंजन्माजोबालक॥ सोनानाप्रकारकेशब्दोंकूंकरता हुआ और भूमिविषेसोयाहुआ माताकेस्तन्यकीइच्छाकरै है॥ तिसस्तन्यपानकीइच्छातैंजन्यदुःखोंसैंआदिलैके जितनेदुःखोंकूं यह अज्ञानीजीव प्राप्तहोवै है॥ तेसंपूर्णदुःख अष्टदोषोंकरिकैजन्यहोवैं हैं॥ और पूर्वपूर्वइच्छादिकअष्टदोषोंकेअनुभवजन्य जेसंस्कार हैं॥ तिनोंकरिकै उत्तरउत्तर अष्टदोषोंकूं यहजीव प्राप्तहोवै है॥ और

जैसे माताकेउदरविषे यहबालक असमर्थहोवै है॥ तैसे जन्मतैं उत्तरभी आपणीइच्छापूर्वक हस्तपादादिकअंगोंकी प्रवृत्तिमें समर्थहोवै नहीं॥ और मत्कुणादिकजंतुवोंकेनिवारणविषे तथाआपणेअंगोंकेकंडूयनविषेभी यहबालक समर्थहोवैनहीं॥ यातैं अतिदुःखकूंप्राप्तहोवै है और आपणीइच्छापूर्वक अन्नकूं तथाजलकूं यह बालक प्राप्त होवैनहीं॥ किंतु क्षुधाकालविषे माता याकूं जलदेवै है॥ और तृषाकालविषे अन्नदेवै है॥ यातैंभी अतिदुःखकूंप्राप्तहोवै है॥ और कंठकेअस्पष्टताकरिकै किंचित् शब्दकाउच्चारण करता हुआभी यहबालक नहीं उच्चारणकरै है॥ और कदाचित् अतिशयकरिकेदुःखीहुआ यहबालक उच्चस्वरकरिकै माताकूं बुलावै है॥ तावचनकूंश्रवणकरिकै सोमाता कभी ताकेसमीपआवै है और कभीं नहींभीआवै है॥ यातैंभी अतिदुःखकूंप्राप्तहोवै है॥ और विष्ठाकरिकैतथामूत्रकरिकै तथामुखकेलालाकरिकै लिप्तहुवे जे बालकके हस्तपादादिकअंग हैं॥ तिनअंगोंकूं कदाचित् सोमाता जलकरिकै प्रक्षालनकरै है॥ और कदाचित् नहींभीकरै है॥ यातैंभी अतिदुःखकूंबालक प्राप्तहोवै है॥ और यहबालक व्यर्थहीहँसै है॥ और व्यर्थही रुदनकरै है॥ और व्यर्थही भयकूंप्राप्तहोवै है॥ और मोहकरिकैयुक्तहुआ यहबालक कदाचित् विष्ठादिकोंकूंभीभक्षणकरै है॥ और यहबालक वारंवार शब्दउच्चारणेकीइच्छाकरै है॥ और शब्दउच्चारणकरणे कासामर्थ्य है नहीं॥ यातैं अतिदुःखकूंप्राप्तहोवै है॥ और गमनकरणेकीतथावस्तुकेग्रहणकरणेकी यहबालक इच्छाकरै है॥ और गमनकरणेका तथावस्तुकेग्रहणकरणेका सामर्थ्य है नहीं॥ यातैंभी बालक अतिदुःखकूंप्राप्तहोवै है॥ और मोहकूंप्राप्तहुआ यहबालक अपणीमाताकूं तथापिशाचीकूं अभेदकरिकैजाणै है॥ और आपणेपिताकूं तथाभ्राताकूं तथारक्षसकूं अभेदकरिकैजाणै है॥ इसप्रकार बाल्यअवस्थाविषे इच्छादिकअष्टदोषजन्य कोटिदुःखोंकूंअनुभवकरिकै तिसबाल्यअवस्थाकेअंतभूत जोकुमार अवस्था है तिसकूं प्राप्तहोवै है॥ तिसकुमारअवस्थाविषे यहबालक जानुकरिकै तथाहस्तोंकरिकै धीरेधीरे गमनकरै है॥ तात्पर्ययह॥ कुमारअवस्थाविषे शीघ्रगमनकरणेकी बालक इच्छाकरै है॥ और शीघ्रगमनकरणेका सामर्थ्य है नहीं॥ यातैं अतिदुःखकूंप्राप्तहोवै है॥ और शब्दउच्चारणम असामर्थ्यहोणतैं एकवस्तुकेप्रातिकीइच्छाकरिकै अन्यवस्तुकेवाचकशब्दका उच्चारण बालक करै है॥

तावांछितवस्तुकेअप्राप्तितैंभी अतिदुःखकूं यहबालक प्राप्तहोवै है ॥ और जैसे श्वान शंकायुक्तहुआ गृहविषे प्रवेशकरै है ॥ तैसे यहबालकभी शंकायुक्त हुआ आपणेगृहविषे प्रवेशकरै है ॥ और मोहकूंप्राप्तहुआ यहबालक हितकारीमातापितादिकोंतैंभी भयकूंप्राप्तहोवै है और पुरुषकेअभिप्रायकाबोधनकरणेहारी जोहस्तादिकोंकीचेष्टा है ॥ तिसतैं पुरुषकेअभिप्रायकूंजाणिकरिकै श्वानादिकपशुवोंकीभी प्रवृत्ति तथानिवृत्ति होवै है ॥ और यहबालक हस्तादिकोंकीचेष्टातैंभी अभिप्रायकूंजाणतानहीं ॥ यातैं पशुतैंभी अतिअधम है ॥ और किंचित्कालपाइके यहबालक पादोंकरिकैगमनकरै है ॥ और अतिसैंकरिकैचंचलहोवै है ॥ और स्पष्टवाणीकरिकै शब्दकूंउच्चारणकरै है ॥ और आपणेहितकूं तथाअहितकूं नहींजाणै है ॥ और पितामाताकरिकै तथाअन्यबांधवोंकरिकै तथाबलवान्बालकोंकरिकै यहबालक ताडनाकूंप्राप्तहोवै है ॥ और दुर्वचनोंकरिकै निरादरकूंप्राप्तहोवै है ॥ और जैसे श्वान गृहगृहविषे व्यर्थभ्रमणकरै है ॥ तैसे यहबालकभी व्यर्थहीएकस्थानतैंदूसरेस्थानकूं गमनकरै है ॥ और जैसे उन्मत्तपुरुष व्यर्थहीं वस्तुकाग्रहणकरै है ॥ और व्यर्थहीं शब्दउच्चारणकरै है ॥ तैसे यहबालकभी व्यर्थहीं वस्तुकाग्रहणकरै है ॥ और व्यर्थहीं शब्दउच्चारणकरै है ॥ और धूलिकरिकै जिसकेसर्वअंग धूसरहोइरहे हैं ॥ और महान्श्रमकरिकैयुक्त हैं औरअन्यबालकोंकेसाथियहबालक व्यर्थहीस्नेहकरै है ॥ और व्यर्थहींद्वेषकरै है ॥ और आपणेगृहविषे अविद्यमानवस्तुकीभी राजाकीन्यांई यहबालक याचनाकरै है ॥ और तिसवस्तुकेनहींप्राप्तहुवे यह बालक भोजनकूंनहींकरै है ॥ और कदाचित् रुदनकरै है ॥ इसप्रकार कुमारअवस्थाविषे इच्छादिकअष्टदोषजन्य अनंतदुःखोंकूं यहजीव अनुभवकरिकै पुनःकोटीदुःखोंकेउत्पत्तिकास्थान जोयौवनअवस्था है ॥ ताकूं यहजीव प्राप्तहोवै है ॥ और तिसयौवनअवस्थाविषे ॥ स्त्रीभावकरिकै तथापुरुषभावकरिकै नानाप्रकारकेदुःखोंकूं सोजीव प्राप्तहोवै है ॥ कैसासोजीव है ॥ आपणेसमर्थतैंरहित है ॥ और कर्मरूपपाशकेअधीन है ॥ और जभी सोजीव कर्मकेवशतैं नारीभावकूं प्राप्तहोवै है ॥ तभी पतितैंआदिलैकै जितने आपणेसंबंधी हैं तिनोंतैं भयकूंप्राप्तहोवै है और सर्वदा स्त्री अस्वतंत्रहोवै है ॥ और गृहविषे महान् जाकूं व्यापारहोवै है ॥ और जैसे कामीपुरुषोंकूं सर्वदा स्त्रीकीइच्छारहे है ॥ तैसे

स्त्रियोंकूंभी सर्वदा कामीपुरुषोंकीइच्छारहैहै ॥ और जैसे शृंखलाकरिकेबंधेहुवेचोरादिक दुःखपूर्वक कालकूं वितीतकरैहैं ॥ तैसे यहस्त्रीजनभी पतिआदिकोंकरिकैनिरोधकूंप्राप्तहुआ तथाआपणेसंबंधियोंकरिकैनिरोधकूंप्राप्तहुआ अथवा धर्मलोपकेभयकरिकैनिरोधकूंप्राप्तहुआ दुःखतैं कालकूंवितीतकरैहै ॥ और पुरुषकेअप्राप्तिकरिकै तथाप्राप्तहुवेपुरुष विषेभी रुचिके अभावकरिकै सोनारी दुःखरूपसमुद्रविषेप्राप्तहोवै है ॥ और पुत्रकीइच्छाकरिकै तथागर्भधारणकरिकै अनंतदुःखोंकूं सोस्त्री प्राप्तहोवै है ॥ इसप्रकारस्त्रीभावकूंप्राप्तहुआयहजीव यौवनअवस्थाविषे इच्छादिकअष्टदोषोंकरिकैजन्य अनंतदुःखोंकूं अनुभवकरै है ॥ और जभी यहजीव कर्मकेवशतैं पुरुषशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तहाँभी यौवनअवस्थाविषे इच्छादिकअष्टदोषोंकरिकेजन्य अनंतदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसयौवनअवस्थाविषे शास्त्रकेजानणेहारेपुरुषकूंतौ यमतैं तथा ईश्वरादिकोंतैं भयहोवैहै ॥ और व्यवहारविषेकुशल जेपुरुषहै ॥ तिनोंकूं राजादिकोंतैंभयहोवैहै ॥ और मूढपुरुषकूं केवल आपणेपितादिकोंतैंभयहोवै है ॥ और धनतैंरहितपुरुषकूं सर्वदा पराधीनताहोवै है ॥ और यौवनअवस्थाविषे स्त्रीकेअप्राप्तहुवे ताकीइच्छातैं पुरुषकूं दुःखहोवै है ॥ और स्त्रीकेप्राप्तहुवेभी ताकेविषेइच्छा है नहीं ॥ यातैंभी पुरुषकूं अतिदुःखहोवै है ॥ और कर्मके अधीन जेपुरुष हैं ॥ तिनोंकूं ॥ प्रथमयौवनहीं ज्वरकेसमान प्रधानदोष हैं ॥ तिसयौवनरूपज्वरविषेभी अभिमानकाजनकजो ब्राह्मणादिकउत्तमकुलकी प्राप्ति और विद्याकी प्राप्ति और धनकीप्राप्ति यहतीनदोष महान् अनर्थकेकारण हैं ॥ जैसे लोकप्रसिद्धज्वरविषे जभी वात पित्त कफ यहतीनधातुरूपदोषोंका कोपहोवै है ॥ तभी तिसपुरुषका मरणतैंविना अन्यकोईउपायहोवै नहीं ॥ किंतु मरणहीं होवै है ॥ तैसे यौवनरूपज्वरभी कुल विद्या धन यातीनदोषोंकरिकैयुक्तहुआ अनंतअनर्थोंका आरंभकरैहै ॥ यातैं तिसयौवनरूपज्वरकेनिवृत्तकरणेका उपाय मरणतैंविना अन्यकोई हम देखतेनहीं ॥ और तिसयौवनरूपज्वरकरिकै मोहकूंप्राप्तहुआ जीव कभी गायनकरै है ॥ और कभी नानाप्रकारकी आपणीगतिकूं दिखावैहै ॥ और कभी हँसैहै ॥ और कभी मत्तहस्तीकीन्यांई यहपुरुष आपणेपितादिकोंकेसमानजेवृद्धहैं ॥ तिनोंकूंभी भूमिपरिगिडावैहै ॥ और कभीयुद्धकरैहै ॥ और युद्धकरणेहारेअन्यपुरुषोंकूंविदारणकरैहै ॥ और कभी नृत्यकरैहै ॥ और चारोंओरतैं धावनकरै

है ॥ और कभी हमारेसमानकोनहै ऐसाअहंकार करैहै ॥ और कभीशयनकरैहै ॥ इसप्रकार यौवनअवस्थाविषे निरंकुशहुआ यहपुरुष नाना प्रकारकीदुष्टचेष्टाओंकूं वारंवारकरैहै ॥ औरतिसयौवनअवस्थाविषे यहपुरुष विषयभोगतैं तृप्तिकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और विहितकर्मकूं तथानिषिद्ध कर्मकूंभी नहींजाणैहै ॥ और जिसकामन सर्वदा स्त्रीजनोंनैं ग्रहणकऱ्याहै ॥ तात्पर्ययह ॥ मनकरिकै सर्वदास्त्रियोंकाहीचिंतनकरैहै ॥ और परधनकेहरणेकीजिसकूं नित्यहींउत्कंठाहै ॥ औरशास्त्रकीआज्ञाकापरित्यागकरिकैवर्त्तै है ॥ ऐसे यौवनअवस्थावान्पुरुषकूं शीघ्रहीं कालभगवान् आइकै प्राप्तहोवै हैं ॥ और जैसे युवान्मंडूककूं सर्प ग्रसहै ॥ तैसे गृहविषेतथाक्षेत्रविषेतथाबांधवोंविषे आसक्त जो दुर्बुद्धियहजीवहै ॥ तिसकूं अतिदारुणकालभगवान् ग्रसैहै ॥ इसप्रकार यावनअवस्थाविषे इच्छादिकअष्टदोषोंकारिकेजन्य अनंतदुखोंकूं यहजीव प्राप्तहोवैहै अब वृद्धअवस्थाविषे इच्छादिकअष्टदोषोंकारिकैजन्यदुःखकूं दिखावहै ॥ रात्रिदिनविषे दुःखोंकाग्रह औरचिंताकारिकैयुक्त ऐसाजो युवान्पुरुष है ॥ तिसकूं जरारूपपिशाचिनी ग्रसैहै ॥ कैसीसोजराहै ॥ श्वेतकुष्ठकारिकैयुक्तहै ॥ तिसकुष्ठिनीजराकेसंगकारिकै दुष्टहुआ यहपुरुषभी सर्वओरतैंश्वेतहोवै है ॥ और कुरूपहोवैहै ॥ और शक्तितैंरहितहोवैहै ॥ और दुःखकारिकै तथाशोककरिकै युक्तहोवैहै और अनुभवकरीवस्तुकाभी जराअवस्थावान्पुरुषकूं स्मरणहोवैनहीं ॥ यातैं अनादरकापात्रहोवैहै ॥ और जराअवस्थाविषे यहमन्दपुरुष कासश्वासरोगकारिकै व्याकुलहोवै है और यौवनअवस्थाविषे करेजेपापकर्म हैं ॥ तिनपापकर्मोंका जराअवस्थाविषेस्मरणकरताहुआ सोवृद्धपुरुष आपणेकूं धिक्कारकरैहै ॥ और कैसेकैसेपापकर्म मैंने करैहैं ॥ याप्रकारकापश्चात्तापकरैहै ॥ और विद्यातथाधनकरिकैयुक्तजोजराअवस्थावान्पुरुषहै ॥ तिसकूंभी पुत्रादिक आदरनहींकरैहै ॥ तौमूर्खतथानिर्धनबुद्धकीक्याकथाहै ॥ औरजिसपराधीनतारूपअवस्थाकूंयहपुरुषबाल्यअवस्थाविषेप्राप्तभयाथा ॥ तिसीपराधीनतारूपअवस्थाकूंजराअवस्थाविषे यहपुरुष प्राप्तहोवैहै और वास्तवतैंविचारकरियेतौ बाल्यअवस्थातैंभी जराअवस्था अतिशयकरिकैनिंदितहैं ॥ काहेत शक्तितैंरहित तथाविष्ठामूत्रादिकोंकरिकैलिप्त जोबालकहै ॥ तिसकी अविवेकी लौकिकपुरुषभी निंदाकरैंनहीं ॥ और मलादिकोंकरिकैलिप्त तामसवृद्धकूंदेखिकरिकै अविवेकीपुरुषभी ताकीनिन्दा करैहैं ॥ यातैं बाल्य

॥ ४९

अवस्थातैं जरा अवस्था अतिनिकृष्टहै ॥ इस प्रकार वृद्धअवस्थाविषे कालपाशकेवशहुवे संपूर्णजीव नानाप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ और वृद्धअवस्थाविषे पुरुषकूं विषयकी प्राप्तिविषे महान्इच्छाहोवै है ॥ और शक्तिकेअभावतैं तथाइंद्रियोंकेक्षयतैं ॥ किंचित्विषयकूंभी वृद्धपुरुष प्राप्तहोवैं नहीं और वृद्धपुरुषका बांधवोंविषे स्नेह वर्द्धताजावै है और शत्रुवोंविषेद्वेष वर्द्धताजावै है ॥ परंतु तिसकेस्नेहतैं किसी मित्रका उपकार होवैनहीं ॥ यातैं ताकास्नेहव्यर्थहै ॥ और तिसके द्वेषतैं किसीशत्रुकी हानिहोवैनहीं ॥ यातैं ताकाद्वेषभीव्यर्थहै ॥ इसतैंआदिलैके अनंतदुःखोंकूं वृद्धाअवस्थाविषे यहजीव प्राप्तहोवैहै ॥ तिसतैं अनंतर यौवनअवस्थाविषेउत्पन्नकऱ्याजोपुत्रहै ॥ तिसकूं इसमनुष्यलोकाविषे स्थापन करैहै ॥ सोकैसापुत्रहै ॥ पिताका द्वितीयशरीरहै ॥ और अनंतपुण्योंकरिकैप्राप्तभयाहै ॥ और पिताकरिकैकर्तव्यजोवेदोंकाअध्ययन तथायज्ञादिककर्म ॥ तिनोंकूं करणेहारा है ॥ और यज्ञादिकों करिकै सर्व भूतोंकेसुखका करता है ॥ और पितानैं आरंभकरे जे कूपतडागादिक कार्य ॥ तिनोंकूंभी परिपूर्णकरणे हारा है ॥ और जो कार्य पितानें नहीं कऱ्या था ॥ तिसशुभकार्यकूंभी करणेहाराहै ॥ इसप्रकार पिताकेसर्वकार्यकूंकरणेहारा जो सत् मार्गवर्तीपुत्रहै ॥ तिसकूं इसलोकविषेस्थापनकरिकै जरा अवस्थाकरिकै युक्त हुआ पिता मरणअवस्थाकूंप्राप्त होवै हैं ॥ तिसतैं अनंतर कालभगवान्रूपरथवाही सूक्ष्मशरीररूपरथकूं सामग्रीकरिकै संपन्न करैहै ॥ सो कैसासूक्ष्मशरीररूपरथहै ॥ पुण्यपापरूपचक्रोंकरिकैयुक्तहै ॥ और दुःखरूपपाथेय करिकैपूरित है ॥ मार्गविषे भोगणेयोग्यवस्तुकानाम पाथेय है ॥ और इंद्रियरूप दुष्टअश्वोंकरिकैयुक्तहै ॥ और बुद्धिरूपकाष्ठकरिकै राचित है ॥ और कास तथाश्वास तथाहिडकी रूपशब्दोंकरिकैयुक्तहै ॥ ऐसे सूक्ष्मशरीररूपरथकूं कालभगवान् त्यागकरैहै ॥ और यह जीव यद्यपि शरीरकेसंबंधतैं बाल्यअवस्थाविषे तथायुवाअवस्थाविषे तथा वृद्धअवस्थाविषे अनंतदुःखोंकूं अनुभवकरिआयाहै ॥ तथापि अध्यासके बलतैं यास्थूलशरीरके परित्यागकीइच्छानहींकरै है ॥ और तिसमरणकालविषे अतिदुःखकूं प्राप्तहुआ यहजीव आपणे पुत्रोंकूं तथाबांधवोंकूं स्मरणकरै है ॥ और मरणकेक्षोभतैं महान्त्रासकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और शरीरजिसकाकांपेहै ॥ और स्त्रीपुत्रादिकबांधवभी इसप्राणीकूंचारोंतरफघेराकरिकैस्थितहोवैहैं ॥ परंतुमृत्युदुःखतैंरक्षाकरणेकूं

कोईभीसमर्थहोवैनहीं॥ दृष्टांत ॥जैसे हिंसाकेस्थानविषेस्थितजेपशुहैं ॥ ते अर्द्धहिंसाकूंप्राप्तहुवेपशुकी रक्षाकरिसकैंनहीं ॥ तैसे बांधवयाकी रक्षाकरिसकैंनहीं ॥ और जैसे बहत्तरिसहस्र ७२००० वृश्चिकएककालविषे सूचीकेअग्रभागतुल्यमुखोंकरिकै अस्मदादिकपुरुषोंके शरीरों विषेदंशकरैं॥तिसतैंजोअस्मदादिकपुरुषोंकूंदुःखहोवैतिसतैंभीआधिकदुःखमरणअवस्थाकूंप्राप्तहुवेपुरुषकूंशरीरकेत्यागविषेउत्पन्नहोवै है ॥ ता दुःखकरिकैसोपुरुषहस्तोंकूंतथापादोंकूंचलाइवैहै ॥ जैसेहिंसाकूंप्राप्तहुआपशुपादोंकूंचलावै है ॥ और दुःखकरिकैयहपुरुषचेतनततैंरहितहोवै है॥ऐसे दुःखकूंप्राप्तहुवेपुरुषकूंदेखिकरिकैसर्वबांधवशोककूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ औररुदनकरैहैं ॥दृष्टांत॥ जैसे बंधनकरिकेदुःखकूंप्राप्तहुवेकाककूंदेखि करिकै सर्वकाक शोककरिकैयुक्तहुवे पुकारैहैं ॥ परंतु तिसकेछुडावेणेमें तिनोंकूं सामर्थ्यहैनहीं ॥ और जैसे व्याधपुरुषकरिकै बंधनकूंप्राप्तहु आ ग्रामसूकरअनंतशब्दोंकूंकरैहै ॥ तैसेअनंतशब्दोंकूंकरतेहुवे यापुरुषकूं कालरूपव्याध बांधिकरिकै जहांसंबंधियोंकूंदर्शननहीं होवै ऐसे दूरदेशविषे लेजावैहै ॥ और जैसे पाशकरिकैबंध्याहुआ कपोत दीनताकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तैसे कालपाशकरिकैबंध्याहुआ यहजीवभी दीनता कूंप्राप्तहोवैहै ॥ औरजैसे बडिशयुक्तकुंढीकूं जलविषे धीवर पावैहै ॥ तिसबडिशकेभक्षणवासतै प्राप्तभईजोमत्स्यहै॥तिसकूं धीवर गृहविषेले जावैहै ॥ तैसेमर्त्यलोकरूपमहाहृदविषे स्त्रीपुत्रधनादिरूपबडिशकेभक्षणकरणेवासतै प्राप्तभया जो यहजीवरूपमत्स्य है ॥ तिसकूं मृत्यु रूपधीवर बांधिकरिकै परलोकविषेलेजावैहै ॥ और जैसे बनविषेस्थितमृगकूं बाणोंकरिकै व्याध मारै है ॥ तैसे संसाररूपवनविषेस्थित जीवरूप मृगकूं ज्वरादिकव्याधिरूपबाणोंकरिकै कालरूपव्याध हननकरै है ॥ और मरण अवस्थाविषे ग्लानीकूंप्राप्तभयाहैमुख जाका ॥ और अनंतहिंडकियोंकरिकैयुक्त दीनपुरुषकूं देखिकरिकेभी कालभगवान् दयाकूंनहींप्राप्तहोवै है ॥ काहेतैं प्रजापतिकीआज्ञातैं जिस मृत्युनैं प्रजाकाहननरूपवृत्तिकूं धारणकऱ्याहै ॥ यह वार्ता मोक्षधर्मविषे प्रसिद्धहै ॥ जीवहिंसारूपअधिकारकीनिवृत्तिवासतै अनंतकालपर्यंत तपकूं मृत्यु करताभया ॥ तौभी मृत्युकेताईं प्रजापति तिसहिंसारूपअधिकारकूंही देताभया ॥ और जैसे पथिकपुरुषकूं चौर हननक रैहै ॥ तैसे हापुत्र हास्त्री हाकलत्र याप्रकार सहस्रशब्दोंकूंकरतेहुवे जीवरूपपाथिककूं यहकालरूपचौरहननकरैहै ॥ और जैसे हिंसास्थानका

स्वामी आपणेकार्यवासतै मेषकूं हननकरै है ॥ तैसे कालभगवान्भी आपणेकार्यवासतै याजीवकूं हननकरैहै ॥ सोकैसाजीवहै ॥ कफकरि कैअवरुद्धभयाहैकंठजाका॥और घुरघुर याप्रकारकेअनंतशब्दोंकूंकरैहै ॥ यहाँ जन्ममरणकीसमानअधिकरणताकारक्षणहीं ॥ कालभगवान् काकार्य जानणा ॥ और जैसे अपराधीपुरुषकूं राजाकेभृत्य लेजावैं हैं ॥ तैसे पुकारतेहुवेसर्वबांधवोंका अनादरकरिकै यमकिंकर इसजी वकूंलेजावैं हैं ॥ और याजीवकेशरीरविषे प्राणोंकूंधारणकरणेहारियांबहत्तरिसहस्र ७२००० नाडी रहैं हैं ॥ तिननाडियोंतैं प्राणनिकासणे वासतै मृत्युभगवान् तिननाडियोंकेबंधनोंकूंछेदनकरैहै ॥ और जैसे कृषिकेकरणहारापुरुष अनायासतैं कदलीवनकूं कुठारकरिकैछेद नकरैहै ॥ तैसे यह मृत्युभगवान्भी अंतरकालरूपकुठारकरिकै या जीवकेअंगोंसाथिजोप्राणोंकासंबंधरूपबंधनहै तिसकूं छेदन करै है ॥ और मरणकालविषे मृत्युभगवान् कालरूपकुठारकरिकै पुरुषोंकेशरीरविषे पादकेअग्रभागतैंलेकरिकेकेशपर्यंत अनंतपीडावोंकूंउत्प न्नकरैहै ॥ जैसे साढेतीनकोटितीक्ष्णसूचियां एक कालविषे अस्मदादिक पुरुषोंके शरीरविषे लागैं ॥ और जैसे दुःखकूंउत्पन्न करैं ॥ तैसाहीं दुःख मरणकालविषे पुरुषोंकूं होवै है ॥ और तीक्ष्णक्रकचोंकरिकै अस्मदादिक जीवित पुरुषोंके अंगोंकूं बहुतवार छेदनतैं जै सादुःख अस्मदादिक पुरुषोंकूं होवै है ॥ तैसाहींदुःख सर्वदेहधारीजीवोंकूं मरणकालविषे होवै है ॥ और पादतैंलेकरिकै मस्तकपर्यंत त्वचाके उतारणेविषे जैसा दुःख अस्मदादिक जीवितपुरुषोंकूं होवै है ॥ तैसाहीं दुःख मरणकालविषे जीवोंकूं होवै है ॥ और तत्र तैलविषे प्रवेशकरणेतैं जैसा दुःख अस्मदादिक जीवित पुरुषोंकूं होवै है ॥ तैसाहीदुःख मरणकालविषे पुरुषोंकूं होवै है ॥ और मुखनासिकादिक नवद्वारोंके निरोधतैं जैसाअस्मदादिक पुरुषोंकूं दुःख होवै है ॥ तैसाही दुःख मरणकालविषे पुरुषोंकूं होवैहैं ॥ अथवा तिसतेंभीआधिकदुः खहोवै है ॥ और दुर्मार्गवर्ती पुरुषोंकूं जैसा नरकजन्यदुःख होवै है ॥ तैसाहीं दुःखमरणकालविषे जीवोंकूं होवैहै ॥ अथवा तिसनरकदुःखतैं भी अधिकदुःख मरणकालविषे होवैहै ॥ और मरण कालविषे सोपुरुष किसीक्षणमें मूर्छाकूं प्राप्त होवैहै ॥ और किसीक्षणविषे मूर्छातैं जाग्रतहोवैहै ॥ और किसीक्षणविषे भयानकयमकिंकरोंकूं देखिकरिकै भयकूं प्राप्त होवै है ॥ तिसभयतैं कदाचित् विष्ठामूत्रादिकोंकाभी

परित्यागकरै है ॥ और नेत्रोंतैं अश्रुकापरित्यागकरै है ॥ और किसीक्षणविषे यमकिंकरोंकूं देखिकरिकै महाभयानकशब्दकूंकरै है ॥ तेकैसेय
मकिंकर हैं॥ अतिसैंकरिकैदीर्घहैं ॥ और विकरालजिनोंकेमुखहैं॥ और स्यामजिनोंकास्वरूपहै॥ और जिनोंकेकेश खुलेहुयेहैं॥ और चाबुक
तथापाश जिनोंकेहस्तोंविषेहैं ॥ ऐसेयमकिंकरोंकूंदेखिकरिकै भयकूंप्राप्तहुआ यहजीव मुखतैंफेनकूंवमनकरै है ॥ और सर्वद्वारोंतैं मलोंका
परित्यागकरै है ॥ और तेयमकिंकर सनमुखआइकरिक प्रथम यापापीजीवकूं दुर्वचनोंकरिकैताडनकरैं हैं ॥ पश्चात् बांधिकरिकै परलो
कविषेलेजावैं हैं ॥ अब तिनयमकिंकरोंकेवचनोंकूंदिखावैं हैं ॥ हेपापीजीव तेरेकूंधिक्कार है ॥ काहेतैं इसमनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोइ
करिकैभी तैसे नरककाकारणरूप पापकर्महीं संपादनकऱ्या ॥ और आपणामुख्यहितजोमोक्ष है तिसकूं तैंनैं आत्मज्ञानकरिकैसंपाद
नकऱ्यानहीं ॥ और गौणहित जेस्वर्गादिक हैं ॥ तिनोंकूंभी यज्ञादिककर्मोंकरिकै तैंने संपादनकऱ्यानहीं ॥ उलटा यहमेराशत्रुहै और यह
मेरामित्र है और यहउदासीन है याप्रकारकीभेदबुद्धिकरिकै आपणाअनर्थ आपहीतुमनैं संपादनकऱ्या ॥यातैं आपणाशत्रु तुम आपहीहुआ
दूसराकोई तुमाराशत्रुहैनहीं ॥ काहेतैं गुरुशास्त्रादिकआत्मज्ञानकीसामग्रीकूंप्राप्तहोइकेभी जन्ममरणरूपबंधनकी तुमनैं निवृत्तिकरीनहीं ॥
और जेअपमानादिक आपणेकूंप्रतिकूलहोवैं हैं ॥ तेअपमानादिक जो अन्यपुरुषकूंकरै है ॥ सोपुरुष आपणाही आपशत्रुहोवै है ॥ यातैं
भेदबुद्धिही अनर्थकाकारण है ॥ और जोपुरुष भेदबुद्धिकरिकै अन्यजीवोंकूंपीडाकरै हैं ॥ तिसकूं जीवितकालविषे अन्यराजादिकबली
पुरुषोंतैं भयहोवै है ॥ और मरणकालविषे हमयमकिंकरोंतैं भयहोवै है ॥ यातैं दोनोंलोकविषेभयकाहेतु जोभेदबुद्धिजन्यपरपीडा ॥
ताकूं कौनबुद्धिमानपुरुष करैगा ॥ किंतु नहींकरैगा ॥ याप्रकारके दुर्वचनोंकरिकै यमकिंकर पापीजीवकी ताडनाकरैहै ॥ और जैसे
राजाकेभृत्य अपराधीपुरुषके चौरीआदिकअपराधकूं स्मरणकराइकै ताकूं बांधिकरिकैलेजावैहैं ॥ तैसे यमकिंकरभी भेदबुद्धिरूपअपराधकूं
तथाअनात्मदेहादिकोंविषेआत्मबुद्धिरूपअपराधकूं स्मरणकराइके याजीवकूं परलोकविषेलेजावैं हैं ॥ तहाँ प्रथम देहकेदोषोंकूंदिखावैं हैं ॥
हेपापिष्ठ जिसदेहविषे तुमनैं आत्मबुद्धिकरीहै ॥ सोदेहकैसाहै॥ पिताकेवीर्यरूपमलतैं औरमाताकेरक्तरूपमलतैं उत्पन्नभयाहै ॥ और विष्ठा

तथामूत्रादिकमलोंकरिकैपूरित है ॥ यहसर्वलोकोंकूं अनुभवसिद्ध है ॥ तथाशास्त्रविषेभीकह्या है ॥ श्लोक ॥ यदंतरस्यदेहस्य बहिःस्याच्च
तदेवचेत् ॥ दंडग्रहावारयेयुःशुनःकामांश्चमानवाः ॥ ७ ॥ अर्थयह ॥ इसशरीरकेअंतर जेविष्ठामूत्रमांसरुधिरादिकमलहैं ॥ सोजेबाहरि
होवैं तौ सर्वपुरुष दंडकूंग्रहणकरिकै आपणेशरीरकी रक्षाकरासतै ॥ सर्वदा काकोंकूं तथाश्वानोंकूंहीं निवारणकरैं ॥ यातैं यहशरीर अतिसै
करिकैनिंदित है ॥ और विनाशी है ॥ और शतवर्षपर्यंत सेवनकऱ्याहुआभीयहशरीर परित्यागकरिजावै है ॥ यातैं कृतघ्नहै ॥ और सहस्र
परिणामोंकरिकैयुक्त है ॥ और पुरुषकेअधीननहीं ॥ और शरीरविषेआत्मबुद्धिद्वारा पुरुषार्थकानाशकहै ॥ यातैं सर्वदा दुःखकाकारण
यहशरीर है ॥ ऐसेनिंदितशरीरविषे आत्मअभिमानकरिकै तुमनैं अनंतपापकर्म करैहैं ॥ तिनपापोंकरिकैजन्य अनंतदुःख तुमारेकूं प्राप्त
होवैंगे ॥ यहवार्ता व्यासभगवाननैंभीकहीहै ॥ श्लोक ॥ सर्वाशुचिनिधानस्य कृतघ्नस्याविनाशिनः ॥ शरीरकस्यापिकृते मूढाः पापानिकुर्व
तइति ॥ ८ ॥ अर्थयह ॥ विष्ठामूत्रादिकसर्वअशुचिपदार्थोंकागृह औरकृतघ्न औरविनाशि ऐसेशरीरकेपालनपोषणवासतै मूढपुरुष पापों
कूंकरैं हैं ॥ ८ ॥ और हेपापीजीव ॥ याअनित्यदेहकेभोगोंकीसिद्धिवासतै पुत्रस्त्रीधनादिकोंविषे ममताअभिमानकरिकै तुमनैं किंचित्मा
त्रभी सुकृतकऱ्यानहीं उलटा पापकर्मोंकूं तुमनैं संपादनकऱ्या है ॥ यातैं हमारेकूं बडाखेदहोवै है ॥ यद्यपि यज्ञादिकोंकरिकैपुण्य
केसंपादनमैं शरीरकाआयास तथाधनादिकोंकाखरच होवै है ॥ यातैं तुमनैं संपादनकऱ्यानहीं ॥ तथापि मैंब्रह्महूं याअभेदज्ञानकेसं
पादनमैं शरीरकाआयास तथाधनादिकपदार्थोंकाखरच होवै नहीं ॥ ऐसेअतिसुलभआत्मज्ञानकूंभी तुमनैं संपादनकऱ्या नहीं ॥ यातैं
हेपापिष्ठ तेरेकूंधिक्कारहै ॥ किंवा ॥ मनवाणीकाअविषय जोनिर्गुणब्रह्महै ॥ तिसके साक्षात्कारकरणेकूं मैं समर्थनहींहूं ऐसाजोतूंकहै ॥ त
थापि सर्वसुखकेकरणेहारी जोनिर्गुणब्रह्मकीउपासना है ॥ तिसकूं तुमनैं किंवासतैनहींकऱ्या ॥ किंवा ॥ मन अतिशयकरिकैचंचल है ॥
यातैं निर्गुणब्रह्मकेध्यानविषे लगता नहीं ऐसाजोतूंकह ॥ तथापिपरस्त्रीगमनादिकपापकर्मविषे जितनातेरेकूं शरीरकाआयास तथा
धनादिकोंकीहानिरूपक्लेश प्राप्तभयाहै ॥ तिसक्लेशकालेशमात्रभी परमेश्वरकेनामकीर्तनमैं हैनहीं ॥ और स्वर्गादिकोंकी प्राप्तिकरणेहा

राहै ॥ ऐसेपरमेश्वरकेनामकीर्तनरूपसुकृतकूं तुमनैं काहेतैंनहींसंपादनकऱ्या ॥ और जैसे तुमनैं मनकूंसावधानकरिकै सर्वदा परपु
रुषोंकेदोषोंका विचारकऱ्याहै॥तैसे महत्फलकीप्राप्तिकरणेहारा जोक्षणमात्रआत्मविचार तिसकूं काहेतैंतुमनैं नहींसंपादनकऱ्या ॥ क्षणमात्र
ब्रह्मविचारकाफल अन्यशास्त्रविषेभीकह्याहै ॥श्लोक ॥ स्नातंतेनसमस्ततीर्थसलिलेदत्ताचसर्वावनिः ॥ यज्ञानांचकृतंसहस्रमखिलादेवाश्चसंपूजि
ताः॥संसाराच्चसमुद्धृताःस्वपितरस्त्रैलोक्यपूज्योप्यसौ ॥ यस्यब्रह्मविचारणेक्षणमपिस्थैर्यनमःप्रामुयात् ॥ ९ ॥ अर्थयह ॥ जिसपुरुषकामन
क्षणमात्रभी ब्रह्मविचारविषेस्थितिकूंप्राप्तहोवै है ॥ तिसपुरुषनैं ॥ सर्वतीर्थोंकेजलोंविषेभीस्नानकिया ॥ और सर्वपृथिवीभी तिसनैं दान
करी ॥ औरसहस्रयज्ञभी तिसनैंकरे ॥ और संपूर्णदेवताभी तिसनैं पूजनकरे ॥ औरससारसमुद्रतैं आपणेपितरभी तिसनैं उद्धारकरे ॥ और
तीनलोकोंकरिकैपूज्यभी सोपुरुषहै ॥ ९ ॥ ऐसेआत्मविचारकूंभी तुमनैं कऱ्यानहीं ॥ और जैसे तुमनैं परप्राणियोंकेनाशवासतैं महान्
उद्यमकऱ्या है ॥ तैसे किंचित्मात्रभी उद्यम स्वर्गकीप्राप्तिवासतै तथा मोक्षकीप्राप्तिवासतै तुमनै काहेतैंनहींकऱ्या ॥ तात्पर्ययह ॥ जोतूं
वृक्षादिकोंकन्यांई उद्यमतैंरहितहोता ॥ तौ तेरेकूं हम उपालंभनहींदेते ॥ परंतु तुमनैं सर्वशक्तिसंपन्नमनुष्यशरीरकूंपाइकरिकैभी शास्त्र
विहितपुण्यकर्मोंकूं संपादनकऱ्या नहीं ॥ उलटा पापकर्मोंकूंसंपादनकऱ्या ॥ यातैं तूं दंडकरणेयोग्यहै ॥ और तुम हमारेपापोंकूं कैसे
जाणतेहो ऐसाजोतूंकहै ॥ सो बनैनहीं ॥ काहेतैं इसलोकविषे जेजेपाप तैनैं राजादिकोंतैंगुह्यकरेहैं ॥ अथवा आपणेबलतैं जेजेपाप तुमनैं
प्रसिद्धकरेहैं ॥ तिनसर्वतुमारेपापोंकूं सूर्यचंद्रमादिक कथनकरेहैं ॥ तिनोंतैं हम तेरेपापोंकूंजाणैहैं ॥ तैंकसेपापहै॥मर्मसदृशहैं ॥ तात्पर्ययह
जैसे मर्मस्थान भेदनकूंप्राप्तहुवे दुःखकूंउत्पन्नकरैहैं ॥ तैसे पापकर्मभीप्रसिद्धहुवे दुःखकूंउत्पन्नकरैहैं ॥ और यमकिंकरोंकेवशकूंप्राप्तहुआ
जोपापीजीवहै ॥ तिसकूंतेयमकिंकरपुनःयापप्रकारकहैहैं॥हेपापिष्ठ॥तूंयाप्रकारकाअहंकारकरताथा॥इसलोकविषेमैंसर्वतैंबलीहूं ॥ मेरेतैंअधिक
बलवान् कोईभीपुरुषनहीं ॥ याकर्मविषेप्रवृत्तहूवेमेरेकूं कौणशिक्षाकरैगा ॥ ऐसीदुर्बुद्धिकरिकै अनंतप्रकारकेदुर्विचारकूंकरिकै अहंकारतैं
पापकर्मविषे तूं प्रवृत्तहोताभया ॥ और शास्त्रोक्तमर्यादाकाभी तूं परित्यागकरताभया ॥ यातैं सर्वलोकोंकरिकै तूं शोककरणेयोग्य है ॥

ऐसा सर्वलोकोंकूंपीडाकरणेहारा जोदुर्बुद्धितूं है ॥ तिसकोशिक्षाकरणेवासतै हमयमकिंकर आइकेप्राप्तभये है ॥ कैसेहम हैं ॥ तुमारेतैंभीअ
धिकबलवान् हैं ॥ और तुमनैं जेजेपापकर्मकरे हैं ॥ तिनसंपूर्णोंकूं हमयमकिंकर जाणते हैं ॥ यमराजाकीसभाविषे वासरादिकोंनैं सर्वतेरेपा
पकर्म हमारेप्रति श्रवणकराये हैं ॥ दिवसविषे तुमनैं जेजेपापकर्मकरे हैं ॥ तेसंपूर्णपापकर्म दिवसनैं तथा सूर्यभगवान्नैं हमारेप्रति
कहे हैं ॥ और रात्रिविषे जेजेपापकर्म तुमनैं करे हैं ॥ तेसंपूर्णपापकर्म रात्रिनैं तथाचंद्रमानैं हमारेप्रति कहे हैं ॥ और दोनोंसंध्याविषे जेजेपा
पकर्म तुमनैं करे हैं ॥ तेसंपूर्णपापकर्म दोनोंसंध्यानैं हमारेप्रति कहे हैं ॥ और सर्वकालविषे जेजेपापकर्म तुमनैंकरे हैं ॥ तेसंपूर्णपापकर्म आ
काश वायु अग्नि जल पृथिवी इनपंचभूतोंनैं हमारेप्रति कहे हैं ॥ और जोतूंऐसाकहैं ॥ गुह्यस्थानविषेकरेजोहमनैंपापकर्म तिनोंकूं सूर्या
दिक कैसेजाणैं हैं ॥ यहतेराकहनाबनैंनहीं ॥ काहेतैं सूर्यादिकसर्वज्ञ हैं ॥ और सर्वप्राणियोंकेसाथि यमराजागुह्यपुरुष सर्वदाविचरैं हैं ॥
परमेश्वरकीमायाकरिकैमोहितहुवे तुमलोक तिनयमकेपुरुषोंकूं जाणतेनहीं ॥ याप्रकारकेदुर्वचनोंकूंकहिकरिके दारुणपाशियोंकरिकै तापा
पीजीवकूंबांधिकरिकै औरचाबुकोंकरिकैताडनकरिकै पश्चात् तिसपापीजीवकूं परलोकविषे यमकिंकर लेजावैं हैं ॥ और जैसे
प्रसिद्धद्वारावतीपुरीतैं कृष्णभगवान्केस्वधामविषे गमनहूवे अनंतर तिसद्वारावती पुरीकूं समुद्र लयकरताभया ॥ तैसे शरीररूपद्वारा
वतीपुरीकास्वामीजोयहजीव हैं तिसका जभीशरीररूपद्वारावती पुरीतैं कालरूपसारथिकरिकैयुक्तसूक्ष्मशरीररूपरथकरिकै परलोकविषे
गमनभया ॥ तिसतैंअनंतर अग्निरूपसमुद्र याशरीररूपद्वारावतीकूं लयकरै है ॥ और जैसे पतिकेमृत्युहुवेतैं अनंतर विधवास्त्री शोभातैंर
हितहोवै है ॥ तैसे जीवरूपकृष्णभगवान्केनिर्गमनहुवेतैं अनंतर यहशरीररूपपुरी शोभातैंरहितहोवै है ॥ और जैसे प्रसिद्ध द्वारकापुरी
तैं कृष्ण भगवान्केनिर्गमनहुयेतैंपश्चात् अर्जुनसहितसर्वबंधुजन दुर्जनआभीरपुरुषोंकरिकैहरणकरेस्त्रीआदिक सर्वपदार्थोंकेरक्षा करणेकूं
समर्थनहींहोते भये ॥ तैसेशरीररूपपुरी तैं याजीवकेनिर्गमनहुवे अनंतर याकेस्त्रीधनादिकपदार्थोंकेरक्षाकरणेकूं कोईभीबांधव समर्थ
होवैनहीं ॥ और पूर्व याशरीररूपपुरीविषे मूर्द्धद्वारकरिकै परमात्माका जीवरूपतैंप्रवेश भयाथा ॥ तिसीमूर्द्धद्वारतैं जभीयाजी

वकानिर्गमनहोवै है ॥ तभी ब्रह्मलोककूंहीं प्राप्तहोवै है ॥ और जभी चक्षुआदिकद्वारोंकरिकै इसजीवकानिर्गमनहोवै है ॥ तभी जोपुण्य वान्जीवहोवै है ॥ सो स्वर्गादिकोंकूंप्राप्तहोवै है ॥ और जोपापकर्मवालाजीवहोवै है॥ सो चक्षुआदिकद्वारोंतैंनिर्गमनहुआभी नरककूंहीं प्राप्त होवै है ॥ इसप्रकार परलोकविषेजीवके निर्गमनहुवेतैं अनंतर ताकेसंबंधियोंकीअवस्थाकहैं हैं ॥ यापुरुषकेजीवतेहुये जेस्त्रीपुत्रादिक बांधव यापुरुषतैंविना एकग्रासमात्रभीनहीं भोजनकरतेथे ॥ तेईहीस्त्रीपुत्रादिकबांधव यापुरुषकेमृत्युहुवेतैंअनंतर स्वादअन्नकूं गलपर्यंतभोजन करैं हैं ॥ और यापुरुषकेजीवतेहुये जेस्त्रीपुत्रादिकबांधव यापुरुषकूं कोमलसिंहजांऊपरि शयनकरावतेथे ॥ तेईहींस्त्रीपुत्रादिकबांधव मरणतैंअनंतर यापुरुषकूं प्रज्वलितअग्निविषेपावैं हैं ॥ औरजेस्त्रीपुत्रादिकबांधव जीवतेहुयेयापुरुषकूं कोमलस्पर्शवाले गंधपुष्पोंकरिकै तथाहस्तोंकरिकै स्पर्शकरतेहुयेभी भयकूंप्राप्तहोतेथे॥ तेईहींस्त्रीपुत्रादिकबांधव चितावि़षेस्थितयापुरुषकूं तीक्ष्णकाष्ठोंकरिकैरूपर्श करैं हैं ॥ और जीवतेहुयेयापुरुषकूं जेस्त्रीपुत्रादिकबांधव अश्वकरिकै तथापालकीकरिकै तथाहस्तीकरिकै तथारथकरिकै लेजातेथे॥तेईहींस्त्रीपुत्रादि कबांधव मरणतैंअनंतर तापुरुषकूं काष्ठकेसाथिबांधिकरिकै काष्ठकीन्याईं इमशानभूमिविषे लेजावैंहैं॥ और जीवताहुआजोपुरुष मंगलीकवा दित्रोंकेसाथि ग्रामतैंबाहरजाताथा॥सोईहीपुरुष मरणतैंअनंतर शोकयुक्तास्त्रियोंकेरोदनकेसाथि जावै है॥और जीवतेहुवेयापुरुषकेआगेजेबांध व दधिआदिकमंगलीकवस्तुकूं लेचलतेथे॥तेईहींपुत्रादिकबांधव मरणतैंअनंतर यापुरुषकेआगे धूमयुक्तअग्निकूं लेचाले हैं॥और जीवताहुआ यहपुरुष जिनस्त्रीपुत्रादिकोंकूं क्षणमात्रभीनहींत्यागकरताथा॥सोईहीपुरुष मरणकालविषे विरक्तपुरुषकीन्यांईं सर्वबांधवोंकूंत्यागिकेजावै है ॥ और जीवितकालविषे जिसपुरुषतैंविना स्त्रीपुत्रादिकबांधव क्षणमात्रभी स्थितनहींहोतेथे ॥ मरणतैं अनंतरतेईहीस्त्रीपुत्रादिकबांधवतापुरुषतैं विना सुखपूर्वक स्थितहोवैं हैं॥और जैसे सूर्यकूंदेखिकरिकैकमल विकाशमानहोवै है॥तैसे जीवतकालविषे जिसपुरुषरूपसूर्यकूंदेखिकरिकैस्त्री पुत्रादिकबांधवोंकेमुखरूपकमल विकाशमानहोतेथे ॥ मरणतैंअनंतर तिसीहींपुरुषकेदर्शनहुयेतथास्पर्शहुये तेस्त्रीपुत्रादिकबांधव स्नानकूंक रैं हैं॥और पूर्वजीवितकालविषे जापुरुषकेपादोंतैंनिःसरणभयेजलकूं स्त्रीपुत्रादिकबांधव आपणेमस्तकविषेधारणकरतेथे॥ मरणतैं अनंतर ति

स्त्रीपुरुषकेस्पर्शतैं तेस्त्रीपुत्रादिकबांधव स्नानकूंकरैं हैं ॥ अथवा स्पर्शकूंहींनहींकरैं हैं ॥ इसप्रकारप्रत्यक्षदोषोंकरिकैयुक्त संसाररूपशूलविषे प्राप्तभयायहजीव परमेश्वरकीमायाकरिकै मोहितहुआ प्रत्यक्षप्रमाणकरिकैसिद्धसंसारदुःखोंकूंभी जाणतानहीं ॥ याप्रकार मरणतैंअनंतर बांधवोंकी अवस्थाकही ॥ अब परलोकविषे जीवकीअवस्थाकूंक हैं हैं ॥ यास्थूलशरीरकूं परित्यागकरिकैः अतिदुःखीहुआ यहजीव परलो ककूंगमनकरै है ॥ और क्षुधापिपासाकरिकैपीडितहोवै है ॥ और यमकिंकरोंकरिकै निरादरकूंप्राप्तहोवै है ॥ और अनंतकोटियोजनदूर यमकास्थान है ॥ तहाँ स्वल्पकालकरिकै ॥ याजीवकूं यमकिंकर लेजावैं हैं ॥ जैसे पाशकरिकै बांध्याहुआ औरचाबुकोंकरिकैताडनकिया हुआ अजाकूं बलात्कारतैं राजाकेभृत्य लेजावैं हैं॥तैसे याजीवकूंभी यमकिंकर परलोकविषेलेजावैं हैं॥और तायमस्थानविषे पापीजीवोंकूं य मकीशासनातैं अनंतदुःख प्राप्तहोवैं हैं॥ तिनसमयदुःखोंके कथनकरणेकूं तथाश्रवणकरणेकूं कोईभी समर्थनहीं॥ तथापिवैराग्यवासतैं किंचि त्मात्रदुःख शास्त्रविषे कथनकरैं हैं ॥ तायमपुरीकेमार्गविषे मांसअहारी सूकरादिकोंका तथाकाकगृध्रादिकपक्षियोंका महाउपद्रव ताजीवकूंहोवै है और तामार्गविषे पापीजीवकूं नानाप्रकारकेशस्त्रोंकरिकै राक्षसोंकेसमान चौर हननकरैं हैं ॥ ताशस्त्रोंकरिकैभी पाप केवशतैं ताजीवका मृत्युहोवैनहीं ॥ और तामार्गविषे सोपापीजीव कहाँ विष्ठातथापूयकरिकैपूर्णनदियोंका उलंघनकरै है ॥ और ति ननदियोंविषे निमज्जनकरै है ॥ और तानदियोंविषेजेमगर हैं तिनोंतैं भयकूं प्राप्तहोवै है ॥ और यमराजाकेस्थानविषे अग्निकापरिणाम रूपनरक है ॥ तथा जल पृथिवी वायु आकाशका परिणामरूप नरक है ॥ तथा शास्त्रोंकापरिणामरूप नरक है ॥ तथा अधंकारकाप रिणामरूप नरक है ॥ इसतैं आदिलेके अनंतप्रकारकेनरक पापीजीवोंकूं दुःखकीप्राप्तिकरैं हैं ॥ और खड्गकीधारसमान हैं तीक्ष्णपत्रजि नोंके ऐसे वृक्षोंकेवनरूपनरकतैंआदिलेके महाभयानकनरकोंविषे सोपापीजीव अनंतकल्पपर्यंत दुःखोंकूंप्राप्तहोवै है ॥ और परलो कविषे पापीजीवोंकूं दुःखकरणेहारेजेनरक हैं ॥ ते गरुडपुराणादिकोंविषेप्रसिद्ध हैं ॥ यातैं यहाँकथनकरेनहीं ॥ इसप्रकार सोपापी जीव नरकदुःखोंकूंअनुभवकरिकै कालवशतैं पुनःवृष्टिद्वाराअन्नभावकूं प्राप्तहोइके मनुष्यलोककूंप्राप्तहोवै हैं और ॥ जोपुण्यवान्जी

वहोवै है ॥ सो स्वर्गविषे महान्सुखकाअनुभवकरिकै तापुण्यकर्मकेसमाप्तितैं अनंतर पूर्वकहीरीतितैं वृष्टिद्वाराअन्नभावकूं प्राप्तहुआयालोक
विषे प्राप्तहोवै है ॥ इसप्रकार यालोककूं प्राप्तहोइकरिकै पूर्वकीन्यांई पुण्यपापकेवशतैं पुनःपिताद्वारा तथामाताद्वारा नानाप्रकारकेजन्मोंकूं सर्व
दायहजीव प्राप्तहोवैहै ॥ औरपूर्व याजीवका पिताशरीरतैं जन्म तथामाताशरीरतैं जन्म निरूपणकरिआये हैं॥ तिनदोनोंजन्मोंकीअपेक्षाकरिकैपु
नःपिताशरीरतैं तीसराजन्मजीवकूं प्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकारपितातैं जन्म ॥ पुनःमातातैं जन्म ॥पुनःपितातैं जन्म ॥यहतीनोंजन्म घटीयंत्रकीन्यांईपु
ण्यपापकेवशतैं जीवोंकूं प्राप्तहोवैं है॥और जबपर्यंत याजीवकूं आत्मज्ञानकीप्राप्तिनहींहोती ॥ तबपर्यंत मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ पुनःजन्मकूंप्राप्त
होवै है ॥ पुनःबाल्यअवस्थाकूंप्राप्तहोवै है ॥ पुनःयुवाअवस्थाकूंप्राप्तहोवै है ॥ पुनःवृद्धाअवस्थाकूंप्राप्तहोवै है ॥ पुनःमृत्युकूंप्राप्तहोवै है ॥
इसप्रकार संसारविषे यहजीव भ्रमण करैहै ॥ और जैसे सूर्यादिकोंके रविवार सोमवार आदिक सप्तवारोंकी धारा उच्छेदतैंरहित हुई वर्तै
है ॥ तैसे याजीवके जन्ममरणादिकषट्विकारभी विच्छेदतैं रहितहुये वर्तै हैं ॥ और जैसे जीर्णवस्त्रोंका परित्यागकरिकै पुरुष नवीन
वस्त्रोंका ग्रहणकरै है ॥ तैसे आत्मज्ञानतैंरहित जीवभी एकशरीरकापरित्यागकरिकै द्वितीयशरीरका ग्रहणकरैहै ॥ और जैसे सूर्यादिरूप
तेजकूंप्राप्तहोइकरिकै अंधकार लयकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसें जन्मअवस्थाकूंप्राप्तहोइकरिकै मरणअवस्था लयकूं प्राप्तहोवैं है ॥ और जैसे प्रकाश
तथाअंधकार यामनुष्यलोककूं परित्यागकरतानहीं ॥ किंतु दोनोंविषे कभीअंधकारहोवै है कभी प्रकाश होवै है ॥ तैसे अविवेकीजीवकूं
भी जन्मतथामरण परित्यागकरैनहीं ॥ दोनोंविष एकबन्यारहै है ॥ यातैं सर्वदुःखोंकाकारण जोअज्ञान है ॥ ताकेनाशकरणेहारा आनंदरू
पआत्माकाज्ञान जबपर्यंत पुरुषोंकूंनहीं उत्पन्नभया ॥ तबपर्यंत जन्ममरणादिकअनंतजीवदुःखोंकूं प्राप्तहोवै हैं ॥ यातैं यहसिद्धभया ॥
आनंदरूपआत्माकाज्ञानहीं सर्वअनर्थकेनिवृत्तिकाकारण है ॥ तातैंभिन्न सर्वउपाय जन्ममरणकेहेतु हैं ॥ औरपूर्वसनकादिकऋ
षियोंनैंभी हमारेकूं आत्मज्ञानकाहीं उपदेशकऱ्याथा ॥ याप्रकार सर्वअधिकारीजन वैराग्यकीउत्पत्तिवासतै देहतैंआदिलेकेसर्वअनात्म
वस्तुविषे दोषोंकाविचार करतेभये ॥ तादोषोंकेविचारतैं तिनअधिकारियोंकूं देहादिकोंविषे वैराग्य उत्पन्नहोताभया ॥ औरतिनसर्वअधिका

रियोंविषे एकवामदेवनामाअधिकारीमृत्युकूंप्राप्तहोताभया ॥ अदृष्टरूपभावीप्रतिबंधकेवशतैं सनकादिकऋषियोंकेउपदेशतैं तिसवामदे
वकूं याजन्मविषे आत्मज्ञानभयानहीं ॥ यातैं पुनःपिताकेगर्भद्वारा माताके गर्भविषे प्रवेशकरताभया ॥ तहाँ पूर्वसंस्कार करिकै युक्त
वामदेव नवममासपर्यंत स्थितहोताभया ॥ और नवममासविषे नियमकरिकेसर्व जीवोंकूं गर्भविषे बोधउत्पन्नहोवै है ॥ तावोधतैं सब जीव
पूर्वपूर्वआपणेजन्मोंकूंस्मरणकरैं हैं ॥ और वामदेवतौ नवममासविषे आत्मसाक्षात्कारकूं प्राप्तहोताभया ॥ काहेतैं भावी प्रतिबंधकेवशतैं
वामदेवकूं पूर्वजन्मविषे आत्मज्ञाननहीं उत्पन्नभयाथा ॥ नवममासविषे तापापरूपप्रतिबंधकेनिवृत्तहुये पूर्वसनकादिकोंकेउपदेशकी वामदे
वकूं स्मृतिहोतीभयी ॥ तिसतैं मननिदिध्यासनकरिकैसंपन्नहुआ वामदेव गर्भविषेहीं आत्मसाक्षात्कारकूं प्राप्त होताभया ॥ और पूर्व जिन
अधिकारियोंकेसाथिमिलकरिकै वामदेवनै सनकादिकऋषियोंतैं ब्रह्मविद्याकाश्रवणकऱ्याथा ॥ तथा सर्वविषयोंविषे दोंषोंका विचार कऱ्या
था ॥ तिनसर्वआपणेमित्रोंकूं गर्भविषेस्थितहुआ वामदेव याप्रकारकेवचनोंकूं कहताभया ॥ वामदेव उवाच ॥ हे मित्रो पूर्वजन्मविषे मै
भी तुमारे मध्यमेथा ॥ परंतु पूर्वजन्माविषे परिच्छिन्नदेहादिकोंविषेआत्मबुद्धिकरिकै परिच्छिन्नभावकूं मैं प्राप्तहोताभया ॥ और अभी हमा
रेकूं गर्भविषे ॥ सनकादिकोंकेउपदेशकरिकेस्मरणतैं आत्मकाज्ञान उत्पन्नभया है ॥ यातैं आपणेअद्वितीयस्वरूपतैंभिन्न किंचित्मात्रभीव
स्तुमै देखतानहीं ॥ किंतु सर्वकूं आत्मरूपजाणताहूं ॥ पूर्वदक्षिणादिकअष्टदिशाभी मेरेकरिकैहींपूर्ण हैं ॥ और आकाशभी मेरेकरिकैहीं
पूर्ण है ॥ और सृष्टिकेआदिकालविषे स्वायंभुवादिकमनुभी मैहीं पूर्वहोताभयाहूं ॥ और सूर्यभगवान्भी मैहीहूं ॥ और शक्तिसंपन्नजेइंद्रा
दिकलोकपालहैं तेभी मेराहीस्वरूपहैं॥मेरेतैंभिन्न तिनोंकीसत्तानहीं॥ और अंडज जरायुज स्वेदज उद्भिज यहचारि प्रकारकेप्राणीभी मेरे तैं
भिन्ननहीं ॥ किंतु मेराहीस्वरूपहै॥तात्पर्ययह ॥ हिरण्यगर्भतैंआदिलेकेस्थावरपर्यंत जेजेपुण्यपापयुक्तजीवहैं ॥ तेसंपूर्ण मेराहीस्वरूप हैं ॥
मेरेतैं कोईभीवस्तुभिन्ननहीं ॥शंका॥ जभी सर्ववस्तु तुमारेतैं भिन्ननहीं ॥ तभी जन्म अस्तित्व वृद्धि परिणामअपक्षय नाश यह षट् विकार
आत्माविषेप्राप्तहोवैंगे ॥ समाधान ॥ इंद्रियसहितदेहके धर्मजन्मादिकषट्विकार हैं ॥ सोषट्विकारयुक्तदेह मेरेविषे कल्पितहै ॥ यातैं क

ल्पितदेहकेधर्ममुझअधिष्ठानकूं स्पर्शकरैनहीं ॥ दृष्टांत ॥ शीतकीनिवृत्तिवासतैंगुंजापुंजाविषे वानरोंनैं कल्पनाकऱ्या जोअग्नि ॥ तिसअग्निके उष्णस्पर्शतैं जैसे गुंजापुंजका दाहहोवैनहीं ॥ तैसे कल्पितदेहादिकोंके धर्म जन्मादिकभी मुझअधिष्ठानकूं स्पर्शकरैनहीं ॥ और मैं आनंदरूपआत्मा वाकूआदिकइंद्रियोंके तथातिनोंकेदेवताओंके जन्मादिकोंकूं जाणताहूं ॥ परंतु तिनोंकेजन्मादिकविकारअधिष्ठानरूपमैंआत्माकूं सुख तथादुःख प्राप्तकरैनहीं ॥ काहेतैं तेसंपूर्ण मेरेविषे कल्पित हैं ॥ और जैसे पूर्वअज्ञानअवस्थाविषे शरीरइंद्रियादिकोंकेअध्यासतैं मैब्राह्मणहूं मैंस्थूलहूं मैबधिरहूं मैमूकहूं इसतैंआदिलेकेशरीरइंद्रियादिकोंकेधर्म मेरेविषे प्रतीतहोतेथे ॥ तेसंपूर्णधर्मऔर शरीरसहितइंद्रियतथा तिनइंद्रियोंकेदेवता अभी हमारेकूं स्पर्शकरैनहीं ॥ काहेतैं अद्वितीयआत्माकेज्ञानकरिकै तिनशरीरादिकोंकाअध्यास निवृत्त होइ गया है और हेमित्रो जैसे लोहकरिकेरचितकाराग्रह पुरुषके बंधनकाहेतुहोवै है ॥ तसे अज्ञानरूपलोहकरिकैरचित ॥ चौराशीलक्षशरीररूपपुरियांभी पूर्व हमारेबंधनकाकारण होतियांभैयां और जैसे लोकविषे महान्शरीरवालाजोश्येनपक्षी है ॥ सो अतिबलवान्होवै है ॥ यातैं पाशोंकरिकै दुर्ग्रहहै ॥ तथापि दृढपाशतैं ताकूंबांधिकरिक लोहेकेपिंजरविषे निरोधकरैं हैं ॥ तैसे अज्ञानरूपलोहकरिकैरचित ॥ चौराशी लक्षशरीररूपपुरियांभी बंधनरहितमुझअद्वितीयआत्माकूं देहादिकोंविषे आत्मबुद्धिरूपपाशोंकरिक निरोधकरतियांभैयां ॥ और जैसे पिंजरा विषे निरुद्धहुआश्येनपक्षी वज्रसमानआपणेतुंडकरिकै पिंजरकेनीचदेशकूंभेदनकरिकै बाहरिनिकासिजावैहै ॥ तैसे मैभी ब्रह्मज्ञानरूपतुंडकरिकै चौराशीलक्षशरीररूपपुरियोंकूं तथा कामक्रोधादिककीलोंकरिकैयुक्त देहादिकोंविषेआत्मबुद्धिरूपपाशकूं छेदनकरताभयाहूं ॥ और हे मित्रो ॥ जो पूर्व सनकादिकऋषियोंनै देहस्त्रीपुत्रादिकोंविषेवैराग्य आत्मज्ञानकाकारण तुमारेकूं कह्याथा ॥ सोहमनैं अभी आत्मज्ञान रूपफलकीउत्पत्तितैं निश्चयकऱ्याहै ॥ और पूर्वजन्मविषे तुमारेसाथिमिलिकारकै हमनैं विषयोंविषे दोषोंकाविचारकऱ्याथा ॥ परंतु भावीअदृष्टरूपप्रतिबंधकेवशतैं हमारेकूं ताजन्मविषे आत्मज्ञान भया नहीं ॥ मरणके अनंतर ताप्रतिबंधकेक्षयहुए सनकादिकऋषियोंकी कृपातैं तथाविषयोंविषेवैराग्यतैं हमारेकूं अब आत्मज्ञान उत्पन्नभयाहै ॥ यातैं विषयोंविषेवैराग्य ॥ औरगुरुकीकृपा यहदोनों आत्मज्ञानके

मुख्यकारणहैं॥ और तुमारेकूं जोआत्मज्ञान नहींउत्पन्नभया॥सोभी किसीप्रतिबंधकेवशतैं नहींभया ॥ यातैं वैराग्यविषे तथा गुरुके उपदेशविषे आत्मज्ञानकीकारणतानहींहै ऐसी तुमनैं असंभावना कभीनहींकरणी ॥ और हे मित्रो गुरुकीकृपातैं केसाहमारेकूंज्ञानउत्पन्न भया है॥ जिसज्ञानकेबलतैं संसारतैंभी मै भयकूंनहीं प्राप्तहोता ॥ और कालतैं तथामृत्युतैंभी मै भयकूंनहींप्राप्तहोता काहेतैं द्वितीय वस्तुतैंभयकी प्राप्ति श्रुतिनैं कही है ॥ और मै अद्वितीयहूं ॥ सर्वप्रपंच मेरेविषेकल्पित है ॥ जैसे रज्जुविषेसर्पकल्पितहै ॥ कल्पितप्रपंचतैं द्वैतभाव मेरेविषेहोवैनहीं ॥ यातैं मै अद्वितीयहूं ॥ और मृत्युतैंरहितहूं ॥ काहेतैं मेरेविषेकल्पितजोमृत्युहै ॥ सो मुझ अधिष्ठानकी किंचित्मात्रभीहानि करैं नहीं औ॒ जैसे लोकविषे आपणेकूं कोई आप नाशकरैनहीं ॥ तैसे मृत्युकाभीआत्मस्वरूपजोमैहूं ॥ तिसमेरेकूं मृत्यु नाश करै नहीं और जन्म तथामरण तथाबाल्यवस्थायुवाअवस्था जराअवस्था यहसंपूर्ण देहविषेदेखीतेहैं ॥ मुझ अद्वितीय आत्माविषे है नहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे अन्यपुरुषकेसुखकरिकै तथादुःखकरिक अन्यपुरुष सुखीतथादुःखीहोवैनहीं ॥ तैसे देहादिकोंतैंभिन्न जो मै आनंदरूप आत्माहूं ॥ तिसमेरेकूं देहादिकोंकेधर्म जन्ममरणादिक प्राप्त होवै नहीं ॥ और इच्छा द्वेष भय मोह क्षुधा तृषा निद्रा विष्ठामूत्रकी बाधा यह पूर्वकहेजेअष्टदोष॥ते आनंदस्वरूप मुझ आत्माकूं स्पर्शकरैनहीं॥काहेतैं इच्छा द्वेष भय मोह यहचारि मनकेधर्म हैं ॥ और क्षुधा तृषा प्राणोंकेधर्म हैं॥ और निद्रा मनका तथाइंद्रियोंका धर्म है ॥ और विष्ठामूत्रकीबाधा शरीरकाधर्महै ॥ और मै साक्षीआत्मा मनइंद्रियादिक सर्वदृश्यका प्रकाशकहूं॥यातैं प्रकाश्यदृश्यकेधर्म मुझ प्रकाशककूं स्पर्शकरैनहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे प्रकाश्यघटादिकपदार्थोंकेधर्म प्रकाशकसूर्यकूं स्पर्शकरैनहीं॥अब यहीं अर्थकूं स्पष्टकरिकैदिखावैं हैं॥ मोक्षकी तथास्वर्गकी औरयालोकविषेविषयजन्यसुखकी मन इच्छा करै है ॥ आनंदरूपमैंआत्मा तिनोंकीइच्छाकरतानहीं॥ और अज्ञानविषे तथानरकविषे मनहीं द्वेषकरैहै॥ और यालोकके दुःखोंविषे तथादुःखके साधनसिंहसर्पादिकोंविषेभी मनहीं द्वेषकरैहै ॥ मं आनंदरूप सर्वकाआत्मा किसीविषे द्वेषकरतानहीं ॥ किंवा ॥ जो विषयकीकामनावाला तथाभेददृष्टिवाला पुरुषहोवैहै॥ सो कामनाकेप्रतिबंधक अन्यपुरुषविषे द्वेषकरैहै ॥ यहवार्त्ता लोकविषेप्रसिद्धहै और मैं ॥ आप्तकामहूं ॥

और अभेददर्शीहूं ॥ यातैं हमारा किसीकेसाथिद्वेष संभवैनहीं ॥ और भय तथामोह दोनों मनकेधर्म हैं ॥ मैंअद्वितीयआत्माहूं ॥ यातैं भय मेराधर्म नहीं ॥ और बोधस्वरूपमैंहूं ॥ यातैं मोहभी मेराधर्म नहीं किंवा यालोकविषे जोपुरुष आपणेतैं शत्रुकूं भिन्नजाणताहै ॥तथा प्रतिकूलजाणता है ॥ सोईहीपुरुष मोहकूं तथाभयकूंप्राप्तहोवै है और मैं आपणेस्वरूपतैंभिन्न किसीमित्रकूं तथाशत्रुकूं तथाउदासीनपुरुष कूं जाणता नहीं ॥ और किसीकूंप्रतिकूलभी नहीं जाणता॥यातैं किसकारणकरिकै मेरेकूं भय तथामोह होवै॥तात्पर्ययह॥ भयतथामोहका कारण जोभेदबुद्धितथाप्रतिकूलताज्ञान सो मेरेविषैहैनहीं ॥ यातैंकारणकेअभावतैं भयतथामोह मेरेकूंस्पर्शकरैंनहीं ॥ और प्राणकेधर्म जेक्षुधातृषाहैं ॥ तेभी प्राणतैंरहितमुझ आत्माकेधर्महोवैं नहीं ॥ और कारणविषेलयरूपनिद्राभी जिसकालविषे स्वप्ननहींहोवैहै ॥ तिसकालविषे मनकाधर्महै और वाक्आदिकइंद्रियकातौ स्वप्नदर्शनकालविषे तथाअदर्शनकालविषे नित्यहीधर्महै ॥यातैं मनतथाइंद्रियकाधर्मनिद्रा मनतथाइंद्रियतैंरहितमुझआत्माकूं प्राप्तहोवैनहीं॥औरविष्ठामूत्रकीबाधा शरीरकाधर्महै॥शरीरतैंरहितमुझआत्माकूं सोबाधाहोवैनहीं ॥ अधिकारी प्रजाउवाच ॥ हेवामदेव॥हमभित्रोंकेतांई अद्वितीय अमृत अजर आत्मा है याप्रकार निषेध मुखकरिकै आत्माकाउपदेश किसवासतैंकरते हो॥जैसे कोईपुरुष शृंगतैंपकडिकरिकै गौकूंदिखावै॥तैसे विधिमुखकरिकै आत्माकूं काहेतैंनहींदिखावते ॥ वामदेवउवाच ॥ हेमित्रो तुमारे हितवासतैं नानाप्रकारकेवचनोंकरिकै जोमैंनैं आत्माकास्वरूप कथनकऱ्याहै॥सोआत्माकास्वरूप वास्तवतैं गौआदि शींकोन्यांई इदं याज्ञानकाविषयहैनहीं॥ और अद्वितीय अमृत अजर इसतैं आदिलैकेनिषेधवाक्यभी लक्षणावृत्तिकरिकै आत्माकूंबोधनकरैहैं ॥ और हेमित्रो सो अद्वितीयआत्मा चक्षुआदिकग्राह्य इंद्रियोंकरिकै जान्याजावैनहीं ॥ तथामन बुद्धि चित्त अहंकार याचतुष्टयअंतःकरणकरिकैभी जान्याजावै नहीं ॥ अधिकारीजनउवाच ॥ हेभगवन् इंद्रियोंका यद्यपि आत्माविषयहैनहीं॥तथापि वेदांतवाक्यतैंउत्पन्नभयी जोबुद्धिकीवृत्तिहै॥ तिसका तथाअज्ञानका आत्मा विषयहोवैगा ॥ वामदेवउवाच ॥ हेमित्रो बुद्धिकेवृत्तिका तथाअज्ञानका प्रकाशकरणेहारा साक्षीआत्मा है ॥ यातैं आत्मा तिनोंकाविषयहोवैनहीं ॥ उलटा बुद्धिकीवृत्ति तथाअज्ञान आत्माकारिकैभास्यमानहैं॥ यातैं आत्माकाविषय हैं ॥ तातैं हेमित्रो पूर्व

सनकादिकऋषियोंनैं उपदेशकऱ्याजो देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहित सर्वकाप्रकाशक आनंदस्वरूपआत्मा तिसकूं भलीप्रकारविचारकरिकै तुमसाक्षात्कारकरो ॥ तात्पर्ययह ॥ भावीप्रतिबंधकीशंकाकरिकै तुमोनैंआत्मविचारतैंनिवृतहोणानहीं ॥ काहेतैं पुण्यपापरूपअदृष्टका नामभावीप्रतिबंधहै ॥सोवर्तमानप्रतिबंधकी सहायतातैं विनाविचारकाप्रतिबंधकहोवैनहीं ॥किंतु वर्तमानप्रतिबंधकेसहायताकूंपाइकरिकैही प्रतिबंधकहोवै है॥ जब वर्तमानप्रतिबंधकाअभावहोवै ॥ तब अदृष्टरूपभावीप्रतिबंधकाभी अभावनिश्चयकरणा ॥ यातैं विषयविषेआसक्ति बुद्धिकीमंदता कुतर्क विपर्ययविषेदुराग्रह इनचारिप्रकारकेवर्तमानप्रतिबंधोंकापरित्यागकरिकै तुमशीघ्रही आत्मविचारविषेप्रवृत्तहोवो ॥ जाकरिक हमारेन्यांई तुमारेकूं पुनः जन्मकीप्राप्तिनहींहोवै ॥ अधिकारीजनउवाच॥हेभगवन् आत्मविचारविषेतौ हम प्रवृत्तहावैं ॥परंतु तत्ववेत्तातुमारेकूंभी गर्भदुःखकीप्राप्तिदेखिकरिकै दुःखकीनिवृत्तिरूपजोआत्मविचारकाफलहै ताविषे हमारेकूं संशयहोवै है ॥ जो आत्मविचारकरिकैभी दुःखकीनिवृत्तिहोती है अथवानहींहोती यहसंशय आत्मविचारकेप्रवृत्तिकाप्रतिबंधकहै ॥ वामदेवउवाच ॥ हेमित्रो तुमारीदृष्टिकरिकै मेगर्भविषेस्थितहूं ॥ तथा गर्भकेदुःखोंकूंअनुभवकरोंहूं ॥ और हमारीदृष्टिकरिकैतौ हम सर्वदेहइंद्रियादिकोंतैंरहितहैं ॥ और हेमित्रो पूर्वजन्मविषे हमनैं तथातुमोनैं मिलिकरिकै जोगर्भकेदुःखकाविचारकियाथा॥तितनाहीदुःख अभीमैं गर्भविषे अनुभवकरताहूं ॥अथवा तिसतैंभीअधिकदुःखका अनुभवकरताहूं॥परंतु सर्वविषेआत्मबुद्धिरूप पौर्णमासीकेचंद्रमाकीशीतलताकरिकै गर्भदुःखरूपग्रीष्मऋतुकासूर्य हमारेकूंसंतापकरतानहीं॥यातैं हेमित्रो आत्मज्ञानकूंहीं तुम संपादनकरो॥इसप्रकार आत्मज्ञान विषेश्रद्धाकरावणेवासतैं अनंतप्रकारकेवचनोंकूंकहिकरिकै वामदेवमुनि माताकेगर्भतैंनिकसिकरिकै भूमिलोकतैंआदिलैकैब्रह्मलोकपर्यंत जीवन्मुक्तहोइकै विचरताभया ॥ कैसा है सो वामदेव ॥ सनकादिकऋषियोंकेसमान है ॥ औरयालोककेसुखतैं तथापरलोककेसुखतैंजाकीइच्छानिवृत्तभयी है ॥ औरउद्यमतैंरहित है और निर्मलहैचित्तजाका ॥ ऐसाजोवामदेवहै॥सो प्रारब्धकर्मकीसमाप्तिवासतै मनुष्यलोकाविषे तथास्वर्गादिकलोकोंविषेप्राप्तभयेजे भोग हैं तिनोंकूं भोगताभया ॥ ताभोगोंकरिकै प्रारब्धकर्मकेनाशहुएतैंअनंतर सोवामदेव विदेहमोक्षकूंप्राप्तहोताभया ॥ इसप्रकार गर्भविषेस्थित

वामदेवकेवचनोंकूं श्रवणकरिकै तेसर्वअधिकारीजन आश्चर्यकूंप्राप्तहोतेभये ॥ और आपसविषेपरस्परकहतेभये ॥ बडाआश्चर्यहै ॥ यहवाम
देव हमसर्वअधिकारियोंकेसमूहतैं किसीपुण्यकेप्रभावतैं निकसताभया ॥ दृष्टांत ॥ जैसे पंकविषे निमग्नगौओंकेसमूहतैं कोईएकगौपुण्य
केप्रभावतैं निकसिजावै है ॥ तैसे यहवामदेव हमारेतैंनिकसताभया ॥ और जैसे पाशकरिकैबांधेहुए पक्षियोंकेसमूहतैं कोईएकपक्षी
पुण्यकेबलतैं सर्वपक्षियोंकापरित्यागकरिकै निकसिजावै है तैसे कामक्रोधादिकरूपपाशकरिकैबांधेहुएहमसर्वजनोंका परित्यागकरिकै
यहवामदेव अभीनाताभया ॥ और जैसे दुर्भिक्षआदिकउपद्रवकेप्राप्तहुएभी मोहकेवशतैं देशकापरित्याग लोक करैनहीं ॥ तिनलोकोंविष
कोईएकपुरुष स्नेहतैंरहितहुआ सर्वबांधवोंकापरित्यागकरिकैतिसदेशतैंनिकसिजावैहै ॥ तैसे यहवामदेव हमसर्वजनोंकापरित्यागकरिकै जा
ताभया ॥ और जैसे मार्गविषेचलेजेअनेकपुरुष ॥ तिनोंविषे किसीएकपुरुषकूं पुण्यकेप्रभावतैं भूमिविषेस्थितधनकीप्राप्तिहोइजावै ॥ तैसे ह
मसर्वअधिकारीजनोंविषे यहवामदेव आत्मसाक्षात्काररूपधनकूं प्राप्तहोताभया ॥ और जैसे गुरुकीसेवाविषेप्रवृत्तभयेजेअनेकशिष्य ॥
तिनोंविषेकोईएकशिष्यहीं महान्विद्याकूं प्राप्तहोवै है ॥ तैसे हमसर्वअधिकारियोंविषे यहवामदेवहीं ब्रह्मविद्यारूपफलकूं प्राप्तहोताभया ॥
यातैं यहवामदेवही पुरुष है ॥ और हमसर्व नपुंसककेतुल्यहैं ॥ और जैसे बहुतपुरुष मंत्रकेजपविषेप्रवृत्त होवैहैं॥तिनोंविष किसीएकपुरुषकूं
हीं सिद्धिप्राप्तहोवै है ॥ तैसे विचारविषेप्रवृत्तहुएहमसर्वोंविषे यावामदेवकूंहीं विचारजन्य आत्मज्ञानरूपफल होताभया ॥ और जैसे अनंत
व्याधपुरुषोंकरिकै निरोधकऱ्याजोमृगोंकासमूह ॥ तिनोंकेमध्यतैं कोईएकमृगही निकसिजावै है ॥ तैसे हमसर्वदुःखीजनोंकेमध्यतैंएकवाम
देवहीं जाताभया ॥ और यावुद्धिमान्वामदेवका कोईअद्भुतपुण्यकर्महै॥जिनपुण्यकर्मकेप्रभावतैं गर्भविषेस्थितवामदेवकूं आत्मसाक्षात्कार
उत्पन्नभयाहै ॥ और हमारेकूं गुरुशास्त्रादिकसाधनोंकरिकैसंपन्नयाभूमिलोकविषेभी आत्मज्ञान उत्पन्नभयानहीं ॥ और यह वामदेव
गर्भविषेस्थितहुआ हमारेप्रति वचनोंकूंकहताभया ॥ यातैं हम ऐसाजानते हैं ॥ यावामदवका हमारेविषे स्नेहनहीं ॥ केवल हमारेऊप
रिकृपा है ॥ जोस्नेहहोता तौ बाहरिनिकसिकै आपणेमातापितादिकोंकूंभी उपदेशकरता ॥ और यहवामदेवतौ जन्मताहुआही माता

पितादिकसर्वबांधवोंकी उपेक्षाकरिकै जडउन्मत्त पुरुषकी न्यांई अथवापिशाचकी न्यांई संबंधियोंकरिकैअज्ञातदेशविषे जाताभया ॥
यातैं केवल कृपाकरिकै वामदेवनैं हमारेप्रति उपदेशकऱ्या है ॥ स्नेहकरिकै उपदेशकऱ्यानहीं ॥ और गर्भविषेस्थितहोइके जोवामदेवनैं
हमारेप्रति उपदेशकऱ्या है ॥ ताके दोप्रयोजन हैं ॥ एकतौं पूर्वहमनैं जोगर्भकदुःखोंकाविचारकियाथा सोयथार्थ है ॥ और दूसरा आ
त्मज्ञानकेबलतैं गर्भदुःख संतापकरैनहीं ॥ यहदाप्रयोजन हैं॥ और हमसर्व नपुंसककीन्यांई निरादरकेपात्र हैं॥ काहेतैं मनुष्यशरीरकूंपाइके
भी हमोनैं आत्मज्ञानकूं संपादनकऱ्यानहीं॥ अज्ञानकरिकै व्यर्थहीकाल वितीतकऱ्या ॥ और यामनुष्यलोकविषे अनंतप्रकारकेदुःख हमो
नैं भोगे हैं ॥ और स्वर्गादिकलोकोंविषेभी ॥ किंचित्मात्रसुखकूं हम प्राप्तनहीं भये ॥ काहेतैं स्वर्गादिकलोकोंविषे तीनप्रकारकेदो
ष रहैहैं ॥ एकतौ सातिशयदोप ॥ अर्थ यह ॥ जिसके अधिकपुण्यहोवै हैं ॥ तिसकूं अधिकभोगोंकीप्राप्ति स्वर्गविषेहोवै है ॥ और
जिसके न्यूनपुण्यहोवै हैं ॥ तिसकूं न्यूनभोगोंकीप्राप्ति होवै है ॥ आपतैं अधिक भोगवाले देवताकूंदेखिकरिकै न्यूनभोगवाले देवताकूं
ईर्षाहोवै है ॥ और दूसरा इंद्रादिकदेवताओंकीअधीनतारूपदोष हैं ॥ तापराधीनतातैं ॥ सर्वदा जीवकूं भयहोवै है ॥ और तीसरा नीचै
पतनरूपदोष है ॥ तात्पर्ययह ॥ स्वर्गविषे कर्मीदेवताओंकूं आपणेपुण्यकर्मका ज्ञान रहै है॥जोइतनाकाल हमनेंस्वर्गविषेरहणा है॥जिसकाल
विषेनीचेपतनका तिनोंकूं ज्ञानहोवै है ॥ तिसकालविषे महाशोककूं प्राप्तहोवै हैं यातीनदोषोंकी स्वर्गविषे निवृत्तिहोवैनहीं ॥ यातैं स्वर्गभीदु
खरूप है ॥ और कभी हम पुण्यकेवशतैं भूमिलोकतैं स्वर्गकूंप्राप्तहोतेभये ॥पुनःस्वर्गलोकतैं पुण्यकेक्षयहुये भूमिलोककूंप्राप्तहोतेभये पुनः
पुण्यकेवशतैं ताभूमिलोकतैं स्वर्गलोककूंप्राप्तहोतेभये ॥ और कभी पापकेवशतैं हमभूमिलोकतैंनरककूंप्राप्तहोतेभये ॥ और पुनःतानकरतैं
भूमिलोककूं प्राप्तहोतेभये॥और पुनःपापकेवशतैं नरककूंप्राप्तहोतेभये ॥ दृष्टांत ॥ जैसे आकाशविषे स्थितकपोतपक्षीभूमिदेशविषेस्थितक
पोतीकूंदेखिकरिकै भूमि देशकूंप्राप्तहोवै है॥ और भूमिदेशविषेस्थितकपोत आकाशविषेकपोतीकूंदेखिकरिकै आकाशकूंगमनकरै है ॥ और
पूर्वदिशाविषेस्थितकपोत पश्चिमादिशाविषेस्थितकपोतीकूंदेखिकरिकै पश्चिमादिशाकूं गमनकरै है ॥इसप्रकार विषयसुखकीतृष्णाकरिकैजैसे

कपोत नीचेऊपरिभ्रमणकरै है॥तैसे हमभी विषयसुखकीतृष्णाकरिकैकभी देवताशरीरकूं और कभीमनुष्यशरीरकूं और कभीस्थावरादिक शरीरकूं प्राप्तहोतेभये हैं॥तेकैसेशरीर हैं॥केवलदुःखऔरशोककेदेणेहारे हैं॥इसप्रकार सर्वअधिकारीजन परस्पर विचारकूंकरतेभये॥तावि रकरिकै उत्पन्नभयाहैवैराग्यजिनोंकूं और सनकादिकोंकेउपदेशविषे उत्पन्नभयीहै श्रद्धाजिनोंकी ऐसेजे सर्वअधिकारीजन हैं॥ ते पुनःपरस्पर आत्मविचारकूंकरतेभये ॥ हेश्रेष्ठब्राह्मणो ॥ पूर्वसनकादिकोंकेउपदेशतैं और अभीवामदेवकेउपदेशतैं जिसआत्माकेजानणेका हमोंनैंउद्यम कऱ्या है ॥ सोआत्मा कौन है ॥ तहाँ चक्षुआदिकइंद्रियोंकेसमुदायकरिकैसहित प्रत्यक्ष जोयहदेह प्रतीतहोवै है ॥ साईही आत्मा है ॥ अथवा शास्त्र करिकैजोप्रतीतहोवै है सत्चित्आनंदस्वरूप सो आत्मा है ॥ तहाँ देहकूंतौ आत्मतासंभवैनहीं ॥ काहेतैं देह उत्पत्तिनाशवा न् है ॥ जो उत्पत्तिनाशवान्वस्तुहोवै है॥ सो आत्माहोवैनहीं ॥ जैसे घटपटादिकपदार्थ उत्पत्तिनाशवान् हैं ॥ यातैं आत्मानहीं ॥किंवा॥ जो आत्मा देहस्वरूपहोवै ॥ तौ स्वर्गकीप्राप्तिवासतै वेदनैं बोधनकरेजेयज्ञादिककर्म तिनोंकूं कोईभीपुरुष करैगानहीं ॥ काहेतैं देहकी उत्पत्तिहोवै है ॥ यातैं ताकानाशभी अवश्यअंगीकारकरणाहोवैगा ॥जोजोवस्तु उत्पत्तिमान्होवै है ॥ सोसोवस्तु नाशवान्होवै है यहनिय म है ॥ और नष्टहुएदेहका स्वर्गनरकविषेगमन संभवैनहीं ॥ यातैं वेदनैं बोधनकऱ्याजो पुण्यकर्म तथापापकर्म सोसर्व व्यर्थहोवैगा ॥ किंवा ॥ देहकूंआत्मामानणेमैं शास्त्रउक्तकर्मकीहीं केवल व्यर्थतानहीं ॥ किंतु लौकिककर्मकीभी व्यर्थताहोवै है ॥ काहेतैं बाल्य अवस्थाविषे अध्ययनकरीजोविद्या ॥ ताका फल युवाअवस्थाविषे तथावृद्ध अवस्थाविषे होवै है ॥ सो नहींहोणा चाहिये ॥ काहेतैं बाल्य अवस्थाकादेह युवाअवस्थाविषे तथावृद्ध अवस्थाविषे रहै नहीं ॥ अवयवोंकी वृद्धितैं तथाक्षयतैं देहकानाश सर्वमतवाले अंगीकारकरैं हैं ॥ और जैसे चैत्रपुरुषनैं कऱ्याजोकर्म ताकाफल मैत्रपुरुषकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु चैत्रपुरुषकूंहीं प्राप्तहोवै है ॥ काहेतैं जो कर्म काकरता होवै है ॥ सोईही तिसकर्मके फलका भोक्ता होवै है ॥ अन्य भोक्ता होवैनहीं ॥ तैसे बाल्यदेहरूप आत्मानैंकऱ्याजो विद्याअध्य यनरूपकर्म ता कर्मकाफल युवादेहरूपआत्माकूं तथावृद्धदेहरूपआत्माकूं नहींप्राप्तहोणाचाहिये॥और प्राप्तहोवै है॥यातैं देह आत्मानहीं ॥

शंका ॥ जो करताहोवै है सोइही भोक्ताहोवै है यह नियम संभवैनहीं ॥ काहेतैं लोकविषे करतातैंभिन्नहीं फलका भोक्ता देखा है ॥ जैसे सेवकोंकरिकैकऱ्याजोयुद्ध है ताकेफलकूं राजा भोगै है ॥ और शास्त्रविषेभी करतातैंभिन्नहीं भोक्तादेखा है ॥ जैसे पिताकरिकैकऱ्याजो वैश्वानरयज्ञ ताकेफलकूं पुत्र भोगै है ॥ और पुत्रकरिकैकऱ्याजो गयाश्राद्ध है ताकेफलकूं पिता भोगै है ॥ तैसे बाल्यदेहरूपआत्मानैं कऱ्याजो विद्याअध्ययनरूपकर्म ताके फलकूं युवादेहरूप आत्मा तथा वृद्ध देहरूप आत्मा भोगै है यहवार्ताभी संभवै है ॥ यातैं देहकूं आत्मामानणेमैं कर्मकीव्यर्थतारूपदोषनहीं ॥ समाधान ॥ सेवकका राजाके साथि स्वामित्वसंबंध है ॥ यातैंसेवककृतयुद्धके फलकूं राजा भोगै है ॥ और पिताका पुत्रकेसाथि पुत्रत्वसंबंध है ॥ यातैं पिताकृत वैश्वानरयज्ञकेफलकूं पुत्र भोगै है ॥ और पुत्रका पिताकेसाथि पितृ त्वसंबंध है ॥ यातैं पुत्रकृत गयाश्राद्धकेफलकूं पिता भोगै है इसप्रकार बाल्यदेहका युवादेहकेसाथि तथावृद्धदेहकेसाथि स्वामित्वादिकको ईसंबंध है नहीं ॥ यातैं देहकूंआत्मामानणेमैं कर्मोंकी व्यर्थतारूपदोष वज्रलेप है ॥ किंवा ॥ जोदेहही आत्माहोवै तौ जोमैं पूर्व बालकथा सोईहींमैं अभीवृद्धहूं ॥ यह बालक वृद्धआत्माकेअभेदकूं विषयकरणेहारीप्रत्याभिज्ञा नहींहोणी चाहिये ॥ काहेतैं बाल्यदेहका तथावृद्ध देहका भेद प्रत्यक्षप्रमाणकरिकै सिद्ध है ॥ और परस्पर भिन्नपदार्थोंका अभेदज्ञान होवै नहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे पिता और पुत्र परस्पर भिन्न हैं ॥ यातैं तिनोंका अभेदज्ञानहोवै नहीं यातैंभी देह आत्मा नहीं ॥ किंवा ॥ अनुमान प्रमाणतैंभी देहकूं अनात्म ताही सिद्धहो वै है ॥ यहदेह जोहै सो आनात्माहोणेकूं योग्य है ॥ काहेतैं जडहोणेतैं ॥ जोजो वस्तु जड होवै है ॥ सो अनात्माहीं होवै है ॥ जैसे घटादिक जड हैं यातैं अनात्मा हैं ॥ और जडत्वधर्म करिकै घटऔर देहके समानताहुएभी जोदेहकूं आत्मामानौंगे ॥ तौ घटभी आत्मा होणाचाहिये ॥ और घट आत्मा होवैनहीं ॥ शंका ॥ नेत्रादिकइंद्रियोंकीआधारता देहविषे है घटविषे है नहीं ॥ यातैंदे हही चेतन है घट चेतननहीं ॥ समाधान ॥ इंद्रियोंकी आधारतारूपहेतुतैं देहविषे घटतैंविलक्षणताकहणी संभवैनहीं ॥ काहेतैं जैसे देह विषे इंद्रियोंकी आधारता है ॥ तैसे घटविषेभी परंपरा संबंध करिकै इंद्रियोंकी आधारता है ॥ तहाँ विषयतासंबंधकरिकैइंद्रियोंकेआधार

जेरूपरसादिकहैं तिनोंकीआधारता घटविषे है ॥ यापरंपरासंबंधकरिकै इंद्रियोंकी आधारता घटविषेभी है ॥ साक्षात्संबंधकीन्यांई परंपरासंबंधभी आधारताकानियामकहोवै है ॥ जैसे पर्यंकविषेसोयेहुएपुरुषमें गृहविषेसोया है ऐसा लोकोंकाव्यवहार होवै है ॥ यास्थान विषे पुरुषका साक्षात्संबंध पर्यंककेसाथि है ॥ पर्यंकद्वारा गृहकेसाथि परंपरासंबंध है ॥ तापरंपरासंबंधकूलैके गृहविषेपुरुषकी आधारता प्रतीतहोवै है तैसे घटविषेभी परंपरासंबंधकरिकैइंद्रियोंकी आधारता संभवैहै ॥ यातैं देहकीन्यांई घटभी चेतनहोणाचाहिये ॥ किंवा ॥ इंद्रियोंकीआधारताकरिकै देहकूं चेतनतातभीहोवै ॥ जभी इंद्रियोंविषे प्रथम चेतनतासिद्धहोवै ॥ सोइंद्रियोंविषे चेतनतासंभवैनहीं ॥ काहे तैं चक्षूतैंआदिलेकेजेइंद्रियहैं ॥ तिनोंविषे एकएकइंद्रिय चेतनहै ॥ अथवा सर्वइंद्रियोंकासमुदाय चेतनहै ॥ तहाँ प्रथमपक्ष बनैनहीं ॥ काहेतैं जोसर्वइंद्रियोंविषे एकचक्षुइंद्रियकूंहीं चेतनमानिये ॥ तौ अंधपुरुषकूं चक्षुइंद्रियहैनहीं ॥ यातैं ताकूं कोईभीज्ञान नहींहोणाचाहिये ॥ और अंधपुरुषकूंभी शब्दादिकोंकाज्ञानतौ होवैहै ॥ और जो श्रोत्रइंद्रियकूंही चेतनमानिये ॥ तौ बधिरपुरुषकूं श्रोत्रइंद्रियहैनहीं ॥ यातैं ताकूं रूपादिकोंकाभीज्ञान नहींहोणाचाहिये ॥ और बधिरपुरुषकूं रूपादिकोंकाज्ञानतौ होवैहै ॥ ऐसेअन्यइंद्रियोंविषेभी जानिलेणा ॥ और जोऐसे कहैं ॥ अंधपुरुषकूं रूपकाज्ञान नहींहोवै है ॥ सोकहनाभीबनैनहीं ॥ काहेतैं रसादिकोंका ज्ञान अंधपुरुषकूंहोवैहै ॥ तेरसादिक रूपस्वरूप हैं ॥ काहे तैं इंद्रियजन्यज्ञानका जोविषयहोवै सो रूपकहिये है ॥ इंद्रियजन्यज्ञानके विषय रसादिकभी हैं ॥ यातैं रसादिक रूपस्वरूप हैं ॥ यहबात्तो पूर्व नामरूपक्रियास्वरूपजगत् है याअर्थकेनिरूपणाविषे कहि आये हैं ॥ यातैं रूपकाज्ञान अंधपुरुषकूंभीसंभवै है ॥ इसप्रकार बधिरपुरुषकूंभी ओष्ठकेचलनतैं शब्दकाज्ञानहोवै है ॥ तथा पृष्ठदेशविषे हस्तकरिकै अक्षरों केलिखणेतैंभी शब्दकाज्ञान बधिरकूंहोवैहै ॥ सो नहोणाचाहिये ॥ यातैं एकएकइंद्रिय विषे चेतनतासंभवैनहीं ॥ किंवा ॥ सर्वइंद्रियोंविषे एकएकइंद्रिय आत्मा है ॥ यहकहना संभवैनहीं ॥ काहे तैं जोसर्वइंद्रियोंविषे एकचक्षुइंद्रियकूं आत्माकहोगे ॥ तौ चक्षुइंद्रियरूपआत्माहीं प्रधानहोवैगा ॥ अन्यश्रोत्रादिकइंद्रिय गौणहोवैंगे ॥ सोयहमानणा संभवैनहीं ॥ काहे तैं सर्व इंद्रियसमान

हैं ॥ तिनोंविषे एककूंप्रधानमानणा अन्यकूं गौणमानणा याकेविषे कोई युक्ति है नहीं ॥ केवल कथनमात्र है ॥ यातैंएकएकइंद्रियकूं ॥ आत्मतानहीं यह सिद्धभया ॥ और सर्वइंद्रियोंकासमुदाय आत्मा है यह दूसरापक्षभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं जोसर्वइंद्रियोंकासमूह आत्माहोवै ॥ तो एकचक्षुइंद्रियकेनाशहुएतैंसर्वइंद्रियोंकासमूहरूपआत्मा रह्यानहीं ॥ यातैं अंधपुरुषकाशरीर आत्मातैंरहित होणाचाहिये ॥ दृष्टांत ॥ जैसे नैयायिकोंके मतविषे सहस्रतंतुतैंउत्पन्नभयाजो पटहै सो एकतंतुकेनाशहुएतैं नाशहोइजावैहै ॥ तैसेएकचक्षु इंद्रियकेनाशहुएतैं आत्मातैं रहित अंधकाशरीरहोणाचाहिये ॥ और होवैनहीं यातैं इंद्रियोंकासमुदाय आत्मानहीं ॥ शंका ॥ जैसेग्रामविषे जो प्रधानपुरुषहोवैहै ॥ सो जभीमृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभीप्रधानपुरुषपणा दूसरेजीवतेपुरुषोंविषे होवैहै ॥ तैसे यहाँभीचक्षुइंद्रियकेनाशहुये बाकरिरहीजे श्रोत्रादिकइंद्रियहैं तिनोंविषे आत्मतारहैहै ॥ यातैं इंद्रियहीं आत्माहैं ॥ समाधान ॥ दृष्टांतविषे जैसे एकप्रधानपुरुषकेनाश हुएभी ताकेनिर्णयरूपव्यवहारकालोप होवैनहीं ॥ किंतु दूसरेजीवतेप्रधानपुरुष ताकेनिर्णयरूपव्यवहारकूं करैं हैं ॥ उलटाकिसीस्थान विषे तौ ऐसादेखीता है प्रथम प्रधानपुरुष आपणेग्राममात्रकेनिर्णयकूं करताथा ॥ ताकेमृत्युहुएं दूसरेप्रधानपुरुष अन्यग्रामकेनिर्णयकूं भी करैहैं ॥ तैसे यहाँभी चक्षुइंद्रियकेनाशहुए ताकाकार्यजोनीलपीतादिकरूपोंकाज्ञानहै सो अन्यश्रोत्रादिकइंद्रियोंतैंभी होणाचाहिये ॥ और चक्षुइंद्रियकाकार्य श्रोत्रादिकइंद्रियोंतैं होवैनहीं ॥ जोकदाचित्होवे तौ अंधपुरुषकूंभी श्रोत्रादिकइंद्रियतैं नीलपीतादिकरूप काज्ञान होणाचाहिये और होवैनहीं ॥ यातैं तुमाराहदृष्टांत विषम है ॥ शंका ॥ हमाराहदृष्टांत विषमनहीं ॥ काहेतैं किसीस्थानविषे प्रधान पुरुषकेमृत्युहुए ताकेनिर्णयरूपव्यवहारका लोपभीदेखा है ॥ समाधान ॥ यातुमारेकहणेकरिकै यहअर्थसिद्धभया ॥ किसीग्रामविषे प्रधानपुरुषकेमृत्युहुए ताकेव्यवहारकूं अन्यप्रधानपुरुष करैहैं ॥ और किसीप्रधानपुरुषकेमृत्युहुए ताकेव्यवहारकूं अन्यकोईपुरुष कर तानहीं ॥ किंतु ताकेव्यवहारका लोपहोइजावैहै ॥ तैसे यहाँभी सर्वअंधपुरुषोंकूं श्रोत्रादिकइंद्रियोंकरिकै नीलपीतादिकरूपकाज्ञान मतहोवै ॥ परंतु किसीकिसीअंधपुरुषकूंतौ होणाचाहिये ॥ और किसीभीअंधपुरुषकूं रूपकाज्ञान होवैनहीं ॥ यातैं प्रधानपुरुषकेदृष्टांततैं इंद्रियों

विषेआत्मता संभवैनहीं ॥ शंका ॥ इंद्रियोंतैं आत्माकूं भिन्नमानणेविषेभी अंधपुरुषकूं नीलपीतादिकरूपकेज्ञानकीप्राप्तिरूप दोष काहेतैं नहींहोवै ॥ समाधान ॥ इंद्रियोंतैंभिन्नआत्माहै यापक्षविषे अंधपुरुषकूं नीलादिकरूपकेज्ञानकीप्राप्तिरूपदोष होवैनहीं ॥ काहेतैं शब्द स्पर्शरूप रस गंधके ज्ञानोंविषे क्रम तैं श्रोत्र त्वक् चक्षु रसन घ्राण यहपंचइंद्रिय करण हैं ॥ अंधपुरुषविषे चक्षुइंद्रियकाअभाव है ॥ यातैं ताकूं नीलादिकरूपकाज्ञान होवैनहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे मणिआदिकपदार्थोंकेचाक्षुषज्ञानमे उपकरण जोदीपकाादिकप्रकाश ॥ ताकेअभावहुवे चक्षूवालापुरुषभी मणिआदिकपदार्थोंकूं देखैनहीं ॥ तैसे चक्षुइंद्रियकेनष्टहुए अंधपुरुष रूपकूंदेखैनहीं ॥ किंवा ॥ जैसे एकदीपकेनाशहुए तिसीस्थानविषे दूसरेदीपककीउत्पत्तिहोवैहै ॥ तैसे एकइंद्रियकेनाशहुवे दूसरेइंद्रियकीउत्पति किसीआस्तिकपुरुषनैं अंगीकारकरीनहीं ॥ काहेतैं आस्तिकोंकेमतविषे धर्मअधर्मरूपअदृष्टतैंविना किसीकार्यकी उत्पत्तिहोवैनहीं ॥ और जिसचार्वाकना स्तिककेमतविषे देहतैंभिन्न कोईआत्माहैनहीं॥तिनोंकेमतविषे एकइंद्रियकेनाशहुए तिसीस्थानविषे द्वितीयइंद्रियकीउत्पत्ति होणीचाहिये ॥ और जोदेहात्मवादीकहै ॥ हमारेमतविषेभी अदृष्टरूपकारणकाअभावहै ॥ यातैं एकइंद्रियकेनष्टहुए तिसीस्थानविषेद्वितीयइंद्रियकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ सोयहकहना बनैनहीं॥ काहेतैं पूर्वजन्मविषेसंपादनकरे पुण्यपापरूपअदृष्ट उत्तरउत्तरजन्मविषे कार्यकीउत्पत्तिकरैहै यहनियम है ॥ और पूर्वजन्म देहात्मवादियोंकेमतविषे संभवैनहीं ॥ जिसतैं अदृष्टकीउत्पत्तिहोवै ॥ यातैं एकइंद्रियकेनष्टहुए द्वितीयइंद्रियकी उत्पत्ति देहात्मवादीकेमतविषे अवश्यहोणी चाहिये॥किंवा ॥ जैसे देहात्मवादीकेमतविषे एकइंद्रियकेनष्टहुए द्वितीयइंद्रियकीउत्पत्तिरूपदोषहोवैहै ॥ तैसे इंद्रियआत्मवादीकेमतविषेभी यहदोष प्राप्तहोवैहै ॥ काहेतैं पूर्वजन्मके अभावहोणेतैं पुण्यपापरूपअदृष्टकीउत्पत्तिइंद्रियआत्मवादी कूंभी संभवैनहीं । यातैं एकचक्षुइंद्रियकेनष्टहुएभी बाकीरहेजेश्रोत्रादिकइंद्रिय तिनोंकरिकैद्वितीयचक्षूइंद्रियकीउत्पत्तिहोणीचाहिये॥दृष्टांत॥ जैसेग्रामविषे एकप्रधानपुरुषकेमृत्युहुएतिसकेकार्यविषेदूसरेप्रधानपुरुषकूंमहाजनलोकस्थापनकरैहैं ॥ और जैसेएकराजाकीमृत्युहुए तास्थानविषे द्वितीयराजाकूं प्रजा अंगीकारकरैहै ॥ शंका॥एकचक्षुइंद्रियके नष्टहुए ताकेस्थानविषे दूसरेचक्षुकूंश्रोत्रादिकइंद्रियतभीस्थानपकरै ॥

जभी सर्वइंद्रियोंकी परस्परएकमतिहोवै ॥ सो एकमति तिनोंकीहैनहीं ॥ यातैं एकचक्षुकेनष्टहुए द्वितीयचक्षुकीउत्पत्ति श्रोत्रादिकइंद्रियोंतैं होवैनहीं॥समाधान॥ जोइंद्रियोंकी परस्पर एकमतिनहींहोवै ॥ तौ किसीइंद्रियकरिकैभी कोईक्रियाहोवैनहीं॥दृष्टांत ॥ जैसे ग्रामविषे प्रधान पुरुषोंकी जभी परस्परएकमति नहींहोती ॥ तभी किसीभीकार्यकीसिद्धि होती नहीं ॥ यातैं किसी प्रकारकरिकैभी इंद्रियोंविषे चेतनता कीसंभावना होवै नहीं ॥ और रूपरसादिकविषयोंकेसाथि चक्षुआदिकइंद्रियोंका केवल संबंधमात्रहोवै है ॥ इंद्रियोंतैं किसीभी अर्थका प्रकाश होवै नहीं यातैं रूपादिकविषयोंकेप्रकाशकरणेहारा इंद्रियोंतैं भिन्नहीं कोईचेतन है ॥ इसप्रकार इंद्रियोंकूंअचेतनहोणेतैं देहविषे चेतनकी आधारतासंभवैनहीं ॥ यातैं घटकी तथादेहकी विलक्षणताबनैनहीं ॥ किंतु दोनोंसमानहैं ॥ शंका ॥ जैसे काथाऔरचूनाकरिकै युक्त तांबूलविषे रक्तता उत्पन्नहोवै है ॥ तैसे आकाशादिकपंचभूतोंकेसमुदायरूपशरीराविषे चेतनता उत्पन्नहोवै है ॥ सोईहीचेतनता शरीर विषेघटतैंविलक्षणताहै॥समाधान॥ पंचभूतोंकेमिलणेतैं शरीराविषे चेतनता उत्पन्नहोवै है॥यहतुमाराकहणा बनैनहीं ॥ काहेतैं पंचभूततौ घट विषेभी मिलेहुएहैं॥यातै ताकेविषे चेतनता काहेतैंनहीं उत्पन्नहोती॥किंतु होणीचाहिये॥शंका॥घटाविषे पृथिवीआदिकभूततौहैं ॥ परंतु वायु घटविषेहैनहीं॥यातैं ताकेविषे चेतनता उत्पन्नहोवैनहीं ॥ समाधान ॥ घटविषे वायुका अभावकहना संभवैनहीं ॥ काहेतैं सर्वत्रआकाशाविषे वायुकेअवयव परस्पर मिलेहुए रहैहैं ॥ याकारणतैंहीं व्यजनकेचलावणेकरिकै तिनअवयवोंका परस्परविभाग होवै है ॥ सो आकाश घटविषे भीहै॥यातैं घटविषे वायुहै॥यातैं शरीरकीन्यांई घटविषेभी चेतनताहोणीचाहिये ॥ किंवा ॥ वायुकेसंबंधतैं देहविषे चेतनतासंवेभी नहीं ॥ काहेतैं मृतकशरीराविषे तथाघटविषे वायुकेसंयोगहुएभी चेतनता देखीतीनहीं ॥ यातैं पंचभूतोंकेमिलनेतैं शरीराविषे चेतनता उत्पन्न होवै है ॥ यहवचन तेरा मिथ्याहै ॥ किंवा ॥ जो इंद्रियोंविषेचेतनताहोवै ॥ तौइंद्रियोंविषे मुख्यआत्मताहोवै॥ और इंद्रियोंकेआधारशरीरविषे गौणआत्मनाहोवै॥सो इंद्रियोंविषे चेतनताहैनहीं॥यातैं इंद्रियोंविषे मुख्यआत्मता और देहविषे गौणआत्मता यहदोनों संभवैनहीं॥यहाँ यह तात्पर्य है॥वेदकेविरोधीनास्तिकोंकेअनंतमतहैं॥तिनोंविषे एकचार्वाकहै॥तेचार्वाकभी चारिप्रकारकेहोवैहैं ॥ एकतौ देहकूंहीं आत्मामानै

हैं॥और दूसरे इंद्रियोंकूंहीं आत्मामानैंहैं॥और तीसरे हृदयकूंहीं आत्मामानैं हैं ॥ और चाथे प्राणकूंहीं आत्मामानैं हैं॥तहाँ देहात्मवादीकात याइंद्रियआत्मवादीका सर्व खंडनकऱ्या ॥ अब हृदयआत्मवादीका औरप्राणआत्मवादीका खंडनकरैं हैं॥यद्यपि हृदयदेशविषे सर्वदेहधारी जीवोंकूं ज्ञानहोवैहै॥तथापि सोहृदयदेशआत्मानहीं॥काहेतैं जैसे देह मांसरूप है ॥ यातैं आत्मानहीं॥तैसे हृदयदेशभी मांसरूपहै ॥ यातैं आत्मानहीं॥और जैसे बाह्यवायु आत्मानहीं ॥ तैसे प्राणभी वायुरूप है॥आत्मानहीं ॥ शंका ॥ जिसकेअदर्शनतैं मृत्युहोवै सो आत्माक हियेहै॥यहआत्माकालक्षण प्राणविषेहीं संभवहै॥ काहेतैं प्राणकेअदर्शनतैंहीं मृत्युहोवैहै॥जब पर्यंत शरीरविषे प्राणोंकादर्शनहोवै है॥तबप र्यंत शरीरविषे मृत्युव्यवहार होवैनहीं ॥ यातैं प्राणहीं आत्माहै ॥ समाधान ॥ शरीरविषेप्राणोंकेअदर्शनतैं मृत्युहोवैहै ॥ यातुमारेकहणेतैं प्राणोंकेअप्रत्यक्षतैं मृत्युहोवैहै यहसिद्धहोवैहै ॥ काहेतैं चार्वाक एकप्रत्यक्षप्रमाणकूंहीमानैंहै ॥ सोप्राणोंकेअप्रत्यक्षतैं मृत्युहोवैनहीं काहेतैं स्थावरवृक्षादिकोंविषे प्राणोंकाप्रत्यक्षज्ञान किसीपुरुषकूं हैनहीं ॥ तौभी वृक्षादिकका मृत्युहोवैनहीं ॥ और जो ऐसाप्राणात्मवादी कहै ॥ जंगमजेमनुष्यादिकशरीरहैं तिनोंविषे प्राणोंकेअप्रत्यक्षतैं मृत्युहोवैहै ॥ सोयहतुमाराकहनाभी बनैनहीं ॥ काहेतैं जंगममनुष्यादि कशरीरविषेभी मूर्च्छादिकअवस्थामें प्राणोंकाप्रत्यक्षहोवैनहीं ॥ यातैं मूर्च्छादिकअवस्थाविषे मृत्युहोणाचाहिये ॥ और मृत्युहोवै नहीं ॥ यातैं प्राण आत्मानहीं ॥ शंका ॥ जाकेनिर्गमनतैं मृत्युहोवैहै ॥ सो आत्माकाहियेहै ॥ यहआत्माकालक्षण ॥ प्राणोंविषेहीसंभवै है ॥ काहे तैं प्राणोंकेनिर्गमनतैंहीं मृत्युहोवै है ॥ और मूर्छाअवस्थाविषे प्राणोंकानिर्गमनहोवैनहीं ॥ किंतु शरीरकेभीतरिहीं प्राणोंकीगतिकानिरोध होवैहै यातैं मूर्छादिकअवस्थाविषे मृत्युहोवैनहीं ॥ यातैं प्राणहीं आत्माहैं ॥ समाधान ॥ जाकेनिर्गमनतैंमृत्युहोवै सो आत्माकाहिये है ऐसाप्राणहै ॥ यहजोतुमाराकहणाहै सो केवलव्यर्थ है ॥ काहेतैं जठराग्निकेनिर्गमनतैंभी प्राणियोंकामृत्यु देख्याहै ॥ यातैं जठराग्निभी तु मारेमतविषे आत्माहोणाचाहिये ॥ और जठराग्निकीआत्मता प्राणात्मवादीकूं अंगीकारहैनहीं ॥ शंका ॥ अग्निकानिर्गमन मृत्युका हेतु तभीहोवै जभी अग्निकेनिर्गमनका किसीकूं प्रत्यक्षहोवैहै ॥ सो अग्निकानिर्गमन प्रत्यक्षहोवै नहीं ॥ समाधान॥जठराग्निकेनिर्गमनका यद्यपि

प्रत्यक्षज्ञान होवैनहीं ॥ तथापि जैसे नासिकाछिद्रकेअग्रभागविषे हस्तराखणतैं प्राणवायुकेस्पर्शकेअभावकाज्ञान होवै है ॥ तिसस्पर्शके अभावरूपहेतुतैं प्राणोंकेनिर्गमनकाअनुमान होवै हैं ॥ तैसे जठराग्निके निर्गमनकाभी शीतलस्पर्शरूपहेतुतैं अनुमानहोवै है ॥ शंका ॥ प्राणोंकेनिर्गमनतैंतथाजठराग्निकेनिर्गमनतैं प्राणियोंकामृत्यु ह्वैवैहै॥यातैं दोनोंहीं आत्माहैं ॥ समाधान ॥ आग्नि और प्राणदोनों आत्माहोवै नहीं॥काहेतैंजोदोनोंकूं आत्मामानोंगे ॥ तौएकशरीरविषे दोआत्मा सिद्धहोवैंगे ॥ सो एकशरीरविषेदो आत्मामानणेविरुद्धहै ॥काहेतैं जोमैं पूर्वमातापितादिकोंकूं देखताभया ॥ सोईहीमें अभी तिनोंकास्मरण करोंहूं ॥ याप्रकारका प्रत्यभिज्ञाज्ञान आत्माकी एकताकूंविषयकरणे हारा नहीं होणाचाहिये ॥ काहेतैं अन्यकरिकेदेखीवस्तुका अन्यकूंस्मरणहोवैनहीं ॥ यातैं आग्नि और प्राण दोनों आत्मा नहीं ॥ किंवा ॥ जाकेनिर्गमनतमृत्युहोवै सो आत्माकाहिये है ऐसा जो आत्माकालक्षण करैं ॥ तौ रुधिरभी आत्माहोणाचाहिये ॥ काहेतैं रुधिरके निर्गम नतैंभी प्राणियोंकामृत्यु लोकविषे देखाहै ॥ और अग्नि प्राण उभयआत्मवादीतेरेकूं रुधिरकीआत्मता अंगीकार है नहीं ॥ किंवा ॥ रुधि रकूं आत्मामानणा संभवैभीनहीं ॥ काहेतैं रुधिरकेसुकावणेहारा जोकोई रोगविशेष ॥ तिसकरिकेयुक्तहुएप्राणी रुधिरतैंविनाभी किसी स्थानविषे जीवतेदेखैहैं ॥ और शास्त्रविषेभी हिरण्यकाशिपुआदिकोंकाशरीर तपकरिकै रुधिरतैंरहित केवलअस्थिमात्र कह्याहै ॥ यातैं रुधिरकूं आत्मतासंभवैनहीं ॥ किंवा ॥ प्राण अग्नि रुधिर यातिनोंकूं आत्मातासंभवैनहीं ॥ काहेतैं जोजोवस्तु जडहोवैहै ॥ सो अना त्माहोवैहै ॥ जैसे घटादिकहैं ॥ इसप्रकार शरीरतैंबाहरिस्थित जेप्राण अग्नि रुधिर तिनोंविषे जडताप्रत्यक्षसिद्ध है ॥ यातैं शरीरकेभी तरिस्थित जेप्राण अग्नि रुधिर हैं तेभी जडहैं ॥ और जड़वस्तु आत्माहोवैनहीं ॥ किंतु चेतनहीं आत्माहोवैहै॥ यातैं प्राण अग्नि रुधिर यह तीनों आत्मानहा ॥ और मन बुद्धि चित्त अहंकार यहचारिप्रकारकाअंतःकरणभी आत्मानहीं ॥ काहेतैं एकशरीरविषे अनंतआत्मामा नणेविषे जोमैं पूर्वपिता।दिकोंकूंदेखताभया सोईहीमैं अभीस्मरणकरताहूं ॥ यह प्रत्यभिज्ञाज्ञान नहीं होणाचाहिये ॥ शंका ॥ चारिअंतः करणकासमुदाय आत्मामतहोवै ॥ परंतु एकएकअंतःकरण आत्माकहेतैं नहीं होवै ॥ समाधान ॥ एकएकअंतःकरणकूंभी आत्मतासं

भवेनहीं ॥ काहेतैं अंतःकरण वृत्तिरूपतैं चक्षुआदिकइंद्रियद्वारा बाहरिनिकसिकरिकै घटादिकविषयावच्छिन्नचेतनकेआश्रितजोआवर णहै ताकी निवृत्तिकरै है ॥ और तावृत्तिउपहित साक्षीचेतन ताघटका प्रकाशकरै है ॥ यातैं साक्षीचेतनकरिके जोघटादिकोंकाप्रका शहै ॥ ताविषे अंतःकरण उपकरण है ॥ जो उपकरणहोवै है ॥ सो आत्माहोवैनहीं ॥ जो उपकरणभी आत्माहोताहोवै ॥तौ दीपादिकप्र काश तथाचक्षु आदिकइंद्रियभी विषयकेप्रकाशविषेउपकरणहैं ॥ यातैं आत्माहोणाचाहिये ॥ काहेतैं प्रकाशतैंविना अंधकारविषेस्थितघ टादिकोंका चक्षुकरिकैज्ञानहोवैनहीं॥तैसे चक्षुआदिकइंद्रियतैंहीनपुरुषकूं रूपादिकविषयकाज्ञान होवैनहीं॥यातैं अंतःकरणकीन्यांई दीपा दिकप्रकाश तथाचक्षु आदिकइंद्रिय यहसंपूर्ण विषयप्रकाशविषे उपकरणहैं॥और उपकरण आत्माहोवैनहीं ॥यातैं अंतःकरण आत्मानहीं ॥ ॥ शंका ॥ इंद्रियोंकीन्याईं मन बुद्धि चित्त अहंकार ज्ञानविषे उपकरणनहीं ॥ किंतु करताहै ॥ और करता आत्माहीहोवैहै ॥ समाधान॥ मनआदिकोंविषे करतापणा अंगीकारकियेहुएभी तिनोंविषे आत्मतासिद्धहोवैनहीं ॥ काहेतैं मन बुद्धि चित्त अहंकार याचारोंकेमध्यमे कोईएक करता है ॥ अथवा चारोंहीं करता हैं ॥ तहाँ एककरता है यहप्रथमपक्ष बनैनहीं ॥ काहेतैं जडत्वधर्म चारोंविषे समान है ॥ तिनोंमें एककूं करतामानणा ॥ और दूसरेकूं करतानहींमानणा ॥ याकेविषे कोईयुक्तिहैनहीं ॥ और चारों करताहैं यह दूसरापक्षभी बनैनहीं ॥ काहेतैं ॥ एकशरीरविषे ॥ अनेककरताआत्मामानणेविषे पूर्वदोष कहिआये हैं ॥ यातैं अंतःकरण आत्मा नहीं ॥ किंवा ॥ मन बुद्धि चित्त अहंकार याचारोंकूं जोवादी आत्मामानै है ॥ तिसतैं यह पूछाचाहिये ॥ मन बुद्धि चित्त अहंकार यहचारि शब्द आत्मा हैं ॥ अथवा मन बुद्धि चित्त अहंकार याचारिशब्दोंतैंउत्पन्नभईयां जेअर्थविषयक अंतःकरणकीचारिवृत्तियाँ हैं ते आत्मा हैं ॥ अथवा मन बुद्धि चित्त अहंकार याचारिशब्दोंके जेचारिअर्थ हैं ते आत्मा हैं ॥ तहाँ प्रथम और द्वितीयपक्ष संभवैनहीं ॥ काहेतैं मन बुद्धि चित्त अहंकार यहचारिशब्द औरतिनोंतैंउत्पन्नभईयां जेअंतःकरणकीचारिवृत्तियां यहसंपूर्ण अर्थप्रकाशके उपकरण हैं ॥ यातैं आत्मानहीं ॥ और मन बुद्धि चित्त अहकार याचारिशब्दोंके जेचारिअर्थ हैं ते आत्मा हैं॥ यह तीसरापक्षभी बनैनहीं॥ काहेतैं ते च

रिअर्थ जडहैं अथवा चेतन हैं ॥ तहाँप्रथमजडपक्ष बनैनहीं॥काहेत जोजोवस्तु जडहोवै है सो परिच्छिन्नहोवैहै॥और जोजोवस्तु परिच्छिन्न होवै है सो अनित्यहोवैहै॥और जोजोवस्तु अनित्यहोवै है सो अनात्माहोवै है॥जैसेघटादिकपदार्थ हैं॥तैसे मन बुद्धि चित्त अहंकार रूपअर्थों कूं जडमानणेविषे अनात्मताही सिद्धहोवैहै॥और अनेकजडोंकूं आत्मामानणेविषे पूर्वकह्या प्रत्यभिज्ञाज्ञानकाविरोधभी प्राप्तहोवै है ॥ यातैं मन बुद्धि चित्त अहंकार रूपअर्थ आत्मानहीं ॥ शंका ॥ जोजोवस्तु जडहोवै है सो परिच्छिन्नहोवैहै ॥ यह पूर्वआपनैं नियमकह्या सो संभ वैनहीं ॥ काहेतैं आकाश काल दिशा यहतीनों जडतो हैं॥ परंतु परिच्छिन्नहैंनहीं ॥ किंन्तु व्यापक हैं॥याकारणतैंहीं आकाशादिक नित्य हैं ॥ समाधान ॥ आकाशादिकोंविषे परिच्छिन्नताकाअभाव संभवैनहीं ॥ काहेतैं श्रुतिविषे आकाशादिकोंकीउत्पत्ति कथनकरीहै ॥ जो जो उत्पत्तिमानकार्यहोवैहै ॥ सो आपणेउपादानकारणकेएकदेशविषेरहैहै ॥ यातैं आकाशादिकभी आपणेकारणकीअपेक्षाकरिकै परिच्छि न्नहैं॥शंका॥जो आकाश परिच्छिन्नहोवै॥तो शास्त्रविषे आकाशकेदृष्टांतकरिकै आत्माविषे व्यापकतासिद्धकरीहै॥सो असंगतहोवैगी ॥समा धान ॥व्यापकता दोप्रकारकीहोवै है॥एक निरपेक्षव्यापकता॥और दूसरी सापेक्षव्यापकता॥तहाँ निरपेक्षव्यापकतातौ एकआत्माविषेहीहै ॥ और आकाशादिकोंविषे आपणे कार्यजेवायुआदिकहैं तिनोंकीअपेक्षाकरिकै सापेक्षव्यापकताहै॥ तिसीसापेक्षव्यापकताकूं अंगीकारकरिकै ही आत्माविषे आकाशकादृष्टांत दियाहै॥और आत्माकीअपेक्षाकरिकैतौ आकाशादिक परिच्छिन्नहीहैं ॥ यातैं नित्यनहीं॥और जे नैयायिक आकाशादिकोंकूंविभुमानै हैं ॥ तिनोंकीरीतितैंभी आकाशादिकोंकूं नित्यतासिद्धहोवै नहीं ॥ काहेतैं नैयायिकोंनें आकाशादिकविभुप दार्थोंविषेभी अन्योन्याभावकीप्रतियोगितारूप वस्तुपरिच्छेद अंगीकारकऱ्या है ॥ परिच्छिन्नवस्तु नित्यहोवैनहीं ॥ यातैं आकाशादिक अ नित्यहैं ॥ याकहणेतैं यहसिद्धभया ॥ सर्वअनात्मपदार्थोंविषे वस्तुपरिच्छेद औरदेशपरिच्छेद औरकालपरिच्छेद विद्यमान है ॥ यातैं सर्वअनात्मपदार्थ अनित्य हैं ॥ तिनोंविषे आकाशादिकनित्य हैं ॥ औरघटादिकअनित्यहैं ॥ यहजो लोकोंकूं प्रपंचविषे भेदप्रतीतहोवैहै॥ सो केवल अविवेकतैंप्रतीतहोवै है ॥ यातैं मन बुद्धि चित्त अहंकारकूं जडमानिकरिकै जो तिनोंकूं नित्यमानणा ॥ सो अत्यंतविरुद्धहै और

मन बुद्धि चित्त अहंकार रूप अर्थ चेतन हैं ॥ यहजोदूसरापक्ष अंगीकारकरैं ॥ तौ सत्यआनंदस्वरूपआत्मातैं मन बुद्धि चित अहंकार अभिन्नहींसिद्धहोवैंगे ॥ किंवा ॥ सत् चित् आनंद आत्मा इनचारोंका परस्परभेद विचारकियेतैं सिद्धहोवैनहीं ॥ और जोवादी सत् चित् आनंद आत्मा याचारोंका परस्परभेद मानै हैं॥तातैं यहहमपूछें हैं॥सत्तैंसतभिन्नहै चित्तैंचित्भिन्नहै आनंदतैंआनंदभिन्नहै आत्मातैं आत्माभिन्नहै॥याप्रकारपरस्परभिन्नहैं ॥अथवा सत्तैंचित्भिन्नहैचित्तैं आनंदभिन्नहै आनंदतैंआत्माभिन्नहै॥ याप्रकारइनचारोंकापरस्परभेदहै॥तहाँ प्रथमपक्ष संभवैनहीं॥काहेतैं जैसे लोकविषे घटपटादिकवस्तु आपणेस्वरूपतैं आप भिन्नहोवैनहीं ॥ तैसेसत्कासत्तैंभेदचेतनकाचेतनतैंभेद यहकहना संभवैनहीं॥और सत् चित् आनंद आत्मा इनचारोंका परस्परभेदहै॥यहदूसरापक्षभी बनैनहीं॥ काहेतैं प्रकाशस्वरूपचैतन्य आनंदतैंभिन्ननहीं ॥ जोआनंदतैंचैतन्यभिन्नहोवै॥तौ प्रतिकूलहोवैगा॥ जोप्रतिकूलहोवैहै सोजडहोवैहै॥यातैंआनंदतैंचैतन्यभिन्ननहीं ॥ तैसे आनंदभी चैतन्यतैंभिन्ननहीं ॥ काहेतैं जोप्रकाशरूपचैतन्यतैं आनंदभिन्नहोवै ॥ तौ दुःखरूपहोवैगा ॥ इसप्रकार सत्यभी आनंदतैं औरचैतन्यतैं भिन्ननहीं ॥ जोसत्यआनंदतैं औरचैतन्यतैं भिन्नहोवै ॥ तौ असत्रूपहोवैगा ॥ जभी सत्यभी असत्यभया ॥ तभी यहवस्तु सत्यहै यहवस्तु असत्यहै याप्रकारकाभेदव्यवहार लोकविषे नहींहोवैगा ॥ यातैं आनंदतैं तथाचैतन्यतैं सत्य भिन्ननहीं ॥ तैसे आनंद औरचैतन्यभी सत्यतैंभिन्ननहीं ॥ काहेतैं जो आनंद औरचैतन्य सत्यतैंभिन्नहोवै ॥ तौ बंध्यापुत्रकेसमान असत्यहीहोवैंगे ॥ इसप्रकार सत् चित् आनंदतैं आत्माभीभिन्ननहीं ॥ काहेतैं जो आत्मा सत्चित्आनंदतैंभिन्नहोवै ॥ तौ असत् जड दुःख स्वरूपहोवैगा ॥ सो संभवैनहीं काहेतैं सर्वप्राणियोंकूं मैंहूं याप्रतीतिमैं आत्माकीसत्यरूपता प्रतीतहोवैहै ॥ और मैंकभीभी अप्रियनहींहूं याप्रतीतिमैं आत्माकीआनंदरूपता प्रतीतहोवैहै ॥ और मैंजानताहूं याप्रतीतिमैं आत्माकीचैतन्यता प्रतीतहोवैहै ॥ यातैं सत्चित्आनंदतैं आत्मा भिन्ननहीं ॥ किंवा ॥ सर्वप्राणीमात्रकूं अनंतआत्माका अहंरूपकारिकै तथाआत्मरूपकरिकै संशयतैंरहितज्ञान देखीताहै ॥ मैंहूं अथवानहींहूं याप्रकारकासंशय किसीकूं होवैनहीं ॥ किंतु मैंसर्वदाहूं ऐसानिश्चय सर्वप्राणियोंकूंहोवैहै ॥ यातैं सत्चित्आनंदयहतीनोंभी आत्मातैंभिन्ननहीं ॥ जोआत्मातैं

सत् चित् आनंद भिन्नहोवै ॥ तो सत्यका सत्यरूपतैंज्ञान और चित्का चितरूपतैं ज्ञान और आनंदका आनंदरूपतैंज्ञान किसीकूंभी नहींहोवैगा ॥ काहेतैं आत्मातैंभिन्न नरशृंगविषे सत्यबुद्धि किसीकूंहोवैनहीं ॥ और आत्मातैंभिन्न घटादिकोंविषे चैतन्यबुद्धि होवै नहीं ॥ और आत्मातैंभिन्न सिंहसर्पादिकोंविषे आनंदबुद्धिहोवैनहीं ॥ यातैं आत्मातैं सत्चित्आनंद भिन्ननहीं ॥ शंका ॥ सत् चित् आनंद आत्मा इनचारोंका यद्यपि परस्परभेदनहीं ॥ तथापि घटपटादिकजडवस्तुओंकारिकै आत्माविषे वस्तुपरिच्छेद काहेतैंनहींहोवै ॥ समाधान ॥ आत्मातैंभिन्न कोईभीवस्तु जगत्काकारणनहीं काहेतैं आत्मानाम आपणेस्वरूपका है ॥ आपणेस्वरूपतैं जोभिन्नहोवै है ॥ सो नर शृंगकीन्यांई निःस्वरूपहोवै है ॥ यातैं आत्माहीं सर्वजगत्काकारण है ॥ कारणतैं कार्य भिन्नहोइकेप्रतीतहोवैनहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे मृत्तिकातैंघट भिन्नहोइकेप्रतीतहोवैनहीं ॥ तैसे कार्यरूपजगत्भी कारणरूपआत्मातैं भिन्नहोइकेप्रतीतहोवैनहीं ॥ शंका ॥ जड जगत्का कारण आत्मानहीं ॥ किंतु जगत् आपणा कारण आपहीं है ॥ समाधान ॥ किसीस्थानविषे कोईभीवस्तु आपणाकारण आपहोवै नहीं ॥ काहेतैं कार्यकी उत्पत्तितैं पूर्वक्षणविषे जो वस्तु रहै सो कारण होवै है ॥ और कारणतैं पश्चात्भावी जो वस्तु होवै सोकार्य होवै है ॥ दृष्टांत ॥ जैसे मृत्तिका घटकी उत्पत्तितैं पूर्व विद्यमान है ॥ यातैं घटका मृत्तिका कारण है ॥ और घट मृत्तिकातैंपश्चात्भावी है ॥ यातैं मृत्तिकाका घटकार्य है ॥ जोजड जगत् आपना कारण आपहीं होवै ॥ तौ जगत् आपही आपने तैंपूर्ववृत्ति आपहीं आपनेतैं पश्चात् भावी कहणा होवैगा ॥ सो अत्यंत विरुद्ध है शंका ॥ अज्ञान केबलतैं जड जगत् आपणा कारण आप काहेतैं नहीं होवै ॥ समाधान ॥ अज्ञानके बलतैंभी जगत् आपना कारण आप होवै नहीं ॥ काहेतैं अज्ञानके बलतैं रज्जु आदिकोंकूं कल्पितसर्पादिकोंकीहीं कारणता देखी है ॥ रज्जुकूं रज्जुके प्रति कारणताअज्ञानकेबलतैंभी संभवैनहीं ॥ यातैं आत्मातैं भिन्न किसीजडवस्तुकीसत्तानहीं ॥ याकहणेतैं आत्माविषे वस्तुपरिच्छेदका अभाव दिखाया ॥ अब देशकाल परिच्छेदकाअभाव आत्मा विषे दिखावैं हैं ॥ जैसे गोत्वजाति गौ व्यक्तिविषे रहै है ॥ तैसे आत्मा किसीदेश विषेर है नहीं॥ किंतु सर्वदेशविषे रहै है॥और जैसे वर्षादिक सर्वकालविषे रहै नहीं ॥ किंतु किसी

कालविषे रहे है ॥ तैसे आत्मा किसीकालविषेनहीं ॥ किंतु सर्वकालविषेविद्यमान है॥ काहेतैं देशकालादिकजितने लौकिकआधार हैं॥तिन सर्वोंकी प्रकाशस्वरूपआत्मातैंविना सिद्धिहोवैनहीं ॥ यातैं आत्मा देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहित है ॥ शंका ॥ जभी आत्माकास्वरूप देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहितहै॥तौ प्रपंचकाभान काहेतैं होता है॥समाधान॥देशकालतैंआदिलैके जितनाआनिर्वचनीयजगत् है॥सोसंपूर्णआत्माविषे अज्ञानीपुरुषोंनैं कल्पनाकऱ्या है॥दृष्टांत॥जैसे मध्याह्नकेसूर्यविषे घूकादिकपक्षी रात्रिकीकल्पनाकरैं हैं ॥औरजैसेसोयेहुएपुरुषोंकूं स्वप्नविषे निद्रादोषकरिकेनानाप्रकारकाजगत् प्रतीतहोवै है॥तैसे आत्माके अज्ञानकरिकै संपूर्णजगत्हमारेकूं प्रतीतहोवै है॥औरसत्चित्आनंदस्वरूपआत्माविषे देशकालवस्तुपरिच्छेदकाअभाव है॥याकारणतैं आत्माअनंत है॥और सृष्टिकेआदिकालविषे सनकादिकऋषियोंनैंइसी आत्माका हमारेतांईं उपदेशकऱ्याथा ॥ और अभी वामदेवनैंभी इसी आत्माका हमारे तांईं उपदेशकऱ्या है ॥ और इसी अद्वितीयआत्माकेजाननेवासतै विचारकेआरंभकालविषे हमोनैं यासंघातविषेकौनआत्मा है वाप्रकारकाकथन कऱ्याथा ॥ सोईही अद्वितीयआत्मा अभी हमोनैं अंतःकरणादिकोंकेविचारकरिकै निश्चय कऱ्या है ॥ याकारणतैं हमसंपूर्णअधिकारी कृतकृत्य हैं ॥ और हमोनैं आनंदस्वरूपआत्माकूं अंतःकरणकेविवेकतैं निश्चयकऱ्या है ॥ यातैं जितनेहृदयादिकनाम अंतःकरणकेवाचक हैं ॥ तिनसंपूर्णनामोंकूं शुद्धआत्माविषे हम समर्पणकरैं हैं ॥ तात्पर्यइह ॥ जितनेक हृदयादिकनाम हैं तेसंपूर्ण अंतःकरणविशिष्टचेतनके तथा अंतःकरणकीविशिष्टचेतनके वाचक हैं ॥ तहाँ भागत्यागलक्षणाकरिकै अंतःकरणतथावृत्तिरूपजडभागकेत्यागकियेतैं संपूर्णहृदयादिकपद शुद्धआत्माकेबोधक हैं ॥ शंका ॥ मनवाणीकेअविषय शुद्धआत्माविषे विशिष्टचेतनकेवाचकहृदयादिकपदोंका प्रयोगकरणा व्यर्थ है ॥ समाधान ॥ शुद्धआत्माविषे हृदयादिक पदोंका प्रयोग करणाव्यर्थनहीं ॥ किंतु अर्थवान् है ॥ काहेतैं जैसेहमअधिकारियोंनैं हृदयादिकपदोंकरिकै शुद्धआत्माका निश्चय कऱ्या है ॥ तैसे सर्व अधिकारियोंनैं हृदयादिकपदोंकरिकै शुद्धआत्माका निश्चयकरणा ॥ याप्रकार अधिकारियोंकेबोधकरणेवासतै हृदयादिकपदोंका शु

द्धआत्माविषेप्रयोगकऱ्या है ॥ तहाँ उपासनातैंतथापंचकोशोंकेविचारतैं हृदयदेशविषे आत्माका अपरोक्षज्ञानहोवै है ॥ याकारणतैं आत्माकूं हृदय कहैं हैं ॥ और यह आनंदस्वरूपआत्मा संपूर्णविश्वको प्रकाशकरै है ॥ याकारणतैं याआत्माकूं मन कहैं हैं॥अथवा सर्वमुमुक्षुवोंनैं मनकरिकै आत्मानिश्चयकरीता है॥याकारणतैं आत्माकूं मन कहैं हैं॥ और आत्माविषेकल्पितजोसर्वप्रपंच ताकूं यह आत्मा भलीप्रकारजाने है॥याकारणतैं आत्माकूं संज्ञान कहैंहैं॥और आत्माकीआज्ञाविषे सर्ववाक्आदिकइंद्रिय औरअग्निआदिकसर्वदेवता वर्तैहैं॥याकारणतैं आनंदस्वरूपआत्माकूं अज्ञान कहैं हैं ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा जडचेतनरूपप्रपंचकेभेद विचारपूर्वकआपणेस्वरूपकूं तथापरमात्माकूं विशेषकरिकैजाणै है॥याकारणतैं आत्माकूं विज्ञान कहैं हैं॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा सर्वप्रपंचकाप्रकाशकजोआपणास्वरूप है ताकूं मैंहूं याप्रकारकरिकै सर्वदाजानै है ॥ याकारणतैं आत्माकूं प्रज्ञान कहै हैं ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा एकवारिजान्याजो आपणा स्वरूप तथाअन्यकोईअनात्मवस्तु ताका विस्मरणकरैनहीं॥याकारणतैं आत्माकूं मेधाकहैं है॥औरयह आनंदस्वरूपआत्मा चक्षुआदिकइंद्रियकरिकै सर्ववस्तुकूं देखै है ॥ याकारणतैं आत्माकूं दृष्टि कहैं हैं॥ और जैसे स्तंभादिक गृहकेभींतरिप्रवेशकरिकै गृहकूंधारणकरैं हैं॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्माभी सर्वशरीरोंविषेप्रवेशकरिकै देहइंद्रियादिकोंकूं धारणकरै है॥याकारणतैं आत्माकूं धृति कहैं हैं॥अथवा जैसे काष्टमृत्तिकाकरिकैरचितसेतु क्षेत्रादिकोंकीमर्यादाकूं धारणकरै है॥तैसे यह आनंदस्वरूपआत्माभीवर्णआश्रमकीमर्यादाकूं औरातिनोंकेधर्मकीमर्यादाकूं धारणकरै है ॥ याकारणतैं याआत्माकूं धृति कहैं हैं ॥ और जैसे काष्टादिकोंकापात्रविषे जोप्रस्थ है सोयवादिकअन्नकेपरिणामकूं निश्चयकरावै है॥और जैसेरज्जुअविच्छिन्नचेतन आपणेविषे कल्पित जेसर्पदंडादिक हैं तिनोंकेपरिणामकूं जनावै है॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्माभी संपूर्णविश्वकेपरिणामकूं निश्चयकरै है ॥ याकारणतैं आत्माकूं मति कहैं हैं ॥ अथवा सर्वप्राणियोंविषेस्थितहुआ यह आत्मा सर्वप्राणियोंकेहितकूं तथाअहितकूं भलीप्रकार निश्चयकरै है ॥ याकारणतैं आत्माकूं मति कहैं हैं ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा यहवस्तु मेरेकूंप्राप्तहोवै यहवस्तु हमारेकूंनहींप्राप्तहोवै याप्रकारकाजोमन है ताकेरोकणेनैं समर्थ है ॥ याकारणतैं आत्माकूं मनीषा कहैं हैं ॥ और यह

आनंदस्वपरूआत्मा देह इंद्रिय अंतःकरण अज्ञानादिकोंकूं प्रकाशकरै है ॥ याकारणतैं आत्माकूं जूति कहैं हैं ॥ अथवा अध्यात्मदुःख अधिदैवदुःख अधिभूतदुःख यातीनप्रकारकेदुःखोंकूं विषयकरणेहारियां जे अंतःकरणकीवृत्तियांहै तिनोंकूं आत्मा प्रकाशकरै है ॥ याकारणतैं आत्माकूं जूति कहैं हैं ॥ अथवा आत्माकेप्रकाशकरिकै संपूर्णजगत् आपणेआपणे कार्यकीसिद्धिकरै है ॥ याकारणतैं आत्माकूंजूति कहैं हैं ॥ और जैसे माता आपणेपुत्रोंकूं स्मरणकरैहै ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्माभी मेरेतैंविना यहसंपूर्णजगत् कैसेसिद्धहोवै याप्रकारका स्मरणकरैहै ॥ याकारणतैं आत्माकूं स्मृति कहैंहैं ॥ औरयहआनंदस्वरूपआत्मा जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति यातीनअवस्थाकूं सम्यक्कल्पनाकरै है ॥ याकारणतैं आत्माकूं संकल्प कहैं हैं ॥ और याआनंदस्वरूपआत्माकीइच्छाकरिकै यहसंपूर्णजगत् उत्पन्नहोवैहै ॥ याकारणतैं आत्माकूं क्रतु कहैंहै॥अथवा यहआनंदस्वरूपआत्माकी प्रपंचकूंविषयकरणेहारा जोमायाकीवृत्तिरूपज्ञानहैताज्ञानतैंयहसंपूर्णप्रपंचउत्पन्नभया है॥याकारणतैं आत्माकूं क्रतु कहैंहैं ॥और यहआनंदस्वरूपआत्मा आपनीसमीपताकरिकै प्राणोंकूं आपणेआपणेव्यापारविषे प्रवर्तकरैहै ॥ याकारणतैं आत्माकूं असु कहैंहैं ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा सुखप्राप्तिकीइच्छाकूं तथादुःखनिवृत्तिकीइच्छाकूं प्रकाशकरैहै ॥ याकारणतैं आत्माकूं काम कहैंहैं ॥ और प्रजाकीउत्पत्तिकाकारणजो स्वस्त्रीसंगमकीअभिलाषा ताकूं यहआनंदस्वरूपआत्मा प्रकाशकरैहै ॥ याकारणतैं आत्माकूं वश कहैं हैं ॥ इसप्रकार हृदयदेशविषेस्थितजोअंतःकरण औरताकीवृत्तियां तिनोंकेहीं संपूर्णहृदयादिकशब्द वाच कहैं ॥ ताअंतःकरणविषे हमअधिकारियोंनैं आनंदस्वरूपआत्मा जान्या है ॥ याकारणतैं वृत्तिसहित अंतःकरणके जितनेहृदयादिकनाम हैं तेसंपूर्णनाम आनंदस्वरूपआत्माके हमोंनैं कथनकरैहैं ॥ और अंतःकरण केहृदयआदिकनाम परमात्माविषे सभैभीहैं ॥ काहेतैं परमात्मातैंभिन्न कोईपदार्थहैनहीं ॥ और वास्तवतैंविचारकरियेतो जितनेघटपटादिकनामहैं ॥ तेसंपूर्ण परमात्माकाहीबोधनकरैहै ॥ काहेतैं परमात्मातैंभिन्न कोईवस्तुहैनहीं ॥ जोवस्तुकूं घटपटादिकनाम बोधनकरैं ॥ यहवार्ता वार्तिककार्यके कर्ता जोसुरेश्वराचार्य हैं तिनोनैंभी कही है ॥ श्लोक ॥ अतोऽनुभवएवैको विषयोऽज्ञातलक्षणः ॥ अक्षादीनांस्वतःसिद्धो यत्रतेषांप्रमाणता ॥ १० ॥ अर्थयह ॥ स्वप्रकाश और अज्ञात

जो चेतनहै ॥ सोईहो प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकाविषयहै ॥ ताचेतनविषेहीं प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकूं प्रमाणताहै ॥ तात्पर्ययह ॥ अज्ञात अर्थ काजोबोधकहोवै सोप्रमाणकहिये है ॥ अज्ञानकाजोआश्रयहोवै और अज्ञानकाजोविषयहोवै सो अज्ञातकहियेहै ॥ अज्ञानका आश्रय और विषय चेतनहै ॥ चेतनतैंभिन्न जडवस्तु अज्ञानकाआश्रयविषय होवैनहीं ॥ यातैं आत्माकेबोधनकरिकेही संपूर्णप्रमाणोंविषे प्रमाणतासिद्धहोवैहैं ॥ १० ॥ और यह आनंदस्वरूपआत्माही शुद्धब्रह्महै ॥ और जगत्काकारण मायाविशिष्टईश्वरभी यह आनंदस्वरूप आत्माही है ॥ और समष्टिसूक्ष्मशरीरकाअभिमानी हिरण्यगर्भभी यह आनंदस्वरूपआत्माहीहै ॥ और समष्टिस्थूलशरीरकाअभिमानी विराट्भगवान्भी यहआनंदस्वरूपआत्माही है ॥ और विराट् भगवान्केशरीरविषे तथा अस्मदादिक सर्वप्राणियोंकेशरीरविषे भोक्ता और तीनलोकोंकूंधारणकरणेहारा तथा सर्वकूंप्रकाशकरणेहारा जोपरमात्माइंद्रहै ॥ सोभी यहआनंदस्वरूपआत्माहीहै ॥ अथवा प्रसिद्धजो देवतावोंकाराजाइंद्र है सोभी यहआनंदस्वरूपआत्माहीं है ॥ और मरीचितैंआदिलैकेजे प्रजापतिहै तेभी आनंदस्वरूपआत्माहीं है ॥ और शरीरकेआश्रितजोवाक्आदिकइंद्रिय और तिनोंके अग्निआदिकदेवता तेसंपूर्ण आनंदस्वरूप आत्माही है ॥ आत्मातैं भिन्न किंचित्मात्रभी नहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे स्वप्नविषे भिन्नभिन्नकल्पनाकरे जे प्रमाता ते संपूर्ण हमही हैं ॥ हमारेतैंभिन्न कोईस्वप्न विषेप्रमातानहीं ॥ इतनैंकरिकै आत्माविषे सजातीय भेदका खंडन कऱ्या ॥ अब विजातीयभेदकूं खंडनकरैहैं पृथिवी जल तेज वायु आकाश यहपंचभूत मैंआनंदस्वरूपआत्मातैंभिन्ननहीं ॥ और अंडज जरायुज स्वेदज उद्भिज यहजेचारिप्रकारके भूत हैं ॥ ते स्थावरजंगमरूपकरिकै तथाकार्यकारणरूपकरिकै दोप्रकारके हैं ॥ तेसंपूण आनंदस्वरूपआत्मातैंभिन्ननहीं ॥ और जैसे अग्नितैं उष्णता आरप्रकाश भिन्ननहीं ॥ तैसे आनंदस्वरूपआत्मातैं स्थूलसूक्ष्मरूपप्रपंच भिन्ननहीं ॥ और जैसे जलतैं शीतलता और द्रवत्व भिन्न नहीं ॥ तैसे आनंदस्वरूपआत्मातैं प्रपंचभिन्ननहीं ॥ और जैसे पृथिवीतैं काठिनता आर गंध भिन्ननहीं ॥ तैंसे आनंदस्वरूपआत्मातैं स्थूलसूक्ष्मप्रपंच भिन्ननहीं ॥ और जेसे वायुतैं क्रिया तथा स्पर्श भिन्ननहीं ॥ तैसे आनंदस्वरूपआत्मातैं प्रपंच भिन्ननहीं ॥ और जैसे आकाशतैं अवकाश

तथाशब्द भिन्ननहीं॥तैसे आनंदस्वरूपआत्मातैं जगत् भिन्ननहीं ॥ और जैसे दोषतैंरहितसूर्यकेप्रकाशविषे अंधकारका यद्यपि अभावहै ॥ तथापि उलूकआदिक सूर्यविषे अंधकारकीकल्पनाकरैहै ॥ तैसे जगत्तैंरहित आनंदस्वरूपआत्माविषे अज्ञानीजन जगत्कीकल्पनाकरैहै॥ और जैसे अमूर्त्तआकाशविषे मेघादिकमूर्त्तपदार्थ रहैहै ॥ तैसे आनंदस्वरूपआत्माविषे यहसंपूर्णजडजगत् रहैहै ॥ और जैसे नानाप्रकार केमेघादिक आकाशमें किसीकालविषेप्रतीतहोवैं है सर्वदा प्रतीतहोवैंनहीं ॥ तैसे आनंदस्वरूपआत्माविषे यहसंपूर्णजगत् कदाचित्प्रतीत होवै है सर्वदाप्रतीतहोवैं नहीं ॥ और जैसे मायावीराक्षसोंकाबालक प्रयोजनतैंविना मायाकरिकैपदार्थोंकूंरचै है ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्मा प्रयोजनतैंविनाहीं जगत्कूंरचैहै ॥ और जैसे मदिरापानकरिकैअंधहुआ पुरुष आवरणतैंरहितदेशविषेभी भित्तिआदिकआवरणों कूंदेखै हैं ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्मा असत् जगत्कूंदेखैहै ॥ और जैसे कोईपुरुष आपणे चित्तकेदोषकरिकै दोषतैंरहितआपणे पिताऔरगुरुआदिकोंविषे दोषोंकूंदेखैहै ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्मा प्रपंचरूपदोषतैंरहितआपणेस्वरूपविषे प्रपंचकूंदेखैहै ॥ और जैसे सोयाहुआपुरुष स्वप्नविषे आपणीएकताकूं नहींजाणैहै ॥ किंतु नानारूपकरिकै आपणेकूंजाणैहै ॥ तैसे यहआनंदस्वरूआत्मा जाग्रत् स्वप्नसुषुप्तिरूपतीनस्वप्नोंकूंदेखताहुआ आपणीएकताकूंनहींदेखता ॥ और जैसे नलिकाकेभ्रमणहूए नालिकाऊपरिआरूढजोशुकहै सो नलिकाकरिकैनहींवांध्याहुआभी आपकूंवांध्याहुआमानिकरिकै भ्रमणकरैहै ॥ तैसे यहजीवात्मा नित्यमुक्तआनंदआत्माकेअज्ञानतैं संसाररूपशूलाविषे भ्रमणकरैहै ॥ और जैसे गंधकेलोभकरिकै भ्रमर कमलकूंत्यागतानहीं ॥ तहाँ रात्रिकेप्राप्तहूए कमल संकोचकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ताकमलकेभींतरि निरुद्धहुआभ्रमर अत्यंतदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और ऐसाविचारकरैहै ॥ जबरात्रिवितीतहोवैगी ॥ और प्रातःकालहोवैगा ॥ तब मैनिकसिजावोंगा ॥ ऐसाविचारकरतैंही हस्तीताकमलकूंभक्षणकरिलेवैहै ॥ तैसे यहजीवात्मा स्त्रीआदिकविषयोंविषेआसक्तहुआ अनंतप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जैसे कोईधनीपुरुष भ्रांतिसैं आपणेधनीपणेकूंविस्मरणकरिकै लोकविषेदुःखकाहेतुजोदरिद्रता है ताकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तैसे यह आत्मा आनंदकासमुद्रजो आपणास्वरूपहै ताकूंविस्मरणकरिकै तुच्छविषयसुखकीप्राप्तिवासतैं अत्यंत

दीनदशाकूं प्राप्तहोवै है ॥ और जैसे सर्वगुणोंकरिकैसंपन्नकोईकपुरुषकिसीव्यभिचारिणीस्त्रीकरिकैमोहितहुआ दीनताकूंप्राप्तहोवै है ॥ तैसे यह आनंदस्वरूपआत्मा मायाकरिकैमोहितहुआ नानाप्रकारकीदीनताकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जैसे त्रिलोकीकानाथजोइंद्र है सो सर्वदेवतावोंकाअधिपति है ॥ यातैं कामदेवताकेवशकरणेकाभी इंद्रकूंसामर्थ्य है ॥ तौभी कामनीकूंवशकरणेमैंसमर्थनहींहोवै है ॥ किंतु कामकरिकै कामिनीकेअधीनहोवैहै ॥ तैसे मायातैंआदिलेकेसर्वका अधिष्ठानजोआत्माहैं ॥ सो मायाकूंवशकरणेमैंसमर्थनहींहोवैहै ॥ और जैसेप्रियपुत्रादिकोंनैं कियाजोनिरादर तानिरादरविषे पिता दोषकूंनहींदेखैहै ॥ तैसे यह आनंदस्वरूपआत्मा मायाकेदोषोंकूंनहींदेखैहै ॥ और जैसे भारश्रृंगनामाजोकोईमृगविशेषहै ॥ सो आपणेश्रृंगोंकेभारकूंप्रसन्नहुआ धारणकरैहै ॥ तैसे यह आत्मा आपणेस्वरूपकेअज्ञानतैं मायाकेभारकूं धारणकरैहै ॥ और जैसे दुर्जनपुरुषकेसंगतैं साधुपुरुष दोषकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्मा मायाकेसंगतैं दोषकूंप्राप्तहोवै है ॥ और जैसे दुर्जनपुरुषकीदृष्टिकरिकै निर्दोषपुरुषविषेभी दोषहोवैहै तैसे अज्ञानीपुरुषकी दृष्टिकरिकै आत्माविषे अनंतदोषयुक्तसंसार है ॥ और जैसे आपणीप्रजाविषेस्थितदुःखोंकूं राजा आपणेविषे मानैहै ॥ तैसे जडअंतःकरणविषेस्थितदुःखकूं तादात्म्यअध्यासकरिकै आत्मा आपणेविषेमानै है ॥ और जैसे कारणसामग्रीतैंरहित एकस्वप्नपुरुषविषे अकस्मातैं संपूर्णजगत् उत्पन्नहोवैहै ॥ तैसे आनंदस्वरूपआत्माविषे अकस्मातैं स्थूलसूक्ष्मप्रपंच उत्पन्नहोवै है ॥ और जैसे स्वप्नविषे यहपुरुष प्रयोजनतैंविना आपणेकूंआपहींदुःखकीप्राप्तिकरै है ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्मा जाग्रत्विषे व्यर्थहीआपणेकूंदुःखकीप्राप्तिकरैहै ॥ और जैसे स्वप्नतैंजाग्रत्भयेपुरुषकूं स्वप्नकेदुःखकानाश होवैहै ॥ और सोपुरुष ऐसाजाणैहै ॥ मेरेकूं पूर्वदुःखनहींहोताभया ॥ और अभीवर्तमानकालविषेभी मेरेकूंदुःखनहीं है॥ औरआगेभीहमारेकूं दुःखनहींहोवैगा इसप्रकार तीनकालविषे स्वप्नकेदुःखकाअभावनिश्चयकरैहै ॥ तैसे जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति रूपसंसारस्वप्नतैं आत्मसाक्षात्काररूपजाग्रतकेप्राप्तहूए ॥ याआनंदस्वरूपआत्माकूं सर्वदुःखोंकानाशहोवैहै ॥ और तिसज्ञानअवस्थाविषे आत्मा याप्रकारजानैहै ॥ मेरेकूं पूर्वकालविषेदुःखनहींहोताभयाऔरअभीवर्तमानकालविषेभी मेरेकूंदुःखनहीं ॥ और आगेभी हमारेकूंदुःखनहींहोवैगा ॥ इसप्रकारतीनका

लविषेआपणेस्वरूपमैं विद्वान्दुःखकूंनहींमानता ॥ किंतु अंतःकरणादिकोंकेधर्मदुःखादिकजाणेहै ॥ और जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिरूपसंसारस्व
प्नैं ब्रह्मसाक्षात्काररूपजाग्रत हमसर्वअधिकारियोंकूं प्राप्तभयाहै ॥ याकारणतैं हम महान्पुण्यवान् हैं ॥ और पूर्वजोहमानैं अंतःकरणके
वाचक हृदयवादिकनाम अद्वितीयआत्माविषे कथनकरथे ॥ तिनसर्वनामोंविषे प्रज्ञानामहा अत्यंत शोभायमानहै ॥ काहेतैं प्रज्ञा याना
मविषे दोशब्दहैं ॥ एकतोप्रशब्दहै ॥ और दूसरा ज्ञाशब्दहै ॥ तहाँ सजातीयभेद विजातीयभेद स्वगतभेद यातीनभेदोंतैंरहिततताप्रशब्द
काअर्थ हैं ॥ और ज्ञाशब्दकाप्रकाशअर्थ है तादोनोंशब्दकाअर्थ आनंदस्वरूपआत्माविषेही घटैहैं ॥ आत्मातैंभिन्न अनात्मवस्तुविषे
घटे नहीं ॥ यहाँ यहअभिप्राय हैं ॥ समानजातिवालेपदार्थोंकाजोपरस्परभेद है ताकूं सजातीयभेदकहैं हैं ॥ जैस एकब्राह्मणकादूसरे
ब्राह्मणतैं भेद है ॥ तहाँ ब्राह्मणत्वजाति दोनोंविषेसमान है ॥ यह सजातीयभेदभी आत्माविषेनहीं ॥ काहेतैं आत्माकेसमानजातिवा
लादूसराकोईआत्माहैनहीं ॥ और विरुद्धजातिवालेपदार्थोंका जोपरस्परभेदहैं ॥ ताकूं विजातीयभेदकहैंहै ॥ जैसे ब्राह्मणकाक्षत्रियतैंभेदहै ॥
तहाँ ब्राह्मणत्वक्षत्रियत्वदोनोंजाति एकअधिकरणमैंरहैनहीं ॥ यातैं परस्परविरुद्ध हैं ॥ यहविजातीयभेदभीआत्माविषेरहैनहीं ॥ काहेतैं
आत्मातैंभिन्न कोईवस्तुहैनहीं ॥ यद्यपि अनात्माजगत् आत्मातैंविजातीयहै ॥ तथापि कल्पितप्रपंचतैं आत्माविषे विजातीयभेदसिद्धहो
वैनहीं ॥ समानसत्तावालापदार्थही भेदकासंपादकहोवै है ॥ और आपणेविषेस्थितजोभेद है ताकूं स्वगतभेदकहैं है ॥ जैसे एकहीशरीर
विषे हस्तपादादिकोंकापरस्परभेद हैं ॥ यहस्वगतभेदभी आनंदस्वरूपआत्माविषेनहीं ॥ काहेतैं स्वगतभेद सावयवपदार्थोंविषेहोवै है ॥
और आत्मा निरवयव है ॥ इसप्रकार तीनभेदतैंरहित और प्रकाशस्वरूप आत्मा प्रज्ञाननामकरिके पूर्वहमोंनैं कथनकऱ्या है ॥ प्रज्ञाश
ब्दका औरप्रज्ञानशब्दका एकही अर्थहै ॥ सोप्रज्ञानशब्दका अर्थ आनंदस्वरूपआत्माहीं ब्रह्मातैंआदिलेकेस्थावरपर्यंत सर्वकेशरीरोंविषे
व्यापक हैं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे संपूर्णकाष्ठोंविषे अग्निस्थितहै ॥ और आकाशादिजेपंचभूत हैं ॥ आर तिनोंकेकार्यजेस्थावरजंगम हैं ॥ तिन
संपूर्णोंका प्रज्ञारूपनेत्रही निर्वाहक है ॥ दृष्टांत ॥ जैसे अस्मदादिकपुरुषोंके मांसमयनेत्र निर्वाहक हैं ॥ यहाँ इतनाभेद है ॥ मांसमय

नेत्रतो केवल निमित्तकारणहुए निर्वाहकहैं ॥ और यहप्रज्ञारूपनत्रता उपादानकारणहुआ प्रपंचकानिर्वाहकहै ॥ काहेतैं संपूर्णजगत्की
आत्मातैंउत्पत्ति और आत्माविषेस्थिति और आत्माविषेहीलय श्रुतिनेकथनकऱ्या है ॥ सो उत्पत्तिस्थितिलयकीकारणता उपादानका
रणविषेही होवै है ॥ जैसे घटकी उत्पत्ति स्थितिलय मृत्तिकाविषे होवै है ॥ यातैं मृत्तिका घटकाउपादानकारण है ॥ किंवा ॥ तीनलोकों
केभीतरि सूर्य चंद्रमा अग्नि आदिकोंकाजोप्रकाश है ॥ सोभी प्रज्ञारूपनेत्रतैंभिन्ननहीं ॥ किंतु प्रज्ञास्वरूप है ॥ प्रज्ञास्वरूपचैतन्यतैंविना
सूर्यादिकोंकीभी सिद्धिहोवैनहीं ॥ यहवार्तासंपूर्णप्राणियोंके अनुभवकरिकैसिद्ध है ॥ काहेतैंसंपूर्णप्राणिमात्र किसीकालविषे किसीदेशविषे
किंचित् किंचित्वस्तुकूं जाणतेहीं है ॥ सोसंपूर्ण प्रज्ञारूपनेत्रकरिकैजाणै हैं ॥ प्रज्ञारूपनेत्रतैंविना किसीभीवस्तुकाज्ञानहोवैनहीं ॥अब चैत
न्यरूपप्रज्ञाकी सर्वत्रव्यापकताजनावणेवासतै प्रथमवृक्षादिकस्थावरपदार्थोंविषे प्रज्ञाकासद्भाव दिखावैं हैं ॥ जैसे अस्मादिकपुरुषोंकूं
अन्नादिकपदार्थोंकीप्राप्तिकरिकै सुखकाज्ञानहोवैहै ॥ तासुखकेज्ञानतैं शरीरकीवृद्धिहोवैहैं ॥ और शस्त्रादिकोंकेप्रहारकरिकै दुःखकाज्ञान
होवैहै ॥ तादुःखकेज्ञानतैं शरीरकाक्षयहोवैहै ॥ तैसे वृक्षादिकोंकीभी जलसिंचनकरिकै वृद्धिदेखीती है ॥ और मूलादिकोंकेछेदनतैं तथा
अत्यंतउष्णतातैं तथा अत्यंतशीततैं वृक्षादिकोंकाक्षय देखीताहै ॥ सोवृद्धि तथाक्षय सुखदुःखककज्ञानतैंविना होवैनहीं ॥ यातैं वृद्धिरूप
हेतुतैं वृक्षादिकोंकेसुखज्ञानका अनुमानहोवै है ॥ और क्षयरूपहेतुतैं तिनोंकेदुःखज्ञानका अनुमानहोवैहै ॥ इसप्रकार ॥ स्थावरोंविषे चैत
न्यरूपप्रज्ञा अनुगतहै ॥ और ग्रामके तथावनके जेपशुहैं ॥ तिनोंकी हरिततृणयुक्तहस्तादिकोंकूंदेखिकरिकै प्रवृत्तिहोवै है ॥ और दंडादि
कयुक्तहस्तकूंदेखिकरिकै निवृत्तिहोवैहै ॥ सोप्रवृत्ति सुखसाधनताज्ञानतैंविना होवैनहीं॥किंतुयहवस्तु मेरेसुखकासाधनहै याप्रकारकेज्ञानतैं
प्रवृत्तिहोवैहै॥ और सोनिवृत्ति दुःखसाधनताज्ञानतैंविना होवैनहीं॥किंतु यहवस्तु हमारे दुःखकासाधनहै याप्रकारकेज्ञानतैंनिवृत्तिहोवै है यह
रीति अस्मदादिकपुरुषोंके प्रवृत्तिऔरनिवृत्तिविषे प्रसिद्धहै॥यातैं प्रवृत्तिरूपहेतुतैं पशुआदिकोंविषे सुखसाधनताज्ञानका अनुमानहोवै है ॥
और निवृत्तिरूपहेतुतैं तिनोंविषे दुःखसाधनताज्ञानका अनुमानहोव है ॥ इसप्रकार पिपीलिकातैं आदिलेकेमनुष्यपर्यंत जितनेकजंगम

प्राणी हैं ॥ तिनसंपूर्णोंका अनुकूलवस्तुविषेप्रवृत्ति औरप्रतिकूलवस्तुतैंनिवृत्ति रूपव्यवहार समानहैं ॥ यातैं संपूर्णजंगम सुखदुःखकेज्ञान वाले हैं ॥ और वशिष्ठादिकमुनियोंके तथाब्रह्माआदिकदेवतावोंके सुखदुःखकाज्ञान शास्त्रप्रमाणतैं जान्याजावै है ॥ अथवा चेतनतारूपहे तुतैं वशिष्ठादिकोंके सुखदुःखकेज्ञानका अनुमानहोवैहे ॥ जोजोचेतनहोवै है सो सुखदुःखकेज्ञानवालाहोवै है ॥ जैसे अस्मदादिकपुरुषहैं ॥ सोचेतनता वशिष्ठादिकमुनियोंविषे तथादेवतावोंविषेभी है ॥ यातैंतेभी सुखदुःखकेज्ञानवाले हैं ॥ इसप्रकार सर्वप्राणीमात्रविषे जो सुखदुःखका अनुभव है ॥ सोअनुभवहीं प्रज्ञाशब्दकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ और सुखविषे तथादुःखविषे कोईभीक्रिया नहीं है॥किंतु जबपर्यंत सुखदुःखरूपफलकी उत्पत्तिनहींभई ॥ तबपर्यंतहीं संपूर्णकारक क्रियाकूंकरैं हैं॥सुखदुःखरूपफलकीउत्पत्तितैंअनंतर क्रियाकूंकरैंनहीं॥दृष्टांत॥ जैसे जबपर्यंत तृप्तिरूपफलकीउत्पत्तिनहींभई ॥ तबपर्यंत करताआदिककारकोंनै भोजनरूपक्रियाकरीती है ॥ तृप्तिरूपफलके उत्पन्न हुए विद्यमान कारकोंनैभी भोजनरूपक्रिया करीती नहीं ॥ और सुखदुःखरूपफलकेभोक्ताजेहमहैं ॥ तिनोंकूं प्रज्ञारूपनेत्रतौंविना सुख दुःख उत्पन्नहोवैनहीं ॥ और प्रज्ञारूपनेत्रतैंविना सुखदुःखकीस्थितिभी संभवैनहीं॥ काहेतैं जोप्रज्ञारूपनेत्रतैं सुखदुःखभिन्नहोवैं ॥ तौशशशृंगकी न्याईं असत्होवैंगे ॥ यातैं प्रज्ञास्वरूपनेत्रतैं सुखदुःख भिन्ननहीं किंतुअभिन्नहैं ॥ और जैसे अस्मदादिकोंकेसुखदुःख प्रज्ञास्वरूपहैं ॥ तैसे सर्वदेहधारीजीवोंकेसुखदुःख प्रज्ञास्वरूपहैं ॥ प्रज्ञातैंआतिरिक्तनहीं ॥ और जैसे सर्वदेहधारीजीवोंकेसुखदुःख प्रज्ञास्वरूप हैं ॥ प्रज्ञातैं भिन्न कियेहुए शशशृंगकीन्याईं असत्होवैं हैं ॥ तैसे जितनाककार्यकारणरूपप्रपंच है सोसंपूर्ण प्रज्ञास्वरूपहै काहेतैं ताप्रज्ञारूपनेत्रकोविद्यमान हुएहीं प्रपंचकास्फुरणहोवै है ॥ दृष्टांत ॥ जैसे रज्जुके विद्यमानहुए सर्प प्रतीत होवै है ॥ रज्जुतैं भिन्नकियाहुआसर्प शशशृंगकी न्याईं असत्होवै है ॥ तैसे प्रज्ञातैं भिन्न किया हुआ सुखदुःखादिकप्रपंच असत् होवै है ॥ शंका ॥ सर्व अर्थोंका प्रकाशक बुद्धि है ॥ यातैं बुद्धिही प्रज्ञा है ॥ समाधान ॥ जैसे सुखदुःखादिकप्रपंच जड हैं ॥ यातैं आपनी सिद्धि विषे प्रज्ञारूपप्रकाशकी अपेक्षा करै है ॥ तैसे बुद्धिभीजड है ॥ यातैं आपणीसिद्धिमैं चैतन्यरूपप्रज्ञाकी अपेक्षाकरै है ॥ और पंचभूतोंके सत्वगुणकाकार्यरूपबुद्धिविषे चेतनके प्रतिबिं

बग्रहणकरणेकीयोग्यताहै ॥ यातैं बुद्धिविषे प्रज्ञाशब्द गौणहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे सूर्यकेप्रकाशविषे प्रकाशशब्द गौण है ॥ और सर्वप्रकाशों काप्रकाशक भेदतैंरहित आनंदस्वरूपआत्माविषेहीं प्रज्ञाशब्द मुख्य है ॥ और मायासहित भूतभौतिकसकलप्रपंचका स्वप्रकाशचेतनक रिकैहीं प्रकाशहोवै है ॥ याकारणतैंहीं श्रुतिनैं सर्वप्रपंचकानिर्वाहक प्रज्ञानेत्र कह्याहै ॥ और सोप्रज्ञाही सर्वप्रपंचकोस्थितिकाआधार है ॥ काहेतैं प्रज्ञा प्रपंचकाउपादानकरण है ॥ उपादानकरणविषेहीं कार्यकीस्थिति लोकविषेदेखी है ॥ दृष्टांत ॥ जस मृत्तिकारूपउपादानकार णविषेहीं घटकीस्थितिहोवै है ॥ और यह संपूर्ण जगत् आपणीउत्पत्तितैंपूर्व तथानाशतैंअनंतर रूपष्टनामरूपकारिकै प्रज्ञाविषे रहै है ॥ और मध्यकालविषे रूपष्टनामरूपकारिकै प्रज्ञाविषे रहै है ॥ यातैं संपूर्णजगत् प्रज्ञारूपउपादानकारणविषे रहैहै ॥ यहाँयहअभिप्रायहै ॥ उपादान कारण तीनप्रकारकाहोवै है ॥ एकतौ परिणामीउपादान कारण और दूसरा आरंभकउपादानकारण ॥ और तीसरा विवर्तउपादानकारण ॥ तहाँ चैतन्यरूपप्रज्ञाकूं प्रपंचकेप्रति परिणामी उपादान कारणता तौ संभवैनहीं ॥ काहेतैं प्रज्ञा निरवयवहै ॥ सावयवदुग्धादिकही दधिआ दिकपरिणामकूं प्राप्तहोवैं हैं ॥ किंवा ॥ परिणामी उपादानकारण कार्यकेसमानसत्तावालाहोवै है ॥ जैसे दुग्धविषे औरदधिविषे व्यावहारिक सत्ता अथवा प्रातिभासिकसत्ता समानहै ॥ तैसे चैतन्यरूपप्रज्ञाकी और प्रपंचकी समानसत्तानहीं ॥ किंतु विषसमत्ताहै ॥ चैतन्यविषेतौ पार मार्थिकसत्ताहै ॥ और प्रपंचविषे व्यावहारिकसत्ताहै ॥ अथवा प्रातिभासिकसत्ताहै ॥ यातैं प्रपंचका परिणामी उपादानकारण प्रज्ञानहीं ॥ और चैतन्यरूपप्रज्ञा प्रपंचकाआरंभकउपादानकारणभी नहीं॥काहेतैं आरंभ बहुतपदार्थोंतैंहोवै है ॥ एकतैं आरंभहोवै नहीं ॥ जैसे नैयायि कोंकेमतविषे अनंतपरमाणुमिलिकरिकै जगत्काआरंभकरैं हैं॥ और प्रज्ञाएक है ॥ यातैं जगत्का आरंभकउपादानकारण होवै नहीं ॥ किंतु प्रपंचका विवर्तउपादानकारण प्रज्ञाहै ॥ आपणे वास्तवस्वरूपकूंनत्यागिकै जोअन्यथाप्रतीतहोवै है ॥ सो विवर्तउपादान काहियेहै ॥ या अर्थकूं दृष्टांतकरिकैस्पष्टकरैं हैं॥ जैसे विशुद्धआकाशविषे गंधर्वनगर औरनीलता प्रतीत होवै हैं और जैसे बालककूं आपणेमनविषेदुःखकेदेणेहारेराक्षसादिक प्रतीतहोवै है ॥ तैसेचैतन्यरूपप्रज्ञाविषे संपूर्णजगत् प्रतीतहोवै है ॥ याकारणतैंहीं वेदांतशास्त्रकेजानणेहारेमहात्मा

प्रज्ञाकूं ब्रह्मरूपकहैं हैं ॥ काहेतैं " प्रज्ञानमानंदंब्रह्म" यामहावाक्यविषे प्रज्ञानकूंब्रह्मस्वरूपकह्याहै ॥ प्रज्ञान और प्रज्ञाशब्दका एकही अर्थ है ॥ प्रज्ञातैंपृथक् स्थूलसूक्ष्मरूपप्रपंचहैनहीं ॥ यातैं प्रज्ञाकूं ब्रह्मस्वरूपता संभवैहै ॥ और जैसे शंकुकरिकैसंपूर्णपत्र व्याप्तहोवैं है॥ तैसे चैतन्यस्वरूपप्रज्ञाकरिकै देशकालतैं आदिलेकै संपूर्ण भावअभावरूपप्रपंच व्याप्त है ॥ और जैसे एकहीं आकाश पाताल भूमि स्वर्ग यातीनलोकोंकूं तथातीनलोकतैं बाह्यदेशकूं व्याप्यकारकै स्थितहोवैहै॥तैसे चैतन्यरूपप्रज्ञा सर्व जगत्कूं व्याप्यकरिकै स्थितहोवै है ॥ और जैसे आकाशविषे काल्पित जोगंधर्वनगर तथामेघ औरनीलिमा आदिक ॥ ते संपूर्ण आकाशस्वरूप हैं आकाशतैंपृथक्नहीं ॥ तैसे चैतन्यस्वरूपप्रज्ञाविषे कल्पित जोजडचेतनरूपप्रपंच ॥ सो प्रज्ञास्वरूपहीहै ॥ प्रज्ञातैंपृथक्नहीं ॥ इसप्रकार विचारकरिकै संपूर्णअधिकारीजन विवेकवैराग्यआदिक साधनोंकरिकै संपन्न हुए जीवब्रह्मके अभेदकूं निश्चय करते भये तानिश्चय करिकै शरीरिआदिकोंविषे ॥ अहंअभिमानका परित्यागकरते भये ॥ और गृहपुत्रादिकोंविषे ममअभिमानका परित्यागकरतेभये ॥ प्रारब्धकर्मकी भोगतैंविना निवृत्तिहोवैनहीं ॥ यातैं प्रारब्धकर्मकीसमाप्तिवासतै इच्छा अनिच्छा परइच्छा पूर्वक भोगोंकूं भोगतेभये ॥ तात्पर्ययह ॥ जीवन्मुक्त हुए सर्व अधिकारी जन विचरतेभये ॥ और जैसे वामदेवमुनि प्रारब्धकर्मकीभोगतैंसमाप्तिकरिकै विदेहमोक्षकूंप्राप्तहोताभया ॥ तैसे संपूर्णअधिकारी जन भोगतैंप्रारब्धकर्मकीसमाप्तिकरिकै आनंदस्वरूपआत्मा हमहैं याप्रकार अद्वितीय आत्माकाअनुभव करतेहुए सुखस्वरूपब्रह्मविषे अभेदरूपविदेहमोक्षकूं प्राप्तहोतेभये ॥ श्रीगुरुवाच ॥ हे शिष्य सनकादिकऋषियोंका और वामदेव आदिकअधिकारी प्रजाका जो परस्पर संवादरूप इतिहासहै ॥ सो इतराकेपुत्रऋषिनैं आपनेशिष्यौंकेताईंवेदकेवचनोंकरिकैकथनकऱ्या है याकारणतैं याउपनिषदूकाऐत्तरेयनाम है ॥ और याइतिहासकहणेंका यहप्रयोजन है ॥ अध्यायकेआरंभविषे पूर्व यह कह्याथा॥ अद्वितीयआत्माकाज्ञानजो है सोईहीं मोक्षकामार्ग है और आत्मज्ञानहीं पुरुषनैं संपादनकरणेयाग्यहै ॥ और सत्यब्रह्मकीप्राप्तिकरणेहारा आत्मज्ञानहै ॥ यातैं आत्मज्ञान सत्यस्वरूप है ॥ और ब्रह्मस्वरूपहै ॥ ऐसे आत्मज्ञानतैं पुरुषोंनैं प्रमादनहींकरणा ॥ किंतु ताकूं अवश्यसंपादनकरणा ॥ और आत्मज्ञानकीउपेक्षाकरिकै ॥ ६९ ॥

मोक्षकीप्राप्तिवासतै अन्यसाधन मुमुक्षुनैं नहींसंपादनकरणे ॥ और जेजेपुरुष याआत्मज्ञानकी उपेक्षाकरतेभयेहैं ॥ तेसंपूर्णदुर्बुद्धिपुरुष पराभवकूंप्राप्तहोतेभये हैं ॥ शिष्यउवाच ॥ हेभगवन् जैसे लोकविषे एकमल्लका दूसरेमल्लकरिकै पराभवहोवै है ॥ तैसे यहाँ आत्मज्ञानरहित पुरुषोंका किसकरिकै पराभवहोवे है ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य द्वैतकेज्ञानतैं श्रुतिनैं भयकीप्राप्तिकही हैं॥ यातैं अंतर्यामीईश्वरहीं यमराजकीन्यांई आत्मज्ञानरहितपुरुषोंका पराभवकरणेहारा है ॥ और मायाका कार्यजो अहंममअभिमानरूपसंसार है ॥ सो यमकिंकरकीन्यांई आत्मज्ञानरहितजीवोंका पराभवकरणेहारा है ॥ यातैं आत्मज्ञानकूंहीं मुमुक्षुनैं अवश्यसंपादनकरणा ॥ याअर्थविषे पुरुषोंकेश्रद्धाकीउत्पत्तिवासतै ऐतरेयमुनि याइतिहासकूं कथनकरतेभये ॥ तात्पर्ययह वामदेवतैंआदिलेक जितनेपूर्वअधिकारीभये हैं ॥ तेसंपूर्ण आत्मज्ञानकरिकैही मोक्षकूं प्राप्तहोतेभये हैं ॥ याकारणतैं इदानींकालकेमुमुक्षुवोंनैंभी मोक्षकीप्राप्तिवासतै आत्मज्ञानकूंहीं अवश्यसंपादनकरणा ॥ यहही इतिहासकहणेका प्रयोजन है ॥ और मनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोइकै जेपुरुष याइतिहासकेअर्थकूं नहींजाणते ॥ तिनपुरुषोंकूं संसाररूपसुभट हननकरैगा ॥ दृष्टांत ॥ जैसे व्याध मृगोंकूंहननकरै है ॥ शिष्यउवाच ॥ हेभगवन् बाणोंकरिकै मृगोंकूं व्याध हननकरैहै यहाँ संसाररूपसुभटकौनशस्त्रोंकरिकै अज्ञानीजीवोंकूंहननकरै है ॥ श्रीगुरुरुवाच॥ हेशिष्य जिनशस्त्रोंकरिकै संसारसुभट अज्ञानीजीवोंकूं हननकरै है॥ सो हम पूर्वविस्तारतैंकहिआये हैं ॥ तथापि संक्षेपतैंफेरि हम कहते हैं ॥ तुम श्रवणकरो ॥ प्रथमतो पितामाताकेउदरविषे त्वचा रुधिर मांस मेद अस्थि मज्जा वीर्य यासप्तधातुरूपगर्ततविषे अज्ञानीजीवोंकानिपातनरूप शस्त्रकरिकै संसारसुभट हननकरैहै ॥ और गर्भविषेविष्ठा मूत्रादिकोंकेलेपनरूपशस्त्रकरिकै संसारसुभट हननकरै है ॥ और गर्भविषे बंधनकरणेहारे जे जरायुचर्य तथाअस्थि आदिक बंधन हैं ॥ तावंधनरूपशस्त्रोंकरिकै हननकरै है ॥ और सर्पकेसमान जेउदरकेकृमिरूपपाश हैं ॥ तापाशरूपशस्त्रोंकरिकै हननकरैहै॥ और उदरविषे स्थितजोजठराग्नि औरप्राणवायु ॥ तिनोंकरिकै उत्पन्नभयेजेदुःसहतापहैं ॥ तिनतापरूपशस्त्रोंकरिकै हननकरै है ॥ और सूक्ष्मउपस्थछिद्रतैंनिगमनरूपशस्त्रोंकरिकै अज्ञानीजीवोंकू संसारसुभट हननकरै है ॥ और गर्भविषे अनेकजन्मोंकीस्मृतिरूप शस्त्रकरिकै और मूर्छाक

रिकै सर्वपदार्थोंकीविस्मृतिरूपशस्त्रकरिकै संसारसुभट अज्ञानीजीवोंका हननकरै है ॥ इसप्रकार गर्भविषे अज्ञानीजीवोंकूं नरककेसमान अनंतदुःखोंकीप्राप्तिकरिकै पुनः बाल्यअवस्थाविषे असामर्थ्य और पराधीनतारूपशस्त्रकरिकै संसारसुभट अज्ञानीजीवोंकूं हननकरै है ॥ और मोहकरिकैविष्ठा मूत्रादिकोंकाभक्षणरूपशस्त्रकरिकै तथाक्रीडाकीअप्राप्तिरूपशस्त्रकरिकै संसारसुभट हननकरै है ॥ और माता पिता अध्यापक आदिकोंतैंभीतिरूपशस्त्रकरिकै अज्ञानीजीवोंकूं संसारसुभट हननकरै है ॥ इसप्रकार बाल्यअवस्थाविषे नरककेसमान अनंतदुःखोंकी प्राप्तिकरिकै पुनःयुवाअवस्थाविषे कामदेवनैंकन्याजो चित्तरूपभूमिविषे स्त्रीकीमूर्त्तिकालेखन ॥ तात्पर्य यह वारंवार चित्तकरिकै स्त्रीकास्मरण ॥ तास्मरणरूपशस्त्रकरिकै और नानाप्रकारकै भ्रमणरूपशस्त्रोंकरिकै संसारसुभट अज्ञानी जीवोंकूं हननकरै है ॥ इसप्रकार युवा अवस्थाविषे अनंतदुःखोंकीप्राप्तिकरिकै पुनःवृद्धअवस्थाविषे जराअवस्थाकीप्राप्तितैंउत्पन्नभयेजे नानाप्रकारकेकासश्वासादिकरोग ॥ तारोगरूपशस्त्रोंकरिकै अज्ञानीजीवोंकूं संसारसुभट हननकरै है ॥ इसप्रकार वृद्ध अवस्थाविषे अनंत दुःखोंकीप्राप्तिकरिकै पुनःमरणअवस्थाविषे कालसर्पकरिकैग्रसनरूपशस्त्रकरिकै तथायमकिंकररूपशस्त्रोंकरिकै अज्ञानीजीवोंकूं संसार सुभट हननकरै है ॥ इसप्रकार मरणअवस्थाविषे अनंतदुःखोंकीप्राप्तिकरिकै पुनःनरकविषे नानाप्रकारकेआयुधोंकापरिहाररूपशस्त्रकरि कै और पृथिवीजलआदिकोंकेविकार जेअनंतनरक हैं तानरकोंकीप्राप्तिरूपशस्त्रकरिकै आत्मज्ञानरहितपुरुषोंकूं संसारसुभट हननकरै है ॥ और स्वर्गतैंनीचेपतनरूपशस्त्रकारक संसारसुभटहननकरै है ॥ इसप्रकार परलोक विषे अनंतप्रकारकेदुःखोंकी प्राप्तिकरिकै पुनः यामनु ष्यलोकविषे देहादिकोंकीप्राप्तिवासतैं पितामाताकेगर्भविषेप्रवेशरूप शस्त्रोंकरिकै आत्मज्ञानरहितजीवोंकूं संसारसुभट हननकरै है ॥ और जैसे लोकविषेएकमल्लदूसरेनिर्बलमल्लकूं कभीनीचेगिडावै है ॥ और कभी ऊपरिगेडै है ॥ औरकभी पूर्वपश्चिमआदिकअष्टदिशाओंविषे गेडै है ॥ और आपणेभुजारूपशस्त्रोंकरिकै ताकूं मर्दनकरै है ॥ याप्रकार ताकापराभवकरै है ॥ तैसे यहसंसारसुभटभी आत्मज्ञानतैंरहित दीनजीवोंकूंचौरासीलक्षशरीररूपदशादिशाओंविषे गिडावताहुआ और पूर्वउक्तपितामाताकेशरीरविषे प्रवेशआदिकशस्त्रोंकरिकैमर्दनकर

ताहुआअज्ञानीजीवोंका पराभवकरै है ॥ जसे यूकादिकक्षुद्रजंतुकेपराभवकरणमैं अस्मदादिकपुरुषोंकूं आयास नहींहोवै है तैसे आत्मज्ञा न तैंरहित पुरुषोंकेपराभवकरणमैं संसारसुभटकूंभी किंचित्मात्र आयासनहींहोवै है ॥ हेशिष्य संसारसुभटनैं प्राप्तकरेजे जन्ममरणआदि कपराभव हैं ॥ तिनपराभवोंकूं जेजेपुरुष जाणते हैं ॥ और तिनपराभवोंकेज्ञानकाफल जोवैराग्यहै ताकूं जेपुरुष संपादनकरै है ॥ तेसुभट पुरुषहीं यावेदांतशास्त्रकेअर्थकूंजाणते हैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जबपर्यंत आत्माकासाक्षात्कारनहींभया ॥ तबपर्यंतही संसारसुभट यूकादिक क्षुद्रजंतुकीन्यांई जीवोंका पराभवकरै है ॥ और जब याजीवकूं गुरुमुखतैं वेदांतकेश्रवणआदिकोंकरिकै आत्माकासाक्षात्कारहोवै है ॥ तब क्षुद्रजंतुकीन्यांई संसारहीं पराभवकूंप्राप्तहोवै है ॥ शिष्यउवाच ॥ हेभगवन् ऐतरेयउपनिषद्काअर्थजीवब्रह्मकाअभेदहै ॥ यह आपनैं पूर्व कह्या ॥ सो हमारीबुद्धिविषे आरूढहोवैनहीं ॥ काहेतैं दूसरेउपनिषद् जीवब्रह्मकेअभेदरूपअर्थकूं बोधनकरैं हैं अथवा भेदकूंबोधनकरैं है यहसंशय हमारेकूंहोवै है ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य सर्वउपनिषद् जीवब्रह्मकेअभेदकूंहीं बोधनकरै हैं ॥ जीवब्रह्मकेभेदमैं किसीउ पनिषद्का तात्पर्यनहीं ॥ तहाँ प्रथम ऋग्वेदकेऐतरेयउपनिषद्काअर्थ जीवब्रह्मकाअभेद तुमारेतांई हमनैं कह्या ॥ अब ऋग्वेदकाजो कौषीतकीउपनिषद् है ताकरिकै कथनकऱ्याजोअर्थ है ॥ सोभी तेरेकूं श्रवण करणेयोग्य है ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्वामि उद्धवानंदगिरिपूज्यपादं शिष्येणस्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचिते प्राकृतात्मपुराणे ऐतरेयार्थप्रकाशोनाम प्रथमोऽध्यायःसमाप्तः ॥ १ ॥

श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वश्वराभ्यांनमः ॥ ॥❀॥ ॥❀॥ ॥❀॥ ॥❀॥ ॥❀॥ ॥❀॥

इतिश्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषा आत्मपुराणेप्रथमोऽध्यायःसमाप्तः ॥

॥ इति श्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषाआत्मपुराणे
प्रथमोऽध्यायः समाप्तः ॥

अथ स्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषाआत्मपुराणे द्वितीयाध्यायप्रारंभः ।

ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ अथ द्वितीयाध्यायप्रारंभः ॥ तहाँ प्रथमअध्यायाविषे ऋग्वेदकाजोऐतरेयउपनिषद् है ताकेअर्थकूं निरूपणकऱ्या ॥ अबद्वितीयअध्यायाविषे ऋग्वेदकाजोकौशीतकीउपनिषद् है ताकेअर्थकूं निरूपण करैं हैं ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य मैंब्रह्महूं यहजो जीवब्रह्मकेअभेदकाज्ञान है ॥ सोयद्यपि अनंतकोटीजन्मोंकारिकैभीदुर्लभ है ॥ तथापिविवेकीपुरुषोंनैं गुरुकीसेवा तथाश्रद्धाआदिकसाधनोंकारिकै पाईता है ॥ और याआत्मज्ञानतैंविना कोईभीपदार्थ मनुष्योंकाहिततमनहीं ॥ आत्मज्ञानहीं अत्यंतहिततम है ॥ काहेतैं निरतिशयसुखकीप्राप्तिका तथामूलसहितसर्वदुःखकीनिवृत्तिका आत्मज्ञानहीं साधन है ॥ आत्मज्ञानतैंभिन्नसर्वपदार्थबंधनकेकारण हैं ॥ हे शिष्य याअर्थविषे पूर्व प्रतर्दनराजाकाइंद्रकेसाथिसंवादरूप इतिहास कथनकऱ्या है ॥ ताइतिहासकूं तुम श्रवणकरो ॥ श्रीकाशीजीविषे दिवोदासनामाराजा पूर्वहोताभया ॥ तादिवोदासराजाकापुत्र प्रतर्दननामाराजाहोताभया ॥ सोकैसाप्रतर्दनराजा हैं॥बाहरिकेजेराजाआदिकशत्रु हैं॥और भींतरिकेजेकामक्रोधादिकशत्रु हैं ॥ तेसंपूर्णशत्रु जिसनैंजीते हैं ॥ और क्षत्रियोंकेधर्मविषे सर्वदा जिसकीप्रीति है ॥ सोप्रतर्दनराजा धर्मयुद्धकारिकै पृथिवीकेसंपूर्णराजाओंकूं जीतताभया ॥ तिसतैंअनंतर देवतावोंकेजीतणेवासतैं सोप्रतर्दनराजा एकलाही धनुषकूंलेकरिकै स्वर्गकूंजाताभया॥तहाँ स्वर्गकेद्वारेऊपरिजाइकेस्थितहुआ ॥ और इंद्रकेपासि दूतकूंभेजताभया॥प्रतर्दनउवाच॥हेदूत देवराजइंद्रकूंहमारा यहसंदेसाजाइकेकहो ॥ अथसंदेसवचन ॥ हेदेवराज यद्यपि संपूर्णलोक तुमारेकूं देवतावोंकाइंद्रकहैं हैं ॥और हमारेकूं मनुष्योंकाइंद्रकहैं हैं ॥ तथापि तुमहमदोनोविषे इंद्रतासंभवैनहीं ॥ काहेतैं परमऐश्वर्यवान्जोहोवै सो इंद्रकहिये है ॥ जाऐश्वर्यकेसमान तथाअधिक दूसराऐश्वर्यनहोवै सो परमऐश्वर्यकाहिये है॥ऐसापरमऐश्वर्य एकाविषेसंभवै है ॥ दोनोंविषेसंभवैनहीं ॥ यातैं तुमारेहमारेविषे इंद्रशब्द मुख्यनहीं किंतुगौण है ॥ दृष्टांत ॥ जैसे देवदत्तपुरुष सिंह है यास्थानाविषे सिंहशब्द मृगराजपशुविशेषविषे मुख्य है ॥ और देवत्तपुरुषविषे गौण है ॥ और हेदेवराज तुमारेतैंभिन्न जितनेराजे पृथिवीविषेस्थित हैं ॥ तिनसंपूर्णोंकूंहम जीतिआये हैं ॥ आपणेइंद्रभावकेगौणताकीनिवृत्तिवासतैं तुमारेजीतणेकीइच्छाकरिके हम स्वर्गविषेआये हैं ॥ यातैं हे देवराज हमारेसाथियुद्धकरणेवासतैं सेनाकूंलेकरिकै शीघ्रहींतुमआवो ॥ अथवा अकेलेआवो ॥ और जोयुद्धकरणेकातुमारेकूंसामर्थ्यनहीं होवै ॥ तौ हमारेसमीपआईकै ऐसावचनकहो जोहमपराजयकूंप्राप्तभये॥यादोनुंवार्तांविषे जोतुमारीइच्छाहोवैसोकरो ॥ और धनुष है दूसरासहायकाजिसका ऐसा जोमैंप्रतर्दनहूं सो तुमारेप्रियधामस्वर्गकूंप्राप्तभयाहूं ॥ यामेरेप्रभावकूं विचारिकरिकै जोतुमारेकूंउचित है सोकरो ॥ इसप्रकार प्रतर्दनराजाकरिकैकह्याहुआदूत देवसभाविषे जाताभया ॥ तहाँ देवराज इंद्रकूंनमस्कार करिकै प्रतर्दनराजाकेसंदेसवाक्यकूं दूत कहताभया ॥ कैसासोइंद्र है सुधर्मानामदेवसभाविषेस्थित है ॥ और सूर्यकी न्यांई जाकातेज है और संपूर्ण देवतावों करिकैपरिवेष्टित है ॥ दूतउवाच ॥ हेभगवन् सर्वलोकोंका औरसंपूर्णलोकपालोंका आपहीं एकस्वामी हो ॥ परंतु एककिंचित्वार्ता हम तुमारेप्रति कथनकरैं हैं भूमिलोकविषे काशीनामा एकमहान् देश है ॥ सो तुमारेस्वर्गतैंभी अत्यंतरमणीक है ॥ काहेतैं देवतावोंकीनदीजोश्रीगंगाजी हैं ॥ सो स्वर्गकी उपेक्षा करिकै श्रीकाशीनामा देशकूं गमन करे है ॥ यातैं यहजान्या जावै है ॥ जो स्वर्गतैंभीकाशीनामादेश रमणीकहै ॥ तहाँ श्रीगंगाजीके तीरविषे श्रीकाशीनाम्नी पुरीविद्यमान है ॥ सोकैसी है काशीपुरी ॥ श्रीमहादेवकेत्रिशूलऊपरिस्थित है ॥ और आपणीशोभाकरिकै स्वर्गकाभी तिरस्कार करणे हारी है ॥ और जिसकाशीविषे मृत्युकूंप्राप्तभये अंडज जरायुज स्वेदज उद्भिज्ज यहचारिप्रकारके जीव महादेवके तारकमंत्र उपदेशतैं आत्मज्ञान द्वारा मोक्षकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ और काशीके मरणेतैं वेदपाठीब्राह्मण जोमोक्षकूं प्राप्तहोवै है ॥ तिसीहीमोक्षकूं कृमिपतंग आदिक्षुद्रजंतु प्राप्तहोवैं हैं ॥ और जोकाशीपुरीविषे भगवान् महादेव विराज मान हैं ॥ कैसे हैं सोभगवान् महादेव ॥ सर्वप्राणीमात्रका आत्मस्वरूप हैं ॥ और संपूर्ण जगत्की उत्पत्ति स्थिति लयकूंकरणे हारे हैं ॥ और भवानीकाजोहृदयरूपकमल है ताके प्रफुल्लितकरणेहारे सूर्य हैं ॥ और कर्पूरकेसमान जिनोंकागौरवर्ण है ॥ और भगवान् महादेवकूं नमस्कार करणेहारे जेसंपूर्णतुमदेवताहो ॥ तिनदेवतावोंनैं अपनेमस्तकविषे स्थितरत्नयुक्त भूषणोंकीकिरणावोंकरिकै जोमहादेवकेचरणकमल प्रकाशमानकरैं हैं ॥ और जोभगवान् महादेवके उपकारकूं मानतेहुए संपूर्णमुनि और चारोवेद वारंवार जोमहादेवका वर्णनकरैं हैं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे लोकविषे महाराजाकूं बंदी

और चारण वर्णनकरैं हैं ॥ यहाँ यहतात्पर्य है ॥ जैसे राजा बंदीचारणोंऊपरि धनकीप्राप्तिरूपउपकार करै है ॥ याकारणतैं बंदी और चारण राजाकावर्णनकरैं हैं ॥ तैसे महादेवभी मुनियोंऊपरि ब्रह्मविद्याकी प्राप्तिरूपउपकार करैं हैं॥याकारणतैं मुनि भगवान् महादेवकावर्णनकरैं हैं और वेदोंऊपरि प्रमाणताकी प्राप्तिरूप उपकारकूं भगवान् महादेव करैं हैं ॥ याकारणतैं वेद ताकावर्णनकरैं हैं ॥ काहेतैं फलवान्अर्थकेबोधनकरिकैहीं वेदोंकूंप्रमाणता शास्त्रविषे कही है ॥ आनात्मवस्तुके ज्ञानतैं सुखकी प्राप्तिरूपफल अथवा दुःखकी निवृत्तिरूपफल प्राप्तहोवै नहीं ॥ यातैं अनात्म वस्तुकेबोधन करिकै वेदोंविषे प्रमाणतासिद्ध होवैनहीं ॥ किंतु ॥ सर्वांतर्यामी महादेवकेज्ञानतैंहीं सुखकी प्राप्ति और दुःखकीनिवृत्तिरूप फलहोवै है ॥ यातैं भगवान्महादेवके बोधनकरिकैहीं प्रमाणताकूं वेद प्राप्तहोवै हैं॥पुनःसोमहादेवकैसे हैं॥जिसकीइच्छामात्रकरिकैब्रह्मातैंआदिलैकैसंपूर्णदेवता याजगत्विषे अनंतवार प्रादुर्भावकूं तथा तिरोभावकूं प्राप्तहोवै हैं ॥ और जोमहादेवकीप्राप्तिकीइच्छाकरिकै हिमाचलकीपुत्रीपार्वतीदेवी उग्रतपकूंकरतीभयी है ॥ सो कैसी पार्वती है ॥ संपूर्णस्त्रियोंविषे प्रधान है॥और पूर्वजन्मविषेभी सतीरूपकरिके भगवान्महादेवकीस्त्री है ॥ और जिसभगवान् महादेवके सेनानी और गणेश दोनों महाबलवान्पुत्र हैं ॥ और जयकरिकैशोभायमान जेप्रमथनामगण हैं ॥ ते जिसमहादेवकेसेनापति हैं और जिसमहादेवकेनामग्रहणतैं यहजीव संसाररूपदुःखकूंनहींप्राप्तहोवै है ॥ और जिसमहादेवकेचरणकमलकेपूजनतैं पुरुषोंकूं मनवाञ्छितफलकीप्राप्ति होवै है ॥ यहवार्ता शिवपुराणविषे व्यासभगवान्नैंभी कही है ॥

॥ श्लोक ॥ महादेव महादेव महादेवेतियोवदेत् ॥ एकेनैवभवेन्मुक्तिर्द्वाभ्यांशंभुऋणीभवेत् ॥ १ ॥ अर्थयह ॥ जोपुरुष श्रद्धाकरिकै महादेव महादेव महादेव याप्रकार तीनवार महादेवकेनामकूंउच्चारण करैं हैं ॥ तिसपुरुषकूं एकनाम करिकैतौ मुक्तिरूप फलकी प्राप्ति महादेव करैं हैं ॥ और दोनोंनामोंकरिकै महादेव भक्तोंकेऋणीहोवैं ॥ काहेतैं मुक्तितैंअधिककोईपदार्थ जगत्विषे है नहीं ॥ जिसकीप्राप्तिकरिकै महादेव ऋण तैंरहितहोवैं ॥ १ ॥ पुनःसोमहादेवकैसे हैं ॥ ब्रह्माडविषेस्थित जेविषयभोग हैं तिनभोगोंकीइच्छातैंरहित हैं ॥ और ब्रह्मविद्याकेसमुद्र हैं ॥ और सर्वदाशुद्ध हैं और चित्तके निरोधकूंकरणे हारेसर्वयोगी जनोंकेगुरु हैं ॥ और जिसभगवान् महादेवतैं संपूर्ण जगत्

॥ २

उत्पन्नहोवै है ॥ और जिस भगवान्महादेवविषे संपूर्णजगत् स्थित है ॥ और जिसमहादेवविषे संपूर्णजगत् लयकूं प्राप्त होवै है ॥ ऐसे भगवान्महादेवकेगुणोंकूं वर्णनकरणेमें कोनप्राणी समर्थ है ॥ किंतु कोईभीसमर्थनहीं ॥ ऐसेभगवान्महादेव जिसकाशीपुरीविषे विद्यमान नहैं ॥ और मुक्तिकेदेणेहारियांजे अयोध्यापुरी १ मथुरापुरी २ मायापुरी ३ काशीपुरी ४ कांचीपुरी ५ अवंतिकापुरी ६ द्वारकापुरी७यहसप्तपुरी यांहै ॥ तिनोंकेमध्यमें श्रीकाशीपुरीकाहींअधिकसौभाग्य संपूर्णजीवोंनैं अनुभवकरीता है ॥ काहेतैं काशीपुरीविषे भोगमोक्षदोनोंकी सुलभता है ॥ और हेदेवतावो तुमारीजोअमरावतीपुरी है ॥ सोभी काशीपुरीकेसमाननहीं ॥ काहेतैं तुमारीपुरीविषेप्राप्तभयेजीवोंकूं भूमिलोकविषेगिडनेका सर्वदाभयरहै है ॥ और नागोंकीजोभोगवतीपुरी है ॥ सोभी श्रीकाशीपुरीके समान नहीं ॥ जभी तुमारी अमरावती पुरी और नागोंकी भोगवतीपुरी काशीपुरीके समान नहींभयी ॥ तभी अन्यपुरियोंकी क्याकथा है ॥ और काशीपुरीकूं श्रीगंगाजी सर्वदासेवनकरैं हैं ॥ और भगवान्महादेव सर्वदा जिसकाशीपुरी विषेरहैं हैं ॥ और सर्वपुरीयोंतैं सौभाग्यकी जाविषे अधिकता है ॥ याकारणतैं याकूं काशीपुरीकहैं हैं ॥ प्रकाशमानकानामकाशी है॥ऐसीकाशीपुरीकाराजा दिवोदासनामा सर्वलोकविषेप्रसिद्ध है ॥ सो कैसा दिवोदास राजा है ॥ संपूर्णशत्रु जिसनैंजीते हैं ॥ और आपणीप्रतिज्ञाकूंसत्यकरणेहाराहै ॥ और क्षत्रियोंकेधर्मविषे जाकीप्रीति है ॥ और हस्ति अश्वरथपदाति यहचारिप्रकारकीसेनाकरिकैयुक्तहै ॥ और आपभी सोदिवोदासराजा अतिबलवान् है ॥ औरयज्ञादिककर्मोंविषेतत्परहै ॥ याकारणतैं तुमदेवतावोंकूंभी प्रसिद्ध है ॥ ऐसादिवोदासराजा श्रीकाशीपुरीविषेस्थित है ॥ और तादिवोदासराजाकापुत्र प्रतर्दननामाराजाभी अतिप्रसिद्धहै ॥ सो कैसाप्रतर्दन राजा है संपूर्णशुभगुणोंकरिकै आपणेपिता तथापितामह आदिकोंकेसमान है ॥ और संपूर्णप्राणीमात्रविषे जाकीकृपादृष्टि है ॥ और याप्रतर्दनराजाके पर्वतकेसमान अनेककोटीहस्ती है ॥ और सूर्यकेअश्वसमान अनंतगुणयुक्त अश्वभी अनंतकोटी हैं ॥ औरपुरारिकेरथसमान महाशब्दकेकरणेहारे रथभी अनेककोटीजिसके हैं ॥ और बलकरिकैआपणेसमान पदातिभी असंख्यात है ॥ और यहप्रतर्दनराजा शस्त्रविद्याविषेभी अतिकुशल है॥और युद्धविषेछलतैंरहित है॥ और यहप्रतर्दन राजा यद्यपि महादेव

केप्रसादतैं संपूर्णअस्त्रोंके प्रयोगरूपसंधानकूं जाणै है ॥ और निर्मोक्षरूपविसर्गकूंजाणैंहैं ॥ और अस्त्रोंकीमर्यादारूपस्थितिकूंजाणै है ॥ और उपसंहाररूपसंहृतिकूंजाणै है ॥ तथापि यहप्रतर्दनराजा किसीऊपरि अस्त्रकूंचलावतानहीं ॥ काहेतैं जोअस्त्रकरिकै पुरुष हननभया ॥ सो मेरे करिकैहननहींभया जैसे कोईअसमर्थपुरुष इयेनयज्ञरूपअभिचारकरिकै शत्रुकानाशकरै है ॥ तिसकेसमाननहीं ॥ अस्त्रकरिकैशत्रुकानाश करणा है ॥ यातैं अभिचारऔरअस्त्रविषे किंचित्मात्रभी विशेषतानहीं ॥ ऐसाविचारकरिकै यहप्रतर्दनराजा अस्त्रोंकरिकैशत्रुकूंनहींहननकरै है ॥ किंतु शत्रुकूं जैसीयुद्धकीइच्छाहोवै है ॥ तैसीहीयुद्धकीप्राप्तिकरै हैं॥ और यहप्रतर्दनराजा शत्रुकरिकैताडनकियाहुआ प्रथम शत्रुकूंनहीं हननकरै है ॥ किंतु शत्रुकरिकैताडनकियाहुआ पश्चात् शत्रुकूंहननकरै है ॥ और शत्रुकरिकैप्रथमताडनकियाहुआभी यहप्रतर्दनराजा पंचा सवर्षतैंऊपरिआयुपूर्वाल्शत्रुकूं नहींहननकरै है ॥ तथा षोडशवर्षतैंन्यूनआयुपूर्वालेशत्रुकूंभी नहींहननकरै है ॥ काहेतैं शूरवीरोंकेव्रतकूं जिस प्रतर्दनराजानैं धारणकऱ्या है॥शूरवीरकेधर्म धनुर्वेदविषेकहे है॥श्लोक॥ मूर्च्छितंनैववि कलं नाशस्त्रंनान्ययोधिनम्॥पलायमानंशरण गतंनैवच हिंसयेत् ॥ २ ॥ अर्थयह ॥ मूर्छाकूंप्राप्तभयेशत्रुकूं तथाव्याकुलकूं तथाशस्त्ररहितकूं तथाअन्यकेसाथियुद्धकरणहारेकूं तथापलायमानकूं तथाशरणागतकूं इतनेपुरुषोंकूं शूरवीर हननहींकरै ॥ २ ॥ और याप्रतर्दनराजाका दूसराक्याव्रत है ॥ ब्राह्मणोंका तथादेवतावोंका और गौवोंका· तथावृषभोंका कदाचित्भी अपमाननहींकरता ॥ और हेदेवराजयाप्रतर्दनराजाका दूसराक्याव्रतहै ॥ अहंकारकरिकैयुक्त और क्षत्रधर्मोंविषेस्थित देवताहोवैं अथवा ब्राह्मणहोवै अथवा आपणापितापितामहहोवैं तिनसंपूर्णोंकूं आपणेबलकरिकै मैंजीतौंगा ॥ याप्रकारकेव्रतकरिकैयुक्त प्रतर्दनराजाकेसमीप एककालविषे नारदादिकमुनि जातेभये ॥ और कदाचित् प्रसंगपाईके प्रतर्दनराजाकेप्रति याप्रकारकेवचनकूंकहतेभये ॥ हेप्रतर्दनराजा ॥ संपूर्णपृथिवीकेराजे तुमनैं जीते हैं ॥ परंतु इंद्रादिकदेवता क्षत्रधर्मकरिकै संपूर्णपृथिवीके राजावोंतैं बलवान् हैं ॥ काहेतैं तिनदेवतावोंकेसाथियुद्धकरणेकूं असुर तथा दानव तथा दैत्य कोईभी समर्थनहीं ॥ जभी असुर दानव दैत्यभी देवतावोंकेसाथि युद्धकरणेकूं समर्थ नहींभये ॥ तभी मनुष्योंकी क्याकथा है ॥ और यालोकविषे एकइंद्रकूंभी जीतणेवि ॥ ३ ॥

पे कोईसमर्थनहीं ॥ तौ संपूर्णसेनाकरिकै तथा लोकपालोंकरिकै युक्त इंद्रकूं कौन जीतणेमैंसमर्थ होवै ॥ किंतु कोईभी इंद्रकेजीतणेमैं समर्थनहीं ॥ इसप्रकार नारदादिकमुनियोंके वचनकूं श्रवणकरिकै और आपणे प्रतिज्ञा रूपव्रतकूं स्मरण करिकै सो प्रतर्दन राजा देवतावोंके साथियुद्ध करणेवासतै उत्साह करिकै अकेलाही स्वर्गकूं जाता भया ॥ हेदेवराज ॥ सोप्रतर्दनराजा यहाँआईकै तुमारीपुरीकेद्वार उपरि समानपृथिवीविषे स्थित है ॥ और सोप्रतर्दनराजा मुझदूतकूं बुलाइकरिकै तुमदेवतावोंकेसमीपभेजताभया है ॥ जोप्रतर्दनराजानैं हमारेकूं संदेसवचनकह्याथा ॥ सोसंपूर्ण हमनैं तुमारेतांई कह्या ॥ आगेंजैसीतुमारीइच्छाहोवै तैसाकरो ॥ इसप्रकार संपूर्णसंदेस वचनकूं देवराजइंद्रकेतांइ दूतकथन करताभया ॥ इसप्रकार दूतकेवचनोंकूंश्रवणकरिकै औरप्रतर्दनराजाकेअभयरूपपुरुषार्थकूंविचारिकरिकै देव राजइंद्रभी अतिविस्मयकूं प्राप्तहोताभया ॥ और आपणे क्षत्रधर्मकूं स्मरणकरिकै क्रोधयुक्त होताभया॥ और संपूर्णदेवतावोंकूंसाथिलैकै शी घ्रही आपणीपुरीतैं बाहरि निकसताभया ॥ और युद्धकरणे वासतै प्राप्तभयेजेसंपूर्णइंद्रादिकदेवता तिनोंकूंदेखिकरिकै सोप्रतर्दन राजाभी तिसस्थानतैंनहीं चलामान होताभया ॥ और सोप्रतर्दनराजा इंद्रकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेदेवराजइंद्र हेसंपूर्णदेवतावो तुम तीक्ष्णबाणोंकरिकै प्रथम हमारा हननकरो ॥ पश्चात् हमतीक्ष्णबाणोंकरिकै तुमाराहननकरैंगे ऐसीहमारीप्रतिज्ञा है ॥ इसप्रकार प्रतर्द नराजाकावचन श्रवण करिकै इंद्रसहितसंपूर्णदेवता क्रोधकरिकैमूर्छितहोतेभये ॥ और कुंडलाकारसेनाकीरचनाकरिकै प्रतर्दन राजाकूं चारोंओरतैंवेष्टनकरतेभये ॥ और याप्रतर्दनराजाकूं हननकरो और बांधो याप्रकारके वचनकूं परस्पर देवता उच्चारणकरतेभये ॥ और तहाँ युद्धविषे नानाप्रकारकेवादित्रोंकेशब्द प्रकटहोते भये ॥ और संपूर्णइंद्रादिकदेवता ॥ क्रोधयुक्तहुए प्रतर्दनराजा ऊपरि बाणोंकी वर्षाकरतेभये जैसे बादल पर्वऊपरि जलकी वर्षाकरैं हैं ॥ तादेवतावोंकेबाणोंकरिकै प्रतर्दनराजाकाशरीर भेदनहोताभया ॥ पश्चात् सोप्रतर्दनराजाभी शीघ्रही तीक्ष्णबाणों करिकै संपूर्णदेवतावोंकूं हनन करता भया ॥ ताप्रतर्दनराजाकेबाणोंकरिकै कितनेदेवतावोंकीभुज। भेदनहोतियांभैया ॥ और कितनेदेवतावोंकेस्तन भेदनहोतेभये ॥ और कितने देवतावोंके मस्तक भेदनहोतेभये ॥ इसप्रकार देवतावों

कीसेनाविषे कोईभीदेवता प्रतर्दनराजाकेबाणकरिकैअविद्धनहीं रह्या ॥ किंतु संपूर्ण देवता बाणोंकरिकेविद्धहोतेभये ॥ और भुजाविषेबाणोंकेप्रहारतैंउत्पन्नभईजोपीडा ॥ तापीडाकरिकैदुःखीहुएसंपूर्णदेवताओंकेभुजातैं नानाप्रकारके आयुध भूमिविषे गिडतेभये ॥ और युद्धविषे प्रतर्दनराजा किसीदेवताकूं शतबाणोंकरिकै वेधनकरताभया ॥ और किसीदेवताकूं पंचासबाणोंकरिकै वेधन करता भया ॥ और देवराजइंद्रकूंतौ सहस्रबाणोंकरिकै वेधन करता भया ॥ और भूमिविषेगिडिपडे हैं आयुधजिनोंके ऐसे देवतावोंकूंदेखिकरिकै सो प्रतर्दन राजा आपणे धनुषकेरज्जुकूं उतारताभया ॥ और देवराजइंद्र या प्रकारके महान् आयुधकूं देखिकरिकै और प्रतर्दनराजाकेपुरुषार्थकूंदेखिकरिकै विस्मयकूंप्राप्तहोताभया ॥ और प्रतर्दनराजाकेप्रति इंद्र कहताभया ॥ हे पृथिवीकेपति प्रतर्दनराजा ॥ तुमारे युद्ध और पुरुषार्थकरिकै मैं बहुतसंतुष्टभयाहूं ॥ यातैं जिस वरकीतुमारेकूंइच्छाहोव ॥ सोवर तूं हमारेतैंमाँग ॥ इसी कालविषे सोवरमैं तुमारेताईं देवोंगा ॥ हेप्रतर्दन तुमारेयुद्ध और पुरुषार्थके समान किसीका युद्ध और पुरुषार्थ हमनैं नहीं देख्या ॥ तेरेतैं विना ऐसाकौनसमर्थ है ॥ जो देवतावों सहितहमारेकूं स्वर्गविषेआइके पराजय करै ॥ और संपूर्णदेवतावोंकूं एकक्षणविषे तीक्ष्णबाणोंकरिकै भेदनकरै ॥ किंतु तूंहीं ऐसासमर्थ है ॥ इसप्रकार जभी देवराजइंद्रनैंकह्या ॥ तभी सोप्रतर्दनराजा इंद्रकेताईं दंडवत्प्रणामकरताभया ॥ और या प्रकारवचन कहता भया ॥ हे देवराज तुमनैं जो यह वचनकह्या ॥ जो देवतावोंकेसहितमुझइंद्रकूं तुमनैं जयकरा यावचनकरिकै तुमनैं हमारेप्रतिज्ञारूपवचनकूंपूर्णकऱ्या॥ और हे देवराज मुझ दुर्बुद्धिबालकके अपराधकूं तुमक्षमा करो ॥ काहेतैं जे तुमदेवता पुष्पोंकरिकैभीताडनकरणेयोग्यनहीं हो ॥ तिनदेवतावोंकूं तीक्ष्णबाणोंकरिकै हमनैं ताडनकऱ्या है ॥ यातैं यह हमारा महान् अपराध है ॥ और हे देवराज हमारेकरिकैपूजणेयोग्य जेहमारे पितापितामहआदिकहैं ॥ तिनोंकरिकैभी तुम देवता पूजणेयोग्यहो ॥ यातैं हमारेकरिकै तौ अत्यंतपूजणेयोग्यहो ॥ और हे देवराज तुम देवता सत्यगुणकरिकैयुक्तहो ॥ याकारणतैंही हमारे अपराधकूंनविचारकरिकै आपनैं हमारेताईं वरदेणेकाउद्यमकऱ्या है ॥ और हमम नुष्य रजोगुणकरिकैयुक्तहैं ॥ या कारणतैं देवतावोंकेहननरूपपापविषे हम प्रवृत्तभये हैं ॥ और हे देवराज सर्वविषेआत्मदर्शी जेसाधुजनहैं ॥

तिनोंकूं यहवस्तु हमाराहै और यहवस्तुपरकाहै याप्रकारकीविषमबुद्धि कभीनहीं होती याकारणतैंहीं हमअपराधीविषे तुम वरकूं देतेहो ॥ और हे देवराज यालोकविषे आपसरीखेमहात्माहीं पुरुषोंविषे उत्तमपुरुषहैं ॥ काहेतैं जो हमसरीखे अपकारीपुरुषों विषेभी तुमदेवता उपकारकरोहो ॥ अपकारीविषे उपकारकरणा यहही उत्तम पुरुषोंका लक्षण है ॥ और हे देवराज जैसे स्तंभोंनैं गृहकूं धारण करता है ॥ तैसे अपकारी पुरुषोंविषे जे उपकारी पुरुष हैं ॥ तिनोंनैं स्तंभकी न्यांई तीनलोकोंकूं धारण करीता है ॥ और हे देवराज उपकारीपुरुषों विषे संपूर्ण पुरुष उपकारकूं करैं हैं ॥ यह लौकिक पुरुषों विषे प्रसिद्ध है ॥ परंतु हमसरीखे अपकारी पुरुषोंविषे आपसरीखेकोईमहात्माही उपकारकूं करैं हैं ॥ और हे देवराज हम मनुष्य रजोगुणकरिकैयुक्त हैं ॥ या कारणतैं लोकविषे आपणे हितकूं तथा आपणे अहितकूं हम नहीं जाणते ॥ काहेतैं जो हमारेकूं आपणे हितका तथा अहितका ज्ञान होता तौ तुमदेवतावोंके साथि युद्ध करणे वासतै हम नहीं आवते ॥ यातैं युद्धकरणे वासतैं जो हमारायहाँ आगमनहै ॥ सोआगमनहीं हमारेहित और अहितके अज्ञानकूं बोधनकरैं है॥और हे देवराज जैसे कोईक्षुद्रजंतु मशकादिक अज्ञानकरिकै महान्हस्तियोंकेसाथि युद्धकरणेवासतैआवै ॥ तैसे आपणेहित और अहितकेज्ञानतैं रहितमैंभी तुमदेवतावोंकेसाथि युद्धकरणेवासतैआयाहूं ॥ और हे देवराज हममनुष्य आपणेहित अहितकेज्ञानतैंरहित हैं ॥ याकारणतैं आपणेहितकाप्रार्थना हम नहींकरिसकते॥ यातैं हे त्रिलोकीनाथ संपूर्ण दुःखोंकानाशकरणेहारा जोहिततमवस्तुहै॥ सोआपहीविचारिकरिकै हमारे ताईं देवो ॥ इसप्रकार प्रतर्दनराजाकेवचनकूंश्रवणकरिकै देवराजइंद्र प्रतर्दनराजाकेप्रतिकहताभया ॥ हे प्रतर्दनराजा याचनातैंविना आपणी बुद्धिकरिकै कोईभीपुरुष किसीकेताईं वरकूं नहींदेता॥ किंतु याचनातैंअनंतरही संपूर्णपुरुष वरकूंदेते हैं ॥ यातैं हे प्रतर्दनराजा तुमभी प्रथम हमारेसैंवरमांगो ॥ इसप्रकार इंद्रकेवचनकूं श्रवणकरिकै सोबुद्धिमान्प्रतर्दनराजा सत्यवादी इंद्रकेप्रति युक्तिसहितवचनकूंकहताभया ॥ हे देवराज यहजोतुमनैंवचनकह्या ॥ जो प्रार्थनातैंविना कोईपुरुष किसीकूंवरनहीं देता ॥ यहआपकावचनसत्य है ॥ परंतु यह आपकावचन भेददर्शीविषमपुरुषोंविषेघटै है ॥ आपसरीखेसमदृष्टिपुरुषोंविषे यहवचनघटतानहीं ॥ और हे देवराज तुमारेतैंविना ऐसाको

नपुरुषहै ॥ जो अपकारीशत्रुकेताईं वरकूंदेवै ॥ किंतु तुमहींऐसेहो ॥ यातैं यह निश्चयहोवै है ॥ तुमदेवता किसी विषमदृष्टिवाले नहीं किंतु सर्वविषेसमदृष्टिवालेहो ॥ यातैं हे देवराज जो आपनें हमारेदेणेवासतै वरकीप्रतिज्ञाकरी है ॥ तभी आपणी बुद्धितैंहिततमवरकूंविचारि करिकै हमारेताईं देवो ॥ और हे देवराज जो हम आपणी इच्छातैंवरकूंमागेंगे ॥ तौ आपकीवरदेणेकी जोप्रतिज्ञाहै ॥ सोप्रतिज्ञा हानिहोवैगी ॥ काहेतैं वरनाम श्रेष्टकाहै ॥ और श्रेष्ठनाम हिततमकाहै ॥ सो हिततम हम जाणनेनहीं ॥ यातैं अज्ञानकरिकै जोजोवर हममागेंगे सो अश्रेष्टहीहोवैगा ॥ अश्रेष्टका नामवर है नहीं ॥ और आपनें तौ वरदेणेकी प्रतिज्ञा करी है ॥ यातैं आपणी प्रतिज्ञाकी रक्षा वासतै आप हीविचारकरिकै हमारेताईं वरकूं देवो ॥ इसप्रकार प्रतर्दनराजाकावचन श्रवणकरिकै तथा प्रतर्दनराजाकेबुद्धिकीचातुर्यतादेखिकरिकै देवराजइंद्र पुनःसंतोषकूं प्राप्तहोताभया ॥ शंका ॥ हे भगवन् जो देवराज अत्यंतसंतुष्टभया॥ तौ इंद्रकीप्रसन्नताही विद्याकीप्राप्तिविषेकारणहै॥ काहेतैं गुरुकीप्रसन्नतातैंविनाविद्याकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ और श्रुतिविषे याप्रकारकह्याहै ॥ इंद्र आपणेसत्यप्रतिज्ञातैं चलायमानहोताभया याकहणेतैं ऐसातात्पर्यजान्याजावै है ॥ प्रतर्दनराजाकेताईं विद्यादेणेविषे देवराजइंद्रकूं कोईप्रतिबंधकरणेहारा प्राप्तभयाभी ॥ तौभी देवराज इंद्र आपणेप्रतिज्ञाकूंसत्यकरणेवासतैं प्रतर्दनराजाकेतांईं ब्रह्मविद्याकूंदेताभया ॥ सो प्रतिबंधकरणेहाराकौनहै ॥ समाधान ॥ हे शिष्य ब्रह्मवेत्ताब्राह्मणकेंप्रति जोब्रह्मविद्याकावचन है ॥ तावचनकीस्मृतिही प्रतिबंधकरणेहारी है ॥ अब तात्रब्रह्मविद्याकेवचनकूंकहैं हैं ॥ एककालमैं अनधिकारीपुरुषोंविषेप्राप्तहुईब्रह्मविद्या अत्यंतखेदकूं प्राप्तहोतीभयी ॥ और ब्रह्मवेत्ताब्राह्मणोंकेसमीपजाइकै ब्रह्मविद्या कहती भई ॥ हे ब्राह्मण जैसे वेश्या सर्वपुरुषोंकरिकै सेवितहोवै है ॥ तैसे धनकेलोभारिकै मुझब्रह्मविद्याकूं वेश्याकेसमान तुम मतकरो ॥ किंतु ॥ कुलीन स्त्रीकीन्यांईं हमारेकूं तुम गुह्यराखो ॥ और श्रद्धातैंहमारासेवनकरो ॥ जाकारणतैं मैंब्रह्मविद्या तुमारेकूं इस लोकविषे तथापरलोकविषे अक्षयनिधिकेसमानहूं॥ और हे ब्राह्मण जो तुम ऐसा कहो ॥ संपूर्णजनोंकेउपकारविषे हमारीप्रीति है ॥ और उदारताकरिकैहमयुक्त हैं ॥ और दीनजनोंऊपरि हमारीअत्यंतकृपा है ॥ यातैं ब्रह्मविद्याकूं हम गुह्यराखिसकतेनहीं ॥ तथापि हे ब्राह्मण गुणहीनपुरुषोंकेताईं

॥ ५

हमारेकूं कदाचित् तुमनैं नहींदेणा ॥ दृष्टांत ॥ जैसे अत्यंतरूपवान्आपणीपुत्री नपुंसककूं कोईदेतानहीं ॥ और हेब्राह्मण इतनेदोष सर्वदाहमारेकूंदुःखकेदेणेहारे हैं ॥ गुणवान्पुरुषोंविषे दोषोंका आरोपणरूपनिंदा ॥ और कुटिलता ॥ और इंद्रियोंकीअधीनता ॥ और नित्यहीस्त्रियोंकासंग ॥ और अनम्रता ॥ और शरीरकरिकैमनकरिकै वचनकरिकै गुरुकीभक्तितैंरहितहोणा इसतैंआदिलेकैदोष जिसपुरुषविषे होवैं ॥ तिसपुरुषकेतांईं मुझब्रह्मविद्याकूं कदाचित् तुमनैं नहीं देणा॥ किंतु इतनेदोषोंतैंजोपुरुषरहितहोवै ॥ और शमदमादिकगुणोंकरिकैयुक्त होवै ॥ तिसकेतांईं हमारेकूंदेणा ॥ अथवा हमारेकूंगुह्यराखणा ॥ इनदोनोंपक्षोंविषे किसी भीपक्षकूं जोतुम अंगीकारकरोगे ॥ तौ तुमारेकूं कामधेनुकीन्यांईं मनवांछितपदार्थोंकी मैं प्राप्तिकरौंगी ॥ और जोतुम धनकेलोभकरिकै गुणहीन पुरुषोंकेतांईं मुझब्रह्मविद्याकूंदेवोगे ॥ तौ फलतैंरहितलताकीन्यांईं मैंबंध्याहोवौंगी ॥ और हेब्राह्मण पूर्वउक्तदोषवान्पुरुषकूंविद्यानहींदेणी ॥ याअर्थविषे सर्वजनोंकेउपकारवासतै युक्तिसहितवचनकूं हम कथनकरैं हैं तुमश्रवणकरो ॥ शिष्यकेहृदयविषेस्थितजोअज्ञानरूपअंधकारहै ॥ ताकूं सूर्यादिकदेवताभी नाशकरिसकैंनहीं ॥ ऐसेशिष्यकेअज्ञानरूपअंधकारकूं जोगुरु आत्मसाक्षात्कारकरिकैनाशकरै है ॥ और तूंब्रह्मस्वरूप है यामहावाक्यरूपअमृतकूं जोगुरु पानकरावै है ॥ तामहावाक्यरूपअमृतकरिकै शिष्यकेकर्णोंकूं दुःखतैंरहितकरै है ॥ और जोगुरु अनंतयुक्तियोंकरिकै शिष्यकूं सर्वदाआत्माकाबोधनकरै है ॥ यातैं सोगुरुहीं मुमुक्षुपुरुषोंका पिताऔरमाता है ॥ गुरुतैंभिन्नदूसराकोईपितामाता है नहीं ॥ काहेतैं गुरुकेब्रह्मविद्यारूपसंप्रदायविषेप्रवेशतैंहीं संपूर्णजन्ममरणादिकदुःखोंकानाशहोवै है ॥ और लौकिकपितामाताकेसंततिविषेप्रवेशतैं पुत्रकूं जन्ममरणादिकदुःखकीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ उलटा जन्ममरणादिकोंकीप्राप्तिहोवै है ॥ यातैं जन्ममरणरूपदुःखकोनिवृत्तिकाउपाय ब्रह्मविद्यारूपगुरुसंप्रदायतैं विना दूसराकोईहैनहीं ॥ किंतु ब्रह्मविद्यारूपगुरुसंप्रदायहीं जन्ममरणरूपदुःखकेनिवृत्तिकाउपाय है ॥ यातैं गुरुहीं मुमुक्षुजनोंका पितामाता है ॥ किंवा ॥ पितामाताशब्दका अर्थभी गुरु विषेहीघटै है ॥ लौकिकपितामाताविषे घटतानहीं ॥ काहेतैं रक्षाकरणेहारेकानामपिता है ॥ और पूजाकरणेहारेकानाममाता है ॥ तहाँ आत्मशाक्षात्कारकीप्रा

तिकरिकै जन्ममरणरूपसंसारकेभयतैं मुमुक्षुजनकीगुरुरक्षाकरै है ॥ यातैं गुरुहीपिता है ॥ और आनंदस्वरूपआत्माकीप्राप्तिरूपस्वाराज्यविषे शिष्यकूं गुरुही स्थापनकरै है ॥ यातैं गुरुहीमाता है ॥ ऐसे गुरुकेसाथिशरीरकरिकै तथावाणीकरिकै तथामनकरिकै कदाचित् भी मुमुक्षुजन द्रोहनहीकरै ॥ तहाँ ताडनादिक शरीरकृतद्रोह है ॥ और अनुचितवचनकाउच्चारण वाणीकृतद्रोह है ॥ और अनिष्टकार्चितन मनकृतद्रोह है ॥ वाणीकृतद्रोहकाफल यहशास्त्रविषेकह्या है ॥ श्लोक ॥ गुरुद्रुंकृत्यतुकृत्य विप्राग्निर्जित्यवादतः ॥इमाशानेजायतेवृक्षःकंकगृध्रोपसेवितः ॥ २ ॥ अर्थयह ॥ जोपुरुष अपणेगुरुकूं हूंकरिकैबोलता है ॥ अथवा तूंकरिकैबोलताहै॥और जोपुरुष ब्राह्मणोंकूं वाद करिकैजीततताहै ॥ सोपुरुष इमशानभूमिविषे वृक्षशरीरकूं प्राप्तहोवै है॥और मांसकेभक्षणकरणेहारे जेकंकगृध्रआदिकपक्षी हैं ॥ तिनोंकरिकै सोवृक्षसेवितहोवै है ॥ तात्पर्ययह ॥ यद्यपि संपूर्णवृक्षशरीर पापकाफल हैं ॥ तथापि इमशानभूमिविषेवृक्षशरीरकीप्राप्ति अत्यंतउग्रपापकाफलहै ॥ काहेतैं इमशानभूमिकावृक्ष सर्वदाइमशानकेअग्निकरिकै दाहकूंप्राप्तहोवै है॥ यातैंकिसीप्रकारकरिकैभीपुरुषनैं गुरुकाद्रोहनहींकरणा ॥ २ ॥ और हेब्राह्मण गुरुकेसाथिद्रोहनहींकरणा किंतुगुरुकी सेवाकरणा यहजोवचन हमनैंकह्या॥ सोब्रह्मविद्यादेणेहारेगुरुविषेकह्या॥औरवेदकातौयह तात्पर्यहै॥लौकिकविद्याकेउपदेशकरणेहारेजेगुरु हैं ॥ तिनोंकेसाथिभी पुरुषनैं कदाचित्द्रोहनहींकरणा ॥ याकारणतैंहीं लोकविषे जिसअध्यापकपुरुषनैं जिनोंशिष्योंकूं लौकिकविद्या अध्ययनकराई है ॥ तिसअध्यापककूं तेशिष्य गुरुकरिकैमानैं हैं ॥ तात्पर्ययह ॥ ब्रह्मविद्याकेदेणेहारेजेगुरु हैं ॥ तथालौकिकविद्याकेदेणेहारेजेगुरु हैं ॥ तिनोंविषे जोजोशिष्य श्रद्धाभक्तिकूंकरै है ॥ तिसकीविद्या सफलहोवै है ॥ और जोजोशिष्य श्रद्धाभक्तितैंरहितहोवै है ॥तिसकीविद्या निष्फलहोवै है ॥ यातैं हेब्राह्मण जोतेरेकूं मैब्रह्मविद्याकेकहणेकीइच्छाहोवै॥ और मेरेरक्षाकरणेविषे तेराअभिप्रायहोवै ॥ तौ ऐसेगुणवान्शिष्यकेतांई तुमनैं ब्रह्मविद्याकथनकरणी॥ जोशिष्य गुरुकाभक्तहोवै ॥ और ब्रह्मविद्याकेश्रवणविषे जाकीश्रद्धाहोवै॥ और प्रमादतैंरहितहोवै॥और अर्थकेधारणेविषे जाकीबुद्धिकुशलहोवै॥और ब्रह्मचर्यकरिकैयुक्तहोवै ॥ ऐसेअधिकारीशिष्यतैंविना किसीकेतांई तुमनैं ब्रह्मविद्यानहींकहणी ॥ याप्रकारकाब्रह्मवेत्ताकेप्रति जोब्रह्मविद्याकावचनहै ॥ तावचनकूंस्मरणकरिकै ॥ ६

सत्यपाशकरिकैबंध्याहुआइंद्रपरमसंशयकूंप्राप्तहोताभया॥तात्पर्ययह॥प्रतर्दनराजाकेतांईब्रह्मविद्यादेणेयोग्यहै॥अथवानहींदेणेयोग्यहै॥याप्रकारकेसंशयकूंप्राप्तहुआइंद्रपुनः ऐसाविचारकरताभया॥ब्रह्मविद्यानैंजोअधिकारी शिष्यकेगुणकहैहैं॥ तिनसर्वगुणोंकरिकैयुक्तयहप्रतर्दनराजा है नहीं यद्यपि यत्किंचित्गुण प्रतर्दनराजाविषैहैं ॥तथापि यह हमाराशत्रु है॥ यातैं इसकेतांई ब्रह्मविद्यादेणेयोग्यनहीं अथवा याप्रतर्दनराजानैं मेरेवरकूं देखिकरिकै शत्रुताकापरित्यागकऱ्याहै॥यातैं अधिकारीशिष्यकेगुणोंकरिकै यहप्रतर्दनराजा संपन्नहै ॥ याकारणतैंइसकेतांई विद्यादेणेयोग्यहै ॥ यहाँबहुतविचारकरणेकाकछुप्रयोजननहीं ॥ यहप्रतर्दनराजा अधिकारीशिष्यकेगुणोंकरिकैयुक्तहै अथवानहीं है॥सर्वथा प्रतर्दनराजाकेतांई हिततमविद्याका हम कथनकरैंगे॥काहेतैं हमनैं पूर्वऐसीप्रतिज्ञाकरी है॥जो तुमारेतांई मैंवरकूं देताहुं ॥ याप्रतिज्ञाकूं ब्रह्मविद्याकेदाननैं हम सत्यकरैंगे ॥ तात्पर्ययह ॥ जहाँदोनोंवाक्योंका परस्परविरोधहोवै है ॥ तहाँ एकवाक्य प्रबलहोवै है ॥ और एकवाक्यदुर्बलहोवै है ॥ जिसवाक्यकीकिसीप्रकारगतिनहींहोइसके सोवाक्य प्रबलहोवै है और जिसवाक्यकीकिसीप्रकारगतिहोइसके सोवाक्य दुर्बलहोवै है यहाँ प्रसंगविषे ब्रह्मविद्याकाजोवचन हैं ताकीगतिहोइसकै है यातैंदुर्बल है ॥ काहेतैं ब्रह्मविद्याकेअधिकारी दोप्रकारकेहोवैहैं॥ एकतौ उत्तम अधिकरीहोवै हैं ॥ और दूसरे मध्यमअधिकारीहोवैं हैं ॥ तहाँ स्त्रीसंगतैंरहितजेविरक्तसंन्यासी हैं ॥ ते उत्तमअधिकारी हैं ॥ और ग्रहस्थ मध्यमअधिकारी हैं ॥ यहप्रतर्दनराजाभी गृहस्थ है ॥ यातैंविद्याकामध्यमअधिकारी ह ॥याप्रकार ब्रह्मविद्याकेवचनकीगति होइसकती है॥ और "नानृतंवदेत्" अर्थयह मिथ्यावचनकूं पुरुष नहींकहै ॥ यावचनकी विद्यादेणैंविना अन्यकोईगतिहैनहीं ॥ यातैं यहवचन विद्यावाक्यतैंप्रबल है इसप्रकार विचारकरिकैदेवराजइंद्र प्रतर्दनराजाकूं कहताभया ॥ हे प्रतर्दनराजा मुझ इंद्रकूं तूंजाण ॥ कैसामैंहूं संपूर्णजगत्का आत्माहूं ॥ और बुद्धिआदिकोंकासाक्षीहूं ॥ और जैसे आकाश सर्वकूंव्याप्यरह्या है ॥ तैसे सर्वजगत्कूं बाहरिअंतरव्याप्यकरिकै मैंस्थितहूं ॥ और स्वप्नकेतुल्य जो संपूर्णस्थूलसूक्ष्मजगत् है तिसतैं मैं रहितहूं ॥ याकारणतैं मैं तुरीयशिवरूपहूं ॥ और देशकालवस्तुपरिच्छेदतैं मैंरहितहूं ॥ और सजातीयभेद विजातीयभेद स्वगतभेद ॥ यातीनभेदरूपबीजकेदाहकरणेहारा मैंअग्निस्वरूपहूं ॥ और

जैसे कल्पितसर्पदंडादिकोंकाअधिष्ठान रज्जु है ॥ तैसे स्थूलसूक्ष्मसर्वप्रपंचका मैंहींअधिष्ठानहूं ॥ याकारणतैं एकहूं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे रज्जुरूपअधिष्ठान स्वविषयकज्ञानद्वारा कल्पितसर्पदंडादिकोंकानाशकरै है ॥ तैसे मैंअधिष्ठानआत्माभी स्वविषयकज्ञानद्वारा सर्व कल्पितप्रपंचकानाशकरणे हाराहूं ॥ और मायाविशिष्टहुआ मैंहींईश्वरहूं॥ हेप्रतर्दन ऐसाजोमेरास्वरूप है ॥ ताकूंविशेषकरिकैतूजाण ॥ मेरे स्वरूपकाज्ञानही तुममनुष्योंकेवासतै हिततम है ॥ यज्ञादिकर्मोंकाफल जोस्वर्गकासुख है ॥ और ताके साधन जेअप्सरादिक हैं ॥ तेसंपूर्ण बंधनकेकारण हैं ॥ यातैं मनुष्योंकेवासतै हितनहीं ॥ और ॥ उपासनाकाफलजोब्रह्मलोककासुख है ॥ और तासुखकेजेसाधन हैं ॥ तेसंपूर्ण बंधनके हेतु हैं ॥ यातैं मनुष्यतांई हितनहीं ॥ जभी स्वर्ग लोकका सुख तथा ब्रह्म लोककासुखभी मनुष्योंकेवासते हितनहीं भया ॥ तभी मनुष्य लोकविषेस्थित जोवनितादिकविषयजन्यसुख हैं ॥ सोअत्यंतअल्प हैं ॥ और शीघ्रनाशवान् है ॥ ऐसामनुष्यलोक कासुख मनुष्योंके वासतै किसप्रकारहित होवै किंतुहितनहीं ॥ और हेप्रतर्दन जैसे कदलीकास्तंभ सारतैंरहितहोवै है ॥ तैसे संपूर्ण शरीर सारतैंरहित हैं ॥ और जैसे जलविषे उत्पन्नहुवेबुदबुद क्षणविषेनाशहोवै हैं ॥ तैसे यहसंपूर्णशरीर नाशवान् हैं ॥ ऐसे अनित्यशरीरविषे वनितादिकसाधनोंकरिकैउत्पन्नभयाजोसुख सोकेवलदुःखरूपही है आत्मारूपमैं इंद्रिहीएकसुखरूपहूं॥ मेरेतैं भिन्नसर्वअनात्मवस्तुदुःखरूप हैं ॥ यातैं हेप्रतर्दन याप्रपंचविषे किसीकालमैं कोईभीवस्तु हितनहीं॥जभी प्रपंचविषे कोईवस्तु हितभीनहींभया॥तभी हिततर और हिततमकी कैसे आशाहोवै ॥ तात्पर्ययह हितनैंजोअधिकहोवै ताकानाम हिततर है और हिततरतैंजोअधिकहोवै ताकानामहिततम है ॥ आनंदस्वरूपमुझइंद्रतैंभिन्न कोईभीअनात्मपदार्थ हित हिततम नहीं है ॥ शंका ॥ हेदेवराजइंद्र लोकविषे जोकोई पदार्थ हित हिततर नहींहोवै ॥ तौ पूर्वआपनैं आत्मज्ञानकूं हिततमनकह्या सो कैसेबनैगा ॥ काहेतैं हित और हिततरकीअपेक्षाकरिकै हिततम कह्याजावै है ॥समाधान॥ हेप्रतर्दन जैसे कल्पिततीनशरीरोंकी अपेक्षाकरिकै शुद्धआत्माकूं तुरीयक हैं हैं ॥ तैसे भ्रांतिज्ञानकरिकै सिद्ध जोहित और हिततर है तिनकी अपेक्षाकरिकै आत्म ज्ञानकूं हिततम कह्या है ॥ तहाँ मनुष्योंका तथा देवतावोंका जोविषय जन्य सुख है ॥ सोपुरुषोंका हित है ॥ ७

और तिसविषयजन्यसुखतैं वैराग्यहिततरहै ॥ और तिसवैराग्यतैं आत्मज्ञान हिततम है ॥ शंका ॥ हे भगवन् मनुष्यलोकके विषयजन्य सुख तथास्वर्गादिकलोकोंकेविषयजन्यसुख हितहैं ॥ और वैराग्य हिततरहै॥यह पूर्वआपनेकह्यासोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं मनुष्यलोककेसुख तैंस्वर्गादिकलोकोंकेसुख उत्कृष्ट हैं॥यातैं मनुष्यलोककेसुखतौ हितहैं॥और स्वर्गादिकलोकोंकेसुख हिततरहैं ॥ वैराग्यकूं हिततरताबनैनहीं समाधान॥मनुष्यलोककेसुखतैं स्वर्गादिकलोकोंकेसुखविषे जोविशेषतातुमनैंकही॥सोविशेषता स्वरूपतैं है॥ अथवा साधनोंतैंविशेषता है॥ तहाँ स्वरूपतैंविशेषताहै यहप्रथमपक्ष संभवैनहीं॥काहेतैं मनुष्यलोककेजेविषयजन्यसुखहैं॥तथा स्वर्गलोककेजेविषयजन्यसुखहैं ॥ तथा ब्रह्मलोककेजेविषयजन्यसुखहैं॥तिनसंपूर्णसुखोंविषे अनुकूलताधर्मसमानहै॥यातैं स्वरूपतैं स्वर्गादिकसुखविषे विशेषतासंभवैनहीं ॥ और साधनोंकीविशेषतातैं स्वर्गादिकसुखकीविशेषताहै यहदूसरापक्षभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं जैसे स्वर्गादिकलोकोंविषेस्थितदेहधारीजीवोंकूं नानाप्रकारकेआहारहैं॥और चक्षुआदिकइंद्रियोंकरिकैयुक्तशरीरहैं॥और मनोरमस्त्रियां हैं ॥तैसेमनुष्यलोकविषेस्थितदेहधारीजीवोंकूंभीनानाप्रकारके आहारहैं॥औरनेत्रादिइंद्रियोंकरिकैयुक्तशरीरहैं ॥ और मनोरमस्त्रियां हैं॥तात्पर्ययह ॥ जैसे अमृतकेपानतैं॥देवतावोंकीतृप्तिहोवै है॥तैसे व्रीहियवादिकअन्नकेभक्षणतैं मनुष्योंकीतृप्तिहोवै है॥तैसेही तृणादिकोंके भक्षणतैं पशुआदिकोंकीतृप्तिहोवै है॥और जैसे स्वर्गादिकलोंकोंविषे स्थितअप्सरा देवतावोंकेसुखकासाधन हैं॥तैसे मनुष्यलोकविषेस्थितस्त्रियांभी पुरुषोंकेसुखकासाधनहैं ॥इसतैं आदिलैकै सर्वसाधनोंकीसमानता है ॥ शंका ॥ हे भगवन् मनुष्यलोककासुख पराधीन है॥यातैं निकृष्ट है॥और स्वर्गादिकलोकोंकासुख पराधीननहीं यातैं उत्कृष्टहै ॥ समाधान ॥ हेप्रतर्दन॥जैसे राजाकीसेवातैंप्राप्तभया जोलौकिकसुखहै ॥ सो पराधीनहोवै है॥ तैसे देवतावोंकेआराधनतैं प्राप्तभयाजो ब्रह्मलोककासुख तथा स्वर्ग लोकका सुख सोभी पराधीननहींहोवै है॥यातैं संपूर्णलोकोंविषे जीवोंकूं पराधीनतासमानहै ॥स्वतंत्रता किसीभीलोकविषेनहीं ॥ काहेतैं अस्मदादिकसंपूर्णतैंअधिकजोहिरण्यगर्भ है॥सोभी अंतर्यामीईश्वरकेअधीनहै ॥ और मैंइंद्र हिरण्यगर्भकेअधीनहूं॥ जभी हिरण्यगर्भ और मैंइंद्रभी पराधीनहुआ ॥ तभी अन्यलोकोंकेस्वतंत्रताकीक्याकथा है ॥ किंवा ॥ मनुष्यलोकतैंआदिलैके हिरण्यगर्भकेलों

कपर्यंत जितनेकविषयजन्यसुख हैं ॥ तेसंपूर्णसुख सातिशयदोषकारकयुक्त हैं यातैंभीसमान हैं ॥ काहेतैं अंतर्यामीईश्वरकेआनंदतैं शतभागन्यून हिरण्यगर्भकाआनंद है ॥ और हिरण्यगर्भकेआनंदतैं शतभागन्यून प्रजापतिकाआनंद है ॥ और प्रजापतिकेआनंदतैं शतभागन्यून मुझइंद्रकाआनंद है ॥ जभी हिरण्यगर्भकाविषयजन्यआनंद तथामुझइंद्रकाआनंदभी सातिशयदोषकरिकैंयुक्तहुआ ॥ तभी दूसरे आनंदकीक्याकथा है ॥ और हेप्रतर्दन जैसे तुममनुष्योंकूं मनुष्यलोककीस्त्रीकेआलिंगनतैं सुखउत्पन्नहोवै है ॥ तैसे मुझइंद्रकूं स्वर्गलोककीस्त्रीकेआलिंगनतैं सुखउत्पन्नहोवै है ॥ तैसाही हिरण्यगर्भकूं स्त्रीकेआलिंगनतैंसुखहोवै है ॥ और तैसाही ईश्वरकूं स्त्रीकेआलिंगनतैंसुखहोवै है ॥ विषयजन्यसुखविषे किंचित्मात्रभी विशेषतानहीं॥यात स्वर्गादिकसुखकूं हिततरतासंभवैनहीं ॥ किंतु विषयजन्यसुख मेरेकूं मतहोवे ऐसा जोवैराग्य है सोईही हिततर है॥ काहेतैं विषयजन्यजितनेसुख हैं ॥ तेसंपूर्ण घटादिकोंकीनाईं नाशकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ और यहवैराग्यरूप सुख उत्तमपुरुषोंकूं एकबारउत्पन्नहुआ नाशकूंनहींप्राप्तहोता ॥ किंतु दिनदिनविषे वर्द्धता जावै है ॥ यातैं विषयजन्यसुखतैं वैराग्य हिततर है ॥ किंवा ॥ जैसे वमन करेअन्नविषे तथाविष्ठादिकोंविषे जोपुरुषोंकावैराग्य है ॥ तावैराग्यविषे केवलदोषदृष्टिहीकारण है ॥ तैसे विषय जन्यसुखविषे दोष दृष्टिही वैराग्यका कारण है ॥ दोषदृष्टितैंभिन्न कोईवैराग्यकाकारणनहा ॥ और विषयजन्य सुख विषेतौ बाध्यनादिक अनेक कारण हैं ॥ यातैंभी विषय सुखतैं वैराग्यरूपसुख हिततर है ॥ किंवा ॥ जिसपुरुषकूं विषयविषेदोषदर्शनतैंभी वैराग्य उत्पन्न नहींभया ॥ उल्टा विषय सुखविषे इच्छा अधिकहोती जावै है ॥ ऐसेवैराग्यरहितपुरुषोंकूं यह मेरेतैंअधिक सुखी है ॥ और जोइसके समीपसुखकेसाधन हैं ॥ सोहमारेसमीपनहीं हैं याप्रकारकाविषमताज्ञानरूपअग्नि सर्वदादाहकरै है ॥ तात्पर्ययह ॥ ब्रह्मलोक पर्यंत विषयजन्य संपूर्णसुखोंकी प्राप्तिहुएभी दीनताकी निवृत्तिहोवैनहीं ॥ वैराग्यकी प्राप्तिहुए दीनताकी निवृत्ति होवै है ॥ याकारण तैंभी वैराग्यही हिततर है ॥ और यावैराग्यतैं मैंआनंदस्वरूपआत्माहूं ऐसाजो अद्वितीयआत्माकाज्ञान है ॥ सो हिततम है ॥ काहेतैं वैराग्यतैं मूलअज्ञानकीनिवृत्ति होवै नहीं ॥ यातैं मिथ्या ज्ञानजन्य संस्कारोंतैं वैराग्यवान् पुरुषकूं भयबन्या रहै है ॥ और मैं अद्वितीय आत्मा ॥ ८ ॥

केज्ञानतैं मूल अज्ञानकी निवृत्ति होवै है यातैं ज्ञानवान्पुरुषकूं मिथ्याज्ञानजन्यसंस्कारोंतैं भय होवै नहीं ॥ याकारणतैं वैराग्यतैं अद्वितीयआत्माका ज्ञान हिततमहै ॥ किंवा ॥ आत्मस्वरूप आनंदकेभानविषे प्रतिबंधक जे दुःख हैं ॥ तिन दुःखोंकी निवृत्तिविषे वैराग्य कारण है ॥ आत्मस्वरूपआनंदके भानविषे वैराग्य साक्षात्कारण नहीं किंतु परंपरा कारण हैं ॥ और मुझ अद्वितीयआत्माकाज्ञानतौ आत्मस्वरूपआनंदकेभानविषे साक्षात्कारण है ॥ यातैंभी आत्मज्ञान वैराग्यतैंहिततम है ॥ और हेप्रतर्दन मैंइंद्रस्वरूपआत्माके ज्ञानतैंभिन्न कोईभीवस्तु लोकविषेहिततमनहीं मेराज्ञानहीं हिततम है ॥ और हेप्रतर्दन ब्रह्महत्यासे आदिलेके जेपापलोकशास्त्रविषेप्रसिद्धहैं ॥ जिनपापोंकरिकै अनंतकोटीकल्पोंविषे जीवोंकूं अनंतदुःखोंकीप्राप्तिहोवै है ॥ ऐसेब्रह्महत्यादिकपापभी मेरे ज्ञानकेप्रभावतैं जीवोंकूं कदाचित्स्पर्शनहींकरते ॥ और हेप्रतर्दन ज्ञानवान्पुरुषकूं ब्रह्महत्यादिकपाप स्पर्शनहींकरते ॥ याप्रकारकेहमारेवचनकूं आत्मज्ञानकीस्तुतिरूपअर्थवाद तुम नहींजानना ॥ किंतुयथार्थकरिकैजानना ॥ काहेतैं याआत्मज्ञानकेप्रभावतैं कोईभीपाप हमारेकूंस्पर्शनहींकरताभया ॥ याअर्थकूं विस्तारकरिकै तुमारेताईं हम कथनकरै हैं तुम श्रवणकरो॥ तीनोंलोकोंकाराजाजोमैंइंद्रहूं ॥ सो आपणीरक्षाकेवासतै तथाप्रजाकी रक्षाकेवास्तै अनंतपापोंकूंकरताभयाहूं ॥ तौभी आत्मसाक्षात्कारकेप्रभावतैं तिनपापोंकारिकै हमारा रोमभीछेदननहींभया ॥ अब तिन पापोंकूंदिखावैं हैं । हेप्रतर्दन एककालविषे तुष्टानामादेवताकापुत्र विश्वरूप हमदेवतावोंका पुरोहितहोताभया ॥ सोविश्वरूप किसीस्थानविषे दैत्योंकीभगिनीतैंउत्पन्नभयाथा ॥ तिसविश्वरूपके तीनमस्तकहोतेभये ॥ एक सात्विकस्वभाववान् ॥ दूसरातामसस्वभाववान्॥ तीसरा राजसस्वभाववान् ॥ तहाँ देवतावोंके अनुसारीहुआविश्वरूप सात्विकसुखकरिकै अमृतकूंपानकरताभया ॥ और असुरोंकेअनुसारीहुआसो विश्वरूप तामससुखकरिकै सुराकूंपानकरताभया ॥ और राजससुखकरिकै सोविश्वरूप मनुष्योंकीनाईं अन्नादिकोंकूंभक्षणकरताभया ॥ और सोविश्वरूप कदाचित् किसीयज्ञविषे ऋत्विक्हैकरिकै देवतावोंकेताईं उच्चस्वरकरिकै यज्ञकेभागोंकूं देताभया ॥ और आपणीमाताकेपक्षपातीजेअसुर हैं तिनोंकूंभी मंदस्वरकरिकै यज्ञकेभागोंकूंदेताभया ॥ शंका ॥ हेभगवन् विश्वरूप जैसेदेवतावोंकेताईं यज्ञके भाग

कूंप्रत्यक्षदेताभया ॥ तैसे असुरोंकूं प्रत्यक्षयज्ञकाभाग काहेतैंनहींदेताभया ॥ समाधान ॥ यज्ञकेभागीअसुरहैंनहीं ॥ यातैं तिनोंकेताईं प्रत्यक्षयज्ञकाभाग देणासंभवैनहीं ॥ यहवार्ता लोकविषेभीप्रसिद्ध है ॥ जैसे किसीचारिपुरुषोंकूं राजाने एकग्रामदियाहोवै ॥ तिसग्रामके तेचारिपुरुषभागी हैं ॥ और तिसग्रामविषे पिशुनवृत्तितैंजीवनकरणेहारा कोईदुष्टपुरुषभीरहै है ॥ सो यद्यपि ग्रामकाभागीनहीं है ॥ तथापि तादुष्टपुरुषकूं ग्रामकाभाग मिले है ॥ परंतु तादुष्टपुरुषकूं ग्रामकाभाग प्रसिद्धनहींमिले है किंतुअप्रसिद्ध मिले है ॥ और चारिभागीपुरुषोंकूं ग्रामकाभाग प्रसिद्धमिले है ॥ परंतुअभागीपुरुषकूं जोभागदेणा है ॥ सोग्रामकेस्वामीका अनर्थकरणेहारा है ॥ काहेतैं अप्रसिद्धभागकीप्राप्तिकरिकै शनैःशनैःसामर्थ्यकूंप्राप्तभयासोदुष्टपुरुष एककालविषे ग्रामकेस्वामियोंकाहननकरै है ॥ और ग्रामादिकसंपदाकाभी हरणकरैहै ॥ यातैं भागतैंरहितपुरुषकूंभागकीप्राप्ति स्वामीकेअनर्थकाकारण हैं ॥ यहवार्तालोकविषेप्रसिद्ध है ॥ इसप्रकारविचारकरिकै औरदेवतावोंकेअनिष्टकरणेहारी जाअसुरोंकेतांईंयज्ञभागकीप्राप्तिरूपविश्वरूपकीक्रिया हैं ताकूंदेखिकरिकै ताविश्वरूपपुरोहितविषे ऐसीबुद्धिकूं मैंइंद्र करता भया ॥ यहविश्वरूपपुरोहित हमारेशत्रुअसुरोंकेहितकीइच्छाकरै है ॥ यातैं हमराजोंका तथा देशका यह घातकरैगा ॥ यातैं यहदुरात्मा विश्वरूप मारणेयोग्य है ॥ अब विश्वरूपकेदुरात्मभावकूंदिखावैं हैं ॥ विश्वासकरिकैयुक्तजेहमदेवता हैं ॥ तिनोंकेनाशकरणेवास्ते यहविश्वरूप हमारेशत्रुवोंकेताईं यज्ञभागोंकूंदेवै है ॥ यातैं यहविश्वरूप दुरात्मा है ॥ विश्वासघातीपुरुषकूं लोकविषेभी दुरात्माकहै है ॥ किंवा ॥ जोपुरुष जिसकेअन्नकूं सर्वदाभोजनकरै है ॥ सोअन्नकाभोक्तापुरुष तिसअन्नदातापुरुषका आत्माहोवै है ॥ और आत्मद्रोहीपुरुष अत्यंतपापवान्होवै है ॥ यह सर्वशास्त्रकासिद्धांत है ॥ और यहविश्वरूप सर्वदा हमदेवतावोंकेअन्नकूंभोजनकरै है ॥ यातैं हमदेवता विश्वरूपकेआत्मा हैं ॥ हमारेसाथ द्रोहकूंकरताहुआयहविश्वरूप आपणेआत्माकेसाथद्रोहकूंकरै है ॥ आत्मद्रोहीपुरुषकेसमान कोईपापीनहीं ॥ यद्यपि यहविश्वरूप वेदोंकावेत्ताहै औरब्राह्मण है और हमसर्वदेवतावोंकापुरोहित है यातैंमारणेयोग्यनहीं ॥ तथापि हम यजमानोंकेनाश वास्ते इसने उद्यम कऱ्या है ॥ यातैं यहदुरात्माविश्वरूप अवश्यमारणे योग्य है ॥ इप्रतर्दन इसप्रकारकाविचारकरिकै मैंइंद्र देवतावों ॥ ९ ॥

कीसभाविषे ताविश्वरूपकेतीनोंमस्तकोंकूं वज्रकरिकैछेदनकरताभया ॥ तापापकर्मकरिकै जिसआत्मज्ञानकेप्रभावतैं मेरारोममात्रभी नहींछेदनहोताभया ॥ और हेप्रतर्दन याआत्मज्ञानके प्रभावतैं वेदान्तविचारतैंरहितकोटिसंन्यासियोंकेमारणेकरिकैभी हमारेकूं पापका स्पर्शनहींहोताभया ॥ किसीकालविषे किसी देशमैं कोटिसंन्यासी एकट्ठेभयेथे ॥ कैसेतेसंन्यासीथे ॥ वर्णआश्रमकेजेआचार हैं तिनोंविषे जिनोंकीप्रीतिथी ॥ औरब्रह्मचर्य गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यास या चारिआश्रमोंविषे उत्तमआश्रम जोसंन्यास है ताकरिकैयुक्तथे ॥ और यहइंद्र हमारा आत्मा है याप्रकारकेसर्वात्मज्ञानतैंरहितथे ॥ ऐसे बहिर्मुखसंन्यासियोंतैं मैंइंद्र पूछताभया ॥ तुमसंपूर्णकौनहो ॥ ऐसा जभी हमनैंपूछा ॥ तभी तेसंन्यासी हमारेप्रति कहतेभये ॥ वर्णआश्रमकेकर्मोंकूंकरणेहारे हम संन्यासी हैं ॥ ऐसाकहिकरिकै पुनःतेसंन्यासीदैवकरिकैमोहकूंप्राप्तहुए ऐसावचन हमारेप्रति कहतेभये ॥ तूकौन है जो हमसंन्यासियोंकूं पूछणेवास्ते यहाँ आया है ॥ इसप्रकार निरादरयुक्तवचन संन्यासियोंका श्रवणकरिकैभी कृपाकरिकैयुक्तमैंइंद्र तिनसंन्यासियोंकूं कहताभया ॥ हे संन्यासियों तुमसंपूर्णोंकाआत्मा मैंइंद्रहूं ॥ ऐसे मेरेवचनकूंश्रवणकरिकै तेसंपूर्णसंन्यासी क्रोधयुक्तहोतेभये ॥ कैसेतेसंन्यासी हैं ॥ हैंतोमूर्ख परंतु आपणेकूंपंडितजिनोंनैंमान्या है ॥ ऐसेसंन्यासी दैवकरिकैमोहितहुए पुनः निरादरयुक्तवचनकूं मुझ इंद्रकेप्रति कहतेभये ॥ शरीररूपविग्रहवालातूं किसप्रकार इंद्रहोवैगा ॥ तात्पर्ययह ॥ इंद्र याप्रकारका शब्द तथाइंद्रशब्दकाअर्थ ॥ दोनोंतैंभिन्नकोईइंद्र संभवै नहीं ॥ तहाँ इंद्र याशब्दकूंइंद्रकहैं हैं ॥ याप्रथमपक्षविषे विग्रहवान् तुमारेकूं इंद्ररूपतासंभवै नहीं ॥ और इंद्रशब्दकेअर्थकूंइंद्रकहै हैं ॥ यादूसरेपक्षविषेभी विग्रह हविषूकाभोग ऐश्वर्य प्रसन्नता फलप्रदान याविग्रह आदिकपंचविशेषणोंकरिकैविशिष्ट देवताविशेष इंद्रशब्दकाअर्थ है ॥ अथवा तुमनैंकह्याजो हमसंपूर्णसंन्यासियोंका आत्मा सोइंद्रशब्दकाअर्थ है ॥ तहाँ प्रथमपक्षतो संभवै नहीं ॥ काहेतैं शरीररूपविग्रहकरिकैविशिष्ट देवताविशेष जोइंद्रशब्दकाअर्थहोवै ॥ तौ जैसे यज्ञविषे अतिथीकाप्रत्यक्षहोवै है ॥ तैसे इंद्रकाभी प्रत्यक्षज्ञानहोणाचाहिये ॥ और इंद्रका यज्ञविषे प्रत्यक्षज्ञान होतानहीं ॥ यातैं शरीररूपविग्रहवान् देवताविशेष इंद्रशब्दकाअर्थ संभवैनहीं ॥ और हविष् अन्नका भोग

रूपविशेषणकरिकैविशिष्ट देवताविशेष इंद्रशब्दकाअर्थ है यहभीकहना संभवैनहीं ॥ काहेतैं जैसे अतिथिकेताईं यज्ञविषेदियाजोअन्न ताअन्नकूं अतिथिभोजनकरै है ॥ यहसर्वलोकोंकूंप्रत्यक्षदीखे है ॥ तैसे यज्ञविषेइंद्रादिकदेवतावोंकेताईं दियाजोहविषूरूपअन्न ताअन्नकूं देवता भोजनकरैं नहीं ॥ जो देवता हविषूअन्नकूं यज्ञविषेभोजनकरतेहोवैं ॥ तौ हमारेकूं अतिथिकीनाईं दीखेचाहियें और दीखते नहीं ॥ ॥ शंका ॥ देवता यद्यपि प्रसिद्ध हविषूरूपअन्नकूंभक्षणकरैं नहीं ॥ तथापि जैसे भ्रमर पुष्पकेगंधकूं ग्रहणकरै है ॥ तैसे देवताभी अन्नके सारअंशकूं ग्रहणकरैं हैं ॥ समाधान ॥ देवता अन्नकेसारअंशकूंभी ग्रहणकरैं नहीं ॥ काहेतैं जोदेवता अन्नकेसारअंशकूंग्रहणकरैं ॥तौ गणेशकूंसमर्पणकरेजेमोदक तेमोदक सार अंशतैं रहितहोणेचाहिये ॥ और सारअंशतैंरहित मोदकहोवैनहीं ॥ यातैं हविषूकाभोगरूप विशेषणकरिकैयुक्त देवता विशेषभी इंद्रशब्दकाअर्थ संभवैनहीं ॥ और ऐश्वर्यरूपविशेषणकरिकैविशिष्ट देवताविशेष इंद्रशब्दकाअर्थ है यह कहनाभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं आपणेविषे स्वामित्वकाअभिमान और अन्यविषे ममत्वअभिमानकानाम ऐश्वर्य है ॥ अथवा अनेक यज्ञोंविषे एककालमेंप्राप्तिवास्ते अनंतस्वरूपधारणकरणेकी जो शक्ति है ताकानाम ऐश्वर्य है ॥ यादोनोंविषे रागवान्देवता सिद्धहोवै है ॥ यातैं जैसे रागवान् औरनानास्वरूपोंकूंधारणकरणेहारीवेश्याका कोईबुद्धिमान् पुरुष पूजनकरतानहीं ॥ तैसे रागवान् और नानास्वरूपोंकूंधारणकरणेहारेदेवतावोंकूं कौनबुद्धिमान् पुरुष पूजनकरैगा ॥ किंतु कोईभी पूजन नहीं करैगा ॥ यातैं ऐश्वर्य विशिष्टदेवताविशेषभी इंद्रशब्दकाअर्थ संभवै नहीं ॥ और प्रसन्नतारूपविशेषणकरिकैविशिष्ट देवताविशेष इंद्रशब्दकाअर्थ है यहकहनाभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं यज्ञादिककर्मोंकेकरणेतैं देवताप्रसन्नहोवैं हैं ॥ अथवा यज्ञादिककर्मोंतैंविनाभी देवता प्रसन्नहोवैं है ॥ तहाँ प्रथमपक्षतौ संभवैनहीं काहेतैं जोकर्मकेकियेतैंहीं देवताप्रसन्नहोवैं ॥ तौ हममनुष्योंतैंदेवताविषे कौनविशेषतासिद्धभई ॥ सेवारूपकर्मकेकरणेहारेप्राणीऊपर हममनुष्यभी प्रसन्नहोते हैं ॥ तैसे यज्ञरूपकर्मकरणेहारेपुरुष ऊपर देवताभी प्रसन्नहोते हैं ॥ यातैं हममनुष्योंतैं देवतावोंविषे विशेषतासिद्धनहीं होवैगी ॥ और कर्मकियेतैंविनाहीं देवताप्रसन्नहोवैं है यहदूसरापक्षभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं कर्मकियेतैंविना कहींभी देवताकीप्रसन्नता देखी

॥ १० ॥

नहीं ॥ यातैं प्रसन्नतारूपविशेषणकरिकैविशिष्ट देवताविशेषभी इंद्रशब्दकाअर्थनहीं ॥ याकारणतैं फलप्रदानरूप विशेषणकरिकै विशिष्ट देवताविशेषभीइंद्रशब्दकाअर्थ संभवैनहीं ॥ काहेतैं प्रसन्नतातैं अनंतरहीं फलकादेणासंभवै है ॥ प्रसन्नताकेअभावहुए फलप्रदानभी देवता विषेसंभवैनहीं ॥ यातैं फलप्रदानरूपविशेषणकरिकैविशिष्ट देवताविषेशभी इंद्रशब्दकाअर्थनहीं ॥ इतनेग्रंथकरिकै त्रिग्रहादिकपंच विशेषणकरिकैविशिष्ट देवताविशेष इंद्रशब्दका अर्थ है यापथमपक्षका संन्यासियोंनैं खंडनकऱ्या॥ अब हमसंपूर्णोंकाआत्मा इंद्रशब्दकाअर्थ है ॥ याद्वितीयपक्षकूं संन्यासी खंडनकरैं हैं ॥ हमसंपूर्णोंकाआत्मा इंद्रशब्दकाअर्थ संभवैनहीं ॥ काहेतैं संपूर्णप्राणियोंकाआत्मा एकएक शरीर विषे भिन्नभिन्नहोवै है ॥ जोसंपूर्णशरीरविषे एकही आत्माहोवै ॥ तौ एकशरीरविषे ॥ सुखतथादुःखके हुए सर्व शरीरोंविषे सुखदुःखकाअनुभव होणाचाहिये ॥ और अनुभवहोवैनहीं ॥ यातैं सर्व शरीरोंविषे आत्माएकनहीं ॥ किंतु नानाआत्मा हैं ॥ और पुण्यपापकाकरता आत्माहै ॥ और आत्माहीं ताकेफलसुखदुःखका भोक्ता है ॥ और आत्माअमूर्त है और विभु है बुद्धि १ सुख २ दुःख ३ इच्छा ४ द्वेष ५ प्रयत्न ६ धर्म ७ अधर्म ८ संस्कार ९ संख्या १० परिमाण ११ पृथक्त्व १२ संयोग १३ विभाग १४ याचतुर्दशगुणोंकरिकैयुक्त आत्मा है ॥ और अहंसुखी अहंदुखी याप्रतीतिकाविषय आत्मा है ॥ और तूं हमसंन्यासियोंतैंभिन्नप्रतीतहोवै है ॥ यातैं हमसंपूर्णसंन्यासियोंका आत्मा तूंकैसेहोवैगा ॥ किंतु हमारा आत्मा तूं नहीं है ॥ यातैं इंद्रशब्दकाअर्थ इंद्रनहीं ॥ किंतु इंद्र याप्रकारकाशब्दही इंद्रहै॥ इंद्रशब्दतैं भिन्न कोईइंद्रदेवताकास्वरूपनहीं ॥ याप्रकार सर्वदेवता शब्दस्वरूपहैं शब्दतैं भिन्न कोईभीदेवतानहीं ॥ हे प्रतर्दन तेबहिर्मुखसंन्यासी याप्रकारकीकुतर्ककरिकैयुक्त तथानिरादरकरिकै युक्तवचनोंकूं काहिकरिकै पुनःमेरेऊपर क्रोधकूंकरते भये ॥ तिनसंन्यासियोंकीमूर्खताकूं तथावचनोंकीक्रूरताकूं तथाविनाकारणतैंक्रोधकूं देखिकरिकै पुनःकृपाकरिकैयुक्त मैंइंद्र तिनसंन्यासियोंकूं कहताभया ॥ हे संन्यासियो देवतावोंकेविग्रहआदिकनहींहोते ॥ और शरीरशरीराविषे आत्माकावास्तवभेद होवै है ॥ और तूं इंद्र हमाराआत्मानहीं है ॥ यहजोपूर्वतुं मोनैंकह्या ॥ याअर्थविषे कोईवेदकावचनजोप्रमाणहोवै ॥ तौ तुम कथनकरो॥हेप्रतर्दन याप्रकार जभी तिनसंन्यासियोंतैं हमनैंप्रमाणपूछा ॥

तभी तेमूर्खसंन्यासी पुनःक्रोधकरिकैयुक्तहुऐ एकभीवेदकावचन नहीं कथनकरतेभये कुटिलकरी है भृकुटी और मुखजिनोंनें ऐसेतेसं न्यासी पुनःमेरीनिंदाकरिकै जावोजावो याप्रकारका कथनकरतेभये ॥ सोकथनभी मुखसैंनहींकरतेभये ॥ किंतु अत्यंतनिरादरकासूचक जोहस्तकीचेष्टा ताकरिकै बोधनकरतेभये ॥ हेप्रतर्दन इसप्रकार जभी संन्यासियोंनें हमारानिरादरकऱ्या ॥ तभी त्रिलोकीकेरक्षणवास्ते उद्यमवाला मैंइंद्र आपणेमनकरिकै याप्रकारकाविचार करताभया ॥ जो यासंन्यासियोंविषेक्याकरणेकूं योग्य है ॥ तात्पर्य यह ॥ या संन्यासियोंकी उपेक्षाकरणीयोग्य है अथवा दंडकरणेयोग्य है ॥ तहाँ उपेक्षाकरणी यहप्रथमपक्षतौसंभवैनहीं ॥ काहेतैं त्रिलोकीकूंअधर्मतैं रक्षाकरणेवास्ते हमाराअवतार है ॥ और दंडकरणा यहदूसरापक्षतौ अपराधनिर्णयतैंविना होवैनहीं ॥ यातैं इनसंन्यासियोंका अपराध निर्णयकऱ्याचाहिये अपराधीनिर्णयतैं अनंतरहीं दंडकरणाउचितहै ॥ तहाँ अपराधनिर्णकरणेवास्ते संन्यासका तथा संन्यासके धर्मोंका तथासंन्यासकेफलका बोधनकरणेहारीश्रुतियोंकेअर्थकानिरूपणकरैं हैं ॥ विवेकादिसाधनचतुष्टययुक्त पुरुष आत्मासाक्षात्कारकी प्राप्ति वास्ते संपूर्णकर्मोंकात्यागरूपसंन्यासकूंकरै ॥ और सर्वकर्मोंकात्यागकरिकै संन्यासीनैं श्रवणमननानिदिध्यासनकरिकै एक वेदांतके अर्थका विचार सर्वदाकरणेयोग्य है ॥ इसप्रकार संन्यासतथावेदांतविचारकरिकै जिसपुरुषकूं अद्वितीय आनंदस्वरूप आत्माकासाक्षात्कारभया है॥ सोपुरुष जन्ममरणरूपसंसारदुःखकूं नहीं प्राप्त होता ॥ याप्रकार श्रुतिनैं कथनकऱ्या है ॥ यहाँ विवेकादिकसाधनसंपत्तिपूर्वक सर्वकर्मोंके त्यागकानाम संन्यासहै ॥ और सर्वदावेदांतशास्त्रकाविचार संन्यासीकाधर्म है॥ और जन्ममरणादिकअनर्थकीनिवृत्ति तथाब्रह्मभावकी प्राप्ति रूपमोक्षकीप्राप्ति संन्यासकाफल है ॥ याप्रकारकासंन्यास इनोंविषेहैनहीं ॥ किंवा ॥ दोप्रकारकासंन्यास श्रुतिविषेकह्याहै॥एकतौ क्रमतैं संन्यास ॥ और दूसरा क्रमतैंविनासंन्यास॥ तहाँ प्रथम ब्रह्मचारीहोणा पश्चात्गृहस्थहोणा पश्चात्वानप्रस्थहोणा पश्चात्संन्यासीहोणा यहक्रम तैंसंन्यास उत्कटवैराग्यतैंरहितपुरुषकूं ७० सत्तरिवर्षतैंअनंतर श्रुतिनैंकह्या है ॥ और जिसपुरुषकूं विषयोंविषेउत्कटवैराग्यहै ॥ तिसपुरुषकूं क्रमतैंविनाभी श्रुतिनैं संन्यासविधानकऱ्याहै ॥ जिसदिनाविषे पुरुषकूं विषयोंविषउत्कटवैराग्यहोवै उसीदिनाविषे संन्यासकूंकरै ॥ ब्रह्मचारी

॥११॥

होवै अथवा गृहस्थहोवै अथवा वानप्रस्थहोवै ॥ यादोप्रकारकेसंन्यासविषे क्रमतैंसंन्यासतौ इनोंकाहैनहीं ॥ काहेतैं यहसंपूर्ण युवाअवस्थावा लेहैं ॥ और दूसराक्रमतैंविनासंन्यासभी इनोंविषेनहीं ॥ काहेतैं यहसंपूर्ण आत्मज्ञानतैंरहित हैं ॥ और नीतितैंरहित हैं ॥ और क्रोध रूपशत्रुकेवशहुए हैं ॥ याकारणतैं दुर्बुद्धिमूर्ख आपणेहितकूंनहींश्रवणकरते ॥ उलटा हितकेउपदेशकरणेहारेसुझइंद्रकेसाथ द्वेषकूंकरैं हैं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे मरणकेनिकटप्राप्तभया रोगीपुरुष हितकारीवैद्यकेसाथ द्वेषकरै है ॥ तैसे यहसंन्यासी मृत्युकेनिकटहुए मेरेसाथद्वेषकरै है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! यद्यपि यहसंन्यासी अपराधी है ॥ तथापि तुमारेकूं क्षमाकरणेयोग्य है॥ किसीदूसरेकेउपदेशतैं इनोंकूं आत्मसाक्षात्कार होवैगा ॥ समाधान ॥ मुझइंद्रकेवचनकूं जभीइनोंनें अंगीकारनहींकऱ्या ॥ तभी येसंन्यासी किसीकेउपदेशकूं नहींअंगीकारकरैंगे ॥ काहे तैं इनसंन्यासियोंकेबोधवासतै इनोंकानिरादरयुक्तवचनकूंसहनकरिकैभी कृपायुक्तमैंइंद्र इनोंतैं श्रुतिप्रमाणपूछताभया ॥ तात्पर्ययह ॥ नि रादरकूंसहनकरिकै उपदेशकेकरणेहारा हमारेतैंविना दूसराकोईहै नहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ऐसेबहिर्मुखसंन्यासियोंतैं तुमनैं काहेवासतैश्रु तिप्रमाणपूछा ॥ समाधान ॥ हेप्रतर्दन हमारेपूछणेकायहअभिप्रायथा ॥ जभी यहसंन्यासी आत्माकेवास्तवभेदविषे कोईवेदकावचनक हैंगे ॥ तभी तिसीवेदवचनकरिकै इनोंकेतांईं मैंआत्माकाउपदेशकरोंगा ॥ यामेरेअभिप्रायकूंनजाणिकरिकै यहमूढसंन्यासी विनाहींकारण तैं मेरेऊपर क्रोधकूंकरतेभये ॥ और वेदकेवचनरूपप्रमाणोंकूंभी यहसंन्यासीजाणतेनहीं ॥ और कुतर्कोंकूं कथनकरणेहारे हैं ॥ यातैं यहसं न्यासी दंडकरणेयोग्य है॥किंवा॥यहशास्त्रकानियमहैचांडाल शत्रु पतित दुराचारी इनचारोंविषे कोईभी जोयथार्थप्रश्नपूछै॥तौ बुद्धिमान्पुरु षनैं ताप्रश्नकाउत्तरकह्याचाहिये ॥ यानियमकाभी इनसंन्यासियोंनैं त्यागकऱ्या है ॥ काहेतैं साक्षात्मुझइंद्रकरिकैपूछेहुएभी यहसंन्यासी उत्तरकूंनहींकहतेभये ॥ किंवा ॥ इनदुर्बुद्धिसंन्यासियोंकाजन्मभीनिष्फल है॥काहेतं सर्वकर्मकात्यागरूपसंन्यासकूं इनोंनैं धारणकऱ्याहै ॥ यातैं यह कर्मकेअधिकारीभीनहीं॥और वैराग्यादिकसाधनोंतैंरहितहैं ॥ यातैं यह ज्ञानकेअधिकारीभीनहीं॥वैराग्यविवेकशमादिकषट्संपत्ति मुमुक्षुता याचारिसाधनोंकरिकैयुक्तपुरुष वेदांतश्रवणविषे अधिकारीहोवै है ॥ शंका संन्यासियोंविषे वैराग्यकाअभाव तुमनैं कैसेजान्या

है ॥ समाधान ॥ क्रोधरूपहेतुतैं इनोंकेवैराग्यकाअभाव जान्याजावै है ॥ जहाँ क्रोधरहै है तहाँ वैराग्यरहैनहीं ॥ काहेतैं प्रथमतौ जीवोंकूंज न्महींकष्टरूप है ॥ ताजन्मतैंभी जन्मकाकारणजोकाम है सो कष्टतर है ॥तिसकामतैंभी क्रोध कष्टतम है॥ सोक्रोध इनसंन्यासियोंविषे विद्य मान है ॥ यातैं इनोंविषे वैराग्यकाअभाव है ॥अब कामतैं क्रोधकीअधिकताकूंदिखावै हैं॥ कामकरिकैजन्यजोदुःखहै सो परिणामकालविषे प्राणियोंकूंहोवै है ॥ कामकेवर्तमानकालविषे दुःखहोवैनहीं ॥ और क्रोधतौ परिणामकालविषे तथावर्तमानकालविषे सर्वदा जीवोंकूं दुःख केदेणेहारा है ॥ यातैं कामतैंक्रोध अधिकदुःखरूपहै ॥ किंवा ॥ दूसरीभी कामतैंक्रोधकी अधिकता है ॥ कामतौ जिसशरीरविषेउत्पन्नहो वेहैतिसीशरीररूपआश्रयकूं संतापकरै है अन्यकूंसंतापकरैनहीं ॥ और परकेताडनरूपफलकरिकैयुक्तहुआ क्रोधतौ जिसशरीरविषेउ त्पन्नहोवै है तिसीशरीररूपआश्रयकूं तथाजिसशरीरऊपरक्रोधहोवै है ताशरीररूपविषयकूं दोनोंकूं संतापकरै है ॥ याकारणतैंहीं क्रोधकरि कैयुक्तहुए कोईकप्राणी आपणेमस्तकका ताडनकरैं हैं औरकूपादिकोंविषेगिरैं हैं ॥ यातैंभी कामतैंक्रोधकष्टतमहै ॥ किंवा ॥ अन्यभी का मतैंक्रोधकीआधिकता है ॥ उत्पत्तिकाकारण कामहै ॥ यातैं काम रजोगुणकापरिणामहै ॥ और क्रोध नाशकाकारणहै ॥ यातैं तमोगुणका परिणाम है ॥ काहेतैं अंडज जरायुज स्वेदज उद्भिज याचारिप्रकारकेप्राणियोंकीजो शरीर मन वाणी करिकैहिंसाहोवैहै ॥ सोहिंसा क्रोधतैं होवै है क्रोधतैंविना हिंसाहोवैनहीं ॥ यातैंभी कामतैं क्रोधअधिकहै ॥ किंवा ॥ जैसे कुष्ठादिकरोग त्वचाकूंनाशकरैं हैं तैसे विश्वविषेव्या पिरह्योजोपुरुषकीकीर्ति है ताकूं तत्कालहीं क्रोधनाशकरैहै॥किंवा ॥परताडनारूपुफलकरिकैयुक्तहुआ यहक्रोध जीवोंकूं स्वर्गतैंभीविमुखक रैहै॥ तात्पर्ययह ॥ स्वर्गकेकारणजेयज्ञादिककर्म हैं तेभी क्रोधकियेतैं स्वर्गरूपफलकेहेतुहोवैनहीं॥दृष्टांत॥ जैसेदुर्जनपुरुष राजद्वारविषेप्रवेश रूपफलकरिकैयुक्तहुआ प्रवेशकरावणेहारेपुरुषकूं राजद्वारतैं निकासिदेवै है ॥ तैसे क्रोधभी पुरुषकूंस्वर्गतैंविमुखकरैहै ॥ किंवा ॥ जैसे अश्व वारपुरुषकूं दुष्टअश्व गर्तविषेजाइकेगेरै है ॥ तैसे यहक्रोधभी पुरुषोंकूं नरकविषेजाइकेगेरै है ॥ यातैं सुखकीप्रातिकीइच्छावान्पुरुषकूं क्रो धकेसमान कोईशत्रुनहीं क्रोधहीपरमशत्रु है ॥ यातैं सुखकीप्रातिकीइच्छावान्पुरुषनैं अवश्य क्रोधकानिरोधकरणा ॥ यहक्रोध कामतैंभी

॥१२

अधिकदुःखकादेणेहारा है ॥ किंवा ॥ जैसे प्रज्वलितमहान् अग्नि शुष्ककाष्ठकूं तथाआर्द्रकाष्ठकूं दाहकरै है ॥ तैसे पुरुषविषेउत्पन्नहुआक्रोध भी स्वर्गकेसाधनोंकूं तथामोक्षकेसाधनोंकूं नाशकरै है॥तात्पर्ययह॥साधनोंविषेजोफलकीउत्पत्तिकासामर्थ्य है सो क्रोधकरिकैनष्टहोजावै है किंवा॥ जैसे वृक्षविषे अग्निरूपहेतुकेज्ञानतैं सरसताकेअभावकाअनुमितिज्ञान दूरदेशविषेस्थितपुरुषोंकूं होवै है॥ताअनुमानकाप्रकारयह है यहवृक्ष सरसताकेअभाववाला है ॥ काहे तैं अग्निवालाहोणेतैं ॥ प्रसिद्धवृक्षकीन्याईं ॥ याअनुमानतैं जैसे वृक्षविषे सरसताकेअभावकानिश्च यहोवै है ॥ तैसे क्रोधरूपहेतुकेज्ञानतैं इनसंन्यासियोंविषेभी वैराग्यकेअभावकाअनुमितिज्ञानहोवै है ॥ ताअनुमानप्रकार यह है ॥ यहसंपूर्ण संन्यासी वैराग्यतैंरहित हैं ॥ काहे तैं क्रोधवान्होणेतैं ॥ प्रसिद्धअज्ञानीपुरुषोंकीनाईं ॥ याअनुमानकरिकै इनसंन्यासियोंविषे वैराग्यकेअभा वकाज्ञानहोवै है॥किंवा॥ जहाँ क्रोधरहै है तहाँ इच्छाभीअवश्यरहै है इच्छातैंविनाक्रोधहोवैनहीं॥काहेतैं जोइच्छाकेविषयका कोईप्रतिबंधकरै है ॥ सोइच्छाही क्रोधाकारपरिणामकूंप्राप्तहोवै है॥यहवार्ता गीताविषे भगवान्नैं कामएषक्रोधएष याश्लोकविषे प्रतिपादनकरी है और लोकवि षेभी यहवार्ताप्रसिद्ध है॥ जोकोईपुरुष किसीवस्तुकीइच्छाकरिकैकिसीपुरुषकेपासजावै॥ तिसवस्तुकीप्रातिविषे जोकोईप्रतिबंधकरै है॥तिस ऊपर तापुरुषका अत्यंतक्रोधहोवैहै ॥ जो इच्छानहींउत्पन्नहोवैतौ॥ताकेफलकी कोईप्रतिबंधकरैनहीं॥ दृष्टांत ॥ जैसे असत्बंध्यापुत्रकेराज का कोईप्रतिबंधकरैनहीं॥यातैं प्रतिबंधकरिकै फलतैंहीनहुईइच्छाहीं क्रोधाकारपरिणामकूंप्राप्तहोवै है॥ और इनसंन्यासियोंविषे क्रोधदीखता है ॥ यातैं क्रोधकाकारणरूपईच्छाभी अवश्यइनोंविषे होवैगी ॥ और जहाँ इच्छारहै है तहाँवैराग्यहोवैनहीं ॥ यातैं सहसंन्यासी वैराग्यतैंरहि त हैं ॥ किंवा ॥ इनसंन्यासियोंविषे काम क्रोध दोनोंविद्यमान हैं ॥ कैसेकामक्रोध हैं निवृत्तिकेउपायतैंरहित हैं ॥ याकारणतैं जयकरणे कूंअसक्य हैं ॥ ऐसेकामक्रोधकोविद्यमानहुए इनसंन्यासियोंविषे वैराग्य कैसेसंभवै ॥ किंतु इनोंविषेवैराग्यनहीं है ॥ यद्यपि स्त्रीकेसंसर्गकी इच्छाकानाम काम है ॥ तथापि ॥ यहाँकाम शब्दकरिकै इच्छामात्रकाग्रहण करणा ॥ शंका ॥ हे भगवन् आपनैं निवृत्तिकेउपायतैंरहित कामक्रोधकूंकह्या सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं मुमुक्षुजन उपायोंकरिकै कामक्रोधकीनिवृत्तिकरैं हैं ॥ समाधान ॥ जिसउपायकरिकै मुमुक्षुजन

कामक्रोधकीनिवृत्तिकरैं हैं ॥ सोउपाय इनसंन्यासियोंविषे है नहीं काहेतैं ब्रह्मवेत्तामहात्मापुरुषोंकीसेवा तथाप्रश्नरूप सत्संगही कामक्रोधक
निवृत्तिकाउपाय है ॥ सो उपाय इनोंविषे है नहीं॥सर्वत्रब्रह्मवेत्तावोंविषेमुख्य मुझ इंद्रकेसाथ यहसंन्यासी मुखतैं भाषाणभी जभीनहीं करते ॥
तभी इनोंनें सेवा तथाप्रश्न क्याकरणा है ॥ यातैं इनोंकेकामक्रोधकेनिवृत्तिकाकोईउपायनहीं ॥ किंवा ॥ वैराग्यतैंरहित इनसंन्यासियोंकूं
संन्यासआश्रमकेधारणतैं किसीफलकीभीप्राप्तिनहींहोवैगी ॥ उलटा इनदेहाभिमानियोंका यासंन्याकरिकै पतनहोवैगा ॥ किंवा ॥ वैरा
ग्यतैंविना इनोंकासंन्यास निष्फल है ॥ काहेतैं संन्यास तथा संन्यासका फल दोप्रकारका होवै है ॥ एकतौ विविदिषासंन्यास और दूसरा
विद्वत्संन्यास ॥ तहाँब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिवास्ते ॥ सर्वकर्मोंकेत्यागकूं विविदिषासंन्यासकहै है ॥ और आत्मासाक्षात्कारकीप्राप्तितैंअनंतर जीव
न्मुक्तिकेसुखवास्ते सर्वकर्मोंकेत्यागकूं विद्वत्संन्यासकहै हैं ॥ तहाँ गुरुमुखतैंवेदांतकाश्रवणकारिकैआत्माकूंनिश्चयकरणा विविदिषासंन्या
सकाफल है॥और जीवनमुक्तिकेसुखकीप्राप्ति विद्वत्संन्यासकाफल है ॥ तहाँ विविदिषासंन्यासके आत्म साक्षात्काररूपफलकी इनसंन्यासि
योंविषे संभावना है नहीं ॥ काहेतैं इनोंविषे आत्मसाक्षात्कारकीइच्छा है नहीं॥इच्छाकेअभावतैं यहमूर्खसंन्यासी आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्ति
वास्तेगुरुकेसमीपभीजावैंगेनहीं ॥ गुरुकेसमीपगयेविना आत्मसाक्षात्कार दुर्लभ है ॥ यातैं विविदिषासंन्यासकाफल आत्मसाक्षात्कार
भी इनोंविषेसंभवैनहीं ॥ जभी विविदिषासंन्यासकाफल आत्मसाक्षात्कार इनोंविषे नहीं भया ॥ तभी आत्मसाक्षात्कारतैंअनंतरहोणेवा
ला जीवन्मुक्तिकाआनंदरूप विद्वत्संन्यासकाफल इनोंविषे कैसेहोवैगा ॥ यातैं दोनोंफलकेअभावतैं इनोंकासंन्यास निष्फल है ॥ किंवा ॥
यहसंन्यासी ऐसाभीनहींजाणते ॥ जो संन्यासशब्दकाअर्थ हमारेविषेघटता है अथवानहीं जभी संन्यासकेशब्दके अर्थकूंभी इनोंने नहीं
जान्या तभी अन्यअर्थकूं यहकैसेजानेगैं ॥ अब संन्यासशब्दकेअर्थकूं दिखावैं हैं ॥ संन्यास याशब्दविषे दोपद हैं ॥ एकतौ संपद है और
दूसरा न्यासपद है ॥ तहां मैंब्रह्मरूपहूं या आत्मज्ञानरूप शास्त्रकरिकैमूलअज्ञानसहितकामक्रोधादिकशत्रुओंकाछेदन संपदकाअर्थ है॥और
पुनरावृत्तितैंरहित ब्रह्मभाव करिकेस्थिति न्यासपदका अर्थ है ॥ दोनोंपदोंको मिलिकरिकै यहअर्थ होवै है ॥ आत्म ज्ञानरूपशास्त्रकरि

के मूलअज्ञानसहितकामक्रोधादिकोंकीनिवृत्तिकरिकै पुनरावृत्तितैंरहितब्रह्मभावकरिकैस्थिति यह संन्यासशब्दकाअर्थ इन वैराग्यही
नोंविषेहैनहीं ॥ यातैं इनोंका संन्यास निष्फल है ॥ किंवा ॥ यह संन्यास शब्दकाअर्थ यद्यपि विद्वत्संन्यासविषे घटै है ॥ तथापि विवि
दिषासंन्यासविषे घटै नहीं ॥ यातैं विविदिषा संन्यासके संग्रह वासतैं अन्य प्रकारतैं संन्यासशब्दका अर्थ कहैं हैं ॥ तहाँ साधनस
हितइसलोकके सुखका तथासाधनसहित परलोकके सुखका त्याग संपदका अर्थ है ॥ और आत्मज्ञानकी प्राप्ति वास्ते गुरुके समीप
स्थिति न्यासपदकाअर्थ है ॥ दोनोंपदोंको मिलिकरिके यहअर्थहोवै है॥साधनसहितसंपूर्णसुखोंकापरित्यागकरिकै आत्मज्ञानकीप्राप्तिवासतै
गुरुकेसमीपस्थिति ॥ यह विविदिषासंन्यासशब्दकाअर्थभी इनसंन्यासियोंविषेहैनहीं ॥ यातैंभी इनोंकासंन्यासनिष्फल है ॥ किंवा ॥
विविदिषासंन्यास तथा विद्वत्संन्यास यह दोनोंसंन्यास मोक्षकेकारण हैं ॥ तेदोनों इनोंविषेहैनहीं ॥ केवलसंन्यासमात्र इनोंनें धारणकऱ्या
है ॥ केवलसंन्यासमात्रतैं मोक्षहोवैनहीं ॥ जोकेवलसंन्यासमात्रतैंहींमोक्षहोवै ॥ तौ संन्यासीकेस्वांगकूंधारणकरणेहारेनटोंकाभी मोक्षहोणा
चाहिये औरहोवैनहीं ॥ यातैं संन्यासमात्र मोक्षकाकारणनहीं ॥ किंतु विषयजन्यसुखकीइच्छाकेपरित्यागतैं तथाकामक्रोधादिकोंकेपरित्या
गतैं मोक्षहोवै है ॥ शंका ॥ जोपुरुष कामक्रोधादिकोंके वशकरणेमैं समर्थनहीं है ॥सोपुरुष क्याउपायकरै ॥ समाधान ॥ जोपुरुष सर्वप्र
कारतैं कामक्रोधादिकोंकेवशकरणेमैंसमर्थनहीं है ॥ सोपुरुष वारंवार सत्संगकूं तथावेदांतशास्त्रके विचारकूंकरै ॥ जैसे शरद्ऋतुजलकीम
लिनताकूंनष्टकरै है ॥ तैसे सत्संग औरवेदांतशास्त्रकाविचार शनैःशनैःकरिकै कामक्रोधादिकोंकूं नाशकरै है ॥ और जैसे दुष्टअश्व अश्व
विद्याकेजाननेहारेपुरुषकरिकै अनंतवारसिखायाहुआभी चिरकालपीछे आपणेदोषोंतैंरहितहोवै है ॥ तैसे कामक्रोधादिकोंकेवश
हुआदुष्टमनगुरुशास्त्रकरिकैसिखायाहुआभीचिरकालपीछे दोषोंतैंरहितहोवै है ॥ यातैं श्रद्धाकरिकैव्यवधानतैंरहित चिरकालपर्यंतकिया
सत्संग और वेदांतशास्त्रकाविचारही कामक्रोधादिकोंकीनिवृत्तिद्वारा पुरुषोंकेमोक्षकासाधन है ॥ इनसाधनोंकीभी इनसंन्यासियों विषे
आशा है नहीं ॥ काहेतैं यह हैंतोमूढ परंतु इनोंकूंआपणेविषे पंडितताकाअभिमान है॥अभिमानीपुरुषतैं सत्संगहोवैनहीं॥ और इन संन्या

सियोनैं गुरुवेदांतकेवचनकाभी अनादरकऱ्या है ॥ और आत्मज्ञानतैंरहित हैं ॥ औरकर्मक्रियाविषेतत्पर हैं ॥ कर्मीपुरुषोंकूं सत्तरिवर्षतैं अनंतरहीं संन्यासकाअधिकार है॥ ७० सत्तरिवर्षतैंपूर्व कर्मीपुरुषोंकूं संन्यासकाअधिकारहैनहीं ॥ और जिसपुरुषकूं विषयोंविषेउत्कटवैराग्यहोवै ॥ औरआत्मज्ञानकेप्राप्तिकीइच्छाहोवै ॥ तापुरुषकूं संन्यासकेग्रहणकरणेविषे कालकानियमनहीं ॥ जभी इच्छाहोवै तभीग्रहण करै ॥ काहेतैं श्रुतिविषे आत्माअनात्माकेविवेकवासतै संन्यासकाविधानकऱ्या है ॥ ताआत्माअनात्माकेविवेककूं यहमूढसंन्यासी करतेन हीं यातैंपतित हैं ॥ सुरेश्वराचार्यनैं वार्तिकग्रंथविषेभी यहवार्ताकही है ॥ श्लोक ॥ प्रत्यक्तत्वविवेकाय संन्यासःसर्वकर्मणाम् ॥ श्रुत्या विधीयतेयस्मात् तत्त्यागीपतितोभवेत् ॥ ४ ॥ अर्थयह ॥ देहादिकोंतैंआत्माकेविवेकवासतै सर्वकर्मोंकात्यागरूपसंन्यास श्रुतिने विधान कऱ्या है ॥ जोपुरुष संन्यासकूंधारणकरिकै आत्मविचारकापरित्यागकरै है ॥ सोपुरुष पतितहोवै है ॥ ४ ॥ किंवा जोपुरुष उत्कटवैराग्यतैंरहित है ॥ और ब्रह्मलोककीप्राप्तिकीकामनावाला है ॥ तिसपुरुषकूं ७० सत्तरिवर्षतैंअनंतर क्रमसंन्यासविषे अधिकार है ॥ तासंन्यासकरिकै ब्रह्मलोकविषेजावै है ॥ याप्रकारकेक्रमसंन्यासकरिकै तथापूर्वउक्त अक्रमसंन्यासकरिकै जेपुरुष रहित हैं ॥ केवलवेशमात्र जिनोंनैं धारण कऱ्या है ॥ तिनोंकूं ब्रह्मलोककीप्राप्ति तथामोक्षकी प्राप्ति होवैनहीं किंतु दोनोंतैंभ्रष्टहोवैं हैं ॥ किंवा ॥ यहसंन्यासी यद्यपि सदाचारकरिकैयुक्तहैं औरब्राह्मणहैं यातैंउत्कृष्टहैं ॥ तथापि जैसे दुष्टअश्व मार्गकापरित्यागकरिकै कुमार्गविषेचालै हैं ॥ तैसे यहसंन्यासीभी आत्मविचाररूपमार्गकापरित्यागकरिकै कुमार्गविषेवर्तते हैं ॥ इनोंकीशिक्षाकरणेहारा कोई है नहीं ॥ काहेतैं शिक्षाकरणेहारा एकतौगुरुहोवै है ॥ और दूसरा राजाहोवैहै ॥ तहाँ गुरुतौइनसंन्यासियोंकाकोईहैनहीं ॥ जो इनोंकूंबलात्कारतैं आत्मविचाररूपमार्गविषेचलावै ॥ और यहसंन्यासी आपणेबलकरिकैआपनैंकूं वेदांतविचारविषेप्रवर्तकरणेमेंभीसमर्थहोवैंगेनहीं ॥ काहेतैं मुझइंद्रकरिकैउपदेशकियेहुएभी यहसंन्यासी वेदके अर्थविषे बुद्धिकूंएकाग्रनहींकरतेभये ॥ यातैं ऐसाजान्याजावै है ॥ इनोंका मन किसीप्रकार वशहोणेवालानहीं ॥ यातैं यहदुरात्मासंन्यासी राजाकरिकै शासनाकरणेयोग्यहैं ॥ सो राजा तीनलोकोंकामैंइंद्रहूं ॥ यातमहीं इनोंकूंशासनाकरों ॥ इसप्रकार संन्यासियोंकेअपराधोंकूं

विचारकरिकै दंडदेणेकानिश्चयकऱ्या ॥ पुनः याप्रकारका इंद्र विचारकरताभया ॥ इनसंन्यासियोंकूं कौनदंडकरिये ॥ तहाँ धनकाहरणरूपदंड तौ इनोंविषेसंभवैनहीं ॥ काहेतैं या संन्यासियोंकेपास धनकासंग्रहहैनहीं ॥ और दूसरा मस्तककामुंडनरूपदंडभी इनसंन्यासियोंविषेसंभवैनहीं ॥ काहेतैं यहसंन्यासी प्रथमहींमुंडितहैं ॥ और तीसरा देशतैंनिकासणारूपदंड हैं ॥ सोभी इनसंन्यासियोंविषे संभवैनहीं ॥ काहेतैं या संपूर्ण देश हमारा है ॥ किंवा ॥ इनसंन्यासियोंकूं या स्थूलशरीरकरिकै जोत्रिलोकीतैंबाहिरजाणेकासामर्थ्यहोवै॥तौ इनोंकूं देशतैंनिकासणारूपदंडसंभवै ॥ सोइनसंन्यासियोंकूं यास्थूलशरीरकरिकै त्रिलोकीतैंबाहिरनिकसणे विषेसामर्थ्यहैनहीं॥और संपूर्ण त्रिलोकीहमारादेश है ॥ यातैं देशतैंनिकासणारूपदंडभी इनसंन्यासियोंविषे संभवै नहीं ॥ परिशेषतैं इनसंन्यासियोंविषे शरीरकाना शरूपदंड कऱ्याचाहिये ॥ इसप्रकारकाविचारकरिकै संपूर्णलोकोंकारक्षणकरणेहारा मैंइंद्र वेदांतविचारतैंरहितसंपूर्णसंन्यासियोंकूं वनाविषे हननकरिकै श्वानोंकेताईं देताभया ॥ और तिनसंन्यासियोंकेमस्तक मांसतैंरहितअस्थिरूपहैं ॥ यातैं ते मस्तक भूमिविषेगिडतेभये ॥ और अंतर्यामीमैंइंद्रकरिकैप्रेरनाकरेहुवेतेश्वान कर्मीलोकोंकेदिखावणेवासतै तिनसंन्यासियोंकेमांसकूंलेकरिकै यज्ञभूमिकेदक्षिणादिशाविषे भक्षणकरतेभये ॥ ताकरिकै कर्मीलोकोंकूं याअर्थकाबोधनकरतेभये ॥ हेकर्मीलोको वैराग्यतैंविनातुमोनैं कमाकों त्याग नहीं करणा ॥ जावैराग्यतैंविना तुम कर्मोंकापरित्यागकरोगे ॥ तौ जैसे इनसंन्यासियोंकीदुर्गतिभयी है ॥ तैसे तुमारीभीदुर्गति होवैगी ॥ याअर्थकेबोधनकरणेवासतै मुझइंद्रकरिकैप्रेरनाकरेहुवेश्वान यज्ञभूमिविषे संन्यासियोंकेमांसकूंभक्षणकरतेभये ॥ और तिनसंन्यासियोंके जेवनविषेमस्तकपडेथे ॥ तेमस्तक खर्जूरवृक्षाकारपरिणामकूंप्राप्तहोतेभये ॥ तिसतैंअनंतर खर्जूरवृक्षोंकाजोसाररूपरस है सो ऊर्ध्वभागकूं जाताभया ॥ पुनःसोरसभूमिविषेपतनहोताभया तारसतैं करीरवृक्ष उत्पन्नहोतेभये ॥ तेकैसेकरीरहैं सौम्यस्वभाववालेहैं ॥ याकारणतैंहीं देवतावोंकोप्रिसन्नतकारणेवासतैंतेकरीरयज्ञकीआहुतिकासाधनहै॥शंका॥करीरोंविषेसौम्यता किसहेतुतैंप्राप्तहोतीभई ॥ समाधान ॥ परंपराकरिकैकरीरोंकी संन्यासियोंतैंउत्पत्तिभई है ॥ और संन्यासी स्वभावतैंक्रोधतैंरहित और सौम्यस्वभाववान्थे ॥ यातैं कारणकीसौम्यताकरिकै करीरोंविषेसो

म्यताहै ॥ शंका ॥ पूर्वआपनैं संन्यासियोंविषे क्रोधादिकोंकाकथनकऱ्या ॥ और अभी क्रोधादिकोंतैंरहित सौम्यस्वभाव संन्यासियोंकोक ह्या ॥ यातैं पूर्वउत्तर कथनका विरोधहोवै है ॥ समाधान ॥ देहत्यागतैंपूर्व यद्यपि तिनसंन्यासियोंविषेक्रोधादिकथे ॥ तथापि देहकाप रित्यागरूपदंडतैं पापरूपक्रोधादिक तिनसंन्यासियोंकोनिवृत्तहोतेभये ॥ और संन्यासियोंकास्वभावजोसौम्यता है तिसविषेस्थित होतेभये॥ ॥ शंका ॥ तौभी संन्यासियोंकीसौम्यता करीरोंविषे किसप्रकारआवतीभई ॥ समाधान ॥ तिनसंन्यासियोंकाजोवीर्य है सो ऊर्ध्वगतिवाला है ॥ तावीर्यकरिकैयुक्तजेसंन्यासियोंकेमस्तक हैं ॥ तिनोंतैंखर्जूरवृक्ष उत्पन्नहोतेभये ॥ और तिनमस्तकोंविषे चिरकालपर्यंत कामरूप ग्निकेक्षोभतैंरहितवीर्यकूं तिनसंन्यासियोंने धारणकऱ्याथा ॥ सो सौम्यस्वभाववान्वीर्यही खर्जूररसभावक्रमकरिकै करीरभावकूंप्राप्तहोता भया ॥ तासौम्यकरीरोंकीआहुतिकरिकै सर्वकाआत्मामैंइंद्र प्रसन्नहोवोहों ॥ औरसर्वजीवोंकूंउपकारकरणेहारी सौम्यतमवृष्टिकूं करताहुं तात्पर्ययह ॥ संन्यासीतो सौम्यहै ॥ और तिनोंकेवीर्यकापरिणामकरीर सौम्यतर है ॥ और करीरोंकापरिणामरूपवृष्टिसौम्यतम है ॥ यहाँ तरतमशब्द अधिकताकेवाचक हैं ॥ और करीरशब्द बांसकावाचकहै ॥ शंका ॥ शरीरत्यागतैंअनंतर तिनसंन्यासियोंकी कौनगतिहोती भई ॥ समाधान ॥ पूर्व ता संन्यासियोंकेआत्मविचारविषे कोईपापकर्म प्रतिबंधकथा ॥ तापापकर्मकी मुझइंद्रकेदंडकरिकै निवृत्तिहोती भई ॥ पश्चात् ते संन्यासी क्रोधादिकोंतैंरहितहोतेभये ॥ और याशरीरकूंपरित्यागकरिकै जन्मांतरकूंपावतेभये ॥ ताजन्मांतरविषे ब्रह्म विद्याकेप्रवर्तक जेव्यासभगवान् तथानारदादिऋषि हैं तिनोंकीब्रह्मविद्यारूपसंततिविषे प्राप्तहोतेभये ॥ तहाँ मैं ब्रह्महूं याप्रकारके आत्मज्ञानकरिकै तिनोंकेसंपूर्णविकार नष्टहोतेभये ॥ और मुझइंद्रके साथ तेसंन्यासी अभेदभावकूं प्राप्तहोतेभये ॥ हे प्रतर्दन इसप्रकार विश्वरूपपुरोहितकूं तथा वरशापदेणेविषेसमर्थ और कर्मकांड विषेतत्पर ऐसे जे ब्राह्मणसंन्यासीथेतिनसंन्यासियोंकूं मैं इंद्र हननकरताभया ॥ तौभी आत्मज्ञानकेप्रभावतैं मेरेकूं किंचितमात्रभी पापकास्पर्शनहींहोताभया ॥ हे प्रतर्दन केवल विश्वरूपपुरोहितकूं तथा संन्यासियोंकूं हमनैं नहींहननकऱ्या ॥ किंतु ॥ अन्यभीकोटिदैत्यकूं हमनैं हननकऱ्या है॥ कैसेते दैत्यथे ॥ वेदोंकूंजानणेहारेथे ॥ और

मायाकाआचार्यजोमयदैत्यहै तिसकूंभी मोहकरणेहारियां ऐसी जोमाया हैं तिनमायावोंकरिकैयुक्तथे ॥ और हमारेसमान जिनोंकाब लथा ॥ कोई हमारेतैंभीअधिकबलवान्थे ॥ और सूर्यकीन्यांई जिनोंकातेजथा ॥ ऐसे दैत्योंके अनंत प्रकारकी मायाकूं तथाविचित्रबलकूं तिरस्कारकरिकै जिसआत्माज्ञानतैंप्रभावतैं तिनदैत्योंकूं मइंद्र हननकरताभया ॥ तहाँ स्वर्गलोकविषे प्रह्लादकेसंबंधीदैत्योंकूं मैं हननकरताभया और अंतरिक्षलोकविषे पुलोमाकेपुत्रोंकूं मैंहननकरताभया ॥ और भूमिलोकविषे कालखंज्यनामादैत्योंकूं मैं हनन करताभया ॥ हे प्रतर्दन इसप्रकार विश्वरूपपुरोहितकूं तथाकोटीसंन्यासियोंकूं तथाकोटीदैत्योंकूं मैंइंद्र हननकरताभया ॥ परंतु तिन ब्राह्मणोंकेशापकरिकै तथातिनदैत्योंकेशस्त्रोंकरिकै जो आत्मज्ञानकेप्रभावतैं मेरारोममात्रभी छेदननहींहोताभया ॥ और लोकविषे मेरीअपकीर्तिभीनहींहोतीभई ॥ उलटा लोकविषे हमारी याप्रकारकीकीर्तिहोतीभई ॥ जोलोकवेदकरिकैनिंदित अनंतरकर्मोंकूं इंद्र करता भया ॥ तौभी आत्मज्ञानकेप्रभावतैं ताकूं किंचित्मात्रभी पापकास्पर्शनहींहोताभया याप्रकारकीकीर्तिहमारीहोतीभई ॥ हेप्रतर्दन निवृ त्तिकेउपायतैंरहित जेब्राह्मणसंन्यासियोंकेशापहैं ॥ तथा निवृत्तिकेउपायतैंरहित दैत्योंके ब्रह्मअस्त्रतैं आदिलेकेजितनेकअस्त्रहैं ॥ तथा मयदैत्यकूंभीमोहितकरणेहारियां जितनीकदैत्योंकीमायाहैं ॥ तथा मेरेतैंअधिकबलवान् दैत्योंकरिकै चलायेजेशस्त्रहैं ॥ कैसे हैं तेशस्त्र मृत्यु केमुखसमानहैं ॥ और सुमेरुपर्वतकूंभीभेदनकरणेहारे हैं ॥ याप्रकारके ब्राह्मणोंकेशाप तथादैत्योंकेअस्त्र तथादैत्योंकीमाया तथादैत्योंके शस्त्र यहसंपूर्ण जिसआत्मज्ञानकेप्रभावतैं मेरेलोमकूंभी नहींछेदनकरतेभये ॥ हे प्रतर्दन जैसे मुझ इंद्रकूं आत्मज्ञानकेप्रभावतैं निषिद्ध कर्मोंकेकरणेकरिकैभी पापकास्पर्शनहींहोताभया ॥ तैसे दूसराभीजोकोईदेवता अथवामनुष्य याआत्मज्ञानकूंसंपादनकरैगा ॥ तिसकूंभी आत्मज्ञानकेप्रभावतैं निषिद्धकर्मोंकेकरणेकरिकै पापकास्पर्शनहींहोवैगा ॥ पापकेउत्पत्तिकरणेहारेनिषिद्धकर्मोंकूं अब संक्षपतैंनिरूपण करैं है ॥ आपणेमातापिताकेनाशकरणेतैं ॥ जीवोंकूं पापकीउत्पत्तिहोवै है ॥ और स्वर्णकीचोरीतैं पापकीउत्पत्तिहोवै है ॥ और वेदपाठी ब्राह्मणकेमारणेतैं पापकीउत्पत्तिहोवै है ॥ और गर्भकेनाशकरणेतैं पापकीउत्पत्तिहोवै है ॥ और ब्रह्मवेत्तामहात्माकेमारणेतैं पापकी उत्प

त्तिहोवै है ॥ और आपणेमित्रकेमारणेतैं पापकीउत्पत्तिहोवै है ॥ और ब्राह्मणकूं अथवा ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य या तीनवर्णोंकूं मदिराकेपाने करणेतैं पापकीउत्पत्तिहोवै है ॥ और आपणीमाताकेसाथमैथुनतैं पापकीउत्पत्तिहोवै है ॥ तिनोंविषेभी स्वर्णकी चोरी करणेहारापुरुष ॥ तथा ब्रह्महत्याकोकरणेहारापुरुष ॥ तथा मदिरापानकरणेहारापुरुष ॥ तथा गुरुकीस्त्रीकेसाथमैथुनकरणेहारापुरुष ॥ यहचारों कर्मक रिकैचंडालहैं ॥ या कारणतैं पतितहैं ॥ यहचारोंकेसाथ एकवर्षपर्यंत जोकोईपुरुष स्नानपानादिकसंबंधकूंकरता है ॥ सोभी तिनचारोंके समानहींपापकूं प्राप्तहोवै है ॥ यहपंच महापातक हैं ॥ इसतैंआदिलैकेजितनेपापकर्म शास्त्रविषेकहे हैं ॥ तिनसंपूर्णपापकर्मोंकरिकै तत्त्व वेत्ताका लोममात्रभी छेदननहीं होता ॥ हेप्रतर्दन जिसपुरुषकूं मुझ अद्वितीयआत्माकाज्ञानभया है ॥ सोपुरुष जो कदाचित् पापकर्मकरणे कीइच्छाभीकरताहै ॥ तौभी तापापकर्मकरिकै तिसकेमुखकीकांति निवृत्तनहीं होती ॥ और जो आत्मज्ञानतैंरहितपुरुष है तिसकी पापकर्मतैं मुखकीकांति निवृत्तहोइजावै है ॥ यातैं यालोकविषे ब्रह्मविद्याके समान कोईभीवस्तुनहीं ॥ ब्रह्मविद्याहीं सर्वतैंउत्कृष्ट है ॥ और हेप्रतर्दन याब्रह्मविद्याका कैसाप्रभाव है ॥ तत्त्ववेत्तापुरुष पापकर्मकीइच्छाकरै है अथवा अनंतपापकर्मोंकूं करै है ॥ तौभी तिसतत्त्व वेत्तापुरुषकी सर्वात्मदृष्टिकूंदेखिकरिकै बांधव तथाराजा तिसतत्त्ववेत्तापुरुषकूं पंक्तितैंबाहरनहींकरते ॥ और शरीरका दंडनहीं करते और वाणीकरिकै तिसतत्त्ववेत्ताकूं शिक्षाभीनहींकरते ॥ उलटा ताके आत्मज्ञानकेप्रभावकूं देखिकरिकै विस्मयकूंप्राप्तहुवे बांधव तथा राजाआदिक तातत्त्ववेत्ताकूं अधिकतैं अधिक आदरकरैं हैं ॥ काहेतैं संपूर्णविश्वकूं आत्मस्वरूपकरिकैजानणेहाराजोतत्त्ववेत्तापु रुषहै ॥ तिसतैंभिन्न कोईराजाआदिकहैंनहीं ॥ किंतु संपूर्णराजादिकोंका तत्त्ववेत्तापुरुष आत्माहै ॥ और आपणेआत्माकेअनिष्टकूं कोईभीप्राणीकरतानहीं ॥ यातैं तत्त्ववेत्तापुरुषका बांधव तथाराजादिक कोईभी निरादरनहींकरता ॥ किंतु संपूर्ण ताका आदरकरैं हैं ॥ यातैं अद्वितीयआत्माकाज्ञानहीं पुरुषोंकूं हिततमहै ॥ इसप्रकार इंद्रकेमुखतैं हिततमआत्मज्ञानकूंश्रवणकरिकै सो प्रतर्दन राजा आपणेअभिप्रायकेबोधनकरणेहारियां जेशरीरकीचेष्टाहैं तिनचेष्टावोंकरिकै इंद्रसैंपूछताभया ॥ अब ताचेष्टावोंकूंदिखावैं हैं ॥ इंद्रकेवचनों

कूंश्रवणकरिकै ताप्रतर्दनराजाकामुख विकासमानहोताभया ॥ और नेत्रभी कमलकीन्यांई प्रफुल्लितहोतेभये ॥ परंतु तुमारेवचनों करिकै मैंकृतार्थभयाहूं याप्रकारकेवचनकूं तथा विरोधयुक्ततुमारेवचनतैं हमारेकूंसंशयउत्पन्नभया है ॥ याप्रकारकेवचनकूं सोप्रतर्दनराजा इंद्रकेप्रति न कहताभया किंतु मौनहोताभया ॥ इसप्रकारकीचेष्टाकरिकै प्रतर्दनराजानें आपणेजडताकूंसूचनकऱ्या ॥ इष्टअर्थ और अनिष्टअर्थकेदर्शनकरिकै उत्पन्नभयाजो कर्तव्यअर्थकाअनिश्चय ताकानाम जडता है ॥ तहाँ इंद्रकूंमैंने वरकरिकैवशकऱ्या है ॥ यातैं हिततमआत्मज्ञानकूं अवश्यहमारेताईंदेवैगा ॥ याप्रकारका इष्ट अर्थकादर्शन प्रतर्दनराजाकूं होताभया ॥ और मेरेकूंतुम जानो यहवचन जोइंद्रनैंकह्या ॥ यहाँ मेरेकूं याअस्मदशब्दके अनेकअर्थ संभवहोइसकते हैं ॥ जोमैं किंचित्मात्रकथनकरोंगा ॥ तौ मेरीबुद्धिकीमंदता सिद्धहोवैगी ॥ याप्रकारके अनिष्टअर्थकादर्शन प्रतर्दनराजाकूं होताभया ॥ इसप्रकार जडभावकूंप्राप्तहुए प्रतर्दनराजाकूंदेखिकरिकै सर्वज्ञइंद्र आपणेमनकरिकै याप्रकारकाविचारकरताभया ॥ यहप्रतर्दनराजाआपणेमनविषे याप्रकारकाविचाकरता है ॥ आत्मज्ञानकी स्तुतिकरणेहाराजोयहइंद्र है तिसनैं आत्मज्ञानविषेहमारेविश्वासकरावणेवासतैं आपणेकूंपापकर्मोंका अस्पर्शदिखाया ॥ तौ भी इंद्रकरिकैउप देशकऱ्याजोहिततमज्ञानताज्ञानकेविषयाविषे हमारेकूंसंशयहोवै है ॥ काहे तैं मेरेकूंतूंजान यहजोपूर्वहमारेताईं ॥ इंद्रनैं उपदेशक ऱ्या ॥ यहाँ मेरेकूं याअस्मदशब्दकरिकै तथाज्ञानकरिकै कौनअर्थकूं इंद्रनैं बोधनकऱ्या ॥ सहस्रजिसकेनेत्र हैं और वज्रजिसकेहस्त विषे है औरसंपूर्णदेवता जिसकेपादोंकीसेवाकरैं हैं औरशचीकापति ऐसाजोस्थूलशरीरहमारेसन्मुखस्थित है सो अस्मदशब्दकाअर्थ है ॥ अथवा या शरीरतैंभिन्न औरशरीरके अंतर अन्यकोईआत्मा ॥ अर्थ है ॥ सोशरीरकेअंतरवर्तमानआत्माभी कौनहै ॥ मेरेकूंतुमजाणो याश ब्दकावक्ताजीवात्मा है ॥ अथवा साक्षीआत्माहै ॥ तात्पर्य यह ॥ मेरेकूंतुमजाणो यहजोवचन इंद्रनैंकह्या ॥ यहाँ मेरेकूंयाअस्मदशब्दका क्याअर्थहै ॥ स्थूलशरीरअर्थ है अथवाजीवात्माअर्थ है॥अथवासाक्षीचेतनअर्थ है ॥ तहाँ स्थूलशरीरविषे तथाजीवविषे तौ मेरेकूंतुमजाणो याइंद्रकेवाक्यकीविपयता संभवैनहीं ॥ काहेतैं स्थूलशरीर तथाजीव दोनों परिच्छिन्नहैं ॥ तापरिच्छिन्नकेज्ञानतैं अपरिच्छिन्नफलकीप्राप्ति

होवैनहीं ॥ और तीसराजोसाक्षीकूटस्थ है तिसविषेभी मेरेकूंतुमजाणो याइंद्रकेवचनकी तथाज्ञानकी विषयतासंभवैनहीं ॥ काहेतैं सोसाक्षी चेतन मनवाणीकाअगोचर है॥ याप्रकारकेसंशयकूं जोमैं प्रगटकरोंगा ॥ तौ मेरेबुद्धिकीमंदतासिद्धहोवैगी॥ और जोयासंशयकूंनहींप्रगटकरोंगा ॥ तौ हमारेकूं संशयविपर्ययतैंरहित आत्मज्ञान नहींहोवैगा ॥ इसप्रकारकीचिंताकरिकै व्याकुलभयाहैमनजिसका ऐसाजोयहप्रतर्दनराजा है ॥ सोमुझइन्द्रकेप्रति किंचित्मात्रवचनकूं नहींकहता ॥ काहेतैं आपणेबुद्धिकीन्यूनतासंपादकक्रियाविषे बुद्धिमानपुरुषोंकीरुचि होवैनहीं ॥ किंवा ॥ प्रतर्दनराजानैं याअभिप्रायकरिकैभी मौनकूंधारणकऱ्याहै ॥ हममनुष्य आपणेहिततमकूंनहीं जाणते ॥ यातैं तुमआपहीविचारिकरिकै हिततमवरकूंदेवो ॥ याप्रकार जभीहमनै इंद्रकेप्रतिकह्या ॥ तभी इंद्र आपहींहमारेवासतैं हिततमवरकूंकथनकरताभया ॥ यातैं इंद्रकूं वरप्रदानकरिकै हमनैं आपणेवशकऱ्या है ॥ जोमैं नहींभीपूछोंगा ॥ तौभी आपणीप्रतिज्ञाकेसत्यकरणेवासतै आपहींइंद्र हमारेसंशयकीनिवृत्तिकरैगा ॥ याप्रकारका मनविषेविचारकरिकै यहप्रतर्दनराजा हमारैंपूछतानहीं ॥ और आत्मज्ञानकीइसकूं प्राप्ति भईनहीं ॥ याकारणतैं मैंकृतार्थहुआहूं ऐसावचनभी यहप्रतर्दनराजा कहतानहीं ॥ यातैं आपणीप्रतिज्ञाकेसत्यकरणेवासतै याप्रतर्दनराजाकूं हिततमआत्मज्ञानविषे जबपर्यंत संशयका अभावहोवै तबपर्यंत विनाहींपूछेतैं इसकेताईं उपदेशकरणायोग्यहै॥ याप्रकारकाविचारकरिकै पुनःइंद्र ऐसाविचारकरताभया॥ यहआनंदस्वरूपआत्मा अलौकिकपदार्थहै॥ और मनवाणीकाअगोचरहै॥ यातैं या आत्माकेसाक्षात्कहणेविषे हमसमर्थनहीं ॥ और यहप्रतर्दनराजाभी साक्षात् आत्माकेजानणेविषे समर्थनहीं ॥ किंतु उपाधिद्वारा आत्माकेकथनविषे हमसमर्थहैं ॥ और यहप्रतर्दनराजाभी उपाधिद्वारा आत्माकेजानणेविषे समर्थहै ॥ यातैं किसीउपाधिकूंद्वारकरिकै प्रतर्दनराजाकेताईं आत्माका मैंउपदेशकरों ॥ तिनउपाधियोंविषेभी स्थूलशरीरतथाइंद्रियादिकउपाधियोंकीअपेक्षाकरिकै क्रियाशक्तिवालाप्राण औरज्ञानशक्तिवालीबुद्धि यहदोनोंउपाधियाँ आत्माकेसमीपहैं ॥ यातैंलोकप्रसिद्धप्राणकूं तथाप्रज्ञारूपउपाधिकूं अंगीकारकरिकै प्रतर्दनराजाकेताईं अलौकिकआत्माकाहम कथनकरैं॥ अब संपूर्णउपाधियोंतैं प्राणऔरप्रज्ञारूपउपाधिविषे अधिकताकूंदिखावै हैं ॥ प्राणऔरप्रज्ञाकेविद्यमानहुए ॥१७॥

देहइंद्रियादिकोंकीस्थितिहोवै है॥ और प्राणप्रज्ञाकेअभावहुवे देहइंद्रियादिकोंकीस्थितिहोवैनहीं॥ याअन्वयव्यतिरेककरिकै संपूर्णशरीरादिकउपाधियोंकीसाधकता प्राणप्रज्ञाविषेसिद्धहोवै है॥ यातैंप्राणप्रज्ञाही सर्वउपाधियोंतैंउत्कृष्ट हैं॥ यहाँ यहतात्पर्य है॥ जिसउपाधिकेकथनकरिकै मुमुक्षुकूं सुखनहीं आत्माबोधहोवै और लाघवहोवै ॥ तिसीउपाधिकूं अंगीकारकरिकै तत्त्ववेत्तापुरुषनैं आत्माकाउपदेशकरणा ॥ याप्रकारकानियमभीप्राणप्रज्ञाविषेहीघटै है॥ काहेतैंजिसकेविद्यमानहुएदेहादिकोंकीस्थिति॥ औरजिसकेअविद्यमानहुएदेहादिकोंकाअभावयाअन्वयव्यतिरेककरिकै देहादिकसंघातकीसाधकता आत्माकालक्षण है ॥ सोलक्षण प्राणप्रज्ञाविषेभीसंभवै है ॥ यातैं प्राणप्रज्ञा आत्मा है॥ याप्रकार प्राणप्रज्ञाविषे जभी मुमुक्षुकीआत्मबुद्धिहोवै है तभी प्राणप्रज्ञाकेसाक्षात्प्रवर्तकशुद्धआत्माविषेभी सुखनहीं मुमुक्षुकीबुद्धि होवै है ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे अत्यंतसूक्ष्मअरुंधतीतारेकूं जानणेहारापुरुष अन्याकिसीपुरुषकूं जभी अरुंधतीदिखावै है ॥ तभी अरुंधतीकेसमीपवर्ती जेस्थूलतारे हैं तिनोंकूं प्रथम अरुंधतीरूपकरिकैदिखावै है ॥ जभी देखणेहारेपुरुषकीदृष्टि तिनस्थूलतारोंविषेठहरै है ॥ तभी क्रमतैंसाक्षात्अरुंधतीविषेभी ताकीदृष्टिपहुंचै है ॥ तैसे शुद्धआत्माकेजनावणेवासतै प्राणप्रज्ञाकाही आत्मरूपकरिकै प्रथमउपदेश कऱ्याचाहिये ॥ किंवा ॥ प्राणप्रज्ञाशब्दकेलक्षणावृत्तिकरिकै आत्माकाबोधमानणेमैं प्राणप्रज्ञाकाआत्मकेसाथ साक्षात्संबंधसंभवै है ॥ यातैं लाघवभी है ॥ और शरीरादिकउपाधिकूं अंगीकारकरिकै जो आत्माबोधनकरिये ॥ तौ प्राणप्रज्ञाद्वारा आत्माकाबोधहोवै है साक्षात्बोधहोवै नहीं ॥ और शरीरादिकपदोंकेलक्षणावृत्तिकरिकै आत्माकाबोधमानणेमैं शरीरादिकोंकाआत्माकेसाथि प्राणप्रज्ञाद्वारा परंपरासंबंधसंभवै है ॥ साक्षात्संबंधसंभवैनहीं ॥ सोपरंपरासंबंध गौरवरूपदूषणकरिकैयुक्त है ॥ यातैं प्राणप्रज्ञारूपउपाधिकूं अंगीकारकरिकै आत्माकेबोधनविषेही सुगमताऔरलाघवता है ॥ शंका ॥ पूर्वउक्तअन्वयव्यतिरेककरिकै देहइंद्रियादिकोंकीसाधकतारूप आत्माकालक्षण प्राणप्रज्ञाविषे संभवैनहीं ॥ काहेतैं प्राणप्रज्ञाका परस्पर व्यतिरेक है तात्पर्ययह॥ प्राणकूंछोडिकैप्रज्ञार है है॥ और प्रज्ञाकूंछोडिकैप्राणरहै है ॥ समाधान ॥ क्रियाशक्तिवालाप्राण प्रज्ञातौंविना रहै नहीं ॥ तथा ज्ञानशक्तिवालीप्रज्ञाभी प्राणतौंविना रहै नहीं ॥ जहाँ प्रज्ञाकाअभावहोवै है ॥ तहाँ प्राणकाभीअभाव

होवै है ॥ जैसे स्थावरवृक्षोंविषे प्रज्ञास्वरूपबुद्धि प्रत्यक्षदीखैनहीं ॥ यातैं प्राणभी तिनवृक्षोंविषेदीखैनहीं ॥ शंका ॥ जैसे शरीरविषे शस्त्रकरिकैघावहोवै है ॥ सोघाव चिरकालपीछेमिलिजावै है ॥ तैसे वृक्षविषे कुठारादिकोंकरिकैकऱ्याजोघाव सोभी चिरकालपीछेमिलिजावै है ॥ और जैसे शरीरकीवृद्धिहोवै है॥तैसे वृक्षोंकीभीवृद्धिहोवै है ॥ यातैं घावकामेलनरूपहेतुतैं तथावृद्धिरूपहेतुतैं वृक्षोंविषे प्राणकाअनुमानसंभवै है ॥ यातैं प्रज्ञारूपबुद्धिकूंछोडिकेभी प्राण वृक्षोंविषेरहै है ॥ समाधान॥ जैसे घावकेमेलनरूपहेतुतैं तथावृद्धिरूपहेतुतैं वृक्षोंविषे प्राणकाअनुमानसंभवै है ॥ तैसे लताकाऊर्द्धदेशविषेगमनरूपहेतुतैं तिनोंकेप्रज्ञारूपबुद्धिकाभी अनुमानहोइसकैहै ॥ वृक्षोंविषे सूक्ष्मरूप करिकै यद्यपि प्राणप्रज्ञा है ॥ तथापि स्पष्टरूपकरिकैनहीं ॥ शंका ॥जहाँ प्रज्ञाकाअभावहोवै है॥तहाँ प्राणकाभीअभावहोवैहै॥ यह पूर्वआपनैं कह्या॥सोसंभवैनहीं॥काहेतैं सुषुप्तिविषे प्रज्ञारूपबुद्धिकेअभावहूवेभी प्राणकीविद्यमानतादीखैहै॥समाधान॥सुषुप्तिअवस्थाविषे प्रज्ञाका अत्यंताभावनहीं॥किंतु कारणस्वरूपहोइकेबुद्धिसुषुप्तिअवस्थाविषेरहैहै॥ यातैंजहाँ प्रज्ञाकाअभावहोवैहै ॥ तहाँ प्राणकाअभावभीअवश्यहोवैहै यहसिद्धभया॥ औरजहाँ प्राणकाअभावहोवैहै॥तहाँ प्रज्ञाकाअभावभीअवश्यहोवैहै॥जैसे घटादिकोंविषे प्राणकाअभावहै॥ यातैंतिनोंविषे प्रज्ञाकाभीअभावहै॥यातैंप्राणऔरप्रज्ञाएकदूसरेकूंछोडिकैरहैंनहींयहसिद्धभया॥तेप्राणऔरप्रज्ञादोनोंआत्मज्ञानकेहेतुहैं॥ काहेतैंजैसेस्तंभादिकजडहोणेतैं आपणेप्रतीतिविषे दीपकादिकप्रकाशकीअपेक्षाकरै हैं॥तैसेप्राण और प्रज्ञाभी जडहोणेतैं आपणीप्रतीतिविषे किसीदूसरेप्रकाशकी अपेक्षाकरै है॥सो प्राणप्रज्ञाकेप्रकाशकरणेहारा कूटस्थआत्माहै॥याप्रकारकीयुक्तिकरिकै प्राणप्रज्ञाकूं आत्मज्ञानकीकारणताहै॥यहाँ यह अभिप्रायहै ॥ प्राणशब्द और प्रज्ञाशब्द शक्तिवृत्तिकरिकैतौआत्माकेबोधकहैंनहीं॥काहेतैं शक्तिवृत्तिकरिकै सत्यादिकपदभी आत्माकूंबोधनकरैनहीं ॥ किंतु ॥ लक्षणावृत्तिकरिकै प्राणशब्द और प्रज्ञाशब्द आत्माकेबोधकहैं ॥ सोलक्षणा शक्यअर्थकीअनुपपत्तितैंविनाहोवैनहीं॥ जैसे गंगाविषेग्रामहै यावाक्यविषे गंगापदकाशक्यअर्थ जलकाप्रवाहहै ॥ ताप्रवाहविषे ग्रामकीअधिकरणता अनुपपन्नहै॥यातैं गंगापदकी तीरविषेलक्षणाहोवैहै॥तैसे यहाँप्रसंगविषेभी प्राणमैंहूं और प्रज्ञामैंहूं यहवचन इंद्रनैकह्या ॥ तहाँ शरीरकेअंतरसंचारीवायु प्राणशब्द

काशक्यअर्थ है ॥ और अंतःकरणकीवृत्तिविषेबुद्धि प्रज्ञाशब्दकाशक्यअर्थ है ॥ तादोनोंशक्यअर्थोंविषे आत्मतासंभवैनहीं ॥ यातैं प्राणशब्दकी तथाप्रज्ञाशब्दकी प्राणप्रज्ञाकेप्रवर्तकचेतनआत्माविषे लक्षणासंभवै है ॥ याअर्थकेनिरूपणकरणेवासतै प्रथम प्राणप्रज्ञाकेशब्दकेशक्यअर्थकूं तथाशक्य अर्थकेअनुपपत्तिकूं दिखावै हैं॥तहाँ प्राण याशब्दविषेदोपद हैं॥एकतौ प्रपद है और दूसरा अनपद है॥तहाँ प्रपदका अतिशय अर्थ है ॥ और अनपदका चलनरूपक्रियाअर्थ है ॥ तैसे प्रज्ञा याशब्दविषेभीदोपद हैं ॥ एकतौ प्रपद है और दूसरा ज्ञा पद है॥ तहाँ प्र पदका अतिशयअर्थ है ॥ और ज्ञा पदका ज्ञानअर्थ है तिनदोनोंकामेलिकरिकै यहअर्थसिद्धहोवै है ॥ अतिशयकरिकैजोचलायमानहोवै सो प्राणकहिये है ॥ और अतिशयकरिकैजोजाणै सो बुद्धिकहिये है ॥ शरीरकेअंतास्थितवायु अतिशयकरिकै चलायमानहोवै है ॥ यातैं ताकूं प्राणकहैं हैं॥ और अंतःकरणकीनिवृत्तिविशेषबुद्धि घटपटादिकपदार्थोंकूं अतिशयकरिकैजानै है॥यातैं ताकूं प्रज्ञाकहैं हैं॥ और वास्तवतैंविचारकरिये तौ प्राणविषेचलनाबनैनहीं ॥ काहेतैं प्राणजड हैं ॥ जडविषे स्वतंत्रक्रियाहोवैनहीं जैसे रथादिक जडपदार्थोंविषे चेतनअश्वादिकोंतैं विना किसीकालविषे तथाकिसीदेशविषे स्वतंत्र चलनरूप क्रियाहोवैनहीं ॥ तैसे जडप्राणविषेभी चेतनतैं विना स्वतंत्र चलनरूपक्रियासंभवैनहीं याप्रकार बुद्धिविषेभी घटपटादिकपदार्थोंकेजानणेसामर्थ्य संभवैनहीं ॥ काहेतैं प्राणकी न्याईं बुद्धिभीजड है॥जडवस्तु आपणेकूं तथाअन्यकिसीपदार्थोंकूं जानैनहीं॥तात्पर्य हैं॥जैसे प्रथम मूलधन किसीकेपास जभीहोवै है॥तभीताधनकेवृद्धिकीभी संभावनाहोवै है ॥ मूलधनतैंविना धनकीवृद्धि संभवैनहीं ॥ तैसे सामान्यतैं जभी प्राणविषे चलनरूपक्रियाहोवै है ॥ और बुद्धिविषे ज्ञानसंभवै ॥ तभी ताक्रियाविषे तथाज्ञानविषे अतिशयतारूपविशेषता संभवै ॥ सो जडप्राणविषे चलनरूपक्रियासंभवैनहीं ॥ तथा बुद्धिविषे ज्ञानसंभवैनहीं ॥ यातैं जिसचेतनआत्माकेसमीपताकरिकै शरीरइंद्रियादिकोंविषे तथा अंतरवायुविषे चलनरूपक्रिया होवै है ॥ सोचेतनआत्माहीं प्राणशब्दका लक्ष्यअर्थ है ॥ याप्रकार प्रज्ञाशब्दकालक्ष्यअर्थभी चेतनआत्माहीं है ॥ काहेतैं चेतनआत्माही संपूर्णजडपदार्थोंकूं प्राकाशै है ॥ और स्वप्रकाशतारूपकरिकै भेदरहितआपणेस्वरूपकूंभी चेतनआत्मा प्रकाशकरै है ॥ अन्यकोईपदार्थ आत्माकूं

प्रकाशकरेनहीं ॥ ऐसा स्वप्रकाशआनंदस्वरूपमैंआत्माहीं प्राणप्रज्ञाशब्दकाअर्थहूं ॥ मेरेतैंभिन्नकोईवस्तु प्राणप्रज्ञा शब्दका अर्थ संभवै नहीं ॥ याप्रकारका आपणेमनाविषे विचारकरिकै सोदेवराजइंद्र प्रतर्दनराजाकूं कहताभया ॥ हेप्रर्दनराजा नानाप्रकारकी क्रियाकाकारण मैंहूं ॥ यातैं मैं प्राणस्वरूपहूं ॥ और भेदतैंरहितस्वयंप्रकाशमैंहूं ॥ यातैं मैंही प्रज्ञास्वरूपहूं ॥ और संपूर्णप्राणियोंकेजीवनका कारणमैंहूं ॥ यातैं मैंही आयुष्पूहूं ॥ और मैं आपजन्ममरणतैंरहितहूं ॥ यातैं मैंहीं अमृतस्वरूपहूं ॥ हेप्रतर्दन प्राण प्रज्ञा आयुष् अमृत ऐसाजो आप णास्वरूप हमनैं तुमारेताईं कथनकऱ्या है ॥ तिसस्वरूपकूं तुम वारंवारविचारकरो ॥ और अनात्माकार विजातीयवृत्तियोंकापरित्यागक रिकै तास्वरूपाकारसजातीयवृत्तियोंकरिकै मेरेस्वरूपकूं साक्षात्कारकरो ॥ दृष्टांत ॥ जैसे यहघट है याप्रकारकेअनंतज्ञानोंकरिकै एकघ टपदार्थ विषयकरीता है ॥ हेप्रतर्दन जैसे पुरुषतैं दंडभिन्नहोवै है ॥ तैसे आयुष् और अमृत यादोनोंविशेषणोंकूं प्राणतैंभिन्ननहीं तुमनैंजा नणा ॥ किंतु आयुष् और अमृत यादोनोंविशेषणोंकूं प्राणतैंअभिन्न जानणा ॥ जैसे आकाशकूं नभकहैं हैं॥और नभकूं आकाशकहैं हैं ॥ आकाशपद औरनभपदकेअर्थकाभेदनहीं॥तैसेआयुष्अमृतपदकेअर्थका और प्राणपदके अर्थका भेदनहीं॥किंतु आयुष् और अमृत प्राण स्वरूप है ॥ और प्राण आयुष् अमृतस्वरूप हैं॥शंका॥जो आयुष् अमृत प्राण यातीनोंपदोंका एकहीअर्थमानोगे ॥ तो पुनरुक्तिदोषकीप्रा प्तिहोवैगी ॥ एकअर्थकेबोधकअनेकपदोंकेउच्चारणकानाम पुनरुक्ति है ॥ जहाँ पुनरुक्तिदोषहोवै है॥तहाँ एकपदकूंहीसार्थकताहोवै है॥दूसरा पद व्यर्थहोवै हैं॥समाधान॥जैसे सत्य ज्ञान आनंद यहतीनपद एकही आत्माके बोधक हैं॥ परंतु तिनशब्दोंकेप्रवृत्तिकानिमित्त भिन्नभिन्न है यातैं पुनरुक्तिदोषहोवैनहीं ॥ तैसे यहाँ भीआयुष् अमृत प्राण यहतीनपद एकहीअर्थबोधक हैं परंतु तिनोंकेप्रवृत्तिकानिमित्त भिन्न भिन्न हैं ॥ यातैं पुनरुक्तिदोषहोवैनहीं ॥ अब या अर्थकूंहीं स्पष्टकरिकैंदिखावैं हैं ॥ लोकोंकेजीवनकाकारणजोहोवै सो आयुष्कहिये है ॥ सोजीवनकाकारणप्राण है ॥ काहेतैं शरीरविषे जबपर्यंत प्राणर है है ॥ तबपर्यंत ताविषे जीवनव्यवहारहोवै है॥ प्राणतैंविना जीवनव्यवहार होवैनहीं ॥ यानिमित्तकूंलैके प्राणकूं आयुष्कह्या है ॥ और शरीरत्यागतैं अनंतर स्वर्गरूपअमृतकूं तथाशरीरकेविद्यमानहुए मोक्षरूप ॥ १९

अमृतकूंप्राणकरिकैंही जीव प्राप्तहोवैहैं ॥ यानिमित्तकूंलैके प्राणकूं अमृतकह्याहै ॥ सो आयुष्अमृतस्वरूपप्राण मैंआत्माहूं ॥किंवा॥ जैसेप्राण स्वरूप मैंआत्माहूं ॥ तैसे प्रज्ञास्वरूपभी मैंआत्माहूं ॥ काहेतैं ज्ञानशक्तिरूपप्रज्ञाकरिकैंही आकाशादिकव्यावहारिकप्रपंचकूं औरस्वप्नादि कप्रातिभासिकपदार्थोंकूंमेंआत्माजानोंहूं॥ हेप्रतर्दनजोपुरुषप्राणस्वरूपमैंआत्माकूं आयुष्रूपकरिकैउपासनाकरै हैं सोपुरुष१०० शतवर्षपर्य तजीवै है और जोपुरुषप्राणस्वरूपमैंआत्माकूं अमृतरूपकरिकैउपासनाकरै है ॥ सोपुरुष अक्षयस्वर्गकूंप्राप्तहोवै है ॥ और जोपुरुष प्राण स्वरूपमुझआत्माकूं आयुष् अमृत दोनोंरूपकरिकै उपासनाकरै हैं ॥ सोपुरुष शतवर्षपर्यंतजीवन और अक्षयस्वर्गकीप्राप्ति यादोनोंफलोंकूं प्राप्तहोवै है ॥ हेप्रतर्दन जभीप्राणरूपउपाधियुक्तमुझआत्माके उपासनाकाहींऐसाफल प्राप्तहोवै है ॥ तभी प्राणरूपउपाधितैंरहित शुद्धआत्मा केज्ञानतैं पुरुषोंकूं महाफलकीप्राप्तिहोवै है याकेविषे क्याआश्चर्यहै॥इसप्रकार जभीइंद्रनैं प्राणस्वरूपआत्माकूंकह्या॥ तभीप्रतर्दनराजा ताके विषे कारणकूंपूछताभया ॥ प्रतर्दनउवाच ॥ हेभगवन् प्राणस्वरूपमैंहूं याआपकेवचनकूंश्रवणकरिकै और पूर्वउक्तमुनियोंकेवचनोंकूंस्मरण करिकै मेरेचित्तविषे याप्रकारकासंशयहोवै है ॥ तात्पर्ययह ॥ आपनै प्राणकूंहीप्रधानकह्या ॥ और मुनियोंनैं प्राणकूंप्रधानकह्यानहीं॥ यातैं किसअर्थविषे हम आत्मबुद्धिकरैं ॥ अब तामुनियोंकेवचनोंकूंदिखावैहैं ॥ हे देवराजइंद्र एककालविषे हमारीसभामैं मुनिआवतेभये ॥ तेवे दकेवेत्तामुनि किसीप्रसंगपाइके हमारेप्रति याप्रकारकावचन कहतेभये ॥ अंतरवायुकरिकैसहितसंपूर्णइंद्रियोंका प्राणशब्द वाचक है ॥ केवल अंतरवायुकावाचक प्राणशब्दनहीं ॥ काहेतैं अतिशयकरिकै आपणेव्यापारकूंजोकरै सोप्राणकहिये है ॥ यह प्राणशब्दकाअर्थ संपू र्णइंद्रियोंविषेभी घटैहै ॥ यातैं संपूर्णइंद्रियोंकूं प्राणशब्दकीअर्थता संभवै है ॥ तिनसंपूर्णप्राणोंविषे एककूं नियमकरिकैप्रधानतानहीं ॥ किंतु आपणेआपणेव्यापारविषे संपूर्णोंकूं प्रधानताहै ॥ काहेतैं वाक्इंद्रियका शब्दउच्चारण कार्य है ॥ और चक्षुइंद्रियका रूपादिकोंकादर्श नकार्य है इसप्रकार अन्यइंद्रियोंकेभी आपनेआपनेकार्य भिन्नभिन्नहैं ॥ ताकार्यकेभेदकरिकै यद्यपि इंद्रिय भिन्नभिन्नहैं तथापि आपणेआप णेकार्यविषे संपूर्णइंद्रिय एकभावकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ जैसे ग्रामविषेभिन्नभिन्नास्थित महाजनपुरुष विवाहादिककार्यकेवासतै संपूर्ण एकभावकूं

प्राप्तहोवै हैं ॥ जिसकालविषे एकइंद्रिय आपणेव्यापारविषे प्रवर्त्तहोवै है ॥ तिसकालविषे अन्यइंद्रियोंकी आपणेव्यापारविषे प्रवृत्तिहोवैनहीं ॥ यहही इंद्रियोंकीएकता है ॥ काहेतैं जिसकालविषे वाक्इंद्रिय शब्दकेउच्चारणरूपआपणेव्यापारकूंकरै है ॥ तिसकालविषे नेत्रादिकइंद्रिय आपणेआपणेव्यापारोंकूंकरैंनहीं ॥ और जिसकालविषे चक्षुइंद्रिय रूपादिकोंकादर्शनरूपव्यापारकूं उत्पन्नकरै है ॥ तिसकालविषे वाकादिकइंद्रिय आपणेव्यापारोंकूं उत्पन्नकरैंनहीं ॥ इसप्रकार सर्वइंद्रियोंविषे जानिलेणा ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे वरकूं आपणेविवाहविषे प्रधानता होवै है ॥ और तिसीवरकूं दूसरेकेविवाहविषे गौणताहोवै है ॥ यातैं नियमकरिकै वरविषे प्रधानता तथा गौणता नहीं ॥ तैसे वचनादिक व्यापारविषे वाक्इंद्रियकूं प्रधानता है ॥ और नेत्रादिकइंद्रियोंकूं गौणता है ॥ और रूपदर्शनविषे चक्षुइंद्रियकूं प्रधानता है ॥ वाकादिकइंद्रियोंकूं गौणता है ॥ इसप्रकार सर्वइंद्रियोंविषे आपणेआपणेव्यापारविषे प्रधानता अन्यइंद्रियकेव्यापारविषेगौणता जानिलेणी ॥ नियमकरिकै प्रधानता किसीइंद्रियविषेभीनहीं ॥ यातैंसंपूर्णसमान हैं ॥ और श्रुतिविषेभी वाक्आदिकसंपूर्णप्राणोंकी समानता तथाअनेकता कथनकरी है किंवा ॥ युक्तितैंविचारकरिये तौभी वाक्आदिकसंपूर्णप्राणोंकी समानताही सिद्धहोवै है ॥ विषमता सिद्धहोवैनहीं ॥ काहेतैं यहपुरुष जिस कालविषे वाक्इंद्रियकरिकै शब्दका उच्चारणकरै है ॥ तिसकालविषे चक्षुइंद्रियकरिक देखतानहीं ॥ और जिसकालविषे नेत्रकरिकैदेखता है ॥ तिसकाल विषे वाक्इंद्रियकरिकै वचनकूं उच्चारण करता नहीं इसप्रकार संपूर्णइंद्रियोंकूं आपणे आपणे व्यापारविषे प्रधानता है और अन्यइंद्रियकेव्यापारविषे गौणता है ॥ जोनियमकरिकै वाक्आदिकइंद्रियोंकूं प्रधानताहीहोवै ॥ तौ दर्शनरूपव्यापारविषे चक्षुकी न्याईं वाक्इंद्रियकूंभी प्रधानताहोणीचाहिये ॥ और दर्शनरूपव्यापारविषे वाक्इंद्रियकूं प्रधानता है नहीं ॥ किंवा ॥ जोनियमकरिकैइंद्रियोंविषे गौणताहीमानिये ॥ तौशब्दउच्चारण रूपव्यापारविषेभी वाक्इंद्रियकूं प्रधानतानहोणीचाहिये ॥ किंतु गौणताहोणीचाहिये ॥ और गौणताहोवैनहीं ॥ याप्रकार सर्वइंद्रियोंविषे प्रधानताका तथा गौणताका नियमनहीं ॥ किंवा ॥ वाक्आदिकसंपूर्णप्राणोंविषे एककाल मैंक्रियाहोवैनहीं ॥ किंतु एकइंद्रियकेव्यापारकी जभीउपरामताहोवै है तभी दूसराइंद्रिय आपणेव्यापारकूंकरै है ॥ शंका ॥ जो संपूर्ण

इंद्रिय एककालविषे आपणेआपणेव्यापारोंकूं न उत्पन्नकरतेहोवैं ॥ तौ यहलोकोंकाअनुभव व्यर्थहोवैगा ॥ वाक्इंद्रियकरिकै वचनकूंउच्चारणकरताहुआमैं चक्षुइंद्रियकरिकै रूपकूंदेखताहूं ॥ और श्रोत्रइंद्रियकरिकै शब्दकूंश्रवणकरताहूं ॥ और घ्राणइंद्रियकरिकै मैं गंधकूंग्रहणकरताहूं ॥ और त्वक्इंद्रियकरिकै मैंस्पर्शकूंजाणताहूं ॥ और रसनइंद्रियकरिकै मैंरसकूंजानताहूं ॥ और हस्त इंद्रिय करिकै मैंग्रहणकरताहूं ॥ और पादइंद्रियकरिकै मैं चलताहूं ॥ और उपस्थ इंद्रियकरिकै मैंआनंदकूंप्राप्तहोताहूं और पायुइंद्रियकरिकै मैंमलादिकोंकापरित्यागकरताहूं ॥ और प्राणकरिकै मैंश्वासादिककियाकूंकरताहूं ॥ और अहंकारकरिकै मैंअहंभावकरताहूं ॥ और मनकरिकै मैंसंकल्पविकल्पकूंकरताहूं ॥ और चित्तकरिकै सामान्यरूपतैंपदार्थोंकूं मैंजानताहूं ॥ और बुद्धिकरिक देहविषेस्थितसुखदुःखादिकपदार्थोंकूं सामान्यरूपतैं तथाविशेषरूपतैं मैंजानताहूं ॥ याप्रकारकेलोकोंकेअनुभवप्रमाणतैं संपूर्णइंद्रियोंविषे एककालमेंहीसंपूर्णव्यापार प्रतीतहोवै हैं ॥ यातैं नियमरहितप्रधानताकूंलैकै संपूर्णइंद्रियोंकूं समानकहणा संभवैनहीं ॥ समाधान ॥ एककालमैं संपूर्णइंद्रियोंके व्यापारविषे ॥ जोलोकोंकाअनुभव तुमनैंकह्या ॥ सो अनुभव भ्रमरूप है ॥ काहेतैं जिसक्षणविषे एकइंद्रियकाव्यापार होवै है ॥ तिसक्षणमैं दूसरेइंद्रियकाव्यापार होवैनहीं ॥ किंतु दूसरेक्षणविषे दूसरेइंद्रियकाव्यापार होवै है ॥ और तीसरेक्षणविषे तीसरेइंद्रियकाव्यापार होवैहै ॥ इसप्रकार क्षणक्षणतैंपछि इंद्रियोंकाव्यापार होवै है ॥ परंतु सोक्षण अतिसूक्ष्म है ॥ यातैं अविवेकीपुरुषोंकूं ऐसीभ्रांतिहोवै है ॥ जोएककाल विषे हमारेकूं संपूर्णदर्शनादिकव्यापार उत्पन्नभये हैं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे नीचेऊपरिस्थित अनेकपद्मपत्रोंका एककालविषे सूचीकारिकैभेदन होवैनहीं ॥ किंतु प्रथमक्षणविषे सूचीमैंक्रियाहोवै है ॥ और द्वितीयक्षणविषे पूर्वदेशतैंसूचीकाविभाग उत्पन्नहोवै है ॥ और तृतीयक्षणविषे सूचीकेपूर्वसंयोगकानाश होवै है ॥ और चतुर्थक्षणविषे पद्मपत्ररूपउत्तरदेशकेसाथ सूचीकासंयोग उत्पन्नहोवै है ॥ इसप्रकार एकएकपत्रकेभेदनविषे चारिचारिक्षणहोवैं है ॥ परंतु ते क्षण अतिसूक्ष्महैं ॥ यातैं अविवेकीजनोंकूं ऐसीभ्रांतिहोवै है ॥ जोएककालविषे हमने अनंत पद्मपत्रोंकूं सूचीकारिकैभेदनकऱ्या ॥ इसीप्रकार वाक् आदिकप्रमाणोंकेव्यापारभी भिन्नभिन्नकालविषे उत्पन्नहोवै हैं ॥ परंतु सोकाल अति

सूक्ष्महै ॥ यातैं एककालताकीभ्रांति अविवेकीपुरुषोंकूंहोवै है ॥ यातैं संपूर्णप्राण समानहैं ॥ हे देवराज इंद्र याप्रकार संपूर्णप्राणोंविषेसमानता मुनियोंनैं पूर्वहमारेप्रति कही थी ॥ और आपनैं वायुरूपप्राणविषेही आत्मबुद्धिकाविधानकऱ्या ॥ सो किसकारणतैंकऱ्या ॥ यह संशय हमारे चित्तविषेहोवै है ॥ याप्रकारकेप्रतर्दनराजाके वचनकूं श्रवणकरिकै प्राणकीप्रधानताविषे कारणेके कथनकी इच्छावान् हुआ इंद्र ताप्रतर्दनकेवचनकूं अंगीकारकरताभया ॥ और पुनःइंद्र कहताभया ॥ हे प्रतर्दन राजा इसलोककेजीवनकीकारणता प्राण विषे है ॥ और परलोककेजीवनकीकारणताभी प्राणविषे है ॥ अन्यकिसीवाक्आदिकइंद्रियविषे है नहीं ॥ सोजीवनकीकारणताही प्राणविषे आत्मबुद्धिकाहेतु है ॥ और सोजीवनकी कारणताहीवाक्आदिकइंद्रियोंतैं प्राणविषेविशेषताहै॥दूसरीकोईविशेषताहैनहीं ॥ और हेप्रतर्दन पूर्वतुमनैं ऋषियोंकेवचनोंकरिकै प्राणविषे प्रधानताका तथागौणताका अनियमकह्या ॥ सोअनियमभी वायुरूपमुख्यप्राणविषे संभवै नहीं ॥ किंतु वाक्आदिकइंद्रियरूपगौणप्राणोंविषेही सोअनियम संभवै है ॥ काहेतैं जबपर्यंत प्राणोंकाव्यापार शरीरविषे होतारहताहै ॥ तब पर्यंत संपूर्णवाक्आदिकइंद्रियोंविषे वचनादिरूपाक्रियाहोवै है ॥ प्राणकाव्यापार जभीउपरामहोवै है ॥ तभी किसी इंद्रियविषे कोईभी क्रियाहोवै नहीं ॥ यहवार्त्ता सर्व लोकोंके अनुभवसिद्धहै ॥ और प्राणकेविद्यमानहुए वाक् पाणि पाद पायु उपस्थ त्वक् चक्षु श्रोत्र रसन घ्राण या दशइंद्रियोंविषे एकएकइंद्रियकेव्यापारतैंविना अथवा सर्वइंद्रियकेव्यापारतैंविनाभी प्राणियोंकाजीवन देख्या है ॥ जैसे वाक्इंद्रियकेवचनरूपव्यापारतैंविना मूकप्राणी जीवैं हैं ॥ और हस्तइंद्रियकेग्रहणरूपव्यापारतैंविना कुणपपुरुष जीवैं हैं ॥ और पायुइंद्रियकेमलविसर्गरूपव्यापारतैंविना कोईरोगीप्राणी जीवैं हैं ॥ और उपस्थइंद्रियके आनंदरूपव्यापारतैंविना ब्रह्मचारी जीवैं हैं ॥ और त्वक्इंद्रियकेस्पर्शनरूपव्यापारतैंविना कुष्ठी प्राणी जीवैं हैं ॥ और चक्षुइंद्रियकेदर्शनरूपव्यापारतैंविना अंधपुरुष जीवैं हैं ॥ और श्रोत्र इंद्रियकेश्रवणरूपव्यापारतैंविना बधिरपुरुष जीवैं हैं॥और रसनइंद्रियकेरसग्रहणरूपव्यापारतैंविना रसनदोषवान् पुरुष जीवैं हैं॥और घ्राणइंद्रियकेगंधग्रहणरूपव्यापारतैंविना घ्राणदोषवालेपुरुष जीवैं हैं ॥ और अंतःकरणकेनिश्चयरूपव्यापारतैंविना जडउन्मत्तपुरुष जीवैं हैं ॥ इसप्रकार सर्वइंद्रियोंकेव्या

पारतैंविना प्राणी जीवैं हैं ॥ परंतु प्राणकेव्यापारतैंविना कोई प्राणी कहींजीवतादेख्यानहीं ॥ यातैं सर्वइंद्रियोंतैं प्राण उत्कृष्टहै॥याकारणतैं हेप्रतर्दन प्राणरूपउपाधिकूंअंगीकारकरिकै प्राणस्वरूपमैंहूं याप्रकारकाउपदेश तुमारेताईं हमनैं कऱ्या है ॥ और संपूर्णवाकादिकइंद्रियोंतैं प्राणकीउत्कृष्टताकूंअंगीकारकरिकैही श्रुतिविषे प्राणोंकीउक्थरूपकरिकै उपासनाकही है ॥ गोलककरिकै तथाइंद्रियोंकरिकै तथादेवतावोंकरिकै युक्तहुआभीयहशरीर मूर्च्छादिक अवस्थाविषे मृतककेसमानहोवै है ॥ तिसशरीरकूं आसनादिकोंतैं यहप्राण उठावै है॥ याकारणतैं प्राणकूंउक्थनामकरिकै विवेकीपुरुष उपासनाकरैं हैं ॥किंवा॥ संपूर्णवाकादिकोंतैंपूर्व कारणरूपप्राणहीं उत्थानकूंपावै है॥ याकारणतैंभीप्राणकूं उक्थकहैं हैं ॥ और जोसर्वतैंपूर्व उत्थानकूंपावै है ॥ सो श्रेष्ठहोवै है ॥ जैसे हिरण्यगर्भ सर्वतैंपूर्वउत्थानकूंपावै है यातैं श्रेष्ठहै ॥तैसेप्राणभीसर्वतैंपूर्व उत्थानकूंपावै है यातैं श्रेष्ठहै ॥ और जो श्रेष्ठहोवै है सोहिततमहोवै है ॥ यातैं प्राणस्वरूपमैंआत्माहीं हिततमहूं ॥ मेरेतैंभिन्न कोईहिततमनहीं ॥ अब प्राणकूंप्रज्ञास्वरूपतादिखावैं हैं ॥ हेप्रतर्दन जैसे नेत्रादिकज्ञानइंद्रियोंकूं तथावाकादिककर्मइंद्रियोंकूं मुख्यप्रज्ञास्वरूपतानहीं ॥ किंतु अंतःकरणकीनिवृत्तिकेसंबंधतैं नेत्रादिकइंद्रियोंकूं गौणप्रज्ञास्वरूपताहै ॥ तैसे प्राणकूं गौणप्रज्ञास्वरूपतानहीं ॥किंतु प्राणकूं मुख्यप्रज्ञास्वरूपताहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे आयुष् और अमृतका तथाप्राणका परस्परभेदनहीं ॥ किंतु प्राणही आयुष् अमृतस्वरूपहै ॥ यह पूर्वकथनकरिआये हैं ॥ तैसे प्राण और प्रज्ञाकाभी परस्परभेदनहीं ॥ किंतु प्राणहीं प्रज्ञास्वरूपहै किंवा॥लोकप्रसिद्धजोवायुरूपप्राणहै ॥ तथा अंतःकरणकीवृत्तिरूपजोप्रज्ञा है ॥ तेदोनोंभी जैसे खाटकेचारिपाद भिन्नभिन्नहुएप्रतीतहोवैं हैं ॥तैसे भिन्नभिन्नहोइकेप्रतीतहोवैंनहीं॥किंतु जीवनकालविषे सर्वजीवोंकेशरीरमैं एकठेहीं प्राणप्रज्ञा प्रतीत होवै हैं॥और मरणकालविषेभी एकठेहीं प्राणप्रज्ञालोकांतरविषेगमनकरैं हैं॥यातैं प्राण औरप्रज्ञा अभिन्नहैं जभी लोकप्रसिद्धप्राण और प्रज्ञाविषे भेदनहींसिद्धभया ॥ तभी भी प्राणप्रज्ञाशब्दके लक्ष्यअर्थ अलौकिक अद्वितीय मुझआत्माविषे किसकारणतैंभेदसिद्धहोवै ॥ किंतु किसीप्रकारकरिकै भेदसिद्धहोवैनहीं ॥ यातैं प्राणप्रज्ञास्वरूप मैं आत्माहूं ॥ किंवा ॥ अन्वयव्यतिरेककरिकैभी प्राणकूंहीं आत्मतासिद्धहोवै है ॥ काहेतैं सुषुप्तिअवस्थाविषे तथामरणअवस्था

विषे प्राण विद्यमानहै ॥ यातैं प्राणका सुषुप्तिमरणविषेअन्वयहै ॥ और वाकादिकइंद्रियोंका सुषुप्तिअवस्थाविषे तथा मरण अवस्था विषे लयहोवै है ॥ यातैं तिनवाकादिकोंका तहाँव्यतिरेकहै ॥ या प्रकारका अन्वयव्यतिरेकेही प्राणकी आत्मरूपता सिद्धकरै है ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकैदिखावैं हैं ॥ जिससुषुप्तिअवस्थाविषे स्थूलसूक्ष्मशरीरकाअभिमानी यहजीवात्मा शयनकूंप्राप्तहुआ किंचित्मात्रभी स्वप्नपदार्थोंकूं नहीं देखता ॥ तिससुषुप्तिअवस्थाविषे यहजीवात्मा प्राणउपहितपरमात्माकेसाथ अभेदभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ यद्यपि जाग्रत् स्वप्नअवस्थाविषेभी अभेदहै ॥ तथापि जाग्रत् और स्वप्नअवस्थाविषे उपाधिकरिकैभेद औरवास्तवतैंअभेद दोनों विद्यमानहैं ॥ और यहाँ सुषुप्तिअवस्थाविषेतौ केवलअभेदहीहोवै है ॥ तात्पर्ययह ॥ वाक्आदिकपंचकर्मइंद्रिय औरनेत्रादिकपंचज्ञानइंद्रिय औरचतुष्टयअंतःकरण और वाक्आदिकइंद्रियोंकेविषय यहसंपूर्णउपाधियां जाग्रत्अवस्थाविषे तथास्वप्नअवस्थाविषे आत्माकेभेदकरणेहारियां हैं ॥ तिन उपाधियोंकरिकैभी सुषुप्तिअवस्थाविषेआत्माकाभेद सिद्धहोवैनहीं ॥ काहेतैं यहसंपूर्णवाकूआदिकइंद्रिय आपणेआपणेविषयोंसहित सुषुप्तिअवस्थाविषे प्राणउपहितमुझपरमात्माविषे लयकूंप्राप्तहोवै हैं॥यातैं सुषुप्तिअवस्थाविषे मुझपरआत्माकीएकता संभवै है ॥ और हेप्रतर्दन मैं आत्माअद्वितीयहूं यातैं स्वरूपतैंमेरेविषेभेदसंभवैनहीं ॥ किंतु वाक्आदिकउपाधियोंकरिकै मुझआत्माविषेभेद प्रतीतहोवै है ॥ तेवा क्आदिकउपाधियां सुषुप्तिअवस्थाविषे लयहोवैं हैं ॥ यातैं सर्वभेदतैंरहितप्राणस्वरूपमुझआत्माकी एकताही सुषुप्तिअवस्थाविषेसिद्धहोवै है ॥ शंका ॥ हेभगवन् सुषुप्तिअवस्थाविषे वाक्आदिकसंपूर्णइंद्रियोंका प्राणविषेलय आपनैंकह्या ॥ यातैं यहनिश्चयहोवैं है॥ वाक्आदिक इंद्रियोंकाउपादानकारण प्राणहै ॥ काहेतैं कार्यकेलयकाआधार उपादानकारणहींहोवै है ॥ निमित्तकारण होवैनहीं ॥ जैसे घटकेलयकाआधार मृत्तिका है ॥ कुलालहै नहीं ॥ यातैं कुलालकीन्याईं वाकादिकइंद्रियोंका प्राणतैंभिन्नहींकोई निमित्तकारण कह्याचाहिये ॥समाधान॥ हे प्रतर्दन वाकादिकइंद्रियोंका उपादानकारण तथानिमित्तकारण प्राणस्वरूपमैंआत्माहींहूं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे एकहीऊर्णनाभिजंतु तंतुकाउपादान तथानिमित्तकारण होवै है ॥ अन्यदृष्टांत ॥ जैसे नैयायिकोंकेमतविषे घटईश्वरकेसंयोगका एकईश्वरही उपादान तथानिमित्तकार

ण होवै है ॥ और हेप्रतर्दन सुषुप्तिअवस्थाविषे जिसप्राणस्वरूपमुझआत्माविषे वाक्आदिकइंद्रिय लयकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ तिसीप्राणस्वरूपमुझआत्मातैं जाग्रत्अवस्थाविषे संपूर्णवाकादिकइंद्रिय उत्पन्नहोवै हैं ॥ और जैसे मृत्तिकातैंउत्पन्नभयाघट मृत्तिकातैंभिन्नहोवैनहीं ॥ तैसे प्राणस्वरूपमुझआत्मातैं उत्पन्नभयेवाक्आदिकइंद्रिय मेरेतैंभिन्न किसीप्रकारहोवैंनहीं ॥ शंका ॥ हे भगवन् जभी वाक्आदिकइंद्रिय प्राण स्वरूपआत्मातैंभिन्ननहीं तभी भिन्नहोइकेकाहेतैंप्रतीतहोतेहैं॥समाधान॥ हेप्रतर्दन यहवाक्आदिक प्राणस्वरूपमुझपरमात्माकीविभूतियां हैं यातैं मुझ आत्मातैंभिन्नहोइकेउत्पन्नहोवैनहीं ॥ किंतु मेरास्वरूपहुएहीं मेरेतैंउत्पन्नहोवैं हैं ॥ अविवेकतैं तिनोंकाभेद प्रतीतहोवै है ॥ शंका ॥ हेभगवन् वाक्आदिकइंद्रियरूपविभूतियोंकी प्राणस्वरूपआत्मातैं अभिन्नरूपकरिकै आपने उत्पत्तिकही ॥ सो संभवैनहीं ॥ काहेतैं लोकविषे भिन्नोंकाहीं कार्यकारणभाव देख्याहै ॥ समाधान ॥ भिन्नोंकाहीं कार्यकारणभावहोवैहै ॥ यहनियम संभवैनहीं ॥ किंतु अभिन्नोंकाभी कार्यकारणभावहोवै है ॥ जैसे प्रज्वलितअग्नितैं कण उत्पन्नहोवैं हैं ॥ तेकण अग्नितैंभिन्ननहीं किंतुअभिन्न हैं ॥ तैसे जाग्रत् अवस्था विषे प्राणस्वरूपमैं आत्मातैं वाक्आदिकइंद्रिय उत्पन्नहोवैं हैं ॥ तावाक्आदिकइंद्रियोंतैं अग्निआदिकदेवता उत्पन्नहोवैं हैं ॥ ताअग्निआदिकदेवतावोंतैं शब्दउच्चारणादिकविषय उत्पन्नहोवैं हैं ॥ अब दृष्टिसृष्टिवादकेस्पष्टकरणेकासतैं ॥ याही अर्थकूंयुक्तियोंकरिकैनिरूपणकरैं हैं ॥ हेप्रतर्दन सुषुप्तिअवस्थाविषे सुषुप्तपुरुष विषयसहितवाक्आदिकइंद्रियोंकूं देखतानहीं ॥ तथा अन्यकोईजाग्रत्पुरुषभी सुषुप्तपुरुषकेवाकादिकइंद्रियोंकूं देखतानहीं ॥ औरसुषुप्तपुरुषकेप्राणकूंतौ अन्यजाग्रत्पुरुषदेखैहै ॥ याकारणतैंभी प्राणकूंही वाकादिकइंद्रियोंकीकारणता सिद्धहोवै है ॥ काहेतैं जिसवस्तुकोविद्यमानहुएहीं जोवस्तु प्रतीतहोवै ॥ और जिसवस्तुकोविद्यमानहुएभी जोवस्तुतहाँनप्रतीतहोवै तिसवस्तुका सोवस्तु कार्यहोवै है ॥ जैसेमृत्तिकाकेविद्यमानहुएही घटादिक प्रतीतहोवैं हैं ॥ और घटकीउत्पत्तितैंपूर्व मृत्तिकाके विद्यमानहुएभी घटादिक तहाँप्रतीतहोवैंनहीं ॥ यातैंमृत्तिकाके घटादिक कार्यहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् जिसके विद्यमानहुए जोप्रतीतहोवैहै ॥ सो ताकाकार्यहोवै है ॥ यहकार्यकालक्षण आपनैंकह्या ॥ सोलक्षण अतिव्याप्तिदोषवालाहै ॥ काहेतैं सूर्यादिकप्रकाशकेविद्यमानहुएही

घटादिकोंकी चक्षुइंद्रियकरिकैप्रतीतिहोवै है ॥ प्रकाशतैंविना अंधकारविषेस्थितघटादिकोंकी प्रतीतिहोवैनहीं ॥ यातैं घटादिकभी प्रकाशकेकार्य होणेचाहिये ॥ और प्रकाशकेकार्य घटादिकहैंनहीं ॥ समाधान ॥ जिसवस्तुके विद्यमानहुएही जोवस्तु उत्पन्नहोवै ॥ और तिसवस्तुतैंभिन्नकिसीवस्तुतैं उत्पन्नहोवैनहीं ॥ और तिसवस्तुकेविद्यमानहुएभी जोवस्तु कदाचित्तहाँउत्पन्नहोवै नहीं ॥ सोवस्तु तिसवस्तुका कार्यहोवै है ॥ जैसे तंतुकेविद्यमानहुएही पट उत्पन्नहोवै है ॥ तंतुतैंभिन्नमृत्तिकाकेविद्यमानहुएभी पटकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ और पटकीउत्पत्तितैंपूर्व तंतुवोंकेविद्यमानहुएभी तुरीवेमादिकसामग्रीतैंविना तहाँ पट उत्पन्नहोवैनहीं ॥ यातैं तंतुओंका पटकार्यहै ॥ और मृत्तिकाका कार्यघटहै सूर्यादिकप्रकाशका घटकार्यनहीं ॥ यातैं यहकार्यकालक्षण निर्दोषहै ॥ सोयहकार्यकालक्षण वाक्आदिकइंद्रियोंविषेभी घटै है काहेतैं सुषुप्तिअवस्थाविषे प्राणकेविद्यमानहुएभी तहाँवाक्आदिकइंद्रिय उत्पन्नहोवैनहीं ॥ और जाग्रत् अवस्थाविषे प्राणकेविद्यमानहुएहीं वाकादिकइंद्रिय उत्पन्नहोवै हैं ॥ और प्राणतैंभिन्नकिसीकारणतैं वाक्आदिक उत्पन्नहोवैनहीं ॥ यातैं वाक्आदिकइंद्रिय प्राणकाकार्य हैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे अग्निकूंछोडिकैधूमरहैनहीं ॥ किंतु जहाँधूमरहै है तहाँ अवश्य अग्निरहै है ॥ और अग्नितौ धूमकूंछोडिकरिकैभी तप्तलोहविषे रहै है ॥ यातैं अग्निव्यापकहै और धूम व्याप्यहै ॥ तैसे प्राणकूंछोडिकै वाक्आदिकइंद्रिय रहैंनहीं और प्राणतौ सुषुप्ति अवस्थाविषे वाक्आदिकइंद्रियोंकेलयहुएभीरहै है ॥ यातैं प्राण व्यापकहै ॥ और वाक्आदिकइंद्रिय व्याप्यहैं ॥ कारण व्यापकहोवै है ॥ और कार्य व्याप्यहोवै है ॥ किंवा सुषुप्तिविषे विषयसहितवाक्आदिकइंद्रियोंकासमूह जोप्राणविषे लयनहीं भयाहोवै ॥ तौ सुषुप्तिविषे सुषुप्तपुरुषकरिकैतथाअन्यजाग्रत्पुरुषकरिकै सविषयवाकादिकइंद्रिय प्रतीतहोणेचाहिये ॥ और सुषुप्तिविषे सविषयवाकादिकइंद्रिय प्रतीतहोवैं नहीं ॥ यातैं ऐसाजान्याजावै है ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे विषयसहितवाकादिकइंद्रिय प्राणविषेलयहुएहैं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे दंडादिकों करिकैप्रध्वंसहुआघट मृत्तिकारूपआपणेकारणविषे लयकूंप्राप्तहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् वाकादिकइंद्रियोंका तथाशब्दउच्चारणादिक विषयोंका परस्परभेदहै॥ यातैं सुषुप्तिविषे वाक्आदिकइंद्रियोंकेलयहुएभी तिनोंकेविषयोंकालय संभवैनहीं ॥ समाधान ॥ कारणकेअभाव

॥ २३

हुए कार्य उत्पन्नहोवैनहीं ॥ जैसे प्रदीपतैंविना प्रदीपकार्यप्रभा उत्पन्नहोवैनहीं ॥ तैसे वाकादिकइंद्रियोंकेलयहुएतिनोंकेकार्य शब्दउच्चारणादिकविषयभी सुषुप्तिअवस्थाविषे उत्पन्नहोवै नहीं ॥ यातैं तिनविषयोंकाभीलयसंभवै है ॥ किंवा जोवस्तु जिस वस्तुविषे लय होवै है ॥ सोवस्तु तिसी वस्तुतैं उत्पन्नहोवै है यहनियम है॥ जैसे प्रज्वालितअग्निविषे कणोंका लयहोवै है ॥ और तिसी अग्नितैं तिनकणोंकी उत्पत्तिहोवै है ॥ तैसे सुषुप्ति अवस्थाविषे वाक्आदिकइंद्रियोंका प्राणविषे लयहोवै है ॥ और जाग्रत्अवस्थाविषे तिसीप्राणतैं वाक्आदिकोंकी उत्पत्ति होवै है ॥ शंका ॥ हेभगवन् जैसे अग्निविषे जोजोकण लयकूंप्राप्त होवै हैं ॥ सोसोकण पुनःउत्पन्नहोवैंनहीं ॥ किंतुतिनोंतैंभिन्नहीकण उत्पन्नहोवैं हैं ॥ तैसे सुषुप्तिमैं प्राणविषेलयभयेजे वाक्आदिकइंद्रिय ॥ तिनोंतैंभिन्नहींवाक्आदिकइंद्रियोंकी जाग्रत्विषे उत्पत्तिहोणीचाहिये ॥ समाधान ॥ जैसे अग्नितैंउत्पन्नहुआकण पूर्वविलीनकणतैंभिन्न प्रतीतहोवै है ॥ तैसे जाग्रत्विषे प्राणतैंउत्पन्नभयेवाकादिक पूर्वविलीनवाकादिकोंतैं भिन्नहुवे प्रतीतहोवैं नहीं ॥ किंतु सुषुप्ति विषे जे वाक्इंद्रिय प्राणविषे लय भयेथे ॥ तेही वाकादिकइंद्रिय पुनः जाग्रतविषे प्राणतैं उत्पन्नहुए प्रतीतहोवै हैं ॥ यातैं तिनोंके भेदविषे प्रत्यक्ष प्रमाणसंभवै नहीं ॥ शंका ॥ वर्तमानवाक् आदिकइंद्रियोंतैं पूर्वविलीनवाक् आदिक इंद्रियोंकाभेद अनुमान प्रमाणतैं सिद्धहोवै है॥ताअनुमानकाप्रकारयह है॥पूर्ववाक् आदिक इंद्रियजे हैं ते वर्तमान वाक् आदिकइंद्रियोंतैं भिन्न हैं ॥ काहेतैं विलीनहोणेतैं ॥ जोजोवस्तु पूर्वविलीनताकूंप्राप्तहोवै है ॥ सोसो वर्तमानवस्तु तौंभिन्न होवै है ॥ दृष्टांत ॥ जैसे पूर्वअग्निविषेविलीनहुएकण वर्तमानकणतौंभिन्न हैं ॥ याअनुमाप्रमाणतैं पूर्वउत्तरवाक्इंद्रियोंका भेदही सिद्ध होवै है ॥ समाधान ॥ याअनुमानतैं वाक्आदिक इंद्रियोंकाभेद सिद्धहोवै नहीं ॥ काहेतैं जोहेतु आपणेसाध्यकूं छोडिके अन्यत्ररहै नहीं ॥ ताहेतुतैं तिस साध्य कीसिद्धि होवै है ॥ जैसे धूमरूपहेतु वह्निरूपसाध्यकूं छोडिकै अन्यत्ररहै नहीं ॥ यातैं धूमरूपहेतुतैं पर्वतविषे वह्निकीसिद्धिहोवै है ॥ और जोहेतु आपणेसाध्यकूंछोडिके अन्यत्रभी रहै है ॥ ताहेतुतैं तिससाध्यकी सिद्धिहोवैनहीं जैसे प्रमेयत्वहेतु वह्निकेअभाववाले जलादिकोंविषे भीरहै है ॥ यातैं प्रमेयत्वरूपव्यभिचारीहेतुतैं पर्वत विषेवह्निरूपसाध्यकी सिद्धिहोवै नहीं ॥ तैसे यहविलीनत्वरूपहेतुभी भेदरूप सायध्यकूं

छोडिकै अन्यत्रवर्तै है ॥ यातैं व्यभिचारी है ॥ काहे तैं बहुतधूलीकरिकैआच्छादितजोघट है ॥तिसविषे विलीनत्वरूपहेतुतौरहै है ॥परंतु वर्तमानतिसीघटतैं ताकाभेदहोवैनहीं किंतु जोपूर्वधूलीकरिकैआच्छादितघटथा ॥ सोईहीघट धूलीतैंरहितहुआ प्रतीतहोवै है ॥ यातैं विलीनत्वरूपव्याभिचारीहेतुतैं वाकुआदिकइंद्रियोंकेभेदकीसिद्धिसंभवैनहीं ॥ शंका ॥ धूलीकरिकैआच्छादितघटविषे जैसे वर्तमानतिसी घटकाभेदरूपसाध्यनहीं तैसे विलीनत्वरूपहेतुभी ताकेविषेनहीं ॥ यातैं विलीनत्वरूपहेतु व्यभिचारीनहीं ॥ समाधान ॥ वस्तुकेअदर्शनकानाम लय है ॥ अदर्शनतैंभिन्न कोईलयशब्दकाअर्थनहीं ॥ जैसे स्वप्नकेपदार्थोंकाजाग्रत्विषेदर्शनहोवै नहीं ॥ यातैं स्वप्नपदार्थोंका जाग्रत्विषेलयकहताहै ॥ तैसे धूलीकरिकैआच्छादितघटकाभी ताकालविषेदर्शनहोवैनहीं ॥ यातैं विलीनत्वरूपहेतु ताघटविषेसंभवै है ॥ ॥ शंका ॥ अदर्शनकानामलयहै यहआपनैं कह्या ॥ सो यद्यपि प्रातिभासिकस्वप्नपदार्थोंविषेतौ घटै है ॥ तथापि व्यावहारिकपदार्थोंविषे घटैनहीं ॥ काहेतैं जोसर्वत्र अदर्शनकानामहीं लयहोवै ॥ तौ देशांतरविषेस्थितपुत्रादिकबांधवोंकादर्शन किसीकूंहोवैनहीं ॥ यातैं मेरे पुत्रादिकबांधव लयहुए हैं याप्रकारकाव्यवहार लोकविषेहोणाचाहिये ॥ और ऐसाकोईकथनकरतानहीं ॥ यातैं अदर्शनकानाम लयनहीं ॥ समाधान ॥ जिसकालविषे पुत्रादिकबांधवोंकाअदर्शनहोवैहै ॥ तिसकालविषे तिनोंकालयहीहोवै है ॥ और जिसकालविषे तिनपुत्रादिकबांधवोंकादर्शनहोवै है ॥ तिसकालविषे तिनोंकी पुनःउत्पत्तिहोवै है ॥ याअर्थमानणेविषे किंचित्मात्र भी हमारीहानिनहीं ॥ शंका ॥ जोलयहुएपुत्रादिकोंकी पुनःउत्पत्ति मानोंगे ॥ तौ मृत्युहुएपुत्रादिकबांधवोंकीभी पुनःउत्पत्तिहोणीचाहिये और मृतहुएपुत्रादिकबांधवोकू पुनःकोईदेखतानहीं ॥ समाधान ॥ पुत्रादिकबांधवोंकेदर्शनविषे मरण तथा जीवन कारणनहीं ॥ किंतु तिनोंतैंभिन्नहीं अदृष्टादिककारणहैं ॥ काहेतैं अत्यंतदूरदेशविषेस्थित जीवतेहुएबांधवोंकाभी कदाचित् पुनःदर्शनहोतानहीं ॥ यातैं जीवन तथामरण पुनःदर्शनकेकारणनहीं ॥ शंका ॥ दूरदेशविषेस्थितबांधवोंकादर्शन तादेशाविषेजाणेकरिकै सभवै है ॥ और मृतबांधवोंकादर्शन किसीप्रकारसंभवैनहीं ॥ यातैं जीवनहीं पुनःदर्शनकाकारणहै मरणनहीं ॥ समाधान ॥ जैसे जीवनकूं कदाचित् पुनःदर्शनकी कारणता तुमनैं

दिखाई ॥ तैसे मरणकूंभी कदाचित् पुनःदर्शनकी कारणतासंभवै है ॥ काहेतैं स्वप्नविषे चिरकालमरेहुएबांधवोंकाभी कदाचित् लोकोंकूंदर्शनहोवै है ॥ यातैं नियमकरिकै जीवन तथामरण पुनःदर्शनके कारणनहीं ॥ किंतु ॥ अदृष्टादिकही पुनःदर्शनकेकारण हैं ॥ शंका ॥ दर्शनकालविषे पुत्रादिकबांधवोंकीउत्पत्तिहोवै है ॥ यह पूर्व आपने कह्या ॥ सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं लोकाविषे जेजेपुत्रादिक उत्पन्नहोवै हैं॥ तिनोंकूं याप्रकारकाज्ञान नियमतैंहोवै है॥ देवदत्त नामामैं यज्ञदत्त नामापितातैं उत्पन्नभयाहूं॥ यातैं ऐसाजान्या जावै है ॥ तिस पितातैंमैं उत्पन्नभयाहूं याप्रकारका ज्ञानतौव्यापक है ॥ और पुत्रादिकोंकी उत्पत्तिव्याप्य है व्यापकतैंविना व्याप्यकी स्थितिहोवैनहीं ॥ जैसे अग्नितैंविना धूमकी स्थितिहोवैनहीं ॥ जोदर्शनदर्शनविषे पुत्रादिकोंकीउत्पत्ति होतीहोवै ॥ तौ तिसतैंमैंअभीउत्पन्नभयाहूं ऐसाज्ञान पुत्रादिकोंकूंहोणाचाहिये ॥ और ऐसाज्ञानकिसीकूंहोतानहीं ॥ यातैं व्यापकरूपज्ञानके अभावहोणेतैं ताज्ञानकाव्याप्यरूप जोपुत्रादिकोंकीउत्पत्ति सोभी दर्शनकालविषेहोवैनहीं ॥ समाधान ॥ तिसतैंमैं उत्पन्नभयाहूं याज्ञानकूं उत्पत्तिकीव्यापकता जोसर्वत्रहोवै ॥ तो तुमारापूर्वपक्ष संभवै ॥ परंतु ताज्ञानकूं उत्पत्तिकीव्यापकता सर्वत्रहै नहीं ॥ काहेतैं घटादिकजडपदार्थोंकी उत्पत्तितौहोवै है॥ परंतु घटादिकजडपदार्थोंविषे तिसतैंमैंउत्पन्नभयाहूं याप्रकारकाज्ञानहोवै नहीं ॥ शंका ॥ तिसतैंमैंउत्पन्नभयाहूं याप्रकारकाज्ञान यद्यपि घटादिकजडपदार्थोंविषेतौ है नहीं ॥ तथापि घटादिकोंकेद्रष्टापुरुषकूं याप्रकारकाज्ञानहोवै है ॥ मृत्तिकादिकोंतैं यहघट उत्पन्नभया है ॥ यातैं जहाँउत्पत्तिहोवै है ॥ तहाँ याप्रकारकाज्ञान अवश्यहोवै है ॥ समाधान ॥ द्रष्टापुरुषकेज्ञानकूं घटकेउत्पत्तिकीव्यापकता संभवैनहीं काहेतैं एकअधिकरणविषे रहणेहारेपदार्थोंकाही परस्पर व्याप्यव्यापकभाव होवै है ॥ जैसे एकअधिकरण विषेरहणेहारे धूम तथाअग्निका परस्पर व्याप्य व्यापकभाव होवै है ॥ और जे भिन्नभिन्न अधिकरणविषेरहैं हैं ॥ तिनोंका परस्परव्याप्य व्यापकभावहोवैनहीं ॥ जैसे शीतस्पर्शका तथाउष्णस्पर्शका परस्पर व्याप्य व्यापकभाव होवैनहीं ॥ तैसे उत्पत्तिका तथापूर्व उक्तज्ञानका एकअधिकरण है नहीं ॥ किंतु उत्पत्तिका अधिकरण तौघट है ॥ और ज्ञानकाअधिकरण घटकाद्रष्टापुरुष है ॥ भिन्नभिन्नअधिकरणविषेरहणेहारे उत्पत्तितथा ज्ञानका परस्पर व्या

ष्णव्यापक भावमानणाअत्यंतविरुद्ध है ॥ यातैं उत्पत्तिका तथापूर्वउक्तज्ञानका परस्परव्याप्यव्यापकभाव संभवैनहीं ॥ शंका ॥ घटादिक जडपदार्थोंकेउत्पत्तिका तथापूर्वउक्तज्ञानका परस्पर व्याप्यव्यापकभाव यद्यपि संभवैनहीं ॥ तथापिचैतन्यमनुष्यादिकोंकूं तिसतैंमेंउत्पन्न भयाहूं याप्रकारकाज्ञान होवै है यातैं चैतन्यमनुष्यादिकोंकेउत्पत्तिकाही पूर्वउक्तज्ञानव्यापक है॥जडोंकेउत्पतिकाव्यापकनहीं ॥समाधान ॥ तिसतैंमेंउत्पन्नभयाहूं याप्रकारकाज्ञान चेतनमनुष्यादिकोंकेउत्पत्तिकाव्यापकभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं चेतनमनुष्यादिकभी उत्पत्तितैं अनंतर याप्रकारजाणते नहीं ॥ जोइसतैंहमउत्पन्नभये हैं ॥ किंतु ॥ माता तथा पिताकेवचनोंतैं तावालककूं चिरकालकेपीछे सोज्ञानहोवै है ॥ यातैं चेतनकेउत्पत्तिका पूर्वउक्तज्ञानव्यापक है यहतुमारा कहणाभी व्यर्थ है ॥ किंवा चेतनकेउत्पत्तिका पूर्वउक्तज्ञान व्यापकहै ॥ यहतेरावचन मेरेमुखविषेजिह्वानहीं है याप्रकारकेवचनकीन्याईं व्याघातदोषकरिकै युक्त है ॥ काहेतैं चैतन्य आत्मास्वरूप है यातैंनित्य है तानित्यचैतन्यकी उत्पत्तिकहणा अत्यंतविरुद्ध है ॥ शंका ॥ यहदेवदत्त नामापुरुष उत्पन्न भया है याप्रकारका अनुभव ॥ सर्व पुरुषोंकूं होवै है ॥ यातैं चैतन्यकीभी उत्पत्तिसंभवै है ॥ समाधान ॥ सोलोकोंका अनुभव जोयथार्थहोवै ॥ तो चैतन्यकेउत्पत्तिकूंसिद्धकरै परंतुसोलोकोंकाअनुवभभ्रांतिरूप है॥काहेतैंअन्यवस्तुकेधर्मोंकाअन्यवस्तुविषेआरोपणनामभ्रांतिज्ञान है ॥ जैसे रज्जुविषेयहसर्प है याप्रकारकाज्ञान भ्रमरूप है॥तैसे उत्पत्ति तथानाश दोनोंदेहकेधर्म हैं॥चैतन्यकेधर्मनहीं॥ परंतुअज्ञानरूपदोषकरिकैअविवेकीपुरुषचैतन्यआत्माविषेउत्पत्तितथानाशमानैहैं॥यातैंतेपुरुषभ्रांत है॥तिनोंकेअनुवभतैंचैतन्यकेउत्पत्तिकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ शंका॥ जोचैतन्यकीउत्पत्तितथानाशन हींहोताहोवै तो दर्शनकालविषेपुत्रादिकोंकीउत्पत्ति तथाअदर्शनकालविषेतिनोंकालय याप्रकारकीदृष्टिसृष्टिवादतुमारा कैसे सिद्धहोवैगा समाधान॥दर्शनकालविषे तथाअदर्शनकालविषे चैतन्यकी उत्पत्ति तथानाश हमभीअंगीकारकरतेनहीं ॥ किंतु तहाँभी शरीरादिकअनात्मपदार्थोंकाहीउत्पत्तितथानाशहोवै है॥किंवा॥जन्मशब्दकेअर्थकाविचारकरिये॥तौभी दृष्टिसृष्टिवादहीसिद्धिहोवैहै ॥ काहेतैं प्रादुर्भावकानामजन्म है॥सोप्रादुर्भाव दर्शनतैंभिन्ननहीं॥किंतु वस्तुकादर्शनहीं प्रादुर्भाव है॥जैसेप्रातःकालविषे जब सूर्यकादर्शनहोवै है ॥ तब लोक ऐसा कथन

करैं है ॥ सूर्यकाप्रादुर्भावभया है ॥ यालोकोंकेव्यवहारतैं दर्शनकानामहीं प्रादुर्भावसिद्धहोवै है ॥ यातैं पुत्रादिकपदार्थोंकादर्शनहींतिनपुत्रादिकोंकीउत्पत्ति है ॥ और पुत्रादिकोंकाअदर्शनहीं तिनपुत्रादिकोंकालयहै ॥यहदृष्टिसृष्टिवादहीं उत्तमासिद्धांतहै॥शंका॥जैसे प्रथम माताकेउदरतैं जभीपुत्रकीउत्पत्तिहोवै है॥ तभी पिता तावालककेजन्मसंस्कारोंकूंकरैहै॥तथा देवदत्तादिकनामकूं राखे है॥तैसे पुत्रकेदर्शनकालविषेभी जन्मकेसंस्कारहोणेचाहिये ॥ काहेतैं तुमारेमतविषे जभीजभी पुत्रकादर्शनहोवैहै ॥ तभीतभी तापुत्रकाजन्महोवैहै ॥ समाधान॥ यहदोषकेवलहमारेमतविषेनहीं ॥ किंतु तैंवादीकेमतविषेभी यह दोषसमान है ॥ काहेतैं तेरेमतविषे जैसे ज्येष्ठपुत्रकेशरीरतैं कनिष्ठ पुत्रका शरीर भिन्न है यातैं तिनकेसंस्कारभी भिन्नभिन्नहोवैं हैं ॥ तैसे पुत्रकेबाल्यशरीरतैं ॥ युवानशरीरभीभिन्न हैं ॥ बाल्यशरीरका तथायुवानशरीरका अभेद तेरेकूंभीअंगीकारनहीं ॥ यातैं बाल्यशरीरकीन्याईं युवानशरीरकेउत्पन्नहुएभी पुनःजन्मकेसंस्कारहोणे चाहिये ॥ और युवा अवस्थाकेप्राप्तहुए जन्मकेसंस्कारोंकूं कोई करतानहीं ॥ शंका ॥ बाल्यशरीरका तथा युवानशरीरका परस्परभेदनहीं किंतु अभेद है ॥ यातैं जन्मकेसंस्कारोंकीआपत्तिरूपदोष हमारेमतविषेसंभवैनहीं ॥ समाधान ॥ बाल्यशरीरका तथायुवानशरीरका अभेदसंभवैनहीं ॥ काहेतैं बाल्यशरीरकेपरिणामतैं यौवनशरीरकापरिमाण भिन्न है ॥ आश्रयकेभेदतैं विना परिमाणकाभेद संभवै नहीं ॥ जैसे पंचहस्त परिमितपटतैं दशहस्तपरिमितपट भिन्नहोवै है ॥ तैसे अल्पपरिमाणवालेबाल्यशरीरतैं दीर्घपरिमाणवालायौवनशरीरभी भिन्न है ॥ शरीरकाभेदहीं जन्मसंस्कारोंविषेकारण है ॥ यातैं यौवनशरीरकीउत्पत्तिविषे ॥ जन्मसंस्कारोंकीप्राप्तिरूपदूषण तुमारेकूंभी अवश्य होवैगा ॥ ॥ शंका ॥ जोबाल्यशरीरतैं यौवनशरीर भिन्नहोवै ॥ तो देवदत्तनामापुरुषकूं आपणेशरीरविषे याप्रकारकाप्रत्यभिज्ञाज्ञानहोवै है ॥ जो मैंबालकथा सोईमैं अभीयुवानहूं ॥ तथा तादेवदत्तपुरुषविषे अन्यपुरुषोंकूंभी याप्रकारकाप्रत्यभिज्ञाज्ञानहोवै है सोई यह देवदत्त है ॥ यहदोनोंप्रकारकेप्रत्यभिज्ञाज्ञान बाल्ययौवनदेवदत्तकेअभेदकूं विषयकरैं हैं ॥ सो नहोणेचाहिये ॥ तैसे तुमदृष्टिसृष्टिवादीकेमतविषेभी सोईमैंदेवदत्तहूं अथवा सोईयहदेवदत्त है ॥ यह दोनोंप्रत्यभिज्ञाज्ञान नहींहोणेचाहिये ॥ और सर्वपुरुषोंकूं याप्रकारका प्रत्यभिज्ञाज्ञान

होवे है ॥ समाधान ॥ सोईमैंदेवदत्तहूं याप्रकारकाप्रत्यभिज्ञाज्ञान पूर्वउत्तरशरीरकेअभेदकूंविषयकरैनहीं ॥ किंतु दोनोंशरीरोंविषे आरोपितजोआत्माकीएकता ताकूंविषयकरै है ॥ और तादेवदत्तपुरुषविषे दूसरेयज्ञदत्तनामापुरुषकूं सोईयहदेवदत्तपुरुष है ऐसाजोप्रत्यभिज्ञा ज्ञानहोवै है ॥ सोभीआपणेसंबंधियोंकेवचनविषेविश्वासतैंहोवैहै ॥ शरीरकेअभेदतैं किसीमतविषेभी प्रत्यभिज्ञाज्ञान संभवै नहीं ॥ यातैं देवादिन् बाल्ययौवनादिकशरीरोंविषे आरोपितजोआत्माकीएकता ॥ ताएकताकूंग्रहणकरिकैहीं सर्वमतविषे प्रत्यभिज्ञाज्ञानकासंभव होइसकै है ॥ शरीरोंकीएकतामानणी निष्फल है ॥ शंका ॥ हमारेमतविषे आत्माकेअभेदकूंग्रहणकरिकै सोईमैंदेवदत्तहूं याप्रकारकाप्रत्य भिज्ञाज्ञानहोवैनहीं ॥ किंतु शरीरकाआरंभकरणेहारी जो अवयवोंकीरचनाविशेष है ॥ सोरचना बाल्ययौवनशरीरविषेएकही है ॥ यातैं ताअवयवोंकीरचनाविशेषकूंग्रहणकरिकै पूर्वउक्तप्रत्यभिज्ञाज्ञान संभवै है ॥ अथवा बाल्ययौवनशरीरकेआरंभकरणेहारा जोपितामाताका शुक्रशोणित है ताशुक्रशोणितकूंग्रहणकरिकै पूर्वउक्तप्रत्यभिज्ञाज्ञान संभवै है ॥ समाधान ॥ आरंभककारणकेअभेदतैं पूर्वउक्तप्रत्यभिज्ञा ज्ञानसंभवै नहीं ॥ काहेतैं जोकारणकेअभेदतैं प्रत्यभिज्ञाज्ञानहोवै ॥ तौ एककाष्टकरिकै अथवा एकपाषाणकरिकै रचेहुए जेदोस्तंभ हैं ॥ तिनदोनोंस्तंभोंकाकारणएकही है ॥ यातैं तिनदोनोंस्तंभोंविषे सोईयहस्तंभ है याप्रकारकाप्रत्यभिज्ञाज्ञान होणाचाहिये ॥ और भिन्नभिन्न स्तंभोंविषे याप्रकारका अभेदज्ञान किसीपुरुषकूंहोवैनहीं ॥ यातैं आरंभककारणकेअभेदकूंग्रहणकरिकै सोप्रत्यभिज्ञाज्ञान संभवै नहीं ॥ शंका ॥ भिन्नभिन्नशरीरोंविषेआरोपित जोआत्माकीएकता ॥ ताकूं ग्रहणकरिकै सोईमैंदेवदत्तहूं याप्रकारकाप्रत्यभिज्ञाज्ञान देवदत्तकूंहो वै है ॥ यहपूर्व आपनेकह्या ॥ सो यद्यपि देवदत्तकेप्रत्यभिज्ञाज्ञानविषेसंभवै है ॥ तथापि स्तंभकेप्रत्यभिज्ञाज्ञानविषेसंभवैनहीं ॥ काहेतैंस्तंभ जड है ॥ यातैं सोईमैंस्तंभहूं याप्रकारकाप्रत्यभिज्ञाज्ञान ताकूंहोवैनहीं॥ किंतु तास्तंभकेद्रष्टा पुरुषकूं सोईयहस्तंभहै याप्रकारकाप्रत्यभिज्ञा ज्ञानहोवै है ॥ सो न होणाचाहिये ॥ काहेतैं तहाँ आत्माका अभेद है नहीं ॥ समाधान ॥ आत्माकेअभेदकूंग्रहणकरिकै यद्यपि स्तंभविषे अभेद प्रत्यभिज्ञा नहीं होती ॥ तथापि जैसेदेवदत्तपुरुषविषे यज्ञदत्तनामापुरुषकूं आपणेसंबंधियोंकेवचनोंकाविश्वासकरिकै सोईयहदे

वदत्त है याप्रकारकाप्रत्यभिज्ञाज्ञानहोवै है ॥ तैसे स्तंभकेद्रष्टापुरुषकूंभी अन्यपुरुषकेवचनकाविश्वासकरिकै सोईयहस्तंभ है याप्रका रकाप्रत्यभिज्ञाज्ञान संभवै है ॥ किंवा ॥ बाल्ययौवनशरीरविषे पितामाताकेशुक्रशोणितकीएकताकूंग्रहणकरिकै जोपूर्ववादीनैं प्रत्यभि ज्ञाज्ञानकह्या ॥ सोभी संभवै नहीं ॥ काहेतैं जैसेअंकुरकेउत्पन्नहुए बीज नष्टहोइजावै है ॥ तैसे शरीरकेउत्पन्नहुएतैं अनंतर शुक्रशो णितभी नष्टहोइजावैं हैं ॥ यातैं ताशुक्रशोणितकूंग्रहणकरिकै प्रत्यभिज्ञाज्ञान संभवै नहीं ॥ किंवा पूर्वजोवादीनैं यहकह्याथा ॥ बाल्य यौवनशरीरविषे एकही अवयवोंकीरचनाविशेष कारण है ॥ यातैं ॥ ताअवयवोंकीरचनाविशेषकूंग्रहणकरिकैही प्रत्यभिज्ञाज्ञान संभवै है ॥ सोकहणाभी संभवै नहीं ॥ काहेतैं अवयवोंकीरचनाविशेषकूं जोशरीरकीकारणता किसीप्रमाणरिकैसिद्धहोवै ॥ तौ तारचना कूंग्रहणकरिकै प्रत्यभिज्ञाज्ञानसंभवै ॥ परंतु अवयवोंकीरचनाविशेषकूंशरीरकीकारणता किसी प्रमाणकरिकै सिद्धहोवैनहीं ॥ काहेतैं जैसे पृथिवी आदिकोंके परमाणुअतिसूक्ष्म हैं ॥ यातैं तिनोंकाप्रत्यक्षज्ञान किसीकूंहोवैनहीं ॥ तैसे शरीरके आरंभकरणे हारेअवयवभी अतिसूक्ष्म हैं ॥ यातैं प्रत्यक्षप्रमाणकरिकै तिनोंकाज्ञानसंभवैनहीं ॥ प्रत्यक्षप्रमाणकेअप्रवृत्तहुए अनुमानादिकोंक रिकैभी तिनअवयवोंकाज्ञानसंभवैनहीं ॥ किंवा ॥ परमाणुवोंकरिकै किसीकार्यकीउत्पभिसंभवैनहीं ॥ काहेतैं परमाणु जडहैं और अनेक हैं जडवस्तुविषे कार्यके आरंभकरणेका विचारसंभवैनहीं ॥ और जोवादी परमाणुवोंकूंचेतनमानैं तौभी भिन्नभिन्न अभिप्रायवाले अनेकपरमाणुवोंतैं एककार्यकीउत्पत्ति संभवैनहीं ॥ यातैं परमाणुरूप अवयवोंकी रचनाविशेषकूंग्रहणकरिकै सोई मैंहूं यहप्रत्यभिज्ञाज्ञान संभवैनहीं ॥ शंका ॥ प्रत्यक्षज्ञानके विषयजेस्थूलअवयव हैं ॥ तिनअवयवोंकीरचनाविशेषहीं बाल्ययौवनशरीरकाका रण है ॥ यातैं ताकूंग्रहणकरिकैही सोईमैंहूं यहप्रत्यभिज्ञाज्ञान संभवै है ॥ समाधान ॥ बाल्यशरीरविषे जोस्थूलअवयवोंकीरचनाहैसोईहीरच नायौवनशरीरविषेसंभवैनहीं॥काहेतैं जोबाल्यशरीरकेअवयवोंकीरचना यौवनशरीरविषेहोवै ॥ तौ यौवनशरीरका बाल्यशरीरतैं अधिकप रिमाण तथा अधिकपराक्रम न होणाचाहिये ॥ और बाल्यशरीरतैं यौवनशरीरविषे अधिकपरिमाण तथाअधिपराक्रम सर्वलोकोंकूं अनुभ

वसिद्धहै ॥ यातैं बाल्ययौवनशरीरविषे स्थूलअवयवोंकीरचना भिन्नभिन्नहै एकनहीं ॥ लोकविषेभी परिमाणकीन्यूनआधिकतातैं अवयवों
केरचनाकाभेदहीदेख्याहै ॥ जैसे दशमणपारिमितमापराशितैं पंचमणमापको जोकोईनिकासिलेवै ॥ अथवा तामापकीराशीविषे पंचमणमा
षको कोईअधिकमिलाइदेवै ॥ तहाँ मापराशीकेरक्षकपुरुष अवयवोंकीरचनाविशेष भिन्नभिन्नहींमानैं हैं ॥ एकरचनामानैंनहीं ॥ यातैं परि
माणकेभेदहुए अवयवरचनाभी भिन्नभिन्नहीहोवै है एकहोवैनहीं ॥ यातैं हेवादिन् जैसे तुमारेमतविषे बाल्यशरीरतैं भिन्नयौवनशरीरकेउ
त्पन्नहुएभी पुनःजन्मकेसंस्कारहोवैंनहीं ॥ तैसे हमदृष्टिसृष्टिवादीकेमतविषेभी दर्शनतैंपुत्रकीउत्पत्तिहुएभी पुनःजन्मके संस्कारहोवै नहीं ॥
शंका ॥ यौवनशरीरविषे यहदेवदत्त उत्पन्नभयाहै॥याप्रकारकाज्ञान किसीपुरुषकूंहोवैनहीं ॥ यातैं यौवनशरीरविषे पुनःजन्मके संस्कारकी
प्राप्तिरूपदूषण हमारेमतविषे संभवैनहीं ॥समाधान॥ हमारेमतविषेभी दर्शनकालविषे पुत्रादिकोंकेउत्पन्नहुएभी तापुत्रादिकोंविषे यहपुत्रह
माराउत्पन्नभयाहै याप्रकारकाज्ञान पितामातादिकसंबंधियोंकूं होवैनहीं ॥ यातैं हमदृष्टिसृष्टिवादीकेमतविषेभी पुनःजन्मकेसंस्कारोंकीप्राप्ति
रूपदोषनहीं॥शंका॥तुमदृष्टिसृष्टिवादीकेमतविषे पुत्रादिकोंकाअदर्शनहीं तिनोंकामरणहै॥ यातैं जैसे मरणके अनंतर पुत्रादिकोंकीदाहक्रिया
करीती है॥तैसे तिनोंकेअदर्शनतैंअनंतरभीतिनपुत्रादिकोंकीअग्निदाहक्रियाकरीचाहिये॥और अदर्शनतैंअनंतरपुत्रादिकबांधवोंकीअग्निदाहा
दिकक्रिया कोईकरतानहीं॥समाधान॥हेवादिन् जैसेतुमारेमतविषे यौवनशरीरकेउत्पन्नहुए बाल्यशरीरनाशहोइजावै है॥काहेतैंजोयौवनशरीर
केप्राप्तहुएभीबाल्यशरीर नाशनहींभयाहोवै ॥ तौ यौवनकालविषेभी बाल्यशरीरकीप्रतीति होणीचाहिये॥ और यौवनकालविषे बाल्यशरीर
कीप्रतीति होतीनहीं ॥ यातैं यौवनकालविषे बाल्यशरीरकानाशहोवै है ॥ तानष्टहुएबाल्यशरीरकी जैसे तुम अग्निदाहादिकक्रियानहींकर
ते ॥ तैसे हमदृष्टिसृष्टिवादीकेमतविषेभी पुत्रादिकसंबंधियोंकेबाहरगयेहुए तिनपुत्रादिकोंकादर्शनहोवै नहीं ॥ सो अदर्श नहीं तिनपुत्रा
दिकबांधवोंकामरण है ॥ ताअदर्शनरूपमरणकेहुएभी तिनपुत्रादिकसंबंधियोंकेदाहादिकक्रियाकूं हम करैंनहीं ॥ यातैं हमारेमतविषे तथा
तुम्हारेमतविषे यहउत्तर समानहै ॥ शंका ॥ हेदृष्टिसृष्टिवादिन् तुम्हारेमतविषे किंचित् मात्रविशेषताहै ॥ काहेतैं पुत्रादिक संबंधी जभी दे

शांतरतैंगृहविषे आवैं हैं ॥ तभी ताकेमातापिताकूं याप्रकारकाज्ञान होवै है ॥ सोई यहहमारापुत्रहै ॥ याअभेदज्ञानकेबलतैं पूर्व उत्तरश
रीरोंकाअभेदही सिद्धहोवै है ॥ समाधान ॥ बाल्यशरीरतैं अनंतर यौवनशरीरकेउत्पन्नहुएभी सोईयहदेवदत्त है ॥ याप्रकारकाअभेद
ज्ञान तुम्हारेमतविषेभीहोवै है ॥ यातैं तुमारेमतविषेभी बाल्ययौवनशरीरका अभेद होणाचाहिये ॥ और बाल्ययौवनशरीरका अभेद
पूर्वउक्तरीतिसैं संभवैनहीं ॥ यातैं यहउत्तरभी तुमारेहमारेमतविषे समान है ॥ शंका ॥ पुत्रादिकसंबंधियोंकाअदर्शनहीं जो तिनपुत्रा
दिकोंकामरण होवै ॥ तो जैसे पुत्रादिकबांधवोंके मरण तैं अनंतर पितामातादिकसंबंधी शोककूं करैं हैं तथा रुदनकूं करैं हैं ॥ तैसे
पुत्रादिकबांधवोंकेअदर्शनकालविषेभी शोक तथारुदनादिक होणेचाहिये ॥ समाधान ॥ हेवादिन् जैसे तुमारेमतविषे यौवनशरीरकीप्राप्ति
कालविषे बालकशरीरकेनाशहुएभी पितामातादिकसंबंधी शोककूं तथारुदनकूं करैंनहीं ॥ तैसे हमदृष्टिसृष्टिवादीकेमतविषेभी पुत्रादिक
बांधवोंकेअदर्शनकालविषे पितामातादिकसंबंधी शोककूं तथारुदनकूं करैं नहीं ॥शंका॥ यौवनशरीरकीप्राप्तिकालविषे बाल्यशरीरकेनष्टहु
एभी सोईयहहमारापुत्र है याप्रकारकाअभेदज्ञान मातापितादिकसंबंधियोंकूं होवै है ॥ यातैं सोअभेदज्ञानहीं हमारेमतविषे अग्निदाहादिक
क्रियाका तथाशोकादिकोंका प्रतिबंधकहै ॥ समाधान ॥ पुत्रादिकबांधवोंकेअदर्शनतैं अनंतर जभी तिनपुत्रादिकबांधवोंकापुनःदर्शनहोवै
है ॥ तभी सोईयहहमारापुत्रहै याप्रकारकाअभेदज्ञान पितामातादिकसंबंधियोंकूं होवै है ॥ यातैं सोअभेदज्ञानहीं हमारेमतविषेभी अग्निदा
हादिकक्रियाका तथाशोकादिकोंका प्रतिबंधकहै ॥ यातैं यहउत्तरभी तुमारेहमारेमतविषे समान है ॥ शंका ॥ पुत्रादिकसंबंधियोंकाअदं
र्शनहीं जोतिनपुत्रादिकोंका मरणहोवै ॥ तो पुनःदर्शनकालविषे तेपुत्रादिकबांधव याप्रकारकहैं हैं हम नहींमरेथे ॥ यहतिनोंकावचन तुम
रेमतविषे असंगतहोवैगा ॥ यातैं अदर्शनकानाम मरणनहीं ॥ समाधान ॥ हेवादिन् तुमारेमतविषेभी यौवनदेहके प्राप्तहुए बाल्यशरीरनष्ट
होइजावै है ॥ परंतु सोयौवनपुरुष ऐसाकहै है हमनहींमरेथे ॥ यातैं यावचनकेविरोधतैं तुमारेमतविषेभी बाल्यशरीरकानाश नहींहोणाचा
हिये ॥ यहवार्त्ता तेरेकूंभीअंगीकारनहीं ॥ शंका ॥ बाल्यशरीरका तथायौवनशरीरका परस्परभेद है ॥ ताभेदकाज्ञान पुरुषकूं होवैनहीं॥

यातैं पूर्वउत्तरशरीरकेभेदकाअज्ञानरूपदोषकरिकैयुक्त युवानपुरुषका हमनहीं मरेथे याप्रकारकावचन प्रमाणरूपनहीं ॥ किंतु सोवचन अप्रमाणरूप है ॥ यातैं तावचनकरिकै बाल्यशरीरकीनित्यतासंभवैनहीं ॥समाधान ॥ पुनःदर्शनकालविषे पुत्रादिकबांधवोंका जोयहवचन है हमनहींमरेथे ॥ सोयहवचनभी पूर्वउत्तरशरीरकेभेदकाअज्ञानरूपदोषयुक्तपुरुषकरिकैजन्य है ॥ यातैं अप्रमाण रूप है ॥ ताअप्रमाणवचनतैं पूर्वशरीरकीनित्यता हमारेमतविषेभी सिद्धहोवैनहीं ॥ यातैं यहउत्तरभी हमारेतुमारेमतविषे समानहीं हैं ॥ किंवा ॥ पूर्वशरीरतैं उत्तरशरीरविषे भेदकेविद्यमानहुएभी ताभेदकाज्ञान लोकोंकूंहोवैनहीं ॥ यातैं ताभेदज्ञानका कोईप्रतिबंधकमान्याचाहिये ॥ सोप्रतिबंधक पूर्वउत्तरशरीरकेभेदकाअज्ञानरूपदोषहै ॥ यादोषकेप्रभावतैंहीं पूर्वउत्तरशरीरकेभेदकाज्ञान पुरुषोंकूंहोवै नहीं ॥ याकारणतैंहीं पितामातादिकबांधव पुत्रकेपूर्वशरीरकेनाशहुएभी शोककूं तथारुदनकूं नहींकरैं हैं ॥ किंवा ॥ पूर्वउत्तशरीरकेभेदज्ञानकाप्रतिबंधक पूर्वउक्तअज्ञान रूपदोषकूं जोनहींमानोंगे ॥ तौ पुत्रादिकोंके पूर्वशरीरतैं उत्तरशरीरविषेभेदकाज्ञान पितामातादिकबांधवोंकूं अवश्यहोवैगा ॥ ताभेदज्ञान करिकै पुत्रादिकोंकेपूर्वशरीराविषे मरणबुद्धिहोवैगी ॥ और तामरणबुद्धितैं पितामातादिकोंकूं शोकादिकोंकीप्राप्तिहोवैगी ॥ यातैं यादोष कीनिवृत्तिवासतै पूर्वउत्तरशरीरकेभेदज्ञानकाप्रतिबंधक पूर्वउक्तअज्ञानरूपदोष हमनैं तथातुमनैं अवश्यमान्याचाहिये ॥ यातैं हे वादिन् जैसे तुमारेमतविषे बाल्यशरीरका तथायौवनशरीरका अभेदहैनहीं किंतुभेद है ॥ तैसे हमदृष्टिसृष्टिवादीमतविषेभी पूर्वदर्शनकेविषयजे पुत्रादिक तथाउत्तरदर्शनकेविषयजेपुत्रादिक तिनदोनोंका अभेदनहीं किंतुभेदहै ॥ और हे वादिन् जैसे तुमारेमतविषे यौवनशरीरके प्राप्तिकालविषे बाल्यशरीरकेनष्टहुएभी पितामातादिक तापुत्रविषे मरणबुद्धिकरैं नहीं ॥ तैसे हमदृष्टिसृष्टिवादीकेमतविषेभी अदर्शनकाल विषेपुत्रादिकोंकेनष्टहुएभी पितामातादिकसंबंधी तापुत्रविषे मरणबुद्धि करैंनहीं ॥ यातैं हेवादिन् तुमनैं जेजेदोष हमारेमतविषेकहे ॥ तेतेदोष तुमारेमतविषेभीप्राप्तहोवैं हैं ॥ और तिनदोषोंकीनिवृत्तिवासतैं जोजोउत्तर तुमनैंकह्या ॥ सो सो उत्तर हमारेमतविषेभीसंभवैहै यह सिद्धभया ॥ किंवा ॥ लोकविषेप्रसिद्ध जोजीवोंकाजन्म तथामरण है ॥ सोजन्ममरणहीं हमारेदृष्टिसृष्टिवादकूं सिद्धकरै है ॥ काहेतैं सोजन्म

तथामरण ज्ञानतैंविना अन्यकिसीकारणतैंसिद्धहोवैनहीं ॥ किंतु ज्ञानतैंहीं ताजन्मकी तथामरणकी सिद्धिहोवै है ॥ जबपर्यंत पुत्रादिकबांधवोंकेजन्मकूं तथामरणकूं पितादिकसंबंधी नहींजानते ॥ तबपर्यंत हर्षकूं तथाशोककूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु पुत्रादिकोंके जन्मतथामरणकेज्ञानतैंअनंतरहीं पितादिकसंबंधी हर्षकूं तथाशोककूं प्राप्तहोवै है ॥ तैसे यहपुत्रादिकभी किसीअन्यकेवचनतैं आपणेजन्मकूंजाणिकरिकै हर्षकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ और आपणेमरणकूंजानिकरिकै शोककूं प्राप्तहोवै हैं ॥ आपणेजन्मकेज्ञानतैंविना तथामरणकेज्ञानतैंविना किसीपुरुषकूंभी हर्षशोककीप्राप्ति होवैनहीं ॥ तहाँ पुत्रादिकोंके जन्मकूं तथामरणकूं पितामातादिकसंबंधी प्रत्यक्षप्रमाणतैंहीजानैं हैं ॥ और पुत्रादिक आपणेजन्मकूं तथामरणकूं प्रत्यक्षप्रमाणतैंजाणतेनहीं ॥ किंतु पितामातादिकसंबंधियोंकेवचनरूपशब्दप्रमाणतैं तथाअनुमानप्रमाणतैं आपणेजन्ममरणकूं जानै हैं ॥ काहेतैं योनितैंनिर्गमनकालविषे यहजीव दुःखकरिकैमूर्छाकूंप्राप्तहोवै है ॥ मूर्छाअवस्थाविषे किसीवस्तुका ज्ञान होवैनहीं ॥ यातैं योनितैंनिर्गमनरूपआपणेजन्मकूं ताकालविषे प्रत्यक्षजानणेमैं यहजीव समर्थहोवैनहीं ॥ तैसे मरणकालविषेभी यहजीवदुःखकरिकै मूर्छाभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ यातैं ताकालविषेभी यहजीव आपणेमरणकूं प्रत्यक्षजानिसकैनहीं ॥ किंतु शब्दप्रमाणतैं तथाअनुमानप्रमाणतैं आपणेजन्मकूं तथामरणकूं यहजीव जानै है ॥ यातैं हेवादिन् जैसे लौकिकपितामातादिकसंबंधियोंकेवचनकरिकै आपणे जन्म मरणकूं तुमनैं निश्चयकऱ्या है ॥ तैसे सर्वज्ञ ईश्वरकरिकैरचितवेद प्रमाणतैंभी पुत्रादिकपदार्थोंकादर्शनहीं ॥ तिनपुत्रादिकोंकी उत्पत्ति औरपुत्रादिकपदार्थोंकाअदर्शनहीं तिनपुत्रादिकोंकामरण याअर्थकीसिद्धिसंभवै है ॥ शंका ॥ वाक्आदिकइंद्रियोंका तथाअग्निआदिकदेवतावोंका परित्यागकरिकै केवल पुत्रादिकविषयोंविषे दृष्टिसृष्टिवादकीसिद्धिवासतै युक्तियोंका कथनविरुद्धहै ॥ काहेतैं आत्मातैं भिन्नसर्वपदार्थ तुमारेमतविषे दृष्टिसृष्टिवादकोविषयहैं ॥ समाधान ॥ जैसे पुत्रादिकविषयोंविषे सोईयहदेवदत्तहै याप्रकारका प्रत्यभिज्ञाज्ञान होवै है ॥ तैसे वाक्आदिकइंद्रियोंविषे तथाअग्निआदिकदेवतावोंविषे सोईयहवाक्इंद्रियहै और सोईयहअग्निदेवताहै याप्रकारकाप्रत्याभिज्ञाज्ञान किसीपुरुषकूं होवैनहीं ॥ काहेतैं जिसवस्तुविषे प्रत्यक्षज्ञानकीविषयताहोवैहै ॥ तिसवस्तुविषेहीं प्रत्याभिज्ञाज्ञानकीविषयताहोवै है ॥

सोप्रत्यक्षज्ञानकीविषयता वाकूआदिकइंद्रियोंविषेहैनहीं ॥ यातैं प्रत्यभिज्ञाज्ञानकीविषयताभी वाकूआदिकइंद्रियोंविषे संभवैनहीं ॥ यहाँ यहअभिप्राय है ॥ केवल इंद्रियकरिकैजन्यज्ञानकानाम प्रत्यक्ष है ॥ जैसे चक्षुइंद्रियकरिकै यह देवदत्त है याप्रकारकाप्रत्यक्षज्ञान होवै है ॥ और पूर्वसंस्कारसहकृतइंद्रियकरिकैजन्यज्ञानकानाम प्रत्यभिज्ञाज्ञान है ॥ जैसे देशांतरविषे तथाकालांतरविषे देख्याहुआजोदेवदत्त है ॥ तादेवदत्तकेसाथ जभी चक्षुइंद्रियकासंबंधहोवै है ॥ तभी सोईयहदेवदत्तहै याप्रकारकाप्रत्यभिज्ञाज्ञानलोकोंकूंहोवै है ॥ तिनइंद्रियोंविषेभी वाकू पाणि पाद पायु उपस्थ यापंचकर्मइंद्रियोंविषेतौ ज्ञानकीकारणता होवैनहीं ॥ किंतु शब्दकाउच्चारणादिककियाकीकारणताहोवै है ॥ और चक्षु त्वकू रसन घ्राण श्रोत्र यापंचज्ञानइंद्रियोंविषेज्ञानकीकारणताहोवै है ॥ तिनोंविषेभी रसनइंद्रिय रसगुणकूंग्रहणकरै है ॥ रसके आश्रयद्रव्यकूं ग्रहणकरैनहीं ॥ तैसे घ्राणइंद्रिय गंधगुणकूंग्रहणकरै है॥ गंधगुणकेआश्रयद्रव्यकूं ग्रहणकरैनहीं॥और श्रोत्रइंद्रियशब्दगुणकूं ग्रहणकरै है ॥ शब्दकेआश्रयद्रव्यकूं ग्रहण करैनहीं ॥ यातैं यातीनइंद्रियोंकरिकैजन्यज्ञानोंकीविषयता वाकूआदिकइंद्रियोंविषे संभवैनहीं ॥ काहेतैं वाकूआदिकइंद्रिय द्रव्यरूपहैं गुणरूपहैंनहीं ॥ और चक्षुइंद्रिय रूपादिकगुणोंकूं तथारूपादिकगुणोंकेआश्रयद्रव्यकूं ग्रहणकरैं हैं ॥ तैसे त्वकूइंद्रियभी स्पर्शादिकगुणोंकूं तथास्पर्शादिकगुणोंकेआश्रयद्रव्यकूं ग्रहणकरै है ॥ तिनदोनोंविषेभी चक्षुइंद्रियतौ उद्भूतरूपकूं तथा उद्भूतरूपवालेद्रव्यकूं ग्रहणकरै है॥ तैसे त्वकूइंद्रियभी उद्भूतस्पर्शकूंतथाउद्भूतस्पर्शवालेद्रव्यकूं ग्रहणकरै है ॥ सोउद्भूतरूप तथाउद्भूतस्पर्श वाकूआदिकइंद्रियोंविषेहै नहीं॥किंतु अनुद्भूतरूपस्पर्शादिक इंद्रियोंविषेरहैं हैं॥यातैं चक्षुइंद्रियजन्यज्ञानकीविषयता तथात्वकूइंद्रियजन्यज्ञानकीविषयतावावाकूआदिकइंद्रियोंविषेसंभवैनहीं॥किंतुशास्त्रप्रमाणतैंतथा अनुमानप्रमाणतैंवाकूआदिकइंद्रियोंका परोक्षज्ञानहोवैहै ॥तैसे वाकू आदिकइंद्रियोंकेअग्निआदिकदेवतावोंकाभी परोक्षहीज्ञानहोवै है ॥ यातैं परोक्षज्ञानकेविषय जेवाकूआदिकइंद्रिय तथाअग्निआदिकदेवता ॥ तिनोंविषे सोईयहवाकूइंद्रिय है औरसोईयहअग्निदेवता है याप्रकारकाप्रत्यभिज्ञाज्ञान संभवैनहीं॥ यातैं केवलश्रुतिवचनतैंही वाकूआदिकइंद्रियोंविषे तथाअग्निआदिकदेवतावोंविषे दृष्टिसृष्टिवाद सिद्धहोवै है ॥ और पुत्रादिकविषयोंविषेतौ सोईयहदेवदत्त है याप्रकारका प्रत्यभिज्ञाज्ञान संभवै है ॥ यातैं ताप्रत्यभिज्ञारूप विरोधीनिवृत्तिवासतैं पुत्रादिकविषयोंविषेही दृष्टिसृष्टि वादका युक्तियोंसैं निरूपण कऱ्या ॥ और वास्तवतैं तौ आत्मातैंभिन्नसंपूर्ण जडवस्तु दर्शनकालविषे उत्पन्नहोवै हैं ॥ और अदर्शनकालविषेलयहोवै हैं॥ वाकूआदिक इंद्रियोंका यद्यपि अस्मदादिकजीवोंकूं प्रत्यक्षज्ञानहोवैनहीं॥ तथापि अग्निआदिकअभिमानीदेवतावोंकूं वाकूआदिकइंद्रियोंका प्रत्यक्षहीज्ञानहोवै है ॥ यातैं देवतावोंकेदर्शनतैं वाकादिकइंद्रियोंकीउत्पत्ति और देवतावोंकेअदर्शनतैं तिनोंकानाश संभवै है ॥ और जैसे आकाशादिकभूतोंकेका र्यवाकादिकइंद्रियोंका दर्शनकालविषे जन्महोवै है ॥ और अदर्शनकालविषे मरणहोवै है ॥ तैसे आकाशादिकपंचभूतोंकाभी दर्शनकालविषे जन्महोवै है ॥ तथा अदर्शनकालविषे नाशहोवै है ॥ और जैसे बाल्ययौवनादिक शरीरोंविषे प्रत्यभिज्ञारूपविरोधका पूर्वसमाधानाकिया है तैसे आकाशादिकपंचभूतोंविषेभी प्रत्यभिज्ञाज्ञानरूपविरोधकासमाधानजानिलेणा ॥ और पूर्व बाल्ययौवनशरीरादिकोंविषे जैसे अवयवोंकूं तथा अवयवरचनाकूं प्रत्यभिज्ञाज्ञानकीकारणताका खंडकऱ्या है ॥ तैसे आकाशादिकभूतोंविषेभी जानिलेणा ॥ यातैं आत्मतैंभिन्नसर्वजड़वस्तुका दर्शनहीं जन्म है ॥ और अदर्शनहीं तिनोंका नाश है ॥ शंका ॥ अदर्शनहींजो वस्तुकानाशहोवै है ॥ तो जिसकालविषे पुरुषकूं तडागकेजलकाज्ञाननहीं है ॥ तिसकालविषे तुमारेमतविषे तडागकाजल नाशहोइगया है ॥ यातैं जलके विरोधी अग्निकी तहाँ उत्पत्तिहोणी चाहिये ॥ और ऐसा कभी होवैनहीं यातैं दृष्टिसृष्टिवाद असंगत है ॥ समाधान ॥ हेवादिन् यादोषकी तुमारे मतविषेभी प्राप्ति होवै है ॥ काहेतैं अन्यकिसीपुरुषकेबाल्यअवस्थाके नाशहुए तावाल्यअवस्थाकाविरोधीयौवनअवस्था तुमारेकूंभी प्राप्तहोणी चाहिये॥ जैसे अन्यपुरुषकेबाल्यअवस्थाकाविरोधी यौवनअवस्थातुमारेकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसेअदर्शनकालविषे जलकेनष्टहुएभी तहाँ अग्निउत्पन्नहोवै नहीं शंका ॥ यौवनअवस्थाकीप्राप्तिविषे धर्मअधर्मरूपकर्म कारण हैं ॥ यातैं अन्यपुरुषकीयौवनअवस्था हमारेकूं प्राप्तहोवै नहीं ॥ समाधान ॥ हेवादिन् जैसे तुमनैं कर्मोंकूंअंगीकारकरिकै दूषणकीनिवृत्ति करी ॥ तैसे हमदृष्टिसृष्टिवादीभी कर्मोंकूंअंगीकारकरिकै सर्वदूषणोंकीनिवृत्ति करैं हैं ॥ अदर्शनकालविषे तडागकेजलकानाशहुएभी कर्मोंकेवशतैं तहाँजलहीउत्पन्नहोवै है ॥ अग्नि उत्पन्नहोवै नहीं॥ शंका ॥ आकाशा

दिकपंचभूतोंकेकार्यजेशरीरादिक हैं ॥ ते सुखदुःखरूपभोगकेसाधन हैं ॥ यातैं तिनोंकीउत्पत्तिविषे यद्यपि धर्माधर्मरूपकर्मोंकूं कारणता संभवै है ॥ तथापि आकाशादिकपंचभूतोंकीउत्पत्तिविषे कर्मोंकूंकारणता संभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेवादिन् आकाशादिकपंचभूतोंकेप्रति कर्मोंकूंकारणतानहीं है ॥ यहतुमनैं आशंकानहींकरी ॥ किंतु ॥ याकहणेकरिकै तुमनैं आपणेअज्ञानकूंप्रगटकऱ्या है ॥ काहेतैं श्रुतिविषे तथास्मृतिविषे तथाव्यासभगवान्केसूत्रोंविषे याप्रकारकह्या है ॥ जीवोंकेपुण्यपापरूपकर्मोंकरिकैयुक्तहुआ मायाविशिष्टपरमात्मा भूतभौतिकरूपप्रपंचकूं उत्पन्नकरै है ॥ और तिसप्रपंचका पालन तथासंहार करै है ॥ जोपरमात्मा जीवोंकेकर्मतैंविनाहीं जगत्कीउत्पत्तिकरैगा ॥ तौ परमात्माविषे विषमता तथानिर्दयतारूप दोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ काहेतैं कोईपुरुष धनी है ॥ और कोईकपुरुष निर्धन है ॥ और कोईकपुरुष सुखी है ॥ और कोईकपुरुष दुःखी है ॥ और कोईकपुरुष पंडितहै ॥ और कोईकपुरुष मूर्ख है ॥ याप्रकारकेविषमप्रपंचकूंकरताहुआपरमात्मा विषमता तथानिर्दयतारूप दोषवालाहोवैगा ॥ और समदृष्टिईश्वरविषे विषमता तथा निर्दयतारूपदोष संभवैनहीं ॥ यातैं तादोषकीनिवृत्तिवासतै अवश्यकर्मोंकूंअंगीकारकऱ्याचाहिये ॥ किंवा ॥ जोवस्तु जिसजीवके सुखकासाधनहोवै है ॥ सोवस्तु तिसजीवकेपुण्यकरिकैउत्पन्नहोवै है ॥ और जोवस्तु जिसजीवकेदुःखकासाधनहोवै है ॥ सोवस्तु तिसजीवकेपापकर्मकरिकैउत्पन्नहोवै है ॥ सोसुखदुःखकीकारणता जैसेशरीरादिकभौतिकपदार्थोंविषे है ॥ तैसे आकाशादिकपंचभूतोंविषेभीहै ॥ यातैं आकाशादिकपंचभूतोंकीउत्पत्तिविषेभी जीवोंकेअदृष्टोंकूंकारणता है ॥ शंका ॥ पूर्वपूर्वसृष्टिविषेस्थितजेजीवहैं ॥ तिनजीवोंकेकर्मोंकूं यद्यपि उत्तरउत्तरसृष्टिकेप्रति कारणतासंभवै है ॥ तथापि सर्वसृष्टियोंतैंप्रथमजोसृष्टिउत्पन्नभयी है ॥ ताकेविषे कर्मोंकूंकारणतासंभवै नहीं ॥ यातैं संपूर्णकार्यकेप्रति कर्मोंकूंकारणतानहीं ॥ समाधान ॥ संपूर्णसृष्टियोंतैंप्रथमकोईसृष्टि हैनहीं ॥ किंतु बीजअंकुरकीन्याईं संसारका प्रवाह अनादिहै ॥ पूर्वपूर्वकर्मोंकेअनुसार उत्तरउत्तरसृष्टि उत्पन्नहोवै है ॥ और यासंसारका आत्मज्ञानतैंविना अन्यउपायकरिकै नाशभी नहींहोवै है ॥ किंतु आत्मज्ञानकरिकैही यासंसारकानाशहोवै है ॥ शंका ॥ कर्मोंकूंही जोसर्वसंसारकीकारणतामानोगे ॥ तौ मायाविषे

जगत्की कारणतामानणीव्यर्थहोवैगी ॥ समाधान ॥ कर्मोंविषेजगत्की कारणतामानणे मैं मायाकीव्यर्थता होवैनहीं ॥ काहेतैं मायातौंविना कर्मोंकेफलकीहीव्यवस्थासंभवै नहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ कार्तिकमासविषे कृत्तिकानक्षत्रकेयोगहुए जोपुरुष कार्तिकस्वामीका दर्शनकरै है ॥ सोपुरुष सप्तजन्मोंविषे धनकरिकैयुक्त वेदपाठी ब्राह्मण होवै है ॥ याप्रकारकाफल कार्तिकस्वामीकेदर्शनरूपकर्मकरिकै प्राप्तहोवै है ॥ यह शास्त्रविषेकह्या है ॥ ताकेविषे याप्रकारकीशंकाहोवै है॥कार्तिकस्वामीकेदर्शनकरणेहारेपुरुषकूं जन्मांतरविषे ब्राह्मणशरीरकीप्राप्ति तथाधनादिकोंकीप्राप्ति रूप फलहोवै है ॥ और तिसब्राह्मणतैं भिन्नपुरुषोंविषे तादर्शनरूपकर्मकरिकै दुःखप्राप्तिहोवै नहीं ॥ याप्रकारकेनियमविषे कोनकारण है ॥ याप्रकारकीशंकाका हमनहींजानते याप्रकारकेउत्तरतैंविना दूसराकोईउत्तर है नहीं ॥ किंतु हमनहींजानते याप्रकारकाउत्तर रही कहनाहोवैगा ॥ और हमनहींजानते यहप्रतीति मायाकूंहीविषयकरै है ॥ यातैं सर्वपुरुषोंकेअनुभवकरिकैसिद्ध औरसर्वकार्यके सिद्ध करणेहारी माया व्यर्थनहीं किंतु सार्थक है ॥ शंका ॥ हमनहींजानते याप्रकारकाशब्द भावरूपमायाकावाचकहै नहीं ॥ किंतु ज्ञानकेअभावकावाचक है ॥ यातैं याशब्दतैं मायाकीसिद्धिसंभवै नहीं ॥ समाधान ॥ मैंनहींजानता यहशब्द किसीएकज्ञानकेअभावकूंबोधनकरै है ॥ अथवा सर्वज्ञानोंकेअभावकूं बोधनकरै है ॥ तहाँ प्रथमपक्षतौबनैंनहीं ॥ काहेतैं जिसकालविषे घटकाज्ञानपुरुषकूं होवै है ॥ तिसकालविषेपटकाज्ञान तापुरुषकूंहोवै नहीं ॥ यौंत तापटज्ञानके अभावकूंअंगीकाकरिकै मैंनहींजाणता यहप्रयोग होणा चाहिये ॥ और घटज्ञानकालविषे यहप्रयोग होवै नहीं ॥ यातैं यत्किंचित् ज्ञानके अभावकूं मैंनहींजाणता यहशब्द बोधनकरै नहीं ॥ और मैंनहीं जानता यहशब्द संपूर्णज्ञानोंकेअभावकूं बोधनकरै है ॥ यहद्वितीयपक्षभी संभव नहीं ॥ काहेतैं अभावकेज्ञानविषे प्रति योगीकाज्ञान तथाअनुयोगीका ज्ञान कारणहोवै है ॥ प्रतिअनुयोगीकेज्ञानतैंविना अभावका ज्ञानहोवै नहीं ॥ जिसवस्तुका अभाव होवै है सोवस्तु ताअभाव काप्रतियोगीहोवै है ॥ और जिसवस्तुविषे अभावरहै है ॥ सोवस्तु ताअभावकाअनुयोगीहोवै है ॥ जैसे घटकेअभाववालाभूतल है ॥ यास्थानविषे अभावका घटप्रतियोगी है ॥ और भूतल अनुयोगी है ॥ तैसे संपूर्णज्ञानोंकेअभावका संपूर्णज्ञान प्रतियोगी है ॥ और जीवात्मा अनुयोगी

है ॥ तहाँ भूतविष्यत्कालविषे होणेहारेसंपूर्णज्ञानोंका अल्पज्ञपुरुषकूं ज्ञानसंभवैनहीं ॥ यातैं मैंनहींजानता यहशब्द सर्वज्ञानोंके अभावकूंभी बोधनकरैनहीं ॥ किंतु भावरूपमायाकूंहींबोधनकरै है ॥ यातैं माया अवश्यअंगीकारकरीचाहिये॥ अब अन्यप्रकारतैं मायाकीआवश्यकता निरूपणकरैं हैं ॥ स्वभावही जगत्काकारण है यह स्वभाववादी कोईकनास्तिक माने है॥और कालहीजगत्काकारण है यह कालवादी कोईकनास्तिक माने है ॥ इसतैं आदिलेके जेनास्तिकोंकेपक्ष हैं ॥ तिनपक्षोंकूंखंडनतर्करूपराक्षसराजा मायारूपीजननीकीसहायता तैंविना भक्षणकरैनहीं ॥ किंतु मायारूपीजननीकीसहायतातैंहीं तिनपक्षोंकूंभक्षणकरै है ॥ तात्पर्ययह ॥ खंडनकरणे योग्यजे नास्तिकोंकेमत हैं ॥ तथाखंडनतर्करूपजोराक्षस राजा है ॥ तिनसर्वोंकी जननी माया है ॥ सोमाया खंडनतर्क रूपकनिष्ठपुत्रविषे अतिस्नेहयुक्त है॥ यातैं नास्तिकोंकेचित्तविषे हमनहींजानते यारूप करिकैप्रगटहुई सोमाया खंडनतर्करूपकनिष्ठ पुत्रकेताईं ॥ नास्तिकोंके मतरूपज्येष्ठपुत्रोंकूं भक्षणकरणेवासतै देवै है ॥ यातैं खंडनतर्करूपकनिष्ठपुत्रके जयकासंपादनरूपदुर्घटकर्मकेकरणेहारीमाया अवश्यमानणीचाहिये ॥ किंवा ॥ जिसकालविषे खंडनतर्करूपराक्षसराजासर्वनास्तिकोंकेमतोंकूं खंडनकरै है॥ तिसकालविषे सो मायाजननी आपणेदुर्घटतारूपकर्मकूं प्रगटकरैनहीं किंतु गुह्यराखै है ॥ जोमायारूपीजननी आपणेदुर्घटतारूपकर्मकूंभी प्रगटकरै ॥ तौ खंडनतर्करूपराक्षसराजा तामायाकेदुर्घटतारूपकर्मकूंभी खंडनकरिदेवै॥यद्यपि आपणीमाताकानाशकरणा अनुचित है॥तथापि आपणेकुलकानाशकरणा राक्षसोंकास्वभावहै॥ याकारणतैंमायारूपीजननी खंडनतर्करूपकनिष्ठपुत्रतैं गुह्यहोइकेरहै है ॥तात्पर्ययह ॥ सर्वनास्तिकोंकेमतोंकूंखंडनकराइके आपगुह्यहोइकेरहणा॥यहभी मायाकादुर्घटकर्म है॥यातैं मैंनहींजानता याअनुभवकरिकैसिद्धमाया अवश्यमानीचाहिये॥शंका ॥अर्थकेबोधकवचनकानामउत्तरहोवै है मैंनहींजाणतायहवचन निरर्थक है॥यातैं यावचनकूं उत्तररूपतासंभवैनहीं॥समाधान॥प्रतिवादीकेमौनका जोवचन कारणहोवै है॥ तावचनकानाम उत्तर है ॥ मैंनहींजानता यहवचनभी प्रतिवादीकेमौनकाकारण है यातैं यावचनकूं उत्तररूपतासंभवै है ॥ तात्पर्ययह ॥ प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकूंअंगीकारकरिकैहीं परस्परवाद होवै है ॥ जोपुरुष मैंनहींजनाता याप्रकारकाकथनकरै है॥ तापुरुषतैं कोईभीप्रतिवादी

पूछतानहीं॥किंतु मौनरहै हैं॥यातैं प्रतिवादीकेमौनकासंपादनहीं तावचनकाफल है॥ शंका ॥मैंनहींजानता याप्रकारकीप्रतीतिकाविषयजोअज्ञानहै॥ताअज्ञानरूपदोषकूंअंगीकारकरिकै प्रतिवादीकाजयकरणाभीपराजयकेतुल्यहै ॥समाधान॥अज्ञानदोप्रकारकाहोवै है॥एकतोआत्मविषयक अज्ञान ॥और दूसराअनात्मवस्तुविषयक अज्ञान ॥तहाँ आत्मविषयकअज्ञानतौ जीवोंकेमहाहानिकाकारण है॥और जन्मादिकअनात्मपदार्थविषयकअज्ञान जीवोंकीहानिकरैनहीं॥तात्पर्ययह ॥ जिसपुरुषकूंआत्मज्ञानभया है ॥ तिसपुरुषकूं सर्वअनात्मवस्तुका मिथ्यारूपकरिकेज्ञानभया है ॥ तामिथ्याप्रपंचकेविशेषरूपकरिकैजानणेकीइच्छाभी आत्मज्ञानीपुरुषकूं होवैनहीं ॥ यातैं आत्मज्ञानीपुरुषकूं अनात्मपदार्थोंकाअज्ञानदूषणनहीं ॥ उलटा भूषणहै ॥ तैसे आत्मज्ञानतैंरहित अज्ञानीपुरुषकूंभी जन्मादिक अनात्मपदार्थोंकाअज्ञान दूषणनहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे नेत्रहीनअंधपुरुषकूं ॥ रूपादिकपदार्थोंकाअज्ञान दूषणनहीं ॥ अन्यदृष्टांत ॥ जैसे कर्दमकरिकैलिप्तपुरुषकूं पुनः धूलीकालेप दूषणहोवैनहीं ॥ तैसे आत्मज्ञानतैंरहित अज्ञानीपुरुषकूं अनात्मपदार्थोंकाअज्ञान दूषणहोवैनहीं ॥ अब याहीअर्थकेनिरूपणकरणेवासतै प्रपंचकीउत्पत्तिविषे तर्ककेअयोग्यताकूं निरूपणकरै हैं ॥ आनंदस्वरूपआत्मातैं जगत्कीउत्पत्ति शास्त्रविषेकही है ॥ सो संभवैनहीं ॥ काहेतैं आत्मा प्रकाशस्वरूप है ॥ और द्वैततैंरहित है ॥ और असंग है ॥ और गुणोंतैंरहित है ॥ और अनंत है ॥ और क्रियातैंरहित है ॥ और मनवाणीकाआविषय है ॥ ऐसाअद्वितीयआत्मा॥नानाप्रकारकेविचित्रजगत्कूं किसप्रकार उत्पन्न करता भया ॥ याप्रकारकीशंकाकेहुए ताशंकाकेसमाधानकरणेकूं तथाजाणेकूं कोईभीपुरुष समर्थनहीं ॥ यातैं प्रपंचकीउत्पत्ति तर्कका विषय नहीं ॥ सोकैसाप्रपंच है ॥ जिसप्रपंचविषे एकएकवस्तुभी शतकोटीप्रमाणोंकरिकै जानीजावैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ यावस्तुका क्या स्वरूप हैं ॥ और कितने इस विषधर्म हैं ॥ और कितने यावस्तुकेअवयव हैं ॥ याप्रकार कोईवस्तु जाणीजावैनहीं ॥ जभी एकवस्तुकेजानणेविषेभी कोईपुरुष समर्थनहीं ॥ तभी सर्वजगत्केजाणनेविषे कौनपुरुष समर्थहोवैगा ॥ किंतु ऐसाकोईभीपुरुष समर्थनहीं ॥ और जिन पुरुषोंकूं ऐसा अभिमान है ॥ हम सर्वजगत्कूंजाणते हैं ॥ तिनपुरुषोंतैं ॥ हम यह पूछैं है ॥ सन्मुखदेशविषेस्थितजोयहघट है ॥ तिसकेस्वरूपका

प्रथम तुमनिरूपणकरो ॥ याघटकेनिरूपणकियेहुए संपूर्णप्रपंचकाभी तुमारेसैं निरूपणहोवैगा ॥ तहाँ घटकेस्वरूपका तथा अन्यपदा
थौंतैंघटकीव्यावृत्तिका तथाव्यावृत्तिकेप्रयोजकधर्मोंका निरूपणहीं घटकाज्ञानरूपण है ॥ यातैं सन्मुखदेशविषे स्थितघटका स्वरूप
क्या है ॥ इतिस्वरूपप्रश्न ॥ और यहघट घटतैंभिन्नकाहेतैंनहींहोवै ॥ तात्पर्ययह ॥ याघटकी अन्यपदार्थोंतैंव्यावृत्ति किसप्रकार ह ॥
इतिव्यावृत्तिप्रश्न ॥ और सन्मुखदेशवृत्तियाघटकेव्यावृत्तिकाप्रयोजक नेत्रइंद्रियकासंबंधही कहणाहोवैगा ॥ यद्यपि घटत्वादिक जाति
यांभी व्यावृत्तिकेप्रयोजक संभवै हैं ॥ तथापि घटत्वादिकजातियोंका आगेनिराकरणकरैंग ॥ यातैं घटत्वादिकजातियोंकू व्यावृत्तिकी
प्रयोजकता संभवैनहीं ॥ सोनेत्रइंद्रियकासंबंध सन्मुखदेशवृत्तिघटविषे है अन्यपदार्थकेसाथनहीं ॥ याकेविषे कौननियामक है ॥ इतिधर्म
प्रश्न ॥ याप्रकार सिद्धांतीकेतीनप्रश्नोंकूं श्रवणकरिकै वादी प्रथमघटकेस्वरूपकानिरूपणकरै है ॥ शंका यह है ॥ याप्रकारकेशब्दकावाच्य
जोवस्तु है ताकानाम घट है ॥ समाधान यह है ॥ याप्रकारकेशब्दकीवाच्यतारूपलक्षणतैं घटकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ काहेतैं यह है याशब्द
कीवाच्यता जैसे घटविषे है ॥ तैसे पटादिकोंविषेभी है ॥ यातैं यहलक्षण अतिव्याप्तिदोषवाला है ॥ लक्ष्यविषे तथाअलक्ष्यविषे जोलक्षण
कावर्तणा है ॥ ताकानाम अतिव्याप्ति है ॥ शंका ॥ यहघट है याप्रकारकेशब्दकीवाच्यता घटकालक्षण है ॥ पटादिकोंविषे यद्यपियह है याप्र
कारकेशब्दकीवाच्यता है ॥ तथापि यहघट है ॥ याप्रकारकेशब्दकीवाच्यता पटादिकोंविषेहैनहीं ॥ किंतु केवलघटविषे है ॥ यातैं पूर्वउक्तअति
व्याप्तिरूपदूषण यालक्षणविषेनहीं ॥ समाधान ॥ यहघट है याप्रकारकेशब्दकीवाच्यता जैसेसन्मुखदेशवृत्तिघटविषे है ॥ तैसे अन्यघट
विषेभी है ॥ यातैं यहलक्षणभी अतिव्याप्तिदूषणकारिकैयुक्त होणतैं सन्मुखदेशवृत्तिघटकीसिद्धिकरैनहीं ॥ शंका ॥ अघटकेभेदवालाजोहोवै ॥
सो घटकहिये है ॥ समाधान ॥ यालक्षणतैंभी घटकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ काहेतैं अघटकेभेदवालाजोहोवै सो घटकहिये है ॥ यालक्षणविषेअघट
शब्दका क्या अर्थ है ॥ घटकेभेदकूंही अघट कहोगे ॥ सोघटकाभेद अन्योन्याभावरूप है ॥ यातैं प्रतियोगीरूपघटकेनिर्णयतैंविना घटकेभेद
कानिर्णयसंभवैनहीं ॥ और घटका निर्णय अबपर्यंतभयानहीं ॥ यात जैसे सन्मुखदेशवृत्तिघटविषे घटकेभेदकासंशय है तैसे पटादिकोंवि

षेभी घटकेभेदकासंशयहै ॥ यातैं सन्मुखदेशवृत्तिघट पटहोणाचाहिये ॥ और पटघटहोणाचाहिये घटकू पटरूपता तथापटकू घटरूपता
अत्यंतविरुद्धहै ॥ किंवा ॥ अघटकेभेदरूपलक्षणकारिकै जोघटकीसिद्धिकरिये ॥ ता घटकीसिद्धिविषे घटकी अपेक्षारूप आत्माश्रय दूषण
कीभीप्राप्तिहोवै है ॥ यातैं लक्षणतैंभी घटकीसिद्धिसंभवैनहीं ॥ शंका ॥ इंद्रियोंतैंभिन्नहोवै औरसन्मुखदेशवृत्तिघटकेसाथजोइंद्रियका संयोग
संबंधतासंबंधकाज्ञानरूपकहोवै सो घटकहियेहै ॥ यालक्षणविषे इंद्रियोंतैंभिन्नहोवै यापदका जोनहींनिवेशकरते ॥ तौ इंद्रियोंविषेही घटके
लक्षणकीअतिव्याप्तिहोती ॥ काहेतैं घटकेसाथ जोनेत्रइंद्रियकासंयोगसंबंधहै ॥ सोसंयोगसंबंध घटतथानेत्रइंद्रियदोनोंविषे रहै है ॥ यातैंजैसे
घट तासंबंधकानिरूपकहै ॥ तैसे नेत्रादिकइंद्रियभी तासंबंधकानिरूपकहै ॥ परंतु नेत्रादिकइंद्रिय इंद्रियोंतैंभिन्नहैनहीं ॥ औरघटतोनेत्रादिक
इन्द्रियोंतैं भिन्नहै यातैं इंद्रियविषे लक्षणकीअतिव्याप्तिवारणवासतैं इंद्रियोंतैंभिन्नहोवै यहपद अवश्यदेणाचाहिये ॥ समाधान ॥ यालक्षणतैंभी
सन्मुखदेशवृत्तिघटकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ काहेतैं जिसक्षणविषेनेत्रइंद्रियका सन्मुखदेशवृत्तिघटकेसाथ संयोगसंबंधहै ॥ तिसीक्षणविषे ताघटकेस
मीपवर्तिअन्यपदार्थोंकेसाथभी नेत्र इंद्रियका संयोगसबंधहै ॥ तासंयोगसंबंधके तेअन्यपदार्थभी निरूपकहैं ॥ और इंद्रियोंतैंभिन्नभी हैं ॥ यातैं
तिनपदार्थोंविषे घटकेलक्षणकीअतिव्याप्तिहोवैं है ॥ शंका ॥ जलकेआनयनकी जिसविषेशक्तिहोवै सो घटकहियेहै ॥ समाधान ॥ जलकेआ
नयनकीशक्तिरूपलक्षणतैंभी सन्मुखदेशवृत्तिघटकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ काहेतैं जैसे सन्मुखदेशवृत्तिघटविषे जलकेआनयनकीशक्ति है ॥ तैसे
अन्यघटविषे तथापटविषे तथाअन्यकिसीपात्रविषेभीजलकेआनयनकीशक्तिदेखाती है ॥ यातैं सोसन्मुखदेशवृत्तिघटपटादिरूपहोणाचाहिये ॥
तात्पर्ययह ॥ याघटकेलक्षणकी पटादिकोंविषे अतिव्याप्तिहोवै है ॥ शंका ॥ जलकाआनयनरूपक्रिया घटरूपकारककीही अपेक्षाकरैहै ॥ पटादि
कोंकी अपेक्षाकरैनहीं ॥ यातैं पटादिकोंविषे पूर्वउक्तलक्षणकी अतिव्याप्तिनहीं ॥ समाधान ॥ जोजोक्रियाहोवै है ॥ सो पूर्वकारककेसमान
कारककीअपेक्षाकरै है ॥ जैसे पाकरूपक्रिया पूर्वअग्निकेसमानअग्निकीअपेक्षाकरैहै ॥ केवल पूर्वअग्निमात्रकीअपेक्षाकरैनहीं ॥ तैसे जलकाआ
नयनरूपक्रियाभी केवलघटमात्रकीअपेक्षाकरैनहीं ॥ किंतु पार्थिवत्वरूपकारिकै घटकेसमानजेपटादिकहैं तिनोंकीभीअपेक्षाकरै है ॥ यातैं

जलकेआनयनकीशक्ति पटादिकोंविषेभी है ॥ किंवा ॥ जलकेआनयनकीशक्तिवालाजोहोवैहै ॥ सो घटकहिये है ॥ याप्रकारका जोघटका लक्षणकरिये॥तौ सच्छिद्रघटविषे जलकेलेआवणेकीशक्तिहैनहीं॥ यातैं तासच्छिद्रघटविषे घटबुद्धिनहींहोणीचाहिये ॥ और सच्छिद्रघटविषे घटबुद्धि सर्वजीवोंकूंहोवै है ॥ तात्पर्ययह ॥ घटकेलक्षणकी सच्छिद्रघटविषे अव्याप्तिहोवै है ॥ किंवा ॥ जलकेआनयनकीशक्तिजोघटकाल क्षणहोवै ॥ तौ काचे घटविषे जलकेआनयनकी शक्तिहैनहीं ॥ यातैं काचेघटविषे घटबुद्धिनहींहोणीचाहिये ॥ और सर्वपुरुषोंकूं ताकेविषे घटबुद्धिहोवै है ॥ तात्पर्ययह ॥ नेत्रादिकइंद्रियकरिकै शक्तिकाप्रत्यक्षज्ञान किसीकूंहोवै नहीं ॥ किंतु कार्यरूपहेतुतैं शक्तिकाअनुमानहोवै है ॥ जैसे स्फोटादिककार्यतैं अग्निविषे दाहशक्तिकाअनुमानहोवै है ॥ काचेघटकरिकैजलकाआनयनरूपकार्यहोवैनहीं ॥ यातैं अनुमान करिकैभी काचेघटविषे शक्तिकीसिद्धिहोवैनहीं॥ किंवा॥जलकेआनयनकीजिसविषेशक्तिहोवै सोघटकहिये है॥ऐसाजो घटकालक्षणकरिये ॥ तो जलकेआनयनकीशक्ति एकघटमात्रविषेनहीं ॥ किंतु अन्यभीअनेकपात्रोंविषे जलकेआनयनकीशक्तिहै ॥ यातैं तिनोंविषेभी घटबुद्धिहो णीचाहिये॥और घटतैंभिन्नपात्रोंविषे घटबुद्धिकिसीकूंहोवैनहीं॥तात्पर्ययह॥याघटकेलक्षणकी अन्यपात्रोंविषे अतिव्याप्तिहोवै है ॥ यातैं यादु ष्टलक्षणतैंभी घटकीसिद्धिहोवैनहीं॥आनयननाम लेआवणेकाहै ॥शंका॥ घटत्वजातिवालाजोहोवै सो घटकहिये है ॥ समाधान ॥ घटत्वजा तिरूपलक्षणतैंभी घटकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ काहेतैं सोघटत्वजाति सर्वत्रव्यापक है ॥ अथवा परिच्छिन्नहै ॥ जोकहो घटत्वजातिव्यापकहै ॥ तौ जैसे घटत्वजातिका घटकेसाथसंबंधहै ॥ तैसे पटादिकोंकेसाथभी अवश्य संबंधमानणाहोवैगा ॥काहेतैं सर्वमूर्तपदार्थोंकेसाथ जाकासंबं धहोवै सो व्यापककहिये है ॥ जैसे आकाशका सर्वघटपटादिकमूर्तपदार्थोंकेसाथ संबंध है ॥ यातैं आकाश व्यापकहै ॥ तैसेही जो घट त्वजातिकूं व्यापकमानोंगे ॥ तौ पटादिकोंकेसाथभी घटत्वजातिकासंबंधहोणेतैं पटादिकोंविषे घटत्वजातिरूपलक्षणकी अतिव्याप्तिहो वैगी॥ताअतिव्याप्तिरूपदूषणकीनिवृत्तिवासतै सोघटत्वजाति जोपरिच्छिन्नमानोंगे ॥ तौ सोघटत्वजाति घटव्यक्ति विषेही चलिकेआवै है ॥ पटादिकोंविषेजावैनहीं ॥ यानियमविषे कौनप्रयोजक है ॥ और जो तुम ऐसाकहो ॥ अनंतगौवोंकेविद्यमानहुएभी जैसे वत्स आपणी

माताकूं पहचानिकरिकै ताकेसमीपजावै है ॥ तैसे घटत्वजातिभी आपणेघटव्यक्तिकूंपहचानिकरिकै ताविषे प्रवेशकरै है ॥ पटादिकों विषे प्रवेशकरै नहीं ॥ सोयह तुम्हाराकहणाभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं वत्स चेतनहै यातैं ताकेविषे आपणे माताकाज्ञानसंभवै है ॥ और घट त्वजाति जडतैं ताकेविषे यहघटरूपव्यक्तिहमारी है याप्रकारकाज्ञान संभवैनहीं किंवा ॥ मूर्तद्रव्यविषेही गमनरूपक्रिया नैयायिक मानै हैं ॥ जैसे पृथिवी जल तेज वायु मन यहपंचमूर्तद्रव्यहैं ॥ यातैं इनोंविषे गमनरूपक्रियाहोवै है ॥ और आकाश काल दिशा आत्मा यह चारि अमूर्तद्रव्यहैं और व्यापक हैं ॥ यातैं इनोंविषे क्रिया होवै नहीं ॥ और घटत्वजाति द्रव्यरूपनहीं तथामूर्तरूपनहीं ॥ यातैं घट त्वजाति विषे गमनरूपक्रियासंभवैनहीं ॥ और क्रियारहितघटत्वजातिकाघटविषेप्रवेशहोणा अत्यंतविरुद्ध है ॥ शंका ॥ घट त्वजाति विषे स्वभावतैं क्रियाहैनहीं ॥ यातैं सोघटत्वजाति स्वतंत्र घटव्यक्तिविषे आइसकैनहीं ॥ किंतु घटतैंभिन्नकिसीव्यक्तिविषे सो घटत्वजातिरहै है ॥ जिसकालविषे घटकीउत्पत्तिहोवै है तिसकालविषे ताव्यक्तिका घटकेसमीप आगमन होवै है ॥ ताव्यक्तिकेसाथ घटत्व जातिभी घटविषेआवै है ॥ दृष्टांत ॥ जैसे रूपादिकगुणोंविषे स्वतंत्र गमनरूपक्रियासंभवैनहीं ॥ परंतु रूपादिकगुणोंकेआश्रय जेकुसुंभादि कद्रव्यहैं ॥ तिनोंका जभी वस्त्रकेसाथ संभवहोवै है तभी ताकुसुंभादिकोंकेसाथ रूपादिकोंकाभी वस्त्रविषेजाणाहोवै ॥ समाधान ॥ वस्त्र केसंबंधतैंपूर्वहीं जैसे कुसुंभादिकोंविषे रक्तरूपकीप्रतीतिहोवै है ॥ तैसे घटव्यक्तितैंविना किसीअन्यव्यक्तिविषे घटत्वजातिकीप्रतीति होवै नहीं ॥ यातैं अन्यव्यक्तिकेआगमनतैं घटत्वजातिका घटविषेआगमन संभवैनहीं ॥ शंका ॥ अन्यव्यक्तिकेआगमनतैं घटत्वजातिका घटवि षेआगमन होवैनहीं ॥ किंतु जिसदेशविषेघटकीउत्पत्तिहोवै है ॥ तिसदेशविषे आपणेप्रादुर्भावतासतै घटत्वजाति पूर्वहींस्थितहोवै है ॥ समा धान ॥ घटकीउत्पत्तितैंपूर्व घटत्वजाति तहाँरहै है ॥ यहतुम्हाराकहना संभवै नहीं ॥ काहेतैं घटकी उत्पत्तितैंपूर्व घटत्वजातिका कोई आश्रयहैनहीं ॥ और जोघटकीउत्पत्तितैंपूर्व घटत्वजातिका घटतैंभिन्नकोईआश्रयमानोंगे ॥ तौ उत्पन्नहुएघटविषेभी घटत्वजातिका स्वतंत्र गमन तथाआश्रयकेगमनतैंगमन पूर्वउक्तयुक्तियोंकरिकैसंभवैनहीं ॥ शंका ॥ जिसकालविषे घट उत्पन्नहोवै है ॥ तिसकालविषे घटके

साथ घटत्वजातिभी उत्पन्नहोवै है ॥ यातैं पूर्वउक्तदोप यापक्षाविषे संभवै नहीं ॥ समाधान ॥ जैसे घटकेसाथ नीलपीतादिकरूपोंकीउत्पत्तिहोवे है ॥ तैसे घटत्वजातिकीउत्पत्ति संभवैनहीं ॥ काहेतैं जातिकीउत्पत्ति नैयायिक मानैंनहीं ॥ जो उत्पत्तिमानपदार्थभी जातिहोवै ॥ तौ नीलपीतादिकगुणभी घटत्वजातिस्वरूपहोणेचाहिये ॥ और नीलपीतादिकरूपोंकूं कोई घटत्वजातिकहैनहीं ॥ यातैं किसीप्रकारकरि कैभी घटत्वजातिकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ किंवा ॥ सोघटत्वजाति अभावरूपहै ॥ अथवा भावरूपहै॥ तहाँ अभावरूपघटत्वजाति है याप्रथमपक्षविषेभी कौनअभावरूपहै ॥ तात्पर्ययह ॥ दोप्रकारका अभाव नैयायिक मानैं हैं ॥ एक अनित्यअभाव ॥ और दूसरा नित्य अभाव ॥ तहाँ प्रागभाव तथाप्रध्वंसाभाव यह दोनोंअभाव अनित्यहैं ॥ और अन्योन्याभाव तथाअत्यंताअभाव यहदोनोंअभाव नित्यहैं॥तहाँ प्रथम प्रागभावरूपता घटत्वजातिविषे संभवैनहीं ॥ काहेतैं सोघटत्वजाति घटकाप्रागभावरूपहै ॥ अथवा पटादिकोंकाप्रागभावरूप है ॥ तहाँ घटकाप्रागभावरूप जोघटत्वजातिकूंमानो ॥ तौ घटविषे घटत्वजातिकीप्रतीति नहींहोणीचाहिये ॥ काहेतैं घटकेउत्पन्नहुए घटकाप्रागभाव नाशहोईजावे है॥ यातैं घटकाप्रागभावरूप घटत्वजातिनहीं ॥ तैसे पटकाप्रागभावरूपभी घटत्वजातिनहीं ॥ काहेतैं प्रागभाव प्रति योगीकीउत्पत्तितैंपूर्व प्रतियोगीकेसमवायिकारणाविषेरहै है ॥ अन्याकिसीविषे प्रागभावरहै नहीं ॥ पटकाप्रागभाव पटकीउत्पत्तितैंपूर्व तंतुवोंविषेरहै है ॥ घटविषे रहैनहीं ॥ यातैं पटादिकोंकाप्रागभावरूपभी घटत्वजातिनहीं ॥ और घटत्वजातिकूं जोप्राग भावरूपमानोंगे ॥ तौ प्रति योगीकेउत्पन्नहुए प्रागभावकानाशहोवै है ॥ यातैं घटत्वजातिकाभी नाशमानणाहोवैगा ॥ सोघटत्वजातिकी उत्पत्ति तथानाश तुमारेकूं अंगीकारहैनहीं॥ यातैं प्रागभावरूप घटत्वजातिनहीं ॥ और प्रध्वंसाभावरूप घटत्वजातिहै ॥ याद्वितीयपक्षविषेभी घटकाध्वंसरूपघटत्वजातिहै ॥ अथवा पटादिकोंकाध्वंसरूप घटत्वजातिहै ॥ तहाँ घटकाध्वंसरूप जोघटत्वजातिहोवै ॥ तौ घटकेविद्यमानहुए नहींप्रतीतिहोणीचाहिये ॥ काहेतैं घटकेविद्यमानकालविषे घटकाध्वंसहैनहीं ॥ यातैं घटकाध्वंसरूप घटत्वजातिनहीं ॥ तैसे पटादिकोंकाध्वंसरूपभी घटत्वजातिनहीं ॥ काहेतैं पटकाध्वंस पटकेसमवायिकारणतंतुवोंविषे रहै है ॥ घटविषे पटकाध्वंस कभीभीरहै नहीं ॥ यातैं पटादिकोंका

प्रध्वंसाभावरूपभी घटत्वजातिनहीं ॥ किंवा जोप्रध्वंसाभावरूप घटत्वजातिकूंमानिये ॥ तौ प्रध्वंसाभावकीउत्पत्तिहोवै है ॥ यातैं घटत्वजातिकीभी उत्पत्तिमानणीहोवैगी ॥ सोजातिकीउत्पत्ति तुमारेकूं अंगीकारहैनहीं ॥ यातैं प्रध्वंसाभावरूपभी घटत्वजातिनहीं ॥ इसप्रकार अन्योन्याभावरूपता तथाअत्यंताभावरूपता घटत्वजातिकूं संभवैनहीं ॥ काहेतैं घटकाअन्योन्याभावरूप तथाघटकाअत्यंताभावरूप जोघटत्वजातिहोवै ॥ तौ घटविषेघटत्वजातिकीप्रतीतिहोवै है सोनहोणीचाहिये ॥ किंतु पटादिकोंविषे घटत्वजातिकीप्रतीति होणीचाहिये ॥ काहेतैं घटकाअन्योन्याभाव तथाअत्यंताभाव घटविषे रहैनहीं ॥ किंतु पटादिकोंविषे रहै है ॥ यातैं घटकाअन्योन्याभावरूप तथाअत्यंताभावरूप घटत्वजातिनहीं ॥ और जोवादी ऐसाकहै ॥ पटका अन्योन्याभावरूप तथाअत्यंताभावरूप घटत्वजातिहै ॥ सोयहकहनाभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं पटका अन्योन्याभाव तथाअत्यंताभाव जैसे घटव्यक्तिविषे है ॥ तैसे स्तंभादिकपदार्थोंविषेभीहै ॥ यातैं स्तंभादिकोंविषेभी घटत्वजातिकीप्रतीति होणीचाहिये ॥ और जोवादीऐसाकहै ॥ घटतैंभिन्नसर्वपदार्थोंका अन्योन्याभावरूप तथाअत्यंताभावरूप घटत्वजातिहै॥ सोयहभीकहणासंभवैनहीं॥काहेतैं अभावकेज्ञानाविषे प्रतियोगीकाज्ञानकारणहोवैहै॥ प्रतियोगीज्ञानतैंविना अभावकाज्ञानहोवैनहीं ॥ और घटतैंभिन्नसर्वपदार्थोंकाज्ञान ईश्वरतैं विनाकिसीअल्पज्ञजीवकूं संभवैनहीं ॥ यातैं घटतैंभिन्नसर्वपदार्थोंका अन्योन्याभावरूप तथाअत्यंताभावरूप घटत्वजातिका किसीपुरुषकूंभी प्रत्यक्षज्ञाननहींहोवैगा ॥ और यहघटहै याप्रत्यक्षज्ञानकीविषयता घटत्वजातिविषे वादीनेभी अंगीकारकरी है॥यातैं घटत्वजाति अभावरूपनहीं यहसिद्धभया ॥ और घटत्वजाति भावरूपहै ॥ याद्वितीयपक्षविषेभी सोभावरूपघटत्वजाति नित्यहै अथवाअनित्य है॥तहाँ अनित्यरूपतातौ घटत्वजातिविषेसंभवैनहीं ॥ काहेतैं जो अनित्यवस्तुहोवै है ॥ सो अभावकरिकैव्याप्तहोवै है॥जैसे घटादिकअनित्यहैं॥यातैंअभावकरिकैव्याप्तहैं ॥ तात्पर्ययह॥जोघटत्वजातिकूं अनित्यमानोंगे ॥ तौएकघटकेअभावहुए घटत्वजातिकाभीअभाव अंगीकारकरणाहोवैगा ॥ घटत्वजातिकेअभावहुए सर्वत्र घटभावबुद्धिहोणीचाहिये ॥ और ऐसाहोवै नहीं ॥ यातैं घटत्वजाति अनित्यनहीं ॥ और घटत्वजाति नित्य है ॥ याप्रथमपक्षविषेभी किसहेतुतैं घटत्वजातिनित्यहै ॥ यहतुमारेकूं कह्याचा

हिये ॥ शंका ॥ घटत्वजातिकेनाशकाकोईकारणहैनहीं ॥ यातैं घटत्वजातिनित्य है ॥ समाधान ॥ हेवादिन् घटत्वजातिकेनाशका कोई कारणनहीं है ॥ यहकेवल तुमारेकूंभ्रांतिभईहै ॥ काहेतैं श्रुतिविषे आत्मज्ञानकरिकै सर्वअनात्मपदार्थोंकानाश कथनकऱ्याहै ॥ किंवा ॥ जोघटत्वजातिकेनाशका कोईकारणनहींहोवै ॥ तौ घटकेनाशकाभी कोईकारणनहींहोणाचाहिये ॥ काहेतैं आश्रयकीनित्यतातैंविना आश्रितवस्तुकीनित्यता संभवैनहीं ॥ यातैं घटत्वजातिकीनित्यतावासतै घटव्यक्तिकूंभी नित्यमान्याचाहिये ॥ सोघटकीनित्यता तुमारेकूंभी अंगीकारनहीं ॥ यातैं घटत्वजातिनित्यनहीं ॥ किंवा ॥ अनित्यवस्तुकेआश्रित जोवस्तुरहै है ॥सो अनित्यहीहोवै है॥जैसे अनित्यतंतुवोंकेआश्रित पट अनित्यहीहोवै है नित्यहोवैनहीं ॥ तैसे अनित्यघटव्यक्तिकेआश्रितरही जोघटत्वजाति सोभी अनित्यहीहोवैगी॥सोजातिकी अनित्यता तुमारेकूं अंगीकारहैनहीं ॥ किंवा ॥ सोघटत्वजाति भावरूपहोवै अथवा अभावरूपहोवै ॥ याकेविषे हम विचारनहींकरते ॥ परंतु ताघटत्वजातिकेमानणेकरिकै किसफलकीप्राप्तिहोवै है ॥ यहतुमारेकूं कह्याचाहिये ॥ शंका ॥ घटविषेस्थितजोपटादिकोंकाभेद ताभेदकाअनुमितिज्ञानहीं घटत्वजातिकेमानणेकाफलहै ॥ ताअनुमानकाप्रकारयहहै ॥ यहघट पटादिकोंतैंभिन्नहै ॥ काहेतैं घटत्वजातिवालाहोणेतैं जोपटादिकोंतैंभिन्ननहीं है ॥ सोघटत्वजातिवालाभीनहीं है ॥ जैसे पटादिकहैं ॥ समाधान ॥ घटत्वजातिरूपहेतुतैं घटविषे पटादिकोंकाभेद तभीसिद्धहोवै ॥ जभी घटत्वजातिका पटत्वजातितैंभेद सिद्धहोवै ॥ घटत्वपटत्वजातिकेभेदकीसिद्धिविना घटपटरूप व्यक्तियोंकाभेद सिद्धहोवैनहीं ॥ यातैं प्रथम घटत्वजातिविषे पटत्वजातिकाभेद सिद्धकऱ्याचाहिये ॥शंका ॥ घटत्वजातिविषेपटत्वजातिका भेदभीअनुमानप्रमाणकरिकैहीसिद्धहै॥ताअनुमानका यहप्रकारहै॥घटत्वजाति पटत्वादिकजातियोंतैंभिन्नहै॥काहेतैं घटकेआश्रित होणेतैं ॥ जोजो घटकेआश्रितहोवैहै॥सोपटत्वादिकजातियोंतैंभिन्नहावै है ॥ जैसेघटविषेस्थितरूपादिकगुणहैं॥समाधान ॥घटाश्रितत्वरूपहेतुतैंघटत्व जातिविषे पटत्वादिकजातियोंकाभेद सिद्धहोवैनहीं॥काहेतैं घटकीसिद्धि अबपर्यंत तुमारेसैंभई नहीं ॥ घटकीसिद्धितैंविना घटाश्रितत्वरूप हेतुकीभी सिद्धिसंभवैनहीं ॥ और असिद्धहेतुतैं असिद्धसाध्यकी अनुमिति कहाँभीहोवैनहीं ॥ किंतु सिद्धहेतुतैं असिद्धसाध्यकीअनुमिति

होवै है ॥ जैसे सिद्धधूमरूपहेतुतैं पर्वतविषे असिद्धवह्निरूपसाध्यकी अनुमितिहोवै है ॥ जो असिद्धहेतुतैंभी अनुमितिहोतीहोवै ॥ तो पर्वतविषेधूमज्ञानतैंरहितपुरुषकूंभीवह्निकी अनुमिति होणीचाहिये ॥ और धूमज्ञानतैंविना वह्निकीअनुमितिकिसीकूं होवैनहीं ॥ तैसे घटाश्रितत्वरूपआसिद्धहेतुकरिकैंघटत्वजातीविषे पटत्वादिकजातियोंकाभेद सिद्धकरणा अत्यंतविरुद्ध है ॥ यातैं घटत्वजातिके स्वरूपका याफलका अनिरूपहोणेतैं ताघटत्वजातिरूपलक्षणकरिकै घटकीसिद्धिसंभवैनहीं यहसिद्धभया॥ शंका॥ घट है याप्रकारके शब्दकी वाच्यता तथा घट है याप्रकारकेज्ञानकीविषयता घटकालक्षण संभवै है॥समाधान॥सामन्यतैंशब्दकीवाच्यतातथाज्ञानकीविषयता घटकालक्षण है अथवा घट है याशब्दकीवाच्यता तथा घट है याज्ञानकीविषयता घटकालक्षण है ॥ तहाँ प्रथमपक्षतौ संभवैनहीं ॥ काहेतैं सामान्यतैंशब्दकीवाच्यता तथा ज्ञानकीविषयता पटादिकोंविषेभी है ॥ यातैं पटादिकोंविषे तालक्षणकीअतिव्याप्तिहोवैगी ॥ तैसे दूसरापक्षभी संभवै नहीं ॥ काहेतैं घट है याशब्दकीवाच्यता तथाज्ञानकीविषयता तभी सिद्धहोवै ॥ जभी घटकीप्रथमसिद्धि होवै ॥ सोघटकी सिद्धि अबपर्यंत भईनहीं ॥ यातैं ताघटके विषयताभी सिद्धिसंभवैनहीं ॥ किंवा ॥ घट है याप्रकारके ज्ञानकी विषयतारूप लक्षणतैं घटकी सिद्धि तभी होवै ॥ जभी प्रथम ता विषयताकी सिद्धि होवै ॥ सो विषयता की सिद्धि तुमारेसैं होणी काठिन है ॥ काहेतैं जिसघट करिकै सर्व लोक जलादिकोंकूंले आवैं हैं ॥ तिसप्रसिद्ध घटकास्वरूपभी जभी तुमारेसैं निरूपणनहीं भया ॥ तभी ताघटविषे ही जोज्ञानकी विषयता ताकास्वरूप तुमारेसैं कैसेनिरूपण होवैगा ॥ किंतु ॥ ताविषयताका स्वरूप तुमारेसैं कभी सिद्धिहोईसकैगानहीं ॥ और जो असिद्धविषय तातैंघटकीसिद्धिकरौगे ॥ तौ असिद्धवस्तुकरिकै असिद्धवस्तुकी सिद्धिरूप पूर्वउक्तदूषण तुमारेकूं प्राप्तहोवैगा ॥ यातैं घट है याज्ञानकी विषयतारूपलक्षणतैंभी घटकीसिद्धिसंभवैनहीं ॥ शंका ॥ मूलदेश तथा उदर जिसका विशालहोवै और मुख जिसकाअल्पहोवै ताकानाम घट है ॥ समाधान ॥ यालक्षणकरिकैभी सन्मुखदेशवृत्ति घटकी सिद्धिहोवैनहीं ॥ काहेतैं पृथिवीविषे जितनेघट हैं तेसंपूर्ण यालक्षणकरिकै युक्त हैं ॥ यातैं सन्मुखदशवृत्तिके लक्षणकी देशांतर वृत्तिघटों विषे अतिव्याप्ति होवैगी ॥ शंका ॥ सन्मुख देशविषे

जोवर्तै है सो घटकहियेहै ॥ अथवा इसकालविषेजोवर्तै है सो घटकहिये है ॥ समाधान ॥ सन्मुखदेशविषेवर्तणा तथा इसकालविषे वर्तणा ॥ यादोनोंलक्षणोंतैं घटकीसिद्धिहो वै नहीं ॥ काहे तैं जैसे सन्मुखदेशविषे तथाइसकालविषे घटवर्तै है ॥ तैसे अन्यपटा दिकपदार्थभी तादेशकालविषे रहै हैं ॥ यातैं याघटकेलक्षणकी तिनपटादिकोंविषे अतिव्याप्तिहोवै है ॥ किंवा ॥ हेवादिन् घटहै याप्रकार सर्वलोक कथनकरैं हैं ॥ और घट है याप्रकार तूंभी घटकूंजाणता है ॥ तिसविषे किसहेतुतैं यहघट है ॥ याप्रकारकीहमारीशंकाका दूस राकोईउत्तर तुमारेसैं होइसकैगानहीं ॥ किंतु हमनहींजाणते याप्रकारकाउत्तर तूंदेवैगा अथवा हमारेऊपर क्रोधकरैगा इनदोनूंउत्त रौतैंभिन्न किंचित्मात्रभी तुमारेसैं घटकास्वरूप निरूपणनहीं होवैगा ॥ जभी सर्वलोकप्रसिद्ध तथासन्सुखदेशवृत्ति घटकेस्वरूपनिरूप णकरणेकूं तुम समर्थनहींभये ॥ तभी संपूर्णप्रपंचकेस्वरूपकहणेकूं तुम किसप्रकारसमर्थहोवोगे किंतु नहींहोवोगे ॥ यातैं हमनहींजानते यातुमारेअनुभवकरिकैसिद्ध अज्ञानकूंहीं घटका तथा सर्वप्रपंचका उपादानकारण मान्याचाहिये ॥शंका ॥ "मायांतुप्रकृतिंविद्यात्"॥ अर्थ यह ॥ मायाकूंजगत्काउपादानकारणजानणा ॥ याश्रुतिप्रमाणकरिकै मायाविषे जगत्कीकारणतासिद्ध है ॥ यातैं युक्तियोंसे जगत्की कारणता मायाविषे कथनकरणीनिष्फल है ॥ समाधान ॥ श्रुतिप्रमाणविषे जिनपुरुषोंकीश्रद्धा है ॥ तिनोंकूं केवलश्रुतिप्रमाणतैंहीं माया विषे जगत्कीकारणता सिद्धहोवै है ॥ और जिनपुरुषोंकूं श्रुतिप्रमाणविषे श्रद्धानहीं है ॥ तिनोंकूं हमारेयुक्तियोंसैंहीं अज्ञानकीसिद्धिहोवैहै॥ यातैं युक्तियोंकरिकै मायाविषे जगत्केकारणताकाकथन निष्फलनहीं ॥ किंवा ॥ यहसंपूर्णप्रपंच सत्यरूपकरिकै तथाअसत्यरूपकरिकै निरूपणाकियाजावैनही ॥ यातैं अनिर्वचनीय है ॥ ताअनिर्वचनीयप्रपंचका मायातैंविना दूसराकोईकारण संभवैनहीं ॥ किंतु अनिर्वचनी यमायाही अनिर्वचनीयजगत्काकारण संभवै है॥ ताअनिर्वचनीयमायाका तथाताकेकार्यप्रपंचका किसीतैंभीनिरूपणहोइसकेनहीं ॥ काहेतैं लोकविषेप्रसिद्ध जोइंद्रजालकाकरणेहारापुरुष है ॥ तिसकेमायाकूं तथामायारचितअनेकपदार्थोंकूं सर्वलोक देखतेभी हैं ॥ परंतु ताकेस्वरू पनिरूपणकरणेविषे कोईभी समर्थहोवैनहीं ॥ जभी लौकिककेंद्रजालिकपुरुषकेमायाकूं तथामायाकेकार्यकूं कोईपुरुष जानणैंसमर्थन

हींभया ॥ तभी सर्वशक्तिसंपन्नपरमेश्वरकी मायाकूं तथामायाकेकार्यप्रपंचकूं ॥ कौनपुरुष निरूपणकरिसकैगा ॥ किंतु कोई निरूपणकरणे मैंसमर्थनहीं ॥ यातैं माया तथामायारचितसकलप्रपंच अनिर्वचनीय हैं ॥ किंवा ॥ जिसपदार्थकी उत्पत्तिविषे योग्यदेश तथा योग्यकाल कारणनहीं होवैं हैं ॥ सोपदार्थ मायाकरिकैरचितहोवै है ॥ जैसे मथुराकेसमीपवनविषे रात्रिमेंसोयाहुआपुरुष आपणेहृदयदेशविषे सूर्यग्रह णकरिकैयुक्तसमुद्रकूं देखै है॥तहाँ अल्पहृदयदेशविषे समुद्रकीयोग्यतानहीं॥तथारात्रिकालविषेसूर्यग्रहणकीयोग्यतानहीं ॥ तथापिस्वप्नविषे तिनदोर्थोंकीप्रतीतिहोवै है॥यातैं स्वप्नपदार्थ मायाकरिकैरचित हैं ॥ तैसे योग्यदेश तथाकालतैंविनाहीं चराचररूपप्रपंचकूं मूढपुरुषदेखैं हैं॥ यातैं यहप्रपंचकीमायाकरिकैरचित है॥किंवा॥जिनपुरुषोंकूं शुद्धआत्माकासाक्षात्कारभया है ॥ तिनपुरुषोंकूं माया तथामायाकाकार्य अस त्यप्रतीतहोवै है॥दृष्टांत॥जैसे आकाशविषे स्थितजोसर्पकेपादोंकाचिह्न तिनोंकूं अंधपुरुषदेखै है॥औरमूकपुरुषकेवचनकूं बधिरपुरुष श्रवण करै है ॥ यहवार्ता जैसे असत्य है ॥ तैसे तत्त्ववेत्तापुरुषकीदृष्टिविषे जगत् अत्यंत असत्य है ॥ और आत्मज्ञानतैंरहितमूढपुरुष हम जग त्कूं जाणते हैं॥ याप्रकारका जोकथनकरैं हैं ॥ सोकेवलअभिमान तिनोंकूं है ॥ जगत्कास्वरूप तिनोंनैं जान्यानहीं॥यातैं मायाबीपरमेश्वर करिकैरचितप्रपंचकूं कोईभीपुरुष जाणिसकतानहीं ॥ किंवा ॥ मायाभीपरमेश्वरकरिकैरचितप्रपंचकाअज्ञान देहधारीजीवोंकूं दूषणरूप न हीं ॥ किंतु आत्मज्ञानरहितजीवोंकूं प्रपंचकाअज्ञान भूषणरूप है ॥ और अज्ञानीपुरुष जोक हैं हैं॥ हमारेकूं किसीवस्तुका अज्ञान नहीं ॥ यहतिनोंकाकहणा केवलमिथ्या है ॥ काहेतैं जिसस्थूलशरीरविषे सर्वदा अविवेकीपुरुषोंकूंआत्मबुद्धि है ॥ तिसशरीरकेस्वरूपकूंभी अवि वेकीपुरुष यथावत् जाणतेनहीं ॥ तौ बाह्यप्रपंचकेस्वरूपकूं किसप्रकारजाणैंगे॥किंतु नहींजाणैंगे ॥किंवा॥ जिनइंद्रियोंकरिकै यहपुरुष स्व र्गकीप्राप्तिकेहेतु विहितकर्मोंकूंकरै है ॥ तथानरकप्राप्तिकेहेतु निषिद्धकर्मोंकूंकरै है ॥ तथा मोक्षकेहेतु निष्कामकर्मोंकूंकरै है ॥ तिनइंद्रियोंके स्वरूपकूंभी यहजीव यथावत् जाणतानहा ॥ तौ बाह्यप्रपंचकूं यहमूढपुरुष कैसेजाणिसकैगा ॥ किंतु नहींजाणैगा ॥ किंवा ॥ मेरेकूं सर्व दासुखकीप्राप्तिहोवै ॥ और मेरेकूं दुःखकीप्राप्ति कभीभीनहीं होवै ॥ याप्रकारकीबुद्धिकरिकै यहजीव कार्यविषे प्रवृत्तहोवै है ॥ परंतु मेरेकूं

याशब्दकेअर्थकूं यहमूढपुरुष जानतानहीं ॥ तौ बाह्यप्रपंचकूं यहमूढपुरुष किसप्रकार जाणेगा किंतुनहींजाणैंगा ॥ किंवा ॥ पूर्वजन्म विषे हमारे कौनसंबंधीथे ॥ और आगेहमारे कौनसंबंधीहोवैंगे ॥ याप्रकारका ज्ञानभी जिसपुरुषकूं नहीं है ॥ सोमूढपुरुष अन्यबाह्यप्रपंचकूं किसप्रकारजानैंगा किंतु नहींजानैंगा ॥ किंवा ॥ बाल्यअवस्थाविषे तथायुवाअवस्थाविषे जेजे पदार्थ इसपुरुषनैं अनुभव करे हैं ॥ तिनपदार्थोंकाभी इसकूं यथावत्स्मरण होतानहीं ॥ तथा आगामीपदार्थोंकूंभी यहजीव यथावत्जाणतानहीं ॥ तौ सकलप्रपंचकूं किस प्रकार यहजानैंगा किंतुनहींजानैंगा ॥ यातैं किसीपुरुषकूं प्रपंचका यथावत्प्रत्यक्षनहीं ॥ किंवा ॥ लोकविषेभी जोजोअर्थ इंद्रियज न्यज्ञानकाविषयनहीं होवै है ॥ तिसअर्थकेज्ञानविषे शब्दकूंहीं प्रमाणतादेखी है ॥ जैसे व्यतीतहुआ कोईव्यवहार तथाआपणेकुलकेआचार आदिक इंद्रिजन्यज्ञानकेविषय हैं नहीं ॥ किंतु मातापितादिकवृद्धपुरुषोंके वचनरूपशब्दप्रमाणतैं तिनकुलाचारादिकोंका पुत्रकूं ज्ञानहोवै है ॥ तैंसे पूर्वउक्तरीतितैं घटादिकप्रपंचकेस्वरूपकाभी किसीइंद्रियकरिकै निर्णयहोइसकतानहीं ॥ यातैं प्रपंचभी अतिइंद्रिय है ॥ ताअतिइंद्रियप्रपंचकी सिद्धिविषेभी दृष्टिसृष्टिवादकूंबोधनकरणेहाराशब्दकी प्रमाण है ॥ शंका ॥ पितामातादिकवृद्धपुरुष जैसे कुलाचारादिक धर्मोंकूंकथनकरैं हैं ॥ तैसे दर्शनकालविषे पदार्थोंकेउत्पत्तिकूं तथाअदर्शनकालविषे पदार्थोंकेलयकूं पितामातादिक कथनकरैं नहीं ॥ यातैं शब्दप्रमाणतैंभी दृष्टिसृष्टिवादकी सिद्धि संभवैनहीं ॥ समाधान ॥ मातापितादिकोंकेवचनतैं दृष्टिसृष्टिवादकीसिद्धिमतहोवै ॥ परंतु तिनसंपूर्णोंकागुरुजोवेदभगवान् है ॥ सो दृष्टिसृष्टिवादकूं कथनकरै है ॥ यातैं श्रुतिप्रमाणतैं दृष्टिसृष्टिवादकीसिद्धिहोवै है ॥ किंवा ॥ जिनमनुआदिकवृद्धपुरुषोंकेवचनकूं संपूर्णलोक प्रमाणरूपकरिकैमानैं हैं ॥ तेमनुआदिकवृद्धपुरुषभी अस्मदादिकपुरुषोंकीन्याईं वेदकेवचनोंतैंहीं आत्मज्ञानकूं प्राप्तहोतेभये हैं ॥ शंका ॥ सोवेदभगवान् किसकेवचनकरिकै ज्ञानकूंप्राप्तहोवै है ॥ समाधान ॥ सो वेदभगवान्की वेदकेवचनोंकरिकैही ज्ञानकूंप्राप्तहोवै है ॥ किसीअन्यकेवचनकरिकै वेदपुरुषकूं ज्ञानहोवैनहीं ॥ काहेतैं वेदपुरुषकाशरीर जोशब्दरूपवेद है ॥ सोभारतादिकोंकीन्याईं पौरुषेयनहीं ॥ किंतु अपौरुषेय है ॥ तहाँ पूर्वकल्पविषे वर्णोंकी तथाश्लोकोंकी तथाकथाप्रसंगकी जोजो आनुपूर्वीहोवै है

तिसीआनुपूर्वीतैं किंचित्विलक्षण और किंचित्समान आनुपूर्वी जिसकी उत्तरकल्पविषे होवै ॥ ताकूं पौरुषेयकहैं हैं ॥ ऐसे महाभारतादि कहैं ॥ काहेतैं पूर्वकल्पविषे जैसे महाभारतकूं व्यासभगवान्नैं कथनकऱ्याथा ॥ तैसेही महाभारतकूं उत्तरकल्पविषे व्यासभगवान् रचैनहीं ॥ किंतु पूर्वतैं किंचित्विलक्षणही रचै है ॥ यातैं महाभारतादिक पौरुषेय हैं और वेदविषेतौ यह नियम है ॥ पूर्वकल्पविषे परमेश्वरतैं जिसप्रकारसे वेदोंका प्रादुर्भाव भया था ॥ उत्तरकल्पविषेभी तिसीप्रकारसे वेदोंका परमेश्वरतैंप्रादुर्भाव होवै है ॥ किंचित्मात्रभी पूर्वउत्तरवेदोंविषे विलक्षणताहोवै नहीं ॥ यातैं वेद अपौरुषेय हैं ॥ किंवा जैसे अस्मदादिकपुरुषोंकेवचनाविषे इतर प्रमाणकी अपेक्षा रहै है ॥ इतर प्रमाणकी सहायतातौंविना अस्मदादिकपुरुषोंकावचन किसीअर्थकूं सिद्धकरिसकैनहीं ॥ तैसे वेदभगवान्कूं आपणे ज्ञान वासतैं ॥ तथा प्रमाणतावासतैं दूसरेकिसीप्रमाणकीअपेक्षाहै नहीं यातैं वेदभगवान् अस्मदादिक पुरुषोंकूं जैसीआज्ञाकरै सोआज्ञा श्रद्धापूर्वक अवश्य हमलोकोंको अंगीकारकरनीचाहिये ॥ दृष्टांत ॥ जैसे महाराजाकीआज्ञाकूं श्रद्धापूर्वक प्रजा अंगीकारकरै है ॥ और सोवेदभगवान् सुषुप्तिअवस्थाविषे तथामरणअवस्थाविषे प्राणमैं संपूर्णवाक्आदिकइंद्रियोंकेलयकूं बोधनकरै है ॥ और जाग्रत्अवस्थाविषे तथाजन्मकालविषे तिसीहीप्राणतैं वाक्आदिकइंद्रियोंकीउत्पत्तिकूं कथनकरै है ॥ याप्रकारकीवेदभगवान्कीआज्ञाअवश्य हमलोकोंको अंगीकारकरनीचाहिये ॥ किंवा ॥ सोवेदभगवान्मातापितादिकोंतैंभी अतिसुहृद्है ॥ यातैं मायामयअनिर्वचनीयप्रपंचविषेस्थित हमजीवोंकूं कृपाकरिकैजिसजिसवचनकाउपदेशकरै है ॥ ते संपूर्णवचन हमजीवोंकेमोक्षकासाधन हैं ॥ किंवा ॥ जस सूर्यकेसन्मुखहुआचक्षु सूर्यकेतेजतैं प्रतिघातकूं प्राप्तहोवै है ॥ तैसे वेदभगवान्काज्ञान किसीवस्तुतैं प्रतिघातकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु सर्ववस्तुकूंविषयकरै है ॥ यातैं वेदभगवान्कूं किसीभीवस्तुका अज्ञाननहीं ॥ याकारणतैंही भ्रम प्रमाद विप्रलिप्सादिकदोष वेदभगवान्विषेनहीं ॥ वचनकरणेकीइच्छाकूं विप्रलिप्साकहैं हैं ॥ ॥ किंवा ॥ वेद याशब्दकेअर्थकाविचारकियेतैंभीआवरणरहितज्ञानस्वरूपताही वेदकूं सिद्धहोवै है ॥ और जोज्ञानस्वरूपहोवै है ॥ सो जड तथापरिच्छिन्नरूप होवैनहीं ॥ यह प्रथमअध्यायविषे कहिआये हैं ॥ यातैं परिपूर्ण तथाचैतन्यरूप जोप्राणउपाहितपरमात्माहै ॥ सोईही

वेदस्वरूपहै ॥ याकारणतैंही वेदकूं शब्दब्रह्मकहैं हैं ॥ ऐसे ब्रह्मरूपवेदभगवान्केप्रति तुमनैं यहवचन किसवास्तेकह्याहै ॥ याप्रकारकेप्रश्न करणेकूं कोईभीजीव समथनहीं ॥दृष्टांत॥ जैसे नेत्रहीनअंधपुत्र चक्षुयुक्तपिताकूं नीलादिकरूपकेज्ञानविषे प्रश्नकरिसकैनहीं ॥ यातैं वेदभगवान्नैं कथनकऱ्याजोअर्थ ॥ ताअर्थकेनिश्चयकरणेविषे जिसप्रकार करिकै हमजीवोंकीबुद्धि समर्थहोव ॥ तिसीप्रकारकाप्रयत्न हमजीवोंकूं करणेयोग्यहै ॥ किंवा ॥ जैसे धर्मात्माराजाकेवचनकूं प्रजा परित्यागकरैनहीं ॥ और जैसे पितामाताकेवचनकूं सुपुत्र परित्यागकरै नहीं ॥ किंतु श्रद्धापूवक तावचनोंकूंग्रहणकरै है ॥ तैसे वेदभगवान्केवचनकूंभी श्रोतापुरुषनैं कदाचित्परित्यागनहींकरणा ॥ किंतु श्रद्धापूर्वक वेदकेवचनकूं अवश्यअंगीकारकरणा ॥ और तिसवेदकेवचनतैं यहअर्थसिद्धहोवै है ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे विषयसहितसंपूर्णवाकूआदिकइंद्रिय प्राणविषे लयकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ और जाग्रत्अवस्थाविषे तिसीहींप्राणतैं वाकूआदिकइंद्रिय उत्पन्नहोवैं हैं॥किंवा ॥ जैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे संपूर्णवाकूआदिकइंद्रिय प्राणविषे लयकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ तैसे मरणअवस्थाविषेभी संपूर्णवाकूआदिकइंद्रिय प्राणविषेलयकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ और जैसे जाग्रत्अवस्थाविषे संपूर्णवाकूआदिकइंद्रिय तिसीप्राणतैंउत्पन्नहोवैं हैं॥तैसे जन्मअवस्थाविषेभी संपूर्णवाकूआदिकइंद्रिय तिसीप्राणतैंउत्पन्नहोवैं हैं यहअर्थसिद्धभया ॥किंवा॥ शरीराविषे प्राणकेविद्यमानहुए वाकूआदिकइंद्रियोंकीविद्यमानताहोवै है ॥ और लोकांतराविषे प्राणकेगमनहुए वाकूआदिकइंद्रियोंकाभी तहाँ गमनहोवै है ॥ याप्रकारकेअन्वयव्यतिरेककानिश्चयही प्राणस्वरूपपरमात्माकी सिद्धिहै ॥ यद्यपि अन्वयव्यतिरेककानिश्चय प्राणकेसिद्धिकासाधनहै ॥ यातैं साधनकूंसिद्धिरूपकहणा संभवै नहीं॥ तथापि जैसेभूमिविषे स्थितधनकीसिद्धि अंजनरूपसाधनकरिकैहोवैहै॥यातैंताअंजनरूपसाधनकूंभी लोकविषेसिद्धिकैहैंहैं॥तैसे मरणअवस्थाविषे अन्वयव्यतिरेकनिश्चयकरिकैही प्राणस्वरूपआत्माकीसिद्धिहोवै है ॥ यातैं ताअन्वयव्यतिरेकरूपसाधनकूं सिद्धिरूपकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ अब मरणअवस्थाविषे इंद्रियोंकेलयकूं स्पष्टकरिकैदिखावैं हैं॥ मरणअवस्थाविषे यहपुरुष नानाप्रकारकीव्याधियोंकरिकै अत्यंतदुःखकूंप्राप्तहोवै है॥ और तिसदुःखकरिकै मूर्च्छाकूंप्राप्तहोवै है॥और सामर्थ्यतैंरहितहोवै है॥यातैं तामरणअवस्थाविषेयहपुरुष किंचित्मात्रभी शब्दउच्चारणेवि

षे समर्थनहींहोता ॥याप्रकारताकीदीनअवस्थाकूंदेखिकरिकै स्त्रीपुत्रादिकसर्वबांधव अतिदुःखकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ और तिसपुरुषकेसमीपस्थितहोइकै याप्रकारपूछैं हैं ॥ हेपिता मुझप्रियपुत्रकूं तूंजाणता है ॥ और हेपति मुझप्रियस्त्रीकूं तूंजाणता है ॥ और हेभ्राता मुझसुहृद्मित्रकूं तूंजाणताहै ॥ इसप्रकार स्त्रीपुत्रादिकबांधवोंकरिकै पूछ्याहुआभीसोपुरुष जभी काष्ठकीन्याईं किसीकूंभीनहींजाणता ॥ तभी तेसर्वबांधव याप्रकार कहैं हैं ॥ इसकूं किसीवस्तुकाभीज्ञान अभी नहींरह्या ॥ जोइसकाज्ञान नहींनिवृत्तहोता॥तो हमप्रियमित्रोंकेवचनकूं पूर्वकीन्याईं यह श्रवणकरता ॥ और पूर्वकीन्याईं हमारीतरफदेखता ॥ तथा हमारेसाथ किंचित्बोलता ॥ और यहपुरुष पूर्वजीवितअवस्थाकीन्याईं अभी हमारीतरफ देखतानहीं तैसेबोलताभीनहीं॥यातैं ऐसाजान्याजावैहै॥याकेविषे अभीज्ञाननहींरह्या॥याप्रकार सर्वबंधुजन कथनकरैहैं॥ यातैं तामरणअवस्थाविषे वाकूआदिकसकलइंद्रिय आपणेआपणेविषयोंसहित प्राणविषे लयकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ और जैसे सुषुप्तितैं अनंतर यहपुरुष जाग्रत्अवस्थाकूंप्राप्तहोवै है ॥ तैसे मरणतैंअनंतर जभी यह जीवजन्मकूंप्राप्तहोवै है ॥ तभी विषयोंसहितसंपूर्णवाकूआदिकइंद्रिय पुनःतिसप्राणतैंउत्पन्नहोवैं हैं ॥ शंका ॥ जैसे जीवित अवस्थाविषे याजीवकेप्रति वाकूआदिकइंद्रिय भोगोंकूंप्राप्तकरैं हैं ॥ तैसे मरणकालविषेभी वाकूआदिकइंद्रिय भोगोंकूं काहेतैंनहीं प्राप्तकरैं हैं ॥ समाधान ॥ पूर्वजीवितअवस्थाविषे जेवाकूआदिकइंद्रिय भूत्यकीन्याईं याजीवकूंभोगोंकीप्राप्तिकरतेथे ॥ तेहीवाकूआदिकइंद्रिय मरणअवस्थाविषे याजीवकूं असमर्थजानिकरिकै ताकापरित्यागकरैं हैं॥ तात्पर्य यह ॥ मरणअवस्थाविषे तेवाकूआदिकइंद्रिय आपणेआपणेविषयतैं उपरामहोइकै याजीवकूंभोगकी प्राप्तिकरैनहीं ॥ यहही वाकूआदिकइंद्रियोंकापरित्यागहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे असमर्थराजाकूंप्रजापरित्यागकरैहै ॥ और जैसे धनकूंनहींप्राप्तहुएसुभट युद्धकेमध्यकालविषे आपणे स्वामीकूंपरित्यागकरैं हैं ॥ तैसे मरणअवस्थाविषे वाकादिकइंद्रियभी जीवकृतआत्मअभिमानरूपबंधनकूंनहींप्राप्तभये याजीवकापरित्यागकरैहैं॥शंका॥मरणअवस्थाविषे वाकूआदिकइंद्रियोंतैंविनाहीं किसीअन्यकारणतैं नामादिकव्यवहारकाहेतैंनहाहोता॥समाधान॥अन्यकरिकैसाध्यजोव्यवहारहै ॥ सो तिसीतैंअन्यकिसीकरिकै सिद्धहोवैनहीं ॥ जैसे जिसग्रामकूं संपूर्णवैश्य परित्यागकरेजावैं हैं ॥ तिसग्रामविषे

वैश्यकरिकैसाध्यजोवाणिज्यादिककार्यहै सो अन्य किसीब्राह्मणादिकातैंहोवैनहीं ॥ तैसे वाक्आदिकइंद्रियोंकेपारत्यागहुए यापुरुषविषे वाक्आदिकइंद्रियोंकरिकैसाध्यनामादिकव्यवहार अन्यकिसीकारणतैंउत्पन्नहोवैनहीं ॥ शंका ॥ मरणअवस्थाविषे यापुरुषकापरित्याग करिकै वाक्आदिकइंद्रिय कहाँ जावैं हैं ॥ समाधान ॥ जैसे महाराजाकेजयरूपकार्यकरणेवास्ते युद्धविषेप्राप्तभयाजोअल्पदेशकाअधिपति राजा तिसका जभी शत्रुकरिकैनाशहोवैहै तभी ताकेसुभट अन्यराजाकेआश्रयकरणेकीइच्छाकरैं हैं ॥ परंतु तेसुभट आपणेस्वामी केअत्यंतभक्त हैं ॥ यातैं अन्यकिसीराजाकूंआश्रयणकरैंनहीं ॥ किंतु आपणेस्वामीकाभीस्वामीजोमहाराजाहै तिसीकूंहीं आश्रयणकरैं हैं॥ तैसे जीवितअवस्थाविषे विषय तथादेवतासहित वाक्आदिकइंद्रिय अहंममअभिमानीरूपजीवकेआश्रितरहैं हैं ॥ और मरणअवस्थाविषे ताजीवकूंमूर्च्छितहुआदेखिकै तेवाक्आदिकइंद्रिय सर्वकेअधिपतिरूपप्राणकूं आश्रयणकरैं हैं ॥ यातैं यहसिद्धभया ॥ प्राणकेविद्यमानहुए वाक्आदिकइंद्रियोंकीशरीरविषेविद्यमानता ॥ और प्राणकेअभावहुए वाक्आदिकइंद्रियोंका अभाव याप्रकारकेअन्वयव्यतिरेककरिकै प्राणविषेही संपूर्णवाक्आदिकोंकालय तथाप्राणतैंहीतिनोंकीउत्पत्ति सिद्धहोवैहै॥यातैं प्राणतैंभिन्न किंचित्मात्रभीवस्तुनहीं यहसिद्धभया॥ किंवा ॥ जीवितअवस्थाविषे प्राणकेविद्यमानहुए प्रज्ञाभीरहै है ॥ और मरणकालविषे प्राणकेनिर्गमनहुए प्रज्ञाभीरहैनहीं ॥ यातैं प्राण और प्रज्ञाकाअभेदहै यहजोपूर्वकह्याथा सो दोषतैंरहितसिद्धभया ॥ काहेतैं प्राणतैंरहितपुरुषविषे प्रज्ञाभीदेखातीनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ जिसकालविषे पुरुषकेप्राण निकसिजावैहैं ॥ तिसकालविषे यापुरुषकेबांधव याप्रकारकहैहैं ॥ इसपुरुषविषे अभी ज्ञाननहींरह्या ॥ यालो कव्यवहारतैंभी प्राण और प्रज्ञाका अभेदहीसिद्धहोवै है ॥ किंवा ॥ प्राणस्वरूप तथाप्रज्ञास्वरूप मेरेकूंतूंजाण ॥ याप्रकारके इंद्रकेवचन विषे जैसे प्राणशब्दकाअर्थ श्वासमात्रनहीं ॥ किंतु परमात्माही प्राणशब्दकाअर्थहै ॥ तैसे प्रज्ञाशब्दकाअर्थभी केवलबुद्धिमात्रनहीं॥किंतु स्वयंप्रकाशचैतन्यहीं प्रज्ञाशब्दकाअर्थहै ॥ तहाँ प्राणकीअद्वितीयरूपता पूर्वकही॥अब प्रज्ञाकेअद्वितीयरूपताकूंदिखावैं हैं॥इंद्रउवाच॥ हेप्रतर्दन प्रज्ञापदकाअर्थजोसंवित् है ॥ सोवास्तवतैंएकहै ॥ तथापि उपाधिके संबंधतैं जैसे एकसंवित् नानारूपहोइके प्रतीतिहो

वैहै ॥ सोप्रकार तेरे ताईं मैंकथन करताहूं ॥ तथा नानारूपहुईसंवित् जिस प्रकारकरिकै पुनः एकभावकूं प्राप्त होवै है ॥ सोप्रकारभी मैं तुमारेताईं कथनकरोंहूं ॥ तुम एकाग्रमनकरिकैश्रवणकरो ॥ वाक्आदिकपंचकर्मइंद्रिय और श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रिय शरीर अंतः करण यहद्वादशकरण आपणे आपणेविषयोंकरिकेयुक्तहुए प्रज्ञारूपसंवित्केभेदकूंकरैं हैं ॥ तहाँ शब्दकाउच्चारण वाक्इंद्रियकाविषय है ॥ और वस्तुकाग्रहण हस्तइंद्रियकाविषयहै ॥ और गमन पादइंद्रियकाविषयहै॥ और मलकापरित्याग पायुइंद्रियकाविषयहै ॥ और आनंद उपस्थइंद्रियकाविषयहै ॥ यह कर्मइंद्रियोंकेपंचविषय तथापंचकर्मइंद्रिय प्रज्ञाकेभेदकूंउत्पन्नकरैं हैं ॥ और शब्द श्रवणइंद्रियका विषय है ॥ और स्पर्श त्वक्इंद्रियकाविषय है ॥ और रूप चक्षुइंद्रियकाविषय है ॥ तथा रस रसनइंद्रियकाविषय है ॥ तथा गंध घ्राणइं द्रियकाविषयहै ॥ यहशब्दादिक पंचज्ञानइंद्रियोंकेविषयहै॥और सुख तथादुःख यहदोनों शरीरकेविषयहैं॥और कामनातथासंकल्पादिक अंतःकरणकेविषयहैं॥इसप्रकार आपणेआपणेविषयोंकरिकैयुक्तहुएपूर्वउक्तवाकादिकद्वादशकरण प्रज्ञाकेविभागकूंकरैंहैं॥दृष्टांत॥ जैसेदशगो पाल आपणेप्रयोजनकोसिद्धिवास्ते एकहीगौकूं दुहैहैं॥तात्पर्ययह॥तागौतैंदुग्धकूंपृथक्करैंहैं॥ तैसेवाक् आदिकद्वादशकरणभी एकहीप्रज्ञा रूपीगौकूंदुहैं हैं॥तात्पर्ययह॥चिदाभासरूपप्रज्ञाकेभागोंकूंपृथक्करैंहैं॥इसप्रकार सो एकहीप्रज्ञा उपाधिकेवशतैं अनेकभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ जैसे एकहीअग्निकीशिखाकूं द्वादशकाष्ठरूपउपाधिकेवशतैंद्वादशप्रकार लोककथनकरैंहैं॥तैसे वाक्आदिकइंद्रियोंकेभेदकरिकै एकहीप्रज्ञा कूं भिन्नभिन्न हम कथनकरैंहैं॥और जैसे द्वादशदीपकोंकरिकै गृहादिकदेशविषे द्वादशप्रकारकाप्रकाश उत्पन्नहोवैहै॥तैसे वाक्आदिकद्वा दशकरणोंकरिकै एकहीबोध विषयोंविषे द्वादशप्रकारउत्पन्नहोवैहै॥तात्पर्ययह॥एकहीप्रज्ञाकाजोजोभागजिसजिसइंद्रियनैं भिन्नकरीताहै ॥ तिसतिसप्रज्ञाकेभागनैं तिसतिसइंद्रियकेविषयका प्रकाशकरीताहै ॥ याकारणतैंहीं चक्षुइंद्रियकरिकैजन्यअंतःकरणकीवृत्तिविषेस्थित जो चिदाभासरूपप्रज्ञाकाभागहै॥सो चक्षुइंद्रियकेविषयरूपादिकोंकूंहींप्रकाशकरैंहै॥रसादिकोंकूंप्रकाशकरैंनहीं॥ इसप्रकारअन्यइंद्रियोंविषेभी जानिलेणा ॥किंवा॥पूर्वउक्तवाक्आदिकद्वादशकरण प्रज्ञाकेसाथ तादात्म्यभावकूंप्राप्तहुएहींआपणेनामादिकविषयोंकूंप्राप्तहोवैहैं॥ प्रज्ञाके

तादात्म्यतैंविना कोईभीइंद्रिय आपणेविषयकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ वाक्आदिकइंद्रियोंतैंविना नामादिकविषयोंकीसिद्धिहोवैनहीं यातैं नामादिकविषय वाक्आदिकइंद्रियस्वरूपहैं ॥ तैसे प्रज्ञातैंविना वाक्आदिकइंद्रियोंको भीसिद्धिहोवै नहीं ॥ यातैं वाक्आदिकइंद्रियभी प्रज्ञास्वरूप हैं प्रज्ञातैंभिन्न वाकादिकनहीं ॥ यारीतिसैं प्रज्ञाकीअद्वितीयरूपताहीसिद्धहोवैहै ॥ शंका ॥ वाकादिकइंद्रिय प्रज्ञाकी अपेक्षातैंविनाहीं आपणेविषयोंकूं काहेतैंनहींप्रकाशकरते ॥ समाधान ॥ वाक्आदिकद्वादशकरण प्रज्ञाकेबलतैंहीं आपणेआपणे विषयकूं जानेहैं ॥ प्रज्ञातैंविना आपणेबलकरिकै किसीवस्तुकूं वाक्आदिकजाणिसकैनहीं ॥ याहीअर्थकूं लौकिकअनुभवकरिकै अब स्पष्टकरै हैं ॥ जिसपुरुषकामन सावधाननहींहोता ॥तिसपुरुषकूं जोकोईअन्यपुरुष वचनकहैहै तभी सोपुरुष याप्रकार ताकूंकहैहै॥ हमारामन तुमारेवचनविषेनहींथा॥यातैं हमन तुमारेवचनकूंनहींजान्या ॥तुम फेरितावचनकूंकहो ॥ इसप्रकार नेत्रोंकरिकैरूपकूंदेखताहुआ तथाशरीरकरि कैसुखदुःखकाअनुभवकरताहुआभी यहपुरुष मनकीअसावधानताहुए किंचित्मात्रभीनहींजाणता॥तात्पर्ययह॥वाक्आदिकइंद्रियोंकाआपणे आपणेविषयोंकेसाथ संबंधहुएभी प्रज्ञातैंविना किसीभीविषयकाप्रकाश होवैनहीं ॥ किंवा ॥ वाक्इंद्रियतैंआदिलैके जेद्वादशकरणहैं तथा तिनोंके नामादिक जेद्वादशविषयहैं॥तेसंपूर्ण प्रज्ञातैंविना कदाचित्भी प्रतीतहोवैनहीं ॥दृष्टांत ॥जस मृत्तिकातैंविनाघटशरावादिक विकार प्रतीतहोवैनहीं यातैं यहसिद्धभया॥जिसवस्तुकेविद्यमानहुए जोवस्तुप्रतीतहोवै ॥ और जिसवस्तुकेअविद्यमानहुए जोवस्तु नहींप्रतीतहोवै सोवस्तुतिसवस्तुतैंभिन्ननहींहोवैहै॥ जैसेमृत्तिकाकेविद्यमानहुएघटकीप्रतीतिहोवैहै ॥ औरमृत्तिकाकेअविद्यमानहुएघटकीप्रतीतिहोवैनहीं।यातैंघटादिकमृत्तिकातैंभिन्ननहीं ।किंतु मृत्तिकातैंघटादिकअभिन्नहैं।तैसेवाक्आदिकद्वादशकरणतथानामादिकद्वादशविषययहसंपूर्ण प्रज्ञाकेविद्यमानहुए प्रतीतिहोवे हैं ॥ और प्रज्ञाकेअविद्यमानहुए प्रतीतहोवैनहीं ॥ यातैं तेसंपूर्णवाक्आदिक प्रज्ञास्वरूपहैं॥प्रज्ञातैं किंचित्मात्रभीतिनोंकाभेदनहीं ॥ यातैं सोप्रज्ञा एकरूपहै ॥ और प्राणतैंअभिन्नहै यहसिद्धभया ॥ प्रतर्दनउवाच हेभगवन् उक्तरीतितैं प्रज्ञाकूं जो सर्वरूपताहोवै ॥ तौ वाक्आदिकइंद्रियभी प्रज्ञाकाहीस्वरूपहैं ॥ यातैं जैसे प्रज्ञाविषेआत्मबुद्धिआपनैं उपदेशकरी ॥ तैसे वा

क्आदिकइंद्रियोंविषे आत्मबुद्धिकरणमैंकौनदोष है ॥ इंद्रउवाच ॥ हेप्रतर्दन वाक्आदिकोंकूं यद्यपिप्रज्ञास्वरूपता है ॥ तथापि वाक्आदिकोंकूं सर्वरूपतानहींहै॥यातैंतिनोंविषेआत्मबुद्धिकरणीसंभवैनहीं॥और प्रज्ञाविषे तथाप्राणविषे पूर्वउक्तरीतितैं सर्वरूपताहै॥ यातैंप्राणविषे तथाप्रज्ञाविषेही आत्मबुद्धिकरणेयोग्य है ॥ यातैं हेप्रतर्दन वाक्आदिकोंकूंप्रज्ञास्वरूपताहै॥ यातैं तिनोंविषेभीआत्मबुद्धिकरणेयोग्य है॥ याप्रकारकेसंशयका परित्यागकरिकै प्राणप्रज्ञास्वरूपमैंइंद्रकूं तुमनिश्चयकरो॥कैसामैंहूं वाक्इंद्रियकरिकै तेरेकूंउपदेशकरता हुआभी वास्तवतैंवाक्इंद्रियतैंरहितहूं ॥तात्पर्ययह॥वाक्आदिकोंकरिकैविशिष्टहुआ आत्मा वक्ता श्रोता द्रष्टाइसतैंआदिलैके संज्ञाकूंप्राप्तहावै है॥दृष्टांत जैसे एकहीब्राह्मण पाककियाकरिकैपाचकसंज्ञाकूंप्राप्तहोवे है॥ और पाठरूपक्रियाकरिकै॥ पाठकसंज्ञाकूं प्राप्त होवैहै॥ तैसे एकही अद्वितीयआत्मा वाक्आदिकोंकरिकैविशिष्टहुआ वक्ताआदिकसंज्ञावोंकूं प्राप्तहोवैहै॥ तिनवाक्आदिककरणोंकापरित्यागकरिकै परिशेषतैंरह्याजो प्राणप्रज्ञास्वरूपआत्मा ताकूं तुमनिश्चयकरो ॥ कैसासोआत्मा है ॥ आपणेआपणेव्यापारोंकरिकैयुक्त जेवाक्आदिककरण हैं तिनोंकूं प्रकाशकरणेहारा है ॥ शंका ॥ हे भगवन् प्राणकूं तथाप्रज्ञाकूं पूर्वआपनैं अद्वितीयरूपकह्या ॥ और वाक्आदिकसर्वोंका प्रकाशककह्या सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं लोकविषे प्रकाश्यरूपघटादिकोंका तथाप्रकाशकरूपदीपादिकोंका परस्परभेदही देख्या है॥ समाधान॥ वाक्आदिकजेद्वादशकरण हैं ॥ तथा नामादिकजेद्वादशविषय हैं ॥ तेदोनों परस्परअपेक्षावाले हैं ॥ यातैं तिन दोनोंका परस्परभी भेद सिद्धहोवै नहीं जभी तिन दोनोंका परस्परभेद निरूपणनहींभया तभी अधिष्ठानरूपप्राणप्रज्ञाकेसाथ तिनवाक्आदिकोंकाभेद किसप्रकारकरिकै निरूपणकऱ्याजावे ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे रज्जुतैंकल्पितसर्प भिन्नहोवैनहीं ॥ तैसे प्राणप्रज्ञास्वरूपमैंआत्मातैं कल्पितवाक्आदिकभी भिन्नहोवैनहीं ॥अब वाक्आदिककरणोंविषे तथानामादिकविषयोंविषे परस्परसापेक्षताकूं दिखावैं हैं ॥ भूतमात्रा है नामजिनोंका ऐसेजेनामादिकद्वादशविषय हैं ॥ तेवाक्आदिकद्वादशकरणोंकूंआश्रयणकरिकैही सिद्धहोवैं हैं ॥ वाक्आदिकोंतैंविना नामादिकोंकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ इसप्रकार प्रज्ञामात्रा है नामजीनोंका ऐसेजेवाक्आदिकद्वादशकरण हैं ॥ तेभी नामादिकविषयोंकूंआश्रयणकरिकैही

सिद्धहोवैहैं ॥ नामादिकविषयोंतैंविना वाक्आदिककरणोंकीसिद्धिहोवै नहीं॥काहेतैं जोकेवल वाक्आदिककरणोंकूंहीं अंगीकारकरिये ॥ और नामादिकविषयोंकूं नहींअंगीकारकरिये॥तौ वाक्आदिकोंविषे करणताहीनहींरहैगी॥काहेतैं वाक्आदिकोंविषेजोकरणताधर्महै॥सो नामादिकविषयोंकरिकैनिरूपितहै याकारणतैंहीं लोकविषे करणहै याप्रकारकाशब्दश्रवणकरिकै किसविषयकाकरणहै याप्रकारकीजिज्ञासा पुरुषोंविषे देखीती है ॥ यातैं वाक्आदिककरणोंकूं नामादिकविषयोंकीअपेक्षा है ॥ तैसे जोकेवल नामादिकविषयही अंगीकारकरिये ॥ और वाक्आदिककरणोंकूं नहींअंगीकारकरिये ॥ तौ नामादिकविषयोंविषे विषयताधर्म नहीं रहैगा ॥ काहेतैं नामादिकविषयोंविषे जोविषयताधर्महै सो वाक्आदिककरणोंकरिकैनिरूपितहै ॥ याकारणतैंहीं लोकविषेविषयहै याप्रकारकेशब्दकूंश्रवणकरिकै किसकरणका विषय है ॥ याप्रकारकरणकीजिज्ञासा पुरुषोंविषेदेखीती है ॥ यातैं नामादिकविषयोंकूंभी वाक्आदिककरणोंकीअपेक्षा है ॥ दृष्टांत ॥ जैसे पितासंज्ञा तथापुत्रसंज्ञा पुत्र तथापिताकेविद्यमानहुएहोवै है ॥ पिताकेअभावहुए पुत्रकोईकहैनहीं ॥ और पुत्रकेअभावहुए पिता कोईकहैनहीं तैसे वाक्आदिकोंविषे करणसंज्ञा नामादिकविषयोंकेविद्यमानहुएही होवै है ॥ औरनामादिकोंविषे विषयसंज्ञा वाक् आदिककरणोंकेविद्यमानहुएही होवै है ॥ यातैं वाक्आदिककरणोंकूं नामादिकविषयोंकीअपेक्षा है ॥ और नामादिकविषयोंकूं वाक्आदिककरणोंकीअपेक्षा है ॥ एककेअभावहुए दूसरेकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ शंका ॥ श्रुतिविषे भूतमात्रारूप नामादिकविषय दशकहे हैं ॥ तथा वाक्आदिककर्णभी दशकहे हैं ॥ यातैं द्वादशकरणोंकाकथन तथाद्वादशविषयोंकाकथनश्रुतिसेविरुद्धहै ॥समाधान॥ श्रुतिविषे शरीर तथाअंतःकरण यादोनोंकरणोंकूंतथासुखदुःख और कामादिक यादोनोंविषयोंकूं परित्यागकरिकै केवलवाक्आदिकबाह्यकरणोंकूं तथा नामादिकबाह्यविषयोंकूं दशप्रकार कथनकऱ्या है; यातैं श्रुतिकेसाथ याग्रंथकाविरोधनहीं ॥ शंका ॥ वाक्आदिककरण तथानामादिकविषय यद्यपि परस्परअपेक्षावाले हैं ॥ तथापि आपणीसिद्धिविषे किसीतीसरेकीअपेक्षाकरैनहीं यातैं वाक्आदिकोंकीप्रकाशकतारूपहेतुकरिकै आत्माकीसिद्धिनहींहोवैगी ॥ समाधान ॥ जेजेसापेक्षपदार्थहोवैं हैं ॥ तेपरस्परअपेक्षाक

रिकैसिद्धहोवैंनहीं ॥ किंतु ॥ आपणेतैंभिन्न जो कोईनिरपेक्षवस्तुहै ॥ तिसकीअपेक्षाकरिकैही सापेक्षपदार्थ सिद्धहोवैं है ॥ दृष्टांत ॥ जैसे रज्जुविषे अयंसर्पःयाप्रकारकाज्ञान पुरुषकूं होवै है ॥ ताज्ञानविषे अयंशब्दकाअर्थरज्जु विशेष्यरूपकरिकैप्रतीतहोवै है ॥ और सर्प विशेषणरूपकरिकैप्रतीतहोवै है॥और जभी तारज्जुविषे सर्प अयं याप्रकारकाज्ञानहोवै है॥तभी ताज्ञानविषे सर्पतौ विशेष्यरूपकरिकैप्रतीतहोवै है॥और अयंशब्दका अर्थ रज्जु विशेषणरूपकरिकैप्रतीतहोवै है॥और विशेषण तथाविशेष्य परस्पर सापेक्षहोवैं है॥यातैं तिनोंकूं विषयकरणेहारेज्ञानभी परस्पर सापेक्षहीहोवै है॥यातैं यहसिद्धभया॥जैसे अयंसर्पः तथा सर्पःअयं यहदोनोंज्ञानपरस्पर अपेक्षावालेतौहैं॥ परंतु निरपेक्षरज्जुतैंविना परस्परअपेक्षामात्रकरिकै तिनज्ञानोंकीसिद्धिहोवैनहीं॥किंतु निरपेक्षरज्जुकीअपेक्षाकरिकैही तिनज्ञानोंकीसिद्धि होवै है तैसे वाक्आदिककरण तथानामादिकविषय यद्यपि परस्परअपेक्षावाले हैं॥ तथापि तिनोंकी निरपेक्षआत्मातैंविना सिद्धिहोवैनहीं किंतुनिरपेक्षआत्माकरिकैही तिनोंकीसिद्धिहोवै है॥किंवा॥वाक्आदिककरण तथानामादिकविषय परस्परभिन्ननहीं॥ तैसे आत्मारूपआश्रयतैंभी भिन्न नहीं ॥ या अर्थकूं अनुमानप्रमाणकरिकैभीसिद्धकरैं हैं ॥ ताअनुमानकाप्रकारयहहै ॥ सविषयवाक्आदिककरण परस्पर तथाआश्रयतैं भिन्ननहीं ॥ काहेतैं सर्वदापरस्परसापेक्षहोणतैं ॥ जेजेपदार्थ परस्परसापेक्षहोवैं हैं॥ तेपरस्पर तथाआश्रयतैं भिन्ननहीं होवैं हैं ॥ जैसे पूर्वउक्त रज्जुसर्पविषयकज्ञान परस्परसापेक्षहैं ॥ यातैं परस्पर तथारज्जुरूपआश्रयतैं भिन्ननहीं किंवा ॥ नामादिकविषय जैसे वाक्आदिककरणोंतैं तथाआत्मारूपआश्रयतैं भिन्ननहीं ॥ तैसे आपणेज्ञानतैंभी ॥ भिन्ननहीं ॥दृष्टांत॥जैसे रज्जुविषेप्रतीतिभयाजोसर्प॥ सो यहसर्प है याप्रकारकेज्ञानतैंभिन्ननहीं ॥ जोभिन्नहोवै तौ ताज्ञानकीनिवृत्तिकालविषेभी प्रतीतहोणाचाहिये॥और कल्पितसर्पयहसर्पहै याज्ञानकीनिवृत्तिकालविषे प्रतीतहोवैनहीं॥यातैं कल्पितसर्प आपणेज्ञानतैंभीभिन्ननहीं ॥ तैसे नामादिकविषयभी आपणेज्ञानतैंभिन्ननहीं किंवा॥चक्षुआदिककरणोंकरिकै पुरुषोंकूं अंतःकरणकीवृत्तिरूपजडज्ञान उत्पन्नहोवै है॥कैसे हैं तेवृत्तिरूपज्ञान॥रूपादिकविषयोंकाआश्रय रूपहैं।तिनवृत्तिरूपज्ञानोंकाद्रष्टा प्राणप्रज्ञास्वरूपमैंचैतन्यहूं।यातैं तेवृत्तिरूपजडज्ञान चैतन्यरूपमुझआत्मातैंभिन्ननहीं।दृष्टांत जैसेस्वप्नविषे

जीवोंकूंरथादिकपदार्थोंकेज्ञान उत्पन्नहोवै हैं ॥ तेरथादिकविषयसहितज्ञान स्वप्नद्रष्टापुरुषतैंभिन्ननहीं ॥ तैसे विषयसहितवृत्तिरूपजडज्ञान मैंद्रष्टाआत्मातैंभिन्ननहीं ॥ यातैं यहसिद्धभया ॥ प्राणप्रज्ञाशब्दकालक्ष्यअर्थआत्माहीं अद्वितीय है ॥ तिसआत्मातैंभिन्न कोईभीवस्तु नहीं ॥ अब याहीअर्थकूं चक्रकेदृष्टांतकरिकैदिखावैं हैं ॥ जैसे रथकेचक्रविषे तीनभागहोवैं हैं ॥ एकनेमी दूसराअरा तीसरानाभि ॥ तहाँ भूमिकेसाथ जाकास्पर्शहोवै है ऐसाजो कंकणकेआकारकाष्ठहै ताकूंनेमीकहैं हैं ॥ औरनेमी जिनोंकेआश्रितरहै है॥ ऐसेजे बीचकेचक्रकाष्ठ हैं ॥ तिनोंकूं अराकहैं हैं॥और तिनअरोंका जोआधाररूपकाष्ठहै जाकेविषे शलाकाफिरे हैं ताकू नाभिकहैं हैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे नेमी अराकेआधार रहै है ॥ और अरा नाभिकेआधार रहैं हैं॥सोनाभि किसीकेआश्रितरहैनहीं॥ किंतु संपूर्णोंकाआधारहोवै है॥तैसे नामादिकविषय वाक्आदिककरणोंकेआश्रितरहैं हैं ॥ और वाक्आदिककरण प्राणप्रज्ञास्वरूपमुझआत्माकेआश्रितरहैं हैं॥ और प्राणप्रज्ञास्वरूपमैंआत्मा किसीकेआश्रितरहतानहीं ॥ किंतु सकलविषय तथावाक्आदिकोंका मैंआत्मा अधिष्ठानहूं ॥ यातैं हेप्रतर्दन नामादिकविषयरूप तथावाकादिककरणरूप जो यह सकलसंसाररूपचक्र है ॥ तासंसाररूपचक्रका प्राणप्रज्ञास्वरूपमैं आत्मानाभिहूं ॥ काहेतैं जैसे प्रसिद्धरथकेचक्रकीनाभिकिसीकेआश्रितरहैनहीं ॥ तैसे मैंआत्माभी किसीअन्यकेआश्रितरहतानहीं ॥ किंतु सकलजगत् मेरे आश्रित रहे है ॥किंवा॥ विषय तथाविषयी यादोनोंकानाम जगत्है ॥ तहाँ नामादिक विषयहैं ॥ और वाकादिककरणविषयी हैं॥ताविषयविषयीरूप सकलप्रपंचका प्रकाशकरणेहारा प्राणप्रज्ञास्वरूपमैंआत्माहूं ॥ किंवा ॥ प्राणप्रज्ञास्वरूपमुझआत्मातैंही यहस्थूलसूक्ष्मसकलप्रपंच उत्पन्नभयाहै ॥ और मुझआत्माविषेही सकलजगत् अभिस्थितहै ॥ और मुझआत्माविषेही सकलजगत् लयकूंप्राप्तहोवैगा ॥ दृष्टांत ॥ जैसे मूढबालकनैं आपणेशरीरविषे कल्पनाकन्याजोराक्षस ॥ ताराक्षसकी उत्पत्ति तथास्थिति तथालय तिसबालकतैंहीहोवै. है ॥ तैसे प्राणप्रज्ञास्वरूपमुझआत्मातैंहीं सकलप्रपंचकी उत्पत्ति तथास्थिति तथालय होवै है॥किंवा॥जैसे सर्वभेदतैंरहितआकाशविषे घटमठादिक उपाधियोंकेवशतैं भेदप्रतीतहोवै है ॥ तैसे शरीरादिकउपाधियोंकरिकै मैं अद्वितीयआत्माविषे नानाप्रकारकाभेद प्रतीतहोवै है॥किंवा ॥

मुझअद्वितीयआत्माविषे उपाधिदृष्टिवालेबहिर्मुखपुरुषोंकूंही भेदप्रतीतहोवै है ॥ उपाधिदृष्टितैंरहित अंतर्मुखपुरुषोंकूंमुझअद्वितीयआत्माविषेभेद प्रतीतहोवैनहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे रंगकरिकै लिखित वृक्षादिरूपचित्रयुक्तपटविषे यद्यपि नीचापणातथाऊंचापणा संभवैनहीं॥ तथापि वृक्षादिरूपचित्रोंकीदृष्टिकरिकै अविवेकीपुरुषोंकूं याप्रकारकीविपमदृष्टिहोवैहै॥यावृक्षका मूलदेश नीचे है और शाखा ऊपरहैं॥और जिन पुरुषोंकूं वृक्षादिरूपचित्रोंकीदृष्टिनहीं ॥ किंतु केवलपटदृष्टिहैं तिनोंकूं सोविपमदृष्टि होवैनहीं तैसे प्रपंचरूपउपाधिकीदृष्टिकरिकै अविवेकी पुरुषोंकूं मुझअद्वितीयआत्माविषे भेदप्रतीतिहोवैहै॥औरउपाधिदृष्टितैंरहित विवेकीपुरुषोंकूं प्राणप्रज्ञास्वरूपमैंआत्माविषेभेदबुद्धिहोवैनहीं अब प्राणप्रज्ञाशब्दकेवास्तवअर्थकूंदिखावैं हैं॥हेप्रतर्दन वायुरूपप्राणतैं यद्यपि मैंआत्माभिन्नहूं तथापि अंडज जरायुज स्वेदज उद्भिज्ज याचारिप्रकारकेजीवोंका मुझआत्मातैंहीं जीवनहोवै है ॥ याकारणतैं मैंअद्वितीयआत्माहीं प्राणशब्दकाअर्थहूं ॥ तथा प्राणशब्दजन्यज्ञानका विषयहूं ॥ शंका ॥ चैतन्यआत्माविषेही प्राणियोंकेजीवनकीकारणताहै वायुरूपप्राणोंविषेनहीं ॥ याअर्थविषेकौनप्रमाणहै ॥ समाधान ॥ तैतरीयउपनिषदविषे चैतन्यआत्माविषेही जीवनकी कारणताकहीहै॥तहाँ यहकह्याहै॥प्राणकरिकै तथाअपानकरिकै कोईभीप्राणी जीवता नहीं ॥ किंतु जिसचैतन्यआत्माकीसमीपताकरिकै यहप्राणअपानादिक प्रवर्तमानहोवैं हैं ॥ ताचैतन्यआत्माकरिकैहीं यहसंपूर्णप्राणी जीवैं हैं॥यातैं सर्वप्राणियोंकेजीवनकाकारण अद्वितीयआत्माहा प्राणशब्दकाअर्थ है यहसिद्धभया॥अब प्रज्ञाशब्दकेअर्थकूंदिखावैं हैं ॥ पंच ज्ञानईंद्रिय पंचकर्मईंद्रिय अंतःकरण शरीर याद्वादशकरणोंकूं तथानामादिकतिनोंकेविषयोंकूं आपणेस्वप्रकाशस्वरूपकरिकै मैंअद्वितीयआत्मा जानताहू ॥ याका गतैं मअद्वितीयआत्मा प्रज्ञाशब्दकाअर्थहूं ॥ अथवा ॥ मेरेप्रकाशकेविद्यमानहुएही संपूर्णप्रपंच प्रतीतहोवैं हैं ॥ आपणेप्रकाशकरिकै जडजगत्काभान होवैनहा ॥ याकारणत मैंअद्वितीयआत्मा प्रज्ञाशब्दकाअर्थहूं ॥ अथवा देशपरिच्छेद तथाकालपरिच्छेद तथावस्तुपरिच्छेद यातीनपरिच्छेदोंतैं मैंआत्मारहितहूं ॥ तथा स्वप्रकाशहूं ॥ याकारणतैं मैंअद्वितीयआत्मा प्रज्ञाशब्दकाअर्थहूं॥अथवा॥लोकविषे ज्ञानतैंभिन्नबाह्यरज्जुआदिकजडपदार्थ कल्पितसर्पादिकोंकेअधिष्ठानरूप देखे हैं ॥ और मैंआत्मा

ज्ञानतैंभिन्ननहीं किंतुज्ञानस्वरूपहूं ॥ तथा बाह्यभीमैंआत्मानहीं किंतु सर्वतैंअंतरहूं ॥ इसप्रकार रज्जुआदिकबाह्यअधिष्ठानोंतैं विलक्षण रूपकरिकैयुक्तहुआभी मैंआत्मा सर्वप्रपंचकाअधिष्ठानहूं ॥ याकारणतैं मैंअद्वितीयआत्मा प्रज्ञाशब्दकाअर्थहूं ॥ अथवा ॥ सजातीयभेद तथाविजातीयभेद तथास्वगतभेद यातीनभेदोंतैंरहितजोआत्मस्वरूपहै ॥ ताआत्मस्वरूपप्रज्ञाकरिकै मैंनिर्युक्तहूं ॥ याकारणतैं मैं अद्वितीयआत्मा प्रज्ञाशब्दकाअर्थहूं ॥ अब आत्मपदकेअर्थकूंदिखावैं हैं॥ हेप्रतर्दन तेरेताईं जोहमनैं वारंवार प्राणप्रज्ञास्वरूपआत्माका उपदेशकऱ्याहै ॥ सोईहीआत्मा तेरावास्तवस्वरूपहै ॥ तैसे स्थावरोंका तथाजंगमोंकाभी सोईहीआत्मा वास्तवस्वरूपहै ॥ और सोई हीआत्मा सर्वप्राणियोंविषे अहंशब्दकीलक्षणाकारिकै जान्याजावैहै ॥ और अहं याज्ञानकाविषय है ॥ और वास्तवतैं अहं याशब्दतथा ज्ञानके संबंधतैंरहितहै ॥ और सोईहीआत्मा आकाशकीन्याईं भेदतैंरहितहुआ याजगत्विषेस्थितहै ॥ किंवा ॥ जैसे घटमठादिकनाना उपाधियोंविषेस्थितआकाशका आकाशहीएकनामहोवै है॥तात्पर्ययह॥ घटउपाधिविषेस्थितआकाशकूं घटाकाशकहैं हैं ॥मठरूपउपाधि विषेस्थितआकाशकूं मठाकाशकहैं हैं ॥ इसप्रकार नानाउपाधियोंविषेस्थितहुआभी आकाश आकाश यानामतैंरहितहोवैनहीं ॥ यातैं सोअनुगत एकआकाशनाम आकाशकेएकताकूं बोधनकरै है ॥ तैसे नानाशरीररूपउपाधियोंविषेस्थितअद्वितीयआत्माकाभी एक आत्माहीनामहोवै है ॥ यातैं सर्वत्रअनुगत एकआत्मानाम मुझअद्वितीयआत्माकीएकताकूं बोधनकरै है ॥ शंका ॥ आत्मा जोवास्तव तैंएकहीहोवै ॥ तौ नानारूपकरिकैकाहेतैंप्रतीतहोवै है ॥समाधान॥ अविद्यारूपदोषकेबलतैं एकहीअद्वितीयआत्मा जगत्रूपहोइकेप्रती तहोवै है ॥ दृष्टांत ॥ जैसे एकहींस्वप्नद्रष्टापुरुष स्वप्नविषे निद्रादोषकेबलतैं अनंतरूपहोइकेप्रतीतहोवै है ॥ और जैसे स्वप्नविषेप्रतीतभये जेरथादिकपदार्थ ते कल्पितहैं ॥ यातैं स्वप्नद्रष्टापुरुषतैंभिन्ननहीं ॥ तैसे अज्ञानकरिकैकल्पित यहसंपूर्णजगत्भी मुझअद्वितीयआत्मातैं भिन्ननहीं ॥ अब आनंदशब्दकेअर्थकूंदिखावैं हैं॥हेप्रतर्दन॥ संपूर्णजीवोंकूं मैंआत्मा अतिशय करिकैप्रियहूं॥यातैं मैंआत्मा आनंदस्वरू पहूं ॥ तात्पर्ययह ॥ इसलोकविषे तथापरलोकविषे भोगणयोग्यजेस्त्रीआदिकपदार्थहैं ते प्रियहैं ॥ और तिनविषयोंतैंउत्पन्नभयाजो अंतः

करणकापरिणामरूपसुख सोप्रियतरहै ॥ और आत्मा सकलकाशेषिरूपहै॥यातैं आत्मा प्रियतमहै ॥ स्त्रीपुत्रादिकपदार्थ जिसके वासतैं होवै सोशेषिकहिये है ॥ ऐसाशेषिरूपआत्माहै ॥ अन्यसंपूर्णपदार्थ आत्माकाशेषरूपहै॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकैदिखावैं हैं ॥संपूर्ण प्राणी सुखकी तथासुखकेसाधनस्त्रीपुत्रादिकोंकी जभी इच्छाकरै हैं तभी आत्माकेवासतैंहीं सुखादिकोंकीइच्छाकरैं हैं॥मेरेकूं सुखकीप्राप्ति होवै ॥ मेरेकूं स्त्रीपुत्रादिकोंकीप्राप्तिहोवै ॥ याप्रकारकीइच्छा संपूर्णजीवकरैं हैं ॥ जोकेवल सुखकीइच्छाहोवै तौ वैरीकेसुखकीभी इच्छा होणीचाहिये ॥ और वैरीकेसुखकीकोईइच्छाकरैनहीं॥किंतु आत्मसंबंधीसुखकी सकलप्राणी इच्छाकरैं हैं यातैं आत्माकेवासतैंही सुख की तथासुखकेसाधनस्त्रीपुत्रादिकोंकी इच्छाहोवै है ॥ सुखकेवासतैं तथासुखकेसाधनस्त्रीपुत्रादिकोंकेवासतैं आत्माकीकोईइच्छाकरै नहीं ॥ यातैं मैंअद्वितीयआत्माही सर्वकाशेषिरूपहूं ॥ अन्यसंपूर्णपदार्थ आनंदस्वरूपमैंआत्माकेशेषरूप हैं ॥ भोगकेसाधनोंकूं शेषकहैं हैं ॥ भोक्ताकूं शेषिकहैं हैं ॥ किंवा ॥ मनुष्यलोकतैंआदिलैके ब्रह्मलोकपर्यंत जितनीकी विषयजन्यसुखकीन्यूनअधिकता है ॥ सो जिसविषेजाइकेपरिअवसानकूंप्राप्तहोवै॥ सो आनंदस्वरूपमैंआत्माहूं ॥अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकैदिखावै हैं ॥ मनुष्यलोकके आनंदतैं शतगुणअधिकआनंद पितरोंकूंहोवैहै॥पितरोंतैंशतगुणअधिकआनंद गंधर्वोंकूंहोवैहै॥गंधर्वोंतैं शतगुणअधिकआनंदकर्मदेवतावों कूंहोवै है॥कर्मदेवतावोंतैं शतगुणअधिकआनंद आजानदेवतावोंकूंहोवै है॥आजनदेवतावोंतैंशतगुणअधिकआनंद प्रजापतिकूंहोवैहै प्रजाप तितैं शतगुणअधिकआनंद हिरण्यगर्भकूंहोवै है॥विषयजन्यसुखविषे हिरण्यगर्भलोककासुख सर्वतैंउत्कृष्टहै॥सोहिरण्यगर्भकाआनंद आनं दसमुद्ररूपमैंआत्माके एककणकेसमानहै ॥ तात्पययह ॥ विषयजन्यसकलसुखोंतैं उत्कृष्टहिरण्यगर्भकाआनंदभी जभी आनंदसमुद्रआ त्माके एककणकेसमानभया॥तभी मनुष्यादिकोंकेआनंदकीक्याकथाहै॥यातैं सकलआनंदोंकाअवधिरूपमैंआत्माहूं॥यातैंमैंआत्मा आ नंदस्वरूपहूं॥किंवा॥शब्दस्पर्श रूप रस गंध यहपंचप्रकारकेविषय लोकोंनैं सुखकेकारणमाने हैं ॥ तेशब्दादिकविषयभी मुझपरमात्मा कूंहीं सुखकी प्राप्तिकरैं हैं ॥ तात्पर्ययह ॥ शब्दादिकविषयोंतैंप्रगटभयाजोसुख सो मैंआत्माकाहीस्वरूपहै॥शंका ॥ शब्दादिकविषयोंतैंउ

त्पन्नभयेसुखोंकूं आत्मरूपतासंभवैनहीं ॥ काहेतैं सत्चित्आनंदरूपआत्माकालक्षणतिनसुखोंविषेहैनहीं ॥ समाधान ॥ जिनपुरुषोंकूं वेदांतवा
क्योंतैं आत्माकायथार्थज्ञानभयाहै ॥ तेपुरुष शब्दादिकविषयजन्यसुखविषेभी वृत्तिरूपउपाधिकापरित्यागकरिके सुखमात्रकूं सत्चित्आ
नंदरूपहीमानै हैं ॥ और आत्मज्ञानतैंरहित मूढपुरुषतौ शब्दादिकविषयोंकूंहीसुखरूपमानै हैं ॥ याकारणतैंही तत्ववेत्तापुरुषकूं विषयकीप्रा
प्तिकालविषेभी आत्मस्वरूपनित्यसुखकाहीभान शास्त्रविषेकह्याहै ॥ किंवा ॥ शब्दादिकविषयोंविषे जोसुख प्रतीतहोवै है ॥ सोभी आनं
दस्वरूपमुझआत्माकेसंबंधतैंहीं प्रतीतहोवै है ॥ दृष्टांत ॥ जैसे गुडविषेजोमधुरता है सो किसीवस्तुके संबंधतैंनहीं ॥ किंतु स्वतःही गुड
विषेमधुरताहै ॥ तागुडकाजिसवस्तुकेसाथसंबंधहोवै है ॥ सोवस्तुभी मधुरप्रतीतहोवै है ॥ तैसे मुझआत्माविषे जो आनंदरूपता है सो
किसीकेसंबंधतैंनहीं ॥ किंतु मैंआत्मा स्वतःहीआनंदस्वरूपहूं ॥ तिसआनंदस्वरूपमुझआत्माकेसंबंधतैं शब्दादिकविषयों विषे आनंद
रूपताप्रतीतहोवै है ॥ स्वतः शब्दादिकविषयोंविषे आनदरूपतानहीं ॥ तौभी आत्मज्ञानतैंरहितमूढपुरुष शब्दादिकविषयोंकूंहीं
सुखरूपमानै हैं ॥ अन्यदृष्टांत ॥ जैसे वायुकास्पर्श शीतलनहीं तथाउष्णभीनहीं ॥ किंतु जलकेशीतस्पशतैं तथाअग्निकेउष्णस्पर्शतैं
विलक्षणहीं वायुकास्पर्श है ॥ तथापि शीतस्पर्शवालेजलकेसाथतथाउष्णस्पर्शवालेतेजकेसाथ जभीवायुकासंबंधहोवै है ॥ तभीतासमुद्र
संबंधीवायुकूं शास्त्रसंस्कारोंतैंरहित मूढपुरुष शीतस्पर्शवालाकहै है ॥ तथा तेजसंबंधीवायुकूं उष्णस्पर्शवालाकहैहै ॥ और विचारवान्पुरुष
वायुकूं उष्णस्पर्शवाला तथाशीतस्पर्शवाला मानैनहीं ॥ काहेत जलकेसूक्ष्मअवयवोंकूं वायु उठाइ लेआवैहै ॥ तिनजलकेअवयवोंका
जभी शरीरसे संबंधहोवै है ॥ तभी शीतलताप्रतीतहोवै है ॥ तेजलकेअवयवसूक्ष्महैं यातैं तिनोंका चाक्षुषप्रत्यक्षहोवैनहीं ॥ याप्रकार
उष्णस्पर्शविषेभी जानिलेणा ॥ तैसे शब्दादिकविषयोंविषे आनंदस्वरूपआत्माकेतादात्म्यसंबंधकरिकैही आनंदरूपताहै ॥ स्वतःशब्दा
दिकविषयोंविषे आनंदरूपतानहीं ॥ तथापि आत्मज्ञानतैंरहित मूढपुरुषोंकूं याप्रकारकीभ्रांतिहोवै है ॥ विषयोंतैंहीहमारेकूंसुखकीप्राप्तिहो
वैहै ॥ यातैं हेप्रतर्दन मैंअद्वितीयआत्माही आनंदस्वरूपहूं ॥ शंका ॥ जो आत्माही आनंदरूपहोवै तो आत्मा सर्वदाविद्यमानहै ॥

किसीकालविषेभी आत्माकाअभावनहीं ॥ यातैं सर्वदा आनंदकीप्राप्तिहोणीचाहिये ॥ और सर्वदाआनंदकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ किंवा ॥ शब्द
दिकविषयही हमारेकूंसुखकेदेणेहारे हैं ॥ याप्रकार संपूर्णलोक कथनकरैं हैं ॥ ताकोविषे कौनकारण है ॥ समाधान ॥ हेप्रतर्दन सर्वबुद्धिआ
दिकजडसंघातकासाक्षी प्राणप्रज्ञास्वरूपमैंआत्माहीं एकसुखरूपहूं ॥ ऐसेमुझआत्माका जभीयाजीवोंकूं अज्ञानहोवै है ॥ तभी अज्ञानक
रिकैआवृतहुए ते मूढपुरुष शब्दादिक विषयोंकेप्राप्तिकी इच्छाकरैं हैं ॥ ताइच्छाकारकै अनंत दुःखोंकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ हे प्रतर्दन तिनअ
ज्ञानजन्यदुःखोंका तूभीपूर्वअनुभवकरिआया है ॥ यातैं आनंदरूपआत्माकेसर्वदाविद्यमानहुएभी ॥ अज्ञानरूपआवरणकेवशतैं पुरुषोंकूं
आत्मआनंदकाभानहोवैनहीं किंवा ॥ शब्दादिकविषयहमारे सुखकाकारण हैं ॥ याप्रकार जोसर्वलोक कथनकरैं हैं ॥ याकोविषे यहका
रण है ॥ शब्दादिकविषयोंकेअप्राप्तिकालविषे तिनशब्दादिकोंकीइच्छाकरिकै पुरुषोंकीबुद्धि चंचलहोवै है ॥ और जभीपूर्वपुण्यकेवशतैं
तिनशब्दादिकविषयोंकेअप्राप्तिहोवै है ॥ तभी किंचित्काल ताईच्छाकीनिवृत्तिहोवै है ॥ ताईच्छाकेनिवृत्तहुए किंचित्काल सोबुद्धि चंचल
तातैंरहित एकाग्रहोवै है ॥ जबपर्यंत दूसरेपदार्थकीइच्छाउत्पन्ननहींभई ॥ तबपर्यंत सोएकाग्रबुद्धि मुझआनंदस्वरूपआत्माकारिकैव्याप्त
होवै है ॥ याकारणतैंही सोएकाग्रबुद्धि सुखरूपआत्माकीन्यांई सुखरूपहुई प्रतीतहोवै है ॥ दृष्टांत ॥ जैसे लोहपिंडविषे उष्णस्पर्श तथाप्र
काशमानता यद्यपि नहीं है ॥ तथापि अग्निकरिकैयुक्तहुआलोहपिंड अग्निकेसमान उष्णस्पर्शवाला तथाप्रकाशमान प्रतीतहोवै है ॥ तैसे
बुद्धि यद्यपि सुखरूपनहीं ॥ तथापिआनंदस्वरूपमैंआत्माकारकव्याप्तहुई सोएकाग्रबुद्धि सुखरूपहोइकेप्रतीतिहोवै है ॥ तात्पर्ययह ॥ आनं
दरूपआत्माकेप्रतिविंबयुक्तबुद्धिकी एकाग्रअवस्थाकूंहीं मूढपुरुष सुखरूपमानै हैं ॥ और सोबुद्धिकीएकाग्रअवस्था शब्दादिकविषयोंकी
प्राप्तिकरिकैहोवै है ॥ शब्दादिकावर्पयातावर्ना सोबुद्धिकीएकाग्रता होवैनहीं ॥ याप्रकार मूढपुरुष मानिकरिकै शब्दादिकविषय हमारे
कूंसुखकी प्राप्तिकरैं हैं या प्रकारका कथनकरैं हैं ॥ शंका ॥ हे भगवन् आनंदरूप आत्माकेप्रति विंबयुक्तबुद्धिकी एकाग्र अवस्थाजोलो
कप्रसिद्धसुखहोवै ॥ तौ सर्व प्राणी मात्रकूं विषयजन्यसुख समानहोणा चाहिये ॥ और विषयजन्य सुख समानहोवै नहीं ॥ समाधान ॥

हेप्रतर्दन जैसे छिद्रयुक्तजोसेपर्पकादाणा है ॥ सो महान्समुद्राविषेप्राप्तहुआभी आपणेछिद्रकेपरिमाणहीं जलकाग्रहणकरै है ॥ आपणे छिद्रतेंअधिकजलका ग्रहणकरैनहीं ॥ तैसे आनंदसमुद्रमैआत्माविषेप्राप्तभयो जोविषयजन्यबुद्धि ॥ सो आपणेपरिमाणहीं आत्मानंदकूंग्रहणकरै है ॥ आपणेपरिमाणतैं अधिकआनंदकूं बुद्धि ग्रहणकरै नहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे अतिस्वच्छदर्पणविषे सूर्यकेप्रतिबिंबकी अधिकताहोवै है ॥ और मलिनदर्पणविषे सूर्यकेप्रतिबिंबको न्यूनताहोवै है॥तैसे शुद्धसत्वगुणयुक्तएकाग्रबुद्धिविषे आनंदस्वरूपआत्माकाप्रतिबिंब स्पष्टहोवै है॥यातैं तहाँआनंदकीअधिकताप्रतीतहोवै है॥और मलिनसत्वगुणयुक्तबुद्धिविषे आनंदकाप्रतिबिंब स्पष्टहोवै नहीं ॥ यातैं तहाँ आनंदकीन्यूनता प्रतीत होवै है ॥ याकारणतैंही चिरकालपीछे गृहविषेआयाजोपुरुष ताकूं जैसा प्रथम स्त्रीकेदर्शनतैं तथापुत्रादिकोंकेदर्शनतैं आनंदहोवै है तैसा पुनःदर्शनतैं आनंदहोवैनहीं ॥ किंतु प्रथमदर्शनजन्यआनंदतैं न्यूनआनंद होवै है ॥ काहेतैं प्रथम पुत्रादिकोंकेदर्शनतैं बुद्धि अत्यंतएकाग्रहोवै है ॥ यातैं आनंदकीअधिकता प्रतीतहोवै है और पश्चात् अन्यपदार्थोंकीइच्छाकरिकै बुद्धिचंचलहोवै है यातैं ॥ पुनःपुत्रादिकोंकेदर्शनहुएभी प्रथमजैसाआनंद होवैनहीं ॥ यात यहसिद्धभया ॥ आनंदस्वरूपआत्माके प्रतिबिंबयुक्त जो एकाग्रबुद्धि है ताकूं मूढपुरुष सुखरूपमानै हैं ॥ सोसुखइच्छाकीनिवृत्तितैंविना होवैनहीं ॥ यातैं इच्छाकीनिवृत्तितासुखविषे कारण है ॥ ताइच्छाकीनिवृत्ति शब्दादिकविषयोंकीप्राप्तितैंविनाहोवैनहीं ॥ यातैं शब्दादिकविषयोंकूं सुखकाकारणमानिकै अविवेकीपुरुष तिनशब्दादिकविषयोंकीप्राप्तिविषे यत्नकरै हैं ॥ इसप्रकार छिक्कातथाकंडूयनआदिकोंतैं जोसुखउत्पन्नहोवै है ॥ तिसविषेभी पूर्वउक्तरीतिजानिलेणी ॥ यातैं हेप्रतर्दन संपूर्णशरीरोंविषे आनंदस्वरूपमैं आत्माहीं सुखदेणेहाराहू ॥ मेरेतैंभिन्नकोई सुखदेणेहारानहीं ॥ और सोईही आनंदस्वरूपआत्मा तेरास्वरूप है ॥ और हेप्रतर्दन अद्वितीयआनंदस्वरूप मैंआत्माहूं याप्रकारके आत्मज्ञानकरिकै अब तुम्हाराअज्ञाननिवृत्तभया है॥यातैं स्थूलशरीरभी तुमारानहीं॥जभी स्थूलशरीरका तुमारेविषे अभावभया ॥ तभी स्थूलशरीरकेधर्मजरामरणादिक तुमारेविषे किसप्रकारहोवैंगे किंतुनहींहोवैंगे ॥ और हेप्रतर्दन बुद्धिआदिकोंका साक्षीरूप जोतेरास्वरूप है तिसविषे

बुद्धिभीनहीं ॥ बुद्धिकेअभावहुए बुद्धिकेधर्मजेपुण्यपापादिक हैं तेभी तेरेस्वरूपविषेनहीं ॥ तात्पर्ययह जैसे लोकविषे प्रकाश्यघटादिकोंकेधर्म प्रकाशकदीपकादिकोंकूं स्पर्शकरैनहीं ॥ तैसे प्रकाश्यबुद्धिकेपुण्यपापरूपधर्मप्रकाशकसाक्षी आत्माकूं स्पर्शकरैनहीं ॥ तिसपुण्यपापकेअभावहुए इसलोकविषे तथापरलोकविषे सुखदुःखरूपफलकाभोक्ता आत्माहोवैनहीं ॥ और हेप्रतर्दन जोपुण्यपापरूपकर्मकेफलकाभोक्ताहोवैहै॥तिसकी अधिकभोगोंकरिकै वृद्धिहोवै है॥और अल्पभोगोंकरिकै न्यूनताहोवै है॥और तूं कर्मोंकाकर्ता तथाभोक्ताहैनहीं॥ यातैं तुमारीबुद्धि तथान्यूनता किसकारणतैं होवै किंतुनहींहोवैगी ॥ और हेप्रतर्दन जोअद्वितीयआत्मा मेरास्वरूपहै ॥ सोईहीअद्वितीय आत्मातेरास्वरूपहै॥और तूही सर्वकासाक्षीहै॥ऐसाआत्मस्वरूपतू पुण्यपापरूपकर्मकेपराधीनकदाचित्भीनहीं॥किंतुआपणीसमीपताकरिकै बुद्धिआदिकोंकूं पुण्य तथा पाप करावता है॥ हेप्रतर्दन तूपरमात्मादेव जिसपुरुषकूं स्वर्गविषेलैजाणेकीइच्छाकरै है ॥ तिसपुरुषकूं पुण्यकर्मकरावै है॥ और जिसपुरुषकूं नरकविषेलैजाणेकी तूइच्छाकरै है॥तिसपुरुषकूं पापकर्म तूकरावै है ॥और जिसपुरुषकूं मनुष्यलोकविषेलैजाणेकी तूइच्छाकरै है तिसपुरुषकूं पुण्यतथापापदोनों करावै है ॥ शंका॥पुण्यकर्म तथा पापकर्मका करावणेहारा जोपरमात्माकूं मानोंगे ॥ तोजीवोंकीन्याई विषमता तथानिर्दयता रूपदोषकीप्राप्ति परमात्माविषेभीहोवैगी ॥ समाधान ॥ पुण्यकर्मकरिकै यहपुरुष पुण्यकर्मवालाहोवै है ॥ और पापकर्मकरिकै पापकर्मवालाहोवै है याप्रकार श्रुतिविषे कथनकऱ्या है ॥ और तिनपुण्यपापकर्मोंकाज्ञान अल्पज्ञजीवकूं है नहीं ॥ किंतु सर्वज्ञपरमात्माकूं है ॥ यातैं याजीवकेपूर्वपुण्य कर्मके अनुसार उत्तरउत्तरजन्मविषे पुण्यकर्मोंकूंईश्वर करावै है ॥ और याजीवके पूर्वपापकर्मके अनुसार उत्तरउत्तरजन्मविषे पापकर्मोंकूं परमात्माकरावै है ॥ यातैं परमात्माविषे विषमता तथानिर्दयतारूप दोषकी प्राप्ति नहीं ॥ यातैं हेप्रतर्दन सर्वकर्मोंकाप्रेरक मुझ परमात्माकास्वरूपजो तूं है ॥ सो पुण्यपापरूपकर्मकेअधीननहीं ॥ किंवा ॥ हेप्रतर्दन संपूर्ण बुद्धिआदिकोंकासाक्षी तथासकलकाप्रेरक जोतेरास्वरूप मैंनें कथन कऱ्या है ॥ सोईहीतेरास्वरूप सर्वलोकोंकोपालनकरै है ॥ दृष्टांत ॥ जैसे माता बालकोंकापालनकरै है॥किंवा ॥हेप्रतर्दन जैसे गृहकास्वामी आपणेपु

त्रादिकबांधवोंकूं नानाप्रकारकेभोगोंकप्राप्तिकरिकै तृप्तकरैहै॥तैसे तूंपरमात्मादेवभी संपूर्णजगत्कूंआपणामानिकरिकै नानाप्रकारकेभोगों कप्राप्तिकरिकै सर्वदातृप्तकरै है॥और हेप्रतर्दन जैसे काष्ठतथामृत्तिकाकरिकैरचितप्रासिद्धसेतु जलकीमर्यादाकूंधारणकरै है॥तैसे पुण्यवान्जीव स्वर्गकूंप्राप्तहोवै है ॥ और पापीजीव नरकूंप्राप्तहोवै है ॥ याप्रकारकेमर्यादाकूंधारणकरणेहारे जेवेद तथाब्राह्मणादिकहैं ॥ तिनोंके साथ विरोधकरणेहारेजेराक्षसादिकहैं ॥ तिनोंकूं आपणेबलकरिकै तूंपरमात्माही वशकरै है ॥दृष्टांत॥ जैसे राजा आपणेबलकरिकैदुष्टपुरुषोंकूंवशकरै है ॥ और हेप्रतर्दन स्थावर तथाजंगम सर्वभूतोंविषे आकाशकीन्याईं समानव्यापक जोपरमात्मादेव है ॥ सो तेरेताईं हमने कथनकऱ्या ॥ तिसअद्वितीयमैं परमात्माकूं आत्मास्वरूपकरिकैतूंजाण॥और हेप्रतर्दन यहअद्वितीयआत्माकाज्ञानहीं मनुष्योंके वासतै हिततम हम मानतेहैं॥ आत्मज्ञानतोंविना कोईभीवस्तु जीवोंकाहिततमनहीं ॥ श्रीशंकरानंदमुनिरुवाच ॥ हेशिष्य आपणेप्रतिज्ञाकेसत्य करणेवासते देवराजइंद्र इसप्रकार हिततमआत्मज्ञानकूं प्रतर्दनराजाकेताईं कथनकरताभया ॥ ताइंद्रकेउपदेशकूंश्रवणकरिकै सोप्रतर्दनराजा इंद्रकीन्याईं आत्मज्ञानयुक्तहोताभया ॥ और देवराजइंद्रकूं दंडवत्प्रणामकरिकै तथाइंद्रकीआज्ञाकूंपाइके सोप्रतर्दनराजा आपणीश्री काशीपुरीकूंजाताभया ॥ तहाँ श्रीकाशीपुरीविषेआइकै प्रारब्धकर्मकीसमाप्तिकरणेवासतैं नानाप्रकारकेभोगोकूंभोगताभया ॥ और भोगोंकूंभोगिकरिकै जभीप्रारब्धकर्मकीसमाप्तिभई ॥ तभी शरीरकापरित्यागकरिकै सोप्रतर्दनराजा इंद्रकेवास्तवअद्वितीयस्वरूपकूं प्राप्तहोताभया ॥ तात्पर्ययह ब्रह्मकेसाथ अभेदरूप जोविदेहमोक्षहै ताकूं प्राप्तहोताभया ॥ हे शिष्य ॥ यहजोआत्मज्ञान हमने तेरेताईं कथन कऱ्याहै॥सोईहीआत्मज्ञान प्रतर्दनादिकमहान्अधिकारियोंनें इंद्रादिकमहान् गुरुवोंतैंपायाहै॥यातैं यहआत्मज्ञानहीं अत्यंतदुर्लभहै॥पुनः सोआत्मज्ञानकैसाहै॥जिसआत्मज्ञानकीअप्राप्तितैंगुरुपदवीकेयोग्यजेब्राह्मणहैंतेभीशिष्यभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥औरजिसआत्मज्ञानकीप्राप्तितैं शिष्यपदवीकेयोग्यक्षत्रियादिकभी गुरुभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ आत्मज्ञानहीं गुरुपणेकासंपादकहै ॥ किंवा ॥ आत्मज्ञानविषेजोमहानताहै ॥ सोमहानता अन्यकिसीपदार्थविषेनहीं ॥ किंतु सोमहानता आत्मज्ञानविषेहीहै ॥ याकारणतैंही छांदोग्यउपनिषद्विषे ज्ञानकेसमान दक्षि

णाकाअभावकथनकऱ्या है ॥ तहाँ यहप्रसंग है॥आत्मज्ञानकीप्राप्तिकरणेहारेजेगुरु हैं॥तिनोंकेताईं जोशिष्य समुद्रपर्यंत पृथिवी दक्षिणा देवै ॥ तौभी आत्मज्ञानकेसमान सोदक्षिणा नहींहोवैहै ॥ यातैं आत्मज्ञानहींसर्वतैंअधिकहै॥किंवा ॥लोकविषेभी गुरुशब्द अधिकअर्थकावाचकहोवैहै ॥ सोसर्वतैंअधिक अद्वितीयआत्माहै ॥ यातैं ताअद्वितीयआत्माकूंविषयकरणेहारा आत्मज्ञानभी अधिकहै॥यातैं यहसिद्धभया ॥ जिसकूंअद्वितीयआत्माकासाक्षात्कारभयाहै ॥ सोईहीगुरुपदवीकेयोग्यहै ॥ और जिनोंकूं आत्माकासाक्षात्कारनहींहै ॥ ते संपूर्ण शिष्यपदवीकेयोग्य हैं ॥ ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचिते प्राकृतआत्मपुराणे कौपीतकीसारार्थप्रकाशे इंद्रप्रतर्दनाख्यानंनाम द्वितीयोऽध्यायः समाप्तः ॥ २ ॥ ॥ छ ॥

इतिश्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषा आत्मपुराणेद्वितीयोऽध्यायःसमाप्तः ॥

॥ इति श्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषाआत्मपुराणे
द्वितीयोऽध्यायः समाप्तः ॥

अथ स्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषाआत्मपुराणे तृतीयाध्यायप्रारंभः ।

ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ अथ तृतीयअध्यायप्रारंभः ॥ तहाँद्वितीय अध्यायौंविषेऋग्वेदकेकौपीतकीउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्या॥ तहाँ देवराजइंद्रने प्रतर्दनराजाकेताईं प्राणप्रज्ञाउपहितआत्माका उपदेशकऱ्या॥ तिसप्राणप्रज्ञारूपउपाधितैंभिन्नकरिकैआत्माकेजानणेविषे॥ जेपुरुष समर्थनहीं हैं॥ तिनमुमुक्षुपुरुषोंकेबोधवासतैंप्राणादिकउपाधियोंतैंभिन्नकरिकै आत्माकेवास्तवस्वरूपकूं कथनकरणेहारा जोकौपीतकीउपनिषद्काचतुर्थअध्यायहै॥ताकेअर्थकूं अब तृतीयअध्यायविषे निरूपणकरैहै ॥ तहाँ पूर्वअध्यायविषेआत्मज्ञानकूंहीं हिततमकह्या ॥ तिसकूंश्रवणकरिकै शिष्य अत्यंत आश्चर्यकूंप्राप्तहोताभया ॥ और संशयकरिकैयुक्त हुआसोशिष्यआपणेगुरुकेप्रति याप्रकार पूछताभया॥शिष्यउवाच॥हे भगवन् प्रथमअध्यायविषे सनकादिकऋषियोंकातथा वामदेवादिक अधिकारियोंका परस्परसंवादरूपइतिहासकरिकैऋग्वेदकेऐतरेयउपनिषद्कारिकैप्रतिपादितआत्मज्ञान आपने कथनकऱ्या सोकैसाआत्मज्ञान है ॥ संसाररूपशूलकेनिवृत्तिकासाधन है और द्वितीयअध्यायविषे इंद्रप्रतर्दनकेसंवादकरिकै तिसहीआत्मज्ञानकूंदृढकरिकै हमारेताईं आपनेकथनकऱ्या॥और पूर्वआपनेयहकह्या॥यहआत्मज्ञानही मनुष्योंकाहिततमहै॥आत्मज्ञानतैंभिन्नकोईभीपदार्थहिततमनहीं॥याप्रकार आपकेवचनकूं श्रवणकरिकै मैंअभी कृतकृत्यभयाहूं ॥ परंतु हमारे हृदयरूपकमलकूं आपके वचनरूपपवनतैं उत्थानकूं प्राप्तभयासशंयरूपभ्रमर चलायमानकरैहै॥तात्पर्ययह॥जैसे पवनकेवेगतेउडिकरिकै भ्रमर कमलकूंचलायमानकरै है ॥तैसेपूर्वआपकेवचनतैंउत्पन्नभयासंशय हमारेहृदयकूं चलायमानकरैहै॥अब तासंशयकूंदिखावैहैं॥हेभगवन् द्वितीयअध्यायकेअंतविषे आपने यहकह्या ॥इसअद्वितीयआत्मकेज्ञानतैं गुरुपदवीकेयोग्यब्राह्मणादिकभी शिष्यभावकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ और शिष्यपदवीकेयोग्यक्षत्रियादिक भी इसअद्वितीयआत्माकेज्ञानतैं गुरुभावकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ यहआपकाकथन हमारेकूंदुर्घटप्रतीतहोवै है ॥ तात्पर्ययह॥ याकहण करिकै आपनैं आत्मज्ञानकीस्तुतिकरीहै ॥ अथवा यहवार्तापूर्वकभीहुई है ॥ यातैं आपने हमारेप्रतिकही है ॥ यहसंशय हमारेकूंहोवै है ॥ और हेभगवन् हमारेकूंतौ यहवार्ता दुर्घटप्रतीत होवै है ॥ काहेतैं जैसे मुकुटकेधारणकरणेयोग्य मस्तकहोवै है ॥ और पादोंविषेधारणकरणेयोग्य उपानह होवैं हैं ॥ सोउपानह मस्तकविषे

अ० ३ ॥ १ ॥

धारणहोवैनहीं ॥ और मुकुट पादोंविषेधारणहोवैनहीं ॥ तैसे ब्राह्मणादिकोंविषेवर्त्तमानजोगुरुपणा सो क्षत्रियादिकशिष्योंविषे वर्तै नहीं ॥ और क्षत्रियादिकोंविषे वर्तमानजोशिष्यपणा सो ब्राह्मणोंविषे वर्तैनहीं॥ याप्रकारकीदुर्घटता हमारेकूं प्रतीतहोवै है॥ यातैं हेभगवन् आत्मज्ञानकीप्राप्तितैं शिष्योंविषे गुरुपणा जोवेदविषे कहीं कथनकऱ्याहोवै तो हमारेप्रति आप कथनकरो ॥ आपतैंभिन्न कोईदूसरापुरुष हमारेकूं बोधकरणेहाराहैनहीं ॥ इसप्रकार शिष्यकेवचनकूंश्रवणकरिकै अत्यंतहर्षयुक्तहुआश्रीगुरु शिष्यके प्रति कहता भया ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हे शिष्य आत्मज्ञानकी प्राप्तितैं शिष्यभी गुरुभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ और आत्मज्ञानकीअप्राप्तितैं गुरुभी शिष्यभावकूं प्राप्त होवै है॥ यह जो हमने पूर्वतुमारेताईं कथनकऱ्याहै सो आत्मज्ञानकीहमनेस्तुति नहीं करी ॥ किंतु यहवार्ता पूर्व होइ गई है ॥ तहाँ कौपीतकी नामाऋषि बहुतकालपर्यंत तपकूंकरताभया ॥ तातपकेप्रभावतैं वेदमंत्रोंकेजानणेकीसामर्थ्यकूंप्राप्तहोता भया ॥ पुनःसो कौपीतकी नामाऋषि मुमुक्षुलोकोंकेकल्याणवासतैं आपणेशिष्योंकेप्रति कौपीतकीनामाउपनिषद्कूं कथनकरताभया ॥ ताकौपीतकीउपनिषद्विषे यहवार्ता कथनकरी है॥तथा बृहदारण्यकउपनिषद्विषे सूर्यभगवान् याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति यहवार्ता कथनकरताभया है ॥ तहाँ यहकथनकऱ्या है ॥ यद्यपि क्षत्रिय वैश्य शूद्र यहतीनों वर्णशिष्यपदवीकेयोग्य हैं गुरुपदवीके योग्यनहीं ॥ और ब्राह्मण गुरुपदवीके योग्य हैं ॥ शिष्यपदवीके योग्य नहीं ॥ तथापि आत्मज्ञानकीप्राप्तिवासतैं ब्राह्मणभी क्षत्रियराजाकाशिष्य होता भयाहै ॥ यहवार्ता बृहदारण्यक तथाकौपीतकीउपनिषद्के चतुर्थ अध्यायविषेप्रसिद्धहै॥ यातैं हेशिष्य आत्मज्ञानकेप्रभावतैं शिष्यभी गुरुभावकूंप्राप्तहोवै है॥ यहजोहमने पूर्वकह्याहै॥ सो आत्मज्ञानकीस्तुतिरूपअर्थवादनहीं किंतुयथार्थ है ॥ तहाँ कौपीतकीउपनिषद्विषे बालाकिब्राह्मणका राजाकेसाथसंवादरूप पुरातनइतिहासकथनकऱ्याहै॥ तिसइतिहासकूं तुम श्रवणकरो ॥ ताकेश्रवणतैं यहतुमारासंशय निवृत्तहोवैगा ॥ गर्गगोत्रविषे है उत्पत्ति जाकी ऐसाबलाकनामा एकब्राह्मणहोताभया॥ सो बालाकनामाब्राह्मणकैसाथा ॥ षट्अंगोंकरिकैयुक्तचारिवेद जिसनेअध्ययनकरे हैं॥ और धर्म विषेजिसकी नेष्ठाहै ॥ ऐसेबलाकनामाब्राह्मणकापुत्र बालाकिनामाब्राह्मण होताभया॥सोबालाकिब्राह्मणभी आपणेपिताकेसमा

॥ १

नहीं वेदवेदांगविद्याविषेकुशलहोताभया ॥ परंतु मैंसर्वब्राह्मणोंतेंविद्याविषेअधिकहूं मेरेसमान कोईभीलोकविषेविद्वान्नहीं ॥ याप्रकारके विद्यामदकरिकै तथा धनकेमदकरिकै तथायौवनकेमदकरिकै तिसबालाकिनामाब्राह्मणकी धर्मविषेनेष्ठानहींहोतीभयी॥और सोबालाकिब्राह्मण सर्वदिशावोंकेपंडितोंकूंजीतणेवासतैं हिमालयपर्वततैंआदिलेकै सेतुबंधरामेश्वरपर्यंत जितनेकमध्यविषे कुरुदेश पांचालदेश काशी देश मिथिलादेश इसतैंआदिलेकै सर्वदेशोंविषे विचरताभया ॥ सोकैसाबालाकिहै ॥ जिसकीसर्वदेशोंविषेकीर्तिप्रसिद्धहै ॥ और बोलणे विषे अत्यंतवाचालहै ॥ और आत्मातैंभिन्नसर्वअनात्म पदार्थोंकूं जानणेहाराहै ॥ और आत्मसाक्षात्कारतैंरहितहै॥और प्राणकूंहीजिसने आत्मामान्याहै ॥ ऐसाबुद्धिमान्सोबालाकिब्राह्मण आपणेविद्याकेबलकरिकै पांचालादिकदेशोंविषेस्थितजेब्राह्मण तथाक्षत्रिय तथावैश्य तिनसंपूर्णोंकूंजीतताभया॥इसप्रकार सर्वदेशोंकेब्राह्मणादिकोंकूंजीतिकरिकै अत्यंतअभिमानकरिकैयुक्तहुआसोबालाकि काशीदेशकेब्राह्मणादिकोंकेजीतणेवासतैं कदाचित्काशीदेशविषे आवताभया तहाँ काशीदेशविषे एककाशीकेराजाकूंछोडिकरिकै जितनेब्राह्मणक्षत्रियवैश्यथे तिनसंपूर्णोंकूं सोबालाकिब्राह्मण जीतताभया॥पुनःसोबालाकि ब्राह्मण अजातशत्रुनामाकाशीराजाकेजीतणेकीइच्छाकरिकैतहाँराजाकेसमीप जाताभया॥सोकाशीकाराजा अजातशत्रु कैसाहै॥अतिशयकरिकैधर्मात्माहै॥और सर्वधर्मात्मापुरुषोंविषेमुख्यहै॥और विनयकरिकैयुक्तहै॥और सत्यविषेजिसकीस्थितिहै॥और महात्मापुरुषोंकीसेवाविषे जिसकीनित्यहींप्रीतिहै ॥ और जिसकेबलतैंअधिकबलवाला कोईभीशत्रु भूमिविषेउत्पन्नभयानहीं॥ याकारणतैंहीं सोकाशीराजा अजातशत्रु यानामकूंप्राप्तभयाहै॥अथवाअंतरकेशत्रुजेअहंकारादिक हैं॥ते जिसकाशीराजाकेनष्टहुएहैं॥याकारणतैंसोराजा अजातशत्रु यानामकूंप्राप्तभयाहै॥अब अंतरशत्रुवोंकेअभावकूंदिखावैं हैं ॥ आपणे शत्रुवोंविषे तथामित्रोंविषे तथाशत्रुमित्रभावतैंरहितउदासीनपुरुषोंविषे जिसराजाकी स्वप्नविषेभीविषमबुद्धिनहीं ॥ किंतुसर्वविषेजाकी समानबुद्धिहै॥और आपणेशरीरविषे तथाकृमिविषे जिसराजाकीविषमबुद्धिनहीं ॥ किंतु दोनोंविषेसमानबुद्धिहै॥तात्पर्ययह॥यहहमाराशत्रुहै ॥ औरयह हमारामित्रहै ॥ याप्रकारकीविषमबुद्धितैंहीं रागद्वेषादिक उत्पन्नहोवैं हैं ॥ विषमबुद्धिरूपकारणकेअभावहुए रागद्वेषादि

रूपकार्यभी उत्पन्नहोवैंनहीं ॥ और सोविषमबुद्धि अजातशत्रुराजाविषेहैनहीं ॥ यातैं संपूर्णरागद्वेषादिकोंकाअभाव राजाविषे है ॥ ऐसा अजातशत्रुराजा आपणीसभाविषेस्थितथा॥ताराजाकेजीतणेवासतैं सोबालाकि तहाँजाताभया॥ और विनाहींप्रसंगतैं सोबालाकि राजाकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेराजन् तूं ब्रह्मज्ञानतैंरहितहै ॥ और जन्ममरणरूपसंसारसमुद्रविषेडूबाहुआ है॥ यातैं तुमारेताईं मैं ब्रह्मकावास्तवस्वरूप उपदेशकरताहूं ॥ तूं मनकूंसावधानकरिकैश्रवणकर ॥ इसप्रकार बालाकिब्राह्मणकावचन श्रवणकरिकै सोअजातशत्रुराजा अत्यंतहर्षकूंप्राप्तहोताभया॥और बालाकिब्राह्मणकेप्रति याप्रकारकेवचनकूं राजा कहताभया॥ हे बालाकि ब्रह्मका मैं तुमारेताईं उपदेशकरताहूं यहजो आपने प्रसंगतैंविनाहीं वचनकह्या ॥ तिसवचनरूपवर्षाकरिकै हमारेकर्णोंकूं आपने शीतलकऱ्या ॥ और आपके यावचनकूंश्रवणकरिकै मेरेहृदयविषे अत्यंतआनंद उत्पन्नभयाहै॥दृष्टांत॥जैसे किसीपुरुषका एकहीपुत्रहोवै ॥ सोपुत्र बहुतकालका किसी दूरदेशविषेगयाहोवै ॥ और किसीपुरुषतैं तापुत्रकामरणा पिताने श्रवणकऱ्याहोवै॥ और सोताकापिता धनसंपत्तिकरिकैयुक्तहोवै ॥ और वृद्धअवस्थाकूंप्राप्तहुआहोवै॥ऐसेपिताकूं मरणकेसमीपकालविषे जो कदाचित् सोपुत्र आइकेप्राप्तहोवे ॥ तापुत्रकेवचनकूंश्रवणकरिकै जैसे तावृद्धपिताकूं आनंदहोवै है ॥ तैसे ब्रह्मकेउपदेशकी प्रतिज्ञारूप आपकेवचनकूं श्रवणकरिकैमेरेकूंअत्यंतआनंद उत्पन्नभया है ॥ और हे बालाकि हमारीसभाविषे अनेकबुद्धिमान्ब्राह्मण आवतेहैं॥और वेदोंकेपाठकूंउच्चारणकरिकै तथावेदोंकेअर्थकूंप्रकाशनकरिकैआपणेआपणे विचित्रकर्मोंकूं दिखावै हैं और लोकविषेप्रसिद्ध जेनानाप्रकारकीविद्याहैं॥तिनविद्यावोंकूं तेब्राह्मणकथनकरैं हैं॥ और ब्रह्मविद्याकेप्रसंगकेप्राप्त हुएभी तथाहमारेकरिकैपूछेहुएभी तेब्राह्मण ब्रह्मविद्याकूं कोईकथनकरतानहीं ॥ तेकैसेब्राह्मण हैं ॥ विद्याकरिकै लोकविषेप्रसिद्धहैं ॥ और वृद्धअवस्थायुक्तहैं ॥ और अनंतहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ ब्रह्मविद्याके नहींउपदेशकरणेविषे तीनकारणहोवै हैं॥ एकतौ अप्रसिद्ध ॥ और दूसरा अयोग्यता ॥ और तीसरा असहायता ॥ यातीनोंकारणोंका इनब्राह्मणोंविषे अभाव है ॥ काहेतैं ब्रह्मविद्यावान्रूपकरिकै इनब्राह्मणोंकी सर्वत्रप्रसिद्धि है ॥ यातैं अप्रसिद्धिरूपकारणभी इनोंविषे नहीं ॥ और यह ब्राह्मण वृद्धअवस्था करिकै युक्त है ॥ और श्रद्धापूर्वक हमने

इनोतैंब्रह्मविद्यापूछी है ॥ यातैं अयोग्यतारूपकारणभी इनोंविषेनहीं ॥ और यह सहस्रब्राह्मण एकठे हुए हैं ॥ यातैं असहाय तारूपकारणभीइनोंविषेनहीं ॥ किंतु प्रसिद्धि तथा योग्यता तथा सहायता यहतीनकारण ब्रह्मविद्या उपदेशके इनब्राह्मणों विषे विद्यमान हैं ॥ तथापि इनब्राह्मणांत हमारेताईं कभीभीब्रह्मविद्याकाउपदेशकऱ्यानहीं ॥ और हेबालाकि आपविषेयातीनोंकारणों काअभावहै ॥ काहेतैंबाल्यअवस्थाकरिकैयुक्तहो ॥ यातैं प्रसिद्धिरूपकारणभी आपविषेनहीं ॥ और हमनैं आपसैंब्रह्मविद्यापूछीनहीं ॥ यात योग्यतारूपकारणभी तुमारेविषेनहीं ॥ और आप अकलेहो ॥ यातैं सहायतारूपकारणभी आपविषेनहीं ॥ याप्रकार उपदेशके तीनकारणोंकअभावहुएभी ब्रह्मकाउपदेश तुमारेताईं म करताहूं ॥ यह जो आपने हमारेप्रति वचनकह्या ॥ ताआपकेवचनकूंश्रवणकरिकै हम बहुतसंतोषकूंप्राप्तभये हैं॥ यातैं हेबालाकि आप ब्रह्मकाउपदेशहमारेप्रतिकरो अथवा नहीं करो॥परंतु ब्रह्मउपदेशकीप्रतिज्ञारूपतुमारेवचनकी हमनैं यहदक्षिणा मनविषेधारणकरी है ॥ एकसहस्रगौवां तैंब्रह्मवक्ताके ताईं मैंदेताहूं ॥ कैसियाते गौवां हैं ॥ घटकीन्याईं जिनोंकाऊधसह ॥ और एकवर्षविषे वत्सकूंदेणेहारियां हैं ॥ और जिनोंकास्वभाव अत्यंतसौम्यहै ॥ ऐसी गौवों को एकसहस्र मैंतुमारेताईं देताहूं ॥ इसप्रकारकेवचनकूंकहिकरिकै सोअजातशत्रुराजा जैसे शास्त्रविषेगोदानकीविधिकहीहै ॥ तिसप्रकार सुवर्णादिकसामग्रीयुक्तसहस्रगौवोंकूं बालाकिकेताईं देताभया॥ब्रह्मउपदेशकी प्रतिज्ञामात्रतैं सहस्रगौवोंकेदेणेविषे अजातशत्रुराजाका यह अभिप्रायहै ॥ ब्रह्मवेत्ता तथाउदारताआदिकसर्वगुणसंपन्न मैंअजातशत्रुराजाकूं नजाणिकरिकै यहब्राह्मण जनकराजाकेसमीपजावैहै ॥ और मोहकेवशहुएतेब्राह्मण याप्रकारकेवचनकूं कथनकरैहै ॥ जैसे पिता पुत्रोंकेताईं धनादिकपदार्थोंकूंदेवै है ॥ तथा पुत्रोंकरिकैअध्ययनकरी विद्याकूंभी पिता श्रवणकरैहै ॥ तैसे जनकराजाभी ब्राह्मणोंकेताईं धनकादान तथाब्रह्मविद्याकादान करै है और आपभीजनकराजा ब्राह्मणोंतैंब्रह्मविद्याकाश्रवणकरैहै ॥ याप्रकार जोलोक कथनकरैहै ॥ सो मुझअजातशत्रुराजाकेप्रभावकूंनजाणिकरिकै केवलभ्रांतितैंकथनकरैं हैं ॥ काहेतैं जनकराजाके प्रति जभीकोईब्राह्मण ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरताहै ॥ तभा तिस उपदेशतैंअनंतर जनकराजा तिसब्राह्मणकेताईं

सहस्रगौ दक्षिणा देता है ॥ और मैं अजातशत्रुराजातौ ब्रह्मविद्याहमतुमारेताईंकथनकरते हैं याप्रकारकेवचनमात्रकहणेहारेब्राह्मण केताईंभी सहस्रगौवोंकूंदेताहूं ॥ यातैं जनकराजातैं हमारीउदारता अधिकहै ॥तिसहमारीउदारताकूं न जाणिकरिकै जनकराजाकेसमीप लोक जावै हैं ॥ याप्रकार अजातशत्रुराजाकेअभिप्रायकूं सोअल्पबुद्धिबालाकि नहीं जाणताभया॥किंतु याप्रकार जाणताभया ॥ याअ जातशत्रुराजाकूं ब्रह्मजानणेकी अत्यंतउत्कटजिज्ञासाहै ॥याकारणतैं ब्रह्मविद्याकेउपदेशतैंप्रथमहीं सहस्रगौ हमारेताईं राजानैं दीयाँ हैं ॥ यातैं याराजाकी जिज्ञासा पूर्णकरीचाहिये॥याप्रकारकभ्रांति बालाकिकूंहोतीभई और बालाकिने जो ब्रह्मकास्वरूप आपणेगुरुतैंजान्या था ॥ तिसीब्रह्मका राजाकेताईंउपदेशकरताभया ॥ तहाँ व्यष्टिरूपकूंधारणकरणेहाराजो अध्यात्महै ॥ और समष्टिरूपकूं धारणकरणे हाराजो अधिदैवहै ॥सोअध्यात्मअधिदैवरूपप्राणहीं ब्रह्म है ॥ याप्रकार अव्याकृतपर्यंत सविशेषप्राणरूपब्रह्म बालाकिने जान्याथा॥ सो राजाकेताईं कथनकरताभया ॥ परंतु अव्याकृततैंपरे जोनिर्गुणब्रह्महै ॥ ताकूं बालाकिने जान्यानहींथा ॥ यातैं राजाके ताईं नहींकहता भया ॥ इसप्रकार जोजोब्रह्मकाउपदेश बालाकि राजाकेताईंकरै॥ तिसतिसउपदेशकूं राजाअजातशत्रु हेबालाकि यहहमनैंआगे जान्याहै याप्रकारकेवचनकरिकै तथानिषेधकाबोधकजोहस्तकीचेष्टाहै ताकरिकै खंडनकरताजावै ॥और पुनःसोबालाकि याप्रकार कहताभया ॥ हेराजन् आदित्य १ चंद्रमा २ विद्युत् ३ मेघमंडलकाशब्द ४ आकाश ५ वायु६ अग्नि ७ जल ८ यहअष्ट अधिदैवब्रह्मपुरुष हैं॥ और प्रतिबिंबकेग्रहणकरणेयोग्य जोदर्पणादिकउज्वलवस्तु १ और दशोदिशारूपश्रोत्र २ और वेगकरिकैचलतेहुएपुरुषकेपश्चात्होणेवालाजो ध्वनिरूपशब्द ३ औरपुरुषकेसमानहैआकारजाकाऐसाजोछायास्वरूप ४ और स्थूलशरीर ५ तथासूक्ष्मशरीर ६ और दक्षिणनेत्रविषे स्थितजोसूक्ष्मशरीरकाआकार ७ तथावामनेत्रविषेस्थितजोसूक्ष्मशरीरकाआकार ८ यहअष्ट अध्यात्मब्रह्मपुरुषहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ आदित्यादिकषोडशस्थानोंविषेस्थित जेषोडशब्रह्मपुरुषहैं ॥ तिनोंकूं ब्रह्मबुद्धिकरिकै मैं उपासनाकरताहूं ॥ यातैं हेराजन् तूभी तिनषोडशपुरुषोंकूं ब्रह्मबुद्धिकरिकैउपासनाकर ॥ तिसउपासनातैं तुमारेकूं महाफलकीप्राप्तिहोवैगी ॥ याप्रकार बालकिकै वचनकूंश्रवणकरिकै सोअ

जातशत्रुराजा बालाकिकेप्रति कहताभया॥ हे बालाकि इनषोडशब्रह्मपुरुषोंकूं हमनैं पूर्वभली प्रकारजान्याहै॥ और हमनैं पूर्व तिनब्रह्मपुरुषोंकीउपासनाभीकरी है॥यातैं पूर्वजानीवस्तुका पुनःउपदेशकरणा तुमाराव्यर्थहै॥इसप्रकार बालाकिने जोजोब्रह्मकास्वरूपजान्याथा॥ तिनसंपूर्णोंकूं राजाअजातशत्रु हमनैं यहआगे जान्या है ॥ या प्रकारके उत्तरकरिकै खंडनकरताभया ॥ इसतैंपरे निर्गुणब्रह्मके स्वरूपकूं सोबालाकिब्राह्मणजाणतानहीं ॥ जो राजाकेताईं उपदेशकरै ॥ और बालाकिने पूर्वयहप्रतिज्ञाकरीथी॥ हेराजन् मैंतुमारेताईं ब्रह्मकाउपदेशकरताहूं ॥ सो प्रतिज्ञा बालाकिकी मिथ्याहोती भई ॥ यातैं ताबालाकिकामुख अत्यंतग्लानियुक्तहोताभया ॥ और चौरकी न्याईं नीचेमुखकरिकै सोबालाकि सभाविषेतूष्णीभावकूंप्राप्तहोताभया ॥ सोकैसाबालाकि है॥ कुलमदकरिकै तथाविद्यामदकरिकै तथाधनमदकरिकै अत्यंतअहंकारीहुआ है ॥ और ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यातीनवर्णोंके तिरस्कारजन्यपापों करिकै नष्टहोगइयी है मुखकीकांति जिसकी ॥ और शरदऋतुके मेघकी न्याईं व्यर्थ है गर्जना जिसकी ॥ ऐसे बालाकि ब्राह्मणकूं राजाअजातशत्रु देखिकरिकै ताबालाकिकेअभिमानकीनिवृत्तिवासतौंनिर्दयपुरुषकी न्याईं उच्चस्वरकरिकै या प्रकारका वचन कहता भया ॥ हेदुष्टबुद्धिबालाकिविप्र जिसब्रह्मज्ञानका तुमनैं हमारेप्रतिकथनकऱ्या है ॥ इतनाहींतुमारेकूंब्रह्मज्ञान है ॥ अथवा इस तैं अधिकभी कछुतेरेकूंज्ञान है ॥ जो इसतैं अधिकतेरेकूंज्ञानहोवै तौ हमारेप्रतिकहो ॥ और हे बालाकि तेरेतैंभी अधिक विद्यावाले सहस्रब्राह्मण यहाँ हमारी सभा विषेस्थित हैं ॥ परंतु विद्यामदकरिकैमोहित तेरेसमान कोईभी ब्राह्मणनहीं ॥ किंतु एकतूही विद्यामदकरिकैमोहकूं प्राप्त भया है ॥ यातैं हेबालाकि जोतेरेकूं पूर्वउक्तज्ञानतैं अधिकज्ञानहोवै ॥ तौ हमारे प्रतिकहो ॥ इस प्रकार अजातशत्रुराजाके वचनोंकूं श्रवणकरिकै सो बालाकिब्राह्मण याप्रकारकहता भया ॥ हे राजन् जिस ब्रह्मकाउपदेश हमनैं तुमारे ताईंकऱ्या है ॥ सोईही ब्रह्मकास्वरूप गुरुनैं पूर्व हमारे ताईं उपदेश कऱ्या है ॥ इसतैं अधिकब्रह्मकेस्वरूपकाउपदेश गुरुनैं हमारे ताईं कऱ्यानहीं ॥ यातैं पूर्व उक्तकार्य ब्रह्मके स्वरूपतैं भिन्न निर्गुणब्रह्मके स्वरूपकूं मैं जानतानहीं॥ इस प्रकार बालाकिब्राह्मणके बचनकूंश्रवणरिकै सो अजातशत्रु राजा या प्रकारके वचनकूं बालाकिके प्रति कहता भया ॥ ४ ॥

हे बालाकि ब्राह्मण जो तैनें पूर्व ब्रह्मकास्वरूप हमारे ताईं उपदेश कऱ्या ॥ तिस तेरे उपदेश करिकै निर्गुण ब्रह्मकास्वरूप जान्या जावै नहीं ॥ यातैं मैं तुमारेताईं ब्रह्मका उपदेशकरोंहूं ॥ यह तुमारावचन मिथ्याहोवै है ॥ और मिथ्यावचनतैं परेकोईपापकर्म नहीं ॥ या कारणतैंही बुद्धिमान्पुरुष आपणेवचनकूंमिथ्याकरैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ आपणेसत्यवचनकरणेविषे जोकदाचित् पुत्रस्त्री धनादिक पदार्थोंकाभी परित्यागहोताहोवै ॥ तौ तिनपुत्रादिकोंकापरित्यागकरिकैभी बुद्धिमान्पुरुष आपणेवचनकूं सत्यकरै है ॥ आपणेवचनकूंमिथ्याकरेनहीं ॥ काहेतैं मिथ्यावादीपुरुष याजगत्विषे कर्मचांडालहोवै है ॥ तात्पर्ययह ॥ चांडाल दोप्रकारके होवै हैं ॥ एकतौ जातिकरिकैचांडालहै ॥ जैसे प्रसिद्धश्वानादिकोंकूंभक्षणकरणेहारे चांडालहैं ॥ तिनोंविषे चांडालत्वजातिरहै है ॥ और दूसरे कर्मकरिकैचांडालहोवै हैं ॥ जैसे मिथ्यावादीपुरुषहैं ॥ मिथ्यावचनरूपकर्मकरिकै तेचांडालहैं ॥ तिसविषेभी जोपुरुष स्वतंत्रहुआ गुरुकेसमीप तथाराजादिकोंके समीप मिथ्यावचनकूंकहै है ॥ सोपुरुष विशेषकरिकैकर्मचांडाल है ॥ यात मिथ्यावचनके समान कोईभी पापकर्म नहीं॥ किंवा ॥ " वर्णिनां हि वधोयत्र तत्रसाक्ष्यऽनृतंवदेत् "॥ अर्थयह ॥ जहाँ ब्राह्मणादिकोंकीहिंसाहोतीहोवै॥ तहाँ ब्राह्मणादिकोंकीरक्षावासतैं साक्षीपुरुष मिथ्यावचनकूंभी उच्चारणकरै ॥ तामिथ्यावचनकरिकै साक्षीपुरुषकूं पापहोवैनहीं ॥ उलटा पुण्यकीउत्पत्ति होवै है॥इसतैंआदिलेकै जोशास्त्रने मिथ्यावचनकहणकेकारणकहे हैं ॥ तिनकारणोंतैंविना जो पुरुष मिथ्यावचनकूंकथनकरै है ॥ तिसपुरुषकीजिह्वाकूं शस्त्रकरिकै यमकिंकर छेदनकरै हैं ॥किंवा॥ लोकविषे जितनेकिअधमपुरुषहैं ॥ तिनसंपूर्णोंविषे मिथ्यावचनकहणेवालापुरुषही मुख्यअधमहै ॥ किंवा ॥ जोपुरुष अग्निआदिकदेवतावोंकेसमीप तथागुरुकेसमीपतथाराजाके समीप मिथ्यावचनकूंउच्चारणकरैहै॥तिसमिथ्यावादीपुरुषकूं विचारतैं विनाहीं राजा हननकरै ॥ याप्रकार यद्यपि शास्त्रविषेकह्या है ॥ तथापि हेपापिष्टबालाकि तूब्राह्मण है ॥ याकारणतैं तुमारेशरीरकाहनन मैनेंनहींकऱ्या ॥ कैसामैंहूं सर्वधर्मकूंजानणेहाराहूं ॥ तिसविषेभी राजसभाविषे विशेषकरिकै मैंधर्मकूंजानोहूं ॥ किंवा॥ हेबालाकिअनेकसाधुब्राह्मणोंका तुमनैं निरादरकऱ्याहै॥तापापकर्मकरिकैही मैंब्रह्मकाउपदेशतुमारेताईंकरताहूं यहतुमारी प्रतिज्ञा मिथ्या भई है ॥ काहेतैंय

यहशास्त्रकासिद्धांतहै॥जोकोईअधमपुरुष समदर्शीसाधुब्राह्मणोंकू शरीरकरिकै तथावाणीकरिकै तथामनकरिकै दुःखकीप्राप्तिकरै है ॥ ति सअधमपुरुषकेसर्वमनोरथोंकूं सूर्यादिकदेवता नष्टकर हैं ॥ तिसपुरुषका कोईभीमनोरथ सिद्धहोवैनहीं ॥ किंवा ॥ जोपुरुष सर्व प्राणियों कूंदुःखकीप्राप्तिकरै है॥सोपुरुष इसलोकविषे तथापरलोकविषे आपणेकूंहीदुःखकीप्राप्तिकरै है ॥ तथाजोपुरुष सर्वप्राणियोंकूंसुखकीप्राप्ति करै है॥सोपुरुष इसलोकविषे तथापरलोकविषे आपणेकूंहीसुखकीप्राप्तिकरै है ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे जोपुरुष आपणेमस्तककूं दूसरेका मस्तकजाणिकरिकै ताडनकरै है॥सोपुरुष आपहीदुःखकूंप्राप्तहोवै है॥तैसे आपणाआत्मास्वरूपजोसर्वप्राणी हैं॥ तिनोंकूं आपणेतैंभिन्नमा निकरिकै जोपुरुष किसीप्राणाकूंदुःखकीप्राप्तिकरै है॥सोअधमपुरुष आपणेकूंहींदुःखकीप्राप्तिकरै है॥किंवा॥हेबालाकि विद्यादिकोंके मदक रिकैउत्पन्नभयाजोमोह॥तामोहकारक तुमनैं बहुतसाधुब्राह्मणोंकानिरादरकऱ्याहै॥तिसनिरादररूपपापकर्मकाफल अबीतेरेकूंआइकेप्राप्त भयाहै॥यातैं हेबालाकि ब्रह्मकाउपदेश मैंतुमारेताईंकरताहूं यहजोमिथ्यावचन तुमने हमारेप्रतिकथनकऱ्याहै ॥ ऐसामिथ्यावचन आजदिन तैंलेकरिकैकिसीकालविषे किसीपुरुषकेआगे तुम नहींकहणा ॥ और हेबालाकि शमदमादिक साधनोंकरिकैयुक्त जेमुमुक्षुब्राह्मणहैं ॥ तिनोंकूं विशेषकरिकैगुरुहीशिक्षाकरै है॥क्षत्रियादिक शमादिसाधनयुक्तब्राह्मणोंकेशासनाकरणेकूं यद्यपियोग्यनहीं हैं ॥तथापि तूशमदमा दिकसाधनोंतैंरहित उन्मत्तब्राह्मणहैं ॥याकारणतैं हमनें तुमारेकूं शासनाकरी है॥तात्पर्ययह॥एकधर्मशास्त्रतो याप्रकारकहै है ॥"नाऽदंड्यो नामराज्ञोऽस्ति धर्माद्विचलितःस्वकात्"।अर्थयह॥जोपुरुष आपणेवर्णाश्रमकेधर्मतैंरहितदुआविपरीतआचरणकूंकरैहै।सोपुरुष राजाकरिकै दंडकरणेयोग्यहै ॥ और दूसरेधर्मशास्त्रविषे यहकह्याहै॥"अक्षतोब्राह्मणोवजेत्" ॥ अर्थयह ॥ शरीरकादंड ब्राह्मणकूं राजानैंनहींकरणा ॥ यादोनोंशास्त्रोंकीव्यवस्थाकरिकै मैंने वाणीकारिकै तेरानिरादरकऱ्या है ॥तात्पर्ययह ॥ चारिप्रकारकादंड नीतिशास्त्रविषेकह्याहै ॥ धिक्दंड१वाक्दंड२धनदंड३शरीरदंड४याचारिप्रकारकेदंडविषे कोईभीदंड जोतुमारेकूंनकरिये ॥ तौ प्रथमशास्त्रविषे व्यर्थहोवैगा॥ताप्रथमशा स्त्रकीप्रमाणतावासतै तुमारेविषे दंडकरणेकीप्राप्तिअवश्यहोवैहै॥तिनदंडोंविषेभी शरीरकादंड ब्राह्मणविषे"अक्षतोब्राह्मणोवजेत"याद्वितीय

॥ ६

शास्त्रकरिकैहींनिवारणकऱ्याहै ॥ यातैं शरीरकाहननरूपदंड ब्राह्मणविषेसंभवैनहीं ॥ और धनकाहरणरूपदंडभी ब्राह्मणविषेसंभवैनहीं ॥ काहेतैं भिक्षुकब्राह्मणोंविषे धनकीयोग्यताहैनहीं ॥ और धिक्दंड तथावाक्दंड दुरात्माब्राह्मणोंविषेभी संभवै है ॥ याकारणतैं हेबालाकि तुमारेकूं कठोरवाणीकरिकै हमने ताडनकऱ्याहै ॥ और हेबालाकि धर्मशास्त्रविषे राजाकायहधर्मकह्याहै ॥ उत्तमपुरुषोंकेताईं तथाअधम पुरुषोंकेताईं राजानैं सर्वदाहितकाउपदेशकरणा ॥ याशास्त्रकूंअंगीकारकरिकै मैंतेरेताईं हितकाउपदेशभीकरताहूं॥ तुम श्रवणकरो॥हेबा लाकि जोतुमनैं पूर्वपोडशब्रह्मपुरुषकहे हैं॥तिनोंकेज्ञानतैं मोक्षकीप्राप्तिहोवैनहीं॥किंतु तिनषोडशपुरुषोंका तथासकलप्रपंचका कारणजो परमात्माहै ॥ तिसकेज्ञानतैंहीं मोक्षकीप्राप्तिहोवै है॥यातैं सोपरमात्माही तुमारेकूंजानणेयोग्यहै॥और तिसपरमात्माकाज्ञान गुरुकेउपदे शतैंविना होवै नहीं ॥ यातैं आत्मज्ञानकीप्राप्तिवासतै आपणेगुरुकेसमीप तुम जावो ॥ और गुरुके उपदेशतैं जो आत्मज्ञानकूं तूंनहींसंपादनकरेगा ॥ तौ यहविद्यामद बारंबारतुमारेकूं जन्ममरणरूपनरककीप्राप्ति करैगा ॥ और हेबालाकि जोपरमात्मा इस जगत्की उत्पत्तिका तथा स्थितिका तथालयका कारण है ॥ सोईहीपरमात्मा ब्रह्मशब्दकाअर्थ है ॥ और ब्रह्मशब्दजन्यज्ञानका विषय है ॥ इसप्रकार राजाअजातशत्रुकेवचनकूंश्रवणकरिकै सो बालाकिब्राह्मण अभिमानतैंरहितहोताभया ॥ औरयाप्रकारकेअभिप्रायकरिकै सोबालाकि राजाअजातशत्रुकूंहीं गुरुरूपकरिकैनिश्चयकरताभया अब तांबालाकिकेअभिप्रायकूं दिखावैं हैं ॥ जिसआत्माकेज्ञानतैं पुरुषोंविषेगुरुपणाहोवै है ॥ सो आत्मा अत्यंतगुरुहै ॥ ताआत्माकेउपदेशकरणेहारा जोकोईकपुरुषहै॥तिसकूंभी गुरुपणायोग्यहै ॥ और अहंकारादिक जिसपुरुषकेआश्रितरहैं हैं ॥ तिसकूंभी लघुताकीप्राप्तिकरैं हैं॥यातैं तेअहंकारादिक अत्यंतलघुहैं॥तिनअहंकारादिकोंकी जोपुरुष निवृत्तिकरैहै ॥ सोपुरुषभी गुरुहोणेकूंयोग्यहै ॥ यहदोनोंप्रकारकालक्षण याअजातशत्रुराजाविषेघटैहै ॥ काहेतैं विद्यामद तथाध नमद तथाकुलमद यहतीनप्रकारकामद मेरेकूं नरककीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ और इसलोकविषेभी जिसमदकेसंबंधतैं महात्मापुरुषोंकीस भाविषे निरादररूपलघुताकूं मैंप्राप्तभयाहूं॥ यातैं विद्यादिकोंकामद अत्यंतलघु है॥ और अनंतप्रकारके दुःखोंकूंकरणेहाराहै ॥ याप्रकार

केहमारेमदकूं याराजानैं अनादररूपउपायकरिकै निवृत्तकऱ्याहै ॥ और राजा आपविद्यादिकमदतैंरहितहै ॥ यह गुरुकालक्षण या अजा
तशत्रुराजाविषेघटै है॥यातैं यहअजातशत्रुराजाही हमारागुरुहोणेकूंयोग्यहै ॥किंवा॥ याअजातशत्रुराजाकापरित्यागकरिकै अन्यकिसीगुरु
केसमीप जोमैंजावोंगा ॥ तौ हमारे विषे कृतघ्नतादोषकीप्राप्तिहोवेगी ॥ काहेतैं जोपुरुष किसीपुरुषकेकियेउपकारकूंनहींमानता सोपुरुष
कृतघ्नहोवै है ॥ और याराजानैं हमारेअहंकारादिकोंकीनिवृत्तिकरी है ॥ यातैं याराजानैं हमारेऊपर महान्उपकारकऱ्याहै ॥ ताराजाकेउ
पकारकूं नमानिकरिकै जोमैं अन्यगुरुकेसमीपजावोंगा ॥ तौ मैंभी कृतघ्नहोवोंगा ॥ जातैं याअजातशत्रुराजाकूंहीं गुरुमानिकै याकेशरण
कूंप्राप्तहोवों ॥ किंवा ॥ इसलोकविषे राजाअजातशत्रु जैसे ब्रह्मकेवास्तवस्वरूपकूंजाणताहै तैसे दूसराकोईपुरुष ब्रह्मकेवास्तवस्वरूप
कूंजाणतानहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे लोकविषे द्वितीयाकाचंद्रमा जिसपुरुषनैं नेत्रोंकरिकैप्रत्यक्षदेख्याहोवै ॥ सोईहीपुरुष दूसरे पुरुषकूं
चंद्रमादिखावणेमेंसमर्थहोवै है ॥ और जिसपुरुषने आप चन्द्रमानहींदेख्या ॥ सोपुरुष दूसरेकूं चंद्रमादिखावणेमेंसमर्थहोवै
नहीं ॥ तैसे याराजातैंभिन्नपुरुषोंनैं ब्रह्मकेवास्तवस्वरूपकूंजान्यानहीं॥तौ हमारेप्रति ब्रह्मकेवास्तवस्वरूपकूं ते कैसेकहैंगे॥किंवा॥पूर्वजि
नगुरुवोंतैं मैंविद्याअध्ययनकरीहै ॥ तिनोंकूंभी ब्रह्मकेवास्तवस्वरूपकाज्ञाननहीं॥काहेतैं जो तिनोंकूंब्रह्मकेवास्तवस्वरूपकाज्ञान होता ॥
तौ प्राणकेसमानप्रियमैंशिष्यकेताईं तेगुरु ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरते ॥ और तिनगुरुवोंनैं ब्रह्मविद्याकाउपदेश हमारेताईं कऱ्या नहीं ॥
किंतु जितनीविद्या तिनगुरुवोंकूंआवतीथी ॥ तितनीसर्वविद्या तिनगुरुवोंने हमारेताईं अध्ययनकराईहै ॥ ब्रह्मविद्या तिनगुरुवोंनैं हमारेप्र
तिकही नहीं ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ तिनगुरुवोंकूं ब्रह्मकेवास्तवस्वरूपकाज्ञाननहीं ॥ और हिमालयतैंआदिलेकैसेतुबंधरामेश्वरपर्यंत
ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यातीनवर्णोंविषे जितनेकप्रसिद्धविद्वान्हैं ॥ तिनसंपूर्णोंकूं मैंपराजयकरिकै राजाअजातशत्रुकेपराजयकरणेवासतै
यहाँआयाहूं ॥ यातैं याराजातैं तथापूर्वहमारेगुरुवोंतैं भिन्नजितनेकब्राह्मणादिकविद्वान्हैं ॥ तेसंपूर्ण हमारेशिष्यभावकूंप्राप्तभये हैं ॥
यातैं तिनोंतैंभी ब्रह्मविद्याकेप्राप्तिकीसंभावना होवैनहीं ॥ जोतिनब्राह्मणादिकोंकूं ब्रह्मविद्याआवतीहोती तौ हमारेसैंपराजयकूंप्राप्त

नहीं होते ॥ और तिन संपूर्ण ब्राह्मणोंकूं मैं पराजयकरि आयाहूं ॥ यातैं तिनों विषे ब्रह्मविद्याकी संभावनाहोवै नहीं ॥ और यह
अजातशत्रुराजा यद्यपिहैतौमनुष्य ॥ तथापि गुणोंकरिकै देवतावोंके समान है ॥ अथवा देवतावोंतैंभी अधिकगुणवान् है ॥ काहेतैं यह
अजातशत्रुराजा प्रमादतैं रहितहुआ ब्रह्मविद्याकूंधारणकरै है ॥ और अधिकारी मुमुक्षुजनोंकेताईंभी ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरै है ॥ यातैं
यहअजातशत्रुराजा देवतावोंतैंभीअधिकहै ॥ और इंद्रादिकदेवता तो देवांगनावोंकेमुखकादर्शनरूपमदिरापानकरिकै अत्यंतमोहकूंप्राप्त
भयेहैं ॥ यातैं तेदेवता ब्रह्मविद्याकूंजाणतेहुएभीनहींजाणते ॥ दृष्टांत ॥ जैसे याभूमिलोकविषे मद्यपानकरणेहारेपुरुष आपगृहादिकोंकूं
जाणतेहुएभीनहींजाणते ॥ और यह अजातशत्रुराजा इतनीलक्ष्मीकूंपाइकेभी मुनिलोकोंकीन्याईं अभिमानतैंरहितहै ॥ और पुत्रादिक
प्रियवस्तुकेप्राप्तहुए याअजातशत्रुराजाकूं हर्षनहींहोता ॥ और अप्रियवस्तुकेप्राप्तहुए याराजाकूंशोकनहींहोता ॥ तात्पर्ययह ॥ जिसवस्तु
विषे पुरुषकारागहोवै है ॥ तिसवस्तुकेप्राप्तहुए तापुरुषकूं हर्षउत्पन्नहोवै है ॥ यातैं रागही हर्षकाकारणहै ॥ और जिसवस्तुविषे
पुरुषकाद्वेषहोवै है ॥ तावस्तुकेप्राप्तहुए तिसपुरुषकूं शोकउत्पन्नहोवै है ॥ यातैं द्वेषहीशोककाकारण है ॥ सोराग तथाद्वेष या अजात
शत्रुराजाविषेहैनहीं ॥ यातैं हर्ष तथाशोकभी याराजाविषेसंभवैनहीं ॥ काहेतैं या अजातशत्रुराजाकूं जैसे आपणेपुत्रहैं तैसेहीशत्रुहैं॥पुत्रों
विषे याराजाकारागनहीं ॥ और शत्रुवोंविषे याराजाकाद्वेषनहीं ॥ किंवा ॥ यालोकविषे एकअजातशत्रुराजाही कामक्रोधतैंरहित है ॥
दूसराकोईपुरुष कामक्रोधतैंरहितहैनहीं ॥ काहेतैं जोयहराजा कामदोषवालाहोता ॥ तौ हमारेताईं सहस्रगौवोंकूंनहींदेता ॥ और यहअ
जातशत्रुराजातो मंत्रब्रह्मकाउपदेशतुमारेप्रतिकरताहूं याहमारेवचनमात्रकरिकै सहस्रगौवाँ हमारेताईंदेताभयाहै ॥ यातैं याराजाविषे काम
दोषनहीं ॥ और जेपुरुष कामदोषयुक्तहोवैहैं ॥ ते सुपात्रविषेदानकरैनहीं ॥ किंतु कुपात्रजेवेश्यादिकस्त्रियाहैं ॥ तथा वेश्याकेपृष्ठदेशविषे
वादित्रोंकूंबजावणेहारेजेपुरुषहैं ॥ तथा नानाप्रकारककौतुकोंकूंकरणेहारे जेनटादिक हैं ॥ इसतैंआदिलेकेजितनेककुपात्रहैं ॥ तिनकुपा
त्रोंकूं सहस्ररुपये कामीपुरुषदेवै हैं ॥ परन्तु ब्रह्मवेत्तासुपात्रपुरुषकेताईं पंचकोडीभी कामीपुरुष देसकते नहीं ॥ यातैं यह सिद्धभया

जिन जिन पुरुषोंकाद्रव्य सुपात्रोंविषेखरचहोवै है तेपुरुष कामदोषतैंरहितहैं ॥ और जिनपुरुषोंकाद्रव्य कुपात्रोंविषेखरचहोवै है तेपुरुष कामदोषवालेहैं ॥ और याअजातशत्रुराजाकाद्रव्य सुपात्रोंविषेहीखरचहोवै है ॥ यातैं यहराजा कामदोषतैंरहितहै ॥ किंवा॥कामदोषकरिकैजन्यजेजन्ममरणादिकदोषहैं ॥ तिनदोषोंकूं जोपुरुष जानताहै ॥ सोईहीपुरुष कामदोषतैंरहितहोवैहै ॥ कामजन्यदोषकेज्ञानतैं रहितपुरुष कामतैंरहितहोइसकैनहीं ॥ और यह अजातशत्रुराजा कामजन्ममरणादिकदोषोंकूं भलीप्रकारजाणैहै ॥ यातैं यहराजा कामदोषतैंरहितहै॥किंवा॥याअजातशत्रुराजाविषे क्रोधभीनहीं॥काहेतैं जेक्रोधवान्पुरुषहोवैहैं॥तिनोंका जभीकोईपुरुष अपराधकरै है॥ तभी तेक्रोधीपुरुष तिसअपराधीपुरुषकूंमारैहैं ॥ अथवा तिसअपराधीपुरुषकेमारणेविषे जोसमर्थनहींहोवैहै॥ तौ आपणेमस्तककूंताडनकरैहैं ॥ यहक्रोधवान्पुरुषोंकालक्षणहै ॥ सोलक्षण याराजाविषेहैनहीं॥काहेतैं सभाविषेआइके मुझअज्ञानीने याब्रह्मवेत्ताअजातशत्रुकीअवज्ञाकरीभी तौभी यहराजा हमारेऊपरक्रोधवान्नहींभया ॥ उलटा हमारेहितकीइच्छाकरैहै॥यातैंयाराजाविषेक्रोधनहीं ॥ जोयाराजाविषे क्रोध होता तौ मुझअपराधीकेहितकीइच्छानहींकरता ॥ किंवा हमनैं पूर्व आपणेगुरुवोंकेमुखतैं तथाशास्त्रतैं यहश्रवणकऱ्या है ॥ एकब्रह्मवेत्तापुरुषकूंछोडिकरिकै सर्व प्राणीमात्रकेहृदयविषे कामक्रोधरहैहैं ॥ और ब्रह्मवेत्तापुरुषविषे कामक्रोधरहैनहीं ॥ याप्रकार गुरुशास्त्रकेवचनतैंभी यह अजातशत्रुराजाही ब्रह्मवेत्तासिद्धहोवैहै॥ काहेतैं याराजाविषे कामका तथा क्रोधका अभावहै॥यातैं ऐसेब्रह्मवेत्तारा जाका परित्यागकरिकै ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिवासतै अन्यकिसीदेवताकेसमीपजाणा हमारेकूंउचितनहीं॥किंवा देवतावोंतैंब्रह्मविद्याकीप्राप्तिविषे हमारेकूंसंशयहोवैहै ॥ काहेतैं इसलोकविषे जैसे मनुष्यादिकोंका प्रत्यक्षदर्शनहोवैहै ॥ तैसे देवतावोंका प्रत्यक्षदर्शन किसीपुरुषकूंहोतानहीं ॥ और जोदेवतावोंकेदर्शनवासतै अनेककालपर्यंत मैंतपकूंकरोंगा ॥ तौभी इसी जन्मविषे हमारेकूं तिनदेवतावोंकादर्शनहोवैगा ॥ अथवा दूसरेजन्मविषे तिनदेवतावोंकादर्शन हमारेकूंहोवैगा ॥ यहसंशय हमारेकूंहोवैहै ॥ किंवा ॥ महान्तपकरिकै इसीजन्मविषेदेवतावोंकादर्शनहुआभी ॥ तौभी सर्वदेवतावोंविषेमुख्यब्रह्मवेत्ता कोईविरलाहीदेवताहोवैहै ॥ किंवा॥ तपकेप्रभावतैं कदाचित् तिस

मुख्यब्रह्मवेत्तादेवताकादर्शनभी हमारेकूंहोवै ॥ तौभी सोदेवता रजोगुणकरिकैयुक्तहै ॥यातैं हमारेताईं ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरैगा॥अथवा नहींउपदेशकरैगा ॥ अथवा किसीद्रव्यादिकपदार्थोंकीप्रातिकरिकै हमारेकूं मोहउत्पन्नकरैगा ॥ याप्रकारकासंशय हमारेकूंहोवै है ॥ यातैं देवतावोंकेउपदेशतैंब्रह्मविद्याकीप्राप्तिविषे हमारेकूं संभावनाहोवैनहीं ॥ और देवतावोंतैंभिन्न जितनेकइसलोकविषे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य या तीनवर्णोंमें प्रसिद्धविद्वान् हैं तेसंपूर्ण हमारेतैंपराजयकूंप्राप्तभये हैं ॥ यातैं तिनोंतैंभी ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिकीसंभावना हमारेकूंहोवैनहीं ॥ इसप्रकारकाविचारकरिकै सोबालाकिब्राह्मण ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिवासतै हस्तविषेकाष्ठोंकूंधारणकरिकै तिसअजातशत्रुराजाकेसमीप जाताभया दृष्टांत ॥ जैसे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यातीनवर्णोंकाबालक अष्टमवर्षविषे हस्तोंमेंकाष्ठोंकूंग्रहणकरिकै और आचार्यकेसमीपजाइके याप्रकारकीप्रार्थनाकरै है ॥ हेभगवन् मैंतुमाराशिष्यहूं ॥ यातैं हमारेकूंउपदेशकरो तैसे बालाकिब्राह्मणभी राजाअजातशत्रुकेसमीपआइके याप्रकार कहताभया ॥ हेभगवन् मैंतुमाराशिष्यहूं ॥ यातैं हमारेताईं ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरो ॥ याप्रकारकेवचनकरिकै बालाकि इसअर्थकूं बोधनकरताभया ॥ इसलोकविषे जोकोईपुरुष ब्रह्मविद्याकरिकैअधिक है ॥ सोईहीपुरुष गुरुपदवीकेयोग्य है सो ब्राह्मणहोवै ॥ अथवा क्षत्रियहोवै ॥ अथवा वैश्यहोवै अथवा शूद्रहोवै अथवा स्त्रीहोवै ॥अथवा नपुंसकहोवै ॥ अथवा राक्षसहोवै ॥ सर्वथा ब्रह्मविद्यावाला गुरुपदवीके योग्य है॥और जिसपुरुषकूं ब्रह्मविद्याकीप्राप्ति नहींभई॥सो ब्राह्मणभीहोवै ॥ तथा अन्यविद्यावोंविषेबृहस्पतिकेसमानहोवै ॥ तौभी सोपुरुष शिष्यपदवीकेयोग्य है ॥ गुरुपदवीकेयोग्यनहीं ॥ एकब्रह्मवेत्ताही गुरुपदवीकेयोग्य है ॥ याप्रकार आपणेअभिप्रायकूं सोबालाकि बोधनकरताभया ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार अभिमानतैंरहितबालाकिकूं राजाअजातशत्रु देखिकारिकै आपणेआसनतैं उठताभया ॥ और दोनोंहस्तोंकूंजोडिकरिकै सोराजा बालाकिकेताईं प्रणामकरताभया ॥ और याप्रकारकेवचनकूं सोराजा बालाकिकेताईं कहताभया॥ हे बालाकिब्राह्मण इसलोकविषे ब्रह्मानैं ब्राह्मणत्वजातिवालेसर्वब्राह्मणोंकूं गुरुरूपकरिकैउत्पन्नकऱ्याहैऔर क्षत्रियादकअन्यवर्णोंकूं स्वभावतैं शिष्यरूपकरिकै ब्रह्माने उत्पन्नकऱ्या है ॥ यातैं हेबालाकि तूब्राह्मणहोइके मुझक्षत्रियकेशिष्यभावरूपविपरीतकर्मकीइच्छा किसवासतैं

करता है किंतु यहविपरीतकर्मकरणा तुमारेकूंउचितनहीं ॥किंवा॥ हेबालाकिविपरीतकर्मविषेप्रवृत्ति तीनकारणोंतेंहोवै है ॥ एकतौ क्रोध करिकैविपरीतकर्मविषेप्रवृत्तिहोवै है ॥ और दूसरा भयकरिकैविपरीतकर्मविषेप्रवृत्तिहोवै है ॥ और तीसरा अज्ञानकरिकैविपरीतकार्यविषे प्रवृत्तिहोवै है तहाँ क्रोधकरिकैजोआपकी याविपरीतकर्मविषेप्रवृत्तिहोतीहोवै ॥ तौ हमारेऊपरक्षमाकरिकै ताक्रोधकीनिवृत्तिकरो ॥ तात्पर्यंयह ॥ मुझअल्पबुद्धिबालकने राजधर्मकूंअंगीकारकरिकै जेजेकटुवचन तुमारेताईंकहे हैं ॥ तिनसंपूर्णहमारेअपराधोंकूं तुम क्षमाकरो ॥ क्षमाकरणाब्राह्मणोंकास्वभाव है ॥ किंवा हेबालाकि मैंने जोआपकूंकटुवचनकहेहैं ॥ सोविनाअपराधतैंनहींकहे ॥ किंतु हमने बहुतजनोंके मुखतैं या प्रकारका वचन श्रवण कऱ्या था ॥ जो बालाकि धनमदकरिकै तथाकुलमदकरिकै तथा विद्यामदकरिकै अनंतसाधुब्राह्मणोंका निरादर करै है ॥ और हे बालाकि जैसा हमने पूर्व श्रवण कऱ्या था ॥ तैसाही हमने तुमारेकूं देख्या ॥ इसी कारणतैं तुमारे मदकी निवृत्तिवासतैं हमने तुमारेकूं कटुवचनकहे हैं ॥ और हे बालाकि तुमारे प्रति जो हमने कटुवचन कहे हैं ॥ सो आपणे प्रमादतैं नहीं कहे ॥ किंतु धर्मशास्त्रकेअनुसारकहेहैं ॥ काहेतैं धर्मशास्त्रविषे यहकह्याहै ॥ दुराचारीजेब्राह्मणहैं ॥ तिनोंकेदुराचरणकूं भली प्रकारनिर्णय कारिकै राजानैं तिन ब्राह्मणोंका वाणी करिकै निरादर करणा ॥ या प्रकार धर्म शास्त्रविषे हमने श्रवण कऱ्या है ॥ या कारणतैं हमने तुमारेकूंकटुवचनकहे हैं ॥ किंवा ॥ हेबालाकि आपसरीखेब्राह्मणलोकोनैंहीं हमारेप्रति राजधर्मकाउपदेशकऱ्या है ॥ तिसधर्मकेआचरणविषे जोहमाराकोईप्रमाद आप देखतेहोवो ॥ तौभी हमबालकऊपरक्षमाकरो ॥ और हे बालाकि तुमारेक्षोभकूंदेखिकारिकै हमारेकूं बहुतशो कहुआहै ॥ जो हमारेकूं धिक्कारहै ॥ और हमारेराजकूंभि धिक्कार है ॥ तथा राजसंबंधीधर्मोंकूंभी धिक्कार है ॥ जिनराजसंबंधीधर्मोंकूंअंगीकारकरिकै हमने ब्राह्मणकानिरादरकऱ्या है ॥ किंवा ॥ हेबालाकिब्राह्मण मेरेभयतैं जोतूं याविपरीतकर्मविषे निवृत्तहोताहोवै ॥ सोकदाचित् नहींहोणा ॥ काहेतैं नीचजातिवालाजोकोई अपराधीप्राणीहोवै है ॥ तिसकूंभी हम हननहीं करते ॥ तौ तुमसरीखेउत्तमब्राह्मणोंकूं हम कैसेहननकरैंगे ॥ हे बालाकि जेकोईपुरुष चोरीरूपप्रथमअपराधकूंकरै है ॥ तिनचौरपुरुषोंकेताईं धनादिकपदार्थोंकूंदेकरिकै चोरीकरणतैं

मैंनिवृत्तकरताहूं ॥ ताधनकूंलेकरिकैभी तेपुरुष पुनःचोरीरूपदूसरेअपराधकूं जभीकरैं हैं तभी तिनपुरुषोंकूंआपणेदेशतैं मैंनिकासिदेता हूं ॥ तादेशकेनिकासणेतैंअनंतरभी तेपुरुष जभीचोरी रूपतृतीयअपराधकूंकरैं हैं ॥ तभी श्वानकेपदसमानहैआकारजिसका ऐसीजोलोहे कीमुद्राहै तिसकूंअग्निविषेतपाइके तिनचौरोंकेमस्तकविषे देवै हैं ॥ और जभी तेपुरुष पुनःचतुर्थवार चोरी आदिक अपराधकूंकरैं हैं ॥ तभी तिनपुरुषोंकेएकहस्तकाछेदन हम करैं हैं और तेपुरुष पुनःपंचमवार जभी चोरी आदिक अपराधकूंकरै हैं ॥ तभी तिनचौरोंके दूसरेहस्तकाछेदन हमकरैं हैं ॥ और तेपुरुष पुनःषष्ठेवार चोरीआदिकअपराधकूं जभी करैं हैं तभी तिनोंकेएकपादकाछेदन हमकरैं हैं॥ और तेपुरुष पुनःसप्तमवार जभी चोरीआदिक अपराधकूं करैं हैं ॥ तभी तिनोंके द्वितीयपादकाछेदन हमकरैं हैं ॥ इसप्रकार सप्तवार अपराधकरणेहारेपुरुषोंकूं हम प्राणोंतैं रहित करते नहीं ॥ जभी तेपुरुष अष्टमवार अपराधकूं करैं हैं ॥ तभी तिनपुरुषोंकूं हम हननकरैं हैं ॥ और हे बालाकि युद्धविषेभी शत्रुकूं धर्मयुद्धतैंहीं मैंहननकरोंहूं ॥ अधर्मतैंकिसीशत्रुकूं मैंहननकरतानहीं ॥ काहेतैं जोशूर बीर युद्धकरणेवासतैं हमारेसन्मुखहोवै है ॥ और षोडशवर्षतैंअनंतर पंचास वर्षपर्यंत आयुष्यवालाहोवै है ॥ और सावधानहोवै है ॥ और प्रथम हमारेऊपरशस्त्रकूंचलावै है ॥ ऐसे शूरबीरकूं पश्चात् मैं हनन करोंहूं ॥ वृद्धअवस्थावानकूं तथाबाल्यअवस्थावानकूं तथाअसावधानपुरुषकूं युद्धविषे मैंहननकरोंनहीं ॥ और हेबालाक शत्रुवोंकूं तथाअपराधीपुरुषोंकूंभी जभी मैंहननहींकरता ॥ तभी संपूर्णदेहधारियोंकरिकैपूजणेयोग्य तुमब्राह्मणोंकूं मैं कैसेहननकरोंगा ॥ किंतु ब्राह्मणकूं कदाचित् मैंहननहींकरता ॥ यातैं हेबालाकि याप्रकारकेहमारेस्वभावकूंविचारिकरिकै तुम भयतरहितहोवो ॥ तात्पर्ययह ॥ ब्राह्मणहोइके क्षत्रियकाशिष्यहोणा यह विपरीतकर्म दोनोंलोकोंविषेनिंदितहै ॥ तानिंदितकर्मविषे हमाराभयकरिकै तुमप्रवृत्तमतहोवो ॥ और हेबालाकि जोतूं आपणेअज्ञानकीनिवृत्तिवासतै याविपरीतकर्मविषेप्रवृत्तहोताहोवै ॥ तौभी पूर्वलेआपणेगुरुवोंकेसमीप तुमजावो ॥ तिनोंकेउपदेशतैंहींतुम्हारेअज्ञानकीनिवृत्तिहोवैगी॥हे बालाकि तुम्हारेताईं हम नमस्कारकरते हैं ॥ जहाँसेतुम्हाराआगमनभयाहै ॥ तहाँहीं तुमपुनःजावो ॥श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य इसप्रकार

जभीराजाअजातशत्रुने बालाकिब्राह्मणकेप्रतिकह्या ॥ तभी सोबालाकि तिससभातैंनहींजाताभया ॥ किंतु आपणेलज्जाकूं तथा चिंताकूं बोधनकरणेवासते नीचेमुखकरिकै पादकेअग्रभागतैं भूमिकूंलिखताभया ॥ और उच्चश्वासोंकूंउठावताभया ॥ इसप्रकार बालाकिकेशरीर कीचेष्टाकूंदेखिकरिकै सोअजातशत्रुराजा बालाकिकेहृदयकेअभिप्रायकूंजाणताभया ॥ तहाँ ब्राह्मणहोइकेक्षत्रियकाशिष्यहोणा याविपरीत कर्मकीइच्छातैंउत्पन्नभयी जोबालाकिकूंलज्जा ॥ तालज्जासे नीचेमुख तथापादकरिकैभूमिकालेखन रूपदोनोंचेष्टावोंतैं राजा जाणताभया और याराजाकापरित्यागकरिकै किसतैंमैंब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोवोंगा ॥ याप्रकारकीबालाकिकीचिंताकूं उच्चश्वासरूपचेष्टातैं राजा जाणताभया काहेतैं पादकरिकैभूमिकालेखन तथानीचेमुख लज्जातैंविनाहोवैनहीं ॥ किंतु लज्जाकरिकैहीहोवै है ॥ तैसे उच्चश्वासोंकाउठावणाभी चिंतातैं विनाहोवैनहीं ॥ किंतु चिंताकरिकैहीहोवै ॥ तात्पर्ययह ॥ जोवस्तु जिस वस्तुतैंावनानहींहोवै ॥ और जिसवस्तुकेविद्यमानहुए जोवस्तु होवै ॥ तावस्तुकरिकै तिसकाअनुमानहोवै है॥जैसे अग्नितैंविनाधूमहोवैनहीं ॥ और अग्निकेविद्यमानहुए धूमहोवै है ॥ यातैं धूमरूपहेतुतैं पर्वतादिकोंविषे अग्निकाअनुमानहोवै है ॥ तैसे लज्जातैं विना नीचेमुख तथापादकरिकैभूमिकालेखन होवैनहीं ॥ किंतु लज्जाकारिकैही होवै है ॥ यातैं नीचेमुख तथाभूमिकालेखन रूप दोनोंहेतुवोंतैं बालाकिकेलज्जाकाअनुमान राजा करताभया ॥ तैसे चिंतातैंविना उच्चश्वासों काउठावणाहोवै नहीं किंतु चिंताकरिकैहीहोवै है ॥ यातैं उच्चश्वासरूपहेतुतैं बालाकिके चिंताकाअनुमान राजा करताभया ॥ अन्यपुरुष केअंतःकरणकाधर्म जो लज्जातथाचिंता ॥ तिसका अन्यपुरुषकूंप्रत्यक्षज्ञानहोवैनहीं किंतु अनुमितिज्ञानहोवै है ॥ इसप्रकार बालाकिके अभिप्रायकूं जाणिकरिकै सोअजातशत्रुराजा बालाकिकेप्रति कहताभया ॥ हेबालाकि जो उत्तमवर्णयुक्तधर्मात्माब्राह्मण यहक्षत्रिय हमारे ताईं ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरेगा याप्रकारकी इच्छाकरिकै क्षत्रियादिकोंकेसमीपजावै है ॥ याप्रकारकेविपरीतकर्मकूं हम अत्यंतअनुचितमा नैं हैं ॥ काहेतैं आपयज्ञकूं करणा १ तथादूसरे यजमानकेप्रति यज्ञकूंकरावणा २ आप विद्याका अध्ययनकरणा ३ तथा शिष्योंकेताईं विद्याका अध्ययन करावणा ४ आपदान करणा ५ तथा शुद्ध यजमानतैं दानलेणा ६ यह षट्कर्म ब्राह्मणोंके शास्त्रविषे कहे हैं ॥ और

आप यज्ञकूंकरणा १ तथादानकूंदेणा २ तथाविद्याकूंअध्ययनकरणा ३ यहतीनकर्म ब्राह्मणकेसमानहीं क्षत्रियकेहैं ॥ परंतु यज्ञकूं करावणा १ तथाविद्याकूंअध्ययनकरावणा २ तथाप्रतिग्रहकूंलेणा ३ यहतीनकर्म क्षत्रियकेकिसीशास्त्रविषेनहींकहे ॥ यातैंहेबालाकि आचार्यहोइके ब्राह्मणोंकेताईं विद्याउपदेशकरणेविषे यद्यपि हमारेकूं शास्त्ररीतिसैंअधिकारनहीं ॥ तथापि हमारायह नियमहै ॥ जोधर्मात्माब्राह्मण धनतैं आदिलेकैप्राणपर्यंत किसीभीपदार्थकीयाचना करताहै ॥ तिसब्राह्मणकेताईं प्राणपर्यंतपदार्थोंकाभी हम दानकरैं हैं ॥ यहहमारानियमहै ॥ यातैं हेबालाकि तुमब्राह्मण यद्यपि हमारेगुरुहो ॥ तथापितुमने हमारेप्रति ब्रह्मविद्याकीयाचना करीहै ॥ जोमैं तुम्हारेताईं प्राणोंतैंभीअतिप्रियब्रह्मविद्याकूं नहींदेवोंगा ॥ तौ हमारेनियमकाभंगहोवैगा॥यातैं आपणेनियमकीरक्षावासतै तुमयाचकगुरुवोंकेताईं ब्रह्मविद्याकादान मैंकरताहूं ॥ यातैं हेबालाकि तुम्हाराहमारा गुरुशिष्यभावसंबंधनहीं ॥ किंतु दातायाचकभाव संबंधहै ॥ तात्पर्ययह॥तुम्हारेविषे शिष्यबुद्धिकरिकै तथाआपणेविषे गुरुबुद्धिकरिकै तुम्हारेताईं मैंब्रह्मविद्यानहींकहता॥ किंतु तुम्हारेविषे याचकबुद्धिकरिकै तथाआपणेविषे दातावुद्धिकरिकै तुम्हारेताईं ब्रह्मविद्याकाउपदेश हम करतेहैं ॥ तिसब्रह्मविद्याकूं तुम श्रवणकरो ॥ याप्रकारकावचन कहिकरिकै सो अजातशत्रुराजा बालाकिकेताईं प्रणामकरताभया ॥ और आपणेसिंहासनऊपर बालाकिकूंबैठावता भया ॥ और आपअजातशत्रुराजा भूमिविषेस्थितहोइके बालाकिकेताईं ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरताभया ॥ राजाअजातशत्रुरुवाच ॥ हे बालाकि प्राणादिकजडपदार्थोंतैंभिन्न तथादेशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहित जोस्वप्रकाशआनंदस्वरूप आत्माहै ॥ तिसकूंहीं तूंब्रह्मरूपकरि कैजाण ॥ इसप्रकार राजाकेवचनकूंश्रवणकरिकै उत्पन्नभयाहैविश्वासजिसकूं ऐसाजोबालाकिब्राह्मणहै ॥ तिसकेप्रति अन्वयव्यतिरेक करिकै जडप्राणोंकीअनात्मताबोधनकरणेवासतै सोअजातशत्रुराजा आपणेआसनतैंउठताभया॥और बालाकिकेहस्तविषेआपणेहस्तकूं धारणकरिकै सिंहासनतैं बालाकिकूंउतारताभया ॥ और गुह्यअर्थका सभाविषेउपदेशहोवैनहीं ॥ याकारणतैं सभाकापरित्यागकरिकै बा लाकिसहितराजाअजातशत्रु अंतःपुरविषेजाताभया ॥ तहाँ अंतःपुरकेद्वारदेशविषे कोईपुरुष सोयाहुआथा ॥ सर्वइंद्रियोंकीचेष्टातैंरहित

केवलप्राणमात्र तापुरुषकेचलतेथे ॥ तिससुषुप्तपुरुषकेसमीप बालाकिसहितराजाअजातशत्रु स्थितहोताभया॥और बालाकिकूंअभिमत जोप्राणोंकीआत्मता ॥ ताकेनिवृत्तकरणेवासतै सोअजातशत्रुराजा बालाकिने जितनेप्राणकेनामजानेथे तिनसंपूर्णनामोंकूंउच्चस्वरतैंउच्चारणकरिकै तिससुषुप्तपुरुषकूंजगावताभया ॥ अब तिनप्राणोंकेनामोंकूंदिखावैं हैं ॥ हेआदित्यरूप हेचंद्रमारूप हेबृहत् हेपांडुरनीरग ॥ अर्थयह ॥ शुक्लवर्णवालेजलकूंआश्रयणकरणेहारा ॥ और हेनीरसंवृत्त ॥ अर्थयह ॥ जैसे एकहीवस्त्रकरिकै नीचेतथाऊपर पुरुष आवृतहोवै है ॥ तैसे नीचेतथाऊपर जलकरिकैआवृत्त ॥ और हेप्रियदर्शन हेसोमनामा हेब्राह्मणोंकेराजन् ॥ और हेदीप्तिसहस्रभाक् ॥अर्थयह॥ अ संख्यातदेवतारूपकिरणोंकरिकैयुक्त ॥ इसप्रकार प्राणोंकेसमष्टिरूपकूंप्रतिपादनकरणेहारे जेसूर्यादिकदेवतावोंकेवाचकनामहैं ॥ तिननामों कूं उच्चस्वरतैंउच्चारणकरिकै अजातशत्रुराजा प्राणकूंबुलावताभया ॥ तौभी प्राण जाग्रत्कूंप्राप्तनहींहोताभया ॥ काहेतैं प्राण अचेतनहै ॥ याकारणतैंहीं सुखदुःखरूपफलकाभोक्ता प्राणनहीं ॥दृष्टांत॥ जैसे जडघट हेघट हेकंबुग्रीवादिमान् हेजलकेधारणकरणेहारे ॥ इत्यादिकना मोंकरिकै बुलायाहुआभी आपणेकूं तथाबुलावणेहारे पुरुषकूं जाणतानहीं याकारणतैं घट अचेतनहै ॥तैसे प्राणभी अचेतनहै ॥ इसप्रकार राजाअजातशत्रुने आदित्यादिकनामोंकरिकैबुलायाहुआभीप्राण जभी आपणेकूं तथाराजाकूं नहींजाणताभया॥तभी बालाकिने घटकी न्याईं प्राणविषेभी अनात्मतानिश्चयकरी॥तिसतैंअनंतर सोअजातशत्रुराजा यहविचारकरताभया॥मनवाणीकाअविषयजोशुद्धआत्माहै ॥ तिसकूं घटादिकोंकीन्याईं इदंतारूपकरिकै साक्षात्बोधनकरणेविषे कोईभीसमर्थनहीं और जाननेकूंभीकोईसमर्थनहीं॥यातैं स्थूलारुंधती न्यायकरिकै शुद्धआत्माकेबोधनकरणेवासतै प्रथमभोक्तारूपविशिष्टआत्माकेजनावणेकेउपायकूं सोराजा रचताभया ॥ तात्पर्ययह॥अत्यं तसूक्ष्म अरुंधतीनक्षत्रकेजानणेहारेजेपुरुषहैं ॥ ते जभी अन्यकिसीकूंअरुंधतीकूंदिखावैं हैं॥तभी प्रथमहीं वास्तवअरुंधतीकूं दिखावैंनहीं॥ काहेतैं अरुंधतीनक्षत्र अतिसूक्ष्महै॥यातैं प्रथमहीं ताकेविषे ताकी दृष्टिपहुँचिसकैनहीं॥किंतु ताअरुंधतीकेसमीपवर्तीजिस्थूलनक्षत्रहैं॥तिनों कूं अरुंधतीरूपकरिकैप्रथमदिखावैं हैं॥तिनस्थूलनक्षत्रोंविषे जभी ताकी दृष्टिपहुँचेहै॥तभी शनैःशनैःकरिकै तावास्तवअरुंधतीकूंभी देखिले

वैहै॥तैसे राजाअजातशत्रु प्राणविषेअनात्मता बोधनकरिकै शुद्धआत्माके बोधनकरणेवासतै प्रथमभोक्तारूपविशिष्टआत्माकेबोधकरावणे केउपायकूंरचताभया॥ताउपायकूंदिखावैहैं॥अंतःपुरकेद्वारऊपरसोएहुएपुरुषकेहस्तकूं आपणेहस्तकरिकैराजापेषणकरताभया ॥औरदूसरे किसीपुरुषकूंप्रेरणाकरिकै तासोयेहुएपुरुषकेपृष्ठदेशविषे यष्टिमरावताभया॥ इसप्रकार हस्तकेपेषणकरिकै तथायष्टिकेमारणेकरिकै उत्पन्न भयीहैंपीडाजिसकूं ऐसाजोसुखदुःखकेअनुभवकरणेहाराभोक्तापुरुषहै॥सो पीडाकरिकै जाग्रत्होताभया॥जैसेभस्मकरिकैआवृतअग्निभस्म केनिवृत्तहुए प्रज्वलितहोवैहै॥तैसे सोपुरुष क्रोधकरिकैप्रज्वलितहोताभया ॥इसप्रकार तापुरुषकूंदेखिकरिकै सोबालाकि नेत्रादिकइंद्रियों करिकैयुक्तभोक्ताआत्माकूं प्राणतैंभिन्नकरिकै निश्चयकरताभया॥परंतु भोक्तातैंभिन्नबुद्धिआदिकोंकासाक्षी जोशुद्धआत्माहै॥ताकूंसोबाला कि नहींजाणताभया॥अब शुद्धआत्माही भोक्ताकाहेतैंनहींहोवै याप्रकारवादीकेआशंकाकीनिवृत्तिकरणेवासतै जिसनिमित्तकूंग्रहणकरिकै भोक्ताशब्द विशिष्टआत्माविषेप्रवर्तहोवैहै तानिमित्तकूं दिखावैहैं ॥ तहाँ भोजनरूपक्रिया भोक्ताशब्दकेप्रवृत्तिकानिमित्त संभवैनहीं ॥का हेतैं भोजनरूपक्रिया नियमकरिकैसर्वभोक्तावोंविषेरहैनहीं ॥तात्पर्ययह॥भोजनरूपक्रियावालेविषे जोभोक्ताशब्दकीप्रवृत्तिहोवै॥तौ जोजो क्रियाहोवैहै सोदुःखरूपहोवैहै यहनियमहै ॥ यातैंदुःखवान्पुरुषविषेही भोक्ताशब्दकीप्रवृत्तिहोवैगी ॥ सुखवान्पुरुषविषे भोक्ताशब्दकी प्रवृत्तिनहींहोवैगी ॥ और सुखीपुरुषकूंभी लोकविषेभोक्ताकहैहैं ॥ किंवा ॥ भोजनरूपक्रियाकूंजोभोक्ताशब्दकेप्रवृत्तिकानिमित्तमा निये ॥ तौ भोक्तापणेतैंरहित जेमुख तथादंत तथाजिह्वादिकहैं॥तिनोंविषेभीभोजनरूपक्रियारहैहै॥यातैं तिनोंकूंभी भोक्ताकह्याचाहिये॥ और मुखादिकोंकूं कोईभोक्ताकहतानहीं ॥किंवा॥भोजनरूपक्रियाकाफलजोतृप्तिहै॥तातृप्तिरूपनिमित्तकूंग्रहणकरिकै जोभोक्ताशब्दकी प्रवृत्तिहोतीहोवै॥ तौ तृप्तिदोप्रकारकीहोवैहै॥ एकतौ पुष्टिरूपतृप्ति ॥ और दूसरी तुष्टिरूपतृप्ति॥ तहाँ पुष्टिरूपतृप्तिवालेकानाम जोभो क्ताहोवै ॥ तौ भित्तिआदिकजडपदार्थभी भोक्ताहोणेचाहिये ॥ काहेतैं मृत्तिकादिकोंकेलेपनतैं भित्तिआदिकोंकीभी पुष्टिहोवैहै ॥ और लोकविषेभित्तिआदिकोंकूं कोईभोक्ताकहैनहीं॥यातैं पुष्टिरूपतृप्तिभी भोक्ताशब्दकेप्रवृत्तिकानिमित्तनहीं ॥किंतु परिशेषतैं सुखदुःखरूप

तृप्तिही भोक्ताशब्दकेप्रवृत्तिकानिमित्तहै ॥ तिनसुखदुःखदोनोंविषेभी सुखही भोगशब्दकामुख्यअर्थहै दुःख भोगशब्दकामुख्यअर्थनहीं ॥ किंतु गौणअर्थहै ॥ काहेतैं लोकविषे वनितादिकविषयजन्यसुखवान्पुरुषकूं हीं भोगवान्कहै हैं॥ और शूलविषेस्थितपुरुषकूं कोईभोगवान्कहैनहीं ॥ यातैं भोगशब्दकामुख्यअर्थ दुःखनहीं ॥ शंका ॥ दुःखविषे सुखरूपताकरिकै भोगशब्दकीअर्थता मतहोवै ॥ परंतु सुखकी जनकतारूपकरिकै दुःखकूं भोगशब्दकीअर्थता काहेतैंनहाहोवे ॥ समाधान ॥ यालोकविषे किसीभीपुरुषकेप्रीतिकूं दुःख उत्पन्नकरैनहीं॥ यातैं तादुःखकरिकै सुखरूपतृप्तिसंभवैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ जिसपदार्थविषेप्रीतिहोवै है ॥ सोईहीपदार्थ सुखरूपतृप्तिकाजनकहोवै है ॥ दुःखविषे किसीप्राणीकी प्रीतिहोवैनहीं ॥ यातैं सुखरूपतृप्तिकूं दुःख उत्पन्नकरैनहीं ॥ किंवा ॥ अनुकूलजोवनितादिकविषयहैं ॥ तिनोंके बारंबारभोगणेकरिकै जोपुरुषोंकूं सुखउत्पन्नहोवैहै ताकूं लोकविषेतृप्तिकहैहैं ॥ सो तृप्ति अनुकूलपदार्थतैंउत्पन्नहोवैहै ॥ प्रतिकूलदुःखादिकोंतैं सोतृप्ति कदाचित्भीउत्पन्नहोवैनहीं ॥ यातैं भोगशब्दकामुख्यअर्थ दुःखनहीं ॥ किंतु भोगशब्दकागौणअर्थ दुःखहै॥ दृष्टांत ॥जैसे देवदत्तमनुष्यसिंहहै ॥ यास्थानविषे सिंहशब्दकामुख्यअर्थ मृगराजपशुविशेषहै ॥ और देवदत्तनामामनुष्य सिंहशब्दकागौणअर्थहै॥ सिंहविषेवर्तमान जेक्रूरतादिकगुणहैं ॥ तेगुण देवदत्तनामामनुष्यविषेभीरहैहैं ॥ यातैं ताकूंसिंहकहैहैं ॥ तैसे भोगशब्दकामुख्यअर्थसुखहै ॥ और गौणअर्थदुःख है ॥ काहेतैं जैसेसुखकीप्राप्ति पुरुषकेचित्तविषे मैंसुखीहूं याअभिमानरूपअतिशयताकूंउत्पन्नकरैहै ॥ तैसे दुःखकीप्राप्तिभी पुरुषकोचित्तविषे मैंदुःखीहूं याअभिमानरूपअतिशयताकूंउत्पन्नकरैहै॥ अतिशयताकेउत्पत्तिकीकारणता सुखविषे तथादुःखविषे समानहै॥यातैं भोगशब्दकागौणअर्थदुःखहै॥सुखही भोगशब्दकामुख्यअर्थहै॥ इसप्रकार सुखदुःखरूपभोगकाआश्रय॥जोविशिष्टआत्मारूप भोक्ताहै॥ताकाउपदेश बालाकिकेप्रति राजानेकन्या॥ तिसभोक्ताआत्माकेज्ञानतैं मोक्षकीप्राप्तिहोवैनहीं॥ किंतु शुद्धआत्माकेज्ञानतैं मोक्षकीप्राप्तिहोवैहै ॥ याकारणतैं शुद्धआत्माकेबोधकरणेवासतै सोअजातशत्रुराजा बालाकिकेप्रति कहताभया ॥ ॥ हेबालाकि सुखदुःख रूपभोगकी प्राप्तिकालविषे भोक्तारूपविशिष्टआत्माविषे मैंसुखीहूं मैंदुःखीहूं याप्रकारकेअनुभवकरिकैसिद्धजोभोक्तापणाहै ॥ सोभो

क्तापणा शुद्ध असंगआत्माविषे वास्तवतैं संभवैनहीं ॥ किंतु कार्य कारणभावतैं रहित स्वप्रकाश आनंदस्वरूप आत्माविषे अध्यासतैंही भोक्तापणाप्रतीतहोवै है॥दृष्टांत जैसे सर्पभावतैंरहितरज्जुविषे अध्यासकरिकैसर्पप्रतीतहोवै है॥तैसे सुखदुःखरूपभोगतैंरहित अद्वितीयशुद्धआत्माविषे अध्यासतैंभोक्तापणाप्रतीतहोवै है ॥ किंवा ॥ सजातीय विजातीय स्वगत भेदतैंरहित शुद्धआत्माविषे अज्ञानरूपमायातैं विना भोक्तापणेकाअध्याससंभवैनहीं ॥ याकारणतैंहीं वेदकेतात्पर्यकूंजानणेहारे महात्मापुरुषोंने ता अद्वितीयआत्माविषे मायाकल्पना करी है ॥ तात्पर्य यह ॥ जोपदार्थ जिसपदार्थतैंविना नहींसिद्धहोइसकै॥सोपदार्थ तापदार्थकीकल्पनाकरावै है॥जैसे दिनाविषे भोजनकूं न करणेहारेपुरुषविषेजोस्थूलताहै ॥ सोस्थूलता रात्रिभोजनतैंविनासंभवैनहीं यातैं सोस्थूलता तापुरुषकेरात्रिभोजनकूंकल्पनाकरावै है॥तैसे अकर्ता अभोक्ता शुद्धआत्माविषे मैंसुखीहूं मैंदुःखीहूं याप्रकार जोभोक्तापणेकाअध्यासहै ॥ सोअध्यास मायातैंविनासंभवैनहीं ॥ यातैं सोअध्यास शुद्धआत्माविषे मायाकीकल्पनाकरावै है ॥ इसप्रकार अर्थापत्तिरूपप्रमाणकरिकै सिद्धभयीजोमाया ताके दोस्वभावहैं ॥ एक तौ आवरणशक्तिरूपस्वभाव है ॥ और दूसरा विक्षेपशक्तिरूपस्वभाव है ॥ तहाँ मायाकाआवरणशक्तिरूपस्वभाव जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति यातीनअवस्थाविषेविद्यमानहैं॥ जबपर्यंत आनन्दस्वरूपआत्माकासाक्षात्कार पुरुषकूंनहींहोता॥ तबपर्यंत मायाकीआवरणशक्तिनिवृत्ति होवैनहीं ॥ किंतु अद्वितीयआत्माकेज्ञानतैंहीं मायाकेआवरणशक्तिकानाशहोवै है॥ और मायाका दूसराजोविक्षेपशक्तिरूपस्वभावहै॥ सो दोप्रकारकाहै ॥ एक जाग्रत्रूप है ॥ और दूसरा स्वप्नरूप है ॥ तहाँ जिसअवस्थाविषे नेत्रादिकइंद्रियोंकरिकै बाह्यघटपटादिकस्थूलपदार्थोंकाज्ञानहोवै ताअवस्थाकूं जाग्रत्कहैं हैं ॥ और जिसअवस्थाविषे पूर्वसंस्कारोंकूंग्रहणकरिकै केवलमनतैंहीं ज्ञानउत्पन्नहोवै है ताअवस्थाकूं स्वप्नकहैं हैं ॥ यह जाग्रत् तथास्वप्न दोनों विक्षेपरूपहैं ॥ यातैं हेबालाकि जैसे जाग्रत्विषे सुखकीप्राप्तिकरिकै तथादुःखकीप्राप्तिकरिकै मैंसुखीहूं मैंदुःखीहूं यहभोगरूपअतिशयता पुरुषोंविषे उत्पन्नहोवै है ॥ तैसे स्वप्नविषेभी सुखदुःखकीप्राप्तिकरिकै मैंसुखीहूं मैंदुःखीहूं यह भोगरूपअतिशयता पुरुषोंविषे उत्पन्नहोवै है॥और स्वप्नविषे भोगरूपअतिशयताका जोआधारहै॥ सोईही जाग्रत्विषे भोगरूपअतिशय

ताका आधारहै ॥ तहाँ स्वप्नविषे सुखदुःखजन्यभोगकाआधार केवलमनहीं है ॥ मनतैंभिन्नकोईभी स्वप्नविषेभोगकाआधारनहीं॥काहेतैं नेत्रादिकइंद्रियोंकातौ स्वप्नविषेलयहोवै है ॥ यातैं इंद्रियोंविषेभी भोगकीआधारतासंभवैनहीं॥और यद्यपि प्राण तथाशुद्धआत्मा स्वप्नविषेभी है॥तथापितिनोंविषे भोगकीआधारतासंभवैनहीं ॥ काहेतैं प्राणतौजडहैं ॥ यातैं भोगकीआधारता प्राणविषेसंभवैनहीं ॥ और शुद्ध आत्मा असंगहै॥यातैं ताकेविषेभी भोगकीआधारतासंभवैनहीं॥इसप्रकार स्वप्नविषे इंद्रियादिकोंविषे भोगकीआधारतासंभवैनहीं॥परिशेषतैं मनहीं स्वप्नविषे सुखदुःखजन्यभोगकाआश्रयहै ॥ जभी स्वप्नविषे भोगकाआधार मनअंगीकारकऱ्या ॥ तभी जाग्रत्अवस्थाविषेभी तिसीमनकूंही सुखदुःखकेभोगकाआश्रय मान्याचाहिये ॥किंवा॥ जो स्वप्नकेभोगकाआधारतौ मनअंगीकारकरिये ॥ और जाग्रत्केभोगकाआधार मनतैंभिन्नकोईदूसरा अंगीकारकरिये तौ स्वप्नतैंअनंतरजाग्रत्विषे पुरुषकूं याप्रकारकाप्रत्यभिज्ञाज्ञानहोवै है ॥ जोमैं स्वप्नविषेराजकेसुखकूंअनुभवकरताभया सोईहौंमैं अब जाग्रत्विषे एकांतकेसुखकूंअनुभवकरताहूं ॥ यहप्रत्यभिज्ञाज्ञान स्वप्नभोक्ताके तथा जाग्रत्भोक्ताके अभेदकूंविषयकरै है॥सोप्रत्यभिज्ञाज्ञान असंगतहोवैगा ॥ यातैं स्वप्नका तथाजाग्रत्का एकहीमनरूपभोक्ता मान्याचाहिये॥शंका ॥हेभगवन् जैसे आकाशादिकपंचसूक्ष्मभूतोंतैं प्राणोंकीउत्पत्तिभयी है यातैंप्राणजडहैं ॥ तैसे आकाशादिकपंचसूक्ष्मभूतोंतैं मनकीभीउत्पत्तिभयी है यातैंमनभीजडहै ॥ जडप्राणोंविषे भोगकीआधारता जैसे पूर्वआपनेखंडनकरी ॥ तैसे जडमनविषेभी भोगकीआधारतासंभवैनहीं ॥समाधान॥ हेबालाकि यद्यपि प्राणोंकीन्याईं मनभीअचेतनहै ॥ तथापि प्राणोंतैंमनविषेविशेषताहै ॥ काहेतैं आकाशादिकपंचभूतोंकेमिश्रितसत्वगुणतैं अंतःकरणकीउत्पतिभयी है ॥ यातैं मनप्रकाशकहै और आकाशादिकपंचभूतोंकेमिश्रितरजोगुणतैं प्राणकीउत्पत्तिभयी है॥यातैं प्राण प्रकाशकनहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे प्रदीप तथाघट दोनोंविषे जडताधर्मसमानहै॥तौभी प्रदीपकरिकैही घटकाप्रकाशहोवै है॥घटकरिकै प्रदीपकाप्रकाशहोवैनहीं ॥शंका ॥ हेभगवन् जडमनकूं जोप्रकाशकमानोंगे ॥ तौप्रदीपादिकोंकीन्याईं मनविषे बाह्यपणासिद्धहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेबालाकि मनकाजोवृत्तिरूपप्रकाशहै ॥ सो स्वतंत्रकिसीपदार्थकूंप्रकाशतानहीं॥किंतु चेत

नआत्माकेआभासकीअपेक्षाकरिकैही पदार्थोंकूंप्रकाशैहै ॥ और तिसचेतनआत्माकेआभासकूंग्रहणकरिकै सोमनकीवृत्तिरूपप्रकाश आपणेजडभावकूंपरित्यागकरैहै ॥ किंवा ॥ नानाप्रकारकेज्ञानवाला अंतःकरणहै यहजोशास्त्रविषेकहाहै ॥ सोभी चेतनकी अपेक्षाकरिकैही नानाप्रकारकेज्ञानवाला अंतःकरणसंभवै है ॥ तात्पर्ययह जोअंतःकरण स्वभावतैंहीचेतनहोवै ॥ तौ एकप्रकारकाहीज्ञान सर्वदाहोणा चाहिये॥और सर्वदाएकप्रकारकाज्ञानहोवैनहीं॥और अंतःकरणकूं जोचेतनकीअपेक्षामानिये ॥तौ सर्वदाएकप्रकारकेज्ञानकीआपत्तिरूपदोष होवैनहीं ॥ काहेतैं जिसकालविषे इच्छादिकोंतैंविलक्षण चेतनकेप्रतिबिंबग्रहणकरणेयोग्य अंतःकरणकीवृत्ति उत्पन्नभयी है॥तिसीकालविषे सोज्ञानहै॥अन्यकालविषेसोज्ञाननहीं॥इसप्रकार नानाज्ञान अंतःकरणविषेसंभवैं हैं॥ऐसेअंतःकरणविषे अविद्याजन्यतादात्म्यअध्यासरूपसंबंध करिकैस्थितहुआ यहपरमात्मा विज्ञानमयसंज्ञाकूंप्राप्तहोवै है॥और तिसअंतःकरणविषेस्थितहोइके यहआनंदस्वरूपआत्मा संपूर्णदेहादिकोंकूंप्रकाशकरै है॥याकारणतैं यहआनंदस्वरूपआत्मा पुरुषसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै॥ऐसेआनंदस्वरूपआत्माविषे अंतःकरणकापरिणामरूपदुःख जैसे वास्तवतैंनहीं॥तैसेअंतःकरणकापरिणामरूपसुखभी वास्तवतैं आत्माविषेनहीं ॥ याकहणेतैं यह अनुमानसिद्धहोवै है ॥ जन्यसुखजो है सो आत्माविषेवर्तैनहीं ॥ काहेतैं जडहोणेतैं तथापरिच्छिन्नहोणेतैं तथादृश्यहोणेतैं ॥ जो जो जडपरिच्छिन्न दृश्य वस्तु होवैं हैं॥सो आत्माविषेवास्तवतैंरहैंनहीं ॥ जैसे जडपरिच्छिन्नदृश्यरूपदुःख आत्माविषे वास्तवतैंरहैंनहीं॥किंवा॥सुखदुःखकीन्याईं सुखदुःखप्राप्तिकेसाधनभी जडपरिच्छिन्नदृश्यरूपहैं यातैं तेसाधनभी आत्माविषे वास्तवतैंरहैंनहीं ॥ यातैं कार्यकारणभावतैंरहित स्वयंप्रकाश आत्माहीं विज्ञानमयभोक्ताका वास्तवस्वरूपहै॥याअर्थका बालाकिकेप्रति बोधकरणेवासतै सोअजातशत्रुराजा याप्रकारकाविचार आपणेमनविषे करताभया॥याबालाकिने पूर्वहमारेउपदेशतैं यद्यपि प्राणोंतैंभिन्नकरिकै विज्ञानमयभोक्ताआत्माकूंजान्याहै॥तथापि विज्ञानमयभोक्तामिथ्याहै ॥ यातैं ताकेज्ञानतैं बालाकिकूं मोक्षकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ किंतु शुद्धआत्माकेज्ञानतैं मोक्षहोवै है ॥ यातैं आपणीप्रतिज्ञाके सत्यकरणेवासतै याबालाकिकेताईं विज्ञानमयभोक्ताकेवास्तवस्वरूपकाउपदेश कऱ्याचाहिये ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै सो अजातशत्रु

राजा विज्ञानमयभोक्ताविषे प्रश्नोंकूंकरताभया ॥ अब तिनप्रश्नोंकूंदिखावैं हैं ॥ हेबालाकि यासोयेहुएपुरुषकेउत्थानरूपव्यापारतैं तुमने विज्ञानमयकूं प्राणतैंभिन्नकरिकै तथाभोक्तारूपकरिकै जान्याहै ॥ परंतु यहविज्ञानमयभोक्ता किसदेशविषेस्थितहुआ शयनकूंकरताभया ॥१॥ और विज्ञानमयभोक्ताकेशयनका आधारकौनहै ॥२॥ और यहविज्ञानमयभोक्ता किसदेशतैंउठिकरिकै जाग्रत्अवस्थाविषेआया है ॥ ३ ॥ इसप्रकार विज्ञानमयभोक्ताविषे तीनप्रश्नोंकूं राजाकरताभया॥अब लोकोंकेव्यवहारकूंग्रहणकरिकै तिनप्रश्नोंकेपरस्परभेदकूंदिखावैं हैं ॥ लोकविषे शयनकरतापुरुष कदाचित् आपणेविषेस्थितहुआ शयनकूंकरै है ॥ जैसे खडाहुआपुरुष आपणेआश्रितहुआ शयनकूंकरै है॥और कदाचित् आपणेतैंभिन्नसिंहजाआदिकोंविषेस्थितहुआपुरुष शयनकूंकरै है॥यातैं शयनकरतापुरुषकेआधारकानियमनहीं॥ ॥शंका॥शयनकरतापुरुषकेआधारकाजोप्रथमप्रश्नहै सो यद्यपिसंभवै है॥तथापि शयनकाआधारकौनहै यहदूसराप्रश्नसंभवैनहीं ॥ काहेतैं जोशयनकरतापुरुषकाआधारहोवै है ॥ सोईही ताकेशयनकाभीआधारहोवै है ॥समाधान॥जोशयनकरतापुरुषकाआधारहोवै है॥सोईही ताकेशयनकरताआधारहोवै है ॥ यहलोकविषे नियमनहीं ॥ किंतु कहांतो शयनकरतापुरुषका तथाशयनकाएकही आधारहोवै है॥जैसे एकहीमंचकादिक शयनकर्तापुरुषका तथाताकेशयनका आधारहै ॥ और कहाँ शयनकर्तापुरुषका तथाताकेशयनका भिन्नभिन्नआधा रहोवै है ॥ जैसे शयनकर्तापुरुषकाआधारतौ मंचकादिकहैं ॥ और मंचकऊपरस्थितजोतूलकादिकहैं ॥ सो ताकेशयनकाआधारहै ॥ इसप्रकार शयनकर्तापुरुषकेआधारकूं तथाशयनकेआधारकूं लोकविषे भिन्नभिन्नमानैं हैं ॥ यातैं प्रथमप्रश्नकरिकै दूसराप्रश्न चरितार्थनहीं किंतु भिन्नहीदूसराप्रश्नसंभवै है ॥ शंका ॥ द्वितीयप्रश्नकूं प्रथमप्रश्नतैंभिन्नहुएभी तृतीयप्रश्नकूं द्वितीयप्रश्नतैंभिन्नतासंभवैनहीं ॥ काहेतैं जोशयनकाआधारहोवै है॥सोईही शयनकरतापुरुषकेआगमनकी अवधिहोवै है॥शयनकेआधारका जभी निश्चयहोवैगा॥तभीशयनकर्ता पुरुषकेआगमनकेअवधिकाभी निश्चयहोइजावैगा ॥ यातैं तृतीयप्रश्नव्यर्थ है ॥ समाधान ॥ जो शयनकाआधारहोवै है ॥ सोईही शयनकर्तापुरुषकेआगमनकीअवधिहोवै है ॥ यहनियमनहीं ॥ काहेतैं लोकविषे शयनकेआधारतौंभिन्नभी आगमनकीअवधि

कहाँदेख्या है ॥ जैसे मंचकऊपरसोयाहुआपुरुष मंचकतैं उठिकरिकैबाहरि आया है ॥ या प्रकार कोई लोक कहैं नहीं ॥ किंतु मंचकतैं उठिकारिकै गृहविषेस्थितहोइके तागृहतैंबाहरआया है याप्रकार लोक कथनकरैं हैं ॥ याप्रकारकेलोकोंकेव्यवहारतैं शयनकेआधा रमंचकतैं आगमनकाअवधिगृह भिन्नहींप्रतीतहोवै है ॥ यातैं द्वितीयप्रश्नकरिकै तृतीयप्रश्न चरितार्थनहीं ॥ किंतु द्वितीयप्रश्नतैंभिन्न ही तृतीयप्रश्नसंभवै है॥इसप्रकार सोअजातशत्रुराजा बालाकिकेप्रति शयनकर्ता विज्ञानमयभोक्ताकेस्वरूपबोधनकरणेवासतै तथास्वप्नसु षुप्तिरूपदोप्रकारशयनकेस्वरूपबोधनकरणेवासतै तथादोप्रकारकेशयनकाआधारबोधनकरणेवासतै तथाशयनकर्ताविज्ञानमयभोक्ताकेआ गमनकीअवधिबोधनकरणेवासतै बालाकिकेप्रति तीनप्रश्नोंकूं राजापूछताभया॥ इसप्रकार गुह्यअर्थकेबोधनकरणेहारे जेराजाकेतीनप्रश्न हैं तिनोंकूंश्रवणकारिकै सोबालाकि तिनप्रश्नोंकेउत्तरदेणेवासतै आपणेचित्तविषे बहुतवारविचार करताभया॥परंतुतिनराजाकेप्रश्नोंकेउत्तरकूं किंचित्मात्रभी सोबालाकि नं जाणताभया इसप्रकार बालाकिकेअज्ञानकूंदेखिकरिकै सो अजातशत्रुराजा आपणेप्रतिज्ञाकेसत्यकरणेवा सतै तिनप्रश्नोंकेउत्तरकूंकहताभया ॥ कैसासोउत्तर है बालाकिकेसर्वसंशयोंकूं निवारणकरणेहारा है॥ तहाँस्वप्नअवस्थाविषेविज्ञानमयभो क्ताकेस्वरूपकास्पष्टबोधकरणेवासतै प्रथम स्वप्नसुषुप्तिरूपदोप्रकारकेस्वप्नकूंदिखावैं हैं॥हेबालाकि याभोक्तापुरुषकाशयन दो प्रकारकाहो वैहै ॥ एकतौ स्वप्नरूपशयनहोवै है ॥ और दूसरा सुषुप्तिरूपशयनहोवै है ॥ तहाँ प्रथमस्वप्नरूपशयनकूं तुम श्रवणकरो ॥जाग्रत्अवस्था विषे यहआत्मा अंतःकरणविषेजोचेतनकाआभास ताआभासरूपविज्ञानकारिकै नेत्रादिकइंद्रियोंकेताईं आपणेआपणेरूपादिकविषयोंके ग्रहणकरणेकी सामर्थ्यकूंदेवै है ॥ याकारणत जाग्रत्अवस्थाविषे यहआत्मा चक्षुमय श्रोत्रमय इत्यादिकसंज्ञाकूंप्राप्तहोवै है ॥ यातैं जाग्रत् अवस्थाविषे विज्ञानमयभोक्ताका स्पष्टभानहोवैनहीं ॥ और स्वप्नरूपशयनकेसन्मुखहुए सो विज्ञानमयभोक्ताआत्मा नेत्रादिकोंकेसामर्थ्य कूंउपसंहारकारिकै शयनकूं प्राप्तहोवै है ॥ तिस स्वप्नकालविषे यह भोक्ता आत्मा चक्षुमय श्रोत्रमय इत्यादिक नामोंकापरित्यागकरिकै केवलविज्ञानमयसंज्ञाकूंप्राप्तहोवै है ॥ तात्पर्य यह॥ तिससमयविषे शयनकर्ताविज्ञानमयभोक्ताकास्वरूप नेत्रादिकइंद्रियोंतैंभिन्नहो

इके प्रतीतहोवे है ॥ इसप्रकार शयनकर्तोविज्ञानमयभोक्ताकेस्वरूपकूंकहिकरिकै अब ताकेआधारकूंदिखावें हैं॥ हेबालाकि यहविज्ञानमयभोक्ताआत्मा स्वप्नविषे हितानामानाडियोंविषेस्थितहुआ शयनकूंप्राप्तहोवे है॥अथवा हृदयविषेस्थितहुआ यहविज्ञानमयभोक्ताआत्मा शयनकूंप्राप्तहोवे है ॥ अथवा पुरीतत्विषे स्थितहुआ यहभोक्ताआत्मा शयनकूंप्राप्तहोवे है ॥ इसप्रकार भिन्नभिन्नश्रुतिवाक्योंकेअनुसार शयनकर्तापुरुषकेआधारकूंकहिकरिकै अब हृदयकेस्वरूपकूं तथापुरीतत्केस्वरूपकूं तथाहितानामानाडियोंकेस्वरूपकूं स्पष्टकरिकै दिखावें हैं ॥ तहाँ संपूर्णप्राणियोंका उदर तथाउरस्थान छिद्रकरिकैयुक्तहोवे है॥ताउदर तथाउरस्थानके मध्यदेशविषे नीचेहैमुखजिसका तथा चित्तके निवासकास्थान ऐसाजो मांसमयकमल है ताकूं हृदयकहें हैं ॥ और तिसहृदयकूंचारों ओरतैं वेष्टनकरणेहाराजो सर्पाकार चर्म है जाकूं लोकविषे आंद्राकहैं हैं ताकानाम पुरीतत् है ॥ आपणे हृदयका तथापुरीतत्काज्ञान किसीभी प्राणीकूं नेत्रोंकरि कैहोवे नहीं ॥ किंतु अन्य किसी प्राणीके उदरका भेदन हुए ताकें हृदयका तथा पुरीतत्काज्ञान अन्य पुरुषकूं नेत्रोंकरिकै होवे है ॥ अब नाडियोंकूं दिखावें हैं ॥ सहस्र विभागकूं प्राप्त भया जो एककेश ॥ ताकेशके एक विभागका जितना परिमाण होवे है ॥ तिसपरिमाणकेसमानहैपरिमाणाजिनोंकाऐसियाँ अनंतनाडियांहृदय देशविषेरहैं हैं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे सूत्रकरिकै रचित जो जाल है ॥ तिसकेप्रथमग्रन्थितैं अनंतसूत्रोंकानिर्गमनहोवे है ॥ तैसे हृदयदेशतैं अनंतनाडियोंकानिर्गमनहोवे है॥तहाँ प्रश्नउपनिषद्विषे जितनीनाडियोंकी संख्याकही है तिससंख्याकूं अबदिखावे हैं॥ जैसे एकहीवृक्षतैं प्रथमस्थूलस्कंधनिकसैं हैं॥ तिनस्कंधोंतैं अन्यथोंकचित्स्थूलशाखानिकसैहैं ॥ और तिनस्थूल शाखावोंतैं अत्यंत सूक्ष्म अन्य शाखानिकसैं हैं ॥ तैसे हृदयरूप एक वृक्षतैं स्थूलस्कंधोंके समान एक उपरिशत १०१ नाडियांनिकसैं हैं ॥ और तिनस्कंधरूपनाडियोंविषे एकएकनाडीतैं किंचित्स्थूलशाखाकेसमान एक एकशत १०० नाडियां निकसैं हैं ॥ और तिनएकएकशतसर्वनाडियोंविषे एकएकनाडीतैं अत्यंतन्यूनशाखाकेसमान बहत्तरिसहस्र ७२००० नाडियाँनिकसैं हैं ॥ तिनसर्व नाडियोंकी मिलिकै इतनी संख्या होवे है ॥ बहत्तरिकोटि बहत्तरिलक्ष दशसहस्र दोशत एक इतनी नाडियाँ हृदयरूप वृक्षतैं

॥ १४ ॥

निकसैंहैं ॥ और अन्नकापरिणामजोरस है ॥ तारसकरिकै तेसर्वनाडियाँ पूर्णहोवे हैं ॥ तिनोंविषेभी कईकनाडियाँ पिंगलरसकरिकैपूर्ण हैं ॥ और कईक शुक्लरसकरिकै पूर्ण हैं॥और कईकनाडियां कृष्णरसकरिकैपूर्ण हैं॥और केईक नाडियां पीतरसकरिकैपूर्णहैं॥और केईक नाडियां लोहितरसकरिकैपूर्ण हैं ॥ ऐसेरसोंकीसूक्ष्मताकूंविचारिकरिकैभी हमारामन मोहकूंप्राप्तहोवे है ॥ तात्पर्ययह ॥ जोवस्तु जिसकेभीतर प्रवेशकरेहै ॥ सोवस्तु तिसकीअपेक्षाकरिकैसूक्ष्महोवे है ॥ जैसे पुरुष आपणेगृहविषेप्रवेशकरे है ॥ यातैं गृहकीअपेक्षाकरिकै पुरुष सूक्ष्म है ॥ तैसे प्रथमतो नाडियांहीं अत्यंतसूक्ष्म हैं॥तिननाडियोंविषेभी जोअन्नकापरिणामरूपरसप्रवेशकरे है॥तारसकीसूक्ष्मताविषे कोईभी दृष्टांत हम देखतेनहीं ॥ इसप्रकार हृदयदेशतैंनिर्गमनभयीआं जेसूक्ष्मनाडियां हैं॥ ते पादतैंलेकरिकैमस्तकपर्यंत सर्वशरीरकूंव्याप्यकरिकै रहैहैं दृष्टांत ॥ जैसे वृक्षकेपर्णोंकूं शंकु व्याप्यकरिकैरहे है ॥ ऐसे सूक्ष्मनाडियोंविषे सर्वइंद्रियोंकाउपसंहारकरिकै मन प्राप्तहोवे है ॥ सोकैसामनहै ॥ धर्मअधर्मरूपपाशकरिकैबंध्याहुआ है ॥ और नानाप्रकारकेसंस्कारोंकरिकैयुक्त है ॥ और स्वप्नअवस्थाविषे द्रष्टा दर्शन दृश्य यात्रिपुटीरूपकरिकै स्थितहोवे है ॥ और साक्षीचेतनकरिकैप्रकाश्यमानहै ॥ ऐसा मन जभी नाडियोंविषेप्रवेशकरेहै॥तभी विज्ञानमयभोक्ताआत्मा आपणेमायाकेबलकरिकै तथापूर्वपूर्वसंस्कारोंकीसहायतातैं अनंतप्रकारकेपदार्थोंकूं तहांदेखे है ॥ स्वप्नविषे कदाचित् भिक्षुकपुरुष महाराजाहोवे है ॥ और कदाचित् महाराजाभी स्वप्नविषे भिक्षुकहोवे है ॥ और स्वप्नविषे कदाचित् नीचजातिवाला चांडालभी उत्तमब्राह्मणहोवे है ॥ और कदाचित् उत्तमब्राह्मणभी स्वप्नविषे चांडालहोवे है ॥ और स्वप्नविषे कदाचित् हिरण्यगर्भभी स्थावर तथाग्रामशूकर तथाकृमि होवे है ॥ और कदाचित् स्वप्नविषे स्थावर तथाग्रामशूकर तथाकृमिभी प्रजापतिहोवे है ॥ इसप्रकार मायाकरिकैमोहितहुआदेहधारीजीवपुण्यपापकर्मके अनुसार स्वप्नविषे उच्चशरीरोंकूं तथानीचशरीरोंकूं प्राप्तहोवे है ॥ अब जाग्रतके तथास्वप्नके समानताकूं दिखावें हैं ॥ हेबालाकि जैसे मायाकरिकै स्वप्नविषे रथादिकपदार्थ प्रतीतहोवें हैं ॥ वास्तवतैं तहाँ रथादिकपदार्थहैंनहीं ॥ जोस्वप्नकेपदार्थवास्तवहोवें ॥ तौ जाग्रत्विषेभी प्रतीतहोणेचाहिये ॥ आर जाग्रत्विषे प्रतीतहोवैंनहीं ॥ यातैं

॥ १४ ॥

स्वप्नकेपदार्थ मिथ्या हैं ॥ तैसे जाग्रत्केपदार्थभी मायाकरिकैप्रतीतहोवैं हैं वास्तवतैं हैं नहीं ॥ जो जाग्रत्केपदार्थ वास्तवतैं होवैं ॥ तौ समाधिकालविषेभी तत्त्ववेत्ताकूं प्रतीतहोणे चाहिये ॥ और समाधिकालविषे तत्त्ववेत्ताकूं पदार्थ प्रतीतहोवै नहीं ॥ यातैं स्वप्नकी न्याईं जाग्रत्केपदार्थभी मिथ्याहैं ॥ किंवा ॥ जैसे स्वप्नविषे आपणेआत्माकाअज्ञान जीवोंकूंहोवै है ॥ तैसे जाग्रत्विषेभी जीवोंकूंआत्मा काअज्ञानहै॥ यातैंभी जाग्रत्स्वप्नदोनोंतुल्य हैं॥किंवा॥जैसे स्वप्नविषे पदार्थोंकाविपरीतभानहोवै है ॥ तैसे जाग्रत्विषेभीपदार्थोंकाविपरी तभानहोवै है ॥ यातैं भी जाग्रत्स्वप्नदोनोंतुल्यहैं ॥शंका॥ जाग्रत्स्वप्नदोनोंकीतुल्यता संभवैनहीं॥ काहेतैं स्वप्नकेपदार्थोंकी अल्पकाल विषेस्थितिहोवै है ॥ और जाग्रत्केपदार्थोंकी दीर्घकालविषेस्थितिहोवै है ॥ समाधान ॥ जैसे जाग्रत्विषे धन वस्त्र तृणादिक सकलजड पदार्थ पार्थिवत्व रूपकरिकैप्रतीतहोवैं हैं॥ तैसे स्वप्नविषेभी धनादिकपदार्थ पार्थिवत्वरूपकरिकैप्रतीतहोवैं हैं॥और जैसे जाग्रत्विषे धना दिकजडपदार्थ अस्तिरूपकरिकैप्रतीतहोवैं हैं ॥ तैसे स्वप्नविषेभी धनादिकजडपदार्थ अस्तिरूपकरिकैप्रतीतहोवैं हैं ॥ यातैं जाग्रत्स्वप्न दोनोंसमानहैं॥ और जाग्रत्पदार्थोंविषे चिरकालस्थायित्व॥ तथा स्वप्नपदार्थोंविषे अल्पकालस्थायित्व ॥यहदोनोंविशेषधर्म अज्ञानकरि कैकल्पित हैं॥यातैं तिनकल्पितधर्मोंतैं जाग्रत्स्वप्नकेपदार्थोंकीविलक्षणता सिद्धहोवैनहीं॥किंवा जैसेस्वप्नअवस्थाविषेएकही स्वप्नद्रष्टापुरुष अज्ञानरचितनानाप्रकारकेपदार्थोंकूंदेखै है ॥ तैसे जाग्रत्अवस्थाविषेभी एकही आनंदस्वरूपआत्मा अज्ञानरचितअनंतपदार्थोंकूंदेखैहै॥ यातैंभी जाग्रत्स्वप्नदोनोंसमानहैं॥इसप्रकारस्वप्नअवस्थाकानिरूपणकरिकै पुनःसोअजातशत्रुराजाकहताभया॥हेबालाकियास्वप्नअवस्था विषे शयनकर्तावि़ज्ञानमयभोक्ताकास्वरूप स्पष्टकरिकै हमनैं तुम्हारेप्रतिदिखाया ॥ सोविज्ञानमय भोक्ता प्राणतैं भिन्न है ॥ काहेतैं जैसे राजाकीपुरीकीरक्षाकरणेहाराभृत्य राजातैं भिन्नहोवै है॥ तैसे यह प्राणभी भृत्यकीन्याईं स्थूलशरीररूपपुरीकीरक्षाकरै है॥और विज्ञानमय भोक्ताआत्मा महाराजाकीन्यांई प्राणादिकसकलजडपदार्थोंकूं आपणेआपणेकार्यविषे प्रवर्तकरैहै॥ यातैं ताविज्ञानमयभोक्तातैंप्राणभिन्नहै ॥ १६ ॥

निमित्ततैं आपणे देशोंविषेविचरै है॥ तैसेयहविज्ञानमयभोक्ताभीस्थूलशरीररूपपुरीकीरक्षावासतैंप्राणरूपप्रधानमंत्रीकूंस्थापनकरिकैमनस हितसर्वइंद्रियोंकूंग्रहणकरिकै आपणीइच्छापूर्वक याकलेवरविषेभ्रमणकरै है ॥ तात्पर्ययह ॥ अज्ञानरचितअनेकपदार्थोंकूंदेखे है॥इसप्रकार स्वप्नरूपप्रथमशयनकूंनिरूपणकरिकै ॥ अब सुषुप्तिरूपद्वितीयशयनकूंनिरूपणकरैं हैं॥ हेबालाकि इसप्रकार नाडीआदिकोंविषेविचरताहु आसोमन जिसकालविषेआपणेकारणरूपअज्ञानविषे लयभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ तभीयहआत्मादेव परिपूर्णतारूपजोदूसरासुषुप्तिरूपशयन है ताकूंप्राप्तहोवै है ॥ तात्पर्ययह ॥ चेतनविषेजोपरिच्छिन्नता है॥सोवास्तवतैंनहीं॥किंतु परिच्छिन्नताउपाधिकेसंबंधतैं चेतनविषेपरिच्छि न्नताहोवै है ॥ यहां अतःकरणविशिष्टचैतन्यकानाम विज्ञानमयभोक्ता है॥सोअंतःकरण जाग्रत्विषे तथास्वप्नविषे रहै है॥यातैं जाग्रत्विषे तथास्वप्नविषे विज्ञानमयभोक्ताआत्माकीपरिच्छिन्नता निवृत्तिहोवैनहीं ॥ और सुषुप्तिविषे अंतःकरणकाअज्ञानविषेलयहोवै है ॥यातैं सो विज्ञानमयभोक्ताआत्मापरिच्छिन्नभावकूंपरित्यागकरिकै सत्यपरमात्माकेसाथअभेदरूपपूर्णताकूं प्राप्तहोवै है॥अब सुषुप्तिरूपद्वितीयशयन केआधारकूंनिरूपणकरैं हैं ॥ सोविज्ञानमयभोक्तातिसनाडीरूपद्वारकरिकै हृदयकमलकेअंतरस्थित परमात्मारूपमहान्आकाशकूं प्राप्त होवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ परिच्छिन्नभावकूंपरित्यागकरिकैमायाविशिष्टपरमात्माकेसाथअभेदरूपपरिपूर्णताकूंप्राप्तहोवैहै ॥ याकरणेकरिकै विज्ञानमयभोक्ताकेद्वितीयशयनकाआधार मायाविशिष्टपरमात्मा दिखाया ॥ और तिसमायाविशिष्टपरमात्माविषेही नेत्रादिकसर्वइंद्रियों करिकैसहितमनकालयहोवै है ॥ तात्पर्ययह ॥ कारणविषेहींकार्यकालयहोवै है यहनियम है ॥ मायाविशिष्टपरमात्माहीं इंद्रियादिकसकल प्रपंचकाउपादानकारण है॥यातैं सुषुप्तिविषे तिसमायाविशिष्टपरमात्माविषे इंद्रियादिकोंकालय संभवै है॥दृष्टांत ॥जैसे समुद्रकाजलहीघनी भूतहुआ लवणभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ यातैं समुद्रकाजल लवणकाकारण है ॥ तिसकारणरूपसमुद्रकेजलविषे प्राप्तहुआलवणकापिंड लयभा वकूंप्राप्तहोवै है ॥ तैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे इंद्रियसहितमन परमात्मारूपकारणविषे लयभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ किंवा ॥ जैसे पटविषेलिखेहुए चित्रपटके संकोचकियेहुए लयभावकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ तैसे मनकेलयहुए मनकरिकैकल्पितसर्वपदार्थोंकालयहोवै है॥ तिसकालविषे सर्व कार्य

प्रपंचतैं रहितहुआ एकअद्वितीयपरमात्मा परिशेषतैं रहै है ॥ शंका ॥ हे भगवन् सुषुप्तिअवस्थाविषे यद्यपि कार्यप्रपंचकालय होवै हैं ॥ तथापि अज्ञानरूपकारण तहांविद्यमान है ॥ यातैं सुषुप्तिविषे परमात्माकूं अद्वितीयरूपतासंभवैनहीं ॥ समाधान ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे यद्यपि अज्ञान है ॥ तथापि ताअज्ञानका स्पष्टरूपकरिकै तहाँभानहोवैनहीं॥यातैं न हुएकेसमान है॥ अब याहीअर्थकूंलोकप्रसिद्धदृष्टांत करिकैस्पष्टकरैं हैं ॥ जैसे कोईयुवाअवस्थावान् कामीपुरुष चिरकालकेपीछेआपणेगृहविषेआवै ॥ और अत्यंतरूपवाली तथाषोडशवर्षके आयुष्यवाली जो आपणीप्रियस्त्री है ॥ ताकेसाथआलिंगनकरिकैमाघमासाविषे मंदिरविषेशयनकरै ॥ तिसकालविषे सोकामीपुरुष आनंद करिकैपरिपूर्णहुआ बाह्यपदार्थोंकूं तथाअंतरपदार्थोंकूं किंचित्मात्रभी नहींजाणता ॥ और तिसकालविषे आपणेकूं तथाप्रियस्त्रीकूं देखता हुआभी नहीं देखता ॥ तैसे यहविज्ञानमयभोक्ताभी सुषुप्तिविषे परमात्माकेसाथतादात्म्यभावकूंप्राप्तहोइकै आपणेविषेस्थितमायाकूंभी नहींजाणता ॥ किंतु अज्ञानकीवृत्तियोंकरिकै केवलआपणेस्वरूपआनंदकूंहीं अनुभवकरै है॥ याकारणतैं श्रुतिविषे ताकूं आनंदभुक्कह्या है ॥ किंवा ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे जभी यहविज्ञानमयभोक्ता विद्यमानमायाकूंभी नहीं जानता ॥ तभी लयभावकूंप्राप्तहुए जे मायाकेकार्य स्वप्नपदार्थ तथाजाग्रत्केपदार्थ तिनोंकूं कैसेजाणेगा॥ किंतु किसीपदार्थकूंभी तहाँ नहींजाणता॥ केवल आनंद करिकैपरिपूर्ण होवै है ॥ अब सुषुप्तिविषेदुःखकीनिवृत्तिकूं तथापरमानंदकीप्राप्तिकूं कुमार तथामहाराजा तथामहाब्राह्मण यातीनदृष्टांतों करिकै निरूपणकरैं हैं ॥ अथकुमारदृष्टांत ॥ अन्नादिकोंकेभक्षणकरणेमेंअसमर्थ जोबालक है॥ तिसबालककूं माता गलपर्यंत दुग्धपानकराइकै मत्कुणतथायूकादि कीटैंरहित कोमलआसनऊपर शयनकरावै है ॥ ताआसनविषेसोयाहुआ सोबालक परमआनंदकूंप्राप्तहोवै है॥और सुखतैंहँसै है ॥ और आनंदकरिकैपरिपूर्णहुआसोबालक आपणेसमीपवर्तीमातापितादिकोंकूं देखताहुआभीनहींदेखै है ॥ केवलआनंदकरिकैपरिपूर्ण होवै है ॥ तैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे यहविज्ञानमयभोक्ता परमआनंदकीप्राप्तिकरिकै सर्वदुःखोंतैंरहितहोवै है ॥ और तिसकालविषे आनंदकरिकैपरिपूर्णहुआ यहविज्ञानमयभोक्ता मायाकूंदेखताहुआभीनहीं देखै है ॥ अब महाराजाकेदृष्टांतकूंदिखावैं हैं ॥ जैसे नानाप्रकारकेधनकरिकैपूर्ण

॥ १६

तथाशत्रुवोंतैं रहित जो संपूर्ण पृथ्वी है॥तापृथ्वीकाराज जिसकूं प्राप्तहोवै ॥ और शरीर जिसकास्थूलहोवै ॥ और अत्यंतबलवान् होवै और युवा अवस्था करिकै युक्त होवै और सर्वरोगोंतैं रहित जिसका शरीर होवै ॥ और रूपकरिकै युक्त होवै ॥ और हस्तपादादिक अंगोंकी उज्वलतारूप लावण्यकरिकै युक्त होवै ॥ और जगत् विषे जिसकी कीर्ति होवै ॥ और धर्मकरिकैसंपन्नहोवै॥ और वेदोंकूं तथावेदके अंगोंकूं जानणे हारा होवै ॥ और मनके हरणकरणे हारियां जे अनंतस्त्रियांहैं तिनोंकरिकै सेवित होवै ॥ और तिन स्त्रियों करिकै गानकरेजेमधुरगीत हैं तथा नानाप्रकारकेवादित्रोंकेजेशब्द हैं तिनोंकरिकैसेवितहोवै और ब्राह्मणोंके तथा चारणबंदीजनोंके जेजयशब्दहैं तथाआशीर्वादहैं तिनोंकरिकै सेवित होवै ॥ और पिताकेसमानगुणवाले तथापितामाताकेभक्त ऐसे जेअनेकपुत्रहैं तिनपुत्रोंकरिकैसेवित होवै॥इस प्रकारके सर्वगुणोंकरिकैसंपन्न जोमहाराजाहै॥सो सर्वभोगोंकीप्राप्तिकरिकै जैसे परमानंदकूंप्राप्तहोवै है॥ तैसे यहविज्ञानमयभोक्ता सुषुप्तिविषे परमआनंदकूंप्राप्तहोवै है ॥ और जैसे सोमहाराजा किंचित्मात्रभी दुःखकूंनहींजानता ॥ तैसे यह विज्ञानमयभोक्ता सुषुप्तिविषे किंचित्मात्रभी दुःखकूंनहीं जानता॥ तात्पर्य यह ॥ इच्छाके विषय जेस्त्रीधनादिकपदार्थ हैं॥ तिनपदार्थोंकी जब नहीं प्राप्तिहोवै है॥तब ताइच्छातैंअनंतदुःखोंकीउत्पत्तिहोवै है॥तिनदुःखोंसेनिवृत्तिकेदोउपायहैं॥एकतो तिनस्त्रीधनादिकपदार्थोंकीप्राप्ति तिनदुःखोंकोनिवृत्तिका उपायहै ॥ और दूसरीइच्छाकीनिवृत्ति तिनदुःखोंकीनिवृत्तिकाउपायहै ॥ तहाँ महाराजारूपदृष्टांतविषेतौ सर्वपदार्थोंकीप्राप्तिकरिकै दुःखोंकाअभाव है ॥ और सुषुप्तिमेंविज्ञानमयभोक्ताविषेतौ इच्छादिकसर्वविक्षेपकीनिवृत्तितैं सर्वदुःखोंकाअभाव है॥ अब महाब्राह्मणरूपदृष्टांत कूंनिरूपणकरैं हैं॥तहाँ प्रथम महाब्राह्मणकेस्वरूपकूंदिखावैं हैं ॥ नेत्रादिकबाह्यइंद्रियोंकूं तथाअंतरमनादिकोंकूं जिसनेवशकऱ्याहै ॥ और सर्वइच्छावोंकाजिसनेपरित्यागकऱ्याहै॥और यथालाभविषे जोसंतोषवालाहै॥और शरीरकरिकैतथामनकरिकै तथावाणीकरिकै दुष्टजनोंनें कऱ्याजोअपकार तिसअपकारकूंजाणताहुआभी जोपुरुष याप्रकारकामनाविषेविचारकरिकै तिनदुष्टपुरुषोंकेसाथ द्वेषकूंनहींकरै है ॥ उलटा तिनोंऊपर उपकारकूंकरै है॥अब ताकोविचारकूंदिखावैं हैं॥जो दुःख तथाअपमानादिक आपणेकूंप्रतिकूलहोवै है॥ तिसदुःखकूं तथाअपमा

नादिकोंकूं जोपुरुष शरीरकरिकै तथामनवाणीकरिकै अन्यकिसीप्राणीविषेकरै है॥सोदुःख तथाअपमानादिक करणेहारेपुरुषकूंहीं इसलोक विषे तथापरलोकविषे प्राप्तहोवै हैं ॥ इसप्रकार आपणेकूंअनुकूलजोसुख है तिस सुखकीप्राप्ति जोपुरुष अन्यप्राणीविषेकरै है॥ तिसकरणे हारेपुरुषकूं इसलोकविषे तथापरलोकविषे तासुखकीप्राप्तिहोवै है॥यातैं पुरुषनैं किसी प्राणीकेदुःखकीइच्छानहींकरणी ॥ किंतु सर्वप्राणि योंके सुखकी इच्छाकरणी ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै जोपुरुष किसीप्राणीकूंदुःख नहींदेवै है॥किंतु सर्वप्राणीयोंकूंसुखदेवै है॥ और सर्ववेदोंकेअर्थकूं जो जाणै है ॥ और जो परनिंदातैंरहितहै॥और आपणेदोषोंविषे सर्वदाजिसकीदृष्टि है॥और दुष्टप्राणियोंकेसंगतैंजोरहित है॥ और आत्मातैंभिन्नसकलजगत्अनित्यहै॥और आत्माहीएकनित्यहै॥याप्रकारकेनित्यअनित्यविवेककरिकै जोपुरुष सर्वदायुक्तहै॥और पूर्व पक्षतर्कविषेतथासिद्धांततर्कविषे जोपुरुष अतिकुशल है ॥ और इसलोकविषे तथापरलोकविषे स्थित जेनानाप्रकारकेअन्नपानादिकपदार्थ तथामनोहरस्त्रियां तथा शब्द स्पर्श रूप रस गंध यहपंचप्रकारकेविषय॥तिनसंपूर्णोंकूं वमनकरे हुएअन्नकीन्याईं देखताहुआजोपुरुष तिन विषयोंविषे इच्छानहींकरै है॥और स्थूलशरीरका तथासूक्ष्मशरीरका अभिमानकरणेहारे जितनेप्राणी हैं॥तिनोंकूं पुण्यपापकेवशतैं सुखकी प्राप्ति तथादुःखकीप्राप्ति अवश्यहोवै है॥याप्रकारकीदोषदृष्टिकरिकै जोपुरुष स्थूलसूक्ष्मशरीरतैंमुक्तहोणेकीइच्छाकरै है ॥ और जोपुरुष ब्रह्मचर्यआश्रमका अथवा गृहस्थआश्रमका अथवा वानप्रस्थआश्रमका परित्यागकरिकै तथाविधिपूर्वकाशिखासूत्रकापरित्यागकरिकैदंडा दिकग्रहणपूर्वक संन्यास आश्रमकूं ग्रहणकरिकै आत्मज्ञानकी प्राप्तिवासतै श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुकेसमीप जावै है ॥और गुरुकेमुखारविंदतैं उच्चारणहुएजेवेदोंकेवचन तिनवचनोंका अद्वितीयब्रह्मविषेतात्पर्यकानिश्चयरूपश्रवणकूं करिकै तथा श्रवणकरेहुएअर्थविषे नानाप्रकारकी युक्तियोंकरिकैविरोधकापरिहाररूपमननकूंकरिकै तथा ताअर्थविषेचित्तकीएकाग्रतारूपनिदिध्यासनकूंकरिकै जोपुरुष मैंब्रह्महूं याप्रकारके साक्षात्कारकूं प्राप्त होवै है ॥ इस प्रकार इंद्रियोंके निग्रहतैं आदिलैके तत्वसाक्षात्कारपर्यंत कथन करे जे शुभगुण तिनशुभगुणोंकरिकै युक्त जो पुरुष है ताकूं महाब्राह्मण कहैं हैं ॥ ऐसा महाब्राह्मण जैसे रागद्वेषादिकोंतैं रहित हुआ परमआनंदकूं प्राप्तहोवै है ॥ तैसे सुषुप्ति

अवस्थाविषे यह विज्ञानमय भोक्ता परमआनंदकूं प्राप्त होवै है ॥ और जैसे या प्रकारके महा ब्राह्मणविषे अनर्थकेकरणेहारेरागद्वेषादिक नहीं रहैं हैं ॥ तैसे सुषुप्तिअवस्था विषे याविज्ञानमय भोक्ताविषेभी अनर्थकेकरणेहारे रागद्वेषादिकनहीं रहैं हैं॥ तात्पर्ययह॥रागद्वेषादिक सकलधर्म अंतःकरणकेहैं ॥ सोअंतःकरण सुषुप्तिविषे लयभावकूंप्राप्त होवै है॥यातैं ताकेधर्मरागद्वेषादिक सुषुप्तिविषेहोवैनहीं ॥ किंवा ॥ जिन पदार्थोंविषे सुखसाधनताज्ञानहोवै है॥तिनपदार्थोंविषे रागहोवै है॥सुखसाधनता ज्ञानतैं विना रागहोवैनहीं॥ यातैं सुखसाधनताज्ञान रागकाकारणहै॥और जिनपदार्थोंविषे दुःखसाधनताज्ञानहोवै है॥तिनपदार्थोंविषे द्वेषहोवै है ॥ दुःखसाधनताज्ञानतैंविना द्वेषहोवैनहीं ॥ यातैं दुःखसाधनता ज्ञान द्वेषकाकारण है॥सो सुखसाधनता ज्ञान तथादुःखसाधनताज्ञान किसी पदार्थविषे तत्ववेत्तामहाब्राह्मणकूंहैनहीं॥ काहेतैं अद्वितीयआत्मातैं भिन्नसकल प्रपंचकूं जिसने शशशृंगकी न्याईं असत्यजान्याहै॥ असत्यवस्तुविषे सुखकीसाधनता तथादुःखकी साधनता संभवैनहीं ॥ यातैं पूर्वउक्तमहाब्राह्मणविषे रागद्वेषसंभवैनहीं॥ तैसे सुषुप्तिअवस्थाविषेभी अंतःकरणकेलयहुए सुखसाधनता ज्ञान तथादुःखसाधनता ज्ञान किसी पदार्थविषे सुषुप्त पुरुषकूँ होवैनहीं ॥ यातैं ताकेविषेभी रागद्वेषकाअभाव संभवै है ॥ इसप्रकार सुषुप्तिरूप द्वितीयशयनका निरूपण करिकै पुनःसो अजातशत्रुराजा कहता भया ॥ हे बालाकि शयनकर्तापुरुषकाकौनआधार है याप्रथमप्रश्नका तथा शयनका कौन आधारहै या द्वितीय प्रश्नका यह उत्तर हमनैं कह्या॥परमात्मारूप आकाशही शयनकर्ताविज्ञानमयभोक्ताका तथासु षुप्तिरूप शयनका आधार है॥तिस परमात्मातैं भिन्नकोईभी तिनोंका आधार नहीं॥ और हेबालाकि विज्ञानमयभोक्ताका जो परमात्मा के साथ अभेद है॥तथा अंतःकरणादिकोंका जो ताकेविषेलय है॥यहही शयनकास्वरूपहै॥ और जैसे घटाकाश महाकाशतैंभिन्ननहीं ॥ किंतु घटाकाश महाकाशस्वरूपहै ॥ तैसे हमनैं तुमारे ताईं कथनकऱ्या जो विज्ञान मयभोक्ता सो परमात्मातैं भिन्न नहीं ॥ किंतु परमा त्मास्वरूपहै ॥ और सो परमात्माही सर्व प्राणियोंविषे व्याप्य करिकै प्रकाश करै है ॥ या कारणतैंहीं श्रुतिविषे तापरमात्माकूं आकाश कह्या है ॥ और हे बालाकि जैसे घटमठादिक अनेक उपाधियोंविषे स्थित हुआभी आकाश सर्वत्र आकाशरूप करिकै प्रतीत होवै है ॥

या कारणतैं आकाश एक है तैसे तुमारा आत्मा तथा हमारा आत्मा तथा अन्य किसी प्राणीकाआत्मा मैंआपणेस्वरूपकूं नहीं जाणता तथाअन्यकूं मैं नहींजाणता याप्रकार अज्ञानकाआश्रयरूपहुआप्रतीतहोवै है॥ और मैं सुखपूर्वकशयनकरताभया याप्रकारसुषुप्तिकासाक्षी रूपकरिकै प्रतीतहोवै है॥यातैं सर्वप्राणियोंविषे एक आत्मा अनुगत है॥और हेबालाकि यद्यपि जाग्रत् अवस्थाविषे तथास्वप्न अवस्थाविषेभी आत्माकीवास्तवतैं एकरूपताही है॥तथापि जाग्रत्अवस्थाविषे तथास्वप्नअवस्थाविषे अंतःकरणकरिकैविशिष्टहुआआत्मा विज्ञानमय भावकूंप्राप्तहोवै है यातैं सोविज्ञानमयभावही जाग्रत्स्वप्नविषे आत्माकेभेदकाकारणहै॥और सुषुप्तिअवस्थाविषे आपणेकार्यसहितअंतःकरणका अज्ञानविषेलयहोवै है॥यातैं सुषुप्तिअवस्थाविषे आत्माकाभेदहोवैनहीं॥दृष्टांत ॥जैसेघटमठादिरूपउपाधियोंकेविद्यमानहुएही आकाशकाभेद प्रतीतहोवै है॥और घटमठादिकउपाधियोंकेनाशहुए आकाशविषेभेद प्रतीत होवै नहीं॥ तैसे अंतःकरण तथावाक्आदिक इंद्रिय जाग्रत्स्वप्नविषे आत्माकेभेदकरणेहारे हैं॥तेमनसहितसर्ववाक्आदिकइंद्रिय सुषुप्तिअवस्थाविषेपरमात्माविषे लयभावकूंप्राप्तहोवै हैं॥ यातैं सुषुप्तिअवस्थाविषे एक अद्वितीयपरमात्मारहै है ॥शंका॥ हे भगवन् सुषुप्तिअवस्थाविषे यद्यपि अंतःकरणादिककार्य नहीं है॥तथापि कारणरूप अज्ञान तहां विद्यमान है॥यातैं अज्ञानरूपउपाधिकेवशतैं आत्माकाभेद सुषुप्तिविषेभीसंभवै है॥समाधान॥अज्ञानके दोस्वरूपहैं ॥ एकतौ आवरणस्वरूप ॥ और दूसरा विक्षेपस्वरूप ॥ तहाँआवरणस्वरूप अज्ञानविषे भेदकीजनकताहै॥अथवा विक्षेपस्वरूप अज्ञानविषे भेदकीजनकताहै ॥ तहाँ आवरणरूपतैंअज्ञानविषेभेदकीकारणताहै ॥ यहप्रथमपक्षतौसंभवैनहीं॥काहेतैं सुषुप्तिविषे आत्माकूं आवरणकरणेहारा अज्ञानतौ विद्यमानहै ॥ परंतु सो अज्ञान तहाँ आत्माकेभेदकूंउत्पन्न करैनहीं॥यातैं आवरणस्वरूपअज्ञानविषे आत्माके भेदकीकारणता संभवैनहीं ॥ और सुषुप्तिविषे विक्षेपस्वरूपअज्ञान आत्माकेभेदकाकारणहै यहदूसरापक्षभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं विक्षेप दो प्रकारका होवै है ॥ एक तौ जाग्रत्रूप ॥ और दूसरास्वप्नरूप ॥ यह दोनों प्रकारका कार्यरूपविक्षेप सुषुप्तिविषे लयभावकूं प्राप्त होवै है॥यातैं विक्षेपरूप अज्ञानभी आत्माके भेदकूं उत्पन्न करै नहीं॥अब याही अर्थकूं दृष्टांतकरिकै स्पष्टकरै हैं॥जैसे वर्षा कालकी

अँधेरी रात्रिविषे संपूर्ण मेघादिक अन्धकारविषे लय भावकूं प्राप्तहोवैं हैं ॥ तैसे सुषुप्ति अवस्थाके प्राप्तहुए आत्माके अज्ञानविषे सर्वकार्य प्रपंच लय भावकूंप्राप्तहोवै है ॥ और जैसे सूर्य भगवान्के उदयकरिकै तिस अन्धकारके तिरस्कारहुए पुनःतेमेघादिक तिसीअन्धकारतैं प्रगटहोवैं हैं ॥ तैसे मायाविशिष्ट परमात्मातैं पुनःकर्मोंकेवशतैं जाग्रत् उत्पन्नहोवै है ॥ तात्पर्ययह ॥ जभीतौ जाग्रत्प्रपंचकेभोगदेणेहारेपुण्यपापरूपकर्मोंका उद्भव होवैहै॥तभी मायाविशिष्टपरमात्मातैं जाग्रत्प्रपंचकी उत्पत्ति होवै है ॥और जभी स्वप्नके भोगदेणेहारेपुण्यपापरूपकर्मोंका उद्भवहोवै है॥तभी तापरमात्मातैं स्वप्नप्रपंचकी उत्पत्ति होवै है ॥यातैं हेबालाकि जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति यातीनअवस्थावोंकी प्राप्तिविषे नियमनहीं ॥ किंतु आपणेस्वरूपके अज्ञानतैं यह परमात्मादेव कर्मोंके वशतैं कदाचित् स्वप्न अवस्थातैं अनंतर जाग्रत् अवस्थाकूं प्राप्तहोवै है ॥ और कदाचित् सुषुप्ति अवस्थातैं अनंतर जाग्रत्कूं प्राप्त होवै है॥ और कदाचित् जाग्रत् अवस्थातैंअनंतर स्वप्नकूं प्राप्त होवै है और कदाचित् जाग्रत्अवस्थातैंअनंतर सुषुप्तिकूं प्राप्त होवै है ॥ और कदाचित् स्वप्नअवथस्थातैं अनंतर सुषुप्तिअवस्थाकूं प्राप्त होवै है ॥ इस प्रकार कर्मोंके अधीनहुआ यहजीवात्मा सर्व शरीरोंविषे जाग्रत् स्वप्न सुषुप्तिरूप तीन अवस्थावोंकूं प्राप्त होवै है ॥ दृष्टांत॥जैसे बालकोंने यष्टि करिकैआकाशविषे चलायाहुआकंदुक चारोंदिशावोंविषे तथा भूमिविषे तथाआकाशविषे निरंतर भ्रमणकरैहै तैसे पूर्वकरेहुएशुभअशुभकर्मोंकेवशतैं यहपरमात्मादेव कभी जाग्रत्कूंप्राप्तहोवै है॥और कभी स्वप्नकूंप्राप्तहोवै है॥और कभी सुषुप्तिकूंप्राप्तहोवै है ॥ इस प्रकार निरंतरभ्रमणकरैहै॥और जैसे वायुकरिकैचलायेहुएतूलकी कदाचित्भी स्थितिहोवै नहीं ॥तैसे कर्मरूपवायुकेवशतैं याशरीरविषे जाग्रत्आदिकअवस्थावोंका प्रवाह कदाचित्भी स्थिरहोवै नहीं किंतु निरंतरही जाग्रत् आदिकअवस्थावोंकाप्रवाह चलाजावै है ॥ और जैसे आकाशविषे संपूर्णमेघ मंडलकूं वायुभ्रमणकरावै है ॥ तैसे कर्मरूपवायुभी देहादिक प्रपंचकूं भ्रमणकरावैहै॥और जैसे जलोंकाप्रवाह सूकेकाष्ठकूं कदाचित् उच्चस्थानविषेगेडे है॥और कदाचित् नीच स्थानविषे गेडे है॥तैसे पुण्यपापरूपकर्मकेवशतैं यहजीवात्मा कभी देवशरीरकूंप्राप्तहोवै है॥और कभी मनुष्यशरीरकूं प्राप्तहोवै है॥और कभी कृमिशरीरकूं प्राप्तहोवै है॥और कभी वृक्षादिकस्था

वरशरीरकूंप्राप्तहोवै है॥तात्पर्य यह॥जभी पुण्यकर्मकीअधिकताहोवै है॥तभीतो देवभावकूंप्राप्तहोवै है॥और जभी पुण्यपापकीसमानता होवै है ॥ तभी मनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोवै है॥और जभी पापकर्मोंकीअधिकताहोवै है॥ तभी कृमिआदिकशरीरोंकूंप्राप्तहोवै है ॥ इसप्रकार कर्मकेवशतैंयहजीव नानाप्रकारकेशरीरोंकूंप्राप्तहोवै है॥ और देवतावोंतैं आदिलेके कृमिपर्यंत सर्वशरीरोंविषे जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति यातीन अवस्थावोंकूं यहजीव प्राप्तहोवै है॥जाग्रत्आदिकतीनअवस्थावोंतैं रहित कोईभी प्राणी नहीं॥शंका॥हेभगवन् मनुष्यादिकोंविषे यद्यपि तीनअवस्थासंभवै हैं॥तथापि देवतावोंविषे तीनअवस्था संभवै नहीं॥ काहेतैं शास्त्रविषे देवतावोंकूं अस्वप्नकह्या है ॥यातैं स्वप्नअवस्था देवतावोंविषे संभवै नहीं॥समाधान॥हेबालाकि देवतावोंकूं जो अस्वप्नकह्या है॥सोदेवतावोंविषे स्वप्नअवस्थानहींहोती याअभिप्रायतैंनहीं कह्या ॥ किंतु देवतावोंविषे सत्वगुणकी प्रधानताहै ॥ यातैं मनुष्योंकीन्यांई क्षणक्षणविषे देवतावोंकूंस्वप्नहोवै नहीं ॥ किंतु देवतावोंविषे अल्पस्वप्नहोवैहै ॥ या अभिप्रायतैंहीं शास्त्रविषे देवतावोंकूंअस्वप्नकह्याहै ॥ जो सर्वथा देवतावोंविषे स्वप्नका अभाव अंगीकारकरिये॥तौ सर्वदेवतावोंविषेमुख्यविष्णुभगवान् शेषनागकीसिहजाऊपरशयनकरै है यहशास्त्रकाकहणा असंगतहोवैगा ॥यातैं देवतावोंतैंआदिलेकेसर्व प्राणी जाग्रत्आदिकतीनअवस्थावोंकरिकैयुक्तहैं यहसिद्धभया ॥ यातैं हेबालाकि सुषुप्तिअवस्थाविषे सत्यपरमात्माकेसाथ अभेदभावकूं प्राप्त हुआ विज्ञानमयभोक्ता कर्मोंकेवशतैं जाग्रत्आदिकअवस्थावोंकूंप्राप्तहोवै है ॥ शंका ॥ हे भगवन् अन्यउपनिषदोंविषे यद्यपि सुषुप्तिविषेयामाविशिष्टपरमात्माविषे अंतःकरणादिकोंकालय कथनकऱ्याहै॥ तथाप याकौषीतकीउपनिषद्विषे प्राणविषेही सर्ववाक्आदिकइंद्रियसहितअंतःकरणकालय कथनकऱ्या है यातैं श्रुतियोंका परस्परविरोधहोवै है ॥ समाधान ॥ सुषुप्तितैंउत्थानकूंप्राप्तहुआ यहपुरुष जाग्रत्विषे याप्रकारकास्मरण करैहै॥मैं कछुनहींजाणताभया॥ यापुरुषकेस्मरणरूपअभिप्रायकरिकैतौ मायाविशिष्टपरमात्माविषेही सकलवाक्आदिकोंकालय सिद्धहोवैहै ॥ और सुषुप्तिअवस्थाविषे प्राणोंकेलयकूं लोक अंगीकारकरैनहीं ॥ किंतु प्राणकूंछोडिकै अन्यसर्ववाक्आदिकोंकेलयकूं सुषुप्तिअवस्थाविषेलोक अंगीकारकरैं हैं यातैं लोकोंकेअभिप्रायकूंअंगीकारकरिकै श्रुतिनें प्राणविषे वाक्आदिक

इंद्रियोंकालयकथनकऱ्या है ॥ यातैं प्राणशब्दकीलक्षणावृत्तिकरिकै मायाविशिष्टपरमात्माकाही ग्रहणकरणा ॥याप्रकारतैं दोनोंश्रुतियोंकाविरोधहोवैनहीं॥यातैं हेबालाकि सुषुप्तिअवस्थाविषे परमात्मास्वरूपप्राणविषेही स्थूलसूक्ष्मरूपसर्वप्रपंच लयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥काहेतैं जोसुषुप्तिअवस्थाविषे मनसहितवाक्आदिकइंद्रिय लयभावकूंनहींप्राप्तहोते॥ तौ जाग्रत्कीन्याईं सुषुप्तिविषेभी तिनवाक्आदिकोंकीप्रतीतहोती ॥ और सुषुप्तिविषे मनसहित वाक्आदिक प्रतीतहोवैनहीं ॥ यातैं वाक्आदिकोंकालयहीं सुषुप्तिविषेजान्याजावैहै ॥ और हेबालाकि जैसे आधार आधेयभावसंबंधकरिकै भूतलविषे घट प्राप्तहोवैहै॥तहाँ भूतलआधार है॥और घट आधेय है॥तैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे यहविज्ञानमय भोक्ता आधारआधेयभावसंबंधकरिकै परमात्माकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु आधारआधेयभावतैंरहित केवलअभेद संबंधकरिकै परमात्माकूंप्राप्तहोवै है॥दृष्टांत॥जैसे गृहाकाशविषेप्राप्तभयाघटाकाश घटकेनाशहुएतैंअनंतर गृहाकाशकेसाथ एकतारूप संबंधकूं प्राप्तहोवै है॥तैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे यहविज्ञानमयभोक्ता अंतःकरणादिकउपाधियोंतैंरहितहुआ परमात्माकेसाथएकतारूप संबंधकूंप्राप्त होवे है ॥ और हेबालाकि जैसे गृहाकाशका गमन तथाआगमन होवैनहीं ॥ किंतु घटाकाशकाही गृहविषे आगमनहोवै है तथा गृहतैं गमनहोवै है ॥ तैसे हृदयदेशविषे स्थितपरमात्माका गमन तथा आगमन होवैनहीं ॥ और घटाकाशके समानविज्ञानमयभोक्ताका तौ नित्यहीं सुषुप्तिविषे गमन तथा जाग्रत्विषेआगमन होवै ॥ और हे बालाकि वास्तवतैंविचारकरिये तौ विज्ञानमयभोक्ताकेस्वरूपविषे भीगमन तथा आगमन संभवैनहीं ॥ किंतु अंतःकरणरूप उपाधिके गमन आगमनतैं विज्ञानमयविषे गमन आगमन प्रतीत होवै है ॥ जैसे घटरूप उपाधिके गमन आगमनतैं घटाकाशविषे गमन आगमन प्रतीत होवै है ॥ वास्तवतैं घटाकाशविषे गमन तथा आगमन नहीं ॥ और हे बालाकि यद्यपि यह परमात्मादेव आकाशकी न्याईं देहके अंतर तथा बाहरि सर्वत्र व्यापक है ॥ तथापि हृदयदेशविषेही परमात्माका अंतर्यामीपणासिद्ध होवै है ॥ अन्यत्र अंतर्यामीपणा सिद्ध होवै नहीं ॥ या कारणतैं हृदयदेशविषे परमात्माकी स्थिति कही है ॥ ऐसे अंतर्यामी परमात्माकरिकै साक्षात् प्रकाशित जो मन है ॥ तिस मन विषे संपूर्ण वाकादिकइंद्रियोंतैं विशेषताकूं

अब निरूपण करैं हैं ॥ सुखके उपभोगवासतै तथादुःखकेउपभोगवासतै संपूर्णप्राणियोंकेशरीर उत्पन्नभयेहैं ॥ काहेतैं शरीरतेंविना सुखदुःखकाभोगहोवैनहीं॥ और शब्दादिकविषयोंकेप्रकाशकूं उपभोगकहैं हैं॥ सोशब्दादिकविषयोंकाप्रकाश श्रोत्रादिकइंद्रियोंतेंविना होवैनहीं किंतु श्रोत्रादिकइंद्रियोंकरिकैही शब्दादिकविषयोंकाप्रकाशहोवै है ॥ और तिनसंपूर्णश्रोत्रादिकइंद्रियोंकानियामकमनहै ॥काहेतैं आपणे आपणेशब्दादिकविषयोंकेसाथ श्रोत्रादिकइंद्रियोंकेसंबंधहुएभी जबपर्यंत मनकासंबंध श्रोत्रादिकइंद्रियोंकेसाथ नहींहोवै है॥तबपर्यंत यह श्रोत्रादिकइंद्रिय आपणे शब्दादिकविषयोंकूं जाणतेनहीं॥ किंतु मनकेसंबंधहुएतैं अनंतरही श्रोत्रादिकइंद्रिय शब्दादिकविषयोंकूंजाणैहै॥ यातैं यह जान्याजावै है ॥ संपूर्ण श्रोत्रादिकइंद्रिय मनकेअधीन हैं॥ अब याहीअर्थकूं लोकप्रसिद्धदृष्टांतकरिकै निरूपणकरैं हैं॥जैसे लोकविषे काष्ठकरिकैरचित दशअश्व एकदीर्घकाष्ठविषेस्थितहोवैं हैं॥और तिसदीर्घकाष्ठकेमध्यछिद्रविषे नीचे है मुखजाकाऐसीएकनालिकाहोवैहै ॥ और तिनदश अश्वोंके पादोंसाथबांधेहुएदशसूत्र तिस मध्यछिद्रद्वारा नलिकाविषेपरोयेहोवैं हैं॥और तिनसूत्रोंकूं पिता बालककेहस्तविषे देवैहै॥और सोबालक पिताकेअंकविषे स्थित हुआ तिनसूत्रोंकूं आकर्षण करिकै तिनअश्वोंकूं नानाप्रकारकीचेष्टाकरावैहै॥तैसे शरीररूपदीर्घकाष्ठहै तिसविषे वाक्आदिकइंद्रियरूपदशअश्व हैं॥और प्राण वायुरूप सूत्रकरिकै तेवाक्आदिकबांध्येहुए है॥ और नाडीरूप छिद्रद्वारा तेप्राणरूपसूत्र हृदयरूप नलिकाविषे परोयेहैं॥और परमेश्वररूप पिताहै॥और मनरूपबालक है॥ तामनरूपबालककूं परमेश्वररूपपिता आपणे हृदयकमलरूप गोदविषेबैठाइके प्राणवायुरूपसूत्रोंकूं ग्रहण करावै है॥तिन प्राणरूपसूत्रोंकूंग्रहणकरिकै सोमनरूपबालक वाक्आदिकइंद्रियरूप अश्वोंकूं तथा प्राण रूपसूत्रोंकूं आपणे आपणे व्यापारविषे प्रवर्त्त करावै है॥या कारणतैं सर्ववाक्आदिकइंद्रियोंतैं बुद्धिविषे उत्कृष्टता है॥ अब दूसरीरीतितैंभी वाक्आदिकइंद्रियोंतैंबुद्धिविषे उत्कृष्टताकूंदिखावैं हैं॥जैसे सूर्यभगवान्काप्रकाश यद्यपिसर्वपदार्थोंविषे समान है ॥ तथापि उपाधिकेवशतैं ता सूर्यके प्रकाशविषेभेद देख्या है॥जैसे ताम्रादिकधातुवोंकरिकै रचित जोकुशूलहै॥ ॥ २० ॥ ताकेविषे सूर्यकेतेजकी अल्पअभिव्यक्तिहोवै है ॥ और तिस कुशूलतैं स्वच्छदर्पणविषे सूर्यके तेजकी अधिक अभिव्यक्तिहोवै है ॥ और

तिसदर्पणतैंभी कृपाणविषे सूर्यकेतेजकी अधिक अभिव्यक्ति होवै है ॥ और तिसकृपाणतैंभीमणिविषे सूर्यकेतेजकी अधिकअभिव्यक्तिहोवै है॥और तिनमणियोंतैंभी सूर्य्यकान्तमणि विषे सूर्यकी अधिकअभिव्यक्ति होवै है काहेतैं कुशूलादिकउपाधियोंविषेस्थित हुआ सूर्यकातेज दाहादिककार्यकूंकरै नहीं॥और सूर्यकांतमणिविषेस्थित हुआ सूर्यकाप्रकाश दाहादिककार्यकूंभीकरै है ॥ यातैं कुशूलादिकसर्व उपाधियोंतैं सूर्यकांतमणिविषे सूर्यके तेजकी अधिक अभिव्यक्तिहोवै है ॥ तैसे कुशूलकेसमान यास्थूलशरीरविषे तथा दर्पणके समान प्राणविषे तथा कृपाणके समान कर्मइंद्रियोंविषे तथा मणिकेसमान ज्ञान इंद्रियोंविषे तथासूर्यकांतमणिकेसमान बुद्धिविषे यह आनंद स्वरूपआत्मा स्वभावतैं यद्यपि एकरूप करिकैही स्थितहोवै है तथापि बुद्धिरूपअंतःकरण अतिस्वच्छ है ॥ यातैं ताअंतःकरणविषेस्थितहुआ यह आनंदस्वरूपआत्मा भोक्तासंज्ञाकूंप्राप्तहोवै है॥अन्यशरीरादिकउपाधियोंविषेस्थितहुआआत्मा भोक्तासंज्ञाकूंप्राप्तहोवैनहीं॥और जैसे सूर्यभगवान् सूर्यकांतमणिविषेस्थितहोइकै दाहादिककार्यकूंकरै है ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्मा अंतःकरणविषेस्थितहुआही कर्तृत्वभोक्तृत्वरूपसंसारकूं तथालोकांतरविषे गमनागमनकूं प्राप्तहोवै है ॥ यद्याप अल्पअंतःकरणविषे व्यापक आत्माकीस्थितसंभवै नहीं ॥ तथापि जैसे अल्पदर्पण महान् पर्वतकेप्रतिबिंबकूंग्रहणकरै हैं॥तैसे अल्पअंतःकरणभी अतिस्वच्छहोणेतैं आत्माकेप्रतिबिंबकूंग्रहणकरैहै॥ यहहीं अंतःकरणविषे आत्माकीस्थिति है ॥ किंवा॥सोअंतःकरण सर्वदाहृदयकमलरूपगृहविषेही निवासकरै है॥और कदाचित् जाग्रत अवस्थाविषे सो अंतःकरण नेत्रादिकस्थानविषेभी निवासकरै है॥जिसकालविषे सुषुप्तिहोवै है तिसकालविषेनेत्रादिकस्थानकूंछोडिकरिकै सोअंतःकरण हृदयकमलरूपआपणे गृहविषे आवै है ॥ ता अंतःकरणकेआगमनतैं विज्ञानमयभोक्ताभी हृदयदेशकूंप्राप्तहोवै है॥तात्पर्य यह ॥ चैतन्यविषे स्वभावतैं तोगमन तथाआगमन रूपक्रिया है नहीं॥ किंतु उपाधिके गमन तथाआगमनतैं चैतन्यआत्माविषे गमन तथा आगमन होवै है ॥ सोअंतःकरण जाग्रत्अवस्थाविषे दक्षिणनेत्रादिकस्थानोंविषेरहै है॥यातैं विज्ञानमयभोक्ताभी तहाँरहै है॥और सुषुप्तिकालविषे नेत्रादिकस्थानोंकूंछोडिकरिकै सोअंतःकरण हृदयकमलरूपआपणेगृहविषे आवै है ॥ यातैं विज्ञानमयआत्माभी हृदयकमलकूं

प्राप्तहोवै है॥ किंवा ॥जैसे पशु तथामनुष्य आपणे गृहकूंछोडिकै अन्यदेशविषेजावै हैं॥तहाँ हानिकूं तथालाभकूं प्राप्तहोवै हैं॥ताहानिकूं भी लाभकेसमानमानिकै तेपशु तथामनुष्य पुनःआपणेआपणेगृहविषेआवै हैं ॥ तैसे बुद्धिरूपअंतःकरणभी आपणेहृदयदेशरूपगृहकूंपरित्यागकरिकै नेत्रादिकदेशविषेजावै है॥तहाँ हानिकूं तथालाभकूं प्राप्तहोवै है॥ताहानिकूंभी लाभकेसमानमानिकै सोअंतःकरण नेत्रादिकदेशतैं पुनःआपणेहृदयकमलरूपगृहविषेआवै है ॥ और जैसे विदेशतैंआपणेगृहविषेप्राप्तहुएजीवोंकूं लाभकाविचारकरिकै सुखकीप्राप्तिहोवै है ॥ और हानिका विचारकरिकै दुःखकीप्राप्तिहोवै है ॥ तैसे नेत्रादिरूपविदेशकूं छोडिकै हृदयकमलरूप आपणेगृहकूं प्राप्त हुई बुद्धि लाभके विचारकूंकरिकै सुखकूंअनुभव करै है ॥ और हानिका विचारकरिकै दुःखकूंअनुभवकरै है एक हृदयकमलकूं छोडिकै नख तैंलैकरिकैशिखापर्यंत संपूर्णशरीर तथा नेत्रादिकइंद्रियोंसहितपूर्णभोलक तथापुरीतत् तथाशिर यहसंपूर्णस्थान बुद्धिका परदेश है॥एक हृदयकमलही बुद्धिका आपणादेश है ॥ किंवा जाग्रत्क तथास्वप्नके भोगदेणेहारेकर्मोंका जब क्षयहोवै है ॥ तभी हृदयकमलके मध्य वर्तै दहराकाशरूपपरमात्माविषेप्राप्तहुईसो बुद्धिआपणेकारणविषेमूर्च्छाकूंप्राप्तहोवै है॥और जैसे अत्यंतमूर्च्छाकूंप्राप्तहुआजोपुरुषहै ॥तिसकूं लोकविषे मृतकहुआकहै हैं॥ तैसे सुषुप्ति विषे आपणेकारणविषेमूर्च्छाकूंप्राप्तहुईबुद्धिविषे लयव्यवहारहोवै है॥और जैसे आकाशविषे प्राप्तहुआजो सूक्ष्मतूल है॥तिसतूलका आकाशविषेलय लोक कथन करै हैं॥तैसे हृदयकमलकेअतंर परमात्मारूपआकाशविषे प्राप्तहुई बुद्धिकूं लयनामकारिकै वेद कथनकरै है ॥ और जैसे पटकेसंकोचकियेतैं पटविषेस्थितचित्र लयभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ तैसे चित्तधातुकरिकै हृदयकमलकेसंकोचरूपहेतुतैंभी बुद्धिविषे लयव्यवहारहोवै है ॥ यातैं हेबालाकि सोविज्ञानमयभोक्तापुरुष सुषुप्तिअवस्थाविषे अंतःकरण रूपउपाधिकेलयहुए परमात्माकेसाथ अभेदरूपशयनकूंअनुभवकरिकै पुनःसोविज्ञानमय आत्मा जाग्रतके भोगदेणे हारेकर्मोंकेउदय हुए जाग्रतअवस्थाकूं प्राप्तहोवै है ॥ और जैसे ऊर्णनाभीजंतुविषे अन्यसाधनोंकीअपेक्षातैंकिनाहीं अनंततंतुवोंकूं आपणेतैंउत्पन्नकरै है ॥ तैसे शयनतैंउत्थानकूंप्राप्तहुआयहपरमात्मादेव प्राणादिकअनंत सृष्टिकूं उत्पन्नकरै है ॥ और जैसे प्रज्वलितमहान्अग्नि आपणेसमानरूपवा

लेअल्पकणोंकूं उत्पन्नकरै है ॥ तैसे शयनतैंउत्थानकूंप्राप्तहुआ यहआत्मदेवभी प्राणोंकूं तथा अंतःकरणकूं तथा ज्ञानकर्मइंद्रियोंकूं तथा तिनइंद्रियोंकेनानाव्यापारोंकूं उत्पन्नकरै है ॥ और तिनवाक्आदिकइंद्रियोंतैं अग्निआदिकदेवता उत्पन्नहोवै हैं ॥ और तिनअग्निआदिकदेवतावोंतैं शब्दादिकविषय तथासंपूर्णलोक उत्पन्नहोवै हैं ॥ इसप्रकार जाग्रत्अवस्थाविषे नित्यही वाक्आदिक इंद्रियोंकी उत्पत्तिहोवै है ॥ तथा अग्नि आदिकदेवतावोंकी उत्पत्तिहोवै है तथा नामादिक विषयोंकी उत्पत्ति होवै है ॥ और सुषुप्ति अवस्था विषे नित्यही तिनवाक्आदिक इंद्रियोंका लयहोवै है॥ तथा अग्निआदिक देवताओंका तथा नामादिक विषयोंका लय होवै है॥ शंका॥ हे भगवन् जाग्रत्विषे नित्यही वाकादिकोंकी उत्पत्ति ॥ और सुषुप्तावपे नित्यही वाक्आदिकोंका लय यह आपनैं कह्या ॥ या अर्थविषे हमारानिश्चय होवैनहा ॥ समाधान ॥ हेबालाकि वेदभगवान्नैं कथनकऱ्याजोअर्थहै ॥ ताअर्थविषे कदाचित्भी बुद्धिमानपुरुषोंनैं अविश्वासनहींकरणा ॥ किंतु जिसअर्थकूं शास्त्रबोधनकरै ॥ सोईहीअर्थ बुद्धिमानपुरुषोंनैं अंगीकारकरणेयोग्य है ॥ काहेत जेस्वर्गादिक पदार्थ इंद्रियजन्यज्ञानकेविषयनहींहोवै है॥तिनस्वर्गादिकअतिइंद्रियपदार्थोंविषे शास्त्रप्रमाणतैंही ज्ञान उत्पन्नहोवै है ॥ शास्त्रप्रमाणतैंभिन्न प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकै तिनस्वर्गादिकपदार्थोंकाज्ञान होवैनहीं ॥ तात्पर्य यह ॥ जिसअर्थविषे परस्परावरोधी दोप्रमाणोंकीप्रवृत्तिहोवै है ॥ तिसीअर्थविषे संशयहोवै है सोयहां संभवनैहीं ॥ काहेते वदकारकैबोधनकरेअर्थविषे किसीप्रत्यक्षादिकप्रमाणकीप्रवृत्तिहोवैनहीं ॥ यातैं वेदकेअर्थविषे संशयकरणा बुद्धिमान्पुरुषकूं योग्यनहीं ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकै निरूपणकरै है ॥ शास्त्रप्रमाणनैंबोधनकरे जे स्वर्गादिक तथाइंद्रादिकदेवता तथाधर्मअधर्मरूपअदृष्ट ॥ इनसंपूर्णविषे प्रत्यक्षप्रमाणकाबाध सर्वलोकोंनैं अनुभवकरीताहै ॥ काहेतैं जो शास्त्रप्रतिपादितस्वर्गादिकोंविषेभी प्रत्यक्षप्रमाणकीप्रवृत्तिहोतीहोवै ॥ तोसर्वजीवोंकूं नेत्रादिरूपप्रत्यक्षप्रमाणतैंस्वर्गादिकोंकाप्रत्यक्षज्ञान होणाचाहिये॥औरप्रत्यक्षप्रमाणकरिकै जीवोंकूंस्वर्गादिकोंकाअनुभवहोवैनहीं॥किंवा॥जोप्रत्यक्षप्रमाणकरिकैजीवोंकूंस्वर्गकाअनुभवहोता होवै ॥ तो स्वर्गनरकादिकोंविषे मूढपुरुषोंकापरस्परविवाद नहींहोणाचाहिये ॥ काहेतैं प्रत्यक्षप्रमाणकोविषय जेघटादिक पदार्थ हैं॥तिनों

विषे कोईपुरुष विवादकरैनहीं॥ और स्वर्गनरकादिकोंविषे तौ मूढपुरुषोंका बहुतप्रकारका वादविवाद लोकविषेदेखीताहै॥कोईपुरुषतौ याप्रकारकथनकरैं हैं ॥स्वर्गनरकादिकहैंनहीं ॥ और कोईमूढपुरुष याप्रकार कथनकरैहैं ॥ इसमनुष्यलोकविषेही स्वर्गनरकहैं ॥ इस मनुष्यलोकतैंभिन्न कोईस्वर्गनरकहैनहीं॥धनादिकपदार्थोंकरिकैयुक्तपुरुष स्वर्गसुखकूंभोगैहैं ॥ निर्धनदरिद्रीपुरुष तथापशुआदिक नरकदुःखभोगैहैं ॥ याप्रकार स्वर्गनरकादिकोंविषे मूढपुरुषविवादकूंकरैं हैं ॥ सो न होणाचाहिये ॥ यातैं प्रत्यक्षप्रमाणकरिकै स्वर्गादिकोंकाअनुभव किसीजविकूंहोवैनहीं ॥ यद्यपि शास्त्रप्रतिपादितस्वर्गादिकोंका योगीपुरुषकूं प्रत्यक्षहीज्ञानहोवैहै ॥ तथापि योगीपुरुषका प्रत्यक्ष प्रमाण शास्त्रप्रमाणकाविरोधीहोवैनहीं ॥ काहेतैं शास्त्रकेअनुकूलआचरणकरिकैही योगीपुरुषकाप्रत्यक्ष उत्पन्नहोवैहै ॥यात सोयोगीकाप्रत्यक्ष प्रमाण पूर्वसिद्धशास्त्रप्रमाणरूपआपणेकारणकेसाथ विरोधकूंकरैनहीं ॥ यातैंशास्त्रप्रतिपादितस्वर्गादिकअर्थविषे प्रत्यक्षप्रमाणकीप्रवृत्ति होवैनहीं ॥ यहसिद्धभया ॥ किंवा ॥ जैसे शास्त्रप्रतिपादितस्वर्गादिकअर्थविषे प्रत्यक्षप्रमाणकीप्रवृत्तिहोवैनहीं॥तैसेअनुमानप्रमाणकीभी प्रवृत्तिहोवैनहीं ॥ काहेतैं प्रत्यक्षप्रमाणकीअपेक्षाकरिकैही पश्चात् ॥ अनुमानप्रमाणकीप्रवृत्तिहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जिसपुरुषकूं पूर्वमहान् सादिकोंविषे वारंवार धूमतथाअग्निकेसहचारदर्शनतैं धूमवह्निकाव्याप्यहै याप्रकारकाव्याप्तिज्ञान प्रत्यक्षप्रमाणतैं उत्पन्नभया है ॥सोईही पुरुष पर्वतविषेधूमकूंदेखिकै पूर्वव्याप्तिकास्मरणकरताहुआ पर्वतविषेअग्निकाअनुमानकरै है ॥ यातैं प्रत्यक्षप्रमाण अनुमानप्रमाणकाकारणहै ॥ सोप्रत्यक्षप्रमाण पूर्वउक्तरीतितैं स्वर्गादिकपदार्थोंविषे प्रवर्तहोवैनहीं॥ यातैं अनुमानप्रमाणभी स्वर्गादिकपदार्थोंकूं बोधनकरिसकै नहीं ॥ किंवा ॥ जोप्रत्यक्षप्रमाणकीअपेक्षातैंविनाहीअनुमानप्रमाण अपणेअर्थकूंबोधनकरैगा ॥ तौ अनुमानसंज्ञातैंही रहितहोवैगा ॥ काहेतैं अनुमान याशब्दविषे दोपद हैं ॥ एक अनुपदहै ॥ और दूसरा मानपद है ॥ तहाँ अनुपदकाअर्थपश्चात् है और मानपदका अर्थ प्रमाणहै ॥ तादोनोंपदोंकामिलिकै पश्चात्भाविप्रमाण यहअनुमानशब्दकाअर्थ सिद्धहोवै है ॥ याप्रकार अनुमानशब्दके विचारकियेहु एभीप्रत्यक्षप्रमाणतैंअनंतरही अनुमानप्रमाणकीप्रवृत्तिसिद्धिहोवैहै॥किंवा॥ प्रत्यक्षप्रमाणकरिकैजन्य प्रत्यक्षज्ञानकी अल्पविषयविषेप्रवृ

त्तिहोवै है या कारणतैंभी शास्त्रप्रतिपादित स्वर्गादिकोंविषे प्रत्यक्षप्रमाणकी प्रवृत्तिहोवै नहीं ॥ काहेतैं इंद्रियइंद्रियविषे जो ज्ञान उत्पन्न होवै है ॥ ताकू प्रत्यक्ष ज्ञान कहैं हैं ॥ सोप्रत्यक्षज्ञान एक प्रकारका होवैनहीं ॥ किंतु नेत्रादिकइंद्रियोंकेभेदतैं भिन्नभिन्नही प्रत्यक्षज्ञान होवै है ॥ तहाँ चक्षु इंद्रियतैं उत्पन्न हुए प्रत्यक्षज्ञानकूं चाक्षुषप्रत्यक्ष कहैं हैं ॥ और रसन इंद्रियजन्य प्रत्यक्ष ज्ञानकूं रासनप्रत्यक्षकहै हैं ॥ और त्वक् इंद्रियजन्यप्रत्यक्षज्ञानकूं त्वचा प्रत्यक्षकहैं हैं॥और घ्राणइंद्रियजन्यप्रत्यक्षज्ञानकूं घ्राणजप्रत्यक्षकहैं हैं॥और श्रोत्रइंद्रियजन्यप्रत्यक्षज्ञानकूं श्रावणप्रत्यक्षकहैं हैं॥इसप्रकार इंद्रियोंकेभेदतैं प्रत्यक्ष ज्ञानभी भिन्नभिन्नही होवै हैं॥ यातैं सर्वपदार्थोंविषे एकप्रत्यक्षज्ञानकीप्रवृत्तिहोवै नहीं ॥ किंतु भिन्नभिन्नरूपादिक विषयोंविषे भिन्नभिन्नहीं चाक्षुषादिकज्ञानोंकी प्रवृत्ति होवै है ॥ तात्पर्ययह चाक्षुषज्ञानकेविषय जेरूपादिकपदार्थ हैं ॥ तिनोंकूं रासनज्ञान विषयकरै नहीं॥ और रासनज्ञानके विषय जे रसादिकहैं॥तिनोंकूं चाक्षुषज्ञान विषयकरैनहीं॥ इसप्रकार अन्यप्रत्यक्षज्ञानोंविषेभीजानिलेणा॥याप्रकार अल्प अर्थकूं विषयकरणेहारा प्रत्यक्षज्ञान शास्त्रप्रतिपादितअर्थकूं विषयकारिसकै नहीं ॥ किंवा ॥ जिसकालविषे देवदत्त नामा पुरुषके नेत्रोंकासंबंध घटादिक पदार्थोंकेसाथहोवै है॥तिसकालविषे देवदत्तनामापुरुषकूंहीं ताघटकाप्रत्यक्षज्ञानहोवै है ॥ देवदत्त पुरुषतैं भिन्न जोयज्ञदत्तनामापुरुष है॥तिसकूं इंद्रियकेसंबंधतैंविना ताघटकाप्रत्यक्षज्ञानहोवैनहीं ॥ यातैं प्रत्यक्षज्ञानकेयोग्यघटादिकविषयोंविषेभी स्वतंत्र प्रत्यक्षज्ञानकीप्रवृत्तिहोवैनहीं ॥ किंतु विषयके साथ इंद्रियके संबंधकी अपेक्षाकरिकैही प्रत्यक्षकी प्रवृत्तिहोवै है ॥ याकहणतैं यहासद्धभया ॥ जभी प्रत्यक्षज्ञानके योग्यघटादिकपदार्थोंविषेभी प्रत्यक्षज्ञानकीस्वतंत्रप्रवृत्तिनहींभयी ॥ तबी वेदप्रतिपादिक स्वर्गादिक अतिइंद्रियपदार्थोंविषे किसप्रकार प्रत्यक्षकी प्रवृत्तिहोवैगी ॥ किंतु नहींहोवैगी॥किंवा॥ वेदप्रमाणकी अपेक्षातैंरहित जो केवलप्रत्यक्षप्रमाणहै ॥ सा दोषोंतैंरहितहोवैनहीं ॥ किंतु दोषकरिकैहीयुक्तहोवै है॥काहेतैं नेत्रादिकइंद्रियोंकानाम प्रत्यक्षप्रमाणहै॥ और तिन नेत्रादिकइंद्रियोंविषे अंधत्वबधिरत्वादिकदोषोंकासर्वपुरुषोंकूं प्रत्यक्षहीज्ञानहोवै है ॥यातैं दोषयुक्त प्रत्यक्षप्रमाण वेदकेअपूर्व अर्थकूं बोधनकरिसकैनहीं ॥ किंवा ॥ वेदबोधितस्वर्गादिकअर्थविषे उक्तरीतिकरिकै प्रत्यक्षप्रमाणकेअप्रवृत्तहुए

अनुमानप्रमाणभी तिनस्वर्गादिकपदार्थोंविषे प्रवृत्तिहोवैनहीं ॥ काहेतैं प्रत्यक्षप्रमाणकीअपेक्षाकरिकैही अनुमानप्रमाणकीप्रवृत्तिहोवे है॥ यहवार्ता पूर्वकथनकरिआये हैं ॥ शंका ॥ वेदप्रतिपादित स्वर्गादिक अर्थोंविषे प्रत्यक्षप्रमाणकी तथाअनुमानप्रमाणकी प्रवृत्तिमतहोवे॥ तथापि अर्थापत्ति आदिकप्रमाणोंकी प्रवृत्ति स्वर्गादिकपदार्थोंविषे होवैगी॥समाधान॥तेअर्थापत्तिआदिकप्रमाण अनुमानप्रमाणतैंअभिन्न है अथवा भिन्न है ॥ तहाँ प्रथम अभिन्नपक्ष संभवै नहीं ॥ काहेतैं ते अर्थापत्तिआदिकप्रमाण जभी अनुमानप्रमाणकेअंतरभूतमानोंगे ॥ तौ अनुमानप्रमाणकेप्रवृत्तिविषे जे पूर्वदोषकहे हैं॥ते संपूर्ण दोष अर्थापत्तिआदिकप्रमाणोंविषेभी प्राप्तहोवैगे ॥ यातैं अनुमानप्रमाणतैंअभिन्न अर्थापत्ति आदिकप्रमाण संभवैनहीं ॥ और अर्थापत्तिआदिकप्रमाण अनुमानप्रमाणतैं भिन्न हैं यह द्वितीयपक्षभी संभवैनहीं॥काहेतैं जोअर्थापत्तिआदिकप्रमाणोंकूं अनुमानप्रमाणतैंभिन्नभीअंगीकारकरोंगे॥तौभी तेअर्थापत्तिआदिकप्रमाण स्वतंत्र किसीप्रमाज्ञानकूंउत्पन्नकरतेनहीं॥ किंतु किसीदृष्टांतकूंअंगीकारकरिकैही किसीपुरुषकेप्रमाज्ञानकूं उत्पन्नकरैंगे॥दृष्टांततैंविना अर्थापत्तिआदिकप्रमाण कहाँभी ज्ञानकूंउत्पन्नकरैंनहीं॥और सोदृष्टांत प्रत्यक्षतैंभिन्ननहीं॥किंतु प्रत्यक्षकेअंतरभूत दृष्टांतहै॥और प्रत्यक्षकाखंडन पूर्वविस्तारतैंकरिआये हैं यात अनुमानप्रमाणतैंभिन्नहुएभी अर्थापत्तिआदिकप्रमाण वेदप्रतिपादितस्वर्गादिरूपअर्थविषे प्रवृत्तहोवैनहीं॥यातैंहेबालाकि संपूर्णदोषोंतैं रहित यहवेदभगवान् जिसजिसअर्थकूंबोधनकरै है॥सोईहीअर्थ मुमुक्षुपुरुषोंनैंअवश्यग्रहणकरिणेयोग्यहैदृष्टांत॥जैसेधर्मात्मासज्जनकीआज्ञाकूं प्रजाग्रहणकरै है॥तैसे वेदभगवान्काअर्थ बुद्धिमानपुरुषोंनैंग्रहणकरणेयोग्यहै॥वेदकेअर्थविषे कदाचित्भी असंभावनानहींकरणी॥और सोवेदभगवान्तौ दिनादिनविषे जाग्रत्अवस्थाकेप्राप्तहुएवाक्आदिकइंद्रियोंकीउत्पत्तिकूं कथनकरैहै॥ तथा आम्र आदिकदेवतावोंकीउत्पत्तिकूं कथनकरै है॥तथा नामादिकविषयोंकीउत्पत्तिकूं कथनकर है॥और सुषुप्तिअवस्थाविषे तिनसंपूर्णवाक्आदिकोंकेलयकूं वेदभगवान् कथन करै है ॥ यातैं हेबालाकि याप्रकारकेवेदअर्थविषे तुम श्रद्धाकूंकरो ॥ और हेबालाकि पूर्व सोयहुएपुरुषकेउत्थापनकालावषे याशरीरविषे स्थित आनंदस्वरूपआत्माकाउपदेश हमनैं तुमारेप्रतिकऱ्याथा ॥ आर पश्चात् हृदयकमलविषेस्थित आत्माकाउपदेश हमनैं तुमारेप्रति ॥ २३

कऱ्या॥यातैं तुमनैंआत्माविषेपरिच्छिन्नदृष्टिनहींकरणी॥किंतुआत्माविषेपूर्णदृष्टिकरणी॥अबयाहींअर्थकूं स्पष्टकरिकैदिखावैहैं॥हेबालाकि जैसेएकहीपरिपूर्णआकाशघटमठशरावादिकउपाधियोंविषे स्थितहोवै है॥तैसे एकहींपरिपूर्णआत्मा वाक्आदिकउपाधियोंविषे स्थितहोवै है तावाक्आदिकविशिष्टआत्माकूं मूढपुरुष वक्तारूपकरिकै तथा श्रोतारूपकरिकै॥तथाद्रष्टारूपकरिकै मानै है॥ तिसप्रकार तुमनैं आत्माकूं परिच्छिन्न करिकै नहीं मानणा ॥ किंतु उपाधिका परित्यागकरिकै परिपूर्णआत्माकूं तुमनैं जानणा॥शंका॥ हे भगवन् जो आत्मा सर्वप्रकारपरिपूर्णहोवै॥तौ हृदयदेशविषे आत्माकीस्थिति पूर्व आपनैं काहेवासतैंकथनकरी॥समाधान॥ हेबालाकि जैसे केशोंकेछेदनकरणेकासाधन जो क्षुर है ॥ सोक्षुर नापितकीपिटारीरूपकिसी एकदेशविषेरहै है॥तैसे यह आनंदस्वरूपआत्मा केवलहृदयदेशविषेरहैनहीं ॥किंतु सर्वप्राणियोंकेअंतर तथाबाहर व्याप्यकरिकैरहै है॥ तथापि अंतःकरणविषे तथाइंद्रियोंविषे तथाशरीरविषे आत्माकीविशेषकरिकैउपलब्धिहोवै है या कारणतैं हृदय इंद्रियशरीरविषे आत्माकीस्थिति हमनैं कथनकरीहै॥दृष्टांत॥जैसे अग्निसामान्यरूपकरिकैसर्वत्रस्थितहै॥तथापि काष्ठविषे अग्निकीविशेषरूपकरिकैउपलब्धिहोवै है॥याकारणतैं काष्ठविषेअग्निस्थितहै याप्रकार लोककथनकरैं हैं यातैं हेबालाकि जैसे नापितकीपिटारीविषे क्षुररूपशस्त्रकीशीघ्रहींउपलब्धिहोवै है तैसे हृदयकमलविषेस्थितबुद्धि अत्यंतस्वच्छहै ॥ यातैं तावुद्धिविषे आत्माकीउपलब्धि विशेषकरिकै होवै है ॥ याअभिप्रायतैं बुद्धिविषे आत्माकीस्थिति हमनैं कथनकरीहै॥और जैसे नापितकीपिटारीविषेही क्षुररूपशस्त्र रहै है अन्यत्ररहैनहीं॥तैसे बुद्धिरूपदेशविषेही आत्मारहै है अन्यत्ररहैनहीं॥ याअभिप्रायतैं आत्माकीबुद्धिविषेस्थिति हमनैं नहींकथनकरी॥ इसप्रकार हृदयविषेआत्माकेविशेषअभिव्यक्तिकूंबोधनकरणेहाराजोक्षुरकादृष्टांत है ॥ तिसकेअभिप्रायकूंनिरूपणकरिकै ॥ अब हृदयकीअपेक्षाकरिकै शरीरादिकोंविषेआत्माके अल्प प्रकाशकूं बोधनकरणेहारा जो अग्निकादृष्टांत है ताकेअभिप्रायकूं दिखावैं हैं ॥ हेबालाकि सोआनंदस्वरूपआत्मा जरायुज अंडजस्वेदज उद्भिज्ज या चारि प्रकारके शरीरोंकूं उत्पन्न करिकै आपणे चैतन्यरूप करिकै नखके अग्रभागतैं लेकरिके शिखापर्यंत तिन सर्वशरीरोंविषे व्याप्त होता भया॥और जैसे अग्नि यद्यपि सर्वत्र समान है ॥तथापि अरणीरूप काष्ठविषे

अग्निकेविशेष अभिव्यक्तिकूं देखिकरिकै काष्ठविषेस्थित अग्निहै याप्रकारकाकथन सर्वलोक कर हैं॥तैसे यह आनंदस्वरूपआत्मा यद्यपि चैतन्यरूप करिकैसर्वत्रसमान है॥तथापि शरीरविषे चैतन्यकेविशेषअभिव्यक्तिकूं देखिकै शरीरविषे आत्मास्थितहै याप्रकारका कथनभी संभवैहै यहाँ शरीरविषे जोआत्माकी विशेषअभिव्यक्तिकही॥सो घटादिकोंकीअपेक्षाकरिकैजानणी॥अंतःकरणकीअपेक्षाकरिकैतौ शरीरविषे आत्माकीअल्पअभिव्यक्तिहोवै है॥यातैं हे बालाकि आकाशकीन्याईं सर्वत्रपरिपूर्णआत्मा याशरीरविषे चैतन्यरूपकरिकैप्रतीतहोवैहै ॥ याकारणतैं सर्वशरीरोंविषे नखकेअग्रभागतैंलेकरिकै परमात्माकाप्रवेश श्रुतिनैं कथनकऱ्याहै॥और हेबालाकि जैसे मृत्तिका घटाकारपरिणामकूंप्राप्तहोवै है॥यातैं मृत्तिकाविषे मुख्यप्रज्ञा तथागौणप्रज्ञा संभवैनहीं ॥ तैसे मन इंद्रियदेहादिरूप संघातभी अनंतप्रकारके परिणामकूंप्राप्तहोवै है यातैं यासंघातविषेभी मुख्यप्रज्ञा तथागौणप्रज्ञा संभवै नहीं ॥ किंतु प्रज्ञास्वरूपआत्माकेतादात्म्यअध्यासकेबलतैं अविचारकालविषे शरीरादिकोंमैं चैतन्यस्वरूपप्रज्ञा प्रतीतहोवै है विचारकियेतैं शरीरादिकोंविषे प्रज्ञासंभवै नहीं ॥ शंका ॥ हे भगवन् मनविषे तथा इंद्रियोंविषे तथाशरीरविषे प्रज्ञाका अभाव आपनैंकह्या सो संभवैं नहीं ॥ काहेतैं बुद्धिरूपप्रज्ञा तिनमनादिकोंविषेभी संभवैहै ॥ समाधान ॥ हे बालाकि चैतन्यआत्मातैंभिन्न मन इंद्रियशरीरादिक संपूर्ण जड हैं ॥ और विकारवान् हैं ॥ यातैं तिन मनादिकों विषेस्थित बुद्धिरूपप्रज्ञाभी जड है ॥ काहेतैं जैसे शरीरादिक परिणामकूंप्राप्त होवै हैं ॥ तैसे बुद्धिभी परिणामकूं प्राप्त होवै है॥यातैं बुद्धि जड है चैतन्यरूप नहीं ॥ यातैं हेबालाकि आनंदस्वरूप आत्मातैंभिन्न किसीभी वस्तुविषे ज्ञानस्वरूप प्रज्ञानहीं ॥ किंतु एक आत्माही ज्ञानस्वरूपहै॥और हे बालाकि जैसे आत्मातैंभिन्न किसी अनात्म पदार्थविषे ज्ञाननहीं है ॥ तैसे आनंदस्वरूपआत्मातैंभिन्न किसीअनात्मपदार्थविषे सुखभी नहीं है॥किंतु एकआत्माहीं सुखरूप है॥ऐसा सुखस्वरूप तथा ज्ञानस्वरूप यह आत्मासुखतथाज्ञानतैंरहितमनइंद्रियदेहादिकोंकूं आपणेतादात्म्यसंबंधतैं सुखयुक्त तथा ज्ञानयुक्त करै है ॥ दृष्टांत ॥ जैसे धनीपुरुष आपणे सेवकोंकूं धनयुक्तकरै है ॥ तैसे सुखज्ञानस्वरूप आत्मा मन इंद्रियादिकोंकूं सुखतथाज्ञानयुक्तकरै है॥और हे बालाकि ऐसे सुखस्वरूप तथा ज्ञानस्वरूप आत्माकूं आश्रय

णकरिकैही संपूर्णवाक्आदिकअध्यात्म तथाअग्निआदिकअधिदेवता आपणेआपणेनामादिकविषयोंकूंनिश्चयकरैहैं॥ तिसआत्माकेसम्बंधतैंविना स्वतंत्रहोइके कोईभीवाक्आदिक किसीअर्थकूं निश्चयकरैनहीं॥दृष्टांत॥जैसे यथार्थज्ञानकरिकैयुक्त अथवा विपरीतज्ञानकरिकैयुक्त जोकोईक धनीपुरुषहै ॥ तिसधनीपुरुषकेनिश्चयकेअनुसारही ताकेभृत्य किसीकार्यकानिश्चयकरै हैं ॥ ताधनीपुरुषकेनिश्चयतैंविना भृत्यों का स्वतंत्रकोईनिश्चय होवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् बाह्यकार्यविषे यद्यपि भृत्योंकूं धनीपुरुषकीपराधीनता है ॥ तथापि ज्ञानरूपअंतरनिश्चयविषे तिनभृत्योंकूं धनीपुरुषकीअपेक्षासंभवैनहीं ॥समाधान॥हे बालाकि ज्ञानरूपअंतरनिश्चयकीउत्पत्तिविषे यद्यपि भृत्योंकूं धनीपुरुष कीअपेक्षानहीं ॥ तथापि धनीपुरुषकेनिश्चयतैंविना तिनभृत्योंकानिश्चय निष्फलहै ॥ तात्पर्ययह ॥ ज्ञानरूपनिश्चयतैं पुरुषोंकीकार्यविषे प्रवृत्तिहोवै है ॥ सोप्रवृत्ति धनीपुरुषकेनिश्चयतैंविना स्वतंत्र भृत्योंकीहोवैनहीं ॥ किंतु धनीपुरुषकीसंमतिकूंग्रहणकरिकैही भृत्योंकी किसी कार्यविषेप्रवृत्तिहोवै है ॥ तैसे ज्ञानरूपआत्माकूंआश्रयणकरिकैही संपूर्णवाक्आदिकदेवता तथाएकएकवाक्आदिक यहकार्य अवश्यकरणेयोग्य है और यहकार्य नहीं करणेयोग्य है और यहवचन कहणेयोग्य है और यहवस्तु देखणेयोग्य है याप्रकार पदार्थोंकूंनिश्चयकरैहैं ॥ ज्ञानस्वरूपआत्मातैंविना स्वतंत्रहुआ कोईभीवाक्आदिकदेवता किसीपदार्थकूंजानैनहीं ॥ यहां दृष्टांततैंसिद्धांतीविषे इतनीविशेषता है॥ दृष्टांतविषे धनीपुरुषकेज्ञानतैंभिन्नहीभृत्योंकेज्ञानहोवै है॥ और सिद्धांतविषेतौ आत्माकेस्वरूपज्ञानतैंभिन्न कोईभीज्ञान वाक्आदिकइंद्रियोंविषे नहीं ॥ किंतु आत्मस्वरूपज्ञानही वाक्आदिकइंद्रियोंकरिकैयुक्तहुआ नानाभावकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ यातैं आत्माही ज्ञानस्वरूप है ॥ आत्मातैंभिन्न सर्वअनात्मपदार्थ जड हैं॥ और हेबालाकि जैसे भोगकेसाधनधनादिकपदार्थोंकरिकैयुक्त कोईकवैश्यपुरुष आपणेपुत्रोंकेसहित तथाभृत्योंकेसहित धनादिकपदार्थोंकूंभोगै है ॥ पुत्रादिकोंतैंविना अकेलाही सोवैश्यपुरुष धनादिकपदार्थोंकूंभोगैनहीं ॥ जोअकेलाही सोवैश्यपुरुष धनादिकपदार्थोंकूंभोगै तौ ताकासर्वधन चोरलेजावै॥यातैं सर्वभृत्योंसैमिलिकैसोधनीवैश्य पदार्थोंकूंभोगैहै॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्माभी वाक्आदिकदेवतावोंकेसहितहीभोगोंकूं भोगै है॥वाक्आदिकइंद्रियोंतैंविना केवलशुद्धआत्मा भोगोंकूंभोगैनहीं॥ और

जैसे धनीवैश्यके पुत्रादिकबांधव तथाभृत्य ताधनीवैश्यतैंविना स्वतंत्र किसीपदार्थकूंनहींभोगते ॥ किंतु ताधनीहैश्यकेसहितही पुत्रादिक बांधव भोगोंकूंभोगे हैं ॥ तैसे वाक्आदिकभी आत्मातैंविना स्वतंत्र होइके किसीपदार्थकूं भोगते नहीं ॥ किंतु आत्माकेसाथमिलिकेही वाक्आदिक भोगोंकूंभोगेहैं॥यहांयहतात्पर्य है॥सुखदुःखकेअनुभवकानामभोगहै॥सोभोग उपाधिरहितशुद्धआत्माविषे संभवेनहीं तैसेवाक् आदिकजडपदार्थोंविषेभी सोभोग संभवै नहीं ॥ किंतु अंतःकरणादिकउपाधियोंकरिकैयुक्तआत्माही भोगकाआश्रयहै ॥ वास्तवतैं कोई भोगकाआश्रयहैनहीं ॥ यातैं सोभोग मिथ्याहै और हेबालाकि जोहृदयाकाश शुद्धआत्मारूपकरिकै हमनैं तुमारेताईं कथनकऱ्या है ॥ सोईही परमात्मा यासर्वसंघातकाअधिपति है ॥ और सोईही परमात्मा यासंघातकेसाथ तादात्म्यअध्यासकूंप्राप्तहुआ बुद्धिमान्पुरुषोंक रिकैभी जानणेकूंअशक्य है॥हेबालाकि जो आत्मा दुर्विज्ञेयनहींहोता॥तौसर्वशास्त्रकेजानणेहारेतुमारेकूं आत्माकेयथार्थस्वरूपविषे भ्रांति नहींहोती और पूर्वतुमनैं प्राणकूंही आत्मारूपकरिकै हमारेप्रति उपदेशकऱ्याहै।यातैं यहतुमारीभ्रांतिही आत्माकेदुर्विज्ञेयताकूं बोधनकरैहै। शंका ॥ हेभगवन् जभी यहआनंदस्वरूपआत्मा यासंघातविषे दुर्विज्ञेय है॥तभी यासंघाततैंभिन्नअन्यकिसीस्थानविषेस्थित आत्माका हमारेप्रतिउपदेशकरो॥ तिसीस्थानविषेस्थितआत्माकूं मैंनिश्चयकरोंगा॥समाधान॥हेबालाकि यासंघातकूं छोडिकै अन्यत्रस्थितआत्मा केजानणेविषे किंचित्मात्रभी तुम उत्साहकूं मतकरो॥किंतु यासंघातविषेहीआत्माकेजानणेकाउत्साह तुमकरो॥दृष्टांत॥जैसे अग्निकीउप लब्धिकास्थान जेकाष्ठहैं॥तिनकाष्ठोंकरिकैयुक्त अग्निकापरित्याग करिकै काष्ठसंबंधतैंरहितअग्निकीप्राप्तिकीइच्छा कोईभीबुद्धिमान् पुरुष करैनहीं॥तैसे आत्माकीउपलब्धिकास्थान जोयहसंघातहै॥तिससंघातकापरित्यागकरिकै अन्यदेशविषे आत्माकाअन्वेषणकरणा व्यर्थहै॥ यातैं हेबालाकि इसीशरीरविषे अंतःकरणादिकसर्वउपाधियोंतैंरहित कूटस्थआत्माकूं ब्रह्मरूपकरिकैनिश्चयकरो॥इसप्रकार अजातशत्रुराजा पूर्वउक्ततीनप्रश्नोंकेअर्थकूं विस्तारतैंनिरूपणकरताभया॥अब तिसीहीतीनप्रश्नोंकेअर्थकूं संक्षेपतैंनिरूपणकरैहैं॥हेबालाकि हृदयाकाशरूप जोसर्वकाआत्माहै॥ सोआत्माहीं शयनकर्तापुरुषका तथाशयनका आधारहै ॥ और सोईहीहृदयाकाशस्वरूपआत्मा शयनकर्तापुरुषके ॥ २६ ॥

आगमनकाअवधिरूपहै॥और हेबालाकि वाक्आदिककरणोंकालयरूपशयन दोप्रकारकाहोवैहै॥एकतौ स्वप्नरूपशयन होवैहै और दूसरा सुषुप्तिरूपशयन होवै है ॥ तहाँ प्रथम स्वप्नरूपशयनकाकर्ता बुद्धितैं विना संपूर्णवाक् आदिक हैं ॥ और दूसरे सुषुप्तिरूपशयनकाकर्ता बुद्धहै ॥ और दोनों प्रकारकेशयनतैं आगमनकर्ताभी बुद्धिसहितवाक् आदिकइंद्रियोंकासमूह है॥ यद्यपि पूर्वग्रंथविषे विज्ञानमयभोक्ताकूं शयनकाकर्ता तथाआगमनकाकर्ता कथनकरिआये हैं ॥ और यहांबुद्धिकूं तथावाक्आदिकोंकूं शयनकाकर्तारूपकरिकै कथनकऱ्या ॥ यातैं पूर्वउत्तरग्रंथकाविरोधप्रतीतहोवै है ॥ तथापि विचारकियेतैं सो विरोध संभवैनहीं॥काहेतैं बुद्धिविशिष्टचैतन्यकानाम विज्ञानमयहै॥ तहांचैतन्यअंशविषेतो कर्तापणा संभवै नहीं ॥ किंतु परिशेषतैं बुद्धिविषेही कर्तापणासंभवै है ॥ याअभिप्रायकरिकैही यहांबुद्धिकूं शयन काकर्ताकह्याहै॥यातैं पूर्वउत्तरग्रंथकाविरोधनहीं ॥ और हेबालाकि प्राणरूपउपाधिविषे तथाप्रज्ञारूपउपाधिविषे जोहृदयाकाशरूपआत्मा तुमारेताईंहमनैंकथनकऱ्याहै॥इसीही प्राणप्रज्ञारूपउपाधियुक्तआत्माकूं पूर्वदेवराजइंद्र प्रतर्दनराजाकेताईं कथनकरताभयाहै॥और इसीही आत्माकेसाक्षात्कारकेप्रभावतैं सो देवराजइंद्र तीनलोकोंके उपद्रवकरणेहारेअसुरोंकूं हननकर्ताभयाहै ॥ तथा नीतितैंरहितविश्वरूपादिक ब्राह्मणोंकूं हननकर्ताभयाहै॥तथा वेदांतविचारतैंरहित अनंतसंन्यासियोंकूं हननकर्ताभयाहै॥ तथापि आत्मज्ञानकेप्रभावतैं देवराजइंद्रका रोममात्रभी छेदननहीं होता भया॥और इसीही आत्माकेज्ञानकेप्रभावतैंसोदेवराजइंद्र सर्वदेवतावोंकेमध्यविषे अत्यंतश्रेष्ठताकूंप्राप्तहोताभ याहै॥और युद्धादिककार्यविषे सो इंद्र किसीदेवताकी अपेक्षाकूंनहीं करताभया॥ किंतु बलनामाअसुरतैंआदिलेकेसर्वअसुरोंकूं अकेलाही सोइंद्र हननकरताभया ॥ याकारणतैं सबबलवानोंविषे सोइंद्र प्रधानबली होताभया ॥ और सोदेवराजइंद्र आपणेतेजकरिकै विराजमान होताभया॥या कारणतैं स्वराट् यासंज्ञाकूं प्राप्त होताभया॥औरशुभगुण तथाकीर्तिआदिकोंकरिकैयुक्तहुआ सोदेवराजइंद्र सर्वदेवतावोंका प्रधानहोताभया ॥ यात हेबालाकि॥जैसेअद्वितीयआत्माकेज्ञानकेप्रभावतैं देवराजइंद्र सर्वकास्वामीहोताभया ॥ तैसे इदानींकालविषेभी जोकोईपुरुषयाआनंदस्वरूपआत्माकेज्ञानकूं विवेकादिकसाधनोंकरिकैसंपादनकरैगा ॥ सोपुरुषभी ताआत्मज्ञानकेप्रभावतैं सर्वजीवोंका

स्वामीहोवैगा॥ शंका॥हेभगवन् पूर्वआपनैं यहकह्या॥ जोदेवराजइंद्र आत्मज्ञानकेप्रभावतैं सर्वअसुरोंकूंजीततताभया ॥सोसंभवैनहीं काहेतैं पुराणोंविषे असुरोंकरिकै इंद्रकापराजयभी बहुतवार कथनकऱ्याहै॥समाधान॥हेबालाकि जबपर्यंत देवराजइंद्र प्रजापतिकेउपदेशतैं आत्म ज्ञानकूं नहींप्राप्तभयाथा॥तबपर्यंतहीं देवराजइन्द्रकूंजीतिकारिकै असुर तीनलोककेअधिपतिहोतेभये ॥ और प्रजापतिकेउपदेशतैं आत्मज्ञा नकीप्राप्तिहोएतैंअनंतरसर्वअसुरोंकाहननकरिकै सोदेवराजइंद्रही तीनलोककाअधिपतिहोताभया॥यातैंहेबालाकियाआनंदस्वरूपअद्वितीयआत्माकाज्ञानहीं सर्वतैंअधिकहै॥ताज्ञानकूंहींपुरुषोंने यत्नकरिकैसंपादनकरणा॥श्रीगुरुरुवाच।हेशिष्य इसप्रकारकौपीतकीऋषि आपणे शिष्योंकेताईं ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरिकै तूष्णीभावकूंप्राप्तहोताभया औरब्रह्मकेनिरूपणतैंअनंतर ताब्रह्मकाअवश्यकहणेयोग्यजो सत्यकास त्यहै याप्रकारकागुह्यनाम॥ तानामकूंअर्थसहित सोकौपीतकीऋषि आपणेशिष्योंकेताईं नहींकथनकरताभया॥ किंतु याज्ञवल्क्यकेतपकरिकै संतोषकूंप्राप्तहुआसूर्यभगवान् याज्ञल्क्यनामाशिष्यकेताईं सत्यकासत्यहै याप्रकारकेब्रह्मकेनामकूं अर्थसहितउपदेशकरताभया ॥ और कौपीतकीऋषितौदेवराजइंद्रतैंभयकूंप्राप्तहुआ संपूर्णब्रह्मविद्या आपणेशिष्योंकेताईं नहींउपदेशकरताभया॥ किंतु चारिअध्यायरूप जोकौपीतकीउपनिषदहै॥ तिसके प्रथमअध्यायविषे प्राणरूपपर्यंकविषे स्थितब्रह्मकीउपासनाकूँ कथनकरताभया॥ और द्वितीयअध्याय विषेअंगोंसहितप्राणविद्याकूँ कथनकरताभया ॥ और तृतीयअध्यायविषे इंद्रप्रतर्दनके संवादकरिकै निर्गुण ब्रह्मविद्याकूं कथन करता भया और चतुर्थअध्यायविषे बालाकिअजातशत्रुकेसंवादकरिकै तिसीनिर्गुणब्रह्मविद्याकूं कथनकरताभया ॥ इतनीविद्या कौपीतकीऋषि आपणेशिष्योंकेताईं उपदेशकरिकै इंद्रतैंभयकूं प्राप्त हुआ सो कौपीतकीऋषि विद्याउपदेशतैं उपरामहोता भया ॥ यह संपूर्णवार्ता चतुर्थ अध्याय विषे कथन करेंगे ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य स्वामिउद्धवानंदपूज्यपाद शिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचिते प्राकृताऽऽत्मपुराणे कौपीतकिसारार्थे प्रकाशे बालाकि अजातशत्रु संवादोनाम तृतीयोऽध्यायःसमाप्तः ॥ ३ ॥

इतिश्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषा आत्मपुराणेतृतीयोऽध्यायःसमाप्तः ॥

अथ स्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषाआत्मपुराणे चतुर्थोऽध्यायप्रारंभः ।

ॐश्रीगणेशानमः ॥ ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ अथ चतुर्थअध्यायप्रारंभः ॥ तहां प्रथमअध्यायविषे ऋग्वेदकेऐतरेयउपनिषद्काअर्थ निरूपण कऱ्या ॥ और द्वितीयअध्यायविषे तथातृतीयअध्यायविषे ऋग्वेदकेकौषीतकी उपनिषद्काअर्थ निरूपण कऱ्या ॥ अब सप्तअध्यायोंकरिकै यजुर्वेदकेउपनिषदोंकाअर्थ निरूपण करैं हैं ॥ तहां प्रथमबृहदारण्यकउपनिषद्केअर्थकूं चारि अध्यायोंकरिकैनिरूपण करैं हैं॥तहां पूर्वतृतीयअध्यायके अंतविषे गुरुनैं शिष्यकेताईं यहअर्थकथनकऱ्या ॥ देवराजइंद्रतैंभयकूंप्राप्तहुआ कौषीतकिऋषि आपणेशिष्योंकेताईं संपूर्णब्रह्मविद्याकाउपदेश नहींकरताभया ॥ और सूर्य भगवान् याज्ञवल्क्यऋषिकेताईं संपूर्णब्रह्म विद्याका उपदेश करताभया ॥ यहविचित्र कथा तृतीयअध्याकेअंतविषे गुरुनैंकही ॥ तिसविचित्र वार्ताकूंश्रवणकरिकै शिष्य अतिविस्मयकूंप्राप्त होताभया ॥ और सूर्यभगवाननैं याज्ञवल्क्यकेताईं उपदेशकरीजो ब्रह्मविद्या ॥ तात्रह्मविद्याकेश्रवणकरणेकीयद्यपि शिष्यकूंइच्छा मना है ॥ तथापि सोशिष्य अत्यंतबुद्धिमान् है॥यातैं तात्रह्मविद्याका साक्षात्प्रश्न नहींकरताभया ॥ किंतु कौषीतकिऋषि इंद्रतैंभयकूं प्राप्तहोता भया ॥ यावचनकूंश्रवणकरिकै संशययुक्त हुआशिष्य प्रथम कौषीतकि ऋषिके भयकाकारण पूछताभया॥भयकेकारणपूछणेविषे शिष्यका यहगुह्यअभिप्राय है ॥ जबी कौषीतकिऋषिकेभयकाकारण मैं पूछोंगा॥तबी कौषीतकिऋषिकेभयकेकारणकूं कथनकरतेहुए श्रीगुरु तासंपूर्णब्रह्मविद्याकूंभीकथन करैंगे ॥ या अभिप्रायतैं शिष्य प्रथम कौषीतकिऋषिके भयकाकारण पूछता भया ॥ शिष्य उवाच ॥ हे भगवन् देवराजइंद्र ऐसा कौनक्रूरकर्म करता भया ॥ जिस कारणतैं कौषीतकीऋषिकूं इंद्रतैं भय होताभया ॥ या विचित्र आख्यानकेश्रवणकरणेकी हमारेकूं इच्छा है ॥ आप कृपाकरिकै हमारेताईं कथनकरो ॥ इसप्रकार शिष्यकेप्रश्नकूं श्रवणकरिकै श्रीगुरु वेदकेमंत्रोंकरिकै कथनकरीजो दध्यङ्अश्विनका तथा इंद्रका परस्पर संवादरूप कथा है ॥ तिस विचित्रकथाकेउपदेशकरणेवासतैं प्रथम ब्रह्मविद्याकेप्रवर्त्तक संपूर्णगुरुवोंकूं स्मरणकरताभया॥काहेतैं जैसेविवेकादिकसाधनचतुष्टय ब्रह्मविद्याश्रवणकेसाधन हैं ॥ तैसैं ब्रह्मविद्याके प्रवर्त्तकगुरुवोंकास्मरणभी पापरूपप्रतिबंधकीनिवृत्तिद्वारा ब्रह्मविद्याके प्राप्तिकासाधन है॥यातैं ब्रह्मविद्या अध्ययनकालविषे ब्रह्मविद्याके

प्रवर्त्तकगुरुवोंकास्मरण मुमुक्षुजनोंने अवश्य कऱ्या चाहिये ॥ तहां मधुकांडके अंतविषे तथायाज्ञवल्क्यकांडकेअंतविषे पुरुषनामकरिकै घटित ऋषियोंकेनाम कथन करे हैं ॥ यातैं तिनदोनोंवंशोंकूं पुरुषवंश कहैं हैं ॥ और खिलकांडकेअंतविषे स्त्रीनामकरिकैघटित ऋषियोंके नाम हैं ॥ यातैं तावंशकूं स्त्रीवंशकहैं हैं॥ तहाँ मधुकांडविषे तथायाज्ञवल्क्यकांडविषे वर्तमान जेदोनोंपुरुषवंशहैं ॥ तथाखिलकांडविषे वर्तमान जोस्त्रीवंश है ॥ यातीनवंशोंविषेवर्तमानऋषियोंका कोईकशास्त्रवाले भेदमानैहैं और कोईक शास्त्रवाले तिनोंकाअभेदमानै हैं ॥ ताभेदअभेददोनोंपक्षोंविषे अभेदपक्षहीश्रेष्ठ है ॥ काहेत एकअद्वितीयब्रह्मही गुरुमूर्तिकूंधारणकरिकै शिष्यकेताईं उपदेशकरै है॥यहवेदांतशास्त्रकासिद्धांत है ॥ यातैं अभेदपक्षकूंअंगीकारकरिकै प्रथम स्त्रीवंशविषे स्थितऋषियोंके परंपराकूंनिरूपणकरै है॥श्रीगुरुरुवाच ॥ हे शिष्य ॥ या जाग्रत्विषे पौतिमाषीनामास्त्री ब्रह्मविद्याकेअधिकारी हमसर्वजनोंकीमाता है ॥ काहेतैं जिसपौतिमाषीकापुत्र इसलोकविषे सर्व ब्राह्मणोंकेताईं दुर्विज्ञेयब्रह्मविद्याकूं देताभया है ॥ सोकैसा है पौतिमाषीकापुत्र ॥ जिसकूंस्त्रीवंशविषे पौतिमाषी पुत्रकहैं हैं ॥ और दोनोंपुरुषवंशविषे जिसकूं पौतिमाष्यकहैं हैं ॥है शिष्य या पौतिमाषीपुत्रतैंआदिलेके हिरण्यगर्भपर्यंतजितनेक ब्रह्मविद्याकेप्रवर्त्तकगुरु हैं तिनसंपूर्णोंकेनामोंकूं हम तुमारेताईं कथनकरैं हैं॥तिनब्रह्मवेत्ताऋषियोंकेनामश्रवणतैं तथा नामस्मरणतैं ब्रह्मविद्याकेप्रतिबंधक संपूर्णपापकर्मोंका नाशहोवैगा तिसतैंअनंतर संपूर्णवेदांत अर्थकेजानणेविषे तूं समर्थ होवैगा ॥ यहवार्ता साक्षात्श्रुतिविषेभीकही है ॥श्लोक॥यस्य देवेपराभक्तिः यथादेवेतथागुरौ ॥ तस्यैतेकथिताह्यर्थाः प्रकाशंतेमहात्मनः ॥ १ ॥ अर्थयह ॥ जिसपुरुषकी विष्णुतथामहादेवआदिकदेवतावोंविषे परमभक्ति है ॥ और जैसे देवतावोंविषेपरमभक्ति है तैसीही ब्रह्मविद्याकेदातागुरुविषे परमभक्तिनहीं है॥तिसमहात्मापुरुषकीबुद्धिविषे वेदांतकरिकैप्रतिपादनकरे अर्थ आरूढहोवै हैं ॥ जिसपुरुषकी देवतावोंविषे तथागुरुविषे परमभक्तिनहीं है ॥ तिस पुरुषकीबुद्धिविषे वेदांतकेअर्थ आरूढहोवै नहीं ॥ यातैं मुमुक्षुपुरुषनैं अवश्य गुरुकीभक्तिकरणी ॥ अथ वंशावली वर्णनम् ॥ हेशिष्य ॥ सोपौतिमाषीपुत्रनामाऋषि कात्यायनीपुत्रनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया॥तिसीकात्यायनीपुत्रनामाऋषिकूं पुरुषवंशविषेगौपवनकहैं हैं॥और सो

कात्यायनीपुत्र गौपवन नामाऋषि भारद्वाजीपुत्रनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूं प्राप्तहोताभया॥ तिसीभारद्वाजीपुत्रनामाऋषिकूं पुरुषवंशविषे पौतिमाष्यकहै हैं ॥ यहपौतिमाष्य पूर्वपौतिमाष्यतैंभिन्नजानणा ॥ और सोभारद्वाजीपुत्र पौतिमाष्यनामाऋषि पाराशरीपुत्रनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसीपाराशरीपुत्रनामाऋषिकूं पुरुषवंशविषेगौपवनकहै है॥ यहगौपवनभी पूर्वगौपवनतैंभिन्नजानणा ॥ और सोपाराशरीपुत्र गौपवननामाऋषि औपस्वस्तीपुत्रनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसीऔपस्वस्तीपुत्रनामाऋषिकूं पुरुषवंश विषे कौपिककहै हैं॥और सोऔपस्वस्तीपुत्र कौपिकनामाऋषि पाराशरीपुत्रनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्त होता भया॥यह पाराशरीपुत्र नामाऋषिभी पूर्वपाराशरीपुत्रतैंभिन्नजानणा॥ तिसपाराशरीपुत्रनामाऋषिकूं पुरुषवंशविषे कौंडिन्यकहै हैं॥ और सोपाराशरीपुत्र कौंडि न्यनामाऋषिकौशिकीपुत्रनामाऋषितैंब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया॥तिसीकौशिकीपुत्रनामाऋषिकूंपुरुषवंशविषेशांडिल्यकहैहै॥औरसोकौ शिकीपुत्रशांडिल्यनामाऋषि आलंबीपुत्रनामाऋषितैं तथावैयाघ्रीपुत्रनामाऋषितैं यादोनोंगुरुवोंतैंब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया॥ तिसीआलं बीपुत्रनामाऋषिकूं पुरुषवंशविषे कौशिक कहै हैं ॥ और तिसीव्याघ्री पुत्रनामाऋषिकूं पुरुषवंशविषे गौतमकहै हैं ॥ और तिनदोनोंविषे आलंबीपुत्रकौशिकनामाऋषितौ साक्षात्ब्रह्मातैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्त होता भया॥ और दूसराव्याघ्रीपुत्र गौतमनामाऋषि कापीपुत्र नामऋ षितैं तथाकाण्वीपुत्रनामाऋषितैं यादोनोंगुरुवोंसैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोता भया ॥ तिसकापीपुत्रनामाऋषिकूं पुरुषवंशविषे अग्निवेश्य कहै हैं ॥ काण्वीपुत्रनामाऋषिका पुरुषवंशविषे समान संख्यावाला कोईनाम है नहीं यातैं लिख्या नहीं ॥ और तिनदोनोंविषे काण्वीपुत्र नामाऋषितौ साक्षात् ब्रह्मातैंहीं ब्रह्मविद्याकूं प्राप्त होता भया ॥ और दूसरा कापीपुत्र अग्निवेश्य नामाऋषि आत्रेयीपुत्र नामाऋषितैं तथाशांडिल्यनामाऋषितैं यादोनोंगुरुवोंतैं ब्रह्मविद्याकूं प्राप्त होता भया ॥ तिसआत्रेयीपुत्रनामाऋषिकूं पुरुषवंशविषे आनभिम्लातकहै हैं ॥ शांडिल्यनामाऋषिकेअभेदकाबोधककोईनाम स्त्रीवंशविषे है नहीं ॥ यातैं नहीं कथनकऱ्या॥और तिनदोनोंविषे शांडिल्यनामाऋ षितौ साक्षात् ब्रह्मातैंही ब्रह्मविद्याकूं प्राप्त होता भया ॥ और दूसरा आत्रेयीपुत्र आनभिम्लात नामाऋषि गौतमी पुत्र नामा ऋषितैं

ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसगौतमीपुत्रनामाऋषिकूं पुरुषवंशविषे आनभिम्लातकहै हैं और सोगौतमीपुत्र आनभिम्लातनामा ऋषि भारद्वाजीपुत्रनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसभारद्वाजीपुत्रनामाऋषिकूं पुरुषवंशविषे गौतमकहैहैं ॥ और सोभारद्वा जीपुत्र गौतमनामाऋषि पाराशरीपुत्रनामादोऋषियोंतैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया॥ तिनदोनोंऋषियोंकूं पुरुषवंशविषे एकंकू सैतवककहैहैं॥ और दूसरेकूंप्राचीनयोग्यकहै हैं॥और सोपाराशरीपुत्र सैतवनामाऋषि तथाप्राचीनयोग्यनामाऋषि यहदोनोंभ्राता वात्सीपुत्रनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोतेभये ॥तिसवात्सीपुत्रनामाऋषिकूं मधुकांडविषेस्थित पुरुषवंशविषे पाराशर्यकहै हैं ॥ और याज्ञवल्क्यकांडविषेस्थि तपुरुषवंशविषे पाराशर्यायणकहै हैं औरसोवात्सीपुत्र पाराशर्यायणनामाऋषि पाराशरीपुत्रनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया॥तिस पाराशरीपुत्रनामाऋषिकूं मधुकांडविषे भारद्वाजकहै हैं ॥ और याज्ञवल्क्यकांडविषे गाग्यार्यणकहै हैं ॥ और सोपाराशरीपुत्र भारद्वाज नामाऋषि वार्कारुणीपुत्र नामाऋषितैं तथा गौतमतैं या दोना गुरुवोंतैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिस वार्कारुणीपुत्रनामाऋषिकूं याज्ञवल्क्यकांडविषे उद्मलकायनकहै हैं॥और मधुकांडविषे भारद्वाजकहै है॥तिनदोनोंविषे वार्कारुणीपुत्र भारद्वाजनामाऋषितौ साक्षात् ब्रह्मातैंहीं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया॥और दूसरागौतमनामाऋषि द्वितीयवार्कारुणीपुत्रनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया॥तिसवार्का रुणीपुत्रनामाऋषिकूं याज्ञवल्क्यकांडविषे जाबालायनकहै हैं ॥ और मधुकांडविषे भारद्वाजकहै हैं ॥ और सो वार्कारुणीपुत्र भारद्वाजना माऋषि आर्तभागीपुत्रनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसआर्तभागी पुत्रनामा ऋषिकूं याज्ञवल्क्यकांडविषे माध्यंदिनायनक हैहै ॥ और मधुकांडविषे पाराशर्यकहै हैं ॥ और सोआर्तभागी पुत्र माध्यंदिनायननामाऋषि शौंगीपुत्रनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोता भया ॥ तिसशौंगीपुत्रनामाऋषिकूं याज्ञवल्क्यकांडविषे सौकरायणकहै हैं ॥ और सोशौंगीपुत्र सौकरायणनामाऋषि सांकृतीपुत्रनामा ऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिससांकृतीपुत्रनामाऋषिकूं याज्ञवल्क्यकांडविषे कापायणकहै हैं ॥ और सोसांकृतीपुत्र कापायण नामाऋषि आलंबायनीपुत्रनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया॥तिसआलंबायनीपुत्रनामाऋषिकूं याज्ञवल्क्यकांडविषे सायकायनकहै

हैं ॥ और मधुकांडविषे वैजपायनकहैं हैं ॥ और सोआलंबायनीपुत्र वैजपायननामाऋषि आलंबीपुत्रनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूं प्राप्तहोता भया॥ तिसआलंबीपुत्रनामाऋषिकूं पुरुषवंशविषे कौशिकायनिकहैं हैं॥और सोआलंबीपुत्र कौशिकायनिनामाऋषि जायंतीपुत्रनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥तिसजायंतीपुत्रनामाऋषिकूं दोनोंपुरुषवंशोंविषे घृतकौशिककहैं हैं ॥ और सोजायंतीपुत्र घृतकौशिकनामाऋषि मांडूकायनीपुत्रनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया॥तिसमांडूकायनीपुत्रनामाऋषिकूं पुरुषवंशविषे पाराशर्यायणकहैं हैं॥ और सोमांडूकायनीपुत्र पाराशर्यायणनामाऋषि मांडूकीपुत्र नामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोता भया ॥ तिसमांडूकीपुत्रनामा ऋषिकूं पुरुषवंशविषे पाराशर्यकहैं है ॥ और सोमांडूकी पुत्र पाराशर्य नामाऋषि शांडलीपुत्र नामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूं प्राप्त होता भया ॥ तिस शांडिलीपुत्रनामा ऋषिकूं पुरुषवंशविषे जातूकर्ण्यकहैं हैं॥और सोशांडिलीपुत्रजातूकर्ण्यनामाऋषि राथीतरीपुत्रनामाऋषितैं तथा यास्कनामाऋषितैं यादोनोंगुरुवोंतैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिस राथीतरी पुत्रनामाऋषिकूं पुरुषवंश विषे आसुरायण कहैं हैं ॥ तिनदोनोंविषे यास्कनामाऋषितौ साक्षात्ब्रह्मातैंहीं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया॥और दूसराराथीतरी पुत्र आसुरायण नामा ऋषि भालुकी पुत्रनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया॥ तिसभालुकीपुत्रनामाऋषिकूं पुरुषवंशाविषे त्रैवणिकहैं हैं॥अब स्त्रीवंशविषेवर्तमान जेअधिक षट्ऋषिहैं॥तिनोंकाआसुरायणऋषिविषे अंतरभावकूं दिखावै हैं॥सोभालुकीपुत्र त्रैवणिनामाऋषि कौचकीपुत्रनामादोनोंऋषियोंतैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया।औरतेकौचकीपुत्रनामादोनोंऋषिवैदभृतिपुत्रनामाऋषितैंब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोतेभये। औरसोवैदभृतिपुत्रनामाऋषिकार्षकेयीपुत्रतैंब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभयाऔरसोकार्षकेयीपुत्रनामाऋषिप्राचीनयोगीपुत्रनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभयाऔरसोप्राचीनयोगीपुत्रनामाऋषिसांजीवीपुत्रनामाऋषितैंब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया। औरसोसांजीवीपुत्रनामाऋषिप्राश्रीपुत्रनामाऋषितैंब्रह्मविद्याकूंप्राप्त होताभया॥कैसाहैसोप्राश्रीपुत्रनामाऋषि स्त्रीवंशकेअंतविषेस्थित है॥और आसुरिनामादेशविषेरहणेतैं अथवाआसुरिनामागुरुकेसमीपरहणेतैं जिसप्राश्रीपुत्रनामाऋषिकूं आसुरिवासीकहैहैं॥औरसोप्राश्रीपुत्रनामाऋषि पूर्वउक्तराथीतरी पुत्रआसुरायणनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूं

प्राप्तहोताभया ॥ कैसा है॥सो आसुरायण नामाऋषि पूर्वउक्त जातूकर्ण्यनामाऋषिकातौगुरुहै॥और त्रैवणिनामाऋषिकाशिष्यहै॥शंका॥ हे भगवन् त्रैवणिनामाऋषिकेगुरुवोंकीपरंपराविषेवर्तमानप्राश्रीपुत्रनामाऋषि त्रैवणिनामाऋषिकेशिष्यआसुरायणनामाऋषितैं किसप्रकार ब्रह्मविद्याकूंग्रहणकरताभया ॥ आपणेशिष्यकेभीशिष्यतैं विद्याकाग्रहणकरणा संभवैनहीं॥समाधान ॥ आपणेशिष्यकेभीशिष्यतैं यद्यपि विद्याकाअध्ययनकरणा असंगतहै॥तथापि किसीनिमित्तकारिकै पूर्वअध्ययनकरीविद्याकोविस्मरणहुए तथासंशयकेउत्पन्नहुए पुनःविद्याका अध्ययन प्रसिद्धदेख्याहै ॥ और महाभारतके गदापर्वविषेभी यहवार्तांप्रसिद्धहै ॥ तहाँ यहकह्याहै ॥ एककालविषे द्वादशवर्षपर्यंत दुर्भिक्ष पडाथा ॥ तादुर्भिक्षकारिकै संपूर्णब्राह्मणोंकी विद्या विस्मरणहोतीभयी॥और सरस्वतीकी कृपाकरिकै एकसारस्वतनामाब्राह्मणकूं विद्या काविस्मरणनहींहोताभया ॥ और दुर्भिक्षके निवृत्तिहुए पुनःतेसंपूर्ण ब्राह्मण तासारस्वतनामाब्राह्मणतैं विद्याकूंअध्ययनकरते भये ॥ इस प्रकार विद्याकेविस्मरणहुए पुनः विद्याकाअध्ययन संभवै है और सोपूर्वउक्तआसुरायण नामाऋषिकागुरु त्रैवणिनामाऋषि औपजंधनिनामाऋषितैंभी ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और सो औपजंधनिनामाऋषि आसुरिनामा ऋषितैं ब्रह्मविद्याकूं प्राप्त होता भया ॥ सोकै साहैआसुरिनामाऋषि ॥ तीन वंशोविषे जिसका समानरूप है ॥ और जिस आसुरिनामाऋषितैंलेकै नीचेनीचे जो नाना प्रकार ऋषियोंके वंशकाभेद है ॥ सोवंशकाभेद किसीपुरुषकैभीसमाधानकरणेकूंअशक्य है ॥ तात्पर्ययह ॥ पौतिमाषीपुत्रनामाऋषितैंलेके आसुरिनामाऋषिपर्यंतऋषियोंकेनामोंकीविलक्षणतादेखिकै तथासंख्याकीविलक्षणतादेखिकैकोईकशास्त्रवालेस्त्रीवंशकूंभिन्नहींअंगीकारकरें हैंऔर कोईकशास्त्रवाले महात्मापुरुष बहुतस्थानविषे नामोंकीसमानताकूंदेखिकरिकै स्त्रीवंशकूंभिन्नमानैंनहीं।किंतु अभिन्नमानें हैं।तैसेदोनोंपुरुषवंशविषेभी कोईकशास्त्रवालेपुरुष अग्निवेश्यनामाऋषितैंलेकै कौशिकायनिनामाऋषिपर्यंत परस्परनामोंकीविलक्षणताकूंदेखिकैभेदहींअंगीकारकरें हैं॥और अग्निवेश्यनामाऋषितैं पूर्वविद्यमान जे ऋषि हैं ॥ तथा कौशिकायनिनामाऋषितैं परेविद्यमानजेऋषि हैं ॥ तिनोंकातौ परस्परअभेदहींअंगीकारकरें हैं ॥ और कोईकशास्त्रवालेपुरुषतौ सर्वत्र अभेदही अंगीकारकरें हैं॥ काहेतैं एकहीऋषिके नानाप्रकारकेनाम

संभवै है॥नामोंकेभेदकूंदेखिकरिकै ऋषियोंकाभेदमानणा निष्फलहै॥किंवा॥तिनवंशोंका परस्परभेदअंगीकारकरिये॥अथवा अभेदअंगी कारकरिये ॥ सर्वप्रकारकरिकै आसुरिनामाऋषिविषे स्त्रीवंशका तथादोनोंपुरुषवंशका अभेदहीसिद्धहोवै है ॥ तात्पर्ययह॥ आसुरिनामा ऋषितैंपूर्व तीनोंवंशोंविषेभेदका तथाअभेदका विवादहै॥ आसुरिनामाऋषितैंअनंतर केवलअभेदही है॥इसप्रकार स्त्रीवंशकूंनिरूपणकरि कै अब दोनोंपुरुषवंशकूं निरूपणकरै हैं ॥ तहां सोआसुरिनामाऋषिभारद्वाजनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और सोभारद्वाज नामाऋषि आत्रेयनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोता भया॥ और सोआत्रेयनामाऋषि मांटिनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया॥और सोमांटिनामाऋषि गौतमनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया॥और सोगौतमनामाऋषि दूसरेगौतमनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोता भया ॥ और सोदूसरा गौतमनामाऋषि वात्स्यनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया॥और सोवात्स्यनामाऋषि शांडिल्यनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और सो शांडिल्यनामाऋषितैं कैशोर्यकाप्यनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूं प्राप्तहोताभया ॥ और सो कैशोर्य काप्यनामाऋषि कुमारहारितनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूं प्राप्त होता भया ॥ और सोकुमारहारितनामाऋषि गालवनामाऋषितैं ब्रह्मविद्या कूंप्राप्तहोता भया ॥ और सोगालवनामाऋषि विदर्भीकौंडिन्यनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और सोकौंडिन्यनामाऋषि वात्सनेयाद्भाश्रवनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूं प्राप्त होता भया ॥ और सो वात्सनेयाद्भाश्रवनामाऋषि पथिनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूं प्राप्त होता भया॥तिसपथिनामाऋषिकूं सौभरिभीकहै हैं॥और सो सौभरिपथिनामाऋषि अपास्यांगिरसनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्त होता भया ॥ और सो अपास्यांगिरसनामाऋषि त्वाष्ट्राआभूतनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूं प्राप्त होता भया ॥ और सोत्वाष्ट्राआभूतिनामाऋषि त्वाष्ट्रविश्वरूपनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूं प्राप्त होता भया ॥ और सोत्वाष्ट्राविश्वरूपनामाऋषि अश्विन्नामा दो ऋषियोंतैंब्रह्मविद्याकूं प्राप्त होता भया ॥ जिनअश्विन्नामाऋषियोंके विद्या उपदेशरूप निमित्ततैं देवराजइंद्र दध्यङ् अथर्वणनामा ऋषिऊपर क्रोधकूं करता भया ॥ और तेअश्विन्नामादोनोंऋषि दध्यङ्अर्थर्वणनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्त होतेभये ॥ कैसाहैसोदध्यङ्अथर्वणनामाऋषि देवराजइंद्रकाभी

गुरुहै॥और सोदध्यङ् अथर्वणनामाऋषि दैवआथर्वणनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया॥और सोदैवआथर्वणनामाऋषि प्राध्वंसनमृ त्युनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और सोप्राध्वंसनमृत्युनामाऋषि प्रध्वंसननामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया॥और सो प्रध्वंसननामाऋषि एकर्षिनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया॥और सोएकर्षिनामाऋषि विप्रचित्तिनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोता भया॥और सोविप्रचित्तिनामाऋषि व्यष्टिनामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और सोव्यष्टिनामाऋषि सनारुनामाऋषितैं ब्रह्मवि द्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और सोसनारुनामाऋषि सनातननामाऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया॥और सोसनातननामाऋषि सनकनामा ऋषितैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और सोसनकनामाऋषि विराट्भगवान्तैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया॥और सोविराट्भगवान् हिर ण्यगर्भतैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसहिरण्यगर्भतैं आगे कोईब्रह्मविद्याकावक्तानहीं॥किंतु हिरण्यगर्भही सर्वकाअवधिरूपहै ॥ तिस हिरण्यगर्भके ताईं सर्वदा हमारानमस्कारहै ॥ कैसाहै सो हिरण्यगर्भ संपूर्णजगत्का तथावेदरूपवृक्षका मूलरूपहै ॥ इसप्रकार स्त्रीवंशके साथ पुरुषवंशकाअभेद अंगीकारकरिकै पुरुषवंशकानिरूपणकऱ्या ॥ अब भेदपक्षकूंअंगीकारकरिकै स्त्रीवंशकानिरूपणकरै हैं ॥ श्रीगुरु रुवाच ॥ हेशिष्य दोनों पुरुषवंशोंविषे ऋषियोंकेनामोंकीसमानता बहुतस्थानविषेदेखीती है ॥ यातैं दोनोंपुरुषवंशोंका यद्यपि अभेदसं भवै है॥तथापि स्त्रीवंशविषे ऋषियोंकेसंख्याकाभेद देखीता है तथा प्रकरणकाभी भेददेखीता है तथा तिनऋषियोंकेनामोंकी भी विलक्ष णतादेखीती है॥यातैं स्त्रीवंशकाभेदही हमारेचित्तविषे प्रतीतहोवै है॥यातैं ताभेदपक्षकूं अंगीकारकरिकै अब स्त्रीवंशकानिरूपण तेरे ताईं हम करै हैं॥तिसकूं तुम श्रवणकरो॥पूर्व अभेद पक्षकूं अंगीकारकरिकै पौतिमाष्यनामाऋषितैंलेके उत्तरउत्तर आसुरिनामाऋषिपर्यंतस्त्री वंशकानिरूपण कऱ्या ॥ अब ब्रह्मातैंलेकै नीचे नीचे ऋषियोंके नामोंकूं निरूपण करै हैं॥हे शिष्य पूर्व पुरुषवंशकेअंतविषे कथन कऱ्या जोस्वयंभू ब्रह्मा तिस ब्रह्मातैं विराट्भगवान् ब्रह्मविद्याकूं प्राप्त होताभया॥और तिसविराट्भगवान्तैं कावषेयनामाऋषि ब्रह्मविद्याकूं प्राप्त होता भया॥तिसकावषेयनामाऋषिकूं तुरभीकहै हैं॥और तिसतुरनामाकावषेयऋषितैं यज्ञवचसूनामा राजस्तंबायनऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्रा

प्राप्तहोताभया।और तिसयज्ञवचसूनामाऋषितैं कुथिनामाऋषि ब्रह्मविद्याकूं प्राप्तहोताभया।और तितकुथिनामाऋषितैं वात्स्यनामाऋषि ब्रह्मविद्याकूं प्राप्तहोताभया॥और तिसवात्स्यनामाऋषितैं शांडिल्यनामाऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोता भया॥और तिसशांडिल्यनामाऋषितैं वामकक्षायणनामाऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया॥और तिसवामकक्षायणनामाऋषितैं माहित्थिनामाऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोता भया॥और तिसमाहित्थिनामाऋषितैं कौत्सनामाऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोता भया और तिसकौत्सनामाऋषितैं मांडव्यनामाऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और तिसमांडव्यनामाऋषितैं मांडूकायनिनामाऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥और तिसमांडूकायनिनामाऋषितैं सांजीवीपुत्रनामाऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया॥तिससांजीवीपुत्रनामाऋषितैंलैकै नीचेनीचे पौतिमाषीपुत्रपर्यंत जोशिष्योंकी परंपरा पूर्वकथनकरिआये हैं ॥ सोईहीपरंपरायहां सांजीवीपुत्रतैंनीचेनीचजानणी ॥ परंतु पूर्वतैंहां इतनाभेद है ॥ पूर्व स्त्रीनामकरिकैअघटितजेपौतिमाष्यतथागोपवनादिकनामहैं ॥ तिननामोंकापरित्यागकरिकै तथापूर्वउक्तआसुरायणऋषिंविषे अंतर्भावका परित्याग करिकै अन्यसंपूर्णशिष्योंकीपरंपरापूर्वकी न्याईं जाननी ॥ यातैं हे शिष्य पौतिमाषीपुत्रनामाऋषितैं आदिलैकै जितनेकऋषि स्त्रीवंशविषे विद्यमान हैं ॥ तिन सर्वऋषियोंका आद्यगुरु स्वयंभू ब्रह्मा है ॥ ता ब्रह्माकूंहीं हिरण्यगर्भकहे हैं ॥ और कोईकबुद्धिमान्पुरुष सूर्यभगवान्कूंभी स्त्रीवंशकाआद्यगुरुकहैं हैं ॥ यातैं हे शिष्य तिस प्रक्रियाकूंभी हम तुमारेताईं कथनकरै हैं ॥ तुम श्रवणकरो ॥ सो कैसाहै सूर्य भगवान् ॥ जिस सूर्यभगवान्कातेज मुमुक्षुजनोंनें सर्वदा ध्यानकरणेयोग्यहै ॥ और जो सूर्यभगवान् हमजीवोंकेअंतरस्थितहोइकै बुद्धिकी संपूर्ण वृत्तियोंकूं धर्मादिकोंविषे प्रवर्त्त करै है॥और जो सूर्यभगवान् मायाविशिष्टईश्वरस्वरूपहै॥तथा हिरण्यगर्भस्वरूपहै॥तथा वैश्वानरस्वरूपहै॥और जो सूर्यभगवान् भूमिलोक अंतरिक्षलोक स्वर्गलोक यह तीनलोकस्वरूपहै॥तथा ऋग् यजुष् साम यहतीनवेदस्वरूपहै ॥ तथा जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति यहतीनअवस्थास्वरूपहै ॥ तथा ब्रह्मा विष्णु महादेव यहतीनदेवतास्वरूपहैं ॥ और जो सूर्यभगवान् प्रणवकाअर्थस्वरूपहै॥ऐसेसूर्यभगवान्तैं अंभिणीनामादेवता ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया॥और तिसअंभिणीनामादेवतातैं वाक्देवताब्रह्म

विद्याकूंप्राप्तहोता भया॥और तिसवाक् देवतातैं कश्यपनामानेधुविऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया॥और तिसनैधुवि कश्यपनामाऋषितैं शिल्पनामा कश्यपऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥और तिसशिल्पकश्यपनामाऋषितैं हरितकश्यपनामाऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया॥और तिसहरितकश्यपनामाऋषितैं वार्षगणनामा असितऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया॥औरतिस वार्षगणआसितनामाऋषितैं जिह्वावान्नामा बाध्योगऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥और तिसजिह्वावान्बाध्योगनामाऋषितैं वाजश्रवसूनामाऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोता भया ॥ और तिस वाजश्रवसूनामाऋषितैं कुथिनामाऋषि ब्रह्मविद्याकूं प्राप्त होता भया और कुथिनामाऋषितैं उपवेशिनामाऋषिब्रह्मविद्याकूं प्राप्त होता भया ॥ और तिस उपवेशिनामाऋषितैं अरुणनामाऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और तिसअरुणनामाऋषितैं उद्दालकनामाऋषि ब्रह्मविद्याकूं प्राप्तहोताभया ॥ और तिसउद्दालकनामाऋषितैं याज्ञवल्क्यनामाऋषि ब्रह्मविद्याकूं प्राप्त होता भया ॥ और तिसयाज्ञवल्क्यनामाऋषितैंआसुरिनामाऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया॥ और तिसआसुरिनामाऋषितैं आसुरायणनामाऋषिब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया॥ और तिसआसुरायणनामाऋषितैं प्राश्रीपुत्रनामाऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया।और तिसप्राश्रीपुत्रनामाऋषितैं सांजीवीपुत्रनामाऋषि ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ सोसांजीवीपुत्रनामाऋषि पूर्वब्रह्मातैंप्रवर्त्तभयावंशविषे मांडूकायनिनामाऋषिका शिष्यरूपकरिकैकथनकऱ्याथा॥ इसप्रकार प्राचीनयोगीपुत्रनामाऋषितैं आदिलैकै पौतिमाषीपुत्रनामाऋषिपर्यंत स्त्रीनामघटितनामोंकरिकै जेजेऋषिपूर्वनिरूपणकरेथे ॥ तेसंपूर्णऋषि पुरुषनामतैंरहितहुए सांजीवीपुत्रनामाऋषिके शिष्यपरंपराविषेजानणे ॥ इसप्रकार सूर्यभगवान्तैं निर्गमनभई जोब्रह्मविद्या ॥ तथा स्वयंब्रह्मातैंनिर्गमनभई जोब्रह्मविद्या ॥ यहदोनोंप्रकारकीब्रह्मविद्या सांजीवीपुत्रनामाऋषिविषे एकभावकूं प्राप्तहोती भई ॥ दृष्टांत ॥ जैसे पर्वतकेदोशृंगोंतैं निर्गमनभयेजो नदीके दोप्रवाह॥ते किंचिन्दूरजाइकै एकताकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ तैसेसूर्यभगवान्तैं तथाब्रह्मातैं निर्गमनभएयां जे ब्रह्मविद्यारूपदोनदी तेदोनोंप्रकारकीब्रह्मविद्या सांजीवीपुत्रनामाऋषिकूंप्राप्त होइकै एकभावकूं प्राप्तहोवै हैं॥ तात्पर्ययह ॥ ब्रह्मातैंलैकै तथासूर्यभगवान्तैंलैकै सांजीवीपुत्रपर्यंत दोप्रकारके शिष्यपरंपराकूं ब्रह्मविद्याप्राप्तहोवैहै ॥

और सांजीवीपुत्रतैलैकै नीचेनीचे एक प्रकारके शिष्यपरंपराकूं ब्रह्मविद्याप्राप्तहोवै है ॥ इसप्रकार भेदपक्षकूंअंगीकारकरिकै स्त्रीवंशका निरूपणकऱ्या ॥ अब तिसी भेदपक्षकूं अंगीकारकरिकै दोनों पुरुषवंशोंकी जितनी अंशाविषेसमानरूपता है तथा जितनीअंशाविषे तिनों कीविलक्षणता है तिनदोनोंकूं निरूपणकरैं हैं ॥ तहाँ बृहदारण्यक उपनिषद्के तृतीयचतुर्थअध्यायरूपमधुकांडविषे तथा बृहदारण्यक उपनिषद्के पंचमषष्ठमअध्यायरूप याज्ञवल्क्यकांडविषे पौतिमाष्यनामाऋषितैं आदिलैकै स्वयंभू ब्रह्मापर्यंत बहुत स्थानविषे पुरुषवंशकी समान रूपताही देखी है॥और अग्निवेश्यनामाऋषिके तथा कौशिकाययननामाऋषिके मध्यवर्तिजेऋषि हैं॥तिनऋषियोंविषे समानरूपता है नहीं ॥ किंतु विलक्षणताहै॥तहाँ प्रथम मधुकांडविषे विलक्षणताकूं निरूपणकरैं हैं॥आग्निवेश्यनामाऋषिके दोगुरुहोतेभये॥ एकतौ शांडिल्यनामाऋषि॥और दूसरा आनभिम्लातनामाऋषि॥तिन दोनोंविषे आनभिम्लातनामाऋषिका अन्यआनभिम्लातनामाऋषि गुरुहोताभया॥ और तिसदूसरे आनभिम्लातनामाऋषिका तृतीयआनभिम्लातनामाऋषि गुरुहोताभया॥और तिसतृतीयआनभिम्लातनामाऋषिका गौतमनामाऋषि गुरुहोताभया॥और तिस गौतमनामाऋषिके सैतवनामाऋषि तथाप्राचीनयोग्यनामाऋषि यह दोनोंगुरुहोतेभये॥और सैतव तथाप्राचीनयोग्यनामादोनोंऋषियोंका पाराशर्यनामाऋषि गुरुहोताभया॥और तिस पाराशर्यनामाऋषिका भारद्वाजनामाऋषि गुरुहोताभया॥ और तिसभारद्वाजनामाऋषिके द्वितीयभारद्वाजनामाऋषि तथागौतमनामाऋषि दोनों गुरुहोतेभये तिनदोनोंऋषियोंविषे गौतमनामाऋषिका अन्यभारद्वाजनामाऋषि गुरुहोताभया॥और तिसभारद्वाजनामाऋषिका अन्यपाराशर्यनामाऋषि गुरुहोताभया ॥ और तिसपाराशर्यनामाऋषिका वैजपाययननामाऋषि गुरुहोताभया॥और तिसवैजपाययननामाऋषिका कौशिकायनिनामाऋषि गुरुहोताभया॥इसप्रकार मधुकांडविषे आग्निवेश्यनामाऋषितैंलैकै कौशिकायनिनामाऋषिपर्यंत विलक्षणताकथनकरी ॥ अब याज्ञवल्क्यकांडविषेताविलक्षणताकूं निरूपणकरैं हैं ॥ तहां आग्निवेश्यनामाऋषिका गार्ग्यनामाऋषि गुरुहोताभया ॥ और तिसगार्ग्य नामाऋषिका दूसरा गार्ग्यनामाऋषि गुरुहोता भया॥और तिस दूसरे गार्ग्यनामाऋषिका गौतमनामाऋषि गुरु होता भया॥

और तिस गौतमनामाऋषिका सैतवनामाऋषि गुरु होता भया ॥ और तिस सैतवनामाऋषिका पाराशर्यायणनामाऋषि गुरुहोताभया॥ और तिस पाराशर्यायणनामाऋषिका गार्ग्यायणऋषि गुरु होता भया ॥ और तिस गार्ग्यायणनामाऋषिका उद्दालकाययननामाऋषि गुरु होताभया ॥ और तिस उद्दालकाययननामाऋषिका जाबालाययननामाऋषि गुरुहोताभया॥और तिस जाबालाययननामाऋषिका माध्यंदिनाययननामाऋषि गुरु होताभया ॥ और तिस माध्यंदिनाययननामाऋषिका सौकरायणनामाऋषि गुरुहोताभया ॥ और तिससौकरायणनामाऋषिका कापायणनामाऋषि गुरु होता भया ॥ और तिसकापायणनामाऋषिका सायकाययननामाऋषि गुरु होता भया ॥और तिससायकाययननामाऋषिका कौशिकायनिनामाऋषि गुरु होता भया ॥हे शिष्य मधुकांडविषे स्थितपुरुषवंशाविषे तथा याज्ञवल्क्यकांडविषेस्थितपुरुषवंशविषे इतनीही विलक्षणताहै॥ताविलक्षणताकूंदेखिकरिकै कोईकविद्वान्पुरुष तिनदोनोंपुरुषवंशोंकेभेदकूंही अंगीकार करैहैं ॥ और कोईकविद्वान्पुरुष याप्रकार अंगीकारकरैं हैं ॥ मधुकांडके अंतविषे तथायाज्ञवल्क्यकांडके अंतविषे तथाखिलकांडकेअंतविषे एकहीवंशकानिरूपणकऱ्याहै ॥ परंतु मधुकांडादिरूप उपाधिके भेदकरिकै वंशकाभेद प्रतीत होवै है ॥ वास्तवतें वंशकाभेदनहीं॥ और कोईकविद्वान्पुरुष कल्पके भेदतैंवंशकाभेद अंगीकारकरैं हैं ॥ और वेदकेअर्थकूंयथार्थ जानणेहारे जे श्रीशंकराचार्यादिकहैं॥तेतौ सर्वप्रकार तिनवंशोंकाअभेदनहीं अंगीकारकरै हैं॥शंका॥हेभगवन् जोतिनवंशोंका सर्वथाअभेदहीहोवै ॥ तौ एकवारकथनतैंहीप्रतिबंधकेनिवृत्तिद्वारा विद्याकीप्राप्तिरूपफलका संभव होइसकैहै तीनवारवंशकाकथन निष्फल है॥ समाधान ॥ तीनवार वंशकाकथन निष्फल नहीं किंतु सफल है॥काहेतैं जैसे एकहीप्राण ज्येष्ठरूपकरिकैआराधन कऱ्या हुआ॥तथाश्रेष्ठरूपकरिकै आराधनकऱ्याहुआ भिन्नभिन्न फलकीप्राप्तिकरै है॥तैसे एकहीऋषियोंकावंश मधुकांडविषे स्थितनामोंकरिकैस्मरणकऱ्याहुआ मधुविद्याकेप्रतिबंधकपापकर्मकीनिवृत्तिद्वारा मधुविद्यारूपफलकीप्राप्तिकरैहै॥ और सोईही ऋषियोंकावंश याज्ञवल्क्यकांडविषेस्थितनामों करिकैस्मरणकऱ्याहुआ याज्ञवल्क्यविद्याकेप्रतिबंधकपापकर्मोंकीनिवृत्तिद्वारा याज्ञवल्क्यविद्यारूपफलकीप्राप्तिकरैहै॥और सोईहीऋषियोंकावंश खिलकांडविषेस्थितनामों

करिकैस्मरणकऱ्याहुआ सर्वविद्याके प्रतिबंधकपापकर्मकीनिवृत्तिद्वारा सर्वविद्यारूपफलकीप्रातिकरै है ॥ यातैं तीनोंकांडविषे ऋषियोंके नामोंकाभेद है ॥ ऋषियोंकेस्वरूपविषेभेदनहीं ॥ किंवा स्त्रीवंशविषे जोपूर्व किंचित्मात्रविलक्षणता कथनकरिआये हैं ॥ सोविलक्षणता भी भेदकाकारणहोवै नहीं॥ काहेतैं जैसे दोनोंपुरुषवंशविषे आग्निवेश्यनामाऋषिके तथा कौशिकायनिनामाऋषिके मध्यवर्तिऋषियोंके जोनामोंकाभेदहै॥सोभेद दोनोंपुरुषवंशकेभेदकूंउत्पन्नकरैनहीं॥ तैसे कहांन्यूनऋषियोंकाकथनऔर कहाँ अधिक ऋषियोंकाकथन और कहांदोगुरुवोंकाकथन और कहांब्रह्मातथासूर्यरूपदोसंप्रदायोकाकथन ॥ यहसर्वप्रकारकीविलक्षणताभी स्त्रीवंशकेभेदकूंसिद्ध करै नहीं ॥ किंवा ॥ ब्रह्मविद्याकाप्रवर्तक जो सूर्यभगवान् है॥सो स्वयंभूब्रह्मातैंभिन्ननहीं॥तैसे स्वयंभूब्रह्मातैं विराट्भगवान् वास्तवतैंभिन्ननहीं॥ तैसे विराट्भगवान्तैं ऋषि वास्तवतैंभिन्न नहीं ॥ किंतु उपाधिकरिकैतिनोंकापरस्परभेद प्रतीतहोवै है॥ यातैं ऋषियोंकेस्वरूपकाभेदनहीं॥ किंतुतिनोंकेनाममात्रकाभेदहै ॥ किंवा सांजीवीपुत्रनामाऋषितैंलैके ब्रह्मापर्यंत श्रुतिही तिनऋषियोंकेसमानरूपताकूं कथनकरैहै ॥ यातैं पौतिमाषीपुत्रपर्यंतभी तिनवंशोंविषे भेदनहींजानणा ॥ किंतु अभेदहीजानणा॥किंवा॥तीनवंशोंविषे स्थितऋषियोंका पररूपरभेदहोवै॥ अथवा अभेदहोवै ॥ सर्वप्रकारकरिकै मुमुक्षुपुरुषनैं तिन ऋषियोंका वारंवार स्मरणहींकरणेयोग्यहै॥ और जोकदाचित् सर्वऋषियोंकेस्मरणकरणकी जिसपुरुषकूंसामर्थ्यनहींहोवै ॥ तिसपुरुषनैंभी पौतिमाषीपुत्रनामाऋषिकातौ अवश्यहीस्मरणकरणा ॥ काहेतैं ब्रह्मविद्याके अधिकारीहमसर्वपुरुषोंकागुरु पौतिमाषीपुत्रनामाऋषिहीहै॥ कैसाहैसोपौतिमाषीपुत्रनामाऋषि स्त्रीवंशविषे तथापुरुषवंशविषे प्रसिद्धहै॥ इतिवंशव्याख्यानंसंपूर्णम् ॥ हेशिष्य पूर्वजोतुमनैं भयकाकारणपूछाथा ॥ तिसकेकथन करणेवासतैं यह ऋषियोंकावंश हमनैं तुमारेताईं कथनकऱ्याहै॥अब तिनऋषियोंकेवंशविषे एकविचित्रइतिहासकूं हमनैंश्रवणकऱ्याहै॥तिस इतिहासकूंतुमश्रवणकरोताइतिहासकेश्रवणकरणतैं तुमारेसंदेहकीनिवृत्तिहोवेगी॥कैसाहै सोइतिहास इंद्रके तथाअश्विनीकुमारोंके गुह्यकर्मकूं प्रकाशकरणेहाराहै॥और अश्विनीकुमारोंकूं देखिकै क्रोधयुक्तहुएकिसीऋषिनैं कथनकऱ्याहै॥श्रीगुरुरुवाच॥हेशिष्य कोईकऋषि किसीकार्यकीसिद्धिवासतैं अश्विनीकुमारोंकेसमीप

जाताभया॥औरतेअश्विनीकुमारकिसीनिमित्तकरिकैतिसऋषिकीअवज्ञाकरतेभये ॥ तिसकरिकैक्रोधयुक्तहुआसोऋषिअश्विनीकुमारोंकेप्रति याप्रकारका वचन कहताभया॥ हे अश्विनीकुमारो॥ तुमोनैं जोपूर्वगुह्यपापकर्मकऱ्याहै॥ तिसकूं मैं भलीप्रकारजाणताहूं॥अहंकारकरिकैयुक्तहुएतुम जोहमारेकार्यकूंनहींकरोगे ॥ तौ जैसे बादल महान्वृष्टिकूंप्रगटकरै है ॥ तैसे तुमारेपापकर्मकूंमैं प्रगटकरोंगा॥इसप्रकार ऋषिकेवचनकूंश्रवणकरिकै तेमहात्माअश्विनीकुमार याप्रकारकाविचारकरतेभये ॥ जो यहऋषि हमारेपापकर्मकूंप्रगटकरैगा ॥ तिसकरिकै हमारीकिंचित्मात्रभीहानि नहींहोवैगी ॥ उलटा जगत्विषे हमारीकीर्तिहोवैगी ॥ तात्पर्ययह ॥ अज्ञानीपुरुषकेपापकर्म जभी प्रगटहोवै हैं ॥ तभी परलोकविषे ताअज्ञानीकेदुर्गतिकूंविचारकरिकै संपूर्णलोक ताअज्ञानीकीनिंदाकरै हैं ॥ और आत्मज्ञानीपुरुषकेपापकर्मकूं देखिकै लोक निंदाकरैनहीं ॥ उलटा ॥ याप्रकारकहै हैं ॥ यातत्त्ववेत्ताज्ञानीपुरुषनैं ऐसाउग्रपापकर्मकऱ्याभी ॥ तौभी जिसआत्मज्ञानके प्रभावतैं याका रोममात्रभीछेदननहींहोताभया ॥ याप्रकार सर्वलोक तत्त्ववेत्ताज्ञानीपुरुषकी कीर्तिकरै हैं॥ याप्रकार आपणेमनविषेविचारकरिकै तेअश्विनीकुमार कहते भये ॥ हेऋषि क्रूरपुरुषकीन्याईं हमोनैं ऐसाकौनपापकर्मकऱ्या है॥ और किसप्रकार हमोनैं सो पापकर्म कऱ्या है तथा किसनिमित्तकरिकै हमोनैं सोपापकर्मकऱ्या है ॥ यहसंपूर्णवृत्तांत हमारेप्रति तुमकहो ॥ और हे ऋषि जोतू हमारेगुह्यपापकर्मकूं प्रगटकरिकै नहींकहैगा ॥ तौ तुमारेकार्यकूं हम नहींसिद्धकरैंगे ॥ यातैं आपणेकार्यकीसिद्धिवासतैं सोहमारापापकर्म प्रगटकरो ॥ हमारेपापकर्मकूं जभी तुम प्रगटकरोगे ॥ तभी हम तुमारेकार्यकीसिद्धिकरैंगे ॥ यह हमारा सत्य वचन है ॥ इसप्रकार अश्विनीकुमारोंके वचनकूं श्रवणकरिकै आपणेकार्यकीसिद्धिवासतैं सोऋषि तिनोंकेगुह्यपापकर्मकूं तथाताकेनिमित्तकूं अश्विनीकुमारोंकेआगे कहताभया॥ ऋषिरुवाच ॥ हे अश्विनीकुमारो ब्रह्माकाशिष्यजो विराट्भगवान् है ॥ तिसतैंआदिलैकै पौतिमाप्यपर्यंत शिष्यपरंपराकरिकै विचित्र जो यहपुरुषवंश प्रवृत्त भया है ॥ तिसपुरुषवंशविषे ब्रह्मातैंलैकैनीचे नीचे जो द्वादशमादध्यङ्अथर्वणनामाऋषिहै॥ सो दैवअथर्वणनामाऋषिकाशिष्यहोताभया॥और तुमदोनोंका गुरुहोताभया ॥ सोकैसा है दध्यङ्अथर्वणनामाऋषि ॥ ब्रह्मविद्याकरिकैयुक्त है॥और मधुकांडके

अर्थकूंजानणेहारा है ॥ ऐसादध्यङ्अथर्वणनामामुनि तुमदोनोंकेताईं वेदकेपाठकूं तथावेदकेअर्थकूं पढावताभया ॥ परंतु तुमारेकूंवैराग्यतैं रहित देखिकरिकै सोऋषि तुमारेताईं उपनिषद्रूपवेदांतभागकेअर्थकूं नहींपढावताभया ॥ किंतु अर्थसहितवेदकेकर्मकांडकूं तुमारेताईं पढावताभयां और तिसदध्यङ्अथर्वणनामागुरुतैं जैसा तुमनैं वेदोंकेपाठकूं तथा अर्थकूं अध्ययन कऱ्याथा॥ तिसीप्रकार तुमदोनों त्वाष्ट्र विश्वरूपनामाऋषिकेताईं कथनकरतेभये ॥ और सोत्वाष्ट्रविश्वरूपनामाऋषि आभूतिनामात्वाष्ट्रकेताईं कथनकरताभया ॥ और सोआभूतित्वाष्ट्रनामाऋषि अपास्यनामाअंगिरसऋषिकेताईं वेदका कथनकरता भया ॥ इसप्रकार सोवेदविद्या परंपराकारिकै पौतिमाष्यनामाऋषिविषे प्राप्तहोती भयी ॥ और सौपौतिमाष्यनामाऋषि मनुष्यलोकवर्त्ति हमसर्वअधिकारियोंका गुरुहोताभया ॥ इसप्रकार वेदविद्याकेसंप्रदायकूंप्रवर्तकारिकै सोदध्यङ्अथर्वणनामाऋषि ब्रह्मज्ञानकेप्रभावतैं महान्यङ्कूंप्राप्त होताभया ॥ और किसीदेशविषे आश्रमकूंकरिकै निवास करताभया॥और तिसआश्रमविषेनिवासकरताहुआ सोदध्यङ्ऋषि पक्षपाततैंरहितहोइकै देवतावोंके तथाअसुरोंके तथामनुष्योंके सुखकूं उत्पन्नकरता भया ॥ तात्पर्य यह ॥ जिसजिसपुरुषकूं स्वर्गरूपफलकेप्राप्तिकीइच्छाहोवै ॥ अथवा पशुपुत्रादिरूपफलकेप्राप्तिकी इच्छाहोवै ॥ अथवा बैरीकेमारणेकीइच्छाहोवै ॥ तिसतिसपुरुषकेताईं तिसतिसउपायकरिकैसहित तिसतिसफलकाउपदेश करतेभये ॥ औरलोकोंकेहितवासतै तिनकर्मोंकेपरिणामकालविषे होणेहारा जो सुख तथा दुःख ॥ तिन संपूर्णोंका उपदेश करतेभये ॥ तात्पर्य यह ॥ स्वर्गके प्राप्तिका जो उपाय पूछै ॥ ताकेप्रति या प्रकार करते भय ॥ दर्शपौर्णमासनामायज्ञकूं जोतुम करोगे तौ तुमारेकूं स्वर्गकी प्राप्ति होवैगी ॥ परंतु पुण्यकर्मकेक्षय हुएतैं अनंतर स्वर्गतैंनीचै गिडनैंकारिकै महानदुःख तुमारेकूंप्राप्त होवैगा ॥ और पुनः उत्तम कुलविषे तुमारा जन्म होवैगा ॥ और जो कोई पुरुष शत्रुमारणेका उपाय दध्यङ्ऋषितैं पूछै ॥ ताकेप्रति याप्रकारकहतेभये ॥ जोतुम श्येनयज्ञ करोगे ॥ तौ तुमारे शत्रुकामरणहोवैगा ॥ परंतु श्येनयज्ञके करणेकारिकै पश्चात् तुमारेकूं नरककीभी प्राप्ति होवैगी ॥ और जो पुरुष चित्तके शुद्धिका उपाय दध्यङ्ऋषितैंपूछै ॥ ताकेप्रति या प्रकार कहते भये ॥ फलकीइच्छाकूंपरित्यागकरिकै जोतुम कर्मोंकूंकरोगे ॥ तो

तुमारेचित्तकीशुद्धिहोवैगी ॥ और पश्चात् श्रवणादिद्वारा आत्मज्ञानकीभी तुमारेकूं प्राप्तिहोवैगी ॥ इसप्रकार सोदध्यङ्अथर्वणऋषि सर्वजीवोंकेताईं हितकाउपदेश करताभया ॥ और जा कोईपुरुष ब्रह्मविद्याकी प्राप्तिकी इच्छाकारिकै तिसदध्यङ्ऋषिके समीप आवै ॥ तिसकेताईंतौ या प्रकारका उपदेश करतेभये ॥ विवेक वैराग्य शमादिकषट्संपत्ति मुमुक्षुता या चतुष्टयसाधनोंकूं प्रथम तुम संपादनकरिकै आवो ॥ पश्चात् तुमारे ताईं मैं ब्रह्मविद्याका उपदेश करौंगा ॥ इस प्रकार सोदध्यङ्ऋषि संपूर्णप्राणियोंके ताईं हितका उपदेशकरता भया ॥ और तिस महात्मादध्यङ्ऋषिकीकीर्ति तीनलोकोंविषे दश दिशावोंविषे पसरतीभई ॥ हे अश्विनीकुमारो ॥ यद्यपि दध्यङ्ऋषिका सर्वप्राणीमात्रविषे स्नेह है तथापि तुम दोनों बाल्यअवस्थातैंलैकै तिसमुनिके शिष्यहो यातैं दध्यङ्मुनिका तुम दोनोंविषे अधिक स्नेह होताभया ॥ इसप्रकार स्नेहकरिकैयुक्त दध्यङ्अथर्वणमुनित तुमनैं ब्रह्मविद्याके प्राप्तिकी प्रार्थनाकरीभी ॥ तौभी तुमारी विषयोंविषे आसक्ति देखिकै सोदध्यङ्ऋषि तुमारेताईं ब्रह्मविद्याकूं नहीं देता भया ॥ और विवेकादिकसाधनोंकी दृढता करावणे वासतै सोदध्यङ्ऋषि वारंवार याप्रकार कहताभया ॥ जैसे अकालविषेपडी हुईवर्षा निष्फल होवै है॥ और जैसे सूर्यकेसमीप दीपक निष्फलहोवै है ॥ और जैसे पूर्वअन्नकेअजीरणहुए भोजनकऱ्याहुआदूसराअन्न निष्फलहोवै है ॥ और जैसे तिसवस्तुकीइच्छातैंरहितपुरुषकेताईं तिसीवस्तुकादेणा निष्फलहोवै है ॥ तैसे विवेकादिकसाधन चतुष्टयरूपअधिकारतैंरहितपुरुषकेताईं उपदेशकरीहुईब्रह्मविद्या निष्फलहोवैहै॥ यातैं ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिवासतै विवेकादिकसाधनचतुष्टयरूपअधिकारकूं तुम संपादनकरो ॥ याप्रकार सोदध्यङ्अथर्वणमुनि तुमारेताईं उपदेश करताभया ॥ और हेअश्विनीकुमारो ॥ एककालविषे तुमदोनों किसीनिमित्तकारिकै देवराजइंद्रकीअवज्ञाकूंकरतेभये ॥ कैसेतुमदोनोंहो॥ सुन्दररूपकेअभिमानकारिकैयुक्तहो॥ तथा विद्याकेअभिमानकारिकैयुक्तहो ॥ याकारणतैंहीं सर्वदेवतावोंकेअधिपतिइंद्रकीअवज्ञाकूंतुमकरतेभये ॥ तिसतुमारीअवज्ञाकूं देखिकरिकै क्रोधयुक्तहुआसोइंद्र तुमारेयज्ञभागकूंनिवृत्तकरताभया ॥ और तीनलोकोंविषेयाप्रकारकीआज्ञा करताभया ॥ हेसंपूर्णलोको यहदोनोंअश्विनीकुमार चिकित्साकरणेहारे हैं यातैं अशुद्ध हैं और पूर्वजन्मविषेभी नीचजातिवालेहैं॥ यातैंभी

अशुद्ध हैं ॥ अशुद्धपुरुषोंकेताईं यज्ञकाभागदेना उचितनहीं ॥ यातैं आजदिनतैंलैके किसीपुरुषनैं इनदोनोंकेताईं यज्ञकाभागनहीं देणा याप्रकारकीआज्ञा देवराजइंद्र करताभया ॥ हे अश्विनीकुमारो इस प्रकार जबी देवराजइंद्रनै सर्वदेवतावोंके तथा मुनियोंके सन्मुख वच नकह्या ॥ तबी तुमदोनोंकाभाग सर्वयज्ञोंतैंनिवृत्तहोताभया ॥ इस प्रकार यज्ञभागतैंरहितहुएतुमदोनों अत्यंततपायमानहोतेभये ॥ और दध्यङ्अथर्वणनामागुरुकेसमीपजाईकै पुनः यज्ञभागकेप्राप्तिकाउपाय तुम पूछतेभये ॥ हेगुरो आज देवराजइंद्रनैं सभाकेमध्यविषे हमदोनों कायज्ञभाग निवृत्तकऱ्या है॥ अब हमदोनोंकूं कौनउपाय करणेयोग्य है ॥ यह आप कृपाकारिकैकहो॥ और हेगुरो जोआपकीआज्ञाहोवे तौसंपूर्णदेवतावोंसहितइंद्रकूं युद्धकारिकैतृप्तकरणेविषेभी हमदोनों समर्थ हैं ॥ याकेविषे किंचित्मात्रभी आपनैं संदेहनहींकरणा ॥ परंतु आपकी आज्ञातैंविना हम युद्धकरणेविषेसमर्थनहीं ॥ अब ऋषिकेसंदेहकीनिवृत्तिवासतैं आपणेसामर्थ्यकूं अश्विनीकुमार निरूपणकरैहैं॥ हेगुरो हमाराकैसासामर्थ्य है ॥ हमदोनोंविषे एकभी तीनलोक सहित ब्रह्माकूं तथा विष्णुकूं तथा महादेवकूं तथा संपूर्णदेवतावोंस हितइंद्रकूंजीतणोविषेसमर्थ है ॥ तौ हमदोनों मिलिकैकिसकूंनहींजीतैंगे ॥ किंतु संपूर्णोंकूं जीतणेविषे हम समर्थ हैं ॥ काहेतैं मृतसंजीवनीविद्याकूं हमजाणते हैं ॥ यातैं किसीशस्त्रकारिकै तथा किसीअस्त्रकारिकै तथाकिसीव्याधिकरिकै हमारा मृत्युहोवैनहीं ॥ और हेगुरो देवतावोंनैं तथाअसुरोंनै तथामनुष्योंनैं करीजोनानाप्रकारकी माया ॥ ते मायाभी हमारेकूं किंचित्मात्रस्पर्श कारिसकैनहीं ॥ और सर्पादिकोंविषे स्थितजेजंगमरूपविष हैं ॥ तथा कालकूटादिक जे स्थावरविष हैं ॥ ते संपूर्णनानाप्रकारकेविष हमारै लोममात्रकूंभी छेदनकरिसकैनहीं ॥ और हेगुरो पुरुषोंकेमरणेकासाधन जेनानाप्रकारकीऔषधियाँ हैं ॥ तथा नानाप्रकारकेजेमंत्र हैं॥ तथा नानाप्रकार केजेभूतपिशाचादिक हैं तथा इत्येनयज्ञरूपजेअभिचार हैं ॥ तथा ब्राह्मणोंकेजेनानाप्रकारकेशाप हैं ॥ यहसंपूर्ण यद्यपि मृत्युकेसाधन हैं॥ तथापि तेसंपूर्ण हमारेकूं स्पर्शकरिसकैनहीं ॥ काहेतैं आपकीकृपाकारिकै तथास्वभावतैं हम सिद्धियुक्तहैं ॥ यातैं तिनसंपूर्णमायाआदि कोंकी निवृत्तिका उपाय हम जाणते हैं ॥ यातैं हमारेजीतणेविषे कोईभीसमर्थ नहीं ॥ और हे गुरो युद्धतैंविनाभीहमदोनों देवतावों

केजीतणेविषेसमर्थ हैं ॥ काहेतैं स्वर्गविषै है ॥ प्रवाहजिसका ऐसीजोश्रीगंगाजी है ॥ तिसविषे जोहम एकआपैधिपावैं॥ तौ संपूर्णदेवतावों सहितइंद्रका एकक्षणविषे मृत्युहोइजावै ॥ और हेगुरो एकमंत्रकेप्रयोगकारिकै संपूर्ण देवतावोंसहितइंद्रकेचित्तविषे स्वर्गतैं वैराग्यउत्पन्नकर णेविषेभी हमसमर्थ हैं॥ और संपूर्णदेवतावोंसहितइंद्रकूं स्वर्गलोकतैंभूमिलोकविषेगिडावणेमैंभी हमसमर्थ हैं॥ और अन्यदिशाविषेस्थित देवराजइंद्रकूं मोहकेवासतैं अन्यादिशाविषेस्थितकरणेमैंभी हमसमर्थ हैं ॥ और हेगुरो यद्यपि देवतावोंकूं स्वर्गकी अप्सरावोंविषेही काम कीअभिलाषाहोवै है ॥ मनुष्यलोककी स्त्रियोंविषे देवतावोंकूं काम अभिलाषा होवै नहीं ॥ तथापि संपूर्ण देवतावोंसहित इंद्रकूं तथासं पूर्णमुनियोंकूं ऐसा हम कामउत्पन्न करैं ॥ जो संपूर्ण देवता तथा मुनि मनुष्यलोककी स्त्रियोंकी अभिलाषा करैं ॥ या प्रकारकी हमारेविषे सामर्थ्य है ॥ हे अश्विनीकुमारो ॥ दध्यङ्ऋषिनामा गुरुके विश्वास करावणे वासतै या प्रकारके वचनोंकरिकै आपणे बलकूं तुम दोनों प्रगट करते भये ॥ इस प्रकारके तुमारे वचनोंकूं श्रवणकरिकै सो दध्यङ्ऋषिनामा तुमारागुरु आपणे मनविषे चिरकालपर्यंत विचार करता भया ॥ और विचारकरिकै सो दध्यङ्ऋषि तुमारे ताईं या प्रकारका वचन कहता भया ॥ हे अश्विनीकुमारो ॥ सर्व शत्रुवोंके नाशकरणेविषे समर्थ होईकै क्रोधरूप अंतरशत्रुके वशकूं तुम मतप्राप्तहोवो ॥ तात्पर्य यह ॥ जैसे बाह्यशत्रुवोंकेजीतणेविषे तुम समर्थ हो ॥ तैसे कामक्रोधादिक अंतरशत्रुवोंके जीतणेविषेभी तुम समर्थहोवो ॥ अब क्रोधविषे शत्रुपणा दिखावै हैं ॥ हे अश्वि नीकुमारो ॥ तुम दोनोंकाशत्रु इंद्रनहीं ॥ तथा अन्यभी कोई तुमाराशत्रुनहीं ॥ किंतु यहक्रोधही तुमाराशत्रुहै॥ शंका॥हेभगवन् क्रोधका कौनअपराधहै ॥ जाकारिकै क्रोधकूं आप शत्रुकहो हो ॥ समाधान ॥ हे अश्विनीकुमारो॥तुमसर्वदेवतावोंकरिकैपूजणेयोग्यजोइंद्रहै तिसके नाशकरणेविषे जोतुमारीप्रवृत्तिभई है ॥ सो केवल क्रोधकेप्रभावतैंभई है॥क्रोधतैंविना ऐसेनिषिद्धकर्मविषे किसीबुद्धिमान् पुरुषकीप्रवृत्ति होवै नहीं ॥ किंतु क्रोधकेवशहुएहीजीव गुरुआदिकवृद्धपुरुषोंकेतिरस्कारकरणेविषे प्रवृत्तहोवैं हैं ॥ और हेअश्विनीकुमारो ॥ पूर्वकालविषे तुमारेकूं इंद्रकेजीतणेकीइच्छा कबीभईनहीं ॥ और इसकालविषे तुमारेकूं इंद्रकेजीतणेकीइच्छाभई है॥ याकेविषेकौनकारणहै ॥यह तुम

विचारिकरिकैदेखो॥क्रोधतौंविना दूसराकोईकारण याकेविषेनहीं ॥ किंतु अन्वयव्यतिरेककरिकै क्रोधही याकेविषेकारण हे॥यातें क्रोधही तुमारा परमशत्रुहै ॥और हेअश्विनीकुमारो ॥ संपूर्णशत्रुवोंकेराजा जोकामक्रोधहैं ॥ तथा ताकेकिंकर ॥ जेइंद्रियहैं॥तिनसंपूर्णोंके जीतणे तौंविना देवशरीरकी प्राप्तिहोवैनहीं ॥ किंतु कामक्रोधादिकोंकेजीतणेकरिकैही देवताशरीरकीप्राप्तिहोवै है॥यातें यहजान्याजावै है॥तुमदो नोंनैंभी पूर्वजन्मविषे कामक्रोधादिकराजाकूं तथाइंद्रियरूपकिंकरोंकूं जीत्याहै ॥ जाकरिकै अबीतुमारेकूं देवताशरीरकी प्राप्तिभयी है॥हे अश्विनीकुमारो ॥ जिससामर्थ्यकरिकै पूर्वतुमोंनैं कामक्रोधादिक वशकरे हैं ॥ सोसामर्थ्य अबीतुमाराकहांगयाहै और हेअश्विनीकुमारो॥ हमतौ आपणेमनविषेऐसाजाणते हैं॥जैसे किसीदेशकाकोईकराजा अन्यदेशकेराजाकूंजीतै है और किसीकालविषे सोराजा सामर्थ्यकूंपाई कै पूर्वलेवैरकूंस्मरणकरिकै तिसीराजाकूंजाइकेजीते है तैसे पूर्वजन्मविषे तुम दोनों कामक्रोधादिकसहितसंपूर्णइंद्रियोंकूं जयकरिआये थे॥ तेइंद्रियरूपकिंकर पूर्ववैरकास्मरणकरिकै क्रोधरूपराजाकूं साथलेकै स्वर्गविषे तुमारेजीतणेवासतैआये हैं और हे आश्विनीकुमारो ॥ क्रो धरूपअंतरशत्रुकेजीतणेविषे जबी तुमारा सामर्थ्य नहीं भया ॥ तबी इंद्रकेजीतणेविषे तुम किसप्रकारसमर्थहोवोगे ॥ किंतु इंद्रकेजीतणे विषे तुमारा सामथ्य नहीं ॥ और हे अश्विनीकुमारो ॥ देवतावोंकी सभाविषे देवराज इंद्रनैं वचनरूप बाणोंकरिकै जो पूर्व तुमारा ताड नकऱ्याथा ॥ सोभी प्रथम कामरूपशत्रुकेवशहुएतुमारेकूंदेखिकरिकैं इंद्रनैं तुमाराताडनकऱ्याथा ॥ तात्पर्ययह ॥ जिसपुरुषकूं कोईकाम नानहीं है ॥ ऐसा जो ब्रह्मज्ञानीपुरुष है ॥ तिसकूं संपूर्ण जगत् आत्मस्वरूप है॥यातें ताका कोई ताडनकरै नहीं॥कामनावालेपुरुषकाही जहाँतहाँ निरादरहोवै है ॥ अब क्रोधकीन्याईं कामविषेभी अन्वयव्यतिरेककरिकै अनर्थकी कारणताकूंदिखावै हैं॥हेअश्विनीकुमारो॥देव राजइंद्र पूर्व तुमदोनोंकानिरादरकिसकारणतैंनहींकरता भया ॥ और इस कालविषे देवराजइंद्रनैं तुमारानिरादर किसकारणतैंकऱ्या है ॥ या प्रकारके विचारतैं तुम दोनों रहित हो॥हे अश्विनीकुमारो॥या तुमारेनिरादरविषे कामतौंविना कोईदूसराकारणनहीं है ॥ किंतु कामही तुमारेनिरादरकाकारण है॥जब पर्यंत तुमारेविषे कामनहींभयाथा॥तब पर्यंत देवराजइंद्रनैं तुमारानिरादरकऱ्यानहीं ॥ और जभी तुमारे

विषे कामकीउत्पत्तिभई तभीदेवराजइंद्रनैं तुमारानिरादरकऱ्या॥यातैंकामही तुमारेनिरादरकाकारणहै॥औरहेअश्विनीकुमारो॥संपूर्णदेवता वोंकरिकै पूजणेयोग्यजोइंद्रहै ॥ तिसकेजीतणेविषे तुमदोनों किसप्रकारसमर्थहोवोगे ॥ किंतुइंद्रकेजीतणेविषे तुमारासामर्थ्यनहीं॥काहेतैं एककामरूपशत्रुनैं सर्वदेवतावोंकीसभाविषे तुमारा अपमान करायाहै ॥ तिसकामरूपएकशत्रुकेजीतणेविषे जभी तुम समर्थ नहीं भये ॥ तभी सर्वदेवतावोंसहितइंद्रकूं तुम किस प्रकारजीतोगे ॥ तात्पर्ययह ॥ पूर्वएककामरूपशत्रुनैं तुमाराअपमानकरायाथा॥अबक्रोधरूपपुत्र करिकैयुक्तहुआसोकामरूपशत्रु तुमारेकिसअनर्थकूंनहींकरैगा ॥ किंतु तुमारेसर्वअनर्थोंकूंकरैगा ॥ और हेअश्विनीकुमारो॥ संपूर्णदेहधारी जीवोंके कामक्रोधही परमशत्रुहैं ॥ जो पुरुष कामक्रोधरूपअंतरशत्रुवोंकी उपेक्षाकरिकै बाह्यराजादिकशत्रुवोंकेजीतणेकी इच्छाकरै है ॥ सो पुरुष अत्यंत मूर्ख है॥ यातैं हेअश्विनीकुमारो जोतुमारेकूं शत्रुवोंकेजीतणेकासामर्थ्यहै ॥ तौ कामक्रोधरूपमहाबलवान्शत्रुवोंकूं तुम जीतो ॥ अब कामकेमहान्प्रभावकूंदिखावै हैं ॥ हे अश्विनीकुमारो॥संपूर्णजगत्कूंउत्पन्नकरणेहाराजोब्रह्माहै॥तिसकूंभी यहकाम जीतता भया है॥और संपूर्णजगत्कूंपालनकरणेहाराजोविष्णुहै तिसकूंभी यहकामदेव जीततताभयाहै ॥और संपूर्णजगत्कासंहारकरणेहाराजोरुद्रहै तिसकूं भी यहकामदेव जीततताभयाहै ॥ और संपूर्णदेवतावोंकाअधिपतिजोइंद्रहै तिसकूंभी यहकामदेवजीततताभयाहै॥हेअश्विनीकुमारो ॥ जभी ब्रह्मादिकईश्वरोंकूंभी कामदेवतानैं जीतलिया ॥ तभी स्त्रियोंकेक्रीडामृग जेअन्यदेवताहैं ॥ तिनोंकूं कामदेव नहीं जीतैगा याकेविषे क्या कहणा है॥किंतु सर्वप्राणीमात्रकूं कामदेव आपणेअधीनकरै है॥यद्यपि संपूर्णजगत्केउत्पत्तिस्थितिलयकूंकरणेहारे ब्रह्माविष्णुमहेशा दिकईश्वरोंविषे कामकीअधीनता संभवैनहीं तथापि सर्वत्रकामकेप्रभावकूंजनावणेवासतै ब्रह्माविष्णुआदिकईश्वर लीलामात्रकरिकै कामादि कोंकूंधारणकरै हैं ॥ वास्तवतैं ते ब्रह्मादिक कामादिकोंतैंरहित हैं॥और हे अश्विनीकुमारो सर्वदेहधारीजीवोंकाशत्रुजोकामहै॥सोकामही तुमारेकूंजीतणेयोग्य है ॥ परंतु ताकामदेवकूं तुमोनैंजीत्यानहीं ॥ उलटा कामदेवनैं तुमदोनोंकूंजीत्याहै॥ और हेअश्विनीकुमारो ॥ याका मदेवतैंभीक्रोध अतिशयकरिकैबलवान् है॥यातैं क्रोधकेजीतणेविषे तुमारेकूं अत्यंत यत्न कऱ्या चाहिये॥काहेतैं अनंत प्रकारके उपायों

करिकै मुनिलोक कामदेवकूं तौ आपणेवशकरै हैं॥परंतु कामदेवकापुत्रजोक्रोधहै॥ताक्रोधकेजीतणेविषे तेमुनिलोकभी समर्थ होवैं नहीं ॥ और हेअश्विनीकुमारो ॥ यह कामक्रोधरूपपितापुत्रदोनों महान्शूरवीरहैं ॥ इनोंकेजीतणेविषे कोईपुरुष समर्थनहीं ॥ किंतु संपूर्णजगतकूं जीतकरिकै यहकामक्रोधदोनों जयकरिकैशोभायमानहैं ॥ हे अश्विनीकुमारो॥ जोतुमदोनों शत्रुवोंकेनाशकरणेविषेसमर्थहो ॥ और अत्यंतमानयुक्तहो ॥ तौ प्रथम कामक्रोधरूपशत्रुकूं तुम जय करो ॥ पश्चात् देवराजइंद्रकेजीतणेकाउद्यम तुमकरो ॥ ऋषिरुवाच॥ हे अश्विनीकुमारो॥इसप्रकार क्रोधकेशांतिकरणेहारेवचनोंकरिकै सोदध्यङ्ऋषितुमारागुरु वैरकेनिवृत्तिकाउपदेश तुमारेताईं करता भया ॥ तथापि क्रोधरूपअग्निकरिकैतपायमानहुएतुमदोनों जबी तिनवचनोंकरिकैशांतिकूंनहींप्राप्तहोते भये ॥ तबी सोदध्यङ्अथर्वणतुमारागुरु सामभेद रूप दोनों उपायोंका परित्यागकरिकै तुम दोनोंकी शांतिकरणे वासतै उपप्रदानरूपउपायकूं करता भया ॥ तात्पर्य यह ॥ साम भेद उपप्रदान दंड या चारिउपायोंकरिकै लोकविषे प्राणी वशवर्ति होवै हैं ॥ तहाँ प्रियवचनोंकरिकै क्रोधादिकोंकीनिवृत्तिकूं सामकहैं हैं ॥ और अन्यशत्रुकेपक्षपाततैं निवृत्तकरिकै आपणे पक्षविषे ले आवणेकूं भेद कहै हैं ॥ और मनवांछित पदार्थोंकेदेणेकी प्रतिज्ञाकूं उपप्रदान कहै हैं ॥ और ताडनाकूं दंड कहैं हैं ॥ इन चारों उपायोंविषे प्रियवचनों करिकै क्रोधादिकोंकीनिवृत्तिरूपसाम तथा कामक्रोधादिकशत्रुवोंकेपक्षपाततैंनिवृत्तिकरिकै आपणेसमतारूपपक्षविषे स्थापनरूपभेद यह दोनोंउपाय दध्यङ्ऋषिनैं करे ॥ परंतु तिनसामभेदरूप उपायकरिकै अश्विनीकुमारोंके कामक्रोधादिकोंकी शांति नहींहोती ॥ यातैं सो बुद्धिमान्दध्यङ्ऋषि तिनदोनोंउपायोंकापरित्यागकरिकै उपप्रदानरूप तृतीय उपायकूं करताभया॥ अब ताउपप्रदानरूप उपायकूं दिखावै हैं॥हेअश्विनीकुमारो॥ जिसब्रह्मविद्याकेप्राप्तिवासतै पूर्व तुमोंनैं हमारेप्रतिप्रार्थनाकरी थी॥सो ब्रह्मविद्या मैं तुमारेताईं तबी उपदेशकरोंगा॥ जबी तुम सर्वप्राणियोंविषे वैरकापरित्यागकरोगे ॥ यातैं जोतुमारेकूं ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिकीइच्छाहोवै ॥ तौ देवराज इंद्रविषे वैरकापरित्याग करो॥ऋषिरुवाच॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ इस प्रकारके बचन जबी तुमारेताईं दध्यङ्ऋषिनैं कहे॥तबी तुम दोनों या प्रकारके वचन दध्यङ्ऋषिगुरुकेप्रति कहतेभये ॥

हे गुरोयहकाल सामरूप उपायका तथाभेदरूपउपायका है नहीं ॥ और उपप्रदानरूप उपायकाभी यहकाल है नहीं ॥ काहेतैं पूर्वआपने अनंतवार यह कथनकऱ्या है॥ जबीतुम विवेकादिकसाधनचतुष्टयरूप अधिकारकूं संपादनकरोगे ॥ तबी हम तुमारेताईं ब्रह्मविद्याका उपदेशकरैंगे ॥ यातैं ब्रह्मविद्याके लोभकरिकैभीइंद्रकेसाथ वैरकापरित्यागहमकरैंगेनहीं ॥ यातैं हे गुरो कृपाकरिकै हमारेताईं युद्ध करणेकी आज्ञादेवो ॥ एकलक्षणविषे संपूर्ण देवतावोंसहितइंद्रकूं हम जीतैंगे ॥ याकेविषे आप किंचित्मात्रभी संदेहनहींकरो ॥ हेअश्विनीकुमारो या प्रकारकेतुमारेवचनोंकूंश्रवणकरिकै सो दध्यङ्ऋषितुमारागुरु उपप्रदानरूप उपायकाभी परित्यागकरकै तुमारेप्रति दंडरूपीवचनोंका कथनकरताभया॥ कैसाहैसोदध्यङ्ऋषि ॥ तुमारेहितकीजिसकूंइच्छाहै ॥ और सर्वप्राणियोंविषे जाकीसमानदृष्टिहै ॥ अब तिनदंडरूपी वचनोंकूंनिरूपणकरैं हैं ॥ हे अश्विनीकुमारो जो कोईपुरुष पंचजीवोंकाभी पालनकरै है ॥ सोपुरुष पंचभूतहैंशरीरजाका ऐसा जो ईश्वरहै ताईश्वरकास्वरूपजानणा ॥ तापंचप्राणियोंकेपालनकरणेहारे पुरुषकूं जोकोईपुरुष हननकरै है ॥ सोपुरुष ईश्वरसहितपंचभूतस्वरूपसंपूर्ण विश्वकूं हननकरै है ॥ तात्पर्ययह ॥ ईश्वरसहितसंपूर्णविश्वके हननकरिकै जोपापउत्पन्नहोवै है ॥ तापापकूं सोपुरुषप्राप्तहोवै है॥हेअश्विनीकुमारो ॥ जबी पंचजीवोंकेपालनकरणेहारेपुरुषके हननतैं इतनापापहोवै है ॥ तबी तीनलोकोंकेपालनकरणेहारेइंद्रकेहननकरिकै महान् पापीकीउत्पत्तिहोवै है ॥ याकेविषे क्याकहणाहै॥और हे अश्विनीकुमारो॥जो पुरुष उपकारकरणेहारेआपणेस्वामीकाहननकरैहै॥सोअधमपुरुष संपूर्णकुटुंबसहित आपणेमाताकूं तथापिताकूं हननकरै है ॥ तात्पर्ययह ॥ संपूर्णकुटुंबसहित आपणेमातापिताकेमारणे करिकै जोपाप उत्पन्नहोवै है॥ तिसीपापकूं स्वामीकेद्रोह करणेहारापुरुष प्राप्तहोवै है ॥ और शास्त्रविषेभी ब्रह्महत्यादिकपापोंकीनिवृत्तिकेउपाय कहैं हैं ॥ परंतुकृतघ्नता दोषजन्यपापकीनिवृत्तिकाउपाय किसीशास्त्रविषेभी कह्या नहीं ॥ यातैं कृतघ्नतादोषकेसमान कोईभीपापकर्मजगत्विषेनहीं ॥ और हे अश्विनीकुमारो॥ जोपुरुष आपणेस्वामीकेसाथद्रोहकरै है ॥ सोअधमपुरुष अंधतामिस्रनामानरकविषे चिरकालपर्यंत निवासकरै है॥ तात्पर्ययह ॥ ब्रह्महत्याकरणेहारेपुरुषतैंभी आपणेस्वामीकेसाथद्रोहकरणेहारापुरुष अत्यंतअधम है ॥काहेतैं ब्रह्महत्या

करणेहारापुरुष सहस्रकोटीकल्पोंतैंअनंतर नरकरूपीसमुद्रतैं कदाचित्मुक्तहोवै है ॥ परंतु आपणेस्वामीके साथद्रोहकरणेहारा कृतघ्नपुरुष कबीभी नरकतैंमुक्तनहींहोवै है ॥ यातैं कृतघ्नतारूपपापकर्मकेसमान कोईभीपापकर्म जगत्विषेनहीं ॥ और हे अश्विनीकुमारो जो कोई राजा भूमिकेकिसीएकदेशकूंभी पालनकरै है ॥ सोराजाभी वैरियोंकरिकै मारणे योग्य नहीं ॥ तौ तीनलोकोंकूंपालनकरणेहाराजोइंद्रहै सो किसप्रकार मारणेयोग्यहोवैगा ॥ किंतु सोइंद्र मारणेयोग्य नहीं॥और हे अश्विनीकुमारो ॥ अल्पपृथिवीकापतिजोराजाहै सो मारणेयोग्यनहीं है ॥ यहजोशास्त्रविषेकह्या है ॥ ताकेविषे यह कारण है जितनेकभूमिलोकविषेराजेहैं ॥ तेसंपूर्णराजे इंद्रादिकलोकपालोंकेअंशरूप हैं ॥ यातैं तेराजे मारणेयोग्यनहीं॥जभी इंद्रादिकलोकपालोंकेअंशरूप पृथिवीकेराजेभी मारणेयोग्यनहींभये ॥ तभी साक्षात्इंद्रादिकलोकपाल किसप्रकार मारणेयोग्यहोवैंगे ॥ किंतु इंद्रादिक मारणेयोग्यनहीं ॥ और हे अश्विनीकुमारो ॥ पृथिवीमात्रविषेहैदेवतापणा जिन्हों विषे ऐसेजेभूदेवब्राह्मण हैं ॥ तेभीकदाचित्मारणेयोग्यनहीं ॥ तौतीनलोकोंविषेहै दवतापणाजिनोंविषे ऐसेजेइंद्रादिकदेवताहैं तेकिसप्रकार मारणेयोग्यहोवैंगे ॥ किंतु इंद्रादिकदेवतामारणेयोग्यनहीं हैं ॥और हे अश्विनीकुमारो ॥ भूदेवब्राह्मणमारणेयोग्यनहींहैंयहजोशास्त्रनैंकह्याहै ताकेविषे यहकारणहै ॥ जितनेकि इंद्रादिकदेवता स्वर्गविषेरहैं हैं ॥ तेसंपूर्णदेवता ब्राह्मणके शरीरविषे अंशरूपकरिकैरहैं हैं ॥ याकारणतैं सोवेदकावेत्ता ब्राह्मण मारणे योग्यनहीं ॥ जभी इंद्रादिकदेवतावोंके निवासकास्थानब्राह्मण शरीरभी मारणे योग्य नहीं भया ॥ तभी साक्षात्स्वर्गविषेरहणेहारेइंद्रादिकदेवता किस प्रकार मारणे योग्य होवैंगे ॥ किंतु इंद्रादिकदेवता मारणे योग्य नहीं ॥ और हे अश्विनी कुमारो ॥ जो अधमपुरुष शरीरकरिकै तथा मनकरिकै तथावाणीकरिकै गौवोंकी तथाब्राह्मणोंकी तथादेवतावोंकी हिंसा करैहै ॥ तथा सर्वलोकोंकेउपकारकरणेहारेधर्मात्माराजावोंकीहिंसाकरै है ॥ सोअधमपुरुषशतकोटीकल्पोंकरिकैभी नरकतैं मुक्त नहीं होवै है ॥ और हे अश्विनीकुमारो ॥ जैसे मस्तककरिकै पर्वतकाभेदनहोइसकैनहीं ॥ तैसे दशलोकपालोंकेजयाकियेतैंविना तथासर्वदेवताओंकेजयकियेतैं विना इंद्रकेजीतणेकूं कोईदेवता तथादानव समर्थ होवै नहीं ॥ किंतु लोकपालोंके तथाअन्यदेवतावोंके जीतणेतैंअनंतरही इंद्रकाजीतणा

संभवै है ॥ इंद्र १ अग्नि २ यम ३ रक्ष ४, वरुण ५ प्रभंजन६धनश७ईश्वर८शेष९ब्रह्मा१० यहदश दिक्पाल हैं ॥ तहाँ पूर्वादिकअष्टदिशावोंके इंद्रादिक अष्टदिक्पालहैं॥और ब्रह्मा ऊर्ध्वदिशाकापात है॥और शेष अधोदिशाकापाति है ॥यादशदिक्पालोंकेजीतणेविषेभी कोई देवता तथादानव समर्थहैंनहीं ॥ तभी सर्वदेवतावोंके अधिपतिइंद्रकूं कौन जीतेगा ॥ किंतु इंद्रके जीतणेविषे कोईपुरुष समर्थनहीं ॥ और हेअश्विनीकुमारो ॥ तुमदोनोंविषे जोसामर्थ्य है॥ सोभी इंद्रादिकदेवतावोंकेअनुग्रहकरिकैही है ॥ इंद्रादिकदेवतावोंके कोपहुए तुम दोनों काष्ठकीन्याई सामर्थ्यतैंरहितहो ॥ और हे आश्वनीकुमारो ॥ तुम दोनों द्वादशआदित्योंकूं तथाअष्टवसुवोंकूं तथाएकादशरुद्रोंकूं तथाएकन्यूनपंचासमरुत्गणकूं किसप्रकार जीतोगे ॥ किंतु तिनोंके जीतणेविषे तुमदोनों समर्थनहींहोवोगे ॥ और हे आश्विनीकुमारो ॥ संपूर्णलोकपालजे हैं ॥ तथा संपूर्णदेवताजेहैं ॥ तथा संपूर्णमुनिजे हैं ॥ तथा संपूर्णसिद्धजे हैं ॥ तथा संपूर्णचारणजे हैं॥ तथा ब्रह्माजो है॥ तथा विष्णुजो है ॥ तथा रुद्रजो है॥ तथा संपूर्णशक्तियांजे हैं॥ तथा आकाशादिकपंचभूतोंकेअभिमानीदेवताजे हैं॥तथा चंद्रमाजो है॥ तथा संपूर्णग्रहजे हैं ॥ तथा संपूर्णनक्षत्रजे हैं ॥ तथा संपूर्णतारागणजे हैं ॥ इनोंतैंआदिलैकेजितनाकविश्वहै ॥ तेसंपूर्णइंद्रकेपक्षविषे हैं ॥ तुमारेपक्षविषे कोईभी देवता नहीं ॥ जबी तुमदोनों इंद्रके साथ युद्ध करोगे॥तबी यह संपूर्ण लोकपालादिक प्रथम तुमारे साथयुद्धकरणे वासतैं सन्मुख होवैंगे॥तिन संपूर्णलोकपालादिकोंकूं जबी तुम जीतोगे॥तबी इंद्र तुमारे साथ युद्ध करैगा॥सोतिन संपूर्णलोकपालादिकों केजीतणेविषे तुमारासामर्थ्य है नहीं यातैं इंद्रके साथ युद्ध करणेकी इच्छाका तुमपरित्यागकरो ॥ और आश्विनीकुमारो ॥ जहां युद्ध करणेतैंविना कार्यकीसिद्धिनहीं होवै॥ तहां युद्धकरणाभी उचित है॥परंतु बलकरिकै तथाबुद्धिकरिकै तथा शूरवीरोंकी सहायता करिकै जो आपणेसमानहोवै तिसके साथही युद्धकरणाउचितहोवै है॥ और जोबलकरिकै तथाबुद्धिकरिकै तथा अन्यशूरवीरोंकी सहायताकरिकै आपणेतैं अधिकहोवै॥तिसकेसाथ युद्ध करणा उचितनहीं॥और यह देवराजइंद्र बलकरिकै तथाबुद्धिकरिकै तथाअन्यदेवतावोंकीसहायता करिकै तुमदोनोंतैंअधिकहै ॥ यातैं इंद्रके साथयुद्धकरणातुमारेकूं उचितनहीं॥ अब इंद्रकीअधिकताकूं दिखावै हैं ॥ हे अश्विनीकुमारो॥

तुमदोनोंविषेजितनाकी सामर्थ्य है ॥ तितनासामर्थ्य संपूर्णदेवतावोंके मध्यविषेएकएकदेवताविषे है ॥ और स्वर्गविषे इंद्रकेसमीप जितने कदेवता निवासकरें हैं ॥ तिन संपूर्णदेवतावोंविषे एकएकदेवताभी जगत्कीउत्पत्तिकरणेविषे तथाजगत्की स्थितिकरणेविषे तथासंहारक रणेविषे समर्थ है॥ऐसे अनंतदेवतावोंकरिकैयुक्त इंद्रके साथ युद्धकरणेविषे तुमारासामर्थ्य नहीं॥और हे अश्विनीकुमारो ॥ स्वर्गविषेस्थित इंद्रादिकदेवतावोंके साथ जो द्वेषकरणाहै ॥ सो केवल स्वर्गतैंनीचैंगिरनेकाकारणहै ॥ यातैं जो तुमारेकूं स्वर्गविषेरहणेकीइच्छाहोवै ॥तौ इंद्रकेसाथ तुम द्वेषमतकरो ॥ इंद्रकेसाथद्वेषकरणेकरिकै स्वर्गतैंभी तुमारानीचेपतनहोवैगा ॥ ऋषिरुवाच ॥ हेअश्विनीकुमारो॥ इसलोक विषे तथा परलोकविषे भयकू बोधनकरणेहारे और नानाप्रकारकी युक्तियोंसहित जेया प्रकारकेवचन हैं ॥ तिनवचनोंरूपी दंडकरिकै सोदध्यङ्ऋषितुमारागुरु तुमदोनोंका ताडन करता भया॥तिसदध्यङ्ऋषिगुरुकेवचनोंकूं श्रवणकरिकैभी तुमदोनों तागुरुकेवचनोंकूंअंगी कारनहीं करते भये ॥ काहेतैं एकतौंइंद्रनैंतुमारायज्ञभागनिवृत्त कऱ्या था॥ और दूसरा सर्वदेवतावोंकीसभाविषे तुमदोनोंका अपमानक ऱ्याथा॥याकारणतैं तुमदोनों अत्यंत दुःखी होते भये॥यातैंहितकारीगुरुकेवचनोंकूंभी नहींमानते भये॥और हे अश्विनीकुमारो तुमदोनों पुनःदध्यङ्ऋषिगुरुकेप्रति याप्रकारकेवचनोंकूंकहतेभये॥हेगुरो इंद्रकेसाथयुद्धकरणेकरिकै जोकदाचित् हमारामरण होवै ॥ तथानरककी प्राप्तिहोवै तिसकूंहम अंगीकारकरतेहैं ॥ परंतु आप हमारेकूंयुद्धकरणेकी आज्ञादेवो॥हे अश्विनीकुमारो ॥ याप्रकारकेतुमारेवचनोंकूंश्रवण करिकै सोदध्यङ्मुनितुमारागुरु पुनः यज्ञभागकेप्राप्तिकीइच्छारूपतुमारेअभिप्रायकूंजाणताभया॥ औरकृपाकरिकैयुक्तहुआसोदध्यङ्मुनि विनाहींयत्नतैंयज्ञभागकीप्राप्तिवासतैं पुनःयाप्रकारकेवचनोंकूंकहताभया ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ अत्यंतकोमलपुष्पोंकरिकैभी किसीशत्रु केसाथयुद्धकरणे योग्यनहीं ॥ तौ तीक्ष्णशस्त्रोंकरिकैयुद्धकरणा कैसेयोग्यहोवैगा ॥ किंतु सर्वप्रकारतैं युद्धकरणायोग्यनहीं ॥ काहेतैं युद्ध विषे इतने दोषरहैं हैं ॥ एकतौ हमाराजय होवैगा ॥ अथवा शत्रुकाजय होवैगा ॥ याप्रकारका संशय १ और दूसरा श्रेष्ठपुरुषों केनाशकाअवश्यहोणा२और तीसरा युद्धविषेप्राप्त हुआ पुरुष शस्त्रोंके घावतैंविना तथा बांधवोंकेमृत्युतौंविना जयकूं प्राप्त होवै नहीं३और ॥१३॥

चतुर्थ पराजयकेहुए परमानिंदा ४ यहचारिदोष संपूर्णयुद्धविषे अवश्यहोवैहैं ॥ यातैंयुद्धकरणायोग्य नहीं ॥ और हेअश्विनीकुमारो॥जिस युद्धविषेमरणतैं पुरुषकूं नरककीप्राप्तिहोवै है ॥ और जीवनेकरिकै लोकविषेअपकीर्तिहोवै ॥ और जिसयुद्धविषे ब्राह्मणोंका तथाबांधवोंका तथादेवतावोंका नाशहोवै ॥ ऐसेअधर्मयुद्धविषे क्षत्रियराजाकूंभीउद्यमकरणायोग्यनहीं ॥ किंतु ऐसेअधर्मयुद्धतैं क्षत्रियराजाकूं भागणा हीश्रेष्ठ है ॥ और हे अश्विनीकुमारो ॥ याक्षणभंगुरसंसारविषे अधिकारीशरीरकूंपाईके पुरुषोंकूं आत्मज्ञानही संपादनकरणे योग्य है ॥ युद्धादिक संपादनकरणे योग्यनहीं ॥ कैसा है यहसंसार जैसे केलेकास्तंभ सारतैंरहित होवै है ॥ तैसे सारतैंरहित है॥ और संपूर्ण दुःखोंक रिकैपूर्ण है जीवनकाल जिसविषे ॥ और निमेषमात्र है जीवन जिसविषे ॥ ऐसे अनित्यसंसारविषे मनुष्यशरीरकूंपाइकै पुरुषनैं आपणेहित काउपायही संपादनकरणा ॥ सोहितकाउपाय अद्वितीयआत्माकाज्ञानहीं है ॥ आत्मज्ञानतैंभिन्न संपूर्णयुद्धादिककर्म पुरुषोंकेअहितके साधन हैं ॥ यातैं हे अश्विनीकुमारो ॥ देवराजइंद्रकेसाथ युद्धकरणा ॥ इसलोकविषे तथापरलोकविषे तुमारेदुःखकाकारण है ॥ शंका ॥ हे भगवन् आपनैं सर्वप्रकारतैं युद्धकानिषेधकऱ्या सो संभवैनहीं ॥ काहेतैं युद्धशास्त्र विषे अनंत प्रकारकेयुद्ध करणेकी रीति लिखी हैं ॥ यातैं सो युद्धशास्त्र व्यर्थहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेअश्विनी कुमारो युद्धशास्त्र व्यर्थ नहीं युद्ध शास्त्र नैंभी तहाँ युद्धकाविधानकरऱ्या है ॥ जहाँ युद्धकरणेतैं विना आपणेमरणेका निश्चयहोवै ॥ और युद्ध करणेतैं जीवनेकीसंभावनाहोवै ॥ तिस काल विषे पुरुष युद्धकूंकरै ॥ यहयुद्ध शास्त्रविषे कह्या है ॥ सोयाप्रकारका युद्ध करणेकाकाल तुमदोनोंविषे प्राप्त भया नहीं ॥ किंतु युद्धकरणेतैंविनाहीं तुमारे कार्य कीसिद्धिहोइसकै है॥ यातैं हेअश्विनीकुमारो ॥ युद्धकरणेकी इच्छाका परित्यागकरिकै पुनःयज्ञभागके प्राप्तिकाउपाय आपणीबुद्धिकरिकै तुम निश्चयकरो ॥ और हे अश्विनीकुमारो ॥ यास्थूल शरीरकेपराक्रमतैं बुद्धिका पराक्रम अधिक है ॥ काहेतैंपुरुष करिकैचलायाहुआ शस्त्र किसीएक शत्रुकूंजयकरै है ॥ कदाचित् एकशत्रुकूंभी जयकरतानहीं ॥ और नानाप्रकारकेउपायोंकूं निश्चयकरणेहाराबुद्धिरूपीशस्त्र तौ बुद्धिमान्पुरुष करिकैचलायाहुआ संपूर्णजगत्कूं जीतलेवै है ॥ यातैं शरीरकेपराक्रमतैं बुद्धिका पराक्रम अधिक है ॥ और हेअश्विनी

कुमारो ॥ यावुद्धिका कैसापराक्रम है ॥ यहपुरुष कोटिजन्मोंकरिकैभी शरीरकेयुद्धादिकपराक्रमतैं जिनपदार्थोंकूंनहींसंपादनकारिसकता॥ तिनपदार्थोंकूं सोपुरुष बुद्धिकेपराक्रमतैं थोडेकालविषे संपादनकरिसकै है ॥ जैसे कोटिजन्मोंकूंपाइकैभी यहपुरुष युद्धादिरूपशरीरकेपराक्रमतैं हिरण्यगर्भकेलोककूं प्राप्तहोइसकैनहीं ॥ और बुद्धिकरिकैनिश्चयकऱ्याजो हिरण्यगर्भकी उपासनारूपउपाय ॥ ताउपासनारूपउपायकरिकै थोडेकालविषेही हिरण्यगर्भकेलोककी प्राप्तिहोइसकै है ॥ यातैं शरीरकेपराक्रमतैं बुद्धिकापराक्रमही अधिक है॥यातैं हेअश्विनीकुमारो ॥ तावुद्धिकरिकै पुनःयज्ञभागके प्राप्तिकाउपायतुम निश्चयकरो ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ युद्धतैंविना दूसराकोईउपाय हम जाणते नहीं ॥ जिसउपायकरिकै हम पुनःयज्ञभागकूंप्राप्तहोवैं ॥ समाधान ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ इंद्रकेसाथयुद्धकरणेकरिकै तुमारेकूंकदाचित्भी यज्ञभागकीप्राप्तिहोणेवालीनहीं ॥ यातैं पुनःयज्ञभागकी प्राप्तिवासतै ॥ तुमारेताईं एकसुगमउपाय हमकहैं हैं ॥ तुम सावधानहोइकेश्रवण करो ॥ हे अश्विनीकुमारो ॥ शर्यातिनामा राजानैं यज्ञकरणेका उद्यमकऱ्या है ॥ और शर्यातिनामा राजाका जामाताजोच्यवननामा ऋषि है ॥ तिसच्यवनऋषिकूं यज्ञकेहोताकरणेकासंकल्प शर्यातिराजानैं मन विषेकऱ्या है ॥ परंतु सोच्यवन नामाऋषि नेत्रोंतैंअंध है॥ यातैं शर्यातिराजाकूं याप्रकारकासंशयहुआ है यहनेत्रोंतैंरहितच्यवनऋषि किसप्रकार हमारेकूं यज्ञकरावैगा ॥ शंका ॥ हेभगवन् सोच्यवननामाऋषि शर्यातिराजाका जामाता किसप्रकार होताभया ॥ और सोच्यवनऋषि नेत्रोंतैंरहित किसप्रकारहोताभया॥ यह संपूर्णवार्ता हमारेप्रति कथनकरो ॥ समाधान ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ ताशर्याति नामाराजाकी सुकन्या नामाएककन्याथी ॥ सोकन्यावाल्यअवस्थाविषे आपणे पिताकेसाथ वनविषेजातीभयी ॥ औरतिसवनविषे च्यवननामाऋषि बहुतकालकातपकरताथा ॥ कैसा हैसोच्यवनऋषि ॥ जिसकासंपूर्णशरीर मृत्तिकाकरिकै ढक्यागया है॥और नेत्रोंकरिकैसूर्यभगवान्कूंदेखिरह्या है ॥और सर्वतपस्वियोंविषेउत्तम है॥ ऐसेच्यवन ऋषिकूंदेखिकरिक सोकन्या याप्रकारकाविचारकरतीभयी ॥ यापृथिवीकेछिद्रोंविषेकाहेकाप्रकाश है॥याप्रकारकाविचारकरिकै सोकन्या किसीतृणकूंहाथविषेलैकै भूमिकेछिद्रविषेस्थितच्यवनऋषिकेनेत्रोंकूं भेदनकरतीभयी ॥ तिसतैं अनंतर तानेत्रोंतैं रुधिरकाप्रवाह चलता

भया ॥तारुधिरकूंदेखिकरिकै सोशर्यातिराजा तामृत्तिकाविषे मुनिकूंजाणताभया ॥ और अत्यंतभयकूंप्राप्तहोताभया॥और तिसच्यवन ऋषिकूं नेत्रोंतैंरहित अंधदेखिकै मुनिकैसेवाकरणेवासतै सुकन्यानाम्नी कन्याकूं च्यवनऋषिकेताईं दताभया ॥ हे अश्विनी कुमारो इसप्रकार सोच्यवननामाऋषि नेत्रोंतैंरहितअंध है ॥ और वृद्धअवस्थाकरिकैयुक्त है तिसच्यवननामाऋषिकूं जोतुम नेत्रोंकीप्राप्तिकरोगे॥ तथा यौवनअवस्थाकीप्राप्तिकरोगे ॥ तौ सोच्यवनऋषि समथ है ॥ यातैं पुनः तुमारेकूं यज्ञभागकीप्राप्तिकरावैगा ॥ हे अश्विनीकुमारो ॥ इसप्रकार जबीदध्यङ्ऋषितुमारेगुरुनैंकह्या ॥ तबी तुम दोनों च्यवननामाऋषिकूं नेत्रयुक्तकरतेभये ॥ तथायौवनअवस्थायुक्तकरतेभये ॥ पश्चात् सोच्यवनऋषिभी बलात्कारसैं तुमारेताईं यज्ञभागकूं दिवावताभया ॥ यहवार्ता भागवतकेनवमस्कंधविषे विस्तारतैंकथनकरीहै॥ हेअश्विनीकुमारो॥ इसप्रकार तुमारेकूंयज्ञभागकीप्राप्तीहोतीभयी॥ पश्चात् एककालविषे तुमारेगुरुदध्यङ्अथर्वणकेआश्रमविषे देवराजइंद्र आवताभया ॥ ताइंद्रकूं आपणेआश्रमविषेआयाहुआदेखिकरिकै सोदध्यङ्ऋषि इंद्रकाबहुतसनमानकरता भया ॥ तिसतैंअनंतरसोइंद्र सुखपूर्वक आसनऊपरबैठताभया ॥ और नानाप्रकारकीकथावों करिकै सोइंद्र अत्यंतहर्षकूं प्राप्तहोताभया इसप्रकारसंतोषकूं प्राप्तहुए इंद्रकेप्रति सोदध्यङ्ऋषि याप्रकारकावचन कहता भया ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ तीनलोकोंका पतितूंइंद्र हमारेआश्रमविषे अतिथिहोइकेआया है ॥ यातैं तुमारे प्रसन्नता करणे वासतैं मैं कौनपदार्थ देवों ॥ हे अश्विनीकुमारो ॥ इस प्रकार जभी तुमारे गुरु दध्यङ् ऋषिनैं इंद्रकेप्रतिवचनकह्या ॥ तभीसोदेवराज इंद्र ॥तुमारेगुरु दध्यङ्ऋषिके प्रति याप्रकारकावचनकहताभया ॥ हे दध्यङ्ऋषि ॥ जोहमारेप्रसन्नताकरणेकीतुमारेकूंइच्छा है ॥ तौ सर्वप्राणियोंकरिकैदुर्लभ जोब्रह्मविद्या है सोब्रह्मविद्या हमारेताईं उपदेशकरो ॥ हेअश्विनी कुमारो ॥ जबी इसप्रकार इंद्रनैं तुमारेदध्यङ्ऋषिकेप्रतिकह्या ॥ तबी सोदध्यङ्ऋषितुमारागुरु महान्संशयकूं प्राप्त होता भया ॥ दृष्टांत ॥ जैसे कन्याकापिता किसीपुरुषकेप्रति मैंतुमारेताईं कन्यादेताहूं याप्रकारकावचन कहै ॥ और पश्चात् तापुरुषविषे विद्यादिक गुणोंकेअभावकूंदेखिकरिकैसोकन्याकापिता इसगुणहीनपुरुषकेताईं कन्याकूंदेवों अथवा नहीं देवों याप्रकारकेसंशयकूं प्राप्तहोवै है ॥ तैसे

सोदध्यङ्ऋषिभी देवराजइंद्रकेताईं पूर्व प्रियपदार्थकेदेणेकीप्रतिज्ञाकरताभया ॥ परंतु सोदेवराजइंद्र गुरुभक्तितैंरहित है ॥ तथा विषयों विषेआसक्त है ॥ यातैंब्रह्मविद्याका अधिकारीनहीं ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै सोदध्यङ्ऋषि इंद्रकेताईं ब्रह्मविद्यादेणेयोग्य है अथवानहीं देणेयोग्य है ॥ याप्रकारकेसंशयकूं प्राप्तहोताभया ॥ तात्पर्ययह ॥ जोदेवराजइंद्रकेताईं मैं ब्रह्मविद्यानहींउपदेशकरोंगा ॥ तौ हमारावचन मिथ्याहोवैगा ॥ और जोइंद्रकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरोंगा॥तो अनधिकारीइंद्रकेताईं दईहुईब्रह्मविद्या निष्फलहोवैगी॥याप्रकारविद्या केदेणेपक्षविषे तथानहींदेणेपक्षविषे दोषोंकाविचारकरिकै सोदध्यङ्अथर्वणऋषि महान्संशयकूंप्राप्तहोताभया ॥ और पुनःसोदध्यङ्ऋषि आपणे मनाविषे याप्रकारकाविचार करता भया ॥ अनधिकारी पुरुषकेताईं ब्रह्मविद्या देणेकारिकै ऐसा पाप उत्पन्नहोवैनहीं ॥ जैसा पाप मिथ्यावचनकारिकैउत्पन्नहोवै है ॥ यातैं आपणेप्रतिज्ञाकेसत्यकरणेवासतैं इंद्रकेताईं अवश्य ब्रह्मविद्यादेणीचाहिये ॥ याप्रकारका विचार करिकै सोदध्यङ्ऋषि कहताभया ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ सर्वलोकविषे प्रसिद्ध जोहमारेअश्विनीकुमारदोशिष्य हैं॥तिनोंनैंब्रह्मविद्याकी प्राप्ति वासतैं पूर्वहमारेआगे प्रार्थनाकरीथी ॥ परंतु ॥ तिनअश्विनीकुमारोंकूं वैराग्यादिकसाधनोंतैंरहितदोखिकरिकै तिनोंकेप्रति मैं ब्रह्मविद्या काउपदेश नहींकरताभया ॥ ऐसीदुर्लभब्रह्मविद्याकाउपदेश मैं तुमारेताईं करताहूं ॥ तुम सावधानहोईकै श्रवणकरो ॥ हेदेवराजइंद्र जैसे सुखशब्दकामुख्यअर्थ आत्मास्वरूपआनंद है ॥ आत्मस्वरूपआनंदतैंभिन्न विषयजन्यआनंद सुखशब्दकागौणअर्थ है॥तैसेविद्याशब्दका भी मुख्यअर्थ ब्रह्मविद्याही है ब्रह्मविद्यातैंभिन्नदूसरीविद्या विद्याशब्दकागौणअर्थ है ॥ अत्र ब्रह्मविद्याविषे विद्याशब्दकी मुख्यअर्थता दिखावणेवासतैं प्रथमविद्याशब्दकेअर्थकूंदिखावै हैं ॥ कार्यरूपकरिकैअनंतरूपोंकूंप्राप्तहुआ तथावासनारूपीजालकामूलरूप और सर्वप्रा णियोंकूँभयकादेणेहारा ऐसाजोअज्ञान है तिसअज्ञानकूं निःशेषतैंजोनिवृत्तकरै तिसकानाम विद्या है ॥ अथवा वैराग्यादिक साधन युक्त अधिकारियोंकेताईं आनंदस्वरूपआत्माकूं जोदेवै ताकानाम विद्या है ॥ अथवा अधिकारियोंके प्रति जो आत्माका साक्षात्कार करावै ताकानाम विद्या है ॥ याप्रकारका विद्याशब्दकाअर्थ ब्रह्मविद्याविषेहीघटै है ॥ ब्रह्मविद्यातैंभिन्नविद्याविषे या प्रकारका अर्थ घटै

नहीं ॥ काहेतैं ब्रह्मविद्याही पुरुषोंकेअज्ञानकीनिवृत्तिकरै है ॥ तथा आनंदस्वरूप आत्माकी प्राप्ति करै है ॥ ब्रह्मविद्यातैंभिन्नकोईविद्या अज्ञानकीनिवृत्ति तथा परमानंदकी प्राप्तिकरै नहीं यातैं ब्रह्मविद्याही विद्याशब्दका मुख्य अर्थ है ॥ या प्रकार विद्याशब्दके अर्थकूं निरूपण करिकै सोदध्यङ्ऋषि कहता भया ॥ हे देवराजइंद्र ॥ संपूर्ण वेदांतशास्त्र करिकै प्रतिपादनकरणेयोग्य जो यह ब्रह्मपुरुष है ॥ सो आपणे सत्चितआनंदरूपकरिकै संपूर्णजगत्कूं व्याप्तकरिरह्याहै ॥ याकारणतैं यहब्रह्मनामापुरुष पूर्णसंज्ञाकूंप्राप्तभयाहै ॥ और हेदेव राजइंद्र ॥ असत्शब्दकाअर्थ तथाअसत्शब्दजन्यज्ञानकाविषय जोतत्पदकाअर्थपरोक्षईश्वरहै ॥ और सत्शब्दकाअर्थ तथा सत्शब्दज न्यज्ञानकाविषय जो त्वंपदकाअर्थपरोक्षजीवहै ॥ तिनदोनोंकूं परमात्माकेसत्आनंदस्वरूपकरिकै तूँ पूर्णजाण ॥ शंका–हेभगवन् ! आ त्माकेभेदकाकारणजोप्रपंचरूपउपाधिहै ॥ तिसकेविद्यमानहुए परमात्माकीसर्वत्रपूर्णता संभवैनहीं ॥समाधान॥ हेदेवराजइंद्र ॥ जोप्रपंच आनंदस्वरूपआत्मातैंभिन्नहोवै ॥ तौ प्रपंच आत्माकेभेदकूंउत्पन्नकरै॥ परंतु आनंदस्वरूपआत्माअधिष्ठानतैं प्रपंच भिन्ननहीं॥ किंतु पूर्ण परमात्मातैंहीं यहप्रपंचउत्पन्नहोवै है ॥ और पूर्णपरमात्माविषेही यह संपूर्ण जगत् स्थित है ॥ और पूर्णपरमात्माविषेही यह सकलजगत् लयहोवै है ॥ अधिष्ठानआत्माकीसत्तातैंभिन्न जगत्कीसत्तानहीं॥यातैं संपूर्णजगत् अधिष्ठानरूपआत्माविषेकल्पितहै॥जैसे रज्जुरूपअधि ष्ठानकेज्ञानहुए ॥ कल्पितसर्पकीनिवृत्तिहोवै है ॥ परिशेषतैं रज्जुरूपअधिष्ठान रहै है ॥ अधिष्ठानस्वरूपआत्माकेसाक्षात्कारहुए ॥ संपू र्णकल्पितप्रपंचकीनिवृत्तिहोवै है ॥ परिशेषतैं पूर्णपरमात्माही प्रपंचरूपउपाधितैंरहितहुआ स्थितहोवै है॥ दृष्टांत ॥ जैसे वर्षाकालविषे आकाशतैंहीं मेघ उत्पन्नहोवैं हैं॥और आकाशविषेहीं मेघ स्थितहोवैं हैं॥ और आकाशविषेही मेघोंकालयहोवै है॥ और संपूर्णमेघोंकेनि वृत्तहुए परिशेषतैं एकआकाशहीरहै है॥ तैसे कल्पितप्रपंचकेनिवृत्तहुए परिशेषतैं एकअद्वितीयपरमात्माहींरहै है॥और हेदेवराजइंद्र ॥जैसे आकाश सर्वत्रपूर्ण है ॥ तैसे आनंदस्वरूपपरमात्माभी सर्वत्रपूर्ण है॥ और जैसे शरीरादिकअनात्मपदार्थ भूत भविष्यत् वर्तमान यातीन कालोंविषे एकस्वभाववालेहोवैनहीं ॥ किंतु बाल्ययौवनादिकनानास्वभावोंकूंप्राप्तहोवैं हैं॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्मा नानास्वभावोंकूं

प्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु तीनकालोंविषे एकस्वभाववालाहै ॥ और सत्चित् आनंद स्वरूपहै ॥ ऐसे निर्गुणपरमात्माकेवास्तस्वरूपकूं शुद्ध अंतःकरणवालेविद्वान्पुरुषही अनुभवकरे हैं ॥ मलिनअंतःकरणवालेपुरुष आत्माकेवास्तवस्वरूपकूं जाणिसकैनहीं॥शंका ॥ हेभगवन्॥ जिसआत्माकेवास्तवस्वरूपकूं विद्वान्पुरुष अनुभवकरे हैं ॥ तिसआत्माकेवास्तवस्वरूपकूं घटपटादिकोंकीन्याईं इदंतारूपकरिकै हमारेप्रतिकथनकरो॥समाधान॥हे देवराजइंद्र ॥ यह आनंदस्वरूपपरमात्मा वास्तवतैंअसंगहै और निर्गुण है॥और जगत्कीउत्पत्तिस्थितिलयतैं रहितहै ॥ यातैं ऐसेनिर्गुणपरमात्माकूं घटादिकोंकीन्याईं इदंतारूपकरिकैबोधनकरणेविषे कोई भीविद्वान् समर्थ नहीं ॥ किंतु ऐसे निर्गुण परमात्माविषे जगत्कीउत्पत्तिस्थितिलयका आरोपणकरिकै शिष्यकेताईं तिसनिर्गुणब्रह्मकाउपदेश गुरुकरे हैं ॥ प्रपंचकेअध्यारोपअपवादतैंविना साक्षात् निर्गुण परमात्माके बोधकरणेविषे कोईभी पुरुष समर्थ नहीं ॥ काहेतैं यहनिर्गुणपरमात्मा स्वप्रकाश ज्ञानस्वरूपहै॥ यातैं बाह्यचक्षुआदिकइंद्रियोंकरिकैभी जान्याजावै नहीं ॥ तैसे अंतरमनबुद्धि आदिकोंकरिकैभी जान्याजावै नहीं ॥ तथा अन्य किसीप्रमाणकरिकैभी जान्याजावै नहीं ॥ ऐसेमनवाणीकेअविषयनिर्गुणपरमात्माविषे जगत्की उत्पत्ति स्थितिलय किसप्रकार संभवै ॥ याप्रकारकेविचारयुक्त जेमहात्मापुरुष हैं ॥ तिनोंनैं जगत्के उत्पत्तिकी सिद्धिवासतै तिस निर्गुणपरमात्माविषे मायाकल्पनाकरीती है ॥ सोमाया अज्ञानतैंभिन्ननहीं ॥ किंतु मैंअज्ञानीहूं याअनुभवकरिकै सिद्ध अज्ञानस्वरूपहीमायाहै ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ तिस अज्ञानरूपमायाकूं यहपरमात्माही प्रकाशकरै है॥यातैं सोअज्ञानरूपमायासंपूर्णपरमात्माकूंआच्छादनकरैनहीं॥ किंतुपरमात्माकोंकिंचित्देशकूं सोमाया आच्छादनकरै है जोसर्वओरतैंपरमात्माकूं माया आच्छादनकरै॥तौ अस्तिभातिप्रियरूपकरिकै आत्माकाभाननहींहोणाचाहिये ॥ और सर्वप्राणियोंकूं मैंसर्वदाविद्यमानहूं याप्रतीतिविषे अस्तिरूपकरिकै परमात्माकाभानहोवै है॥ और मैंभासताहूं याप्रतीतिविषे भातिरूपकरिकै परमात्माकाभानहोवै है ॥ और मैंकभीभीअप्रियनहींहूं याप्रतीतिविषेप्रियरूपकरिकै परमात्माकाभानहोवै है॥ यातैं हेदेवराजइंद्र यहआनंदस्वरूपपरमात्मापुरुष आपणेस्वप्रकाशज्ञानस्वरूपकरिकै संपूर्णबुद्धिआदिकजडपदार्थोंका द्रष्टाहै ॥ और सजातीय विजातीय स्वगतभेदतैंरहितहै ॥ ऐसे स्वतःसिद्धआनंदस्वरूप परमात्माके साक्षात्बोधनकरणेविषे कोईभी पुरुष समर्थ नहीं ॥ अब याही अर्थ

कूंस्पष्टकरिकैदिखावैं हैं ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ शब्दस्पर्शादिकविषयोंकेअनुभवतैं उत्पन्नभयाजोपुरुषकूंसुख है ॥ तिसआपणेसुखकूं सो पुरुष जभी अन्यकिसीपुरुषकेप्रति कथनकरै है ॥ तभी अन्यकिसीपदार्थकूंदृष्टांतकरिकै ताआपणेसुखका कथन करैहै ॥ किसी दृष्टांततैं विना विषयजन्यसुखकेसाक्षात्कथनकरणेविषे कोईभी पुरुष समर्थ नहीं ॥ जभी अनुभवकरेहुएविषयजन्यसुखकूंभी कोई पुरुष साक्षात् कथन करणेविषे समर्थ नहीं भया ॥ तभी अलौकिकआनंदस्वरूपआत्माकूं कौनपुरुष साक्षात्कथनकरिसकैगा॥किंतु आनंदस्वरूपआत्माकेसाक्षात्कथनकरणेविषे कोईभीपुरुष समर्थ नहीं ॥ यातैं हेदेवराजइंद्र तानिर्गुणपरमात्माविषे जगत्काअध्यारोपकरिकै मैंतुमारेताईं आनंदस्वरूपआत्माकाउपदेश करताहूं ॥ जो तुमाराअंतःकरण शुद्धहोवैगा ॥ तौ आपेहीतूं परमात्माकेवास्तवस्वरूपकूंजाणैगा ॥ अब परमात्माविषेजगत्केअध्यारोपकूंदिखावैं हैं ॥ हे देवराजइंद्र॥या अनादिसंसारविषे जैसे रात्रिदिनकाप्रवाह निरंतरवर्तमानहै॥तात्पर्ययह॥ रात्रिकेनिवृत्तहुए दिनकी उत्पत्तिहोवै है॥और दिनकेनिवृत्तहुए पुनःरात्रिकीउत्पत्तिहोवै है॥याप्रकार दिनरात्रिकाप्रवाह निरंतरवर्तमानहै॥ तैसे जगत्की उत्पत्तिका तथाप्रलयका प्रवाहभी निरंतरवर्तमानहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जगत्कीउत्पत्तितैंअनंतर प्रलयहोवै है ॥ और प्रलयके अनंतर पुनःजगत्की उत्पत्ति होवै है ॥ या प्रकार जगत्केउत्पत्तिप्रलयकाप्रवाह निरंतरवर्त्तमानहै॥और जैसे रात्रिके तथादिनके जो मध्य काकालहै ताकूं लोकविषेसंध्याकहै हैं॥तैसे जगत्के उत्पत्तिका तथानाशका जो मध्यकालहै ताकूं शास्त्रविषेस्थितिकहै हैं॥अब जगत्के स्वरूपकूंदिखावैं हैं ॥ हे देवराजइंद्र ॥ यह संपूर्णजगत् नाम रूप क्रिया स्वरूपहै ॥ तहाँ विश्व लोक दृश्य प्रपंच या प्रकारकें शब्दोंकूंनाम कहै हैं॥और आकाशादिकपंचभूतोंकूं तथापंचभूतोंकेकार्यशरीरादिकव्यक्तियोंकूं रूपकहै हैं॥और जगत्केउत्पत्तिकूं तथासंहारकूं क्रिया कहै हैं ॥ इस प्रकार संपूर्णजगत्विषे नामरूपक्रियास्वरूपताकथनकरिकै ॥ अब एकएकघटपटादिकपदार्थविषे नाम रूप क्रिया स्वरूपता दिखावैं हैं ॥ जैसे एकघटका घट कुंभ कलश यह नाम हैं ॥ और उदरबडा मुखछोटा यह घटकारूपहै ॥ और जलादिकोंकाआनयन ॥ यह घटकी क्रियाहै ॥ इसप्रकारपटादिकसर्वपदार्थोंविषेभी नामरूपक्रिया जानिलेणी॥अब नामरूपक्रियाकेपरस्परअभेदकूंदिखावैं हैं॥हेदे

वराजइंद्र जैसे पटादिकपदार्थ कभी नवीनअवस्थाकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ और कभी जीर्णअवस्थाकूंप्राप्तहोवै हैं॥सोनवीनअवस्था तथाजीर्णअवस्था पटादिकपदार्थोंतैंभिन्ननहीं ॥ किंतु पटादिकोंकास्वरूपही है ॥ तैसे आनयनादिरूपक्रियाभी घटादिकपदार्थोंकीअवस्थाविशेषहै ॥ यातैं घटादिकवस्तुकेस्वरूपतैं क्रियाभिन्न नहीं ॥ किंतु रूपस्वरूपही क्रियाहै ॥ और सोघटादिकोंकारूप घटादिकनामोंतैंभिन्ननहीं ॥ काहेतैं घटादिकनामोंतैंविना घटादिकोंकेरूपकीसिद्धिहोवै नहीं ॥ यातैं घटादिकोंकारूप नामस्वरूपहै॥इस प्रकार नाम रूप क्रिया यह तीनों परस्परभिन्न नहीं किंतु अभिन्न हैं ॥ और हे देवराजइंद्र ॥ जैसे नामरूपक्रियायहतीनों परस्परभिन्ननहीं हैं ॥ तैसे आपणेकारणतैंभी नामरूपक्रिया भिन्न नहीं ॥ किंतु नामरूपक्रिया आपणेकारणतैं अभिन्नहीं होवै हैं ॥ कार्यका कारणके साथ अभेद लोकविषेभीदेख्याहै ॥ जैसे रज्जुविषेकल्पित सर्पदंडादिककार्य रज्जुरूपकारणतैंभिन्नहोवै नहीं ॥ तथा परस्परभी भिन्नहोवै नहीं ॥ किंतु कल्पितसर्पदंडादिक रज्जुरूपकारणतैं तथापरस्परअभिन्नहीं हैं ॥ तैसे नामरूपक्रिया आपणेकारणतैं तथापरस्पर भिन्ननहीं किंतुअभिन्नहीं हैं ॥ और हे देवराजइंद्र ॥ जैसे आकाशविषेकल्पितमेघादिक आपणी उत्पत्तितैंपूर्व आकाशस्वरूपही होवै हैं ॥ तैसे नामरूप क्रियास्वरूपसकलजगत् आपणीउत्पत्तितैंपूर्व अद्वितीयब्रह्मरूपही होता भया ॥ या प्रकार श्रुतिनैं जगत्कोउत्पत्तितैंपूर्व ब्रह्मरूपकरिकैजगत्कीस्थिति कथनकरी है॥सोब्रह्मविषे जगत्की स्थिति ब्रह्मकूंजगत्काकारणमानणेतैंविना संभवै नहीं॥काहेतैं आपणीउत्पत्तितैंपूर्व कार्य कारणविषेहीरहै है ॥ कारणतैंभिन्नकिसीपदार्थविषे कार्य रहै नहीं॥जैसे घटरूपकार्य आपणीउत्पत्तितैंपूर्व मृत्तिकारूपकारणविषेरहै है ॥ मृत्तिकातैंभिन्नकिसीपदार्थविषे घटरूपकार्य रहै नहीं॥और हेदेवराजइंद्र॥अद्वितीयब्रह्मविषे श्रुतिनैं कथनकरीजोजगत्की कारणता सो मायातैंविनासंभवैनहीं ॥ यातैं अद्वितीयनिर्गुणपरमात्माविषे जगत्केकारणताकीसिद्धिवासतै तेविद्वान्पुरुष तिसअद्वितीयब्रह्मविषे मायाकीकल्पनाकरैं हैं ॥ और हे देवराजइंद्र ॥ सो मायाभी अधिष्ठानब्रह्मतैंभिन्न नहीं ॥ किंतु अज्ञानब्रह्मकानामहीं माया है ॥ या कारणतैं विवेकीमहात्मापुरुष ब्रह्मविषेजगत्कीकारणताकोसिद्धिवासतै तिस अज्ञात परमात्माकूंहीं मायाके वाच

कअव्याकृतादिकशब्दोंकरिकैकथनकरैं हैं ॥ अब मायाविशिष्टपरमात्माकेनामोंकूंदिखावैं हैं ॥ हे देवराजइंद्र ॥ कोईवेदवेत्तापुरुषतो मायाविशिष्टपरमात्माकूं अव्याकृतकहैं हैं ॥ और कोईकवेदवेत्तापुरुष तिसमायाविशिष्टपरमात्माकूं आकाश कहैं हैं ॥ और कोईकवेदवेत्तापुरुष तिसमायाविशिष्टपरमात्माकूं अक्षरकहैं हैं ॥ और कोईकवेदवेत्तापुरुष तिसमायाविशिष्टपरमात्माकूं मायीकहै हैं॥और कोईकवेदवेत्तापुरुष तिसमायाविशिष्टपरमात्माकूं अधीश्वरकहैं हैं ॥ और कोईकवेदवेत्तापुरुष तिसमायाविशिष्टपरमात्माकूं अंतर्यामीकहैं हैं ॥ और कोईकवेदवेत्तापुरुष तिसमायाविशिष्टपरमात्माकूं ईश्वरकहैं हैं ॥ और कोईकवेदवेत्तापुरुष तिसमायाविशिष्टपरमात्माकूं कारणकहैं हैं ॥ और कोईकवेदवेत्तापुरुष तिसमायाविशिष्टपरमात्माकूं ब्रह्मकहैं हैं॥और कोईकवेदवेत्तापुरुष तिसमायाविशिष्टपरमात्माकूं पूर्णकहैं हैं॥इत्यादिकअनंतनामोंकरिकैं तिसमायाविशिष्टपरमात्माकूं वेदवेत्तापुरुष कथनकरैं हैं॥ अब अव्याकृतशब्दकेअर्थकूंदिखावैं है॥हेदेवराजइंद्र ॥ सृष्टिकीउत्पत्तितैंपूर्व मायाविशिष्टपरमात्माविषे यासंपूर्णप्रपंचकानामरूप अस्पष्टरूपकरिकैरहैहैं॥याकारणतैं तिसमायाविशिष्टपरमात्माकूं अव्याकृतकहैं हैं ॥ और हेदेवराजइंद्र॥ जैसे शीतकालविषे सूक्ष्मरूपहोइकेमेघ आकाशविषेरहैहैं॥और पुनःवर्षाकालविषे तिसीआकाशतैं स्थूलरूपकरिकैमेघ उत्पन्नहोवै हैं ॥ तैसे प्रलयकालविषे तिसअव्याकृतपरमात्माविषे नामरूपक्रियास्वरूपजगत् सूक्ष्मरूपहोइकैरहै है॥ और पुनःसृष्टिकालविषे तिसअव्याकृतपरमात्मातैंहीं स्थूलरूपकरिकैयहजगत् उत्पन्नहोवै है ॥ यातैं मायाविशिष्टअव्याकृतपरमात्माहीं संपूर्णजगत्काकारणहै॥अब हिरण्यगर्भकेस्वरूपकूंदिखावैहैं॥हेदेवराजइंद्र॥आकाश वायु अग्नि जल पृथिवी यहपंचभूत ॥ तथा नेत्र त्वक् रसन घ्राण श्रोत्र यहपंचइंद्रिय ॥ तथा प्राण अपान समान व्यान उदान यहपंचप्राण ॥ तथा मन ॥ या षोडशकलावोंके समूहकूं वेदवेत्तापुरुष सूक्ष्मशरीरकहै हैं॥ तासमष्टिसूक्ष्मशरीरविषे अहंअभिमानकरिकैयुक्तहुआ सोमायाविशिष्टपरमात्माहीं हिरण्यगर्भसंज्ञाकूंप्राप्तहोवै है॥और हेदेवराजइंद्र॥तिसहिरण्यगर्भकूं कोईकवेदवेत्तापुरुष सूत्रआत्माभीकहैहैं॥और कोईकवेदवेत्तापुरुष तिसहिरण्यगर्भकूं मृत्युकहैहैं॥और कोईवेदवेत्तापुरुष तिसहिरण्यगर्भकूं मृत्युकहैहैं॥और कोईवेदवेत्तापुरुष तिसहिरण्यगर्भकूं अशनायाकहैहैं और कोई

वेदवेत्तापुरुषतिसहिरण्यगर्भकूं प्रभंजनकहैं हैं ॥ और कोईकवेदवेत्तापुरुष तिसहिरण्यगर्भकूं स्वयंभूकहैं हैं ॥ और कोईकवेदवेत्तापुरुष तिस हिरण्यगर्भकूंईशकहैं हैं ॥ और कोईकवेदवेत्तापुरुष तिसहिरण्यगर्भकूं कार्यब्रह्मकहैंहैं ॥ इसतैंआदिलैके अनंतनामोंकरिकै हिरण्यगर्भ काकथनकऱ्याहै॥और हेदेवराजइंद्र ॥ इसहिरण्यगर्भकास्वरूप अत्यंतसूक्ष्महै ॥ और नानाप्रकारकेवर्णोंकरिकैयुक्तहै॥ तात्पर्यह ॥ ईश्वर इंद्रियप्राणविषय अंतःकरण इतनेपदार्थोंकासमुदाय जाकास्वरूपहै॥और हेदेवराजइंद्र॥जैसे प्रथम बीजतैं अंकुरउत्पन्नहोवैहै ॥और अंकुर तैंवृक्षउत्पन्नहोवै है ॥ यातैं बीज अंकुरद्वारा वृक्षकाकारण है ॥ और अंकुर साक्षात्वृक्षकाकारण है ॥ तैसे मायाविशिष्टपरमात्मा हिरण्यगर्भद्वारा प्रपंचकाकारण है ॥ और यहहिरण्यगर्भ आकाशादिकस्थूलपंचभूतोंका तथापंचभूतोंकेकार्यस्थूलशरीरादिकोंका ॥ साक्षात्हींकारण है ॥ और यहसंपूर्णजगत् याहिरण्यगर्भकाहीस्वप्न है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जबी यहसंपूर्णजगत् हिरण्यगर्भका स्वप्नप्रमानोंगे ॥ तौ हिरण्यगर्भविषे जीवपणासिद्धहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ उपाधिदृष्टिकरिकै यह हिरण्यगर्भ जबी आपणे चैतन्यस्वरूपकूंनहींअनुभवकरता ॥ तबी यहहिरण्यगर्भ जीवसंज्ञाकूंप्राप्तहोवै है ॥ और चैतन्यदृष्टिकरिकै यह हिरण्यगर्भ आपणेव्यापक स्वरूपकाहीअनुभवकरै है ॥ यातैं यहहिरण्यगर्भ ईश्वरसंज्ञाकूंप्राप्तहोवै है॥ तात्पर्ययह॥ जैसे महाभारतविषे युधिष्ठिरादिकपंचपांडवोंविषे देवतावोंकाअंश तथामनुष्यकाअंश दोनोंकथनकरै हैं ॥ तैसे समष्टिसूक्ष्मउपाधिकीदृष्टिकरिकै हिरण्यगर्भविषे जीवव्यवहारहोवै है ॥ और उपाधितैंरहितव्यापकचैतन्यदृष्टिकरिकै हिरण्यगर्भविषे ईश्वरव्यवहारहोवै है ॥ अब हिरण्यगर्भविषे ईश्वरस्वरूपताकेस्पष्टकरणे वासतै ताहिरण्यगर्भविषे सर्वात्मताकूं तथाजगत्के उत्पत्ति स्थिति लयकीकारणताकूं दिखावै हैं ॥ हे देवराजइंद्र ॥ यहहिरण्य गर्भही जडचेतनरूपसंपूर्णजगत्स्वरूपहै ॥ और यह हिरण्यगर्भही इंद्रादिकसकलदेवतास्वरूप है ॥ और यह हिरण्यगर्भही दशदिशा स्वरूप है ॥ याकरिकै हिरण्यगर्भकीसर्वत्रव्यापकतादिखाई ॥ अब जगत्कीकारणताकूंदिखावै हैं ॥ हे देवराजइंद्र ॥ जैसे मायावी राक्षसोंकाबालक आपणेमायाकेप्रभावतैं अनेकपदार्थोंकीउत्पत्ति स्थिति लयकूंकरै है ॥ तैसे यह हिरण्यगर्भभगवान् आपणेमायाके

बलतैं संपूर्णजगत्के उत्पत्तिकूंतथास्थितिकूं तथासंहारकूंकरैहै ॥ यातैं हिरण्यगर्भही संपूर्णजगत्काकारणहै ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ याजगत्विषे हिरण्यगर्भतैंअधिक तथाहिरण्यगर्भकेसमान कोईभीदेहधारीजीव नहीं ॥ किंतु संपूर्णदेहधारीजीवोंतैं यहहिरण्यगर्भ भगवान् अधिकहै ॥ यातैं यहहिरण्यगर्भभगवान् अतिशयतादोषतैंरहितहै ॥ और हेदेवराजइंद्र जैसे राजाकेप्रियभृत्य आप णीआपणीइच्छाकेअनुसार शुभकर्मविषेतथाअशुभकर्मविषे प्रवर्तमानहोवैं हैं ॥ तिनप्रियभृत्योंकीइच्छाकेअनुसारही राजा तिनोंकूं प्रेरणा करै है॥ तैसे पूर्वपूर्व पुण्यपापरूपकर्मकेअनुसार पुण्यकर्मविषे तथापापकर्मविषे प्रवर्तमानभयेजीवोंकूं यहहिरण्यगर्भभगवान् प्रेरणाकरैहै॥ यातैं यहहिरण्यगर्भभगवान् अंतर्यामीहै ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकैदिखावैं हैं॥हे देवराजइंद्र ॥ यहहिण्यगर्भभगवान् जिनपुरुषोंकूँ नर कविषेलेजाणेकीइच्छाकरै है तिनपुरुषोंकूं प्रेरणाकरिकै पापकर्महींकरावै है ॥ और यहहिरण्यगर्भभगवान् जिनपुरुषोंकूंस्वर्गविषेलेजाणे कीइच्छाकरै है ॥ तिनपुरुषोंकूं प्रेरणाकरिकै पुण्यकर्महींकरावै है ॥ और सोहिरण्यगर्भभगवान् जिनपुरुषोंकूं मनुष्यलोकविषेलेजाणेकी इच्छाकरै है ॥ तिनपुरुषोंकूं प्रेरणाकरिकै पुण्यकर्म तथापापकर्म दोनोंकरावै है ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ जैसे लोकविषेधर्मात्माराजा शुभ कर्मकरणेहारेपुरुषकूं सुखकीप्राप्तिकरै है ॥ और अशुभकर्मकरणेहारेपुरुषोंकूं दुःखकीप्राप्तिकरै हैं ॥ तैसे यहहिरण्यगर्भभगवान्भीपुण्यकर्म वान्पुरुषोंकूं सुखकीप्राप्तिकरै है॥और पापकर्मवान्पुरुषोंकूं दुःखकीप्राप्तिकरैहै॥ और यहहिरण्यगर्भभगवान्पापीपुरुषकीइच्छाकेअनुसार तापापीपुरुषकूं पापकर्मविषेप्रेरणाकरै है॥और धर्मात्मापुरुषकीइच्छाकेअनुसार ताधर्मात्मापुरुषकूं पुण्यकर्मविषेप्रेरणाकरैहै॥ यातैं हिरण्य गर्भविषे विषमतादोष तथानिर्दयतादोष होवैनहीं॥दृष्टांत॥जैसे पिता माता नानाप्रकारकेपदार्थोंकीप्राप्तिकरिकै बालककूं सुखकीप्राप्तिकरैं हैं॥और कदाचित् सोपितामाता ताडनाकरिकै बालककूं दुःखकीप्राप्तिभीकरैहैं॥ परंतुबालककेताडनाकालविषे पितामाताकीबालकऊपर निर्दयताहोवैनहीं ॥ किंतु बालककेहितवासतैंही पितामाता ताकाताडनकरैं हैं ॥ तैसे यहहिरण्यगर्भभगवान्भीजीवोंकेचित्तकीशुद्धि वासतै तिनजीवोंकेकर्मोंकेअनुसार तिनजीवोंकूं नरकदुःखकीप्राप्तिकरैं हैं ॥ यातैं हिरण्यगर्भविषे विषमतादोष तथा निर्दयतादोष संभवै

नहीं ॥ और हेदेवराजइंद्र॥ यहहिरण्यगर्भभगवान् सृष्टिकेआदिकालविषे संपूर्णजगत्कूंविचारकरिकै उत्पन्नकरै है ॥ और स्थितिकालविषे संपूर्णजगत्का पालनकरै है ॥ और प्रलयकालविषे संपूर्णजगत्का संहारकरै है ॥ याहिरण्यगर्भतैंभिन्न दूसराकोईपुरुष जगत्के उत्पत्ति स्थिति लय करणेविषेसमर्थनहीं ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ सोहिरण्यगर्भभगवान् जलहैप्रधानजिनोंविषे ऐसेस्थूलपंचभूतोंकूंउत्पन्नकरिकै तिनजलोंविषे आपणेशक्तिरूपवीर्यकूं पावताभया ॥ सोकैसावीर्यहै॥ उपासकपुरुषोंनैं करेजेकम तथाउपासना तिनोंका सूक्ष्मपरिणामरूप है ॥ ऐसाशक्तिरूपवीर्य जभी हिरण्यगर्भनैं जलविषेपाया ॥ तभी सोशक्तिरूपवीर्य जलकेऊपरस्थितहोताभया तात्पर्ययह ॥ जैसे अंकुर कीउत्पत्तिकालविषे बीज फूलिजावैहै ॥ तैसे सोवीर्य फूलताभया ॥ और तिसतैंअनंतर सोवीर्य दधिकेसमानहोताभया ॥ और तिसतैं अनंतर सोवीर्य अत्यंतकठिनभावकूं प्राप्तहोताभया और अत्यंतकठिनभावकूंप्राप्तहुआ सोवीर्य पृथिवीरूपहोताभया ॥ और तिसपृथिवी कासाररूप यहब्रह्मांडगोलक होताभया ॥ याकारणतैंही यहपृथिवी साररूपतैंरहितहुईरूक्षप्रतीतहोवै है ॥ और सोपृथिवीकासाररूप ब्रह्मांडगोलककैसाहै ॥ कुक्कटकेअंडेसमान जाकाआकारहै ॥ और भूरादिकसप्तलोकोंकाआधारहै ॥ ऐसाब्रह्मांडरूपगोलक एकवर्षपर्यंत तिनजलोंविषेस्थितहोताभया ॥ और जैसे शुष्कतुंबीफल वायुकरिकै जलविषेभ्रमणकरै है ॥ तैसे जलविषे वायुकरिकैताडनकऱ्याहुआ यहब्रह्मांडरूपगोलक एकवर्षकेसमाप्तहुएतैंअनंतर कुक्कटकेअंडकीन्याईं भेदनहोताभया ॥ तिसब्रह्मांडरूपगोलकतैं सप्तलोकहैंशरीरजाका ऐसाविराट्भगवान् प्रगटहोताभया ॥ सोकैसाहैंविराट्भगवान् ॥ भूतभविष्यत् वर्तमान यातीनकालोंविषेस्थित जितनाकप्रपंचहै ॥ सोसंपूर्ण विराट्भगवान्काहीस्वरूपहै ॥ और यह विराट्भगवान्ही संपूर्णजीवोंकूं भोगोंकीप्राप्तिकरै है॥ और यहविराट्भगवान्ही जीवों कूं स्वर्गरूपगौणअमृतकीप्राप्तिकरै है॥तथा मोक्षरूप मुख्यअमृतकी प्राप्तिकरै है ॥ और यहविराट्भगवान्ही वृक्षादिकस्थावरप्राणियोंकूं तथामनुष्यादिकजंगमप्राणियोंकूं नानाप्रकारकेअन्नादिकोंकीप्राप्तिकरिकै वृद्धिकरै है ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ याविराट्भगवान्कीकैसी महिमाहै ॥ संपूर्णजगत् जिसके महिमाका एकपाद है ॥ और तीनपादोंकरिकैयुक्त सो महिमा जिस विराट्भगवान्के स्वप्रक॥

शस्वरूपविषेस्थित है ॥ और जैसे लोकविषे सेनापतितैं आदिलैकै संपूर्णद्रव्यादिक पदार्थ राजाकीमहिमा है ॥ तिससेनापतिआदि कमहिमातैं तिसमहिमाका आश्रयरूप महाराजा अधिकहोवै है ॥ तैसे संपूर्ण प्रपंचरूपमहिमातैं यहविराट्भगवान् अधिक है ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ सकामपुरुषोंकेस्वर्गादिक लोकोंकीप्राप्ति वासतै कर्मकांडरूप प्रवृत्तिमार्गका कर्ताभी यहविराट् भगवान्हीं है ॥ तथा निष्कामपुरुषोंके मोक्षकीप्राप्तिवासतै ज्ञानकांडरूप निवृत्तिमार्गकाकर्ताभीयहविराट्भगवान्हीं है और हेदेवराजइंद्र ॥ आकाशादिकपंच भूतोंकरिकैरचितसंपूर्णप्रपंचतैं यहविराट्भगवान् अधिक है॥याकारणतैं बुद्धिमान्पुरुष ताकूं विराट्कहैं हैं॥और यहविराट्भगवान् संपूर्ण प्राणियोंकाशरीररूपपुरियोंकूंआश्रयणकरिकैस्थितहोवैहै॥औरआपणेस्वरूपकरिकै संपूर्णशरीरोंकूंपूर्णकरै है॥याकारणतैं विराट्भगवान्कूं अधिकपुरुषकहैं हैं॥और हेदेवराजइंद्र ब्रह्मांडविषेस्थित जोयहविराट्भगवान् है॥तिसविराट्भगवान्तैंहींयहसंपूर्णशरीर उत्पन्नभये हैं ॥ तथा संपूर्णपर्वत तथापृथिवी उत्पन्नभयी है ॥ याकारणतैं सोविराट्भगवान् संपूर्णदेहधारीजीवोंतैंअधिक है॥और हेदेवराजइंद्र॥यहविराट्भगवा नहीं यज्ञस्वरूप है॥और ऋक् साम यजुष् अथर्वण याचारिवेदोंकाकारणभी यहविराट्भगवान्हीं है॥और याविराट्भगवानतैंहीं गायत्री आदिकछंद उत्पन्नभये हैं॥तथा अजातैंआदिलैकै संपूर्णग्रामकेपशु तथावनकेपशु उत्पन्नभये हैं॥और याविराट्भगवान्केमुखतैं देवराजइंद्र तथाअग्नि तथासंपूर्णब्राह्मण उत्पन्नभये हैं॥और याविराट्भगवान्केबाहुतैंइंद्रवरुणादिकदेवक्षत्रियउत्पन्नभये हैं॥तथा भूमिकेराजे मनुष्यक्ष त्रिय उत्पन्नभये हैं॥और याविराट्भगवान्केऊरुदेशतैं विश्वदेवादिकदेववैश्य तथासंपूर्णमनुष्यवैश्य उत्पन्नभये हैं ॥और याविराट्भगवान् केपादोंतैं पूषानामादेवशूद्र तथासंपूर्णमनुष्यशूद्र उत्पन्नभये हैं ॥ और याविराट्भगवान्केमनतैं चंद्रमा उत्पन्नभया है॥ और याविराट्भ गवान्केनेत्रोंतैं सूर्यभगवान् उत्पन्नभया है॥और याविराट्भगवान्केप्राणतैं वायु उत्पन्नभया है॥और याविराट्भगवान्कीनाभितैं आकाश उत्पन्नभया है॥और याविराट्भगवान्केमस्तकतैं स्वर्गलोक उत्पन्नभया है॥और याविराट्भगवान्केश्रोत्रतैं दशोंदिशा उत्पन्नभइआहैं ॥ इसप्रकारअन्यभीसंपूर्णदेवता तथाशब्दादिकविषय याविराट्भगवान्तैंहीं उत्पन्नभये हैं ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ घृततैंआदिलैकैंजेद्रव्य हैं॥

तथावसंतऋतुतैंआदिलेकेजेकालहैं॥तथाअग्निआदिकजेदेवताहैं॥तथायज्ञकाकर्ताजोयजमान है ॥और यज्ञादिकजेकर्म हैं॥ यहसंपूर्ण विराट्भगवान्तैंभिन्ननहीं ॥ किंतु विराट्भगवान्का स्वरूप हैं ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ जितनेकलोकविषेप्राणियोंकेमस्तक हैं ॥ तेसंपूर्णमस्तक याविराट्भगवान्केही हैं॥यातैंयहविराट्भगवान्असंख्यातमस्तकोंवालाहै॥औरलोकविषेजितनेकप्राणियोंकीइंद्रिय हैं॥तेसंपूर्णइंद्रिय याविराट्भगवान्की हैं ॥ याकारणतैं यहविराट्भगवान् असंख्यातइंद्रियवान् है ॥ इसप्रकार हस्तपादादिकसर्वअंगोंविषेभीजानिलेणा ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ यहविराट्भगवान्हीं संपूर्णभूतभौतिकप्रपंचकूं व्याप्तकरिकै हृदयदेशविषेस्थित है ॥ और संपूर्णबुद्धिआदिकोंकासाक्षी है॥ और संपूर्णदृश्यवर्गतैं परे है ॥ और आवरणतैंरहितस्वयंप्रकाश है ॥ ऐसेस्वप्रकाशविराट्भगवान्कूं हेइंद्र मैंसाक्षात्अनुभवकरताहूं ॥कैसा है सोविराट्भगवान् ॥ नामरूपात्मकसकलप्रपंचकाकारणहै ॥ और हृदयदेशविषेस्थितहुआ सोविराट्भगवान् शब्दउच्चारणआदिकसकलव्यवहारोंकूंसिद्धकरै है ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ ऐसेविराट्भगवान्केस्वरूपकूं प्रतिबंधकीनिवृत्तिहुए ब्रह्माकेउपदेशतैं तूंभी साक्षात् अनुभव करेगा ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ यहविराट्भगवान् दशौंदिशास्वरूप है ॥ यातैं सकलसामग्रीसहितयज्ञस्वरूपभी यहविराट्भगवान्हीं है ॥ जेपुरुष यज्ञकरिकै ताविराट्भगवान्कापूजनकरैं हैं ॥ तेमहात्मापुरुष तिसयज्ञरूपधर्मकरिकै तिसविराट्भगवान्केमस्तकरूपस्वर्गलोककूं प्राप्तहोवैं हैं ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ यहविराट्भगवान्कैसा है॥स्वर्गलोक याविराट्भगवान्का मस्तक है॥ और सूर्यचंद्रमादोनों याविराट्भगवान्के नेत्र हैं ॥ और वायु याविराट्भगवान्का प्राण है ॥ और अंतरिक्षलोक याविराट्भगवान्केदेहका मध्यदेश है॥और संपूर्णजल याविराट्भगवान्के मूत्राशय हैं॥और संपूर्णभूलोक याविराट्भगवान्के पाद हैं॥और आहवनीयनामाअग्नि याविराट्भगवान्का मुख है॥ और गार्हपत्यनामाअग्नि याविराट्भगवान्का हृदय है ॥ और दक्षिणाग्निनामाअग्नि याविराट्भगवान्का मन है ॥ और यज्ञविषेसंस्कार युक्तजोभूमि है ॥ सो विराट्भगवान्का वक्षस्थल है ॥ और कुशा याविराट्भगवान्के लोम हैं॥ और संपूर्णओषधि तथावनस्पति याविराट्भगवान्के केश हैं ॥ याप्रकार विराट्भगवान्काध्यान उपासकपुरुष करैं हैं ॥ हे देवराजइंद्र ॥ यहविस्तारतैं विराट्भगवान्कास्वरूप

हमनै तुमारेप्रतिकह्या ॥ अब संक्षेपतैंविराट्भगवान्केस्वरूपकूं तुम श्रवणकरो ॥ जितनाकप्रपंच प्रत्यक्षदिखाईदेवै है ॥ और जितनाक प्रपंच प्रत्यक्षनहींदिखीता ॥ यहसंपूर्णजगत् विराट्भगवान्का स्वरूप है॥ऐसेविराट्भगवान्रूपपुत्रकूं उत्पन्नहुआ देखिकरिकै क्षुधाकरिकै पीडितहुआ सोहिरण्यगर्भ विराट्रूपपुत्रकेभक्षणकरणेवासतै मुखकूंपसारताभया ॥शंका ॥ हेभगवन् ॥हिरण्यगर्भभगवान्की पुत्रकेभक्षण रूपनिंदितकर्मविषे काहेतैंइच्छाहोतीभयी ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ यहक्षुधारूपीपिशाची किसजीवकीबुद्धिकूंभ्रष्टनहींकरती॥ किंतु सर्वप्राणियोंकी बुद्धिकूं यहक्षुधारूपीपिशाची भ्रष्टकरै है ॥ याकारणतैं सोहिरण्यगर्भ पुत्रकेभक्षणकरणेविषे उद्यमकरताभया ॥ तात्पर्य यह ॥ हिरण्यगर्भसरीखेईश्वरोंकूंभी जभी क्षुधारूपीपिशाची अनर्थविषेप्रवृत्तकरै है ॥ तभी अन्यअविवेकीजीवोंकीक्याकथाहै ॥किंवा॥ यासंसारविषेनानाप्रकारकेरोग हैं ॥ और तिनरोगोंकेनिवृत्तिकेउपायभी नानाप्रकारकेशास्त्रविषेकहे हैं॥ और याक्षुधारूपरोगकेनिवृत्तिका उपाय अन्नभक्षणतैंविना दूसराकोईहैनहीं ॥ एकअन्नकाभक्षणहीं क्षुधारूपरोगकेनिवृत्तिकाउपाय है ॥ याकारणतैं सर्वरोगोंतैं यहक्षुधारूप रोग अधिक है ॥ किंवा ॥ जैसे पुत्रकेमरणतैं पितामाताकूं दुःखहोवै है॥तिसदुःखतैंभीअधिकदुःख क्षुधावान्पुरुषकूं होवै है॥याअर्थविषे हिरण्यगर्भही दृष्टांत है ॥ काहेतैं पुत्रकेमरणजन्यदुःखकूंअल्पजाणिकरिकै सोहिरण्यगर्भ क्षुधाजन्यदुःखकीनिवृत्तिवासतै पुत्रकेभक्षण करणेविषे प्रवृत्तहोताभया ॥ यातैं यहजान्याजावै है ॥ पुत्रकेमरणजन्यदुःखतैंभी क्षुधाजन्यदुःख अधिक है ॥ किंवा ॥ जैसे दयातैंरहित राक्षस देहधारीजीवोंकीहिंसाकरै हैं ॥ तैसे यालोकविषे क्षुधाकरिकैआतुरहुआपुरुष आपणेपिताकूं तथामाताकूँ तथागुरुकूँ तथाभ्राताकूं तथाबांधवोंकूं हननकरै है ॥ किंवा ॥ यहक्षुधारूपीपिशाची सत्य शौच श्री धैर्य बल वीर्य पराक्रम यज्ञ धर्म दया इसतैं आदिलैकै सर्वगुणोंका नाशकरै है ॥ अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकैदिखावै हैं ॥ क्षुधाकरिकैआतुरहुआयहपुरुष आपणेस्त्रीकूं तथा पितामातादिक संबंधियोंकूं श्वानकीन्याईं तिरस्कार करैहै ॥ यातैंयहजान्याजावै हैं ॥ क्षुधाकारिकै आतुर हुआ पुरुष दयातैंरहितहोवै है ॥ जोदयावान् पुरुषहोवैहै ॥ सो किसीकानिरादरकरैनहीं ॥ दयातैंरहितपुरुषही पितामातादिकसंबंधियोंका निरादरकरै है ॥ किंवा ॥सर्वदेहधारीजीवों

विषे याक्षुधारूपीपिशाचीका विचित्रबलहै ॥ काहेतैं यालोकविषे निद्रा काम क्रोधादिकदोप अत्यंतप्रबल हैं॥ तथापि तिनकामादिकदो
षोंकूं यहक्षुधारूपीपिशाची शीघ्रहीनाशकरै है ॥ तथा सत्यादिकशुभगुणोंकूंभी यहक्षुधारूपीपिशाचीशीघ्रहीनाशकरै है ॥यातैंयहजान्या
जावै है ॥ सत्यादिकशुभगुणोंतैं ॥ तथाकामादिकअशुभगुणोंतैं यहक्षुधारूपीपिशाची बलवान् है ॥ लोकविषेभी बलवान्पुरुषकरिकैहीं
निर्बलपुरुषका पराजयहोवै है ॥ अब क्षुधाविषे निद्रादिकदोषोंकेजयकीकारणताकूं स्पष्टकरिकैनिरूपणकरै हैं ॥ क्षुधाकरिकैआतुरहुआ
यहपुरुष कोमलसिहजाऊपरसोयाहुआभी निद्राकूंनहींप्राप्तहोता ॥ यातैं निद्रारूपदोषतैंभी यहक्षुधारूपीपिशाची प्रबल है ॥ और क्षुधा
कारिकैआतुरहुआयहपुरुष जभीकिसीतैंअन्नकीयाचनाकरै है ॥ तभी सोअन्नदातापुरुष नानाप्रकारकेदुर्वचनोंकरिकै ताक्षुधावान्पुरुषका
निरादरकरै है ॥ तानिरादरकरिकैभी सोक्षुधातुरपुरुष क्रोधकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं क्रोधरूपदोषतैंभी यहक्षुधारूपीपिशाची बलवान् है॥
॥ किंवा ॥ चंद्रकेसमानहैसुखजिनोंका ॥ तथा पीनहैदोनोंस्तनजिनोंके ॥ तथा कोमल है ॥ शरीरजिनोंका ॥ तथा षोडश वर्षकी
अवस्थाहैजिनोंकी॥ तथा कोमलहैभाषणजिनोंका॥ तथा अपसरावोंकेसमानहैसुंदरताजिनोंकी ॥ तथा कामकरिकैयुक्तहैशरीरजिनोंका॥
इत्यादिकगुणोंकरिकैयुक्तजेस्त्रियाँहैं॥तिनस्त्रियोंकरिकै आलिंगनकऱ्याहुआभी यहक्षुधावान्युवान्पुरुष बालककीन्याईं कामदोपकूंप्राप्तहोवै
नहीं ॥ यातैं कामदोपतैंभी यहक्षुधारूपीपिशाची बलवान् है ॥किंवा ॥ क्षुधाकरिकैआतुरहुआयहपुरुषस्वर्णादिकद्रव्यकीभी इच्छाकरता
नहीं ॥ तथा अश्वादिकपशुवोंकीभी इच्छाकरतानहीं ॥ तथा तीनलोकसंबंधीपृथ्वीकेराजकरणेकीभीइच्छाकरतानहीं ॥ यातैंयहक्षुधारूपी
पिशाची लोभदोपतैंभी प्रबल है ॥ किंवा ॥ काम क्रोध लोभ यातीनोंदोपोंनैं तीनलोकोंकूंजीत्या है ॥ यातैं कामक्रोधलोभयहतीनोंदोष
महाबलवान् हैं ॥ ते काम क्रोध लोभभी याक्षुधारूपीपिशाचीकेभयतैं जहांतहांभागेफिरते हैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जबी काम क्रोध लोभ यह
तीनोंशूरबीरभी क्षुधारूपीपिशाचीकेभयतैं याप्रकारकेदुर्गतिकूंप्राप्तहोवैहैं॥तबीकामक्रोधलोभकरिकै पराजयकूंप्राप्तभयेजेसत्यादिकगुणहैं
तिनोंकूं यहक्षुधारूपीपिशाची नहींपराजयकरैगी यहकहणासंभवैनहीं ॥ यातैंयहक्षुधारूपीपिशाचीसत्यादिकशुभगुणोंतैं तथाकामक्रो

धादिकअशुभगुणोंतैं बलवानहै॥ जिसक्षुधारूपीपिशाचीकेवशहुआ यहहिरण्यगर्भभगवान्आपणेंपुत्रकेभक्षणकरणेकीइच्छाकरताभयाहै॥
हेदेवराजइंद्र ॥ इस प्रकार जबी हिरण्यगर्भनैं विराट्रूपपुत्रके भक्षणकरणेवासतैं मुखकूंपसाऱ्या ॥ तभीसोविराट्ता हिरण्यगर्भपिताकूंदे
खिकरिके भयकूं प्राप्त होता भया ॥ और भाणयाप्रकारकेशब्दकूं करताभया॥ हेदेवराजइंद्र यहदेहाभिमानही जीवोंकेअनर्थकाकारण है
काहेतैं जिसदेहाभिमानकरिकैयुक्तहुआ विराट्पुत्र हिरण्यगर्भपिताकूंक्षुधातुरदेखिकै भयकूंप्राप्तहोताभया ॥ यद्यपि मरणतैंअनंतर यास्थू
लशरीरकूं श्वानादिकजंतु भक्षणकरैंगे याप्रकारकाज्ञान विराट्कूं है ॥ तथापि जीवितकालविषे जिसदेहाभिमानकेप्रभावतैं साक्षात्पिताके
ताईभी यह विराट् शरीरकादाननहीं करताभया ॥ यातैं यह देहाभिमानही सर्वधर्मकाप्रतिबंधक है ॥ शंका ॥ हेभगवन् विराट्भगवान्नैं
हिरण्यगर्भपिताकेताईं जोशरीरकादाननहींकऱ्या ॥ याकेविषे देहाभिमानप्रतिबंधकनहीं ॥ किंतु अन्यहीकोईप्रतिबंधकहोवैगा ॥ समा
धान ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ पिताकेताईं शरीरदेणेविषे विराट्भगवानकूं कौनप्रतिबंधक है॥ पिताके ताईं शरीरकादानकरणा हमारेअनिष्टका
साधनहै याप्रकारकाअनिष्टसाधनताज्ञान प्रतिबंधक है॥ अथवा पिताके ताईं शरीरकादानकरणा निष्फलहै याप्रकारकानिष्फलताज्ञान
प्रतिबंधकहै ॥ तहाँ प्रथमपक्षतौसंभवै नहीं ॥ काहेतैं जैसे किसीपुरुषनैं कोई पदार्थ किसी पुरुषकेपास रख्याहोवै ॥ तिसपदार्थकूं जबी
सोपुरुषमाँगै ॥ तबी देणेहारेपुरुषकूं तिसपदार्थकेदेणेविषे किसीअनिष्टकीप्राप्तिहोवैनहीं॥ उलटा नदेणेविषे प्रतीतिकीहानिरूप अनिष्टकी
प्राप्तिहोवै हैं ॥ तैसे पिताकेवीर्यकरिकै पुत्रकाशरीर उत्पन्नहोवै है ॥ यातैं पुत्रकाशरीर पिताकाही है ॥ तिसपुत्रकेशरीरकूं जभी पिताभक्ष
णकरै ॥ तभी पुत्रकूं किंचित्मात्रभी अनिष्टकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ उलटा नदेणेकरिकै प्रतीतिकीहानिरूपअनिष्टकीप्राप्तिहोवै है॥यातैं पिता
केताईं शरीरदानकरणेविषे अनिष्टसाधनताज्ञान प्रतिबंधकनहीं ॥ और पिताकेताईं शरीरदानकरणेविषे निष्फलताज्ञान प्रतिबंधकहै ॥
यहदूसरापक्षभी संभवैनहीं॥ काहेतैं याअनित्यशरीरकरिकै जोकिसीकाकार्यसिद्धहोइसकै ॥तौ इसतैंपरेकोईदूसराकर्तव्यनहीं॥ किंतु इतनैं
करिकैहीं शरीरकीसफलता सिद्धहोवै है॥ यातैं पिताकेताईं शरीरदानकरणेविषे निष्फलताज्ञानभी प्रतिबंधकनहीं ॥किंवा॥ अन्य किसी

क्षुधातुरपुरुषकेताईं जोकोईकपुरुष अन्नादिकपदार्थदेवै है ॥ तिसअन्नदातापुरुषकूं स्वर्गादिकलोकोंकीप्राप्तिहोवै है॥यह शास्त्रविषेकथनक
ऱ्याहै ॥ जभी अन्नादिकोंकेदानकरणेतैंभी पुरुषकूं स्वर्गादिक प्राप्तिहोवै है ॥ तभी साक्षात् आपणे शरीरकेदानकरणेतैं फलकी प्राप्ति
नहींहोवैगी यहकहणा अत्यंतअनुचितहै ॥ किंतु शरीरकेदानकरणेतैं जीवोंकूं महान्फलकीप्राप्तिहोवै है॥ तात्पर्ययह जिसीकिसीक्षुधातुर
अतिथिकेताईं अन्नदानकरणेहारेपुरुषकूंभी जभी स्वर्गादिकफलकीप्राप्तिहोवै है ॥ तभी क्षुधातुरसाक्षात्आपणेपिताकेताईं यास्थूलशरीर
केदानकरणेकरिकै यहपुरुष किसफलकूंप्राप्तनहींहोवैगा ॥ किंतु सर्वफलकूंप्राप्तहोवैगा ॥ यातैं पिताकेताईं शरीरदानकरणेविषे निष्फलता
ज्ञान प्रतिबंधकनहीं ॥ किंवा ॥ याअशुचिशरीरविषे जेपुरुष आत्मअभिमानकरै हैं॥तिनोंतैं यहपूछाचाहिये ॥ श्लोक ॥ विण्मूत्रादिमला
नांहि संचयोदेहईरितः ॥ अस्मिन्नऽहंमतिश्चेत्स्यात् बाह्यैकस्मान्नसाभवेत् ॥ अर्थ यह हे देहाभिमानीजीवो॥ विष्ठा मूत्र मांस रुधिरमज्जा
अस्थि इत्यादिकमलोंकासमुदायरूपयहशरीरहै ॥ ऐसेअशुचिशरीरविषे जभीतुमोनैं आत्मबुद्धिकरी है॥ तभी शरीरतैंबाहरजेविष्ठामूत्रमां
सादिक हैं ॥ तिनोंविषेआत्मबुद्धि तुम काहेतैं नहींकरते ॥ किंतु शरीरतैं बाहरदेशविषे स्थित जे विष्ठामूत्रादिकमलहैं ॥ तिनोंविषेभी
तुमारेकूं आत्मबुद्धिकरीचाहिये ॥ शरीरतैं बाहरदेशविषे स्थितविष्ठामूत्रादिकोंविषे तथा शरीरकेभीतर स्थित विष्ठामूत्रादिकोंविषे
किंचित्मात्र भीविलक्षणतानहीं ॥ यातैं जैसे शरीरतैं बाह्यविष्ठामूत्रादिकमलों विषे तुम आत्मबुद्धिकरते नहीं ॥ तैसे विष्ठामूत्रादिकोंके
समुदायरूप याशरीरविषेभी तुमारेकूं आत्मबुद्धिकरणीउचितनहीं ॥ १ ॥ इस प्रकार देहाभिमानरूपकार्यअविद्याविषे अनर्थकीकारणता
दिखाई ॥ अब देहाभिमानकाकारणजोअज्ञानरूपमायाहै ताकेविषे सर्वअनर्थकीकारणताकूंदिखावैं हैं ॥ हे देवराजइंद्र ॥ यहपरमेश्वरकीमा
याकैसी है॥मायाकेआश्रयजेपुरुषहैं तिनोंकूंभी मोहितकरणेहारी है॥ याकारणतैंहीं यामायानैं मायाकेआश्रयविराट्पुरुषकूं मोहितकऱ्या
है ॥ शंका ॥ हे भगवन् ॥ मायानैं विराट्पुरुषकूंमोहितकऱ्याहै यह कैसे जान्याजावै ॥ समाधान ॥ हे देवराजइंद्र ॥ यहशरीरकैसाहै ॥
पिताकेवीर्यतैंउत्पन्नभयाहै ॥ यातैं पिताकाही है ॥ पुत्रका यहशरीरनहीं ॥ और दुर्गंधिकरिकैयुक्तहै॥ और सर्वदाअपवित्रहै ॥ और क्षण

क्षणविषे नाशकूंप्राप्तहोवै है ॥ और घटकीन्याईं अनात्मरूपहै ॥ और स्थायीपणेतैंरहितहै ॥ ऐसे निकृष्टशरीरकूंभी सो विराट्पुरुष
क्षुधातुरपिताकेताईं नहीं देताभया ॥ यातैं यह जान्याजावैहै ॥ यह संपूर्ण मायाकाहीप्रभावहै तात्पर्य यह ॥ जो पुरुष द्रव्यादिकपदार्थों
केदान करणेविषे कृपणहोवै है ॥ तिस पुरुषका तिन द्रव्यादिकपदार्थोंविषेअध्यासहोवै है ॥ अध्यासतैंविना कृपणताहोवै नहीं ॥ यातैं
कृपणतारूपहेतुतैं अध्यासका अनुमान होवै है ॥ और सो अध्यास अज्ञानरूपमायातैंविना संभवै नहीं ॥ यातैं अध्यासरूपहेतुतैं अज्ञा
न रूपमायाका अनुमानहोवै है ॥ तैसे हिरण्यगर्भपिताकेताईं शरीरदानकरणेविषे जो विराट्पुरुषकीकृपणताहै ॥ सो कृपणताहीअध्या
स द्वारा अज्ञानरूपमायाका अनुमान करावै है ॥ और हे देवराजइंद्र॥शरीरादिकोंविषेआत्मअभिमानरूपजोमोहहै ॥तथा अज्ञानरूप
जो मोहहै ॥ यह दोनों प्रकारकामोह जभी विराटादिकमहान्पुरुषोंकूंभी अनुचितकार्यविषेप्रवृत्तकरै है ॥ तभी अन्यलौकिकपुरुषोंकूं
अनुचितकार्यविषेनहींप्रवृत्तकरैगा यह कहनासंभवै नहीं ॥ यातैं यह दोनों प्रकारकामोहही जीवोंकेसर्वअनर्थकाकारण है ॥ हे देवराज
इंद्र ॥ विराट् पुरुषनैं भयकरिकै जो भाण या प्रकारकीवाणीउच्चारणकरी॥सो विराट् पुरुषकीवाणी सर्वदेहधारीजीवोंकी वर्णरूपवैखरी
वाणी तथाध्वनिरूपवैखरीवाणी होतीभयी ॥ और हे देवराजइंद्र ॥ क्षुधाकरिकैआतुर हुआ सो हिरण्यगर्भभगवान् ॥ विराट्पुत्रकेभक्ष
णकरणेवासतै प्रवृत्तभयाभी॥परंतु ताविराट्पुत्रकूं सो हिरण्यगर्भ भक्षण नहीं करता भया काहेतैं सो हिरण्यगर्भभगवान् विद्याकरिकैसं
पन्नहै यातैं विद्याकेबलतैं पुत्रकेभक्षणरूपनिषिद्धकर्मतैं निवृत्तहोताभया ॥ यातैं हे देवराजइंद्र यह विद्या किस पुरुषऊपर उपकारकूं
नहीं करती ॥ किंतु सर्वजनोंऊपर यह विद्या उपकारकरै है ॥ या अर्थविषे हिरण्यगर्भहीदृष्टांतहै ॥काहेतैं पुत्रकेभक्षणरूपनिषिद्धकर्मविषे
यह हिरण्यगर्भ प्रवृत्तभयाभी ॥ तौभी यह विद्या ताहिरण्यगर्भकूं निषिद्धकर्मतैं निवृत्तकरतीभयी ॥ तात्पर्ययह॥ जैसे हिरण्यगर्भकूं निषि
द्धकर्मतैं विद्या निवृत्तकरतीभई॥तैसे अन्यभी जो कोई पुरुष या विद्याकूंसंपादनकरैगा॥तिसपुरुषकूंभी सो विद्या निषिद्धकर्मतैंनिवृत्तक
रिकै शुभकर्मविषेप्रवृत्तकरैगी ॥ अब विद्याकेप्रभावकूंदिखावैं हैं ॥ हे देवराजइंद्र॥लोककरिकै तथाशास्त्रकरिकै निषिद्धकर्मोंकूं करणेहारा

जो पुरुष है ॥ तथा अत्यंतदीनदशाकूं प्राप्तभयाजोपुरुष है॥तिनसंपूर्णोंकूं यह विद्या सुखकीप्राप्तिकरै है॥तथा सुखकेसाधनद्रव्यादिकपदा
थोंकी प्राप्तिकरे है ॥ और हे देवराजइंद्र ॥ दोनोंलोकोंकेहानिकरणेहारा तथाकीर्तिकेनाशकरणेहारा जो आपदारूपीदुस्तरसमुद्रहै॥ तिस
विषेप्राप्तहुआभी यह पुरुष जिस विद्याकेप्रभावतैं तिस आपदारूपीसमुद्रकूं सुखपूर्वकहीतरिजावै है ॥और हेदेवराजइंद्र॥ यह विद्याही सर्व
देहधारीजीवोंकीमाता है॥विद्यातैंभिन्न दूसरी कोई जीवोंकीमातानहीं॥ काहेतैं लोकप्रसिद्धमाताकेउदरतैंउत्पन्नहुआयहजीव इसलोकविषे
तथापरलोकविषे सुखकूंप्राप्तहोवै नहीं और या विद्यारूपीमातातैं प्रगटहुआयहपुरुष इसलोकविषे तथापरलोकविषे सुखकूंप्राप्तहोवै है॥और
हे देवराजइंद्र ॥ यह विद्याहीसर्वदेहधारीजीवोंकाधनहै ॥ याविद्याकेसमान कोईदूसराधननहीं॥काहेतैं लोकविषेप्रसिद्धजेसुवर्णादिकधन हैं॥
तेदेणेकरिकै न्यूनताकूंप्राप्तहोवै हैं॥और परलोकविषेभी पुरुषकेसाथचलतेनहीं॥और यहविद्यारूपीधन सुपात्रपुरुषोंकेताईं दानकऱ्याहुआ
दिनदिनविषे वृद्धिकूंप्राप्तहोताजावै है ॥ और परलोकविषेभी याजीवकापरित्यागकरतानहीं॥ यातैं स्वर्णादिकलौकिकधनतैं यहविद्यारूपी
धन अत्यंतउत्कृष्टहै और हे देवराजइंद्र काम क्रोध लोभ मोह क्षुधा इत्यादिकशत्रुवोंकरिकैहननकूंप्राप्तहुआयहपुरुषएकविद्यारूपीशस्त्रक
रिकैही तिनकामादिकशत्रुवोंकाहननकरै है॥विद्यारूपीशस्त्रतैंविना अन्यकिसीउपायतैं कामादिकोंकीनिवृत्तिहोवैनहीं॥यातैं हेदेवराजइंद्र ॥
याविद्याकेसमान कोईहितकारीपदार्थनहीं याकारणतैंही सो विद्या हिरण्यगर्भकेहृदयविषे प्राप्तहोइकै ताहिरण्यगर्भकूं कहती भयी॥ अब
ताविद्याकेवचनोंकूंदिखावै हैं॥हे हिरण्यगर्भ॥पुत्रकाभक्षणकरणा तुमारेकूंयोग्यनहीं॥काहेतैं सर्वलोकोंकूं धर्ममर्यादाविषेस्थापनकरणे वासतै
तुमारा प्रादुर्भावहुवाहै ॥ यातैं सर्वलोकोंके तुम गुरुहो ॥ जबी तुमहीं मर्यादाकाभेदनकरोगे॥तबी इसतैंअनंतर कौनजीव मर्यादाकूंपाल
न करैगा ॥ किंतु कोईभीजीव मर्यादाकापालननहींकरैगा ॥ और हे हिरण्यगर्भ यालोकविषे सर्वजीवोंकूं आपणे आपणेधर्मविषेस्थापनक
रणेहारे तुमहो ॥ और तुमारेकूंधर्ममर्यादाविषे स्थापनकरणेहारा मुझविद्यातैंभिन्न दूसराकोईहैनहीं ॥ किंतु मैंविद्याही तुमारेकूं धर्ममर्या
दाविषेस्थापनकरणेहारीहों ॥ और हे हिरण्यगर्भ जोतूं हमारेउपदेशकूंनअंगीकारकरिकै विराट्पुत्रकूंभक्षणकरैगा ॥ तौ दोनोंलो

कविषे तुमारायश नष्टहोवैगा ॥ और पुत्रकरिकै उत्पन्नहोणेहारांजो आनंद है सोभी तुमारा नष्ट होवैगा ॥ यातैं पुत्रका भक्षण करणा
तूमारेकूं उचित नहीं ॥ और हे हिरण्यगर्भ ॥ यह पुत्रका भक्षणरूप कर्म चांडालों करिकै तथापशुवोंकरिकैभी निंदित है ॥ काहेतैं
क्षुधाकरिकै आतुर हुए चांडाल तथापशुभी पुत्रका भक्षण करते नहीं॥ यातैं चांडाल तथापशुवोंकरिकैभी निंदित जो पुत्रकाभक्षणरूप
कर्म है ॥ तिसविषे प्रवृत्तहोणा तुमारेकूंउचितनहीं ॥ और हे हिरण्यगर्भ ॥ जे श्वानादिकपशु कामकरिकैमोहितहुए आपणीमाताके
साथ तथाभगिनीकेसाथभी मैथुनकरै हैं ॥ तेश्वानादिकपशुभी आपणेपुत्रोंकूं जबीभक्षणनहींकरते ॥ तबी धर्मकेस्थापनकरणेहारे
तुमारेविषे यहपुत्रकाभक्षणरूपकर्म कैसेसंभवैगा ॥ हे देवराजइंद्र ॥ इसप्रकार विद्यानैं जबीहिरण्यगर्भकेप्रति उपदेशकऱ्या ॥ तबी
सोहिरण्यगर्भभगवान् ॥ ताविद्याकेवचनोंकाविचारकरिकै पुत्रकेभक्षणतैंनिवृत्तहोताभया ॥ और सोहिरण्यगर्भभगवान्॥ ताविराट्पुत्रके
ताईं आत्मज्ञानकीप्राप्तिकरिकै तथासर्ववेदोंकाकथनकरिकै तहांअंतर्धानहोताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोविराट्भगवान् एकलाहीस्थित
होताभया ॥ और जैसे निर्जनदेशविषेस्थितहुआबालक भयकूंप्राप्तहोवै है॥ तैसे सोविराट्पुरुष हिरण्यगर्भपिताकूंनदेखिकरिकै क्षणमात्र
भयकूंप्राप्तहोताभया ॥ और क्षणतैंपश्चात् सो विराट्पुरुष विचारकरिकै ताभयकापरित्यागकरताभया ॥ अब ताविचारकेस्वरूपकूं
दिखावै हैं ॥ श्रुतिविषे द्वितीयवस्तुतैंभयकीप्राप्तिकथनकरी है ॥ सोमेरेस्वरूपतैंभिन्न कोईदूसरापदार्थ है नहीं ॥ काहेतैं जोमेरेस्वरूपतैं ब्रह्म
भिन्नहोवै ॥ तौ ब्रह्मविषेअद्वितीयपणा नहींरहैगा ॥और शास्त्रविषे ब्रह्मकाअद्वितीयस्वरूपहीकथनकऱ्याहै ॥ यातैं मेरेस्वरूपतैं ब्रह्म भिन्न
नहीं ॥ और जोमेरेस्वरूपतैंआत्माभिन्नहोवै ॥ तौ जैसे मेरेतैंभिन्न घटपटादिक अनात्माहैं ॥ तैसे आत्माभी अनात्माहोवैगा ॥ और
आत्माकूंअनात्माकहणासंभवैनहीं ॥ यातैंआत्माभी मेरेस्वरूपतैंभिन्ननहीं ॥ इसप्रकार ब्रह्मकेस्वरूपकाविचारकरिकै तथाआत्माकेस्वरू
पकाविचारकरिकै सोविराट्भगवान् भेददृष्टिकापरित्यागकरताभया ॥ ताभेददृष्टीरूपकारणकेनिवृत्तहुए सोविराट्भगवान् भयरूपकार्य
तैंरहितहोताभया ॥ अब भेददृष्टिविषे भयकीकारणता स्पष्टकरिकैदिखावैहैं ॥ जैसे लोकविषेदुःखकेसाधनजेसिंहसर्पादिकहैं ॥ तिनोंकूं

जबीयहपुरुष आपणेतैंभिन्नकरिकैमानता है ॥ तबी तिनासिंहसपार्दिकातैं सोपुरुष भयकूंप्राप्तहोवै है ॥ और जबीयहपुरुष भेददृष्टिकापरित्यागकरै है ॥ तबी किसीपदार्थतैंभयकूंप्राप्तहोवै नहीं॥यातैं अन्वयव्यतिरेककरिकै भेददृष्टिही जीवोंकेभयकाकारण है ॥ताभेददृष्टिकूं सोविराट्भगवान् पूर्वउक्तविचारकरिकै परित्यागकरताभया ॥ यातैं सोविराट्भगवान् निर्भयताकूंप्राप्तहोताभया ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ सोविराट्भगवान् यद्यपि विचारकरिकै भयतैंरहितहोताभया ॥ तथापि कामदोषकरिकैयुक्तहुआ सोविराट्भगवान् स्त्रीतैंविना किंचितमात्रसुखकूंभी नहींप्राप्तहोताभया ॥ और जैसेलोकविषे कामीपुरुषोंकूं स्त्रीतैंविना वामभागविषेस्थित संपूर्णआकाश शून्यरूपकरिकैप्रतीतहोवै है ॥ तैसे विराट्भगवान्कूंभीस्त्रीतैंविना वामभागविषेस्थितसंपूर्णआकाश शून्यरूपकरिकैप्रतीतहोताभया॥ तात्पर्ययह ॥ संपूर्णकामनावोंविषे एकएकअंशविषे शून्यताज्ञानकीकारणताहै ॥ जैसे स्त्रीकीकामनावालाकामीपुरुष वामभागकेआकाशकूं शून्यरूपमानै है ॥ और पुत्रकीकामनावालापुरुष अंकआकाशकूं शून्यरूपमानै है और पशुवोंकीकामनावान्पुरुष गृहअंगणकेआकाशकूं शून्यरूपमानै है॥और धनकीकामनावालापुरुष कोशआकाशकूंशून्यमानै है ॥ इसप्रकार जिसजिसपदार्थकी ॥ पुरुषकूंकामनाहोवै है ॥ तिसतिसपदार्थके रहणेकास्थानकूं शून्यरूपकरिकैमानै है ॥ एकनिष्कामपुरुषहीं सर्वत्रआत्माकूंपूर्णकरिकैमानै है ॥ यातैंपदार्थोंकीकामनाहीं दुःखकाकारण है ॥ जिसकामनाकेप्रभावतैं साक्षात्विराट्भगवान्कूंभी दुःखकीप्राप्तिहोतीभयी ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ इसप्रकार जीवोंकेपुण्यपापरूपकर्मकेवशतैं विराट्भगवान्विषे उत्पन्नभयाजोकामरूपसर्प ॥ तिसकामरूपीसर्पकरिकै दंस्यकूंप्राप्तहुआसोविराट्भगवान् आपणेमनविषे याप्रकारकाविचार करताभया ॥ सर्वत्रव्यापकजोयहहमाराशरीर है ॥ सो किसीभोगकेभोगणेविषे समर्थनहीं॥ यातैं भोगोंकेभोगणेवासतै याशरीरतैंभिन्न किसीअल्पशरीरकूं मैंउत्पन्नकरों ॥ जिसशरीरकरिकैमेरेकूं विषयजन्यसुखकीप्राप्तिहोवै॥ हेदेवराजइंद्र ॥ इसप्रकारकाविचारकरिकै सोसत्यसंकल्पविराट्भगवान् दूसरेशरीरकूंउत्पन्नकरताभया ॥ सोकैसाहैदूसराशरीर ॥ जैसे दोनोंशुक्तिकाओंकासंपुटहोवै है॥ तैसे अर्द्धशरीराजितकास्त्रीरूपहै॥और अर्द्धशरीरपुरुषरूपहै॥याप्रकारकेशरीरकूं सोविराट्भगवान् रचताभया॥

हेदेवराजइंद्र ॥ विराट्भगवान्तैंउत्पन्नभयाजो स्त्रीपुरुषात्मकशरीर सो कारणअज्ञानकरिकैघटित है ॥ यातैं मायाविशिष्टईश्वरस्वरूपहै॥ और सोशरीर अंतःकरणादिकसूक्ष्मपदार्थोंकरिकैघटित है ॥ यातैं हिरण्यगर्भस्वरूप है ॥ और सोशरीर स्थूलभौतिकपदार्थोंकरिकैघटित है ॥ यातैं विराट्स्वरूप है ॥ और हे देवराजइंद्र ॥ जैसे यह स्त्रीपुरुषात्मकशरीर ईश्वर हिरण्यगर्भ विराट्स्वरूप है ॥ तैसे जितनेकलोकविषेस्त्रीशरीर हैं ॥ तथा जितनेकपुरुषशरीर हैं ॥ तथा जितनेकनपुंसकशरीर हैं ॥ तथा जितनेकस्थावरजंगमशरीरहैं॥तेसंपूर्णशरीर ईश्वर हिरण्यगर्भ विराट् स्वरूप हैं ॥ काहेतैं सर्वप्राणियोंकेसमष्टिस्थूलशरीरकाअभिमानी विराट्भगवान्है॥यातैं सर्वप्राणियोंकेसाथ विराट्भगवान्कातादात्म्यहै ॥ और सर्वप्राणियोंकेसमष्टिसूक्ष्मशरीरकाअभिमानीहिरण्यगर्भहै ॥ यातैं सर्वप्राणियोंकेसंघातसाथ हिरण्यगर्भकातादात्म्य है ॥ और सर्वप्राणियोंकेसमष्टिकारणशरीरकाअभिमानी ईश्वर है ॥ यातैं सर्वप्राणियोंकेसंघातसाथ ईश्वरकातादात्म्यहै ॥यहाँ अज्ञानरूपमायाकानाम कारण है ॥ और अपंचीकृतपंचभूतोंकूं तथातिनोंकेकार्यअंतःकरणादिकोंकूं सूक्ष्मकहै हैं ॥ और पंचीकृतपंचभूतोंकूंतथातिनोंकेकार्यकूंस्थूलकहैं हैं इसप्रकारसंपूर्णप्राणियोंकेसंघात स्थूल सूक्ष्म कारण स्वरूप हैं ॥ यातैं सर्वप्राणियोंके शरीरसाथ विराट् हिरण्यगर्भ ईश्वरका तादात्म्यसंबंध है यहसिद्धभया ॥ अब पूर्ववृत्तांतकूंदिखावै हैं॥ हेदेवराजइंद्र विराट्भगवान्तैंउत्पन्नभयाजो स्त्रीपुरुषस्वरूपदूसराशरीर ॥ तिसशरीरतैंहीं यहसंपूर्णमनुष्यादिकसृष्टि उत्पन्नभई है ॥ यातैं सोविराट्भगवान्कादूसराशरीर व्यष्टिकोटीविषेगण्याजावैनहीं किंतुसमष्टिकोटीविषे तिसकीगिणती है ॥ अब तिसविराट्भगवान्केदूसरेशरीरतैं मनुष्यादिकसृष्टिकेउत्पत्तिकाप्रकारदिखावै हैं हेदेवराजइंद्र ॥ ऐसेस्त्रीपुरुषात्मकशरीरकूं उत्पन्नहुआदेखिकरिकै सोविराट्भगवान्ताशरीरकेदोविभागकरताभया ॥दृष्टांत ॥ जैसे शुक्तिकासंपुटविषेस्थितकीट शुक्तिकासंपुटकेदोविभागकरै है ॥तैसे सोविराट्भगवान् तिसशरीरकेदोविभागकरताभया॥ तहां एकविभाग स्त्रीरूपहोताभया ॥ जिसकूं शास्त्रविषे शतरूपाकहै हैं ॥ और दूसराविभाग पुरुषरूपहोताभया ॥ जिसकूं शास्त्रविषे स्वायंभुवमनुकहैं हैं ॥ तिसीशतरूपा मनु दोनोंतैं यहसंपूर्णमनुष्यादिकसृष्टि उत्पन्नभई है ॥ हे देवराजइंद्र ॥ इसप्रकारजभीविराट्भगवान्

नैं शतरूपानामस्त्रीकूं तथामनुकूं उत्पन्नकऱ्या ॥ तभी सोशतरूपानामस्त्री मनुपुरुषकूंकामातुरदेखिकरिकै भावीजीवोंकेकर्मअनुसार या प्रकारकाविचार आपणेमनविषेकरतीभई ॥ अब शतरूपाकेविचारकूंदिखावैं हैं ॥ यहमनुनामापुरुष विराट्भगवान्कास्वरूप है ॥ यातैं हमारापिताहोवै है. ॥ अथवा एकहीविराट्भगवान्तैं इसमनुकी तथाहमारी उत्पत्तिभई है ॥ यातैं यहमनुनामापुरुष हमाराभ्राताहोवै है॥ यातैं यामनुनामापुरुषकेसाथ व्यभिचारिणीस्त्रीकीन्याईं मैंकैसेविषयसंबंधकरोंगी ॥ किंतु इसमनुकेसाथ विषयसंबंधकरणा हमारेकूंउचितनहीं ॥ यद्यपि कामकरिकैमोहितहुआ यहमनुनामापुरुष स्वर्गकेप्राप्तिकासाधनधर्मकूं तथानरककेप्राप्तिकासाधनअधर्मकूं जाणतानहीं ॥ तथापि स्वर्गनरककेप्राप्तिकासाधनधर्मअधर्मकूं मैं भलीप्रकारजाणतीहूं ॥ यातैं यानिंदितकर्मविषे प्रवृत्तहोणा हमारेकूंयोग्यनहीं॥किंवा ॥ स्त्रियोंविषे यद्यपि पुरुषोंतैंअधिककामहोवै है ॥ तथापि यालोकविषे कामकरिकैआतुरहुएपुरुषही विशेषकरिकै धर्ममर्यादाका उल्लंघनकरैं हैं ॥ कामकरिकैआतुरहुयांभीस्त्रियां विशेषकरिकै धर्ममर्यादाका उल्लंघनकरैनहीं ॥ किंतु स्त्रियोंविषे पुरुषोंतैंअधिकधैर्यहोवै है ॥ यातैं आपणेहितकाउपाय मेरेकूंभीचिंतनकरणेयोग्यहै ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ इसप्रकार बहुतवारविचारकरिकै सोशतरूपानामस्त्री मनुनामापुरुषके निवृत्तकरणेवासतै याप्रकारकाउपाय चिंतनकरतीभयी ॥ अब ताउपायकूंदिखावैं हैं यहमनुनामापुरुष कामकरिकैआतुरभया है यातैं इसकूं धर्मकाउपदेशकरिकै जोमैं निवारणकरोंगी तौभी यहमनु हमारेवचनकूंअंगीकारकरैगानहीं ॥ काहेतैं जेपुरुष कामकरिकैआतुरहोवै हैं ॥ तिनपुरुषोंकूं तिसकालविषे साक्षात्गुरु तथाईश्वरभी आइकेनिवारण करै तौभी कामातुरपुरुष तिनोंकेवचनकूं अंगीकारकरतेनहीं ॥ तौ हमस्त्रीकेवचनकूं यहमनु कैसेअंगीकारकरेगा ॥ यातैं धर्मकाउपदेशरूपउपायतैं यामनुकानिवारण होवैनहीं किंतु यापूर्वस्वरूपकापरित्यागकरिकै दूसरेस्वरूपकूंधारणकरिकै मैंअंतर्धानहोवों ॥ यहही मनुकेनिवारणकरणेकाउपायहै ॥ काहेतैं लोकविषेसमानजातिवालीस्त्रीविषेही पुरुषोंकी कामभावनाहोवै है ॥ विलक्षण जातिवालीस्त्रीविषे पुरुषोंकी कामभावनाहोवैनहीं ॥ जैसे मनुष्योंकूं मनुष्यत्वजातिवालीस्त्रीविषेही कामभावनाहोवै है ॥ पशुत्वजातिवालीस्त्रीविषे मनुष्योंकूंकामभावनाहोवैनहीं ॥ तैसे पशुवोंकूं पशुत्वजातिवालीस्त्रीवि

षेही कामभावनाहोवै है॥मनुष्यत्वजातिवालीस्त्रीविषे पशुवोंकूंकामभावनाहोवैनहीं॥यातैं इसस्वरूपकापरित्यागकरिकै मैं दूसरेरूपकूंग्रहण करों॥हेदेवराजइंद्र॥इसप्रकारकाविचारकरिकै सोशतरूपानामस्त्री पूर्वस्वरूपकापरित्यागकरिकै गौशरीरकूं धारणकरतीभयी॥ताशतरूपाकूंगौहुआदेखिकरिकै सोमनुनामापुरुषभी वृषभरूपकूंधारणकरताभया॥तिसगौवृषभदोनोंतैं संपूर्णगौ तथावृषभ उत्पन्नहोतेभये॥ औरपुनः शतरूपानामास्त्री तिसगौशरीरकापरित्यागकरिकै अश्विनीस्वरूपकूं धारणकरतीभई ॥ तिसअश्विनीकूंदेखिकरिकै सोमनुनामापुरुषभी अश्वशरीरकूंधारणकरताभया ॥ तिसअश्विनीअश्वदोनोंतैं संपूर्णअश्व तथाअश्विनी उत्पन्नहोतेभये ॥ इसप्रकार जिसजिसजातिवालेस्त्रीशरीरकूं सोशतरूपानामस्त्री ग्रहणकरतीभई ॥ तिसतिसजातिवालेपुरुषशरीरकूं सोमनुनामापुरुषभी ग्रहणकरताभया॥तिनदोनोंतैं तिसतिसजातिवाले स्त्रीशरीर तथापुरुषशरीर उत्पन्नहोते भये ॥ हे देवराजइंद्र ॥ या प्रकार मनुशतरूपादोनोंतैं स्त्रीपुरुषरूप जितनेकस्थावरजंगमप्राणी हैं तेसंपूर्ण उत्पन्नहोतेभये ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ इस प्रकार सोपरमात्मादेव दोपादोंवालेमनुष्यादिकोंकूं तथाचारिपादोंवालेअश्वादिकपशुवोंकूं तथापादोंतैंरहितसर्पादिकोंकूं उत्पन्नकरताभया ॥ इतनैंग्रंथकरिकैमायाविशिष्टपरमात्मातैं जगत्केउत्पत्तिकाप्रकार निरूपणकऱ्या ॥ अब तिसीजगतविषे परमात्माकेप्रवेशकाप्रकार निरूपणकरैं हैं॥ हे देवराजइंद्र ॥ जोपरमात्मादेव समष्टिअज्ञानरूपउपाधिविषे प्रविष्टहुआ जगत्काकर्ताईश्वरसंज्ञाकूं प्राप्तहोवै है॥और जोपरमात्मादेव समष्टिसूक्ष्मउपाधिविषेप्रविष्टहुआ हिरण्यगर्भसंज्ञाकूं प्राप्तहोवै है॥ और जोपरमात्मादेव समष्टिस्थूलउपाधिविषेप्रविष्टहुआ विराट्संज्ञाकूं प्राप्तहोवै है ॥ सोईहीपरमात्मादेव संपूर्ण शरीररूपपुरियोंविषे प्रवेश करताभया ॥ दृष्टांत ॥ जैसे महाकाश मठरूपउपाधिविषेप्रविष्टहुआ मठाकाशसंज्ञाकूंप्राप्तहोवै है॥ और सोमठाकाश मठकेभीतरअल्पगृहविषेप्रविष्टहुआ अपवरकआकाशसंज्ञाकूं प्राप्तहोवै है॥ और सोअपवरकआकाश घटरूपउपाधिविषेप्रविष्टहुआ घटाकाशसंज्ञाकूं प्राप्तहोवै है ॥ तैसे यहपरमात्मादेव समष्टिअज्ञानरूपउपाधिविषे प्रविष्टहुआ ईश्वरसंज्ञाकूंप्राप्तहोवै है ॥ और समष्टिसूक्ष्मउपाधिविषे प्रविष्टहुआ हिरण्यगर्भसंज्ञाकूंप्राप्तहोवै है और समष्टिस्थूलउपाधिविषेप्रविष्टहुआ विराट्संज्ञाकूंप्राप्तहोवै है ॥ और सोईहीपरमात्मादेव आपणेचैतन्यरू

पकरिकै सर्वप्राणियोंकेशरीरविषे पादतैंलेकेमस्तकपर्यंत प्रवेशकरै है ॥ याकारणतैं जीवसंज्ञाकूं प्राप्तहोवै है ॥ यहाँ यहअभिप्राय है॥जैसे अन्नादिकपदार्थोंका गृहविषेप्रवेशहोवै है ॥ तहाँ अन्नादिकपदार्थोंकाजो गृहविषेसंयोगसंबंध है॥सोईही अन्नादिकपदार्थोंका गृहविषेप्रवेश है ॥ याप्रकारकाप्रवेश परमात्माकासंभवैनहीं ॥ किंतु अज्ञानादिकउपाधियोंविषेस्थितहोइकै जोपरमात्माकास्फुरण है॥यहही परमात्माकाप्रवेश है ॥ याहीप्रवेशकूं शास्त्रविषे आभासवादकरिकै तथाअवच्छेदवादकरिकै कथनकरै है॥और हेदेवराजइंद्र ॥ जैसे सर्वत्रव्यापकआकाशकूं भ्रांतपुरुष घटविषेस्थितहुआमानैं हैं ॥ परंतु सोआकाश वास्तवतैंघटविषे रहै नहीं ॥ उलटा घटादिकसर्वपदार्थ आकाशविषेरहैं हैं तैसे सर्वजगत्केअधिष्ठानस्वरूपपरमात्माकूं विचारहीनपुरुष शरीरविषेस्थितहुआमानै हैं ॥ परंतु सोपरमात्मादेव वास्तवतैंशरीरादिकोंविषेरहै नहीं ॥ उलटा शरीरादिकजडपदार्थ परमात्माकेआश्रित रहै है॥और हेदेवराजइंद्र जैसे घटकीउत्पत्तितैंपूर्वही यद्यपि सर्वत्रआकाशविद्यमान है ॥ तथापि घटकीउत्पत्तितैंअनंतर घटविषेआकाश प्रविष्टहुआ है याप्रकार लोक कथनकरै हैं॥तैसे शरीरकीउत्पत्तितैंपूर्वहीयद्यपि परमात्मा सर्वत्रविद्यमान है ॥ तथापि शरीरकेउत्पन्नहुएतैंअनंतर शरीरविषेआत्माप्रविष्टभया है॥याप्रकारकाव्यवहारहोवै है॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ जैसे सूर्यभगवान्काप्रकाश यद्यपि सर्वपदार्थोंविषेसमानहीं है ॥ तथापि सूर्यकांतमणिविषेप्रविष्टहुआ सूर्यका तेज दाहादिककार्यकूंकरै है ॥ घटादिकपदार्थोंविषेस्थितहुआ सूर्यकातेज दाहादिककार्यकूं करैनहीं ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपपरमात्मा यद्यपि सर्वत्रसमानहीं व्यापक है ॥ तथापि हृदयदेशविषे तापरमात्माकी विशेषकरिकैउपलब्धिहोवै है ॥ याकारणतैं हृदयदेश विषे आत्माकी स्थितिशास्त्रविषेकही है ॥ और हेदेवराजइंद्र जैसे नापितपुरुषकेशस्त्रराखणेकी जोबडीपिटारी है ॥ तिसपिटारीकेकिसीएकदेश विषेही क्षुररूपशस्त्रकी शीघ्रउपलब्धि होवै है ॥ तैसे संपूर्णशरीरविषे एकहृदयदेशविषेही आत्माकीशीघ्रउपलब्धिहोवै है ॥ याकारणतैं हृदयदेशविषे आत्माकी स्थितिकही है ॥ और हे देवराज इंद्र ॥ जैसे अग्नि सामान्य रूपकरिकै यद्यपि सर्वपदार्थों विषेरहैहै ॥ तथापि विशेषरूपकरिकै काष्ठविषेही अग्निकी उपलब्धि होवै है ॥ तैसे सामान्यरूप करिकै यह परमात्मा देव यद्यपि सर्वत्रव्यापक है ॥ तथापि

विशेषरूपकरिकै शरीरविषेही आत्माकीउपलब्धिहोवैहै॥और हेदेवराजइंद्र॥जैसे स्वरूपतैं अग्निविषे यद्यपि न्यूनता तथाअधिकताहैनहीं तथापि काष्ठरूपउपाधिकी न्यूनताअधिकतातैं अग्निविषेन्यूनता तथा अधिकता प्रतीतहोवैहै॥तैसे आनंदस्वरूपआत्माविषे यद्यपि वास्तवतैं न्यूनता तथाअधिकताहैनहीं॥तथापि शरीरादिकउपाधियोंकी न्यूनता अधिकताकारिकै आत्माविषे न्यूनताअधिकता प्रतीतहोवै है शंका॥हेभगवन् ॥ जो आत्मा सर्वशरीरोंविषे विशेषरूपकरिकैस्थितहै ॥ तौ सर्वजीवोंकूं आत्माकासाक्षात्कार होणा चाहिये ॥ समाधान॥हेदेवराजइंद्र॥जैसै अग्नि यद्यपि सर्व काष्ठोंविषे विद्यमान है॥तथापि मथनकारिकै किसी काष्ठविषेही अग्नि उत्पन्न होवैहै ॥ तैसे यह आनंद स्वरूपआत्मा यद्यपि सर्वशरीरोंविषेविद्यमानहै॥तथापि श्रवणादिक साधनोंकरिकै किसी शरीरविषेही आत्माका साक्षात्कारहोवैहै॥ तात्पर्ययह॥यद्यपि वेदांतशास्त्रके श्रवणतैं विनाहीं अग्नितभातिरूपकरिकै सर्वजीवोंकूंआत्माकाज्ञानहै ॥ तथापि परिपूर्णआनंदअद्वितीयरूपकरिकै आत्माकाज्ञान श्रवणादिक साधनोंतैंविना होवैनहीं ॥ किंतु श्रवणादिकसाधनोंकरिकैही अद्वितीयरूपकरिकैआत्माका साक्षात्कारहोवैहै॥और हे देवराजइंद्र॥जैसे काष्ठरूपउपाधिके भेदकरिकै अग्नि महान्भावकूं तथा अल्पभावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ वास्तवतैं अग्निविषे महान्पणा तथा अल्पपणा हैनहीं॥तैसे शरीरादिकउपाधिकेभेदकरिकै यहआनंदस्वरूपआत्मा महान्भावकू तथा अल्पभावकूं प्राप्तहोवै ॥ वास्तवतैं आत्मा एकरसहै ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ जैसे एकही अग्निप्रकाश काष्ठरूपउपाधिकेभेदकरिकै नानाप्रकार होवैहै॥तैसे एकहीपरमात्मादेव अंतःकरणादिकउपाधिकेभेदकरिकै नानाभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ जैसे रात्रिविषे सूक्ष्मरूपकरिकै यद्यपि सूर्यकाप्रकाश विद्यमानहै॥तथापिअंधकारकरिकैअभिभवकूंप्राप्तहुआ सोसूर्यप्रकाश किसीपदार्थकूंविशेषकरिकै प्रकाशनैहीं॥तैसे यहआनंदस्वरूपआत्मा यद्यपि सर्वत्रविद्यमानहै ॥ यथापि अज्ञानकरिकैआवृतहुआ यह आत्मा प्रकाशकरैनहीं ॥ हेभगवन् ॥ प्रकाशस्वरूप आत्माविषे अज्ञानकृतआवरण संभवै नहीं ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र जैसे दिनाविषे अंधकाररूपराहु सूर्यकूंआश्रयणकारिकैरहै है॥और तासूर्यकूंहीं आच्छादानकरै है॥तैसे अज्ञानअवस्थाविषेप्रकाशस्वरूपआत्माकूँआश्रयणकरिकै अज्ञानरहै है

और ताआत्माकूंहीं आच्छादनकरै है ॥ याकारणतैंहीं शास्त्रविषे अज्ञानकूं स्वाश्रयविषयकह्या है ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे अंधकार जिसगृह केआश्रितरहै है ॥ तिसीगृहकूं आच्छादनकरै है ॥ तैसे अज्ञानभी अंधकाररूप है॥यातैं जिसशुद्धआत्माकेआश्रितरहै है॥ तिसीहीशुद्ध आत्माकूँ आच्छादनकरै है ॥ अब पूर्वकथनकऱ्याजोआत्माविषेजगत्काअध्यारोप ताकेअपवादकूं निरूपणकरै हैं॥ हेदेवराजइंद्र ॥ जैसे सूर्यकीआतपविषे तथासूर्यविषे यद्यपि प्रकाशपणासमान है॥ तथापि सूर्यभगवानहीं पूर्णप्रकाशस्वरूप है॥सूर्यकीआतप पूर्णप्रकाशरूप नहीं॥किंतु परिच्छिन्नप्रकाशरूप है।तैसे वाक्आदिकइंद्रियोंविषेजो आत्माकाप्रकाश है।सो परिपूर्णप्रकाशनहीं॥किंतु परिच्छिन्नप्रकाशहै॥ आनंदस्वरूपआत्माहीं परिपूर्णप्रकाशरूप है॥और हेदेवराजइंद्र ॥ यद्यपि यहआनंदस्वरूपआत्मा एकएकवाक्आदिकइंद्रियविषे वर्तमान हुआभी वास्तवतैंपरिपूर्णहीं है॥तथापि मैंवाक्हूंमैंश्रोत्रहूं इत्यादिकविपरीतज्ञानोंकाविषयहुआ आत्मा परिच्छिन्नकीन्याईं प्रतीतहोवैहै ॥ परिपूर्णआत्माविषे परिच्छिन्नदृष्टि जन्ममरणरूपसंसारकाकारण है ॥यातैं विद्वान्पुरुष आत्माकूंपरिच्छिन्नकरिकैनहींदेखै हैं ॥ किंतु सर्वत्रप रिपूर्णकरिकैदेखै हैं॥अब वाक्आदिकोंकेसाथ तादात्म्यअध्यासकरिकै आत्माविषेपरिच्छिन्नताकूंनिरूपणकरै है॥हेदेवराजइंद्र जैसे एकहीदे वदत्तनामापुरुष जभीअन्नादिकोंकूंपकावै है॥तभी तादेवदत्तकूं लोक पाचककहै हैं॥और जभीसोदेवदत्तपुरुष पाठकूंकरैहै॥तभी तादेवदत्त पुरुषकूं लोक पाठककहै हैं॥यातैं पाकरूपक्रियाकूंग्रहणकरिकै देवदत्तपुरुषविषे पाचकशब्दकीप्रवृत्तिहोवै है॥और पाठरूपक्रियाकूंग्रहणक रिकै तिसीदेवदत्तपुरुषविषे पाठकशब्दकीप्रवृत्तिहोवै है ॥पाकरूपक्रियातैं तथापाठरूपक्रियातैं रहितदेवदत्तपुरुषकेस्वरूपविषे पाचक पाठ कनाम प्रवृत्तहोवैनहीं॥यातैं पाचक पाठकनाम देवदत्तपुरुषकेपरिच्छिन्नताकेबोधक हैं॥परिपूर्णताकेबोधकनहीं काहेतैं पाचकशब्दतैं पाक क्रियाविशिष्टदेवदत्तकाहीबोधहोवै है॥पाठक्रियाविशिष्टदेवदत्तकाबोधहोवैनहीं तैसे पाठशब्दतैं पाठक्रियाविशिष्टदेवदत्तकाहीबोधहोवै है॥ पाकक्रियाविशिष्टदेवदत्तकाबोधहोवैनहीं ॥ यातैं पाचकपाठकनाम देवदत्तपुरुषकेपरिच्छिन्न ताकेबोधक हैं ॥ तैसे वाक्आदिक नामभी किसीनिमित्तकूंग्रहणकरिकैआत्माविषेप्रवृत्तहोवै हैं ॥ स्वरूपतैंशुद्धआत्माविषेकिसीनामकीप्रवृत्तिहोवैनहीं ॥ यातैं संपूर्णवाक्आदिकनाम

आत्माकेपरिच्छिन्नताकेबोधकहैं॥जिसजिसनिमित्तकूंग्रहणकरिकै वाक्आदिकनाम आत्माविषेप्रवृत्तहोवै हैं॥तिसतिसनिमित्तकूं अबनिरू पणकरै हैं ॥ हेदेवराजइंद्र॥यहआनंदस्वरूपआत्मा शब्दकाउच्चारणरूपव्यापारकूँकरै है याकारणतैं वाक्संज्ञाकूंप्राप्तहोवै है औरयहपरमात्मा देवघटपटादिकसर्वपदार्थोंकाग्रहणकरै है ॥ याकारणतैं हस्तसंज्ञाकूंप्राप्तहोवै है और यह आनंद स्वरूप आत्मा मार्गविषेगमनकरै है ॥ याकारणतैं पादसंज्ञाकूंप्राप्तहोवै है॥और यहआनंदस्वरूपआत्मा मलादिकोंकेपरित्यागद्वारा सर्वप्राणीयोंकापालनकरै है॥याकारणतैं पायु संज्ञाकूंप्राप्तहोवै है॥और यहआनंदस्वरूपआत्मा सर्वप्राणीयोंकेआनंदकूंउत्पन्नकरै है॥याकारणतैं शिश्नसंज्ञाकूंप्राप्तहोवै है॥ और यहआनं दस्वरूपआत्मा जीवोंकेपुण्यपापका फलजोसुखदुःखकाभोगहै तिसका अधिकारीहोवै है ॥याकारणतैं उपस्थसंज्ञाकूंप्राप्तहोवै है॥इसप्रकार वाक्आदिककर्मइंद्रियोंकेसाथ तादात्म्यअध्यासतैं आत्माविषे वाक्आदिकशब्दोंकीप्रवृत्तिदिखाई ॥ अब घ्राणादिक ज्ञानइंद्रियोंकेसाथ तादात्म्यअध्यासतैं आत्माविषेघ्राणादिकशब्दोंकीप्रवृत्तिकूं निरूपणकरै हैं ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ यहआनंदस्वरूपआत्मा गंधकूंग्रहणकरै है ॥ याकारणतैं घ्राणसंज्ञाकूंप्राप्तहोवै है॥और यहआनंदस्वरूपआत्मादेखेहुएपदार्थकूंनिःशंकहुआकथनकरै है॥याकारणतैंचक्षुसंज्ञाकूंप्राप्तहोवै है औरयहआनंदस्वरूपआत्मा शब्दकूंश्रवणकरैहै।और याकारणतैंश्रोत्रसंज्ञाकूंप्राप्तहोवै।और यहआनंदस्वरूपआत्मा मधुरादिकषट्रसोंकूंग्रह णकरै है॥याकारणतैं रसनसंज्ञाकूंप्राप्तहोवै है॥और यहआनंदस्वरूपआत्मा शीतउष्णस्पर्शकूंअनुभवकरैहै॥याकारणतैं त्वक्संज्ञाकूंप्राप्तहो वैहै॥अब आत्माविषे प्राणके तथाअंतःकरणकेनामोकीप्रवृत्तिकूं निरूपणकरै हैं॥हेदेवराजइंद्र॥यहआनंदस्वरूपआत्मा शरीररूपयंत्रविषे अतिशयकरिकैचलायमानहोवै है ॥ याकारणतैं प्राणसंज्ञाकूंप्राप्तहोवै है ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा संपूर्णजगत्कूंविकल्पनाकरै है ॥ याकारणतैं मनसंज्ञाकूंप्राप्तहोवै है ॥ और जैसे स्त्री गर्भकूंधारणकरै है ॥तैसे यहआनंदस्वरूपआत्मा आपणेस्वरूपविषे संपूर्णजगतकूंवास नारूपकरिकै धारणकरै है ॥ याकारणतैं धीसंज्ञाकूंप्राप्तहोवै है ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा अनुसंधानरूपवृत्तिविषे स्फुरणहोवै है ॥ याकारणतैं चित्तसंज्ञाकूंप्राप्तहोवै है॥और अहंयाप्रकारकानाम सर्वप्राणीमात्रकेआत्माकाबोधकहै॥ याकारणतैंहीं लोकविषे तुम कौनहो

याप्रकार किसीकरिकैपुछाहुआपूरुष अहंदेवदत्तः याप्रकारकाउत्तरदेवै है॥ताउत्तरविषे अहंशब्दका प्रथमउच्चारणकरै है ॥ और देवदत्त शब्दका पश्चात् उच्चारणकरै है ॥ यातैं अहंशब्द सर्वप्राणीकेआत्माकावाचकहै ॥ यातैं हेदेवराजइंद्र वाकूतैं आदिलेकेजितनेकनाम पूर्वकथनकरे॥ तथा अन्यभी देव मनुष्य असुर इत्यादिकजेअनेकनामहैं ॥ ते संपूर्णनाम परिच्छिन्नकारिकै आत्माकूं बोधन करै हैं॥ परिपूर्णरूपकरिकै आत्माकूं वाकूआदिकनाम बोधनकरैनहीं ॥ यातैं वाकूआदिकशब्दोंकाअर्थ जोपरिच्छिन्नरूपआत्माहै॥सो विद्वान्पुरुषों करिकैजानणेयोग्यनहीं॥किंतु परिपूर्णआत्माहीं जानणेयोग्य है और ॥ हे देवराजइंद्र जैसे जलरूपउपाधिकेभेदकारिकै एकही सूर्य भगवान् अनेकप्रतिबिंबरूपकारिकै प्रतीतहोवै है॥जलरूपउपाधिकेनिवृत्तहुए तेसर्वप्रतिबिंब बिंबरूपसूर्यविषे एकताकूंप्राप्तहोवै हैं॥तैसेएकहीआनंदस्वरूप आत्मा उपाधिकेसंबंधतैं पूर्वउक्तवाकू आदिकविशेषरूपकूंप्राप्तहोवै है ॥ अंतःकरणादिकउपाधियोंकेनिवृत्तहुए तेसंपूर्णवाकूआदिकविशेषरूप आत्माविषे एकताभावकूंप्राप्तहोवै हैं॥ऐसाजोपरिपूर्णआत्माहै॥सोईहीआत्मा स्वरूपकरिकैजानणेयोग्यहै॥ और हेदेवराजइंद्र जैसे एकहीमहाकाश घटाकाश मठाकाश गृहाकाश इत्यादिकविशेषरूपोंविषे अनुगतहै ॥ तैसे एकहीआनंदस्वरूपआत्मा वाकूआदिक सर्वविशेषरूपोंविषे अनुगत है ॥ और सजातीयभेद विजातीयभेद स्वगतभेद यातीनप्रकारकेभेदोंतैंरहितहै॥काहेतैं सर्वजीवोंविषे यहआनंदस्वरूपआत्मा अहंयाशब्दका तथाअहंयाज्ञानका विषयरूपहोइकेप्रतीतहोवै है॥यातैं हेदेवराजइंद्र परिपूर्णअर्थकाबोधकजोआत्मशब्दहै तथा लक्षणावृत्तिकारिकै परिपूर्णअर्थकाबोधकजोअहंशब्दहै॥ तिनदोनोंशब्दोंकरिकैही बुद्धिमान्पुरुष परिपूर्ण आत्माकूंजाणैहै॥शंका ॥ हेभगवन् ॥ जैसे अनेकपुरुष आपणेशरीरविषे अहंब्राह्मणःअहंस्थूलःयाप्रकार अहंशब्दकाप्रयोगकरैं हैं॥तहाँ वक्तापुरुषोंकेभेदतैं तथाअहंशब्दकेभेदतैं अहंशब्दकेअर्थरूपशरीरका भेदही देख्याहै ॥ तैसे अहंशब्दके तथाआत्मशब्दके वक्तापुरुषोंकेभेदतैं तथाअहंशब्द आत्मशब्दकेभेदतैं अहंशब्द आत्मशब्दके अर्थरूपआत्माकाभी भेदही होवैगा ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ वक्तापुरुषोंकेभेदतैं तथा शब्द प्रयोगकेभेदतैं पदार्थकाभेदहीहोवै है॥यहनियम सर्वत्रसंभवैनहीं ॥ काहेतैं जैसे एकहीघटव्यक्तिविषे अनेकपुरुष घटहै कलशहै या प्रकार

भिन्नभिन्नशब्द उच्चारणकरै है ॥ तहाँ वक्तापुरुषोंका तथाशब्दोंकातौ परस्परभेद है ॥ परंतु घटव्यक्तिकाभेदनहीं ॥ किंतु एकहींघटव्यक्ति सर्वशब्दोंविषेप्रतीतिहोवैहै॥तैसे सर्वपुरुष आत्माकूं अहंरूपकारिकै तथाआत्मरूपकरिकै कथनकरैहैं॥तहाँ यद्यपि वक्तापुरुषोंकापरस्परभेद है ॥ तथा अहंशब्द आत्मशब्दका परस्परभेद है ॥ तथापि आत्मशब्दका तथाअहंशब्दका लक्षअर्थ जोआत्माहै ताका भेदसंभवैनहीं॥ किंतु एकहीआनंदस्वरूपआत्मा सर्वप्राणियोंके अहंशब्दविषे तथाआत्मशब्दविषे अनुगतहुआप्रतीतहोवै है ॥ यातैं वक्तापुरुषोंकेभेदतैं तथाशब्दकेभेदतैं आत्माकाभेदनहीं किंतु एकहीआत्मा सर्वप्राणीमात्रविषेव्यापक है ॥ दृष्टांत ॥ जैसे गृहविषे स्थित आकाशकूं गृहाकाशकहैं हैं ॥ और मठविषेस्थितआकाशकूं मठाकाशकहैं हैं और घटविषेस्थितआकाशकूं घटाकाशकहैं हैं तहां घटाकाशशब्दकाअर्थजो घटउपहितआकाश है॥ तथा मठाकाशशब्दकाअर्थ जोमठउपहितआकाश है ॥ तिनदोनोंका यद्यपि परस्परभेदसंभवै है तथापि आकाशशब्दकाअर्थजो शुद्धमहाकाशहै तिसकाभेद संभवैनहीं ॥ तैसे पूर्वउक्तवाकादिकनामोंकाअर्थ जोविशिष्टआत्मा है ॥ तिनोंकायद्यपि परस्परभेदसंभवैहै।तथापिआत्मशब्दकाअर्थतथाअहंशब्दकाअर्थ जोशुद्धआत्माहै।ताकाभेदसंभवैनहीं॥किंतुसर्वजगत्विषे आत्मशब्दकाअर्थ तथाअहंशब्दकाअर्थशुद्धआत्मा अनुगतहै॥औरहेदेवराजइंद्र!यह जोआत्मशब्दकाअर्थतथाअहंशब्दकाअर्थशुद्धआत्मा हमनेंतुम्हारेप्रति कथनकऱ्या है ॥ इसीशुद्धआत्माकेसाक्षात्कारकाउपाय मुमुक्षुजनोंकूं करणेयोग्यहै॥आत्मातैंभिन्न शब्दादिकाविषयोंकेप्राप्तिकाउपाय अधिकारीजनोंकूं करणेयोग्यनहीं काहेतैं शास्त्रविषे बुद्धिमान्पुरुषोंनैं यहकह्या है ॥ जिसपदार्थकेप्राप्तिके उत्तरकाल विषे सुखकीप्राप्तिहोवै ॥ तिसीहीपदार्थकेप्राप्तिवासतै बुद्धिमान्पुरुषोंनैं यत्नकरणा॥और जिसपदार्थकेप्राप्तिकेउत्तरकालविषे दुःखकीप्राप्तिहोवै ॥ ऐसेपदार्थकीप्राप्तिवासतै बुद्धिमान्पुरुषनैं यत्ननहींकरणा॥किंतु तिनपदार्थोंकेनिवृत्तिका यत्नकरणा॥याप्रकारकानियम शास्त्रविषेकह्याहै॥ तहाँशब्दादिकविषयोंकेउत्तरकालविषे जीवोंकूं सुखकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ किंतु अनंतप्रकारकेदुःखोंकीप्राप्तिहोवै हैं ॥ यातैं शब्दादिकविषयोंकीप्राप्तिवासतैं यत्नकरणाव्यर्थ है॥ और आत्माकेसाक्षात्काररूपप्राप्तिकेउत्तरकालविषे जीवोंकूं निरतिशयआनंदकीप्राप्तिहोवैहै॥यातैं

आनंदस्वरूपआत्माकेप्राप्तिवासतेंही बुद्धिमान्पुरुषोंकूं यत्नकरणाउचितहै ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ जैसे शब्दस्पर्शादिकविषय परिणामका लविषे दुःखकेकारण हैं यातैं बुद्धिमान्पुरुषोंकूं प्राप्तहोणेयोग्यनहीं ॥ तैसे शब्दस्पर्शादिकविषयभोगकेसाधन जे स्थूलशरीर तथासूक्ष्म शरीर तथाकारणशरीर यहतीनप्रकारकेशरीरहैं ॥ तेभी भोगकीप्राप्तिद्वारा उत्तरकालविषे अनंतप्रकारकेदुःखोंकाकारणहै ॥ यातैं स्थूल सूक्ष्म कारण यहतीनप्रकारकेशरीरभी अधिकारीपुरुषोंकूं प्राप्तहोणेयोग्यनहीं ॥ किंतु परित्यागकरणेयोग्यहैं ॥ एकआनंदस्वरूपआत्माही अधिकारीपुरुषोंकूं प्राप्तहोणेयोग्य है ॥ यातैं हे देवराजइंद्र शब्दादिकविषयोंतैंआदिलैकै कारणशरीरपर्यंत जितनाकटृश्यप्रपंच है ॥ तिसका परित्यागकरिकै यासंघातविषेस्थितजोसत्चित्आनंदस्वरूपआत्मा है तिसकूं जभी यहपुरुष जाणैहै ॥ तभी सर्वपदार्थोंविषे सत् चित्आनंदस्वरूपकरिकैआत्माकेजाननेविषे यहपुरुषसमर्थहोवै है ॥ दृष्टांत ॥ जैसे लोकविषे किसीपुरुषकीगौ जभी गृहतैंबाहर कहां चलीजावैहै ॥ तभी सोपुरुष तागौकेपादोंकेचिह्नयुक्तभूमिकूंदेखिकरिकैयाप्रकारकानिश्चयकरै हैं ॥ इसीपूर्वदिशाविषे हमारीगौ गई है ॥ दूसरीकिसीदिशाविषेनहींगई ॥ याप्रकारकानिश्चयकरिकै सोपुरुष जभीतिसीमार्गविषे शनैंशनैंचालेहै॥ तभीसोपुरुष तिसगौकूंप्राप्त होवै है ॥ तैसे अधिकारीजनोंकेप्राप्तहोणेयोग्यजो यासंघातविषेस्थित आनंदस्वरूपआत्माहै ॥ तिसकूं जभीयहपुरुष निश्चयकरता है ॥ तभी सर्वभूतप्राणीविषेस्थित सत्चित्आनंदस्वरूपआत्माकूंभी साक्षात्कारकरिसकैहै॥ यासंघातविषेस्थितआत्माकेज्ञानतैंविनासर्वत्रव्या पकरूपकरिकैआत्माकाज्ञान होइसकैनहीं ॥ तात्पर्य यह ॥ अंतःकरणरूपमार्गविषे गौकेपादकेचिह्नकीन्याईं साक्षीरूपकरिकै वर्तमानजो आत्माहै ॥ ताकूं जभीअधिकारीजन निश्चयकरै है ॥ तभी स्थावर जंगमरूपसंपूर्णजगतकूं सत्चित्आनंदआत्म स्वरूपकरिकैनिश्चयकरैहै यातैं हेदेवराजइंद्र ऐसेआनंदस्वरूपआत्माकेलाभतैंपरे यालोकविषे दूसराकोईपदार्थ लाभनहीं किंतु आनंदस्वरूपआत्माकीप्राप्तिही परमलाभहै ॥ ताआनंदस्वआत्माकेप्राप्तहुए जितनेकलौकिक यशकीर्तिआदिक अल्पपदार्थ हैं तेसंपूर्ण आत्मज्ञानीपुरुषकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ तात्पर्ययह जैसे लोकविषे जितनेकिमनुष्यादिकोंकेपाद हैं ॥ तेसंपूर्णपाद हस्तिकेपादविषेअंतरभूतहोवै हैं ॥ तैसे आत्मज्ञान रूप फल

॥ २९

विषे सर्वकर्मोंकेफलका अंतर भावहोवै है॥यातैं आत्मातैंभिन्न सर्वपदार्थोंकापरित्यागकरिकै आनंदस्वरूपआत्माकाज्ञानहीं अवश्यसंपादन करणेयोग्यहै॥अब याहीअर्थकेस्पष्टकरणेवासतै पुत्रादिकसर्वप्रियपदार्थोंतैं आत्माविषे मुख्य प्रियता दिखावै हैं॥हे देवराजइंद्र ॥ लोकविषे आत्माकूंप्रियकहैं हैं ॥ तथा पुत्रादिकपदार्थोंकूंभी प्रियकहैं हैं ॥ तिन दोनों विषेआत्मातो निरुपाधिकप्रीतिकाविषयहै॥यातैं अतिशय करिकैप्रियहै ॥ और पुत्रादिकपदार्थ सोपाधिकप्रीतिकेविषय हैं ॥ यातैं पुत्रादिकपदार्थ अतिशयकरिकैप्रियनहीं॥अब पुत्रादिकपदार्थों विषे सोपाधिकप्रीतिकीविषयता निरूपणकरैं हैं॥हेदेवराजइंद्र पुत्रविषे तथास्त्रीविषे तथाधनविषे तथाबांधवादिकोंविषे जोलोकोंकीप्रीति होवै है ॥ सो आपणेआत्माकेवासतैंहींहोवै है ॥ पुत्रादिकोंकेवासतै साप्रीतिहोवै नहीं ॥ जोपुत्रादिकोंकेवासतैंहीं साप्रियताहोवै॥तो वैरी पुरुषकेपुत्रादिकोंविषेभी सोप्रियता होणीचाहिये ॥ और वैरीकेपुत्रादिकोंकूं कोईभीपुरुष प्रियमानतानहीं ॥ यातैं यह सिद्धभया ॥ पुत्रा दिकोंविषेजोपुरुषकीप्रियताहै ॥ सा आपणेआनंदकेवासतै है ॥ और आपणेआत्माविषेजोप्रियताहै ॥ सोकिसीदूसरेकेआनंदवासतैनहीं॥ यातैं आनंदस्वरूपआत्माविषे निरुपाधिकप्रीतिकीविषयताहै ॥ और पुत्रादिकोंविषे सोपाधिकप्रीतिकीविषयताहै॥ याकारणतैंहीं श्रुति विषे पुत्रादिक सर्वपदार्थोंतैं आत्माकूं अधिकप्रियकह्याहै ॥ और हे देवराजइंद्र ॥ जैसेआत्माकीअपेक्षाकरिकै पुत्रादिक बाह्यहै ॥ यातैं तिनोंविषे सोपाधिकप्रीतिकीविषयताहै ॥ तैसे आत्माकीअपेक्षाकरिकै प्राणादिकभी बाह्यहैं॥यातैं तिनोंविषेभी सोपाधिकप्रीतिकीही विषयताहै ॥ अब प्राणादिकोंकेबाह्यताकूंनिरूपणकरैं हैं ॥ हे देवराजइंद्र ॥ स्थूलशरीराकारपरिणामकूंप्राप्तभये जेशब्दादिकविषयहैं ॥ तिनोंतैं प्राणविशिष्टइंद्रिय अंतरहै ॥ और तिनइंद्रियोंतैं संकल्पविकल्परूपमन अंतरहै ॥ और तिसमनतैं निश्चयरूपबुद्धि अंतरहै॥और तिसबुद्धितैं अहंकारविशिष्टजीव अंतरहै ॥ और तिसजीवतैं अव्याकृतनामाकारणअज्ञान अंतरहै ॥ और तिसकारणरूपअज्ञानतैं शुद्ध आत्मा अंतरहै ॥ ता शुद्धआत्मातैंअंतर कोईभीपदार्थनहीं ॥ अब याहीअर्थकूं युक्तिकरिकैनिरूपणकरैं हैं ॥हे देवराजइंद्र ॥ जैसे घटका द्रष्टापुरुष घटरूपविषयतैंअंतरहोवै है ॥ तैसे यह आनंदस्वरूपआत्मा नेत्रादिकइंद्रियोंकरिकै रूपादिकविषयोंकूंजाणै है ॥ यातैं द्रष्टाआ

त्माकाविशेषणजेइंद्रियहैं ॥ ते रूपादिकविषयोंकीअपेक्षाकरिकै अंतर हैं ॥ और यह आनंदस्वरूपआत्मा मनकरिकैइंद्रियोंकूंजाणै है ॥ यातैं द्रष्टाआत्माकाविशेषणजोमनहै ॥ सो इंद्रियोंकीअपेक्षाकरिकैअंतरहै ॥ और यह आनंदस्वरूपआत्मा निश्चयरूपबुद्धिकरिकै मनकूं जाणै है ॥ यातैंद्रष्टाआत्माकाविशेषणजोबुद्धिहै ॥ सो मनकीअपेक्षाकरिकैअंतरहै॥और यह आनंदस्वरूपआत्मा अहंकारविशिष्टजीवरूपकरिकै ताबुद्धिकूंजाणै है ॥ यातैं द्रष्टाआत्माकाविशेषणजोजीवहै ॥ सो बुद्धिकीअपेक्षाकरिकैअंतरहै ॥ और यह आनंदस्वरूपआत्मा ताअहंकारविशिष्टजीवकूं कारणअज्ञानउपहितसाक्षीरूपकरिकैजाणैहै ॥ यातैं द्रष्टाआत्माकाविशेषणजोअज्ञानहै ॥ सो जीवकीअपेक्षाकरिकैअंतरहै ॥ और यह आनंदस्वरूपआत्मा आपणेस्वप्रकाशस्वरूपकरिकै ताअज्ञानकूँप्रकाशैहै॥यातैं कारणअज्ञानतैं आत्माअंतरहै॥ आत्मातैंअंतर कोईदूसरापदार्थनहीं ॥ किंतु आत्माकीअपेक्षाकरिकै सर्वअज्ञानादिकपदार्थ बाह्यहैं ॥ आत्माहीं सर्वकेअंतरहै॥याकारण तैंहीं आत्मा आनंदस्वरूपहै ॥ और आत्मा आनंदस्वरूपहै ॥ या कारणतैंहीं पुत्रादिकोंतैंलैकैकारणअज्ञानपर्यंत सर्वपदार्थोंतैं अतिशयकरिकैप्रियहै ॥शंका॥ हे भगवन् ॥ एकआत्माहीप्रियहै यहजोनियम आपनैकह्या ॥सोसंभवैनहीं ॥काहेतैं यद्यपि मुख्यप्रियता आत्माविषेही है॥अन्यपुत्रादिकोंविषे मुख्यप्रियतानहीं॥तथापि गौणप्रियता पुत्रादिकोंविषेभी संभवै है॥यातैं पुत्रादिकपदार्थभी प्रियहैं॥समाधान हे देवराजइंद्र श्रुतिविषे आत्मातैंभिन्नसर्वपदार्थोंकूं नाशवान्कह्याहै ॥ यातैं विचारकियेतैं पुत्रादिकपदार्थोंविषे ॥ गौणप्रियताभी संभवै नहीं ॥ और जोपुरुष आत्मातैंभिन्न शरीर पुत्र धनादिकपदार्थोंकूंप्रियकहै है॥तिस पुरुषके तेशरीरपुत्रधनादिकपदार्थ अवश्यनाशकूंप्राप्त होवैंगे ॥ तात्पर्ययह ॥ जिनपुत्रधनादिकपदार्थोंकूं लोकोंनैं प्रियमान्याहै ॥ तेपुत्रादिकपदार्थ नाशवान्हैं ॥ यातैं तिनोंकावियोग अवश्य होणेहाराहै॥कदाचित् या पुरुषकेविद्यमानहुए पुत्रादिकपदार्थोंकानाशहोवै है ॥और कदाचित् पुत्रादिकपदार्थोंकेविद्यमानहुए यापुरुष कामृत्युहोवै है ॥ यादोनोंप्रकारकेवियोगकरिकै जीवोंकूं अनंतदुःखोंकीप्राप्तिहोवै है॥यातैं पुत्रादिकपदार्थोंविषे बुद्धिमान्पुरुषोंकूं प्रीतिकरणीयोग्यनहीं ॥ किंतु नाशतैंरहितजोआनंदस्वरूपआत्माहै ॥ तिसविषेही बुद्धिमान्पुरुषोंकूं प्रीतिकरणीयोग्यहै ॥ यातैं हेदेवराजइंद्र ॥

जोपुरुष केवलआत्माकूंहींप्रियजाणता है ॥ तिसविद्वान्पुरुषकेसमीपजाइके किसीपुरुषनैं आत्मातैंभिन्न पुत्रादिकपदार्थोंकूं प्रियनहीं कहणा ॥ जोकदाचित् विद्वान्पुरुषकेसमीपजाइके कोईकपुरुष आपणेपुत्रादिकोंकूंप्रियकहैगा ॥ तौ तापुरुषके मिथ्यावचनकूं नसहार ताहुआसोविद्वान्पुरुष तेरेप्रियपुत्रादिकनाशवान् हैं याप्रकार जोकदाचित् वचनकहैगा ॥ तौ तिसमहात्माविद्वान्पुरुषकेवचनकरिकै शीघ्रही तिनपुत्रादिकपदार्थोंकानाशहोवैगा ॥ दृष्टांत ॥ जैसे कोईमूढपुरुष रंगकूं रजतरूपमानिकरिकै किसीपरीक्षकपुरुषकेसमीपजाइकै यहरजत है याप्रकारकाकथनकरै ॥ तापुरुषकेमिथ्यावचनकूं नहींसहनकरताहुआ सोपरीक्षकपुरुष यहरंगहै रजतनहीं याप्रकारकावचन जभीकहै है ॥ तभी तापरीक्षकपुरुषकेवचनकरिकै तामिथ्यारजतका नाशहोइजावै है ॥यातैं आत्माकूंप्रियजानणेहारेविद्वान्पुरुषकेसमीप जाइके पुत्रादिकअनात्मपदार्थोंकूं किसीपुरुषनैं प्रियनहींकहणा ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ आत्माकूंप्रियजानणेहारेविद्वान्पुरुषके वचनमात्रकरिकै पुत्रादिकअनात्मपदार्थोंकानाश संभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ जिसविद्वान्पुरुषनैं एकआत्माकूंहींप्रियजान्याहै ॥ सो विद्वान्पुरुषयहपुत्रादिकपदार्थविनाशी हैं याप्रकारके वचनमात्रकरिकै तिनोंकेनाशकरणेविषेसमर्थ है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ विद्वान्पुरुषतो रागद्वेषतैंरहितहोवैं हैं ॥ और दयालु होवैं हैं ॥ यातैं तेरे पुत्रादिकनाशवान् हैं याप्रकारकाकठोरवचन कैसेउच्चारणकरैंगे॥समाधान॥ हेदेवराजइंद्र ॥ जोकदाचित् विद्वान् याप्रकारकावचन नहींभीकहैं ॥ तौभी विद्वान्पुरुषकेसमीप मिथ्यावचनकाउच्चारणनहींकरणा ॥ काहेतैं श्रुतिविषेब्रह्मज्ञानीपुरुषकूं ब्रह्मस्वरूप कह्या है ॥ यातैं जैसे परमेश्वर वचनउच्चारणतैंविनाहीं जीवोंकूं पुण्यपापकेफल सुखदुःखदेवै है ॥ तैसे परमेश्वरस्वरूप यह विद्वान्पुरुषभी वचनउच्चारणतैं विनाहीं पुण्यपापकेफल सुखदुःखकूंदेवै है ॥ दृष्टांत ॥ जैसे श्रीगंगाजी केतीरविषेनिवासकरिकै जोपुरुष पापकर्मकूंकरै है॥तिसपुरुषकूं॥दुःखकीप्राप्तिहोवै है ॥ और जो पुरुष तहांनिवासकरिकै पुण्यकर्मकूंकरै है ॥ तिसपुरुषकूं सुखकीप्राप्तिहोवै है ॥ तैसे विद्वान्पुरुषकेसमीपजाइके जोपुरुष सत्यवचनकाउच्चारणरूपशुभकर्मकूंकरै है ॥ तिसकूं सुखकीप्राप्तिहोवै है॥और जो पुरुष असत्यवचनकाउच्चारणरूप अशुभकर्मकरै है॥तिसकूं दुःखकीप्राप्तिहोवै है ॥ यातैं श्रीगंगाजीकीन्याईं

विद्वान्पुरुष विषेभी निर्दयतारूपदोषकी प्राप्तिहोवैनहीं ॥ शंका॥ हेभगवन्॥ पूर्वआपनैंयहकह्या ॥ विद्वान्पुरुषके समीपजाइकै जोकोई पुरुष पुत्रादिकअनात्मपदार्थोंकूंप्रियकहताहै ॥ तिसपुरुषकेपुत्रादिकप्रियपदार्थ नाशहोवै हैं ॥ यह आपकाकहणा संभवैनहीं ॥ काहेतैं इसजन्मविषेकऱ्याहुआपुण्यपापरूपकर्म इसजन्मविषेसुखदुःखरूपफलकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ किंतु जन्मांतरविषेही सुखदुःखरूपफलकीप्राप्तिकरै है ॥ यहशास्त्रविषेकह्या है ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ यद्यपि बहुतस्थानविषेतौ जन्मांतरविषेही पुण्यपापकर्मकाफलहोवै है ॥ तथापि अत्यंतउग्र जोकोईक पुण्यपापकर्म है ॥ तिसका इसीजन्मविषे सुखदुःखरूपफलहोवै है ॥ और विद्वान्पुरुषकेसमीपजाइके जोमिथ्यावचनकाउच्चारणकरणाहै ॥ यहभी अत्यंतउग्रपापकर्महै ॥ यातैं तापापकर्मकाफलदुःख इसीजन्मविषेसंभवै है ॥ किंवा ॥ स्थावररूपकरिकैप्रसिद्ध जो अश्वत्थ तुलसी प्रतिमा आदिक अल्पदेवताहैं ॥ तिनोंकेसमीपजाइके जोपुरुष मिथ्यावचनकाउच्चारणकरै है तिसमिथ्यावादीपुरुषकेताईं मुखतैंनहींबोलतेहुएभी तेप्रतिमादिकअल्पदेवता जभी फलकीप्राप्तिकरैं हैं॥तभी सर्वदेवतावोंकाआत्मास्वरूप तथावचनउच्चारणादिकव्यवहारकरणेविषेसमर्थ ऐसाजोविद्वान्पुरुषहै ॥ सो मिथ्यावादीपुरुषकूं दुःखरूपफलकीप्राप्ति कैसेनहींकरैगा ॥ किंतु अवश्यकरैगा ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ जैसे विद्वान्पुरुषकेसमीपजाइकै जोकोईपुरुष पुत्रादिकअनात्मपदार्थोंकूंप्रियकहै है ॥ तिसपुरुषके पुत्रादिकप्रियपदार्थ नाशकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ तैसे विद्वान्पुरुषकेसमीपजाइकै जोकोईपुरुष आत्माकूंहीप्रियकहै है ॥ तिसपुरुषके पुत्रादिकप्रियपदार्थ नाशकूंनहींप्राप्तहोते ॥ किंतु अधिकआयुष्यूवालेहोवै हैं ॥ यातैं हेदेवराजइंद्र वैराग्यादिकसाधनोंतैंरहित जोपुरुष प्रियरूपकरिकै आत्माकेजानणेविषे समर्थनहींहोवै ॥ और पुत्रादिकप्रियपदार्थोंकेजीवनकीइच्छाकरताहोवै॥ सोपुरुष प्रियरूपकरिकैआत्माकीउपासनाकरै ॥ ताउपासनाकारिकै तिसपुरुषकेपुत्रादिकप्रियपदार्थ चिरकालपर्यंत जीवतेरहैंगे ॥ शंका ॥ हे भगवन् ॥ यथार्थअनुभवज्ञानतैं उपासनाकाकितनाभेद है ॥ समाधान ॥ हे देवराजइंद्र ॥ ध्यानकरणेयोग्यवस्तुकेविद्यमानहुए अथवाअविद्यमानहुए केवलगुरुशास्त्रकेवचनतैं जोमानसज्ञान उत्पन्नहोवै॥तिसज्ञानविषे विश्वासकारिकै गुरुशास्त्रउपदेशितअर्थ विषे सजातीयवृत्तियोंकेप्रवाहतैं जोविजातीयवृत्तियों

कानिरोधहै ताकानाम उपासनाहै ॥ जैसे श्रुतिविषे स्वर्ग मेघ मनुष्यलोक पुरुष योषित् यापांचोंकीअग्निरूपकरिकै उपासनाकहीहै तहौं स्वर्गादिक यद्यपि अग्निरूपनहींहैं॥तथापिगुरुशास्त्रकेवचनतैं तिनस्वर्गादिकोंविषे पुरुषकी अग्निबुद्धिहोवैहै।ताकेविषे विश्वासमात्रकरिकैस्वर्गादिकोंविषे निरंतर अग्निआकारसजातीयवृत्तियोंकाप्रवाहहोवैहै ॥ तिसतैं घटादिविषयकाविजातीयवृत्तियोंका निरोधहोवैहै ॥याकानाम उपासनाहै ॥ तात्पर्ययह ॥ यथार्थअनुभवरूपप्रमाज्ञानतौ प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंके तथाविषयके अधीनहोवै है ॥ और उपासनाप्रमाणके तथाविषयके अधीनहोवैनहीं ॥ किंतु गुरुशास्त्रकेवचनविषे विश्वासकेअधीनहोवैहै ॥ इतना दोनोंकाभेदहै ॥ पूर्व प्रियरूपकरिकैआत्माके उपासनाकाफल पुत्रादिकप्रियपदार्थोंकाजीवन कह्या ॥ अब प्रियरूपकरिकै आत्माकेयथार्थअनुभवकाफल कहैहैं ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ जोपुरुष आनंदस्वरूपआत्माकूं प्रियरूपकरिकैजाणताहै ॥ सोपुरुष सर्वदेवतास्वरूपहोवै है ॥ याअर्थविषे तुमनैं किंचित्मात्रभी संशयनहींकरणा ॥ यातैं हेदेवराजइंद्र आनंदस्वरूपआत्माकेज्ञानतैं अधिकारीपुरुषोंकूं सर्वात्मभावकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यहजोअर्थ हमनैं तुमारेप्रति कथनकऱ्याहै ॥ सो केवलआपणेमनकीयुक्तियोंतैंनहींकथनकऱ्याहै ॥ किंतुयाअर्थविषे एक पुरातनवृत्तांतहै ॥ ताकूं तुम श्रवणकरो ॥ कैसा सोवृत्तांतहै ॥ अनेकमहात्माब्राह्मणोंकेसमाजविषे विचारतैंप्रगटभया ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ एककालविषे किसीनिमित्तपाइकै किसीदेशविषे अनेकब्राह्मण एकठेभयेथे ॥ तेंकैसेब्राह्मणथे ॥ चारिवेदोंविषे तथाषट्अंगोंविषे तथाषट्शास्त्रोंविषे अत्यंत निपुणथे॥तिसब्राह्मणोंकेसमाजविषे नानाप्रकारकीलौकिककथा तथावैदिककथा प्रगटहोतीयांभइयां॥और तिसब्राह्मणोंकेसमाजविषे किसीप्रसंगपाइकै याप्रकारकीकथा प्रवृत्तहोतीभई ॥ अब ताकथाकूंदिखावैहैं॥हेदेवराजइंद्र॥ताब्राह्मणोंकेसमाजविषे कोईकविद्वान्ब्राह्मण सर्वब्राह्मणोंकेप्रति याप्रकारकाप्रश्न करतेभये ॥ हेसर्वब्राह्मणो ॥ ब्रह्मविद्याकेजानणहारेपुरुष ब्रह्मज्ञानकरिकै सर्वात्मभावकीप्राप्तिकथनकरैं हैं ॥ याकेविषे हमारेकूं यहसंशय होवै है ॥ जिसब्रह्मकेज्ञानकरिकै अधिकारीजनोंकूं सर्वात्मभावकीप्राप्तिहोवैहै ॥ सोब्रह्मभी किसीपदार्थकेज्ञानकरिकै सर्वात्मभावकूंप्राप्तभयाहै ॥ अथवा किसीपदार्थकेज्ञानतैंविनाहीं सर्वात्मभावकूंप्राप्तभयाहै॥यादोनोंपक्षोंविषे किसीपदार्थकेज्ञानकरिकै सोब्रह्म सर्वात्मभावकूं

प्राप्तभयाहै ॥ यहप्रथमपक्ष जोअंगीकारकरो ॥ तौ जिसपदार्थकेज्ञानतैं ब्रह्मकूं सर्वात्मभाव प्राप्तभयाहै ॥ तापदार्थका तुम निरूपणकरो ॥ और हेब्राह्मणो ॥ किसीपदार्थकेज्ञानतैंविनाहीं सोब्रह्म सर्वात्मभावकूंप्राप्तभयाहै यहदूसरापक्ष जोअंगीकारकरोगे ॥ तौ ब्रह्मकाज्ञान निष्फलहोवैगा ॥ काहेतैं जैसे ब्रह्मकूं ज्ञानतैंविनाहीं सर्वात्मभावकीप्राप्तिभई है ॥ तैसे अन्यअधिकारियोंकूंभी ब्रह्मज्ञानतैंविनाहीं सर्वात्म भावकीप्राप्तिहोवैगी ॥ सर्वात्मभावकीप्राप्तिवासतै ब्रह्मज्ञानकासंपादनकरणा निष्फल है ॥ और हेब्राह्मणो ॥ किसीपदार्थकेज्ञानतैं ब्रह्म सर्वात्मभावकूंप्राप्तभया है ॥ याप्रथमपक्षविषेभी यहविचार कऱ्याचाहिये ॥ सोब्रह्म आपणेतैंभिन्न किसीपदार्थकेज्ञानकरिकै सर्वात्मभा वकूंप्राप्तभया है ॥ अथवा आपणेस्वरूपकेज्ञानकरिकै सर्वात्मभावकूंप्राप्तभयाहै ॥ यादोनोंपक्षोंविषे प्रथमपक्ष जोअंगीकारकरोगे ॥ तौ ब्रह्मकाज्ञान निष्फलहोवैगा ॥ काहेतैं जिसअन्यपदार्थकेज्ञानकरिकै ब्रह्मकूं सर्वात्मभावकीप्राप्तिभई है ॥ तिसीअन्यपदार्थकेज्ञानक रिकै दूसरेअधिकारीजनोंकूंभी सर्वात्मभावकीप्राप्तिहोवैगी ॥ सर्वात्मभावकीप्राप्तिवासतै ब्रह्मज्ञानकासंपादनकरणा निष्फल है ॥ और हेब्राह्मणो सोब्रह्म आपणेस्वरूपकेज्ञानकरिकै सर्वात्मभावकूंप्राप्तभया है यहदूसरापक्ष जोअंगीकारकरोगे ॥ तौभी ब्रह्मज्ञान निष्फलहो वैगा ॥ काहेतैं जैसे ब्रह्मकूं आपणेस्वरूपकेज्ञानकरिकै सर्वात्मभावकीप्राप्तिभई है ॥ तैसे अन्यअधिकारीजनोंकूंभी आपणेआत्मास्वरूप केज्ञानकरिकै सर्वात्मभावकीप्राप्तिहोवैगी ॥ सर्वात्मभावकीप्राप्तिवासतै ब्रह्मज्ञानकासंपादनकरणा निष्फल है ॥ हे देवराजइंद्र ॥ इसप्रकार ब्रह्मका तथाआत्माका पररूपरभेद अंगीकारकरिकै तेब्राह्मण सर्वब्राह्मणोंकेसमाजविषे प्रश्नकूंकरतेभये ॥ तिनअधिकारी जनोंकेप्रश्नकूंश्रवणकरिकै तेसंपूर्णवेदवेत्ताब्राह्मण अन्यकिसीपदार्थकेज्ञानतैंसर्वात्मभावकीप्राप्तिहोवै है याप्रथमपक्षका तथाविनाहींज्ञा नतैं सर्वात्मभावकीप्राप्तिहोवै है याद्वितीयपक्षका परित्यागकरिकै आत्माकेज्ञानतैंसर्वात्मभावकीप्राप्तिहोवै है यातृतीयपक्षकूंअंगीका रकरिकै तथाआत्माब्रह्मकेअभेदकूंअंगीकारकरिकै ताप्रश्नकेउत्तरकूं कहतेभये ॥ अब ताउत्तरकूंनिरूपणकरैहैं ॥ हेअधिकारीब्राह्मणो ॥ अज्ञानकरिकै तथाअन्यकिसीपदार्थकेज्ञानकरिकै सोब्रह्म सर्वात्मभावकूंनहींप्राप्तभया॥ किंतु ब्रह्मशब्दका तथाआत्मशब्दका अर्थ जोआ

॥ ३२

पणास्वरूपहै॥तिसकेज्ञानकरिकैब्रह्म सर्वात्मभावकूंप्राप्तभयाहै ॥ यातैं हेब्राह्मणो॥जैसे आत्माकेज्ञानतैं ब्रह्म सर्वात्मभावकूंप्राप्तभयाहै॥तैसे सर्वात्मभावकीप्राप्तिवासतै अन्यअधिकारीजनोंनैंभी आत्माकाज्ञानहीं संपादनकरणा॥शंका॥हे भगवन्॥ब्रह्मकेज्ञानतैंविनाकेवलआत्माके ज्ञानमात्रतैं सर्वात्मभावकीप्राप्तिसंभवैनहीं॥समाधान॥हेब्राह्मणो॥सोब्रह्म किसीप्राणीकेआत्मातैंभिन्ननहीं॥किंतु सर्वप्राणियोंकाआत्मारूप ब्रह्महै॥यातैं आत्माकाजोज्ञानहै सोईही ब्रह्मकाज्ञानहै॥और जोब्रह्मकाज्ञान है सोईही आत्माकाज्ञानहै॥अब ब्रह्मके तथाआत्माकेअभेद जनावणेवासतैं व्याकरणशास्त्रकीरितितैं ब्रह्मशब्दके तथाआत्मशब्दके अर्थकूंनिरूपणकरैहैं ॥ तहाँ देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहित तथा सर्वतैंअधिक जोअर्थहै ॥ तिसकूं ब्रह्मशब्द बोधनकरैहै ॥ तैसे देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहित तथासर्वकेअंतरव्यापक जोअर्थहै ॥तिसकूं आत्मशब्द बोधनकरैहै ॥ तहाँ देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहितब्रह्मविषे जोसर्वतैंअधिकता है॥ सो सर्वके साथअभेदरूप है ॥ अभेदतैं भिन्नकोईदूसरी ब्रह्मविषेअधिकतानहीं ॥ तैसे देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहितआत्माविषे जो सर्वकेअंतरव्यापकताहै सोभी सर्वकेसाथ अभेदरूप है॥अभेदतैंभिन्न कोईदूसरी व्यापकता आत्माविषे नहीं॥जोब्रह्मका तथा आत्माका किसीदेशकालकेसाथ तथाकिसीस्थूलसू क्ष्मपदार्थकेसाथ भेद अंगीकारकरिये ॥ तौ पूर्वउक्तब्रह्मशब्दकाअर्थ तथा आत्मशब्दकाअर्थ ब्रह्मविषे तथाआत्माविषे नहींघटैगा ॥ यातैं जैसे हस्तशब्द तथाकरशब्द एकहीअर्थकेवाचकहैं॥ तैसे ब्रह्मशब्द तथाआत्मशब्द सर्वभेदतैंरहित एकअद्वितीयचैतन्यकेबोधकहैं॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ सर्वभेदतैंरहित अद्वितीयचैतन्य ब्रह्मशब्दका तथा आत्मशब्दका अर्थहै यहआपनैंकह्या ॥ सो संभवैनहीं ॥ काहेतैं लोकविषे ब्रह्मका तथा आत्माका ॥ भेदहीप्रतीतहोवै है ॥ समाधान ॥ हे ब्राह्मणो ॥ ब्रह्मविषे जोभेदप्रतीतहोवै है ॥ सो वास्तवतैं ब्रह्मविषेभेदनहीं ॥ किंतु उपाधिकेसंबंधतैं ब्रह्मविषे भेद प्रतीतहोवैहै ॥ यातैं सोभेद मिथ्याहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसेआकाशविषे यद्यपि वास्त वतैंभेदनहींहै ॥ तथापि आकाशविषेउत्पन्नभये जेमेघविद्युत्आदिकहैं ॥ तिनमेघादिकोंनैं भेदरहितआकाशविषेभी भेदउत्पन्नकरीताहै॥ तैसे ब्रह्मविषे यद्यपि वास्तवतैंभेदनहींहै ॥ तथापि ब्रह्मतैं उत्पन्नभये जेस्थूलसूक्ष्मपदार्थहैं ॥तिनपदार्थोंनैं भेदरहितब्रह्मविषेभी भेदउत्पन्न

करीताहै ॥ याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकैदिखावै हैं ॥ जैसे भेदतैंरहितआकाशाविषे कल्पितगंधर्वनगर प्रतीतहोवैहै॥ तिसकल्पितगंधर्वनगररूप उपाधिकरिकै आकाशका प्रथमभेद प्रतीतहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर गंधर्वनगराविषेस्थित जेनानाप्रकारकेगृह हैं ॥ तिनोंकरिकै आकाशका भेद प्रतीतहोवै है ॥ तिसतैं अनंतर तिनगृहोंविषेस्थित जेअल्पगृहहैं ॥ तिनोंकरिकै आकाशकाभेद प्रतीतहोवैहै॥तिसतैंअनंतरतिनगृहों विषेस्थित जेघटादिकपदार्थहैं ॥ तिनोंकरिकै आकाशकाभेद प्रतीतहोवैहै ॥ याप्रकार उपाधिकेसंबंधतैं भेदरहितआकाशाविषे अनेकभेद प्रतीतहोवैहैं ॥ यातैं तेसंपूर्णभेदआकाशाविषेकल्पितहैं ॥ तैसे भेदरहित आनंदस्वरूपआत्माविषे प्रथम आकाशादिकपंचमहाभूतों कारिकै भेदप्रतीतहोवैहै ॥ तिसतैं अनंतर पंचमहाभूतोंविषेस्थित जे संपूर्णस्थूलसूक्ष्मशरीरहैं ॥ तिनशरीरोंकरिकै आत्माविषेभेदप्रतीत होवैहै ॥ तिसतैंअनंतर प्राण बुद्धि इंद्रियादिकोंकरिकै आत्माविषेभेद प्रतीतहोवैहै ॥ याप्रकारउपाधिकेसंबंधतैं भेदरहितआत्माविषेअने कप्रकारकाभेद प्रतीतहोवैहै ॥ यातैं तेसंपूर्णभेद आत्माविषेकल्पितहैं ॥ ताकल्पितभेद कारिकै आत्माकीवास्तवएकता निवृत्तहोवैनहीं॥ यातैं हेब्राह्मणो ॥ आत्माकातथाब्रह्मका परस्परभेदनहीं किंतु अभेदहीहै ॥ और ब्रह्मवेत्तामहात्मापुरुष ब्रह्मज्ञानकरिकै जोसर्वात्मभाव कीप्राप्ति कथनकरै हैं॥सोतिनोंकाकहणा मिथ्यानहीं किंतु यथार्थ है ॥काहेतैं समष्टिव्यष्टिउपाधिवान्ब्रह्म पूर्वपूर्वब्रह्मज्ञानकरिकैहीं सर्वात्म भावकूंप्राप्तभयाहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् जोब्रह्म सर्वत्रव्यापक है ॥ तौ आपणेव्यापकस्वरूपकूं सर्वदा काहेतैंनहींजाणता ॥ समाधान ॥ हेब्राह्मणो ॥ जैसे निद्राविषेसोयाहुआ महाराजा निद्रादोषकरिकै आपणेमहाराजपणेकूंनहींदेखता ॥ किंतु आपणेकूंदरिद्रीमानैहै ॥ तैसे अज्ञानरूपमायाकरिकै आवृत्तहुआ यहब्रह्म आपणेव्यापकस्वरूपकूंनहींदेखता ॥ किंतु आपणेकूंपरिच्छिन्नमानैहै ॥ और हेब्राह्मणो ॥जैसे भेदतैंरहितशुद्धआकाशाविषे मेघ धूम पवनादिकउपाधियां नानाप्रकारकाभेदउत्पन्नकरैहैं॥ तैसे भेदतैंरहितशुद्धआत्माविषे यहअज्ञानरूप मायाहीभेदकाकारणहै ॥ और हेब्राह्मणो जैसे रात्रिकालविषे अंधकार सूर्यकेप्रकाशकूंआच्छादनकरैहै ॥ तैसे संसारकालविषे अज्ञान रूपमाया प्रकाशस्वरूपआत्माकूं आच्छादनकरैहै ॥ और हेब्राह्मणो ॥ जैसे चारोंओरतैं महान्वनकरिकैयुक्त जो कोईकग्राम है ॥

तिसग्रामविषेरहणेहारेपुरुषकूं शत्रुराजाकीसैनाका तथासैनाकरिकैग्रामकेलूटणेका अज्ञानरहै है ॥ और कदाचित्दैवयोगतैं तिसग्रा मवासीपुरुषकूं जभी शत्रुराजाकेसैनाका तथालूटणेका दर्शनहोवै है ॥ तभी तादर्शनकरिकै वनवासीपुरुषके पूर्वअज्ञानकीनिवृत्तिहोवै है ॥ और एकवारनिवृत्तहुआ सोअज्ञान पुनःकदाचित्भी उत्पन्नहोवैनहीं ॥ तैसे याआत्मारूपब्रह्मविषे अनादिकालकाअज्ञानरहै है ॥ जब पर्यंत अधिष्ठानआत्माकासाक्षात्कार नहीं होवै है॥तबपर्यंत अज्ञानकीनिवृत्ति किसीउपायकरिकैभीहोवैनहीं॥किंतु अधिष्ठानआत्मा केसाक्षात्कारकरिकैही अज्ञानकीनिवृत्तिहोवै है॥और अधिष्ठानआत्माकेज्ञानकरिकै नाशकूंप्राप्तहुआअज्ञान पुनःकदाचित्भीउत्पन्नहोवै नहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन्॥अधिष्ठानआत्माकेज्ञानकरिकै अज्ञानकीनिवृत्ति आपनैं कथनकरी सो संभवैनहीं काहेतैं जो अज्ञान घटादिक पदार्थोंकीन्याईं भावरूपहोवै ॥ तौ ताकी ज्ञानकरिकैनिवृत्तिसंभवै ॥ परंतु सोअज्ञान भावरूपहैनहीं ॥किंतु ज्ञानकेअभावकानाम अज्ञा नहै ॥ समाधान ॥ हेब्राह्मणो ॥ ज्ञानकाअभावरूप अज्ञाननहीं ॥ काहेतैं प्रकाशस्वरूपजोआत्माहै॥सोईहीज्ञानस्वरूपहै आत्मातैंभिन्न जडबुद्धिआदिक ज्ञानरूपनहीं ॥ और सोज्ञानरूपआत्मा नित्यहै ॥ यातैं ताकाअभावमानणा संभवैनहीं ॥ शंका॥ हेभगवन् ॥ जो आ त्माहीं एकज्ञानरूपहोवै ॥ तौ सर्वलोकोंकूं अंतःकरणकीवृत्तिविषे घटज्ञानमेरेकूंउत्पन्नभयाहै पटज्ञान मेरेकूंउत्पन्नभयाहै या प्रकारकाज्ञा नव्यवहार होवै है ॥ सोव्यवहार नहींहोणाचाहिये ॥ काहेतैं तुमारेमतविषे आत्मातैंभिन्न कोईपदार्थ ज्ञानरूपहैनहीं ॥एकआत्माहीं ज्ञान रूपहै॥समाधान॥हे ब्राह्मणो जैसे लोहेकेपिंडविषे दाहकरणेकीशक्ति तथाप्रकाशकरणेकीशक्ति यद्यपि नहीं है तथापि जभीअग्निकालोहे केसाथ तादात्म्यसंबंधहोवै है॥तभी सोलोहेकापिंड दाहकरै है तथाप्रकाशकरै है याप्रकार लोक कथनकरैं हैं ॥ तैसे जड अंतःकरणविषे तथाताकीवृत्तियोंविषे यद्यपि वास्तवतैं प्रकाशपणानहीं तथापि प्रकाशस्वरूपआत्माकाजभी अंतःकरणकेसाथ तादात्म्यअध्यासहोवै है॥ तभीअंतःकरणविषे तथाताकीवृत्तियोंविषे प्रकाशताप्रतीतहोवैहै॥सो अंतःकरणविषेप्रकाशता आत्माकीहीहै॥यातैं अंतःकरणकीवृत्तियों विषे जोलोकोंकाज्ञानव्यवहारहै ॥ सो गौणहैमुख्यनहीं ॥ आत्माहीं मुख्यज्ञानरूपहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्॥ अंतःकरणादिकजडपदार्थों

विषे प्रकाशताधर्म मतहोवै ॥ तथापिआत्माकाधर्म जोकोईकप्रकाशहै ताकेअभावकानाम अज्ञानहै ॥ समाधान॥हेब्राह्मणो॥ आत्मातैं भिन्न जोज्ञानरूपप्रकाश अंगीकारकरिये॥तौ आत्माविषे तथाप्रकाशविषे जडताभावकीप्राप्तिहोवैगी॥काहेतैंजोजोभेदवालापदार्थहोवै है॥ सो विकाररूपहोवै है॥और जोजोविकाररूपहोवै है॥सोसो जडरूपहोवै है॥जैसे घटादिकपदार्थ हैं॥और जोआत्माकूं तथाताकेप्रकाशकूं जडरूपअंगीकारकरोगे ॥ तौ जोजोपदार्थ जडहोवै है ॥ सोसोपदार्थ अनात्माहींहोवै है ॥जैसे घट तथाघटगतशुक्लादिकरूप दोनोंजड हैं यातैंअनात्माहैं॥तैसे आत्मा तथाप्रकाश दोनों जडहोणेतैं अनात्मभावकूंप्राप्तहोवैंगे॥सोआत्माकी तथाप्रकाशकी अनात्मता तुमारेकूंभी अंगीकारहैनहीं ॥ यातैं आत्मातैं प्रकाश भिन्ननहीं और हेब्राह्मणो जैसे आत्मातैं प्रकाश भिन्न नहीं॥तैसे आत्मा प्रकाश दोनोंतैं आनंदभी भिन्ननहीं॥जो आत्माप्रकाशदोनोंतैं आनंद भिन्नहोवै॥तौ आत्मा प्रकाश आनंद यातीनोंविषे पूर्वउक्तरीतितैंअनात्मभावकीप्राप्ति होवैगी ॥ दृष्टांत ॥ जैसे अन्यकिसीपुरुषकाशरीर तथाशरीरविषेस्थित गौरत्वादिकधर्म तथा तिनोंकूंप्रकाशकरणेहारादीपक यातीनोंका परस्परभेदहै ॥ यातैं तिनतीनोंविषे अनात्मता अनुभवकरिकैसिद्धहै तैसे आत्मा प्रकाश आनंद यातीनोंकूं जोपरस्परभिन्न अंगीकार करोगे॥तौ तीनोंविषे अनात्मभावकीप्राप्तिहोवैगी यातैं आत्माप्रकाशदोनोंतैं आनंदभिन्ननहीं॥किंतु आत्माहीं प्रकाशस्वरूप तथाआनंद स्वरूपहै ॥ किंवा ॥ जोवादी प्रकाशरूपआत्माविषे प्रकाश धर्म मानै है ॥ तासे हम यहपूछै हैं ॥ प्रकाशरूपआत्माविषे जोप्रकाशधर्मर है है ॥ सो अंतःकरणादिकेजडपदार्थोंकेभानवासतैं है ॥ अथवा आत्माकेभानवासतैंहै॥ तहां प्रथमपक्षतो संभवैनहीं॥काहेतैं आत्मारूप प्रकाशकरिकैही अंतःकरणादिकजडपदार्थोंकाभान संभवहोइसकैहै ॥ यातैं अंतःकरणादिकोंकेप्रकाशवासतै आत्माविषे प्रकाशधर्ममान णा निष्फलहै ॥ और आत्माकेप्रकाशवासतै आत्माविषे प्रकाशधर्मकाअंगीकारहै यह दूसरापक्षभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं प्रकाशरूपआ त्माविषे जोअन्यप्रकाशकरिकैप्रकाश्यता अंगीकारकरोगे ॥ तौ आत्माविषे जडताभावकीप्राप्तिहोवैगी ॥ काहेतैं जोजोपदार्थ अन्यप्रका शकरिकै प्रकाश्यहोवै हैं ॥ सो सो पदार्थ जड होवै है॥जैसे नेत्रजन्यअंतःकरणकीवृत्तिअवच्छिन्नचैतन्यकरिकै दीपादिकपदार्थ प्रकाश्यहै॥

यातैं दीपादिकजड़हैं॥ तैसे आत्माभी जोअन्यप्रकाशकरिकै प्रकाश्यहोवैगा॥ तौ दीपादिकोंकीन्याईं जडहीहोवैगा॥सोआत्माकीजडता तुमारेकूंभीअंगीकारनहीं॥यातैं आपणेतैंभिन्नप्रकाशकरिकै आत्मा प्रकाश्यनहीं ॥किंवा ॥ प्रकाशस्वरूपआत्मा जिसअन्यप्रकाशकरिकै प्रकाश्यहै॥सोप्रकाशभी किसीअन्यप्रकाशकरिकै प्रकाश्यहै अथवानहीं॥जोकहो सोअन्यप्रकाश किसीअन्यप्रकाशकरिकै प्रकाश्यनहीं किंतु स्वप्रकाशहै ॥ तौ प्रथमआत्मरूपप्रकाशकूं स्वप्रकाशमानणेविषे कौनअपराध है॥ आत्मारूपप्रकाशकूंछोडिकै द्वितीयप्रकाशकूं स्वप्रकाशमानणेविषे केवलव्यर्थही तुमारापर्यासहै॥ और जोकहो सोदूसराप्रकाशभी किसीतिसरेप्रकाशकरिकै प्रकाश्यहै ॥ और सोती सराप्रकाश किसीचतुर्थ प्रकाशकरिकै प्रकाश्यहै॥तौ तुमारेकूं अनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवैगी॥यातैं प्रकाशस्वरूपआत्मा किसीअन्यप्रका शकरिकै प्रकाश्यनहीं ॥ किंतु आपणेस्वप्रकाशरूपकरिकै आत्मा आपणेकूं तथाजडअंतःकरणादिकोंकूं प्रकाशै है ॥ यातैं आत्माहीज्ञा नस्वरूपहै ॥ और तीनकालविषेनित्यहै ॥ ऐसेज्ञानस्वरूपआत्माकाअभाव किसीप्रकार संभवैनहीं ॥ यातैं ज्ञानकेअभावकानाम अज्ञा नहै यहजोपूर्व तुमोंनैं कह्याथा सोअत्यंतविरुद्धहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ आत्मा सत्यरूप तथाप्रकाशरूप नहीं ॥ किंतु शून्यरूपहै ॥ यातैं शून्यरूपआत्माविषे प्रकाशधर्मसंभवै है ॥ समाधान ॥ हे ब्राह्मणो ॥ जो आत्माकूं शून्यरूप अंगीकारकरोगे ॥ तौ जैसे असत्यनर शृंगविषे आत्मता नहीं है ॥ तैसे असत्यआत्माविषेभी आत्मता नहींरहैगी ॥ और आत्माविषे आत्मताकाअभाव तुमारेकूंभी अंगीका रनहीं ॥ यातैं आत्मा शून्यरूपनहीं ॥ किंवा ॥ आत्माकूंशून्यरूप मानिकै ताकेविषेप्रकाशधर्म अंगीकारकरणा ॥ यहभी अत्यंतविरु द्धहै ॥ काहेतैं सत्यवस्तुही अधिष्ठानहोवै है ॥ असत्यवस्तु किसीपदार्थकाअधिष्ठानहोवैनहीं ॥ जो असत्यवस्तुभी किसीका अधिष्ठान होवै ॥ तौ वंध्यापुत्रभी रूपादिकगुणोंका अधिष्ठान होणाचाहिये और वंध्यापुत्रविषे रूपादिकगुणोंकीअधिष्ठानता कोई अंगीकार करैनहीं ॥ यातैं सर्वकाआधिष्ठानआत्मा शून्यरूपनहीं ॥ किंवा ॥ जो आत्मानरशृंगकीन्याईं असत्यहोवै ॥ तौ जैसे नरशृंगकी अस्ति रूपकरिकैप्रतीति किसीभीप्राणीकूं होतीनहीं तैसे आत्माकीभी अस्तिरूपकरिकैप्रतीति नहींहोणीचाहिये ॥ और सर्वप्राणियोंकूं अहं

अस्मि याप्रकार अस्तिरूपकरिकै आत्माकीप्रतीतिहोवै है ॥ यातैं नरशृंगकीन्याईं आत्मा असत्यनहीं ॥ किंतु सर्वदासत्यरूप है॥तास त्यस्वरूपआत्माकाअभाव कदाचित्संभवैनहीं॥ यातैं ज्ञानकाअभावरूप अज्ञाननहीं ॥किंतु सोअज्ञान भावरूपहै ॥ ताभावरूपअज्ञान कीनिवृत्ति ब्रह्मविद्या करिकैसंभवै है ॥ अब ताब्रह्मविद्याकेस्वरूपकूँ निरूपणकरै हैं॥हेब्राह्मणो॥सर्वभेदतैंरहित तथास्वप्रकाश तथासत्य स्वरूप तथा आनंदस्वरूप जो यहआत्माहै ॥ तिसकूंविषयकरणेहारीतथामहावाक्यतैंउत्पन्नभयी जोचैतन्यकेआभासंयुक्तअंतःकरणकी वृत्ति ताकानाम ब्रह्मविद्याहै ॥ याप्रकारकीब्रह्मविद्या जबपर्यंत नहींउत्पन्नभई ॥ तबपर्यंत जीवोंकेअज्ञानकीनिवृत्ति होवैनहीं ॥ और जब पर्यंत अज्ञानकीनिवृत्तिनहींहोती ॥ तबपर्यंत जन्ममरणरूपसंसारकीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ यातैं जन्ममरणरूपसंसारकीनिवृत्तिवासतै ब्रह्मवि द्याका अवश्यसंपादनकरणा ॥ और हेब्राह्मणो ॥ यद्यपि सत्‌चित्‌आनंदस्वरूपब्रह्म सर्वजीवोंका आत्मास्वरूपहै ॥ तथापि ब्रह्मविद्यातैं विना अज्ञानकरिकैआवृत्तहुआ यहब्रह्म जन्ममरणरूपसंसारतैं जीवोंकीरक्षाकरैनहीं ॥ किंतु ब्रह्मविद्याकरिकै अज्ञानकेनिवृत्तहुएतैंअनंतर आवरणतैंरहितहुआ तथाअनुभवकाविषयहुआ ब्रह्म जन्ममरणरूपसंसारतैंजीवोंकीरक्षाकरैहै॥दृष्टांत॥जैसे गृहविषेदाव्याहुआधनजबपर्यंत गृहीपुरुषकरिकै अज्ञातरहैहै॥तबपर्यंत तागृहीपुरुषकीदरिद्रताकूं निवृत्तकरै नहीं॥और सोईहीधन जभी गृहीपुरुषकरिकैज्ञातहोवैहैतभी तागृहीपुरुषकीदरिद्रताकूंनिवृत्तकरै है ॥ तैसे सर्वजीवोंकेहृदयदेशविषेस्थित यहआनंदस्वरूपआत्मा जबपर्यंत जीवोंकरिकैअज्ञातहै ॥ तबपर्यंत जन्ममरणरूपसंसारतैं जीवोंकीरक्षाकरैनहीं ॥ और जभीयहआनंदस्वरूपआत्मा ब्रह्मविद्याकरिकैज्ञातहोवै है ॥ तभी जन्ममरण रूपसंसारतैं जीवोंकीरक्षाकरै है॥यातैं जन्ममरणरूपसंसारकीनिवृत्तिवासतै तथापरमआनंदकीप्राप्तिवासतै अधिकारीजनोंनैं ब्रह्मविद्या अव श्यसंपादनकरणी ॥ आर हेब्राह्मणो ॥ जोआत्मारूपब्रह्म अपरोक्षज्ञानकाविषयहुआ जन्ममरणरूपसंसारतैं जीवोंकीरक्षाकरै है ॥ सोईहीं ब्रह्म समष्टिकारणअज्ञानरूपउपाधिकरिकैयुक्तहुआ ईश्वरभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ और सोईहीब्रह्म समष्टिसूक्ष्मरूपउपाधिकरिकैयुक्तहुआ हिरण्यगर्भभावकूंप्राप्तहोवै है॥ और सोमायाविशिष्टईश्वर तथाहिरण्यगर्भ जीवोंकीन्याईं गुरुकेउपदेशतैं ब्रह्मज्ञानकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु

आपहीस्वतंत्र वेदांतकेअर्थकूंविचारकरिकै ब्रह्मज्ञानकूंप्राप्तहोवै है ॥ तहाँ मायाविशिष्टईश्वरविषे तथाहिरण्यगर्भविषे इतनीविशेषता है ॥ ईश्वरकाउपाधि जोकारणअज्ञान है ॥ सो अहंअज्ञः याप्रकार अहंकारविषे आरूढहुआ आवरणरूपव्यामोहकूं उत्पन्नकरै है ॥ अहंकारविषेआरूढहुएतैंविना केवलअज्ञान आवरणरूपव्यामोहकूं उत्पन्नकरै नहीं ॥ सोअहंकार परमेश्वरविषे नहीं ॥ यातैं सर्वज्ञ परमे श्वरकूं आवरणतैंरहित सर्वदा वेदांतकेअर्थकाअनुसंधानरहै है ॥ और समष्टिसूक्ष्मरूपकार्य उपाधिवालाजोहिरण्यगर्भ है ॥ तिसविषे अहं काररहै है ॥ यातैं सो हिरण्यगर्भ किंचित्‌आवरणकूंअनुभवकरिकैही वेदांतकेअर्थकाअनुसंधानकरै है ॥ इतनीविलक्षणता यद्यपि ईश्वर विषे तथाहिरण्यगर्भविषे है ॥ तथापि गुरुकेउपदेशकी दोनोंकूंअपेक्षानहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे अग्नि जल वायु वृक्ष अंडजादिक चारिप्र कारकेप्राणी यहसंपूर्ण भय व्यथा शब्द नोदना द्वारा जीवोंकूंनिद्रातैंजाग्रत्‌करैं हैं ॥ तिनअग्निजलादिकोंतैंरहित जोकोईकदेश है ॥ तिस देशविषेशयनकरिकै नानाप्रकारकेस्वप्नोंकूंदेखताहुआ तथागाढसुषुप्तिकूं प्राप्तहोइकै सर्वज्ञानतैंरहितहुआ कोईपुरुष आपही निद्रातैंजाग्रत् होवै है॥तैसे समष्टिकारणअज्ञानरूपउपाधिविषेस्थितहुआब्रह्म तथासमष्टिसूक्ष्मरूपउपाधिविषेस्थितहुआब्रह्मगुरुकेउपदेशतोंविना आपही वेदांतकेअर्थकाविचारकरिकै आपणेअद्वितीयस्वरूपकूंप्राप्तहोवै है ॥ यातैं मायाविशिष्टपरमेश्वरविषे तथाहिरण्यगर्भविषे गुरुकेउपदेशकी अपेक्षानहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ मायाविशिष्टपरमेश्वरकूं तथाहिरण्यगर्भकूं गुरुकेउपदेशतैंविनाहीं ब्रह्मज्ञानकीप्राप्ति होवै है ॥ यहजो पूर्वआपनैंकह्या सो यद्यपिसंभवै है ॥ तथापि परमेश्वरविषे तथाहिरण्यगर्भविषे जगत्‌केउत्पत्तिस्थितिलयकीकारणता संभवैनहीं ॥ काहेतैं परमेश्वरविषे जगत्‌केउत्पत्तिकाअनुकूल कोईव्यापार है नहीं ॥ और लोकविषे व्यापारवालेहीकुलालादिक घटादिकोंके कारणहोवैं हैं ॥ व्यापारतैंरहित कोईकारणदेख्यानहीं ॥ समाधान ॥ हे ब्राह्मणो ॥ शुद्धचैतन्यकूं जोहम जगत्‌काकारणअंगीकारकरैं ॥ तौ यहतुमारापूर्व पक्ष संभवै ॥ सो शुद्धब्रह्मकूं जगत्‌काकारण हमभी अंगीकारकरतेनहीं ॥ किंतु मायाविशिष्टईश्वरकूं जगत्‌काकारण हम अंगीकारकरैं हैं ॥ यातैं जैसे स्वप्नअवस्थाकूं तथागाढसुषुप्तिकूं प्राप्तभयाजोव्यष्टिउपाधिवालाजीव है ॥ तिसविषे स्वप्नपदार्थोंकेउत्पत्तिकाबीज रूप

अज्ञानकाअनुभव तथाआपणीसमीपतामात्रकरिकैप्राणोंकाधारणरूपकर्म विद्यमान है ॥ तैसे मायाविशिष्टपरमेश्वरविषे तथासमष्टिसूक्ष्म उपाधिवालेहिरण्यगर्भविषे जगत्केउत्पत्तिकाअनुकूलव्यापार संभवै है ॥ और हे ब्राह्मणो ॥ जैसे स्वप्नअवस्थाकूं तथासुषुप्तिवस्थाकूं प्राप्तभयाजोजीवहै॥तिसकूं जभीव्यष्टिकारणरूपउपाधितैं तथाव्यष्टिसूक्ष्मरूपउपाधितैं भिन्नकरिये॥ तभी ताजीवकेनिर्गुणस्वरूपविषेकिंचि त्मात्रभी कर्मसंभवैनहीं॥ तैसे समष्टिकारणअज्ञानरूपउपाधिवालेईश्वरकूं तथासमष्टिसूक्ष्मरूपउपाधिवालेहिरण्यगर्भकूं जभी समष्टिकारण अज्ञानतैं तथासमष्टिसूक्ष्मरूपउपाधितैंभिन्नकरिये ॥ तौ ताकेनिर्गुणस्वरूपविषे किंचित्भी कर्मसंभवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् जो ब्रह्म वास्तवतैंनिर्गुण है॥तौ ब्रह्मविद्याकूंआपणेविषे किसवासतैंधारणकरै है॥समाधान॥हेब्राह्मणो॥ जैसे व्यष्टिशरीरविषे वास्तवतैंअकर्ताअभो क्तापुरुषका जोनिद्रातैंजागरणहोवै है॥सोआपणेभोगवासतैनहीं किंतु अंतःकरणकेधर्म स्थूलभोगोंकेवासतैहोवै है॥ तैसे वास्तवतैं अकर्ता अभोक्ता परमात्मा ब्रह्मविद्याकूं जोधारणकरै है॥सो केवल जीवोंकेहितवासतै धारणकरै है॥आपणाकोईस्वार्थ परमेश्वरका है नहीं ॥शंका हेभगवन्॥जो परमेश्वरका आपणाकोईप्रयोजन नहींहोवै॥ तौ जगत्केउत्पन्नकरणेविषे परमेश्वरकीप्रवृत्ति नहींहोणी चाहिये ॥काहेतैं लोक विषे जिसजिसपुरुषकी प्रवृत्तिहोवैहै॥सो आपणेस्वार्थवासतैहीहोवैहै॥स्वार्थतैंविना चेतनजीवोंकीप्रवृत्ति होवैनहीं॥समाधान॥हेब्राह्मणो ॥ जैसे यालोकविषे ब्रह्मवेत्तागुरु आपणेस्वरूपकेसाक्षात्कारकूंप्राप्तहोइकै सर्वपदार्थोंकीकामनातैंरहितहोवै है ॥ यातैं ब्रह्मवेत्तागुरुका यद्यपि आपणाकोईस्वार्थहैनहीं॥तथापि हमसमुमुक्षुजनोंकेकल्याणवासतै उपदेशरूपकार्यविषे प्रवृत्तहोवै हैं ॥तैसे परमात्मादेव यद्यपि आपणेस्वार्थतैं रहितहै ॥तथापि जीवोंकेभोगवासतै जगत्केउत्पत्तिरूपकार्यविषे प्रवृत्तहोवै है॥शंका॥हेभगवन्॥जो सर्वजीवोंकेसुखवासतैंही परमेश्वरकीप्रवृ त्तिहोवै तौ परमेश्वर देहरूपबंधनगृहविषे जीवोंकूं किसवासतैंपावता है॥समाधान ॥ हेब्राह्मणो ॥ जैसे लोकविषे ब्रह्मवेत्तागुरु शिष्योंकेताईं नानाप्रकारकेक्लेशोंकूं देणेहारेब्रह्मचर्यादिकधर्मोंकाउपदेशकरै है॥सोब्रह्मवेत्तागुरुकाउपदेश यद्यपि प्रसिद्धतौ दुःखकाकारणप्रतीतहोवै है ॥ तथापि सोउपदेश दुःखकाकारणनहीं ॥ किंतु मुमुक्षुजनोंकेचित्तकी शुद्धिद्वारा मोक्षरूपसुखकासाधन है ॥ तैसे परमेश्वरभी अवश्यभोगणे

योग्यकर्मोंकेभोगवासतै तथासाधनसंपत्तिद्वारा ॥ मोक्षरूपसुखकीप्राप्तिवासतै जीवोंकेताईं शरीरादिकोंकीप्राप्तिकरैहै ॥और हेब्राह्मणो ॥ जैसे लोकविषे गुरुकेउपदेशकूंपालनकरतेहुएशिष्य उत्तरकालविषे परमआनंदकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ तैसे परमेश्वरनैं कथनकरेजेवेदहैं ॥ तिनोंकूं श्रद्धापूर्वकमानतेहुएजीव परमआनंदकूंप्राप्तहोवैंगे ॥ यातैं परमेश्वरकेआज्ञारूपवेदोंकूं अवश्यमान्याचाहिये ॥ शंका ॥ हे भगवन् ॥ द्वैत भानकाविरोधी जोब्रह्मविद्याहै ॥ तिसविद्याकारिकैनित्ययुक्तहुआपरमेश्वर किसप्रकार द्वैतजगत्कूंउत्पन्नकरैगा ॥ समाधान ॥ हेब्राह्मणो॥ जैसे ब्रह्मसाक्षात्कारकरिकैयुक्तब्रह्मवेत्तापुरुष निद्राविषेसोयाहुआ स्वप्नभोगकेदेणेहारेप्रारब्धकर्मकेवशतैं नानाप्रकारकेजगत्कूं तहाँ उत्प न्नकरैहै ॥ तैसे यहपरमात्मादेव ब्रह्मविद्याकरिकै आपणेस्वरूपकूंजाणताहुआभी मायाकरिकै संपूर्णभूतभौतिकप्रपंचकूंउत्पन्नकरैहै॥यहाँ ॥ इतनीविशेषताहै ॥ ब्रह्मसाक्षात्कारकरिकैयुक्तजोनिष्कामपुरुषहै ॥ सो आपणेकर्मोंकेअनुसार स्वप्नपदार्थोंकूंउत्पन्नकरैहै ॥ और मायावि शिष्टपरमात्माविषे पुण्यपापरूपकर्महैंनहीं ॥ यातैं आपणेकर्मोंकेअनुसार परमेश्वर जगत्कूंउत्पन्नकरैनहीं ॥ किंतु जीवोंकेपुण्यपापरूपक र्मोंकेअनुसार परमेश्वर जगत्कूंउत्पन्नकरैहै ॥ शंका ॥ हे भगवन् ॥ जैसे शुक्तिरूपअधिष्ठानकेज्ञानहुएतैंअनंतर कल्पितरजतकीनिवृत्तिहो वैहै ॥ तैसे मायाविशिष्टपरमात्माकूं अधिष्ठानब्रह्मकेसाक्षात्कारकरिकै कल्पितप्रपंचकीनिवृत्तिकाहेतैंनहींहोती ॥ समाधान ॥ हेब्राह्मणो जैसे स्वप्नअवस्थाविषे सो विद्वान्पुरुष स्वप्नपदार्थोंकूंदेखताहुआभी आपणेकूं तथास्वप्नपदार्थोंकूं भिन्नकरिकैनहींदेखैहै ॥ किंतु यहसं पूर्णस्वप्नपदार्थ मेरास्वरूपहैं ॥ मुझअधिष्ठानतैंभिन्न इनपदार्थोंकी किंचित्मात्रभीसत्तानहीं ॥ याप्रकार विद्वान्पुरुषकूं स्वप्नविषेअ धिष्ठानआत्माकेज्ञानहुएभी जैसे स्वप्नपदार्थोंकीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ किंतु प्रारब्धकर्मकेवशतैं तिनस्वप्नपदार्थोंकाभान विद्वान्पुरुषकूंहोवैहै तैसे आत्मासाक्षात्कारकरिकैयुक्त परमात्मादेव संपूर्णद्वैतप्रपंचकूंदेखताहुआभी आपणेस्वरूपतैंभिन्नकरिकैनहींदेखता ॥ किंतु यहसंपूर्ण जगत् मेराहीआत्माहै ॥ मेरेआत्मातैंभिन्न कोईप्रपंचहैनहीं ॥ याप्रकार परमात्माकूं अधिष्ठानब्रह्मकेसाक्षात्कारहुएभी जीवोंकेपुण्यपाप रूपकर्मोंकेवशतैं जगत्कालयहोवैनहीं ॥ किंतु मिथ्यारूपकरिकै जगत्काभानहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ दोप्रकारकाभ्रम लोकविषेहोवै है ॥

एकतौ निरुपाधिकभ्रमहोवैहै॥ और दूसरा सोपाधिकभ्रमहोवैहै ॥ तहां अधिष्ठानकेज्ञानकरिकै जाकीस्वरूपतैं निवृत्तिहोवैहै॥सो निरुपाधिकभ्रमहोवै है॥जैसे शुक्तिरूपअधिष्ठानकेज्ञानतैं कल्पितसर्पकी तथाताकेज्ञानकी स्वरूपतैंनिवृत्तिहोवैहै॥यातैं शुक्तिविषेरजतभ्रम तथारज्जुविषेसर्पभ्रम इत्यादिकसंपूर्णभ्रम निरुपाधिकभ्रमहैं॥और अधिष्ठानकेज्ञानकरिकै जाकीस्वरूपतैंनिवृत्तिनहींहोवै ॥ किंतु ताकेविषेसत्यपणा निवृत्तहोवै॥सो सोपाधिकभ्रमहोवैहै॥जैसे जपाकुसुमकेसमीपवर्ति जोस्फटिकमणिहै॥सो रक्तरूपवालीप्रतीतहोवैहै॥तहाँअधिष्ठानरूपस्फटिकमणिकेज्ञानहुएभी जबपर्यंत जपाकुसुमरूपउपाधि विद्यमानहै॥तबपयत रक्तरूपकी तथाताकीप्रतीतिकी स्वरूपतैंनिवृत्तिहोवै नहींकिंतु ताकेविषे सत्यताबुद्धिकीनिवृत्तिहोवैहै॥जपाकुसुमकेनिवृत्तहुएही रक्तताकी तथाताकेप्रतीतिकी स्वरूपतैंनिवृत्तिहोवैहै।यातैं शुक्लरूपवाली स्फटिकमणिविषे रक्तरूपकीप्रतीति सोपाधिकभ्रमहै॥तैसे प्रपंचकीजोप्रतीतिहोवैहै।सोभी सोपाधिकभ्रमहै॥यातैंब्रह्मवेत्तापुरुषकूं अधिष्ठानब्रह्मकेसाक्षात्कारहुएभी जबपर्यंत प्रारब्धकर्मरूपउपाधि निवृत्तनहींभई॥तबपर्यंत मिथ्यारूपकरिकैप्रपंचकाभान संभवैहै ॥शंका ॥हेभगवन्॥जो परमात्माएकअद्वितीयहोवै॥तौ संसारविषे कोईजीवबद्धहै और कोईजीवमुक्तहै याप्रकारकाबंधमोक्षव्यवहार नहोणाचाहियेसमाधान ॥ हेब्राह्मणो ॥ जैसे आत्मसाक्षात्कारकरिकैयुक्तविद्वान्पुरुष जभी स्वप्नअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभी तहांस्वप्नविषे अज्ञानकरीकैकल्पितअनेकजीवोंकूंदेखेहै ॥ और तिसस्वप्नअवस्थाविषे स्वप्नद्रष्टाविद्वान्पुरुषकोविदेहमोक्षतौंविनाहीं तिनस्वप्नकल्पितजीवोंविषे कोईकजीव श्रवणादिकसाधनोंकरिकै मुक्तिकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ और तिनमुक्तजीवोंतैंभिन्न दूसरेजीव बंधकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ तैसे जगत्केनिर्वाहवासतै मायाविशिष्टपरमात्माकेस्थितहुएभी इसलोकविषे कोईमुमुक्षुजन श्रवणादिकसाधनोंकरिकै मुक्तिकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ और तिनमुक्तपुरुषोंतैं भिन्न अज्ञानीजीव संसाररूपबंधकूंप्राप्तहोवैहैं॥इसप्रकार एकअद्वितीयआत्माकूंअंगीकारकरिकैभी कल्पितबंधमोक्षकीव्यवस्था संभवैहै॥ और हेब्राह्मणो ॥ जैसे आत्मज्ञानकरिकैयुक्तविद्वान्पुरुष ॥ स्वप्नविषे अनेकप्रकारकेचेतनजीवोंकूंदेखेहै ॥ तथा अनेकप्रकारकेघटादिकजडपदार्थोंकूंदेखे है ॥ और तिनस्वप्नजीवोंविषे यहजीव अभेददर्शी है यातैंमुक्त है औरयहजीव भेददर्शी है यातैंबंधायमान है ॥

यात्प्रकारसोस्वप्नद्रष्टाविद्वान्पुरुष तिनजीवोंकेबंधमोक्षकीकल्पनाकरैहै॥ परंतु सो बंध तथामोक्ष वास्तवतैंविचारकरिकैदेखियेतो स्वप्नद्रष्टाविद्वान्पुरुषविषे हैनहीं ॥ तथा स्वप्नकल्पितजीवोंविषेभी सोबंधमोक्ष वास्तवतैंहैनहीं ॥ केवल निद्रादोषकरिकै बंधमोक्षप्रतीत होवै है ॥ तैसे वास्तवतैंविचारकरिकैदेखियेतौ मायाविशिष्टपरमेश्वरविषे तथाअन्यजीवोंविषे बंध मोक्ष हैनहीं ॥ केवल अज्ञानकरिकै बंधमोक्ष प्रतीतहोवैहै॥ शंका ॥जो वास्तवतैंबंधमोक्षनहींहोवै ॥ तौ बंधकेनिवृत्तिके तथामोक्षकीप्राप्तिके साधनोंकूं प्रतिपादनकरणेहाराशास्त्रव्यर्थ होवैगा ॥ समाधान ॥ हेब्राह्मणो ॥ जसे स्वप्नविषे बहुतअज्ञानीजीव शास्त्रकेउपदेशकरिकै स्वर्गकूं तथामोक्षकूं प्राप्तहोवैहै ॥ यातैंस्वप्नविषे कल्पितअज्ञानीजीवोंकेप्रति शास्त्रकूं व्यर्थतानहीं ॥ तैसे जाग्रत्अवस्थाविषेभी शास्त्रकेउपदेशकरिकैअज्ञानीजीव स्वर्गादिकलोकोंकूं तथा मोक्षकूँ प्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं अज्ञानीजिवोंकेप्रति श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्र व्यर्थनहीं ॥ किंतु अर्थवालाहै ॥ इसप्रकार अज्ञानीजीवोंकेप्रति शास्त्रकीअर्थवेत्ताकथनकरिकै ॥ अब ब्रह्मवेत्तापुरुषकेप्रति शास्त्रकीव्यर्थताकूंदिखावैं हैं हेब्राह्मणो ॥ जैसेतिसीस्वप्नविषे स्वप्नद्रष्टाविद्वान्पुरुषकेप्रति शास्त्रकूं व्यर्थताहै ॥ तथा स्वप्नविषेकल्पनाकरे जेअन्यजीवन्मुक्तपुरुष तिनोंकेप्रतिभी शास्त्रकूंव्यर्थता है ॥ काहेतैं श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रकेउपदेशजन्यज्ञान जीवोंकेअज्ञानकीनिवृत्तिकरैहै ॥ सोअज्ञान तिनाविद्वान्पुरुषोंविषेहैनहीं ॥ यातैं तिनज्ञानीपुरुषोंकेप्रतिशास्त्रकूं व्यर्थता है ॥ तैसे जाग्रत्अवस्थाविषेभी जिनपुरुषोंकूंआत्माकासाक्षात्कारभया है तिनपुरुषोंकेप्रति तथापरमेश्वरकेप्रति श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रकीव्यर्थता हम अंगीकारकरैं हैं ॥ किंवा ॥ हेब्राह्मणो ॥ श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रविषे तभी व्यर्थताप्राप्तहोवै ॥ जभी सर्वजीवोंकेउपदेशविषे शास्त्रकी साधारणप्रवृत्तिहोवै ॥ सो सर्वजीवोंकेउपदेशविषे शास्त्रकी साधारणप्रवृत्तिहोवैनहीं ॥ किंतु अनधिकारीपुरुषोंकापरित्यागकरिकै अधिकारीपुरुषोंकेउपदेशविषे शास्त्रकीप्रवृत्तिहोवैहै ॥ जैसे वैश्यस्तोमनामायज्ञकाअधिकारी वैश्यहीहोवै है ॥ ब्राह्मण तथाक्षत्रिय ताकेअधिकारीहोवैनहीं ॥ यातैं सोवैश्यस्तोमनामायज्ञ ब्राह्मणकीअपेक्षाकरिकै तथाक्षत्रियकीअपेक्षाकरिकै व्यर्थहै ॥ और तिनवैश्योंविषेभी जोवैश्य फलकीकामनावालाहोवैहै॥तथा स्त्रीधनादिकपदार्थोंकरिकैयुक्तहोवैहै॥तथा पापादिकदोषोंतैंरहितहोवैहै॥

याप्रकारकेवैश्यकीअपेक्षाकरिकेही सोवैश्यस्तोमनामायज्ञ सफलहोवै है ॥ फलकामनादिकविशेषणोंतैंरहित वैश्यकीभीअपेक्षाकरिकेसोवै
श्यस्तोमनामायज्ञ निष्फलहीहै ॥ इसप्रकार बृहस्पतिसवनामायज्ञाविषे ब्राह्मणकाहीअधिकारहै ॥ क्षत्रियवैश्यका ताकेविषेअधिकार है
नहीं ॥ यातैं क्षत्रियवैश्यकीअपेक्षाकरिकै सोबृहस्पतिसवनामायज्ञ निष्फल है ॥ और तिनब्राह्मणोंविषेभी जोब्राह्मण फलकीकामनावाल्ल
होवैहै ॥ तथा स्त्रीधनादिकपदार्थोंकरिकै युक्तहोवैहै ॥ तथा पापादिकदोषोंतैंरहितहोवै है॥ याप्रकारकेब्राह्मणकीअपेक्षाकरिकेही सोबृह
स्पतिसवनामायज्ञ सफलहै ॥ फलकामनादिकविशेषणोंतैंरहित अन्यब्राह्मणकीभीअपेक्षाकरिकै सोबृहस्पतिसवनामायज्ञ निष्फलही है ॥
इसप्रकार राजसूयनामायज्ञविषे क्षत्रियकाहीअधिकारहै ब्राह्मणवैश्यका तिसविषेअधिकारनहीं ॥यातैं ब्राह्मणवैश्यकीअपेक्षाकरिकै ॥ राज
सूयनामायज्ञ व्यर्थहै ॥ तिनक्षात्रियोंविषेभी जोक्षत्रिय फलकीकामनावालाहोवैहै ॥ तथा स्त्रीधनादिकपदार्थोंकरिकैयुक्तहोवै है ॥ तथा
पापादिकदोषोंतैंरहितहोवैहै ॥ याप्रकारकेक्षत्रियकीअपेक्षाकरिकैही सोराजसूयनामायज्ञ सफल है ॥ फलकामनादिकविशेषणोंतैंरहित
क्षत्रियकीभीअपेक्षाकरिकै सोराजसूयनामायज्ञ व्यर्थहीहै ॥ ऐसे दूसरेभीयज्ञादिककर्म अधिकारीपुरुषोंकेप्रति सार्थक हैं ॥ और अनधि
कारीपुरुषोंकेप्रति निरर्थकहैं ॥ तैसे मुक्तिकूंप्रतिपादनकरणेहारा वेदांतशास्त्रभी सर्वजीवोंकेप्रति सार्थकनहीं ॥ किंतु आत्मज्ञानतैंरहित
विवेकादिकसाधनचतुष्टयसंपन्न मुमुक्षुजनोंविषेही सार्थकहै ॥ यातैंहेब्राह्मणो ॥ जैसे समष्टिकारणअज्ञानरूपउपाधिवालापरमेश्वर तथासम
ष्टिसूक्ष्मरूपउपाधिवालाहिरण्यगर्भ ब्रह्मविद्याकरिकैहीं सर्वात्मभावकूंप्राप्तभया है ॥ तैसे समष्टिस्थूलउपाधिवालाविराट्भगवान्तथास्वा
यंभूमनुआदिकभी ब्रह्मविद्याकरिकैहीं सर्वात्मभावकूंप्राप्तभये हैं तैसे इदानींकालविषेभी केईकमहात्मापुरुष ब्रह्मविद्याकरिकैही सर्वात्म
भावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे आगेभी केईकमहात्मापुरुष ब्रह्मविद्याकरिकैही सर्वात्मभावकूंप्राप्तहोवैंगे ॥ याप्रकार ब्रह्मविद्याकेसर्वात्मभावरू
पफलकीसमानताकूंकहिकरिकै ॥ अब ब्रह्मविद्याकेउत्पत्तिविषे किंचित्विलक्षणताकूंदिखावैं हैं॥ हेब्राह्मणो॥जैसे पक्षियोंविषे आकाशकेच
चलणेकीजोचातुर्यताहै॥तथा मत्स्योंविषेजलकेचलणेकीजोचातुर्यताहै सोचातुर्यता किसीयत्नकरिकैसाध्यहोवैनहींकिंतु जन्मतैंहीतिनोंविषे

सोचातुर्यताहै॥तैसे विराट्भगवान्विषे तथाकपिलमुनिविषे तथासनत्कुमारादिकोंविषे अदृष्टादिकआगंतुकारणोंतैंविनाहीं ब्रह्मविद्याउत्प
न्नहोवै है॥ और वाल्मीकि तथावामदेवादिकोंविषेतो देशकालादिकनिमित्तकरिकै फलदेणेकूंसन्मुखभयेजे अनंतजन्मकेपुण्यकर्म॥ तिनपु
ण्यकर्मादिकआगंतुकानिमित्तकरिकै ब्रह्मविद्या उत्पन्नहोवै है ॥ दृष्टांत ॥ जैसे यौवनकालविषे पुरुषोंकूं पूर्वलेपुण्यकर्मकेवशतैं यश धन
पुत्रादिकसुख प्राप्तहोवै हैं ॥ तैसे वामदेवादिकोंकूं पूर्वलेपुण्यकर्मकेवशतैं ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिहोवै है ॥ और हेब्राह्मणो ॥ जैसे नेत्रोंकरिकै
सर्वजनोंकूं रूपकाज्ञानहो है ॥ तैसे गुरुउपदिष्टशास्त्रकरिकै संपूर्णअधिकारियोंकूं ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिहोवै है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ पूर्वआ
पनैं विराटादिकोंविषे स्वभावतैंहीब्रह्मविद्याकीउत्पत्ति कथनकरी ॥ और अभी संपूर्णब्रह्मविद्याकेप्रति शास्त्रकूं कारणता कथन करी ॥
यातैं पूर्वउत्तरग्रंथका विरोधहोवै है ॥ समाधान ॥ हेब्राह्मणो ॥ विराटादिकोंविषे स्वभावतैंहींब्रह्मविद्याकीउत्पत्तिहोवै है ॥और वामदेवा
दिकोंविषे पूर्वलेपुण्यकर्मकेप्रभावतैं ब्रह्मविद्याकीउत्पत्तिहोवै है ॥ याकहणेविषे यहतात्पर्य है ॥ जैसे अस्मदादिकजीवोंकूं ब्रह्मचर्यादिकसा
धनपूर्वक ॥ गुरुकेसमीपनिवासकरणेतैं ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिहोवै है ॥ तैसे विराट्भगवान् तथाकपिलमुनिआदिकोंविषे यद्यपि ब्रह्मविद्याकी
उत्पत्तिहोवैनहीं ॥ तथापि ब्रह्मविद्याकीउत्पत्तितैंपूर्व विराटादिकोंविषे तथावामदेवादिकोंविषे श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रकीतौ अवश्यअपेक्षार
है है॥शास्त्रकेचिंतनतैंविना विराटादिकोंविषेभी ब्रह्मविद्या उत्पन्नहोवै नहीं॥यातैं विराटादिकोंकेब्रह्मविद्याविषेभी शास्त्रकूं कारणताहै ॥
दृष्टांत ॥ जैसे आकाशविषेगमनकरणेमैं यद्यपि पक्षी अन्याकिसीसाधनकीअपेक्षाकरैनहीं ॥ तथापि पंखोंकीअपेक्षाकरै है ॥ तैसे विराटा
दिकमहान्पुरुष ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिविषे यद्यपि अध्ययनादिकोंकीअपेक्षाकरैनहीं॥तथापि ब्रह्मविद्याकीउत्पत्तितैंपूर्व श्रुतिरूपशास्त्रकीअपे
क्षाकरै हैं ॥ यातैं पूर्वउत्तरग्रंथकाविरोधनहीं॥और हेब्राह्मणो॥विराट्भगवान् कपिलमुनिआदिक स्वभावतैंब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ और
वामदेववाल्मीक्यादिक पूर्वपुण्यकर्मकेप्रभावतैं ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ और गुरुउपदिष्टशास्त्रकरिकै सर्वअधिकारीजन ब्रह्मविद्याकूंप्राप्त
होवैहैं॥यातीनोंपक्षोंविषे जैसेशास्त्रकूं ब्रह्मविद्याकेप्रति कारणताहै॥तैसे अद्वितीयब्रह्मविषे शास्त्रकेतात्पर्यकानिर्णयरूपजोश्रवणहै॥तिसकूं

भीसंपूर्णब्रह्मविद्याकेप्रति कारणता है॥दृष्टांत॥जैसे क्षुधावान्पुरुषकेतृप्तिविषे भोजनहीं कारणहोवै है ॥ भोजनतैंविना किसीकीतृप्तिहोवै नहीं ॥ तैसे श्रवणतैंविना किसीकूंभी ब्रह्मविद्या प्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु संपूर्णविराट्भगवान्आदिकोंकूं श्रवणतैंहीं ब्रह्मविद्या प्राप्तहोवै है॥ अब ब्रह्मविद्याकेस्वरूपकूंदिखावै हैं ॥ हेब्राह्मणो ॥ ब्रह्मशब्दतैं तथाआत्मशब्दतैं तथाब्रह्मशब्दआत्मशब्दजन्यवृत्तिरूपज्ञानतैं रहित जो ब्रह्मशब्दका तथाआत्मशब्दका सर्वतैंअधिक तथासर्वकेअंतरव्यापकरूप अर्थ है ॥ सो मैंहूं ॥ याप्रकारकेअभेदज्ञानकूं बुद्धिमान्पुरुष ब्रह्मविद्याकहैं हैं ॥ और हेब्राह्मणो ॥याप्रकारकीब्रह्मविद्या जभी उत्पन्नहोवै है॥तभी सर्वात्मभावरूपफलकीप्राप्तिविषे ब्राह्मणत्वादिकउत्तमजातिकीअपेक्षाकरैनहीं ॥ किंतु इसब्रह्मविद्याकरिकै जैसे ब्रह्म सर्वात्मभावकूंप्राप्तभया है ॥ तैसे दूसराभीजोकोईमनुष्य तथामुनि तथा देवता तथादानव श्रवणादिकसाधनोंकरिकै ब्रह्मविद्याकूंसंपादनकरैगा ॥ सो निश्चयकरिकै सर्वात्मभावकूंप्राप्तहोवैगा ॥ और हेब्राह्मणो ॥ मैंब्रह्महूं याप्रकारकेअभेदज्ञानकरिकै अनेकब्राह्मण तथामुनि तथाअनेकअसुर सर्वात्मरूपब्रह्मकूंप्राप्तभये हैं यहब्रह्मविद्याकाफल हमसर्व ब्रह्मवेत्ताब्राह्मणोंकूं परोक्षनहीं ॥ किंतु ब्रह्मविद्याप्राप्तिकेउत्तरक्षणविषे यह फल हमसर्वब्राह्मणोंकेअनुभवकरिकैसिद्ध है ॥ और हेब्राह्मणो ॥ हमसर्वअधिकारीजनोंकेमध्यविषे एकवामदेवनामामुनिहोताभया ॥ और सोवामदेवनामामुनि माताकेगर्भविषेस्थितहोइकै हमसर्वअधिकारियोंऊपरकृपाकरिकै ब्रह्मविद्याकेफलविषे हमारेविश्वासकरावणेवासतैं याप्रकारकेवचनोंकूंकहताभया ॥ वामदेवउवाच ॥ हेअधिकारिब्राह्मणो ॥ माताकेगर्भविषे ब्रह्मविद्याकरिकै हमारेकूं सर्वात्मभावकीप्राप्तिभई है ॥ यातैं सर्वात्मभावकीप्राप्तिरूप ब्रह्मविद्याकेफलविषे तुमारे विश्वासकरावणेवासतै तुमारेप्रति हम वचनोंकूंकहैं हैं ॥ तिनवचनोंकूं सावधानहोइके तुम श्रवणकरो ॥ हेअधिकारीजनो ॥ तुमारीदृष्टिकरिकै तुमारेमध्यविषे कोईकवामदेवनामामैं पूर्वशरीरकापरित्यागकरिकै इदानींकालविषे माताकेगर्भविषेनिवासकरोंहूं ॥ और आपणीदृष्टि करिकैतौ मैंसर्वात्मारूपहूं ॥ और हेअधिकारिब्राह्मणो ॥ पूर्वजन्मविषे हमारेकूं तथातुमसंपूर्णअधिकारियोंकूं सनकादिकमुनियोंनैं समानहीं ब्रह्मविद्याकाउपदेशकऱ्याथा ॥ परंतु तिसकालविषे हमसंपूर्णअधिकारिजन विषयोंविषेआसक्तथे ॥ यातैं हृदयदेशविषेस्थितआत्माकूंभी

हम नहींजाणतेभये ॥ दृष्टांत ॥ जैसे जन्मकेअंध जेपुरुषहैं ॥ ते आपणेहस्तविषेस्थित अत्यंतप्रकाशमानमणियोंकूंभी देखतेनहीं ॥ तैसे विषयोंविषेआसक्तिरूपदोषकेवशतैं हृदयदेशविषेस्थितआत्माकूंभी हम नहींदेखतेभये ॥ और हेअधिकारीजनो ॥ ताविषयआसक्तिरूप प्रतिबंधकेवशतैं पूर्वजन्मविषे हमारेकूं आत्माकासाक्षात्कारभयानहीं ॥ याकारणतैंहीं इदानींकालविषे हमारेकूं शरीररूप बंधनकी प्राप्ति भई है ॥ यातैं हेअधिकारीब्राह्मणो ॥ जैसे हमारेकूंशरीररूपबंधनकीप्राप्तिभईहै ॥ तैसे तुमारेकूं पुनः शरीररूपबंधनकीप्राप्ति जैसे नहीं होवै ॥ ऐसाकोईउपाय तुमकरो ॥ सोउपाय आत्मज्ञानतैंविना दूसराकोई हैनहीं ॥ यातैं आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासतै तुमसंपूर्णअधिकारी यत्नकरो ॥ और हेअधिकारीब्राह्मणो ॥ ब्रह्मविद्याकरिकै सर्वात्मभावकीप्राप्तिरूपफलका अनुभव हमनैं गर्भविषेअभीकऱ्या है ॥ यातैं ब्रह्मविद्याकेफलविषे तुमोनैं संदेहनहींकरणा ॥ और हेब्राह्मणो ॥ सत्ययुगविषेही ब्रह्मविद्याकरिकै सर्वात्मभावकीप्राप्तिहोवै है ॥ कलियुगादिकोंविषे होवैनहीं ॥ याप्रकारकासंदेहभी तुमोनैं नहींकरणा ॥ काहेतैं ब्रह्मविद्याकेउत्पन्नहुएचारोंयुगोंविषे सर्वात्मभावकी प्राप्तिहोवै है ॥ यातैं हेअधिकारीब्राह्मणो ॥ तुमारेविश्वासकरावणेवासतै सर्वात्मभावकी प्राप्तिरूप ब्रह्मविद्याकाफल हम तुमारेप्रति कथन करैहैं ॥ तुम श्रवणकरो ॥ हेअधिकारीब्राह्मणो ॥ मनुष्यादिकसृष्टिकाकारणजोस्वायंभूमनुहै सोभी मैंहींहोताभया ॥ और सर्वजगतूंप्रकाशकरणेहारा जोसूर्यभगवान्है सोभी मैंहींहोताभया ॥और कक्षीवान्नामाजोमुनिहै सोभी मैंहींहोताभया ॥ और लोकविषे प्रसिद्ध जोसूर्यादिकप्रकाश है तिनोंकेभीप्रकाशकरणेहारा जोचैतन्यरूपप्रकाश है सोभीमैंहींहूं ॥ इतनैंकरिकैवामदेवनैं आपणेविषेईश्वरभाव दिखाया ॥ अब आपणेविषेजीवभावकूंदिखावै हैं ॥ हेअधिकारीब्राह्मणो ॥ चतुर्दशलोकविषेस्थित जितनेकशरीर हैं तिनोंकूं मैंहीं प्राप्तहोवोंहूंतात्पर्ययह वास्तवतैंजन्ममरणतैं रहितहुआभीमैं शरीरादिकउपाधिकेजन्ममरणतैं आपणेविषेजन्ममरणमानोंहूं और हेअधिकारीब्राह्मणो ॥ सर्वत्र पसारिरहीहैदृष्टिजिसकी ऐसाजोभृगुकापुत्रशुक्रहै सोभीमैंहींहूं ॥ और हेब्राह्मणो ॥ मैंहीं परशुरामअवतार कूधारणकरिकै कश्यपकेताईं धनकरिकैपूर्ण संपूर्णपृथिवीकूंदेताभयाहूं ॥ और हेअधिकारीब्राह्मणो ॥ पुण्यपापरूपकर्मकरिकैयुक्तजे

जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज यहचारिप्रकारकेजीवहैं ॥ तिनजीवोंकेताईं मेघरूपहोइके मैंहीं वृष्टिदेवोंहूं ॥ कैसीहैसोवृष्टि ॥ पुण्यपाप काफलजोउँचनीचशरीरहैं तिनोंकाकारणहै ॥ याकारणतैंहीं सोवृष्टि जीवोंके सुखका तथादुःखका कारणहै ॥ और हेअधिकारीब्राह्मणो ॥ तीनलोकविषेस्थितजलोंकूं सूर्यरूपहोइके मैंहीं आकर्षणकरोंहूं॥ कैसाहैसोसूर्यभगवान् ॥ वैश्वानरादिकरूपकारिकै सर्वकेअंतर तथाबाहर विचरणेहाराहै ॥ और हेअधिकारीब्राह्मणो ॥ जैसे क्षुधाकारिकैआतुरहुआबालक माताकेशरणकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसेदैत्योंकारिकै अभिभवकूं प्राप्तहुए इंद्रादिकदेवता मेरेहीशरणकूंप्राप्तहोवैहैं॥ और हेअधिकारीब्राह्मणो ॥ तारकासुरकापक्षपातीजोशंबरनामादुरात्माअसुरहै॥तिसनें मायाकारिकैरचियां जेननानवे ९९ पुरीहैं ॥ तेपुरियाँकैसियाहैं ॥ नित्यहीं देवतावोंकेभयकूंकरणेहारियाहैं ॥ ऐसेमायारचित ननानवेपुरि योंकूं स्वामिकार्तिकेयरूपकूंधारणकरिकै मैंहीं विनाशकरताभयाहूं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे प्रणवरूपतारकमंत्र मुमुक्षुजनोंकेहृदयकेअज्ञानकूंना शकरैहै ॥ हेब्राह्मणो ॥ याप्रकारकेवचनोंकरिकै सोवामदेवनामाऋषि सर्वात्मभावकीप्राप्तिरूप ब्रह्मविद्याकेफलकूं पूर्वहमारेप्रति कथन करताभया॥तेवामदेवकेवचन अभी हमारेस्मृतिविषेविद्यमानहै॥यातैं हेब्राह्मणो॥सर्वात्मभावभी प्राप्तिरूपफलकासाधन एकब्रह्मविद्याहीहै यातैं ताब्रह्मविद्याकूं अधिकारीपुरुषोंनें अवश्यसंपादनकरणा ॥ दध्यङ्ऋषिरुवाच ॥हेदेवराजइंद्र ॥ इसप्रकार तेसंपूर्णविद्वान्ब्राह्मण ब्रह्म आत्माकेअभेदज्ञानतैं सर्वात्मभावकीप्राप्तिरूपफलका कथनकरतेभये ॥ यातैं इदानींकालविषेभी जोकोईदेवता तथादानव तथामनुष्य ब्रह्मविद्याकूंसंपादनकरैगा ॥ तिसकूंभी अवश्य सर्वात्मभावकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और हेदेवराजइंद्र॥मैंअद्वितीयब्रह्महूं याप्रकारकीब्रह्मविद्या जिसपुरुषकूंप्राप्तभईहै ॥ तिसपुरुषकूं आपणेवशकरणेविषे तुमदेवताभी समर्थनहींहो ॥ काहेतैं तुमसर्वदेवता आपणेकूंवशकरणेविषेसमर्थ नहींहो ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे अग्निआपणेतैंभिन्न काष्ठादिकोंकूं दाहकरैहै ॥ आपणेकूं अग्निदाहकरैनहीं ॥तैसे तुमसर्वदेवता आपणेतैंभि न्नपुरुषोंके वशकरणेविषेसमर्थहो ॥ परंतु आपणेकूंवशकरणेविषे तुमदेवता समर्थनहींहो ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥यद्यपि हमदेवता आपणे आत्माकेवशकरणेविषे समर्थनहींहैं॥ तथापि हमारेतैंभिन्न जोविद्वान्पुरुषहै॥तिसकेवशकरणेविषे हमदेवता काहेतैंसमर्थनहीं॥समाधान॥

हे देवराजइंद्र ॥ ब्रह्मविद्याकरिकै विद्वान्पुरुष सर्वात्मभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ यातैं सोविद्वान्पुरुष तुमदेवतावोंतैंभिन्ननहीं ॥ किंतु तुमसर्वदे वतावोंका सोविद्वान् आत्माहै ॥ यातैं आपणेआत्मारूपविद्वान्केवशकरणेविषे तुमदेवता समर्थनहींहो ॥शंका हेभगवन् ॥आत्मा सर्व तैंअंतरहोवै है॥और यह विद्वान्पुरुष स्थूलशरीरकरिकैयुक्तहुआ बाह्यप्रतीतहोवै है॥यातैं यहविद्वान्पुरुष हमाराआत्माकिसप्रकारसंभ वैहै ॥ समाधान ॥ हे देवराजइंद्र ॥ जैसे घटरूपउपाधिकरिकैयुक्तहुआ आकाश यद्यपि सर्वत्रव्यापकनहीं है ॥तथापि घटरूपउपाधितैंवि मुक्तहुआआकाश सर्वकेहृदयदेशविषेविद्यमानहै ॥ तैसे ब्रह्मविद्याकरिकै निवृत्तहुआहैदेहाभिमानजिसका ऐसाजोविद्वान्पुरुषहै॥सो तुम सर्वदेवतावोंका आत्मासंभवै है ॥ यातैं हेदेवराजइंद्र ॥ ऐसे सर्वात्मारूपविद्वान्पुरुषकी जोतुमदेवता किंचित्मात्रप्रतिकूलताकरोगे॥तथा अनुकूलताकरोगे ॥ तौ साप्रतिकूलता तथाअनुकूलता तुमारेकूंही प्राप्तहोवैगी ॥ असंगविद्वान्पुरुषकूं साअनुकूलता तथाप्रतिकूलता स्पर्शकरैनहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे आपणेमस्तककूँ अन्यपुरुषकामस्तकमानिकैजोकोईकमूढपुरुष ताडनकरै है ॥ सोमूढपुरुष आपहीपीडा कूंप्राप्तहोवै है ॥ तैसे सर्वकाआत्मारूपजोविद्वान्है ॥ तिसकूं आपणेतैं भिन्नमानिकै जोमूढपुरुष तिसविद्वान्काताडनकरै है॥सोमूढपुरुष आपणाहींताडनकरै है ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकैदिखावैं हैं ॥हेदेवराजइंद्र ॥ सर्वप्राणीमात्रके दोरूपहोवैं हैं ॥एकतौ असंगरूप॥और दूसरा संगवान्रूप ॥ संबंधकूंसंगकहैं हैं ॥ संबंधतैंजोरहितहोवै ताकूं असंगकहैं हैं ॥ और ॥ संबंधवालाजोहोवै ताकूं संगवान्कहैं हैं ॥ तहां वास्तवतैंसंबंधरहित विद्वान्पुरुष सर्वप्राणियोंकाअसंगरूपहै ॥ और अविद्याकरिकैकल्पित जो कर्तृभोक्ताप्रमाणताहै॥सो सर्वप्रा णियोंका संगवान्रूपहै॥तहां आपणेअसंगरूपविद्वान्पुरुषविषे जोकोईमूढपुरुष किंचित्मात्रभी प्रतिकूलताकरै है॥सोप्रतिकूलता असं गविद्वान्पुरुषकूं स्पर्शकरैनहीं किंतु प्रतिकूलताकरणेहारा जोसंगवान्प्रमाताहै तिसविषेही सोप्रतिकूलता प्राप्तहोवै है ॥ दृष्टांत ॥ जैसे कोईकमूढबालक दर्पणसंबंधतैंरहित तथामंदहास्यकरिकैयुक्त आपणेमुखकूं सन्मुखदर्पणविषेस्थितमानै है ॥ और सोमूढबालक जभी दर्पणविषेस्थितमुखके प्रतिकूलताकरणेकीइच्छाकरै है ॥ तभी प्रथम आपणेग्रीवाविषेस्थितमुखकी प्रतिकूलताकरै है॥पश्चात् दर्पणविषे

स्थितमुखकी प्रतिकूलताकरै है॥ग्रीवाविषेस्थितमुखकेप्रतिकूलताविना दर्पणविषेस्थितमुखकीप्रतिकूलता॥होवैनहीं॥और तिसप्रतिकूल
ताकरिकैदर्पणविषेस्थितअसंगमुखकूं किंचित्मात्रभीदुःखकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ किंतु प्रतिकूलताकरणेहारेबालककीग्रीवाविषेस्थित जोमु
खहै तिसविषेहीं ताप्रतिकूलताजन्यदुःखहोवै है ॥ तैसे असंगविद्वान्पुरुषकी जोतुमदेवता किंचित्मात्रभीप्रतिकूलताकरोगे॥ तौ सोप्रति
कूलता असंगविद्वान्पुरुषकूं स्पर्शकरैगीनहीं ॥ किंतु कर्ताभोक्ताजोतुमदेवताहो ॥ तिनोंविषेहीं सोप्रतिकूलता प्राप्तहोवैगी॥दुःखकेजनक
जेताडनाआदिकहैं ताकूं प्रतिकूलकहैं हैं ॥ और सुखकेजनक जेपूजनादिकहैं ॥ ताकूं अनुकूलकहैं हैं॥शंका॥ हे भगवन्॥हमदेवतावों
तैंअभिन्न जोविद्वान्पुरुषहै ॥ तिसकूं दुःखकी प्राप्तिहोती नहीं ॥ और हमारेकूं दुःखकी प्राप्तिहोवैहै ॥ याकेविषे कौनकारणहै ॥ समा
धान ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ जैसे बिंबरूपशरीरकेअलंकारकरणेतैं दर्पणविषेस्थित प्रतिबिंब अलंकारवालाहोवै है ॥ और बिंबरूपशरीरकेतिर
स्कारकरणेतैं दर्पणविषेस्थित प्रतिबिंब तिरस्कारवालाहोवै है ॥ तैसे ब्रह्मरूपविद्वान्पुरुष तुमसर्वजीवोंकाबिंबरूपहै और तुमसंपूर्णजीव
ताकेप्रतिबिंबरूपहो॥यातैं जोतुमदेवतातिसविद्वान्पुरुषके सुखकूं तथादुःखकूं करोगे॥तौ सो सुख तथादुःखतुमदेवतावोंकूंहींप्राप्तहोवैगा॥
विद्वान्पुरुषकेअसंगरूपविषे सुखदुःखादिकोंकासंबंध संभवैनहीं ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ जोकोईपुरुष श्रद्धाकरिकै असंगविद्वान्कापूजन
करै है ॥ सोपूजन तिसपूजनकरणेहारेपुरुषविषेही सफलहोवै है॥विद्वान्पुरुषविषे तापूजनकासंबंधसंभवैनहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे जोकोईपुरुष
जलकरिकै तथाधूलिकरिकै सूर्यभगवान्काआच्छादनकरैहै ॥ परंतु सोजल तथाधूलि सूर्यभगवान्कूं आच्छादनकरिसकैनहीं ॥ किंतु
उलटा आच्छादनकरणेहारेपुरुषकाही आच्छादनकरै है॥तैसे विद्वान्पुरुषकेकरेहुएपूजनादिक असंगविद्वान्पुरुषकूं स्पर्शकरैनहीं किंतुकर
णेहारेपुरुषविषेही तेपूजनादिक सफलहोवै है ॥ इसप्रकार फलसहितब्रह्मविद्याकूंकहिकरिकै ॥ अब अविद्याकेस्वरूपकूं निरूपणकरै हैं ॥
हे देवराजइंद्र ॥ जेपुरुष आपणेतैं देवतावोंकूं भिन्नमानिकै तिनदेवताओंकी उपासनाकरै हैं ॥ ऐसेभेददर्शी अज्ञानीजीवरूपीपशुवोंके
तुमदेवतास्वामीहो ॥ अब अज्ञानीजीवोंकूं पशुरूपकरिकैनिरूपणकरैं हैं ॥ हे देवराजइंद्र ॥ जैसे लोकविषेप्रसिद्धगौवोंकीशाला

काष्ठकरिकै तथा मृत्तिकाकरिकै रचीजावै है ॥ तैसे अज्ञानरूपीमृत्तिका तथाकाष्ठोंकरिकै यहसंसाररूपीशाला ब्रह्मनैं उत्पन्नक
रीहै ॥ कैसीहैसोसंसाररूपीशाला ॥ भेददर्शीअज्ञानीजीवरूपगौवोंकेरहणेकास्थानहै ॥ कैसेहैंते अज्ञानीजीवरूपपशु ॥ तुमदेवतावोंके
ताईं हव्यकव्यादिकपदार्थोंकूंदेवैं हैं ॥ यातैं तेअज्ञानीजीव तुमदेवतावोंका आश्रयरूप हैं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे लोकविषे दुग्धादिकोंकूंदेणे
हारियांजेगोवाँ हैं ॥ तिनोंकूं लोक आपणाआश्रयमानैं है ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ जैसे लोकप्रसिद्ध गौवोंकीशालाविषे ताशालाकेभारकूं
धारणकरणेहारियां अनेकस्थूणाहोवैं हैं ॥ और तिनस्थूणावोंविषे एकदीर्घरज्जु बांधीहोवै है ॥ और तिसदीर्घरज्जुविषे अनेकअल्परज्जु
बांधियांहोवैं हैं ॥ और तिनअल्परज्जुवोंविषे एकएकरज्जुकेसाथ एकएकगौ बांधिहोवै है ॥ तैसे यहसंसाररूपीएकशाला है ॥ और संसा
ररूपीशालाकेभारकरिकै व्याकुल जेकामक्रोधादिकहैं ॥ ते यासंसाररूपीशालाकेस्थूणाहैं ॥ और अग्निहोत्रादिककर्म ब्राह्मणकूंकरणे
योग्यहैं इत्यादिक जेविधिवाक्यहैं ॥ तथा ब्राह्मणादिकोंकीहिंसाकरणेयोग्यनहीं इत्यादिक जेनिषेधवाक्यहैं ॥ यहदोनोंप्रकारकेवेदके
वचन एकदीर्घरज्जुहै ॥ सावेदवचनरूपीदीर्घरज्जु कामक्रोधादिरूपस्थूणावोंकेसाथ बांधीहुई है ॥ और अग्निहोत्रादिककर्मके अधिकारि
योंकूंबोधनकरणेहारे जेब्राह्मणादिकनामहैं ॥ ते अल्परज्जुकेसमानहैं ॥ और तेब्राह्मणादिकनामरूपअल्परज्जु विधिनिषेधवचनरूपदीर्घ
रज्जुविषे बांधियां हैं ॥ और तिनब्राह्मणादिकनामस्वरूप अनेकअल्परज्जुवोंविषे एकएकरज्जुकेसाथ एकएकअज्ञानीजीवरूपपशुबां
ध्याहुआहै ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ यद्यपि ब्राह्मणादिकनामरूपी रज्जुवोंविषे अनेकअज्ञानीजीवबांधेहुएहैं ॥ तथापि यज्ञदानादिककर्मोंकूं
करणेहारा जोअज्ञानीगृहस्थ है ॥ सो तुमसर्वदेवतावोंका कामधेनुसमानहै ॥ अब अज्ञानीगृहस्थविषे कामधेनुपणादिखावैहैं ॥ हेदेवसज
इंद्र ॥ अग्निहोत्रादिककर्मोंकूंकरणेहारा जोएकअज्ञानीगृहस्थहै ॥ सो तुमसर्वदेवतावोंकूंपालनकरै है ॥ तथा ॥ सर्वपितरोंकूंपालनकरैहै ॥
तथा अतिथिआदिकमनुष्योंकूं पालनकरै है ॥ तथा सर्वमुनियोंकूंपालनकरै है॥ तथा अन्यभीअनेकप्राणियोंकापालनकरै है ॥ यातैं यह
अज्ञानीगृहस्थ तुमसर्वदेवतावोंका कामधेनुगौ है ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ जैसे लोकविषे एकएककुटुंबीगृहस्थके अनेकपशुहोवै हैं ॥ तैसे

तुमदेवतावोंके अनेकपशुहैंनहीं ॥ किंतु एकहीअज्ञानीगृहस्थ कामधेनुगौकीन्याईं तुमसर्वदेवतावोंकापालनकरैहै ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ जैसे लोकविषे किसीकुटुंबीगृहस्थकेअनेकपशुहोवैं हैं ॥ और तिनपशुवोंषे जोकदाचित् एकपशुकूंभी चौर लेजावै हैं ॥ तौ तिसकुटुंबी पुरुषकूं महान्दुःखकीप्राप्तिहोवै है॥ जभी एकपशुकेजाणेकरिकैभी तिसकुटुंबीगृहस्थकूं महान्दुःखकीप्राप्तिहोवै है ॥ तभी सर्वपशुवोंकेजाणेकरिकै जोतिसकुटुंबीगृहस्थकूं दुःखकीप्राप्तिहोवै है सो कह्याजावैनहीं ॥ यातैं हेदेवराजइंद्र ॥ जैसे सर्वपशुवोंकेजाणेकरिकै ताकुटुंबीगृहस्थकूं दुःखकीप्राप्तिहोवै है ॥ तैसे तुमसर्वदेवतावोंकापशुजोअज्ञानीपुरुषहै ॥ तिसकाजभीब्रह्मविद्याकारिकै अज्ञानकानाशहोवै है ॥तभी तुमसर्वदेवतावोंकूं दुःखकीप्राप्तिहोवै ॥ और हे देवराजइंद्र ॥ जैसे लोकविषे तेकुटुंबीगृहस्थ चौरोंतेआपणेपशुवोंकीरक्षाकरणेवासतै रात्रि दिनविषेसावधानहुए तिनचौरोंकेनिवृत्तिकाउपायकरै हैं ॥ तैसे ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिवासतै जेपुरुष ब्रह्मचर्यादिकसाधनोंकूंसंपादनकरै हैं ॥ तिनपुरुषोंके ब्रह्मचर्यादिकसाधनोंकेभंगकरणेवासतै अनंतप्रकारकेउपद्रवोंकूं तुमदेवताकरोहो ॥ जीवोंकेबुद्धिकूं विपरीतकरणा यहही देवतावोंकाउपद्रवहै ॥ यातैं जोमुमुक्षुजन ब्रह्मविद्याकेप्राप्तिकी इच्छावालाहोवै ॥ सो प्रथम श्रद्धापूर्वक देवतावोंकाआराधनकरै ॥ ताआराधनकारिकै जभी देवता प्रसन्नहोवै हैं ॥ तभी अधिकारीजनोंकूं सत्बुद्धिकी प्राप्तिकरिकै ब्रह्मविद्याकेसर्व प्रतिबंधोंतैं रक्षाकरैं हैं ॥ यहवार्ता अन्यशास्त्रविषेभीकहीहै ॥ श्लोक ॥ नदेवादंडमादाय रक्षंतिपशुपालवत् ॥ यंहिरक्षितुमिच्छंतिबुद्ध्यासंयोजयंतितम् ॥ १ ॥ अर्थयह ॥ जैसे पशुवोंकेपालनकरणेहारेपुरुष हाथविषेदंडलेके सिंहादिकोंतैं पशुवोंकीरक्षाकरैं हैं ॥ तैसे देवता हाथविषेदंडलेके भक्तजनोंकीरक्षाकरैंनहीं ॥ किंतु जिसभक्तजनकेरक्षाकरणेकी देवताइच्छाकरैं हैं ॥ तिसपुरुषकूं सत्बुद्धिकीप्राप्तिकरैं हैं ॥ १ ॥ यातैं ब्रह्मविद्याकीउत्पत्तितैंपूर्व प्रतिबंधकीनिवृत्तिवासतै मुमुक्षुजनोंनैं अवश्यदेवतोंकाआराधनकरणा और जोपुरुष ब्रह्मविद्याकीप्राप्तितैंपूर्व देवतावोंकाआराधननहींकरै है ॥ तिसपुरुषकूं ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिविषे अनंतप्रकारकेविघ्न देवताकरैं हैं ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ जैसे लोकविषे पशुवोंकेहरणकरणेहारे जेअत्यंतबलवान्चौर हैं ॥ तेचौर पशुवोंवालेकुटुंबीगृहस्थोंकूं प्रियलागतेनहीं तैसे अज्ञानीजीव

॥ ४२

रूप तुमारेपशुवोंकूं ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिद्वारा हरणकरणेहारे जोविद्वान्पुरुषहैं ॥ तोविद्वान्पुरुष तुमदेवतावोंकूंप्रियलागतेनहीं ॥ यद्यपि सर्वदेवतावोंकाआत्मारूप जोविद्वान्पुरुषहै ॥ तिसविषेदेवतावोंकाद्वेषसंभवैनहीं ॥ तथापि चित्तशुद्धितैंरहितजेकर्मकेअधिकारीजीवहैं ॥ तिनोंकूंजेविद्वान् कर्मतैंरहितकरैहैं॥तिनविद्वानोंविषेही देवतावोंकाद्वेषहोवैहै ॥ यहवार्त्तागीताविषे श्रीकृष्णभगवान्नैंभी अर्ज्जुनकेप्रतिकहीहै ॥ श्लोक ॥ नबुद्धिभेदंजनयेदज्ञानांकर्मसंगिनाम् ॥अर्थयह ॥ चित्तशुद्धितैंरहित कर्मकेअधिकारीजेजीवहैं ॥तिनोंकूं विद्वान्पुरुष कर्मोंतैंनिवृत्तनहींकरै ॥ किंतु तिनोंकूं शुभकर्मोंविषेलगावै ॥ १ ॥ याभगवान्केवचनका जेविद्वान्पुरुष उल्लंघनकरैं हैं ॥ तिनोंविषेही देवतावोंकाद्वेष होवैहै ॥ यातैं हेदेवराजइंद्र॥ब्रह्मविद्याकीउत्पत्तितैंपूर्व यद्यपि तुमदेवता विघ्नकरोहो ॥ तथापि ब्रह्मविद्याकेउत्पन्नहुएतैं अनंतर ताविद्याकेसर्वात्मभावकीप्राप्तिरूपफलका प्रतिबंधकरणेविषे तुमदेवताभी समर्थ नहींहो ॥ यातैं यहविद्वान्पुरुष सर्वकाआत्मा रूपह ॥ यातैं तुमदेवतावोंकाभीआत्माहै ॥ तथा यहविद्वान्पुरुष अद्वितीयब्रह्मरूपहै ॥ यातैं तुमदेवतावोंतैंभी अधिकहै ॥ ऐसेविद्वान् पुरुषकेसमीपजाइके आत्मातैंभिन्न पुत्रादिकअनात्मपदार्थोंकूं प्रियरूपकरिकैनहींकथनकरै ॥ यहजोपूर्वकथनकऱ्याथा सो संभवैहै ॥और हेदेवराजइंद्र ॥ पुत्रादिकसर्वअनात्मपदार्थोंतैंप्रिय जोआनंदस्वरूपआत्माहै ॥ तिसकूं न जाणिकारिकै जोपुरुष मरणकूंप्राप्तहोवैहै॥ तिस अज्ञानीपुरुषका स्वरूपभूतहुआभी यह आनंदस्वरूपआत्मा ताअज्ञानीपुरुषकूं जन्ममरणकेप्रवाहतैंरक्षाकरैनहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे गुरु तथापुस्तकद्वारा वेदकेसमीपविद्यमानहुएभी जबपर्यंत यहपुरुष गुरुमुखतैं तावेदकाअध्ययननहींकरता ॥ तबपर्यंत सोनहींअध्ययनक ऱ्याहुआ वेदभगवान् ब्राह्मणकूं पवित्रकारिनहींसकता ॥ किंतु गुरुमुखतैं जान्याहुआवेदही ब्राह्मणकूं पवित्रकरैहै ॥ तैसे यह आनंदस्वरूपआत्माभी गुरुशास्त्रकेउपदेशकरिकै नहींजान्याहुआ जीवोंकूं जन्ममरणरूपसंसारतैंरक्षाकरिसकतानहीं ॥ किंतु गुरुशास्त्रकेउपदेशतैंजान्याहुआ यहआत्मा जीवोंकूं संसारतैंरक्षाकरैहै ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ गुरुशास्त्रद्वारा यज्ञादिककर्म जानेहुएभी अनुष्ठानतैंविना पुरुषोंकूं फलकीप्राप्ति करैनहीं ॥ तैसे यहविवेकादिकसाधन गुरुशास्त्रद्वाराजानेहुएभी अनुष्ठानतैंविना पुरुषोंकूं आत्मज्ञानरूपफलकीप्रा

प्तिकरतेनहीं ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ जोपुरुष आनंदस्वरूपआत्माकूंनजाणिकरिकै अश्वमेधादिकमहान्यज्ञोंकूंकरै है ॥ तिसपुपकूं ते अश्वमेधादिकयज्ञरूपीकर्म किंचित्कालपर्यंत स्वर्गविषेसुखकीप्राप्तिकरिकै पुनःक्षयकूंप्राप्तहुए तेकर्म याजीवकूं परमदुःखकीप्राप्तिकरेहै ॥ यातैं जिसपुरुषकूं नित्यआनंदकेप्राप्तिकीइच्छाहोवै ॥ सोपुरुष अन्यसर्वउपायोंकापरित्यागकरिकै आत्मज्ञानकेप्राप्तिवासतै पुरुषार्थकरै ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ जोपुरुष आत्मज्ञानकेसंपादनविषे समर्थनहींहोवै ॥ सोपुरुष उपासनाकूं तथानिष्कामकर्मोंकूं करै ॥ ताउपासनाके तथानिष्कामकर्मोंके प्रभावतैं चित्तशुद्धिद्वारा इसलोकविषे तथाब्रह्मलोकविषे ताउपासकपुरुषकूं ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिहोवैहै॥ब्रह्मविद्याकी प्राप्तिही उपासनाकामुख्यफलहै॥ अब उपासनाकेअवांतरफलकूंनिरूपणकरै हैं॥ हेदेवराजइंद्र॥यहउपासकपुरुष संसारविषेनिवासकरताहु आभी हिरण्यगर्भकेसमान ऐश्वर्यताकूंप्राप्तहोवैहै॥ तात्पर्ययह॥जैसे हिरण्यगर्भभगवान् जिसजिसपदार्थकीइच्छाकरैहै ॥ तसतिसपदार्थकूं आपणीइच्छामात्रकरिकैउत्पन्नकरै है॥तैसे यहउपासकपुरुषभी कर्मउपासनाके प्रभावतैं सर्वपदार्थोंकूं आपणीइच्छामात्रकरिकै उत्पन्नकरै है ॥ और हेदेवराजइंद्र॥जोपुरुष मैंब्रह्महूं याप्रकारकीबुद्धिकरिकै आनंदस्वरूपआत्माकूंसाक्षात्कारकरैहै॥ तिसपुरुषकूं यह संपूर्णअनात्म प्रपंच परित्यागकरणेयोग्यहै ॥ जैसे तुमदेवतावोंकूं वमनकऱ्याहुआअन्न त्यागणेयोग्यहै ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ याआनंदस्वरूपआत्माकूं नजाणिकरिकै जोपुरुष अन्यअनात्मपदार्थोंकूं जाणैहै॥तापुरुषकूं शास्त्रकेवेत्तामहात्मापुरुषअनात्मज्ञकहै हैं॥ जैसे बालाकिब्राह्मण आत्मा केवास्तवस्वरूपकूंनजाणिकरिकैप्राणकूंहींआत्माजाणताभया॥याकारणतैं सोअनात्मज्ञबालाकि श्रीकाशीविषे अजातशत्रुराजाकाशिष्य होताभया ॥ याकथाकूं तुम भलीप्रकारजाणतेहो ॥ यातैं हे देवराजइंद्र ॥ आनंदस्वरूपआत्मातैंभिन्न कोईभीअनात्मपदार्थ जानणेयोग्य नहीं ॥ अब आत्मातैंभिन्न सर्वपदार्थोंकूं अनात्मरूपकरिकैनिरूपणकरैहैं ॥हेदेवराजइंद्र॥ यास्थूलशरीरविषे अभिमानीजीवकूं नेत्रादिकइं द्रियोंकरिकै जोस्थूलपदार्थोंकीप्रतीतिहोवै है॥ ताकूं शास्त्रविषेजाग्रत्अवस्थाकहै हैं सोजाग्रत्अवस्था ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय तथा ध्याता ध्यान ध्येय इत्यादिकत्रिपुटीस्वरूप है ॥ और साक्षीचैतन्यकरिकैभास्य है यातैं दृश्यरूप है ॥ और जोजोदृश्यपदार्थहोवै है ॥ सो सो

अनात्माहींहोवैहै ॥ जैसे घटादिकपदार्थ दृश्यहैं यातैंअनात्माहैं ॥ तैसे त्रिपुटीरूपजाग्रत्प्रपंचभी दृश्यहै ॥ यातैं अनात्माहीं है॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ स्वप्नअवस्थाविषे रथादिकपदार्थोंकूंउत्पत्तिकेयोग्य देशकालादिकोंकेअभावहुएभी पूर्वपूर्ववासनावोंकरिकैविशिष्ट हुआमन अनेकप्रकारकेपदार्थोंकूं स्वप्नविषेउत्पन्नकरैहै ॥ यात ते स्वप्नकेपदार्थ मायामात्र है ॥ दृष्टांत ॥ जैसे देशकालादिकसामग्रीतैंविनाहीं आकाशविषे गंधर्वनगर प्रतीतहोवै है यातैं सोगंधर्वनगर मिथ्या है ॥ तैसे स्वप्नकेपदार्थभी मिथ्या हैं ॥ और उत्पत्ति नाशवान् हैं ॥ यातैं तेस्वप्नपदार्थभी आत्मारूपनहीं ॥ किंतु अनात्मारूपहैं ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ पुरीतत्रूपीकोटकेमध्यविषेस्थितजोहृदय है ॥ तिसहृदयविषे नाडीरूपमार्गद्वाराजाइकै सुषुप्तिअवस्थाविषे जोअज्ञानकरिकै युक्तहोवैहै ॥ सोअज्ञानविशिष्टजीवभी शुद्धआत्मातैंभिन्नहै॥ यातैं घटादिकोंकीन्याईं सोभी अनात्मारूपहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जभी जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिविषेस्थितसर्वपदार्थ आत्मारूपनहींभये ॥ तभी तिनोंतैंभिन्न आत्माका कौनस्वरूपहै ॥ यहआप कृपाकरिकैकथनकरो ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ सो आत्मा स्वप्रकाशस्वरूप है ॥ जोप्रकाश आपणेप्रकाशविषे तथाकिसीपदार्थकेप्रकाशविषे अन्यकिसीदूसरेप्रकाशकीअपेक्षानहींकरैहै ॥ ताकूंवेदांतशास्त्रविषेस्वप्र काशकहैं हैं ॥ ऐसास्वप्रकाशस्वरूप आत्माहै ॥ आत्मातैंभिन्नसंपूर्ण परप्रकाशहै ॥शंका ॥ हेभगवन् यास्वप्रकाशआत्माकेलक्षणकीसूर्या दिकभौतिकप्रकाशविषे अतिव्याप्तिहोवैहै ॥ काहेतैं सूर्यादिकप्रकाशभी आपणेप्रकाशविषे तथाघटादिकपदार्थोंकेप्रकाशविषे अन्यकिसी प्रकाशकीअपेक्षाकरतेनहीं ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ सूर्यादिकभौतिकप्रकाश यद्यपि आपणेप्रकाशविषे तथा घटादिकपदार्थोंके प्रकाशविषे अन्यकिसीभौतिकप्रकाशकीअपेक्षाकरतेनहीं॥ तथापि चैतन्यरूपअलौकिकप्रकाशकी सूर्यादिकप्रकाशभी अपेक्षाकरै हैं॥ यातैं सूर्यादिकप्रकाशोंविषे स्वप्रकाशआत्माकेलक्षणकीअतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ यातैं हेदेवराजइंद्र ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे जिसआत्माका हृदयदेशविषेनिवास शास्त्रनैं कथनकऱ्याहै ॥ और स्वप्नअवस्थाविषे जिसआत्माका मनाविषेनिवास शास्त्रनैं कथनकऱ्याहै॥ और जाग्रत् अवस्थाविषे जिसआत्माका स्थूलशरीरविषेनिवास शास्त्रनैं कथनकऱ्याहै ॥ तिनस्वप्रकाशआत्माका निषेधमुखकरिकै हम तुमारेताईं

उपदेशकरैहैं ॥ पूर्वतृतीयअध्यायकेअंतविषे यहकह्याथा ॥ देवराजइंद्रतैं भयकूंप्राप्तहुआ कौपीतकिनामाऋषि ॥ सत्यकासत्य है यहजो ब्रह्मकागुह्यनाम है ॥ तानामकूं अर्थसहित आपणेशिष्योंकेप्रति उपदेशनहींकरताभया ॥ अब तिसीअर्थकूं यहाँस्पष्टकारिकैनिरूपणकरै हैं ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ सुषुप्तिअवस्थाकेप्राप्तहुए याजीवकेपंचज्ञानइंद्रिय तथापंचकर्मइंद्रिय तथाचतुष्टयअंतःकरण इनसंपूर्णोंका अज्ञानविषे लयहोवै है ॥ और सुषुप्तिअवस्थाकेनिवृत्तहुए संपूर्णइंद्रियोंसहितअंतःकरण तिसीअज्ञानतैंउत्पन्नहोवै है ॥ और जोजोपदार्थ उत्पत्ति नाशवान्होवै है ॥ सोसोपदार्थ घटादिकोंकीन्याईं असत्यहीहोवै है ॥ यातैं उत्पत्तिनाशवान्होणेतैं अंतःकरणसहित सकल इंद्रिय असत्य हैं ॥ और सुषुप्तिअवस्थाके प्राप्तहुए यद्यपि प्राण लयकूं प्राप्तहोवै नहीं ॥ तथा सुषुप्ति अवस्थाके निवृत्त हुए यहप्राण उत्पन्न होवैनहीं यातैं प्राण सत्य है ॥ तथापि यह आनंदस्वरूपआत्मा वास्तवतैं स्वरूप है ॥ यातैं सत्यप्राणोंतैं उत्कृष्ट है ॥ और यहप्राण जडरूप है ॥ तथा अनात्मारूप है ॥ यातैं आनंदस्वरूपआत्मातैं यहप्राण अपकृष्ट हैं ॥ या अभिप्रायतैंही श्रुतिनैं ब्रह्मकूं सत्यकासत्य कह्या है॥तहाँ प्रथमसत्यशब्दकरिकै प्राणसहित संपूर्णभूतभौतिकप्रपंचका ग्रहणकरणा॥ ताप्रपंचरूपकार्यका यहआनंदस्वरूपपरमात्मा विवर्तउपादानकारणहै ॥ यातैं यहपरमात्मापुरुष सत्यकाभीसत्यहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ प्राणसहितसंपूर्णभूतभौतिकप्रपंच अनित्यहै॥ यातैं ताकूंसत्यकहणासंभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ रूपादिकगुणोंतैंरहित जोअद्वितीयब्रह्महै ॥ ताकेसाक्षात्कारकरावणेवासतै ताब्रह्मकेदोरूप श्रुतिविषे कथनकरैहैं ॥ तहां प्रथमब्रह्मकारूप चारिविशेषणोंकरिकैयुक्तहै ॥ तेचारिविशेषण यहहैं ॥ प्रत्यक्षप्रमाणकेयोग्य होणेत सर्वलोकोंकूंप्रसिद्धहै॥यातैं ताकूं सत्यकहैं हैं॥और देशकालादिकपरिच्छेदवालाहै॥यातैंताकूं स्थितिमान्कहैं हैं॥औरप्रत्यक्षप्रमा णकरिकैसिद्ध जोअवयवोंकीरचनाविशेषताअवयवरचनाकारिकैयुक्त हैं॥यातैं ताकूं मूर्तकहैं हैं और प्रत्यक्षनाशवान्है यातैं ताकूंमर्त्यकहैं हैं॥ इसप्रकार सत्य स्थितिमान् मूर्त मर्त्य याचारिविशेषणोंकारिकैयुक्त प्रथमब्रह्मकारूपहै ॥तहाँ प्रथमसत्यरूपकासार सूर्यमंडलविषेस्थितहै॥ सोकैसाहैसूर्यमंडल ॥ संपूर्णजीवोंकूं प्रत्यक्षप्रमाणकरिकैसिद्धहै ॥ और तप्तकरणेकाहैस्वभावजिसका ॥ और परमेश्वरकाविग्रहहै॥ऐसेसूर्य

मंडलविषे प्रथमसत्यरूपकासार स्थितहोवै है॥याकारणतैंहीं सोसूर्यमंडल सर्वरूपादिकोंकाप्रकाशकहै ॥ अब चारिविशेषणोंकरिकैयुक्त ब्रह्मकेद्वितीयरूपकूंदिखावै हैं ॥हेदेवराजइंद्र॥ब्रह्मकाजोद्वितीयरूपहै॥सो परोक्षहोणेतैं केवलशास्त्रप्रमाणकरिकै जान्याजावैहै॥यातैं ताकूं श्रुतिविषे त्यत्कह्याहै॥और सर्वत्रव्यापकहै यातैं ताकूं गतिमान्कह्याहै॥और दृश्यमानअवयवरचनाविशेषतैंरहितहै॥यातैं ताकूंअमूर्तकहै हैं ॥ और नाशतैं रहितहैं यातैं ताकूं अमृतकहैं हैं॥ इसप्रकार त्यत् गतिमान अमूर्तअमृत याचारिविशेषणोंकारिकैयुक्त ब्रह्मकाद्वितीयरूप कह्याहै॥तहाँसूर्यमंडलविषेस्थितसमष्टिसूक्ष्मशरीरकाअभिमानीजोहिरण्यगर्भ है॥सोप्रथमत्यत्शब्दकेअर्थकासाररूपहै॥काहेतैंहिरण्यगर्भ केशरीरआरंभकरणेवासतैंहीं सूक्ष्मभूतोंकीउत्पत्तिहै॥इतनैंकारिकै ब्रह्मकेआधिदैवरूप दोस्वरूपोंकूंनिरूपणकऱ्या॥अबताब्रह्मकेअध्यात्मरूप दोस्वरूपोंकानिरूपणकरैं हैं ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ अध्यात्मरूपयासंघातविषेस्थित जोब्रह्मकेदोरूपहैं॥तिनदोनोंकाभीपूर्वकीन्याईंसारभावजा नणा ॥ तहाँ चक्षु सत्पदार्थकासाररूपहै॥और दक्षिणनेत्रविषेस्थित जोसूक्ष्मव्यष्टिअभिमानीपुरुषहै॥सो त्यत्शब्दकेअर्थकासाररूपहै॥ यादोनोंरूपतैंभिन्नपंचभूत असाररूप है ॥ अब सत्शब्दकेअर्थकूं तथात्यत्शब्दकेअर्थकूं निरूपणकरैं हैं ॥ हे देवराजइंद्र ॥ पृथिवी जल तेज यहतीनोंभूत प्रत्यक्षज्ञानकेविषयहैं ॥ यातैं पृथिवीआदिकतीनभूतोंकूं श्रुति सत्शब्दकरिकैकथनकरै है ॥ और वायु आकाश यहदोनोंभूत परोक्षज्ञानकेविषयहैं॥यातैं तिनदोनोंकूं श्रुति त्यत्शब्दकरिकैकथनकरै है॥ अब स्थूलसूक्ष्मसमष्टिव्यष्टिकेअभेदकूंनिरूपण करैं हैं॥ हेदेवराजइंद्र॥सूर्यकाजोमंडल है तथा पुरुषकाजोदक्षिणनेत्र है यहदोनों पृथिवी जल तेजरूप है॥यातैं तेदोनों परस्परअभिन्न हैं॥ और सूर्यमंडलविषेस्थितजोपुरुष है ॥ तथा दक्षिणनेत्रविषेस्थितजोपुरुष है ॥ सो अमूर्तपुरुष एकही है॥और स्थूलशरीरके अंतर है ॥ यातैं तापुरुषकूं आत्माकहैहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ स्थूलकूं जोपृथिवी जलतेज यातीनभूतरूपमानोंगे॥तथा सूक्ष्मकूं जोवायु आकाश यादोनोंभूतरूपमानोंगे॥तौ स्थूलकूं तथासूक्ष्मकूं शरीररूपतानहींसंभवैगी ॥ काहेतैं श्रुतिविषे सर्वशरीरोंकूं पंचभूतरूपकह्याहै॥ताश्रुति काविरोधहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र॥पंचीकरणप्रक्रियाकीरीतिसे पृथिवी जल तेज यातीनस्थूलभूतोंविषेआकाश वायु यहदो

नोंसूक्ष्मभूत विद्यमानहैं ॥ यातैं स्थूलकूं शरीररूपतासंभवै है ॥इसप्रकार सूक्ष्मकेआरंभकरणेहारे जे वायु आकाशहैं ॥ तिनदोनोंविषेभी सूक्ष्मरूपकारिकै पृथिवी जल तेज यहतीनोंभूतविद्यमानहैं ॥ यातैं ताअमूर्तसूक्ष्मकूंभी शरीररूपता संभवै है॥ अब सूक्ष्मशरीरके नाना प्रकारकेरूपोंकानिरूपणकरै हैं ॥ हेदेवराजइंद्र॥ पूर्वपूर्ववासनावोंकरिकैजन्य तासूक्ष्म शरीरके नानाप्रकारकेरूप हैं ॥ तिनोंविषे कोईकरूपोंकूं हम तुमारेप्रांति कथनकरते हैं ॥ तुम श्रवणकरो ॥ जिसकालविषे रजोगुणकरिकैयुक्तहुआ यहपुरुष स्त्रीआदिकपदार्थोंकूंदेखे है॥तिस कालविषे यहपुरुष हरिद्राकरिकैरंजितवस्त्रकेसमान रूपवाला होवैहै ॥ और जिसकालविषे यहपुरुष सत्त्वगुणकेप्रभावतैं श्रद्धादिकगुणोंवालाहोवैहै॥तथारजोगुणकेप्रभावतैं क्रोधादिकोंकरिकैयुक्तहोवैहै ॥ तिसकालविषे यहपुरुष किंचितशुक्लजोपर्वतकाकंबलहै ताकेसमानरूपवालाहोवैहै ॥ और जिसकालविषे यहपुरुष एकांतदेशविषेस्थितहुआभी रजोगुणकेप्रभावतैं विषयोंकास्मरणकरैहै ॥ तिसकालविषे यहपुरुष इंद्रगोपकेसमान अत्यंतरक्तवर्णवालाहोवै है ॥ वर्षाकालविषेहोणेहारा जो अत्यंतरक्तरूपवान् कोईजंतुविशेषहै ताकूं इंद्रगोपकहैं हैं॥ और जिसकालविषे यहपुरुष सत्त्वगुणकेप्रभावतैं विद्यायुक्तहुआभी रजोगुणकेप्रभावतैं लोकोंकेसाथ ईर्षाकरै है ॥ तिसकालविषे यहपुरुष दाहशक्तिमान् तथाप्रकाशशक्तिमान् जोअग्निकीज्वालाहै ताकेसमानरूपवालाहोवै है॥और जैसे श्वेतकमल स्वभावतैंहीं शुद्ध तथाकोमल होवै है ॥ तैसे किसीकालविषे यहपुरुष सत्त्वगुणकेप्रभावतैं जन्मतैंहीं शमदमादिगुणोंवाला तथाकोमलस्वभाववाला होवै है॥ और जिसकालविषे यहपुरुष शुद्धसत्त्वगुणकरिकैयुक्तहोवै है ॥ तिसकालविषे यहपुरुष विद्युत्केसमान सर्वप्रकाशकज्ञानवालाहोवै है ॥ जैसे हिरण्यगर्भभगवान् सर्वपदार्थविषयकज्ञानवालाहै॥और हेदेवराजइंद्र॥जेसकामपुरुषहैं तिनोंकूंहीं उपासनाकेप्रभावतैं हिरण्यगर्भकीन्याईं सर्वज्ञता प्राप्तहोवैहै॥और सा सर्वज्ञता उपासनारूप मानसकर्मकरिकैजन्यहोणेतैं अनित्यहै॥यातैं मुमुक्षुजनोंनैं तासर्वज्ञताकीभीइच्छानहींकरणी ॥ तात्पर्ययह॥जितनीकपदार्थोंकीकामनाहै॥तेसंपूर्णेआत्मरूपआनंदकाप्रतिबंधकहै॥यातैं मुमुक्षुजनोंनैं सर्वकामना परित्यागकरणेयोग्य हैं॥ हेदेवराजइंद्र ॥ इसप्रकार पुण्यपापरूपकर्मकरिकै तथावासनावोंकरिकै जन्य सहस्ररूप अमूर्तसूक्ष्मपुरुषकहैं ॥ तिनसर्वरूपोंकेकथनकरणे

विषे हम समर्थनहीं हैं ॥ तथा भगवतीश्रुतिभी तिनसर्वरूपोंकेकथनकरणेविषेसमर्थनहीं॥यातैं संक्षेपतैं तुमारेप्रतिहमनैंकथनकरे हैं॥अब मूर्त अमूर्त यादोनोंरूपोंकेनिषेधकरणेवासतैं प्रथम तिनोंविषेअविद्याकाकार्यपणा दिखावैं हैं ॥हेदेवराजइंद्र जैसे तंतुवोंकाकार्यजोपटहै ॥ तिसपटविषे तंतु अनुगतहोइकैरहै हैं॥तैसे स्थूलसूक्ष्मरूप जोयहप्रपंचहै॥सो अविद्यातैं उत्पन्नभयाहै॥यातैं सोकारणरूपअविद्या संपूर्णप्रपंचरूपकार्यविषे अनुगतहोइकैरहै है॥ और हेदेवराजइंद्र॥जैसे पटादिकपदार्थ तथातिनोंकेकारणतंतुआदिक दृश्यहैं यातैं अनात्माहैं॥तैसे स्थूलसूक्ष्मप्रपंच तथातिनदोनोंकाकारणअविद्या यहतीनोंभी दृश्यरूपहैं यातैं अनात्माहीं हैं॥शंका॥हेभगवन्॥स्थूलसूक्ष्मरूपकार्यप्रपंच तथा ताकाकारणमाया यहदोनों दृश्यरूपहैं यातैंआत्मामतहोवै॥परंतु तिनदोनोंकाअभावरूप जोनिषेधहै॥सो आत्मा काहेतैं नहीं होवै॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ जैसे प्रपंचरूपकार्य तथाअविद्यारूपकारण आत्मानहीं हैं॥तैसे तिनोंकाअभावरूपनिषेधभीआत्मानहीं है ॥ काहेतैं जैसीप्रतियोगीकीसत्ताहोवै है ॥ तैसीही ताकेअभावकीसत्ताहोवै है जैसे शुक्तिविषेप्रतीतभयाजोरजतहै सो कल्पितहै॥यातैं ताक ल्पितरजतकाअभावभी कल्पितहीहोवैहै ॥ तैसे अनात्मप्रपंचकाअभावभी अनात्माहींहोवै है यातैं हेदेवराजइंद्र ॥ सर्वअनात्मप्रपंचका निषेधकरिकै यहजोआनंदस्वरूपआत्माकाउपदेश हमनैं तुमारेप्रतिकऱ्याहै ॥ इसतैंअधिकउपदेश कोईभीब्रह्मवेत्तागुरु शिष्यकेप्रति कर तानहीं॥किंतु संपूर्णब्रह्मवेत्तागुरु सर्वप्रपंचकानिषेधकरिकै याआनंदस्वरूपआत्माकाउपदेश आपणेशिष्योंकेप्रति करैं हैं॥शंका॥हेभगवन्॥ प्रपंचकेनिषेधतैंविनाही तूंआनंदस्वरूपब्रह्महै याप्रकारविधिमुखकरिकैआत्माकाउपदेश गुरु काहेतैंनहींकरता॥समाधान॥हेदेवराजइंद्र ॥ यहआनंदस्वरूपआत्मा मनवाणीकाअविषयहै॥यातैं विधिमुखकरिकै आत्माकेउपदेशकरणेविषे कोईभीपुरुष समर्थनहीं ॥याकारणतैंहीं ब्रह्मवेत्तागुरुनोंनैं सर्वअनात्माप्रपंचकानिषेधकरिकै मुमुक्षुजनोंकेप्रति आत्माकाउपदेशकरीताहै॥तात्पर्ययह॥ब्रह्मकाउपदेश दोप्रकारकाहोतैहै ॥ एकतौ विधिमुखकरिकैउपदेश॥और दूसरा निषेधमुखकरिकैउपदेश॥तहां यहअंतर्यामीआत्मा ब्रह्मस्वरूपहै तथासत्यरूपहै तथाज्ञानरूपहै तथा आनंदस्वरूपहै तथापरिपूर्णरूपहै॥याप्रकारकेउपदेशकूं विधिमुखउपदेशकहै हैं॥और यहआनंदस्वरूप आत्मा कार्यरूपनहीं

तथा कारणरूपनहीं तथास्थूलरूपनहीं तथा सूक्ष्मरूपनहीं ॥ याप्रकारकेउपदेशकूं निषेधमुखउपदेशकहैं हैं ॥ तिनदोनोंप्रकारकेउपदेशोंविषे निषेधमुख उपदेशकी उत्कृष्टताकहणेवासतै प्रथम विधिमुखउपदेशविषे अपकृष्टताकूंदिखावैं हैं ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ तूंब्रह्मरूपहै तथा मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारका विधिमुखकरिकैबोध जोहमनैंपूर्व तुमारेप्रति उपदेशकऱ्याथा ॥ सोविधिमुखबोध शब्दकेअनुगमकरिकैविशिष्टहीं उत्पन्नहोवै है ॥ यातैं मनवाणीकेअविषयआत्माविषे सोविधिमुखबोध संभवैनहीं ॥ किंवा ॥ तत्त्वमसि ॥अर्थयह॥ सोब्रह्मतूंहै॥याप्रकार विधिमुखकरिकै प्रवृत्तभयाजोबोधहै ॥ ताकेविषे तत्पदकेअर्थका तथात्वंपदकेअर्थका परस्परअभेद प्रतीतहोवै है ॥ सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं तत्पदकाअर्थजोमायाविशिष्टईश्वरहै ॥ ताकेविषेतौ सर्वज्ञपणा तथापरोक्षपणा रहै है ॥ और त्वंपदकाअर्थ जोअविद्याविशिष्टजीवहै ॥ ताकेविषे अल्पज्ञपणा तथाअपरोक्षपणा तथादुःखीपणा रहै है ॥ याप्रकार विरोधीधर्मवालेतत्तत्वंपदार्थका परस्परअभेद संभवैनहीं ॥ किंतु जैसे अग्नि तथाबरफ परस्परविरुद्धधर्मवाले हैं ॥ यातैं तिनोंकापरस्परभेद है ॥ तैसेविरुद्धधर्मवालेतत्तत्वंपदार्थकाभी परस्परभेदहींसंभवै है ॥ याप्रकारकीआशंकाकेनिवृत्तिवासतै ॥ तथातत्तत्वंपदार्थकेअभेदकीसिद्धिवासतै तत्त्वं यादोनोंपदोंविषे भागत्यागलक्षणा अंगीकारकरणीहोवैगी जहां पदकेवाच्यअर्थकेएकदेशकापरित्यागकरिकै एकदेशकाग्रहणहोवै ॥ ताकूं भागत्यागलक्षणाक हैं हैं ॥ यहां तत्पदकावाच्यअर्थ ईश्वरहै ॥ ताकेविषे दोभागहैं ॥ एकतौ चैतन्यभागहै ॥ और दूसरा माया तथामायाकृतसर्वज्ञत्वादिक धर्म भागहै तहां माया तथासर्वज्ञत्वादिकधर्मरूप द्वितीयभागकापरित्यागकरिकै प्रथम चैतन्यभागविषे तत्पदकीलक्षणाकरणी ॥ इस प्रकार त्वंपदकावाच्यअर्थजोजीवहै ॥ ताकेविषेभीदोभागहैं ॥ एकतौ चैतन्यभागहै ॥ और दूसरा अविद्या तथाअविद्याकृतअल्पज्ञत्वादिकधर्म भागहै तहां अविद्या तथाअविद्याकृतअल्पज्ञत्वादिकधर्मरूप द्वितीयभागकापरित्यागकरिकै चैतन्यरूपप्रथमभागविषे त्वंपदकी लक्षणाकरणी ॥ तिनदोनोंचैतन्यभागोंका परस्परअभेदसंभवै है ॥ याप्रकार लक्षणावृत्तिकूँअंगीकारकरिकै जोविधिमुखउपदेशहै ॥ सो केवल क्लेशकाहेतुहै ॥ किंवा ॥ विधिमुखकरिकै आत्माकेउपदेशविषे अनुमानप्रमाणकीअपेक्षारूप गौरवदूषणकीप्राप्तिहोवै है॥काहेतैं सत्

चित्आनंदस्वरूप जोत्वंपदकाअर्थ है॥ताका जैसेअधिकारीपुरुषकेस्वरूपविषे भेदनहीं हैं॥तैसे सर्वजीवोंकेआत्माविषे ताकाभेदनहीं है॥ तैसेतत्पदार्थविषेभीताकाभेदनहीं है॥याप्रकारकेअर्थकूंसिद्धकरणेहारा जोअनुमानप्रमाणहै॥ताकी अवश्यअपेक्षाकरणीहोवैगी॥ताअनुमानकाप्रकारयहहै ॥ त्वंपदकाअर्थ जोजीवहै ॥ सो परमात्मातैंभिन्ननहीं ॥ काहेतैं सत्चित्आनंदस्वरूपहोणेतैं॥अधिकारीपुरुषके आत्माकीन्याईं ॥ याप्रकारकेअनुमानप्रमाणकीअपेक्षा विधिमुखउपदेशकूंहै ॥ यातैं विधिमुखउपदेश अपकृष्टहै ॥ किंवा ॥ विधिमुखउपदेशविषे तत्पदार्थके तथात्वंपदार्थके शोधनतैंविना तिन दोनोंकापरस्परअभेद संभवै नहीं ॥ यातैं तत् त्वं पदार्थकाशोधन अवश्यकऱ्याचाहिये ॥ और देहादिकजडपदार्थोंकीव्यावृत्तितैंविना तत्त्वंपदार्थकाशोधन होवैनहीं ॥ यातैं देहादिकजडपदार्थोंकीव्यावृत्ति अवश्यकरीचाहिये ॥ और सोदेहादिकजडपदार्थोंकीव्यावृत्ति युक्तिरूपअनुमानतौंविना सिद्धहोवैनहीं ॥ यातैं देहादिकजडपदार्थोंकीव्यावृत्तिवासतैं अनेकप्रकारकेअनुमानोंकीअपेक्षा करणीहोवैगी ॥ याप्रकार अनेकअनुमानोंकीअपेक्षारूपगौरवदोष विधिमुखउपदेशविषे प्राप्तहोवै है ॥ यातैंभी विधिमुखउपदेश अपकृष्टहै ॥किंवा॥विधिमुखउपदेशविषे जिसजिसअनुमानकीअपेक्षाहोवै है॥ सोअनुमानभीस्वतंत्रहुआ किसी अर्थकीसिद्धिकरैनहीं ॥ किंतु अन्यप्रमाणकी अपेक्षा करै है ॥ जो अनुमानप्रमाण अन्यकिसीप्रमाणकीअपेक्षानहींकरै ॥ तौ ताकेविषे अनुमानपणाहीं नहीं रहैगा ॥ काहेतैं अनुमान याशब्दविषे दोपदहैं ॥ एकतौ अनुपद है ॥ और दूसरा मानपद है ॥ तहांअनुपदकाअर्थ पश्चात्भावी है॥और मानपदकाअर्थ प्रमाणहै॥तादोनोंपदोंकामिलिकारिकै पश्चात्भावीप्रमाण याप्रकारकाअर्थहोवै है॥जोअनुमानप्रमाण किसीप्रमाणकीअपेक्षानहींकरैगा ॥ तौ अनुमान याप्रकारकाशब्द ताकेविषेव्यर्थहोवैगा ॥ याकहणेतैं यह सिद्धभया ॥ जीवजो है सो ब्रह्मतैंअभिन्नहै ॥ काहेतैं सत्चित्आनंदरूपहोणेतैं ॥ अधिकारी पुरुषके आत्माकीन्याईं ॥ याप्रकार जीवब्रह्मकेअभेदकासाधक जो अनुमानहै ॥ तथा देहादिकजे हैं ते अनात्माहोणेकूंयोग्यहैं ॥ काहेतैं जडहोणेतैं तथादृश्यहोणेतैं तथापरिच्छिन्नहोणेतैं ॥ घटादिकोंकी न्याईं ॥ याप्रकार देहादिकोंविषे अनात्मताकासाधक जेअनुमानहैं ॥ तिनअनुमानोंका कोईमूलरूप प्रमाण कह्याचाहिये॥ जिसमूलरूप

प्रमाणकीसहायतातैं ते अनुमान विधिमुखउपदेशविषे सहायताकरैं ॥ जैसे धूमरूपहेतुतैं पर्वतविषे अग्निकाअनुमान तभीहोवै है ॥ जभी प्रथम गृहादिकोंविषे प्रत्यक्षप्रमाणकरिकै धूमरूपहेतुविषे अग्निकेव्याप्तिकाज्ञानहोवै है॥ व्याप्तिज्ञानतैंविना धूमरूपहेतुतैं पर्वतविषेअग्निका अनुमानहोवैनहीं॥यातैं धूमविषे व्याप्तिकूंग्रहणकरणेहारा तथा पर्वतविषे धूमकूंग्रहणकरणेहारा जोप्रत्यक्षप्रमाणहै॥सो पर्वतविषेअग्निकेअनुमानका मूलरूपहै ॥ तैसे यहांप्रसंगविषे जडत्वादिकहेतुवोंकरिकै जोदेहादिकोंविषे अनात्मताकाअनुमानहै ॥ तिसविषेभी जडत्वादिकहेतुवोंविषे अनात्मतारूपसाध्यकेव्याप्तिज्ञानवासतै तथाजडत्वादिकहेतुकेज्ञानवासतै अन्याकिसीप्रमाणकीअपेक्षाहोवैगी ॥ तहां प्रत्यक्षप्रमाणतौ ताअनुमानकामूलहोवैनहीं ॥ काहेतैं दृष्टांतरूपघटादिकोंविषे यद्यपि जडत्वादिकहेतु प्रत्यक्षप्रमाणकरिकैसिद्धहै तथापि अनात्मतारूपसाध्यका घटादिकोंविषेप्रत्यक्षहोवै नहीं ॥ काहेतैं आत्माकेभेदकानाम अनात्मता है ॥ सो आत्माकाभेद अन्योन्याभावरूप है ॥ और प्रतियोगीकेज्ञानतौंविना अभावकाज्ञानहोवैनहीं ॥ यातैं प्रतियोगीरूपआत्माकेप्रत्यक्षतैं विना ताकेभेदकाप्रत्यक्षसंभवैनहीं ॥ यातैं पूर्वउक्तअनुमानका प्रत्यक्षप्रमाण मूलनहीं ॥ किंवा ॥ जडत्वरूपहेतुकरिकै देहादिकोंविषे अनात्मताकासाधकजो पूर्वअनुमान है ॥ तिस अनुमानविषे दृष्टांतरूपजेघटादिकहैं ॥ तिनोंविषे यद्यपि सोअनात्मता प्रत्यक्षप्रमाणकरिकैदेखी है॥ तथापि सोअनात्मता तिनघटादिकोंविषेहीरहै है॥घटादिकोंतैंभिन्न देहादिकोंविषे सोअनात्मता रहैनहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे घटकूंविषयकरणेहाराजो यहघट है याप्रकारकाज्ञान है ॥ सोज्ञान घटविषे स्तंभता धर्मकूंविषयकरैनहीं ॥ तथापि सोस्तंभता धर्म स्तंभतैंनिवृत्तहोवैनहीं ॥ किंतु स्तंभविषेवर्तै है॥ तैसे घटादिकदृष्टांतोंविषे आत्मता धर्म मतहोवै ॥ तथापि सोआत्मताधर्मदेहादिकोंविषेरहैगा॥याविपरीतअर्थकेमानणेविषे कोईबाधकतर्क है नहीं शंका ॥ आत्मा चतन्यहोवै है ॥ जोदेहही आत्माहोवै ॥ तौ देहविषेजडता नहींहोणीचाहिये॥ और देहविषेजडता प्रत्यक्षप्रतीतहोवै है ॥ यातैं देह आत्मानहीं ॥ याप्रकारकीतर्क देहकेआत्मताका बाधकसंभवै है ॥ समाधान ॥ जे चारिवाकनास्तिक आत्मताधर्म देहकाही स्वभावमानैं हैं॥तिसकेआगेयहतुमारातर्क संभवैनहीं ॥ काहेतैं जैसे घटादिकोंविषेरहेहुए जडत्वदृश्यत्वादिकधर्म घटादिकोंकेस्वभावकूं नि

वृत्तकरैनहीं ॥ तैसे देहविषेरहेहुए जडत्वदृश्यत्वादिकधर्मभी देहकोआत्मतास्वभावकूंनिवृत्तकरैनहीं ॥ किंवा ॥ जैसे नैयायिकोंकेमतविषे सत्तानामाजाति द्रव्य गुण कर्म यातीनपदार्थोंविषेरहैं है ॥ परंतु सोसत्ताजाति तिनद्रव्यादिकोंकेस्वभावकूंअन्यथाकरैनहीं ॥ तैसे जडत्वदृश्यत्वादिकधर्म आत्माविषे तथाअनात्माविषे रहै हैं ॥ परंतु तिसआत्माके तथाअनात्माके स्वभावकूं अन्यथाकरैनहीं ॥ याप्रकार मानणेविषे देहात्मवादीचारवाककूं कोईबाधकतर्कहैनहीं ॥ जिसबाधकतर्ककेभयतैं जडत्वदृश्यत्वादिकधर्म आत्माविषेनहीं अंगीकारकरै ॥ तात्पर्ययह ॥ जहां धूमरूपहेतुतैं अग्निकाअनुमानहोवै है ॥ तहां धूमरूपहेतु कार्य हैं ॥ और अग्नितांधूमकाकारणहै ॥ जो अग्नितैंविना धूमकीस्थिति कहांअंगीकारकरिये ॥ तौ धूमका तथाअग्निका परस्परकार्यकारणभाव नहींरहैगा ॥ याप्रकारकीतर्क तहां बाधकहै ॥ और यहांप्रसंगविषे अनात्मतारूपसाध्यतैंविनाभी जोजडत्वदृश्यत्वादिकधर्म अंगीकारकरिये ॥ तौ याकेविषेकोईबाधक तर्कहैनहीं ॥ काहेतैं जडत्वदृश्यत्वादिकधर्मोंका जोअनात्मताधर्म कारणहोवै ॥ तौ अनात्मताधर्मरूपीसाध्यतौंविना जडत्वदृश्यत्वादिकधर्मरूपहेतु नहीं रहैं ॥ सो तिनोंका परस्परकार्य कारणभावहै नहीं ॥ यातैं आत्मविषे जडत्वदृश्यत्वादिकधर्मोंके अंगीकारकरणेविषे कोईबाधकतर्क देहात्मवादीकूंहैनहीं ॥ शंका ॥ आत्माकासर्वत्रचैतन्यरूपकरिकै अनुभवहोवै है ॥ जोजडदेहकूंहीआत्मामानौगे ॥ तौ ताअनुभवकाविरोधहोवैगा ॥ समाधान ॥ आत्माकाजोचैतन्यरूपकरिकैअनुभवहोवै है ॥ ताअनुभवविषे कौनकरणहै ॥ नेत्रादिक बाह्यइंद्रिय करण हैं अथवा मन करण है ॥ तहां चैतन्यरूपकारिकैभीआत्माकेअनुभवविषे नेत्रादिक बाह्यइंद्रिय करण हैं यहप्रथमपक्षतौ संभवैनहीं ॥ काहेतैं बाह्यअनात्मपदार्थोंके विषयकरणेकरिकैभी नेत्रादिकइंद्रियोंकूं बाह्यइंद्रियकहैं हैं ॥ तेनेत्रादिकइंद्रिय जभीअंतरआत्माकूंविषयकरैंगे ॥ तभी तिनोंविषे बाह्यइंद्रियपणा नहीं रहैगा ॥ यातैं नेत्रादिकबाह्यइंद्रिय आत्माकूं चैतन्यरूपकरिकैग्रहणकरैनहीं ॥ किंवा ॥ चैतन्यरूपकरिकैआत्माकेअनुभवविषे मनकरणहै यहदूसरापक्षभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं जो आत्माकूंचैतन्यरूपकारिकै मन ग्रहण करै॥तौ आत्माविषेजडत्वादिकधर्मोंकाविरोधहोवै सोमन आत्माकूंचैतन्यरूपकारिकैं ग्रहणकरतानहीं॥ किंतु अहंअस्मि याप्रकार आत्मा

केसत्तामात्रकूं मन ग्रहणकरै है ॥ यातैं आत्माविषे जडत्वादिकधर्मोंकानिवारणहोवै नहीं ॥ शंका अहंअस्मि याप्रकारकाज्ञान यद्यपि आत्माकेचैतन्यरूपताकूंविषयकरैनहीं ॥ तथापि अहंजानामि याप्रकारकाज्ञान आत्माकेचैतन्यरूपताकूंविषयकरै ॥ समाधान ॥ जैसे तांबूलकेयोगकरिकै पुरुषोंकेमुखविषेरक्तताउत्पन्नहोवै है तैसे मनकेयोगकरिकै आत्माविषेउत्पन्नभई जोचैतन्यताताचैतन्यताकूंहीं अहंजानामि याप्रकारकाअनुभव विषयकरै है ॥ शुद्धआत्माकेचैतन्यताकूं सोअनुभव विषयकरैनहीं यातैं आत्माकेजडत्वादिकधर्मका विरोधी जोचैतन्यपणाहै ॥ ताकूं कोई प्रत्यक्षप्रमाण विषयकरैनहीं ॥ किंवा ॥ जभी आत्माकेचैतन्यताविषे प्रत्यक्षप्रमाणकी प्रवृत्तिनहीं भई ॥ तभी वादीकूं नित्यहींपरोक्ष जेआत्माकेव्यापकतादिकधर्म हैं ॥ तिनोंविषे प्रत्यक्षप्रमाणकीप्रवृत्ति किसप्रकारहोवैगी ॥ किंतु नहीं होवैगी ॥ इतनैंकहणेकरिकै यहासिद्धभया ॥ विधिमुखउपदेशके सहायताकरणेवासतै प्रवृत्तभयेजे पूर्वउक्तअनुमान ॥ तिनअनुमानोंकी मूलकारणताप्रत्यक्षप्रमाणविषेसंभवैनहीं ॥ यातैं मूलकारणकेअभावहोणेतैं ते अनुमान आत्माकेनिर्णयविषे प्रवृत्तहोवैनहीं ॥ यातैं पूर्वउक्तदोषोंकीनिवृत्तिवासतै श्रुतिप्रमाणहीं तिनअनुमानोंकामूलरूप मानणाहोवैगा ॥ सोश्रुतियहहै ॥ सत्यज्ञानमनंतंब्रह्म आनंदोब्रह्म॥ अर्थयह ॥ ब्रह्म सत्यरूपहै ॥ तथाज्ञानरूपहै तथाअनंतरूपहै तथाआनंदरूपहै ॥ याप्रकारकेश्रुतिरूप मूलप्रमाणोंकूं अंगीकारकरिकै तेपूर्वउक्त अनुमान विधिमुखउपदेशविषे सहायताकरै हैं ॥ किंवा जिसश्रुतिरूपमूल प्रमाणकीसहायतातैं पूर्वउक्तअनुमान विधिमुखउपदेशकीसहायताकरै हैं ॥ ते श्रुतिवाक्यही निषेधमुखउपदेशकेप्रधानताकूं बोधनकरै हैं ॥ काहेतैं सत्यादिकपदोंकी शक्तिवृत्तिकरिकैशुद्धब्रह्मविषे प्रवृत्ति किसीविद्वान्नैं अंगीकारकरीनहीं ॥ किंतु ॥ भागत्यागलक्षणाकरिकै सत्यादिकशब्द ब्रह्मकूंबोधनकरै हैं ॥ तहां सत्यशब्द असत्यकीव्यावृत्तिकरिकै ब्रह्मकूंबोधनकरै है ॥ और ज्ञानशब्द अज्ञानकीव्यावृत्तिकरिकै ब्रह्मकूंबोधनकरै है ॥ और अनंतशब्द देश काल वस्तु परिच्छेदकीव्यावृत्तिकरिकै ब्रह्मकूंबोधनकरै है ॥ और आनंदशब्द दुःखकीव्यावृत्तिकरिकै ब्रह्मकूंबोधनकरै है ॥ इसप्रकार संपूर्णसत्यादिकशब्द असत्यादिकधर्मोंकानिषेधकरिकै शुद्धब्रह्मकूं बोधनकरै है ॥ यातैं तेसंपूर्णश्रुतिवाक्य निषेधमुखउपदेश

केही प्रधानताकूंबोधनकरैं हैं ॥ शंका ॥ हे भगवन् ॥ श्रुतिवाक्य निषेधमुखकरिकै ब्रह्मकूं किसवासतैं बोधनकरै हैं समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ यहअद्वितीयब्रह्म सजातीयभेद विजातीयभेद स्वगतभेद यातीनभेदोंतैंरहितहुआ आपणेमहिमाविषेस्थित है॥ ऐसेनिर्गुणब्रह्मकूं जेश्रुतिवाक्य किसीगुणविशिष्टरूपकरिकै बोधनकरैंगे ॥ तौ तिनश्रुतिवाक्योंविषे अप्रामाण्यतादोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ दृष्टांत ॥ जैसे सर्पत्वधर्मतैंरहितरज्जुकूं सर्परूपकरिकैबोधनकरणेहारा जो यहसर्प है॥ याप्रकारकावाक्यहै ॥ तिसवाक्यकूं लोकविषे अप्रमाणमानैं हैं ॥ तैसे सर्वधर्मोंतैंरहित निर्गुणब्रह्मकूं किसीगुणविशिष्टरूपकरिकै बोधनकरणेहारा विधिवाक्यभी अप्रमाणहोवैगा॥ यातैं आपणेअप्रमाणता दोषकीनिवृतिवासतै संपूर्णसत्यादिकवाक्य निर्गुणब्रह्मकूं निषेधमुखकरिकैबोधनकरैं हैं ॥ शंका॥ हेभगवन् ॥सर्वभेदतैंरहित एकअद्वितीयब्रह्म यालोकविषे प्रसिद्धहैनहीं ॥ यातैं ताअप्रसिद्धब्रह्मकूं शास्त्र कैसेबोधनकरैगा ॥ प्रसिद्धपदार्थकूंहीं शब्द बोधनकरैहै ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ लोकप्रसिद्धअर्थकूंहीं शास्त्र बोधनकरैहै॥ यहनियम सर्वत्रनहीं ॥ किंतु लोकविषेअप्रसिद्धपदार्थकूंभी शास्त्र बोधनकरैहै ॥ जैसे यूपशब्दकाअर्थ यद्यपि लोकविषेअप्रसिद्धहै ॥ तथापि यूपंतक्षतिं याप्रकारकेवेदवचनतैं संस्कारकरिकैविशिष्ट काष्ठविशेष यूपशब्दकाअर्थप्रतीतहोवैहै ॥ तैसे लोकविषे यद्यपि अद्वितीयनिर्गुणब्रह्म अप्रसिद्धहै ॥ तथापि सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म इत्यादिकश्रुतिवचनोंकेविश्वासतैं बुद्धिमान्पुरुषोंकरिकै सोनिर्गुणब्रह्म जानणेयोग्यहै ॥ अब विधिमुख उपदेशकूं तथानिषेधमुखउपदेशकूं लक्षणकरिकै तथालोकप्रसिद्धदृष्टांतकरिकै निरूपणकरैहैं ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ याआनंदस्वरूपआत्माकेबोधनकरणेवासतै शास्त्रकी दोप्रकारकीप्रवृत्तिहोवै है ॥ एकतौ विधिमुखकरिकैप्रवृत्तिहोवै है ॥ और दूसरी निषेधमुखकरिकैप्रवृत्तिहोवै है॥यहदोनोंप्रकारकीप्रवृत्ति अधिकारीजनोंकेबुद्धिअनुसार होवै है ॥ अब विधिमुखउपदेशकूंदिखावै हैं॥हेदेवराजइंद्र ॥जैसे कोईधनीपुरुष गोशालाविषेजाइके गोपालपुरुषतैंपूछै ॥ हमारीगौकोनहै और आगेतैंसोगोपालपुरुष तागौकेशृंगकूंपकडिकरिकै ताधनीपुरुषकूंदिखावै ॥ यहतुमारीगौहै ॥ याकूं शृंगग्राहिकान्यायकहै हैं ॥ इसप्रकार शृंगग्राहिकान्यायकरिकै जोशास्त्र आत्माकूंबोधनकरै है ॥ ताकूं विधिशास्त्रकहै हैं ॥दृष्टांत ॥जैसे तुमारेहस्तविषेआमलकफलहै यह

लौकिकविधिवाक्य है ॥ इसप्रकार कोईविधिवाक्य आनंदस्वरूपआत्माकूंबोधनकरैनहीं ॥ काहेतैं यहआत्मा मनवाणीकांअविषयहै ॥ यातैं सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म इत्यादिकविधिवाक्यभी असत्यादिकोंकीव्यावृत्तिद्वाराही शुद्धआत्माविषेप्रवृत्तहोवै हैं॥अब निषेधशास्त्रकूं लक्षण करिकै तथालोकप्रसिद्धदृष्टांतकरिकै निरूपणकरैहैं ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ भ्रांतपुरुषोंनैं लक्ष्यरूपकरिकै अंगीकारकरेजेअनेकपदार्थ ॥ तिन सर्वोंकानिषेधकरिकै परिशेषतैंवास्तवलक्ष्यपदार्थकूं जोशास्त्र अर्थतैंबोधनकरैहै ताकूं निषेधशास्त्र कहैं हैं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे रथअश्वादिक नानाप्रकारकीसेनाकरिकैयुक्त जोकोईकराजा है ॥ तिसकूं नजाणिकारिकै कोईकमूढबालक आपणेपितासैंपूछताभया ॥ यासर्वसमाज विषे कौनराजाहै ॥ याप्रकार बालककेवचनकूंश्रवणकरिकै तावालककेप्रति राजाकेजनावणेकीइच्छाकरताहुआ सोपिता प्रथम यहराजाहै याप्रकारकेवचनकूंनहींकहताभया ॥ किंतु याप्रकारकाविचार आपणेमनविषे करताभया ॥ यावालककेप्रति प्रथमहीं यहराजाहै याप्रकारकावचन जोमैंकहोंगा ॥ तौ यहबालक मूढबुद्धिहै ॥ यातैं किसीअन्यपुरुषकूं अथवा किसीछत्रचामरादिकसामग्रीकूं राजा रूपकरिकैमानैंगा ॥ यातैं यहराजाहै ॥ याप्रकारकावचन प्रथम यावालककेप्रति कहणायोग्यनहीं ॥ किंतु राजातैंभिन्न सर्वपदार्थोंका निषेध मैं करों॥ परिशेषतैं सर्वपदार्थोंतैंविलक्षणराजाकूं यहबालक आपहीजाणैगा ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै सोपिता तावालककेप्रति कहताभया ॥ हेपुत्र यहजेवृक्ष दीखैं हैं तेभीराजानहीं ॥ और यहअश्वभी राजानहीं॥ और यहहस्तिभीराजानहीं ॥ और यहरथभी राजा नहीं ॥ और यहपदातिपुरुषभी राजानहीं ॥ और नानाप्रकारकेआयुधोंकूंधारणकरणेहारे जे यहपुरुषहैं तेभी राजानहीं ॥ और यहविचि त्रतुर्याभी राजानहीं ॥ और यहश्वेतछत्रभी राजानहीं ॥ और यहचामरभी राजानहीं ॥ और छत्र चामर तुर्यादिकहैं हस्तविषेजिनोंके ऐसेजेयहपुरुषहैं तथास्त्रियां हैं तेभी राजानही हैं॥ और यहनीलकंचुकवालापुरुषभी राजानहीं ॥ और यहपीतकंचुकवालापुरुषभी राजा नहीं ॥ और यहरक्तकंचुकवालापुरुषभी राजानहीं ॥ और यहचित्र वस्त्रोंकूंधारणकरणेहारापुरुषभी राजानहीं ॥ और यहसुवर्णमयखड्ग कूंधारणकरणेहारापुरुषभी राजानहीं ॥ और यहस्वर्णमयधनुषकूं धारणकरणेहारा पुरुषभी राजानहीं ॥ इत्यादिकवचनोंकरिकै सोपिता

राजातैंभिन्नसर्वपदार्थोंका निषेधकरताभया ॥ तिसतैंअनंतरसोबालक परिशेषतैं सर्वतैंविलक्षणरूपकरिकै राजाकूंप्रत्यक्षदेखता भया ॥ कैसाहैसोराजा॥ स्वर्णकेसमानउज्ज्वलहैंअंगजिसके॥और श्वेतछत्रहैमस्तककऊपरजिसके॥औरसमीपवर्तीजेगनिकाहै॥तिनोंकेहस्तरूपीकम लोंविषेविचरणेहारे जेचामररूपीहंस हैं ॥ तिनोंकरिकैसेवित है मस्तकाजिसका॥और श्वेतदुकूलकूंधारणकऱ्या है जिसनैं॥और दिव्यहै कां तिजिसकी॥ऐसेराजाकूं सर्वसेनातैंविलक्षणरूपकरिकै सोबालक प्रत्यक्षदेखै है ॥ इसप्रकार निषेधशास्त्रभी एकआत्माकूंछोडिकरिकै अन्य सर्वस्थूल सूक्ष्मप्रपंचका निषेधकरै है ॥ तिसनिषेधतैंअनंतर यह अधिकारीपुरुष सर्वप्रपंचतैंविलक्षणरूपकरिकै आत्माकूं आपहीं निश्चय करै है ॥ यातैं हेदेवराजइंद्र ॥ यहनिषेधमुखकरिकैउपदेशही आत्माकेबोधनकरणेविषे श्रेष्ठउपाय है॥जोयहनिषेधमुखउपदेश नहींअंगीका रकरिये ॥ तौ भावअभावतैंरहित निर्गुणपरमात्माकूं कौनबोधकरैगा ॥ किंतु निषेधमुखउपदेशतैंविना निर्गुणपरमात्माकेबोधकरणे विषे कोईभीवाक्य समर्थनहीं यातैं हेदेवराजइंद्र ॥ महावाक्यकालक्ष्यरूप जो अद्वितीयआत्मा है ॥ सो मनवाणीकाअविषय है॥और शब्दकी प्रवृत्तिकेनिमित्त जे जाति गुण क्रियादिक हैं॥ तिनोंत यह आत्मारहित है॥यातैं सत्यादिकश्रुतिवाक्यभी ताआत्माकूं साक्षात् प्रदिपाद नकरिसकैनहीं ॥ ऐसे अद्वितीयआत्माकूं कौनपुरुष मनकरिकैविषयकरैगा ॥ किंतु कोईभीपुरुष मनकरिकै आत्माकेजानणेविषे समर्थ नहीं ॥ ऐसेअद्वितीयआत्माकेबोधकरणेवासतै जबी निषेधशास्त्र स्थूलसूक्ष्मरूपसर्वजगत्कानिषेधकरै है तबी सोआनंदस्वरूपआत्मादेव आपहीं अधिकारीपुरुषोंकेहृदयविषे प्रकाशमान होवै है॥दृष्टांत॥जैसे दीपक मंदिरविषेप्राप्तहोइकै नेत्रोंकूंआवरणकरणेहाराजोअंधकार है ताकीनिवृत्तिमात्रकरै है॥इतनाहीं दीपकका उपयोगहै॥अंधकारकीनिवृत्तिहुएतैंअनंतर नेत्रवान्पुरुष स्वतंत्रहीं घटादिकपदार्थोंकूंदेखै है ॥ तैसे यहभावअभावरूप तथाकार्यकारणरूप तथास्थूलसूक्ष्मरूप संपूर्णजगत् आत्मानहीं है याप्रकार जभी निषेधशास्त्र कथनकरैहै॥तभी अधिकारीपुरुष आपहीं आत्माकूंसाक्षात्कारकरै है॥यातैं हेदेवराजइंद्र॥ अद्वितीयआत्माकेबोधवासतै यहनिषेधमुखउपदेशही उत्कृष्ट है काहेतैं जैसे विधिमुखउपदेशविषे तत्त्वंपदार्थकेशोधनकी तथाअनुमानादिकोंकी अपेक्षा है॥ तैसे निषेधमुखउपदेशविषे किसीअनुमाना

दिकोंकीअपेक्षा है नहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन्॥ नेतिनेति याप्रकारकीश्रुतिनैं मूर्तअमूर्तरूपप्रपंचकानिषेधकऱ्या है॥तिसमूर्तअमूर्तप्रपंचतैं भिन्न जेकेईकजडपदार्थ हैं तिनोंका श्रुतिनैं निषेधकऱ्यानहीं॥यातैं तिनपदार्थोंकेसाथ आत्माकातादात्म्यअध्यासहोणेतैं अधिकारी पुरुषोंकूं शुद्धरूपकरिकैआत्माकाभान नहींहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ कारणअज्ञानसहित जोमूर्त अमूर्तरूप प्रपंच हमनैं तुमारे प्रति कथनकऱ्या है॥इतनाहीं जडप्रपंच है॥इसतैंअधिक कोईदूसराजडप्रपंचनहीं ॥याकारणअज्ञानसहित मूर्तअमूर्तरूपप्रपंचकेनिषेधकि येतैंहीं विद्वान्पुरुषोंकूं आत्माकासाक्षात्कारहोवै है यातैं हेदेवराजइंद्र ॥ नेतिनेति याप्रकारकीश्रुति अद्वितीयआत्मातैंभिन्न सर्वजडप्रपंचकानिषेधकरै है ॥ तहाँ प्रथमनकारकरिकै कार्यकारणरूप तथास्थूलसूक्ष्मरूप जितनाकभावप्रपंच है ताका आत्माविषेनिषेधकरै है ॥ और दूसरेनकारकरिकै ताभावप्रपंचकेअभावकूँ निषेधकरै है ॥ जभी भावअभावरूपजडप्रपंच आनंदस्वरूपआत्मातैंनिवृत्तभया ॥ तभी यहआनंदस्वरूप स्वप्रकाशआत्माहीं परिशेषतैंरहै है ॥दृष्टांत॥ जैसे अग्निकेविशेषभावकाकारणजेकाष्ठ हैं॥तेकाष्ठ जभी अग्निकरिकैदाहकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ तभी काष्ठोंतैंरहितहुआ सोआग्नि पूर्वविशेषरूपपरित्यागकरिकै आपणेसामान्यरूपविषे स्थितहोवै है ॥ तैसे आत्माके विशेषरूपकाकारण जोभावअभावरूपजडप्रपंच है॥ताकी जभी निवृत्तिहोवै है ॥ तभी यहआनंदस्वरूपआत्माभी उपाधिकृतविशेषरूपकापरित्यागकरिकै आपणेसत्चित्आनंदस्वरूपविषे स्थितहोवै है ॥ और हेदेवराजइंद्र॥यहमैंहूं यहतू है यहदृश्यप्रपंच है यहअन्यजीव है याप्रकारकेसंपूर्णभेद मूर्तअमूर्तरूपउपाधिकरिकैकरेहुए हैं॥ यातैं तेसंपूर्णभेद आनंदस्वरूपआत्माविषे वास्तवतैं हैं नहीं॥और हेदेवराज इंद्र ॥ जैसे भेदतैंरहितआकाशविषे धूम विद्युत् मेघ नानाप्रकारकेभेदोंकूं उत्पन्नकरै हैं॥तैसे भेदतैंरहितअद्वितीयआत्माविषे स्थूलसूक्ष्म शरीर नानाप्रकारकेभेदोंकूं उत्पन्नकरै हैं॥ और हेदेवराजइंद्र॥आकाशविषे भेदकूंकरणेहारेजेमेघादिक हैं ॥ तिनोंका उपादानकारण आकाशनहीं ॥ और आत्माकेभेदकूं करणेहारा जोस्थूलसूक्ष्मप्रपंच है ॥ तिसकातौ आत्माहीं उपादान कारण है ॥ शंका॥ हेभगवन् ॥ असंगआत्माविषे जगत्कीकारणता संभवै नहीं ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र असंगआत्माविषे जगत्कीकारणता नहींसंभव है यहवार्ता

सत्यहै ॥ असंगआत्माविषे जगत्कीकारणता हमभी अंगीकारनहींकरते ॥ किंतु मायाविशिष्टपरमात्माविषे जगत्कीकारणता हम अंगीकारकरैं हैं ॥ यातैं स्थूलसूक्ष्मरूपसंपूर्णप्रपंच परमेश्वरकीमायाकरिकैरचितहै ॥ यातैं संपूर्णप्रपंच मिथ्याहै॥शंका ॥हेभगवन्॥संपूर्णप्रपंच मायाकरिकैरचितहै यातैं मिथ्याहै यहवार्ता यद्यपि संभवै है ॥ तथापि माया मायाकरिकैरचितहैनहीं ॥ यातैं सोमाया सत्यहोवैगी॥ जो मायाकूंभी अन्यमायाकरिकैरचित अंगीकारकरोगे ॥ तौ सोदूसरीमाया तीसरीमायाकरिकैरचित होवैगी ॥ याप्रकार मायावोंकीअनवस्थाहोवैगी ॥ किंवा मायाकूं वेदांतशास्त्रविषेअनादी मानै हैं ॥ यातैं मायाविषे मायाकाकार्यपणासंभवैनहीं ॥ समाधान ॥हेदेवराजइंद्र॥ जोमायाकार्यहोवै है सो मिथ्याहोवैहै ॥ यहजोमिथ्याप्रपंचकालक्षण हमने कह्याहै ॥ सो केवलकार्यप्रपंचकाकह्याहै ॥ कारण रूपमायाके मिथ्यापणेका यहलक्षणनहीं ॥ औरसिद्धांतविषे कार्यप्रपंचकीन्याईं मायाभीमिथ्याही है ॥ यातैं अधिष्ठानचैतन्यविषे जो अध्यस्तहोवै सो मिथ्याकहिये है॥यह मिथ्यात्वकालक्षण मायाविषे तथामायाकेकार्यविषे दोनोंविषे है॥काहेतैं जैसे स्थूलसूक्ष्मप्रपंच अधिष्ठानचैतन्यविषे अध्यस्त है तैसे मायाभी अध्यस्त है ॥ यातैं दोनों मिथ्या हैं ॥ लोकविषेभी ऐंद्रजालिकपुरुषनैं प्रवृत्तकरीजोमाया तथातामायाकरिकैउत्पन्नकरेजेपदार्थ तेसंपूर्ण मिथ्याहीहोवैहैं ॥ तैसे माया तथामायारचितसंपूर्णप्रपंचभी मिथ्याहीहै ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ जैसे लोकविषे मायावी ऐंद्रजालिकपुरुषकरिकै रचेहुए स्थूलसूक्ष्मपदार्थ लोकोंकूं प्रतीतहोवैं हैं॥ तैसे मायाविशिष्टइंद्रकारिकैरच्याहुआ यह इंद्रजालरूपप्रपंच सर्वजीवोंकूं प्रतीतहोवै है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ तीनलोकोंविषे मैंहींइंद्रहूं ॥ मेरेतैंभिन्न कोईदूसराइंद्रहैनहीं ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ जो परमात्मादेव पूर्व सर्वात्मरूपकरिकै आत्माकूंजाणताभयाहै ॥ सोईहीपरमात्मादेव यहाँइंद्रशब्दकरिकै कथनकऱ्याहै॥ तुमारेकूं सर्वात्मरूपकरिकैआत्माकाज्ञानहैनहीं ॥ यातैं तूंइंद्रनहीं ॥ किंवा ॥ परमऐश्वर्यवान् जोहोवै सो इंद्रकहियेहै ॥ याप्रकार इंद्रशब्दकाअर्थभी सर्वात्मज्ञानकरिकैयुक्त सर्वज्ञपरमात्माविषेहीघटैहै तुमारेविषेघटैनहीं ॥ काहेतैं जिसऐश्वर्यकेसमान तथाअधिक कोईऐश्वर्यनहीं होवै ताकूं परमऐश्वर्यकहैं हैं ॥ ऐसापरमऐश्वर्य तुमारेकूंहैनहीं ॥ किंतु तुमारेतैंभी सहस्रगुणाअधिकऐश्वर्य हिरण्यगर्भभगवान्कूं है ॥ यातैं

सर्वात्मज्ञानकरिकैयुक्त जोपरमात्मादेवहै सोईहीइंद्रहै ॥ और सोईहीपरमात्माइंद्र संपूर्णजगत्काकारणहै ॥हेदेवराजइंद्र ॥ स्थूलसूक्ष्मशरी
रकेसाथ तुमारातादात्म्यअध्यासहै ॥ यातैं तापरमात्मारूपइंद्रतैं तूंउत्पन्नभयाहै ॥ याकारणतैं तुमारेविषेइंद्रपणासंभवैनहीं ॥ शंका ॥
हेभगवन् ॥ जोमैंइंद्रनहींहोवों तौसर्वलोक मेरेकूं इंद्र किसवासतैंकहते हैं ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ अस्मदादिकपुरुषोंकेसमीपजोऐश्व
र्यहै ॥ तिसकीअपेक्षाकरिकै तुमाराऐश्वर्य अधिकहै ॥ याकारणतैं सर्वलोक तुमारेकूंइंद्रकहैं है॥ और वास्तवतैंविचारकरिकैदेखियेतौब्रह्मा
त्मसाक्षात्कारयुक्तजोईश्वरहै सोईही इंद्रहै ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ अज्ञानकृतदेहाभिमानकालविषे तुमाराऐश्वर्य तथाश्वानकाऐश्वर्य समान
हींहै ॥ काहेतैं जैसे नानाप्रकारकेऐश्वर्यविषे तथाआपणेदेवताशरीरविषे तथा तीनलोकोंविषे॥ तथा स्वर्गकीस्त्रियोंविषे रमणीकबुद्धिकरिकै
तुमारीआसक्तिहै ॥ तैसे श्वानकूंभी आपणेऐश्वर्योदिकपदार्थोंविषे रमणीकबुद्धिकरिकै आसक्तिहै ॥ शंका ॥हेभगवन् ॥ जोपदार्थसुंदरहो
वैहै ॥ ताकेविषे रमणीकबुद्धितैं आसक्तिहोवैहै ॥ असुंदरपदार्थविषे रमणीकबुद्धिहोवैनहीं यातैं ताकेविषे आसक्तिभीहोवैनहीं ॥ तेसुंदरप
दार्थ ॥ हमारेसमीपविद्यमानहैं ॥ यातैं तिनपदार्थोंविषे हमरीआसक्तिसंभवै है ॥ और श्वानकेसमीप कोईसुंदरपदार्थहैनहीं॥यातैं श्वानकी
आसक्तिसंभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र हमारेसमीप सुंदरपदार्थ हैं श्वानकेसमीप सुंदरपदार्थनहीं ॥ यह केवल तेरेकूंअभिमानभ
याहै ॥ काहेतैं निरपेक्षऐश्वर्योदिकपदार्थ तुमारेसमीपभीनहीं तैसे श्वानकेसमीपभीनहीं ॥ किंतु अस्मदादिकजीवोंकीअपेक्षाकरिकै तुमारे
कूंमहान्ऐश्वर्यहै॥तैसे कीटादिकक्षुद्रजंतुवोंकीअपेक्षाकरिकै श्वानकूंभी महान्ऐश्वर्य है॥और जैसे अस्मदादिकजीवोंकीअपेक्षाकरिकै तुमारा
शरीर कोमलहै ॥ तैसे सूकरादिकोंकीअपेक्षाकरिकै श्वानकाशरीरभी कोमलहै ॥ और जैसे तुमारेदेवताशरीरविषे इंद्राणीआ
दिकअप्सरावोंकीप्रीतिहै तैसे श्वानकेशरीरविषेभी श्वानिणीस्त्रियोंकीप्रीति है ॥ और जैसे तुमदेवतावोंकूं अमृत प्रियलागे है ॥ तैसे
वमनकरयाहुआ अन्न श्वानकूंभी प्रियलागे है ॥ और जैसे आपणेऊपरउपकारकरणेहारेजीवोंविषे तुमदेवता प्रीतिकरोहो ॥ तैसे
श्वानभी आपणेस्वामी ऊपर प्रीतिकरै है ॥ और जैसे अपकारीपुरुषऊपर तुमदेवता कोपकरोहो ॥ तैसे अपकारी जीवोंविषे

श्वानभी क्रोधकरै है ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ तीनलोकोंका मैं पालन करताहूं ॥ यातैं तीनलोकोंका मै इंद्र उपकारकरताहूं ॥ और
यह श्वान तीन लोकोंका उपकारकरतानहीं या प्रकारकाअभिमानभी तुम मतकरो ॥ काहेतैं पृथिवी जल अग्नि वायु सूर्य दिशा चंद्रमा
विद्युत् मेघ आकाश धर्म सत्यवाक्य मनुष्यत्वादिकजाति मनबुद्धिप्राणादिरूप जो हिरण्यगर्भकाशरीरहै तथाविराट्भगवान्का जो
शरीरहै यह दोनों प्रकारके शरीर तथाचिदाभास ॥ यह संपूर्णपृथिवीआदिकपदार्थ स्थूलरूपकरिकै तथासूक्ष्मदेवतारूपकरिकै सर्व
प्राणियोंका उपकारकरैं हैं ॥ तथा श्वानादिकप्राणियोंकेस्थूलसूक्ष्मशरीरभी अदृष्टद्वारा पृथिवीआदिकसर्वपदार्थोंकाउपकारकरैं हैं ॥
तात्पर्ययह ॥ जो पदार्थ जिस प्राणीकेसुखकाकारणहोवै है ॥ सो पदार्थ तिस प्राणीकेपुण्यरूपअदृष्टकरिकै उत्पन्नहोवै है॥और जो पदार्थ
जिसप्राणीकेदुःखकाकारणहोवै है ॥ सोपदार्थ तिसप्राणीकेपापकर्मकरिकैउत्पन्नहोवै है ॥ यह शास्त्रकानियमहै॥यातैं श्वानादिकसर्वप्राणी
पुण्यपापरूपअदृष्टद्वारा पृथिवीआदिकोंकीकारणहै॥ यातैं ते श्वानादिकप्राणी पृथिवीआदिकोंऊपर उपकारकरैं हैं ॥ और ते पृथिवी आ
दिकपदार्थभी श्वानादिकप्राणियोंकूं सुखादिकोंकीप्राप्तिकरैं हैं ॥ यातैं ते पृथिवीआदिकपदार्थ श्वानादिकप्राणियोंऊपर उपकारकरै हैं ॥
यातैं हेदेवराजइंद्र ॥ सर्वऊपरिउपकाररूपधर्म श्वानविषे तथातुमारेविषे समानहीं हैं ॥ मैंसर्वऊपरउपकारकरोंहूं यहव्यर्थअभिमान तुममृत
करो ॥ याकहणेकरिकैयहअर्थ दिखाया ॥ जेपदार्थ परस्परउपकारकरैं हैं ॥ तिनोंका एकहीकारणहोवै है ॥ जैसे दोनोंभ्राता परस्परउप
कारकरैहैं ॥ यातैं तिनदोनोंका एकहीपितामाता कारणहोवै है ॥ तैसेयहसंपूर्णप्रपंचभी परस्परउपकारकरै है ॥ यातैं यासकलप्रपंचका
एकहीमायाविशिष्टपरमात्मादेव कारणहै ॥ और सोमायाविशिष्टपरमात्माहीं सर्वजडप्रपंचविषे तादात्म्यसंबंधकरिकैस्थितहुआ सर्वऊपर
उपकारकरै है ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकैनिरूपणकरै हैं हेदेवराजइंद्र पृथवीआदिकपदार्थ तथामनुष्यादिकप्राणी कोईभी किसीऊपर
किंचित्मात्रभी उपकारकर्तानहीं ॥ किंतु नेतिनेति याश्रुतिकरिकै पूर्वहमनैं तुमारेप्रति कथनकऱ्याजोपरमात्मा॥सोईही नाशरहित स्वप्र
काश परमात्मादेव पृथवीआदिकपदार्थोंविषे तथास्थावरजंगमप्राणियोंविषे तादात्म्यसंबंधकरिकैस्थितहुआ सर्वऊपरउपकारकरै है ॥

हेदेवराजइंद्र ॥ सोपरमात्मादेव पृथिवीविषेस्थितहोइके सर्वप्राणियोंकेभोगकेसाधनजेशरीर हैं तिनशरीरोंकूं उत्पन्नकरेहै॥याकारणतैं सर्व प्राणियोंकेऊपरिपृथवी उपकारकरेहै ॥ और आधाररूपपृथवीतेंविना जीवोंविषेसुखदुःखकाभोगसंभवैनहीं ॥ याकारणतैं सोईहीपरमात्मा देव सर्वप्राणियोंकेशरीरविषेस्थितहोइके पुण्यपापरूपअदृष्टद्वारा पृथवीकीवृद्धिकूंकरै है ॥ याकारणतैं सर्वप्राणी पृथवीऊपर उपकारकरै हैं यहांयहअभिप्रायहै ॥ पृथवीका तथासर्वप्राणियोंका परस्पर कार्यकारणभावहै तथापरस्पर भोक्ताभोग्यभावहै॥ तहां जडअंशकीप्रधानताकरिके पृथिवीविषे तथासर्वप्राणियोंविषे कार्यपणा तथाभोग्यपणाहै ॥ और चैतन्यकीप्रधानताकरिकै पृथवीविषे तथासर्वप्राणियोंविषे कारणपणा तथाभोक्तापणाहै ॥ यहरीति आगेजलादिकोंविषेभी जानिलेणी ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ सोपरमात्मादेव जलोंविषेस्थितहोइके जीवोंकेशरीरविषे वीर्यकीवृद्धिकूंकरै है ॥ याकारणतैंजल सर्वप्राणियोंऊपरि उपकारकरै हैं॥ और सोपरमात्मादेव जीवोंकेवीर्यविषेस्थितहोइके शरीरोंकीउत्पत्तिकरै है॥तिनशरीरोंकरिकैउत्पन्नभये जेपुण्यपापरूपअदृष्ट॥तिनअदृष्टोंकरिकैपुनःजलादिकोंकीवृद्धिकरै है॥याकारणतैं सर्वप्राणी जलोंऊपर उपकार करै हैं ॥ यह रीति आगेभीजानिलेणी॥ और हेदेवराज इंद्र ॥ यहपरमात्मादेव अग्निविषेस्थितहोइके संपूर्ण जीवोंकेवाक्इंद्रियोंकूं शब्दउच्चारणरूपव्यापारविषे प्रवृत्तकरै है ॥ तथा रुधिरादिकधातुवोंकूंपकावै है॥ याकारणतैं अग्निदेवता सर्वप्राणियों ऊपरउपकारकरै है॥औरयहपरमात्मादेव सर्वप्राणियोंकेवाक् इंद्रियविषेस्थितहोइकै मंत्रउच्चारणद्वाराअग्निकूंसंस्कारयुक्तकरै हैं॥ जिसअग्निकूं वेदविषे आहवनीय गार्हपत्य दक्षिणाग्निइत्यादिकनामोंकरिकैकथनकरै हैं॥याकारणतैं सर्वप्राणिअग्निऊपरि उपकारकरै हैं॥और हेदेवराजइंद्र यहपरमात्मादेव वायुविषेस्थितहोइकै सर्वजीवोंकेप्राणोंकूंचलावैहै ॥ याकारणतैं वायु सर्वप्राणियोंऊपरि उपकारकरै है ॥ और यह परमात्मादेव प्राणविषेस्थितहोइके पुण्यपापरूपअदृष्टद्वारा वायुकूंप्रवृत्तकरै है ॥ यातैं सर्वप्राणी वायुऊपरि उपकारकरै हैं ॥ और हे देवराजइंद्र यहपरमात्मादेव सूर्यविषेस्थितहोइके सर्वजीवोंकेनेत्रोंकूं रूपादिकविषयोंविषेप्रवृत्तकरै है ॥ या कारणतैं सूर्यभगवान् सर्वजीवोंऊपरि उपकारकरै है ॥ और सो परमात्मादेव सर्वप्राणियोंकेनेत्रविषेस्थितहोइकै यह सूर्य है या प्रकार सूर्यकूंसिद्धकरै है ॥ या कारणतैं सर्वप्राणी

सूर्यऊपरि उपकार करै हैं ॥ और हे देवराज इंद्र ॥ यह परमात्मादेव पूर्वादिक दश दिशावोंविषे स्थित होइकै सर्व प्राणियोंके श्रोत्रइंद्रियऊपरि उपकार करै है ॥ यातैं दशोंदिशा प्राणियोंऊपरि उपकार करै हैं ॥ और सर्व प्राणियोंके श्रोत्रइंद्रियोंविषे स्थित होइके सोपरमात्मादेव दिशावोंकेप्रतिध्वनिरूपशब्दकूंजाणे है ॥ तात्पर्ययह ॥ भेरीआदिकोंकेशब्दजन्य जोप्रतिध्वनिरूपशब्दहै॥ तिसतैं हीं विशेषकरिकेदिशावोंकाज्ञानहोवै है।सोप्रतिध्वनिकाज्ञान श्रोत्रइंद्रियकरिकैहोवै है॥यातैं प्रतिध्वनिकेज्ञानद्वारा श्रोत्रइंद्रिय दिशावोंकूंसिद्धकरै है॥यहही सर्वप्राणियोंका दिशावोंऊपरि उपकारहै ॥ और हेदेवराजइंद्र॥सोपरमात्मादेवचंद्रविषेस्थितहोइके सर्वजीवोंकेमनकूंप्रवृत्त करै है ॥ याकारणतैं चंद्र सर्वप्राणियोंऊपरि उपकारकरै है ॥ और सर्वजीवोंकेमनविषेस्थितहोइके सोपरमात्मादेव मनकेसंकल्पजन्यजेकर्म हैं तिनकर्मोंकरिकै चंद्रलोककीवृद्धिकरै है॥अथवा यहचंद्रहै याप्रकार मनकरिकैचंद्रकूंजाणे है ॥ याकारणतैं सर्वप्राणी चंद्रऊपरि उपकार करैहैं ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ यहपरमात्मादेव विद्युत्विषेस्थितहोइकै सर्वप्राणियोंकेअंधकारकीनिवृत्तिकरै है ॥ याकारणतैं विद्युत् सर्वप्राणियोंऊपरि उपकारकरै है॥और सर्वजीवोंकेत्वक्विषेस्थित जोउज्ज्वलतारूपतेजहै॥ तातेजकेअभिमानीविषेस्थितहोइके यहपरमात्मादेव सर्वत्रव्याप्तविद्युत्केतेजकूंजाणे है ॥ याकारणतैंसर्वप्राणी विद्युत्ऊपरि उपकारकरै है ॥ और हे देवराजइंद्र ॥ यह परमात्मादेव मेघोंविषे स्थितहोइके गर्जनारूपशब्दकरिकैसर्वजीवोंकेआनंदकूं उत्पन्नकरै हैं ॥ याकारणतैं मेघ सर्वजीवोंऊपरि उपकारकरै है ॥ और सोपरमात्मादेव जीवोंके ध्वनिरूप शब्दविषे स्थित होइकै तागर्जनासहितमेघकूं श्रेष्ठकरिकैमानै है ॥ तात्पर्य यह ॥ जैसे मुखविषे स्थित लाला बाह्यरसके ज्ञानविषेकारणहोवै हैं ॥ तैसे अंतरध्वनिरूप शब्दभी बाह्यशब्दके ज्ञानविषेकारण हैं ॥ या कारणतैं सर्व प्राणीमेघोंऊपरि उपकारकरै हैं ॥ और हे देवराजइंद्र ॥ यह परमात्मादेव आकाशविषे स्थितहोइकै सर्व प्राणियोंकूं हृदयरूप छिद्रकी प्राप्तिकरै है ॥ याकारणतैं आकाश सर्वप्राणियोंऊपरि उपकारकरै है ॥ और हृदयाकाशविषे स्थितहोइके यहपरमात्मादेव सर्वत्रव्यापकआकाशकूंजाणे है ॥ तात्पर्ययह ॥ नेत्रादिकोंकरिकै निरूपआकाशका ज्ञानसंभवैनहीं ॥ किंतु साक्षीचैतन्यकरिकै आकाशकाज्ञानहोवै है ॥ सोसाक्षीचै

तन्य विशेषकरिकै हृदयाकाशविषेहीरहै है ॥ याकारणतैं सर्वप्राणी आकाशऊपरि उपकारकरैं हैं ॥ और हे देवराजइंद्र ॥ सो परमात्मा देव धर्मविषेस्थितहोइकै सर्वजीवोंकूं सुखकीप्राप्तिकरै है ॥ याकारणतैंधर्म सर्वजीवोंऊपरि उपकारकरै है ॥और सोपरमात्मा देव धर्मवान् जीवोंविषेस्थितहोइकै पुनःधर्मकूंकरै है ॥ याकारणतैं सर्वप्राणी धर्मऊपरि उपकारकरैं हैं ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ सो परमात्मादेव सत्य वाक्यविषेस्थितहोइकै जीवोंकूंयथार्थअर्थकाबोधकरै है ॥ याकारणतैं सत्यवाक्य सर्वजीवोंऊपरि उपकारकरै है ॥ और सो परमात्मादेव सत्यवक्तापुरुषोंविषेस्थितहोइकै पुनःसत्यवाक्यकाउच्चारणकरै है॥याकारणतैं सर्वजीव सत्यवाक्यऊपरि उपकारकरैं हैं ॥ और हे देवराज इंद्र ॥ यहपरमात्मादेव मनुष्यत्व ब्राह्मणत्वादिकजातियोंविषेस्थितहोइकै अधिकार संपादनद्वारा जातिअभिमानी जीवोंकूं सुखकी प्राप्ति करै है ॥ याकारणतैं मनुष्यत्व ब्राह्मणत्वादिकजाति सर्वजीवोंऊपरि उपकारकरैं हैं ॥ और सोपरमात्मादेव मनुष्यव्यक्तिविषे तथा ब्राह्मण व्यक्तिविषे स्थितहोइकै मैं मनुष्यहूं मैं ब्राह्मणहूं या प्रकार मनुष्यत्वादिक जातियोंकूं सिद्ध करै है ॥ याकारणतैं मनुष्यादिक सर्व प्राणी मनुष्यत्वादिकजातिऊपरि उपकारकरै है ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ यहपरमात्मादेव देहइंद्रिय मन प्राण बुद्धि रूपयासंघातविषेस्थितहोइकै विज्ञानमयभोक्ताके जन्ममरणादिकोंकूंकरै है ॥ तात्पर्ययह ॥ देहतैंआदिलेकेबुद्धिपर्यंत जोसंघातरूपउपाधिहै तिसविषेस्थित जेजन्मादिक धर्म तिनधर्मोंकरिकै विज्ञानमयकूं जन्मादिकधर्मवालाकरै है॥याकारणतैं यहसंघात विज्ञानमयभोक्ताऊपरि उपकारकरै है॥ और सोपरमात्मादेव बुद्धिकीवृत्तियोंविषेस्थितहोइकै विषयसहितबुद्धिकूंप्रकाशकरै है ॥ याकारणतैं सोविज्ञानमय संघातऊपरि उपकारकरै है यातैं हेदेव राजइंद्र ॥ पूर्वउक्तरीतितैं पृथिवीआदिकोंविषेस्थित होइकै जोपरमात्मादेव सर्वत्रउपकारकरै है ॥ सोआत्मा श्वानका तथा तुमारा एक हीं है ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ जैसे मक्षिका सर्व वनस्पतितैं रसकूंग्रहणकरिकै मधुरूपरसकूं एकठाकरैं हैं ॥ याकारणतैं मक्षिका मधुरूप रसऊपरि उपकारकरैं हैं ॥ और सोमधुरूपरसभी तिन मक्षिकावोंकेक्षुधाकीनिवृत्तिकरै है याकारणतैं सोमधुरूपरस तिन मक्षिकावोंऊप रिउपकारकरै है याप्रकार मक्षिका तथा मधुरूपरस परस्पर उपकारकरैं हैं ॥ तैसे पृथिवीतैंआदिलेके जितनाक जगत् मंडल है ॥ सो

जिसजिसप्राणीऊपरि उपकारकरैहै॥ सोसोप्राणी तिसतिसपृथिवीआदिकोंऊपरि उपकारकरैहै ॥दृष्टांत॥ जैसेलोकविषे धनीपुरुष आपणे भृत्योंविषे धनादिकपदार्थोंकीप्राप्तिरूप उपकारकरै है॥और तेभृत्यभी ताधनीपुरुषऊपरि नानाप्रकारकीसेवारूपउपकार करै है॥और हेदेवराजइंद्र॥पृथिवीआदिकोंकेजितनेकीउपकार हमनैं तुमारेप्रति कथनकरैहैं॥ तेसंपूर्ण दृष्टांतमात्रकेजणावणेवासवैकहैहैं॥वास्तवतैंतेउपकार अनंतप्रकारके हैं ॥ यहवार्ता सुरेश्वराचार्यनैंभी कही है॥श्लोक ॥ सर्वंसर्वस्यकार्यंस्यात् सर्वःसर्वस्यभोजकःइत्येषामधुविद्याऽत्रवैपम्यक्लेशहारिणी॥१॥अर्थयह ॥ सर्वपदार्थ सर्वपदार्थोंकेकार्यहैं ॥ और सर्वपदार्थ सर्वपदार्थोंकेभोक्ता हैं॥ याप्रकारकी मधुविद्याविषमतारूपीक्लेशके निवृत्तकरणेहारी है ॥ १ ॥ यातैं हेदेवराजइंद्र ॥ पूर्वउक्तपृथिवीआदिकपदार्थोंविषे एकएक पृथिवीआदिक पदार्थ आपणेतैंभिन्नसर्वपदार्थों ऊपरि उपकारकरै हैं ॥ तैसे पृथिवीतैंभिन्नसर्वजलादिकपदार्थ पृथिवीऊपरि उपकारकरैं हैं ॥ तात्पर्ययह ॥ पंचीकरणकीरीतिसैं पृथिवी आपणेभागकूंदेकरिकै जलादिकोंकीपूर्णताकरै है ॥ और तेजलादिकभी आपणेआपणेभागकूंदेकरिकै पृथिवीकीपूर्णताकरै हैं ॥ यहरीति सर्वत्रजानिलेणी ॥ यातैं हे देवराजइंद्र ॥ जैसे एकशरीरकेहस्तपादादिकअवयव परस्परउपकारकरै हैं ॥ याकारणतैं तिनअवयवोंका एक हीआत्मा है ॥ तैसे पृथिवीआदिकपदार्थभी पूर्वउक्तरीतितैं परस्परउपकारकरै हैं ॥ याकारणतैं तिनपृथिवीआदिकपदार्थोंकाभी एकही आत्मा मानणेयोग्य है ॥ और हे देवराजइंद्र ॥ सोपरमात्मादेवकैसा है आपणे स्वप्रकाशतेजकरिकै विराजमान है॥ और जन्ममरणआ दिकविकारोंतैं रहित है यातैंपरमअमृतरूप है ॥ और सोईही परमात्मादेवसंपूर्णप्राणियोंकेहृदयदेशविषेस्थितहोइकै बुद्धिकेसर्ववृत्तियोंकूं प्रकाशे है ॥ और वास्तवतैंसंगरहित है ॥ हे देवराजइंद्र ॥ जो परमात्मादेव स्थावर जंगमरूप सर्वशरीरोंविषे अस्तिभातिप्रियरूपकरिकै स्थित है ॥ सोईहीपरमात्मादेव तुमारा तथाश्वानका आत्मा है ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ जैसे घटमठरूपउपाधियोंविषेविद्यमानजोभेद है ॥ सोभेद असंगआकाशकूं स्पर्शकरैनहीं ॥ तैसे शरीर रूपउपाधियोंविषे विद्यमानजोभेद है ॥ सोभेद असंगआत्माकूंस्पर्शकरैनहीं और हे देवराजइंद्र सर्व जीवोंके हृदयदेशविषेस्थित तथा जन्म मरणतैंरहित तथा सर्वभेदतैंरहित तथा सर्वका आत्मारूप जो ब्रह्म हमनैं

तुमारेप्रति कथनकऱ्या है ॥ सोईहीब्रह्म आपणे आत्माकेज्ञानतैं सर्वात्मभावकूंप्राप्तहोताभया ॥ यहवार्ता पूर्वब्राह्मणोंकेपररूपरविचारविषे हम तुमारेप्रति कथनकरिआये हैं ॥ औरहेदेवराजइंद्र ॥ सोईहीपरमात्मादेव संपूर्णजीवोंकूं तथातुमदेवतावोंकूं आपणेवशवर्तीकरिकै पालनकरै है ॥ यातैं मैंइंद्रही सर्वजीवोंकापालनकरोंहूं ॥ याप्रकारका तुमाराअभिमान व्यर्थही है ॥ और हेदेवराजइंद्र॥जैसे सूर्यभगवान् ब्रह्मांडविषे स्थितहोइकै सर्वलोकोंकूंप्रकाशे है ॥ तैसे यहपरमात्मादेव सर्वभूतोंकेअंतरस्थितहोइकै प्रकाशे है ॥ याकारणतैं यह परमात्माहीं राजा है ॥ मैंइंद्र तीनलोकोंकाराजाहूं याप्रकारका तुमाराअभिमान व्यर्थही है ॥ और हेदेवराजइंद्र॥जैसे रथकेचक्रविषे नेमि नाभि अरा यहतीनप्रकारकेकाष्ठरहैं हैं ॥ तहां पृथिवीविषेजाकास्पर्शहोवै है ऐसाजोचंद्रमाकीन्याईवर्तुलाकारकाष्ठ है ताकूं नेमिकहै हैं ॥ और जाके विषे शलाकाफिरै है ताकूं नाभिकहैं हैं ॥ और नाभिनेमिकेमध्यविषे जेवक्रकाष्ठ हैं तिनोकूं अराकहैं हैं ॥ तेअरा स्वतंत्ररहैंनहीं ॥ किंतु नेमिके तथानाभिके दोनोंकेआश्रितरहैहैं॥तैसे पृथिवीकाअभिमानी जो आत्माकाअंशहै सो नेमिकेसमान है॥और शरीरकाअभिमानी जो आत्माकाअंश ॥ सो नाभिकेसमान है ॥ और सर्वशरीर तथापृथिवी अराकेसमान है ॥ तहाँ पृथिवीकाअभिमानी जो आत्माका अंश है॥तथाशरीरकाअभिमानी जो आत्माकाअंश है॥तिनदोनोंकेआश्रितहीं संपूर्णशरीर तथापृथिवीरहैं हैं॥स्वतंत्ररहिसकैनहीं ॥कैसे हैंते आत्माकेदोनोंअंश ॥ पूर्वकहीरीतिनैं सर्वकेउपकारकरणेवासतैं पृथिवीआदिकोंविषेस्थित हैं ॥ यहरीति जलादिकपदार्थोंविषेभी जानिलेणी ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ जैसे रथकेचक्रविषे एकहीशिंशपाकाकाष्ठ नेमि नाभि अरा यातीनरूपोंकूंधारणकरिकै उपकारक उपकार्य भावकूं प्राप्तहोवै है ॥ तथा आधार आधेय भावकूंप्राप्तहोवै है ॥ तैसे एकहीपरमात्मादेव पृथिवीआदिक अधिदैवभावकूं तथाशरीरादिक अध्यात्मभावकूं तथापृथिवीआदिकोंकेअभिमानीपुरुषभावकूं प्राप्तहोइकै सर्वत्र उपकारकूंकरैहै ॥ हेइंद्र ॥ तुम देवता तथापृथिवीआदिकपदार्थ किसीऊपर उपकारकरतेनहीं ॥ यातैं हमहीं उपकारकरैं हैं याप्राकारका तुमाराअभिमान व्यर्थ है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ यद्यपि परमात्माही सर्वत्रस्थितहोइकै उपकारकरैहै यहवार्तासत्यहै ॥ तथापि सोपरमात्मादेव उत्कृष्टदेव

तादिकशरीरोंविषेस्थितहोइकैहीं सर्वत्रउपकारकरै है ॥ श्वानादिकनीचशरीरोंविषेस्थितहोइकै सोपरमात्मादेव किसीऊपरि उपकार करैनहीं ॥ समाधान ॥ हे देवराजइंद्र ॥ उत्कृष्टशरीरविषेस्थितहोइकैहीं परमात्मा उपकारकरै है ॥ याप्रकारकाभी तुमाराअभिमान व्यर्थ है ॥ काहेत जोपरमात्मादेव तुमदेवतावोंकेहृदयविषेस्थितहोइकै सर्वत्रउपकारकूंकरै है ॥ सोईहींपरमात्मादेव श्वानकेहृदय देशविषेस्थितहोइकै सर्वत्रउपकारकूंकरै है॥ यातैं हे देवराजइंद्र ॥ बहुतकहणेकाकछुप्रयोजननहीं ॥संक्षेपकरिकै आत्माकेवास्तवस्वरूपकूं तुम निश्चयकरो ॥ अब तासंक्षेपकूंदिखावैहैं॥ हेदेवराजइंद्र ॥ सत्वगुणकरिकैयुक्त जेहमऋषि हैं॥तथा रजोगुणकरिकैयुक्त जेतुमदेवताहो॥ तथा तमोगुणकरिकैयुक्त जेश्वानादिकपशुहैं ॥ तिनसंपूर्णोंविषे यहपरमात्मादेव समानव्यापक है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ श्वानकीसर्वलो कनिंदाकरैहैं ॥ और देवतावोंकी लोक निंदाकरैनहीं॥यातैं देवताशरीर उत्कृष्टहै ॥ समाधान ॥ हेदेवराजइंद्र ॥ यहभी तुमाराअभिमान व्यर्थ है ॥ काहेतैं जैसे तुमदेवता तथाहममनुष्य श्वानकेजन्मकीनिंदाकरै हैं॥ तसं हमारेकूं विषयोंविषे आसक्तदेखिकरिकै ब्रह्मवेत्ताविरक्त पुरुष हमारेजन्मकीभीनिंदाकरै हैं ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ जैसे तुमदेवतावोंकूं तथाहममनुष्योंकूं आपणेशरीरविषे उत्कृष्टताबुद्धि है तैसे श्वानकूंभी आपणेशरीरविषे उत्कृष्टताबुद्धिहै॥यातैं हेदेवराजइंद्र ॥ जिसआत्माकेतादात्म्यसंबंधकरिकै निकृष्टशरीरोंविषेभी उत्कृष्टताप्रती तहोवैहै॥सोईही आनंदस्वरूपआत्मा अधिकारी पुरुषोंकरिकै जानणेयोग्यहै ॥और हेदेवराजइंद्र॥ऐसेआनंदस्वरूपआत्माकेज्ञानविषे अहं ममअभिमानहीं प्रतिबंधकहै यातैं शरीरविषे अहंअभिमानका परित्यागकरिकै तथाअप्सरावोंसहितस्वर्गविषे मम अभिमानकापरित्यागक रिकै तुम आत्माकूं निश्चयकरो ॥और हेदेवराजइंद्र॥जिसशरीरविषे लोकोनैं अहंअभिमानकऱ्याहै ॥ सोशरीरकैसाहै॥जैसे श्वानकीविष्ठा दुर्गन्धकरिकै युक्त होवैहै तैसे दुर्गंधकरिकैं युक्तहै ॥ और क्षणक्षणविषे परिणामकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ऐसेशरीरविषेबुद्धिमान्पुरुषोंकूं अहंअभिमानकरणा उचितनहा ॥ और हेदेवराजइंद्र ॥ जबपयत जीवोंकूं शरीरादिकोंविषे अहंबुद्धिहोवैहै॥तथा स्त्रीपुत्रधनादिकोंविषे ममबुद्धिहो वैहै॥तबपर्यंत जीवोंकूं आनंदस्वरूपआत्माकीप्राप्ति तथाजन्ममरणादिकदुःखोंकीनिवृत्ति होवैनहीं ॥ यातैं हेइंद्र शरीरविषे अहंआत्मा

नकापरित्यागकरिकै तथाअप्सरावोंसहितस्वर्गविषे ममअभिमानकापरित्यागकरिकै आनंदस्वरूपआत्माकूंतुम निश्चयकरो॥ऋषिरुवाच हेअश्विनीकुमारो ॥ याप्रकार सोदध्यङ्ऋषि तुमारागुरु नानाप्रकारकीयुक्तियोंकरिकै इंद्रकेप्रतिब्रह्मविद्याकाउपदेशकरताभया ॥ कैसाहै सोदध्यङ्ऋषि॥देवराजइंद्रकूं ब्रह्मविद्याकाअनधिकारीजाणताहुआभी आपणीप्रतिज्ञाकेसत्यकरणेवासतै संपूर्णब्रह्मविद्याका उपदेशकरता भया ॥ हेअश्विनीकुमारो॥ इसप्रकार आनंदकेदेणीहारी दध्यङ्ऋषिकेवाणीकूं श्रवणकरिकैभी सोदेवराजइंद्र आनंदकूंनहींप्राप्तहोताभया किंतु विषयोंविषेआसक्तिकरिकै अंधहुआ सोइंद्र उलटाक्रोधकूंप्राप्तहोताभया ॥ दृष्टांत॥ जैसे कोईदयालुपुरुष सर्पकूंक्षुधातुरदेखिकै तास सर्पकूं दुग्धपानकरावै ॥ तादुग्धकूंपानकरिकै सोसर्पतादयालुपुरुषकेप्राणहरणेवासतै क्रोधकरैहै ॥ तैसे श्रीमदकरिकै अंधहुआ सोइंद्र दध्यङ्ऋषिकीअमृतमयवाणीकूंश्रवणकरिकैभी क्रोधकूंहींप्राप्तहोताभया ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे लोकविषे जिसपुरुषकी जिसजिसपदार्थविषे आसक्तिहोवैहै ॥ तिसतिसपदार्थकी जभीकोई निंदाकरैहै ॥ तभी सोपुरुष तिसनिंदाकरणेहारेपुरुषऊपरि अत्यंतक्रोधकरैहै ॥तैसे स्वर्गादिकभोगोंविषेआसक्तइंद्र तिनस्वर्गादिकभोगोंकीनिंदाकूंश्रवणकरिकै अत्यंतक्रोधवान्होताभया ॥ और हेअश्विनीकुमारो ॥ क्रोधकरिकै युक्तहुआ सोइंद्र आपणेमनविषे याप्रकारकाविचारकरताभया ॥ हमारेशत्रु जेअसुरहैं ॥ तिनोंनें हमारेराजकेपरित्यागकरावणेवासतै यह ब्राह्मण हमारीतरफिभेजाहै ॥ याकारणतैं यहब्राह्मण हमारेप्रति स्वर्गकेपरित्यागकरणेकाउपदेशकरै है ॥ किंवा ॥ वास्तवतैंविचारकरिकैदेखियेतौ यहब्राह्मण श्रेष्ठनहीं ॥ काहेतैं जे श्रेष्ठब्राह्मणहोवैं हैं ते मिथ्यावचनकहतेनहीं ॥ और यहदुरात्माती सर्वथा मिथ्याहींभाषण करैहै॥काहेतैं तीनलोकोंकेपति मुझइंद्रकूं श्वानकेसमानकथनकरैहै॥यातैं याब्राह्मणकेसमान कोईमिथ्यावादीनहीं ॥ अब याहींअर्थकूंस्पष्टकरिकैदिखावैहैं ॥ ब्रह्महत्याकरणेहारेपुरुषकूं जन्मांतरविषे श्वानशरीरकीप्राप्तिहोवै है ॥ यातैं श्वानशरीर ब्रह्महत्याकाफल है ॥ और सोश्वान विष्ठादिकमलोंकूं भक्षणकरैहै ॥ और ताश्वानकेस्पर्शतैंभी लोक स्नानकरैहैं ॥ याप्रकारकाती श्वानहै॥और मैइंद्रकैसाहूं ॥ एकशतअश्वमेधयज्ञोंकरिकै इंद्रपदकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं अश्वमेधयज्ञोंकाफल इंद्रशरीरकीप्राप्तिहै ॥ और मैइंद्र सर्वदाअमृतकापानकरोंहूं ॥

और बहुतकालपर्यंत उपासनाकरिकै लोकोंकूं हमारादर्शनहोवै है॥ ऐसेमुझइंद्रकूं यहदुरात्माब्राह्मण सर्वथा श्वानकेसमानहींकथनकरै है ॥ यातैं यहब्राह्मण अत्यंतमिथ्यावादी है ॥ किंवा ॥ यज्ञोंकरिकैभीदुर्लभ जेदेवांगनावोंकेशरीर हैं तिनोंकूं यहब्राह्मण श्वानिणीके शरीर समान कथनकरै है ॥ जिसअभिप्राय करिकै यह ब्राह्मण ऐसेअनुचित वचन कहै है ॥ सोअभिप्राय हम जाणते हैं ॥ किंवा ॥ वज्रकूं धारणकरणेहारा मैइंद्र एकलाहीं संपूर्णजगत्के वशकरणेविषे समर्थहूं ॥ ऐसेमैइंद्र विषे श्वानकी समानता किसी निमित्तकूं लैके याब्राह्मणनें कही है ॥ सर्वप्रकार यह मिथ्यावादी है ॥ यातैं यहब्राह्मण नहीं किंतु यहकोईअसुर है ॥ स्वर्गकेलेणेवासतै तपस्वीब्राह्मणकारूपधारिकै हमदेवतावोंकेबुद्धिकूं तथाअन्यब्राह्मणादिकवर्णोंकेबुद्धिकूं भ्रष्टकरणेवासतै आया है ॥ किंवा ॥ कदाचित् यहब्राह्मणभीहोवै ॥ तौभी हमदेवतावोंकापक्षपातीब्राह्मणनहीं ॥ किंतु दैत्योंकागुरुजोशुक्र है सोईहोवैगा ॥ अथवा शुक्रके शंडामर्कनामाजोदोपुत्र हैं ॥ ते अत्यंत बुद्धिमान् हैं ॥ तिनोंविषे कोईएकहोवैगा॥किंवा॥इसदुरात्माकेब्राह्मणपणेकाविचारकरणाव्यर्थ है ॥ यातैं इसअधमपुरुषकूं इसीकालविषे मैंहननकरों ॥ अथवा यास्थानतैं इसकूं मैंनिकासिदेवो ॥ हेअश्विनी कुमारो ॥ इसप्रकार सोइंद्रआपणेमनविषे विचारकरिकै याप्रकारका निश्चय करताभया ॥ जोमैं याअधमब्राह्मणकूं अबीहींहननकरोंगा॥ अथवा ॥ यास्थानतैंनिकासिदेवोंगा॥ तौ हमारीलोकविषे अपकीर्तिहोवैगी ॥ यातैं किसीअन्यउपायकरिकै याअधमब्राह्मणकूं मैं हनन करों ॥ किंवा॥ अश्विनी कुमार जो हमारे बुद्धिमान् देवताथे ॥ तिनोंकूंभी याअधमब्राह्मणनेहीं हमारेतैंविमुखकऱ्याथा ॥ यातैंभी यह ब्राह्मण दंडकरणेयोग्य है ॥ यातैं याब्राह्मणकूं ब्रह्मविद्याकेनहींउपदेशकरणेकी मैंआज्ञादेवो ॥ जोयहब्राह्मण हमारी आज्ञाकूंउल्लंघनकरिकै किसीकेप्रति ब्रह्म विद्याकाउपदेश करैगा ॥ तौ हम याब्राह्मण कामस्तक छेदनकरैंगे ॥हेअश्विनी कुमारो ॥ याप्रकारकेउपायकाविचारकरिकै सोदेवराजइंद्र तुमारेगुरुदध्यङ्ऋषिकूंयाप्रकारकीआज्ञा करताभया ॥ हेब्राह्मण जो ब्रह्मविद्या तुमनें हमारेप्रति उपदेश करी है ॥ सोब्रह्मविद्या आजदिनतैंलेकरिकै जोकिसी अन्यपुरुषके प्रति उपदेशकरोंगा ॥ तौ वज्रकरिकै तुमारेमस्तककूं मैंछेदनकरोंगा ॥ हे अश्विनीकुमारो ॥ इसप्रकार जभी देवराजइंद्रनें तुमारेगुरुदध्यङ्ऋ

षिकेप्रति अज्ञाकरी ॥ तभी सोदध्यङ्ऋषि तुमारा गुरु देवराजइंद्र ऊपरि किंचित्मात्रभीक्रोध नहींकरताभया उलटा प्रसन्नमन हुआ सोदध्यङ्ऋषि ताइंद्रकीआज्ञाकरिकै आपणेइष्टकी सिद्धि मानताभया॥ अब जिसविचारकरिकै दध्यङ्ऋषिकूं हर्षहोता भया ताविचारकूं निरूपणकरैं हैं ॥ यादेवराजइंद्रकीआज्ञाकूं जोम पालनकरौंगा ॥ तौ हमारेकूं दोप्रकारकेदोषोंकीनिवृत्तिरूप इष्टअर्थकीप्राप्तिहोवैगी ॥ तहाँ एकतौ ब्रह्मविद्याकेउपदेशविषे निष्ठुरतारूपदोषकी निवृत्तिहोवैगी ॥ और दूसरा अनधिकारीपुरुषकेप्रति ब्रह्मविद्याकादानरूपदोष कीनिवृत्तिहोवैगी ॥ यातैं इंद्रकीआज्ञा हमारेकूंपालन करणेयोग्य है ॥किंवा॥ जैसे विद्याकेउपदेशतैंअनंतर गुरुकीप्रसन्नतावासतै शिष्य गुरुकेप्रति दक्षिणादेवै है॥तैसे यादेवराजइंद्ररूपीशिष्यनैं यहजोआज्ञारूपीदक्षिणा हमारेप्रतिदई है ॥सोआज्ञारूपीदक्षिणा हमारेकूं परम अनुकूल है॥काहेतैंआज्ञातैंअनंतर दुर्बुद्धिअनधिकारीपुरुषोंकेप्रति मै कदाचित् ब्रह्मविद्याकाउपदेशनहींकरोंगा॥किंवा॥कामक्रोधादिकों करिकैयुक्त जेअनधिकारीपुरुष हैं ॥ तिनोंकेताईं दईहुईब्रह्मविद्या निष्फलहोवै है॥ दृष्टांत ॥जैसे चांडालकेताईं दईहुईगौ निष्फलहोवै है॥ अन्यदृष्टांत ॥ जैसे रूपकरिकै तथायौवनकरिकैयुक्त आपणीकन्या नपुंसककेताईं दईहुई निष्फलहोवै है ॥ तैसे विषयासक्त अनधिकारी पुरुषकेताईं दईहुई ब्रह्मविद्या निष्फलहोवै है ॥ किंवा ॥ जोविद्वान्पुरुष स्नेहकरिकै मोहितहुआ अथवा धनकरिकैमोहितहुआ विषया सक्तअनधिकारीपुरुषोंकेताईं ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरै है॥सोविद्वान्पुरुष आपणेकूं तथाब्रह्मविद्याकूं तथा श्रोताकूं यातीनोंकूं नाशकरै है॥ तात्पर्ययह ॥ अनधिकारीपुरुषकेप्रति ब्रह्मविद्याकेउपदेशकरणेविषे ब्रह्मविद्या निष्फलहोवै है ॥ और अनधिकारीश्रोता दोनोंलोकोंतैंभ्रष्ट होवै है ॥ और ब्रह्मविद्याकेवक्ताकूं द्वेषकीप्राप्तिहोवै है ॥ यहवार्ता महाभारतविषेभीकही है ॥ श्लोक ॥ यश्चाधर्मेणवैब्रूयात् यश्चाधर्मेणपृच्छति ॥ तयोरन्यतरःप्रैति विद्वेषं वाधिगच्छति ॥ १ ॥ अर्थयह ॥ जोपुरुष अधर्मकरिकै ब्रह्मविद्याकूंकथनकरै है ॥ और जोपुरुष अधर्मकरिकैब्रह्मविद्याकूंश्रवणकरै है ॥ तिनदोनोंविषे एकचल्याजावै है ॥ अथवा द्वेषकूंप्राप्तहोवै है ॥ १ ॥ यातैं अनधिकारीपुरुषकेप्रति ब्रह्म विद्याकाउपदेशकरणा योग्यनहीं॥किंवा ॥ अतिथिकेसन्मानकरणेविषे तत्पर जोहमतपस्वीमुनि हैं ॥ तिनोंकूं दूसराकोईपापके उत्पत्ति

कानिमित्तहैनहीं ॥ अनधिकारीपुरुषोंकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशहीं पापकेउत्पत्तिकानिमित्तथा ॥ अब इंद्रकेआज्ञारूपीकृपातैं सोपाप कभीउत्पन्नहोवैगानहीं ॥ किंवा ॥ जिनोंकेसंगकरिकै अनंतप्रकारकीभेदबुद्धिउत्पन्नहोवै है और बहिर्मुखहैचित्तजिनोंका ऐसेजेमनुष्य हैं तथा देवताहैं तथाअसुरहैं ॥ तिनोंकरिकै हमाराकिंचित्मात्रभीप्रयोजनसिद्धहोवैनहीं ॥ उलटा इनभेदवादियोंकेसंगतैं चित्त बहिर्मुख होवै है ॥ कैसेहैंयहभेददर्शीपुरुष ॥ याजाग्रत्अवस्थाविषे जिसजिसपदार्थकाअनुभवकरै हैं ॥ तिसतिसअनुभवजन्यसंस्कारोंकेप्रभावतैं तिसतिसपदार्थकूं जैसेस्वप्नविषेप्राप्तहोवै हैं ॥ तैसे मरणकालविषेभी तिसीतिसीपदार्थकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ यातैं भेदबुद्धिहीं जीवोंकेजन्ममरण रूपसंसारकाकारणहै और मेरेविषे भेदबुद्धिकाकारण दूसराकोईहैनहीं ॥ किंतु शिष्योंकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशरूपकार्यहीं मेरे भेदबुद्धिकाकारणहै ॥ यातैं ताभेदबुद्धिजन्यसंस्कार अज्ञानीजीवोंकीन्याईं मेरेकूंभी कदाचित्जन्मादिकोंकीप्राप्तिकरैंगे ॥ किंवा ॥ मैंगुरुहूं यहशिष्य है याप्रकारकीभेदबुद्धि अविद्यातैंविनाहोवैनहीं ॥ यातैं उपदेशकालविषे सोभेदबुद्धि अविद्यातैंविनाअनुपपन्नहुई ब्रह्मवेत्ता पुरुषविषेभी अविद्याकेलेशकूंबोधनकरै है यातैं विद्याके उपदेशकालविषे अज्ञानीपामरपुरुषोंकेसमान मैंहोवोंगा ॥ किंवा ॥ यह मैंहूं यहमेराहै यहमेरानहीं है याप्रकारकाभेददर्शन जबपर्यंत जीवोंकानिवृत्तनहींहोता ॥ तबपर्यंत देहरूपकारागृहतैं जीवोंकीमुक्तिहोतीनहीं यातैं भेददर्शनहीं जीवोंकेबंधनकाकारणहै ॥ सोहमाराभेददर्शन याइंद्रनैं कृपाकरिकैनिवृत्तकऱ्याहै ॥ यातैं देवोअथर्वणनामा हमारेगुरुतैंभी यहइंद्र हमारापरमगुरुहै ॥तात्पर्ययह॥आत्मसाक्षात्कारतैंअनंतर जीवन्मुक्तिकेसुखवासतै मनोनाशवासनाक्षयहमारेकूं अवश्यकरणेयोग्यहै तामनोनाश वासनाक्षयकाउपाय देवोअथर्वणनामाऋषिनैं परंपराकरिकै हमारेप्रति उपदेशकऱ्याथा ॥ यातैं सोदेवोअथर्वणनामाऋषि हमारागुरुहै ॥ और यादेवराजइंद्रनैंतौ साक्षात्हीं हमारामनोनाश तथावासनाक्षयकऱ्या है ॥ काहेतैं शिष्यकेप्रति विद्याउपदेशकालविषे हमाराचित्त बहिर्मुखहोवै है ॥ ताचित्तकीबहिर्मुखताकेनिवृत्तिवासतै याइंद्रनैं हमारेप्रति ब्रह्मविद्याके नउपदेशकरणेकीआज्ञाकरी है ॥ यातैं यहइंद्र हमारापरमगुरुहै हेअश्विनीकुमारो ॥ याप्रकारकाविचार आपणेहृदयविषेकरिकै सोदध्यङ्ऋषि तुमारागुरु देवराजइंद्र

ऊपरि क्षमाकरताभया ॥ शंका ॥ गुरुकेसाथ द्रोहकरणेहाराजोइंद्र है ॥ तिसकेप्रति सोदध्यङ्ऋषि शाप काहेतैंनहीं देताभया ॥
समाधान ॥ याप्रकारकाआपणेमनविषे विचारकरिकै सोदध्यङ्ऋषि इंद्रकूं शापनहींदेताभया ॥ अब ताविचारकूं दिखावै हैं ॥ श्वान
सर्पादिकजेतामसीजीव हैं ॥ तेअपकारीजीवोंविषेक्रोधकरै हैं ॥ यहवार्त्ता लोकविषे प्रसिद्ध है ॥ जबी विद्वान्पुरुषभी अपकारी
जीवोंऊपरि क्रोधकरैगा ॥ तौ श्वानसर्पादिकतामसीजीवोंतैं विद्वान्पुरुषविषे कौनविशेषताहोवैगी ॥ किंतु श्वानसर्पादिकोंकेतुल्यहीं सोविद्वा
न्होवेगा ॥ यातैं जेपुरुष अपकारीजीवोंऊपरिक्रोधनहींकरते ॥ उलटा तिनोंऊपरि उपकारकरते हैं ॥ तेपुरुषहीं विद्वान्हैं ॥ अपकारीजीवों
ऊपरि जेपुरुष क्रोधकरै हैं तेपुरुष विद्वान्होवैनहीं ॥ किंवा ॥ अपकारीजीवोंविषे विद्वान्पुरुष क्रोधकरै है ॥ यहजोकोईवादी अंगीकार
करै ॥ तासें यहपूछनाचाहिये कूटस्थआत्माकाअपकारमानिकै सोविद्वान्पुरुष अपकारीजीवोंऊपरिक्रोधकरै है ॥ अथवाशरीरादिकजड
पदार्थोंकाअपकारमानिकै सोविद्वान्पुरुष अपकारीपुरुषऊपरिक्रोधकरै है ॥ तहाँ प्रथमपक्षतौसंभवैनहीं ॥ काहेतैं कूटस्थआत्मा अविकारीहै
तथाअसंगहै ॥ यातैं ताकेविषे अपकाररूपविकारकासंबंधसंभवैनहीं ॥ तैसे दूसरापक्षभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं विद्वान्पुरुषोंनैं शरीरादिक
जडपदार्थोंतैं आत्माकूंभिन्नमान्याहै ॥ यातैं शरीरादिकोंकेअपकारहुएभी विद्वान्पुरुषकीहानिहोवैनहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे एक
पाषाणकरिकै दूसरेपाषाणकाताडनकियेहुएभी चैतन्यपुरुषोंकूं दुःखकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ तैसे जडदंडादिकोंकरिकै जडशरीरकेअप
कारहुएभी विद्वान्पुरुषकूं दुःखहोवैनहीं ॥ शंका ॥ यद्यपि शरीर पाषाणकीन्याईजड है ॥ तथापि सोशरीर आत्माकेसुखका
साधन है ॥ यातैं शरीरकेअपकारहुए विद्वान्पुरुषकाक्रोधसंभवै है ॥ दृष्टांत ॥ जैसे भृत्योंकेअपकारहुए राजाकूंक्रोधहोवै है ॥
समाधान जैसे कोईपुरुष आपणेएकहस्तकरिकै दूसरेहस्तका तथापादका तथामस्तकका ताडनकरै है ॥ ता ताडनकरिकै
तिसपुरुषकूं क्रोधहोवैनहीं ॥ काहेतैं एकशरीर विषेवर्तमान हस्तपादादिकअवयवोंका एकहींआत्मा है ॥ तैसे एकशरीरकरिकै
दूसरेशरीरके ताडनहुएभी विद्वान्पुरुषोंकूं क्रोधहोवैनहीं ॥ काहेतैं शास्त्रप्रमाणकरिकै तथायुक्तियोंकरिकै तथाआपणे अनुभव

करिकै विद्वान्पुरुषनैं सर्वशरीरोंविषे एक आत्मा निश्चयकऱ्या है ॥ यातैं ऐसे विद्वान्पुरुषकूं जैसे आपणाशरीर सुखका साधन है ॥
तैसे सर्व शरीर सुखके साधन हैं ॥ या कारणतैं सो विद्वान् पुरुष किसीऊपरि क्रोधकरता नहीं ॥ किंवा ॥ जो पुरुष अपकार करणे
हारेजीवोंऊपरि क्रोध करै है ॥ सो पुरुष आत्मवेत्ता नहीं ॥ किंतु सो पुरुष आत्माके नाशकरणेहारा है ॥ याकारणतैंही नास्तिकहै ॥ और
सर्वभूतोंकीहिंसाकरणेहाराहै ॥ तात्पर्य यह ॥ असंगआत्माकातौ अपकारहोवै नहीं ॥ किंतु शरीरादिकजडपदार्थोंकाअपकारहोवै है ॥
ताशरीरादिकोंविषे जिसपुरुषकूं आत्मबुद्धिहोवै है ॥ तिसीपुरुषकूं शरीरकेअपकारकरणेहारेजीवोंऊपरि क्रोधहोवै है ॥ यातैं शरीरादिकों
विषे आत्मबुद्धिहीं क्रोधकाकारणहै और चारवाकनास्तिकभी शरीरकूंहीं आत्मामानै हैं ॥ यातैं क्रोधवान्पुरुषविषे तथा नास्तिकविषे
किंचित्मात्रभी भेदनहीं ॥ और क्रोधकीउत्पत्तितैंअनंतर यहपुरुष शरीरकरिकै तथामनकरिकै तथावाणी करिकै जीवोंकीहिंसा अवश्य
करै है ॥ यातैं क्रोधवान्पुरुषहीं सर्वभूतोंप्राणियोंकीहिंसाकरणेहारा है ॥ याकहणेतैंयहसिद्धभया ॥ जिसपुरुषकूंएकअद्वितीयआत्माकाज्ञा
नभयाहै ॥ सोपुरुष किसीप्राणीऊपरि क्रोधकरतानहीं ॥ और जोपुरुष किसीप्राणीऊपरि क्रोधकरै है ॥ सोपुरुष आत्मवेत्तानहीं ॥ किंवा ॥
जिसपुरुषकूं एकअद्वितीयआत्माकाज्ञाननहींभया ॥ किंतु याप्रकारकाज्ञान जितकूंभयाहै ॥ आपणेपुण्यकर्मकरिकै जीवोंकूं सुखकीप्राप्तिहोवै
है ॥ और आपणेपापकर्मकरिकै जीवोंकूं दुःखकीप्राप्तिहोवै है ॥ यातैं पुण्यपापहीं जीवोंकेसुखदुःखकेकारणहै ॥ दूसराकोई जीवोंके सुखदुः
खकाकारणनहीं ॥ याप्रकारकाज्ञानभी जिसपुरुषकूंभयाहै ॥ सोपुरुषभी अपकारीजीवोंऊपरि क्रोधकरतानहीं ॥ तौ सर्वात्मदर्शीतत्ववेत्ता
पुरुष अपकारीजीवोंऊपरि कैसेक्रोधकरैगा ॥ किंतु नहींकरैगा ॥ किंवा जोपुरुष शास्त्रकूंजाणताहुआभी क्रोधवान्होवै है ॥ सोपुरुष किस
प्रकार विद्वान्होवैगा ॥ किंतु सोक्रोधवान्पुरुष विद्वान्नहीं ॥ काहेतैं जोपुरुष विद्यावालाहोवै है ताकूं विद्वान्कहैं हैं ॥ और सर्वप्राणियोंविषे
आत्मबुद्धिकरिकैसर्वकेहितकीइच्छाकरणी यहविद्याकाफलहै ॥ सोविद्याकाफल क्रोधवान्पुरुषविषेसंभवैनहीं ॥ यातैं जैसे गर्दभ मृत्तिका
केभारकूंउठावै है ॥ तैसे क्रोधवान्पुरुष निष्फलहीं शास्त्ररूपीभारकूंउठावै है ॥ किंवा ॥ जोपुरुष ॥ किंचित्मात्र शास्त्रकापठनकरै है ॥

अथवा श्रवणकरे है ॥ अथवा नहींश्रवणकरे हे ॥ परंतुसर्वप्राणियोंविषे आत्माकूंपरिपूर्णजानिकै शरीर मन वाणीकरिकै किसीप्राणीकाद्रोह नहींकरता ॥ तिसीपुरुषनें सर्वशास्त्रकेयथार्थअर्थकूंजान्याहै ॥ यहवार्ता महाभारतविषेभीकही है ॥ श्लोक ॥ आत्मानंचेद्विजानीयात् सर्व भूतगुहाशयं ॥ श्लोकेनयदिवार्द्धेनक्षीणंतस्यप्रयोजनम् ॥ १ ॥अर्थयह॥ जोपुरुष एकश्लोककरिकै अथवाअर्द्धश्लोककरिकै सर्वभूतोंविषेव्या पक आत्माकूंजाणताहै ॥ तिसपुरुषका सर्वप्रयोजनसिद्धभयाहै ॥ गीताविषेभी श्रीकृष्णभगवान्नें अर्जुनकेप्रतिकह्या है ॥ श्लोक ॥ आ त्मौपम्येनसर्वत्र समंपश्यतियोऽर्जुन ॥ सुखंवायदिवादुःखं सयोगीपरमोमतः ॥ १ ॥ अर्थयह ॥ हे अर्जुन ॥ जैसे आपणेकूंसुख प्रियहो वैहै ॥ और दुःख अप्रियहोवै है ॥ तैसे जोपुरुष सर्वप्राणियोंकेसुखकूं प्रियमानै है ॥ और दुःखकूं अप्रियमानै है ॥ सोईहींपुरुष परमायो गीहै ॥ १ ॥ किंवा ॥ जोपुरुषशरीरकरिकै तथामनकरिकै तथावाणीकरिकै प्राणियोंकाद्रोहकरै है ॥सोपुरुष इसलोकविषे तथापरलोक विषे आत्मास्वरूपआनंदकूं प्राप्तनहींहोता ॥ यातें जीवोंकाद्रोहहीं सर्वअनर्थकाकारणहै ॥ हेअश्विनीकुमारो॥ याप्रकारकाविचारकरिकै सोदध्यङ्ऋषितुमारागुरु इंद्रकूं शापनहींदेताभया ॥ उलटा सोदध्यङ्ऋषि इंद्रकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया॥हेदेवराजइंद्र ॥तुमनें जोहमारेकूं ॥ आज्ञाकरी है॥ताआज्ञाकूं मैअवश्यपालनकरौंगा॥ जो मैं तुमारीआज्ञाका नहींपालनकरों ॥तौतुमनें हमारेमस्तककाछेदन करणा ॥ और हे देवराजइंद्र ॥ ब्रह्मविद्याके नउपदेशकरणेकीआज्ञा जो तुमनें हमारेप्रतिकरी है ॥ सोआज्ञा हमारेदुःखकाकारणनहीं ॥ किंतु उलटा जीवन्मुक्तिकेसुखकाकारणहै ॥ परंतु सर्वदेवतावोंकाअधिपति तूंइंद्र स्वर्गलोकतैंचलिकै हमारेआश्रमविषेआया हैं ॥ यातैं तुमारेप्रसन्नताकरणेवास्तै मैं कौनपदार्थ तुमारेप्रतिदेवो ॥ याप्रकारकाविचार मैंकरोंहूं ॥ यातैं हेदेवराजइंद्र ॥ धनकरिकै तथाशरीरक रिकै ॥ तथाअन्यकिसीउपायकरिकै तुमारेप्रसन्नताकूं मैअवश्यसिद्धकरौंगा तुमनें याकेविषे किंचित्मात्रभी संशयनहींकरणा॥ हेअश्विनी कुमारो ॥ इसप्रकारकावचन जभी दध्यङ्ऋषि तुमारेगुरुनें इंद्रकेप्रतिकह्या ॥ तभी सोदेवराजइंद्र सात्त्विकस्वभावकूंप्राप्तहोता भया ॥ आर मुनिकेकोमलस्वभावकूंदेखिकरिकै भयकूंप्राप्तहुआ सोइंद्र याप्रकारकावचन कहताभया॥ हे ब्राह्मण ॥आपणेवर्णाश्रमकेधर्मोंकूंकरणे

हारेजेब्राह्मणहैं ॥ तिनोंकाभीमैंकदाचित् द्रोहनहींकरता॥तो सर्वऊपरिउपकारकरणेहारा जोतूंश्रेष्ठब्राह्मणहैं॥तिसकाद्रोह मैंकैसेकरौंगा ॥ और हेब्राह्मण ॥ मैंनें जोपूर्व विश्वरूपादिकब्राह्मणोंका हननकऱ्याथा॥तथा अनंतसंन्यासियोंकाहननकऱ्याथा॥सोभी तिनोंकेदुष्टस्वभाव कूंजाणिकरिकैहीं हननकऱ्याथा॥ अपराधतैंविना मैं किसीका हननकरतानहीं॥यातैं हेब्राह्मण जोतूं मेरेआज्ञाकाउल्लंघनहींकरैगा॥तौ तुमा राशिर छेदननहींहोवैगा ॥ और जोतूंहमारीआज्ञाकाउल्लंघनकरैगा॥तौविश्वरूपादिकोंकीन्याईं तुमाराभी शिरछेदनहोवैगा॥ और हेब्राह्मण पूर्वजोहमनें तुमारेप्रतिकह्याथा ॥ हमारेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरो ॥ सो तुमनें हमारेवचनकूंअंगीकारकरिकै हमारेप्रतिब्रह्मविद्या काउपदेशकऱ्या ॥ ताविद्याकेउपदेशकरिकै हमारीइच्छाकूं तुमनें पूर्णकऱ्या॥ दूसराकोईकार्य अबीकरणेयोग्य है नहीं॥यातैं हेब्राह्मण तु माराकल्याणहोवै॥हम अबीआपणेस्वर्गलोककूंजातेहैं॥हेअश्विनीकुमारो॥याप्रकारकेवचनोंकूं सोदेवराजइंद्र कहिकरिकै आपणेस्वर्गलोककूं जाताभया ॥ और तुमारागुरु दध्यङ्ऋषि महान्समुद्रकीन्यांई क्षोभतैंरहितहुआ तिसीआश्रमविषेस्थितहोताभया॥शंका॥हे भगवन् ॥ ब्रह्मविद्याकेउपदेशकरिकैहमारेइच्छाकूं तुमनें पूर्णकऱ्या॥यहजोवचन इंद्रनेंदध्यङ्ऋषिकेप्रतिकह्या सो संभवैनहीं॥काहेतैंजोइंद्रकूंब्रह्मविद्या कीप्राप्तिहोती॥तौ दध्यङ्ऋषिऊपरि क्रोधनहींकरता॥समाधान॥हेअश्विनीकुमारो॥दध्यङ्अथर्वण तुमारागुरु देवराजइंद्रकेप्रति संपूर्णब्रह्म विद्याकाउपदेशकरताभया॥तथा नानाप्रकारकेकर्मोंका तथा नानाप्रकारकेउपासनावोंका उपदेशकरताभया तथा नानाप्रकार जगत्के उत्पत्तिकाउपदेशकरताभया ॥ परंतु सोदेवराजइंद्र रागादिकप्रतिबंधकेवशतैं ब्रह्मविद्याकूंछोडिकरिकै अन्यसंपूर्णविद्याकूंग्रहणकरताभया याकारणतैं इंद्रनें आपणेइच्छाकीपूर्णताकही है॥और हेअश्विनीकुमारो॥इसप्रकार इंद्रकेगएतैंअनंतर सोदध्यङ्ऋषि तुमारागुरु मौनकूं धारणकरिकै स्थितहोताभया॥और तुमदोनों बहुतकालकेपीछे वैराग्यादिकसाधनोंकूंसंपादनकरिकै ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिवास्तै दध्यङ्ऋषि केसमीप जातेभये ॥ तहाँ जाइकै दध्यङ्ऋषिगुरुकेप्रति प्रणामकरिकै तुमदोनों याप्रकारकावचन कहतेभये॥हेगुरुहमनेंपूर्व आपतैं ब्रह्मवि द्याकीप्रार्थनाकरीथी ॥ और आपनें यहप्रतिज्ञाकरीथी ॥ वैराग्यादिक साधनोंकूं तुम संपादनकरिआवो॥पश्चात् तुमारेप्रति मैं ब्रह्मविद्या

काउपदेशकरोंगा ॥ सो अभी हमदोनों वैराग्यादिकसाधनोंकूं संपादनकरिकै आपकेचरणकमलोंकूं प्राप्तभये हैं॥यातैं हेगुरो आपणीप्रति ज्ञाकेसत्यकरणेवासतै हमारेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरो ॥ हे अश्विनीकुमारो ॥ याप्रकारकावचन जभी तुमोंनैकह्या ॥ तभी सोदध्यङ्ङृषि तुमारागुरु याप्रकारकाविचार आपणेमनविषेकरिकै परमसंशयकूंप्राप्तहोताभया ॥ अब ताविचारकूंदिखावै हैं ॥ जोमैं अश्विनीकुमारोंकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरोंगा ॥ तौ इंद्र हमारामस्तकछेदनकरैगा॥और जोमैं अश्विनीकुमारोंकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेश नहीं करोंगा तौ हमारावचन मिथ्याहोवैगा॥याप्रकारकाविचारकरिकै सोदध्यङ्ङृषिपरमसंशयकूंप्राप्तहोताभया॥दृष्टांत॥जैसेशकटवालापुरुष याप्रकारकाविचारकरिकै संशयकूंप्राप्तहोवै है ॥ जोमैं बलदोंकेआगेचालोंगा ॥ तौ बलदोंकेपाद हमारेपादोंऊपरिआवैंगे॥और जोमैं बलदोंकेपीछेचालोंगा॥तौ शकटकेचक्र हमारेपादोंऊपरिआवैंगे ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै सो विवेकीपुरुष संशयकूंप्राप्तहोवै है॥तैसे दध्यङ्ङृषि तुमारागुरु संशयकूंप्राप्तहोताभया ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ याप्रकार संशयकूंप्राप्तहोइकै सोदध्यङ्ङृषि तुमारागुरु याप्रकारकानिश्चय आपणेमनविषेकरताभया ॥ अश्विनीकुमारोंकेउपदेशकरणेविषे जोहमारामृत्युहोवैगा सोश्रेष्ठहै॥ परंतु हमारावचन मिथ्यामतहोवै ॥ अब मिथ्यावचनजन्यदुःखतैं मरणजन्यदुःखविषे अल्पताकहिवै है॥यालोकविषे जोप्राणी उत्पन्नभयाहै॥तिसप्राणीकामरण अवश्यहोवैहै॥ और मरणकालविषे रोगादिकनिमित्तकरिकै जीवोंकूं दुःखभी अवश्यहोवै है॥यातैं मरणजन्यदुःख नसहनकरणेयोग्यनहीं॥किंतु संपूर्णप्राणी तामरणजन्यदुःखकूं अनंतवारअनुभवकरै हैं ॥शंका॥ हेभगवन् ॥ अन्यजीवोंकामृत्युज्वरादिकरोगोंकरिकैहोवै हैं ॥ यातैं तिनोंकूं अल्प दुःखहोवै है ॥ और इंद्रकेवज्रजन्यमृत्युतैं परमदुःखहोवै है ॥समाधान॥इतनैंनिमित्तकरिकै जीवोंकामृत्युहोवै है ॥ ज्वरादिकव्याधि सर्प चौर सिंह विष अग्नि जल शत्रु अजीर्णअन्न इतनैंनिमित्तोंविषे किसीएकनिमित्तकरिकैही जीवोंकामृत्युहोवै है ॥ और यहइंद्रकावज्रभी दिव्यअग्निरूपहै ॥ यातैं तिननिमित्तोंकेभीतरिहीं हैं ॥ कोईअपूर्वनिमित्तनहीं ॥ यातैं मरणजन्यदुःखनसहनकरणेयोग्यनहीं॥ किंतु सहनकियाजावैहै ॥ अब मरणजन्यदुःखतैं मिथ्यावचनजन्यदुःखविषे अधिकता दिखावै है ॥ जोमैं आपणावचन मिथ्याकरोंगा॥तो मेरेकूं अनंत

कोटिकल्पपर्यंत नरकविषे अनंतप्रकारकेदुःखोंकीप्राप्तिहोवैगी ॥ जिननरकदुःखोंकेनिवृत्तिका कोईभीउपायनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ जोकोईपुरुष पापकर्मकूं तथाताकेफलकूं नजाणताहुआ तिसपापकर्मकूंकरैहै ॥ तिसपुरुषकूं अल्पदुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और जोकोईपुरुष पापकर्मकूं तथाताके नरकादिकफलकूं शास्त्रप्रमाणतैंजाणिकरिकैभी पुनःतिसपापकर्मकूंकरै है ॥ तिसपुरुषकूं तापापकर्मकरिकै अधिकदुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और मैं मिथ्यावचनरूपीपापकर्मकेफलकूंजाणताहूं ॥ यातैं जाणिकरिकै जोमैं मिथ्यावचनकरूंगा ॥ तौ मेरेकूं अधिकदुःखकीप्राप्तिहोवैगी ॥ किंवा॥ जोपुरुष देहाभिमानकरिकै युक्तहुआमिथ्यावचनकाउच्चारणकरै है॥ सोपुरुष जीवताहुआभी मृतकजानणा ॥ काहेतैं यालोकविषे सर्वप्राणी तामिथ्यावादीपुरुषकीनिंदाकरैं हैं ॥ और मरिकरिकै सोमिथ्यावादीपुरुष नरककूंप्राप्तहोवै है ॥ यातैं दोनोंलोकविषे मिथ्यावादीपुरुषकूं दुःखकीप्राप्तिहोवैहै॥याकहणेकरिकै यहअर्थ बोधनकऱ्या ॥जोपुरुष सकामहै तिसपुरुषकूंतौ स्वर्गकामोयजेत् इत्यादिकविधिवाक्योंका तथानानृतंवदेत् इत्यादिकनिषेधवाक्योंका दोनोंका अधिकारहै।और जोनिष्कामविद्वान्पुरुषहै तिसकूं यद्यपि स्वर्गकामोयजेत् इत्यादिकविधिवाक्योंकाअधिकारनहीं॥तथापि नानृतंवदेत् इत्यादिकनिषेधवाक्योंकाअधिकार निष्कामविद्वान्पुरुषकूंभी हैं॥याकारणतैंही सोदध्यङ्ङृषि नानृतंवदेत् यानिषेधवाक्यकाउल्लंघन नहींकरनाभया ॥ हेअश्विनीकुमारो॥इसप्रकार आपणेमनविषेविचारकरिकै सोदध्यङ्ङृषि तुमारागुरु तुमारेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया॥हेअश्विनीकुमारो ॥ बाल्यअवस्थातैंलेकरिकै मैंनैं कबीभीमिथ्यावचनकाउच्चारणनहींकऱ्या॥तौ अबीवृद्धअवस्थाविषे मिथ्यावचनकाउच्चारण मैं किसवासनैंकरोंगा॥किंतु मिथ्यावचनकरणा हमारेकूं उचितनहा ॥ तथापि मिथ्यावचनकानिमित्त जोमैंनैं आपणेमनविषेचिंतनकऱ्याहै ॥ सो तुमारेप्रति मैंकथनकरताहूं॥ हेअश्विनीकुमारो ॥देवतावोंका तथामनुष्योंका तथा असुरोंका तथाअन्यभीसर्वप्राणियोंका मैं उपकारकरणेहाराहूं ॥ याप्रकारका हमारास्वभाव तुमदोनोंजाणतेहो ॥ पुनः कैसामैहूं ॥ प्रियपदार्थोंकेभोगकरिकै पूर्वलेपुण्यकर्मोंकूं मैं समाप्तकरताहूं॥और अप्रियपदार्थोंकेभोगकरिकै पूर्वलेपापकर्मोंकूं मैं समाप्तकरताहूं॥और जैसे अज्ञानीजीवोंकूं प्रियवस्तुकेप्राप्तहुए हर्षहोवैहै॥तथा अप्रियवस्तुकेप्राप्तहुएशो

कहावैहै॥तैसे मेरेकूं प्रियअप्रियवस्तुकीप्राप्तितैं हर्षशोकहोवैनहीं॥किंतु दोनोंकीप्राप्तिविषे मैं समानरहोंहूं॥ और हेअश्विनीकुमारो॥जैसे यालोकविषे भेददर्शीअज्ञानीपुरुषोंका कोईशत्रुहोवैहै कोईमित्रहोवैहै कोईउदासीनहोवैहै कोईबंधुहोवैहै कोईद्वेष्यहोवैहै कोईमध्यस्थहोवैहै तैसे मुझसमदर्शीका कोईशत्रु मित्र उदासीन बंधु द्वेष्य मध्यस्थ हैनहीं॥तहाँ अपकारतैंविनाहीं स्वभावतैंजोअपकारकरैहै ताकूं शत्रुकहैहैं और जोपुरुष प्रतिउपकारकीनअपेक्षाकरिकै उपकारकरैहै ताकूँ मित्रकहैहैं॥और जोपुरुष उपेक्षाकरैहै ताकूँ उदासीनकहैहैं॥औरजोपुरुष किंचित्संबंधकरिकैउपकारकरैहै ताकूँ बंधु कहैहैं ॥ और जोपुरुष अपकारकी अपेक्षाकरिकै अपकारकरैहै ताकूँ द्वेष्यकहैहैं ॥ और जो पुरुष विवादकरतादोनोंपुरुषोंकेहितकीइच्छाकरैहै॥ताकूं मध्यस्थकहैं हैं॥और हेअश्विनीकुमारो॥ या आपणेब्राह्मणशरीरविषे तथासंपूर्ण स्थावरजंगमशरीरोंविषे तथाश्वानशरीरविषे तथाहिरण्यगर्भकेशरीरविषे मैं समानरूपकरिकैस्थितहूं॥काहेतैं मैं सर्वरूपहूं।अब सर्वरूपताकूं दिखावैहैं हेअश्विनीकुमारो ॥ मैंहीं पुरुषहूं ॥तथामैंहीं स्त्रीहूं तथामैंहीं नपुंसकहूं॥तथामैंहीं पंचमहाभूतहूं॥तथामैंहीं भौतिकप्रपंचहूं॥तथा मैंहीं मनुहूं ॥ तथामैंहीं सूर्यहूं ॥ तथामैंहीं चंद्रमाहूं ॥ तथामैंहीं अग्निहूं ॥तथामैंहीं संपूर्णज्योतिहूं ॥ तथामैंहींभूर् भुवःस्वर् महर् जन तप सत्य यहऊपरिकेसप्तलोकहूं ॥ और मैंहीं अतल वितल सुतल रसातल तलातल महातल पाताल यह नीचेकेसप्तलोकहूं ॥ और हेअश्विनीकुमारो ॥ जैसे स्वप्नविषे स्वप्नद्रष्टापुरुषतैं स्वप्नकेपदार्थ भिन्ननहींहोवैहै॥ तैसे संपूर्णस्थूलसूक्ष्मप्रपंच मेरेतैंभिन्ननहीं किंतु मेराहीं स्वरूपहै ॥ और ब्रह्मांडविषेस्थित जे स्वेदज अंडज जरायुज उद्भिज्ज यहचारिप्रकारकेजीवहैं॥तिनोंविषे कोईजीव उत्कृष्टहै और कोईजीव निकृष्टहै॥ तिनसंपूर्णोंका मैंआत्माहूं ॥ और सर्वभेदतैंरहितब्रह्मकूं मैं आत्मारूपकरिकैजाणताहूं ॥याकारणतैंमेरेविषे मायाकाभीस्पर्श नहीं ॥ तामायाकेअभावहुए काम क्रोध लोभ इत्यादिकदोषभी मेरेस्वरूपविषेहैंनहीं ॥ और हेअश्विनीकुमारो ॥मैंहीं परमात्मादेव लीला मात्रकरिकै संपूर्णजगत्कीउत्पत्तिकरोहूं॥और मैंहीं संपूर्णजगत्कापालनकरोहूं ॥ और मैंहीं संपूर्णजगत्कासंहारकरोहूं॥दृष्टांत॥जैसे ऊर्ण नाभिजंतु अन्यकारणकीसहायतातैंविनाहीं आपणेशरीरमात्रतैं तंतुवोंकूं उत्पन्नकरैहै॥ तथा तिनतंतुवोंका पालनकरैहै॥तथा तिनतंतुवों

कूं आपणेविषेलयकरै है ॥ तैसे मैंहीं परमात्मादेव संपूर्णजगत्की उत्पत्ति स्थिति लय करोंहूं परंतु ऊर्णनाभिरूपदृष्टांततैं हमारेविषे इतनीवि लक्षणताहै॥ऊर्णनाभिजंतु सावयवहुआतथासंबंधवालाहुआ तंतुवोंका परिणामीउपादानकारणहै ॥ और मैंपरमात्मादेवतौ निरवयवहुआ तथाअसंगहुआ जगत्काविवर्त्तउपादानकारणहूं॥शंका॥हेभगवन्॥जोऊर्णनाभिजंतुतैं आपविषे विलक्षणताहोवे॥तौ ऊर्णनाभीजंतुकेदृष्टांत करिकै आपणेविषे जगत्कीकारणता सिद्धकरणीसंभवैनहीं समानस्वभाववालाही दृष्टांतहोवै है ॥ समाधान ॥ हेअश्विनीकुमारो॥ समा नस्वभाववालापदार्थ दृष्टांतहोवै है॥ यहवार्ता यद्यपि सत्य है॥ तथापि सर्वअंशकरिकैसमानता दृष्टांतविषेहोवैनहीं ॥ किंतु किसीएकअं शकरिकै दृष्टांतविषे समानताहोवै है ॥ साएकअंशकरिकैसमानता यहांभी है॥काहेतैं जैसे ऊर्णनाभिजंतु तंतुवोंकाउपादानकारण तथानि मित्तकारणदोनों है ॥ तैसे मैंपरमात्मादेव जगत्का उपादानकारण तथानिमित्तकारण दोनोंहूं॥याप्रकार अभिन्ननिमित्तउपादानकारणता मात्रअंशविषे ऊर्णनाभिकादृष्टांत है ॥ सर्वअंशविषेनहीं॥ और हेअश्विनीकुमारो॥ जैसे स्वप्नविषेप्रतीतभयेजे रथादिकपदार्थ हैं॥ते स्वप्न द्रष्टापुरुषतैंभिन्नहोवैनहीं॥तैसे संपूर्णजगत्की उत्पत्ति स्थिति लय मुझपरमात्मातैं भिन्ननहीं॥हे अश्विनीकुमारो॥ ऐसाब्रह्मनिष्ठमैं आपणे आश्रमविषेस्थितथा॥और किसीकालविषे देवराजइंद्र हमारेआश्रमविषे आवताभया॥और तिसइंद्रकूं अतिथिजाणिकरिकै यथाशक्ति मैं ताइंद्रकापूजनकरताभया ॥ पुनः मैं इंद्रकेप्रतिकहताभया ॥ हेदेवराजइंद्र तुमारीप्रसन्नताकरणेवासतै मैं कौनप्रियपदार्थदेवों ॥ हेअश्वि नीकुमारो ॥ इसप्रकारकावचन जभीमैं इंद्रकेप्रतिकह्या ॥ तभी सोइंद्र हमारेप्रति याप्रकारकावचनकहताभया ॥ हे ऋषि जोतूं हमारेकूं प्रसन्नकऱ्याचाहता है ॥ तौ दुर्लभब्रह्मविद्या हमारेप्रति उपदेशकरो ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ इसप्रकारकावचन जभी देवराजइंद्रनें कह्या॥ तभीमैं इंद्रकेप्रति मधुकांडकेअर्थयुक्त दुर्लभब्रह्मविद्याकाही उपदेशकरताभया ॥ ब्रह्मविद्यातैंभिन्न किसीअन्यविद्याकाउपदेश नहींकर ताभया ॥ काहेतैं जगतविषे ब्रह्मविद्याहीएकदुर्लभ है ॥ ब्रह्मविद्यातैंभिन्न शब्दस्पर्शादिकविषयतौ सर्वलोकोंविषे सर्वजीवोंकूं सुलभ हैं ॥ तहाँ स्वर्गलोकविषे जैसे कर्मीजीवोंकूं विषयप्राप्त हैं ॥ तैसे नरकविषेस्थित जीवोंकूंभी विषयप्राप्त हैं ॥ और ब्रह्मलोकविषेस्थित जीवोंकूं

जैसे विषयजन्यसुखकीप्राप्तिहोवै है ॥तैसे विष्ठाविषेस्थित क्रिमिआदिकजीवोंकूंभी विषयजन्यसुखकीप्राप्तिहोवै है॥यातैं शब्दस्पर्शादिक विषय दुर्लभनहीं ॥ किंतु आत्मातैंभिन्न सर्वविषयोंकीप्राप्ति कर्मउपासनाकारिकै जीवोंकूंहोवै है और यहब्रह्मविद्यातौ अत्यंतदुर्लभ है ॥ काहेतैं जोकभी हमारेकूं पूर्व ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिभईहोती ॥ तौ अबी जन्ममरणरूपसंसार हमारेकूं नहींप्राप्तहोता ॥ और जन्ममरणरूपसंसार अभी हमारेकूंप्रतीतहोवै है॥यातैं यहजान्याजावै है॥ पूर्वहमारेकूं ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिनहींभई॥यातैं ब्रह्मविद्या अत्यंतदुर्लभहै॥शंका॥ हे भगवन् ॥ जैसे ब्रह्मविद्यादुर्लभ है ॥ तैसे ब्रह्मलोकादिकोंकेप्राप्तिकेसाधन जेकर्मउपासना हैं तेभी दुर्लभहीं हैं॥समाधान॥कर्मउपासना दुर्लभनहीं ॥ काहेतैं यालोकविषे बहुतब्राह्मण कर्मउपासनाकूं यथार्थजाणते हैं ॥ तथा तिनकर्मउपासनावोंकाअनुष्ठानभी बहुतब्राह्मण करैहैं ॥ यातैं कर्मउपासना दुर्लभनहीं ॥ किंतुब्रह्मविद्याहीदुर्लभहै ॥ गीताविषेभी श्रीकृष्णभगवान्नैं अर्जुनकेप्रति ब्रह्मविद्याकीदुर्लभता कही है ॥ श्लोक ॥ मनुष्याणांसहस्रेषु कश्चिद्यततिसिद्धये ॥ यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मांवेत्तितत्वतः ॥ १ ॥ अर्थयह ॥ सहस्रमनुष्यों विषे कोईएकपुरुषहीं मेरीप्राप्तिवासतै यत्नकरै है ॥ और तिनयत्नकरणेहारेपुरुषोंविषेभी कोईएकपुरुषही वास्तवस्वरूपतैं मेरेकूं जाणे है ॥ १ ॥ किंवा ॥ लोकविषेभी तिसपदार्थकूं लोक दुर्लभमानैं हैं ॥ जिसपदार्थकेसमानजातिवाला कोईदूसरापदार्थ नहींहोवै है ॥ और जिसपदार्थकेसमानजातिवाला कोईदूसरापदार्थहोवै है ॥ तिसपदार्थकूं लोकविषेभी कोईदुर्लभमानतानहीं ॥ याप्रकारकीदुर्लभता सुखके साधनशरीरादिकोंविषे तथाविषयजन्यसुखरूपफलविषेहै नहीं ॥ काहेतैं शरीरस्वरूपजातिकारिकै सर्वशरीरसमानजातिवाले हैं॥तथा सुख त्वरूपजातिकरिकै संपूर्णविषयजन्यसुख समानजातिवाले हैं॥ यातैं संसारसंबंधी संपूर्णपदार्थोंविषे दुर्लभतानहीं ॥ और कार्यप्रपंचसहित अविद्याकूंनाशकरणेहारी जोब्रह्मविद्या है ॥ ताकेसमानजातिवाला कोईदूसरापदार्थहैनहीं॥यातैं सोब्रह्मविद्याहीं दुर्लभहै ॥अब याअर्थके स्पष्टकरणेवासतै प्रथम सर्वलोकोंविषे शरीरादिकसाधनोंकीसमानता दिखावैं हैं॥ हे आश्विनीकुमारो॥ यास्थूलशरीरतौंविना सुखदुःखका भोगहोवैनहीं॥यातैं ब्रह्मलोकविषेस्थितजीवोंका तथाविष्ठाविषेस्थितजीवोंकास्थूलशरीर समानहींहै॥और आत्मज्ञानतौंविना ब्रह्मलोकवि

षेस्थितजीवोंकूं विषयइंद्रियकेसंबंधतैं जैसेसुखउत्पन्नहोवै है ॥ तैसे विष्ठाविषेस्थितजीवोंकूंभी विषयइंद्रियकेसंबंधतैं सुखउत्पन्नहोवै है ॥ यातैं सुखभी सर्वत्र समानहीं है ॥ याकहणेकरिकै स्थूलशरीरकीसर्वत्रसमानतादिखाई ॥अब सूक्ष्मशरीरकी सर्वत्र समानतादिखावैं हैं ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ वाक् पाणि पाद पायु उपस्थ यहपंचकर्मइंद्रिय ॥ तथा श्रोत्र त्वक् चक्षु रसन घ्राण यहपंचज्ञानइंद्रिय ॥ तथा मन बुद्धि चित्त अहंकार यहचतुष्टयअंतःकरण ॥ तथा प्राण अपान समान व्यान उदान यहपंचप्राण॥यहसंपूर्णवाक्आदिक सूक्ष्मशरीरके अवयव हैं ॥ तेवाक्आदिकअवयभी ब्रह्मलोकविषेस्थित जंगमजीवोंके तथामनुष्यलोकविषेस्थित जंगमजीवोंके समानहीं हैं ॥और किस स्थानविषे अभिव्यक्तिकीन्यूनता तथाअधिकताकरिकै तिनोंकीविषमताभीप्रतीतहोवै है॥और हेअश्विनीकुमारो॥वाक्तआदिलैके प्राण पर्यंत जितनेकिसूक्ष्मशरीरकेअवयव हैं॥ ते जैसेमनुष्यादिकजंगमशरीरोंविषे हैं॥तैसे वृक्षादिकस्थावरशरीरोंविषेभी हैं॥परंतु जैसे मनुष्यादिकजंगमोंविषे तिनवाक्आदिकोंकी अभिव्यक्तिहोवै है ॥ तैसे वृक्षादिकस्थावरोंविषे तिनोंकीस्पष्टअभिव्यक्तिहोवैनहीं॥यातैं वृक्षादिक स्थावरशरीरभी मनुष्यादिक जंगमशरीरोंकेसमान है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ अभिव्यक्त इंद्रियोंवाले जेमनुष्यादिक जंगम हैं ॥ तिनोंकेसाथ अनभिव्यक्त इंद्रियवाले वृक्षादिक स्थावरोंकी समानता कहणी अत्यंत विरुद्ध है ॥ समाधान ॥ आपणे आपणे विषयों केग्रहणकरणे वासतै जोइंद्रियोंकाव्यापार है ॥ ताव्यापारकरिकैयुक्तइंद्रियोंकूं अभिव्यक्तकहैं हैं ॥ और तादृव्यापारतैंरहितइंद्रियोंकूं अनभिव्यक्तकहैं हैं॥सोइंद्रियोंकाअनभिव्यक्तपणा मनुष्यादिकजंगमों विषेभी कदाचित्रहै है॥जैसे गृहकेभीतरास्थितहुआ कोई पुरुष बाह्य अश्व केशब्दकूं श्रवणकरिकै ताशब्दरूपीहेतुतैं बाह्यवर्तमानअश्वका मनकरिकैअनुमानकरै है तिस कालविषे सर्ववाक्आदिकइंद्रिय आपणे आपणेव्यापारतैं रहितहोवैं हैं ॥ इसप्रकार न्यूनइंद्रियवालेजे बधिर तथाअंधादिक हैं तथा वृक्षादिकजे हैं ॥ तिनोंकूं जोज्ञानउत्पन्नहोवै है ॥ सोइंद्रियोंतौंविना उत्पन्नहोवैनहीं ॥ किंतु इंद्रियों करिकैहीउत्पन्नहोवै है ॥ परंतु तिनबधिरादिक न्यूनइंद्रियवाले पुरुषोंकी जेनेत्रादिकअभिव्यक्तइंद्रिय हैं ॥ तिनोंतैंभिन्नश्रोत्रादिकइंद्रियआपणेव्यापारतैंरहितहुए वर्तैं हैं॥यातैं बधिरअंधादिकोंविषे तथावृक्षादिकों

विषे इंद्रियोंकाअभावनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ सर्पविषेकर्णरूपगोलक है नहीं यातैं ताकेविषेश्रोत्रइंद्रियका अभावहोवैगा॥समाधान॥ हेअश्विनीकुमारो॥गोलककेअभावतैं इंद्रियोंकाअभावसंभवै नहीं॥ काहेतैं किसीशरीरविषेतौ नेत्रादिकइंद्रिय आपणेआपणेगोलकविषेस्थि तहोइके कार्यकूंकरै हैं ॥ और किसीशरीरविषे एकहीगोलकविषे दोइंद्रियस्थितहोइके आपणेआपणेकार्यकूंकरै हैं ॥ जैसे सर्पकेचक्षुगोलक विषेस्थितहोइके श्रोत्रइंद्रिय तथा नेत्रइंद्रिय आपणेआपणेकार्यकूंकरै हैं॥ यातैं सर्वशरीरोंविषे वाक्आदिक सूक्ष्मशरीरकेअवयवविद्यमान हैं ॥ इतनैंग्रंथकरिकै सुखदुःखकेसाधन वाक्आदिकइंद्रियोंकी सर्वत्रसमानतादिखाई॥अब सुखदुःखरूपफलकी सर्वत्रसमानतादिखावैं हैं॥ हेअश्विनीकुमारो॥वाक्आदिकइंद्रियोंविषे कोईएकइंद्रियहैअभिव्यक्त जिनोंकी अथवा संपूर्णवाक्आदिकइंद्रियहैंअभिव्यक्तजिनोंकी ऐसेजे मनुष्यादिकजंगम हैं तथावृक्षादिकस्थावर हैं॥ तिनोंकूं जोसुखदुःख उत्पन्नहोवै है॥सो केवल मनविषेही उत्पन्नहोवै है ॥ मनकूंछोडिकरिकै अन्यकिसी विषे सुखदुःखकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ और सोसुख तथादुःख एकइंद्रियकेव्यापारतैंउत्पन्नहोवै अथवा अनेकइंद्रियोंकेव्यापारतैं उत्पन्नहोवै ॥ याकेविषे कोईनियमनहीं ॥ परंतु तासुखविषे तथादुःखविषे स्वरूपतैंकोईविशेषतानहीं॥ किंतु सर्वशरीरोंविषे समानहींसुख दुःखहोवै है ॥ किंवा ॥ इंद्रियोंकरिकैप्राप्तहोणेयोग्य जेशब्दस्पर्शादिकविषय हैं तिनोंविषे जिसविषयविषे पुरुषकारागहोवै है॥तिसविषय कीप्राप्ति जभीतापुरुषकूंहोवै है तभीतापुरुषकेमनविषे सुखकीउत्पत्तिहोवै है ॥ औरजिसविषयविषे पुरुषकाद्वेष होवै है ॥ तिसविषयकी प्राप्ति जभी तापुरुषकूंहोवै है ॥ तभी तापुरुषकेमनविषे दुःखकीउत्पत्तिहोवै है ॥ यातैं आसक्तिरूप राग सुखकाकारण है ॥ और द्वेष दुःखकाकारण है ॥ सोराग जैसेदेवतावोंकूं आपणेशरीरादिकोंविषे है ॥ तैसे विष्ठाविषेस्थित क्रिमिआदिकनीचजीवोंकूंभी आपणेशरीरा दिकोंविषेरागहै ॥ इसप्रकार दुःखकीप्राप्तिकरणेहारे अपकारीजीवों विषे द्वेषभी देवतादिक उत्कृष्टशरीरोंविषे तथाक्रिमिआदिकनीचशरी रोंविषे समानहीं हैं ॥ यातैं रागद्वेषजन्यसुखदुःखभी सर्वशरीरों विषेसमानहीं हैं ॥ अब याही अर्थकूंस्पष्टकरिकैदिखावैं हैं ॥ हेअ श्विनी कुमारो जिसपुरुषका मृगोंकेमारणेविषे रागहोवै है ॥ तिसपुरुषकूं मृगकेप्राप्तिकरिकै जैसा सुख होवै है ॥ तथा जिस पुरुषकूं

गायन श्रवणकरणेविषे राग होवै है ॥ तिस पुरुषकूं गायनकी प्राप्तिकरिकै जैसा सुख होवै है ॥ तैसाही सुख कामी पुरुषकूं स्त्रीकेआ लिंगनतैंहोवै है ॥ और स्त्रीकेकामनावालेपुरुषकूं स्त्रीकेप्राप्तहुए जैसासुखहोवै है ॥ तैसाहीसुख पुत्रकीकामनावालेपुरुषकूं पुत्रकीप्राप्ति तैं होवैहै ॥ और पुत्रकी प्राप्तितैं पुत्रार्थीपुरुषोंकूं जैसासुखहोवै है ॥ तैसाहीसुख क्षुधातुरपुरुषकूं अन्नकी प्राप्तितैंहोवै है॥याप्रकारकीरीति सर्वत्रजानिलेणी ॥ यातैं आसक्तिरूपरागकरिकै सर्वशरीरोंविषे समानहीं सुखउत्पन्नहोवै है ॥ यहसिद्धभया॥अब द्वेषकरिकैसर्वजीवोंविषेदुः खकीसमानता दिखावै हैं ॥ हेअश्विनीकुमारो॥ अनिष्टवस्तुकेप्राप्तहुए एकइंद्रियकेव्यापारतैं तथाअनेकइंद्रियोंकेव्यापारतैं जोमनविषेदुःख उत्पन्नहोवै है ॥ सोभी सुखकीन्याईं सर्वत्रसमानहीं है ॥तात्पर्ययह ॥ विष्ठाविषेस्थितजोक्रिमिहै तिसकूं मरणकालविषे जैसादुःखहोवै है ॥ तैसाहीदुःख ब्रह्मलोकविषेस्थितजीवोंकूंमरणकालविषेहोवैहै ॥ अब सिंहावलोकनन्यायकरिकै पुनःसुखकी सर्वत्रसमानतादिखावै है ॥ जैसे सिंह मृगकूंमारिकै दूरिजाइके पुनःमृगकीतरफदेखै है॥जोकदाचित् दूसरामृग तहांआयाहोवै तौ तिसकूंभीमारो ॥याकूंसिंहावलोकन न्या यकहैं हैं॥हेअश्विनीकुमारो॥ब्रह्मलोकविषेस्थितब्रह्माकूं विषयइंद्रियकेसंबंधतैं जैसासुखहोवै है ॥ तैसाहीसुख विष्ठाविषेस्थितक्रिमिकूं विषय इंद्रियकेसंबंधतैंहोवै है॥और जैसे ब्रह्मलोकविषेस्थित ब्रह्माकूं सुखकेसाधन स्त्री पुत्र अन्नादिकपदार्थ हैं ॥तैसे विष्ठाविषेस्थितक्रिमिकूंभीसुख के साधन स्त्री पुत्र अन्नादिकपदार्थविद्यमानहैं॥और जैसे ब्रह्मलोकविषेस्थितब्रह्मा जन्ममरणकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे विष्ठाविषेस्थितक्रिमिभी जन्ममरणकूंप्राप्तहोवै है ॥ और सुखदुःखकेप्राप्तिकरणेहारादेहअभिमान जैसे ब्रह्माकूंहोवै है॥ तैसे विष्ठाकेक्रिमिकूंभीहोवैहै ॥यातैं विषयज न्यसुख तथाविषयजन्यसुखकेसाधन स्त्रीपुत्रादिक विष्ठाकेक्रिमितैं आदिलैकै ब्रह्मापर्यंत सर्वशरीरोंविषे प्राप्तहैं ॥ यातैं तिनोंविषेदुर्लभता संभ वैनहीं ॥ किंतु जन्ममरणकेनिवृत्तकरणेहारी ब्रह्मविद्याहीं दुर्लभहै ॥हेअश्विनकुमारो ॥ इसप्रकार ब्रह्मविद्याकी दुर्लभता मैंआपणेमनविषे विचारकरिकै देवराजइंद्रकेप्रति ताब्रह्मविद्याकाही उपदेशकरताभयापरंतुसोदेवराजइंद्र ब्रह्मविद्याकाअधिकारीथानहींयातैं ताब्रह्मविद्याकूं श्रवणकरिकै सोइंद्र उलटाक्रोधवान्होताभया॥और हमारेप्रति याप्रकारकी गुरुदक्षिणादेताभया देब्राह्मणआजदिनतैंलैके ॥ यहब्रह्मविद्या

तुमनैं किसीकेप्रति नहींउपदेशकरणी ॥ जोतूं स्नेहकेवशहुआ किसीकेप्रति यहब्रह्मविद्या कथनकरैगा ॥ तौ तुमारेमस्तककूं वज्रकरिकै मैं छेदनकरोंगा॥हेअश्विनीकुमारो॥याप्रकारकीआज्ञा जबीहमारेकूंइंद्रनैंकरीतबीमैं ताआज्ञाकूंअंगीकारकरताभया॥याकारणतैंहीं तुमारेप्रति ब्रह्मविद्याके उपदेशकरणेविषे हमारेकूं महाचिंताप्राप्तभईहै ॥ शंका॥ हेभगवन् ॥ जोआपनैं देवराजइंद्रकेप्रति ब्रह्मविद्याकेनहींउपदेशकर णेकावचनदियाहै॥ तौहमारेप्रतिआप किसप्रकार ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरोंगे॥तात्पर्ययह॥जोहमारेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरौंगे॥तौइंद्र केप्रति जोआपनैंवचनदियाहैसो मिथ्याहोवैगा॥और जो तावचनकेसत्यकरणेवासतै हमारेप्रति नहीं उपदेशकरौंगे॥तौ पूर्वहमारेप्रति जोआ पनैं वचनदियाहै सो मिथ्याहोवैगा॥समाधान॥हेअश्विनीकुमारो॥हमनैं पूर्व तुमारेप्रति ब्रह्मविद्याकेउपदेशकरणेकावचनदियाहै ॥और अबी इंद्रकेप्रति ब्रह्मविद्याके नहींउपदेशकरणेकावचनदियाहै॥परंतु याकेविषेइतनीविशेषताहै॥किसीकेप्रति मैं ब्रह्मविद्याकाउपदेशनहींकरौंगा॥ याप्रकारका नियमकरिकैवचन हमनैं इंद्रकेप्रति नहींदिया॥किंतु जोहमनैं किसीकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकऱ्या॥तौ तुमनै हमारामस्तक छेदनकरणा॥याप्रकारकावचन हमनैं इंद्रकेप्रति कह्याहै॥यातैं तुमारेप्रति ब्रह्मविद्याकेउपदेशकरणेविषे हमारेकूं कोईप्रतिबंधकनहीं॥आपणे वचनकेसत्यकरणेवासतै मैं तुमारेप्रति अवश्यब्रह्मविद्याकाउपदेशकरौंगा ॥ शंका॥हेभगवन्॥ इंद्रकेवज्रकरिकै मृत्युहोणेकाभयही हमारे उपदेशविषे प्रतिबंधकहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ मरणतैं हमारेकूंभयनहीं काहेतैं यासंसारविषे जोजीव उत्पन्न भयाहै ॥ तिसका किसीनाकिसीनिमित्ततैं अवश्यमृत्युहोवैगा ॥ तिनमृत्युकेनिमित्तोंविषे जोदेवराजइंद्र हमारेमृत्युकाकारणहोवै तौ अत्यंतदुर्लभहै॥ ॥ तात्पर्ययह ॥ दध्यङ्ऋषि आपणे वचनकेसत्यकरणेवासतै देवराजइंद्रतेभी भयकूंनहीं प्राप्त होताभया ॥ याप्रकारकी हमारीकीर्ति सर्वलोक करैंगे ॥ और हेअश्विनीकुमारो ॥ संपूर्णधनकानाशहोइजाणाभी श्रेष्ठ है ॥ और संपूर्णस्त्रीपुत्रादिकबांधवोंकापरित्यागहोइजा णाभीश्रेष्ठहै ॥ तथा आपणामृत्युहोइजाणाभी श्रेष्ठहै ॥ परंतु मिथ्यावचनकाभाषणकरणा बुद्धिमान्पुरुषोंकूं श्रेष्ठनहीं॥ और हे अश्विनी कुमारो आपणेमरणकूंतुच्छजाणिकरिकै तुमारेप्रति ब्रह्मविद्याकेउपदेशकरणेविषेभी हमारेकूं मिथ्यावचनकेभाषणकी महान्चिंता

होवै है॥काहे तैं जभी मैंतुमारेप्रति ब्रह्मविद्याकेउपदेशकाआरंभकरौंगा॥तभी उसीकालविषे देवराजइंद्र हमारामस्तकछेदनकरैगा॥मस्त कछेदनहुएकिसप्रकारमैं तुमारेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरौंगा ॥ यातैं पुनःहमारावचन मिथ्याहोवैगा॥और वचनकेमिथ्याहोणेकरिकै मैं नरकविषेप्राप्तहोवौंगा ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ याप्रकारकीचिंता हमारेमनविषे है ॥ औरतुमदोनों बुद्धिमान्हो ॥यातैं जोउपाय हमारेकूंक रणेयोग्यहोवै ॥ सोउपाय तुम हमारेप्रति कथनकरो ॥ हे अश्विनीकुमारो ॥ इसप्रकार जभीदध्यङ्ऋषि तुमारेगुरुनै तुमारे प्रतिकह्या ॥ तभी तुमदोनों आपणेअर्थकेलोभकरिकैयुक्तहुए दध्यङ्ऋषिगुरुकेप्रति याप्रकारकावचन कहते भये ॥ हेगुरो दुष्टइंद्रतैं आप भयकूंमत प्राप्तहोवो ॥ काहेतैं अंगोंकेसंधानकरणेहारी जोमृतसंजीवनीविद्या है॥तिसकूं हम जाणते हैं॥यातैं इंद्रकरिकै चलायाहुआभीवज्र ताहमारी विद्याकेप्रभावतैं निष्फलहोवैगा ॥ और हेगुरो इंद्रकेवज्रकूंनिष्फलकरणा जोतुमारेकूंदुष्टनहींहोवै ॥ तौ हमदोनों दूसराउपायकरैंगे ॥ ता उपायकूं आपश्रवणकरो ॥ यहजो अश्व सन्मुखदीखै है ॥ ताकेमस्तककूं हमछेदनकरैंगे ॥ तथा आपकेमस्तककूं छेदनकरैंगे ॥ पश्चात् अश्वकामस्तक आपकी ग्रीवाविषेस्थापनकरैंगे ॥ औरआपकामस्तक अश्वकीग्रीवाविषेस्थापन करैंगे ॥ तिसतैं अनंतर अश्वके मस्तक करिकै आपनैं हमारेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरणा ॥ जभीदेवराजइंद्र वज्रकरिकै आपकेमस्तककाछेदनकरैगा ॥ तभीहम पूर्वकीन्याईं आपकामस्तक आपकी ग्रीवाविषेस्थापनकरैंगे ॥ और अश्वकामस्तक अश्वकीग्रीवाविषे स्थापनकरैंगे ॥ हेगुरो याउपायकरणे तैं इतनेफ लहोवै हैं ॥ एकतौ अश्वका तथाआपका मरणनहींहोवै है ॥ और दूसरा हमदोनोंकूं गुरुहिंसानहींहोवै है॥और तीसरा आपका अपमृत्यु नहींहोवै है ॥ इंद्रकेवज्रकरिकै जोमृत्युहोवै है ॥ ताकूं शास्त्रविषे अपमृत्युकहैं हैं ॥ और चतुर्थ आपका हमारेतैं मिथ्यावचननहींहोवैगा॥ इतनेफल याउपायविषे हैं ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ आपणेअर्थकेलोभकरिकैयुक्त तुमदोनोंनैं जभीयाप्रकारकावचन दध्यङ्ऋषिगुरुकेप्रतिक ह्या ॥ तभी सोसमदर्शी दध्यङ्ऋषि तुमारेवचनकूंअंगीकारकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर जैसे दयारहित कोईपुरुष पशुकामस्तकछेदन करै है ॥ तैसेदयारहितहुए तुमदोनों शस्त्रकरिकै आपणेदध्यङ्ऋषिगुरुकेमस्तककूं छेदनकरतेभये ॥ तथा अश्वकेमस्तककूंभी छेदन

करतेभये ॥ तिसतैंअनंतर दध्यङ्ङृषिकामस्तक अश्वकी ग्रीवाविषे स्थापनकरतेभये ॥ और अश्वकामस्तक दध्यङ्ङृषिकी ग्रीवाविषे स्थापनकरतेभये ॥ तिसतैंअनंतर हयग्रीवसंज्ञाकूं प्राप्तहुआ सोदध्यङ्ङृषि तुमारागुरु प्रथम तुमारेप्रति चित्तशुद्धिकेसाधन कर्मउपासना उपदेश करताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोदध्यङ्ङृषि याप्रकारकाउपदेश तुमारेप्रति करताभया॥हेअश्विनीकुमारो जबपर्यंत चित्तशुद्ध नहींभया तबपर्यंत कर्मउपासना करणेयोग्य है ॥ चित्तकेशुद्धहुएतैंअनंतर कर्मउपासनाकरणेका कोईप्रयोजननहीं ॥ यातैं चित्तकीशुद्धिहुएतैंअनंतर कर्मउपासनाका परित्यागकरणेयोग्य है ॥ किंतु केवलवेदांतशास्त्रकाविचारही निरंतरकरणेयोग्य है ॥और तिसतैंअनंतर सोदध्यङ्ङृषि तुमारागुरु जोब्रह्मविद्या इंद्रकेप्रतिउपदेशकरीथी ॥ सोईहीब्रह्मविद्या तुमारेप्रति उपदेशकरताभया॥और सोदध्यङ्ङृषि तुमारागुरु पुनःतुमारेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेअश्विनीकुमारो॥ यह जो ब्रह्मविद्या हमनैं तुमारेप्रति उपदेशकरी है॥ सोब्रह्मविद्या आजदिनतैंलैके आगेआगे निःशंकहोईकै कोईऋषिं आपणे शिष्योंप्रति नहींकहैगा ॥ किंतु शंकायुक्तहुए कौपीतकिआदिकऋषि आपणेशिष्योंकेप्रति यहब्रह्मविद्या उपदेशकरैंगे ॥ काहेतैं यह देवराजइंद्र हस्तविषेवज्रलैके हमारेमारणेवासतैं आकाश विषेस्थित है ॥ और सोइंद्र याप्रकारकासंकल्प आपणे मन विषेकरिरह्या है॥जोयहब्राह्मण हमारीआज्ञाकाउल्लंघनकरिकै अश्विनीकुमारोंकेप्रति समग्रब्रह्मविद्याका उपदेशकरैगा ॥ तौ वज्रकरिकै याब्राह्मणका मस्तक मैं छेदनकरौंगा ॥ याप्रकारकासंकल्पकरिकै सोदेवराजइंद्र आपणे वचनकेसत्य करणेवासतैं आकाशविषे स्थित है ॥ हेअश्विनी कुमारो ॥ जबीमैं तुमारेप्रति समग्रब्रह्मविद्याका उपदेश करिरहौंगा ॥ तबी सोदेवराजइंद्र हमारेमस्तककूं अवश्यछेदनकरैगा ॥ और हमारेमस्तककूंछेदनहुआदेखिकरिकै संपूर्णब्राह्मण भयकूंप्राप्तहोवैंगे और इंद्रतैंभयकूंप्राप्तहुएतेब्राह्मण आपणे प्रियपुत्रोंकेताईंभी संपूर्णब्रह्मविद्याकाउपदेशनहींकरैंगे ॥ किंतु कौपीतकिआदिककोईकऋषितौ आपणेशिष्योंकेप्रति अर्द्धब्रह्मविद्याकाउपदेशकरैंगे ॥ और कोईकऋषितौ तपादिकोंकरिकै परमात्मादेवकूंप्रसन्नकरैंगे ॥ तापरमात्मादेवकेअनुग्रहकरिकैयुक्तहुए तेऋषि किसीएकशिष्यकेप्रति ब्रह्मविद्याका उपदेशकरैंगे ॥ परंतु तिनोंकूंभी देवराजइंद्रतैं यत्किंचित् भय

अवश्यहोवैगा ॥ तात्पर्य यह ॥ सूर्यकेसमान है तेजजिसका ऐसाजो सूर्य भगवान्का शिष्य याज्ञवल्क्यमुनि है ॥ तिसकूं छोडि करिकै अन्यसंपूर्ण ऋषि इंद्रतैं भयकूंप्राप्तहोवैंगे ॥ एक याज्ञवल्क्यमुनि इंद्रतैं भयकूं नमानि करिकै आपणे शिष्योंके प्रति संपूर्ण ब्रह्मविद्याका उपदेशकरैगा ॥ हे अश्विनीकुमारो ॥ इसप्रकार जभी दध्यङ्ङृषिनैं तुमारेप्रति संपूर्णब्रह्मविद्याकाउपदेशकऱ्या ॥ तभी सोदेवराजइंद्र वज्र करिकै तुमारेगुरुकामस्तक छेदनकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर तामस्तककूं भूमिविषे गिऱ्याहुआदेखिकै तुमदोनों तामस्तककूं उठाइकै पुनःअश्वकीग्रीवाविषे स्थापनकरतेभये ॥ और अश्वकीग्रीवाविषेस्थित जोदध्यङ्ङृषिकामस्तकथा॥ तिसकूं उतारिकै पुनःदध्यङ्ङृषिके ग्रीवाविषे स्थापनकरते भये॥ और हे अश्विनीकुमारो ॥ दध्यङ्ङृषिनैं जो ब्रह्मविद्या तुमारेप्रतिउपदेशकरीथी॥और जिसब्रह्मविद्याकेलोभकरिकै गुरुकेमस्तककाछेदनरूप अनुचितकर्म तुमोनैं कऱ्याथा ॥ सो ब्रह्मविद्या पुनःतुमारेस्मरणकरावणेवासतैं संक्षेपतैं मैं कथन करताहुं तुम श्रवणकरो ॥ हे अश्विनीकुमारो ॥ जैसे लोकविषे महाराजा आपणे निवासवासतैं प्रथम महानपुरीरचै है॥ तिसतैं अनंतर अल्पपुरियोंकूंरचै है ॥ तैसे जगत्कारण परमात्मादेव प्रथम समष्टिशरीररूपी महानपुरीकूं उत्पन्नकरताभया ॥ तिसतैं अनंतर व्यष्टिशरीररूपी अनंतपुरियोंकूं उत्पन्नकरताभया ॥ तिनोंविषेभी कोईशरीर चारिपादोंवाले उत्पन्न करताभया ॥ जैसे गौअश्वादिक हैं ॥ और कितनेकशरीर दोपादोंवाले उत्पन्न करता भया ॥ जैसे मनुष्यादिकहैं ॥ और कितनेक शरीर तीनपादोंवाले उत्पन्न करता भया॥ और कितनेकशरीर एकपादवाले उत्पन्न करताभया और कितनेकशरीर पादोंतैं रहित उत्पन्नकरताभया ॥ जैसे सर्पादिक हैं ॥ इसतैं आदिलेकेअनंतप्रकारकेशरीरोंकूं सोपरमात्मादेव रचताभया ॥ और जैसे पक्षी आपणेशरीरकासंकोचकरिकै आपणेगृहविषेप्रवेशकरै है ॥ तैसे यहविभुपरमात्मादेवभी परिच्छिन्नताअभिमानरूप अत्यंतसूक्ष्मस्वरूपकूंधारणकरिकै तिनशरीररूपीपुरियोंविषे प्रवेश करता भया ॥ और हे अश्विनीकुमारो ॥ यह आनंद स्वरूपआत्मादेव संपूर्णशरीररूपी पुरियोंविषेनिवासकरै है ॥याकारणतैं याआत्मादेवकूं शास्त्रविषे पुरुषकहैं हैं ॥ अथवा यहपरमात्मादेव आपणे अस्तिभाति प्रियरूपकरिकै संपूर्णशरीर रूपपुरियोंकूं पूर्णकरै है ॥ याकारणतैं आत्माकूं

श्रुति पुरुषकहैं हैं॥और हेअश्विनीकुमारो॥जैसे संपूर्णघटमठादिकपदार्थ अंतरबाहर आकाशकारिकैव्याप्तहैं॥तैसे यहसंपूर्णप्रपंच अंतरबाहर परमात्मापुरुषकारिकैव्याप्त हैं ॥ और जैसे तंतुवोंकारिकैव्याप्त हुआ तथा ओतप्रोत हुआ पट तंतुवोंविषेहींस्थितहोवैहै ॥ तैसे यह संपूर्ण जगत् आनंदस्वरूपआत्माविषेहींस्थितहोवै है ॥ और हेअश्विनीकुमारो॥ जोआनंदस्वरुपआत्मा पूर्व सर्वशरीरोंविषे प्रवेशकरताभया॥ सोईही आनंदस्वरूपआत्मा ॥ इदानींकालविषे तुमारेहृदयदेशविषे तथाहमारेहृदयदेशविषे तथाअन्यसर्वप्राणियोंके हृदयदेशविषे विशे परूपकरिकै प्रतीतहोवै है ॥ दृष्टांत ॥ जैसे जो जल पूर्वघटविषेप्रवेशकरै है॥ सोईहीजल मध्यकालविषे घटविषेस्थितहुआ प्रतीतहोवै है॥ और हेअश्विनीकुमारो ॥ जैसे जल स्वभावतैं यद्यपि एकरूपवालाहै॥तथापि स्थूलघटविषे स्थितहुआ सोजल स्थूलकह्याजावै है ॥ और सूक्ष्मघटविषेस्थितहुआ सोजल सूक्ष्मकह्याजावै है ॥ और अग्निकारिकैतप्तघटविषेस्थितहुआ सोजल तप्तकह्याजावे है ॥ और शीतलघट विषेस्थितहुआ सोजल शीतलकह्याजावै है ॥ और धूलीकारिकैआच्छादितघटविषेस्थितहुआ सोजल मैलाकह्याजावै है॥ और सुगंधघट विषेस्थितहुआ सोजल सुगंधकह्याजावै है और दुर्गंधघटविषेस्थितहुआ सोजल दुर्गंधकह्याजावै है और वायु कारिकै चलायमान घटविषे स्थितहुआ सोजल चलायमानकह्याजावै है॥और निश्चलघटविषेस्थितहुआ सोजल निश्चलकह्याजावै है और सूर्य कारिकै प्रकाशित घट विषेस्थितहुआ सोजल प्रकाशवान कह्याजावै है॥और अंधकारकारिकैआवृतघटविषेस्थितहुआ सोजल अंधकाररूपकह्याजावै है॥इसप्रकार जिसजिसउपाधिकेसाथ जलकासंबंधहोवै है तिसतिसउपाधिकेस्वरूपकूं जल प्राप्तहोवै है ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्माभी स्थूलशरीरके तादात्म्यसंबंधतैं आपणेकूंस्थूलमानै है ॥ और सूक्ष्मशरीरकेतादात्म्यसंबंधतैं यहआत्मा आपणेकूंसूक्ष्ममानै है॥ और जडशरीरकेता दात्म्यसंबंधतैं यहआत्मादेव आपणेकूंजडमानै है ॥ और बुद्धिमान्शरीरकेतादात्म्यसंबंधतैं यहआत्मादेव आपणेकूंबुद्धिमान्मानै है ॥ और धनीशरीरकेतादात्म्यसंबंधतैं यहपरमात्मादेव आपणेकूंधनीमानै है ॥ और निर्धनशरीरकेतादात्म्यसंबंधतैं यह परमात्मादेव आप णेकूंनिर्धनमानै है ॥ और देवतादिक उत्कृष्टशरीरकेतादात्म्यसंबंधतैं यह परमात्मादेव आपणेकूं उत्कृष्टमानै है ॥ और नीचशरीरके

तादात्म्यसंबंधतैं यहपरमात्मादेव आपणेकूंनीचमानै है ॥ और सुखीदुःखीशरीरकेतादात्म्यसंबंधतैं यहपरमात्मादेव आपणेकूंसु खीदुःखीमानै है ॥ इसतैंआदिलेकेअनंतप्रकारके शरीरादिकउपाधियोंकेधर्म अज्ञानकरिकैमोहितहुआ यहआत्मा आपणेविषेमानै है ॥ अन्यदृष्टांत ॥ जैसे विषयासक्तकामीपुरुष कामिनीकेधर्मोंकूंआपणेविषेमानै है ॥ तात्पर्ययह ॥ कामिनीकूंचिंतातुरदेखिकारिकै सो कामीपुरुष आपभीचिंतातुरहोवै है ॥ और कामिनीकूंदुःखीदेखिकरिकै सो कामीपुरुष आपभीदुःखीहोवै है ॥ और कामिनीकूंप्रसन्न देखिकरिकै सोकामीपुरुष आपभीप्रसन्नहोवै है ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्मा यद्यपि बुद्धिआदिकोंकेसुखदुःखादिकधर्मोंतैंरहित है ॥ तथापि अज्ञानकृत तादात्म्यसंबंधतैं तिनबुद्धिआदिकोंके सुखदुःखादिकधर्मोंकूं आपणेविषेमानै है ॥ और हेअश्विनीकुमारो ॥ यहही परमात्मादेव सृष्टिकेआदिकालविषे आकाशादिकपंचभूतोंकूं तथातिनभूतोंकेकार्यशरीरोंकूं तथाशब्दप्रपंचकूं उत्पन्नकरिकै तिनसर्व पदार्थोंकेसाथ तादात्म्यभावकूंप्राप्तहोइकै तिनसर्वपदार्थोंकेभिन्नभिन्न नामोंकूंकरताभया ॥ और यहपरमात्मादेव वाक्आदिकइंद्रियों केसाथ तथावाक्आदिकोंकाप्रेरकजोबुद्धिहै ताकेसाथ तादात्म्यभावकूंप्राप्तहोइकै वचनउच्चारणादिक नानाप्रकारकेव्यवहारोंकूंकरताहु आ वाक्आदिरूपहोवै है ॥ तथा तूं मैं अन्यप्राणी इत्यादिकअनंतरूपोंकूंप्राप्तहोवै है ॥ और हेअश्विनीकुमारो ॥ वास्तवतैंभेदरहित असंगआत्मा जो नानाप्रकारकेभेदोंकूंउत्पन्नकरै है ॥ सो आपणे इंद्रस्वभावकेजनावणेवासतैं करै है ॥ तात्पर्ययह ॥ यह परमात्मादेव संपूर्णजगत्कूंउत्पन्नकरिकै तासंपूर्णजगत्कूं आत्मारूपकरिकैदेखताभया ॥ या कारणतैं सो परमात्मादेव इंद्रसंज्ञाकूंप्राप्तहोताभया ॥ सो इंद्रसंज्ञा जगत्कीउत्पत्तितैंविना संभवैनहीं ॥ यातैं वास्तवतैंभेदरहितहुआभी यह परमात्मादेव नानाप्रकारकेभेदोंकूंउत्पन्नकरै है ॥ अब शरीरादिकउपाधियोंविषे मिथ्यात्वबोधनकरणेवासतैं प्रथम तिनोंविषेमायाकीकार्यतादिखावैं हैं॥हेअश्विनीकुमारो ॥ जैसे लोकविषे मायावीऐंद्रजालिकपुरुष आपणीमायाकरिकै नानाप्रकारके हस्तिव्याघ्रादिकरूपोंकूं धारणकरै है ॥ तैसेएकहीपरमात्मादेव आपणीमाया करिकै नानाप्रकारकेरूपोंकूं धारनकरै है ॥ परंतु तिनमायाकृतविशेषरूपोंकरिकै परमात्माका अस्तिभाति प्रियरूप वास्तवस्वभाव नि

वृत्तहोवै नहीं ॥ अब याहींअर्थकूं युक्तियोंकरिकैनिरूपणकरैं हैं ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ यालोकविषे बुद्धिमान् जे सुवर्णकारादिकपुरुष हैं॥ तेभी अन्यस्वभाववालेसुवर्णादिकपदार्थोंका अन्यस्वभावकरणेविषे समर्थहोवैनहीं ॥ किंतु तिसीसुवर्णादिकोंविषे कुंडलकटकादिक विशे परूपोंकूंकरैं हैं ॥ यातैं वस्तुकेस्वभावकूंअन्यथाकरणेविषे कोईभीप्राणीसमर्थनहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे एकशत शिल्पिपुरुष एकठेहोइकेभी तंतुरूपसूत्रकूं सुवर्णरूपकरिसकैंनहीं ॥ तथा एकसहस्र कुलाल एकठेहोइकैभीकाष्ठकूं मृत्तिकाकरिस्सकैंनहीं॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जो उपायकरिकै वस्तु अन्यभावकूंनहींप्राप्तहोताहोवै तौ धातुमारणेकेशास्त्रविषे ताम्रादिकधातुवोंकूं सुवर्णकरणेकाप्रकार लिख्याहै सो असं गतहोवैगा ॥ समाधान ॥ धातुमारणेकेशास्त्रकीरीतिसैं जेपुरुष ताम्रादिकधातुवोंकूंसुवर्णकरैं हैं ॥ तेपुरुषभी असत्यसुवर्णकीउत्पत्तिकरैं नहीं ॥ काहेतैं जो उपायकरिकैंअसत्यवस्तुकीभी उत्पत्तिहोतीहोवै तौ असत्यशशशृंगकी तथावंध्यापुत्रकीभी उपायकरिकैंउत्पत्तिहोणी चाहिये ॥ और असत्यनरशृंगादिकोंकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ यातैं औषधिआदिकउपायोंकरिकै असत्यसुवर्णकीउत्पत्तिहोवैनहीं किंतु औष धिकेबलतैं ताम्रादिकधातुवोंके पूर्वरक्तरूपकाअभिभवकरिकै ताकेविषे पीतरूपकीउत्पत्तिकरैं हैं ॥ तथापि पूर्वताम्रधातुतैं सोसुवर्णभिन्न नहीं ॥ शंका हेभगवन् ॥ जोपूर्वताम्रधातुतैं सुवर्ण भिन्ननहींहोवै है ॥ तौ यहसुवर्ण पूर्वताम्रधातुतैं भिन्नहै याप्रकारकीभेदप्रतीति तिनपुरु षोंकूं नहोणीचाहिये ॥ समाधान ॥ तहाँ ताम्रधातुकातथासुवर्णका यद्यपि परस्परभेदनहीं॥तथापि रक्तरूपका तथापीतरूपका परस्पर भेदहै ॥ ताभेदकूंअंगीकारकरिकैहीं तिनपुरुषोंकूं याप्रकारकीभ्रांतिहोवै है यहसुवर्ण पूर्वताम्रतैंभिन्नहै ॥यातैं हेअश्विनीकुमारो॥ मृत्तिका सुवर्णादिकोंका जैसापूर्वस्वभावहै ॥ तैसाही सर्वकालविषेरहैहै किसीकालविषे तिनोंकास्वभाव अन्यथाहोवैनहीं ॥ शंका हेभगवन् ॥ जो वस्तुकास्वभाव अन्यथानहींहोताहोवै ॥ तौ कुलाल दंडचक्रादिकसामग्रीमृत्तिकातैंघटकीउत्पत्तिकरैंहै ॥ तेकुलालादिककारण व्यर्थहो वैंगे ॥ समाधान ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ कुलालादिकोंकरिकै मृत्तिका अन्यथाभावकूंप्राप्तहोवैनहीं॥किंतु कुलालादिककारणोंकरिकै सो मृत्तिका घटशरावादिकविशेषरूपोंकूंप्राप्तहोवै है यातैं ॥ कुलालादिककारण व्यर्थनहीं ॥ शंका ॥हेभगवन्॥ तेघटशरावादिकविशेषरूप

ही मृत्तिकाकास्वभाव काहेतैंनहींहोवैं ॥ समाधान ॥ हेआश्विनीकुमारो ॥ तेघटशरावादिकविशेषरूप मृत्तिकाकास्वभावनहीं ॥ जोघटशरावादिकविशेषरूपमृत्तिकाका स्वभावहीहोवैं ॥ तौ घटादिकविशेषरूपोंकेनाशहुएतैंअनंतर मृत्तिकाकीप्रतीति नहींहोणीचा हिये ॥ और घटशरावादिकोंतैंविनाभी मृत्तिकादेखीती है ॥ यातैं घटशरावादिकविशेषरूप मृतिकाकास्वभावनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ जिसवस्तुका जो स्वभावहोवै है ॥ तास्वभावकेनिवृत्तहुए तावस्तुकीभीनिवृत्तिहोवै है ॥ जैसे तेजकास्वभाव जोप्रकाश है ॥ ताप काशकेनिवृत्तहुए सोतेजभीनिवृत्तहोवै है ॥ तैसे घटशरावादिकविशेषरूप जोमृत्तिकाकास्वभावहोवै॥तौ घटादिकोंकेनाशहुए मृत्तिकाभी नाशहोणाचाहिये ॥ और घटादिकोंकेनाशहुएभी मृत्तिकाकानाशहोवैनहीं ॥ यातैं घटशरावादिकविशेषरूप मृत्तिकाकास्वभावनहीं ॥ किंवा ॥ लोकविषेभी विशेषरूपकेनष्टहुए वस्तुकानाशहोवैनहीं ॥ जैसे मूर्तत्वस्वभाववालीपृथिवी पूर्वपिंडरूपविशेषभावकूं परित्यागक रिकै घटभावकूंप्राप्तहोवै है॥ तथापि आपणाजोमूर्तत्वस्वभाव है॥ताकूं कदाचित्भी पृथिवीपरित्यागकरैनहीं॥याकहणेतैं यहसिद्धभया॥ मृत्तिका सुवर्णादिक वस्तुवोंकेविद्यमानहुएभी घटशरावादिकविशेषरूप तथाकुंडलकंकणादिकविशेषरूप प्रतीतहोतेनहीं ॥ यातैं तेघटा दिकविशेषरूपमृत्तिकादिकवस्तुवोंविषे आगमापायीधर्म हैं॥और जोपदार्थ आगमापायीहोवै है॥सोपदार्थ तावस्तुकास्वभाव नहींहोवेहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे मायावीऐंद्रजालिकपुरुष आपणीमायाकेप्रभावतैं कबी सिंहरूपकूंधारणकरै है ॥और कबी हस्तिरूपकूंधारणकरै है ॥ सो सिंहपणा तथाहस्तिपणा मायावीपुरुषविषे सर्वदाहोवैनहीं॥किंतु किसीनिमित्तपाइके कबीकबीहोवै है ॥यातैं आगमापायीहोणेतैं सोसिंह पणा तथाहस्तिपणा मायावीपुरुषकास्वभावनहीं ॥ तैसे घटशरावादिकविशेषरूप मृत्तिकादिकवस्तुकास्वभावनहीं ॥ अब तिनविशेषरू पोंविषे सत्यअसत्यतैं विलक्षणतादिखावैं हैं ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ तेविशेषरूप जोवस्तुकीन्याईं सत्यरूपहोवैं ॥ तौ वस्तुकेस्वभावकी न्याईं तिनविशेषरूपोंकाबाध नहींहोणाचाहिये ॥ और वस्तुकेविद्यमानहुएभी तिनविशेषरूपोंकाबाध देखीता है ॥ यातैं तेविशेषरूप सत्यनहीं॥ किंतु सत्यतैं विलक्षण है॥और तेविशेषरूप असत्यभीनहीं॥काहेतैं वंध्यापुत्र तथानरशृंगादिक जेअसत्यपदार्थ हैं ॥ ते नेत्रा

दिकइंद्रियोंकेसंबंधकरिकै किसीभीजीवकूं प्रत्यक्षहोवैनहीं॥ आर यहविशेषरूपतौ सर्वप्राणियोंकूं नेत्रादिकइंद्रियोंकेसंबंधकरिकै प्रत्यक्षहो
वै हैं॥यातैं तेविशेषरूप असत्यतैंभी विलक्षण हैं॥और जोपदार्थ सत्यअसत्यतैंविलक्षणहोवै है॥सोपदार्थ शुक्तिरजतकीन्याईं मिथ्याहीहो
वै है॥ और जोपदार्थ मिथ्याहोवै है॥सोपदार्थ मायाकाहीकार्यहोवै है॥यातैं संपूर्णविशेषरूपोंका मायाहीकारण है॥अब तामायाकूंनिरू
पणकरै हैं ॥ हेअश्विनीकुमारो॥वास्तवतैं अत्यंतअसत् जोविशेषरूप है ॥तिनोंका नेत्रादिकइंद्रियोंकरिकै प्रत्यक्षसंभवैनहीं ॥और तिन
विशेषरूपोंकाप्रत्यक्ष सर्वजनोंकूंहोवै है॥यातैं जिसकेप्रभावतैं तिनअसत्यविशेषरूपोंका प्रत्यक्षहोवै है तिसकानाम माया है ॥तात्पर्ययह
जैसे दिनविषेभोजनकूंनकरणेहाराजो स्थूलपुरुष है ॥ तिसकीस्थूलता रात्रिभोजनतैंविना संभवैनहीं ॥ यातैं तापुरुषकीस्थूलता तापुरुष
केरात्रिभोजनकीकल्पनाकरावै है॥तैसे अत्यंतअसत्य विशेषरूपोंकीजोप्रतीति है ॥ सो मायातैंविनासंभवैनहीं ॥ यातैं सोविशेषरूपोंकी
प्रतीतिही मायाकीकल्पनाकरावै है ॥ शंका ॥ हेभगवन्॥अत्यंतअसत्य जे वंध्यापुत्र नरशृंगादिकहैं॥तिनोंकाप्रत्यक्षज्ञान किसीजीवकूं
होवैनहीं ॥ और अत्यंतअसत्य विशेषरूपोंकाप्रत्यक्षज्ञान सर्वजीवोंकूंहोवै है याकेविषे कौनकारणहै॥ समाधान॥ हेअश्विनीकुमारो॥अस
त्य नरशृंग वंध्यापुत्रका तथाघटादिकविशेषरूपोंका यद्यपि वास्तवतैंभेदनहीं॥तथापि दुर्घटअर्थकूंसिद्धकरणेहारी जोमाया है तामायाक
रिकैतिनोंकाभेदकल्पनाकरीताहै ॥ और जैसे विशेषरूप तथानरशृंगादिकोंतैंतिनोंकाभेद यहदोनों मायाकरिकैकल्पनाकरीते हैं ॥ तैसे
मायाभी मायाकरिकैही कल्पनाकरीती है॥काहेतैं जैसे घटादिकविशेषरूप तथानरशृंगतैंतिनोंकाभेद यहदोनों असत्यहैं ॥ तैसेमायाभी
असत्यही है॥ असत्यवस्तुकीसिद्धि मायातैंविनाहोवैनहीं ॥ तात्पर्ययह॥जैसे गुहाविषेस्थित व्याघ्रका प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकै ज्ञानहो
वैहै ॥ तैसे मायाका प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकैज्ञानहोवैनहीं॥ काहेतैं जिसपदार्थकरिकै जिसपदार्थकीनिवृत्तिहोवै है॥ तिसपदार्थकरिकै
तिसपदार्थकीसिद्धिहोवैनहीं॥जैसेप्रकाशकरिकैअंधकारकीनिवृत्तिहोवैहै॥यातैंप्रकाशकरिकै अंधकारकीसिद्धिहोवैनहीं॥तैसेप्रमाणजन्यज्ञा
नकरिकै अज्ञानकीनिवृत्तिहोवै है ॥यातैं प्रमाणकरिकै अज्ञानरूपमायाकीसिद्धिसंभवैनहीं॥किंतु मायाकरिकैही मायाकीसिद्धिहोवैहैअब

ज्ञानीजीवोंकीप्रतीतितैं मायाकीसिद्धिकरैहैं॥हेअश्विनीकुमारो॥असत्यजेनरशृंगवंध्यापुत्रहैं॥तिनोंतैं शुक्तिरजतादिकविशेषरूपोंकाभेदकिस
हेतुतैं है॥याप्रकारकाप्रश्न जबीकोईपुरुष अज्ञानीजीवोंकेप्रति करैहै॥तबी तेअज्ञानीपुरुष हम नहींजाणते याप्रकारकाउत्तरदेवैहैंयातैंहमनहीं
जाणते यहजोअज्ञानीजीवोंकीप्रतीतिहै॥सोप्रतीतिही दुर्घटमायाकासाधकहै अब मायाकेदुर्घटताबोधनकरणेवासतैंचारिप्रकारकामायाशब्द
का अर्थनिरूपणकरैहैं॥तहाँ जोतीनकालविषेनहींहोवै ताकूं बुद्धिमान्पुरुष मायाकहैहैं॥ १॥अथवा॥ कार्यकारणरूपजगत्केभेदकाजोकारण
होवै ताकूं शास्त्रकेवेत्तापुरुष मायाकहैं हैं॥२॥अथवा॥ हमजीवोंकेआत्मस्वरूपज्ञानकूं जोआच्छादनकरै है ताकूं विद्वान्पुरुष माया कहैं
हैं ॥ ३ ॥ अथवा ॥ यथार्थज्ञानकरिकै जोनिवृत्तहोवैहै ताकूं विद्वान्पुरुष मायाकहैं हैं ॥ ४ ॥ अब याहीमायाशब्दकेअर्थोंकूंस्पष्टकरिकै
दिखावैं हैं ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ यहआनंदस्वरूपआत्मा वास्तवतैंअसंगहै॥और स्वप्रकाशहै ॥ तथा सजातीयभेद विजातीयभेद स्वग
तभेद यातीनभेदोंतैंरहितहै ॥ ऐसे असंग अद्वितीयआत्माविषे मायाकासंभवहोवैनहीं ॥ और हेअश्विनीकुमारो ॥ ऐसेअसंगअद्वितीय
आत्माविषे वास्तवतैं जगत्कीकारणतासंभवैनहीं ॥ और श्रुतिविषे आत्माकूं जगत्काकारण तथासर्वजगत्रूप कह्याहै ॥ याप्रकारकावि
चारकरिकै वेदवेत्तापुरुष असंगआत्माविषे जगत्कीकारणताकेसिद्धिवासतै तोअसंगआत्माविषे मायाकीकल्पनाकरैं हैं॥और हे अश्विनी
कुमारो ॥ जैसे सूर्यकेउदयहुए अंधकारकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तैसे याप्रकारकाज्ञान जभीजीवोंकूंहोवैहै ॥ तभी तिनोंकेअज्ञानकीनिवृत्तिहोवै
है ॥ सोअज्ञानयहहै ॥ यहआनंदस्वरूपआत्माही ॥ संपूर्णजगत्केउत्पत्तिस्थितिलयका कारणहै॥और यहसंपूर्णजगत् अस्तिभातिप्रिय
रूपहै॥और यहआत्मा सत्चित्आनंदस्वरूपहै॥तथा ब्रह्मरूपहै॥याप्रकारकेयथार्थज्ञानकरिकै अज्ञानकीनिवृत्तिहोवै है॥ और हेअश्विनी
कुमारो जैसे रज्जुकेविशेषरूप जे सर्पदंडादिकहैं ॥ ते रज्जुरूपअधिष्ठानकेज्ञानतैं निवृत्तहोइजावै हैं॥ तैसे निर्विशेषआत्माका विशेषरूप
जोप्रपंच है तथा प्रपंचकाकारणजोअज्ञानहै ॥ सो अधिष्ठानआत्माकेसाक्षात्कारकरिकै निवृत्तहोइजावैहै ॥ याकारणतैं शास्त्रवत्तापुरुष
ताअज्ञानकूंमायाकहैं हैं॥ और हेअश्विनीकुमारो ॥ जैसे दीपककरिकै अंधकारकाज्ञानहोवैनहीं ॥ तैसे हमसरीखे विवेकी पुरुष जहाँजहाँ

दृष्टिकरैहै ॥ तहां मायाकूंदेखतेनहीं ॥ यातैं यथार्थज्ञानकरिकै जो निवृत्तहोवै सो मायाकहिये है॥ यहमायाशब्दकाअर्थ संभवैहै ॥ और हेअश्विनीकुमारो ॥ सोजगत्काकारण माया यद्यपि एकहै ॥ तथापि यहघट है यहपट है इत्यादिकअनेकज्ञान घटादिकविषयोंकेअज्ञानों कीनिवृत्तिकरैहैं ॥ याकारणतैं सोएकहीमाया अनंतरूपोंकूंधारणकरैहै॥ तिनअनंतरूपोंकूं शास्त्रविषे तूलाअज्ञानकहैहैं॥तथा अवस्थाअ ज्ञानकहैहैं॥मूलाअज्ञानका तथा तूला अज्ञानका इतनाभेदहैजोअज्ञान ब्रह्मकेआश्रितहोइकै ब्रह्मकूंहीं आच्छादनकरैहै ॥ और ब्रह्मकेज्ञानतैं हीं निवृत्तहोवैहै॥ताकूं मूलाअज्ञानकहैहैं और जोअज्ञान घटादिकविषयावच्छिन्न चैतन्यकेआश्रितहोइकैघटादिकविषयावच्छिन्नचैतन्यकूंहीं आच्छादनकरैहै ॥ और घटादिकविषयावच्छिन्नचैतन्यकेज्ञानकरिकैहीं निवृत्तहोवैहै॥ ताकूं तूलाअज्ञानकहैहैं ॥ तथा अवस्थाअज्ञानक हैहैं॥याअवस्थाअज्ञानोंकूंग्रहणकरिकैही "इंद्रोमायाभिःपुरुरूपईयते" इत्यादिकश्रुतियोंविषे अनेकमाया कथनकरियाहैं॥और अजामेका इत्यादिकश्रुतियोंविषे जोमायाकीएकताकहीहै॥सो मूलाअज्ञानकूंलेकेकहीहै॥याप्रकारकीमायाकरिकै यहपरमात्मारूपइंद्र नानाप्रकारके रूपोंकूंधारणकरैहै॥दृष्टांत॥जैसे एकहीमायावीऐंद्रजालिकपुरुष आपणीमायाकरिकै अनेकरूपोंकूंधारणकरैहैतैसे वास्तवतैं एक अद्वितीय परमात्मादेव आपणीमायाकरिकै ॥ अनंतरूपोंकूंधारणकरैहै ॥ याप्रकार व्यासभगवानादिकतत्त्वेत्तापुरुषोंनैं ॥मायाकरिकै आत्माविषे नानारूपता कथनकरीहै ॥ तथापि तिनमहात्मापुरुषोंका आत्माकेनानापणेविषे तात्पर्यनहीं ॥ किंतु आत्माकेएकताबोधनकरणेवासतै तेमहात्मापुरुष लौकिकप्रमाणकरिकैसिद्ध नानाप्रकारकेभेदोंका अनुवादकरैं हैं॥ लोकप्रसिद्धअर्थके कथनकरणेहाराजोक्चनहैं ताकूं अनु वादकहैहैं ॥जैसे अग्नि हिमकाऔषधहै यहवचन लोकप्रसिद्धअर्थकाअनुवादकरैहै॥काहेतैं अग्निविषे हिमकेनिवृत्तिकीकारणता सर्वलोकों कूंअनुभवसिद्धहै ॥ तैसे सर्वअज्ञानीजीवोंके अनुभवकरिकै सिद्धजोनानाप्रकारकाभेदहै ॥ तिसका विद्वान्पुरुष अनुवादकरैहै ॥ और पुनः तेमहात्मापुरुष जगत्केकारणविषे लौकिकप्रमाणोंकी अप्रवृत्तिदेखिकरिकै सर्वव्यवहारकीसिद्धिवासतै एकमायाकूंहीं कारणरूपकरि कैकल्पनाकरैं हैं॥तात्पर्ययह॥संपूर्णविद्वान्पुरुष अद्वितीयआत्माकेबोधकरावणेवासतै तथामुमुक्षुजनोंकेबुद्धिकीवृद्धिवासतै आनंदस्वरूप

आत्माविषे अनेकप्रकारकरिकैजगत्काआरोपणकरैहैं ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ इसीअभिप्रायकरिकै दृश्यइंरूपिनैं तुमारेबोधकरावणेवासतै आत्माकेभेदकाकारण ॥ जो शरीर इंद्रिय विषयकाभेदहै ॥ सोतुमारेप्रति कथनकऱ्या है ॥ परंतु आत्माकेभेदविषे ॥ ऋषिकातात्पर्य नहीं किंतु आत्माविषे भेदकाआरोपणकरिकै ताकेनिषेधद्वारा अद्वितीयआत्माकेजनावणेविषे दृश्यइंऋषिकातात्पर्य है अब इंद्रियोंविषे भेदकीकारणता दिखावैं हैं ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ जैसे स्वर्गविषेस्थित जोदेवराजइंद्रहै ॥ सो त्रिलोकीविषे अनेककार्यकरणे वासतै आपणीमायाकरिकै अनेकरूपोंकूं धारणकरै है ऐसेदेवराजइंद्रकेरथोंविषे वायुकेसमानवेगवाले अनेकप्रकारकेअश्व जुडेहुए हैं ॥ तैसे या संसारविषेस्थितजोपरमात्मारूपइंद्रहै तिसके शरीररूपीरथोंविषे अत्यंतप्रबल इंद्रियरूपीअश्व विद्यमान हैं ॥ और ते इंद्रियरूपीअश्व एकएकशरीराविषे दशप्रकारके हैं ॥ तेसंपूर्णइंद्रियरूपीअश्व आत्माकेभेदकरणेहारे हैं ॥ तात्पर्ययह नेत्रादिकइंद्रियोंका जभीविषयकेसाथ संबंधहोवै है ॥ तभी अंतःकरणकीवृत्ति ताविषयाकारहोवै हैं ॥ यातैं नेत्रादिकइंद्रिय अंतःकरणकीवृत्तियोंकेभेदकरणेहारे हैं ॥ और वृत्तियोंकेभेदहुए तिनवृत्तियोंविषे प्रतिबिंबितआत्माकाभी भेदहोवै है ॥ यारीतितैं नेत्रादिकइंद्रिय आत्माकेभेदकरणेहारे हैं ॥ इतनैं कारिकै आत्माविषे इंद्रियोंकेभेदकाअध्यारोपदिखाया ॥ अब तिनोंकेअपवादकूं दिखावैं हैं ॥ हे अश्विनीकुमारो ॥ जिनइंद्रियादिकों कारिकै यहआत्मा भेदकूंप्राप्तहोवै है ॥ तिनइंद्रियोंसहितसंपूर्णप्रपंचका यहआत्मा देव अधिष्ठान है ॥ याकारणतैंही नेतिनेति यहश्रुति कल्पितप्रपंचकानिषेधकरिकै सर्वभेदतैंरहित अधिष्ठानआत्माकूं बोधनकरैं हैं ॥ इतनै कारिकै त्वंपदार्थकाशोधन दिखाया ॥ अब तत्पदार्थकेशोधनकाप्रकार दिखावैं हैं ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ जो वस्तु नानाप्रकारके भेदोंकारिकैभी भेदकूंनहीं प्राप्तहोवै है ॥ ताकूं विद्वान्पुरुष ब्रह्मरूपकरिकैनिश्चयकरैं हैं ॥ कसा है सोब्रह्म ॥ पूर्वपश्चिमादिक देशोंतैं तथाभूत भविष्यत् वर्तमान यातीनकालोंतैं रहित है ॥ और अंतरबाह्य स्वभाववालेजेपदार्थ हैं ॥ तिनोंतैंभी सोब्रह्मरहित है ॥ इसप्रकार तत् त्वं पदार्थका शोधनकरिकै अब तत्त्वंपदार्थकेअभेदकूंदिखावैं हैं ॥ हेअश्विनीकुमारो ॥ संपूर्णदेहधारीजीवोंका एकअद्वितीय आत्मा है ॥ सोअद्वितीयआत्मा अहं

ब्रह्मास्मि इत्यादिकमहावाक्योंकरिकै ब्रह्मरूपकरिकै जानणेयोग्य है ॥ कैसाहैसोब्रह्मरूपआत्मा ॥ द्रष्टारूपकरिकै तथाश्रोतारूपकरिकै संपूर्णजगत्काअनुभवकरे है ॥ और संपूर्णजगत्काआत्माहै ॥ और संपूर्णबुद्धि आदिकोंकासाक्षीहै ॥ और स्वप्रकाशआनंदस्वरूपहै ॥ हे अश्विनीकुमारो ॥ इसप्रकार सोदध्यङ्ऋषि तुमारागुरुसर्वमुमुक्षुजनोंकेकल्याणवासतै तुमारेप्रात आनंदस्वरूपआत्माका ब्रह्मरूपकरिकै उपदेशकरताभया ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारसोऋषि अश्विनीकुमारोंकेप्रति पूर्वगुह्यवृत्तांत कथनकरताभया ॥ और तिस ऋषिकेवचनोंकूंश्रवणकरिकै तेअश्विनीकुमार अत्यंतप्रसन्नहोतेभये॥ और ऋषिकेसर्वज्ञताकूंजाणिकरिकै तिसमहात्माऋषिकूं प्रणामकरते भये ॥ और जिसकार्यकेवासतै सोऋषि अश्विनीकुमारोंकेपासआयाथा॥ताऋषिकेकार्यकूं अश्विनीकुमार सिद्धकरतेभये ॥ और हेशिष्य पूर्वतुमनैंकौपीतकिऋषिकेभयकाकारणपूछाथा ॥ सोकौपीतकिऋषिकेभयकाकारण हमन तुमारेप्रति विस्तारतैंकथनकऱ्या ॥ दध्यङ्ऋषिकेमस्तककूंछेदनहुआदेखिकरिकै सोकौपीताकिऋषि इंद्रतैंभयकूंप्राप्तहोताभया ॥ याकारणतैंहीं शिष्योंकेप्रति समग्रब्रह्मविद्याकाउपदेश नहींकरताभया ॥ यहहीं कौपीतकिऋषिकेभयकाकारणहै ॥ और हे शिष्य दध्यङ्अथर्वणका तथाअश्विनीकुमारइंद्रका परस्परसंवादरूप जोयह इतिहास हमनैं तुमारेप्रतिकह्याहै ॥ सोइतिहास पूर्व वेदकेमंत्रोंकरिकै कथनकऱ्याहुआहै ॥ अब जिसअर्थकेश्रवणकरणेकी तुमारे कूंइच्छाहोवै सोहमारेप्रतिकहो ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य स्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपाद शिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचिते प्राकृतआत्मपुराणे बृहदारण्यकमधुकांडसारार्थप्रकाशके दध्यङ्अश्विसंवादोनाम चतुर्थोऽध्यायःसमाप्तः॥४॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यां नमः ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

इतिश्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषाआत्मपुराणेचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

अथ स्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषाआत्मपुराणे पञ्चमाध्यायप्रारंभः ।

ॐश्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः अथ पंचमाऽध्यायप्रारंभः ॥ तहां चतुर्थअध्यायविषे यजुर्वेदकाजोबृहदारण्यकउपनिषद् है ॥ ताके मधुकांडकाअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ अब पंचमअध्याकरिकै तथाषष्ठेअध्यायकरिकै तिसीबृहदारण्यकउपनिषद्के याज्ञवल्क्यकांडकाअर्थ निरूपणकरैं है ॥ तहां पूर्वअध्यायविषे दध्यङ्ऋषिके आख्यानकूंश्रवणकरिकै सोशिष्य अत्यंतआश्चर्यकूंप्राप्तहोताभया ॥ और पुनःकिंचित्अर्थकेपूछणेकीइच्छावान्हुआ सो शिष्य दोनोंहाथजोडिकरिकै श्रीगुरुकेप्रति कहताभया॥तहां आपणेविषेबुद्धिमान्पणा जनावणेवासतैं सोशिष्य पूर्वअध्यायोंविषेश्रवणकरीकथाकूं गुरुकेप्रतिकथनकरैहै शिष्यउवाच ॥ हे भगवन् ॥ प्रथमअध्यायविषे आपनैं सनकादिकऋषियोंके तथावामदेवादिकअधिकारीजनोंके संवादकरिकै ऐतरेयउपनिषदकेअर्थकानिरूपणकऱ्या॥ और द्वितीयअध्यायविषे इंद्रप्रतर्दनकेसंवादकरिकै आपनैं कौषीतकीउपनिषदकेअर्थकानिरूपणकऱ्या ॥ और तृतीयअध्यायविषे अजातशत्रुबालाकिकेसंवादकरिकै आपनैं तिसीकौषीताकिउपनिषदकेअर्थका निरूपणकऱ्या ॥ और चतुर्थअध्यायविषे जोब्रह्मविद्या कौषीताकिऋषिनैं इंद्रकेभयतैंनहींकहीथी ॥ सोब्रह्मविद्याभी दध्यङ्ऋषिअश्विनीकुमारोंकेसंवादकरिकै आपनैं कथनकरी ॥ और वेदविद्याकेप्रवर्त्तकजेऋषिहैं ॥ तिनऋषियोंकावंशभी आपनैं हमारेप्रति कथनकऱ्या ॥ कैसाहैसोऋषियोंकावंश ॥ हिरण्यगर्भतैंलेके तथासूर्यभगवान्तैंलेके पौतिमाष्यनामाऋषिपर्यंत विस्तारहैजिसका॥पुनःकैसाहैसोवंश हिरण्यगर्भ तथासूर्यभगवान् यह दोनोंहैंमूलाजिसके ॥ और एकस्त्रीवंश तथा दो पुरुषवंश यहतीनप्रकारकी है शिष्योंकीपरंपराजिसविषे ॥ ऐसाजोऋषियोंकावंशहै सोभी आपने हमारेप्रति कथनकऱ्या ॥ और तिसतीनप्रकारकेवंशविषेभी कितनेकऋषियोंके विलक्षणनामोंकूंदेखिकारिकै तिनोंकाभेदहीआपनैं कथनकऱ्या ॥ और कितनेकऋषियोंकेनामोंकीसमानरूपतादेखिकारिकै तिनऋषियोंकाअभेदही आपनैं कथनकऱ्या ॥ और तिनऋषियोंके वंशविषे दैवो अथर्वणनामाऋषिकाशिष्य जोदध्यङ्अथर्वणनामाऋषि है॥जोदध्यङ्ऋषि अश्विनीकुमारोंकेप्रति तथाइंद्रकेप्रति मधुकांडकाउपदेशकर्ताभया ॥ऐसेजेदध्यङ्ऋषिकावृत्तांतभी आपनैं हमारेप्रतिकथनकऱ्या ॥ औरदध्यङ्ऋषिविषेदेवराजइंद्रकीजोदुरात्मताहै

सोभी आपनैकथनकरी॥औरगुरुकेमस्तककाछेदनरूपजोउग्रकर्महै॥ताकेविषेप्रवृत्तकरणेहारीजोअश्विनीकुमारोंकीलिप्साहै॥सोभीआपनैं हमारे प्रति कथनकरी ॥ और हेभगवन् पूर्वआपनैंयहकह्या॥इंद्रनैं जबीदध्यङ्ऋषिकामस्तकछेदनकऱ्या॥तबी सोदध्यङ्ऋषि हयग्रीवभावकूंप्राप्तहोइकै अश्विनीकुमारोंकेप्रति कहताभया।हेअश्विनीकुमारो॥आजदिनतैंलेकेआगेआगे यहसंपूर्णब्रह्मविद्याकोईभीऋषि नहीं कथन करैगा॥एकसूर्यभगवान्काशिष्य याज्ञवल्क्यमुनि इंद्रतैंनिर्भयहोयके आपणेशिष्योंकेप्रतिसंपूर्णब्रह्मविद्याकाउपदेशकरैगा ॥ याप्रकारका दध्यङ्ऋषिकावचन पूर्वआपनैं कह्याथा।और तृतीयअध्यायविषे अजातशत्रु बालाकिकेसंवादविषे आपनैंभीयहवार्त्ताकहीथी॥याज्ञवल्क्यमहामुनि सूर्यभगवान्तैं वेदविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ हेभगवन् ॥ याकेविषे हमयहपूछाचाहे हैं ॥ सोयाज्ञवल्क्यमुनि किसशिष्यकेताईं सोब्रह्मविद्या देताभया ॥ और किसप्रकार सोब्रह्मविद्या देताभया ॥ और सोब्रह्मविद्या कैसी है ॥ यातीनप्रश्नोंकेउत्तरश्रवणकरणेकी हमारे कूंइच्छाहै ॥ इसप्रकार शिष्यकेवचनकूंश्रवणकरिकै सोश्रीगुरुअत्यंतआनंदकूंप्राप्तहोताभया और कहताभया हे शिष्य ॥ वेदविषे कथन करी जो विचित्रकथा है ॥ सोकथा मैं तुमारे प्रतिकथनकरताहूं ॥ तुम सावधानहोइकै श्रवणकरो ॥ श्रीगुरुरुवाच हे शिष्य ॥ याज्ञवल्क्यनामाऋषि प्रथम वैशंपायननामाऋषितैं वेदविद्याकाअध्ययनकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर किसीनिमित्तकारिकै क्रोधवान्हुआ सोवैशंपायननामाऋषि याज्ञवल्क्यतैंसंपूर्णविद्यालेताभया।ताविद्याकापरित्यागकारिकै सोयाज्ञवल्क्यनामामुनि पुनःविद्याकीप्राप्तिवासतैं महान्तपकरिकै सूर्यभगवान्कूंप्रसन्नकरताभया॥कैसाहैसोसूर्यभगवान्सूर्यमंडलविषेहैनिवासजिसका॥और नामरूपक्रिया स्वरूपजोसंपूर्णप्रपंचहै॥सोप्रपंचहैस्वरूपजिसका॥और रक्तपुष्पकेसमानजोनेत्र हैं तिनोंकूंछोडिकरिकै नखतलके केशपर्यंत संपूर्णशरीर जिसकासुवर्णकेसमानहै॥और सूर्यतैंऊपरिकेजेलोकहैं ॥ तथा चक्षुविषेवर्तमानजो सूर्य भगवान्का अध्यात्मरूप है तिसतैं नीचेके जेलोक हैं ॥ तथा मध्यवर्ती जे लोक हैं ॥ तिन सर्व लोकोंविषेस्थित जितनेकजीवहैं ॥ तिनोंकूं यह सूर्य भगवान्हीं मनवांछित पदार्थोंकीप्राप्तिकरै है॥और यहसूर्य भगवान् समष्टिसूक्ष्मउपाधिवालाहै ॥ तथा समष्टिकारणउपाधिवाला है ॥ याकारणतैं श्रुतिविषे ताकूं हिरण्यगर्भरूपकरिकै तथा ईश्वर

रूपकरिकै कथन कऱ्या है ॥ और जिससूर्यभगवान्तैं श्वासोंकीन्याई यत्नतैंविनाहीं संपूर्णवेद उत्पन्नभये हैं ॥ और जो सूर्यभगवान् ऋग् यजुष् साम यहतीनवेदस्वरूपहै तहाँ दिनकेप्रथमभागविषे ऋग्वेदरूपकरिकै सूर्यभगवान् प्रकाश करै है ॥ और दिनके मध्य भागविषे यजुर्वेदरूपकरिकै सूर्यभगवान् प्रकाशकरै है ॥ और दिनकेअंत्यभागविषे अथर्वांगिरसकरिकैयुक्तजोसाम वेद है ॥ तिस सामवेदरूपकरिकै सूर्यभगवान् प्रकाशकरै है ॥ और जैसे लोकविषेप्रसिद्धमधु पुरुषोंकेआनंदकाकारणहै ॥ तैसे वसुआदिकदेवतावोंकेआनंदकाहेतु तथासर्वकर्मोंकेफलकूंदेणेहारा जोआदित्यरूपमधुहै ॥ तिसविषे जोसूर्यभगवान् सर्वदाविराजमानहै ॥ कैसाहैसोआदित्यरूपमधु रक्त शुक्ल कृष्ण अतिकृष्ण गुह्य या पंचरूपोंकरिकैयुक्तहै ॥ पुनःकैसाहैसोआदित्यरूपमधु यथाक्रमतैंरक्तादिरूपवाले जेऋग् यजुष् साम अथर्वांगिरस उपनिषद् ॥ इनपांचप्रकारके वेदरूपीभ्रमरोंकरिकै रचितहै ॥ और जैसे लोकविषे मक्षिका पुष्पोंतैंरसकूंग्रहणकारिकै मधुदेश विषे लेजावैं हैं ॥ तैसे ऋग्वेदादि रूपभ्रमर यागादिककर्मरूपी पुष्पोंविषे मंत्ररूपतैं प्राप्तहोइकै यागादिककर्मोंकी सूक्ष्म अवस्था रूप जेपुण्यरूपी अदृष्ट हैं ॥ ताअदृष्ट रूपीरसकूं तेदेवरूपी भ्रमर आदित्यरूपीमधुविषेलेजावैं हैं ॥ तिसतैंअनंतर सोसूर्यभगवान् सर्वकेआनंदकाहेतुजोवृष्टि है ताकूंकरै है ॥ यहवार्ता अन्यशास्त्रविषेभीकही है ॥ श्लोक ॥ अग्नौ प्रास्ताहुतिःसम्यगादित्यमुपतिष्ठति ॥ आदित्याज्जायतेवृष्टिर्वृष्टेरन्नंततःप्रजाः॥ १ ॥ अर्थयह ॥ अग्निविषेप्राप्तकरीहुई आहुति सूक्ष्मरूपकरिकै आदित्यकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और तिसआदित्यतैंवृष्टि उत्पन्नहोवै है ॥ और वृष्टितैंअन्न उत्पन्नहोवै है और अन्नतैंप्रजाउत्पन्नहोवै है ॥ पुन सोकैसाहैसूर्यभगवान् ॥ सर्वप्राणियोंका बाह्यवर्तमानप्राणहै ॥ और ब्रह्मातैंआदिलेके जितनेकस्थावरजंगमप्राणीहैं तिनोंके हृदयदेशविषेस्थितहै ॥ हे शिष्य ॥ ऐसेसूर्यभगवान्कूं सो याज्ञवल्क्यमुनि तपकरिकै प्रसन्नकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर तिसीसूर्यभगवान्तैं सोयाज्ञवल्क्यमुनि चारिवेदोंकाअध्ययन करताभया ॥ तिसतैंअनंतर गृहस्थाश्रमकूंधारणकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि अधिकारीशिष्योंकेप्रति चारिवेदों काअध्ययन करावता भया ॥ और तिसयाज्ञवल्क्य मुनिके शिष्योंकीमंडली चारिप्रकारकीहोती भई ॥ एकमंडली ऋग्वेदके

अध्ययनकरणेहारी ॥ और दूसरीमंडली यजुर्वेदकेअध्ययनकरणेहारी ॥ और तीसरीमंडली सामवेदकेअध्ययनकरणे हारी ॥ और चतुर्थमंडली अथर्वणवेदकेअध्ययनकरणेहारी ॥ और जैसे सूर्यभगवान् पूर्वादिक दिशावोंकेमध्यविषे प्रकाशमानहै ॥ तैसे सो याज्ञवल्क्यमुनि चारिप्रकारकेशिष्योंकीमंडलीविषे विराजमानहोताभया ॥ और लोकविषे तायाज्ञवल्क्यमुनिकी महान्कीर्तिहोतीभयी ॥ अब याज्ञवल्क्यमुनिकेकीर्तिकूं वारांगनाकेसमानरूपकरिकै निरूपणकरै हैं ॥ हे शिष्य ॥ याज्ञवल्क्यके साथ द्वेषकरणेहारे जितनेकीआश्वलादिकब्राह्मणहैं ॥ ते संपूर्ण गनिकाकेरतियोंकेसमान हैं ॥ तिनआश्वलादिकोंकूं याज्ञवल्क्यकीकीर्तिरूपीवारांगना प्राप्त होतीभई ॥ और जैसे लोकप्रसिद्धवारांगना कामीपुरुषोंकूंतापकरै है ॥ तैसे याज्ञवल्क्यकीकीर्तिरूपीवारांगनाभी आश्वलादिकब्राह्मणोंकूं तापकरतीभई ॥ और कोईपुण्यवान् तथाबुद्धिमान् जेजनकादिकहैं ॥ ते आश्वलादिकब्राह्मणोंकरिकै निवारणकरेहुएभीतायाज्ञवल्क्यमुनिकीकीर्तिरूपवारांगनाकूं भोगतेभये ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे लोकविषे जोकोईपुरुष किसीपरस्त्रीविषे आसक्तहोवै है ॥ तिसपुरुषकूं अनेकलोक निवारणकरै हैं ॥ तौभी सोपुरुष तिनलोकोंकाकहणा अंगीकारकरतानहीं ॥ तैसे याज्ञवल्क्यमुनिकीकीर्तिरूपवारांगनाविषे आसक्तहुआजनकराजा किसीब्राह्मणकाकह्या नहींमानताभया ॥ और जैसे लोकविषे कोईराजा जभीकिसीवारांगनाविषे आसक्तहोवै है ॥ तभीताकेभृत्य राजाकूं तावारांगनातैंनिवृत्तकरणेवासतै कोईअत्यंतरूपवालीआपणीपुत्री राजाकेताईंदेवै हैं ॥ तैसे याज्ञवल्क्यमुनिकीकीर्तिरूपवारांगनाविषे जनकराजाकीआसक्तिदेखिकरिकै तिसकीर्तिरूपवारांगनातैं जनकराजाकूं निवृत्तकरणेवासतैं तेआश्वलादिकब्राह्मण असूयारूपीस्त्रीविषे निंदारूपीनवीनवधूकूं उत्पन्नकरतेभये ॥ अब आश्वलादिकोंके निंदावचनोंकूंदिखावै हैं ॥ जोयहयाज्ञवल्क्यमुनि किसीलौकिकगुरुतैं विद्याकूंनहींप्राप्तभयाहै॥ किंतु साक्षात्सूर्यभगवान्तैंहीं विद्याकूंप्राप्तभयाहै॥तो मुखतैं विनाहीं शिष्योंकेप्रति विद्या काहेतैंनहींपढावता॥और जैसे हमसर्वब्राह्मण मुखकरिकैविद्यापढावते हैं ॥तैसे यहयाज्ञवल्क्यभी मुखकरिकैही विद्यापढावताहै ॥ यातैं मैंसूर्यभगवान्तैंविद्यापढीहै॥यहयाज्ञवल्क्यकाकहणा मिथ्याहै॥किंवा॥सूर्यकेरथविषेस्थितहोइकै हमनैं

विद्यापढी है॥यहभीयाज्ञवल्क्यकाकहणा मिथ्याहै॥काहेतैं जो पूर्व सूर्यकेरथविषेबैठिकरिकैं याज्ञवल्क्यनैं विद्यापढीहोवै ॥ तौ अबी प्रज्वलितमहान्अग्निविषेस्थितहोइकै यहयाज्ञवल्क्यमुनि वेदोंकापठन काहेतैंनहींकरता ॥ किंवा ॥ तेजकासमूह जो सूर्य है सो जबी याज्ञवल्क्यकेप्रति वेदोंकाकथनकरताभयाहै ॥ तौइदानींकालविषे तेजकासमूहजोमहान्अग्निहै सो हमारेप्रति वेदोंकाकथन काहेतैंनहींकरता ॥ किंवा ॥ जोतुमयहकहो ॥ याज्ञवल्क्यकेतपकरिकै प्रसन्नहुआसूर्यभगवान् दूसरेशरीरकूंधारणकरिकै याज्ञवल्क्यकेप्रति वेदपढावताभया है ॥ सोयहतुमाराकहणाभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं जो सूर्यदेवताकाशरीर अंगीकारकरौगे॥तौ जैसे शरीरवाले स्त्रीआदिकप्राणी अनित्यहैं तैसे सूर्यभगवान्भी अनित्यहीहोवैगा ॥ जभी सूर्यदेवता अनित्यभया॥तभी हमारेतैं ताकेविषे कौनविशेषताहोवैगी॥यातैं सूर्यभगवान् तैं याज्ञवल्क्यमुनि वेदविद्याकूंप्राप्तभयाहै॥याकेविषे कोईयुक्तिसंभवैनहीं ॥ और यालोकविषे दूसराकोईगुरु याज्ञवक्यकाप्रसिद्धहैनहीं ॥ यातैं यहजान्याजावै है ॥ यहयाज्ञवल्क्यमुनि आपणीइच्छातैं वेदकेसमानवाक्योंकूंकल्पनाकरिकै पठनकरै है ॥ और यहवेद सूर्यतैंमैंने पठनकऱ्याहै ॥ याप्रकार सर्वलोकोंविषेप्रसिद्धकरिकै अज्ञानीजीवोंकूं मोह उत्पन्नकरै है ॥ किंवा ॥ गुरुसंप्रदायकेअनुसार जो उदात्तादिकस्वरविशिष्टवर्णोंकीआनुपूर्वी है ताकूं बुद्धिमान्पुरुष वेदकहैं हैं ॥ याप्रकारवेदकेलक्षणतैंरहित जितनेकवाक्यहैं ॥ ते नट पुरुषोंकेवाक्योंकेसमानहैं ॥ और या याज्ञवल्क्यकीकोईगुरुसंप्रदाय लोकविषेप्रसिद्धहैनहीं ॥ यातैं याज्ञवल्क्यकेवचनभी नटपुरुषोंके वचनसमानहैं ॥ किंवा ॥ यहयाज्ञवल्क्य हस्तकेकंपकरिकैयुक्त तथापदक्रमकेसंप्रदायतैंरहित यजुर्वेदकूं नटकीन्याईं पठनकरै है ॥ यातैं याज्ञवल्क्यकूं यजुर्वेद किंचित्मात्रभी नहींआवता ॥ किंवा ॥ पूर्ववैशंपायननामाऋषितैं इसयाज्ञवल्क्यनैं यजुर्वेदका अध्ययनकऱ्याथा ॥ तिसकूंभी यहयाज्ञवल्क्य इदानींकालविषेजाणतानहीं ॥ तौ अन्यवेदोंकूं यहयाज्ञवल्क्य कैसेजाणैगा ॥हेशिष्य॥ इसतैंआदिलेकै अनंतप्रकारकेनिंदावचनोंकरिकै तेआश्वलादिकब्राह्मण याज्ञवल्क्यकीकीर्तिरूपीवारांगनाकोनिरोधकरणेविषे प्रवृत्तहोतेभये ॥ परंतु सोयाज्ञवल्क्य कीकीर्तिरूपवारांगना जनकराजाकेहृदयतैं निवृत्त नहींहोतीभई ॥ इतनेंकरिकै आश्वलादिकब्राह्मणोंकेनिंदावचनोंकूं दिखाया ॥ अब

याज्ञवल्क्य मुनिकीक्षमाकूंदिखावै हैं ॥ हेशिष्य इसप्रकार आश्वलादिकब्राह्मणोंनैं करीजोनिंदा ॥ तिसनिंदाकूं सोयाज्ञवल्क्यमुनि आप जाणताहुआभी तथाअन्यलोकोंतैं श्रवणकरताहुआभी किंचित्मात्र क्षोभकूंनहींप्राप्तहोताभया ॥किंतु आत्मज्ञानकेप्रभावतैं सोयाज्ञवल्क्य मुनि उलटाप्रसन्नहोताभया ॥ और जैसे वर्षाकालविषे गर्जनातैंरहितहुएमेघ जलकीवर्षाकरैं हैं ॥ तैसे याज्ञवल्क्यभी आपणेमुखतैं आपणीस्तुतिकूं न करताहुआ पूर्वकीन्याईं शिष्योंकेप्रति अर्थसहितसर्ववेदोंका कथनकरताभया ॥ और निंदाकरणेहारे जेआश्वलादिक ब्राह्मण हैं ॥ तिनोंकेप्रति सोयाज्ञवल्क्यमुनि किंचित्मात्रभीवचन नहींकहताभया॥हेशिष्य॥इसप्रकार याज्ञवल्क्यमुनिकीकीर्तिकूंश्रवण करिकै सोमिथिलाकापति जनकराजा याज्ञवल्क्यमुनिकेदेखणेकीइच्छा करताभया ॥ और जनकराजाके याअभिप्रायकूंजाणिकरिकै ते आश्वलादिकराजाकेपुरोहित अनंतप्रकारकेउपायोंकरिकै तथापूर्वउक्तनिंदावचनोंकरिकै राजाकूंनिवारणकरतेभये ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार जभीआश्वलादिकपुरोहितोंनैं राजाजनककेप्रतिकह्या ॥ तभी सोबुद्धिमान्जनकराजा तिनआश्वलादिकब्राह्मणोंकेदुष्टअभिप्रायकूं जाणिकरिकैभी तिनोंकूंकिंचित्मात्रभी नहींकहताभया॥परंतु याज्ञवल्क्यमुनिकेदेखणेकी राजाकूं बहुतइच्छा है ॥ याकारणतैं सोजनकराजा याज्ञवल्क्यमुनिकेदेखणेवासतैं यज्ञकाआरंभकरता भया ॥ और जेआपणेविश्वासवालेब्राह्मणथे तथाक्षत्रियथे तथा वैश्यथे॥ तिनोंकेप्रति सोजनकराजा याप्रकारकीआज्ञा करताभया ॥ हेब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यो ॥ हमनैं यज्ञकरणेकाविचारकऱ्याहै ॥ यातैं तुम सर्वदेशोंविषेजाइकै सर्वब्राह्मणोंकूं बुलाइलेआवो ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार जनकराजाकेआज्ञाकूंपाइकै तेसंपूर्णभृत्य कुरुदेश तथापांचालदेशतैंआदिलेकै सर्वदेशोंविषेजातेभये ॥ और तिनदेशोंविषेस्थित जितनेकीविद्वान्ब्राह्मणथे॥तिनसंपूर्णोंकूं शिष्योंसहितलेआवतेभये ॥ तथा याज्ञवल्क्य मुनिकूंभी सर्वशिष्योंसहितलेआवतभये और तिनब्राह्मणोंकेआवणेकरिकै जनकराजाकेगृहविषे महान्वेदोंकीध्वनि होतीभई ॥ कैसीहैसो वेदोंकीध्वनि ॥ एकशूद्रोंकूंछोडिकरिकै अन्यजितनेक ब्राह्मण हैं तथा क्षत्रियहैं तथावैश्यहैं॥तिनसंपूर्णोंकूं आनंददेणेहारी है॥अब तिनब्राह्मणोंकेसमाजविषे प्रधान प्रधानब्राह्मणोंकूंदिखावै हैं॥हेशिष्य॥तिसजनकराजाकेयज्ञविषे आश्वलनामाब्राह्मण ऋग्वेदउक्तकर्मोंकेकरणेहारा

होता भया ॥ और जरत्कारुनामाब्राह्मणकापुत्र आर्त्तभागनामाब्राह्मण तहाँ आवताभया ॥ तथा लह्यनामाब्राह्मणकापुत्र भुज्युनामा ब्राह्मण तहाँ आवताभया तथा चक्रनामाब्राह्मणकापुत्र उपस्तनामाब्राह्मण तहाँ आवताभया तथा कुपीतकनामाब्राह्मणकापुत्र कहोलनामा ब्राह्मण तहाँ आवताभया ॥ तथा ब्रह्मनिष्ठा गार्गीस्त्री तहाँ आवतीभई॥ तथा अरुणनामाब्राह्मणकापुत्र उद्दालकनामाब्राह्मण तहाँ आव ताभया॥तथा शकलनामाब्राह्मणकापुत्र जोशाकल्यनामाब्राह्मण है जाकूं विदग्धभीकहैं हैं ॥ सोविदग्धनामाब्राह्मण तहाँ आवताभया॥ कैसाहैसोशाकल्यअत्यंतवाचालहै और अत्यंतमानी है ॥ और पापकारिकैमोहितहुआ सोशाकल्य सर्वदा याज्ञवक्ल्यकेसाथ द्वेषक रैहै ॥ और चारिवेदोंकेवक्ता जेअनेकशिष्य हैं तिनशिष्योंकेसहित याज्ञवल्क्यमुनिभी तायज्ञविषेआवताभया ॥ तथाआश्वलादिब्राह्मण आपणेआपणेशिष्योंसहित तहाँ आवतेभये ॥ तिनोंतैंअन्यभी अनेकविद्वान्ब्राह्मण आपणेआपणेशिष्योंसहित तहां आवतेभये ॥ सम्पूर्णमिलिकै अनेककोटिब्राह्मण होतेभये ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार सोजनकराजा याज्ञवल्क्यमुनिकेआगमनकाउपाय करताभया ॥ और किसीप्रसंगपाइकै सोजनकराजा आश्वलादिकपुरोहितोंतैं आदिलेके सर्वब्राह्मणोंकेप्रति हाथजोडिके यहवचन कहताभया॥हेब्राह्मणो अश्वमेधादिकयज्ञोंकारिकै मैं देवतावोंकेपूजनकरणेकीइच्छाकरोहूँ ॥तथा बहुतदाक्षिणाकरिकै सर्वब्राह्मणोंकेपूजनकीइच्छाकरोंहूं॥आप सर्व ब्राह्मणहमारेकूं यज्ञकरणेकीआज्ञादेवो॥तिसतैंअनंतर मैं सर्वदिशावोंकूं भेरीआदिकोंकेशब्दोंकरिकै पूर्णकरोंगा॥हेशिष्य॥इसप्रकार जभी जनकराजानेब्राह्मणोंकेप्रतिकह्या ॥ तभी तेसंपूर्णब्राह्मण राजाजनककूं यज्ञकरणेकीआज्ञादेतेभये ॥ तिसतैंअनंतर जनकराजाकूं यहइच्छा होतीभई ॥ यहजितनेकब्राह्मण हमारेयज्ञविषे एकठेहुएहैं ॥ तेसंपूर्णब्राह्मण महात्माहैं॥तथा सदाचारकरिकैयुक्त हैं॥ तथा वेदोंविषे और वेदोंकेअंगोंविषे कुशलहैं ॥ और संपूर्णशिष्योंकारिकैयुक्तहैं ॥ परंतु इनसर्वब्राह्मणोंविषे अधिकवेदकावेत्ता कौनब्राह्मणहै ॥ याप्रकारकी इच्छा जनकराजाकूंहोतीभई ॥ तिसतैंअनंतर सोजनकराजा सर्वब्राह्मणोंविषे एकब्राह्मणकीअधिकताजानणेवासतैं याप्रकारकेउपायोंकूं मनविषेविचारताभया ॥ जो मैं याब्राह्मणोंकेसमाजविषे किसीएकब्राह्मणत याप्रकारपूछौंगा ॥ तुमसर्वब्राह्मणोंविषे कौनब्राह्मण अधिकवि

द्वान् है ॥ तौ सोब्राह्मण किसीआपणेमित्रकूंहीं अधिकविद्वान्कहैगा ॥ काहेतैं जिसपुरुषका जिसपुरुषविषे द्वेषहोवैहै ॥ सो साक्षात्देवताहोवै अथवा गुरुहोवै अथवा सर्वविद्याविषे बृहस्पतिकेसमानहोवै ॥ तौभी सोद्वेषवान्पुरुष सर्वथा ताकीनिंदाहीकर है ॥ और जिसपुरुषका जिसपुरुषविषे स्नेहहोवैहै ॥ सोएकअक्षरभी नहीं जाणताहोवै ॥ और कूपिकरणेहार पुरुषोंकीन्याईं महामूढहोवै ॥ तौभी सोस्नेहवान्पुरुष ताकीसर्वदा स्तुतिहीकरैहै ॥ यातैं रागद्वेषवान् किसीब्राह्मणकेपूछणेतैं सर्वतैं अधिकविद्वान्ब्राह्मणका निश्चयहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जोब्राह्मण रागद्वेषतैंरहित उदासीनहोवै ॥तिसतैंपूछिकरिकै अधिकविद्वान्कानिश्चय तुमकरो ॥ समाधान ॥ उदासीनपुरुषकेपूछणेतैंभी अधिकताकाज्ञानहोवैनहीं ॥ काहेतैं शमदमादिकगुणोंकेज्ञानतैं अधिकताकाज्ञानहोवै है ॥ और क्रोधादिकदोषोंकेज्ञानतैं न्यूनताकाज्ञानहोवै है॥ सोशमदमादिकगुणोंकाज्ञान तथाक्रोधादिक दोषोंकाज्ञान उदासीनपुरुषकूंहोवैनहीं ॥ यातैं ताकेवचनतैंभी सर्वतैंअधिकब्राह्मणकाज्ञान संभवैनहीं॥शंका॥हेभगवन् उदासीनपुरुषकूं यद्यपि ब्राह्मणोंकेगुणदोषोंकाज्ञाननहीं है ॥ तथापि ताउदासीनपुरुषकेआगे संपूर्णब्राह्मणोंकेगुणोंकूं तथादोषोंकूं आप वर्णनकरो ॥ पश्चात् सोउदासीनपुरुष तुमारेप्रति सर्वतैं अधिकविद्वान्का कथनकरैगा॥समाधान॥हमारेमुखतैं ब्राह्मणोंकेगुणोंकूं श्रवणकरिकै सोउदासीनपुरुष जिसब्राह्मणविषेअधिकताकहैगा॥ तिनगुणोंकारिकै मैंहीं प्रथम तिसब्राह्मणविषे अधिकताजाणिसकताहूं ॥ उदासीनपुरुषकेप्रति ब्राह्मणोंकेगुणोंकाकथनकरणा निष्फलहै ॥ यातैं उदासीनपुरुषकेवचनतैंभी सर्वतैं अधिकब्राह्मणकानिश्चयहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ एकएकब्राह्मणकूं एकांतदेशविषेबुलाइकै तुम यहपूंछो हेब्राह्मण तुम सर्वतैं अधिकहो अथवा नहींहो॥ जोब्राह्मण आपकूंसर्वतैंअधिककहै॥तिसकूंहीं तुमनैं सर्वतैं अधिकजानणा ॥ समाधान ॥ याप्रकारकेउपायतैंभी सर्वतैंअधिकब्राह्मणका निश्चयहोवैनहीं ॥ काहेतैं जो मैं एकएकब्राह्मणकूंबुलाइकेपूछौंगा ॥ तौ संपूर्ण ब्राह्मण आपणेकूंहीं अधिककहैंगे ॥ कोईभीब्राह्मण आपणेकूंन्यूननहींकहैगा॥यातैं याउपायकरिकैभी सर्वतअधिकब्राह्मणका निर्णयहोवै नहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन्॥ गुह्यअर्थकेबोधनकरणेहारेजेप्रश्नहैं॥तेप्रश्न सर्वब्राह्मणोंप्रति तुमकरो॥जोब्राह्मण तिनप्रश्नोंका भलीप्रकार उत्त

रकहै ॥ तिसब्राह्मणकूं तुमनें अधिकजानणा ॥ समाधान ॥ याप्रकारकेउपायकरिकैभी सर्वतैंअधिकब्राह्मणका निर्णयहोइसकैनहीं॥उलटा हमारी हानिहोवैगी॥ काहेतैं जोमैं तिनब्राह्मणोंकेप्रति गुह्यप्रश्नोंकूंकरौंगा॥तौ क्रोधवान्होइकै तेब्राह्मण हमारेकूंशापदैकेदग्धकरैंगे ॥ यातैं इनपूर्वउक्तसंपूर्णउपायोंतैं सर्वतैंअधिकब्राह्मणका निर्णयहोवैनहीं ॥ किंतु परस्परविवादतैंही याब्राह्मणोंविषे अधिकताका तथान्यूनताका निर्णयहोवैगा ॥ यातैं यासभाविषे सर्वब्राह्मणोंकापरस्पर विवादकराइकै सर्वतैं अधिकब्राह्मणका मैं निर्णय करों ॥ तिसविषेभी जोमैं इन सर्वब्राह्मणोंकूं यहकहौंगा ॥ हेब्राह्मणो तुमसंपूर्ण परस्परविवादकरो तौ यहब्राह्मण क्रोधवान्होइकै मेरेकूं शापदैकेभस्मकरैंगे ॥ यातैं मेरेकहैतैंविनाहीं यहसंपूर्णब्राह्मण आपसविषे परस्परविवादकरैं ॥ ऐसाकोईउपाय हमकरैं ॥ सोऐसाउपाय धनतैंविना कोईदूसरा है नहीं ॥ किंतु धनहींसर्वविवादकाकारणहै ॥ यातैं सर्वब्राह्मणोंकेमध्यविषे बहुतधनकूं मैं राखों ॥ तिसधनकेलोभकरिकै यहब्राह्मण आप हीविवादकरैंगे ॥ और तिनोंकेविवादतैं सर्वतैंअधिक विद्वान्ब्राह्मणका हमारेकूं निर्णयहोवैगा ॥ याप्रकारकेउपायकूं सोराजाजनक आपणेमनविषेनिश्चयकरताभया ॥ अब धनविषेसर्वविवादोंकीकारणता दिखावैहैं ॥ विषयभोगकासाधन जोयहधनहै ॥ सो किसजीवके चित्तकूं क्षोभनहींकरता ॥ किंतु सर्वजीवोंके चित्तकूं क्षोभकरैहै ॥तात्पर्ययह॥जेब्रह्मवेत्ता सन्यासीहैं तिनोंकेभी चित्तकूं यहधन क्षोभकरैहै तोअन्यकुटुंबीगृहस्थोंकेचित्तकूं सो धन किसवासतैं नहींक्षोभकरैगा॥ किंतु अवश्य तिनोंके चित्तविषे क्षोभकरैगा॥ किंवा ॥ चित्तकेक्षो भकेकारण जेकाम क्रोध लोभ मोहादिकहैं ॥ तेभी याधनकरिकैही उत्पन्नहोवैहैं॥ धनतौंविना कामक्रोधादिकविकार उत्पन्नहोवैनहीं॥अब अन्वय व्यतिरेककरिकै धनविषे कामक्रोधादिकोंकीकारणता दिखावैहैं॥तहांधनकेविद्यमानहुए जोकामक्रोधादिकोंकीविद्यमानताहै याकूं अन्वयकहैहैं॥और धनकेअभावहुए॥जोकामक्रोधादिकोंकाअभावहै ताकूं व्यतिरेककहैहैं॥तहां प्रथम व्यतिरेककूंदिखावैहैं॥क्षुधाकरिकैपी डित जोनिर्धनदरिद्रीपुरुषहै ॥ सो कामजन्यसुखकूं प्राप्तहोवैनहीं॥काहेतैं सोनिर्धनपुरुष याप्रकारकाविचार आपणेमनविषे करिकै विवाह नहींकरैहै ॥ जोमैं विवाहकरौंगा ॥ तौजितनाकीअन्न स्त्रीभोजनकरैगी॥इतनाअन्नतौ मेरेकूंहीभोजनकरणेवासतैंचाहिये॥स्त्रीकूंभोजनकरणे

वासतैं मैंकहांसैंअन्नदेवौंगा ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै सोदरिद्रीपुरुष स्त्रीकूं गृहविषेलेआवैनहीं॥और जैसेकिमिकरिकैयुक्त दुर्गंधमुडदेकूं कोईपुरुष स्पर्शकरतानहीं तैसे पुरुषकूंनिर्धनदेखिकरिकै ॥ कामकरिकै आतुरहुईभी स्त्री तानिर्धनपुरुषकेस्पर्शकरणेकीइच्छाकरतीनहीं ॥ तात्पर्ययह॥धर्मशास्त्रकी रीतिसैं विवाहीहुई जोपतिव्रतास्त्री है ॥ सोभी आपणेपतिकूंनिर्धनदरिद्रीदेखिकरिकै सर्वदा ताकेमरणेकीइच्छा करै है ॥ तौ अन्यव्यभिचारिणीस्त्रियोंकीक्यावार्ता है॥ किंवा॥जैसे सिद्धांजन पृथिवीविषेस्थितधनकेदर्शनकासाधनहोवै है ॥ तैसे यहदरिद्र तारूपी सिद्धांजनभी सर्वधर्मोंकेदर्शनविषे साधनहोवै है ॥ काहेतैं जैसे आपणीमातादिकोंविषे किसीपुरुषकूं कामभावनाहोवैनहीं ॥ तैसे यहदरिद्रीपुरुष किसीभीस्त्रीविषे कामनाकरतानहीं ॥ किंतु क्षुधाकरिकैआतुरहुआ दरिद्रीपुरुष एकअन्नमात्रकी इच्छाकरै है ॥ किंवा ॥ जैसे विवेकीपुरुष सर्वकूंआत्मारूपजाणिकै किसीऊपर क्रोध नहींकरै है ॥ तैसे यहदरिद्रीपुरुषभी राजाकीभयतैं तथाधर्मराजाकी भयतैं किसीप्राणीऊपर क्रोध नहींकरता ॥ किंवा सोनिर्धनदरिद्रीपुरुष याप्रकारकाविचारकरिकै किसीपापकर्मविषे प्रवृत्तहोता नहीं ॥ अब ताकेविचारकूंदिखावैं हैं मैंने पूर्वजन्मोंविषे अत्यंतपापकर्मकरे हैं ॥ जिनपापकर्मोंकाफल यहदरिद्रता हमारेकूंप्राप्तभई है ॥ यादरिद्रतातैंपरे दूसराकोईपापकर्मकाफल क्याहोवैगा ॥ किंतु यहदरिद्रताही सर्वपापकर्मोंकाफल है ॥काहेतैं जैसे ब्रह्महत्यारेपुरुषका सर्वलोक निरादरक रै हैं ॥ तैसे मेरेकूंदरिद्रीहुआदेखिकैयहहमारीमाता तथापिता तथास्त्री तथापुत्र यहसंपूर्ण हमारानिरादरकरैं हैं ॥कोईभी हमाराआदरकर तानहीं ॥ यातैं पूर्वलेपापकर्मोंकाफल जोयहदरिद्रता है ॥ ताकूं भलीप्रकारअनुभवकरताहुआभी मैं जोपुनःपापकर्मोंकूंकरौंगा ॥ तौपुनः जन्मांतरोंविषे हमारेकूंयहदरिद्रता प्राप्तहोवैगी ॥ यातैं हमारेकूं पापकर्म करणेयोग्यनहीं ॥ दृष्टांत जैसे सर्पकूं आपणेमृत्युकासाधनजाणि करिकै कोईबुद्धिमान्पुरुष तासर्पकाउल्लंघनकरतानहीं ॥ याप्रकारकाविचार आपणेमनविषेकरिकै निर्धनदरिद्रीपुरुष पापकर्मविषेप्रवृत्तहो तानहीं ॥ किंवा ॥ जोनिर्धनदरिद्रीपुरुष किंचित्मात्रभीधर्मकूंनहींजाणता ॥ सोभी जभीपापकर्मोंकूंनहींकरता ॥ तौ शास्त्रप्रमाणतैं धर्म कूंजाणताहुआदरिद्रीपुरुष किसवासतैंपापकर्मोंकूंकरैगा ॥ किंतु ॥ नहीं करैगा ॥ किंवा जोधनतैंरहित दरिद्रीपुरुष है ॥सो राजादिकोंतैं

भयवान्हुआ परद्रव्यकी तथापरस्त्रीकी इच्छाकरतानहीं॥ और क्षुधाकरिकै पीडितहुआ सोदरिद्रीपुरुष थोडेअन्नकीप्राप्तिकरिकैभी प्रसन्न होवै है ॥ यातैं दरिद्रीपुरुषविषे लोभभीनहीं ॥ इतनैंग्रथकरिकै धनकेअभावहुए कामादिकदोषोंकाअभावरूप व्यातिरेक दिखाया ॥ अब धनकेविद्यमानहुए कामादिकदोषोंकीप्राप्तिरूप अन्वयकूंदिखावै हैं॥ धनकेमदकरिकैअंधहुआ यहधनीपुरुष आपणेबलकरिकै राजाकीतथा गुरुकी तथादेवतावोंकीभी अवज्ञाकरै है ॥ ताकरिकै यहधनीपुरुष इसलोकविषेतथापरलोकविषे अनंतदुःखोंकूंप्राप्तहोवै है किंवा यहधनी पुरुषजभीपरस्त्रीआदिकपदार्थोंविषेमोहकूंप्राप्तहोवै है॥ तभी इसलोकविषे ताकी कीर्तिनष्टहोइजावैहै॥ और संपूर्णलोक ताकूं धिक्कारकरै हैं॥ और मृत्युहोइकै सोधनीपुरुष नरकविषेदुःखकूंभोगै है ॥ किंवा ॥ जैसे प्रज्वलितअग्नि घृतकरिकै तथाकाष्ठोंकरिकै तृप्तिकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसेयहधनीपुरुष धनादिकपदार्थोंकीप्राप्तिकरिकै कभीभी तृप्तहोवैनहीं ॥ किंतु अधिकअधिकपदार्थोंकेप्राप्तिकी सर्वदाइच्छाकरै है॥ कदाचित् पूर्वलेपुण्यकेप्रभावतैं साधनीपुरुषकूं समुद्रपर्यंतपृथिवीकाराजभी प्राप्तहोइजावै ॥ तौभी पुनःस्वर्गलोककेप्राप्तिकीइच्छाकरै है ॥ यातैं धनीपुरुषकेलोभकाशांति होतीनहीं ॥ किंवा ॥ तालोभकरिकै सोधनीपुरुष परस्त्रियोंका तथापरधनका हरणकरै है ॥ यातैं सर्वजनोंकरिकै सो निंदित है ऐसे निंदितकर्मोंकूंकरिकैभी सोधनीपुरुष निर्लज्जपुरुषकीन्याईं अन्यप्राणियोंकूंहँसै है ॥ यातैं सर्वजीवोंतैं सोधनीपुरुष अधम है ॥ किंवा ॥ धनकरिकैमोहकूंप्राप्तहुआ यह धनीपुरुष आपणे हितकूं तथाअहितकूं जाणतानहीं ॥ किंतु मोहकेवशहुआ सोधनी पुरुष आपणेदुःखकूंहीं संपादनकरै है ॥ किंवा ॥ धनकरिकै मोहकूंप्राप्तहुआ यहपुरुष आपणेहितकारीमाताकूं तथापिताकूं तथापुत्रकूं तथावेदवेत्ताब्राह्मणोंकूंशरीरकरिकै तथामनकरिकै तथावाणीकरिकै हननकरै है ॥ इसप्रकार धनीपुरुष कामक्रोधादिकसर्वदोषोंकूं प्राप्तहोवै है ॥ और जोधनरहितदरिद्रीपुरुष है ॥ तिसकूं कामक्रोधादिकदोष प्राप्तहोवैं नहीं ॥ किंतु याप्रकारकाविचारकरिकै सोदरिद्री पुरुष सर्वदाआनंदविषे मगनरहैहै ॥ अब ताकेविचारकूं दिखावैं हैं ॥ जोमैं किसीधनी पुरुषतैं अन्नादिकपदार्थोंकी याचनाकरौंगा ॥ और आगेतैं सोधनीपुरुष हमारेप्रति अन्नमात्रभीनहीं देवैगा ॥ तौहमारी याचनाहीं व्यर्थजावैगी ॥ ताकरिकै हमारेकूं पश्चात्ताप होवैगा ॥

॥ ६

यातैं किसीधनीकेआगे याचनाकरणीयोग्यनहीं ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै निर्धनदरिद्रीपुरुष लोभादिकोंतैंरहितहोवै है ॥ किंवा ॥ यहजो हमारीमाताहै तथापिताहै तथाअन्यबांधवहैं ॥ तेसंपूर्ण हमारेहितकारी हैं ॥ यातैं मातापितादिक जोजोआज्ञा हमारेप्रतिकरैं॥ सोआज्ञा हमारेकूंअवश्यमाननीचाहिये॥ याप्रकारका विचारकरिकै सोनिर्धनदरिद्रीपुरुष मोहतैंभी निवृत्तहोवै है ॥ यातैं यहसिद्धभया ॥ धनकरिकेहीं संपूर्णकामक्रोधादिकदोष उत्पन्नहोवैं हैं॥ जेब्रह्मवेत्तापुरुषहैं तिनोंकूंभी जभी धनकरिकै कामक्रोधादिकदोष प्राप्तहोवैं हैं॥ तभीबहिर्मुखअज्ञानीजीवोंकी क्याकथाहै ॥ यातैं सर्वतैंअधिकविद्वान्ब्राह्मणकेनिर्णयकरणेवासतैं यासर्वब्राह्मणोंकेसमाजविषे जूवाकीन्याईं मैंबहुत धनकूंराखों॥ जोइनसर्वब्राह्मणोंविषे अधिकविद्वान्ब्राह्मणहोवैगा ॥ सोजभीयाधनकूंलैजावैगा ॥ तभी यहसंपूर्णब्राह्मण क्रोधकरिकैव्याकुल हुएआपही तिसब्राह्मणकेसाथविवादकरैंगे ॥ शंका हेभगवन् ॥ धनकरिकैजो तुम ब्राह्मणोंकाक्षोभकरावोगे ॥ तो तुमारेकूं पापहोवैगा ॥ समाधान ॥ नीतिपूर्वकजोधर्महै सो राजावोंकेपापकासाधनहोवैनहीं ॥ किंतु सुखकासाधनहोवै है ॥ ताधर्मकेकरणेकरिकै हमारेकूंपाप होवैगानहीं॥ तात्पर्ययह॥ ब्राह्मणोंकेक्षोभविषे मैं कारणनहीं॥ किंतु तिनोंकेलोभादिकदोषही कारणहैं ॥ यातैं याउपायकरिकैसर्वतैं अधिक ब्राह्मणकेजानणेविषे हमारेकूं किंचित्मात्रभी पापनहींहोवैगा ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ सर्वतैंअधिकजाणिकै जिसब्राह्मणकेताईं धनदेवोगे ॥ सोब्राह्मण जोकदाचित् ताधनकरिकै पापकर्मकरैगा ॥ तौ तुमारेकूंभी परंपराकरिकै पापकीप्राप्तिहोवैगी ॥ समाधान ॥ सर्वतैंअधिकजो विद्वान् है ॥ तिसकूं ताधनकरिकै पापकर्महोवैगानहीं ॥ काहेतैं शमदमादिकगुणोंकरिकैयुक्तब्राह्मणहीं सर्वतैंअधिकहोवै है ॥ तेशमदमादिक गुण जहाँरहैहैं ॥ तहां कामक्रोधादिकदोषोंकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ और कामक्रोधादिकोंतैंविना पापकर्मविषेप्रवृत्तिहोवैनहीं ॥ तेकामक्रोधादिकदोष शमदमादिकगुणवान्पुरुषविषे संभवैनहीं ॥ यातैं कामक्रोधादिकोंतैंरहित शमदमादिकगुणवान् सर्वतैंअधिकविद्वान्पुरुष किसप्रकार पापकर्मकूंकरैगा ॥ किंतुकदाचित्भी सोविद्वान्पुरुष पापकर्मनहींकरैगा ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै सोजनकराजा पुनःयाप्रकारकाविचार करताभया॥ याब्राह्मणोंकेसमाजविषे याज्ञवल्क्यमुनितैंविना अन्यकिसीब्राह्मणविषे सर्वतैंअधिकताकी संभावनाहो

वैनहीं ॥ किंतु सूर्यभगवान्काशिष्य यहयाज्ञवल्क्यमुनिहीं सर्वतैंअधिकप्रतीतहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ संभापणकरेतैंविनाहीं याज्ञवल्क्यकीअधिकता आपनैं कैसेजाणी ॥ समाधान ॥ काम क्रोध लोभ मोह गर्व इत्यादिकदोपोंका जाकेविपेअभावहोवैहै॥सोविद्वान्हीं होवैहै ॥ यहविद्वान्कालक्षण याज्ञवल्क्यमुनिविपेही घटैहै ॥ काहेतैं या याज्ञवल्क्यमुनिविपे काम क्रोध लोभ मोह हैनहीं॥ और इतनीविद्याकूंपाइकेभी याकेविपेगर्वनहीं ॥ और जडपुरुपकीन्याईं मौनकूंधारणकरिकै यहयाज्ञवल्क्यमुनिस्थितहै ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ याकेसमान कोईदूसराविद्वान्नहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जोयहयाज्ञवल्क्यमुनि रागद्वेपादिकोंतैंरहितहै ॥ तौ तुमारेधनकूंकैसेग्रहणकरैगा ॥ रागतैंविना धनादिकपदार्थोंकाग्रहण होवैनहीं ॥ समाधान ॥ यहयाज्ञवल्क्यमुनि हमारेधनकूंजोग्रहणकरैगा ॥ सोआपणेभोगवासतैं नहींग्रहणकरैगा ॥ किंतु जीवोंकेउपकारवासतैं धनकूंग्रहणकारिकै यात्राह्मणोंकूं सभाविपेजीतैगा ॥ किंवा ॥ यहहमाराधन जभी याज्ञवल्क्यमुनिकेहस्तविपेआवैगा ॥ तौ साधनकारिकै सर्वप्राणियोंका उपकारही होवैगा ॥ काहेतैं याज्ञवक्यमुनिकाधन तथा शरीर आपणेभोगवासतैंनहीं ॥ किंतु केवल परउपकारकेवासतैं है॥किंवा ॥ जैसे कोईपामरपुरुप धनादिकपदार्थोंकीलिप्साकरिकै युक्तहुआ प्रसन्नदृष्टितैं राजाकूंदेखेहै ॥ तैसे यह याज्ञवल्क्यमुनि प्रसन्नदृष्टितैं॥ वारंवार हमारेकूंदेखेहै ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥यामुनिका हमारेऊपर परमअनुग्रहहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जहांजहां प्रसन्नतापूर्वकदृष्टिहोवैहै ॥ तहांतहां धनादिकपदार्थोंकीलिप्साहोवैहै अथवा अनुग्रहहोवैहै ॥ लिप्सातैंविना तथा अनुग्रहहतैंविना प्रसन्नतापूर्वक दृष्टिहोवैनहीं ॥ तहां धनादिकपदार्थोंकीलिप्सातौ याज्ञवल्क्यमुनिविपेहै नहीं ॥ परिशेपतैं अनुग्रहकरिकैहीं हमारीओरदेखतेहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ याज्ञवल्क्यमुनिविपे रागद्वेपनहींहै यहतुम कैसेजाणते हो ॥ समाधान ॥ याज्ञवल्क्यमुनिकेजीतणेकीहैइच्छाजिनोंकूं ऐसेजेयह अहंकारीब्राह्मणहैं ॥ ते परस्परहँसतेहुए दुरुत्तरवाक्योंकूंकथनकरैं हैं ॥ तिनब्राह्मणोंकेवचनोंकूं यहयाज्ञवल्क्यमुनि अज्ञानीपुरुपकीन्याईं श्रवणकरैहै और तिनवचनोंकूंश्रवणकरिकैभी यहयाज्ञवल्क्यमुनि जडपुरुपकीन्याईं तिनोंकाउत्तरकहतानहीं॥यातैं यहजान्याजावैहै॥या याज्ञवल्क्यमुनिकेचित्तविपे क्षोभनहीं॥ और जोपुरुप क्षोभतैंरहित

होवै है॥सोईहीपुरुप रागद्वेपतैंरहितहोवै है॥हेशिष्य॥इसतैंआदिलैके बहुतप्रकारकाविचार सोजनकराजा आपणेमनविपेकरताभया॥तिसतैंअनंतर सोजनकराजा कामधेनुगौवोंकेसमान १००० एकसहस्रगौवोंकूं तथा ४०००० चालीससहस्र सुवर्णकेनिष्कोंकूं सभाविपे स्थापनकरताभया ॥ तात्पर्ययह ॥ एकसहस्रगौवोंके दोसहस्र शृंगहोवै हैं॥तहांएकशृंगकेसाथ बीसबीस सुवर्णकेनिष्क राजाबांधताभया॥नवेतोला परिमाणसुवर्णकूं निष्ककहै हैं ॥ याप्रकार शास्त्रकीरीतिसैं सोजनकराजा सभाविपे गौवोंकूंस्थापनकरताभया ॥ और सर्वब्राह्मणोंकेप्रति याप्रकारकावचन राजा कहताभया ॥ हेसर्वब्राह्मणो ॥ जो तुमारे मध्यविपे श्रेष्ठब्रह्मवेत्ताब्राह्मणहोवै ॥ सो यह संपूर्णगौवाँ आपणे आश्रमविपेलैजावै ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारके जनकराजाकेवचनकूंश्रवणकारिकै तेसंपूर्णब्राह्मण नीचेमुखकरिकै तूष्णीभावकूंप्राप्तहोतेभये ॥ आपणे विद्याकेबलकरिकै सर्वब्राह्मणोंकेजीतणेविपे कोईभीब्राह्मण समर्थनहींहोता ॥ याप्रकार संपूर्ण ब्राह्मणोंकूंतूष्णी हुआ देखिकरिकै सो याज्ञवल्क्यमुनि सामवेदपाठीशिष्यकेप्रति यह वचन कहताभया ॥ हेसामवेदपाठीशिष्य ॥ तूं यहसंपूर्णगौवां हमारेगृहविपे शीघ्रहीलैजावो ॥ और सर्वब्राह्मणोंकेप्रति ऊँचेस्वरकरिकै यहवचनकहो ॥ सर्वतैंअधिक ब्रह्मवेत्ता याज्ञवल्क्यमुनि सर्वब्राह्मणोंकेगौवोंकूंलैजावै है ॥ याप्रकार याज्ञवल्क्यमुनिकेवचनकूंश्रवणकारिकै सोसामवेदपाठीशिष्य तिसीप्रकार सर्वब्राह्मणोंकेप्रति वचनकहिकै सर्वगौवोंकूं याज्ञवल्क्यमुनिकेआश्रमविपेलेजाताभया ॥ तिसतैंअनंतर तेसंपूर्णब्राह्मण याज्ञवल्क्यऊपर क्रोधवान्होतेभये॥और जनकराजातौ परमआनंदकूंप्राप्तहोताभया॥ तात्पर्ययह ॥ सोयाज्ञवल्क्यमुनि एकहीकालविपे ब्राह्मणोंकेतौ दुःखकाकारणहोताभया ॥ और जनकराजाके सुखकाकारणहोताभया ॥ याकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि याअर्थकूंबोधनकरताभया ॥ सांख्यशास्त्रवाले शब्दस्पर्शादिकविपयोंविपेही सुखदुःखमानैं हैं ॥ सो तुमोंनैं अंगीकारनहींकरणा ॥ किंतु आपणेमनविपे सुखदुःखरहै हैं यहपक्ष तुमोंनैं अंगीकारकरणा॥काहेतैं जोस्नेहकरिकैयुक्त चित्तहोवै है ताकेविपेतौ सुखकी उत्पत्तिहोवै है ॥ जैसे जनकराजाकूं सुखउत्पन्नभयाहै ॥ और जोचित्त द्वेपकरिकैयुक्तहोवै है ताकेविपे दुःखकी उत्पत्तिहोवै है॥ जैसे ब्राह्मणोंकूं दुःखकीउत्पत्तिभई है ॥ जोविपयकाहीं सुखदुःखधर्महोवै॥तौ सर्वलोकोंकूं नाविपयतैं सुखकीहीप्राप्तिहोणीचाहिये॥अथवा

दुःखकीही प्राप्तिहोणीचाहिये ॥ किसीकूं सुखकीप्राप्ति और किसीकूं दुःखकीप्राप्ति यहविषमता संभवैनहीं॥और यहविषमता सर्वजीवोंकूं अनुभवहोवै है॥यातैं विषयकाधर्म सुखदुःखनहीं॥ किंतु बाह्यकारणतैंविनाहीं यहवस्तु रमणीकहै तथायहवस्तु अरमणीकहै याप्रकारकी कल्पनातैं मनविषे सुखदुःख उत्पन्नहोवै हैं ॥दृष्टांत॥ जैसे निर्जनवनविषे प्राप्तभयाजोवीतरागपुरुषहै ॥ ताकूं आपणेमनतैंहीं तहांआनंद होवै है॥और तिसीनिर्जनवनविषे प्राप्तभयाजोरागीपुरुषहै॥तिसकूं आपणेमनतैंहीं तहांदुःखकीप्राप्तिहोवै है॥किसीविषयतैं तावनविषेस्थितपुरुषोंकूं सुखदुःखकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ यातैं मनहीं सुखदुःखकाआश्रयहै ॥ अब दुःखकारिकैजन्य ब्राह्मणोंकेक्रोधकूंदिखावै हैं॥हेशिष्य॥ याप्रकार गौवोंकूंगयाहुआदेखिकै क्रोधकरिकै तिनब्राह्मणोंकेआसन चलायमानहोतेभये ॥ और मुखकेश्मश्रु कंपायमानहोतेभये ॥ और नीचेकेदांतोंकीजोपंक्तिहै सोमुखकेभीतर प्रवेशकरतीभई ॥ और ऊपरकेदांतोंकीपंक्तिकरिकै नीचेकेअधरकूंदबावतेभये॥और जैसे भूतावेशवालापुरुष नानाप्रकारके रुदनादिककरै है ॥ तैसे क्रोधकरिकैयुक्तहुए केईकब्राह्मण रुधिरकरिकैपूरितनेत्रोंकरिकै अश्रुवोंकापरित्याग करतेभये और केईकब्राह्मण उन्मत्तपुरुषकीन्याईं नानाप्रकारकेशब्दोंकूंकरतेभये ॥ याप्रकार तिनब्राह्मणोंके यज्ञमंडलविषे महान्घोरशब्द होताभया ॥ दृष्टांत ॥ जैसे पूर्णिमाकेप्राप्तहुए समुद्रविषेक्षोभहोवै है ॥ तैसे सर्वब्राह्मण क्षोभवान्होईकै याप्रकारकेवचन कहतेभये ॥ हमसर्वविद्वान्ब्राह्मणोंकूंयहयाज्ञवल्क्य एकलाहीउल्लंघनकरिकैजावै है ॥ यातैं हमारेकुलोंकूंधिक्कारहै ॥ तथा हमारेअध्यापनकरावणेकीजे महान्शालाहैं तिनोंकूंभी धिक्कारहै ॥ तथा हमारेजीवनकूंभी धिक्कारहै॥और अध्ययनकालविषे जोहमोंनैं गुरुवोंकीसेवाकरीहैतासेवाकूंभी धिक्कारहै ॥ तथा हमारेवेदअध्ययनकूं धिक्कारहै ॥ तथा वेदोंकेअध्ययनकरणेहारे जेहमारेशिष्यहैं तिनोंकूंभीधिक्कार है॥हेशिष्य॥याप्रकार सर्वब्राह्मणोंकीअवस्थाकूंदेखिकरिकै आश्वलनामाब्राह्मण बहुतक्रोधवान्होताभया ॥ और याज्ञवल्क्यमुनिकेसमीपआइके सोआश्वलनामा ब्राह्मण याप्रकारवचनकहताभया ॥ हेगुरुसंप्रदायतैंरहित दुराचारीयाज्ञवल्क्य हम सर्व ब्राह्मणोंकेमध्यविषेक्या तूंही एक सर्वतैं अधिक विद्वान् है ॥ हे याज्ञवल्क्य ॥ तुमारेविषे विद्या करिकैतौ अधिकता है नहीं ॥ किंतु लोभकरिकै तथा गर्वकरिकै तेरे विषे हमारेतैं

अधिकताहै ॥ कैसेहैंहमसंपूर्णब्राह्मण हिरण्यगर्भकेसमानहैं॥तथा गर्वलोभादिकदोषोंतैंरहितहैं॥तथा शमदमादिकसाधनोंकरिकैयुक्त हैं ॥ और तर्करूपीमननकीसिद्धिवासतैं चतुर्दशविद्योंकूं हम जानणेहारे हैं ॥ तेचतुर्दशविद्यायह हैं ॥ ऋग् यजुष् साम अथर्वण यहचारिवेद ॥ तथा शिक्षा कल्प व्याकरण निरुक्त ज्योतिष पिंगल यहषट् वेदकेअंग ॥ मीमांसाशास्त्र न्यायशास्त्र पुराण धर्मशास्त्र ॥ यह चतुर्दशविद्या हैं ॥ आयुर्वेद धनुर्वेद गंधर्ववेद अर्थशास्त्र याचारोंकूंमिलाइके अष्टादशविद्याहोवै हैं ॥ हे याज्ञवल्क्य ॥ यापृथिवीविषे लज्जातैंरहितहुआ पुरुष कौनपंडितनहींहोता ॥ किंतु लज्जातैंरहितहुआपुरुष पंडितहीहोवै है ॥ जैसे हमसर्वब्रह्मवेत्ताब्राह्मणोंविषे लज्जातैंरहितहुआ तूं पंडित है ॥ और हे याज्ञवल्क्य॥महान्बली जेवासुकीआदिकसर्प हैं तिनोंकूं पादोंकरिकैकौनस्पर्शकरैगा॥और तीनलोकोंकूंदाहकरणेहारा जो कालकूटविषहै तिसकूं योगसाधनातैंरहित कौनपुरुष भक्षणकरैगा ॥ और प्रज्वलितजोअग्निहै तिसकूं मुष्टिविषेबांधिकरिकै कौनपुरुष गृहविषेलेजावैगा ॥ तैसे या सर्वब्राह्मणोंकूं तेरेतैंविना कौनपुरुष क्रोधकरावैगा किंतु तेरेतैंविना दूसराकोई ब्राह्मणोंकक्रोधकरावणेहारा नहीं ॥ एकतूंहीं गर्व लोभ अनम्रता करिकैयुक्तहुआ ब्राह्मणोंकेक्रोधकरावणेहाराहै ॥ और हे याज्ञवल्क्य ॥ या संपूर्णब्राह्मणोंविषे एकएकब्राह्मणभी क्रोधकरिकैयुक्तहुआ संपूर्णजगत्केदाहकरणेविषेसमर्थ है ॥ तौ क्रोधकरिकैयुक्तहुए यहसंपूर्णब्राह्मण तेरेसरीखेअधम ब्राह्मणकूं किसवास्तैनहींदाहकरैंगे ॥ किंतु अवश्यतेरानाशकरैंगे ॥ हे शिष्य ॥ इत्यादिककठोरवचनरूपीबाणोंकरिकै सो आश्वलनामा ब्राह्मण याज्ञवल्क्यमुनिकेकर्णोंकूंभेदनकरताभया ॥ तथापि सो याज्ञवल्क्यमुनि किंचित्मात्रभी क्षोभकूंनहींप्राप्तहोताभया ॥ दृष्टांत ॥ जैसे पाषाणोंकीवृष्टिकरिकै ताडनाकूंप्राप्तहुआ पर्वत क्षोभकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ तैसे याज्ञवल्क्यमुनिभी क्षोभकूंनहींप्राप्तहोताभया ॥ उलटा आश्वलकेवचनोंकूंश्रवणकरिकै हँसताहुआ सो याज्ञवल्क्यमुनि याप्रकारकावचन आश्वलनामाब्राह्मणकेप्रति कहताभया ॥ हेआश्वलब्राह्मण ॥ याब्राह्मणोंकेसमाजविषे जोजोब्राह्मण ब्रह्मवेत्ताहैं ॥ तिसतिसब्राह्मणकेताईं हमसर्वदा नमस्कारकरैं हैं ॥शंका॥ हेयाज्ञवल्क्य॥ जो तुमारी ऐसीब्राह्मणोंविषेश्रद्धाहै ॥ तौ सर्वब्राह्मणोंकीगौवाँ तुमनैं काहेवासतैंहरणकरियाहैं ॥ समाधान ॥ हे आश्वल ॥ सुवर्णकरिकै

सहित गौवोंकूंदेखिकरिकै तिनगौवोंविषेहमारीअभिलाषाहुई ॥ याकारणतैं हमनैं गौवोंकाहरणकऱ्याहै ॥ याकोविषे किसवासतैंब्राह्मण क्रोधकरैं हैं ॥ हेआश्वल ॥ जोमैं इनब्राह्मणोंकीगौव। लैजाता ॥ तौ यात्राह्मणोंकाक्रोध हमारेऊपर घटता ॥ परंतु हमनैं इनब्राह्मणोंकीगौवांलियानहीं ॥ किंतु जनकराजा गौवोंकादाताहै ॥ और मैं गौवोंकूंलैजाणेहाराहूं ॥ याकेविषे ब्राह्मणोंकेक्रोधका कौनकारणहै॥यहबातौ तुम विचारकैकहो ॥ और हेआश्वल यहजनकराजा बहुतधनवान्है ॥ जोइनसर्वब्राह्मणोंकूं तथातुमारेकूं हमारेन्याईं धनग्रहणकरणेकी इच्छाहोवै ॥ तौ राजाजनकतैं तुमसंपूर्णब्राह्मण धनकूंलेवो ॥ तुमारेताईं दानदेणेविषे हम राजाकूंनिवारणकरतेनहीं ॥ यातैं हमारेऊपर क्रोधकरणा तुमारेकूं उचितनहीं ॥हेशिष्य॥याप्रकारकावचन जबी याज्ञवल्क्यमुनिनै आश्वलकेप्रतिकह्या॥ तबी सोआश्वलनामाब्राह्मण जैसेघृतकेपायतैं अग्निक्षोभकूं प्राप्तहोवै है ॥ तैसे पुनःक्षोभकूं प्राप्तहोताभया ॥ तिसतैंअनंतर याज्ञवल्क्यमुनिकेसाथ विवादकरणेवासतैं सोआश्वल याज्ञवल्क्यकेप्रति अष्टप्रश्न करताभया ॥ तिनोंविषे चारिप्रश्नोंकानाम अतिमोक्षहै ॥ और चारिप्रश्नकानामसंपद्है ॥ तहां कर्मीपुरुषोंके जेवाक्आदिकअध्यात्म हैं ॥ तिनवाक्आदिकअध्यात्मोंकाजोअग्निआदिकअधिदैवोंकेसाथ परिच्छेदहै॥तापरिच्छेदरूपमृत्युकेनिवृत्तिकासाधन जोवाक्आदिकोंकाअग्निआदिकोंके साथ अभेदज्ञानहै ताकूं मोक्षकहैं हैं॥और ताअभेदज्ञानकरिकै वाक्आदिकअध्यात्मोंकूं जोअग्निआदिकअधिदैवभावकीप्राप्तिरूपफलहै ताकूं अतिमोक्षकहैं हैं॥ताअतिमोक्षरूपफलकूंविषयकरणेहारे प्रश्नोंकूंभी अतिमोक्षकहैं हैं ॥ और निकृष्टवस्तुविषे किंचित्मात्रसमानधर्मकूंलेके जो उत्कृष्टदृष्टिहै ताकूं संपद्कहैं हैं॥जैसे श्राद्धकेअन्नविषे अमृतदृष्टि ॥ तथाब्राह्मणविषे विष्णुदृष्टि ॥ तासंपद्कूंविषयकरणेहारेप्रश्नोंकूंभी संपदकहैं हैं ॥ अब चारिअतिमोक्षप्रश्नोंकूंदिखावैं हैं ॥आश्वलउवाच॥ हे याज्ञवल्क्य ऋत्विगादिकसाधनोंकरिकैसंपन्नहुएभी अग्निहोत्रादिककर्म परिच्छेदभावजन्य जोप्रमादरूपमृत्युहै ताकरिकैव्याप्त हैं ॥ यद्यपि शास्त्रउक्तकर्मोंकेअनुष्ठानतैं अशास्त्रीय इंद्रियादिकोंकीवृत्तियांनिवृत्तहोवैं हैं ॥ तथापि परिच्छिन्नभाव ज्ञानतैंविना निवृत्तहोवैंनहीं॥ यातैं किसज्ञानकरिकै यजमान परिच्छिन्नभावका परित्यागकरिकै अपरिच्छिन्नभावरूपफलकूंप्राप्तहोवै है ॥ १ ॥ और हे याज्ञवल्क्य ॥

दिनरात्रिरूपकालकरिकै संपूर्णपदार्थ परिच्छिन्नहोइरहे हैं ॥ तापरिच्छिन्नभावकीनिवृत्ति किसज्ञानकरिकैहोवै हैं ॥ २ ॥ और हेयाज्ञवल्क्य ॥ शुक्लपक्ष कृष्णपक्ष रूपकालकरिकै संपूर्णपदार्थ परिच्छिन्न होइरहे हैं ॥ तापरिच्छिन्नभावकीनिवृत्ति किसज्ञानकरिकैहोवै है ॥ ३ ॥ और हेयाज्ञवल्क्य ॥ यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिकै निराश्रयआकाशविषे यजमान किससाधनकरिकैगमनकरै है ॥ ४ ॥ अब इनचारिप्रश्नोंकेउत्तरोंकूंदिखावैं हैं ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेआश्वलब्राह्मण ॥ कर्मकर्तायजमानकी जोअध्यात्मवाक्है ॥ और तावाक्का अधिदैवरूपजोअग्नि है॥और तावाक्का अधियज्ञरूपजोहोता है॥ यातिनोंकेअभेदकूंविषयकरणेहारीजो आधिदैवअग्निरूपयजमानकावाक्मैंहूं याप्रकारकी होताकीदृष्टि है ॥ सोदृष्टि यजमानके प्रथम परिच्छेदजन्यमृत्युकेतरणकासाधनहै ॥ १ ॥ और हेआश्वल ॥ यजमानकाजोअध्यात्मचक्षुहै ॥ और ताचक्षुका अधिदैवरूपजोसूर्य है ॥ और ताचक्षुका अधियज्ञरूपजोअध्वर्युहै ॥ यातिनोंकेअभेदकूंविषयकरणेहारी जो अधिदैवसूर्यरूप यजमानकाचक्षु मैंहूं याप्रकारकी अध्वर्युकीदृष्टिहै ॥ सोदृष्टि यजमानके द्वितीयपरिच्छेदकूंनिवृत्त करै है ॥२॥और हेआश्वल यजमानका अध्यात्मरूपजोप्राण है ॥ और ताप्राणका अधिदैवरूपजोवायुहै ॥ और ताप्राणका अधियज्ञरूप जोउद्गाताहै ॥ यातिनोंकेअभेदकूंविषयकरणेहारी जो अधिदैववायुरूप यजमानकाप्राण मैंहूं याप्रकारकी उद्गाताकीदृष्टिहै ॥ सोदृष्टि यजमानकेतृतीयपरिच्छेदकूंनिवृत्तकरै है ॥ ३ ॥ और हेआश्वल ॥ यजमानका अध्यात्मजोमनहै ॥ और तामनका अधिदैवरूपजोचंद्रमा है ॥ और तामनका अधियज्ञरूप जोब्रह्माहै॥ यातिनोंकेअभेदकूंविषयकरणेहारी जोआधिदैवचंद्रमारूप यजमानकामन मैंहूं याप्रकारकी ब्रह्माकीदृष्टि है ॥ तादृष्टिकेप्रभावतैं यजमान आकाशविषेगमनकरै है ॥ ४ ॥ यहांदृष्टिशब्दकरिकै सर्वत्र ज्ञानकाग्रहणकरणा ॥ और परिच्छेदशब्दकरिकै भेदकाग्रहणकरणा ॥ और ऋग्वेदकेजानणेहारेब्राह्मणकूं होता कहैं हैं ॥ और यजुर्वेदकेजानणेहारेब्राह्मणकूं अध्वर्यु कहैं हैं ॥ और सामवेदकेजानणेहारेब्राह्मणकूं उद्गाता कहैं हैं ॥ और ऋग् यजुष् साम यातीनवेदोंकेजानणेहारेब्राह्मणकूं ब्रह्मा कहैं हैं ॥ यचारिऋत्विक् यज्ञकेकरणेहारे होवैं हैं ॥ और यज्ञकेकरणेहारे क्षत्रियादिकोंकूं यजमान कहैं हैं ॥ हेशिष्य इसप्र

कार अतिमोक्षरूप चारिप्रश्नोंकेउत्तरकूं जभी याज्ञवल्क्यमुनिनैं कह्या ॥ तभी सो आश्वलनामाब्राह्मण पुनःसंपद्रूप चारिप्रश्नोंकूंकर ताभया ॥ आश्वलउवाच॥हे याज्ञवल्क्य ॥ होताके संपद्रूपज्ञानकारिकै यजमानकूं किसफलकीप्राप्तिहोवै है ॥१॥ और अध्वर्युके संपद्रूपज्ञानकरिकै यजमानकूं किसफलकीप्राप्तिहोवै है ॥ २ ॥ और ब्रह्माके संपद्रूपज्ञानकरिकै यजमानकूं किस फलकी प्राप्ति होवै है ॥ ३ ॥ और उद्गाताके संपद्रूपज्ञानकारिकै यजमानकूंकिसफलकीप्राप्तिहोवै है ॥ ४ ॥ अब याचारिप्रश्नोंकेउत्तरोंकूंदिखावैं हैं ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हे आश्वल ॥ याज्या पुरोनुवाक्या शस्या यातीनऋचावोंविषे त्रित्वसंख्यारहै है ॥ तथा तीनलोकोंविषेभी त्रित्वसंख्यारहै है ॥ ता त्रित्वसंख्यारूप समानधर्मकूंग्रहणकारिकै जभीहोतायाज्यादिकतीनऋचावोंकूं तीनलोकरूपकरिकैदेखै है ॥ तभी ताहोताके संपद्रूपज्ञानकारिकै यजमानकूं तीनलोकोंकाजयरूपफल प्राप्तहोवै है ॥ यहां यज याप्रकारकीप्रेरणातैंअनंतर पठनकरीहुई ऋचाकूं याज्याकहैं हैं ॥ और ब्रूहि याप्रकारकीप्रेरणातैंअनंतर पठनकरीहुईऋचाकूं पुरोनुवाक्याकहैं हैं ॥ और एकश्वासकरिकै पठनकरी हुईऋचाकूं शस्याकहैं हैं ॥ १ ॥ और हे आश्वल ॥ अध्वर्युनैं अग्निविषे हवनकरियां जे आहुतियां ॥ त उज्ज्वलत्व सशब्दत्व अधोगामित्व रूपकरिकै तीन प्रकारकी हैं ॥ और जैसे आहुतियोंविषे उज्ज्वलत्वादिक धर्म रहैं हैं ॥ तैसे देवलोक पितृ लोक मनुष्य लोक यातीनलोकोंविषेभी उज्ज्वलत्वादिकधर्म रहैं हैं तिनउज्ज्वलत्वादिक समानधर्मोंकूंग्रहणकारिकै जबी सो अध्वर्यु तिनआहुतियोंकूं देवलोकादिरूपकरिकैदेखे हैं॥तभीताअध्वर्युकेसंपद्रूपज्ञानकरिकै यजमानकूं देवलोक पितृलोक मनुष्यलोक यातीनलोकोंकाजयरूपफल प्राप्तहोवै है ॥ २ ॥ और हेआश्वल ॥ वृत्तिरूपकरिकै मन अनंतहै ॥ और विश्वेदेवताभीअनंतहैं ॥ ता अनंतत्वरूप सामान्यधर्मकूंग्रहणकारिकै जबी ब्रह्मा मनकूं विश्वेदेवतारूप करिकैचिंतनकरै है॥तबी ताब्रह्माकेसंपद्रूपज्ञानकरिकै यजमानकूं अनंतफलकीप्राप्तिहोवै हैं॥३ और हे आश्वल ॥ उद्गातानैं गायनकरियांजे याज्या पुरोनुवाक्या शस्या यहतानऋचा ॥ तिनतीनोंऋचावोंकूं जबी उद्गाता प्राण अपान व्यान रूपकरिकै देखै है ॥ तबी ताउद्गाताकेसंपद्रूपज्ञानकारिकै यजमानकूं भूर्भुवः स्वर यातीनलोकोंकाजयरूपफल प्राप्तहो

वैहै ॥४॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार जबी याज्ञवल्क्यमुनिनैं आश्वलकेअष्टप्रश्नोंकाउत्तरकह्या ॥ तबी सोआश्वल याज्ञवल्क्यकेजीतणेकी आपणेविषेसामर्थ्य नहींदेखताभया॥ और लज्जाकूंप्राप्तहुआ सोआश्वल याज्ञवल्क्यकेसाथ विवादकरावणेवासतै आर्तभागनामाब्राह्मणकेमुखकी ओर देखिकै पुनःप्रश्नकरणेतैं निवृत्तहोताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोआर्तभाग याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति प्रश्नोंकूंकरताभया ॥ आर्त्तभाग उवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ ग्रह कितनेहैं ॥ तथा अतिग्रह कितनेहैं ॥याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेआर्त्तभाग ॥ अष्टग्रहहैं ॥ और अष्ट अतिग्रहहैं आर्त्तभागउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ ते अष्टग्रह कौनहैं ॥ और त अष्टअतिग्रह कौनहैं ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेआर्त्तभाग ॥ श्रोत्र १ त्वक् २ चक्षु ३ रसन ४ घ्राण ५ मन ६ वाक् ७ हस्त ८ यहअष्टइंद्रिय जीवोंकूंबंधनकरैं हैं॥ यातैं इनअष्टोंकूं ग्रहकहैं हैं ॥ और शब्द १ स्पर्श २ रूप ३ रस ४ गंध ५ इच्छा ६ नाम ७ क्रिया ८ यहअष्ट श्रोत्रादिकअष्टइंद्रियोंके क्रमतैंविषय हैं॥ तिनशब्दादिकविषयोंतैं विना केवलश्रोत्रादिकइंद्रिय जीवकूंबंधनकरैंनहीं ॥ किंतु शब्दादिकविषयोंकरिकैयुक्तहुए श्रोत्रादिकइंद्रिय जीवोंकेबंधनकाहेतुहैं ॥ यातैं शब्दादिकअष्टविषयोंकूं अतिग्रहकहैं हैं ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकैदिखावैं हैं ॥ हेआर्त्तभाग ॥ जैसे प्रसिद्धसमुद्रविषे प्राप्तहुएपुरुषकूं मकरादिकग्रह भक्षणकरैहैं ॥ और तिनमकरादिकग्रहोंकूं तिनोतैंभीअधिकबलवान् तिमिंगलादिकअतिग्रह भक्षणकरैं हैं॥तैसे संसाररूप समुद्रविषे प्राप्तहुएअज्ञानीजीवकूं श्रोत्रादिकइंद्रियरूपग्रह भक्षणकरैं हैं ॥तात्पर्यग्रह ॥ जीवकूं श्रोत्रादिकइंद्रिय आपणेअधीनकरैं हैं ॥ और तिनश्रोत्रादिकइंद्रियरूपग्रहोंकूं शब्दादिकविषयरूपअतिग्रह भक्षणकरैं हैं ॥ तात्पर्यग्रह ॥ शब्दादिकविषय श्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं आपणेअधीनकरैं हैं ॥ यहही तिनोंकाभक्षणहै ॥ और हेआर्त्तभाग॥ जसे मार्जार मूषककूं ग्रहणकरै है ॥ तैसे श्रोत्रादिकइंद्रिय याजीवकूं आपणेवशकरैं हैं ॥ और जैसे धीवरपुरुष जलविषेस्थित मत्स्योंकूं ग्रहणकरैहै तैसे शब्दादिकविषय श्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं आपणेवशकरैंहै॥ और हेआर्त्तभाग ॥ जैसे पिशाचादिकग्रहकरिकैयुक्तहुआ यहपुरुष आपणेहितकूं तथाअहितकूं जाणतानहीं ॥ तैसे श्रोत्रादिकइंद्रियोंके अधीनहुआ यहजीव आपणेमोक्षरूपहितकूं तथाबंधरूप अहितकूं देखतानहीं ॥ और हेआर्त्तभाग ॥ जैसे किसीबलवान्पुरुषकरिकै

वांछ्याहुआ मकर यद्यपि किसीपुरुषकेमारणेकीइच्छा नहींकरै है॥तथापि तावलवान्पुरुषरूपअतिग्रहकरिकै प्रेरणाकऱ्याहुआ सोमकर अन्यपुरुषकेमारणेवासतै प्रवृत्तहोवै है ॥ तैसे श्रोत्रादिकइंद्रियरूप ग्रह यद्यपि जीवोंकेबंधनकरणेकीइच्छानहीं करैं हैं ॥ तथापि शब्दादिकविषयरूप अतिग्रहोंके अधीनहुए श्रोत्रादिकइंद्रिय जीवकेबंधनकरणेवासतै प्रवृत्तहोवैं हैं ॥शंका॥हेभगवन् ॥ याज्ञवल्क्यमुनिनैं अष्ट ग्रह तथाअष्टअतिग्रहकहे सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं अन्यशास्त्रविषे पंचकर्मइंद्रिय पंचज्ञानइन्द्रिय एकअंतःकरण यहएकादशइंद्रियकहैं हैं ॥ और एकादशही तिनोंकेविषयकहैं हैं ॥ ताशास्त्रका विरोधहोवै है ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ यद्यपि इन्द्रिय तथाविषय एकादश हैं ॥ तथापि श्रोत्रादिकअष्टइंद्रियोंकीप्रधानताकूं तथाशब्दादिकअष्टविषयोंकीप्रधानताकूं ग्रहणकरिकै याज्ञवल्क्यमुनिनैं अष्टग्रह तथाअष्ट अतिग्रह कथनकरे हैं ॥ अथवा ॥ त्वक्इंद्रियविषे तथाहस्तइंद्रियविषे पाद पायु उपस्थ यातीनोंका अंतर्भावमानिकै याज्ञवल्क्यमुनिनैं अष्टग्रह अष्टअतिग्रह कहे हैं ॥ तिनोंविषेभी उपस्थइंद्रियका त्वक्इंद्रियविषेअंतर्भावहै ॥ काहेतैं त्वक्इंद्रिय सर्वशरीरविषेव्यापकहै॥यातैं स्त्रीकेसंबंधतैं जोउपस्थविषे सुखउत्पन्नहोवै है ॥ सोसुख स्पर्शकरिकैजन्यहै ॥ यातैं सोसुख त्वक्इंद्रियकरिकैजन्यहै॥यारीतिसे उपस्थका त्वक्इंद्रियविषेअंतर्भावहै ॥ और पादइंद्रियतैं गमनरूपक्रियाहोवै है ॥ और पायुइंद्रियतैं मलकापरित्यागरूप क्रियाहोवै है ॥ और हस्त इंद्रियतैंग्रहणरूपक्रियाहोवै है ॥ याप्रकार क्रियाकीसाधनता तीनोंविषेसमानहै ॥ यातैं पायुका तथापादका हस्तइंद्रियविषे अंतर्भाव है ॥ अथवा ॥ जिसकालविषे पायुइंद्रियका मलकापरित्यागरूपव्यापारहोवै है ॥ तथा पादइंद्रियका गमनरूपव्यापारहोवै है ॥ तिसकालविषे हस्तइंद्रियका आकुंचन प्रसारणरूप व्यापार अवश्यहोवै है॥यातैंयहजान्याजावै है॥पायु पाद हस्त यातीनोंके नाडियोंकेबंध समान हैं॥ तानाडीबंधकीसमानताकूंग्रहणकरिकै याज्ञवल्क्यमुनिनै पायुपादका हस्तविषेअंतर्भावकह्याहै ॥ १ ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार जभी याज्ञवल्क्यमुनिनैं आर्त्तभागकेप्रश्नका उत्तरकह्या ॥ तभी सोआर्त्तभाग पुनःदूसराप्रश्न करताभया ॥ आर्त्तभागउवाच ॥ हे याज्ञवल्क्य ॥ हिरण्यगर्भतैंआदिलैकै जितनाकीजडअजडप्रपंचहै ॥ तिसकूं यहग्रहअतिग्रहरूपमृत्यु भक्षणकरै है यातैं संपूर्णजगत् ग्रहअतिग्रहरूप

मृत्युका अन्न है ॥ और सोग्रहअतिग्रहरूपमृत्युभी जिसदेवताका अन्न है ॥ सोदेवतायहाँकौन है ॥ तात्पर्ययह ॥ ग्रहअतिग्रहरूपमृत्युके भक्षणकरणे हाराकोई दूसरा है ॥ अथवा नहीं है ॥ जोकहो ग्रहअतिग्रहरूप मृत्युकेभक्षणकरणेहारा कोईदूसरा है ॥ तौ सोभक्षणकरणे हारा दूसरा नित्य है अथवा अनित्य है ॥ जोकहो नित्य है ॥ तौ द्वैतापत्ति होवैगी ॥ और जोकहो सो अनित्य है ॥ तौ तादूसरेकेभक्षण करणेहारा कोईतीसरा मानणाहोवैगा ॥ और तीसरेकेभक्षणकरणेहारा चौथामानणाहोवैगा॥ याप्रकार अनवस्थादोषकी प्राप्तिहोवैगी॥और जोकहो ग्रहअतिग्रहरूपमृत्युकेभक्षणकरणेहारा कोई है नहीं॥तौ मोक्षकीप्राप्तिवासतै नानाप्रकारकेयत्नकरणे व्यर्थहोवैंगे ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच॥हेआर्त्तभाग॥जैसे सर्वपदार्थोंकूंभक्षणकरणेहाराजोअग्नि है॥ताअग्निकूं जल भक्षणकरै है॥तैसे सर्वजगत्कूंभक्षणकरणेहारा जोग्रहअतिग्रहरूपमृत्युहै ताकूं आत्माकासाक्षात्कार भक्षणकरैहै॥यातैं मोक्षकीप्राप्तिवासतै यत्न व्यर्थनहीं।और जैसे कतकरेणु जलकेमृत्तिकाकूं निवृत्तकरिकै आपभी निवृत्तहोइजावै है ॥ कतकरेणुकीनिवृत्तिवासतै दूसरेकिसीसाधनकीअपेक्षाहोवैनहीं॥तैसे महावाक्यतैंजन्य जोअंतःकरणकीवृत्तिरूपज्ञान है ॥ सो कार्यसहितअज्ञानकीनिवृत्तिकरिकै आपहीनिवृत्तहोइजावै है ॥ताज्ञानकीनिवृत्तिविषे किसीदूसरेसाधनकीअपेक्षाहोवैनहीं॥यातैं द्वैतापत्ति तथाअनवस्था यहदोनोंप्रकारकेदोष प्राप्तहोवैनहीं ॥ २ ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार जभी याज्ञवल्क्यमुनिनैं दूसरेप्रश्नका उत्तरकह्या ॥ तभी सोआर्त्तभाग पुनःतीसराप्रश्न करताभया ॥ आर्त्तभाग उवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्यमुनि ॥ जिसकालविषे ब्रह्मवेत्तापुरुष स्थूलशरीरकापरित्यागकरै है॥तिसकालविषे ब्रह्मवेत्तापुरुषकेप्राण अज्ञानीजीवकेप्राणोंकीन्याईं लोकांतरविषेजावै हैं अथवा नहींजावै हैं॥जोकहो अज्ञानीपुरुषकेप्राणोंकीन्याईं ब्रह्मवेत्तापुरुषकेभीप्राण लोकांतरविषेजावै हैं॥तौ जैसे अज्ञानीजीवकूं लोकांतरविषे पुनःदूसरेशरीरकीप्राप्तिहोवै है ॥ तैसे ब्रह्मवेत्तापुरुषकूंभी लोकांतरविषे पुनःशरीरकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और जोकहो मरणकाल विषे ब्रह्मवेत्तापुरुषकेप्राण लोकांतरविषेनहींजाते ॥ तौ शरीरविषेप्राणोंकेस्थितहुए मृत्युहोवैनहीं ॥ यातैं ब्रह्मवेत्तापुरुषकेशरीरविषे कदाचित्भी मरणव्यवहार नहींहोणाचाहिये ॥ और प्रारब्धकर्मकेनाशतैंअनंतर ब्रह्मवेत्तापुरुषकेशरीरविषे सर्वलोकोंकूं मरणव्यवहार होवै है॥

याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेआर्त्तभाग ॥ ब्रह्मवेत्तापुरुषका जबी प्रारब्धकर्म क्षयहोवैहै॥तबी तात्रह्मवेत्तापुरुषकाप्राण शरीरतैंबाहरजावैनहीं किंतु याशरीरकेभीतरहीं लयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ अविद्या काम कर्म यहतीनों प्राणोंकेलोकांतरगमनविषे कारणहैं॥तेअविद्याकामकर्म ब्रह्मवेत्तापुरुषके आत्मज्ञानकरिकैनिवृत्तहुएहैं ॥ यातैं ब्रह्मवेत्तापुरुषकेप्राणोंका लोकांतरविषेगमनहोवैनहीं ॥ याकारणतैंब्रह्मवेत्तापुरुषकूं अज्ञानीकीन्याईं पुनःशरीरकीप्राप्तिहोवैनहीं॥और स्थूलशरीरकेसाथ प्राणोंकेसंबंधकीनिवृत्तिकानाम मरणहै॥ सोसंबंधकी निवृत्ति प्राणोंकेलयहुएभी संभवैहै ॥ यातैं विद्वान्पुरुषकेशरीरविषे मरणव्यवहारभी संभवैहै ॥ शंका ॥ ब्रह्मवेत्तापुरुषकेप्राणशरीरतैंबाहरजातेनहीं ॥ किंतु शरीरकेभीतरहीलयहोवैहैं यहवार्त्ता कैसेजाणीजावै॥समाधान॥जीवितअवस्थाविषे अत्यंतकृशशरीरभी मरणतैंअनंतर भेरीकीन्याईं सूजिकेस्थूलहोइजावैहै ॥ तास्थूलताकाकारण दूसराकोईपदार्थहैनहीं ॥ किंतु धनंजयनामाप्राणहीं तास्थूलताकाकारणहै ॥ यातैं मरणतैंअनंतर शरीरकीविलक्षणस्थूलतारूपहेतुतैं शरीरविषे प्राणोंकेलयकाअनुमानहोवैहै ॥ शंका॥ ब्रह्मवेत्तापुरुषकेप्राण लोकांतरविषेनहींजावैहैं याकेविषे कौनप्रमाणहै ॥समाधान॥ याअर्थविषे साक्षात्श्रुतिभगवतीहीप्रमाणहैं॥सोश्रुतियहहै ॥ अस्यपरिद्रष्टुरिमाःषोडशकलाःपुरुषायणाः पुरुषंप्राप्यास्तंगच्छंति ॥अर्थयह॥ जैसे नदियां समुद्रविषेलयहोवैहैं॥तैसेब्रह्मवेत्तापुरुषके एकादशइंद्रिय पंचप्राण यह षोड़शकला अधिष्ठानपुरुषविषेप्रतीतहोवैहैं ॥ और तिसीअधिष्ठानपुरुषविषे लयकूंप्राप्तहोवैहै॥ यातैं ब्रह्मवेत्तापुरुषकेप्राणलोकांतरविषेगमनकरैनहीं॥जोब्रह्मवेत्तापुरुषकेप्राणभी लोकांतरविषेगमनकरैंगे॥तौ तात्रह्मवेत्तापुरुषकूंभी अज्ञानीजीविकीन्याईं अवश्यदूसरेशरीरकीप्रातिहोवैगी॥ औरपुनःपुनःशरीरकूंजोधारणकरैहै॥ताकूं मोक्षकीप्राप्तिसंभवैनहीं॥ यातैं ब्रह्मवेत्तापुरुषकेप्राण लोकांतरविषेजावैनहीं॥२॥हेशिष्य याप्रकार जबी याज्ञवल्क्यमुनिनैं तृतीयप्रश्नकाउत्तरकह्या॥तबीसोआर्त्तभाग पुनःचतुर्थप्रश्नकरताभया॥आर्त्तभागउवाच॥हेयाज्ञवल्क्य॥ जिसकालविषे सोब्रह्मवेत्तापुरुष विदेहमोक्षकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसकालविषे तात्रह्मवेत्तापुरुषकूं कौनवस्तु नहींपरित्यागकरता ॥ तात्पर्ययह॥ जीवन्मुक्तिअवस्थाकीन्याईं तहां सावशेष द्वैतकालयहोवै है॥ अथवा निरवशेष द्वैतकालयहोवैहै ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेआर्त्तभाग

दूसरसर्वपदार्थ मुक्तपुरुषकोपरित्यागकरै हैं ॥ परंतु वामदेवादिकनाम मुक्तपुरुषोंकापरित्यागकरैनहीं॥यद्यपि वामदेवादिकमुक्तपुरुष नामरूप क्रिया स्वरूपभेदप्रपंचतैं मुक्तहुएहैं॥यातैं वास्तवतैं तिनमुक्तपुरुषोंविषे वामदेवादिकनामोंकासंबंध संभवैनहीं॥ तथापिलौकिकपुरुष इदानीं कालविषे तिनवामदेवादिकमुक्तपुरुषोंके वामदेवादिकनामोंकूंग्रहणकरैहैं॥यातैं लौकिकपुरुषोंकीदृष्टिकरिकै मोक्षअवस्थाविषे मुक्तपुरुषोंके वामदेवादिकनामरहैं हैं॥औरतेमुक्तपुरुषोंकेनाम अनंतहैं॥तथा विश्वेदेवताभी अनंतहैं॥यातैं जोपुरुष ताअनंतनामोंविषे अनंतविश्वेदेवतावोंकाअभेदचिंतनकरैहैं॥तापुरुषकूं अनंतफलकीप्राप्ति होवैहै॥४॥हेशिष्य॥यहचारिप्रश्न आर्त्तभागनैं ज्ञानीपुरुषविषेकरे॥तिनचारि प्रश्नोंकाजभी याज्ञवल्क्यमुनिनैं उत्तरकह्या॥तभी सोआर्त्तभागपुनः अज्ञानीपुरुषविषे पंचमाप्रश्नकरताभया॥आर्त्तभागउवाच ॥हेयाज्ञवल्क्य॥जिसकालविषे याजीवोंकूं मरणअवस्थाप्राप्तहोवैहै ॥तिसकालविषे याजीवोंका अध्यात्मरूप वाक्इंद्रिय अधिदैवरूपअग्निकूंप्राप्तहोवैहै और अध्यात्मरूपप्राण अधिदैवरूपवायुकूंप्राप्तहोवैहै॥और अध्यात्मरूपनेत्रइंद्रिय अधिदैवरूपसूर्यकूंप्राप्तहोवै है॥और अध्यात्मरूपश्रोत्रइंद्रिय अधिदैवरूपदिशावोंकूं प्राप्तहोवै है॥और अध्यात्मरूपमन अधिदैवरूपचंद्रमाकूं प्राप्तहोवैहै और अध्यात्मरूपशरीर अधिदैवरूपपृथिवीकूंप्राप्तहोवैहै और शरीरकेभीतरस्थितअध्यात्मरूपआकाश अधिदैवरूपबाह्यआकाशकूंप्राप्तहोवैहै॥औरशरीरविषेस्थितअध्यात्मरूपलोम अधिदैवरूपऔषधियोंकूंप्राप्तहोवैहैं॥ और शरीरविषेस्थित अध्यात्मरूपकेश अधिदैवरूपवनस्पतिकूंप्राप्तहोवै हैं॥और अध्यात्मरूपरुधिर तथावीर्य अधिदैवरूपजलकूं प्राप्तहोवैहै॥याप्रकार अन्यअध्यात्मरूपइंद्रियोंकाभी आपणेअधिदैवरूपविषे लयजानणा ॥ अग्निआदिकदेवतावोंके अनाश्रितहोइकै आपणेआपणेव्यापारकूंनकरणा यहही मरणकालविषे वाक्आदिकोंका अग्निआदिकोंविषेलयहै ॥ याप्रकार मरणकालविषे संपूर्णवाक्आदिकइंद्रियोंकेलयहुए यहअज्ञानीजीव किसकेआश्रितहुआ परलोकविषे सुखदुःखकूंभोगैहै ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार आर्त्तभागकेप्रश्नकूंश्रवणकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि ताप्रश्नकेअर्थकूंगुह्यमानिकै सभाविषे ताप्रश्नकेउत्तरकूंनहींकहताभया ॥ किंतु आर्त्तभागकेहस्तकूंग्रहणकरिकै एकांतदेशविषेलेजाइकै ताप्रश्नकेउत्तरकूंयाज्ञवल्क्यमुनि कहताभया ॥ शंका ॥ हेभगवन् यहआर्त्तभाग

कापश्न कर्मविषयकहै ॥ और आगे याज्ञवल्क्यमुनिनैं सभाविषेस्थितहोइकै ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरणाहै ॥ यातैं यहजान्याजावै है ॥ब्रह्म विद्यातैंभी कर्मविद्या अतिगुह्य है॥समाधान ॥ हे शिष्य॥ ब्रह्मविद्यातैंकर्मविद्या गुह्यहै याअभिप्रायकरिकै याज्ञवल्क्यमुनि आर्त्तभागकूं एकांतदेशविषेनहींलेगया ॥ किंतु याप्रकारकेअभिप्रायकरिकै याज्ञवल्क्यमुनि आर्त्तभागकूं एकांतदेशविषेलेजाताभया ॥ अब ता अभिप्रायकूंदिखावैं हैं ॥ मरणकूंप्राप्तहुआ अज्ञानीजीव आपणेपुण्यपापरूपकर्मोंकेअनुसार परलोकविषे सुखदुःखकूंप्राप्तहोवै है ॥ यहवार्त्ता बालकोंतैंलेकेगोपालपुरुषपर्यंत सर्वलोक जाणै हैं॥ यातैं प्रसिद्धअर्थका जोहम विद्वानोंकीसभाविषेविचारकरैंगे ॥ तौ याआर्त्तभागकेप्रश्न विषे तथाहमारेविषे तुच्छताप्राप्तहोवैगी ॥ तात्पर्ययह ॥ सभाविषेसर्वविद्वान्ब्राह्मण आर्त्तभागका तथाहमारा उपहासकरैंगे ॥ दृष्टांत ॥ जैसे भोजनकारिकै क्षुधाकीनिवृत्तिहोवै है यहवार्त्ता संपूर्णलोक जाणै हैं ॥ तहां बुद्धिमान्पुरुषोंकीसभाविषे जाइकै कोईएकपुरुष किसकारिकैक्षुधाकीनिवृत्तिहोवैहै याप्रकारकाप्रश्नकरै ॥ और आगेतैंकोईबुद्धिमान्पुरुष भोजनकारिकै क्षुधाकीनिवृत्तिहोवै है याप्रकारका उत्तरकहै तहां प्रश्नकर्तापुरुषका तथाउत्तरदेणेहारेपुरुषका दोनोंका सभाविषे उपहासहोवै है ॥ तैसे हमदोनोंका सभाविषे उपहासहोवैगा ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै याज्ञवल्क्यमुनि आर्तभागकूं एकांतदेशविषेलेजाताभया ॥ अब याज्ञवल्क्यकेउत्तर कूंदिखावै हैं ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेआर्त्तभाग॥ जैसे जीवितअवस्थाविषे यहअज्ञानीजीव पुण्यपापके अनुसार सुखदुःखकूंभोगैहै ॥ तैसे मरणतैंअनंतरभी यह अज्ञानीजीव पूर्वलेपुण्यपापरूपकर्मकेआश्रितहुआ सुखदुःखरूपफलकूंभोगै है ॥ अबयाही अर्थकूंस्पष्टकरिकै दिखावैं हैं ॥ हेआर्त्तभाग ॥ जोपापीपुरुषहोवै है ॥ सो नरककूंप्राप्तहोवै है॥ और जोपुण्यवान्पुरुषहोवै है सो देवभावकूंप्राप्तहोवै है॥और जोपुरुष पुण्यपापदोनोंवालाहोवै है ॥ सो मनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोवैहै॥और हे आर्त्तभाग॥ यहजीव यद्यपि आपणे वास्तवरूपकरिकै अधिकभीनहींतथान्यूनभीनहीं तथासमानभीनहीं ॥ तथापि कर्मोंकेवशहुआ यहजीव अधिकताकूं तथान्यूनताकूं तथासमानताकूं प्राप्तहोवैहै॥तहाँ जोपुण्यात्माजीवहोवै है सो हिरण्यगर्भादिरूपअधिकताकूंप्राप्तहोवै है ॥ और जोपापात्माजीवहोवै है सो वृक्षादिरूपन्यूनताकूं ॥ १३

प्राप्तहोवैहै ॥ और जोजीव पुण्यपापदोनोंकाकर्त्ताहोवै है ॥ सो मनुष्यादिरूप समानताकूंप्राप्तहोवै है ॥ और हेआर्त्तभाग ॥ जोपुरुष शरीरकरिकै तथावाणीकरिकै तथामनकरिकैअन्यकिसीप्राणीकूंसुखकीप्राप्ति करैहै ॥ अथवा दुःखकीप्राप्तिकरै है ॥ सोपुरुष इसजन्मविषे अथवा अन्यजन्मविषे तिसीशरीर मन वाणीकरिकै सुखकूंअथवादुःखकूं प्राप्तहोवैहै॥और जोपुरुष जिसदेशविषे तथाजिसकालविषे तथाजिसनिमित्तकरिकै तथाजिसप्रकारकरिकै तथाजिसशरीरकरिकै तथाजिसअवस्थाकरिकै अन्यप्राणियोंकेन्यून अथवा अधिक सुखकूं अथवा दुःखकूं उत्पन्नकरैहै सोपुरुषजन्मांतरकूंपाइकै तिसीदेशविषे तथातिसीकालविषे तथातिसीनिमित्तादिकोंकरिकै तैसेहीन्यून अथवा अधिक सुखकूं अथवा दुःखकूं प्राप्तहोवैहै॥यातैं इसलोकविषे तथापरलोकविषे जोअज्ञानीजीवोंकूं सुखदुःखरूपफल होवैहै॥सोपूर्वलेपुण्यपापरूपकर्मकारिकै तिसीदेशकालादिकोंविषे समानहींहोवैहै॥ और किसीस्थानविषे विशेषभीहोवैहै॥जैसे काशीआदिकदेशविषे तथासूर्यग्रहणकाल विषे सुपात्रब्राह्मणकेप्रति थोडाभीदानकरयाहुआ कोटिकोटिगुणावृद्धिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे वर्षाकालविषे उत्तमभूमिविषे पाये हुए शालिआदिकबीज वृद्धिकूँप्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे उत्तमदेशकालादिकोंविषे दियाहुआ दान वृद्धिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेआर्त्तभाग ॥ जोपुरुष धनादिकपदार्थोंकेवृद्धिकरणेवासतै व्यापारादिककरैहै ॥ तिसपुरुषके जैसे धनादिकपदार्थ दिनदिनविषे वर्द्धते जावैहैं ॥ तैसे देहाभिमानी अज्ञानीजीवोंके पुण्यपापरूपकर्म दिनदिनविषे वृद्धिकूंप्राप्तहोतेजावैहैं ॥ और जैसेलोकविषे अत्यंतसूक्ष्म जो वटकाबीजहै ॥ सोदेशकालादिकीनिमित्तकूंपाइकै महान्वटकेवृक्षकाकारणहोवैहै ॥ तैसे यज्ञादिककर्मोंकेअनंतर सूक्ष्मरूपकरिकै रह्या हुआ पुण्यपापरूपअदृष्टभी देशकालादिकनिमित्तकूंपायकै महान्सुखदुःखकाकारणहोवैहै ॥ यातैं पुण्यपापरूपकर्मही सुखदुःखरूपफलकेभोगविषे प्रधानकारणहै ॥ ॥ ६ ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार जभी याज्ञवल्क्यमुनिनैं आर्त्तभागके पंचप्रश्नोंकाउत्तरकह्या ॥ तभी सोआर्त्तभाग याज्ञवल्क्यमुनिकीस्तुति करताभया ॥ तथायाज्ञवल्क्यमुनिभी ताआर्त्तभागकीस्तुतिकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोआर्त्तभाग भुज्युनामाब्राह्मणकेमुखकीओर देखिकै पुनःप्रश्नकरणेतैं निवृत्तहोताभया ॥ तिसतैंअनंतर सो भुज्युनामाब्राह्मण याज्ञवल्क्यतैं आपणीउत्कृष्टता बोधनकरणेवासतै पूर्व

लाआपणा वृत्तांतश्रवणकराइकै याज्ञवल्क्यकेप्रतिप्रश्नकरताभया ॥ भुज्युरुवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ पूर्व ब्रह्मचर्यअवस्थाविषे हमब्राह्मण वेदविद्याकेअध्ययनकरणेवासतै मद्रनामादेशविषेविचरतेभये ॥ तहांकपिगोत्रविषेहैउत्पत्तिजिसकी ऐसाजोपतंजलनामाब्राह्मण है ॥ ताके गृहविषे एकआश्चर्यरूपवार्त्ताकूं हमदेखतेभये ॥सोवार्त्ता यहहै एककालविषे तापतंजलनामाऋषिके कन्याकेशरीरविषे भूतकीन्याई अग्नि देवता प्रवेशकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर हमसंपूर्णविद्यार्थी ताकन्याकेसमीपजाइके यहपूछतेभये ॥ तुमारानाम क्याहै ॥ तथा तुमारा गोत्रक्याहै ॥ तिसतैंअनंतर सोअग्निदेवता हमारेप्रतिकहताभया ॥ सुधन्वा हमारानामहै ॥ और आंगिरस हमारागोत्रहै॥तिसतैंअनंतर हम संपूर्णब्राह्मण ताअग्निदेवतासे कर्मोंकेफलकाअंत पूछतेभये ॥ तिसतैंअनंतर सोअग्निदेवता यहउत्तरदेताभया ॥ जिसस्थानविषे पारि क्षितपुरुष स्थितहोवैहैं ॥ सोस्थानहीं सर्वकर्मोंकेफलकाअंतहै॥ तिसतैंअधिक कर्मोंकाफलनहीं॥याप्रकार जभीअग्निदेवतानैं हमारेप्रति उत्तरकह्या॥तभी हम संपूर्णब्राह्मण पुनःअग्निदेवतासेपूछतेभये॥तेपारिक्षितपुरुष किसस्थानविषेस्थितहोवैहैं॥याप्रकारजभीहमोनैंपूछातभी सोअग्निदेवता हमारेप्रति पारिक्षितपुरुषोंकेस्थानकूं कहताभया ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ जेअग्निदेवताकेप्रति पूर्वहमोनैं प्रश्नकरेथे ॥तेईहीप्रश्न अभी हम तुमारेप्रति करतेहैं ॥ तिनोंका तुम उत्तरकहो ॥ जिसस्थानविषे पारिक्षितपुरुष स्थितहोवैहैं सोस्थान कौनहै ॥ १ ॥ और तिसस्थानकेआवांतरलोकोंका कितनापरिमाणहै ॥ २ ॥ और तिनपारिक्षितपुरुषोंकाक्यास्वरूपहै ॥ ३ ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार जभी भुज्युनैं याज्ञवल्क्यकेप्रति तीनप्रश्नकरे ॥ तभी सोयाज्ञवल्क्यमुनि भुज्युकेप्रति कहताभया हेभुज्युब्राह्मण याप्रश्नोंकाउत्तर पूर्व तुमारे प्रति अग्निदेवतानैंकह्याथा ॥ ताअर्थकूंभलीप्रकारजाणताहुआभीतूं पुनःसभाविषे वेदकेगुह्यअर्थकूं किसवासतैंपूछताहै ॥किंतु एकवारजा न्याहुआ वेदकागुह्यअर्थ पुनःसभाविषेपूछणा तेरेकूंउचितनहीं ॥ तथापि हे भुज्यु तेरेविश्वासकरावणेवासतै तथावेदअर्थकेगुह्यताके रक्षणकरणेवासतै संक्षेपतैं याप्रश्नोंकाउत्तर हम तुमारेप्रति कथनकरैं हैं ॥ तुम श्रवणकरो ॥ हेभुज्यु ॥ उपासना सहित अश्वमेधयज्ञकेकरणेहारेपुरुष जिसस्थानविषे उपासनासहितअश्वमेधयज्ञकाफल भोगैं हैं ॥ तिसीस्थानविषे पारिक्षितपुरुष जावैं

है ॥ यहां उपासनासहित अश्वमेधयज्ञकेकरणे हारेपुरुषही पारिक्षित हैं यह अर्थ याज्ञवल्क्यमुनिनैं वेदअर्थकेगुह्यताकीरक्षाकरणेवासतै नहीं कह्या ॥ हे शिष्य ॥ याप्रकार जभी याज्ञवल्क्य मुनिनैं संक्षेपतैं उत्तर कह्या ॥ तभी सोभुज्यु ब्राह्मण याज्ञवल्क्यकी सर्वज्ञताविषे अविश्वास करिकै पुनःयाज्ञवल्क्य मुनिसैं पूछता भया ॥ हेयाज्ञवल्क्य उपासनासहित अश्वमेधयज्ञके करणेहारे पुरुष जिसस्थानविषे जावैं हैं ॥ सोस्थान हमारेप्रति विस्तारतैं कहो ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार जभी भुज्युनैंपूछा ॥ तभी सोयाज्ञवल्क्य मुनि याप्रकारकाविचार आपणेमनविषेकरताभया ॥ सभाविषे वेदकेरहस्य अर्थकेप्रकाशकरणेकी यद्यपि हमारेकूंइच्छानहीं है ॥ तथापि यहभुज्यु वारंवार हमारेसैं सोअर्थ पूछता है ॥ यातैं सभाविषे वेदकेरहस्यअर्थकेप्रकाश करणेकरिकै जोपापकीउत्पत्तिहोवैगी ॥ सो याभु ज्युकूंहीहोवैगी ॥ हमारेकूंहोवैगी नहीं ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि विस्तारतैं ताप्रश्नोंकेउत्तरकूंकहताभया॥याज्ञवल्क्य मुनिरुवाच ॥ हेभुज्यु ॥ समुद्रपर्यंत धनकरिकैपूर्ण जोपृथिवी है ॥ सोपृथिवी है वशवर्त्तिजिनोंके ऐसेजे अश्वमेधयज्ञकेकर्त्तापुरुष हैं॥तिनों कानाम परिक्षिति है ॥ और तिनपरिक्षितिपुरुषोंकूंहीं शास्त्रविषे पारिक्षितिकहैं हैं॥ अब सर्वकर्मकेभोगकास्थान जो विराट् भगवान्का शरीर है ताकूं भूलोकरूप करिकै वर्णनकरताहुआ याज्ञवल्क्यमुनि प्रथम ताकेपरिमाणकूं दिखावै है ॥ हेभुज्यु ॥ यहसंपूर्णजंबुद्वीप एक लक्षयोजनपरिमाणवाला है ॥ और जिसजंबुद्वीपकूं चारोंओरतैं मेखलाकीन्याईं वेष्टनकरिरह्याहुआ जोक्षारसमुद्र है ॥ सोभी एकलक्षयो जनपरिमाणवाला है ॥ १ ॥ और तिसतैंपरे प्लक्षद्वीप है॥सोप्लक्षद्वीप दोलक्षयोजनपरिमाणवाला है ॥ तिसप्लक्षद्वीपकूं चारोंओरतैंवेष्टनक रिरह्याहुआ जोइक्षुरसोदनामासमुद्र है ॥ सोभी दोलक्षयोजनपरिमाणवाला है ॥ २ ॥ और तिसतैंपरे शाल्मलीद्वीप है॥सोशाल्मलीद्वीप चारिलक्षयोजनपरिमाणवाला है॥ताशाल्मलीद्वीपकूं चारोंओरतैंवेष्टनकरिरह्याहुआ जोसुरोदनामासमुद्र है ॥सोभी चारिलक्षयोजनपरिमा णवाला है ॥३॥ और तिसतैंपरे कुशद्वीप है॥सोकुशद्वीप अष्टलक्षयोजनपरिमाणवाला है ॥ताकुशद्वीपकूं चारोंओरतैंवेष्टनकरिरह्याहुआ जोघृतोदनामासमुद्र है॥सोभी अष्टलक्षयोजनपरिमाणवाला है ॥४॥ और तिसतैंपरे क्रौंचद्वीप है सोक्रौंचद्वीप षोडशलक्षयोजनपरिमाण

वाला है ॥ ताकौंचद्वीपकूं चारोंओरतैंवेष्टनकरिरह्याहुआ जोक्षीरोदनामासमुद्र है॥सोभी षोडशलक्षयोजनपरिमाणवाला है ॥ ५ ॥ और तिसतैंपरेशाकद्वीपहै॥सोशाकद्वीप बत्तीसलक्षयोजनपरिमाणवालाहै॥ताशाकद्वीपकूंचारोंओरतैंवेष्टनकरिरह्याहुआ जोदधिमंडोदनामास मुद्र है ॥ सोभी बत्तीसलक्षयोजनपरिमाणवाला है॥ ६ ॥और तिसतैंपरे पुष्करद्वीपहै सोपुष्कर द्वीप चौंसठिलक्षयोजनपरिमाणवालाहै ॥ तापुष्करद्वीपकूं चारोंओरतैंवेष्टनकरिरह्याहुआ जोशुद्धोदनामासमुद्रहै सोभी चौंसठिलक्षयोजनपरिमाणवालाहै॥ ७॥यासप्तद्वीपोंका तथास प्तसमुद्रोंकामिलिकै दोकोटि चौपनलक्षयोजन परिमाणहोवैहै।और सप्तद्वीपोंका तथासप्तसमुद्रोंका मिलिकै जितनेयोजनपरिमाणहै।तितनेही योजन शुद्धोदनामासमुद्रतैंपरेभूमिकापरिमाणहै॥और ताभूमितैंपरे अष्टकोटि तथावोगणचालीसलक्षयोजनपरिमाणवाली सुवर्णकीभूमिहै॥ तिसभूमितैंपरे मंडलाका लोकालोकनामापर्वतहै॥तिसलोकालोकपर्वतकाजोमध्यदेशहै जिसमध्यदेशकूंशास्त्रविषे मानसोत्तरमूर्द्धस्थानकहै हैं ॥ तिसमध्यदेशविषे रात्रिदिनकरिकै सूर्यभगवान् सर्वदा भ्रमणकरै है ॥ ता मानसोत्तरपरिमंडलकापरिमाण एकलक्ष साढीनवकोटियो जन शास्त्रविषेकह्या है॥इतनैंयोजनपरिमाण रात्रिदिनविषे सूर्यभगवान्चालै है॥और रात्रिदिनविषे जितनैंयोजनपरिमाण सूर्यभगवान्चा लै है ॥ तिनयोजनोंकूं बत्तीसगुणाकरणतैं जितनीयोजनोंकीसंख्याहोवै है ॥तितनेयोजनपर्यंतदेश सूर्यभगवान्कीकिरणावोंकरिकैव्याप्तहो वै है ॥ तितनैंदेशकूँ बुद्धिमान्पुरुष भूलोककरिकैकथनकरैं हैं ॥ यहभूलोक विराट्भगवान्काशरीर है ॥ और याभूलोकविषेही सर्वकर्मों काफल भोग्याजावै है ॥ अब उपासकपुरुषों करिकै प्राप्तहोणेयोग्यजोदेशहै ताकूं निरूपणकरैं हैं ॥ हेभुज्यु ॥ याभूलोकतैंपरे जितनेकयो जनभूलोककापरिमाणहै तितनैंद्विगुणअधिकयोजनपरिमाणवालीभूमि स्थितहै॥कैसीहैसोभूमि॥भित्तिकीन्याईं चारोंओरतैं भूलोककूंआव रणकरिरहीहै॥और ता आवरणरूपभूमितैंपरे ताभूमिकूंचारोंओरतैंवेष्टनकरणेहारा तथाताभूमितैंद्विगुणअधिकयोजनपरिमाणवाला समुद्र स्थितहै॥जासमुद्रकूं शास्त्रविषेघनोदनामकरिकैकथनकरैं हैं ॥ और ताघनोदनामासमुद्रतैंपरे ब्रह्मांडहै ॥जिसब्रह्मांडका एककपाल रजतम य है॥और दूसराकपाल सुवर्णमय है॥और तिनदोकपालोंकीजोसंधि है॥सोसंधि क्षुरकेधाराकीन्याईं अत्यंततीक्ष्ण है ॥ अथवा मक्षिकाके

पक्षकीन्याईं अत्यंतसूक्ष्महै॥याप्रकारकीसोसंधि ब्रह्मांडतैंबाहरानिकसणेकेमार्गविषेस्थितहै॥हे भुज्यु॥उपासनासहित अश्वमेधयज्ञकेकरणे हारे जेपारिक्षितपुरुष तुमनेपूर्वपूछ्थे ॥ तेपारिक्षितपुरुष जभी शरीरकापरित्यागकरैं हैं ॥ तभी तापारिक्षितपुरुषकूं नानाप्रकारके देवता तथाउपासनारूपबल घनोदनामासमुद्रपर्यंत लेजावै हैं ॥ तिसतैंआगे किसीदेवताकासामर्थ्यनहीं ॥ और हेभुज्यु ॥ जैसे उपासनासहित अश्वमेधयज्ञकेकर्तापुरुष पारिक्षितहैं ॥ तैसे अश्वमेधयज्ञतैंविना केवल हिरण्यगर्भकीउपासनाकरणेहारेजेपुरुष हैं ॥ तेभी पारिक्षित हैं ॥ काहेतैं जिसकरिकै संपूर्णपापकर्मोंकाक्षयहोवै है ताकूं परिक्षितकहैं हैं॥सोपापकर्मोंकाक्षय जैसे अश्वमेधयज्ञकरिकैहोवै है ॥ तैसे उपासना करिकैभी पापकर्मोंकाक्षयहोवै है॥यातैं उपासना तथाअश्वमेधयज्ञ दोनों परिक्षितशब्दकाअर्थ हैं ॥ तापरिक्षितशब्दकेअर्थकूंजोजानणेहा राहै ताकूं पारिक्षितकहैहैं॥ यारीतिसैं केवलउपासकपुरुषविषेभी पारिक्षितशब्दकीप्रवृत्तिहोवै है॥और हेभुज्यु॥ ताब्रह्मांडरूपकटाहकेसंधि विषेस्थित जोसूक्ष्ममार्ग है ॥ तिसमार्गविषे सर्वदेवतावोंकाअधिपति इंद्रदेवताभी जाणेमैंसमर्थनहीं ॥ जभीइंद्रभी तामार्गविषेजाणेमैं समर्थनहींभया ॥ तभी घनोदनामासमुद्रकेपारजाणेविषेभी असमर्थजेअन्यदेवताहैं ॥ ते तिससूक्ष्ममार्गविषे किसप्रकारजाइसकैंगे ॥ किंतु तेअन्यदेवता घनोदनामासमुद्रके ओरले किनारेविषेही स्थितहोवैं है ॥ शंका ॥ जभीइंद्रादिकदेवताभी तामार्गके जाणेविषे समर्थ नहीं हैं ॥ तभी पारिक्षितपुरुष किसप्रकार ब्रह्मांडतैंबाहरहोवै हैं ॥ समाधान ॥ हेभुज्यु ॥ सोविराट्रूपइंद्रदेवता पक्षीकारूपधारणकरिकै तिनपारिक्षितपुरुषोंकूं घनोदनामासमुद्रतैं पारकरै है ॥ और ताघनोदनामासमुद्रकेपारलेकिनारे हिरण्यगर्भरूप वायुदेवता आकाशविषे स्थितहै ॥ तावायुकेताईं पारिक्षितपुरुषोंकूंदेकरिकै सोइंद्रदेवता पीछेफिरिआवै है ॥ तिसतैंअनंतर सोहिरण्यगर्भरूपवायुदेवता तिनपारि क्षितपुरुषोंकूंसूक्ष्मरूपकरिकै आपणेशरीरकेसाथ अभिन्नकरिकै तासंधिरूपमार्गद्वारा ब्रह्मांडतैंबाहरलेजावै है ॥ और जिसस्थानविषेपूर्वपू र्वउपासकपुरुषगये हैं॥ तिसीस्थानविषे तेपारिक्षितपुरुष प्राप्तहोवै हैं ॥ यातैं यहसिद्धभया ॥ तेपारिक्षितपुरुष हिरण्यगर्भरूपकरिकैब्रह्मां डकेअंतर तथाबाह्यव्याप्तहोइकैरहै हैं॥ यातैं सर्वकर्मोंकेफलकाअंत हिरण्यगर्भलोकहै॥हिरण्यगर्भलोकतैंपरेकोईकर्मकाफलनहीं ॥हेशिष्य

पूर्वअग्निदेवतानें जैसाउत्तर भुज्युकेप्रति कह्याथा ॥ तैसाहीउत्तर जभी याज्ञवल्क्यमुनिने भुज्युकेप्रतिकह्या ॥ तभीसोभुज्यु याज्ञवल्क्यके जीतणेकीइच्छाकापरित्यागकरताभया ॥ और उषस्तब्राह्मणकेमुखकीओरदेखिकै सोभुज्यु पुनःप्रश्नकरणेतैंनिवृत्तहोताभया तिसतैंअनंतर सो उषस्त याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति प्रश्नकरताभया ॥ उषस्तउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ जैसेअप्रकाशरूपलोह अग्निकेसंबंधतैं प्रकाशमान होवै है ॥ तैसेवृत्तिअवच्छिन्नसाक्षीचैतन्यकेसंबंधतैं घटपटादिकजडपदार्थ प्रतीतिहोवैहैं यातैं घटपटादिकजडपदार्थोंविषे मुख्य अपरोक्षप णानहीं ॥ किंतु घटादिकोंविषे गौणअपरोक्षपणाहै ॥ और ब्रह्मस्वप्रकाशचैतन्यहै ॥ यातैं ब्रह्मविषे मुख्यअपरोक्षपणाहै ॥ और सोब्रह्मसर्व केअंतरबाहरव्यापकहै ॥ यातैं सोब्रह्महीं आत्मारूपहै ॥ यहवार्ता संपूर्णशास्त्रकथनकरैं हैं ॥ परंतुयहवार्ता संभवैनहीं ॥ काहेतैं शास्त्रने आत्माविषे ब्रह्मरूपता तथाअद्वितीयरूपता यहदोनोंधर्म कथनकरेहैं ॥ याकेविषे हमविवादनहींकरते परंतु ब्रह्मरूपता तथाअद्वितीयरूप ता यहदोनोंधर्म जिसआत्मारूपधर्मीविषेरहैहैं ॥ सोआत्मा यासंघातसेभिन्न हमारेकूंप्रतीतहोतानहीं ॥ यातैं हेयाज्ञवल्क्य यासंघातसेजो आत्माविलक्षणहै ॥ तौ हमारेप्रति कथनकरो ॥ तिसतैंअनंतरहम तुम्हारेकूंबुद्धिमान्जाणैंगे ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारजभीउषस्तनैंयाज्ञव ल्क्यकेप्रति प्रश्नकऱ्या ॥ तभी सोयाज्ञवल्क्यमुनि उषस्तकेप्रति कहताभया ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेउषस्त ॥ यहआत्माअद्वितीयब्रह्म रूपहै ॥ यातैं अत्यंतसमीपआत्माविषे तेरेकूंअसंभावनाकरणीउचितनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ यहआत्माहैयाप्रकारकाउत्तर जोयाज्ञवल्क्य मुनिनेकह्या ॥ ताकेविषे याज्ञवल्क्यमुनिका यहअभिप्रायहै ॥ जोयहउषस्तब्राह्मण अंतर्मुखहोवैगा ॥ तौयहआत्माहै याप्रकारकेउत्तरम ऱ्करिकैही आत्माकेवास्तवस्वरूपकूंजाणके संतोषकूंप्राप्तहोवैगा ॥ परंतु सोउषस्त बहिर्मुखथा ॥ यातैंयहआत्माहै याप्रकारकेउत्तरकरि के आत्माकेवास्तवस्वरूपकूंनजाणताभया ॥ उलटासंशययुक्तहुआ सोउषस्त पुनःयाज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति प्रश्नकरताभया ॥ उषस्तउ वाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ सोआत्माकौनहै ॥ तात्पर्ययह ॥ स्थूलशरीर आत्माहै ॥ अथवासूक्ष्मशरीर आत्माहै ॥ अथवा तिनोंकाप्रकाश कसाक्षीआत्माहै ॥ तहाँ स्थूलशरीर तथासूक्ष्मशरीर आत्माहै यहदोनोंपक्ष संभवैनहीं ॥ काहेतैं स्थूलसूक्ष्म यहदोनोंशरीरपरिच्छिन्नहैं

यातैं तिनोंविषे सर्वव्यापकत्वसंभवैनहीं ॥ और शास्त्रविषे आत्माकूं सर्वांतर्यामी कह्याहै ॥ किंवा ॥ बुद्धिआदिकोंकासाक्षी आत्मा है यहतीसरापक्षभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं साक्षी आत्माहै याकेविषे कोईप्रमाणहै नहीं ॥ हेशिष्य ॥ या प्रकार जभी उषस्तने आत्माकास्वरूप पूछ्या ॥ तभी सोयाज्ञवल्क्यमुनि उषस्तकेप्रति कहताभया ॥ याज्ञवल्क्यमुनि रुवाच ॥ हे उषस्त ॥ जैसे बालक सूत्रकरिकै मर्कटोंकूं नानाप्रकारकीनृत्य करावै है ॥ तैसे तुम्हारेशरीरविषेस्थितहोइकै जो तुम्हारे प्राण अपान उदान समान व्यानकूं तथाबुद्धिआदिकसंघातकूं आपणेआपणेव्यापारविषे प्रवृत्तकरै है ॥ सोईही तुम्हारा आत्माहै ॥ याकहणेकरिकै याज्ञवल्क्यमुनिने यह अनुमानबोधनकऱ्या ॥ प्राणा दिकोंकाप्रवर्त्तकजोआत्माहै ॥ सो तिनप्राणादिकोंतैंभिन्नहै ॥ काहेतैं प्राणादिकोंकाप्रवर्त्तकहोणेतैं ॥ जोजोपदार्थजिसजिसपदार्थका प्रवर्त्त कहोवै है ॥ सोसोपदार्थ तिसतिसपदार्थतैंभिन्नहींहोवै है ॥ जैसे मर्कटोंकूंप्रेरणाकरणेहाराबालक मर्कटोंतैं भिन्नहींहोवै है ॥ तैसे सर्वकाअंत र्यामीयहआत्माभी प्राणादिकसर्व संघातका प्रवर्त्तकहै ॥ यातैं प्राणादिकसर्वसंघाततैं यह आत्माभिन्नहै ॥ हेशिष्य ॥ उपस्तकीमंदबुद्धि देखिकरिकै याज्ञवल्क्यमुनिने अनुमानप्रमाणकरिकै आत्माकास्वरूप निरूपणकऱ्या ॥ तथापि याज्ञवल्क्य मुनिकेअभिप्रायकूंनजाणि करिकै सोउषस्तब्राह्मण उपहासपूर्वक पुनःयाज्ञवल्क्यकेप्रति प्रश्नकरताभया ॥ उषस्तउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ पूर्वस्पष्टकरिकै आत्मा केस्वरूपजानणेवासतैं हमने तुमारेप्रति प्रश्नकऱ्याथा ॥ सोतुमने अबपर्यंत स्पष्टकरिकैआत्माकास्वरूप हमारेप्रति कथनकऱ्यानहीं ॥ यातैं जोतूं संघाततैंविलक्षण आत्माकेस्वरूपकूं जाणताहै ॥ तौ जैसेकोईपुरुष गौकूंशृंगतैं पकाडिकै यहगौ है याप्रकार स्पष्टदिखावै है ॥ तैसे अभीस्पष्टकरिकै आत्माकास्वरूप हमारेप्रति कथनकरो ॥ और हे याज्ञवल्क्य ॥ पूर्व हमने संघातसेविलक्षणआत्माकास्वरूप पूछ्याथा ॥ और अभी तुमने प्राणादिकोंकाप्रवर्त्तकआत्माहै यहउत्तर कह्या ॥ सोयहतुम्हाराउत्तर संघातसेविलक्षण आत्माकूं सिद्धकरतानहीं ॥ का हेतैं लोकविषे व्यापारवान्पुरुषही अन्यमर्कटादिकोंका प्रेरकहोवैहै ॥ व्यापारतैंरहितकोई प्रेरकहोतानहीं ॥ सोव्यापारवालायहसंघातहै ॥ यातैं यहसंघातही प्राणादिकोंका प्रवर्त्तकहै ॥ और प्राणादिकोंकूं जो आपणेआपणेव्यापारविषे प्रवर्त्तकरै है सो आत्मा है ॥ यातुम्हारे

कहणेकारिकै संघातविषेही आत्मपणासिद्धहोवै है ॥ यातैं हेयाज्ञवल्क्य जैसे कोईपुरुष किसीअन्यपुरुषतैं गौकास्वरूपपूछे॥और आगेतैंसो पुरुष तिसकेताईं अश्वदिखाइदेवै ॥ तैसे हमनेतौ संघाततैंविलक्षण आत्माकास्वरूप पूछाथा ॥ और तुमने संघातकूंहीं आत्मरूपकारिकै कथनकऱ्या ॥ यातैं यहतुम्हाराउत्तर अत्यंतविरुद्धहै ॥ यातैं हेयाज्ञवल्क्य संघातसे विलक्षणकरिकै करामलककीन्याईं आत्माकास्वरूप हमारेप्रति कथनकरो ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार जभी उपस्तने उपहासयुक्तवचनकहे॥ तभी सोयाज्ञवल्क्यमुनि किंचित्मात्रभीक्रोधकूं नहीं प्राप्तहोताभया ॥ उलटा आपणीगंभीरताकारिकै मंदमंद हँसताहुआ सोयाज्ञवल्क्यमुनि ताउपस्तकेप्रति कहताभया ॥ याज्ञवल्क्यमुनि रुवाच ॥ हेउपस्त॥ संघातसेविलक्षणआत्माकास्वरूप हमारेप्रतिकहो यहजोतूं प्रश्नकरताहै ॥सो तुम्हाराआत्मा अत्यंतअपरोक्षहै ॥ का हेतैं ' अहंअस्मि ' याप्रकारकी अंतःकरणकीवृत्तिकरिके तूंभी आत्माकूंजाणताहै ॥ यातैं अपरोक्षआत्माविषे असंभावना संभवैनहीं॥हे शिष्य ॥ याप्रकारकाउत्तर जभी याज्ञवल्क्यमुनिनेंकह्या ॥ तभी सोउपस्त पुनःयाज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति प्रश्नकरताभया ॥ उपस्तउवाच॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ तुमने अहंबुद्धिकाविषय आत्माकह्या ॥ याकरिकै आत्माकानिर्णयहोवैनहीं ॥ काहेतैं अहंबुद्धि बहुतपदार्थोंविषेहोवै है॥ तहाँ अहंस्थूलःयाप्रकारकीअहंबुद्धि स्थूलशरीरकूंविषयकरै है॥और ' अहंकाणः ' अहंबधिरःयाप्रकारकीअहंबुद्धि इंद्रियोंकूंविषयकरै है ॥ और अहंक्षुधापिपासावान् याप्रकारकीअहंबुद्धि प्राणोंकूंविषयकरै है ॥ और अहंनिश्चयवान् याप्रकारकीअहंबुद्धि बुद्धिकूंविषयकरै है ॥ और अहंअज्ञः याप्रकारकीअहंबुद्धि अज्ञानकूंविषयकरै है ॥ यातैं स्थूलशरीरतैंआदिलेके अज्ञानपर्यंत सर्वसंघातविषे अहंबुद्धिकीविषयता प्रतीतहोवै है ॥ तिनसंपूर्णोंविषे कौनआत्मा है यह जान्याजावै नहीं ॥ यातैं हे याज्ञवल्क्य॥जो तुम्हारेकूं आत्माका ज्ञान है ॥ तौ बुद्धिआदिकजडपदार्थोंतैंभिन्नकरिकै आत्माकास्वरूप हमारे प्रतिकहो॥ हेशिष्य॥ याप्रकारकाप्रश्न जभी उपस्तनेकऱ्या ॥ तभी सोयाज्ञवल्क्यमुनि उपस्तकेप्रति कहताभया ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हे उपस्त ॥ विद्वान्पुरुषोंके अनुभवकरिकै सिद्ध जो आत्माका अपरोक्षताहै ॥ ताअपरोक्षतारूपकरिकै आत्माके निरूपण विषे तुम्हारा आग्रह है ॥ अथवा जसे घटविषे इंद्रियजन्यज्ञानकीविषयतारूप

अपरोक्षताहै ॥ तैसे अपरोक्षतारूपकरिकै आत्माकेनिरूपणविषे तुमाराआग्रह है ॥ तहाँ जो तूं प्रथमपक्षअंगीकारकरै ॥ तौ जैसे विद्वान्पुरुष आत्माकेस्वरूपकूं निरूपणकरै है ॥ तैसे हमने तुम्हारेप्रति आत्माकास्वरूप निरूपणकऱ्याहै ॥ परंतु तूं बहिर्मुखहै ॥ यातैं विद्वान्पुरुषकीन्याईं तुमने आत्माकूंजान्यानहीं ॥ और हे उपस्त ॥ जोतूं दूसरापक्ष अंगीकारकरै सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं नित्यअपरोक्षरूप यहआत्मा चिदाभासयुक्तबुद्धिकरिकै घटपटादिकपदार्थोंकूंजाणै है ॥ और तावुद्धिकूं आपणे स्वप्रकाशरूपकरिकैआत्मा प्रकाशै है ॥ यातैं हे उपस्त ऐसे बुद्धिआदिकोंकेद्रष्टाआत्माकूं तूंकिसकरिकैविषयकरैगा ॥ किंतु बुद्धिसहितसर्वइंद्रिय द्रष्टाआत्माकूंविषयकरिसकैनहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे घटपटादिकपदार्थोंका प्रकाशकजोचक्षुइंद्रियहै ॥ ताचक्षुइंद्रियकूं घटादिकपदार्थ प्रकाशकरिसकैनहीं ॥ तैसे विषयइंद्रियकेसंबंधतैं उत्पन्नभइआं जेअंतःकरणकीवृत्तियां ॥ तिनवृत्तियोंकूं यह आनंदस्वरूपआत्मा प्रकाशकरै है ॥ यातैं तेवृत्तियां प्रकाशक आत्माका प्रकाशकरैंनहीं ॥हे उपस्त॥ जो बुद्धिआदिकजडपदार्थोंकाप्रकाशकहै ॥ तथा सर्वकेअंतर व्यापकहै ॥ तथा उत्पत्तिनाशतैंरहितहै॥सोईही संघातसेविलक्षण तुम्हाराआत्माहै॥शंका॥हे याज्ञवल्क्य॥आत्मातैं भिन्न बुद्धिआदिकपदार्थ सत्यहैं अथवा असत्यहैं ॥ जोकहो बुद्धिआदिकपदार्थ सत्यहैं ॥ तौ जैसे घट पटादिकोंकेअंतरनहींहोता ॥ तैसे आत्माविषे सर्वांतरपणानहींहोवैगा ॥ और जोकहो आत्मातैंभिन्न बुद्धिआदिकपदार्थ असत्य हैं ॥ तौभी आत्माविषे सर्वांतरपणा संभवै नहीं ॥ काहेतैं आत्मा सर्वकेअंतरव्यापकहै यावचनविषे सर्वशब्दकरिकै बुद्धिआदिकोंकाग्रहणकरणाहोवैगा॥ते बुद्धिआदिकपदार्थ तुम्हारेमतविषे अत्यंतअसत्य हैं ॥ यातैं तिनबुद्धिआदिकोंकेअभावहोणेतैं आत्माविषे सर्वांतरपणा संभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हे उपस्त या आनंदस्वरूपआत्मातैंभिन्न जितनेकी बुद्धि इंद्रिय शरीरादिकपदार्थ हैं ते संपूर्ण जड हैं ॥ यातैं घटादिकपदार्थोंकीन्याईं तेवुद्धिआदिक जन्ममरणवाले हैं॥याकारणतैं तेवुद्धिआदिक कल्पित हैं॥तिनकल्पितबुद्धिआदिकोंविषे अधिष्ठानआत्माकीव्यापकतासंभवै है॥दृष्टांत॥ जैसे रज्जुरूपअधिष्ठानविषे कल्पित जे सर्प दंड जलधारादिकहैं ॥ तिनकल्पितसर्पादिकोंविषे रज्जुरूपअधिष्ठान व्यापकहै॥तैसे कल्पित

बुद्धिआदिकोंविषे अधिष्ठानआत्मा व्यापकहै ॥ यातैं आत्माविषे सर्वांतरपणा संभवै है ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार जभीयाज्ञवल्क्यमुनिने संघातसेविलक्षण आत्माकास्वरूप निरूपणकऱ्या ॥ तभी सो उषस्त यह निश्चयकरताभया॥यह याज्ञवल्क्यमुनि अत्यंतबुद्धिमान् है ॥ यातैं हमारेसे जीताजावैगानहीं ॥ या प्रकारकानिश्चयकरिकै सो उषस्तब्राह्मण कहोलब्राह्मणकेमुखकी ओरदेखिकरिकै पुनःप्रश्नकरणेतें निवृत्तहोताभया ॥ तिसतैंअनंतर सो कहोलब्राह्मण याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति यह प्रश्नकरताभया ॥ कहोलउवाच ॥ हे याज्ञवल्क्य पूर्वउषस्तब्राह्मणके प्रसंगविषे आत्माकूं ब्रह्मरूपता तुमनेकही सो संभवै नहीं॥काहेतैं समानधर्मवालेपदार्थोंकाही परस्पर अभेदहोवै है ॥ विरुद्धधर्मवालेपदार्थोंका परस्पर अभेदसंभवैनहीं ॥ जैसे उष्णस्पर्शवालेअग्निका तथा शीतस्पर्शवालेबरफका परस्पर अभेदहोवै नहीं ॥ तैसे या संघातकाप्रकाशक जो आत्माहै ॥ सो क्षुधा पिपासा शोक मोह जरा मरण यह षट्ऊर्मिरूपसंसारवान् प्रतीतहोवै है॥और ब्रह्म तौ क्षुधापिपासादिकषट्ऊर्मिरूपसंसारतैंरहितहुआ शास्त्रतैंप्रतीतहोवै है ॥ यातैं संसारीआत्माका असंसारीब्रह्मकेसाथअभेदकहणा अत्यंतविरुद्धहै ॥ हे शिष्य ॥ या प्रकारकाप्रश्न जभी कहोलनेकऱ्या ॥ तभी सो याज्ञवल्क्यमुनि कहोलकेप्रति उत्तरकहताभया॥याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेकहोल ॥ विरुद्धधर्मोंवालेपदार्थोंका अभेदनहींहोता यहजोवार्त्ता तुमनेकही सोसत्यहै ॥ परंतु ते क्षुधादिक धर्म आत्माकेनहीं ॥ किंतु क्षुधा पिपासा प्राणोंकाधर्म है ॥ और शोक मोह मनकेधर्म हैं ॥ और जरा मरण शरीरकेधर्म हैं ॥ आत्माकाकोईधर्महैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे घटादिकपदार्थोंकाप्रकाशक जो सूर्यभगवान्है तासूर्यभगवान्कूं घटादिकोंकेधर्म स्पर्श करैनहीं ॥ तैसे प्राणादिकोंकूं प्रकाशकरणेहारा जो आत्माहै॥ ताआत्माकूं प्राणादिकोंकेक्षुधापिपासादिकधर्म स्पर्शकरैनहीं॥यातैं जैसे ब्रह्म जन्मादिकसंसारतैंरहितहै ॥ तैसे यह आत्माभी जन्मादिकसंसारतैंरहितहै ॥ याकारणतैं वेदकेवेत्तामहात्मापुरुष आत्माकूं ब्रह्मरूप कहैं हैं ॥ किंवा ॥ जिनपुरुषोंकूं निःसंशय आत्माकाज्ञानभयाहै ॥ तिनपुरुषोंकाभी जभी जन्ममरणादिरूपसंसार निवृत्तहोवै है ॥ तभी साक्षात्ब्रह्मरूपआत्माविषे जन्ममरणादिरूपसंसार नहींरहै है याकेविषेक्याकहणाहै॥और हेकहोल जन्मादिकसंसारतैंरहित तथाअज्ञानतैं

रहिततथासर्वबुद्धिआदिकोंकासाक्षी जोब्रह्मरूपआत्माहै॥ ताआत्माकासाक्षात्कार विक्षेपवान्पुरुषोंकूंहोवैनहीं ॥ किंतु विक्षेपतैंरहित जे विरक्तमहात्मा पुरुष हैं॥तिनोंकूंहीं आत्माकासाक्षात्कारहोवैहै॥याकारणतैं पूर्ववामदेवादिकमहान्पुरुष आत्मासाक्षात्कारकीप्राप्तिवासतैं संर्वएषणावोंकापरित्यागकरिकै संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरतेभये हैं ॥ याकहणेतैं यहअर्थसिद्धभया ॥ जैसे विवेकवैराग्यादिक आत्मसाक्षात्कारकेसाधन हैं ॥ तैसे उपरतिशब्दकाअर्थसंन्यासभी विक्षेपकीनिवृत्तिद्वारा आत्मसाक्षात्कारकासाधनहै ॥ यहाँसंन्यासशब्दकरिकै विविदिषासंन्यासकाग्रहणकरणा ॥ अब एषणाकेस्वरूपकूं तथातिनोंकेभेदकूं दिखावै हैं॥ हेकहोल ॥ तीनप्रकारकीएषणाहोवै है॥ एक पुत्र एषणा १ दूसरीवित्तएषणा २ तीसरीलोकएषणा ३तहाँ मेरेकूंपुत्रहोवै याप्रकारीइच्छाकूं पुत्रएषणाकहैं हैं ॥ तापुत्रएषणाकरिकै यहपुरुष स्त्रीकेसंग्रहादिकोंविषेप्रवृत्तहोवै है ॥ औरमेरेकूंधनहोवै है याप्रकारकीइच्छाकूं वित्तएषणाकहैं हैं ॥ सोधनभी दोप्रकारकाहोवै है ॥एकतौ दैवधनहोवै है ॥ और दूसरा मानुष्यधनहोवै है ॥ तहाँ देवलोककेजयकासाधनजो कर्मउपासनाहै ताकूं देव धनकहैं हैं ॥ और यामनुष्य लोककेभोगकासाधन जोपशुसुवर्णादिरूपधनहै ताकूं मानुष्यधनकहैं हैं ॥ तादोनोंप्रकारकेधनकी इच्छाकूं वित्तएषणाकहैं हैं ॥ और मेरेकूंसुखहोवै याप्रकारकीइच्छाकूं लोकएषणाकहैं हैं ॥ सोसुखभी दोप्रकारकाहोवै है ॥ एकतौ मनुष्यलोक विषे वर्तमानसुख ॥ और दूसरा देवलोकविषेवर्त्तमानसुख ॥ यादोनोंप्रकारकेसुखकीइच्छाकूं लोकएषणाकहैं हैं ॥ यद्यपि इच्छाकेविषयपदार्थ अनंतहैं ॥ यातैं इच्छाभी अनंतहीसंभवै है ॥ तथापि यातीनइच्छावोंकेभीतरहीं सर्वइच्छावोंकाअंतरभावहै॥ और वास्तवतौंविचारकरिकैदेखियेतौ वित्तएषणा तथालोकएषणा यहदोप्रकारकीही एषणासिद्धहोवै है ॥ काहेतैं जैसे पशु क्षेत्र सुवर्णादिकधन पिताकेसुखकासाधनहैं ॥ तैसे पुत्रभी पिताकेसुखकासाधन है ॥ यातैं इसलोककेजेसाधन हैं तथापरलोककेसुखकेजेसाधन हैं तिनसंपूर्णोंकानाम वित्तहै ॥ तावित्तएषणाकरिकै संपूर्णसुखकेसाधनोंकीएषणाकाग्रहणहोवै है ॥ और लोकएषणाकरिकैइसलोकके तथापरलोककेजितनेकसुखरूपफलहैं तिनोंकेएषणावोंकाग्रहणहोवै है ॥ यातैं फलएषणा तथासाधनएषणा यहदोनोंप्रकारकीएषणाहीं सर्वत्र अनुगतहैं ॥ याकारणतैंहीं संपूर्णजीव

प्रथमसुखरूपफलकीइच्छाकरैं हैं ॥ परंतु सोसुख साधनोंतैंविनासिद्धहोवैनहीं ॥ यातैं तासुखकेसाधनकीभीइच्छाकरैं हैं ॥ यालोकोंकेव्यवहारतैंभी दोप्रकारकीहीएषणा सिद्धहोवै है ॥ शंका ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ विद्वान्पुरुष जोएषणावोंकापरित्यागकरैं हैं ॥ याकेविषे कौनकारणहै ॥ समाधान ॥ हेकहोल ॥ जन्ममरणादिकसंसारतैंरहित जोस्वप्रकाशआनंदस्वरूपआत्माहै ताकेविषेहीं सुखहै ॥ और आत्मातैं भिन्नसर्वअनात्मपदार्थपरिणामकालविषे दुःखकेदेणहारे हैं ॥ यातैं तिनअनात्मपदार्थोंविषे किंचित्मात्रभीसुखनहीं ॥ याप्रकारकाविचार करिकै विद्वान्पुरुष सर्वएषणावोंकापरित्यागकरैं हैं ॥ अब आत्मातैंभिन्न सर्वअनात्मपदार्थोंविषे दुःखरूपतादिखावैं हैं ॥हेकहोल॥यालोकविषे जितनेकसुखकारीपदार्थ हैं॥तिनसंपूर्णपदार्थोंविषे माता पुत्रकीअत्यंतसुखकारीहोवै है॥ काहेतैं यहमाता बाल्यअवस्थाविषे पुत्रकूं दुग्धपानकरावै है॥तथा नानाप्रकारकेउपायोंकरिकै जलअग्निआदिकोंतैं पुत्रकीरक्षाकरैहै॥तथा आपणेहस्तोंकरिकै पुत्रकेविष्ठामूत्रादिकों कूंउठावैहै॥तथा पुत्रविषे नानाप्रकारका स्नेहकरै है॥इसतैंआदिलेके अनंतप्रकारकेउपायोंकरिकै माता पुत्रकापालनकरै है॥यातैं माताजैसा कोईपदार्थ सुखकारीनहीं॥परंतु क्रोधकरिकैकुयुक्तहुई सोमाता ताडनाकरिकै बालककूं दुःखकीभीप्राप्तिकरै है ॥अथवा सोमाता जभी मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै॥ तभीभी बालककूं परमदुःखकीप्राप्तिहोवै है॥अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकैदिखावैहैं ॥बाल्यअवस्थाविषे माताकेमरणेकरिकै जैसाबालककूंदुःखहोवै है ॥ तथा यौवनअवस्थाविषे स्त्रीकेमरणेकरिकै जैसापुरुषकूंदुःखहोवै है॥ तथा वृद्धअवस्थाविषे पुत्रकेमरणेकरिकै जैसापिताकूंदुःखहोवै है॥तैसादुःख वज्रकेपडनेतैं तथाजीवतेहुए अग्निविषेप्रवेशकरणेतैं तथाशरीरकेछेदनकरणेतैं तथाशूलविषे आरूढहोणेतैं तथापर्वतकेनीचेगिडनेतैंभी जीवोंकूंनहींहोवै है ॥ यातैं अत्यंतसुखकारीमाताभी वियोगकालविषे जीवोंकेपरमदुःखकाकारणहोवै है ॥ किंवा॥जैसे माताकावियोग जीवोंकेदुःखकाकारणहै॥ तैसे पितातैंआदिलेकैजितनेकसुखकारीप्रियबांधव हैं तिनोंकाभी जभीवियोगहोवै है॥ तभी याजीवकूं परमदुःखकी प्राप्तिहोवै है॥तात्पर्ययह ॥जिनपदार्थोंका परस्परसंबंधहोवै है ॥ तिनपदार्थोंका देशकालादिकनिमित्तकरिकै वियोगभीअवश्यहोवैहै ॥ तावियोगकेनिवारणकरणेकूं कोईभीजीव समर्थनहीं ॥ यातैं मातापितादिकसंपूर्णप्रियपदार्थ वियोगका

लविषे याजीवकेदुःखकेहीकारणहोवैं हैं ॥ और वास्तवतैंविचारकरिकैदेखियेतौ तीनकालविषे पदार्थ दुःखकेकारणहैं ॥ काहेतैं जबपर्यंत पुत्रादिकप्रियपदार्थोंकीप्राप्तिनहींहोती तब पर्यंत तिनोंकीइच्छाकरिकै जीवकूंदुःखहोवैहै ॥ और जभी पुत्रादिकप्रियपदार्थोंकीप्राप्तिहोवै है ॥ तभी तिनोंकेरक्षणादिकोंकरिकैदुःखहोवै है ॥ और जभी तिनप्रियपदार्थोंकानाशहोवैहै ॥ तभी तिनोंकेवियोगकरिकै जीवोंकूंदुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं आत्मातैंभिन्नसर्वप्रियपदार्थ याजीवकेदुःखकाकारणहैं॥इतनेकरिकै प्रियपदार्थोंविषे दुःखकीकारणतादिखाई ॥अब अप्रियपदार्थोंविषे दुःखकीकारणतादिखावैं हैं ॥ हेकहोल ॥ जैसे अग्निका जिसजिसपदार्थकेसाथ संबंधहोवैहै ॥ तिसतिसपदार्थकूं अग्नि दाहकरै है॥तैसे सिंहसर्पादिक अप्रियपदार्थोंका जिसजिसजीवकेसाथ संबंधहोवैहै तिसतिसजीवकूं तेसिंहसर्पादिक नाशकरैहैं ॥ यहवार्त्ता सर्वजीवोंकूंअनुभवसिद्धहैं ॥ यातैं यहसिद्धभया ॥ मातापितादिक प्रियपदार्थ वियोगकालविषे जीवोंकेदुःखकाकारणहोवैं है॥ और सिंह सर्प शत्रु आदिकअप्रियपदार्थ संयोगकालविषे जीवोंकेदुःखकाकारणहोवैहैं ॥ इतनेकरिकै मातापितादिक चैतन्यपदार्थोंविषे दुःखकीकारणता दिखाई ॥ अब जडपदार्थोंविषे दुःखकीकारणता दिखावैं हैं ॥ हेकहोल ॥ जैसे चैतन्यरूप प्रिय अप्रिय पदार्थ वियोगकालविषे तथासंयोगकालविषे जीवोंकेदुःखकाकारणहोवैहैं ॥ तैसे सुवर्णादिकजडपदार्थभी जिसजिसजीवकूंप्रियहोवैहैं॥ तिसतिसजीवकूं वियोगकालविषे तेसुवर्णादिकजडपदार्थ परमदुःखकीप्राप्तिकरैहैं ॥ और जिसजिसजीवकूं तेसुवर्णादिकजडपदार्थ अप्रियहोवैहैं ॥ तिसतिसजीवकूं तेसुवर्णादिक जडपदार्थ संयोगकालविषे परमदुःखकीप्राप्तिकरैं हैं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे अग्नि पतंगोंकूंदाहकरैहै ॥ तैसे वैराग्यहीनजीवोंकूं प्रियअप्रियपदार्थ सर्वदा दुःखकीहीप्राप्तिकरैं हैं ॥ और हेकहोल ॥ जेपुरुष रागकरिकैअंधहैं ॥ तिनपुरुषोंकूं यद्यपि संसार दुःखरूप नहींप्रतीतहोवैहै ॥ तथापि रागदोषतैंरहित जेविवेकीपुरुषहैं ॥ तिनोंकूं पुत्र धन लोक शरीर बांधव इत्यादिकसंपूर्णसंसार दुःखकाहीकारणप्रतीतहोवैहै ॥ और हेकहोल ॥ यद्यपि संपूर्णअनात्मपदार्थ जीवोंकेदुःखकाकारणहैं ॥ तथापि वास्तवतैंविचारकरिकैदेखियेतौ पदार्थोंकीइच्छाही जीवोंकेदुःखकाकारण सिद्धहोवैहै ॥ काहेतैं धनादिकपदार्थोंकेप्राप्तिकी तथाशत्रुवोंकेमारणेकी इच्छाकरिकै

युक्तहुआयहजीव धनादिकपदार्थोंकेप्राप्तिवासतै तथाशत्रुकेमारणेवासतै नानाप्रकारकायत्नकरेहै ॥ परंतु धनकीप्राप्तिविषे तथाशत्रुवोंके मारणेविषे जभीसोजीव नहींसमर्थहोवैहै॥तभी तासे निवृत्तहोवैहै ॥ और जिसजिसपदार्थतैं यहजीव निवृत्तहोवैहै॥सोसोपदार्थ याजीवकेपर मदुःखकाकारणहोवैहै ॥ शंका ॥ जिसपदार्थकेप्राप्तिविषे पुरुषकासामर्थ्यनहींहै ॥ ऐसेपदार्थकीप्राप्तिकीइच्छा किसकारणतैंकरैहै ॥ समाधान ॥ शरीरइंद्रियादिकोंविषे अहंअभिमानरूप विपरीतज्ञानकरिकै तथापुत्रधनादिकोंविषे ममअभिमानरूप विपरीतज्ञानकरिकै यह जीव नप्राप्तहोणेयोग्यपदार्थोंविषेभी इच्छाकरैहै ॥ और जभीतिनपदार्थोंकीप्राप्तिनहींहोवैहै ॥ तभी याजीवकूं परमदुःखकीप्राप्तिहोवै है ॥ यातैं फलतैंरहितहुईइच्छाही जीवोंकेदुःखकाकारणहै ॥ किंवा ॥ मनुष्यलोकतैंआदिलेके हिरण्यगर्भलोकपर्यंत जितनेक देहधारीजीवहैं ॥ तिनोंके शरीर इंद्रिय पुत्रादिकपदार्थ सर्वथाअनुकूल होवैंनहीं ॥ यातैं प्रतिकूलहुए शरीर पुत्रादिकपदार्थ याजीवोंके दुःखकेहीकारण होवैं हैं ॥ इतनेग्रंथकरिकै अनात्मपदार्थोंविषे दुःखरूपतादिखाई ॥ अब अनात्मपदार्थोंविषे सुखरूपताकेअभावकूंदिखावैहैं ॥ हेकहोल आत्मातैंभिन्न किसीभीअनात्मपदार्थविषे सुखरूपतानहीं ॥ काहेतैं जोपदार्थ जिसजीवकेसुखकाकारण होवैहै ॥ सोईहीपदार्थ कालांतरविषे तिसजीवकेदुःखकाकारणहोवैहै ॥ और जोपदार्थ जिसजीवकेदुःखकाकारणहोवैहै ॥ सोईहीपदार्थ कालांतरविषे तिसजीवकेसुखकाकारणहोवैहै ॥ जैसे ज्वरव्याधितैंरहितपुरुषकूं घृतादिकपदार्थ सुखकेकारणहोवैहैं ॥ और तेहीघृतादिकपदार्थ कालांतरविषे ज्वरव्याधियुक्त तिसीपुरुषके दुःखकेकारणहोवैं हैं ॥ और जेघृतादिकपदार्थ ज्वरव्याधियुक्तपुरुषकूं दुःखकेकारणहोवैहैं ॥ तेही घृतादिकपदार्थ कालांतरविषे ज्वरव्याधिरहित तिसीपुरुषके सुखकेकारणहोवैं हैं ॥ इसप्रकार सर्वअनात्मपदार्थोंविषे सुखकीकारणताका व्यभिचारजानिलेणा ॥ जोआत्मपदार्थ नियमकरिकै सुखकेहीजनकहोवैं ॥ तौ सर्वकालविषे तिनोंतैंसुखकीउत्पत्तिहोणीचाहिये ॥ और सर्वकालविषे तिनोंतैंसुखकीउत्पत्तिहोवैनहीं यातैं अनात्मपदार्थोंविषे सुखकीकारणतानहीं ॥ शंका ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ जोअनात्मपदार्थों विषे सुखकीकारणतानहींहोवै ॥ तौ सुखकीप्राप्तिवासतै संपूर्णजीव शब्दस्पर्शादिकविषयोंकीइच्छाकिसवासतैकरतेहैं ॥ समाधान ॥ हेक

होल ॥ शब्दस्पर्शादिकविषय हमारेसुखकेसाधन हैं ॥ यहजोसर्वलोकोंका अनुभव है ॥ सो यथार्थनहीं किंतुभ्रांतिरूप है ॥ काहेतैं आनंदो ब्रह्म अर्थयह ब्रह्म आनंदरूप है ॥ याश्रुतिविषे ब्रह्मकूंहीं आनंदस्वरूपकह्या है ॥ और सोब्रह्म नित्य है यातैं ब्रह्मरूपआनंदभी नित्य है ॥ तानित्यआनंदकी शब्दादिकविषयोंतैं उत्पत्तिकहणी भ्रांतिसेविनासंभवै नहीं ॥ किंवा ॥ जोसुख शब्दस्पर्शादिकविषयों करिकैजन्यहोवैगा तौ सोसुख नित्यआत्मातैं भिन्नहीं होवैगा ॥ और जोआत्मातैं भिन्नहोवै है ॥ सो दुःखरूपहीहोवै है ॥ जैसे आत्मातैं भिन्नकरिकैजान्याहुआ वैरीपुरुषकासुखभी जीवोंकूं दुःखरूपहोइकेप्रतीतहोवै है ॥ तैसे जो सुख आत्मातैंभिन्नहोवैगा ॥ तौ दुःखरूपही होवैगा ॥ और सुखकूंदुःखरूपतासंभवै नहीं ॥ यातैं सुख आत्मातैं भिन्न नहीं ॥ किंवा ॥ शब्दस्पर्शादिकविषय हमारेसुखकेसाधन हैं यहजोलोकोंकाअनुभव है ॥ ताकेविषे याकारण है ॥ जैसे खद्योतजंतु रात्रिविषे संपूर्णव्यापकआकाशकी अभिव्यक्तिकरिसकै नहीं ॥ किंतु व्यापकआकाशके किंचित्देशकी अभिव्यक्तिकरै है ॥ तैसे शब्दस्पर्शादिक विषयभी संपूर्ण आत्मरूपव्यापक सुखभी अभिव्यक्तिकरै नहीं ॥ किंतु व्यापकसुखकी किंचित्मात्र अभिव्यक्तिकरै हैं ॥ तात्पर्ययह ॥ शब्दस्पर्शादिक विषयोंकेसाथ श्रोत्रादिकइंद्रियोंका जभी संबंध होवै है॥तभी आनंदस्वरूप आत्माकेप्रतिबिंबग्रहणकरणेहारी अंतःकरणकीवृत्ति उत्पन्नहोवै है॥और सोअंतःकरण कीवृत्ति जितनापरिमाणहोवै है ॥ तितनापरिमाणही आत्मारूपसुखकीअभिव्यक्तिकरै है ॥ यातैं अंतःकरणकीवृत्तिविषे स्थित जोशब्द स्पर्शादिकविषयोंकीजन्यता ताजन्यताकूं आत्मारूपसुखविषे आरोपणकरिकैमूढपुरुष सुखकूंविषयजन्यमानैं हैं॥ यातैं सुख विषयजन्य है यहलोकोंका अनुभव केवल भ्रमरूप है यातैं ॥ हेकहोल आत्मातैं भिन्नसर्व जगत्कूंदुःखरूपजाणिकै वामदेवादिक विद्वान् पुरुष आत्मरूप नित्यसुखकीप्राप्तिवासतैं सर्वएषणावोंका परित्यागकरिकै संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरतेभये हैं ॥ इतनेग्रंथकरिकै आत्मज्ञानकी प्राप्तिकासाधन तथाजीवन्मुक्तिके सुखकासाधन जो संन्यास है ताकूं निरूपण कऱ्या ॥ अब आत्मज्ञानके साधन जे श्रवण मनन निदिध्यासन हैं ॥ तिनोंके स्वरूपकूं निरूपण करैं हैं ॥ हेकहोल ॥ स्वप्रकाश सुखरूपजोब्रह्म है ताकेप्राप्तिकीइच्छा है जिसकूं ॥ और

शास्त्रकेपदार्थोंका तथावाक्यार्थोंका ज्ञान है जिसकूं ॥ ऐसाजो चतुष्टय साधनसंपन्न मुमुक्षुजन है ॥ सोप्रथम गुरुमुखतैं वेदांतवाक्यों का श्रवणकरिकै तिन वेदांतवाक्योंका अद्वितीयब्रह्मविषे तात्पर्यनिश्चयकरै ॥ याकानामश्रवण है॥ ताश्रवणतैंअनंतर सोमुमुक्षुजन जन्म मरणादिविकारवान् तथाअसक्तिद्वारा सर्वएषणावोंकाजनकजोयहशरीर है ॥ ताकूं अन्वयव्यतिरेककरिकै दुःखकाकारणजानै ॥ और सर्व एषणावोंकापरित्यागकरिकै सोमुमुक्षुजन बालककीन्याईं रागद्वेषतैंरहितहोइकै स्थितहोवै ॥ तात्पर्ययह ॥ रागद्वेषपूर्वक जो विषयों विषे इंद्रियोंकीप्रवृत्ति है ॥ सोप्रवृत्तिही जीवोंकेदुःखकाकारण है॥याकारणतैंही रागद्वेषपूर्वक इंद्रियोंकीप्रवृत्तितैंरहितजोबालक है॥सो दुःखकूं प्राप्तहोतानहीं ॥ यातैं यहमुमुक्षुजनभीबालककीन्याईं रागद्वेषपूर्वक इंद्रियोंकीप्रवृत्तितैंरहितहोइकै वेदांतकेअर्थका मननकरै ॥ नानाप्रकारकी युक्तियोंकरिकै विरोधनिवृत्ति पूर्वक जोवेदांतके अर्थकाचिंतन है ताकूं शास्त्रवेत्तापुरुष मननकहैं हैं ॥ सोमनन रागद्वेषवान् बहिर्मुखपुरुषतैं होइसकेनहीं ॥ यातैंरागद्वेषतैंरहितहोइकै मुमुक्षुजन वेदांतके अर्थकामननकरै ॥ और ताश्रवणमननतैंअनंतर यहमुमुक्षुजन अनात्माकार विजातीयवृत्तियोंकापरित्यागकरिकै ॥ आत्माकार सजातीयवृत्तियोंकाप्रवाहरूप जो निदिध्यासन है ताकूं निरंतरकरै तात्पर्ययह ॥ मनवाणीका विषय जोदृश्य प्रपंच है ॥ तिसतैं मैं विलक्षणहूं॥और मैं आनंदस्वरूपहूं ॥ और मैं स्वप्रकाशहूं ॥ और मैं सजातीय विजातीय स्वगत भेदतैंरहितहूं ॥ याप्रकारकीवृत्तियोंका निरंतरप्रवाहरूपजोनिदिध्यासन है ॥ तानिदिध्यासनविषे है नेष्टाजिसकी ॥ तथा पूर्वउक्तश्रवणमननकूं चिरकालपर्यंत श्रद्धापूर्वक सेवनकऱ्या है जिसनै ॥ ऐसाजो मुमुक्षुजन है ॥ सो ब्रह्मविद्याकूं प्राप्तहोवै है ॥ ता ब्रह्मविद्यावान्पुरुषकूंही श्रुतिविषेब्राह्मणकह्या है ॥ शंका ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ पूर्वकथनकरेजेश्रवणमननिदिध्यासन ॥ तिनोंका परित्याग करिकै यह मुमुक्षुजन अन्य किसीउपायकरिकै ब्रह्मज्ञानरूप ब्राह्मणभावकूं प्राप्तहोवै है अथवा नहींहोवै है ॥ जोश्रवणादिकोंतैं विना किसी अन्य उपायकरिकै ब्राह्मणभावकी प्राप्तिहोतीहोवै ॥ तौ सोउपाय हमारेप्रति कथनकरो ॥ समाधान ॥ हेकहोल ॥ पूर्वकहेजे श्रवण मनन निदिध्यासन ॥ तिनोंकूं परित्याग करिकै यहमुमुक्षुजन अन्य किसी उपाय करिकै ब्राह्मणभावकूं प्राप्तहोवै नहीं ॥

किन्तु श्रवणादिकोंकरिकैही यहमुमुक्षुजन ब्राह्मणभावकूंप्राप्तहोवै है॥यातैं हेकहोल॥नामरूप क्रियातैंरहित तथास्वप्रकाशसुखरूप जोअद्वितीयब्रह्महै सोमैंहूं ॥ याप्रकारका निर्विकल्पकज्ञान जिसपुरुषकूंभयाहै ॥ तिसीब्रह्मवेत्तापुरुषकूं श्रुति ब्राह्मणकहैं हैं ॥और याप्रकारका ब्राह्मणपणा श्रवण मनन निदिध्यासनतैंविना अन्यकिसीउपायकरिकै प्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं ताब्राह्मणभावकी प्राप्तिवासतैं मुमुक्षुजनने अवश्य श्रवणादिकसाधन संपादनकरणे ॥ और हेकहोल ॥ याप्रकारकाब्राह्मणपणा जोकदाचित् श्रवणादिकसाधनोंतैंविना अन्य किसीसाधनतैंहोताहोवै तौ निःशंक होवै ॥ याकेविषे हमारा आग्रह नहीं ॥ काहेतैं जैसे नदीके पारउतरणा रूपफल नौका करिकै होवै है ॥ अथवा उडुपादिकसाधनोंकरिकै होवै है ॥ जभी उडुपादिक साधनों करिकैही नदीके पारजाणा रूपफल सिद्धहोइसके ॥ तभी नौकाकरिकै पारजाणेविषे कोई बुद्धिमान् पुरुष आग्रह करता नहीं ॥ परंतु जोनदी महान्वेगवाली होवै है ॥ तथा अत्यंतविस्तारवाली होवैहै ॥ तथा जोनदीविषे अगाधजलहोवैहै ॥ ऐसीनदीकेपारजाणेविषे जैसे एकनौकाही साधनहोवैहै ॥ नौकातैंविना उडुपादिकसाधनोंकरिकै ऐसीनदीतैंपारहोणा संभवैनहीं ॥ तैसे पूर्वउक्त ब्राह्मणपणेविषे श्रवणादिकसाधनहैं ॥ श्रवणादिकोंतैंविना किसीअन्यउपायकरिकै याप्रकारकाब्राह्मणपणा प्राप्तहोवैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ सो श्रवणादिकोंतैंभिन्नउपाय हिरण्यगर्भकीउपासनाहोवैगी ॥ अथवा अश्वमेधयज्ञादिक उत्कृष्टकर्महोवैंगे ॥ तेसंपूर्णउपासना तथाकर्म श्रवणादिकोंतैंविना आत्मज्ञानकीउत्पत्तिकरैं नहीं ॥ किंतु उपासनाकरिकै तथाकर्मोंकरिकै चित्तकीशुद्धिहोवै है॥ तिसतैंअनंतर विवेक वैराग्य शमादिषट्संपत्त मुमुक्षुता याचारिसाधनोंकीप्राप्तिहोवै है ॥ तिसतैंअनंतर गुरुमुखद्वारा वेदांतकेश्रवणकरिकै तथामननानिदिध्यासनकरिकै मुमुक्षुपुरुषकूं आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिहोवै है ॥ यातैं चित्तकीशुद्धिविषे कर्मउपासनाका उपयोगहै ॥ साक्षात्आत्मज्ञानविषे कर्मउपासनाकूं कारणतानहीं ॥ किंतु श्रवणादिकोंकूंही साक्षात्कारणताहै ॥ तहाँ वेदांतशास्त्र जीवईश्वरके अभेदकूंबोधनकरै है अथवा जीवईश्वरकेभेदकूंबोधनकरै है॥ याप्रकारकी प्रमाणगतअसंभावना वेदांतशास्त्रकेश्रवणतैं निवृत्तहोवै है ॥ और आत्मा नित्य व्यापकसुखरूपहै अथवा अनित्य परिच्छिन्नदुःखरूपहै ॥ याप्रकारकी

प्रमेयगतअसंभावना वेदांतशास्त्रकेमननतैंनिवृत्तहोवैहै ॥ और अनित्य अशुचि दुःखरूप शरीरादिकोंविषे नित्य शुचि सुखरूपताबुद्धिकूं विपरीतभावनाकहै है॥सोविपरीतभावना निदिध्यासनतैं निवृत्तहोवै है ॥ याप्रकार असंभावनाविपरीतभावनाके निवृत्तिद्वारा श्रवण मनन निदिध्यासन आत्मज्ञानकेसाधनहैं ॥ यातैं श्रवणादिकोंकारिकैही ॥ ब्राह्मणभावकीप्राप्तिहोवै है॥और हेकहोल ॥जिसपुरुषने गुरुमु खतैं वेदांतशास्त्रकाश्रवणनहींकऱ्या ॥ तथा मनन निदिध्यासननहींकऱ्या ॥ तथा वित्तएषणा पुत्रएषणा लोकएषणा यातीनप्रकारके एष णावोंकापरित्यागनहींकऱ्या ॥ केवल विषयभोगविषे जोपुरुष आसक्तहै॥ऐसे साधनहीनपुरुषकूं किसीलोकविषे तथाकिसीकालविषे जोपू र्वउक्तब्राह्मणपणा प्राप्तहुआहोवै ॥ तौ हमारेप्रति तुमकथनकरो ॥ किंतु ऐसेसाधनहीनपुरुषोंकूं किसीलोकविषे तथाकिसीकालविषे ब्राह्म णपणा प्राप्तहोतानहीं ॥ यातैं हेकहोल ॥ जैसे अन्नकाभक्षणनियमकरिकै तृप्तिकाउपायहै ॥ अन्नकेभक्षणतैंविना अन्यकिसीउपायकरिकै पुरुषकी तृप्तिहोवैनहीं ॥ तैसे ब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिरूपब्राह्मणपणेविषे श्रवण मनन निदिध्यासनहींनियमकरिकैसाधनहैं ॥ याकारणतैं हिरण्य गर्भकूंभी क्षणमात्र वेदांतवाक्यकेविचारतैं ही आत्मज्ञानकीप्राप्तिकहीहै॥तथा योगीपुरुषभी प्रणवकेअर्थकाविचारकरिकैही आत्मसाक्षा त्कारकूं प्राप्तहोवैं हैं ॥ श्रवणमननिदिध्यासनतैंविना कोईभीपुरुष आत्मज्ञानकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ हेशिष्य॥याप्रकार जभी याज्ञवल्क्यमु निने कहोलकेप्रति उत्तरकह्या ॥ तभी सोकहोलब्राह्मण याज्ञवल्क्यकूंबुद्धिमान् जाणिकरिकै याज्ञवल्क्यकेजीतणेकीइच्छाका परित्याग करताभया ॥ और गार्गीकेमुखकीओरदेखिकरिकै सोकहोलब्राह्मण पुनःप्रश्नकरणेतैं निवृत्तहोताभया ॥ तिसतैंअनंतर तर्कविषेकुशल जोवचक्नुऋषिकीपुत्रीगार्गीहै ॥ सो अनुमानप्रमाणकूंअंगीकारकरिकै याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति प्रश्नकरतीभई॥ गार्गीउवाच ॥हेयाज्ञवल्क्य ॥ यालोकविषे जोजोपदार्थ कार्यहोवै हैं ॥ सोसोपदार्थ आपणेकारणविषे स्थितहोवै हैं ॥ तथा अंतर बाह्य कारणकरिकैव्याप्तहोवै है॥ जैसे पटरूपकार्य तंतुरूपकारणविषे रहै है ॥ तथा अंतरबाह्य तंतुरूपकारणकरिकै व्याप्तहोवै है ॥यहवार्त्ता सर्वलोकोंकूं अनुभवसिद्ध है ॥ तैसे यामनुष्यलोकविषेवर्तमान जितनेस्थावर जंगमरूप पार्थिवपदार्थ हैं ॥ तेसंपूर्णपार्थिवपदार्थ कार्यरूप हैं ॥ यातैं कारणरूपजलविषे स्थित

हैं ॥ तथा अंतर बाह्य कारणरूपजलकरिकै व्याप्तहैं ॥ जोकदाचित् पार्थिवपदार्थ जलकरिकै व्याप्त नहींहोवै ॥ तौसकुकेमृष्टिकीन्याईं विशीर्णभावकूं प्राप्तहोणेचाहिये ॥ और यहघटादिकपार्थिवपदार्थ विशीर्णभावकूंप्राप्तहोतेनहीं ॥ यातैं यहजान्याजावेह ॥ घटादिकपा र्थिवपदार्थ जलरूपकारणकरिकैव्याप्तहैं ॥ याकहणेकरिकै यहअनुमान बोधनकऱ्या ॥ स्थावरजंगमरूप जेपार्थिवपदार्थ हैं ॥ ते जलरूपकारणकरिकै व्याप्तहैं ॥ काहेतैं कार्यरूपहोणेतैं पटकीन्याईं ॥ यातैं हेयाज्ञवल्क्य ॥ पृथिवीकीन्याईं ते जलभी कार्यरूप हैं ॥ यातैं तेजलभी किसीआपणेकारणविषे ओतप्रोतहोवैंगे ॥ सो जलोंका कारण कौन है ॥ जिसविषे जलओतप्रोत हैं ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारजभी गार्गीने प्रश्नकऱ्या ॥ तभी याज्ञवल्क्यमुनि उत्तरकूंकहताभया ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेगार्गी ॥ तेजल वायुरू पकारणविषे ओतप्रोत हैं ॥ यद्यपि वेदांतमतविषे जलोंकाउपादानकारण तेजहै ॥ और तेजकाउपादानकारण वायु है ॥ यातैं वायुकूं जलोंकाउपादनकारणकहणा संभवैनहीं ॥ तथापि लोकविषे अग्निरूपतेजकीकाष्ठरूप इंधनविषेही उपलब्धिहोवै है ॥ काष्ठरूपइंधनतैं विना अन्यकिसीपदार्थविषे अग्निरूपतेजकी उपलब्धिहोवैनहीं ॥ और काष्ठोंविषेस्थित धूमतैंरहितजोअग्निहै ॥ ताकेविषे जलकाविरोधी पणा प्रत्यक्षदेखीता है ॥ यातैं जलकाविरोधीजोअग्निहै ॥ ताकावषे जलकीउपादानकारणता संभवैनहीं ॥ और काष्ठरूपइंधनतैंरहितजो अग्निहै ॥ ताकेविषे जलकीकारणता शास्त्रप्रमाणतैंविना अन्यकिसीप्रमाणकरिकै सिद्धहोवैनहीं ॥ एकशास्त्रप्रमाणकरिकैहीसिद्धहै ॥ यद्य पि आर्द्रइंधनयुक्तअग्निविषेधूमकेसंबंधद्वारा जलकीकारणताप्रत्यक्षप्रमाणकरिकै सिद्धहै ॥ तथापि तास्थलविषे जलकीकारणताअग्निविषेहै अथवा आर्द्रइंधनविषेस्थितजलविषेहै ॥ यह निर्णयहोइसकैनहीं ॥ याकारणतैं अग्निकापरित्यागकरिकै वायुविषे जलकी कारणता कथनकरीहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे पुत्रकाकारणजोपिताहै ॥ सोपिता पुत्रकेपुत्रकाभीकारणहै ॥ तैसे तेजकाकारणजोवायुहै सोवायुतेजके कार्यजलकाभी कारणहोइसकैहै ॥ याकेविषे किंचित्मात्रभीविरोधनहीं ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारजभी याज्ञवल्क्यमुनिने उत्तरकह्या ॥ तभीसोगार्गी पुनःयाज्ञवल्क्यमुनिसे पूछतीभई ॥ गार्गीउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ सोवायु किसकारणविषेओतप्रोतहै॥याज्ञवल्क्यउवाच॥

हे गार्गी॥ सो वायुअंतरिक्षलोकविषे ओतप्रोतहै ॥ गार्गीउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ सोअंतरिक्षलोक किसकारणविषेओतप्रोतहै ॥ याज्ञवल्क्यउवाच॥हेगार्गी॥ सोअंतरिक्षलोक गंधर्वलोकविषे ओतप्रोतहै ॥ गार्गीउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ सोगंधर्वलोक किसकारणविषे ओतप्रोतहै ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेगार्गी ॥ सोगंधर्वलोक सूर्यलोकविषे ओतप्रोतहै ॥ गार्गीउवाच ॥हेयाज्ञवल्क्य॥सूर्यलोककिसकारणविषे ओतप्रोतहै ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेगार्गी ॥ सोसूर्यलोकचंद्रमालोकविषे ओतप्रोतहै ॥ गार्गीउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ सोचंद्रमालोक किसकारणविषे ओतप्रोतहै॥याज्ञवल्क्यउवाच॥हेगार्गी॥सोचंद्रमालोक नक्षत्रलोकविषे ओतप्रोतहै॥गार्गीउवाच॥ हेयाज्ञवल्क्य॥सोनक्षत्रलोककिसकारणविषे ओतप्रोतहै ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेगार्गी ॥ सोनक्षत्रलोक देवलोकविषे ओतप्रोतहै ॥गार्गीउवाच॥हेयाज्ञवल्क्य॥ सोदेवलोक किसकारणविषे ओतप्रोतहै ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेगार्गी ॥ सोदेवलोक इंद्रलोकविषे ओतप्रोतहै ॥ गार्गीउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ सोइंद्रलोक किसकारणविषे ओतप्रोतहै ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेगार्गी ॥ सोइंद्रलोकप्रजापतिलोकविषे ओतप्रोतहै ॥ गार्गीउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ सोप्रजापतिलोक किसकारणविषे ओतप्रोत है ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥हेगार्गी॥ सोप्रजापतिलोक॥ब्रह्मलोकविषे ओतप्रोतहै॥अब अंतरिक्षादिक शब्दोंकेअर्थकूंनिरूपणकरैं हैं॥अवकाशरूपकरिकै सर्वलोकोंकूंप्रसिद्ध जोस्थूलआकाशहै ताकूंअंतरिक्ष कहै हैं॥और गंधर्वलोक सूर्य्यलोक चंद्रमालोक नक्षत्रलोक देवलोक इंद्रलोक यहपट्प्रकारकेशब्दआकाशादिकपंचभूतोंकी जोउत्तरउत्तर सूक्ष्मअवस्थाहैं तिनोंकेवाचकहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ अंतरिक्षलोककेआरंभक जेआकाशादिकपंचभूतहैं ॥ तिनोंतैं अंतरिक्षलोककूंसर्वओरतैं परिवेष्टनकरिकैस्थित जेगंधर्वशरीरोंकेआरंभकपंचभूतहैं ॥ तेसूक्ष्म हैं॥ तैसे गंधर्वलोककूंसर्वओरतैंपरिवेष्टनकरिकैस्थित जेसूर्यलोककेआरंभकपंचभूतहैं ॥ तेभूतगंधर्वलोककेआरंभकभूतोंतैं सूक्ष्म हैं ॥ इसप्रकार इंद्रलोकपर्यंत आकाशादिकपंचभूतोंकीसूक्ष्मता जानिलेणी ॥ याकेविषेभी इतनीविलक्षणताहै॥गंधर्वलोकतैंलेके इंद्रलोकपर्यंत जेषट्प्रकारकी भूतोंकीअवस्थाकही तेअवस्थाभी पूर्वपूर्वअवस्थाकी

अपेक्षाकरिकै सूक्ष्महैं॥और उत्तरउत्तर अवस्थाकीअपेक्षाकरिकै स्थूल हैं ॥ जैसे गंधर्वलोककीअपेक्षाकरिकै सूर्यलोक सूक्ष्म है ॥ और चंद्रमालोककीअपेक्षाकरिकै सोसूर्यलोक स्थूल है ॥ तैसे चंद्रमालोकभीसूर्यलोककीअपेक्षाकरिकै सूक्ष्महै ॥और नक्षत्रलोककीअपेक्षाकरिकै सोचंद्रमालोक स्थूल है॥इसप्रकार इंद्रलोकपर्यंत स्थूलता तथासूक्ष्मता जानिलेणी ॥ अब इंद्रलोक प्रजापतिलोक ब्रह्मलोक यातीनशब्दोंकेअर्थोंकूंनिरूपणकरैं हैं ॥तहाँ संपूर्णदृश्यप्रपंचकूं जोआत्मारूपकरिकैदेखे ताकूं इंद्रकहैं हैं ॥ याप्रकारका इंद्रशब्दकाअर्थ विराट्पुरुषविषेहीघटै है ॥ काहेतैं यहसंपूर्णविश्व विराट्पुरुषकेशरीरविषे स्थितहै॥यातैं ताविश्वकूं आत्मरूपकरिकै सोविराट्पुरुष देखे है ॥यातैं इंद्रशब्दकरिकै विराट्पुरुषकाग्रहणकरणा॥और ब्रह्मांडरूपीकटाहकेअंतर तथाबाह्य वर्त्तमानजोसूत्रआत्माहै॥ जासूत्रआत्माकूँ पारिक्षित पुरुष प्राप्तहोवैं हैं।यातैं प्रजापतिशब्दकरिकै ता सूत्रआत्माकाग्रहणकरणा।और मायाकाअज्ञानशब्दकाअर्थ जोसर्वकाकारणअव्याकृतहै॥ सोअव्याकृतसूत्रआत्माकेस्थितिकाआधारहै यातैं ब्रह्मलोकशब्दकरिकै ता अव्याकृतकाग्रहणकरणा ॥ कैसाहैसोअव्याकृत॥समष्टिरूपकरिकै एकप्रकारकाहै॥और व्यष्टिरूपकरिकै अनेकप्रकारकाहै॥हेशिष्य ॥याप्रकारके याज्ञवल्क्यमुनिकेवचनोंकूंश्रवणकरिकैसोगार्गी आपणे मनविषेयाप्रकारकाविचार नहींकरतीभई॥सोविचार यहहै॥सर्वजगत्काकारणरूपजोअव्याकृतहै सो यद्यपि शुद्धआत्माकेआश्रितरहै है ॥ तथापि सोअव्याकृत जलादिकोंकीन्याईं अनुमानप्रमाणतैं जान्याजावैनहीं॥काहेतैं कार्यजो है सो कारणकरिकैव्याप्त है ॥ कार्यत्वधर्मवालाहोणेतैं पटरूपकार्यकीन्याईं॥याअनुमानकीप्रवृत्तितैं पूर्व जोजोकार्यहोवै है सोसोकारणकरिकैव्याप्तहोवै है याप्रकारकाव्याप्तिज्ञान तथा कार्यत्वरूपहेतुकाज्ञान अवश्यचाहिये॥व्याप्तिज्ञानतौंविना तथा हेतु ज्ञानतैं विना अनुमान प्रमाणतैं किसी अर्थकी सिद्धि होवै नहीं॥और अव्याकृतकाआश्रयरूपकरिकै आत्माकेज्ञानविषे पूर्वउक्तव्याप्तिज्ञानका तथा कार्यत्वरूप हेतुके ज्ञानका किंचित्मात्रभी उपयोग नहीं॥ काहेतैं अज्ञानमायारूपअव्याकृत अनादि है ॥ यातैं ताअव्याकृतविषे कार्यपणासंभवैनहीं॥ और शुद्धआत्माविषे कार्यपणा तथाकारणपणा दोनोंसंभवैंनहीं ॥ यातैं अव्याकृतकाआश्रयआत्मा अनुमानप्रमाणकाविषयनहीं॥ और वास्तवतौंविचारकरिकैदेखियतौ सूत्रआत्मा

भी अनुमानकाविषयनहीं काहेतैं लोकप्रसिद्धदृष्टांतकूं लेके अनुमानकी प्रवृत्तिहोवै है ॥ लोकप्रसिद्धदृष्टांततैं विना किसी अनुमानकी प्रवृत्तिहोवै नहीं॥सोलोकप्रसिद्धदृष्टांत सूत्रआत्माकीसिद्धिविषेहैनहीं याकारणतैंहीं ब्रह्मांडतैंबाह्यसूत्रआत्माहै याप्रकारकी प्रक्रिया किसी नैयायिकनेलिखीनहीं ॥ यातैं सूत्रआत्मा तथाअव्याकृतकाआश्रयरूप शुद्धआत्मा अनुमानरूपतर्ककाविषयनहीं ॥ याप्रकारकेविचारकूं नकरिकै सोगार्गी आग्रहतैं पुनःयाज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति प्रश्नकरतीभई ॥ गार्गी उवाच ॥ हे याज्ञवल्क्य॥ सोअव्याकृतरूप ब्रह्मलोक किस कारणविषे ओतप्रोतहै॥ हेशिष्य केवलशास्त्रप्रमाणकरिकैजानणेयोग्य जोआत्माकावास्तवस्वरूप है॥सो जभी गार्गीने आपणीमूर्खतातैं अनुमानप्रमाणकीरीतिकरिकैपूछा ॥ तभी सोयाज्ञवल्क्यमुनि गार्गीकेप्रतिकहताभया याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेगार्गी॥ यहआनंदस्वरूपआत्मा केवलशास्त्रप्रमाणकरिकै जानणेयोग्य है ॥ यातैं शास्त्रप्रमाणकरिकैही आत्माकास्वरूप तुम्हारेकूंपूछणेयोग्यथा ॥ परंतु तामर्या दाकापरित्यागकरिकै अनुमानकीरीतिसे जोतुमने आत्माकाप्रश्नकऱ्याहै॥सोतुम्हाराप्रश्न व्यर्थ है॥काहेतैं सर्वकाअधिष्ठानआत्मा किसीअनुमानकाविषयहैनहीं यातैं ॥हेगार्गी॥सर्वकाअधिष्ठानरूपआत्मादेवता अनुमानरीतिसे तुमने कदाचित्नहींपूछणा॥और॥ हेगार्गी॥विचारतैंरहितहोइकैजोतूं दुराग्रहतैं अतिप्रश्नकरैगी ॥ तौ तुम्हारामस्तक भूमिविषेपतनहोवैगा ॥ काहेतैं जोपुरुष परमउत्कृष्टपदार्थकूं निकृष्टपदार्थकेसमानदेखे है ता॥पुरुषकूं परमअनर्थकीप्राप्तिहोवै है॥जैसे अर्जुनके हस्तविषेस्थित जो पाशुपतअस्त्र है सो अन्यशरके समान होणे योग्यहै ॥ अस्त्रत्वधर्मवालाहोणेतैं ॥ दूसरेशरकीन्याईं ॥ याप्रकारकेअनुमानकारिकै पाशुपतअस्त्र अन्यशरकेसमान करणे योग्य नहीं ॥ और जोकोईपुरुष दुराग्रहकारिकै तापाशुपतअस्त्रकूं अन्यशरकेसमानकरै है॥ तौ सोपाशुपतअस्त्र ता विपरीतदर्शीपुरुषके मस्तककूं छेदन करिकै भूमिविषेगिडाहोवै है ॥ अन्यदृष्टांत ॥ जैसे अथर्वणवेदतैंउत्पन्नभये जे मारणेके मंत्रहैं॥ते मंत्रभी अतिक्रोधकरिकै युक्त दुर्वासामुनिकेहृदयदेशविषेस्थितहोवैं ॥ ते मंत्र यद्यपि प्राकृतमंत्रोंकेसमान होणेयोग्यनहीं॥तथापि जो पुरुष दुराग्रहकारिकै तिनमंत्रोंकूं प्राकृतमंत्रोंकेसमानकरै है ॥ तौ तेअथर्वणवेदकेमंत्र ताविपरीतदर्शी पुरुषकेमस्तककूं भूमिविषेगिडावैं हैं ॥ तैसे ॥ हेगार्गी ॥ अनुमानकाआविषयजो

आत्माहै ताकूं जलादिकोंकीन्याईं अनुमानकाविषयमानिकै जोतूं आत्माका अतिप्रश्नकरैगी ॥ तौ तुम्हाराभीमस्तक भूमिविषेपतनहोवैगा ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार याज्ञवल्क्यमुनिकेवचनकूंश्रवणकरिकै सोगार्गी अत्यंतभयकूंप्राप्तहोतीभई ॥ और अरुणऋषिकापुत्र जो उद्दालकनामाऋषिहै ॥ ताकेमुखकीओरदेखिकै सोगार्गी पुनःप्रश्नकरणेतैं निवृत्तहोतीभई ॥ तिसतैंअनंतर सो उद्दालकऋषि अत्यंतक्रोधवान्होइकै पूर्वअग्निदेवतानैं उपदेशकऱ्याजो अत्यंतगुह्यअर्थ है ता गुह्यअर्थकाप्रश्न याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति करताभया ॥ तहाँ भुज्युकीन्याईं आपणेविद्याकीउत्कृष्टताबोधनकरणेवासतैं सो उद्दालक प्रथम आपणेपूर्ववृत्तांतकूं कथनकरताभया ॥ उद्दालकउवाच ॥ हे याज्ञवल्क्य पूर्वब्रह्मचर्यआश्रमविषे हमबहुतब्रह्मचारी वेदोंकेअध्ययनकरणेवासतैं मद्रदेशविषे पतंचलनामाब्राह्मणकेगृहविषे स्थितहोतेभये ॥ और किसीकालविषे तापतंचलनामाब्राह्मणकीस्त्रीकेशरीरविषे पिशाचकीन्याईं अग्निदेवता प्रवेशकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर पतंचलगुरुकेसहित हमसंपूर्णब्राह्मण ता अग्निदेवतासे पूछतेभये ॥ तूंकौनहै ॥ तिसतैंअनंतर सो अग्निदेवता हमसंपूर्णब्राह्मणोंकेप्रति या प्रकारकावचन कहताभया ॥ हे ब्राह्मणो ॥ आथर्वण हमारागोत्रहै ॥ और कबंध हमारानामहै ॥ तुमसंपूर्णब्राह्मणोंके उपकारवासतैं यास्त्रीकेशरीरविषे हमने प्रवेशकऱ्याहै ॥ हे याज्ञवल्क्य ॥ याप्रकारकावचनकहिकै सोअग्निदेवता हमसंपूर्णशिष्योंकरिकै परिवेष्टित पतंचलनामाहमारेगुरुकेताईं या प्रकारकावचन कहताभया ॥ हेपतंचल ॥ जैसे मालाकेपुष्पोंकूं सूत्र धारणकरै है ॥ तैसे यहसंपूर्णभूतभौतिकप्रपंच जिससूत्रकरिकै बांध्याहुआहै ॥ तासूत्रकूं तूं जाणताहै ॥ हे याज्ञवल्क्य ॥ या प्रकारकाप्रश्न जभी अग्निदेवताने हमारेगुरुकेप्रति कऱ्या ॥ तभी सो पतंचलनामा हमारागुरू अग्निदेवताकेप्रति कहताभया ॥ हेअग्निदेवता ॥ संपूर्ण जगतकूं जिस सूत्रने धारणकऱ्याहै तासूत्रकूं हम नहींजाणते ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ या प्रकारकाउत्तर जभी हमारेगुरुनेकह्या ॥ तभी सोअग्निदेवता पुनः हमारेगुरुसे पूछताभया ॥ हेपतंचल ॥ जोसर्वजगत्काप्रेरकअंतर्यामीहै तिसकूं तूं जाणताहै ॥ हेयाज्ञवल्क्य॥याप्रकारकादूसराप्रश्न जभी अग्निदेवताने हमारेगुरुसेपूछा॥तभी सोपतंचलनामा हमारागुरु यहउत्तर देताभया॥हेअग्निदेवता अंतर्यामीकेस्वरूपकूंभी हमनहींजाणते

हे याज्ञवल्क्य ॥ पतंचलनामा हमारेगुरुने जभी अग्निदेवताकेप्रति सूत्रका तथा अंतर्यामीका स्वरूपनहींकह्या ॥ तभी सोअग्निदेवता कृपाकरिकै युक्तहुआ पतंचलनामा हमारे गुरुकेप्रति कहताभया॥हेपतंचल॥हमने जोतुम्हारेसे सूत्रका तथाअंतर्यामीका स्वरूपपूछाहै॥ तासूत्रकूं तथा अंतर्यामीकूं जोपुरुषजाणताहै॥सोपुरुष सर्वज्ञभावकूंप्राप्तहोवैहै॥तात्पर्ययह॥सोपुरुष परमात्माकूं तथाभूरादिकसप्तलोकोंकूं तथा संपूर्णदेवतावोंकूं तथासंपूर्णप्राणियोंकूं तथापंचभूतोंकूं तथा आत्माकूं इत्यादिकसर्वपदार्थोंकूं जाणताहै ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ याप्रकार सूत्रअंतर्यामीकेज्ञानकीउत्कृष्टता कथनकरिकै सोअग्निदेवता हम संपूर्णब्राह्मणोंकेप्रति तासूत्रकेस्वरूपकूं तथाअंतर्यामीकेस्वरूपकूं कथन करताभया ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ ताअग्निदेवताकेउपदेशकरिकै हमसूत्रकेस्वरूपकूं तथाअंतर्यामीकेस्वरूपकूं भलीप्रकार जाणते हैं॥और तूं तासूत्रकेस्वरूपकूं तथाअंतर्यामीकेस्वरूपकूं न जाणिकरिकै जोसर्वब्राह्मणोंकीगौवाँ आपणेगृहविषेलैजावैगा ॥तौ शीघ्रही तुम्हारामस्तक भूमिविषेपतनहोवैगा ॥ हेशिष्य याप्रकारकाप्रश्न जभी उद्दालकनेकऱ्या ॥ तभी सोयाज्ञवल्क्यमुनि उद्दालककेप्रति कहताभया ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हे उद्दालक ॥ पूर्व अग्निदेवताने जोतुम्हारेप्रति सूत्रका तथाअंतर्यामीका स्वरूपकह्याहै ॥ तासूत्रकूं तथाअंतर्यामी कूं हम भलीप्रकारजाणते हैं ॥हे शिष्य॥ याप्रकारकावचन जभी याज्ञवल्क्यमुनिने उद्दालककेप्रति कह्या॥तभी सो उद्दालक क्रोधवान् होइके याज्ञवल्क्यकेप्रति कहताभया ॥ उद्दालकउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य॥जैसे अज्ञानीपामरपुरुष हमसर्वअर्थकूंजाणते हैं याप्रकारकेवचन उच्चारणकरैं हैं ॥ तैसे तूंभी हमसूत्रकूंजाणते हैं हम अंतर्यामीकूंजाणते हैं याप्रकारकावचनमात्र उच्चारणकरैं हैं॥परंतु सूत्रकेस्वरूपकूं तथा अंतर्यामीके स्वरूपकूं तूं कथनकरतानहीं ॥ यातैं यहजान्याजावै है ॥ तेरेकूं सूत्रका तथा अंतर्यामीका ज्ञाननहीं ॥ काहेतैं जिसपुरुषकूं जापदार्थकाज्ञानहोवै है ॥ सोपुरुष हमजाणतेहैं याप्रकारकेवचनमात्रका उच्चारणकरतानहीं ॥ किंतु तापदार्थकेस्वरूपका कथनकरताहै॥ यातैं हे याज्ञवल्क्य ॥ जोतूं सूत्रकेस्वरूपकूं तथाअंतर्यामीकेस्वरूपकूं जाणताहै ॥ तौहमारेप्रति कथनकरो ॥ और जोतूं सूत्रअं तर्यामीकेस्वरूपकूंनहींजाणता ॥ ता हम सूत्रअंतर्यामीकूंजाणते हैं या प्रकारकी व्यर्थगर्जना मतकरो ॥हेशिष्य॥ याप्रकारकाप्रश्न जभी ॥ २९

उद्दालकऋषिने याज्ञवल्क्यकेप्रतिकऱ्या ॥ तभी सोयाज्ञवल्क्यमुनि उद्दालककेप्रति कहताभया॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच॥हे उद्दालक॥ जोतुमने सर्वजगत्केबंधनकाकारण सूत्रपूछ्याथा सोसूत्र प्राणरूपवायुहै ॥ काहेतैं जैसे तंतु पटकूंधारणकरैं हैं ॥ तैसे यहप्राणरूपवायु इस लोककूं तथाअन्यलोककूं तथा सर्वभूतप्राणियोंकूं धारणकरै है ॥ याकारणतैंहीं मरणकालविषे जभी प्राणोंकालोकांतरविषे निर्गमन होवै है ॥ तभी हस्तपादादिकसंपूर्णअवयव शिथिलहोइजावैं हैं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे सूत्रकेनिर्गमनहुए मालाकेपुष्प शिथिलहोइजावैं हैं ॥ याप्रकारकी लोकप्रसिद्धयुक्तिकरिकैभी प्राणकूंही सूत्ररूपतासंभवै है ॥ यहाँ प्राणवायुशब्दकरिकै समष्टिव्यष्टिसूक्ष्मशरीरकाग्रहण करणा ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार जभी याज्ञवल्क्यमुनिने सूत्रकास्वरूपकह्या ॥ तभी सोउद्दालक याज्ञवल्क्यकेवचनकूं अंगीकारकरता भया ॥ और पुनःसोउद्दालक प्रश्नकरताभया ॥ उद्दालकउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ जोपूर्व अग्निदेवतानैं हमारेप्रति सूत्रकास्वरूप कह्याथा॥सोईही सूत्रकास्वरूप तुमने हमारेप्रतिकह्या॥यातैं सूत्रकेस्वरूपविषे हमपुनःप्रश्नकरतेनहीं॥परंतु अंतर्यामीकास्वरूप हमारेप्रति कथनकरो ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारजभी उद्दालकने अंतर्यामीकास्वरूप पूछा ॥ तभीसोयाज्ञवल्क्यमुनि उद्दालककेप्रति कहताभया ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेउद्दालक ॥ जोसर्वज्ञ परमात्मादेव पृथिवी जल अग्नि भुवलोक वायु स्वर्ग आदित्य दिशा चंद्रतारक आकाश अंधकार तेज या द्वादशअधिदैवोंविषे श्रुतिने कथनकऱ्याहै ॥ और जोपरमात्मादेव स्थावरजंगमरूप सर्वअधिभूतोंविषे श्रुतिनैं कथनक ऱ्याहै ॥ और जोसर्वज्ञपरमात्मादेव प्राण वाक् चक्षु श्रोत्र मन त्वक् बुद्धि उपस्थइंद्रिय याअष्टप्रकारकेअध्यात्मोंविषे श्रुतिने कथनकऱ्या है॥और जोपरमात्मादेव पृथिवीआदिक एकवीसस्थानोंविषे स्थितहुआभी तिनपृथ्वीआदिक स्थानोंतैं भिन्नहींरहैहै ॥ जैसे गृहवालापुरु ष आपणेगृहतौंभिन्न होवै है॥ तैसे जोपरमात्मादेव पृथिवीआदिकोंतैं भिन्नहोवै है॥और जिनपृथिवीआदिकोंके अंतरस्थित परमात्मादेव है ॥ ते पृथिवीआदिकभी जिसपरमात्मादेवकूं नहींजाणिसकते॥और जोपरमात्मादेव पृथिवीआदिकोंकूं नियमकरिकै आपणेआपणेका र्यविषे प्रवृत्तकरणेवासतैं किसीदूसरेशरीरकूं ग्रहणनहींकरता किंतु जैसे अस्मदादिकजीवोंका शुक्रशोणितकाविकाररूप यहशरीर

है ॥ तैसे जिसपरमात्मादेवके पृथिवीआदिकहीशरीरहै ॥ और जैसे राजा आपणेभृत्योंकूं नानाप्रकारकेव्यापारोंविषे नियमकरिकै प्रवृत्तकरैहै ॥ तैसे जोपरमात्मादेव पृथिवीआदिकोंकेअभिमानी चेतनरूपलिंगशरीरोंकूं आपणेआपणेव्यापारविषे नियमकरिकै प्रवृत्तकरेहै ॥ सोमायाका अधिपतिपरमात्मादेवही अंतर्यामीहै॥ यातैं हेउद्दालक ॥ जोअंतर्यामीकास्वरूप तुमनैं पूर्वपूछाथा॥ सोअंतर्यामीपरमात्मादेव तुम्हारा तथाहमारा तथासर्वजीवोंका आत्मारूपहै ॥ कैसाहैसोअंतर्यामी ॥ जन्म मरण क्षुधा तृषा शोक मोह यापट ऊर्मियोंतैं रहितहै ॥हेशिष्य॥याप्रकार याज्ञवल्क्यमुनि उद्दालककेप्रति पृथिवीआदिकोंविषे एकवीसवारअंतर्यामीकेस्वरूपका उपदेशकरताभया॥ तात्पर्ययह ॥ जोपृथिवीविषेस्थितहै और पृथिवीतैंभिन्नहै ॥ और पृथिवीजिसकूंजाणतीनहीं॥ और पृथिवीजिसकाशरीरहै ॥ और जोपृथिवीकूंआपणेकार्यविषेप्रवृत्तकरै है ॥ सोपरमात्मादेव हेउद्दालक तेराअंतर्यामीअमृतहै ॥ इसप्रकारजलादिकोंविषेभीजानिलेणा याप्रकार पृथिवीआदिकोंविषे एकवीसवार अंतर्यामीकास्वरूपकाहिकारिकै सोधर्मात्मायाज्ञवल्क्यमुनि नेतिनेति याश्रुतिकूंअंगीकारकारिकै सर्वधर्मोकेनिषेधकरणेहारे जेअदृष्टत्वादिकआत्माकेधर्महैं तिनोंकूं कथनकरताभया ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेउद्दालक यहअंतर्यामीपरमात्मादेव ज्ञानवान्पुरुषकेनेत्रोंकारिकैभी देख्याजावैनहीं ॥ तथा श्रवणोंकारिकै यहअंतर्यामीदेव सुन्याजावैनहीं ॥ और मनकारिकै चिंतनकऱ्याजावैनहीं॥और शुद्धबुद्धिकरिकैभी निश्चयकऱ्याजावैनहीं॥ याप्रकार अन्यकिसीइंद्रियकरिकैभी यहअंतर्यामीपरमात्मादेव जान्याजावैनहीं॥ यातैं यहपरमात्मादेव अदृष्टत्वअश्रुतत्वादिकधर्मोंवालाहै॥ और यहअंतर्यामीआत्मा दृष्टि श्रुति मति विज्ञाति याप्रकारकेबुद्धिवृत्तियोंकूं प्रकाशकरै है याकारणतैं अंतर्यामीआत्माकूं द्रष्टा श्रोता मंता विज्ञाता इत्यादिकनामोंकरिकै श्रुति कथनकरै है ॥ और हेउद्दालक ॥ नेत्रादिकइंद्रियोंके तथाबुद्धिआदिकोंके जितनेकबाह्य अंतर व्यापारहैं ॥ तिनसंपूर्णव्यापारोंकूं यह अंतर्यामीआत्मा जाणताहै ॥ परंतु नेत्रादिकइंद्रिय ताअंतर्यामीपरमात्माकूं जाणिसकतेनहीं॥ यातैं अंतर्यामीआत्मातैंभिन्न कोईपदार्थ द्रष्टा श्रोता मंता विज्ञाता रूपनहीं॥ किंतु अंतर्यामीआत्माहीं द्रष्टा श्रोता मंता विज्ञातारूपहै ॥ यातैं हेउद्दालक यहअंतर्यामीपरमात्मादेवही तुमाराआत्माहै ॥ अंतर्यामी

तैंभिन्न तुम्हाराआत्मानहीं ॥ काहेतैं जोपदार्थ चैतन्यरूपपरमात्मातैंभिन्नहोवै है ॥ सोपदार्थ जडहोवै है ॥ और जोपदार्थ जडहोवै है ॥ सोपदार्थ घटादिकोंकीन्याईं उत्पत्तिनाशवान्होवै है ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकाउत्तर जभीयाज्ञवल्क्यमुनिने उद्दालकऋषिकेप्रति कथनकऱ्या ॥ तभी सोउद्दालकऋषि पुनःप्रश्नकरणेतैं उपरामहोताभया ॥ तिसतैंअनंतर वचक्नुकूंऋषिकीपुत्री गार्गीनामास्त्री सर्वब्राह्मणोंकेप्रति याप्रकारकावचन कहतीभई ॥ हेब्राह्मणो ॥ तुमसंपूर्ण हमारावचन श्रवणकरो ॥ इस याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति मैं दोप्रश्नकरतीहूं॥ जोयहब्रह्मवेत्तायाज्ञवल्क्यमुनि तिनदोनोंप्रश्नोंकाउत्तर हमारेप्रति कहैगा ॥ तौ तुमसंपूर्णब्राह्मणोंविषे कोईभीब्राह्मण याज्ञवल्क्यकूंजीतसकैगानहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे अनेकखद्योतजंतुवोंविषे कोईभीखद्योत सूर्यकूंजीतसकैनहीं ॥ तैसे कोईभीब्राह्मण याज्ञवल्क्यकूं जीतसकैगानहीं ॥ यातैं तुमसंपूर्णब्राह्मण हमारेकूं प्रश्नकरणेकीआज्ञादेवो ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ ब्राह्मणोंकीआज्ञातैंविनाहीं गार्गी याज्ञवल्क्यकेप्रति किसवासतै प्रश्न नहींकरतीभई ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकाविचार आपणेमनविषेकरिकै सोगार्गी ब्राह्मणोंतैं आज्ञालेतीभई ॥ सोविचारयहहै ॥ जोकदाचित् किसीब्राह्मणने आपणेमनविषे प्रश्नकरणेकाआरंभकऱ्याहोवै ॥ और मध्यविषे मैं स्त्रीकेप्रश्नकूंश्रवणकरिकै सोब्राह्मण क्रोधवान्होइकै मेरेकूंशापदेवेगा ॥ यातैं सर्वब्राह्मणोंकीआज्ञालेकै मैं प्रश्नकरों ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै सोबुद्धिमतीगार्गी ब्राह्मणोंतैं आज्ञालेतीभई ॥ तिसतैंअनंतर ते सर्वब्राह्मण गार्गीकूं प्रश्नकरणेकीआज्ञादेतेभये॥ और तिनब्राह्मणोंकीआज्ञाकूंपाइकै सोगार्गी याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति याप्रकारकावचन कहतीभई ॥ गार्गीउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ यालोकविषे जैसे तूं प्रसिद्धहै ॥ तैसे मैंगार्गीभी प्रसिद्धहूं ॥ और जैसे तूं अधिकबुद्धिमान्है ॥ तैसे मैंगार्गीभी अधिकबुद्धिमतीहूं॥काहेतैं नीतिशास्त्रविषे पुरुषोंकीअपेक्षाकरिकै स्त्रियोंकीबुद्धि तथाअविवेक तथाधैर्य तथाकाम तथाक्रोध चारिगुणअधिक कह्याहै ॥ तिनसर्वस्त्रियोंविषे सरस्वतीकेसमान मैं तीक्ष्णबुद्धिवालीहूं ॥ शंका ॥ हेगार्गी तेरी कौनऐसीबुद्धिहै॥ जिसबुद्धिकरिकै तूं सर्वतैंअधिक आपणेकूंमानेहै॥समाधान॥हेयाज्ञवल्क्य॥ सर्वजगत्विषे आत्मबुद्धिही हमारेअधिकताकाकारणहै ॥ याकारणतैं मैं सर्वजगत्कूं पुरुषभावतैंरहितमानतीहूं ॥ एकआपणेकूंहीं पुरुष

मानतीहूं ॥ काहेतैं जगत्विषे जितनेकी स्त्री पुरुष नपुंसकहैं ॥ तिनसंपूर्णोंकूं मैं आत्मरूपकरिकैदेखतीहूं ॥ यातैंयहसिद्धभया ॥जिसकूं सर्वत्रव्यापकआत्माकाज्ञानहै सोईही पुरुषहै ॥ और जिसकूं व्यापकअद्वितीयआत्माकाज्ञाननहींभया ॥ ऐसेअज्ञानीजीव नपुंसकहैं अथ वास्त्रियां हैं ॥ अब अज्ञानीजीवोंविषे नपुंसकपणादिखावैहैं ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ शक्तिहीनकूं लोकविषे नपुंसककहैहैं॥याप्रकारका नपुंसक कालक्षण अज्ञानीजीवोंविषेहीघटेहै ॥काहेतैं यहअज्ञानीजीव अत्यंतसमीप हृदयदेशविषेस्थित जोआनंदस्वरूपस्वप्रकाशआत्माहै ताके जानणेविषेभी समर्थहोते नहीं ॥ यातैं यहसंपूर्णअज्ञानीजीव नपुंसकहैं ॥ अब अज्ञानीजीवोंविषे स्त्रीपणा दिखावैं हैं॥हेयाज्ञवल्क्य॥उच्च स्तनोंवालीमैंगार्गी स्त्रीनहींहूं ॥ किंतु जिनपुरुषोंकूं आनंदस्वरूपअद्वितीयआत्माकाज्ञाननहींभया ॥ तेअज्ञानीपुरुषहीं स्त्रीहैं ॥काहेतैं जैसे लोकप्रसिद्धस्त्रियोंका आपणेतैंभिन्नपतिहोवैहै ॥ और तापतिकेसर्वदा स्त्री अधीनरहै है ॥ कदाचित्भी स्त्री स्वतंत्रहोवैनहीं ॥ तैसे अज्ञानीजीवोंकेभी आपणेतैंभिन्नपतिहैं ॥ सर्वदा अज्ञानीजीवरूपीस्त्री तिनपतियोंके अधीनरहैं हैं॥यातैं अज्ञानीजीवही स्त्रीहैं॥और हेया ज्ञवल्क्य ॥ तिनस्त्रियोंविषेभी यहअज्ञानीजीव वारांगनास्त्रीकेसमानहै ॥ काहेतैं जैसे वारांगनास्त्रीकूं बहुतपुरुषभोगेहैं ॥ तैसे याअज्ञानी जीवरूपीस्त्रीकूंभी काम क्रोध लोभ मोहादिक अनेकपति भोगैं हैं ॥यातैं यहसंपूर्णअज्ञानीजीव वारांगनास्त्रीकेसमानहैं ॥ और मेरेविषे काम क्रोधादिकहैंनहीं ॥ यातैं मैंहीं पुरुषहूं ॥ और हेयाज्ञवल्क्य ॥ जैसे लोकप्रसिद्धस्त्री पुरुषकेसंबंधतैं गर्भकूंधारणकरै है ॥ तैसे यह अज्ञानीजीवभी कालरूपीपुरुषकेसंबंधतैं सप्तमधातुवीर्यरूपगर्भकूंधारणकरैं हैं॥ याकारणतैंभी यहअज्ञानीजीवही स्त्रीहैं ॥ अब कामादिक विकारोंकाअभाव आपणेविषेदिखावैहै ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ मैंगार्गी वरयौवनअवस्थाविषेस्थितहूं ॥ तथा सर्वयुवानपुरुषोंकेमध्यविषेस्थित हूं ॥ तथापि मैं किंचित्मात्रभी कामादिकविकारोंकूं नहींप्राप्तहोती ॥ और हेयाज्ञवल्क्य ॥ जैसे एकांतदेशविषे स्त्री नग्नहोवै है ॥ तैसे सभाकेमध्यविषे मैंनग्नस्थितहूं ॥ और यहसंपूर्णब्राह्मण कामादिकविकारोंके भयकरिकै युक्तहैं ॥ यातैं मेरीतरफ देखतेभीनहीं ॥ और मेरादेहअभिमान निवृत्तभयाहै ॥ यातैं यासंपूर्णब्राह्मणोंकूं मैं नेत्रोंकरिकै देखतीहूं ॥ तथा आपणेहस्तोंकरिकै स्पर्शकरतीहूं ॥

तथापि हमारेविषे किंचित्मात्रभी कामादिकविकार नहींहोते ॥ यातैं मैं स्त्रीनहीं ॥ किंतु अज्ञानीजीवही स्त्री हैं ॥ शंका ॥ हेगार्गी शास्त्रदृष्टिकरिकै यद्यपि तेरेविषेस्त्रीपणानहीं है ॥ तथापि लोकदृष्टिकरिकै तेरेविषे स्त्रीपणा होवैगा ॥ समाधान ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ लोक दृष्टिकरिकैभी स्त्रीशब्दकाअर्थ जिसविषेघटे है ॥ सोईही स्त्री है ॥ और मेरेविषेस्त्रीशब्दकाअर्थ घटतानहीं ॥ यातैं मैं किसप्रकार स्त्रीहो वोंगी किंतु मैंस्त्रीनहीं ॥ अब व्याकरणकीरीतिसे स्त्रीशब्दकेअर्थकूं दिखावै हैं ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ याप्रकारकेशब्दोंकासमूह जिसप्राणी विषेहोवै ॥ ताप्राणीकूं बुद्धिमान्पुरुष स्त्रीकहै हैं ॥ तेशब्द यह हैं ॥ मैं समीचीन बधूहूं ॥ और मैं योवनअवस्थाकरिकैयुक्तहूं ॥ और मैं सुंदरस्तनोंवालीहूं ॥ औरयालोकविषे मेरे समान कोईस्त्री सुंदरनहीं ॥ और यहपतिमेरा है और यहमेरेपुत्र हैं ॥ और यह मेरी पुत्रियाँ हैं ॥ और यहधन तथाअन्न मेरेगृहविषे है ॥ और मैं वंध्याहूं ॥ और मैं बहुतकुटंबवालीहूं इसतैंआदिलेके अहंममअभिमानक रिकै उत्पन्नभयेजेनानाप्रकारकेशब्द ॥ तिनशब्दोंकासमूह जिसजिसअज्ञानीजीवविषे वर्तै है ते अज्ञानीजीवही यालोकविषे स्त्रियां हैं और हेयाज्ञवल्क्य ॥ जेप्राणी आनंदस्वरूपआत्माके ज्ञानकरिकैपूर्ण है॥तिनप्राणियोंकूंश्रुतिपुरुषकहै हैं॥तेआत्मज्ञानकरिकैयुक्त प्राणी शरीरकरिकैस्त्रीहोवैं ॥ अथवा पुरुषहोवैं॥अथवा नपुंसकहोवैं ॥ याकेविषे किंचित्मात्रभीज्ञानीकीहानिनहीं ॥ सर्वथा आत्मज्ञानवानहीं पुरुष हैं॥और ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ जैसेएकहीनट आपणीमायाकरिकै स्त्रियोंकूंमोहनकरणेहारा सुंदरपुरुषरूपकूं धारणकरै है॥और क्षणमा त्रविषे सोनट पुरुषकेधैर्यकूंनाशकरणेहारी सुंदरस्त्रीकेरूपकूं धारणकरै है ॥ और क्षणमात्रविषे सोनट नपुंसककेरूपकूंधारणकरै है ॥ परंतु तास्त्रीआदिककल्पितरूपोंकरिकै तानटका पूर्वला वास्तवस्वरूप अन्यथाभावकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे एकहीयहआनंदस्वरूपआत्मा आप णीमायाकरिकै कभी पुरुषशरीरकूंग्रहणकरै है ॥ और कभी स्त्रीशरीरकूंग्रहणकरै है॥ और कभीनपुंसकशरीरकूंग्रहणकरै है ॥ परंतु तिन कल्पितशरीररूपउपाधियोंकरिकै आत्माकावास्तवएकत्वरूप निवृत्तहोवैनहीं॥और हेयाज्ञवल्क्य ॥ जैसे एकहीपुरुष स्वप्नविषे निद्रादोष तैं पुरुष स्त्री हस्ति अश्व इत्यादिकअनेकरूपोंकूंप्राप्तहोवै है॥परंतु तिनकल्पितरूपोंकरिकै स्वप्नद्रष्टापुरुषकावास्तवस्वरूपनिवृत्तहोवैनहीं ॥

तैसे एकहीपरमात्मादेव आपणीमायाकरिकै स्त्रीपुरुष नपुंसक हस्ति अश्व इत्यादिक अनेकरूपोंकूंधारणकरै है ॥ परंतु तिनकल्पितरूपों करिकै आत्माकावास्तवरूप निवृत्तहोवैनहीं॥यातैं हेयाज्ञवल्क्य ॥ आत्मज्ञानरूपीपुरुषभावकरिकै युक्त तथासर्वज्ञताकरिकैयुक्त मैंगार्गी वाक्रूपीधनुषविषे प्रश्नरूपीदोबाणोंकूंधारणकरिकै तुम्हारेहननकरणेवासतैं आईहूं॥यातैं हेयाज्ञवल्क्य ॥ वादरूपयुद्धविषे जोतुम्हारा सामर्थ्यहोवै ॥ तौ धैर्यकूंधारणकरिकै हमारेसाथ वादरूपयुद्ध करो ॥ और जोतुम्हारेकूंवादरूपयुद्धकरणेकासामर्थ्य नहींहोवै ॥ तौ हमारेआगेनम्रताभावकरो ॥ यादोनों प्रकारोंविषे जैसीतुम्हारीरुचिहोवै सोकरो ॥ और हे याज्ञवल्क्य ॥ जैसे काशीराजदिवो दासकापुत्र प्रतर्दन नामाराजा एकलाही धनुष बाणकूंलेके इंद्रकेसाथ युद्धकरणेवासतैं स्वर्गविषेप्राप्तहोताभया ॥ और जैसे यहजनकराजा सुवर्णमणिरत्नोंकरिकैजडितधनुषकूंग्रहणकरिकै तथा लोहमय तीक्ष्णबाणोंकूं हस्तविषे ग्रहणकरिकै शत्रुवोंकेपीडाकरणेवासतैं युद्धविषे तिनशत्रुवोंकेसनमुखास्थितहोवै है ॥ तैसे धैर्यकूंधारणकरिकै मैंगार्गीभी प्रश्नरूपीबाणोंकरिकै तुम्हारेहननकरणेवासतै यहाँस्थितहूं॥यातैं हेयाज्ञवल्क्य ॥ तिनप्रश्नोंकेउत्तरकूं जोतूंजाणता है॥तौ हमारेप्रतिकथनकरो ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकेवचन जभी गार्गीने याज्ञवल्क्यके प्रतिकहे॥तभी सोयाज्ञवल्क्यमुनि गार्गीकेप्रति ॥ कहताभया ॥ हेगार्गी ॥ जोतुम्हारेकूंप्रश्नकरणा है सोनिःशंकहोइकैकरो ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार याज्ञवल्क्यमुनिकेवचनकूंश्रवणकरिकै सोगार्गीप्रश्नकरतीभई ॥ गार्गीउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ जोसूत्रआत्माका स्वरूप शास्त्रवेत्तापुरुषोंने ब्रह्मांडकेऊपरले कपालतैं ऊपरस्थित कथन कऱ्या है ॥ और जिस सूत्र आत्माका स्वरूप शास्त्रवेत्तापुरुषोंनैं ब्रह्मांडकेनी चलेकपालतैंभी नीचे स्थित कथन कऱ्या है ॥ और जिससूत्र आत्माका स्वरूप दोनोंब्रह्मांडकपालोंकेमध्यविषे कथनकऱ्या है ॥ और जिससूत्र आत्माकास्वरूप शास्त्रवेत्ता पुरुषोंने भूत भविष्यत् वर्त्तमान स्वरूपसकल प्रपंचरूप कथन कऱ्या है ॥ सोसूत्रआत्मा किसकारणविषे ओतप्रोतहुआवर्तै है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ यह प्रश्नतौ पूर्वही गार्गीनेकऱ्याथा ॥ तथा याज्ञवल्क्य मुनिने याप्रश्नका उत्तरभी पूर्वही कह्याथा ॥ यातैं गार्गीने पुनः यह प्रश्न किसवासतैंकऱ्या ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ पूर्व अनुमानरूपतर्ककूं ग्रहणक

रिकै गार्गीने यहप्रश्नकऱ्याथा ॥ और अभी शास्त्रकीरीतिकूं ग्रहणकरिकै गार्गीने प्रश्नकऱ्याहै ॥ याप्रकारकी विलक्षणता बोधनकरणे वासतैंही पूर्वउत्तरप्रश्नविषे शब्दोंकाभेद गार्गीने राख्याहै ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकाप्रश्न जभीगार्गीने कऱ्या तभी सोयाज्ञ वल्क्यमुनि गार्गीकेप्रति कहताभया ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेगार्गी ॥ जो तुमने सूत्रआत्मारूपकार्यका कथनकऱ्याहै ॥ सोसूत्रआत्मा रूपकार्य आवर्णविक्षेपशक्तिवाले अव्याकृतरूपआकाशविषे ओतप्रोतहोइकैरहैहै ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकाउत्तर जभी याज्ञवल्क्य मुनिने गार्गीकेप्रतिकह्या ॥ तभी सोगार्गी याज्ञवल्क्यकूंनमस्कारकरिकै कहतीभई ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ प्रथमप्रश्नकाउत्तर तुमने हमारेप्रतिकह्या ॥ अभी दूसराप्रश्न मैं तुम्हारेप्रति करतीहूं तुम सावधानहोइकै ताप्रश्नकाउत्तरकहो ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकावचनजभी गार्गीनेकह्या ॥ तभी सोयाज्ञवल्क्य कहताभया ॥ हेगार्गी ॥ निःशंकहोइकै तुम दूसराप्रश्नकरो ॥ हेशिष्य याप्रकार याज्ञवल्क्यके वचनकूं श्रवणकरिकै सोगार्गी जोप्रथम प्रश्नविषे सूत्रआत्माका आधारपूछाथा ॥ सोईही पुनःदूसरीवार पूछतीभई ॥ और याज्ञवल्क्य नेभी जोप्रथमप्रश्नकेउत्तरविषे सूत्रआत्माकाअव्याकृतरूपआकाश आधारकह्याथा ॥ सोईही द्वितीयप्रश्नकेउत्तरविषे कहताभया॥शंका॥ हेभगवन् प्रथमप्रश्नकूं पुनः दूसरीवारकरणेविषे गार्गीका क्याअभिप्राय है ॥समाधान॥ हेशिष्य ॥ जिसअभिप्रायकरिकै गार्गीने प्रथमप्र श्नकूं दूसरीवारकह्याहै ॥ ताअभिप्रायकूं तुम श्रवणकरो ॥ जैसे गृह केवलस्तंभोंकेआश्रितरहैनहीं ॥ किंतुस्तंभोंके तथा भित्तियोंके आश्रितरहैहै ॥ तैसे सूत्रआत्मारूपकार्यभी अव्याकृतरूपआकाशविषे तथाअन्यकिसीकारणविषे रहताहोवैगा ॥ याप्रकारकेअभिप्राय करिकै गार्गी प्रथमप्रश्नकूं पुनःदूसरीवार करतीभई ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ सोयाज्ञवल्क्यमुनि प्रथमप्रश्नकेउत्तरकूं पुनःदूसरीवार किस वासतैं कहताभया ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ जिसअभिप्रायकरिकै याज्ञवल्क्यमुनिनैं प्रथमप्रश्नकेउत्तरकूं दूसरीवार कथनकऱ्याहै ॥ तिसअभिप्रायकूं तुम श्रवणकरो ॥ सूत्रआत्मारूपकार्य अव्याकृतरूपआकाशतैंविना अन्यकिसीकेआश्रितरहतानहीं ॥ किंतु जैसे मेघ केवलभूताकाशके आश्रितरहैं हैं ॥ तैसे यहसूत्रआत्मारूपकार्यभी केवलअव्याकृतरूपआकाशके आश्रितहीरहै है ॥ याअभिप्राय

कारिकै याज्ञवल्क्यमुनिने प्रथमउत्तरकूंहीं पुनःदूसरीवार कथनकऱ्याहै ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकाउत्तरजभी याज्ञवक्ल्यमुनिने गार्गीकेप्र
तिकह्या ॥ तभी सोगार्गी पुनःयाज्ञल्क्यमुनिसे पूछती भई ॥ गार्गीउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य सोअव्याकृतरूपआकाश किसविषे ओतप्रो
तहोइकेरहैहै ॥ याप्रश्नकरणेविषे गार्गीकायहअभिप्रायहै ॥ अव्याकृतरूपआकाशकाअधिष्ठान जोआत्माहै ॥ सोमनवाणीकाअविषयहै॥
यातैं ताआत्माकूं जोयाज्ञवल्क्य नहींकथनकरैगा ॥ तौअप्रतिभारूप निग्रहस्थानकूं प्राप्तहोवैगा ॥ औरजोयहयाज्ञवल्क्यमनवाणीकेअवि
षय आत्माकूंकथनकरैगा ॥ तौ विप्रतिपत्तिरूप निग्रहस्थानकूंप्राप्तहोवैगा ॥ दोनोंप्रकारतैं याज्ञवल्क्यका पराजयहीहोवैगा ॥ तहाँ
कथनकरणेयोग्यअर्थकेअज्ञानकूं अप्रतिभाकहै हैं ॥ और विरुद्धकथनकूं विप्रतिपत्तिकहै है ॥ और पराजयकेकारणकूं निग्रह
स्थानकहै हैं ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकाप्रश्न जभी गार्गीनेकऱ्या ॥ तभी सोयाज्ञवल्क्यमुनि गार्गीकेप्रति कहताभया ॥ याज्ञवल्क्यउ
वाच॥हेगार्गी सर्वलोकोंके बुद्धिआदिकोंकासाक्षीतथानित्यहीअपरोक्ष जोआत्मारूपअक्षरहै॥ताअक्षरविषे यहअव्याकृतआकाश ओतप्रो
तहोइकैरहैहै ॥ यहाँ अव्याकृतआकाशशब्दकरिकै मूलाज्ञानका ग्रहणकरणा ॥ सोमूलाज्ञान जीवके तथाईश्वरके आश्रित रहता
नहीं ॥ किंतु जीवईश्वर विभागतैंरहित जोशुद्धचैतन्य है ॥ ताकेआश्रित मूलाज्ञानरहैहै और सोशुद्धचैतन्यरूपआत्मा सर्वत्रव्यापक
है ॥ तथा उत्पत्तिनाशतैंरहितहै ॥ यातैं शुद्धआत्माहीअक्षरहै ॥ ताआत्मारूपअक्षरकेआश्रित अव्याकृतआकाशरहैहै अब पूर्वउक्तअप्र
तिभा तथाविप्रतिपत्ति रूपनिग्रहस्थानकीनिवृत्तिवासतैं अनात्मपदार्थोंकेनिषेधद्वारा अक्षरआत्माकेस्वरूपकूं निरूपणकरैं हैं॥ हेगार्गी॥
जैसे घट बिल्वफलकीअपेक्षाकरिकै स्थूलहोवैहै ॥ और पर्वतकीअपेक्षाकरिकै सोघट सूक्ष्महोवै है ॥ याप्रकारजितनोंकि स्थूलसूक्ष्मपदा
र्थहैं ॥ तिनसंपूर्णोंतैं यहअक्षरआत्मा विलक्षणहै और तृणकीन्याईं जितनेकह्रस्वपदार्थ हैं॥ तथा तालवृक्षकीन्याईं जितनेकिदीर्घपदा
र्थहैं॥तिनसंपूर्णह्रस्वदीर्घपदार्थोंतैं यहअक्षरआत्मा विलक्षणहै ॥और अग्निकीन्याईं जितनेक रक्तवर्णवालेपदार्थ हैं ॥ तिनोंतैंभी यहअक्षर
आत्मा विलक्षणहै ॥ औरजलकीन्याईं जितनेकस्नेहवालेपदार्थ हैं तिनोंतैंभी यहअक्षरआत्मा विलक्षण है ॥ और छायासदृशभूमिकी

न्याईं जितनेककृष्णवर्णवालेपदार्थ हैं ॥ तिनोंतैंभी यह अक्षरआत्मा विलक्षण है॥ और तमालवृक्षकीन्याईं श्याम तथा अंधकारकीन्याईं
नेत्रोंकूंनिरोधकरणेहारे जितनेकपदार्थ हैं ॥ तिनोंतैंभी यहअक्षरआत्मा विलक्षणहै॥और यहअक्षरआत्मा गतिसेरहितहै॥यातैं गतिमान्
वायुतैंभी विलक्षण है ॥ और यहअक्षरआत्मा छिद्रतैंरहितहै ॥ यातैं छिद्रवान्आकाशतैंभी विलक्षणहै और यहअक्षरआत्मा अमूर्त है॥
तथा संगतैंरहितहै ॥ यातैं मूर्तसंगवान्तेजतैंभी विलक्षणहै ॥ और यहअक्षरआत्मा मधुरादिकरसोंतैंरहितहै॥यातैं मधुररसवालेजलतैंभी
विलक्षण है ॥ और यहअक्षरआत्मा गंधतैंरहितहै ॥ यातैं गंधवालीपृथ्वीतैंभी विलक्षण है ॥ और हेगार्गी॥ याअक्षरआत्माका पंचज्ञानइं
द्रिय तथा पंचकर्मइंद्रियभी स्वरूपनहीं ॥ और याअक्षरआत्माका मन बुद्धि चित्त अहंकार यहचतुष्टयअंतःकरणभी स्वरूपनहीं ॥ और
याअक्षरआत्माका प्राण अपान समान व्यान उदान यहपंचप्रकारकाप्राणभी स्वरूपनहीं ॥ और मोक्षपर्यंत है स्थिति जिसकी ऐसाजो
दोनोंलोकोंविषेगमनकरणेहारा सूक्ष्म शरीर है ॥ सोभी या अक्षर आत्माका स्वरूप नहीं ॥ और अद्वितीय आत्माके भेद करणे हारा
जोअविद्यारूप कारणशरीर है ॥ सोभी अक्षर आत्माका स्वरूप नहीं ॥ और हे गार्गी ॥ जो यह अक्षर आत्मा केवलअंतरही होवै ॥
तौ बाह्यकेपदार्थोंकूं कौनप्रकाशकरैगा ॥ और जोयहअक्षरआत्मा केवलबाह्यहीहोवै॥ तौ अंतरकेपदार्थोंकूंकौनप्रकाशकरैगा आत्मातैं
भिन्न सर्वपदार्थ जडरूपहैं॥यातैं तिनोंविषे प्रकाशतासंभवैनहीं॥और यहअक्षरआत्मा आपणेस्वप्रकाशरूपकैकरिकै अंतरबाह्य सर्वपदार्थोंकूं
प्रकाशकरैहै॥ यातैंसर्वकासाक्षी अक्षरआत्मा अंतरबाह्यपणतैंरहितहै॥और यहअक्षरआत्मा निर्विकारअसंगहै यातैं भोक्तापणेतैं तथाभो
ग्यपणेतैंरहितहै॥ और हेगार्गी॥जैसे आकाशविषे मेघोंकासमूह तथाअंधकार प्रतीतहोवै है॥ और जैसे रज्जुविषे सर्पदंडादिक प्रतीतहो
वैं हैं॥तैसेयाअक्षरआत्माविषे यहसंपूर्णजगत् प्रतीतहोवै है तात्पर्ययह॥जैसे मेघादिकोंकरिकै आकाशकाभेद होवैनहीं॥ और जैसे कल्पित
सर्पादिकोंकरिकै रज्जुकाभेद होवैनहीं तैसेकल्पितप्रपंचकरिकै अधिष्ठानरूपअक्षरआत्माका भेद होवैनहीं॥ यातैं अक्षरआत्मासर्वभेदतैंर
हितहै॥हेशिष्य॥इतनेग्रंथकरिकै याज्ञवल्क्यमुनिने उपाधितैंरहित अक्षरआत्माकास्वरूप कथनकऱ्या॥ ताअक्षरआत्माकास्वरूप॥जिनपु

रुषोंकेचित्तविषे नहीं आवता ॥ तिनपुरुषोंके अनुग्रहवासतैं मायाविशिष्टअंतर्यामीकेजनावणेहारेलिंगोंकूं दिखावै हैं ॥ अप्रत्यक्षपदार्थकूं जोज्ञ गइदेवै ताकूं लिंगकहैं हैं ॥ जैसे पर्वतविषे अप्रत्यक्षअग्निकूं धूमरूपीलिंग जनावै है॥ हेगार्गी॥जैसे भृत्य नियमकरिकै राजाकीआज्ञा विषेवर्तै है॥तैसे यह सूर्यचंद्रमाभी नियमकरिकै जगत्केव्यवहारकूंचलावै हैं॥यातैं यहजान्याजावैहै ॥ कोईसर्वज्ञपरमात्मादेव सूर्यचंद्रमाका अधिपतिहै ॥ जिसपरमात्माकीआज्ञाकरिकै यहसूर्यचंद्रमा नियमसेंवर्तै हैं ॥ यातैं सूर्यचंद्रमाकी नियमसेंप्रवृत्ति अंतर्यामीकेजनावणेहारा लिंगहै॥औरहेगार्गी॥जोजोपदार्थ गुरुत्वधर्मवालाहोवै है॥तिसका किसीआधारतैंविना नीचेपतनहोवै है॥जैसे गुरुत्वधर्मवालेवस्त्रादिक पुरुष रूपआधारतैंविना भूमिविषेपतनहोवैं हैं॥तैसे संपूर्णभूतप्राणियोंकेभारकूंधारणकरणेहारीपृथिवी तथास्वर्ग यहदोनोंभी गुरुत्वधर्मवालेवोहैं॥ परंतु तिनोंका नीचेपतननहोतानहीं ॥ यातैं यहजान्याजावै है॥कोईसर्वज्ञपरमात्मादेव पृथिवीके तथास्वर्गके धारण करणे हारा है ॥ यातैं गुरुत्वधर्मवालीपृथिवीकी तथास्वर्गकी स्थितिभी परमात्माकेजनावणेहारालिंग है ॥ और हे गार्गी ॥ जैसेराजाकरिकै प्रेरणाकरेहुएभृत्य नियमसे कार्यकरैं हैं ॥ तैसे निमेषतैंआदिलेके संवत्सरपर्यंत जितनाक मुहूर्त प्रहर दिन पक्ष मास ऋतु रूपकाल है ॥ सो काल नियम करिकै सर्वभूतप्राणियोंके हितकूं तथाअहितकूं करै है ॥ तथा सर्वपदार्थोंकेआयुष्कीगणतीकरै है ॥ यातैं यहजान्याजावै है॥कोईसर्वज्ञपर मात्मादेव कालकेप्रेरणाकरणेहाराहै ॥ यातैं नियमपूर्वक कालकीप्रवृत्तिभी परमात्माकेजनावणेहारालिंग है ॥ और हे गार्गी ॥ हिमालया दिकपर्वतोंतैं उत्पन्नभइयां जेनानाप्रकारकी गंगादिकनदियाँ ॥ तिन गंगादिकनदियोंका उत्पत्तिकालविषे जिस जिस पूर्वादिक दिशावों विषे प्रवाहभयाहै ॥ तिसीतिसी पूर्वादिकदिशावोंविषे अंतपर्यंत नियमसे प्रवाह चल्याजावै है ॥ कदाचित्भी तिनोंका अन्यथाभावहोता नहीं ॥ यातैं यहजान्याजावै है॥कोईसर्वज्ञपरमात्मादेव गंगादिकनदियोंकूं नियमसे चलावणे हारा है ॥ यातैं गंगादिक नदियोंका नियमसे प्रवाहभी अंतर्यामीपरमात्माकेजनावणेहारालिंग है ॥ और हेगार्गी ॥ शास्त्ररीतिसैं दानकरताजोधर्मात्मापुरुषहै॥तिसकी प्रामाणिकशिष्ट पुरुष स्तुतिकरैं हैं॥और ताधर्मात्मापुरुषकूं शिष्टपुरुष आश्रयणकरैं हैं ॥ और जोपुरुष प्रमादकरिकै द्यूतादिकव्यसनविषे द्रव्यका खरच करैहै

तिसप्रमादीपुरुषकी प्रामाणिकशिष्टपुरुष उपेक्षाकरैं हैं तथानिंदाकरैं हैं॥यातैं यहजान्याजावैहै॥कोई कर्मकेफलकाप्रदाता सर्वज्ञपरमात्मा देवहै॥जिसकेभयतैं प्रामाणिकशिष्टपुरुष धर्मात्मापुरुषकूं आश्रयणकरैं हैं॥तथा ताकीस्तुतिकरैं हैं॥और जोसर्वज्ञपरमात्माकूं न अंगीकार करिये ॥ तो जैसे प्रमादीपुरुषकी प्रामाणिकशिष्टपुरुष उपेक्षाकरैं हैं तथानिंदाकरैं हैं॥तैसे धर्मात्मा पुरुषकी प्रामाणिकशिष्टपुरुष उपेक्षा तथानिंदा किसवासतैंनहींकरते ॥ यातैं याप्रकारका प्रामाणिकशिष्टपुरुषोंकाव्यवहारभी सर्वज्ञपरमात्माकेजनावणेहारालिंगहै ॥ और हे गार्गी ॥ यज्ञकर्तापुरुषकूं देवता आश्रयणकरैं हैं ॥ और श्राद्धादिककर्मकर्तापुरुषकूं पितर आश्रयणकरैं हैं॥यातैं सर्वकार्यविषेसमर्थ देव तावोंका तथापितरोंका जोमनुष्यकेअधीनजीवनहै॥सोभी अंतर्यामीपरमात्माकेजनावणेहारा लिंगहै॥यातैं हेगार्गी॥ जिसअक्षरआत्माके आश्रित अव्याकृतआकाश हमने पूर्वकथनकऱ्याथा॥तिसीअक्षरआत्माकी आज्ञाविषे यहसंपूर्णजगत् वर्तताहै॥और हेगार्गी॥ याअक्षरआ त्माकूं नजाणिकरिकै जोपुरुष यज्ञ दान तप होम इत्यादिकअनेककर्मोंकूं बहुतकालपर्यंत करताहै॥ तिसअज्ञानीपुरुषकूं तेयज्ञादिककर्म नाशवान्फलकीप्राप्तिकरैं हैं ॥ तात्पर्ययह ॥ मेरेस्वरूपकेअज्ञानहुए संपूर्णयज्ञादिककर्म नाशवान्फलकूं उत्पन्नकरैं ॥ याप्रकारकानियम जिसपरमात्मा देवनैं कऱ्याहै ॥ ऐसे परमात्माविषे असंभावनाकरणी योग्यनहीं ॥ और हेगार्गी ॥ जैसे कूमिकरिकैयुक्तधानकूं दोखि करिके संपूर्णलोक ताश्वानकाशोककरैं हैंतैसे अधिकारी मनुष्यशरीरकूं पाइकै याअक्षरआत्माकूं नजाणिकरिकै जोपुरुष मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै। सोअज्ञानीपुरुषकृपणहै।तथासर्वलोकोंकेशोककाविषयहै।और हेगार्गी।।जोपुरुष याअक्षरआत्माकूंजाणिकरिकै याशरीरकापरित्यागकरै है ॥ सोविद्वान्पुरुष यालोकविषेकृतकृत्यहै॥और सोईहीपुरुष ब्रह्मवेत्ताब्राह्मणहै॥शिष्यउवाच॥ हेभगवन् ॥ याज्ञवल्क्यमुनिने गार्गीकेप्रति जैसे अक्षरआत्माकेज्ञानकाउपदेशकऱ्या॥तैसे अक्षरआत्माके ज्ञानकेसाधनोंकाउपदेश किसवासतैंनहींकऱ्या॥श्रीगुरुरुवाच॥हेशिष्य ॥गुरुमु खतैंवेदांतशास्त्रकाश्रवण तथामनन तथानिदिध्यासन यहतीनों अक्षरआत्माकेज्ञानकेसाधनहैं।तेश्रवणादिकसाधन पूर्वकहोलब्राह्मणकेप्रति याज्ञवल्क्यमुनिने कहेथे॥और गार्गीनेभी तिनसाधनोंका श्रवण कऱ्याथा ॥याअभिप्रायकूंमनविषेराखिकै याज्ञवल्क्यमुनिने पुनःगार्गीकेप्रति

श्रवणादिकसाधन नहींकहे ॥ अथवा ॥ याज्ञवल्क्यमुनिने ब्रह्मसाक्षात्काररूपफलवान्पुरुषकूं ब्राह्मणकह्या ॥ सो ब्रह्मसाक्षात्काररूपफल श्रवणादिकसाधनोंतैंविना उत्पन्नहोवैनहीं ॥ यातैं जैसेंकिसीवृद्धकुमारीकूंइंद्रनेकह्या ॥ हमारेसैं तूं वरमाँग ॥ आगेतैं सोवृद्धकुमारी यहवर माँगतीभई ॥ मेरेपुत्र कांस्यकेपात्रविषे क्षीरकूंभोजनकरैं ॥ याप्रकारकेवचनकरिकै सोवृद्धकुमारी पति पुत्र धन इत्यादिकसर्वपदार्थोंकूंले तीभई ॥ तैसे ब्रह्मसाक्षात्काररूपफलकेकथनकरणेकरिकै याज्ञवल्क्यमुनिने संपूर्णश्रवणादिकसाधन कथनकरे ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ मायाविशिष्टअंतर्यामीकास्वरूप याज्ञवल्क्यमुनिने पूर्वउद्दालककेप्रति कथनकरयाथा ॥ और गार्गीनेभी सोश्रवणकरयाथा ॥ और अभी विनाहींपूछेतैं याज्ञवल्क्यमुनिने गार्गीकेप्रति पुनःअंतर्यामीकास्वरूप किसवासतैंकह्या ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ जिसअभिप्रा यकरिकै याज्ञवल्क्यमुनिने पुनःअंतर्यामीकास्वरूप गार्गीकेप्रति कह्याहै ॥ ताअभिप्रायकूं तुम श्रवणकरो ॥ उद्दालकब्राह्मणकेप्रति द्वितीयप्रश्नकेविचारविषे जोअंतर्यामी कथनकऱ्याथा ॥ सोअंतर्यामी अक्षरआत्मातैंभिन्ननहीं ॥ किंतु सोअंतर्यामी अक्षरआत्मारूपहै ॥ तात्पर्ययह॥शुद्धआत्माकूं अक्षरकहैं हैं॥सोशुद्धआत्माहीं जभी मायारूपउपाधिकूंअंगीकारकरिकै जगत्के उत्पत्ति स्थिति लय नियमन प्रवेशइत्यादिककार्योंकूंकरै है।तभीताअक्षरआत्माकूं अंतर्यामीकहैं हैं॥यातैंअक्षरआत्मातैं अंतर्यामीभिन्ननहीं।याअर्थकेबोधनकरणेवासतै याज्ञवल्क्यमुनिने पुनःअंतर्यामीकेस्वरूपकूं कथनकऱ्याहै ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेगार्गी ॥ यहअक्षरआत्मा नेत्रादिकसर्वदृश्यप्रपंचका साक्षी है ॥ यातैं ताअक्षरआत्माकूं नेत्रादिकदृश्यप्रपंच जाणिसकैनहीं ॥ और जैसे भित्तितैं घट भिन्नहोवै है ॥ तैसे द्रष्टा श्रोता मंता विज्ञाता रूपजोयहजीवात्माहै ॥ सो ताअक्षरआत्मातैंभिन्ननहीं ॥ किंतु यहजीव अक्षरआत्मारूपहै ॥ यातैं हेगार्गी स्थूलसूक्ष्मप्रपंचरूप विक्षेपकाकारण तथा आत्माकूंआच्छादनकरणेहारा जो अव्याकृतआकाशहै ॥ सो अव्याकृतआकाश याअक्षरआत्माविषेहीरहै है ॥ हेशिष्य ॥ याज्ञवल्क्यरूपीमेघतैं उत्पन्नभयाजोवाक्यरूपीअमृत ॥ कैसाहैसोवाक्यरूपीअमृत ॥ श्रद्धावान्पुरुषोंके कर्णोंकेतापकूंहरणे हाराहै याकारणतैं अत्यंतदुर्लभहै ॥ ऐसेअमृतरूपीवचनकूंश्रवणकरिकै सोगार्गीअत्यंतआनंदकूंप्राप्तहोतीभई ॥ और कृपाकरिकैयुक्तहुई

सोगार्गी सर्वब्राह्मणोंकेप्रति याप्रकारकावचन कहतीभई ॥ गार्गीउवाच ॥ हेसर्वब्राह्मणो ॥ तुमसर्वब्राह्मणोंकीसभाकेमध्यविषे मैंगार्गी पक्ष पाततैंरहितहोइकै एकवचन कहतीहूं ॥ तावचनकूं तुम सर्वब्राह्मण सावधानहोइकेश्रवणकरो ॥ यालोकविषे यद्यपि हमने बहुतप्रकारके पुरुषदेखे हैं ॥ तथापि याज्ञवल्क्यकेसमान कोईपुरुष हमने नहींदेख्या ॥ अब आत्मज्ञानयुक्त याज्ञवल्क्यही पुरुषहै याअर्थकेबोधन करणेवासतै आत्मज्ञानतैंरहित अज्ञानीजीवोंकीनिंदाकूं दिखावैं हैं ॥ हेब्राह्मणो ॥ यालोकविषे हमने कोईपुरुष धवलगृहकेसमानदेखे हैं॥ तात्पर्ययह॥जैसे धवलगृह दूरसेरमणीकलागे है॥और भीतरजडताकरिकैयुक्तहै॥तैसे केईकपुरुष दूरसेतौ रमणीकलागते हैं॥और भीतरतमो गुणकरिकै जडतायुक्तहैं ॥ और हेब्राह्मणो ॥ यालोकविषे हमने केईकपुरुष भारवाहीवृषभकेसमानदेखेहैं॥तात्पर्ययह ॥ जैसे वृषभ आपणे प्रयोजनतैंविनाहीं भारकूंउठावै है॥तैसे कोईकपुरुष शास्त्रकूंपढिकरिकै अन्यलोकोंकेप्रतितौ शास्त्रकेअर्थकाउपदेशकरते हैं ॥परंतु आपणे मनविषेरंचकमात्रभी शास्त्रकेअर्थकूंनहींधारणकरते॥ यातैं व्यर्थहीं शास्त्ररूपीभारकूंउठावैहैं॥और हेब्राह्मणो॥यालोकविषेहमनेकेईकपुरुष शुकसारिकाकेसमानदेखेहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे शुकसारिकापक्षी सुंदरशब्दोंकाउच्चारणकरैं ॥ परंतु तिनशब्दोंकेअर्थकूंजाणतेनहीं ॥ तैसे कोईकपुरुष सुंदरशब्दोंकूंउच्चारणकरते हैं ॥ परंतु तिनशब्दोंकेअर्थकूंजाणतेनहीं और हेब्राह्मणो ॥ यालोकविषे हमने केईकपुरु ष विशालनेत्रोंवालेभी अंधपुरुषकेसमानदेखे हैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे अंधपुरुष अत्यंतसमीपवर्त्तिपदार्थोंकूंभी देखतानहीं ॥ तैसे केईक पुरुष अत्यंतसमीप हृदयदेशविषेवर्तमान आत्माकूंभीदेखतेनहीं॥और हेब्राह्मणो ॥ यालोकविषे हमने केईकपुरुष चित्रलिखित मूर्तिकेस मान देखेहैं ॥तात्पर्ययह ॥ जैसे चित्रलिखित मूर्ति देखणेविषे बहुतसुंदरलागे है ॥ परंतु किसीकार्यकरणेविषे सोमूर्ति समर्थहोवैनहीं ॥ तैसे केईकपुरुष देखणेविषेबहुतसुंदरलागते हैं॥परंतु किसीकार्यकरणेविषे समर्थहोवै नहीं॥ और हेब्राह्मणो॥यालोकविषे हमने केईकपुरुष कुपथ्यभोजनकेसमान देखेहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे कुपथ्यभोजन प्रथम आनंदकाहेतुहोवै है॥ और परिणामकालविषे दुःखकाकारणहोवै है ॥ तैसे केईकपुरुष सभाविषे लोकोंकेप्रति सत्यअर्थकाउपदेशकरिकै किंचित्मात्रप्रसन्नताकूंउत्पन्नकरैं हैं ॥और एकांतदेशविषे असत्य

अर्थकाउपदेशकरिकै दुःखकाकारणहोवै हैं॥ और हेब्राह्मणो॥ यालोकविषे हमने केईकपुरुष व्याघ्रकेसमानदेखेहैं॥तात्पर्ययह॥जैसे व्याघ्र मृगादिकपशुवोंकाहननकरैहै॥तैसे केईकपुरुष शरीर मनवाणी करिकै सर्वदा जीवोंकीहिंसाकरैहै॥औरहेब्राह्मणो यालोकविषे हमने केईक पुरुष मदिरापानकरिकै मत्तवानरकेसमानदेखेहैं॥तात्पर्ययह ॥ जैसे मदिरापानकरिकै मत्तहुआवानर अत्यंतचंचलहोवैहै॥तैसे केईकपुरुष अज्ञानरूपीमदिरापानकरिकै शास्त्रविरुद्ध नानाप्रकारकीचेष्टाकरैं हैं॥ और हेब्राह्मणो ॥ यालोकविषे हमनैं केईकपुरुष कामरूपीशत्रुके वशहुए देखे हैं ॥और केईकपुरुष हमने क्रोधरूपीशत्रुकेवशहुएदेखे हैं ॥ और केईकपुरुष हमने लोभमोहादिकशत्रुवोंकेवशहुएदेखे हैं ॥ और हेब्राह्मणो ॥ वेदोंकूं तथावेदकेअंगोंकूं जानणेहारेजेदेवतापुरुषहैं ॥ तेभी सत्व रज तम यातीनगुणोंकरिकैयुक्त हैं ॥ यातैं विषयोंविषे रागवान्हीं हमने देखेहैं ॥ और तिनदेवतापुरुषोंके स्वप्नविषे तथाजाग्रत्विषे किंचित्मात्रभी विलक्षणतानहीं ॥तात्पर्ययह ॥ जाग्रत्विषे जोनिद्राकाविरोधीपणाहै ॥ यहही जाग्रत्विषे स्वप्नतैंविलक्षणताहै ॥ सोविलक्षणता त्रिगुणअभिमानीदेवतावोंकेजाग्रत्विषेसंभवैनहीं ॥ काहेतैं तिनदेवतावोंने अद्वितीयआत्माकेज्ञानकरिकै आपणे अज्ञानकीनिवृत्तिकरीनहीं॥ और जबपर्यंत जीवोंकूं अद्वितीयआत्माकासाक्षात्कारनहींहोवै है ॥ तबपर्यंत अज्ञानकीनिवृत्तिहोतीनहीं ॥और त्रिगुणअभिमानीदेवतापुरुषोंकूं जोब्रह्मकाज्ञानहोवै है॥सोभी अज्ञान रूपीनिद्राविषेहीहोवै है॥ताज्ञानकरिकै तिनोंकेमूलाज्ञानकीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ और हेब्राह्मणो ॥ यालोकविषे कितनेकपुरुष व्याकरण शास्त्रकूंपढैं हैं ॥ ताव्याकरणकरिकै पदार्थोंकेज्ञानविषे तिनपुरुषोंकीबुद्धि कुशलहोवै है ॥ और कितनेकपुरुष मीमांसाशास्त्रकूंपढैं हैं ॥ तामीमांसाशास्त्रकरिकै वाक्यार्थज्ञानविषे तिनपुरुषोंकीबुद्धि कुशलहोवै है॥ और कितनेकपुरुष न्यायशास्त्रकूंपढैं हैं ॥तान्यायशास्त्रकरिकै प्रमाणज्ञानविषे तिनपुरुषोंकीबुद्धि कुशलहोवै है ॥ और कितनेकपुरुष धर्मशास्त्रकूंपढैं हैं ॥ ताधर्मशास्त्रकरिकै धर्मअधर्मकेज्ञानविषे तिनपुरुषोंकीबुद्धि कुशलहोवै है ॥ इसप्रकार अन्यशास्त्रकूंभीपढिकै तितीतिसीअर्थविषे तिनोंकीबुद्धि कुशलदेखीती है ॥ परंतु अद्वितीय यब्रह्मकाप्रतिपादक जोवेदांतशास्त्रहै ॥ताकेअर्थविषे तिनपुरुषोंकेबुद्धिकीकुशलता देखीतीनहीं॥और हेब्राह्मणो ॥ यालोकविषे जिनपुरु

षोंकूं वेदांतशास्त्रकेअर्थकाज्ञानभीहै ॥ सोज्ञानभी समग्रनहीं ॥ किंतु यत्किंचित्अर्थकाज्ञानहै॥ तायत्किंचित्अर्थकेज्ञानतैं संशयकीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ और हेब्राह्मणो॥ जिनपुरुषोंकूं समग्रवेदांतशास्त्रकेअर्थकाज्ञानभीहै॥तौभी कामक्रोधादिकप्रतिबंधोंकेवशतैं सोज्ञान तिन पुरुषोंकेमूलाज्ञानकीनिवृत्तिकरणेविषे समर्थहोतानहीं॥दृष्टांत॥जैसे अग्निकेसंबंधकरिकै नष्टहुईहै शक्तिजिनोंकी ऐसेजेभूनेधानहैं ॥ तेधान किसीफलकूंउत्पन्नकरतेनहीं ॥ तैसे कामक्रोधादिकप्रतिबंधोंकरिकैयुक्तहुआज्ञान तिनपुरुषोंकेमूलाज्ञानकीनिवृत्तिकरतानहीं ॥ अब कामक्रोधादिकोंकीअपेक्षाकरिकै अहंकारविषे ज्ञानकीमुख्यप्रतिबंधकतादिखावैं हैं॥ हेब्राह्मणो जैसे अपराधीचौरपुरुषोंकेबंधनकागृह स्तंभोंकेआश्रितरहैहै ॥ तिनस्तंभोंविषेभी एकमध्यकास्तंभ मुख्यहोवैहै ॥ और दूसरेकोणोंकेस्तंभ गौणहोवैं हैं ॥तैसे अज्ञानीजीवोंकेबंधनकागृह यहसंसार कामक्रोधादिकस्तंभोंके आश्रितरहैहै॥ तिनस्तंभोंविषेभी यहअहंकार मध्यकामूलस्तंभहै ॥ और कामक्रोधादिक कोणोंकेस्तंभहैं ॥ और जैसे कोणस्तंभोंकेनाशहुएभी जबपर्यंत मूलस्तंभविद्यमानहोवैहै॥तबपर्यंत गृहकानाशहोवैनहीं ॥ तैसे कामक्रोधादिकोंकेनिवृत्तहुएभी जबपर्यंत यहअहंकार विद्यमानहोवैहै॥तबपर्यंत यासंसारकीनिवृत्तिहोतीनहीं॥यातैं आत्मज्ञानविषे मुख्यप्रतिबंधकहै अब अहंकारकी सर्वत्रव्यापकतादिखावैहैं ॥ हेब्राह्मणो ॥ यहअहंकार सर्वजीवोंविषेस्थितहै ॥अहंकारसेरहित कोईभीजीव मैं नहींदेखती काहेतैं या जनकराजाके यज्ञविषे सर्वदेशोंकेविद्वान्ब्राह्मण एकठेहुएहैं तिनोंविषे कितनेकब्राह्मण एक कामदोषतैं रहितहैं और कितनेक ब्राह्मण काम क्रोध दोनोंदोषतैंरहितहैं ॥और कितनेकब्राह्मण काम क्रोध लोभ मोहइत्यादिकबहुतदोषोंतैंरहितहैं ॥परंतु अहंकारतैंरहित कोईभीब्राह्मण म देखतीनहीं ॥यातैं अहंकार सर्वत्रव्यापकहै ॥ अब अहंकारविषे दुर्विज्ञेयतादिखावैहैं॥हेब्राह्मणो॥अहंकारतौभिन्न जितने ककाम क्रोध लोभ मोहादिकदोषहैं॥ तिनोंविषे बुद्धिमान्पुरुष शास्त्रप्रमाणतैं तथाआपणेअनुभवतैं दुःखकीकारणताजाणिके तिनकाम दिकोंकापरित्यागकरैं हैं॥परंतु अहंकारविषे जोदुःखकीकारणताहै ॥ सो शास्त्रप्रमाणतैं तथाअनुभवतैं जाणीजावैनहीं ॥ काहेतैं सर्वशास्त्रकेवेत्ता जेविद्वान्पुरुषहैं ॥ तिनोंविषेभी अहंकारदेखीताहै॥ जो शास्त्रप्रमाणतैं तथाअनुभवप्रमाणतैं तिनविद्वान्पुरुषोंने अहंकारविषे

दुःखकीकारणताजाणीहोवै ॥ तौ किसवासतैं पुनःअहंकारकरतेहैं ॥ यातैं तिनशास्त्रवेत्तापुरुषोंने अहंकारविषे दुःखकीकारणता नहीं जाणी ॥ याअर्थविषे शास्त्रवेत्ता तुमसर्वब्राह्मणहीं दृष्टांतहो ॥ अब अहंकारविषेयालोकपरलोकके दुःखकीकारणतादिखावैहै॥हेब्राह्मणो॥ जैसे मदिरापानकरिकै पुरुष विपरीतदर्शीहोवैहै तैसे अहंकाररूपीमदिरापानकरिकै यहपुरुष विपरीतदर्शीहोवैहै॥और ताविपरीतदर्शनकरिकै यहअहंकारीपुरुषआपणेमातापिताका तथाअन्यबांधवोंका तथादेवतावोंका तथापंडितब्राह्मणोंका निरादर करैं हैं ॥ और कृष्णसर्पकेसमान शीघ्रहींमृत्युकेकारणजेराजेहैं ॥ तिनोंकीभी अहंकारीपुरुष अवज्ञाकरैं हैं और सोयेहुएसर्पकेसमान मृत्युकेकारण जेबुद्धिमान् ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यहैं ॥ तिनोंकीभी सोअहंकारीपुरुष अवज्ञाकरैं हैं ॥ याप्रकार सर्वजीवोंकीअवज्ञाकरणेहारा जोअहंकारीपुरुष है ॥ सो यालोकविषे शीघ्रहीं प्राणांतदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और सर्वप्राणियोंकीअवज्ञाकरिकै उत्पन्नभयाजोपापहै ॥ तापापकर्मकरिकै सोअहंकारी पुरुष मरिकै रौरवनरककूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं यालोकविषे तथापरलोकविषे अहंकारही जीवोंकेदुःखकाकारणहै ॥ हेब्राह्मणो ॥याप्रकारका अहंकारदोष इसयाज्ञवल्क्यविषेहैनहीं ॥ यातैं कामक्रोधादिकदोषभी याज्ञवल्क्यविषेनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे व्यापकअग्निकेअभावहुए व्याप्यधूम तहांरहैनहीं ॥ तैसे व्यापकअहंकारकेअभावहुए व्याप्यकामक्रोधादिक तहाँरहैनहीं ॥ यातैं हेब्राह्मणो तीनलोकोंविषे यहयाज्ञवल्क्यही एकपुरुषहै ॥ याज्ञवल्क्यकेसमान कोईदूसरापुरुषनहीं ॥ काहेतैं श्रुतिविषे सर्वत्रपूर्णकूं पुरुषकह्याहै ॥ और याब्रह्मवेत्तायाज्ञवल्क्यमुनिकरिकै स्थूलसूक्ष्मरूपसंपूर्णजगत् पूर्णहोइरह्याहै ॥ यातैं यहयाज्ञवल्क्यही एकपुरुषहै तात्पर्ययह ॥ श्रुतिने ब्रह्मकूं सर्वत्रपूर्ण कह्याहै ॥ और ब्रह्मविद्ब्रह्मैवभवति ॥ अर्थयह ब्रह्मकूंजानणेहारापुरुष ब्रह्मरूपहोवैहै ॥ याश्रुतिविषे ब्रह्मवेत्तापुरुषकूं ब्रह्मरूपताकही है ॥ यातैं ब्रह्मवेत्तायाज्ञवल्क्यमुनिविषे सर्वत्रपूर्णतासंभवैहै ॥ हेब्राह्मणो ॥ ऐसायाज्ञवल्क्यकास्वरूप मैंगार्गीने शास्त्रप्रमाणकरिकै तथाआपणे अनुभवतैं निश्चयकऱ्याहै ॥ और हेब्राह्मणो ॥ दूसराएकआश्चर्य तुमदेखो ॥ नचक्षुषागृह्यतेनापिवाचा ॥ अर्थयह ॥ मांसमयचक्षुकरिकै तथावाणीकरिकै आत्मा जान्याजावैनहीं ॥ याप्रकारकाश्रुतिवाक्य असत्यकीन्याईं मेरेकूंप्रतीतहोताहै ॥ काहेतैं श्रुतिनेतौ यहकह्याहै ॥

सर्वत्रपूर्णपुरुष मांसमयनेत्रोंकरिकै देख्याजावैनहीं॥और मैंगार्गी यामांसमयनेत्रोंकरिकै सर्वत्रपूर्णयाज्ञवल्क्यपुरुषकूं आपणेसन्मुख देखतीहूं ॥ यातैं ताश्रुतिवाक्यविषे सत्यपणेकीसंभावनाहोवैनहीं ॥ और हेब्राह्मणो॥वास्तवतैंविचारकरिकैदेखियेतौ सो श्रुतिवाक्य सत्यही है॥ काहेतैं मांसमयनेत्रोंकरिकै तुमसंपूर्णब्राह्मण याज्ञवल्क्यकेवास्तवस्वरूपकूं जाणतेनहीं ॥ और मैंगार्गीतौ शास्त्रप्रमाण तथाअंतरअनुभव यादोनोंकरिकैयुक्तजोनेत्र हैं ॥ तानेत्रोंकरिकै याज्ञवल्क्यकेवास्तवस्वरूपकूंजाणतीहूं॥केवलमांसमयनेत्रकरिकै मैंभी नहींजाणती ॥दृष्टांत जैसे सोऽयंदेवदत्तः ॥ याप्रत्यभिज्ञाज्ञानविषे अतीत तथाअंशकेज्ञानमें केवलनेत्रइंद्रियकूंकारणतानहीं ॥ किंतु पूर्वसंस्कारसहकृतनेत्रइंद्रियकूंकारणता है ॥ तैसे यापूर्णपुरुषकेज्ञानविषेभी केवलनेत्रइंद्रियकूंकारणतानहीं ॥ किंतु शास्त्रप्रमाण तथाअंतरअनुभव यादोनों करिकैयुक्तनेत्रइंद्रियकूं कारणता है ॥ यातैं पूर्वउक्तश्रुतिकाविरोधनहीं ॥ और हेब्राह्मणो ॥ जिसमातापितातैं यहब्रह्मवेत्ता याज्ञवल्क्य उत्पन्न भया है ॥ सोमातापिताभी धन्य है ॥ और जिसपृथ्वीऊपर यहयाज्ञवल्क्य विचरता है ॥ सोपृथ्वीभी धन्य है॥और यासभाविषे मुझगार्गीकूं तथाजनकराजाकूं तथातुमसंपूर्ण ब्राह्मणोंकूं इसयाज्ञवल्क्यमुनिका दर्शनभया है ॥ तथा ताकेवचनोंकाश्रवणभया है ॥ यातैंमैंगार्गी तथाजनकराजा तथातुमसंपूर्णब्राह्मण धन्यधन्य हैं ॥ और हेब्राह्मणो ॥ याजगत्विषे याज्ञवल्क्यकेसमान कोईपुरुष पूर्वहुआ नहीं ॥ और इदानींकालविषे कोई है नहीं ॥ और आगेकोईहोवैगानहीं॥ यातैं हेब्राह्मणो॥ शीतलचंदनकेसमान तथाक्षीरसमुद्रके समान जोयहयाज्ञवल्क्य है ॥ ताकाविवादरूपीमथन तुम मतकरो ॥ जोतुमब्राह्मण अहंकारकरिकै याज्ञवल्क्यकेसाथ विवादकरोगे॥तौ जैसे अतिमथनकरिकै क्षीरसमुद्रतैं कालकूटविष उत्पन्नभया ॥ तथा अतिमथनकरिकै जैसे चंदनतैं अग्निउत्पन्नहोवै है ॥ तैसे याज्ञवल्क्यमुनितैं शापरूपीकालकूटविष तथाशापरूपीअग्नि उत्पन्नहोवैगा ॥ ताशापरूपीअग्निकरिकै तुमसर्व ब्राह्मणोंकानाशहोवैगा ॥ यातैं याज्ञवल्क्यकेसाथ तुम विवादमतकरो ॥ किंतु दोनोंलोकों विषेदुःखकादेणेहारा जोअहंकार है ॥ ताकापरित्यागकरिकै तुमसर्वब्राह्मण याज्ञवल्क्यगुरुकूं नमस्कारकरो ॥ और हेब्राह्मणो॥आत्माकेअपरोक्ष ज्ञानवाला जोयह याज्ञवल्क्य है॥तिसकेसाथ परोक्षज्ञानवालेहमोंनैं व्यर्थही विवादका

आरंभकऱ्या है ताविवादकरिकै हमारेकूं दुःखकीहीप्राप्तिहोवैगी ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे लोकविषे एकपुरुषकूं नेत्रोंकरिकै काशीका अपरोक्षज्ञानभया है ॥ और दूसरेपुरुषकूंशब्दप्रमाणकरिकै काशीकापरोक्षज्ञानभया है॥तिसपरोक्षज्ञानवालेपुरुषका अपरोक्षज्ञानवालेपुरुषकेसाथ ॥ काशीकेस्वरूपनिर्णयकरणेविषे विवादसंभवैनहीं ॥ तैसे आत्माकेअपरोक्षज्ञानवान् याज्ञवल्क्यकेसाथ आत्माकेपरोक्ष ज्ञानवाले हमसंपूर्णोंका विवादसंभवैनहीं ॥ और हेब्राह्मणो ॥ पूजाकरणेयोग्य आत्मज्ञानरूपीसमुद्र जोयहयाज्ञवल्क्य है ॥ तिसकूं उल्लंघनकरणेवासतैं हमप्रतिवादियोंने विवादरूपीपादकरिकै स्पर्शकऱ्या है॥ यातैं हमारेविषे महान्पापकीउत्पत्तिभई है ॥ तापापकेनिवृत्तिकाउपाय दूसराकोई है नहीं ॥ किंतु याज्ञवल्क्यकेताईं वारंवार नमस्कारकरणाही तापापकेनिवृत्तिकाउपाय है॥यातैं हेब्राह्मणो॥तापापकीनिवृत्तिवासतैं तथामनवांछितपदार्थोंकीप्राप्तिवासतैं तुमसंपूर्णब्राह्मण याज्ञवल्क्यकेताईं नमस्कारकरो ॥ यहवार्ता श्रुतिविषेभीकही है ॥ आत्मज्ञंह्यर्चयेद्वृतिकामः ॥ अर्थयह ॥ इसलोकके तथापरलोकके धनपुत्रादिकपदार्थोंकीकामनावाला जोसकामपुरुष है ॥ सो शरीरकरिकै तथाधनकरिकै ब्रह्मवेत्ताज्ञानीपुरुषकीसेवाकरै ॥ तासेवाकरिकै सर्वमनवांछितपदार्थ तिसपुरुषकूं प्राप्तहोवै हैं ॥ १ ॥ यातैं हेब्राह्मणो ॥ याज्ञवल्क्यकेजीतणेकी इच्छाकापरित्यागकरिकै तुमसर्वब्राह्मण याज्ञवल्क्यकेताईं नमस्कारकरो ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकेवचन सर्वब्राह्मणोंकेप्रतिकहिकै सोगार्गी याज्ञवल्क्यमुनिकेताईं प्रणामकरिकै पुनःप्रश्नकरणेतैं निवृत्तहोतीभई ॥ तिसतैंअनंतर गार्गीकेवचनरूपीअमृतकेपानकरिकै निवृत्तहुए हैं अहंकारादिकदोषजिनोंके ऐसेजेआश्वलादिकसर्वब्राह्मण हैं॥तेसंपूर्णब्राह्मण याज्ञवल्क्यकेताईं नमस्कारकरतेभये ॥ तिनब्राह्मणोंविषेभी केईकब्राह्मण मस्तककरिकै प्रणामकरतेभये ॥ और केइकब्राह्मण वाणीकरिकै नमस्कारकरतेभये ॥ और केईकब्राह्मण मनकरिकै नमस्कारकरतेभये ॥ एकविदग्धनामा शाकल्यब्राह्मण भावीमृत्युकरिकै मोहितहुआ याज्ञवल्क्यकेताईं नमस्कार नहीं करता भया और जन्मकालकेनक्षत्र हैं ॥भाविअर्थकेबोधकजिनोंके ऐसेजेज्योतिष्शास्त्रकेजानणेहारेविद्वान् हैं ॥ ते शाकल्यकेजन्मनक्षत्रोंकूंदेखिकरिकै याप्रकारकाभावीअर्थ निश्चयकरतेभये ॥ यह शाकल्य याज्ञवल्क्यकेसाथ विविधप्रकारकीईर्षाकरिकै दग्धहोवैगा॥ याप्रकारकेभा

वीअर्थकूंजाणिकै तेज्योतिष्शास्त्रकेजाणनेहारेपंडितशाकल्यका विदग्धनामराखतेभये॥और शास्त्रविषेबुद्धिमान्पुरुषकूंभीविदग्धकहैं हैं ॥ यातैंसोविदग्धनाम शाकल्यकेबुद्धिमान्पणेकूंबोधनकरताहुआ शाकल्यकेमातापितांकूं आनंदकारीकरताभया॥और वास्तवतैंविचारकरिकैदेखियेतौ विदग्धशब्दका प्रथमअर्थही शाकल्यविषेघटै है ॥ विदग्धशब्दका दूसराअर्थ शाकल्यविषेघटतानहीं ॥ काहेतैं जोबुद्धिमान्पुरुषहोवै है ॥ सो आपणेहितकारीवचनोंकूं अंगीकारकरै है॥और यहशाकल्यतौ गार्गीके हितकारीवचनोंकूं श्रवणकरिकै उलटा क्रोधवान्होताभया ॥ दृष्टांत ॥ जैसे सर्पकेप्रति दुग्धपानकरायाहुआभीविषकीहीवृद्धिकरै है ॥ तैसे गार्गीकेहितकारीवचनभी शाकल्यके क्रोधकाहेतु होतेभये॥यातैं शाकल्यविषे बुद्धिमान्पणा संभवैनहीं॥अब विदग्धशब्दकाप्रथमअर्थ शाकल्यविषे दिखावैं हैं॥हेशिष्य॥याज्ञवल्क्य सूर्यभगवान्तैंविद्याकूंप्राप्तभयाहै॥याप्रकारकावचन जिसदिनाविषे शाकल्यनेश्रवणकऱ्या॥तिसदिनतैंलेके सोशाकल्य विविधप्रकारकीईर्षाकरिकैदग्धहोताभया॥और याज्ञवल्क्य सूर्यभगवान्तैं शुक्लयजुर्वेदकूंप्राप्तभयाहै॥याप्रकारकावचन जो किसीप्रसंगपाईकै किसीपुरुषकेमुखतैंशाकल्य श्रवणकरै ॥ तौतिसवचनकहणेहारेपुरुषकेप्रति याप्रकारकाकठोरवचन सोशाकल्य कहताभया ॥ यहयाज्ञवल्क्य जैसे सूर्यभगवान्तैं शुक्लवर्णवालेयजुर्वेदकूं प्राप्तभयाहै॥तैसे चंद्रमातैं रक्तवर्णवाले अथर्वणवेदकेकांडकूंभी प्राप्तभयाहै ॥ तथा भौमतैं हरितवर्णवाले ऋग्वेदकेकांडकूंभी प्राप्तभयाहै॥याप्रकारके उपहासयुक्त कठोरवचनोंकूं रात्रिदिनविषे सोशाकल्य लोकोंकेप्रति कथन करताभया ॥ औरयाज्ञवल्क्यकीनिंदाकूं नहींसहनकरणेहारे जेसज्जन पुरुष हैं ॥ तिनोंने याज्ञवल्क्यकेसाथ विवादकरावणे वासतै शाकल्यकूं प्रेरणा करीभी॥ तौभी मेरेसमानयाज्ञवल्क्य नहीं है याप्रकारकेअभिमानकरिकै सोशाकल्य विवादकरणेवासतैंभी याज्ञवल्क्यकेसमीप आवै नहीं ॥ किंतु जैसे अर्ज्जुनकेसाथ करण स्पर्द्धाकरताभया ॥ और जैसे इंद्रकेसाथ नमुचिनामादानव स्पर्धाकरताभया ॥ तैसे सो शाकल्य याज्ञवल्क्यकेसाथ स्पर्द्धाकरताभया ॥ शंका ॥ हेभगवन् याज्ञवल्क्यकेसाथ जो शाकल्यकीबहुतस्पर्द्धाथी ॥ तौ सर्वब्राह्मणोंतैंप्रथमहीं शाकल्यने याज्ञवल्क्यकेप्रति किसवासते प्रश्ननहींकऱ्या ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ जिसकालविषे याज्ञवल्क्यने गौवोंका

हरणकऱ्याथा ॥ तिसकालविषेभी सोशाकल्य तासभाविषेस्थितथा ॥ परंतु ताकालविषे सोशाकल्य आपणेमनविषे याप्रकारकाविचार कारकै प्रश्नकूं नहींकरताभया ॥ अब शाकल्यके विचारकूं दिखावैहैं ॥ इसयाज्ञवल्क्यने सर्वब्राह्मणोंकीसभाविषे जोगौवोंकाहरण कऱ्याहै ॥ सो अत्यंतअनुचितकर्मकऱ्याहै॥ यातैंयहजान्याजावै है॥ सर्वब्राह्मणोंकेपरोक्ष इसयाज्ञवल्क्यने मैंसूर्यभगवान्काशिष्यहूं याप्र कारकामिथ्यावचनकहिकै सर्वलोकोंकूं मोह उत्पन्नकऱ्याहै ॥ तापापकर्मका याप्रकारकाफल अभीयाज्ञवल्क्यकूं प्राप्तभयाहै ॥आजदिनतैं लेके पूर्वपूर्वकालविषे इसयाज्ञवल्क्यका जोप्रतिष्ठापूर्वक जीवनथा ॥ सोआजदिनतैंलेके आगेआगे समाप्तभया ॥ काहेतैं यहयाज्ञवल्क्य भंडपुरुषकीन्याईं पाखंडीहै याप्रकारजाणिकरिकै हमने तथाअन्यसर्वब्राह्मणोंने इसयाज्ञवल्क्यकीउपेक्षाकरीहै ॥ और विद्वान्पुरुष जिस पुरुषकीउपेक्षाकरै हैं ॥ तिसपुरुषकूं लोकविषेभीकोई सत्कारकरतानहीं॥यातैं सर्वब्राह्मणोंकाअपमानकरिकै गौवोंकेहरणतैं याज्ञवल्क्यकूं यहफल प्राप्तभया॥किंवा॥जैसे सूर्यभगवान्केसमीपअंधकाररहतानहीं॥तैसे सर्वविद्वान्ब्राह्मणोंकेसमीप किसीपुरुषका पाखंडचलतानहीं॥ याप्रकारकेअर्थकूंभी पापकरिकैमोहितहुआ यहयाज्ञवल्क्य जाणतानहीं ॥ जोब्राह्मणोंकेमहात्मकूं यहयाज्ञवल्क्य जाणताहोवै ॥ तौ जिन ब्राह्मणोंके एकबालककेतेजकूं देवराजइंद्रभी सहारिनहींसकता॥ऐसे सर्वब्राह्मणोंकेसमीप यहयाज्ञवल्क्य गौवोंकाहरणरूप अनुचित कर्म नहींकरता ॥ हेशिष्य ॥ इसतैंआदिलेके बहुतप्रकारकाविचार आपणेमनविषेकरिकै अहंकारकरिकैयुक्तहुआ सोशाकल्य पूर्वतूष्णीहोता भया ॥ और ताशाकल्यनैं जभी सर्वब्राह्मणोंकापराजयदेख्या ॥ तथा सर्वब्राह्मणोंसहित गार्गीका याज्ञवल्क्यकेताईं नमस्कार देख्या ॥ तभी जैसे पादकरिकैहतहुआसर्प क्रोधवान्होवै है ॥ तैसे शाकल्यकेनेत्र क्रोधकरिकैपूर्णहोतेभये ॥ और भृकुटी तथालिलाट ता शाक ल्यका कुटिलहोताभया ॥ और वारंवार उच्चैः श्वासोंकूंउठावताभया ॥ और जैसे किसीपुरुषका जभीपुत्रमरैहै ॥ तभी सोपुरुष दैवकूं धिक्कारकरैहै॥तैसे सोशाकल्य दैवकूंधिक्कार करताभया ॥ और सोशाकल्य आपणेमनविषे याप्रकारकाचिंतन करताभया॥यालोकविषे जैसाकि दैवकाबलहै ॥ तैसा शास्त्रअध्ययनकाभी बलनहीं ॥ और तैसाउत्तमकुलकाभीबलनहीं ॥ और तैसामंत्रादिकोंकाभीबलनहीं

काहेतैं शास्त्र उत्तमकुल मंत्रादिकोंकरिकैयुक्त इनसर्वब्राह्मणोंका जोयाज्ञवल्क्यने पराजयकऱ्याहै ॥ सोकेवल दैवबलसेंहीं पराजयक ऱ्याहै ॥ दूसराविद्यादिकोंकाबल कोईयाज्ञवल्क्यकूँहैनहीं ॥ यातैं दैवकाबल विद्यादिकसर्वबलोंतैं अधिकहै॥किंवा॥ इतिहासोंविषे बुद्धि मान्पुरुषोंने याप्रकारकेवचनकहेहैं ॥ निमेष मुहूर्त प्रहर दिन पक्ष मास ऋतु अयन संवत्सर इत्यादिरूप जोकालभगवान्है ॥ सोप्रतिकूल हुआ सर्वजीवोंकीबुद्धिकूं अन्यथाकरैहै ॥ और अनुकूलहुआ सोकाल सर्वजीवोंकीबुद्धिकीवृद्धिकरै है ॥ ताकालकेउल्लंघनकरणेविषे कोई भीपुरुष समर्थनहीं ॥ यहइतिहासोंकावचन आजदिनाविषे सत्यहुआ ॥ काहेतैं जैसे कोईपाखंडीपुरुष मूढबालकोंकूं पराजयकरै है॥ तैसे ब्रह्माकेसमानविद्यावाले इनसर्वब्राह्मणोंकूं यहदुर्बुद्धियाज्ञवल्क्य जीततताभयाहै॥ यातैं यहजान्याजावै है॥कालभगवान्कूं कोईपुरुषउल्लंघन करिसकतानहीं ॥ जिसकालभगवान्की प्रतिकूलतातैं इनसर्वविद्वान्ब्राह्मणोंका पराजयभया है ॥ औरजिसकालभगवान्कीअनुकूलतातैं विद्याहीनयाज्ञवल्क्यका जयभयाहै ॥ किंवा ॥ यालोकविषे जोकार्य होणेवालाहोताहै॥ सोकार्य अवश्यहोताहै ॥ सहस्रउपायोंकरिकैभी ताकार्यकीनिवृत्तिहोतीनहीं ॥ यहजोवार्ता शास्त्रविषेलिखी है सोभीआजदिनाविषे सत्यभई ॥ काहेतैं यासमाजविषे जितनेकब्राह्मणएकट्ठे भयेहैं ॥ तेसंपूर्ण ब्रह्मज्ञकेसमानविद्यावालेहैं॥औरयहकृपणयाज्ञवल्क्य विद्यातैंरहितहै ॥ परंतु इसयाज्ञवल्क्यकाजय होणेहाराथा ॥ और इनसर्वब्राह्मणोंकापराजय होणेहाराथा ॥ सोअवश्यभया ॥ याकारकै हमारेकूंबहुतखेदहुआ है ॥ अथवा यहकाल हमारेयशकेवृद्धिकरणे वासतैंप्राप्तभयाहै ॥ काहेतैं इसयाज्ञवल्क्यने सर्वविद्वान्ब्राह्मणोंकूंजीत्याहै ॥ और मैं जभीइसयाज्ञवल्क्यकूंजीतौंगा ॥ तभीसर्वलोकोंविषे हमारायशहोवैगा ॥ यातैंयहकालहमारेकूं यशकीप्राप्तिकरणेवासतैंआयाहै ॥ हेशिष्य ॥ इसतैंआदिलेके नानाप्रकारका विचारसोशाकल्य आपणेमनविषेकरताभया ॥ और भावीअर्थकेजानणेहारी गार्गीने जो पूर्वहितकाउपदेशकऱ्याथा ॥ ताउपदेशकूं परित्यागकरिकै सोदुर्बुद्धिशाकल्य याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति प्रश्नकरणेकाआरंभ करताभया ॥ अब जिसदुर्बुद्धिकरिकै शाकल्यने गार्गीकावचन नहींअंगी कारकऱ्याथा ताशाकल्यकेदुर्बुद्धिकूंदिखावैं हैं ॥ यहगार्गी कुमारीहै ॥ तथा यौवनअवस्थाकरिकैयुक्तहै ॥ और पितामाताकेगृहसे

बाहरनिकसिकै व्यभिचारिणीस्त्रीकीन्याईं आपणीइच्छासेंविचरतीहै॥ और कामीपुरुषोंविषे यागार्गीकीसदैवइच्छारहैहै॥ और यासभाविषे एकयाज्ञवल्क्यतौंविना जितनेकब्राह्मणहैं ॥ तेसदाचारकरिकैयुक्तहैं ॥ और स्नानशौचादिककर्मोंविषे जिनोंकी नित्यहीं प्रीति है ॥ और जटाश्मश्रुवोंकरिकैयुक्तहैं ॥ और तपकरिकैजिनोंकाशरीर कृशभयाहै॥ और वृद्धअवस्थाकरिकैयुक्तहैं ॥ ऐसेयहउत्तमब्राह्मण यानग्नगार्गीकूं नेत्रोंकरिकैभी नहींदेखते ॥ तौ यानिर्लज्जगार्गीविषे तेब्राह्मण किसवासतैइच्छाकरैंगे ॥ और यहयाज्ञवल्क्य यौवनअवस्थाकरिकैयुक्त है ॥ तथा शरीरजिसका स्निग्धहै ॥ तथा निरंतर शरीरकापोषणकरैहै ॥ तथा अत्यंतकामीहै ॥ तथा वेदकेअर्थोंकूं अन्यथाकरणेहाराहै॥ऐसा दुर्बुद्धि यहयाज्ञवल्क्यपापनेत्रोंकरिकै गार्गीकीयोनिकूंतथास्तनोंकूंतथामुखकूंवारंवारदेखैहै ॥ औरजिसकालविषेयहयाज्ञवल्क्ययासभाविषे आयाहै॥ तिसकालतैंलैकेअबपर्यंत इसयाज्ञवल्क्यकीदृष्टि राजाजनकविषे तथागार्गीविषे हमदेखतेहैं॥इनदोनोंकूंछोडिकै किसीब्राह्मणकी तरफ यहयाज्ञवल्क्यदेखतानहीं ॥ औरयाज्ञवल्क्यतैंभिन्न जितनेकीदूसरेब्राह्मणहैं॥तेगुरुकेचर्णकमलोंके अर्चनपरायण हैं॥ और गुरुशास्त्र करिकैशिक्षितहैं ॥ यातैंनासिकाकेअग्रभागविषे दृष्टिकूंराखिकै यासभाविषेस्थितहैं ॥ और यहअधमयाज्ञवल्क्ययासभाविषेजो आयाहै ॥ सोआपणेविद्याकेप्रकाशकरणेवासतैनहींआया ॥ किंतु यागार्गीस्त्रीवासतै तथासुवर्णवासतै यासभाविषेआयाहै ॥ याकारणतैंहीं यहयाज्ञवल्क्य वारंवार गार्गीकेमुखकूं तथाजनकराजाकेमुखकूं देखैहै ॥ किंवा ॥ यालोकविषे जोव्यभिचारिणीस्त्रीहोवैहै ॥ सोव्यभिचारीपुरुषकूं शीघ्रहींपछाणिलेवैहै ॥ और जोव्यभिचारीपुरुषहोवैहै ॥ सोभी व्यभिचारिणीस्त्रीकूं शीघ्रहींपछाणिलेवैहै " काहेतैं यालोकविषे जो जो पदार्थ जिसने बहुतवारअनुभवकऱ्याहोताहै ॥ तिसतिसपदार्थकूं सोपुरुष शीघ्रहींजाणिलेवैहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे जलविषे मत्स्य मीनकेग मनआगमनकूंशीघ्रहींजाणिलेवै है ॥ तैसे यहगार्गीभीबाल्यअवस्थातैंलेके आपणीइच्छासेंविचरणेहारी व्यभिचारिणी है॥ और यहयाज्ञवल्क्यभी व्यभिचारी है ॥ याकारणतैंहीं इनदोनोंका परस्परस्नेहभया है ॥ किंवा ॥ जेकुलीनस्त्रियांहोवैं हैं ॥ ते आपणेभर्त्ताकूं तथापुत्रकूं तथाभ्राताकूं तथामातुलकूं तथाश्वशुरकूं तथाअन्यकिसीकुलीनस्त्रीकूं परित्यागकरिकै आपणेगृहकेद्वारपर्यंतभी नहींजावैं हैं ॥ किंतु भर्त्ता

दिकोंविषे किसीएककूंसाथलैके बाहरजावैं हैं ॥ यह कुलीनस्त्रियोंकाधर्म है ॥ सो धर्म यागार्गीविषेहैनहीं॥ काहेतैं यहगार्गी नग्नहोइकै एक लीहीतीनलोकोंविषेभ्रमणकरै है ॥ और लोकविषे जहाँ तहाँ व्यभिचारीकामीपुरुषोंकूं देखतीरहती है॥ परंतु जैसे कलियुगविषे वर्णआश्रमतैंरहित व्यभिचारीपुरुषहोवैं हैं ॥ तैसे यात्रेतायुगविषे कोईपुरुष वर्णआश्रमतैंरहितनहीं ॥ जो इसगार्गीकीइच्छाकरै ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकैदिखावैं हैं ॥ यात्रेतायुगविषे जेपुत्रकीकामनावालेगृहस्थ हैं ॥ ते आपणीस्त्रीकेसाथभी सर्वदातंभोगकरैं नहीं ॥ किंतु ऋतुकालविषे संभोगकरैं हैं ॥ यातैं तिनगृहस्थोंकूंभी यागार्गीकीइच्छानहीं ॥ और तिन गृहस्थोंतैं भिन्न जेब्रह्मचारी तथा वानप्रस्थ तथा संन्यासी हैं॥ ते ऊर्ध्वरेता हैं॥ यातैं तेभी या गार्गीकी इच्छा करते नहीं॥ और जे नीचजातीवालेचांडाल हैं॥ तेभी आपणी स्त्रीका परित्यागकरिकै परस्त्रीकीइच्छाकरतेनहीं ॥ तौ शिष्टपुरुष परस्त्रीकीकैसेइच्छाकरैंगे ॥ और जे इंद्रादिकदेवता हैं ॥ ते स्वर्ग लोककी स्त्रीकूं छोडिकै मनुष्यलोककीस्त्रीका स्पर्शभी नहीं करते ॥ यातैं ते देवताभी या गार्गीकी इच्छा करते नहीं ॥ और जे श्वानादिक पशु हैं ॥ ते आपणेसमानजातिवालीस्त्रीकूं छोडिकै विजातीय मनुष्यस्त्रीकी इच्छाकरतेनहीं ॥ और यह गार्गी नित्यही काम करिकै आतुर है ॥ याकारणतैंही नग्नहोइकै सर्वब्राह्मणोंकेसन्मुखस्थित है ॥ तौभी एक पापात्मायाज्ञवल्क्यकूं छोडिकै यहधर्मात्माब्राह्मण यागार्गीकीतरफ देखतेभी नहीं ॥ और कलियुगकेव्यभिचारीपुरुषोंकेसमान कामातुर यहयाज्ञवल्क्य वारंवार गार्गीकीतरफदेखै है ॥ और यहव्यभिचारिणीगार्गीभी इसयाज्ञवल्क्यकूंव्यभिचारीदेखिकरिकै एकांतदेशविषेलेजाणेवासतै व्यभिचारिणीस्त्रियोंकीचातुर्यताकूं अंगीकारकरिकै वारंवार याज्ञवल्क्यकूं नमस्कारकरै है ॥ और लोकोंकेप्रति यहकथनकरै है ॥ यहयाज्ञवल्क्यब्रह्मवेत्ता है ॥ यातैं मैं इसकूं नमस्कार करतीहूं॥ और जैसे ऐंद्रजालिकपुरुष लोकोंकेदृष्टिकाप्रतिबंधकरै है ॥ तैसे राजाजनकके तथासर्वब्राह्मणोंकेदृष्टिकाप्रतिबंधकरिकै यासभाविषे मैं याज्ञवल्क्यकेसाथ व्यभिचारकरौंगी ॥ याप्रकारकाविचार करिकै यहगार्गी सभाविषेस्थित है ॥ और सर्वब्राह्मणोंकेसमीपयहगार्गी वारंवार याज्ञवल्क्यकीस्तुतिकरै है ॥ और यहसंपूर्णविद्वान्ब्राह्मणभी याव्यभिचारिणीगार्गीके अंतरअभिप्रायकूं न जाणिकै ताकेवचनकरिकै

मोहितहुए याज्ञवल्क्यकूं नमस्कारकरें हैं ॥ और सर्वधर्मात्मावोंविषेमुख्य जोयहजनकराजा है ॥ सोभी व्यभिचारिणीगार्गीकेवचनकरिकै मोहकूंप्राप्तभया है ॥ याकारणतैंहीं यहजनकराजा वारंवार याव्यभिचारीयाज्ञवल्क्यकेताईं नमस्कारकरै है ॥ हेशिष्य॥ सर्वदाब्रह्मचर्यधर्म विषेस्थित जोगार्गी है॥तागार्गीकी इत्यादिकअनेकप्रकारकेवचनोंकरिकै सोदुरात्माशाकल्य निंदाकरताभया ॥ और जैसे मृत्युकेसमीपप्राप्तहुआ पतंग प्रज्वलितमहान्अग्निकेउल्लंघनकरणेका उद्यमकरै है॥ तैसे मृत्युकेसमीपप्राप्तहुआ सोशाकल्यज्ञानसमुद्ररूपयाज्ञवल्क्यके उल्लंघनकरणेवासतै उद्यमकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोशाकल्य अनेकप्रश्नोंकरिकै याज्ञवल्क्यसे देवतावोंकीसंख्यापूछताभया॥ तिसतैं अनंतर सोयाज्ञवल्क्यमुनिभी तितनेहीं उत्तरोंकरिकै देवतावोंकीसंख्या शाकल्यकेप्रति कहताभया॥तहाँ सोयाज्ञवल्क्यमुनि विस्तारतैं तिनदेवतावोंकी अनंतसंख्याकहताभया ॥ और संक्षेपतैं सूत्रआत्मारूप एकप्राणकूंही देवताकहताभया॥दूसरेसर्वदेवता तिससूत्रआत्मा रूपप्राणकीविभूतियां हैं ॥ इसप्रकार विस्तारतैं तथासंक्षेपतैं सोयाज्ञवल्क्य देवतावोंकीसंख्या कहताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोशाकल्य याज्ञवल्क्यकेप्रति दूसरेअष्टप्रश्न करताभया ॥ तिनोंकेउत्तरभी सोयाज्ञवल्क्यमुनि शाकल्यकेप्रति कहताभया॥ हे शिष्य ॥ जैसे मंडूक सर्पकेमुखविषेप्राप्तहोवैहै॥तैसे कालरूपीसर्पकेमुखविषेप्राप्तहुआ सोमूढबुद्धिशाकल्य जभी याज्ञवल्क्यकेप्रति बहुतप्रश्नकरताभया॥ तभी सोयाज्ञवल्क्य शाकल्यकेप्रति कहताभया हे शाकल्य जैसे तूं विनाहींकारणतैं द्वेषकरता है ॥ तैसे तुम्हारे पिता पितामहादिकवृद्धपुरुष किसीकेसाथद्वेष नहीं करते भयेहैं॥तथा अन्यब्राह्मण तथाब्रह्मचारी तथाअन्यक्षत्रियादिकभी तेरेन्याईं विनाहींकारणतैं किसीकेसाथद्वेष नहींकरतेभये हैं ऐसे उत्तमकुलविषे उत्पन्नहुआ तूं विनाहींकारणतैं मेरेविषेद्वेष किसवासतैंकरताहै ॥ हेशाकल्य ॥ मेरेद्वेषकरिकै तुम्हारामृत्युमतहोवै ॥ याप्रकारकीइच्छा मैं सर्वदाकरताहूं॥और हेशाकल्य जैसे हमारे मातापिताका तथापुत्रोंका तथा स्त्रीका तथाअन्यबांधवोंका हमारेशरीरविषे प्रेमहै॥तैसे तुम्हारेमातापिता स्त्री पुत्र बांधवादिकोंका तुम्हारेशरीरविषे प्रेमहै॥यातैंयहाँ तुम्हारेमरणेकरिकै तिन तुम्हारेमातापितादिकसंबंधियोंकूं दुःखकीप्राप्तिमतहोवै॥ऐसीइच्छामैं करताहूं।और हेशाकल्य ॥यहवेदविद्या हमने सूर्यभगवान्तैं पाई है।याकारणतैं

हमारीविद्याकातेज दुःसहहै॥यातैं हमारीविद्याकीअवज्ञा तूं मतकर॥जोतूं अहंकारकरिकै हमारीविद्याकीअवज्ञाकरैगा॥तौक्षणमात्रविषे सो हमारीविद्या तुमारेकूंभस्मकरैगी ॥हेशाकल्य॥ जिसकालविषे सूर्यभगवान्तैं विद्याअध्ययनकरिकै मैं पृथिवीविषेआवताथा ॥ तिस कालविषे प्रसन्नहोइकै सूर्यभगवान् हमारेताईं कहताभया ॥ हेयाज्ञवल्क्य तेरेताईं जोमैंने विद्यादई है॥ताविद्याकूं जोपुरुषनहींमानैंगा ॥ तिसपुरुषकूं मैंसूर्यभगवान् तिसीकालविषे भस्मकरौंगा ॥ हेशाकल्य ॥याप्रकारकावचन जभीसूर्यभगवान्नैं हमारेप्रतिकह्या ॥ तभी मैं सूर्यभगवान्केप्रति यहप्रार्थनाकरताभया ॥ हेभगवन् हमारीविद्याकरिकै किसीप्राणीकानाशनहींहोवै॥ऐसा हमारेप्रति वरदेवो ॥ हेशाकल्य ॥ याप्रकारकीप्रार्थना जभी हमनैं सूर्यभगवान्केप्रतिकरी ॥ तभी सोसूर्यभगवान् याप्रकारकानियम करताभया ॥हेयाज्ञवल्क्य॥ जोपुरुष दुराग्रहकरिकै तुमारेसन्मुख बीसवार प्रश्नकरैगा ॥ तिसदुरात्मापुरुषकूं तुमारीजिह्वाविषेस्थितहोइकै मैंसूर्यभगवान् शाप देवौंगा॥तिससापकरिकै सोपुरुष शीघ्रहीभस्महोइजावैगा ॥हेशाकल्य॥ याप्रकारकावचन जभीसूर्यभगवान्नैं हमारेप्रतिकह्या तभीमेरेकूं भय होताभया॥याकारणतैं मैंपुनःसूर्यभगवान्केप्रति प्रार्थनानहींकरताभया॥हेशाकल्य॥सर्वलोकविषेप्रसिद्ध जोहमारागुरुसूर्यभगवान् है तिसकूं किसीपापरूपप्रतिबंधकेवशतैं तूं जाणतानहीं ॥ यातैं यहजान्याजावै है ॥ कालभगवान्करिकै तूं मोहकूंप्राप्तभयाहै ॥ और हेशाकल्य ॥ सूर्यभगवान्केवचनकूंस्मरणकरिकै मेरेकूं तुमारीबहुतचिंताहोती है॥जोहमारेद्वेषकरिकै तुमारीक्यागतिहोवैगी॥ हेशाकल्य यद्यपि तूं हमारेसाथ सर्वथाद्वेषकरताहै ॥ तथापि हमारा तेरेविषेद्वेषनहीं॥काहेतैं जैसे आपणेशरीरविषे मैंआनंदस्वरूपआत्मास्थितहूं ॥ तैसे तुमारेशरीरविषे तथाअन्यप्राणियोंकेशरीरविषे तथास्थावरजंगमसर्वशरीरोंविषे मैंआनंदस्वरूपआत्मास्थितहूं ॥ यातैं यहसंपूर्णजगत् मुझआनंदस्वरूपआत्मातैंभिन्ननहीं॥औरमुझआनंदस्वरूपआत्मातैंहीं याजगत्की उत्पत्ति स्थिति लय होवै है॥ऐसेसर्वात्मज्ञानकरिकैयुक्त जोमैंहूं॥तिसका किसीप्राणीविषेद्वेषनहीं॥और हेशाकल्य॥सुखदुःख हर्षशोक अशनापिपासा इत्यादिकद्वंद्वधर्म मेरेस्वरूपविषे तीनकाल नहीं।और जैसे घटरूपउपाधिके उत्पत्ति स्थिति लयतैं घटाकाशकी उत्पत्ति स्थिति लय होवैनहीं।तैसे शरीररूपउपाधिके उत्पत्ति स्थिति

नाश हुएभीमुझअद्वितीयआत्माकी उत्पत्ति स्थिति नाश होवैनहीं॥ और हेशाकल्य॥जो क्रियावालाहोवै है॥सो किसीका हननकरैहै और मैं आनंदस्वरूपआत्मा निष्क्रियहूं ॥ यातैं किसीभीप्राणीका मैं हननकरतानहीं॥ और मैंआनंदस्वरूपआत्मा निराकारहूं॥यातैं कोईभी प्राणी हमारा हननकरतानहीं॥ और हेशाकल्य॥जैसे कृमिआदिकक्षुद्रजंतुवोंका आत्मस्वरूपज्ञान अज्ञानकरिकै आवृतरहै है॥तैसे तुमा राभी आत्मस्वरूपज्ञान अज्ञानकरिकैआवृतभयाहै ॥ याकारणतैं सर्वात्मदर्शी मुझयाज्ञवल्क्यकूं आत्मघातीपापीपुरुषकेसमान तूं देख ताहै ॥ हेशाकल्य ॥ ब्रह्मवेत्ताज्ञानीपुरुषकेसाथ जोद्वेषहै ॥ सो प्रसिद्धअग्नितैंभीअधिकहै॥ताद्वेषरूपीअग्निकरिकै तुमारेकूंभस्महुआ दे खिकै यहसंपूर्णलोक तुमाराशोक मतकरै ॥ और हे शाकल्य ॥ तुमारीस्त्री विधवाभावकूंप्राप्तहोइकै तथासर्वभूषणोंतैंरहितहोइकै अत्यंत दीनहुई रुदनमतकरै ॥ हेशाकल्य ॥ तुमारेमरणेकरिकै तुमारेपुत्रादिकसर्ववांधवशोकरूपीसमुद्रविषे मतप्राप्तहोवैं ।और तुमारेमरणेकरिकै तुमारेशत्रु आनंदकूंमतप्राप्तहोवैं ॥ और हेशाकल्य ॥ तूं प्रेतशरीरकूंप्राप्तहोइकै क्षुधापिपासाकरिकैपीडितहुआ तथादुःखकरिकैव्याकुल हुआ धर्मराजकी पुरीकूं मतदेख ॥ और हेशाकल्य ॥ मरणेतैंअनंतर पुत्रोंनैंदियाजोबलिप्रदान तथातिलोदक ॥ तिसकूं काककीन्याई तूं मतभक्षणकर और हेशाकल्य ॥ यहतुमाराकोमलशरीर अग्निका तथाश्वानोंका भक्षा मतहोवै॥और हेशाकल्य॥यासर्वशिष्योंकापरि त्यागकरिकै तूं एकलाहींपरलोकविषे मतजाव॥और हेशाकल्य॥जैसेभल्लातनामावृक्षकाफल जीवोंकानाशकरै है तैसे तुमारेचित्तरूपीभूमी विषे बहुतकालकरिकै उत्पन्नभयाजो ब्रह्मवेत्ताकाद्वेषरूपीवृक्ष॥सोद्वेषरूपीवृक्ष तुमारेकूं मृत्युरूपफलकीप्राप्तिमतकरै॥और हेशाल्य॥मरे तैंअनंतर तुमारेअस्थियोंकूं चोररूपीचांडाल मतस्पर्शकरै॥और हेशाकल्य॥जैसे पतंग अग्निविषेप्राप्तहोइकै भस्महोवै है॥तैसे सूर्यभगवा न्हैंजिह्वाविषेजिसके ऐसाजोमैंअग्निहूं ॥ तिसविषे तूं मतभस्महो ॥ और हेशाकल्य ॥ जैसे यालोकविषे अन्नकेभूनणेहारेपुरुष भट्टी विषेस्थित प्रज्वलितअग्निकूं आपणेहस्तोंकरिकै स्पर्शकरैंनहीं किंतु दीर्घकाष्ठरूपदंडकरिकैयुक्त जोलोहेकीकणछीहै ॥ तिसकरिके अग्निकूंस्पर्शकरै हैं ॥ तैसे यहसभारूपीभट्टी है ॥ और मैं याज्ञवल्क्यकाष्ठोंकेसमानहूं ॥ और मेरागुरुसूर्यभगवान् अग्निरूपहै ॥ और

तेरेकूंविवादकरणेविषे प्रेरणाकरणेहारे जेयहसंपूर्णब्राह्मण हैं ॥ ते अन्नभूनणेहारेपुरुषोंकेसमान हैं ॥ और तूं कणछीकेसमान है॥और यह संपूर्णब्राह्मण बुद्धिमान् हैं ॥ यातैं आपणीरक्षाकरणेवासतै तुझमूढबुद्धिकूं कणछीकेसमानकरिकै सूर्य रूपअग्निविषे प्रवेशकरावैं हैं ॥तात्प र्ययह ॥ जेब्राह्मण तेरेकूंविवादकरणेवासतै प्रेरणाकरते हैं ॥ तेब्राह्मणभी तेरेमरणेविषेही प्रसन्न हैं ॥ परंतु कालभगवान्करिकैमोहितहुआ तूं आपणेमरणेकूंजाणतानहीं ॥ यहहमारेकूं बहुतआश्चर्यहोवै है ॥ हे शिष्य ॥ याप्रकारकेवचन जभीयाज्ञवल्क्यनैं शाकल्यकेप्रतिकहे॥ तभी कालकेवशहुआ सोशाकल्य तिनवचनोंकूंविपरीतमानिकै पुनःअधिकद्वेषकूं करताभया ॥ दृष्टांत ॥ जैसे मरणकेसमीपप्राप्त हुआरोगीपुरुष हितकारीवैद्यकेसाथ द्वेषकरै है ॥ और जैसे राज्यतैंभ्रष्टहोणेवाला राजा हितकारीमंत्रियोंकेसाथद्वेषकरै है ॥ और जैसे भाग्यहीनपुरुष राजाकेसाथद्वेषकरै है ॥ और जैसे पापकरणेहारापुरुषसत्यउपदेशकरणेहारेगुरुकेसाथ द्वेषकरै है ॥ तैसे सोशाकल्य याज्ञवल्क्यकेसाथ द्वेषकरताभया ॥ अब जिसबुद्धिकरिकै सोशाकल्य याज्ञवल्क्यकेसाथ द्वेष करताभया तावुद्धिकूंदिखावै हैं ॥ जैसे कोईपुरुष मूढबालकोंकूं भयउत्पन्नकरै है ॥ तैसे यहमंदबुद्धियाज्ञवल्क्य मेरेकूं भय उत्पन्नकरै है ॥ और मेरीसर्वज्ञताकूं तथानिर्भयताकूं यहमंदबुद्धियाज्ञवल्क्य जाणतानहीं ॥ किंवा ॥ कृषिकरणेहारेमूढपुरुषोंकेजेग्रामहैं ॥ तथा पर्वतकेजेग्रामहैं॥ तिनग्रामोंविषेस्थित जेबाल कहैं तथास्त्रियां हैं ॥ तथाकाष्ठादिकजडपदार्थ हैं॥तिनोंकेमध्यविषेबैठिकै जैसे कोईनिर्लज्जपुरुष निःशंकहोइकै मिथ्याभाषणकरै है॥तैसे यहयाज्ञवल्क्य सर्वविद्वानोंकीसभाविषे निःशंकहोइके मिथ्याभाषणकरैहै॥ काहेतैं इसयाज्ञवल्क्यकागुरु जोसूर्यहै॥सोमुझद्वेषकरणेहारेशा कल्यके भस्मकरणेविषे जोसमर्थहोता ॥ तौ इसकालतैंपूर्वकालविषेभी द्वेषकरणेहारेमेरेकूं काहेतैं नहींभस्मकरता ॥ किंवा ॥ यहसूर्य जडहै यातैं याकेविषेभस्मकरणेकासामर्थ्यनहीं ॥ काहेतैं सूर्य चंद्रमा इंद्र याप्रकारकेशब्दोंकानाम देवताहै॥ अथवा सूर्य चंद्रमा इंद्र इत्या दिकशब्दोंकेजोअर्थ हैं॥तिनोंकानाम देवताहै ॥ शब्दतैं तथाअर्थतैं भिन्न कोईदेवताकास्वरूपहै नहीं॥तहाँ जोसूर्यशब्दकूं सूर्यदेवतामा निये ॥ तौ सोसूर्यशब्द आकाशकागुणहै ॥ यातैं सर्वलोकोंकूं ताशब्दविषेजडता अनुभवसिद्धहै ॥ और जोसूर्यशब्दकेअर्थकूं सूर्यदेवता

मानिये॥तौभी तेजोमयमंडल सूर्यशब्दकाअर्थ है॥ता तेजोमयमंडलविषेभी जडताप्रसिद्धहै॥और सूर्यशब्दतैं तथातेजोमयमंडलतैं भिन्न जोकोईचैतन्यसूर्यशब्दकाअर्थ मानिये॥तौभी सोसूर्य देवता पापकर्मतैं विनाकिसीप्राणीकूं भस्मकरतानहीं॥किंतुजीवकेपापकर्मकीअपेक्षा करिकैही ताकूंभस्मकरै है॥सोपापकर्म मेरेविषेहैनहीं॥ यातैं सोसूर्य हमारीक्याहानिकरैगा॥किंवा ॥सूर्यतैंहमनैंविद्यापढीहै यहभी याज्ञवल्क्यकावचन मिथ्याहै ॥ काहेतैं यहयाज्ञवल्क्य भूमिविषेस्थितहै ॥ और सूर्य अत्यंतदूरआकाशविषेस्थितहै॥इनदोनोंका परस्परसंबंध संभवैनहीं ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारका विपरीतचिंतनकरिकै सोशाकल्य पूर्वतैंभीअधिकद्वेष करताभया ॥ तिसतैं अनंतर क्रोधकरिकैयुक्त हुआ सोशाकल्य याज्ञवल्क्यकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ शाकल्यउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ कुरु पांचालादिकदेशोंविषे रहणे हारेजेब्राह्मणहैं ॥ तिनोंकूं तुमनैं पराजयकऱ्या है॥और सर्वब्राह्मणोंकेगौवोंकूं तथासुवर्णकूं तूं लैगयाहै ॥ तिसपापकर्मकारिकै तेरेकूं निर्जलवनविषे अनेकवार ब्रह्मराक्षससशरीरकीप्राप्तिहोवैगी॥और हेयाज्ञवल्क्य ॥ जिसब्रह्मविद्याकेअभिमानकरिकै तुमनैं सर्वमहात्माब्राह्मणोंकूं पराजयकऱ्याहै ॥ सोब्रह्मविद्या हमारेसन्मुख तूं कथनकर ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकावचन जभी शाकल्यनैं कह्या ॥तभी सोयाज्ञवल्क्य आपणेविषेब्रह्मवेत्तापणा दिखावणेवासतैं याप्रकारकावचन शाकल्यकेप्रति कहताभया ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेशाकल्य देवतावोंसहित तथादेवतावोंकेकारणसहित सर्वदिशावोंकूं मैं जाणताहूं ॥ शाकल्यउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य॥पूर्वादिकदिशावोंकेदेवता कौनहैं॥और तिन देवतावोंका कारणकौनहै ॥ और तिनदेवतावोंकेकारणकाभीकारण कौनहै॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेशाकल्य ॥ पूर्व दक्षिण पश्चिम उत्तर ऊर्ध्व यापंचदिशावोंके क्रमतैं आदित्य यम वरुण सोम अग्नि यहपंचदेवताहैं ॥ तेदेवता मुझआनंदस्वरूपआत्मातैंभिन्ननहीं॥ किंतु आनंदस्वरूपमेंआत्माहीं आदित्यादिकदेवतारूपकरिकैस्थितहूं॥और हेशाकल्य ॥ सोआदित्यदेवता चक्षुरूपकारणविषेस्थितहै ॥और यम देवताश्रोत्रइंद्रियरूपकारणविषेस्थित है ॥ और वरुणदेवता रसनइंद्रियरूपकारणविषेस्थितहै ॥ और सोमदेवता मनरूपकारणविषे स्थित है ॥ और अग्निदेवता वाक्इंद्रियरूपकारणविषे स्थितहै ॥ तात्पर्य यह ॥ हिरण्यगर्भकीउपासनाकारिकै हिरण्यगर्भरूपकूं

प्राप्तहोणेहाराजोपुरुष है ॥ तिसके जेअध्यात्मरूपचक्षुआदिकइंद्रिय हैं ॥ तेचक्षुआदिकही आधिदैवसूर्यादिरूपकरिकै परिणामकूंप्राप्त होवैं हैं ॥ याकारणतैं चक्षुआदिकइंद्रिय सूर्यादिकदेवतावोंकेकारणकहे हैं ॥ और हेशाकल्य ॥ रूपादिकविषयोंने आपणेप्रकाशकरणेवासतैं चक्षुआदिकइंद्रियोंकाआरंभकरीताहै ॥ याकारणतैं चक्षुआदिकइंद्रिय रूपादिकविषयरूपकारणविषेरहैं हैं ॥ तहाँ चक्षुइंद्रिय शुक्लनीलपीतादिकरूपोंविषेरहै है ॥ और श्रोत्रइंद्रियकरिकै ग्रहणकरणेयोग्य जोकर्मकांडरूपवेदहै ॥ ताका ॥ दोप्रकारकाअर्थहोवै है ॥ एकतौ मनवाणीशरीरके क्लेशकरणेहारे यज्ञदानव्रतादिरूपअर्थ हैं ॥ और दूसरा श्रद्धारूपअर्थ है तहाँ श्रोत्रइंद्रिय यज्ञदानादिरूपकर्म विषे रहै है और ते यज्ञदानव्रतादिरूपकर्म श्रद्धाविषेरहैं हैं याकारणतैंही अश्रद्धासेकरेहुए यज्ञदानव्रतादिककर्म फलकूंदेतेनहीं ॥ श्रद्धा करिकैकरेहुए यज्ञदानादिक फलकूंदेवैं हैं ॥ और जलरूपजोरसनइंद्रियहै ॥ सो रेतरूपकारणविषेरहैहै ॥ और दोपौंतैंरहितजोमनहै ॥ सो सत्यअर्थविषे रहै है ॥ तैसे वाक्इंद्रियभी सत्यअर्थविषेरहै है ॥ काहेतैं यन्मनसाध्यायतितद्वाचावदति ॥ अर्थयह यहपुरुष जिस अर्थकूं मनकरिकैध्यानकरताहै ॥ तिसीअर्थकूं वाणीकरिकैकथनकरताहै॥ याश्रुतिविषे मनका तथावाणीका एकहीविषयकह्या है॥ और हेशाकल्य ॥ जैसे सर्वजलोंकीउत्पत्तिका तथास्थितिका कारण समुद्रहै ॥ तैसे सूर्यादिकदेवतावोंके तथानेत्रादिकइंद्रियोंके तथारूपादिकविषयोंके उत्पत्तिका तथास्थितिकाकारण हृदयहै ॥ यहाँ हृदयशब्दकरिकै मायाविशिष्ट अंतर्यामीपरमात्माकाग्रहणकरणा ॥ अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकै दिखावैं हैं ॥ हेशाकल्य ॥ जैसे लोकप्रसिद्धभित्ति विषे प्रथम रेखामात्र देवतादिकमूर्तियोंके चित्र स्थितहोवै हैं ॥ और तिनरेखारूपचित्रोंविषे श्वेतपीतनीलरक्तादिकवर्ण स्थितहोवैं हैं ॥ और तिनश्वेतादिकवर्णोंविषे देवतावोंकेमुख विषे दुग्ध स्थितहोवै है ॥ और नेत्रोंविषे अंजन स्थितहोवैहै ॥ और मस्तकऊपर मुकुट स्थितहोवैहै ॥और हस्तोंविषे धनुषबाणादिक स्थित होवै हैं ॥ याप्रकार चित्रादिकपदार्थ एकदूसरेके आश्रितहुए सर्वलोकोंकूं प्रतीतहोवैं हैं ॥ परंतु वास्तवतैंविचारकरिकै देखियेतौ ते संपूर्ण चित्रादिकपदार्थ एकभित्तिकेआश्रितरहैं हैं॥ तैसे पूर्वादिकदिशा तथाअग्निआदिकदेवता तथानेत्रादिकइंद्रिय तथारूपादिकविषय

इत्यादिकसंपूर्णजगत् साक्षात् अथवा परंपराकरिकै एकपरमात्मारूपहृदयविषेरहैं हैं ॥ तहाँ वृत्तियोंसहितअंतःकरण साक्षात्हृदयविषेरहै है ॥ और दूसराजगत् अंतःकरणद्वारा परंपरासंबंधकरिकै हृदयविषेरहै है ॥ और हेशाकल्य ॥ जैसे चित्रोंकाआधारजोभित्ति है ॥ ताकूं जभीमृत्तिकाकरिकैलीपिये ॥ तभी तेचित्र लयभावकूं प्राप्तहोवैं हैं ॥तैसे ब्रह्मज्ञानरूपीमृत्तिकाकेलेपकरिकै यहजगत्रूपीचित्र लयभावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और हेशाकल्य ॥ जैसे नीचेऊंचेपणेतैंरहित जोसमानभित्तिहै ॥ ताकेविषे कोईचित्र ऊंचाप्रतीतहोवै है ॥ और कोईचित्र नीचाप्रतीतहोवैहै ॥ परंतु सोऊंचानीचापणा वास्तवतैंहैनहीं किंतु कल्पितहै ॥ तैसे सर्वत्रसमानजोपरमात्मारूपहृदय है ॥ ताकेविषे इंद्रादिकदेवता उत्कृष्ट प्रतीतहोवैहैं ॥ और वृक्षादिकस्थावर निकृष्टप्रतीतहोवैहैं ॥ परंतु सोउत्कृष्टता तथानिकृष्टता परमात्मारूपहृदयविषे वास्तवतैंनहीं किंतु कल्पितहै ॥ और हेशाकल्य ॥जैसे चित्रकारपुरुष नीलपीतादिकनानाप्रकारकेवर्णोंकरिकै भित्तिविषे चित्रोंकूंरचै है॥ तैसे नानाप्रकारकीवासनाकरिकैयुक्त बुद्धिरूपचित्रकार अहंममअभिमानरूपीवर्णोंकरिकै परमात्मारूपहृदयविषे जगत्रूपीचित्रोंकूंरचे है ॥ और हेशाकल्य जैसे चित्रकेउपयोगी जेनीलपीतादिकरंगहैं ॥ तिनोंकूं धारणकरणेहारी जोकाष्ठकरिकैरचित छाया है ॥ सोछाया भित्तिकेसाथसंबंधमात्रकरिकै ताभित्तिविषे नानाप्रकारकेचित्रोंकूंरचै है॥ तैसे भित्तिभी ताछायाकीसमीपताकरिकै ॥नानाप्रकारकेचित्रोंकूंरचैहै ॥ काहेतैं जोभित्तिनहींहोवै तौ चित्रोंकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ यातैंभित्ति तथाछाया दोनों चित्रोंकेप्रति कारणहैं ॥तैसे मायाविशिष्ट चैतन्यरूपीभित्तिविषे नानाप्रकारकीवासनायुक्त बुद्धिरूपछाया जगत्रूपचित्रोंकूंरचै है ॥ यातैं मायाविशिष्टपरमात्मा तथाबुद्धि यहदोनों जगत्केकारणहैं ॥ और हेशाकल्य ॥ जैसे भित्तिविषेस्थितचित्रोंऊपर जभी वारंवार मृत्तिकाकालेपकरीताहै॥ तभी तेचित्र लेशमात्रकरिकै ताभित्तिविषेस्थितहुएभी बाह्यस्पष्टरूपकरिकैप्रतीतहोतेनहीं ॥तैसे प्रारब्धकर्मकीसमाप्तिपर्यंत परमात्मारूपहृदयविषे आभासमात्र करिकैरह्याहुआभीजगत्रूपचित्र वारंवार ब्रह्माकारवृत्तिरूपीमृत्तिकाकेलेपकरिकै समाधिकालविषे प्रतीतहोतानहीं॥तात्पर्ययह ॥ जैसे पुनःपुनःमृत्तिकालेपतैं चित्रोंकीनिःशेषतैंनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ किंतु पुनःपुनःमृत्तिकाकेलेपतैं चित्रोंका अदर्शनरूपलयहोवै है ॥ भित्तिके

निवृत्तहुएही चित्रोंकी निःशेषतैं निवृत्तिहोवै है ॥ तैसे ब्रह्मज्ञानकरिकैअज्ञानकेनिवृत्तहुएभी जबपर्यंत प्रारब्धकर्मनहीं निवृत्तहोता ॥ तबपर्यंत निःशेषतैं प्रपंचकी निवृत्तिहोतीनहीं ॥ किंतु जीवन्मुक्तपुरुषकूं विचारकालविषे प्रपंचकाअदर्शनहोवै है ॥ प्रारब्ध कर्मकेनिवृत्तहुएही निःशेषतैं प्रपंचकीनिवृत्तिहोवै है ॥ याकारणतैंहीं जीवन्मुक्तपुरुषोंकूं आभासमात्रकरिकै जगत्काभानहोवै है ॥ और हेशाकल्य ॥ जैसे मायावीऐंद्रजालिक पुरुषरूपकारणकरिकै आकाशविषे नानाप्रकारकीसेना प्रतीतहोवै है॥तैसे बुद्धिरूपकारणकरिकै परमात्मारूपहृदयविषे नानाप्रकारका प्रपंच प्रतीतहोवै है ॥ और हेशाकल्य ॥ जैसे मायावी पुरुषरूपकारणके नाशहुए अथवा सुषुप्तिअवस्थाकेप्राप्तहुए अथवा दूसरे किसीकार्यविषे आसक्तहुए आकाशविषेस्थित नानाप्रकारकाजगत् प्रतीतहोतानहीं ॥ तैसे किसीरोगादिकोंकरिकै बुद्धिरूपकारणके नाशहुए अथवा सुषुप्तिकेप्राप्तहुए अथवा आत्माविषे एकाग्रहुए परमात्मारूपहृदयविषेस्थित प्रपंचरूपी चित्र प्रतीतहोवैनहीं ॥ और हेशाकल्य ॥ जैसे मायावी पुरुषने आकाशविषे उत्पन्नकरेजे नानाप्रकारकेपदार्थ ॥ तेपदार्थ मायावी पुरुषतैं भिन्ननहीं ॥ किंतु मायावी पुरुषका स्वरूपही हैं ॥ तैसे परमात्मारूप हृदयविषे बुद्धिने कल्पना कऱ्याजोजगत् ॥ सोजगत् बुद्धितैं भिन्ननहीं ॥ किंतु बुद्धिस्वरूपही है ॥ याअभिप्रायकरिकैही वेदांतशास्त्रविषे दृष्टिसृष्टिवादका कथनकऱ्या है॥और हेशाकल्य॥ जैसे आकाशविषेस्थितहुआअंधकार अंधकारकरिकैहीप्रतीतहोवै है ॥ सूर्यादिकप्रकाशकरिकै अंधकारकीप्रतीतिहोवैनहीं ॥तैसे परमात्मारूपहृदयविषेस्थितहुईबुद्धि बुद्धिकरिकैहीप्रतीतहोवै है॥और जैसे सूर्यादिकप्रकाशकरिकै अंधकारकेनिवृत्तहुए विशुद्धआकाशविषे दोषरहितनेत्रवालेपुरुष अंधकारकूंदेखतेनहीं ॥ तैसे आत्मज्ञानकरिकै अज्ञानकेनिवृत्तहुए विशुद्धआत्माविषे कारणसहितबुद्धिकूं विद्वान्पुरुष देखतेनहीं ॥ यातैं आत्मातैंभिन्न बुद्धिआदिकजडपदार्थ प्रमाणकरिकैसिद्धनहीं ॥ किंतु भ्रांतिकरिकैसिद्ध हैं ॥शंका॥ बुद्धिकूं जोप्रमाणजन्यय थार्थज्ञानकाविषय नहींअंगीकारकरोगे ॥ तौ जोप्रमाणजन्ययथार्थज्ञानका अविषयहोवै है ॥ सो शशशृंगकीन्याईं असत्यहीहोवै है ॥यातैं बुद्धिभी असत्यहीहोवैगी ॥ और जोपदार्थ असत्यहोवै है॥ सोपदार्थ किसीकार्यकरणे विषेसमर्थहोवैनहीं ॥यातैं असत्यबुद्धिकरिकै किसी

कार्यकीसिद्धि नहींहोणीचाहिये ॥समाधान॥ जैसे शशशृंग तथावंध्यापुत्र यद्यपि असत्यहैं ॥तथापि सोशशशृंग तथावंध्यापुत्र शशशृंग वंध्यापुत्र याप्रकारकेशब्दोंतैं स्वविषयक विकल्परूपज्ञानकूंउत्पन्नकरै हैं ॥ तैसे कार्यकारणसहितबुद्धि यद्यपिअसत्य है ॥ तथापि सोबुद्धि नानाप्रकारकेभ्रांतिरूपज्ञानोंकूं उत्पन्नकरै है॥यातैं शशशृंगकीन्याईं असत्यबुद्धिविषेभी नानाप्रकारकेव्यवहारकीकारणता संभवै है ॥ शंका॥बुद्धिकेअसत्यहुएभी बुद्धिकाकारणजोअज्ञान है सो सत्यक्योंनहींहोवै॥जोअज्ञानकूंभी असत्यमानो गे ॥ तौ असत्यवस्तु किसीकूं अनर्थकीप्राप्तिकरै नहीं ॥ यातैं असत्य अज्ञानविषे जन्म मरणादिरूपअनर्थकीकारणता नहींहोनी चाहिये ॥ समाधान ॥ जैसे बुद्धिअसत्य है ॥ तैसे बुद्धिकाकारणअज्ञानभी असत्यही है॥ और असत्यवस्तुविषेभी अनर्थकीकारणता लोकविषेदेखीती है॥जैसे मक्षिकाके नहींभक्षणहुएभी जिसपुरुषकूं याप्रकारकीभ्रांतिहोवै है ॥ हमने मक्षिकाकाभक्षणकऱ्या है॥तिसपुरुषकूं वमनहोवै है ॥अथवा ॥ सर्पकेअविद्यमानहुएभी जिसपुरुषकूंऐसीभ्रांतिहोवै है हमारेकूंसर्पने दंस्यकऱ्या है॥ और तासर्पकाविष हमारेकूंचढता है ॥ सोपुरुष प्राणोंकापरित्यागकरै है ॥ यातैं जैसे असत्यमक्षिकाकाभक्षण वमनरूपअनर्थकाकारण है॥और असत्यसर्प मृत्युरूपअनर्थकाकारण है ॥तैसे अत्यंतअसत्यअज्ञानभी भ्रांतपुरुषोंके जन्ममरणादिरूपअनर्थकाकारण संभवै है॥और हे शाकल्य ॥ जैसे एकहीस्वप्नद्रष्टापुरुष असत्यअज्ञानकरिकै हस्तिअश्वादिकनानाप्रकारकेरूपोंकूंधारणकरै है॥तैसे एकहीपरमात्मादेव असत्यअज्ञानकेवशतैं प्रपंचरूपकूंधारणकरै है ॥और हेशाकल्य ॥ हमसरीखे विद्वान्पुरुषोंकीदृष्टिकरिकै यद्यपि अज्ञान तीनकालविषेअसत्य है॥तथापि तुमारेसरीखेजेअविवेकीपुरुष हैं ॥ तिनोंकूं यहअज्ञान वज्रकेपर्वतसमान दुर्भेद्य है॥याकारणतैंही तेरेसरीखेअविवेकीपुरुष अत्यंतसमीपहृदयदेशविषेस्थित आत्माकूंभीनहींजाणते॥दृष्टांत ॥ जैसे नेत्रोंतैंरहितअंधपुरुष हस्तकरिकैस्पर्शकरीहुई निधिकूंभीजाणतानहीं ॥ यातैं हे शाकल्य ॥ संपूर्णप्रपंचरूपचित्रकाआश्रय परमात्मारूपहृदय है यहउत्तर हमने तुम्हारेप्रतिकह्या ॥ अब जिसअर्थकेश्रवणकरणेकी तुम्हारेकूंइच्छाहोवै सोअर्थ हमारेसे तुमपूछो॥हेशिष्य ॥ याप्रकारकावचन जभी याज्ञवल्क्यने शाकल्यकेप्रतिकह्या ॥ तभी सोमूढबुद्धिशाकल्य पुनःप्रश्नकरणेतैं निवृत्तनहींहोताभया ॥ किंतु

जैसे कालकरिकैमोहितहुआ मंडूक कृष्णसर्पकेबुलावणेहारीवाणीकूं वारंवार उच्चारणकरैहै ॥ तैसे पापकर्मकरिकै प्रेरणाकऱ्याहुआ यहशाकल्यभी कालरूपसर्पकेबुलावणेहारी जोपुनःप्रश्नरूपीवाणीहै तिसकूं उच्चारणकरताभया ॥ ऐसेशाकल्यकूंदेखिकरिकै सोयाज्ञवल्क्य करुणाकरिकै अत्यंतदुःखीहोताभया ॥ अब जोविचारकरिकै याज्ञवल्क्यकूं चित्तविषेदुःखहुआ ताविचारकूंदिखावैहैं॥ बडाकष्टहै यादुर्बुद्धिशाकल्यकामरणा अभीसमीपप्राप्तभयाहै ॥ काहेतैं रक्तवर्णवालेहैंनेत्राजिसके तथा ऋग् यजुष् साम यहतीनवेदहैंस्वरूप जिसके ॥ ऐसाजोसूर्यभगवान् हमारागुरुहै ॥ सो आपणीप्रतिज्ञाकेसत्यकरणेवासतै अभी मंडलतैंनीचेउतरकरिकै मेरीजिह्वाविषेस्थितहोगा ॥ तिसतैं अनंतर परवशहुईयहमेरीजिह्वा यादुर्बुद्धिशाकल्यकेप्रति शापदेवैगी ॥ ताशापकरिकै यहशाकल्य क्षणमात्रविषे भस्महोवैगा ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै कृपाकरिकैयुक्तहुआ सोयाज्ञवल्क्यमुनि चित्तविषेदुःखीहोताभया ॥ और याशाकल्यका किसीप्रकारकरिकैमरणनहींहोवै तौश्रेष्ठ वार्ताहै ॥ याप्रकारकाचिंतन सोयाज्ञवल्क्य करताभया ॥ तिसतैंअनंतर मृत्युकेसमीपप्राप्तहुआ सोमूढबुद्धिशाकल्य पुनःयाज्ञवल्क्यकेप्रतियाप्रकारका प्रश्नकरताभया ॥ शाकल्यउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ संपूर्णप्रपंचरूपीचित्रकाआधारजोहृदयहै॥सो किसकेआश्रितरहैहै॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकाप्रश्न जभीशाकल्यनेकऱ्या ॥ तभी सोयाज्ञवल्क्य हेअहल्लिक याप्रकारकासंबोधनदेकै शाकल्यकेप्रति कहताभया॥अब पंचप्रकारकरिकै अहल्लिकशब्दकेअर्थकूंदिखावैहैं॥तहाँ दिनविषेजोलयकूंप्राप्तहोवैं और रात्रिविषेप्रादुर्भावहोवैं ताकूं अहल्लिकक हैंहैं ॥ ऐसेप्रेतशरीरहोवैं हैं ॥ और यहशाकल्यभी मरिकैप्रेतभावकूंप्राप्तहोवैगा॥ याकारणतैं याज्ञवल्क्यने शाकल्यकूं अहल्लिककह्याहै॥ ॥ १ ॥ अथवा दिनकीन्याईं प्रकाशमानअर्थविषे जोसंशयरूपलयकूंप्राप्तहोवै ताकूं अहल्लिककहैं हैं ॥सोयाज्ञवल्क्यकेस्पष्टअर्थविषे याशाकल्यकूं संशयहुआहै याकारणतैं याज्ञवल्क्यने शाकल्यकूं अहल्लिककह्याहै ॥ २ ॥ अथवा ॥ सूक्ष्मअर्थकूंनिश्चयकरणेहारा जोहृदयहै ॥ ताहृदयतैं जोपुरुष रहितहोवैहै ताकूं अहल्लिककहैं हैं॥तहाँस्पष्टकारिकै कथनकऱ्याजोअर्थ है ताकेविषे कोईबुद्धिमान् पुनःप्रश्नकरतानहीं ॥ और यहशाकल्यतौ स्पष्टअर्थविषेभी पुनःपुनःप्रश्नकरैहै ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ सूक्ष्मअर्थकेनिश्चयकरणेहाराजोहृदयहै तिसतैं यहशा

कल्यरहितहै ॥ जोशाकल्यकीबुद्धि सूक्ष्मअर्थकूंग्रहणकरती ॥ तौ यहशाकल्य पुनःपुनःप्रश्ननहींकरता ॥ याकारणतैं याज्ञवल्क्यने शाकल्यकूं अहल्लिक कह्याहै ॥ अथवा ॥ याज्ञवल्क्यनेकथनकऱ्याजो प्रपंचरूपचित्रकाआधार परमात्मारूपहृदय तिसकूं शाकल्यनेजा न्यानहीं ॥ किंतु मरणतैंअनंतर पृथिवीविषेस्थित जोमांसमयहृदयहै ॥ जिसमांसमयहृदयकूं श्वानादिकभक्षणकरैं हैं ॥ ता मांसमयहृदय कूंहीं शाकल्यने जान्याहै॥याकारणतैं याज्ञवल्क्यने शाकल्यकूं अहल्लिक कह्याहै ॥ ४ ॥ अथवा ॥ दिनकाकारणेहारा जोसूर्यभगवान्है॥ सो यासभाविषे याशाकल्यकानाशकरैगा ॥ याकारणतैं याज्ञवल्क्यने शाकल्यकूं अहल्लिक कह्याहै ॥ ५ ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार याज्ञव ल्क्यमुनि अहल्लिकसंबोधनदेकै शाकल्क्यकेप्रति उत्तरकहताभया ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेशाकल्य ॥ प्रपंचरूपचित्रकेधारणकरणेहारा जोपरमात्माहै॥तिसकूंहीं हमने हृदयरूपकरिकैकह्याहै॥परंतु तुमने यहवार्ताजाणीनहीं॥किंतु प्रसिद्धमांसकेखंडकूं तुमने हृदयरूपकरिकै जान्याहै ॥ यातैं तेरेअभिप्रायकेअनुसार मैं ताप्रश्नकेउत्तरकूंकहताहूं ॥ हेशाकल्य सोहृदय मेरेसूक्ष्मशरीरकेआश्रितरहैहै काहेतैं सूक्ष्मश रीरतैंविना यहस्थूलशरीरस्थितहोवैनहीं॥ और स्थूलशरीरतैंविना यहसूक्ष्मशरीरभी स्थितहोवैनहीं ॥ जभी सूक्ष्मशरीरतैं यहस्थूलशरीर पृथक्होवैहै ॥ तभी मांसमयहृदयसहित यास्थूलशरीरकूं श्वानादिक भक्षणकरैं हैं ॥ तथा काकादिकपक्षी खंडखंडकरिकैलेजावैं हैं ॥ याअभिप्रायकरिकैही सूक्ष्मशरीरकूं हृदयसहितस्थूलशरीरकाआधारकह्याहै ॥ हेशिष्य ॥ याज्ञवल्क्यने पूर्वशाकल्यकेप्रति हृदयशब्द करिकै परमात्माका कथनकऱ्याथा ॥ तिसकूंनजाणिकरिकै जैसे सोशाकल्य पूर्व हृदयकाआश्रयपूछताभया ॥ तैसे सोमूढबुद्धिशा कल्य पुनःआधारपूछताभया ॥ शाकल्यउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ तुमने परस्परआश्रित जेस्थूलसूक्ष्मशरीरकहे ॥ ते स्थूलसूक्ष्म शरीर किसकेआश्रितरहैं हैं ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेशाकल्य ॥ सोस्थूलसूक्ष्मशरीर प्राणकेआश्रितरहैहै ॥ शाकल्यउवाच ॥ हेयाज्ञ वल्क्य ॥ सोप्राण किसकेआश्रितरहै है ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेशाकल्य ॥ सोप्राण अपानकेआश्रितरहैहै ॥ शाकल्यउवाच ॥ हेया ज्ञवल्क्य ॥ सोअपान किसकेआश्रितरहैहै ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेशाकल्य ॥ सोअपान व्यानकेआश्रितरहैहै ॥ शाकल्यउवाच ॥

हे याज्ञवल्क्य ॥ सोव्यान किसकेआश्रितरहै है ॥ याज्ञवल्क्य उवाच ॥ हे शाकल्य ॥ सोव्यान उदानकेआश्रितरहै है॥ शाकल्यउवाच॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ सोउदान किसकेआश्रितरहै है ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेशाकल्य ॥ सोउदान समानकेआश्रितरहै है॥ हेशिष्य ॥ यहजो शाकल्यने प्रश्नकरे हैं ॥ सोयाज्ञवल्क्यकेअभिप्रायकूं नजाणिकरिकैकरे हैं॥ काहेतैं सर्वप्राणियोंकीबुद्धि विषे जोसाक्षीरूपकरिकै सर्वदाअ परोक्ष है ताकूं हृदयकहैं हैं ॥ याअभिप्रायतैं हृदयशब्दकरिकै याज्ञवल्क्यने परमात्माकह्याथा ॥ और सोशाकल्य हृदयशब्द करिकै अंतःकरणकेनिवासकास्थान जोमांसमयहृदय है ताका ग्रहण करता भया ॥ जोशाकल्यने हृदयशब्दकरिकै परमात्मा जान्या होता ॥ तौ सो हृदय किसकेआश्रितरहै है या प्रकारकाप्रश्न शाकल्य नहींकरता ॥ काहेतैं सभूमाकुत्रप्रतिष्ठितःस्वेमहिम्नि ॥ अर्थयह ॥ सोव्या पकपरमात्मा किसविषे स्थित है याशंकाकेहुए ॥ सोव्यापकपरमात्मा आपणेमाहिमाविषे स्थित है ॥ याश्रुतिविषे परमात्माका कोई दूसराआश्रय कह्यानहीं ॥ यातैं यहजान्याजावै है ॥ शाकल्यने हृदयशब्दकरिकै परमात्माकाग्रहणनहींकऱ्या ॥ किंतु मांसमय हृदय काग्रहणकऱ्याहै ॥ और सोहृदय मेरेविषेस्थित है याउत्तरवाक्य विषे याज्ञवल्क्यने मेरे विषे याअस्मद्शब्दकरिकै अहंप्रतीतिविषेभास मान आत्माकाही कथनकऱ्याथा ॥ और सोमंदबुद्धिशाकल्य ता अस्मद्शब्दकरिकै सूक्ष्मशरीरकाहीग्रहणकरताभया ॥ और याज्ञव ल्क्यने प्राण अपान व्यान उदानयाचारिशब्दोंकी लक्षणावृत्तिकरिकै प्राणादिकोंकाप्रवर्त्तक मायाविशिष्टपरमात्माकाही कथन कऱ्या था ॥ और सोशाकल्य प्राणादिकशब्दोंकरिकै वाचार्थभूतवायुकाही ग्रहणकरताभया॥ याकारणतैंहीं सोबुद्धिहीनशाकल्य सोप्राणकिस विषेरहै है सोअपानकिसविषेरहै है याप्रकारकेप्रश्नकरताभया॥ और अंत्यविषे याज्ञवल्क्यने सर्वभूतोंकाआधार समान कह्याथा ॥ और तास मानकूंभी सोशाकल्य वायुरूपही जाणताभया ॥ परंतु समानशब्दकरिकै याज्ञवल्क्यनैं वायुकाकथन नहींकऱ्याथा ॥ किंतु सर्वकाआत्मा रूप जोपरमात्मादेवहै ॥ सो याज्ञवल्क्यने समानशब्दकरिकै कथनकऱ्याथा॥कैसाहैसोपरमात्मादेव ॥आनंदस्वरूप है ॥ और नेतिनेति याप्रकारकीश्रुति दोनकारोंकरिकै स्थूलसूक्ष्मप्रपंचकानिषेधकरिकै जिसपरमात्मादेवकूं बोधनकरै है ॥ अथवा अज्ञानकालविषे विद्यमान

जोभावअभावरूप दोप्रकारकाजगत्है ॥ ताका निषेधकरिकै नेतिनेति यहश्रुति जिसपरमात्माकूंबोधनकरै है॥पुनःकैसा है सोपरमात्मा देव ॥ सजातीयभेद तथाविजातीयभेद तथा स्वगतभेद यातीनप्रकारकेभेदतैंरहितहै॥और सोपरमात्मादेव निर्गुण है ॥ यातैं बुद्धिआदि ककारणोंकरिकैजान्याजावैनहीं ॥ और जैसे वस्त्र बहुतकालपाइकै जीर्णभावकूंप्राप्तहोवै है॥तैसे यहआनंदस्वरूपआत्माकालकरिकै जीर्ण भावकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ याकारणतैं यह आनंदस्वरूपआत्मा अशीर्य है ॥ और जैसे जलादिकपदार्थोंकेसाथ आकाशकासंबंधहोवैनहीं॥ यातैं आकाश असंग है ॥ तैसे बुद्धिआदिकोंकेसाथ आत्माकावास्तवतैं संबंधहै नहीं॥ यातैं यह आनंदस्वरूपआत्माभी असंगहै॥और यह आनंदस्वरूपआत्मा अबद्धहै ॥ यातैं दुःखकासंबंधरूपव्यथाकूं प्राप्तहोतानहीं॥ और यहआत्मा विनाशतैंरहित है॥यातैंहिंसाकूंभी प्राप्तहोतानहीं ॥ हे शिष्य ॥ याप्रकार जभीशाकल्यने याज्ञवल्क्यकेप्रति बहुतप्रश्नकरे ॥तभी सो सूर्यभगवान् आपणीप्रतिज्ञाकेसत्य करणेवासतैं याज्ञवल्क्यकीजिह्वाविषेस्थितहोइके शाकल्यतैं पूछताभया ॥ अब ताप्रश्नकी सिद्धिवासते शाकल्यकेपूर्वअष्टप्रश्नोंकेउत्तरकूं प्रसंगतैंदेखावै हैं ॥ तहाँ पूर्वशाकल्यने देवतावोंकी संख्यापूछीथी ॥ ताका याज्ञवल्क्यने यहसमाधानकऱ्याथा ॥ विस्तारतैंतौ देवता अनंत हैं ॥ और संक्षेपतैंतौ एकप्राणदेवताहै ॥ ताप्राणरूपएकदेवताकी यह अष्ट विभूतियाँ हैं॥ शारीरपुरुष १ काममयपुरुष २आदित्य पुरुष ३ श्रौतपुरुष ४ छायामयपुरुष ५ प्रतिबिंबपुरुष ६ जलस्थपुरुष ७ पुत्रपुरुष ८ ॥ तहाँ पृथिवीरूप या स्थूल शरीर विषे मातातैं उत्पन्नभयेजे त्वक् मांस रुधिर यहतीनकोश ॥ तेकोश शारीरनामापुरुषका आयतन हैं॥१॥ और स्त्रीकेसंभोगकीइच्छारूप जोकाम है॥ सोकाम काममयनामापुरुषका आयतनहै॥२॥और शुक्लनीलपीतादिकजेनानाप्रकारकेरूपहैं॥तेरूप आदित्यनामापुरुषका आयतन हैं॥ ॥३॥और प्रतिध्वनिरूपशब्दविषे विशेषकरिकैहै अभिव्यक्तिजिसकी ऐसाजो श्रौतनामापुरुष है॥ ताश्रौतपुरुषका आकाश आयतनहै॥ ४॥ और अंधकाररूपजोतम है ॥ सोतम छायामयनामापुरुषका आयतन है ॥५॥ और प्रतिबिंबकेग्रहणकरणेयोग्य जेदर्पणादिकस्वच्छ पदार्थ हैं ॥ तिनोंविषे स्थित जो प्रतिबिंबनामा पुरुष है ॥ ता प्रतिबिंबपुरुषका भास्वर रूप आयतन है ॥ ६ ॥ और जल

जलस्थपुरुषका आयतनहै ॥ ७ ॥ और उपस्थइंद्रिय पुत्रनामापुरुषका आयतनहै ॥ ८ ॥ और अग्नि १ हृदय २ चक्षु ३ श्रोत्र ४ हृदय ५ चक्षु ६ हृदय ७ हृदय ८ यहअष्ट शारीरादिकअष्टपुरुषोंके क्रमतैं चक्षु हैं॥यहाँ हृदयशब्दकरिकै बुद्धिकाग्रहणकरणा और अन्नादिकोंकापरिणाम रूपजोअमृतहै ॥ सोअमृत शारीरपुरुषकाकारणहै ॥ १ ॥ और स्त्री काममयपुरुषकाकारणहै ॥ २ ॥और चक्षुइंद्रिय आदित्यपुरुषकाकारणहै ॥ ३ ॥ और दिशा श्रौतपुरुषकाकारणहै ॥ ४ ॥ और मृत्यु छायामयपुरुषकाकारणहै ॥ ५ ॥ और प्राण प्रतिबिंबपुरुषकाकारणहै ॥ ६ ॥ और वरुण जलस्थपुरुषकाकारण है ॥ ७ ॥ और प्रजापति पुत्रनामापुरुषकाकारण है ॥ ८ ॥ इसप्रकार अष्टपुरुष ॥ और तिनपुरुषोंकेअष्टआयतन ॥ और तिनपुरुषोंके अष्टचक्षु ॥ और तिनपुरुषोंकेअष्टकारण ॥ याचा रिप्रकारकेअष्टकोंविषे कारणरूपतैंप्रवेशकरिकै जो परमात्मादेव तिनोंकूं आपणेआपणेव्यवहारकरणेविषे समर्थकरै है ॥ दृष्टांत ॥ जैसे तंतुरूपकारण पटरूपकार्यविषेप्रवेशकरिकैही शीतानिवृत्तिआदिकसर्वव्यवहारोंकूंकरै है ॥ तैसे यहपरमात्मादेवभी संपूर्णकार्यप्रपंचविषे प्रवेशकरिकै नानाप्रकारकेव्यवहारोंकूंसिद्धकरै है ॥ और जैसे तंतुरूपकारणपटरूपकार्यकूं कार्यपणेतैंरहितकरिकै केवलकारणरूपकरिकै स्थितहोवै है ॥ तैसे यहपरमात्मादेवभी प्रपंचकेउपसंहारकालविषेपूर्वादिकदिशावों तैं आदिलेके समानपर्यंत सर्वकार्यकाउपसंहारकरिकै कार्यभावतैंरहित एकअद्वितीयरूपकरिकैस्थितहोवै है ॥ तात्पर्ययह ॥ पूर्वादिकदिशावोंविषे वर्तमानजोपदार्थ हैं तिनपदार्थोंसहित पूर्वादिकदिशावोंका सूर्यादिकदेवतावोंविषे उपसंहारकरै है ॥ और तिनसूर्यादिकदेवतावोंका चक्षुआदिकइंद्रियोंविषे उपसंहारकरै है ॥ और तिनचक्षुआदिकइंद्रियोंका रूपादिकविषयोंविषे उपसंहारकरै है ॥ और तिनरूपादिकविषयोंका हृदयविषेउपसंहारकरै है ॥ और ताहृदयका स्थूलसूक्ष्मशरीरविषे उपसंहारकरै है ॥ और तास्थूलसूक्ष्मशरीरका प्राणविषे उपसंहारकरै है॥और ताप्राणका अपानविषे उपसंहारकरै है।और ताअपानका व्यानविषेउपसंहारकरै है।और ताव्यानका उदानविषेउपसंहारकरै है।और ताउदानका समानविषे उपसंहारकरै है॥इसप्रकारजोपरमात्मादेव सृष्टिकालविषे जगत्कूंउत्पन्नकरै है ॥ और प्रलयकालविषे संपूर्णजगत्कासंहारकरिकै बुद्धिआदिक

उपाधियोंतैं तथातिनोंकेसुखदुःखादिकधर्मोंतैंरहितहोइकै कार्यकारणभावतैंरहित शुद्धस्वरूपविषेस्थितहोवै है ॥ दृष्टांत ॥ जैसे घटमठादिकउपाधियोंविषे स्थितहुआआकाश अंतरबाह्यभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ और जभी सोआकाश घटादिकउपाधियोंका परित्यागकरै है ॥ तभी अंतरबाह्यपणैंतैंरहितहोइकै सो आकाश आपणेपरिपूर्णस्वभावविषे स्थितहोवै है ॥ तैसे शरीरादिकउपाधियोंकेसंबंधकरिकै यापरमात्मादेवविषे अंतरबाह्यपणा प्रतीतहोवै है॥और जभीयहपरमात्मादेव शरीरादिकउपाधियोंकापरित्यागकरै है॥तभी अंतरबाह्यपणे तैंरहितहोइकै सोपरमात्मादेव आपणेपरिपूर्णस्वभावविषेस्थितहोवै है॥और जैसे मधुरादिकरस केवलरसनइंद्रियकरिकैहीं जान्याजावै है ॥ रसनइंद्रियतैंभिन्न किसीइंद्रियकरिकै जान्याजावैनहीं ॥ तैसे जोपरमात्मादेव केवल उपनिषद्प्रमाणकरिकैहीं जान्याजावै है ॥ उपनिषद्प्रमाणतैंभिन्न किसीप्रत्यक्षादिकप्रमाणकरिकै जान्याजावै नहीं ॥ हेशाकल्य ॥ ऐसेपरमात्मादेवकास्वरूप तुम्हारेसैं मैं एकवारपूछताहूं ॥ जोतूं तापरमात्माकेस्वरूपकूंजाणताहै ॥ तौ हमारेप्रतिकहो ॥ हेशाकल्य ॥ तुम्हारेप्रश्नोंकाउत्तर हमने बहुतवारदियाहै॥यातैं हमारे एक प्रश्नकाउत्तर तुमभीकहो ॥ हेशाकल्य ॥ जोतूं हमारेप्रश्नकाउत्तर नहींकहैगा ॥ तौ तीरथतैंरहित तथामनुष्योंकेसमूहकरिकैयुक्त जो यह जनकपुरीरूपअशुभदेशहै ॥ तथा दक्षिणायनकेकृष्णपक्षकीअमावस्यारात्रिरूप जोअशुभकालहै ॥ ताकेविषे तुझदुर्बुद्धिशाकल्यकामृत्यु होवैगा ॥ और हेशाकल्य ॥ मुझब्रह्मवेत्ताकेसाथ द्वेषकरणेहारा जोतूंशाकल्यहै ॥ तिसतुम्हारी मरणैंतैंअनंतर अस्थियांभी तुम्हारेगृहकूं नहीं प्राप्तहोवैंगी किंतु चौररूपीचांडाल धनकेलोभकरिकै अद्धैमार्गविषे तिनअस्थियोंकूंलेजावैंगे ॥हेशिष्य॥ जगत्केउत्पत्तिस्थितिलय कोकरणेहारा जोसूर्यभगवान्है ॥ सो अत्यंतक्रोधवान्होइकै याज्ञवल्क्यकीजिह्वाविषेस्थितहोइकै याप्रकारकावचन शाकल्यकेप्रति कहता भया ॥ और सोशाकल्य आत्मज्ञानतैंरहितथा॥यातैं किंचित्मात्रभी ताप्रश्नकेउत्तरकूं नहींकहताभया॥तिसतैंअनंतर सूर्यभगवान्केशापकरिकै ताशाकल्यका मन तथावाक्आदिकइंद्रिय शरीरतैंउत्क्रमणकरतेभये॥तिसतैंअनंतर ताअशुभदेशकालविषे शाकल्यकामस्तक शीघ्रहीं भूमिविषेपडताभया ॥ दृष्टांत ॥ जैसे देवतावोंकूंजीतकरिकै स्वर्गविषेनिवासकरणेहारा जोनमुचिदानवथा ॥ ताकामस्तक वज्रक

रिकै भूमिविषेपडताभया ॥ तैसे शाकल्यकामस्तक भूमिविषेपडताभया ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार जभी शाकल्यकामृत्युभया ॥ तभी सर्वत्र हाहाकारशब्दहोताभया ॥ और संपूर्णराजमंडली महान्क्षोभकूंप्राप्तहोतीभई॥और ताशाकल्यकेजेशिष्यथे तथाबांधवथे॥तेसंपूर्ण रुदनकरतेभये ॥ और शाकल्यकूंभूमिविषे पतनहुआदेखिकै तासभाविषेस्थित जितनेकब्राह्मणथे तथाबालकथे तथास्त्रियाँथीं ॥ तेसंपूर्णजन शाकल्यकूंधिक्कारधिक्कारकरतेभये ॥ और तेसंपूर्णसभावासीजन याप्रकारकेवचन कहतेभये ॥ ब्रह्मवेत्तायाज्ञवल्क्यकेसाथ याशाकल्यनैं द्वेषकऱ्याथा ॥ ताद्वेषरूप विषकेवृक्षका मृत्युरूपफल याशाकल्यकूंप्राप्तभया ॥ यद्यपि यहशाकल्य विद्यादिकसर्वगुणोंकरिकैयुक्तथा ॥ तथापि ब्रह्मवेत्ताकेद्वेषरूप प्रबलदोषतैं यहशाकल्य मृत्युकूंप्राप्तहोताभया ॥ कैसाहैसोब्रह्मवेत्ताकाद्वेष ॥ जैसे एकहीप्रलयकालकाअग्नि स्थावरजंगमरूपसंपूर्णजगत्कूंदाहकरै है ॥ तैसे एकहीब्रह्मवेत्ताकाद्वेष विद्यादिकसंपूर्णगुणोंकूंनाशकरै है ॥ याअर्थविषे यहशाकल्यहीदृष्टांतहै ॥ काहेतैं यहशाकल्य यद्यपि बहुतविद्याविषेकुशलथा ॥ तथा सर्वगुणोंकरिकैसंपन्नथा ॥ तथापि ब्रह्मवेत्ताकाद्वेषरूपीअग्निनैं याशाकल्यकूं क्षणमात्रविषेदग्धकरिदिया ॥ किंवा ॥ जैसे यालोकविषेसमुद्रकेसुकावणेकी किसीकूंसंभावनानाहोतीनहीं ॥तैसे याज्ञवल्क्यकेशापकरिकै याशाकल्यकेमरणेकी यद्यपि किसीप्राणीकूं संभावनानहींथी॥ तथापि ब्रह्मवेत्तायाज्ञवल्क्यकेद्वेषकारिकै याशाकल्यका मृत्युहोताभया॥यातैं ब्रह्मवेत्ताकाद्वेष अद्भुतप्रभाववालाहै॥किंवा॥सर्वगुणोंकरिकैसंपन्न तथाबहुतविद्याविषेकुशल यहशाकल्यभी ब्रह्मवेत्ताकेद्वेषकरिकै जभी याप्रकारकीदुर्गतिकूंप्राप्तहोताभया॥तभी विद्यादिकगुणोंतैंरहितइतरपुरुषब्रह्मवेत्ताकेद्वेषकरिकै किसदुर्गतिकूं नहींप्राप्तहोवैंगे ॥ किंतु सर्वदुर्गतियोंकूं प्राप्तहोवैंगे ॥ यातैं ब्रह्मवेत्ताज्ञानीपुरुषकेसाथ कदाचित्द्वेषनहींकरणा ॥ किंवा ॥ ब्रह्मवित्परमाप्नोति ॥ अर्थयह ॥ ब्रह्मवेत्तापुरुष ब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यह श्रुति हमोने आजदिनविषे सत्यहुईदेखी ॥ काहेतैं विद्यादिकसर्वगुणसंपन्न जोयहशाकल्यहै ॥ ताकेमारणेविषे जीवोंकासामर्थ्यहैनहीं ॥ किंतु अचिंत्यशक्तिपरमात्माकाही यहकार्य है ॥ यातैं यहजान्याजावै है ॥ यहयाज्ञवल्क्य साक्षात्ब्रह्मरूपहै ॥किंवा ॥ ब्रह्मवेत्तापुरुष सर्वात्मभावकूंप्राप्तहोवै है॥याप्रकारकीश्रुतिभी आजदिनविषे हमोंने सत्यहुई

देखी ॥ काहेतैं जैसे आपणेशत्रुकेनाशहुए देहधारीजीव सुखकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ तैसे याज्ञवल्क्यकाशत्रुजोशाकल्यहै ॥ ताकेनाशहुए संपूर्ण लोक सुखकूंप्राप्तभये हैं ॥ और जैसे देहधारीजीव आपणीनिंदाकरतेनहीं॥ किंतु आपणेतैंभिन्नजीवोंकीनिंदाकरैं हैं॥ तैसे यहसंपूर्णलोक याज्ञवल्क्यकीनिंदाकरतेनहीं ॥ किंतु वारंवार शाकल्यकीहीनिंदाकरैं हैं ॥ यातैं यहजान्याजावै है ॥ ब्रह्मवेत्ता यहयाज्ञवल्क्य सर्वजीवों काआत्माहै ॥ जोयहयाज्ञवल्क्य सर्वजीवोंकाआत्मारूपनहींहोता तौ जैसे देवदत्तनामापुरुषके शत्रुकेमरणेकरिकै यज्ञदत्तनामा पुरुषकूंसुखकीप्राप्तिहोतीनहीं ॥ तैसे याज्ञवल्क्यके शत्रुकेमरणेकरिकै अन्यसर्वलोकोंकूं सुखकीप्राप्तिनहींहोणीचाहिये ॥ और शाकल्य केमरणेकरिकै सर्वलोक सुखकूंप्राप्तभये हैं ॥ यातैं यहयाज्ञवल्क्य सर्वजीवोंका आत्मारूप है ॥ याकारणतैंही आपणाआत्मारूपजोयाज्ञ वल्क्यहै ॥ ताकी कोई प्राणी निंदाकरतानहीं ॥ किंतु संपूर्णलोक शाकल्यकीही निंदाकरैं हैं॥ किंवा ॥ यालोकविषे सर्वपापकर्मोंतैं ब्रह्म हत्यारूपपापकर्म अधिकहोवै है॥ और ताब्रह्महत्यातैंभी ब्रह्मवेत्तापुरुषकाद्वेषरूपपापकर्म अधिकहोवै है ॥ काहेतैं इसजन्मविषेकरीहुईब्रह्म हत्या इसीजन्म विषे पुरुषकूं दुःखरूपफलकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ किंतु सोब्रह्महत्या दूसरेजन्मविषे तापुरुषकूं दुःखरूपफलकीप्राप्तिकरै है ॥ और यहब्रह्मवेत्तापुरुषकाद्वेषतौ इसजन्मविषे तथाजन्मांतरविषे पुरुषकूं दुःखकीप्राप्तिकरै है॥याअर्थविषे यहशाकल्यही दृष्टांत है ॥काहेतैं उत्तमसिंहजा आसनादिकोंकेयोग्य तथाअत्यंतकोमल जोयहशाकल्यकाशरीरथा ॥ सो ब्रह्मवेत्ताकेद्वेषकरिकैपिशाचउन्मत्तपुरुषकीन्याईं याअपवित्रभूमिविषेपडाहै ॥ यातैं ब्रह्मवेत्ताकेद्वेषकरिकै याशाकल्यकूं इसजन्मविषे परमदुःखकीप्राप्ति भई है ॥ और याज्ञवल्क्यकेशापतैं याशाकल्यका दक्षिणायनकेकृष्णपक्षकीअमावस्याविषे मृत्युभयाहै ॥ यातैं यहजान्याजावै है ॥याशाकल्य अवश्यनरकविषे प्राप्तहोवैगा ॥ किंवा ॥ ब्रह्मवेत्तायाज्ञवल्क्यकेसाथ याशाकल्यने विनाहीकारणतैं द्वेषकऱ्याथा॥ताद्वेषरूपपापकर्मकारिकै केवलशाकल्यकूंही दुःखकी प्राप्तिनहींभई ॥ किंतु याशाकल्यने आपणेसंपूर्णबांधवोंकूंभी शोकरूपसमुद्रविषे प्राप्तकऱ्या॥ और आपणीस्त्रीकूंभी विधवाभावकीप्राप्ति करी॥और आपणेकूंभी नरकविषेप्राप्तकऱ्या॥और आपणेकोमलशरीरकूंभी भूमिविषेप्राप्तकऱ्या ॥ और आपणेपुण्यकर्मोंकूंभी पापरूपी

अग्निविषेप्राप्तकऱ्या ॥ यातैं जैसे ब्रह्मवेत्ताकेद्वेषकरिकै याशाकल्यकेदोनोंलोक भ्रष्टभये हैं ॥ तैसे अन्यभीजोकोईपुरुष ब्रह्मवेत्ताके साथ द्वेषकरैगा ॥ तिसकेदोनोंलोक भ्रष्टहोवैंगे ॥ हेशिष्य ॥ इत्यादिकवचनोंकरिकै जनकराजा तथागार्गी तथाअन्यब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र यहसंपूर्णलोकयाज्ञवल्क्यकीस्तुतिकरतेभये ॥ और शाकल्यकीनिंदाकरतेभये ॥ तिसतैंअनंतर शाकल्यकेशिष्य शाकल्यकेशरीर कूंउठाइकै संस्कारतैं रहितजोलौकिकअग्निहै ताकेविषे जलावतेभये ॥ तिसतैंअनंतर तेश्रद्धावान्शिष्य शाकल्यकेअस्थियोंकूंगृह विषेलेजाणेवासतैं तिनअस्थियोंकूंदुकूलविषेबाँधिकै गृहकूंजातेभये ॥ तहाँ मार्गविषे चांडालत्वजातिवालेचौर दुकूलविषेअस्थियों कूंदेखिकरिकै याप्रकारकीकल्पनाकरतेभये ॥ जनकराजाकेयज्ञतैं यहब्राह्मण सुवर्णलेआये हैं ॥ याप्रकार धनकेलोभयुक्त तेनिर्दय चौर तिनशिष्योंकूंमारिकरिकै दुकूलसहिततिनअस्थियोंकूं आपणेगृहविषेलेजातभये ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार शाकल्यकेमृत्युहुएतैं अनंतर तथाशाकल्यकेमरणेतैं जोसभाविषे हाहाकारशब्दभयाथा ताशब्दकेनिवृत्तहुएतैंअनंतर याज्ञवल्क्यमुनि सर्वब्राह्मणोंकेप्रति याप्र कारकावचन कहताभया ॥ याज्ञवल्क्यउवाच॥ हेसर्वब्राह्मणो॥तुमसंपूर्णविद्वान्ब्राह्मण कुरुपांचालादिक नानादेशोंतैंचलिकै यासमाजवि षेएकठेहुएहो ॥ यातैं हमाराएकवचन तुमसंपूर्ण श्रवणकरो ॥ तुमसंपूर्णब्राह्मणोंविषे जोब्राह्मण हमारेप्रति प्रश्नकरणेकीइच्छाकरताहोवै ॥ सोब्राह्मण निःशंकहोइकै हमारेप्रति प्रश्नकरै ॥ अथवा जोब्राह्मण हमारेप्रश्नकेउत्तरदेणेकीइच्छाकरताहोवै॥ तिसब्राह्मणकेप्रति मैं प्रश्नकर ताहूं॥और जोकिसीएकब्राह्मणविषे प्रश्नकरणेका तथा उत्तरदेणेका सामर्थ्य नहींहोवै ॥तौ तुमसंपूर्णब्राह्मण मिलिकै हमारेप्रतिप्रश्नकरो ॥ अथवा तुमसंपूर्णब्राह्मणोंकेप्रति मैं प्रश्नकरताहूं ॥ यादोनोंवार्तांविषे जोतुमारीइच्छाहोवै है ॥ सोकरो ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकावचन जभी याज्ञवल्क्यने सर्वब्राह्मणोंकेप्रति कह्या ॥ तभी तेसंपूर्णब्राह्मण याज्ञवल्क्यकेप्रति प्रश्नकरणेविषे तथा याज्ञवल्क्यके प्रश्नकाउत्तरदेणे विषे समर्थनहींहोतेभये ॥ किंतु शाकल्यकेमृत्युकूंदेखिकैभयभीतहुए तेब्राह्मण मौनकूंप्राप्तहोतेभये ॥ तिसतैंअनंतर सोयाज्ञवल्क्य आपणे विद्याकीउत्कृष्टताबोधनकरणेवासतैं आपही सर्वब्राह्मणोंके प्रति प्रश्नकरताभया ॥ हेब्राह्मणो॥ जैसे लोकविषे पुष्पोंतैं विनाहीं फलकूंग्रह

णकरणेहारे पिप्पलादिकवृक्ष मिथ्याप्रतीतहोवैं हैं ॥ तैसे यहमनुष्यादिकशरीरभी मिथ्याहीप्रतीतहोवै है ॥ अब मनुष्यादिकशरीरोंविषे तथापिप्पलादिकवृक्षोंविषे समानता दिखावैं हैं हेब्राह्मणो ॥ जैसे पिप्पलवृक्षकेअनेकपत्रहोवैं हैं ॥ तैसे यामनुष्यादिकशरीरकेअनेक लोमहैं ॥ और जैसे पिप्पलवृक्षकी बाह्यत्वचा कठिनहोवै है ॥ तसे याशरीरकीभीबाह्यत्वचाकठिनहै ॥ और जैसे कुठारकरिकैछेदनकि येहुए वृक्षकेभीतरसे रसनिकसे है तथा श्वेतवस्त्रकेसमान त्वचाकानीचलाभागनिकसै है तैसे शस्त्रकरिकैछेदनहुए याशरीरतैंभी रुधिर निकसे है ॥ तथा श्वेतवस्त्रकेसमान त्वचाकानीचलाभागनिकसे है ॥ और जैसे कुठारकरिकैछेदनकियेतैं वृक्षतैं काष्ठमयखंड बाहर निकसैं हैं ॥ तैसे शस्त्रकरिकैछेदनकियेतैं याशरीरतैंभी मांसमयखंड बाहरनिकसैं हैं ॥ और जैसे पिप्पलादिकवृक्षोंविषेस्थितनाडियां मिलिकरिकै ग्रंथीकूंकरैं हैं ॥ तैसे मनुष्यादिकशरीरोंविषेभी अनेक सूक्ष्मनाडियाँ मस्तकादिकअंगोंविषे एकठीहोइकै ग्रंथिकूंकरैं हैं ॥ और जैसे वृक्षकेभीतर कठिनसारभागहोवैहै ॥ तैसे यामनुष्यादिकशरीरोंविषेभी कठिनअस्थियां है ॥ और जैसे वृक्षके कठिनसारभाग विषे रसहोवैहै ॥ तैसे यामनुष्यादिकशरीरोंकेअस्थियोंविषे मज्जारूपीरसहोवैहै ॥ यातैं मनुष्यादिकशरीरोंविषे तथापिप्पलादिकवृक्षों विषे सर्वप्रकारतैं समानताप्रतीतहोवै है ॥ परंतु हेब्राह्मणो ॥ मनुष्यादिकशरीरोंविषे तथापिप्पलादिकवृक्षोंविषे एकविशेषताभी प्रतीतहो वैहै ॥ सोविशेषता जिसकारणतैं है ॥ सोकारण तुमसंपूर्णब्राह्मण हमारेप्रति कथनकरो ॥ अब ताविशेषताकूंदिखावैं हैं ॥ हेब्राह्मणो ॥ जैसे कुठारादिकोंकरिकै छेदनहुआवृक्ष पुनःतिसामूलतैं नवीनहोइकै उत्पन्नहोवै है ॥ यहसर्वलोकोंकूं अनुभवसिद्धहै ॥ तैसे नाशकूंप्राप्तहुए यहशरीरादिक जिसमूलतैंनवीनहोइकै उत्पन्नहोवैं हैं ॥ सोमूल प्रत्यक्षदेखीतानहीं ॥ और मूलतैंविना नवीनशरीरोंकीउत्पत्तिसंभवैनहीं ॥ यातैं शरीरादिकोंकाभी कोईमूलहोवैगा ॥ सोमूल तुमसर्वब्राह्मण हमारेप्रतिकहो ॥ और हेब्राह्मणो ॥ जोतुम पिताकावीर्य तथामाताका रक्त याशरीरकामूलकहो ॥ सोयहतुमाराकहणा संभवैनहीं ॥ काहेतैं प्राणोंकूंधारणकरणेहारे जेदेहधारीजीवहैं ॥ तिनोंविषे अन्नादिकोंके भक्षणतैं वीर्यकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ और हमारेपूछणेकातौ यहअभिप्रायहै ॥ जिससुषुप्तिअवस्थाविषे तथाप्रलयअवस्थाविषे संपूर्णकार्यप्रपंच

कानाशहोवै है ॥ तिसतैंअनंतर किसीमूल कारणतैं नवीनदेहादिक उत्पन्नहोवैं हैं ॥ और मातापितादिकोंकेशरीर प्रलयकालविषे हैंनहीं ॥ यातैं देहकामूलकारण वीर्यनहीं ॥ और हेब्राह्मणो जोतुमयहकहो ॥ जैसे पिप्पलकावृक्ष प्रसिद्धआपणेमूलतैं विनाभी अन्यवृक्षकेऊपरनवीनहो इकैउत्पन्नहोवैहै ॥ तैसे यहशरीरभी मूलतैंविनाहीं नवीनहोइकैउत्पन्नहोवैगा ॥ सोयहतुमाराकहणाभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं अन्यवृक्षकेऊपर जो पिप्पलकावृक्षउत्पन्नहोवै है ॥ सो यद्यपि आपणेमूलतैं उत्पन्नहोवैनहीं ॥ तथापि तावृक्षकेऊपर पिप्पलकेबीजकूंपक्षीलेजावैं हैं ॥ तावीजतैं तहां पिप्पलकावृक्ष उत्पन्नहोवैहै ॥ बीजतैंविना अन्यवृक्षकेऊपर पिप्पलकावृक्ष उत्पन्नहोवैनहीं ॥ तैसे याशरीरादिकोंके मूलरूपकारणकेअभावहुएभी बीजरूपकारण कोईतुमारेकूं कह्याचाहिये ॥ सोबीजकेसमान याशरीरादिकोंकाकौनकारण है यहतुमकहो और हेब्राह्मणो ॥ जोतुमयहकहो शरीरादिकप्रपंचकेमूलरूपकारणके तथाबीजरूपकारणके निश्चयकरणेकरिकै ॥ किसीप्रयोजनकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ सोयहतुमाराकहणा संभवै नहीं ॥ काहेतैं जैसे जिसपुरुषपकूंवृक्षकेनाशकरणेकीइच्छाहोवै है ॥ सोपुरुष तावृक्षकेमूलका कुठारकरिकैछेदनकरै है ॥ तथा तावृक्षकेबीजकूं अग्निविषेजलावै है ॥ तादोनोंउपायोंकरिकै वृक्षकानाशहोवैहै ॥ तैसे याअधिकारीपुरुषकूं जभी शरीरादिकप्रपंचकेमूलका तथाबीजकाज्ञान होवै है ॥ तभी सोअधिकारीपुरुष असंगबुद्धिरूपशस्त्रकरिकै तथाज्ञानरूपीअग्निकरिकै तामूलबीजकानाशकरै है ॥ मूलादिकोंकेज्ञानतैंविना ताकानाशकरणासंभवैनहीं ॥ यातैं देहादिकप्रपंचकामूलरूपकारण तथाबीजरूपकारण अवश्यजान्याचाहिये ॥ और हेब्राह्मणो ॥ जोतुमयह कहो ॥ जोपदार्थ एकवार उत्पन्नहोता है ॥ सोपदार्थ पुनःदूसरीवार उत्पन्नहोतानहीं ॥ किंतु स्वभावरूप कारणतैं अपूर्वपदार्थही उत्पन्नहोवै है ॥ यातैं मूलकेविचारकरणेका कछुप्रयोजननहीं ॥ सोयहतुमाराकहणाभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं जोएकवार उत्पन्नहुएपदार्थकी पुनः उत्पत्ति नहींअंगीकारकरिये ॥ तौ करेहुएपुण्यपापरूपकर्मोंका भोगेतैं विनाहींनाशहोवैगा ॥ और न करेहुएपुण्यपापरूपकर्मोंका सुखदुःखरूपफल भोगणाहोवैगा ॥ यहकृतनाश अकृताभ्यागमरूप दोनोंदोषोंकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और जोपूर्वउत्पन्नहुएपदार्थकी पुनःउत्पत्ति अंगीकारकरिये तौ यहदोनोंप्रकारकेदोष प्राप्तहोवैनहीं ॥ काहेतैं पूर्वजन्मविषे याजीवनैं जोपुण्यपापकर्मकरे हैं ॥ तिनपुण्यपापरूपकर्मोंकाफल सुखदुःख

इसजन्मविषेभोगे है ॥ और इसजन्मविषे जोजीव पुण्यपापकर्मोंकूंकरै है ॥ तिनकर्मोंकाफल जन्मांतरविषे भोगेगा ॥ यातैं पूर्वउत्पन्नहुएप
दार्थविषेहीं पुण्यपापरूपअदृष्टरहै है ॥ और जोपदार्थ नरशृंगक्षीन्याई पूर्वकदाचित्भीउत्पन्ननहींभया ॥ तापदार्थविषे पुण्यपापरूपअदृष्ट
संभवैनहीं ॥ किंवा॥ जोपूर्वउत्पन्नहुएपदार्थकी पुनःउत्पत्ति नहींअंगीकारकरिये ॥ तौ माताकेगर्भतैं निकस्याहुआबालक तिसीकालविषे
स्तनपानविषे प्रवृत्तहोवैहै सो न होणाचाहिये॥ काहेतैं यहपदार्थ मेरेसुखकासाधनहै याप्रकारका सुखसाधनताज्ञान जीवोंकेप्रवृत्तिविषेकार
ण है ॥ सुखसाधनताज्ञानतैंविना किसीजीवकीप्रवृत्तिहोतीनहीं॥ और जन्मकालविषे यहस्तनपान हमारेसुखकासाधन है याप्रकारकाज्ञान
ताबालककूंहै नहीं॥ यातैं ताबालककी स्तनपानविषे प्रवृत्तिनहींहोणीचाहिये॥ और उत्पन्नहुएपदार्थकी जोपुनःउत्पत्तिअंगीकारकरिये॥ तौ
यादूषणकीप्राप्तिहोवैनहीं काहेतैं जन्मकालविषे याजीवकूं यद्यपि यहस्तनपानहमारेसुखकासाधन है याप्रकारकाज्ञान अनुभवरूप नहीं ॥
तथापि पूर्वअनंतजन्मोंविषे यहजीव स्तनपानविषे सुखकीसाधनताका अनुभवकरिआया है॥ ताअनुभवजन्यसंस्कारोंतैं याजीवकूं जन्म
कालविषे यहस्तनपानहमारेसुखकासाधन है याप्रकारकास्मृतिज्ञानहोवै है॥ तिसतैंअनंतर यहबालक स्तनपानविषेप्रवृत्तहोवै है॥ यातैं उत्प
न्नहुएपदार्थकीहीउत्पत्तिहोवै है॥ अपूर्वपदार्थकीउत्पत्तिहोवैनहीं॥ और हेब्राह्मणो॥ जोतुमयहकहो जैसे बीजतैं अकुंरहोवै है और अंकुरतैं पुनः
बीजहोवै है ॥ तैसे पुण्यपापरूपअदृष्टतैं यहशरीरहोवै है॥ और याशरीरतैं पुनः पुण्यपापरूपअदृष्टहोवै हैं॥ यातैं दूसरेकिसीकारणकाविचा
रकरणा निष्फल है ॥ सोयहतुमाराकहणाभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं जैसे बीजविषे तथा अंकुरविषे पृथ्वीरूपकारण अनुगतहुआप्रतीतहो
वै है ॥ तैसे पुण्यपापरूपअदृष्टविषे तथाशरीरविषे कोईअनुगतकारण प्रतीतहोतानहीं ॥ यातैं बीजअंकुररूपविषमदृष्टांतकरिकै अदृष्टशरी
रका कार्यकारणभावसिद्धहोवैनहीं ॥ और हेब्राह्मणो ॥ जैसे बीजविषे तथाअंकुरविषे पृथ्वीरूपमूलकारण अनुगत है ॥ तैसे पुण्यपापरूप
अदृष्टविषे तथाशरीराविषेभी कोईमूलभूतकारण अनुगतहोवैगा॥ सोमूलभूतकारण यद्यपि प्रत्यक्षादिकलौकिकप्रमाणोंकरिकै सिद्धनहीं है॥
तथापिवेदरूपअलौकिकप्रमाणकरिकै सिद्ध है ॥ यातैं पुण्य पापरूपअदृष्टका तथाशरीरादिकप्रपंचका जो उपादानकारण है ॥ ताका

स्वरूप तथा लक्षण तुमसर्वब्राह्मण हमारेप्रति कथनकरो॥ हेशिष्ययाप्रकारकाप्रश्न जभीयाज्ञवल्क्यनें सर्वब्राह्मणोंकेप्रतिकऱ्यातभी तेसंपूर्ण
ब्राह्मण जगत्केकारणकूं नहीं जाणतेभये॥ यातैं तेसंपूर्ण ब्राह्मणपराजयकूंप्राप्तहोतेभये॥ तिसतैंअनंतर सोयाज्ञवल्क्यमुनि मुमुक्षुजनोंकेहित
वासतैं आपही ताप्रश्नकेउत्तरकूंकहताभया ॥ याज्ञवल्क्यउवाच॥ हेब्राह्मणो ॥ स्थूलसूक्ष्मरूप जितनाकीजडप्रपंचहै ॥ तिसका विज्ञानआ
नंदरूप परमात्माहीं कारणहै ॥ कैसाहैसोपरमात्मादेव सुवर्णादिकपदार्थोंकेदानकरणेहारे जेपुरुष हैं ॥ तिनोंकूंसुखरूपफलकीप्राप्तिकरणे
हारा है॥ और ब्रह्महत्यादिकपापकर्मोंके करणेहारेजेपुरुष हैं॥ तिनोंकूं दुःखकीप्राप्तिकरणेहारा है॥ यहांयहतात्पर्य है ॥ परमात्माका दोप्रकार
कालक्षणहोवै है ॥ एकतौ स्वरूपलक्षण ॥ और दूसरा तटस्थलक्षण ॥ तहां जोलक्षण आपणेलक्ष्यकास्वरूपहुआ इतर पदार्थोंतैंआपणे
लक्ष्यकीव्यावृत्तिकरै है॥ ताकूं स्वरूपलक्षणकहै हैं॥ जैसे विज्ञान आनंद ब्रह्मकेस्वरूपभूतहुए जडप्रपंचतैं ब्रह्मकीव्यावृत्तिकरै हैं॥ यातैं विज्ञा
नआनंद यह ब्रह्मका स्वरूपलक्षणहै ॥ और जोलक्षण आपणेलक्ष्यविषेसर्वदानहींरहैहै ॥ किंतु कदाचित्रहै है कदाचितनहींरहै है ॥
और आपणेलक्ष्यकूं इतरपदार्थोंतैंभिन्नकरिकैजनावैहै ताकूं तटस्थलक्षणकहैहैं ॥ जैसे सुखदुःखरूपफलदातृत्व ब्रह्मविषे सर्वदारहै
नहीं ॥ किंतु जगत्केस्थितिकालविषेरहैहै ॥ और आकाशादिकजडपदार्थोंतैं लक्ष्यरूपब्रह्मकीव्यावृत्तिकरैहै ॥ यातैं सुखदुःखरू
पफलदातृत्व ब्रह्मकातटस्थ लक्षण है ॥ इस प्रकार जगत्केमूलकारणकूं निरूपण करिकै ॥ अब पूर्व उक्तवृक्षरूप दृष्टांतकी समानता
दिखावैं हैं ॥ हेब्राह्मणो ॥ जैसे वृक्षके मूलकेनाशहुएभी पुनःवृक्षकीउत्पत्तिविषे बीज कारणहोवै है ॥ तैसे याजीवोंके स्थूलशरीरकेनाश
हुएभी पुनःस्थूलशरीरकीउत्पत्तिविषे सूक्ष्मशरीर कारण है ॥ और जैसे तिनबीजोंकेभीनाशहुएतैंअनंतर केवलपृथिवी स्थितहोवै है ॥
तैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे तथाप्रलयकालविषे तासूक्ष्मशरीरकेभी लयहुएतैंअनंतर केवलअज्ञान स्थितहोवै है॥ शंका ॥ हे याज्ञवल्क्यअज्ञा
नतैं तथासूक्ष्मशरीरतैंहीं सर्वजगत्कीउत्पत्ति संभवहोइसकैहै ॥ ब्रह्मकूं किसवासतैंअंगीकारकरणा ॥समाधान ॥हेब्राह्मणो.जैसे वृक्षकीउत्प
त्तिकरणेविषे बीजकूं अदृष्टरूपनिमित्तकारणकीअपेक्षाहोवै है ॥ तैसे स्थूलशरीरकीउत्पत्तिकरणेविषे सूक्ष्मशरीरकूं परमात्माकीअपेक्षाहो

वैहै ॥ चैतन्यरूपपरमात्माकीसत्तातैंविना जडसूक्ष्मशरीर स्थूलशरीरकीउत्पत्तिकारिसकैनहीं ॥ यातैं परमात्माकूं अवश्यअंगीकारकऱ्याचाहिये ॥ किंवा ॥ पृथिवीविषेस्थितजे बीज हैं॥तिनोंका अंकुररूपकार्यद्वारा ज्ञानहोवै है॥ तहाँ पृथिवीविषे संस्काररूपकरिकैजोबीजों कीस्थितिहै॥सोअंकुररूपकार्यद्वारा बीजोंकेज्ञानविषेकारणहै॥काहेतैं जोसंस्काररूपकरिके बीज पृथिवीविषेनहींहोवै॥तौ अंकुररूपकार्य द्वारातिनबीजोंकाज्ञान होवैगानहीं॥तैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे तथाप्रलयकालविषेस्थितजो अज्ञानहै॥सोअज्ञानहीं सृष्टिकालविषे सूक्ष्मशरी राकारपरिणामकूंप्राप्तहोवै है॥यातैं अज्ञानविषे जोसूक्ष्मशरीरकेसंस्कारहैं॥तेसंस्कार सूक्ष्मशरीरकीउत्पत्तिकेकारणहैं॥ काहेतैं जोप्रलयका लविषे सूक्ष्मशरीरकेसंस्कार अज्ञानविषेनहींहोवैं॥तौ सृष्टिकालविषे अज्ञानतैं सूक्ष्मशरीरकीउत्पत्ति नहींहोणीचाहिये ॥ यातैं प्रलयका लविषे सूक्ष्मशरीरकेसंस्कार अज्ञानविषेरहैं हैं ॥ और तेसंस्कार अत्यंतसूक्ष्महं ॥ यातैं सर्वज्ञपरमात्मातैंविना किसीजीवकरिकैजावैंनहीं॥ यातैं तिनसूक्ष्मसंस्कारोंकूंजानणेहारा सर्वज्ञपरमात्मा अवश्यअंगीकारकऱ्याचाहिये ॥ किंवा ॥ जैसे अमूर्त्तआकाशविषे यहमूर्त्तरूपपृ थिवीस्थितहै ॥ तैसे विज्ञानरूपपरमात्माविषे यहजडअज्ञानस्थितहै॥चैतन्यरूपपरमात्मातैंविना अन्यकितीपदार्थविषे अज्ञानरहैनहीं ॥ काहेतैं चैतन्यपरमात्मातैंभिन्न जितनेकजडपदार्थ हैं ॥ ते अज्ञानकाकार्य हैं ॥ यातैं तिनजडपदार्थोंविषे अज्ञानरहैनहीं॥किंवा॥अज्ञान जिसकेआश्रितरहै है ॥ तिसीपदार्थकूं अंधकारकीन्याईं आवरणकरैहै॥यहअज्ञानकास्वभावहै॥और आकाशादिकजडपदार्थ स्वभावतैं हींआवरणरूपहैं ॥ यातैं अज्ञानकृतआवरण तिनजडपदार्थोंविषेसंभवैनहीं याकारणतैंभी जडपदार्थोंविषे अज्ञान नहींरहै है ॥ किंवा ॥ जोवादी आकाशादिकजडपदार्थोंकेआश्रित अज्ञानकूंअंगीकारकरै ॥ तासैं यहपूछाचाहिये ॥ जभी आकाशादिकजडपदार्थ नहींउत्प न्नभयेथे ॥ तभी सोअज्ञान आश्रयतैंविनारहताथा ॥ अथवा किसीदूसरेकेआश्रितरहताथा ॥ तहाँ जोप्रथम निराश्रयपक्ष अंगीकार करौ सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं लोकविषे अज्ञानहै याप्राकारकाशब्दश्रवणकरिकै लोक यह पूछे हैं ॥ किसवस्तुकाअज्ञानहै तथाकिसविषे अज्ञानहै ॥ याप्रकारकेलोंकोकोअनुभवतैं अज्ञानविषेआश्रयकी तथाविषयकी अवश्यअपेक्षारहैहै॥ यातैं आश्रयतैंविना अज्ञानरहैनहीं॥

और आकाशादिकजडपदार्थोंकीउत्पत्तितैंपूर्व किसीदूसरेकेआश्रित अज्ञानरहै है ॥ यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ तासैं यहपूछा चाहिये॥सोदूसरा जीवहै अथवा ईश्वरहै अथवा शुद्धपरमात्माहै ॥ तहाँ जीवईश्वरविषे तौ अज्ञानकीआश्रयतासंभवैनहीं ॥ काहेतैं अज्ञान विशिष्टचैतन्यकानाम जीवईश्वरहै ॥ ताजीवईश्वरविषे जो अज्ञानकीआश्रयतामानिये ॥ तौ अज्ञानविषे अज्ञानकीआश्रयतारूप आत्मा श्रयदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ यातैं जीवईश्वरकेआश्रित अज्ञाननहीं ॥ किंतु परिशेषतैं शुद्धपरमात्माकेआश्रित अज्ञानरहै है ॥ यह सर्ववेदांत कासिद्धांत है॥और हेब्राह्मणो ॥ जैसे यालोकविषे निर्धनपुरुष धनीपुरुषकूंआश्रयणकरै है ॥ तैसे दुःखरूपयहअज्ञान विज्ञान आनंदरूप आत्माकूं आश्रयणकरै है॥ अब विज्ञानआनंददोनोंका अभेददिखावै हैं ॥ हेब्राह्मणो ॥ यालोकविषेभी विज्ञानतैंभिन्नआनंददेखीता नहीं काहेतैं मैं सुखी हूं याप्रकारकेज्ञानतैंविना आनंदकीसिद्धिहोवैनहीं॥यातैं आनंद विज्ञानरूपहै॥शंका॥जैसे मैंसुखीहूं याप्रकारके विज्ञानतैं विना सुखकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ यातैं सुख विज्ञानरूपहै ॥ तैसे मैंदुःखीहूं याप्रकारकेज्ञानतैंविना दुःखकी भीसिद्धिहोवैनहीं॥यातैं दुःखभी विज्ञानरूपहोणाचाहिये॥समाधान॥हेब्राह्मणो॥सुख विज्ञानरूपहै याकेविषे केवललोकप्रसिद्धिप्रमाणनहीं॥किंतु विज्ञानमानंदंब्रह्म ॥ यहश्रु तिभीप्रमाणहै॥तैसे दुःखकीविज्ञानरूपताविषे कोईश्रुति तथाप्रत्यक्षादिकप्रमाणहैं नहीं॥यातैं दुःखविज्ञानरूपनहीं॥शंका॥हेयाज्ञवक्ल्य॥ सर्वशास्त्रोंविषे अप्राप्तवस्तुकीप्राप्तिरूपयोग तथाप्राप्तवस्तुकापरिपालनरूपक्षेम यादोनोंरूपोंकरिकै सुखदुःखकीसमानताहीं कथनकरीहै॥ यातैं जोसुखकूंविज्ञानरूपमानोगे ॥ तौ दुःखकूंभीविज्ञानरूपता होणीचाहिये ॥ और जोसुखकूं विज्ञानरूपमानिकैदुःखकूं विज्ञानरूप नहींमानोगे ॥ तौ सर्वशास्त्रोंविषेकथनकरीहुई सुखदुःखकीसमानयोगक्षेमता असंगतहोवैगी ॥समाधान ॥ हेब्राह्मणो यद्यपि सर्वशास्त्रोंविषे सुखदुःखकीसमानताकही है ॥ तथापि सुखदुःखविषे याप्रकारकीविलक्षणता सर्वलोकोंकूं अनुभवसिद्ध है ॥ संपूर्णलोक यहसुख हमारेकूं सर्वदाहोवै याप्रकार आत्मसंबंधिसुखकीइच्छाकरैं हैं ॥ और संपूर्णलोक यह दुःख हमारेकूं कदाचित्भीनहोवै याप्रकार दुःखविषेद्वेषबुद्धि करैं हैं ॥ याकहणेतैं यहसिद्धभया॥मेरेकूं यहपदार्थ सर्वदाहोवै या प्रकारकीइच्छाकाविषय जोपदार्थहोवै है सोपदार्थ अनुकूलहोवै है॥ तथा

स्वशब्दकरिकैप्रतिपाद्यहोवै है॥ और मेरेकूं यहपदार्थ कदाचित्भीनहींहोवै याप्रकारकीइच्छाकाविषय जोपदार्थहोवै है॥ सोपदार्थप्रतिकूलहो वै है तथा स्वशब्दकरिकै अप्रतिपाद्यहोवै है॥ तहाँ मेरेकूंसर्वदासुखहोवै याप्रकारकीइच्छा सर्वजीवोंकूंहोवै है॥ ताइच्छाविषेभी सर्वदासुखहोवै इतनैअंशकरिकै तौ सुखविषे अनुकूलताप्रतीतहोवै है॥ और मेरेकूं इतनेअंशकरिकै सुखविषे स्वशब्दकीप्रतिपाद्यता प्रतीतहोवै है॥ यातैं यहसुखका लक्षणसिद्धभया ॥ जो सर्वदाअनुकूलहोवै तथा स्वशब्दकरिकैप्रतिपाद्यहोवै ताकूं सुखकहै हैं॥ और मेरेकूं दुःख कदाचित्भी नहोवै याप्रकारकीइच्छाभी सर्वजीवोंकूंहोवै है ॥ यातैं दुःखका यहलक्षणसिद्धभया ॥ जो सर्वजीवोंकूंप्रतिकूलहोवै तथास्वशब्दकरिकैअप्र तिपाद्यहोवै ताकूं दुःखकहैं हैं॥ तहाँ जोअनुकूलहोवै ताकूंसुखकहैं हैं इतनाजो सुखकालक्षणकरिये ॥ तौ वैरीपुरुषकासुखभी सुखरूपकरि कैअनुकूलहीवै है॥ यातैं वैरीपुरुषकासुखभी अन्यपुरुषकूं सुखरूपहोणाचाहिये ॥ और वैरीकासुख किसीकूं सुखरूपहोइकैप्रतीत होवै नहीं याकारणतैं स्वशब्दकरिकैप्रतिपाद्यकह्या ॥ और जोस्वशब्दकरिकैप्रतिपाद्यहोवै ताकूंसुखकहैं हैं॥ इतनाहीं जोसुखकालक्षणकरिये ॥ तौ यहमेराशत्रुहै यहमेरादुःखहै याप्रकारकीप्रतीति सर्वजीवोंकूंहोवै है ॥ यहाँ स्वशब्दकरिकैप्रतिपाद्यता बैरीविषे तथादुःखविषेभी प्रतीतहो वै है ॥ यातैं वैरी तथादुःखभी सुखरूपहोणाचाहिये॥ याकारणतैं अनुकूलकह्या॥ वैरीविषे तथा दुःखविषे किसीकूं अनुकूलताज्ञानहै नहीं ॥ शंका ॥ जो अनुकूलहोवै तथास्वशब्दकरिकैप्रतिपाद्यहोवै ताकूं सुखकहैं हैं ॥ यासुखकेलक्षणविषे स्वशब्दकाअर्थ आत्माका संबंधी लेणा ॥ अथवा स्वशब्दकाअर्थ आत्माहीलेणा॥ तहाँ जो आत्माका संबंधी स्वशब्दकाअर्थमानिये॥ तौ जैसे आत्माकेसंबंधीशरीरादिक आत्मारूपनहीं हैं॥ तैसे आत्माकासंबंधी सुखभी आत्मारूपनहींहोवैगा ॥ और जोस्वशब्दकाअर्थ आत्मा मानिये ॥ तौ मेरेकूंसुखहोवै याप्रतीतिविषे सुखका तथाआत्माका भेदप्रतीतहोवै है सो न होणाचाहिये॥ किंतु मैंसुखीहूं याप्रकारकीप्रतीतिहोणीचाहिये॥ समाधान॥ सुखकेलक्षणविषे जोस्वशब्दहै ॥ ताका आत्माकासंबंधी अर्थनहीं ॥ किंतु आत्माही तास्वशब्दकाअर्थ है॥ यातैं सुख आत्मारूप है॥ और जैसे लोकविषे यहपुरुष आपका आपहीउपकारकरताहै याप्रकारका शब्द उच्चारणकरैं हैं॥ ताशब्दकरिकै यद्यपि आपणेविषेआप

णाभेद प्रतीतहोवै है ॥ तथापि आपणेविषेआपणाभेदहैनहीं॥ यातैं सोप्रतीति भ्रमरूपहै॥ तैसे श्रुतिप्रमाणकरिकै सुखआत्माकेअभेदकी सिद्धिहुएभी मेरेकूंसुखहोवै याप्रकारकेशब्दकरिकै जो सुख आत्माका भेद प्रतीतहोवै है सोप्रतीति भ्रांतिरूपहै ॥ यातैं ताभ्रांतिज्ञानक रिकै सुख आत्माकाभेद सिद्धहोवै नहीं ॥ किंवा ॥ सुखका तथा आत्माका जो परस्परसंबंधहै सो नित्यहै ॥ काहेतैं जो सुख आत्माकासंबंध अनित्यमानिये ॥ तौ जो अनित्यपदार्थहोवै है ॥ सो किसीकालविषे होवै है और किसीकालविषेनहींहोवै है ॥ जैसे घटादिकअनित्यपदार्थ किसीकालविषे हैं और किसीकालविषेनहीं हैं ॥ तैसे सुखआत्माकासंबंधभी जिसकालविषेनहींहोवैगा ॥ तिसकालविषे आत्मा सुखतैंभिन्नहोवैगा ॥ और जो सुखतैंभिन्नहोवै है ॥ सोदुःखकीन्याईं प्रतिकूलहीहोवैहै॥ यातैं आत्माविषेभी प्रतिकू लताहोणीचाहिये ॥ और किसीकालविषे किसीजीवकूं आपणेआत्माविषे प्रतिकूलताहोवैनहीं॥ किंतु सर्वजीवोंकूं आपणेआत्माविषे अनु कूलताहीहोवै है ॥ यातैं सुखआत्माका नित्यसंबंधहै॥ शंका॥ समवायसंबंधकूंही नैयायिक नित्यसंबंधमानैं हैं॥ और गुण द्रव्यविषे सम वायसंबंधकरिकैरहै है॥ यातैं सुखरूपगुणभी आत्माविषे समवायसंबंधकरिकैरहै है॥ और जिनोंका समवायसंबंधहोवैहै ॥ तिनोंका परस्पर भेदहीहोवै है ॥ यातैं सुखआत्माका भेदहीसिद्धहोवैगा ॥ समाधान ॥ सुखआत्माका परस्पर समवायसंबंधनहीं ॥ किंतु कल्पितभेदयुक्त वास्तवअभेदरूप जोतादात्म्यसंबंधहै ॥ सोतादात्म्यहीं सुखआत्माका नित्यसंबंधहै ॥ काहेतैं नेतिनेति यहश्रुति आत्मातैंभिन्न सकलजगत्कानिषेधकरै है ॥ और हेब्राह्मणो ॥ जैसे सुख आत्मातैंभिन्ननहीं ॥ तैसे विज्ञानभी आत्मातैंभिन्ननहीं ॥ काहेतैं जोविज्ञानकूं आत्मातैंभिन्न अंगीकारकरिये ॥ तौ जैसे बुद्धिकीवृत्तिरूप गौणज्ञान आत्मातैंभिन्नहै यातैं जडरूपहै ॥ तैसे आत्मातैंभिन्नहुआविज्ञानभी जडरूपहोवैगा ॥ और जोजोपदार्थ जडहोवै है॥ तिसकूं आपणीसिद्धिआसतै अन्यज्ञानकीअपेक्षारहै है॥ जैसे घटादिकजडपदार्थ आपणी सिद्धिविषे अन्यज्ञानकीअपेक्षाकरै हैं॥ तैसे जडविज्ञानभी आपणीसिद्धिविषे किसीअन्यविज्ञानकीअपेक्षाकरैगा॥ और सोदूसराविज्ञानभी आपणी सिद्धिविषे किसी तीसरे विज्ञानकी अपेक्षाकरैगा ॥ या प्रकार विज्ञानोंकीअनवस्थारूपदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ किंवा ॥ जो

आपणीसिद्धिविषे अन्यविज्ञानकीअपेक्षाकरै हैं ॥ सो विज्ञानरूपहोवैनहीं ॥ जैसे घटादिकपदार्थ आपणीसिद्धिविषे अन्यविज्ञानकीअपेक्षाकरै हैं ॥ यातैं घटादिक विज्ञानरूपनहीं ॥ तैसे विज्ञानभी जोआपणेप्रकाशवासतैं दूसरेविज्ञानकीअपेक्षाकरैगा ॥ तौ विज्ञानभी घटादिकोंकीन्याईं अविज्ञानरूपहोवैगा और विज्ञानकूं अविज्ञानरूपकहणा अत्यंतविरुद्धहै ॥ यातैं सुखकीन्याईं विज्ञानभी स्वप्रकाशआत्मारूपहै ॥ और हेब्राह्मणो ॥ संपूर्णजगत्विषे मिथ्यात्वबोधनकरणेवासतै श्रुति विज्ञानआनंदरूपआत्माकूं ब्रह्मरूपकरिकै कथनकरै हैं ॥ तात्पर्ययह॥देशपरिच्छेद कालपरिच्छेद वस्तुपरिच्छेद यातीनपरिच्छेदोंतैंरहितमहान्अर्थकूं ब्रह्मशब्द बोधनकरैहै॥तहाँ प्रपंचकूँ जोसत्य मानिये ॥ तौ ब्रह्मविषे वस्तुपरिच्छेदकीप्राप्तिहोवैगी ॥ यातैं ब्रह्मशब्द आत्मातैंभिन्न सर्वजगत्विषे मिथ्यात्वकूंबोधनकरताहै ॥ और हेब्राह्मणो ॥ जैसे एकहीआकाशविषे घटमठादिकउपाधियोंकरिकै नानाप्रकारकाभेद प्रतीतहोवै है ॥ तैसे एकहीअद्वितीयआत्माविषे अज्ञानादिकउपाधियोंकरिकै नानाप्रकारकाभेद प्रतीतहोवै है ॥ यातैं ब्रह्मविषे सजातीयभेदनहीं ॥ और हेब्राह्मणो जैसे मायावीपुरुषनैं आपणीमायाकरिकै आकाशविषे उत्पन्नकऱ्याजो मायामयशरीर॥ताशरीररूपउपाधिकेविद्यमानहुए मायावीपुरुषका जोआकाशादिकोंविषेभेद प्रतीतहोवै है ॥ तथा आकाशादिकोंका जोमायावीपुरुषविषेभेद प्रतीतहोवै है॥सोभेद उपाधिकेमिथ्याहोणेतैं मिथ्याहीहै॥तैसे अज्ञानादिकउपाधियोंकेमिथ्याहोणेतैं तिनअज्ञानादिकोंकरिकैकऱ्याहुआ जोब्रह्मविषेनानाप्रकारकाभेदहै सोभी मिथ्याही है॥ यातैं विजातीयभेदभी ब्रह्मविषेनहीं ॥ और विज्ञानआनंदरूपब्रह्म सर्वदाएकरसहै तथानिरवयवहै॥यातैं स्वगतभेदभी ब्रह्मविषेनहीं ॥ और हे ब्राह्मणो ॥ यहजोविज्ञानआनंदरूपब्रह्म हमनैं तुमारेप्रतिकथनकऱ्याहै॥सोशुद्धब्रह्म जगत्काकारणहोवैनहीं॥किंतु मायाकरिकैविशिष्टहुआ सो ब्रह्म जगत्काकारणहोवैहै॥याअभिप्रायकरिकैही श्रुतिनैं पुण्यपापकेफलप्रदाताकूं जगत्काकारण कह्याहै ॥ शुद्धब्रह्मविषे फलप्रदातृत्वसंभवैनहीं ॥ और हेब्राह्मणो॥मायाविषे जगत्कीकारणता बोधनकरणेवासतैं मायाविशिष्टपरमात्माविषे जगत्कीकारणता पूर्वकथनकरी॥ परंतु याअर्थविषेभी अनुपपत्तिरूपदूषणकीप्राप्तिहोवै है ॥ काहेतैं चैतन्यकीसत्तातैंविना सोजडमाया आपणीस्थितिकरणेविषेभी समर्थ

नहींहोवै है ॥ तौ संपूर्णजगत्कैनिर्वाहकरणेविषे सोजडमाया किसप्रकार समर्थहोवैगी ॥ याप्रकारकेअनुपपत्तिकाविचारकरिकैसोवेदभगवान् केवलशुद्धब्रह्मकूंहीं सर्वजगत्काअधिष्ठानकथनकरताभया है ॥ और हेब्राह्मणो ॥ सोब्रह्म केवल जडअज्ञानकाअधिष्ठाननहीं ॥ किंतुब्रह्मचर्यादिकसाधनोंकरिकै जिनपुरुषोंकूं मैंब्रह्महूं याप्रकारकाअभेदज्ञानभया ॥ तिनविद्वान्पुरुषोंकाभी सोशुद्धब्रह्महीं परमस्थान है ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य ॥ मायाकरिकैविशिष्टहुआ जोब्रह्म पुण्यपापकेफलकादाता है ॥ और मायातैंरहितहुआ जो ब्रह्मज्ञानी पुरुषोंकाआत्मा है ॥ सोईहीब्रह्म याजगत्का उपादानकारण है ॥ याअभिप्रायकरिकै याज्ञवल्क्यमुनिने सर्वब्राह्मणोंतैं जगत्काकारणपूछाथा ॥ परंतु तेसंपूर्णब्राह्मण ताजगत्केकारणकूं नहींजाणतेभये ॥ ऐसाकारणरूपब्रह्म हमअधिकारियोंनैं वेदकेवचनोंतैं श्रवणकऱ्या है ॥ हे शिष्य ॥ याप्रकार सूर्यभगवान्काशिष्य सोयाज्ञवल्क्यमुनि गौवोंकूंगृहविषेलेजाणारूपनिमित्तकरिकै सर्वब्राह्मणोंकापराजय करता भया ॥ और ब्रह्मवेत्ताकाद्वेषी जोशाकल्यथा ताकूं भस्मकरताभया ॥ और जोब्रह्मविद्या सूर्यभगवान्नैं याज्ञवल्क्यकेप्रति कथनकरीथी ॥ और जोब्रह्मविद्या याज्ञवल्क्यने सर्वब्राह्मणोंसेपूछीथी ॥ सोब्रह्मविद्या याज्ञवल्क्यमुनि श्रद्धावान्जनकराजाकेप्रति उपदेशकरताभया ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य स्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपाद शिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचिते प्राकृतआत्मपुराणे बृहदारण्यकयाज्ञवल्क्यकांडसारार्थप्रकाशे ऋषियाज्ञवल्क्यसंवादोनाम पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

इतिश्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषा आत्मपुराणेपंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

इति स्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषाआत्मपुराणे पञ्चमोऽध्यायःसमाप्त ॥

॥ अथ स्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषाआत्मपुराणे षष्ठोऽध्यायप्रारंभः ॥

ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यानमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथ षष्ठाअध्यायप्रारंभः ॥ पूर्वपंचमअध्यायविषे बृहदारण्यकउपनिषद्के याज्ञवल्क्यकांडकाअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ अब षष्ठअध्यायविषे तिसीयाज्ञवल्क्यकांडके अर्थकूं निरूपणकरैं हैं ॥ तहां पूर्वअध्यायोंविषे ब्रह्मविद्याकरिकैयुक्त जेनानाप्रकारकीकथा हैं ॥ तिनकथावोंकूं गुरुकेमुखतैं श्रवणकरिकै सो श्रद्धावान्शिष्य पुनःआपणेगुरुसैंपूछताभया ॥ शिष्यउवाच ॥ हेभगवन् प्रथमअध्यायविषे आपने वामदेवादिकअधिकारियोंके तथा सनकादिकऋषियोंके संवादकरिकै ऐतरेयउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ और द्वितीयअध्यायविषे आपने इंद्रप्रतर्दनकेसंवादकरिकै कौशीतकिउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्या॥और तृतीयअध्यायविषे आपने अजातशत्रु बालाकीकेसंवादकरिकै तिसीकौशीतकीउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ और चतुर्थअध्यायविषे आपने दध्यङ्अथर्वण अश्विनीकुमार देवराजइंद्रकेसंवादकरिकै बृहदारण्यकउपनिषद्के मधुकांडकाअर्थ निरूपणकऱ्या॥औरपंचमअध्यायविषे आपणे याज्ञवल्क्य आश्वलादिकऋषियोंकेसंवादकरिकै बृहदारण्यकाउपनिषद्के याज्ञवल्क्यकांडकाअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ तिनसंपूर्णअध्यायोंविषे नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं हमारेप्रति कथनकरी॥और हेभगवन् ॥ पंचमअध्यायकेअंत्यविषे आपने यहकह्याथा सूर्यभगवान्काशिष्य याज्ञवल्क्यमुनिजनकराजाकेप्रति ब्रह्मविद्या उपदेशकरताभया ॥ हेभगवन् ताब्रह्मविद्याकेश्रवणकरणेकी मैं इच्छाकरताहूं ॥ आप कृपाकरिकैकहो ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य ॥ याज्ञवल्क्यमुनिनैं जोब्रह्मविद्या जनकराजाकेताईं उपदेशकरीहै ॥ सोसंपूर्णब्रह्मविद्या मैं तुमारेप्रति कथनकरताहूं ॥ तुमसावधानहोइकै ताविद्याकूं श्रवणकरो ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार जभीशाकल्यकामृत्युहुआ ॥तथा संपूर्णब्राह्मणोंकापराजयहुआ॥ तभी जनकराजा तथाअन्यसभावासीलोक आपणेआपणेगृहविषेजातेभये॥ और जभी प्रातःकालहुआ तभी दुंदुभितैंआदिलेके जोमधुरस्वरवालेवादित्रहैं तथाअप्सरावोंके समानजोस्त्रियां हैं॥तिनोंकेमधुरशब्दोंकरिकै राजाजनक निद्रातैंजाग्रतहोताभया॥औरप्रातःकालविषे शास्त्रनैंविधानकरेजेस्नानादिककर्म॥ तिनकर्मोंकूं सोजनकराजा करताभया॥और ब्राह्मणोंके तथाअन्यवृद्धपुरुषोंके तथाचारणबंदीजनोंके जयजयशब्दोंकूं तथा आशीर्वादोंकूं ॥ १ ॥

सोजनकराजा ग्रहणकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर सर्वअलंकारोंकूं धारणकरिकै सोजनकराजा नानाप्रकारकेवादित्रोंकेशब्दोंकरिकै तथागंधर्वोंकेशब्दकरिकैआपणीराज्यसभाविषेआवताभया ॥ कैसी है सोसभा ॥ नानाप्रकारके मणि रत्न मोती सुवर्ण रजत करि कैरचीहुई है ॥ और सुधर्मानामा जोदेवतावोंकीसभाहै ताकेसमान है ॥ और आपणेप्रकाशकरिकैदशदिशावोंकूंप्रकाशकारिरही है ॥ ऐसीसभाविषेस्थित जोमणियोंकरिकैजडित सुवर्णमयउच्चसिंहासन है ॥ तासिंहासनऊपर राजाजनक बैठताभया ॥ और दूसरे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यभी यथायोग्य आपणेआपणेआसनऊपर बैठतेभय ॥ और हेशिष्य ॥ याज्ञवल्क्यमुनिभी प्रातःकालविषे स्नानादिकसर्वक्रियाकूंकरिकै तथासूर्यभगवान्काआराधनकरिकैसर्वशिष्योंकेसहित ताजनकराजाकीसभाविषेआवताभया ॥ और याज्ञवल्क्यमुनिकूं सभाविषे आयाहुआदेखिकै सोधर्मात्माजनकराजा संपूर्णसभावासीजनोंसहित अभ्युत्थानकरताभया ॥ तथा अर्घ्यपाद्यादिकोंकरिकै याज्ञवल्क्यमुनिकापूजनकरताभया ॥ और नानाप्रकारके मणि रत्न मोती करिकैजडित तथाअत्यंत कोमल जोसुवर्णमयआसन है ॥ सोआसन याज्ञवल्क्यमुनिकेताईं बैठणेवासतै देताभया ॥ और याज्ञवल्क्यकेशिष्योंकेप्रतिभी यथायोग्य आसनदेताभया॥तिसतैंअनंतर ताआसनऊपरबैठिकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि राजाजनककूं तथा अन्यब्राह्मण क्षत्रिय वैश्योंकूं याप्रकारकी आज्ञाकरताभया ॥ हे राजाजनक हेसंपूर्णसभावासीजनो तुम संपूर्णआपणेआपणेआसनऊपरबैठो ॥ याप्रकार याज्ञवल्क्यमुनिकीआज्ञाकूंपाइकै राजाजनकसहित संपूर्णसभावासीलोक याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति नमस्कारकरिकै आपणे आपणेआसनऊपरबैठतेभये ॥तिसतैंअनंतर सो राजाजनक अत्यंतनम्रतापूर्वक नमस्कारकरिकै याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ राजाजनकउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्यमुनि ॥ आपसरीखेजेविद्वान्ब्राह्मण हैं॥ तेही यालोकविषे परमदेवताहैं ॥ काहेतैं जैसे परमात्मादेव जगत्कैं उत्पत्ति स्थिति लय करणेविषेसमर्थहै ॥ तैसे आपसरीखेविद्वान्ब्राह्मण इंद्रादिकदेवतावोंकेभीउत्पत्ति स्थिति लय करणेविषेसमर्थ हैं ॥ तौ हमसरीखेदेह धारिजीवोंकी उत्पत्ति स्थिति लय करणेविषे ब्राह्मणसमर्थ हैं याकेविषे क्याकहणा है॥ और हेयाज्ञवल्क्यमुन॥आपसरीखेविद्वान्ब्राह्मण

कैसे हैं॥ सर्वभूतप्राणियोंविषे जिनोंकीसमानदृष्टिहै ॥ तथा शमदमादिकगुणोंकरिकैयुक्तहै ॥ तथा मत्सरादिकविकारोंतैंरहित हैं ॥ तथा सर्वकामनावोंतैंरहित हैं॥ ऐसेआपसरीखेविद्वान्ब्राह्मणोंकाजो यापृथिवीविषेविचरणाहै॥ सो सुवर्णादिकपदार्थोंवासतैनहीं ॥ किंतु हमसरीखेअज्ञानीजीवोंके उद्धारकरणेवासतैही आपसरीखेविद्वान्ब्राह्मणोंकाविचरणाहै ॥ परंतु लोकोंकारिकैपूछेहुए आपसरीखेविद्वान्ब्राह्मण यानिमित्तकूंकहतेनहीं ॥ किंतु तिन लोकोंकेप्रति याप्रकारकानिमित्त कहते हैं ॥ हम सुवर्णादिकपदार्थोंकीप्राप्तिवास्तैंविचरतेहैं ॥ औ केईकब्राह्मण यहनिमित्त कहतेहैं ॥ हम सत्संगकरिकै आत्माकेजानणेवासतै विचरतेहैं ॥ इत्यादिकअनेकप्रकारकेनिमित्त आपणेविचरणे विषे तेब्राह्मण कथनकरतेहैं ॥ तथापि हेभगवन् हमतौ आपणेमनविषे यहनिश्चयकरते हैं ॥ संसाररूपसमुद्रविषे डूबेहुए जोहमसरीखे राजेहैं ॥ तिनोंकेउद्धारकरणेवासतैही आपसरीखेविद्वान्ब्राह्मण पृथिवीविषेविचरतेहैं ॥ और हेयाज्ञवल्क्यमुनि ॥ आप साक्षात्सूर्य भगवान्केशिष्यहो॥तथा आनंदस्वरूपआत्माके अपरोक्षज्ञानकरिकैयुक्तहो॥तथा पुत्रएषणा वित्तएषणा लोकएषणा यातीनप्रकारकीएप णावोंतैं रहितहो ॥ यातैं यालोकविषे आपकेविचरणेकायद्यपि कोईप्रयोजननहीं है ॥ तथापि आपकेआवणेका एकप्रयोजन मैं मान ताहूं ॥ यासंसाररूपी गर्तविषे फँस्याहुआजोमैंहूं॥ ताकेउद्धारणेवासतै आपका यहाँ आवणाभयाहै॥अब संसारसंबंधीदुःखकूंदिखावैं हैं॥ हेयाज्ञवल्क्यमुनि ॥ जैसे कृमिकीटोंकरिकै व्याप्तहै शरीरजिसका ॥ और छेदनहुआहै कर्ण तथापुच्छ जिसका ॥ और नानाप्रकारकीव्या धियोंकरिकै पीडित है शरीराजिसका॥ऐसाजोकोईकश्वान है ॥ सोश्वान विष्टाकरिकैलिप्त सूकेअस्थिकूंदाँतोंविषेग्रहणकरिकै ताअस्थिकी रक्षाकरणेवासतै दूसरेबलवान्श्वानोंकेसाथ वैरकरै है ॥ तावैरकारिकै सोश्वान प्राणांतदुःखकूं प्राप्तहोवै है ॥ तैसे अस्थिरूपीस्थूणाहैंजि विषे ॥ विष्टामूत्रादिकोंकीदुर्गंधहोजिसविषे ॥ ऐसे यानिंदितशरीरकूं अहंबुद्धितैंग्रहणकरिकै मैं अनेकप्रकारकेदुःखकूंप्राप्तहोताहूं ॥ किंचि मात्रभी हमारेकूं सुखकीप्राप्तिनहींहोती ॥ अब शरीरकेसर्व व्यवहारोंविषे दुःखकीकारणतादिखावैं हैं॥हेयाज्ञवल्क्यमुनि जैसे क्षुधाकरिकै पीडितहुआराक्षस मनुष्यादिकजिवोंकूंभक्षणकरैहै॥तैसे क्षुधाकरिकैपीडितहुआ मैंजनक तंडुलादिकस्थावरअन्नकूं तथामृगादिकजंगमजीवों

॥ २ ॥

कूंभक्षणकरताहूं तात्पर्ययहजोमैं अन्नादिकोंकूंनहींभक्षणकरताहूं ॥ तौ क्षुधाकरिकैमेरेकूं दुःखकीप्राप्तिहोवै है ॥ और जोमैं अन्नादिकोंकूं भक्षणकरताहूं तौ राक्षसोंकीतुल्यता प्राप्तहोवै है ॥ और ताभोजनकेपरिणाम कालविषेभी दुःखकीहीप्राप्तिहोवै है ॥ यातैं भोजनरूप व्यवहारभी सर्वथादुःखकाहीकारण है ॥ और हेयाज्ञवल्क्यमुनि ॥ जैसे श्मशानभूमिविषे स्थित मृतकशरीरकूं पिशाच ग्रहणकरै है ॥ तैसे कामरूपी पिशाचकेआवेशकरिकैयुक्तहुआ मैंजनकसर्वदाअशुच स्त्रीकेशरीरकूं आलिंगनकरताहूं ॥ तात्पर्ययह ॥ जोमैं स्त्रीकाआ लिंगन नहींकरताहूं॥तौ कामकरिकै दुःखकी प्राप्तिहोवै है ॥ और जोमैं स्त्रीकाआलिंगनकरताहूं ॥ तौ पिशाचकीतुल्यताप्राप्तहोवै है ॥ और स्त्रीसंभोगकेपरिणामकालविषेभी अनेकदुःखोंकीप्राप्तिहोवै है यातैं स्त्रियोंकासंभोगरूपव्यवहारभी सवथादुःखकाही कारणहै॥ और हेयाज्ञवल्क्यमुनि ॥ जैसे कोई निर्दयराक्षस मनुष्यादिकशरीरोंकूं हनन करै है ॥ तैसे गंधकेलोभकरिकैयुक्तहुआ मैंजनक चंदना दिकसुंगधपदार्थोंकूं घर्षणकरिकै यादुर्गंधशरीरविषे लगावता हूं॥ तात्पर्य यह ॥ जोमैं चंदनादिकोंकूं नहींलगावताहूं ॥ तौ तिनोंकी इच्छाकरिकै दुःखकी प्राप्तिहोवै है ॥ और जोमैं चंदनादिकोंकूं शरीरविषे लगावताहूं ॥ तौ राक्षकीतुल्यताप्राप्तहोवै है ॥ यातैं चंदना दिकोंकालेपरूपव्यवहारभी सर्वथादुःखकाही कारण है ॥ और हेयाज्ञवल्क्यमुनि ॥ जैसे शांतस्वभाववाले मुनियोंकूं विनाहीं अप राधतैं राक्षस हनन करै है ॥ तैसे मृगयारूपी व्यसनकरिकै युक्तहुआ मैं जनक तृणपर्णोंकूं भोजनकरणेहारे मृगोंकूं विनाहीं अपराधतैं हनन करताहूं ॥ तात्पर्य यह ॥ जोमैं मृगोंकूंनहीं हनन करता तौ मृगयारूप व्यसन करिकै हमारेकूं दुःखकीप्राप्तिहोवै है ॥ और जोमैं मृगोंकूंमारताहूं ॥ तौ राक्षसोंकी तुल्यता प्राप्तहोवै है ॥ यातैं यह मृगयारूपव्यवहारभी सर्वथा दुःखकाही कारण है ॥ और हेयाज्ञ वल्क्यमुनि ॥ जैसे तैलकार पुरुष तिलोंकूंयंत्रविषे पीडिकै तैल निकासे है ॥ तैसे द्रव्यकेलोभ करिकै युक्तहुआमैं जनक प्रजाकूं नानाप्रकारकी पीडादे करिकै तिनोंतैं द्रव्यकूंलेताहूं ॥ तात्पर्य यह ॥ जोमैं प्रजातैं द्रव्यकूं नहींलेताहूं ॥ तौ द्रव्यकीइच्छाकरिकैदुःख होवै है ॥ और जोमैं प्रजातैंद्रव्यलेताहूं ॥ तौ तैलकार पुरुषकीतुल्यता प्राप्तहोवै है॥यातैं प्रजातैं द्रव्यकाग्रहणरूपव्यवहारभी सर्वथादुःख

काहीकारण है ॥ और हेयाज्ञवल्क्यमुनि ॥ जैसे स्कंधदेशविषे तथापृष्ठदेशविषे उत्पन्नभयाजोगडूरोग॥सो मनुष्योंकूं तथापशुवोंकूं दुःख कीप्राप्तिकरै है ॥ तैसे मैंजनक पुरुषोंकेस्कंधोंऊपर आरूढहोइकै तथा हस्ति अश्वउष्ट्रोंकेपृष्ठऊपर आरूढहोइकै तिनोंकूं दुःखकी प्राप्ति करताहूं ॥ तात्पर्ययह ॥ जोमैं अश्वादिकोंऊपर नहींआरूढहोताहूं ॥ तौ आरूढहोणेकीइच्छाकरिकै मेरेकूंदुःखकीप्राप्तिहोवै है ॥ और जोमैं अश्वादिकोंऊपर आरूढहोताहूं ॥ तौ गडूरोगकीतुल्यता प्राप्तहोवै है ॥ यातैं अश्वादिकोंऊपर आरोहणरूपव्यवहारभी सर्वथादुःख काहीकारण है ॥ और हेयाज्ञवल्क्यमुनि ॥ जैसे काक गृहकेशिखरऊपरबैठिकै अप्रियशब्दोंकूं उच्चारणकरै है ॥ तैसे मानकरिकैयुक्तहुआ मैंजनक सर्वलोकोंसैं ऊंचेआसनऊपरबैठताहूं ॥ और नानाप्रकारकेअप्रियशब्दोंकूं उच्चारणकरताहूं ॥ तात्पर्ययह ॥जोमैं ऊंचेसिंहासनऊपर नहींबैठताहूं ॥ तौ मानकेभंगतैं दुःखकीप्राप्तिहोवै है ॥ और जोमैं ऊंच सिंहासनऊपरबैठताहूं ॥ तौ काककी तुल्यताप्राप्तहोवै है ॥ यातैं ऊंचे सिंहासनऊपरस्थितिरूप व्यवहारभी सर्वथादुःखकाही कारण है ॥ और हे याज्ञवल्क्यमुनि ॥ जैसे असक्ति करिकै युक्तहुआ सर्प पृथिवी विषेस्थितधनकी रक्षा करै है ॥ तैसे धनकी आसक्ति करिकैयुक्तहुआ मैंजनक सर्वदाधनकी रक्षा करताहूं ॥ तात्पर्य यह ॥ जोमैं धनकीरक्षा नहींकरता ॥ तौ धनकेवियोगकरिकै मेरेकूंदुःखकी प्राप्तिहोवै है ॥ और जोमैं धनकीरक्षाकरताहूं ॥ तौ सर्पकीतुल्यता प्राप्तहोवै है ॥ यातैं धनकी रक्षारूपव्यवहारभी सर्वथादुःखकाही कारण है ॥ और हेयाज्ञवल्क्यमुनि ॥ जैसे ग्रामकाशूकर आपणेस्त्री पुत्रादिककुटुंबविषे अत्यंतआसक्तहोवै है ॥ तैसे मैंजनकभी स्त्रीपुत्रादिककुटुंबविषे अत्यंतआसक्तहूं॥ याकारणतैं यहअज्ञानीजनक किस गतिकूंप्राप्तहोवैगा याप्रकारके विद्वान्पुरुषोंकेशोकका मैं विषयहूं ॥ यातैं हेभगवन्॥अध्यात्म अधिभूत आधर्दव यहतीनप्रकारकेदुःख हैं तीनशाखा जिसकी ॥ तथा अज्ञानरूपलोहतैं है उत्पत्तिजिसकी॥ऐसाजोयहसंसाररूपशूल है॥ताकेविषेप्राप्तहुआ जोमैंअज्ञानीजीवहूं ॥ ताके उद्धारणकरणे वासतेही आपका यहां आगमनभया है॥हेभगवन्॥आपके यहां आगमनका जोप्रयोजन हमनैंजान्याथा॥सो आपके आगे कथन कऱ्या ॥ अब जिसनिमित्त करिकै आपका यहां आगमन भया है ॥ सो निमित्त आप कृपाकरिकै हमारेप्रति कहो ॥

हे भगवन् ॥ ब्राह्मणोंके आगमनविषे दोप्रकारकेनिमित्त प्रसिद्ध हैं ॥ एकतौ जनकराजाकीसभाविषेजाइके सुवर्णसहित गौवोंकूं हम प्राप्तहोवैंगे यहनिमित्तहै और दूसरा जनकराजाकीसभाविषेजाइकै सर्वब्राह्मणोंसैं आत्माकेस्वरूपका हम निर्णयकरैंगे यहनिमित्तहै ॥ हेभगवन् ॥ दोनोंनिमित्तोंविषे जिसनिमित्तकरिकै आपका यहां आगमन हुआहै ॥ सोनिमित्त आप कृपाकरिकैकहो ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार जभी जनकराजाने याज्ञवल्क्यमुनिसेपूछा ॥ तभी सोयाज्ञवल्क्यमुनि याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेजनक ॥ गौवोंकी प्राप्ति तथा आत्माकानिर्णय यादोनोंनिमित्तकारिकै हमारा यहांआगमनभयाहै॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार आपणेआगमनविषे दोनिमित्तकाहिकै सो याज्ञवल्क्यमुनि पुनःजनककेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेजनक ॥ आजदिनतैंलेके पूर्वपूर्व तुम्हारेताईं जोजोब्राह्मण जिसजिस ज्ञानकाउपदेशकरताभयाहै ॥ तिसतिसज्ञानकेश्रवणकरणेकी हमारेकूंइच्छाहै ॥ सोज्ञान जोगोप्यनहींहोवै ॥ तौ हमारेप्रति तुमकथन करो ॥ तो तुम्हारेज्ञानकूं श्रवणकरिकै पश्चात् म तुम्हारेप्रति उपदेशकरौंगा ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार जभी याज्ञवल्क्यमुनिनैं जनकराजा सैंपूछा ॥ तभी सो जनकराजा पूर्वमुनियोंनैं जोअनेकप्रकारकाज्ञान उपदेशकऱ्याथा ॥ सोसंपूर्णज्ञान याज्ञवल्क्यमुनिकेताईं श्रवणकराव ताभया ॥ जनकउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्यमुनि ॥ शिलिननामाऋषिकापुत्र जित्वानामाऋषि अग्निदेवताकूंहीं ब्रह्मरूपकहता भया ॥ १ ॥ और शुल्वनामाऋषिकापुत्र उदंकनामाऋषि वायुदेवताकूंहीं ब्रह्मरूपकहताभया ॥ २ ॥ और वृष्णुनामाऋषिकापुत्र वर्कुनामाऋषि सूर्य कूंहीं ब्रह्मरूपकहताभया ॥ ३ ॥ और भारद्वाजगोत्रविषेहैउत्पत्तिजिसकी ऐसाजो गर्दभीविपीतनामाऋषिहै ॥ सो दिशावोंकूंहीं ब्रह्मरूप कहताभया ॥ ४ ॥ और जावालाकापुत्र ॥ सत्यकामनामाऋषि चंद्रमादेवताकूंहीं ब्रह्मरूपकहताभया ॥ ५ ॥ औरअभीमृत्युकूंप्राप्तभया जोविदग्धनामाशाकल्यऋषि ॥ सोप्रजापतिदेवताकूंहीं ब्रह्मरूपकहताभया ॥ ६ ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार पूर्वऋषियोंनैं उपदेशकऱ्याजो ब्रह्मकास्वरूप ॥ सो जभी जनकराजानैं याज्ञवल्क्यकेप्रतिकह्या ॥ तभी सो याज्ञवल्क्यमुनि जनकराजाकेप्रति कहताभया ॥ याज्ञव ल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेजनक ॥ अग्निआदिकदेवता सर्वजगत्केनिर्वाहकूं चलावणेहारेहैं ॥ यातैं ब्रह्मरूपकरिकैतिनोंकीउपासनाकरणीश्रेष्ठहै॥

परंतु इतनज्ञानमात्रकरिकै मोक्षकीप्राप्तिहोवैनहीं और हेजनक पूर्वऋषियोंने जो तुमारेताईं अग्निआदिकदेवतावोंकाउपदेशकऱ्या है सोभी संपूर्णनहींकऱ्या ॥ किंतु एकपादकाउपदेश तुमारेताईं कऱ्याहै ॥ तीनपाद बाकीरहतेहैं यातें तिनऋषियोंकेउपदेशविषे न्यूनताहै ॥हेजनक तिन तीनपादोंकूं तुमश्रवणकरो ॥ अधिदैवरूपअग्नि प्रथमपादहै ॥ और अध्यात्मरूपवाक्इंद्रिय द्वितीयपादहै ॥और अव्याकृतरूप आकाशतृतीयपादहै ॥ औरप्रज्ञानाम चतुर्थपादहै ॥ १ ॥ तथा अधिदैवरूपवायु प्रथमपादहै ॥ और अध्यात्मरूपप्राण द्वितीयपाद है॥ और अव्याकृतरूपआकाश तृतीयपादहै ॥ और प्रियनाम चतुर्थपादहै ॥ २ ॥ तथा अधिदैवरूपसूर्य प्रथमपादहै ॥ और अध्यात्मरूप चक्षुइंद्रिय द्वितीयपादहै ॥ और अव्याकृतरूपआकाश तृतीयपादहै ॥ और सत्यनामचतुर्थपादहै ॥ ३ ॥ तथा अधिदैवरूपदिशाप्रथम पादहै ॥ और अध्यात्मरूपश्रोत्रइंद्रिय द्वितीयपादहै॥ और अव्याकृतरूपआकाश तृतीयपादहै॥और अनंतनाम चतुर्थपादहै ॥४॥तथा अधिदैवरूपचंद्रमा प्रथमपादहै और अध्यात्मरूपमन द्वितीयपादहै ॥ और अव्याकृतरूपआकाश तृतीयपादहै॥और आनंदनाम चतुर्थ पादहै॥५॥तथा अधिदैवरूपप्रजापति प्रथमपादहै ॥ और हृदय द्वितीयपादहै और अव्याकृतरूपआकाश तृतीयपादहै ॥ और स्थिति नाम चतुर्थपादहै॥६॥यहां अग्निआदिकचारिचारिपादोंविषे प्रथमपादकेचिंतनकरणेतें हिरण्यगर्भकीस्मृतिहोवै है॥और दूसरेपादकेचिंतन करणेतें विराट्भगवान्कीस्मृतिहोवैहै ॥ और तृतीयपादकेचिंतनकरणेतें अंतर्यामीईश्वरकीस्मृतिहोवैहै॥ और चतुर्थपादकेचिंतनकरणेतें तुरीयकीस्मृतिहोवैहै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार याज्ञवल्क्यमुनि जनकराजाकेप्रति अग्निआदिकचारिपादोंकरिकैयुक्त सगुणब्रह्मकीउपासना षट्वार कहताभया ॥ और जनकराजाभी याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति षट्वार याप्रकारकावचनकहताभया ॥ हे भगवन् ॥ हस्तिकेसमानहै वृषभ जिनोंविषे ऐसीजेयौवनअवस्थाकरिकैयुक्तगौवां हैं॥तिनगौवोंका एकसहस्रमैं तुमारेताईं गुरुदक्षिणादेताहूं ॥ आप तिनगौवोंकूं अंगी कारकरो ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारका जनकराजाकावचन षट्वार श्रवणकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनिभी जनकराजाकेप्रति याप्रकारकावचन षट्वार कहताभया ॥ हेजनक ॥ जबपर्यंत शिष्य कृतार्थनहींहोवैहै॥तबपर्यंत गुरुदक्षिणा ग्रहणकरणेयोग्यनहीं॥याप्रकारकाउपदेश हमा

रेकूं पितानेकऱ्याहै ॥ यातें जबपर्यंत तुमारेकूं आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिनहींहोती ॥ तबपर्यंत मैं तुमारेसैं गुरुदक्षिणा नहींलेवोंगा॥याक हणेकरिकै याज्ञवल्क्यमुनिने जनकराजाकेप्रति यहअर्थ बोधनकऱ्या॥ अग्निआदिकचारिपादोंकरिकैयुक्त सगुणब्रह्मकेउपासनामात्रकरिकै शिष्य कृतार्थहोतानहीं ॥ किंतु निर्गुणब्रह्मकेअपरोक्षज्ञानकरिकै शिष्यकृतार्थहोवै है सो निर्गुणब्रह्मसाक्षात्कार जबपर्यंत तुमारेकूं भया नहीं ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकावचन जभी याज्ञवल्क्यमुनिनैं जनककेप्रतिकह्या ॥ तभी सोजनकराजा याज्ञवल्क्यमुनिकूं लोभतैं रहित देखिकै अत्यंतआश्चर्यकूंप्राप्तहोताभया ॥ और जिसवस्तुकेज्ञानकरिकै शिष्य कृतार्थहोवै है॥ तिसवस्तुकेजानणेकीइच्छाकरताहुआ सो जनकराजा आपणेसिंहासनकापरित्यागकरिकै भूमिविषे स्थितहोताभया ॥ और याज्ञवल्क्यमुनिकेताईं दंडवत्प्रणामकरिकै या प्रकार कावचन कहताभया ॥ जनकउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्यमुनि ॥ आपकेताईं हमारा वारंवार नमस्कारहै ॥ हेभगवन् ॥ जैसे कोई अंधपुरुष महान्वनविषेप्राप्तहोइकै अनेकदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै॥और ताअंधपुरुषकूंदुःखीदेखिकै कोईदयालुपुरुष मार्गकाउपदेशकरिकै ताअंधपुरुषकूं वनतैंबाहरनिकासे है ॥ तैसे संसाररूपीमहान्वनविषे प्राप्तहोइकै मैंअज्ञानीजीव अनेकप्रकारकेदुःखोंकूं अनुभवकरताहूं॥ और आपकाद यालुस्वभावदेखिकै तासंसाररूपीवनतैं बाहरनिकसणेकामार्ग मैं आपसैंपूछताहूं॥आप कृपाकरिकै तामार्गकाउपदेशकरो॥अब संसारविषे वनकीसमानता निरूपणकरैं हैं॥हेभगवन्॥जैसे लोकप्रसिद्धवन भयानकसर्पोंकरिकैयुक्तहोवै है॥तथा अनेकगर्तोंकरिकैयुक्तहोवै है ॥ तथा अनेकवृक्षोंकरिकैयुक्तहोवै है॥तथा अनेकसिंहोंकेशब्दोंकरिकै पूर्णहोवै है॥तथा अग्निकरिकै दग्धहोवै है तैसे यहसंसाररूपीवनभीकामरूपी सर्पोंकरिकैयुक्तहै॥तथा नारीरूपीमहान्गर्तोंकरिकैयुक्तहै॥तथा नेत्रादिकइंद्रियरूपवृक्षोंकरिकैयुक्तहै॥ तथा अहंकाररूपसिंहकेशब्दोंकरिकै पूर्णहै॥तथा क्रोधरूपीअग्निकरिकै चित्तरूपीभूमि तथाशुभगुणरूपवृक्ष जिसकेदग्दभये हैं॥और हेभगवन्॥ जैसे लोकप्रसिद्धवनविषे व्याध पुरुषश्वानोंकूंहाथविषेलेके तथाधनुपवाणकूंहाथविषेलेके ताश्वानोंकरिकै तथाधनुपवाणकरिकै मृगोंकूं हननकरै हैं॥ तैसे यासंसाररूपवन विषेकालरूपव्याधमनरूपश्वानकूंलेके तथा क्षणलवादिकालरूपधनुपविषे जराव्याधिरूपवाणोंकासंधानकरिकै अस्मदादिकजीवरूपमृगोंकूं

हननकरे है॥यातें हेभगवन् ॥ तामृत्युरूपव्याधका जराव्याधिरूपबाण जबपर्यंत हमारेसन्मुखनहींभया ॥ तबपर्यंत शीघ्रही हमारेकूं मार्गकाउपदेशकरो ॥ विलंबकरणेका यह कालनहीं ॥ हेशिष्य॥ याप्रकार जभीजनकराजानें दीनहोइकै याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति प्रार्थना करी ॥ तभी सोयाज्ञल्क्यमुनिजनकराजाके अधिकारकी परीक्षाकरणेवासतें याप्रकारका वचन कहताभया ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेजनक ॥ तुमनें जो हमारेसें मार्गपूछाहै ॥ सो तुमारे अभिप्रायका विषय जो गंतव्यपदार्थ है ताकेजाणेतेंविना हम तामार्गकूं कहनहीं सकते ॥ यातें प्रथम तूं गंतव्यपदार्थकूंकथनकर ॥ पश्चात् मैं तिसकेमार्गकाउपदेश तुमारे ताईं करोंगा ॥ यहां मार्गके चलने करिकै प्राप्तहोणेयोग्यजोग्रामादिकहैं ताकूंगंतव्यकहैं हैं ॥ और हेजनक ॥ जैसे लोकविषे जोपुरुष जभीदूरदेशविषे चालैहै ॥ तभी सोपुरुष पृथिवीकेमार्गविषेतौ रथकूं तथाअश्वादिकोंकूं ग्रहणकरिकैचालैहै ॥ और जोपुरुष जलकेमार्गविषेचालेहै तौ नौकाकूंग्रहणकरिकैचाले है॥ तैसे तुमनेंभी प्रज्ञा प्रिय सत्य अनंत आनंद स्थिति यापट्नामोंकरिकैयुक्त जे अग्नि वायु सूर्य दिक् चंद्रमा प्रजापति यहपट्देवताहैं तिनोंकी ब्रह्मरूप करिकै उपासनाकरी है॥ और अहिंसासत्यादिकदेवीसंपद्केगुणोंकरिकै तूं युक्तहै यातें देवताकीन्याईं सर्वलोकोंकरिकै तूं पूजणे योग्य है और वेदोंकेपूर्वकांडकूंभी तुमनें अध्ययनकऱ्या है तथा अनेकऋषियोंतें तुमनें उपासनाकेरहस्यकूंभीजान्या है ॥ और सर्वलोकविषे तुमाराबुद्धिमान्पणाभी प्रसिद्ध है ॥ यातें हेजनक ॥ याशरीरकापरित्यागकरिकै तिन कर्मउपासनारूपसाधनोंकरिकै तूं किसस्थानविषेजावैगा॥सो गंतव्यस्थान जोतूं जाणताहोवै ॥ तौ हमारेप्रति कथनकरो ॥ पश्चात् मैं तुमारेताईं तागंतव्यस्थानकेमार्गका उपदेश करोंगा ॥ हेजनक ॥ जैसेगंतव्यरूप जोविदेहदेश तथाकोशलदेश तथाकुरुदेश तथापांचालदेश इत्यादिकदेशहैं ॥ तिनगंतव्यदेशोंकूं नजाणिकरिकै जोपुरुष अन्यपथिकपुरुषकेप्रति याप्रकार मार्गकाउपदेशकरै है॥यहमार्ग विदेहदेशकाहै॥यहमार्ग कोशलदेशकाहै ॥ यह मार्ग कुरुदेशकाहै॥यहमार्ग पांचालदेशकाहै॥याप्रकार दिशामात्रकरिकै जोपुरुष मार्गकाउपदेशकरै है॥ सोपुरुष मार्गकाउपदेशकरताहुआभी नहींउपदेशकरता॥तैसे गंतव्यस्थानकेजाणेतेंविना मार्गकाउपदेशकरणा हमाराव्यर्थमतहोवै॥यातें हेराजन्॥ चित्तशुद्धिद्वारा कर्म

उपासनारूपसाधनोंकरिकै गंतव्यजोस्थानहै ॥ तिसकूं तुम प्रथमहमारेप्रतिकथनकरो॥पश्चात् मैं तुमारेताईं तागंतव्यस्थानकेमार्गकाउपदेशकरोंगा ॥ हेशिष्य ॥ जनकराजाकेप्रति याज्ञवल्क्यमुनिकेपूछणेका यह अभिप्रायहै ॥ जो यह जनकराजा तागंतव्यस्थानकूं जाणिकरिकै कुतर्ककरिकै हमारेसैंपूछताहै ॥ तौ यहजनक श्रद्धावान्नहीं ॥ यातें ब्रह्मविद्याकेउपदेशकाअधिकारीनहीं ॥ और जो यह जनक तागंतव्यस्थानकूं नजाणिकरिकै हमारेसैं पूछताहै ॥ तौ यहजनक श्रद्धावान्है॥यातें ब्रह्मविद्याकाअधिकारीहै॥याअभिप्रायकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि जनकराजाकेअधिकारकीपरीक्षाकरणेवासतें जनकराजासें पूछताभया ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार जभी याज्ञवल्क्यमुनिनें जनकराजासेंपूछा ॥ तभी सोजनकराजा याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ जनकउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्यमुनि ॥ हमारेकूं तथाअन्यपुरुषोंकूं कर्मउपासनादिकसाधनोंकरिकै गंतव्यजोस्थानहै तास्थानकूं मैं जाणतानहीं ॥ और हेभगवन् ॥ जैसे सिंहसर्पादिकोंकरिकैयुक्तवनविषे कोईविदेशीअंधपुरुष आइकैप्राप्तहोवै ॥ और वृद्धअवस्थाकरिकैयुक्तहोवै ॥ और क्षुधापिपासादिक नानाप्रकारकीव्याधियोंकरिकै जिसअंधपुरुषकूं आपणेंदेशकाभी विस्मरणहुआहोवै ॥ ऐसाअंधपुरुष जैसें तादेशकेमार्गकेजानणेहारे किसीदयालुपुरुषतें मार्गपूछेहै ॥ तैसे हेमुनीश्वर मैंजनक गंतव्यस्थानकूंनजाणिकरिकै आपसें तास्थानकेमार्गकूंपूछताहूं॥अब आपणे अज्ञानकूं जनकराजा निरूपणकरेहै ॥ हेभगवन् ॥ जैसे समुद्रतें लवणकापिंड आवैहै ॥ तैसे जिसस्थानतें मैं आयाहूं ॥ तिसस्थानकूंभी मैं जाणतानहीं॥तौ गंतव्यस्थानकूं मैं कैसेजाणोंगा ॥और हेभगवन्॥ भूत भविष्यत् वर्तमान यातीनप्रकारकेपदार्थोंकूं आत्माकेकिसीधर्मकरिकै मैं जाणताहूं ॥ अथवा आत्माकेस्वरूपकरिकै मैं जाणताहूं ॥ याप्रकारकेअर्थकूंभी मैंजाणतानहीं ॥तौ गंतव्यस्थानकूं मैं कैसेजाणोंगा ॥ और हेभगवन् ॥ मेराक्यास्वरूपहै याप्रकारकेअर्थकूंभी मैं जाणतानहीं ॥ तौ गंतव्यस्थानकूं मैं कैसेजाणोंगा ॥और हेभगवन्॥ रात्रिदिनविषे मैं सुखदुःखकूंभोगताहूं ॥ परंतु तासुखदुःखका कौनकारणहै याअर्थकूंभी मैं जाणिसकतानहीं ॥तौ गंतव्यस्थानकूं मैं कैसे जाणिसकोंगा ॥ हेभगवन् ॥ बाल्यअवस्थातेंलेके अवपर्यंत सर्वअवस्थाविषे एकदुखकूंहीं मैं अनुभवकरताहूं ॥ परंतु तादुःखकेभोक्ताकूं

तथा तादुःखकेकारणोंकूं तथा तादुःखकेविशेषस्वरूपकूं मैं किंचित्मात्रभीजाणतानहीं ॥ हेभगवन् ॥ जैसे वायुकरिकैभ्रमायाहुआपतंग महान्अग्निविषे प्राप्तहोवै है॥सोपतंग जबपर्यंत मृत्युकूंनहींप्राप्तहोवैहै॥तबपर्यंत सोपतंग आपणेआत्माकूं तथापरकूं तथादुःखकेकारणोंकूं तथाअन्यकिसीपदार्थकूं अनुभवकरतानहीं॥किंतु एकदुःखकूंहीं सोपतंग अनुभवकरताहै ॥ तैसे कर्मरूपवायुकेवशतैं यासंसाररूपीअग्नि विषे प्राप्तहुआ मैंजनक आपणेआत्माकूं तथादुःखकेकारणोंकूं तथाअन्यकिसीपदार्थकूं जाणतानहीं॥केवल एकदुःखकूंहीं मैं निरंतर अनुभवकरताहूं ॥ हेभगवन् ॥ ऐसामूढबुद्धिमैंजनक कर्मउपासनाकरिकै गंतव्यस्थानकूं कैसेजाणिसकोंगा ॥ और हेभगवन् ॥ जैसे लोकविषे जोपुरुष गंतव्यग्रामादिकोंकूं जाणताहै॥सोपुरुष ताग्रामकेमार्गकूंभी जाणताहै ॥ तैसे जोमैं कर्मउपासनारूपसाधनकरिकै गंतव्यस्थानकूं जाणताहोता तौ तागंतव्यस्थानकामार्ग मैं तुम्हारेसैं नहींपूछता॥परंतु तागंतव्यस्थानकूं मैं जाणतानहीं ॥ याकारणतैंहीं तागंतव्यस्थानकेज्ञानवासतै हमनैं आपसैं मार्गपूछाहै ॥ और हेभगवन् ॥ अधिकारीपुरुषोंकरिकै गंतव्यजोस्थान है ॥ सो दुर्विज्ञेयहै ॥ यहवार्त्ता कोई आश्चर्यरूपनहीं ॥ काहेतैं यहजीव जभी यास्थूलशरीरतैं बाहरनिकसेहै ॥ तभी ताजीवका क्यास्वरूपहोवै है ॥ और सोजीव किसप्रकारकरिकै परलोकविषेजावै है ॥ और सोजीव किसफलकूं तहांभोगै है ॥ याप्रकारकेअर्थकूंभी कोईलोक जाणता नहीं ॥ तौ अधिकारीपुरुषकरिकै गंतव्यस्थानकूं ॥ हम नहींजाणिसकते ॥ यावार्तोविषे कोईआश्चर्यनहीं ॥ यातैं हेभगवन् ॥ कर्मउपासनादिकसाधनोंकरिकै गंतव्यजोस्थानहै ॥ ताकूं मैं जाणतानहीं ॥ याकारणतैंहीं तागंतव्यस्थानकामार्ग मैं आपसैंपूछताहूं॥आप कृपाकरिकै तागंतव्यस्थानकूं तथाताकेमार्गकूं हमारेप्रति उपदेशकरो ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकाप्रश्न जभी जनकराजानैं याज्ञवल्क्यमुनिके प्रतिकऱ्या ॥ तभी सोयाज्ञवल्क्यमुनि जनकराजाकूं ब्रह्मविद्याकाअधिकारीजाणिकै कहताभया ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेजनक ॥ अधिकारीपुरुष कर्मउपासनादिकसाधनोंकरिकै चित्तकीशुद्धिद्वारा जिसगंतव्यस्थानकूं प्राप्तहोवै है ॥ सोगंतव्यस्थान मैं तुमारेताईं उपदेशकरताहूं ॥ तागंतव्यस्थानकेज्ञानकरिकै तुमारा संपूर्णभय निवृत्तहोवैगा ॥ हेजनक ॥ कर्मउपासनादिकसाधनोंकरिकै तूं किसस्थान

विषेप्राप्तहोवैगा ॥ याप्रकारकाजोप्रश्न हमनैं पूर्व तुमारेताईं कऱ्याथा ॥ ताप्रश्नकेकरणेविषे यहकारण है ॥ लोकविषे वादियोंके दोप्रकारकेप्रश्न होवै हैं ॥ एकतौ प्रतिपादनकरणेयोग्यवस्तुकूं न जाणिकरिकै वादीकाप्रश्नहोवै है ॥ और दूसरा प्रतिपादनकरणेयोग्यवस्तुकूं जाणिकरिकै वादीकाप्रश्न होवै है ॥ तहां प्रतिपादनकरणेयोग्यवस्तुकूं जाणिकै जोवादीकाप्रश्न होवै है ॥ सोभी दोप्रकारकाहोवै है ॥ एकतौ वस्तुकेयथार्थज्ञानपूर्वक वादीका प्रश्नहोवै है ॥ और दूसरा वस्तुकेअयथार्थज्ञानपूर्वक वादीका प्रश्नहोवै है ॥ तहां वादीकेज्ञानका विषयजोपदार्थ है ॥ तथाप्रतिवादीकेज्ञानकाविषय जोपदार्थ है॥ तिनदोनोंकेसमानताकानिर्णय वस्तुकेयथार्थज्ञानपूर्वकप्रश्नकाफल है॥ और संशयविपर्ययकीनिवृत्तिवस्तुकेअयथार्थज्ञानपूर्वकप्रश्नकाफल है और सोवस्तुकेयथार्थज्ञानपूर्वकप्रश्नभी दोप्रकारकाहोवै है॥ एकतौ आपणेबुद्धिकीनिर्मलता जनावणेवासतै वादीकाप्रश्नहोवै है ॥ और दूसरा प्रतिवादीकेबुद्धिकीनिर्मलता जानणेवासतै वादीकाप्रश्नहोवै है॥ हेजनक ॥ इसप्रकार वस्तुकेज्ञानपूर्वकप्रश्नके अनेकप्रकारकेभेदहैं ॥ तिनप्रश्नोंविषे जोकोईवादी गंतव्यस्थानकूंजाणिकरिकै ताकेमार्गका प्रश्नकरै है ॥ तावादीकेप्रति बुद्धिमान्पुरुष गंतव्यस्थानकूं जाणिकरिकैही ताकेमार्गकाउपदेशकरैं हैं ॥ गंतव्यस्थानकेज्ञानतैंविना कोईभीबुद्धिमान्पुरुष ताकेमार्गकाउपदेशकरतानहीं ॥ और हेजनक॥ जोपुरुष गंतव्यस्थानकूंनजाणिकरिकै ताकेमार्गकूंपूछै है॥ ता श्रद्धावान्पुरुषकेताईंबुद्धिमान्दयालुपुरुष गंतव्यस्थानका तथा ताकेमार्गकादोनोंकाउपदेशकरै है ॥ केवलमार्गमात्रकाउपदेश करै नहीं॥तैसे तूंभी गंतव्यस्थानकूंनजाणिकरिकै हमारेसैं मार्गकूंपूछताहै ॥ यातैं तुझश्रद्धावान्केताईं मैं प्रथम गंतव्यस्थानकाउपदेशकरताहूं ॥ ता गंतव्यस्थानविषे जोचित्तकीएकाग्रताहै यहही ताकामार्ग है ॥ यातैं हेजनक ॥ तूं संशयतैं रहितहोइकै मनकूंसावधानकरिकै ता गंतव्यस्थानकूंश्रवणकर ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकावचन जभी याज्ञवल्क्यमुनिनैं जनकराजाकेप्रतिकह्या ॥ तभी सोजनकराजा प्रसन्नहोइकै कहताभया ॥ हेयाज्ञवल्क्यमुनि ॥ आप कृपाकरिकै हमारेप्रति गंतव्यस्थानकाउपदेशकरो ॥ मैं सावधानहुआस्थितहूं ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारका जभी जनकराजानैं याज्ञवल्क्यकेप्रतिकह्या ॥ तभी सोयाज्ञवल्क्यमुनि जनकराजाकेप्रति उपदेशकरताभया ॥

याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेजनक ॥ सूर्यभगवान्नैं जिसज्ञानका हमारेप्रति उपदेशकऱ्याहै ॥ सोज्ञान मैं तुमारेप्रति उपदेशकरताहूं ॥ तूं सावधानहोइकै श्रवणकर॥कैसाहैसोज्ञान॥आत्मसाक्षात्कारकाकारण है ॥और यज्ञादिकबहिरंगसाधनोंकरिकै तथा विवेकादिकअंतरंगसाधनोंकरिकै प्राप्तहोणेयोग्यहै ॥ अब तुरीयरूपशुद्धब्रह्मकेबोधनकरणेवासतै जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति यातीनअवस्थावोंकेअभिमानी जे विश्व तैजस प्राज्ञहैं तिनोंकेस्वरूपकूंदिखावैं हैं ॥ तहाँ प्रथम वैश्वानररूप जोविश्वहैताकेस्वरूपकूंनिरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ अविद्याकरिकै देहादिकोंकेसाथ तादात्म्यअध्यासकूंप्राप्तहुआ यहपरमात्मादेव जिसकालविषे नेत्रादिकइंद्रियोंकरिकै रूपादिकविषयोंकाग्रहणकरै है ॥ तिसकालविषे यहपरमात्मादेव जाग्रत्अवस्थावान् होवै है ॥ और तिसजाग्रत्अवस्थाविषे यहपरमात्मादेव दोरूपकरिकै स्थितहोवै है ॥ तहाँ भोक्ताइंद्ररूपकरिकै दक्षिणनेत्रविषेरहै है ॥ और भोग्यइंद्राणीरूपकरिकै वामनेत्रविषेरहै है ॥ याप्रकार वैश्वानरकै उपासकपुरुष विश्वात्माकूं इंद्रइंद्राणीरूपकरिकै ध्यानकरैं हैं ॥ अब आत्माविषे इंद्ररूपता निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ यहआत्मा देव आकाशादिकभूतभौतिकप्रपंचकूं उत्पन्नकरिकै तापप्रपंचकूं इदंरूपकरिकै दरसताभया ॥ याकारणतैं यहपरमात्मादेव यद्यपि इदंद्रनामकरिकै कथनकरणेयोग्यथा ॥ तथापि परोक्षप्रिय अग्निआदिकदेवता इदंद्र याअपरोक्षनामकरिकै तापरमात्माका कथनकरैं नहीं॥किंतु इंद्र यापरोक्षनामकरिकै तेअग्निआदिकदेवता परमात्माका कथनकरैंहैं॥और यहआनंदस्वरूपपरमात्मादेवस्वप्रकाशस्वरूपहै याकारणतैं यहआत्मादेव यद्यपि इंध यानामकरिकै कथनकरणेयोग्यथा ॥ तथापि परोक्षप्रिय अग्निआदिकदेवता इंध याअपरोक्षनामकारिकै आत्माकाकथनकरैनहीं ॥ किंतु इंद्र यापरोक्षनामकारिकै आत्माकाकथनकरैं हैं॥अब याहीअर्थकेस्पष्टकरणेवासतै प्रथम आत्माविषे प्रकाशरूपतादिखावैं हैं॥हेजनक ॥ याआनंदस्वरूपआत्माकेप्रकाशकरिकैही यहसंपूर्णचराचररूपजगत् प्रतीतहोवै है ॥ और जिस आनंदस्वरूपआत्माकूं सूर्यचंद्रमाभी नहीं प्रकाशकरिसकते ॥ तथा तारागण अग्नि ज्ञानइंद्रिय कर्मइंद्रिय मन शब्द यहसंपूर्ण जिस आत्माकूं नहींप्रकाशकरिसकते ॥ दृष्टांत ॥ जैसे घटपटादिकपदार्थोंकूं प्रकाशकरणेहाराजोदीपकहै ॥ तादीपककूं घटपटादिकपदार्थ

प्रकाशकरिसकैंनहीं ॥ तैसे सूर्यचंद्रमादिकोंका प्रकाशकजोआत्माहै ॥ ताआत्माकूं सूर्यचंद्रमादिक प्रकाशकरिसकैंनहीं ॥किंतु आपणे प्रकाशकरिकैही यहआत्मा प्रकाशमानहै॥याकारणतैं विद्वान्पुरुष याआत्माकूं स्वप्रकाशकहैं हैं॥ जोप्रकाश आपणेप्रकाशविषे तथाअन्यपदार्थोंकेप्रकाशविषे अन्यकिसीप्रकाशकीअपेक्षानहींकरैहै ताकूं स्वप्रकाशकहैं हैं॥ऐसास्वप्रकाशआत्मा यद्यपि इंधयाप्रकारकेअपरोक्षनामकरिकैही कथनकरणेयोग्यथा॥ तथापि अग्निआदिकसात्विकदेवता याआत्माकूं इंध याअपरोक्षनामकरिकै कथनकरतेनहीं॥किंतु इंद्र यापरोक्षनामकरिकैही आत्माकाकथनकरैं हैं ॥ काहेतैं यामनुष्यलोकविषेभी जेसात्विकपुरुष हैं॥ ते तामसीपुरुषोंकीन्याईं आपणे गुरुके तथा पितामातादिकवृद्धोंके साक्षात् देवदत्तादिकनामोंकूं कथनकरतेनहीं ॥ किंतु आचार्यादिकपरोक्षनामकरिकै तेसात्विकपुरुष व्यवहारकरैं हैं ॥ और यालोकविषे जेसात्विकस्वभाववान्स्त्रियाँ हैं॥ तेभी आपणेपतिके तथाश्वशुरादिकवृद्धोंके साक्षात् देवदत्तादिकनामोंकूं उच्चारणकरैंनहीं॥किंतु स्वामीआदिकपरोक्षनामकरिकै ते सात्विकस्त्रियां व्यवहारकरैं हैं और तिनसात्विकपुरुषोंकेपितामातागुरुका साक्षात् देवदत्तादिकनाम जोकोईदूसरापुरुष उच्चारणकरै है ॥ तिसपुरुषऊपरभी तेसात्विकपुरुष क्रोधवान्होवैं हैं ॥ हेजनक ॥ जभी मनुष्यलोककेसात्विकपुरुषोंकूंभी पितामातागुरुआदिकोंका परोक्षनामहींप्रियलागेहै ॥तभी परमसात्विक जे अग्निआदिकदेवताहैं॥तिनोंकूँआत्माका परोक्षनामहींप्रियहै याकेविषेक्याआश्चर्य है॥याकारणतैं परोक्षप्रिय तेअग्निआदिकदेवता याआनंदस्वरूपआत्माकूं इदंद्र तथा इंध याप्रकारकेअपरोक्षनामकारिकैकथनकरैंनहीं॥किंतु इंद्र यापरोक्षनामकरिकै कथनकरैं हैं॥हेजनक॥ऐसाइंद्रनामापरमात्मादेव जाग्रत्अवस्थाविषे वाक्आदिकइंद्रियोंकूं आपणेअधीनकरिकै दक्षिणनेत्रविषे स्थितहोवैहै ॥ अब इंद्रनामा परमात्माविषे प्रसिद्धदेवराजइंद्रकी समानतादिखावैं हैं ॥ हेजनक ॥ जैसे लोकप्रसिद्धइंद्र स्वर्गविषे वैजयंतनामागृहविषेस्थितहोवै है॥ और देवतावोंनैं अर्पणकरेजेनानाप्रकारकेभोग तिनभोगोंकूं भागहै ॥ तैसे यहपरमात्मादेवभी जाग्रत्अवस्थाविषे दक्षिणनेत्ररूपगृहविषे निवासकरैहै ॥ और ॥ अग्निआदिकदेवतावोंनैं अर्पणकरेजे रूपरसादिकनानाप्रकारकेविषय तिनोंकूंभोगैहै ॥ और हेजनक ॥ जैसे वैजयंतनामागृहविषे देवतावोंकीसभाविषे

स्थितजोइंद्रहै॥ताकीस्त्रीइंद्राणी तावैजयंतनामागृहविषेरहैनहीं॥किंतु तावैजयंतनामागृहकेसमीपवर्तिजोकोईअन्यगृहहै ताकेविषे सोइंद्राणी रहै है और सोइंद्राणीभी इंद्रकेसमानहीं संपदावालीहै तैसे॥जाग्रत्अवस्थाविषे दक्षिणनेत्रविषेस्थित जोपरमात्मारूपइंद्रहै॥ताकीस्त्रीइंद्राणी वामनेत्रविषेरहैहै॥औरजाग्रत्अवस्थाविषे नानाप्रकारकेस्थूलभोगोंकूंभोगणेद्वारा जोपरमात्मारूपइंद्रहै।ताइंद्ररूपभर्ताकेसाथ विविधप्रकार करिकै सोइंद्राणीविराजमानहै॥याकारणतैं विद्वान्पुरुष ताइंद्राणीकूं विराट्नामकरिकै कथनकरैं हैं॥अथवा ॥ जैसे दक्षिणनेत्रविषेस्थित इंद्रनामा पुरुष वाक्आदिकदशइंद्रियोंकाअधिष्ठाताहै ॥ तैसे वामनेत्रविषेस्थित इंद्राणीभी वाक्आदिकदशइंद्रियोंकाअधिष्ठाता है ॥ याकारणतैंविद्वान्पुरुष ताइंद्राणीकूं विराट्नामकरिकै कथनकरैं हैं ॥ तात्पर्ययह ॥ दशअक्षरोंवालाजोछंदहै ताकूंविराट्कहैं हैं ॥ और यहइंद्राणीभी वाक्आदिकदशइंद्रियोंकेसाथ तादात्म्यसंबंधकरिकै दशप्रकारहोवैहै ॥ यातैं बुद्धिमान्पुरुष ताइंद्राणीकूं विराट्नामकरिकै कथनकरैं हैं ॥ अथवा ॥ अन्नंविराट् याश्रुतिविषे भोग्यअन्नकूं विराट्नामकरिकै कथनकऱ्याहै ॥ और यहइंद्राणीभी परमात्मारूप इंद्रकाभोग्यहै ॥ याकारणतैं ताइंद्राणीकूं विद्वान्पुरुष विराट्नामकरिकै कथनकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ याप्रकार जाग्रत्अवस्था विषे यहपरमात्मादेव इंद्राणीरूपकरिकै तथाइंद्ररूपकरिकै सर्वजीवोंके वामदक्षिणनेत्रविषेस्थितहोवै है ॥ कैसाहैसोपरमात्मारूप इंद्र ॥ समष्टिरूपकरिकैतौ एकहै ॥ और व्यष्टिउपाधिकरिकै भ्रांतपुरुषोंकूं नानाकीन्याईं प्रतीतहोवै है ॥ यातैं हे जनक ॥ इंद्रियोंकरिकै नानाप्रकारकेस्थूलभोगोंकूंभोगताहुआ तूं इदानींकालविषे जिसअवस्थाविषेवर्तमानहै ॥ ताअवस्थाकानाम जाग्रत् अवस्था है ॥ ताजाग्रत्अवस्थाविषे तूं परमात्मादेव भोक्ताइंद्ररूपकरिकै तथाभोग्यइंद्राणीरूपकरिकै सर्वशरीरोंविषेस्थितहो इके सर्वव्यवहारकीसिद्धिकरैं हैं ॥ हेशिष्य ॥ याकहणेकरिकै याज्ञवल्क्यमुनिने यहअर्थबोधनकऱ्या जिसअवस्थाविषे परमात्माके इंद्ररूपका तथाइंद्राणीरूपका भिन्नभिन्नस्थानविषेनिवासहोवै है ॥ सो वैश्वानररूपविश्वकास्वरूप है ॥ और जिसअवस्थाविषे परमा त्माकेइंद्ररूपका तथाइंद्राणीरूपका एकस्थानविषे निवासहोवै है ॥ सोहिरण्यगर्भसूत्रात्मारूप तैजसकास्वरूप है ॥ तथाईश्वररूपप्राज्ञ

कास्वरू है ॥ अब तैजसकी तथा प्राज्ञकी परस्पर विलक्षणता निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ जैसे स्वर्गलोकवासी देवराज इंद्र तथा ताकीस्त्री इंद्राणी वैजयंतनामागृहका परित्यागकरिकै परस्पर संभोगकरणेवासतैं किसीएकांतस्थानविषेजावै है ॥ तैसे यह परमात्मारूप इन्द्र तथा इंद्राणी दक्षिणवामनेत्रकापरित्यागकरिकै परस्परसंभोग करणेवासतैं हृदयरूप एकांतस्थानविषेजावैं हैं ॥ जिस हृदयकूं दहरविद्याविषे ईश्वररूपकरिकै कथनकऱ्या है ॥ और बालाकिअजातशत्रुकेसंवादविषे सुषुप्तिका स्थानरूपकरिकैकथनकऱ्या है ॥ और हेजनक ॥ ताहृदयरूपी कमलके कर्णिकाकेसमान रक्तवर्णवाला जोमांसकापिंड है॥सो परमात्मारूपइंद्राणीकाभक्षणकरणेयोग्यअन्न है ॥ और हृदयकमलके केसरसमान जेनाडियां हैं ॥ तिननाडियोंका जालकेसमान जोपररूपग्रंथन है ॥ सो तापरमात्मारूपइंद्रइंद्राणीका वस्त्र है॥और जोसुषुम्नानामानाडी हृहयदेशतैं निकासिकै मूर्द्धस्थानकूंप्राप्तभई है॥और तामूर्द्धस्थानतैंभीऊपर ब्रह्मलोकपर्यंत प्राप्तभई है ॥ सो सुषुम्नानामानाडी यापरमात्मारूपइंद्रइंद्राणीका गमनआगमनविषे राजमार्ग है ॥ और हेजनक ॥ जभी यहपरमात्मारूपइंद्र यासुषु म्नानाडीरूपमार्गकरिकै याशरीरतैं बाहरनिकसे है॥तभी देवयानमार्गद्वारा ब्रह्मलोककूंहीं प्राप्तहोवै है॥और जभी यहपरमात्मारूपइंद्र शरी रकेभीतरही विचरे है॥तभी सुषुम्नानाडीकेशाखारूप जोदूसरीनाडियां हैं॥ तिननाडीरूपमार्गकरिकै हृदयदेशतैं दक्षिणनेत्रविषेआवै है ॥ और हेजनक॥ जैसे एकवृक्षकी अनेकशाखाहोवैं हैं॥तैसे तासुषुम्नानाडीवृक्षकी दूसरीअनेकनाडियां शाखाकेसमान हैं ॥ कैसियां हैं तेना डियां ॥ एककेशके सहस्रभागकरिये ताकेएकभागकेसमान सूक्ष्म हैं ॥ और हेजनक ॥ इंद्राणीसहित सोपरमात्मारूपइंद्र तानाडीरूप मार्गकरिकै जभी हृदयाकाशविषे जावै है॥तभी सुषुप्तिअवस्थाकूं प्राप्तहोवै है॥और इंद्राणीसहित सोपरमात्मारूपइंद्र जभी तानाडीरूप मार्गविषेहीं स्थितहोवै है ॥ तभी स्वप्नअवस्थाकूं प्राप्तहोवै है ॥ और हेजनक ॥ इंद्राणीसहित ॥ सोपरमात्मारूपइंद्र जाग्रत्अवस्थाविषे वामदक्षिणनेत्रविषे स्थितहोइके शब्दस्पर्शादिकस्थूलविषयोंकूं भोगे है॥याकारणतैं तापरमात्मारूपइंद्रकूं विद्वान्पुरुष स्थूलभुक्कहैं हैं॥ और व्यष्टिस्थूलशरीरकेअभिमानतैं तापरमात्मारूपइंद्रकूं विश्वनामा कहैं हैं ॥ और सोईहीपरमात्मारूपइंद्र जाग्रत्अवस्थाकापरित्याग

करिकैस्वप्नअवस्थाविषे नाडीरूपस्थानविषेस्थितहोइकै मनोमयसूक्ष्मविषयोंकूं भोगै है ॥ याकारणतैं तापरमात्मारूपइंद्रकूं विद्वान्पुरुष सूक्ष्मभुक्कहैं हैं ॥ और व्यष्टिसूक्ष्मशरीरकेअभिमानतैं तापरमात्मारूपइंद्रकूं तैजसकहैं हैं ॥ और इंद्राणीसहित सोपरमात्मारूपइंद्र स्वप्नअवस्थाकापरित्यागकरिकै सुषुप्तिअवस्थाविषे हृदयआकाशविषे प्राप्तहोवै है ॥ तहाँ वासनामय अत्यंतसूक्ष्मभोगोंकूं भोगै है ॥ याकारणतैं तापरमात्मारूपइंद्रकूं विद्वान्पुरुष अत्यंतसूक्ष्मभुक्कहैं हैं ॥ और सुषुप्तिअवस्थाविषे यहआत्मारूपइंद्र आनंदस्वरूपअंतर्यामीके साथ अभेदभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ याकारणतैं ताकूं आनंदभुक् कहैं हैं ॥ और व्यष्टिकारणशरीरकेअभिमानतैं ताकूं प्राज्ञकहैं हैं ॥ और हेजनक ॥ वास्तवतैंविचारकरिकैदेखिये तौ सुषुप्तिअवस्थाविषे सोपरमात्मारूपइंद्र अभोक्ताही है ॥ काहेतैं सुखदुःखकेज्ञानकानाम भोग है ॥सो सुखदुःखकाज्ञान सुषुप्तिविषेबुद्धिकेलयहुए संभवैनहीं ॥ यातैं सुषुप्तिविषे आत्मा अभोक्ताही है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे जोआत्मा अभोक्ताहीहोवै ॥ तौ पूर्वआपने यहकह्याथा हृदयाकाशविषे स्थित इंद्राणीसहित परमात्मारूपइंद्रका रक्तवर्णवालामांसपिंड अन्न है ॥ और नाडियोंकासमूहवस्त्र है॥यहआपकाकहणा विरुद्धहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे परमात्मारूपइंद्र तामांसपिंडरूपअन्नकूं भक्षणकरै है ॥ तथानाडीरूपवस्त्रोंकूं धारणकरै है ॥ याप्रकारका हमाराअभिप्रायनहीं ॥किंतु तावच्चविषे हमारायहअभिप्राय है ॥ जिसपुरुषकामन बाह्यविषयोंकीवासनाकरिकै अत्यंतचंचल है ॥ सोपुरुष मनकीएकाग्रताकरणेवासतै अन्नवस्त्रादिकसामग्रीसहित परमात्मारूपइंद्रका ध्यानकरै ताध्यानकरिकै तापुरुषकामन एकाग्रहोवैगा ॥ यातैं आत्माकेध्यानविषे तावच्चकातात्पर्य है भोगविषे नहीं ॥ और सुषुप्तिअवस्थाविषे यहआत्मादेव आपणेसाक्षीस्वरूपकरिकै सर्वदुःखोंकेअभावकूं अनुभव करै है ॥ याकारणतैं ताकूं आनंदभुक्कहैं हैं ॥ तथा अत्यंतसूक्ष्मभुक्कहैं हैं ॥ यातैं सुषुप्तिअवस्थाविषे आत्माविषे आनंदभुक्पणा तथा अत्यंतसूक्ष्मभुक्पणा मुख्यनहीं किंतु गौण है ॥ और हेजनक॥जैसे स्वर्गविषे स्थितदेवराजइंद्र पूर्वादिकदशदिशावोंकाअधिपति है ॥यातैं पूर्वादिकदशदिशावोंकूं आपणेतैं अभिन्नकरिकैमाने है ॥ तैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे यहआत्मा अंतर्यामीईश्वरकेसाथ अभेदभावकूं प्राप्तहोइकै

पूर्वादिकदशदिशावोंकेसाथ अभिन्नहोवैहै।तहाँ इतनीविशेषताहै।दृष्टांतविषे देवराजइंद्रका जोपूर्वादिकदिशावोंकेसाथअभेदहै सोवास्तवतैं नहीं ॥ किंतु अभिमानमात्रतैंहै ॥ और यहपरमात्मारूपइंद्र सर्वजगत्काउपादानकारणहै ॥ यातैंजैसे मृत्तिकारूपकारण घटरूपकार्यके अंतरव्यापकहै॥तथाघटरूपकार्यसैंअभिन्नहै ॥ तैसे यहपरमात्मारूपइंद्र दिशादिकसर्वप्रपंचकेअंतरव्यापकहै॥तथा सर्वजगत्सैंभिन्नहै अब सुषुप्तिविषेस्थितमायाविशिष्टईश्वरविषे सर्वजगत्कीकारणतानिरूपणकरैहै॥हेजनक॥सुषुप्तिअवस्थाविषे स्थितजोमायाविशिष्टपरमेश्वरहै॥सोमायाविशिष्टईश्वरही आकाशादिकपंचभूतोंकाकारणहै॥तथाजरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज याचारिप्रकारकेशरीरोंकाकारणहै॥तथादिककालादिक संपूर्णस्थूलसूक्ष्मप्रपंचकाकारणहै॥शंका॥हेभगवन्। सत्चित्आनंदस्वरूपपरमात्माविषेअसत्जडदुःखरूपजगत्कीकारणता संभवैनहीं॥काहेतैं समानस्वभाववालेपदार्थोंकाही परस्पर कार्यकारणभावहोवै है॥समाधान ॥ हेजनक ॥ समानस्वभाववालेपदार्थोंका परस्पर कार्यकारणभावहोवैहै ॥ यहनियम सर्वत्रसंभवैनहीं ॥ काहेतैं जैसे निरवयव तथारूपादिकोंतैंरहितजोआकाशहै॥ ताकेविषे सावयवतथारूपादिमान मेघविद्युतादिकोंकीकारणताहै॥तैसे सत्चित्आनंदस्वरूप परमात्माविषेभीअसत्जडदुःखरूपप्रपंचकीकारणतासंभवैहै और समानस्वभाववालेपदार्थोंका परस्पर कार्यकारणभावहोवैहै॥याप्रकारकानियम परिणामीउपादानकारणविषे है॥ विवर्त्तउपादानकारणविषे यहनियमहैनहीं॥और यहपरमात्मादेवसर्वजगत्काविवर्त्तउपादानकारणहै॥अथवा शुद्धआत्माविषेतौजगत्कीकारणताहैनहीं ॥ किंतु मायाविशिष्टपरमात्माविषे जगत्कीकारणताहै॥सोमाया असत्जडदुःखरूपहै ॥ यातैं मायाकीअसत्जडदुःखरूपता कार्यप्रपंचविषे प्रतीतहोवै है॥इतनेग्रंथकरिकै व्यष्टि स्थूल सूक्ष्म कारण शरीरकेअभिमानीजेविश्वतैजस प्राज्ञहैंतिनोंकास्वरूपदिखाया॥अब तुरीयशुद्ध आत्माकानिरूपणकरैहै॥हेजनक॥जोतुमनैं पूर्व गंतव्यस्थान हमारेसैंपूछाथा सोगंतव्यस्थान तूं श्रवणकर॥जोपरमात्मादेवजाग्रत्अवस्थाविषे दक्षिणनेत्रविषेस्थितहोइकै आपणेस्वप्रकाशरूपकरिकै सूर्यादिकसकलजगत्कूं प्रकाशकरै है ॥और जोपरमात्मादेव स्वप्नकेसर्वपदार्थोंकूंप्रकाशकरैहै॥और जोपरमात्मादेव सुषुप्तिअवस्थाविषे हृदयाकाशविषेस्थितहोइकै दिशादिकसर्वजगत्केसाथ अभेदभावकूंप्राप्तहो

वेहै॥तथासर्वभूतभौतिप्रपंचकीउत्पत्तिकरै है॥सोपरमात्मादेवहीं तुमारेकूं॥तथा अन्यअधिकारियोंकूं गंतव्यहै ॥और हेजनक॥सोपरमात्मा देवहीतुमारातथा हमारा तथाअन्यप्राणियोंका आत्माहै॥शंका॥हेभगवन्॥जोएकहीपरमात्मादेव सर्वत्रअनुगतहोवै॥तौ विश्व तैजस प्राज्ञ इत्यादिरूपकरिकै तथा मैं तूं अन्य इत्यादिरूपकरिकै भिन्नभिन्न किसवासतेप्रतीतहोवै है॥समाधान॥हेजनक॥जैसे एकहीमहाकाश घटम ठादिरूपउपाधियोंकेभेदतैं घटाकाश मठाकाश इत्यादिकभेदकूंप्राप्तहोवै है ॥ तैसे एकहीपरमात्मादेव शरीरादिकउपाधियोंकेभेदतैं भिन्न भिन्न प्रतीतहोवै है॥और जैसे उपाधिकृतभेदकरिकै आकाशका वास्तव एकपणा निवृत्तहोवैनहीं॥तैसे उपाधिकृतभेदकरिकै आत्माकाभी वास्तवएकपणा निवृत्तहोवैनहीं ॥ और हेजनक ॥ जिनपुरुषोंकूं यासंसाररूपीघोरवनतैं भयहोवै है॥ ऐसे अधिकारीपुरुषोंकूं यह अद्वितीयआत्माहीं जानणे योग्य है ॥ और याअद्वितीयआत्माका जो साक्षात्कार है ॥ सोईही गंतव्य आत्माकी प्राप्तिका राजमार्ग है ॥ हेजनक ॥ ऐसेआत्मज्ञानरूपीमार्गविषे जभी तुम अधिकारी चलोगे॥ तभी तुम्हारेकूं आत्मारूप गंतव्य स्थानकी प्राप्ति होवैगी ॥ और हेजनक॥यहअद्वितीयआत्मा मनवाणीका अविषयहै॥यातैं याअद्वितीयआत्माकूं हम साक्षात्कथनकरणे विषे समर्थनहीं ॥ और तूंभीसाक्षात्जानणेविषेसमर्थनहीं॥यातैं अनात्मपदार्थोंके निषेधद्वारा याआत्माकूंविद्वान्पुरुष कथनकरै हैं॥ अबनिषेधमुखकरिकैआत्मा कानिरूपणकरै हैं॥ हेजनक यहआनंदस्वरूपआत्मा भावत्व अभावत्व धर्मतैंरहित है॥यातैं याआत्माकूं घटादिकपदार्थोंकीन्याईं भावरू पकारकै तथाघटाभावकीन्याईं अभावरूपकरिकै तुमनैं नहींजानणा ॥ दृष्टांत ॥ जैसे आकाश मेघविद्युतादिकभावपदार्थरूपनहीं॥ तथा मेघविद्युतादिकोंकाअभावरूपनहीं ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्मा प्रपंचरूपनहीं ॥ तथा प्रपंचकाअभावरूपनहीं ॥ किंतु भावअभावप दार्थोंसे विलक्षण है॥और हे जनक॥जैसे रज्जुरूपअधिष्ठानके अज्ञानतैं तारज्जुविषे सर्प प्रतीतहोवै है॥जभी रज्जुरूप और अधिष्ठानका ज्ञानहोवै है॥तभी कारणअज्ञानसहित सोसर्प रज्जुरूपअधिष्ठानविषे लयहोवै है॥तैसे आत्मारूपअधिष्ठानकेअज्ञानतैं यहअभावरूपजगत् प्रतीतहोवै है॥और जभी अधिष्ठान आत्माका साक्षात्कारहोवै है॥तभी संपूर्णजगत् आत्मारूपअधिष्ठानविषे लयभावकूंप्राप्तहोवै है॥ अब

आत्माविषे प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकी अविषयता निरूपणकरै हैं ॥ हेजनक ॥यहआनंदस्वरूपआत्मा नेत्रादिकबाह्यकरणोंकरिकै तथा मन बुद्धि चित्त अहंकार याअंतःकरणोंकरिकै जान्याजावैनहीं ॥ यातैं यहआनंदस्वरूपआत्मा अगृह्यहै॥और हेजनक ॥ जिसपदार्थकूं नेत्रादि कककरणग्रहणकरैहै सोईहीपदार्थ प्रमाणकाविषय होवैहै॥और जिसपदार्थकूं नेत्रादिककरण ग्रहणकरतेनहीं॥सोपदार्थ प्रमाणकाविषय होवै नहीं ॥ जैसेघटादिकपदार्थोंकूं नेत्रादिककरणग्रहणकरैहैं ॥ यातैं घटादिकपदार्थ प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंके विषयहैं॥और जोपदार्थ प्रमाणका विषयहोवैहै॥सोईहीपदार्थ प्रमेयहोवैहै॥और याआनंदस्वरूपआत्माकूं नेत्रादिककरण ग्रहणकरिसकैनहीं॥यातैं यहआत्मा प्रमाणकाविषय होवैनहीं ॥ याकारणतैं यहआनंदस्वरूपआत्मा अप्रमेयहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जोपदार्थ नेत्रादिककरणोंकाविषयहोवैहै ॥सोईपदार्थ प्रमाणकाविषय होवैहै ॥ याप्रकारकानियम आपनेकह्या सोसंभवैनहीं ॥काहेतैं॥ स्वर्ग तथा इंद्रादिकदेवता तथा धर्म अधर्म इत्यादिक अतिइंद्रियपदार्थ नेत्रादिकरणोंके विषय तौ हैं नहीं ॥ तथापि शब्दादिकप्रमाणोंकेविषयहैं ॥ समाधान ॥ स्वर्गादिक अतिइंद्रियपदार्थ यद्यपि नेत्रादिकबाह्यकरणोंकेविषयहैनहीं ॥ तथापि मनरूपकरणके विषयहैं ॥ जोस्वर्गादिकअतिइंद्रियपदार्थोंविषे मनरूपकरणकीविष यता नहींअंगीकारकरिये ॥ तौ स्वर्गादिकपदार्थ अतिइंद्रियहैं याप्रकारकाज्ञान जोमनविषेहोवै है सो न होणाचाहिये॥ यातैं अनुमानकी तथाशब्दकी सहायतातैं मन स्वर्गादिकअतिइंद्रियपदार्थोंकूंभी विषयकरै है ॥ इतनेग्रंथकरिकै आत्माविषे प्रमाणकीअविषयतादिखाई॥ अब आत्मातैंभिन्न सर्वअनात्मपदार्थोंविषे विषयता निरूपणकरै हैं ॥ हेजनक ॥ अबाधितअर्थकूं विषयकरणेहारा जोप्रमाज्ञानहै ॥ तथा बाधितअर्थकूंविषयकरणेहारा जो अप्रमाज्ञानहै ॥ और प्रमाज्ञानकेकरण जेप्रत्यक्षादिकप्रमाणहैं तथा अप्रमाज्ञानकेकरण जेदुष्टचक्षुआ दिकअप्रमाणहैं ॥ और प्रमाज्ञानजन्य तथा अप्रमाज्ञानजन्य जेविषयनिष्ठ ज्ञाततारूपफलहैं ॥ और प्रमाज्ञानकेविषय जेघटादिकपदा र्थ हैं॥ तथा अप्रमाज्ञानकेविषय जेशुक्तिरजतादिक हैं॥ यहअष्ट जडहैं ॥ यातैं आपणीसिद्धिवासतै स्वप्रकाशचैतन्यरूपसाक्षीआत्माकूं आश्रयणकरैहैं ॥ स्वप्रकाश साक्षीआत्मातैंविना जडप्रमाआदिकोंकीसिद्धिहोवैनहीं यातैं प्रमाण १ अप्रमाण २ प्रमा ३ अप्रमा ४ प्रमाज

न्यज्ञाततारूपफल ५ अप्रमाजन्यज्ञाततारूपफल ६ प्रमाज्ञानकाविषय ७ अप्रमाज्ञानकाविषय ८ ॥ यहअष्ट साक्षीआत्माकेविषय हैं ॥ यातैं विषयरूपकरिकै यहअष्ट समानहीं हैं ॥ और जेवादीपुरुष तिन प्रमाणादिकअष्टोंकी परस्पर विलक्षणता अंगीकारकरै हैं॥ते वादी पुरुष प्रमाणादिकोंविषे साक्षीआत्माकीविषयताकूं नजाणिकरिकै तिनप्रमाणादिकोंकी परस्पर विलक्षणता कथनकरैं हैं ॥ यातैं यह सिद्धभया ॥ जैसें नेत्रवान्पुरुषकेसमीपस्थितहुआ दुग्ध एकशुक्लवर्णवालाहीहोवै है ॥ और अंधपुरुषोंकीसभाविषेस्थितहुआ सोदुग्ध नीलपीतादिकनानावर्णवालाहोवै है॥तैसे भेदवादीभ्रांतपुरुषोंकीदृष्टिकरिकैतौ प्रमाणादिकोंविषे नानाप्रकारकीविलक्षणताहै॥ और वेदां तशास्त्रकेतात्पर्यजानणेहारे जेअद्वैतवादी हैं॥तिनोंकीदृष्टिकरिकैतौ संपूर्णप्रमाणादिक साक्षीआत्माकेविषयहैं॥ यातैं साक्षीआत्माकीविषय तारूपकरिकैसंपूर्णप्रमाणादिकसमानहीं हैं॥अब प्रमाणादिकअष्टोंविषे साक्षीआत्माकीविषयताकूंनअंगीकारकरिकैजेभेदवादीपुरुष प्रमाणा दिकोंविषे विलक्षणतामानैंहैं तिनोंकाखंडनकरैं हैं।तहाँ जोवादी अप्रमाणकूंअंगीकारकरैहै तासैं यहपूछाचाहिये।सोअप्रमाण किसी अप्रमाण करिकैसिद्धहै॥अथवा किसीप्रमाणकरिकै सिद्धहै॥तहां जोवादी अप्रमाणकरिकैं अप्रमाणकीसिद्धि यहप्रथमपक्षअंगीकारकरै।तौ जैसे अप्र माणकरिकैसिद्ध शुक्तिरजतकूं कथनकरणेहारापुरुष भ्रांतहोवै है॥तैसे अप्रमाणकरिकैसिद्ध अप्रमाणकूं कथनकरणेहारावादीभी भ्रांतहोवै गा॥यातैं अप्रमाणकरिकै अप्रमाणकीसिद्धि संभवैनहीं॥और जोवादी प्रमाणकरिकैअप्रमाणकीसिद्धि यहदूसरापक्ष अंगीकारकरै॥सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं मिथ्याअर्थकूं जोविषयकरै है ताकूं अप्रमाणकहैं हैं ॥ ताअप्रमाणरूपमिथ्याअर्थकूं जोप्रमाणविषयकरैगा॥तौ सोप्र माणभी अप्रमाणनहींहोवैगा ॥ और जोवादीयहकहै ॥ जोजिसअर्थकूं विषयकरै है ॥ सो तिसअर्थकीसिद्धिविषे प्रमाणहींहोवै है ॥ यातैं अप्रमाणकूंविषयकरणेहाराप्रमाणभी ताअप्रमाणकीसिद्धिविषे प्रमाणहीं है ॥ सोयहवादीकाकहणा संभवैनहीं ॥ काहेतैं जो जिसअर्थकूं विषयकरै है ॥ सो तिसअर्थकी सिद्धिविषे प्रमाणहींहोवै है ॥ याप्रकारकानियम जोअंगीकारकरोगे ॥ तौ शुक्तिरजतकूंविषयकरणेहारा अप्रमाणभी प्रमाणहोणाचाहिये ॥ और याके विषेभी जोवादी इष्टापत्तिकरै॥तौ यहप्रमाण है यहअप्रमाण है याप्रकारका तुमाराकथन

व्यर्थहोवैगा ॥ किंवा ॥ चक्षुइंद्रिय रूपकूंग्रहणकरै है गंधकूंग्रहणकरै नहीं ॥ यातैं रूपकीअपेक्षाकरिकैतौ चक्षुइंद्रियविषे प्रमाणताहै ॥ और गंधकीअपेक्षाकरिकै तिसीचक्षुइंद्रियविषे अप्रमाणता है ॥ तैसे घ्राणइंद्रियविषे गंधकीअपेक्षाकरिकैतौ प्रमाणता है ॥ और रूपकीअपेक्षाकरिकै तिसीघ्राणइंद्रियविषे अप्रमाणता है॥इसप्रकार सर्वेप्रमाणोंविषे किसीअर्थकीअपेक्षाकरिकै प्रमाणताहै और किसीअ र्थकीअपेक्षाकरिकै अप्रमाणता है ॥ नियमकरिकै प्रमाणता तथाअप्रमाणता किसीप्रमाणविषेहैनहीं॥ याकारणतैंभी यहप्रमाणहै यहअप्र माणहै याप्रकारका वादियोंकाकथन व्यर्थहै ॥ किंवा ॥ प्रमाणकरिकै जोअप्रमाणकीसिद्धिअंगीकारकरोगे ॥ तौ जैसे मिथ्या रज्जुसर्पकूं तथाशक्तिरजतकूं विषयकरणेहाराज्ञान अप्रमाणहींहोवैहै॥तैसे अप्रमाणकूंविषयकरणेहारा प्रमाणभी अप्रमाणहींहोवैगा॥ यातैं प्रमाणक रिकै अप्रमाणकीसिद्धि संभवैनहीं ॥ किंवा ॥जैसे अप्रमाण अप्रमाणकरिकै तथाप्रमाणकरिकैसिद्धहोवैनहीं॥तैसे प्रमाणभी प्रमाणकरिकै तथाअप्रमाणकरिकै सिद्धहोवैनहीं ॥ काहेतैं जोप्रमाणकाप्रमाणकरिकैहीग्रहणहोवै ॥ तौ सोग्राहकप्रमाण प्रथमग्राह्यप्रमाणतैं अभिन्न है अथवा भिन्नहै॥ जोकहो सोग्राहकप्रमाण ग्राह्यप्रमाणतैंअभिन्नहै॥तौ आपणेग्रहणविषे आपणीअपेक्षारूप आत्माश्रयदोषकीप्राप्तिहोवैगी और जोकहो सोग्राहकप्रमाण ग्राह्यप्रमाणतैंभिन्नहै ॥ तौ तिसग्राहकप्रमाणकी किसप्रमाणकरिकै सिद्धिहोवै है॥जोकहो आपणेकरिकैहीं तिसग्राहकप्रमाणकीसिद्धिहोवै है॥तौ आपणीसिद्धिविषेआपणीअपेक्षारूपआत्माश्रयदोषकीप्राप्तिहोवैगी॥और जोकहो प्रथमग्राह्याप्रमा णकरिकै ताग्राहकप्रमाणकीसिद्धिहोवै है॥ तौ प्रथमप्रमाणकूं आपणीसिद्धिविषे दूसरेप्रमाणकीअपेक्षा॥और दूसरेप्रमाणकूंआपणीसिद्धि विषे प्रथमप्रमाणकीअपेक्षा ॥ याप्रकार अन्योन्याश्रयदोषकीप्राप्तिहोवैगी॥और जोकहो सोदूसराप्रमाण आपणीसिद्धिवासतै तीसरेप्रमा णकीअपेक्षाकरै है ॥ तौ ता तीसरेप्रमाणकी आपणेकरिकैसिद्धि है॥अथवा दूसरेप्रमाणकरिकैसिद्धि है॥अथवा प्रथमप्रमाणकरिकैसिद्धि है ॥ जोकहो ता तीसरेप्रमाणकीआपणेकरिकैहीसिद्धि है ॥तौ आत्माश्रयदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और जोदूसरेप्रमाणकरिकै तीसरेप्रमाण कीसिद्धिमानौगे ॥ तौ अन्योन्याश्रयदोषकीप्राप्तिहोवैगी॥और जो प्रथमप्रमाणकरिकै तीसरेप्रमाणकीसिद्धिमानौगे ॥तौप्रथमप्रमाणकी

दूसरेप्रमाणकारिकैसिद्धि ॥ और दूसरेप्रमाणकी तीसरेप्रमाणकारिकैसिद्धि॥और तीसरेप्रमाणकी पुनःप्रथमप्रमाणकारिकैसिद्धि॥याप्रकार चक्रकी न्याई भ्रमणरूप चक्रिकादोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और जोतीसरेप्रमाणकीसिद्धिवासतै चतुर्थप्रमाणकाअंगीकार ॥और चतुर्थप्रमाण कीसिद्धिवासतै पंचमप्रमाणका अंगीकार॥ याप्रकार प्रमाणोंकीधारा अंगीकारकरोगे॥ तौ अनवस्थादोषकी प्राप्तिहोवैगी ॥ यातैं प्रमा णकरिकै प्रमाणकीसिद्धिसंभवैनहीं ॥ और अप्रमाणकरिकै प्रमाणकीसिद्धिहै यहदूसरापक्ष जोअंगीकारकरोगे ॥ तौ अप्रमाणकाविषयहु आप्रमाणभी अप्रमाणरूपहीहोवैगा॥ यातैं अप्रमाणकरिकेभीप्रमाणकीसिद्धि संभवैनहीं ॥किंवा जैसे प्रमाणके तथाअप्रमाणके स्वरूप कीसिद्धिहोवैनहीं ॥ तैसे प्रमाणके तथाअप्रमाके स्वरूपकीसिद्धिभी संभवैनहीं॥काहेतैं सोप्रमाज्ञान प्रमाज्ञानकरिकैसिद्धहै॥अथवा अप्र माज्ञानकरिकैसिद्धहै ॥ और सोअप्रमाज्ञान अप्रमाज्ञानकरिकैसिद्धहै ॥ अथवा प्रमाज्ञानकरिकैसिद्धहै ॥ इत्यादिकविकल्पोंविषे जेपूर्व दूषणकहैं हैं तेसर्व संभवहोइसकै हैं॥यातैं प्रमाज्ञानका तथा अप्रमाज्ञानकाभीस्वरूप सिद्धहोइसकैनहीं॥ किंवा ॥प्रमाणअप्रमाणकेभेदक रिकै तथाप्रमाज्ञानअप्रमाज्ञानकेभेदकरिकै ज्ञाततारूपफलकाभेदहोवैहै॥सोप्रमाणअप्रमाणकाभेद तथा प्रमाअप्रमाकाभेद पूर्वउक्तयुक्ति योंकरिकै संभवैनहीं॥ यातैं प्रमाअप्रमाजन्य ज्ञाततारूपफलकाभी भेदसंभवैनहीं॥किंवा ॥ प्रमाणकरिकै तथाप्रमाज्ञानकारिकै घटादिक विषयोंकीसिद्धिहोवैहै॥यातैं प्रमाणका तथाप्रमाज्ञानका भेदहीं घटादिकविषयोंकेभेदकासाधक है॥सोप्रमाण तथाप्रमाज्ञान पूर्वउक्तयुक्ति योंकरिकै अप्रमाणरूपहै ॥ यातैं ताअप्रमारूपज्ञानकरिकै घटादिकविषयोंकेभेदकीसिद्धिसंभवैनहीं ॥ जोअप्रमाज्ञानकरिकैभी विषयकी सिद्धिहोतीहोवै॥तौ यहसर्प है याप्रकारके अप्रमाज्ञानकरिकै रज्जुसर्पकीभी सिद्धिहोणीचाहिये ॥ और यहसर्प है याप्रकारके अप्रमाज्ञा नकरिकै रज्जुसर्पकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ यातैं प्रमाणादिकोंकीन्याईं घटादिकविषयोंकाभेदभी संभवैनहीं ॥ किंवा ॥ जोवादी चक्षुआदिक प्रमाणोंकरिकै विषयकी सिद्धिमानै है ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये॥चक्षुआदिकप्रमाण जिसकालविषे घटादिकविषयोंकूं ग्रहणकरै हैं ॥ तिसीकालविषे चक्षुआदिकोंविषे प्रमाणताहै ॥ अथवा स्वभावतैंही चक्षुआदिकोंविषे प्रमाणताहै ॥ तहाँ प्रथमपक्ष जोवादी अंगीकार

॥ १२ ॥

करै ॥ तौ चक्षुआदिकप्रमाणोंकरिकै घटादिकविषयोंकीसिद्धिनहींहोवैगी ॥ काहेतैं प्रथम घटादिकविषयसिद्धहोवै ॥ तौ पश्चात् चक्षुआ दिक प्रमाणोंविषे प्रमाणतासिद्धहोवै॥और प्रथम चक्षुआदिकप्रमाणोंविषे प्रमाणतासिद्धहोवै॥तौ पश्चात् घटादिकविषयोंकीसिद्धिहोवै ॥ याप्रकारकेअन्योन्याश्रय दोषकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और जहां अन्योन्याश्रयदोषकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तहां किसीकार्यकीसिद्धिहोतीनहीं ॥ और चक्षुआदिकप्रमाणोंविषे स्वभावतैंहीं प्रमाणताहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ तौ जैसे चक्षुआदिकप्रमाणोंविषे स्वभावतैं प्रमा णताहै ॥ तैसे अप्रमाणोंविषेभीस्वभावतैं प्रमाणता काहेतैंनहींहोवै ॥ और जोवादी यहकहै ॥ चक्षुआदिकप्रमाणोंविषे जोप्रमाणताहैसो स्वभावतैंहींहै ॥ और अप्रमाणोंविषे स्वभावतैं प्रमाणता संभवैनहीं ॥ काहेतैं काचकामलादिकदोषकरिकैयुक्त चक्षुआदिकोंकूं अप्रमा णकहैं हैं ॥ तिनअप्रमाणोंविषे दोषकूंग्रहणकरणेहारा जोप्रमाणहै ॥ ताप्रमाणकरिकै तिनअप्रमाणोंविषे अप्रमाणताहीसिद्धहोवै है॥यातैं अप्रमाणोंविषे स्वभावतैं प्रमाणता सिद्धहोइसकैनहीं ॥ सोयहवादीकाकहणाभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं जैसे अप्रमाणविषे दोषकूंग्रहणकरणे हारा जोप्रमाणहै ॥ तिसप्रमाणकरिकै ताअप्रमाणविषे अप्रमाणतासिद्धहोवै है ॥ तैसे दोषग्राहकप्रमाणविषेभी दोषकूंग्रहणकरणेहारा जोदूसराप्रमाणहै ॥ तादूसरेप्रमाणकरिकै दोषग्राहकप्रमाणविषेभी अप्रमाणता क्योंनहींसिद्धहोवै ॥ और जोवादी यहकहै॥अप्रमाणविषे दोषकूंग्रहणकरणेहारा जोप्रमाणहै ॥ ताकेविषे अप्रमाणता तभी सिद्धहोवै ॥ जभी ताकेविषे दोषकीप्रतीतिहोवै ॥ और तादोषग्राहक प्रमाणविषे किसीप्रमाणकरिकै दोषकीप्रतीतिहोतीनहीं॥उलटा अनुपलब्धिरूपप्रमाणकरिकै तादोषग्राहकप्रमाणविषे दोषकेअभावकीही प्रतीतिहोवैहै ॥ यातैं अप्रमाणकेदोषग्राहकप्रमाणविषे अप्रमाणता संभवैनहीं ॥ सोयहवादीकाकहणाभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं अप्रमाण विषेदोषकूंग्रहणकरणेहारा जोप्रथमप्रमाणहै।ताकेविषे दोषकेअभावकूंग्रहणकरणेहारा जोअनुपलब्धिप्रमाणहै॥सोअनुपलब्धिप्रमाण प्रमाण रूपहुआ दोषकेअभावकूंग्रहणकरैहै ॥ अथवा सो अनुपलब्धिप्रमाण अप्रमाणरूपहुआ दोषकेअभावकूंग्रहणकरैहै ॥ तहाँ प्रथमपक्ष जो वादी अंगीकारकरै सो संभवैनहीं ॥ काहेतैं श्रुतिरूपअलौकिकप्रमाणकूंछोडिकै जितनेकी प्रत्यक्ष अनुमान उपमान शब्द अर्थापत्ति

अनुपलब्धि यहलौकिकपट्प्रमाण हैं ॥ ते दोषकीशंकाकरिकै युक्तहैं यातैं स्वभावतैंतौ तिनप्रत्यक्षादिकोंविषे प्रमाणताहैनहीं ॥ किंतु जिसकालविषे प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंविषे दोषकेअभावकाज्ञानहोवैहै ॥ तिसीकालविषे प्रत्यक्षादिकोंकूंप्रमाणताहै ॥ यातैं दोषग्राहकप्रमाण विषे दोषाभावकूं ग्रहणकरणेहारा जोअनुपलब्धिप्रमाणहै ॥ ताकेप्रमाणताकीसिद्धिवासतै ताअनुपलब्धिप्रमाणविषे दोषाभावकूंग्रहण करणेहारा कोईअनुपलब्धिप्रमाण अंगीकारकऱ्याचाहिये॥और सोअनुपलब्धिप्रमाण प्रथमअनुपलब्धिप्रमाणतैं अभिन्नहै अथवा भिन्नहै॥ जोवादी अभिन्नकहै ॥ तौ आत्माश्रयदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और जोवादी ताअनुपलब्धिप्रमाणकूंभिन्नकहै ॥तौ तादूसरेअनुपलब्धिप्रमा णविषे दोषाभावकूं कौनअनुपलब्धिप्रमाण ग्रहणकरैहै ॥ तहाँ जोवादी प्रथमअनुपलब्धिप्रमाणकरिकै दूसरेअनुपलब्धिप्रमाणविषे दोषा भावकाग्रहणमानै ॥ तौ अन्योन्याश्रयदोषकीप्राप्तिहोवैगी॥ और जोवादी तादूसरेअनुपलब्धिप्रमाणविषे दोषाभावकेग्रहणवासतै तीसरा अनुपलब्धिप्रमाण अंगीकारकरै ॥ तौ तातीसरेअनुपलब्धिप्रमाणविषे दोषाभावका किसअनुपलब्धिप्रमाणरिकै ग्रहणहोवै है ॥ तहाँ जोवादीक है तीसरेअनुपलब्धिप्रमाणविषे प्रथमअनुपलब्धिप्रमाणकरिकै दोषाभावकाग्रहणहोवै है॥ तौ चक्रिका दोषकी प्राप्तिहोवैगी ॥ और जोवादी तीसरेअनुपलब्धिप्रमाणविषे दोषाभावकग्रहणवासतै चतुर्थअनुपलब्धिप्रमाण और चतुर्थवासतैंपंचम याप्रकार अनुपलब्धिप्रमाणोंकीधारा अंगीकारकरै ॥ तौ अनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ यातैं प्रमाणरूपहुई अनुपलब्धि दोषाभावकूं ग्रहणकरैहै यहप्रथमपक्ष संभवैनहीं ॥ और अप्रमाणरूपहुआ सोअनुपलब्धिप्रमाण दोषग्राहकप्रमाणविषे दोषाभावकूं ग्रहणकरै है ॥ यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरैहै ॥ सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं जो अप्रमाणकाविष्यहोवैहै ॥ सोभी अप्रमाणही होवै है ॥ यातैं अप्रमाणरूपअनुपलब्धिकाविषय जो दोषाभावविशिष्टप्रमाणहै ॥ सोभी अप्रमाणरूपहीहोवैगा॥याकहणेकरिकै यहअर्थसिद्ध भया ॥जोवादी आत्माकूंप्रकाशरूप नहीं अंगीकारकरैहै॥तिसवादीकेमतविषे प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकैही घटादिकविषयोंकीसिद्धिहो वैहै॥ते प्रत्यक्षादिकप्रमाण पूर्वउक्तयुक्तियोंकरिकै सिद्धहोइसकैनहीं ॥ याकारणतैं घटादिकविषयोंकी तथा प्रमाअप्रमारूपज्ञानकीभी

सिद्धिहोइसकैनहीं ॥किंवा॥ प्रमाण प्रमा फल यातीनोंकी सिद्धिविषे कोईप्रमाण है अथवा नहीं है ॥ तहाँ जोवादीकहै तिनोंविषेप्रमाण नहींहैं।तौ नरशृंगकीन्याईंते प्रमाणादिक अत्यंतअसत्होवैंगे ॥और जोवादीकहै।प्रमाण प्रमा फल यातीनोंकीसिद्धिविषे कोईप्रमाणहैतौजो पदार्थप्रमाणकाविषयहोवै है॥सो पदार्थ प्रमेयहींहोवै है॥यातैं प्रमाण प्रमा फल यातीनोंविषेभी घटादिकपदार्थोंकीन्याईं प्रमेयरूपताहींप्रा तहोवैगी॥और जोवादी याकेविषे इष्टापत्तिकरै॥तौ यहप्रमाण है यहप्रमा है यहफल है यहप्रमेय है यहचारिप्रकारकाभेद वादीकेमतविषे असंगतहोवैगा ॥ याकारणतैंभी प्रमाणादिकोंकी सिद्धिसंभवैनहीं ॥यातैं यह सिद्धभया ॥ जैसे आकाशविषे मूढपुरुषोंकूं गंधर्वनगर प्रती तहोवै है॥परंतु सोगंधर्वनगर वास्तवतैं आकाशविषे है नहीं॥किंतु तिनमूढपुरुषोंकेकल्पनाकरिकै सिद्ध है॥तैसे यहप्रमा है यहप्रमाणहै यहफल है यहप्रमेय है यहचारिप्रकारकाभेद केवलवादियोंकीकल्पनाकरिकैसिद्ध है॥और जो कल्पितपदार्थहोवै है ॥ सो साक्षी आत्माक रिकैहीं प्रकाश्यहोवै है ॥ जैसे कल्पितस्वप्नकेपदार्थ साक्षीआत्माकरिकै प्रकाश्य हैं ॥ तैसे कल्पितप्रमाणादिकभी साक्षीआत्मा क रिकैहीं सिद्ध हैं ॥ किंवा ॥ दोषजन्यदृष्टिकरिकै जिसअधिष्ठानविषे जोपदार्थ प्रतीतहोवै है ॥ ताअधिष्ठानविषे सोपदार्थ वास्तव तैंहोवैनहीं ॥ जैसे पुरुषकेवेशकूंधारणकरणे हारीस्त्रीविषे दोषजन्यदृष्टिकरिकै जोपुरुषपणा प्रतीतहोवै है ॥ सोपुरुषपणा ता स्त्रीविषेवा स्तवतैं है नहीं ॥ और जैसे दोषजन्यदृष्टिकरिकै रज्जुविषे जोसर्पप्रतीतहोवै है ॥ सोसर्प तारज्जुविषे वास्तवतैं है नहीं ॥ तैसे दोषजन्य दृष्टिकरिकैवादियोंकूं जो प्रमाण प्रमा फल विषय यह चारिप्रकारकाभेद प्रतीतहोवै है ॥ सोभेदभी वास्तवतैं हैं नहीं ॥ शंका ॥ प्रमाण प्रमा फल विषय इनचारोंकूं जोकल्पितअंगीकारकरोगे ॥ तौ तिनप्रमाणादिकोंकरिकै लोकोंकाव्यवहार सिद्धनहींहोवैगा ॥ यातैं प्रमाणा दिकोंकूं वास्तवमानणाहीं उचित है॥समाधान॥कल्पितअर्थकरिकै जोव्यवहारकीसिद्धिनहींहोती ॥तौ प्रमाणादिकोंकूँ हम सत्यअंगीका रकरते ॥ परंतु लौकिकव्यवहार मिथ्याअर्थकरिकैभी सिद्धहोइसकै हैं ॥ जैसे कल्पितरज्जुसर्पकूंविषयकरणेहारा जोयहसर्प है याप्रकारका ज्ञान है ॥ तामिथ्याज्ञानकरिकै भयकंपादिव्यवहार होवै है॥तैसे कल्पितप्रमाणादिकोंकरिकैभी लोकोंकाव्यवहार संभवै है॥यातैं प्रमाण

अप्रमाण प्रमा अप्रमा इत्यादिकसंपूर्ण जडजगत् साक्षी आत्माकाविषय है॥ और जैसे दीपककरिकै प्रकाश्यजेघटादिकपदार्थ हैं॥ते प्रकाशकदीपककूं विषयकरिसकैनहीं॥तैसे साक्षीआत्माकरिकैप्रकाश्य जेप्रमाणादिक हैं॥तेप्रकाशकसाक्षीआत्माकूंविषयकरिसकैनहीं॥शंका ॥ यद्यपि प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकाविषय आत्मानहीं है॥तथापि श्रुतिप्रमाणकाविषय आत्मा है॥काहेतैं तंत्वौपनिषदंपुरुषंपृच्छामि ॥अर्थ यह॥उपनिषद्प्रमाणकरिकै जानणेयोग्यजोआत्मा है॥ताकास्वरूप मैं तुम्हारेसैंपूछताहूं ॥१॥याश्रुतिविषे उपनिषद्प्रमाणजन्यज्ञानकीविषयता आत्माविषेकहीहै॥यातैं आत्मा प्रमाणकाअविषयनहीं किंतु विषयहीहै॥समाधान॥आत्मातैं भिन्न संपूर्णजडजगत् मिथ्याहै यातैंसो जड जगत् श्रुतिरूपप्रमाणकाविषयनहीं॥औरआत्मास्वप्रकाशहै॥यातैंआत्माभीश्रुतिरूपप्रमाणकाविषयनहीं॥किंतु माताकीन्याईं मुमुक्षु जनोंके अत्यंताहितकारी श्रुतिभगवतीआत्माविषे स्थूलसूक्ष्मजगत्काआरोपणकरिकै ताजगत्कानिषेधकरतीहुई अर्थतैंआत्माकाबोधनकरैहै॥तात्पर्ययह॥श्रुतिप्रमाणजन्य अंतःकरणकीवृत्तिरूपज्ञानकरिकै आत्माका प्रकाशहोवैनहीं॥किंतु तावृत्तिज्ञानकरिकै आत्माकेआवरणकीनिवृत्तिहोवैहै॥ताआवरणकीनिवृत्तिमात्रकूंग्रहणकरिकैहीं श्रुतिविषे आत्माकूंउपनिषद्प्रमाणकाविषकह्याहै ॥ यातैं स्वप्रकाशसाक्षी किसीप्रकार करिकेसिद्धहोवैनहीं किंतुस्वतःही सिद्ध है ॥ अब आत्माविषे स्वप्रकाशताकीदृढताकरणेवासतैं पुनःपूर्वविचारकूं कथनकरैं हैं ॥ किंवा ॥ प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकै मैं याअर्थकूंनिश्चयकरताहूं ॥ याप्रकारकेज्ञानकाआश्रय जोप्रमाता है ॥ ताप्रमाताकूंआश्रयण करिकैहीप्रमाण अप्रमाण प्रमाअप्रमा फल प्रमेय इत्यादिकभेद सिद्धहोवैं हैं ॥ आश्रयरूप प्रमाताकीसिद्धितैंविना प्रमाणादिकोंकाभेद सिद्धहोवैनहीं ॥ यातैं प्रमाणादिकोंकी सिद्धिवासतैं प्रमाताकी सिद्धि अवश्यचाहिये ॥ तहाँ वेदांतसिद्धांतविषे प्रमाताका स्वरूपभूत जोस्वप्रकाशचैतन्य है ॥ ताकरिकैहीं प्रमाताकी सिद्धिहोवै है ॥ काहेतैं वेदांतसिद्धांतविषे अंतःकरणविशिष्टचैतन्यकानाम प्रमाता है॥ सोविशिष्टचैतन्यशुद्धचैतन्यतैं भिन्नहैनहीं॥यातैं स्वप्रकाशचैतन्यहीं प्रमाताकास्वरूप है॥ताकरिकै प्रमाताकीसिद्धि संभवै है ॥और जो वादी अंहअस्मि॥अर्थयह जो॥मैंहूंयाप्रकारकेज्ञानकरिकै प्रमाताकीसिद्धि अंगीकारकरै है॥तावादीसैं यहपूछाचाहियेप्रमाताके आश्रितजो

अहंअस्मियाप्रकारकाज्ञानहै ॥ ताज्ञानकरिकै तिसीप्रमाताकीसिद्धिहोवै है॥ अथवा ॥ अन्यकिसीप्रमाताकेआश्रित जोअहंअस्मियहज्ञानहै ॥ ताज्ञानकरिकै तिसप्रमाताकीसिद्धिहोवैहै ॥ तहाँ जोवादी अंत्यपक्षकूंअंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं जैसे देवदत्तनामापुरुष आपणेतैंभिन्न यज्ञदत्तनामापुरुषकूंजाणताहुआ याप्रकारकाअनुभवकरैहै ॥ मैं इसयज्ञदत्तकूं जाणताहूं ॥ तैसे मैं इसप्रमाताकूं जाणताहूं याप्रकारकाअनुभव जीवोंकूंहोणाचाहिये ॥ और ऐसाअनुभव किसीजीवकूंहोतानहीं ॥ किंतु मैं आत्माकूं जाणताहूं याप्रकारकाअनुभव सर्वजीवोंकूंहोवैहै ॥ यातैं अन्यप्रमाताकेआश्रितज्ञानकरिकै अन्यप्रमाताकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ और तिसप्रमाताकेआश्रित जोअहंअस्मि याप्रकारकाज्ञानहै ॥ ताज्ञानकरिकै तिसीप्रमाताकी सिद्धिहोवैहै ॥ यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैंलोकविषे जोजो क्रियाहोवैहैं ॥ ताका कर्त्ता भिन्नहोवैहै ॥ और कर्म भिन्नहोवैहै ॥ जैसे छेदनरूपक्रियाका पुरुष कर्त्ताहै॥ औरकाष्ठादिककर्म है ॥ तैसे अहंअस्मि याज्ञानरूपक्रियाकाभी कर्त्ता तथाकर्म भिन्नभिन्न होणेचाहिये ॥ एकहीप्रमाता ज्ञानरूपक्रियाकाकर्त्ता तथाकर्म यह वार्त्तासंभवैनहीं ॥ यातैं स्वाश्रितज्ञानकरिकै प्रमाताकीसिद्धिसंभवैनहीं ॥ किंवा ॥ जोवादी याप्रकारकहै ॥ आत्मास्वभावतैंतो ज्ञानरहितजडहै ॥ यातैं आपणेकूंजानिसकैनहीं ॥ परंतु मनकेसंबंधकरिकै आत्माविषेउत्पन्नभयाजो ज्ञानगुण ॥ ताज्ञानगुणकूंप्राप्तहोईकै चेतन भावकूंप्राप्तहुआआत्मा आपणेकूंआपेहीजानैहै ॥ सो यहवादीकाकहणाभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं तावादीकेमतविषे जैसे घट स्वभावतैंजड है ॥ तैसे आत्माभी स्वभावतैंजडहै ॥ यातैं जैसे मनकेसंबंधतैं ज्ञानगुणवालाहुआ आत्मा आपणेकूंजानैहै ॥ तैसेमनकेसंबंधतैं ज्ञानगुणवालाहुआघटभी आपणेकूंक्यानहींजाणता ॥ और घट आपणेकूंजाणतानहीं ॥ यातैं यहवादीकाकहणा असंगतहै ॥ किंवा ॥ जोवादी याप्रकारकहै ॥ जैसे आत्माकेसाथ मनकासंयोगसंबंधहै ॥ तैसे घटकेसाथ मनकासंयोगसंबंधहैनहीं ॥ यातैं घट आपणेकूंजाणतानहीं ॥ सो यहवादीकाकहणाभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं नैयायिकोंकेमतविषे मन परमअणुपरिमाणवालाहै तथा नित्यहै ॥ और जेमुक्तपुरुष हैं तिनोंकेशरीरादिक नष्टहोइजावैहैं ॥ परंतु तिनोंकामन नष्टहोवैनहीं ॥ यातैं बद्धअज्ञानीजीवोंकेमनकासंबंध यद्यपि घटादिकोंसैं

संभवैनहीं ॥ तथापि पूर्वमुक्तपुरुषोंकेमनकासंबंध घटादिकोंविषेसंभवै है ॥ यातैं घटादिकोंकूंभी आपणाज्ञान होणाचाहिये ॥ किंवा ॥ जोवादी आत्माकूं स्वभावतैंजडमाने है ॥ तावादीकेमतविषे घटादिकजडपदार्थोंकी तथा आत्माकी किंचित्मात्रभी विशेषतासिद्धनहीं होवैगी ॥ यातैं वादीकेमतविषे घटादिकजडपदार्थभी आत्माहोणेचाहिये॥किंवा॥ जोवादी याप्रकारकहै॥घटादिकोंविषे तथाआत्माविषे जडपणा तौसमान है ॥ परंतु घटादिक परिच्छिन्नहै तथामूर्त्त हैं ॥ औरआत्मा विभु है तथाअमूर्त्तहै ॥ यातैं घटादिकोंकूं आत्मरूपता संभवैनहीं ॥ सो यहवादीकाकहणाभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं नैयायिकोंकेमतविषे जैसे आत्मा विभुहै तथाअमूर्त्तद्रव्य है ॥ तैसे आकाश काल दिक् यहतीनोंभी विभुहैं ॥ तथाअमूर्त्तद्रव्यहैं॥यातैंआत्मातैंविलक्षण घटादिकपदार्थोंविषे यद्यपि आत्मरूपतासंभवैनहीं तथापिआ काशकालदिक् यहतीनोंविषे आत्मरूपताहोणीचाहिये॥किंवा ॥जोवादीयाप्रकारकहै जैसे आत्माकेसाथ मनकासंबंध ज्ञानकाकारणहै तैसेशरीरकासंबंधभी ज्ञानकाकारण है॥ यातैंशरीरकासंबंधही आत्माविषे आकाशादिकोंतैं विशेषता है॥सो यहवादीकाकहणाभीसंभवै नहीं ॥ काहेतैं नैयायिकोंकेमतविषे आकाशकालदिक्आत्मा यहचारोंद्रव्यविभु हैं॥और सर्वमूर्त्तद्रव्योंकेसाथ जाकासंयोगसंबंधहोवै ताकूं नैयायिक विभुकहै हैं॥यातैं जैसे मूर्त्तद्रव्यरूपशरीरकेसाथ आत्माकासंबंधहै॥तैसे आकाश काल दिक् यातीनोंकाभीशरीरकेसाथ संबंधहै यातैंआकाशादिकोंविषेभी आत्मरूपता होणीचाहिये॥किंवा॥जोवादी आत्माकूं स्वभावतैं जडमानैहै॥तावादीकेमतविषे आत्माकातथा घटादिक विषयोंकापरस्पर भोक्ताभोग्यभावसंबंध तथा उपकार्यउपकारकभावसंबंध नहींसंभवैगा॥ काहेतैं जैसे घटादिकपदार्थ स्वभावतैं जडहैं॥तैसे आत्माभी वादीकेमतविषे स्वभावतैंजडहै॥और आगंतुकज्ञानकेकारणमनःसंयोगादिक पूर्वउक्तरीतिसैं घटादिकोंविषेभी हैं ॥ यातैं जैसे आत्मा कर्ताभोक्ताहै॥तैसे घटादिकंसपूर्णजडपदार्थभी कर्ताभोक्ताहोणेचाहिये॥और घटादिकजडपदार्थोंकूं कोईभीवादी कर्ता भोक्ता मानतानहीं॥किंवा॥जोवादी याप्रकारकहै ॥प्रत्यक्षरूपदृष्टि तथाअनुमितिरूपदृष्टि जिसविषेहोवै है ॥ सोईहीं कर्ताभोक्ताहोवैहै ॥ सोदृष्टि आत्माविषेहीहोवैहै॥घटादिकोंविषेहोवैनहीं ॥ यातैं आत्माहीं कर्ताभोक्ताहै॥घटादिकपदार्थकर्ताभोक्ताहोवैनहीं ॥ सोयहवादी

काकहणाभी संभवैनहीं॥काहेतैं आत्माविषे कर्ताभोक्तापणेकीसिद्धिवासतै तुमनै अंगीकारकरीजोदृष्टि॥सोदृष्टि आत्माकास्वरूपभूतहै॥ अथवा आत्माकाधर्म है तहाँ जोवादी प्रथमपक्ष अंगीकारकरै ॥ तौ हमारेकूंइष्टापत्तिहै ॥ काहेतैं ज्ञानरूपदृष्टिकूं आत्मरूपता हमभीअं गीकारकरते हैं ॥ और सोदृष्टि आत्माकाधर्म यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सो संभवै नहीं ॥ काहेतैं वादीकेमतविषे धर्मका तथा धर्मीका परस्पर भेदहीहोवै है॥यातैं दृष्टिरूपधर्मकूं प्रकाशरूपताहुएभी धर्मीरूपजडआत्माकूं प्रकाशरूपतासंभवैनहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे पुत्रकेपंडितहुएभीपिता पंडितहोवैनहीं॥किंवा॥वादीनैं आत्माविषे अंगीकारकरीजोदृष्टि सोदृष्टि धर्मीरूपआत्मातैंभिन्नहै॥यातैं सोदृष्टिआ त्माकीसिद्धिकरिसकैनहीं॥और आत्मारूपधर्मीकेअसिद्धहुए ज्ञानरूपदृष्टिकीभी सिद्धिसंभवैनहीं ॥ किंवा ॥ जो वादी या प्रकारकहै ॥ ता धर्मरूपदृष्टिकारिकै आत्माकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ किंतु स्वप्रकाशरूपकरिकै अथवा अन्यकिसीप्रमाणकरिकै आत्माकीसिद्धिहोवै है ॥ यातैं आत्माकीधर्मरूपदृष्टिभी सिद्धहोइसकैहै ॥ सो यहवादीकाकहणाभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं जभी स्वप्रकाशरूपकरिकै अथवा अन्य किसीप्रमाणकरिकैभी आत्माकीसिद्धिहोइसकै है॥तभी आत्माविषे दृष्टिकाअंगीकारकरणा निष्फलहै ॥ किंवा ॥ जो वादी आत्माविषे दृष्टिकूं अंगीकारकरै है ॥ तासैं यहपूछाचाहिये ॥ पदार्थोंकाज्ञानहोवै जिस करिकै ताकूं दृष्टिकहैं हैं ॥ याप्रकारकेअर्थकूंअंगीकारकरिकै चक्षुआदिकोंकीन्याईं करणरूपहुई सोदृष्टि प्रमाण है॥अथवा ज्ञानरूपहुई सोदृष्टि प्रमाण है ॥ तहां प्रक्षमपक्षतौ संभवै नहीं॥काहेतैं प्रत्य क्षादिकप्रमाणोंकी अवपर्यंत सिद्धिभईनहीं ॥ यातैं ताप्रमाणरूपदृष्टिकरिकै आत्माकीसिद्धि तुमारेसैंहोइसकैनहीं॥ किंवा॥ वादीनैं अंगी कारकरी जोप्रमाणरूपदृष्टि तादृष्टिविषे प्रमाणरूपता तभी सिद्धहोवै ॥ जभी तादृष्टिजन्यज्ञानविषे प्रमापणासिद्धहोवै॥ काहेतैं प्रमाज्ञान काजोकरणहोवै है ताकूंप्रमाणकहैं हैं ॥ यातैं सोदृष्टि आपणेविषे प्रमाणताकीसिद्धिवासतै स्वजन्यज्ञानविषे प्रमात्वकूंग्रहणकरणेहारे किसी दूसरेप्रमाणकीअपेक्षाकरै है॥और सोदूसराप्रमाणभी आपणेप्रमाणताकीसिद्धिवासतै स्वजन्यज्ञानविषे प्रमात्वकूंग्रहणकरणेहारे किसीती सरेप्रमाणकीअपेक्षाकरै है ॥ याप्रकार प्रमाणोंकीधारामानणेविषे अनवस्थादूषणकीप्राप्तिहोवै ॥ यातैं करणरूपहुई सो दृष्टि प्रमाणहोवै

नहीं ॥ किंवा ॥ ज्ञानरूपहुई सोदृष्टि प्रमाणहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ तासैं यहपूछाचाहिये॥सो प्रमाणरूपदृष्टि प्रकाशतैंरहितहै अथवा परप्रकाश्यहै अथवा स्वयंप्रकाश्यहै ॥ तहाँ प्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सो संभवैनहीं ॥ काहेतैं जैसे प्रकाशतैंरहितघट प्रमाणरूपहैनहीं ॥ तैसे प्रकाशतैंरहित सोदृष्टिभी प्रमाणरूप नहींहोवैगी॥ और प्रकाशतैंरहितदृष्टिकूं जोप्रमाणरूप अंगीकारकरोगे॥तौ प्रकाशतैंरहितघटभी प्रमाणरूप होणाचाहिये ॥ और सोदृष्टि परप्रकाश्यहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभी संभवैनहीं॥काहेतैं जैसैं घट परप्रकाश्यहै यातैं प्रमाणरूपनहीं॥तैसे परप्रकाश्यहोणेतैं सोदृष्टिभी प्रमाणरूपनहींहोवैगी॥किंवा॥ ताप्रमाणरूपदृष्टिकूं परप्रकाश्यमानणेविषे अनवस्थादोषकीभी प्राप्तिहोवै है॥काहेतैं सोप्रमाणरूपदृष्टि जिसदूसरीप्रमाणरूपदृष्टिकरिकै प्रकाश्यहै॥सोदूसरीप्रमाणरूप दृष्टिभी किसीतीसरेप्रमाणरूपदृष्टिकरिकै प्रकाश्यहोवैगी ॥ तीसरीचतुर्थकरिकैहोवैगी ॥ याप्रकार प्रमाणरूपदृष्टियोंकी धारामानणेविषे अनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवैगी यातैं सो प्रमाणरूप दृष्टि परप्रकाश्य संभवै नहीं ॥ किंवा ॥ सो प्रमाणरूपदृष्टि स्वयं प्रकाश्य है यहतीसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं श्रुतिप्रमाणतैंरहित जे केवलशुष्कतर्क हैं ॥ तिनतर्कोंकूं ग्रहणकरिकैही वादी अर्थकीसिद्धिकरै है॥और सोतर्क लौकिकदृष्टांततैंविना किसीअर्थकूं सिद्धकरैनहीं॥ यातैं प्रमाणरूपदृष्टि स्वयंप्रकाश्यहै याअर्थकी सिद्धिविषेभी वादीनैं कोईलौकिकदृष्टांत कह्याचाहिये ॥ और लोकविषे ऐसाकोईपदार्थ है नहीं॥जो आपही प्रकाशनरूपक्रियाकाकर्ताहोवै ॥ और आपही प्रकाशरूपक्रियाकाकर्महोवै ॥ यातैं प्रमाणरूपदृष्टिकूं स्वयंप्रकाशतासंभवैनहीं ॥किंवा॥ प्रमाणरूपदृष्टिकूं आत्मातैं भिन्नमानिकै जोवादी तादृष्टिकूं स्वयंप्रकाशमानेहै ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ सो स्वयंप्रकाशदृष्टि खद्योतजंतुकीन्याईं आपणेस्वरूप मात्रकाहीं प्रकाशकरै है ॥ अथवा सूर्यकीन्याईं सर्वपदार्थोंकाप्रकाशकरै है॥ तहाँ प्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सो संभवैनहीं॥काहेतैं जैसे खद्योतनामाजंतु किसीपदार्थकाप्रकाशकरैनहीं ॥ केवल आपणाहीं प्रकाशकरै है ॥ तैसे सोदृष्टिभी आपणेतैंभिन्न किसीपदार्थका प्रकाश नहींकरैगी ॥ यातैं लोकविषे किसीपदार्थकीसिद्धि नहीं होणीचाहिये ॥ और सूर्यकीन्याईं सोदृष्टि सर्वपदार्थोंका प्रकाशकहै यह

दूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं जो सोदृष्टि सर्वपदार्थोंकाप्रकाशकहोवै॥तौ एकपदार्थकेज्ञानकालविषे सर्व पदार्थोंकाज्ञानहोणाचाहिये ॥ और एकपदार्थकेज्ञानकालविषे सर्वपदार्थोंकाज्ञान किसीजीवकूंहोतानहीं ॥ यातैं सोदृष्टि सर्वपदार्थोंकाप्रकाशकनहीं।इतनैंग्रंथकरिकै चक्षुआदिकप्रमाणोंविषे प्रमाणताकाखंडनकरिकै आत्माविषे प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकीअविषयता निरूपणकरी ॥ अब चक्षुआदिकप्रमाणोंविषे प्रमाणताकाअंगीकारकरिकेभी आत्माविषे प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकीअविषयता निरूपणकरैहैं ॥ किंवा ॥ लोकविषे जीवोंकूं जोघटादिकपदार्थोंकाज्ञान उत्पन्नहोवै है॥सो घटादिकपदार्थोंकाज्ञान किसीकारणतैंविना आपहीउत्पन्नहोवैनहीं किंतु चक्षुआदिकप्रमाणोंका घटादिकपदार्थोंकेसाथ जोसंयोगादिकसंबंधहै॥ता संयोगादिकसंबंधरूप कारणकीअपेक्षाकरिकैही सो घटादिक पदार्थोंकाज्ञान उत्पन्नहोवै है॥याप्रकारकीप्रक्रिया वादी अंगीकारकरैहै तावादीसैं यहपूछाचाहिये॥आत्मा कर्ता भोक्ताहै याप्रकारकाज्ञान तुमारेकूं किसप्रमाणकरिकैभयाहै ॥ प्रत्यक्षप्रमाणकरिकैभयाहै ॥ अथवा अनुमानादिकप्रमाणोंकरिकैभयाहै ॥ तहाँ जोवादी प्रथमपक्ष अंगीकारकरै सो संभवैनहीं ॥ काहेतैं वादीकेमतविषे प्रत्यक्ष प्रमाण दोप्रकारका होवै है ॥ एक बाह्यप्रत्यक्षप्रमाण ॥और दूसरा अंतरप्रत्यक्षप्रमाण ॥ तहाँ मन अंतरप्रत्यक्षप्रमाणहै ॥ और बाह्यप्रत्यक्षप्रमाण पंचप्रकारकाहोवैहै॥श्रोत्र १ त्वक् २ चक्षु ३ रसन ४ घ्राण ५ इनपांचोंविषेभी श्रोत्र रसन घ्राण यहतीनइंद्रियतौ द्रव्यकूंविषयकरैनहीं॥किंतु क्रमतैं शब्द रस गंध यातीनगुणोंकूंही विषयकरैहै ॥ और वादी आत्माकूंभी द्रव्यमानै है॥यातैं श्रोत्र रसन घ्राण यातीनप्रमाणोंकरिकैतौ आत्माका कर्त्ताभोक्तारूपकरिकैज्ञान होइसकैनहीं ॥और चक्षु त्वक् यहदोनोंइंद्रिय द्रव्यकूंग्रहणकरै हैं ॥ परंतु जिसद्रव्यविषे उद्भूतरूप तथा उद्भूतस्पर्श होवै है॥तिसद्रव्यकाग्रहणकरै है॥अन्य द्रव्यकाग्रहणकरैनहीं॥और आत्माविषे उद्भूतरूप तथाउद्भूतस्पर्श है नहीं॥यातैं चक्षु त्वक् यादोनोंइंद्रियोंकरिकैभी आत्माका कर्त्ता भोक्तारूपकरिकैज्ञान संभवैनहीं॥किंवा आत्माविषे इंद्रियजन्यज्ञानकीविषयतानहींहै॥यहवार्ता केवलयुक्तियोंकरिकैसिद्धनहीं॥किंतु श्रुति प्रमाणकरिकैभी यहवार्ता सिद्धहै ॥ तहांश्रुति ॥ पराँचिखानिव्यतृणत्स्वयंभूस्तस्मात्पराङ्पश्यतिनांतरात्मन्॥ अर्थयह॥स्वयंभूपरमात्मा

नेत्रादिकइंद्रियोंकूं बहिर्मुखकरताभया ॥ याकारणतैं तेनेत्रादिकइंद्रिय घटपटादिकबाह्यपदार्थोंकूंहीं देखे हैं॥अंतरआत्माकूं तेनेत्रादिकइंद्रिय देखतेनहीं ॥ १ ॥ याश्रुतिविषे यहनियम कथनकऱ्या॥जिसजिसपदार्थविषे बाह्यपणा होवै है॥तिसतिसपदार्थविषेहीं नेत्रादिकइंद्रियोंकासंबंधहोवै है ॥ बाह्यपणेतैंविना नेत्रादिकइंद्रियोंकासंबंधसंभवैनहीं ॥ और अंतरआत्माविषे बाह्यपणाहैनहीं॥यातैं आत्माविषे नेत्रादिकइंद्रियोंकासंबंधभीसंभवैनहीं॥और संयोगादिकसंबंधतैंविना नेत्रादिकइंद्रिय किसीपदार्थकेज्ञानकूं उत्पन्नकरैनहीं॥यातैं आत्मा कर्त्ता भोक्ताहै याप्रकारकाज्ञान नेत्रादिकइंद्रियोंकरिकै संभवैनहीं ॥ किंवा ॥ आत्मा कर्ताभोक्ताहै याप्रकारकाज्ञान मनरूपअंतरप्रत्यक्षप्रमाण करिकै जोवादी अंगीकारकरै ॥ सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं कामःसंकल्पोविचिकित्सा याश्रुतिविषे इच्छा संकल्प संशय श्रद्धा अश्रद्धा अधैर्य लज्जा भय वृत्तिज्ञान इनसंपूर्णोंका मनहीं उपादानकारणकह्याहै ॥ और जोउपादानकारणहोवै है ॥ सो करणहोवैनहीं ॥ जैसे घटकाउपादानकारणमृत्तिका घटकाकरणहोवैनहीं ॥ तैसे वृत्तिज्ञानकाउपादानकारण जोमनहै ॥ सोमन ताज्ञानका करणहोइसकैनहीं ॥ यातैं आत्मा कर्त्ताभोक्ताहै याप्रकारकाज्ञान मनकरिकैभी संभवैनहीं ॥किंवा॥ आत्मा कर्ताभोक्ताहै याप्रकारकेज्ञानकीउत्पत्ति नेत्रादिक इंद्रियोंकेसंबंधतैं जोवादी अंगीकारकरै ॥ तौ नेत्रादिकइंद्रियोंकासंबंध स्थूलशरीरकेसाथहै ॥ यातैं स्थूलशरीरविषेहीं सोज्ञान होवैगा और असुरोंकेमोहकरणेवासतै देहात्मवादीचार्वाकोंकेमतककर्त्ता जोबृहस्पति है॥ताकेमतकीप्राप्ति वादीकूं बलात्कारसैंहोवैगी ॥ यातैं आत्मा कर्त्ताभोक्ता है याप्रकारकावचन प्रत्यक्षप्रमाणकरिकै संभवैनहीं यहसिद्धभया॥किंवा आत्मा कर्त्ताभोक्ता है याप्रकारकाज्ञान अनुमानादिकप्रमाणोंकरिकैहोवै है यहदूसरापक्ष जोवादीअंगीकारकरै सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं अनुमान उपमान शब्द यातीनप्रमाणोंका प्रत्यक्षप्रमाणहीं मूलकारणहै॥सोप्रत्यक्षप्रमाण जभीआत्माकेज्ञानविषे कारणनहींभया॥तभीअनुमानादिकप्रमाण किसप्रकार कारणहोवैंगे यातैं आत्मा कर्त्ताभोक्ताहै याप्रकारकाज्ञान अनुमानादिकप्रमाणोंकरिकैभी संभवैनहीं॥किंवा॥जोवादी याप्रकारकहै॥ऐतरेयउपनिषदूविषे आत्माकूंद्रष्टा श्रोता मंता विज्ञाता कह्याहै॥तहाँ दर्शनकर्त्ताकानाम द्रष्टाहै ॥और श्रवणकर्त्ताकानाम श्रोताहै।यातैं याश्रुतिकरिकैही आ

त्माविषे कर्त्तापणा सिद्धहै ॥ सो यहवादीकाकहणाभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं जैसे द्रष्टा श्रोता मंता विज्ञाता यहश्रुति आत्माकूंकर्त्तारूप करिकै बोधनकरै है ॥ तैसे अद्रष्टा अश्रोता अमंता अविज्ञाता यहश्रुति आत्माविषे कर्त्तापणेकानिषेधभीकरै है ॥ यातैं तिनदोनोंश्रुतियोंविषे आत्माकूं अकर्त्तारूपकरिकैबोधनकरणेहारीश्रुतिही मुख्यप्रमाण है ॥ और आत्माकूंकर्त्तारूपकरिकै बोधनकरणेहारीजोश्रुतिहै सो भ्रांतपुरुषोंकरिकैसिद्ध जोआत्माविषेकर्त्तापणाहै ताका अनुवादकरै है ॥ यातैं सो श्रुति आपणेअर्थपर नहीं॥तात्पर्ययह ॥ फलवान् तथालौकिकप्रमाणोंकरिकै अज्ञात जोअर्थ है॥ ताके बोधनकरणेकारिकैहींश्रुतिकूं प्रामाण्यताहोवै है॥और कर्त्ताभोक्तारूपकरिकैआत्मा सर्वलोकोंकूंप्रसिद्धहै॥तथा कर्त्ताभोक्तारूपकरिकैआत्माकेज्ञानतैं किसीफलकीभी प्राप्तिहोवैनहीं॥उलटाजन्ममरणादिरूपअनर्थकी प्राप्ति होवै है॥यातैं कर्त्ताभोक्तारूपकरिकै आत्माकेबोधनविषे श्रुतिकातात्पर्यनहीं॥और अकर्त्ताअभोक्तारूपकरिकै आत्मा लोकसिद्धहैनहीं॥ तथा अकर्त्ताअभोक्तारूपकरिकै आत्माकेज्ञानतैं अज्ञानसहितसर्व अनर्थोंकीनिवृत्तिरूपफलकीभीप्राप्तिहोवै है ॥ यातैं अकर्त्ताअभोक्तारूपकरिकै आत्माकेबोधनकरणेविषेहीं श्रुतिकातात्पर्य है ॥ यातैं प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकै आत्माकाज्ञानहोवैनहीं ॥ किंतु आपणेस्वयंप्रकाशरूपकरिकै आत्माकाज्ञानहोवै है ॥ और वास्तवतैंविचारकरिकैदेखियेतौ पूर्वउक्तयुक्तियोंसैं किसीअनात्मपदार्थकाभी प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकै ज्ञानसंभवै नहीं ॥ तौ निर्गुणपरमात्माके ज्ञानविषे प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकूं किसप्रकार कारणता होवैगी ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवतीही आत्माकूं अगृह्यकहै है ॥ इतनैंग्रंथकरिकै आत्माविषे प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकी अविषयतादिखाई ॥ अब आत्माविषे अशीर्यता निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ यहआनंदस्वरूपआत्मा सर्वप्राणियोंका आत्मा है ॥ यातैं हननक्रियाकी कर्मतारूप जोशीर्णता है ॥ ताकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ किंवा ॥ लोकविषे जोजोपदार्थ मूर्तिमान्होवे है तथा भेदवान्होवे है ॥ सोईही पदार्थ अवयवोंकीशिथिलतारूप शीर्णताकूं प्राप्तहोवै है ॥ जैसे वस्त्रादिकपदार्थ मूर्त्तिमान् हैं तथा भेदवाले हैं ॥ यातैं किंचित्काल पाइके तंतुआदिकअवयवोंकीशिथिलतारूप शीर्णताकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ और आत्माविषे मूर्त्तिमान्ता तथाभेद यहदोनोंधर्म है नहीं ॥

यातैं यहआनंदस्वरूपआत्मा शीर्णताभावकूंप्राप्तहोवैनहीं॥याकारणतैं याआनंदस्वरूपआत्माकूं श्रुतिं अशीर्यकहै है ॥ अब आत्माविषे असंगपणानिरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ यालोकविषे जेपदार्थ संगवान्होवैं हैं ॥ तिनपदार्थोंकूं इतरपदार्थोंकेसंगतैं दोषोंकीप्राप्तिहोवै है ॥ जैसे स्वभावतैंशीतलस्पर्शवाला जोजलहै॥ तिसजलविषे अग्निकेसंगतैं उष्णता प्राप्तहोवै है ॥ और स्वभावतैं उष्णशीतस्पर्शतैंरहित जो वायुहै ॥ तिसवायुविषे अग्निके संगतैं उष्णता प्राप्तहोवै है ॥ और जलकेसंगतैं शीतलता प्राप्तहोवै॥और जोपदार्थ असंगहै॥ तिसपदार्थ विषे किसीदोषकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ जैसे असंगआकाशविषे मेघविद्युत्आदिकृतदोषोंकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ और जोपदार्थ मूर्त्तिमान्होवै है तथापरिच्छिन्नहोवै है ॥ सोईहीपदार्थ संगवान्होवै है ॥ जैसे मूर्त्तिमान् तथापरिच्छिन्न जलादिकपदार्थ अग्निआदिकोंकेसाथ संगकूंप्राप्त होवैं हैं ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा मूर्त्तिमान्नहीं तथा परिच्छिन्ननहीं ॥ यातैं आत्माका किसीपदार्थकेसाथ संगहोवैनहीं ॥ और संगकेअभावहुए यहआत्मा किसीपदार्थकेदोषकूंभी प्राप्तहोवैनहीं ॥ किंवा ॥ संयोगादिकसंबंधोंकानाम संगहै ॥ और किंचित् कालपर्यंत इतरपदार्थकेस्वरूपकीन्याईं जोस्थिति है यहसंगकाफलहै ॥ जैसे उष्णस्पर्शवान्अग्निकेसाथ जभी जलकासंयोग संबंधहोवैहै॥तभी सोजल किंचित्कालपर्यंत अग्निकेसमान उष्णस्पर्शवालाहुआ स्थितहोवैहै॥औरयहआनंदस्वरूपआत्मा सजातीयभेद तथाविजातीयभेद तथा स्वगतभेद यातीनभेदोंतैंरहितहै॥यातैं यहआत्मा संयोगादिसंबंधरूपसंगकूंप्राप्तहोवैनहीं॥तथा इतरपदार्थकेसाथ तादात्म्यरूप जोसंगकाफलहै॥ताफलकूंभी प्राप्तहोवैनहीं॥किंवा॥यालोकविषे संगवान् जेवस्त्रादिकपदार्थहैं॥ते बंधनरूपफलकूं तथा परिणामरूपफलकूं अवश्यप्राप्तहोवैहैं॥और वस्त्रादिकपदार्थोंकाउपादानकारण जेतंतुआदिकहैं॥तिनोंकेपरस्परविभागतैं तथा तिनतंतुवोंकेनाशतैं पटादिकपदार्थोंकानाशभी अवश्यहोवैहै कहांतोपटादिकपदार्थोंका शीघ्रहींनाशहोवैहैऔर कहांशनैशनैः करिकैनाशहोवैहैऔर यह आनंदस्वरूपआत्मा संगतैंरहित है ॥ याकरणतैं यहआनंदस्वरूपआत्मा बंधनकूं तथापरिणामकूं तथा विनाशकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा सर्वविशेषभावतैंरहित है॥तथा मनवाणीकाअविषय है ॥ हेजनक॥ऐसा तुरीयआत्माहीं तुम्हारेकूं ज्ञानकरि

कैप्राप्तहोणेयोग्य गंतव्यहै॥ और हेजनक॥सर्वजीवोंकाआत्मारूप तथा भयतैंरहित जोअद्वितीयआनंदस्वरूपब्रह्महै॥ताअभयब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपकरिकैजाणताहुआ तूं ता अभयब्रह्मकूंप्राप्तभयाहै यातैं संसाररूपशूलतैं अबी तुम्हारेकूं भयनहींहोवैगा ॥ तात्पर्ययह आपणेतैंभिन्न परिच्छिन्न जेग्रामादिकपदार्थहैं ॥ तिनोंकीप्राप्ति जैसे गमनरूपक्रियातैंहोवैहै॥तैसे सर्वत्रव्यापकब्रह्मकीप्राप्ति किसीगमनरूप क्रियातैंह्योवैनहीं ॥ किंतु आत्मारूपकरिकै जोब्रह्मकाज्ञानहै सोईही ब्रह्मकीप्राप्ति है॥ शंका॥ हेभगवन् आत्माकेज्ञानहुएभी जीवोंकूं संसाररूपशूलतैंभय काहेतैंनहींहोता ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ संपूर्णजीवोंकूं द्वितीयपदार्थकेज्ञानतैंभयहोवैहै ॥ यातैं द्वितीयपदार्थकाज्ञान भयकाकारणहै यहसिद्धभया ॥ और जबपर्यंत किंचित्मात्रभी द्वितीयपदार्थकाज्ञानहोवैहै॥तबपर्यंत अद्वितीयआत्माकाज्ञानहोवैनहीं॥ और विद्वान्पुरुषकूं अद्वितीयआत्माकेअज्ञानकरिकै द्वितीयपदार्थकाज्ञान निवृत्तभयाहै ॥ यातैं द्वैतज्ञानरूपकारणकेअभावहुए विद्वान् पुरुषकूं भयकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ तहांश्रुति ॥ द्वितीयाद्वैभयंभवति॥ अर्थयह ॥ द्वितीयपदार्थकेज्ञानतैं जीवोंकूं भयकीप्राप्तिहोवैहै॥ १ ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकैदिखावैहैं॥हेजनक जिसपदार्थविषे यहपदार्थ हमारेदुःखकासाधनहै याप्रकारका प्रतिकूलताज्ञानहोवैहै॥तिसीपदार्थतैं जीवोंकूं भयकीप्राप्तिहोवैहै॥ जैसे सिंहसर्पादिकोंविषे जभी जीवोंकूं प्रतिकूलताज्ञानहोवैहै॥तभी तासिंहसर्पादिकोंतैं जीवोंकूं भयकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं यहसिद्धभया ॥ द्वैतज्ञानजन्य जोप्रतिकूलताज्ञानहै ॥ सोईही जीवोंकेभयकाकारणहै॥और आनंदस्वरूपआत्माविषे किसीजीवकूंप्रतिकूलताज्ञानहोवैनहीं ॥ किंतु सर्वजीवोंकूं आत्माविषे अनुकूलताज्ञानहै॥ ऐसेअनुकूलआत्माका सर्वत्रव्यापकरूपकरिकैज्ञानजिसपुरुषकूंभयाहै ॥ तिसपुरुषकूं किसीपदार्थतैंभयहोतानहीं ॥ और हेजनक॥ सोप्रतिकूलताज्ञान द्वैतज्ञानतैंविनाहोवैहैनहीं ॥ यातैं द्वैतपणाहीं प्रतिकूलताज्ञानकाकारणहै ॥ सोद्वैतपणा अद्वितीयब्रह्मविषेहैनहीं ॥ याकारणतैं सोअद्वितीयब्रह्म अभयहै ॥ तथा विज्ञानआनंदरूपहै ॥ तथा संपूर्णभेदतैंरहितहै ॥ हेजनक॥ ऐसा अद्वितीयअभयब्रह्म तेरेतैंभिन्ननहीं किंतु तेरास्वरूपहै॥और हेजनक॥ मैं तथातूं तथासंपूर्णभूतप्राणी तथास्थूलसूक्ष्मशरीर इसतैंआदिलैकेजितनाकीजगतहै सोसंपूर्णजगत् ब्रह्मतैंभिन्ननहीं किंतु ब्रह्मरूपहीहै॥

याकारणतैं भेदरहितअद्वितीयब्रह्मकूं श्रुतिनैं अभयकह्याहै ॥ अब याहीअर्थकूं दृष्टांतकरिकै स्पष्टकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ जैसे गंधर्वनगर आकाशतैं भिन्ननहीं है॥ तैसे यहसंपूर्णजगत् आनंदस्वरूपआत्मातैं भिन्ननहींहै ॥ और जैसे आकाशविषे जोगंधर्वनगरकीस्थितिहै ॥ सो वास्तवतैंनहीं ॥किंतु मायाकरिकैहै ॥ तैसे आनंदस्वरूपआत्माविषे जोजगत्कीस्थिति है ॥ सोभीवास्तवतैंनहीं॥किंतु मायाकरिकै है॥ और हेजनक ॥ जैसे आकाशरूपअधिष्ठानविषे गंधर्वनगर पूर्वहुआनहीं ॥ और आगेहोवैगानहीं ॥ और अभीहैनहीं तैसे याआनंदस्वरूपआत्माविषे जगत् पूर्वहुआनहा ॥ और आगेहोवैगानहीं॥ और अभीहैनहीं॥शंका॥हेभगवन् ॥ जोआनंदस्वरूपआत्माावषे तीनकाल जगत्नहींभयाहै ॥ तौ लोकोंकूं भिन्नभिन्नरूपकरिकै यहजगत् किसवासतैं प्रतीतहोताहै ॥ समाधान ॥ हेजनक जैसे आकाशविषे यद्यपि तीनकालविषे गंधर्वनगरनहीं है॥तथापिभ्रांतपुरुषोंकूं सोगंधर्वनगर स्थूलसूक्ष्मरूपकरिकै तथाजडचैतन्यरूपकरिकै प्रतीतहोवैहै॥ तैसे आनंदस्वरूपआत्माविषे यद्यपि तीनकालमें जगत्नहीं है॥तथापि अज्ञानीजीवोंकूं भ्रांतिकरिकै सोजगत् स्थूलसूक्ष्मरूपकरिकै तथा जडचैतन्यरूपकरिकै प्रतीतहोवैहै ॥ अबयाहीअर्थकूं स्वप्नके दृष्टांतकरिकै निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक जाग्रत्अवस्थाविषे रथ अश्व हस्ति आदिकपदार्थोंकेउत्पत्तिकेसाधन जेदेशकालादिकहैं ॥ तिन देशकालादिकसाधनोंका स्वप्नअवस्थाविषे अभावहुएभी ॥ जैसे एकहीस्वप्नदृष्टापुरुष अज्ञानकेवशतैं रथ अश्व हस्ति इत्यादिकअनेकभावकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ तैसे देशकालादिकसाधनोंतैंरहित एकहीपरमात्मादेव नानाप्रकारकेजगत्भावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक ॥ जैसे स्वप्नतैंजाग्रत्कूंप्राप्तहुआसोपुरुष स्वप्नकेपदार्थोंकूं देखतानहीं ॥ यातैं जाग्रत्अवस्थास्वप्नपदार्थोंकानाश करणेहारीहै ॥ तैसे आत्माकेसाक्षात्कारकरिकै यह संपूर्णजगत् नाशकूंप्राप्तहोवै है॥ हेजनक ॥ ऐसाअद्वितीयआत्माकासाक्षात्कार तुमारेकूंप्राप्तभयाहै ॥ यातैं संसाररूपशूलतैं तूं अभीभयमतकर ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार जभी याज्ञवल्क्यमुनिनैं जनकराजाकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकऱ्या ॥ तभी सोजनकराजा आपणेमनविषे याप्रकारकाविचारकरिकै याज्ञवल्क्य मुनिकेताईं देणेयोग्यगुरुदक्षिणाकूं नहींदेखताभया ॥ अब ता जनकराजाकेविचारकूं निरूपणकरैं हैं ॥ इसयाज्ञवल्क्यमुनिनैं हमारे

ताईं आत्मज्ञानकीप्राप्तिकरीहै॥यातैं इसयाज्ञवल्क्यमुनिकेताईं मैं कौनपदार्थ गुरुदक्षिणादेवौं॥तहाँ जोमैं स्त्री पुत्र धन राज्य सेना सहित आपणाशरीर गुरुदक्षिणादेवौं॥तौभी सोदक्षिणा आत्मज्ञानकेसमानहोवैनहीं ॥किंवा ॥ ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरिकै शिष्यकूं आत्मज्ञान कीप्राप्तिकरणेहारा जोगुरु है ॥ तिसगुरुकेताईं जोशिष्य समुद्रपर्यंत सुवर्णकरिकैपूर्ण संपूर्णपृथिवी गुरुदक्षिणादेवै ॥ तौभी सोदक्षिणा आत्मज्ञानकेसमानहोवैनहीं ॥किंवा॥ अनेकजन्मोंविषे करे हैं ब्रह्मचर्यादिकसाधन जिनोंनैं ऐसेजे देहधारीजीव हैं॥तिनोंकरिकैभी यहआनंदस्वरूपआत्मा दुर्लभ है ॥ और तीनलोकोंविषे आत्माकेलाभतैंपरे दूसराकोईलाभ है नहीं ॥ तहाँ श्रुति ॥ आत्मलाभान्नपरंविद्यते ॥ अर्थयह॥आनंदस्वरूपआत्माकेलाभतैंपरे कोईसंसारविषेलाभ है नहीं ॥ आनंदस्वरूपआत्माकीप्राप्तिही परमलाभ है॥१॥ऐसे दुर्लभआत्माकीप्राप्ति जिसगुरुनेकरी है॥तिसगुरुकेताईं पुत्र स्त्री धन राज्य पृथिवी इत्यादिकअनात्मपदार्थोंकीदक्षिणादेणी हमारेकूं उचितनहीं ॥ किंवा॥स्वर्गविषेदेवतावोंकूंजीतिकरिकै तथा पातालविषे नागोंकूंजीतिकरिकैस्वर्ग भूमिपाताल यहतीनलोक जोमैं याज्ञवल्क्यमुनिकेताईं गुरुदक्षिणादेवौं॥तौभी आत्मज्ञानकेसमान सोदक्षिणानहीं॥तात्पर्ययह॥याज्ञवल्क्यमुनिनै हमारेकूंआत्माकीप्राप्तिकरीहै॥सोकैसा हैआत्मा॥ अपरीच्छिन्न है तथानित्य है॥तथा आनंदस्वरूप है तथा दुर्लभ है॥ऐसे आत्माकेसमान कोईसंसारविषेपदार्थ है नहीं॥ किंतु पुत्र स्त्री धन राज्यतीनलोक इत्यादिकसंपूर्णपदार्थ परिच्छिन्नहैं तथाअनित्यहैं तथादुःखरूप हैं तथासुलभ हैं॥यातैं आत्माकीप्राप्तिकेसमान यहदक्षिणा होवैनहीं ॥ हेशिष्य याप्रकारकाविचारकरिकै सोजनकराजा याज्ञवल्क्यमुनिकेताईं गुरुदक्षिणादेणेयोग्य कोईपदार्थ नहींदेखता भया ॥ तिसतैं अनंतर अत्यंतहर्षवान्होइकै सोजनकराजा याज्ञवल्क्य मुनिकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ राजाजनकउवाच ॥ हेभगवन् ॥ आपकागुरुजो सूर्यभगवान् है ॥ सो सर्वदेहधारीजीवोंका बाहर विचरणेहाराप्राण है ॥ तथासर्वजीवोंकेनेत्रोंकूंनिरोधकरणेहारा जो अंधकार है॥ताअंधकारकी निवृत्तिकरिकै सर्वजीवोंकेव्यवहारकीसिद्धिकरै है ॥ऐसेसूर्यभगवान्केउपकारकेसमान कोईपदार्थकूं नहींदेखते हुए तेदेहधारीजीव तासूर्यभगवान्केताईं दीपकमात्र अर्पण करैं हैं ॥ और सोसूर्यभगवान् आपकागुरु तादीपकमात्रकरिकैहीं प्रसन्नताकूं

प्राप्तहोवैहै॥हेभगवन् तिससूर्यभगवान्केआप शिष्यहो॥ और जैसे सूर्यभगवान् जीवोंकेअंधकारकी निवृत्तिकरैहै ॥ तैसे आपभी आत्म ज्ञानकीप्राप्तिकरिकै शिष्योंके अज्ञानरूप अंधकारकी निवृत्त करतेहो ॥ यातैं आपभी सूर्य भगवान्के समानहो ॥ तथा सर्वकामना वोंतैं रहितहो ॥ यातैं हेभगवन् जैसेआपकागुरु सूर्यभगवान् दीपकमात्रकरिकै जीवोंऊपरप्रसन्नहोवै है ॥ तैसे आपभी हमारीस्वल्पद् क्षिणाकरिकै प्रसन्नहोवो ॥ अब आशीर्वाद सर्वस्व नमस्कार यहतीन प्रकारकीअल्पदक्षिणा निरूपणकरैं हैं ॥ हेभगवन् ॥ पूर्वआपने स्थूल सूक्ष्म कारण यातीन शरीरोंकापरित्याग करिकै तुरीयअभय ब्रह्मकाउपदेशहमारेप्रतिकऱ्या ॥ ताआपकेउपदेशकरिकै अभय ब्रह्मकीप्राप्ति हमारेकूंभई है ॥ यातैं हेभगवन् जिसअभय ब्रह्मकीप्राप्ति आपनैं हमारेप्रतिकरी है॥ सोअभयब्रह्म आपकूंभीप्राप्तहोवै ॥ यह आशीर्वादरूपदक्षिणा मैं आपकेताईं देताहूं ॥ और हेयाज्ञवल्क्यमुनि ॥ कालभगवान्ने जीवरूपीपक्षियोंकेबंधनकरणेवासतै अज्ञानरूप सूत्रकरिकै कामक्रोधादिरूपग्रंथियोंकरिकैयुक्त अहंममअभिमानरूपीजाल रचैं हैं॥ तिनजालरूपीपाशोंतैं मैंदुःखी दीनकूं आपने कृपाक रिकै मुक्तकऱ्या है ॥यातैं आपकेउपकारकेसमान मैं कौन दक्षिणादेवों॥अब सर्वस्वरूपदक्षिणाकूंनिरूपणकरैं हैं ॥ हेयाज्ञवल्क्यमुनि ॥ सर्वलोकविषेप्रासिद्ध जोयहविदेहनामा हमारादेश है॥तथा हमारे निवासकास्थान जोयहमिथिलापुरी है॥तथा हमारीजेस्त्रियां हैं तथा हमा रेजेपुत्र हैं॥इत्यादिकसर्वपदार्थोंसहित मैं जनक आपकादासहूं॥और हेयाज्ञवल्क्यमुनि॥श्रुतिविषे तथा स्मृतिविषे ब्रह्मविद्याके उपदेश करणेहारेगुरुकूं पिताकह्या है॥और शिष्यकूंपुत्रकह्या है ॥और जबपर्यंत पितावि्यमानहोवै है ॥ तबपर्यंत पुत्रका धनविषेअभिमानहोवै नहीं ॥ यातैं शास्त्रकीरीतिसें विचारकरिकै देखियेतो ॥ यहराज्यादिकसर्वपदार्थ हमने आपकेताईं दिये हैं॥याप्रकारकेवचनकहणे विषेभी मैं समर्थनहींहूं ॥ किंतु मेरेसैं आदिलेके संपूर्णराज्यादिकपदार्थ आपकेही हैं ॥ हेभगवन् ॥ आपकीआज्ञातैंविना जभी अन्नमात्रकेभोजन करणेविषेभी मैं स्वतंत्र नहींहूं॥तभीराज्यादिकसंपूर्णपदार्थ हमने आपकेताईं दानकरे हैं॥याप्रकारकाहमाराकहणा कैसेसंभवैगा ॥ यातैं यहराज्यादिकसर्वस्वआपकाहीहै॥अब नमस्काररूपदक्षिणाकूं निरूपणकरैहैं॥हेयाज्ञवल्क्यमुनि॥ब्रह्मकाउपदेशकरणेहारे जाआपकागुरुहो

तिसआपकेताईं हमारावारंवार नमस्कारहै॥ कैसेहोआप॥सर्वमुनियोंविषेश्रेष्ठहो॥और वेदकेमंत्रोंकूं प्रगटकरणेहारेहो॥और साक्षात्सूर्यभग वान्केशिष्यहो ॥ औरसाक्षात्परमेश्वररूपहो॥ऐसेआपकेताईं हमारा वारंवार नमस्कार है॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार जभी आशीर्वाद तथा सर्वस्व तथा नमस्कार यहतीनप्रकारकीगुरुदक्षिणा जनकने याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति दई॥ तभी सोयाज्ञवल्क्यमुनि बहुतप्रसन्नहोताभया॥ और जनकराजाकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हे जनक ॥ विदेहदेशतैंआदिलेके तुम्हारे शरीरपर्यंत जितनेकराज्यादिकपदार्थ हैं ॥ त संपूर्ण हमारेही हैं ॥ याकेविषे तुम किंचित्मात्रभीसंशयनहींकरो ॥ परंतु एकगुरुदक्षिणा हम तुम्हारेसे मागते हैं ॥ सोगुरुदक्षिणा तुम हमारेप्रतिदेवो ॥ हेराजन् ॥ तुम्हाराचित्त अग्निआदिकोंकीउपासनाविषे अत्यंत तत्परहै ॥ तथा तुम्हा राचित्त राज्यकेव्यवहारविषे अत्यंत संलग्नहै ॥ याकारणतैं हमारेकूंमनविषे ऐसीसंभावनाहोवै है ॥ जो हमने तुम्हारेताईं आत्माकाउप देशकऱ्याहै ॥ तिसउपदेशकूं तूं किसीकालपाइकै विस्मरणकरिदेवैगा ॥ इतनेकरिकै याज्ञवल्क्यमुनिने यहअर्थ बोधनकऱ्या ॥ अग्निआ दिकोंकीउपासनाकरिकै ब्रह्मलोककीप्राप्तिहोवैहै॥ यातैं ब्रह्मलोककीइच्छा आत्मज्ञानका भावीप्रतिबंधकहै ॥और राज्यादिकपदार्थोंविषे आसक्ति आत्मज्ञानका वर्तमानप्रतिबंधकहै॥प्रतिबंधककेविद्यमानहुए कार्यकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ यातैं हेजनक ॥ जोहमनैं तुम्हारेताईं आत्माकाउपदेशकऱ्याहै ॥ तिसउपदेशकूं तुमने कदाचित् विस्मरण नहींकरणा ॥ याप्रकारकीगुरुदक्षिणा तुम हमारेप्रतिदेवो ॥ और हेजनक ॥ यहविदेहनामादेश तथा मिथिलापुरी तथासंपूर्णराज्यादिकपदार्थ हमारेहीहैं॥और तूंभी हमाराहीदासहै॥यातैं यहहमारे राज्या दिकपदार्थतैंदासकेपासहीरहैं ॥ हेजनक ॥ अबी हम आपणेआश्रमकूंजातेहैं ॥किसीकालकेपीछे पुनःतुम्हारेसमीप आवैंगे ॥ हे शिष्य ॥ याप्रकारकावचन जबी याज्ञवल्क्यमुनिनैं जनकराजाकेप्रतिकह्या ॥ तबी जनकराजा तथा अन्यब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यहसंपूर्ण याज्ञ वल्क्यमुनिकेप्रति तहांरहणेवासतै बहुतप्रकारकीप्रार्थनाकरतेभये ॥ परंतु सोयाज्ञवल्क्यमुनि एकांतकेसुखकीइच्छाकरताहुआ आपणे आश्रमकूं जाताभया ॥हेशिष्य॥ इसप्रकार याज्ञवल्क्यमुनिकेगयेतैं अनंतर किंचित्कालपाइकै सोजनकराजा राज्यकेकार्योंविषे चित्तकी

संलग्नताकरिकै तथा अग्निआदिकदेवतावोंकी उपासनाविषे चित्तकीतत्परताकरिकै याज्ञवल्क्यमुनिकेउपदेशकूं विस्मरण करताभया ॥ तिसतैं अनंतर सोयाज्ञवल्क्यमुनिभी लोकोंकेमुखतैं जनकराजाकावृत्तांत श्रवणकरिकै तथा आपणीदिव्यदृष्टितैं राजाजनककेवृत्तांतकूं जाणिकरिकै जनकराजाकीपुरीकूं जाताभया ॥ और सोयाज्ञवल्क्यमुनि आपणेमनविषे याप्रकारकासंकल्पकरताभया ॥ याजनकराजानें हमारेउपदेशकाविस्मरणकरिदियाहै ॥ यातैं जनककेसमीपजाइकै ताकेसाथ मैं किंचित्मात्रभी संभाषण नहींकरौंगा ॥ अथवा ॥ जो जनकराजाकेसाथ मैं संभाषणकरौंगा ॥ तौभी जिसनिर्गुणब्रह्मकाउपदेश मैंने पूर्व जनककेप्रतिकऱ्याथा ॥ तिसीनिर्गुणब्रह्मकाउपदेश मैं पुनः जनककेप्रतिकरौंगा ॥ परन्तु आपणेआगमनकाप्रयोजन जेयोगक्षेमादिक हैं ॥ तिनोंकूं जनककेप्रति नहींकहौंगा ॥ याप्रकारकासं कल्प मनाविषेकरिकै सायाज्ञवल्क्यमुनि जनकराजाकीसभाविषे जाताभया ॥ और आगेतैं सोजनकराजा याज्ञवल्क्यमुनिकूं सभाविषे आयाहुआदेखिकै संपूर्णसभासहित अभ्युत्थान करताभया ॥ और अर्घ्यपाद्यादिकोंकरिकै याज्ञवल्क्यमुनिका पूजनकरताभया ॥ और याज्ञल्क्यमुनिकूं सिंहासनऊपरबैठावताभया॥ तिसतैंअनंतर राजाकीसभाविषेरहणेहारे जेबुद्धिमान्ब्राह्मणहैं तथा अन्य क्षत्रिय वैश्य हैं ॥ तेसंपूर्ण आपणीबुद्धिकेअनुसार नानाप्रकारकेविचित्रकथावोंकूं कहतेभय ॥ तिनोंविषे केईकविद्वान्ब्राह्मण वैश्वानरीविद्याकाप्रसंग चला वतेभये ॥ और तावैश्वानरीविद्याविषे जनकराजा अत्यंतकुशलथा ॥ याकारणतैं सभावासीसर्वब्राह्मणोंकेप्रति तथा अन्यक्षत्रियवैश्योंके प्रति सोजनकराजा याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हे संपूर्णसभावासीजनो ॥ नानाप्रकारकेफलोंकरिकैयुक्त तथा ब्रह्मलोककीदेणेहारी जोवैश्वानरी विद्या है ॥ तिसकूं मैं भलीप्रकार जाणताहूं॥यातैं यासभाविषेस्थित जितनेक विद्वान् ब्राह्मण हैं तथाक्षत्रियवैश्य हैं ॥ तिनों विषे जोपुरुष यावैश्वानरीविद्याविषेकुशलहोवै ॥ सोपुरुषहमारेप्रतिनिःशंकहोइकेप्रश्नकरै हमताकाउत्तरदेवेंगे ॥ अथवा ॥ हम तिसपुरुषके प्रतिप्रश्नकरतेहैं ॥ सोपुरुषहमारेप्रश्नकाउत्तरदेवै ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकावचनजबी जनकराजानें सर्वविद्वानोंकेप्रतिकह्या ॥ तबीतेसभा वासीविद्वान्ब्राह्मण तथाक्षत्रियवैश्य तावैश्वनारीविद्याविषे राजाजनककेप्रति प्रश्नकरणेमैं तथाराजाकेप्रश्नकाउत्तरदेणेमैं समर्थ नहींहोतेभये ॥ २१ ॥

किंतुसंपूर्ण सभावासीजन मौनकूंप्राप्तहोतेभये ॥ तिसतैंअनंतर सर्वब्राह्मणोंकूंमौनहुआदेखिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि जनकराजाकेसाथ मैंनहीं भाषणकरौंगा अथवा जनकराजाकेप्रति पुनःतिसीब्रह्मकाहीउपदेशकरौंगा याप्रकारके पूर्वसंकल्पका परित्यागकरताभया॥और सो याज्ञवल्क्यमुनि जनकराजासैं नानाप्रकारकेप्रश्नोंकरिकै सोवैश्वानरीविद्यापूछताभया ॥ और सोजनकराजाभीनानाप्रकारकेउत्तरोंकरिकैयाज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति संपूर्णवैश्वानरीविद्याकहताभया ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारजभीजनकराजानैंयाज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति संपूर्णवैश्वानरी विद्याका कथनकऱ्या ॥ तभी सो याज्ञवल्क्यमुनि जनकराजाकेबुद्धिकीकुशलतादेखिकै जनकराजाऊपर बहुतप्रसन्नहोताभया ॥ और जनकराजा केप्रति कहताभया ॥ हेजनक ॥ जोतुम्हारेकूंइच्छाहोवै॥ सोहमारेसेवरमाँगो॥ हेशिष्य॥ याप्रकारकावचनजभीयाज्ञवल्क्यमुनिने जनकके प्रतिकह्या ॥ तभीसोजनकराजाआपणेकूं कृतार्थमानताभया ॥ और याप्रकारकाविचारआपनेमनविषेकरिकै सोजनकराजा याज्ञवल्क्य मुनितैं कामप्रश्नरूपवरकूंमाँगताभया ॥ अनेकप्रश्नोंकानामकामप्रश्न है॥ अब जिसविचारकरिकै जनकराजानैं कामप्रश्नरूप वरकूंमाँग्याहै ताविचारकूं निरूपणकरैं हैं ॥ इसमहात्मायाज्ञवल्क्यमुनिने कृपाकारिकेपूर्वहमारेताईं आत्मज्ञानकाउपदेश कऱ्याथा ॥ तायाज्ञवल्क्यमु निकेउपदेशकूं मैंमंदबुद्धिजनकविस्मरणकरताभया ॥ दृष्टांत ॥ जैसे पूर्वलेकिसीपुण्यकर्मकेप्रभावतैं प्राप्तहुईचिंतामणिकूं मंदबुद्धिभाग्य हीनपुरुष परित्यागकरैहै ॥ तैसे मैंपापात्माजनकयाज्ञवल्क्यमुनिकेउपदेशकापरित्यागकरताभया ॥ यातैं यहहमारामहान्अपराध है ॥ ताअपराधकेनिवृत्तिकाउपाय दुर्लभहै ॥ परंतुपूर्वलेकिसीपुण्यकर्मकेप्रभावतैं ताअपराधकेनिवृत्तिकाउपाय यहकामप्रश्नरूपवर हमारेकूं प्राप्तभया है किंवा ॥ हस्ति अश्व सुवर्ण स्त्री पुत्र इत्यादिक जोमनुष्यलोककाधन है सोभी हमारेकूं प्राप्त है॥और कर्मउपासनारूप जोदेव लोककाधन है सोभी हमारेकूंप्राप्त है ॥ यातैं तिसमनुष्यधनविषे तथादैवधनविषे हमारीइच्छाहैनहीं ॥ एकआत्माविषे हमारीइच्छाथी ॥ सो आत्मज्ञानभी पूर्व हमारेकूंप्राप्तभयाथा परंतु हमने आपणीमूर्खताकरिकै ताआत्मज्ञानकूं विस्मरणकरिदिया ॥ और अभी हमारा कोईपूर्वलापुण्यकर्म उदयभयाहै ॥ जोपुण्यकर्मकेप्रभावतैं यहयाज्ञवल्क्यमुनि हमारेऊपर प्रसन्नहोइकै कामप्रश्नरूपवरकूं देताभया है ॥

यातैं ता कामप्रश्नरूपवरकरिकै मैं नष्टहुए आत्मज्ञानकूं पुनःयाज्ञवल्क्यगुरुतैं संपादनकरौंगा ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै सोजनकराजा याज्ञवल्क्यमुनिसैं कामप्रश्नरूपवरकूंहीं मांगताभया ॥ और सोयाज्ञवल्क्यमुनिभी दूसरीवार जो जनकराजाके समीप आयाथा ॥ सोकिसीसुवर्णादिकपदार्थोंकी प्राप्तिवासतै नहींआयाथा ॥ किंतु जनकराजाकेप्रति पूर्वउपदेश कऱ्याथा जोआत्मज्ञान तिसीके पुनःस्मरणकरावणेवासतै आयाथा ॥ याकारणतैं सोयाज्ञवल्क्यमुनि जनकराजाकेताईं कामप्रश्नरूपवरकूं देताभया ॥ हेशिष्य॥ याप्रकार जभी याज्ञवल्क्यमुनिने जनकराजाकेताईं कामप्रश्नरूपवरदिया ॥ तभी सोजनकराजा बहुतप्रसन्नहोताभया ॥ और याप्रकार काविचार आपणेमनविषेकरिकै निःशंकहोइके प्रश्नकरताभया ॥ अब ताजनकराजाकेविचारकूं निरूपणकरैं हैं ॥ यद्यपि यहयाज्ञवल्क्य मुनि क्षमावान्है ॥ यातैं चंदनकीन्याईं शीतलस्वभाववाला है ॥ तथापि जैसे चंदनविषे अत्यंतमथनकरिकै अग्निउत्पन्नहोवैहै ॥ तैसे मेरे वारंवार प्रश्नकरिकै जोकदाचित् याज्ञवल्क्यमुनिकूं क्रोधउत्पन्नहोवै तौ जैसे वारंवारप्रश्नकरणेतैं शाकल्यब्राह्मणकीदुर्गतिभईथी॥तैसे वारं वारप्रश्नकरणेतैं मेरीभी दुर्गति होवैगी ॥ याप्रकारकीशंकाकरिकै मैं याज्ञवल्क्यमुनिसैं पूछतानहीं ॥ सोशंका अबीहमारेकूंहैनहीं॥काहेतैं हमनैं याज्ञवल्क्यमुनिसैं कामप्रश्नरूपवर लियाहै ॥ यातैं जोमैं पुनःपुनःतिसीप्रश्नकूंकरोंगा ॥ तथा असंगतपूछौंगा ॥ तौभी याज्ञवल्क्य मुनि हमारेऊपर क्रोधवान् नहींहोवैगा ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै सोजनकराजा आपणेमनविषे निःशंकहोइकै प्रश्नकरता भया ॥ तहाँ प्रथम देहादिकसंघातसैंविलक्षणकरिकै तथास्वयंज्योतिरूपकरिकै त्वंपदार्थरूपआत्माकूं निरूपणकरैं हैं ॥ राजा जनक उवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्यमुनि ॥ दिनविषेजाग्रत्अवस्थाकूंप्राप्तहुआ जोस्थूलसूक्ष्मसंघातरूप यहपुरुषहै ॥ सोपुरुष किसज्योतिकरिकै भास्यमान है ॥ तात्पर्ययह ॥ संघातकेअंतरवर्त्ति किसीज्योतिकरिकै भास्यमान है ॥ अथवा संघाततैंभिन्नकिसीस्थानविषे वर्तमान ज्योतिकरिकै भास्यमान है ॥ यह आप कृपाकरिकै हमारेप्रतिकहो ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेजनक ॥ जाग्रत्अवस्थाविषे यापुरु षका आदित्यज्योतिहै ॥ राजाजनकउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्यमुनि ॥ जगत्काप्राणरूप जोआदित्यरूपज्योतिहै ॥ सो जभी अस्तभावकूं

प्राप्तहोवैहै॥तभी यापुरुषका कौनज्योतिहै॥याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच॥हे जनक आदित्यकेअस्तहुएतैंअनंतर यापुरुषका चंद्रमाहीज्योतिहै॥ राजाजनकउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्यमुनि ॥ जभी चंद्रमाभी अस्तभावकूंप्राप्तहोवै है॥तभी यापुरुषका कौनज्योतिहै॥याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच हेजनक ॥ चंद्रमाकेअस्तहुएतैंअनंतर यापुरुषका अग्निहीं ज्योति है॥राजाजनकउवाच॥हेयाज्ञवल्क्यमुनि जभी अग्निभीअस्तभावकूंप्राप्त होवै है ॥ तभी यापुरुषका कौनज्योतिहै ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हे जनक॥ अग्निकेअस्तहुएतैंअनंतर यापुरुषका वाकही ज्योतिहै ॥ अब आदित्य चंद्रमा अग्नि वाक् याचारोंविषे स्पष्टकरिकै ज्योतिरूपता निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ आदित्य चंद्रमा अग्नि यातीनोंज्यो तियोंविषे आदित्यरूपज्योतिकरिकै अथवा चंद्रमारूपज्योतिकरिकै अथवा अग्निरूपज्योतिकरिकै यहपुरुष सर्पकंटकादिकोंतैंरहित अनु कूलदेशकूं देखिकरिकै तादेशविषेस्थितिकरै है॥तथा गृहविषे जावै है॥तथा क्षेत्रादिकोंविषेजावै है॥तहां क्षेत्रविषे जाइकै इस लोककेसुख केसाधन जेकूपिआदिककर्महैं तिनोंकूं यहपुरुष करै है ॥ और गृहविषेजाइकै यहपुरुष परलोकके सुखकेसाधनजे दानादिककर्महैं तिनोंकूं करै है ॥ इसतैंआदिलैके अनेकप्रकारकेव्यवहारोंकूं यहपुरुष आदित्यादिकज्योतियोंकेप्रकाशकरिकैहींकरै है॥आदित्यादिकज्योतियोंके प्रकाशतैं विना अंधकारविषे किसीव्यवहारकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ यातैं आदित्यविषे तथाचंद्रमाविषे तथाअग्निविषे ज्योतिपणासंभवै है ॥ अब वाक्विषे ज्योतिपणा स्पष्टकरिकै निरूपणकरैं हैं ॥ हे जनक ॥ जिसस्थानविषे आदित्य चंद्रमा अग्नि यातीनोंज्योतियोंकाप्रकाश नहीं होवै है॥तहां अत्यंतगाढअंधकार होवै है॥जहां आपणाहस्तभी दिखाईनहींदेता ॥ ऐसेगाढअंधकार विषे आसनादिकसंपूर्णव्यवहार वाक्रूपज्योतिकरिकैहोवै हैं॥तात्पर्ययह ॥ अंधकारविषेस्थितहुआपुरुष अन्यकिसीपुरुषकूं जभी याप्रकारकावचनकहै है ॥ यापूर्वदिशा विषे बहुतसमीचीनस्थानहै ॥ तहांआइकेतुम आसनकरो ॥ तभी सोपुरुष ताकीवाणीकूंश्रवणकरिकै तहां आसनादिकव्यवहारकरै है ॥ यातैं जैसे आदित्य चंद्रमा अग्नि यहतीनों लोकोंकेगमनआगमनादिकव्यवहारोंकेसाधक हैं ॥ यातैं आदित्यादिकतीनों ज्योतिरूप हैं ॥ तैसे अंधकारविषे वाकभी गमनआगमनादिरूपव्यवहारकासाधकहै ॥ यातैं वाकभीज्योतिरूपहै ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार जाग्रत्अवस्था

विषे याज्ञवल्क्यमुनिनैं आदित्य चंद्रमा अग्नि वाक् यहचारिप्रकारकेज्योतिकहे ॥ तिनोंकूं सोजनकराजा अंगीकारकरताभया॥ तिसतैंअ
नंतर सोजनकराजा पुनःयाज्ञवल्क्यमुनिसैंपूछताभया॥राजाजनकउवाच॥हेयाज्ञवल्क्यमुनि ॥ आपनैं जाग्रत्अवस्थाविषे आदित्य चंद्रमा
अग्निवाक् यहचारिप्रकारकेज्योतिकहे॥तिनचारोंका स्वप्नअवस्थाविषेलयहोवै है॥तास्वप्नअवस्थाविषे यासूक्ष्मसंघातरूपपुरुषका कौनज्यो
तिहै॥जिसज्योतिकरिकै स्वप्नअवस्थाविषेसर्वव्यवहार सिद्धहोवैहैं॥हेयाज्ञवल्क्यमुनि जोआपयहकहो॥स्वप्नअवस्थाविषे यद्यपि आदित्या
दिकज्योतियाकालयहोवैहै॥तथापि स्वप्नअवस्थाविषे मनकालयहोवैनहीं॥यातैं स्वप्नअवस्थाविषे यापुरुषका मनहीं ज्योतिहै॥सोयहकहणा
संभवैनहीं॥काहेतैं जैसे जाग्रत्अवस्थाविषे नेत्रइंद्रियकेविद्यमानहुएभी आदित्यादिकज्योतियोंकेप्रकाशतैंविना सोनेत्रइंद्रियकिसीपदार्थका
प्रकाशकरिसकैनहीं ॥ यातैं घटादिक पदार्थोंकेग्रहणविषे नेत्र इंद्रियकूं आदित्यादिक प्रकाशोंकी अपेक्षा है ॥ तैसे घटादिक पदार्थोंके
ग्रहणविषे मनकूंभी नेत्रादिक इंद्रियोंकी अपेक्षा है ॥ नेत्रादिक इंद्रियोंतैं विना मन किसी पदार्थकूं ग्रहणकरै नहीं ॥ और नेत्रा
दिकइंद्रिय स्वप्नविषेलयकूं प्राप्तहोवै हैं ॥ यातैं स्वप्नअवस्थाविषे मनकूं ज्योतिरूपता संभवै नहीं ॥ किंवा ॥ जैसे मृत्तिका घटशरावा
दिककार्योंका उपादान कारणहोवै है॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषे मनहीं रथादिकपदार्थोंका तथारथादिआकार वृत्तिज्ञानोंका उपादानकारण
होवै है ॥ याकारणतैं मनतैंभिन्नहींकोई स्वप्नकेपदार्थोंकाप्रकाशक चाहिये ॥ और स्वप्नअवस्थाविषे अविद्याकूंहीं जोरथादिकपदार्थोंका
उपादानकारण अंगीकारकरिये ॥ और जाग्रत्केसंस्कारविशिष्टमनकूं करण अंगीकारकरिये ॥ तौभी जैसे जाग्रत्अवस्थाविषे नेत्रादिक
करणोंकूं आदित्यादिकप्रकाशोंकी अपेक्षाहोवै है॥तस स्वप्नअवस्थाविषे मनरूपकरणकूंभी किसी प्रकाशकी अपेक्षा अवश्यहोवैगी॥आर
स्वप्नविषे आदित्यादिकज्योति तथानेत्रादिकइंद्रिय तौ हैंनहीं॥ और स्वप्नअवस्थाविषेभी जाग्रत्अवस्थाकीन्याईं गमनआगमनादिक सर्व
व्यवहारहोवै हैं॥यातैं स्वप्नअवस्थाविषे विद्यमानहुआभीमन जिसज्योतिकीसहायतातैं विना स्वप्नअवस्थाकेपदार्थोंकूंग्रहणकरता नहीं ॥
सो मनऊपर अनुग्रहकरणेहारा स्वप्नअवस्थाविषे कौनज्योति है ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हे जनक स्वप्नअवस्थाविषे या पुरुषका

आत्माहींस्वयं ज्योतिहै॥कैसाहैसोआत्मा॥मृत्तिकाकीन्याईं स्वप्नपदार्थोंका उपादानकारणरूप जोमनहै ताकासाक्षी है ॥और जिसआ
त्माकूं पूर्व हम इंधनामकरिकै तथा इदंद्रनामकरिकै वर्णनकरिआये हैं ॥ हेजनक जैसे जाग्रत्अवस्थाविषे यहपुरुष आदित्यादिकज्योति
योंकेप्रकाशकरिकै गमनआगमनादिक नानाप्रकारकेव्यवहार करै है ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषे यहपुरुष आत्मारूपज्योतिकरिकैहीगमन
आगमनादिक नानाप्रकारकेव्यवहारोंकूं करै है॥यातैं स्वप्नअवस्थाविषे मनादिकोंकासाक्षीआत्माहीं स्वयंज्योतिहै ॥शंका॥ हेभगवन् ॥
जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति यातीनोंअवस्थावोंविषे स्वयंप्रकाशआत्मा विद्यमानहै॥यातैं जाग्रत्अवस्थाविषेभी आत्माकूं ज्योतिपणासंभवै है ॥
जाग्रत्अवस्थाकूंछोडिकै श्रुतिनैं स्वप्नअवस्थाविषे आत्माकूंज्योतिरूपकरिकै किसवातैंकथनकऱ्या ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ यद्यपि
जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति यातीनोंअवस्थावोंविषे आत्माकास्वयंज्योतिपणा समानहीं है॥तथापि जाग्रत्अवस्थाविषे आदित्य चंद्रमा अग्नि वाक्
यहचारिज्योतिभी विद्यमानहैं॥यातैं जाग्रत्अवस्थाविषे आदित्यादिकज्योतियोंकरिकै गमनआगमनादिकव्यवहारहोवै हैं॥अथवा आत्मा
रूपज्योतिकरिकै सोगमनआगमनादिकव्यवहारहोवै हैं ॥ याप्रकारकानिर्णय अल्पबुद्धि पुरुषोंकूं होइसकैनहीं ॥ और स्वप्नअवस्थाविषे
आदित्यादिकचारोंज्योतियोंकालय होवै है ॥ एकआत्माहींरहै है॥यातैं अल्पबुद्धिपुरुषोंकूं स्वयंज्योतिरूपआत्माके निश्चयकरावणेवासतै
श्रुतिनैं स्वप्नअवस्थाविषेही आत्माकूं स्वयंज्योतिकह्याहै ॥ जभी यहअधिकारीपुरुष स्वप्नअवस्थाविषे आत्माकूं स्वयंज्योतिरूपकरिकै
निश्चयकरैगा ॥ तभी जाग्रत्अवस्थाविषेभी आत्माकेस्वयंज्योतिपणेकूं जाणिसकैगा ॥ अब याहीअर्थकेस्पष्टकरणेवासतै स्वप्नअवस्था
विषे आत्माकूं स्वप्नपदार्थोंकाकर्तारूपकरिकै निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ जैसे सृष्टिकालविषे एकहीमायाविशिष्टईश्वर संपूर्णजगत्कूं उत्प
न्नकरै है॥तैसे स्वप्नअवस्थाविषे एकहीस्वयंज्योतिआत्मा आदित्य चंद्रमा अग्नि वाक् याचारिज्योतिरूप प्रकाशकोंकूं तथा रथअश्वादि
रूप प्रकाश्यपदार्थोंकूं उत्पन्नकरै है ॥ तथा आदित्यादिकप्रकाशोंकरिकैअनुगृहीत जेनेत्रादिककरणहैं तिनोंकूं उत्पन्नकरै है॥ और तास्व
प्नअवस्थाविषे यहस्वयंज्योति आत्मा आकाशादिकपंचभूतोंकूं तथाभौतिकजगत्कूं उत्पन्नकरै है ॥ तथा भूत भविष्यत् वर्तमान यातीन

प्रकारकेकालकूंउत्पन्नकरै है ॥ तथा पूर्वदक्षिणादिकदशदिशावोंकूं उत्पन्नकरै है ॥ तथा स्थावरजंगमरूप जेऊंचनीचजंतुहैं तिनोंकूंउत्पन्न करै है ॥ तथा क्षारसमुद्रतैंआदिलेके जेसप्तसमुद्रहैं तिनोंकूंउत्पन्नकरै है ॥ तथा जंबुद्वीपतैंआदिलेकें जेसप्तद्वीपहैं तिनोंकूं उत्पन्नकरै है ॥ तथा सुमेरुपर्वततैंआदिलेके सर्वपर्वतोंकूं उत्पन्नकरै है ॥ तथा श्रीगंगातैंआदिलेके सर्वनदियोंकूं उत्पन्नकरै है ॥ तथा नीचेकेसप्तलोकोंकूं उत्पन्नकरै है ॥ तथा ऊपरकेसप्तलोकोंकूं उत्पन्नकरै है ॥ तथा तिनचतुर्दशलोकोंके अधिपतियोंकूं उत्पन्नकरै है ॥ तथा इंद्र अग्नि यम रक्ष वरुण पवन धनद महेशान ब्रह्मा शेष यादशदिक्पालोंकूंउत्पन्नकरै है ॥ तथा ब्रह्मा विष्णु शिव इत्यादिकजेपरमेश्वरकेलीलाविग्रहहैं तिनोंकूंउत्पन्नकरैहै॥तथा नानाप्रकारके भूमिकेराजोंकूं उत्पन्नकरै है॥इसतैंआदिलैके जितनाकीस्थूलसूक्ष्मजगत्है॥तथा परोक्ष अपरोक्षरूपजगत्है॥तिससंपूर्णजगत्कूं स्वप्नअवस्थाविषे यहस्वयंज्योतिआत्मा उत्पन्नकरै है॥और हेजनक॥यहजीव अल्पज्ञहै यातैं सर्वज्ञब्रह्मकेसाथ ताकाअभेदसंभवैनहीं ॥ याप्रकारकीकुतर्ककरिकै दूषितहैचित्तजिनोंका ऐसेजे भेदवादीपुरुषहैं॥ते अहंब्रह्मास्मि॥अर्थयह मैंब्रह्महूं याश्रुतिकूं अप्रमाणरूपमानै हैं ॥ तथापि स्वप्नअवस्थाविषे तिनभेदवादियोंकूं बलात्कारतैं ताश्रुतिकीप्रमाणता सिद्धहोवै है॥काहेतैं जैसे ब्रह्म आपणीमायाशक्तिकरिकै जगत्कीउत्पत्ति स्थिति लय करै है॥तैसे स्वप्नअवस्थाविषे यहस्वयंज्योतिआत्माभी आपणीमायाशक्तिकरिकै जगत्की उत्पत्ति स्थिति लय करै है ॥ यातैं जगत्के उत्पत्ति स्थिति लयकीकारणता जैसेब्रह्मविषेहै॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषे याजीवात्माविषेभी जगत्के उत्पत्ति स्थिति लयकीकारणताहै॥याकारणतैं यहजीवात्मा ब्रह्मतैंभिन्ननहीं किंतु अभिन्नहै ॥ और हेजनक॥ जैसे प्रज्वलित महान्अग्नितैं अग्निकेसमानरूपवाले विस्फुलिंग उत्पन्नहोवै हैं॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषे यास्वयंज्योतिआत्मातैं आपणेसमानरूपवाले अनेकजीव उत्पन्नहोवै हैं ॥ और हेजनक॥जैसे मायाविशिष्टपरमेश्वर प्रथम समष्टिसूक्ष्महिरण्यगर्भरूपमनकूं उत्पन्नकरै है॥कैसाहैसोहिरण्यगर्भरूपमन उत्पन्नहोणेहारा स्थूल भूत भौतिक प्रपंचरूपगर्भकरिकैयुक्तहै॥ऐसेहिरण्यगर्भरूपमनकरिकै सोपरमात्मादेव नामरूपात्मक संपूर्ण स्थूलसूक्ष्मजगत्कूं उत्पन्नकरै है॥कैसाहै सोजगत्॥हिरण्यगर्भरूपमनकीउत्पत्तितैंपूर्व मायाविशिष्टपरमात्माविषे संस्काररूपकारिकैरहैहै ॥

तैसे स्वप्नअवस्थाविषे यहस्वयंज्योतिआत्माभी एकमनरूपीसाधनकरिकै सर्वजगत्कूंउत्पन्नकरै है॥ और हेजनक ॥ जैसे लोकविषे एकही आकाशविषे घटाकाश मठाकाशयाप्रकारकाभेद प्रतीतहोवै है॥परंतु सोभेद वास्तवतैंनहीं॥किंतु घटरूपसूक्ष्मउपाधिकरिकै तथा मठरूप स्थूलउपाधिकरिकै सोभेद प्रतीतहोवै है॥तैसे अद्वितीयब्रह्मतैं जोजीवोंकाभेद प्रतीतहोवै है॥ सोभेदभी वास्तवतैंनहीं ॥किंतु स्थूलसूक्ष्मशरीररूपउपाधिकरिकै सोभेद प्रतीतहोवैहै॥और हेजनक॥जैसे एकहीआकाश घटरूपउपाधिविषेतथामठरूपउपाधिविषे एकरूपकरिकै विद्यमानहै॥आकाशविषे किंचित्मात्रभीविलक्षणतानहीं॥औरघटाकाश मठाकाश इत्यादिकजोविलक्षणता प्रतीतहोवैहै॥साविलक्षणता आकाशविषे अनुपपन्नहुई घटमठादिकउपाधियोंकूंहीं आश्रयणकरै है तैसे ब्रह्मभी स्थूलसूक्ष्मशरीरोंविषे समानरूपकरिकेहीं स्थितहोवै है ब्रह्मविषे किंचित्मात्रभी विलक्षणतानहीं॥औरलोकोंकूं जोविलक्षणता प्रतीतहोवैहैसोविलक्षणता अद्वितीयब्रह्मविषे अनुपपन्नहुई परिशेषतैं स्थूलसूक्ष्मरूपउपाधियोंकूंहीं आश्रयणकरै है॥याकहणेकरिकै आत्माका सर्वत्रअभेदनिरूपणकऱ्या ॥अब उपाधियोंकेअभेदकहणेवासतै प्रथम सूक्ष्मउपाधिके स्वरूपकूं निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ जैसे समष्टिअज्ञानविशिष्टईश्वरका हिरण्यगर्भरूपसूत्रआत्मासूक्ष्मशरीर है तैसे व्यष्टिअज्ञानविशिष्टजीवोंका मनहीसूक्ष्मशरीरहै यहां मनशब्दकरिकै पंचज्ञानइंद्रिय पंचकर्मइंद्रिय पंचप्राण मन बुद्धि यासप्तदशतत्वोंका ग्रहणकरणा ॥ और हेजनक ॥ जैसे समष्टिमाया विशिष्टईश्वर हिरण्यगर्भरूपसूत्रकरिकै स्थूलजगत्रूपपटकूंरचे है ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषे यहजीवात्मा मनरूपसूत्रकरिकै जगत्रूपपटकूं रचेहै ॥ अब व्यष्टिसमष्टिकेअभेदकहणेवासतै प्रथम तिनोंकेसमानधर्मोंकूंदिखावैं हैं हेजनक ॥ जैसे प्रज्वलितमहान्अग्नितैं अनेकविस्फुलिंग उत्पन्नहोवै हैं ॥ तैसे सूत्रआत्मारूपहिरण्यगर्भतैं अनेकमन उत्पन्नहोवै हैं॥और जैसे प्रज्वलितमहान्अग्नि दाहकरै तथाप्रकाशकरै है ॥ तैसे अग्नितैं उत्पन्नहुएविस्फुलिंगभी दाहकरैं हैं तथाप्रकाशकरैं हैं ॥ इसीप्रकार जैसे हिरण्यगर्भरूपसूत्रात्मा जगत्की उत्पत्ति स्थिति लय करै है ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषे सर्वदेहधारीजीवोंकेमनभी जगत्की उत्पत्ति स्थिति लय करैं हैं॥ और जैसे प्रज्वलितअग्निविषे तथा विस्फुलिंगोंविषे तेजरूपता तथारक्तरूपता समानहीं है तैसे समष्टिसूक्ष्मसूत्रआ

त्माविषे तथा जीवोंके व्यष्टिमनविषे सूक्ष्मरूपता समानहीं है ॥ याकरणेकरिकै समष्टिसूक्ष्मसूत्रात्माविषे तथाव्यष्टिसूक्ष्ममनविषे समान धर्मता दिखाई ॥ अब दोनोंकेअभेदकूं निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक जैसे प्रज्वालितमहान्अग्नि तथा विस्फुलिंग यहदोनों तेजरूपकरिकै समानहीं हैं ॥ यातैं वास्तवतैं तिनोंकाभेदनहीं ॥ किंतु काष्ठरूपउपाधिकरिकै तिनोंकाभेद है ॥ तैसे समष्टिसूत्रात्माविषे तथाव्यष्टि मनविषे वास्तवतैं भेदनहीं ॥ किंतु समष्टिस्थूलविराट्शरीररूपउपाधिकरिकै सूत्रआत्माविषेभेद है ॥ तथाव्यष्टिस्थूलशरीररूपउ पाधिकरिकै मनविषेभेदहै॥इतनैं करिकै समष्टिव्यष्टिउपाधियोंका अभेददिखाया ॥ अब संपूर्णजडजगत्विषे मिथ्यात्वबोधनकरणेवासतै प्रथम संपूर्णजडजगत्विषे चैतन्यआत्माकरिकै प्रकाश्यता निरूपणकरैं हैं॥ हेजनक॥ जैसे लोकविषे भित्ति नानाप्रकारकेचित्रोंकाआधार होवैहैतैसे समष्टिसूक्ष्मरूपसूत्रात्मा समष्टिस्थूलरूपचित्रोंकाआधारहै॥ इसीप्रकार व्यष्टिसूक्ष्ममनरूपीभित्तिभी व्यष्टिस्थूलशरीररूपचित्रों काआधारहै॥ और हेजनक जैसे दीपक प्रथम भित्तिकूंप्रकाशकरै है॥ताभित्तिद्वारा तिनचित्रोंकूंप्रकाशकरै है तैसे समष्टिअज्ञानउपहित ईश्वरसाक्षी प्रथम सूत्रात्मारूपभित्तिकूंहीं प्रकाशकरै है॥ तासूत्रआत्माद्वारा समष्टिस्थूलविराट्रूपचित्रोंकूंप्रकाशकरैहै इसीप्रकार व्यष्टि अज्ञानउपहितजीवसाक्षी प्रथम व्यष्टिसूक्ष्मशरीररूपभित्तिकूंप्रकाशकरै है ॥ तासूक्ष्ममनद्वारा व्यष्टिस्थूलशरीररूपीचित्रोंकूं प्रकाश करै है॥और जैसे भित्ति तथाचित्र दीपककूंप्रकाशकरिसकैनहीं ॥ तैसे समष्टिव्यष्टिसूक्ष्मस्थूलरूपउपाधि साक्षीआत्माकूंप्रकाशकरिसकै नहीं॥इतनैंकरिकै तत्त्वमासि याश्रुतिविषे तत्पदकालक्ष्यार्थ जो ईश्वरसाक्षीहै तथात्वंपदकालक्ष्यार्थ जोजीवसाक्षीहै॥तिनदोनोंके अभेदकी योग्यतादिखाई अब मनकेविद्यमानहुएआत्माविषे जगत्कीप्रतीति ॥ और मनकेलयहुए आत्माविषेजगत्कीअप्रतीति ॥ याप्रकारके अर्थकेबोधनकरणेवासतै॥समष्टिविषेमनकालय ॥ तथाकारणअज्ञानविषे मनकालय ॥ तथा अधिष्ठानविषे मनकालय॥यहतीनप्रकारका मनकालयरूपव्यतिरेक निरूपणकरैं हैं ॥ तहां प्रथम समष्टिविषे मनकालयरूपव्यतिरेक निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ जैसे काष्ठोंकेअभा वहुए अग्नि सामान्यतेजविषे लयभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ तैसे जेअधिकारीपुरुष हिरण्यगर्भकीउपासनाकरिकै अध्यात्मपरिच्छिन्नभावकीनिवृ

त्तिरूप मोक्षकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ तथा हिरण्यगर्भभावकीप्राप्तिरूप अतिमोक्षकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ तिनउपासकपुरुषोंके मन सूत्रआत्मारूप हिरण्यगर्भविषे लयहोवैं हैं ॥ तिसकालविषे तिनउपासकपुरुषोंके अध्यात्मपरिच्छेदरूपसंसारकीनिवृत्तिहोवै है ॥ अबकारण अज्ञानविषे मनकालयरूपव्यतिरेक निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ जैसे भस्मकरिकै आच्छादितहुई अग्नि दाहरूपकार्यकूं तथा प्रकाशरूप कार्यकूं करैनहीं ॥ और भस्मकेनिवृत्तहुएतैंअनंतर सोईअग्नि दाहरूपकार्यकूं तथा प्रकाशरूपकार्यकूं करैहै तैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे तथा मरणअवस्थाविषे जीवोंकेमनरूपअग्नि भोगप्रदकर्मोंकेअभावरूपभस्मकरिकै आच्छादितरहै हैं ॥ याकारणतैं सुषुप्तिअवस्थाविषे तथा मरणअवस्थाविषे जीवोंकेमन जगत्कीउत्पत्ति स्थिति लय रूपकार्यकूंनहींकरैं हैं ॥ और जभी सुखदुःखरूपफलकेदेणेहारे पुण्यपा परूपप्रारब्धकर्मका उद्भवहोवै है ॥ तभी सोईहीमन जाग्रत्स्वप्नविषे जगत्के उत्पत्ति स्थिति लय रूपकार्यकूंकरै है ॥ अब अधिष्ठान विषे मनकालयरूपव्यतिरेक निरूपणकरैं हैं॥ हेजनक ॥ जैसे सर्वकाष्ठोंकूंभस्मकरिकै जोअग्नि नाशकूंप्राप्तभयाहै ॥ सोअग्नि पुनः कदा चित्भी उत्पन्नहोवैनहीं ॥ और दोकाष्ठोंके मथनकरिकै जोअग्निउत्पन्नहोवैहै॥ सोभी दूसराहीअग्नि उत्पन्नहोवैहै ॥ पूर्वनष्टहुआअग्नि पुनः उत्पन्नहोवैनहीं॥ तैसे श्रवणादिकसाधनोंकरिकैयुक्त जोशुद्धमनहै॥सो आत्मसाक्षात्काररूपीअग्निकरिकै अज्ञानकूं तथा अज्ञानकेकार्य जगत्कूं दग्धकरै है॥ और सोमनभी अज्ञानकाकार्य है ॥ यातैं अज्ञानरूपकारणकेदग्धहुएतैंअनंतर सोमनभी दग्धहोइजावैहै ॥ और एकवार आत्मज्ञानकरिकैनाशकूंप्राप्तहुआमन पुनःकदाचित्उत्पन्नहोवैनहीं ॥ याकारणतैं अज्ञानीजीवोंकीन्याईं मुक्तपुरुषका वारंवार जन्महोवैनहीं ॥ इतनैंकरिकै मनकेअभावहुए संसारका अभावरूप व्यतिरेकदिखाया ॥ अब मनकेविद्यमानहुएसंसारकीविद्यमानतारूप अन्वय दिखावैं हैं ॥ हेजनक ॥ जैसे ग्रीष्मऋतुकेरात्रिकालयविषे प्रकाशतरहित जोउष्णतारूपतेजहै ॥ सोतेज काष्ठादिकइंधनोंतैंविनाहीं संतापरूपकार्यकूं उत्पन्नकरै है तैसे स्वप्न अवस्थाविषे मनविशिष्टआत्मादेशकालादिकलौकिकसामग्रीतैंविनाहीं सूक्ष्मरथादिकपदा थोंकूं उत्पन्नकरै है ॥ और हेजनक ॥जैसे शीतकालविषे अग्निकाष्ठरूपीइंधनोंकूं आश्रयणकरिकैहीं जीवोंकेशीतकीनिवृत्तिरूपकार्यकूंकरै

है ॥ काष्ठोंविना सोअग्नि शीतकीनिवृत्तिकरैनहीं ॥ तैसे जाग्रत्अवस्थाविषे यहमनविशिष्टआत्मा देशकालादिकलौकिकसाधनोंकूं आश्रयणकरिकैहीं स्थूलपदार्थोंकूं उत्पन्नकरै है ॥ अब स्वप्नकेदृष्टांतकरिकै जाग्रत्विषे मिथ्यात्वबोधनकरणेवासतें प्रथम जाग्रत्स्वप्नकी समानताकूं निरूपणकरै है॥ हेजनक ॥ जैसे स्वप्नअवस्था विषे यहमनहीं स्थूलसूक्ष्मजगत्भावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ याकारणतैं संपूर्णस्वप्नके पदार्थ मनोमात्रहैं ॥ तैसे जाग्रत् अवस्थाविषेभी यहमनहीं सर्वजगत्भावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ यातैं जाग्रत्केपदार्थभी मनोमात्रहैं ॥ और जैसे स्वप्नअवस्थाविषे मनके निरोधहुए द्वैतप्रपंच प्रतीतहोवैनहीं ॥ तैसे जाग्रत्अवस्थाविषेभी मनकेनिरोधहुए द्वैतप्रपंच प्रतीतहोवैनहीं ॥ और जैसे स्वप्नअवस्थाविषे मनहीं शत्रुकूं तथामित्रकूं तथाउदासीनपुरुषकूं उत्पन्नकरिकै शत्रुविषे द्वेषकरैहै ॥ और मित्रविषे रागकरै है॥ और उदासीनपुरुषविषे उपेक्षाबुद्धिकरैहै ॥ तैसे जाग्रत्अवस्थाविषेभी यहमनहीं शत्रुकूं तथामित्रकूं तथाउदासीनपुरुषकूं उत्पन्नकरिकै शत्रुविषे द्वेषकरैहै ॥ और मित्रविषे रागकरैहै ॥ और उदासीनपुरुषविषे उपेक्षाबुद्धिकरैहै ॥ शंका॥हेभगवन् ॥ जाग्रत्अवस्थाविषे बहुतकालकरिकै तथाबहुतदेशकरिकै तथाकाष्ठादिक नानाप्रकारकीसामग्रीकरिकै रथादिकपदार्थोंकी उत्पत्तिहोवै है॥और स्वप्नविषे काष्ठादिकसामग्रीविनाहीं रथादिकपदार्थोंकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ यातैं स्वप्नकेपदार्थोंकीन्याईं जाग्रत्केपदार्थ मिथ्यानहीं ॥ समाधान॥हेजनक॥ रथादिककार्योंकूं आपणीउत्पत्तिविषे देश काल काष्ठादिक साधनमात्रकीअपेक्षाहै॥सत्यसाधनोंकीअपेक्षाहैनहीं ॥ यातैं जैसे जाग्रत्अवस्थाविषे कल्पित देशकालादिकसाधनोंकरिकै रथादिकपदार्थोंकीउत्पत्तिहोवै है॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषेभी कल्पित देशकालादिकसाधनोंकरिकै रथादिकपदार्थोंकीउत्पत्तिहोवैहै और जैसे जाग्रत्अवस्थाविषे जीवोंकूं केईपदार्थ सुखकेकारण प्रतीतहोवैहैं॥और केईपदार्थ दुःखकेकारण प्रतीतहोवैहैं॥तैसे स्वप्नअवस्थाविषेभी जीवोंकूंकेईपदार्थ सुखकेकारण प्रतीतहोवै है॥और केईपदार्थ दुःखकेकारण प्रतीतहोव है यातैं जाग्रत्केपदार्थ तथास्वप्नकेपदार्थ दोनोंसमानहैं॥शंकाहेभगवन्॥स्वप्नकेपदार्थ अल्पकालपर्यंतरहैं हैं॥और जाग्रत्केपदार्थ बहुतकाल पर्यंत स्थिररहैं हैं॥ यातैं स्वप्नकेपदार्थोंसैं जाग्रत्केपदार्थोंविषे विशेषताहै ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ जाग्रत्केपदार्थ स्थिरहैं यहजोतुमनें

कह्या॥यहाँ स्थिरशब्दका क्याअर्थहै॥तहां जोपदार्थ कदाचित्भी अन्यथाभावकूं नहींप्राप्तहोवैहै सोपदार्थ स्थिरशब्दकाअर्थहै ॥ अथवा जोपदार्थ नियमकरिकै तिसीकार्यकीउत्पत्तिकरैहै सोपदार्थ स्थिरशब्दकाअर्थहै॥तहां प्रथमपक्षतौसंभवैनहीं॥काहेतें आत्मातैंभिन्न जितने कीजडपदार्थहैं॥ते क्षणक्षणविषे अन्यथाभावकूंप्राप्तहोवैहैं।यातैं अन्यथाभावतैंरहिततारूप स्थिरता जाग्रत्पदार्थोंविषेसंभवैनहीं।तैसे दूसरा पक्षभीसंभवैनहीं॥काहेतें जोपदार्थ स्वप्नविषे जीवकूंसुखकीप्राप्तिकरैहै॥सोईहींपदार्थ जाग्रत्अवस्थाविषे तिसीजीवकूं दुःखकीप्राप्तिकरै है॥ और जोपदार्थ स्वप्नअवस्थाविषे याजीवकूं दुःखकीप्राप्तिकरैहै॥सोईहींपदार्थ जाग्रत्अवस्थाविषे ताजीवकूं सुखकीप्राप्तिकरै है॥इसीप्रकार जाग्रत्अवस्थाविषे जोपदार्थजीवोंकूं सुखकीप्राप्तिकरैहै॥सोईहींपदार्थ स्वप्नअवस्थाविषे ताजीवकूं दुःखकीप्राप्तिकरैहै।और जोपदार्थ जाग्रत् अवस्थाविषे याजीवकूं दुःखकीप्राप्तिकरैहै॥सोईहींपदार्थ स्वप्नअवस्थाविषे ताजीवकूं सुखकीप्राप्तिकरै है॥यातैं कोईभीपदार्थ नियमकरिकै किसीकार्यकीउत्पत्तिकरैनहीं॥याकहणेकरिकै जाग्रत्अवस्थामें स्वप्नकेपदार्थोंविषे विपरीतकार्यकीकारणता दिखाई॥तथा स्वप्नअवस्थामें जाग्रत्केपदार्थोंविषे विपरीतकार्यकीकारणता दिखाईअबजाग्रत्अवस्थामेंहीं जाग्रत्केपदार्थोंविषे विपरीतकार्यकीकारणता निरूपणकरैहैं॥ हेजनक॥जैसे स्वप्नअवस्थाविषे जोप्रियपदार्थ सुखकाकारणहोवै है॥सोईहींप्रियपदार्थ वियोगकालविषे जीवोंकेदुःखकाकारणहोवै है ॥ तैसे जाग्रत्अवस्थाविषेभी जेस्त्री पुत्र धनादिकपदार्थ जीवोंकेसुखकेकारण हैं ॥ तेहीं स्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थ वियोगकालविषे जीवोंके दुःखके कारणहोवै हैं ॥ नियमकरिकै किसीभीपदार्थविषे सुखकीकारणता तथादुःखकी कारणता है नहीं ॥ यातैं स्वप्नकेपदार्थोंतैं जाग्रत्केपदार्थोंविषे किंचित्मात्रभी विलक्षणतानहीं ॥ शंका॥हेभगवन्॥स्वप्नपदार्थोंकेजेकारण हैं॥तिनोंतैं जाग्रत्पदार्थोंकेकारण विलक्षण हैं॥ यातैं जाग्रत्पदार्थोंविषे स्वप्नकेपदार्थोंकीतुल्यता संभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ जैसे जाग्रत्अवस्थाविषे जीवोंकेस्थूलशरीर शुक्रशोणिततैं उत्पन्नहुए प्रतीतहोवै हैं ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषेभी जीवोंकेस्थूलशरीर शुक्रशोणिततैं उत्पन्नहुए प्रतीतहोवै हैं ॥और जैसे स्वप्नअवस्थाकेशुक्रशोणित असत्य हैं ॥ तैसे जाग्रत्अवस्थाके शुक्रशोणितभी असत्यही हैं ॥ और जैसे जाग्रत् अवस्थाविषे पिता माता पुत्र

भ्राता इत्यादिक अनेकप्रकारकेपदार्थ विद्यमान हैं ॥ तैसे स्वप्नअवस्था विषेभी पिता माता पुत्र भ्राता इत्यादिअनेक प्रकारकेपदार्थ विद्यमान हैं ॥ यातें जाग्रत्की तथास्वप्नकी किसीप्रकारतैं विलक्षणता संभवैनहीं ॥ यातें हेजनक जाग्रत्अवस्थाविषे तथास्वप्नअवस्था विषे जितनेकस्थूलसूक्ष्मपदार्थ हैं ॥ तिनसंपूर्णपदार्थोंका मनहींकारण है॥और यहजीव ईश्वरतैंभिन्न है ॥और ईश्वर जीवतैंभिन्न है॥याप्रकारका जीवईश्वरकाभेदभी इसमननेहींकल्पनाकऱ्याहै॥जिसजीवईश्वरकेभेदकूंनिश्चयकरिकै अज्ञानीजीव वारंवार जन्ममरणकूंप्राप्तहोवैहै॥ तहाँश्रुति॥मृत्योःसमृत्युमाप्नोति यइहनानेवपश्यति ॥ अर्थयह ॥ जोपुरुष आद्वितीयब्रह्मविषे नानाभावकूंदेखता है ॥ सोभेददर्शीपुरुष अनंतवार जन्ममरणकूंप्राप्तहोवै है ॥ १ ॥ और हेजनक॥यहमन केवलजगत्काहीकारणनहीं ॥किंतु जीवोंकेबंधका तथामोक्षकाभी यह मनहींकारण है॥तहाँ आत्माकूंआच्छादनकरणेहारा जोआवरणशक्तिरूपअज्ञान है॥ताकूं आपणेविषेमानताहुआ अशुद्धमन जीवोंकेबंधकाकारण है॥और भेदकादर्शनरूपजोविक्षेपशक्तिहै तावीक्षेपशक्तिरूपअज्ञानकूं आपणेविषेमानताहुआ यहमन अध्यात्मअधिदैवअधिभूत यातीनप्रकारकेदुःखका कारणहोवैहै।और श्रुतिनेंकथनकऱ्याजोआत्माका स्वप्रकाशआनंदस्वरूप ताकूं गुरुशास्त्रकेप्रसादतैं जाणताहुआ शुद्धमन जीवोंकेमोक्षका कारणहोवैहै।काहेतैं मनका तथा मनकरिकैरचितप्रपंचका साक्षीरूपजोशुद्धआत्माहै॥ताकेविषे बंधमोक्ष भेददर्शन यहतीनोंसंभवैनहीं।किंतु बंधमोक्षादिक संपूर्णजगत् मननेंउत्पन्नकऱ्याहै॥यातें मनविषेही बंधमोक्षादिकहैं ॥अब याहींअर्थकूं स्पष्टकरिकै निरूपणकरैहैं॥हेजनक॥जैसे लोकविषे अत्यंतचंचलजोमर्कटहै।सो नानाप्रकारकीचेष्टाकरिकै आपेही आपणेकूं मरणांतदुःखकीप्राप्तिकरैहै तैसे अत्यंतचंचल यहमनभी विषयवासनाकरिकैआपेहींआपणेकूं संसारदुःखकीप्राप्तिकरै है॥और हेजनक॥जैसे अगाधजलविषे स्थितजो मत्स्य है॥ताकूं किंचित्मात्रभी तहाँभयनहीं॥परंतु सोमत्स्य जभी कुंढी मिलितमांसकेभक्षणकरणेवासतैं ताअगाधजलकूंछोडिकै बाहर आवै है॥तभी सोमत्स्यप्राणांतदुःखकूं प्राप्तहोवैहै॥तैसे स्वप्रकाशआनंदस्वरूपआत्माविषे स्थितहुआयहमन किंचित्मात्रभी दुःखकूंप्राप्त होवै नहीं और जभी सोमन विषयभोगकेवासतैं आनंदस्वरूपआत्माकूं छोडिकरिकै बाहरआवैहै॥तभी सोमन् नानाप्रकारकेदुःखोंकूं प्राप्त

होवैहै॥और हेजनक जैसे दशरज्जुवोंकरिकैबांध्याहुआ जोअत्यंतचंचलमर्कटहै ॥ सो दशोंदिशावोंविषे भ्रमणकरताहुआ परमदुःखकूंप्राप्त होवैहै।तैसे वाकूआदिकदशइंद्रियरूपरज्जुकरिकै बांध्याहुआयहमनरूपीमर्कटभी विषयोंकीतरफधावताहुआ परमदुःखकूंप्राप्तहोवै है॥और हेजनक ॥ जैसे अत्यंतदूरआकाशविषेस्थित जोकपोतपक्षी है ॥ ताकूं तहाँ किंचित्मात्रभीभयनहीं॥ परंतु सोकपोत जभी पृथिवीविषेक पोतनीस्त्रीकूंदेखैहै॥ तभी रागकरिकैअंधहुआसोकपोत ताआकाशकूंछोडिकै तत्कालभूमिविषेआवै है॥ताभूमिविषे सोकपोत नानाप्रकारकेदुःखकूंप्राप्तहोवै है ॥ तैसे चिदाकाशविषेस्थितहुआयहमन किंचित्मात्रभी दुःखकूंप्राप्तहोतानहीं॥ और जभीसोमन बाह्यशब्दस्पर्शादिकविषयोंकूंदेखिकरिकै रागकरिकैअंधहोवै है॥ और ताचिदाकाशकापरित्यागकरिकै तत्कालबाह्यविषयकीतरफआवैहै॥ तभी सोमन अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवै है ॥और हेजनक ॥ जैसे रज्जुकरिकैबांध्याहुआपशु पराधीनताकरिकै उत्तरउत्तर दुःखकेदेणेहारेस्थानोंकूं प्राप्तहोवै है ॥ तैसे पुण्यपापरूपीरज्जुकरिकैबांध्याहुआ यहसकाममनभी उत्तरउत्तर दुःखकीदेणहारी विषयरूपीभूमिकूंप्राप्तहोवै है॥ और हेजनक ॥ जैसे मृत्यु सर्वलोकविषेविचरै है ॥ परंतु ताकेविचरणेकाकारण कोई जाणिसकतानहीं ॥ तैसे मनभी सर्वदाविषयोंकीतरफजावै है ॥ परंतु ताकेजाणेकाकारण कोईजाणिसकतानहीं ॥ और हेजनक ॥ जैसे मूढबालक व्यर्थहीं नानाप्रकारकीचेष्टाकरै है॥तैसे यहमनभी व्यर्थहीं नानाप्रकारकीचेष्टाकरै है ॥ और हेजनक ॥ जैसे पादजिसकेबांधेहुएहैं और रथविषेजिसकाअत्यंतराग है ऐसाजोकोई रथवाहीपुरुषहै ताकेरथविषे जीर्णरज्जुकरिकैबांधेहुए अत्यंतदुष्टअश्वजुडेहोवैं ॥ ऐसारथवाहीपुरुष अश्वोंसहित गर्त्तविषेपडिकेनष्टहोवै है॥ तैसे मनरूपीशिथिलरज्जुकरिकैबांधेहुए जेदशइंद्रियरूपीदुष्टअश्वहैं ॥ तिनोंकरिकैयुक्त जोयहसंघातरूपीरथहै ॥ तारथविषेस्थितहुआ यहजीवात्मा पुरुष वारंवार संसाररूपीगर्त्तविषेप्राप्तहोवै है ॥ और हेजनक ॥ जैसे मूढबालक जभी प्रथम आपणेमुखविषे नानाप्रकारकीविक्रियाकरै है॥ तभीहीं सन्मुखशुद्धदर्पणविषे नानाप्रकारकी विक्रियादेखे हैं परंतु सोनानाप्रकारकी विक्रिया वास्तवतैंदर्पणविषे नहीं ॥ किंतु बालककेमुखविषेहीं है॥भ्रांतिकरिकै ताबालककूं दर्पणविषे विक्रियाप्रतीतहोवै है॥तैसे यहमनभी संसारसंबंधी अनेकप्रकारकी विक्रियाकरै है ॥और

तिनआपणेविक्रियावोंकूं समीपवर्त्तिस्वप्रकाशआत्माविषेदेखेहै॥परंतु वास्तवतें तेविक्रया मनविषेही है आत्माविषेनहीं॥भ्रांतिकरिकैमन कीविक्रिया आत्माविषेप्रतीतहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् जडमनविषे नानाप्रकारकेविक्रियावोंकीकारणता संभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेज नक ॥ जैसे अम्लरसवाले जेनिंबुआदिकपदार्थ हैं ॥ ते समीपदेखेहुए पुरुषोंकेमुखविषे जलकीउत्पत्तिकरै हैं॥तथा पुरुषोंकेमनकूंक्षोभकरै हैं ॥ तैसे स्वप्रकाशचैतन्यआत्माभी आपणीसमीपतामात्रकरिकै जडमनकूं नानाप्रकारकीविक्रियाविषे प्रवृत्तकरै है ॥शंका॥हेभगवन्॥ असंगआत्माविषे मनकेक्षोभकीकारणता किसप्रकारसंभवै है ॥समाधान॥हेजनक॥ असंगआत्माविषेयद्यपि मनकेक्षोभकीकारणतासंभ वैनहीं ॥ तथापि अचिंत्यशक्तिअज्ञानकरिकै असंगआत्माविषेभी मनकेक्षोभकीकारणता संभवै है॥और हेजनक जैसे स्वप्नअवस्थाविषे यहआनंदस्वरूपआत्मा जीवोंकेमनोंकूंउत्पन्नकरै है ॥ तैसे जिसमनकरिकैविशिष्टहुआ यहआत्मा स्वप्नअवस्थाकूं प्राप्तहोवै है ॥ तिसमन कूंभी सोआत्माहींउत्पन्नकरै है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ स्वप्नअवस्था विषे जिसमनकरिकै आत्मा अनेकमनोंकीउत्पत्तिकरै है ॥ तिस प्रधानमनकीभीकिसीअन्यमनकरिकै उत्पत्ति अंगीकारकरणीहोवैगी ॥ याप्रकारअनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवैगी॥समाधान॥हेजनक॥मनक रिकैजोमनकीउत्पत्ति हम अंगीकारकरैं ॥ तौअनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवै ॥ परंतु मनकरिकै मनकीउत्पत्ति हम अंगीकारकरतेनहीं॥किंतु जैसे लोकविषे बीजोंकूंनष्टहुआदेखिकरिकै पृथुराजा पृथ्वीकूंप्रेरणाकरताभया ॥ तापृथुराजाकीप्रेरणाकरिकै सोपृथ्वी बीजोंकूंउत्पन्नकर तीभई ॥ तहां बीजोंकेप्रति बीजोंकूंकारणतानहीं ॥ किंतु जिसपृथ्वीनें बीजोंकूंआपणेविषे लयकऱ्याथा ॥ तिसपृथ्वीकूंहीं बीजोंकेप्रति कारणताहै ॥ तैसे मनकीउत्पत्तिविषे मनकूंकारणतानहीं ॥ किंतु मूलाज्ञानकरिकै विशिष्टआत्माहीं मनकाकारणहै ॥ और सोमू लाज्ञान अनादिहै ॥ यातें ताकीउत्पत्तिविषे अन्यअज्ञानकीअपेक्षाहोवैनहीं ॥ और हेजनक ॥ जैसे मेघविद्युतादिकोंतैंरहित अत्यंतनिर्मलजोआकाशहै ॥ सो आपणीअचिंत्यशक्तिकरिकै मेघविद्युतादिकोंके उत्पत्ति स्थिति लयका कारणहोवै है ॥ मेघा दिकोंकरिकैविशिष्टहुआआकाश मेघादिकोंकाकारणहोवैनहीं ॥ तैसे अज्ञानकरिकैविशिष्टहुआ यहआत्मा मनादिकजगत्के

उत्पत्ति स्थितिलयका कारणहोवै है ॥ मनादिकप्रपंचकरिकैविशिष्टहुआआत्मा मनादिकप्रपंचकाकारणहोवैनहीं ॥शंका ॥ हे भगवन् ॥ अज्ञानकरिकै यहआत्मा किसप्रकार विपरीतभावकूंप्राप्तहोवै है॥समाधान ॥ हे जनक ॥ जैसे कोईदरिद्रीभिक्षुक किसीमायादिकनिमित्त करिकै आपणेभिक्षुकपणेकेअज्ञाननें राजाभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ तथा कोईराजा आपणेराजापणेकेअज्ञाननें भिक्षुकभावकूंप्राप्तहोवै है॥ तैसे ब्रह्मरूपयहआत्माभी आपणेवास्तवस्वरूपकेअज्ञाननें स्थूलसूक्ष्मरूपजगत्भावकूंप्राप्तहोवै है॥शंका॥ हेभगवन् अज्ञानकेवशतें आत्माकूं जगत्भावकीप्राप्ति यद्यपिसंभवै है ॥ तथापि अज्ञानकेवशतें आत्माविषे जन्ममरण संभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेजनक जैसे इदानींकाल विषे जन्ममरणतैंरहितयहपुरुष आपणेस्वरूपके अज्ञाननें स्वप्न अवस्थाविषे जन्ममरणकूं प्राप्तहोवै है ॥ तैसे जाग्रत् अवस्थाविषेभी वास्तवतें जन्ममरणतें रहित यहआनंदस्वरूपआत्मा आपणे स्वरूपके अज्ञानकरिकै जन्ममरणकूंप्राप्तहोवै है ॥ यातें आपणे स्वरूपका अज्ञानहीं जन्ममरणकाकारणहै ॥ और हे जनक ॥ जैसे जाग्रत् अवस्थाविषे घटादिकजडपदार्थोंका द्रष्टा जो पुरुष है ॥ तादृष्टापुरुषकूं घटादिकदृश्यपदार्थ प्रकाशकरिसकैनहीं ॥ तैसे स्वप्न अवस्थाविषे रथादिकदृश्यपदार्थोंके आकारकूंप्राप्तहुआ जो मन है ॥ सो मन स्वप्नद्रष्टासाक्षीआत्माकूं प्रकाशकरिसकैनहीं ॥ किंतु साक्षीआत्मा तामनकाप्रकाशकरै है ॥शंका॥ हेभगवन् ॥ जैसे श्रुतिने आत्माकूं ज्योतिकह्याहै ॥ तैसे मनकूंभी ज्योतिकह्याहै ॥ यातें आत्माकीन्याईं मनभी स्वप्रकाश है ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ मन आत्माका प्रकाशकरै है यातें ज्योति है ॥ याअभिप्रायकरिकै श्रुतिने मनकूं ज्योतिनहींकह्या ॥ किंतु आत्मातें भिन्न जोघटपटादिकपदार्थ हैं ॥ तिनोंकूं मनकीवृत्तिद्वारा आत्मा प्रकाश करै है ॥ यातें घटादिकबाह्यपदार्थोंकेप्रकाशविषेमन आत्माका सहकारी है ॥ या अभी प्रायकरिकै श्रुतिने मनकूं ज्योतिकह्याहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे लोकविषे घटपटादिकपदार्थोंकेज्ञानविषे सहकारीजोचक्षुइंद्रिय है ताकूं ज्योति कहैं हैं ॥ तैसे घटादिकपदार्थाकारवृत्तियोंका उपादानकारणजो मन है ताकूं श्रुति ज्योतिकहै है॥ और हेजनक ॥ जैसे यहआत्मा बाह्य स्थूलसूक्ष्मपदार्थोंकूं नेत्रादिकइंद्रियोंकरिकैजाणै है ॥ और नेत्रादिकइंद्रियोंकेअविषय जेपरोक्षपदार्थ हैं॥ तिनोंकूं तथानेत्रादिकइंद्रियोंकूं

यहआत्मा मनकरिकैजाणै है ॥ तैसें मनकूं तथामनकीवृत्तियोंकूं यहआत्मा अन्यकिसीसाधनकरिकै प्रकाशकरै नहीं॥ किंतु आपणेस्वप्रकाशरूपकरिकै यहआत्मा मनकूंप्रकाशै है॥ और हेजनक ॥ आत्माकेआश्रितरहणेहारा तथा आत्माकूंविषयकरणेहारा जोअव्याकृतरूपअज्ञानहै सोई मनकाकारण है ॥ ताकारणअज्ञानकूंभी जभी यहस्वप्रकाशआत्माहींप्रकाशकरै है॥ तभी ताअज्ञानकेकार्य मनकूं यह आत्मा प्रकाशकरै है याकेविषे क्याकहणाहै॥ और हेजनक ॥ जैसे यहस्वयंज्योतिआत्मा अज्ञानसहितमनकूं प्रकाशकरै है॥ तैसे नेत्रादि कइंद्रिय तारागण मणियां रत्न सूर्य चंद्रमा अग्नि इनोंतैंआदिलेकै जितनेकीलोकविषे प्रकाशकपदार्थ हैं ॥ तिनसंपूर्णोंकूं यह स्वप्रकाश आत्माहीं प्रकाशकरै है ॥ चैतन्यआत्मातैंविना जडपदार्थोंकीसिद्धिहोवैनहीं॥ इतनैंग्रंथकरिकै आत्माविषे श्रुतिप्रमाणकरिकैसिद्धजो सर्व जगत्कीप्रकाशताहै सोनिरूपणकरी ॥ अब युक्तियोंकरिकै आत्माविषे सर्वजगत्कीप्रकाशकता निरूपणकरैं हैं ॥ यहघट है यह पट है इत्यादिकज्ञानोंके जितनेक ज्ञानतैंभिन्ननेत्रादिककरण तथाघटपटादिकविषयरूपकारणहैं॥ तिनकारणोंविषे सर्वशास्त्रवाले जडताअंगीकार करैं हैं ॥ एकबृहस्पतिकेशिष्य चार्वाकनास्तिक ज्ञानकेकारणोंविषे जडताअंगीकारकरतेनहीं ॥ काहेतैं चार्वाकनास्तिककेमतविषे शरीराकारपरिणामकूंप्राप्तभये जे पृथिवी जल तेज वायु यहचारिभूतहैं तिनोंविषेहीं चैतन्यताहै ॥ सोतिनचार्वाकोंकेमतकूं करेहुएकर्मोंकाभोगतैंविनानाश तथानकरेहुएकर्मोंकेफलकाभोग याप्रकारके कृतनाश अकृताभ्यागम रूपदोषकरिकै बालकभी खंडनकरिसकै हैं ॥ याकारणतैं तिनोंकेमतका यहांखंडनकरतेनहीं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ यहघटहै यहपटहै इत्यादिकज्ञानोंतैं भिन्न जितनेकपदार्थ हैं तेसें पूर्ण जडहैं ॥ तेज्ञानहीं प्रकाशरूपहैं ॥ अब याअर्थविषे यहविचारकर्त्याचाहिये यहघटहै यहपटहै इत्यादिकज्ञान चैतन्यरूपहाणेतैं स्वप्रकाशहैं॥ अथवा अंतःकरणकीवृत्तिरूपहोणेतैं परप्रकाश हैं॥ अब प्रथमस्वप्रकाशपक्षविषे तिनज्ञानोंकूं ब्रह्मात्मरूपतासिद्धकरणेवासतैं तिन ज्ञानोंकेभेदकाखंडनकरैं हैं॥ यहघटहै यहपटहै इत्यादिकजेस्वप्रकाशज्ञानहैं ॥ तिनज्ञानोंकाभेद किसकरिकैसिद्धहोवै है॥ ताभेद करिकैहीं ताभेदकीसिद्धिहोवै है ॥ अथवा ताभेदका आश्रय जो ज्ञान है ॥ ताज्ञानकरिकै ताभेदकी सिद्धिहोवै है ॥ अथवा किसी अन्य ज्ञान

करिकै ताभेदकीसिद्धिहोवै है ॥ तहाँ ताभेदकरिकै ताभेदकीसिद्धिहोवै है यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै॥ सोसंभवैनहीं॥ काहेतैं जैसे कोईमूढपुरुष याप्रकारकावचनकहै॥ मेरेमुखविषेजिह्वानहीं है ॥ सोयहताकावचन व्याघातदोषवाला है ॥ काहेतैं जिह्वातैंविना याप्रकार कावचन कह्याजावैनहीं ॥ तैसेजडभेद आपणीसिद्धिकरै है याप्रकारका वादीकावचनभी व्याघातदोषवालाहै ॥ काहेतैं जडपदार्थकरिकै आपणीसिद्धि तथाअन्यपदार्थकीसिद्धि कहाँदेखीतीनहीं ॥ और ताभेदकाआश्रयजोज्ञानहै ॥ ताज्ञानकरिकै स्वनिष्ठभेदकीसिद्धिहोवै है यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं अभावके प्रतियोगीअनुयोगीकेज्ञानतैं विनाअभावकाज्ञानहोवै नहीं ॥ जैसे घटके अभाववालाभूतलहै ॥ याप्रतीतिविषे घटाभावकाप्रतियोगी घटहै ॥ और अनुयोगीभूतलहै ॥ तहाँ घटरूपप्रतियोगीकेज्ञानतैंविना तथा भूतलरूपअनुयोगीकेज्ञानतैंविना घटाभावकाज्ञानहोवै नहीं ॥ तैसे ज्ञानोंकाजोपरस्परभेदहै सोभी अभावरूप है ॥ यातैं ताभेदका प्रतियोगीरूपजोज्ञानहै ॥ तथा अनुयोगीरूपजोज्ञानहै ॥ तिनोंकेज्ञानतैंविना ताभेदकाज्ञान होवैनहीं ॥ और सोप्रतियोगीअनुयोगीरूपज्ञान स्वप्रकाश है ॥ यातैं तिनज्ञानोंकूंविषयकरणेहाराज्ञान संभवैनहीं ॥ और जोतिनज्ञानोंकूं विषयकरणेहारा कोईज्ञान अंगीकारकरोगे॥ तो घटादिकोंकीन्याईं तिनज्ञानोंविषे स्वप्रकाशता नहींरहैगी ॥ किंतु तेज्ञान परप्रकाशहोवैंगे ॥ किंवा॥ स्वप्रकाशज्ञानोंविषेस्थितजोभेदहै ॥ सोभेद किसीअन्यज्ञानकरिकैसिद्धहै यहतीसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ तासें यहपूछाचाहिये ॥ सो स्वप्रकाशज्ञानोंकाभेद तुमनें किसीअन्यज्ञानकरिकैग्रहणकरीताहै॥ अथवा नहींग्रहणकरीताहै॥ तहाँ जोवादी प्रथमपक्ष अंगीकारकरै ॥ तासें यहपूछाचाहिये ॥ भेदहै याप्रकारकेज्ञाननें ताभेदकूंविषयकरीताहै॥ अथवा इनज्ञानोंकाभेद है याप्रकारकेज्ञाननें ताभेदकूंविषयकरीताहै ॥ तहां प्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं भेदहै याप्रकारकाज्ञान भेदमात्रकूंविषयकरै है ॥ ज्ञानोंकेभेदकूं विषयकरैनहीं ॥ यातैं भेदहै याप्रकारकेज्ञानकरिकै स्वप्रकाशज्ञानोंकाभेद सिद्धहोवैनहीं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे भेदहै याप्रकरकेज्ञानकरिकै आकाशका आकाशतैंभेद सिद्धहोवैनहीं॥ तैसे भेदहै याप्रकारकेज्ञानकरिकै स्वप्रकाशज्ञानोंकाभेद सिद्धहोवैनहीं ॥ और इनज्ञानोंकाभे

दहै याप्रकारकेज्ञाननैं स्वप्रकाशज्ञानोंकेभेदकूंविषयकरीताहे ॥ यहदूसरापक्षजोवादीअंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैंजैसे घटपटतैं भिन्नहै तथापटघटतैंभिन्नहै ॥ याप्रकारकाज्ञान घटपटकूंतथातिनोंकेभेदकूं विषयकरैहै ॥ याकारणतैं घटपटपरप्रकाशहै ॥ तैसे यहघट है याप्रकारकाज्ञान यहपटहै याप्रकारकेज्ञानतैंभिन्नहै ॥ याप्रकारकाज्ञान तिनज्ञानोंकूं तथातिनोंकेभेदकूं विषयकरैहै ॥ यातैं घटादिकोंकी न्याईं ते ज्ञानभीपरप्रकाशहोणेचाहिये ॥ किंवा ॥ स्वप्रकाशज्ञानोंकाभेद किसीज्ञानकरिकै सिद्धनहींहै यहदूसरापक्षजोवादी अंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं जैसेमनुष्यकाशृंग तथावंध्याकापुत्र किसीप्रमाणजन्यज्ञानकाविषयनहींहै ॥ याकारणतैं अत्यंतअसत्य है ॥ तैसेप्रमाणजन्यज्ञानकाअविषयहोणेतैं स्वप्रकाशज्ञानोंकाभेदभी अत्यंतअसत्यहोवैगा ॥ और प्रमाणजन्यज्ञानकाअविषयमानिकै जोज्ञान केभेदकूं सत्यमानोंगे ॥ तौप्रमाणजन्यज्ञानकाअविषय जोमनुष्यकाशृंगहै तथावंध्यापुत्रहै ॥ सोभीसत्यहोणाचाहिये किंवा ॥ ज्ञानोंकेभे दकूंग्रहणकरणेहाराजोदूसराज्ञानहै ॥ सोपरप्रकाशहै अथवा स्वप्रकाशहै तहाँ जोवादी प्रथमपक्षअंगीकारकरै सो संभवैनहीं ॥ काहेतैं जिसज्ञाननैं ज्ञानोंकेभेदकूंग्रहणकऱ्याहै ॥ सोज्ञान परप्रकाशहै यातैं ताज्ञानका किसीदूसरेज्ञानकारिकै प्रकाशहोवैगा ॥ दूसरेका तीसरे कारिकै प्रकाशहोवैगा ॥ तीसरेकाचतुर्थज्ञानकारिकै प्रकाशहोवैगा ॥ याप्रकार ज्ञानोंकीधारामानणेविषे अनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और ज्ञानोंकेभेदकूंग्रहणकरणेहारा सोदूसराज्ञान स्वप्रकाशहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं प्रतियोगी अनुयोगीकेज्ञानतांविना अभावकाज्ञानहोवैनहीं ॥ यहवार्त्तापूर्वकहिआयेहै ॥ यातैं जोस्वप्रकाशज्ञान स्वप्रकाशज्ञानोंकेभेदकूंग्रहणकरैगा सो स्वप्रकाशज्ञान ताभेदकेप्रतियोगीअनुयोगीरूप स्वप्रकाशज्ञानोंकूंभी अवश्यग्रहणकरैगा ॥ सोयहवार्त्ता संभवैनहीं ॥ काहेतैं जैसे सूर्यचंद्रमा दोनोंविषे प्रकाशता समान है ॥ यातैं सूर्यचंद्रमाकूं प्रकाशनहींकरता ॥ और चंद्रमा सूर्यकूं प्रकाशनहीं करता ॥ तैसे भेदकाआश्रयरूपज्ञानभी स्वप्रकाशरूपहै ॥ और ता भेदकूंग्रहणकरणेहाराज्ञानभी स्वप्रकाशरूपहै ॥ यातैं स्वप्रकाशरूपज्ञानका स्वप्रकाशरूपदूसरेज्ञानकरिकै ग्रहणसंभवैनहीं ॥ और जोप्रकाशरूपज्ञानकाभी दूसरेप्रकाशरूपज्ञानकारिकै प्रकाशमानोंगे ॥ तौ सूर्य ॥ ३० ॥

चंद्रमाकाभी परस्पर प्रकाश्यप्रकाशकभावहोणाचाहिये॥किंवा जोवादी स्वप्रकाशज्ञानकरिकै स्वप्रकाशज्ञानकाप्रकाश अंगीकारकरैहै॥ सोवादी तिनज्ञानोंके परस्परन्यूनअधिकतारूपभेदकूंभी अवश्यअंगीकारकरैगा ॥ तहाँ प्रकाश्यज्ञानविषे न्यूनता मानणीहोवैगी ॥ और प्रकाशक ज्ञानविषे अधिकतामानणीहोवैगी यातैं जैसे यहघटहै यहपटहै इत्यादिकज्ञानोंकरिकै प्रकाश्य जेघटपटादिकपदार्थहैं॥तिनोंविषे स्वप्रकाशतानहीं है ॥ तैसेज्ञानकारिकैप्रकाश्य ज्ञानोंविषेभी स्वप्रकाशता नहीं रहैगी॥यातैं ज्ञानकूंस्वप्रकाशमानिकै ताज्ञानकादूसरेज्ञा नकारिकै प्रकाशमानणा यहवादीकाकहणाकैसाहै॥ जैसे कोईपुरुषकहै मेरीमातावंध्याथी यावचनकीन्याईं व्याघातदोषवाला है ॥ किंवा॥ जोवादीस्वप्रकाशज्ञानोंविषे न्यूनअधिकतारूपभेद नहींअंगीकारकरै ॥ तौभी तिनज्ञानोंका परस्पर प्रकाश्यप्रकाशकभाव सिद्धहोइसकै नहीं ॥ काहेतैं समानजातिवालेपदार्थोंका परस्पर प्रकाश्यप्रकाशकभाव कहाँलोकविषेदेख्यानहीं ॥ जैसे दीपकआपणेतैंविजातीयजेघटा दिकपदार्थ हैं तिनोंका प्रकाशकरहै॥परंतु प्रकाशरूपकरिकैसमानजातिवाले जे खद्योतादिकहैं तिनोंकूंसोदीपक प्रकाशकारिसकैनहीं ॥ तैसे स्वप्रकाशरूपकरिकै समानस्वभाववाले जेज्ञानहैं ॥ तिनोंकाभी परस्पर प्रकाश्यप्रकाशकभावसंभवैनहीं ॥ यातैं किसीप्रकारक रिकैभी ज्ञानोंकाभेदसिद्धहोइसकैनहीं यहसिद्धभया ॥ अब भेदरहितज्ञानोंकूं आत्मरूपता कथनकरणेवासतै प्रथम ज्ञानविषे सुखरूपता निरूपणकरैं हैं ॥ ते भेदतैंरहितज्ञान सुखरूपहैं ॥ काहेतैं योवै भूमातत्सुखं॥ अर्थयह ॥ जोपदार्थ भेदतैंरहितहै सोईपदार्थ सुखरूपहै ॥ याश्रुतिविषेकथनकऱ्या जोभेदशून्यत्वरूप सुखकालक्षण ॥ सोसुखकालक्षण भेदशून्यज्ञानोंविषेभीघटै है ॥ यातैं भेदरहितज्ञान सुखरूप है ॥ शंका ॥ श्रुतिनैंकथनकऱ्या जोभेदशून्यत्वरूपसुखकालक्षण ॥ सोलक्षण सुखविषे कहाँघटै है ॥ समाधान ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे तथासमाधिअवस्थाविषे भेददर्शनकाअभावहोवै है ॥ याकारणतैं यहजीव सुषुप्तिअवस्थाविषे तथासमाधिअवस्थाविषे दुःखकूंअनु भवकरतेनहीं ॥ किंतु सुखकूंहीं तहाँ अनुभवकरते हैं ॥ शंका ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे तथासमाधिअवस्थाविषे विद्यमानजोसुख है ॥ ताकेविषे भेदशून्यत्वरूपसुखकालक्षण यद्यपि संभवै है ॥ तथापि सोसुखस्वप्रकाशज्ञानस्वरूपहै याअर्थविषे कौनप्रमाणहै॥समाधान॥

स्वप्रकाशरूपकरिकै पूर्व वर्णनकरेजेज्ञान ॥ तेज्ञान जोसुखरूपनहींहोवै ॥ तौ जैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे तथासमाधिअवस्थाविषे जीवों कूं दुःखका अनुभव नहींहोवै है ॥ तैसे सुषुप्तिसमाधिविषे जीवोंकूं सुखकाअनुभवभी नहींहोणाचाहिये ॥ और सर्वजीवोंकूं सुषुप्तिअव स्थाविषे तथासमाधिअवस्थाविषे सुखकाअनुभवहोवै है ॥ यातैं स्वप्रकाशज्ञानहीं सुखरूपहै ॥ याकारणतैंहीं सर्वजीवोंकूं सुषुप्तिकेस्वप्र काशज्ञानरूपआनंदविषे इच्छाहोवै है ॥ शंका ॥ सुषुप्तिविषे जोसर्वजीवोंकीइच्छाहोवै है ॥ सोइच्छा स्वकीप्राप्तिवासतै होवैनहीं ॥ किंतु सुषुप्तिअवस्थाविषे सर्वदुःखोंकाअभावहोवै है ॥ ता दुःखाभावकीप्राप्तिवासतै जीवोंकूं सुषुप्तिविषेइच्छाहोवै है ॥ यातैं सुषुप्तिअव स्थाविषे स्वप्रकाशज्ञानकेसाथ सुखकाअभेदअंगीकारकरणानिष्फलहै ॥ समाधान ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे जैसे स्वप्रकाशज्ञान सुखरू पहै ॥ तैसे दुःखकाअभावरूपभीहै ॥ स्वप्रकाशज्ञानतैंभिन्नदुःखाभावनहीं ॥ काहेतैं सुषुप्तिविषेस्थितजो सर्वदुःखोंकाअभावहै ॥ सोदुःखाभाव जोस्वप्रकाशज्ञानतैंभिन्नहोवैगा ॥ तौ तादुःखाभावकीसिद्धिही नहींहोवैगी॥और जोवादी सुषुप्तिअवस्थाविषे दुःखाभावकूं स्वप्रकाशज्ञानतैंभिन्नमानिकै तादुःखाभावकाप्रकाशअंगीकारकरै है ॥ तावादीसें यहपूछाचाहिये ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे तादुःखाभावकूं सूर्यादिक प्रकाशकरैं हैं ॥ अथवा स्वप्रकाशज्ञान तादुःखाभावकूं प्रकाशकरै है ॥ तहाँ प्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सो संभवैनहीं॥ काहेतैं सुषुप्तिअवस्थाविषे सर्वकार्यप्रपंचकालयहोवै है ॥ यातैं सूर्यादिकप्रकाशोंकाभी सुषुप्तिविषेलयहोवै है ॥ और सुषुप्तिअवस्थाविषे स्वप्रकाशज्ञानकरिकै दुःखाभावकाप्रकाशहोवै है यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं सुषुप्तिअवस्थाविषे स्थित जोदुःखाभावहै॥तादुःखाभावकूं वादी स्वप्रकाशज्ञानतैं अत्यंतभिन्नमानै है यातैं ताअत्यंतभिन्नदुःखाभावकूं स्वप्रकाशज्ञान प्रकाश करैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ चैतन्यरूपस्वप्रकाशज्ञान दोपदार्थकूं प्रकाशकरै है ॥ एकतौ आपणेस्वरूपकूं प्रकाशकरै है ॥ और दूसरा आपणेसाथ तादात्म्यभावकूंप्राप्तभयाजोपदार्थ है ताकूं प्रकाशकरै है ॥ अत्यंतभिन्नदुःखाभावकूं स्वप्रकाशज्ञान प्रकाशकरैनहीं ॥ यातैं सुषुप्तिअवस्थाविषे दुःखाभावकीसिद्धिवासतै वादीनैं तादुःखाभावकूं स्वप्रकाशज्ञानरूप मान्याचाहिये ॥ अब सत्ख्यातिवादीके

मतकूं अंगीकारकरिकै दुःखाभावविषे स्वप्रकाशज्ञानरूपता सिद्धकरैं हैं ॥ जैसे सत्ख्यातिवादीकेमतविषे घटविषेस्थित जोप टादिकसर्वपदार्थोंकाअभावहै ॥ सोपटादिकोंकाअभाव अधिकरणरूपघटतैंभिन्ननहीं किंतु घटरूपहीहै ॥ तैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे अधि ष्ठानरूपचैतन्यविषे स्थितजोदुःखाभावहै ॥ सोभी अधिष्ठानरूपचैतन्यतैंभिन्ननहीं ॥ किंतु सोदुःखाभाव अधिष्ठानचैतन्यरूपहै॥शंका॥ सत्ख्यातिवादीकीन्याईं जो अभावकूं अधिकरणरूपमानोगे ॥ तौ संपूर्णजगत्कूं अभावरूपता प्राप्तहोवैगी ॥ समाधान ॥ अभावकूं अधिकरणरूपमानणेविषे जोसंपूर्णजगत्कूं अभावरूपताप्राप्तहोवै ॥ तौ होणेदेवो ॥ याकेविषे हमअद्वैतवादियोंकी किंचित्मात्रभी हानिहोवैनहीं ॥ उलटा अद्वितीयआत्माका दृढनिश्चयहोवै है ॥ शंका ॥ सत्ख्यातिवादीकेमतकूंअंगीकारकरिकै ॥ जोदुःखाभावकूं अधिष्ठानचैतन्यरूप अंगीकारकरोगे ॥ तौ तुमारेसिद्धांतकीहानिहोवैगी ॥ समाधान ॥ सर्वअंशतैं जोपरमतकाअंगीकारकरिये ॥ तौ हमारेसिद्धांतकीहानिहोवै ॥ परंतु सर्वअंशतैं हम परमतकाअंगीकारकरतेनहीं ॥ किंतु परमतकी जितनीअंश श्रुतिअर्थविषे अनुकू लहै ॥ तितनीअंशका हम अंगीकारकरैं हैं ॥ यातैं आपणेसिद्धांतकीहानि होवैनहीं ॥ तहाँ दृष्टांत ॥ जैसे केवलदधिकेभक्षणतैं यद्यपि ज्वरकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ तथापि शर्करायुक्तदधिकेभक्षणतैं ताज्वरकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ तैसे श्रुतिविरुद्धपरमतके अंगीकारकरणेतैं यद्यपि सिद्धांतकीहानिहोवैहै ॥ तथापि श्रुतिअर्थकेअनुकूलजोयुक्तिहै ॥ तायुक्तिरूपशर्काराकरिकैयुक्त परमतरूपीदधिकेग्रहणकरणविषे किंचित् मात्रभी सिद्धांतकीहानिहोवैनहीं ॥ यातैं सत्ख्यातिवादी जिसघटकूं पटादिकसर्वपदार्थोंकाअभावरूपमानैहै ॥ताघटकूंहीं हमअद्वैतवादी ब्रह्मरूपमानैं हैं॥तात्पर्ययह॥अस्तिभाति प्रिय नाम रूप यापंचअंशोंकरिकै सर्वजगत् व्याप्तहै॥तहाँ घटका नामरूप यहदोनोंअंश कल्पि तहैं ॥ यातैं अधिष्ठानचैतन्यतैंभिन्ननहीं॥और अस्ति भाति प्रिय यह तीनोंअंश ब्रह्मरूपहैं ॥यहवार्ता अन्यशास्त्रविषेभीकहीहै॥श्लोक॥ अस्तिभातिप्रियंरूपं नामचेत्यंशपंचकम्॥आद्यंत्रयंब्रह्मरूपं जगद्रूपंततोद्वयम्॥अर्थयह।संपूर्णजगत् अस्ति भाति प्रिय नाम रूप यापंचअं शोंकरिकैयुक्तहै ॥ तहाँ अस्ति भाति प्रिय यह आदिकेतीनअंशतौ ब्रह्मरूपहैं ॥ और नाम रूप यहदोनोंअंश जगत्रूपहैं ॥१॥किंवा॥

अधिकरणरूपभावपदार्थतैं जोअभावभिन्नहोवैगा ॥ तौताअभावविषे पदार्थपणाहीं नहींसंभवैगा ॥ काहेतैंअस्तिपदकेतादात्म्यसंबंधवाला जोवस्तुहोवैहै ॥ तावस्तुकूं बुद्धिमान्पुरुष पदार्थकहै हैं ॥ जैसे घटोअस्ति पटोअस्ति यास्थानविषे अस्तिशब्दका घटपटरूपअर्थके साथतादात्म्यसंबंधहै ॥ सोअस्तिशब्दकातादात्म्य अभावकेसाथसंभवैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ लोकविषे तथाशास्त्रविषे जितनेकवृक्षादि कशब्दहैं ॥ तिनोंकाभीसत्यतैंभिन्न अभावरूपअर्थहोवैनहीं ॥ तौअस्तिशब्दका सत्यतैंभिन्न अभावरूपअर्थकिसप्रकारहोवैगा ॥ याका रणतैंभी संपूर्णपदार्थसत्यहैं ॥ शंका ॥ प्रतिसंख्यानिरोध अप्रतिसंख्यानिरोध आकाश यातीनोंकूंनास्तिकअसत्यमानैं हैं ॥ तहाँ बुद्धि पूर्वक पदार्थकेनाशकूंप्रतिसंख्यानिरोधकहैं हैं ॥ और अबुद्धिपूर्वक पदार्थकेनाशकूं अप्रतिसंख्यानिरोधकहैं हैं ॥ औरआवरणकेअभावकूं आकाशकहै हैं ॥ यातै नास्तिकोंकेमतविषे यहतीनोंअभावरूपहोणेतैं जैसे असत्यहैं तैसे अभावरूपहोणेतैं घटादिकसर्वपदार्थों कूंभी असत्यरूपता क्योंनहींहोवै ॥ समाधान ॥ आकाशविषे जोअभावरूपतासिद्धहोवै ॥ तौ आकाशकेदृष्टांतकरिकै ॥ घटा दिकपदार्थोंविषे असत्यरूपता सिद्धहोवै ॥ सो आकाशविषे अभावरूपता संभवै नहीं ॥ काहेतैं आकाशोअस्ति याप्रतीति विषे आकाशशब्दका तथा अस्तिशब्दका आकाशकेसाथ तादात्म्यसंबंध सर्वलोकोंकूं प्रतीतहोवै है ॥ और सत्यपदार्थका अस त्यपदार्थकेसाथ तादात्म्यसंबंध संभवैनहीं ॥ यातैं आकाश असत्यनहीं ॥ किंवा ॥ आकाशकूं जोवंध्यापुत्रकीन्याईं तथानर शृंगकीन्याईं अत्यंतअसत्यमानोगे ॥ तौ जैसे वंध्यापुत्रविषे तथानरशृंगविषे किसीपदार्थकीआधारतानहीं है ॥ तैसे आकाश विषेभी शब्दगुणकीआधारता नहीं होवैगी ॥ और संपूर्णशास्त्रवालेपुरुष शब्दगुणकाआकाशही आधारमानैं हैं ॥ याकारणतैंभी आकाश अभावरूपनहीं ॥ याप्रकार सत्ख्यातिवादी सर्वपदार्थोंकूं सत्यरूपमानै है ॥ और घटविषेस्थित जोपटादिकपदार्थों काअभावहै ॥ ताअभावकूं अधिकरणरूपघटतैं भिन्नमानेनहीं ॥ किंतु ताअभावकूं घटस्वरूपमानैं हैं ॥ याप्रकारका सत्ख्यातिवादी कामत अद्वैतसिद्धांतविषे अनुकूलहै ॥ काहेतैं वेदांतशास्त्रविषे वृद्धपुरुषोंनैं यहकह्याहै ॥ श्लोक ॥ अधिष्ठानावशेषोहि नाशः कल्पि

तवस्तुनः ॥ अर्थयह ॥ कल्पितवस्तुकाजोअभाव है ॥ सो अधिष्ठानतैं भिन्नहोवैनहीं ॥ किंतु अधिष्ठानरूपही होवै है ॥ १ ॥ तहाँ दृष्टांत ॥ जैसे रज्जुरूपअधिष्ठानविषे कल्पितजोसर्प है ॥ ताकल्पितसर्पकाअभाव रज्जुरूपअधिष्ठानतैंभिन्ननहीं किंतु रज्जुरूप है ॥ तैसे नेहनानास्तिकिंचन ॥ अर्थयह ॥ अधिष्ठानआत्माविषे किंचित्मात्रभीद्वैतप्रपंच नहीं है ॥ याश्रुतिनैं अधिष्ठानआत्माविषे बोधनक ऱ्याजो कल्पितप्रपंचकाअभाव ॥ सोअभाव अधिष्ठानआत्मातैंभिन्ननहीं ॥ किंतु अधिष्ठानआत्मारूपहै ॥ इसप्रकार सुषुप्तिअवस्थाविषेस्थित जोसर्वदुःखोंकाअभाव है ॥ सोदुःखाभाव अधिष्ठानपरमात्मातैं भिन्ननहीं किंतु परमात्मारूप है ॥ इतनेग्रंथकरिकै यहअर्थ सिद्धभया ॥ जैसे परमात्मा स्वप्रकाश है तथा आनंदरूप है तथा भेदतैंरहित है ॥ तैसे पूर्वउक्तरीतिसैं यहघटहै यहपटहै इत्यादिकज्ञानभी स्वप्रकाशरूप हैं तथाआनंदरूपहैं तथाभेदतैंरहितहैं ॥ यातैं परमात्माकेसमानलक्षणवालेहोणेतैं तेज्ञान परमात्मातैंभिन्ननहीं ॥ किंतु परमात्मारूपहैं ॥ शंका ॥ पूर्वउक्तरीतिसैं ज्ञानोंविषे यद्यपि सजातीयभेद तथास्वगतभेद संभवैनहीं ॥ तथापि विजातीयघटादिकविषयोंकाभेद संभवै है ॥ समाधान ॥ जहांजहां विषयोंकाभेदहोवै है ॥ तहांतहां ज्ञानोंकाभेदअवश्यहोवैहै ॥ ज्ञानोंकेभेदतैंविना विषयोंकाभेद होवैनहीं ॥ याकारणतैंहीं यह घटहै याएकज्ञानकाविषयजोघट है ॥ ताघटविषे कोईभीशास्त्रवाला भेदअंगीकारकरतानहीं ॥ यातैं ज्ञानोंकेभेदतैंहीविषयकाभेदहोवै है ॥ सोज्ञा नोंकाभेद यद्यपि अविचारकालविषे प्रतीतहोवै है ॥ तथापि विचारकालविषे सोज्ञानोंकाभेद प्रतीतहोवैनहीं ॥ यातैं विषयोंकाभेदभीसंभ वैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ लोकविषे कारणकेभेदतैंहीं कार्यकाभेद देख्या है ॥ जैसे मृत्तिकातंतुरूपकारणकेभेदतैं घटपटरूपकार्यकाभेदहो वै है ॥ और यहां प्रसंगविषे दृष्टिसृष्टिवादकीरीतिसैं ज्ञानरूपदृष्टिहीं घटादिकविषयोंकाकारण है ॥ ता कारणरूपदृष्टिकेअभेदसिद्धहुए घटा दिकविषयरूपकार्यकाभेदसिद्धहोवैनहीं ॥ शंका ॥ ज्ञानोंकेभेदतैंहीं विषयोंकाभेदहोवै है याप्रकारकानियम संभवैनहीं ॥ काहेतैं लोकविषे विशिष्टज्ञानकीएकताहुएभी ताकेविषयोंकाभेदहीदेख्या है ॥ जैसे दशघट हैं याप्रकारका एकविशिष्टज्ञान दशत्वसंख्याविशिष्ट दशघटो कूंविषयकरै है ॥ और यहघट शुक्ल है याप्रकारकाविशिष्टज्ञान शुक्लगुणविशिष्टघटकूं विषयकरै है ॥ और मैत्रकापुत्र चैत्रनामामनुष्य रूप

वान् गमन करे है ॥ याप्रकारका एकहीविशिष्टज्ञान जाति गुण क्रिया संज्ञा संबंध यापंचविशेषणोंकरिकैयुक्तचैत्रव्यक्तिकूं विषयकरै है ॥ तहां मनुष्य इतनीअंशकरिकै मनुष्यत्वजातिकूं विषयकरै है॥और रूपवान् इतनेअंशकरिकै रूपगुणकूंविषयकरै है॥और गमनकरै है इतनें अंशकरिकै गमनरूपक्रियाकूं विषयकरै है॥और चैत्र इतनेंअंशकरिकै चैत्रसंज्ञाकूंविषयकरै है ॥ और मैत्रकापुत्र इतनेंअंशकरिकै जन्यज नकभावसंबंधकूंविषयकरै है ॥ इसतैंआदिलेकेअन्यभीविशिष्टज्ञान अनेकपदार्थोंकूंविषयकरै है ॥ तहांज्ञानकीएकताहुएभी विषयोंकाभेद सर्वलोकोंकूं अनुभवसिद्धहै ॥ यातैं ज्ञानोंकेभेदतैंहीं विषयोंकाभेदहोवै है ॥ याप्रकारका नियम संभवै नहीं ॥ समाधान ॥ हेवादी जोतु मनैं पूर्व विशिष्टज्ञानकह्या ॥ तहांभी ज्ञानोंकेभेदतैंविना विषयोंकाभेदहोवैनहीं॥किंतु ज्ञानोंकेभेदतैंहीं तहां विषयोंकाभेदहोवै है ॥ काहेतैं यहतुमारानियमहै विशेषणज्ञानतैंविना विशेष्यकाज्ञानहोवैनहीं ॥ यातैं विशिष्टज्ञानोंतैंपूर्ववर्त्ति जे विशेषणज्ञानहैं॥तिनोंकेभेदकूंअंगीकार करिकैहीं विषयोंकाभेदहोवै है ॥ यातैं पूर्वउक्तनियमकाभंगहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती ॥ पूर्व तुमने ज्ञानोंकाअभेद सिद्ध कऱ्याहै ॥ और अभी ज्ञानोंकाभेदअंगीकारकरिकै समाधानकऱ्या ॥ यातैं पूर्व उत्तर कथनकाविरोधहोवै है॥समाधान॥ हेवादी ॥ यहघट शुक्ल है इत्यादिकविशिष्टज्ञान जहां होवै है ॥ तहां प्रथम अंतःकरणकीवृत्तियोंकरिकै शुक्लरूपविशेषणकूं तथाघटरूपविशेष्यकूं तथातिनदोनोंके संबंधकूं विषयकरै है ॥ पश्चात् तिनतीनवृत्तियोंविषेआरूढजो फलचैतन्यहै ॥ ताकरिकै घट शुक्लरूप संबंध यातीनोंकूं विषय करै है ॥ तात्पर्ययह ॥ पूर्वजोज्ञानोंकीएकताकही है ॥ सो अंतःकरणकीवृत्तियोंविषे आरूढजोचैतन्यरूपज्ञानहै ॥ ताकेअभिप्रायतैंकही है॥और अभीजोज्ञानोंकाभेदकह्या ॥ सो अंतःकरणकीवृत्तिउपाधिकेभेदतैं कह्याहै ॥ यातैं पूर्वउत्तरग्रंथकाविरोधहोवैनहीं॥ याकहणेकरिकै यहअ र्थसिद्धभया ॥ ज्ञानोंकेभेदकीअपेक्षाकरिकैहीं विषयोंकाभेद सिद्धहोवै है॥ और सोज्ञानोंकाभेद वास्तवतैं है नहीं॥ किंतु अंतःकरणकीवृ त्तिरूपउपाधिकेभेदतैं ज्ञानोंकाभेद अज्ञानकालविषेप्रतीतहोवै है ॥ और जिसकालविषे याअधिकारीपुरुषकूं ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिहोवै है॥ तिसकालविषे सोकल्पितज्ञानोंकाभेद निवृत्तहोइजावै है ॥ ताके निवृत्तहुए विषयोंकाभेदभी स्थितहोवै नहीं ॥ तहांदृष्टांत ॥ जैसे स्वप्न

विषे प्राप्तभयाजोराजापणा ताकाजाग्रविषेनाशहुए ताराजापणेकरिकैनिरूपित जोराज्यसामग्री है सोभी नष्टहोइजावै है ॥तैसे विचारका लविषे ज्ञानोंकेभेदकानिवृत्तहुए ताज्ञानोंकेभेदनिरूपित जो विषयोंकाभेदहै सोभी निवृत्तहोइजावै है॥एकअद्वितीयआत्मा परिशेषतैंरहै है इतनेग्रंथकरिकैज्ञानोंकूंस्वप्रकाशमानिकै अद्वितीयआत्माकीसिद्धिकरी ॥अब ज्ञानोंकूंपरप्रकाश अंगीकारकरिकैभी अद्वितीयआत्माकी सिद्धिकरैं हैं ॥ घटादिकविषयोंकरिकै तथानेत्रादिककरणोंकरिकै भेदवालेजेज्ञानहैं तेज्ञानपरप्रकाशहैं यहद्वितीयपक्षजोअंगीकारकरिये ॥ तौभी जैसे परप्रकाश्यघटादिकपदार्थोंका सूर्यादिकप्रकाशोंकरिकै प्रकाशहोवैहै॥तैसे तिनपरप्रकाश्यज्ञानोंकाभी किसीअन्यप्रकाशकरि कैही प्रकाश अंगीकारकरणाहोवैगा ॥ सो ज्ञानोंकेप्रकाशकरणेहारा स्वयंप्रकाशसाक्षीआत्माहीं है ॥हेशिष्य॥याअभिप्रायकरिकै सोया ज्ञवल्क्यमुनि जनकराजाकेप्रति स्वप्न अवस्थाविषे एकआत्माकूंहीं स्वयंज्योतिकहताभया ॥ काहेतैं स्वप्नअवस्थाविषे सूर्य चंद्रमा अग्नि वाक् यहचारीप्रकारकेज्योति लयभावकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ और आत्मारूपज्योति किसीअवस्थाविषे लयहोतानहीं ॥ किंतु सर्व अवस्थाविषे साक्षीरूपकरिकै क्ष्यिमान है ॥ यातैं स्वप्नअवस्थाविषे आत्मारूपज्योतिकरिकैहीं गमन आगमनादिकसर्व व्यवहारोंकी सिद्धिहोवै है ॥ हेशिष्य ॥ यासंघातका आत्माहीज्योति है॥यावचनकरिकै याज्ञवल्क्यमुनिनैं जनकराजाकेप्रति संघातसैं भिन्न स्वयंज्योतिआत्माकाउप देशकऱ्या ॥ परंतु तायाज्ञवल्क्यमुनिकेअभिप्रायकूं जनकराजानैं जान्यानहीं ॥ किंतु जनकराजानैंयाप्रकार विपरीत अर्थकूंजान्या ॥ आत्मानाम स्वरूपकाहै॥यातैं संघातकाजोस्वरूपहै॥सोई स्वयंज्योतिहै ॥याप्रकारविपरीतअर्थकूं जाणिकरिकै सोजनकराजा पुनःयाज्ञ वल्क्यमुनिकेप्रति प्रश्नकरताभया ॥ राजाजनकउवाच ॥ हेभगवन् ॥ यासंघातविषेवर्तमान जे देह इंद्रिय प्राण अंतःकरण इत्यादिकपदा र्थ हैं॥तिनोंविषे कौनआत्मा है॥तात्पर्ययह॥स्थूलदेह आत्मा है॥अथवा वाकूआदिकइंद्रिय आत्मा है॥अथवा प्राण आत्मा है ॥अथवा अंतःकरण आत्मा है ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेजनक ॥ आत्मा चेतन पुरुष इत्यादिकशब्दोंकरिकै जिसकूं सर्वलोक कथनकरै हैं ॥ तथा तिनशब्दोंकरिकैजन्यवृत्तिज्ञान जिसकूं विषयकरै हैं ॥ और जो तिनशब्दज्ञानोंतैंभिन्न है ॥ ऐसाआत्मा सर्वजीवोंकूंप्रसिद्ध है॥और

जैसे घटादिकपदार्थ दृश्यहोणेतैं आत्मानहीं हैं॥तैसे देह इंद्रिय प्राण अंतःकरण इत्यादिकसंघातभी दृश्यहोणेतैं आत्मानहीं ॥ किंतु सर्व संघाततैंभिन्न तथासर्वसंघातकाअधिष्ठान जोचेतन है॥ सोईहीं स्वयंज्योतिआत्मा है॥ और हेजनक ॥ आत्माकेज्ञानवासतै तूं दूरदृष्टिमत कर ॥ किंतु जिसज्ञानकरिकै तुमनैं यहप्रश्नकऱ्या है॥ताज्ञानविषेहीं आत्माकापरिचय होइसकै है ॥काहेतैं जैसे लोकविषे विवादकेकरणे हारेपुरुषरूपसाक्ष्यतैं साक्षीपुरुष भिन्नहोवै है॥तैसे देहइंद्रिय प्राण अंतःकरण इत्यादिकसंघातरूपसाक्ष्यतैं भिन्नहोइकैजोस्थित है॥ और सर्वसंघातकाजोसाक्षीहै॥सोईहीं तुमारा अद्वितीयआत्मा है॥हेशिष्य॥याप्रकार॥याज्ञवल्क्यमुनिनैं जनकराजाकेप्रति सामान्यतैं संघाततैं भिन्नकरिकै आत्माकाउपदेशकऱ्या ॥ अब संघातकेघटक जेदेहादिकपदार्थ हैं तिनोंतैंभिन्नकरिकै आत्माकानिरूपणकरैं हैं॥तहाँ प्रथम थूस्लशरीरतैंभिन्नकरिकै आत्माकानिरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ जैसे अग्निविषेतपायाहुआ जो लोहेकापिंड है ॥ तालोहपिंडविषे अग्नि तादात्म्यसंबंधकरिकै रहे है॥तैसे विज्ञानरूपजे नानाअंतःकरण हैं ॥ तिनोंविषे यहचेतनआत्मा कल्पिततादात्म्यसंबंधकरिकैस्थित है ॥ और जैसे लोहविषेस्थितहुएअग्निकूं लोकाविषे लोहमय कहै हैं ॥ तैसे विज्ञानरूपअंतः करणविषेस्थितहुएआत्माकूं शास्त्रवेत्तापुरुष विज्ञा नमय कहैं हैं ॥ और हेजनक ॥ जैसे लोहेकापिंड स्वभावतैं किसीपदार्थकादाहकरैनहीं॥ तथा प्रकाशभीकरैनहीं॥ तैसे अंतःकरण तथा अंतःकरणकी स्मृति अनुभवरूपवृत्तियां जड हैं ॥ यातैं स्वभावतैं प्रकाशरूपनहीं ॥ तथा किसीअन्यपदार्थकाप्रकाश करतेनहीं॥और जैसे अग्निकेतादात्म्यसंबंधकूंपाइकै लोहेकापिंड प्रकाशकरै है ॥ तथादाहकरै है॥ तैसे स्वप्रकाशआत्माके तादात्म्यसंबंधकूंपाइकै अंतः करण तथाअंतःकरणकीवृत्तियां प्रकाशमानहोवै हैं॥तथा स्थूलसूक्ष्मरूपसर्वजगतकूं प्रकाशकरै हैं॥इतनैकरिकै अंतःकरणकीवृत्तियोंविषे आत्माकेतादात्म्यअध्यासकाफल निरूपणकऱ्या॥अब आत्माविषेभी ता तादात्म्यअध्यासकेफलकूं निरूपणकरैं हैं॥ हेजनक॥जैसे लोहके पिंडकेसाथ तादात्म्यसंबंधकरिकै लोहमयसंज्ञाकूंप्राप्तहुआअग्नि प्रकाशकूंकरै है तथा दाहकूँकरै है ॥लोहमयसंज्ञातैंविना केवलअग्नि प्रका शमात्रकूंहीकरै है॥ तैसे वृत्तिसहितअंतःकरणकेसाथ तादात्म्यसंबंधकूंप्राप्तहोइकै विज्ञानमयसंज्ञाकूंप्राप्तहुआ यहआत्मा यहघटहै यहपटहै ॥ ३४ ॥

इत्यादिकविशेषज्ञानोंकाआश्रयहोवैहै ॥ अंतःकरणकेतादात्म्यसंबंधतैंविना केवलआत्मा चित्स्वरूपही है ॥ इतनैकरिकै स्थूलशरीरतैं आत्माकाभेददिखाया॥अब वाक्आदिकइंद्रियोंतैं तथाप्राणोंतैं भिन्नकरिकै आत्माकानिरूपण करैंहैं॥हेजनक ॥यहआनंदस्वरूपआत्मा वायुरूपमुख्यप्राणकेसाथ तथाइंद्रियरूपगौणप्राणकेसाथ तादात्म्यअध्यासकूंप्राप्तहोइकै प्राणोंके तथावाक्आदिकेंइंद्रियोंके नानाप्रकार केव्यापारोंकाकारणहोवै है॥याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष आत्माकूं प्राणोंविषेस्थितकहैंहैं॥शंका॥हेभगवन्॥आत्मा सर्वत्रव्यापकविभुहै॥और प्राण परिच्छिन्नहै ॥ तापरिच्छिन्नप्राणविषे विभुआत्माकीस्थिति संभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ जैसे सर्वत्र व्यापकजोआकाशहै॥ ताकूं लोक घटविषेस्थित कहैंहैं ॥ और जैसे सर्वत्रव्यापकजोवायुहै ॥ सो वृक्षकेचलावणेकरिकै अभिव्यक्तहोवै है ॥ याकारणतैं लोक याप्रकारकहैं हैं ॥ यावृक्षविषेवायुस्थितहै ॥ तैसे आत्मा यद्यपि सर्वत्रव्यापकहै ॥तथापि जहाँ प्राणहोवै हैं॥तहाँ आत्माकीविशेषकरिकै अभिव्यक्तिहोवैहै ॥ याकारणतैं शास्त्रवेत्तापुरुष प्राणोंविषेआत्माकीस्थितिकहैं हैं ॥ अब अंतः करणतैं भिन्नकरिकै आत्माकानिरूपण करैं हैं ॥ हेजनक ॥ यहआनंदस्वरूपआत्मा यद्यपि सर्वत्रव्यापकहै ॥ तथापि हृदयकमलविषेस्थितजोबुद्धिहै ॥ ताबुद्धिविषे विशेषक रिकै आत्माकीअभिव्यक्तिहोवैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती आत्माकूं हृदयविषेस्थितकहैहै ॥ अब याहीअर्थकूं सर्वलोकोंकेअनुभवक रिकै स्पष्टकरैंहैं॥हेजनक॥पादतैंलेकेमस्तकपर्यंत सर्वशरीरविषे यहजीवसुखकूंतथादुःखकूं अनुभवकरैहै ॥ तथापि सोसुखदुःखकाअनुभव विशेषकरिकैहृदयदेशविषेहीं प्रतीतहोवैहै ॥ तहाँदृष्टांत ॥ जैसे धूपकरिकैतपायमानहुआपुरुष जभी शीतलगंगाजलविषेप्रवेशकरै है ॥ तभी ताशीतलजलकेस्पर्शकरिकै सर्वअंगोंविषे सुखकाअनुभवकरैहै ॥ परंतु सोसुखकाअनुभव विशेषकरिकै हृदयदेशविषेहीं प्रतीतहो वैहै ॥ अब याहीअर्थकूं दृष्टांतकरिकैस्पष्टकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ जैसे सूर्यकातेज यद्यपि सर्वब्रह्मांडविषे समानहै ॥ तथापि घटादिकअस्व च्छपदार्थोंविषे जोसूर्यकातेजहै॥ताकीअपेक्षाकरिकै स्फटिकादिकमणियोंविषे सूर्यकातेज अधिकहै॥और स्फटिकमणिविषेस्थिततेजकी अपेक्षाकरिकै सूर्यकांतमणिविषेस्थितजो सूर्यकातेजहै सोअधिकहै इसप्रकार उपाधिकी अस्वच्छतातैं तथास्वच्छतातैं एकहीसूर्यकाते

जैसे घटादिकपदार्थ दृश्यहोणेतैं आत्मानहीं हैं॥तैसे देह इंद्रिय प्राण अंतःकरण इत्यादिकसंघातभी दृश्यहोणेतैं आत्मानहीं ॥ किंतु सर्व संघाततैंभिन्न तथासर्वसंघातकाअधिष्ठान जोचेतन है॥ सोईहीं स्वयंज्योतिआत्मा है॥ और हेजनक ॥ आत्माकेज्ञानवासतैं तूं दूरदृष्टिमत कर ॥ किंतु जिसज्ञानकरिकै तुमनैं यहप्रश्नकऱ्या है॥ताज्ञानविषेही आत्माकापरिचय होइसकै है ॥काहेतैं जैसे लोकविषे विवादकेकरणे हारेपुरुषरूपसाक्ष्यतैं साक्षीपुरुष भिन्नहोवै है॥तैसे देहइंद्रिय प्राण अंतःकरण इत्यादिकसंघातरूपसाक्ष्यतैं भिन्नहोइकैजोस्थित है॥ और सर्वसंघातकाजोसाक्षीहै॥सोईही तुमारा अद्वितीयआत्मा है॥हेशिष्य॥याप्रकार॥याज्ञवल्क्यमुनिनैं जनकराजाकेप्रति सामान्यतैं संघाततैं भिन्नकरिकै आत्माकाउपदेशकऱ्या ॥ अब संघातकेघटक जेदेहादिकपदार्थ हैं तिनोंतैंभिन्नकरिकै आत्माकानिरूपणकरैं हैं॥तहाँ प्रथम थूस्लशरीरतैंभिन्नकरिकै आत्माकानिरूपणकरैं हैं॥ हेजनक ॥ जैसे अग्निविषेतपायाहुआ जो लोहेकापिंड है ॥ तालोहपिंडविषे अग्नि तादात्म्यसंबंधकरिकै रहै है॥तैसे विज्ञानरूपजे नानाअंतःकरण हैं ॥ तिनोंविषे यहचेतनआत्मा कल्पिततादात्म्यसंबंधकरिकैस्थित है ॥ और जैसे लोहविषेस्थितहुएअग्निकूं लोकविषे लोहमय कहै हैं ॥ तैसे विज्ञानरूपअंतः करणविषेस्थितहुएआत्माकूं शास्त्रवेत्तापुरुष विज्ञा नमय कहैं हैं ॥ और हेजनक ॥ जैसे लोहेकापिंड स्वभावतैं किसीपदार्थकादाहकरैनहीं॥ तथा प्रकाशभीकरैनहीं॥ तैसे अंतःकरण तथा अंतःकरणकी स्मृति अनुभवरूपवृत्तियां जड हैं ॥ यातैं स्वभावतैं प्रकाशरूपनहीं ॥ तथा किसीअन्यपदार्थकाप्रकाश करतेनहीं॥और जैसे अग्निकेतादात्म्यसंबंधकूंपाइकै लोहेकापिंड प्रकाशकरै है ॥ तथादाहकरै है॥ तैसे स्वप्रकाशआत्माके तादात्म्यसंबंधकूंपाइकै अंतः करण तथाअंतःकरणकीवृत्तियां प्रकाशमानहोवै हैं॥तथा स्थूलसूक्ष्मरूपसर्वजगत्कूं प्रकाशकरै हैं॥इतनैंकरिकै अंतःकरणकीवृत्तियोंविषे आत्माकेतादात्म्यअध्यासकाफल निरूपणकऱ्या॥अब आत्माविषेभी ता तादात्म्यअध्यासकेफलकूं निरूपणकरैं हैं॥ हेजनक॥जैसे लोहके पिंडकेसाथ तादात्म्यसंबंधकरिकै लोहमयसंज्ञाकूंप्राप्तहुआ अग्नि प्रकाशकूंकरै है तथा दाहकूंकरै है ॥लोहमयसंज्ञातैंविना केवलअग्नि प्रका शमात्रकूंहींकरै है॥ तैसे वृत्तिसहितअंतःकरणकेसाथ तादात्म्यसंबंधकूंप्राप्तहोइकै विज्ञानमयसंज्ञाकूंप्राप्तहुआ यहआत्मा यहघटहै यहपटहै

इत्यादिकविशेषज्ञानोंकाआश्रयहोवैहै ॥ अंतःकरणकेतादात्म्यसंबंधतैंविना केवलआत्मा चित्स्वरूपही है ॥ इतनैंकरिकै स्थूलशरीरतैं आत्माकाभेददिखाया॥अब वाक्आदिकइंद्रियोंतैं तथाप्राणोंतैं भिन्नकरिकै आत्माकानिरूपण करैहैं॥हेजनक ॥यहआनंदस्वरूपआत्मा वायुरूपमुख्यप्राणकेसाथ तथाइंद्रियरूपगौणप्राणकेसाथ तादात्म्यअध्यासकूंप्राप्तहोइकै प्राणोंके तथावाक्आदिकेंइंद्रियोंके नानाप्रकार केव्यापारोंकाकारणहोवै है॥याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष आत्माकूं प्राणोंविषेस्थितकहैहैं॥शंका॥हेभगवन्॥आत्मा सर्वत्रव्यापकविभुहै॥और प्राण परिच्छिन्नहै ॥ तापरिच्छिन्नप्राणविषे विभुआत्माकीस्थिति संभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ जैसे सर्वत्र व्यापकजोआकाशहै॥ ताकूं लोक घटविषेस्थित कहैहैं ॥ और जैसे सर्वत्रव्यापकजोवायुहै ॥ सो वृक्षकेचलावणेकरिकै अभिव्यक्तहोवै है ॥ याकारणतैं लोक याप्रकारकहैं हैं ॥ यावृक्षविषेवायुस्थितहै ॥ तैसे आत्मा यद्यपि सर्वत्रव्यापकहै ॥तथापि जहाँ प्राणहोवै हैं॥तहाँ आत्माकीविशेषकरिकै अभिव्यक्तिहोवैहै ॥ याकारणतैं शास्त्रवेत्तापुरुष प्राणोंविषेआत्माकीस्थितिकहैं हैं ॥ अब अंतः करणतैं भिन्नकरिकै आत्माकानिरूपण करै हैं ॥ हेजनक ॥ यहआनंदस्वरूपआत्मा यद्यपि सर्वत्रव्यापकहै ॥ तथापि हृदयकमलविषेस्थितजोबुद्धिहै ॥ तावुद्धिविषे विशेषक रिकै आत्माकीअभिव्यक्तिहोवैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती आत्माकूं हृदयविषेस्थितकहैहै ॥ अब याहीअर्थकूं सर्वलोकोंकेअनुभवक रिकै स्पष्टकरैहैं॥हेजनक॥पादतैंलेकेमस्तकपर्यंत सर्वशरीरविषे यहजीवसुखकूंतथादुःखकूं अनुभवकरैहै ॥ तथापि सोसुखदुःखकाअनुभव विशेषकरिकैहृदयदेशविषेहीं प्रतीतहोवैहै ॥ तहाँदृष्टांत ॥ जैसे धूपकरिकैतपायमानहुआपुरुष जभी शीतलगंगाजलविषेप्रवेशकरै है ॥ तभी ताशीतलजलकेस्पर्शकरिकै सर्वअंगोंविषे सुखकाअनुभवकरैहै ॥ परंतु सोसुखकाअनुभव विशेषकरिकै हृदयदेशविषेहीं प्रतीतहो वैहै ॥ अब याहीअर्थकूं दृष्टांतकरिकैस्पष्टकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ जैसे सूर्यकातेज यद्यपि सर्वब्रह्मांडविषे समानहै ॥ तथापि घटादिकअस्व च्छपदार्थोंविषे जोसूर्यकातेजहै॥ताकीअपेक्षाकरिकै स्फटिकादिकमणियोंविषे सूर्यकातेज अधिकहै॥और स्फटिकमणिविषेस्थिततेजकी अपेक्षाकरिकै सूर्यकांतमणिविषेस्थितजो सूर्यकातेजहै सोअधिकहै इसप्रकार उपाधिकी अस्वच्छतातैं तथास्वच्छतातैं एकहीसूर्यकाते

जन्यूनअधिकभावकूंप्राप्तहोवैहै॥तैसे यहआनंदस्वरूपआत्मा यद्यपि सर्वत्रसमानव्यापकहै॥तथापि घटादिकोंविषे जोआत्माकाप्रकाशहै ॥ तिसकीअपेक्षाकरिकै शरीरविषे अधिकहै ॥ और शरीरविषेजोआत्माकाप्रकाशहै॥तिसकीअपेक्षाकरिकै हृदयविषे आत्माकाप्रकाशअधिकहै इसप्रकार उपाधिकीअस्वच्छतातैं तथास्वच्छतातैं एकहीआत्माकाप्रकाश न्यूनअधिकभावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तहाँ जैसे सूर्यकाप्रकाश घटादिकपदार्थोंविषे विद्यमानहुआभी स्पष्टरूपकरिकै प्रतीतहोवैनहीं ॥ तैसे शरीरतैंबाहर घटादिकपदार्थोंविषे विद्यमानहुआभी आत्मा स्पष्टरूपकरिकैप्रतीतहोवैनहीं॥और जैसे सूर्यकाप्रकाश यद्यपि स्फटिकादिकमणियोंविषे प्रतिबिंबरूपकरिकै स्पष्टप्रतीतहोवैहै॥ तथापि सोसूर्यकाप्रकाश दाहरूपकार्यकूं करैनहीं ॥ तैसे शरीरविषे सामान्यतैं सुखदुःखकेज्ञानहुएभी विशेषतैं सुखदुःखकाज्ञानहोवै नहीं॥और जैसे सूर्यकांतमणिविषे सूर्यका स्पष्टरूपकरिकैप्रकाश तथादाहरूपकार्य दोनोंप्रतीतहोवैं हैं॥तैसे हृदयदेशविषे सुखदुःख तथा तिनोंकाविशेषकरिकैअनुभव यहदोनोंप्रतीतहोवैं हैं॥याकारणतैं श्रुतिभगवती हृदयविषेआत्माकीस्थिति कथनकरैहै॥अथवा॥वाक्आदि कसर्वइंद्रियोंका तथा जगत्रूपचित्रकूंधारणकरणेहारेअंतःकरणका हृदयकमलहीआधारहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती आत्माकूंहृदयविषे स्थितकहैहै॥तात्पर्ययह॥अंतःकरणरूपउपाधिद्वारा आत्माका हृदयआधारहैअथवायहआनंदस्वरूपआत्माअंतःकरणादिकसर्वउपाधियों तैंरहितहोइकै हृदयविषे सुषुप्तिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती आत्माकूंहृदयविषेस्थितकहैहै ॥ अथवा॥अष्टांगयोगकरिकैयुक्त तथा ब्रह्मचर्यादिकसाधनोंकरिकैयुक्त जेमुमुक्षुजनहैं ॥ तिनोंनैं गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं यहआनंदस्वरूपआत्मा हृदयविषेहींजाणीता है ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती आत्माकूं हृदयदेशविषेस्थितकहैहै ॥ अथवा ॥ मरणकालविषे ब्रह्मलोककूं तथापितृलोककूं तथा कीटपतंगादिकयोनियोंकूं प्राप्तहोणेकीइच्छावानजोजीवहै॥तिसकूँ तितितिसलोककेप्राप्तिकामार्गरूपजोनाडियाँहैं तिनोंकाप्रकाश सविज्ञानहृदयतैंहीं होवैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती आत्माकूं हृदयविषे स्थितकहैहै ॥ याकहणतैं यहअर्थसिद्धभया ॥ जैसे सूर्यकाप्रकाश यद्यपि सर्वत्रविद्यमानहै ॥ तथापि सूर्यमंडलविषे ताप्रकाशकीविशेषकरिकै प्रतीतिहोवैहै ॥ याकारणतैं सर्वलोक सूर्यमंडलविषे प्रकाश स्थित है

याप्रकारकाकथनकरै है ॥ तैसे यह आनंदस्वरूपआत्मायद्यपिसर्वत्र व्यापकहै ॥ तथापि हृदयदेशविषे आत्माकी विशेषकरिकैअभिव्यक्तिहोवै है॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती आत्माकूं हृदयविषेस्थितकहै है॥ अब चैतन्यरूपताकीसिद्धिवासतै आत्माकूं ज्योतिरूपकरिकै वर्णनकरै हैं॥हेजनक॥जैसे बाह्यघटादिकपदार्थोंके प्रकाशकरणेहारे जेतेजरूपसूर्यादिकहैं॥ते सूर्यादिक ज्योतिरूपकरिकै सर्वलोकोंकूं प्रसिद्धहैं॥और सूर्यादिकप्रकाशोंतैं भिन्न जेघटादिकपदार्थ हैं॥तेघटादिकपदार्थ अज्योतिरूपकरिकै सर्वलोकोंकूं प्रसिद्धहैं ॥तैसे यहआनंदस्वरूपआत्मा सूर्यादिकज्योतियोंकूं तथाघटादिकअज्योतियोंकूं प्रकाशकरै है ॥तथा चैतन्यरूपकरिकै तिनोंतैंविलक्षणहै॥याकारणतैं श्रुतिभगवती याआनंदस्वरूपआत्माकूं ज्योतिकहैहै॥और हेजनक॥शरीरतैंबाह्यवर्त्तमान जेसूर्यादिकज्योतिहैं तेसूर्यादिकज्योति आपणेतैंभिन्नसत्तावालेजे घटपटादिकपदार्थ हैं तिनोंकूं प्रकाशकरैं हैं॥ तिसप्रकार आत्मारूपज्योति जगत्कूं प्रकाशकरैनहीं॥ किंतु आपणेतैंअभिन्न सत्तावाले जेघटादिकपदार्थ हैं ॥ तिनोंकूं यहआत्मारूपज्योति प्रकाशकरै है॥तात्पर्ययह ॥ जैसे रज्जुविषेकल्पित सर्पदंडादिक रज्जुरूप अधिष्ठानतैं भिन्नसत्तावालेनहीं ॥ तैसे आत्माविषे कल्पितजगत्भी अधिष्ठानआत्माकीसत्तातैंभिन्नसत्तावालानहीं ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती याआनंदस्वरूपआत्माकूं अंतरज्योतिकहै है॥अथवा ॥ दूसरेप्रकाशकी न अपेक्षाकरिकै जोप्रकाश आपणेकूं तथाअन्यपदार्थोंकूं प्रकाशकरै है ॥ ताकूं अंतरज्योतिकहैं हैं ॥ ऐसाअंतरज्योतिपणा आत्माविषेहींसंभवै है ॥ सूर्यादिकबाह्य ज्योतियोंविषे संभवैनहीं ॥ काहेत सूर्यादिकज्योति यद्यपि घटादिकपदार्थोंकेप्रकाशविषे दूसरेकिसीज्योतिकीअपेक्षाकरैनहीं ॥ तथापि आपणेप्रकाशविषे तेसूर्यादिकजडज्योति चैतन्यआत्माकीअपेक्षाकरै है ॥ यातैं तिनसूर्यादिकोंविषे अंतरज्योतिपणा संभवैनहीं ॥ और हेजनक ॥ जैसे परीक्षाकरणेवासतैं दुग्धविषेपाईहुई मरकतमणि आपणेप्रकाशकरिकै सर्वदुग्धकूं पूर्णकरै है ॥ तैसे यहज्योतिरूपआत्माभी आपणेप्रकाशकरिकै सर्वजगत्कूं पूर्णकरैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती यास्वयंज्योतिआत्माकूं पुरुषकहै है ॥ अथवा जैसे पक्षी आपणेगृहविषे शयनकरै है ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्मा स्थावरजंगमशरीरोंकूं पुरीरूपमानिकै तिनशरीररूपपुरियोंविषे तादात्म्यअध्यासकरिकै स्थितिरूपशयनकूं

करै है ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती याआनंदस्वरूपआत्माकूं पुरुषकहैहै अब अंतःकरणादिकउपाधियोंकेसाथ तादात्म्यअध्यासकरिकै याआत्मापुरुषविषे जन्ममरणादिकविकारोंकूंनिरूपणकरैहैं॥ हेजनक जैसे ॥ जाग्रत्अवस्थाकूं तथा स्वप्नअवस्थाकूं प्राप्तहोयकै यहआत्मापुरुष सुखकूं तथादुःखकूं प्राप्तहो है॥तैसे इसजन्मकूं तथाजन्मांतरकूं प्राप्तहोइकै यहआत्मापुरुष सुखकूं तथा दुःखकूं प्राप्तहोवै है॥ और जैसे रज्जुकरिकैबांध्याहुआघटीयंत्र नीचेऊपरभ्रमणकरै है ॥ तैसे कर्मरूपीरज्जुकरिकै बांध्याहुआयहपुरुष कभीजन्मकूंप्राप्त होवै है ॥ और कभी मरणकूंप्राप्तहोवै है॥ याप्रकार अनेकशरीरोंकाग्रहणकरताहुआ तथाअनेकशरीरोंकापरित्यागकरताहुआ यहपुरुष निरंतर संसारविषेभ्रमणकरै है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ यहआनंदस्वरूपआत्मा सर्वत्रपरिपूर्णहै ॥ यातैं ताका लोकांतरविषे गमन आगमन संभवैनहीं॥और यहआनंदस्वरूपआत्मा कर्तृत्व भोक्तृत्वतैं आदिलेके सर्वविकारोंतैंरहित है॥यातैं आत्माविषे पुण्यपापकासंबंधभी संभवैनहीं॥समाधान॥ हेजनक॥यहआनंदस्वरूपआत्मा यद्यपि वास्तवतैं जन्मादिकसर्वविकारोंतैंरहितहै ॥ तथापि आपणेस्वरूपकेअज्ञानतैंअंतःकरणादिकोंकेसाथ तादात्म्यअध्यासकूं प्राप्तहोइकै यहआत्मा पुण्यपापरूपकर्मोंकूंकरै है ॥ तथा तापुण्यपारूपकर्मके सुखदुःखरूपफलकेभोगवासतैं लोकांतर विषे गमनआगमनकरै है ॥ यातैं अंतःकरणरूपउपाधिकेसंबंधतैंहीं आत्माविषेकर्तृत्व भोक्तृत्वादिकविकार प्रतीतहोवै हैं वास्तवतैंनहीं ॥ तहाँदृष्टांत ॥ जैसे वास्तवतैं उष्णस्पर्शतैंरहितजोआकाशहै ॥ सो उष्णजलकरिकै युक्तहुआ अथवा उष्णजलकेऊपरकेदेशकरिकैयुक्तहुआ उष्णकीन्याईं प्रतीतहोवै है॥ तैसे वास्तवतैं कर्तृत्वभोक्तृत्वादिकविकारोंतैंरहित यहआनंदस्वरूपआत्मा कर्त्ताभोक्ताअंतःकरणकेसाथ तादात्म्यअध्यासकूंप्राप्तहोइके कर्तृत्वभोक्तृत्वादिकविकारोंकूंप्राप्तहोवै है॥और हेजनक ॥ जैसे स्त्रीकेअधीनजोकामीपुरुष है॥सो स्त्रीकेसुखीहुए सुखीहोवै है॥और स्त्रीकेदुःखीहुए दुःखीहोवै है ॥ तैसे बुद्धिकेसाथ तादात्म्य अध्यासकूंप्राप्तहुआ यहआत्मादेवभी बुद्धिकेअनुसारहीं प्रतीतहोवै ॥ तहाँ जोबुद्धि किसीपदार्थकाध्यानकरै है॥तौ आत्माभी ध्यानकर ताकीन्याईं प्रतीतहोवै है ॥ और बुद्धिकेचलायमानहुए आत्माभी चलायमानकीन्याईं प्रतीतहोवै है॥ इसप्रकार अंतःकरणकेतादात्म्य

अध्यासतैं अनेकप्रकारकेविकारोंकूं यहआनंदस्वरूपआत्मा प्राप्तहोवैहै ॥ इतनेग्रंथकारिकै बुद्धिकेसाथ जोआत्माका तादात्म्यअध्यास है ताकेविषे अनर्थकीकारणतादिखाई ॥ अब स्थूलशरीरकेसाथ जोआत्माका तादात्म्यअध्यासहै ताकेविषे अन्वयव्यतिरेककरिकै अनर्थकी कारणताकूं निरूपणकरैं हैं ॥ तहाँ प्रथम व्यतिरेककूं निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ यहआनंदस्वरूपआत्मा बुद्धिकेसाथतादात्म्यअध्यासकूं प्राप्तहोइकैस्वप्नअवस्थाविषे तैजससंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तहां स्वप्नविषे आपणीमायाशक्तिकरिकै उत्पन्नकरेजेनानाप्रकारकेपदार्थ तिनोंकूं देखैहै ॥ ऐसीस्वप्नअवस्थाकूंप्राप्तहोइकै यहआत्मादेव सुखैनहीं जाग्रत्लोककूं उल्लंघनकरैहैं ॥ कैसाहैसोजाग्रत्लोक ॥ स्थूलशरीरहैप्रधान जिसविषे ॥ तथाग्रहरूपजेवाक्आदिकइंद्रियहैं तथाअतिग्रहरूपजेशब्दादिकविषयहैं तिनोंकरिकैयुक्तहै ॥ तथाअविद्या काम कर्मरूपजो मृत्युहै ताकाकार्यहै ॥ तथा जलकेबुदबुदकीन्याईं शीघ्रहीनाशवान्है ॥ तथानानाप्रकारकेदुःखोंकाकारणहै ॥ तथानानाप्रकारकीव्याधियों कारिकैयुक्तहै ॥ याप्रकारकेजाग्रत्लोककूं यहपुरुष स्वप्नअवस्थाकूंप्राप्तहोइकै सुखैनहींपरित्यागकरै है ॥ तहां दृष्टांत ॥ जैसे महाराजा नौकारूपसाधनकरिकै सुखैनहीं अगाधनदीकूंउल्लंघनकरैहै ॥ तैसे यहपुरुष स्वप्नअवस्थाकूंप्राप्तहोणेहारी बुद्धिरूपनौकाकरिकै सुखैनहीं जाग्रत्लोकरूपीनदीका उल्लंघनकरैहै ॥ इतनेंकरिकै स्वप्नअवस्थाविषे स्थूलशरीरकेअध्यासके अभावहुए स्थूलशरीरके अध्यासजन्य दुःखोंकाअभावरूप व्यतिरेकदिखाया ॥ अबजाग्रत्अवस्थाविषे स्थूलशरीरके तादात्म्यअध्यासकेविद्यमानहुए नानाप्रकारकेदुःखोंकी विद्यमानतारूपअन्वयकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक जैसे माताकेउदरतैं बालकबाहरनिकसैहै ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषे सुखदुःखरूपफलकूंदेणे हारे जेपुण्यपापरूपकर्महैं ॥ तिनोंकेक्षयहुएतैंअनंतर जाग्रत्अवस्थाविषे सुखदुःखरूपफलकूंदेणेहारे जेपुण्यपापरूपकर्महैं ॥ तिनोंकरिकै जगायाहुआ यहपुरुष जाग्रत्अवस्थाकूंप्राप्तहोइकै जभीस्थूलशरीराविषे अहंअभिमानकरैहै ॥ तभी यहपुरुष नानाप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्त होवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् जाग्रत्अवस्थाविषे स्थूलशरीरकेअभिमानतैं यहपुरुष कौनकौनदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ जाग्रत्अवस्थाविषे यास्थूलशरीरकेअभिमानतैं जीवोंकूं जेदुःखहोवैहैं ॥ तेदुःख सर्वजीवोंकूंप्रत्यक्षसिद्धहैं ॥ यातैं तिनोंकेनिरूपणकरणे

विषे कुछप्रयोजननहीं ॥ हेजनक ॥ यहआनंदस्वरूपआत्मा जबपर्यंत स्थूलशरीरकेअभिमानकूं नहींपरित्यागकरता ॥ तबपर्यंत तास्थूलशरीरकेअभिमानकारिकै अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवै है॥ और हेजनक ॥ जैसे स्थूलशरीरकेअभिमानकूं परित्यागकारिकै स्वप्नअवस्थाकूंप्राप्तहुआ यहपुरुष स्थूलशरीरकेअभिमानजन्यदुःखोंकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे मरणकालविषे यास्थूलशरीरकेअभिमानकापरित्यागकारिकै जभी यहपुरुष लोकांतरविषेजावैहै ॥ तभीयास्थूलशरीरकेअभिमानजन्य नानाप्रकारकेदुःखोंकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ अब याहीअर्थकूं दृष्टांतकारिकै स्पष्टकरैहैं ॥ हेजनक ॥ जैसे दुर्भिक्षादिकउपद्रवोंकरिकैयुक्तजोदेशहै ॥ तादेशविषे मोहकरिकै जोपुरुष निवासकरै है ॥ सोपुरुष तादेशविषे नानाप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे यास्थूलशरीरविषे अहंममअभिमानकरिकै स्थितहुआ यहआत्मादेव नानाप्रकारके दुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक ॥ जैसे दुर्भिक्षादिकउपद्रवोंकरिकै युक्तजोदेशहै ॥ ताकापरित्यागकरिकै जभी सोपुरुष अन्य किसीदेशविषे चलाजावैहै ॥ तभीसोपुरुष तादेशजन्यदुःखोंकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे मरणकालविषे यास्थूलशरीरका परित्यागकरिकै जभीयहआत्मादेव परलोककूंजावैहै ॥ तभी तास्थूलशरीरकेअभिमानजन्य नानाप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवैनहीं इतनेग्रंथकरिकै अन्वय व्यतिरेकतैं स्थूलशरीरकेअभिमानविषे अनर्थकीकारणताादिखाई ॥ अब परलोककूं नहींमाननेहारेजेनास्तिकहैं ॥ तिनोंकेखंडनकरणेवासतै परलोककीसिद्धिकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ वास्तवतैं जन्ममरणादिकविकारोंतैंरहित जोयहपरमात्मादेवहै॥ सो अनिर्वचनीयअविद्याकेसंबंधतैं जीवभावकूं प्राप्तहोवै है ॥ और नानाप्रकारके पुण्यपापरूपकर्मोंकूंकरै है॥ तापुण्यपापरूपकर्मोंकेवशतैं नानाप्रकारकेशरीरोंकूं ग्रहण करै है॥तथा नानाप्रकारकेशरीरोंका परित्यागकरै है॥याप्रकार सर्वदासंसारविषे विचरणेहारे याआत्मादेवके दोस्थान अनुगतहैं॥ एकतौ यहलोक और दूसरापरलोक तहां प्रत्यक्षप्रमाणकरिकैसिद्ध जोयहस्थूलशरीरहै ताकूं यहलोककहैं हैं ॥ और यास्थूलशरीरकेत्यागतैं अनंतर आगेहोणेहारेजेशरीरहैं ताकूंपरलोककहैहैं॥यहदोनोंलोक आत्माकेविचरणेके स्थानहैं॥अब स्वप्नकेप्रत्यक्षप्रमाणकरिकै परलोककीसिद्धिकरणेवासतै प्रथम स्वप्नअवस्था विषे दोनोंलोकोंकीसंधिरूपताकूं निरूपणकरैहैं॥हेजनक॥जैसे यहलोक तथा परलोक जीवके सुखदुःखके

भोगकास्थानहैं॥तैसे स्वप्नअवस्थाभी जीवके सुखदुःखकेभोगकास्थानहै॥याअभिप्रायतैं केईकविवेकीपुरुष स्वप्नकूं तृतीयस्थान मानैं है॥ और जेअत्यंतसूक्ष्मदर्शीपुरुषहैं॥ते स्वप्नकूं तृतीयस्थानमाननेनहीं॥किंतु यहलोक तथा परलोक यहदोनोंस्थानमानैं हैं।और स्वप्नदोनोंलोकोंकीसंधिविषेउत्पन्नहोवै है याकारणतैं स्वप्नकूं सांध्य मानैं हैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे दोनोंग्रामोंकीजोसंधिहै ॥ तासंधिकूं कोईपुरुष तीसरा ग्राम कहैनहीं ॥ तैसे दोनोंलोकोंकीसंधिविषेस्थित जोस्वप्नहै ॥ सोतीसरास्थान होइसकैनहीं ॥शंका॥ हेभगवन्॥ जोस्वप्न तीसरास्थान नहीं है॥तौइसलोकविषेतथापरलोकविषे स्वप्नकाअंतरभाव मान्याचाहिये॥स्वप्नकूं सांध्यरूपता किसवासतैं अंगीकारकरतेहो॥समाधान॥ हेजनक॥दोनोंलोकोंविषे स्वप्नकाअंतरभाव होइसकैनहीं॥याकारणतैं स्वप्नकूं सांध्यमानैं हैं॥तहाँ शुक्रशोणितकरिकैउत्पत्तिहैजिसकी ऐसा जोस्थूलशरीररूप यहलोकहै॥ताकोविषेभी स्वप्नकाअंतरभाव होइसकैनहीं॥काहेतैं जभी यहजीव स्वप्नअवस्थाकूंप्राप्तहोवै है॥तभी जाग्रत् कीन्याईं यास्थूलशरीरकाअभिमानता जीवकूंहोवैनहीं॥याकारणतैंहीं मृतकशरीरकीन्याईं भूमिविषेपडेहुएयास्थूलशरीरकूंस्वप्नद्रष्टापुरुष देखतानहीं ॥ जोइसलोकविषे स्वप्नकाअंतरभावहोता॥तौ जैसे जाग्रत्अवस्थाविषे याजीवकूं स्थूलशरीरकाअभिमानहोवैहै॥तैसेस्वप्नअवस्थाविषे यास्थूलशरीरकाअभिमानहोणाचाहिये॥ और स्वप्नअवस्थाविषे या स्थूलशरीरकाअभिमानहोतानहीं ॥ यातैं इसलोकविषेभी स्वप्नकाअंतरभाव होइसकैनहीं ॥ याप्रकार परलोकविषेभी स्वप्नकाअंतरभाव होइसकैनहीं ॥ काहेतैं जैसे मरणतैंअनंतरयहजीव स्थूलशरीरकेदाहादिकोंकरिकै दुःखकूं नहींप्राप्तहोवै है॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषेहैनहीं किन्तुस्वप्नअवस्थाविषे यास्थूलशरीरकेदाहादिकोंकरिकैजीवकूंदुःखहोवैहै॥तथा श्वासोंकरिकैयुक्तहोवै है॥यातैं यहजान्याजावैहै॥जैसे मरणतैंअनंतरयास्थूलशरीरकेअभिमानकीअत्यंतनिवृत्तिहोवै है॥ तैसेस्वप्नअवस्थाविषे यास्थूलशरीरकेअभिमानकी अत्यंतनिवृत्तिहोवैनहीं॥जोस्वप्नकापरलोकविषे अंतरभाव अंगीकारकरिये ॥ तौ स्वप्नविषे यास्थूलशरीरकेदाहादिकोंतैं जीवकूं पीडानहींहोणीचाहिये ॥ तथाश्वासोंकाभी अभावहोणाचाहिये ॥ यातैं परलोकविषेभी स्वप्नकाअंतरभाव होइसकैनहीं ॥ याकहणत यहसिद्धभया ॥ स्थूलशरीरकेअभिमानकूं न परित्यागकरणा ॥ यह इसलोककालक्षणहै ॥ सोभी

स्वप्नविषेघटे है॥और स्थूलशरीरके अहंममअभिमानका परित्यागकरणा यह परलोककालक्षण है ॥ सोभी स्वप्नविषे घटे है ॥ यातैं दोनोंलोकोंकेसंधिविषे स्वप्न उत्पन्नहोवै है ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती स्वप्नकूंसांध्यकहै है॥अब याहीअर्थकूं दृष्टांतकरिकैस्पष्टकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ जैसे मेघादिकोंतैंरहित निर्मलआकाशविषे तारागणका न दर्शनहोणा यह दिनकालक्षणहै ॥ और निर्मलआकाशविषे सूर्य मंडलका न दर्शनहोणा यह रात्रिकालक्षणहै ॥ यहदोनोंप्रकारकेलक्षण सायंकालविषेघटैं हैं ॥ याकारणतैं सायंकालकूं बुद्धिमान्पुरुष रात्रि दिन यादोनोंकीसंधिकहैं हैं ॥ तिस संधिविषेजोपदार्थ उत्पन्नहोवै है ताकूं सांध्यकहैं हैं ॥ तैसे स्वप्नभी इस लोकके तथापरलोकके संधिविषे उत्पन्नहोवै है॥याकारणतैं श्रुतिभगवती स्वप्नकूं सांध्यकहै है ॥ इतनैंकरिकै स्वप्नविषेसांध्यपणा निरूपणकऱ्या ॥ अब स्वप्नके प्रत्यक्षकारिकै परलोककीसिद्धिकरैं हैं ॥ हेजनक॥ तिसस्वप्नरूपसांध्यस्थानविषेस्थितहुआ यहआत्मादेव इसलोककूं तथापरलोककूं देखै है ॥ तात्पर्ययह ॥ इसशरीरकरिकै जेजेपदार्थ अनुभवकरैं हैं ॥ तथा पूर्वशरीरोंकरिकै जेजेपदार्थ अनुभवकरैं हैं ॥ तथा भावीशरीरोंकरिकै जेजेपदार्थ आगेअनुभवकरणेहैं ॥ तिनसंपूर्णपदार्थोंकूं यहजीव स्वप्नविषेदेखेहै तहाँदृष्टांत ॥ जैसे गृहका तथागृहकेबाहरअंगणका संधिरूपजोद्वारहै ॥ ताद्वाररूपसंधिविषेस्थितहुआ यहपुरुष गृहकेपदार्थोंकूं तथाबाहरअंगणकेपदार्थोंकूं देखै है ॥ तैसे यह आत्मादेव स्वप्नरूपसंधिविषेस्थितहोइकै इसलोककेपदार्थोंकूं तथा परलोकके पदार्थोंकूं देखै है ॥ और हेजनक ॥ यास्थूलशरीरकेत्यागतैंअनंतर पुण्यपापरूपकर्मके अनुसार यहजीव जिसप्रकारकेउत्कृष्टशरीरकूं अथवा निकृष्टशरीरकूं प्राप्तहोवैगा ॥ तिसीप्रकारकेशरीरकूं स्वप्नविषेग्रहणकरिकै यहजीवात्मा पुण्यपापकर्मकेप्रभावतैं सुखकूंप्राप्तहोवै है ॥ और पापकर्मकेप्रभावतैं दुःखकूंप्राप्तहोवै है॥इसप्रकार स्वप्नअवस्थाविषे पुण्यपापकेवशतैं सुखदुःखरूपफलकूंभोगताहुआ यहआत्मादेव इसलोककूं तथापरलोककूं दोनोंकूंदेखै है ॥ यातैं स्वप्नद्रष्टापुरुषका प्रत्यक्ष परलोकविषे प्रमाण है ॥ तथा अन्यभी श्रुति स्मृति इतिहास पुराण आदिक परलोकविषेप्रमाण हैं इतनै करिकै परलोककी सिद्धिकरी ॥ अब स्वप्नअवस्थाविषे आत्माकीस्वयंप्रकाशरूपता सिद्धकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ जभी यहआनंदस्वरूपआत्मा यास्थूलशरीर

रूपलोकका परित्यागकरिकै दोनोंलोकोंकेदर्शनवासतै स्वप्नरूपसांध्यस्थानकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभी स्थूलशरीरकेसंबंधी नेत्रादिक इंद्रियां हैं तथारूपादिकजेविषय हैं ॥ तिनोंकेसूक्ष्मवासनावोंकूं तथातिनवासनावोंकाआधारजोमनहै तिसकूं साथलैकेही यहआत्मादेव स्वप्नअवस्थाकूं प्राप्तहोवै है ॥ तहाँ दृष्टांत ॥ जैसे महाराजा आपणेअनुचरोंकूंसाथलैकेही जावै है ॥ तैसे यहआनंदस्वरूप आत्मा विषयइंद्रियोंकेवासनायुक्तमनकूं साथलेकेहीं स्वप्नकूंप्राप्तहोवै है ॥ और हेजनक ॥ जैसे रेतिविषेक्रीडाकरताहुआबालक ताक्रीडाकेसाधन जेनानाप्रकारकेगृहादिकपदार्थ हैं ॥ ते पदार्थ तारेतिकेहीरचै है ॥ और क्षणपीछे सो बालक तिनसर्व रेतिमय पदार्थोंकूं नाशकरैं हैं ॥ इसप्रकार गृहादिकपदार्थोंकूं उत्पन्नकरिकै तथातिनोंकानाशकरिकै निरंतर सोबालक क्रीडाकरै है ॥ तैसे यह आनंदस्वरूपआत्माभी स्वप्नअवस्थाविषे नानाप्रकारकेरथादिकपदार्थोंकूंउत्पन्नकरिकैतथा तिनपदार्थोंकानाशकरिकै निरंतर क्रीडाकरै है ॥ और हेजनक॥तास्वप्नअवस्थाविषे स्वप्नकाशज्ञानरूपआत्मातैंविना दूसराकोई सूर्यादिकज्योतिहैनहीं॥याकारणतैं स्वप्नअवस्थाविषे आत्मास्वयंज्योतिहै तात्पर्ययह ॥ जैसे स्वयंदासास्तपस्विनः ॥ अर्थयह ॥ तपस्वीपुरुष आपहीदास हैं ॥ याप्रकारकेवचनतैं तपस्वीपुरुषों तैंभिन्न दूसरेदासकाअभाव जान्याजावै है ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषे आत्मा स्वयंज्योतिहै ॥ याप्रकारकेवचनतैंभी आत्मातैंभिन्न दूसरेज्योतिकाअभाव जान्याजावै है ॥ यातैं स्वप्नअवस्थाविषे आत्माहीं स्वयंज्योतिहै ॥शंका॥हे भगवन्॥ स्वप्नअवस्थाविषे आदित्यादिकज्योतियोंकालयहोवै है ॥ यातैं आदित्यादिकोंकूं यद्यपि ज्योतिरूपता संभवैनहीं॥तथापि मनका स्वप्नअवस्थाविषेलयहोवैनहीं॥यातैं स्वप्नअवस्थाविषे मनकूं ज्योतिरूपता किसवासतैनहींहोवै ॥समाधान॥ हेजनक जैसे बालककेक्रीडाकेसाधन जेगृहादिकपदार्थ हैं ॥तिनोंकाउपादानकारण मृत्तिकाजडहै तैसे स्वप्नद्रष्टापुरुषके क्रीडाकेसाधनजेस्वप्नकेपदार्थ हैं ॥ तिनोंकाउपादानकारणमनभी जड है ॥ और जैसे क्रीडाकेसाधनगृहादिकपदार्थोंका परिणामीउपादानकारण जोमृत्तिकाहै ॥ तिसकूं सोबालक पूर्वदेखे है ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषे रथादिकपदार्थोंका परिणामीउपादानकारणजोमनहै ॥ तिसमनकूं यहस्वप्नकाशसाक्षीआत्मा देखे है ॥तात्पर्ययह॥ जैसे मृत्तिका गृहादिकपदा

थोंका परिणामीउपादानकारणहोणेतैं जडहै ॥ तैसे मनभी स्वप्नपदार्थोंका परिणामीउपादानकारणहोणेतैं जडहै ॥ और जोपदार्थ जड होवै है ॥ सोपदार्थ मृत्तिकाकीन्याईं स्वयंप्रकाशहोवैनहीं ॥ किंतु परप्रकाशहोवै है॥यातैं स्वप्नअवस्थाविषे जडमनकूं ज्योतिपणा संभवै नहीं ॥ शंका ॥हेभगवन्॥ स्वप्नअवस्थाविषे मनकूंज्योतिरूपता मतहोवै॥तथापि स्वप्नअवस्थाविषे अविद्याकूं ज्योतिरूपता किसवासतै नहींहोवै समाधान ॥ हेजनक ॥ जैसे स्वप्नअवस्थाविषे साक्षीआत्माकरिकै प्रकाश्यहोणेतैं जडमन स्वयंज्योतिरूपनहीं है ॥ तैसे साक्षी आत्माकरिकै प्रकाश्यहोणेतैं तथाआवरणरूपहोणेतैं जडअविद्याभी स्वयंज्योतिरूपनहीं ॥किंवा॥ जोवादीआवरणरूपअविद्याकूं स्वयं ज्योतिरूपता अंगीकारकरै ॥ तौ आवरणरूपअंधकारकूंभीस्वयंज्योतिरूपता अंगीकारकरीचाहिये ॥ यातैं स्वप्नअवस्थाविषे अविद्याभी स्वयंज्योतिरूपनहीं ॥ और जाग्रत्अवस्थाविषे प्रकाशकरूपकरिकैप्रसिद्ध जेनेत्रादिकइंद्रियहैं ॥ तेइंद्रियभी स्वप्नअवस्थाविषेहैंनहीं ॥ तथा आदित्य चंद्रमा अग्नि वाक् यहचारिप्रकारकेज्योतिभी स्वप्नअवस्थाविषे हैं नहीं॥यातैं परिशेषतैं आत्मारूपज्योतिकरिकैही स्वप्नके पदार्थोंकाप्रकाशहोवै है ॥ याअभिप्रायकरिकेही श्रुतिभगवतीनैं स्वप्नअवस्थाविषे आत्माकूंहीं स्वयंज्योतिरूप कह्याहै॥अब याहीअर्थके स्पष्टकरणेवासतै सर्वलोकोंकेअनुभवकरिकै मनविषे दृश्यपणानिरूपणकरै हैं ॥हेजनक॥ जाग्रत्अवस्थाविषे किसीपुरुषकेप्रति जभीकोई अन्यपुरुष वचनकहैहै ॥ तभी सोपुरुष याप्रकार ताकेप्रतिकहै है तुमनैंजोहमारेप्रति वचनकह्या॥तावचनकेअर्थकूं छोडिकरिकै हमारामन अन्यत्रगयाथा ॥ याकारणतैं तुम्हारेवचनकाअर्थ हमनैं जान्यानहीं तुम फेरिदूसरीवार तावचनकूंकहो ॥ याप्रकारकेअनुभवकरिकै संपूर्ण लोकोंनैं आपणेमनकूं विषयकरीताहै ॥ याकारणतैं घटादिकपदार्थोंकीन्याईं मनभी दृश्यहै॥अब युक्तियोंकरिकै मनविषे जडपणा निरूपणकरै हैं ॥ हेजनक ॥ वेदकूंनहींमानणेहारेजेनास्तिकहैं ॥ तिनोंकूंछोडिकरिकै कोईभीआस्तिकवादी मनकूंचेतन मानतानहीं ॥ किंतु सर्वआस्तिकवादी मनकूंजडमानै हैं ॥ और जोनास्तिकवादी मनकूंचेतनमानै है ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये॥ जिसमनकूं तुम चेतनरूप मानतेहो ॥ सोमन आत्मारूपहै अथवा अनात्मारूपहै ॥ तहांमन अनात्मारूपहै यहदूसरा पक्ष जोवादी अंगीकारकरै सो संभवैनहीं ॥

काहेतैं मनकूंअनात्मरूपमानिकै जोवादी मनकूंचेतनरूपअंगीकारकरै ॥ तौ मनकीन्याईं अनात्मारूप जेघटपटादिकजडपदार्थ हैं तेभी चेतनरूपहोणेचाहिये ॥ और घटपटादिकजडपदार्थोंकी चेतनरूपताविषे जोवादी इष्टापत्तिकरै ॥ तौ मनविषे चेतनरूपता अंगीकारकरणी व्यर्थ होवैगी ॥ काहेतैं घटपटादिकसंपूर्णअनात्मपदार्थ मनकीन्याईं चेतनरूपहैं ॥ तिनघटादिकचेतनोंकरिकै भी व्यवहारकीसिद्धि होइसकैहै ॥ मनकूंचेतनमानणा व्यर्थहै ॥ तहांदृष्टांत ॥ जैसे एकदीपकरिकैहीं घटादिकपदार्थोंकाप्रकाश संभवहोइसकैहै ॥ तिनघटादिकपदार्थोंके प्रकाशवासतै दूसरेदीपककूं कोईपुरुष जगावतानहीं ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती श्रुतिविषे सर्वजगत्कूं चैतन्यरूपकह्याहै ॥ यातैं हमभी सर्वजगत्कूं चेतनरूपमानैं हैं ॥ समाधान ॥ हेवादी ॥ संपूर्णजगत्विषे चैतन्यरूपताकूं कथनकरणेहारीजो श्रुति है ॥ सोश्रुति अनुवादरूपहुई सर्वजगत्विषे चैतन्यरूपताकूं कथनकरै है ॥ अथवा विधिरूपहुई सोश्रुति सर्वजगत्विषे चैतन्यरूप ताकूं कथनकरै है॥ तहां प्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सो संभवैनहीं॥ काहेतैं प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकै सर्वलोकोंकूंज्ञात जो अर्थहै॥ ताअर्थकूं कथनकरणेहाराजोवचनहै ॥ तावचनकूं शास्त्रवेत्तापुरुष अनुवादकहैं हैं ॥ जैसे अग्नि हिमका भेषजहै ॥ याप्रकारकावचन सर्वलोकोंकूं प्रत्यक्ष जो अग्निविषे हिमकीनिवृत्तिकीकारणताहै ताकूं कथनकरै है ॥ याकारणतैं सोवचन अनुवादरूपहै॥ तैसे संपूर्णजगत् चेतनरूपहै याप्रकारकाश्रुतिवचनभी तभीअनुवादरूपहोवै॥जभी संपूर्णजगत्विषे अस्मदादिकजीवोंकूं प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकै चैतन्यरूपतासिद्धहोवै सो सर्व जगत्विषे चैतन्यरूपता प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकै अस्मदादिकजीवोंकूं सिद्धहैनहीं ॥ यातैं सर्वजगत्विषे चैतन्यरूपताकूं कथनकरणेहारीश्रुतिअनुवादरूपनहीं॥और सर्वजगत्विषे चैतन्यरूपताकूं कथनकरणेहारी श्रुति विधिरूपहै यहदूसरापक्षजोवादी अंगीकारकरै सोभी संभवैनहीं॥काहेतैं जोअर्थ प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकै पूर्वज्ञातनहींहोवै॥ तथा जिसअर्थकेज्ञानतैं फलकीप्राप्तिहोवै॥ तथाजिसअर्थका प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकै बाध नहींहोवै॥ ऐसे अर्थकूं विधिरूपश्रुति बोधनकरै है॥याप्रकारकाअर्थ अद्वितीयआत्माहीहै ॥ यातैं संपूर्णजगत् चेतनआत्मारूपहै याप्रकारकेअर्थकूंबोधनकरणेहारीजोश्रुति है॥ सो श्रुति जडजगत्विषे चैतन्यरूपताकूं बोधन

करैनहीं ॥ किंतु जैसे यहरज्जुहै याप्रकारकावचन सर्पत्वभ्रमकीनिवृत्तिकरिकै रज्जुत्वकूंबोधनकरै है ॥ तैसे यहसंपूर्णजगत् चेतनआत्मारूपहै याप्रकारकाश्रुतिवचनभी द्वैतभ्रमकीनिवृत्तिकरिकै अद्वितीयआत्माकूंहीं बोधनकरै है ॥ तहाँ यहसंपूर्णजगत् अद्वितीयब्रह्मस्वरूपहै याप्रकारकेअर्थकूं बोधनकरणेहारीजोश्रुति है॥सोश्रुति तत्पदार्थकेशोधनकूं बोधन करै है॥ और यह चराचररूप संपूर्णजगत् चेतनरूपहै याप्रकारकेअर्थकूं बोधनकरणेहारीजो श्रुति है ॥ सोश्रुति तिसीतत्पदार्थरूपपरमात्माविषे चैतन्यरूपताका विधानकरै है ॥ और यहसंपूर्णजगत् आत्मारूपहै याप्रकारकेअर्थकूं बोधनकरणेहारीजोश्रुति है ॥सोश्रुति आत्माविषे सर्वरूपताबोधनद्वारा त्वंपदार्थकेशोधनकूं विधानकरै है॥और तत्पदकाअर्थ परमात्मा आत्मारूपहै याप्रकारकेअर्थकूं बोधनकरणेहारीजोश्रुति है ॥सोश्रुति जीवईश्वरकेअभेदकूं बोधनकरै है ॥ इसतैंआदिलेके संपूर्णश्रुतिवचनोंविषे कोईश्रुतिवचन तत्पदार्थकेशोधनकाप्रकार बोधनकरै है ॥ और कोईश्रुतिवचन त्वंपदार्थकेशोधनकाप्रकार बोधनकरै है॥ और कोईश्रुतिवचन तत्त्वंपदार्थकेअभेदकूं बोधनकरैं हैं ॥अज्ञान तथाअज्ञानकाकार्यरूपउपाधिका परित्यागकरिकैताउपाधितैंचेतनकूंभिन्नकरिकै जोजानणाहैताकूंतत्त्वंपदार्थकाशोधनकहैं हैं॥ याप्रकारकेश्रुतिकेअभिप्रायकूंनअंगीकारकरिकै जोवादी पूर्वउक्तश्रुतिवचनोंकाजडचेतनकेतादात्म्यबोधनविषेतात्पर्यकल्पनाकरैहै॥और ताचेतनआत्माकेतादात्म्यतैंसंपूर्णजड जगत्कूंचेतनरूपमानैं हैं॥तावादीसे यपूछाचाहिये॥चेतनआत्माका तथाजडजगत्का जोतादात्म्यसंबंधहै॥तिसतादात्म्यसंबंधका संबंधीपणाचेतनआत्माविषे तथाजडजगत्विषे समानहीं है॥यातैं जैसे चेतनआत्माकेतादात्म्यसंबंधतैं वादी जड जगत्कूंचेतनरूपमानै है॥तैसे जडजगत्केतादात्म्यसंबंधतैं सोवादी चेतन आत्माकूंभी जडजगत्रूपता किसवासतैंनहीं अंगीकारकरता॥किंतु तावादीनैं चेतनआत्माविषेभी जडजगत्रूपता अवश्य अंगीकारकरीचाहिये ॥ यातैं जडप्रपंचकीचैतन्यरूपताबोधनाविषे श्रुतिकातात्पर्यनहीं ॥ किंवा ॥ जडजगत्विषे चैतन्यरूपताहै याप्रकारकेअर्थविषे श्रुतिका तात्पर्यसंभवैनहीं॥ काहेतैं जिसाजिसअर्थविषे बुद्धिमान्पुरुषोंके अनुभवकाविरोध नहींहोवै है ॥ तिसीअर्थविषे वेदका तात्पर्यहोवै है॥ अनुभवविरुद्धअर्थविषे वेदका तात्पर्यहोवैनहीं॥ जोअनुभवविरुद्धअर्थविषेभी वेदका

॥ ४० ॥

तात्पर्यहोवै ॥ तौ आदित्योयूपः अर्थयह यज्ञभूमिविषेस्थित जोकाष्ठकास्तंभरूपयूप है सो आदित्य है ॥ याप्रकारकेवेदवचनकरिकै आकाशविषेस्थित प्रकाशरूपसूर्यका अप्रकाशरूपयूपकेसाथ तादात्म्य सिद्धहोणाचाहिये ॥ और सूर्यकाकाष्ठमययूपकेसाथ तादात्म्य सर्वलोकोंकेअनुभवविरुद्धहै ॥ यातैं ताविरुद्धअर्थविषे तावचनका तात्पर्यनहीं ॥ किंतु ता यूपकेस्तुतिविषे तावचनका तात्पर्य है ॥ इसीप्रकार यजमानःप्रस्तरः ॥ अर्थयह दर्भोंकीमुष्टिरूप जोप्रस्तरहै सो यज्ञकर्तायजमानरूपहै ॥ याप्रकारकेवेदवचनकरिके यजमानपुरुषका प्रस्तरकेसाथ तादात्म्य सिद्धहोणाचाहिये ॥ और यजमानपुरुषकाप्रस्तरकेसाथ तादात्म्य सर्वलोकोंकेअनुभवकरिकैविरुद्धहै ॥ यातैं ताविरुद्धअर्थविषे तावचनका तात्पर्यनहीं ॥ किंतु ताप्रस्तरकी स्तुतिविषे तावचनका तात्पर्य है ॥ जो प्रस्तर यजमानकेअभेदविषे तावचनकातात्पर्यहोवै ॥ तौ ताप्रस्तरका अग्निविषेदाहकियेतैं यजमानकाभी दाहहोवैगा ॥ यजमानकेदाहहुएतैं संपूर्णयज्ञादिककर्मोंकालोपहोवैगा ॥ यातैं यह अर्थ सिद्धभया ॥ बुद्धिमान्पुरुषोंके अनुभवकरिकैअविरुद्धजोअर्थ है ॥ ताकेविषे वेदका तात्पर्यहोवैहै ॥ और जडजगत्विषे चैतन्यरूपता सर्वलोकोंकेअनुभव करिकै विरुद्धहै ॥ यातैं ताअनुभवविरुद्धअर्थविषे वेदकातात्पर्यनहीं ॥ किंवा ॥ जोअर्थ अधिकारीपुरुषोंके पुरुषार्थकाकारणहोवै है ॥ ताअर्थकूंहीं वेदकावचन बोधनकरै है ॥ यह वेदवेत्तापुरुषोंका सिद्धांत है ॥ और चेतनआत्मा जडजगत्रूपहै ॥ तथाजडजगत् चेतनआत्मारूपहै ॥ याप्रकारकेअर्थज्ञानतैं जीवोंकूं किंचित्मात्रभी पुरुषार्थकीप्राप्तिहोवै नहीं ॥ यातैं तानिष्फलअर्थकेबोधनविषे वेदभगवान्का तात्पर्यनहीं॥किंवा ॥जैसे प्रियपदार्थकेदर्शनवासतैं उन्मीलनकराहुआचक्षु अप्रियपदार्थकूंभी प्रकाशकरैहै ॥ तैसे पुरुषार्थतैंरहितअर्थकूं वेदभगवान् कदाचित्भी कथनकरतानहीं ॥ काहेतैं जोपुरुषार्थतैंरहितअर्थकूं वेदभगवान् बोधनकरैगा ॥ तौ वेद याप्रकारकेशब्दकाअर्थ वेदभगवान्विषे घटैगानहीं ॥ काहेतैं अधिकारीपुरुषोंकेप्रति जो पुरुषार्थकूं जनावै ताकूं बुद्धिमान्पुरुष वेदकहैं हैं ॥ किंवा ॥ व्याकरणकीरीतिसैं विदधातुकरिकै वेदशब्दकीसिद्धिहोवै है ॥ ता विदधातुका ज्ञान अर्थहै ॥ ताज्ञानविषे जो अधिकारीपुरुषोंकूं प्रेरणाकरै ताकूं वेदकहैं हैं ॥ और प्रेरणाकरणेहारा प्रयोजक लोकविषे दोप्रकारकाहोवै है॥

एकता मुख्यप्रयोजकहोवैहै ॥ और दूसरा गौणप्रयोजकहोवै है ॥ तहां प्रेरणाकाविषय जो प्रयोज्यपुरुषहै ॥ ताका जिसक्रियाविषे राग होवै है ॥ तिसक्रियाविषे ताप्रयोज्यपुरुषकूं जोपुरुष प्रेरणाकरै है ॥ ताकूं मुख्यप्रयोजक कहैं हैं ॥ जैसे भोजनरूपक्रियाकीइच्छावान् जो क्षुधार्थीपुरुषहै ॥ ताकूं ताभोजनरूपक्रियाविषे जोपुरुष प्रेरणाकरैहै ॥ ताकूं शास्त्रवेत्तापुरुष मुख्यप्रयोजक कहैं हैं ॥ और जहां प्रयोज्यपुरुषका जिसक्रियाविषे राग नहींहोवै है ॥ तिसीक्रियाविषे प्रयोज्यपुरुषकूं जोपुरुष प्रेरणाकरैहै ॥ ताकूं गौणप्रयोजक कहैं हैं ॥ जैसे मरणरूपक्रियाविषे जोजीवोंकूंप्रेरणाकरैहैं ॥ ताकूं मारी कहैं हैं ॥ यहां मरणरूपक्रियाविषे जीवोंकाराग हैनहीं ॥ और कालभगवान् जीवोंकूं मरणरूपाक्रियाविषे प्रेरणाकरै है ॥ यातैं कालरूपमारी गौणप्रयोजकहै ॥ और जोपदार्थ पुरुषार्थरूपहोवैहै ॥ तिसीपदार्थविषे प्रयोज्यपुरुषकारागहोवैहै ॥ पुरुषार्थतैंभिन्नपदार्थविषे प्रयोज्यपुरुषकाराग होवैनहीं ॥ और सोपुरुषार्थभी दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौ मुख्यपुरुषार्थहोवैहै ॥ और दूसरागौणपुरुषार्थहोवैहै ॥ तहां सुखरूपफल मुख्यपुरुषार्थहै॥ और तासुखकेसाधन गौणपुरुषार्थहै॥ और आत्माविषे जडजगत्रूपता तथा जडजगत्विषे चेतनआत्मारूपता यहदोनोंप्रकारकेअर्थ सुखरूपनहींहैं ॥ तथा किसीसुखकेसाधन नहींहै ॥ उलटा जन्ममरणादिकदुःखकेसाधनहैं ॥ ऐसे अपुरुषार्थरूपअर्थविषे अधिकारीपुरुषोंकूं वेदभगवान् किसवासतैं प्रेरणाकरैगा ॥ किंतु नहींप्रेरणा करैगा ॥ तहांदृष्टांत ॥ जैसे पुत्रकेहितकीइच्छाकरणेहारा जोपिता है ॥ सोपिता पुत्रकूं अपुरुषार्थरूपअर्थविषे प्रेरणाकरतानहीं ॥ तैसे सर्वजीवोंकेकल्याणकाइच्छावान् जोवेदभगवान्है ॥ सोवेदभगवान् जीवोंकूं अपुरुषार्थरूपअर्थविषे प्रेरणाकरैगानहीं ॥ जो वेदभगवान् ता अपुरुषार्थरूपअर्थकूं बोधनकरैगा ॥ तौ सोवेदभगवान् अप्रमाणरूपहोवैगा ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती ॥ यहसंपूर्णजगत् चैतन्यआत्मारूपहै याप्रकारकेश्रुतिवचनका जभी जडचेतनकेअभेदविषे तात्पर्यनहींहै ॥ तभी किसअर्थविषे तावचनका तात्पर्य है ॥ समाधान ॥ हेवादी ॥ जोअर्थ प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकै पूर्वज्ञातनहींहोवै है ॥ तथा जिसअर्थका अन्यकिसीप्रमाणकरिकै बाधनहींहोवैहै ॥ तथा जिसअर्थतैं फलकीप्राप्तिहोवै है ॥ ऐसेअर्थकेबोधनविषे वेदभगवान्का तात्पर्यहोवैहै ॥ सो याप्रकारकाअर्थ स्वप्रकाश अद्वितीयआनं

दस्वरूपआत्मा है ॥ यातैं अद्वितीयआत्माकेबोधनविषेही वेदभगवान्कातात्पर्य है॥कैसा है सोअद्वितीयआत्मा॥प्रपंचरूपद्वैतकूंदेखणेहारे जेकुतर्कीपुरुष हैं ॥ तेकुतर्कीपुरुष अनंतजन्मोंकूंप्राप्तहोइकैभी जिसआत्माकूं जाणिनहींसकते॥जोकदाचित् वेदप्रमाणतैंभिन्न किसीप्रमाणकरिकै आत्माकेयथार्थस्वरूपकाज्ञानहोता॥तौ तर्कविषेकुशल जेनैयायिकादिक हैं ॥तेभी आत्माकेयथार्थस्वरूपकूंजाणते॥परंतु तेनैयायिकादिक आत्माकेयथार्थस्वरूपकूंजाणतेनहीं ॥ यातैं यहजान्याजावै है॥श्रुतिप्रमाणतैंभिन्न केवलतर्ककरिकैआत्माका यथार्थस्वरूप जान्याजावैनहीं ॥ शंका॥हेसिद्धांती ॥ यहसंपूर्णजगत् चेतनआत्मारूप है याप्रकारकेश्रुतिवचनोंका जोजडचेतनकाअभेदरूप अर्थ नहीं है ॥ तो तावचनोंका कौनअर्थ है॥समाधान॥हेवादी ॥मुमुक्षुजनोंकेबुद्धिविषेप्रपंचकेअभावकूँ आरूढकरावणेवासतैं सोश्रुतिभगवती माताकीन्याईं कृपाकरिकै मुमुक्षुजनोंकेप्रति याप्रकारकाउपदेशकरै है ॥ हेमुमुक्षुजनो ॥ जैसे रज्जुविषे अज्ञानकरिकैप्रतीतभयाजो सर्प दंड जलधारा मालाइत्यादिकद्वैत है ॥ सोसर्पादिकद्वैत रज्जुमात्रही हैं ॥ सर्पादिकद्वैत तीनकालविषेनहीं ॥ तैसे यहसंपूर्णदृश्यप्रपंच तुमाराआत्माही है ॥ आत्मातैंभिन्नद्वैत तीनकालविषेनहीं॥याप्रकार सोश्रुति द्वैतप्रपंचकानिषेधकरिकै मुमुक्षुजनोंकेप्रति अद्वितीयआत्माकाबोधनकरैहै॥यातैं अद्वितीयआत्माविषेहीं तिनश्रुतिवचनोंका तात्पर्य है॥शंका॥हेसिद्धांती॥जडजगत्कीचैतन्यरूपताविषे यद्यपि श्रुतिप्रमाण नहींसंभवै है।तथापि अनुमानप्रमाणकरिकै जडजगत्विषे चैतन्यरूपतासिद्धहोवैगी।समाधान।हेवादी।जैसेधूमरूपलिंगतैंपर्वतविषेअग्निकाअनुमान होवै है।तैसे जगत्के चैतन्यरूपताविषे कोई लिंगहै नहीं।।यातैंअनुमानप्रमाणतैंभी जगत्विषे चैतन्यरूपतासिद्धहोवैनहीं। उलटा प्रत्यक्षप्रमाणसहकृत अनुमानप्रमाणकरिकै दृश्यत्वरूपलिंगतैं जगत्विषे जडताही सिद्धहोवै है ॥शंका॥हेसिद्धांती ॥ श्रुतिप्रमाण तथाअनुमानप्रमाण यद्यपिजगत्केचैतन्यरूपताकूं सिद्धकरैनहीं॥तथापि किसीपुरुषकाप्रत्यक्षप्रमाण जगत्केचैतन्यरूपताकूं सिद्धकरैगा समाधान ॥ हेवादी ॥ जिसपुरुषकाप्रत्यक्षप्रमाण जगत्विषे चैतन्यरूपता सिद्धकरै है ॥ सोपुरुष अस्मदादिक पुरुषोंकेसमान जातीवाला है ॥ अथवा अस्मदादिकपुरुषोंतैं सोपुरुष विलक्षण है ॥ तहां जो तूं प्रथमपक्ष अंगीकारकरै सो संभवैनहीं॥ काहेतैं अस्मदादिकपु

रुषोंविषे किसीभीपुरुषकूं जगत्केचैतन्यरूपताकाप्रत्यक्षहोतानहीं ॥ यातैं अस्मादिकपुरुषोंकेप्रत्यक्षकरिकै जगत्विषेचैतन्यरूपतासिद्ध होइसकैनहीं ॥ और अस्मदादिकपुरुषोंतैंविलक्षणकिसीपुरुषकेप्रत्यक्षकरिकै जगत्कीचैतन्यरूपतासिद्ध है यहदूसरापक्ष जोवादीअंगीकार करै सोभी संभवैनहीं॥ काहेतैं अस्मदादिकपुरुषोंतैं विलक्षण किसीपुरुषविषे जगत्केचैतन्यरूपताका प्रत्यक्ष है॥यहवार्त्ता हम कैसेजाणें तात्पर्ययह ॥ जैसे नरशृंगकासाधन कोईप्रमाणनहीं तैसे ताविलक्षणपुरुषकेप्रत्यक्षकासाधन कोई प्रमाणनहीं शंका ॥ हेसिद्धांती ॥ जगत्के चैतन्यरूपताकूं विषयकरणेहारा जो विलक्षणपुरुषकाप्रत्यक्ष है ॥ सोप्रत्यक्ष यद्यपि प्रमाणोंकरिकैसिद्ध है ॥ तथापि तेप्रमाण अस्मदादिक पुरुषोंविषे हैं नहीं ॥ समाधान हेवादी ॥ ताविलक्षण पुरुषकेप्रत्यक्षकासाधक जोप्रमाण हैं ॥ तौ अस्मदादिकपुरुषोंकूं ते प्रमाण किसवासतैं नहीं प्रतीतहोते ॥ तात्पर्ययह ॥ सर्वकारणकोंकरिकैयुक्त जेअस्मादिकपुरुष हैं ॥ तिनोंविषे जभी तेप्रमाण अप्रसिद्ध भये ॥ तभी तेप्रमाण किसीभीपुरुषविषे नहीं होवैंगे ॥ और जो अप्रसिद्धप्रमाणोंकीभी सिद्धिअंगीकारकरौगे ॥ तौ लोकविषेप्रसिद्धजो मधुर अम्ल लवण कटु कषाय तिक्त यहषट्रस हैं॥ तिनोंतैंभिन्न किसीसप्तमरसकीभी सिद्धि होणीचाहिये ॥ यातैं तेप्रमाण अस्मदादिकपुरुषोंविषेनहीं हैं॥याप्रकारके वादीकेअर्थविषे दैवकी कोई विचित्रघटनाहै।किंवा।जगत्विषे चैतन्यरूपताकूंविषयकरणेहारा जोप्रत्यक्षहै सो किसीपुरुषविशेषविषेरहै है ॥ और किसीपुरुषविषे नहींरहै है ॥ याप्रकारकेअर्थकूं जोवादी अंगीकारकरैगा ॥ तौ तावादीकूं व्याघा तदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ काहेतैं जोजगत् चैतन्यरूपकरिकैविषयहोणेयोग्यनहीं है ॥ सोईहीजगत् चैतन्यरूपकरिकै किसीपुरुषकेज्ञानका विषयहोवै है॥और सोईहीजगत् चैतन्यरूपकरिकै अस्मदादिकपुरुषोंकेज्ञानका अविषयहोवै है॥याप्रकार एकहीजडजगत्विषे चैतन्यरूप करिकै स्वभावतैं विषयता ॥ तथाचैतन्यरूपकरिकै स्वभावतैं अविषयता जोअंगीकारकरौगे॥तौ आपणेवचनकरिकैही आपणे वचनका बाधरूप व्याघातदोष प्राप्तिहोवैगा ॥ और हेवादी ॥ मनकूंअनात्मारूपमानिकै जोतूं तामनकूंचेतनरूपमानैगा॥तौ अनात्मरूपकरिकै मनकेसमान जेघटपटादिकपदार्थ हैं॥तेभी तुमारेमतविषे चेतनरूपहोवैंगे ॥ और अनात्मरूपकरिकै मनकेसमान जेघटादिकजडपदार्थ

हैं ॥ तिनोंकूंचेतनरूप नमानिकै केवलमनकूंहीं जोतूं चेतनरूपमानताहै यह तुमारा अत्यंतदुर्व्यसनहै ॥ इतनैंकारिकै चेतनरूपमनअनात्मारूपहैयाद्वितीयपक्षकाखंडनकऱ्या॥अब सोचेतनरूपमन आत्मारूपहै याप्रथमपक्षका खंडनकरैं हैं॥चेतनरूपमनआत्मारूपहैयाप्रकार कापक्ष जोवादी अंगीकारकरैहै॥तावादीसैं यहपूछाचाहिये॥सो चेतनआत्मारूपमन परिच्छिन्नहै॥अथवा विभुहै तहाँ प्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं जोपदार्थ परिच्छिन्नहोवैहै ॥ सोपदार्थ भेदवालाहोवैहै ॥ जैसे घटादिकपदार्थ परिच्छिन्नहोणेतैं भेदवाले हैं ॥ तैसे मनभी परिच्छिन्नहोणेतैं भेदवालाही होवैगा॥ और जोपदार्थ भेदवालाहोवै है॥सोपदार्थ कार्यहोवै है॥जैसे घटादिकपदार्थ भेदवालेहोणेतैं कार्य हैं ॥ तैसे भेदवालाहोणेतैं सोमनभी कार्यही होवैगा ॥और जोपदार्थ कार्यहोवै है ॥ सोपदार्थ किसीकारण करिकै जन्यहोवै है॥जैसे घटादिकपदार्थ कार्यरूपहोणेतैं मृत्तिकारूपकारणकरिकैजन्यहै॥तैसे कार्यरूपहोणेतैं सोमनभी भूतभौतिकरूपकारणकरिकै जन्यहोवैगा ॥ यहां भूतशब्दकरिकै सत्वगुणप्रधान आकाशादिकपंचभूतोंकाग्रहणकरणा ॥ और भौतिकशब्दकरिकै भुक्तअन्नका ग्रहणकरणा ॥ और जोपदार्थ किसीकारणकरिकैजन्यहोवै है ॥ सोपदार्थ जडहोवै है॥जैसे मृत्तिकारूपकारणकरिकै जन्यहोणेतैं घटादिकपदार्थ जड हैं॥ तैसे भूतभौतिकरूपकारणकरिकैजन्यहोणेतैं सोमनभी जडहीहोवैगा ॥ यातैं कार्यरूपजडमनकूं चेतनरूपकहणा तथा आत्मरूपकहणा अत्यंत विरुद्धहोवैगा ॥ और सोचेतनआत्मारूपमन विभुहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं जोपदार्थ विभुहोवै है ॥ सो किसीदेशविषे तथाकिसीकालविषे तथाकिसीवस्तुविषे रहैनहीं॥किंतु देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहित होवै है ॥ याप्रकारका वादीनैं अंगीकारकऱ्याजोविभुमन ॥ सो मनरूपहीहोवैगा ॥ किंतु स्वयंज्योतिआत्मारूपहोवैगा ॥ तात्पर्ययह ॥ लोकविषे अनेकप्रकारकेसंकल्पोंका जोकारणहोवै ॥ तथा सत्वगुण जिसविषेप्रधानहोवै॥ताकूं संपूर्णलोक मन कहैं हैं॥ याप्रकारकामन तावादीनैं कथनकऱ्यानहीं ॥ किंतु स्वयंज्योतिआत्माकाही वादीनैं मननाम राख्याहै ॥ और सर्वशास्त्रवेत्तापुरुषोंका नाममात्रविषे विवाद होवैनहीं ॥ किंतु पदार्थविषे विवादहोवै है॥ सोपदार्थकाभेद यहां है नहीं॥किंतु जिसविभुचेतनकूं हम आत्मानामकरिकै कथन

करैं हैं ॥ तिसी विभुचेतनकूं सोवादी मननामकरिकै कथनकरैहै॥यातैं हेवादी चेतनमन विभुहै याप्रकारकेपक्षविषे तुमाराहमारा किंचित् मात्रभी विवादनहीं ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती ॥ तुमाराहमारा विवाद संभवैहै ॥ काहेतैं तुमारेमतविषे आत्मादिकशब्द शक्तिवृत्तिकरिकै विभुचेतनकूं बोधनकरैं हैं ॥ और मनशब्द लक्षणावृत्तिकरिकै ताविभुचेतनकूं बोधनकरैहै॥ और हमारेमतविषेतौ मनशब्द शक्तिवृत्तिकरिकै विभुचेतनकूं बोधनकरै है ॥ और आत्मादिकशब्द लक्षणावृत्तिकरिकै ताविभुचेतनकूं बोधनकरैं हैं याप्रकारका तुमाराहमाराविवाद संभवैहै ॥ समाधान ॥ हेवादी ॥ याप्रकारका तुमाराहमाराविवाद तभीसंभवै ॥ जभी हम आत्मादिकशब्दोंकी शक्तिवृत्तिकरिकै विभुआत्माविषे प्रवृत्तिअंगीकारकरै ॥ परंतु याप्रकार हम अंगीकारकरतेनहीं ॥ किंतु जैसे मनशब्द लक्षणावृत्तिकरिकै आत्माकूं बोधनकरै है तैसे आत्माचेतन इत्यादिकनामभी भागत्याग लक्षणावृत्तिकरिकैहीं॥आत्माकूंबोधनकरैहैं॥शक्तिवृत्तिकरिकै कोईभीशब्द आत्माकूंबोधनकरैनहीं ॥ याकारणतैंहींयतोवाचोनिवर्तंतअप्राप्यमनसासह ॥ अर्थयह जिसअद्वितीयआत्माकूंनप्राप्तहोइकैमनसहितवाणीनिवृत्तहोवैहै ॥ याश्रुतिनैं आत्माविषे शब्दकीशक्तिवृत्तिकीअविषयता दिखाईहै॥और हेवादी॥आत्माकेवास्तवस्वरूपकूंजानणेहारे जेविद्वान्पुरुषहैं॥ तिनों नैं जैसे आत्मादिकनाम चेतनआत्माविषेआरोपणकरीतेहैं ॥ तैसे तुमनैंभी एकमननाम चेतनआत्माविषे आरोपणकऱ्या ॥ याके विषे हमारी किंचित्मात्रभीहानिहोवैनहीं ॥ पूर्व किसीवादीनै स्वप्नविषे मनकूंहींस्वयंज्योतिमान्यथा ॥ तावादीका इतनैपर्यंत खंडनकऱ्या ॥ अब तिसीपूर्वप्रसंगकूं निरूपणकरै हैं॥हेजनक ॥ तास्वप्नअवस्थाविषे सूर्य चंद्रमा अग्नि वाक् अविद्या मन इत्यादिकसंपूर्णोंकूं पूर्व उक्तरीतिसं ज्योतिरूपता संभवैनहीं यातैं परिशेषतैं आत्माहीं स्वप्नविषे स्वयंज्योतिहै ॥ और हेजनक जैसे मीमांसकोंकेमतविषे आत्माकाधर्महोणेतैं स्वप्नप्रकाशज्ञान आत्मातैंभिन्नहै॥तैसेसिद्धांतमतविषेस्वप्नप्रकाशज्ञान आत्मातैंभिन्ननहीं॥काहेतैं जोस्वप्नप्रकाशज्ञानकूं आत्मातैंभिन्न अंगीकारकरिये॥तौ जोपदार्थ भेदरूपवस्तुपरिच्छेदवालाहोवैहै सोपदार्थ अनात्मरूपहींहोवैहै ॥ जैसेघटादिकपदार्थभेदरूपवस्तुपरिच्छेदवालेहैं॥यातैं अनात्मरूपहै ॥ तैसे भेदरूपवस्तुपरिच्छेदवालेहोणेतैं आत्मा तथास्वप्नप्रकाशज्ञान दोनों अनात्माहींहोवैंगे॥और आ

त्माकीअनात्मरूपता कोईभीवादी अंगीकारकरैनहीं॥यातैं स्वप्नप्रकाशज्ञानका तथाआत्माका परस्परभेदनहींहै किंतुअभेदहीहै।और ज्ञानविषे स्वप्नप्रकाशता सर्ववादियोंकूंसंमतहै।यातैं स्वप्नप्रकाशज्ञानकेसाथअभिन्नजोआत्माहै ॥सोभी स्वप्नप्रकाशहीहोवैगा।याप्रकारकीयुक्तिकरिकै यद्यपि आत्माविषे स्वयंज्योतिरूपता सिद्धहोइसकैहै ॥ तथापि स्वप्नअवस्थाविषे जो आदित्यादिकज्योतियोंकाअभावरूपव्यतिरेकहै ॥ तथा आत्माका साक्षीरूपकारिकै जोअन्वयहै ॥ याप्रकारकेअन्वयव्यतिरेककारिकै सुखेनहीं मुमुक्षुजनकूं आत्माकाबोधहोइसकैहै ॥ याप्रकारकेअभिप्रायकरिकै श्रुतिभगवतीनैं स्वप्नअवस्थाविषे आत्माकूं स्वयंज्योतिकह्याहै ॥ और हेजनक ॥ जैसे लोकाविषे काष्ठोंकेसमूहकूं दाहकर्त्ताजोअग्निहै ॥ ताकूं लोक स्वयंज्योतिकहैं हैं ॥ और काष्ठोंविषेस्थित जोसामान्यअग्निहै॥ तथा भस्मकरिकै आवृत जोअग्निहै॥ ताकूं कोईपुरुष स्वयंज्योतिकहैनहीं ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषे सर्वव्यवहारोंकासाधक जोआत्माहै॥ताकूंश्रुतिभगवती स्वयंज्योतिकहै है॥ और हेजनक॥ प्रलयकालविषे नहींहैरूपहूनामरूपजिसका ऐसाजोयहजगत्है ॥ ता जगत्का अभिन्ननिमित्तउपादानकारण तथा वास्तवतैं नामरूपतैंरहित तथासर्वशरीरोंविषे व्यापक ऐसाजोसर्वज्ञब्रह्महै ॥ सोईहीं वेदांतशास्त्रविषे स्वयंज्योति है ऐसे स्वयंज्योतिब्रह्मकूंहीं स्वप्नअवस्थाविषेश्रुति जीवकाआत्मारूपकारिकै कथनकरै है ॥ शंका ॥हेभगवन्॥ जगत्के उत्पत्ति स्थिति लयका कारणजोस्वयंज्योतिब्रह्म है॥सोईहींस्वप्नअवस्थाविषे जीवकाआत्माहै यहवार्ता कैसेजानीजावै॥समाधान॥ हेजनक॥जैसे स्वयंज्योतिब्रह्म जगत्की उत्पत्ति स्थिति लयकूं करै है ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषे यहस्वयंज्योतिआत्माभी जगत्के उत्पत्तिस्थितिलयकूंकरै है ॥ और जैसे स्वयंज्योतिब्रह्म सत्चित्आनंदस्वरूपहै ॥ तैसे यहआत्माभी सत्चित्आनंदस्वरूपहै ॥याप्रकार जगत्कीकारणतारूपतटस्थलक्षण तथा सत् चित् आनंदस्वरूपता यहस्वरूपलक्षण स्वयंज्योतिब्रह्मका तथाआत्माका समानहीं है ॥ याकारणतैं यहआत्मा स्वयंज्योतिब्रह्मरूप है ॥ अब स्वप्नअवस्थाविषे जगत्कीकारणतारूप आत्माकेतटस्थलक्षणकूं स्पष्टकरिकैदिखावैं हैं॥हेजनक स्वप्नविषे जेरथ प्रतीतहोवैं हैं॥ तेरथ स्वप्नविषे हैं नहीं ॥ कैसे हैं तेरथ ॥ सुवर्णकारिकै तथामणियोंकारिकै भूषित हैं॥ और जिनरथोंकीध्वजा आकाशकूंस्पर्शकरिरही है॥और नानाप्रकार

कीअल्पपताकावोंतैं जिनरथोंविषे चमत्कारकऱ्याहै ॥ और मेघकीन्याईं जिनरथोंकीध्वनिहै ॥ और नानाप्रकारकीसामग्रीकरिकै जेरथ पूर्णहैं ॥ याप्रकारकेअद्भुतरथ स्वप्नविषेहैंनहीं ॥ और तिनरथोंविषे जोडनयोग्यजेअश्वहैं ॥ तेअश्वभी स्वप्नअवस्थाविषेहैंनहीं ॥ कैसेहैंते अश्व ॥ विचित्रहै गतिजिन्होंकी ॥ तथा विचित्रहैं कर्णकेभूषण जिनोंके ॥ और वायुकेसमान है वेगजिनोंका ॥ याकारणतैंहीं सन्मुखभूमिकूं देखिकै लज्जाकूंप्राप्तहुए तेअश्वभूमिकूंछोडिकै आकाशविषेगमनकरैं हैं ॥ और कुदालकेसमान जेआपणेपाद हैं ॥ तिनोंकरिकै भूमिकूं विदारण करै है ॥ और जिनअश्वोंके पादोंकेभयकरिकै भूमिभी व्याकुलहोइरही है ॥ याप्रकारकेअश्वभी तास्वप्नविषे हैं नहीं ॥ और तिनअश्वोंयुक्तरथोंके चलणेकेजेमार्ग हैं ॥ तेमार्गभी तास्वप्नविषेहैंनहीं ॥ कैसेहैंतेमार्ग विचित्र हैं ॥ तथा लोकोंकेमनकीप्रसन्नता करणेहारेहैं ॥ और चंदनकरिकै तथाजलकरिकै सिंचनकरेहुएहैं ॥ या कारणतैं तेमार्ग कोमल हैं तथाशीतल हैं ॥ पुनःकैसे हैं तेमार्ग ॥ अत्यंतसघन जेआपणेहैं तथागृहहैं तिनोंकेमध्यविषेस्थितहैं ॥ और मंगलीकघटोंऊपरिस्थित तथागृहोंकेचित्रोंकूंप्रकाशकरणेहारे जेदीपकहैं ॥ तिनदीपकों कारिकैप्रकाशितहैं ॥ पुनःकैसेहैंतेमार्ग ॥ अप्सरावोंकेसमान जेअनेकस्त्रियां हैं ॥ तिनस्त्रियोंकरिकैशोभायमानहैं ॥ कैसियां हैं तेस्त्रियां ॥ मणिरत्नोंकरिकैजडित जेसुवर्णकेभूषणहैं ॥ तिनोंकरिकै भूषित हैं ॥ तथा दधिलाजादिकमंगलीकपदार्थोंकरिकैपूर्ण जेसुवर्णकेकल शहैं ॥ तेकलश हैं हस्तकमलोंविषेजिनोंके ॥ ऐसीस्त्रियोंकरिकै तेमार्ग शोभायमान हैं ॥ याप्रकारकेमार्गभी तास्वप्नविषेहैं नहीं ॥ और जाग्रत्अवस्थाविषे प्रियस्त्रियोंके भोगतैं जो आनंदहोवै है ॥ तथा अन्न पान वस्त्र भूषण इत्यादिक प्रियपदार्थोंकेभोगतैं जो आनंद होवै है ॥ सो आनंदभी तास्वप्नविषे है नहीं ॥ और जाग्रत्अवस्थाविषे प्रियवस्तुकेसमागमतैं तथाअप्रियवस्तुकेवियोगतैं जीवोंकूं जो हर्षहोवै है ॥ सोहर्षभी तास्वप्नअवस्थाविषेहैंनहीं ॥ और जाग्रत्अवस्थाविषे पुत्रादिक पदार्थोंतैंरहितपुरुषकूं पुत्रादिकपदार्थोंकीप्राप्तितैं जो अत्यंतहर्षहोवै है ॥ सोहर्षभी तास्वप्नविषे है नहीं ॥ और जाग्रत्अवस्थाविषे जलकरिकैपूर्ण जे अल्पतलावहैं ॥ तथा कूपादिक हैं ॥ तथा जिनोंतैंसर्वदाजलस्रवताहै ऐसेजेबृहत्तलावहैं ॥ तेसंपूर्ण तास्वप्नविषेहैंनहीं ॥ और जाग्रत्अवस्थाविषे विद्यमान जे विचित्र गृहहैं ॥

तथा विंध्याचलादिकजेपर्वत हैं ॥ तथाइंद्रकेनंदनवनकेसमान जेनानाप्रकारकेवन हैं ॥ तथा श्रीगंगातैंआदिलेके जेनानाप्रकार कीनदियां हैं ॥ तथा क्षारसमुद्रतैंआदिलेके जेनानाप्रकारकेसमुद्र हैं ॥ तेसंपूर्णपदार्थ तास्वप्नविषेहैंनहीं ॥ और जाग्रत्अवस्थाविषे विद्यमान जेभूरादिकचतुर्दशलोक हैं ॥ तथा तिनलोकोंकूंपालनकरणेहारे जेलोकपाल हैं ॥ तथा पूर्वादिकजेदशदिशाहैं ॥ तथा आकाशा दिकजेपंचभूतहैं ॥ तथा अंडज जरायुज स्वेदज उद्भिज्ज यहचारिप्रकारकेजेप्राणीहैं ॥ तथा ब्रह्मांडविषेस्थित जितनेकस्थूलसूक्ष्मपदार्थ हैं ॥ तथा ब्रह्मांडतैंबाह्य जितनेकस्थूलसूक्ष्मपदार्थ हैं ॥ इसतैंआदिलेके सर्वपदार्थोंका स्वप्नविषेअभावहै ॥ एकमन स्वप्नअवस्थाविषेरहैहै ॥ और जैसे जगत्केउत्पत्तिकालविषे मायाविशिष्टईश्वर संपूर्णजगत्कीउत्पत्तिकरै है ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषे यहस्वयंज्योतिआत्मा पूर्वउक्तरथोंकूं तथाअश्वोंकूं तथातिनोंकेमार्गोंकूं तथाअन्यसर्वपदार्थोंकूं उत्पन्नकरेहै ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकैदिखावै हैं ॥ हेजनक ॥ जैसे लोकविषे चित्र कारपुरुष भित्तिऊपर नानाप्रकारकेचित्रोंकूंलिखेहैं ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषे यहस्वयंज्योतिआत्मा मनरूपीभित्तिविषे जगत्रूपचित्रोंकूंलिखे है ॥ याकारणतैंहीं यहस्वयंज्योतिआत्मा जगत्काकर्त्ताईश्वररूपहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ स्वयंज्योतिआत्माहीं जोसर्वजगत्काकारणहोवैगा ॥ तौ माया निष्फलहोवैगी ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ देशकालादिकोंतैंरहित जोनिर्गुणआत्माहैतिसकूंजोहम जगत्काकारणअंगीकारकरैं ॥ तौ माया निष्फलहोवै ॥ परंतु निर्गुणआत्माकूं हम जगत्काकारण माननेनहीं ॥ किंतु मायाविशिष्टपरमात्माकूंहीं हम जगत्काकारण मानते हैं ॥ यातैं मायाकीव्यर्थतानहीं ॥ और हेजनक ॥ जैसे सृष्टिकेआदिकालविषे मायाविशिष्टपरमात्मादेव देशकालादिककारणोंकूंरचिकै संपूर्णजगत कूंरचैहै ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषे यहस्वयंज्योतिआत्माभी देशकालादिककारणोंकूंरचिकै रथादिकपदार्थोंकूंरचै है ॥ और हेजनक ॥ जाग्र त्अवस्थाविषे विद्यमान जोयहस्थूलशरीरहै ॥ तथा तास्थूलशरीरकेसंबंधी जेनेत्रादिकइंद्रियहैं ॥ तथा तिननेत्रादिकइंद्रियोंकेविषय जेरू पादिकपदार्थ हैं ॥ तिनसंपूर्णोंकापरित्यागकरिकै यहस्वयंज्योतिआत्मा स्वप्नकूंप्राप्तहोवै है ॥ तास्वप्नअवस्थाविषेस्थितहोइकै यहस्वयंज्योति आत्मा आपणेस्वप्नप्रकाशरूपकरिकै मनकूं प्रकाशकरै है तथा मनकेपरिणाम जेरथादिकपदार्थ हैं तिनोंकूं प्रकाशकरै है ॥ तथा मनादिकसर्व

पदार्थोंकाकारण जो अज्ञानहै तिसकूं प्रकाशकरैहै ॥ और हेजनक॥तास्वप्नअवस्थाके भोगकूंदेणेहारे जेपुण्यपापरूपकर्म हैं ॥ तिनकर्मों
काभोगकरिके जभी क्षयहोवै है ॥ तथा जाग्रत्केभोगदेणेहारेकर्मोंका प्रादुर्भावहोवै है ॥ तभी यहस्वयंज्योतिआत्मा तास्वप्नअवस्थाका
परित्यागकरिकै जाग्रत्अवस्थाकूंप्राप्तहोवै है ॥ और ताजाग्रत्अवस्थाकेभोगदेणेहारेकर्मोंका जभी क्षयहोवैहै॥तथा स्वप्नकेभोगदेणेहारेक
र्मोंका प्रादुर्भावहोवै है ॥ तभी यहस्वयंज्योतिआत्मा ता जाग्रत्अवस्थाकापरित्यागकरिकै पुनःस्वप्नअवस्थाकूं प्राप्तहोवै है॥और हेजनक
जैसे क्रीडाकूंकरताहुआबालक एकपदार्थका परित्यागकरिकै दूसरेपदार्थकूं ग्रहणकरै है ॥ तैसे एकहीस्वयंज्योतिआत्मा पूर्वपूर्वअवस्था
कापरित्यागकरिकै उत्तरउत्तरअवस्थाकूं ग्रहणकरै है॥याकारणतैं श्रुतिभगवती तास्वयंज्योतिआत्माकूं एकहंस नामकरिकैकथनकरै है ॥
और हेजनक ॥ यालोकविषे जितनेक वृक्षादिकस्थावरशरीरहैं ॥ तथा जितनेकमनुष्यादिकजंगमशरीरहैं॥तिनशरीरोंकूं अन्नकरिकै तथा
जलकरिकै निरंतर यह जीव पूर्णकरै है ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष तिनशरीरोंकूं पुरी यानामकरिकैकथनकरै हैं ॥ और तिनशरीररूपीपु
रियोंविषे यहस्वयंज्योतिआत्मा निवासकरै है॥याकारणतैं श्रुतिभगवती तास्वयंज्योतिआत्माकूं पुरुषनामकरिकैकथनकरै है ॥ और हेज
नक ॥ जैसे महाराजा आपणेपुरीकूंछोडिकै जभी किसीअन्यदेशकूं जावै है॥तभी आपणीपुरीकीरक्षाकरणेवासतैं किसीप्रधानमंत्रीकूं ता
पुरीविषे स्थापनकरिकै जावै है ॥ तैसे यहस्वयंज्योतिपुरुष यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिकै जभी स्वप्नकूंप्राप्तहोवै है ॥ तभी यास्थूलश
रीरकीरक्षावासतैं प्राणकूंस्थापनकरिकै जावै है ॥ और जभी यहस्वयंज्योतिपुरुष मरणअवस्थाकूंप्राप्तहोवै है ॥ तभी प्राणकूंभीसाथ
लेके परलोककूं जावै है ॥ और हेजनक ॥ यास्थूलशरीरकेअभिमानका परित्यागकरिकै यहस्वयंज्योतिपुरुष स्वप्नअवस्थाविषे
हितानामानाडियोंविषे आपणीइच्छापूर्वकविचरै है ॥ तथा नानाप्रकारकेपदार्थोंकूं कल्पनाकरै है ॥ और हेजनक ॥ जैसे मायावी
राक्षसोंकाबालक नानाप्रकारकेपदार्थोंकूंरचे है ॥ तैसे यहस्वयंज्योतिआत्माभी स्वप्नअवस्थाविषे सुखदुःखकेभोगकीप्राप्तिवास
तैकभी ब्रह्मादिकऊँचशरीरोंकूंप्राप्तहोवै है ॥ और कभी वृक्षादिकनीचशरीरोंकूं प्राप्तहोवै है ॥ तथा तिनशरीरोंका परित्यागकरै है ॥

और हेजनक ॥ स्वप्नअवस्थाविषे यहस्वयंज्योतिआत्मा जिसजिसशरीरकूंप्राप्तहोवै है ॥ तिसतिसशरीरके जेजेअन्नपानादिकभोग
केसाधन हैं ॥ तिनसंपूर्णोंकूं तहांरचे है ॥ और हेजनक॥स्वप्नअवस्थाविषे यहस्वयंज्योतिआत्मा पितामातारूपभी आपहीहोवै है॥तथा
गुरुरूपभी आपहींहोवै है ॥ तथा स्त्री पुत्र शत्रु मित्र इत्यादिकसंपूर्णपदार्थ आपहींहोवै है॥ याप्रकार सोस्वयंज्योतिआत्मा स्वप्नअवस्था
विषे नानाप्रकारकेऊंचनीचशरीरोंकूंकल्पनाकरै है ॥ और हेजनक ॥ यहस्वयंज्योतिआत्मा यद्यपि वास्तवतैंसुखदुःखकाभोक्तानहीं है॥
तथापि स्वप्नअवस्थाविषे आपणेमैं भोक्तापणेकीसिद्धिवासतैं अंतःकरणकीवृत्तिरूपभोगकीकल्पनाकरै है ॥ तथा तिसतिसदेवतादिकश
रीरोंके भोगणेयोग्य जेनानाप्रकारकेभोग्यपदार्थ हैं ॥ तिनोंकूं कल्पनाकरै है ॥ और हेजनक॥ यहस्वयंज्योति आत्मा यद्यपि वास्तवतैं
कामादिकविकारोंतैंरहित है॥तथापि यहस्वयंज्योतिआत्मा जभी आपणेविषे कामीपणा कल्पनाकरै है॥तभी स्वप्नविषे सुंदरस्त्रियोंकेआ
लिंगनतैं परमआनंदकूं प्राप्तहोवै है कैसियाहैंतेस्त्रियां॥ स्वर्गकीअप्सरावोंकेसमानसुंदर हैं ॥ तथा षोडशवर्षकी जिनोंकीअवस्थाहै॥तथा
कमलकेसमान जिनोंकेविशालनेत्र हैं ॥ तथा पुरुषकेप्राप्तिकी जिनोंकूं उत्कंठाहै ॥ तथा स्तनोंकेभारकरिकै तथाजघनोंकेभारकरिके
जिनोंकी मंदमंदगति है ॥ और पुष्पोंकरिकैरचाजोवेशहै तथाभूषण है॥ ते विह्वलताकरिकै जिनोंकै भूमिविषेपतनहोवै हैं॥ और मस्तक
विषेविद्यमानजोसिंदूरतासिंदूरकरिकै गेरुमपभूमिकूंभी जिनोंने तिरस्कारकऱ्याहै॥और आपणेशरीरकीकांतिकरिकै हरितालमयभूमिकूंभी
जिनोंने तिरस्कारकऱ्या है ॥ और देवतावोंकेनंदनवनकेसमान जोवनहै ॥ तावनविषे जेस्त्रियां विचरिरही हैं ॥ और तुर्यवीणादिकवा
दित्रोंके मधुरशब्दोंकरिकै जिनोंनें भूमिकूंपूर्णकऱ्याहै ॥ और गानविद्याविषे तथाकंठकीसुंदरताविषे तथा मनोहरताविषे जेस्त्रियां देवां
गनावोंकेसमानहैं॥ याप्रकारकीस्त्रियोंकेसाथ रमणकरताहुआ यहपुरुष स्वप्नअवस्थाविषे परमआनंदकूंप्राप्तहोवै है॥इतनैं करिके केवलपु
ण्यकर्मकाफल जोस्वप्नहै ताकूं निरूपणकऱ्या ॥ अब मिश्रितपुण्यपापरूपकर्मकाफल जोस्वप्न है ताकूं निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥जैसे
जाग्रत्अवस्थाविषे यहपुरुष किसीपुण्यकर्मकेप्रभावतैं स्त्रीआदिकअनुकूलपदार्थोंकूं देखताहुआ सुखकूंप्राप्तहोवै है ॥ और दुर्गंधादिकप्र

तिकूलपदार्थोंकूंदेखिकै तथा आपणेहस्तपादादिकअवयवोंकूं असुंदरदेखिकै दुःखकूंप्राप्तहोवै है॥ तैसे ॥ स्वप्नअवस्थाविषे यस्वयंज्योति आत्मा पुण्यपापकेवशतैं अनुकूलप्रतिकूलवस्तुवोंकूंदेखताहुआ सुखदुःखकूंप्राप्तहोवै है॥ अब केवलपापकर्मकाफलजोस्वप्न है ताकूंनिरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ जैसे जाग्रत्अवस्थाविषे केवलपापरूपकर्मकेवशतैं यहपुरुष चोर व्याघ्रादिकप्रतिकूलपदार्थोंकूंदेखिकै परमदुःखकूंप्राप्तहोवै है ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषेभी केवलपापकर्मकेवशतैं यहजीव चौरव्याघ्रादिकपदार्थोंकूंदेखिकै परमदुःखकूंप्राप्तहोवै है ॥ और हेजनक ॥ जोस्वयंज्योतिआत्मा हमनैं तुमारेप्रतिकथनकऱ्या ॥ तिसस्वयंज्योतिआत्माकूं भाग्यहीनपुरुष देखतेनहीं ॥ किंतु तिसआत्माके क्रीडाकेसाधनजेरथादिकपदार्थ हैं तिनरथादिकपदार्थोंकूंहीं तेभाग्यहीनपुरुष देखते हैं ॥ और हेजनक ॥ जिसकालविषे यहइंद्ररूपआत्मा स्वप्नअवस्थाविषे तथासुषुप्तिअवस्थाविषे इंद्राणीकेसाथ आलिंगनकरिकै शयनकूंप्राप्तहोवै है ॥ तिसकालविषे याआनंदस्वरूपस्वयंज्योतिआत्माकूं किसीपुरुषनैं निद्रातैंजगाव्या नहीं ॥ काहेतैं जैसेलोकविषे एकांतदेशमेंस्थित जोस्त्रीपुरुष हैं ॥ जिसस्त्रीपुरुषकी विषयभोगकरिकै अभिलाषानिवृत्तनहींभई ॥ ऐसे स्त्रीपुरुषकूं जभी कोईपुरुष शीघ्रहीं तिसगृहतैं बाहरनिकासे है ॥ तभी ते स्त्रीपुरुषदोनों अत्यंतक्षोभकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ तैसे स्वप्नरूपएकांतदेशविषे तथासुषुप्तिरूपएकांतदेशविषे स्थित जोआत्मारूप इंद्रइंद्राणी है ॥ तिनोंकूं जभीकोईपुरुष निद्रातैं जगावताहै ॥ तभी सोआत्मारूपइंद्रइंद्राणी दोनों परमक्षोभकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ यातैं सोयेहुएपुरुषकूं कदाचित् नहींजगावणा ॥ ॥ किंवा ॥ सोयेहुएपुरुषके शीघ्रजागणेकरिकै तापुरुषकेप्राण शरीरकेनाडियोंविषे नियमकरिकै प्रवेशकरैनहीं ॥ याकारणतैंभी सोयेहुएपुरुषकूं शीघ्रनहींजगावणा ॥ किंवा ॥ जैसे महाराज किसीअवश्यकार्यकेकरणेवासतैं रात्रिकाल विषे आपणीअंतःपुरतैं शीघ्रही बाहरगमनकरै है॥ और ताराजाकेगमनकूंदेखिकरिकै ताराजाके सेनापति भृत्य शीघ्रहीं किसीमार्गकरिकै अथवाकुमार्गकरिकै ताराजाकेसन्मुखहोवैं हैं॥ और जभी तेराजाकेभृत्य राजाकेआगेचलणेवासतै मार्गकूंछोडिकै कुमार्गविषेचालेहैं ॥ तभी लोकोंकेगृहादिकपदार्थोंकाभी भेदनकरैं हैं ॥ तैसे स्वप्नसुषुप्तिरूपनिद्रातैं याजीवात्मारूपराजाकेशीघ्रआगमनहुए तेप्राणरूप

किंकरभी नाडीरूपमार्गकूंछोडिकरिकै शीघ्रहीं बाहरगमनकरैं हैं ॥ ताकरिकै तिसपुरुषविषे अंगमोटनरूप असाध्यरोगकीउत्पत्तिहोवैहै॥ याकारणतैंभी सोयेहुएपुरुषकूं किसीनैं शीघ्रनहींजगावणा॥किंवा॥सोयेहुएपुरुषका तथा जगावणेहारेपुरुषका जोकदाचित्प्राणोंकेसमान कोईप्रियकार्य सिद्धहोताहोवै ॥ तौभी सोयेहुएपुरुषकूं बुद्धिमान्पुरुषनैं शीघ्रनहींजगावणा किंवा ॥ सोयेहुएपुरुषका तथाजगावणेहारेपुरुषका जबी कोईमहान्कार्य होताहोवै॥तभी सोयेहुएपुरुषकूं यहपुरुष कोमलस्पर्शादिकउपायोंकरिकै शनैः शनैः जगावै ॥जो तासोयेहुएपुरुषकूं शीघ्रहींजगावैगा ॥ तौ तासोयेहुएपुरुषविषे असाध्यरोगकीउत्पत्तिहोवैगी ॥किंवा ॥ सोयेहुएपुरुषकेजगावणेकरिकै उत्पन्नभयाजो परमात्मारूपइंद्रइंद्राणीकावियोग ॥ सोवियोग सोयेहुएपुरुषकेभी दुःखकाहेतुहै ॥ तथा जगावणेहारेपुरुषकेभी दुःखकाहेतुहै ॥ काहेतैं जो पुरुषजगावैहै ॥ ताकूं भावीसुखकेनाशकरणेहारा पापहोवैहै ॥ और जागणेहारेपुरुषकूं वर्तमान सुखकेनाशकरणेहारा पाप होवै है ॥ याकारणतैं सोयेहुएकिसीप्राणीकूं बुद्धिमान्पुरुषनैं शीघ्रनहींजगावणा ॥ किंतु शनैः शनैः करिकैजगावणा ॥ अब अधिष्ठानआत्माविषे प्रपंचकेलयकूं निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ जोस्वयंज्योतिआत्मा स्वप्नअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ सोईहीस्वयंज्योतिआत्मा जाग्रत्अवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं स्वप्नअवस्थाविषे तथाजाग्रत्अवस्थाविषे तास्वयंज्योतिआत्माकाभेदनहीं॥जोजाग्रत्विषे तथास्वप्नविषे आत्माका भेदहोवै ॥ तौ जोमैं स्वप्नकेपदार्थोंकूं अनुभवकरताभया सोईमैं अभी जाग्रत्अवस्थाविषे तिनपदार्थोंकास्मरणकरताहूं ॥ याप्रकारका सर्वलोकोंकाअनुभव व्यर्थहोवैगा ॥ काहेतैं जोपुरुष जिसपदार्थकूं अनुभवकरैहै ॥ सोईपुरुष तिसपदार्थकूं कालांतरविषेस्मरणकरै है ॥ अन्यपुरुषकेअनुभवकियेपदार्थकूं अन्यपुरुष स्मरणकरैनहीं॥यातैं यालोकोंकेअनुभवतैंभी जाग्रत्स्वप्नकेआत्माका अभेदहीसिद्धहोवैहै॥ और हेजनक ॥ शास्त्रकेतात्पर्यकूंजानणेहारे केईमहात्मापुरुष याप्रकार कथनकरैं हैं ॥ जाग्रत्अवस्थाविषे देशकालतैंआदिलेके जितने कीदृश्यपदार्थ हैं ॥ तथास्वप्नअवस्थाविषे देशकालतैंआदिलेके जितनेकृदृश्यपदार्थ हैं ॥ तिनदोनोंप्रकारकेदृश्यपदार्थोंकी अधिष्ठान आत्मातैंभिन्नसत्तानहीं ॥ याकारणतैं तेजाग्रत्स्वप्नकेदृश्यपदार्थ असत्यहैं ॥ और जेअसत्यपदार्थहोवैहैं ॥ तिनोंका अधिष्ठानतैं तथापर

स्परभेदहोवैनहीं ॥ जैसे रज्जुविषेकल्पित जेसर्प दंड जलधारा आदिकुअसत्यपदार्थ हैं ॥ तिनोंका रज्जुरूपअधिष्ठानतैं तथापरस्पर भेद संभवैनहीं ॥ तैसे अधिष्ठानआत्माविषेकल्पित जेजाग्रत्स्वप्नकेपदार्थ हैं ॥ तिनोंका अधिष्ठान आत्मातैं तथापरस्पर भेदसंभवैनहीं ॥ और उपाधिकेभेदतैंहीं आत्माकाभेदहोवैहै ॥ तिनउपाधियोंके भेदकेनिवृत्तहुए आत्माकाभेदसंभवैनहीं ॥ यातैं सर्वअवस्थावोंविषे आत्माका अभेदहै ॥ अब याहींअर्थकूं आगेस्पष्टकरिकैदिखावैहैं ॥हेजनक ॥ जैसे जाग्रत्अवस्थाविषे संपूर्णभूतभौतिकरूप दृश्यपदार्थोंकरिकैयुक्त जोदेशकालहै ॥ सोदेशकाल अध्यस्तरूपकरिकै अधिष्ठानआत्माविषे स्थितहै॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषेभी भूतभौतिकरूप दृश्यप्रपंचक रिकैयुक्त जोदेशकालहै सो देशकाल अध्यस्तरूपकरिकै अधिष्ठानआत्माविषेहीस्थितहै ॥ यातैं आत्मारूपअधिष्ठानकीदृष्टिकरिकै तथा स्वभावतैं तिनजाग्रत्स्वप्नके देशकालादिकोंका परस्पर भेदसंभवैनहीं॥किंवा॥ तर्कविषेकुशल जेनैयायिकहैं ॥ तेभी दिशाविषे दूसरीदिशाकूं तथा कालविषे दूसरे कालकूं अंगीकारकरतेनहीं ॥ और या अर्थविषे जोनैयायिक याप्रकारकीयुक्तिकहैं हैं ॥ सोदेशकालरूपवस्तु दूसरोकिसीदेशकालविषेरहैनहीं ॥ किंतु आपणेव्यवहारकीसिद्धिवासतै सोदेशकालरूपवस्तु तादात्म्यसंबंधकरिकै आपणेस्वरूपविषेहीं रहे हैं ॥ सो याप्रकारकी तिनोंकीयुक्तिभी हमारेसिद्धांतकेअनुकूलही हैं ॥ शंका॥नैयायिकोंकेमतविषे दिशा तथाकाल दोनोंविभुहैं तथा नित्यहैं ॥ तहां सर्वदेशविषे जोपदार्थरहैहै ॥ ताकूं नैयायिक विभुकहैं हैं॥और सर्वकालविषे जोपदार्थरहैहै॥ताकूं नैयायिक नित्यकहैहैं॥ याप्रकारकेलक्षणविषे देशकी देशविषेआधारता प्रतीतहोवैहै॥और कालविषे कालकीआधारता प्रतीतहोवैहैऔर अभिन्नपदार्थोंका परस्पर आधार आधेयभावहोवैनहीं ॥ यातैं देशका कोईदूसरादेश आधार मान्याचाहिये॥तथाकालका कोईदूसराकाल आधार मान्याचाहिये ॥ समाधान॥जैसे नैयायिकोंकेमतविषे घटकेअभावविषे जोपटकाअभावहै ॥ सोपटकाअभाव घटकेअभावतैंभिन्नहीं॥किंतु सोपटाभाव घटाभावरूपहै॥तौभी घटाभावविषे पटाभावहै याप्रकारका आधारआधेयभावप्रतीतहोवैहै॥तैसे देशविषे देशहै॥तथा कालविषे कालहै॥तथा घटविषे घटहै॥याप्रकारकेव्यवहारभी तिनोंकेभेदतैंविनाहीं संभवहोइसकैं हैं॥यातैं देशकालादिकोंका वास्तवतैं भेदहैनहीं॥

शंका॥देशकालादिकोंकेभेदव्यवहारकाजनक जोभेद है॥ताकूं असत्यरूपता संभवैनहीं॥काहेतैं जोअसत्यपदार्थहोवै है॥सो किसीव्यवहार काकारणहोवैनहीं ॥ समाधान ॥ सत्यवस्तुही व्यवहारकाजनकहोवै है ॥ याप्रकार जोवादी अंगीकारकरै है ॥ तासैं यह पूछाचाहिये ॥ जहाँजहाँ व्यवहारहोवै है ॥ तहाँतहाँ सत्यवस्तुहीहोवै है॥याप्रकारकानियम है॥अथवा जहाँजहाँ सत्यवस्तुहोवै है ॥तहाँतहाँ व्यवहारहोवै है याप्रकारकानियम है॥तहाँ जोवादी प्रथमपक्षअंगीकारकरै सोसंभवैनहीं॥काहेतैं जभी कोईपुरुष अन्यकिसीपुरुषकेप्रति गालीदेवै है ॥ तभी सोपुरुष ताकीगालीकूं श्रवणकरिकै क्रोधवान्होवै है॥तहाँ गालीरूपवचनकाअर्थ असत्य है ॥ परंतु सोअसत्यअर्थ क्रोधरूपव्यवहा रकूंउत्पन्नकरै है ॥ जैसे पतिव्रतास्त्रीकूं किसीने व्यभिचारिणीकह्या ॥ तहाँ व्यभिचारशब्दकाअर्थ जोपुरुषकागमन है ॥ सोतापतिव्र तास्त्रीविषे है नहीं ॥ तोभी तावचनकूंश्रवणकरिकै सोपतिव्रतास्त्री क्रोधवानहोवै है॥यातैं जहाँजहाँ व्यवहारहोवै है॥तहाँतहाँ सत्यअर्थहो वै है ॥ यहवादीकानियम संभवैनहीं॥और जहाँजहाँ सत्यअर्थहोवै है॥तहाँतहाँ व्यवहारहोवै है॥यहदूसरा नियम जोवादीअंगीकारकरै ॥ सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं सत्यरूपजोब्रह्मानंद है ॥ सो सर्वजीवोंकेहृदयदेशविषे विराजमान है ॥ परंतु ताब्रह्मानंदका ज्ञानरूपव्यवहार तथाशब्दरूपव्यवहार किसी अज्ञानीजीवकूंहोतानहीं ॥ यातैं व्यवहारतैं वस्तुका सत्यपणासिद्धहोइसकैनहीं ॥ और जेमीमांसकवादी सर्वव्यावहारिक पदार्थोंकूं सत्यमानै हैं ॥ तिनोंकेमतविषेभी तीनकालविषेजाकानाशनहींहोवै सोसत्यकहिये है ॥ याप्रकारका सत्यशब्द कामुख्यअर्थ व्यावहारिकजगत्विषेसंभवैनहीं ॥ किंतु बहुतकालपर्यंतस्थायीतारूप गौणसत्यता तिनोंकूंअंगीकारकरणीहोवैगी ॥किंवा ॥ जोवादी भेदविषेअभिनिवेशकरिकै देशकालकेविभुत्वकी तथानित्यत्वकी सिद्धिवासतै एकदेशविषे दूसरादेश अंगीकारकरै है ॥ तथा एककालविषे दूसराकाल अंगीकारकरै है ॥ तथा एकघटविषे दूसराघट अंगीकारकरै है॥तिसवादीकूं बलात्कारसे अनवस्थादोषकीप्राप्ति होवैगी ॥ काहेतैं जैसेप्रथमदेशकाल दूसरेदेशकालविषे रहै है ॥ तैसे सोदूसरादेशकालभी किसीतीसरे देशकालविषेरहैगा तीसराचतुर्थ विषे रहैगा ॥ याप्रकार अनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और जोवादी आर्हतकीन्याईं एकहीवस्तुकूं अनेकरूपअंगीकारकरै ॥ तौ उष्ण

अग्निकूं शीतरूपताहोणीचाहिये ॥ और शीतजलकूं उष्णरूपताहोणीचाहिये याप्रकारकीअव्यवस्था वादीकूं प्राप्तहोगी और लोकविषे याप्रकारकी अव्यवस्था है नहीं ॥ किंतु जीवोंके सुखदुःखभोगवासतै देशकालादिक सर्वपदार्थोंकी व्यवस्थाही है॥शंका॥जैसे वादीकेम तविषे व्यवस्थासंभवैनहीं ॥ तैसे तुम अद्वैतवादियोंकेमतविषेभी जगत्कीव्यवस्थासंभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हम अद्वैतवादियोंकेमतविषे आत्मसाक्षात्कारतैंपूर्वपूर्व संपूर्णपदार्थोंकीव्यवस्थासंभवैनहीं ॥ परंतु सो जगत्कीव्यवस्था किसीप्रमाणकरिकै सिद्धनहीं॥किंतु जैसे स्वप्न केपदार्थ भ्रमकरिकैसिद्धहैं॥तैसे जाग्रत्प्रपंचकीव्यवस्थाभी भ्रमकरिकैसिद्धहै ॥ यातैं जाग्रत्अवस्थाविषे तथास्वप्नअवस्थाविषे विद्यमा नजोदेशकाल हैं ॥ तथा तादेशकालविषेस्थित जितनेकस्थूल सूक्ष्मपदार्थ हैं॥तेसंपूर्ण अद्वितीयआत्माविषेकल्पित हैं ॥और अधिष्ठान आत्माकीसत्ताकूंपाइकैहीं तेजाग्रत्स्वप्नकेपदार्थ आपणेआपणे कार्यकरणविषे समर्थहोवैं हैं ॥ यातैं जाग्रत्केपदार्थ तथास्वप्नकेपदार्थ दोनोंसमान हैं और हेजनक ॥ जैसे रज्जुरूपअधिष्ठानविषे सर्प दंड माला जलधारा यहसंपूर्ण कल्पित हैं ॥ तैसे अधिष्ठानसाक्षी आत्मा विषे देशकालतैंआदिलेके संपूर्णजगत् कल्पित है ॥ यातैं देशकालादिकसंपूर्णजगत् अधिष्ठान आत्माविषे लयभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ और हेजनक ॥ जैसे रज्जुविषेकल्पित जेसर्प दंड माला जलधारा हैं ॥ तिनसर्पादिकोंका परस्परभेद रज्जुरूपअधिष्ठानकेभेदतैंविना संभवै नहीं ॥ तैसे अधिष्ठानआत्माकेभेदतैंविना जाग्रत्स्वप्नकेप्रपंचका परस्परभेदसंभवैनहीं ॥ और पूर्वउक्तयुक्तिसैं जाग्रत्स्वप्नविषे आत्माक, भेदसंभवैनहीं॥यातैं आत्माविषेकल्पित देशकालादिकपदार्थोंकाभी परस्परभेद संभवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ परमार्थदृष्टिकरिकैतो अभेद है॥परंतु कार्यकीदृष्टिकरिकै मेरेकूं भेदभ्रमहोवै है ॥समाधान॥ हेजनक॥ लोकविषे आश्रयकेभेदतैं तथाज्ञानोंकेभेदतैं पदार्थोंका भेदहोवै है ॥ जैसे यहघट है ॥ याज्ञानकाविषयघट है ॥ औरताघटकाआश्र मृत्तिका है॥और यहपट है याज्ञानकाविषय पट है ॥और तापटकाआश्रय तंतु है ॥ याप्रकार ज्ञानोंकेभेदतैं तथाआश्रयकेभेदतैं घटपटादिकपदार्थोंका परस्परभेद लोकविषेदेख्या है ॥ सो आश्र यकाभेद तथाज्ञानोंकाभेद जगत्विषेहै नहीं॥काहेतैं देशकालतैंआदिलेके जितनाकस्थूलसूक्ष्मजगत् है॥ ताका एकहींमायाविशिष्टपरम,

त्मा आश्रय है और नेत्रादिकइंद्रियद्वारा वृत्तिरूपकरिकै घटादिकपदार्थोंकूंविषयकरणेहारा जो अंतःकरणरूप गौणज्ञानहै सोभी एकहीहै ॥ तथा तिनवृत्तियोंविषेआरूढ जोचैतन्यरूप मुख्यज्ञानहै सोभी एकही है ॥ यातैं एकआश्रयवाला तथाएकज्ञानकाविषय जो जगत् है ताकापरस्परभेदसंभवैनहीं और उपाधिकेभेदतैंहीं आत्माकाभेदहोवै है ॥ ताजगत्रूपउपाधियोंकेभेदकेनिवृत्तहुए आत्माकाभी भेदसंभवैनहीं ॥ यातैं जाग्रत्स्वप्नप्रपंचका एकहीआत्मा अधिष्ठानहै ॥ तहाँदृष्टांत ॥ जैसे आकाशविषे प्रतीतभये जेमेघविद्युत्आदिकप दार्थ ॥ तिनमेघविद्युत्आदिकपदार्थोंकेभेदकरिकै अधिष्ठानआकाशका भेदहोवैनहीं ॥ तैसे अधिष्ठानआत्माविषे प्रतीतभयेजे देशकाला दिकपदार्थ॥तिनदेशकालादिकोंकेभेदकरिकै अधिष्ठानआत्माकाभेदहोवैनहीं॥ इतनैकरिकैभी आधेयपदार्थोंकेभेदकूं अंगीकारकरिकैभी आत्मारूपआधारकी एकता निरूपणकरी अब कल्पितआधारोंके भेदकूंअंगीकारकरिकैभी आधेयपदार्थोंकीएकताकूं निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ जैसे एकहीघट मृत्तिकारूपअवयवोंविषेस्थितहुआ प्रतीतहोवै है ॥ और सोईघट गृहविषे तथागृहकेअंगणविषे स्थितहुआ प्रतीतहोवै है ॥ तहाँ मृत्तिका गृह गृहकाअंगण इत्यादिकजोघटकेआधारहैं ॥ तिनआधारोंकेभेदहुएभी आधेयरूपघटकाभेदहोवै नहीं ॥ तैसे जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति इत्यादिकअवस्थावोंकेभेदहुएभी स्वयंज्योतिआत्माकाभेदहोवैनहीं ॥ और हे जनक ॥ जोस्वयंज्योतिआत्मा जाग्रत्केपदार्थोंकाअधिष्ठानहै ॥ सोईस्वयंज्योतिआत्मा स्वप्नकेपदार्थोंकाअधिष्ठानहै ॥ यातैं जाग्रत्प्रपंचकी तथास्वप्नप्रपंचकी किंचित् मात्रभीविलक्षणतानहीं कल्पितरूपकरिकै दोनोंसमानहैं ॥ यातैं हेजनक ॥ ऐसाभेदतैंरहितस्वयंज्योतिआत्मा स्वप्नअवस्थाविषे स्वयं ज्योतिरूपकरिकै हमनैं तुमारेप्रति कथनकऱ्याहै ॥ अब जिसअर्थकेपूछणेकी तुमारेकूंइच्छाहोवै ॥ सोअर्थ तूं हमारेसैंपूछ ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकावचन जभी याज्ञवल्क्यमुनिनैं जनकराजाकेप्रतिकह्या॥तभी सोबुद्धिमान्जनक याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति याप्रकारकावचनकहता भया।राजाजनकउवाच॥हेयाज्ञवल्क्यमुनि॥जोकोईब्राह्मण हमारेप्रति किसीसाधारणविद्याकाभी उपदेशकरताहै।तिसब्राह्मणकेताईं मैंजनक राजा एकसहस्रगोवां दक्षिणादेताहूं॥कैसीहैं तेगोवां॥ हस्तीकेसमानहैंवृषभजिनोंविषे॥तथा यौवनअवस्थाकरिकैयुक्तहैं और शास्त्रविषे जेश्रेष्ठ

गौवोंकेलक्षणलिखेहैं तिनलक्षणोंकरिकैयुक्तहैं ॥ याप्रकारकीगौवां शास्त्रकीरीतिसैंमैं तिसब्राह्मणकेताईंदेताहूं ॥ याप्रकारका हमारानियम सर्वलोकजाणतेहैं॥यातैं हेभगवन् आपनैं हमारेप्रति जोसाधारणविद्याकाउपदेशकरी है॥तासाधारणविद्याकीगुरुदक्षिणा एकसहस्रगोवाँ मैं आपकेताईंदेताहूं ॥ तिसगुरुदक्षिणाकूंआप अंगीकारकरो॥तिसतैंअनंतर आत्माकेवास्तवस्वरूपकाउपदेश हमारेप्रति करो॥हेशिष्य ॥ याप्रकारकावचन तीनवार जभी जनकराजानैं याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रतिकह्या ॥ तभी सोयाज्ञवल्क्यमुनि आपणेमनविषे याप्रकारकाविचार करताभया ॥ हमनैं जनकराजाकेताईं संपूर्णब्रह्मविद्याकाउपदेशकऱ्याहै ॥ तौभी यहजनकराजा ताब्रह्मविद्याकूं यथार्थ नहींजाणताभया है ॥ किंतु अन्यविद्याकेसमान यहभीकोई साधारणविद्याहै याप्रकार जनकराजानैं जान्याहै ॥हेशिष्य॥ याप्रकारका मनाविषेविचारकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि जनकराजाकेप्रति याप्रकारकावचनकहताभया ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेजनक ॥ यहजोतुमनैं वचनकह्या ॥ साधारणविद्याकीगुरुदक्षिणा एकसहस्रगोवांमैं आपकेताईंदेताहूं ॥ तिसतैंअनंतर आत्माके यथार्थस्वरूपकाउपदेश हमारेप्रतिकरो ॥ सोयहतुमारावचन श्रवणकरिकै हमारेकूं यहसंशयहोवै है ॥ जोहमनैं पूर्वस्वयंज्योतिआत्मा तुमारेप्रति उपदेशकऱ्या है ॥ तिसस्वयंज्यो तिआत्माकूं तुमनैं यथार्थजान्याहै अथवा नहींजान्याहै ॥ यहवृत्तांत तूं हमारेप्रतिकहु ॥ हे शिष्य याप्रकारकावचन जभी याज्ञवल्क्यमु निनैं जनकराजाकेप्रतिकह्या ॥ तभी सोजनकराजा याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेयाज्ञवल्क्यमुनि ॥ आपनैं जोहमारेप्रति स्वयंज्योतिआत्माकाउपदेशकऱ्याहै॥तिसकूं हमनैं अवपर्यंत जान्यानहीं॥यातैं तिसस्वयंज्योतिआत्माकेज्ञानवासतै अभी हमारेप्रति उपदेशकरो ॥ अब पूर्वकथनकरेअर्थविषे जनकराजाकेतीनप्रश्नोंकूं निरूपणकरैं हैं ॥ हेयाज्ञवल्क्यमुनि ॥ पूर्वआपनैं हमारे प्रति स्वप्नअवस्थाविषेस्थित स्वयंज्योतिआत्माकाउपदेशकऱ्या ॥ ताकोविषे मैं याप्रकारकेदोषकूंदेखताहूं ॥ स्वप्नअवस्थाविषे यहस्वयं ज्योतिआत्मा सुंदरस्त्रियोंकेसाथ क्रीडाकरै है ॥ तथा हँसै है ॥ तथानानाप्रकारकेअन्नकूं भक्षणकरै है॥तथा अप्रियपदार्थोंकेदेखणेवासतै ॥ ४९ प्रवृत्तहोवैहै॥तथा अप्रियपदार्थोंतैं निवृत्तहोवै है॥यातैं यहजान्याजावैह॥सोस्वयंज्योतिआत्मा भोक्ताहै॥और जोभोक्ताहोवैहै॥सोसंगवान्

होवैहै॥यातैंस्वप्नअवस्थाविषे सोस्वयंज्योतिआत्माअसंगनहीं॥इतिप्रथमप्रश्न॥अबद्वितीयप्रश्नकूंनिरूपणकरैंहैं॥हेयाज्ञवल्क्यमुनि॥आपनैं स्वप्नअवस्थाविषे जोआत्माकूंअसंगकह्या ॥ सोयद्यपिसंभवैहै ॥ काहेतैं स्वप्नअवस्थाविषेविद्यमान जोसूक्ष्मशरीरहै सो असंग है ॥ याका रणतैंहीं तासूक्ष्मशरीरका पर्वतादिकोंविषेभीप्रवेशहोवै है ॥ ऐसे असंगसूक्ष्मशरीरकरिकैयुक्त जोस्वयंज्योतिआत्माहै ॥ ताकूंभी असंगरू पता संभवैहै ॥ तथापि जाग्रत्अवस्थाविषेविद्यमान जोस्थूलशरीरहै ॥ सो सर्वलोकोंकूं संगवान्प्रतीतहोवै है॥ ता संगवान्स्थूलशरीर विषेस्थित जोस्वयंज्योतिआत्माहै ॥ ताकूंअसंगरूपतासंभवैनहीं ॥ इतिद्वितीयप्रश्न ॥ अब तृतीयप्रश्नकूंनिरूपणकरैं हैं ॥ हेयाज्ञवल्क्य मुनि ॥ जाग्रत्अवस्थाकूं तथास्वप्नअवस्थाकूं प्राप्तहोणेहारा जोएकआत्माहै ॥ तिसएकआत्माकी दोनोंस्थानोंविषेस्थितिहोणी अत्यंतदु र्घटहै ॥ काहेतैं जैसे उज्जयिनीपुरीविषेस्थितजोराजाहै ॥ सोराजा ॥ काशीपुरीविषे स्थितहोइसकैनहीं ॥ किंतुकाशीपुरीकाराजा उज्जयि नीपुरीकेराजातैं भिन्नहीहोवैहै॥तैसे जाग्रत्अवस्थाविषेस्थित जोआत्माहै॥सोआत्मा स्वप्नअवस्थाविषे स्थितहोइसकैनहीं ॥ किंतुजाग्र त्अवस्थाकेआत्मातैं स्वप्नअवस्थाकाआत्मा भिन्नहीहोवैगा इतितृतीयप्रश्न ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकेतीनप्रश्नजभी जनकराजाने याज्ञ वल्क्यमुनिकेप्रतिकरे ॥ तभी सोयाज्ञवल्क्यमुनि तिसराजाकेतीनप्रश्नोंकाउत्तर क्रमतैंकहताभया ॥ अब प्रश्नकेउत्तरकूं निरूपण करै हैं ॥ हेजनक ॥ पूर्वहमन स्वप्नअवस्थाविष जोआत्मा स्वयंज्योतिरूपकरिकै तुम्हारेप्रति उपदेशकऱ्याहै ॥सोईहीस्वयंज्योतिआत्मा कदाचित् संप्रसादनामास्थानविषे स्थितहोवैहै ॥ अब संप्रसादकेअर्थकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ॥ जैसे शरद्ऋतुविषे जल कालुष्य कापरित्यागकरिकै निर्मलहोवै है॥ तैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे यहआनंदस्वरूपस्वयंज्योतिआत्मा स्थूलसूक्ष्मशरीरके अभिमानकूंपरित्याग करिकै स्थितहोवैहै ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष तासुषुप्तिकूं संप्रसादनामकरिकै कथनकरैं हैं ॥ शंका ॥हेभगवन्॥ सुषुप्तिअवस्थाविषेभी श्रुतिन आत्माविषे रति तथागति कथनकरीहै ॥ तहाँ नानाप्रकारकीक्रीडाकानामरतिहै ॥ और नानाप्रकारकेविषयोंकीप्राप्तिवासतै जोपरिअटनहै ताकूं गतिकहैहैं ॥ यातैं सुषुप्तिअवस्थाविषेभी विक्षेपकाअभावनहीं ॥ किंतुजाग्रत्स्वप्नकीन्याईं सुषुप्तिविषेभी रतिगतिरूप

विक्षेपरहैहै ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे यद्यपि रति गति दोनोंनहींहै॥ तथापि सुषुप्तिकीप्राप्तितैंपूर्व तथापश्चात् सोरति गति दोनोंविद्यमानहैं ॥ तिनोंकूंग्रहणकरिकै सुषुप्तिअवस्थाविषे श्रुतिभगवती आत्माविषे रति गति कथनकरैहै इसीप्रकार सुखदुःख रूपफलकेदेणेहारे जेपुण्यपापरूपकर्महैं ॥ तेपुण्यपापरूपकर्म यद्यपि सुषुप्तिअवस्थाविषेहैंनहीं ॥ तथापि तेपुण्यपापरूपकर्म सुषुप्तिअवस्थाविषे कारणअज्ञानरूपहोइकैरहै हैं जोसुषुप्तिअवस्थाविषे पुण्यपापरूपकर्मोंका सर्वथाअभावहोवै ॥ तौ सुषुप्तितैंअनंतर जाग्रत् अवस्थाविषे तथास्वप्नअवस्थाविषे सुखदुःखरूपफलकीप्राप्ति नहींहोणीचाहिये ॥ और जाग्रत्स्वप्नविषे सुखदुःखरूपफलकीप्राप्ति सर्वजीवोंकूंदेखीतीहै ॥ यातैं यहजान्याजावैहै सुषुप्तिअवस्थाविषे पुण्यपापरूपकर्म कारणअज्ञानरूपहोइकैरहैहै ॥ और सुषुप्तिअवस्थाविषे यहस्वयंज्योतिआत्मा आपणेस्वप्रकाशरूपकरिकै ताकारणअज्ञानकूं प्रकाशकरैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवतीनैं यहकह्या है ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे सोआत्मा पुण्यपापरूपकर्मोंकूंदेखै है ॥ और हेजनक ॥ याअनादिसंसारविषे यहजीवात्मा जैसे पूर्वपूर्व संप्रसादरूपअनेकसुषुप्तिअवस्थावोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसीप्रकार यहजीवात्मा पुनः सुषुप्तिरूपसंप्रसादकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और यहजीवात्मा सुषुप्तिरूपसंप्रसादविषे जिसमार्गकरिकैजावैहै ॥ तिसीमार्गकरिकैयहजीवात्मा तासुषुप्तिरूपसंप्रसादतैं बाहरआवैहै ॥ और हेजनक॥ सुषुप्तिअवस्थातैंपूर्व जिसजातिवालेशरीरकरिकैयुक्त यहजीवात्माहोवैहै ॥ सुषुप्तिअवस्थाकूंप्राप्तहोइकैयहजीवात्मा तिसीजातिवालेशरीरकूं ग्रहणकरिकै तासुषुप्तितैंबाहरआवै है ॥ पूर्वशरीरतौंविलक्षण दूसरेशरीरकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तहांव्याघ्रशरीरकरिकैयुक्तहुआ यहजीवात्मा जभीसुषुप्तिअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभी व्याघ्रशरीरकूंग्रहणकरिकैहीं तासुषुप्तितैं बाहरआवैहै ॥ इसप्रकार सिंह वृक वराह कीट मनुष्य इसतैंआदिलेके जितनेकप्राणीहैं॥तेसंपूर्णप्राणी जिसजिसजातिवालेशरीरकरिकै युक्तहुए सुषुप्तिरूपसंप्रसादकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तिसीतिसीजातिवालेशरीरकूं ग्रहणकरिकै पुनःसुषुप्तितैं बाहरआवै हैं ॥ शंका ॥ हे भगवन् ॥ यहजीवात्मा सुषुप्तिरूपसंप्रसादतैंजोबाहरआवै है ॥ सो स्वप्नकी प्राप्तिवासतैंहींआवै है ॥ यहजोश्रुतिनैंकथनकऱ्याहै सो संभवैनहीं ॥ काहेत सुषुप्तितैंअनंतर स्वप्नहींहोवै है याप्रकारकानियम

है नहीं ॥ किंतु सुषुप्तितैं अनंतर कदाचित् जाग्रत्होवै है ॥ और कदाचित् स्वप्न होवै है ॥ हे जनक ॥ यह जीवात्मा स्वप्नकीप्राप्तिवासतै सुषुप्तितैंबाहरआवै है ॥ यह जोश्रुतिनैंकथनकऱ्याहै सोअसंगत नहीं किंतु यथार्थही है ॥ काहेतैं यहाँ स्वप्नशब्दकरिकै केवलस्वप्नअवस्थाका ग्रहणनहींकरणा ॥ किंतु स्वप्नशब्दकरिकै विपर्ययज्ञानरूपविक्षेपकाग्रहणकरणा ॥ सो विक्षेपरूपता जैसे स्वप्नविषे है ॥ तैसे जाग्रत्विषेभी है ॥ यातैं श्रुतिविषे जोस्वप्नपदहै ॥ तास्वप्नशब्दकरिकै जाग्रत्स्वप्नदोनोंकाग्रहणकरणा॥अब आत्माविषे असंगरूपताकूं निरूपणकरै हैं ॥ हेजनक ॥ सोआनंदस्वरूपआत्मा सुषुप्तितैंबाहरआइकै विक्षेपरूपस्वप्नविषे स्थितहोवै है ॥और तास्वप्नविषे स्थितहुआ यह आनंदस्वरूप आत्मा स्त्रीसंभोगतैंआदिलैके नानाप्रकारके विषयोंकूं देखे है ॥ परंतु जैसे घटकाद्रष्टापुरुष घटादिकदृश्यपदार्थोंकेसाथ संबंधकूंप्राप्त होव नहीं॥तैसे स्वप्न अवस्थाविषे नानाप्रकारके विषयोंका द्रष्टाआत्मा तिनदृश्यरूपविषयोंके साथ संबंधकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ शंका ॥हेभगवन्॥ स्वप्नअवस्थाविषे यहद्रष्टापुरुष जैसे रूपादिक विषयोंकूंदेखे है ॥ तैसे अहंसुखी अहंदुःखी याप्रतीतिकरिकै अहंशब्दकाअर्थजोआत्माहै ताकूंभी यहद्रष्टापुरुष जानै है ॥ यातैं स्वप्नअवस्थाविषे जैसे रूपादिकपदार्थ ज्ञानके विषय हैं ॥ तैसे आत्माभी अहं याज्ञानकाविषय है ॥ यातैं रूपादिकदृश्यपदार्थोंकेसाथ यद्यपि द्रष्टापुरुषकासंबंधनहीं है ॥ तथापि आत्मा रूपदृश्यपदार्थकेसाथ द्रष्टापुरुषकासंबंध संभवै है ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ आत्माकारिकैविशिष्टजो कोईपदार्थ है॥ तिसकूं कोईभीपुरुष देखणेविषेसमर्थनहीं ॥ काहेत जोवादी आत्माविशिष्टपदार्थविषे ज्ञानकीविषयता अंगीकारकरै है॥ तिसवादीकूं आत्माविषेभीविषयता बलात्कारसैंअंगीकारकरणीहोवैगी॥काहेतैं जोधर्मविशेषणविशिष्टपदार्थविषेरहै है ॥ सोधर्म विशेषणविषेभी अवश्यरहै है ॥ जैसेनीलघटहै याप्रकारकेज्ञानकीविषयता नीलगुणविशिष्टघटविषेरहै है ॥ और सोविषयता नीलगुणरूपविशेषणविषेभीरहै है ॥ तैसे आत्माविशिष्टपदार्थविषे जोज्ञानकीविषयताहै ॥ सोविषयता विशेषणरूपआत्माविषेभी अवश्यरहैगी॥ किंवा॥ जोपुरुष विशेषणकूं तथाविशेष्यकूं तथा तिनदोनोंकेसंबंधकूं नहींजाणता ॥ सोपुरुष विशिष्टपदार्थकूं जाणिसकैनहीं ॥ यातैं विशिष्टपदार्थकेज्ञानविषे विशेषणकाज्ञान तथाविशेष्यका

ज्ञान तथातिनोंकेसंबंधकाज्ञान यहतीनोंज्ञान कारण हैं ॥ जैसे दंडविशिष्टपुरुषकूं विषयकरणेहारा जोदंडीपुरुष है याप्रकारकाविशिष्ट ज्ञान है ॥ सोविशिष्टज्ञान दंडरूपविशेषणकेज्ञानतैंविना तथा पुरुषरूपविशेष्यकेज्ञानतैंविना तथा दंडपुरुषके संयोगसंबंधकेज्ञानतैंविना कदाचित्होवैनहीं ॥ किंतु दंड पुरुष संयोग यातीनोंकेज्ञानकरिकैहींदंडीपुरुषहै याप्रकारकाविशिष्टज्ञान होवै है ॥ इसीप्रकार जो ज्ञान आत्माविशिष्टपदार्थकूंविषयकरैगा ॥ सोज्ञान विशेषणरूपआत्माकूंभी अवश्य विषयकरैगा ॥ यातैं आत्माविषेभी ज्ञानकी विषयता प्राप्तहोवैगी ॥ शंका ॥ हे भगवन् ॥ आत्माविषे ज्ञानकी विषयता मानणेंक्याहानिहोवै है ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ जैसे दक्षिणहस्तकी मुष्टिकरिकै दक्षिणहस्तकेमुष्टिकाग्रहणहोइसकैनहीं ॥ तैसे आत्माकरिक आत्माकाग्रहण किसीप्रकारकरिकैसंभवैनहीं ॥ और जो आत्मा विषेभी ज्ञानकीविषयता अंगीकारकरिये ॥ तौ जोजोपदार्थ ज्ञानकाविषयहोवै है ॥ सोसोपदार्थ जडहोवै है ॥ जैसे ज्ञानके विषयहोणेंतैं घटादिकपदार्थ जडहैं ॥ तैसे ज्ञानकाविषयहोणेंतैं आत्माभी जडहोवैगा ॥ और जो जो पदार्थ जडरूपहोवै हैं ॥ सोसोपदार्थ अनात्मारूप होवै है ॥ जैसे जडरूपहोणेंतैं घटादिकपदार्थ अनात्मारूपहैं ॥ तैसे जडरूपहोणेंतैं आत्माभी अनात्मारूपहोवैगा ॥ और आत्माविषे अनात्मरूपता कोईभीवादी अंगीकारकरतानहीं ॥ किंवा ॥ जो वादी जडपदार्थोंकूंभी आत्मारूपअंगीकारकरै ॥ तौ जैसे जडआत्माविषे आत्मरूपताहै ॥ तैसे जडघटादिकोंविषेभी आत्मरूपता अवश्यमानणीहोवैगी ॥ और जडघटादिकोंकूं कोईवादी आत्मरूपमानतानहीं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ आकाशादिकविभुपदार्थोंविषे तथाघटादिकपरिच्छिन्नपदार्थोंविषे जहाँजहाँ जडपणारहै है ॥ तहाँतहाँ अनात्मरूपतानहींदेखीती है ॥ यातैं आत्माविषे किसीज्ञानकीविषयतानहीं ॥ और जेवादी अहंसुखी अहंदुःखी याप्रकारकेज्ञानकीविषयता आत्माविषे मानै है ॥ तेवादी भ्रांतिकरिकैमानैहैं ॥ काहेतैं अहं याज्ञानकीविषयता अंतःकरणकीविषयताकूं शुद्धआत्माविषे आरोपणकरिकैतेवादी आत्माकूं अहं याज्ञानकाविषयमानै हैं ॥ यातैं आत्माकिसीज्ञानकाविषयनहीं ॥ और हेजनक ॥ स्वप्नअवस्थाविषेस्त्रीसंभोगतैंआदिलेके जितने कअन्नपानादिकदृश्यपदार्थ हैं ॥ तिनोंकेसाथ द्रष्टाआत्माकासंबंधहैनहीं ॥ काहेतैं थालोकविषेभीजोपुरुष द्रष्टाहोवै है ॥ ताका दृश्यपदार्थकेसाथ

॥ ५१ ॥

संबंधहोवैनहीं ॥ जैसे घटादिकपदार्थोंकूंदेखणेहारा जोद्रष्टापुरुषहै ताका द्रष्टापुरुष घटपटादिकदृश्यपदार्थोंकेसाथ तीनकालसंबंधनहीं तैसे स्वप्नअवस्थाविषे स्वप्नद्रष्टापुरुषका स्वप्नकेदृश्यपदार्थोंकेसाथ तीनकाल संबंधनहीं ॥ यातैं हेजनक ॥ याप्रकार स्वप्नअवस्थाविषेसर्वसंगतैं रहित जोअसंगआत्माहै ॥ सोआत्मा स्वप्नकाशरूपकरिकैजान्याहुआ अधिकारीपुरुषोंकूं मोक्षकीप्राप्तिकरै है ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारप्रथमप्रश्नकाउत्तर जभी याज्ञवल्क्यमुनिनैं जनकराजाकेप्रतिकह्या ॥ तभी सोजनकराजा याज्ञवल्क्यमुनिकेउत्तरकूं अंगीकारकरताभया ॥ तिसतैं अनंतर सोयाज्ञवल्क्यमुनि जनकराजाकेप्रति द्वितीयप्रश्नकाउत्तर कहताभया ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेजनक जैसेद्रष्टाआत्माकूंस्वप्नके पदार्थ लिपायमानकरैनहीं ॥ तैसे द्रष्टाआत्माकूं जाग्रत्केपदार्थभी लिपायमानकरैनहीं ॥ यातैं स्वप्नअवस्थाकीन्याईंजाग्रत्अवस्थाविषेभी आत्मा असंगहै अब याहीअर्थकेस्पष्टकरणेवास्तै जाग्रत्अवस्थाके तथास्वप्नअवस्थाके तुल्यताकूंनिरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ जैसे यहस्वयं ज्योतिआत्मा जाग्रत्केपदार्थोंकूं देखिकरिकैस्वप्नअवस्थाविषेजावै है तैसेस्वप्नअवस्थाविषे यहस्वयंज्योतिआत्मा नाडीरूपमार्गकूंतथापुण्य पापरूपकर्मोंकूं तथाबुद्धिकूं देखिकरिकैहीं जाग्रत्अवस्थाविषे आवै है ॥ और जिसनाडीरूपमार्गकरिकै यहजीवात्मा स्वप्नअवस्थाविषेप्राप्त होवै है तिसीनाडीरूपमार्गकरिकै यहजीवात्मा जाग्रत्अवस्थाविषे आवैहै ॥ यातैं जाग्रत्स्वप्नदोनोंसमानहैं ॥ यहाँ स्वप्नअवस्थातैं जाग्रत्अवस्थाविषे इतनीविशेषताहै ॥ जाग्रत्अवस्थाविषे केवलबाह्यपणाहै ॥ और स्वप्नअवस्थाविषे बाह्यपणा तथाअंतरपणा दोनों हैं ॥ तहाँ जाग्रत्अवस्थाकीअपेक्षाकरिकैतौ स्वप्नअवस्थाविषे अंतरपणाहै और सुषुप्तिअवस्थाकीअपेक्षाकरिकै तौस्वप्नअवस्थाविषे बाह्यपणाहै ॥ और हेजनक ॥ जैसे स्वप्नअवस्थाविषे यहद्रष्टापुरुष दृश्यपदार्थोंकेसंगतैं रहितहोवै है ॥ तैसे जाग्रत्अवस्थाविषेभी यहद्रष्टापुरुष दृश्यपदार्थोंकेसंगतैं रहितहोवै है ॥ यातैं स्वप्नअवस्थाकीन्याईं जाग्रत्अवस्थाविषेभी यहद्रष्टाआत्मा असंग है ॥ तात्पर्ययह ॥ एकमूर्तपदार्थका दूसरे मूर्तपदार्थकेसाथ जोक्रियाजन्यसंयोगसंबंधहै ॥ तासंयोगसंबंधकूं शास्त्रवेत्तापुरुष संगकहैं हैं ॥ जैसे घटरूपमूर्त्तपदार्थका भूतलरूपमूर्तपदार्थकेसाथ जोक्रियाजन्यसंयोगसंबंधहै ॥ तासंयोगसंबंधकानाम संगहै ॥ याप्रकारकासंग किसीपदार्थकेसाथ आत्माकासंभवैनहीं ॥

काहेतैं आत्मा आकाशकीन्याईं अमूर्त है तथाविभुहै ॥ अमूर्तंविभुपदार्थविषे कोईभीवादी क्रिया अंगीकारकरतानहीं॥यातैं विभुआत्मा का क्रियाजन्यसंयोगरूपसंग किसीपदार्थकेसाथसंभवैनहीं ॥ यातैं स्वप्नअवस्थाकीन्याईं जाग्रत्अवस्थाविषेभी आत्मा असंगहै ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार जभी याज्ञवल्क्यमुनिनैं जनकराजाकेप्रति द्वितीयप्रश्नकाउत्तर कथनकऱ्या ॥ तभी सोजनकराजा ताउत्तरकूं अंगी कारकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोयाज्ञवल्क्य मुनि जनकराजाकेप्रति तृतीयप्रश्नकेउत्तरकूं कहताभया ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेजनक॥जाग्रत्अवस्थाविषे यहआनंदस्वरूपआत्मा स्वप्नकीन्याईं प्रियस्त्रियोंकेसाथ क्रीडाकरिकै तथानानाप्रकारकेमार्गोंविषेगमनकरिकै तथा पुण्यपापरूपकर्मोंकरिकैउत्पन्नभईजो सुखदुःखाकारबुद्धि तांबुद्धिकूंदेखिकरिकै स्वप्नअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै॥तहाँ स्वप्नअवस्थाविषेनाना प्रकारकेपदार्थोंकूंदेखिकरिकै यहस्वयंज्योतिआत्मा पुनःजाग्रत्अवस्थाकूं प्राप्तहोवैहै॥इसप्रकार एकहीस्वयंज्योतिआत्मा क्रमतैंजाग्रत्अ वस्थाकूं तथास्वप्नअवस्थाकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तहांदृष्टांत ॥ जैसे लोकविषे जलकरिकैपूर्ण जोमहान्नदी है॥तानदीविषेस्थितजोमहान् मत्स्य है॥सोएकहीमत्स्य कभी नदीकेओरलेकिनारेआवैहै॥और कभीनदीकेपारलेकिनारेजावैहै॥तैसे एकहीस्वयंज्योतिआत्मा कभी जाग्रतअ वस्थाकूं प्राप्तहोवैहै॥और कभी स्वप्नअवस्थाकूं प्राप्तहोवै है॥यातैं स्वप्नकेद्रष्टाआत्मातैं जाग्रत्काद्रष्टाआत्मा भिन्ननहीं॥किंतु एकहीआत्मा क्रमतैं जाग्रत्कूं तथास्वप्नकूं प्राप्तहोवै है ॥ एकहीकालविषे आत्माकूं जाग्रत्स्वप्नदोनोंअवस्थाकीप्राप्ति हम अंगीकारकरतेनहीं ॥ यातैं उज्जयिनीपुरीके तथाकाशीपुरीके राजाकेदृष्टांततैं जाग्रत्स्वप्नकेआत्माका भेदसिद्धहोवैनहीं ॥ किंतु जैसे एकहीतीर्थयात्रीपुरुष कभी काशीपुरीविषे प्राप्तहोवैहै ॥ और कभी उज्जयिनीपुरीविषे प्राप्तहोवै है ॥ तैसे एकहीआत्मा कभीजाग्रत्अवस्थाकूंप्राप्तहोवै है ॥ और कभी स्वप्नअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इतनैंकरिकै तृतीयप्रश्नकाउत्तरकह्या ॥ अब सुषुप्तिअवस्थाविषेभी आत्माके असंगरूपताकूं निरूपण करैं हैं ॥ हेजनक ॥ जैसे श्येनपक्षी अथवा गरुडपक्षी भूमिकेसमीपआकाशदेशविषेस्थित जोआपणागृहहै ॥ तागृहकापरित्यागकरिकै अत्यंतदूर आकाशविषेजावैहै॥तहाँ आपणेगृहकापरित्यागकरिकै अत्यंतदूरआकाशविषेजाणेमें तापक्षीके चारिप्रकारकेप्रयोजनहोवैहैं।एक

॥ ५२ ।

तौस्त्रीकीप्राप्ति॥और दूसराभक्षणकरणेयोग्य पदार्थकीप्राप्ति।और तीसरा अन्यकिसीपक्षीकाहननकरणा।और चतुर्थआपणेइच्छाकापूर्णता करणी॥याचारिप्रकारकेप्रयोजनोंविषे किसीएकप्रयोजनकूं ग्रहणकरिकैहीं सोपक्षी आपणेगृहकापरित्यागकरिकै दूर आकाशविषे जावैहै॥ तहाँजाइकै सोपक्षी जभी अत्यंतश्रमकूंप्राप्तहोवै है॥तभी सोपक्षी विश्रामकरणेवासतै आपणेदोनोंपक्षोंका आपणेशरिरविषेसंकोचकरिकै आपणेगृहकूं प्राप्तहोवै है ॥ तागृहविषेस्थितहोइके सोपक्षी विश्रामकूं प्राप्तहोवै है ॥ तैसे यह आनंदस्वरूपआत्मारूपपक्षीभी सुषुप्तिरू पगृहकापरित्यागकरिकै पुण्यपापरूपदोनोंपक्षोंकेबलतैं जाग्रत्स्वप्नरूप दूरआकाशविषेजावै है॥ ताजाग्रत्स्वप्नअवस्थाविषे नानाप्रकारके विषयभोगरूपव्यापारोंकूंकरिकै जभी यहआत्मारूपपक्षी अत्यंतश्रमकूंप्राप्तहोवै है॥ तभी पुण्यपापरूपदोनोंपक्षोंकासंकोचकरिकै विश्रा मकीप्राप्तिवासतै सुषुप्तिरूपगृहकूं प्राप्तहोवै है ॥ तासुषुप्तिविषेस्थितहुआ यहस्वयंज्योतिआत्मा किसीविषयकीइच्छाकरतानहीं ॥ और किसीविषयकूंदेखतानहीं ॥ इतनैंकरिकै यह अर्थ बोधनकरचा ॥ स्थूलसूक्ष्मशरीरके तथा स्थूलसूक्ष्मशरीरकेधर्मोंकेसाथ आत्माकावास्तवतैंसंबंधनहीं ॥ जोतिनोंकेसाथ आत्माका वास्तवतैं संबंधहोता ॥ तौ सुषुप्तिअस्थाविषेभी आत्माविषे तेस्थूलसूक्ष्मा दिकपदार्थ प्रतीतहोते ॥ और सुषुप्तिविषे तिनपदार्थोंकेलयहुएभी आत्मा साक्षीरूपकरिकै विद्यमान है ॥ यातैं तिनस्थूलसूक्ष्मपदार्थों केसाथ आत्माका वास्तवतैं संबंधनहीं ॥ अब अज्ञानरूपकारणशरीरतैं आत्माकूं भिन्नकरणेवासतै अविद्यारूपअज्ञानकेस्वरूपकूं तथा आत्माकेस्वरूपकूंनिरूपणकरैं हैं ॥ याअथकीसिद्धिवासतै प्रथम स्वप्नसुषुप्तिकेप्राप्तिका मार्गरूपजेनाडियां हैं तिनोंकूं निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति यातीनअवस्थावोंकी प्राप्तिवासतै तथातिनअवस्थावोंतैंबाहरआवणेवासतै जोस्वयंज्योतिआत्माकामार्ग हमनैं तुमारेप्रति पूर्व कथनकऱ्याथा ॥ सोमार्ग नाडीरूपहै ॥ कैसियां हैं तेमार्गरूपनाडियां ॥ हृदयस्थानतैं जिनोंकानिर्गमनभयाहै ॥ तिननाडियोंविषेभी एकऊपरएकशतनाडी प्रधानहैं ॥ और ॥ तिनप्रधाननाडियोंकी शाखारूपदूसरीनाडियां अनेककोटी हैं ॥कैसी हैं तेनाडियां ॥ एककेशकेजोसहस्रविभागकरिये ॥ ताकेएकविभागकेसमान जिननाडियोंकीसूक्ष्मताहै ॥ अथवा तिसकेशकेविभागतैंभी

अतिसूक्ष्महैं ॥ ऐसीनाडियोंकूं शास्त्रवेत्तापुरुष हितानामकरिकै कथनकरैं हैं ॥ काहेतें जैसे माताकेजननविषेस्थित जेनाडियां हैं तेना डियाँ॥ बालककूं दुग्धकीप्राप्तिकरैं है॥ यातें तेनाडियां बालककेहितकरणेहारियांहैं॥तैसे सर्वशरीरविषेस्थितजेनाडियां हैं ॥ तेनाडियां पादतेंलेकै मस्तकपर्यंत सर्वशरीरविषे अन्नकेसूक्ष्मरसकूं प्राप्तकरैं हैं ॥ यातें तेनाडियां याजीवके अत्यंतहितकारी हैं ॥ याकारणतैं शास्त्रवे त्तापुरुष तिननाडियोंकूं हितानामकरिकै कथनकरैं हैं ॥ पुनःकैसियां हैं ॥ तेनाडियां॥ जैसे लोकविषेनदियां जलकरिकैपूर्णहोवै हैं॥तैसे अन्नपानके जेविचित्रवर्णवालेरसहैं तिनोंकरिकैपूर्ण हैं ॥ पुनःकैसियां हैं तेनाडियां॥ जैसे चित्रकारपुरुषकेगृहविषे शुक्ल नील पीत इत्या दिकअनेकवर्णोंकरिकैपूर्ण अनेकपात्रहोवैं है ॥ तैसे याशरीरविषे कफकूंधारणकरणेहारियांनाडियां शुक्लरसकरिकै पूर्णहोवैं हैं ॥ और वातकूंधारणकरणेहारियां जेनाडियां हैं ॥ ते नीलरसकरिकै पूर्णहोवै हैं॥और पित्तकूंधारणकरणेहारी जेनाडियां हैं ॥ तेनाडियां पिंगलरस करिकैपूर्णहोवैं हैं॥ और अल्पपित्तकूंधारणकरणेहारी जेनाडियां हैं॥तेनाडियां हरितरसकरिकैपूर्णहोवै हैं ॥ और रुधिरकूंधारणकरणेहारी जेनाडियांहैंतेनाडियां लोहितरसकरिकेपूर्णहोवैं हैं॥ यहां नीलशब्दकरिकै अंजनकेसमान श्यामवर्णवालेपदार्थका ग्रहणकरणा॥और हरित शब्दकरिकै दूर्वादलकेसमानवर्णवालेपदार्थका ग्रहणकरणा ॥ और पिंगलशब्दकरिकै सुवर्णकेसमान पीतवर्णवालेपदार्थकाग्रहणकरणा ॥ पुनःकैसियां हैं तेनाडियां॥ जैसे चित्रकारपुरुष नीलपीतादिक दोतीनवर्णोंकूंएकठाकरिकै अपूर्ववर्णकूं उत्पन्नकरै है तैसे वातपित्तादिक धातुवोंकेसन्निपाततें नानाप्रकारकेवर्ण उत्पन्नहोवैं हैं ॥ तिननानाप्रकारकेवर्णोंकरिकै जेनाडियांपूर्ण हैं ॥ ऐसेनाडीरूपमार्गकरिकै यहजी वात्मा स्वप्नकूंप्राप्तहोवै है ॥ तथासुषुप्तिकूंप्राप्तहोवै ॥अब स्वप्नअवस्थाविषे कार्यद्वारा अविद्याकेस्वरूपकूं निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ तिसनाडीरूपमार्गकरिकै प्राप्तहोणेयोग्यजोस्वप्न है ॥ सोस्वप्न दोप्रकारकाहोवै है ॥ एकस्वप्न सुखकेदेणेहारा होवै है ॥ और दूसरास्वप्न दुःखकेदेणेहाराहोवैहै॥ तहाँ जाग्रत्अवस्थाकीन्याईं पुण्यकरिकै सहकृतजोअविद्याहै॥ ताअविद्याकरिकैजन्यजोस्वप्नहै ॥ सोस्वप्न जीवोंकूं सुखकीप्राप्तिकरै है ॥ और पापकर्मकरिकैसहकृतजोअविद्याहै॥ताअविद्याकरिकैजन्यजोस्वप्नहै ॥ सोस्वप्न जीवोंकूं दुःखकीप्राप्तिकरै है॥

॥ ५३ ॥

और हेजनक ॥ जैसे जाग्रत्अवस्थाविषे प्रतिकूलरूपकरिकैजानेहुए चौरादिकपदार्थ जीवोंकूंदुःखकीप्राप्तिकरैं हैं ॥ और अनुकूलरूपक रिकैजानेहुए स्रक्चंदनादिकपदार्थ जीवोंकूं सुखकीप्राप्तिकरैं हैं ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषेभी प्रतिकूलरूपकरिकैजानेहुए चौरादिकपदार्थ जीवोंकूं दुःखकीप्राप्तिकरैं हैं ॥ और अनुकूलरूपकरिकैजानेहुए स्रक्चंदनादिकपदार्थ जीवोंकूं सुखकीप्राप्तिकरैं हैं ॥ यातेंजाग्रत्केपदार्थों विषे तथास्वप्नकेपदार्थोंविषे स्वरूपतेंविशेषतानहीं ॥ तथा सुखदुःखकीउत्पत्ति रूपकार्यतेंभी विशेषतानहीं ॥यातें जाग्रत्केपदार्थ तथा स्वप्नकेपदार्थदोनोंसमानहैं ॥ अब दुःखकेदेणेहारेस्वप्नकूं स्पष्टकरिकैनिरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक॥जैसे आकाश शस्त्रादिकोंकरिकै छेदनकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्माभी वास्तवतें शस्त्रादिकोंकरिकै छेदनकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ ऐसाआनंदस्वरूपनिर्विकारआत्मा जभी अंतःकरणादिकउपाधियोंकेसंबंधतें स्वप्नअवस्थाकूं प्राप्तहोवैहै॥ तभी पूर्वलेपापकर्मकेवशतें यास्वप्नद्रष्टापुरुषकूं धनकीप्राप्तिवासतें चौर शस्त्रोंकरिकैहननकरैहैं ॥ और मांसकेभक्षणकरणेहारे जेव्याघ्रवृकादिकजंतुहैं ॥ तेव्याघ्रादिकजंतु यास्वप्नद्रष्टापुरुषकूं तीक्ष्णनखों करिकै तथादंतोंकरिकै छेदनकरैहैं ॥ तथा तीक्ष्णखुरोंकरिकै ताडनकरैहैं ॥ और हेजनक ॥ जैसे आयुष्केक्षयहुए यापुरुषकूं जराअ वस्था वशकरिलेवै है ॥ तैसेवास्तवतें सर्वजगत्कूं वशकरणेहारा जोयहआनंदस्वरूपआत्माहै ॥ तिसकूं स्वप्नअवस्थाविषे कोईदुर्बुद्धिधू र्तपुरुष आपणेवशकरिलेवैहै ॥ तिनधूर्तपुरुषोंकेवशहुआ यहआत्मादेव स्वप्नविषे परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक ॥ जैसे लोक विषे दुर्बुद्धिजोराजाहै ॥ ताराजाकेभृत्य धनकेलेनेवासतें बलात्कारसें धनीपुरुषोंकूं आपणेवशकरैं हैं ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषे याजीवा त्माकूं कोईधूर्तपुरुष बलात्कारसें आपणेवशकरैं हैं ॥ तिनोंकेवशहुआ यहजीवात्मा परमदुःखकूंप्राप्तहोवै है ॥ और हेजनक ॥ जैसे जाग्रत्अवस्थाविषे राजाकेद्वारविषेस्थित जोहस्तीहै ताहस्तीकेसमानहै आकारजिसका ऐसाजोकाष्ठकाहस्तीहै॥ ताहस्तीकूंदेखिकरिकै मूढबालक भयकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा आपणेगृहकीओरभागैहै ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषेभी यहजीवात्मा हस्तिकूंदेखिकरिकै भयकूंप्राप्तहो वैहै ॥ तथाआपणेगृहकीतरफभागैहै ॥ ताकरिकै याजीवात्माकूं परमदुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और हेजनक ॥ जैसे जाग्रत्अवस्थाविषे

समानभूमिविषेस्थित जोकोईविचित्रसभाहै ॥ तासभाकूं गेतरूपजाणिके दुर्योधनराजाकीन्याईं कोईमूढपुरुष तागर्तविषेपतन होवैहै ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषेभी यहजीवात्मा समानभूमिकूं गर्तरूपमानिके तागर्तविषे पतनहोवैहै ॥ तागर्तकेपतनकरिकैभी याजीवात्माकूँ परमदुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और हेजनक जाग्रत्अवस्थाविषे यहपुरुष जिसजिस अप्रियपदार्थकूंदेखिकै भयकूंप्राप्तहो वैहै ॥ स्वप्नअवस्थाविषेभी तिसतिसअप्रियपदार्थकूंदेखिकै यहजीवात्मा भयकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसतैं आदिलेके अनेकप्रकारकेदुष्टस्वप्नोंकूं पापकर्मकेवशतैं यहजीवात्मा प्राप्तहोवैहै ॥ इतनैंकरिकै पापकर्मसहकृतजोअविद्याहै ताअविद्याजन्य दुष्टस्वप्नकानिरूपणकऱ्या ॥ अब अविद्याकेस्वरूपकहणेवासतै प्रथम अविद्याकाविरोधीजोविद्याहै ताकेस्वरूपकूं निरूपणकरैहैं॥ हेजनक ॥ यहब्रह्मकैसाहै ॥ देशकालव स्तुपरिच्छेदतैंरहितहै तथासर्वजीवोंका आत्मारूपहै तथा स्वयंप्रकाशरूपहै ॥ तथा सत्चित्आनंदस्वरूपहै॥तथा अद्वितीयरूपहै॥ऐसे अद्वितीयब्रह्मकेविशेषस्वरूपकूं करामलककीन्याईं अधिकारीपुरुषोंके जोसमीपकरिकै देवै ॥ अथवा ऐसेअद्वितीयब्रह्मकेविशेषरूपकूं अधिकारीपुरुषोंका आत्मारूपकरिकै जोप्रकाशकरै ताकूं शास्त्रवेत्तापुरुष विद्याकहै हैं ॥ तात्पर्ययह ॥ महावाक्यकेश्रवणतैं उत्पन्नभई जो जीवईश्वरकेभेदकूंविषयकरणेहारी अन्तःकरणकीवृत्ति ॥ तावृत्तिकरिकैउपलक्षितजोचैतन्यहै ॥ ताकानामविद्याहै ॥ इतनैकरिकै विद्याकास्वरूप निरूपणकऱ्या ॥ अब ताविद्याकरिकैनिवृत्तहोणेयोग्य जोअविद्याहै ताअविद्याकेस्वरूपकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ॥ तिसविद्यातैंभिन्न जोपरिच्छिन्न अनात्मा असत् जड दुःखरूपहै ॥ ताकूं शास्त्रवेत्तापुरुष अविद्याकहैं हैं॥सोअविद्या अज्ञानतैंभिन्ननहीं ॥ किंतु सोअविद्या अज्ञानरूपहै ॥ अबयाहीअर्थकूं सर्वलोकोंकेअनुभवकरिकै स्पष्टकरैं हैं॥हेजनक॥ यहआनंदस्वरूपपरमात्मा वास्तवतैं सजातीयभेद विजातीयभेद स्वगतभेद यातीनप्रकारकेभेदतैंरहितहै ॥ तथा मनवाणीकाअविषयहै ॥तथा स्वप्रकाशचैतन्यरूपहै॥ऐसा निर्विकारआत्मा नानारूपकूं किसप्रकारप्राप्तहोवै है॥और ऐसे निर्विकारचैतन्यपरमात्मातैं असत्जड दुःखरूप यहजगत् किसप्रकारउत्पन्न होवैहै ॥ याप्रकारकाप्रश्न किसीपुरुषने अन्यपुरुषकेप्रतिकऱ्या ॥ ताप्रश्नकूंश्रवणकरिकै सोअन्यपुरुष आपणेचित्तविषे मैंनहींजाणता

याप्रकारकाजोंअनुभवकरै है ॥ ताअनुभवकाविषय जोअज्ञान है ॥ सोअज्ञानहीं अविद्याकास्वरूप है ॥ इतनेकरिकै अविद्याकास्वरूप दिखाया ॥ अब स्वप्नविषे ताअविद्याकीस्पष्टताकूं निरूपणकरैं हैं ॥हेजनक ॥ इसीअविद्याकेप्रभावतैं यहपरमात्मादेव स्वप्नअवस्थाविषे शस्त्रादिकोंकरिकै आपणेकूं छेदनहुआमानै है ॥ तथा दुष्टपुरुषोंकेवशकूंप्राप्तहोवै है॥तथा सिंहसर्पादिकोंकूंदेखिकैभयकूंप्राप्तहोवै है तथा भागे है ॥ तथा महान्गर्तविषेपडै है ॥ तथा स्त्रीआदिकप्रियपदार्थोंकेवियोगतैं परमदुःखकूंप्राप्तहोवै है ॥इसतैंआदिलेके अनेकप्रकारके दुःखोंकूं जोयहजीवात्मा प्राप्तहोवै है॥सो अविद्याकरिकैही प्राप्तहोवै है॥अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकैदिखावैं हैं ॥हेजनक॥ श्रुतिभगवतीनैं स्वप्नअवस्थाविषे रथादिकसर्वपदार्थोंकाअभाव कथनकऱ्या है॥काहेतैं सुखदुःखकेकारणजेरथादिकपदार्थ हैं तेमहान् हैं॥और जिसहृदय देशविषेस्वप्नहोवै है सोहृदयदेश अत्यंतअल्प है ॥ ताअल्पदेशविषे महान्रथादिकपदार्थोंकी स्थितिहोणीसंभवैनहीं ॥ और जाग्रत्अव स्थाविषे रथादिकपदार्थोंकीउत्पत्तिकेकारण जेदीर्घदेश तथादीर्घकाल तथाकाष्ठादिक इसतैंआदिलेकेनानाप्रकारकेकारण हैं ॥ तिनका रणोंकाभी स्वप्नअवस्थाविषेअभावहै॥यातैं स्वप्नअवस्थाविषे अल्पहृदयदेशविषे तथाअल्पकालविषे वास्तवतैं रथादिकपदार्थोंकीउत्पत्ति संभवैनहीं ॥ और स्वप्नअवस्थाविषे रथादिकपदार्थोंकेअभावहुए तिनरथादिकपदार्थोंकरिकैजन्य जोसुखदुःख है ॥ सोभी वास्तवतैंसंभवै नहीं ॥ और स्वप्नअवस्थाविषे सर्वजीवोंकूं रथादिकपदार्थोंकाअनुभवहोवै है ॥तथा पुण्यपापकेवशतैं सुखदुःखकीप्राप्तिहोवै है ॥ और कारणतैंविना कार्यकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ यहबातभी सर्व लोकोंकूं अनुभवसिद्ध है॥यातैं स्वप्नकेपदार्थोंकाभी कोईकारणमान्याचाहिये ॥ और लोकप्रसिद्धदेशकालादिककारणोंतैं विना जोपदार्थउत्पन्नहोवै है ॥ सोपदार्थ साक्षात्मायाकाहीकार्यहोवै है ॥ जैसे योग्यदेशकाला दिककारणोंतैं विना आकाशविषेगंधर्वनगर प्रतीतहोवै है॥यातैं सोगंधर्वनगर साक्षात्मायाकाहीकार्य है तैसे स्वप्नअवस्थाविषेभी लोक प्रसिद्धदेशकालादिककारणोंतैं विनाहीं रथादिकपदार्थ उत्पन्नहोवै हैं ॥ यातैं तेरथादिकपदार्थ साक्षात्माया केहीकार्य हैं ॥ और सोमाया अज्ञानरूपअविद्यातैंभिन्ननहीं॥किंतु सोमाया अज्ञानअविद्यारूपहै इतनैंकरिकै अविद्या अज्ञान माया इनतीनोंका अभेदनिरूपणकऱ्या॥

अब शक्तिका तथाअविद्याका अभेद निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ स्वप्नअवस्थाविषे रथादिकजगत्कूं उत्पन्नकरणेहारी जोस्वप्नद्रष्टाआत्माकीशक्ति है ॥ सोशक्ति अविद्यातैंभिन्ननहीं ॥ किंतु ताशक्तिकूंहीं शास्त्रवेत्तापुरुष अविद्या कहैं हैं ॥ किंवा ॥ जोवादी ताशक्तिकूं अविद्यातैंभिन्न अंगीकारकरैं है तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ अविद्यातैंभिन्न सोशक्ति किसकार्यकरणेविषे समर्थ है ॥ तात्पर्ययह ॥ ताशक्तिकरिकै यहजीवात्मा जाग्रत्केप्रपंचकूं आपणेस्वप्नविषेलेआवै है अथवा ताशक्तिकरिकै यहजीवात्मा बाहरजाइकै जाग्रत्केरथादिकपदार्थोंकूंदेखै है ॥ यादोनोंपक्षविषे ताशक्तिका अविद्यातैंभेदसिद्धहोवैनहीं ॥ काहेतैं जैसे जाग्रत्अवस्थाविषे स्थूणाकेसमान अत्यंतस्थूलजो कोईसर्प है ॥ तासर्पकूं जोकोईपुरुष आपणेकर्णके सूक्ष्मछिद्रविषेस्थापनकरै है ॥ सोपुरुष मायारूपअविद्याकेबलतैंहींकरै है ॥ मायारूप अविद्यातैंविना ऐसेदुर्घटकार्यकरणेविषे कोईपुरुष समर्थहोइसकैनहीं ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषे अंगुष्ठमात्रपरिमाण जोहृदयाकाश है ॥ ताहृदयाकाशविषे जडचेतनरूप सर्वबाह्यजगत्कूं मायारूपअविद्यातैंविना कौनस्थापनकरैगा ॥ किंतु मायारूपअविद्या विषेही ऐसासामर्थ्य है यातैं स्वप्नअवस्थाविषे बाहरलेप्रपंचकूं भीतरलेआवणेहारी साशक्ति मायारूप अविद्यातैं भिन्ननहीं ॥ किंवा ॥ जैसे जाग्रत्अवस्थाविषे जोकोईपुरुष भूमिलोकविषे स्थितहोइके क्षणमात्रविषे सूर्यलोककूंप्राप्तहोइके पुनःभूमिलोक विषे आवै है ॥ सोपुरुष मायारूप अविद्याके बलतैंहीं सूर्यलोककूं देखिकैआवै है ॥ मायारूपअविद्यातैंविना ऐसे दुर्घटकार्यकूं कोईकरिसकैनहीं ॥ तैसे स्वप्नअवस्थाविषे याशरीरमें प्राणोंकेविद्यमान हुएभी याजीवका जोक्षण मात्रविषे दूसरेद्वीप विषेगमन होवै है ॥ तथा क्षणमात्रविषे स्वर्गलोककूंदेखिकै जोपुनःयाभूमिलोकाविषे आगमनहोवै है ॥ ॥ इसतैंआदिलेके जे अनेकप्रकारके दुर्घटकार्य हैं ॥ तेकार्य मायारूप अविद्यातैंविना संभवैनहीं ॥ किंतु मायारूप अविद्याकेबलतैंहीं याप्रकारकेदुर्घट कार्योंकूं यहजीवात्मा स्वप्नविषे करै है ॥ यातैं सोस्वप्नद्रष्टापुरुषकीशक्ति मायारूप अविद्यातैं भिन्ननहीं ॥ इतनेकरिकै स्वप्नअवस्थाविषे जाग्रत्केबाह्य पदार्थोंका आगमन तथाजीवात्माका बाहरगमन ॥ यादोनोंपक्षोंकूं अंगीकार करिकै ताशक्तिकूं अविद्यारूपता सिद्धकरी ॥ अब तिनदोनों पक्षोंकाखंडन

करैं हैं ॥ हेजनक ॥ स्वप्नअवस्थाविषे यहस्वप्नद्रष्टापुरुष आपणी मायाशक्तिके प्रभावतैं जाग्रत्के बाह्यप्रपंचकूं भीतर चित्तविषे लेआवै है ॥ अथवा ॥ तिसमायारूप शक्तिकेप्रभावतैं यहजीवात्मा बाहरजाइकै जाग्रत्के पदार्थोंकूंदेखे है ॥ या दोनों प्रक्रियाविषे कोईश्रुतिप्रमाणनहीं ॥ किंतु श्रुतिभगवतीतौ स्वप्नअवस्थाविषे हृदयदेशके भीतरहीं रथादिकसंपूर्ण जगत्की उत्पत्तिकूं कथनकरै है ॥ यातैं तेदोनोंप्रक्रिया श्रुतितैं विरुद्ध हैं ॥ इतनेकरिकै तिनदोनोंप्राक्रियाविषे श्रुतिप्रमाणका विरोध दिखाया ॥ अब लोकोंके अनुभवकरिकैभी तिनदोनोंप्रक्रियाविषे विरुद्धपणा दिखावैं हैं ॥ हेजनक ॥ स्वप्नअवस्थाविषे यहस्वप्नद्रष्टापुरुष मायाशक्तिके प्रभावतैं जो कदाचित् जाग्रत्केपदार्थोंकूं भीतरहृदयदेशविषेलेआवताहोवै ॥ तौ जिनस्त्रीपुत्रादिकचेतनपदार्थोंकूंयहस्वप्नद्रष्टापुरुष स्वप्नविषे देखता है ॥ तेस्त्रीपुत्रादिकबांधव जाग्रत्कालविषे तास्वप्नद्रष्टापुरुषकेप्रति याप्रकारकावचन क्योंनहींकहते ॥ हेमित्र आजस्वप्नविषे तूं हमारेकूं हृदयदेशविषेलेगयाथा ॥ अथवा सोस्वप्नपुरुष जाग्रत्अवस्थाविषे तिनस्त्रीपुत्रादिकबांधवोंकेप्रति याप्रकारकावचन क्योंनहींकहता ॥ हे मित्रो आजस्वप्नविषे मैं तुम्हारेकूं हृदयदेशविषेलेगयाथा ॥ सोयाप्रकारकावचन लोकविषेकोईपुरुष कहतानहीं ॥ और याप्रकारकेवचनकूं कोईमानताभीनहीं ॥ यातैं जाग्रत्केपदार्थ स्वप्नविषेआवैं हैं यहप्रक्रिया सर्वलोकोंके अनुभवकरिकैविरुद्धहै ॥ किंवा ॥ स्वप्नअवस्थाविषे यहजीवात्मा बाहरजाइकै जाग्रत्केपदार्थोंकूंदेखैहै यहदूसरीप्रक्रियाभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं स्वप्नअवस्थाविषे यहजीवात्मा जोकदाचित्बाहरजाइकै पदार्थोंकूंदेखताहोवै ॥ तौ स्वप्नअवस्थाविषे यहस्वप्नद्रष्टापुरुष जिनस्त्रीपुत्रादिकबांधवोंकूंदेखै है॥ तेस्त्रीपुत्रादिकबांधव जाग्रत्अवस्थाविषे तास्वप्नद्रष्टापुरुषकेप्रति याप्रकारकावचन क्यों नहींकहते ॥ हेमित्र ! आजतुमनेहमारेकूं गृहविषेदेखाथा ॥ अथवा सो स्वप्नद्रष्टापुरुष जाग्रत्अवस्थाविषे तिनस्त्रीपुत्रादिकबांधवोंकेप्रति याप्रकारकावचन क्योंनहींकहता॥ हेमित्रो आजरात्रिविषे मैं तुम्हारेगृह विषेआयाथा ॥ सोयाप्रकारकावचन लोकाविषे कोईपुरुष किसीकेप्रतिकहतानहीं ॥और याप्रकारकावचन कोईमानताभीनहीं ॥ यातैंस्वप्न अवस्थाविषे यहजीवात्मा बाहरजाइकै जाग्रत्केपदार्थोंकूंदेखै है ॥ यहद्वितीयप्रक्रियाभी लोकोंकेअनुभवतैंविरुद्ध है॥ किंवा ॥ जोवादी

स्वप्नअवस्थाविषे बाहरलेपदार्थोंका भीतरहृदयदेशविषे ॥ आगमन मानैहै ॥ अथवा स्वप्नद्रष्टापुरुषका बाहरगमन मानैहै ॥ तावादी सैं यहपूछाचाहिये ॥ स्वप्नद्रष्टापुरुषके हृदयदेशविषे जेस्त्रीपुत्रादिकचेतनपदार्थ आवैं हैं ॥ तेचेतनपदार्थ स्वप्नकेसूक्ष्मशरीरकरिकैविशिष्टहुए आवैं हैं ॥ अथवा जाग्रत्केस्थूलशरीरकरिकैविशिष्टहुए आवैं हैं ॥ और स्वप्नअवस्थाविषे यहस्वप्नद्रष्टापुरुष बाहरजाइकै स्वप्नके सूक्ष्मशरीरकरिकैविशिष्ट जेस्त्रीपुत्रादिकचेतनपदार्थहैं तिनोंकूंदेखेहै ॥ अथवा जाग्रत्केस्थूलशरीरकरिकैविशिष्ट जेस्त्रीपुत्रादिकचेतनपदार्थहैं तिनोंकूंदेखै है ॥ यादोनोंपक्षोंविषे स्वप्नकेसूक्ष्मशरीरकरिकै विशिष्टहुए तेस्त्रीपुत्रादिकचेतनपदार्थ स्वप्नद्रष्टापुरुषकेहृदयदेशविषेआवै हैं ॥ अथवा सोस्वप्नद्रष्टापुरुष बाहरजाइकै स्वप्नकेसूक्ष्मशरीरकरिकैविशिष्ट जेस्त्रीपुत्रादिकचेतनपदार्थहैं ॥ तिनोंकूंदेखेहै ॥यहप्रथमपक्षजो वादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं जिसकालविषे यहस्वप्नद्रष्टापुरुष स्वप्नकूंप्राप्तभयाहै ॥ तिसीकालविषे जोकदाचित्तिनस्त्रीपु त्रादिकबांधवोंकूंभीस्वप्नकीप्राप्तिहुईहोवै ॥ ता यह तुमाराकहणासंभवै ॥ परंतु स्वप्नअवस्थाविषे यहस्वप्नद्रष्टापुरुष जिनस्त्रीपुत्रादिक बांधवोंकूंदेखैहै ॥ तेस्त्रीपुत्रादिकबांधव तिसीकालविषे स्वप्नकूंहींप्राप्तहुएहोवैहैं ॥ याप्रकारकानियम लोकविषेदेखीतानहीं ॥ किंतुजिनस्त्री पुत्रादिकबांधवोंकूं यहस्वप्नद्रष्टापुरुष स्वप्नविषेदेखेहै ॥ तेस्त्रीपुत्रादिबांधव तिसीकालविषे कोई जाग्रत्अवस्थाकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और कोई सुषुप्तिअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और कोई स्वप्नकूंभीप्राप्तहोवैहै॥ नियमकारकै तिनसंपूर्णोंकूं एककालविषे स्वप्नहोवैनहीं ॥ यातैं स्वप्नकेसू क्ष्मशरीरकरिकैविशिष्ट जेस्त्रीपुत्रादिकचेतनपदार्थ हैं ॥ तिनोंकूं यहस्वप्नद्रष्टापुरुष स्वप्नविषे बाहरजाइकै देखेहै ॥ अथवा तिनोंकूंहृदयदे शविषेलेआइकै देखै है ॥ यहप्रथमपक्षसंभवैनहीं॥ किंवा जाग्रत्केस्थूलशरीरकरिकैविशिष्ट जेस्त्रीपुत्रादिकचेतनपदार्थहैं ॥ तिनोंकूंयहस्व प्नद्रष्टापुरुष बाहरजाइकैदेखेहै ॥ अथवा तेस्त्रीपुत्रादिकचेतनपदार्थ स्वप्नद्रष्टापुरुषकेहृदयदेशविषे आवैहैं॥ यहदूसरापक्षजोवादी अंगीकार करै सोभीसंभवैनहीं॥ काहेतैं स्वप्नअवस्थाविषे यहस्वप्नद्रष्टापुरुष हृदयदेशकेभीतर अथवा बाहरजाइकै जिनस्त्रीपुत्रादिकचेतनपदार्थोंकूं देखेहै ॥ सोईहीस्वप्नद्रष्टापुरुष जाग्रत्अवस्थाकूंप्राप्तहोइकै तिनस्त्रीपुत्रादिकपदार्थोंकूंदेखैहै ॥ परंतु जाग्रत्अवस्थाविषे जिनभूषणादिक

विशेषणोंकरिकैविशिष्ट स्त्रीपुत्रादिकचेतनपदार्थोंकूं यहपुरुषदेखैहै॥तिनभूषणादिकविशेषणोंकरिकैविशिष्टस्त्रीपुत्रादिकचेतनपदार्थोंकूंयापु रुषनैं स्वप्नअवस्थाविषे नहींदेख्याथा॥किंतु जाग्रत्सैं विलक्षणहीं स्वप्नाविषेदेखेथे॥यातैं जाग्रत्केस्थूलशरीरकरिकैविशिष्टजे स्त्रीपुत्रादिकबां धवहैं तिनोंका स्वप्नाविषे दर्शनहोवै है॥यहदूसरापक्षभी संभवैनहीं॥किंवा॥ स्वप्नअवस्थाविषे यहस्वप्नद्रष्टापुरुष स्वप्नकेसूक्ष्मशरीरविशिष्ट जेस्त्रीपुत्रादिकचेतनपदार्थ हैं तिनोंकूं आपणेहृदयदेशविषेदेखै है ॥ अथवा बाहरजाइकैदेखै है॥ याप्रथमपक्षविषे यह दूसरादूषणभी संभ वैहै ॥ काहेतैं जिसकालविषे देवदत्तनामापुरुषकूं स्वप्नाविषे यज्ञदत्तनामापुरुषकादर्शनभयाहै ॥ तिसीकालविषे तायज्ञदत्तनामापुरुषकूंभी दैवयोगतैं स्वप्नविषे देवदत्तनामापुरुषका दर्शनभयाहै ॥ तहाँ जाग्रत्अवस्थाकूंप्राप्तहोइकै तिनदोनोंकापरस्पर याप्रकारकाविवाद होणा चाहिये ॥ हेयज्ञदत्त रात्रिविषे तूं हमारेहृदयदेशविषे आयाथा ॥ हेदेवदत्त यहवार्ता तूं मिथ्याकहताहै ॥ रात्रिविषे तूं हमारे हृदय देश विषे आयाथा ॥ याप्रकार तिनदोनोंका परस्पर विवादहोणाचाहिये ॥ और याप्रकारकाविवादकोई लोकविषे करता नहीं ॥ यातैं स्वप्न अवस्थाविषे जाग्रत्केपदार्थ स्वप्नद्रष्टापुरुषकेहृदयदेशविषे आवैं हैं ॥ अथवा स्वप्नद्रष्टापुरुषशरीरतैंबाहरजाइकै जाग्रत्केपदार्थोंकूंदेखै है॥ यहदोनोंप्रकारकीप्रक्रिया श्रुतिप्रमाणतैं तथालोकोंकेअनुभवतैं विरुद्ध हैं ॥ यातैं यहदोनोंप्रक्रिया परित्याग करणेयोग्य हैं ॥ शंका ॥ हे भगवन् तिनदोनोंप्रक्रियाकापरित्यागकरिकै किसप्रक्रियाकूं हम अंगीकारकरैं ॥ समाधान ॥ हेजनक॥ स्वप्नअवस्थाविषे यहस्वप्नद्रष्टा पुरुष आपणेहृदयदेशविषे जितनेकीस्त्रीपुत्रादिकचेतनपदार्थोंकूं देखता है ॥ तथा जितनेकी रथादिकअचेतनपदार्थोंकूं देखता है ॥ तेसंपूर्णचेतनअचेतनपदार्थ स्वप्नद्रष्टापुरुषकेमायाशक्तिकारिकै शरीरकेभीतरहीउत्पन्नहोवैं हैं ॥ याकारणतैं तेस्वप्नकेपदार्थ मायामय हैं ॥ यहप्रक्रिया श्रुतिप्रमाणकरिकैसिद्धहै ॥ तथा लोकोंकेअनुभवसैंभी विरुद्धनहीं॥ यातैं यहप्रक्रियाहीं सर्ववादियोंकूं अंगीकारकरणेयोग्यहै॥ अब स्वप्नकेपदार्थोंविषे मायामयत्वकेस्पष्टकरणेवासतै प्रथम स्वप्नकेपदार्थोंविषे योग्यदेशकालादिककारणोंकाअभाव दिखावैं हैं ॥ हेज नक ॥ स्वप्नअवस्थाविषे यहस्वप्नद्रष्टापुरुष कदाचित् दूसरेदेशविषेस्थित जोराजाकामहान्गृहहै तागृहकूं आपणे अल्पकुटीविषे देखै है ॥

और सहस्रयोजनपरिमाणहैविस्तारजिसका तथाअनेकलहरियोंकरिकैशोभायमान ऐसाजोमहान्समुद्रहै ॥ तिससमुद्रकूं कदाचित्यहस्वप्न द्रष्टापुरुष आपणेगृहकेद्वारविषेदेखै है ॥ और लक्षयोजनहैपरिमाणजिसका तथागंगादिकसर्वनादियोंकापति ऐसाजोअगाधसमुद्रहै ॥ तास मुद्रकूँ कदाचित् यहस्वप्नद्रष्टापुरुष गुल्फमात्रमात्रिकै यामनुपशरीरकरिकैही ताका उल्लंघनकरै है ॥ और कदाचित् यह स्वप्न द्रष्टापुरुष तासमुद्रकेपारजाइकै भगवान्नरसिंहकेनिवासकास्थान जोनीलपर्वतहै ताकूं देखै है ॥ और कदाचित् काशीपुरीविषे रात्रिकालमें सोया हुआ यहस्वप्नद्रष्टापुरुष कुरुक्षेत्रविषे सूर्यकेग्रहणकूंदेखैहै ॥ इसतैंआदिलेकै अनेकप्रकारकेमिथ्यापदार्थोंकूं यहस्वप्नद्रष्टापुरुष स्वप्नविषेदेखै है ॥ यातैं यहअर्थसिद्धहोवै है ॥ स्वप्नद्रष्टापुरुषके शरीरतैंआदिलेके जितनेकसुखदुःखकेदेणेहारे जडचेतनपदार्थ हैं ॥ तेसंपूर्णस्वप्नकेप दार्थ मायामयहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ मायामय जेस्वप्नकेपदार्थ हैं॥तिनोंकाउपादानकारण तथाआश्रयकौनहै॥समाधान॥ हेजनक ॥ सहिसर्वस्यकर्त्ता ॥ अर्थयह ॥ स्वप्नद्रष्टापुरुषहीं स्वप्नकेपदार्थोंकाकर्त्ता है॥याश्रुतिनैं मायाविशिष्टस्वप्नद्रष्टापुरुषकूंहीं स्वप्नकेसर्वपदार्थोंका कर्त्ताकह्याहै ॥ यातैं मायामयजेस्वप्नकेपदार्थ हैं ॥ तिनोंका मायाविशिष्टस्वप्नद्रष्टापुरुषहीं उपादानकारण है तथाआश्रयहै ॥ याप्रकार कासिद्धांत श्रुतिप्रमाणकरिकै तथायुक्तियोंकरिकै सिद्धहोवै है ॥ यातैं स्वप्नअवस्थाविषे जाग्रत्काप्रपंच भीतरआवै है॥ अथवा स्वप्नद्रष्टा पुरुष बाहरजाइकै जाग्रतकेप्रपंचकूंदेखै है ॥ यहदोनोंप्रकारकी वादियोंकीप्रक्रिया निष्फल है ॥ यातैं हे जनक ॥ स्वप्नप्रपंचकेउत्पत्तिस्थि तिलयकूंकरणेहारा जो स्वप्नद्रष्टापुरुषकाअज्ञान है॥ताअज्ञानकूंहीं शास्त्रवेत्तापुरुष मायाशब्दकरिकै तथाअविद्याशब्दकरिकै कथनकरैं हैं ॥ और हेजनक ॥ जैसेस्वप्नअवस्थाविषे यहपुरुष अविद्याकरिकै जडचेतनरूपजगत्कूंदेखताहै॥ तैसे जाग्रत्अवस्थाविषेभी यहआत्मा देव अविद्याकरिकैहीं जडचैतन्यरूपजगत्कूंदेखताहै ॥ यातैं जाग्रत्अवस्थाविषे तथास्वप्नअवस्थाविषे द्रष्टारूपकरिकै आत्माकाभी भेदनहीं॥ और दृश्यरूपकरिकै अनात्मपदार्थोंकाभी भेदनहीं॥ यातैं जाग्रत्विषे तथास्वप्नविषे किंचित्मात्रभीविलक्षणतानहीं॥ किंतु दोनों समानहैं याकहणेतैं यहअर्थसिद्धभया॥ वास्तवतैं भयदुःखतैंरहित जोअद्वितीयआत्माहै॥ सो जाग्रत्विषे तथास्वप्नविषे दुःखकूंतथाभयकूं

जोआपणेविषेमानै है ॥ सो अविद्याकरिकैही आपणेविषेमानैहै॥ इतनैंकरिकै स्वप्नअवस्थाविषे भेददर्शनरूपकार्यद्वारा अविद्याकास्वरूप निरूपणकऱ्या ॥ अब जिसआत्माकेस्वरूपकूंआच्छादनकरिकै अविद्या पूर्वउक्तनानाप्रकारकेदुर्घटकार्योंकूंकरै है तिसआत्माकेस्वरूपकूं सुषुप्तिअवस्थाविषे निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ यहजीवात्मा नाडीरूपमार्गकरिकै स्वप्नकूंप्राप्तहोवैहै॥ तथा सुषुप्तिकूंप्राप्तहोवैहै॥ यहअर्थ पूर्व हमनैं तुमारेप्रति कथनकऱ्याथा ॥ तिसविषे नाडीरूपमार्गकरिकै प्राप्तहोणेयोग्य जोस्वप्न है ॥ तास्वप्नकाविस्तार अवपर्यंत हमनैं तुमारेप्रति कथनकऱ्या ॥ अब तिसीनाडीरूपमार्गकरिकै यहआत्मादेव जिससंप्रसादनामासुषुप्तिकूं प्राप्तहोवै है ॥ तिससुषुप्तिकेस्वरूपकूं हम तुमारेप्रति कथनकरते हैं ॥ तूं सावधानहोइकै श्रवणकर ॥ हेजनक ॥ पुरीततकरिकैवेष्टित जोहृदयाकाशहै ॥ ताकेविषे यहइंद्ररूप आत्मा नाडीरूपमार्गकरिकैजावै है ॥ कैसाहैसोआत्मा ॥ आपणास्वरूपभूत जोस्वप्रकाशबोधहै॥ तास्वप्रकाशबोधकरिकै आपही बोध कूंप्राप्तहोवै है ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताइंद्ररूपआत्माकूं देवशब्दकरिकै कथनकरै है॥ और यहआत्मादेव दूसरेप्रकाशकीअपेक्षाका परित्यागकरिकै आपणेस्वयंज्योतिरूपकरिकै प्रकाशमान है॥ याकारणतैं श्रुतिभगवतीताआत्मादेवकूं राजाशब्दकरिकै कथनकरै है ॥ ऐसापरमात्मादेव तिसनाडीरूपमार्गकरिकै सुषुप्तिकूंप्राप्तहोवै है ॥ तासुषुप्तिविषे मनतैंआदिलेके जितनेक जाग्रत्स्वप्नकेपदार्थ हैं ॥ तेसं पूर्णपदार्थ लयभावकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ और अंधकारकीन्याईं आवरणकरणेहारा जोअज्ञान है ॥ सोअज्ञानभी सुषुप्तिअवस्थाविषे स्पष्टप्रती तहोवैनहीं ॥ यद्यपि सुषुप्तिअवस्थाविषे अज्ञानकूंविषयकरणेहारी तथा सुखकूंविषयकरणेहारी अज्ञानकीवृत्ति सिद्धांतविषे अंगीकारक रीहै ॥ तथापि ताअज्ञानकीसूक्ष्मवृत्तिविषे अज्ञानका स्पष्टरूपकरिकै भानहोवैनहीं ॥ किंतु जाग्रत्स्वप्नविषेहीं मैं अज्ञानी हूं याप्रकारकीअंतःकरणकीवृत्तिविषे अज्ञानका स्पष्टरूपकरिकैभानहोवै है ॥ यातैं सुषुप्तिअवस्थाविषे अज्ञानका स्पष्टरूपकरिकै भानहोवै नहीं ॥ याप्रकारकीसुषुप्तिअवस्थाकूं यहजीवात्मा नाडीरूपमार्गकरिकै प्राप्तहोवै है ॥ और तात्हृदयाकाशविषेस्थित जो सत्यस्वरूप परमात्मादेवहै ॥ ताकेसाथ यहजीवात्मा जभी अभेदभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ तभी यहजीवात्मा मुक्तपुरुषके

समानहोवै है ॥ काहेतैं जोपुरुष सर्वजगत्कूं आत्मारूपकरिकैजानै है ॥ तापुरुषकूं शास्त्रविषेमुक्तकहै हैं॥याप्रकारका मुक्तपुरुषकालक्षण सुषुप्तजीवात्माविषेभीघटै है ॥ काहेतैं संपूर्णजगत्का आत्मारूप जो परमात्मादेवहै ॥ ताकेसाथ अभेदभावकूंप्राप्तहोइकै यहजीवात्माभी सर्वजगत्कूंआत्मारूपकरिकै जानै है ॥ यातैं सुषुप्तिअवस्थाकूंप्राप्तभया यहजीवात्मा मुक्तपुरुषकेसमानहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ सुषुप्तिकूंप्राप्तभयाजोयहजीवात्माहै ॥ ताकूं मुक्तपुरुषकी समानतासंभवैनहीं॥काहेतैं मुक्तपुरुषका ज्ञानरूप अग्निकरिकै अज्ञान तथाअज्ञान काकार्यप्रपंच नष्टहोइजावै है ॥ और सुषुप्तजीवका यद्यपि कार्यप्रपंच निवृत्तहोवै है ॥ तथापि कारणरूपअज्ञान निवृत्तहोवैनहीं ॥ यातैं सुषुप्तजीवात्माकी मुक्तपुरुषकेसाथ समानतासंभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ मुक्तपुरुषकी तथासुषुप्तपुरुषकी सर्वअंशतैंसमानता हम अंगीकारकरतेनहीं ॥ किंतु जैसे सर्वदुःखतैंरहितभूमाआनंदविषे मुक्तपुरुषकीस्थितिहोवैहै ॥ तैसे सर्वदुःखतैंरहितभूमाआनंदविषे सुषुप्तपुरुषकीभीस्थितिहोवैहै ॥ इतनीअंशकूंग्रहणकरिकै सुषुप्तपुरुषकूं मुक्तपुरुषकेसमान हमनैं कह्याहै ॥ हेशिष्य इतनैंकरिकै याज्ञवल्क्यमुनिनैं यहअर्थ बोधनकऱ्या ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे आत्माकेविद्यमानहुएभी तहाँ सर्वकार्यप्रपंचका अभावहोवै है ॥ याकारणतैं सोकार्यप्रपंच आत्माकास्वभावनहीं॥जोकार्यप्रपंच आत्माकास्वभावहोता॥तौ सुषुप्तिअवस्थाविषेभी आत्माके सत्चित्आनंदस्वभाव कीन्याईं सोकार्यप्रपंचभी आत्माविषेरहता ॥ और सुषुप्तिअवस्थाविषे कार्यप्रपंचकी प्रतीतिहोवैनहीं ॥ यातैं सोकार्यप्रपंच आत्माकास्वभावनहीं ॥ इसीप्रकारमुक्तिअवस्थाविषे आत्माकेविद्यमानहुएभी कारणरूपअज्ञानरहैनहीं ॥ यातैं कारणअज्ञानभी आत्माका स्वभावनहीं ॥ जोकारण अज्ञान आत्माकास्वभावहोता ॥ तौ जैसे मुक्तिअवस्थाविषे सत्चित्आनंदादिक आत्माकेस्वभाव प्रतीतहोवैं हैं ॥ तैसे कारणअज्ञानभी प्रतीतहोता ॥ परंतु मुक्तिअवस्थाविषे विद्वान्पुरुषोंकूं कारणअज्ञान प्रतीतहोतानहीं ॥ यातैं सो कारणअज्ञानभी आत्माकास्वभावनहीं ॥ और हेजनक ॥ मुक्तपुरुषोंकरिकै तथासुषुप्तपुरुषोंकरिकै प्राप्तहोणेयोग्य जो स्वप्रकाशआनंदस्वरूपपरमात्मादेवहै ॥ सोपरमात्मादेव स्वर्गादिकसर्वअनात्मलोकोंतैं उत्कृष्टहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं

परमलोक यानामकरिकैकथनकरै है ॥ अब लोकशब्दकेअर्थकूं निरूपणकरै हैं ॥ हेजनक ॥ गुरुशास्त्रकेउपदेशकरिकै अधिकारीपुरुष जिसपदार्थकूंजानै है तापदार्थकानाम लोकहै ॥ याप्रकारका लोकशब्दकाअर्थ आनंदस्वरूपआत्माविषेहींघटै है ॥ काहेतैं विषयवासनातैंरहित जेउत्तमअधिकारी हैं ॥ ते इसीजन्मविषे गुरुशास्त्रकेउपदेशकरिकै आनंदस्वरूपआत्माकूं जानैं हैं ॥ और उपासकपुरुष ब्रह्मलोकविषेजाइकै ताआनंदस्वरूपआत्माकूं जाने हैं॥यातैं यह आनंदस्वरूपआत्माहीं परमलोकहै॥याआनंदस्वरूपआत्मातैंभिन्न जितनेकस्वर्गादिकलोकहैं ते मिथ्यारूपहैं ॥ यातैं तिनलोकोंकूं गुरुशास्त्र बोधनकरैनहीं ॥और हेजनक॥ सोआनंदस्वरूपपरमात्मादेव जातिगुण क्रिया संबंध इत्यादिकसर्वधर्मोंतैं रहितहै॥ यातैं वेदकेगायत्रीआदिकछंदोंका सोपरमात्मादेव विषयनहीं॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताआनंदस्वरूपपरमात्माकूं अतिछंद यानामकरिकैकथनकरै है ॥ और हेजनक ॥ ताआनंदस्वरूप परमात्मादेवविषे भूत भविष्यत वर्त्तमान यातीनकालविषे पापकर्मोंकासंबंधनहीं याकारणतैं श्रुतिभगवतीता आनंदस्वरूपपरमात्मादेवकूं अपहतपाप्मा यानामकरिकैकथन करै है॥और हेजनक॥सुषुप्तिअवस्थाविषेस्थित जोआनंदस्वरूपपरमात्मादेवहै सो सर्वभेदतैंरहित है॥ यातैं तापरमात्माविषे किंचित्मात्रभी तहाँभयनहीं ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं अभय यानामकरिकैकथनकरै है ॥ हेजनक ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषेस्थित जोपरमात्मादेवहै॥ताकूं भयनहींहोवै है याकेविषेयहकारण है॥ भेदज्ञानतैंहीं जीवोंकूंभयहोवैहै॥सो भेदज्ञानरूपभयकाकारण सुषुप्तिअवस्थाविषेहै नहीं ॥ यातैं सुषुप्तिविषे भयरूपकार्यकीभी उत्पत्तिहोवैनहीं ॥ तहाँश्रुति ॥द्वितीयाद्वैभयंभवति॥अर्थयह ॥ द्वितीयपदार्थतैं जीवोंकूं भयकीप्राप्तिहोवै है॥और हेजनक॥ आपणेतैंभिन्न जोपदार्थ भयकाकारणहोवै है ॥ सोपदार्थभी स्वरूपतैंभयकाकारणहोवैनहीं॥ किंतु दुःखकाकारणरूपकरिकै जान्याहुआसोपदार्थ भयकाकारणहोवैहै॥ जैसे दुःखकेकारणरूपकरिकैजानेहुए सिंहसर्पादिकपदार्थ लोकोंकूंभयकीप्राप्तिकरैहैं॥यातैं दुःखही भयकाकारणहै॥सोभयकाकारणदुःख स्वप्रकाशपरमात्मादेवविषे है नहीं ॥ यातैं दुःखरूपकारणकेअभावहुए तापरमात्मादेवविषे भयकीप्राप्ति संभवैनहीं ॥ और हेजनक ॥ सुषुप्तिविषेदुःखनहीं है ॥ याकेविषे यहकारण है ॥ लोकविषे देह

धारीजीवोंकूं जोदुःखहोवै है ॥ सो अप्रियपदार्थके विशेषज्ञानतैंहोवै है ॥ जैसे जाग्रत्अवस्थाविषे सिंहसर्पादिकअप्रियपदार्थोंकेअज्ञानतैं जीवोंकूं दुःखकी प्राप्तिहोवैहै॥यातैं अप्रियपदार्थोंकाविशेषज्ञान जीवोंकेदुःखकाकारण सिद्धहोवैहै॥सोविशेषज्ञानसुषुप्तिअवस्थाविषेहैनहीं यातैं विशेषज्ञानरूपकारणकेअभावहुए कार्यरूपदुःखभी तहाँ परमात्माविषेसंभवैनहीं ॥ अब याहीअर्थकूं लोकप्रसिद्धदृष्टांतकरिकै निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ जैसे लोकविषे अत्यंतप्रियस्त्रीकरिकै आलिंगनकराहुआ जोकामीपुरुषहै ॥ सोकामीपुरुष तिसकालविषे संपूर्णविशेषज्ञानोंतैं रहितहोवै है ॥ काहेतैं ताकालविषे सोकामीपुरुष धनपुत्रादिकबाह्यपदार्थोंकूंभी जानतानहीं ॥ तथा अंतरकेपदार्थोंकूंभी जाणतानहीं ॥ तथा आपणेकूं तथाआपणीप्रियस्त्रीकूंभी विशेषकरिकैजानतानहीं॥ताकालविषे सर्वदुःखोंकाअभाव जैसे तुम्हारेकूं तथाअन्यलोकोंकूं अनुभवसिद्धहै॥ तैसे सुषुप्तिअवस्थाविषेभी स्वप्रकाशपरमात्मादेवकेसाथ अभेदभावकूंप्राप्तहोइकै यहजीवात्मा संपूर्ण विशेषज्ञानोंतैंरहितहोवै है॥ काहेतैं ताकालविषे यहजीवात्माबाहरकेभूतभौतिकपदार्थोंकूंभी जानतानहीं ॥ तथा अंतरकेइंद्रियादिकपदार्थोंकूंभीजाणतानहीं ॥ तथा सुषुप्तिविषेविद्यमान जोमायारूपअज्ञानहै ताकूंभी जानतानहीं ॥ तथा इंद्राणीसहित सोआत्मारूपइंद्र हृदयाकाशकूंप्राप्तहोइकै जिससुखकूंप्राप्तहोवै है ॥ तासुखकूंभी विशेषकरिकैजाणतानहीं ॥ इसतैंआदिलैके सर्वविशेषज्ञानोंकाअभाव सुषुप्तिविषेहोवै है ॥ याकारणतैं तहाँ किंचित्मात्रभी दुःखकीप्राप्ति जीवकूंहोवैनहीं ॥ और हेजनक ॥सुषुप्तिअवस्थाविषे तथामुक्तिअवस्थाविषे प्राप्तहोणेयोग्य जोआनंदस्वरूप परमात्मादेवहै ॥ सोपरमात्मादेवही सर्वजगत्काउपादानकारणहै ॥ और लोकविषे उपादानकारणकीप्राप्तितैं ताकेकार्यकीभी अवश्य प्राप्तिहोवै है ॥ जैसे सुवर्णकेप्राप्तहुए ताकेकार्यकुंडलादिकभूषणोंकीभी अवश्यप्राप्तिहोवै है ॥ तैसे सर्वजगत्का उपादानकारणजोपरमात्मादेवहै ॥ ताकीप्राप्तिहुए संपूर्णपुत्रधनादिकपदार्थ प्राप्त होवैहैं याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं आप्तकाम यानामकरिकैकथनकरै है ॥ और हेजनक ॥ जैसे सुवर्णकापरित्याग कारिकै कुंडलादिकभूषण रहैं नहीं ॥ तैसे आनंदस्वरूप परमात्माकूंपरित्यागकारिकै याजीवोंकी धनपुत्रादिकअनात्मापदार्थोंविषे

कामनाहोवैनहीं ॥ किंतु आनंदस्वरूपआत्माविषेहीं सर्वजीवोंकीकामना होवैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं आप्तकाम यानामकरिकै कथनकरैहै ॥ और हेजनक ॥ वास्तवतैंविचारकरिकैदेखियेतौ आत्माविषे कामनासंभवैनहीं ॥ काहेतैं यालोकविषे जोपदार्थ जीवोंकूं अप्राप्तहोवैहै ॥ तापदार्थविषे जीवोंकीकामनाहोवैहै ॥ प्राप्तपदार्थविषे किसीजीवकीकामनाहोवै नहीं ॥ और यहआनंदस्वरूप परमात्मादेव सर्वजीवोंकाआत्मारूपहै ॥ यातैं सर्वजीवोंकूं नित्यहीप्राप्तहै॥ ता नित्यप्राप्तपरमात्मादेवविषे कामनासंभवैनहीं ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं अकाम यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और हेजनक ॥ सर्वदुःखोंकाकारण जोकामनाहै ॥ सोकामना जिसपुरुषविषे होवैहै ॥ तिसीपुरुषविषे ताकानामकरिकै शोकादिकविचार उत्पन्नहोवैं हैं ॥ और जिसपुरुषविषे किसीपदार्थकीकामनानहीं है ॥ तिसपुरुषविषे शोकादिकविचार उत्पन्नहोवैनहीं ॥ और सुषुप्तिअवस्थाविषे यहआत्मादेव सर्वकामनावोंतैंरहितहोवैहै ॥ यातैं तापरमात्मादेवविषे शोकादिकविकार संभवैनहीं॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं अशोक यानामकरिकै कथनकरैहै ॥ इतनैंकरिकैसुषुप्तिअवस्थाविषेस्थित जोपरमात्मादेवहै ताकेस्वरूपकानिरूपणकऱ्या ॥ अब तिसीपरमात्मादेवविषे संपूर्णअध्यासकेअभावकूं निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ सुषुप्तिकरिकैप्राप्तहोणेयोग्यजोपरमात्मादेवहै ॥ सोपरमात्मादेव अहंमम अध्यासतैंरहितहै ॥ तथा पुण्यपापरूपकर्मतैं रहितहै॥ याकारणतैं तापरमात्मादेवविषे यास्थूलशरीरकाजनक जोपिताहै सोपिता अपिताभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और माता अमाताभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और स्त्रीतैंआदिलैकेजेपुत्रादिकबांधवहैं तेबांधव अबांधवभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे यहमेरापिताहै यहमेरीमाताहै यहमेरेबांधवहैं याप्रकारका ममताअध्यासहोवैनहीं ॥ इतनैंकरिकै सुषुप्तिअवस्थाविषे स्थूलशरीरकेसंबंधीजेमातापितादिकपदार्थ हैं तिनोंकेअध्यासकाअभावनिरूपणकऱ्या॥अब सूक्ष्मशरीरकेसंबंधी जेपदार्थहैं तिनोंकेअध्यासकेअभावकूं आत्माविषे निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ सुषुप्तिअवस्थामैं तापरमात्मादेवविषे शब्दस्पर्शादिकविषय अविषयभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और वाक्आदिकइंद्रिय अनिंद्रियभावकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ और वाक्आदिकइंद्रियोंके जेअग्निआदिकदेवताहैं॥तेदेवता

अदेवताभावकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ और ऋग्वेदतैंआदिलेकेजेचारिवेदहैं ॥ तेवेद अवेदभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ इतनैंकारिकै सुषुप्तिअवस्थाविषे आत्माविषे ममत्वअध्यासकाअभाव दिखाया ॥ अब सुषुप्तिअवस्थाविषे अहंतारूपअध्यासकेअभावकूं निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ सुवर्णादिकपदार्थोंकीचोरीकरणेहारा जोस्तेनपुरुष है सोस्तेनपुरुष सुषुप्तिअवस्थाविषे स्तेनभावतैंरहितहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ मैं स्तेन हूं याप्रकारकाअहंअध्यास सुषुप्तिविषेहोवैनहीं ॥ यहरीति आगेभीजानिलेणी ॥ और हेजनक ॥ यज्ञ तथायज्ञकेकरणेहारे जेब्राह्मणक्षत्रियवैश्यहैं ॥ तथा शास्त्रकाज्ञाता जोब्राह्मणहै ॥ तथाब्राह्मणभावकूंप्राप्तहोणेहारा जोगर्भहै ॥ इनचारोंकूं शास्त्रविषे भ्रूणनामकरिकै कथनकरैं हैं ॥ ताभ्रूणकूं जोपुरुष हननकरैहै ॥ तापुरुषकानाम भ्रूणहाहै ॥ सोभ्रूणहापुरुष सुषुप्तिअवस्थाकूंप्राप्तहोइकै भ्रूणहा भावतैं रहितहोवैहै ॥ और हेजनक ॥ ब्राह्मणीस्त्रीविषे शूद्रपुरुषतैं उत्पन्नभयाजोपुत्रहै ताकूं शास्त्रविषेचांडालकहैं हैं सोचांडालभी सुषुप्तिकूंप्राप्तहोइकै चांडालभावतैंरहितहोवैहै ॥ और क्षत्रियाणीस्त्रीविषे शूद्रपुरुषतैं जोपुत्रउत्पन्नहोवैहै ॥ ताकूं शास्त्रविषे पुल्कसकहैं हैं ॥ अथवा किसीनीचजातिवालेपुरुषकानाम पुल्कसहै ॥ सोपुल्कसभी सुषुप्तिकूंप्राप्तहोइकै पुल्कसभावतैंरहितहोवैहै ॥ और हेजनक ॥ चतुर्थआश्रमकरिकैयुक्त जोसंन्यासीपुरुषहै ॥ सोसंन्यासीसुषुप्तिकूंप्राप्तहोइकै संन्यासीभावतैंरहितहोवैहै ॥ और वानप्रस्थआश्रमकरिकै युक्त जोपुरुषहै ॥ सोसुषुप्तिकूंप्राप्तहोइकै वानप्रस्थभावतैंरहितहोवैहै ॥ हेजनक ॥ यहां बहुतविस्तारकरिकैकहणेका कछुप्रयोजननहीं ॥ किंतु यहपितामाता मेरेहैं ॥ इसतैंआदिलेके जितनेक ममताकूंविषयकरणेहारेअध्यासहैं॥तथा मैंस्तेनहूं मैंब्राह्मणहूं मैंसंन्यासीहूं इसतैं आदिलेके जितनेकी अहंताकूंविषयकरणेहारेअध्यासहैं तेसंपूर्णअहंममअध्यास सुषुप्तिविषे आत्मामें है नहीं ॥ अब अध्यासरूपकार्यअविद्याविषे तथापुण्यपापरूपकर्मोंविषे अन्वयव्यतिरेककरिकै शोकादिकविकारोंकीकारणताकूं निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥सुषुप्तिअवस्थाविषे परमात्माकेसाथ अभेदभावकूंप्राप्तभया जो यहजीवात्माहै ॥ ताकेविषे अहंअध्यास तथाममअध्यास यहदोनोंप्रकारकाअध्यास हैनहीं ॥ तथा पुण्यपापरूपकर्मभीनहीं ॥ याकारणतैं सुषुप्तिअवस्थाविषे सोपरमात्मादेव शोकतैंआदिलेके सर्वअंतःकरणकेधर्मोंतैं

रहितहोवै है ॥ और जाग्रत्अवस्थाविषे तथास्वप्नअवस्थाविषे याजीवात्माविषे अहंममअध्यासविद्यमान है ॥ तथा पुण्यपापरूपकर्मभी विद्यमान हैं॥यातैं जाग्रतस्वप्नअवस्थाविषे यहजीवात्मा पुत्रादिकप्रियपदार्थोंकेवियोगतैं तथासिंहसर्पादिकअप्रियपदार्थोंकेसंयोगतैं अनेकप्रकारकेशोककूंप्राप्तहोवै है ॥ कैसे हैं तेशोक ॥ अग्निकेसमान दाहकरणेहारे हैं ॥ ऐसेशोकरूपसमुद्रकूं यहजीवात्मा जाग्रत्स्वप्नविषे तरिसकैनहीं ॥ किंतु सुषुप्तिअवस्थाविषे सर्वविशेषज्ञानोंतैं रहितहुआ यहजीवात्मा ताशोकरूपसमुद्रकूंतरै है ॥ शंका ॥हेभगवन् ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे यहआनंदस्वरूपआत्मा संपूर्णविशेषज्ञानोंतैंरहितहोवै है ॥ यहजोआपनैंकह्या सोसंभवैनहीं ॥काहेतैं जोपदार्थ ज्ञानतैंरहितहोवै है ॥ सोपदार्थ जडहोवै है॥जैसे घटपटादिकपदार्थ ज्ञानतैंरहित हैं यातैंजड हैं॥तैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे ज्ञानतैंरहितहोणेतैं आत्मा भी जडहोवैगा॥ समाधान ॥ हेजनक ॥सुषुप्तिअवस्थाविषे यहजीवात्मा सर्वविशेषज्ञानोंतैंरहितहोवै है॥यहजोहमनैंकथनकऱ्या है ॥तावचनका तुमनैं यहअभिप्राय नहींजानणा ॥ जोसुषुप्तिअवस्थाविषे आत्मा प्रकाशरूपनहीं है ॥ याकारणतैं किसी पदार्थकूंजाणतानहीं ॥ किंतु तावचनका तुमनैं यहअभिप्रायजानणा सुषुप्तिअवस्थाविषे यहआत्मादेव यद्यपि आपणेस्वरूपभूतज्ञानकरिकैयुक्तहै॥तथापि सुषुप्तिअवस्थाविषे आत्मातैंभिन्न कोईद्वैतप्रपंचहै नहीं जिसकूं आत्मादेखे॥याअभिप्रायकरिकै सुषुप्तिविषे सर्वविशेषज्ञानोंकाअभाव कथनकऱ्या है ॥ हे जनक ॥ जैसे आकाश सर्व पदार्थों विषे व्यापक है ॥ तैसे श्रोत्र त्वक् चक्षु रसनघ्राण या पंचज्ञानइंद्रियों करिकै उत्पन्न भई जे अंतःकरणकी वृत्तियां ॥ तिनवृत्तियों विषे प्रतिबिंबरूप करिकै आत्माकी चैतन्यशक्ति व्यापक है ॥ तथा वाक् आदिककर्मइंद्रियोंकेव्यापारोंविषे सो चैतन्यशक्ति व्यापक है ॥ ऐसी आत्माकी चैतन्यशक्ति सुषुप्तिअवस्थाविषेभी विद्यमान है ॥ यातैं सुषुप्तिअवस्थाविषे सोस्वप्रकाशआत्मा घटादिकोंकीन्याईं अज्ञानीरूप तथाजडरूप तथाअसत्रूप होइसकैनहीं ॥ और ॥ हेजनक ॥ जाग्रत्अवस्थाविषे यहआत्मादेव श्रोत्रइंद्रियकरिकै शब्दकूं जानै है ॥ और त्वक् इंद्रियकरिकै स्पर्शकूं जानै है ॥ और चक्षुइंद्रियकरिकै रूपकूं जानै है ॥ और रसनइंद्रिय करिकै रसकूं जानै है॥और घ्राणइंद्रिय करिकै गंधकूंजानै है ॥ और वाक् इंद्रियकरिकै शब्दकाउच्चारण

करै है ॥ और हस्तइंद्रियकरिकै पदार्थोंकाग्रहणकरै है ॥ और पादइंद्रियकारक गमनआगमनकरै है ॥ और उपस्थइंद्रियकरिकै आनंदकूं प्राप्तहोवै है॥ और पायुइंद्रियकरिकै मलादिकोंकापरित्यागकरै है॥ और मनकरिकै संकल्पविकल्पकरै है॥ और बुद्धिकरिकै निश्चयकरै है ॥ और चित्तकरिकै स्मरणकरै है ॥ और अहंकारकरिकै अभिमानकरै है ॥ इसतैंआदिलेके अनेकप्रकारकेव्यापारोंकूंयहजीवात्मा जाग्रत् विषेकरै है॥ और सुषुप्तिअवस्थाकूंप्राप्तहोइकै सोआत्मादेव तिनव्यापारोंकूंकरतानहीं॥ याकेविषे यहकारण है ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे श्रोत्रादिकइंद्रियोंतैंआदिलेके तथाशब्दादिकविषयोंतैंआदिलेके संपूर्णद्वैतप्रपंचकाअभावहोवै है॥ याकारणतैं सुषुप्तिविषे कोईव्यापार होतानहीं॥ और सुषुप्तिअवस्थाविषे आत्माकाचैतन्यरूपज्ञाननहींहै॥ याकारणतैं सुषुप्तिविषे कोईव्यापारनहींहोता॥ याप्रकारकेअर्थविषे श्रुतिकातात्पर्यनहीं ॥ और हेजनक॥ जैसे काष्ठरूपउपाधिकरिकैयुक्तजोअग्नि है॥ सोअग्नि दाहकूंकरै है तथा अन्नादिकोंकूंपकावै है॥ तथाप्रकाशकरै है और सोईअग्नि काष्ठरूपउपाधितैंरहितहुआ तथाभस्मकरिकैआवृत्तहुआ दाहादिककार्योंकूंकरैनहीं ॥ तैसे जाग्रत्अवस्थाविषे इंद्रियादिकउपाधियोंकरिकैयुक्तहुआ यहजीवात्मा नानाप्रकारकेव्यापारोंकूंकरै है ॥ और सुषुप्तिअवस्थाविषे तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंका तथाशब्दादिकविषयोंका कारणअज्ञानविषेलयहोवै है ॥ यातैं सुषुप्तिअवस्थाविषे विद्यमानहुआभीसोआत्मादेव किसी व्यापारकूंकरै नहीं ॥ और हेजनक जैसे अग्निकास्वरूप भूतजो प्रकाश है ॥ सोप्रकाश काष्ठोंकेनष्टहुएभी नाशहोवै नहीं ॥ तैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे विषयइंद्रियरूपउपाधिकेलयहुएभी आत्माकास्वरूपभूतज्ञान नाशहोवै नहीं ॥ काहेतैं लोकविषे जितनेकपदार्थ हैं तिन पदार्थोंका जोस्वरूप है ॥ सोस्वरूपतिनपदार्थोंकेविद्यमानहुए कभीभीनाशहोवै नहीं किंतु तिनपदार्थोंकेनाशहुएही तिनोंकेस्वरूपका नाशहोवै है ॥ जैसे अग्निकास्वरूपभूत जोउष्णता है तथा प्रकाशरूपता है ॥ तास्वरूपका अग्निकेनाशतैंविना किसीउपायकरिकैनाशहोइसकैनहीं ॥ किंतु अग्निकेनाशतैंहीं ताकेस्वरूपका नाशहोवै है ॥ और सुषुप्तिअवस्था विषेस्थित जोद्रष्टाआत्मा है सो अविनाशी है यातैं ताद्रष्टा आत्माका नाशहोवै नहीं ॥ द्रष्टाआत्माकेनहींनाशहुए ताद्रष्टाआत्माकी स्वरूपभूत जोस्वप्रकाशज्ञानरूपदृष्टि है ॥ ताकाभी नाशहोवै

नहीं ॥ इतनेकरिकै श्रुतिप्रमाणतैं आत्माकाअविनाशीपणासिद्धकरा ॥ अब तिसीअर्थकूं युक्तिकरिकै स्पष्टकरैहैं ॥ हेजनक जोवादी आत्माकाभीनाशमानैहै तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ द्रष्टाआत्माकानाश किसीकारणकरिकैहोवै है॥ अथवा किसीकारणतैंविनाहींद्रष्टा आत्माकानाशहोवैहै ॥ तहाँ आत्माकानाश किसीकारणकरिकैजानैहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै तावादीतैं यहपूछाचाहिये ॥ सोआत्माकानाश आत्मातैंभिन्नहै अथवा सोआत्माकानाश आत्मास्वरूपहै ॥ तहाँ सोआत्माकानाश ॥ आत्मास्वरूपहै यहदूसरा पक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं॥ काहेतैं आत्माकानाश आत्मारूपहै ॥ याकहणेकरिकै यहअर्थसिद्धहोवै है॥ जिसआनंदस्वरूप चेतनआत्माकूं वादी आत्माकानाश यानामकरिकै कथनकरैहै ॥ तिसीचेतनआत्माकूं हमसिद्धांती आत्मा यानामकरिकै कथनकरैं हैं॥ यातैं वादीकातथाहमाराआत्माकेनाममात्रविषे विवादसिद्धहोवैहै॥ तिननामोंकेअर्थविषेविवादसिद्धहोवैनहीं॥ औरनाममात्रकेविवादकरिकै अर्थकीहानिहोवैनहीं ॥ जैसे एकहीघटव्यक्तिकूं कोईपुरुष घट यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और कोईपुरुष तावटव्यक्तिकूं कलश यानामकरिकै कथनकरैहै ॥ तहाँ घट कलश यादोनोंनामोंकेभेदहुएभीघटव्यक्तिकाभेदहोवैनहीं॥ तैसे आत्माकानाश तथाआत्मायादोनोंनामोंकेभेदहुएभी आत्मारूपव्यक्तिकाभेदसंभवैनहीं ॥ और सोआत्माकानाश आत्मातैंभिन्नहै यहप्रथमपक्ष जोवादीअंगीकारकरै सोभीसंभवै नहीं ॥ काहेतैं सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म ॥ अर्थयह ॥ ब्रह्मरूपआत्मा सत्यरूपहै तथाज्ञानरूपहै तथाअनंतहै ॥ याश्रुतिविषे आत्माकूंहीं सत्यकह्याहै ॥ तासत्यरूपआत्मातैं जोआत्माकानाश तथातानाशकेकारण भिन्नहोवैंगे ॥ तौवंध्यापुत्रकीन्याईं सोआत्माकानाश तथा तानाशकाकारण दोनोंअसत्यहोवैंगे ॥ और जोपदार्थअसत्यहोवैहै ॥ तापदार्थकी किसीप्रमाणकरिकै सिद्धिहोवैनहीं ॥ जैसे असत्यवंध्यापुत्रकी किसीप्रमाणकरिकैसिद्धिहोवैनहीं ॥ तैसे असत्यरूप जोआत्माकानाशहै ॥ तथा तानाशकाजोकारणहै ॥ तिनदोनोंकीभी किसीप्रमाणकरिकै सिद्धिहोइसकैनहीं किंवा ॥ सजातीयभेद तथास्वगतभेद यातीनप्रकारकेभेदतैंरहित जोअद्वितीयआत्माहै ॥ तासत्यस्वरूपआत्मातैंभिन्नहुआ सोआत्माकानाश असत्यरूपहीहोवैगा॥ औरआत्माकेनाशकेअसत्यहुए तानाशरूपकार्यकरिकै अनुमानकरणे

योग्यजो तानाशकाकारणहै सोभीअसत्यहीहोवैगा ॥ और आत्माकानाश तथातानाशकाकारण यादोनोंकेअसत्यहुए ॥ तिनदोनोंकूं सिद्धकरणेहारा जोप्रमाणहै सोभीअसत्यहीहोवैगा ॥ काहेतैं प्रमेयरूपवस्तुकीजोसत्ताहै ॥ ताकेअधीनहीं प्रमाणकीसत्ताहोवैहै ॥ प्रमेयरूपवस्तुकेअसत्यहुए ताकाप्रमाणभीअसत्यहीहोवै है ॥ जैसे वंध्यापुत्रकेअसत्यहुए ताकाप्रमाणभी असत्यहीहोवै है॥ किंवा ॥ वादीनैंअंगीकारकराजोआत्माकानाश ॥ सोनाश भावरूपहै ॥ अथवा सोनाशअभावरूपहै ॥ तहाँ सोनाश भावरूपहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ तावादीसैंयहपूछाचाहिये ॥ सोभावरूप आत्माका नाश घटादिकपदार्थोंकीन्याईं अनित्यहै अथवा आत्मा कीन्याईं नित्यहै ॥ तहाँ सोभावरूप आत्माकानाश घटादिकोंकीन्याईं अनित्यहै ॥ यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं घटादिकोंकीन्याईं नाशवान् जोआत्माकानाशहै ॥ सोनाश नित्यआत्माकीहानिकरिसकैनहीं ॥ और सोआत्माकानाश आत्मा कीन्याईं नित्यहै यहदूसरापक्षजोवादी अंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं जैसे आत्मा भावरूपहै तथाचैतन्यरूपहै तथानित्यहै ॥ तैसे सोआत्माकानाशभी भावरूपहै तथाचैतन्यरूपहै तथानित्यहै ॥ यातैं ताचैतन्यरूपनाशकरिकै चैतन्यरूपआत्माकीहानिहोवैनहीं ॥ किंवा ॥ आत्माकीन्याईं चैतन्यरूपजोआत्माकानाशहै ॥ सोनाश जोकदाचित् चैतन्यरूपआत्माकेनाशकूंकरैगा ॥ तौ चैतन्यरूपक रिकै तानाशकेसमानजोआत्माहै ॥ सोआत्माभीतानाशकूं अवश्यनाशकरैगा ॥ आत्माकीन्याईं चैतन्यरूप सोनाश आत्माकानाश करैहै ॥ और चैतन्यरूपआत्मा तानाशकूं नाशनहींकरै है ॥ याप्रकारकेअर्थकासाधक कोईयुक्तिहैनहीं ॥ यातैं सोआत्माकानाश भावरूपहै यहवादीकाकहणा अत्यंतअसंगतहै ॥ किंवा सोआत्माकानाशअभावरूपहै यहदूसरापक्ष जोवादीअंगीकारकरै ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ ताअभावरूपनाशका अनात्मपदार्थ प्रतियोगीहै ॥ अथवा ताअभावरूपनाशका आत्माप्रतियोगीहै ॥ तहाँताअभाव रूपनाशकाअनात्मपदार्थ प्रतियोगीहै यहप्रथमपक्षजोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं जैसे घटकेअभाववालाभूतलहै ॥ याप्र कारकीप्रतीतिकरिकै भूतलविषेस्थितघटाभावकीसिद्धिहोवैहै ॥ ताघटाभावका प्रतियोगीघटहै॥ पटादिकपदार्थ ताअभावकेप्रतियोगी हैं

नहीं॥यातैं घटाभाववालाभूतलहै याप्रकारकीप्रतीतिकरिकै भूतलविषेघटाभावसिद्धहुएभी ताप्रतीतिकरिकै पटादिकोंकाअभाव सिद्धहो वैनहीं ॥ तैसे आत्मातैंभिन्न जेअनात्मापदार्थ हैं ॥ तिनोंकेअभावसिद्धहुएभी आत्माकाअभाव सिद्धहोवैनहीं ॥ यातैं ताअभावरूपना शका अनात्मापदार्थ प्रतियोगी है यहवादीकाकहणा असंगतहै॥किंवा॥ताअभावनाशका आत्मा प्रतियोगी है यहदूसरापक्ष जोवादी अंगी कारकरै ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ ताअभावरूपनाशका प्रतियोगीजोआत्माहै॥सोआत्मा एकहै अथवा अनेकहै ॥ तहाँ सोअभाव रूपनाशकाप्रतियोगीआत्मा एकहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं॥काहेतैं जोआत्मा अभावरूपनाशकाप्रतियोगी है॥ सोईहीआत्मा ताअभावरूपनाशकाभी आत्माहै ॥ यातैं आपणेआत्माकेसाथ सोअभावरूपनाश किसप्रकारविरोधकरैगा ॥ किंतु सोअ भावरूपनाश आपणेआत्माकेसाथ विरोधनहींकरैगा॥काहेतैं यालोकविषे कोईभीपुरुष आपणेआत्माकेसाथ विरोधकरतानहीं ॥ किंतु आपणेतैंभिन्न जेप्रतिकूलपदार्थ हैं तिनोंकेसाथ सर्वलोकविरोधकरै हैं॥यातैं सोअभावरूपनाश आपणेआत्माकेसाथ विरोधकरैनहीं॥और ताअभावरूपनाशका प्रतियोगीजोआत्माहै सोअनेकहै॥यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं ताअभावरूप नाशकाजोआत्माहै ॥ ताआत्माकूं सोअभावरूपनाश निवृत्तकरैनहीं ॥ यातैं ताआत्माके नाशकरणे वासतै कोईदूसराअभावरूपनाश अंगीकारकरणाहोवैगा ॥ और सोदूसरा अभावरूपनाशभी आपणेआत्माकानाश करिसकैनहीं ॥ यातैं तादूसरे अभावरूपनाशके आत्माकेनाशकरणेवासतै कोईतीसरा अभावरूपनाश अंगीकारकरणाहोवैगा ॥ याप्रकार उत्तर उत्तर अभावरूपनाशोंकीकल्पनाकरणेतैं अनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और जोवादी ताअनवस्थादूषणकेनिवारणवासतै उत्तर उत्तर अभावरूपनाशोंकी कल्पनानहींकरैगा ॥ तौ आत्माका अभावरूपनाश सिद्धनहींहोवैगा ॥ काहेतैं जैसे नीलपीतादिकरूपवाले जेअनेकघटहैं ॥ तिनघटोंविषे एकघटभी जिसभूत लविषेरहै है॥तिसभूतलविषे घटाभाववालाभूतलहै याप्रकारकी सामान्यप्रतीति होवैनहीं॥ किंतु नीलघटकेअभाववालाभूतल है ॥ तथा पीतघटकेअभाववालाभूतलहै॥याप्रकारकी विशेषप्रतीतियां तहाँहोवै हैं॥जभी ताभूतलविषे संपूर्णघटोंकाअभावहोवै है ॥ तभी घटाभा

वबालाभूतलहै याप्रकारकी सामान्यप्रतीतिहोवै है॥तैसे एकआत्माकेभीविद्यमानहुए सामान्यतैंआत्माकाअभावरूपनाश संभवै नहीं॥ इतनैंकरिकै आत्माकेनाशविषे सामान्यतैं अभावरूपकाखंडनकऱ्या ॥ अब प्रागभावादिक विशेषरूपकरिकैभी ताकाखंडन करैं हैं ॥ जोवादी आत्माकेनाशकूं अभावरूपमानै हैं ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ सो अभावरूप आत्माकानाश प्रागभाव रूप है ॥ अथवा अन्योन्याभावरूपहै ॥ अथवा अत्यंताभावरूप है ॥ अथवा प्रध्वंसाभावरूप है ॥ तहाँ सो आत्माका अभावरूप नाश प्रागभावरूप है ॥ यहप्रथमपक्ष जोवादीअंगीकारकरै तावादीसैं यहपूछाचाहिये॥जिसकालविषे सोआत्माकाप्रागभावरूपनाश विद्यमानहै ॥ तिसकालविषे सोआत्मा विद्यमानहै ॥ अथवा नहींविद्यमानहै॥ तहाँ प्रथमपक्षकूं जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं॥ काहेतैं आत्माकाप्रागभावरूपजोनाशहै॥ताप्रागभावकालविषे जो आत्माकास्वरूपविद्यमानहै ॥ तौ सोआत्माहीं आपणेप्रागभावरूपनाशकूं निवृत्तकरैगा॥ यातैं ताप्रागभावरूपनाशकरिकै आत्माकीकिंचित्मात्रभी हानिहोइसकैनहीं ॥ और सोप्रागभावरूपनाश जिसकालविषे है ॥ तिसकालविषे आत्मा विद्यमाननहीं है ॥ यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं जैसे लोकविषे परोक्षगालीप्रदानतैं किसीपुरुषकीहानिहोवैनहीं॥तैसे भिन्नकालविषेस्थित जोप्रागभावहै ॥ ताकरिकै आत्माकीहानिहोवै नहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ एककालविषे तथा एकदेशविषे वर्तमानजेपदार्थ हैं ॥ तिनपदार्थोंकाही परस्पर साधकबाधकभावहोवै है॥भिन्नकालविषे तथाभिन्नदेशविषे वर्तमानजेपदार्थ हैं ॥ तिनोंका परस्पर साधकबाधकभावहोवैनहीं ॥ जैसे भिन्नदेशविषे तथाभिन्नकालविषेस्थित जे कुलाल दण्ड चक्रादिक कारण हैं ॥ तिनोंतैं भिन्नदेशकालविषेस्थितघटकी उत्पत्ति होवैनहीं ॥ तथा भिन्नदेशकालविषेस्थितजोअग्निहै ॥ ताअग्निकरिकै भिन्नदेशकालविषे स्थिततृणादिकोंकादाहहोवैनहीं ॥ तैसे भिन्नकालविषेस्थित जोप्रागभावरूपनाशहै॥ ताकरिकै भिन्नकालविषेस्थितआत्माकी हानिहोवै नहीं ॥ किंवा ॥ जोवादीकार्यकीउत्पत्तितैंपूर्व ताकार्यकाउपादानकारणविषे प्रागभाव अंगीकारकरै है ॥ सोवादीभी प्रागभावकूं कार्यकी उत्पत्तिविषेहीकारणमानै है॥परंतु प्रागभावविषे कार्यकीनाशरूपता सोवादी अंगीकारकरतानहीं ॥ उलटा कार्यकरिकै ताप्रागभावका

नाश मानै है॥जैसे पटकीउत्पत्तितैंपूर्व तंतुरूपकारणविषे तापटकाप्रागभावरहै है॥और तंतुकीन्याईं सोप्रागभावभी पटकाकारणहोवै है ॥ और जभी पटरूपकार्यकीउत्पत्तिहोवैहै॥तभी सोप्रागभाव नाशहोइजावैहै।यातैं कार्यकीउत्पत्तिकाकारण जोप्रागभावहै॥सोकार्यकाविरोधीहोवैनहीं॥उलटा कार्यही प्रागभावकाविरोधीहोवैहै ॥किंवा॥ जिसजिसपदार्थका प्रागभावहोवैहै॥तिसतिसपदार्थका जन्महोवै है॥और जोपदार्थ जन्मतैंरहितहै॥तापदार्थका प्रागभावहोवैनहीं॥और यहआनंदस्वरूपआत्मा जन्मतैंरहितहै॥यातैं ता आत्माकाप्रागभावसंभवै नहीं ॥ और जिसपदार्थकानाशहोवैहै ॥ तिसपदार्थकाही जन्महोवै है ॥ यातैं जैसे दिनविषेनहींभोजनकरणेहारा जोस्थूलपुरुषहै॥ताकी स्थूलता भोजनतैंविना अनुपपन्नहुई ॥ तापुरुषकेरात्रिभोजनकी कल्पनाकरावै है ॥ तैसे तापदार्थकानाशभी तापदार्थकेजन्मतैंविना अनुपपन्नहुआ ता पदार्थकेजन्मकी कल्पनाकरावै है॥और आत्माकानाश किसीप्रमाणकरिकैसिद्ध हैनहीं॥यातैं तानाशकरिकै आत्माके जन्मकी कल्पनाहोइसकैनहीं ॥ यातैं आत्माकानाश प्रागभावरूपनहीं ॥ किंवा ॥ सोआत्माकानाश अन्योन्याभावरूपहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं सोआत्माकानाश जोअन्योन्याभावरूपहोवैगा ॥ तौ सोअन्योन्याभाव आश्ररूपआत्माका विरोधीनहींहोवैगा ॥ जैसे घट पटरूपनहीं है ॥ और पट घटरूपनहीं है ॥ याप्रतीतिकाविषय जोअन्योन्याभावहै॥सोअन्योन्याभाव घटपटरूपप्रतियोगीअनुयोगीके आश्रितरहै है ॥ घटपटरूपआश्रयकेअविद्यमानहुए ताअन्योन्याभावकीस्थितिसंभवैनहीं ॥ तैसे आत्मारूपआश्रयकेअविद्यमानहुए ताअन्योन्याभावकीस्थितिसंभवैनहीं॥यातैं सोअन्योन्याभावरूपआत्माकानाश आत्माकी किंचित् मात्रभीहानिकरिसकैनहीं ॥ किंवा ॥ सोआत्माकानाश अत्यंताभावरूपहै यहतीसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं॥काहेतैं सोआत्माकानाश जोअत्यंताभावरूपहोवैगा॥तौ नरशृंगकीन्याईं आत्माभी नास्तिरूपकरिकैप्रतीतहोवैगा॥और नरशृंगकीन्याईं नास्तिरूपकरिकै आत्माकीप्रतीतिहोतीनहीं ॥ किंतु अहंअस्मि याप्रकार अस्तिरूपकरिकै आत्माकाभान सर्वजीवोंकूंहोवै है ॥ यातैं सो आत्माकानाश अत्यंताभावरूपनहीं ॥ किंवा ॥ सोआत्माकानाश प्रध्वंसाभावरूपहै यहचतुर्थपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभीसंभवै

नहीं ॥ काहेतैं सोआत्माकानाश प्रध्वंसाभावरूपहै ॥ याचतुर्थपक्षविषे आत्माकीसत्तातैंविना तानाशकीसत्ता दुर्लभ है इसतैंआदिले केजेपूर्वदूषणकहे हैं ॥ तेसंपूर्णदूषण प्राप्तहोवै हैं ॥ शंका ॥ सोआत्माकानाश अभावरूपहै यापक्षविषे जेपूर्वदूषणकहे हैं ॥ तेदूषणयद्यपि इसचतुर्थपक्षविषेसंभवै हैं ॥ तथापि सोआत्माकानाश भावरूपहै यापक्षविषे जेपूर्वदूषणकहेहैं तेदूषण याचतुर्थपक्षविषे संभवहोइसकैनहीं॥ समाधान ॥ सोआत्माकानाश भावरूपहै यापक्षविषे जेपूर्वदूषणकहे हैं॥तेसंपूर्णदूषण याचतुर्थपक्षविषे संभवै हैं ॥ काहेतैं यालोकविषे भावपदार्थतैंभिन्न कोईअभावपदार्थ है नहीं ॥ किंतु अभावपदार्थ भावपदार्थरूपहै॥यहवार्त्ताइसीअध्यायविषे पूर्व विस्तारतैंकहिआये हैं ॥ जैसे घटकाप्रध्वंसाभाव घटकेउपादानकारणरूपकपालोंतैं भिन्ननहीं ॥ किंतु सोघटकाध्वंस कपालरूपहै॥तैसे तिनकपालोंकाध्वंसभी ताकपालकाउपादानकारणरूपजेकपालिकाहैं तिनोंतैंभिन्ननहीं ॥ किंतु सोकपालकाध्वंस कपालिकारूपहै ॥ यहवार्त्ता केवलयुक्तिकरिकै सिद्धनहीं ॥ किंतु विष्णुपुराणविषे व्यासभगवान्नैंभी यहवार्त्ताकही है ॥ तहाँ श्लोक ॥ महीघटत्वंघटतःकपालिका कपालिकाचूर्णरज स्ततोऽणुः ॥ अर्थयह ॥ मृत्तिकाकाप्रध्वंसाभाव घटरूपहै ॥ और घटकाप्रध्वंसाभाव कपालरूपहै और कपालोंकाप्रध्वंसाभाव कपालिकारूपहै ॥ और कपालिकाकाप्रध्वंसाभाव चूर्णरूपहै ॥ और चूर्णकाप्रध्वंसाभाव रजरूपहै ॥ और रजकाप्रध्वंसाभाव अणुरूपहै ॥ १ ॥ यातैं सोआत्माकानाश भावरूपहै यापक्षविषे जेपूर्व दूषणकहे हैं ॥ ते संपूर्णदूषण याचतुर्थपक्षविषेभी प्राप्तहोइसकै हैं ॥ इतनैंग्रंथकरिकै आत्माकानाश किसीकारणकरिकैजन्यहै॥ याप्रथमपक्षकाखंडनकऱ्या॥ अब सोआत्माकानाश किसीकारणकरिकै जन्य नहीं है यादूसरेपक्षका खंडनकरैं हैं ॥ सोआत्माकानाश किसीकारणकरिकैजन्य नहीं है यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभीसंभवै नहीं ॥ काहेतैं लोकविषे जिसजिसघटादिकपदार्थोंकानाशहोवै है ॥ सोनाश मुद्गरप्रहारादिककारणोंकरिकैहींहोवै है ॥ कारणतैंविना किसीपदार्थकानाशहोवैनहीं ॥ यातैं आत्माकानाश किसीकारणकरिकैजन्य नहींहोवै है ॥ यहवादीकाकहणा अत्यंतविरुद्धहै ॥ किंवा॥ सोआत्माकानाश किसीकारणकरिकैजन्यहै ॥ याप्रथमपक्षविषे सोआत्माकानाश आत्मातैंभिन्नहै अथवा अभिन्नहै इत्यादिकजेपूर्वविक

ल्पकरथे ॥ तथा तिनविकल्पोंविषे जेपूर्वदूषणकहेथे॥तेसंपूर्णविकल्प तथादूषण याद्वितीयपक्षविषेभीप्राप्तहोइसकै हैं ॥याकारणतैंभी यह द्वितीयपक्ष असंगतहै॥किंवा॥जैसे सिंह मृगकूंमारिकै दूरिजाइकै पुनःतामृगकीतरफदेखै है ॥ जोकदाचित् तहांदूसरामृगभीआयाहोवै ॥ तौ तामृगकूंभी हननकरों ॥ याकानाम सिंहावलोकनन्यायहै॥ तासिंहावलोकनन्यायकरिकै पुनःप्रथमपक्षविषे दूषणोंकूं निरूपणकरैं हैं॥ सो आत्माकानाश जिसकारणकरिकैजन्यहै॥ सोकारण किसीदूसरेकारणकरिकैजन्यहै अथवा अजन्यहै॥तहाँ सोआत्माकेनाशकाकारण किसीदूसरेकारणकरिकैजन्यहै ॥ यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं जैसे आत्माकेनाशकाकारण दूसरेकारणकरि कैजन्यहै ॥ तैसे सोदूसराकारणभी किसीतीसरेकारणकरिकैजन्यहोवैगा ॥ और सोतीसराकारण किसीचतुर्थकारणकरिकैजन्यहोवैगा ॥ याप्रकार उत्तरउत्तर कारणोंकीधारामानणेविषे अनवस्थादूषणकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और सोआत्माकेनाशकाकारण किसीकारणकरिकैजन्य नहीं है यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं सोआत्माकेनाशकाकारण जोकिसीकारणकरिकैजन्यनहींहो वैगा ॥ तौ सोआत्माकेनाशकाकारण नित्यहीहोवैगा॥ और आत्मातैंभिन्न दूसराकोईपदार्थ नित्यहैनहीं॥यातैं सोआत्माकेनाशकाकार णभी आत्मास्वरूपहीहोवैगा ॥ और लोकविषे कोईभीजीव आपणेआत्माकानाश करतानहीं॥ यातैं सोआत्माकेनाशकाकारण आपणे आत्माकूंकिसप्रकारनाशकरैगा किंतु नहींनाशकरैगा॥यातैं सोआत्माकेनाशकाकारण किसीकारणकरिकैजन्यनहीं है यहवादीकाकहणा अत्यंतअसंगतहै ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती ॥ पूर्वउक्तयुक्तियोंकरिकै यद्यपि आत्माकानाशसंभवैनहीं ॥ तथापि जोजोपदार्थ सत्होवै है ॥ सोसोपदार्थ क्षणिकहोवै है ॥ जैसे विद्युत् सत्पदार्थ है यातैं क्षणिकहै॥ तैसे आत्माभी सत्पदार्थ यातैं क्षणिकहै ॥ याअनुमानप्रमाणक रिकै आत्माकेनाशकीसिद्धिहोइसकै है ॥ समाधान ॥ हेवादी ॥ आत्माकेनाशकूंसिद्धकरणेहारा तथा तानाशकेकारणकूंसिद्धकरणेहारा जोअनुमानप्रमाण तुमनैं कथनकऱ्याहै॥ ताअनुमानकी प्रमाणताकालाभरूपसिद्धि तभीहोवै ॥ जभी आत्माकेनाशका तथातानाशके कारणका सत्वहोवै ॥ प्रमेयपदार्थकीसत्तातैंविना प्रमाणकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ यातैं ताअनुमानविषे प्रमाणताकीसिद्धिवासतैं आत्माके

नाशका सत्व तथातानाशकेकारणकासत्व अवश्यतुमारेकूंअंगीकारकरणाहोवेगा॥ ताकेविषेभी यहविचारकन्याचाहिये॥ताअनुमानरूपप्रमाणकीप्रवृत्तितैंपूर्वकालविषे आत्माकानाशरूपप्रमेयकेअविद्यमानहुएभी ताप्रमाणविषे प्रमाणताव्यवहारहोवै है ॥ अथवा ताप्रमाणकी प्रवृत्तितैंपूर्वकालविषे ताप्रमेयकेविद्यमानहुएही ताप्रमाणविषे प्रमाणताव्यवहारहोवै है ॥ तहाँप्रमेयकेअविद्यमानहुएभी प्रमाणविषे प्रमाणताव्यवहारहोवै है यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं प्रमेयपदार्थतैंविनाभी जोकदाचित् प्रमाणविषे प्रमाणताकी सिद्धिहोवैगी॥ तौ प्रमेयपदार्थकाअंगीकारकरणा व्यर्थहोवैगा॥और प्रमेयपदार्थकेविद्यमानहुएही प्रमाणविषे प्रमाणताव्यवहारहोवैहैयहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ ताप्रमेयपदार्थकीसत्ता प्रमेयपदार्थकेस्वभावतैंसिद्ध है ॥ अथवा ताप्रमेयपदार्थकी सत्ता प्रमाणकेबलतैंसिद्धहै ॥ तहाँ प्रमेयपदार्थकी स्वभावतैंहीसत्ताहै यहप्रथम पक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं प्रमाणतैं विनाहीं जोप्रमेयकी स्वभावतैंसत्तासिद्धहोवैगी तौ तुमारेमतविषे प्रमाणकाअंगीकारकरणाानिष्फलहोवैगा ॥ काहेतैं प्रमेयपदार्थकीसिद्धिवासतैंही प्रमाणकाअंगीकारहोवैहै॥सोप्रमेयपदार्थ स्वभावतैंहीसिद्धहोवैहै॥यातैं ताप्रमेयपदार्थकीसिद्धिवासतैं प्रमाणकाअंगीकारकरणा निष्फलहै ॥ और प्रमाणकेबलतैं प्रमेयपदार्थकेसत्ताकीसिद्धिहोवै है ॥ यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं जोकदाचित् प्रमाणकेबलतैंहीं प्रमेयपदार्थकीसिद्धिहोतीहोवै ॥ तौ मिथिलापुरीविषे वंध्याकापुत्र राज्यकरैगा काहेतैं जनककादौहित्रहोणेतैं ॥ प्रसिद्ध जनककेदौहीत्रकीन्याईं याअनुमानरूपशब्दप्रमाणतैं वंध्यापुत्रकीभीसिद्धिहोणीचाहिये ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती ॥ वंध्यापुत्र मिथिलापुरीविषे राज्यकरैगा यहवचन जोप्रमाणरूपहोवै॥ तौ तावचनकेबलतैं वंध्यापुत्रकीसत्तासिद्धिहोवै ॥परंतु सोवचन प्रमाणरूपहीनहीं ॥ यातैं तावचनकरिकै वंध्यापुत्रकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ समाधान॥ हेवादी शब्दप्रमाणविषे तीनदोषोंकरिकै अप्रमाणता प्राप्तहोवै है॥ एकतौ मिथ्याअर्थकीबोधकता॥ और दूसरा किसीअर्थकूंबोधननहींकरण॥ और तीसरा संशयकूंउत्पन्नकरणा॥तहाँ जोवादी प्रमाणकेबलतैं प्रमेयपदार्थकीसत्ता अंगीकारकरै है ॥ तावादीकेमतविषे मिथ्याअर्थकीबोधकतारूप प्रथमदूषण संभवैनहीं ॥

और वंध्याकापुत्र मिथिलापुरीविषे राष्यकरैगा याप्रकारकेवाक्यविषे अर्थकीअबोधकता तथा संशयकीजनकता यहदोनोंप्रकारकेदूषणहैंनहीं ॥ यातैं सोवचनभी तुमारेमतविषे प्रमाणहींहोवैहै ॥ तावचनकरिकै वंध्यापुत्रकीसिद्धिहोणी चाहिये ॥ और ता वचनकरिकै वंध्याकेपुत्रकीसत्ता सिद्धहोवैनहीं ॥ यातैं प्रमाणकेबलतैं प्रमेयपदार्थकीसिद्धिमानणी वादीकूं उचित नहीं ॥ किंतु प्रमेयपदार्थकेबलतैंहीं प्रमाणकीसत्तामानणी उचितहै॥यातैं जिसप्रमाणकरिकै वादीआत्माकेनाशकूं तथातानाशकेकारणकूं सिद्ध करैहै ॥ताप्रमाणकी सत्ताभी तभी सिद्धहोवैगी ॥ जभी आत्माकेनाशरूपप्रमेयकीसत्ता तथा तानाशकेकारणकीसत्ता सिद्धहोवैगी ॥ और सोआत्माकानाश तथा तानाशकाकारण लोकविषे कहाँदेख्यानहीं ॥यातैं आत्माकेनाशकूं तथा तानाशकेकारणकूं सिद्धकरणेहारा वादीकाप्रमाण निष्फलहै ॥ इतनैंग्रंथकरिकै आत्माकेनाशविषे सामान्यतैंप्रमाणकीअविषयता दिखाई ॥ अब विशेषकरिकै प्रमाणकीअविषयताकूं निरूपण करैं हैं ॥ जोवादी आत्माकेनाशविषे तथा तानाशकेकारणविषे प्रमाण अंगीकारकरैहै तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ आत्माकेनाशविषे प्रत्यक्षप्रमाणहै ॥ अथवा अनुमानप्रमाणहै ॥ अथवा शब्दप्रमाणहै॥तहाँ आत्माकेनाशविषे प्रत्यक्षप्रमाणहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं प्रतियोगीकेज्ञानतैंविना अभावकाज्ञानहोवैनहीं जैसे घटरूपप्रतियोगीकेज्ञानतैंविना घटाभावकाज्ञानहोवैनहीं ॥ और यहांप्रसंगविषे आत्माकानाशरूपजोअभावहै ॥ ताअभावकाप्रतियोगी आत्माहै॥सोआत्मा रूपादिकगुणोंतैंरहितहै॥यातैं नेत्रादिकइंद्रियोंकरिकै आत्माकाप्रत्यक्षज्ञान होइसकैनहीं॥ और आत्मारूपप्रतियोगीकेअप्रत्यक्षहुएताकेअभावकाभीप्रत्यक्षहोवैनहीं काहेतैं जोपदार्थ इंद्रियजन्यज्ञानकाविषय होवैहै ॥ तापदार्थकेही अभावकाप्रत्यक्षहोवैहै ॥ और जोपदार्थ इंद्रियजन्यज्ञानकाविषय नहींहोवैहै॥ तापदार्थकेअभावकाप्रत्यक्षहोवैनहीं ॥ याकारणतैंहीं शून्यस्थानविषे पिशाचकीशंकाकरिकै लोक निवासकरतेनहीं ॥ यातैं आत्माकेनाशविषे प्रत्यक्षप्रमाण संभवैनहीं ॥ और आत्माकेनाशविषे अनुमानप्रमाणहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं॥काहेतैं प्रत्यक्षप्रमाणकीसहायतातैंविना अनुमानप्रमाण किसीअर्थकीसिद्धिकरिसकैनहीं॥किंतु प्रत्यक्षप्रमाणकीसहायतातैंहीं अनुमानप्रमाण

किसीपदार्थकीसिद्धिकरै है ॥ जैसे जिसपुरुषनैं आपणेगृहविषे बहुतवार धूमकाअग्निकेसाथ सहचारदेख्याहै ॥ सोईपुरुष ॥ कालपाइकै पर्वतविषेधूमकूंदेखिकै अग्निकाअनुमानकरैहै ॥ और जिसपुरुषनैं धूमकूं तथाअग्निकूं कभीदेख्याईनहीं ॥ तापुरुषकूं धूमकेदर्शनतैं अग्निकाअनुमानहोवैनहीं ॥ यारीतिसैं अनुमानप्रमाणकूं प्रत्यक्षप्रमाणकीअपेक्षाहै ॥ और पूर्वउक्तरीतिसैं आत्माकेनाशविषे प्रत्यक्षप्रमाण संभवैनहीं ॥ यातैं अनुमानप्रमाणकरिकैभी आत्माकेनाशकीसिद्धि होइसकैनहीं॥ और आत्माकेनाशविषे शब्दप्रमाणहै यहतीसरापक्ष जोवादीअंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥काहेतैं श्रुति स्मृति इतिहास पुराण इसतैंआदिलेके जितनाकुशब्दप्रमाणहै ॥ तिसविषे कहांभी आत्माकानाश कथनकऱ्यानहीं ॥ उलटा ॥ सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म ॥ इत्यादिकश्रुतियोंविषे तथा ॥ अजोनित्यःशाश्वतोयंपुराणो न हन्यते हन्यमानेशरीरे ॥ इत्यादिकस्मृतिवचनोंविषे आत्माकूं अविनाशीरूपकरिकैहीं कथनकऱ्याहै ॥ यातैं आत्माकेनाशविषे शब्दप्रमाणभी संभवैनहीं ॥ इतनैंग्रंथकरिकै आत्माकेनाशविषे तथातानाशकेकारणविषे प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकाखंडनकऱ्या ॥अबसर्वलोकोंकेअनुभवकरिकैभी आत्माकेअविनाशीपणेकूं सिद्धकरैहैं ॥ हेवादी सर्वलोकोंकूं याप्रकारकाप्रत्यभिज्ञाज्ञानहोवैहै॥ जोमैं स्वप्नअवस्थाविषे हस्तीकूंदेखताभया ॥ सोईमैं अभी जाग्रत्अवस्थाविषे नीलकमलोंकूंदेखताहूं ॥ तथा नानाप्रकारकेशब्दोंकूंश्रवणकरताहूं ॥ और जोमैं जाग्रत् अवस्थाविषे नीलकमलोंकूंदेखताभया ॥ तथानानाप्रकारकेशब्दोंकूंश्रवणकरताभया ॥ सोईमैं सुषुप्तिअवस्थाविषे किंचित्मात्रभी नहींजाणताभया ॥ याप्रकारका प्रत्यभिज्ञारूपअनुभव सर्वलोकोंकूंहोवै है ॥ ताअनुभवकरिकै जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति यातीनोंअवस्थाविषे आत्माकीनित्यताही सिद्धहोवै है ॥ इतनैंकरिकै जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति यातीनअवस्थावोंविषे आत्माकीनित्यता सिद्धकरी ॥ अब बाल्य यौवन वृद्ध यातीनअवस्थावोंविषे आत्माकीनित्यता सिद्धकरैहैं ॥ जोमैं बाल्यअवस्थाविषे आपणेमातापिताकूंदेखताभया ॥ सोईमैं अभी यौवनअवस्थाविषे आपणेस्त्रीपुत्रादिकोंकूंदेखताहूं ॥ और जोमैं यौवनअवस्थाविषे आपणेस्त्रीपुत्रादिकोंकूंदेखताभया॥सोईमैं अभीवृद्धअवस्थाविषे आपणेपौत्रोंकूं तथादौहित्रोंकूं देखताहूं ॥ याप्रकारका प्रत्यभिज्ञारूपअनुभव सर्वलोकोंकूंहोवै है ॥

ताअनुभवकरिकै बाल्य यौवन वृद्ध यातीनोंअवस्थाविषे आत्माकी नित्यताहीसिद्धहोवै है ॥ शंका ॥याप्रकारके प्रत्यभिज्ञारूपअनुभव करिकैइसजन्माविषे यद्यपिआत्माकाअविनाशीपणा सिद्धहोवैहै॥तथापिपूर्वजन्मोंविषे तथाआगेहोणेहारेजन्मोंविषेआत्माकाअविनाशीपणा सिद्धहोइसकैनहीं॥समाधान॥बाल्यअवस्थातैंआदिलेके वृद्धअवस्थापर्यंत जैसे आत्माकाअविनाशीपणाहै॥तैसे पूर्वजन्मोंविषे तथाभाविजन्मोंविषेभीआत्माअविनाशीहै।काहेतैं यालोकविषे माताकेउदरतैंबाहरनिकस्याहुआबालक उसीक्षणविषेमाताकेस्तन्यपानविषेप्रवृत्तहोवैहै यहवार्त्ता सर्वलोकोंकूं अनुभवसिद्ध है ॥ और लोकविषे चेतनपुरुषकी जोजोप्रवृत्तिहोवै है ॥ सोसोप्रवृत्ति यहपदार्थ हमारेसुखकासाधन है याप्रकारकेइष्टसाधनता ज्ञानकरिकै जन्यहोवै है॥इष्टसाधनताज्ञानतैंविना किसी चेतनपुरुषकी प्रवृत्तिहोवैनहीं ॥ यहवार्त्ताभी सर्वलोकोंकूं अनुभवसिद्ध है॥यातैं जन्मकालविषे माताकेस्तन्यपानविषेजोबालककीप्रवृत्ति है ॥सोप्रवृत्तिभी यहस्तन्यपान हमारेसुखकासाधनहै याप्रकारके इष्टसाधनताज्ञानतैंविना संभवैनहीं ॥ यातैं ताबालककेप्रवृत्तिरूप हेतुतैं ताबालककेइष्टसाधनताज्ञानकाअनुमानहोवै है ॥ और जन्मकालविषे यहस्तन्यपान हमारेसुखकासाधन है याप्रकारकाइष्टसाधनताज्ञान जोबालककूंभया है ॥ सोज्ञान अनुभवरूपसंभवैनहीं ॥ यातैं सोइष्टसाधनताज्ञान स्मृतिरूपमानणाहोवैगा ॥ और लोकविषे जोजोस्मृतिज्ञानहोवै है॥सोसोपूर्वअनुभवजन्यसंस्कारोतैंहोवै है॥पूर्वसंस्कारोंतैं विना स्मृतिज्ञानहोवैनहीं ॥ यहवार्त्ताभी सर्वलोकोंकूंअनुभवसिद्ध है ॥ यातैं तावालकके स्मृतिरूपइष्टसाधनताकेज्ञानतैं पूर्वलेजन्मकेसंस्कारोंका अनुमानहोवै है॥और तेसंस्कार रूपादिकोंकीन्याई आश्रयतैंविना स्वतंत्रनहैं नहीं॥यातैं तिनपूर्वजन्मोंके संस्कारोंतैं आश्रयरूपआत्माकाअनुमानहोवै है॥याप्रकारकी रीतिसैं पूर्वलेजन्मविषेभी आत्माकाअविनाशीपणा सिद्धहोवै है ॥ अब भावीजन्मविषे आत्माकाअविनाशीपणा सिद्धकरैहैं ॥ यालोकविषे शास्त्रकेतात्पर्यकूंजानणेहारे जेबुद्धिमान्पुरुष हैं ॥ तिनोंकी यज्ञादिकपुण्यकर्मोंविषे प्रवृत्तिहोवै है ॥ और ब्रह्महत्यादिकपापकर्मोंतैं निवृत्तहोवै है॥तहां यज्ञादिककर्मोंके करणेकरिकै इसलोकविषेतौ तिनोंकूं किंचित् मात्रभी सुखकीप्राप्तिनहीं होती ॥ उलटा कर्मोंके करणेतैं तिनोंकूं क्लेशकीप्राप्तिहोवै है॥यातैं यहजान्याजावै है ॥ तिनयज्ञादिकपुण्यकर्मो

करिकै जन्मांतरविषे तिनोंकूं सुखकीप्राप्तिहोवैगी॥याप्रकारकी रीतिसैं भावीजन्मविषेभी आत्माकाअविनाशीपणा सिद्धहोवैहै॥इतनेग्रंथक
रिकै नानाप्रकारकीयुक्तियोंसैं आत्माकाअविनाशीपणा सिद्धकऱ्या ॥ अब पूर्वलेप्रसंगकूंनिरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ पूर्वउक्तरीतिसैं यह
द्रष्टाआत्मा अविनाशी है ॥ यातैं ताअविनाशीआत्माका स्वरूपभूत जोज्ञानरूपदृष्टि है॥सोभी नाशकूंप्राप्तहोवैनहीं॥किंतु सर्वदारहैहै॥
जैसे अग्निकैंविद्यमानहुए ताअग्निकास्वरूपभूतउष्णता निवृत्तहोवैनहीं ॥ किंतु अग्निकैनाशहुएही सोउष्णतानाशहोवै है ॥ तैसे यहआनं
दस्वरूपआत्मा विनाशतैंरहित है ॥ यातैं ताआत्माकास्वरूपभूतजोज्ञानरूपदृष्टि है ॥ ताकाभी नाशहोवैनहीं॥याकहणेकरिकै यहअर्थ
सिद्धभया सुषुप्तिअवस्थाविषे यहआत्मादेव द्वैतप्रपंचकूं जोनहींदेखता ॥ याकेविषे आत्माकेस्वरूपभूतज्ञानकाअभाव कारणनहीं किंतु
सर्वद्वैतप्रपंचकाअभावही ताकेविषे कारण है ॥ और हेजनक॥ जाग्रत्अवस्थाविषे तथास्वप्नअवस्थाविषे भेदरूप कार्यअविद्या विद्यमान
है ॥ याकारणतैं जाग्रत्अवस्थाविषे तथास्वप्नअवस्थाविषे यहद्रष्टापुरुष रूपादिकदृश्यपदार्थोंकूं आपणेतैंभिन्नमानै है ॥ तथा नेत्रादिक
इंद्रियोंकूं आपणेतैंभिन्नमानै है॥और आपणेतैंभिन्नरूपकरिकैकल्पनाकरे जे नेत्रादिकइंद्रिय॥तिनोंकरिकै भिन्नरूपादिकविषयोंकूंदेखे है॥
और सुषुप्तिअवस्थाविषे भेदरूपकार्यअविद्याका तथाकामकर्मका अभावहोवै है ॥ यातैं यहद्रष्टापुरुष सुषुप्तिअवस्थाविषे आपणेस्वरूप
तैंभिन्नरूपकरिकै कल्पितप्रपंचकूंदेखतानहीं ॥ काहेतैं सुषुप्तिअवस्थाविषे यहसंपूर्णभूतभौतिकप्रपंच जोकदाचित्आत्मातैं भिन्नहोवै ॥
तौ ताप्रपंचकूंआत्मादेखै ॥ परंतु सुषुप्तिअवस्थाविषे यहसंपूर्णजगत् आत्मातैंभिन्नहोवैनहीं ॥ यातैं सुषुप्तिअवस्थाविषे यहद्रष्टा पुरुष
ताजगत्कूं आपणेतैंभिन्नरूपकरिकै नहींदेखता ॥ हेजनक ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे स्थित जोआनंदस्वरूपआत्मा है ॥ सो सजातीयभेदतैं
तथाविजातीयभेदतैं तथास्वगतभेदतैं रहित है॥याकारणतैं सोआत्मादेव एकअद्वितीयरूप है॥और सोईहीआत्मादेव ब्रह्मरूप है ॥ तथा
स्वयंज्योतिरूप है॥तथापरमलोकरूप है ॥ और हेजनक ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे जोहमने तुम्हारेप्रति आत्माकास्वरूपकथनकऱ्या है॥सो
आत्माकास्वरूपहीं अधिकारी पुरुषोंकूं यज्ञादिकबहिरंगसाधनोंकरिकै प्राप्तहोणे योग्य है ॥ तथा विवेक वैराग्य शमादिषट्संपत्ति

मुमुक्षुता श्रवण मनन निदिध्यासन तत्त्वंपदार्थकाशोधन या अष्टअंतरंगसाधनोंकरिकै प्राप्त होणे योग्यहै ॥ आत्मातैंभिन्न
संपूर्णपदार्थ नाशवान् है ॥ यातैं तेअनात्मपदार्थ अधिकारीपुरुषोंकूंप्राप्तहोणेयोग्यनहीं ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताआनं
दस्वरूपआत्माकूं परमगति यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ यहां चित्तकीशुद्धिविषे जिनसाधनोंकाउपयोगहोवै है तिनसाधनोंका नाम
बहिरंगसाधनहै ॥ और श्रवणविषे तथा आत्मज्ञानविषे जिनसाधनोंकाउपयोगहोवै है ॥ तिनसाधनोंकानाम अंतरंगसाधन है
और हेजनक ॥ यालोकविषे जितनीकसंपदाहैं ॥ तिसतैं कुबेरकीसंपदा अधिक है ॥ याकारणतैं कुबेरकीसंपदाकूं लोक परमसंपदा
कहैं हैं ॥ तैसे सुषुप्तिविषेस्थित जो आनंदस्वरूपआत्माहै ॥ तिसतैं परेकोई अधिकसंपदानहीं ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताआनंद
स्वरूपआत्माकूं परमसंपदा यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और हेजनक ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे जिसआनंदस्वरूपआत्माकूं यहजीव नित्य
हींप्राप्तहोवैहै ॥ तिसआनंदस्वरूपआत्मातैंपरे कोईअनात्मपदार्थ दर्शनकरणेयोग्यनहीं ॥ किंतु यह आनंदस्वरूपआत्माही अधिकारी
पुरुषोंनैं देखणेयोग्यहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताआनंदस्वरूपआत्माकूं परमलोक यानामकरिकैकथनकरै है॥ हेजनक ॥ याआनंद
स्वरूपआत्मातैंभिन्न रूपादिकगुणोंकरिकैयुक्तजेसुंदरास्त्रियां हैं ॥ तेस्त्रियांभी याजीवका परमलोकरूपनहीं ॥ और सर्वगुणोंकरिकैसंपन्न
जेआज्ञाकारीपुत्रहैं ॥ तेपुत्रभी याजीवका परमलोकनहीं ॥ और सुंदररूपकरिकैयुक्त तथाअत्यंतकोमल जोआपणाशरीरहै सोभी परम
लोकनहीं ॥ और हेजनक ॥ पर्वतकेसमानहैआकारजिनोंका ऐसेजेहस्तीहैं॥तथा वायुकीन्याईं आकाशमार्गविषेगमनकरणेहारेजेअश्वहैं॥
तथा मेघकीगर्जनाकेसमानहैशब्दजिनोंका ऐसेजेरथ हैं ॥ तथाभयतैंरहित अत्यंतशूरवीरजेपदातिपुरुष हैं ॥ तथा शंखपदम
संख्याहैधनजिनोंविषे ऐसेजेधनकेकोशहैं ॥ तथा नानाप्रकारकेअन्नकरिकैपूर्ण जेअनेककोठियां हैं ॥ तथा स्वर्गकीअपूसरावोंकेसमान
जेअनेकवारांगनाहैं ॥ तथा इंद्रकेवैजयंतनामागृहकेसमान जेअनेकगृहहैं ॥ तथा इंद्राणीकेसमानसुंदर जेअनेकास्त्रियां हैं ॥ तथा धनधान्य
करिकैपूर्ण जेआज्ञाकारीप्रजाहैं ॥ इसतैंआदिलेकै अनेकप्रकारकेभोगसाधनोंकरिकै युक्तजोराज्यहै ॥ सोराज्यभी याजीवका परमलोक

नहीं ॥ और ताराज्यकेभोगणेकरिकै याजीवकूं जोसुखहोवैहै ॥ सोसुखभी याजीवका परमलोकनहीं ॥ किंतु सुषुप्तिअवस्थाविषे प्राप्तहोणेयोग्यजो अद्वितीयआत्माहै ॥ सोईहीं याजीवकापरमलोकहै ॥ और हेजनक ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे जिसआनंदस्वरूपआत्माकूं यहजीव प्राप्तहोवैहै ॥ सोआत्मारूपआनंद सर्वलौकिकआनंदोंतैं अधिक है याकारणतैं श्रुतिभगवती ताअद्वितीयआत्माकूं परमआनंद यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् सर्वलौकिकआनंदोंतैं यहआनंदस्वरूपआत्मा किसप्रकारअधिक है ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ आनंदकासमुद्रजोयहआत्मादेवहै ॥ ताके लेशमात्रआनंदकूंआश्रयणकरिकै संपूर्णस्थावरजंगमप्राणी जीवनकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यहाँ लेशशब्दकायहअर्थहै ॥ स्निग्धजेघृतादिकअर्थहैंतिनोंकूंहस्तविषेग्रहणकरिकै पुनः ताघृतादिकोंकेपरित्यागकियेतैंअनंतर जोहस्तविषे घृतादिकोंकाअंशरहैहै ताकानामलेशहै ॥ याप्रकारके आत्मानंदकेलेशकूं आश्रयणकरिकै सर्वप्राणीजीवनकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ और हेजनक ॥ जैसेसर्वजलोंकानिधिजोसमुद्रहै ताके लेशमात्रजलकूंग्रहणकरिकै वर्षाकालविषे मेघ आभिव्यक्तिकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे आनंदसमुद्रआत्माके लेशमात्रआनंदकूंआश्रयणकरिकै ब्रह्मातैंआदिलेकेकीटपर्यंत सर्वप्राणी जीवनकूंप्राप्तहोवैहैं ॥याकारणतैंहीं श्रुतिभगवती ताआत्माकूं परमआनंदरूपकहैहै ॥अब आत्माविषे परमानंदरूपता स्पष्टकरणेवासतै प्रथम संसारदशाविषे तापरमानंदकीअप्रतीतिविषे कारणकूंनिरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ॥ विषयोंकीप्राप्तिकरिकै मनुष्यादिकप्राणियोंकूं जोसुखहोवैहै तासुखकूंहीं लोक आनंदकहै हैं ॥ और स्त्री पुत्र धन अन्न इसतैंआदिलेके जेनानाप्रकारकेविषयहैं ॥ तिनविषयोंकूं लोक तासुखकाकारणमानै हैं ॥ याकेविषे यहविचार कर्त्तव्याचाहिये ॥ तास्त्रीपुत्रादिकविषयोंविषे तासुखकीउत्पादकतारूपकारणताहै॥अथवा प्रतिबंधकीनिवृत्तिद्वारा तासुखकीअभिव्यंजकतारूपकारणताहै ॥ तहाँ आत्मास्वरूपजोनित्यसुखहै ताकी विषयोंकरिकैउत्पत्तिसंभवैनहीं ॥ यातैं सुखकीउत्पादकतारूप प्रथमकारणता यद्यपि विषयोंविषेसंभवैनहीं॥तथापि स्त्रीपुत्रादिकविषयोंविषे प्रतिबंधकीनिवृत्तिद्वारा सुखकीअभिव्यंजकतारूप दूसरीकारणतासंभवैहै ॥ काहेतैं जैसे तृषाकरिकै आतुरकोईमूढपुरुष तृणोंकरिकैआच्छादितजोसमीपवर्त्तिजलहै ॥ताकापरित्यागकरिकै मृगतृष्णाकेजलकूं

पानकरणजावै है ॥ तैसे सुखप्राप्तिकीइच्छावाले जेयहअज्ञानीजीवहैं ॥ तेजीव अज्ञानकरिकैआवृत्त जोअत्यंतसमीपवर्तिआनंदरूपआत्माहै ताकापरित्यागकरिकै बाह्यविषयोंकूंदेखिकै तिनविषियोंकीप्राप्तिकीइच्छाकरैहै ॥ और तिनविषयोंकीइच्छाकरिकै तिनजीवोंविषे दुःखकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ और सोइच्छाजन्यदुःख आत्मारूपआनंदका प्रतिबंधकहै ॥ जैसे मणिमंत्रादिकप्रतिबंधक जबपर्यंत अग्निकेसमीपरहैहैं॥तबपर्यंत अग्नि दाहकूंकरैनहीं॥तैसे जबपर्यंत सोइच्छाजन्यदुःख अंतःकरणविषेविद्यमानहै॥तबपर्यंतआत्मस्वरूपआनंदकाभान जीवोंकूंहोवैनहीं ॥ और जैसे मणिमंत्रादिरूपप्रतिबंधककेनिवृत्तहुएतैंअनंतर सोअग्नि दाहकूंकरै है ॥ तैसे याजीवकूं जिसजिसविषयकी इच्छाहोवैहै॥सोसोविषय याजीवकूं जभीप्राप्तहोवैहै ॥ तभी ताविषयकीइच्छा निवृत्तहोइजावैहै॥परंतु सोविषयइच्छाकीनिवृत्ति तबपर्यंत रहै है ॥ जबपर्यंत तिसीविषयविषे अथवा किसीअन्यविषयविषे याजीवकी पुनःइच्छाउत्पन्ननहींभई ॥पुनःइच्छाकेउत्पन्नहुए सोपूर्वइच्छाकीनिवृत्तिरहैनहीं ॥ और विषयकीइच्छारूपकारणकेनाशहुए ताइच्छाजन्यदुःखभी नाशहोइजावै है॥ और जबपर्यंत सोदुःखका अभाव अंतकरणविषेरहै है ॥ तबपर्यंत विक्षेपतैंरहित तथाअज्ञानकरिकैआवृत्तजोआत्मास्वरूपआनंदहै ताआनंदकीप्रतीति जीवोंकूं होवै है ॥ तिसीआत्मास्वरूपआनंदकूं अज्ञानीजीव सुखनामकरिकैकथनकरैं हैं तात्पर्ययह॥ लोकविषे दोप्रकारकाप्रतिबंधहोवै है॥एकतो आवरणरूपप्रतिबंधकहोवै है॥जैसे सूर्यकेदर्शनविषे मेघ आवरणरूपप्रतिबंधकहै॥और दूसरा विक्षेपरूपप्रतिबंधकहोवै है॥जैसे घटादिकपदार्थोंकेदर्शनविषे नेत्रोंकीअत्यंतचंचलता विक्षेपरूपप्रतिबंधकहै ॥तैसे यहांप्रसंगविषे विषयकीइच्छारूपकरिकै जोबुद्धिकीचंचलताहै॥सोबुद्धिकीचंचलतारूप विक्षेप आत्मास्वरूपआनंदकेभानका प्रतिबंधकहै॥औरजिसविषयकीइच्छाकरिकै बुद्धि चंचलहोवैहै ताविषयकी जभीप्राप्तिहोवैहै तभी चंचलतारूपविक्षेपकापरित्यागकरिकै सो बुद्धि जबपर्यंत दूसरेविषयकीइच्छानहींभई तबपर्यंत स्थिरहोवैहै॥तास्थिरबुद्धिविषे अज्ञानकरिकैआवृतजोआनंदस्वरूपआत्माहै ताका स्पष्टरूपकरिकै भानहोवैहै॥ तिसी अज्ञानकरिकैआवृतआत्मारूपआनंदकूं अज्ञानीमूढपुरुष विषयजन्यसुखकहै हैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ विषयकीप्राप्तिकालविषे अज्ञानकरिकैआवृत आत्मानंदकाभानहोवैहै यहवार्ता

कैसेजानीजावै ॥समाधान॥ हेजनक ॥ विषयकीप्राप्तिकालविषे अज्ञानीजीवोंकूं जोकदाचित् आवरणरहितआत्मानंदकाभानहोता ॥ तो जैसे मुक्तिअवस्थाविषे ज्ञानीपुरुषोंकूं मैंसुखरूपहूं याप्रकारका सुखकाअनुभवहोवैहै ॥ तैसे अज्ञानीजीवोंकूं विषयकीप्राप्तिकालविषे मैंसुखरूपहूं याप्रकारकाअनुभव होणाचाहिये ॥ और मैंसुखरूपहूं याप्रकारकाअनुभव अज्ञानीपुरुषोंकूंहोवैनहीं ॥ किन्तु मैंसुखवालाहूं याप्रकारकाअनुभव अज्ञानीजीवोंकूंहोवैहै॥यातैं यहजान्याजावैहै॥विषयकी प्राप्तिकालविषे जोआत्मानंदप्रतीतहोवैहै ॥ सोअज्ञानकरिकै आवृत्तहुआही प्रतीतहोवैहै ॥ एकमुक्तिअवस्थाविषेही आवरणरहितआत्माकाभानहोवैहै ॥ अब ताविषयजन्यसुखके न्यूनअधिकताकूं दृष्टांतकरिकै स्पष्टकरैहैं ॥हेजनक॥ जैसे अंधकारकरिकैयुक्त जोआकाशहै॥ताआकाशकेकिसीअंशविषेस्थितहोइकै खद्योतजंतु अथवा मणि ताआकाशकेजितनेदेशका अंधकार निवृत्तकरैहैं॥तितनेदेशविषेही आकाशकास्फुरणहोवैहै॥तिसतैं अधिकआकाशकास्फुरणहोवै नहीं॥तैसे आत्मारूपआकाशविषेस्थित जोइच्छाजन्यदुःखरूपअंधकारहै॥तिसदुःखरूपअंधकारके जितनेअंशकूं विषयकीप्राप्तिरूप खद्योतादिक निवृत्तकरैहैं॥तितनेपरिमाणहींआत्मारूपसुख विक्षेपतैंरहितहुआप्रतीतहोवैहै॥तिसतैंअधिकसुख प्रतीतहोवैनहीं॥याप्रकार एकहीआत्मारूपसुखकी न्यूनअधिकता प्रतीतिहोवैहै ॥ इतनैंकारिकै इच्छाजन्यदुःखरूपप्रतिबंधकके अभावकेविद्यमानहुए आत्मानंदके प्रतीतिकीविद्यमानतारूपअन्वयदिखाया ॥ अबतादुःखरूपप्रतिबंधककेअभावकेअविद्यमानहुएआत्मानंदकेप्रतीतिकीअविद्यमानतारूप व्यतिरेकका निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ॥ जैसे अंधकारयुक्तआकाशविषे खद्योतके तथामणिके विद्यमानहुए जोआकाशकादेश स्फुरणहोताथा॥सोईहीआकाशका देश खद्योतके तथामणिके निवृत्तहुएतैंअनंतर पुनःअंधकारकरिकैआवृत्तहुआ प्रतीतहोवैनहीं॥ तैसे विषयकीप्राप्तिकालविषे ताविषयकीइच्छाजन्यदुःखकेनिवृत्तहुए जोआत्मारूपआनंद प्रतीतहोताथा ॥ सोआत्मारूपआनंद दूसरेविषय कीइच्छाकेउत्पन्नहुए प्रतीतहोवैनहीं ॥ यातैं यहसिद्धभया ॥ विषयकीप्राप्तिकरिकैजन्य जोदुःखाभावहै ॥ सोदुःखाभावही अन्वयव्यतिरेककरिकै आत्मरूपसुखकेप्रतीतिकाकारणहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ विषयकीप्राप्तितैं इच्छाकीनिवृत्तिहोवैहै॥ और इच्छाकेनिवृत्तहुए

दुःखकीनिवृत्तिहोवै है॥ और विक्षेपरूपदुःखकेनिवृत्तहुए आत्मारूपसुखकीप्रतीतिहोवैहै ॥याप्रकारकानियम जोआपनैंकह्या ॥ सोनियम यद्यपि स्त्रीपुत्रादिकविषयजन्यसुखविषेघटैहै ॥ तथापि पीनसरोगवालेपुरुषकूं छिक्काकीप्राप्तिकरिकै जोसुखहोवैहै ॥ तथा उद्गारकी प्राप्तिकरिकैजोसुखहोवैहै ॥ तासुखविषेसोनियमघटैनहीं॥काहेतैं आपने विषयकेइच्छाकीनिवृत्ति आत्मरूपसुखकेप्रतीतिविषे कारणकही है ॥ और छिक्काविषे तथाउद्गारविषे किसीपुरुषकूंइच्छाहोवैनहीं ॥ यातैं इच्छाकीनिवृत्ति तहाँसंभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ किसीनिमित्तकरिकै जभी छिक्काकातथाउद्गारका निरोधहोवैहै ॥ तभी ताछिक्काविषे तथाउद्गारविषे लोकोंकीइच्छा प्रसिद्धदेखीतीहै॥ यातैं छिक्काकीप्राप्तितैं तथाउद्गारकीप्राप्तितैं जोजीवोंकूं सुखहोवैहै॥सोसुखभी इच्छाकीनिवृत्तितैंहीहोवैहै॥ यातैं पूर्वउक्तनियमका किसी स्थलविषेविरोधनहीं॥ यातैं हेजनक॥यालोकविषे न्यूनअधिकभावकरिकैस्थित जितनाकवैषयिकसुखहै ॥सोसुख आत्मास्वरूपआनन्दतैं भिन्ननहीं ॥ किंतु सोसुख आत्मानंदरूपहै॥ याकारणतैंहीं स्त्रीपुत्रादिकविषयोंकीप्राप्ति ताआत्मारूपसुखकीउत्पत्तिकाकारणनहीं॥किंतु सोविषयोंकीप्राप्ति इच्छाकीनिवृत्तिद्वारा तासुखकेअभिव्यक्तिकाकारणहै ॥ इतनैंकारिकै विषयजन्यसुखविषे आत्मानंदरूपता दिखाई ॥ अब विषयजन्यलौकिकसुखोंविषे सापेक्षअधिकता निरूपणकरिकै आत्मानंदविषे निरपेक्षअधिकता निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ यामनुष्यलोकविषे जोपुरुष यौवनअवस्थाकारिकैयुक्तहोवै ॥ तथा वज्रकेसमान जिसकाशरीर दृढहोवै ॥ तथा भीमअर्जुनकेसमान जोबलवान् होवै ॥ तथा व्यासभगवान्केसमान जोसर्वशास्त्रकावेत्ताहोवै ॥ तथा नानाप्रकारकेअस्त्रोंकेचलावणेविषे जोमहादेवकेसमानहोवै ॥ तथा अश्विनीकुमारोंकेसमान जोरोगतैंरहितहोवै ॥ तथा अणिमादिकअष्टसिद्धियोंकारिकैयुक्तहोवै ॥ और श्रीकृष्णभगवान्कीसहायतातैं जैसे राजायुधिष्ठिर तथाअर्जुन समृद्धिकूंप्राप्तहभयेथे ॥ तैसे शूरवीरोंकीसहायताकारिकै जोसमृद्धिकूं प्राप्तहुआहोवै ॥ तथा सप्तद्वीपोंविषेस्थित जितनेकमनुष्यादिकप्राणीहैं ॥ तिनसंपूर्णोंका जोचक्रवर्तीराजाहोवै ॥ तथा लोकविषे जिसका महान्यशहोवै ॥ तथा मनुष्योंकेभोगके साधन जे अन्न पान स्त्री पुत्र इत्यादिकपदार्थ हैं ॥ तिनसंपूर्णसाधनोंकारिकैयुक्तहोवै ॥ तथा मनुष्यलोककाकोईभीविषय जिसकूं अप्राप्त

नहींहोवे॥ तथा तिनपदार्थोंकेभोगणेकीशक्तिकरिकैसंपन्नहोवे॥ तथा बहुतजिसकीआयुष्होवे ॥ इसतैंआदिलेके सर्वभोगोंकीसामग्रीकरिके संपन्न जोचक्रवर्तीराजाहै ॥ तिसकूंजो आनंदहोवैहै॥ ताआनंदकेसमान यामनुष्यलोकविषे किसीप्राणीकूंआनंदहोवैनहीं ॥ यातैंअस्मदादिकमनुष्योंकेआनंदकीअपेक्षाकरिकै सोचक्रवर्तीराजाकाआनंदपरमानन्दहै ॥ और ताचक्रवर्तीराजाकूं जोविषयजन्यआनंदहोवैहै ॥तिस आनंदतैंभी शतगुणाअधिकआनंदपितृलोकविषे पितरोंकूंहोवैहै ॥ यातैं चक्रवर्तीराजाकेआनंदकीअपेक्षाकरिकै सोपितरोंकाआनंद परम आनंदहै॥और पितरोंकूंजोआनंदहोवैहै॥तिसआनंदतैंभीशतगुणाअधिकआनंद गंधर्वलोकविषे गंधर्वोंकूंहोवैहै॥यातैं पितरोंकेआनंदकीअपेक्षाकरिकै सोगंधर्वोंकाआनंद परमआनंदहै॥और गंधर्वोंकूंजोआनंदहोवैहै तिसआनंदतैंभी शतगुणाअधिकआनंद कर्मदेवतावोंकूंहोवैहै॥ यातैं गंधर्वोंकेआनंदकीअपेक्षाकरिकै कर्मदेवतावोंकाआनंदपरमआनंदहै ॥ अग्निहोत्रादिककर्मोंकरिकै जिनपुरुषोंकूं देवभावप्राप्तहोवैहै ॥ तिनोंकानामकर्मदेवताहै ॥ और तिनकर्मदेवताकूं जोआनंदहोवैहै ॥ तिसआनंदतैंभी शतगुणाअधिकआनंद आजानजदेवतावोंकूंहोवैहै ॥ यातैं कर्मदेवतावोंकेआनंदकीअपेक्षाकरिकै आजानजदेवतावोंकाआनंदपरमआनंदहै ॥ सृष्टिकेआदिकालविषे उत्पन्नहुएजेअग्निआदिकदेवताहैं ॥ तिनोंकानाम आजानजदेवताहै ॥ और आजानजदेवतावोंकूं जोआनंदहोवैहै ॥ तिसआनंदतैंभी शतगुणाअधिकआनंद प्रजापतिकेलोकविषेहोवैहै ॥ यातैं आजानजदेवतावोंके आनंदकीअपेक्षाकरिकै प्रजापतिलोककाआनंद परमआनंदहै ॥ और प्रजापतिलोकविषे जोआनंदहोवैहै ॥ तिसआनंदतैंभी शतगुणाअधिकआनंद विराट्भगवान्केलोकविषेहोवैहै ॥ यातैं प्रजापतिलोककेआनंदकीअपेक्षाकरिकै विराट्भगवान्केलोककाआनंद परमआनंदहै॥ और विराट्भगवान्केलोकविषे जोआनंदहोवैहै ॥ तिसआनंदतैंभी शतगुणाअधिकआनंद ब्रह्मलोकविषेहोवैहै ॥ यातैं विराट्लोककेआनंदकीअपेक्षाकरिकै ब्रह्मलोककाआनंद परमआनंदहै ॥ कैसा हैसोब्रह्मलोक ॥ स्थूलजगत्काकारण जोसूत्रआत्मारूपहिरण्यगर्भ है ताके निवासकास्थानहै ॥ ऐसेब्रह्मलोकविषेस्थित उपासकपुरुषोंकूं जोविषयजन्यआनंदहोवैहै ॥ तिसआनंदतैंपरे कोईविषयजन्यआनंदनहीं ॥ किंतु मनुष्यलोकतैंआदिलेकेविराट्लोकपर्यंत जितनाक

अ०६ ॥ ७० ॥

विषयजन्यआनंद है ॥ तिनसंपूर्णआनंदोंका हिरण्यगर्भकाआनंद अवधिरूपहै ॥ हेजनक मनुष्यलोकतैंआदिलेके ब्रह्मलोकपर्यंत जोविषयजन्यआनंदोंकीन्यूनअधिकता श्रुतिनैंकथनकरीहै ॥ ताश्रुती भगवतीका यहअभिप्रायहै ॥ विषयजन्यसर्वआनंदोंतैंअधिक जोहिरण्यगर्भकाआनंदहै ॥ ताआनंदकीभी जबपर्यंत यापुरुषकूं इच्छारहैहै ॥ तबपर्यंत तापुरुषकूं आत्मारूपआनंदकाभानहोवैनहीं ॥ यातैं आत्मारूपआनंदकीप्राप्तिकी जिसपुरुषकूंइच्छाहोवै ॥ तिसपुरुषनैं हिरण्यगर्भकेआनंदकीभीइच्छानहींकरणी ॥ याप्रकारकेपरम वैराग्यविषे ताश्रुतीकातात्पर्यहै ॥ यहाँ मनुष्यलोकतैंआदिलेके ब्रह्मलोकपर्यंत जितनेक विषयजन्यआनंदहैं ॥ तथा तिनआनन्दोंके साधन जेधन स्त्री पुत्र शरीरादिकहैं॥तिनसंपूर्णोंकूं काकविष्टाकीन्याईं असारजाणिकै तिनोंकीप्राप्तिकीइच्छानहींकरणी याकानाम परमवैराग्यहै ॥ याप्रकारकापरमवैराग्य जिसपुरुषकूंहोवैहै ॥ तिसीपुरुषकूं आनंदस्वरूपआत्माकासाक्षात्कारहोवैहै ॥ इतनैंकरिकै परमवैराग्यका फल दिखाया ॥ अब तावैराग्यकीन्यूनअधिकताकारिकै जोजोफलहोवे है ताकूं निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ मनुष्यलोकतैंआदिलेके ब्रह्मलोकपर्यंत जोजोविषयजन्यआनंदहमनैं तुमारेप्रति कथनकरेहैं॥ तिनआनंदोंकीप्राप्तिके दोप्रकारकेसाधन हैं ॥ एकतौ कालांतरविषे ताआनंदरूपफलकूंदेणेहारे कर्मउपासनारूपसाधन हैं ॥और दूसरा शीघ्रहीं ताआनंदरूपफलकूंदेणेहारा साधन है सोदूसरा साधनयह है ॥ जिसपुरुषनैंविधिपूर्वक गुरुमुखद्वारा वेदोंकेपाठकूं तथावेदोंकेअर्थकूं अध्ययनकऱ्या है ॥तथा सर्वपापकर्मोंतैंरहित है ॥ तथा संपूर्णविषयजन्यसुखकीकामनातैंरहितहै॥ऐसे वेदवेत्तानिष्कामपुरुषकूं मनुष्यलोकतैंआदिलेके ब्रह्मलोकपर्यंत संपूर्णआनंद प्राप्तहोवै हैं ॥ परंतु याकेविषे इतनीविशेषता है ॥ जोवेदवेत्तानिष्पापपुरुष चक्रवर्तीराजाकेविषयजन्यआनंदकूं काकविष्टाकीन्याईं असारजानिकै ताकी प्राप्तिकीइच्छानहींकरैहै परंतु पितृलोकादिकोंकेआनंदकीइच्छाकरैहै तिसवेदवेत्तानिष्पापपुरुषकूं केवल चक्रवर्तीराजाकेआनंदकीही प्राप्तिहोवै है।पितृलोकादिकोंकेआनंदकी प्राप्तिहोवैनहीं॥इसीप्रकार जोवेदवेत्तानिष्पापपुरुष पितृलोककेआनंदकूं काकविष्टाकीन्याईंअसार जानिकै ताआनंदकीप्राप्तिकीइच्छाकरतानहीं ॥ परंतुगंधर्वलोकादिकोंकेआनंदकीइच्छाकरै है॥ तिसवेदवेत्तानिष्पापपुरुषकूं पितृलोकके

आनंदकीप्राप्तिहोवैहै ॥गंधर्वलोकादिकोंकेआनंदकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥याप्रकारऊपरकेलोकोंविषेभीजिसजिसलोककेआनंदकूं यहवेदवेत्तानिष्पापपुरुष काकविष्ठाकीन्याईं असारजानिके ताकीप्राप्तिकीइच्छानहींकरैहै॥तिसतिसलोककेआनंदकूं यहवेदवेत्तानिष्पापपुरुषप्राप्तहोवैहै॥ और जोवेदवेत्तानिष्पापपुरुष ब्रह्मलोककेआनंदकूंभी काकविष्ठाकीन्याईं असारजानिके ताकीप्राप्तिकीइच्छानहींकरैहै॥ सोवेदवेत्तानिष्पापपुरुष ब्रह्मलोककेआनंदकूंभीप्राप्तहोवैहै इसप्रकारकर्मउपासनादिकसाधनोंतैंविनाहीं सोवेदवेत्तानिष्कामपुरुष संपूर्णआनंदोंकूंप्राप्तहोवैहै॥और हेजनक॥मनुष्यलोकतैंआदिलेकै जितनेकविषयजन्यआनंदहैं॥तिनसंपूर्णआनंदोंतैं ब्रह्मलोककाआनंद अधिकहै॥सोब्रह्मलोककाआनंदभी जिसआत्मास्वरूपआनन्दकाएककलेशमात्रहै॥ऐसाआनन्दकासमुद्र जोपरमात्मादेवहै सोआनंदस्वरूपपरमात्मादेवं सर्वजीवोंकूं सुषुप्तिअवस्थाविषेप्राप्तहोवैहै॥ कैसाहैसोपरमात्माकास्वरूपभूतआनंद ॥मनकातथावाणीकाआविषयहै॥ तथा न्यूनअधिकतातैंरहित है॥ याकारणतैंहींसोआत्मारूपआनंद ब्रह्मलोककेआनंदतैंभीअधिकहै॥याहीअर्थकेबोधनकरणेवासतै श्रुतिभगवतीनैंनिष्कामपुरुषकूंब्रह्मलोकके आंनदकीप्राप्तिकहीहै॥यातैंहेजनक॥सुषुप्तिअवस्थाविषे जोआत्माकास्वरूप हमनैंतुम्हारेप्रतिकथनकऱ्याहै॥सोमनुष्यलोकतैंआदिलेकै ब्रह्मलोकपर्यंत संपूर्णआनंदोंतैंअधिकहै ॥यातैंसोपरमात्मादेवहीपरमआनंदरूपहै ॥हेशिष्य॥ याप्रकारकाउपदेश जभी याज्ञवल्क्यमुनिनैं जनकराजाकेप्रतिकऱ्या॥तभी सोजनकराजा आपणेज्ञानकीअपूर्णताकूंबोधनकरताहुआ पूर्वकीन्याईं पुनःयाप्रकारकावचन कहताभया॥ राजाजनकउवाच ॥ हे याज्ञवल्क्यमुनि ॥ यहजोसाधारणविद्या आपनैं हमारेप्रति उपदेशकरीहै ॥ ताविद्याकी गुरुदक्षिणा एक सहस्रगोवां मैं आपकेताईंदेताहूं ॥ तागुरुदक्षिणाकूं आप अंगीकारकरो ॥ तिसतैंअनंतर जिसविद्याकरिकै हमारेकूं मोक्षकीप्राप्ति होवै है॥ तिसविद्याकाउपदेश आप हमारेप्रतिकरो॥ हेशिष्य॥ जिसअभिप्रायकरिकै जनकराजानैं याप्रकारकावचन याज्ञवल्क्यमुनिके प्रति कह्याहै ॥ ताजनकराजाकेअभिप्रायकूं तूं श्रवणकर राजाजनकउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्यमुनि॥ पूर्वआपनैं हमारेप्रति यहउपदेशकऱ्या था ॥ वास्तवतैंसंगतैंरहित जोस्वयंज्योतिआत्माहै ॥ सोएकहीस्वयंज्योतिआत्मा अविद्याकेसंबंधतैं जीवभावकूंप्राप्तहोइकै जाग्रत् स्वप्न

सुषुप्ति यातीनअवस्थावोंविषे निरंतर भ्रमणकरै है ॥ तिनअवस्थावोंविषेभी पूर्वलेपुण्यपापरूपकर्मकेवशतैं यहस्वयंज्योतिआत्मा कभी जाग्रत्अवस्थाकूंप्राप्तहोवै है ॥ और कभी स्वप्नअवस्थाकूंप्राप्तहोवै है॥ताजाग्रत्अवस्थाविषे तथास्वप्नअवस्थाविषे पूर्वलेपुण्यकर्मकेवशतैं यहस्वयंज्योतिआत्मा सुखकूंभोगै है॥और पूर्वलेपापकर्मकेवशतैं दुःखकूंभोगै है॥ और जाग्रत्स्वप्नअवस्थाविषे सुखदुःखरूपफलकेदेणेहारे जेपुण्यपापरूपकर्म हैं ॥ तेकर्म जभी नाशकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ तभी जैसे आकाशविषेभ्रमणकरिकै परिश्रमकूंप्राप्तहुआपक्षी ताआकाशकापरित्यागकरिकै आपणेगृहविषेआवै है ॥ तैसे जाग्रत्स्वप्नअवस्थाकेव्यापारोंकरिकै परिश्रमकूंप्राप्तहुआ यहस्वयंज्योतिआत्मा सुषुप्तिअवस्थाकूंप्राप्तहोवै है ॥ हे भगवन् ॥ याप्रकार जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति यातीनअवस्थावोंतैं भिन्नकरिकै आत्माकास्वरूप आपने पूर्व हमारे प्रति उपदेशकऱ्याथा ॥ सोइतनेज्ञानमात्रकरिकै मोक्षकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ काहेतैं दूसरेशरीरकीप्राप्तिरूप जोजन्महै ॥तथा यास्थूलशरीरकापरित्यागरूपजोमरणहै ॥ तथा तिस जन्ममरणकाकारण जेनानाप्रकारकीकामनाहैं ॥ तिनजन्मादिकविकारोंका जो आत्माविषेसंबंध प्रतीतहोवै है ॥ तिसका नानाप्रकारकीयुक्तियोंकरिकै आपने खंडनकऱ्यानहीं ॥ यातैं जन्ममरणादिकविकारवान् यहसंसारीआत्मा परमआनंदरूप किसप्रकारहोवैगा ॥ हे भगवन् ॥ जन्ममरणादिक संसारधर्मोंकूंनविषयकरणेहारा जोआत्माकायथार्थज्ञानहै॥सोज्ञान जबपर्यंतअधिकारीपुरुषोंकूं नहींप्राप्तहोता ॥ तबपर्यंत अनेकजन्मोंकरिकैभी मोक्षकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ यातैं हेभगवन् ॥ मोक्षकीप्राप्तिवासतै जन्ममरणादिकविकारोंतैंभिन्नकरिकै आत्माकायथार्थस्वरूप हमारेप्रति आप उपदेशकरो ॥हेशिष्य ॥ याप्रकारकेअभिप्रायकूंमनाविषेराखिकै सोजनकराजा याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति प्रश्नकरताभया ॥ और सोयाज्ञवल्क्यमुनिभी त जनकराजाके अभिप्रायकूं जाणिकै भयकूंप्राप्तहातोभया ॥ शंका ॥ हे भगवन् ॥ जनक राजाके प्रश्नके उत्तर देणेविषे याज्ञवल्क्यमुनिका सामर्थ्य नहीं था ॥ याकारणतैं सोयाज्ञवल्क्यमुनि ॥ भयकूंप्राप्तहोताभया॥अथवा किसीदूसरेनिमित्तकरिकै भयकूंप्राप्तहोताभया ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥सूर्यभगवान् कीन्याईं सर्वज्ञजोयाज्ञवल्क्यमुनि है ॥ ताकेविषे जनकराजाकेप्रश्नकेउत्तरदेणेकीअसमर्थता संभवै नहीं ॥ किंतु जिसविचारकरिकै सो

याज्ञवल्क्यमुनि भयकूंप्राप्तभयाहै ॥ सोविचार तूं श्रवणकर ॥ चारिवेदोंकूंअध्ययनकरणेहारे अनेकबुद्धिमान्शिष्य हमारे हैं॥तिनशिष्यों विषे कोईभी हमाराशिष्य जनकराजाके समान बुद्धिमान्नहीं ॥ काहेतैं जोविद्या अनेकवर्षपर्यंत अध्ययनकरीहुईभी प्राप्तहोइसकै नहीं ॥ तासंपूर्णविद्याकूं यहजनकराजा कामप्रश्नरूपवरकरिकै थोडेकालविषेहींलियाचाहै है॥ यातैं यहजनकराजा अत्यंतबुद्धिमान्है॥और याज नकराजानें पूर्वकामप्रश्नरूपवर हमारेतैंलियाथा॥यातैं तासत्यवचनरूपपाशकरिकै याजनकराजानें हमारेकूंबांध्याहै॥यातैं सूर्यभगवान्की आराधनाकरिकै जोविद्या हमारेकूंप्राप्तभई है ॥ सो संपूर्णब्रह्मविद्या आपणेवचनकेसत्यकरणेवासतै याजनकराजाकेप्रति उपदेकरणी हे वैगी ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकाविचार आपणेमनविषेकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि भयकूंप्राप्तहोताभया॥ तिसतैं अनंतर सोयाज्ञवल्क्यमुनि जनकराजाकेप्रति कहताभया ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेजनक ॥ बुद्धिआदिकसर्वसंघातकासाक्षी जोस्वयंज्योतिआत्मा हमनें पूर्व तुमारेप्रति उपदेशकऱ्याथा ॥ सोस्वयंज्योतिआत्मा कदाचित् जाग्रत्अवस्थातैंअनंतर प्रथम सुषुप्ति अवस्थाकूं प्राप्तहोवै है॥ सुषुप्तितैंप श्चात् स्वप्नअवस्थाकूंप्राप्तहोवै है ॥ और कदाचित् सोस्वयंज्योतिआत्मा सुषुप्तिकीप्राप्तितैंविनाहीं प्रथम स्वप्नअवस्थाकूंहीं प्राप्तहोवै है॥ तास्वप्नअवस्थाविषे यहस्वयंज्योतिआत्मा स्त्रीआदिकोंकेसाथ नानाप्रकारका व्यवहारकरै है ॥ तथा अनेकनाडीरूपमार्गोंविषे भ्रमण करै है ॥ तथा पुण्यपापरूपकर्मोंकाफल जो सुखदुःख है ॥ तिसकूं देखे है ॥ इसतैं आदिलेकें अनेकप्रकारकेव्यवहार स्वप्नविषे करै है ॥ तिसतैंअनंतर सोस्वयंज्योतिआत्मा तास्वप्नअवस्थाकापरित्यागकरिकै तिसीनाडीरूपमार्गद्वारा जाग्रत्अवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै।ताजाग्रत्अव स्थाविषेभी यहस्वयंज्योतिआत्मा पुण्यपापरूपकर्मकेवशतैं अनेकप्रकारकेसुखदुःखोंकूंप्राप्तहोवै है ॥ और हेजनक ॥ जैसे स्वप्नअवस्था विषे सुखदुःखरूपफलकेदेणेहारे जेपुण्यपापरूपकर्म हैं॥तिनकर्मोंका जभीक्षयहोवै है॥तथा जाग्रत्केभोगदेणेहारेकर्मोंकाप्रादुर्भावहोवै है ॥ तभी यहजीवात्मा स्वप्नअवस्थाकापरित्यागकरिकै जाग्रत्अवस्थाकूंप्राप्तहोवै है ॥ तैसे यास्थूलशरीरविषे सुखदुःखरूपभोगके देणेहारो जेपुण्यपापरूपकर्म हैं॥तिनोंकाजभीक्षयहोवै है ॥ तथा जन्मांतरविषे सुखदुःखरूपभोगकेदेणेहारेकर्मोंका जभी प्रादुर्भाव होवै है ॥ तभी

॥ ७२

यहजीवात्मा यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिकै दूसरेशरीरकूंप्राप्तहोवै है ॥ हेजनक ॥ यहजीवात्मा यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिकै जोपर लोकविषेजावै है ॥ याकेविषे तूं दृष्टांतकूंश्रवणकर ॥ जैसे कोईधनीपुरुष आपणेग्रामकापरित्यागकरिकै दूसरेकिसीग्रामविषेजाणेकाउद्यम करेहै।सोधनीपुरुष आपणेशकटकूंतयारकरेहै॥ताशकटऊपरनानाप्रकारका अन्न तथाधन तथास्त्री तथापुत्र इसतैंआदिलेकेअनेकप्रकारकी सामग्रीराखेहै॥सोधनीपुरुषकाशकट नानाप्रकारकेशब्दोंकूंकरताहुआ शनैःशनैःकरिकै मार्गविषेचालेहै॥तैसे मरणकालविषे यास्थूलशरी रकापरित्यागकरिकै परलोककूंजाणेहारा जोयहजीवात्मारूपधनीपुरुषहै ॥ ताजीवात्माका परलोककेजाणेकासाधन यहसूक्ष्मशरीररूप रथहै॥कैसाहैसोसूक्ष्मशरीररूपरथ॥पुण्यपापरूपसामग्रीकरिकैपूर्ण है॥ऐसासूक्ष्मशरीररूपीरथ मरणकालविषेनानाप्रकारकेशब्दोंकूंकरता हुआपरलोकविषेजावै है॥अब सूक्ष्मशरीररूपरथकेशब्दोंकानिरूपणकरैं हैं ॥हेजनक॥ जिसकालविषे यहपुरुष मरणकेसमीपप्राप्तहोवै है॥ तिसकालविषे याप्रकारकेशब्दोंकूंउच्चारणकरैहै ॥ हे हमारे गुणवान्पुत्र ॥ हे हमारी प्राणोंकेसमानप्रिय नवीनयौवनवालीस्त्री ॥ हे हमारे धन तेरेकूंबहुतयत्नकरिकै मैंने एकत्रकऱ्याथा ॥ हे हमारे हितकारीबांधव ॥ तुमसंपूर्णोंकापरित्यागकरिकै मैंभाग्यहीन अकेलाही दूरमार्ग विषेजाताहूं ॥ यातैं हमारेकूं धिक्कारहै ॥ हेजनक ॥ इसतैंआदिलेकै अनेकप्रकारकेशब्दोंकूं यहजीवात्मा मरणकालविषे स्त्रीपुत्रादिकोंके वियोगतैं करै है ॥ अब बाल्यअवस्थाविषे जेपापकर्मकरैं हैं॥तिनोंकास्मरणकरिकै यहजीवात्मा मरणकालविषे जिनशब्दोंकूंउच्चारणकरै हे तिनशब्दोंकानिरूपणकरैं हैं ॥ बाल्यअवस्थाविषे मैंपापात्माजीव दुर्बलबालकोंका वाणीकरिकै निरादरकरताभया ॥ तथा तिनबाल कोंकूं ताडनकरताभया ॥ और जेदेवता पूजनकरणेकूंयोग्यहैं ॥ तिनदेवतावोंकेमस्तकऊपर मैंपापात्माजीव पादोंकूंरखताभया ॥ और हमारेहितकीकरणेहारी जोहमारीमाताथी ॥ जिसमातानें पाषाणकीन्याई नवमासपर्यंत उदरविषेराख्याथा ॥ ऐसीहितकारीमाताकूंभी मैंकृतघ्न नानाप्रकारके क्लेश देताभया ॥ जैसे लोहेकाककच काष्ठकूंविदारणकरै है॥तैसे ताहितकारीमाताके योनियंत्रकाविदारणकरिकै मैंदुरात्माजीव माताकेउदरतैंबाहरनिकसताभया॥तिसतैंअनंतर बाल्यअवस्थाविषे हमारेविष्ठाकूं तथामूत्रकूं जोमाता आपणेहस्तोंऊप

रउठाइकैडारतीभई ॥ और तिसबाल्यअवस्थाविषे अन्नादिकोंकेभक्षणकरणेविषे हमारेकूंअसमर्थदेखिकै आपणेस्तनोंकादुग्ध पानकराव तीभई ॥ और भक्षणकरणेयोग्यजेउत्तमपदार्थ हैं॥तिनोंकूं आपणेउदरविषेनपाइकैभी जोमाता तिनउत्तमपदार्थोंकूं हमारेताईंदेतीभई॥ और बाल्यअवस्थाविषे आपणेहितअहितकेज्ञानतैंरहित जोमैंमूढथा॥ताकी नानाप्रकारकेउपायोंकरिकै जोमाता जलअग्निआदिकोंतैंर क्षाकरतीभई ॥ ऐसीहितकारीमाताका मैंदुर्बुद्धिकृतघ्न बाल्यअवस्थाविषे राक्षसीकीन्याईं अनादरकरताभया॥तथा कठोरवचनरूपबाणों करिकै तामाताकेकर्णोंकूंभेदनकरताभया॥और शत्रुकेवचनकीन्याईं तामाताकेहितकारीवचनोंकूंभी मैंपापात्मा नहींमानताभया॥और ताबाल्यअवस्थाविषे मैंदुर्बुद्धिजीव पितापितामहादिकवृद्धपुरुषोंकूं तथाशास्त्रवेत्ताब्राह्मणोंकूं तथासुहृद्मित्रोंकूं नानाप्रकारकेकठोरवचनों करिकै ताडनकरताभया और ताबाल्यअवस्थाविषे मैंमूढबुद्धिजीव नहींभक्षणकरणेयोग्यपदार्थोंकूंभी भक्षणकरताभया ॥ और लोक वेदविषेनिंदितजेकर्म हैं तिनोंकूंभी करताभया ॥ इसतैंआदिलेके अनेकप्रकारकेनिंदितकर्मोंकूं मैंपापात्माजीव बाल्यअवस्थाविषेकरता भया ॥ याकारणतैं हमारेकूंधिक्कारहै ॥हेजनक॥ इसप्रकार मरणकालविषे बाल्यअवस्थाकेकर्मोंकूं स्मरणकरताहुआ यहजीवात्मा नाना प्रकारकेशब्दोंकूंकरै है ॥ अब मरणकालविषे यौवनअवस्थाकेनिषिद्धकर्मोंकास्मरणकरिकै जिनशब्दोंकाउच्चारण यहजीवात्माकरै है ॥ तिनशब्दोंकानिरूपणकरैं हैं ॥ जैसे कोईपुरुष चित्तकूंएकाग्रकरिकै विष्णुआदिकदेवतावोंका निरंतरध्यानकरै है ॥ तैसे यौवनअवस्था विषे मैंमूढबुद्धिजीव आपणेहृदयरूपीमंदिरविषे आपणीस्त्रीकूं अथवा परस्त्रीकूं स्थापनकरिकै तिनस्त्रियोंका निरंतरध्यानकरताभया ॥ एकक्षणमात्रभी हमनैं परमेश्वरकाध्यान नहींकऱ्या ॥ और तायौवनअवस्थाविषे हमारेकूं धनादिकपदार्थोंकेएकठेकरणेका अत्यंत लोभहोताभया ॥ तालोभकेवशहुआ मैंदुर्बुद्धि ब्राह्मणादिकमहान्पुरुषोंके सुवर्ण पशु गृह क्षेत्र अन्न स्त्री इसतैंआदिलेके अनेकपदार्थोंकूं हरणकरताभया ॥ और तायौवनअवस्थाविषे मैंमूढबुद्धिजीव धनादिकपदार्थोंकेप्राप्तिकीइच्छाकरिकै संपूर्णदिवसोंकूं वितीतकरताभया॥ आर स्त्रियोंकेसाथक्रीडाकरिकैसंपूर्णरात्रियोंकूं वितीतकरताभया॥और तायौवनअवस्थाविषे मैंदुरात्माजीव धनकेलोभकरिकै ब्रह्महत्यादि

कपापकर्मोंकूंकरताभया॥जेब्रह्महत्यादिकपापकर्मअनेकजन्मोंविषे हमारेकूंदुःखकीप्राप्तिकरैंगे॥और ता यौवनअवस्थाविषे मैंदुरात्माकृतघ्न स्त्रीकेअधीनहोइकै आपणेमातापिताकाभी परित्यागकरताभया और तायौवनअवस्थाविषे अहंकारकरिकै युक्तहुआ मैंदुरात्माजीव आपणे पितादीकवृद्धपुरुषोंकाभी उपहासकरताभया ॥ इसतैंआदिलेके अनेकप्रकारकेनिंदितकर्मोंकूं मैंपापात्मा यौवनअवस्थाविषेकरताभया॥ याकारणतैं हमारेकूं धिक्कारहै॥हेजनक॥याप्रकारमरणकालविषे यहजीवात्मा यौवनअवस्थाके निंदितकर्मोंका स्मरणकरिकै नानाप्रकार केशब्दोंकूंकरै है॥ अब मरणकालविषे यहजीवात्मा वृद्धअवस्थाकेनिंदितकर्मोंका स्मरणकरिकै जिनशब्दोंकूंउच्चारणकरै है तिनशब्दोंका निरूपणकरैं हैं ॥ वृद्धअवस्थाकूं प्राप्तहोइकै मैं दुरात्माजीव आपणे हस्तपादादिकअंगोंकेचलावणेविषेभीनहींसमर्थहोताभया और तावृद्धअवस्थाविषे काम क्रोध लोभ मोह यहचारों वृद्धिकूंप्राप्तहोतेभये॥और तावृद्धअवस्थाविषे कामकरिकैआतुरहुआ मैंमूढबुद्धि स्त्रीकी अप्राप्तिकरिकैभीमैंदुःखीहोताभया॥और स्त्रीकेप्राप्तहुएभीताकेभोगणेकीअसामर्थ्यकरिकै दुःखकूंप्राप्तहोताभया॥और तावृद्धअवस्थाविषे मैंदुरात्माजीवकूं क्रोधरूपीअग्निकरिकै तथालोभादिकविकारोंकरिकै जोजोदुःखप्राप्तभयाहै ॥ तादुःखकूं मुझ जडतैंविना कौनचेतनपुरुष सहनकरिसकैगा॥कैसेहैंतेदुःख ॥जिनदुःखोंविषे एकएकदुःखभीब्रह्महत्याजन्यदुःखकेसमानहैं ॥ याप्रकारकेअनेकदुःखोंकूं मैंपापात्मा वृद्ध अवस्थाविषे प्राप्तभयाहूं॥और तावृद्धअवस्थाविषे हमारेहृदयकमलविषेकाम क्रोध लोभ मोह यहचारों अत्यंतवृद्धिकूंप्राप्तहोतेभये॥तिन कामक्रोधादिकोंकरिकै यहहमाराहृदयकमल कर्कटीफलकीन्याईं भेदनकूं नहींप्राप्तहोताभया॥यहहमारेकूं बहुतआश्चर्यहोवैहै॥और जेस्त्री पुत्रादिकबांधव हमारेकूं प्राणोंकेसमान प्रियजाणतेथे॥तेस्त्रीपुत्रादिकबांधव हमारेकूं वृद्धहुआदेखिकै श्वानकीन्याईं हमारानिरादरकरतेभये और काम क्रोध लोभ मोह यहचारों बाल्यअवस्थातैंलेके वृद्धअवस्थापर्यंत हमारेविषेवर्तमानहैं॥ और जैसे घृतकेपावणेकरिकै प्रज्वलित अग्निकीशांतिहोवैनहीं उलटा घृतकेपावणेतैं अग्निकीवृद्धिहोतीजावै है॥तैसे विषयोंकीप्राप्ति करिकै कामादिकोंकीशांतिहोवैनहीं॥उलटा विषयोंकीप्राप्तितैं दिनदिनविषे कामादिकोंकीवृद्धिहोतीजावैहै॥एकआत्माकाविचार कामादिकोंकेशांतिकाउपायथा॥तिसआत्मविचारकूं

हमनें संपादनकऱ्यानहीं ॥ किंतु बाल्यअवस्थातैंलेके मरणपर्यंत आपणेशरीरकेपालनकरणेवासतें तथास्त्रीपुत्रादिककुटुंबकेपालनकरणे वासतें अनेकप्रकारकेपापकर्मोंकूं मैंदुरात्माकरताभया ॥ यातैं हमारेकूंधिक्कारहै॥ हेजनक॥ याप्रकार मरणकालविषे वृद्धअवस्थाकेनिंदि तकर्मोंकूंस्मरणकरिकै यहजीवात्मा अनेकप्रकारकेशब्दोंकूं उच्चारणकरै है ॥ अब मरणकालकेदुःखकाअनुभवकरिकै यहजीवात्मा जिन शब्दोंकूंउच्चारणकरै है तिनशब्दोंका निरूपणकरैहैं॥ जैसे मलीनजलकरिकैपूर्णजोतलावहै॥ तातलावविषेस्थितजोमत्स्यहै ॥ सोमत्स्य मृत्ति काकरिकैआवृतहोवै है॥ तथा सूर्यकीतप्तकरिकै तपायमानहोवै है॥ ऐसीमत्स्यकूं जैसे धीवरपुरुष लेणेवासतैआवै है तैसेस्त्रीपुत्रादिरूपमली नजलकरिकैपूर्ण जोयहगृहरूपतलावहै॥ तिसविषे मैंदुरात्मारूपमत्स्य स्थितहूं ॥ कैसाहूंमैं॥ अध्यात्म अधिदैव अधिभूत यातीनप्रकारके दुःखरूपसूर्यकरिकैतपायमानहूं॥ तथा कामक्रोधादिरूपमृत्तिकाकरिकैआवृतहूं॥ याप्रकारकेमत्स्यरूपमैंदीनकूं मृत्युरूपधीवर लेणेवासतैं आयाहै ॥ और जैसे पशुवोंकेहिंसास्थानविषे कोईनिर्दयपुरुष लोहेकेककचकरिकै पशुकेअंगोंकूंछेदनकरैहै॥ तैसे दयातैंरहितयहमृत्यु हमा रेअंगोंकाछेदनकरैहै ॥ ताकरिकै हमारेकूंबहुतकष्टहोवैहै ॥ और यामरणकालविषे अनेकतीक्ष्णसूचियोंकरिकै हमारेसर्वअंगोंकूं कोनवेधन करताहै ॥ तिसपुरुषकूं मैं जाणिसकतानहीं ॥ और यामरणकालविषे हमारेहस्तपादभी काष्ठकेसमानजडहोइगयेहैं ॥ और जैसे दुष्टअश्व रथवाहीपुरुषके वशवर्तीहोवैनहीं॥ तैसे इसकालविषे मनसहितनेत्रादिकसंपूर्णइंद्रिय हमारे वशवर्ती हैं नहीं॥ याकारणतैं अंधपुरुषकीन्याईं किसीपदार्थकूं मैं देखतानहीं॥ तथा बधिरपुरुषकीन्याईं किसीशब्दकूं मैं श्रवणकरतानहीं॥ और इसकालविषे हमाराकंठ कफधातुनें निरो धकरिलियाहै ॥ और जठराग्निभी आपणेस्थानकूंछोडिकै हमारेशरीरकूंदाहकरताहुआ ऊपरचल्याआवै है ॥ और प्राणवायुभी आप णेस्थानकूंछोडिकै हमारेशरीरकूं शोषणकरताहुआ ऊपरचल्याआवै है ॥ और जैसे यालोकविषे कोटिवृश्चिकक्रोधवान्होइकै किसीपुरु षकेशरीरविषे वारंवार दंशकरै ॥ ताकरिकै जैसीपीडा तापुरुषकूंहोवैहै ॥ तैसीहीपीडा इसकालविषे हमारेकूंहोतीहै ॥ हेजनक ॥ इसतैंआ दिलेकेअनेकप्रकारकेशब्दोंकूं यहजीवात्मा मरणकालविषेकरैहै ॥ और तामरणकालविषे वाणीकोनिरोधहुएभी यहजीवात्मा घुरघुर याप्र

कारकेशब्दोंकूंकरैहै॥ याप्रकारकेअनेकशब्दोंकूंकरताहुआ यहसूक्ष्मशरीररूपरथ यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिकै परलोककूं गमनकरैहै॥ और यास्थूलशरीररूपपुरीतैं एकवारबाहरनिकस्याहुआ यहसूक्ष्मशरीररूपरथ पुनःतास्थूलशरीरविषेआवैनहीं॥ और हेजनक॥ जैसेसुषुप्ति अवस्थाविषे यहजीवात्मा हृदयदेशविषे स्थितपरमात्मादेवकेसाथ तादात्म्यभावकूं प्राप्तहोवैहै॥ तैसे मरणकालविषेभी यहजीवात्माहृदयदे शविषेस्थितपरमात्माकेसाथ तादात्म्यभावकूं प्राप्तहोवैहै॥ और हेजनक॥ जैसे सुषुप्तिअवस्थाविषेस्थितहुआ यहजीवात्माजाग्रत्स्वप्नकेसं पूर्णविशेषज्ञानोंतैं रहितहोवैहै॥ तैसे मरणकालविषेभी यहजीवात्मा संपूर्णविशेषज्ञानोंतैंरहितहोवैहै॥ याकारणतैंही यहजीवात्मा मरणका लविषे परमात्माकेसाथ तादात्म्यभावकूंप्राप्तहोवैहै और जैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे यहजीवात्मा परमात्माकेसाथ तादात्म्यभावकूंप्राप्तहो इकै जाग्रत्स्वप्नकेसर्वविक्षेपोंतैं रहितहोवैहै॥ तैसे मरणकालविषेभी यहजीवात्मा परमात्माकेसाथ तादात्म्यभावकूंप्राप्तहोइकै पूर्वउक्तसंपूर्ण शब्दोंका परित्यागकरैहै ॥ तिसतैंअनंतर ऊर्ध्वश्वासोंकरिकै आपणेदीनभावकूंबोधनकरताहुआ यहजीवात्मा यास्थूलशरीरकापरित्याग करिकै पूर्वलेपुण्यपापरूपकर्मोंकेअनुसार दूसरेशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अब पूर्वशरीरकापरित्यागकरिकै याजीवात्माकूं जिसप्रकारतैं दूसरे शरीरकीप्राप्तिहोवै है॥ ताप्रकारका निरूपणकरैहैं॥ हेजनक॥ मरणकालविषे बहुतअस्थानोंविषेतो यहरीतिहै ॥ प्रथम यहजीवात्मा दुर्बल ताकूंप्राप्तहोइकै पश्चात् ऊर्ध्वश्वासोंकरिकैउपलक्षितजोदीनदशाहै तादीनदशाकूं प्राप्तहोवैहै॥ और सोदुर्बलता याजीवकूं दोप्रकारकेकार णोंतैंहोवैहै ॥ एकतो जरावस्थाकरिकै सोदुर्बलताहोवैहै ॥ और दूसरा व्याधिकरिकै सोदुर्बलताहोवै है ॥ तादुर्बलताकरिकै दीनदशाकूं प्राप्तहुआयहजीव मरणकालविषेऊर्ध्वश्वासलेवैहै ॥ हेजनक ॥ याप्रकारकीदशाकूंप्राप्तहुआ यहजीवात्मा जिसप्रकार यास्थूलशरीरका परित्यागकरैहै ताप्रकारकूं तूं श्रवणकर ॥ जैसे यालोकविषे आम्रकाफल तथा उदुंबरकाफल तथा पिप्पलकाफल जभी परिपक्वहोवैहै ॥ तभी तत्कालहीं तावृक्षकीशाखातैंटूटिके भूमिविषेपडेहै॥ अनेकप्रकारकेउपायोंकरिकैभी परिपक्वफलकी वृक्षविषेस्थितिहोइसकैनहीं ॥ तैसे यास्थूलशरीरकेआरंभकरणेहारे जेपुण्यपापरूपप्रारब्धकर्म हैं ॥ तिनोंका जभी भोगकरिकैक्षयहोवैहै ॥ तभी यहजीवात्मा यास्थूल

शरीरकाशीघ्रही परित्यागकरैहै ॥ और हेजनक ॥ जैसे नीचेपतनतैंपूर्वआम्रादिकफलोंका वृक्षकेसाथ तादात्म्यसंबंधहोवैहै॥तैसे मरणतैं पूर्व याजीवात्माकाभी यास्थूलशरीरकेसाथ तादात्म्यसंबंधहोवैहै ॥ याकारणतैंहौं मैंब्राह्मणहूं मैंक्षत्रियहूं मैंस्थूलहूं याप्रकारकीप्रतीतिलोकोंकूंहोवैहै ॥ और जैसे नीचेपतनतैंपूर्व वृक्षकेसाथ फलोंकातादात्म्यहुएभी परिपक्वअवस्थाविषे तिनफलोंका वृक्षकेसाथ अवश्यवियोगहोवैहै ॥ तैसे मरणतैंपूर्व याजीवात्माका स्थूलशरीरकेसाथ तादात्म्यसंबंधहुएभी मरणकालविषे याजीवात्माका तास्थूलशरीरकेसाथ अवश्यवियोगहोवैहै ॥ और हेजनक ॥ आम्रादिकवृक्षकीशाखातैं नीचेपतनहुआ आम्रादिकफल किसीआधारतैंविना रहैनहीं ॥ किंतु नीचेपतनतैंपूर्व तेआम्रादिकफल वृक्षकेआश्रितरहैं हैं ॥ और नीचेपतनतैंपश्चात् तेआम्रादिकफल भूमिआदिकोंकेआश्रितरहैं हैं तैसे यहयसूक्ष्मशरीरभी यास्थूलशरीरकेत्यागतैंअनंतर किसीआधारतैंविनारहैनहीं ॥ किंतु मरणतैंपूर्व सोसूक्ष्मशरीर यास्थूलशरीरकेआश्रितरहैहै ॥ और यास्थूलशरीरकेत्यागतैंअनंतर सोसूक्ष्मशरीर किसीदूसरेस्थूलशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तहाँ यहसूक्ष्मशरीरविशिष्टजीवात्मा जिसप्रकार पूर्वलेशरीरकूंप्राप्तहोवैहै॥ तथाजिसजातिवालेपूर्वशरीरकूंप्राप्तहोवैहै॥तिसीप्रकार तथातिसीजातिवालेदूसरेशरीरकूं यहजीवात्मा प्राप्तहोवैहै ॥ हेजनक ॥ जिसजातिवालापूर्वशरीरहोवैहै ॥ तिसीजातिवाले दूसरेशरीरकूं यहजीवात्मा प्राप्तहोवैहै ॥ यहअर्थ जोश्रुतिभगवतीनैंकथनकऱ्याहै ताका यहअभिप्रायहै॥पूर्वलेपुण्यपापरूपकर्मकेवशतैं यहजीवात्मा कदाचित् पूर्वलेशरीरकेसमान जातिवालेशरीरकूंभी प्राप्तहोवैहै ॥ परंतु यहजीवात्मा पूर्वलेशरीरकेसमानजातिवालेशरीरकूंहींप्राप्तहोवैहै ॥ याप्रकारकेनियमविषे श्रुतिभगवतीकातात्पर्यनहीं ॥किंतु एकशरीरकापरित्यागकरिकै यहजीवात्मा दूसरेशरीरकूंअवश्यप्राप्तहोवैहै॥ याप्रकारकेनियमविषे श्रुतिभगवतीकातात्पर्य है सोदूसराशरीर पूर्वले शरीरके समानजातिवालाहोवै॥अथवा पूर्वलेशरीरतैंविलक्षणहोवै॥याकेविषे कोईनियमनहीं ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकारिकै निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक प्रारब्धकर्मकेक्षयहुएतैंअनंतर यद्यपि यास्थूलशरीरकानाशहोवैहै ॥ तथापि जबपर्यंत याजीवकूं अद्वितीयब्रह्मकासाक्षात्कारनहींभया तबपर्यंत सूक्ष्मशरीरकानाशहोवैनहीं ॥एकब्रह्मज्ञानकरिकैहीसूक्ष्मशरीरकानाश

होवै है ॥ और सोसूक्ष्मशरीरस्थूलशरीरतैंविना स्थितहोवैनहीं॥किंतु स्थूलशरीरकूंआश्रयणकरिकैही यासूक्ष्मशरीरकीस्थितिहोवै है ॥ तात्पर्ययह ॥ आत्मज्ञानतैंपूर्व संसारदशाविषे यासूक्ष्मशरीरकी दोप्रकारकीअवस्थाहोवै है॥एकतौ कारणअज्ञानविषे संस्काररूपकरिकै स्थितिरूपअवस्थाहोवै है ॥ औरं दूसरी स्थूलशरीरकूंआश्रयणकरिकैस्थितिरूपअवस्थाहोवै है ॥ तहाँ सुषुप्तिकालविषे यहसूक्ष्मशरीर कारणअज्ञानविषे संस्काररूपकरिकैरहै है ॥ और सुषुप्तितैंभिन्नकालविषे यह सूक्ष्मशरीर स्थूलशरीरकूंआश्रयणकरिकैरहै है ॥ यादोनों प्रकारकीअवस्थाविषे किसीएकअवस्थाकूंआश्रयणकरिकैही यहसूक्ष्मशरीररहैं हैं॥ और हेजनक ॥ पापकर्मके वशतैं यहसूक्ष्मशरीर नरककूंप्राप्तहोवै है ॥ तानरकविषे यहसूक्ष्मशरीर नानाप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवै है ॥ और पुण्यकर्मके वशतैं यहसूक्ष्मशरीर स्वर्गादिकलोकोंकूंप्राप्तहोवै है॥तथा उपासनाकेबलतैं यहसूक्ष्मशरीर ब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवै है ॥ तास्वर्गादिकलोकोंविषे तथाब्रह्मलोकविषे यहसूक्ष्मशरीर नानाप्रकारकेसुखकूंप्राप्तहोवै है ॥ सोनरकविषेदुःखकाभोग तथास्वर्गविषे ॥ सुखकाभोग तथाब्रह्मलोकविषेसुखकाभोग स्थूलशरीरतैंविना संभवैनहीं ॥ यातैं स्वर्गविषे तथाब्रह्मलोकविषे तथानरकविषे यहसूक्ष्मरीर स्थूलशरीरकूंआश्रयणकरिकैही सुखदुःखकूंभोगे है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ आपने सूक्ष्मशरीरकी दोअवस्थाकही सोसंभवैनहीं ॥ किंतु सूक्ष्मशरीरकीतीनअवस्थासंभवै हैं ॥ काहेतैं जभी यहसूक्षमशरीर यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिकै परलोकविषेजावैहै॥तिसकालविषे यहसूक्ष्मशरीर संस्काररूपकरिकैकारणअज्ञानविषे रहै नहीं॥तथा तिसकालविषे यहसूक्ष्मशरीर स्थूलशरीरकूंभीआश्रयणकरैनहीं॥यातैं तिसकालविषे यासूक्ष्मशरीरकीतीसरीअवस्था अंगीकारकरीचाहिये ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिकै यहसूक्ष्मशरीर जबपर्यंत दूसरेस्थूलशरीरकूंनहींप्राप्तभया ॥ तबपर्यंत यासूक्ष्मशरीरकी जोकदाचित् तीसरीअवस्थासंभवतीहोवै ॥ तौ सातीसरीअवस्था निःशंकहोवै ॥ याकेविषे हमारा कोईआग्रनहीं ॥ परंतु सुखदुःखकेभोगकेवासतै जोसूक्ष्मशरीरकी स्थिति है ॥ सास्थिति स्थूलशरीरतैं विनाहोवैनहीं ॥ याप्रकारकेअर्थविषे हमारातात्पर्य है ॥ और हेजनक ॥ यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिकै यहसूक्ष्मशरीर जबपर्यंत दूसरेस्थूलशरीरकूंनहींप्राप्तहोता॥तब

पर्यंत मध्यकालविषे यह सूक्ष्मशरीर किसीसुखदुःखकूं भोगतानहीं ॥ तहाँ दृष्टांत ॥ जैसे गृध्रपक्षी मांसकूंमुखविषेग्रहणकरिकै आकाश विषेउडे है ॥ सोगृध्रपक्षी यद्यपि ताकालविषेभी मांसकेभक्षणकरणेविषेसमर्थ है ॥ तथापि आकाशविषे चलताहुआ सोगृध्र तामां सकूंभक्षणकरैनहीं॥किंतु किसीवृक्षादिकोंविषेस्थितहोइकै सोगृध्र तामांसकूंभक्षणकरै है ॥ तैसे यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिकै यहसू क्ष्मशरीर जबपर्यंत दूसरेस्थूलशरीरकूं नहींग्रहणकरता ।. तबपर्यंत यहसूक्ष्मशरीर किसीपदार्थकेभोगणेविषे समर्थहोवैनहीं॥ याकारणतैं सोसूक्ष्मशरीर यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिकै सुखदुःखकेभोगणेवासतै दूसरेस्थूलशरीरकूं अवश्यप्राप्तहोवै है॥सोदूसराशरीर पूर्वलेशरी रकेसमानजातिवालाहोवै ॥ अथवा पूर्वलेशरीरतैंविलक्षणहोवै ॥ याकेविषेकोई नियमनहीं ॥ काहेतैं नरकविषे केवलपापकर्मकेदुःखरूपफ लकूंभोगताहुआ जोजीव है ॥ ताजीवका जभीकोई पूर्वलापुण्यपापरूपमिश्रितकर्म उदयहोवै है॥तभी सोनरकवासीजीव नरककेस्थूलशरी रकापरित्यागकरिकै यापृथिवीलोकविषे मनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोवै है ॥ और ता नरकवासीजीवका जभीकोईपूर्वला केवलपुण्यकर्मउदयहो वै है ॥ तभी सोनरकवासीजीव तानरककेस्थूलशरीरकापरित्यागकरिकै स्वर्गविषे देवताशरीरकूंभी प्राप्तहोवै है ॥ और स्वर्गविषेस्थित जेकर्मदेवता हैं ॥ तिनदेवतावोंका जभी कोईपूर्वलापुण्यपापरूपमिश्रितकर्मउदयहोवै है ॥ तभी तेदेवता स्वर्गकेस्थूलशरीरकापरित्याग करिकै याभूमिलोकविषे मनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ और तामनुष्यशरीरकेपरित्यागकालविषे जभीकोईपूर्वलापापकर्मउदयहोवै है ॥ तभी तेदेवता तामनुष्यशरीरकापरित्यागकरिकै नरककेशरीरकूंभीप्राप्तहोवैं हैं ॥ याप्रकार स्थूलशरीरकेपरित्यागकालविषे जोजोपुण्य कर्म अथवा पापकर्म याजीवकाउदयहोवै है ॥ तिसपुण्यपापकर्मकेअनुसार याजीवकूंदूसरेशरीरकीप्राप्तिहोवै है॥यातैं याजीवकूं पूर्वलेशरी रकेसमानजातिवालाही दूसराशरीर प्राप्तहोवै है ॥ याप्रकारका नियम संभवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् यहजीव अल्पज्ञ है ॥ यातैं यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिकै इसजातीवालेशरीरकूं मैं प्राप्तहोवोंगा ॥ याप्रकारकाज्ञान जीवविषे संभवैनहीं ॥ और पुण्यपापरूपकर्म जड हैं॥यातैं तिनोंविषेभी उत्तरशरीरकाज्ञानसंभवैनहीं ॥ यातैं याजीवकूं दूसरेशरीरकीप्राप्ति कौनकरावता है॥ समाधान ॥हेजनक जैसे

यालोकविषे दीर्घकाष्ठकेसाथ सूत्रकरिकैबांधेहुए जेकाष्ठकेमर्कटहैं॥तिनमर्कटोंकेसाथ बालककीडाकरै है॥ तहां सोबालक जिस मर्कटके क्रीडाकरावणेकीइच्छाकरै है॥तिसमर्कटकेसूत्रकूंआकर्षणकरै है ॥ तासूत्रकेआकर्षणकरिकै तेमर्कट नानाप्रकारकीक्रीडाकरैं हैं ॥ तैसे यहअनादिसंसार दीर्घकाष्ठकेसमानहै ॥ और स्थावरजंगमरूपसर्वप्राणी मर्कटकेसमानहैं॥और जीवोंकेपुण्यपापरूपकर्म सूत्रकेसमान हैं॥ और मायाविशिष्टअंतर्यामीपरमात्मा बालककेसमानहैं॥ यातैं सोपरमात्मारूपबालक क्रीडाकरणेवासतै जिसजिसप्राणीरूपमर्कटके पुण्य पापकर्मरूपसूत्रकूंआकर्षणकरै है ॥ सोसोजीवरूपमर्कट यासंसार विषे नानाप्रकारकीचेष्टाकरै है॥ तात्पर्ययह ॥ याजीवनैं पूर्वजन्मोंविषे अनेकपुण्यपापरूपकर्मकरे हैं ॥ तिनकर्मोंकाज्ञान याअल्पज्ञजीवकूंहैनहीं ॥ किंतु सर्वज्ञपरमात्माकूंहीं जीवकेपुण्यपापकाज्ञानहै ॥ और यहजीव जिसकालविषे यास्थूलशरीरकापरित्यागकरै है॥तिसकालविषे सोपरमात्मादेव ताजीवकेजिसपुण्यपापरूपकर्मोंकूं सुखदुःखरूप फलकेदेणेवासतै सन्मुखकरै है॥तिसीपुण्यपापरूपकर्मकेअनुसार यहपराधीनजीव दूसरेजन्मकूंप्राप्तहोवै है ॥ यातैं पुण्यपापरूपकर्मकेकरणे विषे तथापुण्यपापकर्मकेसुखदुःखरूपफलकेभोगणेविषे तथा दूसरेशरीरकीप्राप्तिविषे यहजीव स्वतंत्रनहीं ॥ किंतु अंतर्यामी परमात्माही ताकेविषेकारणहै ॥ सोपरमात्मादेव याजीवके पुण्यपापकर्मकेअनुसार जैसेजैसे शरीरकूं रचै है ॥ तिसी तिसी शरीरकूंयहजीव प्राप्त होवै है॥यातैं पूर्वलेशरीरकेसमानजातिवालेदूसरेशरीरकूं यहजीव प्राप्तहोवै है याप्रकारकानियम संभवैनहीं॥ किंवा अत्यंतअल्पतृणशरीर विषेस्थितहुआयहजीवपूर्वलेकिसीपुण्यकर्मकेप्रभावतैं ब्रह्माकेशरीरकूंप्राप्तहोवै है॥और अत्यंतउत्कृष्टब्रह्माकेशरीरकेविषे स्थितहुआयहजीव पूर्वलेकिसीपापकर्मकेप्रभावतैं तृणशरीरकूं प्राप्तहोवै है ॥ यातैं यहसिद्धभया ॥ जैसे पिशाचशरीरोंका तथामेघोंका वायुकेअधीन गमन होवै है॥स्वतंत्रगमनहोवैनहीं ॥ तैसे ब्रह्मलोकविषे तथास्वर्गलोकविषे तथाभूमिलोकविषे याजीवकाजोगमनहोवै है सो स्वतंत्रहोवै नहीं ॥ किंतु परमेश्वरनैं सुखदुःखरूपफलकेदेणेवासतै सन्मुखकरेजेपुण्यपापरूपकर्म तिनकर्मोंकेअनुसारहीं याजीवका परलोकविषेगमनहोवै है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ यहजीव पूर्वलेशरीरकेसमानजातिवालेदूसरेशरीरकूं जोनप्राप्तहोताहोवै ॥ तौ श्रुतिनैं याजीवकूं पूर्वलेशरीरके समान

जातिवालेदूसरेशरीरकीप्राप्ति किसवासतै कथनकरी है ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ पूर्वलेशरीरकेसमानजातिवालेदूसरेशरीरकूंही यहजीव प्राप्तहोवै है॥याप्रकारकेनियमविषे श्रुतिभगवतीकातात्पर्यनहीं ॥ किंतु यहजीवात्मा जिसकालविषे यास्थूलशरीरकापरित्यागकरै है ॥ तिसकालविषे जोकदाचित् तिसीशरीरकेसमानजातिवालेदूसरे शरीरकीप्राप्तिकरणेहारेकर्मोंकाउद्भवहोवै है ॥ तौ यहजीवात्मा पूर्वलेसंस्कारोंकेवशतैं तिसीजातिवालेशरीरकूं पुनःप्राप्तहोवै है ॥ और जभी पूर्वशरीरतैंविलक्षणशरीरकीप्राप्तिकरणेहारेकर्मोंकाउद्भवहोवै है ॥ तभी यहजीवात्मा पूर्वलेशरीरतैं विलक्षणशरीरकूंभी प्राप्तहोवै है॥ परंतु एकशरीरकापरित्यागकरिकै यहजीवात्मा दूसरेशरीरकूंअवश्यप्राप्तहोवै है ॥ याप्रकारकेनियमविषे श्रुतिभगवतीकातात्पर्य है ॥ और हेजनक ॥ जोकदाचित् याजीवकूं नियमकरिकै पूर्वलेशरीरकेसमान जातिवालाही दूसराशरीर प्राप्तहोताहोवै ॥ तौ पुण्यकेसुखरूपफलकूं तथापापकेदुःखरूपफलकूं बोधनकरणेहाराजोशास्त्रहै,सोशास्त्र अप्रमाणरूपहोवैगा ॥ काहेतैं अग्निहोत्रादिककर्मोंकूंकरणेहारा जोपुरुषहै ॥ तिसकूं स्वर्गविषे देवताशरीरकीप्राप्ति शास्त्रनैंकथनकरीहै ॥ और उपासनाकूंकरणेहाराजोपुरुषहै ॥ तिसकूं ब्रह्मलोककीप्राप्ति शास्त्रनैंकथनकरीहै ॥ और ब्रह्महत्यादिकपापकर्मोंकूंकरणेहाराजोपुरुष है ॥ तिसकूं श्वानादिकनीचशरीरोंकीप्राप्ति शास्त्रनैंकथनकरीहै ॥ इसतैंआदिलेकेसंपूर्ण विधिनिषेधरूपशास्त्र अप्रमाणरूपहोवैगा ॥ किंवा ॥ यहसंसार प्रवाहरूपकरिकैअनादिहै ॥ ताअनादिसंसारविषे कोईभीपदार्थ सर्वतैंप्रथमहैनहीं ॥ यातैं याजीवका सर्वशरीरोंतैं प्रथम किस जातिवालाशरीरथा याप्रकार वादीकीआशंकाहुए॥याजीवका सर्वशरीरोंतैंप्रथम इसजातिवालाशरीरथा याप्रकारकेउत्तरदेणेविषे कोईभी विद्वान्समर्थनहीं ॥ किंवा ॥ जोवादी वर्तमानशरीरोंकूंदेखिकरिकै याप्रकारकानियमकरै ॥ याजीवका मनुष्यत्वजातिवालाशरीरहीयोग्यहै ॥ और याजीवका पशुत्वजातिवालाशरीरहीयोग्यहै ॥ तौ पूर्वशरीरोंकेअज्ञानतैं यासंसारविषे सादिपणाही प्राप्तहोवैगा॥ और संसारविषेसादिपणा कोईभीआस्तिकवादी अंगीकारकैरनहीं ॥ किंतु चार्वाकनास्तिकतैंभिन्न संपूर्णआस्तिकवादी संसारकूं प्रवाहरूपकरिकै अनादिहीमानैं हैं ॥ यातैं याजीवकूं नियमकरिकै पूर्वलेशरीरकेसमानजातिवालाहीदूसराशरीर प्राप्तहोवैहै ॥ याप्रकारकाजोनियमअंगी

कारकरिये ॥ तौ संसारविषेअनादिपणानहींरहैगा ॥ अब संसारकूंसादिमानणेहारे जेचार्वाकनास्तिकहैं॥तिनोंकेमतकूं खंडनकरणेवासतै नानाप्रकारकीयुक्तियोंकरिकै संसारविषेअनादिपणा सिद्धकरै हैं ॥ हेजनक ॥ जैसे जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति यातीनअवस्थावोंविषे यहजाग्रत् अवस्था सर्वजाग्रत्अवस्थावोंतैं प्रथमहै ॥ और यहस्वप्नअवस्था सर्वस्वप्नअवस्थावोंतैं प्रथमहै ॥ और यहसुषुप्तिअवस्था सर्वसुषुप्तिअवस्थावोंतैं प्रथम है ॥ याप्रकारकानियम कन्याजावैनहीं ॥ तैसे याजगत्की उत्पत्ति स्थिति लय यातीनोंविषेभी यहजगत्कीउत्पत्तिसर्व उत्पत्तियोंतैं प्रथम है ॥ और यह जगत्कीस्थिति सर्वस्थितियोंतैं प्रथम है ॥ और यह जगत्कालय सर्वलयोंतैं प्रथम है ॥ याप्रकारका नियम कन्या जावैनहीं॥यातैं जगत्की उत्पत्ति स्थिति लय यहतीनों प्रवाहरूपकरिकैअनादिहैं॥ तहांदृष्टांत जैसे कूपादिकोंतैं जलके निकासणेकासाधान जो घटीयंत्रहै॥ताकेविषेस्थितजोदीर्घरज्जुहै॥तारज्जुकेसाथ बांधेहुए जेमृत्तिकाकेघटीनामापात्रविशेषहैं॥तिनपात्रोंविषे यहमृत्तिकाका पात्र सर्वपात्रोंतैं प्रथम है॥ याप्रकारकानियम कन्याजावैनहीं तैसे यहसंसार संपूर्णसंसारोंतैं प्रथमहै याप्रकारकानियम किसीसेंकन्याजावैनहीं॥अब याहीअर्थकूं सत्कार्यवादकीरीतिसैं स्पष्टकरिकैनिरूपणकरै हैं ॥हेजनक॥यालोकविषे जितनेकीकार्यरूपघटादिकपदार्थ हैं ॥ तेघटादिकपदार्थ प्रथम उत्पत्तिकूंप्राप्तहोइकैही पश्चात् वर्तमानतारूपस्थितिकूंप्राप्तहोवै हैं॥याप्रकारकानियम संभवैनहीं ॥ काहेतैं उत्पत्तितैंपूर्व अत्यंतअसत्घटादिकपदार्थोंकी जोउत्पत्ति अंगीकारकरिये ॥ तौ अत्यंतअसत्वंध्यापुत्रकी तथानरशृंगकीभीउत्पत्तिहोणीचाहिये॥यातैं उत्पत्तितैंपूर्व घटादिकपदार्थ अत्यंतअसत्नहीं॥किंतु आपणीउत्पत्तितैंपूर्व तेघटादिकपदार्थ आपणेमृत्तिकादिक उपादानकारणोंविषे सूक्ष्मरूपकरिकैस्थितहोवै हैं॥यातैं यहसिद्धभया स्थितिकूंप्राप्तहुएतेघटादिकपदार्थ उत्पत्तिकूंप्राप्तहोवै हैं॥और उत्पत्तिकूंप्राप्तहुए तेघटादिकपदार्थ पुनःस्थितिकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ और उत्पत्तिस्थितितैंअनंतर तेघटादिकपदार्थ नाशकूंप्राप्तहोवै हैं॥और नाशतैंअनंतर तेघटादिकपदार्थ पुनः कारणरूपकरिकैस्थितहोवै हैं ॥ और कारणरूपकरिकैस्थितहुए तेघटादिकपदार्थ पुनःउत्पत्तिकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ याप्रकार घटादिकपदार्थोंके उत्पत्तिका तथास्थितिका तथालयका पुनःपुनःव्यवहारहोवैहै॥यातैं घटादिकपदार्थोंकी उत्पत्तिं

स्थिति लय यहतीनों घटीयंत्रकीन्याईं प्रवाहरूपकरिकैअनादिहैं ॥ किंवा जोचार्वाकनास्तिक संसारकूंसादिमानै है ॥ ताचार्वाकवादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ जिसकालविषे संसारकासादिपणाहै ॥ तिसकालकूंजोतूंजाणताहोवै॥तौ सोकाल हमारेप्रतिकहो॥तहाँ सोचार्वाकवादी जोयाप्रकारकाउत्तरकहै ॥ जिसकालविषे यासंसारमैं सादिपणाहै ॥ तिसकालकूं हम जाणतेनहीं ॥ तौ सोचार्वाकवादी यासंसारविषे सादिपणा किसप्रकार सिद्धकरिसकैगा ॥ यातैं यहसंसार सादिहै याप्रकारकी तावादीकोप्रतिज्ञा मिथ्याहोवैगी॥और सोचार्वाकवादी जो अत्यंतदुराग्रहकरिकै याप्रकारकावचनकहै॥जिसकालविषे यहहमाराशरीर उत्पन्नभयाथा॥तिसकालविषे यासंसारमैं सादिपणाहै॥सोयह वादीकाकहणा संभवैनहीं ॥ काहेतैं ॥ ताचार्वाकवादीसैं यहपूछाचाहिये॥यहतुमारास्थूलशरीर पितामातादिककारणोंतैंविनाहीं उत्पन्न भयाथा ॥ अथवा पितामातादिककारणोंकरिकै उत्पन्न भया था ॥ तहाँ जो वादी प्रथमपक्ष अंगीकारकरै सो संभवै नहीं ॥ काहेतैं यालोकविषे जोजोपदार्थ कार्यरूपहोवै है सोसोपदार्थ किसीकारणकरिकैही जन्यहोवै है ॥ जैसे कार्यरूपघटादिकपदार्थ मृत्तिकाकुला लादिककारणोंकरिकैजन्यहैं ॥ तैसे कार्यरूपयहस्थूलशरीरभी किसीकारणकरिकैहींजन्यहोवैगा ॥ यातैं मातापितादिककारणोंतैंविना हीं यहहमाराशरीर उत्पन्नभयाहै यहवादीकाकहणा अत्यंतविरुद्धहै ॥ और यहहमाराशरीर मातापितादिककारणोंतैं उत्पन्न भया है यह दूसरा पक्ष जो वादी अंगीकारकरै ॥ तौभी वादीकें प्रतिज्ञाकीहानीहोवैगी ॥ काहेतैं कार्यकी उत्पत्तितैं नियमकरिकै जोपूर्वहो वैहै ॥ ताकूंबुद्धिमान्पुरुष कारणकहै हैं ॥ यातैं ताचार्वाकवादीनैं आपणेशरीरकीउत्पत्तितैंपूर्वमातापितादिककारणोंकीविद्यमानता अव श्यअंगीकारकरणीहोवैगी ॥ यातैं हमारेशरीरकीउत्पत्तिकालविषे संसारमैंसादिपणाहै यहवादीकीप्रतिज्ञा मिथ्याहोवैगी ॥ और सोचार्वा कवादी जोयाप्रकारकहै ॥ हमारीअपेक्षाकरिकै यहसंसारसादिहै ॥हमारे पितापितामहादिकोंकीअपेक्षाकरिकै यहसंसार सादिनहीं ॥सो याप्रकारकाकहणाभी तावादीकासंभवैनहीं काहेतैं ताचार्वाकवादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ तेरेमतविषे संसारकाक्यास्वरूपहै ॥ तहाँ सोचा र्वाकवादी जोयहउत्तरकहै ॥ यहस्थूलशरीरहीसंसारहै ताचार्वाकवादीकेप्रति यहकह्याचाहिये ॥ हेवादी यहस्थूलशरीररूपसंसार सादी है

यहजोतूं कहताहै ॥ तिसका हम खंडनकरतेनहीं॥ किंतु यास्थूलशरीरविषे हमभी सादिपणा अंगीकारकरते हैं ॥ परंतु यहशरीर सर्वशर रोंतैंप्रथमहै याप्रकार हमअंगीकारकरतेनहीं ॥ किंतु याशरीरतैंपूर्वभी अनेकशरीर होतेभये हैं ॥ याप्रकार हम अंगीकारकरते हैं॥ तिस हमारेसिद्धांतकूं तुमनैं खंडनकऱ्यानहीं ॥ किंवा ॥ सोचार्वाकवादी यहहमाराशरीर सर्वशरीरोंतैंप्रथम है याप्रकारजोकथनकरै॥तावादीतैं यहपूछाचाहिये ॥ हेवादी तूं देहस्वरूपहै ॥ अथवा देहतैंभिन्नहै ॥ तहाँ देहस्वरूप मैंहूं यहप्रथमपक्ष जोवादीअंगीकारकरै सोसंभवै नहीं ॥ काहेतैं जैसे लोकविषे कोईपुरुष याप्रकारकावचनकहै ॥ यहहमारागृह इसगृहतैं प्रथमहै ॥ याप्रकारकेवचनतैं गृहवाले पुरुषका गृहतैंभेदहीप्रतीतहोवै है ॥ तैसे यहहमाराशरीर सर्वशरीरोंतैंप्रथम है याप्रकारकेवादीकेवचनतैं शरीरतैंवादीके स्वरूपका भेदहीसिद्धहोवै है ॥ यातैं मैं शरीररूपहूं यहवादीकाकहणा अत्यंत विरुद्धहै॥ और याशरीरतैं मैं भिन्नहूं यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकार करै ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ जभी यहतुमाराशरीर नहीं उत्पन्नभयाथा ॥ तभी तूं किसस्थानविषेस्थितथा ॥ और याशरीरकी उत्पत्तितैंअनंतर याशरीरविषे किसप्रयोजनवासतैं तू आयाथा॥तहाँ सोचार्वाकवादी जोयाप्रकारकहै॥ याशरीरकीउत्पत्तितैंपूर्व मैं किसी दूसरेशरीरविषेस्थितनहींथा किंतु आपणेआत्माविषेस्थितथा॥और याशरीरकीउत्पत्तितैं अनंतर मैं याशरीरविषे यदृच्छाकारिकैआयाहूं॥ यहाँ नहींचिंतनकरेहुएपदार्थकीप्राप्तिकरणेहाराजोस्वभावहै ताकानाम यदृच्छाहै ॥ याप्रकार कथनकरणेहारा जोचार्वाकवादी है ॥ तासैं यहपूछाचाहिये ॥ इसशरीरकीप्राप्तितैंपूर्व तूं दूसरेशरीरकूं किसवासतैंनहींप्राप्तभया॥ और जिसयदृच्छाकारिकै तूं इसशरीरकूंप्राप्तभयाहै॥ सोयदृच्छाइसशरीरतैंपूर्व तुमारेविषे किसवासतैंनहींहुई ॥ यहदोनोंप्रश्नोंकाउत्तर तूं हमारेप्रतिकहु ॥ याप्रकार सिद्धांतीकरिकैपूछाहुआ सोचार्वाक किंचित्मात्रभी उत्तरकहणेविषे समर्थनहींहोवैगा ॥ किंवा ॥ सोचार्वाकवादी पूर्वशरीरोंकेअभावकीसिद्धिकरणेवासतैं जोयाप्र कारकाअनुमानप्रमाण अंगीकारकरै ॥ जोकदाचित् इसशरीरतैंपूर्व हमारेकूं दूसरेशरीरोंकीप्राप्तिहुईहोती ॥ तौ इसवर्तमानशरीरविषे तिनपूर्वशरीरोंकास्मरण हमारेकूंहोता ॥ परंतु इसवर्तमानशरीराविषे हमारेकूं पूर्वशरीरोंकास्मरणहोतानहीं ॥ यातैं यहजान्याजावै है ॥

इसशरीरतैंपूर्व हमारेकूं कोईदूसराशरीरप्राप्तनहींभया ॥ यहाँ अनुमानकाआकार यहहै ॥ मैंचार्वाक पूर्वशरीरोंकेअत्यंताभाववालाहूं ॥ काहेतैं पूर्वशरीरोंकीस्मृतिकेअभावालाहोणेतैं ॥ अन्यपुरुषकीन्याईं सो यह चार्वाकवादीकाअनुमानप्रमाण संभवैनहीं ॥ काहेतैं यालोक विषे जितनेकपदार्थोंकूं अनुभवकरीताहै ॥ तिनसर्वपदार्थोंकीस्मृति जोनियमकरिकैजीवोंकूंहोती ॥ तौ यहवादीकाअनुमानप्रमाण पूर्वशरीरोंकेअत्यंताभावकूं सिद्धकरता ॥ परंतु इसीजन्मविषेअनुभवकरेहुएपदार्थोंकाइसीजन्मविषेभी नियमकरिकैस्मरणहोवैनहीं ॥ तौजन्मांतरोंकेशरीरकास्मरण किसप्रकारवादीकूंहोवैगा ॥ यातैं सोवादीकाअनुमान व्यभिचारीहै॥ व्यभिचारीअनुमानतैं किसीअर्थकी सिद्धिहोवैनहीं ॥ इसतैंआदिलेके अनेकप्रकारकेदूषणसंसारकूंसादिमानणेविषे प्राप्तहोवै है॥यातैं चार्वाकतैंआदिलेके संपूर्णवादियोंनैं यासंसारकूं प्रवाहरूपकरिकै अनादिमान्याचाहिये ॥ और संसारकूंअनादिमानणेविषे पुण्यवान्पुरुष सुखरूपफलकूंप्राप्तहोवैगा और पापी पुरुष दुःखरूपफलकूंप्राप्तहोवैगा याप्रकारकी शास्त्रकीव्यवस्थाभीसुखैनहीं सिद्धहोइसकै है ॥ यातैं यहसिद्धभया ॥ यहजीवात्मा यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिकै तिसीजातिवालेदूसरेशरीरकूंप्राप्तहोवै है ॥ याप्रकारकेनियमविषे श्रुतिभगवतीकातात्पर्यनहीं ॥ किंतु याप्रकारकेअर्थविषे श्रुतिभगवतीकातात्पर्य है ॥ यहसंसार अनादिहै ॥ ताअनादिसंसारविषे यहजीवात्मा जैसे अभीशरीरकूंप्राप्तभयाहै ॥ तैसे पूर्वभी यहजीवात्मा जिसजिसजातिवालेशरीरकूंप्राप्तहोवै है ॥ तिसतिसजातिवालेशरीरकूं पुनःभीकदाचित्प्राप्तहोवैगा ॥ तात्पर्ययह ॥ यहजीवात्मा पशुपक्षीतैंआदलक जिसाजिसजातिवालेशरीरकूंप्राप्तहोवै है ॥ तिसतिसजातिवालेशरीरके खानपान मैथुन इसतैंआदिलैके जितनेकीव्यवहार हैं ॥ तिनसंपूर्णव्यवहारोंकूं यहजीवात्मा उपदेशतैंविनाहींकरै है॥यातैं यहजान्याजावै है ॥ याजीवात्माकूं इसजातीवालाशरीर पूर्वभीकभीप्राप्तभया है ॥ तिसशरीरकेसंस्कारोंतैं यहजीवात्मा उपदेशतैंविनाहीं खानपानादिकसर्व व्यवहारोंकूंकरै है ॥ इतनेग्रंथकरिकै यहअर्थकथनकऱ्या॥जबपर्यंत याजीवकूं आत्माकेवास्तवस्वरूपकासाक्षात्कार नहींभया ॥ तबपर्यंतयहजीव एकस्थूलशरीरकापरित्यागकरिकै पुण्यपापकेवशतैं दूसरेस्थूलशरीरकूं अवश्यप्राप्तहोवै है ॥ सो दूसराशरीर कदाचित् पूर्वले

शरीरकेसमानजातिवालाहोवैहै ॥ कदाचित् विलक्षणहोवै है॥ याकेविषे कोईनियमनहीं ॥ अब यहजीवात्मा याशरीरकापरित्यागकरिकै पुण्यपापकेवशतैं जिसप्रकार दूसरेस्थूलशरीरकूंप्राप्तहोवै है ॥ तिसअर्थकूं लोकप्रसिद्धदृष्टांतकरिकै निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ क्षत्रियाणीमाताविषे वैश्यपितातैं जेपुत्रउत्पन्नहोवै हैं तिनोंकूं शास्त्रवेत्तापुरुष उग्र नामकरिकैकथनकरैं हैं ॥ अथवा हिंसादिकउग्रकर्मोंकूंकरणेहारेजेपुरुषहैं तिनोंकानाम उग्रहै ॥ अथवा हीनजातिवालीमाताविषे उत्कृष्टजातिवालेपितातैं जेपुत्र उत्पन्नहोवै हैं ॥ तिनोंकूं शास्त्रवेत्तापुरुष अनुलोम नामकरिकैकथनकरैं हैं ॥ और उत्कृष्टजातिवालीमाताविषे निकृष्टजातिवालेपितातैं जेपुत्र उत्पन्नहोवै हैं ॥ तिनोंकूं शास्त्रवेत्तापुरुष प्रतिलोम नामकरिकैकथनकरैहैं ॥ तिसीअनुलोमनामापुरुषोंकूं तथाप्रतिलोमनामापुरुषोंकूं शास्त्रवेत्तापुरुष उग्र नामकरिकैकथनकरैहैं ॥ और ब्राह्मणीमाताविषे क्षत्रियपितातैं उत्पन्नभयेजेपुत्रहैं ॥ तिनोंकूं शास्त्रवेत्तापुरुष सूत नामकरिकैकथनकरैहैं ॥ तिनसूतनामापुरुषोंकी दोप्रकारकी आजीवकाहोवैहै॥ कोईकसूततौ रथोंविषेसारथिहोवैहै॥और कोईकसूत भागवतादिकपुराणोंकेज्ञाताहोवैहैं ॥ अथवा राजाकेधनकरिकै आपणेकुटुंबकूंपालनकरणेहारे जेत्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र यहचारिवर्ण हैं ॥ तथा अनुलोमनामा प्रतिलोमनामा जेपुरुषहैं ॥ तिनसंपूर्णोंकूं शास्त्रवेत्तापुरुष सूत नामकरिकैकथनकरैहैं ॥ अथवा माताकेउदरतैं जेप्राणीबाहरनिकसैहैं तिनोंकानाम सूतहै ॥ यहसूतशब्दकाअर्थ सर्वदेहधारीजीवोंविषेघटैहै ॥ और पापीपुरुषोंकूंदंडदेणेहारे जेराजाकेभृत्यहैं॥ तथा पुरीकेलोकोंकूंनीतिमार्गविषेचलावणेहारेजेप्रधानपुरुष हैं ॥ तिनसंपूर्णोंकूं शास्त्रवेत्तापुरुष प्रत्येनस नामकरिकैकथनकरै हैं ॥ और ग्रामकेलोकोंकूं नीतिमार्गविषेचलावणेहारेजेपुरुषहैं ॥ तिनोंकूं शास्त्रवेत्तापुरुष ग्रामणी नामकरिकैकथनकरैं हैं ॥हेजनक ॥ याप्रकारके उग्रनामवालेजेपुरुषहैं ॥ तथा सूतनामवालेजेपुरुषहैं ॥ तथा प्रत्येनसनामवालेजेपुरुषहैं ॥ तथा ग्रामणीनामवालेजेपुरुषहैं ॥ इनोंतैं आदिलेकेदूसरेभी जितनेकराजाकेधनतैं कुटुंबकीपालनाकरणेहारेपुरुषहैं ॥ तेसंपूर्णउग्रादिकपुरुष तादेशकेराजाकाआगमनश्रवणकरिकै ताराजाकेसन्मुखजावैं हैं ॥ और तेउग्रादिकपुरुष महाराजाकीप्रसन्नताकरणेवासतै नानाप्रकारकेकौतुककरैं हैं ॥ तथानानाप्रकारकेमंगल

करैं हैं ॥ कैसेहैंतेउग्रादिकपुरुष तूर्यतैंआदिलेकेजेनानाप्रकारकेवादित्रहैं॥तिनोंकरिकैयुक्तहैं ॥तथा कर्णोंकूंआनंदकीप्राप्तिकरणेहारे जेना
नाप्रकारकेमधुरगायनहैं तिनोंकरिकैयुक्तहैं॥ तथा नानाप्रकारकीवारांगनावोंके हस्तकमलविषेस्थितजआर्तिदीपकहैं तिनोंकरिकैयुक्तहैं॥
इसतैंआदिलेके अनेकप्रकारकेकौतुकोंकूंकरतेहुए तेउग्रादिकपुरुष आपणेमहाराजाकेसन्मुखजावैं हैं ॥और तामहाराजाकेआगमनतैंपूर्वहीं
तेउग्रादिकपुरुष याप्रकारकीव्यवस्थाकरिराखैं हैं ॥ इसगृहविषे महाराजा निवासकरैगा ॥ और इसगृहविषे महाराजाकेप्रधानमंत्री निवा
सकरैंगे ॥ और इसगृहविषे महाराजाकीसेना निवासकरैगी ॥ याप्रकार राजाकेनिवासवासतै नानाप्रकारकेगृहोंकीकल्पनाकरिकै
पुनःतेउग्रादिकपुरुष तिनगृहोंविषे शरीरकूं तथामनकूं तथानेत्रादिकइंद्रियोंकूं सुखकेदेणेहारे जेनानाप्रकारके अन्नवस्त्रादिकपदार्थ हैं ॥
तिनपदार्थोंकूं यथायोग्यराखैं हैं ॥ इसप्रकार नानाप्रकारकेसामग्रीकूँत्यारकरिकै तेउग्रादिकपुरुष तानगरकापरित्यागकरिकै महाराजा
केसन्मुखहोणेवासतै दूरजावैं हैं ॥ और तेउग्रादिकपुरुष महाराजाकहांगया महाराजाअभीआवताहै इसतैंआदिलैके तिसीमहाराजाके
वार्ताकूंहीं परस्परकरैं हैं हेजनक ॥ इसीप्रकार यहजीवात्मारूपमहाराजा यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिकै जिसकालविषे
दूसरेशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसकालविषे याजीवकेकर्मोंकेअनुसारभोगदेणेहारे जेआदित्यादिकदेवताहैं ॥ तथादूसरेशरीरकेआरंभकरणे
हारे जे आकाशादिकपंचभूतहैं ॥ तेआदित्यादिकदेवता याजीवकेपुण्यपापरूपकर्मकेअनुसार संपूर्णभोगसामग्रीकूंत्यारकरिकै याजीवा
त्मारूपमहाराजाकेआगमनकूंदेखैहैं ॥ और तेआदित्यादिकदेवता परस्पर याप्रकारकीवार्ताकरैं हैं ॥ हमाराकर्त्ता तथाभोक्ता
जोयहजीवात्मारूपमहाराजाहै ॥ सोजीवात्मा यादेवदत्तनामापुरुषकापुत्रहोणेवासतै यादेवदत्तकीऋतुस्नातपत्नीविषे जन्मलेणेवासतै
अभीआवताहै ॥ याप्रकार तेआदित्यादिकदेवता याजीवात्मारूपमहाराजाके आगमनकूं उडीकैहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥
यहजीवात्मारूपमहाराजा यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिकै एकलाही दूसरेशरीरविषेजावैहै॥अथवा कोईवस्तु याजीवात्माकेसाथजावैहै॥
समाधान ॥ हेजनक ॥जैसे महाराजा आपणीपुरीकूंछोडिकै जभी किसीदूसरीपुरीविषे जाणेकीइच्छाकरैहै ॥ तभी तामहाराजाकेअभि

प्रायकूंजाणिकरिकै तेउग्रादिकभृत्य महाराजाकेसाथजावै हैं ॥ तैसे यहजीवात्मारूपमहाराजा यास्थूलशरीररूपपुरीकापरित्यागकरिकै
जभी परलोकविषेजाणेकीइच्छाकरै है॥तभीवाकादिकदशइंद्रिय तथापंचप्राण तथाअंतःकरण यहसंपूर्ण ताजीवात्मारूपमहाराजाकेसाथ
जावैं हैं।अब याषष्ठअध्यायकीसमाप्तिपर्यंत साधनोंसहित संसारकूं तथासाधनोंसहितमोक्षकूं विस्तारकरिकैनिरूपणकरै हैं।तहाँ प्रथम संसार
कानिरूपणकरैहैं॥हेजनक॥जिसमरणकालविषेअत्यंतनिर्बलताकूंप्राप्तहोइकै यहजीवात्मा वाकादिकइंद्रियोंकरिकै किसीपदार्थकूं नहींजाण
ता ॥ तिसकालविषे यहजीवात्मा वाक्आदिक इंद्रियोंकूं आपणे आपणेस्थानोंतैं ग्रहणकरिकै हृदयआकाशकूंप्राप्तहोवै है ॥ हेजनक जैसे
सुषुप्तिअवस्थाविषे यहजीवात्मा वाक्आदिकइंद्रियोंकूं ग्रहणकरिकै हृदयदेशविषे मायाविशिष्टपरमात्माकेसाथ अभेदभावकूंप्राप्तहोवै है॥
तैसे मरणकालविषेभी यहजीवात्मा वाक्आदिकइंद्रियोंकूंग्रहणकरिकै हृदयदेशविषे परमात्माकेसाथ अभेदभावकूंप्राप्तहोवै है॥तिसकाल
विषे यहजीवात्मा किसीइंद्रियकरिकै किसीविषयकाग्रहणकरैनहीं ॥ किंतु तिसकालविषे यहजीवात्मापुरुष वाक्आदिकसर्वइंद्रियोंकेव्या
पारतैंरहितहोवै है॥हेजनक॥मरणकालविषे यहजीवात्मापुरुष परमात्माकेसाथ अभेदभावकूंप्राप्तहोइकै सर्वइंद्रियोंकेव्यापारतैंरहितहोवै है
यहवार्त्ता जोहमनैं तुमारेप्रतिकथनकरी है ॥ सोकेवलशास्त्रविषेप्रसिद्धनहीं ॥ किंतु सर्वलोकविषेभी यहवार्त्ताप्रसिद्ध है ॥ काहेतैं जिसका
लविषे यहपुरुष मरणअवस्थाकूंप्राप्तहोवै है ॥ तिसकालविषे पुत्रस्त्रीआदिकसंपूर्णबांधव यापुरुषकूं भूमिविषेशयनकराइकै याप्रकारके
वचन परस्परकहे हैं ॥ इसकालविषेयहहमारापिता हमपुत्रोंकीतरफदेखतानहीं ॥ और यहपिता हमपुत्रोंकेवचनकूंभी नहींश्रवणकरता ॥
और आपणेकंठविषेस्थितजोपुष्पोंकीमाला है ॥ तिसकेसुगंधकूंभी यहपितालेतानहीं ॥ और इसकालविषे यहहमारापिता मुखविषेदई
हुईदधिकेरसकूंभी ग्रहणकरतानहीं ॥ और इसकालविषे यहपिता हमप्रियपुत्रोंकेसाथ बोलताभीनहीं ॥ और इसकालविषे यहपिता हम
प्रियपुत्रोंकास्पर्शभीनहींकरता ॥ और यहहमारापिता वाक्आदिकसंपूर्णइंद्रियोंकेव्यापारतैंरहित है ॥ यातैं यहजान्याजावै है॥यहपिता
मनकरिकै तथाबुद्धिकरिकैभी किसीपदार्थकूंजाणतानहीं ॥ और जैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे हमलोक वाक्आदिक सर्वइंद्रियोंके व्यापारतैं

रहितहोवै है॥तैसे यामरणकालविषे यहहमारापिताभी वाक्आदिकसर्वइंद्रियोंकेव्यापारतैंरहितहुआ है ॥और इसकालविषे याहमारेपिता कीवाक्आदिकइंद्रिय आपणे आपणेस्थानोंकूंछोडिकै हृदयदेशविषेजाइकै एकठीभयां हैं॥याकारणतैं यहहमारापिता किसीइंद्रियकेव्यापारकूंकरतानहीं ॥ हेजनक ॥ याप्रकारके लोकोंकेवचनतैंभी मरणकालविषे सर्वइंद्रियोंकेव्यापारकाभाव तथाहृदयदेशविषे तिनइंद्रियोंकीएकता सिद्धहोवै है ॥ और हेजनक ॥ जिसमरणकालविषे यहजीवात्मापुरुषहृदयदेशविषे परमात्माकेसाथ तादात्म्यभावकूंप्राप्त होवै है॥तिसकालविषे यद्यपि दूसरेसंपूर्ण विशेषज्ञानोंकाअभावहोवै है तथापि परलोकगमनकेअनुकूलजोज्ञान है ताकाअभावहोवैनहीं ॥ किंतु परलोककेमार्गदिखावणेवासतै चिदाभासयुक्तवृत्तिकरिकै हृदयकाअग्रभाग प्रकाशमानहोवै है ॥ अब याहीअर्थकूं दृष्टांतकरिकै स्पष्टकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ जैसेमहाराजा आपणीपुरीकापरित्यागकरिकै ॥ जभी किसीदूसरीपुरीविषे जाणेकीइच्छाकरै है॥तभी तामहाराजाकेचलणेकाजोराजमार्गविषे नानाप्रकारकेदीपक प्रकाशकरैं हैं ॥ तैसे यहजीवात्मारूपमहाराजा यास्थूलशरीररूपपुरीका परित्यागकरिकै जभी परलोकजाणेकीइच्छाकरै है ॥ तभी हृदयकाअग्रभागरूप जोराजमार्ग है॥तिनमार्गोंकूं चिदाभासयुक्तवृत्तिरूपदीपक प्रकाशकरैं हैं॥तिसतैंअनंतर यहजीवात्मारूपमहाराजा यास्थूलशरीररूपपुरीतैं एकादशद्वारोंसैं बाहरनिकसै है॥तेएकादशद्वार यह हैं ॥दोचक्षु २ दो श्रोत्र ४ दोनासिका ६ मूर्द्धद्वार ७ मुख ८ नाभि ९ उपस्थ १० पायु ११ याएकादशद्वारोंविषे किसीएकद्वारतैं यहजीवात्माबाहरनिकसे है॥अब तिनएकादशद्वारोंतैंबाहरनिकसिकै यहजीवात्मा जिसजिसस्थानकूंप्राप्तहोवै है॥तिनस्थानोंकूं निरूपणकरै हैं॥हेजनक॥मरणकालविषे यहजीवात्मापुरुष जभी पायुद्वारतैंबाहरनिकसै है॥तभी यहजीवात्मा नरककूंप्राप्तहोवै है॥और जभी यहजीवात्मा उपस्थद्वारतैं बाहरनिकसै है ॥ तभी अत्यंतकामातुर जेकपोतादिक हैं ॥ तिनोंकेशरीरकूंप्राप्तहोवै है॥और जभी यहजीवात्मा नाभीद्वारतैंबाहरनिकसैहै॥तभी प्रेतशरीरकूंप्राप्तहोवै है॥और जभी यहजीवात्मा मुखद्वारतैं बाहरनिकसै है॥तभी अन्नविषेअत्यंतआसक्तजेप्राणी हैं तिनोंकेशरीरकूंप्राप्तहोवै है॥ और जबी यहजीवात्मा नासिकाद्वारतैं बाहरनिकसै है ॥ तबी गंधविषेआसक्तजेप्राणी हैं तिनोंकेशरीरकूंप्राप्तहोवै है॥ और जबीयहजीवात्मा श्रोत्रद्वारतैं बाहरनिकसै है तबी गंधर्वलोककूंप्राप्तहोवै है और जबी यहजीवात्मा चक्षुद्वारतैंबाहरनिकसै है ॥ तबी

यहजीवात्मा सूर्यलोककूं तथाचंद्रलोककूं तथाअग्निलोककूं प्राप्तहोवैहै ॥ और जबी यहजीवात्मा मूर्द्धद्वारतैंबाहरनिकसैहै तबी यहजीवात्मा ब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार यहजीवात्मा आपणेपुण्यपापकर्मकेअनुसार तिसतिसद्वारतैंबाहरनिकसिकै तिसतिसशरीरकूं प्राप्तहोवैहै ॥ हेजनक ॥ याएकादशद्वारों विषे निकृष्टफलकेदेणेहारेजेद्वारहैं ॥ तिनोंविषे पायुद्वारतैंपरेकोईनिकृष्टद्वारनहीं ॥ और उत्कृष्टफलकूंदेणेहारेजेद्वारहैं ॥ तिनोंविषे मूर्द्धद्वारतैं परेकोईउत्कृष्टद्वारनहीं ॥ और मूर्द्धद्वार तथापायुद्वार इनदोनों द्वारोंकूंछोडिकै दूसरेद्वारोंविषे किसीद्वारकीअपेक्षाकरिकै उत्कृष्टताहै ॥ और किसीद्वारकी अपेक्षाकरिकै निकृष्टताहै॥और हेजनक॥बुद्धिरूपज्ञानशक्तिवाला यहजीवात्मापुरुष जभी यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिकै बाहरनिकसैहै ॥ तभी क्रियाशक्तिवालाप्राणभी तिसजीवात्माकेसाथहीबाहरनिकसैहै ॥ और जभी क्रियाशक्तिवालाप्राण याशरीरतैंबाहरनिकसै है ॥ तभी वाक्आदिकइंद्रियभी ताप्राणकेसाथहीबाहरनिकसे हैं ॥ और हेजनक ॥ जैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे यहजीवात्मा हृदयदेशविषे परमात्माकेसाथ तादात्म्यभावकूंप्राप्तहोइकै सर्वविशेषज्ञानोंतैंरहितहोवैहै ॥ तैसे मरणकालविषे यहजीवात्मा हृदयदेशविषे परमात्माकेसाथ तादात्म्यभावकूंप्राप्तहोइकै सर्वविशेषज्ञानोंतैंरहितहुआभी पुनः विशेषज्ञानकूंप्राप्तहोवै है ॥ तात्पर्ययह ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषेतो सर्वविशेषज्ञानोंकाअभावहोवैहै॥ और मरणअवस्थाविषे दोप्रकारकाज्ञान याजीवकूंहोवैहै ॥ एकतो हृदयकाअग्रभागरूपजोमार्ग है ॥ तामार्गकूंविषयकरणेहाराज्ञानहोवैहै ॥ और दूसरा याशरीरकेत्यागतैंअनंतर जोभावीशरीर प्राप्तहोणेहाराहै॥ तिसकूंविषयकरणेहाराज्ञानहोवैहै॥ यादोप्रकारकेज्ञानकूंछोडिकै दूसरेसर्वविशेषज्ञानोंका अभाव होवैहै ॥ इतनीहीं सुषुप्तिअवस्थातैं मरणअवस्थाविषे विशेषताहै॥ और हेजनक॥पुण्यपापके सुखदुःखरूपफलकूं भोगणेहाराजोयह जीवात्मा है ॥ सोजीवात्मा जभी याशरीरतैंबाहरनिकसैहै ॥ तभी पूर्वपूर्वशरीरोंविषेअनुभवकरेजेपदार्थ हैं ॥ तिनपदार्थोंकेसंस्कार तथा पुण्यपापरूप कर्म यहदोनों ताजीवात्माकेसाथजावै हैं ॥ तहाँजाइकै सोपुण्यपापरूपकर्मतो याजीवकूं सुखदुःखभोगणेकेअनुकूलशरीरकीप्राप्तिकरैहै ॥ और पूर्वलेसंस्कार याजीवकूं तिसतिसजातिवालेशरीरकेव्यवहारोंविषे प्रवृत्तकरैं हैं ॥ और हेजनक ॥ यहजीवात्मा यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिकै दूसरेस्थूलशरीरकेआलंबनतैंविना स्थितहोवैनहीं ॥ किंतु दूसरेस्थूलशरीरकूंआलंबनकरिकैहीं यहजीवात्मा पूर्वलेस्थूलशरी

रकापरित्यागकरैहै ॥ तहाँदृष्टांत ॥ जैसे तृणजलौकानामा कोईकृमिविशेष तृणोंविषेभ्रमणकरै है ॥ तहाँ सोतृणजलौकाकृमि दूसरेतृणकूं आलंबनकरिकैही प्रथमतृणकापरित्यागकरैहै॥दूसरेतृणकेआलंबनतैंविना प्रथमतृणकापरित्यागकरैनहीं ॥ यहवार्त्ता सर्वलोकोंकूंअनुभव सिद्धहै ॥ तैसे यहजीवात्माभी दूसरेभावीशरीरकूंआलंबनकरिकैही यास्थूलशरीरकापरित्यागकरैहै दूसरेशरीरकेआलंबनतैंविना यहजी वात्मा प्रथमशरीरकापरित्यागकरैहैनहीं ॥ अब याहीअर्थकूं अन्यदृष्टांतकरिकैभी स्पष्टकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ जैसे यालोकविषे कोईमहा राजा अथवा कोईधनीपुरुष जो आपणेपूर्वजीर्णगृहकापरित्यागकरैं हैं ॥ सो दूसरेनवीनगृहकेसंपादनतैंविना परित्यागकरैंनहीं ॥ किंतु दूसरेनवीनगृहकूं संपादनकरिकैही सोमहाराजा तथाधनीपुरुष पूर्वलेजीर्णगृहकापरित्यागकरैं हैं ॥ तैसे यहजीवात्माभी दूसरेभावीशरीरके आलंबनतैंविना प्रथमशरीरकापरित्यागकरैनहीं॥किंतु दूसरेशरीरकूंआलंबनकरिकैही यहजीवात्मा प्रथमशरीरकापरित्यागकरैहै॥शंका॥ हेभगवन् ॥ जोपदार्थ परिच्छिन्नहोवैहै ॥ सोईहीपदार्थ एकस्थानकापरित्यागकरिकै दूसरेस्थानविषेजावैहै जैसे घटादिकपदार्थ परि छिन्नहैं ॥ यातैं एकदेशकापरित्यागकरिकै दूसरेदेशकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ तैसे यहआत्मादेव परिच्छिन्नहैनहीं ॥ किंतु यहआत्मासर्वत्रपूर्णहै ॥ यातैं इसशरीरकापरित्यागकरिकै आत्मा दूसरेशरीरविषे गमनसंभवैनहीं ॥ और जोकदाचित्इसशरीरकापरित्यागकरिकै आत्मा दूस रेशरीरविषेजावैगा ॥ तौघटादिकोंकीन्याईं आत्माभी परिच्छिन्नहीहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ यहआनंदस्वरूपआत्मा यद्यपि वास्तवतैं सर्वत्रपरिपूर्ण है॥ तथासर्वभेदतैंरहितहै॥यातैं पुण्यपापकेफलभोगणेवासतैं आत्माका परलोकविषेगमनसंभवैनहीं॥तथापि जैसे परिपूर्णआकाश घटरूपउपाधिकेसम्बन्धतैं गमनआगमनकूंप्राप्तहोवैहै॥तैसे बुद्धिरूपउपाधिकेतादात्म्यसंबंधतैं यहपरिपूर्णआत्माभीलोकां तरविषे गमनआगमनकूंप्राप्तहोवैहै॥ तात्पर्ययह॥घटरूपउपाधिकेसंबंधतैं जोघटाकाशविषे गमनआगमनप्रतीतहोवै है॥ सोगमनआगमन वास्तवतैंविचारकरिकैदेखियेतौ आकाशविषेसंभवैनहीं ॥ किंतु घटरूपउपाधिविषेही सोगमनआगमनरूपक्रियासंभवैहै ॥ तैसे बुद्धिउप हितआत्माविषे जोगमनआगमनरूपक्रिया प्रतीतहोवैहै ॥ सोगमनआगमनरूपक्रिया वास्तवतैंविचारकरियेतौ आत्माविषेसंभवै नहीं ॥

॥ ८२ ॥

किंतु बुद्धिरूपउपाधिविषेही सोगमनआगमनरूपक्रियासंभवै है॥ शंका ॥ हेभगवन् तृणजलौकाकीन्याईं इसशरीरविषेस्थितहुईबुद्धि दूस रेशरीरकूंप्राप्तहोवै है ॥ यहजोआपनैंकह्या सोसंभवै नहीं ॥ काहेतैं परिछिन्नमूर्त्तपदार्थका जोदूसरेदेशके साथ क्रिया जन्य संबंध होवै है॥ सोपूर्वदेशकेसाथ विभागहुएतैंविना संभवै नहीं ॥ किंतु प्रथमक्षणविषे मूर्त्तपदार्थमें क्रिया होवै है ॥ और द्वितीयक्षणविषे तामूर्त्त पदार्थका पूर्वदेशकेसाथ विभाग होवै है ॥ और तृतीयक्षणविषे तामूर्त्तपदार्थका पूर्व देशके साथ जो संयोगसंबंध है तासंयोगका नाश होवै है ॥ और चतुर्थ क्षणाविषे तामूर्त्तपदार्थका उत्तरदेशकेसाथ संयोगहोवै है॥ और पंचमक्षणविषे तामूर्त्तपदार्थकेक्रियाकानाशहोवै है॥ इसप्रकार पूर्वदेशकेसाथविभागहुएतैंअनंतरही मूर्त्तपदार्थका उत्तरदेशकेसाथसंबंधहोवै है ॥ यातैं मरणकालविषे इसशरीरविषेस्थितहुई बुद्धिका दूसरेशरीरकेसाथ संबंधसंभवैनहीं॥समाधान॥ हेजनक॥ जैसे तेजरूपचक्षुइंद्रिय आपणेगोलकाविषेस्थितहुआही वृत्तिद्वारा सूर्यचं द्रमादिकदूसरेदेशकूंप्राप्तहोवै है॥जोकदाचित्चक्षुइंद्रिय आपणेगोलकरूपस्थानकापरित्यागकरिकैही सूर्यमंडलादिकदेशकूं प्राप्तहोताहोवै तौ ताचक्षुइंद्रियकेगयेतैंअनंतर यहपुरुष अंधहोणाचाहिये॥इसप्रकार मरणकालविषे पूर्वलेपुण्यपापरूपकर्मकेवशतैं तथा पूर्वलेसंस्कारोंके प्रभावतैं तथापरमेश्वरकीइच्छा के प्रभावतैं यहबुद्धिभी यास्थूलशरीरविषेस्थितहुईही आपणीवृत्तिद्वारा दूसरे भावी शरीरकूं प्राप्त होवै है॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जैसे मरणकालविषे सोबुद्धि वृत्तिद्वारा दूसरेशरीरकूं प्राप्तहोवै है ॥ तैसे मरणतैंपूर्व जीवत् अवस्थाविषेभी सोबुद्धि वृत्तिद्वारा दूसरेभावीशरीरकूं किसवासतैं नहींप्राप्तहोती॥समाधान हेजनक ॥ जिसकालविषे यावर्तमानशरीरकेभोगदेणेहारेप्रारब्धकर्मो काक्षयहोवै है॥और भावीशरीरके भोगदेणेहारेकर्मोकाप्रादुर्भावहोवै है ॥ तिसीकालविषे अंतर्यामीपरमात्माकारिकैप्रेरणाकरीहुई सोबुद्धि आपणी वृत्तिद्वारा भावीशरीरकूंप्राप्तहोवै है ॥ अन्यकालविषे सोबुद्धि भावीशरीरकूंप्राप्तहोवै नहीं शंका ॥ हे भगवन् ॥ मरणकाल विषे याजीवकीबुद्धि जो कदाचित् भावीशरीरकूंप्राप्तहोती होवै ॥ तौमरणकालविषे सोबुद्धि मैं दूसरेशरीरकूंप्राप्तभईहूं या प्रकारका अनुभव किसवासतैंनहीं करती ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ जैसे चक्षुइंद्रिय जडहै तथा अत्यंतवेगवालाहै ॥ याकारणतैं सोचक्षुइंद्रिय आप णीवृत्तिद्वारा सूर्यादिकदेशकूंप्राप्तहोइकैभी मैंसूर्यमंडलकूंप्राप्तभयाहूं याप्रकारकाअनुभव करै नहीं ॥ तैसे यहबुद्धिभी पंचभूतोंकाकार्य

होणेतैं जडहै तथाअत्यंतगेवाली है ॥ यातैं मरणकालविषे सोबुद्धि वृत्तिद्वारा भावीशरीरकूंप्राप्तहोइकैभी मैंभावी शरीरकूं प्राप्तभई हूं याप्रकारकाअनुभवकरैनहीं ॥ और हेजनक ॥ पूर्वतृणजलौकाकेदृष्टांतकरिकै याजीवात्माकूं दूसरेशरीरकीप्राप्ति जो हमनैं तुमारेप्रति कथनकरीथी ॥ ताकहणेकायहअभिप्रायहै ॥ जैसे कोईमहाराजा जभी जीर्णगृहकापरित्यागकरिकै नवीनगृहविषेनिवासकरणेकीइच्छा करै है ॥ तभीतामहाराजाकेभृत्य तामहाराजाकेअभिप्रायकूंजाणिकै दूसरेनवीनगृहकूंत्यारकरैं हैं ॥ और तामहाराजाकेआगमनतैंपूर्वही तेराजाकेभृत्य प्रथम तानवीनगृहविषे हस्तीअश्वादिकराज्यसामग्रीकूंलेजावैं हैं ॥ ताअश्वादिकराज्यसामग्रीकूंदेखिकरिकै नगरवासीलोक परस्पर याप्रकारकाकथनकरैं हैं यह राजाआयाहै यहराजाआयाहै॥ तहाँ सो महाराजायद्यपि ताकालविषे पूर्वले जीर्ण गृहमें स्थितहै ॥ अथवा मार्गविषे है ॥ तथापि अश्वादिक राज्य समाग्रीकूं देखिकै ते नगरवासी लोक यहराजा नवीनगृहविषे आयाहै याप्रकारकाकथन करैं हैं तैसे यह जीवात्मारूपमहाराजा यास्थूलशरीररूपजीर्णगृहकापरित्यागकरिकै मरणतैं अनंतर जिस दूसरे शरीर रूप नवीन गृहकूंप्राप्तहोवैगा ॥ तिसदूसरेशरीररूपगृहकूं पुण्यपापकर्मरूपभृत्य पंचभूतोंकरिकैत्यारकरै हैं ॥ तहाँ जीवात्मारूपमहाराजाके पूर्वशरीर विषेस्थितहुएहीं तेपुण्यपापकर्मरूपभृत्य प्रथम बुद्धिकीवृत्तिरूपराज्यसामग्रीकूंताभावीशरीरविषेप्राप्तकरै हैं॥याप्रकारकेआभिप्रायकरिकैही पूर्वतृणजलौकाकेदृष्टांतसैं याजीवात्माकूं भावीशरीरकीप्राप्तिकही है॥अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकैनिरूपणकरै हैं हेजनक॥ यहजीवात्मा यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिकै जिसभावीशरीरकरिकै सुखदुःखरूपफलकूंभोगैगा ॥ सोभावीशरीर याजीवात्माकेभविष्यत् भोगका साधनहै ॥ और यहजीवात्मामरणकालविषे जिसशरीरकापरित्यागकरैहै ॥ सोशरीर याजीवात्माकेपूर्वभोगकासाधनहै ॥ यातैं याजीवा त्माका दोनोंशरीरोंकेसाथसंबंध संभवैहै और हेजनक ॥ जैसे यालोकविषे कोईपुरुष आपणेशरीरविषे पुष्पोंकीमालाकूंधारणकरै है ॥ अथवा वस्त्रोंकूंधारणकरैहै ॥ सोमाला तथावस्त्र जभी जीर्णभावकूंप्राप्तहोवैहैं॥ तभी सोपुरुष तामालाके तथावस्त्रके परित्यागकरणे कीइच्छाकरताहुआ दूसरेनवीनमालाकूं तथानवीनवस्त्रकूं वारंवारदेखै है ॥ तैसे मरणकालविषे यास्थूलशरीरकेपरित्यागकरणेकीइच्छा करताहुआ यहजीवात्मा पुण्यपापकर्मकेअनुसार भावीशरीरकूंदेखैहै॥तात्पर्ययह॥मरणकालविषे याजीवात्माकूं पुण्यपापकर्मकेअनुसार

जोभावीशरीरकाज्ञानहोवैहै ॥ सोभावीशरीरकाज्ञानहीं याजीवात्माकूं मरणकालविषे भावीशरीरकीप्राप्तिहै ॥ और हेजनक ॥ जैसे दाहकरणेहारा तथाप्रकाशकरणेहारा जोप्रज्वलितअग्निहै ॥ सोअग्नि आपणेतादात्म्यसंबंधकरिकै लोहपिंडकूंभी आपणे समान प्रकाशवाला तथादाहशक्तिवालाकरैहै ॥ और सोअग्नि जभी तालोहकेपिंडकापरित्यागकरै है ॥ तभी प्रकाशतैंरहित तथादा हशक्तितैंरहित जोलोहकापूर्वलास्वभावथा ॥ तिसीपूर्वलेस्वभावकूं सोलोहकापिंड प्राप्तहोवैहै ॥ तैसे यह आत्मादेवभी आपणेतादात्म्य संबंधकरिकै याजडशरीरविषे चैतन्यभावकीप्राप्तिकरैहै ॥ और मरणकालविषे यहचेतनआत्मा जभी यास्थूलशरीरकापरित्यागकरै है ॥ तभी यास्थूलशरीरका जैसा पूर्वलाजडस्वभावथा ॥ तिसीजडस्वभावकूं यहस्थूलशरीरप्राप्तहोवैहै ॥ और हेजनक ॥ जैसे अग्नि लोहके पिंडकाजोपरित्यागकरैहै ॥ सोपरित्यागही लोहकेपिंडकाहननहै ॥ तैसे यहचैतन्यआत्मा यास्थूलशरीरकाजोपरित्यागकरै है ॥ सोपरि त्यागही यास्थूलशरीरकाहननहै ॥ और हेजनक ॥ जैसे प्रज्वलितअग्निप्रथमलोहपिंडकापरित्यागकरिकै दूसरेनवीनलोहपिंडकूंप्राप्त होवैहै॥तिसदूसरेलोहपिंडकूंभी सोअग्नि आपणेतादात्म्यसंबंधकरिकै आपणेसमानहीरूपवानकरैहै॥तैसे यहजीवात्माभी यास्थूलशरीरका परित्यागकरिकै दूसरेनवीनशरीरकूंप्राप्तहोवै है॥ और यहआनंदस्वरूपजीवात्मा आपणेतादात्म्यसंबंधकरिकै जैसेपूर्वलेशरीरकूंचैतन्यरूप करताभया॥तथा आपणेसुखकासाधानमानताभया॥तैसे दूसरेशरीरकूंभी यहआत्मादेव आपणेतादात्म्यसंबंधतैंचैतन्यरूपकरैहै॥तथासुख कासाधनमानैहै ॥ और हेजनक ॥ जैसे यालोकविषे सुवर्णकारपुरुष एकहीसुवर्णकेपिंडतैं कभी कंकणकूंउत्पन्नकरैहै ॥ और कभी कुंड लकूंउत्पन्नकरै है ॥ इसप्रकार सोसुवर्णकारपुरुष एकहीसुवर्णकेपिंडकूं क्रमतैं नानाभावकीप्राप्तिकरैहै ॥ तैसे यहपरमात्मादेवभी एकहीअ विद्यातैं कभी मनुष्यशरीरकीउत्पत्तिकरैहै ॥ और कभी देवताशरीरकूंउत्पन्नकरैहै ॥ और कभी पशुशरीरकूंउत्पन्नकरैहै ॥ इसप्रकार सोपरमात्मादेव एकहीअविद्याकूंअनेकशरीरभावकीप्राप्तिकरैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्॥लोकविषे कारणकीविलक्षणतातैं कार्यकीविलक्षण ताहोवैहै ॥ जैसे मृत्तिकारूपकारणकीविलक्षणतातैं तथातंतुरूपकारणकीविलक्षणतातैं घटरूपकार्यकी तथापटरूपकार्यकी परस्परविल

क्षणताहोवैहै ॥ कारणोंकीविलक्षणतातैंविना कार्यकीविलक्षणताहोवैनहीं ॥ और यहांप्रसंगविषे मनुष्यादिकशरीरोंकापरिणामी उपादा
नकारणजोअविद्याहै सोएकहीहै ॥ तथामनुष्यादिकशरीरोंका विवर्तउपादानकारणजोचेतनहै सोभीएकहीहै ॥यातैं मनुष्यादिकशरीरों
विषेविलक्षणता नहींहोणीचाहिये ॥ समाधान ॥हेजनक ॥ यद्यपि चेतनआत्मा तथाअविद्यारूपकारणएकही है॥तथापि जीवोंकेपुण्यपा
परूपकर्मविलक्षणहैं ॥ यातैं तापुण्यपापरूपकारणकीविलक्षणताकरिकै शरीररूपकार्यभी विलक्षणहीहोवै हैं॥और हेजनक ॥ जिसमरण
कालविषे याशरीरकेभोगदेणेहारेकर्मोंकाक्षयहोवैहै ॥ तथा भावीशरीरकेभोगदेणेहारेकर्मोंकाप्रादुर्भावहोवैहै ॥ तिसमरणकालविषे यहजी
वात्मा पूर्वलेउत्कृष्टशरीरकूंभी निकृष्टजानैहै ॥ और भावीनिकृष्टशरीरकूंभी उत्कृष्टमानैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् मरणकालविषे यहजीवा
त्मा पूर्वलेउत्कृष्टशरीरकूं निकृष्टजानैहै ॥ और भावीनिकृष्टशरीरकूं उत्कृष्टजानैहै॥यहजोवचन आपनैं हमारेप्रतिकह्या॥सोआपकाकहणा
हमारेकूंआश्चर्यजैसालागैहै ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ यावार्तोविषे तूं आश्चर्यमतकर ॥मरणकालविषे पापकर्मरूपदोषकेप्रभावतैं याजीव
कीबुद्धि विपरीतभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं मरणकालविषे यहजीवात्मा वर्तमानउत्कृष्टशरीरकूं निकृष्टमानैहै ॥ और भावीनिकृष्टशरीरकूं
उत्कृष्टमानैहै॥तहांदृष्टांत ॥जैसे यालोकविषे कोईव्यभिचारिणीस्त्री किसीधनीपुरुषकूं किसीमंत्रकेप्रभावतैं तथा किसीऔषधिकेप्रभावतैं
आपणेवशकरिलेवैहै ॥ कैसीहै सोव्यभिचारिणीस्त्री कुष्ठरोगकरिकैयुक्तहै॥ तथा मृत्तिकाकरिकैजिसकाशरीर आवृतहै ॥तथा कर्णनासि
कातैंरहितहै ॥ ऐसीकुरूपव्यभिचारिणीस्त्रीकेवशकूंप्राप्तहुआ सोधनीपुरुष तावव्यभिचारिणीस्त्रीकूं इंद्राणीकेसमान सुंदरमानैहै॥और ताध
नीपुरुषकेगृहविषेस्थित जोआपणीस्त्रीहै सोइंद्राणीकेसमान सुंदरहै ॥ तथा सर्वगुणोंकरिकैयुक्तहै ॥ तथा पतिव्रताहै ॥ तथा कुलीनगृह
कीहै ॥ ऐसीपतिव्रतासुंदरस्त्रीकूं सोधनीपुरुष निकृष्टमानिकै ताका परित्यागकरिदेवैहै ॥ यहवार्ता लोकविषेप्रसिद्धहै ॥ तैसे मरणकाल
विषे पापकर्मकरिकै मोहितहुआ यहजीवात्मा सर्वसुखोंकरिकैसंपन्नदेवताशरीरकूं तथाचक्रवर्तीराजाशरीरकूं अत्यंतनिकृष्टमानै है ॥
और भावीहोणेहारेश्वानादिकनीचशरीरोंकूं यहजीवात्मा तामरणकालविषे अत्यंतउत्कृष्टकरिकैमानैहै ॥ हेजनक ॥ मरणकालविषे
जभी याजीवात्माका कोईपूर्वलापुण्यकर्म फलदेणेकूंसन्मुखहोवैहै॥तभी यहजीवात्मा यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिकै तापुण्यकर्मकेप्रभाव

तैं तथापूर्वलेशुभसंस्कारोंकेप्रभावतैं पितरलोकविषे तथागंधर्वलोकविषे तथादेवलोकविषे तथाप्रजापतिलोकविषेतथाब्रह्मलोकविषेउत्कृष्ट
देवताशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और मरणकालविषे जभीयाजीवकेपुण्यपापदोनों फलदेणेकूंसन्मुखहोवैं हैं ॥ तभी यहजीवात्मा यास्थूलशरी
रकापरित्यागकरिकै मनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोवै है ॥ और मरणकालविषे जभी याजीवात्माकाकोईपापकर्म फलदेणेकूंसन्मुखहोवै है ॥ तभी
यहजीवात्मा यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिकै तापापकर्मकेवशतैं श्वानादिकनीचशरीरोंकूंप्राप्तहोवै है ॥ इसप्रकार ब्रह्मातैंआदिलेके कीट
पर्यंत जितनेकआत्मज्ञानतैंरहितप्राणी हैं ॥ तेअज्ञानीजीव पुण्यपापकर्मकेशवतैं निरंतर संसाररूपशूलविषे भ्रमणकरैं हैं ॥ अब जिसशुद्ध
आत्माकेज्ञानतैं जीवोंकेसंसारकीनिवृत्तिहोवै है॥ तिसशुद्धआत्माकेस्वरूपका कथनकरणेवासतैं प्रथम आत्माकेआनंदरूपताकूंनिरूपण
करैं हैं ॥ हेजनक ॥ आत्माकाजोआनंदस्वरूप है॥सो सर्वत्रसमानही है॥ताआत्माकास्वरूपआनंदविषे किंचित्मात्रभी न्यूनअधिकता
नहीं ॥ और पूर्व मनुष्यलोकतैंआदिलेके ब्रह्मलोकपर्यंत जोआनंदकीन्यूनअधिकताहमनैंकथनकरीथी ॥ सोन्यूनअधिकता स्वभावतैं
आत्मास्वरूपआनंदविषेनहीं ॥ किंतु चेतनकेप्रतिबिंबकूंग्रहणकरणेहारी तथा चेतनकेआवरणकूंनिवृत्तकरणेहारी जोबुद्धि है ॥तावुद्धिके
संबंधकीअपेक्षाकरिकै आत्मास्वरूपआनंदकेअभिव्यक्तिकी न्यूनअधिकता होवै है ॥ तहाँ अधिक सत्वगुणवाली बुद्धिकेसंबंधतैं
आत्मास्वरूपआनंदकी अधिकअभिव्यक्तिहोवै है ॥और न्यूनसत्वगुणवालीबुद्धिकेसंबंधतैं आत्मास्वरूपआनंदकी न्यूनअभिव्यक्तिहोवै
है ॥अब याहीअर्थकूंदृष्टांतकरिकैस्पष्टकरैं हैं॥हेजनक॥ जैसे भेदतैंरहित एकहीआकाश सूचिविषे तथाघटविषे तथागृहविषे तथानगरविषे
स्थितहोइकैन्यूनअधिकताभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ तैसे एकहीआत्मास्वरूपआनंद बुद्धिकेसंबंधतैं न्यूनअधिकताभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ और
उपाधिकेसंबंधतैं जोउपहितपदार्थविषेधर्मप्रतीतहोवै है॥सोधर्म वास्तवतैंउपहितपदार्थविषे होवैनहीं ॥ किंतु उपाधिविषेहीसोधर्महोवै है॥
जैसे घटमठादिकउपाधियोंकेसंबंधतैं जोआकाशविषे न्यूनअधिकताप्रतीतहोवै है ॥ सोन्यूनअधिकता आकाशविषे वास्तवतैंहोवैनहीं॥
किंतु घटमठादिकउपाधियोंविषेहीं सोन्यूनअधिकता है ॥ तैसे बुद्धिरूपउपाधिकेसंबंधतैं जोआत्मास्वरूपआनंदविषे न्यूनअधिकता

प्रतीतहोवै है॥सोन्यूनअधिकता वास्तवतैं आत्मास्वरूपआनंदविषेहै नहीं ॥ किंतु बुद्धिरूपउपाधिविषेही सो न्यूनअधिकताहै ॥ याकारणतैंही शास्त्रविषे उपाधिशब्दका याप्रकारकाअर्थकह्याहै॥उपहितपदार्थकेसमीपस्थितहोइकैजोवस्तु आपणेधर्मोंका ताउपहितपदार्थविषे आरोपणकरैहै॥तावस्तुकानाम उपाधिहै॥सोयहाँप्रंसगविषे आत्माकास्वरूपआनंदकेसमीपस्थितहोइकै सोबुद्धि आपणेन्यूनअधिकताकूं आत्मास्वरूपआनंदविषेआरोपणकरै है ॥ याकारणतैं सोबुद्धि उपाधिरूप है ॥ उपाधिवालेपदार्थकानाम उपहित है ॥ यातैं हेजनक ॥ ब्रह्मलोकविषे स्थित जोसर्वतैंउत्कृष्टब्रह्माकाशरीर है ॥ तथा भूमिलोकविषेस्थित जोसर्वशरीरोंतैंनिकृष्टश्वानकाशरीर है इसतैंआदिलेके सर्वशरीरोंविषे अंतःकरणविशिष्टभोक्ताआत्माकी तथासुखदुःखरूपभोग्यकी किंचित्मात्रभी विषमतानहीं ॥ किंतु सर्वशरीरोंविषे समान है ॥ तात्पर्य यह ॥ जभी अंतःकरणविशिष्टभोक्ताआत्माकी तथासुखदुःखरूपभोग्यकीभी सर्वशरीरोंविषे विषमतासिद्धनहींभई॥ तभी आनंदस्वरूपशुद्धआत्माकीविषमता किसप्रकारसंभवैगी॥अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकैनिरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ जैसे कोद्रवादि कनिकृष्टअन्नकेभक्षणकरिकै निर्धनदरिद्रीपुरुष सुखकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ तैसे भक्ष्य भोज्य लेह्य चोष्य याचारिप्रकारके अन्नकेभक्षण करिकै महाराजा तथाधनीपुरुष सुखकूंप्राप्तहोवै है ॥ यातैं सुखकेभोक्ताविषे तथासुखरूपभोगविषे किंचित्मात्रभीविषमतानहीं ॥ और हेजनक ॥ जैसे क्षुधापिपासादिकोंकरिकै निर्धनदरिद्रीपुरुष दुःखकूंप्राप्तहोवै है॥तैसे क्षुधापिपासादिकोंकरिकैमहाराजा तथाधनीपुरुषभी दुःखकूंप्राप्तहोवै है ॥ यातैं दुःखकेभोक्ताविषे तथादुःखरूपभोगविषे किंचित्मात्रभी विषमतानहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ महाराजाविषे तथादरिद्रीपुरुषविषे यद्यपि सुखदुःखरूपफलकी विषमतानहीं है तथापि तासुखदुःखरूपफलकीउत्पत्तिके जेअन्नपानादिक साधन हैं ॥ तिनोंकी परस्परविषमता प्रत्यक्षप्रतीतहोवै है ॥ यातैं ताअन्नपानादिक साधनोंकी विषमतातैं सुखदुःखरूपफलकीभी विषमताहोवैगी॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ सुखदुःखरूपफलकीउत्पत्तिके दोप्रकारकेसाधनहोवै हैं ॥ एकतौ बाह्यसाधनहोवै हैं ॥ और दूसरे अंतरसाधनहोवै हैं तहाँ अन्नपानादिक बाह्यसाधन हैं ॥ और रागद्वेषादिक अंतरसाधन हैं ॥ तहाँ यद्यपि अन्नपानादिकबाह्यसाधनोंविषे किंचित्मात्र

कल्पितविषमतासंभवैहै ॥ तथापि रागद्वेषादिकअंतरसाधनोंविषे किंचित्मात्रभी विषमतासंभवैनहीं॥काहेतैं क्षुधा १ पिपासा २ भय ३ निद्रा ४ प्रियवस्तुविषेराग ५ अप्रियवस्तुविषेद्वेष ६ आत्माकूंआवरणकरणेहारामोह ७ विष्टामूत्रकेपरित्यागतैंपूर्व विषमदशाकीप्राप्ति ८ यहअष्टप्रकारकेदोप जीवोंके सुखका तथादुःखका कारणहोवैं हैं ॥ तहाँ निवृत्तिकूंप्राप्तहुए यहअष्टदोप जीवोंके सुखकाकारणहोवैं हैं ॥ और विद्यमानहुएयहअष्टदोप जीवोंके दुःखकाकारणहोवैं हैं ॥ तेअष्टदोप सर्वप्राणियोंविषेसमान हैं ॥ यातैं सुखदुःखरूपफलभी सर्वप्राणियोंविषेसमानहै ॥और हेजनक॥ दरिद्रीपुरुषोंविषे तथामहाराजाविषे तथाश्वानादिकोंविषे यद्यपि लोकोंकीदृष्टिकरिकै महान्विषमता प्रतीतहोवै है ॥ तथापि अष्टदोपरूपकारणोंविषे तथासुखदुःखरूपफलविषे किंचित्मात्रभीविषमतानहीं॥यातैं सर्वशरीरोंतैंउत्कृष्ट जोब्रह्माकाशरीरहै ॥ तथा सर्वशरीरोंतैंनिकृष्ट जोश्वानकाशरीरहै ॥ तिनदोनोंविषे किंचित्मात्रभी विषमतानहीं॥अब सर्वशरीरोंकीसमानता सिद्धकरणेवासतै सर्वशरीरोंविषे अष्टदोषोंकाअनुगतपणा निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ जैसे श्वानशरीरविषे कामक्रोधादिकदोप विद्यमानहैं ॥ तैसे हिरण्यगर्भशरीरविषेभी कामक्रोधादिकदोप विद्यमानहैं ॥ यातैं कामक्रोधादिकदोप सर्वशरीरोंविषेअनुगतहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् सर्वजगत्के उत्पत्ति स्थिति लयकूंकरणेहारा जो सूत्रात्मारूपहिरण्यगर्भ है ॥ ताकेविषे यद्यपि कामक्रोधादिकसंभवै हैं ॥ तथापि क्षुधापिपासादिकदोप हिरण्यगर्भविषेसंभवैनहीं ॥ समाधान ॥हेजनक॥ जगत्काईश्वरजोहिरण्यगर्भ है॥सो श्वानतैंभीनिकृष्टहै ॥ काहेतैं क्षुधाकरिकैआतुरहुएभी श्वानादिक आपणेपुत्रोंकूंभक्षणकरैनहीं ॥ और यहहिरण्यगर्भतौ विराट्रूपपुत्रकूंउत्पन्नकरिकै तिसीविराट्रूपपुत्रकूं भक्षणकरणेवासतै प्रवृत्तहोताभया ॥ यहवार्त्ता चतुर्थअध्यायविषे विस्तारतैंकहिआये हैं ॥ यातैं हिरण्यगर्भविषेभी क्षुधापिपासादिकदोष हैं॥और हेजनक श्वानादिकपशु जोकदाचित् आपणेपुत्रोंकूंभक्षणकरणेविषेप्रवृत्तहोवैं॥तौ तिनश्वानादिकोंकीनिंदा कोई प्राणीकरैनहीं ॥ यातैं श्वानादिकपशुवोंकूं पापकर्मकेकरणेविषे लोकोंकेनिंदाकाभयनहीं ॥ और संपूर्णजगत्कागुरु जोहिरण्यगर्भ है॥ सोहिरण्यगर्भ जोकदाचित् पुत्रभक्षणादिकपापकर्मविषे प्रवृत्तहोवैगा ॥ तौ सर्वलोक ताहिरण्यगर्भकीनिंदाकरैंगे॥ तालोकनिंदाकाभय हिरण्य

गर्भकूंहै ॥ याकारणतैंभी सोहिरण्यगर्भ श्वानादिकोंतैंनिकृष्टहै ॥ और हेजनक श्वानके जोभषणादिरूपव्यापारहैं ॥ तेव्यापार चौरादिकों कीनिवृत्तिकरैहैं ॥ यातैं तेश्वानकेभषणादिकव्यापार गृहवालेपुरुषके सुखकेसाधनहैं ॥ और याहिरण्यगर्भके जे जगतकीउत्पत्तिआदिक व्यापारहैं ॥ तेव्यापार किसीप्राणीकेसुखकेसाधननहीं ॥ याकारणतैंभी सोहिरण्यगर्भ श्वानादिकोंतैंनिकृष्टहै ॥ हेजनक ॥जोवादी हिरण्य गर्भकेव्यापारोंकूं जीवोंकेसुखकासाधन मानैहै ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ जगत्कीउत्पत्तिआदिक जेहिरण्यगर्भकेव्यापारहैं ॥ तेव्यापार कर्मीपुरुषोंके सुखकासाधनहैं ॥ अथवा उपासकपुरुषोंके सुखकासाधनहैं ॥ अथवा ज्ञानीपुरुषोंके सुखकासाधनहैं ॥ तहाँ हिरण्यग र्भकेव्यापार कर्मीपुरुषोंकेसुखकासाधनहैं यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं॥काहेतैं रात्रिविषे जभी हिरण्यगर्भ निद्राकरै है तभी स्वर्गादिकतीनलोकोंकाप्रलयहोइजावैहै॥जोप्रलयकूं शास्त्रविषे नैमित्तिकप्रलयकहेहैं ॥यातैं ताहिरण्यगर्भका निद्रारूपव्यापार कर्मी पुरुषोंकेसुखकाहेतुनहीं ॥ उलटा कर्मीपुरुषोंकेभयकाहेतुहै ॥ और ताहिरण्यगर्भकाव्यापारउपासकपुरुषोंकेसुखकासाधनहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं उपासनाकेप्रभावतैं जेपुरुषहिरण्यगर्भलोकविषेजावै हैं ॥ तिनपुरुषोंकूं हिरण्यगर्भकेसमान ऐश्वर्यहोवैनहीं ॥ यातैं हिरण्यगर्भकेऐश्वर्यकूंदेखिकै तेउपासकपुरुष ईर्ष्याकरिकै परमदुःखकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ यातैं हिरण्यगर्भकाऐश्वर्यरूपव्यापार उपासकपुरुषोंकेसुखकाहेतुनहीं ॥ उलटा उपासकपुरुषोंकेदुःखकाहेतुहै ॥ और हिरण्यगर्भकाऐश्वर्यरूप व्यापार ज्ञानीपुरुषोंकेसुखकासाधनहै ॥ यहतीसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं जबपर्यंत यापुरुषकूं ब्रह्मलो ककीप्राप्तिकीइच्छाहोवै है ॥ तबपर्यंत यापुरुषकूं आत्माकासाक्षात्कारहोवैनहीं ॥ यातैं ब्रह्मलोकविषयकइच्छाकीउत्पत्तिद्वारा सोहिरण्य गर्भकाऐश्वर्यरूपव्यापार ज्ञानीपुरुषोंकेभयकाहीकारणहै ॥ यातैं हिरण्यगर्भकाव्यापार किसीप्राणीकेसुखकासाधननहीं ॥ उलटा जीवोंकेदुःखकासाधनहै ॥ अथवा ॥ संपूर्णस्थूलप्रपंचकाकारण जोविराट्रूपभगवान्है ॥ ताकै भक्षणकरणे वासतै हिरण्यगर्भकाजो प्रवृत्तिरूपव्यापारहै ॥ सोव्यापार किसीप्राणीकेसुखकासाधननहीं ॥ किंतु सर्वजीवोंकेदुःखकाहीसाधनहै ॥ याकारणतैं श्वानादिकों तैंभी सोहिरण्यगर्भ निकृष्टहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जोकदाचित् हिरण्यगर्भ तथाश्वानादिकपशु दोनोंसमानहोवैं ॥ तौशास्त्रविषे

जोहिरण्यगर्भकीउत्कृष्टताकही है॥तथा श्वानादिकोंकीनिकृष्टताकही है॥सोशास्त्र असंगतहोवैगा ॥समाधान॥ हेजनक ॥ सुखदुःखरूप फलकूंलेके तथाअष्टदोषरूपसाधनोंकूंलेके तथापांचभौतिकशरीरकूंलेके शास्त्रनैं हिरण्यगर्भकीउत्कृष्टतानहीं कही ॥ किंतु ब्रह्मविद्याकूंलैके शास्त्रनैं हिरण्यगर्भकीउत्कृष्टताकही है॥सोब्रह्मविद्या श्वानादिकोंविषे है नहीं॥यातैं श्वानादिकनिकृष्टहैं॥यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ मैंब्रह्म रूपहूं याप्रकारकाअभेदज्ञान जिसपुरुषकूंप्राप्तभयाहै॥सोईहींपुरुष सर्वतैं उत्कृष्टहै और जिसपुरुषकूं सोअभेदज्ञान नहींप्राप्तभया ॥ सो पुरुष श्वानतैंभीनिकृष्टहै॥और हेजनक ॥ जिसआनंदस्वरूपआत्माकेज्ञानतैं जीवोंकूं उत्कृष्टताप्राप्तहोवै है॥ सोआनंदस्वरूपआत्मा हिरण्यगर्भविषे तथा श्वानविषे तथातुमारेविषे तथाहमारेविषे तथाअन्यप्राणियोंविषे सर्वत्र समानव्यापक है ॥ और सोआनंदस्वरूपआत्माहीं ब्रह्मरूपहै ॥ इतनैंकरिकै सर्वकाअधिष्ठानरूपजोशुद्धआत्माहै ॥ ताकास्वरूप निरूपणकऱ्या॥ अब बुद्धिआदिकउपाधियोंके तादात्म्यसं बंधतैं जोआत्माके कल्पितनानारूपहैं तिनोंकानिरूपणकरैं हैं ॥हेजनक॥ बुद्धिरूपउपाधिकेतादात्म्यसंबंधतैं यहआत्मादेव विज्ञानमयसं ज्ञाकूं प्राप्तहोवै है ॥ और मनरूपउपाधिकेसंबंधतैं यहआत्मादेव मनोमयसंज्ञाकूंप्राप्तहोवै है॥और प्राणरूपउपाधिकेसंबंधतैं यहआत्मादेव प्राणमयसंज्ञाकूंप्राप्तहोवै है ॥ और श्रोत्र त्वक् चक्षु रसन घ्राण यापंचइंद्रियरूपउपाधिकेसंबंधतैं यहआत्मादेव क्रमतैं श्रोत्रमय त्वग्मय चक्षुमय रसनमय घ्राणमय इत्यादिकसंज्ञाकूंप्राप्तहोवै है ॥और आकाश वायु तेज अप् पृथिवी यापंचभूतरूपउपाधिकेसंबंधतैं यहआत्मा देव क्रमतैं आकाशमय वायुमय तेजोमय अप्मय पृथिवीमय इत्यादिकसंज्ञाकूंप्राप्तहोवै है ॥ और अज्ञानरूपतमकेसंबंधतैं यहआत्मादेव तमोमयसंज्ञाकूंप्राप्तहोवै है॥और कामक्रोधरूपउपाधिकेसंबंधतैं यहआत्मादेव काममयसंज्ञाकूं तथाक्रोधमयसंज्ञाकूं प्राप्तहोवै है॥और धर्म रूपउपाधिकेसंबंधतैं यहआत्मादेव धर्ममयसंज्ञाकूंप्राप्तहोवै है॥और सुषुप्तिविषेस्थितजोधर्मकाअभावहै ॥ तथा जलताडनादिकनिष्फल क्रियाविषे स्थित जोधर्मकाभेदहै ॥ तथा हिंसादिकनिषिद्धक्रियाविषेस्थित जोधर्मकाविरोध है॥तिनतीनोंकेसंबंधतैं यहआत्मादेव अधर्म मयसंज्ञाकूंप्राप्तहोवै है॥हेजनक॥ बहुतक्याकहैं ॥ जितनेकस्थूलसूक्ष्मपदार्थ हैं ॥ तिनसंपूर्णोंकेतादात्म्यसंबंधतैं यहआत्मादेव सर्वमय

सज्ञाकूंप्राप्तहोवै है॥और हेजनक ॥ यहआत्मादेव नानाप्रकारके वेदविहितकर्मोंकूंकरै है ॥ तथा निषिद्धकर्मोंकूंकरै है ॥ याकारणतैं यहआत्मादेव यथाकारिसंज्ञाकूंप्राप्तहोवै है॥और यहआत्मादेव नानाप्रकारकेआचारोंकूंकरै है॥ याकारणतैं यहआत्मादेव यथाचारीसंज्ञा कूंप्राप्तहोवै है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ धर्मअधर्मरूपकर्मतैं आचार भिन्नहैनहीं ॥ किंतु कर्मोंकानामहीआचार है॥यातैं यथाचारी यहआ त्माकानाम संभवैनहीं ॥समाधान॥ हेजनक ॥ यद्यपि धर्मअधर्मरूपकर्मतैं आचार भिन्ननहीं है॥ तथापि कर्मतैं आचारविषेइतनीविशे षताहै ॥ जिसकर्मकूं वेदभगवान् पुरुषोंकेसुखकासाधनरूपकरिकै कथनकरै है ॥ ताकर्मकानाम धर्म है ॥ जैसे अग्निहोत्रादिकहैं ॥ और जिसकर्मकूं वेदभगवान् पुरुषोंकेसुखकासाधनरूपकरिकै कथनकरै है ॥ ताकर्मकानाम अधर्म है ॥ जैसे ब्रह्महत्यादिक हैं॥और जो कर्म शास्त्रकरिकैप्रतिपादितनहींहोवैहै॥किंतु देशकीपरंपरातैं तथाआपणेकुलकीपरंपरातैं प्राप्तहोवै है॥ताकर्मकानाम आचारहै ॥ सो आचा रभी दोप्रकारकाहोवै है॥एकतौ विहितआचारहोवै है॥ और दूसरा निषिद्धआचारहोवै है॥तहाँ जिसआचारकूं पितापितामहादिकवृद्धपु रुष सुखकासाधनरूपकरिकै कथनकरैं हैं॥सोआचार विहितहोवै है॥और जिसआचारकूं पितापितामहादिकवृद्धपुरुष दुःखका साधनरूप कारिकै कथनकरैं हैं ॥ सोआचार निषिद्धहोवै है ॥हेजनक॥ यहआत्मादेव जभी लोकविहितशुभकर्मोंकूंकरै है॥तथा शास्त्रविहितशुभक र्मोंकूंकरै है॥तभीयहआत्मादेव साधुकारीसंज्ञाकूंप्राप्तहोवै है॥और लोककरिकै तथाशास्त्रकरिकै निषिद्धजेकर्म हैं ॥ तिननिषिद्धकर्मोंकूं जभीयहआत्मादेवकरै है॥ तभीयहआत्मादेव असाधुकारीसंज्ञाकूंप्राप्तहोवै है॥यहाँ संज्ञाशब्दकरिकै नामकाग्रहणकरणा॥और हेजनक॥ जभी यहआत्मादेव शास्त्रकरिकैविधानकरेशुभकर्मोंकूंकरै है॥तभी देवतादिकउत्कृष्टशरीरोंकूंप्राप्तहोवै है॥और जभी यहआत्मादेव शास्त्र करिकैनिषिद्धअशुभकर्मोंकूंकरै है॥तभी श्वानादिकनीचशरीरोंकूंप्राप्तहोवैहै इसप्रकार पुण्यपापकर्मकेवशतैं यहजीवात्मा निरंतर संसारवि षेभ्रमणकरै है॥इतनैंकरिकै बुद्धिआदिकउपाधियोंकेसंबंधतैं आत्माके विज्ञानमयादिकअनेकरूपोंकानिरूपणकरा॥अब तिनविज्ञानमया दिकरूपोंविषे कल्पितरूपताके स्पष्टकरणेवासतै ॥ अधिष्ठानआत्माविषे तिनविज्ञानमयादिकरूपोंकेअभावकूंनिरूपणकरैं हैं॥हेजनक ॥

यहआनंदस्वरूपआत्मा असंगहै ॥ यातैं याआत्मादेवविषे वास्तवतैं पुण्यपापदोनोंनहीं हैं ॥ और याआनंदस्वरूप आत्माविषे लौकिकआचारभीनहीं हैं ॥ तथा धर्मभी आत्माविषेनहीं है ॥ और धर्मकाअभावरूप तथाधर्मकाभेदरूप तथाधर्मकाविरोधरूप जोअधर्म है सोअधर्मभी याआनंदस्वरूपआत्माविषेनहीं है ॥ और अज्ञानरूपजोअंतरतमहै ॥ तथा अंधकाररूपजोबाह्यतमहै ॥ यहदोनोंप्रकारकातमभी आत्माविषेनहीं है॥और आकाशादिकपंचभूतभी आत्माविषेनहीं हैं और वाक्आदिकदशइंद्रियभी आत्माविषे नहीं हैं ॥ और क्रियाशक्तिवालाजोप्राणहै सोप्राणभी आत्माविषेनहीं है॥और ज्ञानशक्तिवालीजोबुद्धिहै तथा मनहै यहदोनोंभी आत्मा विषेनहीं हैं ॥ और प्राप्तिकालविषेतथाअप्राप्तिकालविषेदुःखकीप्राप्तिकरणेहारे सुखकीप्राप्तिकरणेहारे जेशब्दस्पर्शादिकविषयहैं॥ते विष यभी आत्माविषेनहीं हैं ॥ इसतैंआदिलेके जितनाकस्थूलसूक्ष्मजगत्है ॥ सोजगत् अधिष्ठानआत्माविषे वास्तवतैंनहीं है ॥ और हेजनक ॥ जोपदार्थ जिसअधिष्ठानविषे वास्तवतैंहोवैनहीं ॥ और तिसीअधिष्ठानविषे जोकदाचित् सोपदार्थ प्रतीतहोवै ॥ तौ सोपदार्थ मिथ्याहीहोवै है जैसे रज्जुरूपअधिष्ठानविषे सर्प वास्तवतैं हैनहीं और तिसीरज्जुरूपअधिष्ठानविषे दीपकेप्रभावतैं सोसर्पप्रतीतहोवैहै॥यातैं सोसर्पमिथ्याहै ॥ तैसे आनंदस्वरूपआत्माविषे यहजगत्वास्तवतैं हैनहीं ॥ और आत्माविषे यहजगत् प्रतीतहोवैहै॥याकारणतैं यहजग त्भी मिथ्याही है ॥ हेजनक ॥ जिसअधिष्ठानआत्माविषे यहसंपूर्णजगत्कल्पितहै सोअधिष्ठानआत्मा कैसाहै ॥ आनंदस्वरूपहै॥तथा स्वयंज्योतिरूपहै ॥ तथा मनवाणीकाअविषयहै तथा सजातीयभेद विजातीयभेद स्वगतभेद यातीनप्रकारकेभेदतैंरहितहै हेजनक ॥ ऐसाआनंदस्वरूपआत्मा यद्यपि सर्वत्रसमानव्यापकहै ॥ तथापि जैसे सर्वत्रव्यापकसूर्यकाप्रकाश सूर्यकांतमणिविषे विशेषकरिकैस्फुरण होवै है ॥ तैसे यहआत्मादेवभी तुमारेहृदयविषे तथाहमारेहृदयविषे तथाअन्यप्राणियोंकेहृदयविषे विशेषकरिकैस्फुरणहोवै है ॥ और हेजनक ॥ जैसे वास्तवतैंसंगतैंरहितजोआकाशहै ॥ सोआकाश गंधर्वनगरकाकारणहोवै है॥तैसे वास्तवतैंसंगतैंरहितजोअद्वितीयआत्मा है॥सोआत्मा याकल्पितजगत्काकारणहोवै है॥हेजनक॥ऐसाअद्वितीयआनंदस्वरूपआत्मा आपणेवास्तवस्वरूपकेअज्ञानतैं नानाप्रका

रकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवै है ॥ अब बुद्धिकेतादात्म्यसंबंधकरिकै विज्ञानमयसंज्ञाकूंप्राप्तहुआ यहआत्मादेव जिनदुःखोंकूंप्राप्तहोवै है॥तिनदुःखों कानिरूपणकरै हैं ॥ हेजनक ॥ यहआनंदस्वरूपआत्मादेव यद्यपि सर्वत्रव्यापकहै ॥ तथापि परिच्छिन्नबुद्धिकेसाथ तादात्म्यसंबंधकूंप्राप्त होइकै यहआत्मादेव शुष्कतुंबीकीन्याईं अत्यंतलघुताकूंप्राप्तहोवै है ॥और जन्ममरणादिरूपसंसारकेकारण जेअविद्याकामकर्म हैं॥तिनों केसंबंधकूं यहविज्ञानमयआत्मा प्राप्तहोवै है ॥ और हेजनक ॥ जैसे यालोकविषे क्रीडाकरतेहुएबालक हस्तविषेदंडकूंग्रहणकरिकै कंदुक कूं दशोदिशाविषेभ्रमणकरावै हैं ॥ एकक्षणमात्रभीताकंदुककूं भूमिविषेठहरणेदेवैनहीं ॥ तैसे पुण्यपापरूपकर्म याजीवकूं नानाप्रकारकी योनियोंविषेप्राप्तकरैं हैं॥और हेजनक॥जैसे यालोकविषे कूपादिकोंतैंजलकेनिकासनेकासाधन जोअरघटनामायंत्रहै॥तायंत्रकेऊपरस्थित जोदीर्घरज्जुहै ॥ तारज्जुकेसाथबांधीहुई जेमृत्तिकाकीघटियां हैं ॥ तेघटियां कूपादिकोंतैंजलकाग्रहणकरिकै ऊपरआइके ताजलकापरि त्यागकरैं हैं ॥ पुनःतेघटियां नीचेजाइकै कूपादिकोंतैंजलकाग्रहणकरिकै ऊपरआइकै ताजलकापरित्यागकरैं हैं ॥ इसप्रकार तेघटियांअ नेकवारजलकाग्रहणकरैं हैं ॥ और अनेकवार ताजलकापरित्यागकरैं हैं ॥ तैसे यहजीवात्माभी पुण्यपापरूपकर्मकेवशतैं अनेकप्रकारके ऊंचनीचशरीरोंकूंग्रहणकरिकै पुनःतिनशरीरोंकापरित्यागकरै है॥कदाचित् यहजीवात्मा पातालकूंप्राप्तहोवै है॥और कदाचित् यहजीवा त्मा नरककूंप्राप्तहोवै है॥और कदाचित् यहजीवात्मा स्वर्गादिकलोकोंकूंप्राप्तहोवै है और कदाचित् यहजीवात्माब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवै है ॥ इसप्रकार पुण्यपापरूपकर्मकेवशतैं यहजीवात्मा अनेकप्रकारकेशरीरोंकूंप्राप्तहोवै है ॥और हेजनक॥ किसीपुण्यकर्मकेप्रभावतैं यहजीवा त्मा जभी ब्रह्माकेशरीरकूंप्राप्तहोवै है तभी ताब्रह्माकेशरीरकूंहीं आपणाआत्मारूपकरिकैमानै है॥और किसी पापकर्मकेप्रभावतैं यहजी वात्मा जभी श्वानकेशरीरकूंप्राप्तहोवै है॥तभी ताश्वानकेशरीरकूंहीं आपणाआत्मारूपकरिकैमानै है इसप्रकार पुण्यपापरूपकर्मकेवशतैं यहविज्ञानमयआत्मा जिसजिसशरीरकूंप्राप्तहोवै है ॥ तिसतिसशरीरकूं आपणाआत्मारूपकरिकैहींमानै है ॥और हेजनक॥ यहविज्ञान मयआत्मा जभी पुण्यकर्मकेक्षयहुए ताब्रह्मकेशरीरकापरित्यागकरै है ॥ तभी यहजीवात्मा ताब्रह्माकेशरीरकूंश्वानकेविष्ठासमान

अत्यंतनिकृष्टमानै है॥और यहजीवात्मा पापकर्मकेक्षयहुए जभी ताश्वानशरीरकापरित्यागकरै है॥तभी यहजीवात्मा ताश्वानशरीरकूंभी अत्यंतनिकृष्टमानै है ॥ इसप्रकार जिसजिसशरीरकूं यहजीवात्मापरित्यागकरै है ॥ तिसतिसशरीरकूं यहजीवात्मा श्वानकेविष्ठासमान अत्यंतनिकृष्टमानै है॥ और हेजनक ॥ यहविज्ञानमयआत्मायास्थूलशरीरकापरित्यागकरिकै ब्रह्मातैंआदिलेके श्वानपर्यंत जिसजिसशरी रकूंप्राप्तहोवै है॥तिसतिसशरीरकेआहारोंकूं तथा स्त्रीपुत्रादिकबांधवोंकूं सर्वतैं अधिककरिकैमानै है॥और हेजनक॥यहविज्ञानमयआत्मा जभी यास्थूलशरीरविषे आत्मावुद्धिकरैहै॥तभी तास्थूलशरीरकेदाहतैं आपणादाहमानैहै॥और यास्थूलशरीरकेचंदनादिकपूजनतैं आप णापूजनमानै है ॥ और स्थूलशरीरकेजन्ममरणतैं आपणाजन्ममरणमानै है॥इसप्रकार शरीरादिकोंविषे आत्मबुद्धिकरिकै यहविज्ञानमय आत्माअनेकप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवै है ॥ अब नरककेदुःखोंकानिरूपणकरै हैं ॥हेजनक॥ यद्यपि यासंसारविषेदुःखरूपता तुमनैंअनंत वार अनुभवकरी है ॥ तथापि तिनदुःखोंकेस्मरणकरावणेवासतै यत्किंचितदुःखकूं मैं तुम्हारेप्रतिकथनकरताहूं॥तिनदुःखोंकूं तूं सावधा नहोइकैश्रवणकर ॥ हेजनक ॥ यहविज्ञानमयआत्मा जभी यास्थूलशरीरकापरित्यागकरै है ॥ तभी अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवै है॥ तिनदुःखोंकाकथन पूर्व मैंने तुम्हारेप्रतिकरा है ॥ यातैं तिनमरणकालकेदुःखोंका पुनःहम कथनकरतेनहीं॥याकारणतैं अभी नरककेदुः खोंकूं कथनकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ यहविज्ञानमयआत्मा एकशरीरकापरित्यागकरिकै दूसरेशरीरकूं अवश्यप्राप्तहोवै है ॥तहाँ पूर्वलेपापकर्म केवशतैं यहजीवात्मा जभी नरककेशरीरकूंप्राप्तहोवै है ॥ तभी तानरकविषे अनेकप्रकारकेदुःखोंकूँ यहजीवप्राप्तहोवै है॥जिननरककेदुःखों कूंस्मरणकरणेतैंभी हमारेकूं भयकीप्राप्तिहोवै है ॥ शंका ॥हेभगवन्॥ जैसे यालोकविषे जिसजीवकूं बहुतदुःखकीप्राप्तिहोवै है॥तिसजीव काशरीर नाशकूंप्राप्तहोवै है ॥ तैसे नरकविषे बहुतदुःखकरिकै याजीवकाशरीर नाशकूं क्योंनहीं प्राप्तहोता ॥ समाधान ॥हेजनक॥जैसे स्वप्नअवस्थाविषे याजीवकूंनानाप्रकारकेदुःखप्राप्तहोवै हैं॥तौभी ताजीवकेस्थूलशरीरकानाशहोवैनहीं ॥ तैसे नरकविषे नानाप्रकारकेदुः खोंकीप्राप्तिहुएभी याजीवका यमयातनाका शरीर नाशकूं प्राप्तहोवै नहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ जिनपापकर्मोंने नरकविषे याजीवकूंदुःखकी

प्राप्तिकरणी है ॥ तेपापकर्म ताशरीरकूंनाशहोणेदेवैनहीं॥और हेजनक॥यामनुष्यलोकविषे यापुरुषनैं अन्यकिसीप्राणीकूं जिसशरीरकरि
के जिसमनकरिकै जिसवाणीकरिकै जैसेदुःखकीप्राप्तिकरीहै॥सोपुरुष जभी नरकविषेजावैहै॥तभी तापुरुषकूं सोअन्यप्राणी तिसीशरीरक
रिकै तिसीमनकरिकै तिसीवाणीकरिकै तिसदुःखतैंकोटिगुणाअधिकदुःखकीप्राप्तिकरै है ॥ इतनैंकरिकै सामान्यतैंनरकदुःखोंकानिरूप
णकरा अब विशेषकरिकै तिनदुःखोंकानिरूपणकरै हैं ॥ हेजनक ॥ यामनुष्कलोकविषे जोपुरुष मार्गविषे चोरीआदिकउपद्रवों
कूंकरै है ॥ सोपुरुष जभी मरिकैनरककूंप्राप्तहोवै है ॥ तभी तापुरुषकाअत्यंतसमीपमार्गभी कोटियोजनपरिमाणविस्तारवालाहोवै है ॥
तिसमार्गविषेचलताहुआयहपुरुष परमदुःखकूंप्राप्तहोवै है ॥ और हेजनक ॥ यामनुष्यलोकविषे जोपुरुष पादत्राणकीचोरीकरै है॥सोपुरुष
जभी मरिकैनरककूंप्राप्तहोवैहै॥तभी तापुरुषकेपादोंविषे विषययुक्तलोहेकेतीक्ष्णकंटकलागै हैं॥ताकरिकै यहपुरुष परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहै॥
और हेजनक ॥ यामनुष्यलोकविषे जोपुरुष अन्नकी तथाजलकी चोरीकरै है ॥ सोपुरुष जभी मरिकैनरककूंप्राप्तहोवै है ॥ तभी सोपुरुष
क्षुधाकरिकै तथातृषाकरिकै परमदुःखकूंप्राप्तहोवै है ॥ और हेजनक ॥ यामनुष्यलोकविषे जोपुरुष वस्त्रोंकीचोरीकरै हैं ॥ अथवा जोपु
रुष आपणेमातापितादिकवृद्धोंकेसमीप बालकभावसैंनहींरहै है किंतु अहंकारीहोइकैरहै है॥सोपुरुष जभी मरिकैनरककूंप्राप्तहोवैहै॥तभी
तापुरुषकेवस्त्रोंकूं यमकेदूत हरणकरै हैं ॥ ताकरिकै सोपुरुष परमदुःखकूंप्राप्तहोवै है ॥ और हेजनक ॥ यामनुष्यलोकविषे जोपुरुष
सुवर्णकीचोरीकरै है ॥ सोपुरुष जभी मरिकैनरककूंप्राप्तहोवै है॥तभी तापुरुषकीसुवर्णकीत्वचाबनाइकै यमकिंकर तापुरुषकेत्वचाकाछे
दनकरैं हैं ॥ ताकरिकै सोपुरुष परमदुःखकूंप्राप्तहोवै है ॥ और हेजनक ॥ यामनुष्यलोकविषे जोपुरुष ब्राह्मणकूं हननकरै है ॥ सोपुरुष
जभी मरिकैनरककूंप्राप्तहोवै हैं ॥ तभी जैसेलोहकापुरुष लोहेकेमुद्गरकरिकै तप्तलोहेकूं ताडनकरै है ॥ तैसे यमकिंकर लोहेकेमुद्
गरोंकरिकै तात्रह्महत्यारेपुरुषकेमस्तककूं ताडनकरैं हैं ताकरिकै सोपुरुष परमदुःखकूंप्राप्तहोवै है ॥ और हेजनक ॥ यामनुष्यलोकविषे
जोपुरुष मदिरापानकरै है ॥ सोपुरुष जभी मरिकैनरककूंप्राप्तहोवै है ॥ तभी यमकिंकर तापुरुषकेमुखविषे मदिराकूंतपाइकैपावैं हैं ॥
कैसा है सोमदिरा अग्निकेसंबंधतैं द्रवीभावकूंप्राप्तहुएलोहेकेसमान है ऐतेमदिराकेपानेकरिकै सोपुरुष परमदुःखकूंप्राप्तहोवै है ॥ और

हेजनक ॥ यामनुष्यलोकविषे जोपुरुष एकतिलप्रमाणभी ब्राह्मणकेसुवर्णकीचोरीकरैहै ॥ सोपुरुष जभी मरिकैनरककूंप्राप्तहोवै है ॥ तभी
यमकिंकर तापुरुषकी सुवर्णकेसमानउज्ज्वल तथासघन ऐसीत्वचाबनाइकै ॥ तात्वचाकूं तिलतिलप्रमाणकरिकैछेदनकरैं हैं ॥ ताकरिकै
सोपुरुष परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहै॥ और हेजनक॥ यामनुष्यलोकविषे जोपुरुष आपणेगुरुकीस्त्रीकेसाथ तथाआपणीमाताकेसाथ मैथुनकरै
है ॥ सोपुरुष जभी मरिकैनरककूंप्राप्तहोवै है ॥ तभी यमकिंकर तापुरुषकेउपस्थकूंछेदनकरै हैं ॥ और ताउपस्थकूं तापुरुषकेमुखविषे
देकै ताकेप्राणोंकानिरोधकरैं हैं ॥ और जिसप्रकार तादुष्टपुरुषनैं पूर्व गुरुकीस्त्रीकेसाथ आलिंगनकराथा तिसप्रकार यमकिंकर लोहेकी
स्त्रीकूंअग्निविषेतपाइकै तालोहेकीस्त्रीकेसाथ तादुष्टपुरुषकूँ आलिंगनकरावैं हैं ॥ ताकरिकै सोपुरुष परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहै॥ और हेजनक॥
यामनुष्यलोकविषे जोपुरुष परस्त्रीकेसाथ मैथुनकरैहै ॥ सोपुरुष जभी मरिकैनरककूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभी तापुरुषकूँ गुरुकीस्त्रीगामीपुरुषतैं
किंचित्न्यूनदुःखकीप्राप्तिहोवैहै । तात्पर्ययह॥परस्त्रीगामीपुरुषके उपस्थकाछेदन यमकिंकरकरैनहीं॥ किंतु तापरस्त्रीकेसमान लोहेकीस्त्रीकूं
अग्निविषेतपाइकै तालोहेकीस्त्रीकेसाथ तापुरुषकूंआलिंगनकरावैहै॥ताकरिकै सोपरस्त्रीगामीपुरुष परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहै॥और हेजनक ॥
जैसे परस्त्रीकेगमनतैं सोव्यभिचारीपुरुष नरकविषेदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे साव्यभिचाररिणीस्त्रीभी परपुरुषकेगमनतैं नरकविषेदुःखकूं
प्राप्तहोवै है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ पुण्यपापकर्मकेफलकूंबोधनकरणेहारे जेश्रुतिस्मृतिआदिकशास्त्रहैं ॥ तिनशास्त्रोंविषे पुरुषकानामले
कैहीं पुण्यपापकर्मकेफलकाकथनकरयाहै॥स्त्रीकानामलेके पुण्यपापकर्मकाफल किसीशास्त्रविषेकथनकऱ्यानहीं ॥यातैं यहजान्याजावैहै॥
स्त्रीकूं पुण्यपापकर्मकाफलहोवैगानहीं ॥समाधान ॥ हेजनक ॥ स्त्रीकूं तथानपुंसककूं पुण्यपापकर्मकाफलनहींहोवै है॥ याप्रकारकेअभिप्रा
यकरिकै शास्त्रविषे पुरुषनामकाग्रहणनहींकऱ्या ॥ किंतु पुरुष स्त्री नपुंसक यातीनोंशरीरोंविषे पुरुषशरीर प्रधानहै ॥ यातैं पुरुषनामके
ग्रहणतैं स्त्रीनपुंसककाभी अर्थतैंग्रहणहोइसकैहै ॥ याप्रकारकेअभिप्रायकरिकै शास्त्रविषेपुरुषनामकाग्रहणकऱ्याहै ॥ यातैं पूर्वउक्तपापक
र्मोंकाफल जैसेपुरुषभोगैहै ॥ तैसे स्त्री तथानपुंसक दोनोंभोगैं हैं ॥ हेजनक॥ कोईशास्त्रवेत्तामुनितौ पशुपक्षीआदिकोंकूंभी पुण्यपापकर्म

केफलकीप्राप्ति अंगीकारकरैं हैं ॥ यातैं पशुपक्षियोंकूंभी जभी पुण्यपापकर्मकाफलहोवै है॥ तभीपत्नीरूपकरिकै यज्ञादिककर्मोंकेअधिका
रीजेस्त्रियां हैं॥तिनस्त्रियोंकूं पुण्यपापरूपकर्मकाफलहोवैहै ॥ याकेविषे क्याकहणाहै॥शंका हेभगवन् ॥पत्नीरूपकरिकै यज्ञकाअधिकारी
जोस्त्रीहै ॥ तास्त्रीकूं यद्यपि यज्ञादिकपुण्यकर्मोंकेफलकीप्राप्तिसंभवैहै ॥ तथापि तास्त्रीकूं पापकर्मकेफलकीप्राप्तिसंभवैनहीं ॥ समाधान॥
हेजनक ॥ जोकदाचित् स्त्री केवलपुण्यकर्मकेफलकूंहींप्राप्तहोवैहै ॥ और पापकर्मकेफलकूंनहींप्राप्तहोतीहोवै ॥ तौस्त्रीकापाणिग्रहणकरणा
व्यर्थहोवैगा ॥ काहेतैं विवाहकालविषे पुरुष याप्रकारकावचनउच्चारणकरिकै स्त्रीकेपाणिकूंग्रहणकरैहै॥ त्वंमधर्मादौसहायनस्याः ॥ अर्थ
यह॥हेपत्नी तूं मेरेधर्मविषे तथा अधर्मविषे तथाअर्थविषे तथाकामविषे हमारेसमान फलकाभागीहोव ॥ याप्रकारकावचनउच्चारणकरिकै
सोपुरुष तास्त्रीकापाणिग्रहणकरैहै॥सो व्यर्थहोवैगा॥ यातैं पुण्यकर्मकेफलकीन्याईं सोस्त्री पापकर्मकेफलकूंभी अवश्यभोगैहै ॥ किंवा॥या
लोकविषे जोपुरुष जिसपुरुषकेशुभकर्मकेफलकूंभोगैहै ॥ सोपुरुष तापुरुषके अशुभकर्मकेफलकूंभी अवश्यभोगैहै ॥ जैसे यालोकविषे
महाराजाकेपुण्यकर्मकाफलजोराज्यसंपदाहै ॥ तासंपदाकूं जेपुरुष भोगैहैं ॥ तेपुरुष महाराजाकेपापकर्मकाफल जोआपदाहै ताकूंभी अव
श्यभोगैं हैं ॥ पापकर्मकेफलकापरित्यागकरिकै केवलपुण्यकर्मकाफल कोईप्राणी भोगैनहीं ॥तैसे जोस्त्री पतिकेपुण्यकर्मकेफलकूंभोगै है॥
सोस्त्री पतिकेपापकर्मकेफलकूंभी अवश्यभोगेगी॥इतनैंकारिकै यहअर्थसिद्धभया॥ पुरुष अथवा स्त्री अथवा नपुंसक जोजोप्राणी पापकर्म
कूंकरैहै ॥ सोसोप्राणी मरिकैनरकविषे दुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अब पापकर्मविषे दूसरेकूंप्रेरणाकरणेहारे जेजीवहैं ॥ तिनोंकेदुःखोंकानिरूपण
करैं हैं हेजनक ॥ यामनुष्यलोकविषे जोस्त्री अथवा पुरुष अन्यकिसीस्त्रीकूं अथवा अन्यकिसीपुरुषकूं बलात्कारसैं पापकर्मविषेप्रवर्त्त
करैं हैं ॥ तापापकर्मकाफल करणेहारीस्त्रीकूं तथापुरुषकूं होवैनहीं ॥ किंतु तापापकर्मविषे प्रवर्त्तकरणेहारीजोस्त्रीहै अथवा पुरुषहै ॥
तिनोंकूंहीं तापापकर्मकाफलहोवैहै ॥ और जहाँ किसीस्त्रीनैं अथवाकिसीपुरुषनैं अन्यकिसीस्त्रीकूं अथवा अन्यकिसीपुरुषकूं किसीपाप
कर्मविषेप्रवर्त्तकऱ्याहोवै ॥ और तापापकर्मविषे तास्त्रीकी तथापुरुषकी आपणीभी इच्छाहोवै ॥ तास्थलविषे तापापकर्मकाफल तापाप

कर्मकेकरणेहारेस्त्रीपुरुषकूं तथा पापकर्मविषेप्रवृत्तकरणेहारेस्त्रीपुरुषकूं समानहीहोवै है॥और जभी किसीस्त्रीकी तथाकिसीपुरुषकी व्यभि
चारकरणेविषे आपणीइच्छाहोवैनहीं ॥ और दूसराकोईबलवान्पुरुष बलात्कारसैं तिनोंकूं व्यभिचारकर्मविषेप्रवृत्तकरै॥तभी तास्त्रीकूंत
थापुरुषकूं ताव्यभिचारकर्मकाफल प्राप्तहोवैनहीं॥ किंतु बलात्कारसैं तापापकर्मकूंकरावणेहाराजोपुरुषहै ॥ तिसीकूंहीं ताव्यभिचाररूप
कर्मकाफल प्राप्तहोवैहै॥परंतु याकेविषेभीइतनीविशेषताहै॥जास्त्रीकी तथापुरुषकी व्यभिचारकर्मकरणेविषे आपणीइच्छाहोवैनहीं ॥ और
किसीबलवान्पुरुषने तिनोंकूं व्यभिचारकर्मविषे प्रवर्त्तकऱ्या॥तहाँ॥सोस्त्री तथापुरुष ताव्यभिचारकर्मके निवृत्तिकेउपायकूंनकारिकै ताव्य
भिचारकर्मविषे जोकदाचित्प्रवर्त्तहोवै॥तौतिससस्त्रीकूंतथापुरुषकूं ताव्यभिचारकर्मकाफल प्राप्तहोवैहै ॥परंतु ताव्यभिचारकर्मकेकरावणेहारे
पुरुषकूं अधिकफलहोवैहै॥और करणेहारेकूंअल्पफलहोवैहै ॥ यालोकविषे व्यभिचाररूपपापकर्मविषे विशेषकरिकैलोकोंकी प्रवृत्तिदेखने
मेंआवैहै ॥ याकारणतैं व्यभिचाररूपपापकर्मविषे दुःखरूपफलकीव्यवस्थादिखाई है॥यातैं याप्रकार कर्मकेफलकीव्यवस्था हिंसादिकसर्व
पापकर्मोंविषे बुद्धिमान्पुरुषोंनैंजानिलेणी ॥ अब पापकर्मतैंनिवृत्तिकेउपायकूं निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ कोईकशास्त्रवेत्तामुनितौ याप्र
कारका कथनकरैं हैं॥किसीबलवान्पुरुषनैं अन्यकिसीपुरुषकूं अथवा किसीस्त्रीकूं बलात्कारसैंकिसीपापकर्मविषे प्रवर्त्तकऱ्या ॥ तापाप
कर्मकीनिवृत्ति जोकिसीदूसरेउपायतैंनहींहोतीहोवै ॥तौ सोपुरुष अथवा सोस्त्री तापापकर्मतैंनिवृत्तहोणेवासतै आपणेशरीरकाभी परित्या
गकरिदेवै ॥ परंतु तापापकर्मकूंनहींकरै ॥ और जोकदाचित् सोपापकर्मकेकरावणेहारापुरुष तिनोंकूंमरणेकाउपायभी नहींकरणेदेवै॥ तौ
तापापकर्मकाफल करणेहारेपुरुषकूं तथास्त्रीकूँ प्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु बलात्कारसैं तापापकर्मकूंकरावणेहाराजोपुरुषहै॥ तिसकूंहीं तापाप
कर्मकाफलप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं मरणपर्यंत पापकेमर्कनिवृत्तिकाउपाय जीवोंनैंकरणा ॥ याप्रकार कोईशास्त्रवेत्तामुनि कथन करैं हैं ॥ और
हेजनक ॥ शास्त्रकेयथार्थतात्पर्यकूंजानणेहारेजो कोईमुनिहैं ॥ तेतौ याप्रकारका कथनकरैं हैं ॥बलात्कारसैं प्राप्तभयाजोपापकर्महै॥ताके
निवृत्तिकरणेवासतै यापुरुषनैं मरणरूपउपायकूंछोडिकै दूसरेसर्वउपायकरणे ॥ मरणरूपउपायकूं यापुरुषनैं कदाचित्नहींकरणा ॥ काहेतैं

ब्रह्महत्यातैंआदिलेके जितनेकीपापकर्म हैं॥ तिनसंपूर्णोंतैं आत्महत्या अधिकहै॥यातैं जोपुरुष व्यभिचारादिकअल्पपापकर्मोंकेभयतैं आत्महत्यारूप महान्पापकर्मकूंकरै है ॥ सोपुरुष कैसामूढहै ॥ जैसे यालोकविषे कोईमूढपुरुष वृश्चिककेदंशकीभयतैं भागिकै सर्पकेदंशकूं प्राप्तहोवै ॥ तापुरुषकेसमानहै ॥ यातैं आपणेशरीरकानाशकरिकैभी यहपुरुष पापकर्मतैंनिवृत्तहोवै ॥ याप्रकारकाकहणा अत्यंतअसंगतहै ॥उलटा जिसस्थलविषे किसीपापकर्मकेनकरणेकरिकै आपणामृत्युहीनिश्चयहोताहोवै ॥तिसस्थलविषे सोपुरुष आपणेशरीरकीरक्षाकरणेवासतै निःशंकहोइकै तापापकर्मकूंकरै ॥ हेजनक ॥ यासिद्धांतपक्षविषे तेशास्त्रवेत्तामुनि याप्रकारकीयुक्तिभीकहैं हैं ॥ जिसपुरुषकी जापापकर्मकेकरणेविषे आपणीइच्छाहैनहीं ॥ और कोईबलवान्पुरुष बलात्कारसैं तापुरुषकूं तिसपापकर्मविषेप्रवर्त्तकरैहै ॥ तापापकर्मकाफल करणेहारेपुरुषकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु करावणेहारेपुरुषकूँहीं तापापकर्मकाफल प्राप्तहोवैहै ॥ और सोपापकरणेहारापुरुषजभी तापापकर्मकेकरणेतैंभयकूंप्राप्तहोइकै आपणेमरणकूंसंपादनकरै है ॥ तभी ताआत्महत्याकाफल करणेहारेपुरुषकूंहीं प्राप्तहोवै है॥ पापकर्मकेकरावणेहारेपुरुषकूं ताआत्महत्याकाफल प्राप्तहोवैनहीं ॥ काहेतैं तापापकर्मकेकरावणेहारेपुरुषनेतौ तापुरुषकूं तापापकर्मकेकरणेविषे प्रेरणाकरीहै ॥ आत्महत्याकरणेविषे प्रेरणाकरीनहीं ॥ यातैं यहसिद्धभया ॥ पापकर्मकीनिवृत्तिवासतै यापुरुषनैं आपणेमरणकूंछोडिकै दूसरेसर्वउपायकरणे ॥ आपणेमरणकूंकदाचित्नहींकरणा ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ शास्त्रविषेतौ पापकर्मका सर्वथा निषेधकऱ्याहै॥ तहाँश्लोक॥ अकर्त्तव्यं नकर्तव्यं प्राणैःकंठगतैरपि॥ कर्तव्यमेव कर्त्तव्यं प्राणैःकंठगतैरपि ॥ अर्थयह॥ जबपर्यंत यापुरुषोंके कंठविषेप्राणस्थितहै ॥ तबपर्यंत यापुरुषोंनैं नकरणेयोग्यपापकर्म कदाचित्नहींकरणा ॥ और करणेयोग्यजोपुण्यकर्महैतिसकूं तबपर्यंत करणा ॥ १ ॥ इत्यादिकशास्त्रोंविषे सर्वथापापकर्मकानिषेधकह्या है यातैं मरणतैं याशरीरकीरक्षाकरणेवासतै यापुरुषनैं पापकर्मकूंभी करणा॥याप्रकारकाकहणा शास्त्रसैंविरुद्धहोवैहै॥समाधान॥हेजनकिसीबली पुरुषनैं पापकर्मविषेप्रवर्त्तकऱ्याहुआ यहपुरुष आपणेमरणकूं संपादनकरिकैभीतापापकर्मतैंनिवृत्तहोवै ॥ याप्रकारकेअर्थविषे तिनवचनोंकातात्पर्यनहीं॥ ।कतु जबपर्यंत यापुरुषकेकंठविषेप्राणस्थितहै ॥ ९१ ॥

तबपर्यंत यहपुरुष आपणीइच्छाकरिकै किसीपापकर्मकूंनहीं करै॥याप्रकारकेअर्थविषेहीं तिनवचनोंकातात्पर्य है ॥ यातैं पापकर्मकेभयतैं यापुरुषनैं आत्महत्याकदाचित्भीनहींकरणी ॥ और जोपुरुष पापकर्मकीभयतैं आत्महत्याकरै है ॥ तापुरुषकूं परमदुःखकीप्राप्तिहोवै है ॥ तहाँश्रुति ॥ असुर्यानामतेलोका अंधेनतमसावृताः ॥ मृत्वातानभिगच्छंति येकेचात्महनोजनाः ॥अर्थयह॥ जेपुरुष आपणेआत्माकाहननकरै हैं॥तेपुरुष मरिकरिकै अविवेकीपामरपुरुषोंकूंप्राप्तहोणेयोग्य तथाअंधकारकरिकै आवृत जेतामसीलोकहैं ॥ तिनलोकोंकूं प्राप्तहोवैं हैं॥१॥ याश्रुतिनैं आत्महत्यारेपुरुषोंकूं परमदुःखकीप्राप्तिकथनकरी है॥यातैं यहअर्थसिद्धभया॥प्रयोजकपुरुष तथाप्रयोज्यपुरुष तथाअनुमंतापुरुष यातीनोंकूं पापकर्मकादुःखरूपफल अवश्यप्राप्तहोवै है॥ परंतु सोदुःखरूपफल रोगादिकआपदावोंकीन्यूनअधिकताकरिकै तिनप्रयोजकादिकपुरुषोंविषे न्यूनअधिकभीहोवै है॥यहाँ दूसरेपुरुषकूं पापकर्मविषे प्रवर्त्तकरणेहाराजोपुरुषहै ॥ तापुरुषकानाम प्रयोजकहै ॥ और दूसरेकिसीबलवान्पुरुषनैं प्रवर्त्तकऱ्याहुआजोपुरुष रागपूर्वकतापापकर्मविषे प्रवर्त्तहोवै है ॥ तापुरुषकानाम प्रयोज्य है ॥ और जोपुरुष दूसरेपुरुषकूं पापकर्मतैंनिवृत्तकरणेविषेसमर्थ होवै ॥ और तापुरुषकूं पापकर्मतैंनिवारणनहींकरै है ॥ तापुरुषका नाम अनुमंताहै ॥ यातीनोंकूं पापकर्मके फलकीप्राप्तिहोवै है ॥ याकारणतैं जिस पुरुषकूं आपणेकल्याणकरणेकी इच्छा होवै ॥ तिसपुरुषनैं आप पापकर्मकूंकरणानहीं ॥ और दूसरेपुरुषकूंप्रेरणाकरिकै पापकर्मकूंकरावणानहीं ॥ और जो आपणासामर्थ्यहोवै ॥ तौदूसरेपुरुषकूंभी पापकर्मतैंनिवारणकरणा ॥शंका ॥हेभगवन्॥ पापकर्मकेकरणेहारापुरुष नरकविषेजाइकै तिनपापकर्मोंकेदुःखरूपफलकूं अवश्यभोगै है॥ याप्रकारकानियम पूर्व आपनैंकथनकऱ्या ॥ सोनियम संभवैनहीं ॥ काहेतैं धर्मशास्त्रविषे दुःखरूपफलभोगतैंविनाहीं प्रायश्चित्त करिकै पापकर्मकीनिवृत्ति कथनकरी है॥समाधान ॥ हेजनक ॥ जोपुरुष व्यामोहकरिकै अथवा भ्रमकरिकै अथवा आपदाकरिकै किसीपापकर्मकूंकरै है॥तापुरुषकेपापकर्मकीनिवृत्तिवासतैं धर्मशास्त्रनैं प्रायश्चित्तोंकाविधानकऱ्याहै ॥ और ताप्रायश्चित्तकरिकैभी तापुरुषकापापकर्मतबी निवृत्तहोवै है॥जबी सोपुरुष तिसपापकर्मकूं पुनःकदाचित्नहींकरै है॥और जोपुरुष तिसपापकर्मकी निवृत्तिवासतैं प्रायश्चित्तकूंकरि

कै पुनःतिसीपापकर्मकूंकरै है॥तापुरुषका सोपापकर्म प्रायश्चित्तकरिकैनिवृत्तहोवैनहीं ॥ किंतु जैसे हस्ती जलविषेस्नानकरिकै पुनः आप
णेमस्तकाविषेमृत्तिकापावै है॥यातैं सोहस्तीकास्नान निष्फल है ॥ तैसे जोपुरुष किसीपापकर्मकीनिवृत्तिवासतै प्रायश्चित्तकूंकरिकै पुनःति
सीपापकर्मकूंकरै॥तापुरुषका सोप्रायश्चितभी निष्फलही है ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ पापकर्मके प्रायश्चित्ततैंरहित जेपापीपुरुषहैं तथा
स्त्रियां हैं तथानपुंसकहैं॥तेसंपूर्णपापीजीव मरिकैनरकविषे अवश्यदुःखकूं भोगैं हैं॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्राविषेभीकहीहै ॥ श्लोक ॥ नाऽभुक्तं
क्षीयतेकर्म कल्पकोटिशतैरपि ॥ अर्थयह ॥ आत्मज्ञानतैं तथाप्रायश्चित्ततैं रहितजोपुरुष है ॥ ताअज्ञानीपुरुषके पुण्यपापकर्म अनेक
कोटिकल्पोंकरिकैभी भोगतोंविना क्षयहोवैनहीं ॥ किंतु भोगकरिकैही तिनपुरुषोंकेकर्मोंकाक्षयहोवै है॥१॥ और हेजनक॥ ब्रह्महत्यादिक
पापकर्मोंकूंकरणेहारामहापातकीपुरुष तथाकरावणेहारापुरुष जिसप्रकारकेनरकदुःखकूंप्राप्तहोवै है ॥ तिनमहापातकीपुरुषोंकेसाथ एकवर्ष
पर्यंत जोपुरुषसंगकरैहै॥सोपुरुषभी मरिकैनरकविषे तिसीप्रकारकेदुःखकूंप्राप्तहोवैहै॥ और हेजनक॥यामनुष्यलोकविषे वादविवादतैंरहितज
स्वभाववालेप्राणी हैं॥तिनप्राणियोंकूं जोनिर्दयपुरुष हननकरै है ॥ सोनिर्दयपुरुष जभी मरिकेनरककूंप्राप्तहोवै है ॥ तभी जिस प्रकारकेजी
वोंकूं तानिर्दयपुरुषनैं पूर्व हननकऱ्याथा ॥ तिसीप्रकारकेजीव नरकके मार्गविषे तापापीजीवके प्राणोंकारोधनकरैं हैं ॥ तथा नाना प्रकार
केशस्त्रोंकरिकै तापापीजीवकेशरीरकाछेदनकरैं हैं ॥ तथा तीक्ष्णदांतोंकरिकै तापापीजीवकाछेदनकरैं हैं ॥ तथा तीक्ष्णखुरोंकरिकै तथा
तीक्ष्णशृंगोंकरिकै तापापीजीवकेशरीरकाछेदन करैं हैं॥तथा लोहकेमुदगरोंकरिकै तापापीजीवकेमस्तककूंभेदनकरैं हैं॥ ताकरिकै सोपापी
जीव परमदुःखकूंप्राप्तहोवै है ॥ और हेजनक ॥ यामनुष्यलोकविषे जोपुरुष मांसकूंभक्षणकरै है सोपुरुष जभी मरिकैनरककूंप्राप्तहोवै है ॥
तभी तापापीपुरुषकेमांसकूं श्वानगृध्रादिकजंतु भक्षणकरैं हैं॥ताकरिकै सोपापीजीव परमदुःखकूंप्राप्तहोवै है॥और हेजनक॥यामनुष्यलोक
विषे जोपुरुष छलकपटसैं परायेधनकाहरणकरिकै आपणे स्त्रीपुत्रादिककुटुंबकापालनकरैहै ॥ सोपुरुष जभी मरिकैनरककूंप्राप्तहोवै है तभी
तापुरुषकेसन्मुख ताकेस्त्रीपुत्रादिकप्रियबांधवोंकूं श्वानगृध्रादिकजंतु भक्षणकरैं हैं॥तिनस्त्रीपुत्रादिकबांधवोंकेभक्षणकूंदेखिकैसोपुरुष परम

दुःखकूंप्राप्तहोवै है ॥ और हेजनक ॥ अधर्मकरिकैकुटुंबकूंपालनकरणेहाराजोपुरुषहै तिसकूं तथा ताकेस्त्रीपुत्रादिककुटुंबकूं गृध्रादिकपक्षी
आपणेमुखमेंलेकै आकाशविषेउडैं हैं ॥ तहाँ दूरआकाशविषेजाइकै तिनपापीजीवोंकूं नीचेगेडे हैं ॥ इसप्रकार दूरआकाशतैंनीचेगिडेहुए
तेपापीजीव कभीतौ अग्निकेकुंडविषेपडैं हैं ॥ और कभी मूपकादिकजीवोंकरिकेपूर्ण जेजलकेस्थानहैं तिनोंविषेपडैं हैं॥और कभी पाषा
णकीभूमिविषेपडैं हैं ॥ और कभी अगाधजलविषे पडैं हैं ॥ और कभी महान्वायुकेकुंडविषेपडैं हैं ॥ और कभी विष्ठामूत्रादिकोंकेकुंड
विषेपडैं हैं ॥ इसतैंआदिलेके अनेकमलिनस्थानोंविषेपडैं हैं ॥ और भूमिविषेपडेहुए तिनपापीजीवोंकूंभक्षणकरणेवासतै तेश्वानगृध्रादिक
जंतु परस्पर आकर्षणकरैं हैं ॥ कभी तिनपापीजीवोंकूं तेश्वानादिक समानभूमिविषेलेजावैं हैं ॥ और कभी विषमभूमिविषेलेजावैं हैं ॥
याप्रकारकीदुर्गतिकूंप्राप्तहुए तेपापीजीव शरीरकरिकै तथामनकरिकै परमदुःखकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ और जैसे कृमियुक्तश्वानका लोक निरादर
करैं हैं ॥ तैसे नरकविषे तिनपापीजीवोंका संपूर्णप्राणी निरादरकरैं हैं ॥ हेजनक अधर्मकरिकै कुटुंबकूंपालनकरणेहारापुरुष इसतैं आदि
लैके अनेकप्रकारकेदुःखोंकूं सहनकरताहुआ कुटुंबसहित अथवा एकलाही यमलोककेमार्गकूंप्राप्तहोवै है ॥ कैसाहैसोयमलोककामार्ग ॥
यहसूर्यभगवान् द्वादशमूर्तिकूंधारणकरिकै जिनमार्गोंविषे तप्तकरैहै ॥ और अग्निकरिकैतपायेहुए जेलोहादिकधातुहैं तिनोंकरिकै तेमार्ग
जडेहुएहैं ॥ और अग्निकीज्वालाकरिकै तेमार्गव्याप्तहैं ॥ और जिनमार्गोंविषे कोईजलनहीं है ॥ तथा कोईवृक्षनहीं है ॥ हेजनक ॥ यामनु
ष्यलोकविषे जेपुरुष शरीरकरिकै तथामनकरिकै तथावाणीकरिकैजीवोंकूं दुःखकीप्राप्तिकरैं हैं ॥ तेपापीपुरुष यमकिंकरोंकरिकैताडनकरे
हुए याप्रकारकेभयानकमार्गोंकूं प्राप्तहोवैं हैं ॥ तामार्गकेचलनेकरिकै तेपापीजीव परमदुःखकूंप्राप्तहोवैं हैं॥ और हेजनक ॥ जैसे यामनुष्य
लोकविषे जोपुरुष चोरीआदिकपापकर्मोंकूंकरै है।तापुरुषकूं राजाकेभृत्य दारुणपाशोंसे बांधिकै राजद्वारविषेलेजावैं है॥और तेराजाकेभृत्य
तापापीपुरुषकेशरीरविषे नानाप्रकारकेशस्त्रोंकाप्रहारकरैं हैं और तापापीपुरुषनैं महाराजाका तथाअन्यलोकोंका जोजोअपराधकऱ्याहै ॥
ताअपराधकूं वारंवार कथनकरतेहुए तेराजाकेभृत्य तापापीपुरुषकूं कठोरवचनोंकरिकैताडनकरैं हैं तैसे यामनुष्यलोकविषे स्त्रीपुत्रादिक

कुटुंबकेपालनकरणेवासतै नानाप्रकारकेपापकर्मोंकूं करणेहाराजोपुरुषहै ॥ तिसपापीपुरुषकूं दृढपाशोंसेबांधिकरिकै यमकिंकर नरककेमा
र्गविषेलेजावै हैं ॥ और तामार्गविषे तेयमकिंकर नानाप्रकारकेशस्त्रोंकरिकै तापापीजीवकूंहननकरैं हैं॥ और यापुरुषनैं कुटुंबकेपालनकर
णेवासतै जेजेपूर्वपापकर्मकरेथे॥ तिनपापकर्मोंकूं वारंवार कथनकरतेहुए तेयमकिंकर नानाप्रकारकेकठोरवचनोंकरिकै तापापीजीवकूंताड
नकरैं हैं अब जिनकठोरवचनोंकरिकै तेयमकिंकर तापापीजीवकानिरादरकरैं हैं ॥ तिनवचनोंकानिरूपणकरैं हैं ॥हेजनक॥ तापापीजीव
केप्रति तेयमकिंकर याप्रकारकेकठोरवचनकहैं हैं ॥हेपापीजीव ॥ अग्निहोत्रादिककर्मोंकरिकै स्वर्गकीप्राप्तिकरणेहारा तथा श्रवणादिकसा
धनोंकरिकै मोक्षकीप्राप्तिकरणेहारा जोयहमनुष्यशरीर है ॥ सो अत्यंतदुर्लभ है तिसविषेभी भारतखंडविषे मनुष्यशरीरकी प्राप्तिहोणी
अत्यंतदुर्लभहै ॥ ऐसेदुर्लभमनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोइकैभी तुमनैं किंचित्मात्रभी पुण्यकर्मकऱ्यानहीं ॥ उलटा कुटुंबकीपालनाकरणेवासतै
तुमनैं नानाप्रकारकेपापकर्महीं संपादनकरे ॥ यातैं तेरेकूंधिक्कारहै ॥ और हेपापीजीव यामनुष्यशरीरकूंपाइकै जिनस्त्रीपुत्रादिकबांधवोंके
मोहकरिकै तुमनैं पुण्यकर्मकूंसंपादननहींकऱ्या॥तेस्त्रीपुत्रादिकबांधव कोईदुर्लभनहीं हैं ॥ किंतु यानरकशरीरविषेभी तथाश्वानादिकोंके
शरीरोंविषेभी तेस्त्रीपुत्रादिकबांधव तुमारेकूं बहुतप्राप्तहोवैंगे परंतु सुखकेदेणहारेजेपुण्यकर्म हैं॥ तेपुण्यकर्म तुमारेकूं यामनुष्यशरीरतैंविना
किसीभीशरीरविषे प्राप्तनहींहोवैंगे॥और हेपापीजीव जिनस्त्रीपुत्रादिकबांधवोंके पालनकरणेवासतैंतुमनैं नानाप्रकारकेपापकर्मकरेथे॥तेस्त्री
पुत्रादिकबांधव कैसेकृतघ्नहैं॥जोइमशानभूमिविषे तेरेकूंएकलाछोडिकै आपणेगृहकूंजातेभये हैं॥ऐसेकृतघ्नस्त्रीपुत्रादिकबांधवोंके पालनकर
णेवासतैं तुमनैं अनेकप्रकारकेपापकर्मकरे हैं ॥ याकारणतैं तेरेकूंधिक्कारहै ॥ और हेपापीजीव ॥ यामनुष्यशरीरविषे कुटुंबकेपालनकरणे
वासतै जोजोपापकर्म तुमनैं करेथे॥तेपापकर्म जैसे दुःखदेणेवासतै तुमारेसाथआये हैं॥तैसे यामनुष्यशरीरविषे जो तूं पुण्यकर्मोंकूंकरता ॥
तौ तेपुण्यकर्मभी सुखकेदेणेवासतै तुमारेसाथआवते ॥ परंतु यामनुष्यशरीरविषे तुमनैं पुण्यकर्मकरेनहीं ॥ यातैं केवलपापकर्मके दुःखरू
पफलकूं तूं अभीभोग॥और हेपापीजीव॥जैसे व्याघ्रतैं जीवोंकूंभयकीप्राप्तिहोवै है॥तैसे दूसरेप्राणियोंकेधनादिकपदार्थोंकूं हरणकरणेहारा

जोतू बलवान्था ॥ तिसतुमारैंतैं तेजीव भयकूंप्राप्तहोतेभये ॥ और हेपापीजीव॥ यामनुष्यलोकविषे जिसजिसपुरुषकेपास सुंदरस्त्रीथी॥
तथा गौ अश्वादिकसुंदरपशुथे॥ तथा नानाप्रकारकाधनथा॥ तिनपुरुषोंकेस्त्रीआदिकसुंदरपदार्थोंकूं तूंपापात्मा बलात्कारसैं हरणकरता
भया तापापकर्मकरिकै अबी तुमारेनेत्रोंकूं तथाहृदयकूं यहगृध्रादिकपक्षी छेदनकरैं हैं ॥ और हेपापीजीव ॥ यामनुष्यलोकविषे जो
तुमनैं शरीरकरिकै तथामनकरिकै तथावाणीकरिकै दूसरेप्राणियोंकूं दुःखकीप्राप्तिकरीहै॥सोईतुमारापापकर्म अबी तुमारेकूंदुःखदेणेवाससै
तुमारेसन्मुखभयाहै ॥ और हेपापीजीव ॥ जैसे यामनुष्यलोकविषे कोईभाग्यहीनपुरुष पूर्वलेकिसीपुण्यकर्मकेप्रभाववैं राज्यपदवीकूंप्राप्त
होइकैभी तत्काल नष्टहोइजावैहै ॥ तैसे पूर्वलेकिसीपुण्यकर्मकेप्रभाववैं याभारतखंडविषे मनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोइकैभी तूभाग्यहीन
जीव पापकर्मकरिकै नरककूंहींप्राप्तभयाहै ॥ याकारणतैं तेरेकूंधिक्कारहै ॥ अब पापीजीवकेउद्वेगकरणेवासतै पितृलोकके पितृयाणना
मामार्गकूं निरूपणकरैं हैं ॥ हेपापीजीव ॥ यामनुष्यलोकविषे जोपुरुष यज्ञादिकपुण्यकर्मोंकूंकरैं हैं ॥ सोपुरुष यामनुष्यशरीरका
परित्यागकरिकै प्रथम धूमकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और ताधूमतैंअनंतर सोकर्मीपुरुष रात्रिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और तारात्रितैंअनंतर सोकर्मीपुरुष
कृष्णपक्षकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और कृष्णपक्षतैंअनंतर सोकर्मीपुरुष षट्मासरूपदक्षिणायनकूंप्राप्तहोवैहै ॥और तादक्षिणायनतैंअनंतर सोकर्मी
पुरुष पितृलोककूंप्राप्तहोवैहै॥और तापितृलोकतैंअनंतर सोकर्मीपुरुष अंतरिक्षलोककूंप्राप्तहोवै है॥और ताअंतरिक्षलोकतैंअनंतर सोक
र्मीपुरुष चंद्रलोककूंप्राप्तहोवैहै ॥ ताचंद्रलोकविषे देवतावोंनैं प्राप्तकरेजेनानाप्रकारकेभोग ॥ तिनभोगोंकूं सोकर्मीपुरुष चिरकालपर्यंतभो
गेहै ॥ यहाँ धूम रात्रि कृष्णपक्ष इत्यादिकशब्दोंकरिकै धूमादिकोंकेअभिमानीरूपदेवतावोंकाग्रहणकरणा ॥ हेपापीजीव ॥यामनुष्यलोक
विषे तेयज्ञादिककर्म तुमनेकरेनहीं ॥ याकारणतैं तुम्हारेकूं पितृलोककीप्राप्तिभीनहींभई ॥ हेपापीजीव ॥ स्वर्गादिकलोकोंकेप्राप्तिकासा
धन जेयज्ञादिककर्म हैं॥ तेकर्म यास्थूलशरीरकरिकैसिद्धहोवैहैं ॥ यातैं तेयज्ञादिक शारीरककर्महैं॥ और ब्रह्मलोकेप्राप्तिकासाधन जेउ
पासनाहैं ॥ तेउपासना मनकरिकैसिद्धहोवैहैं ॥ यातैं तेउपासना मानसकर्म हैं॥ और शारीरककर्मोंकीअपेक्षाकरिकै मानसकर्म अत्यंत

कठिनहोवैहैं ॥ हेपापीजीव तायज्ञादिरूपशारीरककर्मोंकरिकैभी जभीतूं स्वर्गकूंनहींप्राप्तभया ॥ तभी उपासनारूपमानसकर्मकरिकै तूंब्रह्मलोकविषेजावैगा याकेविषेक्याआशाहै ॥ अब ब्रह्मलोककेअधिकारीकानिरूपणकरैहैं ॥ हेपापीजीव ॥ याभारतखंडविषे अधिकारीमनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोइकै जेपुरुष विषयसुखतैंविरक्तहोवैहैं ॥ तथा जितइंद्रियहोवैहैं ॥ तथा यमनियमादिकसाधनोंक रिकै संपन्नहोवैहैं ॥ ऐसेअधिकारीपुरुष गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं नानाप्रकारकेउपासनावोंकूंजाणिकरिकै तिनउपासनावोंविषे पर्यंक विद्यारूपउपासनाकरिकै अथवा पंचाग्निविद्यारूपउपासनाकरिकै अथवा किसीअन्यउपासनाकरिकै तेउपासकपुरुष ब्रह्मलोककूंप्राप्त होवै हैं ॥ अब ब्रह्मलोककेस्वरूपकूं तथा ब्रह्मलोकके देवयाननामामार्गकेस्वरूपकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेपापीजीव यामनुष्यलो कविषे जेपुरुष पंचाग्नीआदिकउपासनावोंकूंकरैहैं ॥ तेउपासकपुरुष सुषुम्नानाडीरूपमार्गद्वारा दशमद्वारतैंबाहरनिकासिकै प्रथम अर्चिषकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और ताअर्चिषतैंअनंतर तेउपासकपुरुष दिनकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ और तादिनतैंअनंतर तेउपासकपुरुष शुक्ल पक्षकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और ताशुक्लपक्षतैंअनंतर तेउपासकपुरुष षट्मासरूपउत्तरायणकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और ताउत्तरायणतैंअनंतर तेउपासकपुरुष संवत्सरकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और तासंवत्सरतैंअनंतर तेउपासकपुरुष देवलोककूंप्राप्तहोवै हैं ॥ और तिसदेवलोकतैंअनंतर तेउ पासकपुरुष वायुकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ कैसाहैसोवायु ॥ जैसे रथकेचक्रविषेछिद्रहोवैहै ॥ तिसीप्रकारकाछिद्र उपासकपुरुषकेताईं आपणेशरीर विषेदेवैहै ॥ और तावायुतैंअनंतर तेउपासकपुरुष आदित्यकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ कैसाहैसोआदित्य ॥ जैसे डंबरनामावादित्रविशेषका मध्यका छिद्रहोवैहै ॥ तिसीप्रकारकाछिद्र सोआदित्य आपणेविषे उपासकपुरुषकेताईंदेवैहै॥ और ताआदित्यतैंअनंतर तेउपासकपुरुष चंद्रमाकूं प्राप्तहोवै हैं ॥ कैसाहैसोचंद्रमा ॥ जैसे दुंदुभिनामावादित्रविशेषका मध्यछिद्रहोवैहै ॥ तिसीप्रकारकाछिद्र सोचंद्रमा आपणेविषेउपास कपुरुषकेताईं देवैहै ॥ और ताचंद्रमातैंअनंतर तेउपासकपुरुष विद्युत्कूं प्राप्तहोवै हैं ताविद्युत्लोकविषे अमानवनामापुरुष आइकै ताउपासकपुरुषकूं ब्रह्मलोकविषेलेजावैहै ॥ यहाँ अर्चिष दिन शुक्लपक्ष इत्यादिकशब्दोंकरिकै अर्चिआदिकोंकेअभिमानीदेवता

वोंकाग्रहणकरणा ॥ और मनुकीसृष्टिविषे जिसकीउत्पत्तिनहींहोवै है ॥ ताकानाम अमानवपुरुष है ॥ जिसब्रह्मलोकविषे सोउपासकपुरुष जावै है ॥ सोब्रह्मलोककैसा है ॥ वरुणलोक इंद्रलोकविराट्लोक यातीनोंलोकोंतैंपरेस्थितहै॥ पुनःकैसा है सोब्रह्मलोक॥आरनामा हृदक रिकै तथा विजरानामानदीकरिकै युक्त है ॥ ऐसे ब्रह्मलोकविषे सोअमानवपुरुष ताउपासकपुरुषकूंलेजावै है ॥ तहाँ विद्युत्लोकतैंअनंतर सोउपासकपुरुष जभी आरनामाहृदके ओरलेकिनारेऊपरजावै है ॥ तभी ब्रह्माकीआज्ञाकूंपाइकै पंचशत ५०० दिव्यअप्सरा नानाप्रका रकेपदार्थोंकूंहस्तोंविषेलैकै ताउपासकपुरुषकेसमीपआवैं हैं ॥ और तिनपंचशतअप्सरावोंविषे एकशतअप्सरावोंकातौ ताउपासकपुरुष केपहरावणेवासतैं सुंगंधीवालेपुष्पोंकीमाला हस्तविषेलेआवैं हैं॥ और दूसराअप्सरावोंकाशततौ ताउपासकपुरुषकेमर्दनकरणेवासतैं कस्तू रीकर्पूरादिकोंकरिकैयुक्तनानाप्रकारकातैल हस्तोंविषेलेआवैं हैं ॥ और तीसराअप्सरावोंकाशततौ ताउपासकपुरुषकेभोजनकरावणेवा सतैं नानाप्रकारकेदिव्यफलोंकूं हस्तोंविषेलेआवैं हैं ॥ और चतुर्थ अप्सरावोंकाशततौ ताउपासकपुरुषकेशरीरविषेलगावणेवासतैं नानाप्रकारके सुगंधिवालेचूर्ण हस्तोंविषेलेआवैं हैं ॥ और पंचम अप्सरावोंका शततौ ताउपासकपुरुषके पहरावणेवासतैं नानाप्रकार केवस्त्र तथानानाप्रकारके भूषण हस्तोंविषेलेआवैं हैं ॥ और तेअप्सरा जैसे दिनदिनविषे ताअलंकारोंकरिकै ब्रह्माकूंशोभायमानकरैं हैं ॥ तिसीप्रकार तेअप्सरा पुष्पादिकअलंकारोंकरिकै ताउपासकपुरुषकूं शोभायमानकरैं हैं ॥ इसप्रकार तिनअप्सरावोंकरिकै अलंकार युक्तकऱ्याहुआ सोउपासकपुरुष एकक्षणमात्रविषे मनकेसंकल्पकरिकै ताआरनामाहृदके पारलेकिनारेकूंप्राप्तहोवै है ॥ ताआरनामाहृद केपारलेकिनारेऊपरस्थित जेतीसमुहूर्त हैं ॥ जिनमुहूर्तोंकूं श्रुतिविषे येष्टिह यानामकरिकैकथनकऱ्या है॥तिनतीसमुहूर्तोंकेसमीप सोउपा सकपुरुषजावै हैं ॥ ताउपासकपुरुषकूं तहांआयाहुआदेखिकै तेयेष्टिहनामातीसमुहूर्त तहां तैंभागिजावैं हैं॥ यहां येष्टिह यानामकायहअर्थ है ॥ ब्रह्मलोककेप्राप्तिकीइच्छावाले जेउपासकपुरुष हैं ॥ तिनोंकेउपासनाकूं नानाप्रकारकेसंकल्पकीउत्पत्तिकरिकै जेहननकरैं तिनों कानाम येष्टिह है ॥ ताआरनामाहृदतैं अनंतर सोउपासक पुरुष विजरानामनदीकूं प्राप्तहोवै है ॥ ताविजरानामानदीकेओ

रलेकिनारेऊपरस्थितहुआ सोउपासकपुरुष आपणेपूर्वलेपापकर्मोंकूं द्वेषीपुरुषोंकेताईं देवै है ॥ और आपणे पुण्यकर्मोंकूं सुहृद् पुरुषोंके ताईं देवै है॥और आपणेधनादिकपदार्थोंकूं पुत्रोंकेताईं देवै है॥इसप्रकार पुण्यपापकर्मके लयहुएतैं अनंतर सोउपासकपुरुष जरामरणतैंरहितहोइकैताविजरानामानदीकूं एकक्षणमात्रविषेमनकेसंकल्पकरिकै तरिजावै है ॥ और तिसविजरानामासदीतैंअनंतर सोउपासकपुरुष इल्यनामावृक्षकूंप्राप्तहोवै है ॥ तहां ब्रह्माकेप्राप्तहोणेयोग्यजोदिव्यसुगंध है॥ सोसुगंध ताउपासकपुरुषकूंप्राप्तहोवै है॥और ताइल्यनामावृक्षतैंअनंतर सोउपासकपुरुष शालज्यनामास्थानकूंप्राप्तहोवै है ॥ तहांब्रह्माकेप्राप्तहोणेयोग्य जोदिव्यरस है॥ सोरस ताउपासकपुरुषकूंप्राप्तहोवै है ॥ और ताशालज्यनामास्थानतैंअनंतर सोउपासक पुरुष ब्रह्माकेअपराजितनामामंदिरकूं प्राप्तहोवै है ॥ तहां ताउपासकपुरुषविषे ब्रह्माकातेज प्रवेशकरै है ॥ तातेजकेप्रवेशकरणेतैं सोउपासकपुरुष ब्रह्माकेसमान तेजवालाहोवै है॥ और ताअपराजितनामा मंदिरकेद्वार ऊपर इंद्रनामा तथा प्रजापतिनामा यहदोनों द्वारपालस्थित हैं ॥ तेदोनोंद्वारपाल ताउपासकपुरुषकेताईं भीतरजाणेकामार्ग देकै भययुक्तपुरुषकीन्याईं स्थितहोवैं हैं और तिसतैंअनंतर सोउपासकपुरुष ब्रह्माके विभुप्रमितनामा सभामंडपकूं प्राप्तहोवै है ॥ तहाँ ताउपासकपुरुषविषे ब्रह्माकायश प्रवेशकरै है ॥ तायशकेप्रवेशकरणेतैं सोउपासकपुरुष ब्रह्माकेसमानयशवालाहोवै है ॥ और तासभामंडपतैंअनंतर सोउपासकपुरुष ब्रह्माके बुद्धिमयवेदिकाकूंप्राप्तहोवै है ॥ जिसवेदिकाकूं श्रुतिविषे आसंदीनामाकरिकैकथनकऱ्या है ॥ यहाँ काष्ठादिकोंकरिकैरचित चारिपादोंवालाजोऊँचाआसन है ताकानाम वेदिका है ॥ तावेदिकाकूंप्राप्तहोइकै सोउपासकपुरुष ब्रह्माकेसमानबुद्धिवालाहोवै है ॥ कैसी है सोवेदिका॥ बृहत्नामासामवेद तथा रथंतरनामासामवेद यहदोनों जिसवेदिकाकेपूर्वदिशाकीतरफकेदोपाद हैं और इयैतनामासामवेद तथा नौधसनामासामवेद यहदोनों जिसवेदिकाकेपश्चिमदिशाकीतरफकेदोपाद हैं ॥ और तावेदिकाके जोऊपरकेचारकोण हैं ॥ तिनोंविषे वैरूपनामासामवेद दक्षिणकी कोणरूप है ॥ और वैराजनामासामवेद उत्तरकोणरूप है ॥ और शाक्वरनामासामवेद पूर्वकोणरूप है ॥ और रैवत नामासामवेद पश्चिमकोणरूप है याप्रकारकीवेदिका तासभामंडपविषे स्थित है और तावेदिका

तै अनंतर सोउपासकपुरुष ब्रह्माकेपर्यंककूंप्राप्तहोवैहै ॥ कैसाहैसोपर्यंक ॥ तावेदिकाकेऊपरस्थितहै ॥ तथा नानाप्रकारकीविचित्रताकरिकैयुक्तहै ॥ तथा प्राणरूपहै ॥ और जिसपर्यंककूं अमितओजसनामकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ पुनःकैसाहैसोपर्यंक ॥ भूत भविष्यत् वर्तमान यातीनकालविषेस्थित जितनाकीजगत् है ॥सोसंपूर्णजगत् जिसपर्यंककेपूर्वदिशाकेदोपादहैं ॥ और पृथिवी तथालक्ष्मी यहदोनों जिसपर्यंकके पश्चिमदिशाकेदोपादहैं ॥ और बृहत्नामासामवेद जिसपर्यंकके दक्षिणदिशाकेतरफकी काष्ठमयदीर्घपटिकाहै ॥ और रथंतरनामासामवेद जिसपर्यंकके उत्तरदिशाकेतरफकी काष्ठमयदीर्घपटिकाहै ॥ और भद्रनामासामवेद जिसपर्यंकके पूर्वदिशाकेतरफकी काष्ठमयलघुपटिकाहै॥ और यज्ञायज्ञीयनामासामवेद जिसपर्यंकके पश्चिमकेतरफकी काष्ठमयलघुपटिकाहै ॥ और गीतिरूपसामकरिकै युक्त जेछंदोवद्धमंत्ररूपऋचाहैं ॥ तेऋचा जिसपर्यंकके पूर्वपश्चिमकेतरफकी सूत्रमयदीर्घपटियां हैं ॥ और मंत्ररूपयजुर्वेद जिसपर्यंकके दक्षिण उत्तरकेतरफकी सूत्रमयलघुपटियां हैं ॥ और तात्रह्माकेपर्यंकऊपर तूलकरिकैयुक्तजोउपस्तरणहै ॥ जिसकूंलोकविषेगदेलाकहैं हैं ॥ तोउपस्तरण चंद्रमाकीकिरणरूपहै ॥ और ताउपस्तरणऊपर जोश्वेतवस्त्रपाइताहै सोश्वेतवस्त्र उद्गीथनामासामवेदरूपहै ॥ और तापर्यंकऊपर मस्तकराखणेकाजोसिराणाहै॥सोसिराणा लक्ष्मीरूपहै॥यद्यपि पूर्व तापर्यंककापादरूपकरिकै लक्ष्मीकाकथनकऱ्याथा और अभी तापर्यंककासिराणारूपकरिकै लक्ष्मीकावर्णनकऱ्याहै ॥ तथापि पूर्वलौकिकलक्ष्मीकाकथनकऱ्याहै॥और अभी वैदिकलक्ष्मीकाकथनकऱ्याहै ॥ यातैं पूर्वउत्तरग्रंथकाविरोधहोवैनहीं ॥ ऐसीपर्यंकऊपर हिरण्यगर्भरूपब्रह्मा स्थितहोवैहै ॥ कैसाहैसोब्रह्मा ॥ जिसब्रह्माके विषयजन्यआनंदतैंपरे किसीलोकविषेअधिकआनंद नहीं ॥ ऐसेब्रह्माकेलोकविषे ताब्रह्माकेप्रीतिकूंकरणेहारा सोमसवननामा अश्वत्थकावृक्षहै॥जिसवृक्षतैंसर्वदा अमृतस्रवताहै॥याकारणतैंहीं तावृक्षकानाम सोमसवनहै॥ और ताब्रह्मलोकविषे ब्रह्माकेप्रीतिकूंकरणेहारे अरनामासमुद्र तथाण्यनामासमुद्र यहदोनोंसमुद्र अमृतकरिकैपूर्ण हैं॥और मनकीजननी तथासर्वजगत्काकारण जोअविद्याशक्तिहै॥ सो अविद्याशक्ति ताब्रह्माकीप्रियभार्याहै।औरचक्षुइंद्रियकाउपादानकारणरूप जोसत्वगुणप्रधानतेजहै॥सोतेजताब्रह्माकाप्रतिबिंबरूपछायाहै।

और संपूर्णजगत्काकारणरूप जेवेदकीश्रुतियोंहैंतथातिनश्रुतियोंकरिकैजन्य जोशब्दबोधरूपज्ञानहैं॥तेसंपूर्ण तात्रह्माकेसमीप अप्सरारूप करिकैनिवासकरै हैं ॥ यहां वेदरूपश्रुतियोंकूंजगत्काकारणकह्या॥ताकायहअभिप्रायहै॥ सृष्टिकेआदिकालविषे सोपरमात्मादेवतिसतिस पदार्थकेनामकूंउच्चारणकरिकै तिसतिपदार्थकूंउत्पन्नकरैहै ॥ तहांश्रुति सभूरित्युक्त्वाभुवमसृजत्॥ अर्थयह॥ सृष्टिकेआदिकालविषे सोपरमात्मादेव भूःयाप्रकारकेनामकूं उच्चारणकरिकै पृथिवीरूपअर्थकूंउत्पन्नकरताभया ॥ याप्रकार वेदकेशब्दोंकाउच्चारणकरिकै आकाशादिकसर्वपदार्थोंकूंउत्पन्नकरताभया ॥ तहाँस्मृति ॥ वेदशब्देभ्यएवादौ निर्ममेसमहेश्वरः ॥ अर्थयह ॥ सोमहेश्वररूप परमात्मादेव सृष्टिके आदिकालविषे वेदकेशब्दोंतेंहीं संपूर्णजगत्कूंउत्पन्नकरताभया ॥ इत्यादिकश्रुतिस्मृतिप्रमाणकरिकै वेदभगवान्विषेभी जगत्की कारणतासिद्धहोवैहै ॥ और ताहिरण्यगर्भरूपब्रह्माकेदेशविषे नानाप्रकारकीउपासनारूपनदियां सगुणनिर्गुणब्रह्मकाज्ञानरूपजलकूंधारण करिकै बहैहैं ॥ और स्थूलसूक्ष्मरूपसंपूर्णजगत् तात्राह्माकेपुष्पहैं अथवा वस्त्रहैं ॥ इस प्रकार देवयानमार्गतैं आदि लेके वस्त्रपर्यंत जितनीकब्रह्माकी विभूति कथनकरी है ॥ ताविभूतिविशिष्टब्रह्माकी अहंग्रहउपासनाकरिकै सो उपासकपुरुष ब्रह्माकेआसनऊपरपुत्रकी न्याईं शंकातैंरहितहोइकै स्थितहोवैहै ॥ और ताउपासकपुरुषतैं सोब्रह्मा याप्रकारपूछैहै ॥ हेपुत्र तूकौनहै ॥ और तेरेभोगकेसाधनकौनहैं ॥ याप्रकारके ब्रह्माकेवचनकूंश्रवणकरिकै सोउपासकपुरुष याप्रकारकाउत्तरकहैहै ॥ हेभगवन् जोतूं है सोईमैंहूं ॥ और जोतुमारेभोगकेसाधनहै ॥ सोई हमारेभोगकेसाधनहैं ॥ याप्रकारकासंवाद ब्रह्माकेसाथकरिकै सोउपासकपुरुष ब्रह्माकीआज्ञाकूंपाइकै ब्रह्माकेसमान भोगोंकूंभोगैहै ॥ और जभी ब्रह्माकीआयुष् समाप्तहोवैहै ॥ तभी सोउपासकपुरुष मोक्षकूंप्राप्तहोवैहै ॥ याप्रकारकी पर्यंकविद्यारूपअहंग्रहउपासना कौषीतकीउपनिषद्केप्रथमअध्यायविषेकहीहै ॥ तथा अन्यउपनिषदोंविषेभी नानाप्रकारकीअहंग्रहउपासनाकहियां है ॥ हेपापी जीव ॥ तुमनैंअधिकारीमनुष्यशरीरकूंपाइकै तिनउपासनावोंकूंभीनहींकऱ्या ॥ याकारणतैं तुमारेकूंधिक्कारहै ॥ अब छांदोग्यउपनिषद्के तृतीयअध्यायविषे जोहृदयकमलकाध्यान कथनकऱ्याहै ताकूं निरूपणकरैं ॥ यापुरुषकेहृदयकमलविषे पंचछिद्रहैं ॥ तहाँ पूर्व

दक्षिण पश्चिम उत्तर याचारिदिशावोंकीतरफ ताहृदयकमलविषे चारिछिद्रहैं ॥ और पंचमछिद्र ताहृदयकमलके ऊर्ध्वभागविषे है॥तहाँ अधिदैवरूपआदित्यकरिकैयुक्त जोचक्षुइंद्रियहैताचक्षुइंद्रियका अध्यात्मरूपप्राणआश्रयहै ॥और ताअध्यात्मरूपप्राणका हृदयकमलकेपूर्वदिशाकाछिद्र आश्रयहै॥१॥और अग्निरूपअधिदैवकरिकैयुक्त जोवाक्इंद्रियहै॥तावाक्इंद्रियका अध्यात्मरूपअपान आश्रयहै ॥ और ताअध्यात्मरूपअपानका हृदयकमलकेदक्षिणदिशाकाछिद्र आश्रयहै॥२॥और अधिदैवरूपदिक्करिकैयुक्त जोश्रोत्रइंद्रियहैताश्रोत्रइंद्रियका अध्यात्मरूपव्यान आश्रयहै॥और ताअध्यात्मरूपव्यानका हृदयकमलकेपश्चिमदिशाकाछिद्रआश्रयहै ॥३॥औरअधिदैवरूपपर्जन्यकरिकै युक्तजोमनहै ॥तामनका अध्यात्मरूपसमान आश्रयहै ॥ और ताअध्यात्मरूपसमानका हृदयकमलकेउत्तरदिशाकाछिद्रआश्रयहै ॥४॥ और अधिदैवरूपआकाशकरिकैयुक्तजोवायुहै ॥ तावायुका अध्यात्मरूपउदान आश्रयहै॥और ताअध्यात्मरूपउदानका हृदयकमलका ऊर्ध्वछिद्र आश्रयहै ॥५॥याप्रकारके पंचछिद्रोंकरिकैयुक्त जोहृदयकमलहै ॥ ताहृदयकमलविषे सत्यकाम सत्यसंकल्प इत्यादिकगुणों करिकैविशिष्ट जोसगुणब्रह्महै ताका जेपुरुष ध्यानकरैहैं ॥तेपुरुषभी ब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवैं हैं ॥हेपापीजीव॥सो हृदयकमलविषे सगुणब्रह्मकाध्यानभी तुमनेकऱ्यानहीं॥याकारणतैं तुम्हारेकूंधिक्कारहै॥और हेपापीजीव ॥निर्गुणब्रह्मकेध्यानकीअपेक्षाकरिकै सगुणब्रह्मकाध्यानअत्यंतसुगमहै॥सोसगुणब्रह्मकाध्यानभी जभी तुम्हारेसेनहींहोइसक्या॥तभी निर्गुणब्रह्मकाध्यान तुम्हारेसे किसप्रकारहोवैगा ॥कैसाहैसोनिर्गुणब्रह्मजिसनिर्गुणब्रह्मकेसाक्षात्कारकरिकै याअधिकारीपुरुषोंकूं जन्ममरणादिकसंसारकेदुःख किंचित्मात्रभी प्राप्तहोवैनहीं और हेपापीजीव पर्यंकविद्यारूपउपासनातैंआदिलके जितनीकअहंग्रहउपासनाहैं ॥ तेअहंग्रहउपासना अंतर्मुखदृष्टिकरिकै सिद्धहोवैं हैं॥यातैं अत्यंतकठिनहैं॥याकारणतैंही तिनअहंग्रहउपासनावोंकरिकै ब्रह्मलोककूंप्राप्तहुआ यहअधिकारीपुरुष पुनःभूमिलोकविषेआवैनहीं ॥ किंतु तात्रह्मलोकविषेहीमोक्षकूंप्राप्तहोवैहै॥ याप्रकारकीअहंग्रहउपासनाकूं यद्यपि तुमने कठिनजाणिकरिकै नहींकऱ्या ॥तथापि बाह्यदृष्टिकरिकैसिद्धहोणेहारी जोपंचाग्निविद्यारूपउपासनाहै ॥ सोउपासना अत्यंतसुगमहै ॥ याकारणतैंही तापंचाग्निविद्यारूपउपासनाकरिकै ब्रह्मलोककूं

प्राप्तहुआ यहउपासकपुरुष पुनःभूमिलोकविषेआवैहै॥सोपंचाग्निविद्यारूपउपासनाभीतुमनेकरीनहीं ॥ अब पंचाग्निविद्याकूंनिरूपणकरैं हैं ब्रह्मलोककीप्राप्तिकीइच्छा जिसपुरुषकूंहोवै॥तथा अग्निहोत्र जिसपुरुषकेगृहविषेहोवै॥ऐसापुरुषपंचाग्निविद्याकाअधिकारीहै॥सोअधिकारी पुरुष स्वर्ग१मेघ२मनुष्यलोक३पुरुष४योषित्५यापांचोंका अग्निरूपकरिकैध्यानकरै॥अब स्वर्गादिकपंचअग्नियोंविषे लोकप्रसिद्धअग्निके समानधर्मोंका निरूपणकरैहैं॥जैसे लोकप्रसिद्धअग्निकूं काष्ठादिकप्रज्वलितकरैं हैं॥यातैं काष्ठादिक लोकप्रसिद्धअग्निकेसमिधूहैं॥ तैसेस्वर्ग लोककेप्राप्तिकेसाधन जेपुण्यकर्महैं॥तिनपुण्यकर्मोंविषे आदित्यभगवान्ही सर्वजीवोंकूंप्रवर्तकरैहैं॥ याकारणतैंसोआदित्यभगवान्स्वर्गरूप अग्निका समिधूहै॥१॥ और संवत्सरकरिकै जलकासंग्रहकरणेहारेजेमेघहैं ॥ तेमेघ वर्षाकालविषे वृष्टिकरनेविषे समर्थहोवै हैं याकारणतैं संवत्सर मेघरूपअग्निकासमिधूहै ॥२॥और संपूर्णलोकोंकाआधाररूप जोयहपृथवीहै॥ तापृथवीकारिकै यहमनुष्यलोक शोभायमानहै ॥ याकारणतैं सोपृथिवी मनुष्यलोकरूपअग्निकासमिधूहै॥३ ॥ और यहपुरुष संभाषणकालविषे प्रसारितमुखकरिकै शोभायमानहोवैहै ॥ याकारणतैं सोप्रसारितमुख पुरुषरूपअग्निकासमिधूह ॥४॥और पुत्रादिकसंतानका जिसतैंनिर्गमनहोवैहै ॥ ऐसाजो योषित्का उपस्थ इंद्रियहै ॥ताउपस्थइंद्रियकरिकै योषित् शोभायमानहोवैहै॥याकारणतैं सोउपस्थइंद्रिय योषित्रूपअग्निकासमिधूहै ॥ ५ ॥ अब स्वर्गादिकपंचअग्नियोंके धूमरूपकरिकै ध्यानकरणेयोग्यजेपदार्थ हैं तिनाका निरूपणकरैं हैं॥ जैसे लोकप्रसिद्धअग्निविषे काष्टरूपसमिधूतैं धूम कीउत्पत्तिहोवै है ॥ आदित्यरूपसमिधूतैं किरणोंकीउत्पत्तिहोवै है ॥ याकारणतैं तेकिरण स्वर्गरूपअग्निका धूमहैं ॥ १ ॥ और संवत्स ररूपसमिधूतैं श्वेतमेघोंकीउत्पत्तिहोवै है ॥ याकारणतैं तेश्वेतमेघ मेघरूपअग्निका धूमह ॥ २ और काष्ठमयपृथवीरूपसमिधूतैं लोकप्र सिद्धअग्निउत्पन्नहोवै है॥याकारणतैं सोआग्नि मनुष्यलोकरूपअग्निका धूमहै ॥ ३ ॥ और प्रसारितमुखरूपसमिधूतैं प्राणरूपवायुकीउत्प त्तिहोवैहै ॥याकारणतैं सोप्राणरूपवायु पुरुषरूपअग्निका धूमहै ॥ ४ ॥ और उपस्थरूपसमिधूतैं लोमोंकीउत्पत्तिहोवै है ॥ याकारणतैं तेलोम योषितरूपअग्निकाधूमहैं॥५॥अबस्वर्गादिकपंचअग्नियोंकेज्वालारूपकरिकैध्यानकरणेयोग्यजेपदार्थहैं तिनपदार्थोंकूंनिरूपणकरैं हैं

जो समिधूकरिकैजन्यहोवै तथाप्रकाशकहोवै ताकानामज्वालाहै ॥ जैसे प्रसिद्धअग्निकीज्वाला काष्ठरूपसमिधूकरिकैजन्यहै ॥ तथा प्रका शकहै ॥ तैसे दिन आदित्यरूपसमिधूकरिकैजन्यहै तथाप्रकाशकहै ॥ याकारणतैं सोदिन स्वर्गरूपअग्निकीज्वालाहै ॥ १ ॥ और विद्युत् संवत्सररूपसमिधूकरिकैजन्यहै तथाप्रकाशकहै ॥ याकारणतैं सोविद्युत् मेघरूपअग्निकीज्वालाहै ॥२॥ और अंधकारमयरात्रि कृष्णवर्ण वालीपृथ्वीरूपसमिधूकरिकैजन्यहै ॥ तथा निशाचरजीवोंकूं प्रकाशकरणेहारी है ॥ याकारणतैं सोरात्रि मनुष्यलोकरूपअग्निकीज्वालाहै ॥ ३ ॥ और वाक्इंद्रिय प्रसारितमुखरूपसमिधूकरिकैजन्यहै॥तथा अर्थकाप्रकाशकहै ॥ याकारणतैं सोवाक्इंद्रिय पुरुषरूपअग्निकीज्वा लाहै ॥ ४ ॥ और गोलकरूपयोनि उपस्थइंद्रियरूपसमिधूकरिकैजन्यहै ॥ तथा अग्निकेज्वालासमान रक्तवर्णकरिकैप्रकाशमानहै॥याका रणतैं सोयोनि योषित्रूपअग्निकीज्वालाहै ॥ ५ ॥ अब स्वर्गादिकपंचअग्नियोंके अंगाररूपकरिकै ध्यानकरणेयोग्यजेपदार्थ हैं तिनोंका निरूपणकरै हैं ॥ तहाँ जैसे लोकप्रसिद्धअग्निकी ज्वालाकेउपशमकालविषे अंगार प्रकाशमानहोवै हैं ॥ तैसे दिनरूपज्वालाकेउपशम रूपसंध्याकालविषे पूर्वादिकचारिदिशा नानारूपकरिकैप्रकाशमानहोवै हैं ॥ याकारणतैं पूर्वादिकादिशा स्वर्गरूपअग्निकेअंगार हैं॥ १ ॥ और विद्युत्रूपज्वालाकेउपशमकालविषे वज्ररूपअशनिं प्रकाशमानहोवै हैं ॥ याकारणतैं तेअशनि मेघरूपअग्निकेअंगार हैं॥ २ ॥और रात्रिरूपज्वालाकेउपशमकालविषे मंदप्रभाववालाचंद्रमा प्रकाशमानहोवै है॥याकारणतैं सोचंद्रमा मनुष्यलोकरूप अग्निकेअंगार हैं॥३॥ और वाक्इंद्रियरूपज्वालाकेउपशमकालविषे चक्षुइंद्रियप्रकाशकरै है ॥ याकारणतैं सोचक्षुइंद्रिय पुरुषरूपअग्निकेअंगारहैं ॥ ४ ॥ और योनिरूपज्वालाकेउपशमकालविषे मैथुनकेमध्यकालमें जोआनंदहोवै है ॥ सोआनंद योषित्रूपअग्निकेअंगारहैं ॥५॥ अब स्वर्गादिकपं चअग्नियोंके विस्फुलिंगरूपकरिकै ध्यानकरणेयोग्यजेपदार्थ हैं तिनपदार्थोंका निरूपणकरैं हैं ॥ तहां जैसे लोकप्रसिद्धअग्निके विस्फुलिंग होवैं हैं॥तैसे ईशानकोणतैंआदिलेके जेचारिउपदिशाहैं ॥तेउपादिशा स्वर्गरूपअग्निके विस्फुलिंगहैं ॥ १ ॥ और मेघोंकेगर्जनारूपजेश ब्दहैं ॥ तेशब्द मेघरूपअग्निकोविस्फुलिंगहैं २ ॥ और यज्ञादिककर्मोंकूंकरणेहारेजेकर्मीपुरुषहैं ॥ तेकर्मीपुरुषही यामनुष्यलोकविषे

तारागणरूपकरिकैपरिणामकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ याकारणतैं नक्षत्ररूपतारागण मनुष्यलोकरूपअग्निकेविस्फुलिंगहैं ॥ ३ ॥ और श्रोत्रइंद्रिय जन्य जेशब्दाकारवृत्तियां हैं ॥ तेवृत्तियां पुरुषरूपअग्निकेविस्फुलिंग हैं ॥ ४ ॥ और आलिंगनादिकोंतैं उत्पन्नभयेजेआनंदहैं ॥ तेआनंद योषित्रूपअग्निकेविस्फुलिंग हैं ॥ ५ ॥ अब स्वर्गादिकपंचअग्नियोंके आहुतिरूपकरिकै ध्यानकरणेयोग्यजेपदार्थ हैं ॥ तिनपदार्थोंका निरूपणकरैं हैं ॥ तहां जैसे प्रसिद्धअग्निकेयवघृतादिकपदार्थ आहुति होवैं हैं ॥ तैसे श्रद्धा स्वर्गरूपअग्निकी आहुति है॥यहां श्रद्धाशब्द करिकै श्रद्धाकरिकैकरेहुए जेअग्निहोत्रादिककर्म हैं ॥ तिनकर्मोंतैं उत्पन्नभया जोधर्मरूपअपूर्व है ॥ जोधर्मरूपअपूर्व याजीवात्माकेसाथ परलोकविषेजावै है ॥ ताधर्मरूपअपूर्वका ग्रहणकरणा ॥ १ ॥ और सो धर्मरूपश्रद्धा स्वर्गविषेजाइकै ताकर्मीपुरुषके सोममय शरीर कूंरचै है ॥ तहां भोगकीसमाप्तिकालविषेशोकरूप अग्नि करिकै सो सोममय शरीर द्रवीभावकूं प्राप्तहोइकै मेघोंविषे प्राप्तहोवै है ॥ याकारणतैं सोजीवमिश्रितसोम मेघरूपअग्निकीआहुतिहै ॥२॥ और तामेघोंतैंअनंतर सो वृष्टिरूपकरिकै यामनुष्यलोकविषेप्राप्तहोवैहै॥ याकारणतैं सो जीवमिश्रितवृष्टि मनुष्यलोकरूपअग्निकीआहुतिहै ॥ ३ ॥ और तावृष्टितैंअनंतरअन्नरूपकरिकै सो पुरुषविषेप्राप्तहोवै है॥ याकारणतैं सोजीवमिश्रितअन्न पुरुषरूपअग्निकीआहुतिहै ॥ ४ ॥ और तिसपुरुषतैंअनंतर सो रेतरूपकरिकै योषित्विषेप्राप्तहोवै है॥या कारणतैं सोजीवमिश्रितरेत योषित्रूपअग्निकीआहुति है ॥५॥ और यजमानपुरुषके इंद्रिआदिककरणोंके अधिष्ठातारूपजेइंद्रादिकदेव ताहैं॥तेइंद्रादिकदेवता स्वर्गादिकपंचअग्नियोंविषे श्रद्धादिकपंचआहुतियोंकूं हवनकरणेहारे हैं ॥ याप्रकार स्वर्गादिकपांचोंकूं अग्निरूपक रिकैध्यानकरणेद्वारापुरुषभी ब्रह्मलोकविषेजावैहै ॥हेपापीजीव ॥ सोपंचाग्निविद्यारूपउपासनाभीतुमनेकरीनहीं ॥ याकारणतैंभी तुम्हारेकूं धिक्कारहै ॥ और हेपापीजीव॥पूर्वलेकिसीपुण्यकर्मकेप्रभावतैंतुम्हारेकूंस्वर्गकीप्राप्तिभईथी ॥ तापुण्यकर्मका जभीभोगकरिकैनाशहुआ॥ तभी आकाश वायु मेघ इत्यादिकमार्गकरिकै तू भूमिलोकविषे मनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोताभया ॥ अब गर्भकेदुःखोंकानिरूपणकरैं हैं॥हेपा पीजीव॥माताकेउदरविषे कलिल बुद्बुद इत्यादिकअवस्थावोंकरिकै जोजोदुःख तुम्हारेकूंप्राप्तभयाहै॥तादुःखकालेशमात्रभी यानरकविषे

नहीं है॥ हेपापीजीव ॥ याप्रकारकेदारुणदुःखकीप्राप्तिकरणेहारा ॥ जोमाताकेउदरकानिवास है ॥ तानिवासकूं तुमारेसरीखेजडतैंविना दूसराकौनचेतनप्राणी सहनकरिसकैगा ॥ किंतु तुमनेहीं तागर्भकेनिवासकूं सहनकऱ्याहै॥ हेपापीजीव॥ जिसमाताकेउदरविषे तूं अनेक वारनिवासकरिआयाहै ॥ सोमाताकाउदर कसाह ॥ विष्ठाकरिकै तथामूत्रकरिकै पूर्ण है ॥ याकारणतैं अत्यंतदुर्गंधहै॥तथा कृमिगणोंक रिकैपूर्ण है ॥ याप्रकारके माताकेउदरविषे तूंपापात्माजीव जरायुनामापटकरिकैआवृतहुआ निवासकरताभया॥और तामाताकेउदरविषे तूंपापात्माजीव श्वासोंकूं तथाहस्तपादादिकअवयवोंकूं चलावणेविषेभी समर्थनहींहोताभया॥ और तामाताकेउदरविषे माताकाजठराग्नि तुमारेकूं जिसप्रकारका तापकरताभया है ॥ तिस तापकालेशमात्रभी यानरकविषेतापनहीं है ॥ और हेपापीजीव ॥ तामाताके उदर विषे प्राणरूपवायुकरिकै॥ तूंपापात्मा दशदिशावोंविषे भ्रमणकरताभया ॥ ताभ्रमणकरिकै जोजोदुःख तुमारेकूं प्राप्तभया है॥तादुःखका लेशमात्रभी यानरकविषेदुःखनहीं॥ और हेपापीजीव माताकेउदरविषे प्रवेशकरणेतैं॥ तथाप्रसूतिवायुकरिकै माताकेउदरसेबाहरनिकसणे तैं जोजोदुःख तुमारेकूंप्राप्तभयाहै॥ तिसतुमारेदुःखकूं हमयमकिंकरभी कहणेकूंसमर्थनहीं हैं॥ और हेपापीजीव जिसजिसअन्नकूं माताभो जनकरै है॥तिसतिसअन्नकासूक्ष्मरस गर्भविषेस्थितबालककूंप्राप्तहोवै है ॥ यातैं तुमारीमाताने भोजनकरजे कटु अमल लवण कषाय तिक्त उष्ण इत्यादिकअनेकपदार्थ ॥ तिनोंकरिकै दाहकूंप्राप्तहुआतूंपापात्मा तामाताकेउदरविषे दशमासपर्यंत किसप्रकारास्थितहोता भया ॥ और हेपापीजीव॥ जैसे किसीगृहविषे अग्नियोंकाएकशत प्रज्वलितकरिये॥ ताअग्नियोंकरिकै॥सोगृह अत्यंत तपायमानहोवै है॥ तागृहकेसमान तपायमान जोमाताकाउदरहै॥ताउदरविषे सर्पोंकेसमान जेअनेककृमिहैं ॥ ताकृमियोंकरिकैभक्षणकऱ्याहुआ तूंपापात्मा दशमासपर्यंत किसप्रकार स्थिरहोताभया॥ और हेपापीजीव ॥ माताकेउदरविषे जेजेदुर्दशा तुमारेकूंप्राप्तभई हैं ॥ तिन तुमारेदुर्दशावों केकहणेविषे भयकरिकै हमाराशरीर कंपायमानहोवै है ॥ याकारणतैं तिन तुमारेदुर्दशावोंकेकहणेकूं हमयमकिंकरभी समर्थनहीं हैं ॥ हेपापीजीव॥सोगर्भनिवासकादुःखकैसाहै जोकदाचित् कोईमहापापीजीव अनेकशतकोटिकल्पपर्यंतानिरंतर नरकविषेनिवासकरै है॥तानि

वासकरणेकरिकै तापापीपुरुषकूं जिसप्रकारकादुःखप्राप्तहोव है॥ तैसाहीदुःख माताकेगर्भविषेनिवासकरणेतैं याजीवकूंहोवैहै॥ और हेपापी जीव ॥ गर्भकेधारणेतैंअनंतर जोस्त्रियोंका आपणेपुरुषकेसाथसुरत है ॥ सोसुरत गर्भविषेस्थितबालकका तथागर्भिणीस्त्रीका तथापुरुषका यातीनोंका दुरंतहै ॥ परंतु सोदुरंत परोक्षकालविषेहोवै है ॥ याकारणतैं लोक ताकूं दुरंतकहै नहीं॥किंतु सुरतकहै हैं ॥ यहाँ विषयसंभोगकानाम सुरत है॥और परिणामकालविषे जोदुःखकाहेतुहोवै ताकानामदुरंतहै ॥ और ताविषयसंभोगरूपदुरंतकूं सुरतनामक करिकै जोबुद्धिमान्पुरुष कथनकरै हैं याकेविषे यहकारणहै॥ यालोकविषे जेशिष्टमहात्मापुरुषहैं ॥ तेमहात्मापुरुष आपणेतैंभिन्नपदार्थोंकूं किसीउत्कृष्टनामकरिकैहीकथनकरै हैं॥ निकृष्टनामकरिकै किसीवस्तुका कथनकरैनहीं ॥ याप्रकारकेशिष्टपुरुषोंकेआचरणकूं अंगीकारक रिकै तेबुद्धिमान्पुरुष विषयसंभोगरूपदुरंतकर्मकूं सुरतनामकरिकैकथनकरै हैं ॥ अब विषयसंभोगविषे दुरंतपणा स्पष्टकरिकैनिरूपण करै हैं जोपुरुष गर्भिणीस्त्रीकेसाथ विषयसंभोगकरै है ॥ता पुरुषकूं स्त्रीकेहत्याकादोष तथा बालकके हत्याकादोष प्राप्तहोवै॥ और जागर्भिणीस्त्री पुरुषकेसाथ विषयसंभोगकरै है॥तिसगर्भिणीस्त्रीकूं आत्महत्याकादोष तथा बालहत्याकादोष प्राप्तहोवै है याकारणतैं गर्भिणी स्त्रीकेसाथ विषयसंभोगस्त्री पुरुष बालक यातीनोंकेदुःखकाहेतुहै ॥ और हेपापीजीव ॥ यासंसारचक्रविषेप्राप्तहोइकै यद्यपि तुमने अनेकप्रकारकेदुःखोंकूं अनुभवकऱ्याहै ॥ तथापि तिनसंपूर्णदुःखोंकूं विस्मरणकरिकै यामनुष्यशरीरविषे तूं पुनःपापकर्मोंकूंकरताभया ॥ और हेपापीजीव॥जिसशरीरकेअभिमानकरिकै तुमने पापकर्मकरैहैं सोशरीरकैसाहै॥जैसे पितामाताका विष्ठामूत्रादिकमलहोवैहै।तैसेही तापिता माताके शुक्रशोणितरूपमल हैं ताशुक्रशोणितरूपमलतैं याशरीरकीउत्पत्तिभई है॥याकारणतैं यहशरीर पितामाताके विष्ठामूत्रादिकोंकेसमानहै॥और वर्तमानकालविषेभी यहशरीर विष्ठामूत्रादिकमलोंकरिकैपूर्णहै॥और मरणतैंअनंतर यहशरीर श्वानशृगालादिकोंकाभक्ष्यहै॥ ऐसेनिंदितशरीरकूं तुमने आत्मारूपमानिकै लोकशास्त्रकरिकैनिषिद्धकर्मोंकूंकऱ्याहै तिनपापकर्मोंकादुःखरूपफल अभी नरकविषेतुमारेकूं प्राप्तभयाहै॥हेपापीजीव॥जैसे यालोकविषे किसीपुरुषकेगृहविषेअग्निलागै॥ और सोपुरुष ताअग्निके शांतिकरणेवासतै तिसकालविषेकूपकूं

खोदे॥सोकूपकाखोदणारूप तापुरुषकाव्यापार निष्फलहै।तैसे इसकालविषे मैं पूर्व पापकर्मोंकूंकिसवासतैंकरताभया और पुण्यकर्मोंकूं मैं क्योंनहींकरताभया याप्रकारकातुमारापश्चात्ताप निष्फलहै॥और हेपापीजीव ॥ हमयमकिंकरभी तुमारेदुःखकेकरणेहारेनहीं हैं ॥ और सूर्यकापुत्रधर्मराजभी तुमारेदुःखकेकरणेहारानहीं है ॥ और यहश्वानगृध्रादिकभी तुमारेदुःखकेकरणेहारेनहीं हैं ॥ किंतु यामनुष्यशरीरकूंपाइकै जोतुमने शरीरकरिकै तथामनवाणीकरिकै अन्यप्राणियोंकूंदुःखकीप्राप्तिकरीहै॥सोतुमारापापकर्मही इहांनरकविषे तुमारेकूंदुःखकीप्राप्तिकरै है ॥ अब तापापीजीवकेपश्चात्तापकरावणेवासतै तापापीजीवकेपूर्वलेपापकर्मोंकानिरूपणकरै हैं ॥ हेपापीजीव ॥ यामनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोइकै तुमने सर्वजीवोंकूं दुःखकीहीप्राप्तिकरी है ॥ तिनजीवोंविषेभी जेसाधुस्वभाववालेमहात्मापुरुषहैं तिनोंकूंविशेषकरिकै तुमने दुःखकीप्राप्तिकरी है ॥हेपापीजीव॥ जिनदुर्भावनावोंकरिकै तुमने महात्मापुरुषोंकानिरादरकऱ्याहै॥तिनआपणीदुर्भावनावोंकूं तूंश्रवणकर ॥ जैसे पित्तदोषवालापुरुष श्वेतशंखकूंपीतदेखेहै ॥ तैसे कामरूपदोषकरिकै दूषितहुआतूंपापात्मा सर्वजगत्कूं कामीमानताभया ॥ तहाँ एकांतदेशविषेस्थित जेमहात्मासंन्यासी हैं तथानैष्ठिकब्रह्मचारी हैं॥तथा वनविषेस्थित जेवानप्रस्थ हैं ॥ तिनमहात्मापुरुषोंकूंदेखिकरिकै तूंपापात्मा याप्रकारकेवचनोंकूं कहताभया ॥ जैसे मैं दिनदिनविषे अन्नपानादिकोंकाभक्षणकरताहूं॥याकारणतैं मैं मैथुनकापरित्यागरूपब्रह्मचर्यतैंरहितहूं॥जैसे यहसंन्यासी तथा ब्रह्मचारी तथावानप्रस्थभी दिनदिनविषे अन्नपानादिकोंकूंभक्षणकरते हैं॥ याकारणतैं यहसंन्यासीआदिकभी ब्रह्मचर्यतैंरहितहीहोवैंगे ॥ किंवा यहसंन्यासी एकांतदेशविषेस्थितहैं ॥ तथा शब्द स्पर्श रूप रस गंध यापंचविषयोंकूं श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रियोंकरिकैग्रहणकरै हैं ॥ तथा यहसंन्यासी वाकादिककर्मइंद्रियोंकरिकै शब्दउच्चारणादिकव्यापारोंकूंकरै हैं ॥ तथा मनकरिकैसुखदुःखकाग्रहणकरै हैं ॥ याप्रकार श्रोत्रादिकसर्वइंद्रियोंकेव्यापारोंकूंकरतेहुए यहसंन्यासी उपस्थइंद्रियकेमैथुनरूपव्यापारकूं क्योंनहींकरतेहोवैंगे ॥ किंतु मैथुनभी अवश्यकरतेहोवैंगे ॥ किंवा यालोकविषे जिसपुरुषकीवाकादिकइंद्रिय भोग भोगणेविषेसमर्थ हैं ॥ सोपुरुष जबपर्यंतजीवै है तबपर्यंत आहार निद्रा मैथुन यातीनोंकापरित्यागकरैनहीं ॥ और यहसंन्यासी आहार

तथानिद्रा यादोनोंकूंतौकरै हैं ॥ यातैं तीसरेमैथुनकूंभी यहसंन्यासी अवश्यकरतेहोवेंगे ॥ किंवा ॥ यामनुष्यलोकविषे वाक्इंद्रियतैआदि लैके कोईभीइंद्रिय आपणेव्यापारतैंरहितहोवैनहीं ॥ किंतु संपूर्णवाकादिकइंद्रिय आपणेव्यापारविषे प्रवर्त्तहोवै है ॥ यातैं इनसंन्यासियों का उपस्थइंद्रिय आपणेमैथुनरूपव्यापारतैंरहितहोवै है यहवार्त्ता अत्यंतअसंभवहै ॥ किंवा ॥ वनविषे तृणोंकूंभक्षणकरणेहारे जेमृगादि कपशुहैं ॥ तिनोंकूंभी यहकामदेव आपणेवशकरिलेवैहै ॥ और जलविषेविचरणेहारेतथाजलकूंभक्षणकरणेहारे जेमत्स्यादिकहैं ॥ तिनों कूंभी यहकामदेव आपणेवशकरिलेवै है ॥ और मृत्तिकाकूं तथापवनकूं भक्षणकरणेहारे जेसर्पादिकहैं ॥तिनोंकूंभी यहकामदेव आपणे व शकरिलेवै है ॥ यातैं तृणादिकोंकूंभक्षणकरणेहारेमृगादिकपशुभी जभी कामतैंरहितनहींहोइसकते॥तभी नानाप्रकारकेअन्नादिकोंकूंभ क्षणकरणेहारे यहयुवानसंन्यासीकिसप्रकार कामतैंरहितहोवेंगे ॥ यातैं यहजान्याजावै है ॥ जैसे मार्जार मूषकोंकेपकडनेवासतै ध्यानकरै है ॥ तैसे यहसंन्यासी लोकोंकेस्त्रीधनादिकपदार्थोंकेहरणकरणेवासतै ध्यानलगाइकैबैठे हैं ॥ याकारणतैं यहसंन्यासीदंभी हैं ॥ और यहसंन्यासी नासिकाकेअग्रभागविषे जोदृष्टिलगाइकैबैठेहैं ॥ सोभी लोकोंकेमोहकरणेवासतैंबैठे हैं ॥ मनकरिकैतौ यहसंन्यासी परध नकूं तथापरस्त्रीकूं चिंतनकरतेहोवेंगे ॥ हेपापीजीव ॥ इसतैंआदिलैकेअनेकप्रकारकीदुर्भावनावोंकरिकैतुमने धर्मात्मासंन्यासियोंविषे तथानैष्ठिकब्रह्मचारियोंविषे तथावानप्रस्थोंविषे नानाप्रकारकेदूषण आरोपणकरे हैं॥तिनपापकर्मोंका दुःखरूपफल अभी नरकविषे तुम्हा रेकूंप्रातहोवै है ॥और हेपापीजीव॥ यामनुष्यलोकविषे जोपतिव्रतास्त्रियां हैं तिनोंविषे जिसदुर्भावनाकरिकै तुमने दूषणआरोपणकरे हैं ॥ तिनआपणेदुर्भावनावोंकूं तूं श्रवणकर ॥ हेपापीजीव ॥ पतिव्रतास्त्रियोंकूंदेखिकरिकै तूंपापात्मा याप्रकारकेवचनकहताभया॥यामनुष्य लोकविषे यौवनअवस्थाकरिकैयुक्त ऐसीस्त्रीकौनहै ॥ जोस्त्री रूपवान्परपुरुषकीइच्छानहींकरै है ॥ किंतु संपूर्णस्त्रियाँ रूपवान्परपुरुषकी इच्छाकरैहैं॥काहेतैंयहस्त्रियाँ आपणेपिताकूं तथाआपणेभ्राताकूं तथाआपणेपुत्रकूंभी रूपवान्देखिकै जभीकामातुरहोवैहै॥तभीपरपुरुषकूं रूपवान्देखिकै तेस्त्रियां क्योंनहींकामातुरहोवैंगी ॥ किंतु परपुरुषकूंरूपवान्देखिकै यहस्त्रियां कामातुर अवश्यहोवै हैं ॥ और यहस्त्रियां

॥१००॥

जोपरपुरुषकेसमीप नहींजावैहैं ॥ याकेविषे यहचारिकारणहैं ॥ एकतौआपणामान ॥ और दूसरा लोकोंकीलज्जा ॥ और तीसरा पति आदिकोंकाभय ॥ और चतुर्थ एकांतस्थानकाअभाव ॥ याचारिप्रकारकेनिमित्तकरिकै यहस्त्रियां परपुरुषकेसमीपनहींजावैहैं ॥ परंतु आपणेमनविषे यहस्त्रियां सदैवही परपुरुषोंकाचिंतनकरैहैं ॥ किंवा ॥ परपुरुषोंकूंदेखिकरिकै जास्त्रीनीचै मुखकरैहै ॥ तास्त्रीकूं लोक पति व्रताकहैहैं ॥ सो याप्रकारका पतिव्रतास्त्रीकालक्षणभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं जास्त्री परपुरुषकूंदेखिकै नीचैमुखकरैहै ॥ सास्त्री कामकरिकै आतुरहुई आपणेमनकरिकै तीनलोकवर्तिपुरुषोंकाध्यानकरैहै ॥ किंवा ॥ यालोकविषे जास्त्री पतिव्रतारूपकरिकै प्रसिद्धहै॥सास्त्री गणि कातैंभी अत्यंतव्यभिचारिणीजानणी॥ काहेतैं गणिकास्त्री आपणेसंबंधियोंसैं व्यभिचारकरैनहीं॥और यहस्त्रीतौ आपणेसंबंधियोंसैंभीव्य भिचारकरैहै ॥ यातैं सास्त्री गणिकातैंभी अधिकव्यभिचारिणीजानणी ॥किंवा ॥ विवेकादिकसाधनोंकरिकैयुक्तजेइंद्रादिकमहान्पुरुषहैं॥ तिनोंकेधैर्यकूंभी जभी यहकामदेव हरणकरैहै॥तभी यामूढस्त्रियोंकेधैर्यकूं यहकामदेव हरणकरैहै याकेविषे क्याकहणाहै॥ हेपापीजीव॥इसतैं आदिलैके अनेकप्रकारकीदुर्भावनावोंकरिकै तूंपापात्मा तिनपतिव्रतास्त्रियोंविषे नानाप्रकारकेदूषण आरोपणकरताभया और हेपापीजीव जैसे तैलकेसंबंधकरिकै वस्त्र दूषितहोवैहै ॥ तैसे यालोकविषे जितनाकी शास्त्रकरिकैप्रतिपादितधर्महै ॥ तिसधर्मविषे तूंपापात्माजीव नानाप्रकारकीकुतर्ककरिकै नानाप्रकारकेदूषण आरोपणकरताभया ॥ कैसाहैसोधर्म ॥ जैसे मालाकेपुष्पोंकूं सूत्र धारणकरैहै ॥ तैसे यह धर्मरूपसूत्र जगत्रूपपुष्पोंकूंधारणकरैहै और हेपापीजीव ॥ यामनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोइकै तूंपापात्मा ब्रह्मादिकदेवतावोंकी तथाआपणे गुरुवोंकीभी निंदाहीकरताभया ॥ और पितामातातैंआदिलैकेसंपूर्णबांधवोंका तूंपापात्मा निरादरहीकरताभया॥और लोभकेवशहुआ तूंपापात्मा अन्यपुरुषोंकेधनादिकपदार्थोंकूं हरणकरताभया ॥ और कामकेवशहुआ तूंपापात्मा अन्यपुरुषोंकेस्त्रियोंकूं हरणकरताभया॥ और हेपापीजीव ॥ यामनुष्यलोकविषे तूंदुर्बुद्धि अन्यप्राणियोंकेदुःखदेणेवासतैं याप्रकारकाविचारकरताभया ॥ इसशत्रुकूं अल्पदुःख कीप्राप्तिकरणेहारा जोयहसुगमउपायहै॥ तिसउपायकूं मैं प्रथमासिद्धकरिकै तिसतैंअनंतर याशत्रुकूं महान्दुःखकीप्राप्तिकरणेहारा जोयह

महान्उपायहै ॥ तिसमहान्उपायकूं मैं सिद्धकरौंगा ॥ ताउपायकरिकै याशत्रुकूं परमदुःखकीप्राप्तिहोवैगी ॥ अथवा ॥ याशत्रुकेसाथ मैं प्रथम मित्रताकरौंगा ॥ तामित्रताकरिकै याशत्रुका जभी हमारे ऊपरविश्वासहोवैगा ॥ तभी याशत्रुकूं मैं परमदुःखकीप्राप्तिकरौंगा ॥ हे पापीजीव ॥ इसतैंआदिलेकेअनेकप्रकारकेउपायोंकूं आपणेमनविषेचिंतनकरिकै तूंपरमात्मा अन्यप्राणियोंकूं शरीरकरिकै तथा वाणीकरिकै नानाप्रकारकेदुःखोंकीप्राप्तिकरताभया ॥ याकारणतैं तेरेकूंधिक्कारहै॥ हेजनक॥ इसतैंआदिलेके नानाप्रकारकेकठोरवचनोंकरिकै ते यमकिंकर तापापीजीवकानिरादरकरैहैं ॥ तिसतैंअनंतर तेयमकिंकर तिनपापीजीवोंकूं नानाप्रकारकेनरकोंविषेपावैहैं ॥ तिननरकोंविषे प्राप्तहुए तेपापीजीव अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और हेजनक ॥ तिनपापीजीवोंकूं केवलनरकविषेहीदुःखहोवैहै ॥ अन्यत्रतिनपापीजीवोंकूं दुःखनहींहोवैहै ॥ याप्रकारकाअर्थ तुमने निश्चयनहींकरणा किंतु तिनपापीजीवोंकूं नरकविषे जैसादुःखहोवैहै ॥ तैसाहीदुःख याशरीरकेजन्मकालविषेहोवैहै॥और तैसाहीदुख याशरीरकीस्थितिकालविषेहोवै है ॥और तैसाहीदुःख याशरीरकेमरणकालविषेहोवैहै ॥ अब सर्वलोकोंविषे जन्मकेदुःखकीसमानताकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ॥ ब्रह्मलोकविषे तथास्वर्गलोकविषे तथामनुष्यलोकविषे तथापातललोकविषे जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज याचारिप्रकारकेशरीरोंकी समानहींउत्पत्तिहोवैहै ॥याकारणतैं तिनशरीरोंकेजन्मकालका दुःखभी सर्वलोकोंविषे समानहींहोवैहै ॥ यहाँ जैसे वृक्षादिकशरीर भूमिकूंउद्भेदनकरिकै उत्पन्नहोवै हैं याकारणतैं तेवृक्षादिकशरीर उद्भिज्जहैं ॥ तैसे देवतावोंकेशरीरभी सूक्ष्मभूतोंकूं उद्भेदनकरिकैउत्पन्नहोवैहैं ॥ याकारणतैं तेदेवताशरीरभी उद्भिज्जहैं ॥ अब सर्वलोकोंविषे स्थितिकालकेदुःखकीसमानताकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ॥ ब्रह्मलोकतैंआदिलेके पातालपर्यंत जितनेकीलोकहैंतिनलोकोंविषे याजीवोंकूंजोजोविषयजन्यसुखहोवैहै ॥ सोसोसुख अतिशयतादोषवालाहोवैहै ॥ याकारणतैं सोविषयजन्यसुख सर्वलोकोंविषे ईर्ष्याकीउत्पत्तिद्वारा जीवोंकेदुःखकाहीकारणहोवै है ॥ और सोविषयजन्यसुख पराधीनहै ॥ याकारणतैं सोविषयजन्यसुखभयकी उत्पत्तिद्वारायाजीवोंकेदुःखकाहीकारणहै ॥ और सोविषयजन्यसुख कर्मउपासनादिकसाधनोंकरिकैजन्यहै और जोपदार्थ जन्य ॥१०१॥

होवै है ॥ सोपदार्थ घटादिकोंकीन्याईं नाशवान्होवै है ॥ याकारणतैं सोविषयजन्यसुख नाशकेचिंताकीउत्पत्तिद्वारा जीवोंकेदुःखकाहीकारण है॥याप्रकार ब्रह्मलोकतैंआदिलेके पातालपर्यंत सर्वलोकोंविषे याजीवोंकूं शरीरकीस्थितिकालविषे समानहींदुःखहोवै है ॥ अब सर्वलोकोंविषे मरणकालकेदुःखकीसमानताकूंनिरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ ब्रह्मलोकतैंआदिलेके पातालपर्यंत जितनेकीलोक हैं ॥ तिनलोकोंविषेस्थित जितनेकदेहधारीजीव हैं॥तिनजीवोंकूं आपणेआपणेस्त्रीपुत्रादिकपदार्थोंविषे अत्यंतआसक्तिहोवै है ॥और जिसजिस पदार्थविषे याजीवोंकीअत्यंतआसक्तिहोवै है ॥ तिससिसपदार्थकेवियोगतैं तिनजीवोंकूं परमदुःखकीप्राप्तिहोवै है॥ और सोप्रियपदार्थोंका वियोग दोप्रकारसैंहोवै है ॥एकतौ स्त्रीपुत्रादिकप्रियपदार्थोंकेविद्यमानहुए ताभोक्तापुरुषकेमृत्युहुएतैंवियोगहोवै है ॥ और दूसरा ताभोक्तापुरुषकेविद्यमानहुएभी तिनस्त्रीपुत्रादिकप्रियपदार्थोंकेमरणेतैं वियोगहोवै है ॥ याकहणेतैं यहअर्थसिद्धभया यामनुष्य लोकविषे आपणेमरणेकरिकै तथास्त्रीपुत्रादिक बांधवोंकेमरणेकरिकै याजीवोंकूँ जिसप्रकारकादुःख प्राप्तहोवै है ॥ तिसदुःखतैंअनेककोटिगुणाअधिकदुःख ब्रह्मलोकविषे तथास्वर्गलोकविषे तथापाताललोकविषे आपणेमरणेकरिकै तथास्त्रीपुत्रादिक बांधवोंकेमरणेकरिकै प्राप्तहोवै है॥ हेजनक ॥ जैसे यामनुष्यलोकविषे यादेहधारीजीवोंका कोई पिता है॥तथा कोई माता है॥तथा कोईस्त्री है ॥ तथा कोईपुत्र है ॥ तथा कोईबांधव हैं ॥ तथा कोईमित्र हैं॥तथा कोईशत्रु है तथा कोईउदासीन हैं॥तैसे ब्रह्मलोकादिकोंविषेभी याजीवोंके मातापितादिकअनेक संबंधीहोवै हैं ॥ तिनसंबंधियोंकेवियोगकरिकै याजीवोंकूं सर्वलोकविषेदुखःहोवै है ॥ अब शरीरकेतादात्म्यसंबंधविषे सर्वदुःखोंकीकारण ताकूं बोधनकरणेवासतै प्रथम ब्रह्मादिकदेवतावोंके महान्पणेकानिरूपणकरै हैं॥हेजनक॥यहजोहिरण्यगर्भरूपब्रह्मा है ॥ सोब्रह्मा अस्मदादिकसर्वजीवोंतैं प्रथमउत्पन्नभयाहै ॥ और मनुष्यलोकतैंआदिलेके विराट्लोकपर्यंत जितनाकीविषयजन्यसुखजीवोंकूंहोवै है॥तिनजीवोंतैं सोब्रह्मा अधिकसुखवाला है ॥ और जोब्रह्मा ऋग् यजुष् साम अथर्वण याचारिवेदोंकेसंप्रदायका प्रवर्तक है ॥ और जोब्रह्मा याजगत्के उत्पत्ति स्थिति लयकूं करणेहारा है ॥ तथा स्वभावसिद्ध ब्रह्मविद्याकरिकै द्वैतभावतैंरहित है ॥ और जिसब्रह्मारूपवृक्षतैं अनेकब्रह्मांडरूप उदंबरके फल उत्पन्नहोवै हैं ॥ और जिसब्रह्माविषे तेब्रह्मांडलयभावकूं प्राप्तहोवै हैं॥और जिसब्रह्माके प्रजापतिआदिक

विभूतियां आपणे आपणेलोकोंविषे निवासकरैहैं ॥ और जोब्रह्मा प्राणरूपीपर्यंकऊपर आपणीभार्याकेसहितस्थितहुआ सर्वदा ब्रह्मलोक विषे निवासकरै है॥और जोदेवराजइंद्र स्वर्गलोकविषे इंद्राणीकेसहित निवासकरै है॥और जोइंद्र अग्निआदिकसर्वदेवतावोंकास्वामी है ॥ तथा तीनलोकोंकापति है ॥ और पूर्वादिकदिशावोंकेअधिपति जेअष्टलोक पाल हैं ॥ और पाताललोकविषेस्थित जेवासुकि तक्षक पद्मक इत्यादिकनाग हैं ॥ और यामनुष्य लोकविषेस्थित जितनेकी मनुष्य पशु पक्षी कृमि आदिकजीव हैं ॥ हेजनक ॥ ब्रह्मातेंआदिलैके कृमिपर्यंत जितनेक देहधारीजीव हैं ॥ तिनोंविषे जोसुख प्रतीतहोवै है ॥ सोअभिचारकरिकैप्रतीतहोवै है ॥ विचारदृष्टिकरिकैदेखियेतौ तिनदेहधारी जीवोंविषे किंचित्मात्रभी सुखनहीं ॥ हेजनक ॥ ब्रह्मातें आदिलैके कृमिपर्यंत सर्वजीवोंविषे जन्ममरण तथासुखदुःख तथासुखदुःखकेसाधन तथापांचभौतिकशरीर यहसंपूर्णपदार्थ समानहीं हैं यातें ब्रह्मातेंआदिलैके कृमिपर्यंत सर्वदेहधारी जीवोंविषेकिंचित्मात्रभी विषमतानहीं ॥ यहाँयहतात्पर्य है॥ हिरण्यगर्भरूपब्रह्मा तथादेवराजइंद्र तथाअष्टलोकपाल तथा वासुकीआदि कनाग इसतेंआदिलैके जेमहान्पुरुष हैं॥ तेभी शरीरकेतादात्म्यसंबंधतें जभी जन्ममरणादिदुःखोंकूंप्राप्तहोवै हैं तभी अस्मदादिकजीवों कूं शरीरकेसंबंधकरिकै दुःखकीप्राप्तिहोवैगी याकेविषे क्याकहणा है॥यातें यहअर्थसिद्धभया ॥ जोजो विज्ञानमयआत्मा है सोसो शरीर तेंरहितहोवैनहीं ॥ और जोजो शरीरवालाहोवै है ॥ सोसो सुखदुःखतेंरहितहोवैनहीं ॥ तहाँश्रुति ॥ नहवैसशरीरस्यसतःप्रियाऽप्रिययो रपहतिरस्ति ॥ अर्थयह ॥ जोजोशरीरधारीजीव हैं॥ ताके सुखदुःखकी निवृत्तिहोवैनहीं ॥१॥हेजनक॥ याप्रकार बुद्धिकेसाथ तादात्म्य संबंधकरिकै विज्ञानमयसंज्ञाकूंप्राप्तहुआ यहआत्मादेव नानाप्रकारकेऊंचनीचशरीरोंकूंप्राप्तहोवै है॥इतनेंग्रंथकरिकै बुद्धिकेतादात्म्यअध्या सकाफल निरूपणकऱ्या ॥ अब मनकेतादात्म्यअध्यासकाफल निरूपणकरै हैं हेजनक ॥ यहआनंदस्वरूपआत्मा मनकेतादात्म्यअ ध्यासतें जभी मनोमयसंज्ञाकूंप्राप्तहोवै है ॥ तभी यहआत्मादेव नानाप्रकारकीइच्छावालाहोवै है ॥ तथा ताइच्छाकाकारणरूप जोशुभ अशुभवस्तुका ज्ञान है ॥ ताज्ञानवाला होवै है ॥ तथा नानाप्रकारके संशयवाला होवै है ॥ तथा श्रद्धा अश्रद्धा धैर्य अधैर्य लज्जा

चिंता भय इत्यादिकअनेकधर्मवालाहोवै है॥तात्पर्ययह॥ इच्छा संकल्प संशय श्रद्धा अश्रद्धा धैर्य अधैर्य लज्जा चिंता भय इत्यादिकसंपूर्ण धर्म श्रुतिनें मनकेकहे हैं॥ यातें जैसे यालोकमें स्त्रीविषेआसक्तजोकामीपुरुषहै ॥ सोकामीपुरुषतास्त्रीकेसुखदुःखादिकधर्मोंकूं आपणेविषे मानैहैं ॥ तैसे मनकेसाथ तादात्म्यअध्यासकरिकै यहआत्मादेव मनकेइच्छादिकधर्मोंकूं आपणेविषेमानैहै॥ याप्रकारकीरीति आगेप्राणा दिकोंकेअध्यासविषेभी जानिलेणी ॥ अब प्राणकेतादात्म्यअध्यासकाफल निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ प्राणकेतादात्म्यअध्यासकरिकै यहआत्मादेव जबीप्राणमयसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी यहआत्मादेव प्राण अपान समान व्यान उदान नाग कूर्म कृकल देवदत्त धनंजय यादृशप्रकारकेभेदकूंप्राप्तहोवै है॥ तथा अनेकनाडियोंविषेविचरणेहारेजेअनेकप्राणहैं ॥ तिनोंकेभेदकरिकै सोआत्मादेवभी अनेकभावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और प्राणकेसंबंधतें सोआत्मादेव ऊर्ध्वश्वासादिकव्यापारोंका तथाजीवनव्यवहारका कारणहोवै है ॥ और प्राणकेसंबंधतें सोआत्मादेव अन्नादिकोंकाभोक्ताहोवै है ॥ तथा बलकरिकैसाध्य जेअनेककर्म हैं ॥ तिनकर्मोंकाकर्त्ताहोवै है ॥ इसप्रकार प्राणकेता दात्म्यअध्यासतें प्राणमयसंज्ञाकूंप्राप्तहोइकै सोआत्मादेव संपूर्णप्राणोंकेधर्मोंकूं आपणेविषेमाने है ॥ अब इंद्रियोंके तादात्म्यअध्यास काफल निरूपणकरैं हैं ॥ हे जनक ॥ श्रोत्र त्वक् चक्षु रसन घ्राण यापंचज्ञानइंद्रियोंके तादात्म्यसंबंधकरिकै यहआत्मादेव जबी श्रोत्रमय त्वक्मय चक्षुमय रसनमय घ्राणमय याप्रकारकीसंज्ञाकूंप्राप्तहोवै है ॥ तबी यहआत्मादेव नानाप्रकारकेशब्दोंकूंग्रहणकरै है ॥ तथा नानाप्रकारके कोमलकठिनादिकस्पर्शोंकूं ग्रहणकरै है ॥ तथा नानाप्रकारके नीलपीतादिकरूपोंकूं ग्रहणकरै है ॥ तथा नानाप्रकारके मधुरअमलादिकरसोंकूंग्रहणकरैहै ॥ तथा नानाप्रकारकेगंधकूंग्रहणकरैहै ॥ इसप्रकार वाक् पाणि पाद पायु उपस्थ यापंचकर्मइंद्रियोंके तादात्म्यअध्यासकरिकै यहआत्मादेव जबी वाक्मय पाणिमय पादमय पायुमय उपस्थमय याप्रकारके संज्ञाकूं प्राप्तहोवै है ॥ तभी यहआत्मादेव नानाप्रकारकेशब्दोंकाउच्चारणकरै है ॥ तथा नानाप्रकरकेपदार्थोंकाग्रणकरै है ॥ तथा नाना प्रकारका गमनआगमनकरै है ॥ तथा मलादिकोंकापरित्यागकरै है ॥ तथा स्त्रीसंभोगतें आनंदकूंप्राप्तहोवै है ॥ इसप्रकार श्रोत्रादिक

पंचज्ञानइंद्रियोंके तथावाक्आदिकपंचकर्मइंद्रियोंके तादात्म्यअध्यासकरिकै यहआत्मादेव तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंकेधर्मोंकूं आपणे विषेमानैहै ॥ अब आकाशादिकपंचभूतोंके तादात्म्यअध्यासकाफल निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ॥ आकाश वायु तेज जल पृथिवी या पंचभूतोंकेतादात्म्यअध्यासतैं यहआत्मादेव जभी भूतमयसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभी यहआत्मादेव जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज याचारिप्रकारकेशरीरोंकूं उत्पन्नकरैहै ॥ तथा श्रोत्रादिकदशइंद्रियोंकेविषयजे शब्दस्पर्शादिकहैं ॥ तिनोंकूं उत्पन्नकरैहै ॥ अब अतेजकेतादात्म्यअध्यासकाफल निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ॥ अतेजरूपजाअविद्याहै ॥ ताअविद्याकेतादात्म्यअध्यास करिकै यह आत्मादेव जभी अतेजोमयसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभी यह आत्मादेव आपणेस्वरूपकेआवरणका तथा उत्पत्तिरूपविक्षेपका कारणहोवैहै ॥ अथवा॥ अतेजरूपजोअंधकारहै ॥ ताअंधकारकेतादात्म्यअध्यासकरिकै यहआत्मादेव जभी अतेजोमय संज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभी यहआत्मादेव निद्रास्वप्नादिकोंकाकारणहोवैहै ॥ अब कामकेतादात्म्यअध्यासकाफलनिरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ॥ कामकेतादात्म्यअध्यासकरिकै यहआत्मादेव जभीकाममयसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै॥ तभी यहआत्मादेव पुत्रादिकप्रजाकेउत्पत्तिकाकारणहोवैहै॥ तथा परिणामकालविषे दुःख कीप्राप्तिकरणेहारा जोविषयजन्यसुखहै तासुखका कारणहोवैहै ॥ तथा क्रीडाकेमर्कटकीन्याईं स्त्रीजनोंके अधीनहोवैहै ॥ तथा पुण्य पाप कर्मकाकर्त्ताहोवैहै॥तथा यहशुभहै यहअशुभहै याप्रकारकेज्ञानकाभी कारण होवैहै अब क्रोधकेतादात्म्यअध्यासकाफल निरूपणकरैहैं॥ हेजनक॥क्रोधकेतादात्म्यअध्यासकरिकै यहआत्मादेव जभी क्रोधमयसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै तभी यहआत्मादेव नानाप्रकारके ब्रह्महत्यादिक पापकर्मोंकूंहींकरैहै ॥ और जैसे अग्निकेकुंडविषेस्थितहुआपुरुष ॥ परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहै॥तैसे ब्रह्महत्यादिकपापकर्मोंकरिकै सोक्रोधवान् पुरुष कुंभीपाकादिनरकोंविषे दुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेजनक ॥ यहकामक्रोधदोनों संसारकेकारणहैं ॥ यातैं तिसकामक्रोधकापरित्याग करिकै यहआत्मादेव जभी अकाममय तथाअक्रोधमय संज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभी यहआत्मादेव जीवन्मुक्तअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अब धर्मअधर्मरूपअदृष्टके तादात्म्यअध्यासकाफल निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ॥ धर्मअधर्मरूपअदृष्टकेतादात्म्यसंबंधतैं यह

आत्मादेव जभी धर्ममयसंज्ञाकूं तथाअधर्ममयसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभी यहआत्मादेव नानाप्रकारके सुखदुःखका कारणहोवैहै ॥ तथा नानाप्रकारके ऊंचनीचशरीरोंका कारणहोवैहै ॥ अब संक्षेपतैं सर्वपदार्थोंकेतादात्म्यअध्यासकाफलनिरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ परोक्षरूपकरिकै तथाप्रत्यक्षरूपकरिकैयुक्त जितनेकजगत्विषेपदार्थ हैं ॥ तिनसर्वपदार्थोंकेतादात्म्यसंबंधतैं यहआत्मादेव जभी सर्वमयसंज्ञाकूंप्राप्तहोवै है॥ तभी यहआत्मादेव सर्वपदार्थोंकेधर्मोंकूंप्राप्तहोवै है॥ हेजनक ॥ जैसे यालोकविषे एकहीपुरुष पाकरूपक्रिया करिकै पाचकसंज्ञाकूंप्राप्तहोवै है ॥ और पाठरूपक्रियाकरिकै पाठकसंज्ञाकूंप्राप्तहोवै है ॥ तैसे यहआत्मादेवभी जिसजिस कर्मकूं तथाआचारकूं करैहै ॥ तिसतिससंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और वास्तवतैंतो यह आत्मादेव साधु असाधु पुण्य पाप इत्यादिकसर्व नामोंतैंरहितहै ॥तथा आकाशकीन्याईं सर्वत्रपरिपूर्ण है॥ऐसाआत्मादेव अविद्याकेसंबंधतैं जीवभावकूंप्राप्तहोइकै जभी पुण्यकर्मोंकूंकरै है तभी यहआत्मादेव साधुकारी यासंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा यालोकविषे यशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा नानाप्रकारकेसुखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और यहआत्मादेव जभी पापकर्मोंकूंकरैहै ॥ तभी यहआत्मादेव असाधुकारीयासंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा यालोकविषे निंदाकूंप्राप्तहोवैहै ॥तथा नानाप्रकारकेदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥इतनेग्रंथकारकै पुण्यपापरूपकर्मोंकीप्रधानताकूंअंगीकारकारिकै पुण्यपापरूपकर्मोंविषे संसारकीकारणता निरूपणकरी ॥ अब अविद्याजन्यकामहीं यासंसारकामुख्यकारणहै यासिद्धांतपक्षकूं निरूपणकरै हैं॥ हे जनक ॥ याजन्म मरणादिरूपसंसारकेविचारविषे कोईबुद्धिमान्महात्मापुरुष याप्रकार कथनकरैं हैं ॥यहपरमात्मादेव निर्गुणहै तथाअसंगहै तथासर्वभेदतैंरहितहै ॥ ऐसानिर्गुणपरमात्मादेव स्वभावतैं किसीस्थूलसूक्ष्मपदार्थकूं उत्पन्नकरैनहीं ॥ किंतु सोपरमात्मादेव अनिर्वचनीय अविद्याकेसंबंधकूंप्राप्तहोइकै प्रथम कामकूंउत्पन्नकरैहै ॥तिसकामकीउत्पत्तितैंअनंतर सोपरमात्मादेव आकाशादिकसर्वजगत्कूंउत्पन्नकरै है ॥ याप्रकारकेअभिप्रायकरिकैही श्रुतियोंविषे कामपूर्वक सर्वजगत्कीउत्पत्ति कथनकरी है ॥ तहांश्रुति ॥"सोऽकामयत एकोहंबहुस्याम्" ॥ अर्थयह॥सोमायाविशिष्टपरमात्मादेव सृष्टिकेआदिकालविषे याप्रकारकीइच्छाकरताभया ॥ एकहींमैंपरमात्मादेव बहुतरूपकरिकैउत्पन्न

होवों ॥ याप्रकारकासंकल्पकरिकै सोपरमात्मादेव स्थूलसूक्ष्मरूपसंपूर्णजगत्कूं उत्पन्नकरताभया ॥ इत्यादिकश्रुतियोंविषे अविद्याजन्य कामविषेही सर्वजगत्कीकारणता कथनकरीहै ॥ हेजनक केवलश्रुतिप्रमाणतैंही कामविषे जगत्कीकारणतासिद्धनहीं ॥ किंतु लोकों केव्यवहारकरिकैभी कामविषेही संसारकीकारणतासिद्धहोवैहै ॥ काहेतैं यालोकविषे जितनेकचेतनप्राणी हैं ॥ तेप्राणी प्रथम यहवस्तु हमारेकूं प्राप्तहोवै यहवस्तु हमारेकूं नहींप्राप्तहोवै याप्रकारकीकामनाकरैं हैं॥ ताकामनातैंअनंतर तिसतिसकार्यविषेप्रवृत्तिद्वारा तेप्राणी नानाप्रकारकेसंसारकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं यालोकोंकेव्यवहारकरिकैभी कामविषेही संसारकीकारणता सिद्धहोवैहै ॥ अब कामशब्दकेअर्थकूं निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ शास्त्रकेतात्पर्यकूंजानणेहारेजेबुद्धिमान्पुरुषहैं ॥ तेबुद्धिमान्पुरुष काम इच्छा राग स्पृहा याचारिशब्दोंका भिन्नभिन्नअर्थ मानैंनहीं ॥ किंतु तिनचारोंशब्दोंका एकहीअर्थ अंगीकारकरैं हैं ॥ और जेबुद्धिमान्पुरुष स्त्रीकेसंगकूं कामकहै हैं ॥ तेबुद्धिमान्पुरुषभी कामशब्दकारकै स्त्रीकेसंगकीइच्छाकूंही कथनकरैं हैं॥ यातैं इच्छाही कामशब्दकामुख्यअर्थ है ॥ और सोइच्छारूपकामही संसाररूप कुचलेकेवृक्षकाबीजहै ॥ औरविज्ञानमय मनोमय प्राणमय इत्यादिकशब्दोंकारिकैकथनकरी जेनाना प्रकारकीअवस्थाहैं ॥ तिनअवस्थावोंवाला यहसंसारीजीवात्मा तासंसाररूपवृक्षकाफलरूपहै ॥ और गुरुशास्त्रकेउपदेशकरिकैजानणेयोग्य जोशुद्धब्रह्महै सो नित्यसिद्धहै ॥ यातैं सोशुद्धब्रह्म तासंसाररूपवृक्षकाफलरूपनहीं ॥ और हेजनक॥ कर्त्ताभोक्तारूपसंसारीजीवविषे इच्छा रूपकामहींप्रधानहै॥ याप्रकारकेअर्थविषे तेबुद्धिमान्पुरुष याप्रकारकीयुक्तिकूं कथनकरैं हैं॥ यालोकविषे यहदेहधारीजीव प्रथम याप्रियपदार्थकूं मैं प्राप्तहोवोंगा या अप्रियपदार्थकूं मैं परित्यागकरोंगा याप्रकारकीइच्छाकरैहै ॥ और ताइच्छातैंअनंतर सोपुरुष तिसपदार्थकी प्राप्तिका तथातिसपदार्थकेपरित्यागकानिश्चयकरैहै॥ औरतानिश्चयसेअनंतर सोपुरुष ताप्रियपदार्थकेप्राप्तिवासतै तथा ताआप्रियपदार्थके परित्यागवासतै शुभकर्मविषे अथवा अशुभकर्मकेविषे प्रवृत्तहोवैहै ॥ और ताशुभअशुभकर्मकेकरणतैं अनंतर सोपुरुष इसलोकविषे तथापरलोकविषे सुखदुःखरूपफलकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैंइच्छारूपकामही पुरुषोंकेदुःखकाकारणहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ सुखकीप्राप्ति ॥१०४

वासतैं तथादुःखकीनिवृत्तिवासतैं यज्ञादिककर्मोंकूंकरणेहारे जेसकामपुरुषहैं ॥ तिनोंकूंदुःखकीप्राप्ति किसप्रकारहोवैहै ॥ समाधान॥ हेजनक ॥ यद्यपि यहसकामपुरुष सुखकीप्राप्तिवासतै तथादुःखकीनिवृत्तिवासतै यज्ञादिककर्मोंकूंकरै है ॥ तथापि तिनसकामपुरुषोंकूं सुखकीप्राप्तिरूपफल तथादुःखकीनिवृत्तिरूपफल प्राप्तहोवैनहीं ॥ काहेतैं स्वर्गादिकफलकेप्राप्तिकी इच्छाकूं मनविषेराखिकै यज्ञादिककर्मोंकूंकरणेहारे जेसकामपुरुषहैं ॥ तिनोंकूं किंचित्साधनकीन्यूनतारूप वैगुण्यदोष अवश्यप्राप्तहोवै है ॥ और वैगुण्यरूपदोषकरिकैयुक्त हुआ काम्यकर्म फलकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ उलटा पश्चात्तापद्वारा दुःखकीहीप्राप्तिकरै है ॥ याकारणतैं सकामपुरुषकूं किंचित्मात्रभीसुखकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ किंवा ॥ जोकदाचित् सकामपुरुष वैगुण्यदोषतैंरहित यज्ञादिककर्मोंकीसमाप्तिकरै है ॥ तौभी तिनयज्ञादिककाम्यकर्मोंकरिकै जोजोविषयजन्यसुख प्राप्तहोवै है ॥ सोविषयजन्यसुख नानाप्रकारकेदुःखोंकरिकै मिश्रितहै ॥ याकारणतैंभी सकामपुरुषकूं किंचित्मात्रसुखकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ यातैं हेजनक ॥ मनकाधर्म जो इच्छारूपकामहै ॥ ताकामकरिकैही यहजीव जन्ममरणादिरूपसंसारकूंप्राप्तहोवै है अब याहींअर्थकूंस्पष्टकरिकै निरूपणकरै हैं ॥ हेजनक ॥ मरणकालविषे भावीकर्मोंकरिकैप्रेरणकऱ्याहुआ यहजीवात्मा ब्रह्मलोक स्वर्गलोक भूमिलोक नरक इसतैंआदिलैकें जिसजिसलोककीप्राप्तिकीइच्छाकरै है ॥ तिसतिसलोकविषे सोजीवात्मा स्थूलशरीरकूंप्राप्तहोवै है ॥ तहां मरणकालविषे पूर्वले पुण्यकर्मोंकरिकैप्रेरणाकऱ्याहुआ यहजीवात्मा जभी स्वर्गादिकउत्तमलोकोंकीइच्छाकरै है तभी यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिकै सो जीवात्मा स्वर्गादिकलोकोंविषे देवताशरीरकूंप्राप्तहोइकै तहांनानाप्रकारकेभोगोंकूंभोगैहै॥ और जिनपुण्यकर्मोंने स्वर्गादिकलोकोंकीप्राप्तिकरीथी॥ तिनपुण्यकर्मोंका जभी भोगकरिकैक्षयहोवै है ॥ तभीसोजीवात्मा तास्वर्गादिकलोकोंकापरित्यागकरिकै पूर्वलेकर्मोंकेअनुसार भूमिलोकविषे स्थूलशरीरकूंप्राप्तहोवै है॥ और भूमिलोकविषेप्राप्तहुआ सोजीवात्मा जभी याभारतखंडविषे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यात्रैवर्णिकशरीरकूंप्राप्तहोवैहै॥ तभीसोजीवात्मा पूर्वलेसंस्कारोंकेवशतैं पुनःस्वर्गादिकलोकोंकीप्राप्तिवासतैं यज्ञादिककर्मोंकूंकरै है ॥ तिनयज्ञादिककर्मोंकरिकै सोपुरुष पुनःस्वर्गादिकोंकूंप्राप्तहोवै है ॥ याप्रकार इच्छारूपकामकरिकैयुक्तहुआ

सोकर्मीपुरुष भूमिलोकतैं स्वर्गकूंप्राप्तहोवै है ॥ और स्वर्गलोकतैंपुनःभूमिलोककूंप्राप्तहोवै है ॥ और भूमिलोकतैंपुनःस्वर्गकूंप्राप्तहोवै है॥ याप्रकार घटीयंत्रकीन्याईं सोसकामकर्मीपुरुष निरंतर संसारविषेभ्रमणकरै है ॥ और याजीवके जभी पापकर्मअधिकहोवैं हैं ॥ तभी यह जीव भूमिलोकतैं नरकविषेप्राप्तहोवै है ॥और हेजनक ॥ जैसे यालोकविषे धान्यादिकबीज जलकेसंबंधकूंप्राप्तहोइकैही अंकुरादिरूपकार्य केकरणेविषेसमर्थहोवैं हैं ॥ तैसे पुण्यपापकर्मरूपबीज इच्छारूपजलकेसंबंधकूंपाइकैही शरीररूपअंकुरकूंउत्पन्नकरै है ॥ यातैं ब्रह्मलोक स्वर्गलोक भूमिलोक पाताल नरक इत्यादिकलोकोंविषे जोयहजीवात्मा नानाप्रकारकेशरीरोंकूंप्राप्तहोवै है ॥ सोइच्छारूपकामकरिकैही प्राप्तहोवै है ॥ शंका ॥ हे भगवन् ॥ इच्छारूपकामकेअनुसारही यापुरुषकूं मरणतैं अनंतर दूसरेशरीरकीप्राप्तिहोवै है ॥ यहवार्ता कैसेजा नीजावै है ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ जैसे जाग्रत्अवस्थाविषे यापुरुषका जिसजिसपदार्थविषे उत्कटरागहोवै है ॥ सोपुरुषजभी जाग्रत्अ वस्थाकापरित्यागकरिकै स्वप्नअवस्थाकूंप्राप्तहोवै है॥ तबी सोपुरुष जाग्रत्केसंस्कारोंकेवशतैं स्वप्नअवस्थाविषेतिसतिसपदार्थकूं प्राप्तहो वै है ॥ तैसे मरणकालविषेयापुरुषकूं जिसजिसशरीरविषेरागहोवै है ॥ मरणतैंअनंतर तिसतिसशरीरकूं यहजीवात्मा प्राप्तहोवै है ॥शंका॥ हेभगवन् ॥ मरणकालकीइच्छाकेअनुसारहीयहजीवात्मा जोशरीरकूंप्राप्तहोताहोवै ॥ तौ संपूर्णपापीजीव मरणकालविषे स्वर्गकीप्राप्तिकी इच्छा किसवासतैनहींकरते ॥ समाधान ॥ हे जनक ॥ मरणकालविषे यहजीवात्मा स्वर्गादिकलोकोंकीप्राप्तिकी इच्छाकरणेविषे स्वतंत्र होवैनहीं ॥ किंतुमरणकालविषे पुण्यपापरूपकर्मकरिकै प्रेरणाकऱ्याहुआयहजीव जिसजिसऊँचनीचशरीरकीप्राप्तिकीइच्छाकरै है ॥ मरणतैं अनंतरयहजीवात्मा तिसीतिसीशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं पूर्वलेपुण्यपापरूपकर्मोंकेअनुसारही मरणकालविषे यापुरुषकीइच्छाहो वै है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जैसे मरणकालविषे यहजीवात्मा जिसजिसशरीरकीइच्छाकरै है ॥ तिसतिसशरीरकूं प्राप्तहोवै है॥तैसे मरण तैंपूर्वजीवितअवस्थाविषे यापुरुषकूं इच्छाकरेहुयेपदार्थकीप्राप्ति क्योंनहींहोती ॥ समाधान ॥ हे जनक ॥ यावर्तमानशरीरकेभोगदेणे हारेजेप्रारब्धकर्म हैं तिन प्रारब्धकर्मोंकी विद्यमानता ॥ तथा भावीशरीरकी प्राप्तिकरणेहारेकर्मोंविषे फलकीअजनकता ॥ यहदोनों ॥१०६॥

वांछितशरीरकेप्राप्तिविषे प्रतिबंधकहैं ॥ और तेदोनोंप्रतिबंधक जीवितअवस्थाविषे विद्यमानहैं ॥ याकारणतैं जीवितअवस्थाविषे याजी वात्माकूं इच्छापूर्वकशरीरकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ और मरणकालविषे तिनदोनोंप्रतिबंधकोंकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ यातैं मरणकालविषे यहजी वात्मा जिसजिसशरीरकीप्राप्तिकीइच्छाकरैहै ॥ मरणतैंअनंतर यहजीवात्मा तिसतिसशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेजनक॥जैसे यालोकविषेकोई नटपुरुष लोकोंकेप्रसन्नकरणेवासतैं नानाप्रकारकेशरीरोंकूंधारणकरैहै ॥ तैसे यहजीवात्मा कर्मकेफल भोगणेवासतैं नानाप्रकारकेशरीरों कूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं यासंसाररूपचक्रका इच्छारूपकामही मूलकारणहै ॥ अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकैनिरूपणकरैं हैं॥ हेजनक ॥ यह जीवात्मा प्रथम शुभकर्मविषे अथवा अशुभकर्मविषे इच्छाकरैहै ॥ तिसतैंअनंतर यहजीवात्माताशुभअशुभकर्मोंकेकरणेका निश्च यकरैहै ॥ तानिश्चयतैंअनंतर यहजीवात्मा ताशुभअशुभकर्मविषेप्रवृत्तहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर यहजीवात्मा पूर्वलेशुभअशुभकर्मोंकेअनु सार पुनःशुभअशुभकर्मकीइच्छाकरैहै ॥ इसप्रकार कामरूपमूलकारणकरिकै यहसंसाररूपचक्र सर्वदा भ्रमणकरै है ॥ तात्पर्ययह ॥ चित्तरूपीभूमिविषे दोप्रकारकेसंस्कारहोवैहैं ॥ तहां एकतौ कर्मजन्यसंस्कार रहै है और दूसरे ज्ञानजन्यसंस्काररहै हैं॥ तहाँ कर्मजन्यसं स्कारतो आपणेफलकेआरंभकीसिद्धिवासतैं तापुरुषकीइच्छाकूंउत्पन्न करैहैं ॥ और दूसरे ज्ञानजन्यसंस्कारतो जिसकर्मविषेइच्छाहोवै है तिसकर्मविषे यहकर्म हमारेकूंअवश्यकर्तव्यहै याप्रकारकेज्ञानकूं उत्पन्नकरैहैं ॥ और ताकर्तव्यताज्ञानकेअनुसार यहजीवात्मा ताशुभअ शुभकर्मविषेप्रवृत्तहोवैहै ॥ और ताशुभअशुभकर्मोंकेसंस्कारकरिकै यहजीवात्मा पुनःताशुभअशुभकर्मकीइच्छाकरै है ॥ और पूर्वलेक र्तव्यताज्ञानकेसंस्कारोंकरिकै यहजीवात्मा तिनशुभ अशुभकर्मोंविषे यहकर्म हमारेकूंअवश्यकर्तव्यहै याप्रकारकानिश्चयकरै है ॥ तिसतैं अनंतर यहजीवात्मा पुनःतिनशुभअशुभकर्मोंविषे प्रवृत्तहोवै है॥ यातें यहअर्थसिद्धभया॥याजीवकूं शुभअशुभकर्मविषेप्रवृत्तकरणेहाराजो कर्तव्यपदार्थकानिश्चयहै ॥तानिश्चयका इच्छारूपकामही मुख्यकारणहै याकारणतैं सोइच्छारूपकामही याजीवके जन्ममरणादिरूपसंसा रविषे कारणहै॥ कैसाहैसोइच्छारूपकाम जिसकामकेशांतिकरणेहारा कोईलोकविषेपदार्थहैनहीं॥शंका॥हेभगवन्॥नानाप्रकारकेविषयोंकी

प्राप्तिहो ताइच्छारूपकामकेशांतिकाउपायहै ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ विषयोंकीप्राप्तिकरिकै इच्छारूपकामकीनिवृत्तिहोइसकैनहीं॥का
हेतें जोपुरुष कामरूपअग्निकरिकैयुक्तहै ॥ तापुरुषकूं जोकदाचित् संपूर्णपृथिवीकेसुवर्णादिकपदार्थोंकीभीप्राप्तिहोवै ॥ तौभी तापुरुषके
इच्छारूपकामकीशांतिहोवैनहीं ॥ उलटा पदार्थोंकीप्राप्तिकरिकै दिनदिनविषे यापुरुषकेइच्छारूपकामकीवृद्धिहोतीजावै है॥ हेजनक ॥
जोकदाचित् नानाप्रकारकेविषयोंकीप्राप्तिकरिकै यापुरुषके इच्छारूपकामकीनिवृत्तिहोती॥तौदेवराजइंद्रकूं अस्मदादिकसर्वलोकोंतें अ
धिकविषयोंकीप्राप्तिहै ॥ यातें देवराजइंद्रकेइच्छारूपकामकीनिवृत्तिहोणीचाहिये॥ और देवराजइंद्रकेइच्छारूपकामकीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥
किंतु ब्रह्मलोककेविषयजन्यसुखकीकामनाकरिकै सोदेवराजइंद्र सदैवही तपायमानहोतारहैहै ॥ और इंद्र पदवीकीप्राप्तिवासतै जोपुरुष अ
श्वमेधादिकयज्ञकरैहैं॥तिसपुरुषकेयज्ञादिककर्मोंविषे सोदेवराजइंद्र नानाप्रकारकेविघ्नकरैहै॥औरजभीकोईदैत्य बलात्कारसे स्वर्गकूंलेलेवै
है॥तभीसोइंद्र तास्वर्गकीप्राप्तिवासतै ब्रह्मादिकदेवतावोंकेसमीपजाइकै नाना प्रकारकीदीनताकूंकरैहै॥यातेंयहजान्याजावैहै॥स्वर्गकेभोगों
करिकै देवराजइंद्रके इच्छारूपकामकीनिवृत्तिनहींभई॥हे जनक॥बहुतआयुपवाले तथा बहुतभोगोंवाले जेइंद्रादिकदेवताहैं॥तिनइंद्रादिक
देवतावोंकेकामकीभी जभी विषयोंकी प्राप्तिकरिकैंनिवृत्तिनहींहोवैहै॥तभीअल्पआयुष्वाले तथा अल्पभोगोंवाले तथा रोगादिकोंकरिकैअ
स्त जेअस्मदादिकजीवहैं ॥तिनोंकेइच्छारूपकामकी विषयोंकीप्राप्तिकरिकै किसप्रकार निवृत्तिहोवैगी॥ और हेजनक॥यद्यपि यहलोकअ
सिद्धअग्नि घृतादिरूपइंधनोंकीप्राप्तिकरिकै शांतिकूंप्राप्तहोवैनहीं।तथापि अत्यंतघृतादिकोंकेपावणेकरिकै ताअग्निकीशांतिहोइसकैहै॥परं
तु भूमि लोक स्वर्गलोक ब्रह्मलोक यातीनलोकोंकूंदाहकरणेहारा जोकामरूपअग्निहै॥ ताकें शांतिकरणेहारा कोई विषयरूपइंधनहैनहीं ॥
उलटा विषयोंकीप्राप्तिकरिकै ताइच्छारूपकामकीवृद्धिहोतीजावैहै ॥ और हेजनक ॥ जैसे यालोकविषे कोईबलवान्पुरुष लोहादि
कोंकेकंचुककूंपहिरिकरिकै तथा शिविकाविषेआरूढहोइकै शत्रुवोंकीभयतैंरहितहुआ विचरैहै ॥ तैसे यहजीवात्मा कामरूपीकंचुक ॥१०६॥
कूंपहिरिकै तथा सूक्ष्मशरीररूपीशिविकाविषेआरूढहोइकै विवेकरूपराजाके तथा शमदमादिरूपसेनाके भयतैंरहितहुआ चौरा

---

*सीलक्षशरीरों*विषेविचरै है॥और हेजनक ॥ जैसे यालोकविषे तंतुरूपसूत्र पटकाकारण है॥तैसेयहइच्छारूपसूत्रही जगत्रूपपटकामुख्यका
रण है॥याकारणतैंहीं "कामःसंकल्पो विचिकित्साश्रद्धाअश्रद्धा" याश्रुतिभगवतीने संपूर्णमनकीवृत्तियोंविषे इच्छारूपकामकूं सर्वतैंप्रथ
मकथनकऱ्या है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जन्ममरणादिरूपसंसारदुःखके जितनेककारण हैं॥ तिनकारणोंविषे अविद्या मन यहदोनोंकारण
प्रधान हैं ॥ यहवार्ता बहुतशास्त्रोंविषे महात्मापुरुषोंने कथनकरी है ॥ और आपनेतौ यहाँकामकूंही संसारदुःखकाप्रधानकारणकह्याहै ॥
याकेविषेकौनहेतु है ॥ समाधान हेजनक ॥ जिसअभिप्रायकरिकै कामकीप्रधानता हमनेकथनकरी है ॥ ताअभिप्राय तूं श्रवणकर ॥
यासंसारकेजितनेककारण हैं ॥ तिनसंपूर्णकारणोंविषे जोअविद्याकीप्रधानता है ॥ सो मनकूंअंगीकारकरिकैही अविद्याविषे प्रधानताहै॥
और मनरूपकारणविषेजोप्रधानता है ॥सो इच्छारूपकामकूंअंगीकारकरिकैही प्रधानता है ॥ इच्छारूपकामकूंआश्रयणकरिकैही यहमन
संपूर्णजगत्काजयकरै है ॥ याकारणतैं इच्छारूपकामही संसारदुःखकाप्रधानकारण है ॥ इतनेकरिकै इच्छारूपकामकेविद्यमानहुए संसार
दुःखकी विद्यमानतारूपअन्वयका निरूपणकऱ्या ॥ अब इच्छारूपकामकेअविद्यमानहुए संसारदुःखकीअविद्यमानतारूपव्यतिरेकका
निरूपणकरै हैं ॥ हेजनक ॥ जोपुरुष इच्छारूपकामतैंरहित है ॥ तिसपुरुषकूं संकल्पादिकवृत्तियोंसहितमन तथा जगत्कीजननीअविद्या
यहदोनों किंचित्मात्रभी दुःखकीप्राप्तिकारिसकैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे याजीवमें इच्छारूपकामहैनहीं ॥ याकारणतैं
सुषुप्तिअवस्थाविषे विद्यमानहुईभीअविद्या सुषुप्तपुरुषकूं दुःखकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ और समाधिअवस्थाविषे मुक्तपुरुषमें इच्छारूपकाम है
नहीं ॥ याकारणतैं समाधिअवस्थाविषे विद्यमानहुआभीमन तामुक्तपुरुषकूं दुःखकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ जोकदाचित् इच्छारूपकामतैंविना
स्वतंत्रही अविद्या मन दुःखकेकारणहोते तौ सुषुप्तिअवस्थाविषे तथासमाधिअवस्थाविषेभी यापुरुषकूं दुःखकीप्राप्तिहोणीचाहिये॥ और
सुषुप्तिअवस्थाविषे तथासमाधिअवस्थाविषे यापुरुषकूं दुःखकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ यातें यहजान्याजावै है॥ इच्छारूपकामही याजीवोंके सं
सारदुःखकाकारणहै॥किंवा॥इच्छारूपकामतैंरहितहुआयहपुरुषजिनविषयोंकूंदेखैहै॥तेविषयभीताइच्छारहितपुरुषकूं सुखकीप्राप्ति अथवा

दुःखकीप्राप्ति करिसकैनहीं॥और ताइच्छारहितपुरुषकामनभी यहकार्य हमारेकूं अवश्यकरणेयोग्यहै याप्रकारकेनिश्चयकूं उत्पन्नकरैनहीं ॥ और श्वासप्रश्वासादिकव्यापारोंवालेजेपंचप्राण हैं ॥ तथा आपणेआपणेव्यापारयुक्त जेवाक्आदिकदशइंद्रिय हैं॥ तथा आकाशतैंआदिलेकेजेपंचभूत हैं ॥ तथा तिनभूतोंकाकार्य जोयहस्थूलशरीर है ॥ इसतैंआदिलेके संपूर्णपदार्थ विद्यमानहुएभी इच्छारहितपुरुषकूं दुःखकी प्राप्तिकरिसकैनहीं ॥ याकारणतैं ताइच्छारहितपुरुषका प्राणादिकसंघात विद्यमानहुआभी नहींविद्यमानहुएकेसमान है॥ और हेजनक॥ योवनरूपअग्निकरिकैतपायमान जेसुंदरस्त्रियाँ हैं ॥ तथा शरीर मन वाणीकरिकैहिंसाकरणेहारेजेशत्रु हैं॥तथा सुखकीप्राप्तिकरणेहारा जो धर्म है ॥ तथादुःखकीप्राप्तिकरणेहारा जोअधर्म है ॥ इंसतैंआदिलेकेसंपूर्णप्रियअप्रियपदार्थ इच्छारहितपुरुषकूं किंचित्मात्रभी सुखदुःख कीप्राप्ति करिसकैनहीं ॥ और जिसपुरुषविषे इच्छारूपकामहोवै है ॥ तिसपुरुषविषेही तेस्त्रीपुत्रादिकप्रियपदार्थ सुखकीउत्पत्तिकरै हैं ॥ और शत्रुआदिकअप्रियपदार्थ दुःखकीउत्पत्तिकरैं हैं ॥ यातैं अन्वयव्यतिरेककरिकै इच्छारूपकामही याजीवोंके संसारदुःखकाकारण है ॥और जोपुरुष ताइच्छारूपकामतैंरहित है ॥ सोपुरुष जीवन्मुक्त पुरुषकेसमान है ॥ हेजनक ॥ यामनुष्यलोकविषे इच्छाकरिकै यह जीव जिसप्रकारकेदुःखोंकूं प्राप्तहोवै है ॥ तिसीप्रकारकेदुःखोंकूं यहजीवात्मा आगेहोणेहारेऊँचनीचशरीरोंविषेभी प्राप्तहोवै है ॥ या तैंसंपूर्णशरीरोंविषे यहइच्छारूपकामहीं जीवोंकूं दुःखकीप्राप्तिकरै है ॥ इतनेग्रंथकरिकै इच्छारूपकामविषे सर्वदुःखोंकीकारणतादिखाई ॥ अब पूर्वउक्तसुषुप्तिकेदृष्टांतकरिकै मोक्षकानिरूपणकरै हैं॥हेजनक॥पूर्वलेपुण्यकर्मकेप्रभावतैं यहपुरुष जभी इच्छारूपकामतैंरहितहोवै है ॥ तभी यहपुरुषकिंचित्मात्रभी संसारदुःखकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु इच्छातैंरहितहूआयहपुरुष मोक्षकूंहीं प्राप्तहोवै है ॥ हेजनक ॥ जैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे सर्वकामनावोंकेनाशहुएतैं यहपुरुष निष्कामभावकूं प्राप्तहोवै है ॥ तैसे पूर्वलेपुण्यकर्मके प्रभावतैं उत्पन्नभया जोतीव्रवैराग्य ॥ तावैराग्यकरिकै जभी यापुरुषकीसर्वकामना निवृत्तहोवै हैं॥तभी यहपुरुष निष्कामभावकूंप्राप्तहोवै है ॥शंका॥ हेभगवन् ॥ विद्वान्पुरुषविषे सर्वकामनावोंका अभावरूपनिष्कामता किसहेतुतैं होवै है ॥ समाधान हेजनक ॥ यहसकामपुरुष अनेक

जन्मोंकूंपाइकैभी जिसधनपुत्रादिकसंपूर्णपदार्थोंकूं नहींप्राप्तहोइसकैहैं ॥ तिनधनपुत्रादिकसंपूर्णपदार्थोंकूं यहविद्वान्पुरुष एकही कालविषे प्राप्तहोवैहै॥याकारणतैं सोआप्तकामविद्वान्पुरुष निष्कामहै ॥तात्पर्ययह॥ अप्राप्तवस्तुविषेही जीवोंकीइच्छाहोवैहै॥ प्राप्तवस्तुविषे किसी जीवकीइच्छाहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ ताविद्वान्पुरुषके धनपुत्रादिक सर्वपदार्थोंकीप्राप्तिरूप आप्तकामताविषे कौनहेतुहै ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ जैसे सुवर्णरूपकारणकेप्राप्तहुए ॥ तासुवर्णविषेकल्पित जेकुंडलादिकभूषणहैं तेभी अवश्यप्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे धनपुत्रादिकसंपूर्णपदार्थोंकाउपादानकारणरूप जोआनंदस्वरूपपरमात्माहै ॥ तापरमात्मादेवकीप्राप्तिकरिकै ताविद्वान्पुरुषकूं धनपुत्रादिकसंपूर्णपदार्थ प्राप्तहोवैं हैं॥ यातैं सोआत्मकामरूपविद्वान्है आप्तकामताविषेहेतुहै॥याहेतुकहणेतैंयह अर्थ सिद्धभया ॥ जोपुरुष आत्मकामहोवैहै ॥ सोईपुरुष आत्मकामहोवैहै ॥ यातैं आत्मकामता आत्मकामताविषेहेतुहै ॥ और जोपुरुष आप्तकाम होवैहै॥ सोईपुरुष निष्कामहोवैहै॥ यातैं आप्तकामता निष्कामता विषेहेतुहै॥और जोपुरुष निष्कामहोवै है॥सोईपुरुष सर्वकामनावोंतैंरहित अकामहोवैहै॥यातैं निष्कामता आकामताविषेहेतुहै ॥ यारीतिसैं आत्मकामताही परंपरा करिकै सर्वकामनाकेअभावरूपअकामताविषे कारणहै॥अब याहीअर्थकूं स्पष्ट करिकैनिरूपणकरैहैं ॥हेजनक॥ यालोकविषे इच्छारूपकामकरिकैयुक्त जेअज्ञानीपुरुषहैं ॥ तेअज्ञानीपुरुष जिनजिन स्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ ते स्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थ नाशवान्हैं ॥ यातैं ते स्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थ तिनज्ञानीपुरुषोंकी तृष्णाकीनिवृत्तिकरैनहीं ॥ किंतु जैसे घृतादिकोंकरिकै अग्निकीवृद्धिहोतीजावैहै ॥ तैसे तिनस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंकरिकै तिनअज्ञानीजीवोंकाकामरूपअग्नि दिन दिनविषे वृद्धिकूंप्राप्तहोता जावैहै ॥ और आत्मकामविद्वान्पुरुष जोतिनस्त्रीपुत्रधनादिकसर्वपदार्थोंकूंप्राप्तहोवै है ॥ सो अज्ञानीपुरुषकी न्याईं नानाप्रकारके यत्नकरिकै तथा बाह्यरूपकरिकै तिनपदार्थोंकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु स्त्री पुत्र धन इसतैंआदिलेकेसंपूर्णजगत्मेराही आत्माहै ॥ याप्रकार सर्वात्मभावकीप्राप्तिरूपब्रह्मविद्याकरिकै सोआत्मकामविद्वान्पुरुष सर्वजगत्कूंआपणाआत्मारूपमानिकै प्राप्तहोवै है ॥ यातैं मैं ब्रह्मरूपहूं या प्रकारका अभेदज्ञानहीं इच्छारूपकामकी निवृत्तिद्वारा परमआनंदकी प्राप्तिका हेतु है ॥ इतनै करिकै

इच्छारूपकामकेअभावविषे श्रुतिप्रमाणतैं परमआनंदकीप्राप्तिकीकारणतानिरूपणकरी॥ अब लोकप्रसिद्धदृष्टांतकरिकैभी ताअर्थका निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ॥ यालोकविषे जेपुरुष धनादिकदार्थोंकीइच्छाकरिकैयुक्तहैं ॥ तिनपुरुषोंकूं ताधनादिकपदार्थोंकीइच्छा करिकै परमदुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ काहेतैं यालोकविषे धनादिकदार्थोंकीइच्छातैंरहित संतोषवान्हैं ॥ तिनसंतोषवान्पुरुषोंकूं परमसुखकीप्राप्तिहोवैहै॥ काहेतैं यालोकविषे धनादिकपदार्थोंकी तृष्णाकरिकैयुक्त जेधनीपुरुषहैं॥ तेधनीपुरुष धनकी प्राप्तिवासतै राजादिकोंकीसेवाकरैहैं॥ तासेवादिकोंकरिकै परमदुःखकूंप्राप्तहोइकै कदाचित् यत्किंचित्मात्र राजससुखकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ और॥सर्वकामनावोंतैंरहित तथा यथालाभविषेसंतुष्ट ऐसाजोसंतोषवान्पुरुषहै॥सो यद्यपि दरिद्री है॥तथापि सोसंतोषवान् पुरुष परमसात्विकसुखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं सर्वकामनावोंकाअभावरूपसंतोषही जीवोंके सुखकाकारणहै॥ किंवा यालोकविषे तृष्णाकरिकैयुक्त जेधनीपुरुषहैं ॥ तिनोंकूं चौर अग्नि राजा आदिकोंतैं सर्वदाभयप्राप्ति होवैहै ॥ और संतोषवान्दरिद्रीपुरुषकूं चौरादिकोंतैंभयकीप्राप्तिहोवैनहीं॥याकारणतैंभी संतोषवान्पुरुष परमसुखीहै ॥ किंवा ॥ सर्वकामनावोंकाअभावरूपसंतोष थोडेउद्यमकरिकैभी पुरुषकूं सुखकीहीप्राप्तिकरैहै ॥ यातैं संतोषविषे सुखकीकारणताका निश्चयहै ॥ औरइच्छारूपकाम महान्उद्यमकरिकैभी पुरुषकूं दुःखकीहीप्राप्ति करैहै ॥ यातैं इच्छारूपकामविषे सुखकीकारणताका संशयहै ॥ और हेजनक ॥ जैसे कंटकादिकोंतैं पादोंकीरक्षाकरणेहारा जोचर्मकाउपानहहै ॥ सोउपानह मार्गविषे चलणेहारेपुरुषोंके सुखकाकारणहोवैहै ॥ तैसे सर्वकामनावोंकाअभावरूप यहसंतोषभी जीवोंकेपरमसुखकाकारणहोवैहै ॥ और हे जनक ॥ जैसे मार्गविषेचलणेहाराकोईपुरुष याप्रकारकासंकल्पकरै ॥ मैं संपूर्णपृथिवीकूं कंटकोंतैंरहितकरौं तथाकोमलकरौं ॥ जाकरिकै हमारेकूं पादोंविषे कंटकादिकनहींलागै ॥ याप्रकारकासंकल्पकारिकै जोपुरुष तिसकेउपायविषेप्रवृत्तहोवैहै ॥ सो मूढबुद्धि पुरुष परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ काहेतैं संपूर्णपृथिवी कंटकोंतैंरहितहोणी तथा कोमलहोणी अत्यंतदुर्घटहै ॥ तैसे इच्छारूपकामकेविषय जितनेकपदार्थहैं ॥ तिनसंपूर्णपदार्थोंकूं मैं प्राप्त होवों ॥ याप्रकारकासंकल्पकरिकै जोपुरुष तिनपदार्थोंकीप्राप्तिवासतै प्रयत्नकरै है ॥ ॥१०८॥

सोमूढबुद्धिपुरुष परमदुःखकूंप्राप्तहोवै है ॥ काहेतैं पुरुषोंकीइच्छारूपकामकेविषय जितनेकपदार्थ हैं॥ तिनसर्वपदार्थोंकीप्राप्तिहोणी अत्यंतदुर्घटहै ॥ याकारणतैं सकामपुरुषकूं दुःखकीहींप्राप्तिहोवै है॥ और हेजनक॥ सर्वकामनावोंकेपरित्यागतैं जोसुख निष्कामपुरुषकूंहोवै है सोसुख चक्रवर्तीराजाकूंभीनहींहोवै है॥ तथा सोसुख स्वर्गविषे देवराजइंद्रकूंभी नहींहोवै है ॥ तथा सोसुख ब्रह्मलोकविषे ब्रह्माकूंभीनहीं होवैहै ॥ काहेतैं चक्रवर्तीराजातैंआदिलेकै ब्रह्मापर्यंत जितनेकविषयजन्यसुखहैं ॥ तेसुख कर्मउपासनादिकसाधनोंकरिकैजन्यहैं ॥ याकारणतैं तेसुख नाशवान्हैं ॥ तहाँश्रुति ॥ यथेहकर्मचितोलोकःक्षीयते एवमेवामुत्रपुण्यचितोलोकक्षीयते ॥ अर्थयह ॥ जैसे यामनुष्यलोकविषे गृहादिकपदार्थ शरीरकेव्यापाररूपकर्मकरिकैरचितहैं ॥यातैं तेगृहादिकपदार्थ किसीकालपाइकै क्षयकूंप्राप्तहोवैं हैं॥तैसे स्वर्गलोकतैं आदिलेकै ब्रह्मलोकपर्यंत जितनेकलोकहैं ॥ तेलोक जीवोंकेपुण्यउपासनारूपकर्मकरिकैरचितहैं॥यातैं तेलोकभी किसीकालपाइकैक्षयकूं प्राप्तहोवैं हैं॥१॥याश्रुतिप्रमाणकरिकै तथा जोजोपदार्थ उत्पत्तिवालाहोवैहै सोसोपदार्थ नाशवान्होवैहै जैसेघटादिकपदार्थ हैं याअनुमानप्रमाणकरिकै तिनस्वर्गादिकलोकोंविषे अनित्यताहीसिद्धहोवैहै॥और जोपदार्थ नाशवान्होवैहै॥सोपदार्थ वियोगकालविषे अवश्यदुःखकीप्राप्तिकरै है यातैं चक्रवर्तीराजातैंआदिलेकैब्रह्मापर्यंत जितनेकविषयजन्यसुखहैं तेसुख परिणामकालविषेदुःखकाहेतुहोणेतैंदुःखरूपही है ॥ तहाँमूलश्लोक ॥ नसुखंसार्वभौमस्य विद्यतेनबिडौजसः ॥ ब्रह्मणोनसुखंयत्स्यात् पुंसःकामाविवर्जनात्॥अर्थयह॥सर्वकामनावोंकेअभावतैं यानिष्कामपुरुषकूं जोसुखहोवै है॥ सोसुख चक्रवर्तीराजाकूं तथाइंद्रकूं तथाब्रह्माकूंभी प्राप्तहोवैनहीं ॥ १ ॥ और हेजनक ॥विषयजन्यसुखकीइच्छारूपकामहीं याजीवोंकेआत्मसाक्षात्कारविषेप्रतिबंधकहै ॥ सोइच्छारूपकाम जिसपुरुषकानिवृत्तभयाहै ॥ तिसीनिष्कामपुरुषकूं गुरुउपदिष्टमहावाक्यतैं मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकेआत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिहोवै है॥और ताआत्मसाक्षात्कारकरिकै तिसनिष्कामपुरुषके पुण्यपापरूपसंचितकर्मोंका नाशहोइजावैहै ॥ और तेपुण्यपापरूपकर्महीं वासनाकीउत्पत्तिद्वारा लोकांतरकेप्राप्तिकाकारणहोवै हैं ॥ यातैं तिनपुण्यपापरूपकर्मोंकेनाशहुए ताविद्वान्पुरुषकी किसीलोकविषेवासनाहोवैनहीं ॥ याकारणतैं ताविद्वान्पुरुषकालिंगशरीर

लोकांतरविषेजावैनहीं ॥ किंतु जैसे गृहविषेस्थितदीपकका गृहविषेहीलयहोवैहै ॥ तैसे प्रारब्धकर्मकीसमाप्तितैंअनंतर ताविद्वान्पुरुषके मनइंद्रियसहितप्राण शरीरकेभीतरहीं अधिष्ठानआत्माविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ तहाँश्रुति ॥ नतस्यप्राणाउत्क्रामंति ॥ अर्थयह ॥ जैसे मरणतैंअनंतर अज्ञानीजीवोंकेप्राण वासनाकेअनुसार लोकांतरविषेगमनकरैं हैं ॥ तैसेवासनारहितविद्वान्पुरुषकेप्राण किसीलोकांतरविषेगमनकरैनहीं ॥ किंतु शरीरकेभीतरहीं लयभावकूंप्राप्तहोवैं हैं॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ मरणकालविषे ताविद्वान्पुरुषके प्राणादिकोंकेलयहुएभी ताविद्वान्पुरुषकाचैतन्यभाग कहांजावैहै ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ सोविद्वान्पुरुष आत्मसाक्षात्कारतैंपूर्वभी ब्रह्मरूप हीथा ॥ परंतु आत्मसाक्षात्कारतैंपूर्व सोविद्वान्पुरुष अज्ञानकरिकैआवृतब्रह्मरूपथा ॥ और आत्मसाक्षात्कारतैंअनंतर सोविद्वान्पुरुष अज्ञानरूपआवरणतैंरहित शुद्धब्रह्मरूपहोवै है॥ सोशुद्धब्रह्मरूप सर्वत्रपरिपूर्ण है॥यातैं ताब्रह्मका कहां गमनआगमन होवैनहीं॥अब याही अर्थकूं दृष्टांतकरिकैस्पष्टकरैं हैं ॥ हेजनक॥ जैसे घटविषेस्थितजोआकाशहै ॥ सोआकाश घटकेनाशतैंपूर्वभी महाकाशरूपहीहै ॥ परंतु घटरूपउपाधिकेसंबंधतैं सोआकाश घटाकाशसंज्ञाकूंप्राप्तहोवै है॥और घटरूपउपाधिकेनाशतैंअनंतर सोईहीआकाश घटाकाशसंज्ञाकापरित्यागकरिक महाकाशरूपहीहोवै है ॥ तैसे विद्वान्पुरुषकाआत्मा शरीरादिकउपाधियोंकेविद्यमानहुएभी ब्रह्मरूपही है ॥ और शरीरादिकउपाधियोंकीनिवृत्तितैंअनंतर सोविद्वान्पुरुषकाआत्मा ब्रह्मरूपहीहोवै है ॥ और हेजनक ॥ जैसे अज्ञानकाविषय हुआ शुद्धआकाश गंधर्वनगररूपवृक्षकेउत्पत्तिकाक्षेत्रहोवै है॥ तैसे अज्ञानकाविषयहुआ यहआत्मादेव कामरूपबीजसहित यासंसाररूप वृक्षकेउत्पत्तिकाक्षेत्रहोवै है और जैसे आकाशरूपअधिष्ठानकेवास्तवज्ञानकरिकै ताकल्पितगंधर्वनगरकीनिवृत्तिहोइजावै है ॥ तैसे अधिष्ठानरूपशुद्धआत्माके साक्षात्कारकरिकै यहसंसाररूपवृक्ष नाशहोइजावैहै ॥ तात्पर्य यह ॥आत्माकेअज्ञानतैं इच्छारूपकामकीउत्पत्ति होवै है॥और ताइच्छारूपकामतैं संपूर्णजगत्कीउत्पत्तिहोवैहै॥यातैं अज्ञानविशिष्टआत्मा यासंसाररूपवृक्षकेउत्पत्तिकाक्षेत्रहै ॥और इच्छारूपकाम यासंसाररूपवृक्षकाबीजहै॥और आत्मसाक्षात्काररूपअग्निकरिकै जभी अज्ञानकानाशहोवै है॥तभी अज्ञानविशिष्टआत्मारूप

क्षेत्रकाभीनाशहोइजावै है॥यद्यपि आत्मा नित्यहै यातैं आत्माकानाशसंभवैनहीं ॥ तथापि शुद्धआत्माविषेतौ संसाररूप वृक्षकीक्षेत्ररूपताहैनहीं॥किंतु अज्ञानविशिष्टआत्माविषे क्षेत्ररूपताहै॥ताअज्ञानरूपविशेषणकेनाशहुए आत्माविषे संसाररूपवृक्षकीक्षेत्ररूपतारहैनहीं॥ और ताक्षेत्रकेनाशहुए कामरूपबीजकाभीनाशहोइजावै है ॥ और ताकामरूपबीजकेनाशहुए संसाररूपवृक्षकाभीनाशहोइजावै है इस प्रकार आत्मसाक्षात्कारकरिकैनाशकूंप्राप्तहुआ सोसंसाररूपवृक्ष पुनःउत्पन्नहोवैनहीं॥अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकैनिरूपणकरैहैं॥हेजनक ! पुत्रेषणा वित्तेषणा लोकेषणा यहतीनप्रकारकीएषणा जभी यापुरुषकीनिवृत्तहोवै है॥तभी यहपुरुष इसीशरीरविषे अद्वितीयब्रह्मकूंप्राप्तहोइकै मोक्षकूंप्राप्तहोवै है॥हेजनक ! देहादिकोंविषेजोअहंअभिमानरूपअध्यासहै॥ तथा देहकेसंबंधीपुत्रधनादिकपदार्थोंविषे जोममअभिमानरूपअध्यासहै, सोअहंममअभिमानहीं ॥ सर्वकामनाओंकाकारणहै ॥ ताअहंममअभिमानकूं यद्यपि मरणतैंअनंतर सर्वअज्ञानीजीवभी परित्यागकरैं हैं ॥ तथापि जोपुरुष जीवतअवस्थाविषेही ताअहंममअभिमानकापरित्यागकरै है ॥ सोपुरुष याशरीरविषेस्थितहुआभी मुक्तहीजाना ॥ काहेतैं इच्छारूप कामका जोहृदयविषेनिवास है ॥ ताकूं बुद्धिमान् पुरुष संसाररूपबंधकहै हैं ॥ और तिसइच्छारूपकामका जोहृदयदेशविषेअभाव है ॥ ताकूं बुद्धिमान्पुरुष मोक्षकहै हैं ॥ और सोइच्छारूप कामका नाश ब्रह्मज्ञानतैं विनाहोवै नहीं ॥ किंतु ब्रह्मज्ञानकरिकैही अविद्याकीनिवृत्तिद्वारा ताइच्छारूपकामकानाशहोवै है ॥ और सोब्रह्मज्ञान जभी यापुरुषकूं जीवतअवस्थाविषेप्राप्तहोवै है ॥ तभी याशरीरकेविद्यमानहुएभीसोपुरुष जीवन्मुक्तिकूंप्राप्तहोवै है॥यातैं हेजनक ! जभी आत्मसाक्षात्कारके प्रभावतैं यहविद्वान्पुरुष शरीरादिकउपाधियोंकेविद्यमानहुएभी जीवन्मुक्तिकूंप्राप्तहोवै है ॥ तभी शरीरादिकउपाधियोंकेनाशतैंअनंतर सोविद्वान्पुरुष विदेहमुक्तिकूंप्राप्तहोवै है याकेविषेक्याकहणाहै ॥शंका॥ हेभगवन् ! जीवन्मुक्तितैं विदेहमुक्तिविषे कितनीविशेषता है ॥ समाधान ॥ हेजनक ! आत्माकेआश्रितजोमायारूपअविद्याहै ताअविद्याकीदोप्रकारकीशक्तिहोवै है॥ एकतौआवरणशक्तिहोवै है॥और दूसरीविक्षेपशक्तिहोवै है॥तहां साविक्षेपशक्तिभी दोप्रकारकीहोवै है॥एकतौ शरीरविषे तथा शरीरकेसंबंधीधनपुत्रादिकोंविषे रागकूंउत्प

न्नकरणेहारी विक्षेपशक्ति होवै है॥और दूसरी प्रपंचकीप्रतीतिकरावणेहारी विक्षेपशक्तिहोवै है॥इनसंपूर्णोंकानामबंधहै॥तहां आत्मसाक्षात्कारकरिकै याविद्वान्पुरुषका जभी आवरणशक्ति तथा रागकाकारणाविक्षेपशक्ति यहदोनोंप्रकारकाबंध निवृत्तहोवैहै॥ तभीयह विद्वान् पुरुष जीवन्मुक्तअवस्थाकूंप्राप्तहोवै है॥और जभी प्रपंचकीप्रतीतिकरावणेहारीविक्षेपशक्तिकीनिवृत्तिहोवै है॥ तभी यहविद्वान्पुरुषविदेह मुक्तिकूंप्राप्तहोवै हे ॥ इतनीही जीवन्मुक्तितैं विदेहमुक्तिविषेविशेषताहै ॥शंका॥ हेभगवन् ! जिसकालविषे आत्मसाक्षात्कार आवरणशक्तिकूं तथा रागकाकारणरूपविक्षेपशक्तिकूं नाशकरै है॥ तिसकालविषे सोआत्मसाक्षात्कार प्रपंचकी प्रतीतिकरावणेहारीविक्षेपशक्तिकूं किसवासतैनहींनाशकरता ॥ समाधान ॥ हेजनक ! जिनपुण्यपापरूपप्रारब्धकर्मोंनें विद्वान्पुरुषकेशरीरकाआरंभकऱ्या है ॥ तेप्रारब्ध कर्म ताविद्वान्पुरुषकूं सुखदुःखकेभोगदेणेवासतै ताविक्षेपअंशकूँनिवृत्तहोणेदेवैनहीं ॥ जभी भोगकरिकै ताप्रारब्ध कर्मका क्षयहोवै है ॥ तभी ताविद्वान्पुरुषकेशरीरका तथा ताविक्षेपशक्तिका नाश होवै है ॥ तिसतैंअनंतर सो विद्वान्पुरुष विदेह मुक्तिकूं प्राप्तहोवै है ॥ शंका ॥ हे भगवन् ! जीवितअवस्थाविषे ताविक्षेपशक्तिकरिके प्रपंचकूंदेखताहुआ सोविद्वान्पुरुष अज्ञानीपुरुषकीन्याईं बंधकूंकिसवासतैं नहींप्राप्तहोता॥समाधान॥ हेजनक ! अज्ञानीजीव आपणेआत्माकेतादात्म्यसंबंधकरिकै यास्थूल सूक्ष्म कारण शरीरादिकोंकूंदेखे है ॥ आत्माकूं असंगजानतानहीं॥ याकारणतैं सोअज्ञानीजीव संसारविषेंबंधायमानहोवै है॥और यहविद्वान्पुरुष आपणेआत्माकूंअसंगजानिकरिकै शरीरादिकप्रपंचकूंदेखै है॥ यातैं सोविद्वान्पुरुष संसारविषे बंधायमानहोवैनहीं ॥ याकारणतैंहीं सोविद्वान्पुरुष जीवन्मुक्त है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! रागादिकोंतैंरहित जोजीवन्मुक्तविद्वान्पुरुष है ॥ ताके खानपानादिकलौकिकव्यवहार किस प्रकार होवैंगे ॥ समाधान ॥ हेजनक ! जैसे प्रारब्धकर्मकेवशतैं उन्मत्तपुरुषके तथाबालकके खानपानादिकव्यवहारहोवै हैं ॥ तैसे प्रारब्धकर्मकेवशतैं ताजीवन्मुक्तिविद्वान्पुरुषकेभी खानपानादिकव्यवहारहोवै हैं ॥ शंका ॥ हे भगवन् ! खानपानादिकव्यवहारोंकूंकर ताहुआ सोविद्वान्पुरुष तिनपदार्थोंविषेरागवान् क्यूंनहींहोवै है ॥ समाधान हे जनक ॥ पदार्थोंका विशेषरूपकरिकै ज्ञानही

रागद्वेषकाकारणहोवै है ॥ सोपदार्थोंकाविशेषज्ञान विद्वान्पुरुषकूंहोवैनहीं ॥ किंतु जैसे नवममासतैंपूर्व माताकेगर्भविषेस्थितहुआबालक मातानैंभोजनकरऱ्याजेनानाप्रकारकेरस तिनरसोंकूंभोजनकरताहुआभी विशेषकरिकै तिनरसोंकूंजाणतानहीं ॥ तैसे आनंदस्वरूपआत्माकूं चिंतनकरताहुआ यहविद्वान्पुरुष खानपानादिकव्यवहारोंकूंकरताहुआभी विशेषकरिकै तिनव्यवहारोंकूंजाणतानहीं ॥ याकारणतैं ताविद्वान्पुरुषका किसीपदार्थविषेरागद्वेषहोवैनहीं ॥ और हेजनक जैसे अशोकवनिकान्यायकरिकै उन्मत्तपुरुषोंकाचित्त किसीएक विषयविषे अवश्यलगनहोवै है ॥ तैसे ताजीवन्मुक्तपुरुषकाचित्त आत्माकेविचारविषेहीलगनहोवै है॥अशोकवनिकान्यायकायहअर्थ है ॥ जैसे सीताकूंहरणकरिकै रावणनैं तासीताकूं किसीएकवचनविषे अवश्यराखणाथा ॥ परंतु दैवयोगतैं तारावणनैं सीताकूं अशोकवनविषे हीराख्या ॥ याकानाम अशोकवनिकान्यायहै ॥ तैसे यहचित्तभी किसीनकिसीविषयविषे अवश्यलागे है ॥ याकारणतैं तेविद्वान्पुरुष आत्माकेविचारविषेहीताचित्तकूंलगावै हैं ॥ शंका हेभगवन् आनंदस्वरूपआत्माकूं सर्वदाचिंतनकरताहुआ सोविद्वान्पुरुष जोकदाचित् बाह्यपदार्थोंकूंविशेषरूपकरिकैनहींजानताहोवै ॥ तौ जैसे ताविद्वान्पुरुषकी शास्त्रविचारादिकशुभकर्मोंविषे प्रवृत्तिहोवै है॥तैसे परद्रोहादिकनिषिद्धकर्मोंविषे ताविद्वान्पुरुषकीप्रवृत्ति किसवासतैनहींहोती ॥ समाधान ॥ हेजनक जैसे यालोकविषे जिसपुरुषनैं बहुतकालपर्यंत शास्त्रकाअभ्यासकऱ्याहै ॥ तथा शास्त्रकेअनुसार शुभकर्मकरे हैं॥सोपुरुष जोकदाचित् किसीरोगादिकनिमित्तकरिकै उन्मत्तदशाकूंभी प्राप्तहोवै है ॥ तौभी सोपुरुष पूर्वशुभकर्मोंकेअभ्यासकेवशतैं शास्त्रनिषिद्धकर्मोंकूंकरैनहीं ॥ किंतु ताउन्मत्तदशाविषेभी सोपुरुष यथार्थ अथवा अयथार्थ शुभकर्मोंकूँहीकरै है तथा पूर्वअभ्यासकरेहुएशास्त्रकाही वारंवारउच्चारणकरै है॥तैसे याविद्वान्पुरुषनैं आत्मसाक्षात्कारतैं पूर्व मुमुक्षुदशाविषे बहुतकालपर्यंत शमदमादिकसाधनकरे हैं॥तथा निरंतरवेदांतशास्त्रकाविचारकऱ्याहै॥तिनसंस्कारोंकेवशतैं सोविद्वान्पुरुष जीवन्मुक्तअवस्थाविषे परद्रोहादिकनिषिद्धकर्मोंविषेप्रवृत्तहोवैनहीं ॥ किंतु पूर्वलेसंस्कारोंकेवशतैं सोविद्वान्पुरुष शुभकर्मोंविषे तथा वेदांतशास्त्रकेविचारविषेहीं प्रवृत्तहोवै है ॥शंका॥ हेभगवन् अद्वितीयआत्माकेसाक्षात्कारकरिकै याविद्वान्पुरुषकीभेददृष्टि निवृत्त

होइजावै है ॥ यातैं सोविद्वान्पुरुष यहशिष्य उपदेशकाअधिकारी है और यहशिष्य उपदेशकाअधिकारीनहीं है॥याप्रकारकीभेददृष्टिकूं अंगीकारकरिकै किसप्रकार उपदेशकरै है ॥ समाधान ॥ हेजनक जैसे सर्वशास्त्रोंकूंजानणेहारा जोकोईमायावीपुरुषहै ॥ सो मायावी पुरुष आपणेमायाकेप्रभावतैं नानाप्रकारकेरूपोंकूंधारणकरिके आपणेएकअद्वितीयस्वरूपकूंविस्मरणकरिदेवै ॥ और तिनआपणे रूपोंकूंआपणेतैंभिन्नमानिकै सोमायावीपुरुष तिनोंकेप्रति शास्त्रकाउपदेशकरै है ॥ तहाँवास्तवतैंभेदतैंरहितहुआभी सोमायावीपुरुष भेदवालेकीन्याईं प्रतीतहोवै है ॥ तैसे अद्वितीयआत्माकेसाक्षात्कारकरिकै सर्वभेददर्शनतैंरहितहुआभी यहविद्वान्पुरुष प्रारब्धकर्मके वशतैं भेदकूंदेखताहुआ शिष्योंकेप्रति उपदेशकरै है ॥ शंका ॥ हेभगवन् द्वितीयाद्वैभयंभवति ॥ अर्थयह ॥ द्वैतरूपभेदकेदर्शनतैं जीवोंकूं भयकीप्राप्तिहोवै है ॥ याश्रुतिविषे भेददर्शीपुरुषकूंभयकीप्राप्तिकही है ॥ यातैं गुरुशिष्यादिकोंकेभेदकूंदेखणेहारा जोविद्वान् पुरुष है ॥ तिसकूंभी भयकीप्राप्तिहोवैगी ॥ समाधान ॥ हेजनक जैसे स्थूलशरीरकेअभिमानकापरित्यागकरिकै स्वप्नअवस्थाकूं प्राप्तहुआ कोईकपुरुष तास्वप्नअवस्थाविषे नानाप्रकारकेजडचेतनपदार्थोंकूंदेखे है ॥ और कदाचित् सोस्वप्नद्रष्टापुरुष तिसीस्वप्नअवस्था विषे यहसंपूर्णपदार्थ स्वप्नरूपहोणेतैं मिथ्या हैं याप्रकारकानिश्चयकरै है ॥ तानिश्चयतैंअनंतर सोस्वप्नद्रष्टापुरुष तिनमिथ्यापदार्थोंविषे बंधायमानहोवैनहीं ॥ और शास्त्रकेअभ्यासजन्यजेसंस्कार हैं ॥ तिनसंस्कारोंकेवशतैं सोस्वप्नद्रष्टापुरुष तिनमिथ्यापदार्थोंकेउपदेशा दिकोंविषेभी प्रवर्त्तहोवे है ॥ तैसे यहविद्वान्पुरुषभी अज्ञानसहितस्थूलसूक्ष्मशरीरादिरूपसर्वप्रपंचकूं मिथ्याजाणिकै ताकेविषेबं धायमानहोवै नहीं ॥ तथा अधिकारीशिष्योंकेताईं उपदेशादिकभीकरै है ॥ तात्पर्ययह ॥ अद्वितीयआत्माकेसाक्षात्कारकरिकै सर्वजगत्कूं मिथ्यारूपकरिकैजानणेहाराजोविद्वान्पुरुषहै ॥ ताविद्वान्पुरुषकूं जीवन्मात्रकाउपयोगीभेददर्शन बंधकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ सत्यरूपकरिकैभेदकादर्शनहीं बंधनकाहेतुहोवै है ॥ शंका ॥ हेभगवन् जैसे जीवन्मुक्तअवस्थातैंपूर्व बंधअवस्थाविषे यहविद्वान्पुरुष शरीरसहितप्रतीतहोवै है ॥ तैसे जीवन्मुक्तअवस्थाविषेभी यहविद्वान्पुरुष शरीरसहितप्रतीतहोवै है॥यातैं बंधअवस्थातैं जीवन्मुक्तअव

स्थाविषेकौनविशेषताहै ॥ समाधान ॥ हेजनक जैसे यालोकविषे सर्प जबपर्यंत आपणेकंचुककापरित्यागनहींकरैहै ॥ तबपर्यंत सोसर्प ताकंचुककेछेदनादिकोंकरिकै दुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जभी सोसर्प आपणेकंचुककापरित्यागकरैहै ॥ तभी सोसर्प ताकंचुककेछेदनादि कोंकरिकै दुःखकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ आपणेबिलकेद्वारऊपरास्थितजोकंचुकहै ॥ ताकूं दिनदिनविषे देखताहुआभी सोसर्प ताकंचुकवि षेआसक्तिकरैनहीं ॥ तथा ताकंचुककेधर्मोंकूं आपणेविषेमानैनहीं ॥ तैसे यह विद्वान्पुरुष जबपर्यंत देहकेअभिमानकापरित्याग नहींकरै है, तबपर्यंतही तादेहकेछेदनादिकोंकरिकै दुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा तादेहकेजन्ममरणादिकधर्मोंकूंआपणेविषेमानैहै॥ और आत्माकेसा क्षात्कारकरिकै सोविद्वान्पुरुष जभी देहादिकोंतैं आपणेकूंभिन्नकरिकैजानैहै॥तभी सोविद्वान्पुरुष देहादिकोंकेदाहछेदनादिकोंकरिकैदुः खकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और दिनदिनविषे आपणेदेहादिकोंकूंदेखताहुआभी सोविद्वान्पुरुष तिनदेहादिकोंविषे आसक्तिकरैनहीं ॥ तथा ति नदेहादिकोंकेजन्ममरणादिकधर्मोंकूं आपणेस्वरूपविषेमानैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ विचारतैंरहित जेतामसीसर्पादिकजंतुहैं ॥ तेसर्पादिकभी जभी कंचुककेपरित्यागतैं अनंतर ताकंचुककेछेदनादिकधर्मोंकूं आपणेस्वरूपविषेनहीं मानते ॥ तभी विचारादिकसाधनोंयुक्त जोसात्वि कीविद्वान्पुरुषहै ॥ सोविद्वान्पुरुष शरीरादिकोंकेअभिमानत्यागतैंअनंतर तिनशरीरादिकोंकेजन्ममरणादिकधर्मोंकूं आपणेस्वरूपविषेन हींमानैहै ॥ याकेविषेक्याकहणाहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् कंचुककेपरित्यागतैंअनंतर तासर्पका कंचुककेसाथ कोईसंबंधहैनहीं॥ याकारणतैं सोसर्पताकंचुककेछेदनादिकोंकरिकै दुःखकूंप्राप्तहोवैनहीं॥यहवार्ता यद्यपि संभवैहै॥तथापि विद्वान्पुरुषका जीवन्मुक्तअवस्थाविषे शरीरा दिकोंकेसाथ संबंधप्रतीतहोवैहै ॥ यातैं शरीरादिकोंकेछेदनादिकोंकरिकै ताविद्वान्पुरुषकूं अवश्यदुःखकीप्राप्तिहोवैगी ॥समाधान ॥ हे जनक ॥ सामान्यतैंशरीरकासंबंध सुखदुःखकाहेतुहोवैनहीं ॥ किंतु मैं शरीररूपहूं अथवा यहमेराशरीरहै याप्रकारकेअहंममअभिमानरू पसंबंधकरिकै शरीरविशिष्टजोपुरुषहै॥तिसकूंहीं शरीरकेपूजनदाहादिकोंकरिकै सुखदुःखकीप्राप्तिहोवै है॥ और जोपुरुष शरीरकेअहंमम अभिमानतैंरहितहै ॥ तिसपुरुषकूं शरीरकेपूजनताडनादिकोंकरिकै सुखदुःखकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥तहांदृष्टांत॥ जैसे भूतकेआवेशकरिकैयु

कृजोशरीरहै ॥ सोशरीर ताभूतकेपूजनताडनकरिकै सुखदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और ताशरीरविषेस्थितजोभूतहै ॥ताभूतकातिसमनुष्यशरीरविषे अहंममअभिमानहैनहीं ॥ याकारणतैं सोभूत ताशरीरकेपूजनताडनादिकोंकरिकै सुखदुःखकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे पुण्यपापरूप प्रारब्धकर्मकेवशतैं याविद्वान्पुरुषकाशरीर पूजनादिकोंकरिकै सुखकूंप्राप्तहोवैहै॥ तथा ताडनादिकोंकरिकै दुःखकूंप्राप्तहोवैहै॥ औरताशरीरकेअहंममअभिमानतैंरहित तथापुण्यपापरूपकर्मतैंरहित जोविद्वान्पुरुषकावास्तवस्वरूपहै॥सोसुखदुःखकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥इतनैकरिकै समाधिअवस्थाविषेस्थितजोविद्वान्पुरुषहै ताकेविषे सुखदुःखकेअनुभवकाअभाव दिखाया॥अब समाधितैंउत्थानकालविषे याविद्वान्पुरुषकूं जोसुखदुःखकाअनुभवहोवैहै ॥ ताकेविषे अज्ञानीपुरुषोंतैंविलक्षणता निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक जैसे यालोकविषे बालककूं प्रियवस्तुकीप्राप्तितैं सुखकाअनुभवहोवैहै ॥ तथा अप्रियवस्तुकीप्राप्तितैं दुःखकाअनुभवहोवैहै ॥ परंतु सोसुखदुःखकाअनुभव तावालकविषे रागद्वेषकीउत्पत्तिकरैनहींतैंससमाधितैंउत्थानकालविषेयाविद्वान्पुरुषकूंप्रियवस्तुकीप्राप्तितैंसुखकाअनुभवहोवै है तथाअप्रियवस्तुकीप्राप्तितैंदुःखकाअनुभवहोवैहै॥परंतु सोसुखदुःखकाअनुभव ताविद्वान्पुरुषविषे अज्ञानीपुरुषकीन्याईं रागद्वेषकीउत्पत्तिकरैनहीं ॥यातैं अज्ञानीपुरुषके सुखदुःखकेअनुभवतैं विद्वान्पुरुषके सुखदुःखकेअनुभवविषे महान्विषमता है॥अबताविद्वान्पुरुषविषे परइच्छाअधीन सुखदुःखकी प्राप्तिका निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ! यालोकविषे जोपुरुष वृद्धअवस्थाकरिकैयुक्त है॥ तथा रोगादिकोंकरिकै जिसकीशक्तिनष्टहुई है ॥ ऐसाशक्तिहीनवृद्धपुरुष आपणीइच्छातैं सुखदुःखकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु सोवृद्धपुरुष आपणेस्त्रीपुत्रादिकबांधवोंकीइच्छाकेअधीनहीं सुखदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तहाँ स्त्रीपुत्रादिकबांधव तावृद्धपुरुषकेताईं जोप्रियपदार्थोंकीप्राप्तिकरैहैं ॥ तौ सोवृद्धपुरुष सुखकूंप्राप्तहोवैहै ॥और ते स्त्रीपुत्रादिकबांधव तावृद्धपुरुषकेताईं जोअप्रियपदार्थोंकीप्राप्तिकरैहैं तौ सोवृद्धपुरुष दुःखकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ तैसे यहविद्वान्पुरुषभीआपणी इच्छातैं सुखदुःखकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु अन्यपुरुषोंकीइच्छाकेअधीन सोविद्वान्पुरुष सुखदुःखकूंप्राप्तहोवै है ॥ तहाँ जोकोईभक्तजन ताविद्वान्कापूजनकरैहै ॥ तौ सोविद्वान्पुरुष सुखकूंप्राप्तहोवैहै॥और जोकोईदुष्टजन ताविद्वान्पुरुषकाताडनकरैहै ॥ तौ सोविद्वान्पुरुष

दुःखकूंप्राप्तहोवैहै॥अब अनात्मपदार्थोंकीप्राप्तिकरिकै तथातिनोंकेवियोगकरिकै विद्वान्पुरुषकूं हर्षशोकहोवैनहीं याअर्थकूंनिरूपणकरैहैं हेजनक॥जैसे यालोकविषे बहुतधनकरिकै तथाअन्नकरिकै युक्तजोकोईधनीपुरुष है॥सोधनीपुरुष किसीनिमित्तपाइकै आपणेक्षेत्रविषेजावै है।तहां क्षेत्रतैं अन्नादिकोंकीअप्राप्तिदेखिकरिकै सोधनीपुरुष शोककूंप्राप्तहोवैनहीं।और ताक्षेत्रतैं बहुतअन्नादिकोंकीप्राप्तिदेखिकै सोधनीपुरुष हर्षकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे ब्रह्मानंदकरिकैतृप्तहुआ यहविद्वान्पुरुषभी धनपुत्रादिकलौकिकपदार्थोंकीप्राप्तिकरिकै हर्षकूंप्राप्तहोवैनहीं तथा धनपुत्रादिकपदार्थोंकेवियोगतैं ॥ सोविद्वान्पुरुष शोककूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ अब ताविद्वान्पुरुषकेचित्तकीआत्माविषे तत्परता तथा व्यवहारविषेउदासीनता निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ॥ जैसे यालोकविषे कोईगृहवालापुरुष किसीकार्यकेकरावणेवासतै किसीमजूरकूंराखै है ॥ तामजूरकेसाथ सोगृहीपुरुष याप्रकारकाठहरावकरै है ॥ प्रातःकालतैंलेके सायंकालपर्यंत याकार्यकूं जोतूंकरैगा॥ तौ तुम्हारेताईं मैं इतनेंपैसेमजूरीकेदेवोंगा ॥ याप्रकारकाठहरावकरिकै सोमजूर आपणेमजूरीकेपैसोंकूंचिंतनकरताहुआ तथासायंकालकूंदेखताहुआ ता कार्यविषेप्रवृत्तहोवै है ॥ परंतु ताकार्यविषे तिस मजूरका राग है नहीं ॥ यातैं गृहवालेपुरुषकीन्याईं अधिककार्यकूं तथान्यूनकार्यकूं सोमजूर करैनहीं॥तैसे यहविद्वान्पुरुषभी आनंदस्वरूपआत्माकूंचिंतनकरताहुआ तथा प्रारब्धकर्मकेसमाप्तिकालकूंदेखताहुआ खानपानादिकव्यवहारोंकूंकरै है परंतु ताखानपानादिकव्यवहारोंविषे ताविद्वान्पुरुषकारागहैनहीं यातैं सोविद्वान्पुरुष अज्ञानीपुरुषोंकी न्याईं तिनव्यवहारोंकीवृद्धिकरैनहीं॥अब प्रारब्धकर्मकेवशतैं ताविद्वान्पुरुषकेगमनआगमनादिकोंका निरूपणकरैहैं ॥ हेजनक जैसे सूत्रकेकातणेकासाधन जोकाष्ठकायंत्रहै॥सोयंत्र सूत्रकेडोरेकरिकैभ्रमणकरैहै॥तैसेविद्वान्पुरुषकाशरीरभी प्रारब्धकर्मकेवशतैं तीर्थादिकोंविषे गमनआगमनकरै है॥अब जीवोंकेभावनाकेअनुसार विद्वान्पुरुषकेशरीरविषे सुखदुःखकीकारणताका निरूपणकरैहैं ॥हेजनक॥ जैसे किसी पुरुषनैं कौतुककेवासतै चर्मका अथवा काष्ठका हस्तीरच्या॥सोकाष्ठकाहस्ति जीवोंकेभावनाकेअनुसार किनोंकूंसुखकीप्राप्तिकरै है॥तथा किन स्त्रीबालकादिकमूढोंकूं दुःखकीप्राप्तिकरैहै॥तैसे यहविद्वान्पुरुषकाशरीरभी जीवोंकेभावनाकेअनुसार सुखदुःखकीप्राप्तिकरैहै॥तहाँ

जेजीव विद्वान्पुरुषकेशरीरविषेप्रीतिकरैं हैं॥तिनजीवोंकूं सोविद्वान्पुरुष आपणेपुण्यकर्मदेके सुखकीप्राप्तिकरै है॥और जेजीव ताविद्वान्
पुरुषकेशरीरविषेद्वेषकरैं हैं ॥ तिनजीवोंकूं सोविद्वान्पुरुष आपणेपापकर्मदेके दुःखकीप्राप्तिकरै है ॥ तहाँश्रुति तस्यपुत्रादायमुपयांति
सुहृदःसाधुकृत्यं द्विषंतःपापकृत्यं ॥ अर्थयह ॥ तिसविद्वान्पुरुषकेधनादिकपदार्थोंकूं पुत्रादिकबांधव लेजावैं हैं॥और ताविद्वान्पुरुषके
पुण्यकर्मोंकूं सुहृद्भक्तजन लेजावैं हैं ॥ और ताविद्वान्केपापकर्मोंकूं द्वेषकरणेहारेदुष्टपुरुष लेजावैं हैं ॥ १ ॥ अब मनकेव्यापारतैंविनाहीं
विद्वान्पुरुषकेशरीरकीप्रवृत्तिका निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ जैसेकोईपुरुष धनुषतैं बाणकूंछोडे है ॥ सोबाण जबपर्यंत भूमिविषेनहीं
पडे है॥तबपर्यंत सोबाण पूर्वलेवेगकेवशतैं आकाशविषे भ्रमणकरै है तैसे जबपर्यंत याविद्वान्पुरुषकेशरीरकापातनहींहोता॥तबपर्यंतसो
विद्वान्पुरुषकाशरीर प्रारब्धकर्मकेवेगकरिकै गमनआगमनकरै है॥अब ब्रह्मनिष्ठाकेआवेशतैं विद्वान्पुरुषविषे सर्वव्यवहारोंकेविस्मरणका
निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ जैसे यालोकविषेजिसपुरुषकेशरीरविषे भूतप्रवेशकरै है ॥ सोपुरुष ताकालविषे नानाप्रकारकेव्यवहारोंकूंकर
ताहुआभीविशेषकरिकै तिनव्यवहारोंकूंजाणतानहीं ॥ तैसे ब्रह्मनिष्ठाकेआवेशतैंअनंतर यहविद्वान्पुरुष नानाप्रकारकेव्यवहारोंकूंकरता
हुआभी तिनव्यवहारोंकूं विशेषकरिकैजाणतानहीं ॥ हेजनक ॥ याप्रकारकेअवस्थाकूं जभी यहविद्वान्पुरुष प्राप्तहोवै है॥तभीयहविद्वान्
पुरुष स्थूल सूक्ष्म कारण यातीनशरीरोंकेविद्यमानहुएभी तिनशरीरोंतैंरहितहोवै है॥तथा तिनशरीरोंकेजन्ममरणादिकधर्मोंतैं रहितहोवै
है ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताविद्वान्पुरुषकूं अशरीर यानामकरिकैकथनकरै है ॥ और शरीरादिकोंकेनाशहुएभी ताविद्वान्पुरुषका
वास्तवस्वरूप नाशहोवैनहीं ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवतीताविद्वान्पुरुषकूं अमृत यानामकरिकैकथनकरै है॥और हेजनक ॥ यहविद्वान्
पुरुष यद्यपि वास्तवतैंप्राणअपनादिकोंतैंरहितहै॥तथापि यहविद्वान्पुरुष आपणीसमीपताकरिकै तिनप्राणोंकूं आपणेआपणेव्यापारविषे
प्रवर्त्तकरै है ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताविद्वान्पुरुषकूं प्राण यानामकरिकैकथनकरै है ॥ और सोविद्वान्पुरुष सजातीयभेद विजाती
यभेद स्वगतभेद यातीनभेदोंतैंरहित है ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताविद्वान्पुरुषकूं ब्रह्म यानामकरिकैकथनकरै है ॥ और सोविद्वान्

पुरुष स्वप्रकाशचैतन्यरूपहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताविद्वान्पुरुषकूं तेज यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ हेशिष्य ॥ याप्र
कार जभी याज्ञवल्क्यमुनिनैं जनकराजाकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकऱ्या ॥ तभी सोजनकराजा ताब्रह्मविद्याकूं जाणताभया परंतु ता
ब्रह्मविद्याकेप्राप्तिकेजेसाधनहैं ॥तिनसाधनोंकूं सोजनकराजा नहींजाणताभया ॥याकारणतैं सोजनकराजा आपणेमनविषे याप्रकारकावि
चार करताभया॥साधनोंतैंरहितजोपुरुषहै ताकामन शुद्धहोवैनहीं॥और अशुद्धमनवालेपुरुषकूं वेदांतकेश्रवणतैंभी यथार्थज्ञानहोवैनहीं॥
यातैं मनकेशुद्धिकूंकरणेहारेजेसाधनहैं ॥ तिनोंकाश्रवण अवश्यकऱ्याचाहिये ॥ याप्रकारकेअभिप्रायकूंमनविषेराखिकै सोजनकराजा पूर्व
कीन्याई पुनःयाज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति यहवचनकहताभया ॥ राजाजनकउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्यमुनि आपकेउपदेशतैं मैंजनक विद्याकूंप्राप्त
भयाहूं ॥ यातैं ताविद्याकीगुरुदक्षिणा एकसहस्रगौवां मैं आपकेताईंदेताहूं ॥ तागुरुदक्षिणाकूं आप अंगीकारकरो ॥ हेशिष्य ॥ याप्र
कारकावचन जभा जनकराजानैं याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रतिकह्या ॥ तभी सोयाज्ञवल्क्यमुनि ताजनकराजाकेअभिप्रायकूंजाणिकारिकै नानाप्र
कारकेसाधनोंसहित ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरताभया ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेजनक ॥ अनेकजन्मोंकेपुण्यकर्मोंकेप्रभावतैं अंत्यजन्म
विषे जोआत्माकासाक्षात्कार उत्पन्नहोवैहै ॥ सोआत्मसाक्षात्कारही ब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपमोक्षकामार्गहै॥कैसाहैसोआत्मसाक्षात्काररूप
मार्ग ॥ अत्यंततर्कविषेकुशलजेपुरुषहैं ॥ तिनोंकूंभी दुर्विज्ञेयहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताज्ञानरूपमार्गकूं सूक्ष्मयानामकरिकैकथ
नकरैहै ॥ और यहआत्मज्ञान परिपूर्णनित्यब्रह्मकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताआत्मज्ञानरूपमार्गकूं विस्तृत पुराण
यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ हेजनक ॥ ऐसे आत्मसाक्षात्काररूपमार्गकूं मैंसर्वज्ञयाज्ञवल्क्यही जाणताहूं ॥ मेरेतैंभिन्न अल्पज्ञप्राणी
ताज्ञानरूपमार्गकूं जानिसकैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जोआपतैंविना दूसराकोईप्राणी तिसज्ञानरूपमार्गकूंनहींजाणिसकता ॥ तौ
अस्मदादिकजीवोंकूं ताज्ञानरूपमार्गकेजानणेविषे क्याआशाहै ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ मैंयाज्ञवल्क्यनेहीं तिसज्ञानरूपमार्गकूंजा
न्याहै ॥ याहमारेकहणेका यहअभिप्रायहै ॥ जैसे मैंयाज्ञवल्क्यमुनि ब्रह्मचर्यादिकसाधनोंकरिकै तथागुरुकीकृपाकरिकै आत्मज्ञानरूप

मार्गकूंप्राप्तभयाहूं ॥ तथा तामार्गद्वारा मोक्षकूंप्राप्तभयाहूं ॥ तैसे दूसरेभी अधिकारीपुरुषें ब्रह्मचर्यादिकसाधनोंकरिकै तथागुरुकीकृपाकरिकै ताआत्मज्ञानरूपमार्गकूंप्राप्तहोवैहैं॥तथा ताज्ञानरूपमार्गद्वारा मोक्षकूंप्राप्तहोवैं हैं॥ और जेपुरुष ब्रह्मचर्यादिकसाधनोंतैंरहित बहिर्मुखहैं ॥ तेवहिर्मुखपुरुष ताआत्मज्ञानरूपमार्गकूंजाणिसकैनहीं ॥ याअभिप्रायकरिकै हमनैं सोवचनकह्याहै॥ और हेजनक॥जैसे लवणका पिंड समुद्रकूंप्राप्तहोइकै समुद्ररूपहोइजावैहै॥तैसे तेविद्वान्पुरुष ज्ञानरूपमार्गद्वारा आनंदस्वरूपआत्माकूंप्राप्तहोइकै आत्मारूपहुएस्थित होवैं हैं ॥ और ऐसेआनंदस्वरूपआत्माविषेंस्थितहोइकै तेविद्वान्पुरुष जन्ममरणादिकदुःखोंतैं तथा रागद्वेषतैं तथाअज्ञानतैं रहितहोवैं हैं ॥ और देहादिकउपाधियोंतैं आपणेकूंभिन्नमानिकै तेविद्वान्पुरुष देहादिकोंकेसर्वधर्मोंतैंरहितहोवैं हैं ॥ यातैं हेजनक ॥ कार्यसहितअज्ञानकीनिवृत्ति तथाब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपजोमोक्षहै ॥ ताकेप्राप्तिकरणेहारा आत्माकाज्ञानहींमार्ग है ॥ तहाँश्रुति ॥नान्यः पंथाविद्यतेअयनाय ॥ अर्थयह ॥ मोक्षकीप्राप्तिवासतैं ज्ञानतैंभिन्न दूसराकोईमार्गनहीं है ॥ किंतु आत्मज्ञानहीं मोक्षकीप्राप्तिकामार्ग है ॥ १ ॥ अब जैसे कोईपुरुष मणिकीप्रभाविषे मणिकीबुद्धिकरै है॥ तैसे केइकउपासकपुरुष सुषुम्नानामानाडीकूंहीं॥ मोक्षकामार्गकहैं हैं॥तिनोंकेमतका निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ केइकउपासकपुरुष याप्रकार कथनकरैं हैं॥ हृदयकमलविषेस्थितजोसूर्यभगवान्है ॥ तथाबाह्यआकाशविषेस्थितजोसूर्यभगवान्है ॥ तिनदोनोंकेसाथ संबंधहैजिसका ऐसीजोसुषुम्नानामानाडीहै ॥ तानाडीरूपमार्गकरिकै यहउपासकपुरुष जभी ब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवै है॥तभी सोउपासकपुरुष ब्रह्माकेसाथ मोक्षकूंप्राप्तहोवैहै॥यातैं जैसे आत्मसाक्षात्काररूपमार्गकरिकै यहअधिकारीपुरुष मोक्षकूंप्राप्तहोवै है॥तैसे सुषुम्नानाडीरूपमार्गकरिकैभी यहउपासकपुरुष मोक्षकूंप्राप्तहोवैहै॥ यातैं सुषुम्नानामानाडीभी मोक्षकेप्राप्तिकामार्ग है ॥ कैसाहैसोब्रह्मलोककामार्ग सूर्यतैंनिकसेजोकिरणहैं ॥ तथाहृदयकमलतैंनिकसियांजेनाडियाँ हैं ॥ तिनदोनोंकरिकैरचितहै ॥ और नानाप्रकारके अन्नकेरसोंकरिकै तेनाडियांपूर्ण हैं ॥ याकारणतैं तेउपासकपुरुष ताब्रह्मलोककेमार्गकूं शुक्ल नील पिंगल हरित लोहित इत्यादिकअनेकवर्णवालामानैं हैं ॥ ऐसेविचित्रमार्गकूं तेउपासकपुरुषही आपणेसाक्षीरूपप्रत्यक्षकरिकैजानैं हैं ॥

दूसराकोईपुरुष तामार्गकूंजानिसकैनहीं ॥ और जेअधिकारीपुरुष तासगुणब्रह्मकी अहंग्रहउपासनाकरैं हैं ॥ तेउपासकपुरुष तानाडीरूपमार्गद्वारा ब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तथा पूर्वउक्तपंचाग्निविद्याकूंजानणेहारे जेअग्निहोत्रीगृहस्थहैं॥ तेगृहस्थभी तानाडीरूपमार्गद्वारा ब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ तथा गृहस्थतैंभिन्न जेऊर्ध्वरेता ब्रह्मचारी वानप्रस्थ संन्यासी यह तीनआश्रमवाले हैं ॥ तेभीआपणेआपणे आश्रमकेपुण्यकर्मोंकूंकरिकै तानाडीरूपमार्गद्वारा ब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ ताब्रह्मलोकविषेजाइकै तेउपासकपुरुष ब्रह्माकेसाथ मोक्षकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ यातैं सुषुम्नानामानाडीही मोक्षकामार्गहै ॥ हेजनक याप्रकार केईउपासकपुरुष सुषुम्नानामानाडीकूंहीं मोक्षकामार्गकहैं हैं ॥ अब आत्मज्ञानरूपमार्गविषे मुमुक्षुजनोंकीश्रद्धाकरावणेवासतैं तिसतैंभिन्न दूसरेसर्वमार्गोंकीनिंदाकानिरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ जेपुरुष स्वर्गलोककीप्राप्तिवासतैं यज्ञदानादिककर्मोंकूंकरैं हैं ॥ तेसकामपुरुष धूमादिरूपदक्षिणमार्गकरिकै स्वर्गलोककूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ तास्वर्गलोकविषेप्राप्तहोइकै तेकर्मीपुरुष देहाभिमानरूपअंधतमकूंहींप्राप्तहोवैं हैं ॥ कैसाहैसोदेहाभिमानरूपअंधतम ॥ स्त्रीपुत्रादिकपदार्थोंविषे आसक्तिद्वारा तिनपुरुषोंकेविचाररूपीनेत्रोंकूंआच्छादनकरणेहाराहै ॥ इतनेकरिकैयह अर्थ बोधन कऱ्या ॥ यज्ञदानादिकपुण्यकर्मों करिकै दक्षिण मार्गविषे गमनकरणे हारे जे कर्मीपुरुषहैं तेकर्मीपुरुषभीजभीअंधतमकूंप्राप्तहोवैं हैं तभीकेवलपापकर्मकरिकैकीटपतंगादिकभावकीप्राप्तिरूप तीसरेमार्गविषे गमनकरणेहारे जेपापात्मापुरुषहैं तेपापात्मापुरुष अंधतमविषेप्राप्तहोवैं हैं याकेविषे क्याकहणाहै ॥ अब ब्रह्मलोककेमार्गकीनिंदाका निरूपणकरैंहैं हेजनक जेपुरुष ब्रह्मलोककीप्राप्तिवासतैं ब्रह्मादिकदेवतावोंकीउपासनाकरैंहैं तेउपासकपुरुष कर्मीपुरुषोंतैंभी अधिकअंधतमकूंप्राप्तहोवैंहैं काहेतैं ब्रह्मादिकदेवतावोंकीउपासनाकरिकै तेउपासकपुरुष जभी ब्रह्मलोकविषे जावैंहैं तभी तिनउपासकपुरुषोंकूं तहाँ परमऐश्वर्यकीप्राप्तिहोवै है॥ और स्वर्गलोकविषेकर्मीपुरुषोंकूं स्त्रीपुत्रादिकपदार्थोंविषे जितनीआसक्तिहोवैंहै तिसतैंभीकोटिगुणाअधिकआसक्ति ब्रह्मलोकविषे उपासकपुरुषोंकूं स्त्रीपुत्रादिकपदार्थोंविषेहोवैंहै॥यातैं ब्रह्मलोककेप्राप्तिकामाकेभी तिनउपासकपुरुषोंकूं देहाभिमानरूपअंधतमकीहीप्राप्तिकरैंहै ॥ हेजनक याप्रकार स्त्रीपुत्रादिकपदार्थोंविषेआसक्तहुए तेकर्मीपुरुष

तथाउपासकपुरुष तिनलोकोंविषे किंचित्मात्रसुखकूं भोगिकै तिनपुण्यकर्मोंकेनाशतैंअनंतर तेसकामपुरुष पुनःजन्ममरणरूपदुःखकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ आत्मसाक्षात्कारतैंरहित जेकमापुरुष हैं तथाउपासकपुरुष हैं ॥ तेकर्मीउपासकपुरुष मृत्युकूंप्राप्तहोइकै ताकर्मउपासनाकेफलकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ कैसाहैसोफल अतिशयतादोषवालाहै ॥ तथा नाशवान् है ॥ याकारणतैं सोफल सुखतैंरहित है ॥ तथा देहअभिमानरूपअंधतमकरिकैआवृत है याप्रकारकेफलकूं तेकर्मीउपासकपुरुष प्राप्तहोवै हैं ॥ और हेजनक ॥ यामनुष्यलोकविषे जितनेकसात्विक राजस तामसजीव हैं ॥ तेसंपूर्णजीव मरणतैंअनंतर तिनमार्गोंकरिकै परलोकविषेजावै हैं ॥ तहाँ एकतौ उपासकपुरुषोंकूं ब्रह्मलोककीप्रातिकरणेहारा देवयाननामामार्ग है ॥ जिसमार्गकूं शास्त्रविषे अर्चिपूनामकरिकैकथनकरैहै ॥ और दूसरा कर्मीपुरुषोंकूं स्वर्गलोककीप्रातिकरणेहारा पितृयाणनामा मार्गहै॥जिसमार्गकूं शास्त्रविषे धूममार्ग यानामकरिकैकथनकरैहैं॥ और तीसरा कीटपतंगादिकशरीरोंकी तथा नरककीप्रातिकरणेहारा तृतीयस्थान नामामार्गहै॥यहतीनोंमार्ग यद्यपि पूर्वउक्तरीतिसैं दुःखरूपफलकीहीप्रातिकरै हैं ॥ तथापि तिनतीनोंमार्गोंविषे परस्पर इतनीविलक्षणताहै ॥ तहाँ कीटपतंगादिकशरीरोंकी प्रातिकरणेहारा तथा नरककीप्रातिकरणेहारा जोतृतीयस्थाननामा तीसरामार्ग है ॥ तातीसरेमार्गका ब्रह्मज्ञानरूपचतुर्थमार्गकेसाथ परंपराकरिकैभी संबंधनहीं ॥ यहवार्ता गीताविषे श्रीकृष्णभगवान्नेभीअर्जुनकेप्रतिकहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ तानहंद्विषतःक्रूरान्संसारेषुनराधमान् ॥ क्षिपाम्यजस्रमशुभानासुरीष्वेवयोनिषु ॥ अर्थयह ॥ द्वेषादिकपापकर्मोंकूंकरणेहारे जेअधमजीवहैं ॥ तिनोंकूं मैंकृष्णभगवान् यासंसारविषे कीटपतंगादिकतामसीयोनियोंविषे प्राप्तकरूंहूँ ॥१॥ याभगवत्गीताकेवचनतैंभी तातृतीयस्थाननामातीसरेमार्गका आत्मसाक्षात्काररूपचतुर्थमार्गकेसाथ संबंधसंभवैनहीं ॥ और उपासकपुरुषोंका जोदेवयाननामा मार्ग है ॥ तथा कर्मीपुरुषोंका जोपितृयाणनामा मार्गहै ॥ तेदोनोंमार्ग कदाचित्चित्तकीशुद्धिद्वारा किसीभाग्यवान्पुरुषकूं आत्मज्ञानकीभीप्रातिकरैं हैं ॥ यातैं देवयानपितृयाण या दोनोंमार्गोंका चित्तकीशुद्धिद्वारा आत्मज्ञानरूपचतुर्थमार्गविषे संबंधसंभवैहै ॥ हेजनक ॥ जन्ममरणादिकसर्वदुःखोंतैंरहित जो ब्रह्मज्ञान ॥ ११६ ॥

रूपचतुर्थमार्ग है ॥ तिसमार्गविषेविचरणेकीजिसपुरुषकूंइच्छाहोवै ॥ तिसअधिकारीपुरुषने यातीनोंमार्गोंकापरित्यागकरिकै केवल आत्मज्ञानरूपमार्ग विषेहीविचरणा ॥ इतनैंकरिकै आत्मज्ञानरूपचतुर्थमार्गकीउत्कृष्टता निरूपणकरी ॥अब ताआत्मज्ञानकरिकैजोफल प्राप्तहोवै है ताका निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ यहआनंदस्वरूपआत्मा शरीरादिकोंतैंभिन्नहै॥यातैं सुखदुःखतैंआदिलैकै जितनेकीशरीरादिकोंकेधर्म हैं तेधर्म असंगआत्माकूंस्पर्शकरैंनहीं ॥ ऐसाआनंदस्वरूपआत्मा आपणेवास्तवस्वरूपकेअज्ञानतैं जभी शरीरकेसाथ तादात्म्यअध्यासकूंप्राप्तहोवै है॥तभी सोआत्मादेव आपणेसर्वात्मभावकूंविस्मरणकरिकै मूढताकूंप्राप्तहोवै है॥और सुखदुःखादिकसंसारधर्मोंकरिकै तपायमानजोयहशरीरहै ॥ ताकेतादात्म्यसंबंधकरिकै सोआत्मादेवभी तपायमानहोवै है ॥ और मेरेकूंसुखकीप्रातिहोवै है ॥ याप्रकारकीइच्छाकरिकै परमदुःखकूंप्राप्तहोवै है ॥ और हेजनक ॥ जिसपुरुषकूंयाप्रकारकाज्ञानभयाहै ॥ सर्वजीवोंकेहृदयदेशविषेस्थित तथा सर्वसुखोंकासमुद्र ऐसाजोस्वयंज्योतिपरमात्मादेवहै ॥ सोपरमात्मादेव मेरेस्वरूपतैंभिन्ननहीं ॥ किंतु मैंहीं परमात्मारूपहूं ॥ याप्रकार आत्माकूंजानणेहाराजोपुरुषहै सोविद्वान्पुरुष शरीरादिकोंतैं आपणेकूंभिन्नमानै है ॥ तथा सर्वविषयजन्यसुखकीइच्छातैंरहित होवै है ॥ याकारणतैं सोविद्वान्पुरुष विषयजन्यसुखकीइच्छा करिकै तथा शरीरकेसुखदुःखादिकधर्मोंकरिकै तपायमानहोवैनहीं॥अब याहीअर्थकूं दृष्टान्तकरिकैनिरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ जिसपुरुषकूं आत्माकासाक्षात्कारहोवै है ॥ तिसपुरुषकी कारणअविद्या निवृत्तहोइजावै है ॥ और ताकारणअविद्याकेनिवृत्तहुएतैंअनंतर ताविद्वान्पुरुषकी शरीरादिकोंविषेतादात्म्यअध्यासरूपकार्यअविद्या निवृत्तहोइजावै है ॥ और ताकार्यअविद्याकेनिवृत्तितैंअनंतर ताविद्वान्पुरुषकूं शरीरकेसुखदुःखादिकधर्म तपायमानकरैंनहीं ॥ तहाँदृष्टांत ॥ जैसे लोहकेपिंडका जबपर्यंत अग्निकेसाथ तादात्म्यसंबंधहोवै है ॥ तबपर्यंत सोलोहकापिंड प्रकाशमानहोवै है ॥ तथा तपायमानहोवै है ॥ और जभी तालोहकेपिंडका अग्निकेसाथ तादात्म्यसंबंध निवृत्तहोवै है ॥ तभी सोलोहकापिंड प्रकाशमानहोवैनहीं तथा तपायमानहोवैनहीं ॥ तैसे जबपर्यंत याविद्वान्पुरुषका शरीरकेसाथ तादात्म्यअध्यासहोवै है ॥तबपर्यंत यहविद्वान्पुरुष शरीरकेसुखदुःखादिकधर्मों

कारिकै तपायमानहोवै है ॥ और जभी ताविद्वान्पुरुषका शरीरकेसाथ तादात्म्यअध्यास निवृत्तहोवै है ॥ तभी सोविद्वान्पुरुष शरीरके सुखदुःखादिकधर्मोंकरिकै तपायमानहोवैनहीं ॥ हेजनक ॥ यालोकविषेभी तादात्म्यअध्यासही जीवोंकेदुःखकाकारणदेख्याहै ॥ काहेतें यालोकविषे जोपुरुष आपणेस्त्रीपुत्रादिकबांधवोंकूं आपणाआत्मारूपकरिकैमानै है॥सोपुरुष तिनस्त्रीपुत्रादिकबांधवोंकेदुःखकरिकै परम दुःखकूंप्राप्तहोवै है॥और जोपुरुष तिनस्त्रीपुत्रादिकबांधवोंके अहंममअभिमानका परित्यागकरै है।सोपुरुष उदासीनपुरुषकीन्याईं तिनस्त्री पुत्रादिकबांधवोंकेदुःखकरिकै दुःखकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे यहविद्वान्पुरुषभी जभी शरीरविषेअहंममअभिमानकरै है॥तभी ताशरीरकेदुःखकरिकै दुःखकूंप्राप्तहोवै है॥और जभी यहविद्वान्पुरुष ताशरीरकेअहंममअभिमानकापरित्यागकरै है।तभी सोविद्वान्पुरुष ताशरीरकेदुःखकरिकै दुःखकूंप्राप्तहोवैहैनहीं यातें आनंदस्वरूपआत्माकासाक्षात्कारहीं कार्यसहितअज्ञानकीनिवृत्तिद्वारा परमानंदकेप्राप्तिकातथासर्वदुःखोंकीनिवृत्तिका कारणहै इतनैंकरिकै सर्वदुःखोंकीनिवृत्तिरूप आत्मज्ञानकाफल निरूपणकऱ्या ॥अबतिसीआत्मसाक्षात्कारके जगत्कर्तृत्वरूपफलका तथा सर्वात्मभावकीप्राप्तिरूपफलका निरूपणकरैं हैं ॥हेजनक॥ हृदयकमलविषेस्थित जोआनंदस्वरूपआत्मा है ॥ सो स्वयंज्योतिरूपहै॥तथा सर्वत्रव्यापकहै ॥तथा बुद्धिआदिकसंघाततैंविलक्षणहै॥ऐसेआनंदस्वरूपअद्वितीयआत्माकूंजिसअधिकारीपुरुषनैं गुरुशास्त्रकेउपदेशकरिकै निश्चयकऱ्याहै ॥ सोविद्वान्पुरुषही यासंपूर्णविश्वकाकर्त्ता है॥और हेजनक॥जैसे रज्जुरूपअधिष्ठानविषेकल्पित जेसर्प दंड माला जलधारा इत्यादिकपदार्थ हैं ॥ तिनसर्पादिककल्पितपदार्थोंका एकरज्जुही अधिष्ठानहै ॥ तैसे मनुष्यलोकतैं आदि लेके ब्रह्मलोकपर्यंत जितनेकसुखदुःखकेदेणेहारेलोक हैं॥तिनसंपूर्णलोकोंका सोविद्वान्पुरुषही अधिष्ठानहै।और जैसे कल्पितसर्पदंडादिक रज्जुरूप अधिष्ठानतैंभिन्ननहीं॥किंतु तेकल्पितसर्पादिक रज्जुरूपही हैं॥तैसे पूर्वउक्ततीनमार्गोंकरिकै प्राप्तहोणेयोग्य जेब्रह्मलोकादिकहैं ॥ तथा अध्यात्म अधिदैव अधिभूत इसतैंआदिलेके जितनाकस्थूलसूक्ष्मजगतहै ॥सोसंपूर्णजगत् ताविद्वान्पुरुषतैंभिन्ननहीं ॥ किंतु संपूर्ण जगत्ताविद्वान्पुरुषकाआत्मारूपही है॥इतनैंकरिकै आत्मज्ञानकेफलकानिरूपणकऱ्या॥अब ताआत्मज्ञानतैंविना जीवोंकूं महान्हानिकी

॥११६॥

प्राप्तिका निरूपणकरैहैं॥हेजनक॥देवयानपितृयाण तृतीयस्थान यहतीनोंमार्ग संसाररूपीघोरवनविषे याजीवकूंप्राप्तकरणेहारेहैं॥याकारण तैं तिनतीनोंमार्गोंकापरित्यागकरिकै जबपर्यंत मृत्युसन्मुखनहींभया तबपर्यंत यहमुमुक्षुजन शीघ्रही आत्मज्ञानरूपचतुर्थमार्गविषेप्राप्त होवै ॥ और ताज्ञानरूपमार्गविषेप्राप्तहोइकै हमअधिकारीजन जीवितअवस्थाविषेही ब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपमोक्षकूंप्राप्तहोवैं ॥ तथा आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासतैं हमअधिकारीजन वेदांतशास्त्रके श्रवण मनन निदिध्यासनकूं यत्नकरिकैसंपादनकरैं ॥ जिसआत्मसाक्षात्कारकरिकै हमअधिकारीजन सर्वात्मभावकूंप्राप्तहोवैं ॥ हेजनक ॥ याब्राह्मणशरीरविषे तथाक्षत्रियशरीरविषे तथावैश्यशरीरविषे जोकदाचित् हमअधिकारीजनोंकूं आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिनहींहोवैगी ॥ तौ हमअधिकारीजीवोंकी महान्हानिहोवैगी ॥ यातैं विद्युत्कीन्याईंचंचल तथाअत्यंतदुर्लभ जोयहअधिकारीमनुष्यशरीरहै ॥ तिसकूंप्राप्तहोइकै हमअधिकारीजीव ऐसाकोईउपायकरैं ॥ जिसउपायकरिकै हमअधिकारीजीवोंकूं पुनःजन्ममरणादिकदुःखोंकीप्राप्तिनहींहोवै ॥ सोऐसाउपाय आत्मज्ञानतैंविना दूसराकोईहैनहीं ॥यातैं जन्ममरणादिकदुःखोंकीनिवृत्तिवासतैं आत्मज्ञानकूंहीं हमअधिकारीजीव संपादनकरैं॥ अब मनुष्यशरीरकीदुर्लभताकूं निरूपणकरैहैं॥हेजनक॥जैसेग्रीष्मीऋतुकेमध्यानकालकेसूर्यकरिकै तपायमानजोरेतीहै ॥ तातरेतीविषे किसीपुरुषकेहस्ततैं पतनभयाजोघृतहै॥ताघृतकूं बुद्धिमान्पुरुषभी पुनःप्राप्तहोइसकैनहीं ॥ तैसे याअधिकारीमनुष्यशरीरकेनष्टहुएतैंअनंतर हमजीवोंकूं पुनःतिसीअधिकारीमनुष्यशरीरकीप्राप्तिहोणी अत्यंत दुर्लभहै ॥ और हेजनक ॥ यामनुष्यशरीरकूँ छोडिकै दूसरेजितनेकऊंचनीचशरीरहैं ॥ तेशरीर कोईदुर्लभनहीं ॥किंतु सर्वयोनियोंविषे तेशरीरसुलभहैं ॥ एकमनुष्यशरीरही दुर्लभहै ॥ हेजनक ॥ तिनमनुष्यशरीरोंविषेभी याभारतखंडविषे मनुष्यशरीरकीप्राप्तिहोणी अत्यंत दुर्लभहै॥औरतिसभारतखंडविषेभी ब्राह्मणशरीरकीप्राप्तिहोणी तथाक्षत्रियशरीरकीप्राप्तिहोणी तथावैश्यशरीरकीप्राप्तिहोणी अत्यंतदुर्लभहै ॥ यातैं भारतखंडविषे अधिकारीमनुष्यशरीरकीप्राप्तिरूपलाभतैंपरे दूसराकोईअधिकलाभनहीं॥ हेजनक ॥ जिन स्त्रीपुत्रधनादिक पदार्थोंकेमोहकरिकै हमअधिकारीजीव यामनुष्यशरीरकूं व्यर्थगवांवतहैं ॥ तेस्त्रीपुत्रादिकपदार्थ कोईदुर्लभनहीं हैं ॥किंतु स्वर्गविषे तथा

नरकविषे तथा चौरासीलक्षशरीरोंविषे जहाँ जहाँ हमजीव प्राप्तहोवेंगे ॥ तिसतिसशरीरविषे तिसतिसशरीरकेसमानजातिवाले स्त्रीपुत्रादिकपदार्थ हमजीवोंकूं पुण्यपापकर्मकेवशतें विनाहींयत्नतें प्राप्तहोवेंगे ॥ यातें तेस्त्रीपुत्रादिकपदार्थ दुर्लभनहीं ॥ और यहअधिकारी मनुष्यशरीरतौ एकवारप्राप्तहुआ पुनःप्राप्तहोणाकठिनहै ॥ यातें यहअधिकारीमनुष्यशरीरही सर्वपदार्थोंतेंदुर्लभ है ॥ अब याअधिकारी मनुष्यशरीरविषे सर्वलोकोंकीप्राप्तिकीसाधनतादिखाइके ताकीदुर्लभतासिद्धकरें हैं ॥ हेजनक ॥ याभारतखंडकूं परमेश्वरनें मनुष्योंके करणेवासतेरच्याहै ॥ ताभारतखंडविषे यहजीव मनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोइकै जोकदाचित् पुण्यकर्मोंकूंकरै है ॥ तौ सोजीव स्वर्गादिकउत्तम लोकोंकूंप्राप्तहोवै है॥ और जोपापकर्मकरै है॥ तौ नरकादिकोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातें भारतखंडविषे जोमनुष्यशरीरहै ॥ सोमनुष्यशरीरही पुण्यपापकर्मकीउत्पत्तिद्वारा याजीवोंकूं सर्वलोकोंकीप्राप्तिकरणेहारा है ॥ और हेजनक ॥ याभारतखंडकेपुण्यकर्मोंकरिकैही यहजीव पातालल्लोककूंप्राप्तहोवै है ॥ कैसा है सोपातालल्लोक ॥ स्वर्गलोकतेंभी अधिकशोभावाला है ॥ और अतल वितल सुतल तलातल महातल रसातल पाताल यासप्तरूपकरिकैविराजमान है ॥ और नानाप्रकारकेभोगकेसाधनोंकरिकैपरिपूर्ण है ॥ और जिसपा तालल्लोकविषे नागोंकीसुंदरकन्या नानाप्रकारकीनृत्यकरें हैं ॥ कैसीहैंतेनागोंकीकन्या ॥ हरीचंदनादिकोंकेलेपकरिकैयुक्त हैं पीन उन्नतस्तनीजिनोंके ॥ और नानाप्रकारकेमणियोंकीकांतिकरिकै शोभायमानहै मुखरूपीचंद्रमा जिनोंका ॥ और चित्रकीलिखीहुईजोमू र्तिहै ताकेसमानहैशरीरजिनोंका ॥ पुनःकैसीहैंतेनागोंकीकन्या ॥ यौवनअवस्थायुक्तपुरुषोंके धैर्यरूपधनकूंहरणेहारियां हैं ॥ और जिन नागकन्यावोंकेसमान स्वर्गविषेभी कोईस्त्रीनहीं ॥ और जिनकन्यावोंकेमस्तकविषे सूर्यकेसमानप्रकाशवान् मणियां विराजमानहैं ॥और बिल्वफलकेसमान जेमोतियोंकेगुच्छे हैं तिनोंकरिकैयुक्तनानाप्रकारकेहार जिनकन्यावोंकेअंगोंविषे विराजमानहैं ॥ ऐसे सर्वगुणोंकरिकैसं पन्न नागोंकीसुंदरकन्या जिसपातालल्लोकविषेविराजमानहैं ॥ हेजनक ॥ पातालल्लोकविषेरहणेहारेजेजीवहैं ॥ तिनोंकेसंपूर्णपुण्यकर्म एकठे होइकै पातालभावकूंप्राप्तहुएहैं ॥ और हेजनक ॥ सूर्यभगवान्कूंजेनहींदेखे हैं तिनोंकानाम असूर्यपश्यहै ॥ याप्रकारका असूर्यपश्यशब्द

॥११७॥

काअर्थ यद्यपि पाणिनिऋषिनें राजाकीस्त्रियोंविषेघटायाहै ॥ तथापि तिनराजाकीस्त्रियोंकूं कदाचित् सूर्यकादर्शनहोवैभीहै॥यातें असूर्य

पश्य यहशब्द मुख्यवृत्तिकरिकै तिनराजाकी स्त्रियोंकूं बोधनकरैनहीं किंतु गौणवृत्तिकरिकै सोअसूर्यपश्यशब्द तिनस्त्रियोंकूंबोधनक रै है ॥ और पातालविषेरहणेहारेजेजीव हैं॥तिनोंकूं कदाचित्भी सूर्यकादर्शनहोवैनहीं ॥ किंतु मणियोंकेप्रकाशकरिकै तिनपातालवासी जीवोंके गमनआगमनादिकव्यवहारहोवैं हैं ॥ यातें असूर्यपश्य यहशब्द मुख्यवृत्ति करिकै पातालवासीलोकोंकूंहीं बोधनकरै है ॥ हेजनक॥जिसपातालल्लोकविषे नानाप्रकारकेऐश्वर्यकूंभोगतेहुएअसुर तथानाग निवासकरें हैं॥याकारणतेंहीं तिनपातालवासीनागोंकूं शा स्त्रवेत्तापुरुष भोगी यानामकरिकैकथनकरें हैं॥अब तिननागोंके तथाअसुरोंके प्रसिद्धनामोंका निरूपणकरें हैं ॥ हेजनक ॥ महादेवकेकं ठकाभूषण जोवासुकिनाग है ॥ सोवासुकिभीपातालल्लोकविषेहीरहै है॥और विष्णुभगवान्का शय्यारूपजोशेषनाग है॥सोभी पातालल्लो कविषेहीरहै है ॥ और सूर्यभगवान्के रथविषेस्थित जोतक्षकनाग है॥जिसतक्षककेविषयकीनिवृत्तिकरणेहारा कोईलोकविषेउपायनहीं ॥ ऐसातक्षकनागभी पातालल्लोकविषेही निवासकरै है ॥ और नलराजाकामित्र जोककोटकनामानाग है ॥ तथा पद्म महापद्म सशंख कुलिक एलापत्रक इननामोंवाले जे अनेकविषधारीनाग हैं ॥ जे नाग महादेव देवी गरुडादिकदेवतावोंके कुंडलादिक भूषण रूप हैं ॥ ऐसे संपूर्णनाग आपणेस्त्रीपुत्रादिकबांधवोंसहित तथाभृत्योंसहित जिसपातालल्लोकविषेनिवासकरै हैं और हेजनक॥विश्वकर्माके समान तथा मायाविषेअत्यंतकुशल जोमयनामादैत्य है ॥ तथा विप्रचित्ति बलितैं आदिलेकेजेअनेकअसुर हैं॥जिनअसुरोंतें इंद्रादिकदेव ताभी भयकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ ऐसेअसुरभी जिसपातालल्लोकविषे निवासकरें हैं ॥ हेजनक ॥ ऐसेपाताल लोकविषे नारदादिकमुनिआइकै तापातालकेप्रभावकूंदेखिकै तेनारदादिकमुनि स्वर्गलोकविषे जाइकै देवराजइंद्रकेसमीप तापातालल्लोककेप्रभावकावर्णनकरें हैं ॥ हेजनक ऐसेपाताललोकविषे जोसुख जीवोंकूंप्राप्तहोवै है ॥ तथा ब्रह्मलोकविषे जोसुखप्राप्तहोवै है॥तथा स्वर्गलोकविषे जोसुखप्राप्तहोवै है ॥ तथा यामनुष्यलोकविषे जोसुख प्राप्तहोवै है ॥ तिनसंपूर्णसुखोंकूं जोयहजीव प्राप्तहोवै है ॥ सो भारतखंडविषे अधिकारीमनुष्यशरीरकेपुण्यक र्मोंकरिकैही प्राप्तहोवै है ॥ और ताभारतखंडविषे मनुष्यशरीरकेपापकर्मोंकरिकै यहजीव नरककूंभीप्राप्तहोवै है॥और आत्मसाक्षात्कार

करिकैप्राप्तहोणेयोग्यजोमुक्ति है तामुक्तिकूंभी यहअधिकारीपुरुष भारतखंडकेमनुष्यशरीरकेसाधनोंकरिकैहीप्राप्तहोवै है॥ और हेजनक ॥ जैसे क्षेत्रोंविषे धान्यादिकअन्न उत्पन्नहोवै हैं ॥ ताअन्नकूं लोक गृहोंविषेभोजनकरै हैं ॥ तैसे याभारतखंडविषे पुण्यपापरूपकर्म उत्पन्नहोवै हैं ॥ तापुण्यपापरूपकर्मोंकेफलकूं यहजीव स्वर्गादिकलोकोंविषेभोगै है ॥ यातैं यहभारतखंडही स्वर्गादिकसुखोंके तथाब्रह्मज्ञानके उत्पत्तिकाक्षेत्ररूप है॥शंका॥हेभगवन्॥ व्यासभगवान्नैं ॥ तदुपर्यपि ॥ यासूत्रविषे देवताशरीरोंविषेभी ब्रह्मविद्याकाअधिकार सिद्धकऱ्या है यातैं भारतखंडविषेही ब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिहोवै है ॥ याप्रकारका नियम संभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ यद्यपि व्यासभगवान्नैं देवताशरीरोंविषेभी ब्रह्मज्ञानकीप्राप्ति कथनकरी है तथापि तिनदेवताशरीरोंविषे हमअधिकारीजीवोंकूं अवश्यब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिहोवैगी याप्रकारकानिश्चय होइसकैनहीं ॥ किंतु तिनदेवताशरीरोंविषे ब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिहोवैगी अथवा नहींहोवैगी याप्रकारकासंशयहोवै है ॥ और याभारतखंडविषे अधिकारीमनुष्यशरीरके श्रवणादिकसाधनोंकरिकै ब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिविषे संशयनहीं किंतु निश्चयही है ॥ यातैं याभारतखंडविषेही ब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिवासतै हमअधिकारीजीव प्रयत्नकरैं ॥ हेजनक ॥ याभारतखंडविषे अधिकारीमनुष्यशरीरकूं प्राप्तहोइकै जोपुरुष ब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिवासतै प्रयत्ननहींकरै है ॥ किंतु स्वर्गादिकलोकोंविषे ब्रह्मज्ञानकेप्राप्तिकीइच्छाकरै है ॥ सोमूढबुद्धि पुरुष ॥ पिंडंत्यक्त्वाकरंलेढि याप्रकारकेन्यायकाविषयहोवै है॥तान्यायका यहअर्थ है॥जैसे किसीक्षुधातुरपुरुषकूं दधिकरिकैयुक्त ओदन कापिंड हस्तविषेप्राप्तभया ॥ ताओदनकेपिंडकापरित्यागकरिकै सोक्षुधातुरपुरुष क्षुधाकीनिवृत्तिवासतै आपणेहस्तोंकूंचाटणेलगा ॥ सो पुरुष अत्यंतमूढबुद्धि है ॥ तैसे याभारतखंडके अधिकारीमनुष्यशरीरकापरित्यागकरिकै जोपुरुष स्वर्गादिकलोकोंविषे ब्रह्मज्ञानकीप्राप्ति कीइच्छाकरै है ॥ ॥ सोपुरुषभी तिसपुरुषकीन्याईं अत्यंतमूढबुद्धिजानणा ॥ यातैं बुद्धिमान्पुरुषनें याभारतखंडविषेही ब्रह्मज्ञानकेप्राप्ति कायत्नकरणा ॥ अब स्वर्गादिक लोकोंविषे ब्रह्मज्ञानकी प्राप्तिका संशय निरूपण करैं हैं ॥ हेजनक ॥ याभारत खंडविषे अधिकारी मनुष्य शरीरकूं प्राप्तहोइकै जोपुरुष ब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिका साधननहीं करता ॥ किंतु स्वर्गादिकलोकोंविषे ब्रह्मज्ञानके

प्राप्तिकीइच्छाकरैहै ॥ तिसपुरुषकूं विद्वान्महात्मापुरुष मूढबालकमानैंहैं ॥ काहेतैं याअनादिसंसारविषे याजीवनैं पूर्वअनेकजन्मोंविषे जेजेपुण्ययापापरूप अनेककर्मकरे हैं ॥ तेसंपूर्णपुण्यपापरूपकर्म सूक्ष्मरूपकरिकै याजीवोंकेअंतःकरणविषेरहै हैं ॥ तिनकर्मोंविषेकौनकर्म मरणकालविषे याजीवकूं भावीफलकेदेणेवासतै सन्मुखहोवैगा ॥ यहवार्ता सर्वज्ञईश्वरतैंविना दूसराकोईजीव जाणिसकतानहीं॥किंतु सर्वज्ञईश्वरही तिनकर्मोंकीगतिकूंजाणैहै॥ यातैं स्वर्गादिकलोकोंविषे ब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिकीइच्छावान्जोपुरुषहै॥तिसका जोकदाचित् मरणकालविषे पापकर्महीनरकादिकफलदेणेवासतै सन्मुखहोवैगा ॥ तौ सोमूढबुद्धिपुरुष तिसकालविषे कौनउपायकरैगा॥ अब याहीअर्थकूं जूवाखेलणेहारेपुरुषोंकेदृष्टांतकरिकैस्पष्टकरै हैं॥ हेजनक ॥ जैसे यालोकविषे जूवाखेलणेहारेजुवारीपुरुषोंविषे कोईएकजुवारीपुरुष पूर्वलेकिसी पुण्यकर्मकेप्रभावतैं ताजूवाविषे किसीमहान्पदार्थकूं प्राप्तहोवै ॥ और ताजुवारीपुरुषका सोमहान्पदार्थ तिसीजूवाविषे पुनःनष्टहोइजावै ॥ तिसतैंअनंतर सोजुवारीपुरुष वारंवार जूवाकूंखेलताहुआभी तामहान्पदार्थकूँ पुनःप्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे यहजीवरूपजुवारीपुरुष विषयरूपजुवारीपुरुषोंकेसाथ संसाररूपजुवाखेलै है ॥ तासंसाररूपजुवाकेखेलतेहुये ॥ याजीवात्मारूपजुवारीपुरुषकूं पूर्वलेकिसी पुण्यकर्मके प्रभावतैं यहअधिकारीमनुष्य शरीररूप महान्पदार्थ प्राप्तभयाहै ॥ तामनुष्यशरीररूपमहान्पदार्थकूँ यहजीवात्मारूपजुवारी जभी संसाररूपजुवाविषे नष्टकरिदेवैगा ॥ तभी सोमनुष्यशरीररूपमहान्पदार्थ याजीवात्मारूपजुवारीकूं पुनःप्राप्तहोणादुर्लभहै ॥ हेजनक ॥ जैसे यालोकविषे जोजुवारीपुरुष जूवाविषे पराजयकूंप्राप्तहोवै है ॥ सोजुवारीपुरुष सर्वलोकप्रसिद्धदुःखका तथागुह्यदुःखका अनुभवकरैहै ॥ तैसे याभारतखंडविषे विषयरूपजुवारीपुरुषोंतैं पराजयकूंप्राप्तहुआ यहजीवात्मारूपजुवारी यामनुष्यशरीरकापरित्यागकरिकै जभी पाताललोकविषे तथाब्रह्मलोकविषे तथाभूमिलोकविषे तथानरकलोकविषे नानाप्रकारकेशरीरोंकूंप्राप्तहोवै है ॥तभी सोजीवात्मारूपजुवारी तिनपातालादिकलोकोंविषे विषयजन्यपराधीनसुखकलेशकरिकैआवृतदुःखकूंहींभोगै है ॥और नरकादिकोंविषेतौ प्रसिद्धदुःखकूंहींभोगैहै ॥ हेजनक ॥ यालोकविषे जूवाखेलणेहारेजुवारीपुरुषोंका यहस्वभावप्रसिद्धहै ॥ तेजुवारीपुरुष जिसमूढपुरुषकूं

जूवाविषेएकवारजीतैं हैं ॥ सोमूढपुरुष जहाँजहाँ जावैहै ॥तहाँतहाँ तेजुवारीपुरुषजाइकै ताकेजीतणेकाउद्यमकरैं हैं ॥जबपर्यंत तामूढपुरुषकेपास किंचत्मात्रभीधनरहै है ॥ तबपर्यंत तेजुवारीपुरुष ताकापीछाछोडेनहीं ॥ जभी तापुरुषकेपास एककौपीनमात्ररहै है ॥ तभी तेजुवारीपुरुष तामूढपुरुषकापीछाछोडैं हैं ॥ तैसे तेविषयरूपजुवारीपुरुष याभारतखंडविषे जिसमूढजीवकामनुष्यशरीररूपधन जीतिलेवैं हैं॥सोमूढजीव यास्थूलशरीरकापरित्यागकरिकै जिसजिसलोकविषेजावैहै॥तिसतिसलोकविषे यहविषयरूपजुवारीपुरुष तामूढजीवकेजीतणे वासतैजावैं हैं॥जबपर्यंत तामूढजीवकेपास पुण्यरूपधनरहैहै तबपर्यंत तेविषयरूपजुवारीपुरुष तामूढजीवकापीछाछोडेनहीं किंतु सर्व पुण्यरूपीधनकूंजीतिकरिकै जभी तामूढजीवकेपास पापरूपीकौपीनमात्ररहै है।तभी तेविषयरूपजुवारीपुरुष तामूढजीवकापीछाछोडैं है॥ हेजनक याभारतखंडविषे अधिकारीमनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोइकैजेपुरुष मैं ब्रह्मरूपहूं या प्रकारके अभेदज्ञानकूं नहीं प्राप्त होवैं हैं ॥ तिनअज्ञानीपुरुषोंकी यामनुष्यशरीरकेनाशतैं अनंतरयाप्रकारकी महान्हानिहोवैहै ॥ सोमहान्हानिजैसेहमअधिकारीजीवोंकूंनहींप्राप्त होवै ॥ ऐसाकोईउपाय हमअधिकारीजीवकरैं॥ सोऐसाउपाय ब्रह्मज्ञानतैंविना दूसराकोई है नहीं॥यातैं याभारतखंडविषेही हमअधिकारी जीव ब्रह्मज्ञानकूंसंपादनकरैं ॥ जात्रह्मज्ञानकारक सोमहान्हानि हमअधिकारीजीवोंकूं पुनः नहींप्राप्तहोवैहै ॥ शंका॥हेभगवन्॥ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिकरिकै अधिकारीपुरुषोंकूं विषयरूपजुवारियोंतैं भयकीनिवृत्ति किसप्रकारहोवैहै ॥ समाधान ॥ हेजनक॥जैसे यालोकविषे जूवाखेलणेहारेजुवारीपुरुष कपटकेपाशकोंकरिकै अन्यकिसीमूढपुरुषकूं तभी पराजयकरैहैं ॥ जभी ताजूवाविषे यथार्थवक्तासाक्षीपुरुषनहींहोवैहै ॥ और जभी यथार्थवक्ताकोईसाक्षीपुरुष विद्यमानहोवै है ॥ तभी तेजुवारीपुरुष कपटकेपाशकोंकरिकै अन्यकिसीपुरुषकापराजयकरैनहीं ॥ उलटा ते कपटी जुवारीपुरुषही पराजयकूं प्राप्तहोवै है ॥ तैसे हमअधिकारीजीवोंनैं पूर्वअनेकजन्मों विषे विषयरूपजुवारी पुरुषोंके साथ जो जुवा खेलीहै ॥ सो वेदांतसास्त्ररूपसाक्षीपुरुषतैं विनाहीं खेली है ॥ याकारणतैं तिनविषयरूपजुवारी पुरुषोंने कपटक पाशकोंकरिकै हम अधिकारी जीवोंका पराजय कऱ्याहै ॥ और अभी इस कालविषे हम अधिकारी

जीवोंने वेदांतशास्त्ररूपसाक्षीकूंस्थापनकरिकै तिनविषयरूपजुवारियोंकेसाथ जुवाखेलणेकाआरंभकऱ्याहै ॥ याकारणतैं तिनविषयरूपजुवारीपुरुषोंकूं हमअधिकारीजीव अभी अवश्यपराजयकरैंगे ॥ हेजनक ॥ हमारेन्याईं तूंभी वेदांतशास्त्रकूंसाक्षीराखिकै तिनविषयरूपजुवारियोंकेजीतणेकाउद्यमकर ॥ वेदांतशास्त्ररूपसाक्षीकेविद्यमानहुए यहविषयरूपकपटीजुवारी तुमारेकूंजीतनहींसकैंगे ॥ किंतु तुमहीं तिनोंकूंजीतोगे ॥ हेजनक ॥ वेदांतशास्त्ररूपसाक्षीतैंपूर्व जोहमनैं विषयरूपजुवारियोंकेसाथ जूवाखेलणेकाआरंभकऱ्याथा ॥ सोमनुष्यशरीररूपधनकूं मध्यविषेराखिकै जुवाकऱ्याथा ॥ सोमनुष्यशरीररूपधन विषयरूपजुवारीपुरुषोंकेभी भोगकाउपयोगी है याकारणतैं पूर्व हमअधिकारीजीवोंका जयभयानहीं ॥ और अभी हमअधिकारीजीवोंनैं वेदांतशास्त्ररूपसाक्षीकूं मध्यविषेस्थापनकऱ्याहै ॥ और सोवेदांतशास्त्ररूपसाक्षी हमअधिकारीजीवोंकेअनुकूलहै॥याकारणतैं तावेदांतशास्त्ररूपसाक्षीनैं हमअधिकारीजीवोंकूं याप्रकारकाउपदेशकऱ्याहै॥ हेअधिकारीजीवो ॥ यहमनुष्यशरीररूपधन विषयरूपजुवारीपुरुषोंकेअनुकूलहै ॥ यातैं तामनुष्यशरीररूपधनकूं मध्यविषेराखिकै जोतुम विषयरूपजुवारीपुरुषोंकेसाथ जूवाखेलोगे तौ तुमारा कदाचित्भी जयनहींहोवैगा ॥ किंतु पराजयही तुमाराहोवैगा ॥यातैं विषयरूपजुवारीपुरुषोंकेजीतणेकी जोतुमारेकूंइच्छाहै ॥ तौ तुमअधिकारीजीव ब्रह्मप्राप्त्यर्थादिकसाधनरूपधनकूं मध्यविषेराखिकै विषयरूपजुवारीपुरुषोंकेसाथ जूवाखेलो ॥ तेब्रह्मचर्यादिकसाधनरूपधन विषयरूपजुवारीपुरुषोंकेप्रतिकूल हैं यातैं तिनब्रह्मप्राप्त्यर्थादिकसाधनोंकूंदेखिकै तेविषयरूपजुवारी शीघ्रहीभागिजावैंगे हेजनक याप्रकारके वेदांतशास्त्ररूपसाक्षीकेवचनकूं श्रद्धापूर्वकअंगीकारकरिकै हमअधिकारीपुरुष इसकालविषे तिनविषयरूपजुवारीपुरुषोंकूंअवश्यजीतैंगे ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ याजीवोंके विषयरूपशत्रु बहुतहैं ॥ तिनसंपूर्णोंका जुवामात्रकरिकै पराजयहोइसकैनहीं ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ जैसे यालोकविषे जीवोंकेअनेकशत्रुहैं ॥ तिनशत्रुवोंविषे जेशत्रु दूरदेशविषे स्थित हैं ॥ ॥ तिनशत्रुवोंका बाणोंकरिकैहननहोवैहै ॥ और समीपदेशविषेवर्तमानजेशत्रुहैं ॥ तिनशत्रुवोंका पाशोंकरिकैबंधनहोवै है ॥ और अत्यंतअल्पशत्रुवोंका जुवाकरिकैपराजयहोवैहै ॥ तैसे जिनविषयोंकाशास्त्रविषेनिषेधकऱ्याहै ॥ तिनविषयरूपशत्रुवोंकूं हमअधि

कारीपुरुष शास्त्र विहित यज्ञदानादिकबहिरंगसाधनरूपीबाणोंकरिकै हननकरैंगे ॥ और जिनविषयोंका शास्त्रविषानिषेधनहींकऱ्या ॥ तिनविषयरूपपशुवोंकूं हमअधिकारीपुरुष शमदमादिकअंतरंगसाधनरूपपाशोंकरिकै बाँधैंगे॥और ब्रह्माकारवृत्तिकेउत्थानकालविषेकदा चित्प्रतीतिहोणेहारे जेअल्पविषय हैं ॥ तिनविषयरूपपशुवोंकूं हमअधिकारीपुरुष ब्रह्मचर्यादिरूपधनकूं मध्यविषेराखिकै जुवाविषेजी तैंगे ॥ हेजनक ॥ वेदांतशास्त्ररूपप्रमाणतैं उत्पन्नभयाजो हमब्रह्मरूपहैंयाप्रकारकाअभेदज्ञान ॥ ताब्रह्मज्ञानरूपअग्निकरिकै हमअधिकारी पुरुष तिनविषयरूपप्रमत्तशत्रुवोंकूं तथा तिनोंकेमातापिताकूं तथा तिनोंकेबांधवोंकूं दग्धकरैंगे ॥ शंका ॥ हेभगवन् तिनविषयरूपशत्रुवोंके मातापिता बांधवकौनहैं॥समाधान॥हेजनक अनित्यपदार्थोंविषे नित्यबुद्धि तथाअशुचपदार्थोंविषे शुचबुद्धि इसतैं आदिलेके अन्य पदार्थोंविषे अन्यबुद्धिरूपजाविक्षेपशक्ति है ॥ तथा आत्माकूंआच्छादनकरणेहारी जाआवरणशक्तिहै ॥ यादोनोंप्रकारकीशक्तिवाली जाअविद्या है ॥ साअविद्याही याविषयरूपजुवारियोंकीमाताहै॥ और शास्त्रकेसंस्कारोंतैंरहित जोअशुद्धमन है॥ सोमन तिनविषयरूपजुवारियोंकापिताहै ॥ और नानाप्रकारकीजेवासनाहैं॥ तेवासना तिनविषयरूपीजुवारियोंकेसंबंधी हैं ॥ऐसेमातापिताबांधवोंसहित तिनविषयरूपशत्रुवोंकूं ब्रह्मज्ञानरूपअग्निसैं दग्धकरिकै हमअधिकारीजीव तिनविषयरूपशत्रुवोंका पराजयकरैंगे ॥ शंका ॥ हेभगवन् याविषयरूपशत्रुवोंनैं ऐसाकौनअपराधकऱ्याहै॥जिसअपराधकरिकैआपने तिनविषयरूपशत्रुवोंकाकुटुंबसहित नाशकरणेकाउद्यमकऱ्याहै॥समाधान॥ हेजनक याविषयरूपकटीजुवारियोंनैं हमअधिकारीजीवोंकूं पूर्वजन्मोंविषे बहुतवार पराजयकऱ्या है ॥ यातैं इनविषयरूपशत्रुवोंका यहमहान्अपराधहै । ताअपराधकेअनुसारही तिनोंकूंदंडदियाचाहिये ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ विषयरूपकपटीजुवारियोंनैं हमअधिकारीजीवोंका पूर्व बहुतवार पराजयकऱ्याहै ॥ याअर्थविषे कौनप्रमाणहै ॥ समाधान ॥ हेजनक याअर्थविषे पृथिवीआदिक लोक तथाधर्मराजादिकलोकपाल तथा अंतर्यामीईश्वर यहसंपूर्ण साक्षीरूपकरिकैप्रमाणहैं ॥ यहवार्ता मनुस्मृतिविषेभगवान्नैं भीकहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ आदित्यचंद्रावनिलोनलश्च द्यौर्भूमिरापोहृदयंयमश्च ॥ अहश्चरात्रिश्चउभेचसंध्ये धर्मश्चजानातिनरस्यवृत्तम् ॥ ॥१२०॥

अर्थ यह ॥ आदित्य चंद्रमा पवन अग्नि स्वर्गलोक भूमि जल साक्षीआत्मा मन दिन रात्रि दोनोंसंध्या धर्मराज यह संपूर्ण याजीवोंके शुभअशुभ वृत्तांतकूंजानै हैं ॥ १ ॥ हे जनक जोहमअधिकारीजीव पूर्वपूर्वजन्मोंविषे विषयरूप जुवारियोंतैं पराजयकूं प्राप्तभयेथे ॥ सोईहम अधिकारीजीव अभी वेदांतशास्त्ररूपसाक्षिकेबलतैं इंद्रियरूपपाशकोंकरिकै तथायज्ञदानादिरूपबाणोंकरिकै तिन विषयरूपकपटीजुवारियोंकूं अवश्यजीतैंगे ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे लोकप्रासिद्ध जुवारीपुरुषोंका पाशकोंकीप्रवृत्तिकरिकैजयहोवै है ॥ तैसे रागद्वेषतैंरहित जाइंद्रियरूपपाशकोंकीप्रवृत्ति है ॥ ताकरिकै हमअधिकारीजीवोंकाभी विषयरूप जुवारियोंतैंजयसंभवै है ॥ यह वार्त्ता गीताविषे श्रीकृष्णभगवान्नैंभी अर्ज्जुनकेप्रति कथनकरी है ॥ तहांश्लोक ॥ रागद्वेषवियुक्तैस्तु विषयानिंद्रियैश्चरन् ॥ आत्मवश्यैर्विधेयात्मा प्रसादमधिगच्छति ॥१॥ अर्थयह॥रागद्वेषतैंरहित तथाआपणेवशवर्ती ऐसेजेनेत्रादिकइंद्रियहैं ॥ तिनइंद्रियोंकरिकै रूपादिकविषयोंकूंग्रहणकरताहुआ यहविद्वान्पुरुष बंधनकूंप्राप्तहोवैनहीं॥किंतु परम आनंदकूंप्राप्तहोवैहै॥१॥और हेजनक॥जैसे युधिष्ठिरादिकपंचपांडव श्रीकृष्णभगवान्रूपसाक्षीकेबलतैं दुर्योधनादिककपटीजुवारियोंकूं पराजयकरतेभयेहैं॥तैसे हमअधिकारीजीवभी वेदांतशास्त्ररूपसाक्षीकेबलतैं इनविषयरूपकपटीजुवारियोंकूं अवश्यपराजयकरैंगे॥हेजनक॥जेपुरुष वेदांतशास्त्ररूपसाक्षीतैंविनाविषयरूपजुवारियोंकेसाथजुवाखेले हैं॥तिनअज्ञानीपुरुषोंकी महान्हानिहोवैगी॥और हमअधिकारीजीव अभी वेदांतशास्त्ररूपसाक्षीकीसहायतातैं विषयरूपजुवारियोंकेसाथजुवाखेलतेहैं॥याकारणतैं हमअधिकारीजीवतामहान्हानिकूं नहींप्राप्तहोवैंगे किंतु अभी हमाराहीजयहोवैगा॥हेजनक॥जैसे पूर्व शुकवामदेवादिकअधिकारीपुरुष वेदांतशास्त्ररूपसाक्षीकेबलतैं विषयरूप जुवारियोंकूंजीतिकरिकै ब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपस्वाराज्यकूं प्राप्तभयेहैं॥तैसे हमअधिकारीजीवभी अभी वेदांतशास्त्ररूपसाक्षीकेबलतैं विषयरूपकपटीजुवारियोंकूंजीतिकरिकै ब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपस्वाराज्यकूंप्राप्तहोवैं ॥ याकार्यकेकरणेविषे हमअधिकारीजीवोंकूं विलंब नहींकऱ्याचाहिये ॥ हेजनक ॥ जेमूढबुद्धिपुरुषवेदांतशास्त्ररूपसाक्षीतैंविनाहीं विषयरूपजुवारियोंकेसाथ जुवाखेलणेकाआरंभकरै हैं॥ तेमूढबुद्धिपुरुष पुण्यरूपधनतैंरहितहोइकै एकपापरूपीकौपीनकोग्रहणक

रिकै अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवै हैं॥हेजनक जैसे लोकप्रसिद्धजुवाविषे जिनपुरुषोंकापराजयहोवै है ॥ तिनपुरुषोंकीमंडली ताजुवाके गृहविषे भिन्नदेखणेमेंआवै है॥तैसेयासंसारविषे जेमूढपुरुष विषयरूपजुवारियोंतैं पराजयकूंप्राप्तहुए हैं ॥ तिनोंविषेकोईजीवतौ पक्षीशरीरकूं प्राप्तहुएहैं ॥ और कोईकजीवतौ वृक्षादिकस्थावरशरीरोंकूंप्राप्तहुए हैं॥ और कोईकजीवतौ ग्रामकेरहणेहारे तथावनकेरहणेहारे पशुशरीरोंकूंप्राप्तहुएहैं और कोईकजीवतौ सर्पादिकशरीरोंकूंप्राप्तहुएहैं ॥ इनोंतैंआदिलेके जितनेकिचौरासीलक्षशरीरप्रतीतहोवै हैं ॥ ते संपूर्ण पराजयकूंप्राप्तहुएजीवोंकीमंडलीजानणी ॥ और हेजनक ॥ जैसे यालोकविषे कृत द्वापर त्रेता कलि याप्रकारकेनाम कल्पनाकरै हैं जिनोंके ऐसेजे जुवाखेलणेकेसाधनरूप पाशकहैं ॥ तिनपाशोंकरिकै तेजुवारीपुरुष तिनपुरुषोंकापराजयकरै हैं ॥ जिनपुरुषोंकूंतिनपाशकोंकेअनुकूलपावणेकासाधनरूप अक्षहृदयनामामंत्रकाज्ञाननहीं हैं॥और जिनपुरुषोंकूं ताअक्षहृदयनामामंत्रकाज्ञानहै ॥ तिनपुरुषोंकूं तेकपटीजुवारीपुरुष पराजयकरिसकैनहीं ॥ उलटा तेकपटीजुवारी आपहीपराजयकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ तैसे यहविषयरूपकपटीजुवारीभी तिस पुरुषका पराजयकरै हैं ॥ जिसपुरुषकूं अद्वितीयब्रह्मरूप अक्षहृदयनामामंत्रकाज्ञाननहीं है ॥ और जिसपुरुषकूं अद्वितीयब्रह्मरूप अक्षीहृदयनामामंत्रकाज्ञानहै ॥ तिसपुरुषकूं यहविषयरूपजुवारी पराजयकरिसकैनहीं ॥ किंतु तेविषयरूपजुवारी आपहीपराजयकूंप्राप्तहोवै हैं ॥हेजनक॥ सोअद्वितीयब्रह्मरूप अक्षहृदयनामामंत्र हमअधिकारी पुरुषोंनैं अभी जान्याहै॥ यातैं यहविषयरूपजुवारी अभी हमअधिकारीजीवोंका पराजयनहींकरिसकैंगे ॥ किंतु हमअधिकारीजीवही तिनविषयरूपजुवारियोंका पराजयकरैंगे ॥ हेजनक ॥ संपूर्णजगत्का अधिष्ठानरूप जोअद्वितीयब्रह्महै ॥सोअद्वितीयब्रह्म मेरेआत्मातैंभिन्ननहीं ॥ किंतु सोअद्वितीयब्रह्म मैंहूं याप्रकार जभी यह अधिकारी पुरुष अद्वितीयब्रह्मरूप अक्षहृदयनामामंत्रकूं गुरुशास्त्रकेउपदेशतैंनिश्चयकरै है ॥ तभी सो अधिकारीपुरुष अज्ञानीजीवकीन्याईं पश्चात्तापकूंकरैनहीं ॥ अब ता पश्चात्तापकूंनिरूपणकरै हैं ॥ याभारतखंडविषे पूर्वलेकिसीपुण्यकर्मकेप्रभावतैं इमारेकूं अधिकारी मनुष्य शरीरकीप्राप्तिहोतीभई ॥ तामनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोइकैभी मैं मूढबुद्धिजीव वेदांतशास्त्ररूपसाक्षीकीसहायतातैं विनाहीं विषयरूप ॥१२१॥

जुवारियोंकेसाथ जूवाखेलताभया ॥ याकारणतैं तिनविषयरूपजुवारियोंनै हमाराविद्यारूपधन तथापुण्यरूपधन संपूर्णहरणकरिलिया ॥ एकपापरूपकौपीनमेरेपासरही है ॥ जिसपापरूपकौपीनकरिकै मैंमूढबुद्धिजीव अनेकजन्मोंविषेदुःखकूंप्राप्तहोयोंगा ॥हेजनक॥ याप्रकार कापश्चात्तापकरिकै॥जैसे अज्ञानीपुरुष आपणेकूं धिक्कारकरै है॥तैसे अद्वितीयब्रह्मरूप अक्षहृदयनामामंत्रकूंजानणेहाराविद्वान्पुरुष तापश्चात्तापकूंकरिकै आपणेकूंधिक्कारकरैनहीं॥हेजनक॥जिसअद्वितीयब्रह्मरूपआत्माकूंनिश्चयकरिकै सोविद्वान्पुरुष तापश्चात्तापतैंरहितहोवै है ॥ सोअद्वितीयब्रह्मरूपआत्माकैसाहै॥जन्ममरणादिकजेशरीरकेधर्म हैं॥तथा क्षुधापिपासादिकजेप्राणोंकेधर्म हैं ॥ तथा कर्तृत्वभोक्तृत्वादिकजेअंतःकरणकेधर्म हैं॥तिनसंपूर्णधर्मोंतैंरहितहै॥तथा अंतःकरणादिकसर्वसंघातकासाक्षीरूपहै॥और ब्रह्मादिकदेवतावोंकेजोदिनहैं ॥ तिनदिनोंकरिकैघटित जोसंवत्सररूपनानाप्रकारकाकालहै॥सोकालभी आकाशादिकपदार्थोंकेभेदकरणेवासतै तिसआत्मादेवतैंहीं उत्पन्न होवैहै॥ऐसाआनंदस्वरूपआत्मा आपणेप्रकाशविषे दूसरे सूर्यचंद्रमा विद्युत्वाक् इत्यादिकज्योतियोंकीअपेक्षाकरैनहीं॥किंतु सोस्वयंज्योतिआत्माही सूर्यादिकजडज्योतियोंकूंप्रकाशकरै है ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताआत्मादेवकूंज्योतियोंकाभीज्योतिकहैं हैं ॥ और हेजनक ॥ यादेहधारीप्राणियोंकूं प्राणरूपवायु तथा अपानरूपवायु जीवनकीप्राप्तिकरैनहीं॥किंतु यहस्वयंज्योतिआत्माही सर्वप्राणियोंकूं जीवनकीप्राप्तिकरै है ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तास्वयंज्योतिआत्माकूं आयुप् यानामकरिकैकथनकरैहै॥और हेजनक॥जिसअधिष्ठानरूप आत्मादेवविषे प्राणचक्षु श्रोत्र मन सूर्यादिकयहपांचोंस्थितहैं॥तथा जिसआत्मादेवविषे पृथिवीआदिकचारिभूतोंसहितआकाशस्थितहै॥ऐसे अधिष्ठानआत्माकूं मैंआपणाआत्मारूपकरिकै जानताहूं॥याकारणतैं मैंभी जन्ममरणादिकविकारोंतैंरहित सर्वजगत्काअधिष्ठानरूपहूं॥और प्राण चक्षु श्रोत्र मन सूर्यादिक यहजेपंचप्रकारकेज्योतिहैं॥तिनोंविषे यहआत्मादेव प्राणकाभीप्राणहै ॥ और यहआत्मादेव चक्षुकाभीचक्षुहै॥और यहआत्मादेव श्रोत्रकाभीश्रोत्रहै॥और यहआत्मादेव मनकाभीमनहै॥और यहआत्मादेव सूर्यादिकोंकाभीसूर्य है याप्रकार सर्वप्राणादिकज्योतियोंकाभीज्योतिरूपकरिकै ताअंतर्यामीआत्माकूं जेअधिकारीपुरुष निश्चयकरै हैं॥तेअधिकारीपुरुषही ताअ

द्वितीयब्रह्मरूपअक्षरहृदयनामामंत्रकूंजानेहैं॥कैसाहैसोअंतर्यामीआत्मा॥याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्व तथा याजगत्केनाशतैंअनंतर एकअद्वितीयरूपकरिकैस्थितहोवै है ॥ और जगत्कीस्थितिकालविषे सोआत्मादेव शरीरादिरूपकल्पितउपाधियोंकेसंबंधतैं नानारूपहुएकीन्याईं प्रतीतहोवै है ॥ याप्रकार आत्माकेवास्तवस्वरूपकेजानणेहारेपुरुषोंकूं विषयरूपशत्रुवोंतैं किंचित्मात्रभीभयकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ एसेअद्वितीयआत्माकासाक्षात्कार अधिकारीपुरुषोंकूं किसप्रमाणतैंहोवै है ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ सर्वभेदतैंरहितजो अद्वितीयआत्माहै ॥ सोअद्वितीयआत्मा रूपस्पर्शादिकगुणोंतैंरहितहै ॥ याकारणतैं नेत्रादिकबाह्यइंद्रियोंकरिकै ताअद्वितीयआत्माका साक्षात्कारहोवैनहीं ॥ किंतु मनकरिकैही ताअद्वितीयआत्माकासाक्षात्कारहोवै है ॥ शंका ॥हेभगवन्॥ जोमनकरिकैही अद्वितीय आत्माकासाक्षात्कारहोताहोवै ॥ तौ सर्वजीवोंकेमन विद्यमान हैं॥यातैं तिनजीवोंकूं साधनोंतैंविनाहीं अद्वितीयआत्माकासाक्षात्कार किसवासतैंनहींहोता॥समाधान॥ हेजनक॥वेदांतशास्त्रकेश्रवणमननादिकजेसाधनहैं॥तिनसाधनोंकरिकैसंस्कृतजोशुद्धमनहैताशुद्धमनकरिकैही आत्माकासाक्षात्कारहोवैहै॥याप्रकारकामन सर्वजीवोंकाहैनहीं॥याकारणतैं साधनहीनपुरुषोंकूं अद्वितीयआत्माकासाक्षात्कारहोवैनहीं॥ अब याहीअर्थकेरूपष्टकरणेवासतैं मनविषे सर्वपदार्थोंकेज्ञानकीकारणताका निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ यद्यपि परांचिखानिव्यतृणत्स्वयंभूः ॥ याश्रुतिविषे नेत्रादिकइंद्रियोंकूं अंतरात्माकेदर्शनकीअयोग्यताकथनकरी हैं ॥ तथापि ब्रह्मानैं मनकूं अंतरबाहरसर्वपदार्थोंके दर्शनवासतै उत्पन्नकऱ्याहै ॥ याकारणतैं भूत भविष्यत् वर्तमान यातीनकालोंविषेवर्तमान जेबाह्यपदार्थ हैं ॥ तिनपदार्थोंकूं यहजीव मनकरिकैहीजानैं है ॥ और तीनकालोंतैंरहित जोअंतरअद्वितीयआत्माहै ॥ तिसकूंभी यहअधिकारीपुरुष मनकरिकैही जानै है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जोमनकरिकैही सर्वपदार्थोंकाज्ञानहोताहोवै तौ नेत्रइंद्रियतैंरहितजोअंधपुरुषहै ॥ तिसकामनतौ विद्यमानहै ॥ यातैं तामनकरिकै तिसअंधपुरुषकूं रूपादिकोंकानिश्चय होणाचाहिये ॥ समाधान ॥ हेजनक रूपादिकपदार्थोंकेदर्शनविषे नेत्रादिकइंद्रिय मनकेसहकारीकारण हैं ॥ तानेत्रादिकसहकारीकारणोंकेअभावतैं सोमन रूपादिकोंकेनिश्चयकूं उत्पन्नकरै नहीं ॥

काहेतैं यालोकविषे नेत्रइंद्रियसहितमनवाला जोपुरुषहै ॥ सोपुरुष जैसे नीलपीतादिकरूपोंकूंदेखैहै ॥ तैसे श्रोत्रइंद्रियसहितमनवाला जोअंधपुरुषहै ॥ सोअंधपुरुष नीलपीतादिकरूपोंकूंदेखेनहीं ॥ और सोनेत्रइंद्रियतैंरहितअंधपुरुष नीलपीतादिकरूपकूं नहींजाणताहुआ जैसे अपराधकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे नेत्रादिकप्रमाणोंतैं विना नीलपीतादिकरूपोंकूं नहींजाणताहुआ यहमनभी अपराधकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं यहजीवात्मापुरुष मनकरिकैही सर्वअंतरबाह्यपदार्थोंकूंजाणैहै ॥ तहां भेदकूंग्रहणकरणेहारे जेनेत्रादिकप्रमाणहैं ॥ तिनोंकरिकैसहकृतजोमनहै ॥ तामनकरिकै यहपुरुष नानाप्रकारकेभेदकूंग्रहणकरैहै ॥ और जीवईश्वरकेअभेदकूंबोधनकरणेहारा जोमहावाक्यरूपशब्दप्रमाण है ॥ ताशब्दकरिकैसहकृतजोमन है ॥ तामनकरिकै यहअधिकारीपुरुष अद्वितीयब्रह्मकूं साक्षात्कारकरैहै ॥ यातैं हेजनक सर्वभेदतैंरहित तथासर्वजीवोंकाआत्मारूप जोअद्वितीयब्रह्महै ॥ ताकासाक्षात्कार शुद्धमनकरिकैही होवैहै ॥ तहांश्रुति ॥ मनसेवानुद्रष्टव्यम् ॥ अर्थयह ॥ श्रवणमननादिकसाधनोंकरिकैयुक्तजोशुद्धमनहै ॥ तामनकरिकैही अधिकारीपुरुषोंनैं अद्वितीयआत्मा देखणेयोग्य है ॥ १ ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ यतोवाचोनिवर्त्तंतअप्राप्यमनसासह ॥ अर्थयह ॥ जैसे मध्याह्नकेसूर्यकूं विषयकरणेवासतै प्रवृत्तभयाचक्षुइंद्रिय तासूर्यकेतेजकूंनसहारताहुआ तासूर्यतैंनिवृत्तहोइआवैहै॥ तैसे अद्वितीयआत्माकूं विषयकरणेवासतैंप्रवृत्तहुआ मन तथावाणी ताअद्वितीयआत्माकूंनप्राप्तहोइकै ताअद्वितीयआत्मातैं निवृत्तहोइआवैहैं ॥१॥ याश्रुतिविषे अद्वितीयब्रह्मकूं मनसहितवाणीका अविषयकह्याहै ॥ और मनसैवानुद्रष्टव्यम् ॥ याश्रुतिविषे अद्वितीयआत्माकूं मनकाविषयकह्याहै ॥ यातैं तिनदोनोंश्रुतियोंका परस्पर विरोधहोवै है ॥ समाधान ॥ हेजनक॥ यतोवाचोनिवर्त्तंते ॥ याश्रुतिविषे जोमनकानिषेधकऱ्याहै॥सोअशुद्धमनकानिषेधकरयाहै शुद्धमनकानिषेधकऱ्यानहीं॥ और मनसैवानुद्रष्टव्यम् ॥ याश्रुतिविषे जोअद्वितीयआत्माकेसाक्षात्कारविषे मनकूंकरणताकही है ॥ सो श्रवणादिकसाधनोंकरिकै युक्तशुद्धमनकूं करणताकहीहै ॥ यातैं तिनदोनोंश्रुतियोंका परस्पर विरोधसंभवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ तत्वौपनिषदंपुरुषंपृच्छामि ॥ अर्थयह॥ उपनिषदरूपशब्दप्रमाणकरिकै जानणेयोग्यजोअद्वितीयब्रह्मरूपआत्माहै॥ताआत्माकास्वरूप मैं तुम्हारेसैंपूछताहूं॥

॥१२२॥

याश्रुतिविषे अद्वितीयब्रह्मरूपआत्माकेसाक्षात्कारविषे उपनिषद्रूपशब्दकूंही करणताकहीहै ॥ और मनसैवानुद्रष्टव्यम् ॥ याश्रुतिविषे अद्वितीयआत्माकेसाक्षात्कारविषे मनकूंहीकरणताकहीहै यातैं तिनदोनोंश्रुतियोंका परस्पर विरोधहोवै है ॥ समाधान ॥ हेजनक उपनिषद्रूपशब्दप्रमाणकीसहायतातैंविना यहमन आत्मसाक्षात्कारकूं उत्पन्नकरैनहीं किंतु उपनिषद्रूपशब्दप्रमाणकीसहायताकारिकैही यहशुद्धमन आत्माकेसाक्षात्कारकूंउत्पन्नकरैहै॥यातैं तिनदोनोंश्रुतियोंकाभी परस्पर विरोधसंभवैनहीं॥तात्पर्ययह॥कोईकविद्वान्पुरुषतौ आत्मसाक्षात्कारविषे उपनिषद्रूपशब्दकूंकरणमानैहैं ॥ और मनकूंसहकारीकारणमानैहैं ॥ और कोईकविद्वान्पुरुषतौ आत्मसाक्षात्कारविषे मनकूंकरणमानैहैं ॥ और उपनिषद्रूपशब्दप्रमाणकूं सहकारीकारणमानैहैं ॥ यहदोनोंप्रकारकीप्रक्रिया श्रुतिप्रमाणकरिकैसिद्ध हैं ॥ इतनैकरिकै अद्वितीयब्रह्मरूपआत्माकेसात्क्षाकारविषे प्रमाणकानिरूपणकऱ्या ॥ अब तिसीअद्वितीयब्रह्मविषे सर्वद्वैतकेनिषेधकानिरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ॥ अद्वितीयब्रह्मरूपजोयहआत्मादेवहै ॥ ताकेविषे नानाप्रकारकेभेदवाला यहप्रपंच किंचित्मात्रभी नहीं ॥ काहेतैं व्याकरणकीरीतिसैं देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहितजोसर्वतैंअधिकवस्तु है ॥ सोवस्तुही ब्रह्मशब्दकाअर्थ सिद्धहोवै है ॥ जोकदाचित् ब्रह्मविषे किसीपदार्थकाभेद अंगीकारकरिये ॥ तौ जोपदार्थ भेदवालाहोवैहै ॥ सोपदार्थ वस्तुपरिच्छेदवालाहोवै है ॥ और जोपदार्थ भेदरूपवस्तुपरिच्छेदवालाहोवैहै ॥ सोपदार्थ अल्पहोवैहै ॥ और जोपदार्थ अल्पहोवैहै ॥ सोपदार्थ सर्वतैंअधिकहोवैनहीं॥ जैसे घटपटादिकपदार्थ हैं ॥ यातैं भेदकेअंगीकारकरणतैं सर्वतैंअधिकतारूपब्रह्मशब्दकाअर्थ तापरमात्मादेवविषेनहींघटेगा ॥ अब याही अर्थकूं स्पष्टकरिकैदिखावैं हैं॥ हेजनक॥यालोकविषे शास्त्रवेत्तापुरुष शब्दोंका दोप्रकारकाअर्थ अंगीकारकरैं हैं॥तहां एकतौ शब्दका मुख्यअर्थहोवैहै ॥ और दूसरा शब्दका गौणअर्थहोवैहै॥ जैसे देवदत्तनामापुरुष सिंहहै॥यास्थलविषे मृगराजपशुविषे सिंहशब्दकामुख्यअर्थ है॥ और देवदत्त नामापुरुष सिंहशब्दकागौणअर्थहै॥और जिसस्थलविषे शब्दकामुख्यअर्थ संभवहोइसकै तिसस्थलविषे ताशब्दकागौण अर्थ नहींअंगीकारकरणा ॥ याप्रकारकाभी शास्त्रवेत्तापुरुषोंकासंकेत हैं ॥ यातैं एकअद्वितीयपरमात्मादेवकूंछोडिकै जितनेकीहस्ती

आदिकअनात्मपदार्थ हैं॥तिनहस्तीआदिकोंविषे यद्यपि अश्वादिकोंकीअपेक्षाकरिकै अधिकता है॥ तथापि पर्वतादिकोंकीअपेक्षाकरिकै तिनहस्तीआदिकोंविषे अधिकता है नहीं॥तैसे पर्वतादिकोंविषेभी यद्यपि हस्तीआदिकोंकीअपेक्षाकरिकै अधिकता है॥तथापि आकाशादिकोंकीअपेक्षाकरिकै तिनपर्वतादिकोंविषे अधिकता है नहीं ॥ इसप्रकार सर्वअनात्मपदार्थोंविषे सापेक्षअधिकताहै॥याकारणतैं तेहस्तीआदिकअनात्मपदार्थ ब्रह्मशब्दकामुख्यअर्थनहीं ॥ किंतु तेहस्तीआदिकअनात्मपदार्थ ब्रह्मशब्दकागौणअर्थ हैं ॥ और देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहितजोपरमात्मादेव है ॥ ताकेविषे किसीपदार्थकीअपेक्षाकरिकै अधिकतानहीं॥किंतु ताकेविषे निरपक्षेअधिकताहै॥ याकारणतैं सोपरमात्मादेवही ब्रह्मशब्दकामुख्यअर्थ है ॥ हेजनक ॥ जोपदार्थ किसीदेशविषेहोवै है ॥ और किसीदेशविषेनहींहोवै है ॥ सोपदार्थ देशपरिच्छेदवालाहोवै है ॥ और जोपदार्थ किसीकालविषेहोवै है॥और किसीकालविषेनहींहोवै है॥ सोपदार्थ कालपरिच्छेदवालाहोवै है ॥ और जोपदार्थ दूसरेकिसीपदार्थतैंभिन्नहोवै है॥सोपदार्थ वस्तुपरिच्छेदवालाहोवै है॥और जोपदार्थ देशकालवस्तुपरिच्छेदवालाहोवै है॥सोपदार्थ अल्पहोवै है॥जैसे पुरुषकेहस्तविषेस्थित जोआमलकफल है॥ सो देशकालवस्तुपरिच्छेदवाला है याकारणतैं सो आमलकफल अल्प है ॥ तैसे परमात्मादेवतैंभिन्न जितनेकअनात्मपदार्थ हैं॥ ते देशकालवस्तुपरिच्छेदवाले हैं यातैं तेसंपूर्णअनात्मपदार्थ अल्प हैं॥और देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहित जोसर्वतैंअधिकवस्तु है॥सो ब्रह्मशब्दकाअर्थ है॥और सर्वतैंअधिकता तथाअल्पता यह दोनोंधर्म परस्पर विरोधी हैं ॥ यातैं एकपदार्थविषे तेदोनों धर्मरहैं नहीं ॥ किंतु जिसपदार्थविषे अधिकताधर्म रहै है तिसपदार्थविषे अल्पताधर्मरहै नहीं ॥ और जिसपदार्थविषे अल्पताधर्म रहै है ॥ तिसपदार्थविषे अधिकताधर्म रहै नहीं ॥ याकारणतैं परमात्मादेवतैं भिन्नसर्वअनात्मपदार्थ ब्रह्मशब्दका गौणअर्थ है ॥ एकपरमात्मा देवही ब्रह्मशब्दका मुख्यअर्थ है ॥ और हेजनक ॥ सोभेदरूपवस्तुपरिच्छेदभी तीनप्रकारका होवै है ॥ एकतौ स्वरूपभेद रूप वस्तुपरिच्छेदहोवै है ॥ और दूसरा सजातीय भेदरूप वस्तुपरिच्छेदहोवै है ॥ और तीसरा विजातीय भेदरूप वस्तु परिच्छेदहोवै है ॥ तहां आपणे स्वरूप विषेस्थित जो भेद है ताकानाम

स्वरूपभेद है ॥ जैसे एकही वृक्षविषे स्कंद शाखा पत्र पुष्प फल इत्यादिकोंका जोपरस्पर भेद है ॥ सोभेद स्वरूपभेद है ॥ यास्वरूपभेदकूंहीं शास्त्रविषे स्वगतभेद कहैं हैं ॥ सोस्वरूपभेद सावयवपदार्थोंविषे होवै है ॥ और यह अद्वितीयब्रह्म निरवयव है ॥ याकारणतैं ताअद्विय ब्रह्मविषे स्वरूपभेद संभवैनहीं ॥ और समान जातिवाले पदार्थोंका जोपरस्परभेद होवै है ॥ ताभेदकानाम सजातीयभेद है ॥ जैसे गोत्वरूप जातिवालियां जेसर्व गौवां हैं ॥ तिनोंविषे शुक्लवर्णवाली गौविषे कृष्णवर्णवालीगौकाभेदरहै है ॥ अथवा सर्वअंगोंकरिकै संपन्नगौविषे शृंगादिकअंगहीनगौकाभेद रहे है ॥ याकानाम सजातीयभेद है ॥ सोसजातीयभेदभी अद्वितीय ब्रह्मविषे है नहीं ॥ और विरुद्ध जातिवाले पदार्थोंका जोपरस्पर भेद होवै है ॥ ताभेदकानाम विजातीय भेद है ॥ जैसे मनुष्यत्वजातिवाले मनुष्योंविषे घटत्व जातिवाले घटोंकाभेद होवै है ॥ ता भेदकानाम विजातीयभेद है ॥ सोविजातीयभेदभी अद्वितीयब्रह्मविषे संभवैनहीं ॥ और हेजनक ॥ जैसे आकाशविषे जोमहान् गंधर्वनगर प्रतीत होवै है ॥ सोगंधर्व नगर अधिष्ठान रूप आकाशतैं तीनकालविषे भिन्ननहीं ॥ तैसे अद्वितीयब्रह्मविषे जोयहस्थूल सूक्ष्मरूप संपूर्ण जगत् प्रतीत होवै है ॥ सोजगत् अधिष्ठानब्रह्मतैंतीनकालविषे भिन्ननहीं ॥ और हेजनक ॥ जैसे स्वप्नअवस्थाविषे संपूर्णपदार्थोंसहितदेशकाल स्वप्नद्रष्टापुरुषविषेहीउत्पन्न होवै है ॥ तैसे देशकालतैंआदिलेकेयहसंपूर्णजगत्भी ब्रह्मविषेहीउत्पन्नहोवै है ॥ कैसाहैसोब्रह्म ॥ परमानंदस्वरूप है ॥ तथा सूर्यादिकज्योतियोंकाभीज्योति है ॥ तथानाशतैंरहित है तथा सर्वभेदतैंरहित है॥तथा सर्वत्रव्यापक है॥और हेजनक॥जैसे घटादिकउपाधियोंतैंरहित शुद्धआकाशआपणेस्वरूपकेसाथभेदनहीं हैं ॥ तैसे मायादिकउपाधियोंतैंरहितशुद्धब्रह्मकाअंतःकरणादिकउपाधियोंतैंरहितशुद्धआत्माके साथभेदनहीं है॥काहेतैं जैसे मशकशरीरविषे तथा हस्तीशरीरविषे आकाश अंतरबाहर समानव्यापकहै॥ तैसे यहआत्मादेवभी सर्वजगत् विषेअंतरबाहर समानव्यापक है ॥ ऐसेआत्माकी ब्रह्मकेसाथएकतासंभवै है ॥ हेजनक ॥ जैसे रज्जुरूपअधिष्ठानविषे प्रतीतभयेजे सर्प दंड माला जलधारा इत्यादिककल्पितपदार्थ हैं ॥ तेसर्पादिककल्पितपदार्थ रज्जुरूपअधिष्ठानविषेही स्थित है ॥ रज्जुरूपअधिष्ठा ॥१२४॥

नतैं तेसर्पादिक तीनकालविषेभिन्ननहीं ॥ तैसे देशकालतैंआदिलेकें संपूर्णजगत् अधिष्ठानरूपब्रह्मविषेहीस्थितहै ॥ अधिष्ठानब्रह्मतैं सोजगत् तीनकालविषे भिन्ननहीं॥और हेजनक॥संपूर्णदेहधारीजीवोंकाजोआत्माहै॥सोआत्मा पूर्वउक्तसर्वभेदोंतैंरहितहै ॥ याकारणतैं यहआत्मादेवही परब्रह्मरूपहै॥और याआनंदस्वरूपआत्मातैंपरे दूसरकोईअधिकपदार्थ है नहीं ॥ किंतु यहआत्मादेवही सर्वपदार्थोंतैंअधिकहै याकारणतैं अयमात्माब्रह्म॥इत्यादिकश्रुतियोंविषे याआनंदस्वरूपआत्माकूंही ब्रह्मरूपकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ यातैं ब्रह्मविषे तथा आत्माविषे किंचित्मात्रभीभेदनहीं॥हेजनक॥जोकदाचित् याआनंदस्वरूपआत्माविषे भेदहोवैगा तौअयमात्माब्रह्म याश्रुतिनैं कथनकरी जोआत्माकीब्रह्मरूपता सोनहींसंभवैगी॥और याआनंदस्वरूपआत्माविषे जोब्रह्मरूपताहोवैगी ॥ तौ याआनदस्वरूपआत्माविषे भेदनहींरहैगा॥काहेतैं ब्रह्मरूपता तथाभेद यहदोनोंधर्म परस्परविरोधीहैं और जेधर्म परस्परविरोधीहोवै हैं॥तेधर्म एकअधिकरणविषेरहैनहीं॥ जैसे उष्णता तथाशीतलता यहदोनोंधर्म परस्परविरोधीहैं ॥यातैं तेदोनोंधर्म एकअधिकरणविषेरहैनहीं तैसे ब्रह्मरूपता तथाभेद यह दोनोंधर्मभी परस्पर विरोधीहोणतैं एकअधिकरणविषेरहैनहीं॥यातैं जिनदोनोंधर्मोंविषे एकधर्मका परित्यागकऱ्याचाहिये ॥ तहाँ अन्योन्याभावरूपभेद आपणेप्रतियोगीकीअपेक्षाकरैहै ॥ यातैं सोभेद बहिरंगहै॥और ब्रह्मरूपता किसीकीअपेक्षाकरैनहीं॥याकारणतैं सोब्रह्मरूपता अंतरंगहै और बहिरंगधर्मोंकी तथाअंतरंगधर्मोंकी जहाँ एकअधिकरणविषे प्राप्तिहोवै तहाँ विरोधकीनिवृत्तिवासतै बहिरंगधर्मोंका हीपरित्यागकरणाउचितहै॥यहवार्ता सर्ववादियोंकूंसंमतहै॥ याकारणतैं बहिरंगभेदकापरित्यागकारिकै आत्माविषे ब्रह्मरूपताही अंगीकारकरीचाहिये ॥ हेजनक॥सर्वकेअंतर व्यापकजोवस्तुहै ॥ सोवस्तुहीआत्मशब्दकाअर्थ है ॥ याकारणतैं सो ब्रह्मरूपता आत्मरूपतातैं भिन्ननहीं॥किंतु सोब्रह्मरूपता आत्मरूपतातैंअभिन्नहै॥तहाँ आत्माविषे जोकदाचित् भेदकापरित्याग नहींकरिये तौ आत्माविषे ब्रह्मरूपताकानाशहोवैगा और ब्रह्मरूपताकेनाशहुएतैंअनंतर ताब्रह्मरूपतातैंअभिन्न जोआत्मारूपताहै ॥सोआत्मारूपताभीनाशकूंप्राप्तहोवैगी और ताआत्मरूपताकेनाशहुएतैंअनंतर आत्माकाभीनाशहोवैगा ॥ सोआत्मकानाश किसीभीआस्तिकवादीकूंअंगीकारनहीं ॥ यातैं

आनंदस्वरूपआत्माकीरक्षाकरणेवासतैं ताभेदकाहीनाश अंगीकारकऱ्याचाहिये ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरीकै निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक॥जेकेवलनीतिशास्त्रकूंजानणेहारेपुरुष अर्थकूं तथाकामकूंहीं परमपुरुषार्थकहैं हैं ॥ तेनीतिशास्त्रकेजानणेहारेपुरुषभी याप्रकारका वचनकहैं हैं ॥ जिसस्थानविषे आपणेआत्माकेनाशकीप्राप्तिहोवै तिसस्थानाविषे यहबुद्धिमान्पुरुष आपणेआत्माकीरक्षाकरणेवासतै सर्वपदार्थोंकापरित्यागकरिदेवै ॥याप्रकारकावचन तेनीतिशास्त्रकेजानणेहारेपुरुष कथनकरै हैं॥तिनोंकेवचनतैंभी आत्माकीरक्षाकरणेवासतै सर्वभेदकापरित्यागकरणाउचितहै॥तात्पर्ययह॥यास्थूलशरीरकूंहीजिनोंनैं आत्मामान्याहै ॥ ऐसेजेबहिर्मुख तथासकाम नीतिशास्त्रकेजानणेहारेपुरुषहैं ॥ तेसकामपुरुषभी जभी शरीररूपमिथ्याआत्माकीरक्षाकरणेवासतैं सर्वपदार्थोंकापरित्यागकरै हैं ॥ तभी अनंतरमुख तथानिष्काम जेहमअधिकारीपुरुषहैं ॥ तेहमअधिकारीपुरुष परमपुरुषार्थरूपशुद्धआत्माकीरक्षाकरणेवासतै दुःखरूप जडभेदकूं किसवासतैनहींपरित्यागकरैंगे ॥ किंतु शुद्धआत्माकीरक्षाकरणेवासतैं हमअधिकारियोंनै जडभेदकापरित्याग अवश्यकऱ्याचाहिये ॥ हेजनक ॥ जेपुरुष जडपदार्थोंविषे अभिनिवेशकरिकै आपणेआत्मरूपताका परित्यागकरैं हैं ॥ तिनपुरुषोंकेअनात्मजडपदार्थोंके विनाहींपरित्यागतैं नाशहोइजावै है ॥ जैसे कृपणपुरुष जीवितकालविषे धनकापरित्यागकरैनहीं ॥ परंतु ताकृपणपुरुषके मरणतैंअनंतर ताकाधनभी विनाहींत्यागेतैं नाशहोइजावै है ॥ तैसे आत्माकेनाशहुए तिनजडपदार्थोंकाभी अवश्यनाशहोवै है ॥ यातैं आनंदस्वरूपआत्माकीरक्षाकरणेवासतै हमअधिकारीपुरुषोंने जडभेदकापरित्याग अवश्यकरणा ॥ हेजनक ॥ बृहस्पतिकेशिष्यजेचार्वाकनास्तिकहैं तथा शास्त्रकेविचारतैंरहित जेपामरपुरुषहैं ॥ तेचार्वाक तथापामरपुरुष यास्थूलशरीरकूंहीआत्मामानैं हैं ॥ और तेचार्वाक तथापामरपुरुष यास्थूलशरीररूपमिथ्याआत्माकेनाशतैंअनंतर सर्वजगत्कानाश अंगीकारकरैं हैं ॥ जभी चार्वाक तथापामरपुरुषभी शरीररूपआत्माकेनाशहुएतैंअनंतर सर्वजगत्केनाशकूंकथनकरैं हैं ॥ तभीशास्त्रकूंजानणेहारेबुद्धिमान्पुरुष साक्षीआत्माकेनाशतैंअनंतर सर्वजगत्केनाशकूं किसवासतैंनहींकथनकरैंगे ॥ तात्पर्ययह ॥ सूर्यादिकज्योतियोंकाभीज्योतिरूपजोआत्माहै ॥ सोआत्माहीं

॥१२५॥

एकचेतनहै और आत्मातैंभिन्नजितनेकअनात्मपदार्थ हैं ॥ तेसंपूर्णअनात्मपदार्थ जडरूपहैं तिनजडरूपसाक्ष्यपदार्थोंकीचेतनरूपसाक्षी आत्मातैंविना किसीप्रकारसिद्धिहोवैनहीं ॥ यातैं आत्माकेनाशकाअंगीकारकरणतैं तिनजडपदार्थोंकानाशभी अंगीकारकरणाहोवैगा ॥ शंका ॥ अद्वितीयब्रह्मरूपआत्माकीरक्षाकरणेवासतैं सर्वजडपदार्थोंकानाश अंगीकारकरणाउचितहै॥ यहजोआपनैकह्या सोयद्यपिसत्य है तथापि संपूर्णजडपदार्थोंकेनाशहुएतैंअनंतर तिनसर्वपदार्थोंकीसिद्धिकरणेहारा अद्वितीयब्रह्मरूपसाक्षी किसप्रकारस्थितहोवैगा ॥ समाधान॥हेजनक॥ जैसे साक्षीआत्माकासाक्ष्यरूपजोअंतःकरणकीवृत्तियाँहैं तिनवृत्तियोंका सुषुप्तिअवस्थाविषेनाशहुएभी तासुषुप्तिअवस्थाविषे साक्षीआत्माकानाशहोवैनहीं तैसे संपूर्णजडजगत्केनाशहुएभी अद्वितीयब्रह्मकानाशहोवैनहीं ॥ याकारणतैं हमअधिकारीपुरुषोंनैं अद्वितीयब्रह्मकीरक्षाकरणेवासतै जडप्रपंचकाहीपरित्यागकऱ्याचाहिये ॥ हेजनक ॥ जैसे उष्णस्वभाववान्अग्निविषे शीतलता किसीप्रमाणकरिकै ग्रहणकरीजावैनहीं ॥ तैसे अद्वितीयस्वभाववालेब्रह्मविषे भेद किसीप्रमाणकरिकैग्रहणकऱ्याजावैनहीं ॥ और लोकविषे जिसपदार्थका किसीप्रमाणकरिकैग्रहणहोवैहै ॥ तिसपदार्थकीहीसिद्धिहोवैहै ॥ याकारणतैं ताभेदकीसिद्धिसंभवैनहीं ॥ हेजनक ॥ जैसे रज्जुरूपअधिष्ठानविषे जोसर्प प्रतीतहोवैहै ॥ सोसर्प वास्तवतैंरज्जुरूपअधिष्ठानविषेहैनहीं ॥ काहेतैं जोरज्जुरूपअधिष्ठानविषे सोसर्पवास्तवतैंहोवै ॥ तौ रज्जुरूपअधिष्ठानकेज्ञानहुएतैंअनंतरभी सोसर्प प्रतीतहोणाचाहिये ॥ और रज्जुरूपअधिष्ठानकेज्ञानतैंअनंतर सोसर्प प्रतीतहोवै नहीं ॥ यातैं यहजान्याजावै है सोसर्प रज्जुविषे वास्तवतैंनहीं ॥ तैसे अद्वितीयब्रह्मविषे जोभेदप्रतीतहोवै है ॥ सोभेद अद्वितीयब्रह्मविषे वास्तवतैंनहीं ॥ काहेतैं जोकदाचित् अद्वितीयब्रह्मविषे सोभेद वास्तवतैंहोता तौसमाधिअवस्थाविषे विद्वान्पुरुषकूं जैसे ब्रह्मविषे सत्चित्आनंदरूपताप्रतीतहोवैहै ॥ तैसे ताअद्वितीयब्रह्मविषे विद्वान्पुरुषकूं भेदभीप्रतीतहोता परंतु विद्वान्पुरुषकूं अद्वितीयब्रह्मविषे भेद प्रतीतहोवैनहीं ॥ यातैंयहजान्याजावैहै ॥ ताअद्वितीयब्रह्मविषे सोभेद वास्तवतैंनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जोकदाचित् अद्वितीयब्रह्मविषे सोभेद वास्तवतैंनहींहोवै ॥ तौसोभेद अद्वितीयब्रह्मविषेस्थितहुआ किसवासतैंप्रतीतहोवै है ॥ समाधान ॥

हेजनक ॥ जोपदार्थ जिसपदार्थविषे स्थितहुआप्रतीतहोवै है ॥ सोपदार्थ तिसपदार्थविषे वास्तवतैंहींहोवैहै॥ याप्रकारकानियमसंभवैनहीं काहेतैं जैसे प्रकाशमान्सूर्यविषे घूकादिकनिशाचरजीव अंधकारकूंदेखैं हैं ॥ परंतु सोअंधकार प्रकाशमानसूर्यविषे वास्तवतैं हैनहीं ॥ जो अंधकार सूर्यविषे वास्तवतैंहोवैतौ॥अस्मदादिकजीवोंकूंभी सोअंधकार प्रतीतहोणाचाहिये॥औरअस्मदादिकजीवोंकूं सूर्यविषे अंधकारप्रतीतहोवैनहीं॥यातैं यहजान्याजावैहै ॥ घूकादिकोंनैं आपणेअज्ञानकरिकै सूर्यविषे अंधकार कल्पनाकऱ्या है ॥ तैसे अद्वितीयब्रह्मविषे अज्ञानीजीव भेदकूंदेखैंहै ॥ परंतु सोभेद अद्वितीयब्रह्मविषे वास्तवतैं हैनहीं ॥ जोकदाचित् अद्वितीयब्रह्मविषे सोभेद वास्तवतैं होता तौ अस्मदादिकविद्वान्पुरुषोंकूंभी सोभेद प्रतीतहोता ॥ और अस्मदादिकविद्वान्पुरुषोंकूं अद्वितीयब्रह्मविषे सोभेद प्रतीतहोवै नहीं ॥ यातैंयहजान्याजावैहै ॥ अविवेकीपुरुषोंनैं आपणेवास्तवरूपकेअज्ञानकरिकै अद्वितीयब्रह्मविषे भेदकल्पनाकऱ्याहै॥और जोपदार्थ अज्ञानकरिकैकल्पितहोवै है ॥ सोपदार्थ वास्तवतैंहोवैनहीं ॥ यातैं भेद याप्रकारकेशब्दतैं तथा भेद याप्रकारकेज्ञानतैं भिन्न कोई ताभेदकावास्तवस्वरूपनहीं किंतु भेद याप्रकारकाशब्दरूप तथा भेद याप्रकारकाज्ञानरूपही सोभेद है ॥ जैसे वंध्यापुत्र याप्रकारकेशब्दतैं तथा वंध्यापुत्र याप्रकारकेज्ञानतैं भिन्न तावंध्यापुत्रकाकोईवास्तवस्वरूपनहीं ॥ किंतु वंध्यापुत्र याप्रकारकाशब्दरूप तथा वंध्यापुत्र याप्रकारकाज्ञानरूपही सोवंध्यापुत्र है ॥ याकारणतैं सोवंध्यापुत्र अत्यंतअसत्यहै॥तैसे सोभेदभी अत्यंतअसत्यहीहै ॥हेजनक॥ यासंसारविषे अद्वितीयब्रह्मतैंभिन्नजोकोईपदार्थहै ॥ तौ तिसपदार्थकाभेद अद्वितीयब्रह्मविषेरहै ॥ परंतु यासंसारविषे अद्वितीयब्रह्मतैंभिन्न कोईस्थूलसूक्ष्मपदार्थहैनहीं ॥ किंतु यहसंपूर्णजगत् ॥ तौ अद्वितीयब्रह्मरूपही है ॥ यातैं ताअद्वितीयब्रह्मविषे भेदकीसंभावनाभीहोवैनहीं॥हेजनक॥जैसे शशशृंग वंध्यापुत्र याप्रकारकेशब्दकेवलतैं तथा याप्रकारकेज्ञानकेवलतैंहीं सोशशशृंग तथा वंध्यापुत्र स्थितहोवै है ॥ ताशब्दज्ञानतैंभिन्न दूसराकोईपदार्थ शशशृंगके तथावंध्यापुत्रके स्थितिकाकारणनहीं ॥ तैसे भेद याप्रकारके शब्दकेवलतैं तथा याप्रकारकेज्ञानकेवलतैंहीं सोभेद स्थितहोवैहै ॥भेद याप्रकारकेशब्दज्ञानतैंविना दूसराकोईपदार्थ ताभेदकेस्थितिका

कारणनहीं॥यातैं भेद याप्रकारकेशब्दज्ञानकेप्रभावतैं प्रतीतहुआभीसोभेद ताअद्वितीयब्रह्मविषे वास्तवतैं हैनहीं॥इतनैंकरिकै अद्वितीयब्रह्मविषे संपूर्णभेदरूपप्रपंचकाअभाव निरूपणकऱ्या॥अब भेददर्शनाविषे अनर्थकीकारणताकानिरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ मनवाणीका अविषय जोस्वयंप्रकाशअद्वितीयब्रह्म है॥ताअद्वितीयब्रह्मविषे जोपुरुष नानाप्रकारकेभेदकूंदेखै है॥सोभेददर्शीपुरुष पुनः पुनःमृत्युकूंप्राप्त होवै है ॥ तहांश्रुति ॥ मृत्योःसमृत्युमाप्नोति यइहनानेवपश्यति अर्थयह ॥ जोपुरुष अद्वितीयब्रह्मविषे नानाप्रकारकेभेदप्रपंचकूंदेखै है ॥ सोभेददर्शीपुरुष वारंवार मृत्युकूंप्राप्तहोवै है ॥हेजनक॥ अद्वितीयब्रह्मविषे ॥ जोभेदबुद्धिहै ॥ सोभेदबुद्धिही अज्ञानीजीवोंकूंसंसारकीप्राप्तिकरै है ॥ याकारणतैं मुमुक्षुजननैं अद्वितीयब्रह्मविषे भेदबुद्धिकदाचित्भीनहींकरणी ॥ और जोपुरुष अद्वितीयब्रह्मविषेभेदबुद्धिकरै है॥ सोपुरुष नरकादिकोंविषे अनेकप्रकारकेशरीरोंकूंप्राप्तहोइकै अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवै है ॥ याकारणतैं मुमुक्षुजननैं ताभेदबुद्धिकाप रित्यागकरिकै ताब्रह्मकूं एकअद्वितीयरूपकरिकैनिश्चयकरणा ॥ कैसाहैसोअद्वितीयब्रह्म ॥ सूर्यादिकज्योतियोंकाभी ज्योतिरूपहै ॥तथा मनवाणीकाअविषयहै ॥ याकारणतैंहीं सो अद्वितीयब्रह्म अप्रमेयहै ॥ प्रत्यक्षादिकप्रमाणजन्यज्ञानकाजोअविषयहोवैहै॥ ताकानामअप्रमेयहै॥शंका॥हेभगवन्॥ मनसैवानुद्रष्टव्यम्॥ याश्रुतिकेव्याख्यानविषे पूर्व आपणैं शुद्धमनजन्यज्ञानकीविषयता अद्वितीयब्रह्मविषे कथनक रीथी॥और अभी आपनैं अद्वितीयब्रह्मविषे प्रमाणजन्यज्ञानकीअविषयता कथनकरी॥याकारणतैं पूर्वउत्तरग्रंथका विरोधहोवैहै॥समाधान हेजनक॥चेतनका आभासयुक्त जोअंतःकरणकीवृत्तिहै ताकानाम ज्ञानहै ॥ तहाँ घटादिकजडपदार्थोंविषे अंतकरणकीवृत्तितौआवर्ण कीनिवृत्तिकरैहै॥और तावृत्तिविषेस्थित जोचिदाभासहै ॥ सोचिदाभास तिनघटादिकजडपदार्थोंकाप्रकाशकरैहै ॥ याकारणतैं घटादि कजडपदार्थोंविषे वृत्तिकीविषयता तथा चिदाभासरूपफलकीविषयता दोनोंविद्यमानहैं॥और चेतनरूपअद्वितीयब्रह्म स्वयंज्योतिरूपहै ॥ याकारणतैं ताअद्वितीयब्रह्मविषे चिदाभासरूपफलकीविषयतातौ संभवैनहीं॥और महावाक्यतैं उत्पन्नभईजोअंतःकरणकीवृत्तिहै॥सोवृत्ति अद्वितीयब्रह्मकेअज्ञानरूपआवरणकीनिवृत्तिकरैहै॥यातैं तावृत्तिकीविषयता अद्वितीयब्रह्मविषेभीहै॥यातैं यहअर्थसिद्धभया॥ पूर्वजोहमनैं

अद्वितीयब्रह्मविषे प्रमाणजन्यज्ञानकीविषयताकहीथी ॥ सो वृत्तिकीविषयताकूं अंगीकारकरीकै कहीथी ॥ और अभीजो हमनैं अद्वितीयब्रह्मविषे ज्ञानकीअविषयता कथनकरी है ॥ सो चिदाभासरूपफलकीअविषयताकूं अंगीकारकरिकै कथनकरी है ॥ यातैं पूर्वउत्तरग्रंथका विरोधहोवैनहीं ॥ ऐसेसर्वभेदतैंरहितअद्वितीयब्रह्मविषे जोपुरुष भेदकूंदेखै है ॥ सोभेददर्शीपुरुष परमदुःखकूंप्राप्तहोवै है ॥ और हेजनक॥ भेददर्शीपुरुषोंकूं नानाप्रकारकेदुःखकीप्राप्तिकरणेहाराजोभेदहै॥ताभेदकूंउत्पन्नकरणेहारीजोअविद्याहै ॥ ताअविद्यातैंभी जोअद्वितीयब्रह्म परे है और सोअद्वितीयब्रह्म जन्ममरणादिकविकारोंतैंरहितहै ॥ याकारणतैं ताअद्वितीयब्रह्मकूं श्रुतिभगवती अज यानामकरिकैकथनक रै है ॥ और सोअद्वितीयब्रह्म गमनआगमनादिककियातैंरहित है याकारणतैं श्रुतिभगवती ताअद्वितीयब्रह्मकूं ध्रुव यानामकरिकैकथन करै है ॥ और सो अद्वितीयब्रह्म देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहित है ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताअद्वितीयब्रह्मकूं महान् यानामकरिकै कथनकरै है ॥ हेजनक ॥ ऐसे अद्वितीयब्रह्मकेसाक्षात्कारकी जिसपुरुषकूंइच्छाहोवै ॥ सोपुरुष याप्रकारकाउपायकरै ॥ अनात्मपदार्थों कूंप्रतिपादनकरणेहारे जितनेकव्याकरणादिकशास्त्र हैं ॥ तिनोंकापरित्यागकरिकै यहअधिकारीपुरुष श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुकेमुखतैं केवल वेदांतशास्त्रकाश्रवणकरै ॥ और एकांतदेशविषे स्थितहोइकै ताश्रवणकरेहुएअर्थकामननकरै ॥ और मननकरिकैनिश्चयकऱ्याजोअ द्वितीयब्रह्मरूपअर्थ ताकेविषे चित्तकीवृत्तियोंकानिरंतरप्रवाहरूपनिदिध्यासनकरै ॥ तथा बालककीन्याईं रागद्वेषादिकोतैंरहितहोवै ॥ तथा ब्रह्मचर्यादिकसाधनोंकरिकैयुक्तहोवै ॥ याप्रकार श्रवणादिकसाधनोंकरिकैसंपन्नहुआ यहअधिकारीपुरुष आपणेमनका अंतरात्मा विषेलयकरै ॥ याप्रकारका मनकालयही सर्वदुःखोंकीनिवृत्तिकाकारणहै ॥ अब अनात्मपदार्थोंकीनिवृत्तिका निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक याअद्वितीयआत्मातैंभिन्न जितनेकलोकप्रसिद्धअनात्मपदार्थ हैं ॥ तथा तिनअनात्मपदार्थोंकूं प्रतिपादनकरणेहारे जितनेकशास्त्र हैं ॥ तथा तिनअनात्मपदार्थोंकीप्राप्तिकेजितनेकसाधनहैं ॥ तसंपूर्णपदार्थ जोकदाचित् शास्त्रकरिकैनिषिद्ध नहींभीहोवैं तौभी तेअनात्मप दार्थ चिंतनकरणेहारेपुरुषके वाकादिकइंद्रियोंकूं पारश्रमरूपदुःखकीहीप्राप्तिकरैं हैं ॥ याकारणतैं तिनअनात्मपदार्थोंका तथा ॥१२७॥

तिनअनात्मपदार्थोंकेप्रतिपादनकरणेहारेशास्त्रोंका यामुमुक्षुजननैं परित्यागहीकरणा ॥ हेजनक ॥ जैसे यालोकविषेभारकूं उठावणेहारे गर्दभ परमदुःखकूं प्राप्तहोवैं हैं ॥ तैसे वर्तमानविषेयोंकी चिंताकरिकैव्याकुलहुआ ॥ यह पुरुष परमदुःखकूं प्राप्तहोवै है ॥ तात्पर्ययह ॥ वर्तमानविषयोंकीचिंताकरिकैभी यहपुरुष जभीपरमदुःखकूंप्राप्तहोवै है ॥ तभी भूतभविष्यत्विषयोंकीचिंताकरिकै यहपुरुष परमदुःखकूंप्राप्तहोवै है याकेविषे क्याकहणाहै ॥ और हेजनक ॥ आनंदस्वरूपआत्माकेचिंतनकापरित्यागकरिकै यहपुरुष जिन जिनविषयोंकाचिंतनकरै है ॥ तेविषय जोकदाचित् शास्त्रकरिकैनिषिद्धनहींभीहोवैं ॥ तौभी तेविषय तापुरुषकीप्रवृत्तिद्वारा तापुरुषके वाकादिकइंद्रियोंकूं केवलपरिश्रमरूपदुःखकीहीप्राप्तिकरैं हैं ॥ तात्पर्ययह ॥ शास्त्रनेविधानकरेजेपाणिग्रहीतस्त्रीकेसंभोगादिकविषय हैं ॥ तेविषयभी जभी यापुरुषकूं दुःखकीहीप्राप्तिकरैं हैं ॥ तभी शास्त्रन निषेधकरेजेपरस्त्रीगमनादिकाविषयहैं ॥ तेनिषिद्धविषय यापुरुषकूं पर मदुःखकीप्राप्तिकरैं हैं याकेविषे क्याकहणाहै ॥ यातैं यहमन जैसे पुनःदुःखकूंनहींप्राप्तहोवै ॥ तैसे यह पुरुष सर्व विषयोंका परित्याग करिकै तामनकूं अंतरआत्माविषेएकाग्रकरै ॥ यहही सर्वदुःखोंकेनिवृत्तिकासाधनहै ॥ हेजनक याप्रकार शमदमादिकसाधनोंकरिकै तथाश्रवणादिकसाधनोंकरिकै तथा अन्नमयादिकपंचकोशोंकेविचारकरिकै जिनअधिकारीपुरुषोंनैं अद्वितीयआत्माविषेमनकूंएकाग्रकऱ्या है ॥ तेअधिकारी पुरुषही अद्वितीयआत्माकेसाक्षात्कारकूंप्राप्तहोवैं हैं॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया॥ अनात्मपदार्थोंकेचिंतनकापरित्यागकरि कै अंतरआत्माविषे जोचित्तकीएकाग्रताहै॥सो एकाग्रताही आत्मसाक्षात्कारकासाधनहै ॥ अब व्याकरणादिकशास्त्रोंनैं कथनकरेजेअना त्मपदार्थ हैं तिनोंकानिरूपणकरैं हैं॥हेजनक॥ जैसे रोगीपुरुषकूं कुपथ्यअन्नकाभक्षण दोषकाहीकारणहोवै है ॥ तैसे अधिकारीपुरुषोंकूं व्याकरणादिकअनात्मशास्त्रोंकाअध्ययनभी बहिर्मुखताकाहीकारणहोवै है॥तहां प्रथम व्याकरणशास्त्रकेपदार्थोंकानिरूपणकरैं हैं॥ पाणि निऋषिकृत अष्टाध्यायीतैं आदिलेके जेव्याकरणकेग्रंथहैं ॥ तिनोंविषे याप्रकारकेपदार्थोंकानिरूपणकऱ्या है॥ तहां शक्ति गौणी लक्षणा यहतीनप्रकारकीवृत्तिहोवै है॥पदोंका जोआपणेआपणेअर्थकेसाथसंबंधहै तासंबंधकानामवृत्तिहै ॥ तहां शक्तिवृत्ति दोप्रकारकीहोवै है ॥

एकतौ योगशक्तिहोवै है॥और दूसरी रूढीशक्तिहोवै है ॥ तहां पदकेअवयवोंविषेरहणेहारी जोशक्तिहै ताकानाम योगशक्तिहै ॥ तायोग शक्तिवालेपदकानाम यौगिकहै ॥ जैसे पाचक यापदविषे दोअवयव हैं॥एकतौ पचधातुरूपअवयव है ॥ और दूसरा अकप्रत्ययरूपअव यवहैं ॥ तहां पचधातुरूपअवयवकी पाकरूपअर्थविषेशक्तिहै ॥ और अकप्रत्ययरूपअवयवकी कर्त्तारूपअर्थविषेशक्तिहै॥ तेदोनोंअव यव मिलिकै पाककर्त्तापुरुषकाबोधनकरै हैं ॥ और पदकेअवयवोंकाजोसमुदायहै ॥ तासमुदायविषेरहणेहारीजोशक्तिहै॥ताकानाम रूढी शक्ति है ॥ तारूढीशक्तिवालेपदकानाम रूढहै ॥ जैसे विप्र गौ घट इत्यादिकपदोंकेजेअवयवहैं ॥ तिनअवयवोंकेसमुदायकविषेहीं ब्राह्म णादिकअर्थकेबोधनकरनेकीशक्तिरहै है॥शक्तिवालेपदकानाम शक्तपद है॥और पदकेवाच्यअर्थविषेवर्तमानजोगुणहै तागुणद्वारातापदका अवाच्यअर्थकेसाथ जोसंबंध है ताकानाम गौणीवृत्तिहै॥तागौणीवृत्तिवालेपदकानाम गौणहै॥जैसे किसीपुरुषनैंकह्या यहबालकअग्निहै॥या वचनविषे अग्निशब्दकावाच्यअर्थ लोकप्रसिद्धअग्निहै॥ताअग्निविषे तेजस्वीपणागुणरहै है॥सोतेजस्वीपणागुण तावालकविषेभीरहै है॥यातैं अग्निपदकीतावालकविषेगौणिवृत्तिहै॥और पदकेवाच्यअर्थकाजोअवाच्यअर्थकेसाथ संबंधहै ताकानाम लक्षणावृत्तिहै॥तालक्षणावालेपद कानाम लाक्षणिकपदहै॥सोलक्षणाभी तीनप्रकारकीहोवै है॥एक तौ जहत्लक्षणाहोवै है॥और दूसरी अजहत्लक्षणाहोवै है॥और तिसरी लक्षितलक्षणाहोवै है॥तहाँ जिसस्थलविषे पदकेवाच्यअर्थकापरित्यागकरिकैअवाच्यअर्थकाग्रहणहोवैहै॥तहाँ जहत्लक्षणाहोवैहै॥जैसेकिसी पुरुषने गंगाविषेग्रामहै॥याप्रकारका उच्चारणकऱ्या ॥ यावचन विषे गंगापदकावाच्यअर्थ जोजलकाप्रवाहहै ॥ ताकेविषे ग्रामकीस्थिति संभवैनहीं॥ याकारणतैंजलकाप्रवाहरूपवाच्यअर्थकापरित्यागकरिकै ताप्रवाहकासंबंधीजोतीरहै ताकेविषे गंगापदकीलक्षणाहोवै है॥और जिसस्थलविषे पदकेवाच्यअर्थका नपरित्यागकरिकै अवाच्यअर्थकाग्रहणहोवै है॥तहाँ अजहत्लक्षणाहोवै है ॥ जैसे किसीपुरुषने काकों तैंदधिकीरक्षाकरणी याप्रकारकावचन किसीअन्यपुरुषकेप्रतिकह्या ॥ तहाँ सोपुरुष तावचनकूंश्रवणकरिकै काकतैंआदिलेके जितनेकद धिकेनाशकरणेहारेश्वानादिकपशुहैं॥तिनसंपूर्णोंविषे काकशब्दकीलक्षणाकरै है॥और पदकेवाच्यअर्थकेसाथ अवाच्यअर्थकेसाथ जो परंप

रासंबंधहै ताकानाम लक्षितलक्षणाहै ॥ जैसे किसीपुरुषने द्विरेफ शब्दकरै है याप्रकारकावचन उच्चारणकऱ्या ॥ यावचनविषे द्विरेफपदकावाच्यअर्थ दोरकार हैं॥तिसवर्णरूपदोरकारोंविषे शब्दकीकारणतासंभवैनहीं॥यातैं द्विरेफपदकी मधुकरव्यक्तिविषेलक्षणाहो वै है ॥ तहाँ द्विरेफपदकेवाच्यअर्थरूप दोरकारोंका मधुकरव्यक्तिकेसाथ साक्षात्संबंधसंभवैनहीं॥किंतु स्वघटितपदवाच्यत्वरूप परंपरा संबंधसंभवै है ॥ यहाँ स्वशब्दकरिकै दोरकारोंकाग्रहणकरणा ॥ तादोरकारोंकरिकैघटितजोभ्रमरपदहै ॥ ताभ्रमरपदकावाच्यअर्थ मधुक रव्यक्तिहै ॥ इसप्रकार व्याकरणशास्त्रविषे पाचकादिकपदोंविषे शक्तिआदिकवृत्तियां कथनकरियां हैं॥और तेव्याकरणशास्त्रकेकर्त्तापुरुष पुनःयाप्रकारकेपदार्थोंकाकथनकरै हैं॥श्वकः इत्यादिकपदोंविषे प्रकृतिअर्थ प्रधानहोवै है॥और पाचकः इत्यादिकपदोंविषे प्रत्ययकाअर्थ प्रधानहोवै है॥औरकर्त्ता कर्म करण संप्रदान अपादान अधिकरण यहषट्प्रकारकेकारकहोवै हैं॥औरपचादिकधातुवोंकेअर्थकानाम क्रिया है ॥ और तंडुलादिकपदार्थोंकानाम कर्म है ॥ और पचादिकधातु सकर्मकधातु हैं॥और भूवादिकधातु अकर्मकधातु हैं॥और यहनिचप्र त्यय प्रयोजकपुरुषकेव्यापारकाकथनकरै है॥और यहप्रत्यय प्रयोज्यपुरुषकेव्यापारकाकथनकरै है ॥ और यहप्रकृतिप्रत्ययदोनों एकठेही उच्चारणकरेजावै हैं ॥ और सु औ जस इत्यादिकप्रत्ययोंकानाम सुप्प्रत्ययहै ॥ तेसुपप्रत्यय जिसपदकेअंतविषेहोवै है ताकानाम सुबंतप दहै ॥ और तिप् तस झि इत्यादिकप्रत्ययोंकानाम तिङ् प्रत्ययहै ॥ तेतिङ्प्रत्यय जिसपदकेअंतविषेहोवै हैं ताकानाम तिङंतपदहै ॥ और यहसुप्तिङ्प्रत्यय जहाँविद्यमानहोवै है ॥ तहाँ दूसराकोईप्रत्यय प्राप्तहोइसकैनहीं ॥ और यहतद्धितप्रत्ययहै ॥ और यहकृदंतप्रत्य यहै ॥ और यहकृत्यप्रत्ययहैं ॥ और अव्ययीभाव तत्पुरुष द्विगु द्वंद्व कर्मधारय बहुव्रीहि यहषट्प्रकारकासमासहै ॥ और यहनामधातु है ॥ और यहस्त्रीप्रत्ययहै ॥ और यहप्रत्यय भावविषेहै ॥ और यहप्रत्यय कर्त्ताविषे है॥इसतैंआदिलेके व्याकरणशास्त्रविषे अनेकप्रकार केशब्द कथनकरे हैं ॥ तेसंपूर्णशब्द अनात्मपदार्थोंकाबोधनकरै हैं ॥ याकारणतैं तिनशब्दोंकेचिंतनकरणेतैं यहअधिकारीपुरुष परममो हकूंप्राप्तहोवै है ॥ अब जैमिनिऋषिकृत पूर्वमीमांसाशास्त्रकेपदार्थोंकानिरूपणकरै हैं ॥ तहाँ ककारादिकवर्णोंकेसमुदायकानामपद है ॥

और तिनपदोंकेसमुदायकानाम वाक्यहै ॥ और ज्योतिष्टोमेनयजेतस्वर्गकामः ॥ इत्यादिकवाक्योंविषेस्थितजोपद हैं ॥ तेपद एकदूसरे कापरित्यागकरिकै शाब्दबोधकूंउत्पन्नकरैनहीं ॥ याकारणतैं तेपद परस्पर आकांक्षावाले हैं ॥ और ॥ ज्योतिष्टोमेनयजेतस्वर्गकामः ॥ यावाक्यविषेस्थितजोपदोंकासमूहहै ॥ तथा ॥ उद्भिदायजेत ॥ यावाक्यविषेस्थित जोपदोंकासमूहहै ॥ तिनदोनोंसमूहोंकूं परस्परआ कांक्षाहैनहीं ॥ यातैं तेदोनोंवाक्य परस्परभिन्नहैं ॥ और एकवारउच्चारणकऱ्याहुआपद तथावाक्य एकहीअर्थकूंबोधनकरै है ॥और जिस स्थलविषे सोपद तथावाक्य दूसरेभीअर्थकूंबोधनकरै है ॥ तहाँ वाक्यभेदकीप्रातिहोवैहै ॥ और जैसे मायाविशिष्टपरमात्मातैं आकाशा दिकभूत उत्पन्नहोवै है ॥ तैसे ककारखकारादिकवर्णभी उत्पन्नहोवैं हैं ॥ याप्रकार उत्तरमीमांसावालेकथनकरै हैं॥और पूर्वमीमांसावाले तौ याप्रकारका कथनकरै हैं ॥ ककारादिकवर्ण विभु हैं तथानित्यहैं ॥ यातैं तिनोंका उत्पत्तिनाश संभवैनहीं ॥ शंका ॥ ककारादिक वर्ण जोनित्यहोवैं ॥ तौ तिनककारादिकवर्णोंकी सर्वदाप्रतीतिहोणीचाहिये ॥ समाधान ॥ जैसे आकाशविषेविद्यमानहुएभीनक्षत्र दिनविषेप्रतीतहोवैनहीं ॥ किंतु रात्रिविषे तेनक्षत्रप्रतीतहोवै हैं ॥ यातैं रात्रि तानक्षत्रोंकाअभिव्यंजकहै ॥ तैसे सर्वदाविद्यमानहुएभी ककारादिकवर्ण कंठतालुआदिकोंकेसंबंधतैंविना प्रतीतहोवैंनहीं॥किंतु कंठतालुआदिकोंकेसंबंधतैं अनंतरही तेककारादिकवर्ण प्रतीत होवै हैं ॥ यातैं अंतरवायुकरिकैसंबंधजे उर कंठ शिर जिह्वामूल दंत नासिका ओष्ठ तालु यहअष्टस्थानहैं ॥तथा स्पष्टादिकजेप्रयत्नहैं ॥ तेसंपूर्ण तिनककारादिकवर्णोंकेअभिव्यंजकहैं॥याप्रकार तिनस्थानोंकरिकै अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहुए तेककारादिकवर्ण जभी श्रोतापुरुषके श्रवणविषेप्राप्तहोवै हैं॥तभी तेककारादिकवर्ण पदसंज्ञाकूं तथावाक्यसंज्ञाकूं प्राप्तहोवै हैं॥और तिनपदोंके तथावाक्योंके अंत्यविषेस्थित जोवर्ण है॥सोवर्णहीं पूर्ववर्णोंकेअनुभवजन्यसंस्कारोंकरिकै सहकृतहुआ पदार्थज्ञानका तथावाक्यार्थज्ञानका कारणहोवै है ॥ और पदोंके साथ तथावाक्योंकेसाथ जोअर्थका बोध्यबोधकभावसंबंधहै सोसंबंध नित्यहै॥और सोबोध्यबोधकभावसंबंध घटादिकपदोंका घटत्वादि कजातियोंविषेही है॥यातैं घटादिकशब्दोंतैं घटत्वादिकजातियोंकाही शाब्दबोधहोवै है॥ और घटादिकव्यक्तियोंकाज्ञान अर्थापत्तिरूप

॥१२९॥

आक्षेपतैंहोवैहै ॥ और ज्योतिष्टोमेनयजेतस्वर्गकामः ॥ इत्यादिकवाक्योंविषेस्थितजेपदहैं तेपद आपणेआपणेअर्थोंका स्मरणकरावै हैं॥ याकारणतैं तेपद अभिधायकहैं॥ यद्यपि वाक्यार्थकेज्ञानबासतैंही तिनपदोंकीप्रवृत्तिहोवैहै॥तथापि पदार्थोंकेज्ञानतौंविना वाक्यार्थकाज्ञा नहोवैनहीं ॥ यातैं तेपद आपणेआपणेअर्थकाभी अवश्यबोधनकरैं हैं ॥ और सत्चित्आनंदरूपआत्माहै ॥ इत्यादिकवाक्योंविषेस्थित जेपदहैं ॥ तिनपदोंनैं स्मरणकरायेजेआपणेआपणेअर्थ हैं ॥ तेअर्थहीं परस्परसंबंधरूपवाक्यार्थकूं बोधनकरैं हैं॥ और जितनेकपदार्थोंकी परस्परआकांक्षाहोवैहै ॥ तिनसंपूर्णपदार्थोंका तिसवाक्यार्थविषेसंबंधहोवैहै॥और कर्त्ता कर्म इत्यादिकपदार्थोंकेविद्यमानहुएभी क्रियाप दार्थतैंविना वाक्यार्थकीपूर्णताहोवैनहीं॥यातैं क्रियापदार्थहीं वाक्यार्थकीपूर्णताकरैहै॥और जोवाक्य दूसरेवाक्यकीअपेक्षानहींकरैहै ताका नाम वाक्यहै॥याकारणतैं एकवाक्यविषेएकहीक्रियापदहोवैहै॥एकवाक्यविषे अनेककक्रियापदहोवैंनहीं॥और जहाँ एकवाक्य दूसरेवाक्यकी अपेक्षाकरै है॥ तहाँ प्रकरणरूपप्रमाणहोवैहै ॥ और तिनक्रियापदघटितवाक्योंविषेभी लिङ् लोट् लेट् तव्यादिककृत्यप्रत्यय यह संपूर्ण प्रत्यय विधिकाबोधनकरैं हैं ॥ और लोकविषे तथावेदविषे जोपदार्थ प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकैज्ञातनहींहोवै है॥सोअज्ञातपदार्थही लिङा दिकविधिप्रत्ययोंकाअर्थहोवै है॥ और अपौरुषेयवाक्योंकेसमूहकानाम वेदहै ॥सोवेदभी दोप्रकारकाहोवैहै॥एकतौमंत्रभागरूप वेदहोवैहै॥ और दूसरा ब्राह्मणभागरूप वेदहोवैहै॥ और विधिवाक्योंकेयज्ञादिरूपअर्थकीस्तुतिकरके जेवेदवाक्य अधिकारीपुरुषोंकूंतिनयज्ञादिकक र्मोंविषे प्रवृत्तकरैं हैं ॥ तेवेदकेवाक्य अर्थवादरूपहोवैं हैं ॥ सोअर्थवादभी तीनप्रकारकाहोवै है ॥ एकतौ गुणवाद ॥ दूसराअनुवाद ॥ तीसरा भूतार्थवाद ॥ और जिसवाक्यविषे क्रियापदनहींहोवै ॥ तिसवाक्यविषे पूर्ववाक्यतैं अथवा उत्तरवाक्यतैं क्रियापदकाअनुषंग करणा ॥ इसप्रकार जिसवाक्यविषे कर्त्ताकर्मादिककारकोंकेवाचकपद नहींहोवैं ॥ तिसवाक्यविषेभी पूर्वउत्तरवाक्योंतैंतिनपदोंकाअनु षंगकरणा ॥ और जिसवाक्यविषे जोपद अपेक्षितहोवैं ॥ और जोपदकदाचित् पूर्वउत्तरवाक्योंविषेहोवैंनहीं॥तौ तिसवाक्यविषे तापदका अध्याहारकरणा ॥ और आकांक्षायोग्यतादिकोंकेवशतैं पदोंका तथावाक्योंकापरस्पर व्यत्ययभावकरणा॥और पदोंका जोअर्थकेसाथ

संबंधहै ॥ सो लोकविषे वृद्धपुरुषोंकेव्यवहारकरिकै जान्याजावै है ॥ यातैं लौकिकशब्दहैं ॥ तेही वैदिकशब्दहैं ॥ और यद्यपि लोक विषे तथावेदविषे पदोंकी तथापदार्थोंकी समानताही है॥तथापि वेदविषे वाक्योंकाअर्थअपूर्वहीहोवै है ॥ तहाँ पूर्वकांडकेवाक्योंका धर्म रूपअर्थ है॥ और उपनिषद्रूपउत्तरकांडकेवाक्योंका अद्वितीयब्रह्मरूपअर्थ है॥तेदोनों प्रत्यक्षादिकलौकिकप्रमाणोंकरिकैज्ञातनहीं हैं॥ यातैं तेदोनोंअपूर्व हैं॥ और विधिवाक्योंका जोयज्ञादिरूपअर्थ है॥ताअर्थकीस्तुतिकरिकै॥तथातिसअर्थतैंभिन्न अर्थकीनिंदाकरिकै अर्थ वादरूपवचन ताअर्थविषे अधिकारीपुरुषोंकीप्रवृत्तिकरावैं हैं ॥ और मंत्ररूपवचन देवतादिकोंकास्मरणकरावैं हैं ॥ यातैं तेअर्थवाद तथामंत्र विधिवाक्यकेअर्थविषेही प्रमाणहैं ॥ और ते विधिवाक्यभी चारप्रकारकेहोवै हैं ॥ एकतौ विनियोगविधिहोवै है ॥ और दूसरा प्रयोगविधिहोवै है॥और तीसरा उत्पत्तिविधिहोवै है और चतुर्थ अधिक्रियाविधिहोवै है॥और भावनाकूंप्रतिपादनकरणेहारा जोविधिवाक्य होवै है ॥ तावाक्यकेअर्थविषे साधन साध्य इतिकर्तव्यता यहतीनों उपयोगीहोवैं हैं ॥और स्वर्गकामोयजेत ॥यावाक्यकेअर्थज्ञानतैंअनं तर तिनयज्ञादिककर्मोंकेअनुष्ठानतैं धर्मरूपअपूर्व उत्पन्नहोवै है ॥ जिसधर्मरूपअपूर्वकरिकै यापुरुषकूं स्वर्गकीप्राप्तिहोवै है ॥ और तेवेदप्रतिपादितकर्मभी दोप्रकारकेहो वैं हैं ॥ एकतौ प्राकृतकर्महोवैं हैं ॥ और दूसरे वैकृतकर्महोवैं हैं ॥ तहाँ यहकर्म इसीप्रकारकरणा याप्रकार विधानकरचाहुआकर्म प्राकृतकर्महोवै है ॥ और यहकर्म इसकर्मकीन्याईकरणा याप्रकार विधानकरचाहुआकर्म वैकृतकर्म होवैहै ॥ और शब्दांतर अभ्यास संज्ञा संख्या गुण प्रकरणांतर इनोंकरिकै तेकर्म भिन्नभिन्नहोवैं हैं तिनकर्मोंविषेभीकोईकर्मअंगरूपहैं ॥ और कोईकर्म अंगीरूपहैं ॥ तिनकर्मोंकेअंगअंगीभावविषे श्रुति लिंग वाक्य प्रकरण स्थान समाख्या यहषट्प्रमाणहैं ॥ और तिनकर्मों केअंगअंगीभावकेनिश्चयतैंअनंतर इयत्तारूपपरिमाण श्रुति अर्थ पाठ स्थान मुख्य प्रवृत्ति यापट्प्रमाणोंकरिकैजान्याजावैहै ॥ कैसा है सोकर्मोंकापरिमाण ॥ पत्नीकरिकैयुक्तजे त्रैवर्णिकअधिकारीपुरुषहैं ॥ तिनोंविषे एककरिकै तथाअनेकोंकरिकै व्यवस्थापूर्वक करणेयो ग्यहै ॥ और यज्ञादिककर्मोंविषे उपयोगीजेद्रव्यहैं तयादेवताहैं ॥ तिनोंकूंदेखिकरिकै विवेकीपुरुषनैं यहकर्म इसकर्मकाविकृति है याप्र

कार यज्ञादिककर्मोंका परस्पर प्रकृति विकृतिभाव निश्चयकरणा॥ और विकृतियज्ञोंविषे बुद्धिमान्पुरुषोंनैं पदादिकोंकीऊहाकरणी॥ और सर्वकर्मोंकेपूर्णहुए ताविकृतिकर्मोंविषे प्रकृतिकर्मोंकेअंगोंका निवृत्तिरूपबाध जानणा और जहाँ अन्यकिसीवासतैंकाज्याजोअंग ता अंग करिकै किसीअन्यकाहीउपकारहोवै ताकानामप्रसंगहै॥ और एकवारकाज्याहुआजोकर्म नानाकर्मोंकाअंगरूपहोवै है ताकानाम तंत्रहै॥इस तैंआदिलेके अनेकप्रकारकेपदार्थ पूर्वमीमांसाविषे जैमिनिऋषिनैं कथनकरेहैं॥ तिनपदार्थोंकाअभ्यासकरिकै इदानींकालकेपुरुष आपणेकूंप डितमानै हैं ॥ और विद्वानोंकीसभाविषेस्थितहोइकै तेपुरुष तिनपूर्वमीमांसाकेपदार्थोंकाकथनकरैं हैं॥ और तेपुरुष अभिमानकरिकै याप्र कारकेवचन कहैंहैं॥उत्तरमीमांसाकूंभी हमहीं जाणतैंहैं॥ उत्तरमीमांसाविषे ब्रह्मकेज्ञानत मोक्षकीप्राप्तिकहीहै॥ और ताब्रह्मज्ञानकेप्राप्तिविषे यज्ञादिककर्मोंतैंआदिलेकेअनेकप्रकारकेसाधनकहैंहैं॥तिनसंपूर्णोंकूं हम भलीप्रकारजाणतैंहैं ॥याप्रकार मीमांसाशास्त्रकेअनात्मपदार्थोंका चिंतनकरिकै तेबहिर्मुखपुरुष नानाप्रकारकेव्यामोहकूंप्राप्तहोवैहैं अब गौतमऋषिकृत न्यायशास्त्रकेपदार्थोंकानिरूपणकरैहैं॥तहाँ प्रतिज्ञा हेतु उदाहरण यातीनअवयोंकासमुदायरूपजोवाक्यहै॥ताकरिकै परार्थअनुमानहोवैहै॥याप्रकार मीमांसकमानै हैं॥और उदाहरण उपनय यादोअवयवोंकासमुदायरूपजोवाक्य है ॥ ताकरिकै परार्थअनुमानहोवै है ॥ याप्रकार बौद्धमानैं हैं॥यहदोनोंमतअसंगत हैं ॥ किंतु प्रति ज्ञा हेतु उदाहरण उपनय निगमन यापंचअवयोंका समुदायरूपजोवाक्य है ताकरिकैही परार्थअनुमानहोवै है ॥ और तेनैयायिक दूसरे शास्त्रवालेपुरुषोंकेमतविषे याप्रकारकेदूषणकहैं हैं कि तुम्हारेमत विषे यहआत्माश्रयरूपतर्क प्राप्तहोवै है ॥ और तुम्हारेमतविषे यहअ न्योन्याश्रयरूपतर्क प्राप्तहोवै है ॥ और तुम्हारेमतविषे यहचक्रिकारूपतर्क प्राप्तहोवै है ॥ और तुम्हारेमतविषे यहअनवस्थारूपतर्क प्रा प्तहोवै है ॥ और तुम्हारेमतविषे यहव्याघातरूपतर्क प्राप्तहोवै है॥ और तुम्हारेमतविषे यहप्रतिबंदीरूपतर्क प्राप्तहोवै है॥ और यहतुम्हारा तर्क इष्टापत्तिरूपदूषणकरिकैग्रस्त है यातैंअसत्य है ॥ और यहतुमारातर्क प्रतिवादीकेअनिष्टकूंकरतानहीं यातैंअसत्य है॥ और यहतुम्हा रातर्क व्याप्तितैंरहित है यातैंअसत्य है॥ और यहतुम्हारातर्क विपरीत है यातैंअसत्य है॥ और यहतुम्हारातर्क अनुग्राहकप्रमाणतैंरहित है

यातैंअप्रयोजक है॥ और यहतुम्हाराहेतु व्याप्तिपक्षधर्मतातैंरहितहै यातैं हेत्वाभास है॥ और यहतुम्हारासाध्य आश्रयतैंरहितहै तथा प्रसिद्धितैंरहित है और यातुम्हारेअनुमानविषे कोईदृष्टांतसमीचीननहीं ॥ और याअनुमानविषे तुमने उदाहरण व्यर्थकह्या है ॥ और याअनुमानविषे तुमने निगमन व्यर्थकह्या है ॥ इसतैंआदिलेके अनेकप्रकारकेअनात्मपदार्थ न्यायशास्त्रविषे कथनकरे हैं ॥ हेजनक इसप्रकार व्याकरणशास्त्रविषे तथा पूर्वमीमांसाविषे तथा न्यायशास्त्रविषे अनेकप्रकारकेअनात्मपदार्थोंकाकथनकऱ्या है ॥ तिनअनात्मपदार्थोंविषे आसक्तिकरिकै इदानींकालकेबहिर्मुखपुरुष याप्रकारकेवचनकहैं हैं ॥ यासंपूर्णअर्थकूं हमहींजाणते हैं॥हमारेतैंविना दूसराकोईपुरुष याअर्थकूंजाणतानहीं ॥ याप्रकार आपणेकूंसर्वतैंउत्कृष्टमानिकै तेबहिर्मुखपुरुषव्यर्थहींक्रोधकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ जैसे अनेकश्वानोंकरिकैवेष्टितहुआ श्वान क्रोधकरिकै आपणेदांतोंकूंदिखावैहै॥तैसे क्रोधकरिकैयुक्तहुए तेबहिर्मुखपुरुषभी आपणेदांतोंकूंदिखावैं हैं॥और हेजनक॥वेदांतशास्त्रकेविचारकापरित्यागकरिकै जेपुरुष पूर्वउक्तअनात्मशास्त्रोंकाविचारकरैंहैं तेपुरुष यद्यपि लोकविषे शास्त्र वेत्ताकहेजावैंहैं तथापि तिनपुरुषोंविषे इतरजीवोंतैं किंचित्मात्रभीविशेषतानहीं।काहेतैं यालोकविषे जितनेक देहधारी जीवहैं तिनोंविषे क्षुधा पिपासा निद्रा भयइत्यादिकधर्मसमानहींहैं॥और जोतुमयहकहो॥अनात्मशास्त्रोंकेविचारकरणेहारेपुरुष दूसरेजीवोंतैं अधिकसंभाषणकरैं हैं याकारणतैं दूसरेजीवोंतैं तिनोंविषेविशेषताहैं॥सोयहतुम्हाराकहणाभीसंभवैनहीं॥काहेतैं बहुतबोलणेकरिकै क्रोष्टुनामकूंप्राप्तभयेजे शृगालहैं तिनशृगालोंतैं तिनब्रह्मिर्मुखपुरुषोंविष विशेषतासंभवैनहीं ॥ किंतु बहुतभाषणकरणेहारे तेबहिर्मुखपुरुष शृगालोंकेहीसमान हैं ॥ और हेजनक ॥ अनात्मपदार्थोंकाविचारकरणेहारे जेबहिर्मुखपुरुष हैं ॥ तेबहिर्मुखपुरुष ब्रह्मचिंतनकरणेहारेविद्वान्पुरुषोंका बिनाहींप्रयोजनतैं निरादरकरैं हैं ॥ तथा शास्त्रकेव्याख्यानकरणेहारे महात्मापुरुषोंकाउपहासकरैं हैं ॥ और जैसे यालोकविषे कोईदुर्जनापिशुनपुरुष दोषतैंरहितमहात्मापुरुषोंविषे दोषोंकाआरोपणकरिकै तिनदोषोंकाकथनकरैं हैं ॥ तैंते अनात्मपदार्थोंके विचारकरिकै अत्यंतअभिमानकूंप्राप्तहुएतेबहिर्मुख पुरुष ऋषियोंविषेभी याप्रकारकेदोष आरोपणकरैं हैं कि पाणिनिऋषिनैं यहजोसूत्ररचाहै सो विचारतैं विनाहींरचा है ॥ और जैमिनिऋषिनैं

यहजोसूत्ररचा है सोविचारतैंविनाहींरचा है ॥ और व्यासभगवान्नैं यहजोसूत्ररचा है सो विचारतैं विनाहीं रचा है ॥ काहेतैं पूर्वसूत्रकरिकै अथवा उत्तरसूत्रकरिकै याअर्थकीसिद्धिहोइसकै है ॥ यातैं यह सूत्रव्यर्थहीहै ॥ और यह वेदकावचन उन्मत्तपुरुषके वचनकी न्याईं असंगत प्रतीतहोवै है ॥ यातैं यहजान्याजावै है यहवचन परमेश्वर करिकै रचितनहीं किंतु यह वचन किसी धूर्तपुरुषनैं वेदविषेपायाहै ॥ यातैं यह वचन व्यर्थ है अथवा यहवचन परमेश्वर करिकै रचित है यातैं व्यर्थ नहीं किंतु सार्थकहै ॥ परंतु यावचनके अर्थकूं एकमैंहीं जाणताहूं मेरेतैं विना दूसरा कोई पुरुष यावचनके अर्थकूं जाणतानहीं॥ याप्रकार तेबहिर्मुखपुरुष जिनऋषियोंके शास्त्रोंकूंपढिकै बुद्धिमान्होवैं हैं तिनऋषियोंविषेही नानाप्रकारकेदूषणोंकाआरोपणकरैं हैं ॥ और वेदकेपाठकूंश्रवणकरिकै तेबहिर्मुखपुरुष याप्रकारकेवचनकहैं हैं ॥ यहाँ यहस्वर चाहीताथा ॥ यहाँ यहवर्ण चाहीताथा ॥ और यहाँयहपद चाहीताथा ॥ और यहाँ यहक्रम चाहीताथा ॥ तेस्वरवर्णादिक इनब्राह्मणोंनैं उच्चारणकरेनहीं यातैं इनब्राह्मणोंनैं वेदोंकूंहीं नष्टकरिदिया है ॥ याप्रकारतेबहिर्मुखपुरुष वेदपाठकसाधुब्राह्मणोंकीभीनिंदाहीकरैं हैं॥और तेबहिर्मुखपुरुष पुनःयाप्रकारकेवचनकहैहैं कि शास्त्रकेविचारविषे जैसीहमारीबुद्धि तीक्ष्णहैतैसी तीक्ष्णबुद्धि हमारेगुरुकीभीनहीं॥ और ब्रह्माकीभी ऐसीतीक्ष्णबुद्धिनहीं है॥तथा अन्यविद्वान्पुरुषोंकीभी ऐसीतीक्ष्णबुद्धि नपूर्वे भई है नअभीवर्तमान है नआगेहोवैगी॥ और जैसे समुद्रतैं नानाप्रकारकीलहरियां उत्पन्नहोवैं हैं ॥तैसे मेरेमुखरूपीसमुद्रतैं व्याकरणमीमांसा न्यायशास्त्रकेअनुसार नानाप्रकारकीविचित्रवाणियां निकसैं हैं॥हेजनक॥ जैसे भारकरिकेआतुरहुआगर्दभ नानाप्रकारकेशब्दोंकूंकरै है ॥ तैसे अनात्मशास्त्ररूपभारकरिकैआतुरहुए तेबहिर्मुखपुरुष नानाप्रकारकेशब्दोंकूंउच्चारणकरैं हैं ॥ याकारणतैं तेबहिर्मुखपुरुष अत्यंतदुर्जन हैं ॥ और हेजनक ॥ यालोकविषे स्त्री पुत्र धन इत्यादिकपदार्थोंकात्यागकरणा यद्यपि अत्यंतकठिनहै ॥ तथापि कोईपुरुष तिनस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंकापरित्यागकरिकै संन्यासआश्रमकूंधारणकरिकैभी विद्यादिकोंकेअभिमानकापरित्यागकरतेनहीं ॥ हेजनक ॥ जैसे यालोकविषे कोईभारवाहीपुरुष आपणेमस्तकऊपरस्थित जोदधिओदनादिकअन्नकाभारहै ॥ जिनअन्नादिकोंकेभक्षणकरिकै क्षुधादिकोंकी

निवृत्तिहोवैहै ॥ ऐसे अन्नरूपभारकापरित्यागकरिकै पाषाणकाभार आपणेमस्तकऊपरउठावै सोभारवाहीपुरुष अत्यंतमूढबुद्धिहै ॥ तैसे सुखकेसाधन जेस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थ हैं तिनोंकापरित्यागकरिकै संन्यासआश्रमकूंधारणकरिकैभी जेपुरुष विद्याआश्रमादिकोंकेअभिमानरूपभारकूंउठावैं हैं तेपुरुषभी अत्यंतमूढबुद्धिजानणे यातैं जिसअधिकारीपुरुषकूं आपणेकल्याणकरणेकीइच्छाहोवै सोअधिकारीपुरुष वेदांतशास्त्रकेविचारकूंछोडिकै दूसरेअनात्मशास्त्रोंकाविचार कदाचित्भीनहींकरै काहेतैं सोअनात्मपदार्थोंकाविचार यापुरुषकेवाक्आदिकइंद्रियोंकूं केवलपरिश्रमकीहीप्राप्तिकरणेहाराहै तथाअभिमानकीउत्पत्तिकरणेहाराहै ॥ तहाँश्रुति ॥ नानुध्यायाद्बहून्छब्दान्वाचोविग्लापनंहितत् ॥ अर्थयह ॥ बहुतअनात्मपदार्थोंकाचिंतन यापुरुषकेवाक्आदिकइंद्रियोंकूं परिश्रमकीप्राप्तिकरणेहारा है ॥ याकारणतैं यहअधिकारीपुरुष तिनअनात्मपदार्थोंकाचिंतन नहींकरै ॥ किंतु यहअधिकारीपुरुष निरंतर वेदांतशास्त्रकाहीचिंतनकरै ॥ हेजनक ॥ जैसे लोकप्रसिद्ध गौ आपणेचारिस्तनोंकरिकै वत्सकीतृप्तिकरै है ॥ तैसे स्वाहाकार वषट्कार स्वधाकार हंतकार याचारिस्तनोंकरिकै देवताऋषि पितर मनुष्यादिक यासंपूर्णोंकी तृप्ति करणेहारी जो यहवेदकीवाणीरूपकामधेनुगौहै तावाणीरूपधेनुकूं जेपुरुष अभिमानादिकविकारोंतैंरहितहोइकै प्रसन्नकरै हैं ॥ तिनअधिकारीपुरुषोंकेताईंहीं सोवाणीरूपकामधेनु मोक्षरूपदुग्धकीप्राप्तिकरैहै ॥ और अभिमानादिकविकारोंकरिकैयुक्तहुए जेपुरुष तावेदवाणीरूपकामधेनुकूं ग्लानिकीप्राप्तिकरै हैं ॥ तिनअभिमानीपुरुषोंकेताईं सोवेदवाणीरूपकामधेनु मोक्षरूपअमृतकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ यातैं यामनुष्यलोकविषे ऐसाकौनविवेकीपुरुषहै जो वेदवाणीरूपकामधेनुकूंग्लानिकीप्राप्तिकरै ॥ किंतु आत्मविचारतैंरहित बहिर्मुखपुरुषही तावेदवाणीरूपकामधेनुकूं ग्लानिकीप्राप्तिकरैहैं ॥ यातैं यहअधिकारीपुरुष तावेदवाणीरूपकामधेनुकीप्रसन्नताकरणेवासतै याप्रकारकाउपायकरै कि अद्वितीयब्रह्मरूपआत्माविषे आपणे मनकूंएकाग्रकरिकै नेत्रादिकबाह्यइंद्रियोंकेसंपूर्णव्यापारोंकापरित्यागकरै ॥ याप्रकारकाउपायकरिकै प्रसन्नताकूंप्राप्तहुई सोवेदवाणीरूपकामधेनु याअधिकारीपुरुषकेताईं मोक्षरूपअमृतकीप्राप्तिकरैहै ॥ इतनैंकरिकै निर्गुणब्रह्मविषे मनकीएकाग्रताकाप्रकार निरूपणकऱ्या ॥१३२॥

अब सगुणब्रह्मविषेमनकीएकाग्रताकाप्रकार निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ यहमन अत्यंतचंचल है ॥ यातैं निर्गुणब्रह्मविषे ताचंचलमन कालयरूपनिग्रहकरणेविषे जोतूं समर्थनहींहोइसकै तौ तुमारेताईं सगुणब्रह्मकाअभेदचिंतनरूप दूसराउपाय मैं कथनकरताहूं ॥ ताउपायकूं तूं सावधानहोइकैश्रवणकर ॥ हेजनक॥पूर्व हमनैं तुमारेप्रति प्राणइंद्रियोंकासाक्षीरूपकारिकै जोपरमात्मादेव कथनकऱ्याथा ॥जोपरमात्मादेव बुद्धिकेतादात्म्यसंबंधकरिकै ॥ विज्ञानमयसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जोपरमात्मादेव सर्वप्राणियोंकेहृदयदेशविषेस्थितहै॥और जिसपरमात्मादेवविषे यहविज्ञानमयजीव सुषुप्तिअवस्थामें अभेदभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ सोपरमात्मादेव सर्वत्रपरिपूर्ण है ॥ याकारणतैं श्रुति भगवती तापरमात्मादेवकूं महान् यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और सोपरमात्मादेव जन्ममरणादिकसर्वविकारोंतैंरहितहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं अज यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और जैसे यालोकविषे मंत्रसिद्धिवालेपुरुषके संपूर्णप्राणी वशवर्ती होवैं हैं ॥ तैसे तामायाविशिष्टपरमात्मादेवके संपूर्णभूतभौतिकजगत् वशवर्तीरहै है याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं वशी यानामकरिकैकथनकरै है॥अथवा ॥ जैसे पुत्रोंविषेस्नेहवानजोमाताहै ॥ तामाताकूं तेपुत्र आपणेवशकरिलेवैं हैं ॥ तैसे यहपरमात्मादेवभी सर्वजीवोंकेहृदयदेशकापरित्यागकरिकै कहाँजावैनहीं ॥ यातैं संपूर्णजीवोंनैं तापरमात्मादेवकूं आपणेवशकऱ्याहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं वशीयानामकरिकैकथनकरै है॥और जैसे यालोकविषे कोईगृहीपुरुष आपणेस्त्रीपुत्रादिककुटुंबकूं आपणी आज्ञाविषे चलावैहै ॥ तैसे यहपरमात्मादेवभी संपूर्णजगत्कूं आपणीआज्ञाविषेचलावै है ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं ईशान यानामकरिकैकथनकरैहै॥ और जैसे सूर्यभगवान् यासर्वजगत्कापालनकरैहै॥तैसे यहपरमात्मादेवभी फलप्रदातारूपकारिकै सर्वजगत्कापालनकरैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं अधिपति यानामकरिकैकथनकरैहै॥और हेजनक॥ जैसे यालोकविषे पुण्यवान्पुरुष तापुण्यकर्मोंकरिकै यशआदिकोंकूंप्राप्तहोइकै वृद्धिकूंप्राप्तहोवै है॥ तैसे यहआनंदस्वरूपपरमात्मादेव पुण्यकर्मकरिकै वृद्धिकूंप्राप्तहोवैनहीं॥ और जैसे यालोकविषे पापीपुरुष तिनपापकर्मोंकरिकै अयशआदिकोंकूंप्राप्तहोइकै लघुताकूंप्राप्तहोवै है॥ तैसे यहपरमा

त्मादेव पापकर्मकरिकै लघुताकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ हेजनक ॥ वास्तवतैं पापपुण्यतैंरहित तथाविषमतातैंरहित जोयहपरमात्मादेवहै ॥सोप
रमात्मादेवही महाराजाकीन्याईं संपूर्णजगत्कूं आपणेआज्ञाविषेचलावै है ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं सर्वेश्वर यानामक
रिकैकथनकरैहै ॥ और सूर्यभगवान्कीन्याईं यहपरमात्मादेवही सर्वभूतोंकाराजा है ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्माकूं भूताधि
पति यानामकरिकैकथनकरैहै ॥और जैसे माताआपणेपुत्रोंकापालनकरैहै॥तैसे यहपरमात्मादेवही सर्वभूतप्राणियोंकापालनकरैहै॥ याका
रणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं भूतपाल यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और जैसे यालोकविषे नदीकेपारलेकिनारेके तथाओरलेकिना
रेके मध्यविषेस्थित जोकाष्टमृत्तिकादिकोंकरिकैरचाहुआसेतुहै ॥ सोसेतु नदीकेजलोंकीमर्यादाकूंधारणकरैहै ॥ तैसे यहस्वयंज्योतिपरमा
त्मादेवही भूरादिकलोकोंकी तथावर्णआश्रमकेधर्मोंकी मर्यादाकूंधारणकरैहै याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं सेतु यानामक
रिकैकथनकरैहै ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकैनिरूपणैंकरहै ॥ हेजनक ॥ यालोकविषे यहपरमात्मादेव जोकदाचित् जगत्कीमर्यादाकूं
व्यवस्थापननहींकरै ॥ तौ पृथवी जल तेज वायु आकाश यहपंचभूत आपणेआपणेमर्यादाकापरित्यागकरिकै संपूर्णजगत्केप्रलयकरणे
विषेजोकदाचित् प्रवृत्तहोवैं तौ तापरमात्मादेवतैंविना दूसराकौनपुरुष तिनपृथवीआदिकभूतोंकूं निवारणकरैगा॥किंतु यहपरमात्मादेवही
तिनभूतोंकूं आपणीआपणीमर्यादाविषे स्थापनकरिरह्याहै॥और हेजनक यापृथिवीलोकविषे जेप्रियव्रतादिकक्षत्रियराजहैं॥ केसेहैंतेराजे ॥
महान्हैंप्राक्कर्मजिनोंका ॥ तथा अग्निकेसमानहैंतेजजिनोंका॥तथा शस्त्रअस्त्रविद्याविषे जेराजे अत्यंतकुशलहैं॥तथा यापृथिवीलोकविषे
जिनराजोंतैंकोईअधिकबलवान्नहीं है॥ऐसे महाबलवान्प्रियव्रतादिकराजे जोकदाचित् आपणेधर्ममर्यादाकापरित्यागकरिकै प्रजाकेअन
र्थकरणेविषेप्रवृत्तहोवैं तौ सर्वज्ञपरमात्मादेवतैंविना दूसराकौन पुरुष तिन राजाकूं निवारणकरैगा ॥ किंतु यहपरमात्मादेवही तिनराजोंकूं
आपणेधर्ममर्यादाविषे स्थापनकरिरह्याहै॥और हेजनक॥वरशापदेणेविषेसमर्थ जेदुर्वासादिककोधीब्राह्मणहैं॥तेब्राह्मणजोकदाचित् शापदेकै
तीनलोकोंकेभस्मकरणेविषेप्रवृत्तहोवैं ता यापरमात्मादेवतैंविना दूसराकौनपुरुष तिनब्राह्मणोंकूं निवारणकरिसकैगा किंतु यहपरमात्मादे

वही तिनब्राह्मणोंकूं आपणीमर्यादाविषे स्थापनकरिरह्याहै॥और हेजनक॥यालोकविषे सर्पकीन्याईं क्रोधवान् जेसिंहादिक तामसी जीवहैं॥
तेतामसीजीव जोकदाचित् आपणेमर्यादाकापरित्यागकरिकै सर्वप्राणियोंके हिंसाकरणेविषेप्रवृत्तहोवैं तौ सर्वज्ञपरमात्मादेवतैंविना दूसरा
कौनपुरुष तिनसिंहादिकोंकूंनिवारणकरैगा॥किंतु यहपरमात्मादेवही तिनसिंहादिकतामसीजीवोंकूं आपणी२मर्यादाविषेस्थापनकरिरह्या
है ॥ और हेजनक ॥ अगाधहैजलजिनोंविषे ऐसेजेक्षारससमुद्रतैंआदिलेकेसप्तसमुद्र हैं ॥ ते समुद्र आपणे आपणेमर्यादाकापरित्यागकरिकै
जोकदाचित संपूर्णजगत्केप्रलयकरणेविषेप्रवृत्तहोवैं तौ यापरमात्मादेवतैंविना तिनसमुद्रोंकूं दूसराकौनपुरुष निवारणकरैगा किंतु यहपर
मात्मादेवहीतिनसमुद्रोंकूं आपणीआपणीमर्यादाविषेस्थापनकरिरह्याहै॥और हेजनक श्रीगंगातैंआदिलेकेजनदियोंकेजलहैं तेजल आपणे
मर्यादाकापरित्यागकरिकै जो कदाचित् उलटाहीगमनकरैं तौ तिनजलोंकूं सर्वज्ञपरमात्मातैंविना दूसराकौनपुरुष निवारणकरैगा किंतु
यहपरमात्मादेवही तिनजलोंकूं आपणेआपणेमर्यादाविषेचलावै है ॥ और हेजनक ब्रह्मांडकेभारकरिकैयुक्त जोयहपृथिवी है सोपृथिवी
जलकेऊपरास्थितहै ॥ जोकदाचित् सोपृथिवी आपणेमर्यादाकापरित्यागकरिकै ताजलविषेप्रवेशकरणेकीइच्छाकरै तो तापृथिवीकूं सर्व
ज्ञपरमात्मादेवतैंविना दूसराकौनपुरुष निवारणकरैगा ॥ किंतु यहपरमात्मादेवही तापृथिवीकूं आपणेमर्यादाविषे स्थापनकरिरह्याहै ॥
और हेजनक ॥ आकाशविषेस्थित जेसूर्यचंद्रादिकहैं तेसूर्यादिक आपणेमर्यादाकापरित्यागकरिकै जोकदाचित् नीचेपृथिवीविषे पतन
होवैं तौ तिनसूर्यादिकोंकूं यापरमात्मादेवतैंविना दूसराकौनपुरुष निवारणकरैगा किंतु यहपरमात्मादेवही तिनसूर्यादिकोंकूं आपणीआ
पणीमर्यादाविषे स्थापनकरिरह्याहै ॥ हेजनक याप्रकार सेतुकीन्याईं जोपरमात्मादेव सर्वजगत्कीमर्यादाकूं व्यवस्थापनकरैहै ॥ तापर
मात्मादेवकूं तूं आपणाआत्मारूपकरिकै निश्चयकर ॥ इतनैंकरिकै मायाविशिष्टगुणब्रह्मकेअभेदचिंतनकाप्रकार निरूपणकऱ्या ॥ अब
बहिर्मुखपुरुषोंऊपर अनुग्रहकरिकै दूसरेउपायकानिरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ सर्वजगत्कूं आपणीआपणीमर्यादाविषे स्थापनकरणेहारा
जोमायाविशिष्टसगुणब्रह्महै सोसगुणब्रह्मभी बहिर्मुखपुरुषोंकरिकैजान्याजावैनहीं॥याप्रकारकावचन जोतूं कहै तौ तामनकेअंतर्मुखताका

उपाय जोविद्वान्पुरुषोंनैं कथनकऱ्याहै ॥ ताउपायकूं तूं श्रवणकर ॥ हे जनक जैसे यहबहिर्मुखमन बाह्यविषयोंकीइच्छाकरिकै तिनविष योंविषे प्रवृत्तहोवै है ॥ तैसे अंतरआत्माकीइच्छाकरिकै यहमन अंतरआत्माविषेभीप्रवृत्तहोवै है ॥ यातैं यहजान्याजावै है॥ अंतर अथवा बाहर जोजोमनकीप्रवृत्तिहै ॥ ताप्रवृत्तिका इच्छाहीकारणहै ॥ और यहपदार्थ सर्वदोषतैंरहित सुंदर है ॥ याप्रकार सुंदरतारूपकरिकै जिसजिसपदार्थकूं यहमन जानै है ॥ तिसतिसपदार्थकीप्राप्तिकीइच्छाकरै है ॥ यातैंयहजान्याजावै है पदार्थोंकेसौंदर्यकाज्ञान तिनपदार्थों कीइच्छाकाकारणहै ॥ और यालोकविषे पापीजीवोंकूं सिंहसर्पादिकअप्रियपदार्थोंका जोज्ञानहोवै है ॥ सोपूर्वलेपापकर्मोंकारिकैहोवै है ॥ यातैं पापकर्म अप्रियपदार्थोंकेज्ञानकाकारणहै ॥ और यालोकाविषे पुण्यवान्पुरुषोंकूं धनादिकप्रियपदार्थोंकाजोज्ञानहोवै है ॥ सोपूर्वलेपुण्यकर्मकेप्रभावतैंहोवै है ॥ यातैं पुण्यकर्म प्रियपदार्थोंकेज्ञानविषेकारण है॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ जिसअधिकारीपुरुषकूं आत्मसाक्षात्कारकीइच्छाहोवै ॥ सोअधिकारीपुरुष यज्ञ दान तप अनाशक इत्यादिकपुण्यकर्मोंकूंकरै ॥ तिनयज्ञादिकपुण्यकर्मोंकरिकै ताअधिकारीपुरुषकूं आत्माकेसौंदर्यताकाज्ञानहोवै है ॥ और तासौंदर्यताज्ञानतैंअनंतर ताअधिकारीपुरुषकूं आनंदस्वरूपआत्माकीप्राप्तिकीइच्छाहोवै है ॥ और ताइच्छातैंअनंतर ताअधिकारीपुरुषकामन आनंदस्वरूपआत्माविषेप्रवृत्तहोवै है ॥ याप्रकार तिनयज्ञादिककर्मोंका आत्मज्ञानविषेपरंपराकरिकै उपयोगहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ ज्योतिष्टोमेनयजेतस्वर्गकामः ॥ इत्यादिकवेदवाक्योंविषे यज्ञादिककर्मोंकूं स्वर्गादिकफलकासाधनकह्याहै ॥ यातैं तिनयज्ञादिककर्मोंविषे आत्मज्ञानकीसाधनता किसप्रकारसंभवैगी ॥ समाधान ॥ हेजनक यद्यपि यज्ञादिककर्मोंकूं स्वर्गादिकफलकासाधनकह्याहै ॥ तथापि तेयज्ञादिककर्म आत्मज्ञानकेभीसाधन हैं ॥ काहेतैं जैसे ॥ यावज्जीवंदर्शपूर्णमासाभ्यां यजेत ॥ यावचनतैं दर्शपौर्णमास्यनामायज्ञोंविषे नित्यकर्मरूपता सिद्धहोवै है ॥ और ॥ दर्शपूर्णमासाभ्यांस्वर्गकामोयजेत ॥ यावचनकरिकै उत्पन्नभईजोहमअधिकारीजीवोंकीइच्छा ॥ ताइच्छाकेवशतैं तिनदर्शपौर्णमासनामायज्ञोंविषे काम्यकर्मरूपताभीसंभवै है ॥ तैसे दर्शपूर्णमासाभ्यांस्वर्गकामोयजेत ॥ यावचनतैंउत्पन्नभईजोइच्छा ॥ ताइच्छाकेवशतैं तेयज्ञादिककर्म यद्यपि

॥१३४॥

हमअधिकारीजीवोंके स्वर्गादिकफलकासाधनहैं ॥ तथापि तमेतंवेदानुवचनेनब्राह्मणाविविदिषंतियज्ञेनदानेनतपसानाशकेन ॥अर्थयह ॥ अधिकारीब्राह्मण वेदाध्ययन यज्ञ दान तप अनाशक इत्यादिककर्मोंकरिकै याआनंदस्वरूपआत्माकेजानणेकीइच्छाकरै है ॥ १ ॥ याश्रुतिवचननैं तिनयज्ञादिककर्मोंविषे पूर्वउक्तरीतिसैं आत्मज्ञानकीकारणताभीसिद्धहोवैहै॥ अब याहीश्रुतिकेअर्थकूं विस्तारकरिकै निरूपण करै हैं॥हेजनक॥याश्रुतिभगवतीनैंकथनकरेजेयज्ञ दान तप अनशन यहचारिप्रकारकेकर्म ॥ तिनचारिप्रकारकेकर्मोंके वर्णआश्रमकेभेदकीअपेक्षाकरिकै नानाप्रकारकेस्वरूपहैं ॥ तहाँ प्रथम यज्ञोंकेस्वरूपकीव्यवस्थाकानिरूपणकरैं हैं ॥हेजनक ॥ दर्शपौर्णमासयज्ञतैं आदिलेके जितनेक द्रव्यादिकपदार्थोंकरिकैसाध्ययज्ञ हैं ॥ तिनयज्ञोंविषे गृहस्थआश्रमवालेपुरुषकाही अधिकारहै ॥ ब्रह्मचारी वानप्रस्थ संन्यासी यातीनोंका तिनयज्ञादिककर्मोंविषेअधिकारनहीं॥और विनाहीद्रव्यतैंजिसकीसिद्धिहोवैऐसाजे मंत्रकाजपरूपयज्ञहै तथा समाधिरूपयज्ञहै ॥ तिनयज्ञोंविषे ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यासी याचारिआश्रमोंकाअधिकारहै ॥ परंतु याकेविषेइतनीविशेषताहै॥ब्रह्मचारी वानप्रस्थ संन्यासी इनतीनोंकूंतौ मुख्यअधिकारहै ॥ और गृहस्थकूं गौणअधिकारहै ॥ और धनतैंविनाहीं सिद्धहोणेहारे जेज्ञान अभ्यासरूपयज्ञ हैं ॥ तिनोंविषेभी ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यासी याचारिआश्रमोंकाअधिकारहै॥ परंतु याकेविषेभी इतनीविशेषताहै ॥ ज्ञानअभ्यासरूपयज्ञोंविषे संन्यासीका मुख्यअधिकारहै ॥ और ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ इनतीनोंका गौणअधिकार है ॥ अब दानरूपकर्मकेस्वरूपकीव्यवस्थाकानिरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक पक्कअन्न काचाअन्न सुवर्ण गौ अश्व पृथिवी इसतैंआदिलेके अनेक प्रकारकेपदार्थोंकादान शास्त्रनेविधानकऱ्या है ॥ सोदान संन्यासआश्रमतैंभिन्न ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ इनतीनोंआश्रमवालेपुरुषोंने यथाशक्ति अवश्यकरणा ॥ और संन्यासियोंनैंतौ सर्वप्राणियोंकेताईं अभयरूपदानकरणा ॥ यहां शरीरकरिकै तथावाणीकरिकै तथा मनकरिकै जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज याचारिप्रकारकेजीवोंकूं दुःखकीप्राप्तिनहीं करणी याकानाम अभयदान है ॥ याअभयरूप दानतैंपरे दूसराकोईदान अधिकनहीं ॥ किंतु यहअभयरूपदानहीं सर्वदानोंतैंउत्कृष्टदान है ॥ हेजनक ॥ यहअभयरूपदान केवलसं

न्यासियोंनैंहींकरणा ॥ दूसरेआश्रमवालेपुरुषने नहींकरणा ॥ याप्रकारकेअर्थविषे शास्त्रकातात्पर्य नहीं ॥ किंतु ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र याचारिवर्णोंनैं तथा ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यासीयाचारिआश्रमोंनैंयहअभयरूपदान अवश्यकरणा॥ परंतु संन्यासियोंने याअभयरूपदानकूंहीं विशेषकरिकैकरणा काहेतैं कुटीचक बहूदक हंस परमहंस याचारिप्रकारकेसंन्यासविषे किसीभीसंन्यासआश्रमके धारणकरणेकीइच्छा जभी यह अधिकारीपुरुषकरै है ॥ तभी सो अधिकारीपुरुष मैं सर्वभूतप्राणियोंकेताईं अभयरूपदानदेताहूं याप्रकारकामंत्रउच्चारणकरिकै पूर्वगृहस्थादिकआश्रमकापरित्यागकरिकै संन्यासआश्रमकाग्रहणकरै है ॥ या कारणतैं संन्यासीनै जरायुजादिकचारिप्रकारकेजीवोंकेताईं अभयरूपदान अवश्य देणा ॥ जो पुरुष संन्यास आश्रमकूं धारणकरिकै शरीरमनवाणी करिकै किसीजीवकूं दुःखकी प्राप्तिकरै है ॥ तापुरुषका संन्यासआश्रमही निष्फलहोवै है ॥ यातैं आपणे संन्यासआश्रमकेस फलकरणेवासतै यासंन्यासीनैं सर्वप्राणियोंकेताईं अभयरूपदान अवश्यदेणा॥ और अधिकारीपुरुषोंकेताईं यहसंन्यासी ब्रह्मविद्याका तथा ब्रह्मविद्याकेसाधनोंका दानकरै ॥ याप्रकारकावचन जोशास्त्रोंविषेकथनकऱ्या है सोभी आपणीप्रतिष्ठावासतै तथाधनादिकपदार्थोंकी प्राप्तिवासतै संन्यासी अधिकारीपुरुषोंकेताईं ब्रह्मविद्याकादानकरै याप्रकारकेअभिप्रायकरिकै सोवचन शास्त्रविषेनहींकह्या॥किंतु मेरेशरणकूं प्राप्तहुए जेयहअधिकारीशिष्यहैं ॥ तिनोंकूं अभयब्रह्मकीप्राप्तिहोवै याप्रकारकाउद्देशकरिकै यहसंन्यासी तिनअधिकारीपुरुषोंकेताईं ब्रह्मविद्याकादानदेवै यातैं ब्रह्मविद्याकादानभी अभयदानरूपही है ॥ अब अभयरूपदानविषे सर्वदानोंतैंउत्कृष्टताकानिरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ कुरुक्षेत्रभूमिविषे सूर्यकेग्रहणकालविषे जोपुरुष सुवर्णादिकपदार्थोंकरिकैपूर्ण संपूर्णपृथिवीकूं ब्रह्मवेत्ताब्राह्मणकेताईं श्रद्धापूर्वक दानकरिदेवै॥तिसदानतैंभीस्थावरजंगमप्राणियोंविषेकिसीएकप्राणीकूंभी अभयकीप्राप्तिकरणी अधिकदानहै॥तात्पर्ययह॥स्थावरजंगमप्राणियोंविषे किसीएकप्राणीकेताईभी जोपुरुष अभयदानदेवै है ताअभयदानतैंपरेभी जभी कोईपुण्यकर्म अधिकनहींभया ॥ तभी जो कोई पुरुष सर्वकालविषे तथासर्वदेशविषे स्थावरजंगमरूपसर्वप्राणियोंकेताईं अभयरूपदानदेवै है ॥ ताअभयदानतैंपरे यालोकविषे कोई अ

धिकपुण्यकर्मनहीं है याकेविषेक्याकहणाहै यातैं जोसंन्यासी सर्वप्राणियोंकेताईं अभयरूपदान देकरिकै आत्मसाक्षात्कार कीप्राप्तिवासतै प्रयत्नकरैहै ॥ सोसंन्यासी इसशरीरविषे अथवा अन्यशरीरविषे द्वैतदर्शनजन्यभयकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥किंतु सर्वभयतैंरहितअद्वितीयब्रह्मकूंहीं सोसंन्यासी प्राप्तहोवैहै ॥ यातैंअभयरूपदानतैंपरे दूसराकोईदानहैनहीं ॥ अब अभयरूपदानकीउत्कृष्टताबोधनकरणेवासतै ताअभयरूपदानकालक्षणरूपजोअहिंसाधर्म है ताकेविषे सर्वधर्मोंकाअंतर्भावकरिकै ताअहिंसाकीउत्कृष्टताकानिरूपणकरै हैं ॥ हेजनक ॥ जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज याचारिप्रकारकेजीवोंकूं शरीरकरिकै तथावाणीकरिकै तथामनकरिकै जोदुःखकीप्राप्तिनहीं करणी याकानाम अहिंसाहै ॥ ताअहिंसाविषेही ॥ सत्य दया तप दान याचारिपादोंवालाधर्म सर्वदानिवासकरैहै ॥ अब याहीअर्थकेस्पष्टकरणेवासतै प्रथम हिंसाकेस्वरूपकानिरूपणकरैहैं ॥ हेजनक ॥ यालोकविषे तीनप्रकारकीहिंसाहोवैहै ॥ एकतौ शरीरकृतहिंसाहोवै है ॥ और दूसरी वाणीकृतहिंसाहोवैहै ॥ और तीसरी मनकृतहिंसाहोवैहै ॥ तहाँ शरीरकृतहिंसाकायहस्वरूपहै ॥ जरायुनामाचर्मतैंउत्पन्नहोणेहारे जेमनुष्य गौ अश्वादिकहैं तिनोंकानाम जरायुजहै ॥ और अंडतैंउत्पन्नहोणेहारे जेपक्षीसर्पादिकहैं तिनोंकानाम अंडज है ॥ और स्वेदतैंउत्पन्नहोणेहारे जेमत्कुणयूकादिकहैं ॥ तिनोंकानाम स्वेदजहै ॥ और भूमिकूंभेदनकरिकैउत्पन्नहोणेहारे जेवृक्षादिकहैं तिनोंकानाम उद्भिज्जहै ॥ याचारिप्रकारकेजीवोंकेशरीरविषे जोशस्त्रादिकोंकाप्रहारकरणा ॥तथा मंत्रऔंषधिआदिकोंकरिकै तिनजीवोंकेशरीरविषे रोगादिकोंकीउत्पत्तिकरणी ॥तथा तिनजीवोंके स्त्री धन अन्न पशु आदिकपदार्थोंकाहरणकरणा ॥ इसतैंआदिलेकै अनेकप्रकारकेजेजीवोंकेमरणकेउपायहैं ॥ तिनोंकानाम शरीरकृतहिंसाहै अब वाणीकृतहिंसाकेस्वरूपकानिरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ यालोकविषे चोरीआदिकपापकर्मोंकूंकरणेहारे जेपापात्माजीवहैं ॥ तिनजीवोंके चोरीआदिकपापकर्मोंका राजाकेसमीप तथाराजाकेभृत्योंकेसमीप कथनकरणा ॥ तथा अन्यप्राणियोंकीनिंदाकरणी ॥ तथा गुणवान्पुरुषोंविषे दोषोंकाकथनकरणा ॥ इसतैंआदिलेकै अनेकप्रकारकीवाणीकरिकैजोजीवोंकूंदुःखकीप्राप्तिकरणी याकानाम वाणीकृतहिंसाहै ॥ अब मनकृतहिंसाकेस्वरूपकानिरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ अन्यपुरुषोंविषे

विद्यादिकोंकरिकैउत्पन्नभये जेकीर्तिआदिकगुणहैं ॥ तिनगुणोंकूंनहींसहनकरणा ॥ जिसकूं शास्त्रविषेमत्सरकहैं हैं ॥ तथा अन्यपुरुषोंके जेस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थ हैं ॥ तिनपदार्थोंकीप्राप्तिवासतै नानाप्रकारकेउपायोंकाचिंतनकरणा ॥ तथा अन्यप्राणियोंकेमारणेकेउपायोंका चिंतनकरणा ॥ इसतैंआदिलेकै जोअनेकप्रकारका मनकरिकै जीवोंकेदुःखकेउपायकाचिंतनहै याकानाममनकृतहिंसाहै ॥ और हेजनक यालोकविषे देवदत्तनामापुरुषका जोयज्ञदत्तनामापुरुषशत्रुहै ॥ तायज्ञदत्तनामापुरुषकेप्रति जोपुरुषतादेवदत्तनामापुरुषकेमारणेकीबुद्धि देवैहै ॥ तथा धनादिकपदार्थदेवैहै ॥ याकानाम उपायहिंसाहै सोउपायहिंसा यालोकविषे नानाप्रकारकीहोवैहै॥और इसलोकविषे तथा परलोकविषे अन्यप्राणियोंके तथाआपणे दुःखकेकरणेहारा जोमिथ्यावचनहै ॥ सोमिथ्यावचनभी हिंसाहीहै ॥ और यज्ञदानादिकशुभकर्मोंकेकरणेविषे प्रवृत्तभयाजोकोईपुरुषहै ॥ तापुरुषकूं नानाप्रकारकीकुतर्ककरिकै जोपुरुष ताशुभकर्मतैंनिवृत्तकरै है ॥ तथा जोपुरुष आपभीशुभकर्मोंकूंकरतानहीं याकानाम नास्तिकपणाहै ॥ सोनास्तिकपणाभी हिंसाहीहै और शास्त्रनैंविधानकरेजे संध्यागायत्रीआदिकानित्यनैमित्तिककर्म तिनोंकापरित्यागकरिदेणा ॥ और शास्त्रसे निषेधकरेजेपरस्त्रीगमनादिकपापकर्म तिनोंकूंकरणा यहदोनों करणेहारेपुरुषकूं तथाताकेकुलकूं तथादेशादिककूं अनर्थकीहींप्राप्तिकरणेहारे हैं ॥ यातैं यहदोनोंभी हिंसाहीहै ॥ और जेपुरुष याभारतखंडविषे अधिकारी मनुष्यशरीरकूं प्राप्तहोइकै निद्रातंद्रादिकतामसीवृत्तियोंकरिकै आपणेआयुष्यकूं व्यर्थव्यतीतकरै हैं ॥ तिन पुरुषोंकूं इसलोकविषे तथापरलोकविषे दुःखकीहीप्राप्तिहोवैहै॥ यातैं निद्रातंद्रादिकोंकरिकै जोव्यर्थ आयुष्काव्यतीतकरणाहै सोभीहिंसाहीहै ॥ हेजनक इसतैंआदिलेके हिंसावोंके नानाप्रकारकेस्वरूप शास्त्रविषेकथनकरैहैं ॥ तिनहिंसावोंतैंजोविपरीतहोवै तथा शास्त्रनैंजिसकाविधानकऱ्याहोवै ताकानामधर्म है ॥ सोसंपूर्णधर्म अहिंसाविषे अंतर्भूतहै ॥ याकारणतैंहीं श्रुतिस्मृतिआदिकशास्त्रोंविषे अहिंसाधर्मकूं परमधर्मकह्याहै ॥ जिसधर्मतैंकोईअधिकधर्मनहींहोवै ताकानाम परमधर्म है ॥ यातैं संपूर्णविवेकीपुरुषोंने अहिंसाधर्मकूं अवश्यसंपादनकरणा॥अब अहिंसाधर्मकेफलकानिरूपणकरैहैं॥हेजनक॥यालोकविषे जोपुरुष अहिंसाधर्मकूंसंपादनकरैहै॥तापुरुषकेहस्तविषे धर्म अर्थ ॥१२६॥

काम मोक्ष यहचारिप्रकारकापुरुषार्थ स्थितहोवै है॥यातैं अहिंसाधर्महीं सर्वफलकीप्राप्तिकरणेहारा है॥याकारणतैंही पतंजलिभगवान्नैं अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहायमाः॥यायोगसूत्रविषे अहिंसाधर्मकूं सर्वतैंप्रथम कथनकऱ्याहै॥अब योगसूत्रविषे कथनकरेजे अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य अपरिग्रह यहपंचप्रकारकेयम तिनोंविषे ब्रह्मचर्य सत्य अस्तेय अपरिग्रह याचारोंका अहिंसाविषेअंतर्भाव दिखावैं हैं ॥ हेजनक ॥ स्त्रीकेसंभोगकाअभावरूपजोब्रह्मचर्य है ॥ ताब्रह्मचर्यकाभी अहिंसाविषेहीअंतर्भाव है॥काहेतैं ब्रह्मचर्यतैंरहितकामीपुरुषोंकूं स्त्रीसंभोगकेउत्तरकालविषे परमदुःखकीप्राप्तिहोवै है ॥ काहेतैं यौवनअवस्थाविषे स्त्रीकेसंभोगकरणेतैं स्त्रीविषेगर्भकीउत्पत्तिहोवै है॥ तागर्भकीउत्पत्तिकरिकै गर्भिणीस्त्रीकूं तथा तागर्भकूं मरणकेसमानदुःखकीप्राप्तिहोवै है॥और कदाचित् तास्त्रीकूं तथागर्भकूं मरणरूपदुःखकीभीप्राप्तिहोवै है ॥ यातैं स्त्रीकासंभोगभी हिंसारूपही है ॥किंवा॥ यहकामीपुरुष जभी स्त्रीकासंभोगकरै है॥तभी याकामीपुरुषका सप्तमधातुरूपवीर्य स्त्रीकेउदरविषे जीवोंकेशरीरकीउत्पत्तिकरै है॥ताशरीरकेसंबंधतैं तिनजीवोंकूं अध्यात्म अधिदैव अधिभूत यहतीनप्रकारकेदुःख प्राप्तहोवै हैं ॥ तिसकरिकै तास्त्रीकेसंभोगकरणेहारेकामीपुरुषकूं पापकीप्राप्तिहोवै है॥तापापकरिकै सोकामीपुरुष इसलोकविषे अथवा परलोकविषे दुःखकूंप्राप्तहोवै है ॥ यातैं सोस्त्रीकासंभोग स्त्री बालक पुरुष यातीनोंके दुःखकाकारणहोणेतैं हिंसारूपही है॥ और जोपुरुष ब्रह्मचर्यकर्मकूंधारणकरै है॥तिसपुरुषकूं सोहिंसा प्राप्तहोवैनहीं ॥ याकारणतैं सोब्रह्मचर्य अहिंसारूपकर्मविषेही अंतर्भूतहै॥ और शरीर मन वाणी करिकै जोपुरुष किसीप्राणीकीहिंसानहीं करैहैं ॥सोमहात्मापुरुष असत्यवचनकाभी उच्चारणकरैनहीं॥तथा सोपुरुष अन्यपुरुषोंकेधनादिकपदार्थोंकीचोरीभीकरैनहीं ॥ तथा सोपुरुष धनादिकपदार्थोंकासंग्रहभीकरैनहीं ॥ याकारणतैं सत्य अस्तेय अपरिग्रह यातीनोंकाभी अहिंसाधर्मविषेही अंतर्भाव है॥यातैं अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य अपरिग्रह यापांचप्रकारकेयमोंविषे अहिंसा सत्यादिकसर्वयमोंकीजननी है ॥ ताअहिंसाधर्मकरिकैयुक्तजोपुरुष है ॥ सोपुरुष सर्वपुरुषोंतैंउत्तम है॥याकारणतैं संन्यासीनैं अहिंसारूप अभयदानकूंहीं सर्वदाकरणा ॥ यद्यपि गृहस्थ वानप्रस्थ ब्रह्मचारी यातीनआश्रमोंकूंभी अहिंसारूपअभयदान करणेयोग्य है ॥ तथापि

गृहस्थादिकोंतैं सर्वथाहिंसादिकोंकापरित्याग होइसकैनहीं ॥ और संन्यासियोंकातौ अहिंसारूपअभयदानकेदेणेवासतैंहीं संन्यासआश्रम काग्रहण है ॥ यातैं संन्यासियोंनैं अहिंसारूपअभयदानहीं विशेषकरिकैदेणा ॥ इतनैंकरिकै दानकेस्वरूपकानिरूपणकऱ्या ॥ अब तप केस्वरूपकानिरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र याचारिवर्णोंके तथा ब्रह्मचर्य गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यास याचारिआ श्रमोंके जेजेधर्म शास्त्रनैंविधानकरे हैं ॥ तिनआपणे आपणेधर्मोंकूं श्रद्धापूर्वककरणेकानामतप है ॥ अब अनशनकेस्वरूपकानिरूपण करैं हैं ॥ हेजनक ॥ शास्त्रनैं जिनविषयोंकानिषेधनहींकऱ्या है ॥ तिनविषयोंकेभोगकाभी यथाशक्ति परित्यागकरणा ॥ याकानाम अन शन है ॥ याप्रकारकाअनशनधर्म संन्यासियोंकूँछोडिकै संपूर्णवर्णआश्रमवालेपुरुषोंकूं यथाशक्ति करणेयोग्य है ॥ और संन्यासियोंकूंतौ याप्रकारकाअनशन करणेयोग्य है ॥ इसलोकविषे तथापरलोकविषे विद्यमानजे विषयजन्यसुख हैं ॥ तथा ताविषयजन्यसुखकेसाधन जेस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थ हैं ॥ तिनपदार्थोंके प्राप्तिकीइच्छामात्रभीनहींकरणी ॥ किंतु प्रारब्धकर्मकेयोगतैं जिसप्रकारकाभिक्षाकाअन्न प्राप्तहोवै तथा जिसप्रकारकावस्त्रप्राप्तहोवै ॥ ताअन्नवस्त्रकरिकै संन्यासियोंनैं आपणे शरीरकानिर्वाहकरणा ॥ याप्रकारका अनशन संन्यासियोंकूं अवश्यकरणे योग्य है ॥ हेजनक ॥ याप्रकार श्रुतिभगवतीनैं विधानकरेंजे यज्ञ दान तप अनशन यहचारि प्रकार केपुण्यकर्म ॥ तापुण्यरूप अदृष्टकारण करिकै तथा गुरु शास्त्र अधिकारीशरीर इत्यादिकदृष्टकारणोंकरिकै याअधिकारीपुरुषकूं जभी अद्वितीयआनंदस्वरूपब्रह्मकाज्ञानहोवै है॥तभी ताअद्वितीयब्रह्मकेसाक्षात्कारविषे याअधिकारीपुरुषकी आपहीइच्छाहोवैहै॥ याकहणैतैं यहअर्थसिद्धभया ॥ यज्ञ दान तप अनशन याशुभकर्मोंकेकरणैतैं यापुरुषविषे पुण्यरूपअदृष्टकीउत्पत्तिहोवै है ॥ और तापुण्यरूपअ दृष्टतैं यापुरुषकूं गुरु शास्त्र अधिकारीशरीर शुद्धबुद्धि इत्यादिकदृष्टकारणोंकीप्राप्तिहोवै है ॥ और तागुरुशास्त्रादिक दृष्टकारणोंतैं याअधिकारीपुरुषकूं प्रथम आत्माका परोक्षज्ञानहोवै है ॥ और तिसपरोक्ष ज्ञानतैंअनंतर याअधिकारी पुरुषकूं आत्माकेअपरोक्षज्ञा नकीइच्छाहोवै है ॥ और ताइच्छातैं अनंतर याअधिकारी पुरुषकेचित्तकी आनंदस्वरूपआत्माविषे एकाग्रताहोवै है ॥ याप्रकार परंप

राकरिकै यज्ञ दानादिक पुण्यकर्म आत्मसाक्षात्कारविषे कारण हैं ॥ यातैं गुरुशास्त्रादिरूपदृष्टकारणोंके संपादन करणेवासतै तथा पापरूपप्रतिबंधकीनिवृत्तिकरणेवासतै याअधिकारीपुरुषने यज्ञदानादिकपुण्यकर्मोंकूं अवश्यकरिकैसंपादनकरणा ॥ शंका हेभगवन् ॥ यज्ञ दान तप अनशन याचारिप्रकारकेपुण्यकर्मोंकरिकैही हमअधिकारीजीवोंकूं मोक्षकीप्राप्तिहोवैगी॥आत्मज्ञानकाक्याप्रयोजनहै॥समा धान ॥ हेजनक ॥ आत्मज्ञानतैंविना केवलकर्मोंतैं मोक्षकीप्राप्तिहोवैनहीं॥काहेतैं जभी याअधिकारीपुरुषकाचित्त बाह्यविषयोंकीतरफन हींजावैहै॥ तभी याअधिकारीपुरुषकूं ताएकाग्रचित्तविषे संशयविपर्ययतैंरहित महावाक्यजन्य आत्माकासाक्षात्कारहोवै है॥ताआत्मसा क्षात्कारतैं अनंतर यहअधिकारीपुरुष जीवन्मुक्तिरूपमुनिभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ यज्ञदानादिकपुण्यकर्मोंकरिकै याअधिकारीपुरुषकूं जभी अद्वितीयब्रह्मरूपआत्माकेजाननेकीदृढइच्छाहोवै है॥ तभी सोअधिकारीपुरुष ताअद्वितीयब्रह्मरूपआत्माकूं गुरुकेउपदेशतैं साक्षात्कारकरिकै जीवन्मुक्तिरूपमुनिभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ आत्मज्ञानतैंविना केवलकर्मोंकरिकै यहअधिकारीपुरुष जीव न्मुक्तिकूंप्राप्तहोवैनहीं।अब आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासतै विविदिषासंन्यासकानिरूपणकरैं हैं।हेजनक।संन्यासीपुरुषोंकरिकैजानणेयोग्य तथा वास्तवतैंमनवाणीकाअविषय ऐसाजोआनंदस्वरूपआत्मा है ॥ ताआनंदस्वरूपआत्माकेसाक्षात्कारकीइच्छाकरतेहुए अधिकारीवि रक्तपुरुष यज्ञादिकसर्वकर्मोंकापरित्यागकरिकै संन्यासआश्रमकाग्रहणकरैं हैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् तेविरक्तमहात्मापुरुष यज्ञादिककर्मो कापरित्यागकरिकै संन्यासआश्रमकूं किसवासतैंग्रहणकरैं हैं ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ कर्मोंकेकरणेविषे आसक्तजोकर्मीपुरुषहै ॥ तिसक र्मीपुरुषकी आत्मसाक्षात्कारीविषे निष्ठाहोणी अत्यंतदुर्लभहै॥ यातैं आत्मज्ञानविषे निष्ठाकरणेवासतै याअधिकारीपुरुषनैं कर्मोंकापरि त्याग अवश्यकऱ्याचाहिये ॥शंका॥ हेभगवन् संन्यासआश्रमतैंविनाही सर्वकर्मोंकापरित्यागकरिकै आत्मज्ञानविषेनिष्ठाहोइसकै है॥यातैं संन्यासआश्रमकेग्रहणकरणेकाकछुप्रयोजननहीं ॥समाधान॥ हेजनक ॥ संन्यासआश्रमतैंविना ब्रह्मचर्यआश्रमविषे तथागृहस्थआश्रमविषे तथा वानप्रस्थआश्रमविषे सर्वकर्मोंकात्याग कऱ्याजावैनहीं काहेतैंनिषिद्धकर्म काम्यकर्म नित्यकर्म नैमित्तिककर्म यहचारिप्रकारकाकर्म

शास्त्रविषेकथनकऱ्याहै ॥ तहां ब्रह्महत्यादिकपापकर्मोंकानाम निषिद्धकर्म है॥ और स्वर्गादिकफलकीप्राप्तिवासतै शास्त्रनैंविधानकरेजे ज्यो तिष्टोमादिकयागहैं तिनोंकानाम काम्यकर्म है ॥ और संध्याअग्निहोत्रादिककर्मोंकानाम नित्यकर्म है ॥ और सूर्यग्रहणविषे स्नानश्राद्धादिकोंकानाम नैमित्तिककर्म है तहाँ स्थूलसूक्ष्मशरीरकेअध्यासकरिकैयुक्त जेबहिर्मुखपुरुष हैं ॥ तिनोंकूं निषिद्धकाम्यकर्म भोगकेअनुकूलहै ॥ यातैं तेबहिर्मुखपुरुषतौ निषिद्धकाम्यकर्मोंकाभीत्यागकरिसकैनहीं ॥ और शास्त्रकेविचारकरिकैयुक्तजेब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ यहतीनआश्रमवालेपुरुषहैं ॥ तेपुरुष यद्यपि शास्त्रविचारकेबलतैं निषिद्धकर्म काम्यकर्म यादोनोंप्रकारकेकर्मोंकापरित्यागकरिसकैहैं ॥ तथापि शास्त्रनैंविधानकरेजेनित्यनैमित्तिककर्म तिनकर्मोंकापरित्याग संन्यासआश्रमतैंविनाइतरआश्रमियोंतैं होइसकैनहीं ॥ जोकदाचित् ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ यहतीनोंआश्रमकेग्रहणतौंविनाहीं प्रमादकरिकै अथवा आलस्यकरिकै नित्यनैमित्तिककर्मोंकापरित्यागकरै हैं ॥ तौतिनोंकूं पापकीप्राप्तिहोवै है ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ ब्रह्मचर्य गृहस्थ वानप्रस्थ यातीनआश्रमोंविषेरहिकै जोपुरुष नित्यनैमित्तिककर्मोंकूंकरै हैं ॥ तिसपुरुषकाचित्त अंतरआत्माविषेएकाग्रहोवैनहीं ॥ और तिनआश्रमोंविषेरहिकै जोपुरुष नित्यनैमित्तिककर्मोंकूंनहींकरै है तिसकूंपापकीप्राप्तिहोवै है याप्रकार तिनपुरुषोंकूं दोनोंप्रकारसैं बंधनकीप्राप्तिहोवै है ॥ और जोपुरुष शास्त्रउक्तरीतिसैं संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरिकै नित्यनैमित्तिकादिकसर्वकर्मोंकापरित्यागकरैहै ॥ तिसपुरुषकूं तिनकर्मोंकेपरित्यागतैं पापकीप्राप्तिहोवैनहीं किंतु उलटा तापुरुषकूं कर्मोंकेत्यागतैं परमआनंदकीहीप्राप्तिहोवै है ॥ और जोपुरुष संन्यासआश्रमकेग्रहणतौंविनाहीं नित्यनैमित्तिककर्मोंकापरित्यागकरै है ॥ तिसपुरुषकूं पापकीप्राप्तिहोवै है ॥ तापापकरिकै सोपुरुष अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवै है ॥ तहाँ स्मृति ॥ मोहात्तस्यारित्यागस्तामसःपरिकीर्तितः ॥ अर्थयह ॥ जोपुरुष संन्यासआश्रमकेग्रहणतौंविनाहीं प्रमादरूपमोहतैं तथाआलस्यतैं नित्यनैमित्तिककर्मोंकापरित्यागकरैहै॥ तिसपुरुषका सोकर्मोंकात्याग तामसत्यागहै ॥ तातामसत्यागकरिकै तिसपुरुषकूं किंचित्मात्रभीफलकीप्राप्तिहोवैनहीं उलटा तापुरुषकूं पापकीहीप्राप्तिहोवैहै ॥ १ ॥ अब याहीअर्थकेस्पष्टकरणेवासतं कर्मोंकेअधिकारीका तथा

संन्यासकेअधिकारीका निरूपणकरैं हैं॥ हेजनक॥ स्त्रक् चंदन स्त्री धन पुत्र इत्यादिकविषयोंविषे जिसपुरुषकाचित्त अत्यंतआसक्तहोवै है॥ सोविषयआसक्तरागीपुरुष आत्माकेसाक्षात्कारकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं ताविषयआसक्तरागीपुरुषने नित्यनैमित्तिककर्मोंकूंही अवश्यकरिकैकहणा ॥ और जिसकर्मीपुरुषकाचित्त विषयोंकीप्राप्तिकीइच्छातैंरहितहुआहै ॥ सोपुरुष पुनःकर्मरूपी भारकूंउठावैनहीं ॥ किंतु संन्यासआश्रमकूंधारणकरिकै सोपुरुष सर्वकर्मोंकापरित्यागहीकरै॥ काहेतैं जिसपुरुषकूंस्वर्गादिकफलकेप्राप्तिकीइच्छाहै॥ तापफलइच्छावान्पुरुषकेप्रतिहीं वेदभगवान् यज्ञादिककर्मोंकाविधानकरैहै ॥ और जिसपुरुषकूं स्वर्गादिकफलकेप्राप्तिकी इच्छानहीं है॥ तिसनिष्कामपुरुषकेप्रति वेदभगवान् यज्ञादिककर्मोंकाविधानकरैनहीं ॥ यातैं विषयोंविषेरागवान्पुरुषही कर्मोंकाअधिकारी है ॥ रागतैंरहितनिष्कामपुरुष कर्मोंकाअधिकारीनहीं ॥ किंतु सोनिष्कामपुरुष संन्यासआश्रमकाहीअधिकारीहै॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ जबपर्यंत यापुरुषकाचित्त शुद्धनहींभया तबपर्यंत सोपुरुष नित्यनैमित्तिककर्मोंकूं अवश्यकरिकैकरै ॥ और जभी नित्यनैमित्तिककर्मोंकरिकैयाअधिकारीपुरुषकाचित्तशुद्धहोवै है तभी पुनःकर्मोंकेकरणेकाकछुप्रयोजनहैनहीं ॥ यातैंसो अधिकारीपुरुष सर्वकर्मोंकात्यागरूपसंन्यासआश्रमकूंग्रहणकरिकै निरंतर वेदांतशास्त्रकाहीविचारकरै ॥ यहवार्ताअन्यशास्त्रविषेभीकही है ॥ तहां श्लोक ॥ प्रत्यक्प्रवणतांबुद्धेः कर्मा ण्युत्पाद्यशुद्धितः ॥ कृतार्थन्यस्तमायांति प्रावृडंतेघनाइव ॥ अर्थयह ॥ जैसे वर्षाकालविषे मेघ जलकीवृष्टिरूपप्रयोजनकीसिद्धिकरिकै वर्षाकालकेअंतविषे तेमेघ आपहीलयभावकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ तैसे नित्यनैमित्तिककर्मभी चित्तकीशुद्धिद्वारा बुद्धिकूंआत्मपरायणकरिकै आपहीलयभावकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ १ ॥ शंका ॥हे भगवन्॥ अंतर आत्माकेविचारविषे जिसपुरुषकीबुद्धि तत्परभईहै॥ तिसपुरुषकूं नित्यनैमित्तिककर्मोंकेकरणेकरिकै कौनहानिहोवै है ॥ समाधान ॥ हेजनक ॥ याअधिकारीपुरुषकी आत्माकेविचारविषे तत्परभईजोबुद्धिहै॥ तावुद्धिकूं जैसे स्त्रक् चंदन स्त्री पुत्र इत्यादिकविषय बहिर्मुखकरैं हैं ॥ तैसे नित्यनैमित्तिककर्मभी तावुद्धिकूं बहिर्मुखहीकरैं हैं ॥ यातैं चित्तकीशुद्धिपर्यंतहीं तिनकर्मोंकाउपयोगहै ॥ चित्तकीशुद्धितैंअनंतर तेकर्म आत्मविचारविषेप्रतिबंधकहैं ॥ यातैं तिनकर्मोंकापरित्या

गकरणाहींउचितहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जेपुरुष संन्यासआश्रमकूंधारणकरै हैं ॥ तेपुरुषभी भिक्षाअटनादिककर्मोंकूंकरै हैं॥यातैं जैसे भिक्षाअटनादिककर्मोंकारिकै संन्यासियोंकीबुद्धि बहिर्मुखनहींहोवैहै ॥ तैसे अग्निहोत्रादिकनित्यनैमित्तिककर्मोंकेकरणेकरिकै अस्मदादि कगृहस्थपुरुषोंकीबुद्धिभी बहिर्मुखनहींहोवैगी॥यातैं अग्निहोत्रादिकनित्यनैमित्तिककर्मोंकेपरित्यागकरणेका कछुप्रयोजननहीं॥समाधान हेजनक ॥ अग्निहोत्रादिककर्मोंविषे जिसपुरुषकाचित्त तत्पर है ॥ सोईपुरुष अग्निहोत्रादिककर्मोंकूंकरिसकैहै ॥ चित्तकीतत्परतातैंविना अग्निहोत्रादिककर्म सिद्धहोइसकैनहीं ॥यातैं अग्निहोत्रादिककर्म जैसे बुद्धिकूंबहिर्मुखकरै हैं ॥ तैसे भिक्षाअटनादिककर्म संन्यासीकीबुद्धि कूंबहिर्मुखकरैनहीं ॥ काहेतैं जैसे भोजनकालविषे अन्यपदार्थोंकूंचिंतनकरताहुआभी यहपुरुष ताभोजनविषे चित्तकीतत्परतातैंविनाही आपणेहस्ततैं अन्नकूंउठाइक आपणेमुखविषेपावैहै॥तैसे मनकरिकै आनंदस्वरूपआत्माकूंचिंतनकरताहुआ यहसंन्यासी भिक्षाअटनादि ककर्मोंविषे चित्तकीतत्परतातैंविनाहीं भिक्षाअटनादिककर्मोंकूंकरैहै ॥ यातैं भिक्षाअटनादिककम तासंन्यासीकीबुद्धिकूंबहिर्मुखकरैनहीं किंवा॥अग्निहोत्रादिकनित्यकर्मोंकेनहींकरणेतैं जैसे गृहस्थपुरुषकूं पापकीप्राप्तिहोवैहै॥तैसेभिक्षाअटनादिककर्मोंकेनहींकरणेतैं संन्यासीकूं पापकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ याकारणतैंभी भिक्षाअटनादिकसंन्यासीकेकर्म अग्निहोत्रादिकनित्यकर्मोंत विलक्षणहैं ॥ हेजनक ॥ इसप्रकार अग्निहोत्रादिककर्मोंकूं विक्षेपकाकारणमानिकै पूर्वअधिकारीपुरुष आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासतै विविदिषासंन्यासकूंधारणकरिकैनिरंतर वेदांतशास्त्रकाहीश्रवणकरतेभयेहैं ॥ यातैं इदानींकालकेअधिकारीपुरुषोंकूंभी तिसीप्रकार करणाउचितहै॥इतनैंकरिकै आत्मसाक्षा त्कारकी प्राप्तिवासतै विविदिषासंन्यासकानिरूपणकऱ्या ॥ अब जीवन्मुक्तिसुखकीप्राप्तिवासतै विद्वत्संन्यासकानिरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ पूर्व संन्यासआश्रमकेग्रहणतैं विनाहीं जिनमहात्मापुरुषोंकूं पूर्वलेपुण्यकर्मकेप्रभावतैं गृहस्थआश्रमविषे आत्मसाक्षात्कार भयाहै ॥ अथवा ब्रह्मचर्य वानप्रस्थ आश्रमविषे आत्माकासाक्षात्कारभयाहै ॥ तिनविद्वानपुरुषोंकूं यद्यपि पदार्थोंकेग्रहणत्यागतैं कोई हानिलाभहोवैनहीं ॥ तथापि तेविद्वानपुरुष अग्निहोत्रादिककर्मोंकूं विक्षेपकाकारणमानिकै जीवन्मुक्तिसुखकेवासतै विद्वत्संन्या

सकूंहीं ग्रहणकरतेभये हैं ॥ याकहणतैं यहअर्थसिद्धभया ॥ जिनपुरुषोंनैं अद्वितीयआनंदस्वरूपआत्माकूं करामलककीन्याईं साक्षा त्कारकऱ्याहै ॥ तेविद्वान्पुरुषभी जभी नित्यनैमित्तिककर्मोंकूं विषयोंकीन्याईं विक्षेपकाकारणमानिकै जीवन्मुक्तकेसुखवासतै विद्वत्सं न्यासकाग्रहणकरैं हैं॥तभी आत्मसाक्षात्कारकेप्राप्तिकीइच्छावान् जेमुमुक्षुजनहैं॥तेमुमुक्षुजन कर्मोंकूंविक्षेपकाकारणमानिकै विविदिषा संन्यासकूंग्रहणकरै हैं ॥ याकेविषेक्याआश्चर्य है ॥ हेजनक॥ ऐसेविद्वान्संन्यासियोंतैं किसीलोकोंनैं याप्रकारपूछा॥हेविद्वान्संन्यासियो ॥ यालोकविषे सुखकाकारणजोपुत्रादिकप्रजाहै ताकाकारणजोस्त्री हैं ॥ तास्त्रीकासंग्रह तुमविद्वानोंनैं किसवासतैंनहींकऱ्या ॥ हेजनक ॥ याप्रकार लोकोंकरिकैपूछेहुए तेविद्वान्पुरुष तिनलोकोंकेप्रति याप्रकारकेवचनकहतेभये ॥ आत्मास्वरूपनित्यसुखतैंअधिक कोईलोक विषेसुखहैनहीं ॥ ऐसाआत्मास्वरूपनित्यसुख हमविद्वानोंकूं अपरोक्षरूपकरिकैप्राप्तभयाहै ॥ यातैं पुत्रादिकविषयजन्यअनित्यसुखकी इच्छा हमारेकूंहै नहीं॥हेलोको॥इसलोकविषे अथवा परलोकविषे पुत्रादिकप्रजाकरिकै जोसुखउत्पन्नहोवैहै ताजन्यसुखकाही परंपरासंबंध करिकै स्त्रीकासंग्रहकारण है ॥ ताजन्यसुखकी हमारेकूंइच्छा है नहीं॥किंतु हमविद्वान्तौ आपहीनित्यसुखरूपहैं॥ यातैं पुत्रादिकप्रजाक करिकै हमविद्वान्पुरुष किसप्रयोजनकीसिद्धिकरैंगे॥शंका॥हेभगवन्॥अपुत्रस्यगतिर्नास्ति स्वर्गनैवचनैवच॥अर्थयह पुत्ररहितपुरुषकीगतिहो वेनहीं ॥ तथापुत्ररहितपुरुषकूं स्वर्गकीभीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ १ ॥ याशास्त्रविषे पुत्रादिकप्रजाकूंहीं पिताकेमोक्षका तथास्वर्गका कारणक ह्याहै ॥ सो असंगतहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेलोको यहवचन विषयआसक्तरागीपुरुषोंकेअभिप्रायकूंकथनकरै है॥ यातैं यहवचन अनु वादरूपअर्थवादहै ॥ यातैं तावचनकरिकै पुत्रादिकप्रजाविषे मोक्षकीकारणतासिद्धहोवैनहीं ॥ जोकदाचित् पुत्रादिकप्रजाकरिकैपिताका मोक्षहोताहोवै ॥ तौ सूकरादिकपशुवोंकूं मनुष्योंतैंभी बहुत पुत्रादिकप्रजाहोवै हैं॥यात तिनसूकरादिकोंकाभी मोक्षहोणाचाहिये॥यातैं पुत्रादिकप्रजाकरिकै पिताकूं मोक्षकीप्राप्तिहोवैनहीं॥ उलटा तिनपुत्रादिकप्रजाके पालनपोषणकरणेवासतै सोपिता अनेकप्रकारकेपापक र्मोंकूंकरै है॥तापापकर्मोंकरिकै सोपिता नरककूंहीप्राप्तहोवै है॥और हेलोको॥जिस निरतिशयब्रह्मानंदरूपसमुद्रकेलेशमात्रकूंग्रहणकरिकै

ब्रह्मादिकलोकभी आनंदकूंप्राप्तहोरहे हैं ॥ सोब्रह्मानंद हमविद्वान्पुरुषोंकूं आपणेआत्मातैंअभिन्नहुआवतैं है॥यातैं हमविद्वान्पुरुषोंकूं पु
त्रादिकविषयजन्यक्षुद्रसुखकीइच्छाहोवैनहीं ॥ हेजनक ॥ तिनलोकोंकेप्रति याप्रकारकेवचनोंकूंकहतेहुए तेविद्वान्पुरुष संन्यासआश्रमकूं
ग्रहणकारिकै केवलभिक्षावृत्तिकारिकै शरीरकानिर्वाहकरतेभये ॥ कैसे हैं तेविद्वान्पुरुष ॥ कोईविद्वान्पुरुषतौ पूर्वगृहस्थआश्रमकूंकरिकै
पश्चात् संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरतेभये॥ और कोईकविद्वान्पुरुषतौ गृहस्थआश्रमकेग्रहणतैंविनाहीं ब्रह्मचर्य आश्रमतैं संन्यासआश्रमकूंग्रह
णकरतेभये॥ और लोकएषणा पुत्रएषणा वित्तएषणा यातीनप्रकारकेएषणावोंकापरित्यागकरतेभये॥ अब यातीनोंएषणावोंकूं एकरूपमा
निकै दोप्रकारकीएषणाका निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ यालोकविषे जैसे गौसुवर्णादिरूपवित्त यापुरुषकेसुखकासाधनहै ॥ तैसे पुत्रभी
पिताकेसुखकेसाधनहैं ॥ यातैं पुत्रएषणा वित्तएषणातैंभिन्ननहीं ॥ किंतु सोपुत्रएषणा वित्तएषणारूपहै और जैसे पशुसुवर्णादिरूप वित्त
यापुरुषकेसुखकासाधनहै ॥ तैसे स्वर्गादिकलोकभी यापुरुषकेसुखकासाधानहैं ॥ यातैं सोवित्तएषणा लोकएषणातैंभिन्ननहीं ॥ किंतु सो
वित्तएषणा लोकएषणारूपहै॥यातैं यासंसारविषे दोप्रकारकीएषणाहीसिद्धहोवै है ॥एकतौ सुखरूपफलकीएषणा और दूसरीतासुखरूपफ
लकेसाधनोंकीएषणा॥ और जिनविद्वान्पुरुषोंकूं आत्मरूपनित्यसुखकीप्राप्तिभई है॥ तेविद्वान्पुरुष तादोनोंप्रकारकीएषणाका परित्या
गकरैं हैं॥केवलआत्मारूपनित्यसुखकरिकै तेविद्वान् तृप्तरहैं हैं अब संन्यासआश्रमकरिकै प्राप्तहोणेयोग्यजोआत्माहै ताकेस्वरूपकानिरू
पणकरैं हैं॥हेजनक॥पूर्वग्रंथविषे जोपरमात्मादेव स्वयंज्योतिरूपकरिकै तथाआनंदरूपकरिकै हमनैं तुमारेप्रतिकथनकऱ्याथा ॥ तिसी
परमात्मादेवकूं यहविद्वान्पुरुष आपणाआत्मारूपकरिकै साक्षात्कारकरैं हैं॥और इसीपरमात्मादेवकास्वरूप पूर्व हमनैं शाकल्यब्राह्मणसे
पूछाथा ॥ कैसाहैसोपरमात्मादेव मूर्तअमूर्त्तरूप तथाभावअभावरूप जितनाकजगत्है॥तिससंपूर्णजगत्तैं सोपरमात्मादेव रहितहै॥और
यहपरमात्मादेव स्वयंज्योतिरूप है ॥ याकारणतैं वाकूआदिकइंद्रियोंकरिकै तथा अग्निसूर्यादिकबाह्यप्रकाशोंकरिकै यहआत्मादेव ग्रहण
कऱ्याजावैनहीं॥हेजनक॥यालोकविषे पदार्थोंकाप्रकाशरूपजोग्रहणहै सोपदार्थोंकाग्रहण कर्त्ता करण कर्म फल संबंध यापांचोंकेभेदकी
अपेक्षाकरिकैहीहोवैहै ॥ तिनकर्त्तादिकोंकेभेदतैंविना सोपदार्थोंकाग्रहणसिद्धहोवैनहीं ॥ जैसे घटादिकपदार्थोंकूं यहपुरुष चक्षुइंद्रिय

करिकैग्रहणकरै है॥ यहां पुरुषतौकर्त्ता है ॥ और चक्षुइंद्रिय करणहै ॥ और घट कर्म है॥और घटनिष्ठज्ञातता फलहै ॥और चक्षुकाघटके
साथसंयोगसंबंध है॥यापाँचोंकेभेदकीअपेक्षाकरिकैही घटादिकपदार्थोंकाग्रहणहोवै है॥तिनोंकेभेदतैंविना किसीपदार्थकाग्रहणहोवैनहीं ॥
और यहआत्मादेव सजातीयभेद विजातीयभेद स्वगतभेद यातीनप्रकारकेभेदतैंरहित है ॥ यातैं याआनंदस्वरूपआत्माकूं वाकूआ
दिकइंद्रिय ग्रहणकरिसकैनहीं ॥ तथा अग्निसूर्यादिक प्रकाशकरिसकैनहीं ॥ याकारणतैं यास्वयंज्योतिआत्माकूं श्रुतिभगवती अगृह्य
यानामकरिककथनकरै है ॥ और हे जनक ॥ यहआनंदस्वरूपआत्मा सर्वभेदतैंरहित है ॥ यातैं जैसे वस्त्रादिकपदार्थ कालपाइकै
परिणामरूपशीर्णभावकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ तैसे यहपरमात्मादेव परिणामरूपशीर्णभावकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापर
मात्मादेवकूं अशीर्य यानामाकारिकैकथनकरै है॥और हेजनक॥यहआनंदस्वरूपआत्मा सर्वभेदतैंरहितहै॥याकारणतैं अंतरबाहर जितनेक
पदार्थ हैं ॥ तिनोंकेसाथ आत्माकासंबंधहैनहा ॥ काहेतैं जोपदार्थ भेदवालाहोवै है॥सोईपदार्थ संयोगादिरूपसंबंधकूंप्राप्तहोवै है॥ तथा
नाशकूंप्राप्तहोवै है॥और यहआनंदस्वरूपआत्माको सर्वभेदतैंरहितहै॥याकारणतैं यहआत्मादेव संबंधरूपसंगकूं तथासंबंधकूं तथानाशकूं
तथादुःखकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ हेजनक ॥ ऐसेसर्वसंगतैंरहितअसंगआत्माकूं संगवान्रागीपुरुष जानिसकैनहीं ॥ किंतु पूर्वउक्ततीनएषणातैं
रहित तथा केवलभिक्षावृत्तिकरिकै शरीरकानिर्वाहकरणेहारे जेमहात्मासंन्यासी हैं॥तेविरक्तसंन्यासीही तापरमात्मादेवकूं साक्षात्कारकरै
हैं ॥ अब आत्मज्ञानकेफलकानिरूपणकरैं हैं ॥हेजनक॥ जिनविद्वान्पुरुषोंनैं तीनएषणावोंकापरित्यागकरिकै याआनंदस्वरूपआत्माकूं
साक्षात्कारकऱ्याहै ॥ तिनविद्वान्पुरुषोंकूं यहपुण्यपापरूपकर्म अज्ञानीपुरुषकीन्याईं तपायमानकरैनहीं ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकै
निरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ यहपुण्यपापरूपकर्म न करणेहारेअज्ञानीपुरुषकूं तथाकरणेहारेअज्ञानीपुरुषकूं सर्वदा दुःखकीहींप्राप्तिकरै
है ॥ काहेतैं यहपुरुष जभी पापकर्मकूंकरै है ॥ तभी तापापकर्मकेआरंभकालविषे याज्ञानीपुरुषकूं परमक्लेशकीप्राप्तिहोवै है यातैं पाप
कर्म आरंभकालविषेभी कर्त्तापुरुषकेदुःखकाही हेतुहै ॥ और जभी सोपापकर्म ताकर्त्तापुरुषकूं फलकीप्राप्तिकरै है ॥ तभीभी सोकर्त्तापु

रुष परमदुःखकूंप्राप्तहोव है ॥ यातैं सोपापकर्म फलकीप्राप्तिकालविषेभी ताकर्त्तापुरुषकेदुःखकाही हेतुहोवै है ॥ इसप्रकार यहपुरुष जभी पुण्यकर्मकूंकरै है॥ तभी तापुण्यकर्मकेआरंभकालविषे सोकर्त्तापुरुष परमक्लेशकूंप्राप्तहोवै है॥यातैं सोपुण्यकर्म आपणेआरंभकालविषेभी ताकर्त्तापुरुषकेदुःखकाहीहेतुहोवै है॥ और सोपुण्यकर्म जभी ताकर्त्तापुरुषकूं नाशवान्सुखरूपफलकीप्राप्तिकरै है॥तभीभी सोकर्त्तापुरुष परमदुःखकूंप्राप्तहोवै है॥यातैं सोपुण्यकर्म फलकीप्राप्तिकालविषेभी ताकर्त्तापुरुषक दुःखकाहीहेतुहोवै है ॥ इतनैंकरिकै पुण्यपापकर्मोंविषे अज्ञानीकर्त्तापुरुषके तापकीकारणतानिरूपणकरी॥ अब तिनपुण्यपापकर्मोंविषे अज्ञानीअकर्त्तापुरुषके तापकीकारणतानिरूपणकरै हैं॥ हेजनक॥जेअज्ञानीपुरुष पापकर्मोंकूं नहींकरैं हैं ॥ तेअज्ञानीपुरुष दूसरेपापीजीवोंकूंदेखिकै आपणेकूंतिनोंतैंउत्कृष्टमानिकैगर्वकरै है॥यातैं सोपापकर्म गर्वकीउत्पत्तिद्वारा तिनअज्ञानीअकर्त्तापुरुषोंके तापकाहीकारणहोवै है॥इसीप्रकार जेअज्ञानीपुरुष पुण्यकर्मकूंनहींकरैं हैं॥तेद यावानअज्ञानीपुरुषनिर्धनलोकोंकूंदुःखीदेखिकरिकै तिनोंऊपर कृपाकारकै परमदुःखकूंप्राप्तहोवैं हैं॥यातैं सोपुण्यकर्म कृपाकीउत्पत्तिद्वारा अकर्त्ताअज्ञानीपुरुषोंके तापकाहीकारणहोवै है ॥ यहवार्ता अन्यशास्त्रविषेभीकही है ॥ तहां श्लोक ॥ ईर्षुर्घृणीत्वसंतुष्टः क्रोधनोनित्यशंकितः॥परभाग्योपजीवी च षडेतेनित्यदुःखिनः॥अर्थयह॥ईर्षाकरणेहारापुरुष तथा दयावान्पुरुष तथा संतोषतैंरहितपुरुष तथा क्रोधवान् पुरुष तथा संशयवान्पुरुष तथा परधनतैंजीवनकरणेहारापुरुष यहषट्प्रकारकेपुरुष यालोकविषे सर्वदादुःखीहीरहैं हैं॥१॥किंवा॥ जोपुरुष पुण्यकर्मकूंनहींकरै है॥तिसपुरुषकूं सुखकीप्राप्तिहोवै नहीं॥याकारणतैंभी सोपुण्यकर्म अकर्त्ताअज्ञानीपुरुषोंके तापकाहीकारणहै॥ किंवा इसलोकविषे तथापरलोकविषे जिसपुण्यकर्मनैं जीवोंकूं महान्सुखकीप्राप्तिकरी है ॥ तिसपुण्यकर्मकूं जिसअज्ञानीपुरुषनैंनहींकऱ्या ॥ सोअज्ञानीपुरुष तिनजीवोंकेमहान्सुखकूंदेखिकरिकै ईर्ष्याकरै है ॥ याकारणतैंभी सोपुण्यकर्म ईर्ष्याकीउत्पत्तिद्वारा ताअकर्त्ताअज्ञानी पुरुषोंके तापकाहीकारणहोवै है ॥ किंवा मरणकालविषे यहअज्ञानीपुरुष आपणेमनविषे याप्रकारकासंकल्पकरिकै तपायमान होवैहै ॥ याभारतखंडविषे अधिकारीमनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोइकैभी मैंदुर्बुद्धिजीव जन्मतैंलेके मरणपर्यंत केवलपापकर्मोंकूंहीकरताभया ॥ और

सुखकेदेणेहारेजेपुण्यकर्मथे तिनपुण्पकर्मोंकूं मैं पापात्माजीव नहींकरताभया ॥ याप्रकारकासंकल्पकरिकै यहअज्ञानीजीव परमदुःखकूं प्राप्तहोवै है ॥ यातैं मरणकालविषेभी तेपुण्यपापरूपकर्म ताअज्ञानीजीवोंके तापकाहीकारण हैं ॥हेजनक॥इसप्रकार तेपुण्यपापरूपकर्म तिनकर्मोंकेकरणेहारेअज्ञानीजीवोंकूं तथा तिनकर्मोंकेनहींकरणेहारेअज्ञानीजीवोंकूं सर्वदा तापकीहीप्राप्तिकरैं हैं ॥ और जिसपुरुषकूं गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं आत्माकासाक्षात्कार प्राप्तभया है ॥ तिसविद्वान्पुरुषकूं तेपुण्यपापकर्म करेहुए अथवा नहींकरेहुए तपायमानकरै नहीं ॥ किंतु जैसे हनुमान् समुद्रकूंतरिगयाथा ॥ तैसे सो विद्वान्पुरुष पुण्य पापकर्मरूप समुद्रकूं विनाहीं यत्नतैं तरिजावै है ॥ यहाँ आत्मज्ञानके प्रभावतैं विद्वान्पुरुषविषे पुण्यपापकर्मोंका जो अस्पर्श है ॥ सोईहीं पुण्य पापकर्मोंका तरणा है ॥ हेजनक ॥ विद्वान्पुरुषकूंपुण्यपापकर्म तपायमान नहींकरै हैं याकेविषे यह कारण है ॥ या प्रकारक संकल्पोंकरिकै युक्त जे अज्ञानीपुरुष हैं ॥ तिनअज्ञानीपुरुषोंकूंहीं तेपुण्यपापरूपकर्म तपायमानकरैं हैं ॥ तेसंकल्पयह हैं ॥ इसज्योतिष्टोमनामायज्ञकरिकै मेरेकूं स्वर्गलोककी प्राप्तिहोवैगी ॥ और इसब्रह्महत्यादिकपापकर्मोंकरिकै हमारेकूंनरकादिकोंकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और इसपुत्रइष्टिआदिककर्मोंकरिकै हमारेकूं इसीजन्मविषे पुत्रादिकपदार्थोंकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और इसअश्वमेधादिकयज्ञोंकाफल हमारेकूं इसजन्मविषेनहींहोवैगा ॥ किंतु दूसरेजन्मविषेहोवैगा ॥ और ब्राह्मणोंकेधनादिकपदार्थोंकूंहरणकरिकै आपणेकुटुंबकापालनकरणेहाराजोमैं हूं॥तिसमेरेकूं शीघ्रही कुष्ठादिकरोगोंकीप्राप्तिहोवैगी ॥ तथा यालोकविषेहमारी अपकीर्तिहोवैगी ॥ हेजनक ॥ इसतैंआदिलेके नानाप्रकारकेसंकल्पोंकूंकरणेहारे जे अज्ञानीजीव हैं ॥ तिनअज्ञानीजीवोंकूंहीं तेपुण्यपापरूपकर्म तापकीप्राप्तिकरैं हैं ॥ और विद्वान्ज्ञानीपुरुषविषे तेनानाप्रकारकेसंकल्प हैं नहीं॥यातैं ताविद्वान्पुरुषकूं तेपुण्यपापरूपकर्म तापकीप्राप्तिकरैंनहीं इसप्रकार सोविद्वान्पुरुष पुण्यपापरूपकर्मोंकूं तरिजावै है॥हेजनक याप्रकारकेविद्वान्पुरुषकूं वेदकेमंत्र याप्रकार कथनकरै हैं ॥ मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकाअभेदज्ञान जिसपुरुषकूं प्राप्तभया है ॥ ताविद्वान् पुरुषकी जोस्वरूपभूतमहिमाहै॥सोमहिमा तीनकालविषे अन्यथाभावकूंप्राप्तहोवैनहीं॥यातैं सोविद्वान्पुरुषकीमहिमा नित्यहै॥हेजनक॥

जेसे यालोकविषे अज्ञानीपुरुष पुण्यकर्मकरिकै वृद्धिकूं प्राप्तहोवैं हैं ॥ और पापकर्मकरिकै तेअज्ञानीजीव लघुताकूं प्राप्तहोवैं हैं ॥ तैसे सोविद्वान्पुरुष पुण्यकर्मकरिकै वृद्धिकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ तथा पापकर्मोंकरिकैलघुताकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ याप्रकारतैं तविद्वान्पुरुषकी महिमा अत्यंतअद्भुतहै ॥हेजनक॥ जैसे पूर्वलेअधिकारीपुरुष अद्वितीयआत्माकेसाक्षात्कारकरिकै पुण्यपापतैंरहिततारूपमहिमाकूं प्राप्त भये हैं॥तैसे इदानींकालविषेभी जेअधिकारीपुरुष अस्ति भाति प्रियरूप करिकै अद्वितीयआत्माकूं साक्षात्कारकरैं हैं॥तेविद्वान्पुरुषभी तामहिमाकूंप्राप्तहोवैं हैं ॥ आत्मसाक्षात्कारतैंविना ऐसीमहिमाकीप्राप्तिहोणी अत्यंतदुर्लभहै ॥ यातैं याअधिकारीपुरुषोंनैं आत्मसाक्षा त्कारकूं अवश्यसंपादनकरणा॥इतनैंकरिकै आत्मसाक्षात्कारकेफलकानिरूपणकऱ्या॥अब ताआत्मसाक्षात्कारके शमदमादिकसाधनों कानिरूपणकरैं हैं ॥ हेजनक ॥ इसकालतैंपूर्वकालविषे जेअधिकारीपुरुषहुए हैं॥तेअधिकारीपुरुष आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासतै शम दमादिकसाधनोंकूंसंपादनकरिकै संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरतेभये हैं ॥यातैं इदानींकालकेअधिकारीपुरुषोंनैंभी शमदमादिकसाधनोंकूंसंपा दनकरिकै आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासतै संन्यासआश्रमकाहीग्रहणकरणा ॥हेजनक॥ बालककीन्याईं यामनकूंरागद्वेषादिकविकारोंतैंर हितकरणायाकानाम शमहै॥औरवाक्आदिकइंद्रियोंकूं आपणेआपणेविषयोंतैंरहितकरणा याकानाम दमहै॥औरप्रारब्धकर्मकेयोगतैं जो पदार्थप्राप्तहोवै॥तापदार्थकरिकै आपणेशरीरकानिर्वाहकरणा॥तथा प्रियवस्तुकीप्राप्तिकरिकै हर्षकूंनहींप्राप्तहोणा ॥ और अप्रियवस्तुकी प्राप्तिकरिकै द्वेषकूं नहींप्राप्तहोणा ॥ याप्रकारकेसंतोषकानाम उपरतिहै ॥ अब क्षमारूपतितिक्षाकेस्वरूपकानिरूपणकरैं हैं ॥ यह अ धिकारीपुरुष याप्रकारकाविचारकरिकै क्षमारूपतितिक्षाकूंकरै॥सोविचारयह है॥शरीरकरिकै तथा मनवाणीकरिकै दुष्टपुरुषोंनैंकरीजोपी डाहै ॥ सोपीडा हमारेवास्तवस्वरूपविषे तीनकालनहीं हैं ॥ किंतु हमारेशरीरअंतःकरणइंद्रियादिकोंविषे सोपीडा है ॥ और मैं तिनश रीरादिकोंतैंसर्वदाअसंगहूं ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै सोअधिकारीपुरुष तिनदुष्टपुरुषोंऊपर क्रोधनहींकरै ॥ और सोअधिकारीपुरुष आपणीनिंदाकूंश्रवणकरिकै तिननिंदकपुरुषोंऊपर याप्रकारकाविचारकरिकै क्षमाकरै ॥ सोविचारयह है ॥ हमारीनिंदाकूंकरणेहारे जे

यहनिंदकपुरुषहैं ॥ तेनिंदकपुरुष हमारेशत्रुनहीं हैं ॥ किंतु तेनिंदकपुरुष हमारे परममित्रहैं ॥ काहेतैं यालोकविषे जोपुरुष जिसपुरुषऊ पर उपकारकरै है॥ सोउपकारकरणेहारापुरुष तिसपुरुषकामित्रहोवैहै॥ सोयाप्रकारकामित्रकालक्षण इननिंदकपुरुषोंविषेभीघटैहै॥काहेतैं दुःखरूपफलकूंदेणेहारे जेहमारेपापकर्म हैं ॥ तिनपापकर्मोंकूं यहनिंदकपुरुष आपणेविषेलेजावैहैं ॥ इसतैंपरे कोईदूसराउपकार है नहीं ॥ ऐसेपरमउपकारकूंकरणेहारे यहनिंदकपुरुष हमारे परममित्रहैं ॥ किंवा ॥ यानिंदकपुरुषोंकूं यद्यपि लोक शत्रुकहैं हैं ॥ तथापि यहनिंदक पुरुष हमारेतौ मित्रहीहैं॥ काहेतैं हमारेदोषोंकाचिंतनकरिकै यहनिंदकपुरुष आपणेमनकूं तथावाणीकूंपरिश्रमकीप्राप्तिकरैं हैं॥तथा हमा रेपापकर्मोंकूं आपणेविषेग्रहणकरिकै यहनिंदकपुरुष तिनपापकर्मोंकेदुःखरूपफलकूं आपभोगैं हैं ॥ यातैं जैसे समुद्रकेमथनकरणेतैं उत्प न्नभया जोहलाहलविष ॥ ताहलाहलविषकरिकै सर्वजीवोंकूंदग्धहुआदेखिकै कृपाकरिकैयुक्तहुआश्रीमहादेव ताहलाहलविषकूं आपणेकं ठविषे धारणकरताभया ॥ तैसे हमारेकूंदुःखकीप्राप्तिकरणेहारे जेहमारेपापकर्म हैं ॥ तिनपापकर्मोंकूं यहनिंदकपुरुष कृपाकरिकै आपणे विषेधारणकरैं हैं ॥ परंतु लोकविषे तथा शास्त्रविषे श्रीमहादेवकूं सज्जनकहैं हैं ॥ और यानिंदकपुरुषोंकूं दुर्जनकहैं हैं ॥ यहवार्ताश्रवणकरिकै हमारेकूं बहुतआश्चर्यहोवैहै ॥ हेजनक ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै तेअधिकारीपुरुष तिननिंदकपुरुषोंऊपरभी क्षमाहीकरैं हैं ॥ और हेजनक ॥ तिनअधिकारीपुरुषोंकूं जभी कोईदुष्टपुरुष हननकरै है ॥ तभी तेअधिकारीपुरुष याप्रकारकाविचारक रिकै तिनदुष्टपुरुषोंऊपर क्षमाकरैं हैं ॥ यहपुरुष किसकारणतैं हमाराहननकरै है॥ हमारेदुःकरूपअनिष्टकेचिंतनकरणेकरिकै इसपुरुषकूं चांडालयोनिकीप्राप्तिमतहोवै ॥ याप्रकारकीइच्छा मैंकरताहूं ॥ यहवार्ता मनुष्यभगवान्नेभी कहीहै तहांश्लोक ॥ परद्रव्याण्यऽभिध्या यंस्तथाऽनिष्टानिचिंतयन् ॥ वितथाऽभिनिवेशीचजायतेऽत्यासुयोनिषु॥अर्थयह ॥ जोपुरुष परायेधनस्त्रीआदिकपदार्थोंकेप्राप्तिकीइच्छा करैहै ॥ तथा जोपुरुष अन्यपुरुषकेदुःखरूपअनिष्टकाचिंतनकरैहै ॥ तथा जोपुरुष वेदविरुद्धपाखंडमतोंविषे दुराग्रहकरै है ॥ सोपुरुष मरिकै चांडालयोनियोंविषेउत्पन्नहोवै है ॥ १ ॥ यातैं हमारेअनिष्टकेचिंतनकरणेकरिकै इनपुरुषोंकूं चांडालशरीरकीप्राप्तिमतहोवै ॥

किंवा ॥ जैसे आपणेदोनोंहस्तोंका तथादोनोंपादोंका आपहीताडनकरणा अनुचितहै ॥ तैसे मेरेशरीरकाताडनकरणाभीइनपुरुषोंकूं उचितनहीं ॥ काहेतें हमारेशरीरविषे तथा इनपुरुषोंकेशरीरविषे तथा अन्यप्राणियोंकेशरीरविषे आत्माएकही है यातें आपणेशरीरकेता डनकरिकै जैसे हमारेकूंदुःखहोवेहै ॥ तैसे हमारेशरीरकेताडनकरिकै इनजीवोंकूंदुःखकीप्राप्तिनहींहोवै ॥ याप्रकारकीइच्छा हम करें हैं ॥ किंवा ॥ यहताडनाकरणहारेपुरुष हमारेकूं दुःखकीप्राप्तिनहीं करते ॥ किंतु जेहमनें पूर्व पापकर्मकरेहैं ॥ तेपापकर्महीं इदानींकालविषे हमारेकूं दुःखकीप्राप्तिकरेहैं ॥ यातें इनपुरुषोंकाकोईअपराधनहीं ॥ किंवा ॥ जैसे यहप्रसिद्धशरीर मैं आत्माकाहै ॥ तैसेयहसंपूर्णशरीर मैंआत्माकहै ॥ याप्रकार गुरुशास्त्रकेउपदेशतें हमनें अंतर्यामीआत्माकानिश्चयकऱ्याहै ॥ यातें इसताडनकालविषे जोदुःखहमारेशरीर विषेहोवेहै ॥ सोदुःख इनताडनाकरणेहारेपुरुषोंकेशरीरविषे मतहाव ॥ किंतु यहसंपूर्णदेहधारीजीव सर्वदा सुखीहोवैं ॥ तथा सर्वरोगतें रहितहोवैं॥और मेरेताडनकरिकै किसीजीवकूंपापकीप्राप्तिनहींहोवै॥हेजनक ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै तेअधिकारीपुरुष तिनताडनाक रणेहारेपुरुषोंऊपरभी क्षमाहींकरैं हैं ॥ याकानाम तितिक्षाहै ॥अब समाधान श्रद्धा यादोनोंकानिरूपणकरै हैं॥हेजनक॥आत्माकेसाक्षा त्कारवासतें जोचित्तकीसावधानताहै ॥ ताकानाम समाधानहै ॥ और गुरुशास्त्रकेउपदेशविषे जोविश्वासहै ताकानाम श्रद्धाहै॥इसप्रकार शम दम उपरति तितिक्षा समाधान श्रद्धा याषट्साधनोंकरिकैयुक्तहुआ यहअधिकारीपुरुष गुरुमुखतें वेदांतशास्त्रकाश्रवणकरै॥अर्थताश्र वणतेंअनंतर यहअधिकारीपुरुष श्रुतिअनुकूल नानाप्रकारकीयुक्तियोंकरिकै ताश्रवणकरे अर्थकामननकरै॥ तिसमननतेंअनंतर यहअधि कारीपुरुष अंतरआत्माविषे चित्तकेवृत्तियोंकानिरंतरप्रवाहरूप निदिध्यासनकूंकरै ॥ तिसतेंअनंतर यहअधिकारीपुरुष गुरुउपदिष्ट महावा क्यरूपप्रमाणकरिकैसहकृतजोशुद्धमनहै ताशुद्धमनकरिकैस्वयंज्योतिआनंदस्वरूप आत्माकूं साक्षात्कारकरै ॥शंका॥हेभगवन् ताआत्म साक्षात्कारकरिकै याअधिकारीपुरुषकूं किसफलकीप्राप्तिहोवैहै॥समाधान ॥ हेजनक मैंअद्वितीयब्रह्मरूपहूं याप्रकारकाअभेदज्ञानजिसअ धिकारीपुरुषकूं प्राप्तभयाहै ॥ तिसअधिकारीपुरुषकी अविद्यारूपमायानिवृत्तहोइजावैहै ॥ कैसीहैसामाया ॥ आवरणशक्तिकरिकै तथा विक्षेपशक्तिकरिकै युक्तहै ॥ऐसीअविद्यारूपमाया आत्मसाक्षात्कारकरिकै एकवार नाशकूंप्राप्तहुई पुनःउत्पन्नहोवैनहीं ॥ और याविभुआ

त्माविषे जोपरिच्छिन्नपणाप्रतीतहोताथा॥सो अविद्यारूपमायाकरिकैप्रतीतहोताथा॥आत्मसाक्षात्कारकरिकै तामायाकेनिवृत्तहुएतेंअ नंतर यहविद्वान्पुरुष तापरिच्छिन्नभावकापरित्यागकरिकै आपणेआत्माकूं सर्वजीवोंकाआत्मारूपकरिकैदेखै है॥यातें अविद्याकीनिवृत्ति पूर्वक सर्वात्मभावकीप्राप्तिही आत्मसाक्षात्कारकाफल है ॥ और हेजनक इसप्रकार गुरुवेदांतशास्त्रकेउपदेशतें जिसअधिकारीपुरुषनें आत्माकूं साक्षात्कारकऱ्या है ॥ तिसविद्वान्पुरुषकेअसंगस्वरूपकूं पुण्यपापरूपकर्म तरिसकैनहीं ॥ तथा तादिद्वान्पुरुषकूं तेपुण्यपाप कर्म तपायमानकरिसकैंनहीं ॥ किंतु जैसे नौका समुद्रकूंतरै है ॥ तथा जैसे आकाशतेंउत्पन्नभया विद्युत्रूपअग्नि तूलादिकोंकूंदग्धकरै है॥तैसे यहविद्वान्पुरुष आत्मसाक्षात्कारकेप्रभावतें तिनपुण्यपापरूपकर्मोंकूंतरै है॥तथा ज्ञानरूपअग्निकरिकै यहविद्वान्पुरुष तिनपुण्य पापरूपकर्मोंकूंदग्धकरैहै।तहाँस्मृति॥ज्ञानाग्निःसर्वकर्माणि भस्मसात्कुरुतेतथा॥अर्थयहहेअर्जुन॥यहज्ञानरूपअग्निविद्वान्पुरुषकेसर्वकर्मो कूँदग्धकरै है ॥१॥ हेजनक॥ पूर्वउक्तशमदमादिकसाधनोंकरिकै यहविद्वान्पुरुष जिसआनंदस्वरूपआत्माकूंप्राप्तहोवै है॥सोआत्मादेवकै साहै ॥ वास्तवतें पुण्यपापरूपकर्मोंतैंरहितहै॥तथा मायारूपअविद्यातैंरहितहै॥तथा संशयतैंरहितहै॥ऐसे असंगआत्माकूं जोअधिकारी पुरुष अद्वितीयब्रह्मरूपकरिकैजानै है ॥ सोविद्वान्पुरुष याशरीरकेविद्यमानहुएभी ब्रह्मरूपहीहोवै है ॥ तहाँश्रुति ॥ ब्रह्मवेदब्रह्मवभवति॥ अर्थयह ॥ ब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपकरिकैजानणेहारा ब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुष ब्रह्मरूपहीहोवै है॥ और हेजनक ॥पूर्व हमनें तुमारेप्रति सुषु प्तिअवस्थाविषे सर्वजीवोंकूंप्राप्तहोणेयोग्य जोपरमात्मादेव कथनकऱ्याथा ॥ सोईहीपरमात्मादेव बुद्धिआदिकोंकासाक्षीरूपकरिकै अभी हमनें तुमारेप्रति कथनकऱ्या है॥कैसा है सोपरमात्मादेव ॥ तुमारेहृदयविषे तथा हमारेहृदयविषे तथा अन्यप्राणीयोंकेहृदयविषे आका शकीन्याईं परिपूर्ण है ॥ तथा सूर्यादिकज्योतियोंकाभी जोआत्मादेव ज्योतिरूप है॥ऐसास्वयंज्योतिरूपआत्मा वास्तवतें संपूर्णसंसार धर्मोंतैंरहितहै॥यातें अविद्याकेसंबंधतें यहआत्मादेव जन्म मरण जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति इत्यादिकअवस्थावोंविषे भ्रमणकरताहुआभी वास्त वतें जन्ममरणादिकअवस्थावोंकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ हेजनक ॥ पूर्वजिसब्रह्मका अभयरूपकरिकै हमनें तुमारेप्रतिकथनकऱ्याथा ॥ सोईअभ

यत्रब्रह्म अभी हमनैं तुमाराआत्मारूपकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ ऐसेअद्वितीयब्रह्मरूपआत्मातैंभिन्न कोईभीस्थूलसूक्ष्मपदार्थ सिद्धहोवैनहीं॥ किंतु अधिष्ठानरूपआत्माकीसत्ताकूंपाईकैहीं यहकल्पितजगत् प्रतीतहोवै है ॥ हेजनक ॥ नानाप्रकारकेसाधनोंयुक्त आत्मसाक्षात्कारकूं बोधनकरणेहारी जोब्रह्मविद्या सूर्यभगवान्ने हमारेप्रति उपदेशकरीथी सोसंपूर्णब्रह्मविद्या मैंयाज्ञवल्क्यनैं तुमारेप्रति उपदेशकरी है ॥ ताब्रह्मविद्याकेश्रवणतैं अभी तुमारेकूं संशयविपर्ययतैंरहित आत्माकासाक्षात्कार प्राप्तभयाहै॥ यातैं अभी तुम जन्ममरणादिरूपसंससारके भयकापरित्यागकरिकै आपणे चित्तविषेप्रसन्नहोवो ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकावचन जभी याज्ञवल्क्यमुनिने जनकराजाकेप्रति कथन कऱ्या तभी सोजनकराजा आपणेबोधकीपूर्णताजनावणेवासतैं याज्ञवल्क्यमुनिकेप्राति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ राजाजनक उवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्यमुनि याविदेहदेशतैंआदिलैकेजितनीकी हमारीराज्यसंपदा है ॥ सोसंपूर्णराज्यसंपदा हमनैं पूर्व आपकेताईं दई है ॥ तासंपूर्णराज्यसंपदासहित तथा पुत्रादिककुटुंबसहित यहमैंजनक दासकीन्याईं आपकेसन्मुखस्थितहूं ॥ यातैं हेभगवन् मैं जनककूं तथा मेरेपुत्रादिककुटुंबकूं आपणादासजानिकै आपणीसेवाविषेग्रहणकरिकै जिसस्थानविषे आपकीइच्छाहोवै तिसस्थानविषे हमारेकूं आपणेसाथलेजावो ॥ अथवा इसीमिथिलापुरीविषे आपनिवासकरो ॥ हेभगवन् आपतैंविना एकक्षणमात्रभीमैं स्थितनहींहोवोंगा ॥ याप्रकारकी हमारीप्रार्थनाकूं आपकृपाकरिकै अंगीकारकरो ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार जभी जनकराजानैं याज्ञवल्क्यमुनिके आगे अत्यंतदीनतापूर्वक प्रार्थनाकरी ॥ तभी सोयाज्ञवल्क्यमुनिभी जनकराजाकेअत्यंतप्रीतिकूंदेखिकै कृपाकरिकैयुक्तहुआ ता मिथिलापुरीकेसमीपवनविषे स्थानकूंबनाइकै तहाँ निवासकरताभया ॥ और तिसतैंअनंतर बहुतकालकेपीछे सोयाज्ञवल्क्यमुनि आप णीस्त्रीकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरिकै तथा संन्यासआश्रमकूं ग्रहणकरिकै राजाजनककेसाथ विदेहमोक्षकूंप्राप्तहोताभया ॥ यहाँ पूर्वग्रं थविषे इतिहासरूपकरिकै वर्णनकऱ्याजोआत्मा तथाआत्माकेदोस्वरूप हैं॥ एकतौ सगुणरूप है ॥ और दूसरा निर्गुणरूप है॥तिनदोनों स्वरूपोंविषे प्रथम सगुणआत्माकेस्वरूपका तथा ताकेज्ञानकेफलका निरूपणकरैं हैं ॥ हेशिष्य ॥ पूर्ववर्णनकऱ्या जोजन्ममरणादिकवि कारोंतैं रहित आत्माकास्वरूप ॥ सोईहीआत्मादेव मायाकेसंबंधतैं सगुणरूपकूं प्राप्तहोवै है॥ और तासगुणरूपकूंप्राप्तहोइकै सोआत्मा ॥१४४॥

देव संपूर्णशरीररूपउपाधियोंविषेस्थितहोइकै नानाप्रकारके अन्नोंकूंभक्षणकरै है ॥ याकारणतैं ताआत्मादेवकूं श्रुतिभगवती अन्नाद यानामकरिकैकथनकरै है ॥ और यहआत्मादेवही दानकरतापुरुषोंकूं कर्मकेफलकीप्राप्तिकरै है ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताआत्मादे वकूं वसुदान यानामकरिकैकथनकरै है ॥ इसप्रकार अन्नादरूपकरिकै तथा वसुदानरूपकरिकै तासगुणआत्माकीउपासना जोअधिकारी पुरुषकरै हैं ॥ सोअधिकारीपुरुष लोकोंनैं श्रद्धापूर्वकदियेजे नानाप्रकारकेअन्नादिकपदार्थ तिनोंकूंभोगै है॥ तथा इसजन्मविषे अथवा जन्मांतरविषे सोउपासकपुरुष नानाप्रकारके धनादिकपदार्थोंकूं लोकोंके ताईंदेवै है॥ अब निर्गुणआत्माकेस्वरूपका तथाताकेज्ञानकेफ लका निरूपणकरैं हैं ॥ हेशिष्य ॥ जोविज्ञानआनंदस्वरूपआत्मा याज्ञवल्क्यमुनिनैं जनककेप्रति अभयब्रह्मरूपकरिकै उपदेशकऱ्याहै॥ सोनिर्गुणआत्मादेव जरावस्थातैंरहितहै यातैं अजरहै ॥ और सोआत्मादेव मरणअवस्थातैंरहितहै यातैं अमरहै ॥ और यह आत्मादेव अजरअमरहै याकारणतैंअभयहै ॥ काहेतैं जोपुरुष जराअवस्थाकरिकैमरणकूंप्राप्तहोवै है ॥ सोईहीपुरुष जन्ममरणकेदुःखकूं तथा तिन दुःखोंतैंभयकूं प्राप्तहोवै हैं॥ और यहआत्मादेव अजरअमरहै याकारणतैं यहआत्मादेव जन्ममरणकेदुःखकूं तथाभयकूं प्राप्तहोवैनहीं॥पुनः कैसाहैसोआत्मादेव ॥ स्थूल सूक्ष्म कारण यातीनशरीरोंतैंरहित है॥ तथा आकाशकीन्याईं सर्वत्रव्यापकब्रह्मरूपहै ॥ ऐसेअभयब्रह्मकूं जोपुरुष आपणाआत्मारूपकरिकै साक्षात्कारकरैहै॥सोब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुष अभयब्रह्मरूपहोवैहै॥हेशिष्य॥जनकराजाकेप्रति जोब्रह्मविद्या याज्ञवल्क्यमुनिनैं उपदेशकरीथी॥सोसंपूर्णब्रह्मविद्या हमनैं तुमारेप्रति कथनकरीहै॥अब जिसअर्थकेश्रवणकरणेकीतुमारेकूंइच्छाहोवै ॥सो अर्थ हमारेसैंपूछो॥इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचिते प्राकृ तआत्मपुराणे बृहदारण्यकयाज्ञवल्क्यकांडसारार्थप्रकाशे याज्ञवल्क्यजनकसंवादोनामषष्ठोऽध्यायःसमाप्तः ॥ ६ ॥श्रीगुरुभ्योनमः ॥ ॥

इति श्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषा आत्मपुराणेषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

॥ इति श्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषाआत्मपुराणेषष्ठोऽध्यायःसमाप्तः ॥

॥ अथ स्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषाआत्मपुराणे सप्तमाध्यायप्रारंभः ॥

ॐश्रीगणेशानयनमः ॥ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ अथ सप्तमअध्यायप्रारंभः॥तहां षष्ठेअध्यायविषे यजुर्वेदकेबृहदारण्यकउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ अब सप्तमअध्यायविषे तिसीबृहदारण्यकउनिषद्केअर्थकानिरूपणकरैहैं ॥ तहां षष्ठेअध्यायविषे याज्ञवल्क्यमुनिनैं जनकराजाकेप्रति उपदेशकरीजात्रह्मविद्या ॥ तात्रह्मविद्याकूं गुरुकेमुखतैंश्रवणकरिकै सोशिष्य पुनः ब्रह्मविद्यायुक्तकथाकेश्रवणकरणेकीइच्छाकरताहुआ आपणेगुरुसैं याप्रकारपूछताभया ॥ शिष्यउवाच ॥ हेभगवन् याआत्मपुराणकेप्रथमअध्यायविषे आपनैं ऋग्वेदकेऐतरेयउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ ताप्रथमअध्यायविषे सनकादिकऋषियोंका तथा वामदेवादिकअधिकारीप्रजाका जोपरस्परसंवादहै ॥ तासंवादकरिकै नानाप्रकारकेवैराग्यादिकसाधन आपनैं निरूपणकरे ॥ और याआत्मपुराणकेदूसरेअध्यायविषे आपनैं तिसीऋग्वेदकेकौषीतकीउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ ताद्वितीयअध्यायविषे देवराजइंद्र प्रतर्दनकेसंवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं निरूपणकरी॥और याआत्मपुराणकेतृतीयअध्यायविषे आपनैं तिसीकौषीतकीउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्या॥ तातृतीयअध्यायविषे राजाअजातशत्रु बालाकीब्राह्मणकेसंवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं निरूपणकरी ॥ और याआत्मपुराणकेचतुर्थअध्यायविषे आपनैं यजुर्वेदकेबृहदारण्यकउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ ताचतुर्थअध्यायविषे दोपुरुषवंश एकस्त्रीवंश यातीनवंशोंविषे स्थितऋषियोंका परस्परभेद तथाअभेद आपनैं निरूपणकऱ्या ॥ तथा सर्वज्ञदध्यङ्अथर्वण ऋषिकेसाथ अश्विनीकुमारोंकासंवाद आपनैं निरूपणकऱ्या ॥ तथा दध्यङ्अथर्वणकेउपदेशतैं जात्रह्मविद्या अश्विनीकुमारोंकूंप्राप्तभई थी ॥ तथा जात्रह्मविद्या देवराजइंद्रकूं प्राप्तभईथी सात्रह्मविद्याभी आपनैं निरूपणकरी ॥ तथा परउपकारविषेहैप्रीतिजिसकी ऐसाजोदध्यङ्अथर्वणनामाऋषिहै ॥ सो देवराजइंद्रतैं तथाअश्विनीकुमारोंतैं जिस मस्तकका छेदनरूपआपदाकूंप्राप्तभयाथा ॥ ताआपदाकाभी आपनैं निरूपणकऱ्या और याआत्मपुराणकेपंचमअध्यायविषे आपनैं तिसीबृहदारण्यकउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्या॥तापंचमअध्यायविषे याज्ञवल्क्यमुनिकेसाथ आश्वलादिकब्राह्मणोंकासंवाद आपनैंनिरूपणकऱ्या॥तथा याज्ञवल्क्यमुनिकाजय

तथा शाकल्यब्राह्मणकामृत्यु आपनैं निरूपणकऱ्या ॥ और याआत्मपुराणकेषष्ठेअध्यायविषे आपनैं तिसीबृहदारण्यकउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ तापष्ठेअध्यायविषे याज्ञवल्क्यमुनिनैं जनकराजाकेप्रति जात्रह्मविद्याउपदेशकरीथी सासंपूर्णब्रह्मविद्या आपनैं निरूपणकरी ॥ तथाजिसकामवरकरिकै जनकराजा कृतकृत्यभावकूंप्राप्तभया था ॥ सोकामवरभीआपनैं निरूपणकऱ्या ॥ हेभगवन् तापष्ठेअध्यायकेअंत्यविषे आपनैं यहवार्ता कथनकरीथी॥ सोयाज्ञवल्क्यमुनि आपणीस्त्रीकेताईं ब्रह्मविद्याकाउपदेशदेकै संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरताभया ॥ हेभगवन्॥सोयाज्ञवल्क्यमुनि आपणीस्त्रीकेप्रति जात्रह्मविद्याकाउपदेशकरिकै संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरताभयाहै॥तात्रह्मविद्याकेश्रवणकरणेकी हमारेकूंइच्छाहै ॥ आप कृपाकरिकै तात्रह्मविद्याकाउपदेश हमारेप्रतिकरो ॥ इसप्रकार शिष्यकेवचनकूंश्रवणकरिकै सोश्रीगुरु परमआनंदकूंप्राप्तहोताभया ॥ और बृहदारण्यकउपनिषद्के मधुकांडविषे तथा याज्ञवल्क्यकांडविषे कथन करी जाकथाहै ॥ साकथा सोगुरु शिष्यकेप्रति कहताभया॥कैसीहैसाकथा॥अधिकारीपुरुषोंकेमनकूं तथाश्रवणकूंसुखकीप्राप्तिकरणेहारीहै॥श्रीगुरुरुवाच॥ हेशिष्य ॥ जिसयाज्ञवल्क्यमुनिनैं जनकराजाकेप्रति उपदेशकऱ्याहै ॥ सोयाज्ञवल्क्यमुनि बाल्यअवस्थातैंलेके वृद्धअवस्थापर्यंत विषयोंकीइच्छातैंरहितहोताभया॥ यद्यपि सोयाज्ञवल्क्यमुनि बाहरतैं विकारीपुरुषोंकीन्याईं लोकोंकूंप्रतीतहोताभया॥तथापि सोयाज्ञवल्क्यमुनि आपणेचित्तविषे सर्वविकारोंतैंरहितहोताभया ॥ तथा सर्वलोकोंकेउपकारविषे जिसयाज्ञवल्क्यमुनिकी सर्वदा प्रीतिहोती भई ॥ ऐसायाज्ञवल्क्यमुनि विद्याकीप्राप्तिवासतैं बाल्यअवस्थाविषेही तपकाआरंभकरताभया ॥ तायाज्ञवल्क्यमुनिकेतपकूंदेखिकै भय युक्तहुआदेवराजइंद्र तायाज्ञवल्क्यमुनिकेतपविषे विघ्नकरणेवासतैं अनेकअप्सरावोंकूं तहाँ भेजताभया ॥ ताअप्सरारूपवृकोंकरिकैयुक्त जोमहान्वनहै ॥ तावनविषेस्थितहुआसोयाज्ञवल्क्यमुनि तिनअप्सरावोंकेहावभावकूंदेखिकरिकैभी आपणेधैर्यतैंनहींचलायमानहोताभया ॥ अब याज्ञवल्क्यमुनिकेतपकानिरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥जभी वर्षाकालआवै॥तभी सोयाज्ञवल्क्यमुनि वृक्षकीन्याईं तथापर्वतकीन्याईं छत्रादिकआवरणतैंविनाहीं समानभूमिविषेस्थितहोताभया ॥ और मेघोंकेजलकीधाराकूं आपणेशरीरऊपरसहनकरताभया ॥

और जभी उष्णकालआवै॥तभी सोयाज्ञवल्क्यमुनि मध्याह्नकेसूर्यकारिकै तपायमानकरीजायापाषाणकीशिलाहै ताशिलाऊपर चारोंओरतैं अग्निजगाइकै तिनअग्नियोंकेमध्यविषेस्थितहोताभया॥औरजभीशीतकालआवै॥तभी सोयाज्ञवल्क्यमुनि हिमयुक्तदेशविषेस्थितजो स्थिर जलहै ताजलविषे स्थितहोताभया।और ऋग् यजुष् साम यहतीनवेदहस्वरूपजिसका ऐसाजोआदित्यमंडलविषेस्थित सूर्यभगवान्हैतासूर्यभगवान्विषे आपणेनेत्रोंकीदृष्टिकूंएकाग्रकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि मनकरिकै तासूर्यभगवान्काध्यानकरताभया॥और आपणेप्राणोंकी रक्षाकरणेवासतै ॥ सोयाज्ञवल्क्यमुनि वृक्षोंकेपत्रोंकूं तथामूलफलोंकूं भक्षणकरताभया ॥ सोपत्रादिकोंकाभक्षणभी दिनदिनविषे नहीं करताभया ॥ किंतु कभीतौ सोयाज्ञवल्क्यमुनि तीसरेदिनविषे पत्रादिकोंकाभक्षणकरताभया ॥ और कभीतौ सोयाज्ञवल्क्यमुनि षष्ठे दिनविषे पत्रादिकोंकाभक्षणकरताभया ॥ और कभीतौ सोयाज्ञवल्क्यमुनि द्वादशदिनविषे पत्रादिकोंकाभक्षणकरताभया ॥ इसप्रकार पत्रादिकोंकाभक्षणकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि आपणेशरीरकूंसुखावताभया ॥ और निद्रातैं तथाश्रमतैं रहितहोताभया ॥ और पूर्व उपनयनकालविषे पितानैं उपदेशकऱ्याजोगायत्रीमंत्र॥तागायत्रीमंत्रकूं वाणीकरिकैजपताहुआ सोयाज्ञवल्क्यमुनि आपणेमनकरिकै निरंतर सूर्यभगवान्काध्यानकरताभया ॥ ॥ हेशिष्य॥ याप्रकार याज्ञवल्क्यमुनिनैं जभी बहुतकालपर्यंत तपकऱ्या॥तभी याज्ञवल्क्यमुनिकेतपकरिकै प्रसन्नहुआसोसूर्यभगवान् पुरुषकेरूपकूंधारणकरिकै तायाज्ञवल्क्यमुनिकेसन्मुख स्थितहोता भया ॥ तासूर्यभगवान्कूंदेखिकै सो याज्ञवल्क्यमुनि तासूर्यभगवान्केप्रति दंडवत्प्रणामकरताभया॥और संपूर्णजगत्काबाह्यप्राणरूप तथामहान्तपकाफलरूप जोसूर्यभगवान्है ॥ ताकूंदेखिकरिकै प्रसन्नहुआ सोयाज्ञवल्क्यमुनि तासूर्यभगवानकीस्तुतिकरताभया ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रेमकूंदेखिकै सोसूर्यभगवान्भी बहुतप्रसन्नहोताभया ॥ और तासूर्यभगवान्केनेत्र आनंदकेअश्रुवोंकरिकै पूर्णहोतेभये ॥ और प्रेमकरिकै ॥ तासूर्यभगवान्केरोमांच खडेहोतेभये॥ इसप्रकार प्रेमकरिकैपूर्णहुआ सोसूर्यभगवान् आपणेदोनोंहस्तोंकूं याज्ञवल्क्यमुनिकेमस्तकऊपरराखताभया ॥ और सोसूर्यभगवान् तायाज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हे पुत्र ॥ तूं बाल्यअवस्था ॥ २ ॥

विषे यावनविषेस्थितहोइकै महान्तपकरिकै बहुतक्लेशकूंप्राप्तभया है ॥ तातुमारेतपकरिकै मैं सूर्य भगवान् बहुत प्रसन्न भया हूं ॥ यातैं जिसपदार्थकेप्रातिकीइच्छा तुमारेकूंहोवै ॥ तिसपदार्थकेप्रातिका वर तूं हमारेसैं मांग ॥ मैंसूर्यभगवान् तुमारेप्रति तिसीपदार्थकी प्रातिकरौंगा ॥ हे शिष्य ॥ याप्रकारकावचन जभी सूर्यभगवान्नैं याज्ञवल्क्यमुनिके प्रतिकह्या ॥ तभी सो याज्ञवल्क्यमुनि आपणे मस्तकऊपर दोनोंहाथोंकूंजोडिकरिकै तथा नीचेमुखकरिकै सूर्यभगवान्केप्रति याप्रकारकावचन कहताभया॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेसूर्यभगवान् आप सर्वजगत्के प्राणहो॥ तथा संपूर्णशुभअशुभकर्मकेसाक्षीहो ॥ यातैं यजगत्विषे यद्यपि आपकूंकोईपदार्थअज्ञाततनहीं है तथापि आपके समीप मैंबालक आपणेवृत्तांतकूंकथनकरताहूं ॥हेभगवन् व्यासभगवान्काशिष्यजोवैशंपायननामाऋषिहै॥तावैशंपायनसैं मैंयाज्ञवल्क्य पूर्व विद्याअध्ययनकरताभया॥और मैंयाज्ञवल्क्य शरीरमनवाणीकरिकै देवताकीन्याईं तावैशंपायननामागुरुकीसेवाकरताभया ॥ और किसीकालपाइकै सर्व ऋषिमिलिकै परस्पर याप्रकारकासंकेत आपसमें करतेभये ॥ जो ऋषि आजदिनविषे महामेरुऊपर समाजविषेनहींआवैगा ॥ तिसऋषिकूं सप्तरात्रितैंअनंतर ब्रह्महत्याकीप्रातिहोवैगी ॥ याप्रकारका जो तिनऋषियोंकासंकेत था ॥ तासंकेतकूं हमारागुरुवैशंपायन भेदनकरताभया ॥ तासंकेतकेभेदनकरणेकरिकै तावैशंपायनकूं किंचित्निमित्तकरिकै ब्रह्महत्याकीप्रातिहोतीभई ॥ ताब्रह्महत्याकरिकै ग्लानिकूंप्राप्तभयाहैमुखजिसका ऐसासोवैशंपायननामाहमारागुरु ताब्रह्महत्याकेनिवृत्तिवासतै हमसर्वशिष्योंकेप्रति प्रायश्चित्तकरणेकीआज्ञाकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर मैंयाज्ञवल्क्य तिनसर्वब्रह्मचारियोंऊपरअनुग्रहकरिकै भक्तिपूर्वक तावैशंपायननामागुरुकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हे गुरो ॥ आपकाशरीर वृद्धअवस्थाकरिकै युक्त है ॥ यातैं ताप्रायश्चित्तकरणेविषे आपकातौसामर्थ्य है नहीं ॥ और यहजेआपकेशिष्य हैं॥ते बाल्यअवस्थाकरिकैयुक्तहैं ॥ यातैं इनशिष्योंकाभी ताप्रायश्चित्तकरणेविषे सामर्थ्यनहीं ॥ और मैंयाज्ञवल्क्य दृढशरीरवालाहूं ॥ तथा यौवनअवस्थाकेसन्मुख प्राप्तभयाहूं ॥ यातैं आपकेब्रह्महत्याकीनिवृत्तिवासतै मैंही ताप्रायश्चित्तकूंकरौंगा ॥ हेभगवन् ॥ याप्रकारकावचन जभी हमनैं वैशंपायननामागुरुकेप्रतिकह्या ॥ तभी सोवैशंपा

यननामा हमारागुरु ब्रह्महत्याकेप्रभावतैं विपरीतभावकूंप्राप्तहोइकै हमारेऊपर उलटाक्रोधवान्होताभया ॥ इसप्रकार क्रोधकूंप्राप्तहुआ सोवैशंपायननामाहमारागुरु निर्दयपुरुषकीन्याईं याप्रकारकावचन हमारेप्रति कहताभया॥हेब्राह्मणोंकेनिंदकयाज्ञवल्क्य तुमारेताईं जाविद्या हमनैंदई है॥तिसविद्याकूं शीघ्रहीं तुम परित्यागकरो ॥ हेभगवन् ॥ याप्रकारकावचन जभी तावैशंपायनगुरुनैं हमारेप्रतिकह्या ॥ तभी मैंयाज्ञवल्क्य आपणेअपराधकेक्षमाकरावणेवासतै आपणेशरीरमनवाणीकरिकै नानाप्रकारकेनमस्कारादिकउपायोंकूंकरताभया ॥ परंतु सोवैशंपायननामा हमारागुरु हमारेऊपर प्रसन्ननहींहोताभया॥किंतु उलटा हमारीप्रार्थनाकूंदेखिकरिकै सोवैशंपायननामा हमारागुरु अधिकक्रोधवान्होइकै याप्रकारकावचन हमारेप्रति कहताभया॥हेब्राह्मणोंकेनिंदकयाज्ञवल्क्य जोतूं हमारेप्रसन्नकरणेवासतै उद्यमकरैगा ॥ तौ तेरेशरीरप्राणादिकोंकूंनाशकरणेहाराशाप मैंतुमारेताईंदेवोंगा॥ताशापकरिकै इसलोकविषे तथा परलोकविषे तूं दुःखकूंहींप्राप्तहोवैगा॥ यातैं जोतुमारेकूं इसलोकके तथापरलोकके सुखकीइच्छाहोवै॥तौ हमारेप्रसन्नकरणेकेउपायोंकापरित्यागकरिकै शीघ्रही हमारीविद्याकापरित्यागकरो॥जोतूंहमारीविद्याका शीघ्रहींपरित्याग नहींकरैगा॥तौइसीकालविषे मैंतुमारेकूंशापदेकेनष्टकरौंगा।हेभगवन्॥याप्रकारकावचन जभीतावैशंपायननामागुरुनैं हमारेप्रतिकह्या॥तभी मैंयाज्ञवल्क्य तागुरुतैंभयकूंप्राप्तहोइकै तागुरुकेप्रसन्नकरणेकेउपायोंतैंनिवृत्तहोताभया और जैसे कोईपुरुष अन्नकावमनकरै है ॥ तैसे मैंयाज्ञवल्क्य तासंपूर्णविद्याकावमनकरताभया ॥ इसप्रकार संपूर्णविद्याकापरित्यागकरिकै सोमैंयाज्ञवल्क्य विद्यातैंरहितहोताभयाहूं ॥ और मनुष्यगुरुतैंअविद्याअध्ययनकरिकै हमनैं पूर्व दुःखकाअनुभवकऱ्या है ॥ यातैं पुनः किसीमनुष्यगुरुकेआगे विद्याकीप्राप्तिवासतै मैं प्रार्थनाकरतानहीं ॥ याकारणतैं पुनःविद्याकीप्राप्तिवासतै मैंयाज्ञवल्क्य आप ईश्वरकेशरणकूंप्राप्तभयाहूं ॥ हे शिष्य ॥ याप्रकारकीप्रार्थना जभी याज्ञवल्क्यमुनिनैं सूर्यभगवान्केआगेकरी ॥ तभी सोसूर्यभगवान् याज्ञवल्क्यमुनिकूं आपणेरथविषे स्थापनकरिकै व्याकरणादिकषट्अंगोंयुक्त चारिवेदोंकाअध्ययन याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति करावताभया ॥ और जैसे पूर्व अंभिणीनामादेवता सूर्यभगवान्काशिष्यहोताभया॥ तैसे सोयाज्ञवल्क्यमुनिभी सूर्यभगवान्काशिष्यहो ॥ ३ ॥

ताभया॥हेशिष्य॥ इसप्रकार सूर्यभगवान्तैं संपूर्णवेदोंकेयथार्थअर्थकूंजाणिकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि गृहस्थआश्रमकरणतैंविरक्तहोताभया ॥ और तिसीब्रह्मचर्यआश्रमतैंहीं सोयाज्ञवल्क्यमुनि संन्यासआश्रमकेग्रहणकरणेका उद्यमकरताभया ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार तायाज्ञवल्क्यमुनिकूंविरक्तहुआदेखिकै सोसूर्यभगवान् तायाज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ सूर्यभगवान्उवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य ॥ विद्याकेअध्ययनतैंअनंतर शिष्यनैं गुरुकेप्रति गुरुदक्षिणा अवश्यदेणी यहशास्त्रकीआज्ञाहै ॥ यातैं हमनैं जोतुमारेप्रति विद्यादई है ताविद्याकीगुरुदक्षिणा तुमहमारेप्रतिदेवो याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेभगवन् ॥ जागुरुदक्षिणा आप हमारेप्रतिकहो ॥ सागुरुदक्षिणा मैं आपकेताईंदेवों ॥ सूर्यभगवान्उवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य याप्रकारकीगुरुदक्षिणा हम तुमारेसैंमाँगते हैं॥तूं अभी संन्यासआश्रमकूंग्रहणमतकर ॥ किंतु अभीतुम गृहस्थआश्रमकाग्रहणकरो ॥ और हमनैं जोतुमारेप्रति वेदविद्याउपदेशकरी है ॥ तावेद विद्याका अधिकारी ब्राह्मणोंकेप्रति तथा अधिकारीक्षत्रियवैश्योंकेप्रति उपदेशकरो॥इसप्रकार हमारेविद्याकीसंप्रदायकूंप्रवर्त्तकरिकै पश्चात् आपनैं संन्यास आश्रमकूंग्रहणकरणा ॥ याप्रकारकी हमारीआज्ञाकूं तुमअंगीकारकरो यहही हमारीगुरुदक्षिणा है ॥ हेयाज्ञवल्क्य तिनचारिवेदोंविषे जाउपनिषदभागरूपब्रह्मविद्या हमनैं तुमारेप्रति उपदेशकरी है ॥ साब्रह्मविद्या तुमनैं संन्यासआश्रमतैंपूर्व अथवा संन्यास आश्रमतैंउत्तर विषयवासनातैंरहित अधिकारीपुरुषोंकेप्रतिही उपदेशकरणी ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार जभी सूर्यभगवान्नैं याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति आज्ञाकरी॥तभी सोयाज्ञवल्क्यमुनि तासूर्यभगवान्केआज्ञाकूं आपणेमस्तकऊपरराखिकै तथा सूर्यभगवान्केताईं दंडवत्प्रणामकरिकै भूमिलोकविषेआवताभया॥ तहाँभूमिलोकविषेजाइकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि आपणेयज्ञवल्क्यनामापितातैं गृहस्थआश्रमकरणेकी आज्ञामाँगताभया॥ तापिताकीआज्ञाकूंपाइकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि जनकराजातैंधनकूंलैकै दोस्त्रियोंकूं विवाहताभया ॥ तहाँ एकतौ कात्यायननामाऋषिकीपुत्री कात्यायनीनामास्त्री ॥ और दूसरी मित्रयुनामाऋषिकीपुत्री मैत्रेयीनामास्त्री॥इसप्रकार गृहस्थआश्रमकूंधारणकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि जैसे पूर्व ब्रह्मचर्यआश्रमविषे वेदोंकेअध्ययनकरिकै ऋषियोंकेऋणकूं निवृत्तकरताभया ॥ तैसे देवतावोंकेऋ

णकूं तथा पितरोंकेऋणकूंभी निवृत्तकरताभया ॥ तहाँ बहुतदक्षिणाकरिकैयुक्त जेअग्निष्टोमादिकयज्ञहैं॥तिनयज्ञोंकूंकरिकै सोयाज्ञवल्क्य मुनि देवतावोंकेऋणकीनिवृत्तिकरताभया ॥ और आपणेसमानगुणवालेजेश्रद्धावान्पुत्रहैं तथापुत्रियां हैं ॥तिनोंकूंउत्पन्नकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि पितरोंकेऋणकीनिवृत्तिकरताभया ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ पूर्व आपनैं याज्ञवल्क्यमुनिकूंविरक्तकह्या॥और अभीआपनैं याज्ञवल्क्यमुनिकूंऋणकीप्राप्तिकही सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं जोपुरुष विरक्तहोवै है ॥ ताकूं ऋणकीप्राप्तिसंभवैनहीं॥और जोपुरुष ऋणवानहोवै है ॥ ताकेविषे विरक्ततासंभवैनहीं ॥समाधान॥ हेशिष्य यहयाज्ञवल्क्यमुनि विरक्तहै॥यातैं ताकेविषे यद्यपि ऋणकीप्राप्तिसंभवैनहीं ॥ तथापि ब्रह्मचर्यआश्रमकेसंबंधतैं तथागृहस्थआश्रमकेसंबंधतैं तायाज्ञवल्क्यमुनिविषे ऋणकीप्राप्तिसंभवैहै॥तहाँश्रुति॥जायमानोवैब्राह्मण स्त्रिभिर्ऋणैर्ऋणवान्जायते ॥ अर्थयह ॥ उपनयनसंस्कारकरिकैयुक्तजोब्राह्मणहै॥ सोब्राह्मण ऋषिऋण देवऋण पितृऋण यातीनऋणोंकरिकैयुक्तहोवै है ॥ १ ॥ अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकैनिरूपणकरैं हैं ॥हेशिष्य॥ जैसे ब्रह्मचर्यआश्रमवालापुरुष ऋषियोंकाऋणीहोवै है ॥ तैसे गृहस्थआश्रमवालापुरुषभी देवतावोंका तथापितरोंकाऋणीहोवै है ॥ और जोपुरुष तीव्रवैराग्यकरिकै संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरै है॥ तिससंन्यासीपुरुषकूं जैसे लौकिकपुरुषोंकाऋण प्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे ऋषिऋण देवऋण पितृऋण यहतीनप्रकारकावैदिकऋणभी तासंन्यासीकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं संन्यासआश्रमतैंपूर्व विद्वान्पुरुषकूंभीतेतीनऋण अवश्यप्राप्तहोवै हैं॥किंवा जैसे यालोकविषे पुत्रकेजन्मादिकनिमित्तोंकेप्राप्तहुए यहपुरुष पुत्रइष्टिआदिककर्मोंकूंअवश्यकरै हैं ॥ यातैं तेपुत्रकेजन्मादिक पुत्रइष्टिआदिककर्मोंकेकरणेविषे निमित्तकारणहैं ॥ तैसे ऋषिऋण देवऋण पितृऋण यातीनऋणोंकीनिवृत्तिवासतै शास्त्रनैं विधानकरेजेकर्म हैं ॥ तिनकर्मोंकेकरणेविषे ब्रह्मचर्यआश्रम तथागृहस्थआश्रम यहदोनोंआश्रम निमित्तकारण हैं ॥ याकारणतैं संन्यासआश्रमतैंपूर्व विद्वान्पुरुषनैंभी तिनतीनऋणोंकी निवृत्तिवासतै तिनकर्मोंकूंअवश्यकरणा ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ ब्रह्मचर्यआश्रम तथागृहस्थआश्रम यह दोनों आश्रमहीं या अधिकारी पुरुषकूं जोतीनऋणोंकीप्राप्तिकरतेहोवैं ॥ तौ यहअधिकारीपुरुष तिनदोनोंआश्रमोंकूंकिसवासतै ग्रहणकरता है ॥ किंतु तिनदोनों

॥ २॥

आश्रमोंकापरित्यागकरिकै यहअधिकारीपुरुष प्रथम वानप्रस्थआश्रमकूंहीग्रहणकरै॥जाकरिकै यहअधिकारीपुरुष तिनतीनोंऋणोंतैंमुक्तहोवै ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ ब्रह्मचर्यआश्रम तथागृहस्थआश्रम यादोनोंआश्रमोंकेग्रहणतैंविना प्रथमहीं वानप्रस्थआश्रमकाग्रहणकरणा योग्यनहीं ॥ काहेतैं स्मृतिविषे यहकह्याहै ॥ अनाश्रमीनतिष्ठेत क्षणमेकमपिद्विजः ॥ अर्थयह ॥ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यातीनवर्णोंकानामद्विजहै ॥ तेद्विज किसीआश्रमतैंविना एकक्षणमात्रभी नहींस्थितहोवैं ॥ किंतु ब्रह्मचर्यादिकचारिआश्रमोंविषे किसीएक आश्रमकूंग्रहणकरिकैही यहद्विज यामनुष्यलोकविषेस्थितहोवैं ॥ जोपुरुष किसीआश्रमतैं बिनाअनाश्रमीरहैहै ॥ तापुरुषकूं पापकीप्राप्तिहोवैहै ॥ १ ॥ यास्मृतिविषे आश्रमतैंविना द्विजकेस्थितिका निषेधकऱ्याहै॥ यातैं ब्रह्मचर्यादिकचारिआश्रमोंविषे किसीएकआश्रमकूंग्रहणकरिकैही द्विजनैं यामनुष्यलोकविषे स्थितहोणा ॥ और शास्त्रविषे तौ वानप्रस्थआश्रमग्रहणकरणेकेकालकानियमकथनकऱ्याहै ॥ यातैं ब्रह्मचर्य गृहस्थ यादोनोंआश्रमोंके ग्रहणतैंविना प्रथमहीं वानप्रस्थआश्रमकाग्रहणसंभवैनहीं ॥ अब वानप्रस्थआश्रमकेग्रहणकरनेकेकालकानिरूपणकरैं हैं ॥ हेशिष्य ॥ मनुस्मृतितैंआदिलेके जेधर्मशास्त्रहैं ॥ तिनोंविषे यह कह्याहै ॥ यह गृहस्थाश्रमवाला पुरुष जिसकालविषे आपणेशरीरमैं चर्मकीशिथिलतादेखै॥तथा आपणेकेशोंविषे शुक्लवर्णदेखै॥तथा आपणेपुत्रोंकेपुत्रोंकूंउत्पन्नहुआदेखै॥ तिसीकालविषे सोगृहस्थपुरुष पूर्वगृहस्थआश्रमकापरित्यागकरिकै वनविषेनिवासरूप वानप्रस्थआश्रमकाग्रहणकरै ॥ याप्रकार शास्त्रोंविषे वानप्रस्थआश्रमग्रहणकरणेकाकाल कथनकऱ्याहै ॥ यातैं यहसिद्धभया ॥ ब्रह्मचर्यआश्रम तथागृहस्थआश्रम यादोनोंआश्रमोंकूंन ग्रहणकरिकै यहअधिकारीपुरुष जोकदाचित् बाल्यअवस्थाविषे तथायौवनअवस्थाविषे वानप्रस्थआश्रमकूंग्रहणकरैगा ॥ तौ वानप्रस्थआश्रमकेकालकूंबोधनकरणेहारेशास्त्रकाविरोधहोवैगा ॥ औरजोयहअधिकारीपुरुष तावानप्रस्थआश्रमकेकालपर्यंत किसीआश्रमतैं बिनाहीं स्थितहोवैगा ॥ तौ अनाश्रमीनतिष्ठेत क्षणमेकमपिद्विजः॥ यावचनकाविरोधहोवैगा॥यातैं ब्रह्मचर्यआश्रमतैं तथागृहस्थआश्रमतैं प्रथमहीं वानप्रस्थआश्रमकाग्रहण श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रतैंविरुद्धहै ॥ शंका॥ हेभगवन्॥ जैसे गृहस्थआश्रमतैंविनाहीं ब्रह्मचर्यआश्रमतैं

अनंतर संन्यासआश्रमकाग्रहणहोवैहै ॥ तैसे गृहस्थआश्रमतैंविनाहीं ब्रह्मचर्यआश्रमतैंअनंतर वानप्रस्थआश्रमकेग्रहणकरणेविषे कौनबाधकहै ॥ समाधान॥ हेशिष्य जैसे तीव्रवैराग्यकेउत्पन्नहुए श्रुतिनैं ब्रह्मचर्यआश्रमतैंअनंतर तथागृहस्थआश्रमतैंअनंतर संन्यासआश्रमका विधानकऱ्याहै॥तैसे ब्रह्मचर्यआश्रमतैंअनंतर वानप्रस्थआश्रमकाविधान किसीश्रुतिस्मृतिनैंकऱ्यानहीं यातैं याअधिकारीपुरुषनैं गृहस्थआश्रमतैंअनंतरहीं वानप्रस्थआश्रमकूंग्रहणकरणा ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ ब्रह्मचर्यआश्रमतैंअनंतर याअधिकारीपुरुषनैं गृहस्थआश्रमकूंग्रहणकरणा ॥ और तागृहस्थआश्रमतैंअनंतर याअधिकारीपुरुषनैं वानप्रस्थआश्रमकूंग्रहणकरणा ॥ याप्रकारकाजोआपनैंनियमकह्या सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं ॥ ब्रह्मचर्यपरिचरेदाशरीरविमोक्षणात्॥ अर्थयह ॥ यास्थूलशरीरकेनाशपर्यंत यहअधिकारीपुरुष ब्रह्मचर्यआश्रमकूंसेवनकरै ॥ १ ॥ यावसिष्ठभगवान्केवचनतैं तानियमकाविरोधहोवैहै ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ मरणपर्यंत यहअधिकारीपुरुष एकआश्रमकासेवनकरै ॥ याप्रकारकेअर्थकूंबोधनकरणेहारा जोवसिष्ठभगवान्कावचनहै ॥ सोवचन पूर्वउक्तक्रमकानिवारणकरैनहीं ॥ किंतु उलटा ताक्रमकूं सोवचन दृढकरैहै ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकैनिरूपणकरै हैं ॥ हेशिष्य तावसिष्ठभगवान्कवचनका यहअभिप्रायहै॥ ब्रह्मचर्यआश्रमविषे तथा गृहस्थआश्रमविषे तथा वानप्रस्थआश्रविषे याअधिकारीपुरुषका जोअत्यंतरागहोवै ॥ तौ ताअधिकारीपुरुषनैं मरणपर्यंत ताआश्रमकेनहींपरित्यागकरणेकासंकल्पकरिकै मरणपर्यंत ताआश्रमविषेहीस्थितहोणा ॥ इसप्रकारकादृढसंकल्पकरिकै जोपुरुष एकआश्रमविषेहीस्थितहोवै है ॥ सोपुरुष उत्तरउत्तरआश्रमकेनहींग्रहणकरणेकरिकै पापरूपदोषकूंप्राप्तहोवैनहीं तात्पर्ययह ॥ जैसे रागपूर्वक एकआश्रमकेसेवनकरणेहारेपुरुषकूं पापरूपदोषकीप्राप्तिहोवै है ॥ तैसे दृढसंकल्पपूर्वक एकआश्रमकेसेवनकरणेहारेपुरुषकूं तापापरूपदोषकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ शंका हेभगवन् ॥ जिसकूंगृहस्थआश्रमकरणेकीइच्छानहीं है ऐसाजोनैष्ठिकब्रह्मचारीहै ॥ सोनैष्ठिकब्रह्मचारी वनविषेनिवासादिरूप वानप्रस्थकेकर्मोंकूंकरिकै आपणेविषे वानप्रस्थभावकूंसिद्धकरैगा॥ यातैं गृहस्थआश्रमतैंउत्तरहीं वानप्रस्थआश्रमहोवैहै याप्रकारकीव्यवस्थासंभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेशिष्य॥ जैसे यालोकविषे कोईगृहस्थपुरुष आपतकालकेप्राप्तहुए वनविषेनिवास करैहै ॥ तथाभिक्षाअटन काषायवस्त्रोंकूंधारणकरैहै ॥ परंतु वनविषेनिवासादिरूप वानप्रस्थकेकर्मोंकेकरणेकरिकै सोगृहस्थपुरुष

वानप्रस्थहोइसकैनहीं ॥ तथा भिक्षाअटनादिरूप संन्यासीकेकर्मकरणेकरिकै सोगृहस्थपुरुष संन्यासीहोइसकैनहीं ॥ तैसे सोनैष्ठिकब्रह्मचारीभी वनविषे निवासकरणेकरिकै वानप्रस्थहोइसकैनहीं ॥ किंवा ॥ जैसे गृहस्थपुरुष देवतावोंका तथा पितरोंका ऋणीहोवै है ॥ तैसे यहब्रह्मचारी यद्यपि देवतावोंका तथा पितरोंका ऋणिनहींहै॥तथापि सोब्रह्मचारी ऋषियोंकाऋणीहै॥ और जोअधिकारी पुरुषवानप्रस्थआश्रमकूंग्रहणकरै है ॥ सोअधिकारीपुरुष ऋषिऋण देवऋण पितृऋण यातीनऋणोंकीनिवृत्तितैंविना ॥ वानप्रस्थआश्रमकूं ग्रहणकरैनहीं ॥ किंतु तिनतीनऋणोंकूं निवृत्तकरिकैही सोअधिकारीपुरुष वानप्रस्थआश्रमकूं ग्रहणकरै है ॥ याकारणतैंभी वनकेसेवनकरिकै सोनैष्ठिक ब्रह्मचारी वानप्रस्थभावकूं प्राप्तहोइसकै नहीं ॥ किंवा जैसे यहअधिकारी पुरुष ब्रह्मचर्य आश्रमतैंविना गृहस्थआश्रमकूंग्रहणकरैनहीं ॥ किंतु ब्रह्मचर्यआश्रमकूंप्रथमग्रहणकरिकैहीं पश्चात् यहअधिकारीपुरुष गृहस्थआश्रमकाग्रहणकरै है ॥ तैसे यहअधिकारीपुरुष गृहस्थआश्रमतैंविना वानप्रस्थआश्रमका ग्रहणकरैनहीं॥किंतु प्रथमगृहस्थआश्रमकूंग्रहणकरिकैही पश्चात् यहअधिकारीपुरुष वानप्रस्थआश्रमकाग्रहणकरै ॥ यातैं यहक्रमसिद्धभया ॥ यहअधिकारीपुरुष प्रथम ब्रह्मचर्यआश्रमकूंग्रहणकरै॥तात्रह्मचर्यआश्रमतैं अनंतर यहअधिकारीपुरुष गृहस्थआश्रमकूंग्रहणकरै ॥ तागृहस्थआश्रमतैंअनंतर यहअधिकारीपुरुष वानप्रस्थआश्रमकूंग्रहणकरै॥याप्रकारकाक्रम अनेकश्रुतिस्मृतिआदिकशास्त्रोंविषे कथनकऱ्या है ॥ तहांश्रुति ॥ ब्रह्मचर्यादृगृहीभवेद्गृहाद्वनीभवेत् ॥ अर्थयह ॥ यहअधिकारीपुरुष ब्रह्मचर्यआश्रमतैंअनंतर गृहस्थआश्रमकूंग्रहणकरै ॥ और गृहस्थआश्रमतैंअनंतर वानप्रस्थआश्रमकूंग्रहणकरै॥१॥तहांदक्षप्रजापतिकीस्मृति॥श्लोक॥त्रयाणामानुलोम्यंस्यात्प्रातिलोम्यंनविद्यते।प्रातिलोम्येनयोयाति नतस्मात्पापकृत्तमः।अर्थयह॥प्रथमब्रह्मचर्यआश्रम तिसतैंअनंतर गृहस्थआश्रम तिसतैंअनंतर वानप्रस्थआश्रम याप्रकारकेक्रमकानाम अनुलोमहै॥और प्रथमगृहस्थआश्रम तिसतैंअनंतर ब्रह्मचर्यआश्रम तिसतैंअनंतर वानप्रस्थआश्रम ॥ अथवा प्रथमब्रह्मचर्यआश्रम तिसतैंअनंतर वानप्रस्थआश्रम तिसतैंअनंतर गृहस्थआश्रम ॥ याप्रकारकेविपरीतक्रमकानाम प्रतिलोम है॥तहाँ जोअधिकारीपुरुष अनुलोमकरिकै ब्रह्मचर्यादिकतीनआश्रमोंकूंग्रहण

करे है ॥ तिसपुरुषकूं महान्पुण्यकीप्राप्तिहोवै है ॥ और जोपुरुष प्रतिलोमकरिकै तिनब्रह्मचर्यादिकतीनआश्रमोंकूंग्रहणकरै है॥तिसपुरुषकूं महान्पापकीप्राप्तिहोवै है यातैं अनुलोमकरिकैही याअधिकारीपुरुषनैं तिनआश्रमोंकूंग्रहणकरणा ॥शंका॥ जैसे ब्रह्मचर्यादिकतीन आश्रमोंविषे आपनैं क्रमकह्या॥ तैसे चतुर्थसंन्यासआश्रमविषे आपनैं सोक्रम किसवासतैंनहीं कह्या॥ समाधान॥ हेशिष्य॥ ब्रह्मचर्यादिकतीनआश्रमोंविषे जिसप्रकारकाक्रम श्रुतिस्मृतिनैं कथनकऱ्या है ॥ तिसप्रकारकाक्रम संन्यासआश्रमविषे किसीश्रुतिस्मृतिनैं कथनकऱ्यानहीं ॥ यातैं संन्यासआश्रमके ग्रहणकरणेविषे कोईक्रमनहीं ॥ किंतु जिसकालविषे याअधिकारीपुरुषकूं तीव्रवैराग्य प्राप्तहोवै ॥ तिसीकालविषे यहअधिकारीपुरुष संन्यासआश्रमकाग्रहणकरे ॥ तहाँश्रुति ॥ यदहरेवव्रजेत्तदहरेवप्रव्रजेत् यदिवेत्तरथाब्रह्मचर्यादेवप्रव्रजेद्गृहाद्वावनाद्वा ॥ अर्थयह ॥ याअधिकारीपुरुषकूं जिस दिनाविषे तीव्रवैराग्यकी प्राप्तिहोवै ॥ तिसीदिनाविषे सोअधिकारी पुरुष संन्यासआश्रमकूं ग्रहणकरे ॥ तहाँ याअधिकारीपुरुषकूं पूर्वलेपुण्यकर्मोंके वशतैं जोकदाचित् ब्रह्मचर्यआश्रमविषेहीतीव्रवैराग्यकी प्राप्तिहोवै ॥ तौ यह याअधिकारीपुरुष तात्रह्मचर्यआश्रमतैंहीं संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरे ॥ और याअधिकारीपुरुषकूं गृहस्थआश्रमविषे जोकदाचित् तीव्रवैराग्यकी प्राप्तिहोवै ॥ तौ यह अधिकारीपुरुष तागृहस्थआश्रमतैंहीं संन्यासआश्रमकूं ग्रहणकरे ॥ और याअधिकारीपुरुषकूं जोकदाचित् वानप्रस्थआश्रमविषे तीव्रवैराग्यकीप्राप्तिहोवै ॥ तौ यहअधिकारीपुरुष वानप्रस्थआश्रमतैंहीं संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरे ॥ १ ॥ तहांस्मृति ॥ श्लोक ॥ यदैवचास्यवैराग्यं जायतेसर्ववस्तुषु ॥ तदैवसंन्यसेद्विद्वान् अन्यथापतितोभवेत् ॥ अर्थयह ॥ याअधिकारीपुरुषकूं जिसकालमैं सर्वपदार्थोंविषे तीव्रवैराग्यउत्पन्नहोवै ॥ तिसकालविषे सोअधिकारीपुरुष संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरे ॥ याकेविषेकोईक्रमहै नहीं॥परंतु तावैराग्यतैंविना संन्यासकूंकरताहुआ यहपुरुष पतितहोवै है॥१॥ हेशिष्य॥इसतैंआदिलेके अनेकश्रुतिस्मृतियोंविषे संन्यासआश्रमकेग्रहणकरणेविषे तीव्रवैराग्यकूंहीं मुख्यकारणकह्या है ॥ सोतीव्रवैराग्य जिसआश्रमविषे यापुरुषकूंप्राप्तहोवै ॥ तिसीआश्रमतैं यहपुरुष संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरे ॥शंका॥ हेभगवन् ॥ जैसे श्रुतिस्मृतियोंनैं ब्रह्मचर्यादिकतीनआश्रमोंकाक्रम

निरूपणकऱ्या है ॥ तैसे कितनीकश्रुतिस्मृतियोंनैं संन्यासआश्रमकाभीक्रमहीं कथनकऱ्याहै ॥तहाँश्रुति ॥ ब्रह्मचर्यादृगृहीभवेदगृहाद्वनीभवेद्वनात्प्रव्रजेत् ॥ याश्रुतिविषे वानप्रस्थआश्रमतैंअनंतरहीं संन्यासआश्रमकाविधानकऱ्याहै ॥ तहाँ स्मृति ॥श्लोक॥ ऋणत्रयमपाकृत्य निर्ममोनिरहंकृतः ॥ ब्राह्मणःक्षत्रियोवाथ वैश्योवाप्रव्रजेद्गृहात् ॥ अर्थयह ॥ ऋषिऋण देवऋण पितृऋण यातीनऋणोंकीनिवृत्तिकरिकै अहंममअभिमानतैंरहित जोब्राह्मणहै अथवा क्षत्रियहै अथवा वैश्यहै ॥ यहतीनोंवर्ण संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरैं ॥ १ ॥ यास्मृतिविषेभी तीनऋणोंकीवृत्तितैंअनंतरही संन्यासआश्रमकाविधानकऱ्याहै॥यातैं संन्यासकेअक्रमकूंबोधनकरणेहारी श्रुतिस्मृतियोंका तथा संन्यासकेक्रमकूंबोधनकरणेहारी श्रुतिस्मृतियोंका परस्परविरोधप्राप्तहोवै है ॥समाधान ॥ हेशिष्य ॥ विषयभोगोंतैं जिसपुरुषकूंतीव्रवैराग्य नहींप्राप्तभयाहै ॥ किंतु मंदवैराग्य प्राप्तभयाहै ॥ तामंदवैराग्यवान्पुरुषकेप्रति तेश्रुतिस्मृतियां वानप्रस्थआश्रमतैंअनंतर चतुर्थअवस्थाविषे संन्यासआश्रमकाविधानकरैहैं॥और जिसपुरुषकूं विषयभोगतैं तीव्रवैराग्य प्राप्तभया है ॥ तातीव्रवैराग्यवान्पुरुषकप्रति तेश्रुतिस्मृतियां ब्रह्मचर्यादिकआश्रमोंविषेभी संन्यासआश्रमकाविधानकरैं हैं॥यातैं संन्यासआश्रमकेअधिकारीपुरुषोंकेभेदहोणतैं तिनश्रुतिस्मृतियोंकापरस्परविरोधहोवैनहीं ॥ किंवा ॥ न्यासोहिब्रह्म ॥ याश्रुतिविषे संन्यासआश्रमकूं ब्रह्मरूपकह्याहै ॥ और तदेतद्ब्रह्मापूर्वमनपरं ॥ याश्रुतिविषे ब्रह्मकूं पूर्वउत्तरभावतैंरहितकह्याहै ॥ यातैं जैसे ब्रह्मविषे पूर्वउत्तरभावनहीं है॥ तैसे ब्रह्मरूपसंन्यासविषेभी पूर्वउत्तरभावसंभवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जैसे ब्रह्मचर्यआश्रमतैंउत्तर गृहस्थआश्रमहोवैहै॥ तैसे संन्यासआश्रमतैंउत्तरभी कोईआश्रमहोवै है अथवा नहींहोवै है ॥समाधान॥ हेशिष्य जैसे ब्रह्मचर्यआश्रमतैंउत्तर गृहस्थआश्रमहोवै है ॥ तथा गृहस्थआश्रमतैंउत्तर वानप्रस्थआश्रमहोवै है ॥ तैसे संन्यासआश्रमतैंउत्तर कोईदूसराआश्रमहोवैनहीं ॥ किंतु ब्रह्मचर्यादिकसर्वआश्रमोंका यहसंन्यासआश्रमहीं अवधिरूपहै ॥ यह वार्ता शारीरिकभाष्यकेतृतीयअध्यायकेचतुर्थपादविषे ॥ तद्भूतस्यतुनातद्भावोजैमिनेरपिनियमात्तद्रूपाभावेभ्यः याचालीसमेंसूत्रविषे श्रीव्यासभगवान्नैं तथा ॥ तासूत्रकेव्याख्यानकरता श्रीभाष्यकारोंनैं विस्तारतनिरूपणकरीहै ॥ तासूत्रकासंक्षपतैं यहअर्थ है ॥संन्यास

आश्रमतैंऊपर किसीआश्रमकेग्रहणकरणेका बोधनकरणेहारीकोईश्रुतिस्मृतिहैनहीं ॥ तथाशिष्टपुरुषोंका ऐसाआचारभीदेखणेविषे आवतानहीं ॥ याकारणतैं चतुर्थ संन्यासआश्रमकूंप्राप्तभयाजोपुरुषहै ॥ तापुरुषका शरीरकेनाशपर्यंत ताचतुर्थआश्रमतैंऊपरअवरोह होवैनहीं ॥ १ ॥ हेशिष्य चतुर्थसंन्यासआश्रमतैंऊपर किसीआश्रमकाग्रहणहोवैनहीं ॥ यहवार्ता जैसे सर्वशास्त्रोंविषेप्रसिद्धहै ॥ तैसे द्विज नैं किसीआश्रमतैंविना नहींस्थितहोणा यहवार्ताभी श्रुतिस्मृतिआदिकसर्वशास्त्रोंविषेप्रसिद्ध है ॥ तहां दक्षप्रजापतिकीस्मृति ॥ श्लोक ॥ अनाश्रमीनैवतिष्ठेदब्दमेकमपिद्विजः ॥ आश्रमेणविनातिष्ठन् प्रायश्चित्तीयतेहिसः॥ अर्थयह ॥ यालोकविषे द्विज आश्रमतैंविना एकवर्ष पर्यंतभीनहींस्थितहोवै ॥ किंतु किसीएकआश्रमकूंअंगीकारकरिकैही यहद्विज स्थितहोवै ॥और जोद्विज एकवर्षपर्यंतभी आश्रमतैंविना रहै है॥ ताद्विजकूं प्रायश्चित्तकीप्राप्तिहोवै है॥तात्पर्ययह॥ जबपर्यंत याद्विजकीस्त्रीजीवै है॥तबपर्यंत गृहस्थआश्रमहोवै है॥और स्त्रीकीमृत्युतैं अनंतर सोगृहस्थआश्रम निवृत्तहोइजावैहै॥यातैं याद्विजनैं स्त्रीकेमृत्युतैंअनंतर एकवर्षकेभीतरहीकैतौपुनःस्त्रीकाविवाहकरणा॥अथवा वानप्रस्थआश्रमकूंग्रहणकरणा ॥ अथवा संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरणा ॥ परंतु किसीआश्रमग्रहणतैंविना अनाश्रमीहोइकै द्विजनैं कदा चित्भीनहींरहणा ॥१॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ ब्रह्मचर्यआश्रमविषे ऋषियोंकेऋणकीनिवृत्तिकरिकै तथागृहस्थआश्रमविषे देवतापि तरोंकेऋणकीनिवृत्तिकरिकै यहअधिकारीपुरुष वानप्रस्थआश्रमकूंग्रहणकरै ॥तावानप्रस्थआश्रमविषे यहअधिकारीपुरुष तीनोंऋणोंतैंर हितहोवै है॥और जैसे ब्रह्मचारी देवताऋण पितृऋण यादोनोंऋणोंतैंरहितहोवैहै॥तथा गृहस्थ ऋषियोंकेऋणतैंरहितहोवै है ॥तथा वान प्रस्थ ऋषिऋणदेवऋण पितृऋण यातीनोंऋणोंतैंरहितहोवैहै॥तैसे यहचतुर्थआश्रकवालासंन्यासी लौकिकवैदिकसर्वऋणोंतैंरहितहोवै है ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारशास्त्रकीव्यवस्थाकूंजानणेहारा सोयाज्ञवल्क्यमुनि मनकरिकै सर्वऋणोंतैंमुक्तहुआभी तागृहस्थआश्रमके संबंधतैं तिनऋणोंकूंप्राप्तहोताभया ॥ हेशिष्य ॥ गृहस्थआश्रमकूंअंगीकारकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि जिसविचारकरिकै देवतापितरोंकी प्रसन्नताकरणेवासतै गौसुवर्णअन्नादिकपदार्थोंकादानकरताभया ॥ ताविचारकूं तूंश्रवणकर ॥ मैंयाज्ञवल्क्यनैं ब्रह्मचर्यआश्रमविषे वेदों

काअध्ययनकरिकै जिसप्रकारऋषियोंकाऋणदियाहै ॥तिसीप्रकार देवतावोंकाऋण तथापितरोंकाऋण देकारिकै पश्चात् मैं संन्यासआश्र मकूंग्रहणकरौंगा ॥जोकदाचित् ऋषियोंकीन्याईं देवतापितरोंकाऋण मैं नहींदेवोंगा॥तौ ऋषि देवता पितर यातीनोंकाविषमअर्चनरूप पंक्तिभेदहोवैगा॥यातैंऋषियोंकीन्याईं देवतापितरोंकेताईभी मैं भलीप्रकार ऋणदेवों॥इसप्रकार तीनऋणोंकीनिवृत्तिकरिकै मैंयाज्ञवल्क्य जभी संन्यासआश्रमकाग्रहणकरौंगा तभी हमारेगुरुसूर्यभगवान्नैं जोहमारेप्रति आज्ञाकरीथी॥ताआज्ञाकापालन हमारेसैं भलीप्रकारहो वैगा ॥ यातैं सूर्यभगवान्केवचनकूंसत्यकरणेवासतै मैंयाज्ञवल्क्य स्वर्गादिकलोकोंकीप्राप्तिकरणेहारा जोयज्ञादिरूपप्रवृत्तिमार्गहै॥तथामो क्षकीप्राप्तिकरणेहाराजोआत्मज्ञानरूपनिवृत्तिमार्ग है ॥ तिनदोनोंमार्गोंका पालनकरौं ॥हेशिष्य ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै सोयाज्ञव ल्क्यमुनि देवतापितरोंकीप्रसन्नताकरणेवासतै नानाप्रकारकादानकरताभया ॥ अब तायाज्ञवल्क्यमुनिकेगृहस्थआश्रमकावर्णनकरै हैं ॥ हेशिष्य॥ रात्रिदिनविषेसर्वजीवोंकेउपकारकरणेहारा जोयाज्ञवल्क्यमुनिकागृहस्थआश्रमहै ॥ ताकूंदेखिकरिकै सर्वलोक आश्चर्यकूंप्राप्तहो तेभये तहाँ कात्यायनी मैत्रेयीयादोनोंभार्यासहिततथाआज्ञाकारीपुत्रोंसहित सोयाज्ञवल्क्यमुनि यज्ञहोमादिककर्मोंकूंकरिकै इंद्रादिकदेव तावोंकापालनकरताभया॥औरदिनदिनविषे वेदकेपाठकोंकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि ऋषियोंकापालनकरताभया और पुत्रादिकोंकीउत्प त्तिकरिकै तथा पिंडदानादिकोंकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि स्वर्गवासी पितरोंकापालनकरताभया ॥ और रात्रिविषेनिवासकरणेकेस्थान तथानानाप्रकारके अन्न तथा नानाप्रकारकेवस्त्र तथा सुवर्णादिकधन इसतैंआदिलैकै अनेकप्रकारकेपदार्थोंकादानकरणेकरिकै सोयाज्ञ वल्क्यमुनि अर्थिमनुष्योंकापालनकरताभया ॥ औरतृणादिकोंकेदानकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि गौ अश्वादिकपशुवोंकापालनकरता भया ॥ और अन्नकेपकावणेकेजेपात्रहैं॥ तथा भोजनकरणेकेजेपात्रहैं ॥ तिनपात्रोंविषे परिशेषतैंरह्याजोअन्नहै ॥ ता अन्नके पावणेकारिकै तथा बलिदानादिकोंकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि काक श्वानकीटादिकजंतुवोंका पालनकरताभया ॥ और जैसे यालोकविषे किसीउदार घनीपुरुषकेगृहविषे दुंदुभिकेशब्दोंकरिकै अन्नार्थिजीवोंकूंबुलावै हैं॥तैसे तायाज्ञवल्क्यमुनिकेगृहविषे वेदवाणीरूपधेनुके स्वाहा वषट्

स्वधा हंत याचारिस्तनरूपशब्दोंकरिकै देवतादिकोंका आवाहनकरतेभये ॥ तहां स्वाहा वषट् यादोनोंशब्दोंकरिकै इंद्रादिकदेवता
वोंका आवाहनकरतेभये ॥ और स्वधा याशब्दकरिकै पितरोंका आवाहनकरतेभये ॥ आर हर्षकाबोधनकरणेहाराजोहंतशब्दहै ताहंत
शब्दकरिकै अन्नार्थिमनुष्योंकूंबुलावतेभये ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारका अद्भुतगृहस्थआश्रम तायाज्ञवल्क्यमुनिकाहोताभया ॥ अब
याज्ञवल्क्यमुनिके कात्यायनीस्त्रीकावृत्तांत निरूपणकरै हैं ॥ हे शिष्य साकात्यायनीनामास्त्री गृहकेकार्योंविषे अत्यंतकुशलहोतीभई
तहां आपणेगृहकीजेभित्तियां हैं तथागृहकीजाभूमिहै तथागृहकेजेद्वारहैं तथायज्ञशालाकीजाभूमिहै ॥ इत्यादिकसंपूर्णस्थानोंकूं साकात्या
यनी दिनदिनविषे मार्जनकरिकैशुद्धकरतीभई और साकात्यायनी चूनादिकशुक्लमृत्तिकाकरिकैसंपूर्णगृहकूं दुग्धकीन्याईं शुक्लकरतीभई
और तागृहकीशोभावासतैं साकात्यायनी कहांकहां तागृहकूं सेंधुरादिकोंकरिकै रक्तवर्णयुक्तकरतीभई ॥ और साकात्यायनी तागृहकूं
कहींकहां रक्तपीतादिकवर्णोंकरिकैविचित्ररूपवालाकरतीभई ॥ और साकात्यायनी अन्नपकावणेकेपात्रोंकूं तथा जलकेघटोंकूं तथा
कमंडलुवोंकूं तथा तिनोंकेढाकणेकेअल्पपात्रोंकूं भस्मादिकोंसेमाजनकरिकै सर्वदाशुद्धराखतीभई ॥ और जैसे भीमसेननलादिक पाक
विद्याविषेकुशलहैं॥तैसे साकात्यायनीभी सूर्यकेतेजकरिकै तथाप्रसिद्धअग्नितेजकरिकै भक्ष्य भोज्य लेह्य चोष्य याचारिप्रकारकेअन्नकूं
पकावतीभई ॥ और साकात्यायनी प्रातःकालविषे उठिकै स्नानादिकनित्यकर्मोंकूंकरिकै आपणेपतिकापूजनकरतीभई ॥ तथा आपणे
पतिकेजेमातापितारहैं तथापतिकेजेज्येष्ठकनिष्ठभ्रताहैं तथा भागिनियां हैं ॥ तिनसंपूर्णबांधवोंका साकात्यायनी यथायोग्यपूजनकरनी
भई ॥ हेशिष्य इसप्रकार गृहकेव्यवहारोंविषे अत्यंतकुशलबुद्धिकरिकै साकात्यायनी सर्वस्त्रियोंविषेप्रधानहोतीभई ॥ साकात्यायनीके
समान व्यवहारविषेकुशल कोईस्त्री पूर्वहुईनहीं और आगेहोवैगीनहीं और अभीवर्तमानकालविषेहैनहीं अब याज्ञवल्क्यमुनिके दूसरीमैत्रे
यीस्त्रीकावृत्तांत निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ तायाज्ञवल्क्यमुनिकी दूसरीमैत्रेयीनामास्त्रीहोतीभई ॥ सामैत्रेयी संसारसंबंधिजन्ममरणा
दिकदुखोंकूंदेखिकै उनमत्तपुरुषकीन्याईंविचरतीभई ॥ और जैसे वत्स्यकेमरणेकारिकै गौ सर्वदाशोकातुररहैहै ॥ तैसे सामैत्रेयी

यात्रकारकाविचारकरिकै सर्वदाशोकातुर रहतीभई ॥ अब ताकेविचारकानिरूपणकरैहैं ॥ मैं मैत्रेयी कौनहूं ॥ देहादिकसंघातरूपमैंहूं ॥
अथवा देहादिकसंघाततैं मैं भिन्नहूं ॥ तहां देहादिकसंघाततैंभिन्नहुईभीमैं क्याजडरूपहूं अथवा चैतन्यरूपहूं ॥ और इसमनुष्यलोकविषे
मैं किसप्रयोजनवासतैंआईहूं ॥ और इसशरीरकीउत्पत्तितैंपूर्व मैं किसस्थानविषेस्थितथी॥और अबीवर्तमानकालविषे मैं किसविषेस्थि
तहूं ॥ और मरणतैंअनंतर मैं किसस्थानकूंप्राप्तहोवोंगी ॥ और यामेरेपतिकाक्यास्वरूपहै ॥ और यामेरेपुत्रपुत्रियोंकाक्यास्वरूप है ॥
तात्पर्ययह ॥ प्रत्यक्षप्रमाणकरिकैसिद्धजेयहस्थूलशरीरहैं तिनोंकेही पतिपुत्रादिकनामहैं ॥ अथवा तिनशरीरोंतैंभिन्नकिसीवस्तुके पतिपु
त्रादिकनामहैं ॥ सोभिन्नवस्तुभी जडहै अथवा चेतन है॥यहरीतिआगेभीजानिलेणी॥और दिनदिनविषे जोमेरेकूंदुःखहोवै है॥तादुःखका
क्यास्वरूपहै ॥ और विषयसंबंधतैं जोमेरेकूंसुखहोवै है॥ तासुखका क्यास्वरूपहै ॥ और जिनचक्षुआदिकइंद्रियोंकरिकै मैं रूपादिकवि
षयोंकूंदेखतीहूं ॥ तिनचक्षुआदिकइंद्रियोंका क्याम्वरूपहै॥ और जिनस्थावरजंगमजीवोंकूं मैं आपणेनेत्रोंकरिकैदेखतीहूं॥ तिनजीवोंका
क्यास्वरूप है ॥ हेशिष्य याप्रकारकाविचारआपणेमनविषे सदैवकरतीहुई सामैत्रेयी परमशोकातुरहोती भई॥और तामैत्रेयीस्त्रीकेचित्त
केसर्ववृत्तांतकूं जाणताहुआभी सोयाज्ञवल्क्यमुनि आपणेगृहस्थआश्रमकी सिद्धिवासतैं पूर्व तामैत्रेयीकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेश नहींकर
ताभया ॥ किंतु सोयाज्ञवल्क्यमुनि तामैत्रेयीस्त्रीकूं गृहकेकार्योंविषे प्रवृत्तकरताभया ॥ अब याज्ञवल्क्यमुनिकेवृत्तांतकानिरूपणकरै हैं ॥
हेशिष्य इसप्रकार याज्ञवल्क्यमुनिकूं गृहस्थआश्रमविषेरहतेहुये जभी बहुतकालवितीतभया॥ अब तभी सोयाज्ञवल्क्यमुनि एककालविषे
एकांतस्थानविषेबैठिकै याप्रकारकाविचारकरताभया यहबडाआश्चर्य है ॥ यालोकविषे सर्वदेहधारीजीवोंकूं अत्यंतप्रियजोप्राणोंकाधार
णहै ॥ सोप्राणोंकाधारणहीं परमदुःखरूपहै॥काहेतैं यहजीव शरीररूपबंधनगृहकूं जोग्रहणकरै हैं॥सोप्राणोंकेसाधारणवासतैंहीं ग्रहणकरैहैं॥
कैसाहैयहशरीर त्वक् रुधिर मांस मेद मज्जा अस्थि वीर्य यासप्तधातुवोंकरिकैपूर्णहै॥तथा वात पित्त कफ यातीनदोषोंवालाहै ॥ तथा पूय
विष्ठा मूत्र इत्यादिकमलोंकरिकैपूर्ण है॥याकारणतैंहीं यहशरीर अत्यंतदुर्गंधवालाहै॥तथा नानाप्रकारकेभयकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥पुनःयह

शरीरकैसाहै॥आध्यात्मिकदुःख तथा आधिभौतिकदुःख तथा अधिदैविकदुःख यातीनप्रकारकेदुःखोंकरिकैयुक्तहै॥तहाँ शिरोरोग अक्षिरोग अतीसार प्लीह गुल्म भगंदर गुदावर्त्त गंडमाला इसतैं आदिलैके अनकप्रकारकीव्याधियोंकरिकै उत्पन्नभयेजेनानाप्रकारकेदुःखहैं॥तथा काम क्रोध द्वेष लोभ मोहादिरूपआधियोंकरिकै उत्पन्नभयेजेनानाप्रकारकेदुःखहैं॥यादोनोंप्रकारकेदुःखोंकानाम आध्यात्मिकदुःखहै॥और सिंहसर्पवृश्चिक शत्रु इत्यादिकभूतोंकरिकैजन्य जेनानाप्रकारकेदुःखहैं॥तिनदुःखोंकानाम आधिभौतिकदुःखहै ॥ और शीत आतप वर्षा अग्निजल वायु इत्यादिकोंकरिकैजन्य जेनानाप्रकारकेदुःखहैं ॥ तिनोंकानाम आधिभौतिकदुःखहै ॥ पुनःयहशरीरकैसाहै ॥ बाल्य यौवन वृद्ध यातीनअवस्थावोंविषे राग द्वेष मोह शोक अशक्ति इत्यादिकविकारोंकरिकै नानाप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ और याशरीरविषेजोप्राणोंकाप्रवेशहै ॥ तथा याशरीरतैंजोप्राणोंकानिर्गमनहै ॥ यादोनोंकेस्मरणकरिकै उत्पन्नभया जोभयहै ॥ सोभय सर्वअवस्थाविषे अस्मदादिकजीवोंकूं दुःखकीहीप्राप्तिकरै हैं । ताभयजन्यदुःखतैंअधिकदुःख माताकेगर्भविषे तथामरणकालविषेभी होवैनहीं ॥ इसतैं आदिलेके जोअनेकप्रकारकेदुःख इसलोकविषे तथापरलोकविषे जीवोंकूंप्राप्तहोवै हैं॥सो शरीरकेसंबंधतैंहीं प्राप्तहोवै है॥ शरीरकेसंबंधतैंविना याजीवोंकूं कदाचित्भी दुःखकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥यातैं यहशरीरकासंबंधही सर्वदुःखोंकाकारणहै॥किंवा॥एकांतदेश विषेनिवासकरणेहारे जेजीवन्मुक्तविद्वान्पुरुषहैं ॥ तिनमुक्तपुरुषोंकूंभी जभीयहशरीर दुःखकीहीप्राप्तिकरै है ॥ तभी संसारविषेआसक्त जे अस्मदादिकजीवहैं ॥ तिनोंकूं यहशरीर दुःखकीप्राप्तिकरै है याकेविषेक्याकहणाहै किंवा ॥ आपणेएकशरीरविषे जोअहंममअभिमान रूपसंगहै ॥ सोसंगभी जभीयाजीवोंकूं अनेकप्रकारकेदुःखकीप्राप्तिकरै है ॥तभी याशरीरकेसंबंध जेस्त्रीपुत्रादिकअनेकबांधवहैं॥तिनोंविषे अहंममअभिमानरूपसंग याजीवोंकूं अनेकप्रकारकेदुःखोंकीप्राप्तिकरैहै ॥ याकेविषेक्याकहणाहै अत्र याहीअर्थकेस्पष्टकरणेवासतै अनेक दृष्टांतोंकरिकै संगविषे दुःखकीकारणतानिरूपणकरै हैं ॥ तहां वास्तवतैंसर्वसंगतैंरहित जोनिर्गुणआत्माहै ॥ सोआत्माभी अविद्यादिकोंकेकल्पितसंगकरिकै नानाप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवै है यातैं यहसंगही सर्वजीवोंके अनर्थकाकारण है ॥ किंवा ॥ स्व भावतैंशीतस्पर्शवालाजोजलहै ॥ सोजल जभी अग्निकेसाथसंबंधकूंप्राप्तहोवै है ॥ तभी सोजल उष्णभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ और स्व

भावतैं छेदनभावतैंरहितजोवृक्ष है ॥ सोवृक्ष जभी कुठारकेसंगकूंप्राप्तहोवै है॥तभी सोवृक्ष छेदनभावकूंप्राप्तहोवै है॥ और स्वभावतैं छेदन भावतैंरहितजोयहशरीरहै ॥ सोशरीर जभी शस्त्रकेसंगकूंप्राप्तहोवै है॥तभी सोशरीर छेदनभावकूंप्राप्तहोवै है॥ और स्वभावतैंअंतर्मुखजो मनहै ॥ सोमन जभी विषयोंकेसंगकूंप्राप्तहोवै है॥तभी सोमन बहिर्मुखताकूंप्राप्तहोवै है॥ और पूर्वलेपापकर्मोंकरिकैयुक्तजोपापीपुरुष है॥ सोपापीपुरुष जभी दुष्टपुरुषोंकेसंगकूंप्राप्तहोवै है ॥ तभीहीसोपापीपुरुष तापापकेदुःखरूपफलकूंअनुभवकरै है ॥ और स्वभावतैं दुःखतैंर हितजोधर्मात्मापुरुषहै ॥ सोधर्मात्मापुरुष जभी दुःखीपुरुषोंकेसंगकूंप्राप्तहोवै है ॥ तभी सोधर्मात्मापुरुष अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहो वै है ॥ औरस्वभावतैं कामदोषतैंरहितजोपुरुषहै ॥ सोपुरुष जभी कामीपुरुषोंकेसंगकूंप्राप्तहोवै है॥ तभी सोपुरुष कामदोषकूंप्राप्तहोवै है इसप्रकार स्वभावतैं चोरीआदिकविकारोंतैंरहित जोपुरुष है ॥ सोपुरुष जभी चौरादिकपुरुषोंकेसंगकूंप्राप्तहोवै है ॥ तभी सोपुरुष चोरीआदिकविकारोंकूंप्राप्तहोवै है ॥ और अम्लरसवालेजेदाडिमनिंबुआदिकपदार्थ हैं ॥ तिनोंकेदर्शनरूपसंगतैं यापुरुषकेमुखकाजल द्रवीभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ और स्वभावतैं क्रियातैंरहितजोलोहहै ॥ सोलोह जभी चुंबकपाषाणकेसंगकूंप्राप्तहोवै है ॥ तभी सोलोह नानाप्रकारकी गमनआगमनादिरूपक्रियाकूंप्राप्तहोवै है ॥ इसप्रकार यहजीव स्त्रीपुत्रादिकपदार्थोंकेसंगकूं प्राप्तहोइकै नानाप्रकारकेदुः खोंकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ तात्पर्ययह ॥ यालोकविषे जडरूपकरिकैप्रसिद्धजेलोहादिकपदार्थ हैं ॥ तेलोहादिकजडपदार्थभी चुंबकादिकजडपदा र्थोंकेसंगकरिकै जभी नानाप्रकारकेविकारोंकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ तभी यहचेतनजीव स्त्रीपुत्रादिकचेतनपदार्थोंकेसंगकरिकै नानाप्रकारके विकारोंकूंप्राप्तहोवै है याकेविषेक्याकहणाहै ॥ यातैं अहंमम अभिमानरूपसंगकरिकैयुक्तहुआ यहशरीरही सर्वजीवोंकेदुःखकाकारण है ॥ याअर्थविषे मैंयाज्ञवल्क्यहीं दृष्टांतहूं ॥ काहेतैं पूर्व ब्रह्मचर्य अवस्थाविषे मैंयाज्ञवल्क्य सर्वसंगतैंरहितहोताभया ॥ यातैं मेरेकूं किंचित् मात्रभीविक्षेपकीप्राप्तिनहींहोतीभई ॥ सोईमैंयाज्ञवल्क्य अभी स्त्रीपुत्रादिकोंकेसंगकरिकै नानाप्रकारकेविक्षेपकूंप्राप्तहोताहूं ॥ यातैं यह जान्याजावै है॥यहसंगही परमदुःखकाकारणहै अत्र स्त्रीपुत्रादिकोंकेसंगविषे अन्वयव्यतिरेककरिकै विक्षेपकीकारणताकानिरूपणकरै हैं ॥

॥ ९ ॥

पूर्व ब्रह्मचर्यअवस्थाविषे मैंयाज्ञवल्क्य आपणेशरीरकूंभी विष्ठाकेसमानमलिनजाणिकै परमवैराग्यकूंप्राप्तहोताभया ॥ और परमधैर्यकूंधारणकरिकै मैंयाज्ञवल्क्य वनविषेतपकरताभया तावनविषे स्वर्गलोककीअप्सराआइकै नानाप्रकारकेहावभावकरिकै हमारेधैर्यकूंचलायमानकरतीयांभयां ॥ परंतु तिनअप्सरावोंकेहावभावकरिकै हमाराधैर्य नहीं चलायमानहोताभया ॥ कैसी थी तेअप्सरा ॥ बहुतकामरूपीभारकरिकै मंदमंदहैगतिजिनोंकी ॥ तथा आपणेशरीरकीसुगंधिकरिकै केतकीचंपकादिकपुष्पोंकेसुगंधकूं तिरस्कार कऱ्याहै जिनोंनैं ॥ तथा सुवर्णकेपुष्पोंसमानहै शरीरकीकांतिजिनोंकी॥तथा पीनउन्नतजेस्तनहैंतथाजघनस्थानहै तिनोंतैं वायुनेहरणकरेहैंवस्त्रजिनोंके तथा पोर्णमासीकेचंद्रमासमानहैं मुखजिनोंके ॥ तथा चंद्रमाकेसमानउज्ज्वलजेवस्त्रभूषण हैं तिनवस्त्रभूषणोंकरिकैशोभायमानहैंशरीरजिनोंके ॥ ऐसीस्वर्गकी अप्सरा आपणेकटाक्षोंकरिकै मेरेधैर्यकूं नहींनिवृत्तकरतीयांभयां ॥ कैसेहैंतिनअप्सरावोंकेकटाक्ष ॥ कामीपुरुषोंकेधैर्यकूं नष्टकरणेहारे हैं ॥ तथा संभोगकीइच्छारूपउत्कृष्टअभिप्रायकूंबोधनकरणेहारे हैं ॥ और तेअप्सरा आपणेमधुरवचनोंकरिकैभी मेरेधैर्यकूं नहींनिवृत्तकरतीयांभयां ॥ कैसेहैंतिनोंकेवचन ॥अत्यंतकोमलहैं ॥तथा मंदमंदहासयुक्त हैं॥तथा कामीपुरुषोंकेमनकूंहरणकरणेहारे हैं ॥ तथा प्रसिद्धजिनोंकाअर्थ है ॥ तथा गंभीरजिनोंकाअभिप्रायहै ॥ तथा घृतकीन्याईं कामरूपअग्निकूंप्रज्वलितकरणेहारे हैं॥तथा दीर्घललितस्वरकरिकैं जिनोंकाउच्चारण है ॥ ऐसेमधुरशब्दोंकरिकै तथा पादोंविषेस्थितनूपुरादिकभूषणोंकेशब्दोंकरिकै तेअप्सरा हमारेधैर्यकूं नहींनिवृत्तकरतीयांभयां और तेअप्सरा आपणेहस्तपादादिकअंगोंकरिकैभी मेरेधैर्यकूं नहींनिवृत्तकरतीयांभयां ॥ कैसेहैंतिनअप्सरावोंकेअंग ॥ वायुकरिकै तथाचलनेकरिकै शिथिलभावकूंप्राप्तभये जेदुकूलादिकवस्त्र हैं तथा कांची कंकण अंगद आदिकभूषणहैं तिनोंकरिकैयुक्त हैं ॥ तथा रोमांचरूपीकंचुककरिकैविशिष्ट हैं ॥ तथा चलनेकरिकैउत्पन्नभयाजोश्रम ताश्रमरूपभारकरिकै विह्वल हैं ॥ तथा द्रवीभावकूंप्राप्तभया जोमस्तककासिंदूर तथानेत्रोंकाअंजन ताकरिकैयुक्त हैं ॥ तथा ललाटउरस्थानादिकोंविषेस्थितजे कुंकुमचंदनादिकपदार्थ हैं तिनोंकरिकैयुक्त हैं ॥ और सुगंधिवालेपुष्पोंकरिकै ग्रंथनकरेजेकेश हैं॥ तिनकेशोंकेग्रंथीके ॥१०॥

खुलनेकरिकैशोभायमानहैं ॥ तथा हास्यवादित्रगीतादिकोंकरिकै शोभायमानहैं ॥ ऐसेआपणेसुंदरअंगोंकरिकैभी तेअप्सरा मेरेधैर्यकूं नहींनिवृत्तकरतीयांभयां ॥ और तेअप्सरा सुंदरस्थलोंकरिकैभी मेरेधैर्यकूं नहींनिवृत्तकरतीयांभयां ॥ कैसेहैं तेस्थल ॥ कोकिलादिकपक्षियोंकेमधुरशब्दोंकरिकैयुक्तहैं ॥ तथा वसंतऋतुकरिकैयुक्तहैं ॥ तथा मंदाकिनीगंगाकेजलकीसमीपताकरिकै अत्यंतकोमल हैं ॥ तथा वालुकाकरिकैयुक्तहैं ॥ तथा देवतावोंकरिकैसेवितहैं ॥ इसतैंआदिलैकेनानाप्रकारकेउपायोंकूं तेअप्सरा हमारेधैर्यकेनिवृत्तकरणे वासतैंकरतीयांभयां ॥ परंतु तिनअप्सरावोंकेउपायोंकरिकै हमाराधैर्य नहींनिवृत्तहोताभया॥सोहमाराधैर्य अभी वृद्धअवस्थाविषे केवल भ्रांतिकरिकै नष्टहोताभया ॥ अब ताभ्रांतिकानिरूपणकरेहैं ॥ अभी वृद्धअवस्थाविषे जिनस्त्रियोंनैं हमारेधैर्यकूं निवृत्तकऱ्याहै ॥तिनस्त्रियोंकाशरीर हमारेशरीरतैं किंचित्मात्रभीविलक्षणनहीं॥किंतु जैसे रुधिर मांस पूय विष्ठा मूत्र नाडी मज्जाअस्थि इत्यादिकमलिनवस्तुवोंकासमुदायरूप हमाराशरीरहै तैसे इनस्त्रियोंकाशरीरभी रुधिरमांसादिकमलिनवस्तुवोंकासमुदायरूपहै ॥ यातैं ऐसेमलिनस्त्रियोंकेशरीरकूं जोहमनैं सुखकासाधनमान्याहै ॥ सो केवलभ्रांतिकरिकैमान्याहै ॥ किंवा ॥ मैंयाज्ञवल्क्य याआपणेशरीरकूं वारंवार मृत्तिकाजलादिकोंकरिकै प्रक्षालनकरताहूं ॥ तौभीयहहमाराशरीर शुद्धहोतानहीं ॥ किंतु सर्वदादुर्गंधिकरिकै अशुद्धहीरहै है ॥ और यहस्त्रियांतोहमारेन्याईं मृत्तिकाजलादिकोंकरिकै आपणेशरीरकूं प्रक्षालनकरतीयांनहीं ॥ तौ इनस्त्रियोंकाशरीर किसप्रकारशुद्धहोवैगा ॥ किंतु इनस्त्रियोंकाशरीर सर्वदाअशुद्धहीरहैहै ॥ ऐसे अशुद्धस्त्रियोंकेशरीरविषे जोहमनैं सुखकीकारणतामानीहै सोकेवलभ्रांतिकरिकैमानी है ॥ जाविवेकीविरक्तपुरुषहैं ते आपणेशरीरकूं तथा स्त्रीआदिकोंकेशरीरकूं सर्वदाअशुद्धहीजानैंहैं ॥ तहाँ श्लोक ॥ स्थानाद्बीजादुपष्टंभान्निष्पंदान्निधनादपि ॥ कायमाधेयशौचत्वात्पंडिताह्यशुचिंविदुः ॥ अर्थयह यहशरीर माताकेउदररूपस्थानविषेस्थितहोवै हैं ॥ तथा पितामाताकेशुक्रशोणितरूपबीजतैं उत्पन्नहोवैहै ॥ तथा अन्नपानादिकोंकेरसकापरिणामरूपहै ॥ तथा नेत्रादिकनवद्वारोंतैं जिसकामलनिकसैहै॥ तथा अशुचिपणेकाकारणहै ॥ तथा स्वभावतैंशुद्धपणेतैंरहितहै ॥ इतनैंकारणोंतैं विवेकीमहात्मापुरुष याशरीरोंकूं अशुचहीजाणै हैं ॥ १ ॥ किंवा ॥ यौवनअवस्थाकेप्राप्तहुए जेस्त्रियोंकेपीनउन्नतस्तनहोवै हैं ॥ जिनस्तनोंकूं मैंयाज्ञवल्क्य सुवर्णकेकलशोंकीउपमादेताभया॥

तेस्तनकैसे हैं॥जैसे अस्मदादिकपुरुषोंकूं किसीरोगकेवशतैं हृदयदेशविषेम।सकीग्रंथीहोवै हैं ॥ तिनमांसकीग्रंथियोंकेसमान तेस्त्रियोंकैं स्तनहैं ॥ ऐसे मांसकीग्रंथीरूपस्तनोंविषे जोहमारेकूं सुखकीकारणताकाज्ञानभयाहै ॥ सोज्ञान केवलभ्रमरूपहै ॥किंवा॥ एकस्तनोंकूंछोडिकै दूसरा स्त्रीकाशरीर तथा पुरुषकाशरीर समानहीं है ॥ और वास्तवतैंविचारकरिकैदेखियेतौ तिनस्तनोंकारिकैभी तास्त्रीकूंशरीर विषे विलक्षणतासंभवैनहीं ॥ काहेतैं पुरुषोंकेकटिस्थानकेनीचेस्थित जेमांसकीग्रंथीरूपस्फिज हैं ॥ तिन स्फिजोंविषे ॥ तथास्त्रीकेस्तनोंविषे किंचित्मात्रभीविलक्षणता नहीं ॥ किंवा ॥ पुरुषका जो पायुछिद्र है ॥ तथास्त्रीकाजो योनिछिद्रहै तेदोनोंछिद्र मलनिकसणेकेद्वारहैं ॥ यातैं ॥ तिनदोनोंछिद्रोंविषे किंचित्मात्रभीविलक्षणतानहीं॥ यातैं यहसिद्धभया॥स्त्रीकाशरीर दोपायुद्वारवालाहै और पुरुषकाशरीर एकपायुद्वारवाला है ॥ ऐसेस्त्रीकेशरीरविषे यह स्त्रियां हमारेसुखकासाधनहैं याप्रकारका सुख साधनता ज्ञान जो हमारेकूंभयाहै ॥ सोज्ञान भ्रांतिरूपहै ॥ काहेतैं ॥ विचारदृष्टिकरिकैदेखियेतौ यहस्त्रियोंकाशरीर ग्लानिकीउत्पत्तिद्वारा विवेकीपुरुषोंके पश्चात्तापकाहीकारण है ॥ ऐसेदुःखकेसाधनरूपस्त्रीकेशरीरविषे ॥ सुखसाधनतावुद्धि भ्रांतिरूपहीसिद्धहोवै है ॥ जैसे सर्पभावतैं रहितरज्जुविषे सर्पबुद्धि भ्रांतिरूपहै ॥ किंवा ॥ यालोकविषे जेअविवेकीपामरपुरुषहैं ॥ तेभी अन्यपुरुषकेसमीपविद्यमानहुए आपणेस्त्रीकेसाथ संभोगकरैनहीं ॥ और मैंयाज्ञवल्क्यतौ तिनस्त्रियोंकेहृदयदेशविषेस्थितजो अंतर्यामीआत्मारूपपुरुषहै ताकेअत्यंतसमीपविद्यमानहुएभी निर्लज्ज होइकै स्त्रियोंकेसाथ संभोगकरताभया ॥ यातैं तिनपामरपुरुषोंतैंभी मैंयाज्ञवल्क्य निकृष्टहूं॥ अब विषयसुखके कारण का विचारकरै हैं ॥ किंवा ॥ स्त्रीपुरुषका जोपरस्परसंयोगसंबंध है ॥ सोसंयोगसंबंध याजीवोंकेविषयजन्यसुखका कारण नहीं ॥ किंतु यहस्त्री हमारेविषयसुखकासाधनहै ॥ तथा यहपुरुष हमारेविषयसुखकासाधन है ॥ याप्रकारकी जापुरुषकी तथास्त्रीकी भावना है ॥ सा भावनाहीं तिनपुरुषोंके तथा स्त्रियोंके विषयसुखकासाधन है ॥ काहेतैं जोकदाचित् स्त्रीपुरुषकासंयोगसंबंधही ताविषयसुखकाकारणहोवे॥तौ स्नेहकरिकै आपणीयुवानमातकूंआलिंगनकरताहुआ जोयुवानपुत्रहै ॥ तथा स्नेहकरिकै आपणेयुवानपुत्रकूंआलिंगनकरतीहुई जा ॥ ११ ॥

युवानमाताहै॥तिनदोनोंकूं सोविषयसुखहोणाचाहिये॥तथा स्नेहकरिकै आपणेयुवानपितांकूंआलिंगनकरतीहुई जायुवानपुत्रीहै॥तिसकूंभी सोविषयसुखप्राप्तहोणाचाहिये ॥ तथा स्नेहकरिकैपरस्परआलिंगनकरतेहुए जेयुवानभगिनी तथायुवानभ्राताहैं ॥ तिनदोनोंकूंभी सोविषय जन्यसुखहोणाचाहिये ॥ तथा परस्परद्वेषकरिकैयुक्तजेयुवानस्त्रीपुरुष हैं॥तेदोनों किसीदैवयोगतैं परस्परआलिंगनकूंप्राप्तहुएभी ताविषय सुखकूंप्राप्तहोणेचाहिये ॥ और तिनपुत्रादिकपुरुषोंकूं आपणीमातादिकस्त्रियोंकेआलिंगनतैं सोविषयसुखप्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं यहजान्या जावैहै॥स्त्रीशरीरका तथापुरुषशरीरका परस्परसंयोगसंबंध ताविषयसुखकाकारणनहीं ॥ किंतुपूर्वकथनकरीहुईभावनाहीं ताविषयसुखका कारणहै॥स्त्रीकाशरीर तथापुरुषकाशरीर तथा तिनदोनोंका परस्परसंयोगसंबंध यहतीनों ताविषयसुखकेकारणनहीं॥किंवा जिसआत्मस्वरूपआनंदके लेशमात्रआनंदकरिकै ब्रह्मादिकलोक आनंदकूंप्राप्तहोइरहे हैं॥ ऐसाआनंदकासमुद्र स्वयंज्योतिआत्मा सर्वदा हमारेहृदयदेशविषे विराजमान है ॥ ताआनंदस्वरूपआत्माकीउपेक्षाकरिकै मैंयाज्ञवल्क्य जैसे भूताविष्टपुरुष याभूमिविषे नानाप्रकारकीनृत्यकरै है तैसे यानारीरूपीनरकभूमिविषे नानाप्रकारकीनृत्यकरताभयाहूं ॥ यातैं आत्मरूपनित्यसुखकीउपेक्षाकरिकै स्त्रीरूपनरकविषे जाहमारी सुखबुद्धि है ॥ सासुखबुद्धिही हमारेमूर्खताकूंजनावै है ॥ काहेतैं यालोकविषेभी जोपुरुष उत्कृष्टपदार्थकापरित्यागकरिकै निकृष्टपदार्थका ग्रहणकरै है ॥ तापुरुषकूं सर्वलोक मूर्खहीकहै हैं ॥ किंवा ॥ यालोकविषे महान्पुरुषोंकीजाअवज्ञा है ॥ साअवज्ञाही तिनमहापुरुषोंकाहनन है ॥ और सूर्यचंद्रमादिकोंकूंभी आपणीआज्ञाविषे चलावणेहारा जोयहआनंदस्वरूपअंतर्यामीआत्माहै सोसर्वतैंमहान् है॥तामहान् आत्माकी मैंयाज्ञवल्क्यनैं विषयसुखकीप्राप्तिवासतै उपेक्षाकरिदई है॥साउपेक्षारूपअवज्ञाही ताआत्माकाहनन है॥ और आत्महत्यारेके समान यालेकविषेकोईपापात्माहोवैनहीं ॥ यातैं आपणेआत्माका हननकरणेहारा मैंयाज्ञवल्क्य अत्यंतपापात्माहूं ॥ किंवा ॥ यालोक विषे जेअविवेकी पामरपुरुष हैं ॥ तेपामरपुरुष आनंदस्वरूपआत्माकूंजाणतेनहीं ॥ याकारणतैं तेपामरपुरुष स्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंविषे आसक्तिकरिकै बहिर्मुखहोवै हैं ॥ और मैंयाज्ञवल्क्यतौ गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं आनंदस्वरूपआत्माकूं जाणताहुआभी इनस्त्रीपुत्रधनादि

कपदार्थोंविषे आसक्तिकरिकैवादिर्मुखहुआहूं ॥ यातैं मैंयाज्ञवल्क्य अविवेकीपामरपुरुषोंतैंभी निकृष्टहूं ॥ किंवा ॥ यालोकविषेवृद्धअवस्था करिकैयुक्तजेपामरपुरुषहैं ॥ तेपामरपुरुषभी आपणीस्त्रीकूंवृद्धदेखिकै तावृद्धस्त्रीकेसंभोगकीइच्छाकरैनहीं ॥ और मैंयाज्ञवल्क्यतौ वृद्धअवस्थाकूंप्राप्तहोइकै इनवृद्धस्त्रियोंकेसंगभोगकीइच्छाकरताहूं॥याकारणत मैंभीयाज्ञवल्क्यतिनपामरपुरुषोंतैंभीनिकृष्टहूं॥किंवा॥वृद्धअवस्थाविषे जिनस्त्रियोंमैं हमारीआसक्तिभईहै ॥ तेस्त्रियांकैसीहैं ॥शुष्ककाष्ठकेसमान जिनोंकाशरीरहै ॥ तथा भेरीकेसमानजिनोंकाउदरहै तथा पुत्रोंकेप्रति स्तन्यपानकरावणेकरिकै जिनस्त्रियोंकेस्तन शुष्कहोइगयेहैं ॥ ऐसेकुरूपवृद्धस्त्रियोंविषे हमारामन अबपर्यंत प्रवर्तहोवैहै॥यहह मारेकूं बहुतआश्चर्यहोवैहै ॥ किंवा ॥ पूर्व सूर्यभगवाननैं जोहमारेप्रति गृहस्थआश्रमकेकरणेकीआज्ञाकरीथी ॥ सो पुत्रोंकीउत्पत्तिवासतैं तथावेदविद्याकेसंप्रदायकीप्रवृत्तिवासतैं आज्ञाकरीथी॥ताआज्ञाकीपूर्णतातैंअनंतर जोहमनैं गृथस्थआश्रमविषे कालवितीतकऱ्याहै॥ सो आपणीआसक्तिकरिकै कालवितीतकऱ्याहै ॥ इतनैकालपर्यंत गृहस्थआश्रमविषेरहणेमैं कोईसूर्य भगवान्‌कीआज्ञानहींथी॥ किंतु आपणे विद्याकीसंप्रदायकेप्रवृत्तिकरणेविषे सूर्यभगवाननैं हमारेप्रति आज्ञाकरीथी॥ सोविद्याकासंप्रदाय मैंयाज्ञवल्क्यनैं बहुतप्रवर्तकऱ्या॥ काहे तैं चारिवेदोंकूंजाननेहारे कितनेब्राह्मणतौ हमारे शिष्यहैं ॥ और कितनेब्राह्मणतौ हमारेशिष्योंकेभीशिष्यहैं ॥ और कितनेब्राह्मणतौ तिन हमारेप्रशिष्योंकेभीशिष्यहैं ॥ इसप्रकारसंपूर्णब्राह्मणमिलिके अनेककोटिब्राह्मण हमारेशिष्यहोतेभयेहैं ॥ ऐसेमहानसंप्रदायकेप्रवर्त्तहुएभी मैंयाज्ञवल्क्य याप्रकारकी आसक्तिकरिकै तागृहस्थआश्रमकापरित्याग नहींकरताभया ॥अबताआसक्तिकानिरूपणकरैहैं॥मैंयाज्ञवल्क्य विषेहैअत्यंतस्नेहजिनोंका ऐसीजेयहकात्यायनी तथामैत्रेयी मेरीदोभार्या हैं ॥ तिनोंकूं एकलावनविषेपरित्यागकरिकै जोमैं अभीसंन्यास आश्रमकूंग्रहणकरौंगा ॥ तौ यहदोनोंहमारी स्त्रियां मेरेवियोगकरिकै परमदुःखकूंप्राप्तहोवैंगी ॥ यातैं इसकालविषे हमारेकूं संन्यासकर णउचितनहीं॥किंतु इनस्त्रियोंकूं कोईकालपर्यंत संसारसुखकीप्राप्तिकरिकै पश्चात् मैं संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरौंगा ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै मैंयाज्ञवल्क्य तिनस्त्रियोंकूं संसारसुखकीप्राप्तिकरणेविषे कोईकालवितीतकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर मैंयाज्ञवल्क्य पुनः या

॥ १२ ।

प्रकारकाविचारकरताभया॥इनस्त्रियोंकूं संसारसुखकीप्राप्तितौभई॥परंतु इनस्त्रियोंकूं पुत्रकीप्राप्तिनहींभई॥यातैं पुत्रोंकीउत्पत्तिकरतैंविना जोमैं इनस्त्रियोंकापरित्यागकरौंगा॥तौपुत्रोंतैंरहितहुईयहदोनोंस्त्रियां मेरेवियोगकरिकै परमदुःखकूंप्राप्तहोवैंगी॥यातैं अभीगृहस्थआश्रमका परित्यागकरणा हमारेकूं योग्यनहीं॥किंतुइनस्त्रियोंविषे पुत्रोंकीउत्पत्तिकरिकै पश्चात्मैं संन्यासआश्रमकूं ग्रहणकरौंगा॥याप्रकारकाविचार करिकै मैंयाज्ञवल्क्य पुत्रोंकीउत्पत्तिकरणेविषे कोईकालवितीतकरताभया ॥ और तिनपुत्रोंके उत्पन्नहुएतैंअनंतर मैंयाज्ञवल्क्य पुनःया प्रकारकाविचारकरताभया ॥ इनस्त्रियोंकूं पुत्रोंकीप्राप्तितौभई ॥ परंतु इनपुत्रोंकेजातकर्मादिकसंस्कारभयेनहीं ॥ जोमैं इनबालकोंकाप रित्यागकरिकै अभीसंन्यासआश्रमकूंग्रहणकरौंगा॥ तौ जातकर्मादिकसंस्कारोंतैंरहितहुए यहबालक परमदुःखकूंप्राप्तहोवैंगे ॥ यातैंअभी हमारेकूं संन्यासकरणायोग्यनहीं ॥ किंतु जातकर्मतैंआदिलैके उपनयनपर्यंत इन बालकोंकेसंस्कारकरिकै पश्चात्मैं संन्यासआश्रमकूंग्रह णकरौंगा॥याप्रकारकाविचारकरिकै मैंयाज्ञवल्क्य तिनबालकोंके जातकर्मादिकसंस्कारकरणेविषेभी कोईकालवितीतकरताभया ॥और तिनपुत्रोंकेउपनयनपर्यंत संस्कारोंकेकरणेतैंअनंतर मैंयाज्ञवल्क्य याप्रकारकाविचारकरताभया ॥ इनपुत्रोंके उपनयनपर्यंत संस्कारतौ हुए ॥ परंतु इनहमारेपुत्रोंकूं विद्याकीप्राप्तिभईनहीं ॥ जोमैं इनपुत्रोंकापरित्यागकरिकै अभीसंन्यासआश्रमकूंग्रहणकरौंगा ॥ तौ यहहमा रेपुत्र विद्यातैंरहितहुए परमदुःखकूंप्राप्तहोवैंगे ॥ यातैं अभीहमारेकूं संन्यासकरणायोग्यनहीं ॥ किंतु इनपुत्रोंकेताईं आपणीसंपूर्णविद्यादैकै पश्चात् मैं संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरौंगा ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै मैंयाज्ञवल्क्य तिनपुत्रोंकेविद्यापढावणेविषे कोईकालवितीतकरता भया ॥ और तिनपुत्रोंकूं विद्याकीप्राप्तिहुएतैंअनंतर मैंयाज्ञवल्क्य पुनःयाप्रकारकाविचारकरताभया ॥ इनहमारेपुत्रोंकूं विद्याकीतौप्राप्ति भईहै ॥ परंतु इन हमारेपुत्रोंकूं स्त्रीकीप्राप्तिभईनहीं ॥ जोमैं इनपुत्रोंकापरित्याकरिकै अभीसंन्यासकरौंगा तौ स्त्रीतैंरहितहुए यह हमारेपुत्र परमदुःखकूंप्राप्तहोवैंगे ॥ यातैं अभीहमारेकूं संन्यासग्रहणकरणायोग्यनहीं ॥ किंतु इनपुत्रोंकाविवाहकरिकै पश्चात् मैं संन्या सआश्रमकूंग्रहणकरौंगा ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै मैंयाज्ञवल्क्य तिनपुत्रोंकीविवाहकरणेविषे कोईकालवितीतकरताभया ॥ और ति

नपुत्रोंकेतथापुत्रियोंकेविवाहहुएतैंअनंतरमैंयाज्ञवल्क्यपुनःतिनपुत्रोंकेभीपुत्रोंकेदेखणेवासतैंकोईकालवितीतकरताभया॥औरतिनपौत्रोंकेउ
त्पन्नहुएतैंअनंतरमैंयाज्ञल्क्यतिनपौत्रोंकेभीविवाहकरणेवासतैंकोईकालवितीतकरताभया ॥ याप्रकारकाविचारकरताहुआसोमैंयाज्ञवल्क्य
अत्यंतजीर्णअवस्थाकूंप्राप्तभयाहूं॥तौभीहमाराचित्तयासंसारतैंउपरामनहींहोता॥किंतु अवपर्यंतभी सोहमाराचित्त संसारविषेही धावनकरै
है॥यातैं यहजान्याजावैहै॥इनस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंकाजोसंगहैसोसंगहीयाजीवोंकेअनर्थकाकारणहै ॥तिनजीवोंविषेभीचतुर्थआश्रमवालेजे
संन्यासीहैं॥तिनसंन्यासियोंकातौयहसंगविशेषकरिकैअनर्थकाकारणहै॥तहांश्लोक॥निःसंगतामुक्तिपदंयतीनां संगादशेषाःप्रभवन्तिदोषाः॥
आरूढयोगोपिनिपात्यतेऽधः संगेनयोगीकिमुतात्पसिद्धिः॥अर्थयह।स्त्रीधनादिकपदार्थोंकेसंगकापरित्यागरूपजोनिःसंगताहैसानिःसंगताही
संन्यासियोंकूं मोक्षकामार्गहै॥काहेतैं स्त्रीआदिकोंकेसंगतैं यापुरुषकूं संपूर्णदोषप्राप्तहोवैहैं॥जोपुरुष योगविषेआरूढहै॥ तिसपुरुषकूंभीजभी
यहस्त्रीआदिकोंकासंग नीचेपतनकरैहै ॥ तभी योगविषेआरूढहोणेकीइच्छावानपुरुषकूं यहस्त्रियोंकासंग नीचेपतनकरैहै याकेविषेक्याकह
णाहै ॥ यातैं संन्यासियोंनैं तिनस्त्रीधनादिकपदार्थोंकेसंगका विशेषकरिकैपरित्यागकरणा ॥ १ ॥ तात्पर्ययह ॥ विद्यादिकसर्वगुणोंकरिकै
युक्त जोमैंयाज्ञल्क्यहूं॥ सोमैंभी यास्त्री पुत्रादिकोंकेसंगतैं जभी याप्रकारकेदुर्दशाकूंप्राप्तभयाहूं ॥ तौ अल्पविचारवालेइतरजीव स्त्रीपुत्रा
दिकपदार्थोंकेसंगकरिकै तादुर्दशाकूं प्राप्तहोवैंगे याकेविषेक्याकहणाहै ॥ यातैं यहसिद्धभया ॥ यास्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंकासंगही आस
क्तिद्वारा याजीवोंकेसर्वअनर्थोंका कारणहै यातैं जिसपुरुषकूं करामलककीन्याईं संशयविपर्ययतैंरहित आत्माकासाक्षात्कारहोवै ॥ तिसवि
द्वान्पुरुषनैंभी स्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंकासंग कदाचित्भीनहींकरणा ॥ तिनपदार्थोंविषेभी स्त्रीकासंग यापुरुषनैं कदाचित्नहींकरणा ॥
तिनस्त्रियोंविषेभी युवानस्त्रियोंकासंग यापुरुषनैं कदाचित्भी नहींकरणा ॥ काहेतैं मरणतैंअनंतर पापीजीवोंकूं जोनरकप्राप्तहो
वह ॥ सोनरक स्थावरहै ॥ यातैं सोनरक त्यागकियेतैंअनंतर तिनपापीजीवोंकेपीछेआवैनहीं ॥ और यहस्त्रीतौ दोपादोंसैंचलणेहारा
मूर्तिमान्नरकहै ॥ यातैं सोस्त्रीरूपनरक त्यागकियेतैंअनंतरभी यापुरुषकेपीछेआवैहै ॥ ऐसेस्त्रीरूपबलवान्नरकविषे जोकदाचित् सर्वशा

स्त्रोंकावेत्ताविद्वान्पुरुषभीपडेहै॥तौ सोविद्वान्पुरुषभी तास्त्रीरूपनरकतैं आपणेकूंनिकासणेविषे समर्थहोइसकैनहीं॥तिनविद्वान्पुरुषोंविषे
मैंयाज्ञवल्क्यहीदृष्टांतरूपहूं॥काहेतैं सर्वविद्वान्पुरुषोंविषेमुख्य तथा संपूर्णविद्याकूंजानणेहारा तथा आत्मसाक्षात्कारकरिकैयुक्त ऐसाजोमैं
याज्ञवल्क्यहूं ॥ सोभी यास्त्रीरूपनरकतैं आपणेकूंनिकासणेविषे समर्थनहींहोइसकता॥ यातैं योगारूढपुरुषभी स्त्रीकेसंगकरिकै अधःपतन
होवै है ॥ यहजोवार्ता सर्वशास्त्रोंविषेकही है सोयथार्थहै॥ किंवा॥जैसे यालोकविषे ग्रामकेप्राप्तिकरणेहारामार्गहोवै है॥तैसे नरकरूपग्रामके
प्राप्तिकरणेहारा यहस्त्रीकाशरीररूपहीमार्ग है॥यातैं मोक्षकीप्राप्तिकरणेहारा जो आत्मज्ञानरूपमार्ग है॥ ताज्ञानरूपमार्गकेप्राप्तिकीइच्छा
जिसपुरुषकूंहोवै ॥ तिसमुमुक्षुजननैं यहस्त्रीरूपनरककामार्ग अवश्यपरित्यागकरणा ॥ किंवा ॥ यालोकविषे जेअधिकारीपुरुष संन्यासआ
श्रमरूपमार्गकरिकै मोक्षकेप्राप्तिकीइच्छाकरै हैं तिनअधिकारीपुरुषोंकूंतासंन्यासरूपमार्गविषे एकस्त्रियोंतैंहीभयकीप्राप्तिहोवैहै॥ तिनास्त्रि
योंकूंछोडिकै दूसरेकिसी सिंह सर्प चौर राजा जल अग्नि विष आधि व्याधि देव भूत इत्यादिकोंतैं तिनअधिकारीपुरुषोंकूं भयकीप्राप्तिहो
वैनहीं ॥ तहां स्त्रियोंतैं जो तिनसंन्यासियोंकूंभयहोवै है ॥ याकेविषेयहकारण है॥बहिर्मुखपुरुषकूं आत्माकासाक्षात्कारहोवैनहीं॥ यहशा
स्त्रकासिद्धांत है ॥ सा बहिर्मुखता जैसेस्त्रीकेसंगतैंहोवै है ॥ तैसे दूसरेकिसीपदार्थकेसंगतैंहोवैनहीं॥ काहेतैं यास्त्रीयोंका जोमनकरिकैस्मर
ण है ॥ सोस्मरणभी यापुरुषोंकेचित्तविषेकामकीउत्पत्तिकरै है ॥ जभी तिनस्त्रियोंकेस्मरणतैंभी यापुरुषविषे कामउत्पन्नहोवै है ॥ तभी
तिनस्त्रियोंकेदर्शनतैं तथा तिनस्त्रियोंकेवचनतैं तथा तिनस्त्रियोंकेस्पर्शतैं यापुरुषोंकेचित्तविषे कामकीउत्पत्तिहोवै है ॥ याकेविषेक्याक
हणा है ॥ यातैं आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासतैं जिनअधिकारीपुरुषोंनैं संन्यासआश्रमकूंग्रहणकऱ्या है॥ तेअधिकारीपुरुष शरीरकरिकै
तथा मनकरिकै तथा वाकादिकइंद्रियोंकरिकै कदाचित्भी तिनस्त्रियोंकासंगनहींकरैं ॥ जोकदाचित् यहअधिकारीपुरुष संन्यासआश्र
कूंधारणकरिकै स्त्रियोंकासंगकरैगा ॥ तौ जैसे अग्निकेसंबंधतैं घृत द्रवीभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ तैसे यासंन्यासियोंकाचित्तभी आपणेधैर्यकाप
रित्यागकरिकैद्रवीभावकूंप्राप्तहोवैगा॥ ताकरिकै सोसंन्यासी मोक्षमार्गतैंपतितहोवैगा॥यातैं संन्यासियोंनैं सर्वप्रकारतैं स्त्रियोंकासंगनहींकर

णा ॥ किंवा ॥ यालोकविषेप्रसिद्धजोसर्पादिकोंकाविष है॥ताविषकेनिवृत्तिकरणेवासतैं यद्यपि शास्त्रने नानाप्रकारकेउपाय कथनकरेहैं ॥ तथापि यास्त्रीरूपसर्पकेविषकीनिवृत्तिकरणेका एकहीउपाय शास्त्रनैं कथनकऱ्या है ॥ सोएकउपाययहहै॥ शरीरकरिकैतिनस्त्रियोंकास्पर्श नहींकरणा ॥ और मनकरिकै तिनस्त्रियोंकास्मरणनहींकरणा॥और वाकादिकइंद्रियोंकरिकै तिनस्त्रियोंकेसाथसंभाषणादिकनहींकरणे ॥ याप्रकारकेउपायकूंछोडिकरिकै दूसराकोईउपाय तास्त्रीरूपसर्पकेविषकीनिवृत्तिकरणेहाराहैनहीं ॥ सोयाप्रकारकाउपाय गृहस्थआश्रमवि षेरहिकरिकै मैंयाज्ञवल्क्यसैं होइसकैगानहीं ॥ यातैं यास्त्रीपुत्रधनादिकसर्वपदार्थोंकापरित्यागकरिकै मैंयाज्ञवल्क्य संन्यासआश्रमकूंग्रह णकरौं ॥ जोमैं इनस्त्रीपुत्रादिकोंकेसंगकापरित्याग नहींकरौंगा॥ तौ इनस्त्रीपुत्रादिकोंकेसंगतैं हमारेकूं दूसरेजन्मकीप्राप्ति अवश्यहोवैगी ॥ काहेतैं वासनाकरिकैही याजीवोंकूंजन्मकीप्राप्तिहोवै है ॥ जैसे जाग्रत्अवस्थाविषे यापुरुषकी जिसपदार्थविषेदृढवासनाहोवै है ॥ तिसी पदार्थकूं यहपुरुष स्वप्नविषेदेखे है ॥ तैसे मरणकालविषेभी यापुरुषकूं जैसीदृढवासनाहोवै है॥ तावासनाकेअनुसारही सोपुरुष दूसरेशरीर को प्राप्तहोवै है और ता दूसरे शरीरविषेभी यहजीव पूर्वलेकामक्रोधलोभमोहादिकोंकेसंस्काररूपवासनाकरिकै पुनःकामक्रोधादिकोंकूंप्रा प्तहोवै है॥तिनकामक्रोधादिकोंके संस्काररूपवासनाकरिकै यहजीव पुनःजन्मकूंप्राप्तहोवै है ॥ इसप्रकार यहजीव स्त्रीआदिकोंकेसंगकरिकै अनेकप्रकारकेजन्मोंकूंप्राप्तहोवै है॥किंवा॥स्त्री आदिकोंकेसंगतैं यापुरुषोंकेचित्तविषे कामक्रोधादिकविकार उत्पन्नहोवै हैं ॥ और तिनका मक्रोधादिकविकारोंकरिकै यापुरुषकाचित्त अशुद्धभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ और ता अशुद्धचित्तविषे पूर्वउत्पन्नहुआभीआत्मज्ञान शिथिलहो इजावै है ॥ तात्पर्ययह ॥ पूर्वउत्पन्नहुआआत्मज्ञानभी जभी ताअशुद्धचित्तविषे शिथिलहोइजावै है ॥ तभी ताअशुद्धचित्तविषे नवीनज्ञा नकेउत्पत्तिकी क्याआशा है ॥ यातैं यहसिद्धभया स्त्रीपुत्रादिकपदार्थोंकेसंगतैं यापुरुषविषे कामक्रोधादिकविकार उत्पन्नहोवै हैं ॥ ताका मक्रोधादिकविकारोंकरिकै यहपुरुष ब्रह्मज्ञानतैं तथा कर्मउपासनारूपदोनोंमार्गतैं भ्रष्टहोइकै वारंवार कीटपतंगादिकशरीरोंकीप्राप्तिरूप तथा नरककी प्राप्तिरूप तृतीयमार्गकूंप्राप्तहोवै है यापकार स्त्रियोंकेसंगतैं यहपुरुष कोटिकल्पपर्यंत नानाप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवै है ॥

किंवा॥ जैसे यहपुरुष स्त्रियोंकेसंगतैं कामादिकोंकीउत्पत्तिद्वारा अनेकजन्मोंविषेदुःखकूंप्राप्तहोवैहै॥ तैसे विषयासक्तकामीपुरुषोंकेसंगतैंभी यहजीव तिसीप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवै है॥ काहेतैं तेविषयासक्तकामीपुरुष सर्वदा स्त्रीसंबंधीकामकाहीवर्णनकरे हैं ॥ तिनकामीपुरुषोंकेव चनोंतैंतिसपुरुषकूं अवश्यकरिकै स्त्रीकास्मरणरूपज्ञानहोवैगा ॥ और तास्मरणकरिकै सास्त्रीरूपअग्नितापुरुषकेचित्तकूं अवश्यदग्ध करैगी ॥ तादग्धचित्तविषे आत्माकाविचारहोइसकैनहीं ॥ यातैं मोक्षकीप्राप्तिवासतै जिसपुरुषनैं संन्यासआश्रमकाग्रहणकऱ्या है ॥ सोसं न्यासीपुरुष स्त्रियोंकेसंगका तथा स्त्रियोंविषेआसक्तकामीपुरुषोंके संगका अवश्यकरिकै परित्यागकरै ॥ किंवा ॥ जैसे महान्वायु विषेस्थितजोदीपकहै॥सोदीपक मार्गादिकपदार्थोंकाप्रकाशरूपकार्यकूं उत्पन्नकरैनहीं ॥ तैसे गुरुशास्त्रकेउपदेशतैंउत्पन्नभयाभीब्रह्मज्ञान स्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंकेसंगरूपप्रतिबंधकेवशतैं अज्ञानकीनिवृत्तिरूपकार्यकूंउत्पन्नकरैनहीं ॥ यातैं मोक्षकेप्राप्तिकीइच्छा जिसपुरुषकूं होवै ॥ तिसपुरुषनैं स्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंकेसंगका अवश्यपरित्यागकरणा ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार स्त्रीआदिकपदार्थोंकेसंगविषे नाना प्रकारकेदोषोंकाविचारकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि तिनस्त्रीपुत्रादिकपदार्थोंकेसंगकापरित्यागकरणेवासतै संन्यासआश्रमकेग्रहणकरणेका दृढनिश्चयकरताभया ॥ और सोयाज्ञवल्क्यमुनि अत्यंतकृपालुहै ॥ यातैं सोयाज्ञवल्क्यमुनि पुनःयाप्रकारकाविचारकरताभया ॥ याभू मिविषे सप्तपादोंकेउठावणेकरिकै जितनाकाल वितीतहोवै है ॥ तितनेंकालपर्यंतभी जोपुरुष किसीपुरुषकेसाथ सहवासकरैहै ॥ सोपुरुष तिसपुरुषकामित्रहोवैहै ॥ यहवार्ता शास्त्रोंविषे महात्मापुरुषोंनैं कथनकरीहै ॥ और मैंयाज्ञवल्क्यतौ इनस्त्रियोंकेसाथ चिरकालपर्यंत रह्याहूं ॥ यातैं शास्त्रकरीरीतिसैं यहस्त्रियां हमारेमित्रहोवै हैं ॥ और यालोकविषे उपकारकरणेहारेकानाम मित्रहोवै है॥यातैं इनास्त्रियोंऊप रभीहमारेकूं उपकारकऱ्याचाहिये ॥ तहाँ यहहमारीकात्यायनीनामास्त्रीतौकेवलगृहकेकार्योंविषेहीकुशलहै ॥ दूसरेकिसीबंधकूं तथामो क्षकूं यहकात्यायनीजाणतीनहीं॥यातैं याकात्यायनीकूं ब्रह्मविद्याकाअधिकारनहीं॥और यहहमारी मैत्रेयीनामाजोदूसरीस्त्रीहै॥ सामैत्रेयी संसारकेजन्ममरणादिकदुःखोंकूंदेखिकरिकै सर्वदा शोकातुररहै है ॥ और यहमैत्रेयी सर्वदा मोक्षकेप्राप्तिकीइच्छाकरै है ॥ और यामैत्रे

यकूं यौवनअवस्थाविषेभी कामादिकविकार नहीं प्राप्तभयेहैं ॥ और यामैत्रेयी का आपणेशरीराविषेभी स्नेहनहींहै ॥ जभी आपणेशरीराविषेभी यामैत्रेयीकास्नेहनहींभया तभी पतिपुत्रादिकोंविषे यामैत्रेयीकास्नेह किसप्रकारहोवैगा ॥ और यहमैत्रेयीस्त्री पूर्वजोहमारीसेवाकरतीभईहै ॥ सो भी लौकिकस्त्रियोंकीन्याईं कामभावनाकरिकैयामैत्रेयीनैं हमारीसेवानहींकरी ॥ किंतु पतिव्रतास्त्रीनेपतिकीसेवाकरणीयाप्रकारकेशास्त्रनैंबो नकऱ्याजोपतिव्रतास्त्रियोंकाधर्म ॥ ताधर्मकेभंगकीभयतैं यहमैत्रेयी हमारीसेवाकरतीभईहै ॥ यातैंयहमैत्रेयी ब्रह्मविद्याकाअधिकारीहै ॥ जोमैं यामैत्रेयीकेप्रतिब्रह्मविद्याकेउपदेशकियतैंविनाहीं ॥ संन्यासआश्रमकूंधारणकरौंगा तौ कात्यायनीकीन्याईं यामैत्रेयीकूं धनादिकपदार्थोंकी प्राप्तिकरिकैतौ संतोषहोवैगानहीं ॥ यातैं यहमैत्रेयी चिंताकरिकै परमदुःखकूंप्राप्तहोवैगी ॥ यातैं यामैत्रेयीकेप्रति प्रथम ब्रह्मविद्याकाउप देशकरिकै पश्चात् मैं संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरौं ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकाविचार आपणे मनविषेकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि तामैत्रेयीस्त्रीके प्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेमैत्रेयी ॥ मैंयाज्ञवल्क्य अभी यागृहस्थआश्रमकापरित्यागकरिकैचतुर्थ संन्यासआश्रमकूं ग्रहणकरताहूं ॥ यावार्तोकूंतुमअंगीकारकरो हेमैत्रेयी हमारे गृहविषे जितनाकीसुवर्णगौआदिकधनहै ॥ ताधनकेदोविभागक रिकैएकधनकाभाग मैं तुमारेताईंदेताहूं ॥ और दूसराधनकाभाग मैं कात्यायनीकेताईंदेताहूं ॥ ताधनकरिकै हमारेगयेतैंअनंतर तुमदोनोंस्त्रि योंकूं सुखकीप्राप्तिहोवैगी ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकावचन जभीयाज्ञवल्क्यमुनिनैं मैत्रेयीस्त्रीकेप्रतिकह्या ॥ तभी संसाररूपभारकरिकैअत्यं तखेदकूंप्राप्तहुई सामैत्रेयी याप्रकारकेअवसरकूंपाइकैयाज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति याप्रकारकावचन कहतीभई ॥ मैत्रेयीउवाच ॥ हेभगवन् ॥ जिसधन कीप्राप्तिकरिकै मैंमैत्रेयी मरणतैंरहितहोवौं ॥ ऐसेधनकेप्राप्तिकी मैं इच्छाकरतीहूं ॥ और जिसधनकरिकै यालोकविषे मरणकीप्राप्तिहो वैहै ॥ ताधनकेप्राप्तिकीमैं इच्छाकरतीनहीं ॥ हेभगवन् ॥ सुवर्णादिकधनकरिकैपूर्ण यहसंपूर्णपृथिवी जोकदाचित् आप हमारेताईंदेवो ॥ तौ ताधनकीप्राप्तिकरिकै मैंमैत्रेयी अमृतभावकूंप्राप्तहोवोंगी ॥ अथवा ताधनकरिकै मैं अमृतभादकूंनहींप्राप्तहोवोंगी ॥ यादोनोंपक्षोंविषे एक पक्षकूं आप निश्चयकरिकै हमारेप्रतिकथनकरो ॥ तिसतैंअनंतर विचारकरिकै मैं आपसे धनलेवोंगी ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकावचन

जभी मैत्रेयीने याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रतिकह्या ॥ तभी सोयाज्ञवल्क्यमुनि सुवर्णादिकधनकरिकै याजीवोंकूं अमृतभावकीप्राप्तिनहींहोवै है ॥ यादूसरेपक्षकूंअंगीकारकरिकै तामैत्रेयीकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेमैत्रेयी यासुवर्णादिरूपनाशवान धनकरिकै कोईभीदेहधारीजीव मोक्षरूपअमृतभावकूंप्राप्तहोइसकैनहीं ॥ उलटा यासुवर्णादिरूपधनकरिकै यहजीव मरणकूंहींप्राप्तहोवै हैं ॥ अब सुवर्णादिकधनविषे अन्वयव्यतिरेककरिकै मरणकीकारणता निरूपणकरै हैं ॥ यालोकविषे जितनेकीधनवान्पुरुष हैं ॥ तेधनीपुरुष महाराजातैं तथा चौरपुरुषोंतैं तथा अन्यदुष्टपुरुषोंतैं अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोइकै मृत्युकूंहींप्राप्तहोवै हैं ॥ हेमैत्रेयी यालोकविषे ऐसा कोईधनवानपुरुषहैनहीं ॥ जो चिंतातैंरहितहोइकैनिवासकरैहैं ॥ किंतु याधनवान्पुरुषोंकूं स्वप्नअवस्थाविषेभी राजाचौरअग्निआदिकोंका भय बन्यारहैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जभी स्वप्नअवस्थाविषेभी यहधनवान्पुरुषराजादिकोंकीभयतैंरहितनहींहोवै हैं ॥ तभी जाग्रतअवस्थाविषे यहधनवान्पुरुष राजादिकोंकेभयतैंरहित किसप्रकारहोवैंगे ॥ और हेमैत्रेयी यालोकविषे धनतैंरहितजेनिर्धनपुरुषहैं ॥ तिनोंकूं विशेष करिकैरोगादिकभीहोवैनहीं ॥ तथा तिननिर्धनपुरुषोंकेशरीरविषे बलभीअधिकहोवैहै ॥ तथा तिननिर्धनपुरुषोंकीजठराग्निभी प्रज्वलित रहैहै ॥ यातैंयहजान्याजावैहै ॥ तिननिर्धनपुरुषोंऊपर दैवभीअनुकूलहीरहैहै ॥ अब धनीपुरुषोंऊपरदैवकीप्रतिकूलता दिखावैहैं ॥ हेमैत्रेयी यालोकविषे जेधनवान्पुरुषहैं तिनोंऊपर विशेषकरिकैतौ दैव प्रतिकूलहीरहैहै ॥ काहेतैं यालोकविषे विशेषकरिकैतौ धनवान्पुरुष रोगी हीरहैहैं ॥ तथा तिनधनवान्पुरुषोंकूं क्षुधाभीनहींलागैहै ॥ तथा तिनधनवान्पुरुषोंका आयुष्भीअल्पहीहोवै है ॥ तथा बहुतधनकेप्राप्त हुएभी तिनधनीपुरुषोंकेतृष्णाकीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ और तेधनीपुरुष आपणेपुत्रादिकबांधवोंकेसाथभी मनविषेद्वेषहीराखैहैं ॥ और कोई कधनवान्पुरुषतौ श्वानोंकीन्याईं प्रसिद्धही पुत्रादिकबांधवोंकेसाथ द्वेषकरैहैं ॥ और याकार्यकूं मैंकरौं तथायाकार्यकूं मैंनहींकरौं याप्रका रकीचिंताकरिकै तेधनवान्पुरुष सर्वदा व्याकुलहीरहैहैं ॥ ताचिंताकरिकै तेधनवान्पुरुष किंचित्मात्रभी सुखकूंप्राप्तहोवैंनहीं ॥ और यालोकविषे महात्मादयालुपुरुष निर्धनपुरुषोंऊपर कृपाकरिकै जैसास्नेहकरै हैं तैसास्नेह तेमहात्मादयालुपुरुष धनवान्पुरुषऊपरकरैनहीं ॥

और यालोकविषे धनकेमदकरिकै यहधनीपुरुष जिसप्रकारकेपापकर्मोंकूं करै हैं ॥ तिनपापकर्मोंकूं यहनिर्धनपुरुषराजादिकोंकेभयतैं करैनहीं॥ और यालोकविषे धनवान्पुरुष धनकेमदकरिकै देवतावोंकीभीअवज्ञाकरै हैं॥तथा तेधनीपुरुष गुरुवोंकीभीअवज्ञाकरै हैं॥ तथा तेधनीपुरुष अतिथीपुरुषोंकीभीअवज्ञाकरै हैं ॥ तथा तेधनीपुरुष वेदवेत्ताब्राह्मणोंकीभीअवज्ञाकरै हैं॥ तथा तेधनीपुरुष ब्रह्मवेत्ताज्ञानीपुरुषोंकीभीअवज्ञाकरै हैं ॥ और यहधनवान्पुरुष आपणेपक्षविषेस्थितजीवोंके तथापरपक्षविषेस्थितजीवोंके सर्वदा उपद्रवकूंहीकरै हैं ॥ याकारणतैं तेधनवान्पुरुष इसलोकविषे तथापरलोकविषे अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंहीं प्राप्तहोवै हैं॥और यालोकविषे जेनिर्धनदरिद्रीपुरुषहैं॥ तेनिर्धनपुरुष परजीवोंकेपीडाकरणेविषे समर्थ हैं नहीं ॥ यातैं तेनिर्धनपुरुष तिनदुःखोंकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ याकारणतैं तिनधनवान्पुरुषोंतैं तेनिर्धनपुरुष अत्यंतउत्कृष्ट हैं ॥ हेमैत्रेयी जभीतूं यासुवर्णादिरूपधनकूं अंगीकारकरैगी ॥ तभी यालोकविषे जैसे प्रसिद्धधनीपुरुषोंका जीवनहोवै है ॥ तैसे ताधनकरिकै तुम्हाराभीजीवनहोवैगा ॥ और जैसे यालोकविषे धनकीआसक्तिकरिकै चलायमानहैं चित्तजिनोंके ऐसेधनवान्पुरुषोंकूं मोक्षरूपअमृतभावकेप्राप्तिकीआशानहीं है॥तैसे धनकीआसक्तिकरिकै तुम्हारेकूंभी मोक्षरूपअमृतकेप्राप्तिकी आशा नहींहोवैगी ॥ हेमैत्रेयी धनवान्पुरुषोंकूं अमृतभावकीप्राप्तिनहींहोवै है॥याकेविषेयहकारणहै॥ब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपजोमोक्षहै ताकानामअमृतहै॥सोमोक्षरूपअमृत देहादिकोंविषेअहंमम अभिमानकीनिवृत्तितैंविना होवैनहीं ॥ यातैं देहादिकोंविषेअहंममअभिमानकीनिवृत्ति तामोक्षरूपअमृतकाकारण है॥और साअहंममअभिमानकीनिवृत्ति अज्ञानकीनिवृत्तितैंविनाहोवैनहीं॥ यातैं साअज्ञानकीनिवृत्ति अहंमम अभिमानकेनिवृत्तिकाकारण है॥ और साअज्ञानकीनिवृत्ति आनंदस्वरूपआत्माकेज्ञानतैंविनाहोवैनहीं।यातैं सोआत्माकाज्ञान अज्ञानके निवृत्तिकाकारणहै॥और धनकीआसक्तिकरिकै विक्षिप्तहैंचित्तजिनोंका ऐसेधनवान्पुरुषोंकेचित्तविषे सोआत्मज्ञानउत्पन्नहोवैनहीं ॥ और ताआत्मज्ञानकेअभावहुए तिनधनीपुरुषोंके अज्ञानकीभीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ और ताअज्ञानकेस्थितहुए ताअज्ञानकाकार्यरूपसूक्ष्मशरीर भीनिवृत्तहोवैनहीं ॥ और तासूक्ष्मशरीरकेस्थितहुए तासूक्ष्मशरीरकेआश्रित पुण्यपापकर्मभी नाशहोवैनहीं ॥ और तापुण्यपापक

र्मोंकेस्थितहुए पुनःस्थूलशरीरकीप्राप्ति अवश्यहोवैहै ॥ और तास्थूलशरीरकेप्राप्तहुए यहजीव पूर्वलेपुण्यपापकर्मोंकेअनुसार सुखदुःख कूंभोगैहै॥तथा पूर्वलेसंस्कारोंकेवशतैं यह जीव पुनःपुण्यपापकर्मोंकूंकरैहै॥तथा प्रारब्धकर्मकूंभोगिकै तेजीव मरणकूं प्राप्तहोवै हैं॥और मरणतैंअनंतर तेअज्ञानीजीव पुनःजन्मकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ इसप्रकार आत्मज्ञानतैंरहित तेधनवान्पुरुष घटीयंत्रकीन्याईं निरंतर संसारविषे भ्रमणकरैहैं ॥ ऐसेधनवान्पुरुषोंविषे मोक्षरूपअमृतकेप्राप्तिकीआशाहैनहीं॥यातैं सुवर्णादिरूपधनकरिकै मोक्षरूपअमृतकीप्राप्तिहोवैनहीं यहअर्थसिद्धभया ॥ इतिशिष्य ॥ याप्रकारकेवचन ॥ जभी याज्ञवल्क्यमुनिनैं मैत्रेयीकेप्रतिकहे ॥ तभी सामैत्रेयी याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति याप्रकारकावचन कहतीभई ॥ मैत्रेयीउवाच ॥ हेभगवन् यासुवर्णादिरूपधनकी प्राप्तिकरिकै जभी मोक्षरूपअमृतकेप्राप्तिकीआशानहीं है ॥ उलटा मरणकीहीप्राप्तिहोवैहै ॥ तभी मोक्षरूपअमृतकेप्राप्तिकीइच्छावाली मैं मैत्रेयी यासुवर्णादिरूपधनकूंलैकै किसप्रयोजनकीसिद्धिकरौंगी ॥ किंतु याधनकरिकै हमारा किंचित्मात्रभी प्रयोजनसिद्धनहींहोवैगा ॥ यातैं हेभगवन् ॥ यहआपकासंपूर्णधन कात्यायनीकूंप्राप्तहोवै ॥ हमारेकूं इसधनकेप्राप्तिकीइच्छानहीं ॥शंका॥हेमैत्रेयी॥यासुवर्णादिरूपधनकूं जोतूं नहींअंगीकारकरैगी ॥ तौ तुम्हारेशरीरकेखानपानादिकव्यवहार किसप्रकारहोवैगे॥ समाधान॥ हेभगवन् ॥ जैसे संन्यासआश्रमकूंधारणकरिकै आप शरीरकेनाशपर्यंत भिक्षाअन्नकरिकै आपणेशरीरकानिर्वाहकरैगे ॥ तैसे मैंमैत्रेयीभी याशरीरकेनाशपर्यंतभिक्षाअन्नकरिकै आपणेशरीरकानिर्वाहकरौंगी ॥ यातैं हमारेजीवनकी आप किंचित्मात्रभीचिंतामतकरो ॥ हेभगवन् ॥ पूर्व माताके उदरविषे दशमासपर्यंत जिसविश्वंभरदेवनैं हमारी रक्षाकरीहै॥ सोविश्वंभरदेव अभीभी हमारीरक्षाकरैगा॥यातैं ऐसेविश्वंभरपरमात्मादेवके विद्यमानहुए आपणेशरीरकेजीवनकीचिंताकरणी हमारेकूंउचितनहींहै ॥ हेभगवन् ॥ जोकदाचित् भिक्षाअन्नकेअप्राप्तिकरिकै हमाराशरीर नष्टहोइजावैगा ॥ तौभी हमारेकूंभयनहीं ॥ उलटा या शरीरकेनाशहुए मैं परमेश्वरका उपकारमानौंगी ॥ काहेतैं यहशरीर विष्ठामूत्रादिकमलोंकरिकैपूर्णहै ॥ यातैं यहशरीर अत्यंत दुर्गंधवालोहै ॥ तथा यहशरीर अनेकप्रकारकीव्याधियोंकरिकैग्रहस्तहै ॥ तथा नानाप्रकारकेदुःखोंकाकारणहै ॥ तथा यहशरीर ज

शुभप्रवृत्तिद्वारा अनेकपापोंकाकारणहै ॥ ऐसे निंदितशरीरविषे मेरीकिंचित्मात्रभीआसक्तिनहीं ॥ शंका ॥ हेमैत्रेयी आपणेशरीर विषे जोतुम्हारीआसक्तिनहीं है॥ तौ याशरीरकेरक्षणकरणेनासतैं तूं अन्नादिकोंकाभक्षण किसवासतैंकरती है ॥ समाधान ॥ हेभगवन् ॥ जैसे यालोकविषे राजाकेभृत्य किसीपुरुषकूं बलात्कारसैं किसीकार्यविषे प्रवृत्तकरै हैं॥ तैसे मैंमैत्रेयीभी पराधीनताकरिकै भोजनादिकव्यवहारोंविषे प्रवृत्तहोतीहूं॥शरीरविषेरोगकरिकै मैं भोजनादिकोंविषेप्रवृत्तहोतीनहीं॥ अब अन्नकेभोजनविषे दोषोंकानिरूपणकरै हैं॥ हेभगवन्॥ अन्नकेभोजनकरणेतैं याजीवोंकेचित्तविषे काम क्रोध लोभ मोह उत्पन्नहोवै हैं ॥ तथा अन्नकेभोजनतैंहीं याजीवोंविषे निद्रातंद्रादिकदोष उत्पन्नहोवै हैं॥तथा विष्ठामूत्रादिकमलकीवृद्धिभी अन्नकेभोजनकरिकैहीहोवै है॥ तथा अन्नकेभोजनकरिकैही याजीवोंके नेत्रादिकपंचज्ञानइंद्रिय तथावाकादिकपंचकर्मइंद्रिय तथामन शरीर आपणेआपणेव्यापारोंविषे प्रवृत्तहोवै हैं ॥ तानेत्रादिकोंकीप्रवृत्तितैं याजीवविषे अनेकप्रकारकेपापउत्पन्नहोवै हैं॥और जेप्राणी आहारतैंरहितक्षुधातुरहैं॥तिनप्राणियोंकेनेत्रादिकइंद्रिय किसीविषयविषेप्रवृत्तहोवैनहीं ॥ हेभगवन्॥अन्नकेनहींभोजनकरणेतैंयाजीवकूं एकक्षुधा पीडाकरै है॥और अन्नकेभोजनकरणेतैं याजीवोंकूं कामक्रोधादिकअनेकशत्रु पीडाकरै हैं॥हेभगवन्पूर्वकामरूपदोषनैं जोजोहमारेकूं दीनदशाकीप्राप्तिकरी है॥तिसहमारीदीनदशाकूं आप जाणतेहो॥यातैं आपकेआगे मैंताआपणेदीनदशाका कथनकरतीनहीं॥हेभगवन्॥ ताकामरूपदुःखका गर्भरूपफल हमस्त्रियोंकूं शीघ्रहींप्राप्तहोवै है ॥ तागर्भकेधारणकरणेतैं तथा तागर्भकेपरित्यागकरणेतैं हमस्त्रियोंकूं जोदुःखप्राप्तहोवै है॥सोदुःखनरककेदुःखतैं तथामरणकेदुःखतैंभी कोटिगुणाअधिकहै ॥ हेभगवन्॥जैसे यालोकविषेकुचलेकावृक्ष जीवोंकूं विषरूपफलकीप्राप्तिकरै है॥तैसे यहकामरूपवृक्ष हमस्त्रियोंकूं नानाप्रकारकेदुःखरूपफलोंकी प्राप्तिकरै है ॥ तिनदुःखोंकाअनुभव जैसे हमस्त्रीजनोंकूंहै॥तैसे पुरुषोंकूं तिनदुःखोंकाअनुभवहैनहीं ॥ हेभगवन् ऐसेदारुणदुखोंकूंसहनकरिकैभी हमस्त्रियोंका यह शरीर नाशकूंनहीं प्राप्तहोवै है ॥ यहहमारेकूं बहुतआश्चर्यहोवै है ॥ यातैं यहजान्यावै है ॥ ब्रह्मानैं हमस्त्रीजनोंकाशरीर कोईवज्ररूपउत्पन्नकऱ्याहै ॥ हे भगवन् याकामकरिकै जिस प्रकारके दुःख हमारेकूं प्राप्तहुए हैं ॥ तिसीप्रकारके

दुःख क्रोधलोभमोहादिकोंकरिकैभी हमारेकूंप्राप्तभये हैं ॥ तिनसंपूर्णदुःखोंकूं मैं आपणे चित्तविषे अनुभवकरती हूं ॥ आपसर्वज्ञहो ॥ याकारणतैं आपकेसमीप मैं तिनदुःखोंकावर्णनकरतीनहीं ॥ और हेभगवन् अन्नकेभोजनकरणेतैं उत्पन्नभये जे कामक्रोधादिकअनेकविकारहैं ॥ तिनकामक्रोधादिकअनेकविकारोंकरिकै जोकदाचित् हमारामृत्युहोवै ॥ तामृत्युतैं क्षुधाजन्यमृत्युकूं मैं श्रेष्ठमानतीहूं ॥ काहेतैं जैसे यालोकविषे एकशूरवीरपुरुष एकहीशूरवीरपुरुषकेसाथ युद्धकरणेविषे समर्थहोवै है ॥ एकशूरवीरपुरुषका अनेक शूरवीरपुरुषोंकेसाथ युद्धकरणासंभवैनहीं ॥ जोकदाचित् सोएकशूरवीरपुरुष अनेकशूरवीरपुरुषोंकेसाथभीयुद्धकरै है ॥ तौ सोशूरवीरपुरुषभीअनेकोंकेसाथ युद्धकरिकै क्लेशकूंहींप्राप्तहोवै है॥ तैसे कामक्रोधादिकअनेकविकारोंविषे प्रबल जोयहक्षुधारूपविकार है ताएकक्षुधाकेसाथ युद्धकरणेविषे यद्यपि मैं समर्थहूं ॥ तथापि अनेककामक्रोधादिकविकारोंकेसाथ युद्धकरणेविषे मैं समर्थनहींहूं ॥ यातैं हेभगवन् धनकेग्रहणकरणेतैंविना जोकदाचित् यहहमाराशरीर नष्टहोइजावैगा ॥ तौ हमारेऊपरसैं दुर्गंधशरीररूपभारउतरेगा ॥ याशरीरकेरक्षणकरणेविषे हमारा किंचित्मात्रभीरागनहीं ॥ परंतु हेभगवन् याभारतखंडविषे अधिकारीमनुष्यशरीरकूंपाइकै आत्मज्ञानतैंरहितहुईमैंमैत्रेयी याशरीरकेपरित्यागकरणेकीइच्छानहींकरती ॥ किंतु जैसे आप आत्मज्ञानकरिकैसंतोषकूंप्राप्तभयेहो ॥ तैसे मैंभी आत्मज्ञानकूंसंपादनकरिकै पश्चात् जोशरीरका परित्यागकरौं तौश्रेष्ठबातां है यातैं हेभगवन् जोआपकीहमारेऊपरकृपाहै॥तथा जोआपमोक्षरूपअमृतकेप्राप्तिकाउपायजाणतेहोवो ॥ तौ सोमोक्षरूपअमृतकेप्राप्तिकाउपाय आपकृपाकरिकै हमारेप्रति उपदेशकरौ ॥ जिसकरिकै मैं मोक्षरूपअमृतकूं प्राप्तहोवौं ॥ हे शिष्य ॥ याप्रकार धनकेनहींअंगीकारकरणेकावचन जभी मैत्रेयीनैं याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रतिकह्या तभी सोयाज्ञवल्क्यमुनिआपणेमनविषे याप्रकारकाविचारकरिकै तामैत्रेयीकेवचनकूंअंगीकारकरताभया ॥ अब ताविचारकानिरूपणकरै हैं ॥ यालोकविषेयद्यपि यहजीव धनकरिकैकामरूपपुरुषार्थकूं तथाधर्मरूपपुरुषार्थकूं प्राप्तहोवै है ॥ तथापि ताधनकरिकै यहजीवमोक्षरूपअमृतकूं कदाचित्भीप्राप्तहोइसकैनहीं ॥ और धनकरिकै याजीवोंकूं जोस्त्रीआदिकविषयोंकासंबंधरूपकाम प्राप्तहोवै है॥सोकाम वास्तवतौंविचारकरिकैदेखियेतौ जीवोंकेदुः

सुखकाहीसाधनहै ॥ परंतु जैसे मार्गकेचलणेकरिकैपरिश्रमकूंप्राप्तभयाजोपुरुषहै॥तिसपुरुषकूं दुःखकाकारणभीपादोंकाप्रहार सुखकाकारण प्रतीतहोवै है ॥ तैसे विषयासक्तभ्रांतपुरुषोंकूं दुःखकाकारणभीसोकाम सुखकाहीकारणप्रतीतहोवै है ॥ किंवा ॥ वास्तवतैंविचारकरिकैदेखियेतौ विषयजन्यसुखविषे सुखरूपतासंभवैनहीं ॥ किंतु ताविषयजन्यसुखविषे दुःखरूपताही है ॥ परंतु विषयासक्तलोकोंकीदृष्टिकूंलेकेजोकदाचित् ताविषयजन्यसुखविषे सुखरूपता अंगीकारभीकरिये ॥ तौभी ताविषय जन्यसुखविषेधनकूंकारणतासंभवैनहीं ॥ काहेतैं धनतैंरहित जेश्वानादिकपशुहैं ॥ तेभी आपणीस्त्रीकेसंभोगतैं विषयसुखकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ यातैं स्त्रीरूपविषयजन्यसुखविषेभी धनकूंकारण तासंभवैनहीं ॥ और धनतैंरहितजेभ्रमरहैं ॥ तेभी नानाप्रकारके पुष्पोंकीसुगंधकूंग्रहणकरिकैसुखकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ यातैं गंधरूपविषयजन्य सुखविषेभी धनकूंकारणतासंभवैनहीं ॥ और धनतैं रहितजेशुककोकिलादिकपक्षी हैं ॥ तेभीआम्रादिकफलोंकेरसकूंग्रहणकरिकैसुखकूं प्राप्तहोवै हैं॥यातैं रसरूपविषयजन्यसुखविषेभी धनकूंकारणतासंभवैनहीं॥और विष्णुआदिकदेवतावोंकेमंदिरविषे स्थितजेगौआदिकपशुहै तथा अन्यनिर्धनपुरुष हैं ॥ तेभी नानाप्रकारकेगीतवादित्रोंकेशब्दकूंश्रवणकरिकै सुखकूंप्राप्तहोवै हैं॥यातैं शब्दरूपविषयजन्यसुखविषेभी धनकूंकारणतासंभवैनहीं ॥ और यालोकविषे धनतैंरहितजेदरिद्रीपुरुष हैं ॥ तेभी वारांगनादिकसुंदरास्त्रियोंकेरूपकूंदेखिकै आनंदकूंप्राप्त होवै हैं॥यातैं रूपविषयजन्यसुखविषेभी धनकूंकारणतासंभवैनहीं ॥ और धनतैंरहितजेमाक्षिकादिकजीवहैं ॥ तेभीदुर्लभराजोंकीस्त्रियों केस्पर्शकूंप्राप्तहोइकै सुखकूंप्राप्तहोवै हैं॥यातैं स्पर्शरूपविषयजन्यसुखविषेभी धनकूंकारणतासंभवैनहीं ॥ यद्यपि यालोकविषे किसीकि सीमनुष्यकूं धनकरिकै विषयसुखकीप्राप्तिहोवै है ॥ यातैं धनविषे यत्किंचित्विषयसुखकीकारणतासंभवै है ॥ तथापि संपूर्णकार्यव्यक्ति योंका जोवस्तु नियमकरिकैजनकहोवै है॥ताकूं शास्त्रविषेकारणकहै हैं ॥ और जोवस्तु किसीकार्यव्यक्तिकाजनकहोवै और किसीकार्यव्य क्तिकाजनकनहींहोवै॥तावस्तुकूं शास्त्रविषेकारणकहैंनहीं॥जैसे मृत्तिका दंड चक्र कुलाल यहचारों नियमकरिकैसंपूर्णघटोंकेजनकहैं ॥यातैं तेचारों घटकेकारणहैं॥और ताकुलालकेगृहविषेस्थितजोरासभहै ॥ सो यद्यपि यत्किंचित्घटकाजनक है ॥ तथापि सोरासभ संपूर्णघटों

काजनकहैनहीं ॥ यातैं सोरासभ घटकाकारणनहीं ॥ किंतु अन्यथासिद्धहै॥तैसे यहधन यद्यपि यत्किंचित्पुरुषकेविषयसुखकाजनकहै ॥ तथापि यहधन पशुआदिकसर्वजीवोंकेविषयसुखकाजनकहैनहीं ॥ यातैं यहधन विषयसुखकाकारणनहीं ॥ किंतु रासभकीन्याईं अन्यथा सिद्धहै ॥किंवा॥ यालोकविषे जेधनवान्पुरुषहैं तेभी ताधनकरिकै संपूर्णविषयसुखोंकूंप्राप्तहोइसकैनहीं॥किंतु तेधनवान्पुरुष यत्किंचि त्विषयसुखकूंही प्राप्तहोवै हैं ॥ सोयत्किंचित्विषयसुख निर्धनपुरुषोंकूंभीप्राप्तहोवै है॥यातैं विषयजन्यसुखविषे धनकूंकारणतासंभवैनहीं॥ किंवा ॥ जैसे विषयजन्यसुखविषे धनकूंकारणतासंभवैनहीं ॥ तैसे स्वर्गादिकसुखकाहेतुजोधर्म है ॥ ताधर्मविषेभी धनकूंकारणतासंभवै नहीं ॥ काहेतैं मुद्गलब्राह्मणतैंआदिलैकेजेनिर्धनपुरुषहुए हैं ॥ तेभी अतिथिकीसेवादिककर्मोंकरिकै स्वर्गकूंप्राप्तहुए शास्त्रविषेश्रवणकर ते हैं ॥ यातैं धनकरिकैही यापुरुषकूं धर्मकीप्राप्तिहोवै है॥याप्रकारकानियम संभवैनहीं॥उलटा कितनेकधनवान्पुरुषतौ धनकेमदकरिकै नरककूंहीप्राप्तहोवै हैं ॥शंका॥ स्वर्गकीप्राप्तिकेसाधन जेअश्वमेधादिकयज्ञहैं॥तेयज्ञ धनतैंविनाहोवैनहीं ॥यातैं धनही स्वर्गकेप्राप्तिकासा धनहै ॥समाधान॥ अश्वमेधादिकयज्ञोंतैंविना दूसरेकिसीउपायकरिकै जोकदाचित् याजीवोंकूं स्वर्गकीप्राप्तिनहींहोती॥तौधनविषे स्वर्ग कीकारणतासंभवती ॥ परंतु स्वर्गकीप्राप्तिवासतै शास्त्रनैं जप व्रत तप आदिकअनेकप्रकारकेसाधन कथनकरे हैं ॥ तिनजपादिकसाध नोंकरिकैभी याजीवोंकूं स्वर्गकीप्राप्तिहोइसकै है ॥ यातैं धनही स्वर्गादिकोंकाकारणहै याप्रकारकानियम संभवैनहीं ॥किंवा॥ जोवादी धनकूं मोक्षविषेकारणमानै है ॥ सोवादीभी मोक्षविषे धनकूं साक्षात्कारणमानैंनहीं ॥ किंतु यज्ञादिककर्मोद्वारा ताधनकूं मोक्षविषेकार णमानै है ॥ तिनयज्ञादिककर्मोंविषेही जभी मोक्षकीकारणतासंभवैनहीं ॥ तभी धनविषे मोक्षकीकारणता किसप्रकारसंभवैगी ॥ और स्वर्गादिकोंकीप्राप्तिविषे जैसे यज्ञादिककर्मोंकूंकारणताहै ॥ तैसे जपव्रतादिककर्मोंकूंभीकारणताहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ अश्वमे धादिकयज्ञ यद्यपि धनकरिकैप्राप्तहोवै हैं ॥ तथापि धनकरिकै मोक्षरूपअमृतकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥हेशिष्य ॥ याप्रकारकाविचार आपणे मनविषेकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि तामैत्रेयीकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेप्रियमैत्रेयी ॥ धनकेपरि

त्यागकरणेका जोतुमनैं हमारेप्रति वचनकह्याहै ॥ तथा मोक्षरूपअमृतकेप्राप्तिकासाधन जोतुमनैं हमारेसैंपूछाहै ॥ तातुमारेवचनकूंश्रवण करिकै हमारेमनविषे बहुतप्रसन्नताभई है ॥ हेमैत्रेयी ॥ यालोकविषे यहपुरुष पुत्ररूपकरिकैप्रीतियुक्तहुआ जिसस्त्रीतैंउत्पन्नहोवै है ॥ तास्त्रीकानाम जायाहै ॥ सोयाप्रकारकी हमारीजाया एकतूही है ॥ काहेतैं यातुमारेवचनकूंश्रवणकरिकै प्रीतिविशिष्टहुआमैंयाज्ञवल्क्य तुमारेतैंउत्पन्नभयाहूं ॥ यातैं तेरेसरीखीजेविचारवानस्त्रियां हैं ॥ तेही जाया यानामकरिकैकहणेयोग्यहैं ॥ और तुमारेसरीखीविचारवान स्त्रियोंतैंभिन्न जितनीकिलौकिकस्त्रियां हैं॥तेस्त्रियां अन्नवस्त्रभूषणादिकपदार्थोंकीयाचनाकरिकै आपणेपतियोंकूं अनेकप्रकारकेक्लेशोंकी प्राप्तिकरै हैं ॥ यातैं तेस्त्रियां जाया यानामकरिकैकथनकरणेयोग्यनहीं हैं ॥ किंतु तेस्त्रियां ललना भार्या इत्यादिकनामोंकरिकै कथनकरणेयोग्य हैं ॥ हेमैत्रेयी याकालविषे मैंयाज्ञवल्क्य जैसे धनादिकपदार्थोंकीकामनातैं रहितहुआहूं ॥ तैसे तुमनैंभी धनादिकपदार्थोंकीकामनाकापरित्यागकरिकै हमारेसैं आत्माकास्वरूपपूछाहै ॥ तातुमारेनिष्कामवचनकूं श्रवणकरिकै मैंपरमआनंदकूंप्राप्तभयाहूं॥यातैं स्त्रियोंकाजोस्वभावतैंलज्जाधर्म है तालज्जाकापरित्यागकरिकै तुम हमारेसन्मुखस्थितहोवो॥हेमैत्रेयी॥जोतुमनैं मोक्षरूपअमृतकेप्राप्तिकासाधन पूछाहै ॥ सोसाधन मैंयाज्ञवल्क्य तुमारेप्रति कथनकरताहूं॥तूं आपणेमनकूं तथा नेत्रोंकूं तथाकरणोंकूं सावधानकरिकै श्रवणकर॥अब अन्वयव्यतिरेककरिकै आत्माकेपरमानंदरूपताका निरूपणकरै है ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥हेमैत्रेयी॥तेरेकूं मैंपतिप्रियहूं ॥ और मेरेकूं तूजायाप्रियहै ॥ यहवार्ता तुमारेहमारेकूं अनुभवसिद्धहै ॥ परंतु याकेविषेयह विशेषताहै ॥ हमारीजातुमारेशरीरविषेप्रीति है ॥ साप्रीति तुमारेसुखवासतैनहीं है ॥ किंतु आपणेआत्माकेसुखवासतैंही हमारी तुमारेशरीरविषेप्रीतिहै ॥और हेमैत्रेयी॥ तुमारीजाहमारेशरीरविषे प्रीतिहै॥साप्रीतिभी हमारेसुखवासतैनहीं है॥किंतु आपणेआत्माकेसुखवासतैंही तुमारी हमारेशरीरविषेप्रीतिहै ।अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकैनिरूपणकरै हैं॥हेमैत्रेयी॥यहजाया आपणेपतिसैंजोप्रीतिकरैहै॥सोपतिकेसुखवासतैनहींकरैहै॥किंतु कामरूपअग्निकरिकैतपायमानहुई साजाया ताकामरूपअग्निकीशांतिद्वारा आपणेविषयसुखवासतै तथा वस्त्रभूषणादिकोंकीप्राप्तिजन्यसुखवासतै आपणेपतिविषेप्रीतिकरै है ॥ १९ ॥

शंका ॥ हेभगवन् ॥ यहजाया आपणेसुखवासतै पतिविषेप्रीतिकरैहै ॥ यहवार्ता कैसेजाणीजावै॥ समाधान॥ हेमैत्रेयी जोकदाचित् पतिकेसुखवासतै यहजाया पतिविषेप्रीतिकरतीहोवै ॥ तौजिसकालविषे सोपति किसीपरस्त्रीकीआसक्तिकरिकै ताजायाकेप्रतिकूलहोवै है ॥ तिसकालविषेभी ताजायाकीआपणेपतिविषेप्रीतिहोणीचाहिये॥और आपणैतैंप्रतिकूलजोपतिहै ॥ तापतिविषेकोईभीजाया प्रीतिकरती नहीं ॥ किंतु अनुकूलपतिविषेही संपूर्णजाया प्रीतिकरैहैं ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ यहजाया आपणेसुखवासतैंही पतिविषेप्रीतिकरैहैं ॥ पतिकेसुखवासतै कोईजाया पतिविषेप्रीतिकरतीनहीं ॥ और हेमैत्रेयी ॥ जैसे यहजाया पतिकेसुखवासतै पतिविषेप्रीतिकरैनहीं ॥ तैसे यहपतिभी ताजायाकेसुखवासतै ताजायाविषेप्रीतिकरैनहीं ॥ किंतु कामरूपअग्निकीशांतिद्वारा आपणेविषयसुखवासतै तथा अन्नपाकादिकगृहकेव्यवहारजन्यसुखवासतै सोपति आपणीजायाविषेप्रीतिकरैहै ॥ जोकदाचित् ताजायाकेसुखवासतै सोपति ताजायाविषेप्रीतिकरताहोवै ॥ तौजिसकालविषे साजाया ऋतुधर्मकरिकै अथवा किसीव्यभिचारादिककर्मोंकरिकै तापतिकेप्रतिकूलहोवैहै ॥ तिसकालविषेभी तापतिकी तिसजायाविषेप्रीतिहोणीचाहिये ॥ और आपणैतैंप्रतिकूलजायाविषे किसीभीपतिकीप्रीतिहोवैनहीं ॥ किंतु अनुकूलजायाविषेही सर्व पतियोंकीप्रीतिहोवैहै ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ ताजायाकेसुखवासतै तिसपतिकी जायाविषेप्रीतिनहीं ॥ किंतु आपणेसुखवासतैंही तापतिकी तिसजायाविषेप्रीतिहै॥यातैं हेमैत्रेयी जैसेयालोकविषे शर्करा स्वभावतैंमधुरहै॥तथा आपणेसंबंधकरिकैसाशर्करा अमधुरपदार्थोंकूंभी मधुरकरैहै॥यातैं साशर्करा मधुरतमहै॥तैसे यास्त्रियोंका तथापुरुषोंका जोस्वयंज्योति आनंदस्वरूपआत्माहै ॥सोआत्माहीं स्वभावतैंप्रियरूपहै॥और सोआनंदस्वरूपआत्मा आपणेतादात्म्यसंबंधकरिकैशरीरादिकअप्रियपदार्थोंकूंभी प्रियरूपकरैहै॥याकारणतैं सोआत्मादेवप्रियतमहै ॥और हेमैत्रेयी॥ जैसे जायाकूं आपणेसुखवासतै पतिप्रियहै॥तथा पतिकूं आपणेसुखवासतै जायाप्रियहै॥ तैसे पुत्र सुवर्णादिकधनगवादिकपशु ब्राह्मणत्वजातिक्षत्रियत्वजातिभूरादिकसप्तलोक इंद्रादिकदेवता ऋगादिकवेद स्थावरजंगमप्राणीइसतैं आदिलेके जितनेकीजगत्विषेपदार्थ हैं तिनपुत्रादिकपदार्थोंविषे जो जीवोंकीप्रीतिहोवै है ॥ सोतिनपुत्रादिकपदार्थोंकेसुखवासतैनहीं

होवैहै ॥ किंतु आपणेसुखवासतैंहीं तिनजीवोंकी पुत्रादिकपदार्थोंविषेप्रीतिहोवैहै ॥ जोकदाचित् तिनपुत्रादिकपदार्थोंकेसुखवासतैंहीं तिनजीवोंकी पुत्रादिकपदार्थोंविषेप्रीतिहोतीहोवे॥तौ जिसकालविषे तेपुत्रादिकपदार्थ याजीवोंकेप्रतिकूलहोवैहैं॥तिसकालविषेभी तिनजीवोंकी तिनपुत्रादिकपदार्थोंविषे प्रीतिहोणीचाहिये ॥ और आपणेतैंप्रतिकूलपुत्रादिकपदार्थोंविषे कोईभीजीव प्रीतिकरतानहीं ॥ किंतु अनुकूलपुत्रादिकपदार्थोंविषेही सर्वजीव प्रीतिकरैहैं ॥ यातैंयहजान्याजावैहै॥यहजीव आपणेसुखवासतैंहीं तिनपुत्रादिकपदार्थोंविषेप्रीतिकरैहैं ॥ तिनपुत्रादिकपदार्थोंकेसुखवासतै कोईजीव तिनपुत्रादिकोंविषे प्रीतिकरतानहीं ॥ यातैं सर्वजीवोंकूं आपणाआत्माहीं स्वभावतैं प्रियहै ॥शंका ॥हेभगवन् ॥पति जाया पुत्र इसतैंआदिलैकेजितनाकीजगत्है ॥ सोजगत् यद्यपि प्रतिकूलहुआजीवोंकेसुखकाहेतुनहींहै॥ तथापि अनुकूलहुआसोजगत् जीवोंकेसुखकाहेतुहै ॥ यातैं आनंदस्वरूपआत्माकेसंबंधकूंपाइकै यहजगत् प्रियरूपनहीं ॥ किंतु स्वभावतैंहीं॥यहजगत् प्रियरूपहै॥समाधान ॥ हेमैत्रेयी ॥ एकआनंदस्वरूपआत्माकूंछोडिकै जितनेकीपतिजायापुत्रादिकअनात्मपदार्थ हैं ॥ तेपदार्थ स्वभावतैंप्रियरूपनहीं तथाअप्रियरूपनहीं ॥ ॥किंतु यहपदार्थ हमारेसुखकासाधनहै याप्रकारकाअनुकूलताज्ञान जिसजीवकूं जिसपदार्थविषेहोवैहै ॥ तिसजीवकूं सोपदार्थ प्रियहोवैहै ॥ और यहपदार्थ हमारेदुःखकासाधनहै याप्रकारकाप्रतिकूलताज्ञान जिसजीवकूं जिसपदार्थविषेहोवै है॥ तिसजीवकूं सोपदार्थ अप्रियहोवैहै॥ याकारणतैंहीं यालोकविषे जिसपुरुषकूं भ्रांतिकरिकै आपणेप्रियमित्रविषे प्रतिकूलताज्ञानहोवै है॥और आपणेशत्रुविषे अनुकूलताज्ञानहोवै है॥सोभ्रांतपुरुष आपणेमित्रकूंतौ अप्रियमानैहै॥और आपणेशत्रुकूंप्रियमानैहै॥यातैं यहसिद्धभया॥अनात्मपदार्थोंकीप्रियताविषे अनुकूलताज्ञान कारणहै॥और अनात्मपदार्थोंकीअप्रियताविषेप्रतिकूलताज्ञान कारणहै॥स्वभावतैं कोईभीअनात्मपदार्थ प्रियअप्रियरूपनहीं॥तहाँदृष्टांत॥जैसे वायु स्वभावतैं न उष्णहै न शीतलहै॥परंतु सोवायु अग्निकेसंबंधकरिकै उष्णप्रतीतहोवैहै और जलकेसंबंधकरिकै सोवायु शीतलप्रतीतहोवैहै ॥ तैसे यहअनात्मपदार्थ स्वभावतैं नप्रियरूपहै नअप्रियरूपहै॥परंतु अनुकूलताज्ञानकरिकै तेअनात्मपदार्थ जीवोंकूं प्रियरूपहुएप्रतीतहोवै हैं॥ और प्रतिकूलताज्ञानकरिकै

ते अनात्मपदार्थ जीवोंकूं अप्रियरूपहुएप्रतीतहोवै हैं ॥ किंवा ॥ यालोकविषे जिसपदार्थका जोस्वभावहोवै है॥तिसपदार्थका सोस्वभाव किसीकालविषेभी निवृत्तहोवैनहीं ॥ जैसे अग्निकाजोउष्णतास्वभावहै ॥ सोउष्णतास्वभाव ताअग्नितैं किसीकालविषेनिवृत्तहोवैनहीं ॥ तैसे पतिजायादिक अनात्मपदार्थोंविषे जोस्वभावतैंहीं प्रियताहोवै ॥ तौसर्वदा तिनपदार्थोंविषे प्रियताप्रतीतहोणीचाहिये॥ और सर्वदा तिनअनात्मपदार्थोंविषे प्रियताप्रतीतहोवैनहीं॥ किंतु आपणेस्थितिकालविषे जेपतिजायादिकअनात्मपदार्थ याजीवोंकूं सुखकीप्राप्तिकरैहैं ॥ तेहीपतिजायादिकअनात्मपदार्थ आपणेवियोगकालविषे तथा प्रतिकूलताज्ञानकालविषे तिनजीवोंकूं परमदुःखकीप्राप्तिकरैं है ॥ यातैं आनंदस्वरूपआत्मातैंभिन्न जितनेकीपतिजायादिकअनात्मपदार्थ हैं॥ तिनोंविषे स्वभावतैंप्रियरूपतानहीं ॥ किंतु जिसकालविषे याजीवोंकूं तिनपतिजायादिकपदार्थोंविषे अनुकूलताज्ञानहोवै है ॥ तिसीकालविषे तेपतिजायादिकपदार्थ ताजीवोंकूं प्रियलागे हैं ॥ यातैं यह सिद्धभया ॥ जोआनंदस्वरूपआत्मा आपणेसंबंधकरिकै अप्रियपदार्थोंकूंभी प्रियकरै है ॥ सोआनंदस्वरूपआत्माहीं सर्वजीवोंकाप्रियतमहै ॥ अब आनंदस्वरूपआत्माविषे प्रियतमताकेस्पष्टकरणेवासतै प्रथम अप्रिय प्रिय प्रियतरयातीनोंकानिरूपणकरै हैं ॥ हेमैत्रेयी ॥ यहपदार्थ हमारेकूं कदाचित्भी नहींप्राप्तहोवै ॥ याप्रकार जीवोंकेद्वेषकाविषयजोदुःखहै ॥ तथा तादुःखकेसाधनजोसिंहसर्पादिकहैं ॥ तिनदोनोंकानाम अप्रियहै ॥ और यहपदार्थ हमारेसुखकेसाधनहैं याप्रकार जीवोंकेज्ञानकाविषय जेपतिजायादिकपदार्थ हैं ॥ तिनोंकानाम प्रियहै॥ और तिनपतिजायादिकप्रियपदार्थोंकीप्राप्तिकरिकै जोसात्विकअंतःकरणकापरिणामरूपसुखहोवै है॥तासुखकानाम प्रियतरहै॥ और जैसे पतिजायादिक प्रियपदार्थोंविषे जोजीवोंकीप्रीतिहोवै है ॥ सो तिनपतिजायादिकपदार्थोंकेसुखवासतैहोवैनहीं ॥ किंतु आपणेसुखवासतैंहीं तिनजीवोंकी तिनपतिजायादिकपदार्थोंविषेप्रीतिहोवै है ॥ तैसे ताप्रियतरसुखविषे जोजीवोंकीप्रीतिहोवै है ॥ सो तासुखवासतैनहींहोवै है ॥ किंतु आपणेआत्मावासतैंहीं तिनजीवोंकी तासुखविषेप्रीतिहोवैहै ॥ जोकदाचित् तासुखकेवासतैंहींजीवोंकी तासुखविषेप्रीतिहोवै ॥ तौ वैरीपुरुषकेसुखविषेभी तिनजीवोंकीप्रीतिहोणीचाहिये ॥

और वैरीपुरुषकेसुखविषे किसीजीवकीप्रीतिहोवैनहीं ॥ यातैं यहजान्याजावै है ॥ आपणेआत्मावासतैहीं याजीवोंकूं सोसुखप्रियतरहै ॥ याकारणतैं यहआनंदस्वरूपआत्माहीं सर्वजीवोंकूं प्रियतमहै ॥ इहां प्रियतैंजोअधिकहोवै ताकानाम प्रियतरहै ॥ और प्रियतरतैंभीजोआधिकप्रियहोवै ताकानाम प्रियतमहै ॥ हेमैत्रेयी ऐसेप्रियतमआत्माके लेशमात्रआनंदकूंआश्रयणकरिकै ब्रह्मादिक लोकभी आनंदकूंप्राप्तहोइरहे हैं ॥ याकारणतैं सोआत्मास्वरूपआनंद ब्रह्माकेआनंदतैंभी उत्कृष्टहै ॥ हेमैत्रेयी स्वर्गलोकतैंआदिलेकै ब्रह्म लोकपर्यंत जितनेकीविषयजन्यआनंदहैं॥तिनसंपूर्णआनंदोंतैं आधिक तथाद्वैतभावतैंरहित जोब्रह्मानंद है ॥ सोब्रह्मानंद याजीवोंकेआत्मा तैंभिन्ननहीं ॥ किंतु सोब्रह्मानंद याजीवोंकाआत्मारूपही है ॥याकारणतैं यहआत्मास्वरूपआनंदही याजीवोंकापरमपुरुषार्थरूपहै॥इतनैं करिकै आनंदस्वरूपआत्माविषे परमपुरुषार्थरूपता निरूपणकरी ॥ अब ता आनंदस्वरूपआत्माकेसाक्षात्कारवासतैं श्रवणादिकसाधनोंका निरूपणकरै हैं ॥ हेमैत्रेयी ॥ जिनअधिकारीपुरुषोंकूंकरामलककीन्याईं संशयविपर्ययतैंरहित आत्माकेसाक्षात्कारकीइच्छाहोवै॥ तिनअधिकारीपुरुषोंनैं प्रथम विवेक वैराग्य शमादिषट्संपत्ति मुमुक्षुता याचारिसाधनोंकूंसंपादनकरणा ॥ तिसतैंअनंतर याअधिकारीपुरुषनैं श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुकेसमीपजाणा॥तहांजाइकै याअधिकारीपुरुषनैं तागुरुकेमुखतैं॥अयमात्माब्रह्म ब्रह्माहमस्मि ॥ इसतैंआदिलैकै अनेकश्रुतिवचनोंका वारंवारश्रवणकरणा॥औरउपक्रमउपसंहारादिकषट्लिंगोंकरिकै या अधिकारीपुरुषनैं तिनवेदांतवचनोंका अद्वितीय ब्रह्मविषे तात्पर्यनिश्चयकरणा याकानाम श्रवणहै॥याश्रवणकरिकै अधिकारीपुरुषकी प्रमाणगतअसंभावना निवृत्तहोवैहै॥तहां वेदांतशास्त्र जीवब्रह्मकेअभेदकाप्रतिपादकहैअथवा भेदकाप्रतिपादकहै॥याप्रकारकेसंशयकानाम प्रमाणगतअसंभावनाहै॥अबमननकानिरूपणकरैहैं हेमैत्रेयी॥याप्रकार गुरुकेमुखतैं वेदांतवचनोंकूंश्रवणकरिकै यह अधिकारीपुरुष एकांतदेशविषेस्थितहोइकै श्रुतितैंअविरुद्धतर्ककरिकै तिनवचनोंकेअर्थकामननकरै सोतर्कयहहै॥जैसे यालोकविषे एकहीमृत्तिकादिककारण घटशरावादिकअनेककार्यरूपकरिकै स्थितहोवै है ॥ तैसे एकहीआद्वितीयपरमात्मादेव अज्ञानकेसंबंधतैं नानाजगत्रूपहोइकै प्रतीतहोवै है ॥ और जैसे घटशरावादिककार्य

मृत्तिकादिककारणोंविषेलयहोवै हैं ॥ तैसे यहसंपूर्णजगत् अधिष्ठानपरमात्माविषे लयभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ और जैसे मालाकेपुष्पोंविषे सूत्रकातोअन्वय है ॥ और पुष्पोंका परस्परव्यतिरेकहै॥तैसे जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति बाल्य यौवन वृद्ध इत्यादिकअवस्थावोंविषे आत्माका तोअन्वय है ॥ और तिनअवस्थावोंका परस्परव्यतिरेकहै॥ इसतैंआदिलैकेअनेकप्रकारकीतर्कोंकरिकै यहअधिकारीपुरुष वेदवचनोंकेअर्थकामननकरैं ॥ तामननकरिकै याअधिकारीपुरुषकी प्रमेयगतअसंभावना निवृत्तहोवै है॥यहाँ आत्मा व्यापकहै अथवा परिच्छिन्न है ॥ इत्यादिकसंशयोंकानाम प्रमेयगतअसंभावना है ॥ अब निदिध्यासनका निरूपणकरै हैं ॥ हेमैत्रेयी ॥ यह मन अत्यंतचंचल है ॥ यातैं तामनकूं यहअधिकारीपुरुष प्रथम किसीबाह्यप्रियपदार्थविषे एकाग्रकरै॥तिसतैंअनंतर यहअधिकारीपुरुष ताशिक्षितमनकूं अंतरआत्माविषेएकाग्रकरै ॥ जोआत्माविषे एकाग्रताकूंप्राप्तहुआ यहमन पुनःबहिर्मुखताकूं नहींप्राप्तहोवै ॥ याकानाम निदिध्यासन है॥ तानिदिध्यासनकरिकै याअधिकारीपुरुषकी विपरीतभावना निवृत्तहोवै है ॥ अन्यवस्तुविषे अन्यबुद्धिकानाम विपरीतभावना है ॥ हेमैत्रेयी ॥ इसप्रकार श्रवणमननिदिध्यासनकरिकै असंभावनाविपरीतभावनातैंरहितहोइकै अंतरआत्माविषेएकाग्रताकूंप्राप्तहुआ यहशुद्धमन गुरुउपदिष्टमहावाक्यरूपशब्दप्रमाणतैं ॥ आत्माकेसाक्षात्कारकूंउत्पन्नकरै है ॥शंका ॥ हेभगवन् ॥ महावाक्यरूपशब्दप्रमाणतैंविनाहीं स्वतंत्र मन आत्मसाक्षात्कारकूं किसवासतैंनहींउत्पन्नकरता ॥ समाधान ॥ हेमैत्रेयी ॥ जैसे नेत्रादिकबाह्यइंद्रिय कदाचित् यथार्थज्ञानरूपप्रमाकूंउत्पन्नकरै हैं ॥ और कदाचित् तेनेत्रादिकइंद्रिय दोषकेवशतैं अयथार्थज्ञानरूपअप्रमाकूंभीउत्पन्नकरै हैं यथार्थज्ञानकूंहीं हम उत्पन्न करैं ॥ अयथार्थज्ञानकूं हम नहींउत्पन्नकरैं ॥ याप्रकारकाआग्रह तिननेत्रादिकइंद्रियोंविषेहोवैनहीं ॥ तैसे सर्ववृत्तियोंकाउपादानकारणजोयहमनहै॥सोमनभी कदाचित् यथार्थज्ञानरूपप्रमाकूंउत्पन्नकरै है॥और कदाचित् सोमन दोषकेवशतैं अयथार्थज्ञानरूपअप्रमाकूंभी उत्पन्नकरै है ॥ यथार्थज्ञानकूंहीं मैं उत्पन्नकरौं अयथार्थज्ञानकूं मैं नहींउत्पन्नकरौं याप्रकारका आग्रह तामनविषे होवैनहीं ॥ और सर्वदोषोंतैंरहित यहमहावाक्यरूपशब्दप्रमाणतो केवलयथार्थज्ञानरूपप्रमाकूंहींउत्पन्नकरै है ॥ यातैं आत्मसाक्षात्कारकीउत्पत्तिविषे महावा

क्यरूपशब्दप्रमाणहीं प्रधानकारण है॥शंका॥हेभगवन् ॥ आत्माकेसाक्षात्कारविषे जोमहावाक्यरूपशब्दप्रमाणकूंहीं प्रधानताहोवै॥ तौ मनकीसहायतातैंविनाहीं सोमहावाक्यरूपशब्दप्रमाणआत्मसाक्षात्कारकूंकिसवासतैनहींउत्पन्नकरता ॥समाधान॥ हेमैत्रेयी ॥ जैसे नेत्रादिकबाह्यइंद्रियोंकरिकैजन्य जोघटपटादिकपदार्थोंकाप्रत्यक्षज्ञानहै॥ताप्रत्यक्षज्ञानविषे नेत्रादिकइंद्रियोंका घटादिकविषयोंकेसाथ संयोगादिकसंबंध कारण है ॥ विषयइंद्रियकेसंबंधतैंविना प्रत्यक्षज्ञानहोवैनहीं ॥ तैसे महावाक्यरूपशब्दप्रमाणतैं मनविषेउत्पन्नभईजोआत्माकारवृत्ति है ॥ तावृत्तिज्ञानविषे साक्षात्काररूपता तभीसिद्धहोवै॥ जभी आत्माकेसाथ मनकासंयोगतंबंधहोवै आत्माकेसाथ मनकेसंबंधतैंविना तावृत्तिज्ञानविषे साक्षात्काररूपतासिद्धहोवैनहीं ॥ याकारणतैंमहावाक्यजन्यआत्मसाक्षात्कारविषे आत्माकेसाथ शुद्धमनका संबंधभी अवश्यअपेक्षित है ॥ यातैंयहअर्थ सिद्धभया ॥ श्रवण मनन निदिध्यासन यातीनसाधनोंकरिकैयुक्त जोशुद्ध मन है ॥ सोमन गुरुउपदिष्टमहावाक्यरूप शब्दप्रमाणतैं अद्वितीयआत्माकेसाक्षात्कारकूं उत्पन्नकरै है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ आत्मसाक्षात्कारकेउत्पन्नहुएयाअधिकारीपुरुषोंकूं कौनफलकीप्राप्ति होवै है ॥ समाधान ॥ हेमैत्रेयी ॥ याअधिकारीपुरुषोंकूं जभी श्रवणादिकसाधनोंकरिकै आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिहोवैहै॥तभी याअधिकारीपुरुषोंके अज्ञानरूपअविद्याकीनिवृत्तिहोवैहै॥ और ताअविद्यारूपकारणकेनाशहुएतैं अनंतर याअधिकारीपुरुषोंके कर्तृत्वभोक्तृत्वादिकसंपूर्णदुःखोंकी निवृत्तिहोवै है॥ इसप्रकार कार्यसहितअविद्याकेनिवृत्तहुएतैंअनंतर याअधिकारीपुरुषोंकेहृदयविषे स्वयंज्योतिआनंदस्वरूपअद्वितीयआत्मा प्रादुर्भावहोवै है ॥ तहाँदृष्टांत ॥ जैसे मेघादिकोंकेनिवृत्तहुए केवल शुद्धआकाश प्रतीतहोवै है ॥ तैसे कार्यसहितअविद्याकेनाशहुए याअधिकारीपुरुषोंकूं आनंदस्वरूपअद्वितीयआत्माप्रतीतहोवै है ॥ हेमैत्रेयी ॥ जैसे स्वप्नअवस्थातैं जाग्रत्अवस्थाकूंप्राप्तहुआयहपुरुष तास्वप्नकेदुःखोंकूंमिथ्यामानै है ॥ तैसे आत्मसाक्षात्कारकरिकै अविद्यारूपनिद्रातैंजाग्रतहुआ यहविद्वान्पुरुष संपूर्णदृश्यप्रपंचकूं मिथ्यामानै है ॥ हे मैत्रेयी ॥ जैसे भयतैंरहित चक्रवर्तीमहाराजा स्वप्नविषे जाइके नानाप्रकारकेभयकूं प्राप्तहोवै है ॥ और तास्वप्नतैं जाग्रतहुआ सोमहाराजा तास्वप्नकेभयकूं आपणेविषे मानैं नहीं ॥ तैसे

वास्तवतैं सर्वदुःखोंतैंरहितहुआभीयहपुरुष आपणे आत्मास्वरूपके अज्ञानतैं आपणेविषे नानाप्रकारके दुःखोंकूं माने है ॥ और आत्माकेसाक्षात्कारहुएतैंअनंतर यहविद्वान्पुरुष आपणेस्वरूपविषे तिनसंपूर्ण दुःखोंकूंमिथ्यामानेहै ॥ अब आत्माकेज्ञानतैं सर्वप्रपंचकेज्ञानकीसिद्धिकरणेवासतै प्रथम अनेकदृष्टांतोंकरिकै प्रपंचविषे मिथ्यापणानिरूपणकरैहैं ॥ हेमैत्रेयी ॥ जैसे शुद्धआकाशविषे अविद्याकरिकै गंधर्वनगर उत्पन्नहोवै है ॥ तैसे याशुद्धआत्माभी अविद्याकरिकैही जगत् उत्पन्नहोवै है ॥ और जैसे वास्तवतैंविचारकरिकै देखिये तौ ताआकाशविषे सोगंधर्वनगर तीनकालमें उत्पन्न नहींभया ॥तैसे वास्तवतैंविचारकरिकैदेखियेतौ याअद्वितीयआत्माविषेभी यहदुःखरूपजगत् तीनकालमें उत्पन्ननहींभया ॥ हेमैत्रेयी ॥ जैसे नेत्रकेतिमिररोगकरिकै यहपुरुष एकचन्द्रमाकूं अनेकदेखे है॥ तैसे अविद्यारूपदोषकरिकै यह अज्ञानीजीव एकद्वितीयआत्माकूं अनेकरूपदेखेहै ॥ और जैसे मूढबालक आपणीअंगुलीसैं नेत्रोंकानिरोधकरिकै निर्मलआकाशविषे मयूरकेपुच्छसमान विचित्ररूपकूंदेखेहै ॥ तैसे यहमूढअज्ञानीजीवभी अविद्यारूपदोषकरिकै आनंदस्वरूपआत्माविषे यहदुःखरूपजगतदेखेहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् जिनपुरुषोंकूं आत्माकासात्कारनहींभया ॥ ऐसे अज्ञानीजीव जोकदाचित् याजगाकूंदेखैं ॥ तौयाके विषे कोई आश्चर्यनहीं ॥ परंतु आत्मसाक्षात्कारकरिकैजिसविद्वान्पुरुषोंकी कार्यसहितअविद्यानिवृत्तभई है ॥ ऐसेविद्वान्पुरुषभी याप्रपंचकूंदेखैहैं ॥ यहहमारेकूंबहुतआश्चर्यहोवैहै ॥ समाधान ॥ हेमैत्रेयी ॥ जैसे यालोकविषे पूर्वादिकदिशावोंविषे पश्चिमादिकदिशावोंकाभ्रम अज्ञानीपुरुषोंकूंहोवैहै ॥ तैसे शास्त्रवेत्तापुरुषोंकूंभी सोदिशाभ्रमहोवै है ॥ इसप्रकार जैसे याअज्ञानीपुरुषोंकूं अद्वितीयआत्माविषे नानाप्रकारकाजगत्प्रतीतहोवैहै ॥ तैसे प्रारब्धकर्मोंकरिरक्षित जो अविद्याकालेशहै ॥ ताकरिकै तिनविद्वान्पुरुषोंकूंभी शरीरकेनाशपर्यंत कल्पितरूपकरिकै जगत्काभानहोवैहै ॥ हेमैत्रेयी ॥ जैसे यालोकविषे जिसपुरुषनैं शंखकूंशुक्लरूपवालाजान्याहै ॥ तिसपुरुषकूंभी नेत्रोंकेपित्तदोषकरिकै सोशंख पीतरूपवालाप्रतीतहोवैहै ॥ तथा जिसपुरुषनैं गुडकूंमधुररसवालाजान्याहै ॥ तिसपुरुषकूंभी जिह्वादोषकेवशतैं सोगुड तिक्तरसवालाप्रतीतहोवै है ॥ तैसे जिसविद्वान्पुरुषनैं

अद्वितीयआत्माकानिश्चयकऱ्याहै ॥ तिसविद्वान्पुरुषकूंभी अविद्यालेशकेवशतैं प्रारब्धकर्मकेनाशपर्यंत यहजगत् कल्पितरूपकरिकैप्रतितहोवैहै॥अब विद्वान्पुरुषोंविषे अज्ञानीजीवोंतैंविलक्षणता बोधनकरणेवासतै अज्ञानीजीवोंकेप्रपंचदर्शनका अनेकदृष्टांतोंकरिकैनिरूपण करैहैं ॥ हेमैत्रेयी जैसे वास्तवतैंजलतैंरहितजोऊषरभूमिहै॥ताऊषरभूमिविषे तृषातुरमृगादिकजीवोंकूं नानाप्रकारकीलहरियोंयुक्तजल प्रतीतहोवैहै ॥ तैसें वास्तवतैं भेदप्रपंचतैंरहित जोयहअद्वितीयआत्माहै ताकेविषे विषयासक्तअज्ञानीपुरुषोंकूं यहभेदप्रपंच प्रतीतहोवैहै ॥ और जैसे वास्तवतैं रजतभावतैंरहित जोशुक्ति है ताशुक्तिविषे लोभीपुरुषोंकूं रजतप्रतीतहोवैहै॥ तैसे वास्तवतैं प्रपंचभावतैंरहित जोयह अद्वितीयआत्मा है ॥ ताकेविषे अज्ञानीपुरुषोंकूं यहजगत् प्रतीतहोवैहै ॥ और जैसे मंदअंधकारविषे यहपुरुष भयरूपदोषकेवशतैं सर्पभावतैंरहितरज्जुविषे सर्पकूंदेखैहै ॥ तथा चौरभावतैंरहितस्थाणुविषे चौरकूंदेखैहै तैसे यहअज्ञानीजीव अविद्यारूपदोषकेवशतैं निर्दुःखचे तनआत्माविषे दुःखजडअनात्मरूपजगत्कूंदेखैहै ॥ हेमैत्रेयी ॥ जैसे स्वप्नअवस्थाविषे यास्वप्नद्रष्टापुरुषकूं जितनाकी पतिजायादिकजगत् प्रतीतहोवैहै ॥ सोजगत् तास्वप्नद्रष्टापुरुषतैंभिन्ननहीं ॥ तैसे जाग्रतअवस्थाविषेभी जितनाकी पतिजायादिकजगत्प्रतीतहोवैहै ॥ सोजगत् आनंदस्वरूपआत्मातैंभिन्ननहीं ॥ किंतु सोजगत् आत्मारूपहीहै ॥ यातैं हेमैत्रेयी ॥ ऐसे अद्वितीयआनंदस्वरूपआत्माकेसाक्षा त्कारकूं तुम श्रवणादिकसाधनोंयुक्तशुद्धमनकरिकै तथा महावाक्यरूपशब्दप्रमाणकरिकै सिद्धकरो ॥ ऐसेआत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तितैं अनंतर तूं पुनः संसारदुःखोंकूंनहींप्राप्तहोवैगी ॥ हेमैत्रेयी जैसे आकाशविषेकल्पितजोगंधर्वनगरहै ॥ सोगंधर्वनगर आकाशरूपहीहै ॥ आ काशतैंभिन्न तागंधर्वनगरकीसत्तानहीं ॥ तैसे आनंदस्वरूपआत्माविषेकल्पितजोयहजगत्है सोजगत्भी आत्मास्वरूपहीहै ॥ आत्मा तैंभिन्न ताजगत्कीसत्तानहींहै॥याकारणतैं ताअधिष्ठानआत्माकेश्रवणतैं यासंपूर्णजगत्काश्रवणहोवैहै॥तथा ताअधिष्ठानआत्माकेमननतैं यासंपूर्णजगत्काममननहोवैहै ॥ तथा ताअधिष्ठानआत्माकेध्यानतैं यासंपूर्णजगत्काध्यानहोवैहै॥ तथा ताअधिष्ठानआत्माके ज्ञानतैं यासं पूर्णजगत्काज्ञानहोवै है॥हेमैत्रेयी ॥ अधिष्ठानआत्माकेज्ञानतैं याविद्वान्पुरुषकूं सर्वजगत्काज्ञानहोवैहै ॥ याप्रकारकावचन जोहमनें तु

मारेप्रतिकह्याहै ॥ तावचनकायहअभिप्रायहै अधिष्ठानआत्मातैं याकल्पितजगत्कीभिन्नसत्ताहैनहीं॥यातैं ताअधिष्ठानआत्माकेज्ञान हुएतैंअनंतर याविद्वान्पुरुषकूं ताकल्पितजगत्काभी अर्थतैंज्ञानहोवै है॥परंतु यादेशविषे इतनेपदार्थ हैं ॥ तथा तिनपदार्थोंका याप्रका रकास्वरूपहै याप्रकार विशेषरूपकरिकै तासंपूर्णजगत्काज्ञान ताविद्वान्पुरुषकूंहोवैनहीं ॥ काहेतैं यह विद्वान्पुरुष विशेषरूपकरिकै जगत्कूंजानै याअर्थकूंबोधनकरणेहारा कोईश्रुतिवचन देखीतानहीं ॥ और यहसंपूर्णजगत् सुखरूपपुरुषार्थनहीं है ॥ तथादुःखाभावरू पपुरुषार्थनहीं है ॥ तथा तिनदोनोंपुरुषार्थोंकासाधनरूपनहीं है ॥ ऐसेअपुरुषार्थरूपजगत्के विशेषज्ञानकरिकै ताविद्वान्पुरुषकूं किंचि त्मात्रभी सुखकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ उलटा ताजगत्केविशेषज्ञानकरिकै ताविद्वान्पुरुषकूं परिश्रमकीहीप्राप्ति होवै है ॥ हे मैत्रेयी ॥ जोक दाचित् यहसंपूर्णजगत् याजीवोंकेसुखकाभीहेतुहोवै तौभी यासंपूर्णजगत्का विशेषरूपकरिकैज्ञानहोणा अत्यंतदुर्घटहै ॥ यातैं याविद्वा न्पुरुषनैं ताजगत्कूं विशेषरूपकरिकैनहींजानणा ॥ हेमैत्रेयी ॥ यद्यपि याअनात्मप्रपंचकेज्ञानकरिकै अधिकारीपुरुषोंकूंकिंचित्मात्रभी पुरुषार्थकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ तथापि तुमारास्त्रीस्वभावहै॥यातैं जोकदाचित् कौतुकवासतै तूं यासंपूर्णजगत्केदेखणेकीइच्छाकरतीहोवै ॥ तौ अधिष्ठानआत्माकाज्ञानही याकल्पितजगत्केज्ञानकाहेतुहै ॥ आधिष्ठानआत्माकेज्ञानतैंविना दूसराकोईउपाय जगत्केज्ञानकानहीं॥ हेमैत्रेयी॥जैसे घटशरावादिकजितनेकीमृत्तिकाकेकार्यहैं॥तिनघटादिकोंकावास्तवस्वरूप मृत्तिकारूपउपादानकारणहै॥यातैं तामृत्तिका रूपउपादानकारणके ज्ञानहुएतैंअनंतर यापुरुषकूं भिन्नदेशविषेस्थित तथाभिन्नकालविषेस्थित संपूर्णघटशरावादिककार्योंका ज्ञानहोवै है॥ तैसे याआनंदस्वरूपआत्माकाकार्यरूपजितनाकीजगत्है ता जगत्का सो आत्मारूपकारणही वास्तवस्वरूप है ॥ यातैं श्रवणादि कसाधनोंकरिकै याअधिकारीपुरुषकूं जभी आत्मारूपकारणकाज्ञानहोवै है ॥ तभी ताअधिकारीपुरुषकूं जगत्रूपकार्यकाभी अर्थतैंही ज्ञानहोवै है ॥ अबभेदज्ञानविषेअनर्थकीकारणताकानिरूपणकरै हैं॥हेमैत्रेयी॥जोपुरुष अद्वितीयआत्माविषे नानाभेदकूंदेखै हैं ॥सोभेद दर्शीपुरुष इसलोकविषे तथापरलोकविषे विषयसंबंधीसुखकूंभी प्राप्तहोवैनहीं ॥ तौ सोभेददर्शीपुरुष मोक्षरूपसुखकूंप्राप्तहोवैगा याके

विषेक्याआशाहै ॥ अबभेददर्शीपुरुषविषे इसलोककेसुखकाअभाव निरूपणकरै हैं ॥हेमैत्रेयी॥ यालोकविषे जानारी आपणेपतिकूं तथा पुत्रादिकबांधवोंकूं जभी आपणेआत्माकीन्याईं प्रियरूपकरिकै नहीं देखे हैं॥किंतु आपणेतैंभिन्नकरिकै तिनपतिपुत्रादिकबांधवोंकूंदेखै है तभीतानारीकीआपणेविषे भेददृष्टिरूपविषमताकूं देखिकै सोपति तथा पुत्रादिकबांधव तानारीकापरित्यागकरिदेवै हैं ॥ अथवा आपणे चित्तविषे तानारीकीउपेक्षाकरिदेवै हैं इसी प्रकार जोपति तथापुत्रादिकबांधव तानारीकूं आपणेआत्माकीन्याईं जभी प्रियरूपकरिकैनहीं देखे हैं ॥ किंतु आपणेतैंभिन्नकरिकैतानारीकूंदेखे हैं तभी तापतिपुत्रादिकबांधवोंकी आपणेविषेभेददृष्टिरूपविषमताकूंदेखिकै सानारी तापतिका तथापुत्रादिकबांधवोंकापरित्यागकरिदेवै हैं ॥ अथवा सानारी आपणेचित्तविषे तिनपतिपुत्रादिकोंकीउपेक्षाकरिदेवै हैं ॥ यातैं यह अर्थसिद्धभया ॥ यालोकविषेजानारी जोपुरुष जबपर्यंत याजडचेतनपदार्थोंकूं आपणेआत्माकीन्याईं प्रियजाणिकै तिनपदार्थोंका पालनकरै है ॥ तबपर्यंतही तेजडचेतनपदार्थतानारीकूं तथातापुरुषकूं सुखकीप्राप्तिकरै हैं ॥ और जभी यहदेहधारीजीव तिनपदार्थोंकूं आपणेतैंभिन्नकरिकैजानै हैं॥तभी तेपदार्थ तिनजीवोंकापरित्यागकरिजावै हैं॥तिनपदार्थोंकैवियोगकरिकै तिनजीवोंकूंपरमदुःखकीप्राप्तिहो वैहै ॥ हेमैत्रेयी भेददर्शनकरिकै यहजीव दुःखकूंप्राप्तहोवै है ॥ याकेविषे यह कारणहै ॥ जैसे यालोकविषे जोपुरुष महाराजाकूंमहाराजा रूपकरिकैदेखे है ॥ तिसपुरुषऊपर सोमहाराजा प्रसन्नहोवै है ॥ और जोपुरुष तामहाराजाकूंदरिद्रीरूपकरिकैदेखै है ॥तिसपुरुषऊपर सो महाराजा क्रोधवान्होवै है ॥ तैसे जोदेहधारीजीव पतिजायादिकपदार्थोंकूं आपणाआत्मारूपकरिकैदेखे है ॥ तिसजीवकूंतेपतिजायादिक पदार्थ सुखकीप्राप्तिकरै हैं ॥ और जोदेहधारीजीव तिनपतिजायादिकपदार्थोंकूं आपणेतैंभिन्नकरिकैदेखै है ॥तिसजीवकूं तेपतिजायादिक पदार्थ दुःखकीप्राप्तिकरै हैं ॥ जोकदाचित् तेपतिजायादिकपदार्थ याजीवकाआत्मारूपनहींहोते ॥ तौ आपणेतैंभिन्नरूपकरिकैदेखेहुए तेपतिजायादिकपदार्थ याजीवकूंदुःखकीप्राप्तिकरतेनहीं ॥ यातैं यासर्वलोकोंकेअनुभवतैं यहअर्थसिद्धहोवै है ॥यालोकविषे जितनेकीपति जायापुत्रादिकपदार्थ हैं तिनपदार्थोंका एकआत्माहीवास्तवस्वरूपहै॥ताभेदरहितअद्वितीयआत्माकूं जोपुरुष भेदवालादेखै है ॥ सोभेद

दर्शीपुरुष दुःखकूंही प्राप्तहोवैहै ॥ हेमैत्रेयी ॥ पतिजायादिकपदार्थोंकूं आपणेतैंभिन्नदेखणेहारायहजीव जैसे दुःखकूंप्राप्तहोवै है ॥ जैसे जोपुरुष ब्राह्मणत्वजातिकूं तथाक्षत्रियत्वजातिकूं आपणेआत्मातैंभिन्नकरिकैदेखेहै ॥ ताभेददर्शीपुरुषकूं साब्राह्मणत्वजाति तथाक्षत्रियत्व जाति दोनोंलोकविषे दुःखकीहीप्राप्तिकरैहै ॥ तहाँ इसजन्मविषेतौ साब्राह्मणत्वक्षत्रियत्वजाति ताभेददर्शीपुरुषकूं पापकीप्राप्तिकरै है ॥ तथा तापापजन्य अविद्या अस्मिता राग द्वेष अभिनिवेश यापंचक्लेशोंकीप्राप्तिकरैहै॥और परलोकविषे साब्राह्मणत्वक्षत्रियत्वजाति ताभेद दर्शीजीवकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं नीचजातिकीप्राप्तिद्वारा साब्राह्मणत्वक्षत्रियत्वजाति परलोकविषेभी ताभेददर्शीजीवकूं दुःखकीहीप्राप्ति करैहै ॥ और हेमैत्रेयी जैसे ब्राह्मणत्वक्षत्रियत्वजाति ताभेददर्शीपुरुषकूं दुःखकीप्राप्तिकरै है ॥ तैसे स्वर्गादिकलोक तथा इंद्रादिकदेवता तथा ऋगादिकवेद इत्यादिकसंपूर्ण ताभेददर्शीपुरुषकूं दुःखकीहीप्राप्तिकरै हैं ॥ तहाँ यह पुरुष जभी स्वर्गादिक लोकोंकूं आपणेआत्मातैंभिन्नकरिकैमानै है॥तभी तेस्वर्गादिकलोक ताभेददर्शीपुरुषकूं इसजन्मविषे नानाप्रकारकाभ्रमणकरावै हैं ॥ और मरणतैंअनंतर ताभेददर्शीपुरुषकूं नानाप्रकारकेनरकोंकीप्राप्तिकरै हैं॥और यहपुरुष जभी इंद्रादिकदेवतावोंकूं आपणेआत्मातैंभिन्न करिकैदेखैहै ॥ तभी तेइंद्रादिकदेवता ताभेददर्शीपुरुषकूं नानाप्रकारकेनरकदुःखोंकीप्राप्तिकरैहैं ॥ और यहपुरुष जभी ऋगादिकवेदोंकूं आपणेआत्मातैंभिन्नकरिकैदेखैहै ॥ तभी तेऋगादिकवेद ताभेददर्शीपुरुषकूं शूद्रादिकनीचजातियोंकीप्राप्तिकरै हैं॥अथवा ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यात्रैवर्णिकशरीरकेप्राप्तहुएभी ताभेददर्शीपुरुषकूं तेऋगादिकवेद यज्ञोपवीतादिकसंस्कारोंतैंरहितकरै हैं ॥ अथवा ताभेददर्शीपुरुष कूंपतितकरै हैं ॥ अथवा यज्ञोपवीतादिकसंस्कारकेहुएभी ताभेददर्शीपुरुषकूं तेऋगादिकवेद वेदकेपदवाक्यस्वरोंकेउच्चारणकरणेविषे असमर्थकरै है॥ अथवा तावेदोंकेअध्ययनहुएभी ताभेददर्शीपुरुषकूं तेऋगादिकवेद वेदकेअर्थज्ञानतैंरहितकरै हैं ॥ अथवा तिनवेदोंकेअ र्थज्ञानहुएभी ताभेददर्शीपुरुषकूं तेऋगादिकवेद तावेदोंकेअर्थकी तथातावेदोंकेपाठकीशीघ्रहीविस्मृतिकीप्राप्तिकरै हैं॥अथवा तिनवेदोंके अर्थकास्मरणहुएभी ताभेददर्शीपुरुषकूं तेऋगादिकवेद वेदविहितकर्मोंकेकरणेविषे अरुचिकीप्राप्तिकरै हैं ॥ इसतैंआदिलेके ताभेददर्शी

पुरुषकूं तेऋगादिकवेद अनेकप्रकारकेदुःखोंकीप्राप्तिकरैहैं ॥ और यहपुरुष जभी संपूर्णदेहधारीजीवोंकूं आपणेआत्मातैंभिन्नकरिकैदेखे है तभी तेसंपूर्णदेहधारीजीव ताभेददर्शीपुरुषकूं इसजन्मविषे तथाजन्मांतरविषे अनेकप्रकारकेदुःखोंकीप्राप्तिकरैहैं ॥हेमैत्रेयी बहुतविस्तार करिकैक्याकहैं ॥ आकाशादिपंचभूतोंसहित जितनाकजडचेतनरूपजगत्है ॥ ताजगत्कूं यहपुरुष जभी आपणेआत्मातैंभिन्नकरिकैदेखे है ॥ तभी सोसंपूर्णजगत् ताभेददर्शीपुरुषकूं अनेकदुःखोंकीहीप्राप्तिकरैहै ॥ हेमैत्रेयी ॥ इसलोकविषे तथापरलोकविषे जितनेकीस्त्रीपुत्र धनादिकप्रियपदार्थ हैं॥ तेप्रियपदार्थ जभी याजीवोंकूंनहींप्राप्तहोवै हैं॥ तभी यहअज्ञानीजीव तिनपदार्थोंकीअप्राप्तिकरिकै दुःखोंकूंप्राप्त होवैहै ॥ और जोकदाचित् दैवयोगतैं तिनअज्ञानीजीवोंकूं तिनपदार्थोंकीप्राप्तिहोवैहै॥ तौभी किसीरोगादिकनिमित्तकरिकै तेअज्ञानीजी व जभी तिनप्रियपदार्थोंकेभोगणेविषे असमर्थहोवैं हैं ॥ अथवा अन्यदेशविषेजाणेकरिकै जभी तिनपदार्थोंकावियोगहोवैहै॥ अथवा तिन प्रियपदार्थोंका जभी नाशहोवैहै ॥ तभी तेअज्ञानीजीव परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं यहस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थ आपणेअप्राप्तिकालविषे तथा आपणेप्राप्तिकालविषे तिनअज्ञानीजीवोंकूं दुःखकीहीप्राप्तिकरैहै ॥ हेमैत्रेयी ॥ इसप्रकार संपूर्णस्थावरजंगमपदार्थ ताभेददर्शी अज्ञानीजीवोंकूं दुखकीहीप्राप्तिकरैहै॥याकारणतैं तुमनैं तिनपदार्थोंकूं आपणेआत्मातैंभिन्नकरिकै कदाचित्भी नहींदेखणा॥ किंतु तुमनैं यासंपूर्णजगत्कूंआपणाआत्मारूपकरिकैदेखणा ॥ हेमैत्रेयी ॥ यहआनंदस्वरूपआत्मा सजातीयभेद विजातीयभेद स्वगतभेद यातीनभे दोंतैंरहितहै ॥ तथा स्वयंज्योतिरूपहै ॥ तथा जन्मादिकविकारोंतैं रहितहै याप्रकारका जोआत्माकाज्ञानहै॥सोईही यथार्थज्ञानहै॥ और याआनंदस्वरूपआत्मातैंभिन्न जितनेकीअनात्मपदार्थ हैं तिनअनात्मपदार्थोंकूंविषयकरणेहारे जितनेकीज्ञानहैं ॥ तेसंपूर्णज्ञान भ्रांतिरूप हैं ॥ यातैं हेमैत्रेयी॥ब्राह्मणत्वक्षत्रियत्वजाति तथा स्वर्गादिकलोक तथाऋगादिकवेद तथाआकाशादिकपंचभूत इसतैंआदिलैके जितना कजडचेतनरूपजगत्है ॥ सोसंपूर्णजगत् याआनंदस्वरूपआत्मातैंभिन्ननहीं ॥ किंतु सोजगत् आत्मारूपहीहै ॥ इतनैंकरिकैश्रवणकीरी तिदिखाई ॥ अब मननकीरीतिदिखावैहैं ॥ हेमैत्रेयी ॥ जडचेतनरूपकरिकै प्रसिद्धजितनाकयहगत्है ॥ सोसंपूर्णजगत् ताआनंदस्वरूप

आत्मा विषेही स्थितहै ॥ और ताआनंदस्वरूपआत्मातैंही सोजगत् उत्पन्नहोवैहै ॥और ताआनंदस्वरूपआत्माविषेही सोजगत् लयहो वैहै ॥ और सर्वजगत्काकारणजोअज्ञानहै ॥ सोअज्ञानभी आत्मसाक्षात्कारकेउत्पन्नहुए ताआनंदस्वरूपआत्माविषेहीलयहोवै है ॥ याकारणतैं यहआत्मादेव अद्वितीयरूपहै ॥ हेमैत्रेयी ॥ ऐसे अद्वितीयआत्माविषे मनकीस्थिरताकरणेहारेजेदृष्टांतहैं ॥तिनोंका हम कथ नकरैहैं ॥ तूं सावधानहोइकै श्रवणकर ॥ अब प्रपंचकीस्थितिकालविषे आत्माकीअद्वितीयरूपतासिद्धकरणेवासतैं दृष्टांतकानिरूपणक रैहैं ॥ हेमैत्रेयी॥ यालोकविषे तामस राजस सात्विक यहतीनप्रकारकेपदार्थ स्थितहैं ॥ तेसंपूर्णपदार्थ आपणीस्थितिकालविषे याआनंद स्वरूपआत्मातैंभिन्ननहीं हैं ॥ याप्रकारकेअर्थविषे तुमारीसंभावनाकरावणेवासतैं मैंयाज्ञल्क्य भेरी शंख वीणा यातीनदृष्टांतोंकाकथन करताहूं ॥ तूं सावधानहोइकैश्रवणकर ॥ हेमैत्रेयी ॥ जैसे यालोकविषेप्रसिद्धजे भेरी शंख वीणा यहतीनप्रकारकेवादित्रहैं ॥ तेभेरीआदि कवादित्र दंडरूपनिमित्तकरिकै तथामुखकावायुआदिकानिमित्तकारिकै क्रूर मध्यम मंजुल यातीनप्रकारकेशब्दोंकूंकरै हैं ॥ तहाँ वीररसकूं बोधनकरणेहारा जोभेरीआदिकोंकाशब्दहै ताकानाम क्रूरशब्दहै॥और भयानकरसकूं बोधनकरणेहारा जोभेरीआदिकोंकाशब्दहै ताका नाम मध्यमशब्दहै ॥ और शृंगाररसकूंबोधनकरणेहारा जोभेरीआदिकोंकाशब्द है ताकानाम मंजुलशब्दहै ॥ यहतीनप्रकारकेशब्दभी ऊंचनीचभेदकरिकैअनेकप्रकारके हैं ॥ हेमैत्रेयी ॥ भेरी शंख वीणा यातीनोंकेविशेषशब्द क्रमतैं भेरीशब्दत्व शंखशब्दत्व वीणाशब्दत्व यातीनधर्मोंवालेहोणतैं तीनप्रकारकेहैं ॥ तहाँ भेरीशब्दत्व शंखशब्दत्व वीणाशब्दत्व यहतीनोंधर्म यद्यपि क्रमतैं ॥ क्रूरभेरीशब्दत्व ॥ मध्यमभेरीशब्दत्व मंजुलभेरीशब्दत्व क्रूरशंखशब्दत्व मध्यमशंखशब्दत्व मंजुलशंखशब्दत्व क्रूरवीणाशब्दत्व मध्यमवीणाशब्दत्व मंजुलवीणाशब्दत्व ॥ इनधर्मोंकीअपेक्षाकरिकै सामान्यधर्म हैं ॥ तथापि सर्वशब्दोंविषेवर्त्तणेहारा जोशब्दत्वरूपसामान्यधर्म है ॥ ताश ब्दत्वरूपसामान्यधर्मकीअपेक्षाकरिकै भेरीशब्दत्व शंखशब्दत्व वीणाशब्दत्व यहतीनोंविशेषधर्म हैं॥ तिनभेरीशब्दत्वादिकतीनविशेषध र्मोंकाज्ञान शब्दत्वरूपसामान्यधर्मकेज्ञानतौंविना होइसकैनहीं ॥ किंतु याजीवोंकूं जभी प्रथप्र शब्दत्व रूपसामान्यधर्मका ज्ञान होवै है ॥

तिसतैंअनंतरही भेरीशब्दत्व शंखशब्दत्व वीणाशब्दत्व यातीनविशेषधर्मोंकाज्ञानहोवैहै॥ इहाँ अधिकदेशविषेरहणेहारेधर्मकानाम सामान्यधर्म है ॥ और अल्पदेशविषेरहणेहारेधर्मकानाम विशेषधर्म है ॥ तहाँ भेरीशब्द शंखशब्द वीणाशब्द यातीनप्रकारकेशब्दोंविषेशब्दत्वधर्मरहैहै ॥ और भेरीशब्दत्वरूपधर्म केवलभेरीशब्दविषेरहै है ॥ शंखवीणाकेशब्दविषेरहैनहीं ॥ तथा शंखशब्दत्वरूपधर्मभी केवल शंखशब्दविषेहीरहै है ॥भेरीवीणाकेशब्दविषेरहैनहीं ॥ तथा वीणाशब्दत्वरूपधर्मभी केवलवीणाशब्दविषेरहै है॥ भेरीशंखकेशब्दविषेही रहैनहीं ॥ यातैं शब्दत्वरूपसामान्यधर्मकेदेशकीअपेक्षाकरिकै भेरीशब्दत्व शंखशब्दत्व वीणाशब्दत्व यहतीनोंधर्मन्यूनदेशविषेवर्तै हैं ॥ याकारणतैं ते तीनोंधर्म शब्दत्वरूपसामान्यधर्मकीअपेक्षाकरिकै विशेषधर्म हैं॥ इसप्रकार क्रूरभेरीशब्द मध्यमभेरीशब्द मंजुलभेरीशब्द यातीनोंशब्दोंविषे भेरीशब्दत्वरूपसामान्यधर्म अनुगतहोइकैरहै है॥ और क्रूरभेरीशब्दत्वरूपधर्म केवल क्रूरभेरीशब्दविषेरहै है ॥ मध्यम मंजुलभेरीशब्दविषेरहैनहीं ॥ तथा मध्यमभेरीशब्दत्वरूपधर्मभी केवल मध्यमभेरीशब्दविषेरहै है ॥ क्रूरमंजुलभेरीशब्दविषेरहैनहीं॥तथा मंजुलभेरीशब्दत्वरूपधर्मभी केवलमंजुलभेरीशब्दविषेरहै है ॥क्रूरमध्यमभेरीशब्दविषेरहैनहीं ॥ यातैं भेरीशब्दत्वरूपसामान्यधर्मकेआधिकरणकीअपेक्षाकरिकै क्रूरभेरीशब्दत्व मध्यमभेरीशब्दत्व मंजुलभेरीशब्दत्व यहतीनोंधर्म न्यूनदेशविषेवर्तै हैं ॥ याकारणतैं भेरीशब्दत्वरूपसामान्यधर्मकीअपेक्षाकरिकै क्रूरभेरीशब्दत्वादिकतीनधर्म विशेषधर्म हैं ॥ याप्रकारकीरीति शंखशब्दादिपे तथावीणाशब्दादिषेभी जानिलेणी ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया॥जैसे शब्दत्वरूपसामान्यधर्मकेज्ञानतैंविना भेरीशब्दत्वादिकविशेषधर्मोंकाज्ञानहोवैनहीं ॥ तैसे यास्वयंज्योतिआत्माके अस्ति भाति प्रिय रूपसामान्यधर्मोंकेज्ञानतैंविना यालोकविषे किसीविशेषपदार्थकाज्ञानहोवैनहीं॥किंतु अस्ति भाति प्रियरूपसामान्यधर्मोंकेज्ञानतैंअनंतरही याजीवोंकूं घटादिकविशेषपदार्थोंकाज्ञानहोवै है ॥ अब अस्ति भाति प्रिय रूपआत्माविषे सामान्यरूपता स्पष्टकरणेवासतै प्रथमसर्वत्र आत्माकाअनुगतपणा निरूपणकरै हैं ॥ हेमैत्रेयी ॥ यालोकविषे जिनपदार्थोंका प्रत्यक्षरूपकरिकै ग्रहणहोवै है ॥ तथा जिनपदार्थोंका परोक्षरूपकरिकैग्रहणहोवै है॥ तथा जिनपदार्थोंका सत्यरूपकरिकैग्रहणहोवै है ॥ तथा

जिनपदार्थोंका असत्यरूपकरिकैग्रहणहोवै है ॥ तथा जिनपदार्थोंका अहंरूपकरिकैग्रहणहोवै है ॥ तथा जिनपदार्थोंका ममरूपकरिकैग्रहणहोवै है ॥ तेसंपूर्ण पदार्थ चेतन आत्मातैं भिन्ननहीं ॥ किंतु तेसंपूर्णपदार्थ चेतन आत्मारूपही हैं ॥ तात्पर्य यह ॥ जैसे रज्जुरूपअधिष्ठानविषे प्रतीतभयेजेसर्प दंड माला जलधारादिकपदार्थ ॥ तेकल्पितसर्पादिक रज्जुरूपअधिष्ठानतैं भिन्ननहीं ॥ किंतु सोरज्जुरूपअधिष्ठानहीं अज्ञानकेवशतैं सर्पदंडमाला जलधाराआदिकअनेकरूपोंकरिकै स्थितहोवै है ॥ तैसे याआनंदस्वरूपआत्माविषे प्रतीतभयाजोआकाशादिकप्रपंच॥सोप्रपंच ताअधिष्ठानआत्मातैंभिन्ननहीं॥किंतुसोअधिष्ठानआत्माहीं अज्ञानकेवशतैं आकाशादिकजगतरूपहोइकै स्थितहोवै है ॥ यातैं अस्तिभातिप्रियरूप सामान्यधर्मोंकी अपेक्षाकरिकै तेआकाशादिकपदार्थ आत्माकेविशेषधर्म हैं ॥ तिनविशेषधर्मोंकाज्ञान अस्तिभातिप्रियरूपसामान्यधर्मोंके ज्ञानकरिकैहीहोवै है ॥ हेमैत्रेयी ॥ तेचेतनआत्माकेविशेषरूप यद्यपि बहुत प्रकारके हैं ॥ तथापि संक्षेपतैं तेआत्माके विशेषरूप दोप्रकारके हैं॥एकतौ युष्मद्शब्दकाअर्थरूप है॥ और दूसरे अस्मद्शब्दकेअर्थरूप हैं ॥ तहां इदं एतत् इत्यादिकशब्दोंकरिकै जिनपदार्थोंकाकथनहोवै है॥ तेपदार्थ युष्मद्शब्दकाअर्थरूपहोवै हैं॥और अहं ममअनिदं इत्यादिकशब्दोंकरिकै जिनपदार्थोंकाकथनहोवै है ॥ तेपदार्थ अस्मद् शब्दकाअर्थरूप होवै हैं ॥ हेमैत्रेयी ॥ अंतःकरणादिक संघात विशिष्टचेतन अस्मद्शब्दका वाच्यअर्थ है ॥ और बाह्यघटादिकपदार्थविशिष्टचेतन युष्मद्शब्दका वाच्यअर्थ है ॥ तहाँ युष्मद्अस्मद् शब्दकेवाच्यअर्थका यद्यपि परस्परभेद है॥तथापि तिनदोनोंशब्दोंकीभागत्यागलक्षणाकरिकै प्रतीतभयाजोचेतनमात्ररूपलक्ष्यअर्थ है॥ सोचेतनमात्ररूपलक्ष्यअर्थ तिनदोनोंशब्दोंकाएकही है ॥ यातैं जिसअर्थकूं युष्मद्शब्दकथनकरै है ॥ तिसीअर्थकूं अस्मद्शब्दकथन करै हैं॥अब याहीअर्थकेस्पष्टकरणेवासतै प्रथम युष्मद्शब्दकेअर्थविषे अस्मद्शब्दकीअर्थरूपता निरूपणकरै हैं॥हेमैत्रेयी॥ अस्मद्शब्दकाअर्थरूप जोअंतरआत्मा है ॥ तिसतैंभिन्न जितनेकीबाह्यशंखादिकजडपदार्थ हैं ॥ तथा पुरुषादिकचेतनपदार्थ हैं॥ तेसंपूर्णजडचेतनपदार्थ युष्मद्शब्दकाअर्थरूप हैं॥परंतु तेशंखादिकजडपदार्थ जभी चेतनपुरुषोंकेवाकादिकइंद्रियोंकेसाथ संबंधकूं प्राप्तहोवै हैं॥ तभी तेशं

खादिकजडपदार्थ नानाप्रकारकेशब्दोंकूंकरतेहुए चेतनव्यवहारके योग्य होवै हैं ॥ तथा चेतनपुरुषोंकेशरीरसाथ तादात्म्यअभिमानकूंप्रा
तहुएतेशंखादिक अस्मदशब्दकेअर्थरूपआपणेआत्माकूं युष्मदशब्दकेअर्थरूप बाह्यपदार्थोंतैं भिन्नकरिकैमानै हैं॥इसप्रकार युष्मदशब्द
काअर्थरूपकरिकैप्रसिद्ध जेपुरुषादिकचेतनपदार्थ हैं ॥तेभी अस्मदशब्दकेअर्थरूपआपणेआत्माकूं युष्मदशब्दकेअर्थरूप अन्यपदार्थोंतैं
भिन्नकरिकैमानै हैं॥यातैंयुष्मदशब्दकेअर्थरूप जेशंखादिकजडपदार्थ हैं ॥तथा पुरुषादिकचेतनपदार्थ हैं ॥तिनोंविषेभी अस्मदशब्दकी
अर्थरूपतासंभवहोइसकैहैशंकाहेभगवन्शंखादिकजडपदार्थोंका चेतनपुरुषोंकेसाथ तादात्म्यसंबंध किसप्रकारकासंभवैहै समाधान हेमै
त्रेयी॥यालोकविषे ऐसाकोईपदार्थहै नहीं॥जिसपदार्थकूं चेतनपुरुष आपणाआत्मारूपकरिकैनहींग्रहणकरै है ॥किंतु यासंपूर्णजडपदार्थोंकूं
चेतनपुरुष आपणाआत्मारूपकरिकैहीग्रहणकरैहै॥तहाँ सर्वपदार्थोंकामूलकारणजोअविद्याहै ताअविद्याकूं यहपरमात्मादेव आपणाशरीर
रूपकरिकैग्रहणकरै है॥और ताअविद्याकाकार्य जितनाकीसूक्ष्मप्रपंच है तासमष्टिसूक्ष्मप्रपंचकूं यहहिरण्यगर्भभगवान् आपणाशरीररूप
करिकैग्रहणकरै है ॥ और ताअविद्याकाकार्यरूप जितनाकीस्थूलप्रपंच है ॥ तासमष्टिस्थूलप्रपंचकूं यहविराट्भगवान् आपणाशरीररू
पकरिकैग्रहणकरै है ॥ और व्यष्टिरूपकरिकैप्रसिद्धजेजडपदार्थ हैं ॥ तिनजडपदार्थोंकूं यहअनेकमनुष्यादिकचेतनपुरुष आपणाशरीररू
पकरिकैग्रहणकरै हैं ॥ यारीतिसैं संपूर्णजडपदार्थ चेतनकेहीआश्रित हैं॥यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ यालोकविषे नियमकरिकै किसीपदार्थ
विषे युष्मदशब्दकीअर्थरूपतानहीं ॥ तथा नियमकरिकै किसीपदार्थविषे ॥ अस्मदशब्दकीअर्थरूपतानहीं ॥ किंतु एकदूसरेकीअपेक्षा
करिकैही याजडचेतनपदार्थोंविषे युष्मदअस्मदशब्दकीअर्थरूपता है ॥ जिसपदार्थकूं यहपुरुष आपणाआत्मारूपकरिकैमानै है॥ तिसप
दार्थविषे अस्मदशब्दकीअर्थरूपताहै॥और जिनपदार्थोंकूं यहपुरुष आपणेआत्मातैंभिन्नकरिकैमानैहै॥तिनपदार्थोंविषे युष्मदशब्दकीअ
र्थरूपताहै॥ जैसे देवदत्तनामापुरुषकीअपेक्षाकरिकै यज्ञदत्तनामापुरुषविषे युष्मदशब्दकीअर्थरूपताहैऔर॥यज्ञदत्तनामापुरुषकीअपेक्षाक
रिकै तादेवदत्तनामापुरुषविषे युष्मदशब्दकीअर्थरूपता है॥हेमैत्रेयी॥मनवाणीकाअविषयरूपजोयहआनंदस्वरूपआत्मा है ॥ सोआत्मादे

व आपणेअस्तिभातिप्रियरूपकरिकै सर्वअनात्मपदार्थोंकाअधिष्ठानरूपहै॥याकारणतैं सोआत्मादेवकिसीशब्दकावाच्यअर्थनहीं॥किंतुसो
आत्मादेवतिनयुष्मदअस्मदादिकसर्वशब्दोंका लक्ष्यअर्थरूपहै ॥यातैं चेतनआत्मारूपलक्ष्यअर्थकूंग्रहणकरिकै तेयुष्मदअस्मदशब्दएकही
अर्थकाबोधनकरै हैं ॥ इसप्रकार युष्मदअस्मद् यादोनोंशब्दोंकाभागत्यागलक्षणाकरिकै जभी एकचेतनआत्मारूपअर्थ सिद्धभया॥तभी
तायुष्मदअस्मदशब्दकेअर्थकाव्याप्यरूपजेअर्थ हैं ॥ तिनअर्थोंकूंबोधनकरणहारेजेइदमादिकशब्दहैं ॥ तिनइदमादिकशब्दोंकाभी लक्ष
णावृत्तिकरिकै एकचेतनआत्माहीं अर्थसिद्धहोवैहै ॥ कैसाहैसोचेतनआत्मा॥आपणेअस्तिभातिप्रियरूपकरिकै सर्वपदार्थोंविषे स्फुरणहो
है॥तथा सूर्यादिकज्योतियोंकाभी सोआत्मादेव ज्योतिरूपहै॥ऐसे आनंदस्वरूपआत्माविषे यहआकाशादिकविशेषपदार्थअज्ञानीजीवोंनैं
आरोपणकरीतहैं ॥ हेमैत्रेयी ॥ याकारणतैंयहअर्थसिद्धभया ॥ जैसे शब्दत्वरूपसामान्यधर्मके ज्ञानहुएतैंअनंतरहीं भेरीशब्दत्वशंखशब्द
त्ववीणाशब्दत्व इत्यादिकविशेषधर्मोंकाज्ञानहोवैहै॥तथा भेरीशब्दत्वादिकसामान्यधर्मोंकेज्ञानहुएतैंअनंतरही याजीवोंकूंक्रूरभेरीशब्दत्व
क्रूरशंखशब्दत्व आदिकविशेषधर्मोंकाज्ञानहोवै है ॥ तैसे अस्तिभातिप्रियरूपआत्माकेस्फुरणहुएतैंअनंतरही याजीवोंके अहंत्वंआदिक
विशेषव्यवहार सिद्धहोवै हैं ॥ आनंदस्वरूपआत्माकेस्फुरणतैंविना यालोकविषे कोईभीव्यवहार सिद्धहोइसकैनहीं ॥ यातैं आपणी
स्थितिकालविषे यहसम्पूर्ण जडचेतनरूपजगत् अद्वितीयआत्मारूपहीहै ॥ हेमैत्रेयी॥ यहहीअद्वितीयआत्मा पूर्व हमनैं प्रियतम रूपकरि
के तुम्हारेप्रति कथनकऱ्याथा ॥ इतनैं ग्रंथकरिकै जगत्कीस्थितिकालविषे आत्माकीअद्वितीयरूपता सिद्धकरी॥ अब जगत्की उत्पत्ति
तैंपूर्वभी आत्माकी अद्वितीयरूपतासिद्धकरैहैं॥हेमैत्रेयी ॥ जैसे जगत्कीस्थितिकालविषे यहआनंदस्वरूपआत्मा सर्वभेदतैंरहितअद्वितीय
यरूपहै ॥ तैसे जगत्कीउत्पत्तिकालविषेभी यह आनंदस्वरूपआत्मा सर्वभेदतैंरहित अद्वितीयरूपही है ॥ याअर्थ विषेभी तूं दृष्टांतकूं
श्रवणकर ॥ जैसे विस्फुलिंगादिककार्यकीउत्पत्तितैंपूर्वसर्वभेदतैंरहित जोप्रज्वलितअग्निहै ॥ ताप्रज्वलितअग्नितैं ताअग्निकेसमानस्वभाव
वालेविस्फुलिंग तथाअंगार रूपकार्य उत्पन्नहोवै हैं॥तैसे प्रपंचरूपकार्यकीउत्पत्तितैंपूर्व सर्वभेदतैंरहित जोअद्वितीयआनंदस्वरूपआत्माहै॥

ताआत्मातैं यहजडचेतनरूपसंपूर्णजगत् उत्पन्नहोवै है ॥ हेमैत्रेयी ॥ तापरमात्मादेवतैं हिरण्यगर्भद्वारा जिसप्रकार यास्थूलजगत्कीउत्पत्तिभई है॥सोप्रकार बहुतश्रुतिस्मृतियोंविषे कथनकऱ्याहै ॥ तहाँश्रुति ॥ सूर्याचंद्रमसौधाता यथापूर्वमकल्पयत् ॥ अर्थयह ॥ सोमाया विशिष्टपरमात्मादेव जगत्कीउत्पत्तिकालविषे सूर्यचंद्रमातैंआदिलैके संपूर्णजगत्कूं पूर्वकल्पकीन्याईं रचताभया ॥ तहाँस्मृति ॥ तेषांच नामरूपाणि कर्माणिचपृथक्पृथक् ॥ वेदशब्देभ्यएवादौ निर्ममेसमहेश्वरः ॥ अर्थयह ॥ जगत्की उत्पत्तिकालविषे सोपरमात्मादेव आकाशादिकपदार्थोंके भिन्नभिन्ननामोंकूं तथा भिन्नभिन्नरूपोंकूं तथा भिन्नभिन्नकर्मोंकूं वेदकेशब्दोंतैंउत्पन्नकरताभया ॥ तात्पर्ययह ॥ भू यावेदकेशब्दकाउच्चारणकरिकै सोपरमात्मादेव पृथिवीकूंउत्पन्नकरताभया ॥ तथा आकाश यावेदकेशब्दकाउच्चारणकरिकै सोपरमात्मादेव आकाशकूंउत्पन्नकरताभया॥याप्रकार सर्वजगत्कूंउत्पन्नकरताभया॥ १॥हेमैत्रेयी॥इसतैं आदिलैकेअनेकश्रुतिस्मृतिवचनोंतैं याआकाशादिकजगत्कीउत्पत्तिकूं तूं आपहीजाणेगी॥यातैं ताकेकहणेकी अभी आवश्यकतानहीं है॥परंतु ऋगवेदादिकशब्दप्रपंचकेउत्पत्तिकूं तूं आपेजाणिसकैगीनहीं॥यातैं ऋगवेदादिरूपशब्दप्रपंचकीउत्पत्ति जिसप्रकार आत्मादेवतैंभई है॥ताप्रकारकूं तूं श्रवणकर॥हेमैत्रेयी जैसे यालोकविषेशुष्ककाष्ठोंकरिकै तथा आर्द्रकाष्ठोंकरिकै युक्तजोप्रज्वलितअग्निहै॥ताअग्नितैं विलक्षणधूमकीउत्पत्तिहोवैहै॥तैसे यासर्वज्ञपरमात्मादेवतैं यहविलक्षणशब्दरूपवेद उत्पन्नहोवै है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ ऋगादिकवेदोंकी जोईश्वरतैंउत्पत्तिअंगीकारकरोगे ॥ तौ सोवेदरूपशब्द लौकिकशब्दोंकीन्याईं पौरुषेयशब्दहोवैगा ॥ और शास्त्रविषेतौ वेदरूपशब्दोंकूं अपौरुषेयकथनकऱ्याहै ॥ यातैं ताशास्त्रकाविरोध होवेगा ॥ समाधान ॥ हेमैत्रेयी ॥ जिसजब्दकेउच्चारणहुएतैंअनंतर ताशब्दअर्थकानिश्चयकरणेवासतैं प्रत्यक्षअनुमानादिकप्रमाणाकीअपेक्षाहोवै है॥ सोशब्द ताअर्थकेविचारपूर्वकहीं उत्पन्नहोवैहै ॥ अर्थकेविचारतैंविना सोशब्द उत्पन्नहोवैनहीं ॥ जैसे इदानींकालकेलोकोंकेशब्द अर्थकेविचारपूर्वकही उत्पन्नहोवै हैं ॥ और यहवेदरूपशब्द जोपरमात्मादेवतैं उत्पन्नहोवैहै॥सोअर्थकेविचारपूर्वक उत्पन्नहोवैनहीं ॥ किंतु जैसे यत्नतैंविनाहीं यापुरुषोंतैं श्वास उत्पन्नहोवैहैं॥तैसे विनाहींप्रयत्नतैं तापरमात्मादेवतैं तेवेदरूपशब्द उत्पन्नहोवैहैं ॥ यातैंयहअर्थ

॥ २८ ॥

सिद्धभया ॥ पुरुषकरिकैउच्चारणकऱ्याजोवचन है ॥ ता वचनकानाम पौरुषेयवचननहीं ॥ किंतु यह पुरुष आपणे मन विषे अर्थका विचारकरिकै जिस वचनकाउच्चारणकरै है ॥ सोवचन पौरुषेयहोवैहै ॥ ऐसा पौरुषेयपणा वेदवचनोंविषेहैनहीं ॥ या कारणतैं ते वेद अपौरुषेयहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ अर्थविचारतैंविनाहीं पुरुषनैंउच्चारणकरेजेवचनहैं ॥ तेवचन जोकदाचित् अपौरुषेयहोतेहोवैं ॥ तौ इदानींकालविषे लौकिकपुरुषोंनैं अर्थकेविचारतैंविनाहींउच्चारणकरेजेवचनहैं ॥ तेवचनभी वेदवचनोंकीन्याईं अपौरुषेयहोणे चाहिये ॥ समाधान ॥ हेमैत्रेयी ॥ यहजीव भ्रमप्रमादादिकदोषोंकरिकैयुक्तहै ॥ यातैं यहजीव अर्थकेविचारतैंविना जिसजिसवचनकाउच्चारणकरैहै ॥ तेवचन उन्मत्तपुरुषकेवचनकीन्याईं आपणेअर्थतैं व्यभिचारीहीहोवै है॥ इहाँ जिसवचनकेअर्थका प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकै बाधहोवै ॥ सोवचन आपणेअर्थतैंव्यभिचारीहोवैहै ॥ जैसे किसीपुरुषनैं अग्नि शीतलहै याप्रकारकावचन उच्चारणकऱ्या ॥ तावचनकाअर्थरूप जोअग्निविषेशीतलताहै ॥ सो प्रत्यक्षप्रमाणकरिकैबाधितहै ॥ यातैं अग्निशीतलहै यहवचन आपणेअर्थतैं व्यभिचारीहै ॥ हेमैत्रेयी॥ यामनुष्यलोककीक्यावार्ता है॥ जोकदाचित् यहजीव ब्रह्मलोकविषेस्थितहोइकैभी अर्थविचारतैंविनाहीं किसीवचनकाउच्चारणकरै है॥ सोताकावचनभी उन्मत्तपुरुषकेवचनकीन्याईं आपणेअर्थतैंव्यभिचारीहीहोवैहै॥और सर्वज्ञपरमात्मादेव भ्रमप्रमादादिकदोषोंतैंरहितहै॥यातैं तासर्वज्ञईश्वरनै अर्थकेविचारतैंविनाहीं उच्चारणकरेजेवेदकेवचनहैं ॥तेवेदवचन आपणेअर्थतैं व्यभिचारीहोवैनहीं ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ वेदचनोंकूंआपणेअर्थकीसिद्धिवासतै किसीप्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकीअपेक्षाहैनहीं॥तथा तिनवेदवचनोंकाआपणेअर्थतैंव्यभिचारभीहैनहीं॥यातैंतेवेदकेवचन प्रत्यक्षादिकसर्वप्रमाणोंविषे राजाहैं ॥ अब वेदवचनोंविषे प्रमाणताकीसिद्धिकरणेवासतैं प्रथम मीमांसाशास्त्रकीरीतिसैं लौकिकशब्दोंविषेभी सामान्यतैंप्रमाणताका निरूपणकरैहैं ॥ हेमैत्रेयी ॥ यालोकविषे अयथार्थवचनकूंकथनकरणेहारेजोअनाप्तपुरुषहैं॥तिसअनाप्तपुरुषनैं किसीमार्गकेचलणेहारेपथिकपुरुषकेप्रति याप्रकारकावचनकह्या ॥ यानदीकेतीरऊपर तुमारेभक्षणकरणेयोग्य नानाप्रकारकेफलस्थितहैं ॥ सोयाप्रकारकावचन तिसकालविषे श्रोतापुरुषकूं नदीकेतीरविषे फलोंकीस्थितिरूपअर्थकाबोधनकरैहै ॥ यातैं सोवचनभी

सामान्यतैंप्रमाणरूपहीहै ॥ तात्पर्ययह ॥ नदीतीरविषे फलोंकीस्थितिरूपअर्थ तिसकालविषे नेत्रादिकइंद्रियोंकारिकै दिखाईदेतानहीं ॥ यातैं ताअर्थविषे प्रत्यक्षप्रमाणतौहैनहीं ॥ और तिसकालविषे ताशब्दकारिकै तिसअर्थकाबोधहोवै है ॥ यातैं ताअर्थविषेशब्दकूंहीं प्रमाण ताहै ॥ याकारणतैंहीं तेमीमांसाशास्त्रवाले याप्रकारकीप्रमाणअप्रमाणकी व्यवस्थाकरैहैं ॥ जोकिसीअर्थकाबोधनकरैहै ताकानाम प्रमाणहै ॥ और जोकिसीभीअर्थकाबोधननहींकरैहै ताकानाम अप्रमाणहै ॥ सोअर्थकीबोधकता तावचनविषेभीहै ॥ यातैं सोवचनभी सामान्यतैंप्रमाणरूपहींहै ॥ किंवा ॥ जेनैयायिकवादी अर्थकीबोधकता रूपकारिकै तिनप्रमाणोंविषे प्रमाणरूपता नहीं अंगीकारकरैहैं ॥ तिननैयायिकोंकेमतविषे तिनप्रमाणोंमें प्रमाणरूपता किसकरिकैसिद्धहोवैगी ॥ तहां सोनैयायिक जोयाप्रकारकावचनकहै ॥ अर्थकीबोधकतारूपकारिकै तिनप्रमाणोंविषे प्रमाणरूपतासिद्ध होवैनहीं ॥ किंतु जिसप्रमाणजन्यज्ञानतैं याजीवोंकी समर्थप्रवृत्तिहोवैहै ॥ तासमर्थप्रवृत्तिरूप हेतुतैं ताप्रमाणविषे तथा ताप्रमाणजन्य ज्ञानविषे प्रमाणरूपताकाअनुमानहोवैहै ॥ जैसे पूर्वअज्ञातस्थलविषे जलकूंदेखिकै यहपुरुषता जलकेलेनेवासतैजावैहै ॥ जभीतास्थलविषे यापुरुषकूं जलकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तभी सोपुरुष याप्रकारका अनुमानकरैहै ॥ पूर्वजोमेरेकूंजलकाज्ञान भयाथा सो ज्ञान प्रमाणरूपथा ॥ काहेतैं हमारेसमर्थप्रवृत्तिकाजनकहोणेतैं ॥ याप्रकार जेनैयायिक अंगीकारकरै हैं ॥ तिननैयायिकोंतैं यहपूछाचाहिये ॥ जिससमर्थप्रवृत्तिरूपहेतुतैं ताज्ञानकेप्रमाणताकाअनुमानहोवैहै ॥ ताप्रवृत्तिविषे समर्थता क्यावस्तुहै ॥ तहां जोपदार्थ ताज्ञानका विषयहै ॥ सोईहीपदार्थ ताप्रवृत्तिकाविषयहै ॥ याप्रकारकीजोसमानविषयताहै ॥ तासमानविषयताकानाम समर्थताहै ॥ अथवा ॥ फलकी जनकताकानाम समर्थताहै ॥ तहाँ प्रथमपक्षकूं जोनैयायिकअंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं यालोकविषे चेतनपुरुषोंकी जाजाप्रवृत्तिहोवैहै ॥ सासाप्रवृत्ति यहपदार्थ हमारेसुखकासाधनहै याप्रकारकेइष्टसाधनताज्ञानतौंविनाहोवैनहीं ॥ किंतु इष्टसाधनताज्ञानतैं अनंतरहीं चेतनजीवोंकी प्रवृत्तिहोवैहै ॥ यातैं ताप्रवृत्तिकूं तथाप्रवृत्तिकेसमर्थताकूं ताज्ञानकीअवश्यअपेक्षाहै ॥ ताज्ञानतैंविना ताप्रवृत्तिविषेसमर्थरूपतासंभवैनहीं ॥ यातैं तासमर्थप्रवृत्तितैं ज्ञानमात्रकाहीअनुमानहोवैगा ॥ ताज्ञानकेप्रमाणताकाअनुमानसंभवैनहीं ॥ और ताप्रवृत्ति

विषेफलकीजनकतारूप समर्थताहै ॥ यादूसरेपक्षकूं जोनैयायिकअंगीकारकरै ॥ सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं सुखदुःखयादोनोंकानामफलहै तासुखदुःखरूपफलकीसिद्धिविषे उपयोगीजोज्ञानहै ॥ ताज्ञानमात्रकीही साप्रवृत्ति अपेक्षाकरैहै ॥ प्रमाणज्ञानकीअपेक्षा साप्रवृत्तिकरैनहीं ॥ सा सुखदुःखरूपफलकीजनकतारूपसमर्थता अनाप्तपुरुषकेवचनजन्यप्रवृत्तिविषेभीहै ॥ काहेतैं नदीकेतीरविषेफलहैं याप्रकारका ता अनाप्तपुरुषकावचनश्रवणकरिकै तहांप्रवृत्तभयाजोपथिकपुरुषहै ॥ तापथिकपुरुषकूं तानदीतीरकेदर्शनतैं सुखदुःखरूपफलकीअवश्य प्राप्तिहोवै है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ तानदीतीरविषे फलोंकीप्राप्तिकारिकै तापथिकपुरुषकूं यद्यपि सुखरूपफलकीप्राप्तितौसंभवै है ॥ तथापि तापथिकपुरुषकूं दुःखरूपफलकीप्राप्तिसंभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेमैत्रेयी इसलोकविषे तथापरलोकविषे ऐसीकोईपुरुषकीप्रवृत्तिहैनहीं ॥ जाप्रवृत्ति दुःखतैंरहित केवलसुखकूंहीं उत्पन्नकरै ॥ किंतु जोजोजीवोंकीप्रवृत्तिहोवै है ॥ साप्रवृत्ति सुखदुःखदोनोंउत्पन्न करै है ॥ और वास्तवतैंविचारकरिकैदेखियेतौ जोजोपुरुषकीप्रवृत्तिहोवै है ॥ साप्रवृत्ति केवलदुःखकाहीकारण है ताप्रवृत्तिविषे जो लोकोंकूं सुखसाधनताबुद्धिहोवै है ॥ सोकेवलभ्रांतिकरिकैहोवै है ॥ हेमैत्रेयी यालोकोंकी प्रवृत्तिदुःखतैंरहितकेवलसुखकूं उत्पन्नकरैनहीं ॥ याअर्थविषे नैयायिकोंकासिद्धांतभी अनुकूलहै ॥ काहेतैं तेनैयायिक दुःखतैंरहितकेवलसुखकूं किसीपदार्थविषे अंगीकारकरैनहीं ॥ याकारणतैंही तेनैयायिकतानियमकीरक्षाकरणेवासतै श्रुतिप्रसिद्धपरमानंदरूपमोक्षविषेभी आनंदरूपता अंगीकारकरैनहीं ॥ किंतु दुःखाभावविषेही तेनैयायिक मोक्षरूपताअंगीकारकरै हैं ॥ यातैं पुरुषोंकीप्रवृत्ति केवलसुखकाहीकारणहै ॥ यहतुमाराकहणासंभवैनहीं ॥ यातैं यह अर्थसिद्धभया ॥ प्रमाणोंविषे जाअर्थकीबोधकताहै साअर्थकीबोधकताही तिनप्रमाणोंविषे प्रमाणरूपताकीसिद्धिकरै है ॥ साअर्थकीबोधकता जैसे शब्दप्रमाणविषेहै ॥ तैसे प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंविषेहैनहीं यातैंनदीकेतीरविषेफलहै याप्रकारका जोअनाप्तपुरुषकावचनहै ॥ सोभी अर्थकाबोधकहोणेतैं प्रमाणरूपहीहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ यानदीकेतीरविषेफलहै यावचनविषेप्रमाणरूपतासंभवैनहीं ॥ काहेतैं यानदीकेतीरविषेफलनहीं है यानिषेधकवचनकरिकै तावचनकेप्रमाणरूपताका बाधहोवैहै ॥ समाधान ॥ हेमैत्रेयी ॥ तानिषेधकवचनकरिकै यद्यपि

तावचनकेप्रमाणरूपताकाबाधहोवै है ॥ तथापि तानिषेधकवचनकी जबपर्यंत प्रवृत्तिनहींभई ॥ तबपर्यंत तावचनकेप्रमाणरूपताकीनिवृत्तिहोवैनहीं॥किंतु तानिषेधकवचनकेप्रवृत्तितैंअनंतरहीं तावचनकेप्रमाणरूपताकाबाधहोवै है॥याकारणतैंहीं भाष्यकारभगवान्नैं आत्मसाक्षात्कारपर्यंतहीं संपूर्णलौकिकवैदिकप्रमाणोंविषे प्रमाणरूपताअंगीकारकरीहै॥ यातैं जैसे सर्वमृगोंविषे सिंह बलवानहै ॥ तैसे आपणे संबंधकरिकै सर्वपदार्थोंकेअभावकूंबोधनकरणेहारा जोयहनकारहै ॥ सोनकार यासंपूर्णककारादिकवर्णोंविषे बलवानहै॥शंका॥ हेभगवन् जहांनकारकरिकैयुक्त दोनिषेधकवचनहोवै हैं ॥ तहाँ परस्पर प्रतिबंधकताकरिकै किसीअर्थकीभी सिद्धिनहींहोणीचाहिये ॥ समाधान ॥ हेमैत्रेयी॥जहां एकहीपदार्थविषे दोनिषेधकवचनोंकीप्राप्तिहोवै है ॥ तहां एकअर्थकेनिश्चयकरणेवासतै कोईतीसराप्रमाण अवश्यअंगीकार कऱ्याचाहिये॥परंतु सोतीसराप्रमाणभी तभी ताअर्थकीसिद्धिकरै है ॥ जभी तातीसरेप्रमाणकेअर्थकाबाधकरणेहारा कोईचतुर्थप्रमाणन हींहोवै है ॥ किंवा ॥ तिनदोनोंनिषेधकवचनोंविषेभी जहां एकनिषेधकवचन लौकिकहोवै है ॥ और दूसरानिषेधकवचन वैदिकहोवैहै ॥ तहां एकवचनकेअर्थकानिश्चयकरणेवासतै किसी तीसरेप्रमाणकी अपेक्षाहोवैनहीं ॥ किंतु भ्रमप्रमादादिकदोषोंकीशंकाकरिकैयुक्त जोलौकिकनिषेधकवचनहै ॥ सो दुर्बलहोवैहै॥ और भ्रमादिकदोषोंकीशंकातैंरहित जोवैदिकनिषेधकवचनहै ॥ सो बलवानहोवै है॥ तावलवानवैदिकप्रमाणकरिकै दुर्बललौकिकप्रमाणकाबाधहोइजावै है ॥ किंवा ॥ जैसे नदीकेतीरविषे फलोंकीविद्यमानताकूं बोधनकरणेहारा जोनदीकेतीरविषेफलहैं याप्रकारकालौकिकवचनहै ॥ तथा तानदीकेतीरविषे फलोंकेअभावकूंबोधनकरणेहारा जो नदीकेतीरविषेफल नहीं हैं याप्रकारकालौकिकनिषेधकवचनहै ॥ तिनदोनोंलौकिकवचनोंका जैसे परस्परविरोधहै ॥ तैसे परलोकनहीं है याप्रकारकाजोलौकिकनिषेधकवचनहै ॥ तथा परलोकहै याप्रकरकाजोवैदिकवचनहै ॥ तिनदोनोंवचनोंकाभी परस्परविरोधहै ॥ तहाँ परलोकनहीं है यहलौकिकवचन यद्यपि निषेधकवचनहोणेतैंप्रबल है ॥ तथापि तालौकिकवचनविषे भ्रमप्रमादादिकदोषोंकीसंभावनाहोवै है ॥ यातैं सोलौकिकवचन दुर्बलहै ॥ और परलोकहै ॥ याप्रकारकेवैदिकवचनोंविषे भ्रमादिकदोषोंकीसंभावनाहोवैनहीं ॥ यातैं सोवैदिकवचन

तालौकिकवचनतैं बलवानहै ॥ तावलवानवैदिकवचनकरिकैही तालौकिकवचनकाबाधहोवै है ॥ किंवा ॥ ककारादिकशब्दोंकेस्वरूपकूंबोधनकरणेहारे जेकखगघङ इत्यादिकवचनहैं॥तिनवचनोंविषेभी शब्दरूपअर्थकीबोधकतारूपकरिकै जभी प्रमाणरूपतासिद्धहोवै है॥ तभी नानाप्रकारकेअर्थोंकूंबोधनकरणेहारेजेवचनहैं ॥ तिनवचनोंविषे अर्थकीबोधकतारूपकरिकै प्रमाणरूपतासिद्धहोवै है ॥ याकेविषे क्याकहणा है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ अर्थकीबोधकतारूपकरिकै जोकदाचित् तावचनोंविषे प्रमाणरूपताहोवै॥तौ जिसवचनतैं किसी भीअर्थकाबोधनहींहोवै है ॥ सोवचन अप्रमाणरूपहोणाचाहिये ॥ समाधान ॥ हेमैत्रेयी ॥ जोवचन किसीभीअर्थकेबोधकूं नहींउत्पन्नकरै है ॥ तावचनविषे जोप्रमाणरूपता नहींसिद्धहोवै तौ मतहोवै॥ याकेविषेहमारी किंचित्मात्रभीहानिहोवैनहीं ॥ काहेतैं जोवचन किसी अर्थकाबोधकहोवै है ॥ तिसीवचनकूं हम प्रमाणरूपमानै हैं ॥ अबोधकवचनकूं हमभी प्रमाणरूपमानतेनहीं ॥ किंवा ॥ परस्परविरोधवालेजेप्रत्यक्षादिकप्रमाण हैं ॥ तिनोंकूंजीतणेवासतै जोअविरुद्धप्रमाण समर्थहोवै है ॥ सो अभावकूंकथनकरणेहारेनकारकीसहायतातैंहीं समर्थहोवै है याकारणतैं सोनकार ककारादिकसर्ववर्णोंविषेबलवान है ॥ सोबलवाननकार जोकदाचित् अभावरूपअर्थकूंविषयकरणेहारे बोधकूं उत्पन्नकरै है ॥ तौ नेतिनेति याश्रुतिकेनकारजन्यसर्वजगत्केअभावकाबोध हमअधिकारीजीवोंकूं सर्वदाहोवै ॥ यातैं जैसे निषेधकवचनों विषे अर्थकीबोधकतारूपकरिकै प्रमाणरूपता सिद्धहोवै है ॥ तैसे सर्ववचनोंविषे अर्थकीबोधकतारूपकरिकैही प्रमाणरूपताहै ॥ पुरुषोंकेप्रवृत्तिकीजनकतारूपकरिकै किसीभीवचनविषे प्रमाणरूपतानहीं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ भ्रमप्रमादादिकदोषोंकरिकैदूषित जेलौकिकवचन हैं॥ तेलौकिकवचनभी जभी पूर्वउक्तयुक्तियोंसैं अर्थकीबोधकतारूपकरिकै प्रमाणरूपताकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ तभी भ्रमादिकसर्वदोषोंतैं रहित जेवेदकेवचन हैं ॥ तेवेदकेवचन अर्थकीबोधकतारूपकरिकै प्रमाणरूपताकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ याकेविषेक्याकहणा है ॥ इतनैंकरिकै ईश्वरउच्चारितअपौरुषेयवेदविषे स्वतःप्रमाणताकानिरूपणकऱ्या ॥अब तावेदकेविभागकानिरूपणकरै हैं ॥ हे मैत्रेयी ॥ प्रत्यक्षादिकसर्वप्रमाणोंविषे राजारूपजोवेदप्रमाणहै॥सोवेद प्रथम दोप्रकारका है॥एकतौ मंत्ररूपवेदहै॥और दूसरा ब्राह्मणरूपवेदहै॥तहाँ

प्रथम मंत्ररूपसोवेद ऋग् यजुष् साम अथर्वण याभेदकरिकैचारिप्रकारकाहै ॥ और दूसरा ब्राह्मणरूपवेदभी इतिहास१पुराण २ विद्या ३ उपनिषद् ४ श्लोक ५ सूत्र ६ व्याख्यान ७ अनुव्याख्यान ८ याभेदकरिकैअष्टप्रकारकाहै ॥ तहाँ जेवेदकेवचन जनकराजादिकोंकेकथा प्रसंगकूं बोधनकरै हैं॥तिनवेदवचनोंकानाम इतिहासहै ॥१॥ और जेवेदकेवचन मायाविशिष्टपरमात्मातैं जगत्के उत्पत्ति स्थिति लयकूं कथनकरै हैं॥तथा पौतीमाष्यादिकऋषियोंकेवंशकूंकथनकरै हैं॥तथा विराटभगवान्कापुत्र जोस्वायंभुवमनुहै ताकेउत्पत्तिकाकथनकरै हैं ॥ तथा मनुकीसृष्टिविषे उत्पन्नभये जेब्राह्मणादिकचारिवर्ण हैं॥तथा ब्रह्मचर्यादिकचारिआश्रमहैं॥तिनसंपूर्णोंके भिन्नभिन्नकर्मोंका कथनकरै हैं ॥ तिनवेदवचनोंकानाम पुराणहै ॥२॥ और जेवेदकेवचन उपासीत इत्यादिकशब्दोंकरिकै ब्रह्मादिकदेवतावोंकेउपासनाकाकथन करै हैं॥तिनवेदवचनोंकानाम विद्याहै॥३॥और जेवेदकेवचन सत्यकाभीसत्य हैं इत्यादिकब्रह्मकेरहस्यनामोंकूंकथनकरै हैं॥तिनवेदवचनों कानाम उपनिषद् है ॥ ४ ॥ और वेदके ब्राह्मणभागविषे कथनकरे जे मंत्र हैं तिनमंत्रोंका नाम श्लोक है ॥ ५ ॥ और संक्षेपकरिकै अनेक अर्थोंकूं कथन करणेहारे जे आत्मानमुपासीत इत्यादिक वेदके वचन हैं ॥ तिनोंकानाम सूत्र है ॥ ६ ॥ और मंत्रोंकेअर्थकूंकथनकरणेहारा जोब्राह्मणरूपवेदकाभाग है ताकानाम व्याख्यान है ॥७॥ और जेवेदकेवचन सूत्रकेअर्थकूं मंत्रअर्थवादादिकोंसहित विस्तारतैंकथनकरै हैं ॥ तिनवेदवचनोंकानाम अनुव्याख्यान है ॥ ८ ॥ शंका ॥हेभगवन्॥ अनेकअर्थोंकूं जोवचन बोधनकरै हैं तावचन कानाम सूत्र है ॥ यहजो आपनैं सूत्रकालक्षणकह्या सोसंभवेनहीं ॥ काहेतैं एकवारउच्चारणकऱ्याहुआशब्द एकहीअर्थकूंबोधन करै है ॥ याप्रकारकानियम शास्त्रविषेकथनकऱ्या है ॥ तानियमका विरोधहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेमैत्रेयी ॥ जैसे लौकिकवाक्यों विषे पुनःपुनःआवृत्तिकरिकै अनेकअर्थोंकीबोधकता दूषणरूपहोवै है ॥ तैसे सूत्ररूपवेदवाक्योंविषेपुनःपुनःआवृत्तिकरिकै अनेकअर्थोंकीबोधकता दूषणरूपनहीं है ॥ किंतु उलटा अनेकअर्थोंकीबोधकता सूत्रवाक्योंकाभूषणरूप है ॥ हेमैत्रेयी ॥ जैसे भूमिरूपक्षेत्रतैं वृक्षकीउत्पत्तिहोवै है ॥ तैसे ब्रह्मरूपक्षेत्रतैं यहवेदरूपी कल्पवृक्ष उत्पन्नहोवै है ॥ कैसाहैसोवेदरूपवृक्ष ॥ ऋग् यजुष् साम अथर्वण ॥ ३१ ॥

याचारिस्कंधोंकरिकैयुक्त है ॥ तथानानाप्रकारकीशाखावोंकरिकैयुक्त है ॥ ऐसेवेदभगवान्की ब्रह्मतैंउत्पत्तिभई है ॥ याकारणतैं तावेद भगवान्कूं शास्त्रविषे ब्रह्मरूपकरिकैकथनकऱ्या है ॥ हेमैत्रेयी ॥ तामायाविशिष्टब्रह्मतैंजैसेयह शब्दरूपवेद उत्पन्नभया है ॥ तैसे तिनवेदोंकेअर्थभी तिसीब्रह्मतैंउत्पन्नभयेहैं॥अब संक्षेपतैंतिनपदार्थोंकानिरूपणकरैहैं॥हेमैत्रेयी॥ज्ञानयोग कर्मयोग यहदोनोंप्रकारका जोयोगहै ॥ तथा यज्ञभूमितैंबाहरकरणेयोग्य जोनानाप्रकारकादानहै॥ तथा इसलोकविषे तथापरलोकविषे जीवोंकूंप्राप्तहोणेयोग्य जोसुख दुःखरूपफल है तथा तासुखदुःखरूपफलकेभोगणेकासाधनरूप जेस्थावरजंगमशरीरहैं ॥ तथा आकाशादिकजेपंचभूतहैं ॥ तथावाकादिकजेएकादशइंद्रियहैं ॥ तथा पंचप्राणजेहैं ॥ तथा तिनवाकादिकइंद्रियोंके जेअभिमानीदेवताहैं॥इसतैंआदिलैकै यहसंपूर्णजगत् तापरमात्मादेवतैंहीं उत्पन्नहोवैहै ॥ इतनैंकरिकै जगत्कीउत्पत्तितैंपूर्व ब्रह्मविषे अद्वितीयरूपताासिद्धकरी ॥ अब जगत्केप्रलयकालविषेभी ताब्रह्मविषे अद्वितीयरूपता सिद्धकरैहैं ॥ हेमैत्रेयी ॥ जैसे जगत्कीउत्पत्तिस्थितिकालविषे ब्रह्ममैं अद्वितीयरूपताहै॥तैसे याजगतकेप्रलयकालविषे ताब्रह्मकेअद्वितीयरूपताविषे तूं दृष्टांतकूंश्रवणकर ॥ हेमैत्रेयी ॥ जैसे श्रीगंगादिक नदियोंविषेस्थितजेजलहैं ॥ तथा मेघादिकोंविषेस्थितजेजलहैं ॥ तेसंपूर्णजल साक्षात्संबंधकरिकै अथवा परंपरासंबंधकरिकै महान्समुद्रकूंहींप्राप्तहोवै हैं ॥ तैसे प्रलयकालविषे यह संपूर्णस्थावरजंगमरूपजगत् साक्षात्संबंधकरिकै अथवा परंपरासंबंधकरिकै परमात्मादेवकूंहीं प्राप्तहोवैहै ॥ अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकैनिरूपण करैहैं ॥ हे मैत्रेयी ॥ प्रलयकालविषे यहशब्दस्पर्शादिकविषय श्रोत्रादिकइंद्रियोंविषे लयभावकूंप्राप्तहोवै हैं॥और तेश्रोत्रादिकइंद्रिय आकाशादिकभूतोंविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥और तेआकाशादिकपंचभूत मायाविशिष्टपरमात्माविषे लयभावकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ तहां स्पर्शरूपविषय त्वक्इंद्रियविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहैं॥और संपूर्णमधुरादिकरस रसन इंद्रियविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और संपूर्ण गंध घ्राणइंद्रियविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहैं॥और संपूर्णनीलपीतादिकरूप चक्षुइंद्रियविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और संपूर्णलौकिकशब्द श्रोत्रइंद्रियविषे लयभावकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ और संपूर्णसंकल्प मनविषे लयभावकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ और संपूर्ण निश्चयरूपवृत्तियां बुद्धिविषे

लयभावकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ और संपूर्णग्रहणादिकव्यापार हस्तइंद्रियविषे लयभावकूं प्राप्त होवै हैं ॥ और संपूर्ण विषयजन्यआनंद उपस्थ इंद्रियोंविषे लयभावकूंप्राप्तहोवै हैं॥ और संपूर्णमलादिकोंकेविसर्ग पायुइंद्रियविषे लयभावकूंप्राप्त होवै हैं ॥ और संपूर्णगमन आगमनादि कव्यापार पादइंद्रियविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और संपूर्ण वैदिकशब्द वाक्इंद्रियविषे लयभावकूं प्राप्त होवै हैं॥इसप्रकार जो जो इंद्रिय जिस जिस भूतका कार्य है ॥ सो सो इंद्रिय तिसीतिसीभूतविषे लयभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ हे मैत्रेयी ॥ जैसेयालोकविषे अल्पनदियोंके जल प्रथम श्रीगंगादिकमहान् नदियोंकूं प्राप्त होइकै तागंगादिक नदियोंके साथ ते अल्पनदियोंके जल महान्समुद्रकूं प्राप्त होवैहैं ॥ तैसे प्रलयकालविषे यहसंपूर्णकार्य प्रथम आपणे आपणेकारणकूं प्राप्तहोइकै ताकारणकेसहित तेकार्य परमकारणरूपपरमात्मा विषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं प्रलयकालविषे सोपरमात्मादेव अद्वितीयरूपहींहै ॥ इतनैंकरिकै प्रलयकालविषे आनंदस्वरूप आत्माकी अद्वितीयरूपतासिद्धकरी॥अब मोक्षअवस्थाविषेभी ताआनंदस्वरूपआत्माकी अद्वितीयरूपता सिद्धकरैहैं॥हेमैत्रेयी॥ब्रह्मज्ञा नकेउत्पन्नहुएतैं अनंतर यहकार्यसहितअविद्या जिसप्रकार लयभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ ताके विषे तूं दृष्टांतकूं श्रवणकर ॥ जैसे यालोकविषे स्वभावतैंद्रवीभूतजेसमुद्रादिकोंकेजलहैं ॥ तेजल जभी आतपवायु आदिकदृष्टनिमित्तकूं प्राप्तहोवै हैं॥ तथा जीवोंके पुण्य पापरूपअदृष्ट निमित्तकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तभी तेसमुद्रादिकोंकेजल लवणादिकरूपघनीभावकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ तैसे वास्तवतैंजीवईश्वरादिकभेदतैंरहित यहशु द्धआत्मादेवभी जभी अविद्याकेसंबंधरूपनिमित्तकूंप्राप्तहोवैहै॥तभी सोआत्मादेव जीवभावकूंप्राप्तहोवैहै॥और हेमैत्रेयी जैसे तालवणपिंडके दशोदिशाविषे तथामध्यविषे तासमुद्रकेजलतैंभेदनहीं है ॥ किंतु क्षाररसकरिकै सोलवणकापिंड समुद्रजलरूपही है ॥ तैसे याजीवात्मा विषे तापरमात्मातैंभेदनहीं है ॥ किंतु सत्चित्आनंदरूपकरिकै यहजीवात्मा तापरमात्मातैंअभिन्नहीं है॥और हेमैत्रेयी ॥ जैसे सोलव णकापिंड जभी तासमुद्रकेजलकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभी यहजीव ताब्रह्मविषेलयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेमैत्रेयी॥तालवणकेपिंडविषे जोजी वकूं घनीभावताप्रतीतहोवैहै॥सो तासमुद्रकेजलकेभेददर्शनकालविषेही प्रतीतहोवैहै॥तैसे हमजीवोंकूंअद्वितीयब्रह्मविषे जोयहसंसारप्रतीत

होवैहै॥सो ताअद्वितीयब्रह्मकेभेददर्शनकालविषेहीप्रतीतहोवैहै॥औरजैसे सोलवणकापिंड वास्तवतैं तीनकालविषेसमुद्रकेजलतैंभिन्ननहीं है तैसे यहजीवात्मावास्तवतैं तीनकालविषे ताब्रह्मतैंभिन्ननहीं है॥और हेमैत्रेयी॥जैसे तालवणपिंडविषे जोघनीभावता है ॥ साघनीभावता नाशवानहै ॥ और तालवणपिंडविषे जासमुद्रजलरूपताहै ॥ साजलरूपता नाशतैंरहितहै ॥ तैसे याआत्मादेवविषे जाजीवरूपताहै ॥ साजीवरूपता नाशवान है॥और याआत्मादेवविषे जाब्रह्मरूपताहै॥साब्रह्मरूपता नाशतैंरहितहै॥ और हेमैत्रेयी ॥ जैसे तालवणपिंडके घनीभावताका जभी नाशहोवैहै ॥तभी तालवणपिंडकाभीनाशहोवै है॥तैसे मोक्षअवस्थाविषे अविद्याकेनाशहुए ताजीवपणेकाभीनाश होवै है ॥ और हेमैत्रेयी ॥ जैसे सोलवणकापिंड आपणीउत्पत्तिस्थितिलयकालविषे सर्वओरतैंक्षाररसवालाहै॥तैसे यहजीवात्माभी तीन कालविषे स्वयंप्रकाशचेतनरूपही है ॥ शंका ॥ हेभगवन् यहआनंदस्वरूपआत्मा जो स्वयंप्रकाशरूपहै ॥तौ सर्वजीवोंकूं सोआत्मादेव किसवातैंनहींप्रतीतहोता ॥ समाधान ॥ हेमैत्रेयी॥ जैसे अत्यंतसमीपवर्तमान जो सूर्यादिकोंकाप्रकाशहै॥ताप्रकाशकूं नेत्रोंतैंअंधपुरुष देखिसकैनहीं ॥ तैसे अज्ञानरूपअंधकारकरिकै आवृत्तहैंबुद्धिरूपनेत्रजिनोंके ऐसेजेअज्ञानीजीवहैं ॥ तेअज्ञानीजीव अत्यंतसमीपवर्तमान स्वयंज्योतिआत्माकूं देखिसकैनहीं ॥ और हेमैत्रेयी॥जैसे यालोकविषे जिसपुरुषकामन स्त्रीआदिकविषयोंविषेजावै है ॥ सोपुरुष अत्यंत समीपास्थितपदार्थकूंभी देखतानहीं॥तैसे जिनपुरुषोंकामन स्त्रीधनपुत्रादिकपदार्थोंविषेआसक्तहै॥तेपुरुष अत्यंतसमीपास्थितआत्माकूंभी देखिसकतेनहीं ॥ और हेमैत्रेयी ॥ जैसे समुद्रकेलवणपिंडविषे घनीभावताहोवै है॥तैसे याआनंदस्वरूपआत्माविषे मैंमनुष्यहूं मैंब्राह्मणहूं इत्यादिकाविशेषज्ञानहीं घनीभावतारूपहैं ॥ और ताविशेषज्ञानरूप घनीभावताकाकारण यहस्थूलशरीरहै ॥ यातैं तास्थूलशरीरका जभी नाशहोवै है॥तभी ताविशेषज्ञानरूप घनीभावताविशिष्ट आत्माकाभीनाशहोवैहै॥हेशिष्य यास्थूलशरीरकेनाशतैंअनंतर आत्मा काभीनाशहोवै है॥ याप्रकारकावचन जिसअभिप्रायकरिकै याज्ञवल्क्यमुनिनैं मैत्रेयीकेप्रति कथनकऱ्याहै॥तायाज्ञवल्क्यमुनिकेअभिप्रा यकूं तूं श्रवणकर ॥ यहआनंदस्वरूपआत्मा यद्यपि वास्तवतैंनाशरहित है ॥ तथापि जैसे चारिकोणवालेलोहकेपिंडसाथ तादात्म्यभा

वकूंप्राप्तहुआअग्निभी चारिकोणवालाप्रतीतहोवै है ॥ तहाँ चारिकोणवालेलोहपिंडकेनाशहुएतैंअनंतर ताचारिकोणवालेअग्निकाभीनाश होवैहै॥तैसे जीवतअवस्थाविषे यास्थूलशरीरकेतादात्म्यअध्यासकारिकै यहआत्मादेव मैंमनुष्यहूं इत्यादिकविशेषज्ञानोंकारिकैविशिष्टहुआ प्रतीतहोवैहै॥और मरणकालविषे यास्थूलशरीरका जभी नाशहोवै है॥तभी ताविशेषज्ञानविशिष्टआत्माकाभी नाशहोवै है॥तात्पर्ययह जैसे पुरुषकेविद्यमानहुएभी दंडरूपाविशेषणकेनाशकारिकै इहांदंडीपुरुषनहीं है याप्रकार दंडविशिष्टपुरुषकेअभावकानिश्चयहोवै है ॥ तैसे मरणकालविषे आत्माकेविद्यमानहुएभी मैंमनुष्यहूं इत्यादिकविशेषज्ञानरूपविशेषणकेनाशकारिकै ताविशेषणविशिष्टआत्माकेनाशकाव्य वहारहोवै है॥और जैसे मरणकालविषेयहजीव मैंमनुष्यहूं मैंब्राह्मणहूं इत्यादिकसर्वविशेषज्ञानोंतैंरहितहोवै है॥याकारणतैं सोजीव तामरण कालविषे यास्थूलशरीरकेदुखोंकूंप्राप्तहोवैनहीं॥ तैसे मोक्षअवस्थाविषेभी यहजीव मैंमनुष्यहूं इत्यादिकसंपूर्णविशेषज्ञानोंतैंरहितहोवै है ॥ याकारणतैं यहजीव तामोक्षअवस्थाविषे किंचित्मात्रभीदुःखकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् जैसे मरणकालविषे मैंमनुष्यहूं इत्या दिकसर्वविशेषज्ञानोंकाअभावहोवै है ॥ तैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे तिनसर्वविशेषज्ञानोंकाअभावहोवै है ॥ यातैं सुषुप्तिअवस्थाकेदृष्टांतक रिकै याज्ञवल्क्यमुनिनैं मोक्षअवस्थाविषे सर्वदुःखोंकाअभाव किसवासतैनहींकथनकऱ्या ॥ समाधान ॥ हेशिष्य यद्यपि सुषुप्तिअवस्था विषे याजीवके तासंपूर्णविशेषज्ञानोंकाअभावहोवै है॥तथापि यहजीव तासुषुप्तिअवस्थाकापरित्यागकारिकै जभी जाग्रत्अवस्थाकूंप्राप्तहो वैहै ॥ तभी सोजीव इसीशरीरविषे नानाप्रकारकेदुखोंकूंप्राप्तहोवै है ॥ और मरणकालविषे यहजीवात्मा तथा यास्थूलशरीरसंबंधीदुः खोंकूं पुनःप्राप्तहोवैनहीं याकारणतैं सुषुप्तिअवस्थाकापरित्यागकारिकै तायाज्ञवल्क्यमुनिनै मोक्षअवस्थाविषे मरणअवस्थाका दृष्टांत कथनकऱ्याहै ॥ यातैं जैसे यास्थूलशरीरकेनाशतैंअनंतर संपूर्णविशेषज्ञानोंतैंरहितहुआ यहजीव पुनःताशरीरजन्यदुःखोंकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥तैसे आत्मासाक्षात्कारकारिकै अविद्याकेनाशहुएतैंअनंतर सर्वविशेषज्ञानोंतैंरहितहुआ यहस्वयंज्योतिआत्मा पुनःताशरी रसंबंधीदुःखोंकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥मोक्षअवस्थाकीन्याईं मरणकालविषेभी जोकदाचित् सर्वदुःखोंकाअभावहोताहोवै ॥

तौ मरणअवस्थाकूंप्राप्तहुए अज्ञानीजीवोंतैं तिनमुक्तपुरुषोंविषे विलक्षणता सिद्धनहींहोवैगी ॥ समाधान ॥ होशिष्य ॥ मरणकालविषे संपूर्णविशेषज्ञानोंकेअभावहुए यह अज्ञानीजीव यद्यपि पूर्वशरीरजन्यदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथापि भावीशरीरोंकेप्राप्तिकरणे हारे जेपुण्य पापरूपअदृष्ट हैं ॥ तथा सर्वशरीरोंकाकारणजाअविद्या है तेदोनों अज्ञानीजीवोंकेमरणकालविषे विद्यमान हैं॥यातैंतापुण्यपापरूपकर्मों केवशतैं तेअज्ञानीजीव दूसरेजन्मोंकूंप्राप्तहोइकै तहां अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ और मुक्तपुरुषकेआत्मज्ञानकरिकै अविद्या तथापुण्यपापरूपअदृष्ट यहदोनोंनाशहोइजावै हैं ॥ यातैं तामुक्तपुरुषकूं पुनःशरीरकीप्राप्तिकरिकै दुःखोंकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ होशिष्य या प्रकारकेअभिप्रायकूंमनविषेराखिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि तामैत्रेयीकेप्रति शरीरकेनाशतैंअनंतर आत्माकानाश कथनकरताभया ॥ ता याज्ञवल्क्यमुनिकेअभिप्रायकूंनजाणि करिकै सोमैत्रेयी याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति याप्रकारकाप्रश्नकरतीभई ॥ मैत्रेयीउवाच ॥ हेभगवन्॥ पूर्वआपनैं याआनंदस्वरूपआत्माकूं सत्चित्आनंदस्वरूपकरिकै कथनकऱ्याथा॥और अभीआपनैं यास्थूलशरीरकेनाशतैं अनंतर ता आत्माका नाश कथनकऱ्या ॥ यातैं आपकेपूर्वउत्तरवचनोंका परस्पर विरोधहोवै है ॥ हेभगवन् ॥ जैसे पवन तूलकूं दशोंदिशाविषे भ्रमणकरावै है ॥ तैसे यहआपकावचनरूपीपवनहमारेमनरूपतूलकूंसर्वओरतैंभ्रमणकरावै है ॥ हेभगवन् ॥ जैसे राजाकेवचनकेअभिप्राय कूंनजाणिकरिकै सेवककामन व्यामोहकूंप्राप्तहोवै है ॥ तैसे आपकेवचनकेअभिप्रायकूंनजाणिकरिकै हमारामन व्यामोहकूं प्राप्तहोवै है ॥ हेभगवन् ॥ जैसे विचारतैंरहितगौ तृणोंकेलोभकरिकै दूसरेदेशविषेजावैहै॥ तहाँतृणोंकरिकैआच्छादितजोपंकहै तापंकविषे सा गौ फँसि जावै है तैसे आत्मज्ञानकेलोभकरिकै आपसैंपूछतीहुई मैं मैत्रेयी आपकेवचनरूपीपंकविषे फँसिगईहूं ॥ हेभगवन् ॥ पूर्वहमनैं आत्मा कानाशनहींहोवै है याप्रकारकावचन बहुतविद्वान्ब्राह्मणोंकेमुखतैंश्रवणकऱ्याहै॥और आत्माकानाशनहींहोवै है याप्रकारकावचन किसी प्रसंगपाइकै आपकेमुखतैंभी हमनैंबहुतवारश्रवणकऱ्या है ॥ और अभीआपनैं यास्थूलशरीरकेनाशतैंअनंतर साआत्माकानाश कथन कऱ्या है ॥ यातैं ताआपकेवचनकूंश्रवणकरिकै सोआत्माकेनित्यरूपताकानिश्चय हमारा निवृत्तहोताभयाहै ॥हेभगवन्॥ जैसे कोईपुरुष

आपणेधनकीवृद्धिकरणेवासतें ॥ किसीव्यापारविषेप्रवृत्तहोवै ॥ ताव्यापारविषे सोपुरुष आपणेपूर्वमूलधनकूंभीनष्टकरिदेवै ॥ याप्रकार कान्याय हमारेविषेप्राप्तभया है॥काहेतैं आत्माकेवास्तवस्वरूपकेजाननेवासतैं हमनैं आपकेप्रतिप्रश्नकऱ्याथा॥ सोआपकेवचनतैं आत्मा केवास्तवस्वरूपकाज्ञानतौनहींभया ॥ उलटा हमनैं पूर्व जोआत्माकीनित्यरूपता निश्चयकरीथी ॥ सोआत्माकीनित्यरूपताभी आपके वचनतैं निवृत्तहोइगई ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकावचन जभी मैत्रेयीनैं याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति कथनकऱ्या ॥ तभी सोयाज्ञवल्क्यमुनि कृपाकरिकै तामैत्रेयीकेप्रति आपणेहृदयकाअभिप्राय कहताभया ॥ याज्ञवल्क्यमुनिरुवाच ॥ हेमैत्रेयी याशरीरकेनाशतैंअनंतर आत्मा काभीनाशहोवै है ॥ याप्रकारकेहमारेवचनतैं तुम्हारेकूं ताव्यामोहकीप्राप्ति मतहोवै ॥ तथापूर्वनिश्चयकरीजाआत्माकीनित्यरूपता ताके हानिकीचिंताकरिकै तुम्हारेकूं खेदकीप्राप्तिभीमतहोवै ॥ हेमैत्रेयी ॥ हमारेवचनकूंश्रवणकरिकै तूंजिसमोहकूंप्राप्तभई है ॥ तातुम्हारेमोह करणेवासतैं हमनैं सोवचन नहींकह्या है ॥ किंतु हमारेपूर्व उत्तरवचनोंकेतात्पर्यकूं नजाणिकरिकै तूं व्यर्थहींमोहकूं प्राप्तभई है ॥ हेमैत्रेयी यास्थूल शरीरकेनाशतैं अनंतर ॥ आत्माकाभी नाशहोवैहै ॥ याप्रकारकावचन जिसअभिप्रायकरिकै हमने तुमारेप्रति कथन कऱ्या है ॥ ताअभिप्रायकूं तूंश्रवणकर ॥ हे मैत्रेयी ॥ यह आनंदस्वरूपआत्मा यद्यपि वास्तवतैं जीवईश्वरभावतैंरहित है ॥ तथापि अविद्याकेसंबंधतैं सोआत्मादेव जीवरूप घनीभावताकूं प्राप्तहोवै है ॥ जभी आत्मसाक्षात्कार करिकै ताअविद्याकी निवृत्तिहोवै है ॥ तभी यहआनंदस्वरूप आत्मा ताजीवरूपघनीभावताका परित्यागकरिकै आपणेवास्तवस्वरूपविषे स्थित होवै है तामोक्षअवस्थाविषे मैंमनुष्यहूं ब्राह्मणहूं इत्यादिकसंपूर्णविशेषज्ञानोंकेनाशहुएभी ताआनंदस्वरूपआत्माकानाशहोवै नहीं ॥ किंतु जैसे मरणकालविषे सर्व विशेष ज्ञानोंकेनाशहुए यहपुरुष यास्थूलशरीरजन्यदुःखोंकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे तामोक्षअवस्थाविषेभी सर्वविशेषज्ञानोंकेअभाव हुए यह आत्मादेव ताशरीरजन्यदुःखोंकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ हे मैत्रेयी ॥ तुमारेप्रति याप्रकारकेअर्थकाबोधकरणेवासतैं मैंयाज्ञवल्क्यनैं याशरी रकेनाशतैंअनंतर आत्माकानाशकथनकऱ्या है ॥ परंतु वास्तवतैं आत्माकेनाशविषे हमारातात्पर्यनहीं है ॥ अब याहीअर्थकूं दृष्टांतक

रिकैस्पष्टकरै हैं ॥ हेमैत्रेयी ॥ जैसे घटविषेस्थितजोआकाश है ॥ ताआकाशका स्वभावतैंनाशहोवैनहीं ॥ किंतु घटरूपउपाधिकेनाश तैंअनंतर ताघटकेनाशका घटाकाशविषेआरोपणकरिकै मूढपुरुष घटाकाशकानाशमानै है॥ तैसे याआनंदस्वरूपआत्माकाभीस्वभावतैं नाशहोवैनहीं॥किंतु यास्थूलशरीररूपउपाधिकेनाशतैंअनंतर ताशरीरकेनाशकूं आत्माविषेआरोपणकरिकै अविवेकीपुरुषयाआत्माका नाशमानै हैं ॥ हेमैत्रेयी ॥ जोकदाचित् स्वभावतैंहीं आत्माकानाश अंगीकारकरिये ॥ तौ यालोकविषेकरेहुएपुण्यपापरूपकर्मोंका सुखदुःखरूपफलकेभोगतैंविनाहींनाशरूपजोकृतनाशरूपदोष है॥तथा नकरेहुएपुण्यपापरूपकर्मोंके सुखदुःखरूपफलकाभोगरूप जोअकृ ताभ्यागमरूपदोषहै ॥ यादोनोंप्रकारकेदोषोंकीप्राप्तिहोवैगी ॥ यातैं बुद्धिमान्पुरुषोंकूं आत्माकानाश अंगीकारकरणायोग्यनहीं॥हेमैत्रे यी ॥ मरणकालविषे यापुरुषके देहइंद्रियादिकसर्वसंघातकालयहोवै है ॥ याकारणतैं तामरणकालविषे मैंमनुष्यहूं इत्यादिकविशेषज्ञान तापुरुषविषेउत्पन्नहोवैनहीं ॥ तासर्वविशेषज्ञानोंकेअभावहुए यहआत्मादेव जभी मरणअवस्थाविषेभी संसारदुःखोंकूंनहींप्राप्तहोवै है ॥ तभी आत्मसाक्षात्कारकरिकै कार्यसहितअविद्यातैंरहितहुआ यहआत्मादेव मोक्षअवस्थाविषे तासंसारदुःखोंकूंनहीं प्राप्तहोवै है याकेविषे क्याकहणा है ॥ यातैं हेमैत्रेयी ॥ तामोक्षअवस्थाविषे मैंमनुष्यहूं मैंब्राह्मणहूं इत्यादिकसर्व विशेषज्ञानोंकेनाशहुएभीयास्वयं ज्योतिआत्माकानाशहोवैनहीं ॥ याकारणतैं यहस्वयंज्योतिआत्मा अविनाशीरूप है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ मोक्षअवस्थाविषे यह आत्मादेव जोस्वप्रकाशहोवै है॥तौ तामोक्षअवस्थाविषे यहआत्मादेव शरीरादिकद्वैतप्रपंचकूं किसवासतैंनहींदेखता॥ और मोक्षअवस्था विषे यहआत्मादेव द्वैतप्रपंचकूंदेखतानहीं ॥ यातैं यहजान्याजावै है ॥ तामोक्षअवस्थाविषे यहआत्मादेव स्वप्रकाशरूपनहीं है ॥ समाधान ॥ हेमैत्रेयी ॥ जैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे तथामरणअवस्थाविषे स्वप्रकाशचैतन्यरूपकरिकै विद्यमानहुआभीयहआत्मादेव जोपुत्र स्त्रीधनादिकपदार्थोंकूंनहींदेखै है ॥ तानदेखणेविषे आत्माकेस्वप्रकाशरूपताकाअभाव कारणनहीं है ॥ किंतु तासुषुप्तिअवस्थाविषे तथा मरणअवस्थाविषे तिनपुत्रधनादिकपदार्थोंकाअभावहोवै है॥ तथा नेत्रादिककरणोंकाभीअभावहोवै है॥याकारणतैं तासुषुप्तिअवस्थाविषे

तथा मरणअवस्थाविषे स्वप्रकाशचैतन्यरूपकरिकै विद्यमानहुआभी यहआत्मादेव ताद्वैतप्रपंचकूंदेखतानहीं॥ तैसे मोक्षअवस्थाविषेभी यहआत्मादेव जोद्वैतप्रपंचकूंनहींदेखताहै॥तानदेखणेविषे आत्माकेस्वप्रकाशरूपताकाअभाव कारणनहीं ॥ किंतु तामोक्षअवस्थाविषे सर्वद्वैतप्रपंचकाअभावहोवै है ॥ याकारणतैं तामोक्षअवस्थाविषे स्वप्रकाशचैतन्यरूपकरिकै विद्यमानहुआभी यहआत्मादेव ताद्वैतप्रपंच कूंदेखतानहीं ॥ और हेमैत्रेयी ॥ यहआनंदस्वरूपस्वयंज्योतिआत्मा अविनाशीरूपहै ॥ याकारणतैं यहआत्मादेव सुषुप्ति मरण मोक्षयातीनोंअवस्थावोंविषे आपणेवास्तवस्वरूपकापरित्यागकरैनहीं ॥ यातैं जो आत्माका वासनास्वरूप मोक्ष अवस्थाविषे है ॥ सोईहीआत्माकावास्तवस्वरूप संसारदशाविषेहै ॥ परंतु संसारदशाविषे देहादिकोंकेतादात्म्यसंबंधकरिकै सो आत्माकावास्त वस्वरूप प्रतीतहोतानहीं ॥ और मोक्षअवस्थाविषे देहादिकोंकेतादात्म्यबंधकीनिवृत्ति होइजावै है ॥ याकारणतैंमोक्षअवस्थाविषे सो आत्माका वास्तवस्वरूप विद्वान्पुरुषोंकूं करामलककीन्याईं स्पष्टप्रतीतहोवै है ॥ यातैं यह अर्थसिद्धभया ॥ जैसे अग्नि काउष्णस्वभाव कदाचित्भी अन्यथाभावकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे सुषुप्ति मरण मोक्ष यातीनोंअवस्थावोंविषे याआनंदस्वरूपआ त्माका स्वप्रकाशअद्वितीयचैतन्यस्वरूप कदाचित्भी अन्यथाभावकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं यहआत्मादेव सर्वभेदतैंरहित है ॥ इतनैंक रिकै त्वंपदार्थरूपजीवकाशोधनकऱ्या ॥ अब ताजीवका परिपूर्णब्रह्मके साथ अभेदशोधनकरणेवासतै प्रथम भेददर्शनविषे अविद्याकी व्याप्यता निरूपणकरैहैं ॥ हेमैत्रेयी ॥ याआनंदस्वरूपस्वयंज्योतिआत्माविषे वास्तवतैं यह द्वैतप्रपंच कदाचित्भीनहीं है॥ऐसे अद्वितीय आत्माविषे जीवोंकूं जोद्वैतप्रपंच प्रतीतहोवैहै ॥ सो जैसे नेत्रदोषकरिकै मूढबालकोंकूं आकाशविषे दोचंद्रमाप्रतीतहोवै हैं॥ तैसे अविद्या रूपीदोषकरिकै अज्ञानीजीवोंकूं अद्वितीयआत्माविषे यहद्वैतप्रपंचप्रतीतहोवैहै याकारणतैं यहसंपूर्णद्वैतप्रपंच मायामात्र है ॥ हेमैत्रेयी ॥ ऐसाआत्माकाअद्वितीयस्वरूप जिसकालविषे द्वैतप्रपंचकीन्याईं प्रतीतहोवैहै ॥ तिसकालविषे यहअज्ञानीजीव आपणेकूं ब्रह्मतैंभिन्नहुआ देखेहै ॥ तथा विश्व तैजस प्राज्ञ इत्यादिकअनेकभेदवाला आपणेकूंदेखे है॥तथा शब्द स्पर्श रूप रस गंध इसतैंआदिलैके संपूर्णजगत्प्रकूं

यहअज्ञानीजीव श्रोत्रादिकएकादशइंद्रियोंकरिकै भिन्नभिन्नदेखेहै॥ इतनैंकरिकै अविद्याकोविद्यमानहुए द्वैतदर्शनकीविद्यमानतारूप अन्वय कानिरूपणकऱ्या॥अब अविद्याकेअभावहुएद्वैतदर्शनकाअभावरूपव्यतिरेककानिरूपणकरैहैं॥हेमैत्रेयी॥याअधिकारीपुरुषोंकूंजभीगुरुशा स्त्रकेउपदेशकरिकै अद्वितीयब्रह्मकाज्ञानहोवै है॥तभीताअधिकारीपुरुषोंके मायारूपअज्ञानकानाशहोइजावैहै॥ ताअज्ञानरूपकारणकेना शहुएतैंअनंतर स्थावरजंगमशरीर तथाशब्दादिकविषयोंसहित श्रोत्रादिकइंद्रिय तथा सुखदुःखादिकोंसहित अंतःकरण इसतैंआदिलेकेसं पूर्णकार्यप्रपंच लयभावकूंप्राप्तहोवै है॥इसप्रकार संपूर्णकार्यप्रपंचसहित अज्ञानकेनाशहुएतैंअनंतर परिशेषतैं स्वयंज्योतिआनंदस्वरूपआ त्माहीं स्थितहोवै है॥ हेमैत्रेयी ॥ ऐसीमोक्षअवस्थाकूंप्राप्तहुआ यहविद्वान्पुरुष संपूर्णजगत्कूं आपणाआत्मारूपहीदेखेहै॥ यातैं तामोक्ष अवस्थाविषे यहविद्वान्पुरुष आपणेतैंभिन्न नेत्रादिकइंद्रियोंकरिकै रूपादिकपदार्थोंकूं देखतानहीं ॥ तथा रूपादिकपदार्थोंकेदर्शनतैं जो आवरणकीनिवृत्तिरूपफलहोवै है॥ सोफलभी पूर्वआत्मसाक्षात्कारकरिकैसिद्धभयाहै ॥ यातैं तामोक्षअवस्थाविषे सोआवरणकीनिवृत्तिरू पफलभीहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ तामोक्षअवस्थाविषे यहविद्वान्पुरुष आपणेतैंभिन्नजगत्कूं मतदेखै ॥ परंतु सोविद्वान् पुरुष तामोक्षअवस्थाविषे आपणेआत्माकूं किसवासतैंनहींदेखता॥ समाधान ॥ हेमैत्रेयी ॥ जिसअविद्याकालविषे यहआत्मादेव द्वैतकीन्याईं प्रतीतहोवैहै॥तिसअविद्याकालविषेभी यहस्वयंज्योतिआत्मा किसीज्ञानकाविषयहोवैनहीं॥जभी अविद्याकालविषेभी यहस्वयंज्योतिआ त्मा किसीज्ञानकाविषयनहींभया॥तभी मोक्षअवस्थाविषे सर्वद्वैतप्रपंचकेअभावहुए यहस्वयंज्योतिआत्मा किसीज्ञानकाविषयनहींहोवैहै याकेविषेक्याकहणाहै ॥ अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकैनिरूपणकरै हैं॥ हेमैत्रेयी ॥ आपणेस्वप्रकाशरूपकरिकै सर्वजगत्कूंजानणेहारा जो विज्ञाताआत्माहै ॥ ताविज्ञाताअद्वितीयआत्माकूं मैं जानताहूं याप्रकारकावचन जोपुरुष कथनकरै है॥ तामूढपुरुषतैं यहपूछाचाहिये ॥ यालोकविषे याजीवोंकूं जिसजिसपदार्थका जोजोज्ञानहोवै है ॥ सोसोज्ञान किसीनेत्रादिककरणोंकरिकैजन्यहीहोवैहै॥ नेत्रादिककरणों तैं विना कोईभीज्ञानउत्पन्नहोवैनहीं ॥ यातैं अद्वितीयआत्माकूंविषयकरणेहारा जोतुमारकूंज्ञानभयाहै ॥ सोज्ञान कितकारणकरिकैउत्पन्नभ

यांहै ॥ याप्रश्नकाउत्तर तूं हमारेप्रतिकह॥ तहां सोवादीजोमूर्तअमूर्तरूपजगत्कूं तथा ताजगत्कअभावकूं आत्माकेज्ञानविषे करणमानै सोवादीकाकहणा संभवैनहीं ॥ काहेतैं अविद्यातैं रहित ताशुद्धआत्माविषे मूर्तअमूर्तरूपजगत् तथा ताजगत्काअभाव वास्तवतैं है नहीं ॥ यातैं यहस्वयंज्योतिआत्मादेव मनबुद्धिआदिकअंतःकरणोंकरिकै तथा नेत्रादिकबाह्यकरणोंकरिकै ग्रहणकऱ्याजावैनहीं ॥ किंवा यालोकविषे जोजोपदार्थ इंद्रियजन्यज्ञानकाविषयहोवै है ॥ सोसोपदार्थ शनैःशनैःकरिकै आपणेअवयवोंकीशिथिलतारूप शीर्यताकूं अवश्यप्राप्तहोवैहै ॥ जैसे इंद्रियजन्यज्ञानकेविषय जेवस्त्रादिकपदार्थ हैं॥ तेवस्त्रादिक शनैःशनैःकरिकै ताशीर्यताकूंप्राप्तहोवैहैं॥ तैसे इंद्रियजन्यज्ञानकाविषयहोणतैं यहआत्मादेवभी ताशीर्यताकूं अवश्यप्राप्तहोवैगा ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा अशीर्य है ॥यातैं यहआत्मादेव किसीइंद्रियजन्यज्ञानकाविषयहोवैनहीं ॥ और हेमैत्रेयी ॥ यालोकविषेजोजोपदार्थ शीर्यताकूंप्राप्तहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ संयोगादिकसंबंधरूपसंगवालाहोवैहै ॥ जैसे वस्त्रादिकपदार्थ शीर्यताधर्मवाले हैं यातैं तेवस्त्रादिकपदार्थ जलादिकपदार्थोंकेसंगवालेभी हैं ॥ और यहस्वयंज्योतिआत्मा संयोगादिकसंबंधरूप सर्वसंगतैंरहितहै ॥ यातैं यह आत्मादेव शीर्यताकूं प्राप्त होवै नहीं ॥ और हेमैत्रेयी यालोकविषे जोजोपदार्थ संयोगादिरूपसंगवालाहोवै है सोसोपदार्थभयवालाभीअवश्यहोवै है जैसे यहमनुष्यादिकशरीरसंयोगादिरूपसंगवाले हैं ॥ यातैं यहमनुष्यादिकशरीर सिंहसर्पादिकोंतैं भयकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ और यहआत्मादेव सर्वभयतैंरहितहै ॥ यातं यहआत्मादेव किसीपदार्थकेसंगवालाभी नहीं है ॥ और हेमैत्रेयी ॥ यालोकविषे जोजोपदार्थ भयवालाहोवै है ॥ सोसोपदार्थ व्यथावालाहोवै है ॥ जैसे यहमनुष्यादिकशरीर भयवाले हैं ॥ यातैं यहमनुष्यादिकशरीर व्यथा वालेभी हैं ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा सर्वव्यथातैंरहितहै ॥ यातैं यहआत्मादेव भयतैंभीरहितहै ॥ और हेमैत्रेयी॥यालोकविषे जोजोपदार्थ व्यथावालाहोवैहै सोसोपदार्थ विनाशकेकारणोंकरिकै युक्तहोवै है॥ जैसे यहमनुष्यादिकशरीर व्यथावाले हैं ॥ यातैं यहमनुष्यादिकशरीर विनाशकेकारणोंकरिकैभीयुक्तहैं॥और यहआत्मादेव विनाशकेकारणोंतैंरहितहै॥ यातैं यहआत्मादेव व्यथातैंभीरहित है॥तात्पर्ययह॥जैसे जहांजहांधूम

रहैहै ॥ तहांतहां अग्निअवश्यरहैहै ॥ अग्नितैंविना धूम रहैनहीं॥यातैं धूम व्याप्यहै और अग्निव्यापकहै॥व्यापकअग्निका जहां अभावहोवै है ॥ तहांव्याप्यधूमकाभीअभावहोवैहै ॥ जैसे जलकरिकैपूर्णतलावविषे व्यापकअग्निकाअभावहै॥ यातैं तातलावविषे व्याप्यधूमकाभीअभावहै ॥ तैसे यहाँप्रसंगविषे इंद्रियजन्यज्ञानकीविषयता १ शीर्यता २ संयोगादिकसंबंधरूपसंग ३ भय ४ व्यथा ५ विनाशकाकारण ६ याषट्पदार्थोंविषे पूर्वपूर्वपदार्थकीअपेक्षाकरिकै उत्तरउत्तरपदार्थ व्यापक हैं ॥ और उत्तरउत्तरपदार्थकीअपेक्षाकरिकै पूर्वपूर्वपदार्थ व्याप्य हैं ॥ तिनउत्तरउत्तर व्यापकपदार्थोंका आत्माविषे अभावहै ॥ यातैं पूर्वपूर्वव्याप्यपदार्थोंकाभी आत्माविषे अभावहीसिद्धहोवै है ॥ जैसे यहआत्मादेव नाशकेकारणोंतैंरहित है ॥ यातैं व्यथातैंरहित है ॥ और यहआत्मादेव व्यथातैंरहित है यातैं भयतैंरहितहै ॥ और यहआत्मादेव भयतैंरहित है ॥ यातैं संगतैंरहित है ॥ और यहआत्मादेव संगतैंरहित है ॥ यातैंशीर्यतातैंरहितहै ॥ और यहआत्मादेव शीर्यतातैंरहित है ॥ यातैं इंद्रियजन्यज्ञानकाविषयनहीं ॥ याअभिप्रायकरिकैही श्रुतिभगवती यास्वयंज्योतिआत्माकूं अगृह्य यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ हेमैत्रेयी ॥ इसप्रकार भावअभावरूपसर्वजगत्तैंरहित तथामायातैंरहित जोस्वप्रकाशआत्माहै॥ तास्वप्रकाशआत्माविषे नेत्रादिककरणजन्यज्ञानकीविषयता कदाचित्भीसंभवैनहीं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ वेदांतशास्त्रकेमतविषे तथायोगशास्त्रकेमतविषे आत्माकेसाक्षात्कारमें नेत्रादिकोंकूंकरणरूपतासंभवैनहीं ॥ अब अन्यशास्त्रोंकेमतविषेभी आत्मसाक्षात्कारमें नेत्रादिककरणोंका अभाव निरूपणकरै हैं ॥ हेमैत्रेयी ॥ बृहस्पतिकेशिष्य जेचार्वाक हैं ॥ तिनचार्वाकोंविषे कोईकचार्वाकतौ यास्थूलशरीरकूंहीं आत्मामानैहैं ॥ और कोईकचार्वाकतौ नेत्रादिकइंद्रियोंकूंहीं आत्मामानै हैं ॥ और कोईकचार्वाकतौ प्राणकूंहीआत्मामानै हैं॥ और कोईकचार्वाकतौ मनकूंहींआत्मामानै हैं ॥ और न्यायशास्त्रवालेतौ देहइंद्रियादिकोंतैंभिन्न कर्त्ताभोक्ताकूंहींआत्मामानै हैं ॥ तिनसंपूर्णोंकेमतविषे आत्मसाक्षात्कारमें नेत्रादिकोंकूंकरणरूपतासंभवैनहीं ॥ अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकैनिरूपणकरै हैं ॥ हेमैत्रेयी ॥ जेचार्वाक यास्थूलसंघातकूंहीं आत्मामानै हैं ॥ तिनचार्वाकोंकेमतविषेभी यासंघातरूपआत्माकेसाक्षात्कारविषे नेत्रादिकोंकूं करणरूपतासंभवैनहीं॥काहेतैं यासंघातरूपआत्मातैं यहनेत्रादिककरण भिन्नहैनहीं ॥ किंतु यहनेत्रादिककरण संघातरूपहीहैं ॥ और सोसंघातरूपआत्मा ताज्ञानरूप

क्रियाकाकर्त्ता है ॥ यातैं तासंघाततैंअभिन्न नेत्रादिकभी कर्तारूपहीहोवैंगे ॥ तिनकर्त्तारूपनेत्रादिकोंविषे करणरूपतासंभवैनहीं॥काहेतैं यालोकविषे कर्त्तापुरुषतैंभिन्नहीं करणदेख्या है ॥ जैसे छेदनरूपक्रियाकाकर्त्ताजोपुरुष है ॥ तातैं कुठाररूपकरण भिन्नहींहोवै है ॥ यातैं तिनचार्वाकोंकेमतविषे तासंघातरूपआत्माकेसाक्षात्कारविषे नेत्रादिकइंद्रियोंकूं करणरूपतासंभवैनहीं ॥ और दूसरेचार्वाक नेत्रादिक इंद्रियोंकेसमुदायकूंहीं आत्मामानैं हैं॥तिनचार्वाकोंकेमनविषेभी इंद्रियरूपआत्माकेसाक्षात्कारविषे कोईकरणसंभवैनहीं॥काहेतैं नेत्रादिक इंद्रियरूपआत्मातौ ताज्ञानरूपक्रियाकाकर्त्ता है॥यातैं ताइंद्रियरूपकर्त्ताआत्माविषेभी ताज्ञानरूपक्रियाकी करणरूपतासंभवैनहीं॥ और यहस्थूलशरीर तथा बाह्यघटादिकपदार्थ यहसंपूर्ण ताज्ञानरूपक्रियाकेकर्मरूपहैं॥यातैं तिनदेहादिकपदार्थोंविषेभी ताज्ञानरूपक्रियाकीक रणरूपतासंभवैनहीं।यातैंतिनचार्वाकोंकेमतविषेभी इंद्रियरूपआत्माकेसाक्षात्कारविषे कोईकरणसंभवैनहीं।और जेदूसरेचार्वाक प्राणकूंहीं आत्मामानैंहैं॥तथा मनकोहीं आत्मामानैंहैं और जेनैयायिकदेहादिकोंतैंभिन्नकर्त्ताभोक्ताकूंहीं आत्मामानैंहैं॥तिनतीनोंवादियोंकेमतविषेभी ताआत्माकेसाक्षात्कारविषे नेत्रादिकइंद्रियोंकूं करणरूपतासंभवैनहीं॥काहेतैं तिनतीनोंवादियोंसैंयहपूछ्याचाहिये॥तुमानैं प्राणरूप तथाम नरूप तथा कर्त्ताभोक्तारूप जोआत्माअंगीकारक-याहै॥सोतुमाराआत्मा नीलपीतादिकरूपवालाहै॥अथवा नीलपीतादिकरूपोंतैंरहित है ॥ तहाँ सोआत्मा रूपवालाहै ॥ यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं जोघटपटादिकपदार्थोंकीन्याईं आत्मा रूपवालाहोवै ॥ तौ जैसे रूपवालेघटपटादिकपदार्थ हमजीवोंकूं नेत्रादिकइंद्रियोंकरिकै प्रतीतहोवै हैं ॥ तैसे सोरूपवान् तुमाराआ त्माभी हमजीवोंकूं नेत्रादिकइंद्रियोंकरिकै प्रतीतहोणाचाहिये ॥ और घटादिकोंकीन्याईं नेत्रादिकइंद्रियोंकरिकै सोआत्मा प्रतीतहोता नहीं ॥ यातैं नेत्रादिकबाह्यइंद्रियोंविषेतौ ताआत्माकेसाक्षात्कारकीकरणरूपता संभवैनहीं ॥ और नेत्रादिकइंद्रियोंकीसहायतातैंविना रूपवान्पदार्थोंकूं मन ग्रहणकरैनहीं ॥ यातैं ताआत्माकेसाक्षात्कारविषे मनकूंभी करणरूपतासंभवैनहीं ॥ और सोआत्मा नीलपी तादिकरूपोंतैंरहितहै यहदूसरापक्ष जोवादीअंगीकारकरै ॥ तौभी तारूपरहितआत्माकेसाक्षात्कारविषे कोईकरणसंभवैनहीं ॥

काहेतैं नेत्रादिकबाह्यइंद्रियतौ रूपवान्घटादिकपदार्थोंकूंहीं ग्रहणकरै हैं ॥ यातैं तारूपरहितअनंतरआत्माकेसाक्षात्कारविषे नेत्रादिक बाह्यइंद्रियोंकूंतौ करणरूपतासंभवैनहीं ॥ तहां जोवादी तासाक्षात्कारविषे मनकूंहीं करणमानै है ॥ तावादीसैंयहपूछ्याचाहिये ॥ मनरूप करणकरिकै जोआत्माकासाक्षात्कारहोवैहै॥ताज्ञानरूपक्रियाका सोआत्मा कर्महै॥अथवाकर्ताहै॥तहां सोआत्मा ताज्ञानरूपक्रियाका क र्म रूपहै॥यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं॥काहेतैं सोआत्मा ताज्ञानरूपक्रियाकाजोकर्महोवै॥ तौ जोपदार्थ जाक्रियाका कर्मरूपहोवै है ॥ सोपदार्थ ताक्रियाकाकर्त्तारूपहोवैनहीं ॥ यातैं ताज्ञानरूपक्रियाका ताआत्मातैंभिन्न कोईदूसरापदार्थ कर्त्तामान्याचा हिये और आत्मातैंभिन्न कोई दूसरापदार्थ ताज्ञानरूपक्रियाकाकर्त्ता है नहीं ॥ यातैंकर्त्ताकेअभावहुए ताज्ञानरूपक्रियाविषे मनकूंक रणरूपतासंभवैनहीं ॥ और सोआत्मा ताज्ञानरूपक्रियाका कर्त्ता है यहदूसरापक्ष जोवादीअंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं॥ काहेतैं आत्मा कूंविषयकरणेहाराजोज्ञान है ॥ ताज्ञानरूपक्रियाका आत्मातैंभिन्न दूसराकोईपदार्थ कर्मरूपहोवैनहीं ॥ यातैं कर्मकेअभावहुए ताज्ञान रूपक्रियाविषे मनकूंकरणरूपतासंभवैनहीं ॥ काहेतैं यालोकविषे जोजोकरणहोवै है ॥ सो कर्त्ताकी तथाकर्मकी अवश्यअपेक्षाकरै हैं ॥ कर्तातैंविना तथाकर्मतैंविना करणकास्वरूप सिद्धहोवैनहीं ॥ जैसे छेदनरूपक्रियाकाकर्ताजोपुरुष है ॥ तथा ताछेदनरूपक्रियाकाकर्म रूप जोकाष्ठ है ॥ तिनदोनोंकेविद्यमानहुएही कुठारविषे करणरूपतासिद्धहोवै है॥तिसकर्त्ताकर्मतैंविना ताकुठारविषे करणरूपतासिद्धहो वैनहीं ॥ याकारणतैंहीं शास्त्रवेत्तापुरुषोंनैं ताकरणका यहलक्षणकह्या है॥ कर्तापुरुष जिसपदार्थकरिकै कर्मविषे किंचित्फलकीउत्पत्तिक रै है ॥ तापदार्थकानाम करण है ॥ जैसे यहकर्तापुरुष कुठारकरिकै काष्ठरूपकर्मविषे दोविभागरूपफलकीउत्पत्तिकरै है॥ यातैं सोकुठार करणरूप है॥याप्रकारकीकरणरूपता तामनविषेसंभवैनहीं ॥ शंका ॥ आत्मातैंभिन्नदूसराकोईपदार्थ ताज्ञानरूपक्रियाकाकर्तारूप तथा कर्मरूप यद्यपि नहीं है ॥ तथापि सोएकआत्माहीं ताज्ञानरूपक्रियाका कर्तारूप है तथाकर्मरूप है॥यातैं कर्ताकर्मकेविद्यमानहुए ताज्ञा नरूपक्रियाविषे तामनकूं करणरूपता संभवहोइसकै है ॥ समाधान ॥ हेवादी ॥ एककालविषे एकहीक्रियाविषे एकहीपदार्थकूं कर्तारूप

तातथाकर्मरूपता कहांलोकविषेदेखीतीनहीं ॥ और युक्तियोंकरिकैभी संभवैनहीं ॥ यातैं एकहीज्ञानरूपक्रियाविषे एकहीआत्माकूंकर्ता रूपता तथाकर्मरूपता अत्यंतविरुद्ध है ॥ और याविरुद्धअर्थकूंअंगीकारकरिकैभी जोवादी ताआत्मसाक्षात्कारविषे मनकूंकरणरूपता मानैं ॥ तो तावादीकेप्रति यहवचनकह्याचाहिये हेवादी ॥ यालोकविषे कर्ताकर्मकाअभेद अत्यंतविरुद्ध है ॥ ताविरुद्धअर्थकूंअंगीकार करिकैभी जोतूं आत्मसाक्षात्कारविषे मनकूंकरणरूपतामानता है ॥ तौश्रुतिकरिकैसिद्ध तथा विद्वान्पुरुषोंके अनुभवकरिकैसिद्ध जो आत्माकीस्वप्रकाशरूपताहै ॥ तास्वप्रकाशरूपताकेअंगीकारकरणेविषे तुमारेकूं कौनभारहोवै है॥यातैं श्रुतिअनुभवसिद्ध आत्माकेस्व प्रकाशरूपताकापरित्यागकरिकै आत्माविषे नेत्रादिककरणजन्यज्ञानकीविषयता अंगीकारकरणी अत्यंत अनुचित है ॥ शंका॥ हेभगव न् ॥ पूर्वआपनैं आत्माकेसाक्षात्कारविषे महावाक्यरूपशब्दकूं करणरूपता कथनकरीथी ॥ और अभीआपनैं आत्मसाक्षात्कारविषे करणकाखंडनकऱ्या है ॥ यातैं आपके पूर्वउत्तरवचनोंकापरस्पर विरोध प्राप्तहोवै है ॥ समाधान ॥ हेमैत्रेयी ॥ जैसे घटादिकजडपदा र्थोंकेसाक्षात्कारविषे नेत्रादिकइंद्रियोंकूं करणरूपता है ॥ तैसे आत्मसाक्षात्कारविषे महावाक्यरूपश्रुतिकूं करणरूपतानहीं है ॥ किंतु आत्माकेआश्रित तथा आत्माकूंविषयकरणेहारा जोअज्ञानरूपआवरणहै॥सोअज्ञानरूपआवरण आत्माकेसाक्षात्कारका प्रतिबंधकहै॥ ताआवरणरूपप्रतिबंधककीनिवृत्ति महावाक्यजन्यवृत्तिकरिकैहोवै है॥ ताआवरणकेनिवृत्तहुएतैंअनंतर यहआनंदस्वरूप आत्मा आपणे स्वप्रकाशरूपकरिकै स्फुरणहोवै है ॥ यातैं आत्माकेसाक्षात्कारविषे महावाक्यरूपश्रुतिकूंभी वास्तवतैंकरणरूपतानहीं ॥ किंतु तामहा वाक्यरूपश्रुतिजन्यअंतःकरणकीवृत्ति आवरणरूपप्रतिबंधकी निवृत्तिकरै है ॥ यातैं इतनी अंशकूं अंगीकारकरिकै पूर्वहमनैं आत्म साक्षात्कारविषे महावाक्यरूप श्रुतिकूं करणरूपताकही है ॥ यातैं पूर्वउत्तर वचनोंका विरोधहोवै नहीं ॥ हे मैत्रेयी जे मंद बुद्धिचार्वा कादिक शरीरादिकोंकूंहीं आत्मामाने हैं ॥ तिनचार्वाकादिकोंकेमतविषेभी जभी शरीरादिरूपआत्माकेसाक्षात्कारविषे पूर्वउक्तरीतिसैं कोईकरणसिद्धनहींभया ॥ तभी आत्माकूं स्वप्रकाशरूप मानणेहारे जेहमअद्वैतवादी हैं ॥ तिनोंकेमतविषे तास्वप्रकाशआत्माकेसाक्षा

॥ ३८

त्कारविषे कोईकरणनहीं है याअर्थविषे क्याकहणा है ॥ हे मैत्रेयी ॥ जैसे घटपटादिकपदार्थ जडरूपहैं ॥ यातैं तेघटादिकपदार्थअना त्मारूपहैं ॥ तैसे देह इंद्रिय प्राण मन इसतैंआदिलेके यहसंपूर्णसंघातभी जडरूपहै॥ यातैं सोसंघात अनात्मारूपही है ॥ सोअनात्मारूप संघात अधिष्ठानआत्माकेसंबंधकूंपाइकैही प्रतीतहोवै है ॥ यातैं मिथ्यारूपहै तामिथ्याजगत्काअधिष्ठानरूपआत्मासर्वभेदतैंरहित अद्वि तीयरूपहै ॥ हेमैत्रेयी ॥ सोअद्वितीयरूपआत्माही याबुद्धिआदिकसंघातकासाक्षीरूपहै ॥ ऐसे साक्षीरूपस्वप्रकाशआत्माकूं यहअधि कारीपुरुष नेत्रादिककरणोंकरिकै जाणिसकैनहीं ॥ यातैं हेमैत्रेयी ॥ दुःखकेदेणेहारे जेपतिपुत्र धनादिकपदार्थ हैं ॥ तिनोंकापरित्यागक रिकै तूं आपणेहृदयविषे ऐसे स्वयंज्योतिआनंदस्वरूपआत्माकूं निश्चयकर ॥ हेमैत्रेयी जोतुमनैंपूर्व हमारेसैं मोक्षरूपअमृतकासाधन पूछ्याथा ॥ सो हमने जातुम्हारेप्रति यहब्रह्मविद्याउपदेशकरी है ॥ साब्रह्मविद्याही तामोक्षरूपअमृतकेप्राप्तिकासाधनहै ॥ हेमैत्रेयी ॥ सर्वजीवोंकेहृदयदेशविषे विराजमान जोपरब्रह्महै सोब्रह्म हमाराआत्मारूपहै ॥ याप्रकारका जोआत्माकासाक्षात्कारहै ॥ ताआत्मसाक्षा त्कारतैंविना दूसराकोई मोक्षरूपअमृतकेप्राप्तिकासाधनहैनहीं ॥ किंतु यहआत्मसाक्षात्कारही तामोक्षरूपअमृतकेप्राप्तिकासाधनहै हेमैत्रेयी ॥ यादेहादिकअनात्मपदार्थोंके अहंममअभिमानकापरित्यागकरिकै जभीतूं याआनंदस्वरूपआत्माकूं साक्षात्कारकरैगी ॥ तभी ताआत्मसाक्षात्कारके प्रभावतैं तूं याशरीरकेपरित्यागतैंअनंतर पुनःमृत्युकूंतथाजन्मकूं कदाचित्भीनहींप्राप्तहोवैगी ॥ यातैं देहादिकसर्व अनात्मपदार्थोंकेअभिमानकापरित्यागकरिकै याआनंदस्वरूपआत्माविषे तुम चित्तकूंएकाग्र करो ॥ हे शिष्य ॥ या प्रकार सो याज्ञव ल्क्यमुनि आपणेमैत्रेयीस्त्रीकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरिक पश्चात् तागृहस्थआश्रमकापरित्यागकरिकै संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरता भया॥हेशिष्य॥जिसविचारकूंकरताहुआ सोयाज्ञवल्क्यमुनि संन्यासआश्रमकाग्रहणकरताभया॥ताविचारकूं तूं श्रवणकर॥ सत्चित्आनं दस्वरूपआत्मातैंविलक्षण जाअसत्जडदुःखरूपमायाशक्तिहै ॥ जामायाशक्तिसत्व रज तम यातीनगुणोंकरिकैयुक्तहै ऐसी आत्माकेमाया रूपशक्तिकूं सोयाज्ञवल्क्यमुनि मिथ्यारूपकरिकैदेखताभया ॥ जिसमायारूपशक्तिकूं पूर्वमुनीश्वरभी जगत्केकारणोंकाविचारकरिकैयाप्र

कार निश्चयकरतेभये हैं ॥ यहआनंदस्वरूपआत्माही याजगत्काप्रधानकारणहै॥ और यहमायारूपशक्तितौ याजगतका सहकारीकारण है ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै तेमुनीश्वर तामायारूपशक्तिकूं निश्चयकरतेभये ॥ तिसीमायारूपशक्तिकूं सोयाज्ञवल्क्यमुनि मिथ्यारूपक रिकैनिश्चयकरताभया॥ और शीत उष्ण सुख दुःख मान अपमान शत्रु मित्र आपणाशरीर परशरीर ध[illegible]त्मा पापात्मा इसतैंआदिलेके जितनेकअनुकूलप्रतिकूलपदार्थ हैं ॥ तिनसंपूर्णपदार्थोंविषे सोयाज्ञवल्क्यमुनि समानदृष्टिकरताभया॥ और रूपादिकविषयोंविषे जानेत्रादिकइंद्रियोंकी प्रवृत्तिहै ॥ताप्रवृत्तिविषे सोयाज्ञवल्क्यमुनि द्वेषबुद्धि नहींकरताभया॥ और तिनरूपादिकविषयोंतैं जानेत्रादिकइंद्रियोंकी निवृत्तिहै॥ तानिवृत्तिविषे सोयाज्ञवल्क्यमुनि इच्छानहींकरताभया॥ किंतुविषयोंविषेप्रवृत्ति तथाविषयोंतैंनिवृत्ति यहदोनों नेत्रादिकइंद्रियों केहीधर्म हैं॥मैंआनंदस्वरूपआत्मातौ सर्वदानिर्विकारहूं॥ याप्रकारकाविचारकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि इंद्रियोंकीप्रवृत्तिविषे तथानिवृत्ति विषे उदासीनहोताभया॥ तथा शरीरमन वाणीकरिकै सर्वप्राणियोंकूं अभयकीप्राप्तिकरताहुआ॥ सोयाज्ञवल्क्यमुनि सूर्यचंद्रमाकीन्याईं रागद्वेषादिकविकारोंतैंरहितहोइकै यापृथिवीविषे विचरताभया ॥ इतनैंकरिकै याज्ञवल्क्यमुनिका वृत्तांतकह्या ॥ अब मैत्रेयीकेवृत्तांतका निरूपणकरैहैं॥हेशिष्य॥जैसे सोयाज्ञवल्क्यमुनि चतुर्थसंन्यासआश्रमकूंधारणकरिकै यालोकविषे विचरताभया॥तैसे साब्रह्मवेत्तामैत्रेयीभी चतुर्थसंन्यासआश्रमकूंग्रहणकरिकै यालोकविषे विचरतीभई ॥ परंतु याकेविषेइतनीविशेषताहै॥याज्ञवल्क्यमुनितौ लिंगसंन्यासकूंधारण करताभया ॥ और मैत्रेयी अलिंगनसंन्यासकूंधारणकरतीभई ॥ तहाँ दंडग्रहणपूर्वक जोसंन्यासहै ॥ ताकानाम लिंगसंन्यासहै ॥ और दंडग्रहणतैंविना जो संन्यास है ॥ ताका नामअलिंगसंन्यास है ॥ इतनीविशेषताकूं छोडिकै दूसरेभिक्षाअटनादिकबाह्य धर्म तथा शम दमादिकअंतरधर्म लिंगसंन्यासियोंके तथा आलिंगसंन्यासियोंके समानहींहोवै हैं॥ शंका॥ हेभगवन्॥याज्ञवल्क्यमुनिकी न्याईं सामैत्रेयीभीदंडग्रहणपूर्वक लिंगसंन्यासकूं किसवासतैं नहींधारणकरतीभई ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ दंडग्रहणपूर्वकजोलिं गसंन्यासहै ॥ ताकेविषे एकब्राह्मणकाही अधिकारहै ॥ ब्राह्मणतैंभिन्न क्षत्रियका तथावैश्यका तालिंगसंन्यासविषे आधिकारनहीं ॥

जभी क्षत्रियवैश्यकाभी ता लिंगसंन्यासविषे अधिकारनहीं भया ॥ तभी तालिंगसंन्यासविषे स्त्रीकाअधिकार किसप्रकारहोवैगा ॥ यहवार्ता स्मृतिविषेभीकहीहै ॥ तहां श्लोक ॥ मुखजानामयंधर्मो यद्विण्णोर्लिंगधारणं ॥ बाहुजातोरुजातानां नायंधर्मो विधीयते ॥ अर्थयह ॥ परमेश्वरकेमुखतैंउत्पन्नभयेजेब्राह्मणहैं ॥ तिनब्राह्मणोंकाही दंडग्रहणपूर्वकलिंगसंन्यासविषे अधिकार है ॥ और परमेश्वरके बाहुतैंउत्पन्नभयेजेक्षत्रियहैं ॥ तथा परमेश्वरके उरुस्थानतैंउत्पन्नभयेजेवैश्यहैं ॥ तिनदोनोंका ता लिंगसंन्यासविषे ॥ अधिकार नहीं॥१॥ हेशिष्य ॥ पूर्वलेपुण्यकर्मकेप्रभावतैं जिनक्षत्रियपुरुषोंकूं तथावैश्यपुरुषोंकूं तथा त्रैवर्णिकास्त्रियोंकूं यासंसारतैं उत्कटवैराग्यकीप्राप्तिहोवै ॥ तौ तेक्षत्रिय वैश्य स्त्रियां अलिंगसंन्यासकूंधारणकरिकै जेलिंगसंन्यासियोंके अहिंसा ब्रह्मचर्य सत्य इत्यादिकधर्म शास्त्रविषेकथनकरेहैं ॥ तिनसंपूर्णधर्मोंकूं संपादनकरैं ॥ अहिंसादिकधर्मोंकेकरणेविषेसर्वप्राणियोंकाअधिकार है ॥ अब चतुष्टयसाधनसंपन्नअधिकारियोंकेप्रति ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिवासतैं गुरुशिष्यभावकीव्यवस्थानिरूपणकरै है ॥ हेशिष्य ॥ याभारतखंडविषे अधिकारिमनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोइकै जेपुरुष आत्मसाक्षात्कारकूं नहींप्राप्तहोवैहैं ॥ तिनपुरुषोंकूं महान्हानिकीप्राप्ति श्रुतिकहैहै ॥ तहांश्रुति ॥ नचेदवेदिर्महतिविनिष्टि येतद्विदुरमृतास्तेभवंति॥अर्थयह॥ याभारतखंडविषे अधिकारिमनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोइकै जेपुरुष याआनंदस्वरूपआत्माकूंनहींजाणते ॥ तिनअज्ञानीपुरुषोंकूं जन्ममरणादिकअनेकदुःखोंकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और जेपुरुष ताआनंदस्वरूपआत्माकूंजाणैहैं तेपुरुष मोक्षरू पअमृतकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ १ ॥ यातैं याअधिकारीपुरुषोंनैं आत्मसाक्षात्कारकूंअवश्यसंपादनकरणा ॥ और स्त्रियोवैश्यास्तथाशूद्रास्ते पियांतिपरांगति ॥ अर्थयह ॥ स्त्रियां तथावैश्य तथाशूद्र यहसंपूर्ण मोक्षकूंप्राप्तहोवै हैं ॥-१ ॥ याभगवत्गीताकेवचनतैं स्त्री वैश्य शूद्र यातीनोंकूंभी मोक्षविषे अधिकारसिद्धहोवै है ॥ और सोमोक्ष आत्मज्ञानतैंविनाहोवै नहीं ॥ तहांश्रुति ॥ ऋतेज्ञानान्नमुक्तिः नान्यःपंथा विद्यतेअयनाय ॥ अर्थयह ॥ आत्मज्ञानतैंविना मुक्तिहोवैनहीं ॥ और आत्मज्ञानतैंविना दूसराकोईमार्ग मोक्षकीप्राप्तिवासतै है नहीं ॥ किंतु एकआत्मज्ञानहीं मोक्षकेप्राप्तिकामार्ग है ॥१॥ और सोआत्माकाज्ञान श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुकेउपदेशतैंहींप्राप्तहोवै है ॥ तहांश्रुति ॥

आचार्यवान्पुरुषोवेद ॥ अर्थयह ॥ श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठआचार्यवालापुरुषही आत्माकूंजाणै है ॥ ३ ॥ यातैं ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र याचारिवर्णोंकूंपुरुषोंनैं तथा तिनचारिवर्णोंवालीस्त्रियोंनैं श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुकेमुखतैं ब्रह्मविद्याकाश्रवणकरिकै आत्मज्ञानकूं अवश्यसंपादनकरणा ॥ तहाँ किसवर्णवालेअधिकारीनैं किसवर्णवालेविद्वान्कूं गुरुकरणा ॥ याप्रकारकीव्यवस्थाकूं तूंश्रवणकर ॥ संपूर्णवर्णोंविषे ब्राह्मणउत्तमहै ॥ यातैं सोब्रह्मवेत्ताब्राह्मण चतुष्टयसाधनसंपन्न अधिकारीब्राह्मणोंकूं तथाक्षत्रियोंकूं तथावैश्योंकूं तथात्रैवर्णिकस्त्रियोंकूं उपनिषद्रूप वेदकेवचनोंकाउपदेशकरिकै आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिकरै ॥ काहेतैं जैसे शास्त्रविषे शूद्रोंकूं उपनिषद्रूपवेदवचनोंकेश्रवणकरणेका निषेध कथनकऱ्याहै ॥ तैसे अधिकारीक्षत्रियवैश्योंकूं तथात्रैवर्णिकस्त्रियोंकूं उपनिषद्रूपवेदवचनोंकेश्रवणकरणेकानिषेध किसीशास्त्रविषे कथन कऱ्यानहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ श्रुतिविषेस्त्रियोंकूं वेदकेअध्ययनकरणेका निषेध कथनकराहै ॥ तहांश्रुति ॥ स्त्रीशूद्रौनाधीयातां ॥ अर्थयह ॥ स्त्री शूद्र यादोनोंकूं वेदकाअध्ययन नहीं करावै ॥ याश्रुतिवचनका विरोधहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेशिष्य जिसवेदकेवचनकूं गुरु उच्चारणकरै ॥ तिसीवेदकेवचनकूं शिष्यभी उच्चारणकरै याकानाम अध्ययनहै ॥ याप्रकारकेवेदअध्ययनका यद्यपि त्रैवर्णिकस्त्रियोंकूं निषेधहै ॥ तथापि ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं वेदवचनोंकेश्रवणकरणेका त्रैवर्णिकस्त्रियोंकूं निषेधनहीं ॥ जोकदाचित् त्रैवर्णिकस्त्रियोंकूं वेदवचनोंकेश्रवणकाभी निषेधहोवै तौ तावेदविषेही मैत्रेयीगार्गीआदिकस्त्रियोंकेप्रति जोब्रह्मविद्याकेउपदेशकाप्रकार कथनकऱ्या है सोसंपूर्ण असंगतहोवैगा ॥ यातैं मुमुक्षुत्रैवर्णिकस्त्रियोंकूं उपनिषद्रूपवेदवचनोंके श्रवणकरणेकाआधिकारहै ॥ और क्षत्रियपुरुषोंकूं तथा वैश्यपुरुषोंकूं तौ वेदकेअध्ययनकरणेविषेभी अधिकारहै ॥ यातैं सोब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुष अधिकारीक्षत्रियवैश्योंकूं तथात्रैवर्णिकस्त्रियोंकूं उपनिषद्रूपवेदवचनोंकेउपदेशकरिकै आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिकरै ॥ परंतु सोविद्वान्पुरुष तिनक्षत्रियवैश्योंकूं तथा त्रैवर्णिकस्त्रियोंकूं दंडग्रहणपूर्वकलिंगसंन्यास कदाचित् नहीं करावै ॥ और जोकदाचित् तिनक्षत्रियवैश्यपुरुषोंकूं तथा त्रैवर्णिकस्त्रियोंकूं यासंसारतैं उत्कट वैराग्यहोवै तौ सोविद्वान्पुरुष तिनक्षत्रियवैश्यस्त्रीजनोंकूं दंडकेग्रहणतैंविना अलिंगसंन्यास करावै ॥ काहेतैं जैसे शास्त्रविषे यद्यपि शूद्रोंकूं

यज्ञादिकविशेषकर्मोंकेकरणेकानिषेधकथनकऱ्याहै ॥ तथापि तायज्ञविषे ब्राह्मणादिकअधिकारियोंकरिकै करणेयोग्य जेदान तप सत्य नमस्कारादिक शुभकर्म हैं ॥ तिन दानादिकशुभकर्मोंकेकरणेविषे शूद्रोंकूंभी अधिकार शास्त्र विधानकरैहै ॥ तैसे दंडग्रहणपूर्वकलिंगसंन्यासविषे यद्यपि केवलब्राह्मणकूंहीं अधिकारहै ॥ तथापि तिनलिंगसंन्यासियोंकरिकै करणेयोग्य जे अहिंसा ब्रह्मचर्य सत्यादिकधर्म हैं ॥ तिन अहिंसादिकधर्मपूर्वक अलिंगसंन्यासकेग्रहणकरणेविषे क्षत्रियवैश्यपुरुषोंकूं तथात्रैवर्णिकस्त्रियोंकूं दोषकी प्राप्तिहोवैनहीं ॥ उलटा तिनोंकूं महान् पुण्यकीप्राप्तिहोवैहै ॥ हेशिष्य ॥ यालोकविषे क्षत्रिय वैश्य त्रैवर्णिकस्त्रियां यहसंपूर्ण जो कदाचित् ब्रह्मविद्याविषेकुशलभीहोवैं ॥ तौभी ब्रह्मवेत्ताब्राह्मणकेविद्यमानहुए तेक्षत्रियादिक गुरुरूपहोइकै दूसरे अधिकारीकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशनहींकरैं ॥ किंतु ब्रह्मवेत्ताब्राह्मणहीं तिन अधिकारियोंकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरै ॥ और जभीकोईब्रह्मवेत्ताब्राह्मण नहींविद्यमानहोवै ॥ तभी सोब्रह्मवेत्ताक्षत्रियपुरुष गुरुरूपहोइक आपणेसमानज्ञातिवालेक्षत्रियपुरुषोंकूं तथा क्षत्रियाणीस्त्रियोंकूं तथावैश्यपुरुषोंकूं तथावैश्याणीस्त्रियोंकूं ब्रह्मविद्याका उपदेशकरै ॥ परंतु सोक्षत्रिय गुरुरूपहोइकै ब्राह्मणोंकेप्रति तथाब्राह्मणीस्त्रियोंकेप्रतिब्रह्मविद्याकाउपदेशनहींकरै ॥ इसीप्रकार ब्रह्मवेत्ता वैश्यपुरुषभी ब्रह्मवेत्ताब्राह्मणके तथाब्रह्मवेत्ताक्षत्रियकेअभावहुए आपणेसमानजातिवालेवैश्योंकेप्रति तथावैश्याणीस्त्रियोंकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरै ॥ परंतु सोब्रह्मवेत्तावैश्यगुरुरूपहोइकै आपणेतैंउत्तमवर्णवालेक्षत्रियोंकेप्रति तथाब्राह्मणोंकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशनहीं करै ॥ और ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यातीनवर्णोंकीजेस्त्रियां हैं ॥ तिनस्त्रियोंकूं शास्त्रविषे वेदकेअध्ययनकानिषेधकऱ्याहै ॥ यातैं तेत्रैवर्णिकस्त्रियांभी गुरुरूपहोइकै त्रैवर्णिकपुरुषोंकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेश नहींकरैं ॥ और जभीकोई त्रैवर्णिकपुरुष ब्रह्मविद्यावालानहींहोवै ॥ तभी तेत्रैवर्णिकस्त्रियांभी गुरुरूपहोइकै ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरैं ॥ परंतु तेत्रैवर्णिकस्त्रियां आपनेसमानजातिवालेपुरुषोंके प्रति तथा आपणेतैं निकृष्टजातिवालेपुरुषोंकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरैं ॥ आपणेतैंउत्तमजातिवालेपुरुषोंकेप्रति तेस्त्रियां ब्रह्मविद्याकाउपदेश नहींकरैं ॥ और ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यातीनवर्णोंवालेपुरुषोंकूंभी जभी आपणेतैंउत्तमजातिवालेगुरुकीतथा आपणेसमानजातिवालेगुरुकी नहीं

प्राप्ति होवै ॥ तभी ते ब्राह्मणादिकपुरुषभी आपणेतैं नीच जातिवाले ब्रह्मवेत्ता गुरु शास्त्रके मर्यादाकूं जाणि करिकै वेदके वचनोंतैं आपही आत्मसाक्षात्कारकूं संपादनकरैं॥ और जोब्राह्मण कुलीनहोवै ॥तथा बाल्यअवस्थाविषे माताकरिकैशिक्षितहोवै॥तिसतैंअनंतर पिताकरिकैशिक्षितहोवै ॥ तिसतैंअनंतर आचार्यकरिकैशिक्षितहोवै ॥ ऐसेब्रह्मवेत्ताब्राह्मणकूंहीं ॥ ब्राह्मणीस्त्रीनैं गुरुकरणा॥तथा अन्यक्षत्रियादिकोंनैंभी ऐसेब्रह्मवेत्ताब्राह्मणकूंहीं गुरुकरणा ॥ और ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यातीनवर्णोंकीस्त्रियोंका तौ आपणापतिहीगुरुहोवै है ॥ जोकदाचित् सोपति ब्रह्मविद्यावालानहींहोवै॥ तौतिनस्त्रियोंनैं आपणेतैंउत्तमजातिवाले किसीब्रह्मवेत्तापुरुषकूंगुरुकरणा ॥ और जोआपणेतैंउत्तमजातिवाला कोईब्रह्मवेत्तापुरुषनहींहोवै ॥ तौतिनस्त्रियोंनैं आपणेसमानजातिवाले किसीब्रह्मवेत्तापुरुषकूंगुरुकरणा॥और ब्राह्मणोंकीअपेक्षाकरिकै अधमजातिवाले जेक्षत्रियवैश्यहैं ॥ तथा क्षत्रियवैश्योंकीअपेक्षाकरिकैभी अधमजातिवालेजेशूद्र हैं ॥ ते शूद्र किसी आपदाकालविषेभी ब्राह्मणादिकउत्तमवर्णोंके गुरुहोवैंनहीं ॥ और शूद्रपुरुषोंकूं तथा शूद्रास्त्रियों तथा अन्यकिसीसंकरजातिवालेपुरुषोंकूं पूर्वलेकिसीपुण्यकर्मके प्रभावतैं जो आत्मसाक्षात्कारकी इच्छा होवै ॥ तौ यहविद्वान्पुरुष तिनशूद्रादिकोंके प्रतिभी ब्रह्मविद्याका उपदेशकरै ॥ परंतु यहविद्वान्पुरुष तिनशूद्रादिकोंकेप्रति साक्षात् उपनिषद्रूपवेदकाउपदेशनहींकरै ॥ किंतु उपनिषदोंकेअर्थकानिरूपण करणेहारे जेभागवतादिकपुराणहैं तथा पंचदशीआदिकप्रकरणग्रंथहैं ॥ तिनोंकाउपदेशकरिकै सोविद्वान्पुरुष मुमुक्षुशूद्रादिकोंकूं आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिकरै ॥ और जभीकोई उत्तमजातिवालाब्रह्मवेत्तागुरु नहींप्राप्तहोवै॥ और अधमजातिवालाकोईब्रह्मवेत्तागुरुप्राप्तहोवै॥ तभी उत्तमजातिवालेब्राह्मणादिकोंनैंताअधमजातिवालेक्षत्रियादिकोंतैं धनादिकपदार्थदेकै ब्रह्मविद्यालेणी॥और जोकदाचित् तेअधमजातिवालेगुरु धनादिकपदार्थोंकीइच्छातैंरहित निष्कामहोवैं॥तौ ताअधमजातिवालेगुरुवोंकेताईं तिनउत्तमजातिवालेशिष्योंनैंकोईआपणी विद्या देकै ब्रह्म विद्या लेणी ॥ और सोअधम जातिवाला पुरुष जो कदाचित् ताउत्तम जातिवाले पुरुषकेप्रति ब्रह्म विद्या देवै ॥ तौभी ताउत्तम जातिवाले शिष्यतैं सो अधम जातिवाला गुरु पादसंवाहनादिक निकृष्टसेवानहीं करावै ॥ हेशिष्य ॥ वेदविषे अश्वपति

नामा क्षत्रियराजानैं उद्दालकादिकब्राह्मणोंके प्रति ब्रह्मविद्याका उपदेश कऱ्या है ॥ तथा अजातशत्रुनामा क्षत्रियराजानैं बालाकी ब्राह्मणके प्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकऱ्या है॥याप्रकारकी वेदप्रतिपादितकथावोंकूंदेखिकै धर्मशास्त्रकेवक्तामनुआदिकऋषियोंने क्षत्रियादिकअधमवर्णोंतैं ब्राह्मणादिकउत्तमवर्णोंकूं ब्रह्मविद्यालेणेकाप्रकार कथनकऱ्या है॥परंतु यहसंपूर्णप्रकार तबपर्यंतहोवै है॥जबपर्यंत किसी ब्रह्मवेत्ताब्राह्मणकाअभावहोवै है॥और जोब्रह्मवेत्ताब्राह्मणगुरुकालाभहोवै॥तौ क्षत्रियादिकोंतैं ब्राह्मणनैंब्रह्मविद्याकाअध्ययननहींकरणा ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकी जोशास्त्रविषेमर्यादाकथनकरी है ॥ तासंपूर्णमर्यादाकूंजाणतीहुईसाब्रह्मवेत्तामैत्रेयी दंडग्रहणपूर्वक लिंगसंन्यासकूं नहींधारणकरतीभई ॥ किंतु ब्रह्मचर्यादिकसाधनपूर्वक अलिंगसंन्यासकूंधारणकरिकै सामैत्रेयी याज्ञवल्क्यमुनिकीन्याईं यालोकविषेविचरतीभई ॥ तहां तामैत्रेयीतैं याज्ञवल्क्यमुनिविषे एकदंडग्रहणमात्रकीविशेषताहोतीभई ॥ तादंडग्रहणरूपविशेषताकूंछोडिकै दूसरेशमदमादिकधर्म जैसेयाज्ञवल्क्यमुनिविषेहोतेभये ॥ तैसेहीधर्म मैत्रेयीविषेभीहोतेभये ॥हेशिष्य॥ याज्ञवल्क्यमुनिनैं आपणीमैत्रेयीस्त्रीकेप्रति जाब्रह्मविद्याउपदेशकरीथी ॥ तासंपूर्णब्रह्मविद्या हमनैं तुमारेप्रति कथनकरी है॥अब जिसअर्थकेश्रवणकरणेकी तुमारेकूंइच्छाहोवै॥सोह मारेप्रति तुम कथनकरो ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपाद शिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचिते प्राकृतात्मपुराणे बृहदारण्यकयाज्ञवल्क्यमैत्रेयीसंवादोनाम सप्तमोऽध्यायःसमाप्तः ॥ ७ ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यां नमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्यो नमः ॥ ॥छ॥ ॥छ॥ ॥छ॥ ॥छ॥

इति श्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषा आत्मपुराणेसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

॥इति श्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषाआत्मपुराणेसप्तमोऽध्यायःसमाप्तः॥

॥ अथ स्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषाआत्मपुराणे अष्टमाध्यायप्रारंभः ॥

ॐश्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथ अष्टमाऽध्यायप्रारंभः ॥तहां याआत्मपुराणके चतुर्थ पंचम षष्ठ सप्तम याचारिअध्यायोंविषे यजुर्वेदके बृहदारण्यकउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ अब अष्टम अध्यायविषे तिसीयजुर्वेदके श्वेताश्वतरउपनिषद्काअर्थ निरूपणकरैं हैं ॥ तहां पूर्वअध्यायोंविषे याज्ञवल्क्यमुनिनैं कथनकरीजात्रह्मविद्या ताब्रह्मविद्याकूं श्रवणकरिकै परमआश्चर्यकूं प्राप्तहुआ सोशिष्य आपणेगुरुकेप्रति पुनःयाप्रकारकाप्रश्नकरताभया॥शिष्यउवाच॥हेभगवन् याआत्मपुराणकेप्रथमअध्यायविषे ऋगवेदकेऐतरेयउपनिषद्काअर्थ आपनैं निरूपणकऱ्या ॥ प्रथमअध्यायविषे सनकादिकऋषियोंके तथा वामदेवादिकअधिकारीप्रजाके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं निरूपणकरी॥और या आत्मपुराणके दूसरेअध्यायविषे तथातीसरेअध्यायविषे तिसीऋग्वेदकेकौषीतकीउपनिषद्काअर्थ आपनैंनिरूपणकऱ्या॥तहां द्वितीयअध्यायविषे देवराजइंद्रकेतथाप्रतर्द नराजाके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरी॥ औरतीसरेअध्यायविषे राजाअजातशत्रुकेतथाबालाकीब्राह्मणकेसम्वादकरिकै नानाप्रकारकी ब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरी॥और याआत्मपुराणके चतुर्थ पंचम षष्ठ सप्तम याचारिअध्यायोंविषेयजुर्वेदकेबृहदारण्यकउपनिषद्का अर्थ आपने निरूपणकऱ्या ॥ तहां चतुर्थअध्यायविषे एकस्त्रीवंश दोपुरुषवंश यातिनिवंशोंकेऋषियोंका परस्पर भेद तथा अभेद आपनैं निरूपणकऱ्या॥और दृध्यङ् अथर्वणऋषिके तथाअश्विनीकुमारोंके तथा देवराजइंद्रके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरी ॥ तथा अश्विनीकुमारोंके प्रति ब्रह्मविद्याकेउपदेशकरणेकरिकै तादृध्यङ्मुनिकूं मस्तककाछेदनरूपक्लेशकीप्राप्ति आपनैं कथनकरी ॥ और याआत्मपुराणकेपंचमअध्यायविषे जनकराजाकेयज्ञविषे याज्ञवल्क्यमुनिके तथाआश्वलादिकऋषियोंके परस्परसं वादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं निरूपणकरी॥तथा याज्ञवल्क्यमुनिकेशापकरिकैशाकल्यब्राह्मणकामरण आपनैं कथनकऱ्या॥ और याआत्मपुराणके षष्ठेअध्यायविषे याज्ञवल्क्यमुनिके तथाजनकराजाके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथन करी ॥ और याआत्मपुराणकेसप्तमअध्यायविषे याज्ञवल्क्यमुनिके तथा मैत्रेयीस्त्रीके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं

कथनकरी ॥ हेभगवन् ॥ तासप्तमअध्यायकेअंतविषे आपनैं यहवार्ता कथनकरीथी ॥ पूर्व शास्त्रवेत्तामुनीश्वर जगत्केकारणकाविचार करिकै जिसअविद्यारूपशक्तिकूंदेखतेभये हैं ॥ तिसीअविद्यारूपशक्तिकूं सोयाज्ञवल्क्यमुनि संन्यासआश्रमकूंधारणकरिकै मिथ्यारूपक रिकेदेखताभया ॥ हेभगवन् ॥ यहवार्त्ता सप्तमअध्यायकेअंतविषे आपनैं कथनकरीथी ॥ याकेविषे हमारेकूं ऐसीजिज्ञासाहोवै है ॥ तिनमुनीश्वरोंका किसप्रकारकाविचार होताभया ॥ तथा तिनमुनीश्वरोंकी किसप्रकारकीसभा होतीभई ॥ तथा ते मुनीश्वर किसप्रका रका आपणाआपणाअभिप्राय प्रगटकरतेभये ॥ तथा तेमुनीश्वर जगत्केकारणकाविचारकरिकै ब्रह्मकूंहीं जगत्काकारणरूप निश्चय करतेभये ॥ अथवा किसीअन्यपदार्थकूं जगत्काकारणरूप ॥ निश्चयकरतेभये ॥ तथा तेसंपूर्णमुनीश्वर किससिद्धांतकूं निश्चयकरतेभये हेभगवन् ॥ यहसंपूर्णवार्ता आप कृपाकरिकै हमारेप्रति कथनकरो ॥ हमारेतैंगुह्यराखणेकी कोईवार्ता आपकूं है नहीं ॥ इसप्रकार जभी शिष्यनैं गुरुकेप्रति प्रश्नकऱ्या ॥ तभी सोश्रीगुरु कृपाकरिकै ताशिष्यकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य तपकरिकै नष्टहोइगयेहैंपापकर्मजिसके ऐसा श्वेताश्वतरनामाऋषिपूर्वहोताभया ॥ औरएककालविषे ताश्वेताश्वतरनामाऋषिकेआश्रम विषे बहुतमहात्मासंन्यासी एकठेहोइकै आवतेभये ॥ तहां श्वेताश्वतरनामाऋषिकूं देखिकै तेमहात्मा संन्यासी ताश्वेताश्वतरनामाऋषि केप्रति याप्रकारकेवचन कहतेभये ॥ हेवेदकीशाखाकेप्रवर्त्तकरणेहारे श्वेताश्वतरमुनि तुमारेकल्याणहोवै ॥ हेश्वेताश्वतरमुनि हमअतिथि संन्यासी तुमारेआश्रमविषेआये हैं ॥ यातैं आप ब्रह्मविद्यारूपभिक्षा हमसंन्यासियोंकेताईदेवो ॥ हेभगवन्॥जोब्रह्मविद्या आपकूं ब्रह्माके उपदेशतैं प्राप्तभई है ताब्रह्मविद्याकेश्रवणकरणेवासतै हमसर्वसंन्यासी आपकेआश्रमविषेआये हैं॥यातैं आप कृपाकरिकै सोब्रह्मविद्या हमा रेप्रति श्रवणकरावो ॥ ताब्रह्मविद्याकेश्रवणकरिकेही हमारेसंशयकीनिवृत्तिहोवैगी ॥ हेभगवन् ॥ शास्त्रोंके भिन्नभिन्नसंप्रदायोंकूं अंगीका रकरिके हमसंपूर्णसंन्यासी जगत्केकारणोंकूं भिन्नाभिन्न अंगीकारकरतेहैं॥याकारणतैं हमसंन्यासियोंका जगत्केकारणविषे बहुतकालपर्यंत विवादहुआ है ॥ परंतु यहपदार्थही सर्वजगत्काकारण है याप्रकारकानिश्चय अबपर्यंत हमसंन्यासियोंकूंहुआनहीं॥याकारणतैंहमसंपूर्णसं

न्यासियोंनैं याजगत्के कारणकानिश्चयकरणेवासतै परस्पर याप्रकारकासंकेतकऱ्या है॥ यालोकविषे यजुर्वेदकेशाखाकाप्रवर्त्तक जोश्वेता
श्वतरनामाऋषि है सोऋषि पक्षपाततैंरहित है ॥ तथा ब्रह्माकीन्याईं सर्वशास्त्रोंकेजाननेहाराहै ॥ और शत्रुविषे तथाआपणेपुत्रविषे तथा
आपणेशरीरविषे जिसकीसमानबुद्धिहै ॥ ऐसा श्वेताश्वतरनामामुनि याजगत्का जोकारणकहै सोजगत्काकारण हमसर्वसंन्यासि
योंनैं अंगीकारकरणा ॥ हेभगवन् ॥ याप्रकारका परस्पर संकेतकरिकै हमसंपूर्णसंन्यासी आपकेसमीपआये हैं॥ यातैं आप ब्रह्मविद्याका
उपदेशकरिकै हमारेसंशयकीनिवृत्तिकरो ॥ हेशिष्य ॥ तिनमहात्मासंन्यासियोंनैं जभी याप्रकारकाप्रश्न श्वेताश्वतरनामाऋषिकेप्रति
कऱ्या तभी सोश्वेताश्वतरमुनि तिनसंन्यासियोंकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ श्वेताश्वतरमुनिरुवाच ॥ हेसंन्यासियो ॥ जैसे इदा
नींकालविषे जगत्केकारणकाविचारकरणेवासतै तुमसंन्यासी एकठेहुएहो ॥ तैसेपूर्वभी किसीकालविषे तथाकिसीदेशविषे किसीनिमित्त
कोपाइकै संपूर्णवेदवेत्ताब्राह्मण एकठेहोतेभये ॥ कैसेथे तेब्राह्मण॥वेदोंविषे तथावेदकषट्अंगोंविषे अत्यंतकुशलथे॥ तथा शास्त्रोंकेअर्थकी
कल्पनाकरणेविषे जिनोंकीबुद्धि अत्यंतकुशलथी ॥ तिनब्राह्मणोंविषेभीकोईब्राह्मणतौ ब्रह्मविद्याविषेकुशलथे ॥ और कोईकब्राह्मण अन्य
विद्यावोंविषेकुशलथे ॥ याप्रकारके संपूर्णब्राह्मण एकठेहोतेभये ॥ तिनब्राह्मणोंविषेभी जोब्रह्मवेत्ताब्राह्मणथे॥ तेब्रह्मवेत्ताब्राह्मण सर्वअज्ञा
नीजीवोंकेउद्धारकरणेवासतैं तिनसर्वब्राह्मणोंकेप्रति याप्रकारकावचनकहतेभये ॥ हेब्राह्मणो वेदवेदांगविद्याविषेकुशल तथालोकोंकेअनु
ग्रहकरणेहारे जेतुमविद्वान्ब्राह्मणहो ॥ तिनतुमविद्वान् ब्राह्मणोंकायहसमाज जिसप्रकार लोकोंकेउपकारवासतेहोवै ॥ ऐसा कोईविचार
तुमकरो ॥ सोअज्ञानीलोकोंऊपरउपकार तभीसिद्धहोवैगा ॥ जभी तुमसंपूर्णब्राह्मण ग्लानिकेकरणेहारीलौकिककथावोंकापरित्याग
करिकै वेदकेवचनोंकाविचारकरोगे ॥ वेदवचनोंकेविचारतैंविना अज्ञानीजीवोंकाकल्याणनहींहोवैगा ॥ यातैं हेब्राह्मणो ॥ जो तुमारे
कूं इसलोकोंके उपकारकरणेविषेप्रीति है तौसंपूर्णब्राह्मण लौकिककथावोंका परित्यागकरिकै या जगत्के कारणका विचारकरो ॥
हे संन्यासियो ॥ याप्रकारका वचन जभी तिनब्रह्मवेत्तावृद्धब्राह्मणोंनैं तासभावासी सर्वब्राह्मणोंकेप्रतिकह्या ॥ तभीतेसंपूर्णब्राह्मण

तिनब्रह्मवेत्ताब्राह्मणोंकेवचनकूं श्रवणकरिकै बहुतप्रसन्नहोतेभये ॥ और तेसंपूर्णसभावासीब्राह्मण याजगत्केकारणकाश्रवणकरणेवासतै
तिनब्रह्मवेत्तावृद्धब्राह्मणोंकेप्रति याप्रकारकावचन कहतेभये ॥ हेब्रह्मवेत्तावृद्धब्राह्मणो ॥ याजगत्काजोकारण आपनैं निश्चयकऱ्याहोवै ॥
सोकारण आप कृपाकरिकै हमसर्वब्राह्मणोंकेप्रति कथनकरो हमसंपूर्णब्राह्मण ताजगत्केकारणकाश्रवणकरैंगे ॥ हेसंन्यासियो ॥ याप्रका
रकावचन जभी तिनसर्वब्राह्मणोंनैं कह्या ॥ तभी तेब्रह्मवेत्तावृद्धब्राह्मण तिनसर्वब्राह्मणोंकूं तर्कविषेकुशलदेखिकै नानाप्रकारकीयुक्तियोंक
रिकै तिनब्राह्मणोंकेप्रति जगत्काकारण कहतेभये ॥ हेसर्वब्राह्मणो ॥ जोतुमकहो यहजगत् किसीकारणतैंविनाहींउत्पन्नहोवै है सोयहतुमा
राकहणा संभवैनहीं ॥ काहेतैं यालोकविषे जैसे पटादिककार्य तंतुआदिककारणोंतैंविना उत्पन्नहोवैनहीं ॥ तैसे यहकार्यरूपजगत्भी
किसीकारणतैंविना उत्पन्नहोवैनहीं ॥ और हेब्राह्मणो ॥ जोतुम कारणतैंविनाहीं कार्यकीउत्पत्ति अंगीकारकरो ॥ तौ तंतुरूपकारणतैं
विनाहीं पटरूपकार्यकीउत्पत्तिहोणीचाहिये ॥ किंवा ॥ कारणतैंविनाहीं जोकदाचित् कार्यकीउत्पत्तिहोतीहोवै ॥ तौ पुत्ररूपकार्यकीप्रा
तिवासतै स्त्रीका पुरुषकेसमीप गमन नहींहोणाचाहिये ॥ तथा पुरुषका स्त्रीकेसमीप गमन नहींहोणाचाहिये ॥ तथा धनकीप्राप्तिवासतै
निर्धनपुरुषकूं धनीपुरुषकीसेवा नहींकरीचाहिये ॥ तथा क्षुधापिपासाकीनिवृत्ति करणेवासतै याजीवोंका अन्नजलकीप्राप्तिवासतै भ्रमण
नहींहोणाचाहिये ॥ तथा अन्नजलकेभक्षणतैंविनाहीं ॥ याजीवोंके क्षुधातृषाकीनिवृत्तिहोणीचाहिये ॥ तथा शीतआतपकीनिवृत्तिवासतै
किसीपुरुषकीवस्त्रगृहादिकोंकेसंपादनविषे प्रवृत्तिनहींहोणीचाहिये ॥ इसतैंआदिलेके सर्वव्यवहारोंकाअभावहोवैगा ॥ जोकारणतैंविनाहीं
कार्यकीउत्पत्तिअंगीकारकरोगे ॥ यातैं कारणतैंविना किसीभीकार्यकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ याकारणतैं याजगत्रूपकार्यकाभी कोईकारण
अंगीकारकऱ्याचाहिये ॥ अब जेबहिर्मुखवादी कार्यकीउत्पत्तिविषे कारणकेअभावकूंहीं कारणमानैं हैं ॥ तिनोंकेमतकाखंडनकरैं हैं ॥
हेब्राह्मणो॥जेबहिर्मुखवादी बीजादिककारणोंके अभावकूंहीं अंकुरादिककार्योंकेप्रति कारणमानैं हैं॥ तिनवादियोंकेमतविषे यहपूर्वउक्तसर्व
व्यवहारोंकेअभावकीप्राप्तिरूपमहान्दूषण प्राप्तहोवैहै॥यातैं तिनवादियोंकामत अत्यंतविरुद्धहै॥किंवा जेवादी कारणकेअभावकूंहीं कारण

मानैं हैं तिनवादियोंसैं यहपूछाचाहिये॥कार्यकीउत्पत्तिविषे जिसकारणकेअभावकूं तुमनैंकारणमान्याहै सोकारणकाअभाव अत्यंताभाव रूप है अथवा प्रागभावरूपहै अथवा प्रध्वंसाभावरूपहै अथवा अन्योन्याभावरूपहै ॥ तहाँ कार्यकीउत्पत्तिविषे कारणकाअत्यंताभाव कारणहै॥ यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं॥काहेतैं यहजगत् विनाहींकारणतैंउत्पन्नहोवै है याप्रकारकीप्रतिज्ञा तावादीनैं करीहै ॥ ताआपणीप्रतिज्ञाकेसिद्धकरणेवासतै तावादीनैं कारणकेअभावकूं जगत्काकारणमान्याहै ॥ सोकारणकेअभावकूं जभी वादीनैं जगत्काकारण अंगीकारकऱ्या ॥ तभी विनाहींकारणतैं यहजगत् उत्पन्नहोवैहै यहवादीकी प्रतिज्ञा मिथ्याहोवैगी॥किंवा॥जोकारणका अत्यंताभाव कार्यकीउत्पत्तिविषे हेतुहोवै ॥ तौ कारणकाअत्यंताभाव सर्वत्रसुलभहै ॥ यातैं सर्वत्र ताकार्यकीउत्पत्तिहोणी चाहिये ॥ और सर्वत्र सर्वकार्योंकीउत्पत्ति देखणेमैंआवतीनहीं ॥ यातैं सर्वत्र कार्यकीउत्पत्तिविषे कारणकेअत्यंताभावकूं कारणरूपतासंभवैनहीं ॥ इसप्रकार कारणतैंविनाहीं यहजगत्रूपकार्य उत्पन्नहोवैहै ॥ याप्रतिज्ञाकी हानिरूपदोष आगेप्रागभावादिकोंविषेभीजानिलेणा और जगत्रूपकार्यकीउत्पत्तिविषे कारणकाप्रागभाव कारणहै यहदूसरा पक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं जोवादी प्रागभावतैंहीं कार्यकीउत्पत्ति अंगीकारकरैहै ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ जिसकालविषे घटादिककार्योंकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ तिसकाल विषे सोप्रागभाव नाशहोइजावैहै ॥ अथवा ताकालविषे सोप्रागभाव विद्यमानहोवैहै ॥ तहाँ घटादिकरूपकार्यकीउत्पत्तिकालविषे सोप्राग भाव नाशहोइजावैहै यहप्रथमपक्षजोवादीअंगीकारकरै ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये सोप्रागभाव घटादिककार्योंकीउत्पत्तितैंपूर्व नाश होवै है ॥ अथवा घटादिककार्योंकीउत्पत्तितैंअनंतर सोप्रागभाव नाशहोवैहै ॥ तहाँ घटादिककार्योंकीउत्पत्तितैंपूर्व सोप्रागभाव नाशहो वैहै ॥ यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं जैसे यालोकविषे घटरूपकार्यकीउत्पत्तितैंपूर्व नाशकूंप्राप्तहुआकुलाल ताघटकाकारणहोवैनहीं ॥ तैसे घटादिककार्योंकीउत्पत्तितैंपूर्वही नाशकूंप्राप्तहुआ सोप्रागभाव तिनघटादिकोंकीउत्पत्तिविषे कारण होइसकैनहीं॥जोकदाचित् पूर्वनष्टहुए ताप्रागभावतैंघटादिककार्योंकीउत्पत्ति अंगीकारकरोगेतौ पूर्वनष्टहुएकुलालतैंभी घटकीउत्पत्तिहोणी॥

चाहिये॥और नष्टहुआकुलाल घटकाकारणहोवैनहीं॥यातैं घटादिककार्योंकीउत्पत्तितैंपूर्व नाशकूंप्राप्तहुआ सोप्रागभाव तिनघटादिकोंका कारणहोवैहै यहकहणा अत्यंतविरुद्धहै॥और सोप्रागभाव घटादिककार्योंकीउत्पत्तितैंअनंतर नाशहोवैहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकार करै तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ घटादिककार्योंकीउत्पत्तितैं अनंतर नाशहोणेहारा सोप्रागभाग एकहै अथवा अनेकहै ॥ तहां सोप्राग भाव एकहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै तावादीसैं यहपूछाचाहिये॥सोएकप्रागभाव इसवर्तमानकालविषे नष्टहुआ है अथवा विद्य मानहै ॥ तहां इसवर्तमानकालविषे सोएकप्रागभाव नष्टहुआहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं घटादिकसर्व कार्योंका कारणरूपजोएकप्रागभावहै ॥ सोप्रागभाव जोकदाचित् इसकालविषे नष्टहुआहोवै तौ कारणतैंविनाकार्यकीउत्पत्ति संभवैनहीं ॥ यातैं इदानींकालविषे घटादिककार्योंकीउत्पत्तिनहींहोणीचाहिये ॥ और इदानींकालविषेभी घटादिककार्योंकीउत्पत्ति सर्वलोकोंकूंदेखणेविषे आवै है ॥ यातैं इदानींकालविषे ताप्रागभावकानाश संभवैनहीं ॥ और अभीवर्तमानकालविषे सोएकप्राग भाव विद्यमानहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं कार्यकीउत्पत्तितैंअनंतर सोप्रागभाव नाशहोइजावै है यहवार्ता संपूर्णवादीअंगीकारकरैहैं ॥ सोअवपर्यंतअनेककार्योंकेउत्पन्नहुएभी सोतुमाराप्रागभाव जभी नष्टनहींभया॥तभी सोतुमाराप्रा गभाव कभीनष्टहोवैगा ॥ किंवा याजगत्काकारणरूप सोएकप्रागभाव जभी नष्टहोवैगा तभी यहजगत्रूपकार्य पुनःउत्पन्नहोवैगा अथवा नहींउत्पन्नहोवैगा ॥ तहांताप्रागभावकेनाशतैंअनंतरभी यहजगत् उत्पन्नहोवैगा यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं तावादीनैंप्रागभावकूंहीं जगत्काकारणमान्याहै ॥ ताप्रागभावरूपकारणकेनाशहुएतैंअनंतरभी जोवादी जगत्कीउत्पत्ति अंगीकारकरैगा तौ कारणतैंविनाहीं कार्यकीउत्पत्ति मानणीहोवैगी ॥ यातैं तावादीकेमतविषे तंतुतैंविनाहीं पटकीउत्पत्ति तथा अन्नजलकेभक्षणतैंविना क्षुधापिपासाकीनिवृत्ति इत्यादिकपूर्वउक्तसर्वदूषणोंकीप्राप्तिहोवैगी ॥ किंवा ॥ ताप्रागभावरूपकारणकेनाशतैं अनंतरजैसे विनाहींकारणतैं जगत्रूपकार्यकीउत्पत्तिहोवैगी ॥ तैसे इदानींकालविषेभी तंतुआदिककारणोंतैंविनाहीं पटादिककार्योंकी

उत्पत्तिकिसवासतैंनहींहोती ॥ इसकालविषे तंतुआदिककारणोंतैंविना पटादिककार्योंकीउत्पत्तिनहींहोती ॥ और आगे प्रागभावरूप कारणतैंविना जगत्रूपकार्यकीउत्पत्तिहोवैगी ॥ याअर्थकीसिद्धिकरणेवासतैं वादीनैंकोईयुक्तिकहीचाहिये ॥ सोयाअर्थकेसिद्धकरणे हारी कोईयुक्तिहैनहीं ॥ यातैं ताप्रागभावरूपकारणकेनाशतैंअनंतर यहजगत्रूपकार्य उत्पन्नहोवैगा ॥ यहवादीकाकहणा अत्यंतविरुद्ध है ॥ और ताप्रागभावरूपकारणकेनाशतैंअनंतर सोकार्यरूपजगत् नहींउत्पन्नहोवैगा ॥ यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभीसंभवै नहीं॥ काहेतैं ताप्रागभावरूपकारणकेनाशतैंअनंतर जोकदाचित् यहजगत्रूपकार्य नहींउत्पन्नहोताहोवै तौश्रवणादिकसाधनोंतैंविनाहीं जीवोंकूं मोक्षकीप्राप्तिहोवैगी ॥ यातैं मोक्षकीप्राप्तिवासतै नानाप्रकारकेब्रह्मचर्यादिकसाधनकरणेनिष्फलहोवैंगे॥ किंवा ॥ताप्रागभावरूप कारणकेनाशतैंअनंतर जोकदाचित् पुनःसंसारकीउत्पत्तिनहींहोतीहोवै तौ कितनेवादियोंकेप्रति अनादिरूपकरिकै तथा अनंतरूपक रिकै प्रसिद्धजोयहजगत् है ॥ ताजगत्विषे सांतरूपताासिद्धहोवैगी ॥ सांतरूपताकेसिद्धहुए ताजगत्विषे सादिपणाभी अवश्यसिद्धहोवै गा ॥ काहेतैं यालोकविषे जोजोपदार्थ नाशरूपअंतवालाहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ उत्पत्तिवालाहोवैहै ॥ जैसे घटपटादिकपदार्थनाश वालैहैं ॥ यातैं तेघटादिकपदार्थ उत्पत्तिवालेभीहैं॥ और जोवादी याजगत्कूंउत्पत्तिवाला तथानाशवाला अंगीकारकरै तौ तिसवादीनैं जिनपुरुषोंकूंमुक्तमान्या है तिनमुक्तपुरुषोंकूंभी पुनःसंसारकीप्राप्तिहोणीचाहिये ॥ और तिनमुक्तपुरुषोंकूंभी जोकदाचित् पुनःसंसारकी प्राप्तिहोवैगी तौ तावादीनैं जितनेकमुक्तिके साधनमानेहैं तेसंपूर्णसाधन॥व्यर्थताकूंप्राप्तहोवैंगे॥इतनैंकरिकै सोजगत्काकारणरूपप्रागभाव एकहे याप्रथमपक्षकाखंडनकऱ्या॥अबसोजगत्काकारणरूपप्रागभाव अनेकहैं याद्वितीयपक्षकाखंडनकरैहैंसोकारणरूपप्रागभाव अनेकहैं यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरैतावादीसैंयहपूछाचाहिये कि यालोकविषे कोईभीवादीस्वरूपतैंअभावकाभेद अंगीकारकरतानहीं॥किंतु प्रतियोगीकेभेदतैंहीं ताअभावकाभेद सर्ववादी अंगीकारकरै हैं ॥ जैसे घटपटरूपप्रतियोगीकेभेदतैं घटाभाव पटाभावका पररूपरभेद होवै है तैसे ताप्रागभावकाभेदभी प्रतियोगीकेभेदतैंहीं अंगीकारकरणाहोवैगा ॥ सोतिसप्रागभावकाप्रतियोगीपणा किसविषेहै ॥ कार

णोंविषे है अथवा कार्योंविषे है ॥ तहाँ ताप्रागभावकाप्रतियोगीपणा कारणोंविषे है॥यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं सोप्रागभाव वादीकेमतविषेअनादि है ॥ यातैं ताअनादिप्रागभावका॥कोईकारणसंभवैनहीं॥और ताप्रागभावका प्रतियोगीपणा कार्योंविषे है यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं जोवादीकार्योंविषे प्रागभावकाप्रतियोगीपणा अंगीकारकरै गा तौ कार्यकेअभावविषे कारणरूपतासिद्धहोवैगी ॥ और तावादीनैं कार्यकेअभावविषे कारणरूपता अंगीकारकरीनहीं किंतु तावादी नैं कारणकेअभावविषे कारणरूपता अंगीकारकरी है॥सावादीकीप्रतिज्ञा हानिहोवैगी॥और तावादीनैं अंगीकारकरी जोकारणकेअभाव विषे कारणरूपता ॥ सा जभी सिद्धिनहींभई॥ तभी कारणतैंविनाहीं कार्यकीउत्पत्ति अंगीकारकरणीहोवैगी॥ यातैं कारणतैंविना कार्य की उत्पत्तिविषे जे पूर्व सर्वव्यवहारोंके अभावकी प्राप्तिरूप दूषणकहे हैं ॥ तेसंपूर्ण दूषण यापक्षविषे प्राप्त होवैंगे ॥ किंवा ॥ जोवादी प्रागभावकूंहीं कारणमानै हैं ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ ताप्रागभावविषे प्रागभावत्वरूप करिकै कारणता है अथवा ॥ घटप्रागभावत्व पटप्रागभावत्व इत्यादिकविशेषरूपोंकरिकै ताप्रागभावविषे कारणरूपताहै॥तहां प्रागभावत्वरूपकरिकै ताप्रागभावविषे कारणरूपताहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं॥काहेतैं जोप्रागभावत्वरूपकरिकै ताप्रागभावकूंकारणताहोवै ॥तौ घटके प्रागभावतैं पटादिककार्योंकीभी उत्पत्तिहोणीचाहिये ॥ और घटकेप्रागभावतैं पटादिककार्योंकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ यातैं प्रागभावत्वरूप करिकै ताप्रागभावविषे कारणरूपतासंभवैनहीं ॥ और घटप्रागभावत्व पटप्रागभावत्व इत्यादिकविशेषरूपोंकरिकै ताप्रागभावकूं कारण ता है॥यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै॥सोभी संभवैनहीं॥काहेतैं घटकाप्रागभाव घटकाकारणहै॥तथा पटकाप्रागभाव पटकाकारण है याकहणेतैं यहअर्थ सिद्धहोवैहै॥प्रतियोगितासंबंधकरिकै घटरूपविशेषणविशिष्ट जोप्रागभावहै सोप्रागभाव घटकाकारणहै तथा पटरूप विशेषणविशिष्टजोप्रागभाव है सोप्रागभाव पटका कारण है ॥ सोप्रागभावविषे घटरूपविशेषणकरिकैविशिष्ट रूपता तभी सिद्धहोवै ॥ जभी घटविशिष्ट प्रागभाव है याप्रकारकाविशिष्ट ज्ञानहोवै ॥ और सोविशिष्टज्ञान तभी उत्पन्नहोवै ॥ जभी प्रथम घटरूपविशेषपण

काज्ञानहोवे॥काहेतैं यालोकविषे जोजोविशिष्टज्ञानहोवै है॥सोसोविशिष्टज्ञान विशेषणकेज्ञानकरिकैजन्यहोवै है ॥ विशेषणकेज्ञानतौंविना विशिष्टज्ञानहोवैनहीं ॥ जैसे दंडरूपविशेषणकेज्ञानहुएतैंअनंतरहीं यहदंडवालापुरुषहै याप्रकारकाविशिष्टज्ञानहोवै है ॥ दंडरूपविशेषणके ज्ञानतैंविना यहदंडवालापुरुषहै याप्रकारकाविशिष्टज्ञानहोवैनहीं॥ यातैं घटविशिष्टप्रागभावकेज्ञानविषेभी घटरूपविशेषणकाज्ञानअवश्य चाहिये॥और जिसकालविषे घटकाप्रागभावहै॥तिसकालविषे घटरूपविशेषण उत्पन्नभयानहीं॥ यातैं ताघटविषे ताप्रागभावकीविशेषण रूपतासंभवैनहीं॥वर्तमानपदार्थहीविशेषणरूपहोवैहै॥ यातैं घटप्रागभावत्वरूपकरिकै तथापटप्रागभावत्वरूपकरिकै ताप्रागभावविषे कार णरूपतासँभवैनहीं॥शंका॥हेसिद्धांती॥हमारेमतविषे तुमनैं यहजोदूषणदिया॥ सोदूषणहमारे मतविषे तभीप्राप्तहोवै॥जभी हमवादि विशि ष्टज्ञानविषे विशेषणज्ञानकूं कारणमानतेहोवैं॥साहेम विशिष्टज्ञानविषे विशेषणज्ञानकूं कारणमानतेनहीं॥ किंतु हमवादीतौ कारणकेअभाव कूंहीं सर्वत्र कारणमानते हैं यातैं सोतुमारा दूषण हमारेमतविषे प्राप्तहोवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेवादी विशिष्टज्ञानविषे विशेषणज्ञान नकूंकारणता सर्ववादियोंनैंअंगीकारकरी है ॥ ताकारणताकूं जोतूं नहींअंगीकारकरैगा॥ तौ विशेषणज्ञानतैंविना दूसरेकिसीउपायकरिकै सोविशिष्टज्ञानहोतानहीं ॥ यातैं घटविशिष्टप्रागभाव है याप्रकारकाविशिष्टज्ञान तुमारेमतविषे कदाचित्भीनहींहोवैगा ॥ शंका ॥ हेसि द्धांती॥जैसे वंध्यापुत्रहै याप्रकारकेशब्दतैं वंध्यापुत्रका विकल्परूपज्ञानहोवै है॥ तैसे प्रागभावकालविषे ताघटकेअविद्यमानहुएभी ताघट रूपविशेषणका विकल्परूपज्ञान संभवहोइसकै है ॥ ताविकल्परूपविशेषणज्ञानतैंअनंतर घटविशिष्टप्रागभाव है याप्रकारकाविशिष्टज्ञान संभवै है ॥ समाधान ॥ हेवादी ॥ तुम्हारेमतविषे जैसे वंध्यापुत्र अत्यंतअसत्य है॥ तैसे प्रागभावकालविषे सोघटभी अत्यंतअसत्य है ॥ यातैं जैसे वंध्यापुत्रकाप्राग्भाव है याप्रकारकेविशिष्टज्ञानहुएभी ताप्रागभावविषे वंध्यापुत्रकीकारणतानहीं है॥तैसे घटकाप्रागभाव है याप्र कारकेविशिष्टज्ञानहुएभी ताप्राग्भावविषे घटकीकारणता नहींसंभवैगी॥शंका॥ हेसिद्धांती जिसकालविषे घटरूपकार्य उत्पन्ननहींभया ॥ तिसकालविषे यद्यपि ताप्रागभावका ताघटकेसाथसंबंधनहीं है ॥ तथापि जभी सोघटरूपकार्य उत्पन्नहोवैगा ॥ तभी ताघटरूपविशे

षणकेसाथ ताप्रागभावकासंबंधहोवैगा॥ताभावीसंबंधकूं अंगीकारकरिकै ताघटकीउत्पत्तितैंपूर्वभी घटविशिष्टप्रागभावहै याप्रकारकाकथन संभवै है ॥ जैसे बाल्यअवस्थाविषे राजाकेपुत्रका यद्यपि राजापणेकेसाथ संबंधनहींहै॥तथापि यौवनअवस्थाविषे ताबालकका राजापणेके साथ संबंधहोवैगा ॥ यातैं ताभावीसंबंधकूंलैके सर्वलोक ताबालककूंराजाकहै हैं॥ समाधान ॥ हेवादी ॥ यौवनअवस्थाविषे ताराजाकेपु त्रका ताराजाकेसाथ संबंधहोवैहै॥यातैं ताभावीसंबंधकूंअंगीकारकरिकै बाल्यअवस्थाविषे यद्यपि ताराजाकेपुत्रविषे राजापणेकाकथन संभवै हैं॥तथापि भावीसंबंधकूंअंगीकारकरिकै ताप्रागभावविषे घटविशिष्टरूपताकाकथन संभवैनहीं ॥ काहेतैं जिसकालविषे घटरूपका र्य उत्पन्नहोवै है तिसकालविषे जोकदाचित् सोप्रागभावरहताहोवै॥तौ ताप्रागभावका घटकेसाथसंबंधसंभवै है ॥ परंतु घटरूपकार्यकीउ त्पत्तितैंअनंतर सोप्रागभावरहतानहीं ॥ यातैं भावीसंबंधकूंअंगीकारकरिकैभी ताघटकीउत्पत्तितैंपूर्व ताप्रागभावविषे घटविशिष्टरूपतासं भवैनहीं॥किंवा॥जोवादी घटादिकरूपकार्यकीउत्पत्तितैंअनंतर ताकार्यकेसाथ ताप्रागभावकासंबंध अंगीकारकरै ॥ तौ ताप्रागभावविषे नित्यरूपतासिद्धहोवैगी॥ काहेतैं प्रागभावकूं अंगीकारकरणेहारे जितनेकवादी हैं॥तेवादी कार्यकीउत्पत्तितैं ताप्रागभावकानाशमानै हैं॥ ताकार्यकीउत्पत्तितैंभी जभी ताप्रागभावकानाश नहीं कऱ्या ॥ तभी कार्यकीउत्पत्तितैं विना दूसरा कोई पदार्थ ताप्रागभावकेनाश करणेहाराहैनहीं ॥ यातैं सोप्रागभाव नित्यही होवैगा॥और जोपदार्थ तीनकालोंविषे अबाधितहोवै ताकानाम नित्यहै ॥ याप्रकारकी नित्यरूपता ताप्रागभावविषेसंभवै नहीं ॥ काहेतैं कार्यकीउत्पत्तितैंपूर्वकालविषे ताकार्यकेउपादानकारण विषेरहणेहारा जोअभावहै ॥ ताकानाम प्रागभावहै ॥ याप्रकारका प्रागभावशब्दकाअर्थ तानित्यप्रागभावविषेघटैगानहीं ॥किंवा॥ जोवादी ताप्रागभावकूं स्वरूपतैं नित्यमानेगा तौ तानित्यप्रागभावविषे अनेकरूपता नहींसंभवैगी॥काहेतैं जोवादीताप्रागभावकूंनित्यरूपमानिकै अनेकरूपमानैहैतावादी सैंयहपूछाचाहिये॥प्रतियोगीरूपउपाधिकेभेदकरिकैही अभावकाभेदहोवै है।स्वरूपतैं ताअभावकाभेदहोवैनहीं॥यातैं तानित्यप्रागभावका जोभेदहै सो नित्यपदार्थरूपउपाधिकेभेदतैंहोवै है॥अथवा अनित्यपदार्थरूपउपाधिकेभेदतैंहोवै है॥तहां नित्यपदार्थरूपउपाधिकेभेदतैं ता

नित्यप्रागभावकाभेदहोवै है यहप्रथमपक्ष जोवादीअंगीकारकरै सो संभवैनहीं ॥ काहेतैं जो पदार्थप्रागभावका तथा प्रध्वंसाभावका अप्रतियोगीहोवै है ॥ सोपदार्थ नित्यहोवै है ॥ जैसे आत्मा प्रागभावका तथाप्रध्वंसाभावका अप्रतियोगी है ॥ यातैं सोआत्मा नित्य है ऐसे नित्यपदार्थोंविषे ताप्रागभावकीप्रतियोगिता संभवैनहीं ॥ और प्रतियोगीकेभेदतैंहीं अभावकाभेदहोवै है ॥ यातैं तानित्यपदार्थ रूपउपाधिकेभेदतैं तानित्यप्रागभावकाभेद संभवैनहीं ॥ और अनित्यपदार्थरूपउपाधिकेभेदतैंतानित्यप्रागभावकाभेदहोवै है ॥ यहदूस रापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं जैसे अनित्यघटादिकपदार्थोंकेभेदतैंप्रध्वंसाभावकाभेदहै ॥ तैसे अनित्यघटादिक पदार्थोंकेभेदतैं जोकदाचित् ताप्रागभावकाभेद अंगीकारकरोगे॥तो ताप्रागभावतैंअतिरिक्त प्रध्वंसाभावका अंगीकारकरणा व्यर्थहोवैगा किंतु सोप्रागभावही प्रध्वंसाभावरूपहोवैगा॥ और जोवादी ताप्रागभावकूं प्रध्वंसाभावरूपभीअंगीकारकरै ॥ तो ताप्रागभावविषे कारणरूपता नहींसिद्धहोवैगी ॥ किंतु जैसे प्रध्वंसाभावघटादिककार्योंकाविरोधीहोवै है॥तैसे सोप्रागभावभी घटादिककार्योंकाविरोधीही होवैगा ॥किंवा याप्रसंगविषे जोवादी कारणकेअभावकूं प्रागभावरूपमानै है॥ तावादीकेमतविषेभी यहसंपूर्णपूर्वउक्तदूषण प्राप्त होवै हैं ॥ काहेतैं जिसकारणकेप्रागभावकूं कारणरूपताहै ॥ सोकारण जोनित्यहोवैगा ॥ तौ तानित्यकारणविषे ताप्रागभावकी प्रतियोगिता नहीं होवैगी॥और सोकारण जोअनित्यहोवैगा॥ तौ ताअनित्यकारणकेप्रागभावकूं प्रध्वंसाभावरूपता सिद्धहोवैगी ॥और जैसे घटादिककार्यों काप्रध्वंसाभाव तिनघटादिककार्योंकाविरोधीहोवै है॥तैसे मृत्तिकादिककारणोंकाप्रध्वंसाभावभी घटादिककार्योंकाविरोधीहीहोवै है॥यातैं प्रध्वंसाभावरूपताकारणके प्रागभावविषे कारणरूपता संभवैनहीं॥इतनेकरिकै कारणकाप्रागभाग जगत्काकारणहै याद्वितीयपक्षकाखंड नकऱ्या ॥ अब कारणकाप्रध्वंसाभाव जगत्काकारणहै यातृतीयपक्षकाखंडनकरैहै॥तहां नास्तिकवादीकेअभिप्रायकूंजानणेवासतै प्रथम सिद्धांती तावादीसैंपूछैहैं ॥ हेवादी ॥ यालोकविषे नित्यरूपकरिकै तथा अनित्यरूपकरिकै प्रसिद्ध जेमृत्तिकातंतुआदिकभावपदार्थ हैं ॥ तिनभावपदार्थोंकूंहीं संपूर्णलोक घटपटादिकोंकाकारणमानैं हैं ॥ तिनभावकारणोंकापरित्यागकरिकै तिनभावकारणोंकेअभावकूं जो

तुमनैं कारणमान्याहै ॥ सोकिसप्रयोजनकीसिद्धिवासतै मान्याहै॥ सोप्रयोजन तूं हमारेप्रतिकह॥ याप्रकार सिद्धांतीकरिकै पूछाहुआसो नास्तिकवादी याप्रकारकावचन कहताभया॥ हे सिद्धांती ॥यालोकविषे जबपर्यंत बीजादिककारणोंकानाशनहींहोवैहै॥ तबपर्यंत अंकु रादिककार्योंकीउत्पत्तिहोवैनहीं॥किंतुपृथिवीजलादिकोंकेसंबंधतैं जभीताबीजकानाशहोवैहै॥तभीहीताअंकुरादिककार्योंकीउत्पत्तिहोवैहै याप्रकारकीव्यवस्थाकूंदेखिकैं हमवादी बीजादिकभावपदार्थोंकूं अंकुरादिककार्योंकेप्रति कारण नहींमानैं हैं॥ किंतु तिनबीजादिकभावप दार्थोंकेअभावकूंहीं हम अंकुरादिकोंकाकारणमानतेहैं ॥ याप्रकारक तावादीकेअभिप्रायकूं श्रवणकरिकै सोसिद्धांती तावादीकेप्रति याप्र कारकावचन कहताभया ॥ हेवादी बीजादिकोंका जभी नाशहोवै है ॥ तभी अंकुरादिककार्योंकीउत्पत्तिहोवै है याप्रकारका जो तुमनैं वचनकह्याहै ॥ तातुमारेवचनतैं यहतुमाराअभिप्राय जान्याजावैहै ॥ बीजादिककार्योंकाप्रागभाव अंकुरादिकोंकाकारणनहीं ॥ किंतु बीजादिककारणोंकाप्रध्वंसाभावही अंकुरादिकोंकाकारणहै ॥ सोबीजादिककारणोंकाप्रध्वंसाभावभी अंकुरादिरूपकार्यकीउत्पत्ति विषे कारणरूपहोवैनहीं ॥ काहेतैं जोकारणकाप्रध्वंसाभाव कार्यकीउत्पत्तिविषेहेतु होवै ॥ तौ या जीवोंकी जठराग्निविषे बीजा दिकअनेककारणोंका प्रध्वंसाभावहोवैहै ॥ यातैं तावीजादिककारणोंकेप्रध्वंसाभावतैं ता उदर विषे अंकुरादिक कार्योंका उत्पत्तिहो णीचाहिये ॥ और याजीवोंके उदरविषे अंकुरादिक कार्योंकी उत्पत्ति होती नहीं ॥ यातैं कारणके प्रध्वंसाभावविषे कारणरूपतासं भवै नहीं ॥ किंवा ॥ जोपदार्थ जिस पदार्थकी उत्पत्ति करै है ॥ सोपदार्थ तापदार्थका कारण होवै है ॥ जैसे तंतु पटरूपकार्यकी उत्पत्तिकरैहैं ॥ यातैं तेतंतु तापटकाकारणहैं ॥ और जोवादी बीजादिकोंविषे अंकुरादिककार्योंकी जनकता नहीं अंगीकारकरै है॥तावा दीकेमतविषे बीजादिकोंविषे कारणरूपताहीनहीं ॥ यातैं अकारणरूपबीजादिकोंकेअभावकूं जोवादी कारणाभाव यानामकरिकैकथन करैहै॥तावादीका सोवचनकैसाहै॥जैसे कोईपुरुषकहै हमारेमुखविषेजिह्वानहीं है॥याप्रकारकावचनजैसे वदतोव्याघातदोषवालाहै ॥तैसेसो वादीकावचनभी वदतोव्याघातदोषवालाहै॥जाअर्थकीसिद्धिकरणेवासतैजोवचनउच्चारणकरिये॥तावचनकरिकै तिसीअर्थकाबाधजहांहोवै

ताकानाम वदतोव्याघातहै ॥ किंवा ॥ जोवादी बीजादिककारणोंकेअभावकूं अंकुरादिककार्योंकीउत्पत्तिविषेकारणमानेहै॥तावादीकेम
तविषे अनवस्थादोषकीभीप्राप्तिहोवैहै ॥ काहेतैं जैसे तावादीकेमतविषे बीजादिकोंकाअभाव कारणाभावरूपहै ॥ यातैं सोबीजाभावअं
कुरादिकोंकाकारणहै॥ तैसे तिनबीजादिकोंकेअभावकाजोअभावहै सोभी बीजाभावरूपकारणकाअभाव रूपहै॥यातैं सोबीजादिकोंके
अभावकाअभावभी अंकुरादिकोंकाकारणहोवैगा॥इसप्रकार तृतीयअभाव चतुर्थअभावतैंआदि लैकेसंपूर्णअभावोंकूं कारणकाअभावरू
पहोणेतैं अंकुरादिककार्योंकीउत्पत्तिविषे कारणरूपताहोवैगी ॥ याप्रकार कारणोंकीअनवस्था प्राप्तहोवैगी ॥ किंवा ॥ कारणकाप्रध्वंसा
भाव कार्यकीउत्पत्तिविषे कारणहै ॥ यहवादीकाकहणा प्रत्यक्षप्रमाणतैंभी विरुद्धहै॥ काहेतैं यालोकविषे कुंडल कंकणादिक कार्योंकीउ
त्पत्तितैंअनंतर तिनकुंडलकंकणादिककार्योंविषे सर्वलोकोंकूं सुवर्णरूपकारण प्रत्यक्षप्रतीतहोवै है॥ तथा पटरूपकार्यकीउत्पत्तितैंअनंतर
तापटरूपकार्यविषे सर्वलोकोंकूं तंतुरूपकारण प्रत्यक्षप्रतीतहोवै है॥इसतैंआदिलेके जेजेलोकविषेभावकार्य हैं॥तिनकार्योंविषे आपणाआ
पणाउपादानकारण अनुगतहोइकैप्रतीतहोवैहै ॥ जोकदाचित् कारणकाप्रध्वंसाभावहुआहोवै ॥ तौ कुंडलकंकणादिककार्योंविषे सुवर्णरू
पकारण नहींप्रतीतहोणाचाहिये ॥ तथा पटरूपकार्यविषे तंतुरूपकारण नहींप्रतीतहोणाचाहिये ॥ यातैं कार्यकीउत्पत्तिविषे कारणकाप्र
ध्वंसाभावकारणहै यहवादीकाकहणा सर्वलोकोंकेअनुभवतैंविरुद्धहै ॥ किंवा ॥ पूर्वजोवादीनैं बीजकेनाशतैं अंकुररूपकार्यकीउत्पत्तिकही
थी सोभी बीजरूपकारणकेनाशतैं अंकुरकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ किंतु तावीजकेनाशहुएभी तावीजकेअंतर वर्तमान जेपार्थिवअवयवहैं
तेअवयव नाशकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं तेबीजकेअवयवहीं ताअंकुररूपकार्यकीउत्पत्तिविषे कारणहैं ॥ किंवा ॥ कारणकाप्रागभावही जग
त्कारणहै याद्वितीयपक्षविषे जेजेपूर्वविकल्पकरेथे ॥ तथा तिनविकल्पोंविषे जेजेपूर्वदूषणदियेथे ॥ तेसंपूर्णविकल्प तथातेसंपूर्णदूषण
याप्रध्वंसाभावपक्षविषे तथाअत्यंताभावपक्षविषे तथाअन्योन्याभावपक्षविषेभी प्राप्तहोइसकैहैं ॥ याकारणतैंभी ताकारणकेप्रध्वंसाभाव
विषे जगत्कीकारणरूपतासंभवैनहीं ॥ और यहघट पटतैंभिन्नहै तथायहपट घटतैंभिन्न है या प्रकारकेज्ञानकाविषयजोभेदरूपअन्योन्या

भाव है॥ ताअन्योन्याभावविषे जगत्कीकारणता किसीभीवादीकूंप्रतीतहोतीनहीं ॥ यातैं कारणकाअन्योन्याभाव जगत्काकारणहै यह
चतुर्थपक्षभी संभवैनहीं ॥ अब शून्यवादीकेमतकाखंडनकरैं हैं ॥ ह्रेब्राह्मणो ॥ पूर्वउक्तदूषणोंकीप्राप्तिहोणेतैं जभी ताअत्यंताभावविषे
तथाप्रागभावविषे तथाप्रध्वंसाभावविषे तथाअन्योन्याभावविषे याजगत्कीकारणता नहींसिद्धिभई॥तभी शून्यकूंभी याजगत्कीकारणता
संभवैनहीं ॥ काहेतैं जेवादी शून्यकूंहीं जगत्काकारणमानै हैं ॥ तेवादी अत्यंताभावकूंहीं शून्य यानामकरिकैकथनकरै हैं ॥ और सो
अत्यंताभावरूपशून्य वंध्यापुत्रकी न्याईं अत्यंतअसत्य है ॥ यातैं जैसे वंध्यापुत्रकूं ॥ किसीकार्यकी उत्पत्तिविषे कारणरूपतानहीं है ॥
तैसे ताअत्यंताभावरूपशून्यकूंभी किसीकार्यकीउत्पत्तिविषे कारणरूपता संभवैनहीं ॥ किंवा ॥ जोवादी ता अत्यंताभावरूपशून्यकूंहीं
कारणमानै है ॥ तावादीसैंयहपूछाचाहिये ॥ ताशून्यरूपअत्यंताभावका कौनप्रतियोगी है॥कार्य प्रतियोगी है अथवा कारण प्रतियोगी
है अथवा कार्यकारण दोनोंप्रतियोगी हैं ॥ तहां ताशून्यरूपअत्यंताभावका कार्य प्रतियोगीहै ॥ यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सो
संभवैनहीं॥काहेतैं तावादीनैं कार्यकीउत्पत्तिविषे कारणकेअभावकूं हेतुमान्याहै ताकापरित्यागकरिकै सोवादी जोकार्यकेअभावकूंकार
णमानैंगा॥तौ तावादीकेपूर्वप्रतिज्ञाकीहानिहोवैगी॥तथा आपणे सिद्धांतकापरित्यागरूप अपसिद्धांतदोषभी प्राप्तहोवैगा॥किंवा॥जोवादी
कार्यकेअत्यंताभावकूं कारणमानै है॥तावादीसैं यहपूछाचाहिये सोकार्यकाअत्यंताभाव लोकप्रसिद्धकारणोंकीअपेक्षातैंविनाहीं ताकार्यकी
उत्पत्तिकरै है ॥ अथवा जैसे दंडरूपकारणचक्रकुलालादिककारणोंकीअपेक्षाकरिकै घटरूपकार्यकूंउत्पन्नकरै है॥तैसे सोकार्यका अत्यंता
भावभी लोकप्रसिद्धकारणोंकीअपेक्षाकरिकैही ताकार्यकीउत्पत्तिकरै है ॥तहां सोकार्यकाअत्यंताभाव लोकप्रसिद्धकारणोंतैंनिरपेक्षहुआ
कार्यकूंउत्पन्नकरै है यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं पटादिककार्योंकीउत्पत्तितैंपूर्व तिनपटादिककार्योंकाअत्यं
ताभाव जैसे तंतुआदिकोंविषेहै॥तैसे अन्यपदार्थोंविषेभीहै ॥यातैं तिनसर्वपदार्थोंविषे पटादिकसर्वकार्योंकीउत्पत्तिहोणीचाहिये॥और सर्व
पदार्थोंविषे सर्वकार्योंकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ और लोकप्रसिद्धकारणोंकीअपेक्षाकरिकैही सोकार्यकाअत्यंताभाव ताकार्यकूंउत्पन्नकरै है

यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं तावादीकेमतविषे जैसे वंध्यापुत्र अत्यंतअसत्यहै ॥ तैसे घटपटादिककार्य भी आपणीउत्पत्तितैंपूर्व अत्यंतअसत्यहैं ॥ यातैं तावादीकेमतविषे जैसे लोकप्रसिद्धदंडचक्रकुलालादिककारणोंकरिकै सहकृत ताघटके अत्यंताभावतैं घटरूपकार्यकीउत्पत्तिहोवैहै॥तैसे लोकप्रसिद्धवंध्यास्त्रीरूपकारणकरिकैसहकृत तावंध्यापुत्रकेअत्यंताभावतैं ता वंध्यापुत्र कीभी उत्पत्तिहोणीचाहिये ॥ और वंध्यास्त्रीतैं पुत्रकीउत्पत्तिहोवैनहीं॥यातैं इतरकारणसापेक्ष ताकार्यकेअत्यंताभावविषे कारणरूपता संभवैनहीं ॥शंका॥हेसिद्धांती॥ जिसपदार्थविषे कार्यकेउत्पत्तिकरणेकीशक्तिहोवै है॥सोपदार्थही ताकार्यकीउत्पत्तिविषे कारणहोवै है ॥ जैसे मृत्तिकादंडचक्रादिकपदार्थोंविषे घटरूपकार्यकेउत्पत्तिकरणेकीशक्तिरहै है ॥ यातैं तेमृत्तिकादंडचक्रादिकपदार्थ ताघटकेकारण हैं॥ और वंध्यास्त्रीविषे पुत्ररूपकार्यकेउत्पत्तिकरणेकीशक्तिहैनहीं।यातैं सोवंध्यास्त्री पुत्रकाकारणहींनहीं॥समाधान॥हेवादी॥जिसशक्तिकरिकै कार्यकीउत्पत्तिहोवैहै॥ताशक्तिकाक्यास्वरूपहै॥सोतुमारेकूंकह्याचाहिये॥शंका॥हेसिद्धांती जिसकेबलतैं सोकारण कार्यकीउत्पत्तिकरै है ताकानाम शक्तिहै ॥समाधान॥ हेवादी जिसशक्तिकेबलतैं सोकारण कार्यकीउत्पत्तिकरैहै॥सोशक्ति ताकारणतैं भिन्नहै अथवा अभिन्नहै तहां सोशक्ति ताकारणतैंभिन्न है यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै॥तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ सोशक्ति ताकारणकीअपेक्षातैंविनाहीं कार्यकाजनकहै ॥ अथवा ताशक्तिकी न्याईं सोकारणभी ताकार्यकाजनकहै॥तहां सोएकशक्तिही कार्यकाजनकहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं ताशक्तितैंभिन्न जितनेकीलोकप्रसिद्धकारण हैं॥तेकारण जोकदाचित् कार्यकेजनकनहींहोवैंगे॥तो तिनलोकप्रसिद्धकारणोंविषे कारणरूपताहीनहींरहैगी॥और तेलोकप्रसिद्धकारणभी कार्यकेजनक हैं यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं यालोकप्रसिद्धकारणोंकरिकैभी जभी कार्यकीउत्पत्तिहोइसकैं है ॥ तभी ताशक्तिकूंकारणमानणा व्यर्थ होवैगा ॥ और सोशक्ति ताकारणतैंअभिन्नहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं सोशक्ति जोकदाचित् ताकारणतैंअभिन्नहोवैगी ॥ तौ शक्ति कारण यहदोनोंनाम एकहीअर्थकेवाचकहोवैंगे ॥ याकारणतैंभी सोशक्ति व्यर्थहोवैगी ॥ इसप्र ॥ ८ ॥

कार जभी ताशक्तिकीसिद्धिनहींभई ॥ तभी जोवादी कार्यकेअत्यंताभावकूंहीं कारणमानैहैं ॥तावादीकेमतविषे घटादिककार्योंकी न्याईं वंध्यापुत्रकीभी उत्पत्तिहोणीचाहिये ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती ॥आपणीउत्पत्तितैंपूर्व यद्यपि तेघटपटादिककार्य अत्यंतअसत्यहैं ॥ तथापि तेघटपटादिककार्य मृत्तिकातंतुआदिककारणोंतैंहीं उत्पन्नहोवैहैं ॥ और वंध्यास्त्रीतौ पुत्रकीउत्पत्तिविषेकारणहीनहीं ॥ यातैं तावंध्यास्त्रीतैं पुत्रकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेवादी ॥ वंध्यास्त्रीविषे पुत्रकीकारणतानहीं है याप्रकारकाकथनकरणेहाराजोतूंहै ॥तातुम्हारेसैं हम यहपूछतेहैं ॥ तावंध्याविषेपुत्रकीकारणतानहीं है याकेविषेकौनहेतुहै॥हेवादी जोतूंयहकहै ॥ पुत्ररूपकार्यकाजोअदर्शनहै सोईही ताकेविषेहेतुहै ॥ तौ हमसिद्धांती तुम्हारेतैंयहपूछतेहैं ॥ तापुत्ररूपकार्यका जोदर्शननहींहोता ॥ ताकेविषेभी कौनहेतुहै ॥ हेवादी जोतूं यहकहै ॥ वंध्यापणा तथा वंध्याविषेकारणताकाअभाव यहदोनों तापुत्ररूपकार्यकेअदर्शनविषेहेतुहै ॥ सोयहतुम्हाराकहणासंभवै नहीं ॥ काहेतैं तावंध्यास्त्रीविषे जभी वंध्यापणासिद्धहोवै ॥ तथा पुत्रकीकारणताकाअभाव सिद्धहोवै ॥ तभी ता वंध्यापुत्रका अदर्शन सिद्धहोवै ॥ और जभी ता वंध्यापुत्रका अदर्शनसिद्धहोवै ॥ तभी ता वंध्यास्त्रीविषे वंध्यापणा तथापुत्रके कारणताकाअभाव सिद्धहोवै ॥ याप्रकारकेअन्योन्याश्रयदोषकीप्राप्ति होवैगी ॥ किंवा ॥ हे वादी जैसे सत्कार्यवादीसांख्यादिक घटादिककार्यों कीउत्पत्तितैंपूर्व मृत्तिकादिककारणोंविषे तिनघटादिककार्योंकी सूक्ष्मरूपकरिकैस्थितिमानै हैं ॥ तैसे तुमअसत्कार्यवादी अंगी कारकरतेनहीं ॥ किंतु तुम्हारेमतविषेतौ घटादिककार्योंकीउत्पत्तितैंपूर्व तिनघटादिककार्योंका जैसे मृत्तिकादिककारणोंविषेअत्यंताभाव रहैहै ॥ तैसे तंतु आदिकोंविषेभी अत्यंताभावहीरहैहै॥ यातैं तुम्हारेमतविषे जैसे मृत्तिकातैंघटकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ तैसे तंतुवोंतैंभी घटकी उत्पत्तिहोणीचाहिये ॥ इसप्रकार संपूर्णकार्य सर्वत्र उत्पन्नहोणेचाहिये ॥ और सर्वकार्योंकी सर्वत्र उत्पत्तिहोती नहीं ॥ या कारणतैंभी तुम्हारामत असंगतहै ॥ किंवा ॥ जोवादी घटादिककार्योंकूं अत्यंतअसत्यमानै है ॥ ता वादीके मतविषे मृत्तिकादिकसत्यपदार्थोंकूं घटादिकोंकीकारणरूपता सिद्ध नहीं होवैगी ॥ काहेतैं समानस्वभाववालेपदार्थोंकाही परस्पर कार्यकारणभावहोवै है ॥ विलक्षण

स्वभाववालेपदार्थोंका परस्पर कार्यकारणभावहोवैनहीं॥यातैं मृत्तिकादिकसत्यपदार्थोंविषे घटादिकअसत्यपदार्थोंकीकारणतासंभवैनहीं॥ किंवा ॥ जेअसत्यकार्यवादी नैयायिकादिक याप्रकारकथनकरै हैं ॥ घटपटादिककार्य आपणीउत्पत्तिकैपूर्व यद्यपि अत्यंतअसत्यहैं ॥ तथापि तेघटपटादिककार्य सत्ताजातिकेसंबंधतैं सत्त्वरूपउत्पत्तिकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ सोयहतिनोंकाकहणाभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं अत्यंत असत्यघटादिकपदार्थोंविषे जोकदाचित् सत्ताजातिकेसंबंधतैं कार्यरूपताहोतीहोवै ॥ तौ अत्यंतअसत्यवंध्यापुत्रविषेभी तासत्ताजातिका संबंध तथा तासत्ताजातिकेसंबंधतैंकार्यरूपता होणीचाहिये ॥ और वंध्यापुत्रविषे सत्ताजातिकेसंबंधतैं कार्यरूपता प्रतीतहोवै नहीं ॥ यातैं सत्ताजातिकेसंबंधतैंअसत्यकार्यकीउत्पत्तिमानणी अत्यंतविरुद्धहै ॥ किंवा ॥ जोवादी कार्यकूं असत्य मानै है॥ तावादीकेमतविषे कारणकूंभी असत्यरूपताहीसिद्धहोवैगी ॥ और सोवादीजोकदाचित् किसीयुक्तिप्रमाणतैंविना आपणीइच्छातैंहीं कार्यकूंअसत्यमानिकै कारणकूंअसत्यमानैगा॥ तौ तावादीकेमतविषे अर्धजरतीयन्यायकी प्राप्तिहोवैगी॥आपणीइच्छातैंहींकिसीअंगकाग्रहणकरणा तथा किसी अंगकापरित्यागकरणा याकानाम अर्धजरतीयन्यायहै॥ किंवा ॥ ताअर्धजरतीयन्यायकीनिवृत्तिवासतै सोवादी जोकदाचित् कारणकूंभी असत्यहीमानैंगा॥तौ तावादीकेसिद्धांतकीहानिहोवैगी॥काहेतैं सत्यकारणतैं असत्यकार्यकीउत्पत्तिहोवैहै॥याप्रकारका तावादीकासिद्धांत है सो नष्टहोवैगा ॥ किंवा ॥ यालोकविषे असत्यरूपकरिकैप्रसिद्ध जेवंध्यापुत्र नर शृंगादिकहैं॥ तिनअसत्यपदार्थोंतैं पटतैलादिककार्यों कीउत्पत्ति देखणेमैं आवै नहीं॥किंतु सत्यरूपकरिकैप्रसिद्ध जेतंतुतिलादिककारणहैं ॥ तिनसत्यकारणोंतैंहीं पटतैलादिककार्योंकीउत्पत्ति देखणेविषेआवैहै ॥ याकारणतैंभी असत्यपदार्थोंविषे कारणरूपतासंभवैनहीं॥ शंका ॥ हेसिद्धांती ॥ तंतुआदिकसत्यकारणोंकेविद्यमान हुए पटादिककार्योंकीउत्पत्ति तथा तंतुआदिकसत्यकारणोंकेअविद्यमानहुए पटादिककार्योंकीअनुत्पत्ति ॥ याप्रकारका जोलोकोंकाअन्वयव्यतिरेकज्ञानहै॥सोअन्वयव्यतिरेकज्ञान जोकदाचित् यथार्थहोवै॥तौ ताज्ञानकरिकै तिनकारणोंविषेसत्यरूपतासिद्धहोवै॥परंतु सोअन्वयव्यतिरेकज्ञान भ्रांतिरूपहै ॥ यातैं ताभ्रांतिज्ञानकरिकै कारणकीसत्यरूपता सिद्धहोइसकैनहीं ॥ समाधान ॥ हे वादी यालोक

विषे जितनेकीज्ञानउत्पन्नहोवै हैं ॥ तिनसंपूर्णज्ञानोंकूं भ्रांतिरूपअंगीकारकरणा तुमारेकूंउचितनहीं ॥ किंतु धर्मीरूपवस्तुकूंविषयकरणेहारे जेज्ञानहैं ॥ तिनज्ञानोंकूं प्रमाणरूपहीमान्याचाहिये ॥ याकारणतैंहीं शास्त्रविषे यहकह्याहै ॥ सर्वं ज्ञानं धर्मिण्यभ्रांतं प्रकारेतुविपर्ययः ॥ अर्थयह ॥ यालोकविषे प्रमारूपकरिकै तथा अप्रमारूपकरिकै प्रसिद्ध जितनेकीज्ञानहैं ॥ तेसंपूर्णज्ञान धर्मीअंशविषेप्रमारूपहीहोवैहैं ॥ और दोषकेवशतैं तेज्ञान जोकदाचित् अप्रमारूपहोवै हैं॥तौभी प्रकारअंशाविषेही अप्रमारूपहोवैहैं॥धर्मीअंशविषे कोईभीज्ञान अप्रमारूपहोवैनहीं ॥ जैसे शुक्तिविषे इंदंरजतं याप्रकारकाजोअप्रमाज्ञानहोवै है ॥ सोभी इदंरूपधर्मीअंशविषे प्रमारूपहीहोवै है ॥ और रजत रूपप्रकारअंशविषे सोज्ञान अप्रमारूपहोवै है ॥ १ ॥ताधर्मीअंशविषे ज्ञानकीप्रमाणरूपताकूंअंगकिारकारिकैही पूर्वपक्षोंका तथासिद्धांत पक्षोंका निर्णयहोवै है ॥ तहाँ धर्मीपदार्थकेवास्तवस्वरूपतैं बहिर्भूतजेपदार्थ हैं ॥ तिनपदार्थोंकूंविषयकरणेहारेपक्षोंकानाम पूर्वपक्षहै ॥ जैसे रज्जुविषे सर्प दंड माला जलधारादिकपदार्थोंकूंविषयकरणेहारेपक्ष पूर्वपक्षरूपहैं॥ और धर्मीपदार्थकेवास्तवस्वरूपकूंविषयकरणेहारे जेपक्षहैं ॥ तिनोंकानाम सिद्धांतपक्षहै ॥ जैसे यहरज्जुहै याप्रकार रज्जुरूपधर्मीकूंविषयकरणेहारापक्ष सिद्धांतपक्षरूपहै ॥ जोकदाचित् ताधर्मीअंशविषेभी तिनज्ञानोंकूं प्रमाणरूपता नहींअंगीकारकरिये ॥ तौ तिनपूर्वपक्षोंका तथासिद्धांतपक्षोंका निर्णयनहींहोवैगा॥ यातैं धर्मीअंशविषे तिनज्ञानोंकूंप्रमाणरूपता अवश्यअंगीकारकरीचाहिये ॥ किंवा घटादिककार्योंविषे तथा मृत्तिकादिककारणोंविषे जोअत्यंतअसत्यरूपताहोवै ॥ तौ सर्वलोकोंकूं प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकै सोअसत्यरूपता प्रतीतहोणीचाहिये ॥ और तिसकार्यकारणरूपजगत्विषे अस्मदादिकजीवोंकूंप्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकै सोअसत्यरूपता प्रतीतहोतीनहीं ॥ उलटा ताकार्यकारणरूपजगत्विषे सत्यरूपताही अनुगतहुई प्रतीतहोवै है ॥ याकारणतैंभी ताकार्यकारणरूपजगत्कूं असत्यरूपतासंभवैनहीं ॥ किंवा ॥ कार्यरूपकरिकै तथा कारणरूपकरिकै प्रसिद्ध जितनाकीयहजगत् है॥सोजगत् जोकदाचित् वंध्यापुत्र शशशृंगकीन्याईं अत्यंतअसत्यरूपहीहोवै ॥ तौभी ताजगत्कीअसत्यरूपता साक्षीआत्मातैंविना किसीप्रमाणकरिकैसिद्धहोइसकैनहीं॥ किंवुतासाक्षीआत्माकूंआश्रयणकरिकैहीताजगत्की

असत्यरूपतासिद्धहोवैगी॥ यातैं कार्यकारणरूपजगत्केअसत्यहुएभी ताजगत्केअसत्यरूपताकूंसिद्धकरणेद्वारा साक्षीआत्मा सत्यरूपही सिद्धहोवैगा ॥ किंवा॥ यहकार्यकारणरूपजगत् जोकदाचित् अत्यंतअसत्यहोवै ॥ तौ जैसे याजीवोंकूं भ्रांतिदशातैंविना प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकै वंध्यापुत्रनरशृंगकीप्रतीतिहोतीनहीं॥तैसे भ्रांतिदशातैंविना याजीवोंकूं प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकै याजगत्कीप्रतीति नहीं होणीचाहिये॥किंतु जैसे वंध्यापुत्रकी तथानरशृंगकी भ्रांतिदशाविषेही प्रतीतिहोवै है॥तैसे याजगत्कीभीभ्रांतिदशाविषेही प्रतीतिहोणी चाहिये॥ सोभ्रांतिदशाविषे याजगत्कीप्रतीतिहोतीनहीं॥किंतु सर्वजीवोंकूं प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकैही याजगत्कीप्रतीतिहोवै है॥यातैं ताकार्यकारणरूपजगत्विषे अत्यंतअसत्यरूपतासंभवैनहीं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया॥कार्यकाअत्यंताभाव तथा कारणकाअत्यंताभाव तथा कार्यकारणदोनोंकाअत्यंताभाव याजगत्काकारणहै॥यहतीनोंपक्ष संभवैनहीं॥किंवा यहकार्यकारणरूपजगत् जोकदाचित् अत्यंतअसत्यरूपहोवै ॥ तौ जोअसत्यपदार्थहोवै है॥ताका किसीप्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकेसाथ संबंधहोवैनहीं ॥ जैसे असत्यवंध्यापुत्रनरशृंगका प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकेसाथ संबंधहोतानहीं ॥ तैसे ताअसत्यजगत्काभी प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकेसाथ संबंधहोवैगा ॥ और संबंधतैंविना तेप्रत्यक्षादिकप्रमाण किसीअर्थकेज्ञानकूंउत्पन्नकरैंनहीं यातैं संबंधतैंविना ताअसत्यजगत्का किसीभीप्रमाणकरिकैज्ञाननहींहोवैगा ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती ॥ जैसे वंध्यापुत्रहै याप्रकारकेशब्दतैं असत्य वंध्यापुत्रकाज्ञानहोवै है ॥ तैसे ताकार्यकारणरूप असत्यजगत्काभी शब्दप्रमाणतैं ज्ञानसंभवैहै ॥ समाधान ॥ जिसशब्दका जिसअर्थविषे वाच्यवाचकभावसंबंध जिसपुरुषकूंग्रहणहोवै है॥तिसपुरुषकेप्रति सोशब्द तिसीअर्थकाबोधकरै है ॥ जैसे घट याशब्दका घटरूपव्यक्तिविषे यहघटव्यक्ति घटशब्दकावाच्यअर्थ है याप्रकारकावाच्य वाचकभावसंबंध जिसपुरुषकूंग्रहणभयाहै ॥ तिसीपुरुषकेप्रति सोघटशब्द ताघटरूपव्यक्तिकाबोधकरै है ॥ अर्थकेसंबंधज्ञानतैंविना सोशब्द किसीअर्थकूंबोधनकरैनहीं ॥ और सोवंध्यापुत्ररूपअर्थ अत्यंत असत्यहै ॥ यातैं ता अत्यंतअसत्यअर्थविषे वंध्यापुत्र याशब्दकासंबंध किसीपुरुषकूं ग्रहणहोवैनहीं ॥याकारणतैं वंध्यापुत्र याशब्दतैंभी तावंध्यापुत्रकाज्ञान संभवैनहीं॥किंवा जेवादी वंध्यापुत्र

इत्यादिकशब्दोंतैं असत्यवंध्यापुत्रादिकोंकाज्ञान अंगीकारकरैहै॥ तेवादीभीतिनअसत्यपदार्थोंकेज्ञानकूंप्रमारूपमानतेनहीं ॥ किंतु ताज्ञानकूं विकल्परूपमानैंहैं॥शंका॥ हेसिद्धांती ॥ जैसे वंध्यापुत्रादिकअसत्यपदार्थोंका विकल्परूपज्ञानहोवैहै ॥ तैसे या कार्यकारणरूपजगत्काभी विकल्परूपज्ञानहोवैगा ॥ याकेविषे हमारीकौनहानिहै ॥ समाधान ॥ हेवादी ॥ जोतूं वंध्यापुत्रकेज्ञानकी न्याईं याजगत्केज्ञानकूं विकल्परूपमानैंगा ॥ ता जसे वंध्यापुत्रकेविकल्परूपज्ञानतैं किसीजीवकी प्रवृत्ति तथानिवृत्ति होवैनहीं॥ तैसे याजगत्केज्ञानतैंभी किसी जीवकी प्रवृत्ति तथानिवृत्ति नहींहोवैगी ॥ यातैं प्रवृत्तिनिवृत्तितैंआदिलैके संपूर्णव्यवहारोंकालोप होवैगा ॥ यातैं वंध्यापुत्रकेज्ञानकीन्याईं याजगत्केज्ञानकूं विकल्परूपतासंभवैनहीं ॥ किंवा ॥ जिसशब्दप्रमाणकरिकै सोवादी असत्यपदार्थकीसिद्धिकरैहै ॥ सोशब्दरूपकार्यही कारणकेसत्यरूपताकूंसिद्धकरैहै॥काहेतैं यालोकविषे वागादिकइंद्रियोंकरिकैयुक्त जो देवदत्तादिकपुरुषोंकाशरीरहै ॥ ताशरीररूपसत्काकारणतैंही ताशब्दरूपकार्यकीउत्पत्ति देखणेमैंआवै है ॥ और असत्यरूपकरिकैप्रसिद्ध जोवंध्यापुत्रकाशरीरहै ॥ ताअसत्यशरीरतैं ताशब्दरूपकार्यकीउत्पत्ति देखणेमैंआवतीनहीं ॥ याकारणतैंभी असत्यपदार्थोंविषे कारणरूपतासंभवैनहीं ॥ शंका ॥ हे सिद्धांती ॥ केवलयुक्ति केवलतैं हम कारणकूंअसत्यरूपनहींमानते किंतु साक्षात्श्रुतिही कारणकूंअसत्यरूपकहैहै ॥ तहांश्रुति ॥ असद्वाइदमग्रआसीत् ततोवैस दजायत ॥ अर्थयह ॥ यहदृश्यप्रपंच आपणीउत्पत्तितैंपूर्व असत्यरूपहीहोताभया ॥ ताअसत्यकारणतैं यहसत्यरूपजगत् उत्पन्नहोता भया ॥ १ ॥ याश्रुतिविषे असत्यकारणतैंही जगत्कीउत्पत्तिकथनकरीहै ॥यातैं ताश्रुतिकेअर्थकीअनुपपत्तिकरिकै कल्पनाकरीजामाया है ॥ तामायाकेबलतैं हमवादी असत्यकूंही जगत्काकारणमानतेहैं ॥ समाधान ॥ हेवादी ॥ तुमारेमतविषे जोकदाचित् वेदकूंप्रमाणरूप ताहोवै ॥ तौ ताश्रुतिकेअर्थकीअनुपपत्तिकरिकै कल्पनाकरीजामाया है ॥ ता मायाके बलतैं असत्यपदार्थविषे कारणरूपतासिद्धहोवै ॥ परंतु तुमारेमतविषे वेदोंकूंप्रमाणरूपताहैनहीं॥यातैं तुमारेमतविषे ताश्रुतिकेबलतैंभी असत्यपदार्थविषे कारणरूपतासिद्धहोवैनहीं ॥और हेवादी जोतूं वेदकूंप्रमाणरूपभीअंगीकारकरै॥ तोभी सोवेदभगवान् किसीभीस्थलविषे ताकार्यकारणकेअसत्यरूपताकूं कथनकरतानहीं

और प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकैतौ याकार्यकारणरूपजगत्विषे असत्यरूपताप्रतीतहोतीनहीं॥ यातैंतुमारेमतविषेसाकार्यकारणकीअसत्य रूपताकिसप्रमाणकरिकैसिद्धहोवैगी॥किंतुसाअसत्यरूपताकिसीभीप्रमाणकरिकैसिद्धहोवैनहीं॥शंका॥ हेसिद्धांती॥वेदविषेकहांभीअसत्य पदार्थकूंकारणरूपतानहींकही यहजोवचन तुमनैंकह्या सोसंभवैनहीं ॥काहेतैं॥असद्वाइदमग्रआसीत्॥यह श्रुति याजगत्केकारणकूंअसत्य रूपहीकहैहै ॥ समाधान ॥ हेवादी ॥ याश्रुतिविषेजोअसतशब्दहै ॥ सोतुमारेअत्यंताभावरूपशून्यकूंबोधनकरतानहीं ॥ किंतु सोअसत् शब्द यास्थूलजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्व अव्याकृतरूपसूक्ष्मअवस्थाकूंबोधनकरै है ॥ अथवा अत्यंताभावरूपशून्यकूंहीं जगत्काकारणमानणे हारे जेतुमशून्यवादीहो ॥ तिनतुमारेपूर्वपक्षका सोवचन अनुवादकरैहै ॥ परंतु तावचनका कारणकीअसत्यरूपताविषे तात्पर्यनहीं है॥ जो कदाचित् ताश्रुति वचनका कारणकीअसत्यरूतताविषे तात्पर्यकल्पनाकरिये ॥ तौ कारणके सत्यरूपताकूंबोधनकरणेहारीश्रु तिकाविरोधहोवैगा॥तहांश्रुति ॥ सदेवसोम्येदमग्रआसीत्॥अर्थयह ॥ हेप्रिय यहदृश्यप्रपंच आपणीउत्पत्तितैंपूर्व सत्यरूपहोताभया॥१॥ याश्रुतिविषे कारणकीसत्यरूपता कथनकरीहै सोअसंगत होवैगी ॥ यातैं कारणकीअसत्यरूपताविषे ताश्रुतिवचनकातात्पर्यनहीं ॥ इत नैंग्रंथकरिकै कारणकेअभावकूं तथाकार्यकेअभावकूं जगत्काकारणमानणेहारेवादियोंकेमतकाखंडनकऱ्या ॥ अब ब्रह्मविषे जगत्की कारणताकाखंडनकरैहैं ॥ हेब्राह्मणो ॥ जैसे कारणके अभावविषे तथाकार्यके अभावविषे याजगत्कीकारणतानहींसंभवैहै॥ तैसे ब्रह्मविषे भी याजगत्कीकारणतासंभवैनहीं ॥ काहेतैं देशकालपरिच्छेदतैंरहित तथासजातीय विजातीय स्वगत यातीनभेदोंतैंरहित जो सर्वतैंअ धिकवस्तुहै सोईही ब्रह्मशब्दकामुख्य अर्थहै ॥ ऐसेआनंदस्वरूपअद्वितीयब्रह्मविषे याजगत्कीकारणतासंभवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ यतोवाइमानिभूतानि जायंते ॥ अर्थयह ॥ जिसब्रह्मतैं यहसंपूर्णभूतभौतिकजगत् उत्पन्नभयाहै ॥ इसतैं आदिलैकेअनेकश्रुतिस्मृतियों विषे ब्रह्मकूंहीं याजगत्काकारणकह्याहै ॥ जोब्रह्म जगत्काकारणनहींहोवैगा॥तौ तिनश्रुतिस्मृतिवचनोंकी क्यागतिहोवैगी ॥ समाधान ॥ हेब्राह्मणो॥जिनश्रुतिवचनोंविषे ब्रह्मकूं जगत्काकारणकह्याहै॥तिनश्रुतिवचनोंविषेभी निर्विकारअद्वितीयब्रह्मकूं जगत्काकारणकह्यानहीं

किंतु ब्रह्मशब्दकागौणअर्थ जेआकाशादिकहैं ॥ तिनोंविषेही जगत्कीकारणताकथनकरी है॥ शंका हेभगवन् ॥ जैसे यह भौतिकप्रपंच उत्पत्तिवालाहै ॥ तैसे आकाशादिकभी उत्पत्तिवाले हैं॥यातैं तिनआकाशादिकोंकाभी कोईकारणमान्याचाहिये ॥और आत्मनआका शःसंभूतः॥याश्रुतिविषे आत्मातैंहींआकाशकीउत्पत्तिकही है॥यातैं तिनआकाशादिकोंकीकारणता ब्रह्मविषेसंभवै है॥समाधान॥हेब्राह्म णो ॥ वास्तवतैंतौ ताअद्वितीयनिर्विकारब्रह्मविषे किसीपदार्थकीकारणताहैनहीं॥और बहुतश्रुतिस्मृतियोंविषे ब्रह्मकूंहीं जगत्काकारण कह्याहै यातैं ताअद्वितीयब्रह्मकेसमीपस्थितहोइकै ताअद्वितीयब्रह्मविषे कारणताकीप्रतीतिकरावणेहारा कोईदूसरा अनादिकारणकल्पना कऱ्याचाहिये॥जिसकारणकेसंबंधतैं अद्वितीयब्रह्मविषेभी कारणताप्रतीतहोवैहै॥यातैं हेब्राह्मणो॥कारणतैंविनाहीं यहजगत् उत्पन्नहोवै है॥ अथवा अभावतैं यहजगत उत्पन्नहोवै है ॥ अथवा अद्वितीयब्रह्मतैं यहजगत् उत्पन्नहोवै है ॥ यातीनोंपक्षोंविषे पूर्वउक्तसर्वदूषणोंकीप्रा प्तिहोवै है ॥ यातैं तेतीनोंपक्ष असंगतहैं ॥ यातैं यहजान्याजावै है ॥ तिनकारणोंतैंभिन्नकोईदूसरा याजगत्काकारणहै॥सो याजगत्काका रणकौन है ॥ याप्रकारकाविचार हमसर्वब्राह्मणोंकूंकऱ्याचाहिये ॥हेब्राह्मणो॥जिसकारणतैं यहसंपूर्णजगत् उत्पन्नहोवै है॥ताकारणकेविचा रकूं अभीतुम रहणे देवो ॥ किंतु प्रथम हमसंपूर्णब्राह्मण यास्थूलशरीरकेकारणकाविचारकरैं॥जोयहहमारास्थूलशरीर किसकारणतैंउत्प न्नभयाहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ पिताकेवीर्यतैंहीं यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिहोवैहै॥यहवार्ता संपूर्णलोकजाणै हैं ॥ यातैं यासर्वलोकप्रसिद्ध अर्थविषे विचारकरणानिष्फलहै॥समाधान॥हेब्राह्मणो॥त्वचा रुधिर मांस मेद अस्थि मज्जा वीर्य यासप्तधातुवोंविषे अंत्यकासप्तमधातुजो वीर्य है॥तावीर्यतैंहीं जोकदाचित् यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिहोतीहोवै॥तौ पुरुषकेशरीरविषेस्थित तावीर्यतैंभी यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिहो णीचाहिये॥ और पुरुषके शरीर विषेस्थित तावीर्यतैं यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिहोतीनहीं॥यातैं तावीर्यविषे स्थूलशरीरकीकारणतासंभवै नहीं॥शंका॥हेभगवन्॥त्वचादिकधातुवोंकेसाथ मिल्याहुआजोवीर्य है तावीर्यविषे यद्यपियास्थूलशरीरकीकारणतानहीं है॥तथापितिनत्व चादिकधातुवोंतैं पृथक्भावकूंप्राप्तहुआजोवीर्य है ॥ ता वीर्यविषे यास्थूलशरीरकीकारणतासंभवै है॥ समाधान॥हे ब्राह्मणो॥त्वचादिक

धातुवोंतैं भिन्नहुआसोवीर्य जोकदाचित् यास्थूलशरीरकेउत्पत्तिकाकारणहोवै॥ तौ कामरूपअग्निकेतापकरिकै तिनधातुवोंतैंपृथक्होइकै पुरुषकेहृदयदेशविषेप्राप्तहुआजोवीर्य है ॥ तावीर्यतैंभी यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिहोणीचाहिये ॥ और तावीर्यतैं यास्थूलशरीरकीउत्पत्ति होतीनहीं ॥ यातैं तावीर्यविषे यास्थूलशरीरकीकारणतासंभवैनहीं ॥ शंका॥ हेभगवन् ॥ पुरुषकेशरीरविषेस्थितहुआ सो वीर्य यास्थूल शरीरकीउत्पत्तिकरैनहीं ॥ किंतु उपस्थइंद्रियद्वारा तापुरुषकेशरीरतैंबाहरनिकस्याहुआसोवीर्य याशरीरकाकारणहोवै है ॥ समाधान ॥ हेब्राह्मणो ॥ पुरुषकेशरीरतैंबाहरनिकस्याहुआसोवीर्य जोकदाचित् याशरीरकाकारणहोताहोवै॥ तौ निद्रादोषकरिकै तापुरुषका उपस्थ इंद्रियद्वारा निकस्याजोवीर्यहै ॥ तावीर्यतैंभी यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिहोणीचाहिये ॥ और तावीर्यतैं याशरीरकीउत्पत्तिहोतीनहीं॥यातैं तावीर्यविषे याशरीरकीकारणतासंभवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ स्त्रीकेसंभोगकरिकै यापुरुषकेशरीरतैंबाहरनिकस्याजोवीर्यहै ॥सोवी र्य यास्थूलशरीरकाकारणहै ॥ समाधान॥ हेब्राह्मणो स्त्रीकेसंभोगकरिकै पुरुषकेशरीरतैंबाहरनिकस्याहुआ सोवीर्य जोकदाचित् यास्थूल शरीरकाकारणहोवै ॥ तौ स्वप्नविषे स्त्रीकेसंभोगकरिकै तापुरुषकेशरीरतैंबाहरनिकस्याजोवीर्यहै ॥ तावीर्यतैंभीयास्थूलशरीरकीउत्पत्ति होणीचाहिये ॥ और तावीर्यतैं यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिहोतीनहीं ॥ यातैं तावीर्यविषे याशरीरकीकारणतासंभवैनहीं ॥शंका॥ हेभगवन् जाग्रतअवस्थाविषे स्त्रीकेसंभोगकरिकै तापुरुषकेशरीरतैं बाहरनिकस्याजोवीर्य है॥ सो वीर्यही यास्थूलशरीरकाकारण है ॥ समाधान ॥ हेब्राह्मणो ॥ जाग्रतअवस्थाविषे स्त्रीकेसंभोगकरिकै यापुरुषकेशरीरतैंबाहरनिकस्याहुआसोवीर्य जो कदाचित् यास्थू लशरीरकाकारणहोवै ॥ तौबाल्यस्त्रीकेसंभोगकरिकै तथावृद्धस्त्रीकेसंभोगकरिकै यापुरुषकेशरीरतैंबाहरनिकस्याजोवीर्य है ॥ तावी र्यतैंभी यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिहोणीचाहिये ॥ और तावीर्यतैं यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिहोतीनहीं ॥ यातैंतावीर्यविषे याशरीरकी कारणता संभवै नहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ योवनअवस्थावालीस्त्रीकेसंभोगकरिकै या पुरुषकेशरीरतैं बाहरनिकस्या जो वीर्य है सो वीर्य यास्थूलशरीरकाकारण है ॥ समाधान ॥ हे ब्राह्मणो युवान स्त्रीके संभोगकरिकै यापुरुषकेशरीरतैं बाहरनिकस्या हुआ सो वीर्य जो कदाचित् या स्थूलशरीरका कारणहोवै ॥ तौ योवनअवस्थावाली वंध्यास्त्रीकेसंभोगकरिकै यापुरुषके शरीरतैं

बाहरनिकस्याजोवीर्य है ॥ तावीर्यतैंभी यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिहोणीचाहिये ॥ और तावीर्यतैं याशरीरकीउत्पत्तिहोती नहीं ॥ यातैं तावीर्यविषे याशरीरकीकारणतासंभवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जास्त्रीविषे गर्भकेधारणकरणेकीशक्ति है ॥तास्त्रीकेसंभोगकरिकै यापुरुषकेशरीरतैंबाहरनिकस्याजोवीर्य है ॥ सोवीर्य यास्थूलशरीरकाकारण है ॥ वंध्यास्त्रीविषे गर्भकेधारणकरणेकीशक्तिहैनहीं ॥ यातैं तावंध्यास्त्रीकेसंभोगकरिकै यापुरुषकेशरीरतैं बाहरनिकसेहुएवीर्यविषे याशरीरकीकारणताहोवैनहीं ॥ समाधान ॥ हे ब्राह्मणो ॥ गर्भके धारणकरणेविषेसमर्थयुवानस्त्रीकेसंभोगकरिकै यापुरुषकेशरीरतैंबाहरनिकस्याहुआसोवीर्य जोकदाचित् यास्थूलशरीरकाकारणहोवै ॥ तौ तास्त्रीकेसंभोगकरिकै कामीपुरुषोंका दिनदिनविषेवीर्यनिकसै है॥यातैं दिनदिनविषे तावीर्यतैं यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिहोणी चाहिये और दिनदिनविषे तावीर्य तैं यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिहोतीनहीं ॥ यातैं तावीर्यविषे या शरीरकीकारणतासंभवैनहीं ॥ यातैं हे ब्राह्मणो यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिविषे किसीप्रकारकरिकैभी तावीर्यकूंकारणतासंभवैनहीं॥और मातापितावियेजो यास्थूलशरीरकीकारणताहोवै है सो वीर्यद्वाराहोवै है ॥ तावीर्यविषे जभी यास्थूलशरीरकीकारणतासिद्धनहींभई ॥ तभी तामातापितावियेजो याशरीरकीकारणता किसप्रकारसिद्धहोवैगी ॥ किंतु सोमातापिताभी यास्थूलशरीरकाकारणनहीं है ॥ इतनैंकरिकै वीर्यके विद्यमानहुएभी या स्थूलशरीरकी अनुत्पत्तिरूप अन्वयव्यभिचार निरूपणकऱ्या ॥ अब तावीर्यकेअभावहुएभी यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिरूप व्यतिरेकव्यभिचारकानिरू पणकरै हैं ॥ हेब्राह्मणो ॥ मत्कुणयूकादिकजेस्वेदजशरीर हैं ॥ तथा वृक्षादिकजेउद्भिज्जशरीर हैं॥तेस्वेदजउद्भिज्जशरीर पुरुषकेवीर्यतैं विनाहींउत्पन्नहोवै हैं ॥ याकारणतैंभी तापुरुषकेवीर्यविषे यास्थूलशरीरकीकारणतासंभवैनहीं ॥ इतनैंकरिकै पुरुषकेवीर्यविषे यास्थूलश रीरकीकारणताकाखंडनकऱ्या ॥ अब धर्मअधर्मरूपकर्मविषे याशरीरकीकारणताखंडनकरै हैं ॥ हेब्राह्मणो ॥ जो वादी पुण्यपापरूपक र्मविषे याशरीरकीकारणता अंगीकारकरै है॥तावादीसैंयहपूछाचाहिये॥याशरीरकेकारणरूप जेपुण्यपापरूपकर्म हैं॥तिनकर्मोंका कौनका रणहै।शुद्धआत्मा तिनकर्मोंकाकारण है अथवा यहस्थूलशरीरही तिनकर्मोंकाकारणहै।तहां शुद्धआत्मा तिनकर्मोंकाकारणहैयहप्रथमपक्ष

जोवादीअंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं आत्मज्ञानकरिकै जिनपुरुषोंकामोक्षभयाहै॥तिनमुक्तपुरुषोंकाभी शुद्धआत्मा विद्यमानहै ॥ यातैं सोमुक्तपुरुषोंकाशुद्धआत्माभी पुण्यपापरूपकर्मोंकूंउत्पन्नकरैगा॥तथातापुण्यपापरूपकर्मकेसुखदुःखरूपफलकूंभीभोगैगा॥और जो पुरुष पुण्यपापकर्मकाकरताहोवै है तथा ताकेफलकाभोक्ताहोवैहै॥सोपुरुषमुक्तिकूंप्राप्तहोवैनहीं किंतु बंधकूंप्राप्तहोवै है यातैंशुद्धआत्माविषे कर्मोंकीकारणतामानणमैं किसीभीपुरुषकूं मोक्षकी प्राप्तिनहींहोवैगी।और यहस्थूलशरीरही तिनकर्मोंकाकारणहै यहदूसरापक्षजोवादीअंगीकारकरै तावादीसैंयहपूछाचाहिये ॥ तिनकर्मोंकाकारणरूपजोयहस्थूलशरीरहै ॥ तास्थूलशरीरका कौनकारणहै॥सोपुण्यपापरूपकर्महीं तास्थूलशरीरकाकारणहै ॥ अथवा तापुण्यपापतैंभिन्न कोईदूसरापदार्थ ताशरीरकाकारणहै ॥ तहां पुण्यपापरूपकर्म तास्थूलशरीरका कारण है यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं जभी प्रथम पुण्यपापरूपकर्म उत्पन्नहोवै॥ तभी तिनकर्मोंतैं यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिहोवै ॥ और जभी प्रथम यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिहोवै ॥ तभी यास्थूलशरीरतैं तिनकर्मोंकीउत्पत्तिहोवै ॥ याप्रकार अन्योन्याश्रयदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ यातैं यास्थूलशरीरविषे तिनकर्मोंकीकारणतासंभवैनहीं ॥ और पुण्यपापकर्मतैंभिन्न कोईदूसरापदार्थहीं यास्थूलशरीरकाकारण है ॥ यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ तावादीनैं सोदूसराकारणकह्याचाहिये ॥ तहां सोवादी यास्थूलशरीरका जोसूक्ष्मशरीर कारणमानैं तावादीसैंयहपूछाचाहिये ॥ सोसूक्ष्मशरीर किसीएकस्थूलशरीरकाकारणहै ॥ अथवा सोसूक्ष्मशरीर सर्वस्थूलशरीरोंकाकारणहै ॥ तहां सोसूक्ष्मशरीर किसीएकस्थूलशरीरकाकारणहै ॥ यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं जोपदार्थ जिसकार्यकेकिसीएकव्यक्तिकूं उत्पन्नकरै है॥सोपदार्थ ताकार्यकाकारणहोवै नहीं ॥ किंतु सोपदार्थ ताकार्यकेप्रतिं अन्यथासिद्धहोवै है॥ जैसे कुलालका रासभ यद्यपि यत्किंचित्घटव्यक्तिकाकारणहै॥ तथापि सोरासभ सर्वघटोंका कारणहै नहीं ॥ यातैं सोरासभ घटरूपकार्यकीउत्पत्तिविषेअन्यथासिद्धहै ॥ तैसे किसीएकस्थूलशरीरकीउत्पत्तिकरणेहारा सोसूक्ष्मशरीरभी यास्थूलशरीररूपकार्यकीउत्पत्तिविषे अन्यथासिद्धहीहोवैगा ॥ इहां सर्वकार्यव्यक्तियोंकीउत्पत्तिविषे नियमकरिकै जे कारणहोवै हैं ॥ तिन कारणोंतैंभि

न्नपदार्थोंकानाम अन्यथासिद्धहै ॥ यातैं तासूक्ष्मशरीरविषे किसीएकस्थूलशरीरकीकारणतासंभवैनहीं ॥ और सोसूक्ष्मशरीरसर्वस्थूलशरीरोंकाकारणहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं तासूक्ष्मशरीरविषे जोकदाचित् सर्वस्थूलशरीरोंकीकारणताहोवै ॥ तौ जैसे देवदत्तनामापुरुषकेसूक्ष्मशरीरतैं तादेवदत्तनामापुरुषकास्थूलशरीर उत्पन्नहोवैहै ॥ तैसेतादेवदत्तनामापुरुषकेसूक्ष्मशरीरतैं यज्ञदत्तनामापुरुषकास्थूलशरीरभी उत्पन्नहोणाचाहिये ॥ और देवदत्तनामापुरुषकेसूक्ष्मशरीरतैं यज्ञदत्तादिकपुरुषोंकेस्थूलशरीर उत्पन्नहोतेनहीं ॥ यातैं तासूक्ष्मशरीरविषे सर्वस्थूलशरीरोंकीकारणतासंभवैनहीं ॥ किंवा ॥ सोसूक्ष्मशरीर जोकदाचित् यास्थूलशरीरकाकारणहोवै ॥ तौ तासूक्ष्मशरीरतैंहीं यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिसंभवहोइसकै है यातैं तावादीनैं अंगीकारकरी जापुण्यपापकर्मविषे यास्थूलशरीरकीकारणता सोव्यर्थहोवैगी ॥ किंवा ॥ जैसे यहस्थूलशरीर उत्पत्तिवालाहै ॥ तैसे सोसूक्ष्मशरीरभी उत्पत्तिवालाहै ॥ यातैं तासूक्ष्म शरीरकाभीकोईकारण तावादीनैंकह्याचाहिये ॥ तहां सोवादी जोकदाचित् अज्ञानकूंही तासूक्ष्मशरीरकाकारण मानैं ॥ तौ ताअज्ञानकरिकैही यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिहोइसकैहै ॥ तिनदोनोंकेमध्यविषे तासूक्ष्मशरीरकाअंगीकारकरणा निष्फलहै ॥ किंवा ॥ सोअज्ञानभी पुण्यपापरूपकर्मकीअपेक्षातैंविनाहींतासूक्ष्मशरीरकाकारणहै ॥ अथवा सोअज्ञान पुण्यपापरूपकर्मोंकीअपेक्षावालाहुआ तासूक्ष्मशरीरकाकारणहै ॥ तहां सोअज्ञान कर्मकीअपेक्षातैंविनाहीं तासूक्ष्मशरीरकाकारणहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं॥काहेतैंपुण्यपापरूपकर्मकीअपेक्षातैंविनाहीं सोअज्ञान जैसेतासूक्ष्मशरीरकीउत्पत्तिकरैहै तैसेसोनिरपेक्षअज्ञान यास्थूलशरीरकीभीउत्पत्तिकरैगा ॥ यातैं तासूक्ष्मशरीरविषे यास्थूलशरीरकीकारणतामानणी निष्फलहोवैगी ॥ और सोअज्ञान पुण्यपापरूपकर्मकीअपेक्षावालाहुआ तासूक्ष्मशरीरिकाकारण है यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं पुण्यपापादिककार्योंकीवासनाकरिकैयुक्तहुआ सोअज्ञान जैसे तासूक्ष्मशरीरकाकारणहोवै है ॥ तैसे सोअज्ञान यास्थूलशरीरकाभीकारणहोवैगा ॥ यातैं तासूक्ष्मशरीरविषे यास्थूलशरीरकीकारणतामानणी निष्फलहोवैगी ॥ किंवा ॥पुण्यपापरूपकर्मोंकीवासनावोंकूं जोकदाचित् तासू

क्ष्मशरीरकाकारणमानिये ॥ तो घटीयंत्रकीन्याईं अनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवैगी॥काहेतैं संस्कारोंकानाम वासनाहै॥तेवासनारूपसंस्कार विनाशअवस्थावालेपुण्यपापरूपकर्मोंतैंउत्पन्नहोवै हैं॥और जोवस्तु पूर्वविद्यमानहोवै है॥ताकाही नाश होवैहै॥ अविद्यमानवस्तुकानाश होवैनहीं ॥ यातैं तिनवासनारूपसंस्कारोंतैंपूर्व तिनपुण्यपापरूपकर्मोंकीविद्यमानता अवश्यअपेक्षितहै ॥ यातैं यहअर्थ सिद्धभया पुण्य पापरूपकर्मोंतैं वासनारूपसंस्कार उत्पन्नहोवै है ॥ और तिनसंस्कारोंतैं सूक्ष्मशरीर उत्पन्नहोवै है॥और तासूक्ष्मशरीरतैं यहस्थूलशरीर उत्पन्नहोवै है॥और यास्थूलशरीरतैं पुनःपुण्यपापरूपकर्म उत्पन्नहोवै हैं॥याप्रकार घटी यंत्रकीन्याईं अनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवै है॥यातैं हे ब्राह्मणो॥ याप्रकारके पूर्वउक्तदूषण जिसविषेनहींप्राप्तहोवैं॥ऐसाकोई यास्थूलशरीरकाकारण प्रतीतहोतानहीं॥तात्पर्ययह॥सर्वलोकोंकूं प्रत्यक्षप्रमाणकरिकैसिद्ध जोयहस्थूलशरीरहै ॥ तास्थूलशरीरकेकारणकाभी जभी हमलोकोंकूं निश्चयनहींभया ॥ तभी यासर्वजगत्के कारणकानिश्चय हमजीवोंकूं किसप्रकारहोवैगा ॥ और कारणतैंविना किसीकार्यकीउत्पत्तिहोतीनहीं ॥यातैं यहजान्याजावैहै॥ यास्थूल शरीररूपकार्यकाभी कोईकारणहोवैगा ॥ परंतुताकारणकानिश्चय हमलोकोंकूंहै नहीं ॥ जो यहस्थूलशरीर इसकारणतैंउत्पन्नभया है ॥ और हेब्राह्मणो ॥ यहहमाराशरीर अन्नतैंउत्पन्नहोवै है ॥ याप्रकारकावचन जोवादी कहै॥सोभीसंभवैनहीं॥ काहेतैं यास्थूलशरीरकीउत्प त्तितैंपूर्व कोईजीव अन्नकाभक्षणकरतानहीं ॥ किंतु यास्थूलशरीरकीउत्पत्तितैंअनंतरहीं याशरीरकीतृप्तिवासतै तथापुष्टिवासतै हमसर्व जीव अन्नकाभक्षणकरतेहैं ॥ यातैं ताअन्नविषेभी यास्थूलशरीरकीकारणतासंभवैनहीं ॥ इतनैकरिकै यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिकेकारण काविचारकऱ्या ॥ अब याशरीरकीस्थितिकेकारणकाविचारकरैं हैं॥हे ब्राह्मणो ॥ यद्व्रीहियवादिकअन्न जैसे यास्थूलशरीरकेउत्पत्तिका कारणनहीं है ॥ तैसे सोअन्न याशरीरकेजीवनकाभीकारणनहीं है ॥ काहेतैं जोकदाचित् यहअन्न याप्राणियोंकेजीवनकाकारणहोवै ॥तो ताअन्नकेविद्यमानहुए तिनप्राणियोंकामृत्यु नहींहोणाचाहिये ॥ और अन्नके विद्यमानहुएभी तिनप्राणियोंकामृत्यु देखणेविषे आवै है ॥ यातैं याअन्नविषे जीवनकीकारणतासंभवैनहीं ॥उलटा ताअन्नकेदोषतैं याजीवोंके शरीरविषे नानाप्रकारकी व्याधियां उत्पन्न होवै हैं ॥

ताव्याधियोंकरिकै तिनजीवोंकीमृत्युहोवैहै ॥ इसप्रकार चिकित्साशास्त्रविषे व्याधिकीउत्पत्तिद्वारा ता अन्नकूंहीं जीवोंकेमृत्युकाकारण कह्याहै ॥ यातैं ताअन्नविषे जीवनकीकारणतासंभवैनहीं॥और हे ब्राह्मणो॥जैसे अन्नकीप्राप्ति या पुरुषोंकेजीवनकाकारणनहींहै॥तैसेअन्य विषयोंकीप्राप्तिभी यापुरुषोंकेजीवनकाकारणनहीं है ॥ किंतु उलटा तिनविषयोंकीप्राप्ति यापुरुषोंके मरणकाहीकारणहै ॥ तहाँ स्त्रीरूप विषयकीप्राप्तितैं याकामीपुरुषोंकूं हृदयविषे परमतापकीप्राप्तिहोवै है ॥ यातैं स्त्रीरूपविषयकीप्राप्तिभी यापुरुषोंके दुःखकाहीकारण है ॥ और जोरोगीपुरुष आपणेशरीरकेभीतर घंटाके शब्दसमान प्राणवायुके शब्दोंकूं श्रवणकरै है ॥ सोरोगीपुरुष थोडेकालविषेही मृत्युकूं प्राप्तहोवैहै ॥ याप्रकार निमित्तशास्त्रकेजाननेहारेपुरुष कथनकरैं हैं ॥यातैं शब्दरूपविषयभी याजीवोंकेमरणकाहीकारणहै॥ अब स्त्रीरूप विषयकीप्राप्तिविषे मरणकीकारणता स्पष्टकरिकैदिखावै हैं ॥ हेब्राह्मणो ॥ वेदकेअर्थकूंजाननेहारे जेविद्वान्पुरुषहैं ॥ तेविद्वान्पुरुष याप्र कार कथनकरैं हैं ॥ जोकामीपुरुष शास्त्रकी मर्यादाकापरित्यागकरिकै रात्रिदिनविषे आपणीस्त्रीमैं वीर्यकापरित्यागकरै है सोकामीपुरुष पापकूंप्राप्तहोवै है ॥ तापापकर्मकरिकै सोकामीपुरुष शीघ्रही मृत्युकूंप्राप्तहोवै है ॥ और परस्त्रीविषेतो एकवार वीर्यके परित्यागकियेतैंभी याकामीपुरुषकूं पापकीहीप्राप्तिहोवैहै ॥ तापापकर्मकरिकै सोपरस्त्रीगामीपुरुष शीघ्रही मृत्युकूंप्राप्तहोवै है॥ तहांश्रुति ॥ प्राणंवाएतेप्रस्कं दंतियेदिवारत्यासंयुज्यंते ॥ अर्थयह ॥ जेपुरुष आपणीस्त्रीकेसाथ दिनविषे संभोगकरैं हैं ॥ तेपुरुष आपणेप्राणोंकूंहींनष्टकरैं हैं॥ तहांस्मृ तिभी ॥ श्लोक ॥ परदारानगंतव्या सर्ववर्णेषु कर्हिचित् ॥ नहीदृशमनायुष्यं त्रिपुलोकेषुविद्यते ॥ अर्थयह ॥ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र याचारिवर्णोंविषे किसीभीपुरुषनैं परस्त्रीकागमननहींकरणा ॥ काहेतैं यातीनलोकोंविषे॥ जैसे परस्त्रीकागमन यापुरुषके आयुष्कीहानि करैहै ॥ तैसे दूसराकोईकर्म यापुरुषकेआयुष्कीहानिकरतानहीं॥१॥ याप्रकार तेशास्त्रवेत्तापुरुष कथनकरैं हैं ॥ और योगशास्त्रकेजान णेहारेजेविद्वान्पुरुषहैं ॥ तेविद्वान्पुरुषतो याप्रकारकथनकरैं हैं ॥ जैसे यालोकविषे जिसवृक्षकारस बाहरनहींनिकसैहै॥सोवृक्ष तारसके प्रभावतैं चिरकालपर्यंत स्थितहोवै है ॥ और जिसवृक्षकारस बाहरनिकसैहै ॥ सोवृक्ष थोडेकालमैंहीं सूखिकै मूलसहितनष्टहोवैहै॥तैसे

जिसपुरुषकवीर्यरूपरस याशरीरतैंबाहरनहींनिकसैहै॥ सोपुरुष तावीर्यरूपरसकेप्रभावतैं कामदेवकीन्याईं सुंदरकांतिवालाहुआ चिरका
लपर्यंत जीवैहै ॥ और जिसपुरुषका सोवीर्यरूपरस याशरीरतैंबाहरनिकसैहै॥ सोपुरुष शीघ्रहीमृत्युकूंप्राप्तहोवै है ॥किंवा ॥ जैसे वृक्षकी
शाखावोंविषे तथास्कंधोंविषे स्थितजोरसहै॥तारसकेनिर्गमनहुएभी सोवृक्ष नाशकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और जभी तावृक्षकेमूलतैंरसनिकसैहै
तभी सोवृक्ष शीघ्रही नाशकूंप्राप्तहोवै है॥तैसे यापुरुषकेहस्तपादादिकअंगोंविषेस्थित जेरुधिरादिकरसहैं॥तिनरुधिरादिकरसोंकेनिर्गमन
हुएभी यहपुरुष नाशकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और जभी यापुरुषकेमस्तकतैं सोवीर्यरूपरसनिकसैहै ॥ तभी यहपुरुष शीघ्रहीनाशकूंप्राप्तहोवैहै
यातैं रुधिरादिकसर्वधातुवोंतैं सोवीर्यरूपसप्तमधातु उत्कृष्टहै॥किंवा॥जैसे लोकप्रसिद्ध पिप्पलादिकवृक्षोंकामूलहोवै है॥ तैसे याशरीररूप
वृक्षका यहमस्तकहीमूलहै ॥ तहांश्रुति ॥ ऊर्ध्वमूलोह्यवाक्छाखएषोऽश्वत्थःसनातनः ॥ अर्थयह॥यालोकप्रसिद्धअश्वत्थावृक्षोंकातो
मूलनीचेहोवै है और शाखा ऊपरहोवैहै॥और प्रवाहरूपकरिकैअनादि जोयहशरीररूपअश्वत्थकावृक्षहै॥ताकामस्तकरूपमूलतो ऊपरहै
और हस्तपादादिकअवयवरूपशाखा नीचेहैं॥किंवा॥जैसेप्रसिद्धवृक्षकेमूलविषेमध्यभागहोवैहै॥तैसेयापुरुषकेमस्तकरूपमूलविषेमस्तिष्क
नामामध्यभागरहै है॥और जैसे तावृक्षकेमूलकेमध्यभागविषेस्थितजोरसहै॥सोरस तावृक्षकेजीवनकाकारणहै॥ तैसे यापुरुषकेमस्तकरूप
मूलकेमस्तिष्कभागविषेस्थित जोवीर्यरूपरसहै॥सोवीर्यरूपरसही यापुरुषकेजीवनकाकारणहै ॥ इहां पुरुषकेमस्तकविषेस्थित जो श्लेष्म
लविशिष्टमांसकापिंडविशेषहै ताकानाम मस्तिष्कहै॥कैसाहैसोमस्तिष्क ॥ यापुरुषकेदशमद्वारकूंनिरोधकरणेहाराहै॥तथा चंद्रमाकेबिंब
समान जाकाशुक्लवर्ण है ॥ तथा संपूर्णनाडीरूप सूत्रोंकूंधारणकरणेहारा है ॥ और जिस मस्तिष्कविषे पद्मपत्रके समान सहस्रस्थूलना
डियां रहैहैं॥ तथा ते सहस्रनाडियां तहां सहस्रदलवालेकमलकूंरचै हैं ॥ और जिसमस्तिष्कनामादेशविषे यहजीवरूपहंस गंगायमुनाकाप
रित्यागकरिकै पश्चिमवाहनी सरस्वतीरूपमार्गकरिकैप्राप्तहोवैहै॥कैसाहैसोजीवरूपहंस मनरूपीमानससरोवरविषे निवासकरणेहाराहै॥इहां
इडानामाजावामनाडी है ताकानाम गंगाहै॥और पिंगलानामाजादक्षिणनाहीहै ताकानाम यमुनाहै॥ और तिनदोनोंनाडियोंके मध्यविषे

स्थित जा सुषुम्नानामानाडी है ताकानाम सरस्वती है ॥ यहवार्ता स्वरोदयशास्त्रविषेभीकही है॥ तहाँश्लोक॥ इडागंगेतिविज्ञेया पिंगला
यमुनानदी ॥ मध्ये सरस्वतीविद्यात्प्रयागादिसमस्तयोः॥अर्थयह ॥ इडानामावामनाडी गंगारूपहै ॥ और पिंगलानामादक्षिणनाडी यमु
नारूपहै ॥ और तिनदोनोंकेमध्यविषेस्थित सुषुम्नानामानाडी सरस्वतीरूपहै॥और तिनतीनोंकासंगम प्रयागकेसमानहै ॥ १ ॥ किंवा॥
याशरीरविषेस्थित जे मूलाधार स्वाधिष्ठान मणिपूरक अनाहत विशुद्धि आज्ञा यहषट्चक्र हैं॥जे षट्चक्र कुंडलिनीनामानाडीकेविचरणे
कास्थानहैं ॥ ताषट्चक्ररूपीमार्गकाज्ञान यापुरुषकूं गुरुकीकृपातैंहोवै है॥ गुरुकीकृपातैंविना तिसषट्चक्ररूपीमार्गकाज्ञान यापुरुषकूं
होवैनहीं ॥ और गुरुकीकृपातैंरहितहुआ यहजीवरूपहंस जभी ताषट्चक्ररूपमार्गकूंनहींजाणैहै ॥ तभी सो जीवरूपहंस या शरीरकेअने
कनाडियोंविषे वारंवार भ्रमणकरै है ॥ तथा तिननाडियोंविषेस्थित अन्नकेस्थूलसूक्ष्मरसोंकूंभोगै है ॥ परंतु ताजीवरूपहंसका ऊर्ध्वगम
नहोवैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे जलकेसरोवरविषेस्थितजोप्रसिद्धहंसहै ॥ ताहंसका जभी ताजलकेऊपर आकाशविषे गमनकरणेकामार्ग
निरुद्धहोवै है॥ तभी सोहंस ताजलविषेहीभ्रमणकरै है॥ तथा ताजलके पदार्थोंकूंभक्षणकरतहुआ सोहंस तहाँहींस्थितहोवै है॥तैसे मोक्ष
कामार्गरूपजासुषुम्नानामानाडी है ॥ ताकूं जोजीवरूपहंस नहींजानैहै ॥ सोजीवरूपहंस यासंसारविषेहीवारंवार भ्रमणकरै है॥ ऐसीसुषुम्ना
नामानाडीरूपमार्गद्वारा यहजीवरूपहंस जिसमस्तिष्कदेशकूंप्राप्तहोवै है॥ तामस्तिष्कविषेस्थित जोयहवीर्यरूपसप्तमधातुहै ॥ सोवीर्यरू
पसप्तमधातु त्वगादिकषट्धातुवोंकासाररूपहै ॥ और सोवीर्यरूपसप्तमधातुभी याशरीरविषे तीनप्रकारकेपरिणामकूं प्राप्तहोवै है ॥ तहाँ
कामदोषतैंरहितजोजीवोंकाहृदयकमलहै॥ताहृदयकमलविषेविशेषरूपकरिकै स्थितहुआसोवीर्य तथा अन्यहस्तपादादिकअंगोंविषेसामा
न्यरूपकरिकैस्थितहुआसोवीर्य बलरूपप्रथमपरिणामकूंप्राप्तहोवैहै॥जोबल सर्ववैरियोंकूंभयकीप्राप्तिकरै है॥औरमस्तकविषेस्थितहुआसो
वीर्य सामर्थ्यरूपद्वितीयपरिणामकूंप्राप्तहोवैहै॥जोसामर्थ्ययाशरीरकेचिरकालपर्यंतस्थितिकाकारणहै ॥औरकामरूपअग्निकरिकैक्षोभकूंप्रा
प्तहुआभीजोवीर्यनिरोधकूंप्राप्तहोवैहै॥तथा जोवीर्य अधिकताकूंप्राप्तहोवैहै॥सोवीर्य ओजनामाअष्टमधातुरूप तृतीयपरिणामकूंप्राप्तहोवै है॥

जिस ओजकरिकै यहपुरुषनिरोगरहैहै ॥ इतनैंकरिकै तावीर्यकेनिरोधकरणेकाफल निरूपणकऱ्या॥अब तावीर्यकेपरित्यागकरणेविषे दोष कानिरूपणकरैहैं ॥ याजीवोंका सोसप्तमधातुरूपवीर्य जभी याशरीरतैंबाहरनिकसैहै ॥ तभी सोपूर्वउक्तफल तिनजीवोंकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं ताफलकीप्राप्तिवासतै यहअधिकारीपुरुष मंत्र औषधि ध्यान इत्यादिकउपायोंकरिकै तावीर्यकूं शरीरतैंबाहरनिकसणेनहींदेवै॥तहाँ वीर्यकेनिरोधकायहलक्षणहै॥जैसे यालोकविषे अग्निकेसंबंधकरिकै वृक्षोंकारस बाहरनिकसेहै ॥ तैसेस्त्रीरूपअग्निकेसंबंधहुएभी यापुरुषरूपीवृक्षकावीर्यरूपरस जभी बाहरनहींनिकसै ॥ तभीयावीर्यकानिरोधजानणा ॥ तावीर्यकेनिरोधकरिकै योगीपुरुषोंकूं आकाशविषेगमनादिकसिद्धियोंकीप्राप्तिहोवैहै ॥ ताफलकूं वीर्यकेपरित्यागकरणेहाराभोगीपुरुष प्राप्तहोवै नहीं ॥ उलटा तावीर्यकेपरित्यागकरणेतैं सोभोगीपुरुष नाशकूंहींप्राप्तहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जसे अग्निके संबंधकरिकै जिसवृक्षकारस एकवारभी बाहरनिकस्याहै॥ सोवृक्षभी जभी शीघ्रहीनाशकूंप्राप्तहोवैहै॥तभी अनेकवार अग्निकेसंबंधकरिकै जिसवृक्षकारस अनेकवार बाहरनिकसैहै सो वृक्ष शीघ्रहीनाशकूंप्राप्तहोवैहैयाके विषेक्याकहणाहै ॥ तैसे एकवार स्त्रीरूपअग्निकेसंबंधकरिकै जिसपुरुषरूपीवृक्षका वीर्यरूपरस एकवारभी बाहरनिकसैहै॥सोपुरुषभीजभी नाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभी अनेकवार स्त्रीरूपअग्निकेसंबंधकरिकै अनेकवार वीर्यरूपरसकेनिकसणेतैं यहपुरुषरूपवृक्ष नाशकूंप्राप्तहोवै है याके विषेक्याकहणाहै ॥ यातैं यापुरुषनैं अनेकउपायोंकरिकै तावीर्यकानिरोधकरणा ॥ हेब्राह्मणो इसप्रकार योगशास्त्रविषे स्त्रीकेसंभोगकूं पुरुषकेमृत्युकाकारणकह्याहै ॥ यातैं सोस्त्रीकासंभोगरूपविषयभी यापुरुषकेजीवनकाकारणनहीं ॥ और हेब्राह्मणो ॥ जैसे स्त्रीकासंभोगरूपविषय याजीवोंकेमरणकासाधनहै ॥ तैसे चंदनकर्पूरादिकोंकरिकैयुक्त जेनानाप्रकारके लेप हैं ॥ तेलेपभी यापुरुषोंकेशरीरविषे शीत वात कफ सन्निपातादिकरोगोंकीउत्पत्तिकरैहैं ॥ तिनशीतादिकरोगोंकरिकै सोपुरुष शीघ्रहीमृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं चंदनादिकोंके लेपभी शीतादिकोंकीउत्पत्तिद्वारा यापुरुषकेमृत्युकेहीकारणहैं ॥ हेब्राह्मणो ॥ इसतैंआदिलेके जितनेकीनेत्रादिकइंद्रियोंकेरूपादिकविषयहैं ॥ तेसंपूर्णविषय याजीवोंकेमृत्युकेहीकारणहैं ॥ तथा तिनविषयोंके प्राप्तिकी इच्छावाले जे दुर्जनशत्रुहैं तथा सिंहसर्पादिक हैं ॥

तेभी यापुरुषोंकेमृत्युकाहीकारणहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ नेत्रादिकइंद्रियोंकेजेरूपादिकविषयहैं ॥ तेरूपादिकविषय जभी याशरीरोंके जीवनकाकारणभीनहींभये ॥ तभी तेरूपादिकविषय याशरीरोंकीउत्पत्तिकेकारण किसप्रकारहोवैंगे॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ प्राणोंकाजोश्वासप्रश्वासरूपव्यापारहै ॥ सोव्यापारही याशरीरोंकेजीवनकाकारणहै॥ समाधान ॥ हेब्राह्मणो॥ सोप्राणोंकाश्वासप्रश्वासरूपव्यापारभी याशरीरोंकेजीवनकाकारणनहीं ॥ काहेतैं वृक्षादिकस्थावरशरीरोंविषे सोप्राणोंकाव्यापार किसीकूंदेखणेविषेआवतानहीं ॥ तथापि तेवृक्षादिकजीवनकूंप्राप्तहुए देखीतेहैं ॥ तथा मनुष्यादिकजंगमशरीरभी मूर्च्छाअवस्थाविषे ताप्राणकेव्यापारतैंरहितहुएभी जीवतेदेखीते हैं॥यातैंसोप्राणोंकाश्वासप्रश्वासरूपव्यापारभी याशरीरोंकेजीवनकाकारणनहीं ॥शंका॥हेभगवन् ॥ जठराग्नि तथारुधिर या शरीरोंकेजीवनकाकारणहै ॥समाधान ॥हेब्राह्मणो ॥जठराग्नि तथा रुधिर यहदोनोंभी याशरीरकेजीवनकाकारणनहीं ॥ काहेतैं कितनेकरोगीपुरुषोंकेनाडीकूं शस्त्रकरिकैछेदनकियेहुएभी रुधिरनिकसतानहीं ॥ तथा कितनेकरोगीपुरुषोंकेशरीरकास्पर्शकिएहुएभी तिनोंकेशरीरविषेउष्णताप्रतीत होती नहीं ॥ तथापि तेरोगीपुरुष जीवतेहुएदेखणेमैंआवतेहैं ॥ यातैं रुधिर तथाजठराग्नि यहदोनोंभी पुरुषकेजीवनकाकारणनहीं॥ हेब्राह्मणो ॥ हमसंपूर्णप्राणी किसपदार्थकरिकैजीवते हैं ॥ याप्रकार जीवनकेकारणकानिश्चयकरणेविषेभी जभीहम समर्थनहींभये॥तभीयाशरीरोंकी उत्पत्तिकेकारणकानिश्चयकरणेविषे हम किसप्रकार समर्थहोवैंगे॥किंतु ताकारणकेनिश्चयकरणेविषे हम समर्थनहींहोवैंगे ॥ इतनैंकरिकै याशरीरकेजीवनकेकारणकाविचारकऱ्या ॥ अब याशरीरकेआधारकाविचारकरैं हैं ॥ हेब्राह्मणो ॥ यहहमाराशरीर जिस आधारविषेस्थितहै ॥ ताआधारकूंभी हम जाणते नहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् यहप्रत्यक्षभूमिहीं याशरीरकाआधारहै ॥ समाधान ॥ हे ब्राह्मणो याभूमिविषे याशरीरकीआधारतासंभवैनहीं ॥ काहेतैं याशरीरकाआधाररूपजाभूमिहै ॥ सोभूमि किसआधारविषेरहै है ॥ और सोभूमिकाआधारभी किसआधारविषेरहैहै ॥ इसप्रकार उत्तर उत्तर आधारकी कल्पनाकरणेतैं अनवस्थादोषकी प्राप्ति होवैगी ॥ याकारणतैं यहभूमि याशरीरकाआधारनहीं ॥ और हे ब्राह्मणो ॥ या शरीरकी अविशेषताहुएभी चित्तकी गति नानाप्रकारकी देखणे विषे

आवेहै॥ यातैं याशरीरकाजोआधारहै सोचित्तकाआधारसंभवैनहीं॥किंतु याशरीरकेआधारतैंभिन्नहीकोई चित्तकाआधार कह्याचाहिये॥ किंवा ॥ याभूमिविषे इसशरीरकीआधारतासंभवैनहीं॥काहेतैं जापदार्थकेविद्यमानहुए आधेयवस्तुकानीचेपतननहींहोवै॥तापदार्थकाना म आधारहै॥जैसे स्तंभोंकेविद्यमानहुए गृहकानीचेपतनहोवैनहीं॥यातैं तेस्तंभ तागृहकाआधारहैं॥सोयाप्रकारका आधारकालक्षणयाभू मिविषे घटतानहीं ॥ काहेतैं ऊँचीभूमिविषे अथवा किसीआसनविषे स्थितहुआभीयहपुरुष जभी निद्राकरिकैयुक्तहोवैहै ॥ तभी सोपुरुष आपणेशरीरकूं स्थितकरणेविषेसमर्थनहींहोवैहै ॥ किंतु तानिद्राकरिकै सोपुरुष नीचेपडिजावैहै॥ यातैं यहजान्याजावैहै॥ यहशरीरभूमिके आधारनहीं॥ किंतु ताभूमितैंभिन्नकिसीआधारविषे यह शरीर स्थितहै ॥ हे ब्राह्मणो ॥ ताशरीरके आधारकूं तथा याभूमिकेआधार कूंभी जभी हम नहीं जाणिसकते ॥ तभी या शरीरके जीवनके कारणकूं तथा उत्पत्तिके कारणकूं हम किसप्रकार जाणि सकैंगे ॥ किंतु ताकारणकूं हम नहीं जाणिसकैंगे ॥ इतनैंकरिकै याशरीरके आधारकाविचारकऱ्या ॥ अब याशरीरके प्रवर्तकका विचारकरैहैं ॥ हेब्राह्मणो ॥ जैसे यालोकविषे भूतकेआवेशकरिकैयुक्त जोपुरुषहै॥ सोपुरुष आपणेइच्छातैंविनाहीं नानाप्रकारकेशुभअशु भकर्मोंकूंकरैहै ॥ तैसे शुभअशुभकर्मोंकेकरणेकीइच्छातैंरहितजोहमजीवहैं ॥ तिनोंकूं हृदयदेशविषेस्थितहोइकै कोनदेव तिनकर्मोंविषे प्रवृत्तकरैहै ॥ यहवार्ता पांडवगीताविषे दुर्योधननैंभीकहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ जानामि धर्मनचमेप्रवृत्तिः जानामि पापं नचमे निवृत्तिः ॥ केनापिदेवेनहृदिस्थितेन यथानियुक्तोस्मि तथाकरोमि ॥ अर्थ यह ॥ मैं दुर्योधन धर्मकूंजाणताहूं ॥ तौभी ताधर्मविषे मेरी प्रवृत्तिहोती नहीं ॥ और मैं पापकर्मकूंजाणताहूं ॥ तौभी तापापकर्मतैं हमारीनिवृत्तिहोतीनहीं ॥ यातैं यहजान्याजावै है ॥ हमारेहृदयदेशविषेकोई देवस्थितहै ॥ सोदेव जिसजिसकर्मविषे हमारेकूंप्रेरणाकरैहै ॥ तिसीतिसीकर्मकूं मैं पराधीनहुआकरताहूं ॥ सो नानाप्रकारके शुभअशु भकर्मोंविषे हमारेकूं प्रवर्त्तकरणेहारा कौनदेवहै ॥ ता देवकूं हम जाणते नहीं ॥ और हेब्राह्मणो ॥ जिसपुण्यपापरूपकर्मोंकेसुखदुःखरूप फलकूं हम दिनरात्रिविषेभोगतेहैं ॥ तासुखदुःखरूपफलकेभोगणेविषे कौनकारण है ॥ यहभी हमजाणतेनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ ॥ १७ ॥

तासुखदुःखरूपफलकेभोगणेविषे हमजीवही स्वतंत्रकारणहैं ॥ समाधान ॥हेब्राह्मणो॥तासुखदुःखरूपफलकेभोगणेविषे हमजीव स्वतंत्रका रणनहीं ॥ काहेतैं हमजीव कितनेककर्मोंकूं सुखकासाधनमानिकैकरते हैं ॥ परंतु तेकर्म हमारेकूंसुखकीप्राप्तिकरतेनहीं ॥ किंतु उलटा ते कर्म हमारेकूंदुःखकीहीप्राप्तिकरते हैं ॥ और हमजीव कितनेककर्मोंकूं दुःखकासाधनमानिकैकरते हैं॥ परंतु तेकर्म हमारेकूंदुःखकीप्राप्ति करतेनहीं ॥ किंतु उलटा तेकर्म हमारेकूंसुखकीहीप्राप्तिकरते हैं॥जैसे कुपथ्यसेवनतैंभी कदाचित् रोगकीनिवृत्तिहोइजावै है॥जोकदाचित् हमजीव सुखदुःखरूपफलकेभोगविषेस्वतंत्रहोवैं॥तौ सर्वकर्मोंविषे हमारेकूं सुखकीहीप्राप्तिहोणीचाहिये ॥ और सर्वदा हमजीवोंकूं सुखकी प्राप्तिहोतीनहीं ॥ यातैं यहजान्याजावै है ॥ ताशुभअशुभकर्मोंकेकरावणेहारा तथा ताकर्मोंकेसुखदुःखरूपफलकेदेणेहारा कोईस्वतंत्रदेव हमारेहृदयविषेविराजमानहै ॥ जादेवकीप्रेरणाकरिकै हमजीव शुभअशुभकर्मोंविषेप्रवर्तहोते हैं ॥ तथा ताकर्मकेफलकूंभोगते हैं परंतु तादेवकूं हमजीव जाणिसकतेनहीं ॥ हेब्राह्मणो ॥ ऐसेअत्यंतसमीपदेवकूंभी जभीहमजीव नहींजाणिसकते ॥ तभी याशरीरके उत्पत्ति स्थिति जीवनकेकारणकूं हमजीव किसप्रकार जाणिसकैंगे ॥ यातैं हेब्राह्मणो ॥ हमसंपूर्णबुद्धिमान्ब्राह्मण किसीदैवयोगतैंइहांआइकैएक ठेभये हैं ॥ सोहमाराएकठाहोणा जिसप्रकार सर्वलोकोंकेउद्धारकरणेवासतैहोवै ॥ तिसप्रकार हमसंपूर्णब्राह्मण याजगत्केकारणकाविचार करैं ॥ इसप्रकार तेब्रह्मवेत्ताब्राह्मण सर्वब्राह्मणोंकेप्रति वचनकहिकै कालादिकोंकूंजगत्काकारणमानणेहारेवादियोंकेमतोंकाखंडनकरणे वासतै प्रथम तिनोंकेमतकानिरूपणकरतेभये॥तहांप्रथम ज्योतिषशास्त्रवाले कालवादियोंकामत निरूपणकरैं हैं॥ हेब्राह्मणो ॥ कोईकब्रा ह्मणतौ याकालकूंहीं जगत्काकारणमानै हैं॥तेकालवादी याप्रकारकेवचनकहै हैं॥आकाशादिकपंचभूतोंतैंआदिलैकै यहसंपूर्णजगत् काल तैंहींउत्पन्नहोवै है ॥ और कालविषेही सोजगत्स्थितहोवै है ॥ और कालविषेही सोजगत् लयभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ और यहजीव कालक रिकैही स्वर्गकूंप्राप्तहोवै है॥तथा कालकरिकैही यहजीव नरककूंप्राप्तहोवै है॥तथा कालकरिकैही यहजीव भूरादिकसप्तलोकोंकूंप्राप्तहोवै है॥ और कालकरिकैही यहजीव ब्रह्मादिकउच्चशरीरोंकूं प्राप्तहोवै है तथा कालकरिकैही यहजीवमनुष्यादिकमध्यमशरीरोंकूंप्राप्तहोवैहै तथाका

लकरिकैही यहजीव पशुआदिकनीचशरीरोंकूंप्राप्तहोवै है ॥ और कालकरिकैही यहजीव संपदाआपदाकूंप्राप्तहोवै है॥ और कालकरिकैही यहजीव सुखदुःखकेदेणेहारेविषयोंकूंप्राप्तहोवै है ॥ और भोगमोक्षकीदेणेहारीविद्याकूंभी यहजीव कालकरिकैहीप्राप्तहोवै है॥ और उपकार करणेहारेजेसुहृदमित्रहैं॥तथा अपकारकरणेहारेजेदुर्जनशत्रुहैं ॥ तथा उपकारअपकारतैंरहित जेउदासीनपुरुषहैं ॥ तिनमित्रादिकोंकूंभी यहजीव कालकरिकैहीप्राप्तहोवै है॥ और कालकरिकैही यहजीव जन्मकूंप्राप्तहोवै है॥ और कालकरिकैही यहजीव बाल्य यौवन वृद्ध याती नअवस्थावोंकूंप्राप्तहोवै है॥ और कालकरिकैही यहजीव मरणकूं तथा पुनःमातापिताकूं प्राप्तहोवै है॥ और कालकरिकैही यहजीव भ्रातावों कूं तथा भगिनियोंकूं प्राप्तहोवै है॥ और कालकरिकैही यहजीव गर्भवासकूं तथा तागर्भतैं बाहरनिर्गमनकूं प्राप्तहोवै है॥ और कालकरिकै ही यहजीव नानाप्रकारकेऐश्वर्यकूंप्राप्तहोवै है॥ तथा ताऐश्वर्यकेनाशकूंप्राप्तहोवै है॥ और कालकरिकैही यहस्त्रियां ऋतुधर्मकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ और कालकरिकैही यहस्त्रियां गर्भकूंधारणकरै हैं॥ और वात वर्षा आतपइत्यादिकसंपूर्णपदार्थ ताकालतैंहींउत्पन्नहोवै हैं॥ हेब्राह्मणो इहां बहुतकहणेकाकछुप्रयोजननहीं॥ तेकालवादी ज्योतिषशास्त्रवाले यासंपूर्णस्थावरजंगमरूपजगत्कीउत्पत्ति कालतैंहींअंगीकारकरै हैं॥ यातैं तिनोंकेमतविषे यहकालही सर्वजगत्काकारणहै॥ याअर्थविषे तेकालवादीब्राह्मण याप्रकारकीयुक्तिभीकथनकरै हैं ॥ जोकदाचित् कोईभाव पदार्थकालकीअपेक्षातैंविनाहीं किसीकार्यकेपूर्ववर्तिहोवै॥ तौ तिसपदार्थविषेही कारणरूपताहोवै याकानिवारण हम करतेनहीं॥ परंतु ऐसा कोईभावपदार्थहैनहीं॥ जोकालकी अपेक्षानहींकरताहोवै किंतु लोकप्रसिद्धसर्वकारणोंकेविद्यमानहुएभी याकालकीअपेक्षा अवश्यहोवै है॥ यातैं यहकालहीसर्वजगत्काकारणहै ॥ किंवा ॥ एककालतैंविना जितनेकलोकप्रसिद्धकारणहैं ॥ तेकारण कार्योंकीउत्पत्तिविषे परस्पर व्यभिचारीहैं ॥ और यहकालतो सर्वकार्योंकीउत्पत्तिविषे अव्यभिचारीहै ॥ याकारणतैंभीयहकालही सर्वजगत्काकारणहै ॥ किंवा ॥ जिसपदार्थकेपूर्वविद्यमानहुए जोपदार्थ उत्पन्नहोवै है॥ और जिसपदार्थकेपूर्वअविद्यमानहुए जोपदार्थ नहींउत्पन्नहोवै है ॥ सोपदार्थ तापदार्थकाकारणहोवै है ॥ जैसे मृत्तिकादंडचक्रकुलालादिकपदार्थोंकेविद्यमानहुए घटकीउत्पत्तिहोवै है ॥ और मृत्तिकादंडादिकोंकेअवि

द्यमानहुए ताघटकीउत्पत्तिहोवैनहीं॥ यातैं तेमृत्तिकादंडादिकपदार्थ ताघटकेकारणहैं॥ याप्रकारका कारणकालक्षण याकालविषेहीघटै है॥ याकारणतैंभी यहकालही सर्वजगत्काकारणहै ॥ किंवा ॥ जैसे लोकविषे तंतुवोंतैं पटरूपकार्यकीउत्पत्तिहोवै है ॥ तथा मृत्तिकातैं घटरूपकार्यकीउत्पत्तिहोवै है ॥ तथा बीजोंतैं अंकुररूपकार्यकीउत्पत्तिहोवै है॥ तहां पटादिककार्योंकीउत्पत्तिविषे यद्यपितंतुआदिक विशेषकारणप्रतीतहोवै है ॥ तथापि तंतु मृत्तिका बीज इत्यादिकविशेषकारणोंविषे यहभूमि अनुगतहुईप्रतीतहोवै है॥ यातैं पट घट अंकुर इत्यादिकपार्थिवकार्योंविषे ताभूमिकूंही कारणरूपताहै॥ और तंतु मृत्तिका बीज इत्यादिकविशेषपदार्थ तिनपटादिककार्योंकीउत्पत्तिविषे सहकारी हैं ॥ तैसे यहकालभी सर्वत्रअनुगतहुआप्रतीतहोवै है ॥ यातैं नानाप्रकारकेकारणोंतैंउत्पन्नभयेजेकार्य हैं ॥ तिनकार्योंकीउत्पत्ति विषे यहकालही मुख्यकारणहै ॥ और दूसरेलोकप्रसिद्धनानाप्रकारकेकारण ताकेसहकारी हैं॥ काहेतैं यालोकविषे कालकीअपेक्षातैंविना कोईभीकारण किसीकार्यकीउत्पत्तिकरणेविषे समर्थहोवैनहीं॥ तथा कालकीअपेक्षातैंविना सोकार्यभी आपणीउत्पत्तिविषेसमर्थहोवैनहीं॥ याकारणतैंभी यहकालही सर्वजगत्काकारणहै ॥ किंवा ॥ जैसे याजगत्कीउत्पत्तिविषे कालतैंविना दूसराकोईपदार्थकारणनहीं है ॥ तैसे याजगत्कीस्थितिविषे तथा याजगत्केलयविषेभी ताकालतैंविना कोईदूसरापदार्थ कारणहोइसकैनहीं ॥ किंतु यहकालही याजगत्के उत्पत्तिस्थितिलयकाकारणहै ॥ यातैं जेसांख्यादिकवादी प्रत्यक्षअनुमानादिकप्रमाणोंकेबलतैं प्रधान परमाणु आदिकोंकूंही याजगत्काकारणमानैं हैं ॥ तेप्रधानपरमाणुआदिकभीकालकीअपेक्षातैंविना स्वतंत्रही याजगत्कीउत्पत्तिकरणेविषेसमर्थहोवैनहीं॥ किंतु याकालकेसंबंधकरिकैही तिनप्रधानपरमाणुआदिकोंविषे सामर्थ्यहोवै है ॥ यातैं यहकालही सर्वजगत्काकारणहै ॥ अब सोकालकूंकारणमानणेहारावादी परमाणुवोंविषे जगत्कीकारणताखंडनकरै है ॥ तहांप्रथम परमाणुवोंकूंकारणमानणेहारे नैयायिकोंकीप्रक्रिया निरूपण करै हैं॥ पृथिवी जल तेज वायु याचारिभूतोंकेजेपरमाणुहैं॥ तेपरमाणुहीं याजगत्काकारणहैं॥ तहां झरोखेद्वारा गृहविषेप्राप्तभयेजेसूर्यकेकिरणहैं॥ तिनकिरणोंविषेजोसूक्ष्मरजप्रतीतहोवै है तारजका जोषष्ठभागहै ताकानाम परमाणुहै ॥ तेपरमाणु नेत्रादिकइंद्रियजन्यज्ञानकेविषय

होवैनहीं ॥ तथा तेपरमाणु नित्यहोवै हैं ॥ तथा परमअणुत्वपरिमाणवालेहोवै हैं ॥ ऐसेपरमाणुवोंविषे परमेश्वरकीइच्छाकेवशतैंक्रिया उत्पन्नहोवै है ॥ ताक्रियातैं दोदोपरमाणुवोंका परस्पर संयोगसंबंधहोवै है ॥ तासंयोगतैंअनंतर द्व्यणुकरूपकार्यकीउत्पत्तिहोवै है ॥ ता द्व्यणुकरूपकार्यविषे तेदोनोंपरमाणु समवायिकारणहैं ॥ और तिनदोपरमाणुवोंका परस्परसंयोगसंबंध असमवायिकारणहै ॥ और ईश्वरइ च्छादिक निमित्तकारणहैं ॥ इसप्रकार तिनद्व्यणुकरूपकार्योंविषेभी प्रथम क्रिया उत्पन्नहोवै है ॥ ताक्रियातैंअनंतर तिनतीनद्व्यणुकोंका परस्पर संयोगसंबंधहोवै है ॥ तासंयोगतैंअनंतर त्र्यणुकरूपकार्यकीउत्पत्तिहोवै है ॥ इसप्रकार चतुरणुकादिकोंकीउत्पत्तिक्रमतैं यहमहा नृपृथिवी महान्जल महान्तेज महान्वायु उत्पन्नहोवै है ॥ और जिसकालविषे याजगत्काप्रलयहोवै है ॥ तिसकालविषे पुनः परमेश्वर कीइच्छाकेवशतैं तिनपरमाणुवोंविषे क्रिया उत्पन्नहोवै है ॥ ताक्रियातैंअनंतर तिनपरमाणुवोंका परस्पर विभागहोवै है ॥ ताविभागतै अनंतर तिनपरमाणुवोंकेसंयोगकानाशहोवै है ॥ तासंयोगनाशतैंअनंतर द्व्यणुकरूपकार्यकानाशहोवै है ॥ ताद्व्यणुकरूपकारणकेनाशतैं अनंतर त्र्यणुकरूपकार्यकानाशहोवै है ॥ इसप्रकारचतुरणुकादिकोंकेनाशक्रमतैं यहमहान्पृथिवी महान्जल महान्तेज महान्वायु नाश कूंप्राप्तहोवै है ॥ इसप्रकार तेनैयायिक परमाणुवोंतैंहीं याजगत्कीउत्पत्तिअंगीकारकरै हैं ॥ सोयहतिनोंकामत तभीसिद्धहोवै ॥ जभी प्रथम तिनपरमाणुवोंविषे नित्यरूपतासिद्धहोवै ॥ सो तिनपरमाणुवोंविषेही नित्यरूपतासंभवैनहीं ॥ काहेतैं जैसे प्रसिद्धस्थूल पृथिवी जल तेज वायु याचारिभूतोंविषे क्रमतैं पृथिवीत्व जलत्व तेजत्व वायुत्व यहचारिधर्मरहै हैं याकारणतैं यहप्रसिद्धपृथिवीआदिकचारिभूत अनि त्यहैं॥तैसे तिनपृथिवीआदिकचारिभूतोंकेपरमाणुवोंविषेभी क्रमतैं तेपृथिवीत्वादिकचारिधर्मरहै हैं॥यातैं तेपृथिवीआदिकचारिभूतोंकेप रमाणुभी अनित्यहीसिद्धहोवै हैं ॥याकहणतैं यहअनुमानसिद्धभया॥पृथिवीपरमाणु अनित्यहोणेयोग्यहैं॥पृथिवीत्वधर्मवालेहोणेतैं प्रसिद्ध पृथिवीकीन्याईं ॥ इसप्रकार क्रमतैं जलत्व तेजत्व वायुत्व याहेतुवोंकरिकै तथा प्रसिद्धजलतेजवायुकेदृष्टांतकरिकै परमाणुरूपजलतेज वायुविषेभी अनित्यरूपताकेअनुमान बुद्धिमान्पुरुषनैं जानिलेणे ॥ ऐसे अनित्यपरमाणुवोंविषे याजगत्कीकारणतासंभवैनहीं ॥ शंका

हेकालवादी॥परमाणुवोंविषे जोतुमनैं अनित्यरूपतासिद्धकरी सोसंभवैनहीं॥काहेतैं यालोकविषे जिसजिसपदार्थविषे अनित्यपणाहोवैहै॥ तिसतिसपदार्थविषे मध्यमपरिमाण अवश्यहोवैहै॥जैसे घटादिकपदार्थोंविषे अनित्यपणाहै॥यातैंतिनघटादिकोंविषे मध्यमपरिमाणभीहै॥ सोमध्यमपरिमाण तिनपरमाणुवोंविषेहैनहीं॥यातैंतिनपरमाणुवोंविषे अनित्यपणाभीसंभवैनहीं॥याकहणेतैं यहअनुमानसिद्धभया॥पृथिवी आदिकोंकेपरमाणु नित्यहोणेयोग्यहैं मध्यमपरिमाणकेअभाववालेहोणेतैं ॥ जोपदार्थ नित्यनहींहोवै है॥सोपदार्थ मध्यमपरिमाणकेअभाव वालाभीनहींहोवै है॥ जैसे घटादिकपदार्थ नित्यनहीं हैं॥यातैं मध्यमपरिमाणकेअभाववालेभीनहींहैं॥किंतु तेघटादिक मध्यमपरिमाणवा लेहीहैं ॥ समाधान ॥ हेनैयायिक॥अणुपरिमाण परममहत्परिमाण यादोनोंपरिमाणोंतैंभिन्नजोपरिमाणहै॥ताकानाम मध्यमपरिमाणहै॥ तामध्यमपरिमाणकाअभाव जैसे परमाणुवोंविषे है॥ तैसे शब्दादिकगुणोंविषेभीहै ॥ यातैं तिनपरमाणुवोंकीन्याईं शब्दादिकगुणोंविषेभी नित्यरूपता सिद्धहोणीचाहिये ॥ और शब्दादिकगुणोंविषे नित्यरूपता तुमनैयायिक अंगीकारकरतेनहीं ॥यातैं मध्यमपरिमाणके अभा व रूपहेतुतैं तिनपरमाणुवोंविषेनित्यरूपतासिद्धहोवैनहीं ॥ किंवा ॥ जैसे मध्यमपरिमाणकाअभाव वस्तुकेनित्यपणेका प्रयोजकनहीं है॥ तैसे मध्यमपरिमाणभी वस्तुकेअनित्यपणेका प्रयोजकनहीं है काहेतैं नैयायिकोंकेमतविषे रूपादिकगुणोंविषे तथाकर्मविषे रूपादिकगु ण रहैंनहीं ॥ यातैं मध्यमपरिमाणरूपगुणकेअभाववालेजेशब्दादिकगुणहैं तथाकर्महै तिनोंविषे अनित्यपणा नहींहोणाचाहिये ॥ और तिनशब्दादिकोंविषे अनित्यपणातौ प्रत्यक्षप्रमाणकरिकैप्रतीतहोवैहै ॥ यातैं सोमध्यमपरिमाण वस्तुकेअनित्यपणेका प्रयोजकनहीं है॥ किंतु आकाश काल दिक् आत्मा याचारिविभुपदार्थोंतैंभिन्नपणाहीं वस्तुकेअनित्यपणेका प्रयोजकमानणाहोवैगा॥सोविभुपदार्थोंतैंभिन्न पणा जैसे प्रसिद्धघटादिकपदार्थोंविषेहै ॥ तैसे पृथिवीआदिकोंकेपरमाणुवोंविषेभी सोविभुपदार्थतैंभिन्नपणा विद्यमानहै॥ यातैं घटादिक पदार्थोंकीन्याईं तिनपरमाणुवोंकूंभी अनित्यरूपहीमान्याचाहिये ॥ घटादिकमूर्त्तपदार्थोंकूं अनित्यमानिकै परमाणुरूपमूर्त्तपदार्थोंकूं नित्यमानणेविषे केवल तावादीका पक्षपातहीप्रतीतहोवै है ॥ शंका ॥ हेकालवादी ॥ यालोकविषे जोजोपदार्थ निरवयवहोवै है ॥ सो

सोपदार्थ नित्यहीहोवैहै ॥ जैसे आत्मा निरवयवहै यातैं नित्यहै ॥ तैसे यहपरमाणुभी निरवयवहैं ॥ यातैं तेपरमाणु नित्यही हैं ॥ याकरह
णेकरिकै यहअनुमानसिद्धभया ॥ पृथिवीआदिकोंकेपरमाणु नित्यहोणेकूंयोग्यहैं निरवयवहोणेतैं आत्माकीन्याईं ॥ याअनुमानप्रमाणक
रिकै तिनपरमाणुवोंविषे नित्यपणाहीसिद्धहोवैहै ॥ यातैं तिनपरमाणुवोंविषे अनित्यपणेकूंसिद्धकरणेहारा सोकालवादीकाअनुमान सत्प्र
तिपक्षदोषवालाहै ॥ जिसहेतुकेसाध्यकेअभावकूं दूसराहेतुसिद्धकरैहै ॥ सोहेतु सत्प्रतिपक्षदोषवालाहोवै है॥ समाधान॥हेनैयायिकवादी ॥
तानिरवयवत्वरूपहेतुतैं तिनपरमाणुवोंविषे नित्यत्वरूपसाध्यकीसिद्धिहोइसकैनहीं॥काहेतैं तुमनैयायिकोंकेमतविषे जोहेतु आपणेसाध्यके
अभाववालेपदार्थविषेरहैहै ॥ सोहेतु व्यभिचारीहोवैहै ॥ ताव्यभिचारीहेतुकरिकै तासाध्यकीसिद्धि तुम अंगीकारकरतेनहीं ॥ और यह
तुम्हारा निरवयवत्वरूपहेतुतौनित्यत्वरूपसाध्यकेअभाववालेगुणकर्मादिकोंविषेभीरहै है ॥ यातैं सोनिरवयवत्वरूपहेतुभी व्यभिचारीहै ॥
ताव्यभिचारीहेतुकरिकै तिनपरमाणुवोंविषे नित्यरूपता सिद्धहोइसकैनहीं ॥ शंका ॥ हेकालवादी ॥ यद्यपि सोनिरवयवत्वरूपहेतु नित्य
त्वरूपसाध्यकेअभाववालेगुणकर्मादिकोंविषेभीरहैहै ॥ यातैं सोनिरवयवत्वरूपहेतु व्यभिचारीहै॥तथापि निरवयवद्रव्यत्वरूपहेतु तिनगुण
कर्मादिकोंविषेरहतानहीं यातैंसोनिरवयवद्रव्यत्वरूपहेतु व्यभिचारीनहीं है॥तानिरवयवद्रव्यत्वरूपहेतुकरिकैही हमनैयायिकतिनपरमाणुवों
विषे नित्यरूपतासिद्धकरैहैं॥समाधान॥हेपरमाणुवादीनैयायिक ॥ पृथिवीआदिकोंकेपरमाणु अनित्यहोणेयोग्यहैं मूर्त्तपदार्थहोणेतैं प्रसिद्ध
पृथिवीआदिकोंकीन्याईं॥याहमारे अनुमानकेविद्यमानहुए सोतुम्हारानिरवयवद्रव्यत्वरूपहेतु तिनपरमाणुवोंविषेनित्यरूपता सिद्धकरिसकै
नहीं॥शंका॥हेकालवादी॥जैसे तिनपरमाणुवोंविषे अनित्यरूपताकीसिद्धिकरणेहारा जोतुम्हाराअनुमानहै॥ ताअनुमानकेविद्यमानहुए हम
नैयायिकोंकूं तिनपरमाणुवोंविषे नित्यरूपताकानिश्चय होइसकैनहीं॥तैसे तिनपरमाणुवोंविषे नित्यरूपताकीसिद्धिकरणेहारा जोहमाराअ
नुमानहै ॥ ताअनुमानकेविद्यमानहुए तुम्हारेकूंभी तिनपरमाणुवोंविषे अनित्यरूपताकानिश्चय होइसकैगानहीं ॥ समाधान ॥ हेपरमाणु
वादीनैयायिक ॥ जिसस्थूलविषे परस्परविरोधीअर्थकीसिद्धिकरणेवासतैं दोअनुमानप्रवृत्तहोवैं हैं ॥ तिसस्थलविषे यद्यपि एकअ

र्थकानिश्चय होइसकैनहीं ॥ तथापि तिनदोनोंअनुमानोंविषे जिसअनुमानका श्रुतिस्मृतिआदिकप्रमाण सहकारीहोवै हैं ॥ सोअनुमान
प्रबलहोवै है॥और जिसअनुमानका श्रुतिस्मृतिआदिकप्रमाण सहकारीनहींहोवै हैं॥सोअनुमान दुर्बलहोवै है॥और प्रबलकरिकैदुर्बलका
बाध यालोकविषे प्रसिद्धदेख्याहै ॥ और यावद्विकारंतुविभागोलोकवत् ॥ याव्यासभगवान्केसूत्रविषे ॥ तथा ॥ अतोऽन्यदार्त ॥याश्रु
तिविषे भेदवालेपरिच्छिन्नपदार्थोंविषे अनित्यरूपताहीकथनकरीहै॥ सोभेदवालेपरिच्छिन्न परमाणुभी हैं ॥यातैं ताश्रुतिसूत्ररूपप्रमाणकी
सहायतातैं प्रबलताकूंप्राप्तहुआ सोहमाराअनुमान तुमारेअनुमानकाबाधकरिकै तिनपरमाणुवोंविषे अनित्यरूपताही सिद्धकरै है ॥ और
तुमारेअनुमानविषे कोईश्रुतिस्मृतिरूपप्रमाण सहायताकरणेहाराहैनहीं ॥ यातैं तादुर्बलअनुमानकरिकै तिनपरमाणुवोंविषे नित्यरूपता
सिद्धहोइसकैनहीं ॥ किंवा ॥जिसनिरवयवत्वरूपहेतुकरिकै तुमनैयायिक तिनपरमाणुवोंविषे नित्यरूपता सिद्धकरोहो ॥ सोनिरवयवत्वरूप
हेतु तिनपरमाणुवोंविषे रहताहीनहीं॥काहेतैं तुमनैयायिक तिनपरमाणुवोंका पूर्वादिकअष्टदिशावोंकेसाथ संयोगसंबंधअंगीकारकरोहो॥
तथा तिनपरमाणुवोंका परस्परभी संयोगसंबंध अंगीकारकरोहो ॥ और तासंयोगसंबंधकूं तुमनैयायिक अव्याप्यवृत्तिमानोहो ॥ तहाँ
जोपदार्थ आपणेआश्रयके एकदेशविषेरहै है तथा एकदेशविषेनहींरहै है ताकानाम अव्याप्यवृत्तिहोवै है ॥ ऐसेअव्याप्यवृत्तिसंयोगसंबंध
वाले परमाणुवोंविषे निरवयवरूपता संभवैनहीं ॥ किंतु संयोगसंबंधवालेमूर्तपदार्थ सावयवहीहोवै हैं ॥ जैसे घटपटादिकमूर्तपदार्थ संयो
गसंबंधवालेहोणेतैं सावयवहीहैं ॥ तैसे संयोगसंबंधवालेहोणेतैं तेपरमाणुभी सावयवहीसिद्धहोवैंगे ॥ और जोजोपदार्थ सावयवहोवै है ॥
सोसोपदार्थ किसीकारणकरिकैजन्यहीहोवै है ॥ जैसे घटपटादिकपदार्थ सावयवहोणेतैं मृत्तिकादिककारणोंकरिकैजन्यहैं ॥ तैसे तेपर
माणुभी सावयवहोणेतैं किसीकारणकरिकै अवश्यजन्यहोवैंगे ॥ और सोतिनपरमाणुवोंकाकारणभी जोकिसीदूसरेकारणकरिकैजन्यमा
निये ॥ तौ सोदूसराकारणभी किसीतीसरेकारणकरिकै जन्यहोवैगा ॥ याप्रकार कारणोंकीअनवस्थाप्राप्तहोवैगी॥यातैं तिनपरमाणुवोंके
कारणकूंअजन्यहीमान्याचाहिये॥सोऐसाउत्पत्तितैंरहितकारण कालतैंविनादूसराकोई हैनहीं॥यातैं ताकालकूंहीं तिनपरमाणुवोंकाकारण

मानणाहोवैगा ॥ जभी ताकालविषे परमाणुवोंकीकारणता वादीनैं अंगीकारकरी ॥ तभी ताकालकरिकैही सर्वजगत्कीउत्पत्ति संभव होइसकैहै ॥ तिनदोनोंकेमध्यविषे परमाणुवोंकूंकारणमानणा निष्फलहै ॥ किंवा॥ जोनैयायिकवादी तिनपरमाणुवोंकूं नित्यभीअंगीकार करै ॥ तौभी तिनानित्यपरमाणुवोंतैं सर्वदाजगत्कीउत्पत्तिहोणीचाहिये ॥ कदाचित्भी प्रलय नहींहोणाचाहिये ॥ सोसर्वदा जगत्की उत्पत्तिहोवैनहीं ॥ यातैं याजगत्के उत्पत्तिप्रलयकी व्यवस्थाकरणेवासतै तेपरमाणु कालकीअपेक्षा अवश्यकरैंगे ॥ याकारणतैंभी ताका लकूंहींजगत्काकारणमानणा उचितहै ॥ किंवा ॥ प्रलयकालविषे तेपरमाणु परस्परविभागवालेहुए स्थितहोवै हैं॥ याकारणतैं तेपरमाणु ताप्रलयकालमें याजगत्कीउत्पत्तिकरणेविषे समर्थहोवैनहीं ॥ और जगत्कीउत्पत्तिकालविषे तिनपरमाणुवोंकापरस्पर संयोगसंबंध होवै है ॥ याकारणतैं तेपरमाणु याजगत्कीउत्पत्तिकरणेविषेसमर्थहोवै हैं॥तासंयोगसंबंधकीउत्पत्तिविषे याकालकीअपेक्षा अवश्यहोवैगी याकारणतैं यहकालहीसर्वजगत्काकारणहै ॥ ताकालतैंभिन्न परमाणुआदिकोंविषे याजगत्कीकारणतासंभवैनहीं ॥ इतनैंकरिकै कालवा दीज्योतिषशास्त्रवालेपुरुषोंका मतनिरूपणकऱ्या ॥ अब स्वभावकूंहीं जगत्काकारणमानणेहारे जेस्वभाववादीलोकायत हैं तिनोंकेमत कानिरूपणकरै हैं ॥ तहाँ तेस्वभाववादी ताकालवादीकेमतविषे याप्रकारकेदूषण कथनकरै हैं ॥ हेकालवादी यासर्वजगत्काकारणरूप करिकै तुमनैं अंगीकारकऱ्याजोकाल है ॥ सोकाल आपणेस्वभावकी तथाकार्यकेस्वभावकी अपेक्षाकरिकैही कारणहोवै है ॥ अथवा तास्वभावकीअपेक्षातैंविनाहीं सोकाल याजगत्काकारणहोवै है॥तहाँ सोकाल तास्वभावकीअपेक्षातैंविनाहीं कारणहोवै है यहद्वितीयपक्ष जोतुम अंगीकारकरो सोसंभवैनहीं॥ काहेतैं वस्तुकेस्वभावकीअपेक्षातैंविनाहीं सोतुमाराकाल जोकदाचित् कार्यकीउत्पत्तिकरताहोवै ॥ तौ प्रज्वलितमहान्अग्निविषे तथा आकाशविषे सोतुमाराकाल जलकीउत्पत्ति किसवासतैंनहींकरता ॥और सोतुमाराकाल अग्निकरिकै जीवोंकेतृषाकीनिवृत्ति किसवासतैंनहींकरता॥ और सोकाल अन्नतैंविनाहीं याजीवोंकेक्षुधाकीनिवृत्ति किसवासतैंनहीं करता॥ और सोतुमा राकाल पुत्रार्थी पुरुषोंकूं स्त्रीतैंविनाहीं पुत्रोंकीप्राप्ति किसवासतैंनहींकरता॥ औरसोतुमाराकाल मृतकशरीरकेसंयोगकरिकैभीयाजीवोंविषे

सुखदुःखकीउत्पत्ति किसवासतैंनहींकरता ॥ और ताकालकेप्रभावतैं यहमृतकशरीर हमारेसाथसंभाषण किसवासतैंनहींकरता ॥ और ताकालकेप्रभावतैं यहस्त्रियां पुत्रषकेसंबंधतैंविनाहीं गर्भकाधारण किसवासतैंनहींकरतीयां॥और ताकालकेप्रभावतैं यहआकाश अवका शभावतैं रहितहोणाचाहिये ॥ तथा यहपृथिवी रसातलविषेगईचाहिये॥तथा यहजल स्नेहभावतैंरहितहोणाचाहिये ॥तथा यहअग्निआदि कतेज प्रकाशतैंरहितहोणेचाहिये ॥ तथा यहवायु निश्चलताकूंप्राप्तहोणाचाहिये॥ किंवा॥सोतुमाराकाल जोकदाचित् वस्तुकेस्वभावकी अपेक्षातैंविनाहीं कार्यकीउत्पत्तिकरताहोवै ॥ तौ सोकाल यापुरुषोंकेमुखद्वारतैं मलमूत्रादिकोंकापरित्याग किसवासतैंनहींकरावता॥त था सो काल यापुरुषोंकेघ्राणइंद्रियकरिकै शब्दकाश्रवण किसवासतैंनहींकरावता॥तथासोकाल यापुरुषोंकेश्रोत्रइंद्रियकरिकै गंधकाग्रहण किसवासतैंनहींकरावता॥ तथा सोकाल यापुरुषोंकेनेत्रइंद्रियकरिकै आहारकाग्रहण किसवासतैंनहींकरावता ॥ इसप्रकार सोकाल यापु रुषोंकेवाकादिकइंद्रियोंकेव्यापारोंकाविपरीतभाव किसवासतैंनहींकरावता ॥ इसतैंआदिलैकेअनेकप्रकारकेदूषणोंकीप्राप्तिहोवैगी॥जो ता कालकूं वस्तुकेस्वभावकीअपेक्षातैंविनाहींयाजगत्काकारणमानोगेयातैं तास्वभावकीअपेक्षातैंविना ताकालविषे जगत्कीकारणतासंभ वैनहीं ॥ और सोकाल कारणके तथाकार्यके स्वभावकीअपेक्षाकरिकैही याजगत्काकारणहोवै है ॥ यहप्रथमपक्ष सोकालवादी जोअंगी कारकरै॥तौ जिसस्वभावकीअपेक्षाकरिकै सोकाल याजगत्कीव्यवस्थापूर्वक उत्पत्तिकरै है॥तास्वभावविषेही याजगत्कीकारणतासंभव होइसकै है ॥ यातैं स्वभाव जगत्यादोनोंकेमध्यविषे कालकूंजगत्काकारणमानणा निष्फलहोवैगा ॥ किंवा ॥ तास्वभावकूंहीं जगत्का कारणमानणेविषे पूर्वउक्तदोषोंकीभीप्राप्तिहोवैनहीं॥काहेतैं यापुरुषोंकाचक्षुइंद्रिय आपणेस्वभावतैं रूपकूंहींग्रहणकरै है॥रसादिकोंकूंग्रहण करैनहीं ॥ तथा श्रोत्रइंद्रियभी आपणेस्वभावतैं शब्दकूंहींग्रहणकरै है ॥ रूपादिकोंकूंग्रहणकरैनहीं ॥ इसप्रकारदूसरेइंद्रियभी आपणेस्व भावकेबलतैं आपणेआपणेविषयकूंहींग्रहणकरै हैं ॥अन्यइंद्रियकेविषयकूं अन्यइंद्रिय ग्रहणकरैनहीं॥ इतप्रकार रूपादिकविषयभी आपणे आपणेस्वभावकेबलतैं आपणेआपणेनेत्रादिकइंद्रियोंकेहीविषयभावकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ अन्यइंद्रियकाविषय अन्यइंद्रियकेविषयभावकूंप्राप्त

होवैनहीं ॥ इसप्रकार वस्तुकेस्वभावकाअंगीकारकरिकै पूर्वउक्तसर्वदोषोंकापरिहार होइसकैहै ॥ यातैं याजगत्कीप्रवृत्तिनिवृत्तिविषे तथा याजगत्कीउत्पत्तिस्थितिलयविषे यहस्वभावहीकारणहै ॥ यास्वभावतैंभिन्नदूसराकोईपदार्थ याजगतकाकारणहोवैनहीं ॥ इतनैंकरिकै स्वभावकारणवादी लोकायतोंकामतनिरूपणकऱ्या ॥ अब धर्मअधर्मरूपनियतिकूंहीं याजगत्काकारणमानणेहारे जेमीमांसकवादी हैंति नोंकेमतकानिरूपणकरै हैं ॥ तहां तेमीमांसकवादी ताधर्मअधर्मरूपनियतिविषे जगत्कीकारणतासिद्धकरणेवासतै प्रथम तिनस्वभावका रणवादियोंकेमतविषे याप्रकारकेदूषण कथनकरै हैं ॥ हेस्वभाववादी ॥ याजगत्काकारणरूपकरिकै तुमनैंअंगीकारकऱ्याजोस्वभावहै ॥ सोस्वभाव धर्मअधर्मरूपनियतिकीअपेक्षाकरताहुआ याजगत्काकारणहै॥अथवा सोस्वभावतानियतिकीअपेक्षातैंविनाहीं याजगत्काका रणहै ॥ तहांधर्मअधर्मरूपनियतिकीअपेक्षातैंविनाहीं सोस्वभाव याजगत्काकारणहै॥यहदूसरापक्ष जोतुम अंगीकारकरौ सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं तानियतितैंविनाहीं सोस्वभाव जोकदाचित् याजगत्काकारणहोवै॥तौ ताअनियतस्वभावकेबलतैं याउष्णस्वभाववालेअग्नितैंभी शीतलताउत्पन्नहोणीचाहिये ॥ तथाशीतलस्वभाववालेजलतैंभी उष्णताकीउत्पत्तिहोणीचाहिये॥याप्रकार सर्वकालविषे तथासर्वपदार्थों विषे सर्वकार्योंकीउत्पत्तिहोणीचाहिये॥ और सर्वकालविषे तथासर्वपदार्थोंविषे सर्वकार्योंकीउत्पत्ति देखणेमैंआवतीनहीं ॥ यातैं तानियति कीअपेक्षातैंविना तास्वभावविषे जगत्कीकारणतासंभवैनहीं ॥ और सोस्वभाव धर्मअधर्मरूपनियतिकीअपेक्षाकरिकैही याजगत्काकार णहै यहप्रथमपक्ष जोतुम अंगीकारकरौ ॥ तौ जैसे स्वभावकीअपेक्षाकरताहुआ सोकाल याजगत्केउत्पत्तिस्थितिलयकाकारणहोवै है ॥ याकारणतैं सोकाल याजगत्काकारणनहींहै ॥ किंतु सोस्वभावहीयाजगत्काकारणहै ॥ याप्रकारकीयुक्तिसैं तुमनैं कालकाखंडनकरिकै स्वभावकूंहीं जगत्काकारणमान्याहै ॥ तैसे सोतुमारास्वभावभी धर्मअधर्मरूपनियतिकीअपेक्षाकरिकैही याजगत्काकारणहोवै है॥याका रणतैं सोतुमारास्वभावभी याजगत्काकारणहोइसकैनहीं॥किंतु सोधर्मअधर्मरूपनियतिही याजगत्काकारणमान्याचाहिये॥नियतिजगत् यादोनोंके मध्यविषे स्वभावकूंकारणमानणा निष्फलहै ॥ इतनैंकरिकै धर्मअधर्मरूपनियतिकूं कारणमानणेहारे मीमांसकवादियोंकामत

निरूपणकऱ्या ॥ अब यदृच्छाकूंहीं याजगत्काकारणमानणेहारे जेकोईकवादी हैं तिनोंकेमतकानिरूपणकरै हैं॥यहां कार्यकूं आपणीउत्प त्तिविषे कर्तादिकोंकीअपेक्षानहींहोणी याकानाम यदृच्छाहै ॥ तेयदृच्छाकारणवादी आपणेमतकीसिद्धिकरणेवासतै ता नियतिवादीके मतविषे याप्रकारकेदूषणकहै हैं हेनियतिकारणवादी तुमनैं याप्रकारका तानियतिकास्वरूपकह्याहै ॥ यहकार्य इसीहीकारणकरिकैउत्पन्न होवैहै ॥ इसकारणतैंभिन्न दूसरेकिसीकारणकरिकै यहकार्य उत्पन्नहोवैनहीं ॥ तथा यहकार्य इसीप्रकारतैं उत्पन्नहोवै है ॥ दूसरेकिसीप्रका रतैंउत्पन्नहोवैनहीं ॥ तथा याकारणतैं यहहीकार्य उत्पन्नहोवै है दूसराकोईकार्य उत्पन्नहोवैनहीं॥याप्रकारकीनियतिकूंहीं तुमनैं याजगत्का कारणमान्याहै ॥ जैसे ऋतुधर्मयुक्तस्त्रियोंकाजोरजहै ॥ सोरजही नियमकरिकैगर्भधारणेकाकारणहोवै है ॥ सो याप्रकारकीनियतिकूं जगत् काकारणमानणा ॥ तुम्हारेकूंयोग्यनहीं ॥काहेतैं यालोकविषे तानियतितैंविनाहीं कितनेककारणोंकी तथाकितनेककार्योंकी यदृच्छारूप हेतुतैं प्राप्तिदेखणेमैंआवै है ॥ जैसे यालोकविषे कितनेधर्मात्मापुरुषोंकूं अकस्मात्तैं दुःखकीप्राप्तिहोवै है ॥ और कितनेकपापात्मा पुरुषोंकूं अकस्मात्तैं सुखकीहीप्राप्तिहोवैहै॥ और यालोकविषे सुखकासाधनरूपकरिकैप्रसिद्ध जेस्त्रीपुत्रादिकपदार्थ हैं ॥ तेस्त्रीपुत्रादिकप दार्थभी कदाचित् याजीवकेदुःखकाहीकारणहोवैं हैं ॥ और यालोकविषेदुःखकासाधनरूपकरिकैप्रसिद्ध जोपादादिकोंकाप्रहारहै ॥ सोभी कदाचित् परिश्रमयुक्तपुरुषोंकेसुखकाहीकारणहोवै है ॥ इसतैं आदिलैकेअनेकप्रकारकाविपरीतभाव देखणेमैंआवै है ॥ जोपूर्वउक्तनिय तिहींकारणहोवै तौ याप्रकारकाविपरीतभाव नहींहोणाचाहिये॥और याप्रकारकाविपरीतभाव प्रसिद्धदेखणेमैं आवै है यातैं तानियतिविषे जगत्कीकारणतासंभवैनहीं किंतु सोयदृच्छाही याजगत्काकारणहै ॥ इतनैंकरिकै यदृच्छाकारणवादियोंकामत निरूपणकऱ्या ॥ अब आकाशादिकपंचभूतोंकूं जगत्काकारणमानणेहारे जेकोईकवादीहैं तिनोंकेमतकानिरूपणकरैं हैं ॥ तहाँ तेभूतकारणवादी आपणेमतकी सिद्धिकरणेवासतै तायदृच्छाकारणवादीकेमतविषे याप्रकारकेदूषण कथनकरै हैं ॥ हेयदृच्छाकारणवादी ॥ यालोकविषे जितनेकरूपर सादिकधर्म हैं ॥ तेधर्म घटादिकधर्मियोंकीअपेक्षातैंविना स्वतंत्ररहतेनहीं किंतु तेरूपरसादिकधर्म घटादिकधर्मियोंकीअपेक्षाकरिकैही

स्थितहोवैहैं ॥ तैसे सोतुमारीयदृच्छाभी धर्मरूपहै॥ यातैं सोयदृच्छा किसीधर्मीकीअपेक्षातैंविना स्वतंत्रस्थितहोइसकैनहीं॥किंतु सोयदृच्छा किसीधर्मीकीअपेक्षाकरिकैही स्थितहोवैगी ॥ और जबपर्यंत प्रत्यक्षवस्तुकासंभवहोइसकै ॥ तबपर्यंत परोक्षवस्तुकीकल्पनाकरणी अनुचितहोवैहै ॥ याप्रकारकानियम सर्वशास्त्रोंविषेकथनकऱ्याहै ॥ यातैं प्रत्यक्षप्रमाणकरिकैसिद्ध जेयहआकाशादिकपंचभूतहैं ॥तेभूत ही तायदृच्छारूपधर्मका धर्मीरूप अंगीकारकरणेहोवैगे यातैं सोयदृच्छा जिनभूतोंकीअपेक्षाकरिकै याजगत्काकारणहोवै है ॥ तिनभूतों करिकैही याजगत्कीउत्पत्तिकासंभवहोइसकैहै ॥ तिनदोनोंकेमध्यविषे यदृच्छाकूंजगत्काकारणमानणा निष्फलहोवैगा ॥यातैं आकाशादिकपंचभूतही याजगत्काकारणहैं॥इतनैंकरिकै आकाशादिकभूतोंकूंजगत्काकारणमानणेहारेवादियोंकामतनिरूपणकऱ्या ॥अबप्रकृति कूंहीं याजगत्काकारणमानणेहारे जेसांख्यशास्त्रवाले हैं तिनोंकेमतकानिरूपणकरैं हैं॥तहां तेप्रकृतिकारणवादी तिनभूतकारणवादियोंके मतविषे याप्रकारकेदूषण कथनकरैं हैं ॥ हेभूतकारणवादी ॥ तुमनैं जिनभूतोंकूं जगत्काकारणमान्याहै तेभूत घटादिकपदार्थोंकीन्याईं सावयवहैं ॥ और जोजोपदार्थ सावयवहोवै हैं ॥ सोसोपदार्थ किसीकारणकरिकैजन्यहोवै हैं जैसे घटपटादिकपदार्थ सावयवहैं ॥ यातैं मृत्तिकातंतुआदिककारणोंकरिकैजन्यहैं ॥ तैसे तिनसावयवभूतोंकाभी कोईदूसराकारण तुमनैं अंगीकारकऱ्याचाहिये ॥ और यालोकविषे जिसप्रकारकाकार्यहोवै है ॥ तिसीप्रकारका कारणहोवै है॥ कार्यतैं विलक्षणस्वभाववाला कारणहोवैनहीं ॥ जैसे घटादिककार्योंकेसमानस्वभाववालीजोमृत्तिकाहै ॥ सोमृत्तिकाही तिनघटादिकोंकाकारणहोवै है ॥ तैसे याजगत्रूपकार्यकेसमानस्वभाववालाहीकोईपदार्थ ताजगत्काकारणमान्याचाहिये ॥ और याजगत्विषे सुवर्ण स्त्रीरत्न वस्त्र इसतैंआदिलेकेजितनेकपदार्थहैं ॥तेसंपूर्णपदार्थ सुखरूपसत्वगुण करिकैतथादुःखरूपरजोगुणकरिकै तथामोहरूपतमोगुणकरिकैयुक्तहैं॥तहांतेसुवर्णादिकपदार्थ जिसपुरुषकेहस्तविषेरहैं हैं॥तिसपुरुषकूंतो सुखकीप्राप्तिकरैं हैं॥और तासुवर्णादिकपदार्थोंवालेपुरुषकाजोशत्रुहोवैहै॥ताशत्रुकूं तेसुवर्णादिकपदार्थ दुःखकीहीप्राप्तिकरैं हैं॥और तिन सुवर्णादिकपदार्थोंकीप्राप्तितैंरहितजोलोभीपुरुषहैं॥तालोभीपुरुषकूं तेसुवर्णादिकपदार्थमोहकीप्राप्तिकरैं हैं ॥ इसप्रकारयहसंपूर्णजगत्सत्त्व

रजतमयातीनगुणोंकरिकैयुक्तहै॥यातैंतात्रिगुणरूपजगत्काकारणभीकोईत्रिगुणरूपवस्तुमान्याचाहिये ॥सोऐसीत्रिगुणरूपतथासर्वकार्योंविषेअनुगतजडप्रकृतिहै ॥ यातैंसोजडप्रकृतिही याजगत्काकारणहोणेयोग्यहै॥याहीप्रकृतिकूं श्रुतिविषे योनि यानामकरिकैकथनकऱ्याहै॥ ऐसीजडरूपनित्यप्रकृतितैं प्रथममहत्तत्वउत्पन्नहोवै है॥तिसमहत्तत्वतैं अहंकार उत्पन्नहोवैहै॥ताअहंकारतैं शब्द स्पर्श रूप रस गंध यह पंचतन्मात्रा तथा एकादशइंद्रिय उत्पन्नहोवैं हैं ॥ तहां श्रोत्र त्वक् चक्षु रसन घ्राण यहपंचज्ञानइंद्रिय तथा वाक् पाणि पाद उपस्थ पायु यहपंचकर्मइंद्रिय तथा मन यहएकादशइंद्रियकहेजावैहैं॥और तिनशब्दादिकपंचतन्मात्रावोंतैं यथा क्रमतैं आकाश वायु तेज जल पृथिवी यहपंचमहाभूत उत्पन्नहोवैं हैं ॥ इसरीतिसैं यहसंपूर्णजगत् प्रकृतितैंहींउत्पन्नहोवै है ॥ यातैं सोप्रकृतिही सर्वजगत्काकारणहै ॥ इतनैंकरिकै प्रकृतिकारणवादी सांख्यशास्त्रज्ञोंकामत निरूपणकरचा ॥ अब हिरण्यगर्भादिकपुरुषोंकूंहीं याजगत्काकारणमानणे हारे जे पुरुष कारणवादी हैं तिनोंकेमतकानिरूपणकरैं हैं॥तहां तेपुरुषकारणवादी आपणेमतकी सिद्धिकरणेवासतै प्रथम तिनप्रकृतिकारणवादियोंके मतविषे याप्रकारके दूषण कथनकरैं हैं ॥ हेप्रकृतिकारणवादी॥कारणविषे कार्यकी सादृश्यताकूंअंगीकारकरिकै जोतुमनैं त्रिगुणात्मकप्रकृतिकूं याजगत्काकारणमान्याहै ॥ तातुमारेसैं हम यहपुछते हैं ॥ कार्यकारणकी सर्वरूपकरिकैसादृश्यताहोवै है ॥ अथवा यत्किंचित्रूपकरिकैसादृश्यताहोवै है ॥ तहाँ कार्यकारणकी सर्वरूपकरिकै सादृश्यताहोवै है॥यहप्रथमपक्ष जोतुंअंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं कार्यकारणका जोअत्यंतसादृश्यहोवैगा ॥ तो तिसकार्यकारणका परस्पर भेदसिद्धनहींहोवैगा ॥ और यत्किंचित्भेदकीअपेक्षाकरिकैही पदार्थोंका परस्पर कार्यकारणभावहोवै है ॥ अत्यंतअभिन्नपदार्थोंका परस्पर कार्यकारणभावहोवैनहीं॥ यातैं कार्यकारणकीअत्यंतसादृश्यताअंगीकारकियेतैं ताप्रकृतिविषे याजगत्कीकारणताही सिद्धनहींहोवैगी॥और कार्यकारणकीयत्किंचित्रूपकरिकैसादृश्यताहो वै है यहद्वितीयपक्ष जोतुमअंगीकारकरो सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं तुमसांखियोंकेमतविषे कार्यकारणभावतैंरहित जोचेतनअसंगपुरुषहै सोपुरुषभी भावत्वरूपयत्किंचित्धर्मकरिकै याजगत्केसदृशही है ॥ यातैं सोअसंगपुरुषभी याजगत्काकारणहोणाचाहिये॥ और ता अ

संगपुरुषकूं तुम सांखी याजगत्काकारणमानतेनहीं ॥ यातैं कार्यकारणकी यत्किंचित्रूपकरिकैभी सादृश्यतासंभवैनहीं॥ किंवा ॥ जैसे यालोकविषे जडरूपकरिकैप्रसिद्ध जेशकटादिकपदार्थ हैं॥तिनशकटादिकोंकीप्रवृत्ति चेतनपुरुषतैंविना स्वतंत्रहोवैनहीं॥किंतु चेतनपुरुष केअधीनहीं तिनशकटादिकोंकीप्रवृत्तिहोवै है॥तैसे सातुमारीजडप्रकृतिभी चेतनपुरुषकीप्रेरणातैंविना स्वतंत्र किसीकार्यैकरणेविषे प्रवृत्तनहींहोसकैगी॥यातैं ताजडप्रकृतिकूं आपणेकार्यविषेप्रवृत्तकरणेहारा कोईचेतनपुरुष तुमोनैं अवश्यअंगीकारकऱ्याचाहिये ॥ यातैं जिस चेतनपुरुषकीअपेक्षाकरिकै साप्रकृति याजगतकूंउत्पन्नकरैहै॥ताचेतनपुरुषकरिकैही याजगत्कीउत्पत्तिसंभवहोइसकैहै॥ यातैं चेतनपुरुष जगत् यादोनोंकेमध्यविषे तीसरीप्रकृतिकूंकारणमानणा निष्फलहै॥यातैं चेतनपुरुषही याजगत्काकारणहै ॥इतनैंकरिकैं पुरुषकारणवादी योंकामत निरूपणकऱ्या ॥ हेब्राह्मणो॥ इसप्रकार काल १ स्वभाव २ नियति ३ यदृच्छा ४ भूत ५ प्रकृति ६ पुरुष ७यह सप्तपक्ष हमोनैं तुमारेप्रतिकथनकरे हैं ॥ तहां पूर्व पूर्वमतविषे दूषणोंकाकथनकरिकै उत्तरउत्तरमतकाग्रहणकऱ्याहै ॥परंतु यह सप्त मत पूर्वउक्तदूषणों करिकैदूषितहैं ॥ यातैं इनसप्तमतोंविषे कोईभीमत ग्रहणकरणेयोग्यनहीं॥शंका॥हेभगवन्॥कालतैंआदिलैके प्रकृतिपर्यंत याषट्मतोंविषे यद्यपि पूर्व दूषणकथनकरे हैं ॥ तथापि यहचेतनपुरुषजगत्काकारणहै ॥या सातैंमतविषे कोईदूषण कथनकऱ्यानहीं ॥ यातैं यहपुरुषका रणवादही अंगीकारकरणेयोग्यहै ॥ समाधान ॥ हेब्राह्मणो ॥ जैसे कालादिकोंविषे कारणतासंभवैनहीं॥तैसे ताचेतनपुरुषविषेभी साकारणतासंभवैनहीं ॥ काहेतैं सोचेतनपुरुष सर्वसंगतैंरहितहै तथानिर्गुणहै तथासर्वव्यापारोंतैंरहितहै ॥ ऐसेनिष्क्रियअसंगपुरुषविषे याजगत् कीकारणतामानणी अत्यंतअसंगतहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ ताचेतनपुरुषकेवासतै जोतिनकालादिकोंकासंयोगहै॥सोसंयोगही याजगत्काकारणहोवैगा ॥ समाधान ॥ हे ब्राह्मणो ॥ ताचेतनपुरुषकेविद्यमानहुएताचेतनपुरुषकेवासतै जोतिनकालादिकोंकासंयोगहै ॥ सोसंयोगभीताप्रकृतिकीन्याईं जडहोणैतैं किसीअन्यकारणकीअपेक्षा अवश्यकरैगा ॥ और तिनकालादिकोंकेसंयोगकाभी कोन कारणहै ॥ याप्रकारकीजिज्ञासाभी निवृत्तहोवैनहीं ॥ यातैं जैसे कालादिकोंकूंकारणतानहीं है ॥ तैसे तिनकालादिकोंकेसंयोगकूंभी कारणतासंभ

वैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् सोशुद्धपरमात्मापुरुष असंगहै॥ यातैं ताशुद्धपुरुषविषे यद्यपि कारणतासंभवैनहीं ॥ तथापि प्रतिबिंबरूपजीवात्माविषे याजगत्कीकारणता संभव होइसकै है॥समाधान हे ब्राह्मणो ॥ यहजीव परतंत्रहै॥यातैं यहजीव आपणेसुखदुःखकीउत्पत्तिकर णेविषेभीसमर्थहोइसकैनहीं ॥ जभी यहजीव आपणेसुखदुःखकीउत्पत्तिकरणेविषेभी समर्थनहींभया ॥ तभी यासंपूर्णजगत्केउत्पन्नकरणे विषे यहजीव किसप्रकार समर्थहोवैगा ॥ किंवा॥यहजीवात्मा जोकदाचित् याजगत्कीउत्पत्तिकरणेविषे स्वतंत्रहोवैगा॥तो यहजीवात्मा आपणेसुखकेसाधनोंकूंही उत्पन्नकरैगा॥दुःखकेसाधनोंकूंउत्पन्नकरैगानहीं॥ यातैं ताजीवात्माविषेभी या जागत्की कारणतासंभवैनहीं ॥ इतनैंग्रंथकरिकै याजगत्केकारणविषे जितनेकवादियोंकेपक्षथे तिनपक्षोंकानिरूपणकरिकैखंडनकऱ्या ॥ अब सिद्धांतपक्षकानिरूपणकरे हैं ॥ हे संन्यासियो ॥ याप्रकारकेवचन जभी तिनब्रह्मवेत्ताब्राह्मणोनैं सर्वसभावासीब्राह्मणोंकेप्रतिकहे॥तभी तेशुद्धचित्तवाले संपूर्णसभावा सीब्राह्मण तिनपूर्वपक्षोंविषे नानाप्रकारकेदूषणोंकूंदेखिकरिकैतिनपक्षोंकापरित्यागकरतेभये ॥ और तेब्राह्मण वेदके वचनोंतैं ब्रह्मकूंहीजग त्काकारण जानतेहुएभी ताअर्थकीदृढताकरणेवासतै नानाप्रकारकीयुक्तियोंकेजानणेकीइच्छाकरतेभये ॥ तिसतैंअनंतर तेसंपूर्णब्राह्मण योगशास्त्रकीरीतिसैं ता अद्वितीयब्रह्मविषे चित्तकेवृत्तियोंकाप्रवाहरूपध्यान करतेभये॥इसप्रकार ध्यानकूंप्राप्तहोइकै तेविद्वान्ब्राह्मण ता अद्वितीयआत्माकेआश्रित एकअविद्यारूपशक्तिकूंदेखतेभये ॥ कैसीहैसाअविद्यारूपशक्ति याजगत्केउत्पत्तिस्थितिलयकूंकरणेहारी है॥ तथा कुतर्कीपुरुषोंकरिकै देखी जावैनहीं ॥ तथा आवरणविक्षेपादिकगुणोंकारिकैढाकीहुइ है॥ ऐसीअविद्यारूपशक्तिकूंदेखिकरिकै तेसंपूर्ण ब्राह्मणआश्चर्यकूंप्राप्तहोतेभये॥अबतामायारूपशक्तिकेगुणोंकानिरूपणकरैहैं॥ स्वप्रकाशअद्वितीयआनंदरूप जोयहआत्मादेवहै ताकेविषे यहमायारूपशक्ति यद्यपिवास्तवतैं हैनहीं॥तथापि ताआनंदस्वरूपआत्माविषे भासमानहुईयहमायारूपशक्ति आपणेअसज्जडदुःखरूपोंक रिकै तासत्चित् आंनदरूपआत्माकूं आच्छादनकरिलेवै है॥यातैं तामायारूपशक्तिका यहआवरणरूप स्वाभाविकगुणहै॥ और याजग त्की जो उत्पत्तिस्थिति लयहै ॥ तथा यास्थूलसूक्ष्मशरीरके अध्यासतैं या आनंदस्वरूपआत्माकूं प्राप्त होणेहारे तथा ताअध्यासकी

निवृत्तितैंनिवृत्तहोणेहारे जेकामक्रोधादिकअनेकविकारहैं ॥ तेसंपूर्णविकार तामायाशक्तिकेविक्षेपरूपगुणहैं॥ ऐसेआवरणविक्षेपरूपअनेक गुणोंकारिकैयुक्त जो मायाशक्तिहै तामायाशक्तिकूंदेखिकरिकै तेविद्वान्ब्राह्मण परमआश्चर्यकूंप्राप्तहोतेभये॥ अब तामायाशक्तिकेअधिष्ठान आत्माकास्वरूपनिरूपणकरैहैं॥हेसंन्यासियो॥यहमायाशक्ति जिसअधिष्ठानआत्माकेआश्रितरहैहै॥ सोअधिष्ठानआत्माकैसाहै।जैसे यहसूर्यभगवान् घटादिकसर्वपदार्थोंकूंप्रकाशकरै हैं॥ तैसे सो अद्वितीयआत्माभी आपणेअस्तिभातिप्रियरूपकरिकै पूर्वउक्तकालादिकसर्वकारणोंकूं व्याप्तकरै है ॥ और जैसे यहआकाश घटमठादिकसर्वपदार्थोंविषे व्याप्तहै॥तैसे सोपरमात्मादेव प्रथम समष्टिरूपकालादिककारणोंकूंव्याप्तकरिकै तिसतैंअनंतर व्यष्टिरूपजगत्कूंव्याप्तकरै है ॥ और हेसंन्यासियो ॥ सर्वविकारोंतैंरहित जो असंगआत्मा है ॥ ता असंग आत्माविषे जोहमनैं कालादिककारणोंकीअधिष्ठानतातथा कार्यप्रपंचकीअधिष्ठानता कथनकरीहै॥साअधिष्ठानताभीयामायारूपशक्तिके बलतैंहीहोवै है ॥ वास्तवतैं ताअसंगआत्माविषे याकार्यकारणप्रपंचकी अधिष्ठानतासंभवैनहीं ॥ जैसे किसी व्यभिचारिणीस्त्रीनैं करेजे मंत्रऔषधादिकउपायहैं ॥ ताउपायोंकरिकैमोहकूंप्राप्तहुआ कोईधनीपुरुष ताव्यभिचारिणीस्त्रीकेविलासोंविषेआसक्तहोवै है ॥ तैसे तामायारूपशक्तिकरिकै मोहकूंप्राप्तहुआ यहआत्मादेव तामायाकेप्रपंचरूपविलासोंविषे आसक्तहोवै है और जैसेयालोकविषे सर्वसंगतैंरहितहुआभी कोई महात्मापुरुषआपणे सुद्धत्त्वभावकरिकै जभी किसी दुष्टपुरुषके संगकूंप्राप्तहोवै है ॥ तभी ता दुष्टपुरुषके संगकरिकै सोमहात्मापुरुष मिथ्यावचनरूपपापकूं तथातापापकेदुःखरूपफलकूंप्राप्तहोवै है ॥ तैसे वास्तवतैंअसंगरूपआत्मादेव तामायारूपशक्तिकेसंबंधकूंपाइकै जभी जीवरूपताकूं तथा जगत्के कारणरूपताकूंप्राप्तहोवै है तभी सो आत्मादेव अनेकप्रकारके दुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेसंन्यासियो ॥ वास्तवतैं सर्वसंगतैं रहित जो यहस्वयंज्योतिनिर्गुणआत्मा है॥ ता असंगआत्माकूंभी यहमायारूपशक्ति मोहित करिलेवै है ॥ यातैं यामायाशक्तिकाप्रभाव बहुतआश्चर्यरूपहै ॥ याकारणतैंही वेदांतशास्त्रविषे तामायाशक्तिकूं अघटितघटनापटीयसी यानामकरिकैकथनकरै है ॥ ऐसीमायारूपशक्तिकेसंबंधकरिकैही यहअसंगआत्मादेव या संसारचक्रविषे प्रवेशकरै है ॥ अब

याहीअर्थकेस्पष्टकरणेवासतै प्रथम यासंसारकूं चक्ररूपकरिकैवर्णनकरै हैं ॥ हेसंन्यासियो जैसे यालोकविषेप्रसिद्ध जोरथकाचक्रहै ता चक्रका एकनेमिहोवै है॥ और दूसरा नाभिहोवैहै ॥ और तीसरेअराहोवै हैं॥तहां पृथ्वीकेसाथ जाकासंबंधहोवै है ऐसाजोवर्तुलाकार काष्ठविशेषहै ताकानाम नेमिहै ॥ और जाकेविषेरथकीशलाकाफिरैहैं ऐसाजोमध्यकाकाष्ठविशेषहै॥ताकानाम नाभिहै ॥ और तानेमिनाभिदोनोंकेमध्यविषे जेकाष्ठविशेषहैं तिनोंकानाम अराहै॥तैसे माया शक्ति अज्ञान मूलप्रकृति प्रधान अव्याकृत इत्यादिकनामोंकरिकै कथनकरणेयोग्यजाअविद्याहै ॥ साअविद्या यासंसारकूं सर्वओरतैंव्याप्यकरिकैस्थितहै ॥ याकारणतैं साअविद्या यासंसाररूपचक्रकानेमिहै॥ और जैसेप्रसिद्धरथकाचक्र लोहरजतसुवर्णादिकधातुमय पटिकाकरिकैजटितहोवैहै ॥तैसे यहसंसाररूपचक्रभी शुक्लवर्णवालासत्वगुण रक्तवर्णवालारजोगुण कृष्णवर्णवालातमोगुण यातीनगुणरूपपटिकाकरिकै जडितहै ॥ और जैसे याप्रसिद्धचक्रकेनाभिविषे अरारूपकाष्ठोंकेरहणेवासतै छिद्ररूपसंस्थानहोवै है ॥ तैसे यासंसाररूपचक्रकेनाभिविषे क्लेशादिरूपअराकेरहणेवासतै षोडशविकाररूप छिद्रस्थानहैं ॥ तेषोडशविकार यह हैं ॥ श्रोत्र, त्वक्, चक्षु, रसन, घ्राण, यह पंचज्ञानइंद्रिय तथा वाक्, पाणि, पाद, पायु, उपस्थ यहपंचकर्मइंद्रिय आकाश, वायु, तेज, जल, पृथिवी यहपंचभूत एकमन इनोंकानाम षोडशविकारहै ॥ और जैसे प्रसिद्धचक्रविषे अराहोवै हैं॥ तैसे यासंसाररूपचक्रविषे५० पंचासअराहैं॥तेअरा यहहैं पंचक्लेश ५ अष्टसिद्धि ८ नवतुष्टि ९ अट्ठाईसअशक्ति२८तहांअविद्या अस्मिता राग द्वेष अभिनिवेश यहपंचप्रकारकाक्लेशहोवैहै ॥ तहां अनात्मरूपदेहादिकोंविषे आत्मबुद्धिरूपजोविपर्ययहै ॥ ताविपरीतबुद्धिकानाम अविद्या है ॥ याअविद्याकूंही शास्त्रविषे मत यानामकरिकैकथनकरै हैं॥१ ॥ और विचारहीनपुरुषोंकूं जोदेहादिकोंविषे अहंबुद्धिहै ताकानाम अस्मिताहै याअस्मिताकूंही शास्त्रवेत्तापुरुष मोह यानामकरिकैकथनकरैहै॥२॥और विषयसुखकेसाधन जेधनस्त्रीपुत्रादिकपदार्थ हैं तिनोंविषेजाअत्यंतआसक्तिहै याकानामरागहै ॥याहीरागकूं शास्त्रवेत्तापुरुष महामोह यानामकरिकैकथनकरै हैं॥ ३ ॥ और दुःखकीप्राप्तिकरणहारेशत्रुआदिकोंके अनिष्टका जो चिंतनहै॥याकानामद्वेषहै ॥याहीद्वेषकूं शास्त्रवेत्तापुरुष तामिस्र यानामकरिकैकथनकरैहैं॥४॥ और

धनस्त्रीपुत्रादिकप्रियपदार्थोंके जोत्यागकीइच्छानहींकरणी ऐसी जा तिनधनादिकपदार्थोंविषेममताहै॥ या कानाम अभिनिवेश है याही अभिनिवेशकूं शास्त्रवेत्तापुरुष अंधतामिस्र यानामकरिकैकथनकरैहैं॥५॥यद्यपंचप्रकारकेक्लेशहोवैहैं॥और सुहृद्प्राप्ति १ अध्ययन २ ऊह ३शब्द ४अध्यात्मदुःखकानाश५ अधिदैवदुःखकानाश ६आधिभूतदुःखकानाश ७दान ८यहअष्टसिद्धियांहोवैहैं॥और प्रकृति १उपादान २ काल ३ भाग्य ४ शब्दनिवृत्ति ५ स्पर्शनिवृत्ति ६ रूपनिवृत्ति ७ रसनिवृत्ति ८ गंधनिवृत्ति ९ यह नवप्रकारकीतुष्टिहोवैहैं ॥ तहां प्रकृति आदिकचारि अंतरतुष्टिहैं ॥ और शब्दादिकपंच बाह्यतुष्टियां हैं ॥ और श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रिय तथा वागादिकपंचकर्मइंद्रिय एकमन याएकादशइंद्रियोंका जोकुष्ठादिकरोगोंकरिकैनाशहै ॥ अथवा तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंकेविद्यमानहुएभी तिनइंद्रियोंविषे जो आपणेकार्यकरणेकाअसामर्थ्यहै ॥ अथवा दूसरेपुरुषकेइंद्रियोंकीअपेक्षाकरिकै जोतिनइंद्रियोंविषे अल्पकार्यकरणेकासामर्थ्यहै ॥ यही तिनइंद्रियोंका नाशहै॥याप्रकार तिनएकादशइंद्रियोंकेएकादशनाशोंकरिकै याबुद्धिविषे असामर्थ्यरूप एकादशअशक्तियां उत्पन्नहोवैहैं ॥ इसप्रकार पूर्व उक्त अष्टसिद्धियोंकेअप्राप्तिकरिकै ताबुद्धिविषे अष्टअशक्तियां उत्पन्नहोवै हैं ॥इसप्रकार नवतुष्टियोंकेअप्राप्तिकरिकै ताबुद्धिविषे नव अशक्तियां उत्पन्नहोवैहैं ॥ इसप्रकार संपूर्णमिलिकै अट्ठाईसअशक्तियां होवैहैं ॥ तेअट्ठाईसअशक्तियां तथा नवतुष्टियां तथा अष्टसिद्धियांतथा पंचक्लेश यहसंपूर्णमिलिकेपचासहोवैहैं॥तेसंपूर्ण यासंसाररूपचक्रके अराहैं ॥ तहां पूर्व अविद्यादिकपंचक्लेशोंका सामान्यतैंनिरूपणकऱ्या था ॥ अब तिसीपंचक्लेशोंका विस्तारतैंनिरूपणकरै हैं तहां अनात्मपदार्थोंविषेआत्मबुद्धिरूपजाअविद्या है ॥ ताअविद्याकेअष्टप्रकारके विषयहोवैहैं ॥ ताविषयकेभेदकरिकै साअविद्याभी अष्टप्रकारकीहोवैहै ॥ तेअष्टविषययहहैं॥कारणरूपप्रकृति महत्तत्व अहंकार पंचभूत याअष्टविषयोंकेभेदतैं सातमरूपअविद्याभी अष्टप्रकारकीहोवैहै।साअविद्यासुषुप्तिअवस्थाविषेभी बीजरूपहोइकैरहैहै॥१॥ऐसीअविद्याका बीजरूपजाअस्मिताहै ॥ साअस्मिताभीजाग्रत्स्वप्नविषे तिसअविद्याकेप्रकृतिआदिकअष्टविषयोंकूंही अहंरूपकरिकैविषयकरैहै ॥ यातैं तिनप्रकृतिआदिकअष्टविषयोंकेभेदकरिकै सामोहरूपअस्मिताभी अष्टप्रकारकीहोवैहै ॥ २ ॥और श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रियोंके नेकमतैं

शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध यहपंचप्रकारकेविषय हैं॥ तेशब्दादिकपंचविषयभी दिव्य अदिव्य याभेदकरिकै दोदोप्रकारके होवै हैं ॥ तहाँ स्वर्गादिकलोकोंकेजेशब्दादिकविषय हैं ॥ते दिव्यविषय हैं ॥ और यामनुष्यलोककेजेशब्दादिकविषय हैं॥ ते अदिव्यविषय हैं॥इसप्रकार दिव्यअदिव्यभेदकरिकै दशप्रकारकेजेशब्दादिकविषय हैं ॥ तेदशप्रकारकेविषय याजीवोंकेसुखकासाधनहोणेतैं याजीवोंकेरागकाविषयहैं यातैं तादशप्रकारकेविषयोंकेभेदकरिकै सोमहामोहरूपरागभी दशप्रकारकाहोवै है॥३॥और अणिमा, गरिमा, लघिमा, महिमा प्राप्ति प्राकाम्य, ईशित्व, वशित्व, यहअष्टप्रकारकी सिद्धियां ॥ तथा पूर्वउक्त दिव्यअदिव्यभेदतैं शब्दादिकदशविषय ॥ यहअष्टादशविषय द्वेषकेविषय हैं ॥ यातैं तिनअष्टादशविषयोंकेभेदतैं सोद्वेषभी अष्टादशप्रकारकाहोवै है॥अथवा पूर्वउक्तअस्मिताके जेप्रकृतिआदिकअष्ट विषय हैं ॥ तथा पूर्वउक्तरागके जेशब्दादिकदशविषय हैं॥तेअष्टादश द्वेषकेभीविषय हैं॥ यातैं तिनअष्टादशविषयोंकेभेदकरिकै सोद्वेषभी अष्टादशप्रकारकाहोवै है ॥ तात्पर्ययह ॥ यहअष्टादशविषय किसीनिमित्तकरिकै जभी नाशकूंप्राप्तहोवै हैं॥तभी तेअष्टादशविषय याजीवविषे दुःखकीउत्पत्तिकरिकै याजीवकेद्वेषकाविषयहोवै हैं ॥ ताअष्टादश विषयोंकेभेदकरिकै सोतामिस्ररूपद्वेषभी अष्टादशप्रकारका होवै है ॥ ४ ॥ और पूर्वउक्तआणिमादिकअष्ट सिद्धियोंसहित जेशब्दादिकदशविषयहैं ॥ अथवा पूर्वउक्तअस्मिताके प्रकृतिआदिकअष्ट विषयोंसहित जेशब्दादिकदशविषय हैं ॥ तिनविषयोंके नाशकरणेहाराजोकोईकेबलवान्पुरुषहै॥तावलवान्पुरुषविषे आपणीप्रतिकूलता जाणिकै जोतिनविषयोंकेनाशका भय है ॥ याकानाम अभिनिवेश है॥सोआभिनिवेशभी तिनअष्टादशविषयोंकेभेदतैं अष्टादशप्रकारका हीहोवै है ॥ ५ यातैंयहअर्थासिद्धभया॥ तमरूपअविद्या अष्टप्रकारकी ८ तथा मोहरूपअस्मिता अष्टप्रकारकी ८ तथा महामोहरूपराग दशप्रकारका १० तथा तामिस्ररूपद्वेष अष्टादशप्रकारका १८ तथा अंधतामिस्ररूपअभिनिवेश अष्टादशप्रकारका १८ यहसंपूर्णमिलिकै ६२ बासठि संख्याहोवै हैं ॥ इतनेकरिकै अविद्यादिकपंचक्लेशोंका निरूपणकऱ्या॥अब पूर्वउक्तअष्टसिद्धियोंकेस्वरूपका निरूपण करै हैं तहाँ ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरणेहारा जोश्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुहै॥ताकेप्राप्तिकानाम सुहृद्प्राप्तिहै॥१॥ताब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं जोवेदांत

शास्त्रकाश्रवणकरणा है याकानाम अध्ययन है ॥ और ताश्रवणकरेअर्थका जोनानाप्रकारकीयुक्तियोंकरिकैमननकरणा है याकानाम ऊह है ॥ ३ ॥ और तामननकरेहुएअर्थविषे जोनिरंतर चित्तकेवृत्तियोंकाप्रवाहरूप निदिध्यासन है ॥ ताकानाम शब्दहै॥४॥ और ज्वरादिकव्याधियोंकरिकै तथा कामक्रोधादिकआधियोंकरिकै उत्पन्नभयाजोदुःख है॥तादुःखकेनाशकानाम अध्यात्मदुःखनाश है ॥५॥और अग्निजलादिकोंकरिकै उत्पन्नभयाजोदुःखहै तादुःखकेनाशकानाम अधिदैवदुःखनाश है ॥ और सिंहसर्पादिकभूतोंकरिकैउत्पन्नभयाजोदुःख है ॥ तादुःखकेनाशकानाम अधिभूतदुःख नाश है॥७॥और पूर्ववृद्धमहान्पुरुषोंकेअनुसार जोवेदांतविद्याकेसंप्रदायकीप्रवृत्तिकरणीहै याकानाम दान है ॥ ८ ॥ यहसुहृद् प्राप्तितैंआदिलैके जेअष्टसिद्धियां हैं ॥ तेसिद्धियां याजीवकेमोक्षकासाधन हैं ॥ यातैं यहअष्टही सिद्धिशब्दका मुख्यअर्थ हैं ॥ और पूर्वउक्तअणिमादिकअष्टसिद्धियांतो मायिकपदार्थोंकीप्राप्तिकरणेहारियां हैं ॥ यातैं तेअणिमादिक तासिद्धिशब्दका मुख्यअर्थनहीं ॥ किंतु तासिद्धिशब्दकागौणअर्थ है ॥ इतनैकरिकैअष्टसिद्धियोंकानिरूपणकऱ्या ॥ अब पूर्वउक्तनवतुष्टियोंकास्वरूप निरूपणकरै हैं ॥ तहाँ प्रथम प्रकृतितुष्टिकास्वरूप निरूपणकरै हैं ॥ यहप्रकृतिरूपमायाही यासंपूर्णजगत्की उत्पत्ति स्थिति लय करै है ॥ तथा सामायारूपप्रकृतिंही नानाप्रकारकेदुर्घटकार्योंकूंभीउत्पन्नकरै है ॥ यातैं सामायारूपप्रकृति जैसे याजगत् कूंउत्पन्नकरै है ॥ तैसे साप्रकृति कदाचित् हमारेआत्मज्ञानकूंभीउत्पन्नकरैगी ॥ ताआत्मज्ञानकी प्राप्तिवासतै हमाराउद्यम निष्फल है॥ याप्रकारकाविचारकरिकै जेआलसीमूढपुरुष श्रवणादिकसाधनोंविषे उद्यमनहींकरै है ॥ याकानाम प्रकृतितुष्टि है ॥१॥ और जोपदार्थ नियमकरिकै ॥ जिसकार्यकीउत्पत्तिकरै है ॥ सोपदार्थ ताकार्यकीउत्पत्तिविषे कारणहोवै है ॥ और " दंड्यग्रहणमात्रेण नरोनारायणो भवेत् "इत्यादिकशास्त्रोंविषे संन्यासआश्रमकूंही आत्मज्ञानका कारण कह्या है ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै जोपुरुष संन्यासआश्रम कूंधारणकरै है॥और वासंन्यासआश्रमकरिकैही आपणेकूंकृतकृत्यमानताहुआ जोपुरुष श्रवणादिकसाधनोंविषे उद्यमनहींकरै है॥याका नाम संप्रदानतुष्टि है ॥२॥ और यहकालही सर्वजगत्कीउत्पत्तिस्थितिलयकरै है ॥ यातैं यहकाल जैसे सर्वजगत्कूंउत्पन्नकरै है॥तैसे सो

काल कदाचित् हमारेआत्मज्ञानकूंभीउत्पन्नकरैगा ॥ ताआत्मज्ञानकीप्राप्तिवासतै हमाराउद्यम निष्फल है ॥ याप्रकारकाविचार करिकै जोबुद्धिहीनआलसीपुरुष श्रवणादिकसाधनोंविषे उद्यमनहींकरैहै ॥ याकानाम कालतुष्टिहै ॥ ३ ॥ और यहजीव आपणे भाग्यतैंही राज्य कूंप्राप्तहोवै है ॥ तथा भाग्यतैंही यहजीव लक्ष्मीयशआदिकपदार्थोंकूंप्राप्तहोवै है ॥ यातैं जोभाग्य हमारेकूं धनादिकपदार्थोंकीप्राप्तिकरै है सोभाग्य कदाचित् हमारेआत्मज्ञानकूंभी उत्पन्नकरैगा ॥ ताआत्मज्ञानकीप्राप्तिवासतैहमाराउद्यमनिष्फलहै ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै जोमूढआलसीपुरुष श्रवणादिकसाधनोंविषे उद्यमनहींकरैहै ॥ याकानाम भाग्यतुष्टिहै ॥ ४ ॥ यहचारों अंतरतुष्टि हैं ॥ अब बाह्यपंचतुष्टियोंकास्वरूप निरूपणकरैहैं ॥ जोपुरुष श्रोत्रइंद्रियकरिकै नानाप्रकारकेशब्दोंकूं नहींश्रवणकरैहै ॥ और ताश्रोत्रइंद्रियके निरोधकरणेकरिकैही आपणेकूंकृतकृत्यमानिकै जोपुरुष श्रवणादिकसाधनोंविषे उद्यमनहींकरैहै ॥ याकानाम शब्दनिवृत्तितुष्टि है ॥ ५ ॥ और जो पुरुष त्वक्इंद्रियकरिकै नानाप्रकारकेस्पर्शोंकूंग्रहणनहीं करैहै ॥ और तात्वक्इंद्रियकेनिरोधकरणेकरिकैही आपणेकूंकृतकृत्यमानिकै जोपुरुष श्रवणादिकसाधनोंविषे उद्यमनहींकरैहै ॥ याकानाम स्पर्शनिवृत्तितुष्टिहै ॥ ६ ॥ और जोपुरुष नेत्रइंद्रियकरिकै नानाप्रकारकेरूपोंकूंनहीं देखेहै ॥ और तानेत्रइंद्रियकेनिरोधकरणेकरिकैही आपणेकूंकृतकृत्यमानिकै जोपुरुष श्रवणादिकसाधनोंविषे उद्यमनहींकरै है॥याकानाम रूपनिवृत्तितुष्टिहै ॥ ७ ॥ और जोपुरुष रसनइंद्रियकरिकै नानाप्रकारकेमधुरादिकरसोंकूंनहींग्रहणकरैहै ॥ और तारसनइंद्रियके निरोधकरणेकरिकैही आपणेकूंकृतकृत्यमानिकै जोपुरुष श्रवणादिकसाधनोंविषे उद्यमनहींकरै है ॥ याकानाम रसनिवृत्तितुष्टि है ॥ ८ ॥ और जोपुरुष घ्राणइंद्रियकरिकै नानाप्रकारकेगंधकूंग्रहणनहींकरैहै ॥ और ताघ्राणइंद्रियकेनिरोधकरणेकरिकैही आपणेकूंकृतकृत्यमानिकै जो पुरुष श्रवणादिकसाधनोंविषे उद्यमनहींकरैहै ॥ याकानाम गंधनिवृत्तितुष्टिहै ॥ ९ ॥ और कोईकशास्त्रवेत्तापुरुषतो तिनबाह्यपंचतुष्टियों का याप्रकारकास्वरूप निरूपणकरैहैं ॥ याधनादिकपदार्थोंकाजोएकठाकरणाहै १ तथा याधनादिकपदार्थोंकाजोरक्षणकरणाहै २ तथा याधनादिकपदार्थोंकाजोखर्चकरणाहै ३ तथा याधनादिकपदार्थोंकाजोभोगणाहै ४ तथा याधनादिकपदार्थोंकाजो नाश है ५

यहपांचों याजीवोंकूं क्लेशकीहीप्राप्तिकरैहैं ॥ तहांश्लोक ॥ अर्थानामर्जने क्लेशस्तथैवपरिपालने॥ नाशेव्ययेचभोगेच धिगर्थान्क्लेशभाजिनः अर्थयह ॥ याधनादिकपदार्थोंके एकठेकरणेविषे तथा रक्षणकरणेविषे तथा नाशविषे तथा खर्चकरणेविषे तथा भोगणेविषे या जीवोंकूं क्लेशकीहीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं सर्वदा क्लेशकीप्राप्तिकरणेहारेजेधनादिकपदार्थ हैं तिनोंकूंधिक्कारहै ॥१ ॥ याप्रकारकाविचारकरिकैजोपुरुष पूर्वइकट्ठे कियेहुएधनादिकपदार्थोंकाभी परित्यागकरिदेवै है॥ अथवा ताविचारकूंकरिकै जोपुरुष तिनधनादिकपदार्थोंकूं एकाठाहीनहीं करै है ॥ तापुरुषकेचित्तविषे तिसपंचप्रकारकेनिमित्तकरिकै पंचप्रकारकीउपरामताहोवै है ॥तापंचप्रकारकीउपरामताकरिकैही आपणे कूंकृतकृत्यमानिकै जोपुरुष श्रवणादिकसाधनोंविषे उद्यम नहीं करै है ॥ याका नाम बाह्यपंचप्रकारकी तुष्टि है ॥ हेमुनीश्वरो ॥ यानवप्रकारकी तुष्टियोंविषे किसीभीतुष्टिकूंअंगीकारकरिकै जो मूढबुद्धिपुरुष श्रवणादिकसाधनोंविषे उद्यम नहीं करै है ॥ तामूढबुद्धिपुरुषकूं कदाचित्भी आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ यातैं यहनवप्रकारकी तुष्टियां आत्मसाक्षात्कारका विरोधीहोणे तैं याजीवोंके जन्ममरणादिरूपसंसारकेहीकारणहैं ॥ यातैं मुमुक्षुजननैं तिननवतुष्टियोंका परित्यागकरिकै श्रवणादिकसाधनोंविषे ही उद्यम न करणा ॥ और हेमुनीश्वरो ॥ जैसे प्रसिद्धचक्रविषे एकमहान्अराहोवै हैं ॥ और दूसरे अल्पअराहोवै हैं ॥ तैसे यासंसाररूप चक्रके पूर्वउक्तक्लेशादिकपंचास महान्अराहैं ॥ और श्रोत्रादिकदशइंद्रिय तथा शब्दादिकदशविषय यह बीस २० ता संसारचक्रके अल्पअराहैं ॥ और हे मुनीश्वरो ॥ जैसे प्रसिद्धचक्रकेनेमिविषे तीक्ष्णधाराहोवै हैं ॥ तैसे यासंसाररूपचक्रविषे यह षट्अष्टकरूप तीक्ष्णधारा हैं ॥ अब ताषट्अष्टकोंकास्वरूप निरूपणकरै हैं ॥ भूमि १ जल २ तेज ३ वायु ४ आकाश५ मन ६ बुद्धि ७ अहंकार ८ यहप्रकृतिअष्टक है ॥ अथवा प्रकृति १ भूमि २ जल ३ तेज ४ वायु ५ आकाश ६ मन ७ अहंकार ८ याप्रकारका प्रकृतिअष्टक होवै है ॥ १ ॥ और यम १ नियम २ आसन ३ प्राणायाम ४ प्रत्याहार ५ धारणा ६ ध्यान ७ समाधि ८ यहयोगांगअष्टक है ॥ २ ॥ और सुहृद्प्राप्ति १ अध्ययन २ ऊह ३ शब्द ४ अध्यात्मदुःखनिवृत्ति ५ आधिदैवदुःखनिवृत्ति ६ आधिभूतदुःखनिवृत्ति ७

दान ८ यह सिद्धिअष्टकहैं ॥ ३ ॥ और अणिमा १ गरिमा २ लघिमा ३ महिमा ४ प्राप्ति ५ प्राकाम्य ६ ईशित्व ७ वशित्व ८ यह सिद्धिअष्टकहै ॥ ४ ॥ और वाक् १ श्रोत्र २ त्वक् ३ चक्षु ४ रसन ५ घ्राण ६ मन ७ हस्त ८ यहग्रहअष्टकहैं ॥ ५ ॥ और या वाकादि कइंद्रियोंके जेक्रमतैं शब्दउच्चारण १ शब्द २ स्पर्श ३ रूप ४ रस ५ गंध ६ संकल्प ७ ग्रहण ८ यहअष्टप्रकारके विषय हैं ॥ सोयहअष्ट विषय अतिग्रहअष्टकहैं ॥ ६ ॥ इसप्रकार षट्अष्टकोंकास्वरूप कोईकविद्वान्पुरुष अंगीकारकरै हैं ॥ और कोईकशास्त्रवेत्तापुरुषतौ याप्र कार तिनषट्अष्टकोंकास्वरूप निरूपणकरै हैं ॥ वाक् १ श्रोत्र २ त्वक् ३ चक्षु ४ रसन ५ घ्राण ६ मन ७ हस्त ८ यहग्रहअष्टक हैं॥१॥ और शब्दउच्चारण १ शब्द २ स्पर्श ३ रूप ४ रस ५ गंध ६ संकल्प७ग्रहण८यहअतिग्रहअष्टकहै ॥२॥ याग्रहअतिग्रहोंकास्वरूप पंचम अध्यायविषे आर्त्तभागकेसंवादमैं विस्तारतैंकहिआये हैं ॥ और पृथिवी १ काम २ रूप ३ आकाश ४ तम ५ रूप ६ दल ७ रेत ८ यहआ यतनअष्टकहै ॥३॥ और अग्नि१हृदय२ चक्षु ३ श्रोत्र ४ हृदय ५ चक्षु ६ हृदय ७ हृदय ८ यहलोकअष्टकहै ॥४॥ और अमृत १ स्त्री २ सत्य ३ दिशा ४ मृत्यु ५ प्राण ६ वरुण ७ प्रजापति ८ यहदेवताअष्टकहै ॥ ५ ॥ और शारीर १ काममय २ आदित्य ३ श्रोत ४ छा यामय ५ प्रतिबिंब ६ उदकस्थ ७ पुत्रमय ८ यहपुरुषअष्टकहै ॥ ६ ॥ तहां आयतनअष्टक, लोकअष्टक, देवताअष्टक, पुरुषअष्टक याचारि अष्टकोंकास्वरूप पूर्वपंचम अध्यायविषे याज्ञवल्क्यमुनिशाकल्यकेसंवादविषे विस्तारतैंनिरूपण करिआयेहैं॥ याकारणतैं इहांसं क्षेपतैं नाममात्रलिखे हैं ॥ इसप्रकार जैसे कुलालकेचक्रविषे घटस्थितहोवैहै ॥ तैसे यहषट्प्रकारकेअष्टक या संसाररूप चक्रके नेमिकी तीक्ष्णधाराहैं ॥ और हेमुनीश्वरो॥जैसे प्रसिद्धचक्रकेधारणकरणेहारे रज्जुआदिकपाशहोवैहैं ॥ तैसे यास्थावरजंगमरूपजगत्भाव कूंप्राप्तभया जोमायाविशिष्टपरमात्माहै ॥ सोपरमात्मादेव यासंसाररूपचक्रकेधारणकरणेहारा रज्जुरूपपाशहै ॥ और नेमि नाभि अरा इत्यादिकअवयवोंकरिकैयुक्त जोप्रसिद्धचक्रहै ॥ सोचक्र जैसे रज्जुआदिक बंधनोंतैंविना शीघ्रही विशीर्णभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ तैसे यहसंसाररूपचक्रभी तापरमात्मारूपबंधनतैंविना शीघ्रहीविशीर्ण भावकूंप्राप्तहोवै है ॥ और हे मुनीश्वरो ॥ ब्रह्मलोककीप्राप्तिकरणेहारा

जोदेवयाननामामार्ग है ॥ तथा स्वर्गादिकलोकोंकी प्राप्तिकरणेहारा जो पितृयाण नामामार्ग है ॥ तथा कीटपतंगादिकक्षुद्रशरीरोंकी प्राप्तिकरणेहारा जोतृतीयस्थाननामामार्ग है॥यहतीनप्रकारकेमार्ग तासंसाररूपचक्रकेभेदकाकारणहै तिनतीनमार्गोंकेयोगतैंयहसंसाररूप चक्र तीननाभिवाला तथा तीननेमिवालाकह्याजावै है॥तात्पर्ययह॥जैसे प्रथम वर्तुलाकार एकसूक्ष्ममंडलालिखणा॥तासूक्ष्ममंडलकूंबाह्य तीनमंडलोंकरिकैवेष्टितकरणा॥तिनचारोंमंडलोंविषे जोप्रथममध्यकासूक्ष्ममंडल है॥ सोसर्वमंडलोंकेअंतरभूतहै॥यातैंसोसूक्ष्ममध्यकामंड लकेवलनाभि रूपही है और तिनचारिमंडलोंविषे जो अंत्यका मंडलहै सो सर्वमंडलोंकी अपेक्षाकरिकैबाहरहै यातैंसोअंत्यकामंडल केवलनेमि रूपही है ॥ और तिनचारोंमंडलोंविषे जेमध्यकेदोमंडल हैं॥तिनदोमंडलोंविषेतौ बाह्यमंडलकीअपेक्षाकरिकै नाभिरूपताहै॥ और अंतरमंडलकी अपेक्षा करिकै नेमिरूपता है ॥ इस प्रकार यह संसाररूपचक्र तीननेमिवाला तथा तीननाभिवाला सिद्ध होवै है॥ तहां ब्रह्मलोकके प्राप्तिकरणेहारा देवयाननामामार्ग अंतरमुख उपासकपुरुषोंकूंही प्राप्तहोवै है॥ यातैं सोदेवयाननामामार्ग यासंसारचक्रका प्रथममध्यनाभिहै॥ और स्वर्गादिकलोकोंकीप्राप्तिकरणेहारा जोपितृयाणनामामार्ग है॥सोमार्ग उपासकपुरुषोंकीअपेक्षा करिकै बहिर्मुखकर्मीपुरुषोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं सोपितृयाणनामामार्ग यासंसारचक्रका दूसरानाभिहै ॥और कीटपतंगादिकक्षुद्रशरीरोंकी प्राप्तिकरणेहारा जोतृतीयस्थाननामामार्ग है ॥सोमार्ग कर्मीपुरुषोंकीअपेक्षाकरिकै अत्यंतबहिर्मुखपापात्माजीवोंकूंप्राप्तहोवै है॥ यातैं सो तृतीयस्थाननामामार्ग यासंसारचक्रकातीसरानाभिहै ॥ औरतिनकीटपतंगादिकजीवों तैंभी अत्यंतनिकृष्टजेवृक्षादिकतामसीजीवहैं॥ति नतामसीजीवोंकरिकैप्राप्तहोणेयोग्य जातमरूपअविद्याहै ॥ सातमरूपअविद्या यासंसारचक्रका अत्यंतबाह्यनेमिहै ॥ और जैसे काष्ठमृत्ति का यहदोनों कुलालकेचक्रकाकारणहोवै है ॥ तैसे सुखदुःखरूपफलकूंदेणेहारे यहपुण्यपापरूपदोनोंकर्म यासंसारचक्रकेनिमित्तकारण हैं और हृदयदेशविषेस्थितआत्माकाभीविस्मरणकरिदेणा ऐसाजोतमरूपमोहहै ॥ सोमोह यासंसारचक्रका सर्वत्रअनुगतएकरूपहै ॥ हेसं न्यासियो ॥ ऐसे संसारचक्रभावकूंप्राप्त भया जोमायाविशिष्टपरमात्माहै ॥ तापरमात्मादेवकूं तेवेदवेत्ताब्राह्मण ध्यानकरिकैदेखते भये ॥

इतनैंकरिकै तामायाविशिष्टपरमात्माकूं संसारचक्ररूपकारिकैवर्णनकऱ्या ॥ अब तिस मायाविशिष्टपरमात्माकूं नदीरूपकरिकै वर्णनकरै हैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ तासंसारचक्रका उपादानकारण जामायारूपमहान्नदी है ॥ तामायारूपनदीका पुनःयाप्रकारकास्वरूप तेब्राह्मणदेखतेभये ॥ श्रोत्र, त्वक्, चक्षु, रसन, घ्राण यापंचज्ञानइंद्रियोंकेरहणेकेस्थान जेपंचगोलकहैं ॥ तेपंचगोलकस्थान या मायारूप नदीकेपंचस्रोतहैं ॥ जलबहणेकेजेस्थानविशेषहैं तिनोंकानाम स्रोतहै॥और जैसे प्रसिद्धनदियोंकेजल तिन स्रोतस्थानोंविषेचलै हैं ॥ तैसे यहश्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रियभी गोलकरूपस्थानोंविषेगमनकरै हैं॥यातैं तेश्रोत्रादिकपंचइंद्रिय यामायारूपनदीके पंचप्रकारकेजलहैं ॥और जैसे प्रसिद्धनदियोंकेजलोंका मेघ कारणहोवैहै॥ तैसे आकाश, वायु, तेज, जल, पृथिवी यह पंचभूत ताइंद्रियरूपजलोंका तथातागोलक रूपस्रोतोंका कारणहै ॥ और जैसे वर्षाकालविषे लोकप्रसिद्धनदियोंके कुटिलप्रवाहहोवै हैं ॥ तैसे कामक्रोधादिक आसुरीसंपदावाले प्रमादीजीवोंविषे श्रोत्रादिकपंचइंद्रियोंकरिकै उत्पन्नभये जेपंचप्रकारकेज्ञानहैं ॥ तेपंचज्ञान याजीवोंकेदुःखकाहेतुहैं ॥ यातैं तेपंचप्रकारके ज्ञान यामायारूपनदीकेअत्यंतउग्र तथा कुटिल पंचप्रवाह हैं ॥ अथवा जैसे लोकप्रसिद्धनदियोंविषे जलका भ्रमणरूप जे चक्रहोवै हैं ॥ तेचक्र याजीवोंकूंनीचलैजावै हैं॥तैसे शास्त्रसंस्कारतैंरहितप्रमादीपुरुषोंविषे श्रोत्रादिकपंचइंद्रियोंकरिकै उत्पन्नभयेजेपंचप्रकारकेज्ञानहैं ॥ तेज्ञानभी तिनप्रमादीपुरुषोंकूं कीटपतंगादिकशरीरोंकीप्राप्तिरूप अधोगतिकीप्राप्तिकरै हैं ॥ यातैं तेपंचप्रकारकेज्ञान यामायारूपनदीके पंचउग्रचक्रहैं॥और जैसे लोकप्रसिद्धनदियोंविषे नानाप्रकारकेतरंगहोवै हैं तैसे प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान यहपंचप्राण यामाया रूपनदीके महान्पंचतरंग हैं ॥ और जैसे लोकप्रसिद्धनदियोंकेमूलहोवै हैं॥तैसे शब्द स्पर्श रूप रस गंध यापांचोंकूंविषयकरणेहारे जेशा स्त्रविहित अथवा शास्त्रनिषिद्ध पंचप्रकारकेज्ञानउत्पन्नहोवै हैं ॥ तथा पंचप्रकारकीइच्छाउत्पन्नहोवै हैं ॥ तेपंचज्ञान तथापंचइच्छा संस्का रद्वारा यामायारूपनदीके पंचमूल हैं ॥ और जैसे लोकप्रसिद्धनदियोंविषे नानाप्रकारकेआवर्त्तहोवै हैं ॥ जिनआवर्त्तोंविषेप्राप्तहुआयहजीव बाहरनिकसिसकतानहीं॥तैसेशब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध यहपंचविषय यामायारूपनदीके पंचमहान्आवर्त्त हैं॥काहेतैं जैसेलोकप्रसिद्ध

नदियोंतैं जीवोंकूंपारउतारणेहाराजोनाविकपुरुषहै॥ सोनाविकपुरुषभी जोकदाचित् तिननदियोंकेआवर्त्तोंविषेप्राप्तहोवै है॥तौ सोनाविक पुरुषभी तानदीकेआवर्त्तो तैं आपणेकूं निकासणेमैंसमर्थहोतानहीं ॥ तैसे अधिकारीपुरुषोंकूं शास्त्रकाउपदेशकरिकै मायारूपनदीतैं पारकरणेहारा जोविद्वान्पुरुषहै ॥ सोविद्वान्पुरुषभी जोकदाचित् याविषयरूपआवर्त्तोंविषेप्राप्तहोवै है ॥ तौ सोविद्वान्पुरुषभी ताविषय रूपीआवर्त्तोंतैं आपणेकूंबाहरनिकासणेविषेसमर्थनहींहोवै है ॥ और जैसे सोनाविकपुरुष अन्यलोकोंकूंनदीतैं पारकरिकै जभी आप तानदीकेआवर्त्तोंविषेप्राप्तहोवै है ॥ और तानदीकेआवर्त्तोंतैं आपणेकूंनिकासणेमैंसमर्थनहींहोवै है॥तभी तानाविकपुरुषोंनैं जिनलोकोंकूं तानदीतैं पारकऱ्याथा ॥ तेलोक तानाविकपुरुषकूं नदीकेआवर्त्तोंविषेप्राप्तहुआदेखिकै कोइकलोकतौ तानाविकपुरुषकाशोककरै हैं ॥ और कोईकलोक ताका उपहासकरै हैं॥ तहां तानाविकपुरुषकेउपकारकूंजानणेहारे जेसज्जनपुरुष हैं॥तेसज्जनपुरुषतौ तानाविकपुरुषका शोककरै हैं ॥ और तानाविकपुरुषकेउपकारकूंनहींजानणेहारे जेकृतघ्नलोकहैं ॥ तेकृतघ्नलोकतौ तानाविकपुरुषकाउपहासकरै हैं ॥ तैसे जोविद्वान्पुरुष शास्त्रकाउपदेशकरिकै याअधिकारीपुरुषोंकूं मायारूपनदीतैंपारकरै हैं ॥ सोविद्वान्पुरुष जभी ताविषयरूपआवर्त्तो विषेप्राप्तहोइकै ताविषयरूपआवर्त्तो तैं आपणेकूंनिकासणेमैंसमर्थनहींहोवै है॥तभी ताविद्वान्पुरुषनैं जिनअधिकारीपुरुषोंकूं यामायारूप नदीतैंपारकऱ्याथा॥तेअधिकारीपुरुष याविद्वान्पुरुषकूं विषयरूपआवर्त्तोंविषेप्राप्तहुआदेखिकै कोईकसज्जनपुरुषतौ ता विद्वान्पुरुषका शोककरै हैं॥और कोईककृतघ्नपुरुषतौ ताविद्वान्पुरुषकाउपहासकरै हैं॥यातैं हेमुनीश्वरो याविद्वान्पुरुषनैंभी ऐसाअभिमान कदाचित् नहींकरणा ॥ जोहमविद्वान्पुरुष शास्त्रकाउपदेशकरिकै सर्वजीवोंकूं यामायारूपनदीतैंपारकरणेहारे हैं॥ यातै हमविद्वानोंकूं यहविषयआ वर्त्त क्याकरैंगे ॥ याप्रकारकाअभिमानकरिकै सोविद्वान्पुरुष जोकदाचित् तिनविषयरूपआवर्त्तोंविषेप्राप्तहोवैगा॥तौ सोविद्वान्पुरुषभी लोकोंकेउपहासकातथाशोकका विषयहोवैगा यातैंकरामलककीन्याईं जिनपुरुषोंकूंआत्माकासाक्षात्कारप्राप्तभयाहै ऐसेविद्वान्पुरुषोंनैंभी याविषयरूपआवर्त्तो तैं सर्वदा भयहीकरणा ॥ और हेमुनीश्वरो ॥ जैसे लोकप्रसिद्धनदियोंकेआवर्त नाविकपुरुषोंकूं तथा अन्यपुरुषोंकूं

अत्यंतदुस्तरहोवै हैं ॥ तैसे यामायारूपनदीके विषयरूपआवर्त्तभी विद्वान्पुरुषोंकूं तथाअविद्वान्पुरुषोंकूं अत्यंतदुस्तर हैं ॥

शंका ॥ हे भगवन् ॥ जिनविषयरूपआवर्त्तोंविषे प्राप्त हुआ यह विद्वान्पुरुषभी तिन विषयरूपआवर्त्तो तैं बाहर नहीं निकसिसकता ॥ ऐसे विषयरूपआवर्त्तोंतैंरक्षाकरणेहारा जोकोईउपायहै॥तौ हमारेप्रतिकहो ॥ समाधान ॥ हेमुनीश्वरो ! याविषयरूपता वर्त्तोंतैंरक्षाकरणेहारा एकहीउपाय शास्त्रविषेकह्याहै॥सोतुमश्रवणकरो ॥ जैसे लोकप्रसिद्धनादियोंविषेचलणेहारे नाविकपुरुष जभीतानदी केआवर्त्तोंकूं आपणेवामभागकीतरफ अथवा दक्षिणभागकीतरफ परित्यागकरिकैचालेहैं तभीही तेनाविकपुरुष तिनआवर्त्तोंविषे नहींप्रा प्तहोवैहैं ॥ तैसे जोविद्वान्पुरुष तथामुमुक्षुजन शास्त्रविचारकेबलतैं याविषयरूपआवर्त्तोंकूं दूरतैंहीपरित्यागकरैहैं ॥ सोईहीपुरुष याविषय रूपआवर्त्तोंविषे नहींप्राप्तहोवै हैं॥यातैं विषयोंविषेदोषदृष्टिकरिकै तिनविषयोंकासंगहीनहींकरणा॥यहही तिनविषयरूपआवर्त्तोंतैंरक्षाका उपायहै ॥ याउपायकापरित्यागकरिकै जोकदाचित् विद्वान्पुरुषभी तिनविषयरूपआवर्त्तोंविषेप्राप्तहोवैगा ॥ तौ सोविद्वान्पुरुषभी तिन विषयरूपआवर्त्तोंतैं आपणेकूंनिकासणेमैंसमर्थनहींहोवैगा॥ और जभी यहविद्वान्पुरुषभी तिनविषयरूपआवर्त्तोंविषेप्राप्तहोइकै तिनआ वर्त्तो तैंआपणेकूंनिकासणेमैंसमर्थनहींहोवै है ॥ तभी अविद्वान्पुरुष तिनविषयरूपआवर्त्तो तैं आपणेकूंनिकासणेविषे किसप्रकारसमर्थहो वैगा ॥ यातैं तिनविद्वान्पुरुषोंनैं तथामुमुक्षुजनोंनैं यहविषयरूपआवर्त्त दूरतैंहीपरित्यागकरणे ॥ यासंगकापरित्यागरूपउपायकूंछोडिकै दूसराकोईउपाय तिनविषयरूपआवर्त्तोंतैं रक्षाकाहैनहीं ॥ यातैं यहशब्दादिकपंचविषय यामायारूपनदीकेपंचआवर्त्त हैं ॥ और तिनश ब्दादिकपंचविषयोंतैं याजीवोंविषे जोपंचप्रकारकासुखउत्पन्नहोवैहै ॥ सोविषयसुख नाशवान्है तथाभयकाकारणहै ॥ यातैं मधुविषयुक्त अन्नकीन्याईं तेविषयजन्यसुख दुःखरूपही हैं ॥ ऐसेपंचप्रकारकेदुःखोंका जोरात्रिदिनविषेनिरंतरप्रवाहहै ॥ सोपंचप्रकारकेदुःखोंका प्रवाह यामायारूपनदीका पंचप्रकारकावेगहै ॥ अथवा गर्भदुःख, जन्मदुःख, जरादुःख, व्याधिदुःख, मरणदुःख, यहपंचप्रकारकादुःख तामायारूपनदीकेपंचवेगहैं ॥ और तम, मोह, महामोह, तामिस्र, अंधतामिस्र, यहपंचप्रकारकेक्लेश यामायारूपनदीके पंचपर्व हैं ॥ इहां

विभागकानाम पव है यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ पंचइंद्रियोंकेगोलक १ पंचश्रोत्रादिकइंद्रिय २ आकाशादिकपंचभूत ३ पंचज्ञान ४ पंचप्राण ५ पंचबुद्धि ६ पंचइच्छा ७ पंचविषय ८ पंचदुःख ९ पंचक्लेश १० यापचास (५०) भेदकरिकै सामायारूपनदी पचासभेदवाली है ॥ अथदा पंचक्लेश अष्टसिद्धि नवतुष्टि अट्ठाईसअशक्ति यह पूर्वउक्तपचासभेदकरिकै सामायारूपनदी पचासभेदवालीहै ॥ हेसंन्यासियो ॥ ऐसीमायाशक्तिकूं तेवेदवेत्ताब्राह्मण ध्यानकालविषे कारणब्रह्मकेआश्रित देखतेभये ॥ शंका ॥ हेभगवन् अद्वितीयब्रह्मकेध्यानपरायण जेविद्वान्ब्राह्मणथे ॥ तेब्राह्मण तामायाशक्तिकूं किसवासतैं देखतेभये ॥ समाधान ॥ हेसंन्यासियो ॥ तेविद्वान्ब्राह्मण अद्वितीयब्रह्मकेध्यानकरिकै तामायाकूं सर्वदादेखतेनहीं ॥ किंतु जिसकालविषे तेविद्वान्ब्राह्मण ताअद्वितीयब्रह्मतैं याजगत्केउत्पत्तिआदिकोंकी अनुपपत्तिकास्मरणकरै हैं ॥ तिसीकालविषे तेविद्वान्ब्राह्मण तामायाशक्तिकूंदेखेहैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ जैसे पूर्व तेविद्वान्ब्राह्मण ब्रह्माकार वृत्तियोंकेप्रवाहरूपध्यानकरिकै तामायाशक्तिकूंदेखतेभयेहैं ॥ तैसे तुमभी जभी ताअद्वितीयब्रह्मविषे वृत्तियोंकाप्रवाहकरोगे तभी तामायाशक्तिकूं तुम आपहीजाणिलेवोगे॥यातैं तुमसंन्यासियोंकेप्रति मैं श्वेताश्वतरऋषि ताअद्वितीयब्रह्मकाउपदेशकरताहूं॥तुमसावधानहोइ केश्रवणकरो ॥ हेसंन्यासियो पूर्वउक्तकालादिकसर्वकारणोंकाअधिष्ठान जोनिर्गुणब्रह्महै ॥ जिसनिर्गुणब्रह्मकूं पूर्वमुनीश्वर ध्यानकरिकैदेखतेभयेहैं ॥ सोनिर्गुणब्रह्म तुम्हारेआत्मातेभिन्ननहीं ॥ किंतु सोनिर्गुणब्रह्म तुम्हाराआत्मारूपहीहै ॥ हेसंन्यासियो ॥ जोअद्वितीयब्रह्मरूपआत्मा तुम्हारेहृदयदेशविषेस्थितहोइकै बुद्धिआदिकसंघातकूंप्रकाशकरैहै ॥ सोईहीब्रह्मरूपआत्मा मायारूपउपाधिकेसंबंधतैं ईश्वरसंज्ञाकूं तथाईश्वरसाक्षिसंज्ञाकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और सोईहीब्रह्मरूपआत्मा अविद्यारूपउपाधिकेसंबंधतैं संसारचक्रविषेभ्रमणकरताहुआ जीवसंज्ञाकूं तथाजीवसाक्षीसंज्ञाकूं प्राप्तहोवै है॥तात्पर्ययह॥एकहीप्रकृति शुद्धसत्वगुणकीप्रधानताकरिकै मायासंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै॥और मलिनसत्वगुणकीप्रधानताकरिकै आविद्यासंज्ञाकूंप्राप्तहोवै है॥तहां मायाविशिष्टचेतनकानाम ईश्वरहै॥और मायाउपहितचेतनकानाम ईश्वरसाक्षीहै ॥ इसीप्रकार अविद्याविशिष्टचेतनकानाम जीवहै ॥और अविद्याउपहितचेतनकानाम जीवसाक्षीहै॥हेसंन्यासियो॥जैसे कुलालदंड

कारिकै चक्रकूंभ्रमणकरावै है ॥ तैसे सर्वजीवोंकेहृदयदेशविषेस्थितहोइकै यहपरमात्मादेव कामक्रोधादिरूपदंडकरिकै यापराधीनजीवोंकूं निरंतर भ्रमणकरावैहै ॥ हेसंन्यासियो ॥ यहजीवात्मा जबपर्यंत यासंसारविषेभ्रमणकरै है ॥ तबपर्यंत याजीवात्माकूं अद्वितीयआत्माकासाक्षात्कारनहींभया ॥और जभी यहजीवात्मा गुरुशास्त्रकेउपदेशकरिकै ताअद्वितीयआत्माकूं निश्चयकरै है॥तभी यहजीवात्मा संसाररूपकार्यसहित ताअविद्याकूंनाशकरै है ॥ याकारणतैंही श्रुतिभगवती याजीवात्माकूं हंस यानामकरिकैकथनकरै है जोजीव अद्वितीयआत्माकेज्ञानकरिकै अविद्याकूंहननकरै है ताजीवकानाम हंसहै॥ ऐसाजीवरूपहंस जभी आपणेआत्माकूं अद्वितीयब्रह्मरूपकरिकैदेखे है॥ तभी यहजीवात्मा जन्ममरणादिकविकारों तैं रहितहोइकै मोक्षरूपअमृतकूंप्राप्तहोवे है ॥हेसंन्यासियो ॥ जिसअद्वितीयब्रह्मकूं यहजीवरूपहंस आपणाआत्मारूपकरिकैदेखे है ॥ तिसीअद्वितीयब्रह्मकूं यहवेदांतशास्त्र प्रतिपादनकरै है॥तथा तिसीअद्वितीयब्रह्मरूपअधिष्ठानविषे तेज जल पृथ्वी यहतीनभूतरहे हैं ॥ और सोईअद्वितीयब्रह्म सर्वकर्मफलोंकाअवधिरूपहै॥ और आत्मसाक्षात्कारतैंविना किसीउपायकरिकै जिसकानाशनहींहोवैगा ॥ ऐसीजाआत्माकूंआवरणकरणेहारीमायाशक्तिहैसामायाशक्तिभी तिसीपरमात्मादेवकेआश्रित रहेहै॥और पूर्व तेवेदवेत्ताब्राह्मणभी इसीस्वयंज्योतिआत्मादेवकूंमायातैंभिन्नजाणिकै तथा अद्वितीयब्रह्मरूपजाणिकै ताआवरणविक्षेपरूपमायातैं विमुक्तहोतेभये हैं॥तथा इसीअद्वितीयब्रह्मविषे अभेदभावकूंप्राप्तहुए तेवेदवेत्ताब्राह्मण जन्ममरणादिकाविकारोंतैंरहितभयेहैं॥यातैं तुमभी ऐसेअद्वितीयब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपकरिकैजाणों ॥ अब तत्त्वमसि यावाक्यविषेस्थितजो तत्, त्वं यहदोपदहैं तिनोंकेअर्थका तथा ताकेविचारतैंमोक्षकेप्राप्तिका निरूपणकरै हैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ सर्वत्रव्यापकजोपरमात्मादेवहैसोतत्पदकाअर्थहै ॥ और पूर्वहंसरूपकरिकैकथनकऱ्याजोजीवात्माहै सोत्वंपदकाअर्थहै॥ और तिसततत्पदार्थरूपईश्वरका तथा त्वंपदार्थरूपजीवकाजोपरस्परभेदप्रतीतहोवै है ॥ सोभेद वास्तववतैंनहीं है॥किंतुसोभेदउपाधिकारिकै है॥तहां श्रुतिविषे क्षर व्यक्त यादोनोंनामकरिकै कथनकऱ्या जोअंतःकरणादिककार्यप्रपंचहै ॥ सोकार्यप्रपंच यात्वंपदार्थरूपजविकाउपाधिहै ॥ और श्रुतिविषे अव्यक्त अक्षर यादोनोंनामकरिकैकथनकऱ्याजोकारण

अज्ञान है ॥ सो कारणअज्ञान तत्पदार्थरूपईश्वरकाउपाधि है ॥ तहांश्रुति ॥ " कार्योपाधिरयंजीवः कारणोपाधिरीश्वरः " ॥ अर्थयह ॥ अंतःकरणादिरूपकार्यउपाधिवाला जीवहोवै है ॥ और अज्ञानरूपकारणउपाधिवाला ईश्वरहोवै है ॥ १ ॥ तिसकार्यकारणरूपदोनोंउपाधियोंकाअधिष्ठानभी शुद्धपरब्रह्म है ॥ सोपरमात्मादेवही जभी बुद्धिकेसाथतादात्म्यसंबंधकूंप्राप्तहोइकै आपणेवास्तवस्वरूपकूंनहींजाणे है ॥ तभी सोपरमात्मादेव जीवभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ ताजीवभावकरिकै सोपरमात्मादेव पुण्यपापकेवशतैं नाना प्रकारकेसुखदुःखोंकूंभोगे है ॥ और सोईहीपरमात्मादेव जभी मायाकृतजीवभावकापरित्यागकरिकै आपणेकूंअद्वितीयब्रह्मरूपजाणेहै ॥ तभी सोपरमात्मादेव सर्वबंधनोंतैंमुक्तहोइकै मोक्षरूपअमृतभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ हेसंन्यासियो ॥ जैसे वास्तवतैंन्यूनअधिकभावतैंरहितजोआकाश है ॥ सोआकाश जभी सूचीकेमूलछिद्रविषेस्थितहोवै है ॥ तभी सोआकाश अल्पकह्याजावै है ॥ और सोईहीआकाश जभी ब्रह्मांडरूपउपाधिविषेस्थितहोवै है ॥ तभी सोआकाश महान्कह्याजावै है ॥ तैसे वास्तवतैंजीवईश्वरभावतैंरहित जोयहपरमात्मादेवहै ॥ सोपरमात्मादेव जभी बुद्धिरूपउपाधिविषेस्थितहोवै है ॥ तभी सोपरमात्मादेव जीवसंज्ञाकूंप्राप्तहोवै है और सोईहीपरमात्मादेव जभी मायारूपउपाधिविषे स्थितहोवै है ॥ तभी सोपरमात्मादेव ईश्वरसंज्ञाकूंप्राप्तहोवै है ॥ यातैं कार्यकारणरूपउपाधिकेभेदकरिकेही जीवईश्वरकाभेदप्रतीतहोवै है ॥ वास्तवतैं ताजीवईश्वरकाभेद है नहीं ॥ यातैं ताकल्पितउपाधियोंकापरित्यागकरिकै यहजीवात्मारूपहंस जभी आपणेकूंअद्वितीयब्रह्मरूपकरिकैजाणे है॥ तभी यहजीवात्मा मायारूपकारणसहित सर्वकामक्रोधादिकपाशोंतैं मुक्तहोवै है ॥ शंका ॥ हेभगवन्॥ऐसेअद्वितीयआत्माविषे जीव ईश्वर ब्रह्म इत्यादिकभेदव्यवहार कौनकरावै है॥ समाधान॥हेसंन्यासियो एकईश्वर, दूसराजीव, तीसराशुद्धब्रह्म, यातीनोंकूं शास्त्रवेत्तापुरुष अनादिकहै हैं ॥ सोतिनतीनोंविषे जोअनादिपणा है तथा जन्मतैंरहितपणाहै ॥ सोभी यामायाकरिकैही कल्पितहै ॥ तात्पर्ययह सामायाशक्तिही तिनईश्वरादिकोंकूं अनादिरूपकरिकैकल्पनाकरै है ॥ और आकाशादिकप्रपंचकूं सादिरूपकरिकै कल्पनाकरै है ॥ और तामायानैं जीव ईश्वर शुद्धब्रह्म यातीनोंविषे जभी अनादिपणाकल्पना

कऱ्या॥तभी तिसजीवईश्वरकाभेद तथा सामाया तथा मायाचेतनकासंबंध यातीनोंविषेभी अनादिपणा अर्थतैंहीसिद्धहोवैहै ॥ यहवार्ता सुरेश्वराचार्यनैंभीकथनकरी है ॥ तहांश्लोक ॥ "जीवईशोविशुद्धाचिद्विभागश्चतयोर्द्वयोः ॥ अविद्यातच्चितोर्योगः षडस्माकमनादयः ॥" अर्थयह ॥ जीव ईश्वर शुद्धचेतन तिनदोनोंकापरस्परभेद अविद्या अविद्याचेतनकासंबंध यहषट् वेदांतशास्त्रविषे अनादि होवै हैं ॥ १ ॥ इसतैंआदिलैकेजोअद्वितीय आत्माविषे भेदप्रतीतहोवै है ॥ सोसंपूर्ण मायाकरिकैहीप्रतीतहोवै है ॥ और यहअधिकारीपुरुष जभी जीव ईश्वर शुद्धचेतन यातीनोंकूं आपणेआत्मातैं अभिन्नकरिकैजानै है ॥ तथा आपणेस्वरूपकूं सर्वत्रव्यापकरूपकरिकैजानै है॥ तभी यह अधिकारीपुरुष मोक्षकूंप्राप्तहोवै है ॥ अब ताअनादिमायाके निवृत्तिकाउपाय वर्णनकरै हैं ॥ हेसंन्यासियो जाअनादिमाया जगत्कीउत्पत्तिकालविषे भोक्ताभोग्यरूपकरिकै याजीवकूं अनेकप्रकारकेसुखदुःखकीप्राप्तिकरै है॥और जामाया प्रलयकालविषे नामरूपात्मकजगत्भावतैंरहितहुई स्थितहोवै है तामायाकूं श्रुतिभगवती अक्षर यानामकरिकै कथनकरै है ॥ और सोईहीमाया आत्मसाक्षात्कारकीउत्पत्तितैं अनंतर नाशकूं प्राप्तहोवै है ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तामायाकूं क्षर यानाम करिकै कथनकरै है ॥ शंका ॥ हेभगवन् पूर्वश्रुतिनैं यामायाकूं अक्षरनामकरिकै कथनकऱ्या है ॥ और अभीश्रुतिनैं तामायाकूं क्षरनामकरिकै कथनकऱ्या है ॥ सोअक्षरपणा तथाक्षरपणा एकपदार्थविषे संभवैनहीं ॥ यातैं तिनदोनोंश्रुतियोंका परस्पर विरोधहोवैगा ॥समाधान॥ हेसंन्यासियो ॥ यहअनादिमाया आत्मसाक्षात्कारतैंविना अन्य किसीउपाय करिकै नाश होतीनहीं ॥ याकारणतैं श्रुतिनैं तामायाकूं अक्षरकह्या है॥ और आत्मसाक्षात्कार करिकै तामायाका नाशहोवै है ॥ याकारणतैं श्रुतिनैं तामायाकूं क्षरकह्या है ॥ यातैं तिनदोनोंश्रुतियोंका परस्परविरोधहोवैनहीं ॥ और हेसंन्यासियो जोवस्तु नाशतैंरहितहोवै है ॥ ताकानाम अक्षर है॥ऐसाअक्षरपणा तामायाविषेसंभवैनहीं॥किंतु उत्पत्तिनाशतैंरहित यापरमात्मादेवविषेही सोअक्षरपणासंभवै है ऐसाअक्षरपरमात्मादेव जभी याअधिकारीपुरुषोंकेवृत्तिविषे आरूढहोइकै यामायाकाहरणकरै है ॥ तभी यापरमात्मादेवकूं श्रुतिभगवती हर यानामकरिकै कथनकरै है ॥ और यहपरमात्मादेव आपणी सत्ताकरिकै तामायारूपकारणकूं तथा

जगद्रूपकार्यकूंनियमतेंप्रवृत्तकरै है ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं ईश यानामकरिकैकथनकरैहै ॥हेसंन्यासियो ॥ तुमोंनैं आपणेमनविषे याप्रकारकीअसंभावनानहींकरणी॥क्योंकिहमारेकूं आत्माकाज्ञानतोभयाहै॥परंतु हमारे अविद्याकीनिवृत्तिभईनहीं॥यातैं आत्माकाज्ञान अविद्याकेनिवृत्तिका कारणनहीं ॥ याप्रकारकीअसंभावना तुमोंनैं कदाचित्भीनहींकरणी॥काहेतैं या अविद्याकीअनेक शक्तियां हैं॥तिनशक्तियोंकूं क्रमतैंही आत्मज्ञानकीअवस्था नाशकरै हैं॥अब तिनअज्ञानकेशक्तियोंका तथा तिनआत्मज्ञानकेअवस्था वोंका निरूपणकरै हैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ याजगतविषे प्रथम सत्यबुद्धिकराइकै पश्चात् ताजगत् विषे आसक्तिकरावणेहारी जाकोईकअ विद्याकीशक्ति है॥साअविद्याकीशक्ति अभिध्यानरूप ज्ञानतैंनाश होवै है ॥ तहाँ यहसंपूर्णजगत्॥हमाराआत्मास्वरूपहै ॥ याप्रकारके चिंतनकानाम अभिध्यान है ॥ ताअभिध्यानकी उत्पत्तितैंपूर्व याअधिकारी पुरुषकी जैसेपदार्थोंविषे आसक्तिहोवै है ॥ तैसीआसक्ति ताअभिध्यानकी उत्पत्तितैंअनंतर याअधिकारी पुरुषकी होवैनहीं यातैं यहजान्याजावै है ताअभिध्यान करिकै याअधिकारी पुरुषोंकी कोईकअविद्याकीशक्ति निवृत्तभई है जिसअविद्याशक्तिकेनाशकरिकै यहविद्वान्पुरुष संसारविषेआसक्तअज्ञानीजीवोंतैं विलक्षणहोवै है॥ तथा रागद्वेषादिकोंतैं रहितहुआ सोविद्वान्पुरुषशांतिआदिक गुणोंवालाहोवै है ॥हेसंन्यासियो॥ याअर्थविषे तुमसंन्यासीही दृष्टांतहो ॥ काहेतैं सर्वात्मभावकाचिंतन रूपअभिध्यानतैंपूर्व जैसीतुमारी अनात्मपदार्थोंविषे आसक्तिथी ॥ तैसीआसक्ति अभी तुमारेविषे है नहीं॥ और हेसंन्यासियों ॥ याजीवोंका परस्परभेद है तथा जीवईश्वरका परस्परभेदहै ॥ याप्रकारकीभेदप्रतीतिकरावणेहारी जादूसरीअविद्या कीशक्ति है ॥ सादूसरीशक्तियोजनातैं निवृत्तहोवै है ॥ तहाँ जीवईश्वरकेअभेदचिंतनकानाम योजना है॥और जैसे लौकिकपुरुष आपणे ब्राह्मणत्वक्षत्रियत्वादिकजातियोंविषे संशयविपर्ययतैंरहितहोवै हैं ॥ तैसे तायोजनाकरिकै ताअविद्याशक्तिकेनिवृत्तहुए यहविद्वान्पुरुष आपणेआत्माकेब्रह्मरूपताविषे संशयविपर्यतैं रहितहोवै है ॥ और हेसंन्यासियो अनात्म पदार्थोंकूं विषयकरणेहारे जेज्ञानकर्म वासना है ॥ तिनोंकूं उत्पन्नकरणेहारी जा तीसरी अविद्याकीशक्ति है॥सातीसरीशक्ति तत्वभावतैंनाशहोवै है ॥ तहाँ निरंतर अद्वितीय

आत्माकाचिंतनरूप जाआत्मनिष्ठाहै तानिष्ठाकानाम तत्त्वभावहै ॥तातत्त्वभावकरिकै ताअविद्याशक्तिकेनाशहुए यहविद्वान्पुरुष जीवत अवस्थाविषेभी विदेहमुक्तपुरुषकेसमानहोवै है ॥ हेसंन्यासियो ॥ यातत्त्वभावअवस्थाकेप्राप्तहुए याविद्वान्पुरुषोंकी शुभअशुभसंस्का रसहितसर्वप्रकारकीअविद्या नाशहोवैहै ॥ और जैसे स्वप्नतैंजाग्रतहुआयहपुरुष स्वप्नकेप्रपंचकूंदेखतानहीं ॥ तैसे स्वप्रकाशआनंदस्वरूप आत्माकेनिष्ठाकूंप्राप्तहुआ यहविद्वान्पुरुष शरीरादिकप्रपंचकूंदेखतानहीं ॥ और हेसंन्यासियो ॥ समाधिअवस्था विषे यद्यपि ताविद्वान् पुरुषकूं प्रपंचकाभानहोवैनहीं ॥ तथापि तासमाधितैंउत्थानकालविषे ताविद्वान्पुरुषकूंभी जगत्काभानहोवै है ॥ यातैं तानिद्वान्पुरुषकूं भी जगत्कीप्रतीतिकरावणेहारी जाचतुर्थअविद्याकीशक्तिहै॥साशक्ति प्रारब्धकर्मकेनाशतैंअनंतरहीं नाशहोवै है॥इसप्रकार ज्ञानकीअव स्थाविशेषोंकरिकै ताअविद्याकेशक्तियोंकानाशहोवै है ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकै निरूपण करैहैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ यहअधिकारीपुरुष जभी सर्वात्मभावकाचिंतनरूप अभिध्यानकरिकै आत्माकूंसाक्षात्कारकरै है ॥तभी यहअधिकारीपुरुष कामक्रोधादिकसर्वपाशोंतैंमु क्तहोवैहै ॥ कैसेहैंतेकामक्रोधादिक ॥ जिनकामक्रोधादिकपाशोंकरिकैबँधाहुआ यहअज्ञानीपुरुष नानाप्रकारकेऊंचनीचशरीरोंकूंप्राप्तहो वैहै॥तथा तिनऊंचनीचशरीरोंविषेभी अध्यात्म,अधिदैव अधिभूत यातीनप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहैं॥ ऐसे कामक्रोधादिकदारुणपाशया अधिकारीपुरुषोंके तभीनिवृत्तहोवैहैं॥जभी यहअधिकारीपुरुष गुरुशास्त्रकेउपदेशतैंयासंपूर्णजगत्कूंआपणाआत्मारूपकरिकैजाणैहै॥इतनैं करिकै प्रथम अभिध्यानरूपअवस्थाकाफल निरूपणकऱ्या अब दूसरीयोजनारूपअवस्थाकाफलनिरूपणकरै हैं॥हेसंन्यासियो॥ जैसे घटा काश महाकाशतैं अभिन्नहै तैसे यहहमाराआत्माअद्वितीयब्रह्मरूपहै॥ याप्रकारजीवब्रह्मकेअभेदचिंतनरूपयोजनातैंयाअधिकारीपुरुषोंकूं जभी अद्वितीयब्रह्मकाज्ञानहोवैहैतभी याअधिकारीपुरुषके आत्माअनात्माकाअध्यासरूपहृदयग्रंथीकाभेदनहोवैहै॥ तथाअविद्यादिकपंच क्लेशोंकीनिवृत्तिहोवैहै तथा संपूर्णशुभ अशुभ कर्मोंकाक्षयहोवैहै॥तथा संपूर्णसंशयोंकीनिवृत्तिहोवै है ॥तहांश्रुति॥भिद्यतेहृदयग्रंथिःछिद्यंते सर्वसंशयाः॥क्षीयंतेचास्यकर्माणि तस्मिन्दृष्टेपरावरे ॥ अर्थयह ॥ अद्वितीयपरमात्माकेसाक्षात्कारहुए याअधिकारीपुरुषकी अध्यासरूप

हृदयग्रंथि भेदनकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तथा आत्माकूंविषयकरणेहारेसंपूर्णसंशय छेदनकूंप्राप्तहोवैहै॥ तथा प्रारब्धकर्मतैंअतिरिक्तसंपूर्णकर्म क्षय कूंप्राप्तहोवै है॥१॥इसप्रकारआत्मसाक्षात्कारकरिकै जभी याअधिकारीपुरुषोंकेअज्ञानकीनिवृत्तिहोवैहै॥तभीअविद्या,अस्मिता,राग,द्वेष अभिनिवेश,यापंचप्रकारकेक्लेशोंकी निवृत्तिहोवैहै ॥ और तिनक्लेशोंकेनिवृत्तिहुए याअधिकारीपुरुषोंकूं पुनःदुःखोंकीप्राप्तिहोवै हैं नहीं॥हे संन्यासियोयाजीवोंविषे जबपर्यंत आपणे स्वरूपकाअज्ञानहोवै है॥तबपर्यंतही याजीवोंविषे अविद्यादिकपंचक्लेश उत्पन्नहोवैहै॥ तथातिन क्लेशोंकरिकै नानाप्रकारकेदुःखउत्पन्नहोवैहैं॥और याअधिकारीपुरुषोंकूंजभी गुरुशास्त्रकेउपदेशतैंआत्माकासाक्षात्कारहोवैहै॥तभीताअ ज्ञानकीनिवृत्तिहोवैहै॥ ताअज्ञानकेनिवृत्तहुए याअधिकारीपुरुषोंके अविद्यादिकपंचक्लेश निवृत्तहोवैहैं॥तिनक्लेशोंकेनिवृत्तहुएयाअधिकारी पुरुषोंके सर्वदुःखोंकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ इसप्रकार आत्मसाक्षात्कारकेप्रभावतैं सर्वदुःखोंतैं रहितहुआयहविद्वान्पुरुष आपणेप्रारब्धकर्मकेस मप्तिकीइच्छाकरताहुआयासंसारविषेविचरैहै।और हेसंन्यासियो।यादेहादिकसंघातविषेहैआत्मबुद्धिजिनोंकीऐसेजेअज्ञानीजीवहैंतेअज्ञानी जीव जैसे तासंघातके पूजनताडनादिकोंकरिकै सुखदुःखकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तथा अनुकूलप्रतिकूलपदार्थोंकीप्राप्तितैं सुखदुःखकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे यहविद्वान्पुरुष सुखदुःखकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु यहबुद्धिदेहादिकसंघातही पूर्वलेपुण्यकर्मतैंसुखकूंप्राप्तहोवै है और पूर्वलेपापकर्मतैं दुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ मैंआत्मा तावुद्धिआदिकसंघाततैंभिन्नहूं ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै सोविद्वान्पुरुष बुद्धिआदिकसंघातविषेही सुख दुःखादिकधर्ममानैंहै ॥ आपणेआत्माकेधर्ममानैंनहीं ॥ और जैसे यालोकविषे जोपुरुष आपणेशरीरतैंभिन्न दूसरेशरीरोंकेअभिमानतैंरहि तहै ॥ सोपुरुष तिनदूसरेशरीरोंकेसुखदुःखकरिकै आपणेकूंसुखीदुःखीमानतानहीं ॥ तैसे यहविद्वान्पुरुष आपणेशरीरकूंभी दूसरेशरीर कीन्याईजाणेहै याकारणतैं सोविद्वान्पुरुष याशरीरकेसुखदुःखकरिकै आपणेआत्माकूंसुखीदुःखीमानैनहीं॥ और हेसंन्यासियो॥ जैसे या लोकविषे परस्परविवादकरणेहारेजेदोपुरुषहैं ॥ तिनदोनोंकेपक्षपाततैंरहितजोमध्यस्थपुरुषहै ॥ सोमध्यस्थपुरुष तिनविवादकरणेहारे पुरुषोंकेसुखदुःखकूंजाणताहुआभी तिससुखदुःखकूंआपणेविषेमानतानहीं ॥ तैसे यह असंगविद्वान्पुरुषभी या संघातकेसुखदुःखोंकूं

जाणताहुआभी आपणेस्वरूपविषे तासुखदुःखकूंमानतानहीं ॥ और हेसंन्यासियो ॥ जैसे यहस्वप्नद्रष्टापुरुष पूर्वलेकर्मवासनाके अनुसार नानाप्रकारकेस्वप्नकूंदेखै है॥तैसे यहविद्वान्पुरुषभी प्रारब्धकर्मकेअनुसार समाधितैंउत्थानकालविषे यासुखदुःखादिकप्रपंचकूंदेखैहै॥हेसं न्यासियो!अभिध्यान योजना तत्त्वभाव यातीनअवस्थावोंविषे प्रथम अभिध्यानरूपअवस्थाका जोफलहमनैं तुमारेप्रतिकथनकऱ्याहै।सो ऐश्वर्यरूपफल देवराजइंद्रकूंभीदुर्लभहै ॥ और पूर्व योजनारूपदूसरीअवस्थाका जोफल हमनैं तुमारेप्रति कथनकऱ्याहै ॥ सोऐश्वर्यरूप फल ब्रह्माकूंभीदुर्लभहै ॥ और तत्त्वभावरूपतीसरीअवस्थाकीप्राप्तिकरिकै याविद्वान्पुरुषके अविद्यासहितसर्वसंस्कारोंकानाशहोवै है॥ ताकरिकै याविद्वान्पुरुषकूं परमेश्वरकाऐश्वर्यरूपफल प्राप्तहोवै है ॥ तातत्त्वभावरूपअवस्थाकेप्राप्तहुए यहविद्वान्पुरुष आपणेआत्माकूं तथाअन्यपदार्थोंकूं भिन्नरूपकरिकैस्मरणभीनहींकरै है॥और तातत्त्वभावकेप्राप्तहुए यहआप्तकाम विद्वान्पुरुष सर्वभेदतैंरहितहोवै है ॥ तथा मनवाणीकाअविषयहोवै है ॥ तथा सर्वउपमातैंरहितहोवै है ॥ तथा स्वयंज्योतिआनंदस्वरूपहोवैहै॥हेसंन्यासियो॥श्रुतिविषेसत्य शब्दकरिकैकथनकरेजेप्राणहैं ॥ तेप्राण जभी लोकांतरविषेगमननहींकरैहैं ॥ किंतु तेप्राण याशरीरविषेही लयभावकूंप्राप्तहोवैहैं॥याप्रका रकेऐश्वर्यरूपफलकूं कोईविरलाहीपुरुष अंत्यजन्मविषेहोवैहै ॥ हेसंन्यासियो ॥जिसविद्वान्पुरुषकेप्राण लोकांतरविषेगमननहींकरै हैं॥ऐसा अपरोक्षज्ञानवालाविद्वान्पुरुष यालोकविषे अत्यंतदुर्लभहै॥काहेतैं यालोकविषे सहस्रमनुष्योंविषे कोईएकमनुष्यहीमोक्षकेप्राप्तिकीइच्छा करैहै ॥ यातैं तिनमनुष्योंविषे मोक्षकीइच्छावालामुमुक्षुपुरुष दुर्लभहै॥और तिनसहस्रमुमुक्षुवोंविषेभी कोईएकहीमुमुक्षु श्रवणादिकसाध नोंकरिकैसंपन्नहोवै है ॥ यातैं तिनमुमुक्षुजनोंविषे श्रवणादिकसाधनसंपन्नपुरुष दुर्लभहै ॥ और तिनश्रवणादिकसाधनसंपन्नसहस्रपुरुषोंवि षेभी कोईएकहीपुरुष आत्माकेपरोक्षज्ञानवालाहोवैहै॥यातैं तिनसाधनसंपन्नपुरुषोंविषे परोक्षज्ञानवालापुरुष दुर्लभहै ॥ और तिनपरोक्ष ज्ञानवालेसहस्रपुरुषोंविषेभी कोईएकहीपुरुष आत्माकेअपरोक्षज्ञानवालाहोवैहै॥यातैं रागद्वेषतैंरहित तथा सर्वभूतोंकूं आपणाआत्मारूप करिकैदेखणेहारा जोआत्माकेअपरोक्षज्ञानवालापुरुषहै॥सोविद्वान्पुरुष यालोकविषे अत्यंतदुर्लभहै॥यहवार्ता गीताविषे श्रीकृष्णभगवान्

नैंभी कही है ॥ तहांश्लोक ॥ मनुष्याणां सहस्रेषुकश्चिद्यतति सिद्धये ॥ यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मांवेत्तितत्त्वतः ॥ अर्थ यह ॥ हे अर्जुन ॥ यालोकमैं सहस्र मनुष्योंविषे कोई एकमनुष्यही हमारी प्राप्तिवासतै यत्नकरै है ॥ और तिन यत्नकरणेहारे सहस्रमनुष्योंविषेभी कोईएकमनुष्यही मेरेवास्तवस्वरूपकूंजाने है ॥ १ ॥ यातैं आत्माकेअपरोक्षज्ञानवालापुरुष यालोकविषे अत्यंत दुर्लभ है ॥ हेसंन्यासियो ॥ ऐसाब्रह्मवेत्तापुरुष जिसमातापितातैं उत्पन्नहोवै है ॥ तेमातापिताभी कृतार्थहोवै हैं॥तथा सोब्रह्मवेत्तापुरुष जिसकुलविषे उत्पन्नहोवै है ॥ सोकुलभी कृतार्थहोवै है तथा ॥ सोब्रह्मवेत्तापुरुष जिसपृथिवीविषेविचरै है ॥ सोपृथिवीभी कृतार्थहोवै है ॥ तात्पर्ययह ॥ जिनमातापितादिकोंतैं यहब्रह्मवेत्तापुरुष उत्पन्नहोवै है ॥ तिनमातापितादिकोंका महिमाभी जभी वाणीकरिकै कह्याजावै नहीं ॥ तभी ताब्रह्मवेत्तापुरुषकामहिमा यावाणीकरिकै किसप्रकारकह्याजावैगा॥हेसंन्यासियो॥जिसपुरुषकूं संशयविपर्ययतैंरहितआत्मा कासाक्षात्कारभयाहै॥सोब्रह्मवेत्तापुरुष जोकदाचित् ब्रह्महत्यादिकपापकर्मोंकूं करणेहारेमहापातकी जीवोंऊपर आपणी कृपादृष्टिकरैहै॥ तौ ताब्रह्मवेत्तापुरुषकीदृष्टिकेविषयहुए तेमहापातकीजीव तिनब्रह्महत्यादिकपापोंतैंमुक्तहोवै हैं ॥ यहवार्त्ताअन्यशास्त्रविषेभीकही है ॥ तहांश्लोक ॥ यस्यानुभवपर्यंता बुद्धिस्तत्त्वेप्रवर्त्तते ॥ तद्दृष्टिगोचराःसर्वे मुच्यंतेसर्वकिल्विषैः ॥ अर्थयह ॥ जिसविद्वान्पुरुषकीबुद्धि आद्वितीयआत्माविषे अपरोक्षअनुभवपर्यंत प्रवर्त्तहोवैहै ॥ ऐसाब्रह्मवेत्तापुरुष जिनपुरुषोंऊपर आपणीकृपादृष्टिकरैहै ॥ तेपुरुष संपूर्णपापकर्मोंतैं मुक्तहोवैहैं ॥ १ ॥ हेसंन्यासियो ॥ जैसे यालोकविषे जिसपुरुषकूंक्षयरोगहोवैहै सोपुरुष बहुतकालतैंपीछे आपणेशरीरकूं सर्वदोषोंका ग्रहजाणेहै ॥ और जिसपुरुषकूं याशरीरविषेकोईरोगनहींभयाहै ॥ सोनिरोगपुरुष याशरीरकेदोषोंकूंजाणतानहीं ॥ तैसे जोविद्वान्पुरुष बहुतकालपर्यंत याअद्वितीयआत्माकाध्यानकरैहै ॥ सोईहीविद्वान्पुरुष याआत्माके सत् चित् आनंद आदिकगुणोंकूंयथार्थजानैहै॥ ऐसा विद्वान्पुरुष आपणेआत्माकूं परमेश्वररूपजाणिकरिकै तापरमेश्वरके ऐश्वर्यरूपफलकूंप्राप्तहोवैहै ॥ जाकरिकै सोविद्वान्पुरुष किंचित्मात्रभी भयकूंप्राप्तहोवै नहीं ॥ हे संन्यासियो ॥ सर्वत्रव्यापकअद्वितीयब्रह्म हमाराआत्मारूप है याप्रकारकाजोजीवब्रह्मकाअभेदज्ञान है ॥

ताअभेदज्ञानतैं परे याअधिकारीपुरुषोंकूं कोईवस्तुजानणेयोग्यनहीं॥ किंतुयहजीवब्रह्मकाअभेदही याअधिकारीपुरुषोंकूंजानणेयोग्यहै॥हेसं न्यासियो ॥ यासंसाररूपचक्रविषेहैस्थितिजिसकी ऐसाजोसुखदुःखकाभोक्ता जीवरूपहंसहै॥और तासंसारचक्रकीजननी जामायारूपनदी है ॥ और ताजीवरूपहंसकरिकैजानणेयोग्य जोपरमात्मादेव है ॥ जोपरमात्मादेव याजीवोंकूं शुभअशुभकर्मोंविषेप्रेरणाकरै है ॥ और जि सपरमात्माकेज्ञानतैं यहजीव ईश्वरभावकूंप्राप्तहोवै है॥ऐसा तत्पदकाअर्थब्रह्म तथा त्वंपदकाअर्थजीवरूपहंस तथा याजगत्कीजननीमाया यहतीनों वास्तवतैं अद्वितीयब्रह्मरूपही हैं ॥ और जैसे घटमठरूपउपाधियोंकेभेदकरिकै आकाशविषेभेदप्रतीतहोवै है ॥ तैसे जीव ब्रह्म माया यातीनोंविषेजोभेदप्रतीतहोवै है ॥ सोभी कल्पितउपाधिकेभेदकरिकैहीप्रतीतहोवै है॥वास्तवतैं तिनतीनोंकाभेदहैनहीं॥याप्रकार जोअधिकारीपुरुष तत् त्वंपदार्थकाशोधनकरै है ॥ ताअधिकारीपुरुषकूं शीघ्रही आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिहोवै है॥ और हे संन्यासियो ॥ मायाकेकार्यजेदेहादिकपदार्थ हैं॥ तिनदेहादिकोंतैं यहआत्मादेव विलक्षणहोईकैप्रतीतहोतानहीं॥याकारणतैं याआत्मादेवविषे अद्वितीय रूपतासंभवैनहीं॥किंतु याआत्माविषे अनेकरूपताहीसंभवै है याप्रकारकीशंका तुमोंनैं आपणेमनविषे कदाचित्भीनहींकरणी॥काहेतैं सा तुमारीशंका तभी संभवै जभी यादेहादिकसंघातविषे किसीभीउपायकरिकै आत्माकादर्शननहींहोवै ॥ परंतु यादेहादिकसंघातविषे अनेकउपायोंकरिकै आत्माकीसत्ताप्रतीतहोवै है॥यातैं सातुमारीशंकासंभवैनहीं॥अब यासंघातविषे प्रथम अनुमानकरिकै आत्माकी सत्तासिद्धकरै हैं ॥ हे संन्यासियो ॥ जैसे काष्ठोंविषेस्थितजोअग्निहै॥ सोअग्नि यद्यपि स्वरूपतैंप्रतीतहोतानहीं ॥ तथापि तिनकाष्ठोंविषे सोअग्नि नहीं है यहवचन कह्याजावैनहीं ॥ काहेतैं ताकाष्ठोंविषेजोउष्णताप्रतीतहोवै है ॥ सा उष्णता अग्नितैंविनासंभवैनहीं ॥ यातैं जैसे शरीरकीउष्णतातैं जीवकाअनुमानहोवै है॥तैसे ताउष्णतारूपहेतुतैं तिनकाष्ठोंविषे अग्निकाअनुमानहोवै है॥तैसे यादेहादिकसंघातविषे स्थित जोआत्मादेवहै ॥ सोआत्मादेव यद्यपि उपायतैंविनाप्रतीतहोतानहीं ॥ तथापि यासंघातविषेआत्मानहीं है ॥ याप्रकारकावचन कह्याजावैनहीं ॥ काहेतैं यादेहधारीजीवोंकूं घटपटादिकजडपदार्थोंका जोप्रकाशरूपस्फुरणहोवै है॥सोस्फुरण आत्माकीसत्तातैंविनासंभ

वेनहीं ॥ यातैं ता स्फुरणरूपहेतुतैं या संघातविषे आत्माका अनुमानहोवै है ॥ हे संन्यासियो ॥ जिसस्फुरणरूपहेतुकरिकै यासंघातविषे आत्माकाअनुमानहोवै है ॥ सोस्फुरण भेदतैंरहितहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ यहघट है यहपट है यहभित्ति है इत्यादि कस्फुरणोंकाभेद प्रत्यक्षप्रतीतहोवै है ॥ यातैं तिनस्फुरणोंकाअभेद किसप्रकारहोवैगा॥समाधान ॥ हेसंन्यासियो ॥ तास्थलविषेभी घट पटादिकपदार्थोंकाही भेदहोवै है ॥ प्रकाशरूपस्फुरणविषे सोभेदहोवैनहीं ॥ यातैं सोप्रकाशरूपस्फुरण सर्वदाअभिन्नहै ॥ और सोस्फुरण आपणेप्रकाशविषे दूसरेकिसीप्रकाशकीअपेक्षाकरतानहीं ॥ याकारणतैं सोस्फुरण स्वप्रकाशरूपहै ॥ शंका ॥हेभगवन्॥ नेत्रादिकइंद्रियोंका जभी घटपटादिकपदार्थोंकेसाथ संबंधहोवै है ॥ तभीही यहघटहै यहपटहै इत्यादिकस्फुरण उत्पन्नहोवै है ॥ और यालोकविषे जो जोपदार्थ उत्पत्तिवालाहोवै है ॥ सोसोपदार्थ परप्रकाशहोवै है ॥ जैसे घटादिकपदार्थ उत्पत्तिवालेहोणेतैं परप्रकाशहैं ॥ तैसे नेत्रादिकइंद्रियोंकरिकैजन्यहोणेतैं सोस्फुरणभी परप्रकाशहीहोवैगा॥समाधान॥हेसंन्यासियो ॥ नेत्रादिकइंद्रिय जोकदाचित् तास्फुरणकीउत्पत्ति करतेहोवैं ॥ तौ तास्फुरणविषे परप्रकाशतासिद्धहोवै ॥ परंतु तेनेत्रादिकइंद्रियतास्फुरणकीउत्पत्तिकरतेनहीं ॥ किंतु तेनेत्रादिकइंद्रिय अंतःकरणकेवृत्तिकीउत्पत्तिद्वारा ताप्रकाशरूपस्फुरणकीअभिव्यक्तिकरै हैं ॥ यातैं अंतरबाहरसर्वभेदतैंरहित सोस्फुरण स्वप्रकाशरूपही है ॥ और हेसंन्यासियो ॥ यहप्रकाशरूपस्फुरण देहादिकसर्वसंघाततैंअंतरहै॥याकारणतैं शास्त्रवेत्तापुरुष तास्फुरणकूं आत्मारूपकहै हैं और यह स्फुरण सर्वपदार्थोंतैं अधिकप्रियहै ॥ तथा सर्वभेदतैंरहितहै ॥ याकारणतैं शास्त्रवेत्तापुरुष तास्फुरणकूं आनंदरूपकहै हैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ यहस्फुरण जभी आत्मारूपही है ॥ तभी तास्फुरणरूपहेतुकरिकै आत्माकाअनुमाननहींहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेसंन्यासियो ॥ जैसे अग्नितैंअभिन्नजाउष्णताहै ॥ ताउष्णतारूपहेतुकरिकै ताअग्निकाअनुमानहोवै है ॥ तैसे आत्मातैंअभिन्न जोप्रकाशरूप स्फुरणहै ॥ तास्फुरणरूपहेतुतैं यासंघातविषे आत्माकाअनुमानसंभवै है॥तात्पर्ययह॥जैसे सत् चित् आनंद यहतीनों धर्म यद्यपि वा स्तवतैंआत्मास्वरूपही हैं ॥ तथापि कल्पितभेदकूंअंगीकारकरिकै तिनसत्यादिकधर्मोंकूं आत्माकास्वरूपलक्षणमानैं हैं॥तैसे वास्तवतैं

आत्मास्वरूपजोस्फुरण है॥ तास्फुरणविषे कल्पितभेद अंगीकारकरिकै आत्माकीसिद्धिविषे हेतुरूपतासंभवै है॥जैसे यालोकविषेप्रसिद्ध जो लौकिकअग्निहै तथा वेदविषेप्रसिद्ध जोगार्हपत्यादिकवैदिकअग्निहै ॥यहदोनोंप्रकारकाअग्नि काष्ठोंकैमथनरूपउपायतैं याजीवोंकूंप्राप्त होवै है ॥ तैसे स्वर्गादिकलोकोंकेफलकाभोक्ता जोसंसारीआत्माहै ॥ तथा सर्वगुणोंतैंरहित जोशुद्धआत्माहै ॥ यहदोनोंप्रकारकाआत्मा याअधिकारीपुरुषोंकूं स्फुरणरूपहेतुजन्यअनुमानरूपउपायतैं प्राप्तहोवै है ॥हेसंन्यासियो॥ याअधिकारीपुरुषोंकूं जभी किसीप्रतिबंधके वशतैं तत्वमस्यादिकवेदवाक्योंकरिकै कार्यसहितअविद्यातैंभिन्नरूपकरिकै ब्रह्मात्माकासाक्षात्कार नहींप्राप्तहोवै॥तभीसर्वअर्थकूंजानणेहारा महात्मागुरु तिनअधिकारियोंकेप्रति ॐकाररूपप्रणवकेध्यानकाउपदेशकरिकै आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिकरै॥अब ताप्रणवकेध्यानकाप्रकार निरूपणकरै हैं ॥ जैसे यालोकविषे काष्ठरूपदोअरणियोंकेमथनतैं लोक अग्निकूंप्रगटकरै हैं ॥ तैसे यहहमाराशरीर नीचेकीअरणिहै ॥ और ब्रह्मकावाचकप्रणवमंत्र ऊपरकीअरणिहै॥ और यहॐकाररूपप्रणव मैं ब्रह्मरूपआत्माकाहीनामहै॥याप्रकार जोचित्तकेवृत्तियोंकानिरंतरप्रवाहहै ॥ सो तिनदोनोंअरणियोंकामथनहै ॥ हेशिष्य याप्रकारकेमथनकूं जभीतूं निरंतरकरैगा ॥ तभी यासंघातविषे तूंशीघ्रही आत्मरूपअग्निकूं साक्षात्कारकरैगा ॥ याप्रकार प्रणवकेध्यानकाउपदेशकरिकै सोब्रह्मवेत्तागुरु तिनअधिकारीपुरुषोंकेप्रति आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिकरै ॥ यातैं प्रणवकाध्यानभी आत्मसाक्षात्कारकाउपायहै ॥ हेसंन्यासियो ॥ जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज याचारिप्रकारकेशरीरोंविषे सोआत्मादेव नहींप्रतीतहोवै है॥यातैं सोआत्मादेव यासंघातविषेहैनहीं ॥जोकदाचित् सो आत्मादेव यासंघातविषेहोता तौहमारेकूंप्रतीतहोता ॥ याप्रकारकीशंका तुमोंनैं आपणेमनविषे कदाचित्भीनहींकरणी॥काहेतैं जोवस्तु जहांनहींप्रतीतहोवै है ॥ सोवस्तु तहांनहींहोवै है ॥ याप्रकारकानियम संभवैनहीं ॥ किंतु जोवस्तु जहां किसीउपायकरिकैभी नहींप्रतीतहोवै है॥सोवस्तु तहांनहींहोवै है ॥ याप्रकारकानियम संभवै है ॥ और यासंघातविषेतौ अनेकउपायोंकरिकै आत्माकीप्रतीतिहोवै है॥यातैं यासंघातविषे आत्मानहीं है॥ऐसीआशंकाकरणीसंभवैनहीं ॥हेसंन्यासियो ॥ यासंघातविषेस्थितआत्माका उपायोंकरिकै साक्षात्कारहोवै है याअर्थकी

दृढताकरावणेवासतैं मैं तुम्हारेप्रति चारिदृष्टांतकहताहूं ॥ तिनोंकूं तुम श्रवणकरो॥ जैसे तिलोंविषेस्थितजोतैलहै ॥ सो तैल यद्यपि प्रसिद्धदिखाईदेवैनहीं ॥ तथापि तिनतिलोंकेपीडनरूपउपायकरिकै सो तैल प्रसिद्धदिखाईदेवै है ॥ और जैसे दधिविषेस्थितजोघृतहै ॥सोघृत यद्यपि प्रतिद्धदिखाईदेवैनहीं ॥ तथापि तादधिकेविलोडनरूपउपायतैं सोघृत प्रसिद्धदिखाईदेवैहै ॥ और जैसे नदीप्रवाहकेरेतविषेस्थित जोजलहै ॥ सोजल यद्यपि प्रसिद्धदिखाईदेवैनहीं ॥ तथापि तारेतकाखननरूपउपायकरिकै सोजलप्रसिद्धदिखाईदेवै है॥ और जैसे काष्ठों विषेस्थितजोअग्निहै ॥ सोअग्नि यद्यपि प्रसिद्धदिखाईदेवैनहीं ॥ तथापि तिनकाष्ठोंकेमथनरूपउपायतैं सो अग्नि प्रसिद्ध दिखाईदेवै है ॥ तैसे गुरुशास्त्रादिक उपायोंतैं रहित जेबहिर्मुखपुरुषहैं ॥ तिनबहिर्मुखपुरुषोंकूं यद्यपि यासंघातविषेआत्माकादर्शनहोवै नहीं ॥ तथापि गुरुशास्त्रके उपदेशके अनुसार वर्त्तणेहारे जेश्रद्धावान्अधिकारीपुरुषहैं ॥ ते अधिकारीपुरुष यमनियमादिकउपायोंकरिकै या संघातवि षेही आत्माकूंसाक्षात्कारकरैहैं ॥ और हेसंन्यासियो ॥ जैसे घृत क्षीरकेअंतरव्यापकहै ॥ तैसे यहआत्मादेव सर्वजगत्केअंतरव्यापक है ॥ तथा यहआत्मादेवही ईश्वररूपकरिकै कर्मउपासनातपादिकधर्मोंके संप्रदायकाप्रवर्त्तकहै ॥ तथा तिनकर्मउपासनातपकेफलकादे णेहाराहै ॥ तथासर्वजगत्काकारणरूपहै ॥ ऐसे आत्मादेवकूं जोअधिकारीपुरुष गुरुउपदिष्टमहावाक्यतैं साक्षात्कारकरै है ॥ सोईहीअधि कारीपुरुष वेदोंकावेत्ताहै ॥ हेसंन्यासियो ॥ यहसर्वशास्त्रकाअर्थ हमनैं संक्षेपतैं तुम्हारेप्रति कथनकऱ्याहै ॥ अब तिसी अर्थकूं विस्ता रकरिकै हम तुम्हारेप्रति कथनकरतेहैं ॥ तुम सावधानहोइकैश्रवणकरो ॥ हे संन्यासियो ॥ पूर्वहमनैं तुम्हारेप्रति जो आत्मादेव हंस रूपकरिकै तथाब्रह्मरूपकरिकै कथनकऱ्याथा ॥ सोईहीआत्मादेव आपणे वास्तवस्वरूपकेज्ञानवासतैं जभी याअधिकारीपुरुषोंकेसं कल्परूपमनकूं ताआत्माकेस्वरूपविषे अष्टांगयोगकीरीतितैंजोडेहैं तभी सो आत्मादेव निश्चयरूपबुद्धिकाकारणहोवै है और तानि श्चयरूपबुद्धिकरिकैयहअधिकारीपुरुष तास्वयंज्योतिरूपआत्माकूंनिश्चयकरै है ॥ तानिश्चयतैंअनंतर यासंघाततैंभिन्नरूपकरिकैस्थित हुआ तथा यासंघातकानियंतारूपकरिकैस्थितहुआ ॥ सोविद्वान्पुरुष अंतरबाहरपूर्णरूपकरिकैस्थितहोवै है ॥ हे संन्यासियो ॥ सूर्य ॥ ३७

मंडलविषेस्थित जोसवितानामाअंतर्यामीदेवहै ॥ ताअंतर्यामीदेवके ध्यानकेप्रभावतैं पूर्व हमसरीखेअधिकारीपुरुष सर्वदुःखकीनिवृत्तिवा सतै तथाब्रह्मानंदकीप्राप्तिवासतै ताईश्वरपरायणशुद्धमनकरिकै ज्ञानअभ्यासरूपयत्नकूंकरतेभये हैं ॥ और हे संन्यासियो ॥ ता अंतर्या मीदेवकीशक्तिकरिकैयुक्तजोमन है ॥ तामनकरिकै यहअधिकारीपुरुष जिनवागादिकइंद्रियोंकूं शुभकर्मविषेप्रवृत्तकरै है ॥ तिनवाका दिकइंद्रियोंकूंभी सोअंतर्यामीपरमात्मादेवही शुभकर्मविषेप्रवृत्तकरै है ॥ कैसेहैंतेवाकादिकइंद्रिय ॥ भूमानंदरूपनित्यसुखकेज्ञानकूं प्रगट करणेहारेहैं ॥ हे संन्यासियो ॥ तिनवाकादिकइंद्रियोंतैं उत्पन्नभईजाआत्माकारबुद्धिहै ॥ तावुद्धिरूपकार्यकीउत्पत्तितैं यहअधिकारीपुरुष तिनवाकादिकइंद्रियोंऊपर परमेश्वरकेअनुग्रहकाअनुमानकरिकै तास्वप्रकाशपरमात्मादेवकूंप्राप्तहोवै है॥हेसंन्यासियो ॥ अंतर्यामीईश्वरके अनुग्रहतैंविना याअधिकारीपुरुषोंकी साआत्माकारबुद्धिहोवैनहीं ॥ यातैं ताआत्माकारबुद्धिरूपकार्यतैं ताअंतर्यामीदेवकाअनुग्रह अव श्यजान्याजावैहै ॥ याकारणतैंहीं महात्मायोगीजन प्रथम आपणेसंकल्परूपमनकूं तापरमात्माविषेजोडेहै ॥ तिसतैंअनंतर तामनकेजोड नेतैं उत्पन्नभईजानिश्चयात्मकबुद्धि है ॥ तावुद्धिकूंभी तिसीपरमात्माविषेजोडे हैं ॥ कैसीहैंतावुद्धि तास्वयंज्योतिरूपपरमात्मादेवकेस्वरू पभूतआनंदकूंविषयकरणेहारीहै ॥ तावुद्धिकेप्रसादतैं तिनमहात्मायोगीजनोंकूं इसीशरीरविषे आत्माकासाक्षात्कारहोवैहै ॥ और हेसंन्या सियो ॥ प्राण अपान यादोनोंप्रकारकेवायुका परस्परलयचिंतनरूपजोअंतरअग्निहोत्रहै ॥ ताअग्निहोत्रकूं पूर्व महात्मापुरुष करतेभये हैं ॥ तिनमहात्मापुरुषोंकेमनोरथोंकूं सोपरमात्मादेव इसप्रकारपूर्णकरैहै॥जिसप्रकार हमअधिकारीपुरुषोंका आत्मज्ञानकामनोरथ पूर्णकऱ्याहै॥ काहेतैं सत्मार्गविषेवर्त्तणेहारे अधिकारीजनोंऊपरअनुग्रहकरणा ईश्वरकास्वभावही है ॥ और हेसंन्यासियो॥ याअंतर्यामीपरमात्मादेवके एकआश्चर्यरूपस्वभावकूं तुमदेखो ॥ जो यहपरमात्मादेव मनवाणीकाअविषयहुआभी याअधिकारी पुरुषोंकेबुद्धिकाविषयहोवै है ॥ ऐसे सर्वमनोरथोंकी प्राप्तिकरणेहारे परमात्मादेवकीस्तुति हमअधिकारीजीवोंकूं सर्वदाकरणेयोग्य है ॥ अब तास्तुतिकाप्रकार निरू पणकरै हैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ याअधिकारीपुरुषोंकूं आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिविषे अनेकप्रकारकेविघ्नहोवै हैं॥ यातैं तिनविघ्नोंकीनिवृत्ति

दृढताकरावणेवासतैं मैं तुम्हारेप्रति चारिदृष्टांतकहताहूं ॥ तिनोंकूं तुम श्रवणकरो॥ जैसे तिलोंविषेस्थितजोतैलहै ॥ सो तैल यद्यपि प्रसिद्धदिखाईदेवैनहीं ॥ तथापि तिनतिलोंकेपीडनरूपउपायकरिकै सो तैल प्रसिद्धदिखाईदेवै है ॥ और जैसे दधिविषेस्थितजोघृतहै ॥सोघृत यद्यपि प्रतिद्धदिखाईदेवैनहीं ॥ तथापि तादधिकेविलोडनरूपउपायतैं सोघृत प्रसिद्धदिखाईदेवैहै ॥ और जैसे नदीप्रवाहकेरेतविषेस्थित जोजलहै ॥ सोजल यद्यपि प्रसिद्धदिखाईदेवैनहीं ॥ तथापि तारेतकाखननरूपउपायकरिकै सोजलप्रसिद्धदिखाईदेवै है॥ और जैसे काष्ठों विषेस्थितजोअग्निहै ॥ सोअग्नि यद्यपि प्रसिद्धदिखाईदेवैनहीं ॥ तथापि तिनकाष्ठोंकेमथनरूपउपायतैं सो अग्नि प्रसिद्ध दिखाईदेवै है ॥ तैसे गुरुशास्त्रादिक उपायोंतैं रहित जेबहिर्मुखपुरुषहैं ॥ तिनबहिर्मुखपुरुषोंकूं यद्यपि यासंघातविषेआत्माकादर्शनहोवै नहीं ॥ तथापि गुरुशास्त्रके उपदेशके अनुसार वर्त्तणेहारे जेश्रद्धावान्अधिकारीपुरुषहैं ॥ ते अधिकारीपुरुष यमनियमादिकउपायोंकरिकै या संघातवि षेही आत्माकूंसाक्षात्कारकरैहैं ॥ और हेसंन्यासियो ॥ जैसे घृत क्षीरकेअंतरव्यापकहै ॥ तैसे यहआत्मादेव सर्वजगत्केअंतरव्यापक है ॥ तथा यहआत्मादेवही ईश्वररूपकरिकै कर्मउपासनातपादिकधर्मोंके संप्रदायकाप्रवर्त्तकहै ॥ तथा तिनकर्मउपासनातपकेफलकादे णेहाराहै ॥ तथासर्वजगत्काकारणरूपहै ॥ ऐसे आत्मादेवकूं जोअविकारीपुरुष गुरुउपदिष्टमहावाक्यतैं साक्षात्कारकरै है ॥ सोईहीअधि कारीपुरुष वेदोंकावेत्ताहै ॥ हेसंन्यासियो ॥ यहसर्वशास्त्रकाअर्थ हमनैं संक्षेपतैं तुम्हारेप्रति कथनकऱ्याहै ॥ अब तिसी अर्थकूं विस्ता रकरिकै हम तुम्हारेप्रति कथनकरतेहैं ॥ तुम सावधानहोइकैश्रवणकरो ॥ हे संन्यासियो ॥ पूर्वहमनैं तुम्हारेप्रति जो आत्मादेव हंस रूपकरिकै तथाब्रह्मरूपकरिकै कथनकऱ्याथा ॥ सोईहीआत्मादेव आपणे वास्तवस्वरूपकेज्ञानवासतैं जभी याअधिकारीपुरुषोंकेसं कल्परूपमनकूं ताआत्माकेस्वरूपविषे अष्टांगयोगकीरीतितैंजोडैहैं तभी सो आत्मादेव निश्चयरूपबुद्धिकाकारणहोवै है और तानि श्चयरूपबुद्धिकरिकैयहअधिकारीपुरुष तास्वयंज्योतिरूपआत्माकूंनिश्चयकरै है ॥ तानिश्चयतैंअनंतर यासंघाततैंभिन्नरूपकरिकैस्थित हुआ तथा यासंघातकानियंतारूपकरिकैस्थितहुआ ॥ सोविद्वान्पुरुष अंतरबाहरपूर्णरूपकरिकैस्थितहोवै है ॥ हे संन्यासियो ॥ सूर्य

मंडलविषेस्थित जोसवितानामाअंतर्यामीदेवहै ॥ ताअंतर्यामीदेवके ध्यानकेप्रभावतैं पूर्व हमसरीखेअधिकारीपुरुष सर्वदुःखकीनिवृत्तिवा सतैं तथाब्रह्मानंदकीप्राप्तिवासतैं ताईश्वरपरायणशुद्धमनकरिकै ज्ञानअभ्यासरूपयत्नकूंकरतेभये हैं ॥ और हे संन्यासियो ॥ ता अंतर्या मीदेवकीशक्तिकरिकैयुक्तजोमन है ॥ तामनकरिकै यहअधिकारीपुरुष जिनवागादिकइंद्रियोंकूं शुभकर्मविषेप्रवृत्तकरै है ॥ तिनवाका दिकइंद्रियोंकूंभी सोअंतर्यामीपरमात्मादेवही शुभकर्मविषेप्रवृत्तकरै है ॥ कैसेहैंतेवाकादिकइंद्रिय ॥ भूमानंदरूपनित्यसुखकेज्ञानकूं प्रगट करणेहारेहैं ॥ हे संन्यासियो ॥ तिनवाकादिकइंद्रियोंतैं उत्पन्नभईजाआत्माकारबुद्धिहै ॥ तावुद्धिरूपकार्यकीउत्पत्तितैं यहअधिकारीपुरुष तिनवाकादिकइंद्रियोंऊपर परमेश्वरकेअनुग्रहकाअनुमानकरिकै तास्वप्रकाशपरमात्मादेवकूंप्राप्तहोवै है॥हेसंन्यासियो ॥ अंतर्यामीईश्वरके अनुग्रहतैंविना याअधिकारीपुरुषोंकी साआत्माकारबुद्धिहोवैनहीं ॥ यातैं ताआत्माकारबुद्धिरूपकार्यतैं ताअंतर्यामीदेवकाअनुग्रह अव श्यजान्याजावैहै ॥ याकारणतैंहीं महात्मायोगीजन प्रथम आपणेसंकल्परूपमनकूं तापरमात्माविषेजोडैहै ॥ तिसतैंअनंतर तामनकेजोड नेतैं उत्पन्नभईजानिश्चयात्मकबुद्धि है ॥ तावुद्धिकूंभी तिसीपरमात्माविषेजोडे हैं ॥ कैसीहैंतावुद्धि तास्वयंज्योतिरूपपरमात्मादेवकेस्वरू पभूतआनंदकूंविषयकरणेहारीहै ॥ तावुद्धिकेप्रसादतैं तिनमहात्मायोगीजनोंकूं इसीशरीरविषे आत्माकासाक्षात्कारहोवैहै ॥ और हेसंन्या सियो ॥ प्राण अपान यादोनोंप्रकारकेवायुका परस्परलयचिंतनरूपजोअंतरअग्निहोत्रहै ॥ ताअग्निहोत्रकूं पूर्व महात्मापुरुष करतेभये हैं ॥ तिनमहात्मापुरुषोंकेमनोरथोंकूं सोपरमात्मादेव इसप्रकारपूर्णकरैहै॥जिसप्रकार हमअधिकारीपुरुषोंका आत्मज्ञानकामनोरथ पूर्णकऱ्याहै॥ काहैतैं सत्मार्गविषेवर्त्तणेहारे अधिकारीजनोंऊपरअनुग्रहकरणा ईश्वरकास्वभावही है ॥ और हेसंन्यासियो॥ याअंतर्यामीपरमात्मादेवके एकआश्चर्यरूपस्वभावकूं तुमदेखो ॥ जो यहपरमात्मादेव मनवाणीकाअविषयहुआभी याअधिकारी पुरुषोंकेबुद्धिकाविषयहोवै है ॥ ऐसे सर्वमनोरथोंकी प्राप्तिकरणेहारे परमात्मादेवकीस्तुति हमअधिकारीजीवोंकूं सर्वदाकरणेयोग्य है ॥ अब तास्तुतिकाप्रकार निरू पणकरै हैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ याअधिकारीपुरुषोंकूं आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिविषे अनेकप्रकारकेविघ्नहोवै हैं ॥ यातैं तिनविघ्नोंकीनिवृत्ति

वासतै याअधिकारीपुरुषनैं इसप्रकारपरमेश्वरकीस्तुतिकरणी ॥ हेतत्पदकाअर्थरूपब्रह्म हेत्वंपदकाअर्थरूपजीवात्मा तुमदोनोंकेअभेदरूप योगकूं हमअधिकारीपुरुष गुरुशास्त्रसहकृतशुद्धमनकरिकैकरैहैं ॥ काहेतैं ॥ सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म ॥ इत्यादिकअवांतरवाक्योंकरिकैसहकृत जेतत्त्वमस्यादिकमहावाक्यहैं तेमहावाक्य तुमदोनोंकेवास्तवस्वरूपकाअभेदही प्रतिपादनकरै हैं ॥ तथा आत्मावाइदमेकएवाग्रआसीत् ॥ इत्यादिकश्रुतिवचन याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्व तुमदोनोंकूं अद्वितीयब्रह्मरूपकरिकैकथनकरै हैं ॥ और जैसे लौकिकपुरुष लोकप्रसिद्धमार्ग करिकै नगरकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे तुमारेध्यानकरिकै सर्वविघ्नोंतैंरहितहुए यहअधिकारीपुरुष आत्मज्ञानरूपमार्गकरिकै ब्रह्मानंदरूपमोक्ष कूंप्राप्तहोवै हैं ॥ और जिनअधिकारीपुरुषोंकूं तुमारासाक्षात्कारभयाहै ॥ तेअधिकारीपुरुष आपणेमोक्षरूपकीतिकूं बुद्धिमान्पुरुषोंकेमुख तैं बहुतवारश्रवणकरैहैं और जैसे पिताकेधनविषे पुत्रकाभागहोवै है ॥ तैसे ब्रह्मानंदरूपमोक्षविषे तेसंपूर्णअधिकारीपुरुष भागवालेहोवै हैं ॥ और जे अधिकारीपुरुष हृदयादिकस्थानोंविषे तुमाराचिंतनकरै हैं ॥ तेअधिकारीपुरुष आत्मसाक्षात्कारकूंप्राप्तहोइकै ताआत्मसा क्षात्कारकेप्रभावतैं सूर्यचंद्रादिकोंविषेस्थित परमेश्वरकेतेजकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ और वास्तवतैं शुद्धब्रह्मरूप तथाभेदतैंरहित जोतुमदोनोंहो ॥ तिनतुमदोनोंकेप्राप्तिकेद्वारकूं हमअधिकारीजन गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं भलीप्रकारजाणते हैं ॥ काहेतैं जैसे काष्ठोंकेमथनतैंउत्पन्नभया जोअग्निहै ॥ सोअग्निजिसस्थानतैं उत्पन्नहोवै है ॥ तिसीस्थानविषेलयभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ तैसे वायुचंद्रसूर्यादिकजगत् जिसमायाविशिष्ट चेतनविषे उत्पत्तिलयकूंप्राप्तहोवै है ॥ सोमायाविशिष्टरूपही तुमदोनोंकेशुद्धस्वरूपकूंजनावैहै ॥ या कारणतैं सोमायाविशिष्टस्वरूप तुमदोनोंकेप्राप्तिकामार्ग है ॥ काहेतैं जैसे यालोकविषे मृत्तिकारूपकारणकेज्ञानहुएतैंअनंतर घटशरावादिककार्योंकाभेददर्शन निवृ त्तहोइजावै है ॥ तैसे सर्वजगत्काकारणरूप जो मायाविशिष्टचेतन है ताविशिष्टचेतनकेज्ञानहुएतैंअनंतर यहअधिकारीपुरुष भेद दर्शनजन्यसर्वभ्रांतिकापरित्यागकरिकै शुद्धब्रह्मकूंप्राप्तहोवै है ॥ इसप्रकार शुद्धआत्माकेसाक्षात्कारहुएतैंअनंतर तत्पदकाअर्थरूप तूंईश्वर आपणे परोक्षताकीनिवृत्तिवासतै तादात्म्यसंबंधकरिकै या त्वंपदार्थरूपजविकासेवनकरै हैं ॥ और यह त्वंपदार्थरूपजीव

अ० ८

॥ २८ ॥

आपणेपरिच्छिन्नभावकी निवृत्तिवासतै तादात्म्यसंबंधकरिकै तैंतत्पदार्थ रूपईश्वरका सेवनकरै है ॥ ऐसीअभेददशाविषे तूंपरमात्मादेव आपणेसाक्षात्कारकरिकै याअधिकारीपुरुषोंकेअविद्याकूंनाशकरै हैं ॥ कैसी है साअविद्या ॥ याजीवोंकेजन्ममरणादिकदुःखोंकाकारण है तथा नाना प्रकारकेभेद दर्शनका कारण है ॥ यातैं यह अधिकारीपुरुष तुम्हारीप्राप्तिवासतै अग्निहोत्रादिक इष्टकर्मोंकूं तथा कूपत डागादिकपूर्त्त कर्मोंकूं कदाचित्भी नहींकरै ॥ किंतु तुम्हारी प्राप्तिवासतैं यह अधिकारी पुरुष आत्मज्ञानकाही अभ्यासकरै ॥ आत्मज्ञानतैंविनादूसराकोईउपाय तुम्हारेप्राप्तिकाहैनहीं ॥ हेसंन्यासियो ॥ इसप्रकार जोअधिकारीपुरुष ताअंतर्यामीपरमात्मादेवकीस्तु तिकरै है ॥ ताअधिकारीपुरुषके सर्वपापकर्म निवृत्तहोवैं हैं और तापापकर्मरूप प्रतिबंधकेनिवृत्तहुएतैंअनंतर याअधिकारीपुरुषकाचित्त शुद्धहोवै है ॥ और ताचित्तशुद्धितैंअनंतर याअधिकारीपुरुषकूं योगकेप्राप्तिकीइच्छाउत्पन्नहोवै है ॥ ताइच्छाकीउत्पत्तितैंअनंतर यहअधि कारीपुरुष तायोगकूंकरै है ॥ और तायोगकरिकै यहअधिकारीपुरुष साक्षीआत्माकूंदेखै है ॥ तासाक्षीआत्माकेदर्शनकरिकै याअधिकारी पुरुषकूं मोक्षकीप्राप्तिहोवै है ॥ यातैं मुमुक्षुजननैं पूर्वउक्तरीतिसैं परमेश्वरकीप्रार्थना अवश्यकरणी अब ताअष्टांगयोगकानिरूपणकरै हैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ यम १ नियम २ आसन ३ प्राणायाम ४ प्रत्याहार ५ धारणा ६ ध्यान ७ समाधि ८ यहयोगके अष्टअंग हैं ॥ तहां अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य अपरिग्रह यहपंचप्रकारकायमहोवै है ॥ तहां शरीरमनवाणीकरिकै किसीजीवकूंपीडानहींकरणी याकानाम अहिंसा है ॥ और परजीवोंकेहितवासतै यथार्थवचनकहणा याकानामसत्य है ॥ और बलात्कारसैं तथा छलसैं परधनादिकोंका नहीं हरणकरणा याकानाम अस्तेय है ॥ और नेत्रादिकइंद्रियोंके निरोधपूर्वक जोउपस्थइंद्रियकानिरोध है याकानाम ब्रह्मचर्य है ॥ और शरी रकेनिर्वाहतैंअधिक भोगकेसाधनोंकासंग्रहनहींकरणा याकानाम अपरिग्रह है ॥ १ ॥ अब नियमरूप दूसरेअंगकानिरूपणकरै हैं ॥ तहां शौच संतोष तप स्वाध्याय ईश्वरप्रणिधान यह पंचप्रकारका नियमहोवै है ॥ तहां शौच दोप्रकारकाहोवै है ॥ एक बाह्यशौचहोवै है ॥ और दूसरा अंतरशौचहोवै है ॥ तहां जलमृत्तिकादिकोंकरिकै शरीरकूंशुद्धराखणा यह बाह्य शौच है ॥ और मैत्री करुणा मुदिता इत्यादिक

द्वारोंविषेस्थितजोप्राणरूपवायुहै ॥ तावायुकूं हृदयदेशविषेनिरोधकरिकै जबपर्यंत अंतरहींवायुकालयहोवै ॥ तबपर्यंत उत्साहपूर्वक अभ्यासकरै॥इसप्रकार अंतरहींवायुकेलयतैंअनंतर यहअधिकारीपुरुष नासिकाद्वारा श्वासउच्छ्वासकरिकै तावायुकूं शरीरतैंबाहरनिकसै जबपर्यंत सोवायु सूक्ष्मताकूंनहींप्राप्तहोवै ॥ तबपर्यंत यहअधिकारीपुरुष ता अभ्यासकूंकरै ॥ इसप्रकार अभ्यासकरतेहुए याअधिकारीपुरुषके जभी जभी सोप्राणरूपवायुवशवर्त्तीहोवै है ॥ तभी यहमनभी वशवर्त्तीहोवै है ॥ और याअधिकारीपुरुषके जभी यहमन वशवर्त्तीहोवै है ॥ तभी नेत्रादिकइंद्रियभी सुखैनहीं वशवर्त्तीहोवै है ॥ काहेतैं जैसे यालोकविषे सारथिपुरुष जभी दुष्टअश्वोंकेबंधनकरणेहारीरज्जुकूं आपणेवशवर्त्तीकरैहै ॥ तभी सोसारथिपुरुष तिनदुष्टअश्वोंकूं सुखैनहीं आपणेवशवर्त्तीकरिलेवै है ॥ तैसे यहअधिकारीपुरुष जभी मनरूपरज्जुकूं आपणेवशवर्त्तीकरै है॥तभी इंद्रियरूपदुष्टअश्वोंकूं सुखैनहीं आपणेवशवर्त्तीकरिलेवै है ॥ अब तायोगकरणेकेदेशका निरूपणकरै हैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ योगाभ्यासकरणेहारेपुरुषोंकूं आसनकरणेवासतै याप्रकारकादेश सुखकाहेतुहोवै है ॥ जो देश अत्यंतऊँचाभीनहींहोवै ॥ तथा अत्यंतनीचाभीनहींहोवै ॥ तथा गोमयादिकोंकरिकैलेपितहोवै ॥ तथा नदीतैंआदिलैकेजलकेस्थान हैं ॥ तेजलकेस्थानभी जिसदेशकेअत्यंतसमीपनहींहोवै ॥ तथा जोदेश कंटकादिकोंतैंरहितहोवै ॥ तथा वालुका पाषाणकेसूक्ष्मकंकरोंतैंरहितहोवै ॥ तथा जादेशविषे अत्यंतशीतभीनहींहोवै ॥ तथा अत्यंतउष्णताभीनहींहोवै ॥तथा नानाप्रकारकेपक्षी आदिकोंकेशब्दतैंरहित होवै ॥ तथा मशकादिकजंतुवोंतैंरहितहोवै ॥ तथा अत्यंतवायुतैंरहितहोवै ॥ तथा देखणेतैं नेत्रादिक इंद्रियोंकूं तथा मनकूं आनंदकीप्राप्तिकरणेहाराहोवै ॥ ऐसेपर्वतकीगुहाआदिकदेशविषे आसनकूंबांधिकरिकै यह अधिकारी पुरुष योगाभ्यासकरै ॥ हेसंन्यासियो ॥ जादेशविषे यहअधिकारीपुरुष योगकरणेकाआरंभकरै ॥ तादेशविषे जोकदाचित्याअधिकारीपुरुषकूं किसीविघ्नकीशंकाहोवै ॥ तौ यह अधिकारीपुरुष तादेशविषे योगाभ्यासकूंनहींकरै ॥ हेसंन्यासियो ॥ विघ्नकीनिवृत्तिवासतैं ताअधिकारीपुरुषकूं जैसेआसनकानियमकह्या है ॥ तैसे अन्नादिकोंकेभोजनकाभीनियमकह्या है॥ तहां सोयोगाभ्यासकरणेहारापुरुष आपणेउदरकेदोभाग अन्नकरिकैपूर्णकरै ॥ और

एकभाग जलकरिकैपूर्णकरै ॥ हेसंन्यासियो॥इसप्रकारअष्टांगयोगकरिकै जोअधिकारीपुरुष आत्मसाक्षात्कारकेप्राप्तिकीइच्छाकरै है॥तिसअधिकारीपुरुषकूं फलकेसमीपकालविषे अणिमादिकसिद्धियां प्रगटहोवैहैं ॥ और सोअधिकारीपुरुष जोकदाचित् तिनसिद्धियोंविषेआसक्तिकरैहै ॥ तौ ताअधिकारीपुरुषकूं आत्माकासाक्षात्कारहोवैनहीं॥यातैं तेअणिमादिकसिद्धियां आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिविषे विघ्नरूपहैं ॥ अब तिनसिद्धियोंकानिरूपणकरैहैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ इसप्रकार योगाभ्यासकरतेहुए याअधिकारीपुरुषकूं जभी आत्मसाक्षात्कारकेप्राप्तिकाकाल समीपहोवैहै ॥ तभी सोयोगीपुरुष आपणेमनविषे कदाचित् नीहारकेसमानरूपकूंदेखै है॥और कदाचित् धूमकेसमानरूपकूंदेखै है ॥ और कदाचित् सूर्यकेसमानरूपकूंदेखै है ॥और कदाचित् अग्निकेसमानरूपकूंदेखै है ॥और कदाचित् वायुकेसमानरूपकूंदेखैहै ॥ इहांजलकेशुक्लरूपसमान शुक्लवर्णवालानीहारहोवैहै ॥ जानीहारकूं शास्त्रविषे तुषारभीकहैहैं ॥और धूमका कृष्णवर्णहोवैहै ॥ और सूर्यका पिंगलवर्णहोवै है ॥ अनेकवर्णोंकेसमुदायकानाम पिंगलवर्णहै ॥ और अग्निका रक्तवर्णहोवै है॥ और वायुका दुर्वाकेसमान श्यामवर्णहोवै है ॥ और कदाचित् सोयोगीपुरुष आपणेमनविषे खद्योतकेसमानरूपकूंदेखै है ॥ और कदाचित् विद्युत्केसमानरूपकूंदेखै है ॥ और कदाचित् स्फटिककेसमानरूपकूंदेखैहै ॥ और कदाचित् चंद्रमाकेसमानरूपकूंदेखै है॥हेसंन्यासियो॥सोयोगीपुरुष जैसेनेत्रइंद्रियकारिकै दिव्यरूपोंकूंदेखै है॥तैसे सोयोगीपुरुष श्रोत्रइंद्रियकारिकै नानाप्रकारकेदिव्यशब्दोंकूंश्रवणकरैहै॥ और रसनइंद्रियकरिकै नानाप्रकारकेदिव्यरसोंकूंग्रहणकरैहै॥ और घ्राणइंद्रियकरिकै नानाप्रकारकेदिव्यगंधोंकूंग्रहणकरैहै ॥ और त्वक्इंद्रियकरिकै नानाप्रकारकेदिव्यस्पर्शोंकूंग्रहणकरैहै॥इतनैंकरिकैअंतररसिद्धियोंकानिरूपणकऱ्या॥अबबाह्यसिद्धियोंकानिरूपणकरैहैं॥हेसंन्यासियो ॥ जैसेसमाधिकालविषेतायोगीपुरुषकूं दिव्यरूपादिकोंकादर्शनरूपअंतरसिद्धियां प्राप्तहोवैहैं।तैसेसमाधितैंउत्थानकालविषे तायोगीपुरुषकूं याप्रकारकीबाह्यसिद्धियांप्राप्तहोवैहैं॥जैसे अग्निकेसंबंधकरिकै सुवर्णकेसंपूर्णमलादिकविकारनिवृत्तहोवै हैं तैसे योगरूपअग्निकेप्राप्तहुएतायोगीपुरुषकेपांचभौतिकस्थूलशरीरके संपूर्णरोग तथा जरामृत्यु नाशहोवैहै ॥और तायोगकेप्रभावतैं तायोगीपुरुषकेशरीरविषे इतनेगुण उत्पन्नहोवैहैं

हस्तपादादिकअंगोंकीजडताकाअभावरूप जोलघुपणाहै सोलघुपणा तायोगीकेशरीरविषेप्राप्तहोवैहै ॥ और तायोगीकेशरीरविषे अरोगताहोवै है ॥ और पृथिवीस्वर्गादिकलोकोंके विषयोंविषे ता योगीकीइच्छानहींहोवै है ॥ और सुवर्णके समान ता योगीकेशरीरकावर्णहोवैहै और ता योगीके दर्शनतैं सर्वलोकोंकेमनकूं तथानेत्रोंकूं आनंदकीप्राप्तिहोवै है और ता योगीकास्वरभीमधुरहोवै है ॥ और चंपकादिकपुष्पोंकेगंधसमान तायोगीकेशरीरकागंधहोवैहै ॥ और तायोगीकेशरीरविषे अन्नजलादिकोंका अत्यंतपाचनहोवै है ॥ यातैं बहुतअन्नजलकेभक्षणकरिकैभी तायोगीपुरुषके विष्ठामूत्रादिकमल अल्पहोवै हैं॥ हेसंन्यासियो ॥ इसतैंआदिलैकेअनेकप्रकारकेफल तायोगीपुरुषकूं आत्मसाक्षात्कारतैंप्रथमहोवैहैं ॥ और तिसकालविषे तायोगीपुरुषकूं अणिमादिकअष्टसिद्धियोंकीभीप्राप्तिहोवै है ॥ तिन सिद्धियोंविषे सोयोगीपुरुष जोकदाचित् आसक्तिकरैहै॥ तौ तायोगीपुरुषकूं आत्माकासाक्षात्कारहोवैनहीं॥ किंतु सोयोगीपुरुष योगभ्रष्ट कह्याजावैहै ॥ और जभी सोयोगीपुरुष तिनसिद्धियोंकापरित्यागकरैहै॥ तभी तायोगीपुरुषकूं आत्मसाक्षात्कारकी प्राप्तिहोवैहै ॥ताआत्मसाक्षात्कारकरिकै सोयोगीपुरुष कृतार्थहोवैहै ॥ और हेसंन्यासियो ॥ जैसे पूजनकरणेवासतै रजतादिकधातुवोंकरिकैरच्याहुआजोसूर्यका अथवा चंद्रमाका मंडलहै॥सोमंडल जभी मृत्तिकाकरिकैलिप्तहोवैहै तभीतामृत्तिकारूपआवरणकीनिवृत्तितैंविना तामंडलकादर्शन होइसकैनहीं ॥ किंतु तामृत्तिकारूपआवरणकीनिवृत्तितैंअनंतरही तामंडलकादर्शनहोवैहै ॥ तैसे तायोगीपुरुषकूं जबपर्यंत तिनसिद्धियों विषेरागहोवैहै ॥ तबपर्यंत सोयोगीपुरुष ॥ आत्माकूंदेखिसकैनहीं॥ और जभीसोयोगीपुरुष तिनसिद्धियोंकापरित्यागकरैहै ॥तभीसोयोगीपुरुष अद्वितीयआत्माकूं साक्षात्कारकरैहै ॥ तथा सर्वशोकोंतैं रहितहोवै है ॥ हेसंन्यासियो॥तेयोगशास्त्रवालेपुरुष जैसे केवलत्वंपदार्थरूपआत्माकेज्ञानतैंहीं मोक्षकीप्राप्तिमानैं हैं ॥ तैसे तुमोंनैं केवल त्वंपदार्थरूपआत्माकेज्ञानतैंमोक्षकीप्राप्तिनहींमानणी॥किंतु यहमहानूभाग्यवालेअधिकारीपुरुष जभी प्रथम तायोगकेप्रभावतैं सर्वभेदतैंरहितस्वयंज्योतिरूप तत्पदार्थब्रह्मकेस्वरूपकूंजानैहैं ॥तिसतैंअनंतर कार्यकारणभावतैंरहित तथा जन्ममरणादिकविकारोंतैंरहित त्वंपदार्थरूपआत्माकेस्वरूपकूंजानै हैं ॥ तिसतैंअनंतर सोअद्वितीयब्रह्ममैंहूं

याप्रकार तिनदोनोंकेअभेदकूंनिश्चयकरै हैं॥तभीहीं यहअधिकारीपुरुष अविद्यादिकसर्वपाशोंतैंमुक्तहोवै है॥केवलत्वंपदार्थकेज्ञानतैं अविद्यादिकपाशोंकीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ और हेसंन्यासियो॥तेयोगीपुरुष जिसस्वयंज्योतिआत्माकूंसाक्षात्कारकरै हैं॥सोस्वयंज्योतिआत्माकेसाहै ॥ पूर्वादिकदशोदिशारूपहै॥तथा सोपरमात्मादेवही पूर्व हिरण्यगर्भरूपकरिकैउत्पन्नहोवै है॥तथा सोपरमात्मादेवहीब्रह्मांडरूपकरिकैजलादिकोंविषे स्थितहोवै है॥तथा सोपरमात्मादेवही स्त्रियोंकेगर्भविषेस्थितहोवै है॥तथा सोपरमात्मादेवहीबुद्धिआदिकसंघातकेअंतरवर्तमानहै तथा शरीरइंद्रियादिकसंघातकाभोक्तारूपहै॥तथा सोपरमात्मादेवही अग्निजलादिकमहाभूतोंविषेस्थितहै॥और जेपदार्थ पूर्वउत्पन्नभये हैं॥तथाजेपदार्थ आगेउत्पन्नहोवैंगे॥तिनसंपूर्णपदार्थोंविषेभीसोपरमात्मादेवहीव्यापकहै ॥ और सोपरमात्मादेव संपूर्णविश्वकूंउत्पन्नकरिकैताविश्वविषे आपहीप्रवेशकरताभया है ॥ याकारणतैं सोपरमात्मादेवसर्वजीवोंकेहृदयविषे साक्षीरूपकरिकैविराजमान है ॥ और सोपरमात्मादेव स्थावरजंगमसर्वपदार्थोंविषेस्थितहै॥याकारणतैं सोपरमात्मादेव सर्वभूतरूप है॥ ऐसेसर्वरूपशुद्धपरमात्मादेवकेप्रतिहमारा वारम्वारनमस्कारहै ॥ हेसंन्यासियो ॥ आत्मसाक्षात्कारकासाधनरूप जोअष्टांगयोगहै॥ सोयोग हमनैं तुमारेप्रति संक्षेपतैंकथनकऱ्याहै॥ अब तायोगकरिकैप्राप्तहोणेयोग्य जोअद्वितीयआत्मा है ताअद्वितीयआत्माकासाक्षात्कार जिसविद्याकरिकैप्राप्तहोवै है ताविद्याकूंतुम श्रवणकरो॥हेसंन्यासियो ॥ जोहमनैं पूर्व तुमारेप्रति परमात्मादेव कथनकऱ्याथा॥ और जोहमनैं अभी तुमारेप्रति परमात्मादेव कथनकऱ्याहै ॥ सोपरमात्मादेव तुमोंनैं एकहीजानणा॥ तथा यासंसाररूपजालका सोपरमात्मादेवही स्वामी है॥और सोपरमात्मादेवही आपणे वशवर्तीमायाकी अनेकशक्तियोंकरिकै यासम्पूर्णलोकोंकूं आपणेवशवर्तीकरै है॥और सोपरमात्मादेवही याजगत्केउत्पत्ति स्थिति लयकरणेविषेसमर्थ है॥ऐसेपरमात्मादेवकूं जे अधिकारीपुरुष गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं साक्षात्कारकरै हैं ॥ ते अधिकारीपुरुषही मोक्षरूपअमृतकूं प्राप्तहोवै हैं॥हेसंन्यासियो ॥ ऐसेपरमात्माकेसाक्षात्कारहुए याअधिकारीपुरुषोंकूं पुनः जन्मकीप्राप्तिहोतीनहीं॥ और यालोकविषे जिसपदार्थकाजन्महोवै है॥तिसीपदार्थकानाशहोवै है॥जैसे घटादिकपदार्थोंका जन्महोवै है॥ यातैं कालपाइकै तिनघटादिकोंकानाशभीअवश्य

होवै है॥और यह विद्वान्पुरुषतौ आत्मसाक्षात्कारकरिकै जन्मतैंरहितहोवै है॥यातैं सोविद्वान्पुरुष पुनःमरणकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और हेसं न्यासियो॥यहपरमात्मादेव जैसे आपणीमायाशक्तिकरिकै याजगत्कीउत्पत्तिस्थितिकरै है ॥ तैसे प्रलयकालकेप्राप्तहुए यहपरमात्मादेव याजगत्कूंनाशकरिकै सर्वजीवोंकेताईं दुःखकीप्राप्तिकरै है॥याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं रुद्र यानामकरिकै कथनकरै है ॥ और हेसंन्यासियो ॥ जैसे ऊर्णनाभिजंतु आपणेशरीरतैं तंतुवोंकूंउत्पन्नकरै है॥तथा तिन तंतुवोंकापालनकरै है ॥ तथा अंत्यविषे तिनतं तुवोंकूं आपणेविषेलय करै है ॥ तैसे यहपरमात्मादेवभी सृष्टिकालविषे याजगत्कूं आपणेतैंउत्पन्नकरै है ॥ और स्थितिकालविषे याजग त्कापालनकरै है॥और प्रलयकालविषे यासंपूर्णजगत्कूं आपणेविषेलयकरै है ॥ इसप्रकार सर्वजगत्कूंआपणेविषेलयकरिकै सोपरमात्मा देव एकअद्वितीयरूपकरिकैस्थितहोवै है ॥ और हेसंन्यासियो यालोकविषे जितनेकीस्थावरजंगमशरीरहैं ॥ तथा तिनशरीरोंविषेस्थित जितनेकीनेत्रादिकज्ञानइंद्रियहैं ॥ तथा वाकादिककर्मइंद्रियहैं ॥ तेसंपूर्णशरीरइंद्रियादिक याअंतर्यामीपरमात्मादेवकेही हैं ॥ और सो परमात्मादेवही आपणीमायाशक्तिकरिकै प्रथम आकाशादिकपंचभूतोंकूं उत्पन्नकरै है ॥ तिसतैं अनंतर याशरीरादिकभौतिकपदार्थों कूं उत्पन्नकरै है हेसंन्यासियो ॥ जैसे पक्षोंकरिकैयुक्त तथादोभुजावोंकरिकैयुक्त जोप्रसिद्धपक्षी है ॥ सोपक्षी आपणेगृहकूंरचै है ॥ तैसे आकाशादिकपंचभूतरूपपक्षोंकरिकैयुक्त तथा पुण्यपापरूपदोभुजाकरिकैयुक्त जोयहपरमात्मादेव है ॥ सोपरमात्मादेव यासंपूर्णभौति कप्रपंचकूं उत्पन्नकरै है ॥ तथा स्वर्गादिकऊपरिकेलोकोंकूं उत्पन्नकरै है॥ तथा भूमिआदिकनीचेकेलोकोंकूं उत्पन्नकरै है॥ याकेविषे इत नीविशेषता है ॥ यहलोकप्रसिद्धपक्षीतौ आपणेतैंभिन्नगृहकूंउत्पन्नकरै है ॥ और सोपरमात्मादेवतौ आपणेकूंहींजगत्रूपकरै है ॥ तात्पर्ययह ॥ सोपक्षी आपणेगृहका केवलनिमित्तकारण है उपादानकारणनहीं ॥ और यह परमात्मादेवतौ याजगत्का उपादान कारण तथा निमित्तकारण दोनों हैं॥ यातैं केवलनिमित्तकारणताकूंलैकै पक्षीकादृष्टांतदियाहै ॥ और निमित्तकारणता तथा उपा दानकारणता यादोनोंकारणताविषेतौ पूर्वउक्तऊर्णनाभिकादृष्टांतहीसमीचीनहै ॥ और हेसंन्यासियो ॥ जो रुद्रभगवान् यासंपूर्णवि

श्वतैंअधिकहै ॥ तथा संपूर्ण वेदोंके स्मरणकरणेहारा महान्ऋषिरूप है ॥ तथा सर्वज्ञानोंकरिकैसंपन्न है ॥ तथाअग्निआदिकदेवता वोंके तथा वाकादिकइंद्रियोंके उत्पत्तिस्थितिलयकूंकरणेहारा है ॥ तथा जोरुद्रभगवान् पूर्व हिरण्यगर्भकूंउत्पन्नकरताभया है ॥ त था स्थावरजंगमरूपसर्वशरीरोंकूं उत्पन्नकरताभया है ॥ सोरुद्रभगवान्ही हमअधिकारीजीवोंकूं शुभबुद्धिकीप्राप्तिकरै है ॥ याका रणतैं मैंश्वेताश्वतरऋषि पूर्व तारुद्रभगवान्केप्रति याप्रकारकीप्रार्थनाकरताभया ॥ हेरुद्रभगवान् तुमारीदोमूर्ति हैं ॥ एकतौ सात्त्वि कीमूर्त्ति है ॥ और दूसरी तामसीमूर्त्तिहै ॥ तिनदोनोंविषे ब्रह्मविद्याकेप्रवर्त्तकरणेहारी जातुमारीसात्त्विकीगुरुमूर्तिहै ॥ तागुरुमूर्त्तिकरि कै हमविचारहीनअज्ञानीजीवोंकूं प्रकाशकरो ॥ हेभगवन् जैसे यालोकविषे नेत्रोंतैंहीनअंधपुरुषोंकूं बुद्धिमानवैद्य नेत्रोंकीप्राप्तिकरिकै प्रकाशकरावै है ॥ तैसे मोहरूपीरोगकरिकैं अंधहुएहैंबुद्धिरूपनेत्रजिनोंके ऐसेजेहमअधिकारीजनहैं ॥ तिनहमारेकूं आपणेगुरुमूर्त्तिकाद र्शनकराइकै प्रकाशकरो ॥ और हेरुद्रभगवान् पापीजीवोंकूंसंसाररूपगरतविषेपावणेवासतैं जोतुम दूसरी नारीरूपतामसीमूर्तिकूंधारणक रोहो ॥ साआपणीतामसीमूर्ति हमअधिकारीजनोंकेप्रति सुखकाहेतुकरो॥कैसीहैसाआपकीतामसीमूर्ति॥ कामक्रोधादिकरूपलोहमयहै तथा धनुषबाणकीन्याईं वैरीआदिकोंकूंनिवारणकरणेहारी है ॥ तथा अत्यंतभयानकरूपवाली है ॥ हेभगवन् ऐसीनारीरूपतामसीमूर्त्तिकरिकै याजगत्रूपपुरुषकूं प्रमादरूपमृत्युकीप्राप्तिमतकरो ॥ तथा याआपणीतामसीमूर्त्तिकरिकै हमअधिकारीजीवोंके वास्तवस्व रूपकूंआच्छादनमतकरो ॥ हेसंन्यासियो ॥ इसप्रकार जभी हमनैं तारुद्रदेवकीप्रार्थनाकरी ॥ तभी हमाराअंतःकरण कामक्रोधादिक विकारोंसेरहित शुद्धहोताभया ॥ ताचित्तशुद्धितैंअनंतर मैंश्वेताश्वतरनामाऋषि तारुद्रभगवान्के गुरुरूप सात्त्विकीमूर्तिकूंदेखताभया ॥ तामूर्तिकेदर्शनतैं मैं कृतकृत्यहोताभया ॥ हेसंन्यासियो ॥ जैसे यालोकविषे पुत्ररहितधनवान्पुरुष पुत्रकूंप्राप्तहोइकै आपणेकूंकृतकृत्य मानै है॥और जैसे सर्वदा स्त्रीकाचिंतनकरताहुआकामीपुरुष ताप्रियस्त्रीकूंप्राप्तहोइकै आपणेकूंकृतकृत्यमानै है ॥और जैसे अत्यंतकृपण लोभीपुरुष पूर्वनष्टहुएधनकूंप्राप्तहोइकै आपणेकूंकृतकृत्यमानै है॥तैसे तारुद्रभगवान्के गुरुरूपसात्त्विकीमूर्त्तिकूंप्राप्तहोइकै मैंश्वेताश्वतर

आपणेकूंकृतकृत्यमानताभया ॥ हेसंन्यासियो ॥ तारुद्रभगवान्केगुरुरूपमूर्त्तिनैं जोहमारेऊपरउपकारकऱ्या है ॥ ताउपकारकेनिवृत्ति करणेवासतै मैंश्वेताश्वतर इसलोकविषेभी तथास्वर्गादिकलोकोंविषे तथा अनेकजन्मोंकरिकै कोईप्रतिउपकारकूंदेखतानहीं॥हेसंन्यासियो जैसे मैंश्वेताश्वतरऋषि तारुद्रभगवान्केगुरुमूर्तिकूंदेखिकै कृतकृत्यभावकूंप्राप्तभयाहूं ॥ तैसे तुमभी जभी पूर्वउक्तस्तुतिकूंकरिकै तारुद्र भगवान्केगुरुमूर्तिकूंदेखोगे ॥ तभी तुमभी कृतकृत्यभावकूंप्राप्तहोवोगे ॥ हेसंन्यासियो ॥ सारुद्रभगवान्कीगुरुमूर्ति हमारेप्रति याप्रकार काउपदेशकरतीभई है ॥ हेपुत्र ॥ कारण अज्ञानसहित जोयहसंसारचक्र है ॥ तासंसारचक्रतैंपरेजोअद्वितीयब्रह्महै ॥ सोअद्वितीयब्रह्मही तुमारावास्तवस्वरूपहै ॥ कर्ताभोक्तारूपसंसारी तुमारावास्तवस्वरूपनहीं है ॥ हे संन्यासियो ॥ याप्रकार जभी नानाप्रकारकीयुक्तियों करिकै तारुद्ररूपगुरुमूर्त्तिनैं हमारेप्रति आत्माकाउपदेशकऱ्या ॥ तभी ताउपदेशकरिकै मैंश्वेताश्वतर अनेकसंशयविपर्ययतैंरहितहोता भया ॥ और यासंसारजालतैंपरेस्थित जोअद्वितीयब्रह्महै ॥ ताअद्वितीयब्रह्मकूं मैं आपणाआत्मारूपजाणताभया ॥ कैसाहैसोअद्वितीय ब्रह्म सर्वतैंअधिक है ॥ और तापरमात्मादेवतैं अधिक कोई भी पदार्थ नहीं है और कारणअज्ञानसहित आकाशादिकपंचभूत जिसपर मात्मादेवकाशरीररूप हैं ॥ और वास्तवतैं झरीरतैंरहितहै और जैसे आकाश जिसजिसघटमठादिकउपाधियोंविषेस्थितहोवै है ॥ तिस तिसउपाधिकेसमानआकारवालाहुआ प्रतीतहोवै है ॥ तैसे जिसजिसजीवका जैसा जैसाशरीरहोवै है ॥ तिसतिसशरीरविषे सोपरमात्मादे व तिस तिसरूपकरिकै स्थितहोवै है ॥तहांश्रुति॥ समःप्लुषिणासमोमशकेन ॥ अर्थयह॥प्लुषिमशकादिकअल्पशरीरोंविषे तथा हस्ती आदिक महान्शरीरोंविषेस्थितहोइकै ॥ यहपरमात्मादेव तिनशरीरोंकेसमान आकारवालाहुआ प्रतीतहोवै है॥ १ ॥ शंका ॥ हेभगवन् सोपरमात्मादेव जो सर्वशरीरोंविषेस्थितहै ॥ तौ सर्वजीवोंकूं किसवासतैंनहींप्रतीतहोता ॥ समाधान ॥ हेसंन्यासियो ॥ जैसे सर्वकाष्ठोंके अंतरअग्निगुह्यहोइकैरहै है ॥ याकारणतैं सो अग्नि तिनकाष्ठोंकेमथनरूपउपायतैंविना प्रतीतहोवै नहीं ॥ तैसे सोपरमात्मादेवभी सर्व भूतप्राणियोंविषे गुह्यहोइकैरह्या है ॥ याकारणतैं आत्मज्ञानरूपउपायतैंविना सोपरमात्मादेव प्रतीतहोवै नहीं ॥ और हे संन्यासियो ॥

जैसे ऊर्णनाभिजंतु तंतुवोंकूं चारोंओरतैंवेष्टनकरिकै तिनतंतुवोंविषेस्थितहोवै है ॥ तैसे यहपरमात्मादेवभी यास्थावरजंगमरूपज गतकूं सर्वओरतैंव्याप्यकरिकै ताजगत्विषेस्थितहोवै है ॥ हेसंन्यासियो ॥ यालोकविषे जेअधिकारीपुरुष तारुद्रभगवान्केगुरुरू पमूर्त्तिकूंप्राप्तहोइकै तापरमात्मादेवकूं साक्षात्कारकरै हैं ॥ तेअधिकारीपुरुषही जन्ममरणादिविकारोंतैंरहितहोवे हैं ऐसे माया रूपतमतैंपरेस्थित स्वयंज्योतिव्यापकआत्माकूं मैंश्वेताश्वतरनामाऋषि तारुद्रभगवान्केप्रसादतैं जानताहूं ॥ हेसंन्यासियो ॥ जैसे मैंश्वेताश्वतरनामाऋषि गुरुकेउपदेशतैं ताअद्वितीयपरमात्माकूंनिश्चयकरिकै यासंसाररूपमृत्युतैंरहितहुआहूं ॥ तैसे दूसरेभीअधि कारीजन गुरुकेउपदेशतैं तापरमात्मादेवकूंनिश्चयकरिकै यासंसाररूपमृत्युतैंरहितहोवे हैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ अज्ञानकीनिवृत्तिपूर्व क जोब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपमोक्षहै ॥ तामोक्षकेप्राप्तिवासतै आत्मज्ञानतैंविना दूसराकोईमार्गनहीं है ॥ किंतु मैं अद्वितीयब्रह्मरूपहूं याप्र कारकाअभेदज्ञानही तामोक्षकेप्राप्तिकामार्ग है ॥ यातैं याअधिकारीपुरुषोंनैं श्रवणमननादिकसाधनोंकरिकै ताआत्मज्ञानकूंअवश्यसंपा दनकरणा ॥ तहाँश्रुति ॥ तमेवविदित्वाऽतिमृत्युमेति नान्यःपंथाविद्यतेऽयनाय ॥ अर्थयह ॥ ताअद्वितीयब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपज निकै यहविद्वान्पुरुष संसाररूपमृत्युतैं पारहोवै है ॥ और मोक्षकीप्राप्तिवासतै आत्मज्ञानतैंविना दूसराकोईमार्गनहीं है॥ हेसंन्यासियो॥ यहपरमात्मादेव सर्वजगत्काआत्मारूप है ॥ याकारणतैं तापरमात्मादेवतैं कोईपदार्थ अधिकनहीं है ॥ तथा कोईपदार्थ सूक्ष्मनहीं है ॥ और जैसे यालोकविषे अनेकशाखापर्णोंकरिकैयुक्त जो कोईकमहान्वटकावृक्षहै ॥ सोवृक्ष बहुतअवकाशकूंव्याप्यकरिकै स्थितहोवै है तैसे यहपरमात्मादेवभी संपूर्णजगत्कूंव्याप्तकरिकै आपणेस्वप्रकाशस्वरूपविषेस्थितहोवै है ॥ और हेसंन्यासियो ॥ यद्यपि यहनिर्गुण परमात्मादेवही समष्टिस्थूलशरीररूपउपाधिके संबंधतैं विराट्रूपहोवै है ॥ तथा समष्टिसूक्ष्मशरीररूपउपाधिकेसंबंधतैं हिरण्यगर्भ रूपहोवैहै ॥ तथा समष्टिकारणअज्ञानरूपउपाधिकेसंबंधतैं ईश्वररूपहोवै है ॥ तथापि सोपरमात्मादेवका विराट्रूप तथा हिरण्यगर्भ रूप तथा ईश्वररूप केवलउपासनाकाउपयोगी है ॥ परंतु सो उपाधियुक्तरूप मुमुक्षुजनोंकेजाननेयोग्यनहीं है ॥ किंतु तिनस्थूल

सूक्ष्मकारणतैंपरेस्थित जोआत्माकानिर्गुण स्वरूपहै ॥ सोनिर्गुणस्वरूपही मुमुक्षुजनोंकेजानणेयोग्यहै ॥ काहेतैं विराट्विषे तथा हिरण्यगर्भविषे तथा ईश्वरविषे नाम रूप क्रिया यहतीनोंप्रकारकाजगत् विद्यमानहै ॥ और जोजोपदार्थ नामरूपक्रियाकरिकैयुक्त होवेहै॥सोसोपदार्थ मिथ्याहीहोवैहै॥और जोजोपदार्थमिथ्याहोवैहै॥सोसोपदार्थ रज्जुसर्पकीन्याईं नाशवान्होवैहै॥और तापरमात्मादेवके विराटादिकस्वरूपभी मिथ्याहोणेतैंनाशवान्है॥याकारणतैं तेविराटादिकस्वरूप मुमुक्षुजनोंकेजानणेयोग्यनहीं हैं॥ किंतुताविराटादिकतीनोंतैंपरेस्थित जोशुद्धनिर्गुणआत्माहै ॥ सोईही मुमुक्षुजनोंकेजानणेयोग्यहै ॥ ऐसे निर्गुणशुद्धपरमात्मादेवकूं जेअधिकारीपुरुष आपणाआत्मारूपकरिकैजानै हैं तेअधिकारीपुरुषही मोक्षरूपअमृतभावकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ और जेपुरुष ऐसेनिर्गुणपरमात्माकूंआपणाआत्मारूपकरिकै नहींजानै हैं ॥ तेपुरुष यासंसारविषे अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ तहाँश्रुति ॥ यएतद्विदुरमृतास्तेभवंत्यऽथेतरेदुःखमेवापियंति ॥ अर्थयह ॥ मैंअद्वितीयब्रह्मरूपहूं याप्रकार जेअधिकारीपुरुष आत्माकूंजानै हैं ॥ तेअधिकरीपुरुषही मोक्षरूपअमृतभावकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ और जेपुरुष ताअद्वितीयआत्माकूंनहींजानैहैं ॥ तेअज्ञानीपुरुष यासंसारविषे केवलदुःखकूंहीप्राप्तहोवै हैं ॥ १ ॥अब तापरमात्मादेवकी सर्वत्रव्यापकतानिरूपणकरै हैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ यालोकविषे जितनेकीजीवोंके मुख मस्तक ग्रीवा हस्त पादादिकअवयवहैं॥ तेसंपूर्णअवयव तापरमात्मादेवकेही हैं॥ और सोपरमात्मादेव सर्वजीवोंकेहृदयदेशविषेस्थितहै॥ तथा सर्वजीवोंकाआत्मारूपहै ॥ याकारणतैं सोपरमात्मादेव सर्वगतहै ॥ और ताआनंदस्वरूपआत्मादेवविषे शोकादिकोंकाकारण रूपअविद्याहैनहीं ॥ यातैंतापरमात्मादेव विषेशोकादिकविकारभीसंभवैनहीं याकारणतैंहीं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं शिव यानामकरिकैकथनकरै है ॥ हेसंन्यासियो ॥ सो आनंदस्वरूआत्मादेव आकाशादिकमहान्पदार्थोंतैंभी अतिशयकरिकैमहान् है ॥ और सोपरमात्मादेव याजीवोंकेशरीररूपपुरविषे सर्व दाविराजमानहै ॥ कैसेहैंतेशरीररूपपुर ॥ दोचक्षु दोनासिका दोश्रोत्रमुख पायु उपस्थ नाभि मूर्द्धद्वार याएकादशद्वारोंकरिकै युक्तहैं ॥ और सोपरमात्मादेव याजीवोंकेहृदयदेशविषेस्थितहोइकै तिनजीवोंकेबुद्धिकूंशुभअशुभकर्मोंविषेप्रवर्त्तकरै है॥तथा सोपरमात्मादेव आप

णेस्वरूपभूतआनंदकूं आपणेस्वप्रकाशरूपकरिकैहीजानैहै॥और भूत भविष्यत् वर्तमान यातीनकालोंविषेस्थित जितनेकीस्थूलसूक्ष्मपदार्थ हैं॥तिनपदार्थोंका यहपरमात्मादेवही स्वामी है॥और सोपरमात्मादेवसूर्यादिकज्योतियोंकाभीज्योतिरूपहै॥तथा सोपरमात्मादेव नाश तैंरहित साक्षीक्षेत्रज्ञरूपहै ॥और हे संन्यासियो ॥ यहस्वयंज्योतिपरमात्मादेव यद्यपि वास्तवतैंआकाशकीन्याईं सर्वत्रपरिपूर्णहै॥ तथापि जीवोंकेअंगुष्ठमात्रपरिमाण हृदयछिद्रविषेस्थितहुआ सोपरमात्मादेव अंगुष्ठमात्रपरिमाणवाला कह्याजावैहै ॥और यहपरमात्मादेव यद्यपि स्थावरजंगमरूपसर्वजगत्विषे समानव्यापकहै ॥ तथापि हृदयदेशविषे बुद्धिआदिकसंघातकासाक्षीरूपकरिकै यापरमात्मादेवकी विशेष करिकैप्रतीतिहोवै है ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं हृदयदेशविषेस्थितकहैहै ॥ हेसंन्यासियो ॥ बुद्धिकेसर्ववृत्तियोंकूंप्रवृत्त करणेहारा तथा श्रवणमननादिकसाधनोंकरिकैयुक्त ऐसाजोअंतर्मुखशुद्धमनहै ॥ ताशुद्धमनकरिकैही सोपरमात्मादेव जान्याजावै है ॥ यातैं जेअधिकारीपुरुष ताशुद्धमनकरिकै ताअंतर्यामीआत्माकूंसाक्षात्कारकरैहैं ॥ तेअधिकारीपुरुषही मोक्षरूपअमृतभावकूंप्राप्तहोवैहैं॥ और हेसंन्यासियो यहपरमात्मादेव सर्वभूतप्राणियोंकाआत्मारूपहै ॥ याकारणतैं यहपरमात्मादेव सहस्रमस्तकवाला है ॥ तथा सहस्रनेत्रोंवालाहै ॥ तथा सहस्रपादोंवालाहै ॥ हेसंन्यासियो ॥ जैसेदशअंगुलपरिमाणवालाजोकाष्ठहै ॥ ताकाष्ठकूंव्याप्यकरिकै अग्नि ताकाष्ठतैं बाह्यअधिकदेशविषेभीरहै है ॥ तैसे यहपरमात्मादेवभी विराट् हिरण्यगर्भ अव्याकृत यातीनोंकूंव्याप्यकरिकै तिनोंतैंअधिकदेशविषेभी रहैहै ॥ सोअधिकदेश तापरमात्माकामहिमारूप है ॥ यातैं आकाशकीन्याईं यहआनंदस्वरूपआत्मा ब्रह्मांडकेअंतरबाह्य सर्वत्रव्याप्यकरिकैस्थितहोवैहै ॥ हेसंन्यासियो ॥ भूत भविष्यत् वर्तमान यातीनकालोंविषेस्थितजितनाकीजगत्है ॥ सोसंपूर्णजगत् तापरमात्मादेव करिकैव्याप्तहै ॥ याकारणतैं सोपरमात्मादेवही याअधिकारीपुरुषोंकूं मोक्षरूपअमृतकीप्राप्तिकरैहै ॥ तथा कर्मउपासनाकरणेहारेपुरुषोंकूं धर्म अर्थ काम या तीनप्रकारकेपुरुषार्थकीप्राप्तिकरैहै ॥ और यहपरमात्मादेवही यापृथिवीविषे अन्नरूपकरिकै प्रगटहोवैहै ॥ जिसअन्नके भक्षणतैं यहमनुष्यादिकजंगमशरीर उत्पन्नहोवैहैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ यहअंतर्यामीपुरुष सर्वजगत्काआत्मारूपहै ॥ याकारणतैं यहअंत

यौंभीआत्मा अद्वितीयब्रह्मरूपहै ॥ केसाहैसोब्रह्म ॥ यालोकविषे जितनेकीजीवोंके हस्त पाद नेत्र मुख श्रोत्र इत्यादिकअंगहैं ॥ तेसंपूर्ण अंग ताब्रह्मकेहींहैं ॥ तथा सोब्रह्म सर्वजगत्कूंव्याप्तकरिकैरहेहै॥और वास्तवतैं नेत्रादिकसर्वइंद्रियोंतैंरहितहुआभी सो परमात्मादेव तिननेत्रादिकइंद्रियोंकेरूपादिकसर्वविषयोंकूंप्रकाशकरेहै ॥ और सोपरमात्मादेवही यासर्वजगत्कास्वामीहै ॥ तथा सोपरमात्मादेवही यासंपूर्ण जगत्कूं आपणीआज्ञाविषेचलावेहै ॥ तथा सोपरमात्मादेवही यासर्वजगत्कारक्षणकरणेहाराहै ॥ तथा यासर्वजगत्ऊपर उपकारकरणेहाराहै ॥ हेसंन्यासियो ॥ जैसे महाराजा आपणेपुरविषेप्रवेशकरिकैस्थितहोवेहै ॥ तैसे सोपरमात्मादेवही जीवरूपतैं याशरीररूपपुरविषे प्रवेशकरिकैस्थितहोवेहै ॥ और यहशरीर मुखादिकनवद्वारोंवालाहै ॥ याकारणतैं विवेकीपुरुष याशरीरकूं नवद्वारवालापुरकहेहैं ॥ और अन्नपानादिकोंकापरिणामरूपजेरसादिधातुहैं ॥ तिनधातुवोंकरिकै यहशरीर नित्यहीपूर्णहोवेहै ॥ याकारणतैं विवेकीपुरुष याशरीरकूं पुर यानामकरिकैकथनकरे हैं ॥ ऐसेशरीररूपपुरविषेस्थितहोइकै यहजीवात्मा आपणेकूंअद्वितीयब्रह्मरूपजाणिकै जभीकार्यसहितअज्ञानकूं नाशकरेहै ॥ तभी यहजीवात्मा हंससंज्ञाकूंप्राप्तहोवेहै॥ ऐसाजीवरूपहंस याशरीररूपपुरविषेस्थितहोइकैंविषयोंकीप्राप्तिवासतैं बाहरिजाइकै नानाप्रकारकीचेष्टाकरेहै ॥ हेसंन्यासियो ॥ जैसे यालोकविषे जोविषयासक्तकामीपुरुष स्त्रियोंकेवशवर्त्तीहोवेहै ॥ ताकामीपुरुषकूं लोक वशी यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ तैसे वास्तवतैं स्वतंत्रहुआभीयहपरमात्मादेव जभी अविद्यारूपउपाधिकेसंबंधतैं यासंसारचक्रकूं प्राप्तहोइकै सर्वलोकोंकेवशवर्त्तीहोवेहै ॥ तभी यहपरमात्मादेव वशी यानामकूं प्राप्तहोवेहै ॥ अथवा यालोकविषेजीवोंकेवशकरणेकेसाधन जेमंत्रऔषधआदिकपदार्थहैं ॥ तेमंत्रऔषधादिक जिसपुरुषकेहस्तविषेहोवेहैं ॥ तापुरुषकूं लोक वशी यानामकरिकैकथनकरे हैं ॥ तैसे यास्थावरजंगमरूपजगत्के वशकरणेकासाधन जाचैतन्यरूपताहै ॥साचैतन्यरूपता ॥यापरमात्मादेवविषे सर्वदाविद्यमानहै॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं वशी यानामकरिकैकथनकरेहै ॥ और हेसंन्यासियो ॥ यहपरमात्मादेव पाणिइंद्रियतैंरहितहुआभी सर्वपदार्थोंकाग्रहणकरेहै ॥ और यहपरमात्मादेव पादइंद्रियतैंरहितहुआभी मनतैंअधिकवेगवालाहोवेहै ॥ और यहपरमात्मादेव नेत्र

इंद्रियतैंरहितहुआभी सर्वरूपोंकूंदेखे है ॥ और यहपरमात्मादेव श्रोत्रइंद्रियतैंरहितहुआभी सर्वशब्दोंकूंश्रवणकरे है ॥ शंका ॥ हे भगवन् यहपरमात्मादेव सर्वजगत्काउपादानकारण है ॥ यातैं तापरमात्मादेवविषे सर्वजगत्कासंबंधहोवे है ॥ ऐसे परमात्मादेवविषे नेत्रादिक इंद्रियोंका अभावकहणासंभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेसंन्यासियो ॥ नेत्रादिकइंद्रिय तथा तिनइंद्रियोंकेगोलक यहसंपूर्ण सूक्ष्मस्थूलशरीर विषेरहे हैं ॥ आत्माविषेकोई रहै नहीं ॥ यातैं जिसआत्माका तास्थूलसूक्ष्मशरीरकेसाथ तादात्म्यअध्यास है॥तिसीआत्माका तिनइंद्रियोंकेसाथसंबंध है ॥ और ब्रह्मविद्याकरिकै जिसआत्माका तिनशरीरादिकोंकेसाथ तादात्म्यअध्यास निवृत्तभयाहै ॥ तामुक्तआत्माविषे तिनइंद्रियोंकासंबंधहै नहीं॥याकारणतैंहीं श्रुतिविषे तापरमात्मादेवकूं सर्वइंद्रियोंतैं रहितकह्या है॥और मायाशक्तिकेसंबंधतैं तिसीपरमात्मादेवतैं सर्वइंद्रियोंकेव्यापारसिद्धहोवे हैं ॥ याकारणतैं तापरमात्मादेवकूं सर्वइंद्रियोंकेव्यापारकाकर्त्तारूपकह्या है ॥हेसंन्यासियो॥ यहपरमात्मादेवही सर्वइंद्रियोंकेव्यापारोंकूंकरे है याअर्थविषे तुम आश्चर्यमतकरो ॥ किंतु जैसे एकहीमृत्तिकाघटशरावादिकअनेकरूपकूंप्राप्तहोवे है ॥ तैसे यहजीव नेत्रादिकबाह्यकरणोंकरिकै तथा मनबुद्धिआदिकअंतरकरणोंकरिकै जिनजिनपदार्थोंकूंग्रहणकरे है॥तिनसंपूर्णपदार्थरूप यहपरमात्मादेवहीहोवेहै॥याकारणतैं यहपरमात्मादेव देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहित सर्वव्यापकहै॥ऐसेस्वयंज्योतिआनंदस्वरूपआत्माकूं यालोकविषे कोईजडचेतनपदार्थ विषयकरिसकतानहीं ॥ याकारणतैं ब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुष याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्वभी ताअद्वितीयआत्माकीस्थिति कथनकरे हैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ यहपरमादेव अणुपदार्थों तैंभी अत्यंतअणुहै ॥ तथा आकाशादिकमहान्पदार्थोंतैंभी अत्यंतमहान् है ॥ ऐसापरमात्मादेव याजीवोंकेहृदयरूपगुहाविषे ॥ सर्वदाविराजमान है॥हेसंन्यासियो ॥सर्वजीवोंकेहृदयदेशविषे विद्यमानहुआभी सोपरमात्मादेव पूर्णगुरुकीकृपातैंविना प्राप्तहोवेनहीं॥यातैं जेअधिकारीपुरुष विषयवासनातैंरहितहोइकै गुरुकेशरणकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ और तागुरुकेउपदेशतैं तास्वयंज्योतिआत्माकूं साक्षात्कारकरे हैं॥तेहीअधिकारीपुरुष कामक्रोधादिकसर्वपाशोंतैंरहितहोवे हैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ जोरुद्रभगवान् आपणीकल्याणमूर्त्तिकरिकै हमसर्वअधिकारीजनोंका पालनकरे है ॥सोरुद्रभगवान्ही हमआधि

कारीजीवोंकागुरुरूप है ॥ सोरुद्रभगवान्रूपगुरु याअधिकारीजनोंकेप्रति याप्रकारकाउपदेशकरेहै ॥हेशिष्य ॥ तूं पुण्यपापकर्मकाकर्त्ता नहीं है ॥ तथा तिनपुण्यपापकर्मोंकेसुखदुःखरूपफलकाभोक्तानहीं है ॥ किंतु जोवेदांतशास्त्रविषे अद्वितीयआनंदस्वरूपब्रह्मकथनकऱ्या है ॥ सोअद्वितीयब्रह्मरूपतूं है ॥ याअर्थविषे तुमनें किंचित्मात्रभी संशयनहींकरणा॥ और तुम्हारेस्वरूपतैंभिन्न जितनाकी यहजगत् है सोजगत् स्वप्नकीन्याईं नाशवान् है ॥ यातैं सोसंपूर्णजगत् तेरेस्वरूपविषेकल्पितहो है ॥ हेसंन्यासियो ॥ याप्रकारकेरुद्रभगवान्केउपदेशतैं उत्पन्नभयाजोअद्वितीयआत्माकाज्ञान है ॥ ताआत्मज्ञानकरिकै तेअधिकारीपुरुष सर्वशोकतैंरहितहोवै हैं ॥ हे संन्यासियो ॥ जैसे रुद्रभगवान्केउपदेशतैं तेअधिकारीपुरुष अद्वितीयआत्माकूंसाक्षात्कारकरतेभये हैं ॥ तैसे मैंश्वेताश्वतरनामाऋषिभी तारुद्रभगवान्के उपदेशतैं ताअद्वितीयआत्माकूं साक्षात्कारकरताहूं ॥ कैसा है सोआत्मादेव ॥ अजर है तथा सर्वजगत्का आत्मारूप है तथापुरात न है ॥ तथाविभुहोणेतैं सर्वत्रव्यापक है ॥ तथा सर्वभेदतैंरहित है ॥ और अज्ञानीजीव ताआत्माकूं जन्ममरणवालाकहे हैं ॥ और ब्रह्म वेत्ताविद्वान्पुरुष ताआत्माकूंनित्यकहै हैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ ऐसे परमात्मा देवकासाक्षात्कार अशुद्धअंतःकरणवालेपुरुषकूं होवैनहीं ॥ यातैं अंतःकरणकीशुद्धिवासतै तिनअधिकारीपुरुषोंनैं प्रथम याप्रकार सगुणब्रह्मका चिंतनकरणा ॥ तापरमात्मादेवके दोरूपहोवै हैं ॥ एकतो पररूपहोवै है ॥ और दूसरा अपररूपहोवै है॥तहां निर्गुणरूपकानाम परहै ॥ और सगुणरूपकानाम अपर है ॥ तहाँश्रुति॥ देवा ब्रह्मणो रूपेपरंचापरंच ॥ ऐसापरअपररूपवाला सोपरमात्मादेव ॐकाररूपप्रणवकाअर्थरूप है ॥ तहां परब्रह्म ताप्रणवकालक्ष्य अर्थ है॥ और अपरब्रह्म ताप्रणवका वाच्यअर्थ है॥और मीमांसादिकशास्त्रोंविषे शब्दका आपणे अर्थकेसाथ तादात्म्यसंबंध अंगीकारकऱ्या है ॥ याकारणतैं ॥ सोपरमात्मादेवताप्रणवरूप है ॥ ऐसाप्रणवरूपपरमात्मादेव आपणीमायाशक्तिकरिकै सृष्टिकेआदिकालविषे जीवोंकेभोग कीसिद्धिवासतै ताप्रणवनामतैंहीं सर्वशब्दोंकूं तथा सर्वअर्थोंकूं उत्पन्नकरै है ॥ और सोईही परमात्मादेवप्रलयकालविषे तासंपूर्णप्रपंचकूं आपणेशांतस्वरूप विषेलयकरै है ॥ ऐसापरमात्मादेव हमअधिकारीजीवोंकूं शुभबुद्धिकी प्राप्तिकरै ॥ जिसशुभबुद्धिके प्रसादतैं हम

अधिकारीजीव आपणे आत्माकूं अद्वितीयब्रह्मरूपकरिकैनिश्चयकरैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकीशुभबुद्धिकरिकै जानणे योग्यजोब्रह्महै ॥ सोब्रह्महीं अग्निरूपहै ॥ तथा सोब्रह्महीं आदित्यरूपहै ॥ तथा सोब्रह्महीं वायुरूपहै ॥ तथा सोब्रह्महीं चंद्रमारूप है ॥ तथा सोब्रह्महीं अव्याकृतरूपहै ॥ तथा सोब्रह्महीं तारामंडलरूपहै ॥ तथा सोब्रह्महीं ऋगादिकवेदरूपहै ॥ तथा सोब्रह्म हीं सूक्ष्मपंचभूतरूपहै ॥ तथासोब्रह्महीं हिरण्यगर्भरूपहै ॥ तथा सोब्रह्महीविराट्रूपहै ॥ तथा सोब्रह्महीं मरीचिदक्षप्रजापति रूपहै ॥ इतनैंकरिकै ताब्रह्मविषेअधिदैवरूपतानिरूपणकरी ॥ अब तिसीब्रह्मविषे अध्यात्मरूपतानिरूपणकरैं हैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ सोब्रह्महीं स्त्रीरूपहै ॥ तथा सोब्रह्महीं पुरुषरूपहै ॥ तथा सोब्रह्महीं कुमाररूपहै ॥ तथा सोब्रह्महीं कुमारीरूपहै ॥ तथा सोब्रह्म ह्महीं वृद्धअवस्थाकूंप्राप्तहोइकै दंडकूंहाथविषेग्रहणकरिकै शनैःशनैःगमनकरै है॥ इसतैंआदिलैकै सोब्रह्महीं सर्वशरीररूपहोवैहै ॥ और सो ब्रह्महीं अंतःकरणकीवृत्तिरूपउपाधिकेभेदकरिकै नानाज्ञानरूपहोवैहै ॥ हेसंन्यासियो ॥ इसप्रकार स्त्रीआदिकशरीरोंकरिकैयुक्त जोत्वंपद काअर्थरूपआत्माहै ॥ सोआत्मादेव तत्पदार्थरूपईश्वरतैंभिन्ननहीं है ॥ किंतु उपाधिकापरित्यागकरकै सोजीवात्मा ईश्वररूपहीहै ॥अब उपासनाकेवासतै तापरमात्मादेवकूंपक्षीरूपकरिकै वर्णनकरैहैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ जेअधिकारीपुरुष तानिर्गुणब्रह्मकेजानणेविषे समर्थनहीं होवै है ॥ ऐसेमंदबुद्धिअधिकारीजनोंऊपर अनुग्रहकरिकै तेमहात्मापुरुष ताविराट्रूपपरमात्मादेवकूं पक्षीरूपकरिकै वर्णनकरैं हैं ॥ तहां जगत्काकारणरूप सोविराट्भगवान् पक्षीरूपहै ॥ और दूर्वादलकेसमान तापक्षीकाश्यामवर्ण है ॥ और ताविराट्रूपपक्षीकेदोनोंनेत्र अग्निकेसमानरक्तवर्णवालेहैं ॥ और जैसे माताकेउदरविषे बालकरहै है ॥ तैसे विद्युतकेसमान शीघ्रही उत्पत्तिनाशवालायहजगत् ताविरा ट्रूपपक्षीकेगर्भविषेरहैहैं ॥ और वसंतऋतुतैंआदिलैकै जोनानाप्रकारकाकालहै ॥ तथा क्षारसमुद्रतैंआदिलैकै जेनानाप्रकारकेसमुद्रहैं यहसंपूर्ण ताविराट्रूपपक्षीकेपक्षरूपहैं ॥ और सोविराट्रूपपक्षीही उपासकपुरुषोंकूं ब्रह्मांडतैंबाहरलेजावै है ॥ और सोविराट्रूप पक्षीही याब्रह्मांडकेअंतरबाहरव्यापकहै ॥ और तिसीविराट्भगवान्तैं चतुर्दशभुवन उत्पन्नहोवैहैं ॥ तथा तिनभुवनोंकाकारणरूप

स्थूलभूत उत्पन्नहोवै हैं हेसंन्यासियो ॥ इसप्रकार सगुणब्रह्मकेध्यानकरिकै जभी याअधिकारीपुरुषोंकाअंतःकरणशुद्धहोवै है ॥ तभी तिनअधिकारीपुरुषोंकूं सुखेनही निर्गुणब्रह्मकासाक्षात्कारहोवै है ॥ यहवार्ता अन्यशास्त्रविषेभीकही है ॥ तहांश्लोक॥ निर्विशेषंपरंब्रह्म साक्षात्कर्तुमुनीश्वराः ॥ येमंदास्तेनुकंप्यंते सविशेषनिरूपणैः ॥ १ ॥ वशीकृतमनस्त्येषां सगुणब्रह्मशीलनात् ॥ तदेवाविर्भवेत्साक्षादपेतोपाधिकल्पनम् ॥ २ ॥ अर्थयह ॥ जेमंदबुद्धिपुरुष निर्गुणब्रह्मकेसाक्षात्कारकरणेविषे समर्थनहीं हैं ॥ तिनमंदबुद्धिपुरुषोंऊपर अनुग्रहकरिकै ब्रह्मवेत्तागुरु सगुणब्रह्मकाकथनकरै हैं ॥ तासगुणब्रह्मकेध्यानकरिकै जभी तिनअधिकारीपुरुषोंकाअंतःकरणशुद्धहोवै है ॥ तभीतिनअधिकारीपुरुषोंकूंसुखेनहीं निर्गुणब्रह्मकासाक्षात्कारहोवै है॥इतनैंकरिकैसगुणब्रह्मकेध्यानप्रकार निरूपणकऱ्या॥अबशुद्धचित्तवालेपुरुषोंकेप्रति महावाक्यकाउपयोगीविचार निरूपणकरै हैं ॥ हेसंन्यासियो॥ इसप्रकार तापरमेश्वरविषे पक्षीरूपताकल्पनाकरिकै पुनःतेविद्वान्पुरुष तापरमात्मादेवविषे जीव ईश्वर माया यहतीनप्रकारकाभेद कल्पनाकरै हैं ॥ तहां सर्वजगत्काकारणरूपजामायाहै ॥ तामायाकाजन्म होवैनहीं ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तामायाकूं अजा यानामकरिकैकथनकरैहै ॥साअजामाया तेज जलपृथिवी यातीनकार्यरूपकरिकै तीनरूपवालीहोवैहै ॥ तहां अग्निरूपकारिकै सामाया लोहितरूपवालीहोवै है ॥ और जलरूपकरिकै सामाया शुक्लवर्ण वालीहोवै है ॥ और पृथिवीरूपकरिकै सामाया कृष्णवर्णवालीहोवैहै॥इसप्रकार लोहित शुक्ल कृष्ण यातीनरूपवालीसामाया तातीन रूपोंकरिकै आपणे समान सर्वजगत्कूंउत्पन्नकरैहै॥ जैसे यालोकविषेप्रसिद्ध जारक्तशुक्लनीलवर्णवालीअजाहै ॥सा अजा आपणेसमानरूपवालेअजोंकूंहींउत्पन्न करैहै ॥ तैसे सामायारूपअजाभी आपणेसमानरूपवाले जगत्कूंहींउत्पन्नकरै है॥ और जैसे यालोकप्रसिद्धअजाकेभोगणेकीइच्छावालाजो अजहै॥सो अज ताअजाकासेवनकरैहै॥औरताअजाकेभोगणेकीइच्छातैंरहितजोनिष्कामअजहै॥सोनिष्कामअजताअजाकापरित्यागकरैहै तैसे त्वंपदकाअर्थरूप यहजीवात्मारूपअज तामायारूपअजाकेभोगणेकीइच्छावालाहै॥याकारणतैं सोजीवरूपअजतामायारूपअजाकासेवनकरैहै॥तासेवनकरिकै सोजीवरूपअज बंधायमानहोवैहै॥ और तत्पदकाअर्थरूप जोईश्वरहै॥ सोईश्वररूपअज तामायारूपअजाकेभोग

णेकीइच्छातैंरहितहै॥याकारणतैं सोईश्वररूपअज तामायारूपअजाकापरित्यागकरै है॥याकारणतैंहीं सोईश्वर नित्यमुक्तहै ॥ अब दूसरीरीतिसेंभी ता जीवईश्वरमायाकानिरूपणकरै हैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ कोईकमहात्मापुरुषतौ जीव ईश्वर माया यातीनोंका याप्रकार वर्णनकरै हैं ॥ जैसे यालोकविषे पिप्पलादिकवृक्षोंऊपरपक्षीरहै हैं ॥ तैसे यहकार्यसहितमायातौ वृक्षरूप है ॥ और तत्पदकाअर्थरूपईश्वर तथा त्वंपदकाअर्थरूपजीव यहदोनोंपक्षी हैं ॥ कैसे हैं तेजीवईश्वररूपदोनोंपक्षी ॥ वास्तवतैंपरस्परअभिन्नहैं ॥ तथा समानरूपवाले हैं ॥ तथा एकहीकार्यसहितमायारूपवृक्षकेआश्रितरहै हैं तिनदोनोंविषे बुद्धिविशिष्टजीवरूपपक्षीतौ तामायारूपवृक्षकेपुण्यपापरूपपुष्पोंतैं उत्पन्नभयेसुखदुःखरूपफलकूं स्वादुमानिकैभोगै है॥ और दूसराईश्वररूपपक्षीतौ तासुखदुःखरूपफलकूं कदाचित्भीभोगतानहीं ॥ किंतु सोईश्वररूपपक्षी तासुखदुःखरूपफलकूं केवलप्रकाशहीकरै है ॥हेसंन्यासियो॥ अजरूपकरिकै तथापक्षिरूपकरिकै जोश्रुतिनैं भोक्ता अभोक्तारूपतैं जीवईश्वरकीविलक्षणता कथनकरी है॥ताश्रुतिवचनका जीवकेभोक्तापणेविषे तात्पर्यनहीं है ॥ किंतु ताजीवकेभोक्तापणेकीनिवृत्तिविषे तात्पर्य है॥काहेतैं लोकोंकरिकैअज्ञातजोअर्थ है ताअज्ञातअर्थकेबोधनकरणेकरिकैही शास्त्रविषे प्रमाणरूपताहोवै है॥लोकप्रसिद्धअर्थकेबोधनकरणेकारिकै शास्त्रविषे प्रमाणरूपताहोवैनहीं॥ और यालोकविषे अज्ञानीपुरुषोंकूं जीवविषे भोक्तापणा प्रत्यक्षसिद्धहै॥यातैं तालोकप्रसिद्धजीवकेभोक्तापणेविषे ताश्रुतिकातात्पर्यसंभवैनहीं किंतु ताजीवकेभोक्तापणेकीनिवृत्तिविषेहीं तावचनकातात्पर्य है ॥शंका॥ हेभगवन्॥ सोश्रुतिवचन जीवकेभोक्तापणेकीनिवृत्तिनहींकरै है॥ किंतु सोश्रुतिवचन ईश्वरकेभोक्तापणेकीहीनिवृत्तिकरै है ॥समाधान॥हेसंन्यासियो॥जोवस्तु जिसस्थानविषे किसीप्रमाणकरिकैप्राप्तहोवै है॥तावस्तुकाहीं तिसस्थानतैंनिषेधहोवै है॥और जोवस्तु जिसस्थानविषे किसी प्रमाणकरिकैप्राप्तनहीं है॥तावस्तुका तिसस्थानतैंनिषेध होवैनहीं॥यहसर्वशास्त्रोंकासिद्धांतहै॥यातैं सोश्रुतिवचन ईश्वरविषे भोक्तापणेकी निवृत्ति तभीकरैगा ॥ जभी ताईश्वरविषे सो भोक्तापणा किसीप्रमाणकरिकैसिद्धहोवै॥ सोईश्वरविषेभोक्तापणा किसीप्रमाणकरिकैसिद्धहै नहीं॥किंवा॥जोवादी ताईश्वरविषे भोक्तापणाअंगीकारकरै है॥तावादीसैंयहपूछाचाहिये ॥ ताईश्वरविषे भोक्तापणा प्रत्यक्षादिकलौकिक

प्रमाणोंकारिकैसिद्धहै ॥ अथवा किसीश्रुतिप्रमाणकारिकैसिद्धहै ॥ तहां प्रथमपक्ष जोवादीअंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं प्रत्यक्षा दिकलौकिकप्रमाण तौ लोकप्रसिद्धघटादिकपदार्थोंकूंहीं विषयकरै हैं॥अलौकिकपदार्थकूंविषयकरैनहीं ॥ और सोईश्वर लोकप्रसिद्ध है नहीं॥ यातैं सोईश्वरअलौकिकहै ॥ ऐसेअलौकिकईश्वरकूंतेप्रत्यक्षादिकलौकिकप्रमाण विषयकरिसकैनहीं ॥ और ताईश्वरविषे सोभोक्तापणा किसीश्रुतिप्रमाणकारिकैसिद्धहै यहदूसरा पक्ष जोवादीअंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं ताईश्वरविषे भोक्तापणेकूंप्रतिपादनक रणेहारी कोईश्रुति प्रसिद्धहैनहीं उलटा ॥ नतदश्नातिकिंचन ॥ इत्यादिकश्रुतियां ताईश्वरविषेअभोक्तापणाहीकथनकरै हैं ॥ यातैं ता तत्पदार्थरूपईश्वरविषे सोभोक्तापणा किसीप्रमाणकारिकैप्राप्तहैनहीं ॥ याकारणतैं ताश्रुतिवचनतैं ता ईश्वरविषेभोक्तापणेकानिषेधभीसंभवै नहीं॥किंतुसोश्रुतिवचन याप्रकारकेशंकाकीनिवृत्तिकरिकै त्वंपदार्थजीवविषेही भोक्तापणेकीनिवृत्तिकरै है॥ साशंकायहहै॥मैंब्रह्मरूपहूं यह जीवब्रह्मकेअभेदकूंबोधनकरणेहारावचन व्यर्थ है ॥ काहेतैं यहजीवतौ कर्मकेफलकाभोक्ता है ॥ और ब्रह्म ताकर्मकेफलकाअभोक्ता है ॥ ऐसेभोक्ताजीवका अभोक्ताब्रह्मकेसाथ अभेदसंभवैनहीं ॥ याप्रकारकीवादीकेशंकाकूं सोश्रुतिवचन निवृत्तकरै है ॥ शंका॥हेभगवन् जीव ईश्वरकूं अजरूपकरिकै तथा पक्षीरूपकरिकै वर्णनकरणेहारा सोश्रुतिवचन ता वादीकेशंकाकीनिवृत्ति किसप्रकारकरै है ॥ समाधान ॥ हेसंन्यासियो॥सोश्रुतिवचन जिसरीतिसैं ताशंकाकीनिवृत्तिकरै है॥तारीतिकूं तुम श्रवणकरो ॥ जैसे तत्पदार्थरूप निर्विकारईश्वरविषे अज रूपता तथा पक्षीरूपता यद्यपि शब्दकेबलतैंप्रतीतहोवै है॥तथापि ताईश्वरविषे साअजरूपता तथा पक्षीरूपता वास्तवतैं है नहीं॥किंतु आरोपितहै॥तैसे त्वंपदार्थरूपजीवविषे यद्यपि बुद्धिकेसंबंधतैं भोक्तापणाप्रतीतहोवै है॥तथापि ताजीवविषे सोभोक्तापणा वास्तवतैं है नहीं॥किंतु आरोपितहै॥ तात्पर्ययह॥अंतःकरणादिकउपाधियोंकरिकैयुक्तजोचेतन है ताकानामजीवहै॥तहां अंतःकरणादिकउपाधिकाप रित्यागकरिकै ताजीवकाजो साक्षीकूटस्थस्वरूपहै ताकेविषेतौ तीनकालमेंभोक्तापणानहीं है॥किंतु सोभोक्तापणा अंतःकरणविषेही है॥ ताअंतःकरणकेभोक्तापणेका आत्माविषेआरोपणकरिकै ताजीवकूं भोक्ताकह्याहै ॥ वास्तवतैंयहजीवभी अभोक्ताही है॥यातैं ताअभोक्ता

जीवका अभोक्ता ब्रह्मविषे अभेद संभवहोइसकै है ॥ हेसंन्यासियो ॥ जीवईश्वररूपदोनोंपक्षियोंकेरहणेकास्थान जोयहकार्यसहितअविद्या रूपीवृक्ष है ॥ ताअविद्यारूपवृक्षविषे यहजीवरूपपक्षी आपणेवास्तवस्वरूपकेअज्ञानतैंही सुखदुःखरूपफलकूंभोगे है ॥ तथा शरीरबुद्धि आदिकोंकेतादात्म्यअध्यासतैं सोजीव दुःखरूपसमुद्रविषेडूबै है ॥ तथा असमर्थताकूंप्राप्तहोइकै सोअज्ञानीजीव नानाप्रकारकेशो कोंकूंप्राप्तहोवै है ॥ और सोत्वंपदकाअर्थरूपजीवात्मा जभी गुरुकीकृपातैंप्राप्तभईशुद्धबुद्धिकरिकै यास्वयंज्योतिआनंदस्वरूपअद्वितीय आत्माकूं देहादिकोंतैंभिन्नकरिकैजाणै है ॥ तभी यहजीवात्मा सर्वशोकोंतैंरहितहोवै है ॥ तथा तत्पदार्थईश्वरकेसाथ अभेदभावकूं प्राप्तहोइकै ता ईश्वरकेसर्वात्मभावरूपमहिमाकूंप्राप्तहोवै है ॥ हे संन्यासियो ॥ ब्रह्मवेत्तामुरुकीकृपाकरिकै यहविद्वान्पुरुष जिसत त्पदार्थईश्वरकेमहिमाकूंप्राप्तहोवै है ॥ तिसीईश्वरकेस्वरूपकूं याज्ञवल्क्यमुनिनैं गार्गीकेप्रति अक्षररूपकरिकैवर्णनकऱ्या है॥ तिसीअक्षरप रमात्माविषे यहऋगादिकवेद स्थित हैं ॥ और तिसीअक्षरविषे विश्वेदेवता तथाअग्निआदिकदेवता स्थितहैं ॥ इसतैंआदिलैके यहसंपूर्ण जगत् ताअक्षरविषेहीस्थितहै ॥हेसंन्यासियो॥ इसप्रकार सर्वजगत्काअधिष्ठानरूप जोपरमात्मादेवहै॥ताअक्षरपरमात्माकूं जेअधिकारी पुरुष सर्वांतर्यामीरूपकरिकै नहींजानै हैं ॥ तेअज्ञानीपुरुष यालोकविषे व्यर्थहीजीवते हैं ॥ और जेअधिकारीपुरुष ताअक्षरपरमात्माकूं सर्वांतर्यामीरूपकरिकैजानै हैं ॥ तिनअधिकारीपुरुषोंकाजीवन सफल है ॥ हे संन्यासियो ॥ जैसे गर्दभकेऊपरपाया जो चंदनकेकाष्ठोंका भार है ॥ सोचंदनकाभार तागर्दभकेउपकारवासतैनहीं है॥किंतु क्लेशवासतै है॥तैसे जिनपुरुषोंने ऐसेअंतर्यामीपरमात्माकूंनहींजान्याहै॥ तिनबहिर्मुखपुरुषोंकूं षट्अंगोंसहितचारिवेदोंकाअध्ययनभी किसीउपकारवासतैहोवैनहीं ॥ उलटा वेदोंकेअध्ययनकरिकै तिनबहिर्मुख पुरुषोंकूं अभिमानकीहीप्राप्तिहोवै है ॥ हेसंन्यासियो ॥ जेतुमसरीखेविद्वान्पुरुष तथा हमसरीखेविद्वान्पुरुष तापरमात्मादेवकूं आपणा आत्मारूपकरिकैजानै हैं ॥ तेविद्वान्पुरुषही महाराजाकेसमान सुखपूर्वक स्थितहोवै हैं॥हेसंन्यासियो॥ तिनऋगादिकवेदोंकेअध्ययनका फलभी यहआत्मज्ञानही है ॥ आत्मज्ञानतैंकोईअधिकफल तिनवेदोंकेअध्ययनकाहैनहीं ॥ शंका ॥ हे भगवन् एकआत्माकेज्ञानतैं यह

अधिकारीपुरुष कृतकृत्यताकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ काहेतैं याअधिकारीपुरुषकूं आत्मातैंभिन्नअनेकपदार्थ जानणेयोग्यरहे हैं ॥ समाधान॥ हेसंन्यासियो ॥ आत्माकेज्ञानतैंविना यह अधिकारीपुरुष किसीअन्यउपायकरिकै यासर्वजगत्कूंजाणिसकैनहीं ॥ किंतु आत्माकेज्ञानकरिकैही यह अधिकारीपुरुष तासर्वजगत्कूंजाणिसकै है ॥ काहेतैं जैसे यालोकविषे घटपटादिककार्योंका मृत्तिकातंतुआदिककारणही वास्तवस्वरूपहोवै हैं ॥ कारणतैंविनादूसराकोईकार्यकावास्तवस्वरूपहोवैनहीं ॥ यातैं मृत्तिकादिककारणोंकेज्ञानहुएतैंअनंतर तिनघटादिककार्योंकाभी अवश्यज्ञानहोवै है॥और जैसे मायावीऐंद्रजालिकपुरुष नानाप्रकारकेरूपोंकाकारणहोवैहै॥तैसे यहपरमात्मादेवही आपणीमायाशक्तिकरिकै यासर्वजगत्काकारणहोवै है॥तहां यहपरमात्मादेवही आपणीमायाशक्तिकरिकै गायत्रीआदिकनानाप्रकारकेछंदोंकूं उत्पन्नकरै है ॥ तथा ऋगादिकचारिवेदोंकूंउत्पन्नकरै है॥तथा अग्निष्टोमादिकनानाप्रकारकेयज्ञोंकूंउत्पन्नकरै है ॥तथा नानाप्रकारकेशुभ अशुभसंकल्पोंकूंउत्पन्नकरै है॥तथा तपतैंआदिलैके नानाप्रकारकेव्रतोंकूंउत्पन्नकरै है॥इसतैंआदिलैके भूत भविष्यत्वर्तमान यातीनकालविषेस्थित जितनाकीजगत् है सो संपूर्णजगत् तापरमात्मादेवतैंहीउत्पन्नहोवै है ॥यातैं तापरमात्मारूपकारणकेज्ञानकरिकै याजगत्रूपकार्यकाज्ञान संभवहोइसकैहै॥शंका॥हेभगवन् जिसमायाशक्तिकरिकै यहपरमात्मादेव याजगत्कूंउत्पन्नकरै है ॥तामायाकाक्यास्वरूप है॥समाधान॥हेसंन्यासियो॥जैसे अंधकार आपणीसिद्धिविषेसूर्यादिकप्रकाशोंकीअपेक्षानहींकरैहै॥तैसे जोवस्तु आपणीसिद्धिविषे किसी प्रमाणकीअपेक्षानहींकरै है ॥ तथा सर्वकार्योंकूंउत्पन्नकरै है॥तावस्तुकानाममायाहै॥हेसंन्यासियो॥जैसे स्वप्नद्रष्टापुरुष अविद्याकेबलतैं तास्वप्नविषे अनेकपदार्थोंकीउत्पत्तिस्थितिलयकरैहै॥तैसे सोपरमात्मादेवभी तामायाशक्तिकरिकै याजगत्के उत्पत्तिस्थितिलयकूंकरैहै॥ हेसंन्यासियो ॥ इसप्रकार तापरमात्मादेवतैंउत्पन्नभया जोयहसंसारचक्रहै॥तासंसारचक्रविषे अविद्याकरिकैनिरुद्धहुआ यहजीव आपणेकूं तापरमात्मादेवतैंभिन्नकरिकैमानैहै॥तथा कर्मरूपीबंधनगृहविषे कामक्रोधादिकपाशोंकरिकैबांध्याहुआ यहजीव नानाप्रकारकीदीनदशाकूं प्राप्तहोवैहै॥यातैंतामायाशक्तिका अत्यंतआश्चर्यरूपबलहै अब तामायाकेसामर्थ्यकानिरूपणकरै हैं॥हेसंन्यासियो॥तामायाकूं तुम प्रकृति

रूपजाणों ॥ और महेश्वरकूं तुम तामायाकाअधिष्ठानजाणों ॥ हेसंन्यासियो ॥ यहपुरुष जिसकरिकै अत्यंतदुर्घटकार्योंकूंकरै है ताका नाम प्रकृतिहै ॥ और यहपरमात्मादेव तामायाकरिकै अत्यंतदुर्घटकार्योंकूंकरैहै॥ याकारणतैं शास्त्रवेत्तापुरुष तामायाकूं प्रकृति यानाम करिकैकथनकरै हैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ यहपरमात्मादेव निर्गुणहै तथाअसंगहै ॥ तथा जन्मादिकसर्वविकारोंतैंरहितहै॥तथा एकअद्वितीय रूपहै ॥ ऐसेअद्वितीयआत्माविषे यहनानापणा अत्यंतदुर्घटहै ॥ तथापि यहमाया ताअद्वितीयपरमात्मादेवकूं कार्यरूपकरिकै नानाभावकूंप्राप्तकरै है ॥ यातैं तादुर्घटकार्यकेकरणेहारीमायाकूं बुद्धिमान्पुरुष प्रकृतिकहे हैं॥हेसंन्यासियो॥ यालोकविषेप्रसिद्ध जा ऐंद्रजालिक पुरुषोंकीमायाहै ॥ तामायाविषे दोस्वभावप्रसिद्धहैं ॥ एकतौ मिथ्यापदार्थोंकीउत्पत्तिकरणी॥ और दूसरा एकपदार्थकूं नानारूपकरिकै दिखावणा ॥ तादोनोंस्वभावलीमायाकरिकैयुक्त जोऐंद्रजालिकपुरुषहै ॥ ताकूं लोकविषे मायी कहै हैं ॥ तैसे परमात्मादेवकेआश्रित जामायाहै ॥ तामायाविषेभी तेदोनोंस्वभाव विद्यमानहैं ॥ काहेतैं सोएकहीअसंगनिर्गुणपरमात्मादेव तामायाकरिकै अनेकप्रकारकाहोवैहै ॥ तथा आपणेअवयवरूपजेआकाशादिकपंचभूतहैं तथा इंद्रियादिकहैं ॥ तिनोंकरिकै याचराचररूपसर्वजगत्कूं व्याप्तकरै है ॥ हेसंन्यासियो ॥ यहअधिकारीपुरुष जिसीकिसीशरीराविषेस्थितहोइकै जभी तापरमात्मादेवकूं आपणाआत्मारूपकरिकै साक्षात्कारकरै हैं॥ तभीही तेअधिकारीपुरुष मोक्षरूपपरमशांतिकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ कैसाहैसोपरमात्मादेव जरायुज अडंज स्वेदज उद्भिज्ज याचारप्रकारके शरीरोंविषे एकरूपकरिकैस्थितहै ॥ तथा यासर्वजगत्केउत्पत्तिस्थितिलयकूंकरणेहाराहै॥तथा अधिकारीजनोंकूं मोक्षकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ तथा सर्वबुद्धिआदिकोंकाप्रेरकहै ॥ तथा सर्वदेवताओंकरिकै स्तुतिकरणेयोग्यहै॥ऐसेअद्वितीयपरमात्मादेवकूं आपणाआत्मारूप जाणिकरिकै यहअधिकारीपुरुष मोक्षरूपशांतिकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ हमअधिकारीजनोंकूं शुभबुद्धिकीप्राप्तिकरणेहारा तथा हिरण्यगर्भादिकदेवताओंकूंउत्पन्नकरणेहारा जोपरमात्मादेव हमनैं पूर्व तुम्हारेप्रति कथनकऱ्याथा ॥ सोईहीपरमात्मादेव इंद्रादिकसर्वदेवताओंकाअधिपतिहै ॥ और जैसे यहमनुष्यादिकशरीर पृथिवीकेआश्रितरहै हैं ॥ तैसे यहभूरादिकलोक जिसपरमात्मादेवकेआश्रित

रहे हैं ॥ तथा जोपरमात्मादेव दोपादवालेमनुष्यादिकशरीरोंका तथा चारपादवालेअश्वादिकशरीरोंका नियंताईश्वरहै ॥ तथा वृक्षादिक स्थावरप्राणियोंका नियंताईश्वरहै ॥ ऐसेपरमात्मादेवकेप्रसन्नकरणेवासतै हमअधिकारीजन घृत यव तिल आदिकहविषकरिकै तथा नानाप्रकारकेअन्नकरिकै पूजनकरैहैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ जबपर्यंत हमअधिकारीजनोंकूं आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिनहींभई ॥ तबपर्यंतही हमअधिकारीजन शास्त्रउक्तरीतिसैं आपणेवर्णआश्रमकेअनुसार ताघृतादिरूपहविषकरिकै तापरमात्मादेवकापूजनकरै हैं ॥ और जभी हमअधिकारीजनोंकूं गुरुशास्त्रकीकृपातैं तापरमात्मादेवका आपणाआत्मारूपकरिकैसाक्षात्कारहोवै है ॥ तभी सोपरमात्मादेव हमअधिकारीजीवोंका आत्मास्वरूपहीहोवै है ॥ यातैं ताआत्मज्ञानअवस्थाविषे हमअधिकारीजीव जिसअन्नपानादिकोंकरिकै याशरीरकाधारणकरै हैं ॥ सोशरीरकाधारणही तापरमात्मादेवकापूजनहै हेसंन्यासियो ॥ यालोकविषे जो पदार्थ नेत्रादिकइंद्रियोंकरिकै नहीं जान्याजावै है ॥ किंतु केवलबुद्धिकरिकैही जान्याजावै है तापदार्थकानाम सूक्ष्महै ॥ और यहपरमात्मादेवतौ ताबुद्धिकरिकैभी ग्रहण कऱ्याजावैनहीं ॥ यातैं यहआत्मादेवसूक्ष्मतैंभी अति सूक्ष्महै ॥ और हेसंन्यासियो ॥ यहआत्मादेव आपणेस्वरूपकेअज्ञानतैं पुण्यपाप कर्मोंकूंकरै है ॥ तापुण्यपापकर्मकेवशतैं अन्नद्वारा पिताकेशरीरविषेजावै है ॥ तापिताकेशरीरतैं वीर्यद्वारास्त्रीकेउदरविषेजावै है ॥ तहां स्त्रीकेरजकेसाथमिलिकै सोवीर्य फेनाकार कालिलअवस्थाकूंप्राप्तहोवै है ॥ और ताकालिलरूपउपाधिविषेस्थितहोइकै सोपरमात्मादेव नानाप्रकारकेशरीरोंकूंउत्पन्नकरैहै॥इसप्रकार वटादिकबीजोंविषेस्थितहोइकै नानाप्रकारकेवृक्षोंकूंउत्पन्नकरैहै॥कैसाहै सो परमात्मादेव ॥ शरीररूपउपाधिकेसंबंधतैं नानारूपहुआभी वास्तवतैं सर्वभेदतैंरहित एकअद्वितीयरूपहै ॥ तथा स्मरणमात्रकरिकै हमअधिकारीजनोंके भयकीनिवृत्तिकरै है ॥ याकारणतैं सोपरमात्मादेव मंगलरूपहै॥ ऐसेआनंदस्वरूपअद्वितीयपरमात्माकूं जेअधिकारीपुरुष आपणाआत्मा रूपकरिकै जानै हैं॥तेअधिकारीपुरुष मोक्षकूंप्राप्तहोइकै सर्वदुःखोंतैंरहितहोवै हैं॥हेसंन्यासियो ॥ जोपरमात्मादेव वीर्यादिकबीजोंविषेस्थि तहोइकै याजगतकूंउत्पन्नकरै है ॥ सोईहीपरमात्मादेव याजगतकीस्थितिकालविषे काष्ठोंविषेअग्निकीन्याईं तासर्वजगतकेअंतरणुरूपकरिकै

तासर्वजगत्कापालनकरैहै ॥ याकारणतैंही श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं विश्वाधिपति यानामकरिकैकथनकरै है ॥ और तिसीपरमा त्मादेवविषे योगीजन तथा अंतर्मुखब्राह्मण तथा हिरण्यगर्भादिकदेवता स्थितहोवैहैं॥ ऐसे परमात्मादेवकूं जेअधिकारीपुरुष सर्वजगतका उपादानकारणरूपकरिकै तथा सर्वांतर्यामीरूपकरिकै जानैहै॥ तेअधिकारीपुरुषही ताज्ञानरूपअसिकरिकै प्रमादजन्यकामक्रोधादिकपा शोंकूंछेदनकरैहै ॥ और हेसंन्यासियो ॥ जैसे यालोकविषे दधितैंनिकस्याहुआजोघृतहै ॥ सोघृत तादधितैंउत्कृष्टहोवै है ॥ और ताद्रवी भावघृततैंभी घनीभावयुक्तघृत अत्यंतस्वादुहोवैहै ॥ यातैं ताद्रवीभावघृततैं सोघनीभावघृत उत्कृष्टहै ॥ तैसे यास्थूलसूक्ष्मरूपजगत्तैं मायाविशिष्टसगुणब्रह्म उत्कृष्टहोवैहै॥और तासगुणब्रह्मतैंभी निर्गुणशुद्धब्रह्म उत्कृष्टहोवै है॥ऐसेआनंदस्वरूपशुद्धब्रह्मकूंजभीयहअधिकारी पुरुष आपणाआत्मारूपकरिकैजानैहै ॥ तभी यहअधिकारीपुरुष कामक्रोधादिकसर्वपाशोंतैं मुक्तहोवै है ॥ हेसंन्यासियो ॥ पूर्वहमनैं तुमारेप्रति जोपरमात्मादेव हृदयरूपउपाधिकेसंबंधतैं अंगुष्ठमात्र परिमाणवालाकह्याथा ॥ सोईहीपरमात्मादेव सर्वत्रपरिपूर्ण है ॥ तथा सर्वजगत्काकर्त्ताहै ॥ तथा मनबुद्धिआदिकोंका साक्षीरूपकरिकै तथाप्रेरकरूपकरिकै सर्वदाप्रसिद्धहै ॥ तथा स्वयंज्योतिरूप है ॥ ऐसे परमात्मादेवकूं जेअधिकारीपुरुष आपणाआत्मारूपकरिकै जाणैहैं ॥ तेहीअधिकारीपुरुष मोक्षरूपअमृतकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ हेसंन्यासियो॥ याअधिकारीपुरुषोंकूं जभी गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं ब्रह्मआत्माकाअभेदज्ञानहोवै है ॥ तभीही यहसर्वजगत्कीजननीमायारूपतम नाशकूं प्राप्तहोवै है ॥ ताज्ञानअवस्थाविषे दिन रात्रि स्थूल सूक्ष्म इसतैंआदिलैकेसर्वपदार्थ लयभावकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ ताज्ञानअवस्थाविषे तिन विद्वान्पुरुषोंकूं एकस्वयंज्योतिअक्षरशिवरूपआत्माही प्रकाशमानहोवै है ॥ तिसीअक्षरपरमात्मादेवकूं गायत्रीआदिकमंत्र जगत्काकार णसूर्यरूपकरिकैवर्णनकरै हैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ तिसीपरमात्मादेवकेआराधनकरिकै हमअधिकारीजीवोंकूं याशुद्धबुद्धिकीप्राप्तिभईहै ॥जा शुद्धबुद्धिकरिकै हमअधिकारीजीवोंनैं ता तत्पदार्थरूपपरमात्मादेवकूं साक्षात्कारकऱ्या है ॥ हेसंन्यासियो ॥ गुरुकेउपदेशतैंपूर्व यद्यपि हमअधिकारीजनोंकूं सावुद्धिउत्पन्नहोतीभई ॥ तथा सावुद्धि दशोंदिशाविषेभ्रमणकरतीभई ॥तथापि सावुद्धि याआनंदस्वरूपआत्माकूं

नहींग्रहणकरतीभई ॥ और अभी गुरुकेउपदेशकूंप्राप्तहोइके सा हमारीबुद्धि तापरमात्मादेवकूं सर्वत्रव्यापकरूपकरिकैग्रहणकरै है ॥ हेसं न्यासियो ॥ तापरमात्मादेवका कैसास्वरूपहै याप्रकारकीशंका तुमोनैं कदाचित्भी नहींकरणी॥ काहेतैं जैसे यालोकविषे गौकेसमान स्वभाववाला गवयपशुहोवै है ॥ यातैं तागवयपशुकेजनावणेवासतै गौकूंउपमानकरीताहै ॥ तैसे यालोकविषे जोकोईपदार्थ तापरमात्मा देवकेसमानस्वभाववालाहोवै ॥ तौ तापरमात्मादेवकेजनावणेवासतै तापदार्थकूंउपमानकरिये ॥ परंतु यालोकविषे तापरमात्मादेवकेस मानस्वभाववाला कोईपदार्थहैनहीं ॥ यातैं आत्माकेजनावणेविषे किसीअनात्मपदार्थकूं उपमानरूपतासंभवैनहीं ॥ और सोपरमात्मादेव सर्वअनात्मपदार्थोंतैंअत्यंतप्रियरूपहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं महद्यशः यानामकरिकैकथनकरै है ॥ हेसंन्यासियो॥ ऐसे आनंदस्वरूपअद्वितीयआत्माकूं कोईभीपुरुष चक्षुआदिकइंद्रियोंकरिकै ग्रहणकरिसकैनहीं ॥ किंतु जिसअधिकारीपुरुषऊपर तारुद्र भगवान्कीकृपाभई है॥सोईहीअधिकारीपुरुष सर्ववृत्तियोंसहितमनकानिरोधकरिकै ताआनंदस्वरूपआत्माकूं साक्षात्कारकरै है यातैं हे संन्यासियो ॥ तारुद्रभगवान्केप्रसन्नकरणेवासतैं यहअधिकारीपुरुष याप्रकार तारुद्रभगवान्कीप्रार्थनाकरै ॥ हेरुद्रभगवन् ॥ आप जन्म मरणादिकसर्वविकारोंतैंरहितहो ॥ यातैं हमअधिकारीजीवोंके कामक्रोधादिकपाशोंकेनिवृत्तकरणेविषे आप समर्थहो ॥ हेभगवन् ॥ जैसे यालोकविषे जीवताहुआकोईजंतु अग्निकेमध्यविषेस्थितहोइकै दुःसहदुःखकूंप्राप्तहोवै है ॥ तैसे मैं अज्ञानीजीव याशरीररूपअग्निविषे स्थितहुआ नानाप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोताहूं॥हेभगवन्॥ ज्वरादिकव्याधिकोंकरिकै तथा कामक्रोधादिकआधियोंकरिकै उत्पन्नभयेजेआ ध्यात्मिकदुःखहैं॥तथा सिंहसर्पादिकोंकरिकै उत्पन्नभयेजेअधिभूतदुःखहैं॥तथा अग्निजलादिकोंकरिकै उत्पन्नभयेजेअधिदैवदुःखहैं॥यातो नप्रकारकेदुःखोंकरिकै मैं सर्वदापीडितरहताहूं॥और पुण्यपापकरिकै पराधीनताकूंप्राप्तहुआ मैंपशु आपपशुपतिकेअधीनहूं॥हेभगवन् ॥ पुण्यपापकर्मकेफलकाप्रदाता जोआपईश्वरहो ॥ ताआपकेसमान यालोकविषे कोईउद्धारकरणेहाराकृपालुहैनहीं ॥ और मेरेसमान यालो कविषे कोईदीनपुरुषनहीं है ॥ यातैं दैवनैं तुमाराहमारायोग्यसंबंधकऱ्याहै॥हेभगवन् ॥ यहऋगादिकवेद जोकदाचित् प्रमाणरूपहैं॥तथा

सुखकेदेणेहारा शंकरनामादेव जोकदाचित् जीवत्अवस्थाविषे तथा मोक्षअवस्थाविषे परिपूर्णरूप है॥तौ हमअधिकारीजनोंके जन्ममर णादिकदुखोंकूं आप नाशकरो ॥ हेभगवन् ॥ रुद्रभगवान् शरणागतजीवोंकीरक्षाकरै है ॥ याप्रकारकेवेदवचनोंतैं हमनैं आपकामहिमा श्रवणकऱ्या है ॥ याकारणतैं जन्ममरणादिकदुःखोंकीनिवृत्तिकरणेवासतै मैंअनाथ आपकेशरणागतकूंप्राप्तभयाहूं॥यातैं आप हमारेप्रति आत्मज्ञानकीप्राप्तिकरिकै हमारेसर्वदुःखोंकीनिवृत्तिकरो ॥शंका॥ हेशिष्य ॥ तूं आपेहीआत्माकाविचारकरिकै जन्ममरणादिकदुःखोंतैं रहितहोवै ॥ हमारेअनुग्रहकाक्याप्रयोजन है ॥ समाधान ॥ हेभगवन् मैंअल्पबुद्धिवालाजीव किसीअर्थकूंभीजाणतानहीं॥तौ आपकेअनु ग्रहतैंविना दुर्विज्ञेयआत्माकूं मैं कैसे जाणोंगा ॥ यातैं बुद्धिमान् पुरुषोंविषे हमारी गिणतीनहीं ॥ शंका ॥ हेशिष्य ॥ जोतूं किसीभीअर्थ कूंनहींजाणता ॥ तौ तूं पाषाणकीन्याईं जडहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेभगवन् जैसे सर्पव्याघ्रादिकोंकरिकैयुक्त किसीनिर्जनवनविषे किसी बालककूंएकलाछोडिदीजिये ॥ सोबालक तावनविषे भयकूंप्राप्तहोइकै केवलदुःखकाहीअनुभवकरै है ॥ तैसे मैंभी यासंसाररूपवनविषे केवलदुःखकूंही अनुभवकरताहूं ॥ इतनैमात्रकरिकैही हमारेविषे चेतनता है ॥ हेभगवन् यासंसाररूपवनविषे क्षुधापिपासारूपपिशाच हमारेकूं परमदुःखकीप्राप्तिकरै हैं ॥ हेभगवन् तासंसाररूपवनविषेभी यहयौवनअवस्थारूपमहान्वन है ॥ तायौवनरूपवनविषे प्राप्तभ याजोमैंअनाथहूं ॥ तामैंअनाथकूं यहकामदेवरूपसर्प वारंवार दंशकरै है ॥ कैसा है सोकामदेवरूपसर्प ॥ अत्यंतविषवाला है ॥ जाविषके निवृत्तिकरणेहारा आप स्मरारिकेध्यानतैंविना दूसराकोईउपाय है नहीं ॥एकआपकाध्यानही ताविषकेनिवृत्तिका उपाय है॥ हेभगवन् ॥ तायौवनरूपवनविषे शब्द स्पर्श रूपरस गंध यहपंचप्रकारकेविषयरूपवृक्षरहे हैं ॥ तथा स्त्रीरूपीकाकरहे हैं॥तेविषयरूपवृक्ष तथा स्त्रीरू पकाक हमारे धर्मविचाररूपशरीरकूं सर्वदाहननकरै हैं ॥हेभगवन्॥ तासंसाररूपवनविषे यहक्रोधरूपसिंहरहै है॥ताकीगर्जनाकरिकै हमा राहृदय सर्वदा तपायमानहोवै है ॥ हेभगवन् यासंसाररूपवनविषे यहलोभरूपतरक्षुरहै है ॥ डाकनीकेवाहनकानाम तरक्षु है ॥ ऐसावि चित्रवर्णवाला लोभरूपतरक्षु आपणेदर्शनतैं हमारेनेत्रोंकूं तपायमानकरैहै॥याकारणतैंही लोभीपुरुषकूंदेखिकै तादातापुरुष आपणेनेत्रोंकूं

तालोभी पुरुषकीतरफतैं हटाइलेवै हैं॥हेभगवन्॥ जैसे विंध्याचलादिकपर्वत सूर्यकेप्रकाशकूं आच्छादनकरैहैं ॥ तैसे यासंसाररूपवनविषे आत्मारूपसूर्यकेप्रकाशकूं आच्छादनकरणेहारा यहअहंकाररूप महान्पर्वतरहे है ॥ हे भगवन् ॥ इसतैंआदिलैकेअसंख्यातदुःख हमारेकूं दिनादिनविषेप्राप्तहोवै हैं ॥ और आपकास्वभाव अत्यंत दयालु है ॥ यातैं तिनहमारेदुःखोंके श्रवणकरणेविषेभी आप समर्थनहीं हो ॥ याकारणतैं आपकेसमीप मैंआपणे बहुतदुःखोंकावर्णन नहींकरता ॥ और हे रुद्रभगवन् तत्पुरुष अघोर सद्योजात वामदेव ईशान यह जोआपकेपंचमुख हैं ॥ तेपंचमुख क्रमतैं पूर्वादिकचारि दिशाओंविषे तथा मध्यविषे स्थित हैं ॥ तिनमुखोंविषेभी दक्षिणकेतरफका जो आपका अघोरनामामुख है॥सोअघोरनामामुख अधिकारीजनोंकेप्रति ब्रह्मविद्याकेउपदेशकरणेविषे अत्यंतकुशल है ॥ ऐसेगुरूरूपअघोर नामामुखकरिकै हमअधिकारीजनोंकूं यासंसारदुःखोंतैं रक्षाकरो ॥ तथा हमअधिकारीजनोंकूं आत्मज्ञानकीप्राप्तिकरिकै सर्वशोकोंतैंरहित करो ॥ तहांश्रुति ॥ तरतिशोकमात्मवित् ॥ अर्थयह ॥ आत्माकूंजानणेहारापुरुष सर्वशोकोंतैंरहितहोवै है ॥हेभगवन्॥ऐसासर्वशोकों कीनिवृत्तिकरणेहाराआत्मज्ञान हमअधिकारीजीवोंकूं जबपर्यंतनहींप्राप्तहोवै॥तबपर्यंत जैसे अन्यपापीजीवोंके पुत्रादिकप्रियपदार्थोंकूं आप मृत्युरूपहोइकै हननकरोहो ॥ तैसे हमअधिकारीजनोंके पुत्रादिकप्रियपदार्थोंकूं आप मृत्युरूपहोइकै मतहननकरो ॥तथा हमअधिकारी जनोंके पुत्रपौत्रादिकसंबंधियोंविषे तथा गौअश्वादिकपशुओंविषे किसीरोगादिकउपद्रवोंकी उत्पत्तिमतकरो ॥ हेभगवन् ॥ आप साक्षात् मोक्षकीप्राप्तिकरणेहारेहो ॥ यातैं आपकेआगे पुत्रादिकअनात्मपदार्थोंकेरक्षाकरणेकीप्रार्थनाकरणा यद्यपि हमारेकूंउचितनहीं है॥ तथापि तिनपुत्रादिकप्रियपदार्थोंकेवियोगतैं हम अधिकारीजनोंकेचित्तविषे क्षोभकीप्राप्तिहोवै है ॥ ताक्षोभवालेचित्तविषे आपकाध्यानहोइसकै नहीं॥ याकारणतैं हमारेमृत्युतैंपूर्व हमारेप्रियपुत्रोंकूं तथा हमारेप्रिय भ्राताओंकूं तथा हमारेअग्रियोंकूं तथा हमारेऊपर उपकारकरणे हारेराजादिकोंकूं आप मृत्युरूपहोइकै हननमतकरो ॥ किंतु तिनसंपूर्ण प्रियपदार्थोंकूं आप दीर्घआयुषवालाकरो॥ हेभगवन् ॥ यद्यपि आप स्वभावतैं दयालु हो ॥ यातैं हमअधिकारीजनोंकेपुत्रादिकप्रियपदार्थोंकूं आप कदाचित्भी हननकरतेनहीं ॥ उलटा तिनपुत्रा

दिकाप्रियपदार्थोंकूं आप दीर्घआयुषकीप्राप्तिकरतेहो।यातैं आपकेआगे तिनपुत्रादिकप्रियपदार्थोंकेरक्षाकीप्रार्थनाकरणी हमअधिकारियोंकूं उचित नहीं है ॥ तथापि ताआपकेदयालुस्वभावकाही हम अनुवादकरते हैं॥ पूर्वसिद्धअर्थका पुनःकथनकरणा याकानाम अनुवादहै ॥ हेभगवन् ॥जिसधनधान्यादिकपदार्थोंकारिकैयुक्तहुए हमअधिकारीजन सुखपूर्वक आपकाआराधनकरैं ॥ तिसधनधान्यादिकपदार्थोंकारिकै युक्त हमअधिकारीजनोंकूं आपकरो ॥हेसंन्यासियो॥ इसप्रकार यहअधिकारीपुरुष जभी तारुद्रभगवान्कीप्रार्थनाकरैं हैं॥तभी सोरुद्रभग वान् तिनअधिकारीजनोंऊपर प्रसन्नहोइकै तिनअधिकारियोंकेप्रति भोग मोक्ष यादोंनोंकीप्राप्तिकरे है॥ यातैं जिनअधिकारीजनोंकूं भोग मोक्ष दोनोंकेप्राप्तिकीइच्छाहोवै ॥ तिनअधिकारीजनोंनैं तारुद्रभगवान्कीप्रार्थना अवश्यकरणी ॥ हेसंन्यासियो॥शतशोपिपथ्यंवक्तव्यं॥ अर्थयह ॥ जोपदार्थ अधिकारीजनोंकेहितकासाधनहोवै ॥ तापदार्थकूं अनेकप्रकारकरिकै शास्त्रवेत्तापुरुषनैं कथनकरणा॥ याकेविषे कोई भीपुनरुक्तिदोष होवैनहीं ॥ याप्रकारकानियम शास्त्रविषे कथनकऱ्याहै ॥ यातैं अधिकारीजनोंकेप्रति भोगमोक्षकी प्राप्तिकरणेहारा जोप रमात्मादेवहै ॥ तापरमात्मादेवकाउपदेश मैंश्वेताश्वतरमुनि पुनःतुमारेप्रतिकरताहूं ॥ तुम सावधानहोइकै श्रवणकरो ॥ हे संन्यासियो ॥ जैसे लोकप्रसिद्धवृक्षोंविषे पत्रोंकारिकै आच्छादित आम्रादिकफल गुह्यरहैंहैं ॥ तैसे यावेदरूपीवृक्षविषे अविद्या विद्या यहदोनों गुह्यहोइकैर हे हैं ॥ तहां अग्निहोत्रादिककर्मोंकानाम अविद्याहै ॥ और ब्रह्मज्ञानकानाम विद्याहै॥ और साकर्मरूपअविद्या याजीवोंकूं स्वर्गादिरूपअ नित्यफलकीप्राप्तिकरै है ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताकर्मरूपअविद्याकूं क्षर यानामकरिकैकथनकरै है॥ और साब्रह्मज्ञानरूपविद्या या अधिकारीजीवोंकूं मोक्षरूपनित्यसुखकीप्राप्तिकरै है॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताब्रह्मज्ञानरूपविद्याकूं अक्षर अमृत यानामकरिकैकथन करेहै ॥ तेविद्याअविद्यादोनों मोक्षकेप्राप्तिकाहेतुहैं ॥ तहां ब्रह्मज्ञानरूपविद्यातौ साक्षात् मोक्षकेप्राप्तिकाहेतुहै ॥और कर्मरूपअविद्यातौ फलकीइच्छातैंरहितकरीहुई चित्तकीशुद्धिद्वारा मोक्षकेप्राप्तिकाहेतुहोवै है ॥ तिनाविद्याअविद्या दोनोंके प्रवृत्तकरणेहारा तथा तिनदोनोंके फलकेदेणेहारा सोरुद्रभगवान्ही है ॥ हेसंन्यासियो ॥ ते विद्याअविद्यादोनों याजीवोंकेप्रति आपणेआपणेफलकूंनदेकरिकै नाशकूंप्राप्त

होवैनहीं ॥ किंतु तेविद्याअविद्यादोनों याजीवोंकेप्रति आपणेआपणेफलकूंदेकरिकै पश्चात् नाशकूंप्राप्तहोवै हैं॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तिनविद्याअविद्याकूं अनंत यानामकरिकैकथनकरैहै॥ हेसंन्यासियो ॥ साकर्मरूपअविद्या तथा ब्रह्मज्ञानरूपविद्या यहदोनों शिवभगवान् केप्रसादतैंही जीवोंकूंप्राप्तहोवै हैं॥ दूसरेकिसीउपायकरिकै प्राप्तहोवैनहीं॥ यातैं तिनविद्याअविद्यादोनोंका सोरुद्रभगवान्ही ईश्वरहै॥ और हेसंन्यासियो ॥ जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज याचारप्रकारकेशरीरोंकीउत्पत्तिकेकारण जे बीजहैं ॥ तिनसर्वबीजोंकूंआश्रयणकरिकै जोपरमात्मादेव स्थितहोवै है॥ तथा जोपरमात्मादेव आकाशादिकसर्वभूतोंकूं तथा सर्वबीजोंकूं आपणेतैंउत्पन्नकरै है॥ और विचित्रवर्ण वालाहोणेतैं श्रुतिविषे कपिलपदकरिकै कथनकऱ्याजोहिरण्यगर्भ है॥ तथा सर्वपदार्थोंकाद्रष्टाहोणेतैं श्रुतिविषेऋषिपदकरिकै कथनकऱ्या जोहिरण्यगर्भहै ॥ जोहिरण्यगर्भ यास्थूलजगत्तैं पूर्वउत्पन्नभयाहै ॥ ऐसेहिरण्यगर्भकेप्रति जोपरमात्मादेव अर्थसहितचारवेदोंकूंदेकै नानाप्रकारकेज्ञानोंकरिकै भरणकरैहै ॥ तथा जोपरमात्मादेव ताहिरण्यगर्भकूं यास्थूलजगत्की उत्पत्तिकरणेविषेसमर्थदेखै है॥ऐसापरमात्मादेवहीतत्त्वमसि यावाक्यविषेस्थित तत्पदकाअर्थरूपहै ॥ हेसंन्यासियो ॥ सोपरमात्मादेव प्रथम जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज याचारप्रकारकेयोनियोंकूंउत्पन्नकरैहै ॥ तिनचारप्रकारकेयोनियोंविषेभी एकएकयोनिकूं एकविंशतिलक्षप्रकारका करै है ॥ ते संपूर्णयोनियांमिलिकै चौरासीलक्षयोनियांहोवै हैं॥ तिनचौरासीलक्षयोनियोंविषेभी एकएकयोनिकूं अवांतरअनेकभेदकरिकै जालकीन्याईं अनेकप्रकारकाकरैहै ॥ इसप्रकार सृष्टिकालविषे सर्वजगत्कूंउत्पन्नकरिकै सोपरमात्मादेव प्रलयकालविषे तासंपूर्णजगत्कूं आपणेमायारूपक्षेत्रविषे लयकरैहै॥ तिसतैंअनंतरसृष्टिकालविषे सोपरमात्मादेव पुनःतामायारूपक्षेत्रतैं पूर्वकीन्याईं नानाप्रकारकेजगत्कूंउत्पन्नकरै है॥ तथा तिसजगत्केपालनकरणेहारे दिक्पालोंकूंउत्पन्नकरै है ॥ इसप्रकार सर्वजगत्कूंउत्पन्नकरिकै सोपरमात्मादेव सर्वजगत्काअधिपतिहोवैहै ॥ और हेसंन्यासियो ॥ जैसे वृषभ भारकूंउठावै है ॥ तैसे यहपरमात्मादेव सर्वविश्वकेभारकूंधारणकरै है ॥ तथा सोपरमात्मादेव सर्वजगत्केउपकारवासतै सूर्यरूपहोइकै पूर्वादिकदशदिशाओंकूं प्रकाशकरै है ॥ और सोपरमात्मादेवही अनेकशरीरोंकूंउत्पन्नकरिकै

तिनशरीरोंकेअनेकस्वभावोंकूं आपणेविषेआरोपणकरिकै स्थितहोवै है॥ और पुत्रादिकप्रजाकेउत्पत्तिकरणेहारे जेस्त्रीपुरुषोंकेस्वभावहैं॥ तिनस्वभावोंकूंधारणकरिकै सोपरमात्मादेवही तिनोंकूं फलकीप्राप्तिकरै है ॥ और सोपरमात्मादेवही नानायोनियोंकेशरीरोंकूं उत्तरउत्तरकालविषे परिणामकीप्राप्तिकरै है॥ जैसे कभीतो यहशरीर बाल्यअवस्थावालाहोवै है और कभी यहशरीर युवाअवस्थावालाहोवै है॥ और कभी यहशरीर वृद्धअवस्थावालाहोवै है ॥ इसप्रकार सोपरमात्मादेव याशरीरोंकूं अनेकप्रकारकेपरिणामोंकीप्राप्तिकरै है ॥ हेसंन्यासियो ॥ यहपरमात्मादेव सर्वपदार्थोंकाअधिष्ठानहै याअर्थविषे हम बहुतक्याकहैं ॥ किंतु नानाप्रकारकेस्वभाववालेयहसंपूर्णशरीर जिसब्रह्मांडकेगर्भविषेरहै हैं ॥ ताब्रह्मांडकूंभी यह परमात्मादेवही धारणकरिरह्या है ॥ तथा सोपरमात्मादेवही तिसब्रह्मांडवर्त्तीजीवोंकूं आपणेआपणेकार्यविषेप्रवृत्तकरै है ॥ हेसंन्यासियो ॥ इसप्रकार यासर्वजगत्काकारणरूप जोअद्वितीयब्रह्म है ॥ तिस अद्वितीयब्रह्मकूं मैंश्वेताश्वतरनामाऋषि तारुद्रभगवान्केअनुग्रहतैं साक्षात्कारकरताहूं ॥ कैसाहैसोब्रह्म ॥ उपनिषद्रूपवेदकरिकै प्रतिपादित है ॥ तथा सनातनहै ॥ तथानानाप्रकारकेप्रवृत्तिरूपज्ञानोंविषे स्वप्रकाशरूपकरिकैस्थित है॥ तथा शास्त्रविचारतैंरहितमूढपुरुषोंकरिकै दुर्विज्ञेयहै॥ हेसंन्यासियो ॥ जैसे मैंश्वेताश्वतरनामाऋषि तारुद्रभगवान्केप्रसादतैं तत्पदार्थरूपब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपकरिकैजानताहूं ॥ तैसे पूर्वहिरण्यगर्भभगवान् तथा इंद्रादिकदेवता तथा सनकादिकऋषि तारुद्रभगवान्केप्रसादतैं तात्स्वयंज्योतिसर्वज्ञपरमात्मादेवकूं आपणाआत्मारूपकरिकै जानतेभये हैं॥ तैसे इदानींकालविषेभी जोकोईबुद्धिमान्पुरुष तारुद्रभगवान्का आराधनकरैगा ॥ सोबुद्धिमान्पुरुषभी ताअद्वितीयब्रह्मकूं अवश्यजाणेगा॥ हेसंन्यासियो ॥ इसप्रकार जेजेहिरण्यगर्भादिकदेवता तथा जेजेऋषि तथा जेजेमनुष्य ताअद्वितीयब्रह्मकूंजानतेभये हैं॥ तेसंपूर्णविद्वान् ताब्रह्मभावकूंप्राप्तहोइकै मोक्षरूपअमृतभावकूंप्राप्तहोतेभये हैं ॥ इतनैंकरिकै आत्माकूं तत्पदार्थईश्वररूपकरिकैवर्णनकऱ्या अब तिसीआत्माकूं त्वंपदार्थजीवरूपकरिकै निरूपणकरैं हैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ जैसे स्वभावतैं उष्णस्पर्शतैंरहित तथा गंधतैंरहित जोजलहै॥ सोजल जभी अग्निकेसंबंधकूंप्राप्तहोवै है॥ तभी सोजल ताअग्निकेउष्णस्पर्शकूंप्राप्तहोवै है॥ और सोजल जभी

पुष्पादिकोंकेसंबंधकूंप्राप्तहोवै है॥ तभी सोजल तापुष्पादिकोंकेगंधगुणकूंप्राप्तहोवै है॥तैसे वास्तवतैं सर्वधर्मोंतैंरहित . जोनिर्गुणपरमात्मा देवहै ॥ सोपरमात्मादेव जभी आपणेस्वरूपकेअज्ञानतैं जीवभावकूंप्राप्तहोइकै अंतःकरणादिकउपाधियोंके तादात्म्यअध्यासकूंप्राप्तहोवै है तभी सोआत्मादेव तिनअंतःकरणादिकउपाधियोंके कामक्रोधादिकधर्मोंकूं तथा सत्त्व रज तम यातीनगुणोंकूं आपणेविषेमाने है॥तिसतैं अनंतर यहआत्मादेव रागपूर्वक पुण्यपापरूपकर्मोंकूंकरै है॥ और तापुण्यपापरूपअदृष्टद्वारा सुखदुःखरूपफलकूं तथा सुखदुःखकेसाधनोंकूं उत्पन्नकरिकै यहआत्मादेव तिसीअंतःकरणादिकउपाधियोंकेतादात्म्यअध्यासकरिकै तिससुखदुःखरूपफलकूंभोगे है॥ तिनशुभअशुभकर्मोंविषेभी उपासनारूपमानसकर्मकरिकै यहजीवात्मा देवयाननामाउत्तममार्गद्वारा ब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवै है॥और अग्निहोत्रादिकपुण्यकर्मोंकरिकै यहजीवात्मा पितृयाणनामामध्यममार्गद्वारा स्वर्गादिकलोकोंकूंप्राप्तहोवै है॥ और ब्रह्महत्यादिकपापकर्मोंकरिकै यहजीवात्मा तृतीयस्थाननामाअधममार्गद्वारा कीटपतंगादिकक्षुद्रशरीरोंकूंप्राप्तहोवै है ॥ इसप्रकार पुण्यपापकर्मकेवशतैं यहजीवात्मा निरंतर संसार विषेभ्रमणकरै है॥हेसंन्यासियो॥यहआत्मादेव यद्यपि वास्तवतैं देशकालवस्तुपरिच्छेददोंतैंरहित सर्वत्रपरिपूर्णरूप है ॥ तथापि अंगुष्ठमात्रहृदयरूपउपाधिकेसंबंधतैं यहआत्मादेव अंगुष्ठमात्रपरिमाणवालाहोवै है॥ तथा सोआत्मादेव अहंकारकरिकै तथा मनकेसंकल्पोंकरिकै युक्तहोवै है॥तथा बुद्धिके परिणामवृत्तिरूपगुणोंकरिकैयुक्तहोवै है॥कैसे हैं तेवृत्तिरूपगुण॥मायाविशिष्टआत्माकरिकैरचितहैं॥यातैं आत्माकेभी तेगुणहैं॥तथा स्वप्नकेसमान मिथ्यारूपहैं॥ऐसेबुद्धिकेवृत्तिरूपगुणोंकूं प्रकाशकरणेहारा सोआत्मादेव सूर्यकीन्याईं स्वयंज्योतिरूप है॥हेसंन्यासियो॥यहआत्मादेव यद्यपि वास्तवतैंमहान्है॥तथापि अल्पपरिमाणवालीबुद्धिविषेस्थितहोइकै यहआत्मादेव आराकेअग्रभाग समान अल्पपरिमाणवालाहोवै है॥तहां चर्मकेभेदनकरणेहारी जाचर्मकारकीसूईहै ताकानाम आराहै॥हेसंन्यासियो॥इसप्रकार बुद्धिरूपउपाधिके तादात्म्यसंबंधतैं यहआत्मादेव जीवभावकूंप्राप्तहोइकै यद्यपि अविवेकीपुरुषोंकीदृष्टिविषे निकृष्टभावकूंप्राप्तहोवै है॥ तथापि विवेकीमहात्मापुरुष याआनंदस्वरूपआत्माकूं सर्वतैंउत्कृष्टरूपकरिकैहीदेखे हैं॥हेसंन्यासियो तावुद्धिविषेस्थितहोइकै यहजीवात्मा जिससूक्ष्मताकूं

॥ ५४ ॥

प्राप्तहोवै है॥तासूक्ष्मताविषे कोईकसूक्ष्मदर्शीपुरुषयाप्रकारकादृष्टांत कथनकरै हैं ॥ एककेशकाजोअग्रभागहै॥ताके एकशत१०० विभाग करिये॥ताशतविभागोंविषे एकविभागकूं पुनःएकशत १०० विभागकरिये॥सोएककेशकाविभाग जिससूक्ष्मपरिमाणवालाहोवै है॥तिसी सूक्ष्मपरिमाणवाला यहजीवात्माहोवै है ॥ हेसंन्यासियो ॥ याजीवात्माकूं जबपर्यंत आपणेवास्तवस्वरूपकाअज्ञानहोवै है ॥ तबपर्यंतही यहजीवात्मा बुद्धिकेतादात्म्यसंबंधतैं याप्रकारकीअल्पताकूंप्राप्तहोवै है ॥ और जभी यहजीवात्मा तारुद्रभगवान्केप्रसादतैं आपणेकूंब्रह्मरूपकरिकैजानै है ॥ तभी कार्यसहितअज्ञानकेनिवृत्तहुए यहजीवात्मा परिपूर्णब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ हे संन्यासियो ॥ यहआत्मादेव यद्यपि वास्तवतैं स्त्री पुरुष नपुंसक भावतैंरहितहै ॥ तथापि आपणेस्वरूपकेअज्ञानतैं यहआत्मादेव जिसजिसशरीरकूं तादात्म्यसंबंधकरिकैग्रहणकरै है ॥ तिसतिसशरीररूपहोइकै प्रतीतहोवै है ॥ जैसे नटपुरुष स्त्रीआदिकोंकेवेशकूंधारणकरिकै स्त्रीआदिकरूपकरिकैप्रतीतहोवै है ॥ हेसंन्यासियो ॥ शब्दस्पर्शादिकविषयोंकरिकैजन्य जोबाह्यभोगहै ॥ तथा मनकेसंकल्पकरिकैजन्य जोअंतरभोगहै॥तथा सुखकेप्राप्तिकीजाइच्छाहै ॥ तथा नानाप्रकारकेअन्नजलकी जाप्राप्तिहै॥इत्यादिकअनेकपदार्थोंकीप्राप्तिकरिकै यद्यपि यहदेहादिकही वृद्धिकूं प्राप्तहोवै है ॥ तथापि तिनदेहादिकोंकेतादात्म्यअध्यासतैं यहआत्मादेव तावृद्धिकूं आपणेविषेमाने है॥ तथा तिनदेहादिकोंकीवासनाकरिकै यहआत्मादेव अनेकजन्मोंकूंप्राप्तहोवै है॥ हेसंन्यासियो ॥याजीवोंकूं पूर्वलीवासनाकेअनुसार जोजन्ममरणवृद्धिआदिकप्राप्तहोवै हैं ॥ ताकेविषे पुण्यपापरूपकर्मभी निमित्तकारण है॥तापुण्यपापकर्मकेअनुसार यहजीवात्मा सुख दुःखकीप्राप्तिवासतै यासंसारविषे नानाप्रकारकेशरीरोंकूंप्राप्तहोवै है ॥ कभीतौ यहजीवात्मा नपुंसकशरीरकूंप्राप्तहोवै है॥और कभी स्त्रीशरीरकूंप्राप्तहोवै है॥ और कभी पुरुषशरीरकूंप्राप्तहोवै है और कभी स्वर्गादिकलोकोंविषे देवताशरीरकूंप्राप्तहोवै है ॥ इसप्रकार पुण्यपापकर्मकेवशतैं यहजीवात्मा अनेकजन्मोंविषेभ्रमणकरै है ॥हेसंन्यासियो॥ जैसे यालोकविषे नटपुरुष अनेकप्रकारकेरूपोंकूंधारणकरै है॥ तैसे यहआत्मादेवभी बुद्धिआदिकोंकेसाथ तादात्म्यभावकूंप्राप्तहोइकै तापुण्यपापकेवशतैं कभी हस्ती आदिकस्थूलशरीरोंकूंप्राप्तहोवै है ॥ और कभी चींटीआदिकसूक्ष्मशरीरों

अ० ८

कूंप्राप्तहोवै है ॥ हेसंन्यासियो ॥ याजीवोंकूं निकृष्टभावकीप्राप्तिकरणेहारा जोआपणेस्वरूपकाअज्ञानहै॥ताअज्ञानकूं जभी यहजीवात्मा आपणेविषे आरोपणकरै है ॥ तभी यहजीवात्मा श्रोत्रादिकएकादशइंद्रियोंकेसाथ तादात्म्यभावकूंप्राप्तहोइकै नानाप्रकारकेशरीरोंकूंयहणकरै है ॥ हेसंन्यासियो ॥ याआनंदस्वरूप आत्मादेवकूं वास्तवतैंजन्ममरणादिकोंकीप्राप्तिहोवैनहीं॥यातैं पूर्वहमनैं कलिलादिकबीजोंविषेस्थित जिसपरमात्मादेवका कथनकऱ्याथा ॥ सो तत्पदकाअर्थरूप परमात्मादेव यात्वंपदकेअर्थरूपआत्मातैं भिन्ननहीं है ॥ किंतु यहजीवात्मा ब्रह्मरूपही है ॥ ऐसे आत्मादेवकेज्ञानतैं यहअधिकारीजन कामक्रोधादिकसर्वपाशोंतैंमुक्तहोवै है ॥ हेसंन्यासियो ॥ जोआत्मादेव पूर्वइंद्रनैं प्रतर्दनराजाकेप्रति प्राणप्रज्ञारूपकरिकैकथनकऱ्याथा ॥ सोआत्मादेव याअधिकारीजीवोंकूं मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकेअभेदज्ञानतैंही प्राप्त होवै है ॥ याअभेदज्ञानतैंविना अन्यकिसीउपायकरिकै सोआत्मादेव प्राप्तहोवैनहीं ॥ और हेसंन्यासियो ॥ प्राण १ श्रद्धा २ आकाश ३ वायु ४ तेज ५ जल ६ पृथ्वी ७ श्रोत्रादिकदशइंद्रिय ८ मन ९ अन्न १० वीर्य ११ तप १२ मंत्र १३ यज्ञादिककर्म १४ लोक १५ नाम १६ याषोडशकलावोंकूं सोपरमात्मादेवही सृष्टिकेआदिकालविषेउत्पन्नकरै है ॥ तथा यासर्वजगत्केउत्पत्तिस्थितिलयकाकारणभी सोपरमात्मादेवही है ॥ और यहस्वयंज्योतिपरमात्मादेव सर्वमंगलोंकाभीमंगलरूप है ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं शिव यानामकरिकैकथनकरै है ॥ ऐसेअद्वितीयपरमात्मादेवकूं जेअधिकारीपुरुष आपणाआत्मारूपकरिकै साक्षात्कारकरै हैं ॥ तेअधिकारीपुरुष स्थूल सूक्ष्म कारण यातीनशरीररूपबंधनकापरित्यागकरिकै मोक्षकूं प्राप्तहोवै हैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ यापूर्वग्रंथविषे तापरमात्मादेवकूं सर्वजगत्काकारणरूपकरिकै हमनैं तुमारेप्रति कथनकऱ्या ॥ अब वादियोंकेमतखंडनपूर्वक तिसीपरमात्मादेवकाउपदेश मैंश्वेताश्वतरनामामुनि तुमारेप्रति करताहूं ॥ तुम सावधानहोइकैश्रवणकरो ॥ हेसंन्यासियो ॥ केईकुबुद्धिमानपुरुष काल स्वभाव नियती यदृच्छाभूत प्रकृति पुरुष इनोंकूंही जगत्काकारणकहे हैं ॥ तिनवादियोंकेमतका विस्तारतैंनिरूपण पूर्वकहिआये हैं ॥ परंतु तेकालादिकोंकूंकारणमाननेहारे वादी वेदभगवान्केयथार्थतात्पर्यकूं जाणि ॥ ९९

सकतेनहीं ॥ याकारणतैंही मोहकूंप्राप्तहोइकै तेवादी याजगत्केकारणविषे नानाप्रकारकाविवादकरै हैं ॥ जैसे जन्मकेअंधपुरुष दुग्धादिकोंकेरूपविषे विवादकरै हैं ॥ तैसे तेवादीभी परस्परविवादकरै हैं ॥ हे संन्यासियो ॥ तिनवादियोंकेवचन प्रमाणतैं तथायुक्तितैं रहितहैं ॥ याकारणतैं वेदकेयथार्थतात्पर्यकूंजाननेहारेबुद्धिमान्पुरुषोंनैं तिनवादियोंकेवचन कदाचित्भी नहींग्रहणकरणे ॥ अब तिनवादियोंकेमतविषे प्रमाणकाअभाव निरूपणकरै हैं ॥ हे संन्यासियो ॥ कालस्वभावादिक जगत्केकारणहैं याअर्थविषे कोई वेदकावचनरूपशब्दप्रमाणतो है नहीं ॥ और सोसर्वजगत्काकारण नेत्रादिकइंद्रियोंकरिकै ग्रहणकऱ्याजावैनहीं ॥ याकारणतैं ताजगत्केकारणविषे लोकोंकाप्रत्यक्षप्रमाणभी संभवैनहीं ॥ और प्रत्यक्षप्रमाणकूंआश्रयणकरिकैहीं ॥ अनुमानप्रमाणकीप्रवृत्तिहोवै है ॥ यातैं ताप्रत्यक्षप्रमाणकेअभावहुए ताकारणविषे अनुमानप्रमाणभी संभवैनहीं ॥ यातैं तिनवादियोंकेमतप्रमाणतैं रहित हैं ॥ अब तिनवादियोंकेमतविषे युक्तियोंकाअभाव निरूपणकरै हैं ॥ हेसंन्यासियो ॥ तेवादी जिसकालस्वभावादिकोंकूंकारणमानै हैं ॥ तेकालस्वभावादिकपदार्थ जडरूपहैं ॥ याकारणतैं चेतनआत्मातैंविना स्वतंत्र तिनकालादिकोंविषे कारणरूपतासंभवैनहीं ॥ किंच ॥ याऽलोकविषे जोजोपदार्थ जडहोवै है ॥ सोसोपदार्थ कार्यरूपहीहोवै है॥ जैसे घटपटादिकपदार्थ जडरूपहैं यातैंकार्यरूपभीहै॥तैसे यहकालस्वभावादिककारणभी जडरूपहैं यातैं कार्यरूपभीअवश्यहोवैंगे॥ और यालोकविषे जोजोपदार्थ कार्यरूप होवैहै ॥ सोसोपदार्थ किसीकारणकरि जन्य अवश्यहोवै है ॥ जैसे घटपदादिकपदार्थ कार्यरूपहोणेतैं मृत्तिकातंतुआदिककारणोंकरिकैजन्यहोवै हैं॥ तैसे तिनकालस्वभावादिककार्योंकाभी कोईदूसराकारण कल्पनाकरणाहोवैगा ॥ यातैं तिनकालादिकोंकेकारणतैंहीं यासर्वजगत्कीउत्पत्तिसंभवहोइसकैहै ॥ तिसकार्यकारणकेमध्यविषे कालादिकोंकूंजगत्काकारणमानणा निष्फलहै ॥ यातैं तिनवादियोंकेमत युक्तितैंभीरहितहैं ॥ शंका॥हेभगवन्॥ वेदरूपसूर्यकेविद्यमानहुएभी तिनवादियोंकूं याप्रकारकामोह किसवासतैंहोवै है ॥ समाधान ॥ हे संन्यासियो याजगत्केकारणविषे तिनवादियोंका जोनानाप्रकारकाविवाद देखणेविषेआवे है॥सोकोईआश्चर्यरूपनहीं है॥ काहेतैं जिसपरमात्मादेवकीमायाशक्ति या संसाररूप

चक्रकूंभ्रमणकरावै है ॥ सा अद्भुतप्रभाववालीमायाशक्ति तिनवादियोंकूंभी मोहकीप्राप्तिकरै है ॥ हेसंन्यासियो ॥ जैसे वायु आकाशविषे तूलकूंभ्रमणकरावै है ॥ तैसे यहपरमात्मादेव आपणेमायाशक्तिकरिकै बुद्धिमानपुरुषोंकेभी बुद्धिकूं भ्रमणकरावै है ॥ और हेसंन्यासियो जिसज्ञानस्वरूपपरमात्मादेवकरिकै यहसंपूर्णजगत्व्याप्त है ॥ और जोपरमात्मादेव कालकाभीकालहै ॥ तथा जोपरमात्मादेव सत्य काम सत्यसंकल्प इत्यादिकगुणोंकरिकैयुक्त है ॥ तथा जोपरमात्मादेव आपणेस्वप्रकाशज्ञानकरिकै सर्वजगत्कूंजाणे है ॥ तथा जोपर मात्मादेव याजीवोंकेप्रति शुभअशुभकर्मका सुखदुःखरूपफलदेवै है ॥ तथा जोपरमात्मादेव आकाश वायु तेज जल पृथ्वी यापंचभूत रूपकरिकै विवर्त्तभावकूंप्राप्तहोवै है॥ तहां आपणेस्वरूपका न परित्यागकरिकै जोअन्यरूपतैंप्रतीति है याकानाम विवर्त्तहै ॥ जैसे रज्जु आपणेवास्तवस्वरूपका नपरित्यागकरिकै सर्पादिकरूपतैं प्रतीतहोवै है ॥ तैसे यहपरमात्मादेवभी आपणेवास्तवस्वरूपका नपरित्याग कारिकै आकाशादिकरूपकरिकैप्रतीतहोवै है ॥ ऐसापरमात्मादेव मुमुक्षुजनोंनैं सर्वदाचिंतनकरणेयोग्यहै ॥ हे संन्यासियो ॥ जिसपुरुषकूं मोक्षकेप्राप्तिकीइच्छाहोवै ॥ सोअधिकारीपुरुष प्रथम फलकीइच्छातैंरहितहोइकै यज्ञादिककर्मोंकरिकै आपणे अंतःकरणकूंशुद्धकरै ॥ ता अंतःकरणकीशुद्धितैंअनंतर सोअधिकारीपुरुष मनसहितनेत्रादिकइंद्रियोंकूं आपणेआपणेव्यापारतैंनिवृत्तकरै ॥ ताइंद्रियोंकानिरोधतैंअनं तर सोअधिकारीपुरुष गुरुशास्त्रकेउपदेशतैंयाआनंदस्वरूपआत्माकूं साक्षात्कारकरै ॥ कैसाहैयहआत्मादेव ॥ अविद्याएकतैंरहितहै ॥ त था पुण्यपाप यादोनोंकर्मोंतैंरहित है॥ तथा सत्त्व रज तम यातीनगुणोंतैंरहितहै ॥ तथा आकाशादिकपंचभूत अव्यक्त बुद्धि अहंकार या अष्टोंतैंरहितहै ॥ अथवा ॥ पंचमअध्यायविषे कथनकरेजे इंद्रियरूपअष्टग्रह तथा विषयरूपअष्टआतिग्रह तिनोंतैंरहितहै ॥ तथा कालतैं रहितहै ॥ तथा बुद्धिकेवृत्तिरूपगुणोंतैंरहितहै ॥ ऐसेआत्मादेवकूं तेशुद्धचित्तवालेअधिकारीजन साक्षात्कारकरै हैं ॥हेसंन्यासियो॥ इसप्र कार वास्तवतैंसर्वधर्मोंतैंरहितहुआभी यहआत्मादेव सत्त्व रज तम यातीनगुणोंकेअभिमानकरिकै पुण्यपापरूपकर्मोंकूंकरै है॥ तथा सुख दुःखकीप्राप्तिवासतै यहआत्मादेव अंतरपदार्थोंकूं तथा बाह्यपदार्थोंकूं आपणेआपणेव्यापारविषेजोडेहै॥ और सोईहीआत्मादेव जभी आ

पणेवास्तवस्वरूपविषे तिनसर्वपदार्थोंकेअभावकूंनिश्चयकरै है॥ तभी ताआत्मज्ञानरूपअग्निकरिकै तिनसर्वकर्मोंकूंक्षयकरैहै॥तिनकर्मोंके क्षयहुए यहविद्वान्पुरुष तिनसर्वअनात्मपदार्थोंतैंभिन्नरूपकरिकैआपणेब्रह्मस्वरूपकूंप्राप्तहोवैहै॥हेसंन्यासियो॥जोमायाकाआश्रयरूप परमा त्मादेव याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्व कारणरूपहोइकैस्थितहोवैहै ॥ तथा आपणेचिदाभासकेसंबंधकरिकै कार्यसहितअविद्याकूं चेतनकीन्याई करै है॥तथा जिसपरमात्मादेवकूं महात्मापुरुष तीनकालोंतैंरहित तथा प्राणादिकषोडशकलावोंतैंरहित शुद्धरूपकरिकैदेखैहैं ॥ तथा जोप रमात्मादेव सर्वजगत्काआत्मारूपहै॥तथा जोपरमात्मादेव इंद्रादिकदेवतावोंकरिकै स्तुतिकरणेयोग्यहैतथा सर्वप्राणियोंकेचित्तविषेस्थित है ऐसेपरमात्मादेवकूं प्रथम उपासनाकरिकै यहअधिकारीजन सर्वविघ्नोंतैंरहितहोवै है॥तथा तागुरुशास्त्रकेउपदेशतैं आत्मसाक्षात्कारकूंप्रा प्तहोइकै यहअधिकारीजन ब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवै हैं॥हेसंन्यासियो॥जोपरमात्मादेवयासंसाररूपवृक्षतैं तथा कालतैं तथाअविद्यातैं परेस्थित है ॥ तथा जिसपरमात्मादेवतैं यहसंपूर्णजगत् उत्पन्नहोवै है ॥ तथा जोपरमात्मादेव स्मरणमात्रकरिकै याजीवोंकूं धर्मकीप्राप्तिकरै है ॥ तथा पापकीनिवृत्तिकरैहै ॥ तथा जोपरमात्मादेव ऐश्वर्य धर्म यश श्रीज्ञान वैराग्य याषट्भगोंकाईश्वरहै ॥ अथवा जोपरमात्मादेव याज गत्कीउत्पत्ति स्थिति जीवोंकापरलोकविषेगमन तथापरलोकतैंआगमन विद्या अविद्या याषट्भगोंकाईश्वर है ॥ कार्यकेकरणविषे तथा नकरणविषे तथा अन्यथाकरणविषे जोसमर्थहोवै ॥ ताकानामईश्वरहै ॥ तथा जोपरमात्मादेव याजीवोंकेपुण्यपापकर्मोंकास्वामी है॥तथा जोपरमात्मादेव जन्ममरणादिकसर्वविकारोंतैंरहितहै ॥ तथा सर्वप्राणियोंकेहृदयदेशविषे जाकानिवासहै ॥ तथा स्वयंज्योतिअद्वितीयरू पहै ॥ तथा सर्वविश्वकाईश्वरहै ॥ तथा सूर्यादिकसर्वप्रकाशोंकाआश्रयरूपहै ॥ ऐसे परमात्मादेवकूं जेअधिकारीपुरुष आपणाआत्मारूप करिकै साक्षात्कारकरैहैं ॥ तेअधिकारीपुरुष कृतकृत्यभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ हे संन्यासियो ॥ जोपरमात्मादेव ब्रह्मादिकईश्वरोंकाभीईश्वरहै॥ तथा जोपरमात्मादेव इंद्रादिकदेवतावोंकाभीदेवताहै॥तथा जोपरमात्मादेव मरीचिआदिकप्रजापतियोंकाभीपतिहै॥तथा जोपरमात्मादेव भूरादिकचतुर्दशलोकोंकूं आपणीआज्ञाविषेचलावणेहाराहै ॥ ऐसेपरमात्मादेवकूं हमअधिकारीजन केवल वेदकेवचनोंतैंजानैहैं ॥शंका ॥

हेभगवन् ताअद्वितीयआत्मादेवकूं वेदकेवचन किसप्रकारबोधनकरै हैं ॥ समाधान ॥ हेसंन्यासियो॥ तापरमात्मादेवका यहस्थूलप्रपंच रूपकार्यभीकोईनहीं॥तथा तापरमात्मादेवका नेत्रादिकइंद्रिययुक्तसूक्ष्मशरीररूपकारणभीकोई है नहीं॥और यालोकविषे तापरमात्मादेव केसमान कोईभीपदार्थहैनहीं॥ जभी तापरमात्मादेवकेसमानभी कोईपदार्थनहींभया॥तभी तापरमात्मादेवतैंअधिक कौनपदार्थहोवैगा॥ और हेसंन्यासियो ॥ तापरमात्मादेवकी एकमायाशक्ति सर्वत्रप्रसिद्धहै॥सामायाभी प्रथम ज्ञानशक्ति क्रियाशक्तिकेभेदतैं दोप्रकारकीहो वै है ॥ तहां साज्ञानशक्ति प्रमाणसंशयादिकोंकेभेदकरिकै अनेकप्रकारकीहोवै है॥ इसीप्रकार साक्रियाशक्तिभी बलवीर्यादिकोंकेभेदक रिकै अनेकप्रकारकीहोवै है ॥ हेसंन्यासियो ॥ जैसे यालोकविषे पिता आपणेपुत्रादिकोंकापालनकरै है॥ याकारणतैं सोपिता तिनपुत्रा दिकोंका पतिहै ॥ और यालोकविषे महाराजा ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र याचारिवर्णोंकूं आपणेआपणेधर्ममर्यादाविषेचलावै है ॥ याकारणतैं सोमहाराजा तिनचारिवर्णोंका नियंताहै॥और यालोकविषे पर्वतादिकोंमें धूमकूंदेखिकै यालोकोंकूं अग्निकाज्ञानहोवैहै॥याका रणतैं सोधूम अग्निकेजनावणेहारालिंगहोवै है॥तैसे यापरमात्मादेवका कोईपतिहैनहीं॥तथा कोईनियंताहैनहीं तथा कोई लिंग है नहीं॥ तात्पर्यहै ॥ सोपरमात्मादेव अंतर्यामीरूपकरिकै सर्वजगत्कापालनकरै है ॥याकारणतैं तापरमात्मादेवका कोईपतिहैनहीं॥और सोपर मात्मादेव ब्रह्मादिकदेवतावोंकूंभी आपणीआज्ञाविषेचलावै है॥याकारणतैं तापरमात्मादेवका कोईनियंताभीनहींहै॥और सोपरमात्मादेव असंगनिर्गुणहै॥याकारणतैं तापरमात्मादेवका कोईजनावणेहारालिंगभीनहीं है ॥हेसंन्यासियो॥सोपरमात्मादेव सर्वजगत्काकारणहै॥तथा सो परमात्मादेव नेत्रादिकइंद्रियोंके सूर्यादिकदेवतावोंकाभी नियंताईश्वरहै॥याकारणतैं तापरमात्मादेवका कोईजनकहैनहीं॥तथा तापर मात्मादेवका कोईनियंताईश्वरभीनहीं है ॥ हेसंन्यासियो ॥ जैसे तंतुनाभनामाजंतु आपणेतंतुवोंकरिकै गृहकूंव्याप्तकरै है ॥ तैसे जोपरमात्मादेव मायाजन्यपंचभूतरूपतंतुवोंकरिकै अस्मदादिकजीवोंकूंव्याप्तकरिकै स्थितहुआहै ॥ ऐसा स्वयंज्योतिअद्वितीय परमात्मादेव हमअधिकारीजनोंकेचित्तविषे आपणेनिर्गुणस्वरूपकाप्रकाशकरै ॥ तात्पर्यह ॥ हमारेचित्तकीवृत्तिविषेआरूढहोइकै सो

परमात्मादेव हमारेअज्ञानकूंनिवृत्तकरै ॥ और हेसंन्यासियो ॥ जैसे आकाश सर्वत्रव्यापकहै ॥ तैसे यहस्वयंज्योतिपरमात्मादेवभी सर्व भूतोंविषेव्यापकहै ॥ और जैसे अग्निसर्वकाष्ठोंकेअंतर गुह्यहोइकैरहै है ॥ तैसे यहस्वयंज्योतिआत्मादेवभी सर्वप्राणियोंविषे गुह्यहोइके रहैहै ॥ और सोपरमात्मादेवही हमजीवोंकेप्रति पुण्यपापरूपकर्मोंके सुखदुःखरूपफलकूंदेवै है ॥ और सोपरमात्मादेवही सर्वजी वोंके शरीरोंविषे आत्मारूपकरिकैनिवासकरै है ॥ और सोपरमात्मादेवही चैतन्यरूपहै ॥ याकारणतैं सोपरमात्मादेव सर्वबुद्धिवृ त्तियोंका द्रष्टासाक्षीरूपहै हेसंन्यासियो ॥ तापरमात्मादेवविषे ॥ जोद्रष्टासाक्षीपणाहै ॥ सो भीबुद्धिआदिकउपाधियोंकेसंबंधतैंही है॥ वास्तवतैं तापरमात्मादेवविषे साक्षीपणाभीहैनहीं ॥ याकारणतैं सोपरमात्मादेव केवलनिर्गुणरूपहै ॥ तथा सर्वसंगतैंरहितहै ॥ हेसंन्या सियो ॥ स्वभावतैं प्रवृत्तहोणेमेंअसमर्थ जेयहअनेकजडपदार्थ हैं ॥ तिनसर्वजडपदार्थोंकूं जोचेतनपरमात्मादेव आपणेआपणेकार्यविषे स्वतंत्र प्रवृत्तकरै है ॥ तथा संपूर्णस्थूलशरीरोंका बीजरूपजोहिरण्यगर्भहै ॥ ताहिरण्यगर्भकूं जोपरमात्मादेव सूक्ष्मउपाधिविषे प्रवेश कारिकै उत्पन्नकरैहै॥और जोपरमात्मादेव एकही सर्वजगत्कीउत्पत्तिकरै है॥ ऐसे परमात्मादेवकूं जेअधिकारीपुरुष आपणाआत्मारूपक रिकैसाक्षात्कारकरै हैं तिनविद्वान्पुरुषोंकूंही सर्वदुःखोंकीनिवृत्तिपूर्वक मोक्षरूपनित्यसुखकीप्राप्तिहोवै है ॥ ताआत्मज्ञानतैंरहित इतरजी वोंकूं तानित्यसुखकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ यातैं मोक्षकीइच्छावालेअधिकारीजनोंनैं ता आत्मसाक्षात्कारकूं अवश्य करिकै संपादनकरणा ॥ हेसंन्यासियो ॥ यालोकविषे नित्यरूपकरिकैप्रसिद्ध जेआकाशादिकहैं॥तिनआकाशादिकनित्यपदार्थोंकाभी जोपरमात्मादेव नित्यरूप है ॥ तथा यालोकविषे चेतनरूपकरिकैप्रसिद्ध जेप्रमाताजीवहैं ॥ तिनचेतनप्रमातावोंकाभी जोपरमात्मादेव चेतनरूपहै॥ तात्पर्यह ॥ जिसपरमात्मादेवकी नित्यताकूं तथा चेतनताकूं अंगीकारकरिकै अनित्यजडरूपपदार्थभी नित्यचेतनरूपहोइकैप्रतीतहोवै हैं॥और जिस परमात्मादेवकेस्वरूपभूतसुखकूं अधिकारीजन ब्रह्मचर्यादिकसाधनोंकरिकैप्राप्तहोवैहैं॥ऐसापरमात्मादेवजभी याअधिकारीजनोंकूं आत्मा रूपकरिकैसाक्षात्कारहोवै है ॥ तभी याअधिकारीजनोंकी आविद्या तथा अविद्याजन्यकामक्रोधादिकसर्वपाश छेदनकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ हेसं

न्यासियो ॥ ऐसेआत्मादेवकेप्राप्तिके दोसाधनहोवै हैं ॥ एक तौ विचाररूपसांख्यसाधनहै और दूसरायोगसाधनहै ॥ तहा प्रथम विचार रूपसांख्यसाधनकूं तुम श्रवणकरो ॥ हेसंन्यासियो ॥ यहमुमुक्षुजन ताआत्मादेवकीप्राप्तिवासतै याप्रकारकाचिंतनकरै ॥ शास्त्रवेत्ताविद्वान्पुरुष ताअद्वितीयब्रह्मकूं मनवाणीकाअविषयकहै हैं ॥ ऐसेअद्वितीयब्रह्मकूं मैं अधिकारीजन किसप्रकारजानौंगा ॥ यातैं प्रथम मैं याप्रकारकाविचारकरौं ॥ सोब्रह्मरूपसुखमेरेकूं प्रतीतहोताहै ॥अथवा नहींप्रतीतहोताहै ॥ और ताब्रह्मरूपसुखकेप्रतीतहुएभी सोब्रह्मरूपसुख मेरेकूं प्रकाशरूपकरिकैप्रतीतहोवै है ॥ अथवा सोब्रह्मरूपसुख मेरेकूं अप्रकाशरूपकरिकैप्रतीतहोवै है ॥ अथवा सोब्रह्मरूपसुख मेरेकूंविपरीतरूपकरिकैप्रतीतहोवै है औरवास्तवतैं ताब्रह्मरूपसुखकूं प्रकाशरूपताहुएभी सोब्रह्मरूपसुख मेरेकूंघटादिकपदार्थोंकीन्याईं विषयरूपकरिकैप्रतीतहोवै है ॥ अथवा सोब्रह्मरूपसुख मेरेकूं अविषयरूपकरिकैप्रतीतहोवै है ॥ हेसंन्यासियो ॥ आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासतै सोमुमुक्षुजन याप्रकारकाविचारकरै ॥ परंतु याप्रकारकाविचार सोमुमुक्षुजन गुरुकेउपदेशतैंपूर्वनहींकरै ॥ किंतु श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरु जभी यामुमुक्षुजनकेप्रति तूंआनंदस्वरूपआत्मा ब्रह्मरूपही है याप्रकारकाउपदेशकरै॥ तभीही सोमुमुक्षुजन याप्रकारकाविचारकरै ॥ अबपूर्व कहेविकल्पोंविषे एकअर्थकोनिश्चयकरणेवासतै ताविचारका स्पष्टकरिकैनिरूपणकरै हैं ॥ हेसंन्यासियो॥ गुरुकेमुखतैं वेदांतशास्त्रकाश्रवण करिकै यहअधिकारीजन आपणेअसंभावनाकीनिवृत्तिवासतै याप्रकारका विचाररूपमननकरै ॥ श्रीगुरुनैं हमारेप्रति उपदेशकऱ्याजोआनंदस्वरूपआत्माहै ॥ सोआत्मास्वरूपआनंद चैतन्यरूपप्रकाशतैंभिन्नहै अथवाअभिन्नहै॥तहां सोआत्मास्वरूपआनंद चैतन्यरूपप्रकाशतैंभिन्नहै यहप्रथमपक्षतौसंभवैनहीं ॥ काहेतैं सोआनंद प्रकाशतैंभिन्नहै याप्रथमपक्षविषेभी यहविचारकऱ्याचाहिये ॥ आनंद प्रकाश यहदोनोंहीनित्यहैं ॥ अथवा तिनदोनोंविषे एकनित्यहै एकअनित्यहै ॥ तहां आनंद प्रकाश यहदोनोंनित्यहैं यहप्रथमपक्ष जोअंगीकार करिये तौ जैसे काल आकाश यादोनोंका परस्पर संयोग संबंध तथा समवायसंबंधहोवैनहीं ॥ तैसे निरवयवपरिपूर्णरूप जेआनंदप्रकाशहैं॥ तिनदोनोंकाभी परस्पर संयोगसंबंध तथा समवायसंबंध संभवैनहीं॥ तैसे आनंद प्रकाश यादोनोंका परस्पर तादात्म्यसंबंधभी

संभवैनहीं ॥ काहेतैं जिनदोपदार्थोंविषे एकपदार्थ कल्पितहोवै है ॥ तिनदोनोंपदार्थोंकाही परस्पर तादात्म्यसंबंधहोवै है ॥ जैसे घटरूपकार्यका तथा मृत्तिकारूपकारणका परस्पर तादात्म्यसंबंध हैं तहां घटरूपकार्यतौ कल्पित है ॥ और मृत्तिकारूपकारण सत्य है तैसे आनंदस्वरूपआत्माकौं तथा चैतन्यरूपप्रकाशका जोपरस्पर तादात्म्यसंबंध अंगीकारकरिये ॥ तौ तिनदोनोंविषेभी एककूंकल्पितमान्याचाहिये॥तहां आनंदस्वरूपआत्माकूंकल्पितमानणा यहवार्तातौसंभवैनहीं॥काहेतैं जोकदाचित् सोआनंदस्वरूपआत्मा कल्पितहोवैगा ॥ तौ कृतनाश ॥ अकृताभ्यागमरूप दोनोंदूषणोंकीप्राप्तिहोवैगी ॥ तहां करेहुएपुण्यपापरूपकर्मोंका जोफलकेभोगतैंविनाहीनाशहै ताकानामकृतनाशरूपदोषहै ॥ और न करेहुएपुण्यपापकर्मोंका जोसुखदुःखरूपफलकाभोगहै॥ताकानाम अकृताभ्यागमरूपदोषहै यातैं ताआनंदस्वरूपआत्माविषेतौ कल्पितरूपतासंभवैनहीं ॥ तैसे चैतन्यरूपप्रकाशविषेभीकल्पितरूपतासंभवैनहीं॥काहेतैं सोचैतन्यरूपप्रकाश जोकदाचित् कल्पितहोवै तौ ताप्रकाशतैंपूर्व ताआनंदस्वरूपआत्माकीसिद्धिनहींहोवैगी॥यातैं ताचैतन्यरूपप्रकाशविषेभी कल्पितरूपतासंभवैनहीं ॥ किंवा ॥ जैसे घटविषे रूपादिकगुणरहे हैं ॥ तैसे ताआनंदस्वरूपआत्माविषे सोचैतन्यरूपप्रकाश गुणरूपहोइकैरहै है ॥ याप्रकार जोअंगीकारकरिये ॥ सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं ॥ साक्षीचेताकेवलोनिर्गुणश्च ॥ याश्रुतिविषे ताआनंदस्वरूप आत्माकूं सर्वगुणोंतैंरहित निर्गुणकह्या है ॥ यातैं तानिर्गुणआत्माविषे प्रकाशरूपगुणसंभवैनहीं ॥ अब युक्तियोंकरिकैभी ताप्रकाशविषे गुणरूपता काखंडनकरै हैं ॥ सोप्रकाशरूपगुण निर्गुणआत्माविषेरहे है ॥ अथवा सगुणआत्माविषेरहै है॥तहां निर्गुणआत्मा विषे सोप्रकाशरूपगुण रहैहैयहप्रथमपक्ष जोअंगीकारकरिये॥तौ जैसे मेरेमुखविषेजिह्वानहींहै याप्रकारकावचन वदतोव्याघातदोषवालाहोवै है॥तैसे निर्गुणआत्मा विषे प्रकाशरूपगुणरहैहै याप्रकारकावचनभी वदतोव्याघातदोषवालाहोवैगा॥और सगुणआत्माविषे सोप्रकाशरूपगुणरहे है यहदूसरापक्ष जोअंगीकारकरिये ॥ तौ आत्माश्रय अन्योन्याश्रय चक्रिका अनवस्था याचारि दोषोंकीप्राप्तिहोवैगी ॥ काहेतैं गुणवाले पदार्थकानाम सगुण है ॥ तहां जासगुणआत्माविषे सोप्रकाशरूपगुणरहै है॥सोआत्मा तिसीप्रकाशरूपगुणकरिकैसगुणहुआ है॥अथवा तिसप्रकाशरू

पयुणतैंभिन्न किसीदूसरेगुणकरिकै सोआत्मा सगुणहुआ है ॥ तहांतिसीप्रकाशरूपगुणकरिकै सोआत्मा सगुणहुआ है यहप्रथमपक्ष जो अंगीकारकरिये॥ तौ ताप्रकाशरूपगुणकूं आपणीस्थितिविषे आपणी अपेक्षारूप आत्माश्रयदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और ताप्रकाशरूप गुणतैंभिन्न किसीदूसरेगुणकरिकै सगुणभावकूं प्राप्तभयाजोआत्मा है तासगुणआत्माविषे सोप्रकाशरूपगुणरहैहै यहदूसरापक्ष जोअंगीकार करिये ॥ तौ याकेविषेभी यहविचारकऱ्याचाहिये ॥ सोदूसरागुणभी निर्गुणआत्माविषेरहैहै॥अथवा सगुणआत्माविषे रहै है ॥ तहां सो दूसरागुण निर्गुणआत्माविषेरहै है ॥ यहप्रथमपक्ष जोअंगीकारकरिये॥तौ पूर्वकीन्याईं वदतोव्याघातदोषकीप्राप्तिहोवैगी॥और सोदूसरा गुणभी सगुणआत्माविषेरहे है यहदूसरापक्ष जोअंगीकारकरिये ॥ तौ याकेविषेभी यहविचारकऱ्या चाहिये ॥ तादूसरेगुणकरिकैसगुणभा वकूंप्राप्तभया जोआत्मा है ॥ तासगुण आत्माविषे सोदूसरागुणरहै है ॥ अथवा प्रथमप्रकाशरूपगुणकरिकै सगुणभावकूं प्राप्तभयाजोआ त्मा है ॥ तासगुणआत्माविषे सोदूसरा गुणरहै है॥अथवा किसीतीसरेगुणकरिकै सगुणभावकूं प्राप्तभयाजोआत्मा है तासगुणआत्माविषे सोदूसरागुणरहे है ॥ तहां तादूसरेगुणविशिष्टआत्माविषे सोदूसरागुणरहे है यहप्रथमपक्ष जोअंगीकारकरिये तौ पूर्वकी न्याईं आत्माश्रय दोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और ताप्रथमगुणविशिष्टआत्माविषे सोदूसरागुणरहै है ॥ यहदूसरापक्ष जोअंगीकारकरिये ॥ तौ प्रथमगुणविशिष्ट आत्माविषे सोदूसरागुणरहे है ॥ और ता दूसरेगुणविशिष्टआत्माविषे सो प्रथमगुणरहै है ॥ या प्रकारका अन्योन्याश्रयदोषहोवैगा ॥ और सोदूसरागुण किसीतिसरे गुणविशिष्ट आत्माविषेरहे है यहतीसरापक्ष जोअंगीकारकरिये ॥ तौ सोतीसरागुणभी जोआपणेक रिकैविशिष्टआत्माविषे आपरहैगा ॥ तौ आत्माश्रय दोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और सोतीसरागुण जोद्वितीयगुण विशिष्टआत्माविषे रहैगा ॥ तौ अन्योन्याश्रयदोषकी प्राप्तिहोवैगी ॥ और सोतीसरागुण जो प्रथमगुणविशिष्टआत्माविषेरहेगा तौ ॥ सोतीसरागुण प्रथम गुणविशिष्टआत्माविषेरहै है ॥ और सोप्रथमगुण दूसरेगुणविशिष्टआत्माविषेरहे है॥और सोदूसरागुण तीसरेगुणविशिष्टआत्माविषेरहे है॥ और सोतीसरागुण प्रथमगुणविशिष्टआत्माविषेरहे है ॥ याप्रकार चक्रकीन्याईं भ्रमणरूप चक्रिकादोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और सोतीसरा

॥ ६९ ॥

गुण चतुर्थगुणविशिष्टआत्मा विषेरहे है॥और सोचतुर्थगुण पंचमगुणविशिष्टआत्माविषेरहै है ॥याप्रकार आगेआगेगुणोंके अंगीकारकरणे तैं अनवस्थादोषकी प्राप्तिहोवैगी ॥ याकारणतैं सोचैतन्यरूपप्रकाश गुणरूपकरिकै आत्माविषेरहैनहीं ॥ किंवा ॥ आत्मस्वरूपआनंद तथा चैतन्यरूप प्रकाश यादोनोंकेमध्यविषे जोकदाचित् एकविषेनित्यपणाहोवै अथवा अनित्यपणाहोवै ॥ तौ तिनदोनोंका परस्परसंबं धही संभवैनहीं ॥ काहेतैं यालोकविषे योग्यपदार्थका योग्यपदार्थकेसाथही संबंधहोवै है ॥ योग्यपदार्थका अयोग्यपदार्थकेसाथ संबं धसंभवैनहीं ॥ यातैं तिनदोनोंके संबंधकीसिद्धिवासतै तिनदोनोंकूं नित्यहीअंगीकारकऱ्याचाहिये॥अथवा तिनदोनोंकूं अनित्यही अंगी कारकऱ्याहिये ॥ तहां आत्माकेअनित्यपणेविषे पूर्व कृतनाश अकृताभ्यागमरूप दोनोंदूषणोंकीप्राप्ति कथनकरिआये हैं ॥ तथा प्रका शकेअनित्यपणेविषेभीपूर्वदूषणकहिआये हैं ॥ और आनंदस्वरूपआत्मा तथाप्रकाश यादोनोंका जोपरस्पर संबंधही नहीं अंगी कारकरिये॥तौ ता आनन्दस्वरूपआत्माविषे सर्वदा प्रकाशका अभाव अंगीकारकरणाहोवैगा॥और ताआनंदस्वरूपआत्माविषे प्रकाश काअभावमानणा अत्यन्तविरुद्धहै॥काहेतैं ताआनंदस्वरूपआत्माविषे जोकदाचित् प्रकाशकाअभावहोवैहै ॥ तौ हमजीवोंकूं ताआनंद स्वरूपआत्माकी अत्यंतप्रियरूपकरिकैप्रतीति नहींहोणीचाहिये ॥ और हमसर्वजीवोंकूं सोआनन्दस्वरूपआत्मा अत्यंतप्रियरूपकरिकै प्रतीतहोवै है॥यातैं यहजान्याजावै है॥सोआत्मास्वरूपआनंद ताप्रकाशकेसाथ नित्यसंबंधवाला है॥अब आनंद प्रकाश या दोनोंकेअ भेदसिद्धकरणेवासतै प्रथम ताआनंदविषे आत्मरूपताकरिकै नित्यतासिद्धकरै है ॥ सोआनंद जोकदाचित् आत्मातैंभिन्नहोवैगा ॥ तौ ताआनंदतैंभिन्नहुआ सोआत्मा अत्यंतप्रियरूपनहींहोवैगा ॥ किंतु ताआनंदतैंभिन्नहुआ सो आत्मा दुःखरूपहोवैगा॥अथवा सकूचंदना दिकोंकीन्याईं सोआत्मा सुखकासाधनहोवैगा ॥ और जोपदार्थ दुःखरूपहोवै है॥ अथवा जोपदार्थ सुखकासाधनहोवै है ॥ तापदार्थविषे जीवोंकी निरतिशयप्रीतिहोवैनहीं॥यातैंताआत्माविषेभी जीवोंकी निरतिशयप्रीति नहींहोणीचाहिये॥और मेरा कदाचित्भीअभावनहीं होवै किंतु मैं सर्वदाविद्यमानहोवौं याप्रकारकीनिरतिशयप्रीति सर्वलोकोंकीआत्माविषे देखणेमैंआवै है॥यातैंयहजान्याजावै है ॥सोआनंद

आत्मारूपही है ॥ और आत्माकेउत्पत्तिकरणेहारा कोईकारणहैनहीं ॥ याकारणतैं सोआत्मा नित्यहै॥ ऐसे नित्यआत्मातैं सोआनंदअ
भिन्नहै ॥ याकारणतैं सोआनंदभी नित्यही होवैगा ॥ और ऐसे आत्मारूपनित्यआनंदकेसाथ अनित्यप्रकाशकासंबंध संभवैनहीं ॥ या
कारणतैं ताप्रकाशकूंभी नित्यहीअंगीकारकरणाहोवैगा॥और जोकदाचित् ताप्रकाशकूं अनित्यअंगीकारकरिये॥तौताअनित्यप्रकाशका
तानित्यआनंदकेसाथ संबंधहोवैगानहीं॥ और प्रकाशकेसंबंधतैंविना वस्तुकाभानहोवैनहीं याकारणतैं ताप्रकाशकेसंबंधतैंरहितहुआ सो
आत्मास्वरूपआनंद हमजीवोंकूं कदाचित्भी प्रतीतनहींहोवैगा॥ और यालोकविषे अज्ञातपदार्थविषे किसीभीजीवकीप्रीतिहोतीनहीं ॥
किंतु ज्ञातपदार्थोंविषेही सर्वजीवोंकीप्रीतिहोवैहै॥यातैं साआनंदस्वरूपआत्माकेअज्ञातहुए हमजीवोंकूं ताआनंदस्वरूपआत्माविषे परम
प्रीतिनहींहोवैगी ॥ और सर्वजीवोंकी आपणेआत्माविषे परमप्रीतिदेखणेमैंआवै है॥याकारणतैं ताप्रकाशकूंभी आत्मास्वरूपआनंदकी
न्याईं नित्यहीअंगीकारकऱ्याचाहिये ॥किंवा॥ जैसे घटादिकपदार्थोंकेज्ञान नेत्रादिककरणोंकरिकैजन्यहोवै हैं ॥ तैसे ताआत्मास्वरूपआ
नंदकाज्ञान किसीकरणकरिकै जन्यहोवैनहीं काहेतैं जोपदार्थ जिसवस्तुकेसाथ संबंधकूंप्राप्तहोइकै तावस्तुकेज्ञानकूंउत्पन्नकरै है ॥ सोप
दार्थ तावस्तुकेज्ञानविषे कारणहोवैहै॥जैसे नेत्रादिकइंद्रिय घटादिकपदार्थोंकेसाथ संयोगादिरूपसंबंधकूंप्राप्तहोइकै तावटादिकपदार्थोंके
ज्ञानकूँ उत्पन्नकरै हैं॥ याकारणतैं तेनेत्रादिकइंद्रिय तिनघटादिकोंकेज्ञानविषे करणहोवै हैं॥तैसे आत्मास्वरूपआनंदकेसाथ जोकदाचित्
किसी पदार्थकासंबंधहोताहोवै॥ तौ सोपदार्थ ता आत्मास्वरूपनित्यआनंदकेज्ञानविषे करणसंभवै॥ परंतु ताआत्मास्वरूपनित्यआनंद
केसाथ किसीअनित्यपदार्थकासंबंधसंभवैनहीं ॥ तहांश्रुति ॥ असंगोनाहिसज्जते ॥ अर्थयह ॥ यह आनंदस्वरूपआत्मा स्वभावतैंअसंग
है ॥ याकारणतैं यहआनंदस्वरूपआत्मा किसीपदार्थकेसाथ संबंधकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥१॥ यातैं ताआत्मास्वरूपआनंदकेज्ञानविषे किसी
अनात्मपदार्थकूं करणरूपतासंभवैनहीं ॥ शंका ॥ ताआत्मास्वरूपआनंदकेज्ञानविषे मनकूंही करणरूपताहै॥समाधान ताआनंदस्वरू
पआत्माकेसाक्षात्कारविषे जोकदाचित् मनकूंहीकरणरूपताहोवै॥तौ यालोकविषे जोजोकरणहोवै है ॥सो सो करणकिसीकर्त्ताकीअपेक्ष

अवश्यकरै है ॥ जैसे कुठारादिककरण पुरुषरूपकर्त्ताकीअपेक्षाकरै हैं ॥ तैसे सो मनरूपकरणभी किसी कर्त्ताकीअपेक्षा अवश्यकरैगा ॥
तहां ताज्ञानरूपक्रियाविषे आत्माकूं कर्त्तारूपताहै ॥ अथवा ताकरणरूपमनकूंही कर्त्तारूपताहै ॥ तहां ताज्ञानरूपक्रियाविषे आत्माकूं
कर्त्तारूपताहै यहप्रथमपक्ष जोअंगीकारकरिये सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं यालोकविषे जोपदार्थ जिसक्रियाकाकर्मरूपहोवै है ॥ सो पदार्थ
तिसीक्रियाविषे कर्त्तारूपहोवैनहीं जैसे दर्शनरूपक्रियाका कर्मरूपजोघटहै ॥ सोघट तादर्शनरूपक्रियाका कर्त्तारूपहोवैनहीं तैसे ताज्ञान
रूपक्रियाका कर्मरूपजोआनंदस्वरूपआत्मा हैं सोआनंदस्वरूपआत्मा ताज्ञानरूपक्रियाविषे कर्त्तारूपहोवैनहीं ॥ और ताज्ञानरूप
क्रिया विषे तामनरूपकरणकूंही कर्त्तारूपता है यह दूसरापक्ष जो अंगीकारकरिये सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं यालोकविषे जो पदार्थ
जिसकालविषे जिसक्रियाकेप्रति करणरूपहोवै है ॥ सोपदार्थ तिसीकालविषे तिसीक्रियाकेप्रति कर्त्तारूपहोवै नहीं ॥ जैसे छेदनरूप
क्रियाकाकरणरूप जोकुठार है ॥ सो कुठार तिसीछेदनरूपक्रियाका कर्त्तारूपहोवैनहीं ॥ तैसे ताज्ञानरूपक्रियाविषे करणरूपजो
मन है ॥ सो मन तिसीज्ञानरूपक्रियाविषे कर्त्तारूपहोइसकैनहीं ॥ और ताज्ञानरूपक्रियाविषे जो मनकूं कर्त्तामानिये ॥ तौ
ताज्ञानरूपक्रियाविषे तामनकूं करणरूपतानहीं होवैगी ॥ तात्पर्य यह ॥ कर्त्ता उपकार्य होवै है ॥ और करण उपकारक होवै
है ॥ तहां जिसऊपरउपकारकरिये ताकानाम उपकार्य होवै है ॥ और जोउपकारकरै ताकानाम उपकारकहोवै है ॥ सो उपकार्यपणा
तथाउपकारकपणा एककालविषे एकवस्तुमेंरहै नहीं ॥ किंवा ॥ मेरामन इसवस्तुविषे गयाथा ॥ और मेरामन यावस्तुकेप्रातिकीइच्छा
करै है॥यासर्वलोकोंकेअनुभवतैं तामनविषेभी ज्ञानकीविषयता प्रतीतहोवै है॥ ताकेविषे यहविचारकऱ्याचाहिये ॥ तामनकूंविषयकरणे
हारेज्ञानविषे कौनकरणहै ॥ नेत्रादिकइंद्रिय करणहैं ॥ अथवा मनकरण है॥तहां प्रथमपक्षतौसंभवैनहीं ॥ काहेतैं नेत्रादिकइंद्रियतौ बाह्य
स्थूलघटादिकपदार्थोंकेज्ञानविषेहीकरणहोवै है ॥ अंतरपदार्थकेज्ञानविषे तिननेत्रादिकोंकूंकरणरूपतासंभवैनहीं ॥ और तामनकूंविषयक
रणहारेज्ञानविषे तामनकूंहींकरणताहै यहदूसरापक्षभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं सोमन ताज्ञानरूपक्रियाकाकर्मरूपहै ॥ यातैं ताज्ञानरूपक्रिया

विषे तिसीमनकूं करणरूपतासंभवैनहीं ॥ जोकदाचित् कर्मकूंभी करणरूपताहोवै ॥ तौ घटकेज्ञानविषे ताघटकूंभी करणरूपताहोणीचाहिये ॥ और घटादिकपदार्थोंकेज्ञानविषे घटादिकपदार्थोंकूं करणरूपताहैनहीं ॥ किंतु तिनघटादिकोंकेज्ञानविषे नेत्रादिकइंद्रियोंकूंहीकरणरूपताहै ॥ यातैं तामनकूंविषयकरणेहाराज्ञान किसीकरणकरिकैजन्यनहीं है ॥ किंतु सोज्ञान नित्यआत्मास्वरूपही है ॥ यातैं यह अर्थसिद्धभया ॥ आनंद प्रकाश आत्मा यातीनोंपदोंका एकहीअर्थ है ॥ याप्रकारकेविचारकियेहुए आत्मारूपआनंद हमारेकूं प्रतीत होताहै अथवा नहीं प्रतीतहोताहै याप्रकारकासंशय संभवै नहीं ॥ अब आत्मास्वरूपआनंदके विपरीतभानपक्षका खंडनकरणेवास्तेताविपरीतभानकेकारणकाविचारकरै हैं ॥ सो आत्मास्वरूपआनंद किसनिमित्तकरिकै विपरीतप्रतीतहोवै है ॥ तहां ताआत्मारूपआनंतविषे जोआत्माकाभेदप्रतीतहोवै है ॥ तथा ज्ञानकीविषयताप्रतीतहोवै है ॥ तथा विषयोंकीप्राप्तिकरिकै जो जन्यताप्रतीतहोवै है ॥ यहतीनों ताआत्मास्वरूपआनंदविषे विपरीतरूपताहै ॥ काहेतैं जिसवस्तुका जोवास्तवस्वरूपहोवै ॥ सोवास्तवस्वरूप जिसज्ञानविषे नहींप्रतीतहोवै॥सोज्ञान विपरीतज्ञानहोवै है।जैसे रज्जुविषे यहसर्प है याप्रकारकाजोज्ञानहोवै है।ताज्ञानविषे रज्जुकावास्तवस्वरूप प्रतीतहोवैनहीं॥याकारणतैं सोसर्पज्ञान विपरीत ज्ञानरूपहै ॥ तैसे विषयभावतैंरहित जोआत्मास्वरूप नित्यआनंदहै॥ताआनंदविषे आत्माकेभेदकूंविषयकरणेहाराजोज्ञानहै ॥ तथा ताआनंदविषे विषयरूपताकूंविषयकरणेहाराजोज्ञानहै ॥ तथा ताआनंदविषे विषयजन्यरूपताकूंविषयकरणेहाराजोज्ञानहै ॥ यहसंपूर्णज्ञानविपरीतज्ञानरूपहैं ॥ और यालोकविषे जोजोविपरीज्ञानहोवै है ॥ सोसोविपरीतज्ञान मिथ्याहोवै है ॥ जैसे शुक्तिकाविषेरजत ज्ञान तथा रज्जुविषेसर्पज्ञान विपरीतरूपहोणेतैं मिथ्यारूप हैं ॥ तैसे आत्मास्वरूपआनंदविषे भेदकूं तथाविषयताकूं तथाजन्यताकूं विषयकरणेहारे तेविपरीतज्ञानभी मिथ्याहींहोवैंगे ॥ और यालोकविषे कार्यकेसमानस्वभाववाला पदार्थही कारणहोवै है ॥ जैसे घटकेसमानस्वभाववालीमृत्तिका ताघटकाकारणहोवै है ॥ तैसे तिनमिथ्याज्ञानोंका कोईकारणभी मिथ्याहीअंगीकारकऱ्याचाहिये ॥ सत्यपदार्थविषे तिनमिथ्याज्ञानोंकीकारणतासंभवैनहीं ॥ और ऐसा मिथ्याकार मायातैंविना दूसरा

कोईहैनहीं ॥ यातैं सामिथ्यामायाही तामिथ्याविपरीतज्ञानोंकाकारण है ॥ याप्रकारकेविचारकानाम सांख्य है ॥ हेसंन्यासियो ॥ जे अधिकारीपुरुष याविचाररूपसांख्यकूंकरै हैं ॥ तिनअधिकारीपुरुषोंकूं कार्यसहितमायातैंभिन्नरूपकरिकै स्वयंज्योतिआनंदस्वरूपआत्माका साक्षात्कारहोवै है ॥ इतनेकरिकै सांख्यरूपउपायकानिरूपणकऱ्या ॥ अब योगरूपउपायकानिरूपणकरै हैं ॥ हे संन्यासियो ॥ यज्ञदानादिरूप जे बाह्यकर्म हैं ॥ तथा उपासनारूप जे अंतरकर्म हैं ॥ यादोनोंप्रकारकेकर्मोंकानाम योग है ॥ तानिष्कामकर्मरूपयोगकरिकै जभी याअधिकारीपुरुषोंकाअंतःकरण शुद्धहोवै है ॥ तभीही याअधिकारीपुरुषोंकूं स्वयंज्योतिआत्माकासाक्षात्कारहोवै है ॥ और तात्रह्मसाक्षात्कारकेउत्पन्नहुए याअधिकारीपुरुषोंकीअविद्या नाशहोवै है ॥ और ताअविद्यारूपकारणकेनाशहुए याअधिकारीपुरुषोंके कामक्रोधादिकसर्वपाशोंकानाशहोवै है॥इसप्रकार सोनिष्कामकर्मरूपयोगभी चित्तकीशुद्धिद्वारा आत्माकेप्राप्तिकाहीसाधनहै॥हेसंन्यासियो ॥ इसप्रकार सांख्ययोगरूपउपायकरिकै उत्पन्नभयाजोब्रह्मज्ञान है ॥ तात्रह्मज्ञानकरिकै याअधिकारीपुरुषोंकूं जोस्वयंज्योतिआत्मादेव प्रतीतहोवै है ॥ तास्वयंज्योतिआत्मादेवकूं यहसूर्यचंद्रमादिकतेज प्रकाशकरिसकैनहीं ॥ किंतु उलटा सोस्वयंज्योतिआत्मादेवही तिनसूर्यचंद्रमादिकतेजोंकूं प्रकाशकरै है ॥तात्पर्ययह॥ सूर्यचंद्रमादिकबाह्यतेजोंकूं प्रकाशकरणेहारा जोचिदाभाससयुक्तअंतःकरणकीवृत्तिरूपज्ञान है॥सोवृत्तिरूपज्ञानभी तास्वयंज्योतिआत्मादेवकूं प्रकाशकरिसकैनहीं॥किंतु सोस्वयंज्योतिआत्माहीं तावृत्तिज्ञानकूंप्रकाशकरै है ॥ जभीसोवृत्तिरूपज्ञानभी तास्वयंज्योतिआत्माकूं प्रकाशनहींकरिसकै है ॥ तभी तावृत्तिज्ञानकेविषय सूर्यचंद्रमादिकबाह्यजडतेज तास्वयंज्योतिआत्माकूं प्रकाशनहींकरिसकै हैं याकेविषेक्याकहणाहै ॥ हेसंन्यासियो ॥ ऐसास्वयंज्योतिपरमात्मादेवही सर्वजीवोंकेहृदयदेशविषेस्थितहै ॥ तथा सोपरमात्मादेवही तीनलोकोंकेअंतरास्थितहै॥और सोपरमात्मादेवही आत्मसाक्षात्कारकरिकै कार्यसहितअविद्याकूंनाशकरताहुआ हंसयानामकूंप्राप्तहोवै है ॥ और सोपरमात्मादेवही वडवाग्निरूप है ॥ तथा सोपरमात्मादेवही जठराग्निरूप है ॥ तथा सोपरमात्मादेवही विराटरूप है ॥हेसंन्यासियो ॥ ऐसेपरमात्मादेवकूं जे अधिकारीपुरुष आपणा आत्मारूपकरिकै

साक्षात्कारकरै हैं ॥ तेअधिकारीपुरुष यासंसाररूपमृत्युकाउल्लंघनकरिकै ब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवै है॥ हेसंन्यासियो ॥ यालोकविषे मैंब्रह्मरूप हूं याप्रकारकेआत्मज्ञानतैंविना दूसराकोईउपाय ताब्रह्मभावकेप्राप्तिकाहैनहीं ॥ किंतु सोजीवब्रह्मकाअभेदज्ञानहीं ताब्रह्मभावकेप्राप्तिका साधन है॥यातैं ब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपमोक्षकीइच्छावालेमुमुक्षुजनोंनैं श्रवणादिकसाधनोंकरिकै ताब्रह्मज्ञानकूं अवश्यसंपादनकरणा ॥ हेसं न्यासियो ॥ श्रवणादिकसाधनोंकरिकै याअधिकारीपुरुषोंकूं जिसपरमात्मादेवकाज्ञानहोवै है ॥ सोपरमात्मादेवकैसाहै॥यासंपूर्णचरअचर जगत्कूं सामान्यरूपकरिकै तथा विशेषरूपकरिकै जानणेहारा है॥तथा सर्वजगत्काकारण है॥तथा कालकाभीकाल है॥तथा सर्वगुणों करिकैसंपन्न है और सोपरमात्मादेवही क्षेत्रज्ञरूपजीवका तथा मायाका तथा मायाकेसत्त्वादिकगुणोंका पतिरूपहै।तथा सोपरमात्मादेवहीं याजीवोंकेप्रति पुण्यपापरूपकर्मकेसुखदुःखरूपफलकीप्राप्तिकरै है॥तथा सोपरमात्मादेवहीयाजीवोंकेबंधमोक्षकाकारणहै।तथासोपरमात्मा देवही याजगत्केव्यवस्थाकूंकरै है ॥ तथा याजगत्कापालनकरै है ॥ हेसंन्यासियो ॥ प्रपंचरूपकरिकैदेख्याहुआ सोपरमात्मादेव याजीवों कूं बंधकीप्राप्तिकरै है।और जन्ममरणादिकविकारोंतैंरहितरूपकरिकै देख्याहुआसोपरमात्मादेव याजीवोंकूं मोक्षरूपअमृतकीप्राप्तिकरै है॥ और जोपरमात्मादेव आपणेज्ञानस्वरूपविषेस्थितहोइकै यासर्वजगत्कापालनकरै है।और जोपरमात्मादेव यासर्वजगत्कूंआपणी आज्ञाविषे चलावै है॥और जिसपरमात्मादेवकेऐश्वर्यतैं अधिकऐश्वर्यवाला कोईहैनहीं।ऐसापरमात्मादेवही याअधिकारीजीवोंनैं आपणाआत्मारूपकरि कै जानणेयोग्यहै।हेसंन्यासियो।मैंश्वेताश्वतरमुनि तापरमात्मादेवकी जिसप्रार्थनाकरिकै आत्मसाक्षात्कारकूंप्राप्तहोताभयाहूं।ताप्रार्थनाकूं तुम श्रवणकरो॥जोपरमात्मादेव पूर्व हिरण्यगर्भकूंउत्पन्नकरिकै ताहिरण्यगर्भकेप्रति चारिवेदोंसहितज्ञानकूं देताभया ॥तथा जोपरमात्मा देव केवलआत्मज्ञानकरिकैहींप्राप्तहोवै है ॥ ऐसेपरमात्मादेवकेशरणकूं मैंमुमुक्षुजन प्राप्तभयाहूँ॥कैसाहैसोपरमात्मादेव॥हस्तपादादिक अवयवोंतैंरहितहै॥तथा क्रियातैंरहितहै॥तथा शांतस्वरूपहै॥तथा सुखरूपहै॥तथा सर्वजीवोंकाआत्मारूपहै॥तथा सर्वदोषोंतैंरहितहै ॥ तथा कारणतैंरहितहै ॥ तथा मोक्षरूपअमृतकूं सेतुकीन्याईं धारणकरणेहारा है ॥ और जैसे काष्ठोंकूंदग्धकरिकै अग्नि आपणेस्वरूपविषे

॥ ६२ ॥

स्थितहोवै है ॥ तैसे कार्यसहितमायारूपउपाधितैंरहितहुआ सोपरमात्मादेव आपणेअद्वितीयरूपविषेस्थितहोवै है ॥ ऐसेअद्वितीयपरमा त्मादेवकेशरणकूं मैंमुमुक्षु प्राप्तभयाहूं॥ हेसंन्यासियो ॥ याप्रकार जभी हमनैं तापरमात्मादेवकीप्रार्थनाकरी॥ तभी सोपरमात्मादेव कृपा करिकै हमारेताईं मोक्षकाकारणरूपआत्मज्ञान देताभया जिसज्ञानकेप्रभावतैं मैंश्वेताश्वतरऋषि तापरमात्मादेवकूं आपणाआत्मारूपजा नताभयाहूं॥ तापरमात्मादेवकेज्ञानतैंविनायाजीवोंकूं कदाचित्भीमोक्षकीप्राप्तिहोवैनहीं॥अब आत्मज्ञानतैंविना मोक्षकेप्राप्तिकाअभाव निरूपणकरै हैं ॥ हेसंन्यासियो॥ यहदेहधारीजीव जोकदाचित् चर्मवत्न्याईं याआकाशकूं एकठाकरिलेवैगे॥ तौ यहदेहधारीजीव आत्म ज्ञानतैंविनाहीं मोक्षकूंप्राप्तहोवैगे॥ परंतु जैसे चर्मकीन्याईं सोआकाश एकठाहोइसकैनहीं॥ तैसे आत्मज्ञानतैंविना मोक्षकीप्राप्तिहोइसकै नहीं ॥ तहांश्रुति ॥ यदाचर्मवदाकाशं वेष्टयिष्यंतिमानवाः ॥ तदादेवमविज्ञाय दुःखस्यांतोभविष्यति॥ अर्थयह ॥ यहमनुष्य जिसकाल विषे चर्मकीन्याईं याआकाशकूंएकठाकरैगे ॥ तिसकालविषे परमात्मादेवकूंनजाणिकरिकै तिनमनुष्योंके जन्ममरणादिकदुःखोंकीनिवृ त्तिहोवैगी ॥ १ ॥ हेसंन्यासियो ॥ जोआनंदस्वरूपस्वयंज्योतिआत्मादेव हमनैं तुमारेप्रति उपदेशकऱ्याहै ॥ सोईहींआत्मादेव यामुमु क्षुजनोंनैं जानणेयोग्यहै ॥ तथा सोईहीपरमात्मादेव आपणीमायाशक्तिकरिकै यासर्वजगत्काउपादानकारणहोवै है ॥ तथा सोईहीपरमा त्मादेव तुमारा तथाहमारा तथा अन्यस्थावरजंगमरूपजगत्काआत्मारूपहै ॥ तथा सर्वभेदतैंरहितहै ॥ हेसंन्यासियो ॥ जैसे शुद्धआका शविषे नानाप्रकारकेमेघ कल्पितहैं ॥ तैसे यापरमात्मादेवविषेही पूर्वउक्तकालस्वभावादिककारण कल्पितहैं॥और जैसे भ्रांतपुरुषकूं आ काशविषे गंधर्वनगरप्रतीतहोवै है॥तैसे अविवेकीपुरुषोंकूं यापरमात्मादेवविषे मायासहितजगत् प्रतीतहोवै है॥हेसंन्यासियो॥जैसे स्वप्नअ वस्थाविषे यहएकहीस्वप्नद्रष्टापुरुष अनेकरूपहोवै है ॥तैसे यह एकहीपरमात्मादेव अविद्यादोषकारिकै अनेकरूपहोवै है॥और जैसे सुषुप्ति अवस्थाविषे नेत्रादिकइंद्रियोंके तथा रूपादिकविषयोंके लयहुए यहसंसारीजीव किंचित्मात्रभी द्वैतप्रपंचकूंदेखतानहीं॥तैसे मोक्षअवस्था विषे आत्मज्ञानकरिकै कार्यसहित अविद्याकेनाशहुए यहविद्वान्पुरुष किंचित्मात्रभी द्वैतप्रंचकूंदेखतानहीं॥और जैसे जाग्रत्अवस्थाके

प्राप्तहुए याजीवोंके सर्वस्वप्रपदार्थोंकालयहोवे है ॥ तैसे आनंदस्वरूपआत्माकेज्ञानतैं याअधिकारीजनोंका संपूर्णप्रपंच लयभावकूंप्राप्तहो वेहै ऐसेआत्मज्ञानकूं याअधिकारीजनोंनैं अवश्यसंपादनकरणा ॥ अब ताआत्मज्ञानकेदुर्लभताका निरूपणकरै हैं॥हेसंन्यासियो ॥ जो हमनैं तुमारेप्रति आत्मज्ञानकाउपदेशकऱ्या है॥सोआत्मज्ञान अत्यंतदुर्लभहै॥काहेतैं याआत्मज्ञानकीप्राप्तिवासतै मनुष्योंनैं नानाप्रका रकेतपकरिकै प्रसन्नकरेजेदेवताहैं ॥ तेदेवताभी तिनमनुष्योंकेताईं याआत्मज्ञानकाउपदेशकरतेनहीं ॥किंतु तेदेवता तिनमनुष्योंकेताईं दूसरेअनेकप्रकारकेंवरदेवे हैं ॥ और जेमनुष्य तिनवरोंकरिकेसंतोषकूंनहींप्राप्तहोवे हैं ॥ तिनअधिकारीजनोंकेप्रति सत्यपाशकरिकैबांधे हुए तेदेवता याआत्मज्ञानकाउपदेशकरै हैं ॥ जैसे पूर्व सत्यपाशकरिकैबांध्याहुआयमराजा नाचिकेताकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरताभ याहै ॥ यावार्ताकूं तुमसंन्यासिभी तपकेप्रभावतैं जानतेहीहो॥शंका॥हेभगवन् यहब्रह्मविद्या जोऐसीदुर्लभहै ॥ तौ सभाविषेस्थितहोइकै आपने साब्रह्मविद्या हमारेप्रति किसवासतैउपदेशकरी है ॥ समाधान ॥ हेसंन्यासियो ॥ यहब्रह्मविद्या यद्यपिअत्यंतदुर्लभहै ॥ तथापि जिसविचारकरिकै हमने यहदुर्लभब्रह्मविद्या तुमारेप्रति उपदेशकरी है॥ ताविचारकूं तुम श्रवणकरो ॥ यहअतिथिसंन्यासि हमारेआश्रम विषेचलिके आये हैं ॥ तथा ब्रह्मविद्याकेअधिकारी हैं॥जोमैंश्वेताश्वतरऋषि इनसंन्यासियोंकेताईं ब्रह्मविद्याकाउपदेश नहींकरौंगा ॥ तो हमारेतैंविना दूसराकौनपुरुष इनसंन्यासियोंकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरैगा॥किंतु मेरेसमानब्रह्मवेत्तापणा दूसरेकिसीविषे निश्चितनहीं है ॥ और दध्यङ्आथर्वणऋषिकीन्याईं मैंश्वेताश्वतरनामाऋषिभी सर्वजीवोंकेउपकारवासतै प्रवृत्तभयाहूं ॥ यातैं इनअतिथिसंन्यासि योंतैं ब्रह्मविद्यागुह्यरासणी हमारेकूंयोग्यनहीं है ॥ हे संन्यासियो ॥ या प्रकारका आपणेमनविषेविचारकरिकै मैंश्वेताश्वतरमुनि तुमसंन्यासियोंकेप्रति यहगुह्यब्रह्मविद्या उपदेशकरताभयाहूं ॥किंवा॥ जोविद्वान्पुरुष अधिकारीजनोंकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरै है॥ ताविद्वान्पुरुषऊपर परमेश्वरभी प्रसन्नहोवै है ॥ याकारणतैंभी मैंश्वेताश्वतरनामाऋषि तुमसंन्यासियोंकेप्रति यागुह्यब्रह्मविद्याका उपदेश करताभयाहूं यहवार्ता गीताविषे श्रीकृष्णभगवान्नैंभी अर्ज्जुनकेप्रति कही है ॥ तहां श्लोक ॥ य इदं परमंगुह्यं मद्भक्तेष्वभिधा

स्यति ॥ भक्तिं मयि परांकृत्वा मामेवैष्यत्यसंशयः ॥ १ ॥ नचतस्मान्मनुष्येषु कश्चिन्मेप्रियकृत्तमः ॥ भवितानचमेतस्मादन्यःप्रि यतरोभुवि ॥ २ ॥ अर्थयह ॥ हेअर्ज्जुन तुमारेप्रति जोहमनैं यहपरमगुह्यआत्मज्ञान उपदेशकऱ्याहै ॥ ताआत्मज्ञानकूं जोविद्वान्पुरुष मेरेभक्तोंविषेदेवैगा ॥ सोविद्वान्पुरुष मैंपरमेश्वरविषे परमभक्तिकूंकरिकै मेरेविषेही प्राप्तहोवैगा ॥ याकेविषे किंचित्मात्रभीतुमनैं संशय नहींकरणा ॥ १ ॥ ऐसे विद्वान्पुरुषतैंविना यामनुष्योंविषे कोईभीमनुष्य हमारेप्रसन्नताकरणेहारानहीं ॥ किंतु सोआत्मज्ञानकाउपदेश करणेहारा विद्वान्पुरुषही हमारेप्रसन्नताकरणेहाराहै ॥ और मैंपरमेश्वरकूंभी ताविद्वान्पुरुषतैंभिन्नकोईपदार्थ यालोकविषे प्रियनहीं है ॥ किंतु सोब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुषही हमारेकूं अत्यंतप्रियहै ॥ २ ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य॥सोश्वेताश्वतरनामाऋषि तिनसंन्यासियोंकेप्रति ताब्रह्मविद्याकाउपदेशकरिकै मौनकूंधारणकरिकै स्थितहोताभया ॥ हेशिष्य ॥ वेदवेदांगविद्याकेतात्पर्यकूंजानणेहारा सोश्वेताश्व तरनामाऋषि तपकेप्रभावतैं तथा ईश्वरकेप्रसादतैं आत्मसाक्षात्कारकूंप्राप्तहोइके आपणे आश्रमविषे अति आश्रमीसंन्यासियोंके प्रति आत्मज्ञानका उपदेशकरताभया ॥ हेशिष्य ॥ यालोकविषे ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ यातीनआश्रमियोंतैं परमहंससंन्यासि अधिक होवे हैं ॥ याकारणतैं श्रुतिविषे तिनपरमहंससंन्यासियोंकूं अतिआश्रमीकह्या है ऐसे अतिआश्रमीसंन्यासि ताश्वेताश्व तरमुनितैं ब्रह्मात्मज्ञानकूं प्राप्तहोतेभये ॥ केसाहैसोब्रह्मात्मज्ञान ॥ अत्यंतपवित्रहै ॥ तथा ब्रह्मभावकीप्राप्ति कार्यसहितअज्ञानकीनिवृत्ति रूप मोक्षकेप्राप्तिकाकारणहै॥ तथा मोक्षकीइच्छावाले मुनिलोकोंकरिकै सेवितहै॥ पुनःकेसाहै सो आत्मज्ञान ॥ वेदांतोंविषे गुह्यरूपक रिकैकथनकऱ्याहै ॥ और इहांप्रसंगविषे पुराकल्परूपकरिकैकथनकऱ्याहै॥ तहांजिसवेदकेभागविषे पूर्ववृद्धपुरुषोंके सृष्टिआदिकव्यवहार कथनकरिये ॥ तावेदभागकानाम पुराकल्पहै ॥ जैसे इहांप्रसंगविषे पूर्वब्रह्मवेत्तावृद्धब्राह्मणोंका जगत्केकारणकाविचारकरणेवासतै स मागमभयाहै याकानाम पुराकल्पहै ॥ हेशिष्य ॥जिसविचारकूंमनविषेराखिकै सोश्वेताश्वतरनामाऋषि मौनकूंधारणकरताभया ॥ तावि चारकूं तुं श्रवणकर ॥ जोपुरुष शमदमादिकसाधनोंतैं रहितहोवै ॥ तथा जिसपुरुषकाचित्त विषयोंविषेआसक्तहोवै ॥ ऐसाविषयआसक्त

पुरुष जोकदाचित् किसीदयालुब्रह्मवेत्तागुरुकेआगे ब्रह्मविद्याकेप्राप्तिकीप्रार्थनाभीकरै ॥ तौभी तात्रह्मवेत्तागुरुनैं ताविषयआसक्तपुरुषकेप्रति तात्रह्मविद्याकाउपदेश कदाचित्भीनहींकरणा ॥ और सोपुरुष जोकदाचित् शमदमादिकसाधनोंकरिकैसंपन्न ता ब्रह्मविद्याकाअधिकारीभीहोवै ॥ परंतु सोअधिकारीपुरुष पुत्रभावतैं तथा शिष्यभावतैं रहितहोवै ॥ तौभी तात्रह्मवेत्तागुरुनैं तापुत्रशिष्यभावतैंरहितपुरुषकेप्रति याब्रह्मविद्याकाउपदेश कदाचित्भी नहींकरणा॥ और जोकदाचित् सोत्रह्मवेत्तागुरु किसीप्रतिज्ञादिकनिमित्तकरिकै परवशहुआ होवै ॥ तौभी तात्रह्मवेत्तागुरुनैं तागुरुभक्तितैंरहितअधिकारीकेप्रती तात्रह्मविद्याका यथार्थतात्पर्य कदाचित्भीनहींकहणा ॥ और जोपुरुष विवेक वैराग्य शमादिषट्संपत्ति मुमुक्षुता याचारिसाधनोंकरिकैयुक्तहोवै तथा प्रमादतैंरहितहोवै ॥ तथा जोपुरुष साक्षात्परमेश्वरकी न्याईं ब्रह्मवेत्तागुरुकूंदेखताहोवै ॥ ऐसेगुरुभक्तअधिकारीपुरुषकेप्रति सोत्रह्मवेत्तागुरु यात्रह्मविद्याकाउपदेशकरै और ऐसागुरुभक्तअधिकारीही तात्रह्मविद्याकेमोक्षरूपफलकूंप्राप्तहोवै है ॥ और जोपुरुष गुरुभक्तितैंरहितहै ॥ सोपुरुष जोकदाचित् किसीदैवयोगतैं तात्रह्मविद्याकाअध्ययनभीकरै है ॥ तौभी तागुरुभक्तितैंरहितपुरुषकूं तात्रह्मविद्याकेश्रवणकाफलहोवैनहीं ॥ उलटा तागुरुविमुखपुरुषकूं अनर्थकीहीप्राप्तिहोवै है ॥ यहवार्ता पुराणादिकशास्त्रोंविषे श्रीव्यासभगवान्आदिकोंनैंभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ गुरुंयोमानवैरन्यैः समंपश्यतिमोहतः ॥ नतस्यास्मिन्भवेल्लोके सुखंनैवपरत्रवा ॥ १ ॥ अर्थयह ॥ जोपुरुष आपणेप्रमादकरिकै ब्रह्मविद्याकेउपदेशकरणेहारेगुरुकूं दूसरेमनुष्योंके समानदेखताहै ॥ तिसपुरुषकूं इसलोकविषे तथा परलोकविषे किंचित्मात्रभी सुखकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ किंतुतापुरुषकूं दोनोंलोकविषे दुःखकीहीप्राप्तिहोवै है ॥ १ ॥ तहां श्लोक ॥ कर्मणामनसावाचा गुरुं योनावमन्यते ॥ सयातिनरकान्घोरान् महारौरवसंज्ञितान् ॥ २ ॥ अर्थयह ॥ जोपुरुष शरीरमनवाणीकरिकै ब्रह्मविद्याप्रदातागुरुकीअवज्ञाकरैहै ॥ सोपुरुष महान्घोररौरवनरकोंकूंप्राप्तहोवै है ॥ इहां आपणेशरीरकरिकै गुरुकूंखेदकीप्राप्तिकरणी याकानाम शरीरकृतअवज्ञाहै ॥ और आपणेमनविषे तागुरुकेदूषणोंकाचिंतनकरणा याकानाम मनकृतअवज्ञाहै ॥ और आपणीवाणीकरिकै तागुरुकीनिंदाकरणी याकानाम वाणीकृतअवज्ञाहै ॥ और

सहस्रवृश्चिककेसमानविषवाले अनेकजंतुवोंकरिकैपूर्णजोनरक है ताकानाम रौरवनरकहै ॥ ऐसेनरकविषे सोगुरुकीअवज्ञाकरणेहारापुरुष प्राप्तहोवै है ॥ २ ॥ तहांश्लोक ॥ एकाक्षरप्रदातारं गुरुं योनैवमन्यते॥ समूढोनरकं याति यावदाभूतसंप्लवं ॥ ३ ॥ अर्थयह ॥ ब्रह्मविद्याकेएकअक्षरमात्रकाभी उपदेशकरणेहाराजोगुरु है ॥ तागुरुकूं जोमूढपुरुष नहींमानै है ॥ सोमूढपुरुष याजगत्केप्रलयपर्यंत तारौरवनरकविषेनिवासकरै है ॥ तात्पर्ययह ॥ ब्रह्मविद्याकेएकअक्षरमात्रकाउपदेशकरणेहारेगुरुकूं नहींमानणेहारापुरुषभी जभी प्रलयपर्यंत नरकविषे निवासकरै है ॥ तभी संपूर्णब्रह्मविद्याका उपदेशकरणेहारेगुरुकूं नहींमानणेहारापुरुष अनेकप्रलयपर्यंत नरकविषेरहै है याकेविषे क्याकहणा है ॥ ३ ॥ तहांश्लोक ॥ कृतघ्नानांहियेलोका ये लोकाब्रह्मघातिनां ॥ मृत्वातानभिसंयाति गुरुद्रोहपरो नरः ॥४॥ अर्थयह ॥ करेहुए उपकारकूंनमानणेहारेजेकृतघ्न पुरुष हैं ॥ तथा ब्राह्मणोंकाहनन करणेहारे जे ब्रह्महत्यारेपुरुष हैं ॥ ते कृतघ्नपुरुष तथा ब्रह्महत्यारेपुरुष मरिकरिकै जिननरकादिकलोकोंकूं प्राप्तहोवै हैं ॥ तिसीनरकादिक लोकोंकूं यहगुरुद्रोहीपुरुष मरिकैप्राप्तहोवै है ॥ ४॥ तहां श्लोक॥ समहापातकी ज्ञेयस्तथोपपातकीत्यपि गत्वाकल्पसहस्रांते विष्ठायां जायते कृमिः ॥ ५ ॥ अर्थयह ॥ ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरणेहारा जो गुरु है ॥ तागुरुकेसाथ जोपुरुष द्रोहकरै है ॥ सोगुरुद्रोही पुरुषही महापातकी जानणा ॥ तथा उपपातकी जानणा ॥ इहां ब्रह्महत्या मदिरापान सुवर्णकीचोरी गुरुस्त्रीकेसाथ गमन इनपापकर्मोंकूं करणेहारे पुरुषकानाम महापातकी है ॥ और गोवधादिक पापकर्मोंकूं करणेहारेपुरुषकानाम उपपातकी है ॥ ऐसागुरुद्रोहीपुरुष रौरवादिकनरकोंकूंप्राप्तहोइकै तिननरकोंविषे सहस्र कल्पपर्यंत निवासकरै है ॥ तिसतैंअनंतर सोगुरुद्रोहीपुरुष विष्ठाविषेकृमिशरीरकूंप्राप्तहोवै है ॥ ५ ॥ किंवा ॥ शास्त्रविषे जितनीकीविद्या हैं॥तिनसर्वविद्यावोंकीप्राप्तिविषे यहगुरुहीकारण है ॥ याकारणतैं याअधिकारीपुरुषनैं महादेवकेपूजनसमान तागुरुकापूजनकरणा ॥किंवा॥ याअधिकारीपुरुषनैं शिवकेपूजनतैंभी गुरुकाअधिकपूजनकरणा ॥ तहांश्लोक ॥ शिवेरुष्टेगुरुस्त्राता गुरौरुष्टेशिवोनहि ॥ शिवादप्यऽधिकं तस्मात् गुरुं यत्नेन पूजयेत् ॥ ६ ॥ अर्थयह ॥ शिवभगवान्केक्रोधहुए याअधिकारी पुरुषकी गुरुरक्षाकरिसक ह ॥ और गुरुकेक्रोधहुए याअधिकारीपुरु

षोंकीशिव रक्षाकारिसकैनहीं ॥ याकारणतैं यहअधिकारीपुरुष शिवकेपूजनतैंभी गुरुकाअधिकपूजनकरै ॥ ६ ॥ किंवा ॥ जोपुरुष अभि
मानकरिकै आपणेगुरुकीअवज्ञाकरै है॥तापुरुषकेपापकर्मकीनिवृत्तिकरणेहारा कोईप्रायश्चित्त यालोकविषे है नहीं॥काहेतैं ब्रह्महत्यादिक
पापकर्मोंकेनिवृत्तिकरणेकेप्रायश्चित धर्मशास्त्रोंविषेदेखीते हैं ॥ परंतु गुरुद्रोहीपुरुषकेपापकर्मकीनिवृत्तिकाप्रायश्चित किसीशास्त्रविषेदे
खणेमैं आवतानहीं ॥ किंवा ॥ यालोकविषे अन्यपापीजीवोंतैं ब्रह्महत्यारापुरुष अधिकपापीहोवै है ॥ और ताब्रह्महत्यारेतैंभी करेहुएउप
कारकूंनहींमानणे हाराकृतघ्नपुरुष अधिकपापीहोवै है॥और ताकृतघ्नपुरुषतैंभी यहगुरुकेद्रोहकरणेहारापुरुष अधिकपापीहोवै है ॥काहेतैं
याअधिकारीजीवोंका गुरुहीमातापिता है ॥ तथा गुरुही देव है ॥ तथा गुरुही बंधु है ॥ तथा गुरुही मित्र है॥तथा गुरुही उपकारकरणे
हारासुहृद है ॥ ऐसेगुरुकेद्रोहकरणेहारापुरुष कृतघ्नपुरुषतैंअधिकपापी है याकेविषेकोईआश्चर्यनहीं है ॥ किंवा ॥ ब्रह्मवेदब्रह्मैवभवति ॥
याश्रुतिविषे ब्रह्मवेत्तापुरुषकूंब्रह्मरूपकह्या है ॥ यातैं यहअधिकारीजीव आत्मज्ञानकरिकै जिसब्रह्मकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ सोब्रह्म ब्रह्मवेत्तागुरुतैं
अभिन्न है ॥ यातैं ताब्रह्मवेत्तागुरुकी अवज्ञातैं ब्रह्मकीही अवज्ञाहोवै है ॥ और ॥ अयमात्मात्रह्म॥याश्रुतिविषे याआत्माका ब्रह्मकेसाथ
अभेदकह्या है ॥ यातैं ताब्रह्मकीअवज्ञातैं याआत्माकीहीअवज्ञाहोवै है ॥ और ऐतदात्म्यमिदंसर्वं इत्यादिकश्रुतियोंविषे यासंपूर्णजगत्
कूंआत्मारूपकह्या है ॥ यातैं ताआत्माकी अवज्ञातैं सर्वजगत्कीअवज्ञाहोवै है॥और सोअवज्ञारूपहनन शस्त्रकेहननतैंभी अत्यंतदारुण
है ॥ काहेतैं शस्त्रकरिकै हननकऱ्याहुआयहपुरुष क्षणमात्रदुःखकूंप्राप्तहोवै है ॥ कदाचित् नहींभीप्राप्तहोवै है ॥ और ताअवज्ञारूपशस्त्र
करिकैहननकऱ्याहुआयहपुरुष स्मृतिद्वारा मरणपर्यंतदुःखकूंप्राप्तहोवै है ॥ यातैं गुरुकेद्रोहकरिकै सर्वजगत्कूं हननकरणेहारा जो गुरु
द्रोहीपुरुष है ॥ तागुरुद्रोहीपुरुषकूं सुखकीप्राप्तिहोणी अत्यंतदुर्लभ है॥यातैं जिसअधिकारीपुरुषकूं आपणेकल्याणकरणेकीइच्छाहोवै ॥
तिसअधिकारीपुरुषनै शरीर मन वाणी करिकै ताब्रह्मवेत्तागुरुकी प्रसन्नताहीकरणी॥और जैसे यह अधिकारीपुरुषशिवादिकदेवतावोंके ॥ ६९ ॥
पूजनकूं सावधानहोइकैकरै है ॥ तैसेही याअधिकारीपुरुषनै सावधानहोइकै गुरुकापूजनकरणा ॥ और सोब्रह्मविद्याकाउपदेशकरणेहारा

गुरु याशिष्यकेप्रति जोशुभ अथवा अशुभ कार्यकहै ॥ ताशुभअशुभकार्यकूं ताशिष्यनैं प्रसन्नमनहोइकैकरणा॥ ताकार्यकेकरणेविषे ता
शिष्यनैंआपणेशरीरकेरक्षाकीचिंतानहींकरणी॥और ताशिष्यनैं आपणेकर्णोंकरिकै तागुरुकी सर्वदाकीर्तिहीश्रवणकरणी॥और ताशिष्य
नैं आपणेमुखकरिकैसर्वदा तागुरुकेस्तुतिकूंहींकरणा ॥ और ताशिष्यकेसमीप जोकोईदुष्टपुरुष ताब्रह्मवेत्तागुरुकेदोषोंकूंकथनकरै॥तो ता
शिष्यनैं तानिंदकदुष्टपुरुषका यथाशक्ति अपमानहीकरणा ॥ और तानिंदकदुष्टपुरुषोंके अपमानकरणेविषे जोकदाचित् सोशिष्य समर्थ
नहींहोवै ॥ तो जिसस्थानविषे तेदुष्टपुरुष निंदाकरतेहोवैं ॥ तिसस्थानतैं सोशिष्य दूरचल्याजावै ॥ और सोशिष्य जोकदाचित् तिस
स्थानतैं दूरजाणेविषे समर्थनहींहोवै ॥ तो सो बुद्धिमान्शिष्य तास्थानविषे आपणे कर्णोंकूंनिरोधकरिकैस्थितहोवै ॥ जाकरिकै आपणे
गुरुकीनिंदा श्रवणकरणेविषेनहींआवै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ जिसअधिकारीजनकूंआपणेसुखकी इच्छाहोवै॥ तिसअधिकारीपुरुषनैं
शिवादिकदेवतावोंकेभक्तिकीन्याईं रात्रिदिनविषे सावधानहोइकै आपणेगुरुकीभक्तिकरणी॥ता गुरुकीभक्तिकरिकै याअधिकारीपुरुषोंकूं
मोक्षरूपपुरुषार्थकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तहांश्रुति ॥ " यस्यदेवेपराभक्तिः यथादेवेतथागुरौ ॥ तस्यैतेकथिताह्यर्थाः प्रकाशंतेमहात्मनः ॥ "
अर्थयह ॥ जिसअधिकारीपुरुषकी परमात्मादेवविषे परमभक्तिहै ॥ और जैसीपरमात्मादेवविषे परमभक्ति गुरुविषे है ॥ तिसगुरुभक्त
पुरुषकूंही यह वेदांतशास्त्रकेपदार्थ बुद्धिविषेप्रकाशकरै हैं ॥ तथा तिसगुरुभक्तपुरुषकूंही धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष यहचारि
प्रकारकापुरुषार्थ प्राप्तहोवैहै ॥ किंवा ॥ जैसे ब्रह्मचर्य आश्रमविषे यह पुरुष ईश्वरकेआराधनविषे तथा वेदकेअध्ययनादिकोंविषे
सावधानहुआवर्त्तैहै ॥ तैसेहीयाअधिकारीपुरुषनैं गुरुकीभक्तिविषे सावधानरहणा॥काहेतैं यहअधिकारीपुरुष जोकदाचित् ब्रह्मचर्यादिक
साधनोंतैंभ्रष्टभीहोवै है ॥ तोभीताशिष्यऊपर जोगुरुकीप्रसन्नताहोवै है ॥ तो सोगुरु ताशिष्यकूं प्रायश्चित्तादिकउपायोंकरिकै शोधन
करिसकैहै॥और यहअधिकारीपुरुष जभी गुरुकीभक्तितैंभ्रष्टहोइकै तागुरुतैंविमुखहोवैहै॥तभी तागुरुविमुखपुरुषकेरक्षाकरणेहारा कोईभी
प्रायश्चित्तादिकउपायहैनहीं ॥ तहांश्लोक ॥ "गुरौविमुखतांयाते विमुखाःसर्वदेवताः ॥ भवंतिक्रियमाणंच पुण्यंपापंहिजायते ॥"अर्थयह॥
ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरणेहारा जोगुरुहै ॥ तागुरुतैं जभी यहपुरुष विमुखहोवै है ॥ तभी तागुरुविमुखपुरुषतैं संपूर्णदेवता विमुखहोवैहै ॥

और गुरुतैंविमुखहुआसोपुरुष जोकदाचित् पुण्यकर्मभीकरै है॥ तौ सोपुण्यकर्मभी पापरूपहीहोवै है ॥१॥ यातैं जिनअधिकारीपुरुषोंकूं धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष याचारप्रकारकेपुरुषार्थकेप्रातिकीइच्छाहोवै ॥ तिनअधिकारीपुरुषोंनैं सर्वप्रकारतैं देवताकीन्याईं गुरुकापूजनकरणा ॥ किंवा ॥ शमदमादिकगुणोंकरिकैयुक्त तथा आत्मसाक्षात्कारकरिकैयुक्त जेजीवन्मुक्तपरमहंससंन्यासी हैं ॥ तिनजीवन्मुक्तसंन्यासियोंनैंभी सर्वप्रकारकरिकै आपणेगुरुवोंकापूजनकरणा ॥ तहांस्मृति ॥ यावदायुस्त्रयोवेद्या वेदांतोगुरुरीश्वरः ॥ अर्थयह ॥ जबपर्यंत याविद्वान्पुरुषकाआयुपहोवै ॥ तबपर्यंत ताविद्वान्पुरुषकूंभी यहतीनों अवश्यवंदनाकरणेयोग्यहैं ॥ तहांएकतौ वेदांतशास्त्र ॥ और दूसरा वेदांतशास्त्रकेउपदेशकरणेहारागुरु ॥ और तीसराईश्वर ॥ तात्पर्ययह ॥ जभी विधिनिषेधतैंरहित जीवन्मुक्तसंन्यासियोंनैभी गुरुकापूजन अवश्यकरणेयोग्यहै ॥ तभी अन्यआश्रमवालेपुरुषोंनैं गुरुकाअवश्यपूजनकरणा याकेविषेक्याकहणा है ॥ यातैं हेसंन्यासियो ॥ तुम्हारेकूं हमारेउपदेकरिकै यद्यपि आत्माकासाक्षात्कार प्राप्तभयाहै ॥ तथापि आपणेआपणेगुरुवोंकेपूजनकरणेवासतै तुमसंन्यासियोंकूं तिनगुरुवोंकेसमीप अवश्यजाणाचाहिये ॥ हे शिष्य ! याप्रकारकेअभिप्रायकूंमनविषेराखिकै सोश्वेताश्वतरनामाऋषि मौनकूंधारणकरताभया ॥ और ताश्वेताश्वतरमुनिके अभिप्रायकूंजाणिकै तेविद्वान्संन्यासी ताश्वेताश्वतरमुनिकी यथायोग्यस्तुतिकरिकै आपणे आपणेगुरुवोंकेसमीपजातेभये ॥ हे शिष्य ! पूर्वब्रह्मवेत्ताब्राह्मणोंनैं जगत्केकारणकाविचारकरिकै तथा मायाशक्तिकेदर्शनकरिकै जाब्रह्मविद्या कथनकरीथी ॥ सोईहीब्रह्मविद्या सोश्वेताश्वतरमुनि संन्यासियोंकेप्रति उपदेशकरताभया ॥ और सोईहीब्रह्मविद्या हमनैं तुम्हारेप्रति उपदेशकरीहै ॥ अभीजिसअर्थकेश्रवणकरणेकी तुम्हारेकूंइच्छाहोवै ॥ सोअर्थ तुम हमारेसैंपूछो ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपाद शिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचिते प्राकृतआत्मपुराणे श्वेताश्वतरउपनिषत्सारार्थप्रकाशे श्वेताश्वतरसंन्यासिसंवादोनाम अष्टमोऽध्यायःसमाप्तः ॥ ८ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥

अ० ८

इति श्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषा आत्मपुराणेअष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

॥ ६६ ॥

॥ अथ स्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषाआत्मपुराणे नवमाध्यायप्रारंभः ॥

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशङ्कराचार्येभ्योनमः ॥ अथ नवमअध्यापारंभः ॥ तहां पूर्वअष्टमअध्यायविषे यजुर्वेदके श्वेताश्वतरनामाउपनिषदकेअर्थकानिरूपणकऱ्या ॥ अब नवमअध्यायविषे तिसीयजुर्वेदके कठवल्लीनामा उपनिषदकेअर्थकानिरूपणकरे हैं॥तहां पूर्वअष्टमअध्यायविषे जिनब्रह्मवेत्ताब्राह्मणोंनैं शुद्धब्रह्मतैंभिन्नकरिकै मायाकास्वरूपदेख्याथा ॥ तिनब्रह्मवेत्ताब्राह्मणोंकेविचारकूंश्रवणकरिकै परमआनंदकूंप्राप्तहुआ सोशिष्य पुनः आपणेगुरुकेप्रति याप्रकारकाप्रश्न करताभया॥शिष्य उवाच॥ हेभगवन् याआत्मपुराणकेप्रथमअध्यायविषे आपनैं ऋग्वेदके ऐतरेयउपनिषदका अर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ ताप्रथमअध्याय विषे आपनैं सनकादिकऋषियोंके तथा वामदेवादिकसात्त्विकीप्रजाके संवादकरिकै वैराग्यादिकसाधनोंयुक्त नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी ॥ और माताकेउदरविषेस्थितहोइकै वामदेवनैं जोआपणाअनुभव ताअधिकारीपुरुषोंकेप्रति कह्याथा॥ सोभी आपनैं प्रथमअध्यायविषे निरूपणकऱ्याथा ॥ और याआत्मपुराणके द्वितीयअध्यायविषे तथा तृतीयअध्यायविषे आपनैं तिसीऋग्वेदके कौषीतकी उपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा॥तहां द्वितीयअध्यायविषे आपनैं देवराजइंद्रके तथा प्रतर्दनराजाके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी।और तृतीयअध्यायविषे आपनैं अजातशत्रुराजाके तथा बालाकिब्राह्मणके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी॥ और याआत्मपुराणके चतुर्थ पंचम षष्ठ सप्तम याचारिअध्यायोंविषे आपनैं यजुर्वेदकेबृहदारण्यकउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा॥तहां चतुर्थअध्यायविषे आपनैं दोपुरुषवंश एकस्त्रीवंश यातीनवंशोंकेऋषियोंका परस्परभेद तथाअभेद निरूपणकऱ्याथा ॥और ताचतुर्थअध्यायविषे आपनैं दध्यङ्अथर्वणऋषिके तथा अश्विनीकुमारोंके तथा देवराजइंद्रके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी॥और अश्विनीकुमारोंकेप्रति ब्रह्मविद्याकेउपदेशकरणतैं तादेवराजइंद्रनैं जिसप्रकार तादध्यङ्ऋषिका मस्तकछेदनकऱ्याथा ॥ तथा ब्रह्मविद्याकेप्राप्तिकालोभकरिकै तिनअश्विनीकुमारोंनैं जिसप्रकार अश्वकेमस्तककूं दध्यङ्ऋषिकेग्रीवाऊपरराख्याथा॥तथा दध्यङ्ऋषिकेमस्तककूंअश्वकेग्रीवाऊपरराख्याथा॥यहसंपूर्णवार्त्ता आपनैं ताचतुर्थअध्यायविषेकथनकरीथी॥और याआत्मपुराणकेपंचमअध्या

यविषेजनकराजाकेयज्ञविषे याज्ञवल्क्यमुनिके तथा आश्वलादिकअनेकब्राह्मणोंके संवादकरिकै आपनैं नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी॥तथा याज्ञवल्क्यमुनिकेसाथ द्वेषकरणेहारेशाकल्यकामृत्यु आपनैं निरूपणकऱ्याथा॥ और याआत्मपुराणकेषष्ठेअध्यायविषे आपनैंयाज्ञवल्क्यमुनिके तथा जनकराजाके दोबार संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी॥ और याआत्मपुराणकेसप्तमअध्याय विषे आपनैं याज्ञवल्क्यमुनिके तथा मैत्रेयीस्त्रीके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या निरूपणकरीथी ॥ तथा तायाज्ञवल्क्यमुनिके संन्यासआश्रमका निरूपणकऱ्याथा ॥ और याआत्मपुराणकेअष्टमअध्यायविषे आपनैं श्वेताश्वेतरमुनिके तथा संन्यासियोंके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी॥हेभगवन्॥ताअष्टमअध्यायकेअन्तविषे आपनैं यह वार्ता कथनकरीथी॥ यहब्रह्मविद्या अत्यन्त दुर्लभहै ॥ काहेतैं यालोकविषे जेअधिकारीपुरुष ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिवासतैं नानाप्रकारकातपकरिकै जिनदेवतावोंकूं प्रसन्नकरे हैं॥तेदेवता भी तिनमनुष्योंकेप्रति ताब्रह्मविद्याकाउपदेशकरतेनहीं ॥ किंतु तेदेवता तिनमनुष्योंकेताईं ताब्रह्मविद्यातैंभिन्न अनेकप्रकारकेवरोंकूं देकै प्रसन्नकरे हैं॥और जेअधिकारीमनुष्य तिनवरोंकी प्राप्तिकरिकै प्रसन्ननहींहोवै हैं ॥ तिनअधिकारीमनुष्योंकेप्रति तेदेवता सत्यवचन रूपपाशकरिकैबांधेहुए ताब्रह्मविद्याकाउपदेशकरे हैं ॥ जैसे पूर्व अन्यवरोंकरिकैसंतोषकूंनहींप्राप्तभया जोनचिकेता है ॥ तानचिकेताके प्रति यमराजा ताब्रह्मविद्याकाउपदेशकरताभया ॥ यहवार्ता अष्टमअध्यायकेअंतविषे आपनैं कथनकरीथी॥ हेभगवन् याकेविषे हमारेकूं याअर्थकेश्रवणकरणेकीइच्छाहोवै है॥ सोयमराजा तानचिकेताके प्रति किसप्रकार ताब्रह्मविद्याकाउपदेशकरताभया॥और सोनचिकेता किसप्रकार तायमलोकविषेजाताभया॥ और सोब्रह्मविद्या किसप्रकारकीथी ॥ यहसंपूर्णवृत्तांत आप कृपाकरिकैहमारेप्रतिकहो ॥ इसप्रकार शिष्यकरिकैपूछाहुआ सोश्रीगुरु ताशिष्यकेप्रति वेदविषेकहीहुईकथाका उपदेशकरताभया ॥ श्रीगुरुरुवाच॥ हेशिष्य ॥ अरुणऋषिकापुत्र एकउद्दालकनामा ऋषि पूर्व होताभया॥कैसाथासोउद्दालकऋषि सर्व वेदवेत्ताब्राह्मणोंविषेश्रेष्ठथा॥और यालोकविषे अन्नदानकरिकै सोउद्दालक मुनि महान्कीर्तिकूंप्राप्तहोताभया।याकारणतैंही सर्वअर्थीजन ताउद्दालकमुनिकीइच्छाकरतेभये॥ऐसाउद्दालकमुनि एक

कालविषेविश्वजित्नामायज्ञकरणेकाआरंभकरताभया॥ ताविश्वजित्यज्ञाविषे सोउद्दालकमुनि ब्राह्मणोंकेताईं आपणेसर्वधनदेणेकासंकल्प करताभया॥और ताउद्दालकमुनिका एकनचिकेतानामापुत्रथा॥सोनचिकेता पंचवर्षकाबालकथा॥याकारणतैं तानाचिकेताविषे ताउद्दालकमुनिका बहुतस्नेहहोताभया॥और ताउद्दालकमुनिकेगृहविषे विशेषकारिकैतौ गौवांरूपहीधनथा॥यातैं सोउद्दालकमुनि तिनगौवोंके दोविभागकरताभया॥तहां दुग्धकेदेणेहारियां तथा यौवनअवस्थाकरिकैयुक्त जेश्रेष्ठगौवांतौं तानचिकेतापुत्रकेनामकीकरताभया॥और जेदुर्बलवृद्धगौवांथीं॥तेवृद्धगौवां आपणेनामकीकरिकै सोउद्दालकमुनि तिनवृद्ध गौवोंकूं ब्राह्मणोंके ताईं देणेकाआरंभकरताभया॥कैसीथींतेवृद्धगौवां॥अन्नकेभक्षणकरणेविषे तथा जलकेपानकरणेविषेभी जिनगौवोंकासामर्थ्यनहींथा॥ जभी अन्नजलकेभक्षणकरणेविषेभी तेगौवां समर्थनहींभई ॥ तभी ते गौवां गर्भकूंधारणकरैंगी तथा दुग्धकूंदेवैंगी याकेविषे क्याआशा है ॥ ऐसीदुर्बलवृद्धगौवोंकूं सोउद्दालकमुनि ब्राह्मणोंकेताईं देणेकाआरंभकरताभया ॥ और ताउद्दालकमुनिनैं जिसनचिकतापुत्रवासतै सुंदरसुंदरगौवां राखीथांथीं॥ सोनचिकेता स्वभावतैंही शास्त्रकेधर्मविषे श्रद्धावान्था ॥ तथा पंचवर्षकीअवस्थावालाथा ॥ सोनचिकेता ताउद्दालकपिताकेअंकविषे स्थितथा॥ और ताउद्दालकपिताके ताअनुचितव्यवहारकूंदेखिकै सोनचिकेता आपणेमनविषे याप्रकारकाविचारकरताभया ॥ यालोकविषे जोपुरुष जिसप्राणीकेताईं सुखकीप्राप्तिकरै है ॥ सोपुरुष इसलोकविषे तथापरलोकविषे तिसीसुखकूंप्राप्तहोवै है ॥ और जो पुरुष यालोकविषे किसीप्राणीकूंदुःखकीप्राप्तिकरै है॥ सोपुरुष इसलोकविषे तथापरलोकविषे तिसीदुःखकूंप्राप्तहोवै है ॥ यहसर्वशास्त्रोंकासिद्धां तहै॥और याहमारेपितानैं इनब्राह्मणोंकेताईं जिनवृद्धगौवोंकेदेणेकाउद्यमकऱ्या है ॥ तेवृद्धगौवाँ दुग्धादिकोंकीप्राप्तिकरिकै इनब्राह्मणोंकेसुखकाकारणनहीं हैं॥किंतु उलटा तेवृद्धगोवां आपणेभरणपोषणकीचिंताद्वारा इनब्राह्मणोंकेदुःखकाहीकारणहोवैंगी ॥ यातैंतिन वृद्धगौवोंकेदानदेणेकरिकै याब्राह्मणोंकूंदुःखकीप्राप्तिकरणेहारा यहहमारापिताभी दुःखकूंही प्राप्तहोवैगा ॥ काहेतैं यालोकविषे जोपुरुष ब्राह्मणोंकूंदुःखकीप्राप्तिकरै है ॥ सो पुरुष सुखतैंरहितभयकेदेणेहारेलोकोंकूंप्राप्तहोवै है ॥ याप्रकार श्रुतिविषेकथनकऱ्या है ॥ ॥ २ ॥

यातैं यहहमारापिता जैसे तिननरकादिकलोकोंकूंनहींप्राप्तहोवै ॥ तैसे मैंनचिकेता यापिताकूं तिनवृद्धगौवोंकेदानकरणेतैं निवारणकरौं ॥ किंवा ॥ याहमारेपितानैं हमारेवासतै जेसुंदरगौवांराख्या हैं ॥ तेसुंदरगौवां यहहमारापिता ब्राह्मणोंकेताईं किसवासतै नहींदेता ॥ और हमारेचिंताकरणेका यापिताकूं क्याप्रयोजन है ॥ किंवा ॥ यालोकविषे पुत्र स्त्री सुवर्ण गौ इसतैंआदिलैकेजितनाकीधन है॥सोधन जभी याधनीपुरुषके परलोकसुखकासाधनहोवै है ॥ तभीही धन यानामकरिकैकह्याजावै है ॥ और जाधनकरिकै याधनीपुरुषकूं परलोककेसुखकीप्राप्तिनहींहोवै है ॥ सोधनकेवल याधनीपुरुषकेबंधनकरणेहारी लोहेकीशृंखलारूपहै॥और मैंनचिकेता याउद्दालकमुनिकापुत्रहूं ॥ यातैं शास्त्रकीरीतिसैं मैंभी यापिताकाधनहूं॥किंवा॥जिसपुत्रकेदेखतेहुए तापिताकूं कोईनरकदुःखकेप्राप्तिकानिमित्त आइकैप्राप्तहोवै ॥ और सोपुत्र तानरकदुःखकीप्राप्तिकेनिमित्तकूं निवृत्तनहींकरै ॥ सोपुत्र तापिताकापुत्रनहीं है॥किंतु सोपुत्र तापिताकेविष्ठामूत्रादिकमलकेसमान है ॥ यातैं मैंनचिकेता यापिताकूं आपणेदानकरणेविषेप्रेरणाकरौं ॥ जोंमैंपुत्ररूपधनकूं आप किसब्राह्मणकेताईंदेवोंगे॥याप्रकारकावचन जभी मैंनचिकेता पिताकेप्रतिकहोंगा॥तभी ताहमारेवचनकूंश्रवणकरिकै यहहमारापिता हमारेवासतैंराखीहुई सुंदरगौवोंकेदानकरणेका हमारातात्पर्यजाणिकरिकै तिनसुंदरगौवोंकूं ब्राह्मणोंकेताईं देवैगा॥अथवा याहमारेअभिप्रायकूं यहपिता जोकदाचित् नहींजाणैगा ॥ तौभी ताहमारेवचनकूंश्रवणकरिकै यहपिता हमारेसैंपूछैगा ॥ तिसतैंअनंतर मैंनचिकेता यापिताकेप्रति आपणाअभिप्रायकहोंगा ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकाविचार आपणेमनविषेकरिकै सोनचिकेता ताउद्दालकमुनिकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया॥हेपिता जैसे यहगौवां आपकाधन हैं ॥ तैसेमैंपुत्रभी आपकाधनहूं ॥ यातैं मेरेकूं किसब्राह्मणकेताईं आप देवोगे ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकावचन जभी तानचिकेतानैं दो तीनवार पिताकेप्रतिकह्या ॥ तभी सोउद्दालकमुनि तानचिकेतापुत्रके पंडितपणेकेअभिमानकूंदेखिकै क्रोधवान् होताभया॥और क्रोधवान्होइकै सोउद्दालकमुनि तानचिकेतापुत्रकेप्रति याप्रकारकावचनकहताभया॥हेनचिकेता तूं हमारेस्नेहकानिरादरकरिकै आपणापंडितपणादिखावता है॥यातैं सर्वजगत्केनाशकरणेहारा जोमृत्युहै॥तामृत्युकेताईं मैं तुमारेकूंदेवोंगा॥हेशिष्य॥ताउद्दाल

कमुनिनें जभी यापप्रकारकावचनकह्या॥तभी सोनचिकेता तापिताकेवचनकूंश्रवणकरिकै आपणेमनविषे यापप्रकारकाविचारकरताभया ॥ जैसे यालोकविषे कोईविचारतैंरहिततामसीपुरुष आपणेकूंहीदुःखकीप्राप्तिकरणेहारावचन उच्चारणकरै है॥तैसे यहहमारापिता आपणेकूं दुःखकीप्राप्तिकरणेहारा यहवचन किसवासतैं कहताभयाहै ॥ काहेतैं पुत्रकेमरणेतैं जोपितामाताकूं दुःखहोवै है॥तादुःखकूं बुद्धिमान्पुरुष ब्रह्महत्याकाफलरूपकहे हैं॥और यहहमारापिताभी सर्वशास्त्रोंकेजानणेहारा बुद्धिमान्है॥यातैं याहमारेपितानें आपणेकूं आपेहीं तापुत्रमरणजन्यदुःखकीप्राप्ति किसवासतैंकरी ॥ यहहमारेकूं बहुतआश्चर्यहोवै है ॥किंवा॥ यापितानें जोहमारेकूंयमकेताईदिया है॥याकेविषे कोईहमारीहानिनहींहै॥किंतु उलटा हमारेकूंतौ पुण्यकीहीप्राप्तिहोवैगी॥काहेतैं यालोकविषे जोजोशरीर उत्पन्नभयाहै॥सोसोशरीर किसीकालपाइकै अवश्यमृत्युकेवशहोवैगा॥ऐसेअवश्यभावीअर्थविषे मैंनचिकेता जोकदाचित् पिताकीआज्ञाकूंपालनकरिकै तामृत्युकूं प्राप्तहोवौंगा ॥ तौ इसधर्मतैंपरे दूसराकोईधर्म हमारेकल्याणकाहेतुनहीं है॥किंतु यहपिताकेआज्ञाकापालनकरणाही हमारेकल्याणकाहेतु है ॥ परंतु हमारेवियोगकरिकै याहमारेपिताकूं महान्दुःखकीप्राप्तिहोवैगी॥और मेरेतैंविना यहहमारापिता एकक्षणमात्रभी नहींरहिसकैगा॥तापिताकेदुःखकाविचारकरिकै हमारेचित्तविषे महान्क्लेशहोवै है॥आपणेमृत्युकरिकै हमारेकूं किंचित्मात्रभीक्लेशहोतानहीं॥किंवा॥मैंनचिकेता जोकदाचित् यापिताकेदुःखकूंदेखिकै तायमलोकविषे नहींजावौंगा ॥ अथवा अश्रद्धापूर्वकजावौंगा ॥ तौ मैंनचिकेता अधमभावकूं प्राप्तहोवौंगा ॥तहांश्लोक॥ उत्तमश्चिंतितं कुर्यात् प्रोक्तकारीतुमध्यमः॥अधमोऽश्रद्धयाकुर्यात् प्रत्याख्याताथतद्वचः ॥ अर्थयह ॥यालोकविषे पुत्र तथाशिष्य तीनप्रकारकेहोवै हैं ॥ एकतौ उत्तमहोवै हैं॥और दूसरे मध्यमहोवै हैं॥और तीसरे अधमहोवै हैं ॥तहां पितानें तथागुरुनें आपणेमनविषेचिंतनकऱ्याजोकोईकार्य है॥तापिताके तथागुरुके ताअभिप्रायकूं किसीनिमित्ततैंजाणिकरिकै जेपुत्र तथाजेशिष्य विनाहीकहेतैं ताकार्यकूं श्रद्धापूर्वककरै हैं॥तेपुत्र तथातेशिष्य उत्तमकहेजावै हैं॥और तापितानें तथागुरुनें आपणेमुखसैंकह्याजोकार्य है ताकार्यकूं जेपुत्र तथाजेशिष्य श्रद्धापूर्वककरै हैं॥तेपुत्रतथातेशिष्यमध्यमकहेजावै हैं॥और पितानें तथागुरुनें आपणेमुखतैंकह्याजोकार्य है

ताकार्यकूं जेपुत्र तथाजेशिष्य अश्रद्धापूर्वककरै हैं॥अथवा ताकार्यकूंनहींकरै है॥ तेपुत्र तथातेशिष्य अधमकहेजावै हैं ॥१ ॥ यातैं यापिताकेजेबहुताशिष्यहैं तथा पुत्रहैं तिनसंपूर्णोंविषे मैंनचिकेता अधमभावकूंनहींप्राप्तहोवौं ॥ किंतु उत्तमभावकूं अथवा मध्यमभावकूं मैं प्राप्तहोवौं ॥ सोउत्तमभावकीप्राप्ति अथवा मध्यमभावकीप्राप्ति हमारेकूं यापिताकीआज्ञामानणेकरिकैहीहोवैगी ॥ किंवा ॥ यालोककापरित्यागकरिकै मैंनचिकेता जभी यमलोकविषेजावौंगा॥तभी ताहमारेजाणेकरिकै कोई धर्मराजाकाप्रयोजन सिद्धहोवैगानहीं॥तथा हमारेजाणेंकरिकै हमारेपिताकाभी कोईप्रयोजन सिद्धहोवैगानहीं॥उलटा हमारेवियोगकरिकै यह हमारापिता उन्मत्तअवस्थाकूंप्राप्तहोइकै परम दुःखकूं प्राप्तहोवैगा॥यातैं याहमारेपितानें जोहमारेकूं यमकेताईदेणेकावचनकह्याहै॥सो केवलआपणेदुःखकेवासतैंहीकह्याहै॥किंवा॥हमारेवियोगतैंअनंतर याहमारेपिताकूं जोदुःखहोवैगा सोतौहोवैगा ॥ परंतु अभीही याहमारेपिताकूं परमदुःखकीप्राप्तिभई है ॥ काहेतैं याहमारेपिताकामुख अभी परमग्लानिकूंप्राप्तहुआहै॥ और हमारेकूंदेखिकरिकै यहहमारापिता आपणेनेत्रोंतैं अश्रुओंकापरित्यागकरै है ॥ तथा यहहमारापिता स्नेहकरिकै वारंवार हमाराआलिंगनकरै है॥यातैं यहजान्याजावै है ॥ यहहमारापिता अभीहीदुःखकूंप्राप्तभयाहै ॥यातैं मैं नचिकेता यापिताकेप्रतिऐसाकोईयुक्तिपूर्वकवचनकहौं ॥ जाकरिकै यहहमारापिता हमारेस्नेहकापरित्यागकरै ॥ जोकदाचित् यहहमारापिता हमारेस्नेहकरिकै आपणेवचनकूंमिथ्याकरैगा ॥ तौ तामिथ्यावचनरूपपापतैं याहमारेपिताकूं नरककीप्राप्तिहोवैगी ॥ हेशिष्य ॥ यापप्रकारकाविचार आपणेमनविषेकरिकै सोनचिकेता ताउद्दालकपिताकेप्रति यापप्रकारकावचन कहताभया॥ नचिकेताउवाच॥हेपिता ॥ जन्मतैंलैकेअबपर्यंत आपने कोईमिथ्यावचनहींकह्या ॥ ऐसेआपणेसत्यपणेकूं तूंविचारकरिकैदेख और तुम्हारेकुलविषे जेपूर्व पितापितामहादिकवृद्धपुरुषहुएहैं ॥ जेतुम्हारेवृद्धपुरुष आपणेमृत्युकेप्राप्तहुएभी मिथ्यावचनकूंनहींकहतेभये हैं ॥ ऐसेआपणेवृद्धोंकीतरफ आपदेखो ॥ और तुमारेवंश्यकेतुल्य जेदध्यङ्अथर्वणादिक सत्यवादीब्राह्मणहुएहैं ॥ तथा अन्यभी जेक्षत्रियवैश्य सत्यवादीहुएहैं ॥ तिनसंपूर्णोंकीतरफ आपदेखो ॥ हेपिता ॥ ब्राह्मणकेरूपकूंधारणकरिकैप्राप्तभयाजोइंद्रहै ॥ ताइंद्रकेताईं कर्णराजा आपणीत्वचादेताभयाहै॥

और शिविनामाकोईधर्मात्मापुरुष शरणागतकपोतकीरक्षाकरणेवासतै आपणेशरीरकामांस देताभयाहै ॥ और जीमूतवाहननामा कोईधर्मात्मापुरुष शरणागतकीरक्षाकरणेवासतै किसीराक्षसकेताईं आपणाशरीर देताभया है ॥ और दधीचिनामाऋषि देवता ओंकेताईं आपणीअस्थियांदेताभया ॥ और दध्यङ्अथर्वणनामाऋषि आपणेसत्यवचनकरणेवासतै आपणेमस्तककाछेदनकराइकैभी अश्विनीकुमारोंकेताईं ब्रह्मविद्यादेताभयाहै ॥ और देवराजइंद्र आपणेवचनकेसत्यकरणेवासतैआपणेशत्रुप्रतर्दननराजाकेताईं ब्रह्मविद्यादेता भयाहै ॥ और याज्ञवल्क्यमुनि आपणेवचनकेसत्यकरणेवासतै जनकराजाकेताईं कामवरदेताभया है ॥ और दशरथराजा आपणेवचनके सत्यकरणेवासतै प्राणोंतैंभीअत्यंतप्रियरामचंद्रपुत्रकूं महाभयानकवनविषे भेजताभयाहै ॥ इसतैंआदिलैकेअन्यभी अनेकसत्यवादीजन आपणेवचनकेसत्यकरणेवासतै नानाप्रकारकेक्लेशोंकूं सहनकरतेभये हैं ॥ तिनसंपूर्णसत्यवादीजनोंकीतरफ आपदेखो ॥ किंवा॥ जैसे सूर्य भगवान् आम्रादिकवृक्षोंकेफलोंकूं परिपक्वकरै है ॥ तैसे यहकालभगवान् दिनदिनविषे याजीवोंकेशरीरोंकूं मृत्युकेसन्मुखकरै हैं ॥ और यहजीव पुण्यपापरूपकर्मोंकेवशतैं पुनःपुनःजन्ममरणकूंप्राप्तहोवै है॥ ऐसेक्षणभंगुरअनित्यशरीरोंकूंप्राप्तहोइकै याजीवोंनैं पापकर्मकासंपा दननहींकरणा ॥ किंतु पुण्यरूपसत्यकाहीसंपादनकरणा ॥ हेपिता ॥ जोतुम स्नेहके वशहोइकै हमारेकूं मृत्युकेताईं नहींदेवोगे ॥ तौभी किसीकालपाइकै मैं अवश्यमृत्युकूंप्राप्तहोवोंगा ॥ और आप तथायहअन्यप्राणीभी किसीकालपाइकै अवश्यमृत्युकूंप्राप्तहोवैंगे ॥ यातैं हे पिता हमारेस्नेहकापरित्यागकरिकै तुम हमारेकूं यमकेताईंदेकै आपणेवचनकूंसत्यकरो ॥ तावचनकेसत्यकरणे करिकै तुमारा तथाहमारा दोनोंकाकल्याणहोवैगा ॥ और हमारे स्नेहकेवशतैं जोतू आपणेवचनकूंमिथ्याकरैगा ॥ तौ तामिथ्यावचनजन्यपापतैं तुमारेकूंतौदुःखकीप्रा प्तिहोवैंगी और पिताकेआज्ञाकूंनमाननेकरिकै हमारेकूं अधमभावकीप्राप्तिहोवैंगी॥ हेशिष्य ॥याप्रकारकेवचन जभीतानचिकेतानैं उद्दालक पिताकेप्रतिकहे॥तभी सो उद्दालकमुनि आपणेवचनकेसत्यकरणेवासतै अत्यंतदुःखीहोइकै तानचिकेतापुत्रकूं यमलोकविषेभेजताभया ॥ और सोनचिकेता पिताकीभक्तिकेप्रभावतैं तथा आपणेतपकेप्रभावतैं तथा चित्तकीशुद्धिकेप्रभावतैंयास्थूलशरीरसहितही तायमलोककूं

जाताभया ॥ औरआगैतैं सोयमराजा किसीदूसरेग्रामविषेगयाथा॥ तावार्ताकूं यमकिंकरोंकेमुखतैंश्रवणकरिकै सोनचिकेता तायमराजाके द्वारऊपरतीनदिनपर्यंत उपवासकरताभया॥हेशिष्य॥जिसविचारकरिकै सोनचिकेता तीनदिनपर्यंत उपवासकरताभया॥ताविचारकूं तुम श्रवणकरो॥पितानैं हमारेकूं यमराजाकेताईं दियाहै॥सोयमराजा जोकदाचित् हमारेकूंनहीं अंगीकारकरैगा ॥ तौ हमारेपिताका वचन मि थ्याहोवैगा ॥यातैं मैंनचिकेता उपवासरूपहठकूंकरौं॥जाहठकरिकै सोयमराजा हमारेकूंअंगीकारकरै॥याप्रकारकाविचारकरिकैसोनाचिकेता तीनउपवासोंकूंकरताभया॥और सोयमराजाभी तानचिकेताकेधैर्यकीपरीक्षाकरणेवासतै तीनदिन पर्यंत आपणेगृहविषे नहीं आवताभया॥ और सोसर्वज्ञयमराजा आपणेभृत्योंकेप्रति याप्रकारकीआज्ञाकरिकै बाहरगयाथा ॥ जोयहनचिकेता जभीइहांआवै॥तभी तुमोंनैं नाना प्रकारकेउपदेशकरिकै तानचिकेताकूं पुनःभूमिलोकविषेभेजणा ॥ और तेयमकिंकर तानचिकेताकूं यमलोकविषेआयाहुआदेखिकै तान चिकेताकेप्रति याप्रकारकेवचन कहतेभये ॥ हेनचिकेता याभयानकयमपुरी विषे तूंब्राह्मणकाबालक किसवासतैंआयाहै ॥ इसप्रकार ज भी तिनयमकिंकरोंनैं तानचिकेतासैंपूछा ॥ तभी सोनचिकेता तिनयमकिंकरोंकेप्रति आपणासंपूर्णवृत्तांत कहताभया ॥ यद्यपि सर्वज्ञ यमराजाकेसमीपरहणेहारे तेयमकिंकर पूर्वही तावृत्तांतकूंजाणतेथे ॥ तथापि पुनः तानचिकेताकेमुखतैं तिसवृत्तांतकूंश्रवणकरिकै तेयम किंकर तानचिकेताकेप्रति याप्रकारकावचनकहतेभये ॥ हेनचिकेता जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज याचारप्रकारकेजीवोंविषे कोईभी जीव यमराजाकेताईं दीजिये अथवा नहींदीजिये॥परंतु आयुपकीसमाप्तितैंविना सोयमराजा किसीजीवकूंग्रहण करतानहीं॥किंतु आयुपकी समाप्तितैंअनंतरही सोयम तिनजीवोंकूंग्रहणकरै है॥और सोयमराजाभी अभीइसकालविषे इहांहैनहीं।यातैं हेनचिकेता तुम अभी शीघ्रही आपणेपिताकेगृहकूंजावो॥हेशिष्य॥याप्रकारकेवचन तेयमकिंकर तानचिकेताकेप्रति बहुतवारकहतेभये॥परंतु सोनचिकेता आपणेधैर्यतैं नहींचलायमानहोता भया॥और तानचिकेताकेधैर्यकूंदेखिकै सोसर्वज्ञयमराजाभी तीसरेदिनतैंपीछे आपणेगृहकूंआवताभया॥और तायम राजाकूं आयादेखिकै तेयमकिंकर तायमराजाकेप्रति याप्रकारकेवचनकहतेभये॥यमकिंकरउवाच॥हेयमराजा तुमारेगृहविषे अग्निरूप एक

ब्राह्मणकाबालकअतिथिआयाहै॥ताअतिथिरूपअग्निके शांतिकरणेवासतै तुम शीघ्रहीअर्घ्यपाद्यादिरूपजलकीप्राप्तिकरौ॥ हेयमराजा ॥ जैसे यालोकविषे प्रज्वलितमहान्अग्निकीशांति जलकरिकैहोवै है॥तैसे अतिथिरूपअग्निकीशांति अर्घ्यपाद्यादिरूपजलकरिकैहोवैहै॥और जैसे यालोकविषे जलकरिकैनहींशांतकऱ्याहुआअग्नि गृहादिकसर्वपदार्थोंकूंदग्धकरै है॥ तैसे अर्घ्यपाद्यादिरूपजलकरिकै यागृहीपुरुषोंनै शांतिकूंनहींप्राप्तकऱ्याहुआ जोअतिथिरूपअग्निहै॥सोअतिथिरूपअग्नि तिनगृहीपुरुषोंकेसर्वपदार्थोंकूंदग्धकरै है॥अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकैनिरूपणकरैहैं॥हेयमराजा॥जिसमंदबुद्धिगृहस्थपुरुषकेगृहविषे जोअतिथिब्राह्मण अन्नजलादिकोंकीप्राप्तिनैविना क्षुधातृषावालारहैहै ॥ सोअतिथिब्राह्मण तागृहस्थपुरुषके आशा प्रतीक्षा संगत सूनृता इष्ट पूर्त्त पुत्र पशु इत्यादिकसर्वपदार्थोंकूंनाशकरै है॥इहां जिससुखकेप्राप्तिकानिश्चयनहींहोवै॥तासुखकेप्राप्तिकीजाइच्छाहै ताकानाम आशाहै॥औरजिससुखकेप्राप्तिकानिश्चयहोवै॥ तासुखकेप्राप्तिकीजाइच्छाहै ताकानाम प्रतीक्षाहै॥ और यापुरुषकूं सुखकीप्राप्तिकरणेहारे जेप्राणीहैं॥तिनप्राणियोंकेसाथ जोसमागम है ताकानाम संगतहै॥और यालोकविषे तथा वेदविषे अर्थकूंप्रकाशकरणेहारी तथा सुखकीप्राप्तिकरणेहारी जावाणीहै ताकानाम सूनृताहै॥और अग्निकरिकैंसिद्धहोणेहारे जेअग्निष्टोमादिकयज्ञहैं तिनोंकानाम इष्टहै॥और सर्वजीवोंकेउपकारवासतै जो कूप तलाव गृह आदिकोंकाकरणाहै याकानाम पूर्त्त है॥ और पाणिगृहीतस्त्रीतैं उत्पन्नकरे जेसर्वलक्षणोंकरिकैसंपन्नसुतहैं तिनोंकानाम पुत्रहै ॥ और बहुतमूल्यवालीजेश्रेष्ठगौआदिकहैं तिनोंकानाम पशुहै ॥ इसतैंआदिलैके जितनेकी तागृहीपुरुषकेपदार्थ हैं ॥ तेसंपूर्णपदार्थ नाशकूंप्राप्तहोवै हैं॥जिसगृहीपुरुषकेद्वारतैं अतिथिब्राह्मण निराशजावै है ॥ यातैं सर्वशास्त्रकेमर्यादाकूंजानणेहारे आपयमराजाकूंभी ताअतिथिब्राह्मणकासंतोषकऱ्याचाहिये ॥ हेशिष्य॥याप्रकारकेवचन जभी तिनयमकिंकरोंनैं यमराजाकेप्रतिकहे ॥ तभी सोयमराराजा अत्यंतभयवानहोताभया ॥ और सोयमराजा तानचिकेताअतिथिब्राह्मणकेसमीपजाइकै याप्रकारकावचन कहताभया ॥ यमराजाउवाच ॥ हेनचिकेता ॥ तूंअतिथिब्राह्मण हमारेगृहविषे तीनरात्रिपर्यंत अन्नजलकेगृहणतैंविना रह्याहै ॥ ताकरिकै हमारेकूं महान्दोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ यातैं तादोषकीनिवृत्तिवासतै मैं

यमराजा तुमारेताईं तीनवरदेताहूं ॥ जोतुमारीइच्छाहोवै सोहमारेसैंमाँगो ॥ हेनचिकेता॥ जोतूं हमारेप्रसन्नकरणेवासतै उद्यमवालाहुआहै तो तुमारेभीकल्याणहोवैं ॥ और मैंयमराजाका तुमअतिथिब्राह्मणकेताईं नमस्कारहोवै ॥ तुमअतिथिब्राह्मणकेप्रसादतैं कुटुंबसहितमैंयमराजाकूं किसीभीदुःखकीप्राप्तिनहींहोवै ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकावचन जभी तायमराजानैं नाचिकेताकेप्रतिकह्या ॥ तभी सोनचिकेता तायमराजासैं तीनवरमाँगताभया ॥ तहाँ एकतो आपणेपिताकीप्रसन्नतारूपवर माँगताभया ॥ और दूसरा अग्निकाज्ञानरूपवर माँगताभया ॥ और तीसरा आत्माकाज्ञानरूपवर माँगताभया॥ अब पिताकीप्रसन्नतारूप प्रथमवरका विस्तारतैंनिरूपणकरैहैं ॥हेयमराजा ॥ जैसे मैंनचिकेता तुमारेलोकविषे तुमारेप्रसादतैं सर्वदुःखतैंरहितहुआस्थितहूं ॥ तथा प्रसन्नमनहूं ॥ तथा क्रोधतैंरहितहूं ॥तैसे हमाराउद्दालकनामापिताभी सर्वदुःखोंतैंरहितहोवै ॥ तथा मनकेसंतापतैंरहितहोवै ॥ तथा क्रोधतैंरहितहोवै॥ और इसयमलोकतैं जभीमैं पिताकेसमीपजावोंगा ॥ तभी ताहमारेपिताका हमारेविषे अविश्वासनहींहोवै ॥ किंतु जैसे पूर्व हमारेकूं आपणापुत्रजाणिकरिकै हमारेसाथ संभाषणकरताथा ॥ तैसेहीपुनःहमारेसाथ संभाषणकरै ॥ याप्रकारकाप्रथमवर हमारेताईंदेवो ॥ शंका ॥ हेनचिकेता सर्वमुनियोंविषेश्रेष्ठ जोउद्दालकमुनिहै ॥ ताकेविषे दुःख संताप क्रोध अविश्वास यहचारोंसंभवैनहीं ॥ यातैं तिनोंकेनिवृत्तिकावर किसवासतै तुम हमारेसैंमाँगतेहो ॥ समाधान ॥ हेयमराजा ॥ सर्वशास्त्रोंकूंजानणेहारा जोहमारापिताहै ॥ ताकेविषे यद्यपि वास्तवतैं तेदुःखादिक संभवैनहीं ॥ तथापि व्यवहारदृष्टिकूंलेकै हमारेकूं तापितापिषे दुःखादिकोंकीसंभावनाहोवैहै ॥ काहेतैं तापिताका हमारेविषेबहुतस्नेहथा ॥ यातैं हमारेवियोगकरिकै सोपिता अवश्यदुःखकूंप्राप्तहुआहोवैगा ॥ याप्रकार हमारेकूं तापितापिषे दुःखकीसंभावनाहोवैहै ॥ और तापितानैं क्रोधवानहोइकै हमारेप्रति याप्रकारकावचन कह्याथा ॥ हेनचिकेता हमारेस्नेहकानिरादरकरिकै हमारेआगेतूं आपणेपंडितपणेकाआभिमानकरताहै ॥ यातैं मैंउद्दालक तुमारेकूं मृत्युकेताईंदेवोंगा ॥ याप्रकारके तापिताकेवचनकरिकै हमारेकूं तापितापिषे संतापकी तथाक्रोधकी संभावनाहोवैहै ॥ और यमलोकविषेजाइकै पुनःतिसीशरीरकरिकै कोईभीप्राणी भूमिलोकविषे आवतानहीं ॥ और मैंनचिकेता

जभी इसीशरीरकारिकै ताभूमिलोकविषेजावोंगा ॥ तभी हमारेविषे तापिताकाअविश्वास अवश्यहोवैगा ॥ ऐसीमेरेकूंसंभावनाहोतीहै ॥ यातैं हेभगवन् ॥ मैंनचिकेतानैं तापितापिषे संभावनाकरेजे दुःख संताप क्रोध अविश्वास यहचारों तेदुःखादिकचारों हमारेपितापिषे नहींप्राप्तहोवैं ॥ यहप्रथमवर मैंनचिकेता आपसेमाँगताहूं॥ हेशिष्य॥ याप्रकारकावचन जभी तानचिकेतानैं यमराजाकेप्रतिकह्या॥तभी सोयमराजा तानचिंकेताकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेनचिकेता यहपिताकीप्रसन्नतारूपजोप्रथमवर तुमनैं हमारेसैंमाँग्याहै॥ सोप्रसन्नतारूपवर तुमारेपिताकूं आजदिनविषेहीप्राप्तहोवैगा ॥ हेनचिकेता हमारीप्रेरणाकरिकैजभीतू इहांसे भूमिलोकविषेजावैगा॥तभी सोतुमारापिता पूर्वकीन्याईंहीं तुमारेशरीरविषे विश्वासकूंप्राप्तहोवैगा ॥ तथा दुःख संताप क्रोध यातीनोंतैंरहितहोवैगा॥ और मृत्युकेमुखतैं तुमारेकूं पुनःआयाहुआदेखिकरिकै सोउद्दालकमुनि स्वस्थचित्तहोइकै पूर्वकीन्याई निद्राआहारादिकोंकूंकरैगा॥ और जिसप्रकार तुमारा पिता दुःखादिकोंतैंरहितहोवैगा ॥ तैसे तूंभी दुःखादिकोंतैंरहितहोवैगा॥हेशिष्य ॥इसप्रकार पिताकीप्रसन्नतारूप प्रथमवरकूं यमराजातैं लेकरिकै सोनचिकेता तायमराजासैं पुनःअग्निकाज्ञानरूपदूसरावर माँगताभया ॥ हेयमराजा हमनैं वेदवेत्ताब्राह्मणोंकेमुखतैं यहवार्ता श्रवणकरीहै ॥ जोस्वर्गलोकतैंआदिलैकै ब्रह्मलोकपर्यंत जितनेकीऊपरकेलोकहैं॥तिनस्वर्गादिकलोकोंविषेप्राप्तभये जेअधिकारीमनुष्य हैं तिन मनुष्योंकूं मृत्युरूपतुमारेतैंभयकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ और जराअवस्था ज्वरादिकव्याधि शत्रु क्षुधा तृषा शोक मोह इत्यादिलैकै जेअनेकप्रकारकेविकारहैं ॥ तिनविकारोंतैंभी तिनमनुष्योंकूं भयकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ किंतु तेस्वर्गादिकलोकवासीजीव सुखकूंप्राप्तहोइकै सर्वदाप्रसन्नरहैं हैं ॥ याप्रकार हमनैं तिनवेदवेत्ताब्राह्मणोंकेमुखतैंश्रवणकऱ्याहै ॥ हेभगवन् तेस्वर्गादिकलोक याजीवोंकूं चयननामायज्ञ केअग्निकरिकै प्राप्तहोवैहैं ॥ यहभी हमनैं श्रवणकऱ्याहै ॥ और स्वर्गलोकविषेनिवासकरणेहारे जेआपदेवताहो ॥ तेआप ताअग्निके स्वरूपकूं भलीप्रकारजाणतेहो ॥ यातैं श्रद्धावानमैंशिष्यकेताईं ताअग्निकेस्वरूपकाउपदेशकरो ॥ हेभगवन् ॥ याअग्निकरिकै स्वर्गादिकलोकोंकूंप्राप्त हुए जे अधिकारीजनहैं ॥ ते अधिकारीजन ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिद्वारा मोक्षरूपमुख्यअमृतकूंप्राप्त होवैं हैं ॥

और तेअधिकारीजन तिनस्वर्गादिकलोकोंविषे प्रलयपर्यंतस्थितिरूप गौणअमृतकूंभीप्राप्तहोवैं हैं॥ याप्रकारका ताअग्निकाप्रभाव हमनैं तिनवेदवेत्ताब्राह्मणोंकेमुखतैंश्रवणकऱ्याहै ॥ यातैं ताअग्निकाज्ञानरूपदूसरावर आप कृपाकरिकै हमारेताईंदेवो ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार जभी दूसरावर तानचिकेतानैं यमराजासैंमाँग्या ॥ तभी सोयमराजा तानचिकेताकेप्रति याप्रकारकावचनकहताभया॥हेनचिकेता॥स्वर्गादिकलोकोंकेप्राप्तिकासाधनरूप जोअग्निहै ॥ताअग्निकेस्वरूपकूं हम भलीप्रकारजाणते हैं ॥ यातैं सर्व अंगोंकरिकैयुक्त ताअग्निकास्वरूप मैंयमराजा तुमारेप्रति कथनकरताहूं ॥ तूं सावधानहोइकैश्रवणकर ॥ हेनचिकेता ॥ स्वर्गादिक लोकोंकेप्राप्तिका तथास्थितिका कारणरूपजोअग्निहै ॥ सोअग्नि विराटरूपहै ॥ यातैं जैसे यहलोकप्रसिद्धअग्नि सर्वकाष्ठोंविषेरहै है॥ तैसे सोविराट्रूपअग्निभी तीनलोकों विषेस्थितहै ॥ तौभी सोअग्निगुह्यहै॥अथवा वास्तवतैंसाक्षीआत्मारूपहै॥यातैं ताअग्निकूं बुद्धिमान्पुरुषोंकेबुद्धिरूपगुहाविषेस्थितहुआ तूंजाण ॥ हेशिष्य॥याप्रकारकावचनकहिकै सोयमराजा तानचिकेताकेप्रति सर्वलोकोंकाकारणरूप ताविराट्रूपअग्निकास्वरूप कहता भया॥और चयननामायज्ञविषे ताअग्निकेस्वरूपकीसिद्धिकरणेहारी जेइष्टकाहैं ते इष्टका जितनीसंख्यावालीहोवै हैं ॥ तथा जैसेरूपवाली होवै हैं ॥तथा जिसप्रकार तेइष्टका रखीतीयां हैं॥तथा ताकेविषेउपयोगी जितनेकीदूसरेपदार्थ हैं तथामंत्रहैं तथाक्रियाहैं॥सासंपूर्णप्रक्रिया तानचिकेताकेप्रति सोयमराजा कहताभया॥हेशिष्य॥याप्रकार अग्निकास्वरूपकहिकै सोयमराजा तानचिकेताकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेनचिकेता ॥ मैंयमराजानै तुमारेप्रति जिसप्रकार अग्निकास्वरूपकह्याहै ॥ सासंपूर्णप्रक्रिया तुम हमारेआगेकथनकरो ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारके यमराजाकेवचनकूंश्रवणकरिकै सोनचिकेता जिसप्रकार तायमराजाकेमुखतैं अग्निकास्वरूप श्रवणकऱ्याथा ॥ तिसीप्रकार ताअग्निकास्वरूप कथनकरताभया ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार जभी तानचिकेतानैं भयतैंरहितहोइकै तायमराजके समीप ताअग्निकास्वरूप कथनकऱ्या ॥ तभी सोयमराजा तानचिकेताकी अलौकिकबुद्धिदेखिकै बहुतप्रसन्नहोताभया ॥ और सोयमराजा तानचिकेताकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हे नाचिकेता ॥ हमारेकरे हुएउपदेशका तुमनैं यथावत् कथनकऱ्याहै ॥ यातैं मारी

तीक्ष्णबुद्धिकूंदेखिकै मैंयमराजा तुमारेऊपर बहुतप्रसन्नभयाहूं ॥ यातैं पूर्वजोतुमनैं तीनवरमाँगे हैं ॥ सोतौ मैं तुमारेताईं देवोंगा ॥ परंतु तिनतीनोंवरोंतैं यहअधिकवर मैं तुमारेताईं देताहूं ॥ तावरकूं तुम अंगीकारकरो॥ हेनचिकेता॥ हमनैं तुमारेप्रति जिस अग्निका उपदेश कऱ्याहै॥सोअग्नि आजदिनतैंलैकै तुमारेनामकाहीप्रासिद्धहोवैगा ॥ तात्पर्ययह ॥ यालोकविषे जबपर्यंत यहवेदरहैंगे ॥ तथा जबपर्यंत यहसूर्यभगवान्रहैगा॥ तथा जबपर्यंत यहपांचभौतिकजगत्रहैगा ॥ तबपर्यंत वेदवेत्तामहात्मापुरुष ताअग्निकूं नाचिकेतअग्नि यानाम करिकैकथनकरैंगे॥ नाचिकेताक्रि जोअग्निहोवै ताकानाम नाचिकेतअग्निहै ॥ इसप्रकार यहअग्नि तुमारेनामकीप्रगटहोवैगी ॥ और हेनचिकेता दूसरा यहदिव्यमालारूपवर मैं तुमारेताईंदेताहूं तामालाकूं तुम आपणे कंठविषे धारणकरो ॥ कैसीहैसामाला ॥ मणियोंकेसमान जेश्रेष्ठसुवर्णकेदाणे हैं ॥ तेदाणे परोयेहुएहैं जिनोंविषे ऐसेअनेकसूत्रोंकरिकैयुक्तहै ॥ और बहुतमूल्यवाले जेवस्त्रादिकनवीनरत्नहैं तिनरत्नोंकरिकैजडितहै ॥ तथा स्थूलआमलकफलकेसमानजेअनेकमुक्ता हैं तिनोंकरिकैजडितहै ॥ तथा सूर्यकेसमान जाकाप्रकाशहै॥तथा नानाप्रकारकेशब्दोंकरिकैयुक्तहै ॥ ऐसीविचित्रदिव्य मालाकूं तूं आपणेकंठविषेधारणकर ॥ जैसे मेघ विद्युत्कूंधारणकरै हैं ॥ तैसे तामालाकूं तूं धारणकर ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारका वचनकहिकै सोयमराजा तानचिकेताकेताईं सादिव्यमालादेताभया॥अब तानाचिकेतना माअग्निके महातमकूंवर्णनकरै हैं ॥ हेनचिकेता मेरेवरकरिकै नाचिकेतसंज्ञाकूंप्राप्तभई जोयहअग्निहै ॥ताअग्निकूं जोमातापितागुरुकरिकै शिक्षित अधिकारी पुरुष चयननामायज्ञकरिकै तीनवारसंपादनकरैगा ॥ और ताअग्निकरिकै अग्निष्टोमादिकतीनयज्ञोंकूंकरैगा॥सोअधिकारी पुरुष ब्रह्मलोककीप्राप्तिद्वारा जन्ममृत्युकूंतरैगा॥अथवा सोअधिकारी पुरुष इसीजन्मविषे ब्रह्मज्ञानकेसाधनसंपत्तिकूंप्राप्तहोइकै जन्ममृत्युकूंतरैगा ॥ अथवा सोअधिकारीपुरुष आपणेपुण्यकर्मपर्यंत पुनरावृत्तितैंरहितहुआ स्वर्गलोकविषेनिवासरूप जन्ममृत्युकेतरणकूं प्राप्तहोवैगा ॥ अथवा सोअधिकारीपुरुष मोक्षरूप जन्ममृत्युकेतरणकूं प्राप्तहोवैगा ॥ परन्तु तिनअधिकारीपुरुषों विषे भी मोक्षरूपफलकीप्राप्तितौ किसीएकनिष्कामअधिकारीकूंहीहोवेगी ॥ हेनचिकेता ॥ हिरण्यगर्भतैं उत्पन्नभया जोयहविराट्रूपअग्नि है ॥ ७ ॥

सो यहविराट्रूपअग्नि सर्वज्ञरूपहै ॥ तथा अत्यंतप्रकाशमान है ॥ तथा संपूर्ण सुरअसुरोंकरिकै स्तुतिकरणेयोग्य है ॥ ऐसे विराट्रूपअग्निकूं गुरुकेमुखतैंजाणिकरिकै जेअधिकारीपुरुष यज्ञादिरूपकर्मोंकूं तथाउपासनाकूं करै हैं ॥ तेअधिकारीपुरुष आपणेआपणेभावनाकेअनुसार स्वर्गरूपशांतिकूं अथवा मोक्षरूपशांतिकूं प्राप्तहोवै हैं॥हेशिष्य॥ इसप्रकार सोयमराजा तानाचिकेताकेप्रति नानाप्रकारके फलसहित ताअग्निकाउपदेशकरिकै पुनःयाप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेनचिकेता ॥ जोअग्नि तुमनैं हमारेसैंपूछाथा॥ और जिसअग्निकाज्ञान नानाप्रकारकेफलोंसहित हमने तुमारेप्रति कथनकऱ्याहै॥ सोयहअग्नि स्वर्गरूपकरिकै प्रत्यक्षदीखे है॥हेनचिकेता अग्निकाज्ञान रूप दूसरावर तुमनैं हमारेसैंमाँग्याथा॥सोहमनैं तुमारेताईं दूसरावरदिया॥अबी तीसरावर तूं हमारेसैंमाँग ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकावचन जभी तायमराजानैं नाचिकेताकेप्रतिकह्या॥ तभी सोनाचिकेता तीसरेवरकेप्राप्तिकीइच्छाकरिकै तायमराजाकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हे यमराजा ॥ पूर्वहमनैं वेदवेत्तामहात्मापुरुषोंकेमुखतैं याप्रकारकेवचन श्रवणकरे हैं ॥ यालोकविषे जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज याचारिप्रकारकेशरीरोंकरिकैयुक्त जितनेकीजीव हैं ॥ तेसंपूर्णजीव आपणे आपणेप्रारब्धकर्मकेसमाप्तहुएतैंअनंतर अवश्वमृत्युकूं प्राप्तहोवै हैं॥यातैं यह जान्याजावै है यहजीव पुण्यपापकर्मकेवशतैं जिसजिसशरीरकूंप्राप्तहोवै हैं॥तिसतिसशरीरकेसाथही तिनजीवोंकामृत्यु उत्पन्नहोवै है॥सोतिनजीवोंकामृत्युआजादिनविषेहोवै॥ अथवा शतवर्षतैंअनंतरहोवै॥ याकेविषे कोईनियमनहीं है ॥ परंतु जोजो जीव उत्पन्नहोवै है॥ताजीवकामृत्यु अवश्यकरिकैहोवै है ॥ हेभगवन् ॥ अस्मदादिकजीवोंकीक्यावार्ता है ॥ परंतु जन्मकरिकैयुक्त जेब्रह्मादिकदेवताहैं॥तिनदेवतावोंकाभी मृत्युअवश्यहोवै है॥तहांश्रुति॥अतोऽन्यदार्त्त॥अर्थयह॥आधिष्ठान आत्मातैंभिन्न जितनाकीअनात्मजगत्है॥सोजगत् मृत्युकरिकैमुक्तहै॥तहांस्मृति॥जातस्यहिध्रुवंमृत्युर्ध्रुवंजन्ममृतस्यच॥अर्थयह॥जोजोप्राणी जन्मकूंप्राप्तभयाहै ॥ ताका मृत्युअवश्यहोवै है॥और जोजोअज्ञानीजीव मरणकूंप्राप्तभयाहै॥ ताका जन्मभी अवश्यहोवै है॥इत्यादिकश्रुतिस्मृतिवचनोंतैं जन्मवालेपदार्थोंका मृत्युअवश्यहोवै है ॥ यह अर्थ निश्चयहोवै है ॥ अब मरणअवस्थातैं अनंतर आत्मा विद्यमान है अथवा नहीं विद्यमान है॥याप्रकारके

संशयकेदिखावणेवासते प्रथम जीवतअवस्थाविषेही तासंशयकानिरूपणकरे हैं ॥ हेयमराजा केईकचार्वाकादिकनास्तिक याशरीरके विद्यमानहुएही आत्माकेसत्ताकाअभाव कथनकरे हैं ॥ ताअर्थविषे तेचार्वाकवादी याप्रकारकीयुक्तियां कथनकरे हैं॥ वेदकूंमानणेहारेआस्तिकपुरुषोंनैं जोभावरूपआत्मामान्याहै॥ सोआत्मा यासंघाततैंभिन्नहोइकैप्रतीतहोतानहीं॥ यातैं सोआत्मा यास्थूलसंघाततैंभिन्ननहीं है ॥ किंतु यहसंघातही आत्मारूपहै ॥ किंवा ॥ जोवादी यासंघाततैं आत्माकूंभिन्नमानै है ॥ तावादीसैं यहपूछनाचाहिये ॥ सोतुमारा आत्मा स्पर्शादिकगुणोंवालाहै ॥ अथवा तिनस्पर्शादिकगुणोंतैंरहितहै ॥ तहां सोआत्मा स्पर्शादिकगुणोंवालाहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं यालोकविषे जोजोपदार्थ स्पर्शगुणवालाहोवै है ॥ सोसोपदार्थ त्वक्इंद्रियकरिकैग्रहणहोवै है ॥ जैसे घटादिपदार्थ स्पर्शगुणवाले हैं ॥ यातैं तेघटादिकपदार्थ त्वक्इंद्रियकरिकैग्रहणहोवै है ॥ तैसे सोतुमाराआत्माभी स्पर्शगुणवालाहोणेतैं त्वक्इंद्रियकरिकै ग्रहणहोवैगा ॥ और तास्पर्शगुणवालेआत्माकाजोत्वक्इंद्रियकरिकैग्रहणमानोगे ॥ तौ सोतुमाराआत्मा प्राणवायुरूप होवैगा ॥ और आत्माकूंतुमोनैं नित्यअंगीकारकऱ्याहै ॥ और यहवायुरूपप्राण अनित्यहै ॥ यातैं आत्माकूंनित्यमानणेहारे तुमवादियोंके मतविषे ताआत्माकूं अनित्यप्राणवायुरूपतासंभवैनहीं ॥ किंवा ॥ जोप्राणआत्मवादी वायुरूपप्राणकूंही आत्मामाने है ॥ ताप्राणात्मवादीसे यहपूछाचाहिये यासंघातविषे जैसे वायुरूपप्राणविद्यमान है ॥ तैसे तेज जल पृथ्वी यहतीनभूतभीविद्यमान हैं ॥ तिनचारोंविषे एकप्राणही आत्मारूपहै ॥ तेजादिकभूत आत्मारूपनहीं है ॥ याअर्थकीसिद्धिकरणेवासतैं तुमोनैं कोईयुक्तिकहीचाहिये ॥ शंका ॥ हे चार्वाकवादी ॥ जिसपदार्थकेअभावहुए याशरीरकेजीवनकाअभावहोवै तापदार्थकानाम आत्मा है ॥ याप्रकारका आत्माकालक्षण याप्राणविषेहीघटे है ॥ काहेतैं प्राणोंकेअभावहुएही याशरीरकेजीवनकाअभाव यालोकविषेदेखीता है याप्रकारकीयुक्तिकरिकै प्राणोंविषे ही आत्मरूपतासिद्धहोवै है ॥ समाधान ॥ हेप्राणआत्मवादी ॥ तायुक्तिकरिकै जैसे वायुरूपप्रमाणोंविषे आत्मरूपतासिद्धहोवै है ॥ तैसे तायुक्तिकरिकै तेज जल पृथ्वी यातीनभूतोंविषेभी आत्मरूपतासिद्धहोवै है ॥ काहेतैं याशरीरविषे तेजरूपजाउष्णता ॥

तथा जलरूपजोरक्तहै॥तथा पृथिवीरूप जोवीर्यकासारभूत ओजनामाअष्टमधातुहै॥यातीनोंका जभीअभावहोवैहै ॥ तभी याशरीरोंकेजीवनकाभी अभावहोवैहै।यातैंवायुरूपप्राणकीन्याईं तेज जल पृथिवी यातीनोंविषेभी आत्मरूपताहोणीचाहिये॥किंवा॥जिसकालविषेयाजीवोंकामरणहोवैहै॥तिसकालविषे याजीवोंकेशरीरमें प्राण उष्णता रक्त ओज याचारोंका समानहींअभावहोवैहै॥और तिनचारोंविषे जडरूपताभीसमानहींहै॥यातैं तिनचारोंविषे एकवायुरूपप्राणकूंतौ आत्मारूपमानणा ॥ और तेज जल पृथिवी यातीनोंकूं आत्मरूपनहींमानणा॥यापक्षकेअंगीकारकरणेविषे कोईयुक्तिहैनहीं॥शंका॥हेचार्वाकवादी॥ यासंघातविषे जोज्ञानउत्पन्नहोवैहै॥ताज्ञानकाकारण वायुरूपप्राणहींहै॥तेजादिकतीनभूत ताज्ञानकेकारणहैं नहीं॥याकारणतैं सोवायुरूपप्राणहीं आत्मरूपहै॥तेजादिकतीनभूत आत्मारूपनहीं है॥समाधान॥हेप्राणात्मवादी॥जिसकालविषे याजीवोंकूं घटादिकपदार्थोंकाज्ञानहोवैहै।तिसकाल विषे यासंघातमें जैसे सो वायुरूपप्राणविद्यमानहै तैसे उष्णता रुधिरओज यह तीनोंभीविद्यमानहैं।यातैं तिनचारोंकेविद्यमानहुएभी एकवायुरूपप्राणकाही सोज्ञानधर्महै।तेजादिकतीनभूतोंकासो ज्ञान धर्मनहीं है॥यहकहणा अत्यंतविरुद्धहै॥यातैंशास्त्रयुक्तितैंरहित जेकोईमूढबालकवादीहै॥तिनवादियोंनैंमोहमात्रतैं यहप्राणात्मवाद प्रगटकऱ्याहै ॥ परंतु सोप्राणात्मवाद किसीयुक्तिप्रमाणतैं सिद्धहोइसकैनहीं ॥किंवा ॥ जोप्राणात्मवादी प्राणकूंहीं आत्मामाने है ॥ तावादीसे यहपूछाचाहिये ॥ सोतुमाराप्राणरूपआत्मा जभी परलोकविषेजावै है ॥ तभी सोप्राणरूपआत्मा निराधारहुआ किसप्रकारजावै है ॥ और जैसे यहलोकप्रसिद्धवाह्यवायु आकाशविषे लयभावकूंप्राप्तहोवै है॥ तैसे सोप्राणरूपआत्माभी परलोकविषेजाताहुआ तामार्गविषेहीं लयभावकूं किसवासतैंनहींप्राप्तहोता ॥ यादोनोंप्रश्नोंकाउत्तर तुमप्राणात्मवादियोंनैं कह्याचाहिये ॥ किंवा ॥ यालोकविषे चर्मादिकोंविषे निरोधकऱ्याहुआजोवायुहै ॥ सोवायु तवपर्यंतहीं ताचर्मादिकोंविषेरहै है ॥ जवपर्यंत तिनचर्मादिकोंविषे कोईछिद्रनहींभया ॥ तिनचर्मादिकोंविषेछिद्रहुएतैंअनंतर तिनचर्मादिकोंविषेरहैनहीं ॥ किंतु तिनचर्मादिकोंतैं सोवायु तिसछिद्रद्वारा वाहरनिकसजावै है॥ यह वायुकास्वभाव सर्वलोकोंकूंअनुभवसिद्धहै ॥ और मुखादिकनवद्वारोंवाला जोयहशरीर है ॥ ताशरीरविषेरहताहुआ सोतुमाराप्राणरूप

आत्मा याशरीरकापरित्यागकरिकै बाहरकिसवासतैंनहींजाता॥और सोप्राण याशरीरकापरित्यागकरिकै बाहरजातानहीं ॥ यातैं यहजा न्याजावैहै ॥ याशरीरविषे कोईपदार्थ तिसप्राणकेबंधनकरणेहारा है॥जिसपदार्थकरिकैबांध्याहुआ सोतुमाराप्राणरूपआत्मा याशरीरका परित्यागकरिकै बाहरजातानहीं ॥ सोप्राणोंकेबंधनकरणेहारा कौनपदार्थ है ॥ सोपदार्थ तुमोंनैं कह्याचाहिये ॥ शंका ॥ हेचार्वाकवादी जिनपुण्यपापरूपकर्मोंनैं याशरीरकीप्राप्तिकरी है ॥ तेपुण्यपापरूपकर्महीं याशरीरविषे ताप्राणकेस्थितिकाकारण हैं ॥ और तेपुण्यपाप रूपकर्म जभी सुखदुःखरूपभोगकूंदेकैसमाप्तहोवै है ॥ तभी सोप्राणभी याशरीरविषेरहैनहीं ॥ समाधान ॥ हेप्राणात्मवादी ॥ तुमनैं जिस पुण्यपापरूपकर्मकर्मोंकेअधीन यासंघातविषे प्राणोंकीस्थिति कथनकरीहै॥ तेपुण्यपापरूपकर्म नित्यहैं॥अथवा अनित्यहैं॥तहां तेपुण्य पापरूपकर्म नित्यहैं यहप्रथमपक्ष जोतू अंगीकारकरै॥तौ जिनपुण्यपापरूपकर्मोंकरिकै याशरीरविषेताप्राणकीस्थितिविनाशहोवैहै॥तेपुण्य पापरूपनित्यकर्महीं आत्मारूप किसवासतैंनहींहोवै॥और तेपुण्यपापरूपकर्मअनित्यहैं यहदूसरापक्ष जोतू अंगीकारकरै॥ तौ जैसे तापुण्यपा परूपकर्मोंकेनाशतैं ताप्राणरूपवायुका याशरीरतैंबाहरनिकसणा तुमकल्पनाकरतेहौ॥तैसेतापुण्यपापरूपकर्मकेनाशतैंअनंतरताप्राणरूप आत्माकानाश तुम किसवासतैंनहींकल्पनाकरतेहो॥किंतु तापुण्यपापरूपकर्मोंकेनाशतैंअनंतर ताप्राणरूपआत्माकानाशभीतुमोंनैं अंगी कारकऱ्याचाहिये॥सोप्राणरूपआत्माकानाश तुम अंगीकारकरतेनहीं॥यातैं यहअर्थसिद्धभया॥जेवादी प्राणकूंहींआत्मामानैं हैं॥तिनप्रा णात्मवादियोंकेमतविषेभी देहात्मवादियोंकीन्याईं ताप्राणरूपआत्माका परलोकविषेगमनसंभवैनहीं॥यातैं जेचार्वाकादिकनास्तिक पृथ्वी जल तेज वायु याचारिभूतोंकेसमुदायरूपशरीरकूं हीं आत्मामानै हैं॥ तिनचार्वाकनास्तिकोंकेमतकूं अंगीकारकरिकैहीं किसीनास्तिकनैं नाममात्रकाभेदकरिकै प्राणकूंआत्मामान्याहै॥परंतु वास्तवतैंविचारकरिकैदेखियेतौ तिसप्राणात्मवादीकेमतविषेभीतिनवायुआदिकभूतों कूंहीं आत्मरूपता सिद्धहोवै है॥यातैं यासंघाततैंभिन्न कोईदूसरा स्पर्शगुणवालाआत्माहैनहीं॥किंवा॥यासंघाततैंभिन्नकिसीआत्माविषे जैसे स्पर्शगुण प्रतीतनहींहोवै है ॥ तैसे रूप रस गंध यहतीनोंगुणभी प्रतीतहोवैनहीं॥ यातैं यासंघाततैंभिन्न जैसे कोईस्पर्शगुणवाला आत्मा

नहीं हैं॥ तैसे यासंघाततैंभिन्न कोईरूपगुणवाला तथा रसगुणवाला तथा गंधगुणवालाभी आत्माहैनहीं॥किंवा॥जोवादीयासंघाततैंभिन्न शब्दगुणवालाकोईआत्मामानै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं पृथ्वी जल तेज वायु यहचारिभूतही शब्दगुणवालेहुए प्रतीतहोवै हैं ॥ याचारि भूतोंतैं भिन्न किसीभीपदार्थविषे सोशब्दगुण प्रतीतहोतानहीं॥जोकदाचित् सोवादी याचारिभूतोंतैंभिन्नभीकिसीपदार्थकूं ताशब्दगुण वालाअंगीकारकरै ॥ तौ तावादीकेमतविषे याचारिभूतोंतैंभिन्न वंध्यापुत्रभी मधुरशब्दवालाहोणाचाहिये ॥किंवा॥ जोवादी यासंघाततैं भिन्न किसीआत्माकूं शब्दगुणवालाअंगीकारकरै ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये॥तुमारेमतविषे ताशब्दगुणवालेआत्माकाज्ञान किसप्रमा णकरिकैहोवै है॥सोप्रमाण तुमनैं कह्याचाहिये॥तहां सोवादी जोश्रोत्रइंद्रियकरिकै ताआत्माकाज्ञानमानै सोसंभवैनहीं॥काहेतैं सोश्रोत्रइं द्रिय एकतौशब्दगुणकूंग्रहणकरै है ॥ तथा ताशब्दविषेवर्त्तणेहारी शब्दत्वादिक जातियोंकूंग्रहणकरै है॥ तथा तिनशब्दोंकेअभावकूंग्रह णकरै है ॥ परंतु सोश्रोत्रइंद्रिय शब्दगुणवालेद्रव्यकूंग्रहणकरै है यहप्रक्रिया किसीभीवादीनैं अंगीकारकरीनहीं॥ यातैं ताशब्दगुणवालेआ त्माकाज्ञान श्रोत्रइंद्रियकरिकैसंभवैनहीं॥शंका॥हेचार्वाकवादी॥ताशब्दगुणवालेआत्माकाज्ञान मनकरिकैहीहोवैगा॥समाधान॥हेवादी॥म नकरिकैभी ताशब्दगुणवालेआत्माकाज्ञान होइसकैनहीं॥काहेतैं याजीवोंकामन जिसजिसमनोरथादिकोंकीकल्पनाकरै है॥तिसीतिसीमनो रथादिकपदार्थोंकूं यहजीवतामनकरिकैदेखे है॥ शब्दादिकगुणोंकूं तथा शब्दादिकगुणवालेद्रव्योंकूं यालोकविषे कोईभीजीव मनकरिकैदे खतानहीं ॥ किंवा॥ स्पर्शादिकगुणोंवालाआत्माहै यापक्षविषे जैसे ताआत्माकूं अनित्यरूपताप्राप्तहोवै है ॥ तैसे स्पर्शादिकगुणरूपआ त्माहै यापक्षविषेभी ताआत्माकूं अनित्यरूपताही प्राप्तहोवै है ॥ यातैं स्पर्शादिकगुणरूपभी सोआत्मानहीं है ॥ किंवा ॥ जेवादी स्प र्शादिकोंकूंगुणरूपमानै हैं ॥ और आत्माकूं द्रव्यरूपमानै हैं ॥ और गुणोंका तथाद्रव्योंका परस्परभेदमानै हैं ॥ तिनवादियोंके मतविषे सोद्रव्यरूपआत्मा स्पर्शादिकगुणरूप किसप्रकारहोवैगा किंतु सोद्रव्यरूपआत्मा स्पर्शादिकगुणरूप कदाचित्भीनहीं होवैगा॥किंवा जैसे सोतुमाराआत्मा रूपस्पर्शादिकगुणरूपनहींहै॥तैसे सोआत्मा रूपस्पर्शादिकगुणोंतैंभिन्नभी कह्याजावैनहीं॥काहेतैं

सोआत्मा जोवायु आदिकद्रव्यरूपकारिकै तिनस्पर्शादिकगुणोंतैं भिन्नहोवै ॥ अथवा वायु आदिकद्रव्योंतैंभीभिन्नहोवै ॥ यादोनोंपक्षोंविषे ता आत्माकेज्ञानविषे नेत्रादिकइंद्रियोंकूं करणरूपतासंभवै नहीं ॥ काहेतैं तेनेत्रादिकइंद्रिय रूपस्पर्शादिकगुणोंके तथा तिनरूपस्पर्शादिकगुणोंवालेद्रव्योंके ग्रहणविषेहीसमर्थहोवै हैं ॥ तिसतैंभिन्नकिसीपदार्थकूं तेनेत्रादिकइंद्रिय ग्रहण करिसकैनहीं ॥ यातैं पृथिवी जल तेज वायु याचारिभूतोंकासमुदायरूप जोयहस्थूलशरीरहै ॥ सोस्थूलशरीरही आत्माहै ॥ याशरीरतैंभिन्न कोईआत्माहैनहीं ॥ हेयमराजा इसतैंआदिलैके जोतिनचार्वाकादिकनास्तिकोंके कुतर्कवचनहैं ॥ तिनवचनोंकूं श्रवणकरिकै बुद्धिमान्पुरुषभी याजीवतअवस्थाविषे ही यासंघाततैं आत्माभिन्नहै अथवा यहसंघातही आत्मारूपहै याप्रकारकेव्यामोहकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ हेयमराजा ॥ जैसे तेचार्वाकादिकनास्तिक नानाप्रकारकीयुक्तियोंकेबलतैं यास्थूलसंघाततैं भिन्न ता आत्माका असत्यपणाकहै हैं ॥ तैसे कोईकआस्तिकवादी वेदवचनोंकेबलतैं यासंघाततैंभिन्न ताआत्माकासत्यपणाभीकहै है ॥ हेभगवन्॥ इसप्रकार आत्माविषे सत्यपणा तथाअसत्यपणा श्रवण करिकै ॥ हमारेकूं संशयप्राप्तभयाहै ॥ जोआत्मा सत्यहै अथवा असत्यहै ॥ हेभगवन् याहमारेसंशयकीनिवृत्तिकरणेवासतै आप कृपाक रिकै हमारेप्रति तिनदोनोंपक्षोंविषे एकपक्षकीसिद्धिकरणेहारावचन कथनकरो ॥ याप्रकारका तीसरावर आप हमारेताईंदेवो ॥ हेशिष्य याप्रकार आत्मज्ञानकीप्राप्तिरूप तीसरावर जभी तानचिकेतानैं यमराजासैंमाँग्या॥ तभी सोयमराजा तानचिकेताकेप्रति आपणेहस्तकी भ्रमणरूपचेष्टातैं निवारणकरताहुआ याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेनचिकेता याआत्माकास्वरूप तूं हमारेसैंमतपूछ ॥ काहेतैं पूर्वजेदेवता शमदमादिकगुणोंकरिकैयुक्तहुएहैं ॥ तथा इदानींकालविषे जेदेवता शमदमादिकगुणोंकरिकैयुक्तहुएहैं ॥ तेबुद्धिमान्देवताभी याआत्माकेस्वरूपविषे संशयकूंप्राप्तहोइकै तास्वरूपकानिर्णयकरणेविषे समर्थनहींहोतेभये हैं ॥ तौ तूंबालक ताआत्माकेस्वरूपका निर्णयकरणेविषे कैसेसमर्थहोवैगा ॥ हेनचिकेता ताआत्माका जोसत्यपणाधर्म है तथा असत्यपणाधर्म है तेदोनोंधर्म अत्यंत सूक्ष्महैं ॥ याकारणतैं तेमहान्बुद्धिवालेदेवताभी ताआत्माकेसत्यपणेकूं तथा असत्यपणेकूं नहींजाणतेभयेहैं ऐसेदुर्विज्ञेयआत्माकाज्ञानरूपतीसरावर

॥ १० ॥

तू हमारेसैंमतमाँग ॥ किंतु याआत्मज्ञानतैंभिन्न जिसपदार्थविषे तुमारीप्रीतिहोवै ॥ सोतीसरावर तू हमारेसैंमाँग ॥ यादुर्विज्ञेयआत्माके उपदेशकरणेविषे तू हमारेकूंप्रेरणामतकर ॥ हेनचिकेता ॥ सत्यवचनरूपपाशकरिकैबांध्याहुआ मैं यमराजा तुमारेवशकूंप्राप्तभयाहूं ॥ यातैं तादुर्विज्ञेयआत्माकाप्रश्नरूपभार तुम हमारेऊपरमतपावो ॥ किंतु ताआत्मज्ञानतैंभिन्न कोईतीसरावर हमारेसैंमांगिकै हमारेकूं तास त्यवचनरूपपाशतैं मुक्तकरो ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकावचन जभी तायमराजानैं नचिकेताके प्रतिकह्या तभी सोनचिकेता तायमराजाके प्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेयमराजा ॥ जिसआत्माकेवास्तवस्वरूपविषे देवतावोंकूंभी संशयहोवै है॥ और जिसआत्माकीदुर्विज्ञेयता आपनैं कथनकरीहै॥तथा पूर्वमहात्माविद्वान्पुरुषोंनैंभी कथनकरीहै ऐसेदुर्विज्ञेयआत्माके उपदेशकरणेहारे आपसरीखेमहात्मा दुर्लभहैं ॥ हेभगवन् ॥ ऐसेआपसरीखेदुर्लभगुरुवोंकूंप्राप्तहोइकैभी जोमैंनचिकेता तादुर्विज्ञेयआत्माकूंनहींजाणोंगा॥तौया तीनलोकोंविषे तादुर्विज्ञेयआत्माका उपदेश हमारे प्रति कौनविद्वान्पुरुष करैगा ॥ किंतु तादुर्विज्ञेयआत्माकेउपदेशकरणेविषे आपतैंविना दूसराकोई समर्थहैनहीं ॥ यातैं हेयमराजा ॥जोकदाचित हमारेविषे तुमारीप्रीतिहै ॥ तथा जोकदाचित् सोतुमारावचन सत्यहै ॥ तौ यहआत्मज्ञा नकीप्राप्तिरूपहीतीसरावर आप हमारेताईंदेवो ॥ हेभगवन् याआत्मज्ञानकीप्राप्तिरूपवरतैंपरे दूसराकोईवर मैं श्रेष्ठदेखतानहीं ॥ यातैं ताआत्मज्ञानरूपवरकूंछोडिकै अन्यकिसीवरदेणेकाउद्यम आप किसवासतैकरतेहो ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकावचन जभी तानचिकेतानैं यमराजाकेप्रति कथनकऱ्या ॥ तभीसोयमराजा तानचिकेताकेवैराग्यकीपरीक्षाकरणेवासतै पुत्र १ पौत्र २ पशु ३ हस्ती ४ सुवर्ण ५ अश्व ६ मंडलाधिपत्य ७ चिरजीवन ८ वित्त ९ स्थिरजीविका १० चक्रवर्त्तिराजापणा ११ दिव्यमनुष्यकामभोगिपणा १२ सत्यकामपणा १३ दिव्यस्त्रियां १४ तिनस्त्रियोंकीदासियां १५ तिनस्त्रियोंका नृत्यवादिकोंविषे कुशलपणा १६ ॥ यहषोडशप्रकारकेवरतानचिकेताकेताईं देताभया ॥ अब क्रमतैं तिनषोडशवरोंका निरूपण करै हैं ॥ हेनचिकेता ॥ शतवर्षपर्यंतजीवणेहारे तथा रूपयौवनविद्यादिकगुणोंकरिकैयुक्त जेअनेकश्रेष्ठपुत्रहैं ॥ तिनपुत्रोंकीप्राप्तिरूप तीसरावर तूं हमारेसैंमाँग ॥ १ ॥ अथवा तिसीप्रकारकेश्रेष्ठगुणवालेजे

पौत्रहैं ॥ तिनपौत्रोंकीप्राप्तिरूप तीसरावर तूं हमारेसैंमाँग ॥ २ ॥ अथवा बहुतमूल्यवाले जेगौआदिकश्रेष्टपशुहैं तिनपशुवोंकीप्राप्तिरूप तीसरावर तूं हमारेसैंमाँग ॥ ३ ॥ अथवा पर्वतकेसमान जिनोंकाआकारहै ऐसेजेश्रेष्टहस्ती हैं ॥ तिनहस्तियोंकीप्राप्तिरूप तीसरावर तूं हमारेसैंमाँग ॥ ४ ॥ अथवा स्वर्गलोकविषेस्थित जोसुमेरुपर्वतकेसमानसुवर्णहै॥ तासुवर्णकीप्राप्तिरूप तीसरावर तूं हमारेसैंमाँग ॥ ५ ॥ अथवा सूर्यभगवान्केरथविषेस्थितजेअश्वहैं ॥ तिनअश्वोंकेसमान आकाशविषेगमनकरणेहारे जेश्रेष्टअश्वहैं ॥ तिनअश्वोंकीप्राप्तिरूप तीसरावर तूं हमारेसैंमाँग ॥ ६ ॥ अथवा सर्वभूमिविषे आपणेशुभगुणोंकरिकैप्रसिद्ध जोनिष्कंटकभूमिमंडलकाराज्य है ॥ ताराज्यकीप्राप्तिरूप तीसरावर तूं हमारेसैंमाँग ॥ ७ ॥ अथवा जितनेकालपर्यंत जीवनविषे तुमारी इच्छाहोवै ॥ तितनेकालपर्यंत दीर्घआयुष्प्रकीप्राप्तिरूप तीसरावर तूं हमारेसैंमाँग ॥ ८ ॥ अथवा यातीनलोकविषेस्थित जोनानाप्रकारकाधनहै ॥ ता धनकीप्राप्तिरूप तीसरावर तू हमारेसैंमाँग ॥९॥अथवा यालोकविषे जोचिरकालपर्यंत आपणीजीविकाहै॥ताजीविकाकीप्राप्तिरूप तीसरावर तू हमारेसैंमाँग ॥१०॥ अथवा यासर्वभूमिविषे जोचक्रवर्त्तिराजापणाहै ॥ ताचक्रवर्त्तिराजापणेकीप्राप्तिरूप तीसरावर तू हमारेसैंमाँग ॥ ११ ॥ अथवा आपणी कामनाकेविषय जेपुत्रपौत्रादिकदिव्यपदार्थ हैं ॥ तिनदिव्यपदार्थोंकीप्राप्तिरूप तीसरावर तूं हमारेसेमाँग ॥ १२ ॥ अथवा यातीनलोक विषे जेजेदुर्लभपदार्थहैं ॥ तिनपदार्थोंकीआपणीइच्छामात्रतैं प्राप्तिरूप जोसत्यकामपणाहै ॥ तासत्यकामपणेंकीप्राप्तिरूप तीसरावर तूं हमारेसैंमाँग॥१३॥ अथवा यास्वर्गलोकविषेस्थित जेदिव्यअप्सरा हैं ॥ तिन दिव्यास्त्रियोंकीप्राप्तिरूप तीसरावर तूं हमारेसैंमाँग ॥ कैसी हैंतेस्वर्गकीस्त्रियां॥स्वर्गकेरहणेहारेपुरुषोंके मनकूं तथानेत्रोंकूं आनंदकीप्राप्तिकरणेहारियां हैं॥ और अश्वमेधादिकमहान्यज्ञोंकरिकै याजीवोंकूं जिनस्त्रियोंकादर्शनहोवैहै ॥ और आपणेपीनउन्नतदोस्तनोंकरिकै चंद्रमंडलका तिरस्कारकऱ्याहै जिनस्त्रियोंनैं ॥ और नितंबस्थानविषेस्थित सुवर्णमणिमयकांचीके मधुरशब्दोंकरिकै व्याप्तकरी है भूमि जिन स्त्रियोंनैं ॥ और आपणे मुखरूपकमलके सुगंधकरिकै

युक्तजोवायुहै ॥ तावायुकरिकै सुगंधिवालाकऱ्याहै गृहकामध्यभाग जिनास्त्रियोंनैं ॥ और वृंततैंरहित जोचंपकपुष्पोंकीमालाहै ॥तामालाकेकोमलस्पर्शकूं आपणेशरीरकेकोमलस्पर्शकरिकैं तिरस्कारकऱ्याहै जिनास्त्रियोंनैं॥ तथा उत्कृष्टहावभावोंकरिकै कामीपुरुषोंकेरसउल्लासकूं उत्पन्नकरणेहारे हैं विलास जिन स्त्रियोंके ॥ तथा कोकिलाकेसमानहैं मधुरस्वर जिन स्त्रियोंका ॥ और मंदमंदहास्यकरिकैयुक्त जो स्निग्धमुखहै॥तामुखकरिकै जे स्त्रियां विचित्रअर्थवालेपदोंकूंभाषणकरणेहारीयां हैं॥ और आपणेशरीरकीनिर्मलकांतिकरिकै जिन स्त्रियोंनैं सूर्यचंद्रमाकीकांतिकूंभी तिरस्कारकऱ्याहै॥और जे स्त्रियां सर्वलक्षणोंकरिकैसंपन्नहैं॥और प्रथमनवीनयौवनअवस्था प्राप्तभई है जिन स्त्रियोंकूं॥और आपणेशरीरकीसुंदरताकरिकै जे स्त्रियां कामकूंभी कामकीउत्पत्तिकरणेहारीयां हैं॥और प्रकाशमानतथा अमूल्य जेनानाप्रकारकेविचित्रवस्त्रहैं तथा भूषणहैं॥ तिनवस्त्रभूषणोंकरिकै शोभायमानहैशरीर जिन स्त्रियोंका ॥और भोक्तापुरुषोंकेअनेकपुण्यकर्मोंकरिकै रचितहैशरीरजिन स्त्रियोंका॥१४॥पुनःकैसीहैं ते स्त्रीयां॥आपणेसमानरूपवालियाँतथासमानअवस्थावालियाँजेएकएकशत१००दासियाँ हैंतिनदासियोंकरिकैयुक्तहैं॥१५॥तथानृत्यकरणेकेसाधनजेनानाप्रकारकेतूर्यवीणादिकवादित्रहैं॥तिनवादित्रोंकरिकैयुक्तहैं ॥१६॥ऐसेस्वर्गकी स्त्रियोंकेजेनेत्रोंकेकटाक्षहैं॥तेकटाक्ष याजीवोंकूं मोक्षरूपसुखतैंभी अधिकसुखकीप्राप्तिकरै हैं॥जभी तिन स्त्रियोंकेकटाक्षमात्रभी याजीवोंकूं मोक्षसुखतैंभी अधिकसुखकीप्राप्तिकरै हैं॥तभी तिन स्त्रियोंकेअंगोंकास्पर्श याजीवोंकूंपरमआनंदकीप्राप्तिकरैहैयाकेविषेक्याकहणा है॥हेनाचिकेता मेरीआज्ञाविषेविचरणहारे जेस्वर्गवासीपुरुषहैं ॥ तेस्वर्गवासीपुरुष ऐसीसुंदरास्त्रियोंकूं आलिंगनकरिकै सर्वदा सुखकूंप्राप्तहोवै है ॥ ऐसीसुंदर स्त्रियां मनुष्यलोकविषे किसीमनुष्योंकूं प्राप्तहोवैनहीं॥ हेनाचिकेता ऐसीस्वर्गकीसुंदर स्त्रियां मैंयमराजा तुमारेताईंदेताहूं तिन स्त्रियोंकेसाथतुम सुखपूर्वक रमणकरो ॥ परंतु मरणतैंअनंतर याशरीरतैंभिन्नरूपकरिकै आत्माकासत्यपणाहै ॥ अथवा असत्यपणाहै ॥ याप्रकारका मरणविषयकप्रश्न तुम हमारेसैंमतकरो ॥ हेनाचिकेता ॥ जैसे यालोकविषे काककेकितनेदंतहैं याप्रकारका काककेदंतोंकीपरीक्षाकरणेतैं याजीवोंकूं किंचित्मात्रभी फलकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ तैसे मरणतैंअनंतर यहजीवात्मा स्वर्गादिकलोकोंकूंप्राप्तहो

वे हे अथवा भस्मभावकूंप्राप्तहोवे हे ॥ याप्रकारकेआत्मविचारकरणेतैं तेरेकूं किंचित्मात्रभी फलकीप्राप्तिहोवैनहीं॥ हेनचिकेता ॥यहजे स्त्रीपुत्रादिकपदार्थ म तुमारेताईदेताहूं ॥ तेपदार्थ इसीकालविषेतुमारेकूंसुखरूपफलकीप्राप्तिकरेंगे ॥ और जोतूं आत्माकाविचारकरताहै सो विचार आपसुखरूपनहीं है ॥ तथा सोविचार सुखकेप्राप्तिकासाधनरूपनहीं है॥यातैं सोनिष्फलविचार तुमारेकूंकरणेयोग्यनहीं है ॥ हेनचिकेता॥ यालोकविषे जेजेबुद्धिमान्पुरुषहोवे हैं॥ तेबुद्धिमान्पुरुष तिसकार्यकूंकरे हैं जिसकार्यतैं आपणेकूंसुखरूपफलकीप्राप्तिहोवे है और जिस कार्यतैं आपणेकूंसुखरूपफलकीप्राप्तिनहींहोवे है॥ ताकार्यकूं तेबुद्धिमान्पुरुष करतेनहीं॥और यालोकविषे सुखकीप्राप्तिक रणेहारे पुत्रस्त्रीआदिकपदार्थहीं हैं॥यातैं तिनपुत्रस्त्रीआदिकपदार्थोंकीप्राप्तिरूप तीसरावर तूं हमारेसैंमाँग ॥और आत्मज्ञानकीप्राप्तिरूपव रकरिकै तुमारेकूं किंचित्मात्रभी सुखकीप्राप्तिहोवैगीनहीं॥ यातैं सोआत्मज्ञानरूपवर तूं हमारेसैंमतमाँग॥ हेशिष्य॥याप्रकार आत्मज्ञा नकेप्रश्नतैं निवृत्तकरणेवासते सोयमराजा तानचिकेताविषेलोभकूंउत्पन्नकरताहुआ नानाप्रकारकेवरोंकूं कथनकरताभया ॥और तायमरा जाकेवचनोंकूंश्रवणकरिकै सोनचिकेताभी तायमराजाकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ नचिकेताउवाच॥हेयमराजा॥जिनस्वर्गकी स्त्रियोंकूं तुमनैं यापुरुषोंकेसुखसाधनरूपकरिकै वर्णनकऱ्याहै ॥ तेस्वर्गकी स्त्रियां आपणीउत्पत्तितैंपूर्व तथाआपणेनाशतैंअनंतरआपणेकूं तथापुरुषोंकूं सुखकीप्राप्तिकरे हैं अथवा नहींकरे हैं॥तहां आपणेउत्पत्तितैंपूर्व तथाआपणेनाशतैंअनंतर तेस्वर्गकीस्त्रीयां आपणेकूं तथाअ न्यपुरुषोंकूं सुखकीप्राप्तिकरे हैं॥यहप्रथमपक्ष जो आप अंगीकारकरो सोसंभवैनहीं ॥काहेतैं यालोकविषे उत्पत्तितैंपूर्व तथानाशतैंअनंतर किसीभीपदार्थविषे कारणरूपतादेखणेमैंआवतीनहीं॥जोकदाचित् उत्पत्तितैं पूर्व तथा नाशतैं अनंतरभी तावस्तुविषे कारणरूपताहोवैतो जिसकालविषे कुलालकीउत्पत्तिनहींभईथी॥तिसकालविषेभी ताकुलालतैं घटरूपकार्यकीउत्पत्तिहोणीचाहिये॥और जिसकालविषेताकु लालकानाशहोवे है॥तिसकालविषेभी ताकुलालतैं तिसघटरूपकार्यकीउत्पत्तिहोणीचाहिये॥और ताउत्पत्तिकालविषे तथानाशकालविषे ताकुलालतैं घटरूपकार्यकीउत्पत्तिहोतीनहीं॥यातैं वर्तमानकालविषेही तेस्वर्गकीस्त्रियां आपणेकूं तथा अन्यपुरुषोंकूं सुखकीप्राप्तिकरे हैं

यहपक्षही आपनैं अंगीकारकरणाहोवैगा ॥ सोयहपक्षभी वास्तवतैंविचारकरिकैदेखियेतो संभवै नहीं ॥काहेतैं॥ आदावंतेचयन्नास्ति वर्त्त मानेपितत्तथा॥ अर्थयह॥जोपदार्थ आद्यकालविषेनहींहोवेहै तथा अत्यंकालविषे नहींहोवे है॥सोपदार्थ वर्त्तमानकालविषेभीनहींहोवे है॥ जैसे रज्जुविषे सर्प आदिकालमेंनहीं है॥तथा तारज्जुकेज्ञानतैंअनंतरभीनहीं है ॥यातैं सोसर्प वर्त्तमानकालविषेभी तारज्जुमेंहैनहीं॥ तैसे यहस्वर्गकीस्त्रियांभी आपणीउत्पत्तितैंपूर्व तथानाशतैंअनंतर आपणेकूं तथाअन्याकिसीपुरुषकूंसुखकीप्राप्तिकरतीयांनहीं ॥ यातैं वर्त्तमान कालविषेभी यास्त्रियोंविषे पुरुषोंकेसुखकीकारणतासंभवैनहीं॥ और वर्त्तमानकालविषे यापुरुषोंकूं जोतिनस्त्रीयोंविषेआपणेसुखकीकारणता प्रतीतहोवे है॥तापतीतविषे तिनस्त्रियोंकास्वभाव कारणनहीं है किंतुताप्रतीतिविषे याविषयासक्तकामीपुरुषोंकी जोतिनास्त्रियोंविषेरमणी कबुद्धिहै ॥ सारमणीकबुद्धिहीकारणहै ॥ हेयमराजा ॥ पूर्व तुमनैं जिनस्वर्गलोककीस्त्रीयोंकावर्णनकऱ्याहै ॥ तेस्वर्गकीस्त्रीयांभी जभी विषयसंभोगकीप्राप्तिद्वाराही विषयासक्तकामीपुरुषोंकूं सुखकीप्राप्तिकरे हैं तभी तिनस्वर्गलोककीस्त्रीयोंविषे मनुष्यलोककीस्त्रीयोंतैं कोनअधिकतासिद्धहोवैगी ॥ किंतु विचारकियेतैं तिनोंविषेकोईभीअधिकतासिद्धहोवैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ स्वर्गलोककीस्त्रीयोंविषे तथा मनुष्यलोककीस्त्रियोंविषे स्वभावतैंतो किसीपुरुषके सुखकीसाधनताहैनहीं ॥ किंतु जिसस्त्रीविषे जिसपुरुषकूं कामदोषजन्यरमणी कबुद्धिहोवे है ॥ सास्त्रीतिसीपुरुषके सुखकासाधनहोवे है ॥ सोकामदोषजन्यरमणीकबुद्धिवालेपुरुषोंकूं जैसे यहसुगंधिवालीस्वर्गकी स्त्रीयां सुखकीप्राप्तिकरे हैं ॥ तैसे दुर्गंधवालीमनुष्यलोककीस्त्रीयांभी कामदोषजन्यरमणीकबुद्धिवालेपुरुषोंकूं सुखकीप्राप्तिकरे हैं ॥ यातैं तामनुष्यलोककीस्त्रीयोंतैं यास्वर्गलोककीस्त्रीयोंविषे अधिकतासंभवैनहीं ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकैनिरूपणकरे हैं ॥ हेयमराजा ॥ यालोकविषे जैसे श्वानिणीस्त्रीआपणेश्वानपुरुषकूं सुखकीप्राप्तिकरे है ॥ और जैसे मनुष्यस्त्री आपणेमनुष्यपुरुषकूं सुखकी प्राप्तिकरे है ॥ तैसेही यहस्वर्गकीस्त्रीयां आपणेदेवतापुरुषोंकूं सुखकीप्राप्तिकरे हैं ॥ परंतु ताविषयजन्यसुखरूपफलविषे किंचित्मात्रभी न्यूनअधिकता नहीं है ॥ किंतु देवता मनुष्य श्वान यातीनोंकूं आपणीआपणीस्त्रीकेसंभोगतैं समानहींसुखहोवे है॥ हेयमराजा ॥ जोकदाचित् यहस्त्रियां

स्वभावतैंहींसुखकासाधनहोवै तो सर्वजातिवालीस्त्रीया सर्वजातिवाले पुरुषोंके सुखकाकारण होणी चाहिये ॥ और याप्रकारका व्यवहार लोकविषेदेखीतानहीं ॥ किंतु जिसजिसपुरुषकी जिसजिससत्रीविषे रमणीकबुद्धिहोवै है॥ सा सा स्त्री तिसतिसपुरुषकूंहीं विषयसंभोगद्वारा सुखकीप्राप्तिकरै है ॥ इतरपुरुषोंकूं सा स्त्री सुखकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ जैसे यास्वर्गकीस्त्रीयोंविषे देवतापुरुषोंकीरमणीकबुद्धिहै ॥ श्वानकी रमणीकबुद्धिहैनहीं ॥ यातैं तेस्वर्गकीस्त्रियां तिनदेवतापुरुषोंकूंहीं विषयसंभोगकरिकै सुखकीप्राप्तिकरै है ॥ श्वानपुरुषकूं तेस्वर्गकीस्त्रीयां सुखकीप्राप्तिकरैनहीं॥ तैसे श्वानिणीस्त्रीविषे श्वानपुरुषकूं रमणीकबुद्धिहै ॥ देवतापुरुषकूं ताश्वानिणीस्त्रीविषे रमणीकबुद्धिहैनहीं ॥ यातैं साश्वानिणीस्त्री विषयसंभोगकरिकै ताश्वानपुरुषकूंहीं सुखकीप्राप्तिकरै है ॥ देवतापुरुषकूं साश्वानिणीस्त्रीसुखकीप्राप्तिकरैनहीं इसीप्रकार मनुष्य पशु पक्षी सर्प इत्यादिकसर्व जातिवालीस्त्रियां आपणेविषेरमणीकबुद्धिवालेपुरुषोंकूंहीं सुखकी प्राप्तिकरै हैं ॥ रमणीकबुद्धितैंरहित निष्कामपुरुषकूं कोईभीस्त्री सुखकीप्राप्तिकरैनहीं॥यातैं स्वर्गलोककीस्त्रियोंविषे मनुष्यलोककीस्त्रियोंतैं जोआपनैं अधिकताकही सोसंभवै नहीं ॥ हेयमराजा ॥ जोतुम याप्रकारकावचनकहो॥ तेदेवतापुरुष जैसे स्वर्गकीस्त्रीयोंविषे सुंदररूपादिकगुणोंकूंदेखेहैं॥ तैसे तेदेवतापुरुष ताश्वानिणीस्त्रीविषे सुंदररूपादिकगुणोंकूं देखतेनहीं ॥किंतु ताश्वानिणीस्त्रीविषे तेदेवता सर्वदा कुरूपादिकदोषोंकूंहींदेखे हैं॥ याकारणतैं तिनस्वर्गकीस्त्रीयोंतैं साश्वानिणीस्त्री अत्यंतनिकृष्टहै ॥ सोयहतुमाराकहणासंभवैनहीं ॥ काहेतैं जैसे तेदेवतापुरुष स्वर्गकीस्त्रीयोंविषेतो गुणोंकूंदेखे हैं ॥ और श्वानिणीस्त्रीविषे दोषकूं देखे हैं॥तैसे सोश्वानपुरुषभी आपणीश्वानिणीस्त्रीविषेतो गुणोंकूंदेखे है ॥ और ॥ स्वर्गकीस्त्री योंविषे तथामनुष्योंकीस्त्रीयोंविषे सोश्वान सर्वदा दोषोंकूंहींदिखेहै॥याकारणतैंहीं सोश्वान स्वर्गकीस्त्रीकूं तथामनुष्यस्त्रीकूं प्राप्तहोइकै प्रसन्न होवैनहीं॥किंतु सोश्वान आपणीश्वानिणीस्त्रीकूंप्राप्तहोइकैही प्रसन्नहोवैहै॥ हेयमराजा॥जैसेयहदेवतापुरुष यास्वर्गकीस्त्रीयोंविषे नानाप्रकार केगुणोंकूंदेखे हैं॥तैसे सोश्वानभी आपणीश्वानिणीस्त्रीविषे याप्रकारकेगुणोंकूंदेखे है॥यहहमारी प्रियाश्वानणीस्त्रीसुंदरदीर्घमुखवाली है तथा अत्यंतकोमलस्पर्शवालीहै॥तथा तीक्ष्णदांतोंवालीहै तथा रक्तमुखवालीहै॥ तथा रक्तपुष्पकेसमान जाकीजिह्वाहै॥तथा मांसरुधिरकेभक्ष

णतैं सुंदरगंधवाली है ॥ तथादीर्घनेत्रोंवाली है॥तथा ऊँचेकर्णोंवाली है॥तथा सर्वदा शीघ्रगमनकरणेवाली है॥तथा पुष्टशरीरवाली है॥तथा अल्पउदरवाली है ॥ तथा ऊँचीपूछवाली है॥तथा संकुचितयोनिछिद्रवाली है ॥ तथा अत्यंतशोभायमान है ॥ तथा उगुंकारशब्दोंकरिकै तथा भंकारशब्दोंकरिकै मेरेमनकूं तथाकर्णोंकूं आनंदकीप्राप्तिकरणेहारी है ॥ तथा हमारेसन्मुखगमनकरणेतैं तथा हमारेपीछेगमनकरणे तैं यहस्त्री सर्वदा हमारासेवनकरै है॥और यहस्त्री आपणेदर्शनकरिकै हमारेनेत्रोंकूं तथामनकूं आनंदकी प्राप्तिकरणेहारी है ॥ इसतैंआदि लैकेअनेकप्रकारकेगुणोंकूं सोश्वान ताआपणीश्वानिणीस्त्रीविषेदेखे है ॥ हेयमराजा ॥ ताश्वानिणीस्त्रीकूंदेखिकरिकै ताश्वानपुरुषकूं जैसी मनविषे प्रसन्नताहोवै है॥ तैसीप्रसन्नता इंद्राणीकूंदेखिकै इंद्रकूंभी होतीहोवैगी अथवा नहींहोतीहोवैगी॥यातैं स्वर्गकीस्त्रियोंविषे जोआपनैं अधिकतावर्णनकरी है सोसंभवैनहीं॥हेयमराजा॥जैसे स्वर्गकीस्त्रियां तथामनुष्यस्त्रियां तथा पशुस्त्रियां आपणेआपणेविषेरमणीकबुद्धिवाले सजातीयपुरुषोंकूंहीं सुखकी प्राप्तिकरै हैं॥ इतरजातिवालेपुरुषकूं इतरजातिवालीस्त्री सुखकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ तैसे देवतावोंके तथा मनुष्योंके तथा पशुवोंके जेजेपुत्र पौत्रादिकपदार्थ हैं ॥ तेपुत्रपौत्रादिकपदार्थभी आपणेआपणेविषे रमणीकबुद्धिवालेसजातीयापितामातादिकोंकूंही सुखकीप्राप्तिकरै हैं ॥ इतरजातिवालेपितामातादिकोंकूं इतरजातिवालेपुत्रपौत्रादिकपदार्थ सुखकीप्राप्तिकरतेनहीं॥ याकारणतैं तेपुत्रपौत्रादिकपदार्थभी सर्वलोकोंकेसमानहीं हैं ॥ हेयमराजा ॥ यहजीव पुण्यपापकर्मकेवशतैं जिसाजिसजातिवालेशरीरकूंप्राप्तहोवै है ॥ तिसतिसजातिवालेशरीरके जितनेकी स्त्री पुत्र अन्न पानादिकपदार्थ हैं ॥ तिनपदार्थोंकूंही सोजीव सर्वपदार्थोंतैंअधिककरिकैमाने है और इतरजातिवालेशरीरोंके जितनेकीस्त्री पुत्र अन्न पानादिकपदार्थ हैं ॥ तिनपदार्थोंकूं सोजीव अत्यंतनिकृष्टकरिकैमाने है ॥ हेयमराजा ॥ जैसे श्वानके जितनेकी स्त्री पुत्र अन्न पान आदिकभोगकेसाधनहैं ॥ तिनोंविषे तुमदेवतावोंकूं सर्वदाग्लानिहींरहे है ॥ तैसे तुमदेवतावोंके जितनेकी स्त्री पुत्र अन्न पान आदिकभोगकेसाधनहैं ॥ तिनोंविषे ताश्वानकूंभी सर्वदा ग्लानिहींरहै है॥ यातैं हेयमराजा ॥ स्वभावतैं किसी स्त्रीशरीरविषे तथापुरुषशरीरविषे सुखरूपताहैनहीं ॥ किंतु जैसे पित्तदोषकरिकै भ्रमकूंप्राप्तहुआयहपुरुष श्वेतशंखकूं

पीतरूपवालादेखे है॥ तैसे कामरूपज्वरकरिकैउत्पन्नभया जोयहव्यामोहरूपपित्तदोष है ॥ ताव्यामोहरूपपित्तदोषकरिकै भ्रमकूंप्राप्तहुए यहपुरुष आपणेआपणेसमानजातिवालीस्त्रियोंविषे सुखबुद्धिकरै हैं॥इतरजातिवालीस्त्रियोंविषे सुखबुद्धिकरैनहीं ॥ तैसे तेस्त्रियांभी ताव्या मोहरूपदोषकरिकैभ्रमकूंप्राप्तभई आपणेआपणेसमानजातिवालेपुरुषोंविषेही सुखबुद्धिकरै हैं॥इतरजातिवालेपुरुषोंविषे तेस्त्रियां सुखबुद्धि करैनहीं॥ यातैं तिनोंस्त्रियोंविषे जोतिनपुरुषोंकीसुखबुद्धिहै ॥ तथा तिनपुरुषोंविषे जोतिनस्त्रियोंकीसुखबुद्धिहै॥सासुखबुद्धि श्वेतशंखविषे पीतबुद्धिकीन्याईं केवलभ्रमरूपहै॥अब स्त्रीशरीरविषे तथा पुरुषशरीरविषे स्वभावतैंसुखरूपताका खंडनकरै हैं ॥ हेयमराजा ॥ यास्त्रीश रीरविषे तथा पुरुषशरीरविषे स्वभावतैं सुखरूपतासंभवैनहीं ॥ काहेतैं यहस्त्री जोकदाचित् आपहीसुखरूपहोवै ॥ तौयहस्त्री आपणेकूं आपही सुखकीप्राप्ति किसवासतैंनहींकरती॥और हेयमराजा ॥ जोतुम यहकहो ॥ सास्त्री आपणेशरीरतैं भिन्न किसीशरीरकूंसुखकीप्रा प्तिकरै है ॥ सोयहतुमाराकहणाभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं सा स्त्री जोकदाचित् आपणेतैंभिन्नशरीरविषे सुखकीप्राप्तिकरतीहोवै ॥ तौसास्त्री आपणेतैंभिन्न सपत्नी आदिकस्त्रियोंकूंसुखकीप्राप्ति कितवासतैंनहीं करती॥और हेयमराजा जोतुमयहकहो॥सास्त्री आपणेतैंभिन्नपुरुषश रीरकूं सुखकीप्राप्तिकरै है॥सोयहतुमारा कहणाभी संभवैनहीं॥ काहेतैं सास्त्री जोकदाचित् आपणेतैंभिन्न पुरुषशरीरकूं सुखकीप्राप्तिकरती होवै ॥ तौ तानग्रस्त्रीकेहृदयदेशऊपरकीडा करता जोबालकपुरुषहै ॥ ताबालकपुरुषकूं सास्त्री सुखकीप्राप्ति किसवासतैंनहींकरती॥और हेयमराजा॥ जोतुमयहकहो ॥ सास्त्री युवानपुरुषकूं सुखकीप्राप्तिकरै है॥ सोयहतुमाराकहणाभी संभवैनहीं ॥काहेतैं सास्त्री जोकदाचित् युवानपुरुषकूं सुखकीप्राप्तिकरतीहोवै ॥ तौ सास्त्री आपणेपुत्रभ्रातादिकयुवानपुरुषोंकूं सुखकीप्राप्ति किसवासतैंनहींकरती है॥और हेयम राजा ॥ जोतुम यहकहो ॥ सास्त्री आपणेयुवानपतिकूं सुखकीप्राप्तिकरै है ॥ सोयहतुमाराकहणाभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं सास्त्री जोकदा चित् आपणेयुवानपतिकूं सुखकीप्राप्तिकरतीहोवै ॥ तौ तास्त्रीकेबहुतप्रकारसंभोगकरिकै कामरूपज्वरतैंनिवृत्तभयाजो सोयुवानपति है ॥ तायुवानपतिकूं सास्त्री पूर्वकीन्याईं सुखकीप्राप्ति किसवासतैंनहींकरती है ॥ और हेयमराजा ॥ जोतुमयहकहो ॥ सास्त्री कामदोष

वालेयुवानपतिकूं सुखकीप्राप्तिकरै है सोयहतुमाराकहणाभी संभवैनहीं॥काहेतैं सास्त्री जोकदाचित् कामदोषवालेयुवानपतिकूं सुखकीप्रा तिकरतीहोवै ॥ तौ ज्वरादिकरोगोंकरिकैदुर्बलताकूंप्राप्तहुईसास्त्री ताकामदोषवालेयुवानपतिकूं सुखकीप्राप्ति किसवासतैंनहींकरती॥यातैं किसीप्रकारकरिकैभी तिनस्त्रियोंविषे स्वभावतैं सुखरूपतासंभवैनहीं॥और हेयमराजा॥जैसे यास्त्रियोंविषे स्वभावतैं तिनपुरुषोंकेसुखकी कारणतानहीं है ॥ तैसे यापुरुषोंविषेभी स्वभावतैं तिनस्त्रियोंकेसुखकीकारणतानहीं है ॥ काहेतैं यहपुरुष जोकदाचित्स्वभावतैंहीतिन स्त्रियोंकेसुखकाकारणहोवै॥तौसोपुरुष आपणेपुत्रीभगिनीआदिकस्त्रियोंकूं तासुखकीप्राप्ति किसवासतैंनहींकरता हेयमराजा॥याप्रकारकी युक्तियोंसैं विचारकरिकैदेखियेतौ किसीस्त्रीशरीरविषे तथा पुरुषशरीरविषे स्वभावतैं सुखरूपता सिद्धहोवैनहीं॥तथापिस्त्रियोंकूंपुरुषोंकेशरी रविषे जोसुखबुद्धिहोवै है ॥ तथा पुरुषोंकूं स्त्रियोंकेशरीरविषे जोसुखबुद्धिहोवै है ॥ सोयहसंपूर्ण कामरूपज्वरकीहीमहिमाहै ॥हेयमराजा॥ जैसे यालोकविषे जोपुरुष धतूरेकेबीजोंकूं भक्षणकरै है ॥ सोपुरुष तादोषकरिकै संपूर्णजगत्कूंपीतवर्णवालादेखे है ॥ तैसे यहस्त्रियां तथायहपुरुष आपणेकामदोषकरिकै आपणेसमानजातिवालेपुरुषोंविषे तथा आपणेसमानजातिवालीस्त्रीयोंविषे तौसुखबुद्धिकरै हैं ॥ और विजातीयपुरुषोंविषे तथा विजातीयस्त्रियोंविषे दुःखबुद्धिकरै हैं ॥ हेयमराजा ॥ जैसे यालोकविषे जराअवस्था यापुरुषोंके तथास्त्रि योंके कुरूपताका कारणहोवै है॥तैसे यास्त्रीपुरुषोंकीयौवनअवस्थाही ताकामरूपज्वरका कारणहोवै है॥हेयमराजा॥जेपुरुष ताकामरूप ज्वरकरिकै व्यामोहकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ तेकामीपुरुषही तिनस्त्रियों कीस्तुतिकरै हैं ॥ निष्कामपुरुष तिनस्त्रियोंकीस्तुतिकरतेनहीं॥ यातैं यह जान्याजावै है ॥ आपनैं जोतिनस्त्रियोंकीस्तुतिकरी है॥सोभी तिनविषयासक्तकामीपुरुषोंकेअभिप्रायकूंग्रहणकरिकैहीकरीहै ॥परंतु तिन दुःखरूपस्त्रीयोंकेस्तुतिकरणेविषे कोईआपका तात्पर्यहैनहीं ॥ हेयमराजा ॥ याकेविषे हम बहुतक्याकहैं ॥ जितनेकीस्त्रीपुत्रादिकपदार्थ आपनैं सुखकाकारणरूपकरिकैकथनकरे हैं ॥ तेसंपूर्णपदार्थ अनित्यही हैं ॥ और यालोकविषे जोजोअनित्यपदार्थ जिसजिसजीवकूंअ त्यंतप्रियहोवै हैं ॥ सोअनित्यप्रियपदार्थ आपणेवर्त्तमानकालविषे ताजीवकूं जितनेकीसुखकीप्राप्तिकरै है ॥ तिससुखतैं सहस्रगुणा

अधिकदुःख सोप्रियपदार्थ आपणेवियोगकालविषे ताजीवकूं प्राप्तकरै है॥यातैं यास्त्रीपुत्रादिकपदार्थोंविषे जोअनित्यपणा है॥ सोअनित्य पणाहीतिनस्त्रीपुत्रादिकपदार्थोंविषे दुःखरूपताकूंबोधनकरै है॥हेयमराजा॥प्रियस्त्रियां पुत्र पौत्र दीर्घआयुष्य सर्वभूमिकाराज्य हस्ती अश्व सुवर्ण इसतैंआदिलेकै जितनेकीपदार्थ आपनैं अत्यंतप्रियरूपकरिकैकथनकरे हैं ॥ तेस्त्रीपुत्रादिकप्रियपदार्थ आजदिनविषे तौ हमारेकूं प्राप्तहैंनहीं ॥ और आपकेवरकरिकै तेस्त्रीपुत्रादिकपदार्थ हमारेकूंदूसरेदिनविषेप्राप्तहोवैंगे ॥ परंतु तेस्त्रीपुत्रादिकपदार्थ अनित्यहैं॥यातैं तेस्त्रीपुत्रादिकपदार्थ तीसरेदिनविषे हमारेपासरहैंगे अथवा नाशहोइजावैंगे याप्रकारकानिश्चय कऱ्या जावैनहीं ॥ यातैं तेस्त्रीपुत्रधनादि कअनित्यपदार्थ आपणेवियोगकालविषे हमारेकूं परमदुःखकीप्राप्तिकरैंगे ॥ हेयमराजा ॥ यद्यपि वास्तवतैंविचारकरिकैदेखियेतौ तेस्त्री पुत्रधनादिकपदार्थ क्षणभंगुरहैं ॥ तथापि विचारतैंरहितमूढपुरुषोंनैं तिनस्त्रीपुत्रादिकपदार्थोंकूं चिरकालपर्यंतस्थायीमान्या है ॥ यातैं तिनमूढपुरुषोंकीदृष्टिकूंअंगीकारकरिकै जोकदाचित् तिनपदार्थोंकूं चिरकालस्थायीभी मानिये ॥ तौभी तेस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थ हमजीवोंकूं सुखकीप्राप्तिकरतेनहीं ॥ किंतु तेस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थ हमजीवोंकूं सर्वदा दुःखकीहीप्राप्तिकरै हैं॥ अब प्रथम स्त्रियोंविषे दुः खकीकारणतादिखावै हैं ॥ हेयमराजा ॥ जैसे यालोकविषे पुष्पोंकेरसकूंनिकासणेहारा जोनलिकायंत्र है ॥ तायंत्रकरिकै यहअग्नि तिनपु ष्पोंकेसाररूपरसकूं बाहरनिकासे है ॥ तारसकेनिकसणेकरिकै तेपुष्प शोभातैंरहितहोवै हैं॥तथा शीघ्रहींनाशकूंप्राप्तहोवैहैं॥तैसे यहस्त्री रूपअग्निभी संभोगरूपीयंत्रकरिकै यापुरुषरूपीपुष्पके वीर्य्यरूपरसकूं बाहरनिकासेहै ॥ तावीर्यरूपरसकेबाहरनिकसणेकरिकै यापुरुषके नेत्रादिकइंद्रिय तथाआयुष शीघ्रहीं क्षयकूंप्राप्तहोवै हैं॥यातैं यहस्त्रीयां वर्तमानकालविषेभी यापुरुषकेदुःखकाहीकारणहोवै हैं॥अब पुत्रों विषे दुःखकीकारणता निरूपणकरै हैं ॥हेयमराजा॥ जैसे यहस्त्रीयां पुरुषोंके वीर्यरूपरसकूंनाशकरै हैं॥तैसे यहपुत्रभी यापिताकेश्रोत्रादि कइंद्रियोंके तथामनके सत्त्वरूपरसकूंनाशकरै हैं जोसत्त्वरूपसर याजीवोंकेधर्मज्ञानकीवृद्धिकरै है॥हेयमराजा॥यहपुत्रापिताकेश्रोत्रादिक इंद्रियोंके तथामनके सत्त्वरूपरसकूं नाशकरै हैं॥याअर्थविषेहमारा उद्दालकपिताहीदृष्टांतहै॥काहेतैं मैंनचिकेतापुत्रकेजीवनकीचिंताकरिकै

सोहमारा पिता ब्राह्मणोंकेताईं दुर्बलवृद्धगौवां देताभया ॥ तावृद्धगौवोंकेदानकरणेतैं ताहमारोपिताके धर्मकीहानिहोतीभई और हमारे वियोगकरिकै ताहमारेपिताकेमनविषे महान्क्षोभहोताभया॥तामनकेक्षोभहुए ताहमारेपिताकेश्रोत्रादिकइंद्रियोंका तेजरूपबल क्षयहोता भया ॥ तात्पर्ययह ॥ मैंनाचिकेतासरीखेआज्ञाकारीपुत्रभी जभी पिताकेदुःखकेहीकारणहुए ॥ तभी दूसरेलोकिकपुत्र आपणेपिताक दुःखकेकारणहोवैंगे याकेविषेक्याकहणाहै ॥ यातैं हेयमराजा ॥ यहस्त्रीपुत्रादिकपदार्थ अनित्यहोणेतैं दुःखरूपहीहैं ॥ ऐसेअनित्यदुःखरू पपदार्थोंकूंभी जोकदाचित् तुमनैं आपणेलोकपालरूपअधिकारकेपालनकरणेवासतैं प्रियरूपकरिकैग्रहणकऱ्याहोवै ॥ तौ यहवार्त्ता आप कूंयोग्य है॥ परंतु आत्मज्ञानकीइच्छावाला जोमैंनचिकेताहूं ॥ ताहमारेकूं तिनस्त्रीपुत्रादिकपदार्थोंकेग्रहणकरणेकीयोग्यतानहीं है॥ और हेयमराजा ॥ जोपूर्वआपनैं परमआयुषकीप्राप्तिरूप तीसरावर देणेकोकह्याथा ॥ सोभी अत्यंततुच्छहै ॥ काहेतैं यालोकोंविषे हिरण्यगर्भ रूपब्रह्माकी आयुष सर्वतैंअधिकहै ॥ परंतु ताब्रह्माकेआयुषकीभी दोपरार्द्धपर्यंत अवधिहै॥ यातैं सोब्रह्माकाआयुषभी अल्पहै ॥जभी ता ब्रह्माकाआयुषभी अल्पहुआ ॥ तभी ताब्रह्माकेआयुषकेअंतर्भूत जोदेवतामनुष्यादिकोंकाआयुषहै ॥सोआयुष अल्पहै याकेविषेक्याक हणाहै ॥ अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकैनिरूपणकरै हैं ॥ हेयमराजा ॥ भूमिलोकवासीहममनुष्योंका जोएकवर्ष है ॥ सोहमाराएकवर्ष स्वर्गवासीदेवताओंका एकदिनरात्रिहोवै है ॥ तहां हममनुष्योंका जोषट्मासकाउत्तरायणहै॥सोउत्तरायण तिनदेवताओंकादिनहोवै है ॥ और हममनुष्योंकाजोषट्मासकादक्षिणायनहै ॥ सोदक्षिणायन तिनदेवताओंकीरात्रिहोवै है ॥ ऐसादेवताओंकादिनरात्रि जभी तीनसै साठ ३६० होवै है ॥ तभी तिनदेवताओंका एकवर्षहोवै है ॥ ऐसेदेवताओंकेवर्ष जभी द्वादशसहस्र १२००० होवै है ॥ तभी कृत त्रेता द्वापर कलि यहचारियुगहोवै हैं ॥ ऐसे चारयुग जभी एकसहस्र १००० वारव्यतीतहोवै हैं ॥ तभी ताब्रह्माका एकादिन होवै है ॥ और तादिनजितनीही ताब्रह्माकीरात्रिहोवै है ॥ जिसब्रह्माकीरात्रिविषे यहतीनलोक नाशकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ तिसीरात्रिकूं शास्त्रविषे नैमित्तिकप्र लयकहे हैं ॥ तथा अवांतरप्रलयकहे हैं ॥ ऐसाब्रह्माकादिनरात्रि जभी तीनसैसाठ ३६० होवै हैं ॥ तभी ताब्रह्माकाएकवर्षहोवै है ॥ ऐसा

एकशतवर्ष १०० ताब्रह्माका आयुपहोवै है॥ ताब्रह्माकेएकशतवर्षोंविषे प्रथमपचासवर्ष ५० प्रथमपरार्द्धहोवै है॥और उत्तरपचासवर्ष ५० दूसरापरार्द्धहोवैहै॥तिनदोनोंपरार्द्धोंविषे प्रथमपरार्द्धतौ वितीतहोगयाहै ॥ अभी दूसरापरार्द्ध वितीतहोताहै ॥हेयमराजा ॥ जिसब्रह्माकेमरणतैंअनंतर यासर्वजगत्का महाप्रलयहोवैगा ॥ सोब्रह्माभी अभी अर्द्धआयुपवालाहुआस्थितहै ॥ और जैसे हममनुष्योंकूं मरणकाभयहोवै है ॥ तैसे ताब्रह्माकूंभी आपणेमरणकाभयहोवै है ॥ याकारणतैंही सोब्रह्मा आपणेनेत्रोंकूंमूँदिकरिकै अंतरआत्माकेध्यानकूंकरताहुआ स्थितहोवै है ॥ यातैं हेयमराजा ॥ ऐसाब्रह्माभी जभी मरणकेभयकरिकैयुक्त है॥तभी ताब्रह्माकाअंशभूत तुमदेवता हमारेताईं परमआयुपकीप्राप्ति किसप्रकारकरोगे ॥ यातैं हेयमराजा ॥ जलकेफेनवुद्वुदेकीन्याईं क्षणभंगुर जोयहदुःखरूपसंसारमुद्र है ॥ तासंसारविषे स्थित जितनेकी हस्ती अश्व रथ इत्यादिकवाहनहैं ॥ तथा नृत्यगीतादिकोंकरि कैयुक्त जे यहसुंदरस्त्रीयां हैं ॥ तथा शुभगुणवाले जेपुत्रपौत्रादिकपदार्थ हैं ॥ इसतैं आदिलैके जितनेकीपदार्थ पूर्वआपनैं हमारेदेणेवासतैंकहे हैं ॥ तेसंपूर्णस्त्रीपुत्रादिकपदार्थ आपके पासहीरहैं ऐसेआनित्यपदार्थोंकेप्राप्तिकी हमारेकूं इच्छाहैनहीं ॥ अब धनविषेभी दुःखकीकारणता निरूपणकरै हैं ॥ हेयमराजा ॥ जोतुम हमारेताईं सुवर्णादिरूपधनदेतेहो ॥ सो धन कैसाहै जोकदाचित्किसीपुरुषकूं तीनलोकोंकाधनभीप्राप्त होवै ॥ तौभी ता धनकीप्राप्तिकरिकै तापुरुषकेतृष्णाकीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ किंतु तातीनलोकोंकेधनकूंप्राप्तहोयकै सोपुरुष पुनःब्रह्मलोककेप्राप्तिकीइच्छाकरै है ॥ और जोकदाचित् किसीपुण्यकर्मकेयोगतैं तापुरुषकूं ब्रह्मलोककीभीप्राप्तिहोवै है ॥ तौभीसोपुरुष ताब्रह्मलोकतैंनीचेपतनकेअभावकीइच्छाकरै है ॥ हेयमराजा ॥ जैसे यालोकविषे प्रज्वलितअग्नि काष्ठोंकरिकै तथाघृतकरिकै तृप्तिकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और जैसे यहसमुद्र जलोंकरिकै तृप्तिकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और जैसे स्त्रीपुरुषोंकरिकै तृप्तिकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे यहपुरुष नानाप्रकारकेधनकरिकै तृप्तिकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ उठटा जैसे काष्ठघृतकेपावणेतैं अग्निकीवृद्धिहोतीजावै है॥ तैसे बहुतधनकेप्राप्तिकरिकै यापुरुषकीतृष्णा वृद्धिकूंप्राप्तहोवै है ॥ और ताधनकेरक्षणकरि तथा ताधनकेनाशकीभयकरिकै याधनीपुरुषोंकूं सर्वदा क्लेशकीहीप्राप्तिहोवै है ॥ यातैं ऐसेदुःखरूपधन

केप्राप्तिकी हमारेकूं इच्छानहीं है ॥ हेयमराजा ॥ याप्रकार वास्तवतैंविचारकरिकैदेखियेतौ यहधन जीवोंकेदुःखकाहीकारणहै तथापि लौकिकदृष्टिकूंअंगीकारकरिकै जोकदाचित् ताधनविषे सुखकीकारणताभीमानिये ॥ तौभीताधनकीप्राप्तिरूपवर हमारेकूं आपसैंमाँगणा उचितनहींहै ॥ काहेतैं आपणेदर्शनमात्रतैं सर्वदुःखोंकेनाशकरणेहारे जोतुमदेवताहो ॥तिसतुमारेकूं हमनैं यामांसमयनेत्रोंकरिकैदेख्याहै॥ यातैं जोधन हमारेकूं व्यवहारविषेअपेक्षितहोवैगा ॥ सोधन आपही हमारेकूंप्राप्तहोवैगा ॥ ताधनकीप्राप्तिवासतै हम आपकेआगे प्रार्थनाकरतेनहीं ॥ अब तायमराजाकेस्वरूपकावर्णनकरै हैं ॥ मेघकीन्याईं जायमराजाका श्यामवर्ण है ॥ तथा दीर्घ जाकाशरीरहै ॥ तथा पीतांबरोंकूं जिसनैं धारणकरयाहै ॥ तथा लाक्षारसकेसमान रक्तवर्णवाले स्वच्छविशाल जाके नेत्रहैं॥ तथा दीर्घ जाकीग्रीवाहै॥ तथा विशाल जिसका उरस्थलहै ॥ तथा जानुपर्यंत जाकी दीर्घभुजाहैं ॥ तथा सूर्यकेसमानजिसकेतेजस्वीनेत्रहैं ॥ तथा सूर्यकेसमान जाकेशरीरकातेजहै ॥ तथा महान्महिषरूपवाहनऊपर जाकीस्थितिहै ॥ तथा पापीजीवोंकूंभयकीप्राप्तिकरणेहारादंड जाकेहस्तविषे है ॥ तथा क्रोधवान्सर्पकीन्याईं आपणेदर्शनकरिकै पापीजीवोंकूं भयकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ तथा आपणेचित्तविषे सर्वदा दयालुहै ॥ तथा वेदभगवान्नैंबोधनकऱ्या जोपुण्यपापकर्मके सुखदुःखरूपफलकीप्राप्तिरूपमार्गहै॥ तामार्गकारक्षणरूप जाका कर्महै॥ तथा आत्मज्ञानकरिकैसंपन्नहै ॥ तथा सर्वरोगोंतैंरहितहै ॥ तथा संपूर्णभूतोंविषेजाकीसमदृष्टिहै ॥ तथा शत्रुमित्रभावतैंरहितहै ॥ हेयमराजा ॥याप्रकारकेस्वरूपकरिकैयुक्त जोआपहो ॥ सो आपही यास्थावरजंगमरूपजगत्का मृत्युरूपहो॥ ऐसेसर्वजगत्केसंहारकरणेहारेआप जभी हमारे गुरुरूपहुए ॥ तभी हमारेकूं किसकरिकैमृत्युकीप्राप्तिहोवैगी ॥ किंतु जबपर्यंत आप यादक्षिणदिशाविषेस्थितहोवैंगे॥ तबपर्यंततौ हम निःसंशयहोइकै जीवैंगे यातैं आपकेकृपाकटाक्षकीप्राप्तिकरिकै सोचिरकालपर्यंतजीवन हमारेकूं स्वभावतैंहीसिद्धहै ॥ यातैं ताचिरकालपर्यंत जीवनकी प्राप्तिरूपवर आपसैंमाँगणा हमारकूं उचितनहीं है !! यातैं हेयमराजा ॥ मरणतैंअनंतर आत्माकेसत्ताकाजोसंशयहै॥तासंशयकूं जोबोधनिवृत्तकरै ॥ ताबोधकीप्राप्तिरूप तीसरावर आप हमारेताईंदेवो ॥ हेयमराजा ॥ जरामरणतैंरहित जेआप स्वर्गवासीदेवताहो ॥ और

जरामरणकरिकैयुक्त जेभूमिलोकविषेरहणेहारे हममनुष्यहैं ॥ ऐसे हमसरीखेमनुष्य किसी देवयोगतैं आपसरीखेदेवतावोंकीसमीप ताकूंप्राप्तहोइकै जोकदाचित् आत्म अनात्म पदार्थोंकेविचारकरिकैयुक्तहोवैं॥तौ तेअधिकारीमनुष्य यास्त्रीपुत्रादिकपदार्थोंकूंरमणीकजा निकारिकै ताचिरकालजीवनविषे किसप्रकार आसक्तिकरैंगे ॥ किंतु तेअधिकारीमनुष्य तिनस्त्रीपुत्रादिकपदार्थोंविषेआसक्तिनहींकरैंगे ॥ कैसेहैंतेस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थ ॥ विचारवानपुरुषकूंतौ सर्वदादुःखरूपहींप्रतीतहोवै हैं॥ और विचारतैंरहितमूढपुरुषोंकूं तेस्त्रीपुत्रादिकपदार्थ आपणेदर्शनद्वारा तथाभोगद्वारा सुखकीप्राप्तिकरै हैं॥ हेयमराजा ॥ मनुष्यलोकतैंआदिलैके ब्रह्मलोकपर्यंत जितनेकीविषयजन्यसुखहै तथा सुखकीप्राप्तिके जितनेकी स्त्री पुत्र धन आदिकसाधनहैं ॥ तिनसंपूर्णपदार्थोंकूं पूर्वउक्तरीतिसैं मैंनचिकेता दुःखरूपकरिकैहीजाण ताहूं ॥ यातैं तिनपदार्थोंकेप्राप्तिकी हमारेकूं इच्छानहींहै ॥यातैं हेयमराजा॥जरामरणतैंरहितदेवताभी जिसदुर्विज्ञेयआत्माविषे निर्णयतैं विना संशयकूंप्राप्तहोवै हैं ताआत्माकानिर्णयरूप तीसरावर आप हमारेताईं देवो॥हेशिष्य ॥ याप्रकार अनेकप्रकारकेवरोंकूंदेकरिकै ता यमराजानैं तानचिकेताकूंलोभायमानकराभी तौभी सोनचिकेता ताआत्मज्ञानतैंविना किसीदूसरेवरकूं नहींग्रहणकरताभया॥इसप्रकार तानचिकेताके तीव्रवैराग्यकूंदेखिकै सोयमराजा बहुतप्रसन्नहोताभया ॥ और तानचिकेताकूं ब्रह्मविद्याकाअधिकारीजाणिकै सोयमराजा तानचिकेताकेताईं आत्मज्ञानरूपतीसरावर देणेवासतै याप्रकारकावचन कहताभया ॥ यमराजाउवाच॥हेनचिकेता ॥इसलोकविषे तथा परलोकविषे जीवोंकेप्राप्तहोणेयोग्यदोप्रकारकाफलहोवै है ॥ तहां एकतौश्रेयरूपफलहो वै है ॥ और दूसरा प्रेयरूपफलहोवै है ॥ तहां बुद्धिमान्पुरुषोंकेप्रीतिकाविषयजोमोक्षरूपनित्यसुखहै॥ सोमोक्षरूपसुख सर्वतैंउत्कृष्टहै॥याकारणतैं तामोक्षरूपनित्यसुखकूं श्रुतिभगवती श्रेय यानामकरिकैकथनकरै है ॥ और मूढपुरुषोंकेप्रीतिकाविषय जोसंसारसंबंधीविषयजन्यअनित्यसुखहै ॥ सोविषयजन्यसुख अत्यंत निकृष्टहै ॥ याकारणतैं ताविषयजन्यअनित्यसुखकूं श्रुतिभगवती प्रेय यानामकरिकैकथनकरै है ॥और स्वरूप साधन प्रमाण अधिकारी याचारोंकेभेदकरिकै सोश्रेयरूपफल तथा प्रेयरूपफल परस्परविलक्षणहोवै है ॥ तहां प्रथम मोक्षरूपश्रेयका नित्यसिद्धआनंदस्वरूप

आत्माहीस्वरूपहै ॥ और मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकाअभेदज्ञान ताश्रेयको साधनहै और उपनिषद्रूपवेदांतशास्त्र ताश्रेयविषे प्रमाणहै ॥ और विवेक वैराग्य शमदमादिषट्संपत्ति मुमुक्षुता याचतुष्टयसाधनसंपन्नपुरुष ताश्रेयका अधिकारीहै॥और दूसरा जोप्रेयरूपफलहै ॥ ता प्रेयकातौ विषयजन्यअनित्यसुख स्वरूपहै ॥ और यज्ञादिककर्म ताश्रेयके साधनहैं ॥ और वेदकापूर्वकर्मकांड ताप्रेयविषे प्रमाणहै ॥ और सकामपुरुष ताप्रेयका अधिकारीहै ॥ याप्रकार तिनश्रेयप्रेयदोनोंका परस्परभेदहोवै है ॥ हेनचिकेता ॥ श्रेयप्रेय यादोनोंप्रकारके फलोंविषे जोअधिकारीपुरुष श्रेयरूपफलकूं संपादनकरै है॥ सोअधिकारीपुरुष आपणेप्रयोजनतैं भ्रष्टहोवै नहीं ॥ किंतु सोअधिकारीपुरुष कृतकृत्यभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ और जोमूढबुद्धिपुरुष ताप्रेयरूपफलकूं संपादनकरै है ॥ सोमूढबुद्धिपुरुष यासंसारविषे नानाप्रकारकेजन्म मरणादिकदुःखोंकूं प्राप्तहोवै है ॥ हेनचिकेता॥ जैसे जलविषेस्थितजोमत्स्यहै सोमत्स्य जभीलोहेकीकुंढीसाथबाँधेहुएमांसकेभक्षणकरणे कीइच्छाकरिकै प्रवृत्तहोवै है॥तभीसोमत्स्य सुखलेशतैंरहित मरणांतदुःखकूंप्राप्तहोवै है॥तैसे यहसकामपुरुषभी जभी स्वर्गादिकभोगोंकी इच्छाकरिकै यज्ञादिककर्मोंविषेप्रवृत्तहोवै है ॥ तभी सोसकामपुरुष सुखलेशतैंरहित जन्ममरणादिक अनेकदुःखोंकूं प्राप्तहोवै है और हेनचिकेता॥ जैसे निर्धनदरिद्रीपुरुष दुष्टराजाकेदेशविषेस्थितहुआ भी बंधनादिकदुःखोंकूंप्राप्तहोवैनहीं॥ तैसे मोक्षरूपश्रेयकीइच्छावाले आपसरीखेनिष्कामपुरुष प्रारब्धकर्मकेयोगतैं यासंसारविषेवर्त्तमानहुएभी दुःखकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं यहसिद्धभया ॥ नित्यसुखकीप्राप्ति करणेहारा जोमोक्षरूपश्रेयहै ॥ सोमोक्षरूपश्रेयतौ निष्कामपुरुषकेसाथ संबंधकूंप्राप्तहोवै है ॥ और जन्ममरणादिरूपदुःखकीप्राप्तिकरणे हारा जोविषयजन्यसुखरूपप्रेयहै ॥ सोप्रेय सकामपुरुषकेसाथ संबंधकूंप्राप्तहोवै है ॥ तहां तुमारेसरीखे जेनिष्कामपुरुषहैं ॥ तेनिष्काम पुरुषतौ मोक्षरूपश्रेयकेसाथही संबंधकूंप्राप्तहोवैहै॥और विषयोंविषेआसक्त जेमंदबुद्धिसकामपुरुषहैं॥ तेसकामपुरुषतौ विषयजन्यसुखरूप प्रेयकेसाथही संबंधकूंप्राप्तहोवै हैं॥ हेनचिकेता ॥ जिसकालविषे यह अधिकारीपुरुष वेदोंका तथा पुराणादिकशास्त्रोंका अध्ययनकरै हैं तथा तिनवेदोंके तथा पुराणोंके अर्थविषेकुशलहोवै हैं ॥ तिसीकालविषे याअधिकारीपुरुषोंकेसाथ श्रेयका तथाप्रेयका संबंधहोवै है ॥

तिनअधिकारियोंविषेभी जेतो अत्यंततीक्ष्णबुद्धिवालेपुरुषहोवे हैं॥तेपुरुषतोतामोक्षरूपश्रेयकीहीइच्छाकरे हैं॥और विषयोंविषेआसक्तजेमं दबुद्धिपुरुषहोवे हैं॥ तेमंदबुद्धिपुरुषतो ताप्रेयकीहीइच्छाकरे हैं॥हेनचिकेता॥सोप्रेयकीइच्छाकरणेहारा सकामपुरुष पूर्वअप्राप्तहुए स्त्रीपुत्र धनादिकपदार्थोंके प्राप्तिकीइच्छाकरे है॥ और पूर्वप्राप्तहुए तिनस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंकेरक्षाकरणेकीइच्छाकरे है ॥ परंतु तिन स्त्रीपुत्रा दिकपदार्थोंकीप्राप्ति तथा तिनपदार्थोंकारक्षण दैवकेअधीनहे॥हमारीइच्छातैं तिनपदार्थोंकीप्राप्तितथारक्षण होइसकैनहीं ॥याप्रकारकेअ र्थकूं तेसकामपुरुष जाणतेनहीं ॥ याकारणतैं तेप्रेयअर्थीसकामपुरुष मंदबुद्धिवालेहैं ॥ और हेनचिकेता ॥ जेतुमारे सरीखेबुद्धिमान् नि ष्कामपुरुषहोवेहैं॥ तेबुद्धिमान्पुरुषतो तिनस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंकेप्राप्तिकी तथा रक्षणकरणेकी इच्छाकरतेनहीं ॥किंतु तिनस्त्रीपुत्रादि कपदार्थोंकेप्राप्तिकूं तथा रक्षणकूं दैवकेअधीनमानिकै तेनिष्कामपुरुष आपणेचित्तविषे निरंतर ताप्रेय का तथाश्रेयकाही विचारकरे हैं॥ अब प्रथम प्रेयकेस्वरूपकाविचार निरूपणकरे हैं॥ हेनचिकेता ॥ जिसअधिकारीपुरुषकूं जन्ममरणादिकदुःखोंकेनिवृत्तिकीइच्छाहोवे ॥ सोअधिकारीपुरुष ताप्रेयकेस्वरूपविषे याप्रकारकाविचारकरे ॥ यहसंपूर्णजीव हमारेकूं सर्वदासुखकीप्राप्तिहोवे तथाहमारेकूं दुःखकीप्राप्ति कदाचित्भीनहींहोवे याप्रकारसुखकेप्राप्तिकी तथादुःखकेनिवृत्तिकीइच्छाकरेहैंपरंतुतिनजीवोंकूं सुखकीप्राप्तितथादुःखाभावकीप्राप्तिहोती नहीं उलटा तिनपुरुषोंकूं दुःखकीहीप्राप्तिहोवेहे॥ यातैं यहजान्याजावे है ॥ कोईबलवान्दोष विद्यमानहै॥जादोषकेप्रभावतैं यहजीव सुख कीप्राप्तिवासतैं उद्यमकरतेहुएभी दुःखकूंहीप्राप्तहोवे है॥यातैं यहविचारकऱ्याचाहिये ॥सोदुःखकीप्राप्तिकरणेहारादोष किसकाधर्महै॥तहां पुण्यपापरूपकर्मोंकाकर्त्ता जोपुरुषहै ॥ तापुरुषकाही सोदोष धर्म है ॥ अथवा सोदोष पुण्यपापरूपकर्मोंकाही धर्म है ॥तहां सोदोष पुरु षकाधर्म है यहप्रथमपक्षतोसंभवै नहीं ॥काहेतैं शास्त्रविषेकथनकरी जोयज्ञादिककर्मोंकेकरणेकीरीतिहै ॥ ताशास्त्रकीरीतिसैं किंचित्न्यू नरूपकरिकै अथवा किंचित्अधिकरूपकरिकै जोतिनयज्ञादिककर्मोंकाकरणाहै याकानाम वैगुण्यहै ॥ तावैगुण्यकरिकै तेयज्ञादिककर्म कर्त्तापुरुषकूं आपणेफलकी प्राप्तिकरैनहीं ॥ यातैं सोवैगुण्यही तापुरुषकादोष कहणाहोवैगा॥और सोवैगुण्यदोष जिनपुरुषोंविषेहैनहीं ॥

किंतु जेपुरुषतिनयज्ञादिककर्मोंकूं शास्त्रकीरीतिसैं भलीप्रकारकरेहैंतिनपुरुषोंकूंभी दुःखकीप्राप्तिदेखणमैंआवे है॥यातैं सोदोष पुरुषकाधर्म नहीं है॥किंतु परिशेषतैं स्वर्गादिकलोकोंकीप्राप्तिवासतैं करेजेकाम्यकर्म हैं ॥ तिनकाम्यकर्मोंकाही सोदोष धर्म है ॥ यातैं काम्यकर्महीं याजीवोंकूं दुःखकीप्राप्तिकरे हैं॥ अब लोकप्रसिद्ध सुखकेसाधनोंकानिरूपणकरे हैं॥यालोकविषे साक्षात् अथवा परंपराकरिकै विषयजन्य सुखोंकासाधनजोसुवर्णादिरूपधनहै॥ताधनकूं ब्राह्मणतो प्रतिग्रहयाजन अध्यापन यातीनउपायोंकरिकै संपादनकरे हैं॥तहां ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यातीनवर्णोंविषे जिसपुरुषनैं शास्त्रकीरीतिसैं धर्मपूर्वक धनकासंपादनकऱ्याहोवै॥तथा जोपुरुष गुरुशास्त्रदेवताओंविषे श्रद्धाभक्तिवा लाहोवै ॥तथा अनाचारतैंरहितहोवै॥ ऐसेधर्मात्मापुरुषतैं याब्राह्मणनै धनकादानलेणा याकानाम प्रतिग्रहहै ॥ और ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यात्रैवर्णिपुरुषोंकूं याब्राह्मणनैं यथा अधिकार यज्ञकरावणा याकानाम याजन है ॥ और वैराग्यादिकसाधनोंकरिकैयुक्त जेअधिकारी पुरुषहैं ॥ तिनअधिकारीपुरुषोंकेताईं ब्राह्मणनैं विद्यादेणी याकानाम अध्यापनहै ॥ याप्रकारकेउपायोंकरिकै यहब्राह्मण धनकासंपाद नकरे हैं ॥ और क्षत्रियराजा प्रजाकीचौरादिकोंतैंरक्षाकरिकै धनकासंपादनकरे हैं ॥ और वैश्यपुरुष कृषिवाणिज्यादिकोंकरिकै धनकासं पादनकरे है ॥ और शूद्रपुरुष ब्राह्मणादिकतीनवर्णोंकीसेवाकरिकै धनकासंपादनकरे हैं ॥ इसप्रकार आपणीआपणीवृत्तितैं धनकूंएकठा करिकै तेब्राह्मणादिकचारवर्णोंकेपुरुष ताधनकरिकै नानाप्रकारकेअन्नकूं तथा स्त्रियोंकूं तथा गृहादिकपदार्थोंकूं प्राप्तहोवे हैं ॥ तहां तेब्रा ह्मणादिकपुरुष अन्नकरिकैतो तृप्तिकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ और स्त्रियोंकरिकै पुत्रपौत्रादिकप्रजाकूं प्राप्तहोवे हैं॥ और गृहादिकपदार्थोंकरिकै मन केसंतोषकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ और तेब्राह्मणादिकपुरुष जोकदाचित् ताधनकरिकै यज्ञादिकरूपइष्टकर्मोंकूंकरे हैं ॥ तथा लोकोंकेसुखवासतै वापीकूप तडाग गृह इत्यादिकपूर्त्तकर्मकरे हैं ॥ तथा अन्नवस्त्रादिकपदार्थोंकादानकरे हैं ॥ तो तेब्राह्मणादिकपुरुष इसलोकविषेतो यशकूं प्राप्तहोवे हैं ॥ और मरणतैंअनंतर स्वर्गादिकलोकोंकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तास्वर्गविषे तेपुरुष नानाप्रकारकेदिव्यभोगोंकूंभोगे हैं ॥ और तापुण्य कर्मोंकेक्षयहुएतैंअनंतर तेसकामपुरुष तास्वर्गतैं ॥ पुनःभूमिलोकविषेप्राप्तहोवे हैं ॥ इसप्रकार घटीयंत्रकीन्याईं तेसकामपुरुष निरंतर

यासंसारविषेभ्रमणकरे हैं ॥ यातैं यालोकविषे जिन स्त्रीपुत्रादिकपदार्थकूं यासकामपुरुषोंनैं सुखकासाधनरूपकारिकैमान्या है ॥ तेसंपूर्णपदार्थ याजीवोंकेदुःखरूपवृक्षकेउत्पत्तिका बीजरूपकारणहैं ॥ अब तिनपदार्थोंविषे दुःखकीकारणता निरूपणकरै हैं ॥यहसकाम पुरुष जभी तिनधनादिकपदार्थोंकूंएकठाकरै है ॥ तभी मरणकेसमानदुःखोंकूंप्राप्तहोवै हैं ॥और तादुःखोंकूंसहनकरिकै जभी यहसकाम पुरुष ताधनादिकपदार्थोंकूंएकठाकरै है ॥ तभी यहसकामपुरुष तिनधनादिकपदार्थोंकेवियोगकाभयकरिकै परमदुःखकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ और धनादिकजडपदार्थोंकी तथा स्त्रीपुत्रादिकचेतनपदार्थोंकी जोअन्यपुरुषोंकेसमीपजाणेकीशंका है ॥ तथा अप्रियपदार्थोंकेप्राप्तिकी जोशंका है॥ यहदोनोंप्रकारकीशंका तिनसकामपुरुषोंकेचित्तकूं अग्निकीन्याईं दाहकरै है ॥ और यालोकविषे तथा परलोकविषे स्थित जोआपणाशरीरहै ॥ तथा ताशरीरकेसंबंधी जेमातापितागुरुआदिकोंकेशरीर हैं ॥ तिनशरीरोंकेमरणकाभयकरिकैभी यासकाम पुरुषोंकूं परमदुःखकीप्राप्तिहोवै है ॥ और इसलोकविषे तथा परलोकविषे वर्तमानजोशरीरहै ॥ ताशरीरकेनाशतैंअनंतर पुनः पुण्यपा परूपकर्मोंकरिकै हमारेकूं किसशरीरकीप्राप्तिहोवैगी याप्रकारकीचिंताजन्यभयकरिकैभी यासकामपुरुषोंकूं परमदुःखकीप्राप्तिहोवै है॥और यालोकविषे तथा परलोकविषे आध्यात्मिकदुःख आधिदैविकदुःख आधिभौतिकदुःख यहतीनप्रकारकेदुःख तिनसकामपुरुषोंकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं यासंसारविषे कोईभीपदार्थ याजीवोंकेसुखकासाधननहीं है॥और जैसे विषकरिकैमिल्याहुआअन्न मूढबालकोंकूं सुख कासाधन प्रतीतहोवै है ॥ तैसे यहस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थभी विचारहीनमूढपुरुषोंकूं सुखकेसाधन प्रतीतहोवै हैं॥इतनैंकारिकैश्रेयरूपफल काविचारकऱ्या॥अब श्रेयरूपफलकाविचार निरूपणकरै हैं॥जैसे श्वानकामैथुन प्रथमकालविषे ताश्वानकूं सुखकीप्राप्तिकरै है ॥और उत्त रकालविषे ताश्वानकूं दुःखकीप्राप्तिकरैहै ॥ तैसे इसलोकविषे तथा परलोकविषे स्थित जितनाकीश्रेयहै ॥ सोश्रेय प्रथमकालविषेतौ तिन भ्रांतपुरुषोंकूं किंचित्मात्र सुखकीप्राप्तिकरैहै॥और उत्तरकालविषे सोश्रेय तिनपुरुषोंकूं परमदुःखकीप्राप्तिकरै है॥ऐसादुःखरूपश्रेय यद्यपि विचारहीनमूढपुरुषोंकूं ग्रहणकरणेयोग्यहै ॥ तथापि बुद्धिमानमैंअधिकारीपुरुषकूं सोश्रेय ग्रहणकरणेयोग्यनहीं है ॥ किंतु शरीरतैंरहित

तथा सर्वदुःखोंतैंरहित जोमोक्षरूपश्रेयहै॥ सोश्रेयही हमारेकूं संपादनकरणेयोग्य है ॥ तामोक्षरूपश्रेयकूंछोडिकै कोईदूसरापदार्थहमारेकूं संपादनकरणेयोग्यनहीं है॥ और ताश्रेयकीप्राप्ति ब्रह्मवेत्तापुरुषकेउपदेशतैंविना होवैनहीं॥ यातैं वेदोंकेतात्पर्यकूंजानणेहारे जेब्रह्मवेत्तामहा त्मापुरुषहैं ॥ तिनब्रह्मवेत्तागुरुओंकेसमीपजाइकै मैं अधिकारीजन याप्रकारका ताश्रेयकास्वरूपपूछौं ॥ हेभगवन् ॥ यालोकविषे शरी रतैंरहित कोईनित्यसुखहै अथवा नहीं है ॥ याप्रकार हमारेकरिकैपूछेहुए तेमहात्मापुरुष हमारेताईं जिसवस्तुका उपदेशकरैंगे ॥ सोईही वस्तु हमाराश्रेयहोवैगा ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै सोनिष्कामअधिकारीपुरुष तिनमहात्मापुरुषोंकेआगे ताश्रेयकेप्राप्तिकीही प्रार्थनाकरै है ॥ हेनाचिकेता ॥ तामोक्षरूपश्रेयकीप्राप्तिवासतैं महात्मागुरुकेआगे प्रार्थनाकरणेहारे तेरेसरीखेनिष्कामपुरुष यालोकविषेदुर्लभ हैं ॥ हेनचिकेता ॥ यालोकविषे जीवोंकूंसुखकीप्राप्तिकरणेहारे जितनेकी स्त्री पुत्र धन आदिकपदार्थ हैं ॥ तेसंपूर्णपदार्थ मैंयमराजा पूर्वतुमारे ताईंदेताभया ॥ परंतु तिनस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंकूं दुःखरूपजाणिकै तुमनैं अंगीकारकऱ्यानहीं॥ यातैं मोक्षरूपश्रेयकूंग्रहणकरणेहारा तूं हमाराशिष्य सर्वविवेकीपुरुषोंविषेश्रेष्ठहैं ॥ हेनचिकेता ॥ जैसे यालोकविषे चौरादिकदुष्टपुरुषोंके हस्तपादोंविषेस्थित जोलोहकीशृंखला है॥ताशृंखला तिनचोरादिकपुरुषोंकूं चलनेदेवैनहीं ॥ तैसे स्त्रीपुत्रादिकपदार्थोंविषे आसक्तिरूप जोसुवर्णमयशृंखला है ॥ सोआसक्ति रूपशृंखलाभी यापुरुषोंकूं किसीशुभकर्मविषे प्रवृत्तहोणेदेवैनहीं ॥ ऐसीआसक्तिरूपशृंखलाकूं विचारकेबलतैंतोडिकै तूंनचिकेता बाहर निकस्याहै ॥ यातैं यासंसाररूपज्वरतैं तूंअवश्यमुक्तहोवैगा ॥ कैसी है सा आसक्तिरूपशृंखला॥ जाआसक्तिरूपशृंखलाकरिकैबांधेहुए केई कशास्त्रवेत्ताबुद्धिमान्पुरुषभी यासंसाररूपसमुद्रविषेही डुबेरहे हैं॥तासंसारसमुद्रतैं आपणेकूं निकासणेविषे समर्थहोवैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ स्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंविषे आसक्तिरूपशृंखलाकरिकैबांधेहुए शास्त्रवेत्ताबुद्धिमान्पुरुषभी जभी आपणेकूं यासंसारसमुद्रतैंबाहरनि कासणेविषे समर्थनहींहोवै हैं॥ तभी शास्त्रविचारतैंरहित अन्यजीवोंकीक्यावार्त्ता है॥ ऐतीआसक्तिरूपशृंखलाकूं तुमनैं विचारकेबलतैं भेद नकऱ्याहै ॥ यातैं सर्वविचारवान्पुरुषोंविषे तू श्रेठहै ॥ हेनचिकेता ॥ यालोकविषे दोप्रकारकेमार्ग हैं ॥ एकतौ यज्ञादिककर्मरूपमार्ग है

और दूसरा आत्मज्ञानरूपमार्ग है ॥ तेदोनोंमार्ग परस्पर दूरवर्त्तमानहैं काहेतैं यहकर्मरूपमार्गतौ याजन्ममरणरूपसंसारकेस्थितिका कारणहै ॥ याकारणतैंही सोकर्मरूपमार्ग अनित्यविषयजन्यसुखरूप प्रेयरूपपुरकीप्राप्तिकरै है ॥ और दूसराआत्मज्ञानरूपमार्गतौ ताजन्ममरणरूपसंसारकेनिवृत्तिकाकारणहै ॥ याकारणतैंही सोआत्मज्ञानरूपमार्ग नित्यसुखमोक्षरूपश्रेयरूपपुरकीप्राप्तिकरै है॥हेनाचिकेता॥ पूर्वहमनैं तुमारेताईं स्त्रीपुत्रधनादिकअनेकपदार्थ देणेकहेथे ॥ तौभी तुमारामन चलायमाननहींहोताभया ॥ यातैं तिनदोंनोमार्गोंविषे आत्मज्ञानरूपमार्गकाअधिकारी मैं तुमारेकूंहीमानताहूं ॥ हेनाचिकेता ॥ सोकर्मरूपमार्गभी दोप्रकारकाहोवै है॥ एकतौ शास्त्रविहितयज्ञादिकशुभकर्मरूपमार्गहोवै है॥और दूसरा शास्त्रनिषिद्धहिंसादिकअशुभकर्मरूपमार्गहोवै है ॥ तहांप्रथम शुभकर्मरूपमार्गकूं तूं श्रवणकर॥ यज्ञादिकशुभकर्मोंकूंकरणेहारे जेसकामअज्ञानीपुरुषहैं॥ तथा तिनसकामपुरुषोंकेकामनाकाविषय जितनेकीस्त्रीपुत्रादिकप्रियपदार्थ हैं ॥ तेसंपूर्ण याअविद्यारूपभूमिविषेही वर्त्तमानहैं ॥ कैसे हैं अज्ञानीकर्मीपुरुष ॥ यादेहादिकसंघातकूंही आत्मारूपमानिकै तादेहादिकसंघातकीही सर्वदा स्तुतिकरै हैं ॥ और तेसकामकर्मीपुरुष हैंतौमूर्ख ॥ परंतु आपणेकूंपंडितमानै हैं ॥ ऐसेसकामकर्मीपुरुष ताअविद्याकरिकै यासंसारविषे गर्भवासादिरूपदुर्गतिकूंप्राप्तहोइकै नानाप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवै हैं॥ हेनचिकेता ॥ तेसकामकर्मीपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतैंरहितहैं ॥ याकारणतैं तेसकामअज्ञानीपुरुष ताआत्मज्ञानरूपमोक्षमार्गकूं जाणिसकतैनहीं॥ और तेअज्ञानीसकामकर्मीपुरुष गुरुरूप होइकै अज्ञानीपुरुषोंकूंहींउपदेशकरै हैं ॥ और तिनअज्ञानीसकामकर्मीपुरुषोंके उपदेशकूंश्रवणकरिकै तेअज्ञानीशिष्यभीतिसप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवै हैं॥ जैसे अंधपुरुषकेपीछेचाल्याहुआ जोदूसराअंधपुरुषहै ॥ सोअंधपुरुष वारंवार भूमिविषेपडे है ॥ तैसे अज्ञानीकर्मीगुरुओंकेपीछेचालणेहारे तेअज्ञानीशिष्यभी तिनगुरुओंकीन्याईं वारंवार जन्ममरणादिकदुःखोंकूंही प्राप्तहोवें हैं ॥ हेनचिकेता॥ याजन्ममरणरूपसंसारविषेप्राप्तहोणेहारे तेसकामअज्ञानीजीव यद्यपि बहुतप्रकारके हैं तथापि तेसकामअज्ञानीपुरुष संक्षेपतैं दोप्रकारकेहोवै हैं ॥ एकसकामपुरुषतौ पुण्यरूपअदृष्टद्वारा सुखकीप्राप्तिकीइच्छाकरै हैं ॥ और दूसरेसकामपुरुषतौ दृष्टउपायद्वारा तासुखकेप्राप्तिकीइच्छाकरै ॥ २० ॥

हैं ॥ तहां पुण्यरूपअदृष्टद्वारा सुखकेप्राप्तिकीइच्छाकरणेहारे सकामपुरुषतौ अर्थवादसहित कर्मकांडरूपवेदकूंप्रमाणमानै हैं ॥ और दृष्टउपायद्वारा सुखकेप्राप्तिकीइच्छाकरणेहारे दूसरेसकामपुरुषतौ तावेदप्रमाणकूंअंगीकारकरैनहीं ॥ किंतु तेबहिर्मुखपुरुष केवलप्रत्यक्षप्रमाणकूंही अंगीकारकरैहैं ॥ तहांवेदकेकर्मकांडकूंमानणेहारे तेसकामकर्मीपुरुषतौ आपणेशिष्योंकेप्रति याप्रकारकेवचन कथनकरै हैं॥ पिताने तथागुरुने जिसजिसमार्गकाग्रहणकऱ्याहोवै ॥ तिसीतिसीमार्गकूं पुत्रनै तथाशिष्यनै आपणेनेत्रोंकूंमूंदिकेग्रहणकरणा ॥ तात्पर्य यह ॥ पिताने तथागुरुने उपदेशकऱ्या जोकर्मकांडरूपमार्ग है ॥ ताकर्मकांडरूपमार्गकूं पुत्रनै तथाशिष्यने श्रद्धापूर्वकहीग्रहणकरणा ॥ ताकेविषे आपणीकुतर्क नहींकरणी ॥ याप्रकारकेवचन तेकर्मीपुरुष आपणेशिष्योंकेप्रति कथनकरै हैं ॥ हेनचिकेता ॥ तिनसकामकर्मीपुरुषोंकेवचनविषेविश्वासराखिकै जोमूढबुद्धिपुरुष तिनसकामकर्मोंकूंकरै है ॥ सोमूढबुद्धिपुरुष यासंसाररूपमहान्वनकूंप्राप्तहोइकै कभी स्वर्गादिकऊपरकेलोकोंकूं प्राप्तहोवै है ॥ और कभी पातालादिकनीचेलोकोंकूंप्राप्तहोवै है ॥ इसप्रकार तेसकामपुरुष निरंतर यासंसाररूपवनविषेभ्रमणकरै हैं ॥ हेनचिकेता ॥ केवलप्रत्यक्षप्रमाणकूंहींअंगीकारकरणेहारे जे दूसरेसकामपुरुष हैं ॥ तेसकामपुरुषतौ स्वर्गादिकलोकोंकेप्राप्तिकीइच्छाकरैनहीं ॥ किंतु इसीलोकके स्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंकेप्राप्तिकीइच्छाकरै हैं ॥ और तिनस्त्रीपुत्रादिकोंविषेआसक्तिकरिकै तिनस्त्रीपुत्रादिकोंकेभरणपोषणवासतै चोरी निंदा हिंसा आदिकअनेकपापकर्मोंकूंकरै हैं ॥ तापापकर्मोंकरिकै तेबहिर्मुखपुरुष रौरवादिकनरकोंविषेप्राप्तहोइकै पुनःकीटपतंगादिकक्षुद्रशरीरोंकूं प्राप्तहोवै हैं ॥ हेनचिकेता ॥ यज्ञादिकपुण्यकर्मोंकूंकरणेहारे जेसकामपुरुषहैं ॥ तथा चोरीआदिकपापकर्मोंकूंकरणेहारे जेसकामपुरुषहैं ॥ तिनदोनोंप्रकारकेसकामपुरुषोंकूं आपणेहृदयदेशविषेस्थितस्वयंज्योतिआत्मा प्रतीतहोतानहीं ॥ यातैं आनंदस्वरूपआत्माकाअज्ञान तिनदोनोंकासाधारणधर्म है॥अब तिनदोनोंप्रकारकेसकामपुरुषोंविषे किंचित्मात्रविशेषताभी निरूपणकरै हैं ॥ हेनचिकेता ॥ जैसे दूरआकाशविषेभ्रमणकरताहुआभीपक्षी ताआकाशतैंनीचेभूमिविषेआइकै बंधकपुरुषकेजालविषेफँसेहैं ॥ तैसे यज्ञादिकपुण्यकर्मकेप्रभावतैं तेसकामपुरुष ऊपरस्वर्गलोकविषेविचरतेहुएभी जभी

तापुण्यकर्मका भोगकरिकैक्षयहोवै है ॥ तथा पूर्वलेकिसीपापकर्मका उदयहोवै है ॥ तभी तेसकामपुरुष तास्वर्गलोककापरित्याग करिकै मैंयमराजाकेवशहोवै हैं ॥ तहांश्रुति ॥ कपूयचरणाःकपूयांयोनिमापद्यंते ॥ अर्थयह ॥ स्वर्गफलभोगकेअंतकालविषे याजीवोंका जोकदाचित् कोईपूर्वलापापकर्म फलदेणेवासतै सन्मुखहोवै है ॥ तभी तेजीव स्वर्गकापरित्यागकरिकै नरककीप्राप्तिद्वारा श्वानादिकनीच योनियोंकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ यातैं तेपुण्यवान्सकामपुरुष किसीकालविषे मैंयमराजाकेवशकूं अवश्यप्राप्तहोवै हैं और जिनपुरुषोंकी सर्वदा पापकर्मोंविषेहीप्रीतिहै ॥ तथा महामोहरूपतमकरिकै जेपुरुष प्रमादकूंप्राप्तहुए हैं ॥ ऐसेवेदबाह्यपापात्मासकामपुरुषतौ नित्यही मैंयम राजाकेवशकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ हेनचिकेता ॥ तेवेदतैंविमुख सकामपुरुष जिसकुतर्ककरिकै पापकर्मोंकूंकरै हैं ॥ तेकुतर्क तू श्रवणकर ॥ यालोकविषे प्रत्यक्षप्रमाणकरिकैसिद्ध जोयहस्थूलशरीरहै ॥ सोस्थूलशरीरही आत्माहै ॥ ताशरीररूपआत्माकेमृत्युहुएतैंअनंतर ताआत्माकूंपरलोकविषे दूसरेशरीरकीप्राप्तिहोवैगी याकेविषेकौनकारणहै ॥ किंतु परलोकविषे पुनःशरीरकीप्राप्तिकरणेहारा कोईकारणदेखी तानहीं ॥ यातैं परलोकविषे दूसरेशरीरकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ किंवा जेवादी शरीरतैंभिन्नआत्माकूंमानै हैं ॥ तेवादी दूसरेशरीरकीप्राप्तिविषे पुण्यपापरूपकर्मोंकूंहीकारणमाने हैं ॥ सोतिनवादियोंकाकहणाभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं यालोकविषे जोपुरुष तिनकर्मोंकाकर्त्ताहोवै है ॥ सोईहीपुरुष तिनकर्मोंकेफलकाभोक्ताहोवै है ॥ अन्यपुरुषकेकर्मोंकाफल अन्यपुरुष भोगेनहीं ॥ और यालोकविषे यहस्थूलशरीरतौ पुण्यपापकर्मोंकूंकरै है ॥ और यास्थूलशरीरतैंभिन्नआत्मा परलोकविषेजाइकै तापुण्यपापकर्मोंकेफलकूंभोगे है ॥ याप्रकारकाविरुद्धअर्थ तिनवादियोंकेमतविषे कैसेघटैगा ॥ किंवा ॥ जेवादी याशरीरतैंभिन्न आत्माकूंमानै हैं ॥ तिनवादियोंकेमतविषे करेहुएकर्मोंका भोगतैं विनाहीनाशरूप कृतहानिदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और नकऱ्येहुएकर्मोंकेफलभोगकीप्राप्तिरूप अकृताभ्यागमरूपदोष प्राप्तहोवैगा ॥काहेतैं जिसशरीरनै पुण्यपापरूपकर्मकरेथे ॥ सोशरीरतौ मरणतैंअनंतर अग्निविषेभस्महोइजावै है ॥ यातैं ताशरीरकूंतौ तिनपुण्यपापरूप कर्मोंका सुखदुःखरूपफल होवैनहीं ॥ और याशरीरतैंभिन्न जिसतुमारेआत्मानै तेपुण्यपापरूपकर्म नहींकरेथे ॥ सोतुमाराआत्मा पर

ओकविषे तिनपुण्यपापकर्मोंकेसुखदुःखरूपफलकूंभोगेहै ॥ याप्रकार कृतनाश अकृताभ्यागम रूपदोनोंदूषण तिनवादियोंकेमतविषे प्राप्त होवै हैं॥किंवा॥अकृताभ्यागम यादोनोंदोषोंकीनिवृत्तिवासतै सोवादी जोकदाचितताआत्माकूं पुण्यपापरूपकर्मोंकाकर्त्ताअंगीकारकरैतौ तावादीनैं अक्रियत्वरूपहेतुतैं ताआत्माविषे जोनित्यरूपतासिद्धकरीहै॥सानित्यरूपता ताआत्माविषेनहींरहैगी॥और सोवादी जोकदाचित् ताआत्माकूं क्रियावालामानिकैभी नित्यरूपमानै ॥ तौ जैसे क्रियावालेआत्माविषे तावादीनैं नित्यरूपता अंगीकारकरी है॥ तैसे क्रियावाले याशरीरविषेभी सोवादी नित्यरूपता किसवासतैंनहींमानता॥किंतु याशरीरविषेभी नित्यरूपता माननीचाहिये॥किंवा॥ यालोकविषे जोजोपदार्थ क्रियावालाहोवै है ॥ सोसोपदार्थ स्पर्शगुणवालाभी अवश्यहोवै है॥ जैसे घटपटादिकपदार्थ क्रियावाले हैं यातैं स्पर्शगुणवालेभी हैं ॥ तैसे सोवादीजोकदाचित् ताआत्माकूं क्रियावालामानैगा॥ तौ सोआत्मा स्पर्शगुणवालाभी अवश्यहोवैगा ॥और क्रियावाला तथास्पर्शगुणवाला याशरीरभी है ॥ यातैं याशरीरतैं ताआत्माभेद सिद्धनहींहोवैगा ॥ किंतु यहशरीरही आत्मारूपासिद्ध होवैगा ॥ और याशरीररूपआत्माका परलोकविषेगमन संभवैनहीं ॥ यातैं मरणतैंअनंतर कोईपरलोकहैनहीं ॥ किंवा ॥ जोकदाचित् याशरीरतैंभिन्नकोईआत्मा परलोकविषेजाताहोवै॥तौयालोकविषे जैसेकोईपुरुष आपणेगृहकापरित्यागकरिकै किसीविदेशविषेजावै है ॥ सोपुरुष किसीकालपाइकै पुनःआपणेगृहविषेआइकै आपणेस्त्रीपुत्रादिकबांधवोंकूंदेखे है॥तैसे मरणतैं अनंतर लोकांतरकूंप्राप्तहुआ सोतुमा राआत्मा पुनःकदाचित् आपणेस्त्रीपुत्रादिकप्रियपदार्थोंकेदेखणेवासतै क्योंनहींआवता॥और मरणतैंअनंतर कोईभीपुरुष आपणेस्त्रीपुत्रा दिकोंकेदेखणेवासतैंआवतानहीं ॥ यातैं यहजान्याजावै है ॥ इसलोकतैंभिन्न कोईपरलोकहैनहीं ॥ किंवा यमकिंकरआइकै याजीवात्माकूं परलोकविषेलेजावै हैं याप्रकारजोवादी कथनकरै है सोभीअसंगतहै॥ काहेतैं तेयमकिंकर जोकदाचित् याजीवात्माकूंबांधिकै याशरीरतैं बाहर परलोकविषे लेजातेहोवैं ॥ तौ जैसे यालोकविषे राजाकेभृत्य जभी किसीचौरपुरुषकूंबांधिकै गृहतैंबाहरनिकासे हैं ॥तभी सोचौर पुरुष आपणेगृहतैंबाहरनिकासिकै ऊँचेशब्दोंकूंकरै है॥ तैसे मरणकालविषे तिनयमकिंकरोंनै याशरीरतैंबाहरनिकास्याहुआसोजीवात्माभी

ऊंचेशब्दोंकूंकिसवासतैनहींकरता ॥ और मरणकालविषे याशरीरतैंबाहरनिकसिकै कोईभीजीवात्मा ऊंचेशब्दोंकूंकरतानहीं ॥ तथा कि
जीवऊपर उपकार तथाअपकार करतानहीं ॥ यातैं यहजान्याजावै है ॥ याशरीरतैंभिन्न कोईआत्मानहीं है ॥ किंवा ॥ यास्थूल
शरीरतैंआत्माभिन्नहै ॥ सोआत्मा पुण्यपापरूपकर्मकेवशतैं परलोकविषेजावै है ॥ याप्रकारकेवचन जेवेदविषेदेखणेंमआवै हैं ॥ तेवचन
ईश्वरनैं नहींउच्चारणकरे ॥ किंतु लोकोंकेधनादिकपदार्थोंकेहरणेवासतै किसीलोभीब्राह्मणोंनैं तेवचन वेदविषेपाये हैं॥किंवा॥इसलोकविषे
जोपुरुष आपणेपितरोंकीप्रसन्नवासतै ब्राह्मणोंकेताईं अन्न जल वस्त्र भूषण गृह इत्यादिकपदार्थ दानदेवै है ॥ ते संपूर्णअन्नादिकपदार्थ ता
पुरुषकेपितरोंकूं परलोकविषेप्राप्तहोवैहैं॥याप्रकारकेवचन जोतेवादीपुरुषकथनकरै हैं॥तेवचनभीमिथ्याहैं॥काहेतैं इसलोकविषेस्थितब्राह्म
णोंकेताईंदियेहुएअन्नादिकपदार्थ जोकदाचित् परलोकविषेस्थितापितरोंकूंप्राप्तहोतेहोवैं॥ तौइसीलोकविषेकिसीगृहकेकोणविषे मातापिता
कूंबैठाइकै पुत्रनेतिनोंकीतृप्तिकरणेवासतै तिसीगृहविषे ब्राह्मणोंकेताईं अन्नजलादिकपदार्थ दानदिये॥ताअन्नजलादिकोंकरिकै तामातापि
ताकी क्षुधातृषा किसवासतैंनिवृत्तनहींहोती॥तात्पर्ययह॥मातापिताकीतृप्तिवासतैं जिसगृहविषे ब्राह्मणोंकेताईं अन्नादिकपदार्थदिये हैं ॥
तिसीगृहविषे स्थितमातापिताकीभी जभी ताअन्नादिकोंकरिकै तृप्तिनहींभई॥तभी अत्यंतदूरपरलोकविषेस्थित तामातापिताकी ताअन्न
करिकैतृप्ति किसप्रकारहोवैगी ॥ यातैं याशरीरतैंभिन्न कोईआत्मा परलोकविषेजावैहै यहतिनवादियोंकाकहणा अत्यंतविरुद्धहै ॥
हेनचिकेता ॥ इसतैंआदिलैकेअनेकप्रकारकीकुतर्कोंकूं तेबहिर्मुखमूढपुरुष कामक्रोधादिकोंकेवशहुए कथनकरै हैं ॥ ऐसेवेदबाह्यना
स्तिकपुरुषोंकूं इसलोकतैंविना दूसराकोई परलोक प्रतीतहोवैनहीं ॥ हेनचिकेता ॥ इसप्रकार वेदोंकीनिंदाकरणेहारे तथा आपणेशरीरके
पालनकरणेवासतै तथा स्त्रीपुत्रादिककुटुंबकेपालनकरणेवासतै अनेकप्रकारकेपापकर्मोंकूंकरणेहारे जेबहिर्मुखनास्तिकपुरुषहैं॥ तेबहिर्मु
खपुरुषतौ वारंवार मृत्युकूंप्राप्तहोइकै मैंयमराजाकेवशकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ हे नचिकेता ॥ जैसे वनविषे किसीवृक्षकीशाखाविषेस्थित जोवान
रहै ॥ सोवानर आपणेचंचलस्वभावतैं धनुषवालेपुरुषकी तबपर्यंत अवज्ञाकरै है ॥ जबपर्यंत ताधनुषवालेपुरुषनैं तावानरकीतरफ आपणे

॥ २२

धनुषतैं बाणनहींचलाया॥और जभीसोधनुषवालापुरुष तावानरकीतरफ बाणचलावैहै॥तभी सोमूढवानर ताअवज्ञाकेदुःखरूपफलकूं भली
प्रकारअनुभवकरैहै॥तैसे मैंयमराजानैं जबपर्यंत तिनबहिर्मुखपापीजीवोंकीउपेक्षाकरी है।तबपर्यंतहीतेबहिर्मुखपापीजीव वेदोंकीतथा देवता
ओंकीतथामैंयमराजाकीनिंदाकरैहैं॥औरजभीमैंयमराजा तिनबहिर्मुखपुरुषोंकूंहननकरताहूं ॥तभीतेबहिर्मुखपुरुष तानिंदारूपपापकर्मके
दुःखरूपफलकूं नरकविषे प्रलयपर्यंत अनुभवकरैहै॥हेनचिकेता॥तिनबहिर्मुखपापीपुरुषोंनैं जोपूर्व ब्राह्मणोंकेदानदेणेविषेउपहासकऱ्याहै॥
सोतिनोंकेकहणेविषे पदार्थोंकेसामर्थ्यकाअज्ञानही कारणहै॥काहेतैं यालोकविषे संपूर्णपदार्थदृष्टअर्थकेअनुसारीहीहोवैहैं॥याप्रकारकेनियम
कूं अंगीकारकरिकै तिनबहिर्मुखपुरुषोंनै सोकुतर्ककऱ्याहै ॥ सोतिनोंकानियम सर्वत्र संभवैनहीं ॥ काहेतैं तानियमकूं जोकदाचित् सर्व
त्रअंगीकारकरिये ॥ तौ दिनविषे दीपककरिकै अंधकारकीनिवृति देखीतीनहीं ॥ यातैं तादीपककरिकै रात्रिविषे ताअंधकारकीनिवृत्ति
नहीं होणीचाहिये॥और रात्रिविषे तादीपककरिकै अंधकारकीनिवृति सर्वलोकोंकूं प्रत्यक्षदेखणेमैं आवै है॥ यातैं तिनबहिर्मुखपुरुषोंका
सोनियम संभवैनहीं ॥ किंवा ॥ यालोकविषे जोपुरुष किसीरोगादिकोंकरिकै मूर्च्छाभावकूंप्राप्तहोवैहै॥तापुरुषकेसंबंधी जभी तापुरुषके
मूर्च्छाकेनिवृत्तकरणेवासतै ब्राह्मणोंकेताईं ग्रहादिकोंकादानदेवै हैं॥तभी तापुरुषकी मूर्च्छा निवृत्तहोइजावै है ॥और तादानकेनहींदियेहुए
तापुरुषकूं सामूर्च्छा बनीरहे है ॥ यहवार्त्ता लोकविषे प्रत्यक्षदेखणेमैंआवै है ॥ यातैं जैसे इसलोकविषे ब्राह्मणोंताईं दानदेणेकरिकै
याजीवोंकेमूर्च्छाकीनिवृत्तिहोवैहै तैसे इसलोकविषे ब्राह्मणोंकेताईं अन्नादिकोंकेदानकरणेतैं परलोकविषे पितामातादिकोंकीतृप्तिहोवै है ॥
यहवार्त्ताभी संभवहोइसकैहै ॥ यातैं जिसअधिकारीपुरुषकूं आपणेकल्याणकरणेकीइच्छाहोवै ॥ तिसपुरुषनै पूर्वउक्तकुतर्कोंका परित्या
गकरणा ॥ तथा कुतर्कीपुरुषोंकेसंगकाभी परित्यागकरणा ॥ और वेदभगवानुनैं जिसजिसअर्थकाबोधनकऱ्याहै ॥तिससिसअर्थकूं यापु
रुषनैं श्रद्धापूर्वक अंगीकारकरणा ॥ हेनचिकेता ॥ यद्यपि तिनबहिर्मुखपुरुषोंनैं पूर्व कृतनाश अकृताभ्यागम इत्यादिककुतर्कोंकरिकै
याशरीरतैंभिन्न आत्माकेअभावकीसिद्धिकरीहै ॥ तथापि तिनबहिर्मुखपुरुषोंकाकुतर्क किसीयुक्तिप्रमाणकूंसहारिसकैनहीं॥यातैं तिनकु

तर्कोंविषे किसीआस्विकपुरुषनैं विश्वासनहींकरणा॥ और तिनबहिर्मुखपुरुषोंकेकुतर्कोंकरिकै आत्माकावास्तवस्वरूप जान्याजावैनहीं॥ किंतु जिनअधिकारीपुरुषोंके अनेकजन्मोंकेपुण्यकर्म इकठेहोवै हैं ॥ तेअधिकारीपुरुषही ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं वेदांतवचनोंकाश्रवणकरिकै ताआत्माकेवास्तवस्वरूपकूंजाणे हैं॥ कैसाहैसोआत्मा॥ वास्तवतैं सर्वविकारोंतैंरहितस्वयंज्योतिरूपहुआभी अविद्याकेसंबंधतैं जीवभाव कूंप्राप्तहोइकै कर्त्ताभोक्तापणेकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और सोईहीआत्मादेव ब्रह्मविद्याकरिकैपुनःआपणेसर्वात्मभावकूंप्राप्तहोवै है॥ अब ताआत्माकेश्रवणादिकोंकीदुर्लभता निरूपणकरै हैं ॥ हेनचिकेता॥ अविद्या अस्मिता राग द्वेष अभिनिवेश यापंचप्रकारकेक्लेशोंकरिकै मोहकूंप्राप्तभये जेकोईपापात्मापुरुषहैं॥ तिनपापात्मापुरुषोंकूंतौ यहआत्मादेव श्रवणकरणेवासतैंभी प्राप्तहोवैनहीं॥ यातैं सोआत्माकाश्रवणभी दुर्लभहै ॥ और हेनचिकेता ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे तथामरणअवस्थाविषे यहसंपूर्णजीव हृदयदेशविषे स्थित सत्यपरमात्माकेसाथ अभेदभावकूंप्राप्तहोवैहैं॥ याप्रकारकेवेदांतवचनोंकूंश्रवणकरिकैभी केईकपुरुष किसीप्रतिबंधकेवशतैं ताआत्माका निश्चयकरिसकैनहीं जैसे यालोकविषे किसीसत्यवादीपुरुषनैं उपदेशकऱ्याजोकोईकार्य है ॥ ताकार्यकेमहान्पणेकूं मूढबालक जाणिसकतेनहीं ॥ तैसे तेपुरुष आत्माकूंजाणिसकतेनहीं ॥ यातैं याआत्मादेवकाज्ञानभी अत्यंतदुर्लभहै ॥ हेनचिकेता॥ यहआनंदस्वरूपआत्मा मनवाणीकाअविषयहै॥ यातैं जो पुरुष ऐसेअद्वितीयआत्माकाउपदेश आपणेशिष्योंकेप्रतिकरै है॥ सोआत्माकावक्तापुरुषभी आश्चर्यरूपहै ॥ और ऐसेनिर्गुणआत्मादेवकूं जोपुरुष तागुरुकेउपदेशतैंसाक्षात्कारकरै है ॥ सोआत्माकेजानणेहारा लब्धापुरुषभी अत्यंतकुशलजानणा ॥ हेनचिकेता ॥ याअद्वितीयआत्माका प्रतिपादन तथाज्ञान यहदोनोंआश्चर्यरूपहैं ॥ याकारणतैं ताप्रतिपादनकरणेहारे वक्तापुरुषकूं तथा ताज्ञानवालेज्ञातापुरुषकूं श्रुतिभगवती आश्चर्यरूपकहे हैं ॥ और गुरुउपदिष्टमहावाक्यतैंउत्पन्नभया जोनिर्विकल्पकज्ञानहै ॥ तानिर्विकल्पकरूपसूक्ष्मज्ञानतैं यहआत्मादेव प्राप्तहोवै है ॥ यातैं ताआत्मज्ञानवालेपुरुषकूं श्रुतिभगवती कुशलकहै है ॥ हेनचिकेता ॥ याआत्माकेअपरोक्षज्ञानवाला जोकुशलगुरुहै ॥ सोब्रह्मवेत्तागुरु जभी याआधिकारीपुरुषोंकेप्रति आत्माकाउपदेशकरै है ॥ तभीही यहअधिकारीपुरुष ताआत्माके

वास्तवस्वरूपकूंजाणैहै ॥ परोक्षज्ञानवालेगुरुकेउपदेशतैं याअधिकारीपुरुषोंकूं अपरोक्षज्ञानकीप्राप्तिहोवैनहीं॥ हेनचिकेता॥ जिनपुरुषोंकूं ताब्रह्मवेत्ताकुशलगुरुकेउपदेशतैं ॥ आत्माकासाक्षात्कारनहींभयाहै॥ ऐसेअज्ञानीपुरुष जोकदाचित् किसीशिष्यकेप्रतिबहुतकालपर्यंतभी आत्माकाउपदेशकरैं ॥ तौभी ताअज्ञानीपुरुषोंकेउपदेशतैं ताशिष्यकूं आत्माकाअपरोक्षज्ञान कदाचित्भीहोवैनहीं ॥ और ताब्रह्मवेत्ता कुशलगुरुकेउपदेशतैंविना जोपुरुष आपणेनानाप्रकारकेतर्कोंकरिकै आत्माकाचिंतनकरै है ॥ तापुरुषकूंभी आत्माकासाक्षात्कारहोवै नहीं ॥ जैसे महान्वनविषेस्थितहुआकोईपुरुष आपणेग्रामकेमार्गकूंनजाणिकरिकै किसीदूसरेपुरुषतैं तामार्गकूंपूछे ॥ और आगैंतैं सोदूसरापुरुषभी ताग्रामकेमार्गकूंनजाणताहुआ तापुरुषकेप्रति किसीमार्गकाउपदेशकरिदेवै ॥ तापुरुषकेवचनविषे विश्वासराखिकै सोपुरुष जोकदाचित् तिसमार्गविषेचालेहै॥ तौ सोपुरुष ताआपणेग्रामकूंप्राप्तहोवैनहीं॥ किंतुउलटा तामार्गकेचलणेतैं सोपुरुष दुःखकूंहीं प्राप्तहोवैहै तैसे यासंसाररूपमहान्वनविषेस्थितहुआ यहअधिकारीपुरुष जभी किसीअज्ञानीकर्मीपुरुषतैं आत्मज्ञानरूपमोक्षकामार्ग पूछै है॥ तभी तिनअज्ञानीकर्मीपुरुषोंकेउपदेशतैं यह अधिकारीपुरुष ताआत्मज्ञानरूपमोक्षमार्गकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु उलटा ता अज्ञानीपुरुषोंके उपदेशतैं सो अधिकारीपुरुष विषयरूपसंसारमार्गकूंहीं प्राप्तहोवै है ॥ यातैं जिनपुरुषोंकूं मोक्षकीप्राप्तिकीइच्छाहोवै ॥ तिनमुमुक्षुपुरुषोंनैं आत्मज्ञानकीप्राप्तिवासतैं ब्रह्मवेत्ताकुशलगुरुकूंहीं खोजणा॥ तिसब्रह्मवेत्ताकुशलगुरुकेउपदेशकरिकैही यामुमुक्षुजनोंकूं आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिहोवैहै ॥ हेनचिकेता ॥ ऐसाब्रह्मवेत्ताकुशलवक्तापुरुषसर्वजगत्केआत्मारूपब्रह्मकूं मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकार आपणे आत्मातैं अभिन्न करिकैजानैहै ॥ याकारणतैं सोब्रह्मवेत्ताकुशलपुरुष सर्वजगत्तैंअभिन्नहोवै है॥ ऐसाब्रह्मवेत्तागुरु जभी याअधिकारीपुरुषोंकेप्रति आत्माका उपदेशकरै है॥ तभी ताब्रह्मवेत्तागुरुकूं ताआत्मज्ञानकरिकै जोअद्वितीयब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपफलभयाहै ॥ सोईहीब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपफल ताशिष्यकूंभीहोवैहै ॥ यातैं ऐसेब्रह्मवेत्ताकुशलगुरुकेउपदेशतैंहीं यहशिष्य सर्वात्मभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ परंतु ऐसाब्रह्मवेत्तागुरु यालोकविषे कोईविरलाहींहै ॥ हेनचिकेता ॥ याजीवोंकाआत्मा सूक्ष्मपदार्थोंतैंभी अतिसूक्ष्महै ॥ यातैं ऐसादुर्विज्ञेयआत्मा केवलआपणेतर्ककरिकै

जान्याजावे नहीं ॥ किंतु ताब्रह्मवेत्ताकुशलगुरुकेउपदेशतेंहीं सोआत्मा जान्याजावेहै ॥ हे नचिकेता ॥ ऐसेब्रह्मवेत्ताकुशलगुरुकेउपदेशतें अ० १
जिसअधिकारीपुरुषकी आत्माकारमतिहुईहै ॥ तामतिकूं यहअधिकारीपुरुष किसीकुतर्ककरिकेदूरनहींकरे॥किंतु उलटा नास्तिकवादि
योंनेंशरीरादिकोंविषे आत्मरूपतासिद्धकरणेवासतै जेजेनानाप्रकारकेकुतर्ककरे हैं ॥ तिनकुतर्कोंकूं श्रुतिउक्ततर्कोंतेंछेदनकरिकै यहअधि
कारीपुरुष तातत्पदार्थरूपब्रह्मकेसाथ त्वंपदार्थरूपजीवकीसमानताकूं स्थापनकरे ॥ और ताश्रुतिउक्ततर्कोंतेंविना उत्पन्नभईसामति तिन
कुतर्कोंकरिकै निष्फलताकूंहींप्राप्तहोवै है हेनचिकेता॥याआत्माकारमतिके उत्पत्तिविषे तथाफलविषे प्रतिबंधकरणेहारे जेनानाप्रकारके
कुतर्क वादियोंनें कल्पनाकरे हैं ॥ तिनबहिर्मुखवादियोंकेकुतर्कोंकूं तूं श्रवणकर ॥ तहां प्रथम तेबहिर्मुखपुरुष याप्रकारकीकुतर्ककरे हैं॥
यासंपूर्णशरीरोंविषे यहआत्मा एकहै अनेक है ॥ तहां सर्व शरीरोंविषे आत्माएक है यह प्रथमपक्ष जो वादी अंगीकारकरे सो संभवै
नहीं ॥ काहेतें जोकदाचित् सर्वशरीरोंविषे आत्माएकहोवै॥ तौ तूं मैं अन्य इत्यादिकभेदव्यवहार नहींहोणाचाहिये ॥ और याप्रकारका
भेदव्यवहार सर्वलोकोंविषे देखणेमेंआवताहै ॥ यातें सर्वशरीरोंविषे आत्माएक नहीं है ॥ और सर्वशरीरोंविषे आत्मा अनेकहै ॥यहदूसरा
पक्ष जोवादी अंगीकारकरे सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतें जोकदाचित् शरीरशरीरविषे आत्माकाभेदहोवै॥ तौ तावादीनें जोआत्माकीअद्वि
तीयरूपताअंगीकारकरीहै ॥ साअद्वितीयरूपता ताआत्माविषेनहींरहैगी ॥ यातें ताआत्माविषे अनेकरूपताभी संभवै नहीं ॥ किंवा ॥
आत्माकूं एकअद्वितीयरूपमानणेहारा सो वादी जोकदाचित् शरीररूपउपाधिकेभेदतें आत्माकाभेदअंगीकारकरे ॥ तौतावादीसें यह
पूछाचाहिये ॥ एकहीआत्माकूं एककालविषे नानाशरीरोंकीप्राप्ति किसप्रकारहोवैहै ॥ जैसे यालोकविषे कोईयोगीपुरुष आपणेयोगसिद्धि
केप्रभावतें एकहीकालविषे अनेकशरीरोंकूंप्राप्तहोवैहै॥तैसेकोईयोगसिद्धियाआत्माकूंप्राप्तभईनहीं॥जिसयोगसिद्धिकरिकै यहएकहीआत्मा
एकहीकालविषे अनेकशरीरोंकूंप्राप्तहोवै है ॥ किंवा ॥ जोकदाचित् सर्वशरीरोंविषे एकहीआत्मास्थितहोवै॥तौ जैसे आपणेएकशरीरविषे ॥ २४
यहहमाराशरीरहै याप्रकारकाज्ञान ताआत्माकूंहोवैहै॥ तैसे संपूर्णशरीरोंविषे यहसंपूर्णशरीर हमारेहैं याप्रकारज्ञान ताआत्माकूं किसवास

तेनहींहोता ॥ और सर्वशरीरोंविषे यहसंपूर्णशरीर हमारे हैं याप्रकारकाज्ञान किसीआत्माविषे देखणेमेंआवतानहीं ॥ याकारणतेंभी सर्वे
शरीरोंविषे आत्मा एकनहीं है॥किंवा॥यह आत्मा जोकदाचित् सर्वशरीरोंविषेएकहीहोवै॥तौ यहआत्मा जैसे आपणेशरीरकेसुखदुःखोंकूं
अनुभवकरे है॥ तैसे सर्वशरीरोंकेसुखदुःखोंकूं किसवासतै नहींअनुभवकरता ॥और नानाप्रकारकीयोनियोंविषे भ्रमणतेंविना यहआत्मा
एककालविषे सर्वशरीरोंकेसुखदुःखका अनुभवकरतानहीं॥याकारणतेंभी सर्वशरीरोंविषे सोआत्मा एकनहीं है॥किंवा॥तावादीनेंसर्वशरीरों
विषे अंगीकारकऱ्याजोआत्माहै॥सोआत्मा घटादिकोंकीन्याईं जडहै अथवा चेतनहै॥तहां सोआत्माजडहै यहप्रथमपक्ष जोवादीअंगीका
रकरे ॥ सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें सोआत्मा जोकदाचित् घटादिकोंकीन्याईं जडहोवैगा ॥ तौ जडआत्माविषे कर्त्तापणा तथाभोक्तापणा
संभवैनहीं ॥ यातें ताजडआत्माका अंगीकारकरणाहीं निष्फलहोवैगा ॥ किंवा ॥ सो आत्मा जो कदाचित् घटादिकोंकीन्याईं जडहो
वैगा ॥ तौ जैसे जडघटकेभोगवासतै दूसरेकिसीजडपदार्थकूं कोई उत्पन्नकरतानहीं ॥ तैसे ताजडआत्माकेभोगवासतै याजडशरीरका
आरंभ नहींहोवैगा और आत्माकेसुखदुःखरूपभोगवासतेंही याजडशरीरका आरंभ होवै है ॥ यातें आत्माविषे जडरूपतासंभवैनहीं ॥
और सोआत्मा चेतनरूपहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरे सोभीसंभवै नहीं ॥ काहेतें ज्ञानवालेकानाम चेतनहोवै है ॥ और चेतन
केभोगवासतेंहीं यहशरीरादिकजडपदार्थ होवै हैं ॥ याकेविषे यहविचारकऱ्याचाहिये ॥ यहशरीरादिकजडपदार्थ जोआत्माकेभोगवासतै
होवै हैं ॥ सो ज्ञानरूपसंबंधतैंहोवै हैं ॥अथवा ताज्ञानरूपसंबंधतेंविनाहींहोवै हैं॥तहां ताज्ञानरूपसंबंधतेंविनाहीं तेशरीरादिक आत्माके
भोगवासतेंहोवै हैं ॥ यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरे सोसंभवैनहीं ॥ काहेतें जोपदार्थ ज्ञानकाविषय नहींहोवै है ॥ सोपदार्थ किसी
पुरुषकेभोगकासाधनहोवैनहीं ॥ किंतु ज्ञानकेविषयहुएही तेसर्वपदार्थ याजीवोंकेभोगकासोधनहोवै हैं॥ और तेशरीरादिकपदार्थ ताज्ञान
रूपसंबंधतेंहीं याआत्माकेभोगकासाधनहोवै हैं ॥ यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरे ॥ तावादीसें यहपूछाचाहिये ॥ जिसज्ञानरूपसंबं
धतें तेशरीरादिकपदार्थ याआत्माकेभोगकासाधनहोवै हैं॥सोज्ञान नित्यहै अथवा अनित्यहै॥तहां सोज्ञान नित्यहै यहप्रथमपक्ष जोवादी

अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं काहेतैं सोज्ञान जोकदाचित् नित्यहोवै ॥ तौ ताशरीरादिकपदार्थोंकरिकै याआत्माकूं सर्वदा भोगकी प्राप्ति होणीचाहिये।और तिनशरीरादिकपदार्थोंकरिकै याआत्माकूं सर्वकालविषे भोगकीप्राप्तिहोतीनहीं॥यातैं ताज्ञानविषे नित्यरूपतासंभवैन हीं ॥ और सोज्ञान अनित्यहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ सो अनित्यज्ञान आपणेकरिकैही आप प्रकाशितहै ॥ अथवा किसीदूसरेज्ञानकरिकै प्रकाशितहै ॥ तहां सोअनित्यज्ञान आपणेकरिकैही प्रकाशितहै ॥ यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ तौ एकहीज्ञानविषे ताप्रकाशरूपक्रियाकी कर्मरूपता तथाकर्त्तारूपता प्राप्तहोवैगी॥सोअत्यंतविरुद्धहै ॥ और सोअनि त्यज्ञान दूसरेज्ञानकरिकैप्रकाशितहै ॥ यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ तौ सोएकज्ञान दूसरेज्ञानकरिकै प्रकाशितहोवैगा ॥ और सोदूसराज्ञान तीसरेज्ञानकरिकैप्रकाशितहोवैगा ॥ और सोतीसराज्ञान चतुर्थज्ञानकरिकैप्रकाशितहोवैगा ॥ याप्रकार तिनज्ञानोंकीधारा मानणेविषे अनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ हेनचिकेता इसतैंआदिलैकेअनेकप्रकारकेकुतर्कोंकूं तेबहिर्मुखमूढपुरुष कल्पनाकरैहैं ॥ तेसं पूर्ण तिनोंकेकुतर्क श्रुतिप्रमाणतैंविरुद्धहैं ॥ याकारणतैंहीं तेकुतर्क क्रकचकेसमान दुःखकाहेतुहैं ॥ हेनचिकेता ॥ जिसअधिकारीपुरुषकूं ताआत्माकारमतिकीउत्पत्तितैंपूर्वहीं याकुतर्कोंकीप्राप्तिहोवै है ॥ ताअधिकारीपुरुषविषे साआत्माकारमति उत्पन्नहींनहींहोवैहै ॥ और जिसअधिकारीपुरुषकूं ताआत्माकारमतिकीउत्पत्तितैंअनंतरहीं तिनकुतर्कोंकीप्राप्तिहोवै है॥तिसअधिकारीपुरुषकूं श्रुतिकेअर्थविषेअवि श्वासहोवैहै ॥ताअविश्वासकरिकै तिसपुरुषकूं ताश्रुतिकेअर्थविषे संशयविपरीतभावनाहोवै है॥ तासंशयविपरीतभावनाकरिकै साआत्मा कारमति विनाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं हेनचिकेता॥जिसअधिकारीपुरुषकूं मोक्षकेप्राप्तिकीइच्छाहोवै॥ ताअधिकारीपुरुषनैं ताआत्मा का रमतिरूपगोंकी कुतर्करूपसिंहतैं अवश्यकरिकैरक्षाकरणी ॥ हेनचिकेता ॥ वेदोंकूंप्रमाणरूपमानणेहारे जेआस्तिकपुरुषहैं ॥ तथा वेदोंकूं अप्रमाणरूपमानणेहारे जेनास्तिकपुरुषहैं ॥ तेसंपूर्णपुरुष आपणीआपणीबुद्धिकेअनुसार जिसीकिसीप्रकारका आत्माकास्वरूप जाणते हीं हैं ॥ तथा ताआत्माकास्वरूप आपणेशिष्योंकेप्रति कथनभीकरैहैं ॥ यातैं आपणेआपणेगुरुकेउपदेशतैं साआत्माकारमति सर्वपुरुषों

विषेउत्पन्नहोवै है॥ कितनेकीचार्वाकादिकोंकूंतौयाशरीरविषेही आत्माकारमतिहोवै है॥और कितनेकबादियोंकूंतौ प्राणादिकोंविषेहीआ त्माकारमतिहोवै है।और कितनेकबादियोंकूंतौ कर्त्ताभोक्ताविषेही आत्माकारमतिहोवै है॥परंतु ताआत्माकारमतिकरिकै तिनमूढपुरुषोंकूं मोक्षकीप्राप्तिहोवैनहीं॥ और अद्वितीयआत्माकेयथार्थज्ञानवाला तथा श्रुतिअनुकूलतर्कोंविषेकुशल ऐसाजोब्रह्मवेत्तागुरुहै॥सोब्रह्मवेत्तागुरु जभीयाअधिकारीपुरुषोंकेप्रति ताआत्माकारमतिकाउपदेशकरै है।तभीही याअधिकारीपुरुषोंकूं मोक्षकीप्राप्तिहोवै है।हेनाचिकेता।जिसअ धिकारीपुरुषके पूर्वअनेकजन्मोंकेपुण्यकर्म एकठेहोवै हैं॥सोअधिकारीपुरुषही ताआत्माकारमतिकूंप्राप्तहोवै है ॥ जैसे तूनचिकेता किसी पूर्वलेपुण्यकर्मोंकेप्रभावतैं याआत्माकारमतिकूंप्राप्तभयाहै ॥ हेनचिकेता ॥ मैंयमराजानैं तुम्हारेप्रति स्त्रीपुत्रधनादिकअनेकपदार्थ देणेक रेभी॥तौभी तिनपदार्थोंकूं तू ग्रहणनहींकरताभया ॥ यातैं तुमाराधैर्य कोईआश्चर्यरूपहै ॥ ऐसेधैर्यवान्पुरुषोंकूंही यह आत्माकारमति प्राप्तहोवै है ॥ ऐसेधैर्यवान् तुम्हारेसरीखेशिष्य यालोकविषे अत्यंतदुर्लभ हैं ॥ हे नाचिकेता ॥ ऐसे स्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंकी प्राप्तिकाल विषे जिसप्रकारकाधैर्य तुमारेकूंप्राप्तभयाहै ॥ तिसप्रकारकाधैर्य पूर्वकिसीपुरुषकूं प्राप्तभयानहीं है॥ और अभीवर्त्तमानकालविषे ऐसाधैर्य किसीपुरुषकूं है नहीं॥ और आगेकिसीपुरुषकूं होवैगानहीं॥हेनाचिकेता ॥ दूसरेपुरुषोंकीक्यावार्त्ता है॥ परंतु मैंयमराजाविषेभी तेरेजैसाधै र्यनहीं है ॥ काहेतैं यद्यपि मैंयमराजा आपणेहृदयदेशविषेस्थित ब्रह्मानंदरूपनिधिकूं नित्यजाणताहूं ॥ और लोकपालरूपअधिकारस हित आपणेदेवतापणेकूं अनित्यजाणताहूं ॥ तथापि जैसे स्त्रीपुत्रादिकसर्वपदार्थोंविषे तुमारी त्यागबुद्धिहुई है ॥ तैसे तिनपदार्थोंविषे हमारीत्यागबुद्धिनहीं है ॥ हेनाचिकेता ॥ तुमारेजैसीत्यागबुद्धि हमारेकूंइसकालविषेतौनहीं है ॥ परंतु ऐसीत्यागबुद्धि हमारेकूं पूर्वकाल विषेभीनहींभई है ॥ काहेतैं यहअधिकारीपुरुष यज्ञादिकअनित्यकर्मोंकरिकै मोक्षरूपनित्यसुखकूंप्राप्तहोवैनहीं॥याप्रकारकेअर्थकूं नजाणि करिकै मैंयमराजा पशुइष्टकादिकअनित्यपदार्थोंकरिकै अग्निचयन अग्निष्टोम आदिकयज्ञोंकूंकरताभयाहूं ॥ तिन अग्निचयनादिक यज्ञोंकरिकै मैंयमराजा यालोकपालपदवीकूंप्राप्तभयाहूं ॥ जालोकपालपदवी प्रलयपर्यंत रहणेहारी है ॥ और जैसे अन्नकेभोजनकियेहुए

याजीवोंकी विनाहीयत्नतैं तृप्तिहोवै है॥तैसे यालोकपालपदवीविषेभी विनाहीयत्नतैं हमारेकूं सर्वभोगोंकीप्राप्तिहोवै है ॥ हेनाचिकेता ॥ इसप्रकार पूर्वमहान्यत्नोंकरिकै हमारेकूंप्राप्तभयाजोयहऐश्वर्य है सोयहऐश्वर्य तुमारेकूंविनाहीयत्नतैं प्राप्तहोताथा॥तौभी ताहमारे ऐश्वर्यकूं तू त्यागकरताभया है ॥ यातैं तुमाराधैर्य कोईआश्चर्यरूप है॥ हे नाचिकेता ॥ जिसआनंदस्वरूपआत्माकेसाक्षात्कारवासतैं तू सर्वविषय कापरित्याग करताभयाहै ॥ तिसआनंदस्वरूपआत्माकूं मैं यमराजा साक्षात्अनुभवकरताहुआभी तिनविषयोंकापरित्याग करिसकता नहीं ॥ याकारणतैंभी हमारेधैर्यतैं तुमाराधैर्य अधिक है ॥ हे नचिकेता ॥ जिसआनंदस्वरूपआत्माकेजानणेवासतैं तुमनैं सर्वपदार्थोंका त्यागकऱ्याहै ॥ सोआनंदस्वरूपआत्माकैसाहै ॥ याभूमिलोकतैंआदिलैके ब्रह्मलोकपर्यंत जितनेकीविषयजन्यआनंदहैं ॥ तेसंपूर्ण आनंद जिसआत्मास्वरूपआनंदके अंतरभूत हैं ॥ तथा सोआत्मादेवही यासर्व जगत्काआधार है ॥ तथा सो आत्मादेवही आकाशकी न्याईं सर्वत्रपूर्ण है॥ तथा इंद्रादिकदेवतावोंकरिकै सो आत्मादेवही स्तुतिकरणे योग्य है ॥ तथा सो आत्मादेवही सर्वत्रपरिपूर्णरूपकरिकै तथा याजगत्केउत्पत्तिआदिकोंका कारणरूपकरिकै जानणे योग्य है ॥ तथा सो आत्मादेवही नानाप्रकारकेसंकल्पोंका प्रवर्त्तक है ॥ तथा सोआत्मादेवही देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहितहोणेतैं अनंतरूप है ॥ तथा सोआत्मादेवही सर्वअभयका अवधिरूपहै ॥ जिसतैंपरेको ईअभयहैनहीं ॥ ऐसेआनंदस्वरूपआत्माकूं जाणताहुआभी मैं यमराजा जिनविषयोंकापरित्याग नहींकरिसकताकूं ॥ तिनविषयोंकूं तुमनैं ताआत्माकेजानणेकी इच्छाकालविषेही परित्यागकरिदिया है ॥ यातैं हमारेधैर्यतैं तुमारा धैर्य अधिक है ॥ तात्पर्य यह ॥ जिसपुरुषकूं ब्रह्मानंदकीप्राप्तिभईनहीं ॥ किंतु ताब्रह्मानंदकेप्राप्तिकी केवलइच्छामात्र है ॥ ऐसामुमुक्षुजनभी जभी तिनस्त्रीपुत्रधनादिक पदार्थोंका परित्यागकरै है ॥ तभी ब्रह्मानंदकूंअनुभवकरणेहारे ब्रह्मवेत्तापुरुषोंनैं तौ तिनस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंका विशेषकरिकै परित्यागकऱ्याचाहिये ॥ और हे नचिकेता ॥ यास्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंकापरित्यागकरिकै जिसआनंदस्वरूपआत्माविषे तुमा रेकूंप्रीतिहुई है सो आनंद स्वरूपआत्मा कैसा है ॥ बुद्धिआदिक सर्व संघातका साक्षी रूप है ॥ और नेत्रादिक इंद्रियोंके तथा मन

केसंयमतैंरहित जेबहिर्मुखपुरुषहैं ॥ तिनबहिर्मुखपुरुषोंकरिकै सोआत्मादेव देख्याजावैनहीं ॥ और जैसे अग्नि सर्वकाष्ठोंविषे गुह्यहोइकैरहै है ॥ तैसे सोआत्मादेवभी सर्वशरीरोंविषे गुह्यहोइकैरहै है ॥ और जैसे आकाश घटमठादिकउपाधियोंविषे प्रवेशकरै है ॥ तैसे सोआत्मादेवभी यासंपूर्णजगत्कूंउत्पन्नकरिकै ताकेविषेप्रवेशकरैहै॥ और सोआत्मादेवही हृदयदेशविषेस्थित बुद्धिरूपगुहाविषेनिवा सकरै है तथा सोआत्मादेवही भूत भविष्यत् वर्त्तमान यातीनकालोंविषे एकरसहै और सत्यब्रह्ममैंहूं याप्रकारके निदिध्यासरूपयोगकरिकै सोआत्मादेवही प्राप्तहोणेयोग्य है॥तथा सोआत्मादेवही स्वप्रकाशहै॥हेनचिकेता॥ऐसे आनंदस्वरूपआत्माकूं साक्षात्कारकरिकै जैसेतूं हर्षशोकतैंरहितहुआहै।तैसे जोकोईदूसराअधिकारीपुरुषभी गुरुशास्त्रकेउपदेशतैंताआनंदस्वरूपआत्माकूंसाक्षात्कारकरैगा॥सोअधिकारी पुरुषभी तिनहर्षशोकादिकोंतैंरहितहोवैगा॥हेनचिकेता॥तत्त्वमसि॥यामहावाक्यविषेस्थितजोतत् त्वं यहदोपदहैं॥तिनदोनोंपदोंविषे सर्व त्रपरिपूर्ण मायाविशिष्टसर्वज्ञईश्वर तत्पदका अर्थहै॥और अज्ञानविशिष्ट अल्पज्ञजीवात्मा त्वंपदकाअर्थ है॥तहां जोअधिकारीपुरुष गुरुके मुखतैं तिसततत्त्वंपदार्थकाश्रवणकरिकैतातत्पदार्थकेमायासर्वज्ञतादिरूपवाच्यभागकापरित्यागकरिकै एकचेतनमात्रलक्ष्यभागकाग्रहणक रै है ॥ इसप्रकार त्वंपदार्थके अविद्याअल्पज्ञत्वादिरूपवाच्यभागकापरित्यागकरिकै एकचेतनमात्रलक्ष्यभागकाग्रहणकरै है ॥ इसप्रकार चेतनरूपलक्ष्यभागकाग्रहणकरिकै जोअधिकारीपुरुष मैंअद्वितीयब्रह्महूं याप्रकार आपणेकूंब्रह्मरूपकरिकैजाणे है ॥ सोअधिकारीपुरुष ब्रह्मानंदरूपमोक्षकूंप्राप्तहोइकै सर्वदा प्रसन्नरहै है ॥ कैसाहैसोब्रह्मानंद ॥ सर्वप्राणियोंकूं आनंदकीप्राप्तिकरणेहाराहै॥तहांश्रुति ॥ एषह्येवा नंदयति ॥ अर्थयह ॥ यहआनंदस्वरूपब्रह्मही सर्वप्राणियोंकूं आनंदकीप्राप्तिकरै है ॥ हेनचिकेता ॥ हृदयरूपगुहाविषेस्थित जो ब्रह्मानंद रूपगृहहै ॥ सोब्रह्मानंदरूपगृह याअधिकारीपुरुषोंकूं गुरुशास्त्रकेउपदेशतैंहीं प्राप्तहोवै है ॥ ऐसाब्रह्मानंदरूपगृह तुमनचिकेताकेप्रति खुले द्वारवाला है ॥ हेनचिकेता ॥ मैंयमराजातौ आपणेचित्तविषे ऐसामानताहूं ॥ जो ताब्रह्मानंदरूपगृहविषे तुमाराप्रवेश हुआहीं है॥काहेतैं ताब्रह्मानंदरूपगृहविषे प्रवेशकरणेकामार्ग चित्तकीअंतर्मुखताहै ॥ और तामार्गद्वारा ब्रह्मानंदरूपगृहकीप्राप्तिविषे यहविषयाकार अंतःकर

णकीवृत्तिरूपही प्रतिबंधकहै ॥ तिन विषयाकारवृत्तिरूपपाशोंकूं तुमनें विचारकेबलतैं नष्टकऱ्याहै॥यातैं अभीतुमारकूं तात्रह्मानंदरूप गृहकेप्रवेशकरणेविषे कोईदूसराप्रतिबंधकनहीं है ॥हेशिष्य॥ याप्रकारकाउपदेश जभी तायमराजानें नचिकेताकेप्रतिकऱ्या॥तभी सोनचिकेता मरणतैंअनंतर आत्माकेसत्ताकूं अर्थापत्तिरूपप्रमाणतैं निश्चयकरताभया ॥ अब ताअर्थापत्तिरूपप्रमाणकानिरूपणकरैं हैं ॥ इसयमराजानें मैंनचिकेताकेप्रति जोपूर्व सकाम निष्काम रूपअधिकारियोंकेभेदतैं प्रेय श्रेय रूपफलकाभेद कथनकऱ्याथा॥और मरणतैंअनंतर यहपापीजीव वारंवार मैंयमराजाकेवशकूंप्राप्तहोवै है ॥ याप्रकारकावचन जोइसयमराजानें पूर्वहमारेप्रतिकथनकऱ्याथा ॥ यहसंपूर्ण यमराजाकेवचन तभी सत्यहोवैंगे ॥ जभी यास्थूलशरीरतैंभिन्न कोईआत्माअंगीकारकरिये ॥ और जोकदाचित् यास्थूलशरी रकूंहीं आत्मारूपमानिये ॥ तौ तेयमराजाकेवचन मिथ्याहोवैंगे ॥ काहेतैं यहस्थूलशरीरतौ इसीलोकविषे अग्निकरिकैभस्महोइजावै है॥ ऐसेअनित्यस्थूलशरीरकूं परलोकविषे सुखदुःखरूपभोगकीप्राप्तिसंभवैनहीं ॥ यातैं याशरीरतैंभिन्नहींकोईआत्मा परलोकविषेजावै है ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै सोबुद्धिमाननचिकेता याशरीरतैंभिन्नरूपकरिकै ताआत्माकेसत्ताकूं आपहीनिश्चयकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोनचिकेता ताआत्माकेविशेषस्वरूपकेजाननेकीइच्छाकरिकै तायमराजाकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ नचिकेताउवाच ॥ हेयमराजा ॥ जोवस्तु धर्मअधर्मतैंरहितहै ॥ तथा जोवस्तु कार्यकारणभावतैंरहितहै॥तथा जोवस्तु भूत भविष्यत् वर्तमान यातीनकालोंतैंरहितहै ॥ तथा जोवस्तु सुखदुःखतैंरहितहै ॥ ऐसेवस्तुकूं तूंयमराजा भलीप्रकारजाणता है ॥ यातैं आप तावस्तुकाउप देश मैंनचिकेताशिष्यकेप्रति करो ॥हेशिष्य॥ याप्रकारकाप्रश्न जभी तानचिकेतानें यमराजाकेप्रति कऱ्या॥तभी सोयमराजा तानचि केताकेप्रति ताशुद्धआत्माकेबोधकरणेवासतै प्रथम प्रणवरूपकरिकै ताआत्माकाउपदेशकरताभया ॥ यमराजाउवाच॥हेनचिकेता जि सपरब्रह्मकूं यह अधिकारीपुरुष ब्रह्मचर्यादिकसाधनोंकरिकै साक्षात्कारकरै हैं॥तथा जिसपरब्रह्मकूं यहऋगादिकसर्ववेद कथनकरै हैं॥तथा जिसपरब्रह्मकूं यहकृच्छ्रचांद्रायणादिकतप कथनकरै हैं॥तिसपरब्रह्मकूं तू प्रणवरूपकरिकै जान ॥शंका॥ हेभगवन् शब्दरूपऋगादिकवेद तापरब्रह्मकूं प्रतिपादनकरै है यहवार्ता यद्यपि संभवहोइसकै है॥ तथापि अशुरूप कृच्छ्रचांद्रायणादिकतप तापरब्रह्मकूं प्रतिपादनकर है॥ यहवार्त्ता संभवैनहीं॥समाधान॥हेनचिकेता॥अशुद्धअंतःकरणविषे तापरब्रह्मकासाक्षात्कारहोवैनहीं॥किंतु कृच्छ्रचांद्रायणादिकतपकरिकै जोअंतःकरणशुद्धभयाहैताशुद्धअंतःकरणविषेहीयाअधिकारीपुरुषकूंतापरब्रह्मकासाक्षात्कारहोवै है ॥ यातैंजैसेऋगादिकवेदतापरब्रह्मकूंप्र तिपादनकरै है॥तैसे यहकृच्छ्रचांद्रायणादिकतपभी तापरब्रह्मकूंहीं प्रतिपादनकरैहैं॥ अब अष्टप्रकारकेमैथुनकापरित्यागरूपब्रह्मचर्यकेजना वणेवासतै प्रथम ताअष्टप्रकारकेमैथुनका निरूपणकरै हैं तहां स्मरण १ कीर्तन २ क्रीडा ३ प्रेक्षण ४ गुह्यभाषण ५ संकल्प ६ अध्यवसाय ७ क्रियानिर्वृत्ति८ यहअष्टप्रकारकामैथुनहोवै है तहां आपणेचित्तविषे जोस्त्रियोंकाचिंतनकरणाहै याकानाम स्मरणहै ॥ १ ॥ और तिनस्त्री योंकेकीर्तनगावणे तथा तिनस्त्रीयोंकेसाथ संभाषणकरणा याकानामकीर्तनहै॥२॥और तिनस्त्रीयोंकेसाथ जो द्यूतादिकव्यवहारकरणा है याकानाम क्रीडाहै ॥ ३ ॥ और कामदोषयुक्तमनकरिकै प्रेरणाकरेहुएजेनेत्रहैं ॥ तिननेत्रोंकरिकै वारंवार तिनस्त्रीयोंकूंदेखणा याकानाम प्रेक्षणहै ॥ ४ ॥ और विषयसंभोगकेवासतै तिनस्त्रीयोंके गुह्यअंगोंकाकथनकरणा याकानाम गुह्यभाषणहै ॥५॥ और यहस्त्रीहमारेसाथ विषयसंभोगकरै याप्रकरकाजोचिंतनहै याकानाम संकल्पहै॥६॥ और यास्त्रीकेसाथ मैंअवश्यसंभोगकरौंगा॥ याप्रकारकाजोनिश्चयहै या कानाम अध्यवसायहै ॥ ७ ॥ और विषयसुखकीप्राप्तिकरणेहारा जो तिसस्त्रीकेसाथसंभोगहै याकानाम क्रियानिर्वृतिहै॥८॥ याअष्टप्रका रकेमैथुनतैंजोनिवृत्तिहै याकानाम ब्रह्मचर्य है ॥ हेनचिकेता ॥ जिसब्रह्मकीप्राप्तिवासतै यहअधिकारीपुरुष तात्रह्मचर्यकूंकरै है॥सोब्रह्म ओं काररूपप्रणवशब्दका अर्थरूपहै॥ अथवा सोब्रह्म ताप्रणवशब्दरूपप्रतीकवाला है ॥ यातैं तात्रह्मकूं तूं प्रणवशब्दतैंअभिन्नकरिकै जाण॥ जिसवस्तुविषे अन्यवस्तुकाआरोपणकरिकै ध्यानकरिये ॥ तावस्तुकानाम प्रतीकहै ॥ जैसे पाषाणरूपशालगरामविषे विष्णुकाआरोपण करिकै ध्यानकरीताहै ॥ यातैं सोशालगराम प्रतीकहै ॥ हेनाचिकेता॥ या अधिकारीपुरुषोंकूं यहप्रणवरूपअक्षरही हिरण्यगर्भरूपकरिकै तथा परब्रह्मरूपकरिकै ध्यानकरणेयोग्य है ॥ इसप्रकार जेअधिकारीपुरुष ताप्रणवरूपअक्षरकूं ब्रह्मरूपकरिकैध्यानकरै हैं ॥ तेअ

धिकारीपुरुष हिरण्यगर्भभावकीप्राप्ति तथापरब्रह्मभावकीप्राप्ति यादोनोंफलोंविषे जिसफलकीइच्छाकरै हैं तिसीफलकूं प्राप्तहोवै हैं ॥यातैं याअधिकारीपुरुषोंनैं ताप्रणवरूपअक्षरकीप्रतीकउपासना अवश्यकरिकैसंपादनकरणी॥हेनचिकेता॥ओंकाररूपप्रणवविषे अकार उकार मकार अर्द्धमात्रा यहचारिमात्राहोवै हैं॥तिनअकारादिकचारिमात्रावोंके यथाक्रमतैं स्थूल सूक्ष्म कारण तुरीय यहचारिअवस्था वाच्य अर्थहोवैहैं॥तिनचारिअवस्थाउपहितशुद्धचेतनमैंहू याप्रकारकाजोनिरंतरचिंतनहै॥याकानामआलंबनउपासनाहै॥ताआलंबनउपासनाकूं करणेहारेपुरुषकूं जोफल प्राप्तहोवै है ॥ ताफलकूं तूं श्रवणकर ॥ यहप्रणवरूपआलंबनहीं हिरण्यगर्भकेध्यानकाउपयोगीहै॥और यहप्रण वरूपआलंबनहीं परब्रह्मकेध्यानकाउपयोगी है ॥ याप्रकार ताप्रणवकूंआलंबनकरिकै जोअधिकारीपुरुष हिरण्यगर्भकाध्यानकरै है तथा परब्रह्मकाध्यानकरै है ॥ सोअधिकारीपुरुष ब्रह्मलोकविषेजाइकै तहांमोक्षकूंप्राप्तहोवै है॥इतनैकरिकै फलसहित प्रतीकउपासनाका तथा आलंबनउपासनाका निरूपणकऱ्या॥अब ताउपासनाकरिकै जिसअधिकारीपुरुषकाचित्तशुद्धभयाहै॥ताअधिकारीकेप्रति आत्माकेवा स्तवस्वरूपकाउपदेश निरूपणकरै हैं॥हेनचिकेता ॥ ताप्रणवशब्दकरिकै प्रतिपादनकरणेयोग्यजोब्रह्महै॥ताब्रह्मके याप्रकारकेस्वभावकूं यहमुमुक्षुजन चिंतनकरैं ॥ यहस्वयंज्योतिआत्मादेव जन्ममरणादिसर्वविकारोंतैंरहितहै ॥ काहेतैं यालोकविषे जोजोपदार्थ उत्पत्तिवाला होवै है॥ तिसतिसपदार्थका कोईकारण प्रतीतहोवै है॥जैसे घटादिकपदार्थ उत्पत्तिवाले हैं॥ यातैं तिनघटादिकोंके मृत्तिकाकुलालादिक कारण प्रतीतहोवै हैं ॥ तैसे याआत्मादेवकी जोकदाचित् उत्पत्तिहोवै ॥ तौ याआत्मादेवकाभी कोईकारण प्रतीतहोणाचाहिये॥और आत्माकेउत्पन्नकरणेहारा कोईकारण प्रतीतहोतानहीं॥यातैं याआत्मादेवका जन्मसंभवैनहीं॥औरयहआनंदस्वरूपआत्मादेव वास्तवतैं अद्वितीयरूपहै ॥ यातैं याअद्वितीयआत्मातैंभीकोईपदार्थउत्पन्नहोवैनहीं ॥हेनचिकेता ॥ इसप्रकार सोआत्मादेव जन्मतैंरहितहै॥याका रणतैं श्रुतिभगवती ताआत्मादेवकूं अज नित्य यादोनोंनामकरिकैकथनकरै है ॥ और यहआत्मादेव अजहै तथानित्यहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताआत्मादेवकूं शाश्वत यानामकरिकैकथनकरै है ॥ जोवस्तु सर्वदेशविषे तथासर्वकालविषे वर्त्तमानहोवै तावस्तुकानाम

शाश्वत है ॥ और यहआत्मादेव शाश्वतहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती याआत्मादेवकूं पुराण यानामकरिकैकथनकरै है ॥ जो वस्तु पूर्व कालविषेभी नवीन नहीं होवै ताकानाम पुराणहै।हेनचिकेता॥जैसे घटरूपउपाधिकेनाशहुएभी ताघटविषेस्थितआकाशका नाशहोवैनहीं तैसे याशरीररूपउपाधिकेनाशहुएभी ताशरीरविषेस्थितआत्मादेवका नाशहोवैनहीं ॥ और हेनचिकेता ॥ यहआत्मादेव यद्यपि वा स्तवतैं किसीपदार्थकूं हननकरतानहीं ॥ तथा यहआत्मादेव आपभी किसीपदार्थकरिकैहननहोतानहीं॥तथापि जेअविवेकीपुरुष याआ त्मादेवकूं हननक्रियाकाकर्त्तामानै हैं ॥ तथा जे अविवेकीपुरुष याआत्मादेवकूं हननक्रियाकाकर्ममानैहैं ॥तेदोनोंप्रकारकेपुरुष याआत्मा देवके वास्तवस्वरूपकूंजाणतेनहीं ॥ काहेतैं यालोकविषे कार्यरूपकरिकैप्रसिद्ध जेशरीरादिकस्थूलपदार्थ हैं ॥ तथा कारणरूपकरिकैप्रसि द्ध जेइंद्रियादिकसूक्ष्मपदार्थ हैं ॥ तिनदोनोंकाही नाशदेखणेविषेआवैहै ॥ यातैं यहनियमसिद्धभया ॥यालोकविषे जिसजिसपदार्थकाना शहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ कार्यरूपहोवैहै ॥ अथवा कारणरूपहोवै है ॥ कार्यकारणभावतैंरहित किसीभीपदार्थकानाशहोवैनहीं॥और यह आत्मादेव कार्यकारणभावतैंरहितहै यातैं आत्मादेवकानाश संभवैनहीं ॥ हेनचिकेता॥देहइंद्रियादिकोंतैंरहित तथा आकाशकीन्याई निराकार जोयहआत्मादेवहै ॥ ताआत्मादेवकूं जोपुरुष हननरूपक्रियाका कर्त्तारूप तथाकर्मरूप माने है॥ सोपुरुष अत्यंतमूढबुद्धिहै ॥ हेनचिकेता ॥ जेपुरुष याअविनाशीअक्रियआत्माकूं हननक्रियाका कर्त्तारूप तथाकर्मरूप माने हैं ॥ तेपुरुष जोकदाचित् सर्वशास्त्रोंके जाननेहारेभीहोवैं ॥ तौभी तेपुरुष विपरीतज्ञानवालेहीजानणे॥काहेतैं अन्यवस्तुविषेजोअन्यवस्तुकाज्ञानहै याकानाम विपरीतज्ञानहै ॥ जैसे रज्जुविषेसर्पकाज्ञान विपरीतज्ञानहै।तैसे अकर्ताआत्माविषे कर्त्तापणेकाज्ञान तथाअविनाशीआत्माविषे नाशपणेकाज्ञान यहदोनोंप्र कारकेज्ञानभी विपरीतज्ञानरूपहैं ॥ हेनचिकेता ॥ यालोकविषे जोपदार्थ सत्यहोवैहै॥तासत्यपदार्थका कदाचित्भी नाशहोवैनहीं॥और यहआत्मादेवभी सत्यरूपहै ॥ यातैं असत्य देहादिकोंकीन्याई यासत्यस्वरूपआत्माकानाश किसप्रकारहोवैगा ॥ किंतु नहींहोवैगा॥हे नचिकेता।केईकनैयायिकादिकवादीतौ पृथिवी जल तेज वायु याचारिभूतोंकेपरमाणुवोंकातथामनकाभी नाशमानतेनहींऔर यहआत्मा

देवतो तिनपरमाणुवोंका तथा मनकाभी विवर्त्तउपादानकारणहै यातैं यहआत्मादेव तिनपरमाणुवोंतैंभी अत्यंतसूक्ष्महै॥ ऐसेअत्यंतसूक्ष्म याआत्माकानाशकिसप्रकारहोवैगा॥ किंतु नहींहोवैगा॥किंवा॥ तिननैयायिकोंकेमतविषेतो आकाश काल दिशा यहतीनों महत्परिमा णवालेहोवै हैं ॥ याकारणतैंतेनैयायिक तिनआकाशादिकमहान्पदार्थोंकानाश अंगीकारकरैं नहीं ॥ और यहआत्मादेवतो तिनआका शादिकमहान्पदार्थोंकाभी अधिष्ठानरूपहै।याकारणतैं यहआत्मादेव तिनआकाशादिकोंतैंभी अत्यंतमहान्हैऐसेअत्यंतमहान्आत्माका नाश किसप्रकारहोवैगा ॥ किंतु नहींहोवैगा ॥ हेनचिकेता ॥ जैसे वस्त्रादिकसावयवपदार्थ आपणेपरिणामीरूपस्वभावतैंहीं नाशकूं प्राप्तहोवै हैं ॥ तैसे यहनिरवयवआत्मादेव आपणेस्वभावतैंतो नाशकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं जोवादी आत्माकानाश मानैहै ॥ तावादीनैं आत्माकेस्वभावतैंभिन्नहीकोईपदार्थ ताआत्माकेनाशका कारणमान्याचाहिये।और यालोकविषे ताआत्माकेस्वभावतैंभिन्न जितनेकीकु ठारऔषधादिक नाशकेकारणहैंतेकुठारादिककारण याशरीरकूंतथानेत्रादिकइंद्रियोंकूं प्राप्तहोइकै तिनशरीरादिकोंकूंनाशकरिकै आपभी नाशहोइजावै हैं ॥ परंतु तेकुठारादिककारण बुद्धिकेनाशकरणेविषे प्रवर्त्तहोवैनहीं ॥ जभी बुद्धिकेनाशकरणेविषेभी तेकुठारादिक कारण प्रवर्त्तनहींहोवै हैं ॥ तभी तावुद्धितैंभीपरेस्थित जोतावुद्धिकासाक्षीरूपआत्माहै ॥ तासाक्षीआत्माकेनाशकरणेविषे तेकुठारा दिककारण किस प्रकार प्रवर्त्त होवैंगे ॥ किंतु नहीं प्रवर्त्त होवैंगे ॥ यातैं यह आत्मादेव अविनाशी है ॥ हे नचिकेता ॥ जिसअधिकारीपुरुषकाअन्तःकरणशुद्धभया है ॥ तथा जिस अधिकारी पुरुषने श्रोत्रादिकइंद्रियोंकूंजयकऱ्या है ॥ तथा जिसअधिकारी पुरुषका दुःखविषे द्वेषनहीं है ॥ तथा सुखविषे रागनहीं है ॥ ऐसाउत्तमअधिकारीपुरुष जभी गुरुशास्त्रकी कृपातैं तापरमात्मा देवके महिमाकूं आपणेआत्मातैं अभिन्नकरिकैदेखेहै ॥ तभी सोविद्वानपुरुष न किसीकूंहननकरैहै ॥ और नकिसीकरिकै हननहोवैहै ॥ कैसाहै सोपरमेश्वरकामहिमा ॥परमाणुवोंतैं आदिलैके जितनेकीसूक्ष्मपदार्थ हैं॥ तथा आकाशतैंआदिलैके जितनेकीमहान्पदार्थहैं ॥तिनसंपूर्णों कोअवधिरूपहै ॥ जिसमहिमातैंपरे कोईसूक्ष्मपदार्थनहींहैतथाकोईमहान्पदार्थनहीं है ॥ और सोमहिमा आनंदआत्मास्वरूपहै ॥ यातैं ॥ २९ ॥

सोमहिमा सर्वभेदतैंरहितअद्वितीयस्वरूपहै ॥ हेनाचिकेता ॥ जैसे यालोकविषेस्थित जेयहस्थूलशरीरहै ॥ तेशरीर परिच्छिन्नहै यातैं तेशरीर जिसकालविषे स्थितहोवैहैं॥तथा शयनकरै हैं॥तिसकालविषे तेशरीर दूरजाणेकूंसमर्थहोवैनहीं ॥और यहआत्मादेव परिच्छिन्नहै नहीं ॥ किंतु सर्वत्रव्यापकहै ॥ यातैं यहआत्मादेव जिसकालविषे जाग्रतअवस्थाकूंदेखैहै॥तथास्वप्न सुषुप्तिअवस्थाकूंदेखै है॥तिसकालवि षेभी यहआत्मादेव सर्वदेशकालविषे प्राप्तहोवै है ॥ और हेनचिकेता ॥ जैसे जल सेंदूर हरितालादिकपदार्थोंकेसंबंधतैं यद्यपि रक्तपीतादि कवर्णोंवालाहुआ प्रतीतहोवै है ॥ तथापि सोजल वास्तवतैं शुक्लवर्णवालाही है ॥तैसे यहआत्मादेवभी बुद्धिआदिकउपाधियोंकेतादात्म्य संबंधतैं यद्यपि विद्यामद धनमद इत्यादिकविकारोंवालाहुआ प्रतीतहोवै है॥तथापि सोआत्मादेव वास्तवतैं विद्यामदादिकसर्वविकारोंतैं रहितहै ॥ हेनचिकेता ॥ इसप्रकार वास्तवतैंतो मदतैंरहित तथा बुद्धिआदिकउपाधियोंकेसंबंधतैं मदवाला ऐसाजोपरमात्मादेवहै ॥तिस परमात्मादेवकूं मैंचेतनआत्मातैंभिन्न कोईपदार्थ जाणिसकैनहीं ॥ काहेतैं जोजोपदार्थ मैंचेतनआत्मातैंभिन्नहोवैगा ॥ सोसोपदार्थ घटा दिकोंकीन्याईं अनात्माजडरूपहीहोवैगा ॥ सोअनात्मारूपजडपदार्थ ताचेतनआत्माकूं प्रकाशकरिसकैनहीं ॥ याकारणतैं सोआत्मादेव स्वप्रकाशरूपहै ॥ हेनचिकेता ॥ यहआत्मादेवकैसाहै ॥ वास्तवतैंतो स्थूल सूक्ष्म कारण यातीनोंशरीरोंतैंरहितहै ॥तथा सोआत्मादेव ही याअनित्यशरीरोंविषेस्थितहोवै है॥ तथा सोआत्मादेवही महान्विभुहै॥ ऐसेआत्मादेवकेस्वरूपकूं जिसकालविषे यहअधिकारीपुरुष गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं साक्षात्कारकरै है ॥ तिसीकालविषे यहअधिकारीपुरुष सर्वशोकोंतैंरहितहोवै है ॥ तात्पर्ययह ॥ कर्तृत्व भोक्तृत्व आदिरूपबंधकानाम शोकहै ॥ सोशोक अज्ञानतैंउत्पन्नहोवै है ॥ और ताविद्वान्पुरुषकाअज्ञान आत्मज्ञानतैंनाशहोइजावै है ॥ यातैं ताअज्ञानरूपकारणकेअभावहुए ताविद्वान्पुरुषविषे शोकरूपकार्यकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ हेनचिकेता॥ जोयहआत्मादेव हमनैं तुमारेप्रति विभुरूपकरिकै तथा स्वप्रकाशरूपकरिकै कथनकऱ्याहै ॥ सोयहआत्मादेव अत्यंतदुर्लभहै ॥ काहेतैं यहआत्मादेव चारवेदोंकेअध्याप नकरावणेकरिकैभी प्राप्तहोवैनहीं ॥ तथा चारवेदोंकेअध्ययनकरिकैभी प्राप्तहोवैनहीं ॥ तथा अनेकशास्त्रोंकेज्ञानतैंभी प्राप्तहोवैनहीं ॥

तथा कोटिजन्मोंकरिकैभी प्राप्तहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ ऐसादुर्लभआत्मा हमअधिकारीपुरुषोंकूं किसप्रकार प्राप्तहोवैगा ॥समाधान ॥ हेनाचिकेता ॥ यहआनंदस्वरूपआत्मा यद्यपि बहिर्मुखपुरुषोंकरिकैदुर्लभहै॥ तथापि जिसअंतर्मुखअधिकारीपुरुषकेप्रति यहआत्मादेव गुरुशास्त्ररूपहोइकै आपणावास्तवस्वरूप अभेदरूपकरिकै साक्षात्कारकरावै है॥सोईहीअधिकारीपुरुष याआनंदस्वरूपआत्माकूं प्राप्तहोवै है ॥ हेनचिकेता ॥ जिसपुरुषकूं आत्माकासाक्षात्कारनहींहोवै है ॥ और जिसपुरुषकूं आत्माकासाक्षात्कारहोवै है॥ तिनदोनों पुरुषोंकेलक्षणोंकूं तूं श्रवणकर ॥ तहां जोपुरुष पापकर्मोंतैंनिवृत्तनहींभयाहै ॥ तथा जोपुरुष शमदमादिकोंतैंरहितहै ॥ तथा जोपुरुष ध्यानरूपसमाधितैंरहितहै ॥ तथा जोपुरुषमनकीशांतितैंरहितहै ॥ ऐसेबहिर्मुखपुरुषकूं याआत्मादेवकासाक्षात्कारहोवैनहीं ॥ और जो पुरुष पुण्यआत्माहै ॥ तथा जोपुरुष सर्वजीवोंविषेक्रोधतैंरहितहै ॥ तथा जोपुरुष क्षणक्षणविषे आत्माकाचिंतनकरै है ॥ तथा जोपुरुष रागद्वेषतैंरहितहै ॥ ऐसा अंतर्मुखपुरुषही मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकार आपणेआत्माकूं ब्रह्मरूपकरिकैसाक्षात्कारकरै है ॥ हेनचिकेता ॥ जैसे यालोकविषे यहपुरुष ओदनविषे शाकदधिआदिकपदार्थ मिलाइकै ताओदनकूंभक्षणकरै हैं ॥ तैसे जिसमायाविशिष्टईश्वरका यहब्राह्मणक्षत्रियादिकसर्वजगत् ओदनरूपहै ॥ और सर्वजगत्कूंनाशकरणेहारामृत्यु शाकादिरूपहै ॥ तामृत्युरूपशाकादिकोंकूं याजगत्रूपओदनविषेमिलाइकै जोपरमेश्वर यासर्वजगत्कूंभक्षणकरै है ॥ सोमायाविशिष्टईश्वर जिसशुद्धआत्माविषेस्थितहै ॥ ताशुद्धआत्मादेवकूं जैसे मैं यमराजानैं साक्षात्कारकऱ्याहै ॥ तैसे ताशुद्धआत्माकूं दूसराकौनपुरुष साक्षात्कारकरिसकैगा ॥ किंतु नहींकरिसकैगा ॥ तात्पर्ययह ॥ तत् त्वं पदार्थकेशोधनकालविषे जिसअधिकारीपुरुषनैं ताशुद्धपरमात्मादेवकूं आपणाआत्मारूपकरिकैजान्याहै ॥ सोईहीअधिकारीपुरुष ताशुद्धपरमात्मादेवकूं महावाक्यकाअर्थरूपकरिकैभी जानिसकैहै ॥ ताविचारतैं रहित दूसराकोईपुरुष ताशुद्धपरमात्मादेवकूं जाणिसकैनहीं ॥ अब ताशुद्धआत्माके जानणेका प्रकार निरूपणकरै हैं ॥ हेनाचिकेता ॥ जिसध्यानरूपउपायकरिकै याआत्मादेवका साक्षात्कारहोवै है ॥ ताउपायकूं तूं श्रवणकर ॥ जैसे लोकप्रसिद्धपिप्प

लादिकवृक्षोंविषे पक्षीरहै हैं ॥ तैसे याशरीररूपवृक्षविषे दोपक्षीरहै हैं ॥ तहां एकतौ तत्पदकाअर्थ ईश्वरपक्षी है और दूसरा त्वंपदकाअर्थ जीवरूप पक्षी है ॥ तहां जीवरूप पक्षीतौ याशरीररूप वृक्षविषे पुण्यपाप रूप कर्मके सुखदुःखरूपफलकूं भोगै है और दूसराअंतर्यामीईश्वररूपपक्षीतौ तासुखदुःखरूपफलकूं भोगतानहीं ॥ किंतु सोईश्वररूपपक्षी ताजीवरूपपक्षीकूं सो सुखदुःखरूप फल भोगावै है ॥ कैसे हैं तेजीव ईश्वररूपदोनों पक्षी ॥ बुद्धिरूपउत्कृष्टस्थानविषे एकठे स्थित हैं ॥ तथा भोक्ता अभोक्ता रूप करिकै तथा अल्पज्ञतासर्वज्ञतारूपकरिकै परस्पर विरुद्ध धर्मवाले हैं ॥ हे नाचिकेता ॥ जिनअधिकारी पुरुषोंनैं दक्षिणाअग्नि गार्हपत्य आहवनीय सभ्य आवसथ्य या पंचअग्नियोंकी उपासनाकरी है ॥ तथा जिन अधिकारी पुरुषोंनैं नाचिकेत अग्निका तीनवार चयनकऱ्या है ॥ तेअधिकारीपुरुषही ताउपासनाकेबलतैं शुद्ध अंतःकरणवालेहुए तिनजीवईश्वरदोनोंकेस्वरूपकूं प्रतिपादनकरै हैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् दक्षिणाअग्निआदिक पंचअग्नियोंके स्वरूपकूंजानणेहारे जेकर्मीउपासकपुरुष हैं ॥ तिनोंकूंअद्वितीयब्रह्मकेज्ञान कीप्राप्ति देखणेमेंआवतीनहीं ॥ उलटा तेकर्मीपुरुष जीवब्रह्मकेभेदकूंहीकथनकरै हैं ॥ समाधान ॥ हेनचिकेता ॥ तेपंचअग्नियोंकेजानणहारेकर्मीपुरुष यद्यपि विशेषकरिकैतौ ब्रह्मज्ञानतैंरहितहीहोवै हैं ॥ तथा जीवईश्वरकेभेदकूंही कथनकरै हैं ॥ तथापि तेकर्मीपुरुष तबपर्यंत जीवईश्वरकाभेदकथनकरै हैं जबपर्यंत तिनकर्मीपुरुषोंकूं ब्रह्मवेत्तागुरुकासमागमनहींभया॥और जभी तिनकर्मीपुरुषोंकूं ब्रह्मवेत्तागुरुकासमागमहोवै है ॥ तभीनाचिकेताअग्निकेअनुष्ठानकरिकै तथा प्रणवकीउपासनाकेअनुष्ठानकरिकै शुद्धअंतःकरणवालेहुए तेकर्मीपुरुष इसीकालविषे ताअभयब्रह्मकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ कैसाहैसोब्रह्म ॥ जैसे प्रसिद्धनदियोंकांसेतु याजीवोंकूं तानदीकेपारकीप्राप्तिकरै है॥तैसे यज्ञादिककर्मोंकूं करणेहारे तथा यासंसारसमुद्रतैं पारहोणेकीइच्छावाले जेअधिकारी पुरुषहैं॥तिनअधिकारीपुरुषोंकूं जोब्रह्म तत्पदार्थईश्वररूपकरिकै यासंसारसमुद्रतैंपारकरणेहारा सेतुरूपहै ॥ हेनचिकेता ॥ ब्रह्मवेत्तागुरुकेसमागमतैं ॥ तेकर्मीपुरुष जिसविचारकरिकै ब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवै हैं॥ ताविचारकूं तूं श्रवणकर ॥पुण्यपापरूपकर्मकेफलकाभोक्ता जोयहत्वंपदार्थरूपजीवात्माहै॥सोजीवात्मा याशरीरकरि

केही संसारकूं तथामोक्षकूं प्राप्तहोवैहै ॥ यातैं यहजीवात्मातो रथवालाहै ॥ और ताजीवात्माका यहशरीर रथरूपहै॥और जैसे लोकप्र
सिद्धरथकाचलावणेहारा सारथिहोवै है ॥ तैसे याशरीररूपरथकाचलावणेहारा बुद्धिरूपसारथिहै ॥ और जैसे लोकप्रासिद्धरथविषे अश्वहो
वैहैं ॥ तथा तिनअश्वोंकेसाथबांधीहुईरज्जु तासारथिपुरुषकेहाथविषेहोवैहै ॥ तैसे यहनेत्रादिकइंद्रिय याशरीररूपरथकेअश्वहैं ॥ और
मनरूपीरज्जुहैं ॥ और जैसे प्रसिद्धरथकेअश्व भूमिविषे चालेहैं ॥ तैसे यहइंद्रियरूपअश्वभी शब्दस्पर्शादिकविषयरूपभूमिविषेचाले हैं ॥
और जैसे प्रसिद्धरथकरिकै प्राप्तहोणेयोग्य ग्रामादिकस्थानहोवै हैं ॥ तैसे बुद्धिइंद्रियादिकोंतैंरहितशुद्धआत्मा याशरीररूपरथकरिकै
प्राप्तहोणेयोग्यस्थानहै ॥ हेनाचिकेता ॥ यारथकेदृष्टांतकहणेका यहप्रयोजन है ॥ कर्मउपासनाकरिकै जिनअधिकारीपुरुषोंकाचित्तशुद्ध
भयाहै ॥ तेअधिकारीपुरुषही तावुद्धिरूपसारथिद्वारा तिनइंद्रियरूपदुष्टअश्वोंकूं जयकरै हैं ॥ तिसतैंअनंतर तेअधिकारीपुरुष कर्तृत्व
भोक्तृत्वरूपपूर्वदेशकापरित्यागकरिकै ब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपउत्तरदेशकूं प्राप्तहोवै हैं ॥ तात्पर्ययह रथवालेपुरुषनैं जिसदेशविषेजाणा
होवै तिसदेशतैंभिन्न दूसरेकिसीदेशविषेरागकाअभावहोणा ॥ तथा अश्वादिकोंकेचलावणेका तथानिग्रहणकरणेका जोज्ञानरूपकुशल
होताहै ॥ यहदोनोंप्रकारकेगुण जिससारथिपुरुषविषेरहै हैं ॥ सोईहीसारथिपुरुष तिसरथवालेपुरुषकूं तिसदेशविषेप्राप्तकरै है ॥ तादोनों
गुणोंतैंरहित सारथिपुरुष तादेशकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ तैसे यहबुद्धिरूपसारथिभी जभी तिनदोनोंगुणोंवालाहोवै है ॥ तभीही यहबुद्धि
रूपसारथि याजीवात्माकूं ब्रह्मभावकीप्राप्तिकरै है ॥ और जिसबुद्धिरूपसारथिविषे तेदोनोंगुणनहींहोवै है ॥ सोबुद्धिरूपसारथि
याजीवकूं ब्रह्मभावकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ उलटा याजीवकूं संसारदुःखकीहीप्राप्तिकरै है ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकैनिरूपणकरै हैं ॥
हेनाचिकेता ॥ जिसअधिकारीपुरुषका यहबुद्धिरूपसारथि वैराग्यरूपकवचकूंप्राप्तभयाहै ॥ सोअधिकारीपुरुषही तावुद्धिरूपसारथि
द्वारा मनरूपदृढरज्जुकरिकै ताइंद्रियरूपअश्वोंकूं आपणेवशकरिकै परमात्मारूपदेशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जैसे यालोकविषे दुष्टअश्व
सारथिपुरुषकेवशवर्तीहोवैनहीं ॥ तैसे जिसपुरुषकाबुद्धिरूपसारथि विषयोंविषेरागवालाहै ॥ तथा जिसपुरुषकामनरूपरज्जु धैर्यरूप

बलतैंरहितहै ॥ तिसपुरुषके यहइंद्रियरूपदुष्टअश्व वशवर्तीहोवैनहीं॥ याकारणतैंहीं सोबहिर्मुखपुरुष याशरीररूपरथकरिकै तापरमात्मा
रूपदेशकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और जैसे यालोकविषे श्रेष्ठगुणोंवालेअश्व तासारथिपुरुषके सर्वदावशवर्तीरहै हैं ॥ तैसे जिसअधिकारीपुरुष
काबुद्धिरूपसारथि विषयोंतैं वैराग्यकूंप्राप्तभयाहै ॥ तथा जिसअधिकारीपुरुषकामनरूपरज्जु धैर्यरूपबलकरिकैयुक्त है ॥ तिसअधिकारी
पुरुषकेही यहइंद्रियरूपअश्व वशवर्तीरहै हैं ॥ याकारणतैंही सोअधिकारीपुरुष ब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ हेनाचिकेता जिस पुरुष
काबुद्धिरूपसारथि विवेकतैंरहितहोवै है ॥ तथा जिसपुरुषकामनरूपरज्जु बहिर्मुखहोवै है ॥ तथा जोपुरुष सर्वदाअशुचरहै है ॥ ऐसा
विवेकहीनमूढपुरुष तात्रह्मरूपदेशकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु सो वैराग्यहीन पुरुष उलटा जन्ममरणरूपसंसारकूंही प्राप्त होवै है और
हेनाचिकेता ॥ जिसअधिकारीपुरुषका बुद्धिरूपसारथि विवेकवालाहोवै है॥तथा जिसअधिकारीपुरुषका मनरूपरज्जु अंतर्मुखहोवै है ॥
तथा जोअधिकारीपुरुष सर्वदाशुचरहै है ॥ ऐसाअधिकारीपुरुषही याशरीररूपरथकरिकै ताअद्वितीयब्रह्मरूपपदकूंप्राप्तहोवै है ॥ जिसअ
द्वितीयब्रह्मरूपपदकूंप्राप्तहोईकै सोअधिकारीपुरुष पुनःजन्मकूंप्राप्तहोवै नहीं ॥ हेनाचिकेता ॥ इस प्रकार जिस अधिकारी पुरुषका बुद्धि
रूपसारथि विवेकवालाहै ॥ तथा जिसपुरुषनैं मनरूपरज्जुकरिकै नेत्रादिरूपदुष्टअश्वोंकूं आपणेवशकऱ्याहै॥सोअधिकारीपुरुषही यासंसा
ररूपसमुद्रके परमात्मारूपपारकूं प्राप्तहोवै है ॥ याकहणेतैंयहअर्थसिद्धभया ॥ विषयोंतैं वैराग्यवालीजाबुद्धिहै ॥ तथा विषयोंकेप्राप्तहु
एभी धैर्यवालाजोमनहै॥यहदोनों याअधिकारीपुरुषोंके मोक्षकासाधनहोवै हैं॥और विषयोंविषे रागवालीजाबुद्धिहै॥ तथा धैर्यतैंरहित जो
मन है॥ यहदोनों याजीवोंकेबंधनकाकारणहोवै हैं ॥ यातैं आत्मज्ञानद्वारा मोक्षके प्राप्तिकी इच्छावालेमुमुक्षुजनोंनैं वैराग्यकूं तथाधैर्यकूं
अवश्यसंपादनकरणा ॥ अब बंधमोक्षकेस्वरूपका निरूपणकरै हैं॥ हेनाचिकेता अंतरभावकानाम मोक्षहै॥और बाह्यभावकानामबंधहै॥
सोअंतरभावपणा सर्वदा कारणविषेहीरहै है ॥और सोबाह्यपणा सर्वदा कार्यविषेहीरहै है ॥अब परमकारणरूपपरमात्मा देवविषे मोक्षरूप
तासिद्धकरणेवासतैं प्रथम कारणोंकीपरंपरा निरूपणकरै हैं॥हेनाचिकेता॥शब्द स्पर्श रूप रस गंध यहपंचविषय आकाशादिकपंचभूतोंका

सारूपहैं॥ यातैं तेशब्दादिकपंचविषय आकाशादिकपंचभूतरूपकरिकै श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रियोंकेकारणहैं॥याकारणतैं तिनश्रोत्रादिक इंद्रियोंतैं तेशब्दादिकविषय परहैं ॥ और तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं शब्दादिकविषयोंके ग्रहणविषे यहमनहीप्रवृत्तकरै है॥ यातैं जैसे समुद्र लहरियोंकाकारणहोवै है॥तैसे शब्दादिकविषयभावकूंप्राप्तहुए जेश्रोत्रादिकइंद्रियहैं॥तिनोंका यहमनहीकारणहै ॥यातैं सो मन तिनशब्दादिकविषयोंतैं परहै॥तात्पर्ययह॥ जैसे शब्दादिकविषय आकाशादिकभूतरूपकरिकै श्रोत्रादिकइंद्रियोंतैंपरहैं ॥ तैसे श्रोत्रादिकइंद्रियभावकूंप्राप्तहुए जेशब्दादिकविषयहैं॥ तिनशब्दादिकविषयोंतैं मनकूंभी पररूपतासंभवै है ॥ और मेरेकूं सुखकीप्राप्तिहोवै मेरेकूं दुःखकीप्राप्ति नहींहोवै याप्रकारकीइच्छारूप सोमनहै॥यातैं सोइच्छारूपमन आपणीउत्पत्तिवासतै निश्चयरूपबुद्धिकीअवश्यअपेक्षाकरै है॥निश्चयरूपबुद्धितैंविनाइच्छाकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ यातैं सानिश्चयरूपबुद्धि ताइच्छारूपमनकाकारणहै ॥ याकारणतैंही सानिश्चयरूपबुद्धि ताइच्छारूपमनतैंपरहै ॥ और सानिश्चयरूपव्यष्टिबुद्धिभी आपणीउत्पत्तिविषे समष्टिरूप हिरण्यगर्भकेबुद्धिकीअपेक्षाकरै है॥ जाहिरण्यगर्भकीबुद्धि सर्वस्थूलजगत्कानिमित्तकारणहै॥तथा जाबुद्धिकूं श्रुतिविषे महत्त्व यानामकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ यातैं ताव्यष्टिबुद्धिका हिरण्यगर्भकी महत्तत्वनामासमष्टिबुद्धि कारणहै॥याकारणतैंही ताव्यष्टिबुद्धितैं सामहत्तत्वनामासमष्टिबुद्धि परहै॥और सामहत्तत्वरूपसमष्टिबुद्धिभीआपणीउत्पत्तिविषे मायासहित समष्टिसूक्ष्मशरीरकीअपेक्षाकरै हैं ॥ कैसाहैसो मायासहितसूक्ष्मशरीर ॥ या स्थूलशरीरतैं विलक्षणहै ॥ यातैं तासूक्ष्मशरीरकूं श्रुतिविषे अव्यक्त यानामकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ यातैं तामहत्तत्व रूपसमष्टिबुद्धिका सो मायासहित सूक्ष्मशरीर रूपअव्यक्त कारणहै॥ याकारणतैंही तामहत्तत्वरूपसमष्टिबुद्धितैं सोअव्यक्त परहै॥और साअविद्यारूपमाया आपणेआश्रयविषयकीप्राप्तिवासतै चेतन्यपुरुषकीअपेक्षाकरै है ॥ याकारणतैं ताअविद्यारूपमायातैं सोचेतनरूपपुरुष परहै ॥ और सोचेतनरूपपुरुष आपणीउत्पत्तिविषे तथाआपणेज्ञानविषे किसीदूसरेकीअपेक्षाकरतानहीं ॥ याकारणतैं सोचेतनपुरुष सर्वतैंपर है ॥ ताचेतनपुरुषतैंपरेकोईपदार्थ है नहीं ॥ ऐसेचेतनपुरुषकेबोधकरावणेवासतैंही शास्त्रवेत्तापुरुषोंनैं इंद्रियोंतैंआदिलैके ताचेतनपुरुषपर्यंत यहकारणोंकीपरंपरा कथनकरी है॥

तहांश्रुति ॥ इंद्रियेभ्यःपराह्यर्था अर्थेभ्यश्चपरंमनः ॥ मनसश्चपराबुद्धिर्बुद्धेरात्मामहान्परः ॥ महतःपरमव्यक्तमव्यक्तात्पुरुषःपरः ॥ पुरुषान्नपरंकिंचित् साकाष्ठासापरागतिः ॥ अर्थयह ॥ पूर्वंकहीरीतिसैं श्रोत्रादिकइंद्रियोंतैं शब्दादिकअर्थ परहैं और तिनशब्दादिकअर्थोंतैं मन परहै ॥ और तामनतैं व्यष्टिबुद्धि परहै ॥ और ताव्यष्टिबुद्धितैं महत्तत्वरूपसमष्टिबुद्धि परहै ॥ और तामहत्तत्वरूपसमष्टिबुद्धितैं अव्यक्त परहै ॥ और ताअव्यक्ततैं चेतनपुरुष परहै ॥ और ताचेतनपुरुषतैंपरे कोईवस्तुहैनहीं ॥ किंतु सोचेतनपुरुषही काष्ठारूपहै ॥ तथा परागतिरूपहै ॥ १ ॥ हेनचिकेता ॥ यहस्वयंप्रकाशचेतनरूपसंवित्ही तुमनैं सर्वतैंपरेजानणा ॥ कैसाहैसोचेतनरूपसंवित् ॥ दिशाकालादिकोंकेकल्पनाकाभी अधिष्ठानरूपहै॥तथा सर्वजगत्काविवर्त्तउपादानकारणहै॥ऐसेचेतनरूपसंवित्तैंपरे कोईगतिहैनहीं॥काहेतैं श्रोत्रादिक इंद्रियोंतैं शब्दादिकअर्थ पर हैं ॥ और शब्दादिकअर्थोंतैं मन परहै ॥ और मनतैंबुद्धि परहै ॥ याप्रकारकीकारणोंकीपरंपरा ताचेतनपुरुषपर्यंतही प्राप्तहोवै है ॥ ताचेतनपुरुषतैंपरे साकारगोंकीपरंपरा चालैनहीं ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताचेतनपुरुषकूं परमकाष्ठा यानामकरिकैकथनकरै है ॥ और ताचेतनपुरुषविषे कोईकारणहैनहीं ॥ यातैं ताचेतनपुरुषतैंपरे कोईदूसरीगति है नहीं ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताचेतनपुरुषकूं परमगति यानामकरिकैकथनकरै है ॥ और हेनचिकेता ॥ जैसे अग्नि सर्वकाष्ठोंविषेगुह्यहोइकैरहै है ॥ तैसे यहआत्मादेवभी सर्वशरीरोंविषे गुह्यहोइकैरहै है और जैसे तिनकाष्ठोंकेमथनरूपउपायतैं पूर्व सोअग्नि तिनकाष्ठोंविषे प्रतीतहोवैनहीं ॥ तैसे ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतैंपूर्व यह आत्मादेवभी याशरीरोंविषे स्पष्टरूपकरिकैप्रतीतहोवैनहीं ॥ और जैसे तिनकाष्ठोंकेमथनतैं सोअग्नि प्रत्यक्षहोवै है ॥ तैसे ब्रह्मवेत्तागुरुनैं उपदेशकरेजतत्त्वमसिआदिकमहावाक्य हैं॥तिनमहावाक्योंतैं उत्पन्नभई जाब्रह्माकारसूक्ष्मबुद्धि है ॥ तासूक्ष्मबुद्धिकरिकै याअधिकारीपुरुषोंकूं यहआत्मादेव स्पष्टप्रतीतहोवै है ॥ तहांश्रुति ॥ एषसर्वेषुभूतेषु गूढोत्मानप्रकाशते ॥ दृश्यतेत्वग्र्ययाबुद्ध्या सूक्ष्मयासूक्ष्मदर्शिभिः ॥अर्थयह॥ सर्वभूतोंविषेगुह्यहोइकैरह्याहुआ यहआत्मादेव यद्यपि विचारहीनपुरुषोंकूं स्पष्टप्रतीत होवैनहीं ॥ तथापि गुरुकेउपदेशतैं उत्पन्नभई जाब्रह्माकारसूक्ष्मबुद्धि है ॥ ताबुद्धिकरिकै सूक्ष्मदर्शीअधिकारीपुरुषोंनैं यहआत्मादेव

स्पष्टदेखीताहै।१।अब ताआत्मज्ञानकेप्राप्तिवास्तै योगरूपसाधनकानिरूपणकरैहैं।हेनचिकेता।जिसअधिकारीपुरुषकूं आत्माकेसाक्षात्कारकीइच्छाहोवै॥सोअधिकारीपुरुष प्रथम याचारिअवस्थावालेयोगकूंकरै॥तिनचारिअवस्थावोंविषे प्रथमअवस्थायहहै।जोमन सुखकेप्राप्तिकीकामनाकरिकै श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रियोंकूं तथा वाकादिकपंचकर्मइंद्रियोंकूं आपणेआपणेव्यापारविषे प्रवृत्तकरैहै॥तामनविषे यहअधिकारीपुरुष तिनश्रोत्रादिक इंद्रियोंकालयकरै ॥ तात्पर्ययह ॥ श्रोत्रादिकइंद्रियोंके व्यापारोंतैं रहित केवलमनकाजोव्यापार है ॥ यहही श्रोत्रादिकइंद्रियोंका मनविषेलयहै ॥ याप्रकारकी तायोगकीप्रथमअवस्थाहै॥तहांदृष्टांत॥जैसे यालोकविषे अश्वोंकूंशिक्षाकरणेहारापुरुष तिनदुष्टअश्वोंकूं बाह्यभूमिरूपदेशतैंलेआइके अंतरअश्वशालाविषेबांधेहै।तहां तिनदुष्टअश्वोंका जोबाह्यभूमिविषे नानाप्रकारकाव्यापारथा तिससर्वव्यापारका निरोधहोवै है ॥ केवल ताअश्वकेशरीरमात्रकाचलनरूपव्यापार वाकीरहै है ॥ तैसे यहअधिकारीपुरुष जभी तिन श्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं अंतरमनविषेलयकरै है ॥ तभी तामनका पूर्व श्रोत्रादिकइंद्रियरूपकरिकै जोबाह्यनानाप्रकारकाव्यापारथा ॥ सोसंपूर्णव्यापार निरोधकूंप्राप्तहोवै है ॥ किंतु तामनका केवलशरीरकेअंतरहीं व्यापाररहै है ॥ अब तायोगकेदूसरीअवस्थाकानिरूपणकरै हैं ॥ हेनचिकेता ॥ सोमनकैसाहै ॥ यहवस्तुहमारेकूंप्राप्तहोवै यहवस्तुहमारेकूंनहींप्राप्तहोवै याप्रकारकीइच्छारूपहै॥तथा सोमन गर्वयुक्त है ॥ याकारणतैंहीं प्रमत्तहस्तीकीन्याईं सोमन बलात्कारसैं सर्वदा प्रमादकरणेविषेही उद्यमकरै है ॥ और जैसे यालोकविषे महावतपुरुष ताप्रमत्तहस्तीकूं लोहेकेतीक्ष्णअंकुशकरिकै आपणेवशकरै हैं ॥ तैसे यहअधिकारीपुरुषभी तामनरूपप्रमत्तहस्तीकूंवैराग्ययुक्त निश्चयात्मकबुद्धिरूपअंकुशकरिकै आपणेवशकरै ॥ तात्पर्ययह ॥ ताइच्छारूपमनका निश्चयरूपबुद्धिविषेलयकरै ॥ अब तीसरी चतुर्थ यादोनोंअवस्थावोंकानिरूपणकरै हैं ॥ हेनचिकेता ॥ तानिश्चयरूपव्यष्टिबुद्धिकूं यहअधिकारीपुरुष हिरण्यगर्भकीमहत्तत्वरूपसमष्टिबुद्धिविषे लयकरै ॥ कैसीहैसा महत्तत्वरूपसमष्टिबुद्धि ॥ अहंअस्मि ॥ यासामान्यज्ञानरूपहै ॥ तथा सामान्यरूपकरिकै सर्वजगत्कूं विषयकरणेहारी है ॥ याकारणतैंही विशेषरूपकरिकै जगत्कूंविषयकरणेहारीयां जेव्यष्टिबुद्धियां हैं तिनसर्वबुद्धियोंका सासमष्टिबुद्धिका

॥ ३३ ॥

रणरूपहै ॥ और तासामान्यज्ञानरूपसमष्टिबुद्धिकूं यहअधिकारीपुरुष आनंदस्वरूपआत्माविषे लयकरै ॥ अब याहीश्रुतिकेअर्थकूं युक्तिकरिकैनिरूपणकरै हैं ॥ हेनचिकेता ॥ अधिकारीपुरुष श्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं मनविषेलयकरै ॥ और तामनकूं व्यष्टिबुद्धिविषेलयकरै ॥ और ताव्यष्टिबुद्धिकूं समष्टिबुद्धिविषेलयकरै ॥ और तासमष्टिबुद्धिकूं परमात्माविषेलयकरै ॥ याप्रकारकी योगकीचारिअवस्था जोश्रुतिनैं संक्षेपतैंकथनकरीयां हैं ॥ तिनचारिअवस्थावोंकेस्पष्टकरणेवासतै शास्त्रवेत्ताबुद्धिमान्पुरुष याप्रकारकीयुक्तियां कथनकरै हैं ॥ श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रिय तथावाकादिकपंचकर्मइंद्रिय यादोनोंप्रकारके इंद्रियोंकी जोशुभअशुभव्यापारविषे प्रवृत्तिहोवै है ॥ सो सुखकेप्राप्तिकीकामनाकरिकैही प्रवृत्तिहोवै है तहां ताइंद्रियोंकेप्रवृत्तिकाकारण जासुखकेप्राप्तिकी इच्छा है ॥ तथा ता इच्छाकेउत्पत्तिकाकारणरूप जोयहवस्तुरमणीकहै याप्रकारकास्मृतिरूपज्ञान है ॥ तेदोनों केवल मनकाविलासरूपकरिकैही स्थितहैं॥ यातैं तेदोनों मनतैं भिन्ननहीं हैं॥याकारणतैं श्रोत्रादिकइंद्रियोंका मनविषेलय संभवै है ॥ हेनाचिकेता॥इसप्रकार सुखकीइच्छारूप तथास्मृतिज्ञानरूप जोमनहै ॥ तामनकाउत्पत्ति निश्चयरूपबुद्धितैंविनाहोवैनहीं ॥ किंतुनिश्चयरूपबुद्धितैंहीं ताइच्छारूपमनकी उत्पत्तिहोवैहै॥काहेतैं जिसपुरुषकूं पूर्व सानिश्चयरूपबुद्धिनहींभई॥ तिसपुरुषकूं सासुखकीइच्छा तथाताइच्छाकाकारणरूप सोस्मृतिरूप ज्ञान होवैनहीं ॥ किंतु पूर्वअनुभवरूपनिश्चयही संस्कारद्वारा तास्मृतिज्ञानका तथाइच्छाकाकारणहोवै है ॥ याकारणतैंतामनका निश्चयरूपबुद्धिविषेलय संभवै है ॥ और हे नाचिकेता ॥ सामनकाकारणरूपव्यष्टिबुद्धि आपणीउत्पत्तिविषे ताहिरण्यगर्भकेसामान्यबुद्धिकीअपेक्षाकरै है ॥ यातैं साहिरण्यगर्भकी समष्टिरूपसामान्यबुद्धि याव्यष्टिरूपविशेषबुद्धिका कारणहोवै है॥तहांदृष्टांत ॥ जैसे तलावआदिकोंके जलोंका मेघोंविषेस्थितजल कारणहोवै है॥तैसे हिरण्यगर्भकेइच्छाकाकारणरूप जासमष्टिसामान्यबुद्धिहै॥ सासमष्टिबुद्धि हमजीवोंकेव्यष्टिबुद्धिका कारणहोवै है ॥ और हेनचिकेता ॥ जैसे स्वप्नअवस्थाविषे हमजीवोंकी व्यष्टिबुद्धि तास्वप्नके जडचेतनरूपजगत्का कारणहोवै है तैसे साहिरण्यगर्भकीसमष्टिबुद्धि यासंपूर्णजगत्का कारणहोवै है ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे निद्राविषेसोयाहुआपुरुष आपणेबुद्धिकेबलतैं

आकाशादिकपंचभूतोंकूं उत्पन्नकरै है ॥ तथा जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज याचारिप्रकारकेशरीरोंकूं उत्पन्नकरै है ॥ इसप्रकार तिनसर्वपदार्थोंकूं उत्पन्नकरिकै सोस्वप्नद्रष्टापुरुष आपही तिनसर्वपदार्थोंविषेस्थितहोवै है ॥ तैसे सोहिरण्यगर्भभगवान्भी आपणेसमष्टि बुद्धिकेबलतैं याजडचेतनरूपजगत्कूं उत्पन्नकरिकै तास्थावरजंगमरूपशरीरोंविषे आपहीस्थितहोवै है ॥ यातैं जैसे मठाकाशविषेस्थित घटाकाश तामठाकाशरूपहीहोवै है ॥ तैसे हमजीवोंकीव्यष्टिबुद्धि ताहिरण्यगर्भकीसमष्टिबुद्धिरूपही हैं ॥ याकारणतैं ताव्यष्टिबुद्धिका तासमष्टिबुद्धिविषे लयसंभवै है ॥ और हेनचिकेता ॥ ताहिरण्यगर्भकी समष्टिबुद्धिका मायाविशिष्टपरमात्मादेवही उपादानकारण है ॥ याकारणें तासमष्टिबुद्धिका तामायाविशिष्टईश्वरविषेलय संभवै है ॥ और हेनचिकेता ॥ जैसे यालोकविषे त्वचारूपकंचुककरिकै विशिष्ट जेव्रीहिहैं ॥ तिनव्रीहियोंविषेहीं बीजरूपताहोवै है ॥ त्वचारूपकंचुकतैंरहित तिनव्रीहियोंविषे बीजरूपतासंभवैनहीं ॥ तैसे अविद्यारूपकंचुककरिकैविशिष्ट जोआत्मादेवहै ॥ ताविशिष्टआत्माविषे याजगत्कीकारणरूपताहोवै है ॥ अविद्यारूपकंचुकतैंरहित शुद्धआत्माविषे याजगतकीकारणतासंभवैनहीं ॥ और मैंअद्वितीयब्रह्मरूपहूं याप्रकारकेआत्मज्ञानकरिकै जभी ताअविद्यारूपकंचुकका नाशहोवै है ॥ तभी साहिरण्यगर्भकीसमष्टिबुद्धिकेवलशुद्धआत्माविषेलयहोवै है ॥ यातैं तासमष्टिबुद्धिका सोशुद्धआत्माही अधिकारी पुरुषनैं तासमष्टिबुद्धिका सर्वदाचिंतनकरणा॥हेनचिकेता॥यासमष्टिबुद्धिका मायाविशिष्टईश्वर कारणहै याप्रकारकाचिंतन जोअधिकारी पुरुष सर्वदाकरै है ॥ तथा जिसअधिकारीपुरुषनैं व्यष्टिअभिमानकापरित्यागकरिकै समष्टिअभिमानकूंधारणकऱ्या है ॥ तथा जिसअधिकारीपुरुषके अनेकजन्मोंकेपुण्यकर्मोंकरिकै संपूर्णपापकर्मरूपप्रतिबंधक निवृत्तभये हैं ॥ ऐसेउत्तमअधिकारीपुरुषकूंही गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं मैंअद्वितीयब्रह्मरूपहूं याप्रकारकाआत्मज्ञान प्राप्तहोवै है॥ कैसाहैसोआत्मज्ञान ॥भेददर्शनरूपपर्वतकूंइंद्रकेवज्रसमान भेदनकरणेहारा है ॥ हेनचिकेता ॥ मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकाब्रह्मज्ञान जिसकालविषे याअधिकारीपुरुषकूंप्राप्तहोवै है॥तिसीकालविषे याअधिकारी पुरुषके अविद्याकानाशहोवै है ॥ और जिसकालविषे ताअविद्यारूपकारणकानाशहोवै है॥ तिसीकालविषे तासमष्टिबुद्धिकानाशहोवै है

और जिसकालविषे तासमष्टिबुद्धिरूपकारणकानाशहोवै है ॥ तिसीकालविषे याव्यष्टिबुद्धिकानाशहोवै है ॥ और जिसकालविषे ताव्यष्टिबुद्धिरूपकारणकानाशहोवै है॥तिसीकालविषे याइच्छारूपमनके प्रवृत्तिकाअभावहोवै है ॥ और जिसकालविषे ताइच्छारूपमनके प्रवृत्तिकाअभावहोवै है ॥ तिसीकालविषे श्रोत्रादिकइंद्रियोंकेप्रवृत्तिकाअभावहोवै है ॥ और शब्दादिकविषयोंविषे जोश्रोत्रादिकइंद्रियोंकी प्रवृत्तिहै ॥ सोप्रवृत्तिही याजीवोंकूं अनेकप्रकारकेदुःखोंकीप्राप्तिकरै है ॥ यातैं जिसकालविषे तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंकेप्रवृत्तिकाअभावहोवै है ॥ तिसकालविषे याअधिकारीपुरुषकूं किंचित्मात्रभीदुःखकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ तिसतैंअनंतर यहअधिकारीपुरुष मनवाणीकाअविषय जोआनंदस्वरूपस्वयंज्योतिअद्वितीयआत्माहै ताअद्वितीयआत्माकूं अभेदरूपकरिकैप्राप्तहोवै है॥ ताअद्वितीयआत्माकीप्राप्तिकरिकैही ताविद्वान्पुरुषकूं शास्त्रवेत्तापुरुष कुशल अंत्यदेह आश्चर्य यानामोंकरिकैकथनकरै हैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् याप्रकारकेयोगरूपउपायतैं सर्वजगत्कालयकरिकै सोयोगीपुरुष जिसकालविषे मुक्तिकूंप्राप्तहोवै है ॥ तिसकालविषे दूसरेअयोगीपुरुषोंकूं संसारकीप्राप्ति किसवासतैहोवै है ॥ समाधान ॥ हेनचिकेता ॥ यामायाकाप्रभाव बहुतआश्चर्यरूपहै ॥ काहेतैं सर्वजगत्काकारणरूप जायहमाया है ॥ सामाया यद्यपि एकहीहै ॥ तथापि साएकहीमाया एकहीकालविषे ब्रह्मवेत्तापुरुषविषेतौ लयव्यवहारकूंप्राप्तहोवै है ॥ और दूसरेअज्ञानी जीवोंविषे सामाया अलयव्यवहारकूंप्राप्तहोवै है ॥ तात्पर्ययह ॥ जिसअधिकारीपुरुषविषे मैंशुद्धब्रह्मरूपहूं याप्रकारकाब्रह्मज्ञान उत्पन्नभयाहै ॥ तिसविद्वान्पुरुषकूंतौ तामायाकादर्शनहोवैनहीं ॥ और जिसपुरुषविषे सोब्रह्मज्ञानउत्पन्ननहींभयाहै॥ तिसअज्ञानीपुरुषकूं तामायाकादर्शनहोवै है ॥ इसप्रकार एकहीकालविषे एकहीमायाका दर्शन तथाअदर्शनयहदोनों सिद्धहोवै हैं यहवार्त्ता पतंजलिभगवान्नैं भीकहीहै ॥ तहांसूत्र ॥ कृतार्थप्रतिनष्टमप्यनष्टंतदन्यसाधारणत्वात् ॥ अर्थयह॥आत्मासाक्षात्कारकरिकै कृतार्थभयाजोविद्वानपुरुषहै॥ ताविद्वानपुरुषकीदृष्टिकरिकै यद्यपि यहमायारूपअज्ञान नष्टभयाहै॥ तथापि अज्ञानीजीवोंविषे सोअज्ञानविद्यमानहै ॥यातैं तिनअज्ञानी जीवोंकीदृष्टिकरिकै सोअज्ञान नष्टनहींभया ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ पातंजलशास्त्रकेमतविषे आत्माकाभेद अंगीकारकऱ्याहै ॥ यातैं

तिनोंकेमतविषे यद्यपि साव्यवस्थासंभवैहै ॥ तथापि वेदांतसिद्धांतविषे आत्मा एकअद्वितीयरूपहै ॥यातैं वेदांतविषे साव्यवस्था किस प्रकारसंभवैगी ॥ समाधान ॥ हेनचिकेता ॥ वेदांतमतविषे यद्यपि आत्मा एकअद्वितीयरूपहै ॥ तथापि अंतःकरणादिकरूपउपाधिकेभेदतैं साव्यवस्था संभवहोइसकैहै ॥ काहेतैं जैसे नेत्ररूपदोनोंगोलकविषे यद्यपि चक्षुइंद्रिय एकहीहै॥तथापि दक्षिणैगोलकविषेस्थितहोइकै सोचक्षुइंद्रिय जैसेस्पष्टदेखैहै ॥ तैसे वामगोलकविषेस्थितहोइकै स्पष्टदेखैनहीं ॥ तैसे एकहीआत्मादेव योगीपुरुषकेशरीरविषेस्थितहोइकै ताकार्यसहितमायाकूंदेखतानहीं ॥ और अयोगीपुरुषकेशरीरविषेस्थितहोइकै सोआत्मादेव ताकार्यसहितमायाकूंदेखैहै ॥ याप्रकार शरीरादिकउपाधियोंकेभेदतैं साव्यवस्था संभवहोइसकैहै ॥ यातैं एकहीकालविषे एकहीमायाकीकहांतौनिवृत्ति और कहांअनिवृत्ति याप्रकारकेविरोधकीआशंकाकूं सोमायाकादुर्घटस्वभावही निवृत्तकरैहै ॥ अब तामायाके दूसरेभीदुर्घटस्वभावोंकानिरूपणकरैहैं॥हेनचिकेता॥ यालोकविषे यहघटहै यहपट है इत्यादिकजेज्ञानहैं ॥ तिनज्ञानोंका अंतःकरण आश्रय है और घटपटादिकविषयहै ॥ इसप्रकार ज्ञानके आश्रयका तथाविषयका परस्परभेदहीदेख्याहै ॥ और यामायाकातौ एकहीस्वयंज्योतिअद्वितीयआत्मा आश्रयहोवैहैतथाविषयहोवैहै॥ यातैं यहवार्त्ताभी अत्यंतदुर्घट है ॥ और यहआत्मादेव सर्वभेदतैंरहितअद्वितीयरूपहुआभी प्रपंचरूपऐश्वर्यकीअपेक्षाकरिकै महेश्वरभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ यातैं यहवार्त्ताभी अत्यंतदुर्घटहै ॥ और यालोकविषे जहांआपणीस्थितिविषे आपणीअपेक्षाहोवै है ॥ तहां आत्माआश्रयदोषकीप्राप्तिहोवै है ॥ और इहां मायासंबंधतैंरहितअद्वितीयआत्माविषे जोमायाकीस्थिति है सोमायाकरिकैहीं है ॥यातैं यहवार्त्ताभी अत्यंतदुर्घटहै ॥ और यहमाया सत्यरूपनहीं है ॥ तथा असत्यरूपनहीं है ॥ तथा सत्यअसत्यउभयरूपनहीं है ॥ इसप्रकार अनिर्वचनीयरूपहुईभी सामाया भावरूपकरिकै प्रतीतहोवै है ॥ यातैं यहवार्त्ताभी अत्यंतदुर्घट है ॥ और यहमाया वास्तवतैं जडरूपहुईभी यास्थूलसूक्ष्मजगत्का कर्त्तारूपहोवै है ॥ यातैं यहवार्त्ताभी अत्यंतदुर्घटहै ॥ यद्यपि वेदांतशास्त्रविषे मायाविशिष्टचेतनकूंहीं याजगत्काकर्त्ताकह्याहै ॥ तथापि तामायातैंरहित शुद्धचेतनविषे सोजगत्काकर्तापणानहीं ॥ यातैं परिशेषतैं तामायाविषेही सो

कर्तापणाघटैहै ॥ काहेतैं शास्त्रविषेयह नियम कथनकऱ्याहै ॥ विशिष्टपदार्थविषे जोविधिनिषेधप्राप्तहोवै ॥ सोविधिनिषेध जोकदाचित् विशेष्यपदार्थविषेनहीं घटताहोवै ॥ तौ सोविधिनिषेध विशेषणविषेहीप्राप्तहोवै है ॥ याप्रकारकेनियमतैं तामायाविषेकर्त्तापणासंभवै है॥ और मरणअवस्थाविषे तथासुषुप्तिअवस्थाविषे यहमाया स्पष्टरूपकरिकैनहींप्रतीतहुईभी आगेहोणेवालेशरीरोंकाबीजरूपहोइकैरहै है ॥ यातैं यहवार्त्ताभी अत्यंतदुर्घटहै॥और यहआत्मादेव अनादिभावरूपहै यातैं नाशकूंप्राप्तहोवै नहींऔर यहमायातौ अनादिभावरूपहुईभी आत्मज्ञानतैंनाशहोइजावै है ॥ यातैं यहवार्त्ताभी अत्यंतदुर्घटहै ॥ और विद्वान्पुरुषोंकीअपेक्षाकरिकै ताकार्यसहितमायाकेनाशहुएभी अज्ञानीजीवोंकीअपेक्षाकरिकै ताकार्यसहितमायाकानाशहोवैनहीं ॥ यातैं यहवार्त्ताभी अत्यंतदुर्घट है ॥ और यहमाया किसीप्रमाणकातौविषयहैनहीं ॥ तौभीयहमाया बंधमोक्षादिकनानाप्रकारकीविचित्रताका कारण होवै है ॥ यातैं यहवार्त्ताभी अत्यंतदुर्घटहै ॥ हेनचिकेता ॥ इसतैंआदिलैकै अनेकप्रकारकेदुर्घटस्वभाव तामायाकेहैं ॥तेमायाकेदुर्घटस्वभाव सर्वलोकविषे प्रसिद्ध हैं ॥ यातैं तिनमायाकेदुर्घटस्वभावोंकूंअंगीकारकरिकै हममायावादिवेदांती तिनसर्ववादियोंके दूषणोंकूं निवारणकरिसकै हैं॥और हेनचिकेता ॥ जैसे गोपजनोंकीस्त्रीयोंकेदुकूलवस्त्रोंकूं हरणकरणेहारा जोश्रीकृष्णभगवान्है ॥ ताकृष्णभगवान्विषे जोकामीपणाहै ॥और सर्वजगत्कासंहारकरणेहारा जोरुद्रभगवान्है तारुद्रभगवान्विषे जोक्रोधीपणाहै ॥ सोकामीपणा तथाक्रोधीपणा ध्यानकरणेहारेभक्तजनोंकूं मनवांछितफलकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ यातैं ताकृष्णभगवान्विषेकामीपणा तथारुद्रभगवान्विषेक्रोधीपणा कोईदूषणरूपनहीं है ॥ किंतु भूषणरूपहै ॥ तैसे ताअविद्यारूपमायाविषे जोदुर्घटपणाहै सोदुर्घटपणा कोईदूषणरूपनहीं है ॥ किंतु ताअविद्याका सोदुर्घटपणा भूषणरूपही है ॥ हेनचिकेता ॥ जिसवस्तुविषे स्वभावतैंतौ सुघटपणाहोवैहै॥ और तिसवस्तुविषे जोकदाचित् किसीअंशविषे दुर्घटपणाप्रतीतहोवै है ॥ तौ सोदुर्घटपणा तावस्तुकादूषणरूपहोवै है॥ जैसे किसीश्रेष्ठकविपुरुषनैं रचाजोकाव्यहै॥ ताकाव्यविषे स्वभावतैंतौ सुघटपणाहींहोवै है॥ परंतु ताकाव्यविषे जोकदाचित् किसीअंशविषे दुर्घटपणाप्रतीतहोवै॥तौ सोदुर्घटपणा ताकाव्यकादूषणरूपहीहोवै है ॥ और

यहअविद्यारूपमायातौ स्वभावतैंहीं दुर्घटरूपहै ॥ यातैंतामायाविषे सोदुर्घटपणा दूषणरूपनहीं है ॥ किंतु भूषणरूपहै ॥इहां युक्तिप्रमाण
कारिकै जिसअर्थकीसिद्धिनहींहोइसकै याकानाम दुर्घटपणाहै॥ और युक्तिप्रमाणकारिकै जिसअर्थकीसिद्धिहोइसकैयाकानामसुघटपणाहै॥
और हेनचिकेता ॥ जिसस्थानविषे जिसपुरुषका वारंवार निरादरहोवैहै ॥ तिसस्थानविषे जोकदाचित् सोपुरुष स्थितहोवैहै॥ तौ तापुरु
षकूं लोकविषेढीठकहैहै ॥ सोऐसाढीठपणा जैसे अविद्याविषेहै ॥ तैसे दूसरेकिसीपदार्थविषेनहीं है ॥काहेतैं घटादिकविषयउपहितचेतनके
आवरणकीनिवृत्तिकरणेहारे जेप्रत्यक्षादिकप्रमाणहैं ॥ तिनप्रत्यक्षादिकसर्वप्रमाणोंकारिकै यहअविद्या अनेकवार निरादरकूंप्राप्तहोवै है ॥
तौभी यह अविद्या ताअसंगचेतनतैं निवृत्तहोवैनहीं ॥ किंतु यहअविद्या पुनःताअसंगचेतनविषेहीस्थितहोवै है ॥ यातैं याअविद्याका
ढीठपणा कोईआश्चर्यरूपहै ॥ और ब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुषकीदृष्टिविषेतौ यह अविद्या तीनकालमेंहैनहीं ॥ हेनचिकेता ॥ ऐसेढीठस्वभाव
वाली यहअविद्यारूपमाया एकआत्मज्ञानतैंविना दूसरेकिसीतैं भयकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु एकआत्मज्ञानतैंहीं भयकूंप्राप्तहोवै है ॥ और
यहमायाही सर्वजीवोंकूं जन्ममरणादिकदुःखोंकीप्राप्तिकरै है॥यातैं जिसअधिकारीपुरुषकूं तिनजन्ममरणादिकदुःखोंतैं वैराग्यप्राप्तभयाहै ॥
तिसअधिकारीपुरुषनैं तामायाकेनिवृत्तिकाउपाय अवश्यकरिकैसंपादनकरणा हेनचिकेता ॥ ताअविद्यारूपमायाकेनिवृत्तिकाउपाय यह
है ॥ जिसअद्वितीयआत्माविषे साहिरण्यगर्भकीसमष्टिबुद्धि लयभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ ताअद्वितीयआत्माकासाक्षात्कारही तामायाके
निवृत्तिकाउपायहै ॥ यातैं ताआत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासतै याअधिकारीपुरुषोंनैं अवश्यकरिकैयत्नकरणा ॥ हेनचिकेता ॥ जैसे माता
आपणेपुत्रोंकूं हितकाउपदेशकरै हैं ॥ तैसे श्रुतिभगवती याअधिकारीपुरुषोंकेप्रति याप्रकार हितकाउपदेशकरैहै ॥ हेअधिकारीजनो ॥
यामायानैं उत्पन्नकरी जोविवेकतैंविमुखतारूपजडताहै॥ताजडताकापरित्यागकारिकै तुम आत्मविचारविषेसावधानहोवो ॥ ताजडता करि
कही तुमारेकूं अद्वितीयब्रह्मरूपआत्माका विस्मरणरूपमोह प्राप्तभयाहै॥हेअधिकारीजनों॥जैसे यालोकविषेजेपुरुषनिद्राविषे सोयेहोवै हैं॥
तिनपुरुषोंके पशुसुवर्णादिकधनकूं चोरलैजावै हैं॥ तैसे अविद्यारूपनिद्राविषेसोयेहुए जोतुमअधिकारीजनहो ॥ तिनतुमअधिकारीजनोंके

धर्मज्ञानरूपधनकूं यहकामक्रोधादिकचोर लैजावै हैं॥ यातैं ताअविद्यारूपनिद्राकापरित्यागकारिकै तुम सावधानहोवो॥और हेअधिकारी
जनो॥ जैसे यालोकविषे निद्रामैंसोयेहुएपुरुषकूं नानाप्रकारकेस्वप्नकीप्राप्तिहोवै है॥तथा तास्वप्नविषे अनेकप्रकारकेदुःखोंकीप्राप्तिहोवै है॥
तैसे याअविद्यारूपनिद्राविषेसोयेहुएतुमआधिकारीजनोंकूं यहविपरीतभावरूपस्वप्न प्राप्तभयाहै ॥ तहां अन्यपदार्थविषे अन्यबुद्धिकानाम
विपरीतभावहै ॥ जैसे देहादिकअनात्मपदार्थोंविषे आत्मबुद्धिकानाम विपरीतभाव है ॥ जाविपरीतभावरूपस्वप्नविषे अहंता ममता
यादोनोंप्रकारकेअध्यास करिकै तुमारेकूं अनेकप्रकारकेदुःख प्राप्तहोवै हैं॥तहां प्रथम अहंताघटित विपरीतभावकानिरूपणकरै हैं ॥ हेअ
धिकारीजनों॥जैसे यालोकविषे किसीपिशाचकरिकैग्रस्याहुआ कोई ब्राह्मण आपणेकूंशूद्रमानै है॥ तैसे वास्तवतैंजन्ममरणादिकविकारोंतैं
रहित हुआभी यहआत्मादेव अहंतारूपपिशाचकरिकैग्रस्याहुआ आपणेकूंयाप्रकारमाने है॥मैंआत्मा माताकेगर्भविषेस्थितहूं ॥ तथा
मैं जन्माहूं ॥ तथा मैं कुमारहूं ॥ तथा मैं युवानहूं ॥ तथा मैं वृद्धहूं ॥ तथा मैं धनवान्हूं॥ तथा मैंनिर्धनहूं ॥ तथा मैं सुखीहूं ॥ तथा
मैं दुःखीहूं ॥ तथा मैं स्त्रीवालाहूं ॥ तथा मैं स्त्रीतैंरहितहूं॥तथा मैं पुत्रवालाहूं॥ तथा मैं पुत्रतैंरहितहूं॥ इसतैंआदिलैके अनेकप्रकारका
आपणेकूंमानै है॥अब ममताघटित विपरीतभावका निरूपणकरै हैं ॥ हेअधिकारीजनो ॥ जैसे साअहंता अनेकप्रकारकी है॥ तैसे ताअ
हंताकीपुत्री जाममताहै ॥ साममताभी अनेकप्रकारकी है तहां यहपुरुष हमारेकूंदुःखकीप्राप्तिकरै है॥यातैं हमाराशत्रुहै॥ और यहपुरुष
हमारेकूं सुखकीप्राप्तिकरै है ॥ यातैं हमारासुहृदमित्रहै ॥ और यहपुरुष हमारेकूं सुखदुःखकीप्राप्तिकरतानहीं ॥ यातैं हमारा उदासीन है
और यहहमारेक्षेत्रवस्त्रादिकपदार्थ बहुतकालपर्यंत रहैंगे ॥ और यहहमारेक्षेत्रवस्त्रादिकपदार्थ थोडेकालपर्यंतरहैंगे ॥ और यहकाम
क्रोधलोभमोहादिकविकार हमारेविषेरहै हैं ॥ और यहकामक्रोधादिकविकार हमारेविषे नहींरहै हैं ॥ इसतैंआदिलैके साममता सहस्र
प्रकारकीहोवै है ॥ अब ताअहंताममताके फलकानिरूपणकरै हैं ॥ हेअधिकारीजनो जेपुरुष याअहंताममताकरिकैयुक्तहैं ॥ तेपु
रुष जन्मकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ ताजन्मतैंअनंतर मरणकूंप्राप्तहोवै हैं तामरणतैंअनंतर पुनःजन्मकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ इसप्रकार ते अहंता ममता

वालेअज्ञानीपुरुष चक्रकीन्याईं यासंसारविषेभ्रमणकरैं हैं॥हेअधिकारीजनो ॥ याप्रकार सर्वदुःखोंकाकारण यहविपरीतभावरूपस्वप्न तुमा
रेकूं प्राप्तभयाहै॥तास्वप्नतैं तुम जाग्रतअवस्थाकूंप्राप्तहोवो ॥ जाकरिकै तुमारेसर्वदुःखोंकीनिवृत्तिहोवै ॥ हेअधिकारीजनो ॥ विपरीतभा
वरूप अनेकस्वप्नोंकूंदिखावणेहारी जायहअविद्यारूपनिद्राहै ॥ साअविद्यारूपनिद्रा जैसे माताकेउदरविषेस्थितवामदेवऋषिकी आपही
निवृत्तभई है तैसे साअविद्यारूपनिद्रा जोकदाचित् तुमारी आपहीनिवृत्तनहींहोवै ॥ तौ तुमअधिकारीजन ताअविद्यारूपनिद्राकीनिवृत्ति
करणेवासतै ब्रह्मवेत्ताकुशलगुरुवोंकेसमीपजावो ॥ कैसे हैं तेब्रह्मवेत्तामहात्मापुरुष ॥ ताअविद्यारूपनिद्रातैंरहितहैं ॥ तथा सर्वभूतप्रा
णियोंविषे जिनोंकीकृपादृष्टिहै॥ ऐसेमहात्मापुरुषोंकेसमीप जभी तुमअधिकारीजन जावोगे ॥ तभी तेदयालुमहात्मापुरुष तुमारेप्रति
नानाप्रकारकेउपायोंकरिकै आत्माकाउपदेशकरैंगे ॥हेअधिकारीजनो॥ तेब्रह्मवेत्तागुरु जोकदाचित् तुमारेकूं ब्रह्मविद्याकेउपदेशकाअधि
कारी नहींदेखैंगे ॥ तौभी तेब्रह्मेत्तागुरु कृपाकरिकै तुमारेअंतःकरणकी शुद्धिवासतै धारणा ध्यान समाधिरूप नियमोंका उपदेशकरैंगे ॥
कैसे हैं तेनियम ॥ समाधिरूपयोगके साधनरूप हैं ॥ तथा योगाभ्यासकरिकैजन्यहैं॥हेअधिकारीजनों॥जैसे यहनचिकेता यमराजाकूं वर
रूपपाशतैंबांधिकरिकै याआनंदस्वरूपआत्माकूंजानताभया है ॥ तैसे तुमअधिकारीजनभी जडताका तथा निद्राका परित्यागकरिकै
तथा तिनब्रह्मवेत्तागुरुवोंकूं वररूपपाशोंतैंवशकरिकै ताआनंदस्वरूपआत्माकूं निश्चयकरो॥हेअधिकारीजनो॥याभारतखंडविषे अधिकारी
मनुष्यशरीरकूंपाइकैभी जोतुमारेकूँ आत्माकासाक्षात्कारनहींहोवैगा॥तौ तुमारेकूं महान्हानिकीप्राप्तिहोवैगी।ताहानिकरिकै तुमारेकूं अने
कशरीरोंकीप्राप्तिहोवैगी ॥ यातैं तुमअधिकारीजन शीघ्रही आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासतैयत्नकरो॥और हेअधिकारीजनो ॥ यह आ
त्मज्ञानरूपमार्ग अत्यंतदुर्लक्ष्यहै तथा अत्यंतविषमहै ॥ यातैं तुमअधिकारीजन प्रमादकापरित्यागकरिकै सावधानहोवो॥अब याहीअर्थ
कूंदृष्टांतकरिकैस्पष्टकरैंहैं॥हेअधिकारीजनों॥जैसे सिंहव्याघ्रादिकोंकरिकैयुक्त तथा महान्वनविषेस्थित जोकोइकमार्गहै ॥सोमार्ग तीनकां
टेवाले अनेकगोक्षुरुकोंकरिकैयुक्तहोवै ॥ अथवा तीनवारशाणकेघर्षणकरिकै अत्यंततीक्ष्णहुआ जो नापितपुरुषकाक्षुरनामाशस्त्र है ॥

ताशस्त्रोंकीअनेकतीक्ष्णधारावोंकरिकै सोमार्गयुक्तहोवै ॥ ऐसेतीक्ष्णमार्गविषे अश्वादिकवाहनोंतैंरहितपुरुष चलिसकैनहीं ॥ किंतु अश्वा
दिकवाहनोंवालापुरुषही तामार्गविषेचलिसकै है ॥ तैसे मोक्षरूपपुरकेप्राप्तिकरणेहारा जो यह आत्मज्ञानरूप मार्ग है सोआत्मज्ञानरूप
मार्गभी नानाप्रकारकेविघ्नरूपकंटकोंकरिकैयुक्त है ॥ यातैं अत्यंत तीक्ष्ण है ॥ ऐसे आत्मज्ञानरूपमार्गविषे यह अधिकारी पुरुष
गुरुपरमेश्वरकेअनुग्रहरूपवाहनतैंविना चलिसकैनहीं ॥ किंतु गुरुपरमेश्वरकेअनुग्रहरूपवाहनकरिकैही यहअधिकारीपुरुष ताआत्मज्ञान
रूपमार्गविषे चलिसकै हैं॥यातैं गुरुभक्तितैंरहितपुरुषोंकूं सोआत्मज्ञानरूपमार्ग अत्यंतदुर्गमहै॥हेअधिकारीजनो ॥ ऐसेआत्मज्ञानरूपमार्ग
विषेचलनेकाप्रकारभी तेमहात्मापुरुष कथनकरैं हैं ॥ जिनमहात्मापुरुषोंनैं पूर्व ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतैं ताआत्मज्ञानरूपमार्गका भलीप्र
कारअनुभवकऱ्याहै ॥ और जिन पुरुषोंने ताआत्मज्ञान रूपमार्गका अनुभव नहीं कऱ्या तेपुरुष ताआत्मज्ञान रूपमार्गके उपदेश
करणेविषेसमर्थहोवैंनहीं ॥ तथा तिनोंकेउपदेशतैं किसीअधिकारीजनकूं ताआत्मज्ञानरूपमार्गकाबोधभीहोवै नहीं ॥ जैसे एकअंधपुरु
षकेउपदेशतैं दूसराअंधपुरुष किसीमार्गकूंजाणिसकैनहीं ॥ यातैं जिनमहात्मापुरुषोंनैं पूर्व ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतैं ताआत्मज्ञानरूपमा
र्गकूं साक्षात्कारकऱ्या है॥तिनमहात्मापुरुषोंकेशरणकूं तुमप्राप्तहोवो ॥ जाकरिकै तुमारेकूंआत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिहोवै॥ हेनचिकेता ॥
इसप्रकार साश्रुतिभगवती माताकीन्याईं सर्वअधिकारीजनोंकेप्रति आत्मज्ञानरूपहितकाउपदेशकरतीभई है॥यातैं ताआत्मज्ञानरूपमार्ग
विषे चलणेकाप्रकार हमसरीखेब्रह्मवेत्तापुरुषही कथनकरैं हैं ॥ अब ताआत्मज्ञानरूपमार्गविषे दुर्लक्ष्यता बोधनकरणेवासतै ताआत्मादेव
विषे संपूर्णदृश्यप्रपंचकेधर्मोंकाअभाव निरूपणकरैं हैं ॥ हेनचिकेता ॥ यह आनंदस्वरूपआत्मादेव सर्वशरीरोंविषे एकअद्वितीयरूपक
रकैस्थितहै ॥ तथा मनवाणीकाअविषयहै ॥ तथा स्वयंज्योतिरूपहै ॥ ऐसेआत्मादेवकेज्ञानरूपमार्गकूं ब्रह्मवेत्ताकुशलपुरुषही कथनकरै
हैं॥कैसाहैसोआत्मादेव ॥ शब्द स्पर्श रूप रस गंध यापंचगुणोंतैं रहितहै ॥ याकारणतैं तानिर्गुणआत्माकूं श्रोत्र त्वक् चक्षु रसन घ्राण
यहपंचज्ञानईंद्रिय ग्रहणकरिसकैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ नेत्रइंद्रियतौ नीलपीतादिकरूपोंकूं तथा तारूपगुणवालेद्रव्यकूं ग्रहणकरै है ॥ और

त्वक्इंद्रियतौ शीतउष्णादिकस्पर्शोंकूं तथा तास्पर्शगुणवालेद्रव्यकूं ग्रहणकरै है ॥ और श्रोत्र रसन घ्राण यहतीनइंद्रियतौ क्रमतें शब्द रस गंध यातीनगुणोंकूंहीग्रहणकरै हैं॥तागुणोंकेआश्रयकूंग्रहणकरैनहीं ॥ और यहआत्मादेव तिनशब्दादिकगुणोंकाआश्रयरूपनहीं है ॥ तथा तिनशब्दादिकगुणरूपनहीं है॥यातैं तानिर्गुणआत्माकूं कोईइंद्रिय ग्रहणकारिसकैनहीं ॥ और हे नाचिकेता ॥ शनैःशनैःकरिकैजोप दार्थकानाशहै ताकानाम व्ययहै ॥ सोनाशरूपव्यय स्पर्शगुणवालेवायुआदिकसावयवपदार्थोंकाहीहोवै है॥ और यहआत्मादेव स्पर्शादि कगुणोंतैंरहित है ॥ तथा निरवयवहै ॥ यातैं याआत्मादेवका सोनाशरूपव्यय संभवैनहीं ॥ याकारणतैं श्रुतीभगवती ताआत्मादेवकूं अव्यय यानामकरिकैकथनकरै है ॥ और सोअव्ययआत्मादेव नाशतैंरहितहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताआत्मादेवकूं ॥ नित्य यानामकरिकैकथनकरै है ॥ और यहआत्मादेव अनादिहै ॥ यातैं नाशतैं रहित है ॥ काहेतैं यालोकविषे जोजोपदार्थ उत्पत्तिरूपआ दिवालाहोवै है॥सोसोपदार्थ नाशरूपअंतवालाभीहोवै है॥जैसे घटादिकपदार्थ उत्पत्तिरूपआदिवाले हैं॥ यातैं नाशरूपअंतवालेभी हैं ॥ और यहआत्मादेवतौ उत्पत्तिरूपआदितैंरहित अनादि है ॥ यातैं याआत्मादेवकानाशरूपअंतभी संभवैनहीं॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताआत्मादेवकूं अनंत यानामकरिकैकथनकरैहै॥ और हेनचिकेता ॥ उत्पत्तिनाशवाली जोहिरण्यगर्भकी महत्तत्वरूपबुद्धि है ॥ तामहत्त त्वरूपसमष्टिबुद्धितैं नानाप्रकारकीविक्रियायुक्तअव्याकृत परहै ॥ और ताअव्याकृततैंभी यहनिर्विकारआत्मा पर है॥ तथा नाशतैंरहित है ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताआत्मादेवकूं ॥ ध्रुव यानामकरिकैकथनकरै है ॥ हेनाचिकेता ॥ जैसे सामहत्तत्वरूपबुद्धि उत्पत्तिनाश वाली है ॥ तैसे यहआत्मादेव उत्पत्तिनाशवालानहीं है ॥ याकारणतैं ॥ यहआत्मादेव नित्यहै॥हेनाचिकेता॥जोअधिकारीपुरुष ऐसेआ नंदस्वरूपनित्यआत्माकूं ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैंश्रवणकरै है ॥ तथा श्रुतिअनुकूलयुक्तिरूपतर्कोंकरिकै मननकरै है ॥ तथा ताआत्माविषे निरंतरवृत्तियोंकाप्रवाहरूप निदिध्यासनकरै है ॥ सोअधिकारीपुरुष यासंसाररूपमृत्युकेमुखतैं अवश्यमुक्तहोवै है॥हेनाचिकेता॥देशकाल वस्तुपरिच्छेदतैंरहित जोयहआनंदस्वरूपआत्मादेवहै ॥ ताआत्मादेवकेसाक्षात्कारतैं यहअधिकारीपुरुष यासंसाररूपमृत्युकेमुखतैं मुक्त

होवै है यहवार्त्ता कोईआश्चर्यकाकारणनहीं है॥काहेतैं याआनंदस्वरूपआत्माकूं प्रतिपादनकरणेहारा जोयहकठवल्ली उपनिषद्रूपग्रंथहै ॥ ताग्रंथकेकथनमात्रतैं तथाश्रवणमात्रतैंभी याअधिकारीपुरुषोंकूं अर्चिरादिकमार्गद्वारा ब्रह्मलोककीप्राप्तिहोवै है ॥हेशिष्य॥ तायमराजानैं नचिकेताकेप्रति जोयाग्रंथके श्रवण मनन कीर्तनतैं अनंतफलकीप्राप्तिकही है ॥ ताअर्थविषे यहदोनोंश्रुतिवचन प्रमाणहैं ॥ तहांश्रुति ॥ नाचिकेतमुपाख्यानं मृत्युप्रोक्तंसनातनं ॥ उक्त्वाश्रुत्वाचमेधावीब्रह्मलोकेमहीयते ॥ १ ॥ यइमंपरमंगुह्यं श्रावयेद्ब्रह्मसंसदि ॥ प्रयतःश्राद्ध कालेवा तदानंत्यायकल्पते ॥२॥अर्थयह॥ यमराजानैंकथनकऱ्या जोनचिकेताकासनातनआख्यान ॥ ताआख्यानकूंकथनकरिकै तथा श्रवणकरिकै यहबुद्धिमान्पुरुष ब्रह्मलोकविषेप्राप्तहोवैहै ॥ १ ॥और जोपुरुष पवित्रहोइकै यापरमगुह्यआख्यानकूं ब्राह्मणोंकीसभाविषेश्रवण करावै है॥सोपुरुषभी महान्फलकूंप्राप्तहोवैहै॥और जोपुरुष याआख्यानकूं श्राद्धकालविषेश्रवणकरै है॥सोश्राद्ध तापुरुषकूंअनंतफलकीप्रा प्तिकरै है ॥ २ ॥ तात्पर्ययह॥ताआत्मादेवकाप्रतिपादनकरणेहारा जोयहशास्त्रहै॥ताशास्त्रकेश्रवणमात्रतैं कथनमात्रतैंभी जभी यहअधि कारीपुरुष ब्रह्मलोककूँप्राप्तहोवै है॥तभीताआत्माकेसाक्षात्कारतैंयहअधिकारीपुरुष यासंसाररूपमृत्युकेमुखतैंमुक्तहोवै है याकेविषेक्याआ श्चर्य है॥हेशिष्य ॥ ॐकाररूपप्रणवहैप्रतीकजिसका तथाप्रणवहैआलंबनजिसका ऐसाजोब्रह्महैताब्रह्मकासंक्षेपतैंउपदेशकरिकै सोयमराजा तानचिकेताकेप्रति पुनःतिसीब्रह्मका विस्तारतैं उपदेशकरणेवासतै याप्रकारकावचन कहताभया॥यमराजाउवाच॥हेनचिकेता॥हमनैं पूर्व तुमारेप्रति जोआनंदस्वरूपआत्मा संक्षेपतैंकथनकऱ्याहै॥ सोआनंदस्वरूपआत्मा श्रोत्रादिकइंद्रियोंकरिकैग्रहणकऱ्याजावैनहीं ॥ काहेतैं याजगत्कास्वतंत्रकर्त्ता जोपरमेश्वर है ॥ सोपरमेश्वर तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंकूंअंतरआत्मातैं बहिर्मुखी रचताभया ॥ याकारणतैं सोपर मात्मादेव तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंका मानो हिंसनकरताभयाहै ॥ याप्रकार हमविवेकीपुरुषोंकूं प्रतीतहोवै है ॥ काहेतैं जैसे यालोकविषे कोईमहाराजा किसीआपणेमंत्रीकूं आपणेसमीपपुरकाअधिकार छुडाइकै जभी किसीदूरदेशविषेअधिकारदेवै है ॥ तभी सोमहाराजा ता मंत्रीकेहिंसाकरणेहारेकीन्याईहोवै है ॥ तैसे तापरमात्मादेवनैंभी तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंकेताईं अंतरआत्मारूपविषय दियानहीं ॥ किंतु

तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं अंतरआत्मातैंविमुखकरिकै बाह्यशब्दादिकविषयोंकीहीप्राप्तिकरी ॥ यातैं तेश्रोत्रादिकइंद्रिय हिंसाभावकूंप्राप्तहु एकेसमानहैं ॥ हेनचिकेता ॥ जैसे तामहाराजातैं दूरदेशविषेरहणेहारे तथा शत्रुवोंकेसमीपप्राप्तहुए ऐसेजेतामहाराजाकेमंत्री हैं॥तिनमंत्रियोंकूं ताराजाकेविरोधीशत्रु किसीछिद्रकूंपाइकै हननकरै हैं तैसे याआनंदस्वरूपआत्माकापरित्यागकरिकै बाह्यविषयदेशविषेप्राप्तभये जे श्रोत्रादिकइंद्रियहैं ॥ तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं अद्वितीयआत्माकेविरोधीकामक्रोधादिकविकार हननकरै हैं॥ हेनचिकेता॥ जैसे तामहाराजातैंदूरदेशविषे गयेहुए तेमंत्री यद्यपि तिसदेशविषेस्थितपदार्थोंकूंदेखे हैं ॥ तथापि तिनमंत्रियोंकूं तामहाराजाकादर्शनहोणा अत्यंतदुर्लभहै ॥ तैसे अंतर आत्माकापरित्यागकरिकै बाह्यदेशकूंप्राप्तभयेजेश्रोत्रादिकइंद्रियहैं ॥ ते श्रोत्रादिकइंद्रिय यद्यपि तहांशब्दादिकविषयोंकूंतोदेखे हैं॥तथापि तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं अंतरआत्माकादर्शनहोणा अत्यंतदुर्लभहै॥शंका॥हेभगवन्॥ परमेश्वरने श्रोत्रादिकइंद्रियोंकूँ बहिर्मुखहीरच्या है ॥ यातैं तेश्रोत्रादिकइंद्रिय अंतरआत्माकूंमतदेखै ॥ तथापि मनकीक्यागति है ॥समाधान॥हेनचिकेता॥या जीवोंकामन दोप्रकारकाहोवै है ॥ तहां एकमनतौ सकामहोवै है ॥ और दूसरामन निष्कामहोवै है॥तहां सकाममनतौ तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंकेअधीनहीहोवै है ॥ यातैं सोसकाममनतौ श्रोत्रादिकइंद्रियोंकीन्याईं अंतरआत्माकूंजाणिसकैनहीं ॥ और दूसरा जोनिष्काममनहै॥ सोनिष्काममन श्रोत्रादिकइंद्रियोंकेनिरोधतैं आत्मसाक्षात्कारकाहेतुहोवै है ॥ अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकै निरूपणकरै हैं॥हेनचिकेता ॥ तेश्रोत्रादिकइंद्रिय जभी बाह्यशब्दादिकविषयोंविषे जावै हैं ॥ तभी सोसकाममनभी तिनइंद्रियोंकेपीछेहीजावै है ॥ और तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंका जभी अंतरनिरोधहोवै है ॥ तभी सोनिष्काममन बाहरजावैनहीं ॥ परंतु सोश्रोत्रादिकइंद्रियोंकाअंतरनिरोध देहाभिमानीपुरुषोंकूंमुखतैंकथनकरणाभी दुर्घटहै ॥ जभी सोअंतरइंद्रियोंकानिरोध तिनदेहाभीमानीपुरुषोंकूंमुखतैंकहणे विषेभीदुर्घटभया ॥ तभी सोइंद्रियोंकानिरोध तिनदेहाभिमानीपुरुषोंकूं करणेविषेदुर्घटहै याकेविषेक्याकहणा है ॥ हेनचिकेता सहस्रमनुष्योंविषेकोई एकहीमनुष्य तादेहाभिमानतैंरहितहोइकै तथा शमदमादिकसाधनसंपन्नहोइकै तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं अंतरनिरोधकरै है ॥ ॥ ३९

हेनाचिकेता॥तेश्रोत्रादिकइंद्रिय जभी याशरीरकेअंतरहीस्थितहोवैहैं।तभी ताइंद्रियरूपद्वारकेअभावहुए सोमनभीताशरीरकेअंतरहीस्थितहोवै है॥तहांदृष्टांत॥जैसे यालोकविषे किसीनवद्वारवालेगृहविषे किसीवानरकूंनिरुद्धकरिकैतागृहकेनवद्वारोंकूंबंदकरिदीजिये॥तहांसोवानर तागृहतैंबाहरनिकसणेविषेअसमर्थहुआ तागृहविषे नानाप्रकारकीचेष्टाकरिकै जभी परिश्रमकूंप्राप्तहोवै है ॥ तभी सोवानर तागृहविषेही सुखपूर्वकस्थितहोवैहै॥तैसे जिनआधिकारीपुरुषोंनैं तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंकेनिरोधपूर्वक तामनकाअंतरनिरोधकऱ्याहै॥तिनअधिकारीजनोंका सोनिष्काममन श्रवणमननादिकसाधनोंकरिकैयुक्तहुआताअंतरआत्माकेसाक्षात्कारकूं उत्पन्नकरै है यातैं मुमुक्षुजनोंनैं श्रोत्रादिकइंद्रियोंकेनिरोधपूर्वक तामनका अवश्यकरिकैनिरोधकरणा ॥ हेनचिकेता॥इसलोकविषे तथापरलोकविषेस्थित जे शब्दादिकविषयहैं ॥ तिनशब्दादिकविषयोंकूं जेविचारहीनपुरुष श्रोत्रादिकइंद्रियोंकरिकैग्रहणकरै हैं॥तेविचारहीनपुरुष शरीरशरीरविषेमैंयमराजाकेवशकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ कैसामैंहूं ॥ आधि व्याधि शत्रु आदिकरूपोंकरिकैस्थितहूं ॥ और जैसे जालकरिकैबांधेहुएमत्स्य मृत्युकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ तैसे श्रोत्रादिकइंद्रियोंकेअधीनहुए तेअविवेकीपुरुष वारंवार मृत्युकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ इतनैंकरिकैअविवेकीपुरुषोंकावृत्तांत कथनकऱ्या ॥ अब विवेकीपुरुषोंकावृत्तांत निरूपणकरै हैं॥हेनाचिकेता॥ब्रह्मातैंआदिलैकै स्तंबपर्यंत जितनेकीस्थावरजंगम प्राणी हैं ॥तेसंपूर्णप्राणी मृत्युकेवशकूंप्राप्तहोवै है याप्रकारकीव्यवस्थाकूंदेखिकरिकै तेविवेकीपुरुष कर्मउपासनाकेफलकूं अनित्यहीजानै हैं ॥ और आत्मज्ञानकेमोक्षरूपफलकूं नित्यजानै हैं ॥ इसप्रकार ब्रह्मलोकपर्यंत कर्मकेफलकूंअनित्यजाणिकै तेविवेकीपुरुष ताकर्मकेस्वर्गादिरूपफलकीइच्छाकरतेनहीं जैसे तूनाचिकेता स्वर्गादिकसुखोंकीइच्छाकरतानहीं ॥ तैसे तेविवेकीपुरुष तिनस्वर्गादिकसुखोंकीइच्छाकरतेनहीं ॥ किंतुतेविवेकीपुरुष तुमारेन्याईं मोक्षरूपनित्यफलकीहीइच्छाकरैं हैं ॥हेनाचिकेता ॥तेविवेकीपुरुष जिसआत्माकेज्ञानकरिकै तामोक्षकूंप्राप्तहोवै हैं सोआत्मादेव कैसाहै ॥ नेत्रादिकपंचज्ञानइंद्रियोंके तथावाकादिकपंचकर्मइंद्रियोंकेजेदर्शनादिकव्यापारहैं ॥ तिनदर्शनादिकव्यापारोंकूं यहजीव जिसअंतःकरणकरिकैजानै है॥ताज्ञिष्यसहितअंतःकरणकूं यहजीव जिसस्वयंज्योतिरूपसाक्षीकरिकै अनुभवकरै है ॥सोस्वयंज्यो

तिरूपसाक्षी ताआत्मादेवरूपहीहै॥जोतुमनैं पूर्वधर्मधअर्मादिकोंतैंरहितआत्माकास्वरूपपूछाथा।तास्वयंज्योतिरूपसाक्षीतैं सोआत्मादेव भिन्ननहींहै॥हेनाचिकेता॥जैसे रज्जुविषे सर्पदंड जलधारा आदिककल्पितहोवैहैं॥तैसे भूत भविष्यत्वर्त्तमान यहतीनकालजोहैं तथाताती नकालोंविषेवर्त्तमान जितनेकीस्थूलसूक्ष्मपदार्थहैं॥तेसंपूर्णपदार्थयास्वयंज्योतिरूपसाक्षीआत्माविषे कल्पितहैं यातैं यास्वयंज्योतिसाक्षी आत्मातैं भिन्नसत्तावालाकोईपदार्थनहीं है ॥ याकारणतैं सोआत्मादेव अद्वितीयरूपहै॥और हेनाचिकेता ॥ यहपुरुष जिसस्वयंज्योतिरू पसाक्षीकरिकै जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति यातीनअवस्थावोंकूंदेखे है ॥ तास्वयंज्योतिरूपसाक्षीकूंहीं तुमनैं आपणाआत्मारूपकरिकैजानणा॥ और पूर्व हमनैंतुमारेप्रति जोमहान्आत्मासर्वत्रव्यापकरूपकरिकै कथनकऱ्याथासोमहान्आत्माभी यास्वयंज्योतिरूपसाक्षीतैं भिन्ननहीं है ॥ किंतु सोमहान्आत्मा स्वयंज्योतिसाक्षीरूपहीहै ॥ जिसआत्मादेवके अद्वितीयरूपमहत्वकूंजाणिकरिकै विद्वान्पुरुष कर्तृत्वभो क्तृत्वादिरूपसर्वशोकोंकूं तरै हैं ॥ हेनचिकेता यहजीवरूपआत्मादेव बुद्धिआदिकोंकासाक्षीरूपकरिकै सर्वजीवोंकूं अत्यंतसमीपहै ॥ और लोकप्रसिद्धमधुकेसमान जोपुण्यपापकर्मोंका सुखदुःखरूपफलहै ॥ ताफलकाभी यहआत्मादेवहीभोक्ताहै ॥ ऐसेसर्वभेदतैंरहितअद्वितीय आत्माकूं जेअधिकारीपुरुष यासर्वजगत्काआधिपतिरूपकरिकैजानै हैं ॥ तेअधिकारीपुरुष किसीसंशयकूं तथाकिसीकेनिंदाकूं करैनहीं॥ इतनैंकरिकै त्वंपदार्थरूपजीवके शोधनकाप्रकार निरूपणकऱ्या॥अब तत्पदार्थरूपईश्वरके शोधनकाप्रकार निरूपणकरैहैं॥हेनाचिकेता॥ जिसपरमात्मादेवतैं यहहिरण्यगर्भ उत्पन्नभयाहै॥ कैसाहैसोहिरण्यगर्भ ॥ ब्रह्मांडकाआरंभकरणेहारे जेआकाशादिकस्थूलभूतहैं॥तिनस्थू लभूतोंतैंभी जोहिरण्यगर्भ पूर्वउत्पन्नभयाहै और पूर्वजन्मोंविषे अनुष्ठानकरे जे कृच्छ्रचांद्रायणादिककर्म हैं तथा नानाप्रकारकीउपासनाहैं ताकर्मउपासनारूपतपकेबलतैं जिसहिरण्यगर्भकीउत्पत्तिहोवैहै॥ ऐसे हिरण्यगर्भकूंभी उत्पन्नकरणेहारा जोपरमात्मादेवहै जोपरमात्मादेव सर्वशरीरोंविषे सर्ववुद्धिरूपगुहावोंविषेप्रवेशकरिकै तिनबुद्धियोंकूं साक्षीरूपकरिकैदेखताहुआ स्थितहोवैहै॥ तथा जोपरमात्मादेव आका शकीन्याईं सर्वत्रव्यापकहै॥तिसपरमात्मादेवकूं तू अद्वितीयब्रह्मरूपकरिकैजाण ॥हेनचिकेता॥ जोप्राणस्वरूपहिरण्यगर्भदेवतापूर्वकल्पके

कर्मउपासनारूपतपकेप्रभावतैंयास्थूलविराटतैंप्रथम उत्पन्नहोवै है सोहिरण्यगर्भदेवता यास्थूलप्रपंचरूपअन्नकूं भोजनकरे है ॥याकारणतैं श्रुतिभगवती ताहिरण्यगर्भदेवताकूं अदिति यानामकरिकै कथनकरै है ॥ और संपूर्णइंद्रादिकदेवता ताहिरण्यगर्भकेविभूतियां हैं ॥ यातैं सोहिरण्यगर्भभगवान् सर्वदेवमयहै और सो हिरण्यगर्भभगवान् संपूर्णव्यष्टिभूतप्राणियोंविषे तादात्म्यसंबंधकरिकैरहै है यातैं सो हिरण्यगर्भभगवान् सर्वभूतमय है ॥ ऐसा हिरण्यगर्भभगवान्भी जिसपरमात्मादेवका ध्यानकरणे योग्यस्वरूप है ॥ तिसपर मात्मादेवकूँतू अद्वितीयब्रह्मरूपकरिकैजाण ॥ और हेनचिकेता ऐसेआदितीनामाहिरण्यगर्भतैं उत्पन्नभयाजो विराट्भगवान् है ॥ जावि राटभगवान्कूं शास्त्रविषेअग्निरूपकरिकैवर्णनकऱ्याहै ॥ याकारणतैंहीनीचेकाकाष्ठरूप जोअधरअरणीहै तथा ऊपरकाकाष्ठरूप जो उत्तरअरणी है ॥ तादोनोंअरणियोंतैं सोअग्निरूपविराट् यज्ञविषेप्रादुर्भावकूंप्राप्तहोवै है और जैसे यालोकविषे गर्भिणी स्त्रियां स्नेहपूर्वक गर्भकूंधारणकरैहैं ॥ तैसे यज्ञकेकरणेहारेपुरुष याअग्निरूपविराट्कूं श्रद्धापूर्वक दोनोंअरणियोंकरिकैधारणकरै हैं ॥ तथा निद्रातैंरहितयोगीजनभी ताअग्निरूपविराट्कूं आपणेअंतरधारणकरैहैं ॥ और सोअग्निरूपविराटही सर्वभूतोंविषेस्थितहै॥ और स्वर्गकी इच्छावाले तथामोक्षकीइच्छावाले जेदेवतामनुष्यहैं ॥ तिनोंकरिकै यहअग्निरूपविराट्ही स्तुतिकरणेयोग्यहै ॥ हेनचिकेता ॥जैसे अदि तिनामाहिरण्यगर्भ तापरमात्मादेवकास्वरूपकरिकै ध्यानकरणेयोग्यहै॥तैसे यहअग्निरूपविराट्भी तापरमात्मादेवकास्वरूपकरिकै ध्यान करणेयोग्यहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ हिरण्यगर्भरूपकरिकै तथाविराटरूपकरिकै तापरमात्मादेवकाउपदेश आप किसवासतैंकरतेहो ॥ साक्षात्ही तापरमात्मादेवकेस्वरूपकाउपदेश आप हमारेप्रतिकरो ॥ समाधान ॥ हेनचिकेता ॥ तापरमात्मादेवका वास्तवशुद्धस्वरूप मनवाणीकाअविषयहै ॥ तथा अध्यात्म अधिदैव अधिभूत इत्यादिकसबभेदतैंरहितहै ॥ यातैं तापरमात्मादेवकेवास्तवस्वरूपकूं साक्षा त्कहणेविषे हम समर्थनहींहैं॥काहेतैं जातिवाला तथागुणवाला तथाक्रियावालाजोपदार्थहै॥तापदार्थकूंहीं यहशब्द साक्षात्कथनकरै हैं ॥ जैसे घट यहशब्द घटत्वजातिवालेघटकूं कथनकरैहै ॥ और नीलघटयहशब्द नीलगुणवालेघटकूं कथनकरैहै ॥ और पाचक यहशब्द

पाकरूपक्रियावाले पुरुषकूंकथनकरेहै ॥ इसप्रकार संपूर्णशब्द किसीजातिगुणादिकनिमित्तकूंअंगीकारकरिकैकेही आपणेआपणेअर्थकूं साक्षात्कथनकरेहैं॥ और यहनिर्गुणपरमात्मादेवतौ जातिगुणक्रियादिकधर्मोतैंरहितहै ॥ यातैं तापरमात्मादेवकूं कोईशब्द साक्षात्कथनक रिसकैनहीं ॥ याकारणतैं हिरण्यगर्भ विराट् इत्यादिक सविशेषरूपोंकरिकै तानिर्गुणपरमात्मादेवकेवास्तवस्वरूपकूं तूं जाण ॥ और हेन चिकेता ॥ जिसअधिदैववायुरूपप्राणतैं यहसूर्यचंद्रमादिकतेज उदयहोवै हैं॥ और जिसप्राणविषे तेसूर्यादिकतेज अस्तभावकूंप्राप्तहोवैहैं॥ और जैसे रथकेचक्रकेनाभिविषे अराःस्थितहोवै हैं ॥ तैसे वाकादिकइंद्रिय तथाअग्निआदिकदेवता जिसप्राणविषे सर्वदास्थितहोवै हैं ॥ तहांश्रुति ॥ प्राणाद्ध्राएष उदेतिप्राणेऽस्तमेति सर्वेप्राणेऽर्पितं॥ अर्थयह॥ प्राणतैंही यहसूर्यादिकतेज उदयहोवै हैं॥तथा प्राणविषेही तेसू र्यादिकतेज अस्तभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और ताप्राणविषेही संपूर्णअग्निआदिकदेवता स्थितहोवै हैं ॥१॥ और जिसप्राणकूं आपणेबलक रिकै उल्लंघनकरणेविषे कोईभीपुरुष समर्थनहीं है ॥ ऐसाप्राणभी जिसपरमात्मादेवका ध्यानकरणेयोग्यस्वरूपहै ॥ ऐसे परमात्मादेवकूंतूं ब्रह्मरूपकरिकैजाण ॥ इतनैंकरिकै तत्पदार्थरूपईश्वरकेशोधनकाप्रकार निरूपणकऱ्या ॥अब ताशोधित तत् त्वं पदार्थोंका अभेदनिरू पणकरै हैं ॥ हेनचिकेता ॥तुमारेशरीरविषे तथाहमारेशरीरविषे तथा अन्यजीवोंकेशरीरविषे जोचैतन्यदेव सर्वबुद्धिवृत्तियोंका साक्षीरूप करिकैस्थितहै ॥ सोईहीचैतन्यदेव परोक्षईश्वरशरीरविषे तथाहिरण्यगर्भशरीरविषे तथाविराट्शरीरविषे साक्षीरूपकरिकैस्थितहै ॥ और जोचैतन्यदेव ईश्वरहिरण्यगर्भादिकोंकेशरीरविषेस्थितहै ॥ सोईहीचैतन्यदेव अस्मदादिकजीवोंकेशरीरविषेस्थितहै ॥ हेनचिकेता ॥ जैसे अखंडआकाशविषे किंचित्मात्रभीभेदनहीं है ॥ तैसे याअखंडचैतन्यदेवविषे किंचित्मात्रभीभेदनहीं है॥और जैसे भेदतैंरहित आकाश घटमठादिक उपाधियोंकेभेदकरिकै भेदकूंप्राप्तहोवै है ॥ तैसे यहचैतन्यदेवभी अव्याकृत सूक्ष्म स्थूल इत्यादिकउपाधियोंकेभेद करिकै ईश्वर हिरण्यगर्भ विराट् इत्यादिकभेदकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेनचिकेता ॥ जैसे वास्तवतैंतीनकालविषे असत्यहुआभी गंधर्वनगर आका शकेभेदकूंकरेहै तैसे वास्तवतैं तीनकालविषे असत्यहुआभी यहजडजगत् ता चैतन्यआत्माकेभेदकूंकरै है ॥ परंतु सोचैतन्यआत्मा

काभेद ॥ अज्ञानीपुरुषोंकीदृष्टिविषेही है॥ और विद्वान्पुरुषकीदृष्टिकरिकैतौ ताअद्वितीयब्रह्मविषे कल्पितनानापणाभीनहीं है॥जभी ता अद्वितीयब्रह्मविषे कल्पितनानापणाभीनहींभया ॥ तभी ताअद्वितीयब्रह्मविषे सत्यनानापणा किसप्रकारसंभवैगा॥ हेनचिकेता॥ ऐसेअ द्वितीयब्रह्मविषे जोपुरुष कल्पितनानापणाभीदेखै है ॥ सोभेददर्शीपुरुष वारंवार जन्ममरणकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जोमंदबुद्धिपुरुष पापकर्म करिकैमोहितहुआ ताअद्वितीयब्रह्मविषे वास्तवभेदकूंदेखेहै॥सोभेददर्शीपुरुषतौ अनेकवार नरकोंकोहीप्राप्तहोवैहै॥तहांश्रुति॥मृत्योःसमृ त्युमाप्नोति यइहनानेवपश्यति॥अर्थयह॥जोपुरुषयाअद्वितीयब्रह्मविषे नानापणेकीन्याईंदेखैहै॥सोभेददर्शीपुरुष वारंवारमृत्युकूंप्राप्तहोवैहै॥ यातैं मुमुक्षुजनोंनैंताब्रह्मकूं सर्वभेदतैंरहितएकअद्वितीयरूपकरिकैजानणा॥ हेनचिकेताऐसेअद्वितीयब्रह्मरूपआत्माकेदर्शनविषेयहबहिर्मुख श्रोत्रादिकइंद्रिय करणहोइसकैनहीं यातैं याअधिकारीपुरुषनैं निष्कामशुद्धमनकरिकैहीं ताआत्मारूपब्रह्मकूं निश्चयकरणा और हेनचिकेता जैसेअखंडआकाशविषे स्वभावतैंनानापणानहीं है॥तैसे याअखंडब्रह्मविषेभी स्वभावतैं नानापणानहीं है॥किंतु जैसे घटमठरूपउपाधिकेभे दतैंताआकाशकाभेदहोवै है॥ तैसे देहादिकउपाधियोंकेभेदतैंही ताआत्माकाभेदकहणाहोवैगा॥ और यालोकविषे जोजोभेद उपाधिकृत होवैहै॥सोसोभेद ताउपाधिवालेउपहितपदार्थकूं स्पर्शकरैनहीं॥किंतु तिनउपाधियोंविषेही सोभेद स्थितहोवैहै॥ जैसेघटमठरूपउपाधिकृत जोआकाशकाभेदहै॥सोभेद आकाशकूंस्पर्शकरतानहीं॥किंतु ताघटमठरूपउपाधियोंविषेहीं सोभेद स्थितहोवैहै॥ तैसे देहादिरूपउपा धिकृत जोआत्माकाभेदहै॥सोभेदभी ताअद्वितीयआत्माकूंस्पर्शकरैनहीं॥किंतु तिनदेहादिरूपउपाधियोंविषेही सोभेद स्थितहोवै है ॥ किंवा ताअद्वितीयब्रह्मतैंभिन्न जितनेकीदेहादिकपदार्थ हैं ॥ तेदेहादिकपदार्थ ताब्रह्मतैंभिन्नहुए नरशृंगकी न्याईं असत्यहीहोवैंगे॥ तिनअसत्यप दार्थोंकरिकै ताअद्वितीयब्रह्मकाभेद संभवैनहीं ॥ और ताअद्वितीयब्रह्मविषे भेदकेदर्शनतैं वारंवारमृत्युकीप्राप्ति पूर्व कथनकरिआये हैं ॥ यातैं याअधिकारीपुरुषोंनैं वेदांतशास्त्रकेसंस्कारयुक्तशुद्धमनकरिकै याआत्मारूपब्रह्मकूं अद्वितीयरूपकरिकैहीदेखणा॥हेनचिकेता ॥ ऐसा अद्वितीयपरमात्मादेव जीवरूपकरिकै यामनुष्योंकेहृदयदेशविषेस्थितहोवै है ॥ और यामनुष्योंकाहृदय विशेषकरिकैतौ अंगुष्ठमात्रपरि

माणवालाहोवै है ॥ ऐसेहृदयविषेस्थितहुआ सोपरमात्मादेवभी अंगुष्ठमात्रकह्याजावै है॥ऐसे अंगुष्ठमात्रपरमात्मादेवकूं जेअधिआरीपुरुष
भूतभविष्यत्पदार्थोंका ईशानरूपकरिकैजानै है ॥ तिनअधिकारीपुरुषोंकूं संशयादिकप्राप्तहोवैनहीं॥हेनाचिकेता॥सोहृदयदेशविषेस्थित
अंगुष्ठमात्रपुरुष कैसाहै ॥ यासर्वजगत्काईशान है ॥ तथा स्वयंज्योतिरूपहै ॥ तथा भूत भविष्यत् वर्त्तमान यातीनकालोंविषे विपरीत
भावकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु तीनोंकालविषे एकरसरहे है॥और जैसे यालोकविषे द्रवत्वरूपकरिकै तथास्नेहरूपकरिकै जलकाभेदहोवैनहीं
किंतु द्रवत्वरूपकरिकै तथा स्नेहरूपकरिकै सोजल सर्वत्रएकरूपहीहोवै है॥तैसेअस्ति भाति प्रिय यारूपकरिकैताआत्मादेवकाभेदहोवै॥
नहीं॥किंतुअस्तिभातिप्रियरूपकरिकैसोआत्मादेव सर्वत्रएकरूपहीहै॥और हेनाचिकेता॥जैसे ऊँचेपर्वतोंविषेमेघोंतैंपतनहुएजलहैं॥तेजल
तिनऊँचेपर्वतोंतैं नीचेदेशविषे विशीर्णभावकूंप्राप्तहोवै हैं॥ तैसेभेदरूपकरिकैदेख्याहुआयहआत्मादेवभीनानाप्रकारकीनीचयोनियोंकूंप्राप्त
होवै है ॥ और हेनाचिकेता ॥ जैसे तेमेघोंकेजल प्रथम तापर्वतकेशिखरविषेप्राप्तहोवै हैं ॥ तिसतैंअनंतर तेजल तापर्वतकेमध्यदेशविषेप्रा
प्तहोवै हैं तिसतैंअनंतर तेजल नीचीभूमिकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ तानीचीभूमितैंपरे तेजल कहांजावैनहीं ॥ किंतु तेजल तानीचीभूमिविषेहीस्था
पितहोवै हैं ॥ यातैं सानीचीभूमि ताजलोंकेविश्रामकास्थानहै॥ तैसे यहजीवात्मारूपजलभीभेददर्शनरूपऊँचेपर्वततैंनीचेपतनहोइकैपुण्य
पापकर्मकेवशतैं नानाप्रकारकेयोनियोंविषेभ्रमणकरै है॥ तिसतैंअनंतर पूर्वलेकिसीमहान्पुण्यकर्मकेयोगतैं यहजीवात्मा जभी आत्मज्ञान
रूपनीचीभूमिकूंप्राप्तहोवै है॥तभी यहजीवात्मा ब्रह्मानंदरूपविश्रामकूंप्राप्तहोवै है ॥ और हेनाचिकेता ॥ जैसे स्वभावतैंशुद्धजोजलहै सो
जल जभी किसीपर्वतादिकशुद्धस्थलविषेप्राप्तहोवै है ॥ तभीसोजल शुद्धहींरहै है॥ और सोशुद्धजल जभी गैरकहरितालमयभूमिविषे प्राप्त
होवै है ॥ तभी सोजल ताभूमिकेसंबंधतैं रक्तपीतादिकनानावर्णोंकूं प्राप्तहोवै है॥ तैसे वास्तवतैंशुद्धयहआत्मादेवभी रागद्वेषतैंरहितशुद्ध
मनविषेस्थितहोइकै शुद्धभावकूंहीप्राप्तहोवैहैं॥और रागद्वेषवालेअशुद्धमनविषेस्थितहोइकै सोआत्मादेवभी अशुद्धभावकूंप्राप्तहोवै हैं॥ओ
रहेनाचिकेता॥जैसे स्वभावतैंशुक्लवर्णवालाजोजलहै ॥ सोजल यद्यपि गैरकादिकोंकेसंबंधतैं रक्तादिकवर्णोंवालाप्रतीतहोवै है ॥ तथापिता

जलकेस्वाभाविकशुक्लवर्णकीहानिहोवैनहीं॥तैसेयहआत्मादेवभी यद्यपि अंतःकरणादिकोंकेसंबंधतैं कर्तृत्वभोक्तृत्वरूपमलवालाप्रतीतहोवै
है॥ तथापि ताआत्मादेवकेवास्तवशुद्धस्वरूपकीहानिहोवैनहीं॥और हेनाचिकेता ॥जैसे स्वभावतैंशीतलजोजलहै॥ सोजल अग्निकेसंबंधतैं
उष्णभावकूंप्राप्तहोवैहै॥तैसे स्वभावतैंसुखरूप यहआत्मादेवभी देहादिकोंके संबंधतैं दुःखकूंप्राप्तहोवैहै॥यातैं यहअर्थसिद्धभया॥शरीरके
विद्यमानहुए याजीवोंकूंदुखकीप्राप्तिहोवै है और शरीरकेअभावहुए याजीवोंकूं दुःखकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥याप्रकारकेअन्वयव्यतिरेककरिकै
कारणशरीरसहित यास्थूलसूक्ष्मशरीरविषेही दुःखकीकारणतासिद्धहोवैहै ॥ हेनाचिकेता॥स्थूल सूक्ष्म कारण यातीनशरीरोंविषेभी जोअ
ज्ञानरूपकारणशरीरहै ॥ सोकारणशरीर याजीवोंकेदुःखका साक्षात्कारणहोवैनहीं ॥जोकदाचित् सोकारणशरीर साक्षात्दुःखकाकारण
होवै ॥ तौ सुषुप्तिअवस्थाविषेभी हमजीवोंकूं दुःखकीप्राप्तिहोणीचाहिये ॥ और सुषुप्तिअवस्थाविषे दुःखकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ यातैं
जैसे बीज अंकुरादिद्वारा फलकाकारणहोवै हैंतैसे यहअज्ञानरूपकारणशरीरभी सूक्ष्मस्थूलशरीरद्वाराही याजीवोंकेदुःखकाकारणहोवैहै॥
हेनाचिकेता ॥ तिनसूक्ष्मस्थूलशरीरोंविषेभी यहसूक्ष्मशरीर साक्षात्अज्ञानरूपमायाकाकार्य है ॥ यातैं तामायारूपकारणकेनाशतैंविना
सोसूक्ष्मशरीर नाशकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और सोसूक्ष्मशरीरही याजीवोंकेस्थूलसंसाररूपपटकाकारणहै॥ याकारणतैं ता सूक्ष्मशरीरकूं शा
स्त्रविषे सूत्र यानामकरिकैकथनकरै हैं॥ ऐसासूक्ष्मशरीर यास्थूलशरीरकेग्रहणतैंविना याजीवोंकूं भोगकीप्राप्तिकरै नहीं ॥ किंतु यास्थूल
शरीरकूंग्रहणकरिकैही सोसूक्ष्मशरीर याजीवोंकूं भोगकीप्राप्तिकरै है ॥ यातैं तास्थूलशरीरविषेही गुरुशास्त्रकेउपदेशकरिकै सोआत्मादेव
प्रत्यक्षहोवै है ॥ याकारणतैं मैंयमराजा तुमारेप्रति यास्थूलशरीरकाकथनकरताहूं तूं श्रवणकर ॥ सूक्ष्मशरीररूपजोपुरुषहै॥ तथा त्वगा
दिकजेसप्तधातुहैं ॥ तथा भक्षणकरेहुएअन्नपानादिकोंके जेनानाप्रकारकेरस हैं ॥ तिनसंपूर्णो करिकै यहस्थूलशरीर दिनदिनविषे पूर्णकरी
ताहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती यास्थूलशरीरकूं पुर यानामकरिकैकथनकरै है॥अथवा जैसे लोकप्रसिद्धपुर राजादिकोंकरिकैयुक्तहोवै हैं
तैसे यहस्थूलशरीरभी पूर्णपरमात्माकरिकैयुक्तहै॥याकारणतैं यास्थूलशरीरकूं पुर कहेहैं ॥ अब यास्थूलशरीररूपपुरविषे लोकप्रसिद्धपुर

कीसमानता निरूपणकरै हैं॥ हेनचिकेता जैसे यहलोकप्रसिद्धपुर अनेकद्वारोंवा ग्रहोवै है॥तथा कोईराजा तापुरकास्वामीहोवै है॥तैसेयह स्थूलशरीररूपपुरभी एकादशद्वारवालाहै॥तहां दोचक्षु दोनासिका दोश्रवण एकमुख यहसप्त याशरीररूपपुरकेऊपरलेद्वारहैं ॥और पायु उपस्थ यहदोनों नीचेकेद्वारहैं॥और उदरविषे स्थित जोनाभिछिद्रहै॥सोनाभिछिद्र दशमाद्वारहै ॥और मस्तककेतीनकपालोंकीसंधिविषे स्थित जोछिद्रहै॥सोएकादशमाद्वारहै॥जोएकादशमेंद्वारविषे सुषुम्नानाडीरूपसरस्वती प्राप्तहोवैहै॥कैसीहैसा सुषुम्नारूपसरस्वती॥अयोगी पुरुषोंकरिकै दुर्लक्ष्यहै ॥ किंतु योगीपुरुषही तासुषुम्नाकूंजाणे हैं॥और जिससुषुम्नारूपसरस्वतीकरिकै याशरीरतैंबाहरनि[illegible]स्याहुआ यह योगीपुरुष ब्रह्मलोककेदेवयानमार्गकूंप्राप्तहोवै है ॥ ऐसेशरीररूपपुरविषे यहपरमात्मारूपइंद्र वाकाादिकइंद्रियरूप तथाअग्निआदिकदेवता रूप प्रजाकेसहित निवासकरै है ॥ कैसाहैसोपरमात्मादेव ॥ वास्तवतैं जन्ममरणादिकविकारोंतैंरहितहै ॥ तथा स्वयंज्योतिरूपहै ॥ तथा बहिर्मुखजडमनतैंरहितहै ॥ तथा वाकादिकइंद्रियोंतैंरहितहै ॥ हेनाचिकेता॥ ऐसापरमात्मादेव यद्यपि वास्तवतैंपुण्यपापरूप कर्मों तैंरहितहै ॥तथापि कल्पितपुण्यपापरूपकर्मोंकेसंबंधतैं याशरीररूपपुरकूंप्राप्तहोवै है ॥ और ऐसेदुःखरूपशरीरकूंप्राप्तहोइकैभी यहआनंदस्वरूपआत्मादेव वास्तवतैंशोककूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ काहेतैं यालोकविषेजोजोशोकहोवै है ॥ सोसोशोक दुःखरूपकारणतैंही उत्पन्नहोवै है॥और सोदुःख अनिष्टपदार्थोंकेसंगतैंउत्पन्नहोवै है॥यातैंतादुःखकीउत्पत्तिद्वारा सोसंगहीताशोककाकारणहै ॥और यहआनंदस्वरूपआत्मा सर्वसंगतैंरहितहै ॥ यातैं ऐसेअसंगआत्माकूं सोशोक किसप्रकारप्राप्तहोवैगा ॥ किंतु नहींप्राप्तहोवैगा ॥ हेनचिकेता ॥ जोपूर्वतुमनैं धर्मअधर्मतैंरहित आत्माकास्वरूपपूछाथा॥सोभी यहसर्वशोकतैंरहितस्वयंज्योतिआत्मा देवहीहै ॥ याकेविषे तुमनैं किंचित्मात्रभी संशयनहींकरणा ॥ हेनचिकेता ॥ यहअधिकारीपुरुष नित्यमुक्तआत्मास्वरूपकरिकैनित्यहीमुक्तरूपहै तथापि यास्वयंज्योतिआत्माके साक्षात्कारतैं कल्पितअज्ञानरूपबंधकापरित्यागकरिकै तुमसरीखेअधिकारीपुरुष पुनःमुक्तिकूंप्राप्तहोवै है ॥ जैसेयालोकविषे कोईभाग्यवान्पुरुष पूर्व सुखकूंप्राप्तहुआभी पुनःसुखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे यहआत्मादेव पूर्वमुक्तिहुआभी पुनःमुक्तहोवै है॥ हेनचिकेता ॥ जेवादी ताआ

त्माविषे बंध अंगीकारकरै हैं॥तिनवादियोंसैं यहपूछाचाहिये ॥ ताआत्माविषे रज्जुआदिकोंकरिकै वेष्टनरूपबंधहै ॥ अथवा संसर्गरूपबंध है॥तहां ताआत्माविषे रज्जुआदिकोंकरिकैवेष्टनरूपबंधहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं॥काहेतैं यालोकविषे जिसजिस पदार्थविषे रज्जुआदि कोंकरिकैबंधहोवै है॥तिसतिसपदार्थविषे मूर्त्तपणाहींदेख्याहै॥जैसे घटादिकपदार्थोंविषे रज्जुकरिकैबंधहोवै है॥ यातैं तिनघटादिकपदार्थोंविषे मूर्त्तपणाभी है ॥ और जिसपदार्थविषे मूर्त्तपणेकाअभावहोवै है॥ तिसपदार्थविषे रज्जुआदिकोंकरिकैबंधभीहोवै नहीं ॥ जैसे आकाशविषे मूर्त्तपणेकाअभावहै ॥ यातैं ताआकाशविषे रज्जुकारिकैबंधभीहोवैनहीं ॥ सोमूर्त्तपणेकाअभाव आत्माविषेभी है ॥ यातैं ताआत्मादेवविषे रज्जुआदिकोंकरिकैबंध संभवैनहीं ॥ और ताआत्माविषे संसर्गरूपबंध है यहदूसरापक्ष जो वादी अंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं जोवादियोंनैं संयोगसमवायसंबंधादिरूपबंधनकल्पनाकऱ्याहै ॥ सो संयोगसमवायसंबंधादिरूपबंधन कल्पितहै ॥ यातैं तेसंयोगसमवायादिक असत्यहैं ॥ अब तिनसंयोगसमवायादिकसंबंधोंविषे कल्पितरूपता स्पष्टकरणेवास्तै प्रथम तिन संयोगादिकोंविषेप्रमाणका खंडनकरै हैं॥तहांजोवादी संयोगसमवायादिकसंबंधोंकूंअंगीकारकरै है ॥तावादीसैं यहपूछाचाहियेः॥ तासंयोग समवायसंबंधविषे प्रत्यक्षप्रमाणहै ॥ अथवा अनुमानप्रमाणहै ॥अथवा॥ शब्दप्रमाणहै॥ अथवा इनोंतैंकोईभिन्नप्रमाणहै॥ तहां संयोगतंबंधविषे तथासमवायसंबंधविषे प्रत्यक्षप्रमाणहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं तावादीकेमतविषे दंडवालापुरुष है यास्थलविषे दंडका पुरुषकेसाथ संयोगसंबंधहोवै है ॥ और रूपवालाघटहै यास्थलविषे रूपगुणका घटकेसाथ समवायसंबंधहोवै है ॥ तहां तासंयोगसंबंधका दंडतौ प्रतियोगीहोवै है ॥ और पुरुष अनुयोगीहोवै है ॥ इसीप्रकार तासमवायसंबंधकाभी रूपगुणतौ प्रतियोगी होवै है ॥ और घट अनुयोगीहोवै है ॥ तहां प्रतियोगीकेस्वरूपका तथा अनुयोगीकेस्वरूपका जोभलीप्रकारविचारकरिदेखिये ॥ तौ ताप्रतियोगीअनुयोगीकेस्वरूपतैंभिन्नहोइकै सो संयोग संबंध तथा समवायसंबंध प्रतीतहोवै नहीं ॥ यातैं तासंयोगसमवायविषे प्रत्यक्ष प्रमाण संभवैनहीं ॥ और तासंयोगसमवायविषे अनुमान प्रमाण है यह दूसरा पक्ष जो वादी अंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं ॥

कीसमानता निरूपणकरै हैं॥हेनचिकेता जैसे यहलोकप्रसिद्धपुर अनेकद्वारोंसा ग्राहोवै है॥तथा कोईराजा तापुरकास्वामीहोवै है॥तैसेयह स्थूलशरीररूपपुरभी एकादशद्वारवालाहै॥तहां दोचक्षु दोनासिका दोश्रवण एकमुख यहसप्त याशरीररूपपुरकेऊपरलेद्वारहैं ॥और पायु उपस्थ यहदोनों नीचेकेद्वारहैं॥और उदरविषे स्थित जोनाभिछिद्रहै॥सोनाभिछिद्र दशमाद्वारहै ॥और मस्तककेतीनकपालोंकीसंधिविषे स्थित जोछिद्रहै॥सोएकादशमाद्वारहै॥जोएकादशमेंद्वारविषे सुषुम्नानाडीरूपसरस्वती प्राप्तहोवैहै॥कैसीहैसा सुषुम्नारूपसरस्वती॥अयोगी पुरुषोंकरिकै दुर्लक्ष्यहै ॥ किंतु योगीपुरुषही तासुषुम्नाकूंजाणे हैं॥और जिससुषुम्नारूपसरस्वतीकरिकै याशरीरतैंबाहरनि[illegible]स्याहुआ यह योगीपुरुष ब्रह्मलोककेदेवयानमार्गकूंप्राप्तहोवै है ॥ ऐसेशरीररूपपुरविषे यहपरमात्मारूपइंद्र वाकादिकइंद्रियरूप तथाअग्निआदिकदेवता रूप प्रजाकेसहित निवासकरै है ॥ कैसाहैसोपरमात्मादेव ॥ वास्तवतैं जन्ममरणादिकविकारोंतैंरहितहै ॥ तथा स्वयंज्योतिरूपहै ॥ तथा बहिर्मुखजडमनतैंरहितहै ॥ तथा वाकादिकइंद्रियोंतैंरहितहै ॥ हेनाचिकेता॥ ऐसापरमात्मादेव यद्यपि वास्तवतैंपुण्यपापरूप कर्मों तैंरहितहै ॥तथापि कल्पितपुण्यपापरूपकर्मोंकेसंबंधतैं याशरीररूपपुरकूंप्राप्तहोवै है ॥ और ऐसेदुःखरूपशरीरकूंप्राप्तहोइकैभी यहआनंदस्वरूपआत्मादेव वास्तवतैंशोककूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ काहेतैं यालोकविषेजोजोशोकहोवै है ॥ सोसोशोक दुःखरूपकारणतैंही उत्पन्नहोवै है॥और सोदुःख अनिष्टपदार्थोंकेसंगतैंउत्पन्नहोवै है॥यातैंतादुःखकीउत्पत्तिद्वारा सोसंगहीताशोककाकारणहै ॥और यहआनंदस्वरूपआत्मा सर्वसंगतैंरहितहै ॥ यातैं ऐसेअसंगआत्माकूं सोशोक किसप्रकारप्राप्तहोवैगा ॥ किंतु नहींप्राप्तहोवैगा ॥ हेनचिकेता ॥ जोपूर्वतुमनैं धर्मअधर्मतैंरहित आत्माकास्वरूपपूछाथा॥सोभी यहसर्वशोकतैंरहितस्वयंज्योतिआत्मा देवहीहै ॥ याकेविषे तुमनैं किंचित्मात्रभी संशयनहींकरणा ॥ हेनचिकेता ॥ यहअधिकारीपुरुष नित्यमुक्तआत्मास्वरूपकरिकैनित्यहीमुक्तरूपहै तथापि यास्वयंज्योतिआत्माके साक्षात्कारतैं कल्पितअज्ञानरूपबंधकापारित्यागकरिकै तुमसरीखेअधिकारीपुरुष पुनःमुक्तिकूंप्राप्तहोवै है ॥ जैसेयालोकविषे कोईभाग्यवान्पुरुष पूर्व सुखकूंप्राप्तहुआभी पुनःसुखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे यहआत्मादेव पूर्वमुक्तिहुआभी पुनःमुक्तहोवै है॥ हेनचिकेता ॥ जेवादी ताआ

त्माविषे बंध अंगीकारकरै हैं॥तिनवादियोंसैं यहपूछाचाहिये ॥ ताआत्माविषे रज्जुआदिकोंकरिकै वेष्टनरूपबंधहै ॥ अथवा संसर्गरूपबंध है॥तहां ताआत्माविषे रज्जुआदिकोंकरिकैवेष्टनरूपबंधहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं॥काहेतैं यालोकविषे जिसजिस पदार्थविषे रज्जुआदि कोंकरिकैबंधहोवै है॥तिसतिसपदार्थविषे मूर्त्तपणाहींदेख्याहै॥जैसे घटादिकपदार्थोंविषे रज्जुकरिकैबंधहोवै है॥ यातैं तिनघटादिकपदार्थोंविषे मूर्त्तपणाभी है ॥ और जिसपदार्थविषे मूर्त्तपणेकाअभावहोवै है॥ तिसपदार्थविषे रज्जुआदिकोंकरिकैबंधभीहोवै नहीं ॥ जैसे आकाशविषे मूर्त्तपणेकाअभावहै ॥ यातैं ताआकाशविषे रज्जुकरिकैबंधभीहोवैनहीं ॥ सोमूर्त्तपणेकाअभाव आत्माविषेभी है ॥ यातैं ताआत्मादेवविषे रज्जुआदिकोंकरिकैबंध संभवैनहीं ॥ और ताआत्माविषे संसर्गरूपबंध है यहदूसरापक्ष जो वादी अंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं जोवादियोंनैं संयोगसमवायसंबंधादिरूपबंधनकल्पनाकऱ्याहै ॥ सो संयोगसमवायसंबंधादिरूपबंधन कल्पितहै ॥ यातैं तेसंयोगसमवायादिक असत्यहैं ॥ अब तिनसंयोगसमवायादिकसंबंधोंविषे कल्पितरूपता स्पष्टकरणेवासतै प्रथम तिन संयोगादिकोंविषेप्रमाणका खंडनकरै हैं॥तहांजोवादी संयोगसमवायादिकसंबंधोंकूंअंगीकारकरै है ॥तावादीसैं यहपूछाचाहियें॥ तासंयोग समवायसंबंधविषे प्रत्यक्षप्रमाणहै ॥ अथवा अनुमानप्रमाणहै ॥अथवा॥ शब्दप्रमाणहै॥अथवा इनोंतैंकोईभिन्नप्रमाणहै॥ तहां संयोगतंबंधविषे तथासमवायसंबंधविषे प्रत्यक्षप्रमाणहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं तावादीकेमतविषे दंडवालापुरुष है यास्थलविषे दंडका पुरुषकेसाथ संयोगसंबंधहोवै है ॥ और रूपवालाघटहै यास्थलविषे रूपगुणका घटकेसाथ समवायसंबंधहोवै है ॥ तहां तासंयोगसंधंका दंडतौ प्रतियोगीहोवै है ॥ और पुरुष अनुयोगीहोवै है ॥ इसीप्रकार तासमवायसंबंधकाभी रूपगुणतौ प्रतियोगी होवै है ॥ और घट अनुयोगीहोवै है ॥ तहां प्रतियोगीकेस्वरूपका तथा अनुयोगीकेस्वरूपका जोभलीप्रकारविचारकरिदेखिये ॥ तौ ताप्रतियोगीअनुयोगीकेस्वरूपतैंभिन्नहोइकै सो संयोग संबंध तथा समवायसंबंध प्रतीतहोवै नहीं ॥ यातैं तासंयोगसमवायविषे प्रत्यक्ष प्रमाण संभवैनहीं ॥ और तासंयोगसमवायविषे अनुमान प्रमाण है यह दूसरा पक्ष जो वादी अंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं ॥

जोवस्तुका किसीप्रकारकरिकैभी प्रत्यक्षनहींहोवै॥ तावस्तुविषे अनुमानप्रमाणकीभी प्रवृत्तिहोवैनहीं ॥ काहेतैं जोकदाचित् सर्वप्रकारतैं अप्रत्यक्षवस्तुकीभी अनुमानप्रमाणतैं सिद्धिहोतीहोवै ॥ तौ वंध्यापुत्रकीतथानरशृंगकीभी अनुमानप्रमाणतैं सिद्धिहोणीचाहिये ॥ और अनुमानप्रमाणकरिकै वंध्यापुत्रकी तथा नरशृंगकी सिद्धिहोवैनहीं ॥ यातैं प्रत्यक्षप्रमाणकेअभावहुए तासंयोगसमवायविषे अनुमानप्रमाणभी संभवैनहीं ॥ और तासंयोगसमवायसंबंधविषे शब्द प्रमाणहै यह तीसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं सो शब्द दोप्रकारकाहोवै है ॥ एकतौ लौकिकशब्दहोवै है ॥ और दूसरा वैदिकशब्दहोवै है ॥ तहां तासंयोगसमवायविषे लौकिकशब्द प्रमाणहै यहकहणातौसंभवैनहीं ॥ काहेतैं प्रत्यक्षअनुमानादिकप्रमाणोंकीसहायतातैंविना सोलौकिकशब्द किसीअर्थकीभीसिद्धिकरिसकैनहीं ॥ किंतु प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकीसहायताकूंअंगीकारकरिकैही सोलौकिकशब्द किसीअर्थकीसिद्धिकरै है॥ काहेतैं जोकदाचित् सो लौकिकशब्द प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकीसहायतातैंविनाही किसीअर्थविषे प्रमाणरूपहोवै ॥ तौ वंध्यापुत्रविषे तथानरशृंगविषेभी तालौकिकशब्दकूं प्रमाणरूपताहोणीचाहिये ॥ और वंध्यापुत्रविषे तथानरशृंगविषे तालौकिकशब्दकूं प्रमाणरूपताहैनहीं ॥ यातैं प्रत्यक्षअनुमानप्रमाणकेअभावहुए तासंयोगसमवायविषे लौकिकशब्दकूंभी प्रमाणरूपतासंभवैनहीं ॥ और तासंयोगसमवायसंबंधविषे वैदिकशब्द प्रमाणहै यहकहणाभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं दंडपुरुषका संयोगसंबंधहोवै है और रूपघटका समवायसंबंधहोवै है याप्रकारकेअर्थकूं बोधनकरणेहारा कोईश्रुतिवचन वेदविषेदेखीतानहीं ॥ जावैदिकवचनकरिकै तासंयोगसमवायकीसिद्धिहोवै ॥ यातैं तासंयोगसमवायविषे वैदिकशब्दकूंभी प्रमाणरूपतासंभवैनहीं ॥ और तासंयोगसमवायविषे प्रत्यक्षअनुमान शब्द यातीनप्रमाणोंतैं भिन्नहीकोईप्रमाणहै यहचतुर्थपक्ष जो वादी अंगीकारकरै सोभीसंभवै नहीं ॥ काहेतैं प्रत्यक्ष अनुमान शब्द या तीनप्रमाणोंविषे किसी एक प्रमाणकी सहायताकूंअंगीकारकरिकैही उपमानअर्थापत्तिआदिकप्रमाण प्रवर्त्त होवै है ॥ जभी तासंयोगसमवायविषे प्रत्यक्षादिकतीनप्रमाणोंकी प्रवृत्तिनहींभई ॥ तभी तासंयोगसमवायविषे उपमानअर्थापत्तिआदिकप्रमाण किसप्रकार प्रवर्त्तहोवैंगे ॥ किंतु नहींप्रवृत्तहोवैंगे ॥ हेन ॥ ४४

चिकेता ॥ याप्रकार आकाशादिकजडपदार्थोंविषेभी सोसंयोगसमवायसंबंध संभवैनहीं ॥ जभी आकाशादिकजडपदार्थोंविषेभी तेसंयोगसमवायसंबंध नहींसिद्धभये ॥ तभी चैतन्यस्वरूपअमूर्त्तआत्मादेवविषे तेसंयोगसमवायसंबंध किसप्रकारसिद्धहोवैंगे ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ संयोगसमवायसंबंधरूपबंध ताआत्माविषे मतहोवै ॥तथापि कोईअनिर्वचनीयसंबंधरूपबंधताआत्मादेवविषे किसवासतैंनहींहोवै ॥ समाधान ॥ हेनचिकेता ॥ योग्यपदार्थका किसीयोग्यपदार्थकेसाथही संबंधहोवै है ॥ याप्रकारकानियम शास्त्रविषे कथनकऱ्या है॥यातैं सोअनिर्वचनीयसंबंध अनिर्वचनीयशरीरादिकोंविषेहीसंभवैगा॥ आनंदस्वरूपअसंगआत्माविषे सोअनिर्वचनीयसंबंधभी संभवैनहीं ॥ यातैं सर्वसंबंधतैंरहितयहआत्मादेव यद्यपि पूर्वअज्ञानअवस्थाविषेभी नित्यमुक्तरूपहीथा ॥ तथापि आत्मसाक्षात्कारकरिकै ताकल्पितमायारूपबंधकेनिवृत्तहुए यहआत्मादेव पुनःविशेषकरिकै मुक्तिकूंप्राप्तहोवै है ॥ तहांश्रुति ॥ विमुक्तश्चविमुच्यते अर्थयह ॥ विशेषकरिकैमुक्तहुआभीयहआत्मादेव आत्मसाक्षात्कारकरिकै पुनःविशेषकरिकैमुक्तहोवै है ॥ १ ॥ इतनैंकरिकै याआत्मादेवविषे नित्यमुक्तरूपतादिखाई ॥ अब ताआवरणरहितशुद्धआत्माके प्रभावकावर्णनकरै हैं ॥ हेनचिकेता ॥ यहआत्मादेव आत्मसाक्षात्कारकरिकै कार्यसहितअविद्याकूं हननकरै है॥याकारणतैं श्रुतिभगवती याआत्मादेवकूं हंस यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ अथवा॥ सर्वजीवोंका बाह्यप्राणरूप जोयहसूर्यभगवान्है ॥ तासूर्यरूपकरिकै यहआत्मादेवही तीनलोकोंकूंप्रकाशकरै है ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताआत्मादेवकूं हंस यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ तहां श्रुति ॥ प्राणःप्रजानामुदयत्येषसूर्यः ॥ अर्थ यह ॥ संपूर्ण प्रजाका बाह्यप्राणरूप यह सूर्य उदयहोवैहै ॥१॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मादेव शुद्धहृदयविषे अथवा आकाशविषे स्थितहोवै है॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताआत्मादेवकूं शुचिषत् यानामकरिकैकथनकरै है ॥ और जैसे यालोकविषे पुरुषोंकूं सुवर्णादिरूपधन प्रियहोवै है ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्माभी याजीवोंकूं अत्यंतप्रियहै॥याकारणतैं श्रुतिभगवती ताआत्मादेवकूं वसु यानामकरिकैकथनकरै है॥और यहआनंदस्वरूपआत्मादेव अंतरहृदयआकाशविषेतौ आत्मारूपकरिकै स्थितहोवै है॥और बाह्यआकाशविषे सूर्यरूपकरिकैस्थितहोवै है॥ याकारणतैं श्रुति

भगवतीताआत्मादेवकूं अंतरिक्षसत् यानामकरिकैकथनकरेहै॥और यह आत्मादेव यज्ञकर्त्तायजमानकेप्रसन्नकरणेवासतैं तासंस्कृतयज्ञ भू
मिविषे ऋत्विकरूपकरिकैस्थितहोवै है ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताआत्मादेवकूं होता यानामकरिकैकथनकरेहै॥अथवा॥यहआत्मा
देव भोक्तारूपआत्मअग्निविषे सर्वअन्नकूं हवनकरै है ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताआत्मादेवकूँ होता यानामकरिकैकथनकरै है ॥ और
यज्ञकेवेदीसमान जो मध्यछिद्रवालाहृदयहै ॥ ताहृदयविषे अथवा सूर्यमंडलविषे यहआत्मादेवही स्थितहोवै है ॥ याकारणतैं श्रुतिभग
वती ताआत्मादेवकूं वेदिषत् यानामकरिकैकथनकरेहै॥और हेनचिकेता॥यहआत्मादेवही सोमयागविषेसोमवल्लीकारसरूपकरिकै कलश
विषेस्थितहोवैहै औरयहआत्मादेवही श्रेष्ठगृहस्थपुरुषोंकेगृहविषे अतिथिरूपकरिकैस्थितहोवैहै॥तहांजिसपुरुषकेकुलका तथागोत्रका ज्ञा
ननहींहोवै तथा मध्याह्नादिककालविषेआवै॥तथा अन्नकेप्राप्तिकीइच्छावालाहोवै तापुरुषकानाम अतिथिहै॥और जिनोंकेकुलगोत्रादिकों
काज्ञानहोवै ॥ ऐसेजेआचार्यऋत्विकादिकब्राह्मणहैं ॥ तिनोंकानामभी अतिथिहै ॥ और हेनचिकेता ॥ वाकादिकइंद्रियोंविषे प्रगटभई
जेनानाप्रकारकीशक्तियां हैं॥तथानानाप्रकारकेसुखदुःखका जोभोक्तापणाहै॥तेनानाप्रकारकीशक्तियां तथा सोभोक्तापणा चैतन्यआत्मातैं
विना याजडसंघातविषेसंभवैनहीं॥यातैं ताशक्तियोंकरिकै तथाभोक्तापणेकरिकै याशरीरविषे ताआत्मादेवकीस्थिति जानणेविषेआवै है॥
और हेनचिकेता ॥ जैसे पृथ्वीआदिक जलादिकोंकेआश्रितरहै हैं ॥ तैसे यहस्वयंज्योतिआत्मादेव किसीकेआश्रितरहतानहीं ॥किंतु यह
आत्मादेव आपणेस्वयंज्योतिआनंदस्वरूपविषेहीस्थितहोवै है ॥ तहांश्रुति ॥ सभूमाकस्मिन्प्रतिष्ठितःस्वेमहिम्नि ॥ अर्थ यह ॥
सोव्यापकआत्मा किसविषेस्थितहोवै है याप्रकारकीशंकाकेहुए ॥ सो व्यापकआत्मा आपणे स्वप्रकाशमहिमाविषे स्थितहोवै है
याप्रकारकाउत्तर श्रुतिनैंकह्या है ॥ हेनचिकेता ॥ सुखदुःखरूपफलकी अवश्यकरिकैप्राप्तिकरणेहारे जेपुण्यपापकर्म हैं ॥
तिनकर्मोंविषेभी यहआत्मादेवही फलरूपकरिकैस्थितहोवै है ॥ और हेनचिकेता ॥ सूर्यमंडलकेअंतरस्थित जोसूक्ष्मसत्र
ष्टिरूपहिरण्यगर्भ है ॥ ताहिरण्यगर्भके समष्टिबुद्धिकेअंतरस्थितजोआकाश है ॥ तथा जीवोंके सूक्ष्मव्यष्टिबुद्धिके अंतरस्थितजो

आकाशहै ॥ ताआकाशविषेभी यहआनंदस्वरूपस्वयंज्योतिआत्माहीं साक्षीरूपकरिकै स्थितहोवै है ॥ और हेनचिकेता ॥ जलहैप्र
धानजिनोंविषे ऐसेजेसूक्ष्मआकाशादिकपंचभूतहैं ॥ तिनसूक्ष्मभूतोंतैं यह आत्मादेवही पूर्व हिरण्यगर्भरूपकरिकैउत्पन्नहोवै है ॥ और
मेघरूपकरिकै परिणामकूंप्राप्तभईयां जेसूर्यकेकिरणहैं ॥ तिनसूर्यकेकिरणोंतैं यहआत्मादेवही जलरूपकरिकैउत्पन्नहोवै है ॥ और हे
नचिकेता ॥ सुखदुःखरूपफलकेदेणेवासतै सन्मुखभयेजेपुण्यपापरूपकर्म हैं ॥ तिनपुण्यपापकर्मोंतैं यहआत्मादेवही सुखदुःखकी
प्राप्तिकरणेहारे अनेकदेहइंद्रियादिरूपकरिकै उत्पन्नहोवै है ॥ और पृथ्वीरूपकमलका कर्णिकारूपजोसुमेरुपर्वत है ॥ तासुमेरुपर्वततैं
यहआत्मादेवही चतुराननब्रह्मारूपकरिकै उत्पन्नहोवै है ॥ कैसाहैसोसुमेरुपर्वत ॥ ताब्रह्मारूपगर्भकेप्रादुर्भावविषे जरायुपटकेसमा
नहै ॥ और यहआत्मादेवही हिमाद्रिपर्वततैं गिरिजारूपकरिकैउत्पन्नहोवै है ॥ हेनचिकेता ॥ याअर्थविषे हम बहुतक्याकहैं ॥ पुण्य
पापकर्मकाफलभूत जितनाकीस्थावरजंगमरूपजगत् है ॥ सोसंपूर्णजगत् ब्रह्मरूपही है ॥ ब्रह्मतैंभिन्न कोईभीपदार्थनहीं हैं ॥ तहां
श्रुति ॥ सर्वंखल्विदंब्रह्म ॥ अर्थयह ॥ यहसंपूर्णजगत् ब्रह्मरूपहीं है ॥ इहां सर्वजगत्का जोब्रह्मकेसाथअभेदकह्याहै॥सोबाधसामानाधिक
रणकरिकैजानणा ॥जैसे स्थाणुविषेप्रतीतभयाजोचौरहै॥ताचौरका स्थाणुकेसाथ बाधसामानाधिकरणकरिकैअभेदहोवै है ॥ इतनैंकरि
कै याआत्मादेवका सर्वात्मभावरूपप्रभाव वर्णनकऱ्या॥अब तिसीआत्माकेजनावणेहारे नानाप्रकारकेलिंगोंकानिरूपणकरै हैं ॥ हेनचिके
ता ॥ यहआनंदस्वरूपआत्मा सर्वजीवोंकेहृदयदेशविषेस्थितहोइकै प्राणरूपवायुकूं ऊर्ध्वलेजावै है ॥ और अपानरूपवायुकूं नीचेलेजावै
है॥यातैं याशरीरविषे जोप्राणअपानवायुकाधारण है॥सोधारणभी याआत्माकेजनावणेहारालिंगहै॥और यापुरुषोंकेहृदयदेशका अंगुष्ठ
मात्रजोमध्यदेशहै ॥ ताकेविषेस्थितहोइकै यहआत्मादेव परिच्छिन्नकीन्याईं प्रतीतहोवै है॥और याआत्मादेवकूंहीं संपूर्णवाकादिकदेवता
आश्रयणकरै हैं ॥और हेनचिकेता॥ याशरीरविषेस्थित जोआत्मादेवहै॥सोआत्मादेव जभी मरणकेहेतुरूपकर्मोंकरिकै याशरीरतैंबाहर
गमनकरै है ॥ तभी ताशरीरकेस्थितिकाकारण कोईरहतानहीं ॥ काहेतैं याआत्माकोनिर्गमनहुएतैंअनंतर सोशरीर काष्ठकीन्याईं केवल

दाहकरणेयोग्यहोवै है ॥ यातैं यहजान्याजावै है ॥ तामरणकालविषे याशरीरकोस्थितकाकारणरूपचैतन्यरहतानहीं ॥ यातैं जोचैतन्य याशरीरकोस्थितिकाकारण है ॥ सोचैतन्यहीं धर्म अधर्मतैं रहित अद्वितीय ब्रह्मरूपहै॥ जोब्रह्म पूर्वतुमनैं हमारेतैं पूछाथा॥शंका॥हेभगवन् ॥ याशरीरकेस्थितिकीकारणता जैसे चैतन्यआत्माविषेहै ॥तैसे प्राणविषेभीहै ॥ यातैं सोप्राणहीं आत्मारूपहै ॥समाधान॥ हेनचिकेता ॥ यालोकविषे कोईभीदेहधारीजीव प्राणकरिकै तथा अपानकरिकै जीवतानहीं॥ किंतु जिसअधिष्ठानचैतन्यविषे प्राण अपान यह दोनोंस्थितहोवैहैं ॥तिसअधिष्ठानचैतन्यकरिकैही यह प्राणीजीवैहैं॥यातैं यहप्राणअपानदोनों किसीभीप्राणीका आत्मारूपनहीं हैं॥किंतु मरणमूर्च्छादिकअवस्थावोंविषे यहप्राण अपान जिसअधिष्ठानचैतन्यविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहैं॥सोअधिष्ठानचैतन्यहीं सर्वजीवोंकाआत्मारूप है ॥ तहांश्रुति ॥ नप्राणेन नाऽपानेन मर्त्योजीवतिकश्चन ॥इतरेणतुजीवंति यस्मिन्नेतावुपाश्रितौ ॥ अर्थयह ॥ कोईभीदेहधारीजीव प्राणकरिकैं तथाअपानकरिकै जीवतानहीं ॥ किंतु जिसआधिष्ठानचेतनविषे यहप्राणअपानदोनों स्थितहैं ॥ तिसचेतनआत्माकारिकैही यहसंपूर्णप्राणीजीवते हैं ॥ १ ॥ हेनचिकेता ॥ इतनेग्रंथकरिकै हमनैं तुमारेप्रति धर्मअधर्मतैंरहित शुद्धआत्माकाउपदेशकऱ्या ॥ और पूर्वतीसरेवरविषे जोतुमनैं मरणतैं अनंतर परलोकविषे आत्माकासत्व पूछाथा॥सोहम अभी तुमारेप्रति कथनकरतेहैं॥तूं सावधानहोइकै श्रवणकर ॥ हे नाचिकेता ॥ मरणकेप्राप्तहुए या आत्मादेवका अत्यंतअभावहोवैनहीं॥किंतु मरणतैंअनंतर केईकजीवतौ मनुष्यादिकजंगमशरीरोंकीप्राप्तिवासतै तिनजंगमशरीरोंके बीजभावकूंप्राप्तहोवै हैं॥ और केईकजीवतौ वृक्षादिकस्थावरशरीरोंकीप्राप्तिवासतैतिनस्थावरशरीरोंकेबीजभावकूं प्राप्तहोवैहै॥तहां मनुष्यादिकजंगमशरीरोंकीप्राप्तिविषे तथावृक्षादिकस्थावरशरीरोंकीप्राप्तिविषेदोप्रकारकेकारणहोवै हैं॥एकतौ शरीरमनवाणीकरिकै करेहुए पुण्यपापरूपकर्म कारणहोवैहैं॥और दूसरा पूर्वपूर्वजन्मकेज्ञानकर्मजन्य संस्काररूपवासनाकारण होवैहैं अब पुण्यपापरूपकर्मोंविषे याशरीरोंकीकारणता निरूपणकरैहैं।हेनचिकेता॥ याजीवोंके पापकर्मकीअपेक्षाकरिकै जभीपुण्यकर्मअधिकहोवै हैं तभी यहजीव मरणतैंअनन्तर मनुष्यादिकरूपजंगमशरीरोंकूंप्राप्तहोवैहैं॥ और याजीवोंके पुण्यकर्मकीअपेक्षाकरिकै जभी पाप

कर्मअधिकहोवै हैं॥तभी यहजीव मरणतैं अनंतर वृक्षादिरूपस्थावरशरीरोंकूं प्राप्तहोवैहैं।तहांजंगमशरीरोंविषेभी पुण्यपापकर्मकी न्यूनअधिकताकरिकै यहजीव ब्रह्मातैंआदिलैंकैकीटपर्यंत शरीरोंकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ तात्पर्ययह ॥ अधिकपुण्यकर्मवालेजीव ऊँचजंगमशरीरोंकूंप्राप्तहोवै हैं॥और अल्पपुण्यकर्मवालेजीव नीचजंगमशरीरोंकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ हेनचिकेता॥जिनजीवोंकेपुण्यकर्मतौ अणुकीन्याईं अत्यंतसूक्ष्महोवै हैं॥और पापकर्मतौ पर्वतकीन्याईं अधिकहोवै हैं॥तेजीवमरणतैंअनंतर वृक्षादिरूपस्थावरशरीरोंकूंही प्राप्तहोवैहैं॥जिनवृक्षादिकशरीरोंविषे केवलदुःखकीहीअधिकताहै।तथा जेवृक्ष गमनआगमनादिकोंविषे स्वतंत्रतातैंरहितहैं॥इसप्रकार पुण्यपापरूपकर्मोंकेअनुसार याजीवोंकूं ऊँचनीचशरीरोंकीप्राप्तिहोवै है॥अब संस्काररूपवासनाविषे याशरीरोंकीकारणतानिरूपणकरै हैं।हेनचिकेता॥यहदेहधारीजीव पूर्वजन्मविषे पितादिकवृद्धपुरुषोंकेमुखतैंजिसपुण्यकर्मकूं अथवा जिसपापकर्मकूं कर्तव्यतारूपकरिकैश्रवणकरै हैं॥तिसीपुण्यकर्मकूंअथवा पापकर्मकूं यहजीवकरैहैं॥ इसप्रकारपुण्यपापकर्मोंकूंकरिकै तेजीव जभी मृत्युकूंप्राप्तहोवैहैं।तभीतेजीव तिसपुण्यपापकर्मकेअनुसारही पुनःजन्मकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ ता जन्मकूंप्राप्तहोइकै यहजीव पूर्वपूर्वकर्मोंकेवासनाअनुसार पुनःपितादिकवृद्धपुरुषोंके मुखतैं श्रवणकरिकै तिसीतिसीपुण्यकर्मोंकूं अथवापापकर्मोंकूं करै हैं॥तात्पर्ययह॥जिनजीवोंनैं पूर्वलेजन्मोंविषे पापकर्मोंकाश्रवणकरिकै तिनपापकर्मोंकूंहीकऱ्याहै॥तिनजीवोंकूं उत्तर उत्तरजन्मोंविषेभी तिनपापकर्मोंकेश्रवणविषे तथा तिनपापकर्मोंकेकरणेविषेही प्रीतिहोवै है ॥ और जिनजीवोंनैं पूर्वजन्मोंविषे पुण्यकर्मकाश्रवणकरिकै तिनपुण्यकर्मोंकूंहीकऱ्याहै ॥ तिनजीवोंकूं उत्तरउत्तरजन्मोंविषेभी तिनपुण्यकर्मोंकेश्रवणविषे तथा तिनपुण्यकर्मोंकेकरणेविषेही प्रीतिहोवै है ॥ और हेनचिकेता ॥ सर्वस्थूलप्रपंचतैं पूर्वउत्पन्नभयाजोहिरण्यगर्भभगवान्है॥ ताहिरण्यगर्भविषे पुण्यकर्मतौ पर्वतकेसमान अधिकरहे हैं॥ और पापकर्मतौ केशकेअग्रकेशतभागसमान अल्परहे हैं ॥ याकारणतैंही श्रुतिविषे ताहिरण्यगर्भकूंभी क्षुधाभयकीप्राप्तिकथनकरीहै ॥ यातैं हिरण्यगर्भकाशरीरभी पुण्यपापदोनोंकरिकैरचितहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ हिरण्यगर्भतैं आदिलैंकै वृक्षादिरूपस्थावरपर्यंत जितनाकीयहजगत् है ॥ सोसंपूर्णजगत् याजीवोंकेपुण्यपापरूपकर्मोंतैं उत्पन्नभया है ॥ और तेपुण्यपापरूपकर्म

पूर्वपूर्वशरीरोंतैं उत्पन्नहोवै हैं॥ और तेपूर्वपूर्वशरीर चेतनआत्मातैंविना संभवैनहीं॥ यातैं तिनपूर्वपूर्वशरीरोंकूं धारणकरणेहारा चेतनआत्मा अवश्यअंगीकारकऱ्याचाहिये ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार पुण्यपापकर्मोंतैं जोसंसारकेउत्पत्तिकावर्णनहै ॥ तासंसारकेवर्णनकाभी आत्माकीसिद्धिविषेही तात्पर्य है॥यातैं तासंसारकेवर्णनकरिकै सोयमराजा जन्मांतरोंविषेआत्माके सत्ताकाकथनकरिकै तानचिकेताकेप्रति सर्वउपनिषदोंकासाररूप जीवब्रह्मकाअभेद कथनकरताभया ॥ शंका॥हेभगवन्॥सर्वउपनिषदोंकासाररूप जोजीवब्रह्मकाअभेदहैसोअभेद तानचिकेतानैं यमराजासैं पूछानहींथा ॥ यातैं विनाहींपूछेतैं सोयमराजा तानचिकेताकेप्रति जीवब्रह्मकेअभेदकाउपदेश किसवासतैंकर ताभया ॥ शिष्यकेपूछेतैंविना उपदेशकरणेका शास्त्रविषे निषेधकऱ्याहै ॥ तहींश्लोक॥ नाऽपृष्टंकस्यचिद्ब्रूयात् नचाऽन्यायेनपृच्छतः॥ जानन्नऽपिहिमेधावी जडवल्लोकमाचरेत् ॥ अर्थयह॥ शास्त्रवेत्ता बुद्धिमान्पुरुष पूछेतैंविना किसीपुरुषकेप्रति शास्त्रकीवार्त्ता कदाचित्भी नहींकहै ॥ और जो पुरुष श्रद्धाभक्तितैंरहितहोइकै केवलपरीक्षाकरणेवासतैंपूछैहै॥अथवा आपणेबुद्धिकीचातुर्यताजनावणेवासतैं पूछेहै॥ तापुरुषकेप्रतिभी सोविद्वान्पुरुष शास्त्रकीवार्त्ताकदाचित्भीनहींकहै ॥ १ ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ तानचिकेतानैं यमराजासैं यद्यपि जीवब्रह्मकाअभेद साक्षात्नहींपूछाथा ॥ तथापि तानचिकेताका जीवब्रह्मकेअभेदकाप्रश्न अर्थतैंसिद्धहोवैहै॥काहेतैंपूर्व यमराजानैं तानचिकेताकेप्रति तीनवरादियेथे।तहां प्रथमवरकरिकै सोनचिकेता पिताकेप्रसन्नताकूं प्राप्तहोताभया॥औरदूसरेवरकरिकै सोनचिकेता अग्निविद्याकूंप्राप्तहोताभया ॥ और तीसरेवरकरिकै संपूर्णब्रह्मविद्याकेप्राप्तिकीइच्छाकरताहुआ सोनचिकेता प्रथम ताआत्मादेवकूं त्वंपदार्थरूपकरिकैपूछताभया ॥ तिसतैंअनंतर तिसीआत्मादेवकूं धर्मअधर्मादिकोंतैंरहित तत्पदार्थरूपकरिकैपूछताभया ॥ ताप्रश्नकरिकै जीवब्रह्मकेअभेदकाप्रश्नभी अर्थतैंहींप्राप्तहोवै है ॥ याप्रकारके तानचिकेताकेआभिप्रायकूंजाणिकरिकै सोयमराजा तानचिकेताकेप्रति जीवब्रह्मकाअभेदरूप महावाक्यकाअर्थ उपदेशकरताभया॥अब ताउपदेशकाप्रकार निरूपणकरै हैं ॥ हेनचिकेता ॥संपूर्णजीवोंकाआत्मा रूपं जोयहस्वयंप्रकाशचेतनपुरुषहै।सोचेतनपुरुष स्वप्नअवस्थाविषे पुत्रगृहक्षेत्रादिकअनेकपदार्थोंकूं उत्पन्नकरैहै।और तास्वप्नअवस्थाविषे

श्रोत्रादिकइंद्रियोंकेलयहुएभी सोआत्मादेव लयभावकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु सोआत्मादेव सर्वअवस्थावोंविषे साक्षीरूपकरिकै जागे है ॥ हेनचिकेता॥इसप्रकार स्वप्नकाद्रष्टारूपकरिकै जोआत्माकास्वरूपहमनैं तुमारेप्रति कथनकऱ्याहै ॥सोहीआत्माकास्वरूप चेतनरूपहोणेते शुद्धस्वरूपहै॥तथा सोईहीआत्माकास्वरूप अद्वितीयब्रह्मस्वरूपहै॥तथा मोक्षरूपहै॥हेनचिकेता भूरादिक जेचतुर्दशलोकहैं॥तथा तिनलोकोंविषे स्थित जे जरायुज, अंडज, स्वेदज,उद्भिज्ज,यहचारिप्रकारकेशरीरहैं॥तेसंपूर्ण याआत्मादेवकेहीआश्रितहैं ॥यातैं सर्वकाआधारहोणेतैं याआत्मादेवकूं ब्रह्मरूपतासंभवै है ॥और हेनचिकेता॥यासंसाररूपसमुद्रके पारकेप्राप्तिकीइच्छावाले जेमुमुक्षुजनहैं ॥ तेमुमुक्षुजन ताआत्माकेस्वरूपकूं उल्लंघनकरिकैजावैनहीं ॥ किंतु तेमुमुक्षुजन यासंसाररूपसमुद्रकेपाररूप ताआत्मादेवकूंही प्राप्तहोवै हैं ॥ काहेतैं याआनंदस्वरूपआत्मातैंभिन्न दूसराकोईपदार्थ मोक्षस्वरूपहैनहीं ॥ किंतु सोआनंदस्वरूपआत्माही मोक्षरूपहै ॥अब इसीआत्माकेस्वरूपका विस्तारकरिकैनिरूपणकरै हैं ॥ हेनचिकेता ॥ यहएकहीआत्मादेव संपूर्णस्थूलशरीरोंविषेस्थितहै ॥ तथा संपूर्णसूक्ष्मशरीरोंविषेस्थितहै॥तथासर्वदेहधारीजीवोंकाआत्मास्वरूपहै॥हेनचिकेता॥जैसेयहअग्नि वास्तवतैंतेजरूपकरिकै यद्यपिकाष्ठोंतैंविलक्षणहै॥तथापि तिनस्थूलकाष्ठोंविषेस्थितहुआ सोअग्नि तिसतिसकाष्ठकेसमानरूपवालाहोवैहै॥तैसे यहआत्मादेव यद्यपिवास्तवतैं सर्वस्थूलशरीरोंतैं विलक्षणहै॥ तथापि देव मनुष्य असुर आदिकोंकेस्थूलशरीरोंविषेस्थितहोइकै यहआत्मादेव तिसतिसशरीरकेसमानरूपवालाहोवै है ॥ और हेनचिकेता ॥ जैसे सूक्ष्मसमष्टिरूपवायु व्यष्टिसूक्ष्मशरीरोंविषेस्थितहोइकै तिसतिससूक्ष्मशरीररूपहोइकै यद्यपि प्रतीतहोवै है ॥तथापि सोसमष्टिरूपवायु ताव्यष्टिसूक्ष्मशरीरोंतैं विलक्षणरूपकरिकैस्थितहोवैहै॥ तैसे यहआत्मादेवभी सूक्ष्मशरीरोंविषेस्थितहोइकै यद्यपि तिससतिसशरीरकेसमानआकारवालाहुआ प्रतीतहोवैहै ॥तथापि सोआत्मादेव वास्तवतैं सत्चित्आनंदरूपहोणेतैं तिनसूक्ष्मशरीरोंतैं विलक्षणही है ॥और हेनचिकेता ॥ जैसे यहसूर्यभगवान् सर्वजीवोंकेनेत्रइंद्रियोंकादेवताहै॥ यातैं सोसूर्यभगवान् देवतारूपकरिकै सर्वजीवोंकेनेत्रइंद्रियोंविषेस्थितहुआभी तिननेत्रइंद्रियोंकेअंधत्वादिकदोषोंकरिकै तथा स्वच्छतादिकगुणोंकरिकै लिपायमानहोवैनहीं॥तैसे यह

आत्मादेवभी साक्षीरूपकरिकै यास्थूलसूक्ष्मशरीरोंविषे विद्यमानहुआभीतिनशरीरोंकेगुणदोषोंकरिकै लिपायमानहोवैनहीं ॥ और हेन चिकेता ॥ जैसे बाह्यआकाशविषेस्थितहुआ यहसूर्यभगवान् दोषवालेसर्वपदार्थोंतैंभिन्नहोइकैप्रतीतहोवैहै॥तैसे यात्हृदयआकाशविषेसा क्षीरूपकरिकैस्थितहुआ यहआत्मादेवभी शास्त्रदृष्टिकरिकै यास्थूलसूक्ष्मशरीरोंतैंभिन्नहोइकैप्रतीतहोवैहै॥ तथातिनस्थूलसूक्ष्मशरीरोंके धर्मोंकरिकैभी लिपायमानहोवैनहीं ॥ और हे नचिकेता ॥ जैसे तिसातिसदेशविषेरहणेहारे जेदेहधारीजीव हैं ॥ तिन जीवोंकूं आ पणेआपणेनेत्रोंकेभेदकरिकै तथातिसतिसदेशकेभेदकरिकै एकहीसूर्य अनेकप्रकारकाप्रतीतहोवै है ॥ परंतु ताएकसूर्यविषे जो नाना पणेकाज्ञानहोवै है ॥ सोज्ञान मिथ्यारूप है ॥ तैसे एकहीयहस्वयंज्योतिआत्मा शरीरादिकउपाधियोंकरिकै नानाप्रकारकाप्रतीत होवैहै ॥ परंतु ताएकअद्वितीयआत्माविषे जोनानापणेकाज्ञानहै ॥ सोज्ञान मिथ्यारूपहै ॥ हेनाचिकेता ॥ जैसे एकसूर्यविषे नाना पणेकूंविषयकरणेहारे जेमिथ्याज्ञान हैं ॥ तिनमिथ्याज्ञानोंकरिकै ताएकसूर्यविषे भेदकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ तैसे एकहीआत्माविषे नानापणेकूंविषयकरणेहारे जेज्ञानहैं॥ तिनमिथ्याज्ञानोंकरिकै ताअद्वितीयआत्माविषे भेदकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ हेनाचिकेता ॥ जैसे वास्त वतैं नानापणेतैंरहित सूर्यभगवान्विषे जोमूढबुद्धिपुरुष नानापणेकूंदेखै है ॥ सो मूढबुद्धिपुरुष लोकोंके उपहासजन्येअनकदुःखोंकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तैसे वास्तवतैं सर्वभेदतैंरहित याआनंदस्वरूपआत्माविषे जोमूढबुद्धिपुरुष भेदकूंदेखै है ॥ सोमूढबुद्धिपुरुष वारंवार जन्ममरणादिकदुःखोंकूं प्राप्तहोवैहै ॥ हे नचिकेता ॥ ऐसाअद्वितीयआत्मादेवयद्यपि वास्तवतैं मायातैंरहितहै॥तथापि सोस्वतंत्रआत्मा देव आपणीमायाशक्तिकरिकै एकहीआपणेस्वरूपकूं बहुतप्रकारकाकरैहै॥ऐसे हृदयदेशविषेस्थित अद्वितीयआत्माकूं जेब्रह्मचर्यादिकसा धनसंपन्नअधिकारीजन गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं साक्षात्कारकरैहैं ॥ तिनअधिकारीपुरुषोंकूंही मोक्षरूपनित्यसुखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और जेपु रुष गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं ताआत्मादेवकूंनहींजानैहैं ॥ तिनअज्ञानीपुरुषोंकूंतौ जन्ममरणरूपदुःखकीप्राप्तिहोवै है ॥ हेनाचिकेता ॥ यालोकविषे नित्यरूपकरिकैप्रसिद्ध जेकालआकाशादिकहैं ॥ तिनकालादिकोंविषेभी यहआत्मादेव आपणीसत्तादेकरिकै नित्यता

॥ ४८ ॥

सिद्धकरै हैं ॥ यातैं यहआत्मादेव नित्यपदार्थोंकाभी नित्यस्वरूप है ॥ और यालोकविषे चैतन्यरूपकरिकैप्रसिद्ध जे नेत्रादिकइंद्रिय हैं ॥ तथा तिनइंद्रियोंतैं उत्पन्नभई जेअंतःकरणकीवृत्तियां हैं ॥ तिनोंविषे आपणेचिदाभासकीप्रातिकरिकैयहआत्मादेवही चेतनता कीसिद्धिकरै है ॥ यातैं यहआत्मादेव चेतनपदार्थोंकाभी चेतनस्वरूपहै ॥ हेनचिकेता ॥ जिसपरमात्मादेवकूंसाक्षात्कारकरिकै यहअधि कारीजन नित्यसुखकूंप्राप्तहोवै हैं॥ और जोएकहीपरमात्मादेव सर्वजीवोंकूं मनवांछितपदार्थोंकीप्राप्तिकरै है ॥ तथा सर्वदुःखोंकी निवृत्ति करै है॥तिसपरमात्मादेवका यह हीस्वरूपहै॥ जोसर्वप्राणियोंकेहृदयदेशविषेस्थित स्वयंज्योतिचेतनहै ॥ तथा मनवाणीकाअविषयहै ॥ हेनाचिकेता ऐसेअद्वितीयआत्मादेवका स्वरूपभूत जोनित्यसुखहै॥ सोआत्मारूपनित्यसुख यद्यपि मनवाणीकाअविषयहै तथापि जेमहा त्माविद्वान्पुरुष आपणेअनुभवविषे प्रीतिवाले हैं ॥ तेमहात्मापुरुष ताआत्मरूपसुखकूं अपरोक्षरूपकरिकैजानै हैं॥अब ताआत्मारूप नित्यसुखविषे वाणीकीअविषयता बोधनकरणेवासतै प्रथम विषयजन्यसुखविषेभी वाणीकीअविषयता कथनकरै हैं ॥ हेनचिकेता ॥ या देहधारीजीवोंविषे मिष्टअन्नकेभोजनादिकोंकरिकै उत्पन्नभयाजोसुख है॥ताविषयजन्यसुखकूंभी कोईपुरुष साक्षात्वाणीकरिकैकहिसक्ता नहीं ॥ और जोकदाचित् तेलौकिकपुरुष ताविषयजन्यसुखका कथनभीकरै हैं ॥ तौभी हमारेकूंसुखप्राप्तभयाहै याप्रकारसामान्यरूपतैं तासुखकाकथनकरै हैं ॥ परंतु इसप्रकारका हमारेकूंसुखभया है याप्रकार विशेषरूपकरिकै ता सुखके कहणेविषे कोईभी पुरुष समर्थहोवै नहीं॥किंतु तेलौकिकपुरुष ताविषयजन्यसुखकेस्वरूपविषे किसीपदार्थकीसादृश्यता आरोपणकरिकैही ताविषयजन्यसुखकाकथनकरै हैं परंतु ताविषयजन्यसुखकूं कोईपुरुष साक्षात्कहिसक्तानहीं ॥ यातैं यालोकविषे जितनाकीविषयजन्यसुखहै ॥ सोसंपूर्णसुख वाणीकरिकै कह्याजावैनहीं॥किंतु सोसुखआपणेअनुभवकरिकैही जान्याजावैहै॥हेनचिकेता॥जभी लौकिक विषयजन्यसुखभी वाणीकरिकै नहींकह्या जावैहै॥तभी मनुष्य मनुष्यगंधर्व देवगंधर्व पितर आजानजदेव कर्मजदेव इंद्रबृहस्पति विराट्हिरण्यगर्भ इनसंपूर्णैविषे पूर्वपूर्वकीअपेक्षाक रिकै उत्तरउत्तर शतगुणअधिकआनंदहोवैहै तिनसंपूर्णोंविषेजोहिरण्यगर्भकूंविषयजन्यसुखहोवै है॥तासुखतैंअधिकसुख किसीकूंभीहोवैनहीं

किंतुसोहिरण्य गर्भकासुख सर्वविषयजन्यसुखोंका अवधिरूपहै ऐसाहिरण्यगर्भकाविषयजन्यसुखभी जिसब्रह्मानंदरूपसमुद्रका एकबिंदुमात्रहै ॥ ऐसाब्रह्मानंदरूपनित्यसुख वाणीकरिकैनहींकह्याजावै है याकेविषे क्याकहणाहै॥ हेनचिकेता॥सोआत्मारूपनित्यसुख मनवाणीका अविषयहै॥याकारणतैंही ब्रह्मवेत्तागुरुतथावेदकीश्रुतियां तानित्यसुखकेसाक्षात्कथनकरणेविषे नसमर्थहोइकै याअधिकारीजनोंकेप्रति तानित्यसुखकूं सामान्यतैं प्रियतमरूपकरिकै वर्णनकरैहैं॥ हेनचिकेता॥इसप्रकार प्रियतमरूपकरिकै गुरुशास्त्रनैंकथनकऱ्या जोआत्मारूप नित्यसुखहै॥ तानित्यसुखकूं मैंकिसप्रकारसाक्षात् अनुभवकरौं याप्रकारकीइच्छाकरताहुआ यहअधिकारीपुरुष आपणेमनविषे याप्रकारकाविचारकरै ॥अबताकेविचारकानिरूपणकरैहैं ॥ ताआत्मारूपनित्यसुखकेआवरणकीनिवृत्तिकरणेहारा जोआत्माकाज्ञानहै॥ ताआत्मज्ञानकरिकैयुक्ततथाविषयोंविषे रागरूपप्रतिबंधकतैंरहित ऐसाजो मैंअधिकारीजनहूं ॥ तिसमेरेकूं सोआत्मारूपनित्यसुख यथार्थ प्रतीतहोवैहै ॥ अथवा विपरीतप्रतीतहोवैहै ॥याप्रकारकाविचार सोअधिकारीपुरुषकरै॥शंका॥हेभगवन्॥वाणीकीअविषयतारूपलक्षण करिकैही सोनित्यसुख जानणेकूंयोग्यहै ॥ यातैं ताविचारकरणेकाकछुप्रयोजननहीं है॥ समाधान॥ हेनचिकेता॥वाणीकीअविषयतारूप लक्षण जैसे आत्मारूपनित्यसुखविषेरहेहै ॥ तैसे विषयजन्यसुखविषेभी सोलक्षणरहेहै ॥ यातैं अतिव्याप्तिरूपदोषवाले तालक्षणतैं आत्मारूपनित्यसुखकाज्ञानहोइसकैनहीं ॥ यातैं सोआत्मारूपनित्यसुख मेरेकूं यथार्थप्रतीतहोवैहै अथवाविपरीतप्रतीतहोवै है याप्रकारका विचारकरणा युक्त है ॥ किंवा ॥ कर्त्ता कर्म करण संप्रदान अपादान अधिकरण यहषट्प्रकारकेजेकारकहैं तथा पदार्थोंका जोपरस्पर संबंधहै ॥ तथा गमनादिकजेक्रियाहैं ॥ यहसंपूर्ण जिसपदार्थविषेप्राप्तहोवै हैं ॥ तिसपदार्थविषे भेदभीअवश्यहोवैहै ॥ भेदकूंछोडिकै यह कारकादिकपदार्थ रहैनहीं ॥ और जोजोपदार्थ भेदवालाहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ वस्तुपरिच्छेदवालाहोवैहै ॥और जोजोपदार्थ परिच्छिन्न होवैहै ॥ सोसोपदार्थ मुख्यसुखरूपहोवैनहीं ॥ काहेतैं श्रुतिनैं व्यापक वस्तुकूंहीं सुखरूपकह्याहै ॥ तहांश्रुति ॥ योवैभूमातत्सुखं ॥ अर्थ यह जोवस्तु सर्वत्रव्यापकहै सोवस्तुही सुखरूपहोवैहै ॥ १ ॥ किंवा जोसुख भेदवालाहोवै है ॥ सोसुख जन्ममरणादिकविकारोंकरिकै

ग्रस्तहीहोवै है॥ ऐसेजन्ममरणादिकविकारोंवालेसुखविषे सामान्यतैं सुखरूपताही संभवैनहीं ॥ जभी ताजन्मादिकविकारवालेसुखविषे सामान्यतैंसुखरूपताही नहींसिद्धभई ॥ तभी ताविषयजन्यसुखविषे परमसुखरूपता किसप्रकारसंभवैगी ॥ यातैं सोविषयजन्यपरिच्छिन्न सुख केवलदुःखरूपही है ॥ किंवा ॥ ताविषयजन्यसुखविषे जोलोकोंकूं सुखबुद्धिहोवै है ॥ साबुद्धि भ्रांतिरूपही है ॥ काहेतैंजोवस्तु आदिकालविषे तथाअंतकालविषे दुःखरूपहोवै है ॥ सोवस्तु मध्यकालविषे सुखरूप किसप्रकारहोवैगा ॥ किंतु सोवस्तु मध्यकालविषेभीदुःखरूपहीहोवै है ॥ तैसे यहविषयजन्यसुखभी जिसकालविषे यापुरुषोंकूं नहींप्राप्तहोवै है तिसकालविषे तिनपुरुषोंकूं इच्छाकीउत्पत्तिद्वारा दुःखकीप्राप्तिकरै हैं और जिसकालविषे यहविषयजन्यसुख नाशकूंप्राप्तहोवै हैं तिसकालविषे तेविषयजन्यसुख आपणेवियोगकरिकै तिनपुरुषोंकूंदुःखकीप्राप्तिकरै हैं इसप्रकार आदिअंतःकालविषे दुःखरूपहोणेतैं यहविषयजन्यसुख वर्तमानकालविषेभी दुःखरूपही है ॥ परंतु जैसे वातरोगवालेपुरुष दुःखरूपमुष्टिकादिकोंकेप्रहारकूंभी सुखरूपकरिकैमाने हैं तैसे विषयासक्तमूढपुरुषभी तादुःखरूपविषयजन्यसुखकूं सुखरूपकरिकैमाने हैं॥यातैं यहअर्थासिद्धभया ॥ जोवस्तु पूर्वउक्तकारकादिकोंकीअपेक्षातैंविनाही विद्यमानहोवै है ॥ सोवस्तुही परम सुखरूपहोवै है ॥ सोऐसावस्तु यहआनंदस्वरूपआत्माही है॥यातैं यहआनंदस्वरूपआत्माही परमसुखरूपहै ॥ तिसतैंभिन्न यहसंपूर्णअनात्मपदार्थ दुःखरूपही है ॥ ऐसाजोआत्मारूपपरमसुखहै॥ सो स्वप्रकाशचैतन्यरूपही है॥ और जोस्वप्रकाशरूपचैतन्य है ॥ सोपरमसुखरूपही है ॥इसप्रकार जभी तासुखप्रकाशका परस्पर अभेदसिद्धहोवै है ॥ तभीही सोआत्मास्वरूपपरमसुख याजीवोंकूं सर्वदाप्रतीतहोवै है ॥ चैतन्यरूपप्रकाशकेसंबंधतैंविना तासुखकीसर्वदाप्रतीतिसंभवैनहीं ॥ किंवा ॥ सोआत्मारूपपरमसुख जो कदाचित् जीवोंकूंनहींप्रतीतहोताहोवै ॥ तौ आपणेआत्माविषे सर्वजीवोंकी निरतिशयप्रीति नहींहोणीचाहिये ॥ और सर्वजीवोंकी आपणेआत्माविषे निरतिशय प्रीति देखणेमेंआवै है॥यातैं यहजान्याजावै है ॥ सोआत्मारूपसुख यासर्वजीवोंकूं प्रतीतहोवै है॥किंवा ॥ विषयकीप्राप्तिकालविषे मेरेकूं सुखप्रतीतहोवै है याप्रकारकेजेज्ञान लोकोंकूंहोवै हैं ॥ तिनज्ञानोंविषे अन्यवस्तुमेंअन्यवस्तुकाआरोपणरूपअध्यासही वर्त्तमानहै॥ तात्प

र्यग्रह॥विषयकेसंबंधतैं उत्पन्नभईजोअंतःकरणकीवृत्तिहै ॥ तावृत्तिविषे आत्मास्वरूपसुखका आरोपणकरिकैही तेमूढलोक मेरेकूं याविष
यतैंसुखप्राप्तहोवै है याप्रकारकाकथनकरै हैं ॥ जैसे कामीपुरुषोंकूं स्त्रीकीप्राप्तिकालविषेता केइच्छाकीनिवृत्तिकरिकै अभिव्यक्तभयाजोस्व
रूपसुखहै ॥ तासुखकूं निंदितस्त्रीकेशरीरविषेआरोपणकरिकै तेकामीपुरुष तास्त्रीकूंसुखरूपकहे हैं॥ तहां सोआत्मारूपसुख जोकदाचित्
याजीवोंकूं नहीं प्रतीतहोताहोवै ॥ तौ तासुखकाअन्यपदार्थोंविषेआरोपण नहींहोणाचाहिये॥ और तासुखका अन्यपदार्थोंविषेआरोपण
देखीताहै ॥ यातैं यहजान्याजावै है ॥ सोआत्मास्वरूपसुख सर्व जीवोंकूं सर्वकालविषेप्रतीतहोवै है ॥ और जिसकालविषे याजीवोंकूं
अत्यंतदुःखहोवै है॥तिसकालविषेभी तेजीव किसीसुखकूंआश्रयणकरिकैही जीवै हैं ॥ सुखतैंविना किसीभीप्राणीका जीवन होवैनहीं ॥
हेनाचिकेता ॥ जे विरक्तमहात्मापुरुष इसप्रकार वारंवार विचारकरै हैं ॥ तिनमहात्मापुरुषोंकूं सोमनवाणीकाअविषयरूपपरमसुख कराम
लककीन्याईं स्पष्टप्रतीतहोवै है ॥ हेनाचिकेता ॥ जैसे यालोकविषे सूर्यभगवान्केउदयहुए रात्रि निवृत्तहोइजावै है ॥ तैसे ब्रह्मानंदरूप
सूर्यकाहैउदयजिसविषे ऐसीजाब्रह्माकारवृत्ति है ॥ तात्रह्माकारवृत्तिकेउत्पन्नहुए यहसंसारदुःखरूपरात्रि निवृत्तहोइजावै है ॥ तात्पर्ययह ॥
जैसे सूर्यभगवान् उदयाचलपर्वतऊपर आरूढहोइकै रात्रिरूपअंधकारकीनिवृत्तिकरै है ॥ तैसे यहआनंदस्वरूप स्वयंज्योतिआत्मारूप
सूर्यभी अंतःकरणकीवृत्तिरूपउदयाचलपर्वतऊपरआरूढहोईकै मायारूपअंधकारकानाशकरै है ॥ हेनाचिकेता ॥ ऐसेस्वयंज्योतिआनं
दस्वरूपआत्माकूं सूर्य चंद्रमा तारागण विद्युत् अग्नि इत्यादिकतेज प्रकाशकरिसकैनहीं ॥ किंतु उलटा सोस्वयंज्योतिआत्मादेवही
तिनसूर्यादिकोंकूंप्रकाशकरै है॥हेनाचिकेता ॥ जैसे स्वभावतैंअप्रकाशरूप लोहकापिंड प्रकाशमानआग्निकूंआश्रयणकरिकै पश्चात् प्रका
शमानहोवै है ॥ तैसे यहजडचेतनरूपजगत्भीताप्रकाशरूपआत्माकूंआश्रयणकरिकैही पश्चात् प्रकाशमानहोवै है ॥ और हेनाचि
केता ॥ जैसे स्वभावतैंप्रकाशशक्तितैंरहित जे तैलवत्तीआदिकपदार्थ हैं ॥ ते तैलवत्तीआदिकपदार्थ दीपशिखाकेप्रकाशतैंअनंतरही
प्रतीतहोवै हैं ॥ तैसे स्वभावतैंप्रकाशशक्तितैंरहित जितनाकीबुद्धिआदिकजगत्है॥ सोसंपूर्णजगत्भी स्वयंज्योतिआत्माकेप्रकाशतैंअनं

तरही प्रतीतहोवै है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जोपदार्थ अप्रकाशमानहोवै है॥सोपदार्थही आपणेप्रकाशवासतै दूसरेप्रकाशकीअपेक्षाकरै
है ॥ जैसे घटादिकपदार्थ अप्रकाशमानहैं ॥ यातैं तेघटादिक आपणेप्रकाशवासतै सूर्यादिकप्रकाशोंकीअपेक्षाकरै हैं ॥ और यहसूर्या
दिकतेजतो आपहीप्रकाशरूपहै ॥ यातैं तिनसूर्यादिकतेजोंकूं दूसरेकिसीप्रकाशकीअपेक्षासंभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेनचिकेता ॥ एक
प्रकाशकूं दूसरेप्रकाशकीअपेक्षानहींहोवै है ॥ याप्रकारकानियम सर्वत्रसंभवैनहीं ॥ काहेतैं जैसे तेजरूपजोचक्षुइंद्रिय है ॥ सोचक्षुइंद्रिय
सूर्यरूपतेजकीअपेक्षाकरिकैही घटादिकपदार्थोंकूंप्रकाशकरैहै ॥ तैसे यहसूर्यादिकतेजभी तास्वयंज्योतिआत्माकीअपेक्षाकरिकैही पदा
र्थोंकूंप्रकाशकरै हैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जडतेजरूपकरिकै सूर्यकेसमानजातिवालाजोचक्षुइंद्रियहै ॥ सोचक्षुइंद्रियभी जभी घटादिकपदार्थों
केप्रकाशकरणे वासतै सूर्यादिरूपजडतेजकीअपेक्षाकरै है ॥ तभी जडरूपकरिकै चैतन्यआत्मातैंविलक्षण जेसूर्यादिकतेज हैं ॥ तेसूर्या
दिकजडतेज आपणेव्यवहारकीसिद्धिवासतै चैतन्यरूपप्रकाशकीअपेक्षाकरै हैं याकेविषेक्याकहणाहै॥इतनैंकरिकै ताअद्वितीयआत्मारू
पब्रह्म विषे स्वयंज्योतिरूपता निरूपणकरी ॥ अब तिसीस्वयंज्योतिब्रह्मकूं यासंसारका मूलकारणरूपकरिकै वर्णनकरै हैं ॥ हेनचिके
ता जोसंसाररूप यहस्थूलशरीर पूर्वहमनें तुमारेप्रति एकादशद्वारवालापुररूपकरिकैवर्णनकऱ्याथा ॥ तिसीस्थूलशरीरकूं कोईकवेदवे
त्तामहात्मापुरुष अश्वत्थवृक्षरूपकरिकैवर्णनकरै हैं ॥ हेनचिकेता ॥ पूर्वहमनें तुमारेप्रति जोब्रह्म जगत्काकारणरूपकरिकै तथा स्वयं
ज्योतिआनंदस्वरूपकरिकै तथामोक्षरूपकरिकै वर्णनकऱ्याथा ॥ सोईहीब्रह्म याशरीररूपअश्वत्थवृक्षका मूलरूप है ॥ हेनचिकेता ॥ जो
वस्तु दूसरेदिनविषेस्थितनहींहोवै तावस्तुकानाम अश्वत्थहै ॥ सोयाप्रकारका अश्वत्थशब्दकाअर्थ याशरीरविषेभीघटै है ॥ काहेतैं या
शरीरके एकक्षणपर्यंतस्थितिविषेभी बुद्धिमान्पुरुषोंकूं विश्वासहोवैनहीं ॥ तौ दूसरेदिनपर्यंत यहशरीर स्थिररहैगा याकेविषे तिनबुद्धि
मानपुरुषोंकूं किसप्रकार विश्वासहोवैगा ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती यास्थूलशरीरकूं अश्वत्थ यानामकरिकै कथनकरै हैं ॥ हेनचिके
ता ॥ याशरीररूपवृक्षकामूलरूप जोकारणब्रह्म है॥ताकारणब्रह्मरूपमूलकीअपेक्षाकरिकै याशरीररूपअश्वत्थवृक्षकीशाखा नीचेहोवै हैं ॥

तहां पुण्यपापकर्मरूपस्कंधोंतैं उत्पन्नभयेजेनानायोनियोंकेशरीरहैं ॥ तथा नेत्रादिकइंद्रियोंकेसहित जे सूक्ष्मशरीरहैं ॥ यहसंपूर्ण ताशरीररूपअश्वत्थवृक्षकीशाखारूप हैं ॥ और हेनचिकेता ॥ जैसे यहलोकप्रसिद्धवटादिकवृक्ष यद्यपि स्वरूपतैंअनित्य हैं ॥ तथापि तेनवटादिकोंकेबीजतैंअंकुरहोवै है ॥ और ताअंकुरतैंपुनःबीजहोवै है ॥ ताबीजतैंपुनःअंकुरहोवै है ॥ याप्रकार बीजअंकुरोंकेप्रवाहरूपकरिकै तेवटादिकवृक्ष नित्यरूप हैं॥तैसे यहशरीररूपअश्वत्थवृक्षभी यद्यपि स्वरूपतैंअनित्यही है॥ तथापि ताशरीरतैं पुण्यपापकर्मोंकीउत्पत्ति और तापुण्यपापकर्मोंतैं पुनःशरीरकीउत्पत्ति याप्रकारकेप्रवाहरूपकरिकै यहशरीररूपअश्वत्थवृक्ष नित्यरूपही है ॥ हेनचिकेता ॥ याशरीररूपअश्वत्थवृक्षका जोब्रह्मरूपमूल है ॥ तिसीब्रह्मविषे यहसंपूर्णलोक स्थितहोवै है ॥ और तिसीब्रह्मकूं कोईपुरुष उल्लंघनकरिसकै नहीं ॥ ऐसेअधिष्ठानरूपब्रह्मकेज्ञानतैंही याशरीररूपअश्वत्थवृक्षकानाशहोवैहै ॥ और जोपूर्वतुमनैं धर्मअधर्मतैंरहितवस्तुपूछाथा॥सोभी यहआनंदस्वरूपब्रह्मही है ॥ और हेनचिकेता ॥ यहसंपूर्णजगत् जिसकारणरूपपरमात्माविषेस्थितहोइकै आपणेआपणेव्यापारविषे प्रवर्त्तहोवै है ॥ और जिसपरमात्मादेवतैं यहसंपूर्णजगत् उत्पन्नहोवै है ॥ सोईहीपरमात्मादेव मृत्युरूपहोइकै यासर्वजगत्कासंहारकरै है ॥ याकारणतैं इंद्रकेवज्रकीन्याईं सोपरमात्मादेवही संपूर्णदेहाभिमानी जीवोंकेभयकाकारण है ॥ ऐसेपरमात्मादेवकूं जेअधिकारीपुरुष आपणाआत्मारूपकरिकै साक्षात्कारकरै हैं ॥ तेअधिकारीपुरुषही मोक्षरूपअमृतभावकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ हेनचिकेता ॥ तापरमात्मादेवकूं आपणाआत्मारूप जाणिकरिकै यहअधिकारीपुरुष अमृतभावकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ याकहणेका यहअभिप्रायहै ॥ जैसे यह अग्नि यद्यपि आपणेतैंभिन्नकाष्ठादिकपदार्थोंकूं दग्धकरै है ॥ तथापि सो अग्नि आपणेकूंदग्धकरैनहीं ॥ तैसे सोपरमात्मादेव यद्यपि मृत्युरूपहोइकै सर्वजगत्कूंनाशकरै है ॥ तथापि आपणाआत्मारूप जेब्रह्मवेत्तापुरुष है ॥ तिनब्रह्मवेत्तापुरुषोंकूं सोपरमात्मादेव नाशकरै नहीं ॥ याकारणतैं तेब्रह्मवेत्तापुरुष अमृतरूप हैं ॥ अब तापरमात्मादेवविषे सर्वलोकोंकेभयकीकारणता निरूपणकरै हैं ॥ हेनचिकेता ॥ यातीनलोकोंविषे यहसूर्यभगवान् तथा अग्नि जोप्रकाशकरै हैं ॥ तथा तपतकरै हैं ॥ सोभी तापरमात्मादेवकीभयतैंहीकरै हैं ॥ और यालोकविषे

इंद्रदेवता जोवर्षाकरै है ॥सोभी तापरमात्मादेवकीभयतैंहीकरै है॥ और यालोकविषे यहवायु जोचलायमानहोवै है॥ सोभी तापरमात्मादेवकीभयतैंही चलायमानहोवै है ॥ और सूर्य अग्नि इंद्र वायु याचारोंकीअपेक्षाकरिकै पंचमाजोंमैंमृत्युहूं ॥ सो मैं मृत्यु जोजीवोंकेशरीरतैंप्राणोंकूंहरणकरताहूं सोभी तापरमात्मादेवकीभयतैंही करताहूं ॥ तात्पर्ययह ॥ सूर्य अग्नि इंद्र वायु यमराजा इत्यादिकमहान्देवताभी जभी तापरमात्मादेवतैं भयकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ तभी दूसरेजीव तापरमात्मादेवतैंभयकूंप्राप्तहोवैहैं याकेविषेक्याकहणाहै ॥ हेनाचिकेता॥ ताभयके निवृत्तिकाउपाय एकआत्मज्ञानहीं है ॥ आत्मज्ञानतैंविना दूसराकोईउपाय ताभयकेनिवृत्तिकाहैनहीं ॥ यातैं जिसअधिकारीपुरुषकूं तामृत्युतैंभयहोताहोवै ॥ तिसअधिकारीपुरुषनैं इसीजन्मविषे ताआत्मसाक्षात्कारकूंसंपादनकरणा ॥ यहवार्ता अन्यशास्त्रविषे भीकहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ मृत्योर्बिभेषिकिंमूढ भीतंमुंचतिकिंयमः ॥ अजातंनैवगृह्णाति कुरुयत्नमजन्मनि ॥ अर्थयह ॥ हे मूढपुरुष तूं मृत्युतैंभय किसवासतैंकरताहै ॥ भयकरणेहारेपुरुषकूं सोयमराजा क्याछोडिदेवैगा ॥ किंतु नहींछोडेगा ॥ काहेतैं याजगत्विषे जिसजीवकाजन्महोवै है ॥ तिसजीवकूं सोयमराजा कदाचित्भीनहींछोडता॥ और याजगत्विषे जिसजीवकाजन्मनहींहोवै है॥ तिसजीवकूं सोयमराजा ग्रहणकरतानहीं॥यातैं जोतुमारेकूं तामृत्युतैंभयहोताहोवै॥तौ तूं ऐसायत्नकराजिसकरिकै तुमारेकूं पुनःजन्मकीप्राप्तिनहींहोवै॥१॥ हेनाचिकेता॥ याभारतखंडविषे अधिकारीमनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोइकैभी जिनपुरुषोंकूं याशरीरकेमरणतैंपूर्व आत्माकासाक्षात्कार नहींप्राप्तभया॥तेअज्ञानीपुरुष आपणेपुण्यपापकर्मोंकेअनुसार भूमिआदिकसर्वशुभअशुभलोकोंविषे नानाप्रकारकेऊँचनीचशरीरोंकूंप्राप्तहोवै है॥ कैसेहैंतेसर्वशरीर ॥ मृत्युकेभयकरिकैयुक्तहैं तथा अनेकप्रकारकेदुःखोंकरिकैयुक्त हैं ॥ और हेनाचिकेता ॥ जैसे शुद्धदर्पणविषे यहमुखस्पष्टप्रतीतहोवै है॥ तैसे विवेकादिकचतुष्टयसाधनसंपन्न याअधिकारीशरीरविषे अंतर्मुखशुद्धबुद्धिविषे यहआत्मादेव स्पष्टप्रतीतहोवै है॥ और जैसे स्वप्नअवस्थाविषे याजीवोंकूं आपणेआत्माकास्वरूप स्पष्टप्रतीतहोवैनहीं॥तैसे स्वर्गलोकविषे रमणीकभोगोंके आसक्तिवाली बुद्धिविषे यहआत्मादेव स्पष्टप्रतीतहोवैनहीं॥और हेनाचिकेता॥ जैसे वास्तवतैं कंपादिकधर्मोंतैं रहित जोमुखहै॥ सोमुख कंपायमानजल

विषे कंपादिकविपरीतधर्मवालाहुआप्रतीतहोवै है ॥ तैसे गंधर्वलोकविषेभी भोगासक्तपुरुषोंकूं यहआत्मादेव विपरीतरूपकरिकैही प्रतीत होवै है ॥ इसप्रकार दूसरेलोकोंविषेभी यहआत्मादेव यथार्थरूपकरिकै प्रतीतहोवैनहीं ॥ हेनचिकेता ॥ तिनगंधर्वादिकलोकोंविषे रहणे हारेपुरुष विषयभोगोंविषे अत्यंतआसक्तहोवै हैं ॥ यातैं तिनपुरुषोंकूं जोकदाचित् आत्माकाज्ञान होवैभी है ॥ तौभी विषयासक्तिरूप प्रतिबंधककेवशतैं सोज्ञान आत्माकेवास्तवस्वरूपकूं विषयकरैनहीं॥याकारणतैं ताज्ञानकरिकै तिनपुरुषोंके अविद्याकीनिवृत्तिहोवैनहीं॥ यातैं स्वर्गादिकलोकोंविषे आत्मज्ञानकेप्राप्तिकीइच्छाकरिकै याअधिकारीपुरुषोंनैं इहां पुरुषार्थ तैंरहितनहींहोणा ॥ और हेनचिकेता ॥ जैसे छाया तथाआतप यहदोनों भिन्नभिन्नहोइकैप्रतीतहोवै हैं ॥ तैसे ब्रह्मलोकविषे यद्यपि याजीवोंकूं सोआत्मादेव देहादिकोतैंभिन्नरूप करिकै स्पष्टप्रतीतहोवै है ॥ तथापि सोब्रह्मलोक बहुतकालपर्यन्त उपासनाकरिकै याजीवोंकूं प्राप्तहोवै है ॥ याकारणतैं सो ब्रह्म लोक अत्यंतदुर्लभहै ॥ यातैं ताब्रह्मलोकविषे आत्मज्ञानकेप्राप्तिकी इच्छाकरिकै याअधिकारीपुरुषोंनैं इहां आत्मज्ञानकेयत्नकूं शिथिल नहींकरणा ॥ किंतु जिसपुरुषकूं मोक्षरूपसुखकीइच्छाहोवै ॥ तिसपुरुषनैं याभारतखंडविषे गुरुशास्त्रादिकसाधनसंपन्न या अधिकारी मनुष्यशरीरविषेही आत्माकेसाक्षात्कारकूंसंपादनकरणा ॥ हेनचिकेता ॥ ताआत्मसाक्षात्कारकी प्राप्तिविषे दो प्रकारकेसाधनहोवै हैं तहां एकतौ विचाररूपसांख्य साधनहै ॥ और दूसरा इंद्रियादिकोंकानिग्रहरूपयोग साधनहै ॥ तहां प्रथम तासांख्यसाधनकूं तू श्रवण कर ॥ आकाशादिकपंचभूतोंतैं भिन्नभिन्नकरिकैउत्पन्नभयेजे आपणेआपणेव्यापारसहित श्रोत्रादिकइंद्रिय हैं ॥ तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं जोचैतन्य आपणेस्वरूपतैं तथापरस्पर भिन्नकरिकैजानै हैं सोबुद्धिकासाक्षीरूपचैतन्य याअधिकारीपुरुषोंकूं आपणाआत्मारूपकरिकै जा नणेयोग्यहै ॥ और जे अधिकारीपुरुष ताचैतन्यरूपसाक्षीकूंही आपणाआत्मारूपकरिकैमानै हैं ॥ तथा सर्वदृश्यप्रपंचकूं ताआत्माविषे कल्पितमानै हैं ॥ ते अधिकारीपुरुषही सर्वशोकोंतैं रहितहोवै हैं॥ ते अधिकारीपुरुषही शास्त्रकेतात्पर्यजानणेहारेविद्वान्हैं॥और हेनचि केता॥पूर्वहमनैं तुमारेप्रति जोआत्मादेव कारणतैंरहित अजरूपकरिकैकथनकऱ्याथा ॥ सोपरमात्मादेव श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रियोंतैं तथा ॥ ६२ ॥

तिनोंकेज्ञानरूपव्यापारोंतैं परे साक्षीरूपकरिकैस्थितहै ॥ तथा सोईहीआत्मादेव वाकादिकपंचकर्मइंद्रियोंतैं तथा तिनोंकेक्रियारूपव्या पारोंतैं परे साक्षीरूपकरिकैस्थितहै ॥ अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकैनिरूपणकरै हैं॥हेनचिकेता॥विशेषरूपवालेश्रोत्रादिकइंद्रियोंतैं सामा न्यरूपवालामन परेहै ॥ और तासविकल्परूपमनतैं निर्विकल्परूपबुद्धि परेहै ॥ और तानिर्विकल्परूपव्यष्टिबुद्धितैं समष्टिबुद्धि परेहै ॥ और तासमष्टिबुद्धितैं अव्याकृत परेहै ॥ और ताअव्याकृततैं सर्वांतर्यामीपुरुष परेहै ॥ कैसाहैसोअंतर्यामीपुरुष ॥ स्थूलप्रपंचरूपकार्य तैंरहितहै ॥ तथा सूक्ष्मप्रपंचरूपकारणतैंरहितहै ॥ और जिसपरमात्मादेवकूं आपणाआत्मारूपजानिकै यहअधिकारीपुरुष मोक्षकूंप्राप्त होवै हैं ॥ तथा अमृतभावकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ हेनचिकेता॥यापरमात्मादेवविषे कार्यसहितअविद्याकीनाशरूपताहै॥ याकारणतैं शास्त्रवेत्ता पुरुष यापरमात्मादेवकूं मोक्षरूपकहैहैं॥और यापरमात्मादेवविषे भासमानआनंदरूपताहै॥ याकारणतैंशास्त्रवेत्तापुरुष यापरमात्मादेवकूं अमृतरूपकहै हैं॥हेनचिकेता॥यद्यपि मोक्षशब्दकाअर्थ तथाअमृतशब्दकाअर्थ यहदोनोंपरस्पर अभिन्नहैं॥तथापि कार्यसहितअविद्याके नाशरूपनिमित्तकूं अंगीकारकरिकै तथापरमानंदतारूपनिमित्तकूं अंगीकारकरिकै तेविद्वान्पुरुष तामोक्षअमृतदोनोंका किंचित्कल्पित भेद अंगीकारकरैहैं॥इतनैंकरिकै विचाररूपसांख्यउपायका वर्णनकऱ्या॥अब इंद्रियादिकोंकेनिरोधरूप योगसाधनकानिरूपणकरै हैं ॥हे नचिकेता ॥ यास्वयंज्योतिआत्मादेवकास्वरूप नेत्रादिकइंद्रियजन्यज्ञानविषे विषयभावकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ याकारणतैं याआनंदस्वरूप आत्मादेवकूं कोईभीपुरुष नेत्रादिकइंद्रियोंकरिकैदेखिसकैनहीं ॥ काहेतैं यालोकविषे जोपदार्थ रूपस्पर्शादिकगुणोंवालाहोवै है॥तापदा र्थकूंही यहनेत्रादिकइंद्रिय ग्रहणकरैहैं रूपादिकगुणोंतैं रहितपदार्थकूं यहनेत्रादिक इंद्रिय ग्रहणकरैनहीं ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा भी रूपस्पर्शादिकगुणोंतैंरहित निर्गुणस्वरूपहै ॥ यातैं यानिर्गुणआत्मादेवकूं तेनेत्रादिकइंद्रिय ग्रहण करिसकैनहीं ॥ यहवार्ता पूर्वहम नैं तुमारेप्रति कथनकरीहै ॥ यातैं यहअधिकारीपुरुष तिननेत्रादिकइंद्रियोंकेनिरोधरूपयोगकरिकै तापरमात्मादेवकूं आपणाआत्मारूप करिकै साक्षात्कारकरै ॥ कैसाहैसोयोग॥संकल्पसहितमनकूंवशकरणेहारी जोअंतर्मुखशुद्धबुद्धिहै ॥ ताशुद्धबुद्धिकरिकै याआनंदस्वरूप

आत्माविषे किंचित्मात्रभी दृश्यपदार्थका नसंकल्पकरिकै जायोगकीउत्पत्तिहोवै है ॥ ऐसे योगरूपउपायकरिकै जेअधिकारीपुरुष ताआनंदस्वरूपआत्माकूं साक्षात्कारकरैहैं॥तेअधिकारीपुरुषही अमृतभावकूंप्राप्तहोवै हैं॥हेनचिकेता।जिसकालविषे याअधिकारीपुरुषोंके श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रिय तथामनबुद्धि आपणेचंचलताकूंछोडिकै निश्चल भावकूंप्राप्तहोवै हैं॥तिसकालविषे तिनोंकेनिश्चलताकूं विद्वान्पुरुष परमगति यानामकरिकैकथनकरै हैं ॥ हेनचिकेता ॥मनबुद्धि इंद्रियोंकी जोनिरंतरएकाग्रताहै॥ताएकाग्रतारूपअवस्थाकीप्राप्तिकेसमान कोईदूसरीअधिकगतिनहीं है ॥ किंतु ताएकाग्रतारूपअवस्थाकरिकै याअधिकारीपुरुषोंकूं स्वयंज्योतिआत्माकासाक्षात्कारहोवैहै॥जिस आत्मसाक्षात्कारकरिकै यहअधिकारीपुरुष किंचित्मात्रभीसंसारदुःखकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ याकारणतैं सामनबुद्धिइंद्रियोंकीएकाग्रताही परमगतिरूपहै ॥ हेनचिकेता ॥ नानाप्रकारकेविघ्नोंकरिकैभी नहींचलायमानभई जोमनबुद्धिइंद्रियोंकीएकाग्रतारूपधारणाहै॥ ताधारणाकूं विवेकीपुरुष योग यानामकरिकैकथनकरैहैं ॥ और सोयोगही ब्रह्मभावकीप्राप्तिद्वारा याजगत्केउत्पत्तिसंहारकरणेकीसामर्थ्यरूप ऐश्वर्य केप्राप्तिकाकारणहै ॥ यातैं तायोगकेप्राप्तिवासतैं तूं प्रमादतैंरहितहोइकै सावधानहो ॥ और हेनचिकेता ॥ मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारका जोजीवब्रह्मकाअभेद ज्ञानरूपयोगहै ॥ सोयोग ताइंद्रियोंकीएकाग्रतारूपधारणातैंविनाहोवैनहीं॥तथा कामसंकल्पादिकचित्तकेवृत्तियोंकी उत्पत्तिरूपप्रमादकेविद्यमानहुएभी सोयोग प्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं जोअधिकारीपुरुष तिनमनबुद्धिसहितइंद्रियोंकेनिरोधकरिकै तथाप्रमादतैंरहितहोइकै ताअभेदज्ञानरूपयोगकूंप्राप्तहोवैहै॥ सोअधिकारीपुरुष परमेश्वरकीन्याईं याजगत्केउत्पत्तिसंहारकरणेविषेभीसमर्थहोवैहै ॥ हेनचिकेता ॥ तायोगरूपउपायतैंविना यहआत्मादेव मनवाणीकरिकै तथा श्रोत्रादिकइंद्रियोंकरिकै प्राप्तहोइसकैनहीं॥ किंतु ताएकयोगरूपउपायकरिकैही यहआत्मादेव प्राप्तहोवैहै ॥ हेनचिकेता ॥ यहआनंदस्वरूपआत्मा जैसे तायोगरूपउपायकरिकै प्राप्तहोवैहै ॥ तैसे श्रद्धारूपउपायकरिकैभी यहआत्मादेव प्राप्तहोवै है ॥ तहां वेदबाह्यनास्तिकोंकेविकल्पोंकापरित्यागकरिकै सद्गुरुशास्त्रकेउपदेशविषे विश्वासराखिकै जोआनंदस्वरूपआत्माकेसत्ताका निश्चयकरणाहै याकानाम श्रद्धाहै ॥ हेनचिकेता ॥ भूत भविष्यत् वर्त्तमान यातीन

कालोंविषे मनवाणीकाविषयरूपकरिकैप्रसिद्ध जितनेकीस्थूलसूक्ष्मपदार्थहैं॥तेसंपूर्णपदार्थ मायाविशिष्टपरमात्मास्वरूपहैं॥और मनवाणीकाअविषय जोशुद्धचैतन्यहै॥सो सत्यरूपहीहै॥याप्रकारकेवचनोंकूंकथनकरणहारे जेआस्तिकपुरुषहैं॥तिनआस्तिकपुरुषोंके मतकापरित्यागकरिकै जेबहिर्मुखपुरुष वेदबाह्यनास्तिकोंकेमतविषेश्रद्धाकरै हैं ॥ तिन बहिर्मुखपुरुषोंकूं आत्माकेवास्तवस्वरूपकासाक्षात्कारहोवै नहीं॥यातैं आत्मसाक्षात्कारकीइच्छावालेपुरुषनैं तिननास्तिकोंकेमतकापरित्यागकरिकै तिनआस्तिकपुरुषोंकेमतविषेही श्रद्धाकरणी ॥ हेनचिकेता॥यद्यपि यहआत्मादेव सत्वरूपधर्मतैंरहितहै॥यातैं सत्शब्दकरिकैभी कथनकऱ्याजावैनहीं॥और यहआत्मादेव सर्वजगत्के व्यवहारकूंसिद्धकरै है॥यातैं असत्शब्दकरिकैभी कथन कऱ्याजावैनहीं ॥ तथापि ताआत्मादेवकेदर्शनविषे शास्त्रवेत्तापुरुषोंनैं याप्रकारकाक्रम कथनकऱ्याहै॥यहअधिकारीपुरुष प्रथमताआत्मादेवकूं जगत्कीकारणतारूप सत्वरूपकरिकैदेखै॥तिसतैंअनंतर यहअधिकारीपुरुष तिसीआत्मादेवकूं तत्वभावरूप शुद्धस्वरूपकरिकैदेखै ॥ इसप्रकार जोअधिकारीपुरुष ताआत्मादेवकूं अस्तिरूपकरिकै तथातत्वभावरूपकरिकै देखै है ॥ तिसअधिकारीपुरुषकेअंतःकरणविषे ताअस्तिरूपआत्माका तत्वभावरूपशुद्धस्वरूप आविर्भावहोवै है॥हेनचिकेता॥निरतिशयप्रीतिका विषयहोणेतैं परमआनंदस्वरूप जोआत्मादेवहै ताआत्मादेवविषे अस्तिरूपताहीहै॥नास्तिरूपता कदाचित्भी नहीं है ॥ यातैं ताआत्मादेवविषे जोअस्तिरूपताहै ॥ साअस्तिरूपता तातत्वभावतैंभिन्ननहींहै॥किंतु साअस्तिरूपता तत्वभावरूपही है ॥ हेनचिकेता ॥ जोआत्मादेव नास्तिरूपताकूंभी सिद्धकरैहै॥ताआत्मादेवकूं नास्तिरूपकहणा संभवैनहीं॥और यहसंपूर्णदृश्यप्रपंच जडरूपहै ॥ यातैं ताद्दृश्यप्रपंचकी स्वतःसिद्धिहोवैनहीं ॥ किंतु ताद्रष्टाआत्माकेअनुग्रहतैंही ताजडप्रपंचकीसिद्धिहोवै है ॥ ऐसासर्वप्रपंचकूंसत्तादेणेहारा यहअस्तिरूपआत्मादेव गौणअस्तिरूपताकरिकै सिद्धहोवैनहीं ॥ किंतु सोआत्मादेवही मुख्यअस्तिरूप है ॥ ताआत्मादेवकेअस्तिरूपताकूंअंगीकारकरिकैही दूसरेअनात्मपदार्थ अस्तिरूपकरिकैप्रतीतहोवै हैं ॥ जैसे गुडकेमधुरताकूंअंगीकारकरिकैही चणकादिकअन्न मधुरप्रतीतहोवै हैं ॥ हेनचिकेता ॥ यालोकविषे जिसपुरुषका जैसावास्तवस्वरूपहोवै है ॥ तिसपुरुषकूं तिसी

वास्तवस्वरूपकरिकै जोपुरुष देखै है तथा कथनकरै है॥तिसपुरुषऊपर सोपुरुष प्रसन्नहोवै है ॥ जैसे महाराजाकूं जो पुरुष महाराजारूपकरिकैदेखे है तथा कथनकरै है ॥ तिसपुरुषऊपर सोमहाराजा प्रसन्नहोवै है ॥ तथा तापुरुषकूं सोमहाराजा सुखकीप्राप्तिकरै है ॥तैसे अस्तिरूपआत्मादेवकूं जोपुरुष अस्तिरूपकरिकैदेखे है ॥ तथा अस्तिरूपकरिकैकथनकरै है ॥ तिसपुरुषऊपर यहआत्मादेव प्रसन्नहोवै है ॥ तथा ता पुरुषकूं यहआत्मादेव मोक्षरूपनित्यसुखकीप्राप्तिकरै है ॥ और जैसे तामहाराजाकूं जो मूढपुरुषकूं महाराजारूपकरिकै नहीं देखे है ॥ तथा महाराजारूपकरिकै नहींकथनकरै है ॥ किंतु तामहाराजाकूंभृत्यरूपकरिकैदेखै है ॥ तथा भृत्यरूपकरिकै कथनकरै है ॥ तिसपुरुषऊपर सोमहाराजा प्रसन्नहोवैनहीं ॥ किंतु उलटा सोमहाराजा क्रोधवान्होइकै तामूढपुरुषकूं दुःखकीहीप्राप्तिकरै है ॥ तैसे अस्तिरूप याआत्मादेवकूं जोमूढपुरुष अस्तिरूपकरिकै नहींदेखे है ॥ तथा अस्ति रूपकरिकै नहींकथनकरै है ॥ किंतु याआत्मादेवकूं नास्तिरूपकरिकैदेखे है ॥ तथा नास्तिरूपकरिकै कथनकरै है ॥ तिसमूढपुरुषऊपर यहआत्मादेव प्रसन्न होवै नहीं ॥ किंतु उलटा यहआत्मादेव ताविपरीतदर्शीपुरुषकूं जन्ममरणादिकदुःखोंकीहीप्राप्तिकरै है ॥ यातैं जिसअधिकारीपुरुषकूं सुखकेप्राप्तिकी इच्छाहोवै ॥ तिसअधिकारीपुरुषनैं याआत्मादेवकूंअस्तिरूपकरिकैही जानणा ॥ तथा अस्तिरूपकरिकैही कथनकरणा ॥ और हमअधिकारीजनोंकेप्रति शास्त्रवेत्ताविद्वान्पुरुषोंनैं प्रथम आत्माकेअस्तिरूपकाउपदेशकरिकै पश्चात् ताआत्माकेतत्वभावकाउपदेशकऱ्या है ॥ यातैं तातत्वभावरूपकरिकैदेख्याहुआ यहआत्मादेव हमअधिकारीजनोंऊपर अवश्यप्रसन्नहोवैगा ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ तात त्वभावरूपकरिकै याआत्मादेवकेदर्शनतैं याअधिकारीपुरुषोंकूं किसफलकीप्राप्तिहोवै है ॥ समाधान ॥ हेनाचिकेता ॥ याजीवकेहृदय विषेस्थितजेकामहैं ॥ तेसंपूर्णकाम जिसकालविषेनिवृत्तहोवै हैं ॥ तिस कालविषे यहजीव अमृतभावकूंप्राप्तहोवै है ॥तथा इसीशरीरविषे ब्रह्मरूपनित्यसुखकूंअनुभवकरै है ॥ यहही तातत्वदर्शनकाफलहै ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकैनिरूपणकरै हैं ॥ हेनाचिकेता॥याजी वोंकेहृदयविषेस्थित जोइसलोककेविषयजन्यसुखोंकारागहै ॥ तथा स्वर्गादिकलोकोंकेविषयजन्यसुखोंकारागहै ॥ तिसरागकानाम काम

है ॥ ऐसे रागरूपकामोंकूं तत्वभावरूपकरिकैदेख्याहुआयहआत्मादेव आपणीसौंदर्यतातैंनाशकरै है ॥ तहांदृष्टांत ॥ जैसे रूपयौवनअवस्थाकरिकैयुक्त कामिनी आपणीसौंदर्यतातैं कामीपुरुषोंके अन्यस्त्रीविषेरागकूं नाशकरै है ॥ और जैसे अग्निविषेतपायाहुआ जोसुगंधिवालानवीनगौकाघृतहै ॥ सोगौकाघृत आपणीसौंदर्यताकरिकै यापुरुषोंके तैलविषेरागकूं नाशकरै है ॥ तैसे तत्वभावरूपकरिकैदेख्याहुआ यहआनंदस्वरूपस्वयंज्योति आत्मादेवभी आपणीसौंदर्यतातैं याजीवोंके विषयसुखविषेरागकूं शीघ्रही नाशकरै है ॥ हेनाचिकेता ॥ याजीवोंका जोविषयजन्य सुखविषेरागरूपकामहै ॥ सोकामही याजीवोंकामरणहै ॥ आर ताकामरूपमरणकूंअंगीकारकरिकैही याजीवोंकूं शास्त्रविषे मर्त्ययानामकरिकैकथनकरै हैं ॥ तारागरूपकामकेनिवृत्तहुए यहजीव मर्त्यभावकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु जीवत अवस्थाविषेही सोपुरुष अमरभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ हेनाचिकेता ॥ शास्त्रकेतात्पर्यकूंजानणेहारे विद्वान्पुरुष यास्थूलशरीरकेनाशकूं मरणकहैनहीं ॥ किंतु सर्वदुःखोंकीप्राप्तिकरणेहारा जोयहरागरूपकाम है ॥ ताकामकूंही तेविद्वान्पुरुष मरणकहे हैं ॥ ताकामरूपमरणकेनिवृत्तहुएतैं अनंतर अमरभावकूंप्राप्तहुआयहपुरुष सर्वदुःखोंतैंरहितजीवनकूं किसवासतैंनहींप्राप्तहोवैगा ॥ किंतु ताजीवनकूं अवश्यप्राप्तहोवैगा ॥ और हेनाचिकेता ॥ आनंदस्वरूपआत्माके साक्षात्कारहुए यहअधिकारीपुरुष किसवासतैंब्रह्मरूपनहींहोवैगा ॥ किंतु आत्मसाक्षात्कारकेहुए यहअधिकारीपुरुष ब्रह्मरूपअवश्यहोवै है॥और सोब्रह्म सर्वदुःखोंतैंरहितहै॥यातैं ताब्रह्मकेसाथ अभेदभावकूं प्राप्तहुआयहजीवात्माभी सर्वदुःखोंतैंरहितहोवै है ॥ और हेनाचिकेता॥ याजीवतकालविषे याआनंदस्वरूपआत्माका जोसाक्षात्कारहै॥ सोसाक्षात्कारही ताब्रह्मकीप्राप्तिहै॥और अन्यवस्तुकेज्ञानकरिकै अन्यवस्तुकीप्राप्तिहोवैनहीं॥यातैं यहआत्मादेव ताब्रह्मतैंभिन्ननहीं है॥ किंतु यहआत्मादेव ब्रह्मरूपही है ॥ और जोकदाचित् सोब्रह्म आत्मातैंभिन्नहोवैगा॥तौ एकमेवाद्वितीयंब्रह्म याश्रुतिविषे जोब्रह्मकीअद्वितीयरूपताकथनकरीहै ॥ सो असंगतहोवैगी ॥ यातैं सोब्रह्म आत्मारूपही है ॥ और हेनाचिकेता ॥ भावअभावतैंरहित तथासर्वभेदतैं रहित ऐसाजोयहस्वयंज्योतिआनंदस्वरूपआत्माहै॥ ताआनंदस्वरूपआत्मादेवकूं यहअधिकारीपुरुषजभी याशरीरविषेसाक्षात्कारकरै है

तभी याअधिकारीपुरुषकूं सोआद्वितीयब्रह्म प्राप्तनहींभयाहै याप्रकारकेवचनकहणेविषे कोनपुरुष समर्थहोवेगा॥ किंतु कोईभीआस्तिकपुरुष तावचनकेकहणेविषे समर्थनहींहोवेगा॥ यातैं यहअर्थ सिद्धभया॥याअधिकारीपुरुषकूं जभी आत्माकेसाक्षात्कारकरिकै सर्वकामोंकी निवृत्तिहोवै है॥तभी यहअधिकारीपुरुष इसीशरीरविषेब्रह्मरूपआत्माकूं प्राप्तहोवै है॥ तथा सर्वदुःखोंतैं रहित अमृत्तभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ और हेनाचिकेता ॥ जिनअधिकारीपुरुषोंकूं मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकाआत्मज्ञान प्राप्त भयाहै ॥ तिन पुरुषोंके संपूर्णसंशय तथाविपर्यय नाशकूं प्राप्तहोवै हैं ॥ याकारणतैं या अधिकारी पुरुषोंनैं ताआत्मज्ञानकूं अवश्य संपादनकरणा अब तिनकुतर्करूप संशय विपर्ययोंका निरूपण करै हैं ॥ यालोकविषे कोई ब्रह्म है नहीं ॥ काहेतैं जो कोई ब्रह्म सत्य होता ॥ तौ हमारेकूंप्रतीत होता ॥ और हमारेकूं सो ब्रह्मप्रतीतहोतानहीं ॥ यातैं सो ब्रह्म है नहीं ॥ किंवा ॥ जो कदाचित सो ब्रह्म प्रसिद्धभी होवै ॥ तौभी सर्व धर्मोंतैंरहित सो निर्गुण ब्रह्मरूप मैं कर्ताभोक्ताजीव किस प्रकार होवैगा ॥ किंतु मैं ब्रह्मरूप नहीं हूं ॥ इसतैंआदिलेकेअनेक प्रकारके संशय विपर्यय याअज्ञानीजीवोंकेहृदयविषे उत्पन्नहोवै हैं ॥ हेनचिकेता ॥ गुरुशास्त्रकेअनुग्रहतैं जिसक्षणविषे याअधिकारीपुरुषोंके तेसंशयविपर्ययरूपहृदयग्रंथियां नाशकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ तिसीक्षणविषे सोअधिकारीपुरुष ताअद्वितीयब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपकरिकै प्राप्तहोवै है॥ जैसे जिसक्षणविषे सूर्यकाउदयहोवै है ॥ तिसीक्षणविषे अंधकारकीनिवृत्तिहोवै है ॥ और याअधिकारीपुरुषोंनैं गुरुशास्त्रकेउपदेशकरिकैभी यहजीवब्रह्मकाअभेदही जानणेयोग्य है ॥ इसतैंपरेकोईवस्तु जानणेयोग्यनहीं है ॥ और हेनचिकेता ॥ याप्रकारकेविचारकरिकै जिनपुरुषोंकूं आत्माकासाक्षात्कार नहींप्राप्तभया है ॥ तिनपुरुषोंकी दोप्रकारकीगति शास्त्रविषेकथनकरी है ॥ तहां एकतौ उपासनाकरिकै ब्रह्मलोककीप्राप्ति ॥ और दूसरा कर्मोंकरिकैस्वर्गादिकलोकोंकीप्राप्ति ॥ यह दोनोंप्रकारकीगति जिननाडीरूपद्वारोंकरिकैहोवै है ॥ तिननाडीरूपद्वारोंकूं तूं श्रवणकर ॥ हेनचिकेता ॥ याहृदयरूपमूलतैं एकऊपरएकशत १०१ प्रधाननाडियां निकसै हैं ॥ तिनसर्वनाडियोंविषे एकसुषुम्नानामानाडीमूर्द्धद्वारकूंभेदनकरिकै सूर्यमंडलद्वारा

ब्रह्मलोकपर्यन्त प्राप्तभई है ॥ याकारणतैंहीं सासुषुम्नानामानाडी ताब्रह्मलोककाद्वाररूप है ॥ जिस सुषुम्नानामानाडीद्वारा यह जीव ब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवै है ॥ और तासुषुम्नानामानाडीकूंछोडिकै दूसरी जो एकशतनाडियां हैं ॥ तिननाडियोंद्वारा याशरीरतैंबाहर निकस्याहुआयहजीवात्माआपणेपुण्यपापकर्मोंकेअनुसारनानाप्रकारकेऊंचनीचशरीरोंकूंप्राप्तहोवै है ॥ तथा मैं यमराजाके वशकूं प्राप्त होवै है ॥ यातैं या अधिकारी पुरुषोंनैं इसी जन्मविषे आत्मसाक्षात्कारकूं अवश्यकरिकै संपादन करणा ॥ अब संपूर्ण कठवल्ली उपनिषद्करिकै निरूपण कऱ्या जो अर्थ है ताअर्थकूं संक्षेपतैं निरूपण करै हैं ॥ हेनचिकेता ॥ अंतःकरणरूप उपाधिकेसंबंधतैं अंगुष्ठ मात्रपरिमाणवाला जो यह आत्मादेव है ॥ सो आत्मादेव अविद्यारूपअंतरकंचुककरिकै तथा सूक्ष्मशरीररूपबाह्यकंचुककरिकै आवृतहुआ यासर्वजीवोंकेहृदयविषे विराजमानहोवै है ॥ कैसाहैसोसूक्ष्मशरीर ॥ अनेकप्रकारकेदुःखोंकाकारण है तथा तासूक्ष्मशरीरविषे स्थितजोचित्तहै ॥ सो चित्तलोहेकेशृंखलाकीन्याईं याजीवोंकेबंधनकाकारणहै ॥ ऐसेसूक्ष्मशरीरतैं तथाअविद्यातैं यह अधिकारी पुरुष ताआत्मादेवकूं विवेकयुक्तशुद्धमनकरिकै भिन्नकरै ॥ जैसे यालोकविषे बालक मुंजरूपबाह्यत्वचातैं इषीकारूपमध्यकेतृणकूं भिन्नकरै हैं ॥ इसप्रकार अविद्यासूक्ष्मशरीरादिक सर्वजडउपाधियोंतैं विचारकरिकैभिन्नकऱ्याहुआ यहआत्मादेव उपाधिकृतपरिच्छिन्नभावकापरित्यागकरिकै आपणेपरिपूर्णस्वरूपकूं प्राप्तहोवै है ॥ और हेनचिकेता॥अंतःकरणादिकउपाधियोंकरिकैयुक्तहुआ यहजीवात्मा मरणतैंअनंतर जैसे मैंयमराजाकेपाशोंकरिकै बंधायमानहोवै है॥ तैसे अंतःकरणादिकउपाधियोंतैं रहितहुआ यहशुद्धआत्मादेव मैंयमराजाकेपाशोंकरिकै बंधायमानहोवै नहीं॥हेनचिकेता॥इसप्रकार स्थूल सूक्ष्म कारण यातीनउपाधियोंतैंरहित तथाजन्ममरणादिकसर्वविकारोंतैं रहित जोस्वयंज्योतिपरमात्मादेवहै ॥ तापरमात्मादेवकूंही तुमनैं आपणाआत्मारूपकरिकै निश्चयकरणा ॥ यहजीवब्रह्मकाअभेदहीं सर्ववेदांत शास्त्रकासिद्धांतहै ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार सोयमराजा तानचिकेताकेप्रति साधनोंसहित संपूर्णब्रह्मविद्याकाउपदेशकरिकै मौनकूंधारणकरताभया ॥ और सोनचिकेताभी ताब्रह्मविद्याकूंश्रवणकरिकै संतोषकूंप्राप्तहोताभया ॥ और ताब्रह्मविद्याके श्रवण

मनन निदिध्यासन करिकै आत्मासाक्षात्कारकूं प्राप्तहुआ सोनचिकेता कृतकृत्यभावकूं प्राप्तहोताभया ॥ और तायमराजाकेउपदेशतैं संपूर्णब्रह्मविद्याकूं प्राप्तहोइकै सोनचिकेता याजीवतअवस्थाविषेही अद्वितीय परब्रह्मकूं प्राप्तहोताभया ॥ कैसाहैसोअद्वितीयब्रह्म स्वयंज्योतिरूपहै॥तथा परमआनंदस्वरूपहै॥ तथा सर्वजीवोंका आत्मारूपहै ॥ ऐसेअद्वितीयब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपजाणिकै सोनचिकेता संपूर्णदुःखशोकोंतैंरहितहोताभया तथा जन्ममरणतैंरहितहोताभया ॥ और प्रारब्धकर्मकी भोगतैंविना निवृत्तिहोवैनहीं ॥ यातैं ताप्रारब्धकर्मोंकरिकैरक्षित जोविक्षेपरूपअविद्याकालेशहै ॥ ताअविद्याकेलेशकी जभी प्रारब्धकर्मकेभोगतैंअनंतर निवृत्तिभई ॥ तभी सोनचिकेता विदेहमोक्षकूंप्राप्तहोताभया ॥ हेशिष्य ॥ जैसे सोनचिकेता आत्मसाक्षात्कारकूंप्राप्तहोइकै जीवन्मुक्तिकूं तथाविदेहमुक्तिकूं प्राप्तहोताभया है ॥ तैसे इदानींकाल विषेभी जो कोईअधिकारीपुरुष ताआत्मसाक्षात्कारकूंप्राप्तहोवैगा ॥ सोअधिकारीपुरुषभी जीवन्मुक्तिकूं तथाविदेहमुक्तिकूं प्राप्तहोवैगा ॥ यातैं याअधिकारीपुरुषोंनैं अवश्यकरिकै ताआत्मसाक्षात्कारकूंसंपादनकरणा ॥ हे शिष्य ॥ यहजोहमनैं तुमारेप्रति यमराजानचिकेताकाआख्यान कथनकऱ्याहै ॥ सोयहआख्यान पूर्व कठनामाऋषि त्रैवर्णिकअधिकारी शिष्योंके प्रति कथनकरताभयाहै ॥ हेशिष्य जीवब्रह्मकेअभेदकूंबोधनकरणेहारी जोयहब्रह्मविद्याहै ॥ सोयहब्रह्मविद्या पूर्व नाचिकेतादिक महान्पुरुष यमराजादिकदेवतावोंतैं प्राप्तहोतेभये हैं॥यातैं यहब्रह्मविद्या अत्यंतदुर्लभहै ॥ याकारणतैंही याब्रह्मविद्याकेकथनकरणेहारे गुरुकूं तथाश्रवणकरणेहारेशिष्यकूं पूर्व यमराजानै आश्चर्यरूपकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ हेशिष्य ॥ ऐसीदुर्लभब्रह्मविद्याकेउपदेशकालविषे ताब्रह्मविद्याकेवक्तागुरुकूं अथवा ताब्रह्मविद्याकेश्रोताशिष्यकूं अथवा गुरुशिष्यदोनोंकूं इंद्रादिकदेवता नानाप्रकारकेविघ्नकरै हैं ॥ यह वार्ता पूर्वचतुर्थअध्यायविषे दध्यङ्ऋषिइंद्रकेसंवादविषे हमनैं विस्तारकरिकै तुमारेप्रति कथनकरीथी॥ हेशिष्य ॥ जिसअधिकारीशिष्य कागुरु ब्रह्मविद्याविषे कुशलनहींहोवै है॥तिसअधिकारीशिष्यकूंही ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिविषे तेदेवता विघ्नकरै हैं॥और जिसअधिकारीशिष्य कागुरु ब्रह्मविद्याकीसंप्रदायविषेकुशलहोवै है॥ तिसअधिकारीशिष्यकूं ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिविषे तेदेवता विघ्नकरिसकैनहीं ॥ यातैं याअधि

॥ ५६ ॥

कारीपुरुषनैं ब्रह्मविद्याकेसंप्रदायजानणेहारेकुशलगुरुतैंही ब्रह्मविद्याकाश्रवणकरणा ॥ हेशिष्य ॥ जिसपुरुषकूं ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिविषे देवता विघ्नकरैहैं॥तिसपुरुषकीबुद्धि पूर्वलेपापकर्मकेयोगतैं विपरीतहोइजावै है॥ताविपरीतबुद्धिकरिकै सोशिष्य आपणेगुरुकेसाथ द्वेषकरै है॥ तागुरुकेद्वेषकरिकै सोशिष्य अनेकप्रकारकेनरकोंकूंप्राप्तहोवै है ॥ और यहअधिकारीशिष्य जभी ताब्रह्मवेत्तागुरुकी शरीर मन वाणी करिकैसेवाकरै है ॥ तभी याअधिकारीशिष्यकूंगुरुकी कृपातैं शीघ्रही आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिहोवै है ॥ और यहअधिकारीशिष्य जभी देवतावोंकीसेवाकरै है ॥ तभी यहअधिकारीशिष्यकूं ताआत्मसाक्षात्कारके निष्ठारूपफलकीप्राप्तिहोवै है ॥ इसप्रकार ब्रह्मवेत्तागुरुकीसेवाकरिकै तथादेवतावोंकीसेवाकरिकै सर्वविघ्नोंतैं रहितहुआ यहशिष्य फलसहितब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोवैहै॥ हेशिष्य ॥ स्वप्रकाशआत्मास्वरूप जोमोक्षरूपफलहै॥तामोक्षरूपफलकीप्राप्तिकूं हम देवतावोंकेअनुग्रहअधीन मानतेहैं॥ यातैं तिनदेवतावोंकीप्रसन्नताकरणेवासतै यामुमुक्षुजनोंनैं शांतिमंत्रोंकापाठ अवश्यकरणा ॥ याप्रकारकावचन सोकठनामाऋषि आपणेशिष्योंकेप्रति कथनकरताभया॥और हेशिष्य॥जैसे सोकठनामाऋषि आपणेशिष्योंकेप्रति याब्रह्मविद्याकाउपदेशकरिकै विघ्नोंकीनिवृत्तिवासतै शांतिमंत्रोंकेपाठकरणेकाउपदेशकरताभयाहै॥तैसे तित्तिरिनामाऋषिभी नानाप्रकारकेआख्यानयुक्त यहब्रह्मविद्या आपणेशिष्योंकेप्रति उपदेशकरिकै ताविघ्नोंकीनिवृत्तिवासतै शांतिमंत्रोंकेपाठकरणेकाउपदेशकरताभयाहै ॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचिते प्राकृतआत्मपुराणे काठकोपनिषत्सारार्थप्रकाशे यमनचिकेतःसंवादोनाम नवमोऽध्यायःसमाप्तः ॥ ९ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

इति श्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषा आत्मपुराणे नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

॥ इति श्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषाआत्मपुराणेनवमोऽध्यायःसमाप्तः॥

॥ अथ स्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषाआत्मपुराणे दशमाध्यायप्रारंभः ॥

ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथ दशमाऽध्यायप्रारंभः ॥ पूर्व नवमअध्यायविषे यजुर्वेदकेकठवल्लीउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ अब दशमअध्यायविषे तिसीयजुर्वेदके तैत्तिरीयकउपनिषद्का अर्थ निरूपणकरे हैं ॥ तहां पूर्वनवमअध्यायविषे यमनचिकेताके अद्भुतआख्यानकूं श्रवणकरिकै सोशिष्य बहुत प्रसन्नहोताभया ॥ और सो शिष्य पुनः आपणेगुरुकेप्रति याप्रकारकाप्रश्न करताभया ॥ शिष्यउवाच ॥ हेभगवन् याआत्मपुराणकेप्रथमअध्यायविषे आपनैं ऋग्वेदकेऐतरेयउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा॥ ताप्रथमअध्यायविषे सनकादिकऋषियोंके तथावामदेवादिकसात्विकीप्रजाके संवा दकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी॥और याआत्मपुराणके द्वितीयअध्यायविषे तथातृतीयअध्यायविषे आपनैं तिसी ऋग्वेदकेकौषीतकिउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तहां द्वितीयअध्यायविषे देवराजइंद्रके तथाप्रतर्दनराजाके संवादकरिकै नाना प्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी॥और तृतीयअध्यायविषे अजातशत्रुराजाके तथाबालाकिब्राह्मणके संवादकरिकै नानाप्रकारकी ब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी ॥ और याआत्मपुराणके चतुर्थ पंचम षष्ठ सप्तम याचारअध्यायोंविषे आपनैं यजुर्वेदके बृहदारण्यकउप निषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तहां चतुर्थअध्यायविषे दोपुरुषवंश एकस्त्रीवंश यातीनवंशोंकेऋषियोंकापरस्परभेद तथाअभेद आप नैं निरूपणकऱ्याथा॥तथा सूक्ष्मदर्शीऋषिनैं जो अश्विनीकुमारोंका गुह्यवृत्तांतकथनकऱ्याथा॥ सोभी आपनैं निरूपणकऱ्याथा ॥ और दध्यङ्अथर्वणऋषिनैं जात्रह्मविद्या देवराज इंद्रकेप्रति तथाअश्विनीकुमारोंकेप्रति उपदेशकरीथी॥सात्रह्मविद्याभी आपनैं कथनकरीथी ॥ और अश्वनीकुमारोंकेप्रति ब्रह्मविद्याकेउपदेशकरणेतैं देवराजइंद्रनैंजिसप्रकार तादध्यङ्ऋषिकामस्तकछेदनकऱ्याथा॥सोवृत्तांतभीआपनैं कथनकऱ्याथा ॥ और याआत्मपुराणकेपंचमअध्यायविषे जनकराजाकेयज्ञविषे याज्ञवल्क्यमुनिके तथाआश्वलादिकअनेकब्राह्मणोंके संवादकरिकै आपनैं नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी॥तथा याज्ञवल्क्यमुनिकेशापकरिकै शाकल्यब्राह्मणकामृत्युभी आपनैंकथनक ऱ्याथा॥तथा सर्वब्राह्मणोंतैं तायाज्ञवल्क्यमुनिकाजय आपने कथनकऱ्याथा॥और याआत्मपुराणकेषष्ठअध्यायविषे याज्ञवल्क्यमुनिके

तथाजनकराजाके दोवारसंवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी॥और याआत्मपुराणकेसप्तमअध्यायविषे याज्ञवल्क्य मुनिके तथा मैत्रेयीस्त्रीके संवादकरिकै नानाप्रकारकी ब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी ॥ तथा याज्ञवल्क्यमुनिकेसंन्यासआश्रमका कथन कऱ्याथा ॥ और याआत्मपुराणके अष्टमअध्यायविषे आपनैं तिसीयजुर्वेदके श्वेताश्वतरउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा॥ ताअष्टमअ ध्यायविषे ब्रह्मवेत्ताब्राह्मणोंके संवादकरिकै तथा श्वेताश्वतरसंन्यासियोंके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी ॥त था याजगत्कारणोंका निरूपणकऱ्याथा॥ और याआत्मपुराणकेनवमअध्यायविषे आपनैं तिसीयजुर्वेदके कठवल्लीउपनिषद्काअर्थ नि रूपणकऱ्याथा ॥ तानवमध्यायविषे यमराजाके तथानचिकेताके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी ॥ हेभगव न् ॥ तानवमअध्यायकेअंतविषे आपनैं याप्रकारकावचन कह्याथा॥जोब्रह्मविद्याकीप्राप्तिविषे इंद्रादिकदेवता अनेकप्रकारकेविघ्नकरे हैं॥ तिनविघ्नोंकीनिवृत्तिवासतै याअधिकारीशिष्यनैं शांतिमंत्रोंकापाठ अवश्यकरणा ॥ याप्रकारकावचन जैसे कठनामाऋषि आपणे शिष्योंकेप्रति कहताभयाहै ॥ तैसे तित्तिरिनामाऋषिभी आपणेशिष्योंकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरिकै तिनविघ्नोंकी निवृत्तिवासतै तिनशांतिमंत्रोंकेपाठकरणेकाउपदेश करताभया है ॥ याप्रकारकावचन आपनैं नवमअध्यायकेअंतविषेकह्याथा ॥ और हेभगवन् याआ त्मपुराणके प्रथमअध्यायतैंलेके नवमअध्यायपर्यंतग्रंथविषे ऐतरेय कौषीतकि आदित्य दध्यङ् अथर्वण याज्ञवल्क्य श्वेताश्वतर कठ यासप्तऋषियोंनैं आपणेआपणेशिष्योंकेप्रति जाजा ब्रह्मविद्या कथनकरीथी ॥ सासंपूर्णब्रह्मविद्या हमनैं आपके मुखतैंश्रवणकरी है ॥ परंतु तातित्तिरिनामाऋषिनैं आपणे शिष्योंकेप्रतिजाब्रह्मविद्या कथनकरीहै ॥ तात्रह्मविद्याकेश्रवणकरणेकी हमारेकूं इच्छाहै ॥ आपकृ पाकरिकै सोब्रह्मविद्या हमारेप्रति कथनकरो॥हेभगवन्॥सोतित्तिरिनामाऋषि नानाप्रकारकेआख्यानयुक्तब्रह्मविद्या आपणेशिष्योंके प्रति कथनकरताभया॥याप्रकारकावचन पूर्वनवमअध्यायकेअंतविषे आपनैं कथनकऱ्याथा॥ताआपकेवचनतैं हमारेकूं ऐसीसंभावनाहोवै है ॥ जोतातित्तिरिऋषिउक्तब्रह्मविद्याविषे कोईअत्यंतविचित्रआख्यानहोवैगा ॥याकारणतैं तात्रह्मविद्याकेश्रवणकरणेविषे हमारेकूंअत्यंतउत्कट

इच्छाहै॥ जोआपकी हमारेऊपरकृपाहोवै॥तौ साब्रह्मविद्या हमारेप्रति उपदेशकरो॥याप्रकाराशिष्यकरिकैपूछाहुआ सोश्रीगुरु ताशिष्यऊ परअत्यंतप्रसन्नहोताभया॥और जोब्रह्मविद्या तित्तिरिऋषिनैं आपणेशिष्योंकेप्रति उपदेशकरीथी॥सासंपूर्णब्रह्मविद्यासोश्रीगुरु ताशिष्यके प्रति कथनकरताभया ॥ कैसीहैसाब्रह्मविद्या ॥ वनविषेपठनकरणेयोग्य जोयजुर्वेदकाब्राह्मणभागहै ताकेविषेस्थितहै॥तथा श्रोतापुरुषके कर्णोंका तथामनका ताप हरणेहारीहै ॥ अब ताब्रह्मविद्याकानिरूपणकरै हैं श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य जाब्रह्मविद्या तित्तिरिनामाऋषिनैं आपणेशिष्योंकेप्रति उपदेशकरी है ॥ सासंपूर्णब्रह्मविद्या मैं तुमारेप्रति कथनकरताहूं ॥ तूं सावधानहोइकैश्रवणकर ॥ हेशिष्य ॥एकका लविषे सुमेरुपर्वतऊपर सर्वऋषियोंकासमाज एकठाहोताभया ॥ तहां तेऋषि परस्पर याप्रकारकासंकेत करतेभये ॥ अमुकदिनविषे जो ऋषि यासमाजविषे नहीं आवैगा ताऋषिकूं ब्रह्महत्याकी प्राप्तिहोवैगी ॥ याप्रकारके तिनऋषियोंके संकेतकूं वैशंपायननामाऋषि भंगकरताभया ॥ और तासंकेतकेभंगकरणेतैं तावैशंपायनकूं ब्रह्महत्याकी प्राप्तिहोतीभई ताब्रह्महत्याके निवृत्तकरणेवासतै सो वैशंपाय ननामाऋषिआपणेयाज्ञवल्क्यादिक शिष्योंके ताईं प्रायश्चित्तकरणेकी आज्ञाकरतभया और तावैशंपायन गुरुकेवचनकूं श्रवणकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि तावैशंपायनगुरुकेप्रति याप्रकारकावचनकहताभया ॥ हे भगवन् आपकीवृद्धअवस्थाहुई है ॥ यातैं ताप्रायश्चित्तकर णेविषे आपकातौ सामर्थ्य है नहीं ॥ और यहआपकेशिष्य असमर्थबालकहैं ॥ यातैं ताप्रायश्चित्तकरणेविषे इनशिष्योंकाभी सामर्थ्य नहीं है ॥ किंतु मैंयाज्ञवल्क्यही ताप्रायश्चित्तकूंकरौंगा ॥ याप्रकारके तायाज्ञवल्क्यमुनिकेवचनकूंश्रवणकरिकै सोवैशंपायननामाऋषि अत्यंतक्रोधवान्होताभया ॥ और सोवैशंपायन तायाज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति याप्रकारकावचनकहताभया ॥ हेयाज्ञवल्क्य तूं सर्वब्राह्मणों कीनिंदाकरणेहाराहै ॥ यातैं जोहमनैं तुमारेप्रति विद्यादई है ॥ सासंपूर्णविद्या तुम शीघ्रही परित्यागकरो ॥ और जोतुम हमारीविद्याका परित्याग नहींकरोगे ॥ तौ मैं शापदेकै तुमारेकूं दग्धकरौंगा ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकावचन जभी तावैशंपायननैं याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति कह्या ॥ तभी सोअष्टांगयोगकेजानणेहारा याज्ञवल्क्यमुनि जैसे पानकरेहुएजलकूं हस्ती बाहरनिकासैहै तैसे सर्वविद्याकापरित्याग

॥ २ ॥

करताभया ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार वैशंपायनगुरुकेवचनकूंअंगीकारकरिकै जभी तायाज्ञवल्क्यमुनिनैं तिनयजुर्वेदकेमंत्रोंकापरित्याग कऱ्या॥तभी अभिमानीदेवतारूपकरिकै सूर्यकीनाईं प्रकाशमान जेयजुर्वेदकेमंत्रहैं॥तेमंत्र भूमिविषेभिन्नभिन्नास्थितहोतेभये॥और तायाज्ञ वल्क्यमुनिनैं वमनकरिकै भूमिविषेपरित्यागकरे जेयजुर्वेदकेमंत्रहैं ॥ तिनप्रकाशमानमंत्रोंकूंदेखिकरिकैतेवैशंपायनकेसंपूर्णशिष्य आश्च र्यकूंप्राप्तहोतेभये॥और तिनशिष्योंकूं आश्चर्यमानहुआदेखिकै सोवैशंपायननामागुरु तिनशिष्योंकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया॥ हेसर्वब्राह्मणो ॥ इसयाज्ञवल्क्यनामाशिष्यनैं शास्त्रकीरीतिप्रमाण इनयजुर्वेदके मंत्रोंका अध्ययनकऱ्याथा ॥ याकारणतैंहीं यहयजु र्वेदकेमंत्र सूर्यकीन्याईं प्रकाशमान प्रतीतहोवैहैं ॥ हेब्राह्मणो॥यहयजुर्वेदकेमंत्र हमब्राह्मणोंका अक्षयधनहै ॥ यातैं यहयजुर्वेदकेमंत्र जैसे याभूमिलोककापरित्यागकरिकै ब्रह्माकीसभाकूं नहीं प्राप्तहोवै ॥ तैसे तुमसंपूर्ण ब्राह्मण शीघ्रही इनमंत्रोंकूंग्रहणकरो ॥ हेब्राह्मणो ॥ यह यजुर्वेदकेमंत्र इसयाज्ञवल्क्यमुनिनैं अन्नकीन्याईं वमनकरे हैं॥यातैं इनवमनकरेहुएमंत्रोंकूं हमब्राह्मण किसप्रकार ग्रहणकरैं ॥ याप्रकारका विचारकरिकै तुमोनैं विलंबनहींकरणा ॥ काहेतैं यद्यपि यामनुष्य शरीरकरिकै वमनकरीहुईवस्तुकूं भक्षणकरणायोग्यनहीं है ॥ तथापि यामनुष्यशरीरतैं भिन्न किसीशरीरकरिकै वमनकरीहुईवस्तु भी भक्षणकरीजावै है ॥ यातैं तुमसंपूर्णब्राह्मण तित्तिरिनामापक्षीकेरूपकूंधा रणकरिकै शीघ्रहीं यामंत्रोंकूंग्रहण करो ॥ हेशिष्य॥याप्रकारकावचन जभी तावैशंपायनऋषिनैं आपणेशिष्योंकेप्रति कह्या॥तभी तेसंपू र्णब्राह्मण तित्तिरिपक्षीकेरूपकूंधारणकरिकै शीघ्रहीं तिनमंत्रोंकूंग्रहणकरतेभये।जैसे यालोकविषेप्रसिद्ध जेतित्तिरिनामापक्षीहैं॥तेतित्तिरिप क्षीजभी क्षुधाकरिकैआतुरहोवैहैं॥तभीभूमिविषेस्थित तथाआकाशविषेस्थित जेपतंगादिकक्षुद्रजंतुहैं तिनजंतुवोंकूं तेतित्तिरिपक्षी भक्षण करै हैं॥तैसे भूमिविषेस्थित तथाआकाशविषेस्थित जो तेयजुर्वेदकेमंत्रथे॥तिनसंपूर्णमंत्रोंकूं तेब्राह्मण तित्तिरिरूपकरिकैग्रहणकरतेभये ॥ याकारणतैंहीं वेदविषे तिनब्राह्मणोंकूं तित्तिरि यानामकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ औरतिनतित्तिरिनामाब्राह्मणोंनैं आपणे शिष्योंके प्रति जा ब्रह्मविद्याउपदेशकरीहै ॥ ताब्रह्मविद्याकूं वेदवेत्तापुरुष तैत्तिरीयकउपनिषद् यानामकरिकैकथनकरै हैं ॥ और याज्ञवल्क्यमुनिनैं

जिनयजुर्वेदकेमंत्रोंकाक्रमनकऱ्याथा॥तिनमंत्रोंकूं तेत्राह्मणतित्तिरिपक्षीकारूपधारणकरिकै भक्षणकरतेभये ॥ याकारणतैं तिनमंत्रोंका कृष्णयजुष यापप्रकारकानामहोताभया ॥ हेशिष्य ॥ तिनयजुर्वेदकेमंत्रोंविषेभी वनविषेस्थितहोइकैपठनकरणेयोग्यजेमंत्रहैं॥तिनमंत्रोंविषे जात्रह्मविद्या कथनकरीहै ॥ तात्रह्मविद्याकूं तूं सावधानहोइकैश्रवणकरो ॥ तहां तातैत्तिरीयकउपनिषद्रूपत्रह्मविद्याविषे दोवल्लीहैं॥एक तौआनंदवल्लीहै ॥ और दूसरी भृगुवल्लीहै ॥ तहां प्रथम आनंदवल्लीकाअर्थ निरूपणकरै हैं ॥ ताआनंदवल्लीविषे प्रथम यहसूत्ररूपवचन कथनकऱ्याहै ॥ ब्रह्मविदाप्नोतिपरं ॥ अर्थयह ॥ ब्रह्मकूंजानणेहारापुरुष परमपदकूंप्राप्तहोवै है ॥ यावचनविषे संपूर्णब्रह्मविद्या स्थितहै॥ याकारणतैं यावचनकूं सूत्ररूपकहे हैं ॥ तहां जोवचन अल्पअक्षरोंकरिकै बहुतअर्थकूंसूचनकरै तावचनकानाम सूत्रहै ॥ अब तासूत्ररूप वचनविषे सर्वअर्थकीसूचकता स्पष्टकरणेवासतै प्रथम विषय प्रयोजन अधिकारी संबंध याचारअनुबंधोंका निरूपणकरै हैं ॥ जिसकेज्ञा नतैं याअधिकारीपुरुषोंकी शास्त्रविषेप्रवृत्तिहोवै है ताकानाम अनुबंधहै ॥ तहां ब्रह्मविदाप्नोतिपरं यासूत्ररूपवचनविषेस्थित जोब्रह्मपद है ताब्रह्मपदकरिकै या तैत्तिरीयकउपनिषद्रूपशास्त्रका विषय कथनकऱ्या है ॥ तहां जाशास्त्रजन्यप्रमाज्ञानकरिकै निवृत्तहोणेयोग्यजोअ ज्ञानहै ॥ ताअज्ञानकरिकै जोपदार्थ आवृत्तहोवै है॥सोपदार्थ ताशास्त्रका विषयहोवै है॥ सो इहांप्रसंगविषे तैत्तिरीयकउपनिषद्रूपशास्त्र करिकैजन्य जोप्रमारूपज्ञानहै ॥ ताज्ञानकरिकैनिवृत्तहोणेयोग्य जो अज्ञानहै ॥ ताअज्ञानकरिकै सोब्रह्मआवृत्तहै ॥ यातैं सोब्रह्म यातैत्ति रीयकउपनिषद्रूपशास्त्रकाविषय है॥काहेतैं ब्रह्मविदाप्नोतिपरं यावाक्यविषेस्थितब्रह्मशब्दकेश्रवणतैं सामान्यरूपतैं ताब्रह्मकेज्ञानहुएभी सोब्रह्म याजीवोंकाआत्मारूपहै अथवा आत्मातैंभिन्न है ॥तथा सोब्रह्म चेतनरूपहै अथवा जडरूप है इसतैंआदिलैकेअनेकप्रकारकेसंश य ताब्रह्मविषेहोवै हैं ॥ तिनसंशयोंकी निवृत्ति उत्तरवाक्योंकरिकैहोवै है॥ यातैं सोसूत्ररूपवचन उत्तरवाक्योंविषे याअधिकारीपुरुषोंके जिज्ञासाकूंउत्पन्नकरै है ॥ अब प्रयोजनकानिरूपणकरै हैं ॥ हेशिष्य॥शास्त्रकाप्रयोजन दोप्रकारकाहोवै है॥एकतौ गौणप्रयोजनहोवै है॥ और दूसरा मुख्यप्रयोजनहोवै है तहां ताब्रह्मकूंविषयकरणेहारा जोअंतःकरणकीवृत्तिरूपज्ञान है सोज्ञान यावेदांतशास्त्रका गौणप्रयोजन है

और संपूर्णअनर्थोंकीनिवृत्तिपूर्वक जोपरब्रह्मभावकीप्राप्तिहै ॥ सो यावेदांतशास्त्रका मुख्यप्रयोजनहै ॥ अब अधिकारीकानिरूपणकरैहैं॥ हेशिष्य ॥ जिसपुरुषकूं तादोनोंप्रयोजनोंकेप्राप्तिकीइच्छा है ॥ तथाविवेक वैराग्यशमदमादिकषट्संपत्ति मुमुक्षुतायाचारिसाधनोंकरिकै संपन्नहै ॥ सोपुरुष यावेदांतशास्त्रकाअधिकारीहै॥ अब संबंधकानिरूपणकरै हैं ॥ हेशिष्य ॥ यावेदांतशास्त्रकासंबंधतौ योग्यताकेवशतैं अनेकप्रकारकाहोवैहै तहां अधिकारीपुरुषका तथावेदांतशास्त्रका परस्पर बोध्यबोधकभाव संबंधहै ॥ इहां अधिकारीपुरुषतौ बोध्यहै॥ और वेदांतशास्त्रबोधकहै ॥ और ब्रह्मज्ञानका तथावेदांतशास्त्रका परस्पर जन्यजनकभावसंबंधहै ॥ इहां ब्रह्मज्ञानतौ जन्यहै ॥ और वेदांतशास्त्रजनकहै ॥ और ब्रह्मका तथावेदांतशास्त्रका परस्पर अभिव्यंग्य अभिव्यंजकभाव संबंधहै ॥ इहां ब्रह्मतौ अभिव्यंग्यहै ॥ और वेदांतशास्त्रअभिव्यंजकहै ॥ जोपदार्थ पूर्वसिद्धवस्तुकीप्रतीतिकराइदेवै ॥ तापदार्थकानाम अभिव्यंजकहोवै है ॥ और ताप्रतीतिकाविषय जोपदार्थहोवै है ॥ ताकानाम अभिव्यंग्यहोवै है ॥ जैसे हरीतकिआमलकादिकोंकाभक्षण जलकेमधुररसकीप्रतीतिकरावै है ॥ यातैं सोहरीतकिआमलादिकोंकाभक्षण जलकेमाधुर्यताकाअभिव्यंजकहै॥और साजलकीमाधुर्यता अभिव्यंग्यहै ॥ तैसे यह वेदांतशास्त्रभी पूर्वसिद्धब्रह्मका साक्षात्कारकरावैहै ॥ यातैंयहवेदांतशास्त्रतौ अभिव्यंजकहै॥ और सोब्रह्म अभिव्यंग्यहै ॥ औरअज्ञानकातथावेदांतशास्त्र का परस्परनिवर्त्यनिवर्त्तकभावसंबंधहै॥इहां अज्ञानतौनिवृत्यहै॥औरआत्मज्ञानद्वारा वेदांतशास्त्रताकानिवर्त्तकहै ॥हेशिष्य॥ ब्रह्मविदा प्नोतिपरं यहवचन केवलचारिअनुबंधोंकीसूचना करिकै सूत्ररूपनहीं है ॥ किंतुयातैत्तिरीयकउपनिषद्कीसमाप्तिपर्यंत यासूत्ररूपवचनका ही विस्तारतैंव्याख्यानकऱ्याहै ॥ याकारणतैंतावचनकूं सूत्ररूपतासंभवै है ॥ अब तासूत्ररूपवचनका संक्षेपतैंव्याख्यानकरै हैं॥हेशिष्य ब्रह्मविदाप्नोतिपरं यासूत्ररूपवचनविषेस्थित जोब्रह्मपद है ताब्रह्मपदकरिकै श्रुतिविषे तत्पदकाअर्थरूपपरमात्मादेव कथनकऱ्या है ॥ और लक्षणप्रमाणतैंविना वस्तुकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ यातैं ताब्रह्मका कोईलक्षणकह्याचाहिये ॥ तहां लक्षणभी दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौ स्वरूपलक्षणहोवै है ॥ और दूसरा तटस्थलक्षणहोवै है ॥ तहां जोअसाधारणधर्मरूपलक्षण आपणेलक्ष्यपदार्थतैं अभिन्नहुआ तालक्ष्य

पदार्थकूं इतरपदार्थोंतैंभिन्नरूपकारिकैजनावै है ॥ सोअसाधारण धर्मस्वरूपलक्षणहोवै है ॥ और जोअसाधारणधर्म आपणेलक्ष्य पदार्थ विषे कदाचित्वर्त्तमानहुआ तालक्ष्यकूं इतरपदार्थोंतैंभिन्नरूपकारिकैजनावै है॥सोअसाधारणधर्म तटस्थलक्षणहोवैहै ॥ तहां सत्यंज्ञानमनं तंब्रह्म॥यहश्रुतिवचन ताब्रह्मकेस्वरूपलक्षणकूंकथनकरैहै ॥अर्थयह ॥ जिसब्रह्मकेसाक्षात्कारतैंयहअधिकारीपुरुष मोक्षरूपपरमपदकूंप्राप्त होवैहै ॥ सोब्रह्मसत्यज्ञानअनंतस्वरूपहै ॥ यालक्षणवाक्यविषे कोईकवेदवेत्तापुरुषतौ शास्त्रदृष्टिकूंअंगीकारकरिकै सत्यस्वरूपब्रह्महै ज्ञान स्वरूपब्रह्महै अनंतस्वरूपब्रह्महै यहतीनलक्षण ब्रह्मकेमानैं हैं ॥ और कोईकवेदवेत्तापुरुषतौ लोकदृष्टिकूंअंगीकारकरिकै सत्यज्ञानअनंत रूपब्रह्महै यहएकहीलक्षण ब्रह्मकामानैंहैं ॥ अब तिनदोनोंपक्षोंविषे प्रथम तीनलक्षणवालेपक्षका निरूपणकरैहैं॥हेशिष्य॥सत्यंज्ञानमनंतं ब्रह्म॥याश्रुतिविषेस्थित जोसत्यशब्दहै॥तासत्यशब्दका तीनकालविषेनाशतैंरहित यथार्थवस्तुहीअर्थहै॥और जोवस्तुनाशतैंरहितहोवैहै॥ सोनित्यवस्तु जडरूपहोवैनहीं ॥ किंतु सोनित्यवस्तु चैतन्यरूपज्ञानस्वरूपहीहोवै है ॥ यातैंसत्यशब्दकाअर्थ ताज्ञानशब्दकेअर्थतैंभिन्न नहीं॥और जैसे रज्जुविषे सर्पदंडमालादिक कल्पितहोवैहै ॥ तैसे संपूर्णजडदृश्यपदार्थ चैतन्यज्ञानरूपद्रष्टाविषेकल्पितहैं ॥ ऐसासर्वजड प्रपंचकाअधिष्ठानरूपजोचैतन्यरूपज्ञानहै ॥ ताचैतन्यरूपज्ञानविषे परिच्छिन्नपणासंभवैनहीं ॥ यातैं सोचैतन्यस्वरूपज्ञान अनंतरूपहै ॥ याकहणेतैंयहअर्थसिद्धभया ॥ सत्यस्वरूपब्रह्म है यालक्षणविषे सत्यशब्दकरिकै सत्यज्ञानअनंतरूपवस्तुकाहीबोधहोवै है ॥ यातैं यांलक्षणकी जडपरिच्छिन्नपदार्थोंविषे अतिव्याप्तिहोवैनहीं तैसे ज्ञानस्वरूपब्रह्महै यालक्षणविषेभी ज्ञानशब्दकरिकै ज्ञानसत्यअनंत रूपवस्तुकाहीबोधहोवै है ॥ यातैं यालक्षणकीभी अनित्यपरिच्छिन्नपदार्थोंविषे अतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ तैसेअनंतस्वरूपब्रह्महै यालक्षणवि षेभी अनंतशब्दकरिकै अनंतसत्यज्ञानरूपवस्तुकाहीबोधहोवै है ॥ यातैं यालक्षणकीभी असत्यजडपदार्थोंविषे अतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ यातैं सत्य ज्ञान अनंत यहतीनों ब्रह्मकेभिन्नभिन्नलक्षण हैं ॥ तात्पर्ययह ॥ अतिव्याप्ति अव्याप्ति असंभव यातीनदोषोंकीनिवृत्तिवासतै हींलक्षणविषे पदोंकानिवेशहोवै है ॥ साअतिव्याप्तिआदिकदोषोंकीनिवृत्ति जोकदाचित् एकहीपदकरिकैहोइसकै ॥ तौ तालक्षणविषे ॥ ४ ॥

दूसरेपदोंकानिवेशकरणाव्यर्थहोवैहै॥ यातैं ताश्रुतिवचनकरिकै ब्रह्मकेतीनलक्षणमानणे उचितहैं॥ अब याहीअर्थकेस्पष्टकरणेवास्ते प्रथम सत्यशब्दकाअर्थ निरूपणकरैहैं॥हेशिष्य॥जोवस्तु भूत भविष्यत् वर्त्तमान यातीनकालोंविषे अन्यथाभावकूंनहींप्राप्तहोवै तावस्तुकानाम सत्यहै ॥ सोऐसासत्यशब्दकाअर्थ आनंदस्वरूपआत्माविषेहीघटैहै ॥ आत्मातैंभिन्न अनात्मपदार्थोंविषे सोसत्यशब्दकाअर्थ घटैनहीं ॥ काहेतैं आत्मातैंभिन्न जितनेकीअनात्मपदार्थहैं॥तेसंपूर्णअनात्मपदार्थ किसीकालपाइकै अन्यथाभावकूंअवश्यप्राप्तहोवैहैं।यातैं तिनअना त्मपदार्थोंविषे सत्यरूपतासंभवैनहीं ॥और सर्वजगत्काआत्मारूप जोयहआत्मादेवहै॥ताआत्मादेवकेनाशकरणेद्वारा कोईकारणहैनहीं॥ यातैं यहआत्मादेव नाशतैंरहितअविनाशीरूपहै ॥ ऐसेअविनाशीआत्माविषेही सत्यरूपतासंभवैहै॥किंवा जोवादी ऐसेआत्माकेनाशकूं अंगीकारकरैहै॥तावादीसैं यहपूछाचाहिये॥सोआत्माकानाश याजीवोंकरिकै अज्ञातहै अथवा ज्ञातहै॥तहां सोआत्माकानाश अज्ञात है यह प्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं जैसे कोईपुरुष मेरीमातावंध्याथी याप्रकारकावचनकहै ॥ सोताकावचन कदतोव्याघातदोषवालाहोवै है ॥ तैसे आत्माकानाश किसीजीवकरिकैज्ञाततौ है नहीं॥ परंतु आत्माकानाश विद्यमानहै॥याप्रकारका तावादीकावचनभीवदतोव्याघातदोषवालाहै ॥किंवाजोपदार्थ किसीभीजीवकरिकै ज्ञातनहींहोवै है॥तापदार्थविषेसत्यरूपता संभवैनहीं॥ किंतुउल्टातापदार्थविषे असत्यरूपताहीसंभवै है॥जैसे वंध्यापुत्रनरशृंगादिक किसीभीजीवकरिकैज्ञातनहीं हैं॥यातैंतेवंध्यापुत्रनरशृंगादिक असत्यरूपही हैं तैसे किसीभीजीवकरिकैअज्ञातहुआ सोआत्माकानाशभी असत्यरूपहीहोवैगा॥ यातैं सोआत्माकानाश अज्ञात है यह प्रथमपक्ष संभवैनहीं ॥ और सोआत्माकानाश ज्ञातहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै॥तावादीसैं यहपूछाचाहिये॥ताआत्माकेनाश काज्ञाता आत्माहैअथवा अनात्माहै॥तहांआत्माकेनाशकाज्ञाता अनात्माहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं आत्मातैं भिन्नजितनेकअनात्मपदार्थ हैं॥तेसंपूर्णअनात्मपदार्थ जडरूपहैं॥जडपदार्थोंकूं आपणा तथा परकाज्ञानहोवैनहीं॥ यातैं तिनजड पदार्थोंविषे ज्ञातापणा लोककरिकै तथाशास्त्रकरिकै विरुद्धहै॥ काहेतैं लौकिकपुरुष तथाशास्त्रवेत्तापुरुष चेतनआत्माविषेही ज्ञातापणा

मानैं हैं ॥ घटादिकजडपदार्थोंविषे कोईभीपुरुष ज्ञातापणामानतानहीं ॥ और आत्माकेनाशकाज्ञाता आत्माहै यहप्रथमपक्षजोवादीअंगी कारकरै ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ ताआत्माकेनाशकूं विनष्टआत्मा जानैहै ॥ अथवा अविनष्टआत्मा जानैहै ॥ तहां विनष्टआत्मा ताआत्माकेनाशकूं जानै है यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सो संभवैनहीं ॥ काहेतैं जिसआत्माकानाशहुआहै ॥ सोविनष्टआत्मा आपणेनाशकेजानणेविषे समर्थहोइसकैनहीं ॥ काहेतैं यालोकविषे अन्यपुरुषकेनाशकूंही अन्यपुरुषजानैहै ॥ परंतु आपणेनाशकूं कोई भीपुरुष जाणतानहीं ॥ और अविनष्टआत्मा ताआत्माकेनाशकूंजाणैहै यहदूसरापक्ष जोवादीअंगीकारकरै ॥ सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं आत्माकेविद्यमानहुए आत्माकानाशसंभवैनहीं ॥ और पदार्थकेविद्यमानहुएही तापदार्थकाज्ञानहोवैहै ॥ यातैं ताआत्मनाशकेअभावहुए ताकाज्ञानभीसंभवैनहीं ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती विद्यमानपदार्थकाहीज्ञानहोवै है॥यहनियम संभवैनहीं ॥ काहेतैं असत्यपदार्थोंकाभीज्ञान लोकविषेदेखीताहै ॥ जैसे शत्रुविषे मित्रपणा अत्यंतअसत्यहै ॥ तौभी भ्रांतपुरुषोंकूं ताशत्रुविषे मित्रपणाप्रतीतहोवैहै ॥ तैसे असत्यजो आत्माकानाशहै ॥ ताका आत्माकूंज्ञान संभवैहै ॥समाधान॥ हेवादी असत्यजोआत्माकानाशहै ताकूंआत्माजानै है ॥ याप्रकारजोतूं अंगीकारकरैगा ॥ तो ताआत्माकेनाशकूं वंध्यापुत्रशशशृंगकीतुल्यता प्राप्तहोवैगी॥ सोहमारेकूंभीअंगीकारहै ॥ तात्पर्ययह॥ जिसस्थल विषे जिसवस्तुकेअभावकाअभाव बोधनकरियेहै ॥ तिसस्थलविषेतिसवस्तुकीहीसिद्धिहोवैहै ॥ जैसेभूतलविषेघटकाअभावनहींहै॥यास्थ लविषे ताभूतलविषे ताघटकीविद्यमानताहीसिद्धहोवैहै॥ तैसे आत्माकानाशअसत्यहै याकहणेतैंभी आत्माकीसत्यरूपताहीसिद्धहोवै है सोआत्माकीसत्यरूपता हमारेकूंइष्टहै ॥हेशिष्य॥ इसप्रकार यहआत्मादेव विनाशतैंरहितहै॥याकारणतैं यहआत्मादेव प्रियतमहै॥और यहआत्मादेव प्रियतमरूपहै याकारणतैं यहआत्मादेव परमानंदस्वरूप है ॥ और याआनंदस्वरूपआत्मातैंभिन्न जितनेकपुत्रस्त्रीधना दिकपदार्थ याजीवोंके सुखकेकारण हैं ॥ तथा तिनपुत्रादिक पदार्थोंकीप्राप्तिकरिकै उत्पन्नभया जो अंतःकरणकापरिणामरूप ॥ ५

सुखहै ॥ तासुखसहित तेसंपूर्णपुत्रादिक पदार्थ जोजीवोंकूंप्रियलागे हैं॥ सोआपणेआत्माकेवासतैंही प्रियलागे हैं ॥ स्वभावतैं तिनपुत्रादि कपदार्थोंविषे प्रियरूपताहैनहीं ॥ जोकदाचित् तिनपुत्रादिकपदार्थोंविषे स्वभावतैंहीप्रियरूपताहोवै॥तौ जिसकालविषे तेपुत्रादिकपदार्थ यापुरुषकेप्रतिकूलहोवै हैं ॥ तिसकालविषेभी यापुरुषकूं तिनपुत्रादिकपदार्थोंविषे प्रियरूपता प्रतीतहोणीचाहिये ॥ और प्रतिकूलताका लविषे किसीपुरुषकूं तिनपुत्रादिकपदार्थोंविषे प्रियरूपता प्रतीतहोवैनहीं॥यातैं यहजान्याजावै है ॥ तिनपुत्रादिकपदार्थोंविषे स्वभावतैं प्रियरूपता नहीं है॥और आपणेआत्माविषे जोजीवोंकीप्रियरूपताहै॥सो किसीकेवासतैनहीं है॥किंतु स्वभावतैंही यहआत्मादेव प्रियतम रूपहै ॥शंका॥हेभगवन्॥आत्मातैंभिन्नकिसीपदार्थविषे जोप्रियरूपतानहींहोवै॥तौ आत्माविषे प्रियतमरूपताभी संभवैनहीं॥काहेतैं प्रिय प्रियतर यादोंनोंकीअपेक्षाकरिकैंही प्रियतमरूपताहोवै है।समाधान।हेशिष्य॥वास्तवतैंविचारकरिकैंदेखियेतौ किसीभीअनात्मपदार्थविषे प्रियरूपता तथाप्रियतररूपताहैनहीं॥तथापिलोकोंकीदृष्टिकूंलैके पुत्रस्त्रीधनादिकपदार्थ प्रियरूपहैं॥और तिनपुत्रादिकपदार्थोंकीप्राप्तिक रिकैउत्पन्नभयाजो अंतःकरणकापरिणामरूपसुखहै ॥ सोविषयसुख प्रियतररूपहै ॥ और सोविषयसुख जिसआत्माकेवासतै है ॥ सोआ त्मा प्रियतमरूपहै॥याकारणतैं सोविनाशतैंरहितआत्मा परमानंदरूप है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म याश्रुतिविषे ब्रह्मकूंही सत्य ज्ञान अनंत रूपकह्या है ॥ और आपनैंअभीनानाप्रकारकी युक्तियोंकरिकैआत्माविषेही सत् चित् आनंद रूपतासि द्धकरी ॥ ताकरिकै ब्रह्मविषे सा सत् चित् आनंदरूपता किसप्रकारासिद्धहोवैगी ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ व्याकरणकीरीतिसे आत्म शब्दकाअर्थ तथाब्रह्मशब्दकाअर्थ एकहीव्यापकचेतन है ॥ यहवार्त्ता पूर्वचतुर्थअध्यायविषे दध्यङ्अर्थवर्णइंद्रकेसंवादविषे हम तुमारे प्रतिविस्तारतैं करिआये हैं ॥ यातैं सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म याश्रुतिविषेस्थितजोब्रह्मशब्दहै ॥ ताब्रह्मशब्दकरिकै यहआनंदस्वरूपआत्माही लक्ष्यरूपकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ सोआनंदस्वरूपआत्मा विनाशतैंरहित है ॥ यातैं ताअविनाशीआत्माके जेसत्यादिकलक्षणहैं ॥ ते सत्यादिकलक्षण ब्रह्मकेही हैं और जेब्रह्मकेसत्यादिकलक्षणहैं॥तेसत्यादिकलक्षणआत्माकेही हैं॥शंका॥हेभगवन्।आत्मारूपब्रह्मकेस्वरूप

भूतजेसत्यादिकपदार्थ हैं तिनसत्यादिकपदार्थोंविषे तात्रह्मकीलक्षणरूपता संभवैनहीं ॥ काहेतैं यालोकविषे जिनपदार्थोंकापरस्पर भेदहोवै है॥तिनपदार्थोंकाही परस्पर लक्ष्यलक्षणभाव होवै है ॥ भेदतैंविना॥लक्ष्यलक्षणभाव होवैनहीं॥समाधान ॥हेशिष्य ॥ सोलक्ष्य लक्षणभाव आपणीसिद्धिवासतैं कल्पितभेदकीअपेक्षाकरै है ॥ अथवा वास्तवभेदकीअपेक्षाकरै है ॥ तहां सोलक्ष्यलक्षणभाव कल्पित भेदकीअपेक्षाकरै है यहप्रथमपक्ष जोतूं अंगीकारकरै ॥ तौ याकेविषे कोईहमारेसिद्धांतकीहानिहोवैनहीं ॥ काहेतैं लक्ष्यपदार्थविषे लक्षण काकल्पितभेद हमभी अंगीकारकरतेही हैं॥ और सोलक्ष्यलक्षणभाव वास्तवभेदकीअपेक्षाकरै है यहदूसरापक्षजोतूं अंगीकारकरै सोसं भवैनहीं ॥ काहेतैं यालोकविषे जितनेकीलक्ष्यपदार्थ हैं तथा जितनेकीलक्षणपदार्थ हैं ॥ तिनोंका जोपरस्परभेदहै ॥ सोभेदभी वास्तव तैंहैनहीं ॥ किंतु याजीवोंनैं आपणीआपणीबुद्धिकरिकै सोभेद कल्पनाकऱ्याहै ॥ जभी लोकप्रसिद्धलक्ष्यपदार्थोंविषेभी आपणेलक्षणोंका भेद कल्पितसिद्धभया॥तभी अद्वितीयब्रह्मरूपलक्ष्यविषे सत्यादिकलक्षणोंकाभेद कल्पितहै याकेविषेक्याकहणाहै ॥ अब लोकप्रसिद्धल क्ष्यपदार्थोंविषे लक्षणोंकेभेदकूं कल्पितरूपता निरूपणकरै हैं॥हेशिष्य॥गंधगुणवालीपृथ्वीहोवै है॥ तथा पृथ्वीत्वजातिवाली पृथ्वीहोवै है इसतैं आदिलैके अनेकप्रकारकेलक्षण पृथ्वीआदिकपदार्थोंके नैयायिकादिकवादियोंनैं माने हैं ॥ तहां गंधगुणरूपलक्षण तथा पृथ्वीत्वजा तिरूपलक्षणवास्तवतैं तापृथ्वीरूपलक्ष्यतैं भिन्ननहीं हैं ॥ काहेतैं जोकदाचित् गंधगुणरूपलक्षण तथा पृथ्वीत्वजातिरूपलक्षण तापृथ्वी रूपलक्ष्यतैंभिन्नहोवै ॥ तौ जैसे गौका तथाअश्वका परस्पर वास्तवतैंभेदहै॥यातैं सोगौ अश्वकाधर्मनहीं है॥और सोअश्व गौकाधर्म नहीं है।तैसे पृथ्वीत्वजातिगंधगुणरूपलक्षणका तथापृथ्वीरूपलक्ष्यका परस्पर धर्मधर्मीभावही नहींसिद्धहोवैगा ॥ और जिनपदार्थोंका परस्पर धर्मधर्मीभावसंबंधहोवै है॥तिनपदार्थोंकाही परस्पर लक्षणलक्ष्यभाव संबंधहोवै है यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ पृथ्वीआदिकलक्ष्यपदार्थो विषे गंधगुण पृथ्वीत्वजातिआदिकलक्षणोंकाभेद वास्तवतैं हैनहीं ॥ किंतु नैयायिकादिकवादियोंनैं आपणीबुद्धिकरिकै सोभेद कल्पना कऱ्याहै ॥ किंवा ॥ जोकदाचित् गंधगुणादिरूपलक्षण पृथ्वीआदिकलक्ष्यपदार्थोंतैं वास्तवतैंभिन्नहोवै ॥ तौ जैसे घट पटतैंवास्तव

भेदवालाहै ॥ यातैं सोघट पटतैंभिन्नहोइकैप्रतीतहोवै है ॥ तैसे पृथ्वीआदिकलक्ष्यपदार्थोंतैं तेगंधगुणादिकलक्षणभी भिन्नहोइकै प्रतीत होणेचाहिये ॥ और गंधादिकगुण पृथ्वीआदिकोंतैंभिन्नहोइकै प्रतीतहोतेनहीं ॥ यातैं तिनोंका परस्पर वास्तवतैंभेदनहीं है॥किंतु सोभे द कल्पितहै ॥ ताकल्पितभेदकूंअंगीकारकरिकै जैसे तिनोंका परस्पर लक्ष्यलक्षणभाव संभवै है ॥तैसे अद्वितीयब्रह्मविषे सत्यादिकलक्ष णोंका कल्पितभेदमानिकै शास्त्रवेत्तापुरुष तिनोंका परस्पर लक्ष्यलक्षणभाव कथनकरै हैं ॥ अब तिनधर्मोंकानिरूपणकरै हैं ॥हेशिष्य॥ जैसे ताअद्वितीयब्रह्मविषे कल्पितभेदकूंअंगीकारकरिकै ब्रह्मत्वरूपधर्म रहे है॥तैसे ताकल्पितभेदकूंअंगीकारकरिकै ताअद्वितीयब्रह्मविषे आत्मरूपता आनंदरूपता सत्यरूपता ज्ञानरूपता अनंतरूपता यहपांचोंधर्मरहै हैं ॥ याकारणतैंही वेदवेत्तापुरुष ताअधिष्ठानरूपसाक्षी आत्माके सत्य ज्ञान अनंत ब्रह्म आत्मा आनंद यहषट्नाम कथनकरै हैं ॥ हेशिष्य ॥ जैसे वास्तवतैं गंधर्वनगरतैंरहितजोआकाश है ॥ ताआकाशविषे सोगंधर्वनगर कल्पितहोवै है ॥ तैसे वास्तवतैं जगत्भावतैंरहित जोअद्वितीयआत्माहै॥ताअद्वितीयआत्माविषे यहसंपूर्ण जगत् कल्पितहै ॥ कैसाहैसोजगत् ॥ अविवेकीलोकोंकूं नित्यरूपकरिकैप्रसिद्धहै ॥ तथा भूत भविष्यत् वर्तमान यातीनकालोंकरिकैयुक्त है ॥ तथा नामरूपक्रियास्वरूपहै ॥ तथा सत्असत्रूपहै इहां जेपदार्थ नेत्रादिकइंद्रियजन्यज्ञानकेविषयहैं॥तिनपदार्थोंकानाम सत् है ॥ और जेपदार्थ इंद्रियजन्यज्ञानकेविषयनहीं हैं तिनपदार्थोंकानाम असत्है ॥ ऐसेकल्पितजगत्का अधिष्ठानरूपजोआत्मादेव है ॥ ताआ त्मादेवकूंही विद्वान्पुरुष तासत्यादिकषट्नामोंकरिकैकथनकरै हैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ पूर्वेआपनैं आत्माके सत्यादिकषट्नामकथ नकरे ॥ ते सत्यादिकनाम एकहीआत्माके षट्लक्षणोंकूंकथनकरैंगे ॥ और सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म याश्रुतिविषे ब्रह्मरूपआत्माके तीनही लक्षण कथनकरै हैं ॥ यातैं ताश्रुतिकेसाथ आपकेकहणेकाविरोधहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ सत्य ज्ञान अनंत ब्रह्म आत्मा आनंद यहषट्नाम यद्यपि एकहीचेतनआत्माकेबोधक हैं॥तथापि तिनषट्नामोंविषे ब्रह्म आत्मा आनंद यातीननामोंके अर्थकूं लक्ष्यरू पमानिकै सत्य ज्ञान अनंत यहतीननाम क्रमतैं ताआनंदआत्मारूपब्रह्मके तीनलक्षणोंकूंकथनकरै हैं ॥ तात्पर्ययह ॥ सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म

याश्रुतिविषे आत्मा आनंद यहदोनोंशब्द कथनकरैनहीं॥केवलब्रह्मशब्दकूंहीकथनकऱ्याहै॥यातैं यहजान्याजावै है॥आत्मा आनंदयादो नोंशब्दोंके अर्थका लक्ष्यरूपब्रह्मविषे अंतरभावकरिकै ताश्रुतिनैं ब्रह्मशब्दकाकथनकऱ्याहै॥और सत्य ज्ञान अनंत यातीनशब्दोंकरिकै क्रमतैं ताश्रुतिनैं तालक्ष्यरूपब्रह्मके तीनलक्षण कथनकरे हैं॥हेशिष्य॥इसप्रकार उपनिषद्रूपवेदांतशास्त्रके सिद्धांतरूपसारकूंजानणेहारे जेब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुषहैं तेब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुष शास्त्रदृष्टिकूंअंगीकारकरिकै ताअद्वितीयब्रह्मके सत्य ज्ञान अनंत यहतीनप्रकारकेलक्षण माने हैं॥अब सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म याश्रुतिवचनविषे लोकदृष्टिकूंअंगीकारकरिकै जेविद्वान्पुरुष एकहीलक्षणअंगीकारकरै हैं॥तिनोंकेमतका निरूपणकरै हैं।हेशिष्य।कोई कविद्वान्पुरुषतौ याप्रकार कथनकरै हैं।सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म याश्रुतिविषेस्थितजे सत्यज्ञान अनंत यहतीनपद हैं॥तेतीनोंपद मिलिकै ताअद्वितीयब्रह्मके एकहीलक्षणकूंकथनकरै हैं॥तात्पर्ययह॥सत्यब्रह्महै इतनाहीजोब्रह्मकालक्षणकरिये।तौ नैयायिक सत्ताजातिवाले द्रव्य गुण कर्म यातीनपदार्थोंकूंसत्यमानै हैं।तिनद्रव्यादिकपदार्थोंविषे तालक्षणकीअतिव्याप्तिहोवैगी।अथवा ब्रह्मकी पारमा र्थिकसत्ताहै॥औरआकाशादिकप्रपंचकीव्यवहारिकसत्ताहै॥और शुक्तिरजतकी तथास्वप्नपदार्थोंकी प्रातिभासिकसत्ताहै॥यातीनसत्ताकूं अंगीकारकरणेहारे जोकोईकवेदांती हैं।तिनोंके मतकूंअंगीकारकरिकै व्यावहारिकसत्तावाले आकाशादिकपदार्थोंविषे तालक्षणकीअतिव्या प्तिहोवैगी ॥ और ज्ञानरूपब्रह्महै इतनाहीजोब्रह्मकालक्षणकरिये॥तौ नैयायिक ज्ञानकूं आत्माकागुणमानैं हैं ॥ तागुणरूपज्ञानविषे ताल क्षणकी अतिव्याप्तिहोवैगी ॥ अथवा सिद्धांतविषे अंतःकरणकेवृत्तिकूंभी ज्ञानकहै हैं ॥ तावृत्तिरूपज्ञानविषे तालक्षणकीअतिव्याप्तिहो वैगी ॥ और अनंतरूपब्रह्महै इतनाहीजोब्रह्मकालक्षणकरिये ॥ तौ नैयायिक कालपरिच्छेदतैंरहित आकाशादिकनित्यपदार्थोंकूं अनंत माने हैं ॥ तिनआकाशादिकोंविषे तालक्षणकीअतिव्याप्ति होवैगी ॥ यातैं सत्य ज्ञान अनंत यातीनोंपदोंविषे एकएकपद ताब्रह्मकेलक्ष णकूंबोधनकरैनहीं॥किंतु तेतीनोंपद मिलिकरिकै ताअद्वितीयब्रह्मके एकहीलक्षणकूंबोधनकरै हैं॥और ताएकलक्षणकेमानणेविषे पूर्वकी न्याईं कोई अतिव्याप्तिआदिकदोष प्राप्तहोवैनहीं॥शंका॥हेभगवन्॥सोअद्वितीयब्रह्म मनवाणीकाअविषयहै याकारणतैं ताअद्वितीयब्रह्मकूं

ते सत्यादिकपद शक्तिवृत्तिकरिकैतो बोधनकरिसकैनहीं ॥ किंतुभागत्यागलक्षणाकरिकैही ते सत्यादिकपद ताअद्वितीयब्रह्मकूंबोधन करैंगे ॥ सोलक्ष्यअर्थ तिनसर्वपदोंकाएकहीहै॥यातैं एकपदकरिकैही ताअद्वितीमब्रह्मकाबोधहोइसकैहै॥दूसरेपद व्यर्थहोवैंगे समाधान ॥ हेशिष्य ॥ सत्य ज्ञान अनंत यहतीनोंपद लक्षणवृत्तिकरिकै यद्यपि एकअद्वितीयब्रह्मकेहीबोधकहैं ॥ तथापि तिनसत्यादिकपदोंनैं लक्ष्य रूपब्रह्मविषे बोधनकरीजेव्यावृत्तियां हैं ॥ तिनव्यावृत्तियोंका परस्पर भेदहै ॥ यातैं तिनसत्यादिकपदोंविषे पुनरुक्तिदोषकरिकै व्यर्थरूप ताहोवैनहीं ॥ तहां लक्ष्यस्वरूपब्रह्मविषे भ्रांतिकरिकैप्राप्तभया जोअसत्यपणाहै॥ताअसत्यपणेकीव्यावृत्तिकूं सत्यशब्द बोधनकरैहै॥और तालक्ष्यस्वरूपब्रह्मविषे भ्रांतिकरिकैप्राप्तभयाजोजडपणाहै॥ताजडपणेकीव्यावृत्तिकूं ज्ञानशब्द बोधनकरैहै॥ और तालक्ष्यस्वरूपब्रह्मविषे भ्रांतिकरिकैप्राप्तभयाजोपरिच्छिन्नपणाहै॥तापरिच्छिन्नपणेकेव्यावृत्तिकूं आनंदशब्द बोधनकरै है॥याअर्थविषे वार्तिकग्रंथकेकर्तासुरेश्वरा चार्यनैं इतनीविशेषता कथनकरीहै॥सत्य ज्ञान यहदोनोंशब्दतौ तालक्ष्यस्वरूपब्रह्मविषे साक्षात् सत्यरूपता तथाज्ञानरूपतावोधनकरि कैअर्थतैं असत्जडकीव्यावृत्तिकूंबोधनकरै हैं॥और अनंतशब्दतौ साक्षात् परिच्छिन्नपणेकीव्यावृत्तिकूंबोधनकरिकै अर्थतैं तालक्ष्यस्वरूप ब्रह्मकूंबोधनकरै हैं ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार सत्य ज्ञान अनंत यहतीनोंपद तालक्ष्यस्वरूपब्रह्मविषे असत् जड परिच्छिन्नपणेकेव्यावृत्तिकूं बोधनकरै हैं॥यातैं जैसे नीलकमलहै यहवचननीलगुणके तथाकमलके परस्पर गुणगुणीभावसंबंधकूंबोधनकरै है ॥ अथवा सो वचननील गुणविशिष्टकमलकूंबोधनकरै है ॥ तैसे सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म यहश्रुतिवचन सत्यादिकधर्मोंके तथाब्रह्मके गुणगुणीभावसंबंधकूं तथासत्या दिकगुणविशिष्टब्रह्मकूं बोधनकरैनहीं ॥ किंतु भागत्यागलक्षणाकरिकै सोश्रुतिवचन एकअद्वितीयअखंडब्रह्मकूंहींबोधनकरै है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ सत्य ज्ञान अनंतयातीनोंपदोंनैं क्रमतैं ताब्रह्मविषे बोधनकरीजो असत्यपणेकीव्यावृत्ति तथाजडपणेकीव्यावृत्ति तथापरिच्छिन्नपणेकीव्यावृत्ति॥तिनअभावरूपतीनव्यावृत्तियोंकेभेदकरिकैही ताब्रह्मविषेअद्वितीयरूपताकीहानिहोवैगी॥समाधान॥हेशि ष्य ॥ यद्यपि तेअभावरूपव्यावृत्तियां ब्रह्मविषेरहैंहैं ॥ तथापि ताब्रह्मतैंभिन्नदूसराकोईभावपदार्थहैनहीं ॥ याकारणतैं सोब्रह्म अद्वितीयरू

पहै ॥ याप्रकार भावअद्वैतपक्षकूंमानणेहारेजोहमसिद्धांती हैं ॥ तिसहमारेमतविषे ताब्रह्मकेअद्वितीयरूपताकीहानिहोवैनहीं॥हेशिष्य ॥ वेदांतशास्त्रकेतात्पर्यकूंजानणेहारे जेपूर्व नृसिंहआश्रमआदिकविद्वान्पुरुषहुएहैं ॥ तिनोंनैं जिसअभिप्रायकरिकै यहभावअद्वैतपक्ष अंगीकारकऱ्या है ॥ ताअभिप्रायकूं तू श्रवणकर॥ याब्रह्मरूपआत्माविषे जोकदाचित् सहस्रअभाव रहतेहोवैं॥तौ निःशंकहोइकै तेअभावरहैं याअर्थकेमानणेविषे आत्माकेअद्वितीयरूपताकूंकथनकरणेहारेहमसिद्धांतियोंकी किंचित्मात्रभी हानिहोवैनहीं ॥ काहेतैं सोद्वैतप्रपंचका अभाव वंध्यापुत्रनरशृंगकीन्याईं अत्यंततुच्छहै॥यातैंसोद्वैतप्रंचकाअभाव ताब्रह्मकेअद्वितीयरूपताकीहानिकरणेविषे समर्थहोइसकेनहीं अबयाहीअर्थकूं स्पष्टकरिकैनिरूपणकरै हैं ॥ हेशिष्य ॥ जोवादी अभावोंकेभेदकरिकै ताब्रह्मकेअद्वियरूपताकीहानि कथनकरै है ॥ ता वादीसैंयहपूछ्याचाहिये॥तेअभाव आपणेस्वरूपतैंहीभेदकूंप्राप्तहुए अद्वैतकीहानिकरै है॥अथवा आपणेप्रतियोगियोंकेभेदकरिकै भेदकूंप्रा प्तहुएतेअभाव अद्वैतकीहानिकरैहैं॥ अथवा तिनअभावोंकूंविषयकरणेहारे जेशब्दरूप तथाज्ञानरूपव्यवहारहैं॥तिनव्यवहारोंकेभेदकरिकै भेदकूं प्राप्तहुएतेअभाव अद्वैतकीहानिकरैहैं ॥ तहां स्वरूपतैंभेदकूंप्राप्तहुएतेअभाव॥ अद्वैतकीहानिकरै हैं यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीका रकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं यालोकविषे जितनेकीअभावहैं॥ तिनअभावोंका प्रतियोगीकेभेदतैंविना स्वरूपतैंभेद कोईभीवादी अंगी कारकरैनहीं ॥ और प्रतियोगीपदार्थोंकेभेदकरिकै भेदकूंप्राप्तहुएतेअभाव अद्वैतकीहानिकरैहैं यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं जिसकालविषे सर्वजगतकाकारणरूपअविद्या विद्यमानहै ॥ तिसकालविषे यद्यपि प्रतियोगीपदार्थोंकेभेदकरिकै तिनअभावोंकाभेद संभवैहै॥तथापि जिसकालविषे याअधिकारीपुरुषोंकूं आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिहोवै है ॥ तिसकालविषे नेहना नास्तिकिंचन ॥ अर्थयहयाद्वितीयब्रह्मविषे किंचित्मात्रभी द्वैतप्रपंचनहीं है यहश्रुतिरूपीनृसिंह कार्यसहितअविद्याकूं भक्षणक रिलेवै है ॥ यातैं ताज्ञानअवस्थाविषे नाशकूंप्राप्तहुएतिनप्रतियोगीपदार्थोंविषे तिनअभावोंकेभेदकीकारणतासंभवैनहीं ॥ काहेतैं यालो कविषे विद्यमानहुएप्रतियोगीपदार्थही अभावोंकेभेदकूंकरैहैं॥जैसेविद्यमानहुएघटपटादिकप्रतियोगी घटाभावपटाभाव आदिकअभावोंका

भेदकरैहै॥और आपणेव्यवहारोंकेभेदकरिकै भेदकूंप्राप्तहुएतेअभाव अद्वैतकीहानिकरैहैं यहतीसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभीसंभवै नहीं ॥ काहेतैं अभावोंकूंविषयकरणेहारेजेज्ञानहैं तथा अभावोंकूंबोधनकरणेहारेजेशब्दहैं ॥ तिनदोनोंकानाम व्यवहारहै ॥ तिनव्यवहारों काभेद स्वरूपतैंहोवैनहीं ॥ किंतु तिनअभावोंकेजेप्रतियोगीहैं ॥ तिनप्रतियोगीपदार्थोंकेभेदकीअपेक्षाकरिकैही तिनव्यवहारोंकाभेदहोवै है ॥ जैसे घटपटरूपप्रतियोगीकेभेदकीअपेक्षाकरिकैही घटाभावहै पटाभावहै याप्रकारकेज्ञानरूपव्यवहारोंका तथाशब्दरूपव्यवहारोंका परस्परभेदहोवैहै ॥ तेअभावोंकेभेदकूंविषयकरणेहारेव्यवहारयद्यपि अज्ञानअवस्थाविषेसंभवैहै॥तथापिजिसकालविषे याअधिकारीपुरुषों कूं गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं ताअद्वितीयआत्माकासाक्षात्कारहोवैहै ॥तिसज्ञानकालविषे याअधिकारीपुरुषोंकीबुद्धि सर्वअनात्मव्यवहारोंका परित्यागकरिकै केवलआनंदस्वरूपअद्वितीयआत्माविषे एकाग्रभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया॥प्रतियोगीपदार्थोंकेभेदतैंविना अभावकाभेद संभवैनहीं ॥ और तेसंपूर्णप्रतियोगीपदार्थ ॥ आत्मसाक्षात्कारकेहुए नाशकूंप्राप्तहोवैहैं यातैं ताज्ञानअवस्थाविषे ताअद्वि तीयआत्माविषे नानाअभावरहैनहीं ॥किंतु सर्वद्वैतअभावता एकहीअभावरहैहै॥शंका॥हेभगवन्॥सोएकअभावही आत्माकेअद्वितीयरू पताकीहानिकरैगा ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ ताएकअभावका अधिष्ठानरूपजोआत्माहै॥ताअधिष्ठानरूपआत्माके वास्तवस्वरूपकावि चारकरिकैदेखियेतौ सोएकअभावभी ताअधिष्ठानआत्मातैं भिन्नहोइकैस्थितहोवैनहीं॥किंतु सोकल्पितप्रपंचकाअभाव अधिष्ठानआत्मा रूपही है ॥जैसे कल्पितसर्पकाअभाव रज्जुरूपहीहोवैहै॥ किंवा॥ लौकिकदृष्टिकूंअंगीकारकरिकैभी अधिष्ठानतैंभिन्नरूपकरिकै ताअभाव कीसत्ता प्रतीतहोवैनहीं॥यातैं साअप्रसिद्धअभावकीसत्ता अद्वैतकानाश किसप्रकारकरैगी॥किंतु साअप्रसिद्धअभावकीसत्ता ताअद्वैतका नाश कदाचित्भीनहींकरैगी ॥ काहेतैं यालोकविषे प्रसिद्धपदार्थही अन्यपदार्थकानाशकरैहै॥अप्रसिद्धपदार्थ किसीपदार्थकानाशकरै न हीं॥जोकदाचित् अप्रसिद्धपदार्थभी किसीवस्तुकानाशकरताहोवै॥तौ अप्रसिद्धवंध्यापुत्रकरिकैभी किसीशत्रुकानाशहोणाचाहिये॥और वंध्यापुत्र किसीशत्रुकानाशकरतानहीं॥तैसे अप्रसिद्धअभावकीसत्ताकरिकै अद्वैतकानाश संभवैनहींऔर जोवादी घटादिकपदार्थोंकीन्याईं

ताअभावकीभीअधिष्ठानतैंभिन्नहीसत्ता अंगीकारकरै ॥ तौ घटादिकभावपदार्थोंका तथाअभावका परस्पर भेदसिद्धनहींहोवैगा ॥ किं वा ॥ सोअभाव स्वरूप विशेष सत्ता इत्यादिकसर्वधर्मोतैंरहितहै ॥ यातैं ताअभावकूंअस्तिरूपकरिकैकथनकरणेविषे कोईभीजीव समर्थ नहीं है॥किंतु जैसे वंध्यापुत्र नरशृंगइत्यादिकअसत्पदार्थ विकल्पज्ञानकेविषयहोवैहैं॥तैसे सोअभावकी केवलविकल्पज्ञानकाहीविषयहै ॥ किसीप्रमाणजन्यज्ञानकाविषयहैनहीं ॥ तहां जिसशब्दकाअर्थ किसीदेशविषे तथाकिसीकालविषे किसीभीजीवकूं प्रसिद्धनहींहोवै॥तिस शब्दकेश्रवणतैं जोपुरुषोंकूं तिसअर्थकाज्ञानहोवैहै ॥ ताकानाम विकल्पज्ञानहै ॥जैसे वंध्यापुत्र याशब्दकाअर्थ जोवंध्यास्त्रीकापुत्रहै॥सो वंध्यापुत्र किसीदेशविषे तथा किसी कालविषे किसीभीजीवकूं प्रसिद्धनहींहै॥यातैं वंध्यापुत्र याशब्दकेश्रवणतैं जोपुरुषोंकूं तावंध्यापुत्रका ज्ञानहोवै है॥ सोज्ञान विकल्परूपहै ॥ ऐसेविकल्परूपज्ञानकेविषयहोणेतैं जैसे वंध्यापुत्रनरशृंगादिकअसत्यपदार्थ तुच्छरूपहै॥ तैसे तावि कल्परूपज्ञानकाविषयहोणेतैं सोअभावभी तुच्छ है ॥ ऐसातुच्छअभाव आत्माकेअद्वितीयरूपताकीहानि करिसकैनहीं ॥ किंवा॥सोअभावकाविकल्परूपज्ञानभी तबपर्यंत रहै है॥जबपर्यंत याअधिकारीपुरुषोंकूं अद्वितीयआत्माकासाक्षात्कार नहींप्राप्तभयाहै॥ और जभी याअधिकारीपुरुषोंकूं सोअद्वितीय आत्माकासाक्षात्कारहोवै है॥तभी सोविकल्परूपज्ञानभी नाशकूंप्राप्तहोवै है ॥ऐसीआत्म साक्षात्कारअवस्थाविषे सोद्वैतप्रपंचकाअभाव ताअद्वितीयआत्माविषे किसप्रकारास्थितहोवैगा॥किंतु नहींस्थितहोवैगा ॥ यातैं सोद्वैतप्र पंचकाअभाव आत्माकेअद्वितीयरूपताकीहानिकरैनहीं ॥ याप्रकारकेविचारकियेहुए सोब्रह्मरूपआत्मा सर्वद्वैततैंरहितहोवैहै यहअर्थसिद्ध भया ॥ अब सत्यं ज्ञानमनंतब्रह्म याश्रुतिविषेस्थितअनंतपदनैं जिनपरिच्छिन्नपदार्थोंकीव्यावृत्ति बोधनकरीहै॥तिनपरिच्छिन्नपदार्थोंका निरूपण करै हैं ॥ हेशिष्य॥यालोकविषे आत्मातैंभिन्न जितनेकीअनात्मपदार्थ हैं॥तेअनात्मपदार्थ देशपरिच्छेद कालपरिच्छेद वस्तुप रिच्छेद यातीनपरिच्छेदोंकरिकैयुक्तहैं ॥ याकेविषेभी इतनीविशेषताहै॥कार्यरूपकरिकैप्रसिद्ध जितनेकीघटपटादिकपदार्थ हैं॥तेघट पटा दिकपदार्थ किसीदेशविषेतौ हैं ॥ और किसीदेशविषेनहीं हैं ॥ याकारणतैं तेघटादिकपदार्थ देशपरिच्छेदवाले हैं ॥ और तेघटपटादिक

पदार्थ किसीकालविषेतौ है॥और किसीकालविषेनहीं है॥याकारणतैं तेघटादिकपदार्थ कालपरिच्छेदवाले हैं॥और तादेशविषे तथाकाल विषे देशपरिच्छेद तथाकालपरिच्छेद संभवैनहीं॥यातैं तादेशविषे तथाकालविषे परस्परभेदरूपवस्तुपरिच्छेदही रहैहै॥यातैंतेदेशकालभी परिच्छिन्नहीं हैं ॥शंका॥हेभगवन् परस्परभेदरूपवस्तुपरिच्छेद जैसे देशकालविषेरहैहै ॥ तैसे घटपटादिकपदार्थोंविषेभीसोभेदरूपवस्तुप रिच्छेदरहैहै॥यातैं एकवस्तुपरिच्छेदकरिकैही सर्वजगत्विषे परिच्छिन्नपणा सिद्धहोइसकैहै यातैंदेशपरिच्छेद कालपरिच्छेदयादोनोंपरिच्छे दोंकूंअंगीकारकरणा निष्फलहै ॥ समाधान ॥ हेशिष्य॥यद्यपि वास्तवतैंविचारकरिकैदेखियेतौ एकवस्तुपरिच्छेदकरिकैही सर्वजगत्विषे परिच्छिन्नपणा सिद्धहोइसकैहै ॥ तथापि मंदबुद्धिपुरुषोंऊपर अनुग्रहकरणेवास्ते शास्त्रविषे तीनपरिच्छेदोंका निरूपणकऱ्याहै॥हेशिष्य॥ जिसअभिप्रायकरिकै शास्त्रवेत्तापुरुषोंनैं तीनपरिच्छेदमाने हैं ॥ ताअभिप्रायकूं तूं श्रवणकर॥ केईकनैयायिकवादी पृथिवी जल तेज वायु याचारिभूतोंके सूक्ष्मपरमाणुवोंकूंही याजगत्काकारणमानैंहैं तिननैयायिकोंकेमतविषे तेपरमाणुनित्यहैं ॥ यातैं तिनपरमाणुवोंविषे काल परिच्छेदतौ रहै नहीं॥और तिनपरमाणुवोंविषे यद्यपि भेदरूपवस्तुपरिच्छेदरहैहै॥तथापि ताभेदविषेवस्तुपरिच्छेदरूपता ते नैयायिकअंगी कारकरतेनहीं॥यातैं तिनपरमाणुवोंविषे वस्तुपरिच्छेदभीरहैनहीं॥कितुतेनैयायिक तिन परमाणुवोंविषे केवलदेशपरिच्छेदही अंगीकारकरै हैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकेअविषय जेपरमाणुहैं॥तेपरमाणु तिननैयायिकोंकेमतविषे किसप्रकार सत्यरूपहैं ॥समा धान॥हेशिष्य जैसे मूढबालकोंकेमतविषे असत्यवंध्यापुत्रभी सत्यरूपहोवैहै तैसे तिननैयायिकोंकेमतविषे असत्यपरमाणुभी सत्यरूपहो वैहैं काहेतैं यालोकविषे ऐसाकोनपदार्थ है जोभ्रांतिज्ञानकाविषयनहींहोवै ॥ किंतु सर्वपदार्थ भ्रांतिज्ञानकेविषयहोइसकै हैं और हेशिष्य॥ कोईकसांख्यशास्त्रवालेवादीतौमहत्तत्वकूं विभुमानै हैं॥तथा सर्वविकारोंकाकारणमानैंहैं॥ यातैं तिनसांखियोंकेमतविषे यद्यपि सोमहत्तत्व देशपरिच्छेदतैं तथा वस्तुपरिच्छेदतैंरहितहै॥तथापि सोमहत्तत्व प्रलयकालविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहै॥यातैंसोमहत्तत्वकेवलकालपरिच्छे दवालाहीहोवैहै ॥ और हेशिष्य ॥ केईकवादीतौ आकाश काल दिशा आत्मा याचारोंकूं विभुमानैहैं तथानित्यमाने हैं॥ यातैं तिनवा

दियोंकेमतविषे देशपरिच्छेदतथाकालपरिच्छेदयहदोनोंतिनआकाशादिकोंविषेरहैनहीं॥किंतुकेवलभेदरूपवस्तुपरिच्छेदहीतिनआकाशादिकोंविषेरहैहै॥इसप्रकार भ्रांतिकूंप्राप्तहुएजोवादी हैं॥तिनवादियोंकेबोधकरणेवासतै तिनवादियोंकेअनुसारशास्त्रविषे तीनपरिच्छेदोंका कथनकऱ्याहै ॥ और वास्तवतैंविचारकरिकैदेखियेतौ एकवस्तुपरिच्छेदकरिकैही सर्वजगत्विषे परिच्छिन्नपणा सिद्धहोइसकैहै ॥ हेशिष्य सोभेदरूपवस्तुपरिच्छेदभी तीनप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां एकतौ स्वगतभेदहोवैहै ॥ और दूसरा सजातीयभेदहोवैहै ॥ और तीसरा विजातीयभेदहोवैहै ॥ तहां आपणेस्वरूपविषे आपणेअवयवोंकाजोभेदहै ताकानाम स्वगतभेदहै जैसे एकहीवटकेवृक्षविषे शाखा पत्र फलादिकरूपअवयवोंकाभेदहै ॥ और समानजातिवाले पदार्थकाजोभेदहै ताकानाम सजातीयभेदहै ॥ जैसे एकवटकेवृक्षविषे दूसरेवटकेवृक्षकाभेदरहैहै ॥तहां वटत्वरूपजातितिनदोनों वृक्षोंविषेसमानहै॥ और विरुद्धजातिवालेपदार्थकाजोभेदहैताकानामविजातीयभेदहै ॥ जैसे तावटकेवृक्षविषे पिप्पलकेवृक्षकाभेदहै ॥तहां पिप्पलत्वरूपजाति वटकेवृक्षविषेरहैनहीं॥हेशिष्य॥इसप्रकारसजातीयभेदविजातीयभेद स्वगतभेद यहतीनप्रकारकाजोभेदहै॥तथादेशपरिच्छेदकालपरिच्छेद वस्तुपरिच्छेद यहतीनप्रकारकाजोपरिच्छेदहै ॥ इनसंपूर्णोंकानाम परिच्छिन्नपणाहै॥सोपरिच्छिन्नपणायद्यपि ताब्रह्मविषेवास्तवतैंनहीं है ॥तथापितात्रह्मविषेसोपरिच्छिन्नपणाभ्रांतिकरिकैकल्पितहै॥ताभ्रांतिसिद्धपरिच्छिन्नपणेकूं सो अनंतशब्द निवारणकरै है ॥ हेशिष्य ॥ जिसब्रह्मविषे सोअनंतशब्द परिच्छिन्नपणेकीनिवृत्तिकरै है ॥ सोब्रह्मके साहै ॥ वास्तवतैं पूर्वउक्तदेशादिकतीनपरिच्छेदोंतैं तथास्वगतादिकतीनभेदोंतैं रहितहै ॥ तथा तिनपरिच्छेदोंके अभावतैंभीरहितहै ॥ काहेतैं ता ब्रह्मविषे जोकदाचित् सोभाव भिन्नरूपकरिकैरहैगा तौ सोअनंतशब्द पुनःक्रोधकूंप्राप्तहोवैगा ॥ याकारणतैं सोअनंतशब्द तिनपरिच्छेदोंकेअभावकूंभी निवारणकरै है यातैं सोआनंदस्वरूपआत्मा सर्वभेदतैंरहित परिपूर्णब्रह्मरूपहै इतनेकरिकै ॥ सत्यं ज्ञानमनंतं ब्रह्म याश्रुतिविषेस्थित जोअनंतपदहै ॥ ताअनंतपदकेफलकानिरूपणकऱ्या॥अब ज्ञानपदकेफलकानिरूपणकरै हैं ॥हेशिष्य सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म॥ या श्रुतिविषे कथनकऱ्याजोआत्मारूपब्रह्म है ॥ ताब्रह्मकूं केईकनैयायिकवादी जडरूपमानैहैं॥यातैं तिनवादियोंकी

भ्रांतिकरिकैसिद्ध जोब्रह्मविषेजडपणाहै ॥ ताजडपणेकूं यहज्ञानशब्द निवारणकरैहै ॥ हेशिष्य ॥ सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म ॥ याश्रुतिविषेस्थितजोज्ञानशब्दहै ॥ ताज्ञानशब्दका केईकनैयायिकवादी याप्रकारकाअर्थकरैहैं ॥ ज्ञानगुण जिसविषेरहैहै ताकानाम ज्ञानहै॥याप्रकारका ज्ञानशब्दका अर्थकरिकै ताब्रह्मकूं ज्ञानगुणवालामानै हैं ॥ ज्ञानस्वरूपमानैनहीं ॥ याप्रकारका जोज्ञानशब्दकाअर्थ अंगीकारकरिये ॥ तौ सोज्ञानशब्द ताब्रह्मविषे जडपणेकीव्यावृत्ति करिसकैगानहीं ॥ काहेतैं जैसे यहभूमिमनुष्यवालीहै याप्रकारकावचन ताभूमिविषे मनुष्यतैंभिन्नपणेकीनिवृत्तिकरैनहीं ॥ तैसे ज्ञानगुणवालाब्रह्महै ॥ यहवचनभी ताब्रह्मविषे ज्ञानतैंभिन्नत्वरूपजडपणेकीनिवृत्तिकरैनहीं ॥ यातैं सोज्ञानशब्द ज्ञानगुणवालेब्रह्मकाबोधनकरैनहीं ॥ किंतुताब्रह्मविषे जडपणेकीनिवृत्तिकरणेवासतै सोज्ञानशब्द केवलज्ञानरूपताकूंहीबोधनकरैहै ॥ हेशिष्य ॥ यहज्ञानशब्दताब्रह्मविषे जैसेजडरूपताकीव्यावृत्तिकरै है॥ तैसेअप्रकाशरूपताकी तथापरप्रकाशतारूपकीभीव्यावृत्तिकरै है ॥ काहेतैंसोब्रह्म जोकदाचित् अप्रकाशरूपहोवै॥ तौ जैसे अप्रकाशरूप होणेतैं घटादिकपदार्थ जडरूपहैं ॥ तैसेअप्रकाशरूप होणेतैं सोब्रह्मभीजडरूपहोवैगा ॥ यातैं सोब्रह्म अप्रकाशरूपनहींहै ॥ किंतु प्रकाशरूपहै ॥हेशिष्य॥ ताब्रह्मकूं प्रकाशरूपतासिद्धहुएभी सोब्रह्म जोकदाचित् परप्रकाशहोवै ॥ तौजैसे सूर्यचंद्रमादिकप्रकाश परप्रकाशहोणेतैंजडरूप हैं ॥ तैसेपरप्रकाशहोणेतैं ताब्रह्मकूंपुनः जडरूपता प्राप्तहोवैगी ॥ यातैं ताजडतादोषकेनिवारणकरणेवासतै सोज्ञानशब्द ताब्रह्मविषे परप्रकाशरूपताकी निवृत्तिकरिकै केवल स्वयंप्रकाशरूपताकूं बोधनकरैहै ॥ इतनैंकरिकै ज्ञान पदकेफलका निरूपणकऱ्या ॥ अबसत्यपदकेफलकानिरूपणकरै हैं ॥ हेशिष्य ॥ जैसेरज्जुविषेसर्प तथाशुक्तिविषेरजत असत्यहोवैहै ॥ तैसे यहस्वयंज्योतिब्रह्म असत्यरूपमतहोवै ॥ याप्रकारकीसंभावनाकरिकै ताब्रह्मविषेप्राप्तभयाजोअसत्यपणाहै ॥ ताभ्रांतिसिद्धअसत्यपणेकूं यहसत्यशब्द निवारणकरैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्शुक्तिरजतावपितथारज्जुसर्पविषेभी भ्रांतिकालपर्यंत सत्यपणाही विद्यमानहै ॥ यातैंयहसत्यशब्द ताब्रह्मविषे असत्यपणेकीव्यावृत्ति किसप्रकारकरैहै ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ ज्ञानशब्दकी तथाअनंतशब्दकी समीपताकरिकै सोसत्यशब्द ताब्रह्मविषे असत्यपणेकीव्यावृत्तिकरैहैं ॥ काहेतैं यालोकविषे

जोजोपदार्थ परिच्छिन्नहोवैहै तथा जडहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ नाशकूंअवश्यप्राप्तहोवैहै ॥ जैसे रज्जुसर्पादिकपदार्थ तथाघटादिकपदार्थपरिच्छिन्नहैं तथाजडहैं ॥ यातैं तेपदार्थ किसीनिमित्तकरिकै नाशकूंभी अवश्यप्राप्तहोवै हैं ॥ और यहब्रह्मतौ परिच्छिन्नपणेतैंतथाजडपणेतैं रहितहै ॥ यातैंताब्रह्मकूं कोईभीकारणनाशकरिसकैनहीं ॥ यातैंयहअर्थासिद्धभया ॥ सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म ॥ याश्रुतिविषेस्थित जेसत्यज्ञान अनंत यहतीनपदहैं ॥ तेतीनोंपद क्रमतैं असत्य जड परिच्छिन्नपणेकीनिवृत्तिकरिकै ताअद्वितीयब्रह्मकूंबोधनबोधनकरै हैं ॥ हेशिष्य ॥ सोलक्ष्यस्वरूपब्रह्म यद्यपि सर्वत्रपरिपूर्णहै ॥ तथापि सोब्रह्म याबुद्धिरूपगुहाविषेही साक्षीरूपकरिकैस्पष्टप्रतीतहोवैहै ॥ ऐसेसाक्षीरूप ब्रह्मकूं जोअधिकारीपुरुष मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारआपणाआत्मारूपकरिकैजानैहै ॥ सोअधिकारीपुरुष ताब्रह्मकीन्याईं सर्वजगत्कूं आपणे अस्ति भाति प्रिय रूपकरिकैव्याप्तकरै है ॥ और ता सर्वजगत्कूं व्याप्तकरिकै सोविद्वान्पुरुष एकहीकालविषे सर्वमनवांछित पदार्थोंकूं प्राप्तहोवैहै ॥ हेशिष्य ॥ सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म ॥ याश्रुतिविषे जोब्रह्मरूपआत्मा सत्यज्ञानअनंतरूपकरिकै कथनकऱ्या है ॥ सोब्रह्मरूपआत्मा सर्वभेदतैंरहित है ॥ याकारणतैं सोआत्मादेव अद्वितीयरूपहै ॥ ताब्रह्मकेअद्वितीयरूपताविषे जाविद्वान्पुरुषोंनैं युक्तिकथनकरीहै तायुक्तिकूं तूं श्रवणकर ॥ यालोकविषे जोजोपदार्थ कार्यरूपहोवैहै सोसोकार्यपदार्थ आपणेकारणतैं भिन्नसत्तावाला होवैनहीं ॥ जैसे मृत्तिकाकेकार्य जेघटशरावादिकहैं ॥ तेघटशरावादिककार्य मृत्तिकारूपकारणतैंभिन्ननहींहै ॥ किंतु तेघटादिककार्य मृत्तिकारूपहीहैं ॥ तैसे ब्रह्मरूपआत्माका कार्यरूपजोयहआकाशादिकप्रपंचहै ॥ सोयहआकाशादिकप्रपंच ताआत्मारूपकारणतैं भिन्ननहीं है ॥ किंतु सोआकाशादिकप्रपंच आत्मारूपहीहै ॥ याकारणतैं सोब्रह्मरूपआत्मा अद्वितीयरूपहीहै ॥ याप्रकार जगत्केउत्पत्तिकूंबोधनकरणेहारेवाक्यभीयाब्रह्मरूपआत्माके अद्वितीयरूपताकूंही बोधनकरै है ॥ अब जगत्केउत्पात्तिस्थिति लयकीकारणतारूप तटस्थलक्षणकेबोधनकरणेवासतैं प्रथमताब्रह्मरूपआत्मातैं याजगत्केउत्पत्तिकाप्रकार निरूपणकरै हैं ॥ हेशिष्य ॥ यासत्यज्ञानअनंत ब्रह्मरूप आत्मातैं प्रथम शब्दगुणवालाआकाश उत्पन्नहोताभया ॥ और ताआकाशतैं स्पर्शगुणवालावायु उत्पन्नहोताभया ॥ और

तावायुतैं रूपगुणवालाअग्नि उत्पन्नहोताभया ॥ और ताअग्नितैं रसगुणवालाजल उत्पन्नहोताभया ॥ और ताजलतैं गंधगुणवालीपृथिवी उत्पन्नहोतीभई॥हेशिष्यसंपूर्णकार्योंविषे आपणाआपणाकारण तादात्म्यसंबंधकरिकैरहै है॥यातैं सोसत्यरूपआत्मा आकाशरूपकार्यविषे तादात्म्यसंबंधकरिकैरहै है॥और सोआकाशवायुरूपकार्यविषे तादात्म्यसंबंधकरिकैरहै है॥और सोवायु अग्निरूपकार्यविषे तादात्म्यसंबंधकरिकैरहै है॥और सोअग्नि जलरूपकार्यविषे तादात्म्यसंबंधकरिकैरहै है॥ और सोजल पृथिवीरूपकार्यविषे तादात्म्यसंबंधकरिकैरहै है॥ इहां कल्पितभेदकरिकैयुक्त जोवास्तवअभेदहै ताकानाम तादात्म्यसंबंध है ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार आकाशादिककारणोंका वायुआदिककार्योंविषे तादात्म्यसंबंधहोवै है॥ याकारणतैं ताआकाशविषेतौ एकशब्दगुणहीरहै है और ताआकाशतैंउत्पन्नभयाजोवायुहै॥तावायुविषे शब्द स्पर्श यहदोगुणरहै हैं॥तहां तावायुविषे स्पर्शगुणतौ आपणाहै ॥ और शब्दगुण आकाशरूपकारणकाहै ॥ और तावायुतैं उत्पन्नभयाजोअग्निहै ॥ ताअग्निविषे शब्द स्पर्श रूप यहतीनगुणरहै हैं ॥ तहां ताअग्निविषे रूपगुणतौ आपणाहै ॥ और शब्द स्पर्श यहदोनोंगुण आकाशवायुरूपकारणके हैं ॥ और ताअग्नितैंउत्पन्नभयाजोजल है ॥ ताजलविषे शब्द स्पर्श रूप रस यहचारगुणरहै हैं ॥ तहां ताजलविषे रसगुणतौ आपणाहै ॥ और शब्द स्पर्श रूप यहतीनोंगुण क्रमतैं आकाश वायु अग्निरूपकारणोंके हैं॥और ताजलतैंउत्पन्नभईजापृथिवी है॥तापृथिवीविषे शब्द स्पर्श रूप रस गंध यहपांचगुणरहै हैं॥तहां तापृथिवीविषे गंधगुणतौ आपणाहै ॥ और शब्द स्पर्श रूप रस यहचारगुण क्रमतैं आकाश वायु अग्निजलरूपकारणोंके हैं॥इसप्रकार आकाशादिककारणोंकेगुण वायुआदिककार्योंविषे प्राप्तहोवै हैं ॥ हेशिष्य ॥ जैसे आकाशादिकभूतोंके शब्दस्पर्शादिकगुणहैं ॥तैसे याआनंदस्वरूपआत्माकेज्ञान आनंद गुणरूपनहीं हैं ॥ किंतु सोज्ञानआनंद आत्माकास्वरूपभूतही है ॥ काहेतैं जोकदाचित् याचेतनआत्माके ज्ञान आनंद गुणरूपहोते ॥ तौ जैसे आकाशादिककारणोंके शब्दादिकगुणवायुआदिककार्योंविषेप्रतीतहोवै हैं ॥ तैसे ताआत्मारूपकारणके तेज्ञानादिकगुणभी आकाशादिककार्योंविषे प्रतीतहोते॥परंतु तिनआकाशादिककार्योंविषे तेज्ञानादिकगुण प्रतीतहोतेनहीं॥यातैं यहजान्याजावै है॥तेज्ञानआनंद आत्माकेगुण

रूपनहीं हैं॥ किंतु तेज्ञान आनंद आत्माकेस्वरूपभूतही हैं ॥ किंवा ॥ यालोकविषे जोजोपदार्थ परिणामीकारणहोवै है ॥ तिसतिसपरिणामीकारणकेगुणही कार्यविषेप्रतीतहोवै हैं॥ जैसे आकाशादिकपरिणामीकारणोंकेशब्दादिकगुण वायुआदिककार्योंविषे प्रतीतहोवै हैं॥ तैसे यहसत्चित्आनंदस्वरूपआत्मा जोकदाचित् आकाशादिकोंका परिणामीकारणहोवै ॥ तो याआत्माके सत्चित्आनंदादिकधर्म तिनआकाशादिकभूतोंविषे प्रतीतहोणेचाहिये॥ और याआत्माके सत्चित्आनंदादिकधर्म तिनआकाशादिकजडभूतोंविषे देखीतेनहीं॥ यातैं यहजान्याजावै है ॥ यहआत्मादेव याआकाशादिकजडजगत्का परिणामीउपादानकारण नहीं है॥ किंतु यहआत्मादेव याजगत्का विवर्त उपादानकारणहै ॥ और ताब्रह्मरूपआत्माविषे साविवर्तउपादानरूपता मायातैंविनासंभवैनहीं ॥ यातैं सोपरमात्मादेव माया करिकेही ताआकाशादिकप्रपंचका विवर्तउपादानकारणहोवै है ॥ तहांदृष्टांत ॥ जैसे परिणामभावतैंरहितजोरज्जु है ॥ सारज्जु माया करिकेही सर्पकाविवर्तउपादानकारण होवै है ॥ तैसे परिणामभावतैंरहित यहआत्मादेवभी मायाकरिकेही याजगत्का विवर्तउपादानकारणहोवै है ॥ और ताआत्मातैंभिन्न जितनेकीआकाशादिकभूत हैं ॥ तिनआकाशादिकोंके शब्दादिकगुण वायुआदिककार्योंविषे सर्वजीवोंकूं प्रतीतहोवै हैं ॥ यातैं यहजान्याजावै है ॥ तेआकाशादिक वायुआदिकोंकेपरिणामीउपादानकारणहैं ॥ हेशिष्य ॥ वास्तवतैंविचारकरिकेदेखियेतो सर्वपरिणामोंतैंरहित सोआत्मारूपब्रह्मही सर्वत्रकारणहै ॥ ताब्रह्मतैंभिन्न जितनेकीआकाशादिकपदार्थ हैं ॥ तेसंपूर्णपदार्थ ताब्रह्मकेही कार्य हैं॥ तिनआकाशादिकोंविषे वायुआदिकोंकाकारणतासंभवैनहीं ॥ काहेतैं जोकदाचित् आकाशादिकोंकूंही वायुआदिकोंका कारणमानिये ॥ और ब्रह्मकूं वायुआदिकोंका कारणनहींमानिये ॥ तो ब्रह्मकेज्ञानतैं जोश्रुतिनैं सर्वजगत्काज्ञान कथनकऱ्याहै सोअसंगतहोवैगा ॥ काहेतैं कारणकेज्ञानतैंविना कार्यकाज्ञानहोवैनहीं ॥ यातैं ताश्रुतितैं ब्रह्मविषेही सर्वजगत्कीकारणतासिद्धहोवै है ॥ शंका ॥ हेभगवन् जोकदाचित् आकाशादिकसर्वकार्योंकेप्रति एकब्रह्मकूंहीकारणताहोवै॥ तो आकाशादिकोंविषे वायुआदिकोंकेकारणताकाकथन असंगतहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ वास्तवतैंविचारकरिकेदेखियेतो संपूर्णकार्योंविषे ब्रह्मकूंही ॥ १२ ॥

कारणताहै ॥ तथापि लोकोंकूं जोआकाशादिकोंविषे वायुआदिकोंकीकारणताप्रतीतहोवैहै॥ याकेविषेयहकारणहै॥ उपाधितैंरहित शुद्ध ब्रह्मविषेतो किसीभीपदार्थकी कारणतानहीं है॥ किंतु मायादिकउपाधियुक्तब्रह्मकूंहीं याजगत्कीकारणताहै ॥ यातैं जैसे मायाविशिष्टब्रह्म आकाशकाकारणहै ॥ तैसे आकाशविशिष्टब्रह्म वायुकाकारणहै ॥ और वायुविशिष्टब्रह्म अग्निकाकारणहै॥ और अग्निविशिष्टब्रह्म जलका कारणहै ॥ और जलविशिष्टब्रह्म पृथिवीकाकारणहै ॥ और पृथिवीविशिष्टब्रह्म घटादिकोंकाकारणहै॥ इसप्रकार पूर्वपूर्व आकाशादिककार्यविशिष्टब्रह्म उत्तरउत्तर वायुआदिककार्योंकेप्रति कारणहोवै है ॥ याकारणतैंहीं तिनआकाशादिकोंविषे वायुआदिकोंकेकारणपणेका अभिमान लोकोंकूंहोवै है॥ और आकाशादिकोंके शब्दादिकगुणोंकूं वायुआदिककार्योंविषेदेखिकरिके वायुआदिककार्योंविषे यहशब्दादिकगुण आकाशादिककारणोंकेआये हैं ॥ याप्रकारकाभ्रम लोकोंकूंहोवैहै॥ यातैं सोब्रह्मही सर्वजगत्काकारणहै यहअर्थसिद्धभया॥ अब पूर्वप्रसंगकानिरूपणकरै हैं ॥ हेशिष्य ॥ शब्दादिकपंचगुणोंवाली तथा सर्वब्रह्मांडकीजननी तथास्थावरजंगमरूपसर्वजगत्कूंधारणकरणेहारी जापृथिवी पूर्वजलतैंउत्पन्नभईथी ॥ तापृथिवीतैं अनेकप्रकारकीऔषधियां उत्पन्नहोतीभई ॥ और तेऔषधियां यद्यपि अनेकप्रकारकी हैं ॥ तथापि संक्षेपतैं ते औषधियां दोप्रकारकीहोवै हैं॥ तहां एकतो ग्राम्यओषधिहोवै हैं॥ और दूसरी आरण्यओषधिहोवैहैं॥ तहां पुरुषोंकेप्रयत्नकरिकैजन्य जेव्रीहियवनाषादिकहैं तिनोंकानाम ग्राम्यओषधिहै॥ और पुरुषोंकेप्रयत्नतैंविनाहीं वनविषेहोणेहारे जेश्यामकादिक हैं तिनोंकानाम आरण्यओषधिहै ॥ ते दोनोंप्रकारकीओषधियां मनुष्यादिकजंगमप्राणियोंकरिकै भक्षणकरणेयोग्यहैं॥ ऐसीओषधियोंतैं व्रीहियवादिक नानाप्रकारकेअन्न उत्पन्नहोतेभये ॥ और तिनव्रीहियवादिकअन्नोंकूं स्त्रियां तथापुरुष भक्षणकरतेभये ॥ ताभक्षणकरेहुए अन्नतैं वीर्य उत्पन्नहोताभया ॥ कैसाहैसोवीर्य स्वर्ग मेघ भूमिलोक पुरुष योषित् यापंचअग्नियोंविषे योषित्रूपपंचमअग्निका आहुतिरूपहै ॥ तिनपंचअग्नियोंका षष्ठेअध्यायविषे विस्तारतैं निरूपणकरिआये हैं ॥ और तावीर्यतैं हस्तपादादिकअंगोंवाला यहपुरुष शरीर उत्पन्नहोताभया ॥ याकारणतैं यास्थूलशरीररूपपुरुषकूं श्रुतिभगवती अन्नरसमय यानामकरिकै कथनकरै है ॥ अन्नकेरस

कारजोविकारहोवै ताकानाम अन्नरसमयहै ॥ शंका॥हेभगवन् जैसे यामनुष्यशरीरकी अन्नतैंउत्पत्तिहोवै है ॥ तैसे गौअश्वादिकपशुवोंकी भी ताअन्नतैंही उत्पत्तिहोवै है ॥ यातैं श्रुतिविषे केवलमनुष्यशरीरकीही अन्नतैंउत्पत्ति किसवासतेकथनकरीहै॥समाधान॥हेशिष्य॥ यद्यपि पूर्वउक्तरीतिसैं सर्वशरीरोंकी अन्नतैंहीउत्पत्तिहोवै है ॥ तथापि यहमनुष्यशरीर सर्वशरीरोंतैंश्रेष्ठहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवतीनैं ता अन्नतैं मनुष्यशरीरकीहीउत्पत्तिकथनकरीहै॥सर्वशरीरोंविषे यामनुष्यशरीरकीप्रधानता प्रथमअध्यायविषे कथनकरिआये हैं ॥हेशिष्य॥ जैसे पितामातानैंभक्षणकऱ्याजोअन्न है ॥ ताअन्नतैं शुक्रशोणितद्वारा यहस्थूलशरीर उत्पन्नहोवै है ॥ याकारणतैं यास्थूलशरीरकूं श्रुति अन्नरसमयकहेहै॥तैसे दिनदिनविषे अन्नकेभक्षणकरणेतैं यास्थूलशरीरकीवृद्धिहोवै है॥याकारणतैंभी श्रुतिभगवती यास्थूलशरीरकूं अन्नरसमय यानामकरिकैकथनकरै है॥इतनैंग्रंथकरिकै तात्रह्मकीअद्वितीयरूपताजनावणेवासतै तात्रह्मतैं आकाशतैंआदिलैके यास्थूलशरीरपर्यंत जगत्केउत्पत्तिकानिरूपणकऱ्या ॥ अब स्थूलबुद्धिवालेपुरुषोंकेप्रति सर्वांतरयामीपरमात्मादेवकेबोधनकरणेवासतै पंच कोशोंकानिरूपणकरै हैं॥हेशिष्य॥पूर्वहमनैं सत्यज्ञानअनंतरूपकरिकै तथाआकाशादिकजगत्काकारणरूपकरिकै जोब्रह्मरूपआत्मा तुमारेप्रति कथनकऱ्याथा॥ताआत्मादेवके स्थूल सूक्ष्म कारण यहतीनप्रकारकेशरीर प्रसिद्धहैं॥और तिन तीनशरीरोंविषेही तेतित्तिरिनामा ब्राह्मण अन्नमय प्राणमय मनोमय विज्ञानमय आनंदमय यहपंचकोश कल्पनाकरै हैं॥ हेशिष्य ॥ जैसे यालोकविषे खड्गकूंआवरणकरणेद्वारा जोकाष्ठविशेषहै ताकूं कोशकहै हैं तैसे यहअन्नमयादिकभी आत्माकूं आवरणकरै हैं॥याकारणतैं तिनअन्नमयादिकपांचोंकूं शास्त्रविषे कोश यानामकरिकैकथनकरै है ॥ और असंगबुद्धिरूपशस्त्रतैंरहित जेअज्ञानीपुरुषहैं॥तिनअज्ञानीपुरुषोंकरिकै तेअन्नमयादिककोश भेदनकरेजावैंनहीं॥याकारणतैं तिनअन्नमयादिककोशोंकूं दुर्भेद्यकहे हैं॥अब तिनपंचकोशोंका तीनशरीरोंविषे अंतरभाव निरूपणकरै हैं॥हेशिष्य यह प्रथमस्थूलशरीरतौ एकअन्नमयकोशरूपहै॥और दूसरा सूक्ष्मशरीरतौ प्राणमय मनोमय विज्ञानमय यातीनकोशस्वरूप है॥और तीसरा कारणशरीरतौ एकआनंदमयकोशरूपहै ॥ इसप्रकार तीनशरीरोंविषेही तेपंचकोशरहे हैं॥हेशिष्य॥इसप्रकार तीनशरी

रोंविषे पंचकोशोंकीकल्पनाकरिकै तेतित्तिरिनामाब्राह्मण आपणेशिष्योंकेबोधकरणेवासतै तिनपंचकोशोंकूं पक्षीरूपकरिकै कल्पनाकरतेभये ॥ और जैसे लोकप्रसिद्धपक्षियोंके शिर वामपक्ष दक्षिणपक्ष उदर पुच्छ यहपंचअवयवहोवै हैं ॥ तैसे तेतित्तिनामाब्राह्मण तिन अन्नमयकोशादिरूपपक्षियोंके शिरादिकपंचअवयव कल्पनाकरतेभये ॥अब प्रथमअन्नमयकोशविषे तिनपंचअवयवोंकानिरूपणकरै हैं ॥ हेशिष्य ॥ यहस्थूलशरीररूप जोअन्नमयकोशरूपपक्षीहै ॥ ताका यहप्रसिद्धमस्तकतौ शिरहै ॥ और दक्षिणभुजा दक्षिणपक्षहै ॥ और वामभुजा उत्तरपक्षहै ॥ और यहप्रसिद्धउदर ताकाउदरहै ॥ और यहदोनोंपाद प्रसिद्धपक्षीकेपुच्छकीन्याईं दीर्घ हैं॥यातैं यहदोनोंपाद ताकापुच्छहै ॥ और तेदोनोंपाद याशरीरकोस्थितिकाआधारहैं ॥ याकारणतैंश्रुतिभगवतीतापादरूपपुच्छकूं प्रतिष्ठायानामकरिकैकथन करै है ॥ शंका ॥ हेभगवन् यहलोकप्रसिद्धपक्षी आपणेपुच्छऊपर स्थितहोवैनहीं॥ यातैं ताप्रतिष्ठापदका स्थितिकीआधारतारूपअर्थ संभवैनहीं॥किंतुपक्षीकेशरीरकीसमाप्तिही ताप्रतिष्ठापदकाअर्थहै समाधान॥हेशिष्य॥यद्यपि यहलोकप्रसिद्धपक्षी आपणेपुच्छऊपर स्थितहोवै॥नहीं॥तथापि कोईकवानरभल्लुकादिकजीव आपणेपुच्छऊपरही स्थितहोवैहैं।याकारणतैंस्थितिकीआधारताहीताप्रतिष्ठाशब्दका अर्थ है ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार स्थूलशरीररूपअन्नमयकोशकाकथनकरिकै तेतित्तिरनामाब्राह्मण याअन्नमयकोशविषे याप्रकारका मंत्र रूपश्लोककथनकरै हैं ॥ रसबीजभावकूंप्राप्तभयाजोअन्नहै ॥ ताअन्नतैंहीं यहसंपूर्णपृथिवीविषेस्थितप्रजा उत्पन्नहोवै है॥और ताअन्नकरिकेही यहसंपूर्णप्रजा जीवनकूंप्राप्तहोवै है ॥और तापृथिवीरूपअन्नविषेही यहसंपूर्णप्रजा लयभावकूंप्राप्तहोवै है॥हेशिष्य स्थावररूपकरिकै प्रसिद्ध जेयहवृक्षादिकहैं ॥ तिनवृक्षादिकस्थावरोंकी याजलरूपअन्नतैंहीं उत्पत्तिहोवै है ॥ और ताजलरूपअन्नकरिकैही तिनवृक्षोंकाजीव नहोवै है ॥ और ताजलरूपअन्नविषे तिनवृक्षोंकालयहोवै है ॥ हेशिष्य ॥ जलरूपअन्नकरिकै जोतिनवृक्षादिकोंकी उत्पत्ति स्थिति लय कथनकऱ्याहै ॥ सोकेवलजलकरिकैही तिनवृक्षादिकोंकेउत्पत्तिआदिक तुमनैं नहींजानणे ॥ किंतु भूमियुक्त ताजलरूपअन्नतैंहीं तिनवृक्षादिकोंकी उत्पत्ति स्थिति लय होवै है ॥ और मनुष्यादिकजंगमशरीरोंकी उत्पत्तिस्थितिलयविषेतौ यहप्रसिद्धव्रीहियवादिकअन्नही

कारणहैं ॥ अब दूसरीरीतिसैं तिनस्थावरजंगमशरीरोंका अन्नविषेलय निरूपणकरै हैं॥ हेशिष्य॥ यहवृक्षादिरूप जेस्थावरशरीरहैं॥तथा यहमनुष्यादिरूप जेजंगमशरीरहैं॥तेसंपूर्णशरीर जीवभावतैंरहितहुए किसीप्राणीके अन्नरूपताकूंप्राप्तहोइकै नाशकूंप्राप्तहोवैहैं॥तात्पर्ययह जिसवस्तुकूं यहप्राणी आपणेक्षुधाकीनिवृत्तिवासतै भक्षणकरै हैं तिसवस्तुकानाम अन्नहै॥याप्रकारका अन्नशब्दकाअर्थ वृक्षादिरूपस्थावरशरीरोंविषे तथामनुष्यादिरूपजंगमशरीरोंविषे घटे है॥काहेतैं वृक्षादिकस्थावरशरीरोंकूं यहमनुष्यादिकजंगमप्राणी शाकादिरूपकरिकैभक्षणकरै हैं॥तैसे यामनुष्यादिकजंगमशरीरोंकूंभी सिंहश्वानकृमिआदिकजीव भक्षणकरै हैं॥यातैं यहसंपूर्णस्थावरजंगमशरीर अन्नभावकूंप्राप्तहोइकै नाशकूंप्राप्तहोवै हैं यहवार्तासंभवै है॥किंवा ॥ यहपृथ्वी सर्वजीवोंके भोगकासाधनहै ॥ याकारणतैं यहपृथ्वी सर्वजीवोंका अन्नरूपहै ॥ और यहसंपूर्णस्थावरजंगमशरीर आपणेनाशकालविषे तापृथ्वीतैंअभिन्नहोवै हैं ॥ या रणतैंभी तिनसंपूर्णशरीरोंविषे अन्नरूपता संभवहोइसकैहै ॥ हेशिष्य ॥ यहसमष्टिरूपअन्न सर्वप्रजाके उत्पत्तिस्थितिलयका कारण है ॥ या कारणतैं श्रुतिभगवती ताअन्नकूं ज्येष्ठ यानामकरिकैकथनकरै है ॥ और सर्वरोगरूप जो यह क्षुधाहै ताक्षुधारूपरोगकूं यहअन्न नाशकरै है ॥ या कारणतैं श्रुतिभगवती याअन्नकूं सर्वौषध यानामकरिकैकथनकरै है ॥ हेशिष्य ॥ ताअन्नविषे सर्वभूतोंके उत्पत्तिस्थितिलयकीकारणता रूपब्रह्मकेलक्षणकूं निश्चयकरिकै जेअधिकारीपुरुष ताअन्नकूं ब्रह्मरूपकरिकै उपासनाकरै हैं॥तेअधिकारीपुरुष मनवांछितअन्नकीप्राप्तिरूपफलकूं प्राप्तहोवै हैं॥ इहां अन्नशब्दका दोप्रकारकाअर्थहै॥ व्यष्टिरूपकरिकै जोवस्तु भूतोंकेभक्षणकूंप्राप्तहोवै तावस्तुकानाम अन्नहै॥ अथवासमष्टिरूपकरिकै जोवस्तु सर्वभूतोंकूंभक्षणकरैहैतावस्तुकानाम अन्नहै॥हेशिष्य॥याअन्नमयादिकपंचकोशोंविषे जोएकएककोशके शिरादिकपंचपंचअवयवकहे हैं॥ तिनअवयवोंविषे जिसअवयवकूंपुच्छशब्दकरिकैतथाप्रतिष्ठाशब्दकरिकैकथनकऱ्याहै तिसअवयवकूंतिस तिसकोषविषे प्रधानजानणा तथाकारणरूपजानणा॥तथा उत्तरउत्तरकोशकूं पूर्वपूर्वकोशकाकारणजानणा॥इतनैंकरिकै अन्नमयकोशका निरूपणकऱ्या॥अब जिसनिमितकूंलैकै एकहीसूक्ष्मशरीरविषे तीनकोशोंकीकल्पनाकरीहै॥तिननिमित्तोंकानिरूपणकरै हैं॥ हेशिष्य॥

यासूक्ष्मशरीरविषे क्रिया नाम रूप यहतीनों भिन्नभिन्नरहै हैं ॥ तहां तासूक्ष्मशरीरविषे जोक्रियाप्रधानअंशहै ॥ ताकानाम प्राणमयकोशहै ॥ और प्रमाणरूपजोनामहै ॥ तानामप्रधानजोअंशहै ॥ ताकानाम मनोमयकोशहै॥और प्रमेयस्वरूपजोरूपहै ॥ तारूपप्रधानजोअंशहै ॥ ताकानाम विज्ञानमयकोशहै ॥ नाम रूप यादोनोंशब्दोंकेअर्थकूं क्रमतैं मनोमयकोशकेनिरूपणविषे तथा विज्ञानमयकोशकेनिरूपणविषे स्पष्टकरिकैकहैंगे॥अबप्राणमयकोशकानिरूपणकरैहैं॥हेशिष्य॥तापंचअवयवोंवालेस्थूलशरीररूपअन्नमयकोशतैंअन्यअंतरप्राणमयकोशस्थितहै॥ सोप्राणमयकोशरूपपक्षीभी अन्नमयकोशकीन्याईं शिरादिकपंचअवयवोंवालाहै॥ और ताप्राणमयकोशतैंअंतरमनोमयकोशहै॥और तामनोमयकोशतैंअंतर विज्ञानमयकोशहै॥औरताविज्ञानमयकोशतैंअंतर अविद्यारूपआनंदमयकोशहैतिनपांचोंकोशोंविषे उत्तरउत्तरकोश पूर्वपूर्वकोशकेसदृशहीहोवैहै॥जैसे मूषाविषेपायेहुएजे द्रवीभूतताम्रादिकधातुहैं॥ तिनताम्रादिकधातुओंकरिकैसोमूषा सर्वओरतैंपरिपूर्णहोवैहै ॥ तैसे उत्तरउत्तरकोशकरिकै पूर्वपूर्वकोश सर्वओरतैं परिपूर्णहोवै है ॥ जैसे प्राणमयकोशकरिकैयहअन्नमयकोश सर्वओरतैंपरिपूर्णहोवैहै ॥ और मनोमयकोशकरिकै यहप्राणमयकोश सर्वओरतैंपरिपूर्णहोवैहै ॥ तहां अत्यंतअग्निकेसंबंधकरिकै द्रवीभावहुएजेताम्रादिकधातुहैं ॥ तेताम्रादिकधातु जिसपात्रविषेपावणेकरिकै मनुष्यादिकोंकेमूर्तिआकारकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तापात्रकानाम मूषाहै ॥ अब ताप्राणमयकोशकैं शिरादिकपंचअवयवोंका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ मुखनासिकाद्वारा चलणेहारा जोप्राणरूपवायुहै ॥ सोप्राणरूपवायु याप्राणमयकोशरूपपक्षीका शिररूपहै ॥ और प्राणअपानकासंधिरूप जोव्यानरूपवायुहै ॥ सोव्यानरूपवायु याप्राणमयपक्षीका दक्षिणपक्षरूपहै ॥ और नीचेगमनकरणेहारा जोअपानरूपवायुहै ॥ सो अपान याप्राणमयपक्षीका उत्तरपक्षहै ॥ और आकाशहैदेवताजिसका ऐसाजोसमानवायुहै ॥ सोसमाननामावायु याप्राणमयपक्षीका उदररूपहै ॥ और पृथ्वीहै देवता जिसका ऐसाजोउदाननामावायुहै ॥ सोउदाननामावायु याप्राणमयपक्षीका पुच्छरूपहै तथा प्रतिष्ठारूपहै ॥ हेशिष्य ॥ मरणकालविषे याशरीरकापरित्यागकरिकै लोकांतरविषेजाणेहारा जोयहउदाननामावायुहै ॥ सोउदाननामावायु जभी याशरीरतैंबाहर

निकसे है ॥ तभी संपूर्णप्राण याशरीरतैंबाहरनिकसे हैं ॥ याकारणतैं ताउदानवायुरूपपुच्छकूं प्रतिष्ठाकहे हैं॥ और हेशिष्य ॥जैसे सम
ष्टिरूपकरिकैध्यानकऱ्याहुआ यहअन्नमयकोश मनवांछितअन्नकीप्राप्तिरूपफलकाहेतुहोवै है ॥ तैसे समष्टिरूपकरिकैध्यानकऱ्याहुआ
यहप्राणमयकोशभी दीर्घआयुषकीप्राप्तिरूपफलकाहेतुहोवै है ॥ हेशिष्य॥ याप्राणमयकोशविषेभी तेतित्तिरिनामात्राह्मण याप्रकारकामं
त्ररूपश्लोक कथनकरै हैं ॥ प्राणव्यापारकूंकरणेद्वारा जोसमष्टिप्राणकाअभिमानीदेवताहै ॥ ता प्राणदेवताकूंआश्रयणकरिकैही संपूर्णदेव
ता तथासंपूर्णमनुष्य तथासंपूर्णपशु नानाप्रकारकीचेष्टाकरै हैं॥तथा जीवनकूं प्राप्तहोवै हैं ॥ और याप्राणोंकेविद्यमानहुएही सर्वप्राणियों
काजीवनहोवै है ॥ प्राणोंतैं विना किसीभीप्राणीका जीवनहोवैनहीं ॥ यातैं यहप्राण सर्वजीवोंकाआयुषरूपहै॥ याकारणतैंही श्रुतिभगव
ती याप्राणकूं सर्वआयुष यानामकरिकैकथनकरै है ॥ ऐसेप्राणकूं जेअधिकारीपुरुष ब्रह्मरूपकरिकैउपासनाकरै हैं तेअधिकारीपुरुष शतव
र्षसहस्रवर्षादिकसंपूर्णआयुषकूं प्राप्तहोवै हैं ॥ हेशिष्य ॥ यह प्राणमयकोश तास्थूलशरीररूपअन्नमयकोशकूं सर्वओरतैं व्याप्यकरिकैरहे
है ॥ याकारणतैं यहप्राणमयकोश ताअन्नमयकोशका आत्मारूपहै ॥ तात्पर्ययह॥ याअधिकारीपुरुषनैं ताअन्नमयकोशविषे आत्मत्वबु
द्धिकापरित्यागकरिकै अंतरप्राणमयकोशविषे आत्मत्वबुद्धिकरणी ॥ अब तीसरेमनोमयकोशका निरूपणकरै हैं॥हेशिष्य ॥ जैसे याअ
न्नमयकोशतैं भिन्नरूपकरिकै तथाअंतररूप करिकै तथा ताअन्नमयकोशकाआत्मरूपकरिकै यहप्राणमयकोशस्थितहै॥तैसे याप्राणमय
कोशतैंभिन्न तथाताप्राणमयकोशतैंअंतर तथाप्राणमयकोशकाआत्मारूप तीसरामनोमयकोशहै॥ अब तामनोमयकोशरूपपक्षीके शि
रादिकपंचअवयवोंका निरूपणकरै हैं॥हेशिष्य॥तामनोमयकोशरूपपक्षीका यजुर्वेद शिरहै॥और ऋग्वेद दक्षिणपक्षरूपहै॥और सामवेद
उत्तरपक्षहै॥और वेदकाब्राह्मणभाग उदररूपहै॥और अथर्वणवेद शांतिआदिकगुणोंकाकारणहोणेतैं स्थितिकाहेतुहै॥ याकारणतैं सोअथ
र्वणवेद यामनोमयपक्षीकापुच्छरूपहै तथाप्रतिष्ठारूपहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ऋग् यजुष् साम अथर्वण यहचारोंवेद शब्दरूपहैं ॥ यातैं
तिनशब्दरूपवेदोंविषे मनोमयकोशकीअवयवरूपता संभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ यद्यपि यहऋगादिकचारवेद शब्दोंकासमूह

रूपहीहै ॥ मानसज्ञानरूपनहीं हैं ॥ तथापि तिनऋगादिकवेदोंकेस्वरूपकाघटक तथा तिनऋगादिकवेदोंके प्रमाणरूपताकाघटक जेमा
नसवृत्तियाँ है ॥ तेवृत्तियां मनविषेहीरहैहै ॥ यातैं तेऋगादिकशब्द लक्षणवृत्तिकरिकै तिनमनकेवृत्तियोंकाहीबोधनकरैहै ॥ यातैं तिनश
ब्दरूपवेदोंविषे मनोमयकोशकीअवयवरूपताकाकथन विरुद्धनहीं है ॥ तात्पर्ययह ॥ केवलककारादिकवर्णोंकूं वेदरूपता है नहीं ॥ किंतु
कंठादिकस्थानोंके तथाउदात्तादिकस्वरोंके अनुसंधानकरिकैविशिष्ट जेककारादिकवर्णहैं ॥ तिनवर्णोंकेसमूहकूंही वेदरूपताहै ॥ यातैं
तिनऋगादिकवेदोंकास्वरूप अनुसंधानरूपमानसवृत्तिकरिकै घटितहै ॥ तैसे तिनऋगादिकवेदोंविषे जाप्रमाज्ञानकीकारणतारूपप्रमाण
ताहै॥साप्रमाणताभी स्वभावतैं तिनवेदोंविषेहैनहीं॥ किंतु मानसवृत्तिरूपप्रमाज्ञाननिरूपितसाप्रमाणताहै ॥ यातैं तिनवेदोंकीप्रमानभी
मानसवृत्तिकरिकैही घटितहै ॥ हेशिष्य ॥ यहब्रह्मरूपआत्मा किसीप्रमाणजन्यज्ञानका विषयहैनहीं ॥ यातैं सोमन जैसे वेदरूपप्रमाणक
रिकै याब्रह्मरूपआत्माकूं साक्षात्विषयकरिसकैनहीं॥ तैसे सोमन आपणेस्वरूपकरिकैभी ताब्रह्मरूपआत्माकूं विषयकरिसकैनहीं ॥ हेशि
ष्य ॥ याअर्थविषेभी तेतित्तिरिनामात्राह्मण याप्रकारकामंत्ररूप श्लोक कथनकरै हैं ॥ जिसब्रह्मकूं नप्राप्तहोइकै यहमनसहितवाणियां
जिसब्रह्मतैं निवृत्तिहोइआवै हैं ॥ ताब्रह्मकेस्वरूपभूतआनंदकूं जाणताहुआ यहविद्वान्पुरुष किसीतैंभयकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ हेशिष्य॥ऋग्वे
दतैंआदिलैके जितनेकीवेदरूपवाणियां हैं ॥ तथा पूर्वउक्तरीतिसैं तिनवेदरूपवाणियोंकेस्वरूपकाघटक तथाप्रमाणताकाघटक जोमनहै ॥
तिसवेदवाणीरूपप्रमाणकूं तथातामनरूपप्रमाणकूं यद्यपि याआनंदस्वरूपआत्माकेप्रकाशकरणेविषे सामर्थ्यनहींहै ॥ तथापि शास्त्रकेसं
स्कारोंकरिकैयुक्तजोअंतर्मुखशुद्धमनहै॥ताअंतर्मुखशुद्धमनकरिकैयहअधिकारीपुरुषतामनोमयकेअंतरस्थित आत्मास्वरूपआनंदकूंजाण
ताहुआ याजन्ममरणादिरूपसंसारतैं भयकूंप्राप्तहोवैनहीं॥तात्पर्ययह॥ ताप्राणमयकोशविषे आत्मत्वबुद्धिकापरित्यागकरिकै यहअधिका
रीपुरुष मनोमयकोशविषे आत्मत्वबुद्धिकरै ॥ अब विज्ञानमयकोशकानिरूपणकरै हैं ॥ हेशिष्य ॥ जैसे क्रियारूपप्राणमयकोशतैं प्रमा
णरूप मनोमयकोश अंतरस्थितहै ॥ तैसे ताप्रमाणरूपमनोमयकोशतैं यहप्रमाताप्रमेयरूपविज्ञानमयकोश अंतरस्थितहै ॥ अब तावि

ज्ञानमयकोशरूपपक्षीके शिरादिकपंचअवयवोंकानिरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ सर्वकर्मोंकामूलरूप जोगुरुशास्त्रकेवचनोंविषेविश्वासहै ॥ सोविश्वासरूपश्रद्धा याविज्ञानमयपक्षीका शिररूपहै॥और शास्त्रनैंविधानकरेजेयज्ञादिककर्म हैं॥तिनकर्मोंकेविचारविषे जामीमांसाशास्त्र जन्यमानसीबुद्धिहै ॥ सोबुद्धिरूपऋत याविज्ञानमयपक्षीका दक्षिणपक्षरूपहै॥ और अनुष्ठानकरेहुए जेशास्त्रविहितयज्ञादिककर्म हैं॥तिन कर्मोंकूंविषयकरणेहारीजाबुद्धिहै ॥ सोबुद्धिरूपसत्य याविज्ञानमयपक्षीका उत्तरपक्षरूपहै ॥ और अध्यात्मशास्त्रकेअर्थजो निश्चयहै ॥सो निश्चयरूपयोग याविज्ञानमयपक्षीका उदरहै ॥ और सर्वस्थूलप्रपंचकाकारणरूप जाहिरण्यगर्भकीसमष्टिबुद्धिहै॥ सोसमष्टिबुद्धिरूपयह या विज्ञानमयपक्षीका पुच्छरूपहै तथाप्रतिष्ठारूपहै ॥ हेशिष्य ॥ याविज्ञानमयकोशविषेभी तेतित्तिरिनामाब्राह्मण याप्रकारकामंत्ररूश्लोक कथनकरे हैं ॥ यहविज्ञानरूपबुद्धिही यज्ञादिकसर्ववैदिककर्मोंकूं तथागमनआगमनादिकसर्वलौकिककर्मोंकूं करे है॥ और देवभावकूंप्राप्त होणेहारे सर्वअधिकारीपुरुष याविज्ञानरूपसमष्टि बुद्धिकूंही ब्रह्मरूपकरिकैउपासनाकरे हैं ॥ और जेअधिकारीपुरुष याविज्ञानमयआत्मा कूं ब्रह्मरूपजाणिकरिकै इतरपदार्थोंविषे आत्मत्वबुद्धिकापरित्यागकरे हैं ॥ तेअधिकारीपुरुष देहअभिमानजन्यपापकर्मोंकापरित्यागक रिकै मनवांछितसर्वपदार्थोंकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ हे शिष्य ॥ पूर्वउक्तमूषाताम्रादिकधातुवोंकेदृष्टांतकरिकै यहविज्ञानमयकोश तामनोमयको शकूं सर्वओरतैं परिपूर्णकरेहै ॥ यातैं यहविज्ञानमयकोश तामनोमयकोशका आत्मारूपहै॥ तात्पर्ययह॥ याअधिकारीपुरुषनैं तामनोम यकोशविषे आत्मत्वबुद्धिकापरित्यागकरिकै याविज्ञानमयकोशविषे आत्मत्वबुद्धिकरणी ॥ अब आनंदमयकोशका निरूपणकरे हैं ॥ हे शिष्य ॥ ताविज्ञानमयकोशतैं अन्य अंतरआत्मा आनंदमयकोशहै ॥ सोआनंदमयकोश अव्याकृतरूप है ॥ अब ताआनंदमयको शरूपपक्षीके शिरादिकपंचअवयवोंका निरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ इष्टपदार्थकेदर्शनतैंउत्पन्नभयाजोसुखहै ॥ सोसुखरूपप्रिय याआनं दमयपक्षीका शिरहै ॥ और इष्टपदार्थकीप्राप्तिकरिकै उत्पन्नभयाजोसुखहै॥ सोसुखरूपमोद याआनंदमयपक्षीका दक्षिणपक्षरूपहै॥और ताइष्टपदार्थकेभोगजन्यजोसुखहै॥सोसुखरूपप्रमोद याआनंदमयपक्षीकाउत्तरपक्षरूपहै॥ औरतिनप्रियमोदादिकविशेषोंविषे जोसुख सामा

न्यरूपतैंअनुगतहै ॥ सो सामान्यसुखरूपआनंदमयपक्षीका उदररूप है ॥ औरयासर्वजगत्काकारणरूप जोआनंदस्वरूप ब्रह्म है ॥ सोअधिष्ठानरूपब्रह्म याआनंदमयपक्षीकापुच्छरूपहै तथाप्रतिष्ठारूपहै।औरयहअज्ञानरूप आनंदमयकोशताविज्ञानमयकोशकूं सर्वओरतैं परिपूर्णकरिकैस्थितहै ॥ याकारणतैंयहआनंदमयकोश ताविज्ञानमयकोशकाआत्मारूपहै ॥ तात्पर्ययह ॥ याअधिकारीपुरुषनैं तावि ज्ञानमयकोशविषे आत्मत्वबुद्धिकापरित्यागकरिकै याआनंदमयकोशविषे आत्मत्वबुद्धिकरणी॥ इतनेंग्रंथकरिकै अन्नमयादिकपंचकोशों कानिरूपणकऱ्या ॥ अब जिसअभिप्रायकरिकै श्रुतिभगवतीनैं अन्नमयादिकपंचकोशोंका निरूपणकऱ्याहै ताअभिप्रायकानिरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ यालोकविषे सर्वदेहधारीजीवोंकाचित्त तथाश्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रिय तथावाकादिकपंचकर्मइंद्रिय नित्यबहिर्मुखहीहोवै हैं ॥ याकारणतैं यहसंपूर्णजीव चित्तकरिकै तथाइंद्रियोंकरिकै बाह्यपदार्थोंकूंहींग्रहणकरेहैं और याशरीरकेअंतरस्थितजोआनंदकासमुद्र रूपआत्मादेवहै ॥ ताआनंदस्वरूपआत्माकूं कोईभीदेहधारीजीवग्रहणकरतानहीं ॥ किंतु याअंतरआनंदस्वरूपआत्माकूंपरित्यागकरिकै यहसंपूर्णजीव सुखकीप्राप्तिवासतै बाहरहींभ्रमणकरेहैं ॥ और सुखकीप्राप्तिवासतै बाहरभ्रमणकरतेहुएयहजीव किंचित्मात्रभी सुखकूं प्राप्तहोतेनहीं ॥ उलटा ताबहिर्मुखताकरिकैयहजीव महान्दुःखरूपसमुद्रविषे प्राप्तहोवै हैं ॥ इसप्रकार तिनबहिर्मुखजीवोंकूंमोक्ष रूपपुरुषार्थतैंभ्रष्टहुआदेखिकै तथा जन्म मरण रूपसंसारविषे प्राप्तहुआदेखिकै माताकीन्याईं अत्यंतस्नेहयुक्त श्रुतिभगवती अत्यंतदुःखीहोतीभई ॥ और ताबहिर्मुखप्रवृत्तितैं तिनजीवोंकूं साक्षात् निवृत्तकरणेविषे असमर्थहुई साश्रुतिभगवती पंचको शरूपउपायकाविचारकरिकै प्रथम अधिकारीब्राह्मणोंकूं ताबहिर्मुखप्रवृत्तितैं निवृत्तकरतीभई ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ माता कीन्याईं सर्वजीवोंके हितवासतै प्रवृत्तभईजाश्रुतिभगवतीहै ॥ ता श्रुतिभगवतीनैं प्रथम केवल ब्राह्मणोंकूंही उपदेश किसवा सतैकऱ्या ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ सा श्रुतिभगवती जिसअभिप्रायकरिकै प्रथम अधिकारी ब्राह्मणोंकेप्रतिही उपदेश कर तीभईहै ॥ ताअभिप्रायकूं तू श्रवणकर ॥ या अधिकारीब्राह्मणोंकूं जभी मैं ता बहिर्मुखप्रवृत्तितैं निवृत्तकरौंगी ॥ तभी ताबहि

मुखप्रवृत्तितैं निवृत्तहुए यहब्राह्मण अन्यक्षात्रियोंकूं वेदकेवचनोंकाउपदेशकरिकै ताबहिर्मुखप्रवृत्तितैंनिवृत्तकरैंगे ॥ तथाअन्यशूद्रादिकोंकूं पुराणकेवचनोंकाउपदेशकरिकै ताबहिर्मुखप्रवृत्तितैं निवृत्तकरैंगे ॥ हेशिष्य इसप्रकारकाविचारकरिकेसाश्रुतीभगवती याजीवोंकूं वहि मुखप्रवृत्तितैंनिवृत्तकरणेवासतै तिनअन्नमयादिकपंचकोशोंका उपदेशकरतीभई ॥ शंका ॥ हेभगवन् तिनअन्नमयादिकपंचकोशोंका कथनकरिकै साश्रुतिभगवती याजीवोंके बाह्यप्रवृत्तिकूंकिसप्रकार निवृत्तकरै है ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ यालोकविषे रूपयौवनादिक गुणोंकरिकैयुक्त जेपुरुषहैं ॥ तथा रूपयौवनादिकगुणोंकरिकैयुक्त जेस्त्रियांहैं ॥ तेपुरुष तथा स्त्रियां आपणेआपणेशरीरकरिकै प्रसन्नताकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु तेपुरुष तथास्त्रियां सुखकीप्राप्तिवासतैंपिशाचकीन्याईं आपणेशरीरतैंभिन्न किसीजीवतशरीरकूं अथवा मृतकशरी रकूंही सेवनकरैहै॥ और तेपुरुष तथास्त्रियां सुखकीप्राप्तिवासतै जिसपरशरीरकासेवनकरैहैं ॥ सोपरशरीरभी स्थूल सूक्ष्म कारण याभेद करिकै तीनप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां प्रथम यहस्थूलशरीरतौ अन्नकाविकाररूपहोवैहै ॥ और दूसरासूक्ष्मशरीरतौ प्राण मन विज्ञान या तीनरूपहोवैहै ॥ और तीसराकारणशरीरतौ अनादिअज्ञानरूपहोवैहै ॥ हेशिष्य ॥ केवलपरशरीरही अन्नप्राणादिरूपनहींहै ॥ किंतुया तीनलोकोंविषे जितनाकीप्रपंचहै ॥ सोसंपूर्णप्रपंचअन्न प्राण मन बुद्धि अज्ञान यापंचकोशरूपहीहै ॥ औरसोपंचकोशरूपसंपूर्णप्रपंचया जीवोंकूं आपणेआपणेशरीरविषेही विराजमानहै ॥ यातैं ताअंतरपदार्थोंकूं परित्यागकरिकै याजीवोंकूं बाह्यपदार्थोंकेप्राप्तिकीइच्छाकरणी योग्यनहींहै ॥ तात्पर्ययह ॥ मधुके प्राप्तिकीइच्छावान्जोपुरुषहै ॥ तापुरुषकूं जोकदाचित् आपणेगृहकेसमीपही तामधुकीप्राप्तिहोवै ॥ तौतापुरुषकूं तिसमधुकीप्राप्तिवासतै पर्वतऊपरजाणा योग्यनहींहै ॥ तैसे याजीवोंकूं याआपणेशरीरविषेही जोसर्वपदार्थोंकीप्राप्तिहोइ सकै ॥ तौतिनपदार्थोंकीप्राप्तिवासतै याजीवोंकूं बाह्यभटकणा योग्यनहींहै ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकेअभिप्रायकूंमनविषेराखिकैसाश्रुति भगवतीमाताकीन्याईं कृपाकरिकै तिनअधिकारीपुरुषोंकेप्रति याप्रकारकावचनकहतीभई ॥ हेपुत्र ॥ वास्तवतैंविचारकरिकैदेखियेतौया आनंदस्वरूपआत्मातैंभिन्न किसीभीवस्तुविषे सुखरूपतानहींहै ॥ परंतु जोकदाचित् तुमारेकूं याप्रकारका चित्तविषेआग्रहहोवै॥ जोआ

॥ १७ ॥

त्मातैंभिन्नवस्तुही हमारेसुखकाकारणहैं ॥ तौ आत्मातैंभिन्नवस्तु तुमारेसुखकाकारणहोवैं ॥ ताकाहम निवारणकरतनहीं ॥ तथापि आत्मातैंभिन्न जिनअन्नमयादिकपदार्थोंकूं तुमोंनैं आपणे सुखकासाधन मान्या है॥ ते अन्नमयादिकपदार्थ तुमारेशरीरविषेही विद्यमान हैं ॥ तिनअन्नमयादिकपदार्थोंकूं तुम सेवनकरो ॥ आपणेशरीरविषेविद्यमान अन्नमयादिकपदार्थोंकापरित्यागकरिकै तिनअन्नमयादिकप दार्थोंकीप्राप्तिवासतै तुम बाह्यकिसवासतैंभ्रमणकरतेहो ॥ अब याहीअर्थकूं लोकप्रसिद्धदृष्टांतकरिकै स्पष्टकरै हैं ॥हेशिष्य॥ जैसे यालो कविषे क्षुधाकरिकै तथाकामकरिकै पीडितहुआ कोईकपुत्र आपणेगृहकापरित्यागकरिकै जभी बाहरजाणेका उद्यमकरै है ॥ तभी ता पुत्रकीमाता तापुत्रकेहस्तकूंग्रहणकरिकै तापुत्रकूं गृहतैंबाहरजाणेतैं निवारणकरै है ॥ और सामाता तापुत्रकेप्रति याप्रकारकावचनकहे है॥हेपुत्र अन्नकीप्राप्तिवासतै तथास्त्रीकीप्राप्तिवासतै तूं आपणेगृहकापरित्यागकरिकै बाहरमतजाव॥ आपणेगृहतैंबाहरजाणेकरिकै तेरेकूं बहुतदुःखकीप्राप्तिहोवैगी।और जिसअन्नकीप्राप्तिवासतै तथाजिनस्त्रियोंकीप्राप्तिवासतै तूंआपणेगृहकापरित्यागकरिकैबाहरजाताहै।तेनाना प्रकारकेअन्नादिकपदार्थ तथारूपयौवनअवस्थासंपन्नमनोरमस्त्रियांतुमारेसुखवासतैं मैं इसआपणेगृहविषेही संपादनकरतीहूं॥ तिनअन्नादि कपदार्थोंकीप्राप्तिवासतै तुमारेकूं आपणेगृहतैंबाहरजाणा योग्यनहीं है ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकार माताकेवचनोंकूंश्रवणकरिकै सोपुत्र जोक दाचित् बुद्धिमानहोवै है ॥ तौ सोपुत्र गृहतैंबाहरजाणेकेआग्रहकापरित्यागकरिकै कहांअन्न है कहांस्त्री है याप्रकारकावचनकहताहुआ शीघ्रही आपणेगृहविषेप्रवेशकरै है॥और आपणेगृहविषे प्राप्तहुआसोपुत्र तामाताकीकृपाकरिकै संपूर्णमनवांछितपदार्थोंकूंप्राप्तहोवै है ॥ तैसे आपणेशरीरतैंबाह्य परशरीरोंकूंसुखकासाधनमानिकरिकै तासुखकीप्राप्तिवासतै बाह्यभ्रमणकरतेहुए जेबहिर्मुखपुरुषहैं॥ तिनबहिर्मुख पुरुषोंकूं अंतरमुखकरणे वासतै श्रुतिभगवतीनैं प्रथम अन्नमयकोशका कथनकऱ्याहै ॥ ताश्रुतिभगवतीकेउपदेशतैं यहअधिकारी पुरुष बाह्यविषयोंकापरित्यागकरिकै ताअन्नमयकोशविषे प्राप्तहोवै है॥और बाह्यस्थूलविषयोंकरिकै जन्यजोसुखहै॥तासंपूर्णसुखकूं यहअ धिकारीपुरुष ताअन्नमयकोशविषेही प्राप्तहोवै है॥हेशिष्य इसप्रकार श्रुतिमाताकेउपदेशतैं बाह्यविषयोंतैंनिवृत्तहोइकै ताअन्नमयकोशविषे

स्थितहुआ यहअधिकारीपुरुष यद्यपि स्थूलविषयजन्यसुखकूं प्राप्तहोवे है ॥ तथापि सोअधिकारीपुरुष ताअन्नमयकोशविषे आत्मारूप वास्तवसुखकूं प्राप्तहोवैनहीं।याकारणतैं सोसुखकीइच्छावान्अधिकारीपुरुष श्रुतिरूपमाताकेवचनविषे विश्वासकरिकै तास्थूलशरीररूपअन्नमयकोशकोपरित्यागकरिकै ताअन्नमयकोशतैंअनंतर तीनकोशरूपसूक्ष्मशरीरकूंप्राप्तहोवै है॥ तासूक्ष्मशरीरविषेभी यहअधिकारीपुरुष प्रथम अन्नमयकोशकापरित्यागकरिकै तिसतैंअनंतर प्राणमयकोशकूंप्राप्तहोवे है ॥ और ताप्राणमयकोशविषेभी वास्तवआत्मारूप आनंदकूं नहींदेखताहुआ सोअधिकारीपुरुष प्राणमयकोशकाभीपरित्यागकरिकै तिसतैंअनंतर मनोमयकोशकूंप्राप्तहोवै है॥ और तामनोमयकोशविषेभी वास्तवआत्मारूपआनंदकूं नहींदेखताहुआ सोअधिकारीपुरुषतामनोमयकोशकाभीपरित्यागकरिकै तिसतैंअनंतर विज्ञानमयकोशकूंप्राप्तहोवै है ॥ और ताविज्ञानमयकोशविषेभी आत्मारूपवास्तवआनंदकूंनहीं देखताहुआ सोअधिकारीपुरुष ताविज्ञानमयकोशकाभीपरित्यागकरिकैतिसतैंअनंतर आनंदमयकोशकूंप्राप्तहोवै है।ताकारणशरीररूप आनंदमयकोशविषेप्राप्तहुआयहअधिकारीपुरुष संपूर्णकार्यप्रपंचका परित्यागकरै है ॥ और ताआनंदमयकोशविषे सोअधिकारीपुरुष प्रथम इष्टवस्तुकेदर्शनजन्यसुखकूंप्राप्तहोवै है ॥ तिसतैंअनंतर सोअधिकारीपुरुष ताइष्टवस्तुकेप्राप्तिजन्यसुखकूंप्राप्तहोवै है ॥ तिसतैंअनंतर सोअधिकारीपुरुष ताइष्टपदार्थकेभोगजन्यसुखकूंप्राप्तहोवै है॥तिसतैंअनंतर सोअधिकारीपुरुष सामान्यसुखरूपआनंदकूंप्राप्तहोवै है ॥ तिसतैंअनंतर सोअधिकारीपुरुष सर्वतैंअनंतर आनंदस्वरूपब्रह्मकूंप्राप्तहोवै है॥जिसब्रह्मकूंश्रुतिनैं पुच्छरूपकरिकै तथाप्रतिष्ठारूपकरिकै कथनकऱ्याहै ॥ और इसीसर्वअधिष्ठानब्रह्मकेजनावणेवासतैं श्रुतिभगवतीनेस्थूलअरुंधतीन्यायकूंअंगीकारकरिकै अन्नमयादिकपंचकोशोंकूं आत्मारूपकरिकै वर्णनकऱ्याहै ॥ हेशिष्य इसप्रकार श्रुतिभगवतीनैं सर्वअधिकारीजनोंऊपर अनुग्रहकरिकै उपदेशकऱ्याजोआनंदस्वरूपब्रह्महै ॥ ताब्रह्मकूं जोअधिकारीपुरुष आपणाआत्मारूपकरिकै नहींजानैं है ॥ सोपुरुष जीवताहुआभी वंध्यापुत्रनरशृंगकीन्याईं असत्यभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ हेशिष्य ॥ याअर्थविषेभीतेतित्तिरिनामाब्राह्मण याप्रकारकामंत्ररूपश्लोक कथनकरै हैं॥जोपुरुष ब्रह्मनहीं है याप्रकारजानै है॥तिसपुरुषकाआत्मा असत्यही

होवै है ॥ और जोपुरुष ब्रह्महै याप्रकारजानै है ॥ तिसपुरुषकूं विद्वान्पुरुष सत्यजानै है॥अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकैनिरूपणकरै है ॥ हेशिष्य सर्वकालविषे तथासर्वदेशविषे सर्वकाआत्मारूपकरिकै विद्यमानजोब्रह्महै ॥ ताआनंदस्वरूपब्रह्मकूं जोपुरुष नास्तिरूपकरिकैजानताहै॥तथा नास्तिरूपकरिकैकथनकरताहै॥तिसपुरुषकूं तामिथ्याज्ञानतैं तथामिथ्यावचनतैं महान्पापकीप्राप्तिहोवै है॥ तापापकर्मरूपदोषकेप्रभावतैं सोनास्तिकपुरुष आपणेअंतर ब्रह्मानंदतैंविमुखहोइकै बाह्यविषयोंकीप्राप्तिवासतै रात्रिदिनविषे भ्रमणकरै है॥और ताभ्रमणकरिकैं अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोइकै सोबहिर्मुखनास्तिक पुनःमृत्युकूंप्राप्तहोवै है॥और तामृत्युतैंअनंतर सोनास्तिकपुरुष पुनःजन्मकूंप्राप्तहोवै है ॥ और ताजन्मतैंअनंतर सोनास्तिकपुरुष पुनःनानाप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवै है॥और तिनदुःखोंतैंअनंतर सोनास्तिकपुरुष पुनःमृत्युकूंप्राप्तहोवै है ॥ इसप्रकार यमराजाकेवशकूंप्राप्तहुआ सोदीनपुरुष निरंतर संसारविषेभ्रमणकरै है ॥ और सोबहिर्मुखनास्तिकपुरुष अल्पआयुषवालाहोवै है ॥ तथा सर्वजन ताकानिरादरकरै हैं ॥ इसप्रकार जन्ममरणादिकअनेकदुःखोंकूंप्राप्तहुआ सोनास्तिकपुरुष असत्यकीन्याईं होवै है ॥ और हेशिष्य ॥ गुरुशास्त्रकेवचनोंविषेविश्वासकरणेहारा जोआस्तिकपुरुष है ॥ सोआस्तिकपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं ताब्रह्मकेअस्तिपणेकूंजानिकै जन्ममरणादिकदुःखोंसहितमायाकूंनाशकरणेहाराजो आत्मज्ञानहै ताआत्मज्ञानकूंसंपादनकरै है ॥ और ताआत्मज्ञानकेप्रभावतैं सोआस्तिकपुरुष सर्वदुःखोंतैंरहितहुआ सर्वदा आनंदस्वरूपब्रह्मरूपकरिकैस्थितहोवै है॥ऐसे ब्रह्मवेत्ताआस्तिकपुरुषकूं वेदवेत्तामहात्मापुरुष सत्यरूपकरिकैकथनकरै हैं॥यातैं जिसअधिकारीपुरुषकूं सुखकेप्राप्तिकीइच्छाहोवै॥तिस अधिकारीपुरुषनैं गुरुशास्त्रउपदिष्टअतिइंद्रियअर्थविषे नास्तिकपणा कदाचित्भीनहींकरणा ॥ किंतु तागुरुशास्त्रउपदिष्टअर्थविषे याअधिकारीपुरुषोंनैं सर्वदाआस्तिकपणाहीकरणा ॥ अब कोईकवृत्तिकारएकदेशी आनंदमयकोशकूंही ब्रह्मरूपकरिकैमानै हैं तिनोंकेमनकेखंडनकरणेवासतैअन्नमयादिकपंचकोशोंके शिरादिकअवयवोंकेपरंपराकी पुच्छरूपब्रह्मविषेपरिसमाप्तिका निरूपणकरै हैं ॥ हेशिष्य ॥ अन्नमय प्राणमय मनोमय विज्ञानमय आनंदमय यापंचकोशोंविषे एकएककोशके शिर दक्षिणपक्ष उत्तरपक्ष उदर पुच्छ यहपंचपंचअव

यव कथनकरे हैं॥तिनपंचकोशोंके पंचपंचअवयवमिलिकै२५पंचविंशतिअवयवहोवैहैं॥तेपंचविंशतिअवयवरूपभूमिका याबहिर्मुखचित्तके स्थिरकरणेका कारणहोवै हैं ॥ अब तिनोंकेध्यानकाप्रकार निरूपणकरै हैं॥हेशिष्य यहअधिकारीपुरुष आपणेचित्तकीबहिर्मुखताकेनि वृत्तकरणेवासतै प्रथम यास्थूलशरीररूप अन्नमयकोशरूपपक्षीके मस्तककूं शिररूपकरिकैध्यानकरै ॥ तिसतैंअनंतर दक्षिणभुजाकूं दक्षिणपक्षरूपकरिकैध्यानकरै ॥ तिसतैंअनंतर वामभुजाकूं उत्तरपक्षरूपकरिकैध्यानकरै ॥ तिसतैंअनंतर उदरकूं उदररूपकरिकैध्यानकरै ॥ तिसतैंअनंतर दोनोंपादोंकूं पुच्छप्रतिष्ठारूपकरिकैध्यानकरै ॥ तिनपुच्छरूपपादोंतैंपरेयाअन्नमयकोशविषे दूसराकोईपदार्थहैनहीं ॥ इस प्रकार अन्नमयकोशकाध्यानकरिकै तिसतैंअनंतर यहअधिकारीपुरुष ताअन्नमयकोशकेअनंतर दूसरेप्राणमयकोशकाध्यानकरै ॥ ताप्राणमयकोशविषेभी अन्नमयकोशकीन्याईं शिरादिकपंच अवयवोंका यथाक्रमतैंध्यानकरै ॥ इसीप्रकार यहअधिकारीपुरुष मनोमय विज्ञानमय आनंदमय यातीनकोशोंके शिरादिकअवयवोंकाध्यानकरै ॥ इसप्रकार अन्नमयादिकपंचकोशोंके शिरादिकअवयवरूप पंचविंशतिभूमिकावोंकूं यहअधिकारीपुरुष क्रमतैंध्यानकरै ॥ ताध्यानकरिकै याअधिकारीपुरुषकाचित्त अंतरमुखहोवै है॥हेशिष्य॥जैसे अन्नमयकोशके शिरादिकपंचअवयवोंके अंतविषे पुच्छरूपकरिकै तथाप्रतिष्ठारूपकरिकै कथनकरेजेदोपादहैं॥तेदोनोंपाद याअन्नमयकोशका आधाररूपहैं ॥ तैसे अन्नमयादिकपंचकोशोंकेशिरादिकपंचविंशतिअवयवोंकेअंतविषे पुच्छरूपकरिकै तथाप्रतिष्ठारूपकरिकै कथनकऱ्याजोब्रह्महै॥ताअधिष्ठानरूपब्रह्मविषेही यहचतुर्विंशतिभूमिका स्थितहोवै हैं और इसीअधिष्ठानब्रह्मकेबोधकरावणेवासतै श्रुतिभगवतीनैं शिरादिकपंचअवयवोंकरिकैयुक्त अन्नमयादिकपंचकोशोंकानिरूपणकऱ्याहै ॥ हेशिष्य ॥ श्रुतिभगवतीनैं पुच्छप्रतिष्ठाशब्दकरिकै कथनकऱ्याजो सर्वका अधिष्ठानरूपब्रह्महै॥ताअधिष्ठानब्रह्मके अज्ञानहुए याजीवोंकूं इसलोकविषे तथापरलोकविषे किंचित्मात्रभीसुखकी प्राप्तिहोवैनहीं ॥ उलटा ताअज्ञानकेप्रभावतैं ब्रह्मकूं नास्तिरूपकरिकैजाणताहुआ सोपुरुष दोनोंलोकोंविषे असत्यभावकूंहीप्राप्तहोवै है ॥ और जोपुरुष ताअधिष्ठानरूपब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपकरिकैजानै है ॥ ताअधिकारीपुरुषकूं इसलोकविषे तथापरलोकविषे सर्व

सुखकीप्राप्तिहोवै है॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया॥जोअर्थ फलवालाहोवै है तथा प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकै अज्ञातहोवै है॥ताअर्थके बोधन करणविषेही श्रुतिका तात्पर्यहोवै है ॥ सोऐसाफलवाला तथाअज्ञात अधिष्ठानब्रह्मरूपअर्थहै॥अन्नमयादिकपंचकोश फलवाले तथाअज्ञातहैनहीं ॥ यातैं ताअधिष्ठानब्रह्मविषेही श्रुतिका तात्पर्यहै॥अन्नमयादिकपंचकोशोंके आत्मरूपताबोधनकरणेविषे श्रुतिका तात्पर्यनहीं है ॥ इतनैंग्रंथकरिकै श्रवणकीरीतिसैं आत्माकेवास्तवस्वरूपका निरूपणकऱ्या ॥ अब उत्तरग्रंथकरिकै तिसीआत्माकेवास्तवस्वरूपकूं मननकीरीतिसैं निरूपणकरै हैं ॥हेशिष्य ॥इसप्रकार आत्मारूपब्रह्मके सत्यादिकधर्मोकाविचारकरिकै तिनातित्तिरिनामाब्राह्मणोंनैं जिस अर्थकानिश्चयकऱ्याहै ॥ ताअर्थकूं तू सावधानहोइकैश्रवणकर ॥ हेशिष्य ब्रह्मज्ञानविषे जोब्रह्मभावकेप्राप्तिकीकारणताहै॥ताकूं संशयतैं रहितकरणेवासतै तेतित्तिरिनामाब्राह्मण याप्रकारकाविचारकरतेभये॥अब ताप्रमेयरूपब्रह्मविषे असंभावनारूपसंशयकीनिवृत्तिकरणेवासतै प्रथम ताब्रह्मविषे तीनप्रकारके संशय निरूपणकरै हैं ॥ तहां सोब्रह्म विद्यमानहै अथवा नहीं है ॥ १ ॥ और सोब्रह्म अविद्वान्पुरुषकूं प्राप्तहोणेयोग्यहै अथवा नहींप्राप्तहोणेयोग्यहै ॥२॥ और सोब्रह्म विद्वान्पुरुषोंकूं प्राप्तहोणेयोग्यहै अथवा नहींप्राप्तहोणेयोग्यहै ॥ ३ ॥ यहतीनप्रकारकेसंशयहैं ॥ तहां प्रथमसंशयविषे सोब्रह्मनहीं है यादूसरीकोटीका पूर्वपक्षकीरीतिसैं निरूपणकरै हैं ॥ हेशिष्य ॥ केईकवादी याप्रकारकाविकल्पकरै हैं ॥ जिनवेदांतियोंकेमतविषे सोब्रह्म सत्य ज्ञान अनंतरूपहै॥ तिनवेदांतियोंकेमतविषे ताब्रह्मकाज्ञान व्यर्थहै ॥ काहेतैं ऐसासत्यज्ञानअनंतरूपब्रह्म किसीभीजीवकूं प्रतीतहोतानहीं ॥ यातैं सोब्रह्म कहांभीहैनहीं ॥ जोकदाचित् सोसत्य ज्ञान अनंतरूपब्रह्म कहांभीहोता॥तौ जैसे यालोकविषे हमजीवोंकूं पृथिवीआदिकपदार्थ प्रतीतहोवैहै ॥तैसे सोब्रह्मभी हमारेकूं प्रतीतहोता ॥ और सोब्रह्म हमजीवोंकूं प्रतीत होता नहीं ॥ यातैं सोब्रह्म है नहीं ॥अब दूसरेसंशयविषे सोब्रह्म अविद्वान्पुरुषोंकूं प्राप्तहोणेयोग्यहै याप्रथमकोटीकूं पूर्वपक्षरूपकारिकैनिरूपणकरै हैं ॥ हेशिष्य ॥ केईकवादीतौ याप्रकारकाविकल्पकरै हैं॥ वेदांतमतविषे जोब्रह्मरूपआत्मा अंगीकारकऱ्याहै॥ सोब्रह्मरूपआत्मा विद्वान्पुरुषोंका तथा अविद्वान्पुरुषोंका समानहीं है ॥ताब्रह्मरूपआत्माकूं किसी

विद्वान्अविद्वान्विषे पक्षपातहैनहीं ॥ यातैं जैसे सोविद्वान्पुरुष ताब्रह्मरूपआत्माका स्मरणकरिकै ताब्रह्मरूपआत्माकूं प्राप्तहोवै है ॥ तैसे सो अविद्वान्पुरुषभी ताब्रह्मरूपआत्माकूं किसवासतै नहींप्राप्तहोता ॥ किंतु सोअविद्वान्पुरुषभी ताब्रह्मरूपआत्माकूं प्राप्त होणा चाहिये ॥ और सोविद्वान्पुरुषही ताब्रह्मरूपआत्माकूं प्राप्तहोवै है ॥ अविद्वान्पुरुष ताब्रह्मरूपआत्माकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ याप्रकारके अर्थविषे तुमवेदांतियोंनैं कोईकारण कह्याचाहिये ॥ और अविद्वान्पुरुषकूं ताब्रह्मरूप आत्माका स्मरणनहीं होवै है यह जो वेदांतीक है सोभीसंभवैनहीं॥काहेतैं तुमवेदांतियोंनैं ताअद्वितीयब्रह्मकूं सर्वजीवोंका आत्मारूपमान्याहै ॥ यातैं सो अद्वितीयब्रह्म जैसे ताविद्वान् पुरुषका आत्मारूप है ॥तैसे ताअविद्वान्पुरुषकाभी आत्मारूपहै॥यातैं ताविद्वान्पुरुषकीन्याईं ताअविद्वान्पुरुषकूंभी ताब्रह्मरूपआ त्माका स्मरण तथाप्राप्ति अवश्यहोवैगी॥अब तीसरेसंशयविषे सोब्रह्म विद्वान्पुरुषोंकूंभी प्राप्तहोणेयोग्य नहीं है यादूसरीकोटीकूं पूर्वपक्ष रूपकरिकै निरूपणकरैहैं।हेशिष्य केईकवादीतौ याप्रकारका विकल्पकरैहैंतुमवेदांतियोंनैं अंगीकारकऱ्याजोब्रह्महै।ताब्रह्मकूं जोकदाचित् अविद्वान् पुरुष नहींप्राप्तहोताहोवै॥तौ सोतुम्हाराब्रह्म असत्यहीहोवैगा।काहेतैं सोब्रह्म सर्वजीवोंकाआत्मारूपहै॥और आपणाआत्मा सर्व जीवोंकूं नित्यहीप्राप्तहैयातैं ताब्रह्मकूं सर्वजीवोंकाआत्मारूपमानिकै अप्राप्तकहणा अत्यंतविरुद्धहै और ताअविद्वान्पुरुषकूं अप्राप्तहोणेतैं सोब्रह्म जभी असत्यभया॥ तभी जैसे यालोकविषे वंध्यापुत्रादिकअसत्यपदार्थोंकूं कोईभीपुरुष प्राप्तहोवैनहीं॥ तैसे ताअसत्यब्रह्मकूं जैसे अविद्वान्पुरुष प्राप्तनहींहोवै है ॥ तैसे विद्वान्पुरुषभी ताअसत्यब्रह्मकूं प्राप्तनहींहोवैगा ॥ और ॥सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म ॥ याश्रुतिवचनकूं अंगीकारकरिकै तुमवेदांती ताब्रह्मकूं जोसत्यमानौगे॥तौ विद्वान्पुरुषकूं सोब्रह्म प्राप्तहोवैहै॥और अविद्वान्पुरुषकूं सोब्रह्म प्राप्तहोवैनहीं॥ यह तुमाराकहणा असंगतहोवैगा॥ काहेतैं जैसे एकहीआकाशकूं विद्वान्पुरुषतौ प्राप्तहोवैहै॥और अविद्वान्पुरुष ताआकाशकूं प्राप्तहो वैनहीं ॥ यहकहणा संभवैनहीं ॥ तैसे ताएकहीअद्वितीयब्रह्मकूं विद्वान्पुरुषतौ प्राप्तहोवैहै॥ और अविद्वान्पुरुष ताब्रह्मकूं नहींप्राप्तहोवैहै यहकहणाभीसंभवैनहीं ॥ किंतु जैसे सर्वज्ञपुरुषकूं तथामूढबालककूं ताआकाशकीप्राप्ति समानहीहै ॥ तैसे विद्वान्पुरुषकूं तथा अवि

द्वान्पुरुषकूं ताअद्वितीयब्रह्मकीप्राप्ति समानही है॥अब इनतीनप्रश्नोंकेउत्तरकहणेवासतै प्रथम सूचीकटाहन्यायकरिकै ताब्रह्मकेप्राप्तिकी तथाअप्राप्तिकी व्यवस्थाकूं निरूपणकरै हैं ॥ सूचीकटाहन्यायका यहअर्थ है॥जैसे यालोकविषे कोईलुहारपुरुष किसीकटाहकूंबणावता होवै ॥ तालुहारकेपास कोईपुरुष टेढीसूचीकूंसूधाकरावणेवासतैआवै ॥ तहां सोलुहारपुरुष ताकटाहकूंछोडिकै प्रथम तासूचीकूंसूधाक रिदेवै है ॥ याकानाम सूचीकटाहन्यायहै ॥ तैसे पूर्वकहेहुएतीनप्रश्नोंकाउत्तर आगेविस्तारकरिकैकहणाहै॥ ता उत्तरकेसुखपूर्वकबोधवा सतै प्रथम ताब्रह्मके प्राप्तिअप्राप्तिकीव्यवस्था निरूपणकरै हैं ॥हेशिष्य॥ तेतित्तिरिनामात्राह्मण पूर्वउक्ततीनप्रश्नोंकीकल्पनाकरिकै तिन प्रश्नोंका याप्रकारकाउत्तर कहतेभये ॥ यद्यपि सोब्रह्म विद्वान्पुरुषोंकेप्रति तथाअविद्वान्पुरुषोंकेप्रति समानहीप्राप्तहै ॥ और सोब्रह्म विद्वान्पुरुषका तथाअविद्वान्पुरुषका समानही आत्मारूपहै॥यातैंसोब्रह्म वास्तवतैं विद्वान्पुरुषकूं तथाअविद्वान्पुरुषकूं नित्यहीप्राप्तहै॥ तथापि सोअविद्वान्पुरुष ताब्रह्मकूं कदाचित्भी प्राप्तहोतानहीं ॥ याप्रकारकाअर्थही युक्तिकरिकैसंभवै है ॥ काहेतैं अविद्याकेनाशहुए जोआवरणरहितब्रह्मकाप्रकाशहै ॥ सोप्रकाशही ताब्रह्मकीप्राप्तिहै॥और सोअविद्याकानाश ब्रह्मविद्याकरिकैहीहोवैहै॥साब्रह्मविद्या ताअ विद्वान्पुरुषकूं प्राप्तहैनहीं ॥ यातैं सोअविद्वान्पुरुष ताअविद्यातैंरहितहोइसकैनहीं ॥याकारणतैंही सोअविद्वान्पुरुष ताअद्वितीयब्रह्मकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ अब याहीअर्थकूं दृष्टांतकरिकैस्पष्टकरै हैं ॥ हेशिष्य ॥ जैसे यालोकविषे किसीदोपुरुषोंकेआपणेआपणेगृहविषे सुवर्णा दिरूपधन पृथिवीविषे दाब्याहोवै ॥ तहां एकपुरुषतौ ताधनरूपनिधिकूं जाणताहै ॥ और दूसरापुरुष ताधनरूपनिधिकूं जाणता नहीं ॥ तहां वास्तवतैंविचारकरिकैदेखियेतौ तेदोनोंपुरुष ताधनरूपनिधिवाले हैं ॥ तथापि ताधनरूपनिधिकेज्ञानवालापुरुषतौ ताधन रूपनिधिकूं प्राप्तहुआहैऔरताधनरूपनिधिकेअज्ञानवालापुरुष ताधनरूपनिधिकूं प्राप्तनहींभयाहै याप्रकार तानिधिकेप्राप्तिका तथाअप्रा प्तिका व्यवहार लोकविषेहोवैहै॥तैसे विद्वान्पुरुषकूं तथाअविद्वान्पुरुषकूंयद्यपिवास्तवतैं ब्रह्मकीप्राप्ति समानही है तथापि जैसे विद्वान्पु रुषकूं ताब्रह्मकाज्ञानहै॥तैसे अविद्वान्पुरुषकूं ताब्रह्मकाज्ञानहैनहीं॥याकारणतैं सोअविद्वान्पुरुष अध्यात्मदुःखकरिकै तथाआधिदैवदुःख

करिकै तथाअधिभूतदुःखकरिकै सर्वदा पीडितरहै है याकहणेतैंयहअर्थ सिद्धभया॥ आपणेसत्यस्वभावके बलतैं असत्यपणेकापरित्याग करिकै सर्वत्र समानस्थितहुआजोब्रह्महै ॥ ताब्रह्मका विद्वान्पुरुषकूं जो ज्ञानहै॥सोब्रह्मकाज्ञानही ताविद्वान्पुरुषकूं ब्रह्मकीप्राप्तिहै॥और अविद्वान्पुरुषकूं जो ताब्रह्मकाअज्ञानहै ॥ सोब्रह्मकाअज्ञानही ताअविद्वान्पुरुषकूं ब्रह्मकीअप्राप्तिहै॥ इतनैंकरिकैब्रह्मकेप्राप्तिअप्राप्तिकी व्यवस्था निरूपणकरी ॥ अब कामना विचार जगत्कीउत्पत्तिं जगत्विषेप्रवेश भोग्यपदार्थरूपता यापंचहेतुओंकरिकै ताब्रह्मविषे सत्य पणेकीसिद्धिकरैहैं॥हेशिष्य ॥ आकाशादिकपंचभूतरूप तथातिनपंचभूतोंकाकार्यरूप जितनाकीयहस्थूलसूक्ष्मजगतहै ॥ सोयहसंपूर्णज गत् जिसब्रह्मतैंउत्पन्नभयाहै ॥सोब्रह्म असत्यहै याप्रकारकीशंकाकरणविषेभी कोईवादी समर्थनहीं है जभी ताब्रह्मकेअसत्यपणेकीशंका करणेविषेभी कोईवादी समर्थनहींभया ॥ तभी ताब्रह्मकेअसत्यपणेकीसिद्धिकरणेविषे कौनवादी समर्थहोवैगा॥किंतु ताब्रह्मके असत्यप णेकूं कोईभीपुरुष सिद्धकरिसकैनहीं ॥ अब ताब्रह्मतैं जगत्केउत्पत्तिकानिरूपणकरै हैं ॥ हेशिष्य ॥ अनादिजीवोंकेकर्म वासनाकरिकै विचित्रभावकूंप्राप्तभईजामायाहै ॥ तामायारूपकंचुककरिकैयुक्तहुआ सोपरमात्मादेव याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्व एकअद्वितीय यरूपकरिकै स्थितहोताभया।और सोईहीपरमात्मादेव सृष्टिकेआदिकालविषे जीवोंकेपुण्यपापरूपकर्मोंकरिकैप्रेरणाकऱ्याहुआ भूतभौति कजगत्केउत्पन्नकरणेवासतै याप्रकारकीकामनाकरताभया ॥ मैंपरमात्मादेव आपणाहीजन्मकरिकै बहुतरूपहोवों ॥ हेशिष्य॥इसप्रकार आगे उत्पन्नहोणेहारा जोनामरूपक्रियास्वरूप जडचेतनरूपजगतहै ॥ ताजगत्कूंविषयकरणेहारी कामनारूपचिंताकूंकरिकैसोपरमात्मा देव ताजगत्के विशेषनामरूपादिकोंकेकरणेवासतै पुनःयाप्रकारकाविचारकरताभया ॥ पूर्वकल्पविषे याजगत्के जिसजिसपदार्थका जिसजिसप्रकारका नामरूपक्रियाथा ॥ इसकल्पविषेभी याजगत्के तिसतिसपदार्थका तिसतिसप्रकारका नामरूपक्रियामैं उत्पन्नकरौं॥ हेशिष्य ॥इसप्रकारकाविचारकरिकै सोपरमात्मादेव पूर्वकल्पकीन्याईं यास्थावरजंगमरूपजगत्कूं उत्पन्नकरताभया ॥ और तिनसर्व पदार्थोंकेभिन्नभिन्ननामरूपक्रियाओंकूं उत्पन्नकरताभया ॥ हेशिष्य ॥ जैसे तापरमात्मादेवनैं पूर्वकल्पविषे सूर्यचंद्रमादिकजगतकूंउत्पन्न

कऱ्याथा ॥ तैसे इसकल्पविषेभी सूर्य चंद्रमा स्वर्ग पृथ्वी अंतरिक्ष इसतैंआदिलैके जितनाकीभूतभौतिकजगत्है ॥ तासंपूर्णजगत्कूं सो परमात्मादेव उत्पन्नकरताभया ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार सोपरमात्मादेव स्थावरजंगमरूपसर्वजगत्कूंउत्पन्नकरिकै आपही जीवरूपकरिकै ताजगत्विषेप्रवेशकरताभया ॥ हेशिष्य ब्रह्मविदाप्नोतिपरं ॥ यासूत्ररूपश्रुतिविषेजिसब्रह्मकेज्ञानतैं पूर्वमोक्षकीप्राप्ति कथनकरीथी ॥ और ॥ सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म ॥ याश्रुतिविषेपूर्व जिसब्रह्मकास्वरूपलक्षणकथनकऱ्याथा सोइहीब्रह्म यास्थावरजंगमरूपजगत्कूं उत्पन्नकरिकै ताजगत्विषे जीवरूपकरिकैप्रवेशकरताभया ॥ इसप्रकार सोएकहीपरमात्मादेव नानारूपकरिकैउत्पन्नहोताभया ॥ अब तिननाना रूपोंकानिरूपणकरैहै ॥ हेशिष्य ॥ सोपरमात्मादेवही सत्रूपतथात्यत्रूपहोताभया ॥ इहां पृथ्वी जल तेज यहतीनभूतनेत्रादिकइंद्रियों केविषयहैं ॥ याकारणतैं तिनपृथ्वीआदिकतीनभूतोंकूं श्रुतिभगवती सत्यानामकरिकैकथनकरै है॥ औरवायुआकाश यहदोनोंभूतनेत्रा दिकइंद्रियोंकेअविषयहैं ॥ याकारणतैंतिनदोनोंभूतोंकूं श्रुतिभगवती त्यत्यानामकरिकैकथनकरै है ॥ औरसोपरमात्मादेवहीनिरुक्तरूप तथाअनिरुक्तरूपहोताभया ॥ इहां मनुष्यादिकजीवजिनआकाशादिकपंचभूतोंका तथा तिनभूतोंकेकार्यकानामरूपक्रियाकरिकैनिरूप णकरैहैं ॥ तिनभूतभौतिकपदार्थोंकानामनिरुक्तहै ॥ और मनुष्यादिकजीव जिनपदार्थोंका नामरूपक्रियाकरिकै निरूपणनहींकरै हैं ॥ तिनपदार्थोंकानाम अनिरुक्तहै॥ और सोपरमात्मादेव निलयनरूप तथा अनिलयनरूपहोताभया ॥ इहां पृथिवीआदिकोंकेआश्रितरह णेहारे जेघटादिकपदार्थ हैं तिनोंकानाम निलयनहै ॥ और लोकविषे निराधाररूपकरिकैप्रसिद्ध जेआकाशादिकहैं ॥ तिनोंकानाम अनिलयनहै ॥ और सोपरमात्मादेवही विज्ञानरूप तथाअविज्ञानरूपहोताभया ॥ इहां लोकविषे चेतनरूपकरिकैप्रसिद्ध जेनेत्रादिकइं द्रियहैं तथाअंतःकरणहैं ॥ तिनोंकानामविज्ञानहै ॥ औरजडरूपकरिकैप्रसिद्ध जेघटपटादिकपदार्थ हैं॥ तिनोंकानामअविज्ञानहै॥ औरसो परमात्मादेवहीसत्यरूप तथाअनृतरूपहोताभया ॥ इहां व्यवहारकालविषे बाधतैंरहित जेभूमिघटादिकव्यावहारिकपदार्थहैं ॥ तिनोंका नामसत्यहै ॥ और व्यवहारकालविषेही बाध्यमान जेरज्जुसर्पादिकप्रातिभासिकपदार्थहैं ॥ तिनोंकानाम अनृतहै ॥ आत्मज्ञानतैं और

ओरेजोकालहै ताकानाम व्यवहारकाल है ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार आस्तिरूपकरिकै तथानास्तिरूपकारिकै प्रसिद्ध जितनाकियह विचित्रजगत् है ॥ तिसजगत्रूपकूं सोएकअद्वितीयब्रह्मही प्राप्तहोवै है ॥ हेशिष्य ॥ जैसे एकहीआकाश गंधर्वनगररूपकारिकै नानाभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ तैसे एकहीअद्वितीयब्रह्म जगत्रूपकरिकै नानाभावकूंप्राप्तहोवै है॥और हेशिष्य॥ सोसत्यरूपब्रह्मही पूर्व याजगत्रूपकारिकैउत्पन्नभयाहै ॥ याकारणतैं वास्तवतैंअसत्यरूपभीयहजगत् याचितमंडनन्यायकारिकै सत्यरूपहुआप्रतीतहोवै है॥तात्पर्ययह॥जैसे आपणे गृहकेभूषणवस्त्रादिकपदार्थोंतैंरहित जोकोई निर्धनपुरुषहै॥ सोनिर्धनपुरुष दूसरेधनवान्पुरुषोंतैं भूषणवस्त्रादिकपदार्थमांगि कैआपणेगृहकी शोभाकरैहै ॥ याकानाम याचितमंडनन्यायहै ॥ तैसे स्वभावतैं आपणीसत्तातैंरहितजोयहजगत्है सोयहजगत् ताअधिष्ठानब्रह्मकेसत्ताकूं अंगीकारकरिकैही सत्यरूपहोवै है॥शंका॥हेभगवन् याजगत्विषे आपणीहीसत्ता किसवासतैंनहींहोवै॥समाधान॥हेशिष्य॥भूत भविष्यत् वर्तमान यातीनकालोंविषे जोपदार्थ एकरसहोवै ॥ किसीकालविषेभी अन्यथाभावकूंनहींप्राप्तहोवै ॥ सोपदार्थ सत्यरूपहोवै है ॥ ऐसीसत्यरूपता उत्पत्तिनाशवान्याजगत्विषे कदाचित्भीसंभवैनहीं किंतु उत्पत्तिनाशतैंरहितब्रह्मविषेही सासत्यरूपता संभवै है ॥ और हेशिष्य ॥ जोपदार्थ जहांआदिकालविषे तथा अंत्यकालषिषे नहींहोवैहै ॥ सोपदार्थ तहां मध्यकालविषेभीनहींहोवै है ॥ जैसे रज्जुविषे सर्प आदिकालविषेभीनहीं है ॥ तथा अंत्यकालविषेभीनहीं है ॥ याकारणतैं तारज्जुविषे सोसर्प मध्यकालविषेभीनहीं है ॥ तैसे ताअधिष्ठानब्रह्मविषे यहसंपूर्णजगत् आदिकालविषेभीनहीं है ॥ तथा अंतकालविषेभीनहीं है॥ऐसाजगत् मध्यकालविषे किसप्रकार सत्यहोवैगा ॥ किंतु यहस्थावरजंगमरूपसर्वजगत् मिथ्यारूपहीहै ॥ ऐसामिथ्यारूपयहजगत् तासत्यरूपअधिष्ठानब्रह्मकीसत्ताकूंअंगीकारकरिकैही सत्यरूपहुआ प्रतीतहोवै है॥जैसे अग्निभावतैंरहित जोलोहकापिंडहै॥सो अग्निकेसंबंधतैं अग्निरूपताकूंप्राप्तहोवैहै॥ तैसे अधिष्ठानसत्यब्रह्मके तादात्म्यसंबंधकूंप्राप्तहोइकै यहमिथ्याजगत्भी सत्यरूपहुआ प्रतीतहोवै है ॥ हे शिष्य ॥ याअर्थविषेभी तेतित्तिरिनामाब्राह्मण याप्रकारकामंत्ररूपश्लोक कथनकरै हैं ॥ असद्वाइदमग्रआसीत् ततोवैसदजायत तदात्मानंस्वयमकुरुत तस्मात्तत्सुकृतमुच्यते ॥ अर्थयह

॥ २२ ॥

यहदृश्यमानजगत् आपणीउत्पत्तितैंपूर्व असत्रूपहोताभया ॥ ताअसत्तैं यहसत्जगत् उत्पन्नहोताभया ॥ और सोकारणब्रह्म आपणे आत्माकूंही प्रपंचरूपकरताभया ॥ याकारणतैं सोब्रह्म सुकृत यानामकरिकैकथनकरीताहै ॥१॥ अब याहीमंत्ररूपश्लोकके अर्थकूं स्पष्ट करिकै निरूपणकरै हैं॥ हेशिष्य॥ जैसे गंधर्वनगर आपणीउत्पत्तितैंपूर्व आकाशविषे असत्होवै है ॥ तैसे यहजगत्भी आपणीउत्पत्तितैं पूर्व ताब्रह्मरूपआत्माविषे असत्होताभया ॥ हेशिष्य ॥ इहां असत्शब्दकरिकै तुमनैं अत्यंताभावरूपशून्यका ग्रहणनहींकरणा ॥ किंतु ताअसत्शब्दकरिकै तुमनैं अस्पष्टनामरूपवालेजगत्का ग्रहणकरणा ॥ यातैं ॥ असद्वाइदमग्रआसीत्॥याश्रुतिवचनतैं यहजगत् आपणी उत्पत्तितैंपूर्व अस्पष्टनामरूपवालाहोताभया याप्रकारकाअर्थ सिद्धहोवै है ॥ तिसतैंअनंतर सृष्टिकालविषे सोअस्पष्टनामरूपवालाजगत् अस्पष्टनामरूपवाला होताभया ॥ और यहसंपूर्णजगत् ताकारणरूपब्रह्मकीसत्ताकरिकैही सत्यरूपहोवै है ॥ स्वभावतैं यहजगत् सत्यरूपहैनहीं ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताब्रह्मकूं सुकृत यानामकरिकैकथनकरै है ॥ और हे शिष्य ॥ यहजगत्केउत्पत्तिकाप्रकरण यद्यपि ताब्रह्मरूपआत्माकेसत्य रूपताकूं स्पष्टकरणेवासतेही प्रवृत्तभयाहै ॥ तथापि ताप्रकरणकेअभिप्रायकूं नजाणिकै केईकमंदबुद्धिपुरुष ॥ असद्वाइदमग्रआसीत् ॥ याश्रुतिवचननैं कारणकेअसत्यरूपताकूंही कथनकऱ्याहै याप्रकारकावचनकहै हैं ॥ जैसे वेदबाह्यनास्तिकपुरुष बीजकेप्रध्वंसाभावतैं अंकुरकीउत्पत्ति अंगीकारकरै हैं ॥ और कोईकअर्द्धवैनाशिकनैयायिकतौ ॥ असद्वाइदमग्रआसीत् ॥ याश्रुतिविषेस्थित जोकार्यप्रपंचका वाचकइदंशब्दहै ताइदंशब्दका असत्शब्दके साथ सामानाधिकरण्य कल्पनाकरिकै याजगत्रूपकार्यकूंही उत्पत्तितैंपूर्व असत्कहे हैं ॥ और केईकमंदबुद्धिशून्यवादीतौ ताश्रुतिविषेस्थितइदंशब्दकीअर्थरूपता कार्यकारण यादोनोंविषेमानिकै तथा ताइदं शब्दका असत्शब्दकेसाथ सामानाधिकरण्य कल्पनाकरिकै कार्यकारणरूपसर्वजगत्कूं शून्यरूपमानै हैं ॥ हे शिष्य ॥ इसप्रकार असाद्वाइदमग्रआसीत् ॥ याश्रुतिके पूर्वउक्तयथार्थअर्थकूंनजाणिकरिकै केईकमंदबुद्धिपुरुषतौ कारणकूंही असत्यमानै हैं ॥ और केईकमंदबुद्धिपुरुषतौ कार्यकूंही असत्यमानै हैं ॥ और कोईकमंदबुद्धिपुरुष तौ कार्यकारण दोनोंकूं असत्य मानै हैं ॥

तिनमंदबुद्धिपुरुषोंतैं यहपूछाचाहिये ॥ कारणादिकोंकूं जोतुम असत्मानतेहो ॥ सो केवलयुक्तियोंके बलतैंमानतेहो ॥ अथवा श्रुतिके बलतैंमानतेहो ॥ तहां केवलयुक्तियोंके बलतैं तिनकारणादिकोंविषे असत्यरूपता है यह प्रथमपक्ष जो तेवादी अंगीकारकरैं सो संभवै नहीं ॥ काहेतैं याआत्मपुराणके अष्टमअध्यायकेआदिविषे प्रागभावादिकोंविषे कारणताकेखंडनप्रसंगविषे तिनबहिर्मुखवादियोंके नाना प्रकारकीयुक्तियोंकाखंडन हम विस्तारतैंकरिआये हैं ॥ यातैं युक्तियोंके बलतैं तिनकारणादिकोंविषे असत्यरूपतासिद्धहोवैनहीं ॥ और श्रुतिप्रमाणकेतैंबलतैं तिनकारणादिकोंविषे असत्यरूपताहै यहदूसरापक्ष जोतेवादी अंगीकारकरैं सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं ॥ सत्यंज्ञान मनंतंब्रह्म ॥ याश्रुतिविषे ब्रह्मकूंसत्यरूपकहिकै तिसीसत्यब्रह्मतैं जगत्केउत्पत्तिकूंकथनकरणेहारा जो वेदभगवान् है सो वेदभगवान् ॥ असद्वाइदमग्रआसीत् ॥ याश्रुतिवचनकरिकै ताकारणरूपसत्यब्रह्मकूं असत्यरूप किसप्रकारकहैगा ॥ किंतु नहींकहैगा ॥ और जोकदा चित् सोवेदभगवान् प्रथम ताकारणकूंसत्यरूपकहिकै पश्चात् तिसीकारणकूं असत्यरूपकहैगा ॥ तौ जैसे मेरेमुखविषे जिह्वानहीं है याप्र कारकावचन वदतोव्याघातदोषवालाहै ॥ तैसे सोवेदभगवान्भी वदतोव्याघातदोषवालाहोवैगा ॥ यातैं ॥ असद्वाइदमग्रआसीत् ॥ या श्रुतिका कारणकेअसत्पणेविषे तात्पर्यनहींहै ॥ और होशिष्य॥ ताश्रुतिके यथार्थअर्थकूंनजाणिकरिकै जेअर्ध वैनाशिकनैयायिकवादी उत्पत्तितैंपूर्व याजगत्रूपकार्यकूं असत्यमानेहैं॥ तिनवादियोंकेमतविषे अभीवर्तमानकालमैं याजगत्रूपकार्यविषे सत्यपणा नहीं होणाचा हिये ॥ किंतु जैसे मृत्तिकाके घटशरावादिककार्योंविषे सर्वजीवोंकूं मृत्तिकाबुद्धिहोवै है ॥ तैसे याकार्यरूपजगत्विषेभी सर्वजीवोंकूं असत् असत् याप्रकारकीअनुगतबुद्धिहोणी चाहिये ॥ और याकार्यरूपजगत्विषे किसीभीजीवोंकूं असत्यबुद्धिहोतीनहीं ॥ उलटा घटोस्ति पटोस्ति ॥ याप्रकारकी सत्यबुद्धिही होवै है ॥ यातैं उत्पत्तितैंपूर्व याकार्यजगत्केअसत्यपणेविषे ताश्रुतिकातात्पर्य नहीं है ॥ किंवा ॥ जो कदाचित् याजगत्रूपकार्यकेअसत्यपणेविषेही ताश्रुतिका तात्पर्यहोवै तौ ॥ असद्वाइदमग्रआसीत् ॥ याश्रुतिवचनतैंअनंतर ताजगत्कीसत्यरूपताकूंकथनकरणेहारा जो ॥ ततोवैसदऽजायत ॥ यहश्रुतिवचनहै ॥ सो असंगतहोवैगा ॥ शंका ॥ हे सिद्धांती ॥ यह कार्यरूपजगत् स्वभावतैंसत्यरूप मतहोवै ॥ तथापि कारणरूपब्रह्मकीसत्ताकरिकै यह कार्यजगत् सत्यरूप किसवासतैं नहीं होवै ॥

॥ २३ ।

समाधान ॥ हेवादी सत्यब्रह्मकेतादात्म्यसंबंधकूंप्राप्तहोइकै यहकार्यजगत् सत्यरूपहोवै है॥यहअर्थ जोतुमनैं अंगीकारकऱ्याहै ॥ सोहमारे कूंभीइष्टहै ॥ ब्रह्मकीसत्ताकरिकै कार्यजगत्कीसत्यरूपताकूं हम निवारणकरतेनहीं ॥ और ताब्रह्मकीसत्ताकेप्रभावतैं यह असत्जगत्भी सत्यरूपहोवै है याअर्थकेबोधनकरणेवासतैंही तिनतित्तिरिनामाब्राह्मणोंनैं असद्वा इत्यादिकश्लोकका कथनकऱ्याहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् जैसे यालोकविषे कोईपुरुष एकगृहतैंवस्तुकूंलेके दूसरेगृहविषेलेजावै है॥तैसे ब्रह्मकेसत्ताकूं प्रपंचविषे कौन लैजावै है ॥समाधान॥ हेशिष्य भूत भविष्यत् वर्त्तमान यातीनकालोंविषे असत्रूप जोयहजगत्रूपकार्य है ॥ सोजगत्रूपकार्य कारणब्रह्मकीसत्ताकरिकैही हमारेकूं स त्यरूपप्रतीतहोवैहै॥याकेविषे अनादिमायाकरिकैकऱ्याहुआ आत्माअनात्माकाअध्यासहीकारणहै॥तात्पर्ययह॥जैसेस्वभावतैं उष्णरूपर्श तैं रहितजोजलहै॥ताजलविषे अग्निकेसंगरूपदोषकरिकै उष्णता प्रतीतहोवै है ॥ तैसे स्वभावतैं आपणीसत्तातैंरहित जोयहजगत्है ॥ ता असत्जगत्विषे सत्ब्रह्मकेतादात्म्यअध्यासरूपदोषकरिकै सत्यरूपता प्रतीतहोवै है ॥ यातैं यहअध्यासही ताब्रह्मकेसत्ताकूं जगत्विषेले जावै है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ब्रह्मतैंभिन्नहीकोईपदार्थ आपणीसत्ताकरिकै याकार्यरूपजगत्कूं सत्यरूप किसवासतैंनहीं करता ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ तासत्यस्वरूपब्रह्मतैंभिन्न जितनैकी कार्यरूप तथाकारणरूप पदार्थ हैं ॥ तेसंपूर्णपदार्थ अनात्मारूपहोणेतैं अस त्यरूपही हैं ॥ यातैं ताब्रह्मतैंभिन्न किसीभीपदार्थकीसत्ताकरिकै याजगत्कीसत्यरूपता संभवैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे यालोकविषे धन वान्पुरुषही अन्यनिर्धनपुरुषकूं धनवान्करिसकै है ॥ और जोपुरुष आपहीनिर्धनहोवै है ॥ सोनिर्धनपुरुष अन्यनिर्धनपुरुषकूं धनवान् करिसकैनहीं ॥ तैसे तासत्यब्रह्मतैंभिन्नरूपताकरिकै आपहीअसत्यभावकूंप्राप्तहुआसोपदार्थ याअसत्यजगत्कूं सत्यरूपकरिसकै नहीं ॥ किंवा॥जैसे यालोकविषे किसी महान्वनविषे भ्रमणकरताहुआकोईक नेत्रहीनअंधपुरुष जभी किसी अन्यनेत्रवालेपुरुषकूं मार्गकाउपदेश करै है॥तभी सोनेत्रोंवालापुरुषताअंधपुरुषकेप्रति याप्रकारकाउपालंभदेवैहै॥हेअंधपुरुष जिसमार्गकातूंहमारेप्रति उपदेशकरताहै ॥ तिस मार्गकूं तूं आप किसवासतैंनहीं देखता॥तैसे ब्रह्मतैंभिन्न जोकोईपदार्थ याकार्यजगत्केसत्ताकूंसिद्धकरैहै॥तापदार्थकेप्रति यहवचन कह्याचा

हिये॥हेपदार्थ ब्रह्मतैंभिन्नहुआ तूं आपही असत्यरूपहै॥यातैं प्रथम तूं आपणेसत्ताकूंतौ सिद्धकर तिसतैं अनंतर तुमनैं याकार्यजगत्विषे सत्ताकीसिद्धिकरणी ॥ आपणीसत्ताकोसिद्धितैंविना दूसरेविषेसत्ताकीसिद्धिकरणी संभवैनहीं ॥ किंवा ॥ ब्रह्मतैंभिन्नकोईपदार्थ आपणीस त्ताकरिकै याकार्यजगत्कूं सत्यरूपकरै है यहकहणा तभीसंभवै जभी किसीपदार्थ विषे ताब्रह्मकाभेद सिद्धहोवै॥ सोब्रह्मतैंभिन्न कोईपदा र्थहै नहीं ॥ किंतु यहसंपूर्ण स्थूलसूक्ष्मप्रपंच ताब्रह्मरूपहीहै ॥ और यहसंपूर्णप्रपंच ब्रह्मरूपही है याअर्थकूं सर्वंखल्विदंब्रह्म॥इत्यादिकश्रु तिवचनोंकरिकै वेदवेत्तामहात्मापुरुष वारंवार कथनकरैहैं॥ यातैंताब्रह्मतैंभिन्न कोईभीपदार्थनहीं है॥किंवा जोकदाचित् कोईस्थूलपदार्थ तथासूक्ष्मपदार्थ ताब्रह्मतैंभिन्न अंगीकारकरिये ॥ तौ ॥ सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म ॥ याश्रुतिनैं कथनकरीजोब्रह्मविषेअनंतरूपता सा नहींसि द्धहोवैगी॥काहेतैं जैसेआकाशादिकपदार्थपृथिवीआदिकोंतैंभिन्नहैं॥यातैंतेआकाशादिक भेदरूपवस्तुपरिच्छेदवालेहोणेतैं अनंतरूपनहींहैं तैसे सोब्रह्मभी भेदरूपवस्तुपरिच्छेदवालाहोणेतैं अनंतरूप नहींहोवैगा औरसत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म याश्रुतिनैं साअनंतता ब्रह्मकास्वरूपकह्याहै यातैं ताअनंततास्वरूपके अभावहुए ताब्रह्मकाभीअभाव प्राप्तहोवैगा॥ जैसे यालोकविषे अग्निआदिकतेजका प्रकाश तथाउष्णता यह दोनोंस्वरूपहैं ॥ ताप्रकाश तथाउष्णता स्वरूपकेअभावहुए ता तेजकाभी अभावहीहोवै है॥तैसे ताअनंततास्वरूपकेअभावहुए ताब्रह्म काभीअभावहीहोवैगा॥और ताब्रह्मकेअभावहुए ताब्रह्मकूंबोधनकरणेहारा जोउपनिषद्रूपज्ञानकांडहै सो अप्रमाणताकूंप्राप्तहोवैगा॥और ताउपनिषद्रूपज्ञानकांडकेअप्रमाणहुए ताज्ञानकेसाधनोंकूंबोधनकरणेहारा जोकर्मकांडहै तथाउपासनाकांडहै सोभी अप्रमाणताकूंप्राप्त होवैगा ॥ और सर्वप्रमाणोंविषेराजारूप तथाभ्रमादिकदोषोंतैं रहित जोवेदभगवान्है॥तावेदभगवान्केअप्रमाणहुए भ्रमादिकदोषोंकरि कैयुक्त जेलौकिकवचनहैं तथाप्रत्यक्षादिकप्रमाणहैं ॥ तेसंपूर्ण अप्रमाणताकूंप्राप्तहो वैंगे ॥ और तिनप्रत्यक्षादिकविशेषप्रमाणोंकूं अप्रमा णरूपताहुए सामान्यतैं प्रमाणमात्रकूंही अप्रमाणरूपता प्राप्तहोवैगी ॥ और यालोकविषे किसीप्रमाणकरिकैही वस्तुकीसिद्धिहोवैहै॥प्र माणतैंविना वस्तुकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ यातैं तिनप्रत्यक्षादिकसर्वप्रमाणोंविषे जभी अप्रमाणरूपताप्राप्तभई॥तभी ताब्रह्मतैंभिन्न किसीस्थू ॥ २४ ॥

लसूक्ष्मपदार्थकी तथा किसीकार्यकारणपदार्थकी किसप्रकारसिद्धिहोवैगी ॥ किंतु प्रमाणतैंविना ताब्रह्मतैंभिन्न किसीभीपदार्थकीसिद्धि नहींहोवैगी ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ यालोकविषे कोईअसत्यपदार्थभी ताब्रह्मरूपआत्मातैंभिन्ननहींहै ॥ जभी कोईअसत्यपदार्थभी ताब्रह्मरूपआत्मातैंभिन्ननहींभया ॥ तभी ताब्रह्मरूपआत्माकीसत्ताकूंपाइकै सत्यरूपताकूंप्राप्तभयेजपदार्थहैं ॥ तेसत्यपदार्थ ताब्रह्मरूप आत्मातैंभिन्न किसप्रकारहोवैगे॥ किंतु तेसत्पदार्थ ताब्रह्मतैंभिन्न कदाचित्भीनहींहोवैगे ॥और हेशिष्य॥असद्वाइदमग्रआसीत् ॥यहश्रु तिवचन कारणकेअसत्यरूपताकूं बोधनकरैहै ॥ अथवा कार्यकेअसत्यरूपताकूं बोधनकरैहै ॥ अथवा कारण कार्य यादोनोंकेअसत्यरूप ताकूंबोधनकरैहै॥याप्रकारकेतीनविकल्प जोपूर्व मंदबुद्धिपुरुषोंनेकरैहैं॥सोतीनोंप्रकारकेविकल्प संभवतेनहीं ॥ काहेतैंयालोकविषे प्रत्य क्षादिकप्रमाणोंकरिकैही वस्तुकीसिद्धिहोवैहै।प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंतैंविना किसीवस्तुकीसिद्धिहोवैनहीं॥और याजगत्रूपकार्यके असत्यरूप ताकूं तथाकारणकेअसत्यरूपताकूं कोईप्रत्यक्षादिकप्रमाणासिद्धकरतानहीं॥ उलटा तेप्रत्यक्षादिकप्रमाण॥घटोअस्ति॥पटोअस्तिइत्या दिप्रतीतियोंकरिकै ताकार्यकारणके सत्यरूपताकूंहीसिद्धकरैहैं॥किंवा कार्यविषे तथाकारणविषे जो असत्यरूपताहोवै॥ तौ असद्वाइदमग्र आसीत्॥ याश्रुतिनैं इदंशब्दकरिकै ताकार्यकारणका जोकथनकऱ्याहै॥सोअसंगतहोवैगा॥ काहेतैं प्रत्यक्षज्ञानकाविषय तथासमीपवर्ति जोवस्तुहै ॥ तावस्तुकूंहीइदंशब्द कथनकरैहै ॥ साप्रत्यक्षज्ञानकीविषयता तथासमीपवर्तिपणा असत्यवस्तुविषे संभवैनहीं ॥ याकारण तैंभी ताकार्यकारणविषे असत्यरूपतासंभवैनहीं ॥ किंतु ॥ याजगत्रूपकार्यविषे तथाताकेकारणविषे प्रत्यक्षज्ञानकीविषयताकूंअंगीका रकरिकै जोमंदबुद्धिवादी ताकार्यकारणविषे असत्यरूपतामानै है ॥ सोअत्यंतविरुद्धहै॥काहेतैं सोप्रत्यक्षज्ञान विद्यमानवस्तुकूंही विषय करै है ॥ अविद्यमानवस्तुकूं सोप्रत्यक्ष विषयकरैनहीं ॥ याअर्थकूं सर्ववादी अंगीकारकरै हैं॥ यातैं कार्यकारणकूं प्रत्यक्षज्ञानकाविषयमा निकै तिनोंकूं असत्यकहणा अत्यंतविरुद्धहै ॥ किंतु ॥ असत्यवस्तुका प्रत्यक्षज्ञान नहींहोवै है॥ किंतु विद्यमानसत्यवस्तुकाही प्रत्यक्ष ज्ञानहोवै है ॥याकारणतैंही पूर्वनष्टहुएपदार्थोंका तथाआगेहोणेहारेपदार्थोंका याजीवोंकूं प्रत्यक्षज्ञानहोतानहीं ॥ जोकदाचित् असत्यवस्तु

काभी प्रत्यक्षज्ञानहोताहोवै ॥ तौ अतीतपदार्थोंका तथाभावीपदार्थोंकाभी याजीवोंकूं प्रत्यक्षज्ञानहोणाचाहिये ॥ यातैं ॥ असद्वाइदमग्र आसीत् ॥ यहश्रुति कार्यकेअसत्यपणेकूं तथा कारणकेअसत्यपणेकूं तथाकार्यकारणदोनोंकेअसत्यपणेकूं कथनकरतीनहीं ॥ किंतु साश्रुतिअसत्शब्दकरिकै यामायामयजगत्के अस्पष्टनामरूपसूक्ष्मअवस्थाकूंही कथनकरै है॥यातैं यहअर्थसिद्धभया॥जिसब्रह्मरूपआत्माके सत्ताकूंप्राप्तहोइकै यहअसत्जगत्भी सत्यरूपताकूंप्राप्तहोवै है॥सोब्रह्मरूपआत्माही वास्तवतैंसत्यहै।इतनैग्रंथकरिकै ताब्रह्मरूपआत्माके सत्यरूपताका निरूपणकऱ्या ॥ अब तासत्यब्रह्मके आनंदरूपताकानिरूपणकरै हैं ॥हेशिष्य॥ जोब्रह्म आपणेआनंदरूपसत्ताकरिकै यासर्वजगत्कूं सत्यरूपकरताभयाहै।सोईहीब्रह्म आनंदस्वरूपहोणेतैं यासर्वजगत्का साररूपहै॥शंका॥हेभगवन्॥ यहब्रह्मरूपआत्मा आनंदरूप करिकैविद्यमानहै याअर्थविषे कौनप्रमाणहै।समाधान।हेशिष्य।याब्रह्मरूपआत्माकेआनंदरूपकरिकै सत्यपणेविषे ब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुषोंका अनुभवहीप्रमाणहै काहेतैं लोकप्रसिद्धविषयआनंदकीप्राप्तिकरणेहारे जेस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थहैं॥तिनपदार्थोंतैंरहितहुएभी यहविद्वान्पुरुष मैंब्रह्मरूपहूंयाप्रकारकेज्ञानकरिकै ताआनंदस्वरूपआत्माकूंप्राप्तहोइकै सर्वदा आनंदविषेमग्नहुए प्रतीतहोवै हैं ॥ यातैं यहजान्याजावै है ॥ यहआत्मादेवही आनंदस्वरूप है ॥ जिसआनंदस्वरूपआत्माकीप्राप्तिकरिकै यहविद्वान्पुरुष सर्वदा आनंदीरहे हैं ॥ और हेशिष्य ॥ सर्व प्राणियोंकेहृदयदेशविषेस्थित यहआनंदस्वरूपआत्मा जोकदाचित् ताप्राणियोंके जीवनका तथा ताजीवनकेअनुकूल प्राणादिकोंके क्रियाका कारणरूपनहींहोवै ॥ तौ यादेहधारी जीवोंकेजीवनकूं तथा ताजीवनकेअनुकूल प्राणअपानादिकोंकेक्रियाकूं दूसराकौनक रैगा ॥ किंतु ताआनंदस्वरूपआत्मातैंविना दूसराकोईपदार्थ ताजीवनकूं तथाप्राणादिकोंकेक्रियाकूं करिसकैनहीं ॥ याकारणतैंभी यहआत्मादेव आनंदस्वरूप है ॥ और हेशिष्य ॥ यासर्वजीवोंके हृदयदेशविषेस्थित जोयहआत्मादेव है ॥ सो आनंदस्वरूपहै॥याअर्थ विषे तुमनैं संशयनहीं करणा ॥ काहेतैं यालोकविषे जोजोजीव सुखकूंप्राप्तहोवै है ॥ सो इसीआनंदस्वरूपआत्मातैंही सुखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ याआनंदस्वरूपआत्माकूंछोडिकै किसीभीअनात्मपदार्थविषे सुखरूपतानहीं है॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जो कदाचित् यह आनंद

आत्माकास्वरूपहीहोवै॥ तौ हमारेकूं विषयोंतैं आनंदप्राप्तहोवैहै यालोकोंकेअनुभवतैं जो ताआनंदविषे विषयोंकरिकै जन्यता प्रतीतहोवै है ॥ सो नहींहोणीचाहिये ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ सोआत्मास्वरूपआनंद नित्यहै ॥ यातैं सोआत्मा स्वरूपआनंद शब्दस्पर्शादिकविषयोंकरिकैजन्यहोवैनहीं ॥ किंतु जैसे दीपकादिकप्रकाश घटादिकपदार्थोंकीप्रतीति करावै हैं ॥ तैसे ते शब्दादिक विषयभी इच्छाकीनिवृत्तिद्वारा ता आत्मास्वरूपआनंदकी प्रतीतिकरावै हैं ॥ या अर्थकूंनजाणिकै ते मूढबुद्धिपुरुष ता आनंदकूं विषयजन्यमानै हैं ॥ और हेशिष्य ॥ यहआत्मादेवही आनंदस्वरूपहै ॥ याकारणतैं यहआत्मादेवही सर्वजीवोंकूं आनंदकीप्राप्तिकरै है ॥ तहां जिनजीवोंके प्रति यहआत्मादेव अज्ञातरहै है ॥ तिनजीवोंकेताईं तौ यहआत्मादेव परिच्छिन्न विषयजन्यआनंदकीप्राप्तिकरै है ॥ और जिनविद्वान्पुरुषोंकेप्रति यहआत्मादेव ज्ञातहोवै है ॥ तिनविद्वान्पुरुषोंके ताईंतौ यहआत्मादेव परिपूर्णआनंदकीही प्राप्ति करैहै॥यातैं आपणेआनंदकरिकै सर्वजीवोंकूंआनंदकीप्राप्तिकरणेहारा यहआत्मादेवही आनंदस्वरूपहै ॥ इतनैकरिकै ताब्रह्मरूपआत्माके आनंदरूप ताका वर्णनकऱ्या।अब सोआनंदस्वरूपआत्मा विद्वान्पुरुषकूंही प्राप्तहोवै है याअर्थकानिरूपणकरै हैं॥हेशिष्य॥ऐसाआनंदस्वरूपआत्मा एकब्रह्मविद्याकरिकैही प्राप्तहोवै है अन्यउपायकरिकै प्राप्तहोवैनहीं ॥ याकारणतैं ताब्रह्मविद्यावाला विद्वान्पुरुषही जीवन्मुक्तअवस्थाविषे तथाविदेहमुक्तअवस्थाविषे ताआत्मास्वरूपआनंदकूंप्राप्तहोवै है॥और ताब्रह्मविद्यातैंरहितअज्ञानीजीवतौ ताआनंदकूं शब्दस्पर्शादिक विषयोंतैंजन्यमानै हैं॥याकारणतैं तेअज्ञानीजीव ताआत्मस्वरूपआनंदकूं प्राप्तहोवैनहीं॥अब ताब्रह्मविद्याकेस्वरूपका निरूपणकरै हैं ॥ हेशिष्य ॥ यहअधिकारीपुरुष जभी त्वंपदार्थआत्माकेविचारतैं अभयब्रह्मभावकेयोग्यहोवैहै॥तथा गुरुनैंउपदेशकऱ्या जो तत्त्वमसि यह महावाक्यहै ॥ तामहावाक्यतैंउत्पन्नभयाजो मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकाअभेदज्ञानहै॥ताअभेदज्ञानकरिकै यहअधिकारीपुरुष तत्पदार्थब्रह्म रूपकेसाथअभेदभावकूंप्राप्तहोवै है॥तभीही यहअधिकारीपुरुष ताअभयरूपब्रह्मानंदकूं प्राप्तहोवैहै कैसाहै सोतत्पदार्थरूपब्रह्म॥नेत्रादिकों काविषय जोबाह्यप्रपंचहै तिसतैंरहितहै ॥ तथा स्थूलशरीर सूक्ष्मशरीर कारणशरीर यातीनशरीरोंतैंरहित है ॥ ऐसाअद्वितीयब्रह्म मैंहूं

याप्रकारकेअभेदज्ञानकानामही ब्रह्मविद्याहै ॥ इतनेंकरिकै विद्वान्पुरुषोंकेप्रति तात्रह्मानंदकीप्राप्ति निरूपणकरी ॥ अब अविद्वान्पुरुष तात्रह्मानंदकूं प्राप्तहोवैनहीं याकोटीकेस्पष्टकरणेवासतै प्रथम ईश्वरविषे तिनअविद्वान्पुरुषोंकेभयकीकारणता निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ जैसे विद्वान्पुरुष ताआनंदस्वरूपब्रह्मकूं प्राप्तहोवै है ॥ तैसे अविद्वान्पुरुष तात्रह्मकूंप्राप्तहोवैनहीं॥ काहेतैं जन्ममरणादिकदुःखोंकाकारण जाभेददृष्टि है ॥ साभेददृष्टि ताअविद्वान्पुरुषविषे सर्वदाविद्यमान है ॥ याकारणतैं सोभेददर्शीअविद्वान्पुरुष ता ब्रह्मानंदकूंप्राप्तहोवै नहीं ॥ उलटा सोभेददर्शीपुरुष भयकूंहीप्राप्तहोवै है ॥ हेशिष्य ॥ शास्त्रोंकूंजानणेहारा जोविद्वान्पुरुष है ॥ सोविद्वान्पुरुष ताजीव ब्रह्मकेवास्तवभेदकूंदेखतानहीं ॥ परंतु सोविद्वान्पुरुषभी जोकदाचित् बहिर्मुखताकरिकै तथा आपणेंपंडितपणेकेअभिमानकरिकै ताजीवब्रह्मविषे व्यावहारिकभेदकूंभीदेखै है ॥ तौ सो विद्वान्पुरुषभी ता भेदरूपपर्वतकीसमीपताकरिकै परमभयकूं प्राप्तहोवै है ॥ जभी व्यवहारकालविषे जीवब्रह्मकेभेदकूंदेखणेहारा विद्वान्पुरुषभीभयकूंप्राप्तहोवै है ॥ तभी ताजीवब्रह्मकेवास्तवभेदकूंमानणेहारा जो अविद्वान्पुरुषहै ॥ सोआविद्वान्पुरुष साक्षात् तिनभेदरूपीपर्वतोंविषेनिवासकरताहुआ परमभयकूंप्राप्तहोवैहै याके विषेक्याकहणा है ॥ हे शिष्य ॥ वास्तवतैं विद्वान्पणेतैंरहितहुआभी जो पुरुष भ्रांतिकरिकै आपणेकूं विद्वान्माने है ॥ तथा शास्त्रविचारतैंरहित जोकेवलअज्ञानीपुरुषहै ॥ तिनदोनोंकूं ताभेददर्शनकरिकै जिसप्रकारकाभय प्राप्तहोवै है तिसीप्रकारकाभय प्रमादीविद्वान्पुरुषकूं भी प्राप्तहोवै है ॥ इहां जोपुरुष शास्त्रकेयथार्थअर्थकूंजाणिकरिकैभी ताशास्त्रकेअर्थविषे निष्ठानहींकरै है तापुरुषकानाम प्रमादी है ऐसाप्रमादीविद्वान्पुरुषभी ताभेददर्शनकरिकै अज्ञानीजीवोंकीन्याईंही जन्ममरणरूपसंसारभयकूं प्राप्तहोवै हैं ॥ यातैं जिसअधिकारीपुरुषकूं ताजन्ममरणरूपसंसारकेनिवृत्तकरणेकीइच्छाहोवै ॥ सोअधिकारीपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं ताआनंदस्वरूपआत्माका श्रवणकरिकै श्रुतिकेअनुकूलयुक्तियोंकरिकै ताआनंदस्वरूपआत्माका निरंतरविचाररूपमननकरै॥ और जोकदाचित् यहअधिकारीपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतैं ॥ ताआनंदस्वरूप अद्वितीयआत्माका विचाररूपमननहींकरैगा॥ तौ अनादीभेदवासनाओंके बलतैं सोअधि

कारीपुरुष वारंवार जन्ममरणरूपसंसारकूं प्राप्तहोवैगा ॥ हेशिष्य ॥ तिनभेदवासनावोंकानाश याआनंदस्वरूपआत्माके विचाररूपमनन तैंहींहोवैहै॥ मननतैंविना किसीअन्यउपायकरिकै तिनभेदवासनावोंका नाश होवैनहीं॥ यातैं यहमुमुक्षुजन तिनभेदवासनावोंकी निवृत्ति वासतै निरंतर ताआत्माकेविचाररूपमननकूंकरै ॥ हेशिष्य ॥ याआनंदस्वरूप अद्वितीयआत्माकेसाक्षात्कारतैंविना सोमायाविशिष्ट परमेश्वर विद्वान्देवतावोंकूंभी भयकीप्राप्तिकरैहै ॥ तौ शास्त्रविचारतैंरहितअज्ञानीजीवोंकूं सोपरमेश्वर भयकीप्राप्तिकरै है॥ याकेविषेक्या कहणाहै ॥ तहांश्रुति ॥ यदाह्येवैषएतस्मिन्नुदरमंतरकुरुते अथतस्यभयंभवति ॥ अर्थयह ॥ जिसकालविषे यहपुरुष याअद्वितीयआत्मा विषे किंचित्मात्रभीभेद कल्पनाकरैहै ॥ तिसकालविषे ताभेददर्शीपुरुषकूं परमभयकीप्राप्तिहोवैहै ॥१॥ हेशिष्य ॥ अद्वितीयआत्माके ज्ञानतैंविना सोमायाविशिष्ट परमेश्वर सर्व जीवोंकूंभयकीप्राप्तिकरैहै ॥ याप्रकारकेअर्थविषेभी ते तित्तिरिनामाब्राह्मण याप्रकारकामंत्र रूपश्लोक कथनकरै हैं ॥ भीषाऽस्माद्वातःपवते भीषोदेतिसूर्य्यः ॥ भीषाऽस्मादग्निश्चेंद्रश्च मृत्युर्धावतिपंचमः ॥ अर्थयह ॥ यापरमात्मादेव केभयकरिकैही यहवायु चलायमानहोवैहै ॥ और यापरमात्मादेवकेभयकरिकैही यहसूर्यउदयहोवैहै ॥ और यापरमात्मादेवकेभयकरिकै ही यहअग्नि प्रज्वलितहोवैहै ॥ और यापरमात्मादेवकेभय करिकैही यहइंद्रवर्षाद्वारा यालोकोंकारक्षणकरै है ॥ और यापरमात्मादेवके भयकरिकैही यहमृत्यु जहांतहांभ्रमणकरताहुआजीवोंकाहननकरैहै ॥ १ ॥ हेशिष्य ॥ यासर्वजगत्केव्यवहारकूंसिद्धकरणेहारेजे वायुसूर्य अग्निइंद्र यमयहपंचदेवताहैं ॥ तेवायुआदिकदेवताभीजभीतापरमेश्वरतैंभयकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ तभीदूसरेजीव तापरमेश्वरतैंभयकूंप्राप्तहोवैहै याकेविषेक्याकहणाहै ॥ इतनेंकरिकै भेददर्शीपुरुषोंकूंईश्वरतैंभयकीप्राप्तिकानिरूपणकऱ्या ॥ अब तिसीब्रह्मरूपआत्माविषे निरतिशय आनंदरूपताकेनिरूपणकरणेवासतै प्रथम विषयजन्यआनंदके न्यूनअधिकताकूं निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ सर्वजीवोंकूं आनंदकीप्राप्ति करणेहारा तथाभेददर्शीजीवोंकूं भयकीप्राप्तिकरणेहारा जोआनंदस्वरूपआत्मा पूर्वकथनकऱ्याहै ॥ तिसआत्माकास्वरूपभूतआनंद कितनेपरिणामवालाहै ॥ याप्रकारकीजाशिष्यकीजिज्ञासाहै ॥ ताजिज्ञासाकेनिवृत्तकरणेवासतै तेतित्तिरिनामाब्राह्मण प्रथम विषयजन्य

आनंदोंविषे न्यूनअधिकता वर्णनकरिकै ताआत्मास्वरूपआनंदकूं अनंतरूपकहतेभये हैं ॥ अब प्रथम यामनुष्यलोककेआनंदकीअवधिका निरूपणकरै हैं ॥ हेशिष्य ॥ यामनुष्यलोकविषे जोपुरुष यौवनअवस्थाकरिकैयुक्त होवै॥तथा सुंदररूपशीलादिकशुभगुणोंकरिकै युक्तहोवै ॥ और पुराण न्याय मीमांसा धर्मशास्त्र ॥ यहचारिशास्त्र ॥ तथा शिक्षा कल्प व्याकरण निरुक्त ज्योतिष छंद यह वेदकेषट अंग ॥ तथा ऋग् यजुष् साम अर्थवण यहचारिवेद॥यहचतुर्दशविद्या धर्मके तथाज्ञानके जनावणेहारीयां हैं॥तिनचतुर्दशविद्यावोंका जिसपुरुषनैं अध्ययनकऱ्याहोवै ॥ तथा जोपुरुष तिनविद्यावोंके अध्ययनकरावणेविषेभी समर्थहोवै ॥ और तिनविद्यावोंकेअर्थकी कल्पनाकरणेविषे जिसपुरुषकीबुद्धि अत्यंतकुशलहोवै ॥ और जोपुरुष प्रथम माताकरिकैशिक्षितहोवै॥तिसतैं अनंतर पिताकरिकै शिक्षितहोवै ॥ तिसतैंअनंतर आचार्यकरिकैशिक्षितहोवै ॥ तथा जोपुरुष विनयकरिकैयुक्तहोवै॥तथा वज्रसारकेसमान जिसके अंगहोवैं ॥ तथा इंद्रकेसमान जिसकाबलहोवै ॥ और सुमेरुपर्वतहैमध्यविषेजिसके तथासुवर्णादिकधनकरिकैपूर्ण तथा व्रीहियवादिकधान्यकरिकैपूर्ण ऐसीजा यहसप्तमससमुद्रपर्यंत पृथिवी है ॥ सा संपूर्णपृथिवी जिसकेवशवार्त्तिहोवै ॥ तथा दीर्घ जिसकी आयुषहोवै ॥ हेशिष्य ॥ यौवनअवस्थातैंआदिलैके दीर्घआयुषपर्यंत जितनेकीपदार्थ पूर्व कथनकरे हैं ॥ तिनसर्वपदार्थोंकरिकैयुक्त जो कोईकचक्रवर्त्तिराजा है ताचक्रवर्त्तिराजाकूं जोविषयजन्यआनंद प्राप्तहोवै है ॥ सोआनंद यामनुष्यलोकोंके आनंदोंका अवधिरूप है ॥ और ताचक्रवर्त्तिराजाके आनंदतैं मनुष्यगंधर्वोंकाआनंद १०० शतगुणाअधिकहोवै है ॥ इहां जे मनुष्य कर्मउपासनाके बलतैं गंधर्वभावकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ तिनोंकानाम मनुष्यगंधर्व है और तिनमनुष्यगंधर्वोंकेआनंदतैं देवगंधर्वोंकाआनंद १०० शतगुणाअधिकहोवै है ॥ और तादेवगंधर्वोंके आनंदतैं पितरोंकाआनंद १०० शतगुणाअधिकहोवै है ॥ और तिनपितरोंकेआनंदतैं आजानजदेवतावोंकाआनंद १०० शतगुणा अधिकहोवै है ॥ इहां जेपुरुष स्मार्त्तकर्मोंकेअनुष्ठानकरिकै देवताभावकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ तिनोंकानाम आजानजदेवता है ॥ और तिनआजानजदेवतावोंकेआनंदतैं कर्मदेवतावोंकाआनंद १०० शतगुणाअधिकहोवै है ॥ इहां जे पुरुष अग्निहोत्रादिक श्रौतकर्मोंकेअनुष्ठानकरिकै देवताभावकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ तिनोंकानाम कर्मदेवता है॥ और तिनकर्मदेवतावोंकेआनंदतैं वसुरुद्रादिकदेवता

वोंकाआनंद १०० शतगुणाअधिकहोवै है॥और तिनवसुरुद्रादिकदेवतावोंकेआनंदतैं देवराजइंद्रकाआनंद १०० शतगुणाअधिकहोवैहै और तादेवराजइंद्रकेआनंदतैं बृहस्पतिकाआनंद १०० शतगुणाअधिकहोवैहै॥ और तावृहस्पतिकेआनंदतैं प्रजापतिकाआनंद १०० शतगुणा अधिकहोवै है ॥ इहां प्रजापतिशब्दकरिकै विराट्भगवान्का ग्रहणकरणा ॥ और ताप्रजापतिकेआनंदतैं ब्रह्माकाआनंद १०० शतगुणा अधिकहोवै है ॥ जाब्रह्माकूं शास्त्रविषे हिरण्यगर्भनामकरिकै तथासूत्रआत्मानामकरिकै कथनकरे हैं ॥ ताहिरण्यगर्भकेआनंदतैंअधिक कोईभीविषयजन्यआनंद नहीं है ॥ किंतु संपूर्णविषयजन्यआनंदोंका सोहिरण्यगर्भकाआनंदही अवधिरूपहै ॥हेशिष्य ॥ मनुष्यलोकतैं आदिलैकै ब्रह्मलोकपर्यंत जितनेकीविषयजन्यआनंद श्रुतिनैं कथनकरे हैं ॥ तिनसंपूर्णआनंदोंविषे जिसजिसलोककेआनंदतैं यहअधिकारीपुरुष विरक्तहोवै है तिसतिसलोकतैं शतगुणाअधिकआनंदकूं सोअधिकारीपुरुष प्राप्तहोवै है ॥ तात्पर्ययह ॥ जिनमानुष्यादिकआनंदोंकूं यहजीव चिरकालपर्यंतअनेककर्मउपासनाकरिकै प्राप्तहोवै हैं ॥ तिनमानुष्यादिकआनंदोंकूं यहनिष्कामअधिकारीपुरुष सुखेनहीं प्राप्तहोवै हैं ॥ यातैं याअधिकारीपुरुषोंनैं सर्वकामनावोंकापरित्यागकरिकै अवश्य निष्कामहोणा ॥ और हेशिष्य ॥ यहअधिकारीपुरुष मनुष्यलोकतैंआदिलैके ब्रह्मलोकपर्यंत सर्वविषयजन्यआनंदोंकेप्राप्तिकीइच्छाकापरित्यागकरिकै जिसआत्मास्वरूपआनंदका अनुभव करे है ॥ सोआत्मास्वरूपआनंद ताहिरण्यगर्भकेआनंदतैंभी अधिकहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जैसे पूर्वपूर्व मानुष्यादिकआनंदोंकीअपेक्षाकरिकै उत्तरउत्तर मनुष्यगंधर्वादिकोंकेआनंद १०० शतगुणाअधिकहोवै हैं ॥ तैसे सोआत्मास्वरूपआनंदभी ताहिरण्यगर्भकेआनंदतैं १०० शतगुणाअधिकहोवैगा ॥ समाधान॥ हेशिष्य ॥ यामनुष्यलोकादिकोंके आनंदकीअपेक्षाकरिकै यद्यपि सोहिरण्यगर्भकाआनंद अधिकहै॥तथापि सोहिरण्यगर्भकाआनंद ताआत्माआनंदरूपसमुद्रका एकबिंदुमात्रहै ॥ यातैं सोआत्मास्वरूपआनंद अनंत है ॥ ऐसे अनंतआत्मास्वरूपआनंदविषेशतगुणीअधिकता तथासहस्रगुणीअधिकता कहीजावैनहीं॥हेशिष्य॥ जोयहआत्मास्वरूपआनंद व्यष्टिउपाधिवालेत्वंपदार्थपुरुषविषेरहैहै॥सोईहीआत्मास्वरूपआनंद समष्टिउपाधिवालेतत्पदार्थआदित्यपुरुषविषेरहैहै॥ यातैं तात्पदार्थजीवविषे

तथा तत्पदार्थईश्वरविषे किंचित्मात्रभीभेदनहीं है ॥ किंतु सोआनंदस्वरूपआत्मा सर्वत्र एकही है ॥ ऐसेआनंदस्वरूपअद्वितीय आत्मा विषे जोजीवोंकूं यहसूर्यादिक अधिदैवरूपहैं यहनेत्रादिक अध्यात्मरूप हैं यहरूपादिकविषय अधिभूतरूप हैं याप्रकारकाभेद प्रतीत होवै है ॥ सोभेदताअद्वितीयआत्माकेअज्ञानतेंही प्रतीतहोवै है॥ और हेशिष्य॥ याजीवोंकूं वस्तुकेपरोक्षज्ञानहुएभी जबपर्यंत तावस्तुका अपरोक्ष ज्ञान नहींहोवै है॥ तबपर्यंत तिनजीवोंकूं तावस्तुविषे भ्रम निवृत्तहोवैनहीं॥ किंतु अपरोक्षज्ञानकेहुएही ताभ्रमकीनिवृत्तिहोवै है॥ जैसे पूर्वदक्षिणादिकदिशावोंके परोक्षज्ञानहुएभी जबपर्यंत याजीवकूं तिनपूर्वादिकदिशावोंका अपरोक्षज्ञाननहींहोवैहै॥ तबपर्यंत ताजीवकूं तिनपूर्वादिकदिशावोंकेभ्रमकीनिवृत्ति होवैनहीं ॥ किंतु तिनपूर्वादिकदिशावोंके अपरोक्षज्ञानकरिकैही तादिशाभ्रमकीनिवृत्तिहोवै है ॥ तैसे तात्ब्रह्मरूपआत्माके परोक्षज्ञानहुएभी जबपर्यंत याजीवोंकूं तात्ब्रह्मरूपआत्माका अपरोक्षज्ञान नहीं होवै है ॥ तबपर्यंत याजीवोंके अध्यात्म अधिदैव अधिभूत इत्यादिकभेदभ्रम निवृत्तहोवैनहीं॥ किंतु तात्ब्रह्मरूपआत्माके अपरोक्षज्ञानकरिकैही ताभेदभ्रमकीनिवृत्तिहोवै है ॥ हेशिष्य ॥ जोअधिकारीपुरुष याप्रकार भ्रमकेमर्यादाकूंजाणिकरिकै तात्ब्रह्मरूपआत्माकेसाक्षात्कारवासतें यत्नकरै है ॥ सोअधिकारीपुरुष पूर्वउक्तअन्नमयादिकपंचकोशोंविषे क्रमतें आत्मबुद्धिकरिकै पंचमेआनंदमयकोशकेपुच्छरूपब्रह्मकूं साक्षात्कारकरै है॥ हेशिष्य ॥ ऐसे आनंदस्वरूपब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपकरिकै प्राप्तभया जोविद्वान्पुरुषहै॥ ताविद्वान्पुरुषकूं किसीभीपदार्थतैंभयकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ याप्रकारकेअर्थविषेभी तेत्तिरिनामात्राह्मण याप्रकारकामंत्ररूपश्लोक कथनकरै हैं ॥ यतोवाचोनिवर्त्तंते अप्राप्यमनसासह आनंदंब्रह्मणो विद्वान् नबिभेतिकुतश्चन॥ अर्थयह॥ शब्दोंविषेवाणीकीप्रवृत्तिहोवै है॥ और तिनशब्दोंकेअर्थोंविषेमनकीप्रवृत्तिहोवैहै॥ औरयहअद्वितीयब्रह्मतो शब्दरूपप्रपंचतें तथा अर्थरूपप्रपंचतें रहितहै॥ यातें ताअद्वितीयब्रह्मविषे वाणीकी तथामनकी प्रवृत्ति होवैनहीं ॥ ऐसे आनंदस्वरूपब्रह्मकूं जोविद्वान्पुरुष आपणाआत्मारूपकरिकैजानै है ॥ सोअभेददर्शीविद्वान्पुरुष किसीतैंभी भयकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ और हे शिष्य ॥ जीवब्रह्मकेभेदकूंदेखणेहारा जो अज्ञानीपुरुष है॥ ता भेददर्शीअज्ञानीपुरुषकूं पुण्यकर्म तथा पापकर्म यहदोनों तपायमानकरै हैं ॥ तहां

पुण्यकर्मतो नहींकऱ्याहुआ तिनअज्ञानीजीवोंकूं तपायमानकरैहै ॥ और पापकर्मतो कऱ्याहुआ तिनअज्ञानीजीवोंकूं तपायमानकरै है तात्पर्ययह ॥ दूसरेपुण्यवान्पुरुषोंकूंसुखीहुआदेखिकै तेअज्ञानीजीव याप्रकारका पश्चात्तापकरैहैं ॥ जिस पुण्यकर्मकरिकै यापुरुषोंकूं सुखकीप्राप्तिभई है ॥ सोपुण्यकर्म हमनैं पूर्वजन्मोंविषेकऱ्यानहीं ॥ जोकदाचित् पूर्वजन्मोंविषेमैंभी ऐसा पुण्यकर्मकरता ॥ तो हमारेकूंभी अभी ऐसेसुखकीप्राप्तिहोती ॥ याप्रकारका पश्चात्तापकरिकै सोअज्ञानीपुरुष आपणेकूं धिक्कारकरै है ॥ और सोअज्ञानी पुरुषजभी पूर्वलेपापकर्मोंकादुःखरूपफलभोगैहै ॥ तभी याप्रकारका पश्चात्तापकरै है॥ मैं पूर्वजन्मोंविषे ऐसेपापकर्म किसवासतेंकरता भया ॥ जिनपापकर्मोंकरिकै मैं अभी परमदुःखकूंप्राप्तभयाहूं ॥ याप्रकारका पश्चात्तापकरिकै सोअज्ञानीपुरुष आपणेकूं धिक्कारकरै है हेशिष्य ॥ इसप्रकार ताभेददर्शीअज्ञानीपुरुषोंकूं जैसे नहींकरेहुएपुण्यकर्म तपायमानकरै हैं ॥ तथा करेहुएपापकर्म तपायमानकरैहैं ॥ तैसे मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकेअभेदज्ञानकरिकै ब्रह्मभावकूंप्राप्तभयाजोविद्वान्पुरुषहै ॥ ताविद्वान्पुरुषकूं नहींकरेहुएपुण्यकर्म तपायमानकरैनहीं ॥ तथा करेहुएपापकर्म तपायमानकरैनहीं ॥ हेशिष्य ॥ याविद्वान्पुरुषकूं पुण्यपापकर्म तपायमानकरैनहीं याके विषे यहकारणहै ॥ जैसे यालोकविषे अग्निआपणेतें भिन्नकाष्ठादिकपदार्थोंकूंतो दाहकरै है॥ परंतु सोअग्नि आपणेआत्माकूं दाहकरैनहीं तैसे मैंब्रह्मरूपहूं याअभेदज्ञानकेप्रभावतें तिनपुण्यपापकर्मोंकूंभी आपणाआत्मारूपकरिकैजानणेहारा जोविद्वान्पुरुषहै ॥ ताविद्वान् पुरुषकूं तेआत्मारूपपुण्यपापकर्म तपायमानकरैनहीं ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ जोअधिकारीपुरुष याआनंदस्वरूपब्रह्मकूं आपणाआत्मा रूपकरिकैजानै है ॥ ताअधिकारीपुरुषकूं निश्चयकरिकै अभयकीप्राप्तिहोवैगी ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारते तित्तिरिनामात्राह्मण आपणे शिष्योंकेप्रति यात्ब्रह्मविद्याकाउपदेश करतेभये॥ कैसीहैयहब्रह्मविद्या॥ हमअधिकारीजनोंकूं आनंदस्वरूपआत्माकेप्राप्तिका कारण है ॥ इतनैंग्रंथकरिकै आनंदवल्लीकाअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ अब भृगुवल्लीकाअर्थ निरूपणकरै हैं ॥ हेशिष्य पूर्वआनंदवल्लीविषे यह अर्थकथन कऱ्याथा ॥ जोअधिकारीपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतें याआनंदस्वरूपब्रह्मकाश्रवणकरिकै तिसब्रह्मका वारंवार विचाररूपमनन करै है

सो अधिकारीपुरुष याअन्नमयादिकपंचकोशोंकूं आत्मारूपकरिकैजाणतानहीं ॥ किंतुपंचमेआनंदमयकोशकापुच्छरूपजोब्रह्म है॥ तात्रह्म कूंही सोअधिकारीपुरुषआपणाआत्मारूपकरिकैजाणैहै॥ हेशिष्य॥ याप्रकारकेअर्थविषे ते तित्तिरिनामाब्राह्मण पितापुत्रकेइतिहासकूंकथन करतेभयेहैं ॥ कैसाहैसोइतिहास ॥ ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशश्रवणतैंअनंतर मननकेश्रवणकूंबोधनकरणेहाराहै ॥ ऐसेइतिहासकूं तूं सावधान होइकैश्रवणकर॥ हेशिष्य ॥पूर्वकालविषे वरुणनामाऋषिकापुत्र एकभृगुनामाऋषिहोताभयाहै ॥ सोभृगुनामाऋषि एककालविषे आपणे वरुणपिताकेसमीपजाइकैयाप्रकारकाप्रश्नकरताभया॥भृगुरुवाच॥हेभगवन् जिसब्रह्मकूं आपजानतेहो ॥ सोब्रह्म हमारेप्रति उपदेशकरो॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारजभी ताभृगुनैं आपणेवरुणपिताकेप्रतिप्रश्नकऱ्या ॥ तभी सोवरुणपिता आपणेमनविषे याप्रकारकाविचार करता भया ॥ मैंवरुण याभृगुपुत्रकेप्रति प्रथमत्वंपदार्थआत्माके उपलक्षणपदार्थोंका कथनकरौं ॥ तथा तत्पदार्थब्रह्मके उपलक्षणपदार्थोंका निरूपणकरौं जोकदाचित् यहभृगु ॥ बुद्धिमान्होवैगा ॥ तौ तिनउपलक्षणपदार्थोंकरिकै उपलक्षितजोचैतन्यआत्माहै ॥ ता चैतन्यआ त्माकूं यहभृगु आपहीजाणैगा ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारभृगुपुत्रकेबुद्धिकीपरीक्षाकरणेवासतै सोवरुणपिताप्रथम त्वंपदार्थआत्माकेउपलक्ष णपदार्थोंका निरूपणकरताभया ॥ वरुणउवाच ॥ हेभृगु ॥ यहस्थूलशरीरतथाप्राण अपान समान व्यान उदान यहपंचप्राण तथाश्रोत्र त्वक् चक्षु रसन घ्राण यहपंचज्ञानइंद्रिय तथा वाक् पाणि पाद उपस्थ पायु यहपंचकर्मइंद्रिय ॥ तथा मन बुद्धि चित्त अहंकार यहचारि अंतःकरण ॥ इतनैंही व्यष्टिसमष्टिरूपपदार्थ भोग्यरूपकरिकै यासर्वजगत्विषेस्थितहैं ॥ तिनशरीरादिकपदार्थोंतैंअधिककोईपदार्थ याजगत्विषेहैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ स्थूलशरीरतैंआदिलैकैजितनेकीयहभोग्यपदार्थ हैं ॥ तिनोंकी किसीभोक्तारूपसाक्षीतैंविना सिद्धि होवैनहीं ॥ यातैं तिनशरीरादिकभोग्यपदार्थोंका कोईभोक्तासाक्षीभीहै इतनैंकरिकै त्वंपदार्थजीवात्माके शरीरादिकउपलक्षणपदार्थोंका निरूपणकऱ्या ॥ अब तत्पदार्थब्रह्मके उपलक्षणपदार्थोंकानिरूपणकरै है ॥ हेभृगु ॥ जिसतत्पदार्थब्रह्मकेप्रादुर्भावकासाधन यालोक विषे प्रसिद्धनहीं है ऐसेब्रह्मकेप्रादुर्भावकरणेवासतै मैंवरुण तुमारेप्रति तात्रह्मकालक्षण कथनकरताहूं ॥ तालक्षणकाविचारकरिकै तूं

आपणीबुद्धिकरिकै पूर्वंकहेदुएशरीरादिकपदार्थोंविषे किसीपदार्थकूं ब्रह्मरूपकरिकैजाण ॥ अथवा तिनशरीरादिकपदार्थोंतैं भिन्न किसी पदार्थकूं ब्रह्मरूपकरिकैजाण ॥सोजानणा तुमारेबुद्धिकेअधीनहै ॥ अब तात्रह्मकेलक्षणका निरूपणकरै हैं ॥ हेभृगु जिस उपादानकारणतैं यहसंपूर्णभूतभौतिकजगत् उत्पन्नभयाहै ॥ तथा जिसउपादानकारणविषे यहसंपूर्णजगत् स्थितहै ॥ तथा जिसउपादानकारणविषे यहसंपूर्णजगत् लयभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ सोउपादानकारणही ब्रह्महै ॥ हेशिष्य ॥ जैसे पूर्व ॥ सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म ॥याश्रुतिविषे शास्त्रदृष्टि कूंअंगीकारकरिकै सत्य ज्ञान अनंत यहतीनलक्षण ब्रह्मकेकहेथे॥ और लौकिकदृष्टिकूंअंगीकारकरिकै सत्य ज्ञान अनंत यहएकहीलक्षण ब्रह्मकाकह्याथा ॥ तैसे इहांभी वरुणऋषिनैं भृगुपुत्रकेप्रति शास्त्रदृष्टिकूंअंगीकारकरिकैतौ याजगत्के उत्पत्तिकीकारणता तथास्थि तिकीकारणता तथालयकीकारणता यहतीनलक्षण ब्रह्मकेकथनकरे हैं ॥ और लौकिकदृष्टिकूंअंगीकारकरिकैतौ याजगत्के उत्पत्तिस्थि तिलयकीकारणता यहएकही ब्रह्मकालक्षण कथनकऱ्याहै॥इसप्रकार सोवरुणऋषि तात्रह्मके जगत्केउत्पत्तिस्थितिलयकीकारणतारूप तटस्थलक्षणकूं कथनकरिकै पुनःताभृगुपुत्रकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेभृगुपुत्र ॥ तात्रह्मके दोप्रकारकेलक्षण होवै हैं ॥ एकतौ स्वरूपलक्षणहोवै है ॥ और दूसरे तटस्थलक्षणहोवै हैं॥तहां तात्रह्मकेस्वरूपलक्षणकेजानणेविषे अभी तुमारीबुद्धि समर्थनहीं है॥ याकारणतैं हमनैं तुमारेप्रति सोब्रह्मकास्वरूपलक्षण नहींकथनकऱ्याहै ॥ हे भृगु ॥ सूक्ष्मबुद्धिवालेअधिकारीपुरुषही आपणेसूक्ष्मबुद्धि करिकै तात्रह्मकेस्वरूपलक्षणकूंजानै हैं ॥ स्थूलबुद्धिकरिकै सोब्रह्मका स्वरूपलक्षण जान्याजावैनहीं॥ और इसकालविषे तुमारीभीस्थूल बुद्धिहै ॥ याकारणतैं तात्रह्मकेस्वरूपलक्षणकापरित्यागकरिकै हमनैं तुमारेप्रति तात्रह्मकेतटस्थलक्षणका कथनकऱ्या है ॥ सोतटस्थल क्षण स्वरूपलक्षणकीअपेक्षाकरिकै स्थूलहोवै है ॥ यातैं सो तटस्थलक्षण तुमारीबुद्धिविषे शीघ्रही आवैगा ॥ इहां लक्ष्यस्वरूपब्रह्मतैं ता तटस्थलक्षणकी जो बाह्यस्थिति है यहही ता तटस्थलक्षणविषे स्थूलता है ॥ अब ता तटस्थलक्षणकेस्पष्टकरणेवासतै प्रथम लोकप्रसिद्धदृष्टांतविषे तास्वरूपलक्षणका तथा तटस्थलक्षणका निरूपणकरै हैं ॥ जैसे यालोकविषे सोमशर्मानामापुरुषकागृहस्थूलहै

तथा मनोरमहै तथाशुक्लवर्णवाला हैतथाविचित्रध्वजापताकाओंवालाहै तथामेघोंकूंस्पर्शकरै है॥इहां तेस्थूलतादिकधर्म तागृहकेस्वरूपका घटकहैं॥यातैं तेस्थूलतादिकधर्म तागृहकेस्वरूपलक्षणहैं॥और जहां तासोमशर्मापुरुषके गृहकेजनावणेवासतैं किसीपुरुषकेप्रति याप्रकार कावचन कहिये॥जिसगृहविषे विचित्रशब्दोंकूंकरणेहारे शुकसारिकादिकपक्षी स्थितहैं।सोगृह तुमनैं सोमशर्मापुरुषकाजानणा।इहां शुकसारिकादिकपक्षी तागृहका तटस्थलक्षणहैं॥अब तटस्थलक्षणके तथास्वरूपलक्षणके लक्षणकानिरूपण करैहैं।जालक्षकपदार्थकेअभावहुएभी जहां लक्ष्य पदार्थकाअभाव होवैनहीं॥तालक्षकपदार्थकानाम तटस्थलक्षणहै।जैसेशुकसारिकादिकलक्षकपदार्थोंकेअभावहुएभी तागृहरूप लक्ष्यपदार्थका अभावहोवैनहीं॥ यातैं तेशुकसारिकादिपक्षी तागृहका तटस्थलक्षणहैं॥ और जालक्षकपदार्थकेअभावहुए जहां तालक्ष्यपदार्थकाभीअभावहोवैहै॥तालक्षकपदार्थकानाम स्वरूपलक्षणहै॥जैसे स्थूलतादिकलक्षकपदार्थोंकेअभावहुए तागृहरूपलक्ष्यपदार्थकाभी अभावहोवै है ॥ यातैं तेस्थूलतादिकधर्म तागृहका स्वरूपलक्षणहैं याकहणेतैं यहदोलक्षणसिद्धभये ॥ जिसलक्षकपदार्थकाअभावताल क्ष्यपदार्थकेअभावकाप्रयोजकनहींहोवैहै।सोलक्षकपदार्थ तटस्थलक्षणहोवैहै।जैसेशुकसारिकादिकपक्षीहैं।और जिसलक्षकपदार्थकाअभाव तालक्ष्यपदार्थकेअभावका प्रयोजकहोवैहै॥सोलक्षकपदार्थ स्वरूपलक्षणहोवैहै॥जैसेतागृहके स्थूलतादिकधर्महैं॥शंका॥हेभगवन्॥लक्ष्य वस्तुकास्वरूपभूतजेपदार्थहैं।तिनपदार्थोंविषे लक्षणरूपतासंभवैनहीं काहेतैं यालोकविषे जोपदार्थआपणेलक्ष्यतैंभिन्नहोवै है॥सोपदार्थही लक्षणरूपहोवै है॥समाधान॥हेशिष्य जहां स्वरूपलक्षणहोवै है॥तहां तास्वरूपलक्षणका लक्ष्यपदार्थकेसाथ वास्तवतैंभेदहोवैनहीं॥किंतु तालक्षणकावक्तापुरुष आपणीबुद्धिकरिकै ताभेदकी कल्पनाकरैहै।यातैं कल्पितभेदकूंअंगीकारकरिकै तास्वरूपभूतपदार्थविषेभी लक्षण रूपता संभवहोइसकैहै ॥ और जहां तटस्थलक्षणहोवै है ॥तहांतौ जैसे गात वास्तवभेदवाला अश्वहोवै है ॥तैसे तालक्ष्यपदार्थतैंवास्तव भेदवालाही सो तटस्थलक्षणहोवै है ॥ याकहणेकरिकै यहदोलक्षण बोधनकरे ॥ जोपदार्थ आपणेलक्ष्यपदार्थतैं कल्पितभेदवालाहुआ तालक्ष्यपदार्थकूं इतरपदार्थोंतैंभिन्नकरिकैजनावैहै॥सोपदार्थतालक्ष्यपदार्थका स्वरूपलक्षणहोवै है ॥ और जोपदार्थ आपणेलक्ष्यपदार्थतैं

वास्तवभेदवालाहुआ ता लक्ष्यपदार्थकूं इतरपदार्थोंतैं भिन्नकरिकैजनावैहै ॥ सोपदार्थ तालक्ष्यपदार्थका तटस्थलक्षणहोवैहै ॥ अब या तटस्थलक्षणकेलक्षणकूं सिद्धांतविषेजोडैहैं॥ हेभृगु॥जडत्वपरिच्छिन्नत्वादिकधर्मोंकरिकै याजगत्विषे ब्रह्मकाभेद सर्वप्राणियोंकूंप्रसिद्धहै॥ यातैं ताजगत्केधर्म जेउत्पत्तिस्थितिलयादिकहैं ॥ तिनउत्पत्तिआदिकधर्मोंविषे ता ब्रह्मकी तटस्थलक्षणरूपता संभवहोइसकैहै ॥ और हेभृगु ॥ जहांकिसीलक्ष्यपदार्थकेजनावणेवासतैं तटस्थलक्षणकहीताहै ॥ तहां ता तटस्थलक्षणकरिकै तालक्ष्यपदार्थकावास्तवस्वरूप शीघ्रही प्रतीतहोवैनहीं॥किंतु तिसकालविषे तालक्ष्यपदार्थकास्वरूप सामान्यतैं प्रतीतहोवैहै ॥ और तिसतैंअनंतर यहअधिकारीपुरुष जभी तातटस्थलक्षणकेबोधनकरणेहारेवचनका अनेकप्रकारकीयुक्तियोंकरिकैविचारकरै है ॥ तभी याअधिकारीपुरुषकूं तालक्ष्यपदार्थकेवास्तवस्वरूपका साक्षात्कारहोवैहै ॥ याप्रकारकानियम सर्वतटस्थलक्षणोंविषेप्रसिद्धहै ॥ यातैं हेभृगुपुत्र तूंभी ताब्रह्मकेतटस्थलक्षणकूंबोधनकरणेहारेवचनकाविचारकरिकै तालक्ष्यस्वरूपब्रह्मकेवास्तवस्वरूपकूंजाण ॥ शंका ॥ हेभगवन्॥ स्वभावतैंप्रमाणरूप जेवेदकेवचनहैं ॥ तिनवेदवचनोंकूं आपणेअर्थकेबोधनकरणेविषे विचाररूपमननकीअपेक्षा संभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेभृगु ॥ तिनवेदकेवचनोंकूं आपणेशाब्दबोधरूपफलकीउत्पत्तिविषे यद्यपि ताविचारकीअपेक्षानहीं है ॥ तथापि श्रोतापुरुषोंकेअपराधरूप जेअसंभावनादिकदोषहैं॥ तिनदोषोंकीनिवृत्तिवासतैं तिनवेदवचनोंकूं ताविचाररूपमननकी अवश्यकरिकैअपेक्षाहै ॥ जैसे चक्षुइंद्रियकूं घटादिकपदार्थोंकेदर्शनविषे यद्यपि अंजनकीअपेक्षानहींहै॥तथापि तिनघटादिकोंकेदर्शनविषेप्रतिबंधक जोचक्षुनिष्ठमलिनताहै॥तामलिनताकीनिवृत्ति करणेवासतैं ताचक्षुइंद्रियकूं अंजनकीअपेक्षा अवश्यकरिकैहोवैहै॥ तैसे ब्रह्मसाक्षात्कारविषेप्रतिबंधक जेअसंभावनादिकदोषहैं॥तिनदोनों कीवृत्तिकरणेवासतैं तेवेदकेवचन ताविचाररूपमननकीअपेक्षा अवश्यकरैहैं और हेभृगु जैसे आपणेगृहकीभूमिविषे दाब्याहुआ जोसुवर्णादिरूपधनहै ताधनरूपनिधिकूं सोगृहवालापुरुषसिद्धअंजनतैंविना देखिसकैनहीं ॥ तैसे सर्वप्राणियोंकेदेशाविषेविराजमान जो ब्रह्म है ॥ ताब्रह्मकूंयहअधिकारीपुरुष ता विचाररूपमननतैं विना साक्षात्कारकरिसकै नहीं और हेभृगु॥जैसे भूमिविषेदाबेहुएधनकेदेखणेकासाधन

जोसिद्धअंजनहै॥तासिद्धअंजनविषे कोईसर्वलोकप्रसिद्धऔषध कारणहोवैनहीं ॥ किंतु कोईविलक्षणऔषधही ता अंजनविषेकारणहोवे है तैसे ताब्रह्मकेसाक्षात्कारविषेभी कोईसर्वलोकप्रसिद्धउपायहैनहीं ॥ किंतु श्रुतिअनुकूलअनेकप्रकारकीयुक्तियोंकरिकै जो तालक्षणवाक्य काविचारहै ॥ सोविचाररूपमननहीं ताब्रह्मसाक्षात्कारका उपायहै ॥और हेभृगु ताब्रह्मकेलक्षणवाक्यकाजोज्ञानहै ॥सोज्ञानतौ ताब्रह्मसाक्षात्कारविषे मुख्यउपायहै ॥ और जैसे रूपादिकपदार्थोंकेदर्शनविषे ताचक्षुइंद्रियका अंजनसहकारीहोवैहै ॥ तैसे ब्रह्मसाक्षात्कारकीउत्पत्तिविषे तालक्षणवाक्यकेज्ञानका तालक्षणवाक्यकेअर्थकाविचार सहकारीमात्रहोवैहै ॥ और हेभृगु ॥ ऐसा ब्रह्मकेलक्षणवाक्यकाज्ञान रूपउपाय गुरुशास्त्रकेउपदेशतैंप्राप्तहुआभी अशुद्धअंतःकरणवालेपुरुषोंकूं किंचित्मात्रभी फलकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ किंतु शुद्धअंतःकरण वालेपुरुषोंकूंहीं सोउपाय फलकीप्राप्तिकरैहै यातैं याअधिकारीपुरुषनैं आपणेअंतःकरणकूं अवश्यकरिकै शुद्धकऱ्याचाहिये ॥अब ताअंतःकरणकशुद्धिकाउपाय निरूपणकरैहैं ॥ हेभृगु ॥ याअंतःकरणविषेजोअशुद्धहोवैहै ॥ सो विषयोंकेरागतैंहोवै है ॥ और सोविषयोंकाराग याशरीरइंद्रियोंकेगर्वतैंहोवैहै॥और सोशरीरइंद्रियोंकागर्व विषयोंकेसंबंधतैंहोवै है ॥ यातैं परंपराकरिकै सोविषयोंकासंबंधही अंतःकरण कीअशुद्धिविषेकारण है॥ यातैं जिसअधिकारीपुरुषकूं आपणेअंतःकरणकेशुद्धिकरणेकीइच्छाहोवै है॥सोअधिकारीपुरुष प्रथम विषयोंके बंधका परित्यागकरै ॥ ताविषयसंबंधरूपकारणकेनाशहुएतैंअनंतर तेगर्वादिककार्य आपहीनाशकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ शंका ॥हेभगवन् अन्नपानादिकसर्वविषयोंकेपरित्यागकरणेतैं याअधिकारीपुरुषकाशरीरही नाशकूंप्राप्तहोवैगा समाधान हेभृगु यहअधिकारीपुरुष जोकदाचित् किंचितमात्रभी अन्नपानादिकविषयोंकाग्रहण नहींकरैगा।तौ याअधिकारीपुरुषकाशरीर शीघ्रही नाशकूंप्राप्तहोवैगा और जो कदाचित्यह अधिकारीपुरुष अधिकअन्नपानादिकविषयोंकाग्रहणकरैगा॥तौयाअधिकारीपुरुषके शरीरइंद्रिय गर्वकूंप्राप्तहोवैगा॥यातैं यहअधिकारीपुरुष इतनैंमात्र अन्नपानादिकविषयोंकाग्रहणकरै ॥ जितनैंकरिकै याशरीरकानाशभीनहींहोवै॥तथा याशरीरइंद्रियोंविषे गर्वभी उत्पन्ननहीं होवै ॥ इसप्रकार याशरीरकेजीवनमात्रविषेउपयोगी तथाआपणेवर्णआश्रमतैंअविरुद्ध ऐसे जे अन्नपानादिकविषयहैं ॥ तिनोंतैंअधिकविष

योंकासंग्रह नहींकरणा याकानाम तपहै ऐसे संयमरूपतपकेप्राप्तहुए याअधिकारीपुरुषोंकेशरीरइंद्रियोंका गर्व नाशकूंप्राप्तहोवै है ॥ और तागर्वकेनाशहुए सोविषयोंकारागभी नाशकूंप्राप्तहोवै है ॥ और तारागकेनाशहुए याअधिकारीपुरुषकाअंतःकरण शुद्धहोवै है ॥ इसप्रकार संयमरूपतपकरिकै रागद्वेषादिकमलतैंरहितहुआ यहअंतःकरण गुरुशास्त्रउपदिष्टवचनोंकेअर्थकाविचारकरिकै ताब्रह्मकूंनिश्चयकरैहै॥ यातैं हेभृगु ॥ तूंभी तासंयमरूपतपतैं आपणेचित्तकूंशुद्धकरिकै तथा पूर्वउक्तब्रह्मकेलक्षणवाक्यकाविचारकरिकै ताब्रह्मकूं निश्चयकर ॥ हेभृगु ॥ ताब्रह्मकेलक्षणवाक्यका नानाप्रकारकीयुक्तियोंकरिकैविचाररूपजोतपहै ॥ तथा शरीरइंद्रियादिकोंकासंयमरूपजोतपहै ॥ यह दोनोंप्रकारकातप ताब्रह्मकेसाक्षात्कारविषेकारणहै याप्रकारकावचन हम तुमारेप्रतिकहतेनहीं ॥ काहेतैं जोअर्थ शिष्यकूंअज्ञातहोवैहै ॥ तिसअर्थकूंही गुरुशास्त्र उपदेशकरैहै ॥ ज्ञातअर्थका गुरुशास्त्र उपदेशकरैनहीं ॥ और यहतप सर्वमनवांछितपदार्थोंकेप्राप्तिकाकारणहै याअर्थकूं तूं आपही भलीप्रकारजाणताहै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार सोभृगुऋषि आपणेवरुणपिताकेमुखतैं ताब्रह्मका तटस्थलक्षण श्रवण करिकै तथा ता तपविषे ब्रह्मज्ञानकीकारणतानिश्चयकरिकै प्रथम अंतःकरणकीशुद्धिवासतैं पूर्वउक्तशरीरइंद्रियादिकोंकेसंशयरूपतपकूं करताभया ॥ तासंयमरूपतपकरिकै जभी ता भृगुका अंतःकरणशुद्धभया ॥ तभी सोभृगुऋषि पूर्वउक्तब्रह्मकेलक्षणवाक्यका विचाररूप मनन करताभया ॥ और ताविचाररूपतपकरिकै सोभृगु प्रथम अध्यात्म अधिदैव अधिभूतरूप जोयहसमष्टिव्यष्टिरूपस्थूलशरीर है ता स्थूलशरीररूपअन्नमयकोशविषे पूर्वउक्तब्रह्मकालक्षणजाणिकै ता स्थूलशरीररूपअन्नमयकोशकूंही ब्रह्मरूपजाणता भया ॥ तिसतैंअनंतर ता अन्नमयकोशविषेभी दोषोंकूंदेखिकै सो भृगु पुनःपिताकेसमीपजाता भया ॥ शंका ॥ हे भगवन् ॥ ताअन्नमयकोशविषे ताभृगुनैं ब्रह्मकालक्षण किसप्रकार निश्चयकऱ्या ॥ और ताअन्नमयकोशविषे ताभृगुनैं कौनदोषदेखे ॥ समाधान ॥ हे शिष्य ॥ समष्टिव्यष्टिरूप जे यहस्थूलशरीर हैं ॥ तिनशरीरोंतैंहीं यहसंपूर्णजगत् उत्पन्नहोवै है ॥ और तिनशरीरोंविषेही यह संपूर्णजगत् स्थित है और नाशकालविषे यह संपूर्णजगत् तिनशरीरोंविषेही लयभावकूं प्राप्तहोवै है ॥ जैसे मृतकशरीर श्वान

कृमि अग्नि आदिकदेहोंकूंप्राप्तहोवे है ॥ इसप्रकार सोभृगु जगत्केउत्पत्ति स्थिति लयकीकारणतारूप ब्रह्मकालक्षण तासमष्टिव्यष्टिरूप स्थूलशरीरविषेही निश्चयकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर विचारकरिकै सोभृगु ताअन्नमयकोशविषे याप्रकारकेदोषोंकूंदेखताभया ॥ यह समष्टिव्यष्टिरूपस्थूलशरीर यद्यपि याजगत्केकारणहैं ॥ तथापि यहस्थूलशरीर आप नाशवान्हैं तथापरिच्छिन्नहैं ॥ और ब्रह्मतौ उत्पत्तिनाशतैंरहितहै ॥ तथा सर्वत्र व्यापकहै ॥ यातैं यहस्थूलशरीर ब्रह्मरूप किसप्रकारहोवैंगे ॥ किंतु यहस्थूलशरीर ब्रह्मरूपनहीं है॥ किंवा॥जैसे यहव्यष्टिस्थूलशरीर उत्पत्तिनाशवान्हैं तथापरिच्छिन्नहैं॥ तैसे समष्टिविराट्भगवान्कास्थूलशरीरभी उत्पत्तिनाशवान्है तथापरिच्छिन्नहै ॥ यातैं तासमष्टिस्थूलशरीरविषेभी ब्रह्मरूपतासंभवैनहीं ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार सोभृगुनामाऋषि ताअन्नमय कोशविषेदोषोंकूंदेखिकै ताअन्नमयकोशके कारणकेपूछणेकीइच्छाकरिकै पुनःतावरुणपिताकेसमीपजाताभया॥ और मेरेताईं ब्रह्मकाउपदेशकरो याप्रकारकाप्रश्न जैसे ताभृगुनैंपूर्वकऱ्याथा ॥ तिसीप्रकारका प्रश्न सोभृगुपुनःतावरुणपिताकेप्रति करताभया ॥ और सोवरुणभी पूर्वकीन्याईं याप्रकारकाउत्तर कहताभया॥हेभृगु॥ जोविचाररूपतप हमनैं तुमारेप्रति बोधनकऱ्याहै ॥तथा जोविचाररूपतप तुमनैं निश्चयकऱ्याहै ॥ सोविचाररूपतपही ताब्रह्मसाक्षात्कारविषे मुख्यकारणहै ॥ तिसतपतैंविना दूसराकोईकारणनहीं है॥ यातैं ताविचाररूपतपकरिकैही तूं याजगत्केकारणरूपब्रह्मकूं निश्चयकर ॥ हेभृगु यहविचाररूपतपही ताब्रह्मज्ञानका मुख्यकारणहै ॥याकारणतैंही वेदवेत्तापुरुष ता तपकूं ब्रह्म यानामकरिकैकथनकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार जभी तावरुणपितानैं ताभृगुपुत्रकेप्रति विचाररूपतपका उपदेशकऱ्या॥तभीसोभृगुऋषि पूर्वकीन्याईं पुनःविचाररूपतपकूंकरताभया ॥ताविचाररूपतपकरिकै सोभृगु प्राणमयकोशकूंहीं ब्रह्मरूप जाणताभया ॥और पुनःविचारकरिकै सोभृगु ताप्राणमयकोशविषेभी पूर्वकीन्याईं जडत्वादिकदोषोंकूंदेखिकै पुनःतावरुणपिताकेसमीप जाताभया ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार अन्नमय प्राणमय मनोमय विज्ञानमय आनंदमय यापंचकोशोंकूं यथाक्रमतैं ब्रह्मरूपजाणिकै तथाति नपंचकोशोंविषे यथाक्रमतैं दोषोंकूंदेखिकै सोभृगुऋषि पंचवार तावरुणपिताकेसमीप जाताभया ॥ तहां सोभृगु पंचवार पिताकेसमीप

जाइकै मेरेताईं आप ब्रह्मकाउपदेशकरो याप्रकारकाहीप्रश्नकरताभया ॥ और आगेतैं सोवरुणपिताभी ता भृगुपुत्रके प्रति विचाररूप तप करिकै तूं ब्रह्मकूंजाण याप्रकारकाहीउत्तर पंचवार कहताभया ॥ शंका ॥ हेभगवन् सोभृगु तिनप्राणादिकोंविषे किसप्रकार ब्रह्मकालक्षण जानताभया ॥ और तिनप्राणादिकोंविषे सोभृगु कौनदोषोंकूंदेखताभया॥समाधान ॥ हेशिष्य॥ जिसप्रकार सोभृगु तिनप्राणादिकोंविषे ब्रह्मकालक्षण जानताभयाहै ॥ तथा तिनप्राणादिकोंविषे जोजोदोष ताभृगुनैं देखे हैं ॥ तासंपूर्णअर्थकूं तूं श्रवणकर ॥ जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज यहचारिप्रकारकेदेह प्राणविशिष्टशरीरतैंही उत्पन्नहोवैहैं॥ और ताप्राणनैंकऱ्याजोअन्नकाभक्षण ताकरिकैही याशरीरोंकी स्थितिहोवे है ॥ और याशरीरोंकापरित्यागकरिकै जभी तेप्राण लोकांतरविषेजावै हैं ॥ तभी यहशरीर नाशरूपलयकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ यातैं यहप्राणही ब्रह्मरूपहै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार याजगत्केउत्पत्तिस्थितिलयकीकारणतारूप ब्रह्मकालक्षण ताप्राणविषेजाणिकै सोभृगु ऋषि ताप्राणकूंही ब्रह्मरूपजाणताभया॥तिसतैंअनंतर सोभृगुऋषि विचारकरिकै ताप्राणविषे याप्रकारकेदोषोंकूंदेखताभया॥ जैसे यह स्थूलशरीररूपअन्नमयकोश जड है तथापरिच्छिन्न है तथा उत्पत्तिनाशवालाहै ॥ तैसे यहप्राणमयकोशभी जडहै तथा परिच्छिन्नहै तथा उत्पत्तिनाशवालाहै ॥ यातैं याप्राणविषेभी ब्रह्मरूपता तथा सर्वजगत्कीकारणरूपता संभवैनहीं॥किंतु याजडप्राणकाभी कोईचेतनरूप कारण अवश्यहोवैगा ॥ और संपूर्णलोक हमारामन जाणताहै याप्रकारकावचन कथनकरैहैं ॥ यातैं यहजान्याजावै है ॥ सर्वकूंजानणे हारा यहचेतनरूपमनही याप्राणादिकसर्वजगत्के उत्पत्तिस्थितिलयकाकारणहै॥यातैं यहमनही ब्रह्मरूपहै ॥हेशिष्य ॥ इसप्रकार सोभृगु ऋषि याजगत्केउत्पत्तिस्थितिलयकीकारणतारूप ब्रह्मकालक्षण तामनविषेजाणिकै तामनकूंही ब्रह्मरूपजाणताभया ॥ और तिसतैं अनंतर पुनःविचारकरिकै सोभृगु पूर्वप्राणमयकोशकीन्याईं तामनोमयकोशविषेभी याप्रकारके दोषोंकूंदेखताभया ॥ यहमनभी सविकल्पक संशयरूपहै ॥ यातैं यहमन कारणतैंरहितहोवैनहीं ॥ किंतु यासंशयरूपमनकाभी कोईकारण अवश्यहोवैगा ॥ काहेतैं यालोकविषे यह स्थाणु है अथवा पुरुष है इसतैंआदिलैके जितनेकीसंशयहोवै हैं ॥ ते संशय कारणतौंविनाहोवै नहीं॥ किंतु जिसधर्मीपदार्थविषे

स्थाणुत्व पुरुषत्व यहविरुद्धधर्म प्रतीतहोवै हैं॥ताधर्मीपदार्थका जोइदंरूपकारिकै सामान्यज्ञानहै ॥ सोसामान्यज्ञान तासंशयका कारण होवै है ॥ तथा स्थाणुत्व पुरुषत्व यादोनोंकोटियोंकास्मरणरूपज्ञान तासंशयका कारणहोवैहै॥और सोधर्मीपदार्थादिकोंकाज्ञान निर्विकल्पकबुद्धिरूपहै ॥ यातैं तासंशयरूपमनका सानिश्चयरूपबुद्धिही कारणहै ॥ तात्पर्ययह ॥ मंदअंधकारविषेस्थित जोसाढेतीनहस्तपरिमाणवाला काष्ठविशेषहै ताकानाम स्थाणुहै ॥ तास्थाणुविषे यहस्थाणुहै अथवा पुरुष है याप्रकारकासंशय जीवोंकूंहोवै है ॥ तहां तासंशयतैंपूर्व जिसजीवकूं तास्थाणुविषे मनुष्यपरिमाणऊँचापणा निश्चयहोवै है ॥ तिसीजीवकूं तास्थाणुविषे सोसंशयहोवै है ॥ तानिश्चयतैंरहित अन्यजीवकूं सोसंशयहोवैनहीं यातैं यहजान्याजावै है ॥ सानिश्चयरूपबुद्धि तासंशयरूपमनकाकारणहै ॥ यातैं सोबुद्धिही ब्रह्मरूपहै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार तामनआदिकजगत्के उत्पत्तिस्थितिलयकीकारणतारूपब्रह्मकालक्षण;तानिश्चयरूपबुद्धिविषे जाणिकै सोभृगुऋषि तावुद्धिरूपविज्ञानमयकोशकूंही ब्रह्मरूपजाणताभया ॥ और तिसतैंअनंतर पुनःविचारकरिकै सोभृगुऋषि तावुद्धिरूपविज्ञानमयकोशविषेभी याप्रकारकेदोषोंकूंदेखताभया ॥ यहनिश्चयरूपबुद्धिभी यास्थूलशरीरकीनाईं परिच्छिन्नहै ॥ और जोजोपदार्थ परिच्छिन्न होवै है ॥ सोसोपदार्थ उत्पत्तिनाशवान्होवै है॥ जैसे यहस्थूलशरीर परिच्छिन्नहै ॥ यातैं उत्पत्तिनाशवालाभी है ॥ तैसे परिच्छिन्नहोणेतैं सावुद्धिभी उत्पत्तिनाशवाली है॥और जोजोपदार्थ उत्पत्तिनाशवालाहोवै है ॥ सोसोपदार्थ सर्वकालविषेहोवै नहीं ॥ किंतु किसीकाल विषेहोवै है तथाकिसीकालविषेनहींहोवै है ॥ जैसे शरीर उत्पत्तिनाशवालाहै ॥ यातैं किसीकालविषे है तथा किसीकालविषेनहीं है ॥ तैसे उत्पत्तिनाशवान्होणेतैं सावुद्धि किसीकालविषे है तथाकिसीकालविषेनहीं है ॥ और जोपदार्थ कादाचित्कहोवै है ॥ सोपदार्थ ब्रह्मरूपहोवै नहीं ॥ जैसे यहशरीर कादाचित्कहै यातैं ब्रह्मरूपभीनहीं है ॥ तैसे कादाचित्क होणेतैं यहबुद्धिभी ब्रह्मरूपहोइसकैनहीं ॥ किंतु यावुद्धिकाभी कोईकारण अवश्यहोवैगा ॥ तहां यालोकविषे जाजावुद्धिकीप्रवृत्तिहोवै है ॥ सासा सुखकी प्राप्तिवासतैंहीहोवै है ॥ सुखकीप्राप्तितैं विना सावुद्धिकीप्रवृत्तिहोवै नहीं ॥ और कहां दुःखविषे तथा दुःखकेसाधनोंविषे तथा द्वेष्यपदार्थोंविषे तथा उपेक्ष्य

पदार्थोंविषे जावुद्धिकीप्रवृत्ति देखणेमेंआवैहै ॥ साप्रवृत्तिभी भ्रमप्रमादादिकदोषोंकेवशतैंहींहोवै है ॥ स्वभावतैं सावुद्धि तिनदुःखादिकों विषे प्रवृत्तहोवैनहीं किंतु स्वभावतैं तौ सावुद्धि सुखकीप्राप्तिवासतैंही प्रवृत्तहोवै है॥किंवा॥सर्वइच्छातैंरहित समाधिविषेस्थितजेविद्वान्पुरुषहैं।तिनविद्वान्पुरुषोंकीबुद्धि तासमाधिकालपर्यंत उत्थानकूंप्राप्तहोवैनहीं॥और इच्छावान्अविवेकीपुरुषोंकीबुद्धि सर्वदाउत्थानकूंप्राप्तहोवै है ॥ याप्रकारकेअन्वयव्यतिरेककरिकै याइच्छाविषेही तावुद्धिकीकारणता सिद्धहोवै है ॥ और यालोकविषे अस्मदादिकजीवोंकूं जाजाइच्छाहोवै है ॥ सासाइच्छा सुखविषेहीहोवै है॥तासुखतैंभिन्न दुःखविषे तथादुःखकेसाधनोंविषे तथाद्वेष्यपदार्थोंविषे तथाउपेक्ष्यपदार्थोंविषे किसीभीजीवकूं इच्छाहोतीनहीं॥इसप्रकार आपणेस्वभावतैंसुखविषेप्रवृत्तहुईभी साजीवोंकीइच्छा अनुपादेयरूपकरिकै दुःखादिकोंकूंभीविषयकरैहै ॥ इहां जोपदार्थ प्राप्तहुआ पुरुषोंकेप्रयत्नकरिकैभी निवारणकऱ्याजावैनहीं ॥ तापदार्थकानाम अनुपादेय है ॥ यातैंयहअर्थासिद्धभया ॥ स्वभावतैं केवलसुखकूंहीविषयकरणेहारीजाइच्छाहै ॥ साइच्छा तावुद्धिकाकारण है ॥ और तासुखविषयकइच्छाकरिकैजन्यहोणेतैं सावुद्धिभी सुखविषेही उत्पन्नहोवै है ॥ और अनुपादेयरूपजेदुःखादिकहैं ॥ तेदुःखादिक जैसे ताइच्छाकीउत्पत्तिविषे निमित्तनहींहै ॥ तैसे तावुद्धिकीउत्पत्तिविषेभी तेदुःखादिक निमित्तनहीं हैं ॥यातैं प्रियमोदादिकअवयवोंवाला जोआनंदमयहै ॥सोआनंदमयही ताविज्ञानमयबुद्धिका कारणरूपहै ॥ यातैं सोआनंदमयही ब्रह्मरूपहै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार बुद्धिआदिकजगत्के उत्पत्तिस्थितिलयकीकारणतारूप ब्रह्मकालक्षण ताआनंदमयकोशविषे जाणिकै सोभृगुऋषि ताआनंदमयकोशकूंही ब्रह्मरूपजाणताभया॥और सोभृगुऋषि पुनःविचारकरिकै ताआनंदमयकोशविषेभी याप्रकारकेदोषोंकूंदेखताभया ॥ याआनंदमयविषेभी प्रिय मोद प्रमोद यहतीन अवयवतौ अंतःकरणकीवृत्तिरूपहैं ॥ और आनंदरूपचतुर्थअवयव अविद्याकीवृत्तिरूपहै ॥ यातैं प्रिय मोद प्रमोद आनंद यहचारोंअवयव कार्यरूप हैं ॥ और यालोकविषे जोजोपदार्थ कार्यरूपहोवै है ॥ सोसोपदार्थ किसीकारणकरिकैजन्य अवश्यहोवै है ॥ जैसे घटादिकपदार्थ कार्यरूपहैं ॥ यातैं मृत्तिकादिककारणोंकरिकैजन्यभी हैं ॥ तैसे कार्यरूपहोणेतैं तेप्रियादिकभी किसीकारणकरिकैजन्य अव

श्यहोवैंगे ॥ और यालोकविषे जोजोपदार्थ किसीकारणकरिकैजन्यहोवै है ॥ सोसोपदार्थ नाशकूंभीअवश्यप्राप्तहोवै है ॥ जैसे घटादिक पदार्थ मृत्तिकादिककारणोंकरिकैजन्य हैं॥यातैं नाशकूंभीप्राप्तहोवै हैं॥तैसे कारणकरिकैजन्यहोणेतैं यहप्रियादिकभी नाशकूं अवश्यप्राप्तहोवैंगे ऐसेउत्पत्तिविनाशवाले तिनप्रियमोदादिकोंविषे ब्रह्मरूपतासंभवैनहीं॥किंतु उत्पत्तिनाशतैंरहित तथान्यूनअधिकतातैंरहित जो ब्रह्मस्वरूपआनंदहै ॥ सोब्रह्मस्वरूपआनंदही यावुद्धिआदिकजगत्काकारणहै॥हेशिष्य॥इसप्रकार विचारकरिकै सोभृगुऋषि ता आनंदमयकोशके पुच्छप्रतिष्ठारूप आनंदस्वरूपआत्माकूंही ब्रह्मरूपकरिकैनिश्चयकरताभया ॥ काहेतैं यालोकविषे जितनेकीकारणहैं ॥ तेकारण प्रथम आनंदकूंप्राप्तहोइकैही किसीकार्यकेउत्पन्नकरणेविषे समर्थहोवै हैं ॥ आनंदतैंविना कोईभी कार्यकूंउत्पन्नकरतानहीं ॥ जैसे स्त्री पुरुष दोनों प्रथम आनंदकूंप्राप्तहोइकैही पुत्रादिकप्रजाकीउत्पत्तिकरै हैं ॥ यातैंयहजान्याजावैहै ॥ स्त्रीपुरुषादिकसर्वपदार्थोंविषे अनुगत जोआनंदहै ॥ सोआनंदहीयासर्वजगत्काकारणहै ॥ और सोजगत्काकारणरूपआनंद उत्पत्तिनाशतैंरहितहै ॥ यातैं सोकारणरूपआनंद नित्यहै ॥ और यालोकविषे सोआनंद यद्यपि स्त्रीआदिकविषयोंतैंजन्यहुआ प्रतीतहोवै है॥तथापि वास्तवतैं सोआनंद स्त्रीआदिकविषयोंतैं जन्यहोवैनहीं ॥ किंतु इच्छाकीनिवृत्तिकरिकै चित्तकीएकाग्रताद्वारा तेस्त्रीआदिकविषय ताआनंदकीअभिव्यक्तिकरै हैं॥ इसप्रकार निद्राआहार चंदनादिकोंकालेप स्त्रियां इत्यादिकविषयोंकेसंबंधतैं अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहुआ जोआत्मास्वरूपआनंदहै॥ताआनंदकरिकैही यहसंपूर्णभूतप्राणी जीवनकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ और मरणकालविषे यहसंपूर्णस्थावरजंगमजीव यास्थूलसूक्ष्मशरीरकेअभिमानकापरित्याग करिकै हृदयदेशविषे ताआनंदस्वरूपब्रह्मविषेही तादात्म्यसंबंधकरिकै लयभावकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ तात्पर्ययह ॥ ताआनंदस्वरूपब्रह्मकेसाथ अभेदभावकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ शंका ॥हेभगवन्॥ जैसे यहअधिकारीपुरुष आत्मसाक्षात्कारकरिकै ब्रह्मकेसाथ अभेदभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ याकारणतैं याअधिकारीपुरुषकूं पुनःजन्मकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ तैसे मरणकालविषे यहसंपूर्णजीव जोकदाचित् ताब्रह्मकेसाथ अभेदभावकूं प्राप्तहोतेहोवैं तो या जीवोंकूंभी पुनःजन्मकी प्राप्ति नहींहोणीचाहिये॥ और मरणतैंअनंतर याअज्ञानीजीवोंकूं जन्मकीप्राप्ति अवश्यकरिकै

होवैं है ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ जैसे आत्मज्ञानकरिकै अज्ञानतैंरहितहुआ यहविद्वान्पुरुष ब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ तैसे मरण कालविषे यहजीव जोकदाचित् अज्ञानतैंरहितहुए ताब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवैं ॥ तो याजीवोंकूंभी तामुक्तपुरुषकीनाईं पुनःजन्मकीप्राप्तिनहींहोवै॥ परंतु आत्मज्ञानतैंरहित यहअज्ञानीजीव तामरणकालविषे अज्ञानतैंरहितहुए ताब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवैंनहीं ॥ किंतु जैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे यहजीव अज्ञानयुक्तहुए ताब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवैहै॥तैसे मरणकालविषेभी यहजीव अज्ञानयुक्तहुएही ताब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवै हैं॥याकारणतैं यहअज्ञानीजीव मरणतैंअनंतर पुनःजन्मकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ जिसआत्मास्वरूपआनंदतैं याजगत्केउत्पत्तिस्थिति लय होवै हैं ॥ सोआत्मास्वरूपआनंदही ब्रह्मरूपहै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार पूर्व सोभृगुऋषि विचाररूपमननकरिकै आत्मसाक्षात्कारकूं प्राप्तहोताभयाहै ॥ यातैं इदानींकालकेमुमुक्षुजनोंनैंभी ताआत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासतैं सोविचाररूपमनन अवश्यकरणा ॥हेशिष्य॥ वरुणऋषिनैं आपणेभृगुपुत्रकेप्रति उपदेशकरी जायहब्रह्मविद्या है॥ सायहब्रह्मविद्या हृदयदेशविषेस्थित आनंदस्वरूपआत्माकूंही ब्रह्मरूपकरिकैबोधनकरै है ॥ यातैं याब्रह्मविद्याकरिकै जैसे सोभृगुऋषि सर्वात्मभावरूपफलकूंप्राप्तभयाहै॥तैसे दूसराभीजोकोईआधिकारीपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं याब्रह्मविद्याकूंश्रवणकरिकै ताका विचाररूपमननकरैगा ॥ सोअधिकारीपुरुषभी तासर्वात्मभावरूपफलकूं अवश्य प्राप्तहोवैगा ॥ यातैं इदानींकालकेमुमुक्षुजनोंनैंभी आपणेअसंभावनादोषकीनिवृत्तिवासतैं ताब्रह्मविद्याका विचाररूपमनन अवश्यकर्त्तव्याचाहिये॥हेशिष्य॥समष्टिरूपअन्नमयादिककोशोंकूं जोपुरुषआपणाआत्मारूपकरिकैजाणहै।तिसपुरुषकूं जैसे श्रुतिउक्तसर्वअन्नकीप्राप्तिआदिकफल प्राप्तहोवै हैं॥ तैसे आनंदस्वरूपब्रह्मकूं जोपुरुष आपणाआत्मारूपकरिकैजाणेहै॥तिसपुरुषकूंभी ताआनंदस्वरूपब्रह्मकीप्राप्तिरूपफल अवश्यप्राप्तहोवै है ॥ हेशिष्य॥ इसप्रकार विचाररूपमननकेबलतैं यहविद्वान्पुरुष अन्नमयादिकपंचकोशोंकापरित्यागकरिकै हावु इत्यादिकसामवेदकागायन करताहुआ जीवन्मुक्तरूपहोइकैस्थितहोवै है॥तथा ताआत्मज्ञानकेप्रभावतैं सोविद्वान्पुरुष याप्रकार सर्वात्मभावरूपफलका अनुभवकरै है यहबहुतआश्चर्य है॥जोयालोकविषे मैं एकहीआत्मादेव अन्नादिकभोग्यरूपकरिकै तथापुरुषादिकभोक्तारूप

करिकैस्थितहुआहूं ॥ और देवताअतिथिआदिकोंकेप्रति अन्नकूंनहीं देकरिकै जेकृपणपुरुष आपणेउदरकूंहीभरणकरै हैं॥ तिनकृपणपुरुषोंकूं मैंआत्मादेवही मृत्युरूपहोइकै भक्षणकरताहूं ॥ और मैंहीआत्मादेव ईश्वररूपकरिकै याऋगादिकवेदोंके मंत्रोंकाकरताहूं ॥तथा मैंहीआत्मादेव ऋषिरूपकरिकै तिनवेदोंके मंत्रोंकाद्रष्टाहूं तथास्मरणकरताहूं ॥ और मैंहीआत्मादेव कर्मउपासनाके स्वर्गादिफल रूपकरिकैस्थितहूं ॥ और मैंहीआत्मादेव समष्टिसूक्ष्महिरण्यगर्भरूपकरिकै तथासमष्टिस्थूलविराट्रूपकरिकै संपूर्णव्यष्टिदेवतावोंतैं प्रथमउत्पन्न भयाहूं ॥ और ब्रह्मानंदस्वरूपजोमोक्षहै तथा यहसंपूर्णसंसाररूपजोचक्रहै यादोनोंके मध्यविषे मैं आत्मादेवही नाभिकीनाईंस्थितहूं ॥ तात्पर्ययह ॥ मैंआत्मादेवही याजीवोंकूंमोक्षकीप्राप्तिकरोंहूं तथा संसारकीप्राप्तिकरोंहूं॥और मैंहीआत्मादेव धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष यह चारिप्रकारकापुरुषार्थरूपहूं ॥ और मैंहीआत्मादेव अन्नादिकपदार्थरूपहूं ॥ और मैंहीआत्मादेव अन्नादिकपदार्थोंकादातारूपहूं ॥यातैं ऐसेअन्नादिरूपमैंआत्माकूं जोपुरुष अतिथिआदिकोंके ताईं देकरिकै मृत्युतैंआपणेआत्माकीरक्षाकरै है॥सोअन्नदातापुरुषभी मैंआत्माकीहीरक्षाकरै है ॥ और जेकृपणपुरुष अतिथिआदिकोंके प्रति अन्नदान नहींकरै हैं ॥ किंतु केवलआपणेउदरकूं तथाआपणेस्त्रीपुत्रादिककुटुंबकेउदरकूंही भरणकरै हैं ॥ ऐसे अन्नदानतैंरहितकृपणपुरुषोंकूं मैंआत्मादेवही दिनमासादिककालरूपकरिकै तथामृत्युरूपकरिकै भक्षणकरोंहूं ॥ और सुवर्णकीन्याईंप्रकाशमान् तथासूर्यमंडलविषेस्थित जोस्वयंज्योतिपुरुषहै ॥ ऐसेपुरुषरूपकरिकै मैंआत्मादेवही यासर्वजगत्तैंउत्कृष्टहूं ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार तेविद्वान्पुरुष तासामवेदकेगायनकेव्याजकरिकै जोसर्वात्मभावकीप्राप्तिरूप आपणा अनुभव प्रगटकरै हैं ॥ सो किसीआपणेस्वार्थवासतै नहींप्रगटकरै हैं किंतु यहअधिकारीपुरुष जिसीकिसीप्रकारसैं तासर्वात्मभावकीप्राप्तिवासतै यात्रह्मविद्याविषे प्रवर्त्तहोवै याप्रकारकीकृपा हमअधिकारीजनोंऊपरकरिकै तेविद्वान्पुरुष श्रुतिभगवतीकीनाईं ताआपणे अनुभवकूं प्रगटकरै हैं ॥ अब इसीअर्थविषे प्रमाणरूपकरिकै यजुर्वेदकेनारायणउपनिषदूकाअर्थ निरूपणकरै हैं ॥ हेशिष्य ॥ जिससर्वात्मरूपब्रह्मकूं तेविद्वान्पुरुष सामवेदकरिकैगायनकरै हैं ॥ तिसीसर्वात्मरूपब्रह्मकूं नारायणउपनिषद्भी प्रतिपादनकरै है ॥ यातैं

तानारायणउपनिषद्विषे याआनंदस्वरूपब्रह्मकूं जिसप्रकार सर्वात्मरूपकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ ताअर्थकूंतूं सावधानमनकरिकेश्रवणकर॥ हेशिष्य ॥ अविद्यारूपजलकरिकैपूर्ण जोयहसंसाररूपसमुद्रहै ॥ तथा तासंसाररूपसमुद्रविषेस्थित जेचतुर्दशभुवन हैं ॥ तिनसंपूर्णोंविषे यहआनंदस्वरूपस्वयंज्योतिपरमात्मादेवही आकाशकीन्याईं अनुगतहोयकैवर्त्तै है ॥ और यहपरमात्मादेव सर्वत्रव्यापक है ॥ यातैं या लोकोंकी अपेक्षाकरिकै ऊपरस्थितजोस्वर्गलोकहै ॥ तिसस्वर्गलोकतैं भी सो परमात्मादेव ऊपर स्थितहै ॥ और महान् रूपकरिकैप्रसिद्ध जे आकाशादिकहैं ॥ तिनआकाशादिकमहान्पदार्थोंतैं भी सोपरमात्मादेव अत्यंतमहान्है और अध्यात्मरूप करिकै तथासूर्यादिकअधिदैवरूपकरिकै स्थित जेजीवोंकेनेत्रादिकइंद्रिय हैं ॥ तिननेत्रादिकइंद्रियोंविषे यहपरमात्मादेवही आपणेस्वयंज्योतिश्चैतन्यरूपकरिकै प्रवेशकरै है ॥ और स्थूल सूक्ष्म कारण यातीनप्रकारकीउपाधियोंकेसंबंधकरिकै क्रमतैं विराट् हिरण्यगर्भ ईश्वर यातीनप्रकारकेसंज्ञाकूंप्राप्तहुआ यहपरमात्मादेव सर्वात्मतारूपकरिकै यासृष्टिकेपरंपराकूं प्रवर्त्तकरैहै ॥ या कारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं प्रजापति यानामकरिकैकथनकरैहै॥और अध्यात्म अधिदैव अधिभूतयातीनरूपकरिकैस्थित जितनेकीस्थावरजंगमप्राणीहैं तिनसर्वप्राणियोंकेहृदयदेशरूप आकाशविषे यहपरमात्मादेवही साक्षीरूपकरिकैविचरैहै ॥ और यहसंपूर्णस्थावरजंगमरूपजगत् आपणी उत्पत्तिकालविषे तथास्थितिकालविषेतथालयकालविषे यापरमात्मादेवकेअधीनहुआही स्थितहोवैहै॥और विश्वेदेवनामादेवतावोंतैं आदिलैकेजितनेकीदेवताहैं॥तेसंपूर्णदेवताभी यापरमात्मादेवकेअधीनहुएही स्थितहोवैं हैं॥हेशिष्य यहसंपूर्णजगत् यापरमात्मादेवके अधीनहै याप्रकारकेवचनतैं तुमनैं परमात्माका तथा याजगतका भेदनहींजानणा॥किंतु भूत भविष्यत वर्त्तमान जितनाकीयहजगतहै॥सोसंपूर्णजगत् तापरमात्मारूपही है॥शंका॥हेभगवन्॥ऐसापरमात्मादेव किसवस्तुविषेस्थितहै ॥ समाधान॥हेशिष्य॥यहआनंदस्वरूपआत्मादेव दूसरेकिसीपदार्थविषेरहैनहीं॥किंतु यहपरमात्मादेवचिदाकाशस्वरूपआपणेमहिमाविषेही स्थितहोवैहै॥और यहआत्मादेवही आकाशकूं तथास्वर्गकूं तथाभूमिकूं सर्वओरतैंव्याप्यकरिकैरहैहै और यासर्वलोकमंडलकेमध्यविषेस्थितहोइकै जोयहसूर्यभगवान् प्रकाशकरैहैतासूर्य

भगवान्कूंभीयहपरमात्मादेवही आपणेस्वप्रकाशतेजकरिकै प्रकाशमानकरैहै॥ और हेशिष्य॥जैसे यालोकविषेतंतुवायपुरुष तंतुरूपसूत्रकूं पटभावकीप्राप्तिवासतैविस्तारकरैहै तैसे यासंसारसमुद्रविषेस्थित संपूर्णपदार्थरूपपटका सूत्ररूपजोपरमात्मादेवहै॥ तापरमात्मादेवरूपसूत्र कूंवाल्मीकिआदिककवी जगत्पटरूपकरिकै विस्तारकरैहैं॥ हेशिष्य॥ वास्तवतैं मनवाणीकाअविषयहुआभी यहपरमात्मादेव याजगत्विषे तादात्म्यभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ याप्रकार जो तापरमात्मादेवकावर्णनहै॥ सोवर्णनही तापरमात्मारूपसूत्रका जगत्पटरूपकरिकै विस्तारक रणाहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे सूत्रतैं पट भिन्ननहींहै ॥ यातैं पटकाजोवर्णनहै॥ सो सूत्रकाहीवर्णनहै॥ तैसेयहजगत्रूपपटभी तापरमात्मा रूपसूत्रतैंभिन्ननहींहैं ॥ यातैं तेवाल्मीकिआदिककवी याजगत्कावर्णनकरतेहुए तापरमात्मादेवकाहीवर्णनकरे हैं ॥ तहांश्रुति॥यइमेवीणं यांगायंतिएतमेवतेगायंति ॥ अर्थयह ॥ यहलौकिकपुरुष जोवीणाविषे गायनकरैहैं ॥ सोभी यापरमात्मादेवकूंही गायनकरैहैं ॥१ ॥ हेशि ष्य ॥ सर्वतैंउत्कृष्टअव्याकृतरूप जोपरमात्मादेवहै ॥ तापरमात्मादेवविषेही यहस्थावरजंगमरूपसर्वजगत् स्थितहोवै है ॥ और यापरमा त्मादेवतैंहीउत्पन्नहुआ हिरण्यगर्भरूपब्रह्मा आकाशादिकपंचमहाभूतोंकरिकै यासंपूर्णप्रजाकूंउत्पन्नकरताभया॥ तहां याभूमिलोकविषे ब्री हियवादिकओषधिरूपकरिकै मनुष्यपशुआदिकअनेकप्रकारकीप्रजाकूं उत्पन्नकरताभया॥ इसप्रकार हिरण्यगर्भद्वारा सर्वजगत्कूंउत्पन्नक रिकै सोपरमात्मादेवही जीवरूपकरिकै ताजगत्विषेप्रवेशकरताभया ॥ और यहपरमात्मादेव परमाणुआदिकसूक्ष्मपदार्थोंतैंभी अत्यंतसू क्ष्महै॥तथा आकाशादिकमहान्पदार्थोंतैंभी अत्यंतमहान्है॥ यातैं यापरमात्मादेवतैंपरे कोईसूक्ष्मपदार्थनहींहै तथाकोईमहान्पदार्थनहीं है॥किंतुयहपरमात्मादेवही अणुतैंअणुहै तथामहान्तैंमहान्है॥तहांश्रुति॥अणोरणीयान् महतोमहीयान् यहांअणुशब्दकरिकै दुर्विज्ञेयता काग्रहणकरणा॥और यहपरमात्मादेव सर्वभेदतैंरहितहै॥याकारणतैं अनंतहै॥ और यहपरमात्मादेव यासर्वजगत्का कारणहै॥ यातैं पुराण है॥और यहपरमात्मादेव कार्यसहितअज्ञानरूपतमतैंपरहै॥यातैंस्वयंज्योतिरूपहै और हेशिष्य॥शास्त्रकरिकैविहित जोमनकाव्यापारहैता कानाम ऋतहै॥और शास्त्रकरिकैविहित जोशरीरकाव्यापारहै ताकानामसत्यहै॥सोऋतनामापुण्यकर्म तथासत्यनामापुण्यकर्महीयाजीवों

कूं सुखरूपफलकीप्राप्तिकरैहै ॥ सोदोनोंप्रकारकापुण्यकर्मभी यहपरमात्मादेवही है ॥ और यहपरमात्मादेवही अग्निहोत्रादिकइष्टकर्म रूपहै ॥ और यहपरमात्मादेवही वापीकूपतडागादिकपूर्त्तकर्मरूपहै ॥ और भूत भविष्यत वर्त्तमानरूप जितनाकी यह जगत् है ॥ सोयहसंपूर्णजगत् तापरमात्मादेवविषेहीस्थितहै ॥ याकारणतैं ब्रह्मवेत्तापुरुष तापरमात्मादेवकूं यासंसाररूपचक्रका नाभिरूपकरिकै कथनकरै हैं ॥ और यहपरमात्मादेवही अग्नि वायु सूर्य चंद्रमा मोक्ष सूक्ष्मभूत विराट् रूपहै ॥ और यापरमात्मादेवतैंही निमेष घटी मुहूर्त्त प्रहर दिन रात्रि पक्ष मास ऋतु संवत्सर इत्यादिककाल उत्पन्नहोवै हैं ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार सोपरमात्मादेव सर्वजगत्कूंउत्पन्न करिकै आकाशादिकपंचभूतोंतैं तथा तापंचभूतमयत्रिलोकीरूपगौतैं नानाप्रकारकेभोगरूपदुग्धकूं दुहताभया ॥ जोभोगरूपदुग्ध हमजी वोंकूँ सुखरूपहुआप्रतीतहोवैहै ॥ हेशिष्य ॥ यहपरमात्मादेव नेत्रादिकइंद्रियोंकाविषयहैनहीं ॥ याकारणतैं यापरमात्मादेवकूं जगत्के ऊपर तथानीचे तथामध्यविषे कोईपुरुष ग्रहणकरिसकैनहीं ॥ और यहपरमात्मादेव किसी इंद्रियकरिकैग्रहणकऱ्याजावैनहीं ॥याकारणतैं यापरमात्मादेवका कोईनियंताभीनहींहै ॥ और यहपरमात्मादेव आत्मारूपकरिकै सर्वजीवोंकोनिरतिशयप्रीतिकाविषयहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवतीतापरमात्मादेवकूं 'महद्यशः'यानामकरिकैकथनकरै है॥ और यहपरमात्मादेव रूपस्पर्शादिकगुणोंतैंरहितहै॥याकारणतैं यापर मात्मादेवकूं नेत्रादिकइंद्रियोंकरिकै कोईभीपुरुष देखिसकतानहीं॥किंतु मनकूंनिरोधकरणेहारी जाअंतरमुखशुद्धबुद्धिहै ॥ ताशुद्धबुद्धिकरि कैही यहपरमात्मादेव जान्याजावैहै॥ और हेशिष्य॥पूर्वसृष्टिकालविषे आकाशादिकपंचसूक्ष्मभूतोंतैं तथापृथ्वीआदिकस्थूलभूतोंतैं उत्पन्न भयाजोहिरण्यगर्भनामा तथावैश्वानरनामादेवताहै॥सोहिरण्यगर्भनामादेवता तथावैश्वानरनामादेवताभीयापरमात्मादेवतैंहीउत्पन्नहोवैहै॥ और याव्यष्टिरूपजगत्तैं समष्टिरूपकरिकै अधिकभावकूंप्राप्तहुआ सोहिरण्यगर्भ यासंपूर्णव्यष्टिशरीरविषे व्याप्यकरिकै स्थितहोवै है ॥ कैसाहैसोहिरण्यगर्भ॥यासंपूर्णदेहधारीजीवोंतैं प्रथम देहधारीजीवहै ॥तथा यहसंपूर्णस्थूलजगत् ताहिरण्यगर्भकाहीस्वरूपहै ॥ और यहही नारायणरूपपरमात्मादेव सूर्यमंडलविषेस्थितहोइकै आपणेअस्तिभातिप्रियरूपकरिकैयाजगत्कूंभीअस्तिभातिप्रियरूपकरै है॥औरइसी

ही परमात्मादेवकूं यहअधिकारीपुरुष ब्रह्मविद्याकरिकैप्राप्तहोवैहै ॥ और याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्व जोपरमात्मादेव अनंत निर्गुण चिद्घन इत्यादि रूपकरिकैस्थितहोवैहै ॥ सोईहीपरमात्मादेव ताहिरण्यगर्भका वास्तवस्वरूपहै ॥ ऐसा मायारूपतमतैंपरे तथासूर्यकेसमान तेजवान् तथामहान् जोस्वयंज्योतिआनंदस्वरूपपरमात्मादेवहै ॥ तिसपरमात्मादेवकूं मैंमंत्रद्रष्टाऋषि आपणाआत्मारूपकरिकैजाणताहूं ॥ और मेरेन्याईं जोकोईदूसराभीअधिकारीपुरुष तास्वयंज्योतिपरमात्मादेवकूं मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकार आपणाआत्मारूपकरिकैजानैगा ॥ सो अधिकारीपुरुषभी याशरीरकेवर्तमानकालविषे ब्रह्मरूपहुआ मरणतैंअनंतर ताशुद्धब्रह्मकूंहीप्राप्तहोवैगा ॥ ऐसेअद्वितीयब्रह्मकीप्राप्तिवासतै ब्रह्मज्ञानतैंविना दूसराकोईमार्गहैनहीं ॥ किंतु यहब्रह्मज्ञानही ताकेप्राप्तिकामार्गहै ॥ अबताब्रह्मज्ञानकी प्राप्तिवासतै प्रथम त्वंपदार्थकेशोधनकानिरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ जैसे माताकेउदरविषे बालकस्थितहोवैहै ॥ तैसे आदित्यमंडलविषेस्थितयहस्वयंज्योतिपुरुषही विराट्रूपकरिकै सर्वजीवोंकेअंतरस्थितहोइकै नानाप्रकारकीसृष्टिकूंउत्पन्नकरताहुआविचरैहै ॥ कैसाहैसोपरमात्मादेव ॥ शरीरादिकउपाधियोंकेजन्महुए भी वास्तवतैं जन्ममरणतैंरहितहै ॥ और शास्त्रवेत्तापुरुष जैसे सूर्यमंडलादिकोंकूंसूर्यादिकोंके किरणावोंका कारणमानैहैं ॥ तैसे तासर्वांतर्यामीपरमात्मादेवकूंही ताविराट्का कारणमानैहैं ॥ अब तत्पदार्थकाशोधनकरतेहुए प्रथमचित्तशुद्धिवासतैतापरमात्मादेवकेआराधनकी प्रकार निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ अग्निआदिकजेअधिदैवहैं ॥ तथा वाकादिकजेअध्यात्महैं ॥ तिनसंपूर्णोंकेउपकारवासतै जोपरमात्मादेव आदित्यमंडलविषेस्थितहोइकै सर्वत्रप्रकाशकरैहै ॥ और इंद्रादिकदेवतावोंकापुरोहित जोबृहस्पतिहै सोबृहस्पतिभी जिसपरमात्मादेवकीही विभूतिहै और जोपरमात्मादेवविभूतिरूपसर्वदेवतावोंतैंपूर्व आदित्यरूपकरिकै प्रादुर्भावहोवैहैऐसेस्वप्रकाशचैतन्यरूपशुद्धपरमात्मादेवकेताईं हमारा वारंवार नमस्कारहोवै ॥ हेशिष्य ऐसेनारायणरूपपरमात्मादेवनैं अग्निआदिकदेवताओंकेप्रति याप्रकारकावर दियाहै ॥ हेदेवतावो ॥ आदित्यरूप जोमैंआनंदस्वरूपपरमात्मादेवहूं तिसमैंपरमात्मादेवकीप्रसन्नताकरणेवासतै जेअधिकारीपुरुष श्रद्धा भक्तिपूर्वक मेरेताईंनमस्कारकरैंगे ॥ तिन अधिकारीपुरुषोंकेसर्वपापकर्म निवृत्तहोवैंगेऔर तिनपापकर्मोंकीनिवृत्तितैं अनंतरतिनअधिकारीपु

रुषाकाअंतःकरणशुद्धहोवैगा ॥ ताशुद्धअंतःकरणविषे ॥ तिनअधिकारीपुरुषोंकूं मैंपरमात्मादेवकासाक्षात्कारप्राप्तहोवैगा ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ तापरमात्मादेवनैं तिनअग्निआदिकदेवतावोंकेप्रतियाप्रकारकावर किसकालविषेदियाहै ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ पूर्व तेअग्निआदिकदेवताताप्रकाशमानआदित्यरूपपरमात्मादेवकूं नानाप्रकारकेनमस्कारोंकरिकै प्रगटकरतेभये ॥ और वरकेप्राप्तिकीकामनाकरिकै तेअग्निआदिकदेवता तापरमात्मादेवकेआगे याप्रकारकीप्रार्थनाकरतेभये ॥ हेभगवन् सर्वजगत्काआत्मारूप तथापरमआनंदस्वरूप जो आपहो ॥ तिसआपकेताईं जोअधिकारीपुरुष श्रद्धाभक्तिपूर्वकनमस्कारकरै ॥ तिसअधिकारीपुरुषकेहृदयदेशविषे आपसर्वदा प्रगटहोवो ॥ तात्पर्ययह ॥ ताअधिकारीपुरुषकूं आपकाआत्मारूपकरिकैसाक्षात्कारहोवै ॥ याप्रकारकावरआपहमारेप्रतिदेवो ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार जभी तिनअग्निआदिकदेवतावोंनैंतापरमात्मादेवकेआगेप्रार्थनाकरी ॥ तभीसोपरमात्मादेव तिनदेवतावोंकेप्रति सोवरदेताभया ॥ यातैंजो अधिकारीपुरुषतापरमात्मादेवकेप्रति श्रद्धाभक्तिपूर्वक नमस्कारकरैहै ॥ ताअधिकारीपुरुषकूं तापरमात्मादेवकेवरकेप्रभावतैं ब्रह्मात्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिअवश्यकरिकैहोवै है ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार अग्निआदिक देवतावोंकेप्रति जोपरमात्मादेवनैंवरदियाहै ॥ तावरदानरूपगुह्यव्यवहारकूं जोअधिकारीपुरुषगुरुशास्त्रकेउपदेशतैंजानै है ॥ तिसअधिकारीपुरुषके तेसंपूर्णदेवतावशवर्तीहोवैहैं ॥ हेशिष्य ॥ आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासतै तापरमात्मादेवकेप्रति नमस्कारकरताहुआ यहअधिकारीपुरुष याप्रकारतापरमात्मादेवकीस्तुतिकरै ॥ हेपरमात्मादेव ॥ ऐश्वर्यकाअभिमानीदेवतारूपजाश्रीहै ॥ तथासौंदर्यकाअभिमानीदेवतारूपजालक्ष्मीहै ॥ तेश्रीलक्ष्मीदोनोंआपकीपत्नीयां हैं ॥ और सर्वपदार्थोंकरिकैयुक्त जोदिनरूपकालहै तथारात्रिरूपकालहै ॥ तेदिनरात्रिरूपदोनोंकालआपके पार्श्वस्थानहैं ॥ और यहसंपूर्णतारागण आपकाप्रकाशमानरूपहै ॥ औरअश्विनीकुमारोंकीन्याईं द्वंद्वरूपकरिकैप्रसिद्धजेस्वर्ग पृथ्वी यहदोनोंहैं ॥ तेस्वर्गपृथ्वीदोनों आपका प्रसृतमुखहै ॥ हेदेवतावोंकेइश्वर ॥ हमअधिकारीजनोंकूं मोक्षकीप्राप्तिकरणेवासतै आपणास्वयंज्योतिआनंदस्वरूपप्रगटकरो ॥ हेभगवन् हमअधिकारीजनोंका वारंवार आपकेताईंनमस्कारहोवै ॥ इतनैंकरिकै वैश्वानरअंतर्यामीरूपकरिकै तानारायणपरमात्मादेवकास्वरूप निरूपण

कऱ्या ॥ अवहिरण्यगर्भअंतर्यामीरूपकरिकैभी तानाराधणपरमात्मादेवकास्वरूप निरूपणकरैहैं ॥ जोहिरण्यगर्भरूपदेव यासर्वजगत्तैं पूर्वप्रगटहोइकै यासर्वजगत्कामहेश्वरहोताभया ॥ और जैसे यालोकविषेस्तंभ गृहकूंधारणकरैहैं॥तैसे सोहिरण्यगर्भ देवभी यात्रिलोकी रूपगृहकूंधारणकरताभया ॥ ऐसेहिरण्यगर्भरूपएकदेवके प्रसन्नताकरणेवासतैं हमअधिकारीजनआपणेवर्ण आश्रमकेअनुसार घृतादि रूपहविष्यपदार्थोंकरिकै अर्चनकरैहै ॥ और प्राणोंकूंधारणकरणेहारे तथाज्ञानकर्मइंद्रियोंकरिकै नानाप्रकारकेव्यापारोंकूंकरणेहारेजे चेतनप्राणीहैं ॥ तिनसंपूर्णचेतनप्राणियोंका जोहिरण्यगर्भदेव अधिपतिहोताभया ॥ याकारणतैं सोहिरण्यगर्भ देव दोपादोंवालेमनुष्या दिकोंका तथाचारिपादोंवालेअश्वादिकोंका नियंताईश्वरहै ॥ ऐसेहिरण्यगर्भदेवकेशरणकूं मैं अधिकारीजनप्राप्तभयाहूं ॥ किंवा ॥ जो हिरण्यगर्भदेव आत्मसाक्षात्कारवालेअधिकारीजनोंकेप्रति आपणावास्तवस्वरूप प्राप्तकरैहै ॥ तथाबलप्राप्तकरैहै ॥ और जिसहिरण्यगर्भ देवकूं आपणेशरीरविषेस्थितहोइकैसंपूर्णदेवता आराधनकरैहैं ॥ औरजिसहिरण्यगर्भदेवके यहअग्निआदिकसर्वदेवता शिष्यरूपहै ॥ और जिसहिरण्यगर्भदेवतैं यहसंपूर्णदेवता आशीर्वादकूंप्राप्तहोवै है ॥ और जैसे छाया यापुरुषोंकेअधीनहोवैहै ॥ तैसेमोक्ष मृत्यु यहदोनों जिसहिरण्यगर्भदेवकेकिंकरहैं ॥ ऐसेहिरण्यगर्भदेवकेशरणकूं मैंअधिकारीजनप्राप्तभयाहूं ॥ किंवा ॥ हिमालयतैंआदिलैकैजितनेकीपर्वत हैं ॥ तेसंपूर्णपर्वत जिसहिरण्यगर्भका विभूतिरूपमहिमाहैं ॥ अथवा ॥ हिमालयादिकपर्वतोंतैंभी जिसहिरण्यगर्भ देवकामहिमा अधिक है ॥ और जैसे यालोकविषे जलकेतलाव बालकोंकेक्रिडाकास्थानहोवैहै ॥ तैसेहिमालयआदिकपर्वतहैंतीररूपजिनोंके ऐसेजेसप्तसमुद्रहैं तथापातालहैं॥तेसमुद्र तथापाताल जिसहिरण्यगर्भदेवकेक्रीडाकेस्थानहैं॥ और पूर्वादिकचारिदिशा तथा अग्निकोणादिकचारिउपदिशा यहसंपूर्णदिशा जिसहिरण्यगर्भदेवकीभुजाहैं ॥ ऐसेहिरण्यगर्भदेवकेशरणकूंमैंअधिकारीजनप्राप्तभयाहूं ॥ किंवा ॥ जिसहिरण्यगर्भदेवकी सत्ताकरिकैधारणकरीहुई यहपृथिवी जलऊपरस्थितहोवैहै ॥ तथा जिसहिरण्यगर्भदेवकीसत्ताकरिकैधारणकऱ्याहुआ स्वर्ग आकाशविषे स्थितहोवैहै॥और जिसहिरण्यगर्भकेवास्तवस्वरूपकूंसापृथिवी तथास्वर्ग आपणेमनकरिकै सर्वदा ध्यानकरैहैं॥ ताध्यानकरिकै सापृथ्वी

सर्वदाशोभायमानहैं ॥ और जिसहिरण्यगर्भदेवकूंआश्रयणकरिकै सर्वतैंअधिकतारूपकरिकैउदयभयाजोयहसूर्य है ॥ सोयहसूर्यभी जिस हिरण्यगर्भदेवकीभयकरिकै रात्रिदिनविषे नानाप्रकारकाभ्रमणकरै है ॥ ऐसेहिरण्यगर्भदेवकेशरणकूं मैंअधिकारीजन प्राप्तभयाहूं ॥किंवा॥ जिसहिरण्यगर्भदेवकीविभूतिरूप जेक्षत्रधर्मविषेप्रीतिवाले इंद्रादिकमहान्शूरवीरहैं ॥ तिसइंद्रादिरूपविभूतिकारिकैयुक्तहोणेतैं यहस्वर्गलोक उग्ररूपकरिकैप्रसिद्धहै ॥ और जिसहिण्यगर्भदेवकेअनुग्रहकरिकै यहपृथिवी अत्यंतबलकूंप्राप्तहोवै है ॥ जिस बलकेप्रभावतैं यह पृथिवी ब्रह्मांडकेभारकरिकैयुक्तहुईभी नौकाकीन्याईं जलविषेडूबती नहीं ॥ और जैसे स्तंभोंकरिकैधारणकऱ्याहुआ गृह नीचेपतनहोवै नहीं ॥ तैसे जिसहिरण्यगर्भदेवकरिकै धारणकऱ्याहुआ यहस्वर्गलोक तथा अंतरिक्ष लोक तथा ब्रह्मलोक नीचे पतन होवै नहीं ॥ और जो हिरण्यगर्भदेव रजोगुणकरिकैयुक्तहुआ स्वर्गलोकविषे विमानोंविषेस्थित नानाप्रकारकेभोगीरूपोंकूंधारणकरिकै विषयसुखकी प्राप्ति वासतै देवांगनावोंकेमुखरूपचंद्रमाविषे आपणेनेत्ररूपकमलोंकूंअर्पण करै है ॥ और अग्निआदिकसर्वदेवतावोंकेहरणेकामंदिर जो वैश्वानर है ॥ तावैश्वानररूपकूंभी यहहिरण्यगर्भदेवहीधारणकरै है॥ याकारणतैं यहहिरण्यगर्भदेव मानतैंरहितहै ॥ ऐसेहिरण्यगर्भदेवकेशरणकूं मैं अधिकारी जन प्राप्तभयाहूं ॥ किंवा ॥ जैसे लोकप्रसिद्धगंगादिकनदियोंकेजल समुद्रकूं पतिरूपकरिकै आश्रयणकरै हैं॥ तैसे अव्याकृत प्रकृति माया इत्यादिकनामोंकरिकैप्रसिद्ध जाअविद्याहै ॥ तेअविद्यारूपजल जिससर्वात्मारूपहिरण्यगर्भदेवकूं पतिरूपकरिकैआश्रयण करै हैं॥कैसे हैं तेअविद्यारूपजल ॥ आकाशादिकपंचभूतरूपगर्भकरिकैयुक्त हैं ॥ याकारणतैं महान्है ॥ पुनःकैसे हैं तेअविद्यारूप जल ॥ विराट्रूपजोवैदिकअग्निहै तथालोकप्रसिद्धजोयहअग्निहै तादोनोंप्रकारकेअग्निकूं सूक्ष्मबीजरूपकरिकै आपणेविषेधारणकरै हैं ॥ तथा तिनदोनोंप्रकारकेअग्नियोंकूं आपणेतैंउत्पन्नकरै हैं ॥ होशिष्य ॥ ताअविद्यारूपजलोंतैं केवल एकअग्निहीं उत्पन्ननहींभया ॥ किंतु वाकादिकअध्यात्मोंका तथा अग्निआदिकआधिदैवोंका धारणकरणेहारा जो यह प्राण है ॥ सोप्राणभी तिनअविद्यारूपजलोंतैंहीउत्पन्न भयाहै ॥ याकारणतैंहीं यहप्राण जलतैंविना स्थितहोइसकैनहीं ॥ ऐसेअविद्यारूपजल जिसहिरण्यगर्भदेवकूं पतिरूपकरिकैआश्रय

णकरै है ॥ ऐसेहिरण्यगर्भदेवकेशरणकूं मैंअधिकारीजन प्राप्तभयाहूं ॥ किंवा ॥ जोहिरण्यर्गभदेव आपणेस्वप्रकाशचैतन्यरूपतेजकरिकै ताअविद्यारूपजलोंकूं प्रकाशकरै है ॥ और जोहिरण्यगर्भदेव सर्वजीवोंकाआत्मारूपहै ॥ और जो हिरण्यगर्भदेव इंद्रादिकदेवतावोंकाभी अधिपतिहै॥ऐसेहिरण्यगर्भदेवकेप्रसन्नकरणेवासतै घृतादिकहविष्यपदार्थोंकरिकै, तावेदकाअर्चनकरताहुआ मैंअधिकारीजन ताहिरण्य गर्भदेवकेशरणकूं प्राप्तभयाहूं ॥ किंवा ॥ साधनहीनपुरुषोंकेताईं उपदेशकरणेकूंअयोग्य तथासर्वत्रव्यापक ऐसाजोचैतन्यस्वरूपहिरण्य गर्भदेवहै ॥ ताहिरण्यगर्भदेवकेताईं मैंअधिकारीजनका वारंवार नमस्कारहोवै ॥ और सर्व धर्मोंतैं रहित तथासर्वकाआत्मारूप ऐसा हिरण्यगर्भदेव मैंमुमुक्षुजनकेताईं ब्रह्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिकरै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार जेअधिकारीपुरुष तापरमात्मारूपनारायणदेवकूं हिरण्यगर्भरूपकरिकै तथावैश्वानररूपकरिकै नमस्कारकरै हैं तथास्तुतिकरै हैं ॥ तिनअधिकारीपुरुषोंकेप्रति सोपरमात्मादेव अवश्यक रिकै आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिकरै है॥यातैं जिसअधिकारीपुरुषकूं आत्मसाक्षात्कारकेप्राप्तिकीइच्छाहोवै ॥ तिसअधिकारीपुरुषनैं पूर्व उक्तरीतिसैं तापरमात्मादेवकीस्तुति तथानमस्कार अवश्यकरिकैकरणा ॥ इतनैग्रंथकरिकै तानारायणदेवका वैश्वानररूपकरिकै तथा हिरण्यगर्भरूपकरिकै निरूपणकऱ्या ॥ अब तापरमात्मारूपनारायणदेवका साक्षात्हीनिरूपणकरै हैं ॥ हेशिष्य॥ यहपरमात्मारूपनारा यणदेव यास्थूलजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्व हिरण्यगर्भरूपकरिकैउत्पन्नहोताभयाहै ॥ याकारणतैं यहस्वयंज्योतिनारायणदेवही पूर्वादिक दिशारूपहै ॥ तथा अग्निकोणादिकउपदिशारूपहै ॥ और याब्रह्मांडगोलककेगर्भविषेस्थित जे तीनलोक हैं॥तेतीनलोकहैंशरीरजिसका ऐसाजोविराट्भगवान्है॥सोविराट्भगवानभी यहनारायणदेवही है ॥ और भूत भविष्यत वर्त्तमान यातीनकालोंविषेउत्पन्नहोणेहारे जे जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज यहचारिप्रकारकेशरीरहैं॥तेचारिप्रकारकेशरीरभी यहपरमात्मादेवही हैं हेशिष्य॥ इसप्रकार जे अंतर्मुख अधिकारीपुरुष तापरमात्मादेवकूं बुद्धिआदिकसर्वपदार्थोंतैं अत्यंतसमीरूपकरिकैदेखे हैं ॥ तिनअधिकारीपुरुषोंकूं ताअंतर्मुखतारूपसमा धिविषे सोपरमात्मादेवही आपणाआत्मारूपकरिकैप्रतीतहोवै है॥ और यहपरमात्मादेव सर्वभूतप्राणियोंकाआत्मारूपहै॥याकारणतैं यालो ॥ ३९ ॥

कविषे जितनेकीजीवोंकेचक्षुहैं तथाजितनेकीजीवोंकेमुखहैं तथाजितनेकीजीवोंकेहस्तपादहैं॥तेसंपूर्णचक्षुआदिक यापरमात्मादेवकेही हैं और आकाशादिकपंचभूतोंसहित जेजीवोंकेपुण्यपापरूपकर्म हैं ॥ तिनपुण्यपापकर्मरूपदोनोंभुजावोंकरिकै यहपरमात्मादेवही यासंपू र्णजगत्की उत्पत्ति स्थिति लय करै है॥और यहपरमात्मादेवही स्वर्गरूपऊर्ध्वलोककूं तथापृथिवीरूपअधोलोककूं उत्पन्नकरै है॥शंका॥ हेभगवन् ॥ याप्रकार तापरमात्मादेवकीस्तुतिकरिकै पूर्वंकिसीपुरुषकूं आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिभई है अथवानहीं॥समाधान॥हेशिष्य पूर्व एकवेननामागंधर्व होताभयाहै ॥ सोवेननामागंधर्वपूर्वउक्तरीतिसैं तापरमात्मादेवकीस्तुतिकरिकै तथानमस्कारकरिकै अंतःकरणकी शुद्धिद्वारातानारायणकेवास्तवस्वरूपकूं साक्षात्कारकरताभयाहै।और ताआत्मसाक्षात्कारकूंप्राप्तहोइकै सोवेननामागंधर्व वामदेवऋषिकी न्याईंसर्वअधिकारीजनोंऊपरकृपाकरिकै याप्रकारकाआपणाअनुभवकथनकरताभयाहै॥अबतावेननामागंधर्वकेअनुभवकानिरूपणकरै हैं॥ जिसएकपरमात्मादेवविषे यहनानाप्रकारकाजगत् स्थितहै ॥ तथा जिसपरमात्मादेवतैं यहसंपूर्णजगत् उत्पन्नहोवै है ॥ तथा जिसपरमा त्मादेवविषे यहसंपूर्णजगत् लयभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ और जैसे तंतुरूपसूत्र पटविषेसर्वओरतैंओतप्रोतहोवै है ॥ तैसे याजगत्रूपपटविषे जोपरमात्मादेवरूपसूत्र सर्वओरतैंओतप्रोतहै ॥ और जोपरमात्मादेव जीवरूपकरिकै यासर्वशरीरोंविषे प्रवेशकरै है॥और जोपरमात्मादे वजन्ममरणादिकसर्वविकारोंतैंरहितहै ॥ ऐसेआनंदस्वरूपअद्वितीयपरमात्मादेवकूं मैं वेननामागंधर्व आपणाआत्मारूपकरिकै साक्षात्कार करोंहूं ॥ कैसाहैसोपरमात्मादेव ॥ चारिपादोंकरिकैयुक्तहै ॥ तहां तापरमात्मादेवका एकपाद तौ यहसंपूर्णभूतभौतिकजगत्है ॥ और दूसरेतीनपादतौ आपणेस्वप्रकाशसाक्षीस्वरूपविषेस्थितहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् जैसेचारिपादवालीगौ परिच्छिन्नपरिमाणवालीहोवै है ॥ तैसे चारिपादवालासोपरमात्मादेवभी परिच्छिन्नहोवैगा ॥ समाधान ॥हेशिष्य॥ यहसंपूर्णजगत् तापरमात्मादेवकाएकपाद है ॥ और ती नपाद आपणेस्वप्रकाशस्वरूपविषेस्थितहैं ॥ याप्रकार जोश्रुतिनैंकथनकऱ्याहै॥सोताश्रुतिका परमात्माकेपरिच्छिन्नपणेविषे तात्पर्यनहीं है ॥ किंतु ताश्रुतिका परमात्माकेअनंतपणेविषेही तात्पर्य है ॥ हेशिष्य ॥ ऐसेसूर्यमंडलविषेस्थित नारायणरूपपरमात्मादेवके जे स्वप्र

काशसाक्षीरूपतीनपादहैं॥तिनतीनपादोंकूं जोविद्वान्पुरुष गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं आपणाआत्मारूपकरिकै साक्षात्कारकरै है॥सोविद्वान् पुरुषही हमअधिकारीजनोंकाबंधुहै॥तथा सोविद्वान्पुरुषही हमारा मातापिताहै॥तथा सोविद्वान्पुरुषही हमाराआत्माहै॥तथा सोविद्वान्पुरुषही हमारा ब्रह्माहै ॥ तिसब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुषतौंभिन्न दूसरेकोईपुरुष हमारेबंधुआदिकनहींहै॥इसप्रकार सोवेननामागंधर्व आपणा अनुभव कथनकरताभया ॥ हेशिष्य सूर्यचंद्रमादिकतेजोंके रहणेकेजेस्थानहैं ॥ तिनसंपूर्णस्थानोंकूं यहविद्वान्पुरुष ब्रह्मरूपकरिकैजाणे हैं ॥ और तांब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपकरिकैजाणे हैं॥यातैं सर्वजगत्कूंआपणाआत्मारूपकरिकैदेखणेहारा सोविद्वान्पुरुषही हमारा बंधु मातापितादिरूपहै ॥और हेशिष्य॥ अज्ञानरूपअव्याकृतकाअधिपति जोशुद्धब्रह्महै॥ताशुद्धब्रह्मकूं मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकार आपणाआत्मा रूपजाणिकरिकै जेसे यहविद्वान्पुरुष जन्ममरणतैंरहितमोक्षकूंप्राप्तहोवै हैं॥ तैसे पूर्व अग्निआदिकदेवताभी तांब्रह्मकूंआपणाआत्मारूपजा णिकरिकै तामोक्षकूंप्राप्तहोतेभये हैं ॥ और हेशिष्य ॥ जेसे सोपरमात्मादेव आपणेभक्तजनोंकेताईं अनेकप्रकारकेवरदेवै हैं ॥ तैसे तापर मात्मादेवकूं आपणाआत्मारूपजाणिकै तेअग्निआदिकदेवताभी आपणेभक्तजनोंकेप्रति वरदानादिकोंकरिकै दिव्यस्थानकीप्राप्तिकरै हैं॥ और तिसीब्रह्मज्ञानकेप्रभावतैं तेअग्निआदिकदेवता स्वर्गादिकसर्वलोकोंविषे तथापूर्वादिकसर्वदिशावोंविषे आपणीइच्छापूर्वककविचरे हैं ॥ और हेशिष्य॥जेसे यालोकविषे कार्पासकेवृक्षतैं कार्पासरूपफल उत्पन्नहोवै है॥और ताकार्पासरूपफलतैं तंतुरूपसूत्र उत्पन्नहोवै है॥और तातंतुरूपसूत्रतैं पट उत्पन्नहोवै है॥और तापटरूपकार्यविषे सोसूत्ररूपकारण सर्वओरतैंअनुगतहोवैहै॥तैसे यहयागादिककर्मतो कार्पास कावृक्षरूपहै॥और ताकर्मरूपकार्पासकेवृक्षतैं धर्मअधर्मरूप कार्पासफल उत्पन्नहोवै हैं॥और ताधर्मअधर्मरूपकार्पासफलतैं स्थूलसूक्ष्मभू तरूपसूत्र उत्पन्नहोवै है ॥ और जैसे तेस्थूलसूक्ष्मभूत सूत्ररूप हैं ॥ तैसे तेस्थूलसूक्ष्मभूतहैंशरीरजिसका ऐसाईश्वरभी सूत्ररूपहीहोवै॥ ऐसेईश्वररूपसूत्रतैं यहजगत्रूपपट उत्पन्नहोवै है ॥ ऐसे जगतरूपपटविषे ताईश्वररूपसूत्रकूं अनुगतजाणिकरिकै हमअधिकारीजन आ पणेआत्माकूं तासूत्रआत्मारूपकरिकै साक्षात्कारकरतेभये हैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जोपरमात्मादेव उपाधिकेसंबंधतैं जगत्काकारणसूत्रआ

त्मारूपहोवै है ॥ सोईहीपरमात्मादेव विचारकियेतैंअनंतर उपाधिकृतसूत्रआत्मरूपताकापरित्यागकरिकै निर्गुणब्रह्मरूपहोवै है ॥ऐसानि र्गुणब्रह्मही हमाराआत्मारूपहै॥ हेशिष्य॥ याप्रकारकेविचारकरिकै केवलहमअधिकारीजनोंकूंही तांब्रह्मात्मभावकीप्राप्तिनहींभई॥किंतु पूर्वहिरण्यगर्भभगवान्कूंभी याप्रकारकेविचारकरिकैही तांब्रह्मात्मभावकीप्राप्तिभई है ॥ काहेतैं पूर्व सोहिरण्यगर्भभगवान् उत्कृष्टकर्मउ पासनाकेबलतैं स्वर्गादिकलोकोंका तथाजरायुजादिकचारिप्रकारकेप्राणियोंका तथाआकाशादिकपंचभूतोंका तथापूर्वादिकदशदिशा वोंका स्वामीहोताभया ॥ और तिनस्वर्गादिकलोकोंकेस्वामीभावकूंप्राप्तहोइकेभी संतोषकूंनहींप्राप्तहुआ सोहिरण्यर्भभगवान् जभी अंतर्यामीआत्मादेवकाविचारकरताभया ॥ तभीही सोहिरण्यगर्भ तास्वयंज्योतिआनंदस्वरूपब्रह्मभावकूं प्राप्तहोताभया ॥ यातैं यह जान्याजावै है ॥ याअंतर्यामीआत्मादेवकाविचारही तांब्रह्मभावकेप्राप्तिकासाधनहै॥ताआत्मविचारतैंविना नानाप्रकारकेबाह्यऐश्वर्यकरि कै तांब्रह्मभावकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ और हेशिष्य ॥ सर्ववेदायत्पदमामनंति ॥ अर्थयह ॥ संपूर्णवेद साक्षात् अथवा परंपराकरिकै अद्वि तीयब्रह्मकूंहीकथनकरै हैं॥याश्रुतिनैं ब्रह्मकूंही सर्ववेदोंकरिकैप्रतिपाद्यकह्या है ॥ यातैं सदसंपात्ति इत्यादिकजेनारायणउपनिषद्केमंत्रहैं ॥ तेमंत्र जिसअंतर्यामीपरमात्मादेवकूं अग्निआदिकदेवतावोंका आत्मरूपकरिकैकथनकरै हैं ॥ सोपरमात्मादेवही याविद्वान्पुरुषका आत्मारूपहै और ॥ हेशिष्य ॥ जिसस्वयंज्योतिआनंदस्वरूपपरमात्मादेवतैं ऋत सत्य यहदोनोंप्रकारका कर्मकाफल उत्पन्न होवै है ॥ तिसपरमात्मादेवकूंही यहविद्वान्पुरुष आपणाआत्मारूपकरिकैप्राप्तहोवै है ॥ इहां मनकरिकैकरेहुएशुभकर्मोंकाजोफलहै ताकानाम ऋतहै ॥ और शरीरकरिकैकरेहुएशुभकर्मोंकाजोफलहै ताकानाम सत्यहै ॥ और केईकशास्त्रवेत्तापुरुषतो ऋत सत्य या दोनोंशब्दोंकाअर्थ चंद्रमा सूर्यमानै हैं॥सोतिनोंकाकहणा पुनरुक्तिदोषवाला है॥ काहेतैं सूर्यचंद्रमाकीउत्पत्ति आगेकथनकरणीहै ॥यातैं इहां ऋत सत्य शब्दकरिकै तासूर्यचंद्रमाकाकथन संभवैनहीं ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार सृष्टिकेआदिकालविषे जभी सोऋतसत्यरूपकर्म काफल उत्पन्नहोणेकूंसन्मुखभया॥तभी ताफलकीसिद्धिकरणेवासतैं तापरमात्मादेवतैं अंधकार उत्पन्नहोताभया॥तथाआकाशादिकपंच

सूक्ष्मभूतउत्पन्नहोतेभये ॥ तिसतैं अनंतर आपणेभ्रमणकरिकै रात्रिदिनकूंसिद्धकरणेहाराजोसूर्य है॥ तासूर्यरूप संवत्सरनामाकाल उत्पन्नहोताभया ॥ इसप्रकार हिरण्यगर्भरूपकरिकै यासर्वजगत्कूंउत्पन्नकरताहुआ सोपरमात्मादेव पूर्वकल्पतैं याजगत्कूं विलक्षणनहींकर ताभया ॥ किंतु जैसे पूर्वकल्पविषे परमात्मादेवनैं यास्थावरजंगमरूपजगत्कूंउत्पन्नकऱ्याथा तिसीप्रकार सोपरमात्मादेव याकल्पविषेभी जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज यहचारिप्रकारकेशरीर उत्पन्नकरताभया ॥ तथा आकाश वायु अग्नि जल पृथिवी यापंचमहाभूतोंकूंउत्पन्नकरताभया॥तथा श्रोत्र त्वक् चक्षु रसन घ्राण वाक् पाणि पाद उपस्थ पायु मन याएकादशइंद्रियोंकूंउत्पन्नकरताभया॥तथाप्राण अपान समान व्यान उदान यापंचप्राणोंकूंउत्पन्नकरताभया ॥ तथा सूर्य चंद्रमा यादोनोंकूंउत्पन्नकरताभया ॥ तथा स्वर्गलोक भूमिलोक अंतरिक्षलोक यातीनलोकोंकूंउत्पन्नकरताभया॥ और हेशिष्य॥जलमयहैशरीरजिसका तथापापरूपरजकूंनाश करणेहाराजोवरुणदेव यापृथिवीविषेप्रसिद्धहै सोवरुणदेवभी हिरण्यगर्भकीन्याईतापरमात्मादेवकेतादात्म्यसंबंधकूंप्राप्तहोइकैही आपणेकार्यविषेसमर्थहोवैहै तापरमात्मादेवकेसंबंधतैंविना कोईभीदवता आपणेकार्यकरणेविषेसमर्थहोवैनहीं ॥ और हेशिष्य ॥ सोजगत्काकरतापरमात्मादेवही याजगत्कीस्थितिकालविषे सर्वलोकोंकेअंतरस्थितहोइकेयासर्वजगत्कापालनकरै है ॥ और यहस्वयंज्योतिआनंदस्वरूपपरमात्मादेवही पुण्यवान्पुरुषोंकूं स्वर्गादिकलोकोंकीप्राप्तिकरै है॥और पापवान्पुरुषोंकूं नरकादिकोंकी तथामृत्युकेभयकी प्राप्तिकरै है ॥ और यासंपूर्णलोकोंकेनीचेस्थितजोपृथिवीहै॥तथा ऊपरिस्थितजोस्वर्गहै तिनदोनोंकेअंतरस्थितजोभयहै जाभयकरिकै यहपृथिवी तथास्वर्ग लोकोंकूंधारणकरै है ॥ सोपृथिवीआदिकोंकूं भयकीप्राप्तिभी यहपरमात्मादेवहीकरै है॥ और हेशिष्य॥जोचेतनपरमात्मादेव अग्निविषे तथा जलविषे तथाअन्यपदार्थोंविषे तादात्म्यसंबंधकरिकैस्थितहोवैहै ॥ सोपरमात्मादेवही पुण्यवान्पुरुषोंकूं स्वर्गकीप्राप्तिकरै है और साधनसंपन्नअधिकारीजनोंकूं मोक्षकीप्राप्तिकरैहै ॥ हेशिष्य ॥ ऐसाअद्वितीयब्रह्म याअहंशब्दकेलक्ष्यअर्थरूपआत्मातैं भिन्ननहीं है ॥किंतु सो ब्रह्म आत्मारूपहै॥और यहआत्मा ब्रह्मरूपहै॥याप्रकार तिनदोनोंका परस्परअभेदहीहै॥ जोकदाचित् तिनदोनोंका परस्परभेदहोवैगा॥

तो तिनदोनोंके स्वरूपकीहीहानिहोवैगी॥ ऐसे अद्वितीयब्रह्मरूपआत्माकेज्ञानकरिकै यहअधिकारीपुरुष माया पंचक्लेश कर्म वासनाइत्यादिकसर्वबंधतैंमुक्तहोवै है ॥ काहेतैं जिसचिदाभासकूं तावंधकीप्राप्तिहोवै है ॥ ताचिदाभासकूं यहविद्वान्पुरुष ब्रह्माकारवृत्तिविषेआरूढब्रह्मरूपअग्निविषे पावै हैं ॥ याकारणतैं तिनविद्वान्पुरुषोंकूं तावंधकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥हेशिष्य ॥ इसप्रकार जेअधिकारीपुरुष वेदवचनोंकेअर्थकाविचारकरिकै तथावेदउक्तशुभकर्मोंके अनुष्ठानकरिकै तथावेदवचनोंके जपकरिकै जभी कीर्तिकेयोग्यहोवै हैं ॥ तभीही तेशुद्धमनवालेअधिकारीपुरुष ब्रह्मात्मसाक्षात्कारकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ और हेशिष्य ॥ जैसे सुगंधिवाले पुष्पोंकरिकैयुक्त जोचंपककावृक्षहै ॥ तावृक्षकेसंबंधकरिकै सुगंधविशिष्टहुआवायु दशोदिशाविषेचाले है और सोसुगंधिवालावायु सर्वजीवोंकूं आनंदकीप्राप्तिकरै है ॥ तैसे पुण्यवान्पुरुषोंकीकीर्तिभी दशोदिशाविषे जावै है ॥ और सापुण्यवान्पुरुषोंकीकीर्ति शास्त्रवेत्तासज्जनपुरुषोंकूं आनंदकीप्राप्तिकरै है॥हेशिष्य जोपुरुष आपणेमरणतैंभी भयकूंनहींप्राप्तहोवै है ॥ और जो पुरुष आपणेस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंकेवियोगतैंभी भयकूंनहींप्राप्तहोवै है ॥ किंतु एकपापकर्मतैंही जोपुरुष भयकूंप्राप्तहोवै है ॥ तापुरुषकानाम पुण्यात्माहै ॥ हेशिष्य ॥ जैसे किसीगर्त्तके ऊपर अनेक तीक्ष्णखड्गकीधारा बिछाईहोवैं ॥ तिनखड्गधारावोंके उल्लंघनकरणेतैं अश्वादिकवाहनोंतैं रहित कोमलपादवालेपुरुषकूं जैसामहान् भय प्राप्तहोवै है ॥ तैसाहीभय याविद्वान्पुरुषकूं परमेश्वरतैंहोवै है ॥ यातैं तापरमेश्वरकेभयकरिकै यहविद्वान्पुरुष पापकर्मोंकूंकरै नहीं ॥ हेशिष्य ॥जिसपरमात्मादेवकेभयकरिकै यहविद्वान्पुरुष पापकर्मोंतैं निवृत्तहोवै है ॥ और जिसपरमात्मादेवकूं यहविद्वान्पुरुष आपणा आत्मारूपकरिकैजानै है ॥ सोपरमात्मादेव यानारायणदेवतैंभिन्ननहीं है ॥ किंतु सोपरमात्मादेवही नारायणस्वरूपहै ॥ और हेशिष्य ॥ जोपरमात्मादेव परमाणुआदिकसूक्ष्मपदार्थोंतैंभी अत्यंतसूक्ष्महै ॥ और जोपरमात्मादेव आकाशादिकमहान्पदार्थोंतैंभीअत्यंतमहान्है ॥ और जोपरमात्मादेव याजीवोंके हृदयरूपगृहविषे बुद्धिआदिकोंकासाक्षीरूपकरिकैस्थितहै ॥ ऐसेशुद्ध परमात्मादेवकूं जेअधिकारीपुरुष गुरुशास्त्रकेप्रसादतैं आपणाआत्मारूपकरिकैसाक्षात्कारकरै हैं॥ तेअधिकारीपुरुष सर्वशोकतैंरहितहोवैहैं ॥

अब तापरमात्मादेवके अद्वितीयरूपताकूं रूपषट्करणेवासतें प्रथम तापरमात्मादेवविषे सर्वजगत्कीकारणताका निरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य पुण्यपापकर्मोंकेअनुसार सर्वपदार्थोंकीप्राप्तिकरणेहारा जोजगत्काईश्वरहै ॥ सोईश्वरही अद्वितीयब्रह्मरूप है ॥ काहेतें सप्तलोकोंविषे वर्त्तमान जे सप्तप्रकारकेशरीरहैं॥ तिनशरीरोंविषेरहणेकरिके सप्तप्रकारता कूं प्राप्तभयेजेप्राणहैं॥ तेसप्तप्रकारकेप्राणभी तापरमात्मादेवतैंही उत्पन्नहोवे हैं ॥ और तापरमात्मादेवतैंही भौम जाठर सूर्य चंद्रमा विद्युत् वाडव चक्षु यह सप्तप्रकारकेअग्नि उत्पन्नहोवे हैं ॥ इहां काष्ठोंविषेस्थितजोअग्निहै ताकानाम भौमहै और उदरविषेस्थितजोअग्निहै ताकानाम जाठरहै॥ और समुद्रविषेस्थितजोअग्निहै ताकानाम वाडवहै ॥ और तिसीपरमात्मादेवतैंही सप्तप्रकारकेसमिध उत्पन्नहोवे हैं तेसप्तप्रकारकेसमिध यहहैं ॥ स्वर्ग मेघ भूमिलोक पुरुष योषित यापंचअग्नियोंके क्रमतें आदित्य वायु संवत्सर वाक् उपस्थ यहपंचसमिधहैं ॥ यहवार्त्ता षष्ठेअध्यायविषे विस्तारतैंकहिआये हैं ॥ और श्रुतिप्रसिद्ध आहवनीयगार्हपत्यादिकअग्नियोंका काष्ठादिरूपसमिधहै ॥ और स्मृतिप्रसिद्ध आवसथ्यनामाअग्निकाभी काष्ठादिरूपसमिधहै ॥ और तापरमात्मादेवतैंही भूर भुवः स्वर महर जनतप सत्य यहसप्तलोक उत्पन्नहोवे हैं ॥ और तापरमात्मादेवतैंही कालीकराली मनोजवा सुलोहिता धूम्रवर्णा स्फुलिंगिनी विश्वरूपी यहअग्निकीसप्तजिह्वा उत्पन्नहोवे हैं ॥ और तिनभूरादिकसप्तलोकोंविषेविचरणेहारे तथासर्वजीवोंकेबाह्यप्राण ऐसेजेएकोनपंचाशत्॥४९॥मरुत्गणहैं ते मरुत्गणभी तापरमात्मादेवतैंहींउत्पन्नहोवेहैं॥ औरतापरमात्मादेवतैंहीं सप्तसमुद्र उत्पन्नहोवेहैं ॥ और तापरमात्मादेवतैंहीं हिमालयादिकपर्वत उत्पन्नहोवेहैं ॥ और तापरमात्मादेवतैंहीं संपूर्णनदियां उत्पन्नहोवेहैं ॥ और तारसरूप परमात्मादेवतैंहीं यहव्रीहियवादिकओषधियां उत्पन्नहोवेहैं ॥ और तारसरूपपरमात्मादेवतैंहीं यहशरीर जीवनकूं प्राप्तहोवे हैं ॥ और सोईहीपरमात्मादेव तिनजीवत्तशरीरोंविषेस्थितहोवेहै ॥ और अग्निआदिकसर्वदेवतावोंकेमध्यविषे जिसपरमात्मादेवके हिरण्यगर्भादिकदेवता मुख्यविभूतियां हैं ॥ और जिसपरमात्मादेवकूं बुद्धिमान्पुरुष वेदवचनोंकेविचारकरिके जानेहैं॥ और जिसपरमात्मादेवकूं बुद्धिमान्पुरुष घृतादिकद्रव्यरूपकरिके तथायज्ञरूपकरिकेवर्णनकरेहैं॥ औरजोपरमात्मादेव इंद्रादिकसर्वदेवतावोंकरिके

पूज्य है ॥ तथा सर्वदेवतावोंतैंपूर्ववर्त्तमानहै ॥ और जोपरमात्मादेव सर्वप्राणियोंकेहृदयदेशविषेस्थितहोइकै चित्तकीसर्ववृत्तियोंकूंदेखे है ॥ और जोपरमात्मादेव हिरण्यगर्भकूंउत्पन्नकरिके ताहिरण्यगर्भकूं आपणीअनुग्रहदृष्टितैं सर्वज्ञताकीप्राप्तिकरेहै ॥ ऐसानारायणरूप परमात्मादेव हमअधिकारीजनोंकूंशुभबुद्धिकीप्राप्तिकरे ॥ हेशिष्य॥ याप्रकार जभीयहअधिकारीपुरुष तापरमात्मादेवकीस्तुतिकरेहै ॥ तभी सोपरमात्मादेव प्रसन्नहोइकै तिनअधिकारीपुरुषोंकेप्रतिं आपणावास्तवस्वरूपदिखावेहै कैसाहैसोपरमात्माकास्वरूप ॥ जिसतैं परेकोईपदार्थ अधिकनहीं है तथा जिसतैंपरे कोईपदार्थ सूक्ष्मनहींहै ॥ तथा जोस्वरूप वृक्षकीन्याईंनिश्चलहै ॥ तथा आपणेस्वप्रकाशस्वरूपविषेस्थितहै ॥ तथा एकअद्वितीयरूपहै ॥ तथा जिसस्वरूपकरिके यहसंपूर्णजगत् परिपूर्णहै ॥ ऐसेआपणेस्वरूपकूं सोपरमात्मादेव तिनअधिकारीजनोंकेप्रति दिखावेहै ॥ हेशिष्य ॥ ऐसेनारायणरूप परमात्मादेवकीप्राप्तियाजीवोंकूं अग्निहोत्रादिककर्मोंकरिकैभीहोवे नहीं ॥ तथा अनेकपुत्रपौत्रादिरूप प्रजाकरिकैभी तापरमात्मादेवकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ तथा सुवर्णादिरूपधनकरिकैभी तापरमात्मादेवकी प्राप्तिहोवैनहीं ॥ किंतु तिनसर्वपदार्थोंकरिकेत्यागकरिकैही तापरमात्मादेवकीप्राप्तिहोवेहै॥ तहांश्रुति॥ नकर्मणानप्रजयानधनेन त्यागेनैके अमृतत्वमानशुः ॥अर्थयह॥पूर्वअधिकारीजन अग्निहोत्रादिककर्मोंकरिके तथापुत्रपौत्रादिरूपप्रजाकरिकैतथासुवर्णादिरूपधनकरिकैब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपमोक्षकूं नहींप्राप्तहोतेभयेहैं॥किंतु कर्मप्रजाधन यासंपूर्णैकेपरित्यागकरिकैही तेअधिकारीजनतामोक्षकूंप्राप्तहोतेभये हैं॥ हेशिष्य ॥इसप्रकारपूर्वअनेकसहस्रमनुष्योंविषे कोईभाग्यवान्पुरुषही सर्वपदार्थोंकापरित्यागकरिके तानारायणस्वरूपमोक्षकूंप्राप्तहोतेभये हैं यातें तापरमात्मारूपमोक्षकीप्राप्तिविषे त्यागतैंविना दूसराकोईसाधननहींहै ॥किंतु एकत्यागहीतामोक्षकीप्राप्तिविषे मुख्यसाधनहै॥हे शिष्य॥ स्वर्गादिसुखोंतैंभीपरमउत्कृष्ट जोआनंदस्वरूपपरमात्मादेवहैं ॥ तापरमात्मारूपमोक्षकूं जैसेपूर्वअधिकारीजनसर्वपदार्थोंकेत्याग करिकैप्राप्तहुएहैं ॥ तैसे इदानींकालविषेभी जेअधिकारीपुरुष पुत्रएषणाधनएषणा लोकएषणा यातीनएषणावोंकापरित्यागकरिके संन्यास आश्रमकूंग्रहणकरेहैं ॥ तेअधिकारीजनहीगुरुशास्त्रकेउपदेशतें तामोक्षकूंप्राप्तहोवे है ॥और जेपुरुष शरीरादिकोंविषेअहंआभिमानक

रिकै तथाशरीरसंबंधिपुत्रधनादिकोंविषे ममअभिमानकरिकैतिनस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंकात्याग नहींकरैहैं ॥ तेरागवान्पुरुष ताआनंद स्वरूपपरमात्मादेवकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ यालोकविषे कितनेकसंन्यासियोंकूंभी आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्ति देखीती नहीं ॥ यातैंत्यागविषे आत्मसाक्षात्कारकीकारणतासंभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ संन्यासकरिकै तथाचित्तकेनिरोधरूपयोगक रिकै जिनसंन्यासियोंकाअंःतकरण शुद्धभयाहै ॥ तथा जेसंन्यासी शमदमादिकसाधनोंकरिकैयुक्तहैं ॥ तथा जिनसंन्यासियोंनैवेदांतवच नोंकेविचारकरिकै तत् त्वंपदार्थका शोधनकऱ्याहै ॥ ऐसेसाधनसंपन्नसंन्यासियोंकूं जोकदाचित्किसीप्रतिबंधकेवशतैं इसजन्मविषेआत्म साक्षात्कारनहींहोवैहै॥तौ तेसंन्यासी ताशरीरकापरित्यागकरिकै अर्चिरादिकमार्गद्वाराब्रह्मलोकविषेजावैहै ॥ और ताब्रह्मलोकविषे ब्रह्मा केसमानताकूंप्राप्तहोइकै तेसंन्यासी आत्मसाक्षात्कारकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और ताब्रह्माकेदेहपातहुए तेसंन्यासीभी ताब्रह्माकेसाथहीविदेहमु क्तिकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं सर्वपदार्थोंकापरित्यागही आत्मज्ञानद्वारा मोक्षकासाधनहै ॥ और हेशिष्य ॥ एकादशहैंद्वारजिसविषे ऐसाजो यहशरीररूपपुर परमात्मादेवनैंउत्पन्नकऱ्याहै ॥ ताशरीरविषेस्थित जोअंगुष्टपरिमाणहृदयकमलहै ॥ ता हृदयकमलरूपगृहविषे जो आनंदस्वरूपपरमात्मादेव विराजमानहै ॥ तापरमात्मादेवकूंआपणाआत्मारूपजाणिकरिकैहीं तेसंन्यासी इसलोकविषेतथाब्रह्मलोकविषे मोक्षकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ ताआत्मसाक्षात्कारतैंविनाकिसीभीलोकविषे मोक्षकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ यातैं हे संन्यासियो ॥ ब्रह्मलोकविषेभी संन्यासियोंकूं आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिहोवैहै याप्रकारकावचनश्रवणकरिकै तुमोंनैं इसजन्मविषे ताआत्मसाक्षात्कारकेयत्नतैं रहितनहीं होणा॥किंतु जिसआत्मसाक्षात्कारकरिकै इसलोकविषे तथाब्रह्मलोकविषे मोक्षकीप्राप्तिहोवैहै॥ तिसआत्मसाक्षात्कारकूं तुमोंनैं यामनु ष्यशरीरविषेही संपादनकरणा ॥ बहुतकालतैंअनंतरप्राप्तहोणेहारेब्रह्मलोककी आशाकरिकै तुमोंनैं इसजन्मविषे प्रयत्नकीशिथिलता नहींकरणी ॥ अब ताआत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासतैं प्रणवकेध्यानका निरूपणकरैहैं॥हेशिष्य ॥ जिनअधिकारीपुरुषोंकूं महावाक्यके विचारकरिकै आत्माकासाक्षात्कार प्राप्तनहींहोवैहै॥तिनअधिकारीपुरुषोंकूं ॐकाररूपप्रणवकेविचारकरिकैहीं सोआत्मसाक्षात्कार प्राप्त

होवैहै ॥ सोविचारयहहै ॥ मनकेजीतणेकीइच्छावाले जेमहात्मापुरुषहैं ॥ तिनमहात्मापुरुषोंकूं आनंदस्वरूपआत्माविषे यह ॐकाररूप प्रणवही क्रीडाकरावैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताॐकाररूपप्रणवकूं स्वर यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ जोॐकाररूपस्वर वेदकेआ दिविषेकथनकऱ्याहै ॥ और जोॐकाररूपस्वर वेदकेअंतविषेकथनकऱ्याहै ॥ सोॐकाररूपस्वर आपणेलयअवस्थाविषे जिसपरानामा कारणविषेलयहोवै है ॥ तापरातैंभी जोशुद्धचेतनपरहै ॥ सोशुद्धचेतनहीं हमारावास्तवस्वरूपहै ॥ याप्रकार जोअधिकारीपुरुष सर्वदा चिंतनकरै हैं ॥ ताअधिकारीपुरुषकूंभी अवश्यकरिकै आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिहोवै है॥हेशिष्य ॥ हृदयदेशविषेस्थित जोपरमात्मादेव पूर्व अणुतैंभीअणुकह्याथा ॥ तापरमात्मादेवकूं तुमनैं महान्तैंभीमहान्जानणा ॥ काहेतैं यालोकविषे याजीवोंके जितनेकोंमस्तकहैं ॥ तथा शरीर इंद्रिय प्राणहैं ॥तेसंपूर्णमस्तकादिक तापरमात्मादेवकेहीहैं॥और सोपरमात्मादेवही यासर्वजीवोंकूं आपणेपुण्यपापकर्मकेअ नुसार सुखदुःखरूपफलकीप्राप्तिकरैहै ॥ ऐसेस्वयंज्योतिसर्वात्मादेवकूं श्रुतिभगवती नारायण यानामकरिकै कथनकरै है ॥ अब तानारायणशब्दका एकादशप्रकारकाअर्थ निरूपणकरै हैं॥हेशिष्य॥आपणीसमीपतामात्रकारिकै जोचेतन सर्वपदार्थोंकूं आपणेआ पणेकार्यविषेप्रवर्त्तकरै है ॥ ताचेतनदेवकानाम नरहै ॥ ऐसेचेतनआत्मारूपनरका यहमाया दृश्यरूपकरिकैसंबंधीहै ॥ याकारणतैं तामा याकूं नारा यानामकरिकैकथनकरै हैं ॥ और यहसूक्ष्मप्रपंच तामायाकाकार्य है याकारणतैं तासूक्ष्मप्रपंचकूं नार यानामकरिकैकथन करै हैं ॥ एसेमायारूपनारविषे तथा सूक्ष्मप्रपंचरूपनारविषे यहपरमात्मादेव प्रतिबिंबरूपकरिकैवर्त्तै है ॥याकारणतैं तामायाविशिष्टप रमात्मादेवकूं तथासूक्ष्मप्रपंचविशिष्टहिरण्यगर्भदेवकूं श्रुतिभगवती नारायण यानामकरिकैकथनकरै है ॥ १ ॥ अथवा परमात्मारूपनर नैं उत्पन्नकरेजेजलहैं ॥ तिनजलोंकानाम नाराहै ॥ तेनारारूपजल याविराट्रूपपरमात्मादेवकाआधारहैं ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवतीता विराट्रूपपरमात्मादेवकूं नारायण यानामकरिकैकथनकरै है ॥ २ ॥ अथवा ॥ जैसे प्रसिद्धनदियोंकेजल नौकाकाआधारहोवै हैं ॥ तैसे याभूमिरूपनौकाकाआधार जेजलहैं ॥ तेजल यापरमात्मादेवतैंही उत्पन्नहोवै हैं ॥ यातैं तिनजलोंकानाम नाराहै ॥ ऐसे नारारूप

जलोंकूं यहपरमात्मादेवही सूत्रात्मारूपप्राणरूपकारिकै धारणकरै है याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं नारायण यानामकरिकै कथनकरै है ॥ ३ ॥ अथवा स्थूलप्रपंचहै शरीरजिसका ऐसाजोविराट्है ॥ तथासूक्ष्मप्रपंचहै शरीरजिसका ऐसा जो हिरण्यगर्भ है ॥ तिनदोनोंकानाम नरहै॥तिनदोनोंनरोंकीस्थिति यापरमात्मारूपकारणविषेहीहोवै है॥याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं नारायण यानामकरिकै कथनकरै है ॥ ४ ॥ अथवा तापरमात्मादेवकेप्रतिबिंबरूपजेयहजीवहैं तिनजीवोंकानाम नरहै ॥ तिनप्रतिबिंबभूतनरोंका निरूपण ताबिंबरूपपरमात्मादेवतैंहीहोवै है ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं नारायण यानामकरिकैकथनकरै है ॥ ५ ॥ अथवा ॥ याजीवोंविषेस्वभावतैंसिद्ध जेकामक्रोधादिकदोषहैं तिनदोषोंका नाम अरहै ॥ और तिनकामक्रोधादिरूपअरोंतैं उत्पन्नभये जेदुःखहैं तिनदुःखोंकानाम आर है ॥ और तिनदुःखरूपआरोंका आश्रयरूप जो यहअज्ञानादिकजडप्रपंच है ता जड प्रपंचकानाम आरायणहै॥सोजडप्रपंचरूपआरायण यास्वयंज्योति आनंदस्वरूपपरमात्मादेवविषे तीनकालमैंनहीं है ॥ याकारणतैं श्रुति भगवती तापरमात्मादेवकूं नारायण यानामकरिकै कथनकरै है ॥ ६ ॥ अथवा अविद्या अस्मिता राग द्वेष अभिनिवेश यहपंचक्लेश तथापुण्यपापरूपकर्म तथासुखदुःखरूपफल तथातिनोंकीवासना यहसंपूर्णअविद्यादिक यासंसाररूपचक्रकेअराहैं ॥ और तिनक्लेशादि रूपअरोंका यहमाया परिनामीउपादानकारणरूपकारिकै आश्रयहै॥ यातैं तामायाकानाम आरायणहै ॥ यह और ताआरायणरूपमायातैं कूटस्थपरमात्मादेव भिन्नहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं नारायण यानामकरिकैकथनकरै है ॥७॥ अथवाकल्पिततादात्म्यअध्यासरूपसंबंधकरिकै तामायारूपनारीकीस्थिति यापरमात्मादेवविषेहीहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं नारायन यानामकरिकैकथनकरै है ॥ ८ ॥ अथवा ॥ परमेश्वररूपनरकीसंबंधी जायहलक्ष्मीहै ॥ तालक्ष्मीकानाम नारीहै ॥ कैसीहैसालक्ष्मी ॥ सर्वदेहधारीजीवोंकूंप्रियहै ॥ तथा अनेककलावोंकरिकैयुक्तहै ॥ तथा अनेकरूपोंवालीहै ॥ तथा अत्यंतमनोरमहै ॥ तथा पुण्यवान्पुरुषोंकूं सर्वदा सुखदेणेहारीहै ॥ तथा पापीजीवोंकूं आपणीनप्राप्तिकरिकै तथानाशकरिकै सर्वदा दुःखकीप्राप्तिकरणेहारीहै ॥

ऐसीलक्ष्मीरूपनारी यापरमात्मापुरुषविषेही निश्चलास्थितहोवै है ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं नारायण यानामकरिकै कथनकरै है ॥ ९ ॥ अथवा ॥ याआनंदस्वरूपद्रष्टाआत्माकेप्रति नानाप्रकारकेपदार्थोंकूंदिखावणेहारी जायहसर्वजीवोंकीबुद्धि है ॥ तावुद्धिकानाम नारीहै ॥ तानारीरूपजडबुद्धिका यहस्वयंज्योतिआत्मादेवही प्रकाशकरै है॥याकारणतैं श्रुतिभगवती तास्वयंज्योतिद्रष्टाआत्माकूं नारायण यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ १० ॥ अथवा ॥ यापरमात्मादेवतैंभिन्न किंचित्मात्रभीवस्तुनहीं है ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं नारायण यानामकरिकैकथनकरै है ॥ ११ ॥ इसप्रकार नारायणशब्दके एकादशप्रकारकेअर्थ शास्त्रवेत्तापुरुष कथनकरै हैं ॥ और यहनारायणदेवही स्वयंज्योतिरूपहै ॥ तथा अक्षररूपहै ॥ तथा परमपदरूपहै ॥ तथा सर्वविश्वतैंपरहै ॥ तथा सर्वविश्वरूपहै ॥ तथा सनातनहै ॥ हेशिष्य ॥ ऐसेनारायणरूपपरमात्मादेवका जेअधिकारीजन श्रद्धाभक्तिपूर्वकस्मरणकरै हैं ॥ तथाकीर्तन करै हैं ॥ तिनअधिकारीजनोंके अविद्यादिकपंचक्लेशोंकूं तथासर्वपापकर्मोंकूं यहपरमात्मादेवही नाशकरै है ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं हरि यानामकरिकैकथनकरैहै॥ और यहपरमात्मादेवही यासंपूर्णजगत्कूंउत्पन्नकरिकै ताजगत्कापालनकरै है ॥याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं पति यानामकरिकैकथनकरै है॥ और यहपरमात्मादेव आपणेअस्तिभातिप्रियरूपकारिकै यासंपूर्णविश्वकूं व्याप्तकरैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं आत्मा यानामकरिकै कथनकरै है॥ और यहपरमात्मादेव सर्वमंगलोंकाभीमंगलरूपहै ॥ तथा परमकल्याणरूपहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं शिव यानामकरिकैकथनकरै है ॥ और यापरमात्मादेवरूपआनंदसमुद्रके एकबिंदुमात्रआनंदकूंग्रहणकरिकै यहहिरण्यगर्भदेवभी आनंदकूंप्राप्तहोइरह्याहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं आनंद यानामकरिकैकथनकरैहै॥और कालकरिकै जोघटादिकपदार्थोंकानाशहोवै है॥तानाशकानामच्युतिहै॥ साच्युतियापरमात्मादेवविषेहैनहीं ॥ काहेतैं यहपरमात्मादेव कालरूपमृत्युकूंभी भयकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ तथा कालकाभीकालहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं अच्युत यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और यहपरमात्मादेव सूर्यअग्निआदिकसर्वजगत्का

नियंताहै॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं ईश्वर यानामकरिकैकथनकरैहै॥ और यहपरमात्मांदेव किसीकालविषे तथाकिसी देशविषे अन्यथाभावकूंप्राप्तहोवैनहीं॥ किंतु सर्वकालविषे तथासर्वदेशविषे एकरसरहैहै। याकारणतैंश्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं शाश्वत यानामकरिकैकथनकरैहै॥ और यहपरमात्मादेव ब्रह्मादिकमहान्पुरुषोंकरिकै जानणेयोग्यहै॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं महाज्ञेय यानामकरिकैकथनकरै है॥ और यहपरमात्मादेवही सर्वभूतोंकापरागति है॥ याकारणतै श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं परायण यानामकरिकैकथनकरैहै॥ और अग्निकीज्वालातैंआदिलेकेजेजडज्योतिहैं॥ तथा बुद्धिआदिकोंविषेस्थितजेचिदाभासरूपचेतनज्योति हैं॥ तिनदोनोंप्रकारकेज्योतियोंकीअपेक्षाकरिकै यहपरमात्मादेव अत्यंतउत्कृष्टहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं परमज्योति यानामकरिकैकथनकरैहै॥ तथा ब्रह्म परंतत्व यानामकरिकैकथनकरैहै॥ हेशिष्य॥ ध्याता ध्यान ध्येय इसतैंआदिलैकेयहसंपूर्णजगत् तानारा यणरूपही है॥ और जितनाकीजगत् देखणेविषेआवै है॥ तथा जितनाकीजगत् श्रवणकरणेविषेआवै है॥ तासंपूर्णजगत्केअंतरबाहरव्याप्यक रिकै यहनारायणदेवही स्थितहै॥ पुनःकैसाहैसोनारायणदेव॥ आनंदस्वरूपहै॥ तथा उत्पत्तिनाशतैंरहितहै॥ तथा स्वप्रकाशरूपहै॥ तथा सर्व जगत्कूंप्रकाशकरणेहाराहै॥ और यासंसाररूपसमुद्रकाकारण जामायाहै॥ तामायाविषे नियंतारूपकरिकैस्थितहुआभी सोपरमात्मादेव वास्तवतैं तिनमायादिकविकारोंतैंरहितहै॥ औरहेशिष्य॥ यद्यपियहपरमात्मादेव सर्वत्रव्यापकहै॥ तथापि हृदयकमलकेअंतरस्थितसूक्ष्म बुद्धिकरिकैही जान्याजावैहै ॥ याकारणतैंही याआत्मादेवकूं पूर्व अणुकह्याथा ॥ अब याहीअर्थकेस्पष्टकरणेवासतै प्रथम हृदयकमलका स्वरूप निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ जैसे यालोकविषे अष्टदलोंवाला तथारक्तवर्णवाला तथाकिंचित्मात्रविकासकूंप्राप्तहुआ कोई कमल होवैहै ॥ तैसे हृदयदेशकेशिरविषेलंबायमान एकअंतरकमलरहैहै॥ कैसाहैसोअंतरकमल अत्यंतरमणीकहै॥ तथापंचाछिद्रोंकरिकैयुक्तहै ॥ तथानाभितैंद्वादशअंगुलऊपरलेदेशविषेस्थितहै॥ तहां ताहृदयकमलका पूर्वाछिद्रतौचक्षुरूपहै ॥ और दक्षिणाछिद्र श्रोत्ररूपहै ॥ औरपश्चिमछिद्रवाक्रूपहै ॥ और उत्तराछिद्रमनरूपहै ॥ औरमध्यकाछिद्रघ्राणरूपहै ॥ और जिह्वा ताकमलकामूलस्था

नहै ॥ और वक्षस्थलतैं आदिलैकै गलपर्यंत जोअंतरदेशहै॥ सोदेश ताकमलभूमिहै ॥ और यहहृदयकमल मनकेरहणेकास्थान है ॥ याकारणतैं शास्त्रवेत्तापुरुष ताहृदयकमलकूं मानस यानामकरिकैकथनकरै है ॥ और सोहृदयकमल गलतैंद्वादशअंगुलनीचेदेशविषे स्थितहै ॥ और सूर्य चंद्रमा अग्नि नक्षत्र विद्युत यापांचोंकेसमान जाहृदयकमलकातेजहै ॥ तथासंपूर्णविश्वकाआधारहै॥ और यहहृदय कमल अल्पपरिमाणवालाहुआभी यासर्वविश्वकाआधारहै॥ याकारणतैं विद्वान्योगीपुरुष ताहृदयकमलकूं महान्कहे हैं पुनःकैसाहैसोहृद यकमल॥ रजतादिकधातुवोंकरिकैरचितजेशिलाहैं तिनशिलावोंकेसमान उज्ज्वलवर्णवालियां तथारुधिरमांसादिक धातुवोंकरिकैलिप्तहुई ऐसीजेयाशरीरविषेस्थित नानाप्रकारकीआस्थियांहैं तिनआस्थियोंकरिकै सोहृदयकमल चारोओरतैंवेष्टितहै और जैसे यालोकविषे किसी महाराजाकेगृहकेभीतर तामहाराजाकेक्रीडाकरणेवासतै जलकासरोवरहोवै है तैसेहृदयकेमध्यविषेजोछिद्रहै सोछिद्र ताहृदयकमलकासरो वरहै ऐसेहृदयकमलविषे सोपरमात्मादेव निवासकरै है कैसाहैसोपरमात्मादेव अद्वितीयआनंदस्वरूपहै ॥ तथा अग्निकेसमानप्रकाशमान है॥ तथा स्वयंज्योतिरूपहै तथा जिसपरमात्मादेवकी चिदाभासरूपज्वालाबुद्धिआदिकसर्वजगत्विषेस्थितहैं ॥ तथा बुद्धिआदिकसर्वसंघा ततैं अत्यंतसमीपहै॥ और सोपरमात्मादेवही बुद्धिरूपउपाधिकूंअंगीकारकरिकै सर्वविषयजन्यसुखोंकूंभोगेहै और सोपरमात्मादेवहीप्राण जठराग्निरूपकरिकै भोजनकरेहुएअन्नके स्थूल मध्यम सूक्ष्म यहतीनप्रकारकेविभागोंकूंकरताहुआ सर्वजीवोंकेउदरविषेस्थितहोवै है और ताजठराग्निरूपपरमात्मादेवकी क्षुधा तृषा क्रोधादिरूपाकिरण नीचेऊपरमध्यविषे तेजकरिकैव्याप्तहैं ऐसेक्षुधातृषादिकरूपकिरणोंकरिकै सोजठराग्निरूपपरमात्मादेवपादतैंलैकेमस्तकपर्यंत यासंपूर्णशरीरोंकूं तपायमानकरै है हेशिष्य ऐसे परमात्मादेवका यहअधिकारीपुरुष ताहृदयकमलविषे ध्यानकरै ताध्यानकरिकै याअधिकारीपुरुषकूं तापरमात्मादेवकासाक्षात्कार प्राप्तहोवै है हेशिष्य॥ याप्रकार ताहृदय कमलविषे परमात्माकेध्यानकियेहुएभीजभी याअधिकारीपुरुषकूं सोपरमात्मादेव सत्चित्आनंदरूपकरिकैप्रतीतनहींहोवै तभीसोअधि कारीपुरुषदूसरेप्रकारसैं तापरमात्मादेवकाध्यानकरै ताहृदयकमलकेमध्यविषे एकदीपककीशिखास्थितहै॥ कैसी हैसादीपशिखा ॥ अन्यं

तसूक्ष्महै ॥ तथा ऊर्ध्वदेशविषेप्रज्वालित है ॥ तथा निश्चल है ॥ तथा नीलमेघविषेस्थितविद्युत्तरेखाके समान प्रकाशमान है ॥ तथा श्यामककेशूककीन्याईं अत्यंतसूक्ष्महै ॥ तथा सुवर्णकेसमान पीतवर्णवाली है ॥ तथासूक्ष्महुईभी प्रकाशवाली है ॥ ऐसेदीपशिखाकेमध्यविषे सोपरमात्मादेवास्थितहै॥कैसाहैसोपरमात्मादेव ॥ ब्रह्मरूपहै तथाशिवरूपहै तथाहरिरूपहै ॥ तथा सर्वतैंसनातनहै तथा इंद्ररूप है तथा अक्षररूपहै तथा सर्वजगत्काप्रभुहै॥तथा आपणेस्वप्रकाशरूपकरिकै विराजमानहै॥हेशिष्य ॥ ऐसेपरमात्मादेवका यहअधिकारी पुरुष तादीपशिखाविषेध्यानकरै ॥ ताध्यानकारिकै याअधिकारीपुरुषकूं तापरमात्मादेवकासाक्षात्कार प्राप्तहोवै है ॥हेशिष्य ॥ यहपरमात्मादेवही उपाधिकेसंबंधतैं हिरण्यगर्भभावकूं तथाविराट्भावकूं प्राप्तहोवै है ॥ याकारणतैंश्रुतिभगवती ताहिरण्यगर्भविराट्रूपपरमात्मादेवकूं आदित्यादिकअनेकरूपकरिकै वर्णनकरै है॥ऐसेपरमात्मादेवकेसाक्षात्कारकरिकैही याअधिकारीजीवोंकूं मोक्षकीप्राप्तिहोवै है ॥हेशिष्य॥ऐसाआत्माकासाक्षात्कारविक्षेपवालेपुरुषोंकूंहोवैनहीं ॥ किंतु सर्वविक्षेपतैंरहित अंतर्मुखपुरुषोंकूंहीहोवै है॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती धर्म १ सत्य २ तप ३ दम ४ शम ५ दान ६ प्रजनन ७ आहिताग्नि ८ अग्निहोत्र ९ यज्ञ १० मानस ११ एकादशसाधनोंकीस्तुतिकरिकैतिनधर्मादिकसर्वसाधनोंतैंसंन्यासआश्रमविषेउत्कृष्टताबोधनकरै है यातैंयहजान्याजावै है ताश्रुतिभगवतीका तासंन्यासकेप्रधानताविषेही तात्पर्य है ॥ अब तासंन्यासकीउत्कृष्टताबोधनकरणेवासतै प्रथम धर्मादिकएकादशसाधनोंकेस्वरूपका तथा तिनोंके फलका निरूपणकरै हैं ॥ तहां प्रथम धर्मकानिरूपणकरै हैं ॥ हेशिष्य॥ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र यहचारवर्णजे हैं ॥ तथा ब्रह्मचर्य गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यास यहचारआश्रमजे हैं॥ तिनसंपूर्णवर्णआश्रमवालेपुरुषोंकूं यहधर्मही धर्म अर्थ काम मोक्ष याचारिप्रकारकेपुरुषार्थकीप्राप्तिकरै है॥तथा तिनपुरुषार्थोंकेसाधनोंकीप्राप्तिकरै है॥काहेतैं यालोकविषे जोकार्य अत्यंतकठिनहोवै है॥तिसकार्यकूंभी यहधर्म सिद्धकरिदेवै है।और यहधर्महीं सर्वजगत्केपालनकरणेहारी परमेश्वरकीसात्विकीमूर्तिहै ॥ याकारणतैंही जैसे मार्गविषेस्थित फलपत्रपुष्पादिकोंकरिकैपूर्णवृक्षकूंमार्गकेचलणेहारेपुरुष सेवनकरै हैं॥तैसे ताधर्मात्मापुरुषकूं संपूर्णजन आश्रयणकरै हैं॥ और यहजीव जाणिकरिकै तथानजाणिकरिकै जे जे पापकर्मकरै हैं ॥ तिनसंपूर्णपापकर्मोंकूं यहधर्मही नाशकरै है॥ यातैं यहधर्मही जीवोंकेश्रेयकासाधनहै॥हेशिष्य॥ जैसे गौकेचारपादहोवै हैं ॥ तैसे याधर्मकेभी सत्य तप दया दान यहचारपादहोवै हैं ॥ ऐसेचारपादयुक्तधर्मकूं याअधिकारीजनोंनैं जन्मतैंलेकेमरणपर्यंत अवश्यकरिकैसेवनकरणा ॥ अब ताधर्मके सत्यरूपप्रथमपादका फलसहित निरूपणकरै हैं ॥ हेशिष्य ॥ जैसावृत्तांत आपणेनेत्रोंकरिकैदेख्याहोवै अथवा किसीधर्मात्मापुरुषकेमुखतैंश्रवणकऱ्याहोवै ॥ तैसाहीवृत्तांत आपणेमुखतैंकथनकरणा याकानाम सत्य है ॥अथवा आपणेमुखतैं जिसकार्यकरणेकीप्रतिज्ञाकरीहोवै तिसप्रतिज्ञातैं चलायमाननहींहोणा याकानामसत्यहै॥सोसत्य वाक्इंद्रियकरिकैसिद्धहोवै है ॥ यातैं तासत्यकूं वाचनिकधर्मकहे हैं॥ हेशिष्य ॥कालांतरविषेहैफलजिनोंका ऐसेजेयज्ञादिक वैदिककर्म हैं तथावाणिज्यादिकलौकिककर्महैं ॥ तिनदोनोंप्रकारकेकर्मोंविषे जोजीवोंकीप्रवृत्तिहोवैहै॥सोसत्यवचनतैंहीहोवै है ॥ सत्यवचनतैंविना किसीभीकर्मविषे प्रवृत्तिसंभवैनहीं ॥ और युधिष्ठिरादिकराजा जोयास्थूलशरीरसहित स्वर्गविषेगयेहैं॥तथा अबपर्यंत तास्वर्गतैंनीचे पतननहींहोते॥सोभी यासत्यवचनकेप्रभावतैंहीगये हैं॥और यासत्यधर्मकरिकैही यहवायु आपणेमर्यादाविषेचलेहै॥और यासत्यधर्मकरिकैही यहसूर्यभगवान् सर्वलोकोंकूंप्रकाशकरै है॥और यासत्यधर्मकरिकैही यहपृथिवी जलऊपरस्थितहै॥इसतैंआदिलैकेसंपूर्णदेवता तासत्यधर्मकेबलतैंही आपणेआपणेअधिकारकानिर्वाहकरै हैं॥ऐसेसत्यकूं याअधिकारीपुरुषनैं अवश्यकरिकैसंपादनकरणा॥अब ताधर्मके तपरूपद्वितीयपादका फलसहित निरूपणकरै हैं ॥हेशिष्य॥ आपणेमनविषेदृढसंकल्पधारणकरिकै जोशीतउष्णकासहारणाहै तथाक्षुधातृषाकासहारणा है तथाअन्नादिकपदार्थोंतैंरहितहोणाहै याकानाम तपहै ॥ हेशिष्य ॥ यातपकेप्रभावतैंही मुनिलोक तथाइंद्रादिकदेवता मनवांछितस्वर्गादिकसुखकूंप्राप्तहोवै हैं॥औरयातपकेप्रभावतैंही यालोकविषेयहमनुष्यशत्रुओंतैं जयकूंप्राप्तहोवै हैं॥और जैसेयहपटरूपकार्य तंतुरूपकारणविषेस्थितहोवैहै ॥ तैसे यहकार्यरूपजगत् ताकारणरूपतपविषेही स्थितहोवैहै॥और यातपकेप्रभावतैंही दुर्वासादिकमुनि वरशापदेणेविषेसमर्थहोवै हैं ॥ और यहतपहीसर्वकार्योंकीसिद्धिविषे अत्यंततेजस्वीसाधनहै ॥ याकारणतैंही पूर्व विश्वामित्रादिकऋषि यातपकेप्रभावतैं नवीनहीं

सृष्टिकूं रचतेभये हैं ॥ ऐसे तपकूं याअधिकारीपुरुषोंनैं अवश्यकरिकै संपादनकरणा॥अब ताधर्मके दयारूपतीसरेपादका फलसहित नि
रूपणकरै हैं ॥हेशिष्य॥दम शम यहदोनों तादयाकेकारणहैं॥तादमशमरूपकारणतैंविना सादया उत्पन्नहोवैनहीं॥याकारणतैं शास्त्रवेत्ता
पुरुष तादमशमकूं याजीवोंकेश्रेयकासाधनकहेहैं॥अब फलसहित तादमकेस्वरूपकानिरूपणकरेहैं॥हेशिष्य॥जैसे यालोकविषे किसीप्रम
त्तवृषभका रज्जुआदिकबंधनोंकरिकैही जयहोवै है॥तैसे बाह्यशब्दादिकविषयोंविषे दोषदृष्टिकरिकै जोश्रोत्रादिकइंद्रियोंकानिरोधकरणाहै
याकानाम दमहै॥तादमकरिकैयुक्त यहब्रह्मचारीपुरुष फलसहितसर्वपापकर्मोंकापरित्यागकरिकै मरणतैंअनंतर स्वर्गलोककूंअथवाब्रह्मलो
ककूंप्राप्तहोवै हैं॥यातैं ऐसेदमरूपसाधनकूं याअधिकारीपुरुषनैंअवश्यकरिकैसंपादनकरणा॥अबफलसहित शमकेस्वरूपका निरूपणकरै हैं
हेशिष्य॥जैसे स्त्रीआदिकविषयोंकेसमीपविद्यमानहुएभी ज्वरादिकरोगकेवशतैं यापुरुषोंकी तिनस्त्रीआदिकविषयोंविषेइच्छाहोतीनहीं ॥
तैसे अनेकप्रकारके दोषदर्शनकरिकै तिनस्त्रीआदिकविषयोंकीइच्छाकापरित्यागकरिकै केवलआनंदस्वरूपआत्माकीइच्छाकरणी याका
नाम शमहै॥हेशिष्य॥ताशमकाफल यालोकविषे तथावेदविषे प्रसिद्धहीहै ॥ काहेतैं यालोकविषे शमकरिकैयुक्तमुनिलोक महान्वनविषे
स्थितहुएभी सिंहसर्पादिकोंतैंभयकूंप्राप्तहोवैनहीं॥किंतु तेमुनिलोक ताशमकेप्रभावतैं तिनसिंहसर्पादिकतामसीजीवोंकूंभी हिंसादिकपाप
कर्मोंतैं रहितकरै हैं।और ताशमकेप्रभावतैं तेमुनिलोक कामक्रोधादिकविकारोंकूंजयकरिकै स्वर्गादिकउत्तमलोकोंकूंप्राप्तहोवैहैं।ऐसेशमकूं
याअधिकारीपुरुषोंनैं अवश्यकरिकैसंपादनकरणा ॥ तादमशमकरिकैही याजीवोंकूं सर्वभूतोंविषेदयाहोवै है ॥ इतनैंकरिकै तादमशमके
प्राप्तहुए दयाकीप्राप्ति याप्रकारकेअन्वयकरिकै तादमशमविषे दयाकीकारणता निरूपणकरी ॥अब तादमशमकेअप्राप्तहुए तादयाकीअ
प्राप्ति याप्रकारकेव्यतिरेककरिकैभीतादमशमविषे दयाकीकारणता निरूपणकरै हैं ॥ हेशिष्य ॥ यालोकविषे जोपुरुष ताशमतैंरहितहो
वै है ॥ सोपुरुष कामक्रोधादिकविकारवालाहीहोवै है ॥ और जोपुरुष तादमतैंरहितहोवै है॥सोपुरुष सर्वदा इंद्रियोंकेअधीनहीहोवै है ॥

और जोपुरुष कामक्रोधादिकविकारोंवाला तथाइंद्रियोंके अधीनहोवै है।सोप्रमादीपुरुष शरीरमनवाणीकरिकै अवश्य भूतप्राणियोंकीहिंसा
करै है ॥ और जोपुरुष शरीरमनवाणीकरिकै सर्वभूतोंकीहिंसाकरै है ॥ सोपुरुष दयातैंरहितहीहोवै है॥ऐसेनिर्दयपुरुषविषे कदाचित्भी द
याकीसंभावनाहोवैनहीं ॥ यातैं दयाकीउत्पत्तिद्वारा यहशमदमही जीवोंके श्रेयकासाधनहै॥अब ताधर्मके दानरूपचतुर्थपादका फलसहि
त निरूपणकरै हैं॥हेशिष्य॥वाणीकादान तथाबुद्धिकादान तथाधनकादान तथाशरीरकादान इसतैं आदिलैके अनेकप्रकारकादानहोवै है॥
तहां अधिकारीपुरुषकेप्रति विद्यादेणी यहवाणीकादानहोवै है॥और किसीपुरुषकेप्रति श्रेष्ठबुद्धिदेणी यहबुद्धिका दानहोवैहै॥और सुपात्र
ब्राह्मणकेप्रति सुवर्णगोअन्नादिकपदार्थदेणे यहधनकादानहोवैहै॥ और शरणागतजीवोंकीशत्रुआदिकोंतैं रक्षाकरणी यहशरीरकादानहोवै
है॥हेशिष्य॥यालोकविषे जेउदारपुरुष सुवर्णादिकपदार्थोंकादानकरै हैं॥तिनदानकर्तापुरुषोंकी सर्व प्राणी स्तुतिकरै हैं॥जैसे कर्णराजानैं
इंद्रकेप्रति आपणेत्वचाकादानकऱ्याहै॥और बलिराजानैं वामनभगवान्केप्रति तीनलोकोंकादानकऱ्याहै ॥ और शिबिनामाकिसीधर्मा
त्मापुरुषनैं शरणागतकपोतकीरक्षाकरणेवासतै आपणामांस दानकऱ्याहै।इसतैंआदिलैके दूसरेभीअनेकधर्मात्मापुरुषोंनैं नानाप्रकारके
दानकरेहैं॥याकारणतैं तिनकर्णराजादिकधर्मात्मापुरुषोंकी अबपर्यंत लोक स्तुतिकरै हैं॥ और तेदानकरणेहारेपुरुष याशरीरकेपरित्याग
तैंअनंतर स्वर्गादिकउत्तमलोकोंकूंप्राप्तहोवै हैं॥यातैं दानकर्ता पुरुषकूं दोनोंलोकविषेसुखकीप्राप्तिहोवैहै॥किंवा॥यालोकविषे दक्षिणारूप
दानकरिकैही अश्वमेधादिकयज्ञ संपूर्णताकूंप्राप्तहोवैहै।और जैसे पुत्र पिताकूंआश्रयणकरैहै।तैसेदानकर्त्तापुरुषकूं सर्वप्राणी आश्रयणकरै
हैं ॥ और यादानकरिकै शत्रुभी मित्रभावकूंप्राप्तहोवै हैं॥ याकारणतैंही साम दाम भेद दंड याचारप्रकारकेउपायोंकूंजानणेहारे राजादि
कपुरुष यादानरूपउपायकरिकैही शत्रुओंकूं आपणेवशकरै हैं॥ और यादानविषेही यहसंपूर्णजगत् स्थितहोवै है॥ ऐसेदानकूं याअधिका
रीपुरुषनैं अवश्यकरिकैसंपादनकरणा ॥ हेशिष्य ॥ सत्य तप दया दान याचारपादोंकरिकैयुक्त जोयहधर्म है ॥ सोधर्म यासर्वदेहधारीजी
वोंका साधारणधर्म है ॥ ताधर्मविषे ब्राह्मणादिकचारवर्णोंकी तथाब्रह्मचर्यादिकचारआश्रमोंकी तथाबाल्यादिकतीनअवस्थाओंकी अपे
क्षानहीं है ॥ काहेतैं पंचवर्षकीअवस्थावाला ध्रुव तपरूपधर्मकरिकै परमपदकूंप्राप्तभयाहै ॥ यातैं याधर्मविषे किसीअवस्थाकी अपेक्षा

नहीं है ॥ और कपोतपक्षी अतिथिकेप्रति आपणेशरीरकादानकरिकै उत्तमगतिकूंप्राप्तभयाहै॥ यातैं याधर्मविषे किसीवर्णआश्रमकीभी अपेक्षानहीं है ॥ किंतु सर्व देहधारीजीवोंकूं याधर्मकरणेविषेआधिकार है॥इतनैंकरिकै धर्म सत्य तप दम शम दान याषट्साधनोंकानिरूपणकऱ्या ॥ अब प्रजननरूपसप्तमसाधनका निरूपणकरै हैं॥हेशिष्य॥जैसे सोचारपादोंवालाधर्म वर्ण आश्रम अवस्था यातीनोंकीअपेक्षातैंविनाही सिद्धहोवै है॥तैसे यहपुत्रादिकप्रजाकीउत्पत्तिरूप प्रजनन साधन वर्ण आश्रम अवस्था यातीनोंकी अपेक्षातैंविना सिद्धहोवै नहीं॥किंतु यामनुष्यादिकसर्वजीवोंकूं गृहस्थआश्रमकी तथायौवनअवस्थाकी अपेक्षाकरिकैही पुत्रादिकप्रजाकीप्राप्तिहोवै है॥ स्त्रीतैंविना तथायौवनअवस्थातैंविना कोईभीपुरुष पुत्रकीउत्पत्ति करिसकैनहीं ॥ हेशिष्य ॥ दूसरे मनुष्यादिकोंकी क्यावार्त्ता है ॥ परंतु साक्षात्प्रजापतिभी यौवनअवस्थातैंविना तथास्त्रीतैंविना पुत्रादिकप्रजाकीउत्पत्ति करणेविषे समर्थहोइसकैनहीं॥ हेशिष्य॥.पुत्रपौत्रादिरूपप्रजावालापुरुष इसलोकविषे कीर्तिकूंप्राप्तहोवै है ॥ तथा सुखकूंप्राप्तहोवै है॥तथा शत्रुओंतैं जयकूंप्राप्तहोवै है ॥ और सोपुत्रवान्पुरुष पितरोंके ऋणतैंमुक्तहोइकै मरणतैंअनंतर स्वर्गकूंप्राप्तहोवै है ॥ हेशिष्य॥यहपुत्रपौत्रादिरूपप्रजा याजीवोंके संसारसंबंधीसुखकाही कारणहोवै है॥ मोक्षरूपसुखका कारण होवैनहीं॥ उलटा रागकीउत्पत्तिद्वारा सोपुत्रादिरूपप्रजा याजीवोंके मोक्षविषे प्रतिबंधकहीहोवै है॥अब जे विषयासक्तरागीपुरुष पुत्रादिकप्रजाकूंहीमोक्षका कारणमानै हैं ॥ तिनरागीपुरुषोंके मतकेखंडनकरणेवासतै प्रथम तिनरागीपुरुषोंकेमतका निरूपणकरै हैं ॥ हेशिष्य ॥ कामरूपज्वरकरिकैआतुरहुए केईकअविवेकीपुरुष पुत्रादिकप्रजाकूंही मोक्षकाकारणमानै हैं॥और तेविषयासक्तबहिर्मुखपुरुष ताअर्थकीसिद्धिकरणेविषे याप्रकारकीयुक्तिकूं कथनकरै हैं॥ जैसे यालोकविषे सप्त महलवाला जोकोईऊँचागृहहै ॥ तागृहकेशिखरऊपर आरूढहोणेकी जोपुरुष इच्छाकरै है ॥ सोपुरुष सोपानकूंग्रहणकरिकैही तागृहकेशिखरऊपरजावै है ॥ ता सोपानविषेभी सो पुरुष प्रथम प्रथम पौडीऊपर पादराखेहै ॥ तिसतैंअनंतर दूसरी पौडीऊपर पादराखे है ॥ तिसतैं अनंतर तीसरीपौडीऊपर पादराखे है ॥ याप्रकार शनैःशनैः तासोपानकीपौडियोंऊपर पादराखतारासता ता गृहके शिखरऊपर जावै है ॥ ता सोपान

तैंविना सोपुरुष तागृहकेशिखरऊपर जाइसकैनहीं ॥ तैसे इहां धर्म अर्थ काम मोक्ष याचारिप्रकारकेपुरुषार्थकी जोजीवोंकूं प्राप्तिहोवै है ॥ सोभी पूर्वपूर्वकेप्राप्तितैंअनंतर उत्तरउत्तरकीप्राप्तिरूपक्रमतैंहीं होवै है ॥ ताक्रमतैंविना तिनपुरुषार्थोंकीप्राप्तिहोवै नहीं ॥ तहां यहजीव प्रथम धर्मकूंप्राप्तहोवै है॥और ताधर्मतैंअनंतर यहजीव अर्थकूंप्राप्तहोवै है ॥ और ताअर्थतैंअनंतर यहजीव कामकूंप्राप्तहोवै है॥और ताकामतैंअनंतर यहजीव मोक्षकूंप्राप्तहोवै है॥याक्रमतैंविना यहजीव प्रथमही मोक्षकूंप्राप्तहोवैनहीं॥अब धर्मादिकोंविषे अर्थादिकोंकीकारणताका निरूपणकरै हैं॥यहधर्मही अर्थकारणहै॥काहेतैं यहलोक दुःखवालेदरिद्रीपुरुषकूं पापात्माकहै हैं ॥ और सुखवालेधनीपुरुषकूं पुण्यात्माकहै हैं॥यालोकोंकेव्यवहारतैं धर्मविषेही अर्थकीकारणता सिद्धहोवै है॥शंका ॥यालोकविषे कितनेकधनीपुरुष पुण्यकर्मकरतेनहीं॥यातैं तिनधनीपुरुषोंविषे पुण्यात्माव्यवहार संभवैनहीं ॥ समाधान ॥यालोकविषे दोप्रकारकाधर्महोवै है ॥एकधर्म तौ इसशरीरविषे कऱ्याहुआ इसीशरीरविषे फलकीप्राप्तिकरै है॥जैसे इसीशरीरकरिकैकऱ्याहुआ आकारीनामायज्ञ इसीशरीरविषे वृष्टिरूपफलकीप्राप्तिकरै है ॥ तथा इसीशरीरकरिकैकऱ्याहुआ पुत्रइष्टिनामायज्ञ इसीशरीरविषे पुत्ररूपफलकीप्राप्तिकरै है ॥और दूसराधर्मतौ इसशरीरकरिकैकऱ्याहुआ इसीशरीरविषे फलकीप्राप्तिकरैनहीं॥किंतु दूसरेशरीरविषे फलकीप्राप्तिकरै है ॥ जैसे कृच्छ्रचांद्रायणादिकव्रतहैं॥ तहां जेधनवान्पुरुष इसजन्मविषे पुण्यकर्मोंकूंकरतेनहीं ॥ किंतु केवलपापकर्मोंकूंहीकरते हैं ॥ तिनधनवान्पुरुषोंविषे पूर्वजन्मकेपुण्यकर्म कल्पनाकरणे ॥ जिनपूर्वलेपुण्यकर्मोंकरिकै तिनधनीपुरुषोंकूं इसजन्मविषे सुखकीप्राप्तिभई है ॥ तात्पर्ययह ॥ कारणतैंविना कार्यकीउत्पत्तिहोवै॥ नहीं ॥ यहसर्वशास्त्रकारोंकासिद्धांतहै॥ तहां जिसस्थलविषे कार्यतौ प्रत्यक्षदीखे॥ और कारण प्रत्यक्षदीखेनहीं॥तिसस्थलविषे कार्यरूपहेतुतैं कारणका अनुमानहोवै है ॥ जैसे नदीविषे जोजलकीवृद्धिहोवै है ॥ ताजलकेवृद्धिकाकारण वृष्टिहै ॥ सावृष्टि दूरदेशविषेस्थित है॥यातैं लोकोंकूं प्रत्यक्षदीखेनहीं॥किंतु ताजलकीवृद्धिरूपहेतुतैं तेलोक तावृष्टिका अनुमानकरैहैं॥तैसे जोजोसुखहोवैहै॥सोसोसुख पुण्यकर्मकरिकैजन्यहोवै है॥पुण्यकर्मतैंविना सुखकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥यातैं सुखरूपहेतुतै तिनपापात्माधनीपुरुषोंके पूर्वजन्मकेपुण्यकर्मोंका अनु

मानहोवै है॥ इसप्रकार श्वानादिकपशुवोंकूंभी जोस्त्रीसंभोगादिकोंतैं आनंदहोवै है॥ सोभी पूर्वलोकिसीपुण्यकर्मकरिकैहीहोवैहै॥ और जैसे सो पुण्यकर्म दोप्रकारकाहोवै है ॥ तैसे पापकर्मभी दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां कोईकपापकर्मतो इससशरीरकरिकैकन्याहुआ इसीशरीर विषे दुःखरूपफलकीप्राप्तिकरै है॥और कोईकपापकर्मतो इसीशरीरकरिकैकन्याहुआ दूसरेशरीरविषे दुःखरूपफलकीप्राप्तिकरै है॥तहांइ सशरीरविषे जिनपुरुषोंनैं कोईबुद्धिपूर्वक पापकर्मनहींकन्याहै ॥ किंतु सर्वदा पुण्यकर्महीकरैहैं॥तिनपुण्यवान्पुरुषोंविषेभी अनेकप्रकार दुःख देखणेमैंआवैहैं।यातैं तादुःखरूपहेतुतैं तिनपुण्यवान्पुरुषोंविषे पूर्वजन्मोंकेपापकर्मोंका अनुमानहोवैहै॥यातैं यहअर्थासिद्धभया ॥ याजीवोंकूं जितनाकीविषयजन्यसुख प्राप्तहोवै है॥सो धर्मकरिकैही प्राप्तहोवै है॥ और ताधर्मात्मापुरुषोंकूं जोविषयसुखप्राप्तहोवैहै॥ सो अ र्थतैंविना प्राप्तहोवैनहीं॥ काहेतैं यालोकविषे जोपुरुष धर्मात्माभीहै ॥सोधर्मात्मापुरुषभी स्त्रीतैंविना ताविषयसुखकूंप्राप्तहोवैनहीं॥ तथा पुत्रादिकप्रजाकूं तथा गृहस्थपणेकूं प्राप्तहोवैनहीं॥और सोधर्मात्मापुरुषभी अन्नतैं विना क्षुधाकूंनिवृत्तकरिसकैनहीं ॥ और निर्धनदरिद्री पुरुषकेसमीपस्त्रीअन्नादिकपदार्थ विद्यमानहुएभी तानिर्धनपुरुषकूंसुखकीप्राप्तिकरैनहीं यातैंधनादिरूपअर्थहीकामसुखकाकारणहै काहेतैं धनरूपअर्थतैं रहितपतिकूं पतिव्रतास्त्रीभी परित्यागकरिदेवैहै ॥ और धनहीनदरिद्रीपुरुषकूं आपणेबांधव तथामित्र तथाअन्यलोकभी आदरकरतेनहीं किंतु सर्वलोक तानिर्धनपुरुषका निरादरहीकरैहैं॥और जैसे मृतकशरीर किसीकार्यकरणेविषे समर्थहोवैनहीं॥तैसेनिर्धन पुरुषकाउत्तमकुलतथाशील तथानानाप्रकारकीविद्याकिंचितमात्रभी कार्यकरणेविषेसमर्थहोवैनहीं और जोपुरुषधनवान्होवैहै॥सोपुरुषही नानाप्रकारकेभोगोंकूंप्राप्तहोवैहै॥ तथा स्वर्गकूंप्राप्तहोवैहै॥ तथा महान्कीर्त्तिकूंप्राप्तहोवैहै तथा नानाप्रकारकेगुणोंकूंप्राप्तहोवैहै यातैं यह अर्थसिद्धभया ॥ यहपुरुष धनरूपअर्थकरिकैही स्त्रीसंभोगरूपकामकूंप्राप्तहोवैहै धनरूपअर्थतैं विनास्त्रीसंभोगरूपकामकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं सोअर्थ कामकाकारणहै॥किंवा॥विषयसुखकीइच्छारूपजोकामहै ॥ सोकाम जिसदेहधारीजीवकूं नहींप्राप्तहोवैहै ॥ ऐसाकोईदेहधा रीजीवयातीनलोकोंविषे है नहीं ॥ किंतु मनुष्यजातिविषे तथापशुजातिविषे जितनेकी बाल्यअवस्थावाले तथायौवनअवस्थावाले तथावृ

द्धअवस्थावाले स्त्री पुरुष नपुंसक रूपजंगमप्राणी हैं॥ तथा जितनेकीवृक्षादिरूपस्थावरप्राणी हैं॥ तेसंपूर्णप्राणी ताविषयसुखकीइच्छारूप कामकरिकैही व्याप्तहैं ॥ ताकामतैंरहित कोईभीप्राणी नहीं है ॥ यातैं ताविषयसुखकेभोगतैंविना किसीभीजीवकूं वैराग्यकीप्राप्तिहोवै नहीं ॥ किंतु ताविषयसुखकेभोगतैंअनंतरहीं याजीवोंकूं वैराग्यकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं ताविषयसुखकेभोगतैंपूर्व ब्रह्मचर्यआश्रमविषे यहजीव मोक्षकाअधिकारीहोवैनहीं ॥ किंतु गृहस्थआश्रमतैंअनंतरही यहजीव मोक्षकाअधिकारीहोवैहै ॥ किंवा ॥ वैराग्यवान्पुरुषही मोक्षकाअधिकारीहोवैहै ॥ यहवेदांतशास्त्रकासिद्धांतहै ॥ तहां रागकेप्रध्वंसाभावकानाम वैराग्यहै ॥ सोरागकाप्रध्वंसाभावरूपवैराग्य रागकीउत्पत्तितैंविनाहीहोवैहै अथवा रागकीउत्पत्तितैंअनंतर होवैहै ॥ तहां रागकीउत्पत्तितैंविनाहीं सोरागकाप्रध्वंसाभावरूपवैराग्य होवै है ॥ यःप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं॥ काहेतैं प्रध्वंसाभावविषे प्रतियोगीभीकारणहोवै है ॥ प्रतियोगीतैंविना प्रध्वं साभावकीउत्पत्ति होवैनहीं ॥ जैसे दंडकरिकैउत्पन्नभया जोघटकाप्रध्वंसाभावहै॥ताप्रध्वंसाभावविषे जैसे दंडकूंकारणताहै ॥ तैसे ताघट रूपप्रतियोगीकूंभी कारणताहै ॥ घटकीउत्पत्तितैं विना ताघटकाप्रध्वंसाभाव होवै नहीं ॥ तैसे रागरूपप्रतियोगीकीउत्पत्तितैं विना ता रागकाप्रध्वंसाभावरूपवैराग्यभी उत्पन्नहोवैनहीं ॥ और रागकीउत्पत्तितैंअनंतरहीं सोरागकाप्रध्वंसाभावरूपवैराग्य उत्पन्नहोवैहै यहदू सरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं जैसे यालोकविषे जीवोंकूंउत्पन्नभईजाक्षुधाहै ॥ साक्षुधा अन्नकीप्राप्तितैंविना निवृत्तहोवैनहीं॥किंतु अन्नकीप्राप्तिकरिकैही साक्षुधा निवृत्तहोवैहै ॥तैसे याजीवोंविषे उत्पन्नभयाजो विषयसुखोंकारागहै॥ सोरागभी तिन विषयसुखोंकीप्राप्तितैंविना निवृत्तहोवैनहीं॥किंतु तिनविषयसुखोंकीप्राप्तिकरिकैही सोराग निवृत्तहोवैहै ॥ और तेविषयजन्यसुख ब्रह्मचर्य आश्रमविषे याजीवोंकूं प्राप्तहैनहीं॥यातैं ब्रह्मचर्यआश्रमविषेयाजीवोंकूंरागकाप्रध्वंसाभावरूपवैराग्यकीप्राप्ति संभवैनहीं॥ तावैराग्यकेअभाव हुए मोक्षकीप्राप्तिवासतैंउद्यमकरणा निष्फलहै॥शंका॥ताब्रह्मचर्यआश्रमविषे याजीवोंकूं यद्यपि विषयोंविषेराग उत्पन्नहोवैहै॥ तथापितेअ धिकारीजीवशास्त्रविचारकेबलतैंतिनविषयोंविषेनानाप्रकारकेदोषोंकूंदेखिकै तिनविषयोंकेरागकानिरोधकरैहैं ॥ यातैं ताब्रह्मचर्यअवस्थावि

षेभी वैराग्य तथामुमुक्षुता संभवैहै॥समाधान॥याजीवोंकेचित्तविषे उत्पन्नभयाजोविषयोंकारागहै॥ सोरागजबपर्यंत ताविषयकूंनहींप्राप्तहो वैहै॥तबपर्यंत सोराग याजीवोंकेचित्तकूं सर्वओरतैंनिरुद्धकरिकैस्थितहोवैहै॥ताचित्तविषे दूसरेविषयका प्रवेश होणेदेवैनहीं॥ जैसे यालोक विषे स्त्रीकेउदरविषे जबपर्यंत बालकरहैहै ॥ तबपर्यंत सोबालक तास्त्रीकेउदरविषे दूसरेबालकका प्रवेशहोणे देवैनहीं ॥ किंतु सोबालक जभी तास्त्रीकेउदरतैंबाहरनिकसैहै॥तभीहीतास्त्रीकेउदरविषे दूसरेबालकका प्रवेशहोवैहै॥ तैसे याजीवोंकेचित्तविषेभीजबपर्यंत एकविषयकाराग रहैहै॥तबपर्यंत ताचित्तविषे दूसरेविषयकेरागकूं प्रवेशहोणेदेवैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ याचित्तविषे एकविषयकेरागहुए जभी लोकप्रसिद्धविषयभी प्रवेशनहींकरिसकैहै ॥ तभी ताविषयरागवान्चित्तविषे अलौकिक मोक्षकीइच्छा किसप्रकार प्रवेशकरैगी ॥ किंतु नहींप्रवेशकरैगी॥किंवा ॥ जैसेमदकरिकैप्रभिन्नहुआहैगंडस्थलजिसकाऐसीजोपष्टिवर्षकीअवस्थावालाकोईयुवानहस्तीहै ॥ सोहस्तीकिसी महान्वनकेसूक्ष्ममार्गोंविषेविचरताहुआ जभी तासूक्ष्ममार्गकेद्वारदेशकूंनिरुद्धकरिकै स्थितहोवैहै ॥ तभी सोप्रमत्तहस्ती दूसरेमृगादिकव नकेपशुवोंकूं तामार्गद्वारा तावनविषेप्रवेशकरणेदेवैनहीं ॥ तैसे चित्तरूपवनकेद्वारविषे जबपर्यंत यहविषयोंकारागरूपहस्ती विद्यमानहै ॥ तबपर्यंत मोक्षकीइच्छारूपमृगादिकोंकूं ताचितरूपवनविषे प्रवेशहोणेदेवैनहीं ॥ अब याहीअर्थकेस्पष्टकरणेवासतै प्रथम लौकिकविषयों केरागविषे दूसरेलौकिकविषयोंकेरागकीप्रतिबंधकता दृष्टांतकरिकैनिरूपणकरैहैं अनेकस्त्रीजनोंकेमध्यविषेस्थितहुआ जोमंदोदरीकापति रावणथा सोरावण जभी सीताकेरागकरिकैयुक्तहुआ॥तभी तासीतातैंविना तीनलोकवर्त्तिपदार्थोंकीभी इच्छानहींकरताभया॥ किंतु ताए कसीताकेप्राप्तिकीहीइच्छाकरताभया ॥ और जैसे नलराजाविषेहैसंलगनहृदयजिसका ऐसीजोदमयंतिनामास्त्रीथी॥ सा दमयंतिनामास्त्री स्वयंवरविषेप्राप्तहुएइंद्रादिकदेवतावोंकूंभीनहींवरतीभई॥किंतु सादमयंतिनामास्त्री तानलराजाकूंहीवरतीभई ॥ इसप्रकार रागकरिकैअंधहु ईहैबुद्धिजिनोंकी ऐसेदूसरेभीअनेकजीवपूर्वहुएहैं॥तथा अभीवर्त्तमानहैं॥तथाआगेहोवैंगे॥ तेसंपूर्णरागीजीव जिसविषयकेरागकरिकैयुक्तहुएहैं तिसविषयतैंविना दूसरेकिसीभीविषयकीइच्छा नहीं करतेभये हैं ॥ यातैं यहजान्याजावैहै॥याजीवोंकेचित्तविषे जबपर्यंत एकविषयकाराग

रहैहै तबपर्यंततताचित्तविषे दूसरेविषयकाराग होवैनहीं ॥ जभीयाचित्तविषे एकविषयकेरागहुए दूसरेविषयकाभीराग संभवैनहीं ॥ तभी ताविषयरागवानचित्तविषे मोक्षकीइच्छा किसप्रकारसंभवैगी किंतु नहींसंभवैगी ॥शंका॥ जिसपुरुषकूंप्रथम विषयसुखविषेरागहुआनहीं॥ किंतुप्रथमही मोक्षरूपसुखविषेरागहुआहै ॥ सोपुरुषहीसंन्यासद्वारा आत्मज्ञानकातथामोक्षकाअधिकारीहोवैगा॥समाधान॥जिनपुरुषों कूंयालोकप्रसिद्धविषयजन्यसुखविषेरागनहींभयाहै ॥ तिनपुरुषोंकूं प्रथमहीअलौकिकमोक्षरूपसुखविषेराग किसप्रकारहोवैगा ॥ किंतु नहींहोवैगा॥तात्पर्ययह॥ जिसपुरुषकूं इसलोककेविषयजन्यसुखविषेसुखत्वरूपकरिकैइष्टज्ञानभयाहै ॥ तिसपुरुषकूंहीस्वर्गलोककेविषयज न्यसुखविषेइच्छाहोवैहै ॥ ताइष्टज्ञानतैंविनास्वर्गलोककेविषयजन्यसुखविषे किसीभीजीवकीइच्छाहोवैनहीं ॥ तैसेजिसपुरुषकूं यालोकप्र सिद्धविषयजन्यसुखोंकाज्ञानभयाहै तिसपुरुषकूंही तामोक्षरूपसुखविषेइच्छाहोवै है ॥ विषयजन्यसुखकेज्ञानतैंविना प्रथमही तामोक्षकी इच्छासंभवैनहीं॥यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ आपणेहृदयविषेस्थित जेविषयसुखोंकीकामनाहै तिनकामनावोंकीताविषयसुखोंकीप्राप्तितैंनहीं पूर्णताकरिकै यहअधिकारीपुरुषप्रथमहीं तामोक्षकीप्राप्तिवासतैं संन्यासआश्रमकूंग्रहणनहींकरै ॥ किंतु यहबुद्धिमान्पुरुष प्रथमतिनवि षयसुखोंकीकामनावोंकूं तिनविषयसुखोंकीप्राप्तितैंपूर्णकरिकै पश्चात् मोक्षकीप्राप्तिवासतैं संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरै ॥ यहवार्त्तामनुभग वान्नैंभीकहीहै॥तहांश्लोक ॥ अनधीत्यद्विजोवेदान् अपुत्रोत्पाद्यतथासुतान् अनिष्ट्वाचैवयज्ञैश्च मोक्षमिच्छन्व्रजत्यधः ॥ अर्थयह ॥ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यातीनवर्णोंकानाम द्विजहै ॥ जोद्विजवेदोंकूं नअध्ययनकरिकै तथापुत्रोंकूं न उत्पन्नकरिकै तथायज्ञादिककर्मोंकूं नकरिकै प्रथमहीमोक्षकेप्राप्तिकीइच्छाकरैहै सोद्विज तामोक्षकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु उलटा तामोक्षकीइच्छाकरताहुआसोद्विज अधोगतिकूंप्राप्त होवैहै ॥ १॥यातैं जिसद्विजकूंमोक्षकेप्राप्तिकीइच्छाहोवै ॥ सोद्विज प्रथमब्रह्मचर्यआश्रमविषे वेदोंकेअध्ययनकरिकै ऋषियोंकेऋणतैंमुक्त होवै॥तिसतैंअनंतरगृहस्थआश्रमविषे पुत्रोंकूंउत्पन्नकरिकै पितरोंकेऋणतैंमुक्तहोवै ॥ तथा यज्ञादिककर्मोंकूंकरिकैदेवतावोंकेऋणतैंमुक्त होवै॥ तिसतैंअनंतर मोक्षकीप्राप्तिवासतै संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरै॥इसप्रकार रागकेअभावसेंज्ञानगोहरे मनुआदिकवर्णपुरुषोंनैंव्यव

स्थाकरीहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया॥सर्वप्रकारकेविषयोंकेभोगकरिकै जभी याअधिकारीपुरुषोंकेंचित्तविषे तादिषयोंकेरागकानाशहोवै॥ तभीही यहअधिकारीपुरुष संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरिकै तामोक्षकीप्राप्तिवासतै यत्नकरै॥विषयोंकेभोगतैंपूर्वही मोक्षकीप्राप्तिवासतैयत्न करणानिष्फलहै॥इतनेंग्रंथकरिकै विषयासक्तपुरुषोंके मतकानिरूपणकऱ्या॥अब तिनोंकेमतकाखंडनकरैहैं॥हेशिष्य॥इसप्रकार तेविषया सक्तबहिर्मुखपुरुष धर्म अर्थ काम यातीनपुरुषार्थोंकीप्राप्तितैंअनंतरही चतुर्थमोक्षरूपपुरुषार्थकीप्राप्तिकाकथनकरैहैं॥सोतिनबहिर्मुखपुरु षोंकेवचनोंकूं विद्वान्पुरुषग्रहणकरैनहीं ॥किंतुविषयासक्तबहिर्मुखपुरुषही तिनोंकेवचनोंकूं ग्रहणकरैहै ॥और हेशिष्य ॥ तिनबहिर्मुखपुरु षोंनैं जोपूर्वपुण्यकर्मविषे सुखकीकारणताकथनकरीथी ॥ तथा पापकर्मविषे दुःखकीकारणताकथनकरीथी ॥ सोतिनोंकावचनहमसिद्धां तीभीअंगीकारकरतेहैं ॥ परंतु तिनबहिर्मुखपुरुषोंनैं जोपूर्व धनादिरूपअर्थविषे सुखकीकारणताकथनकरीथी ॥ सोतिनोंकावचन हम सिद्धांतीअंगीकारकरतेनहीं ॥ काहेतैं यालोकविषे धनादिरूपअर्थतैंरहितहुएभी बहुतजीवसुखीहुए देखणेमेंआवै है ॥ और यालोकविषे धनादिरूपअर्थकरिकैयुक्तहुएभी बहुतजीवदुःखीहुएदेखणेमेंआवैहैं ॥ यातैंधनादिरूपअर्थविषे विषयसुखकीकारणतासंभवैनहीं॥हेशिष्य॥ धनादिरूपअर्थतैंविनाभी यामनुष्यादिकजीवोंकूं विषयसुखकीप्राप्तिहोवै है यहवार्त्ता हमसप्तमअध्यायविषे याज्ञवल्क्यमैत्रेयीकेसंवादविषे विस्तारतैं कथनकरिआयेहैं ॥ यातैं इहां कथनकरीनहीं ॥ और हेशिष्य ॥ धनादिरूपअर्थोंकेइकट्ठेकरणेविषे तथारक्षणकरणेविषे तथानाशविषे याजीवोंकूं परमदुःखकीही प्राप्तिहोवैहै याप्रकारकेअर्थकूंजानणेहारे जेविद्वान्पुरुषहैं ॥तिनविद्वान्पुरुषोंकूंतौ यहधनादिरूप अर्थ दुःखकेहीकारण प्रतीतहोवैहैं ॥ ऐसेधनादिरूपअर्थोंतैं तिनबहिर्मुखपुरुषोंकूंसुखकीप्राप्तिकिसप्रकारहोवैगी ॥ किंतु नहींहोवैगी ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे अग्निकेअंगारविषे मणिबुद्धिकरिकै जोमूढबुद्धिपुरुष ताअंगारकूंआपणेहस्तविषे ग्रहणकरैहै ॥ सोमूढबुद्धिपुरुष दाहजन्यदुःखकूंही प्राप्तहोवैहै ॥ तैसे दुःखकेदेणेहारे धनादिरूपअर्थोंविषे सुखसाधनताबुद्धिकरिकै जोमूढबुद्धिपुरुष तिनधनादिरूपअर्थों केग्रहणकरणेवासतै प्रवृत्तहोवैहै ॥ सोमूढबुद्धिपुरुषभी केवलदुःखकूंहीप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं धनादिरूपअर्थविषे सुखकीकारणतासंभवैनहीं

और हेशिष्य॥अर्थहीन दरिद्रीपुरुषकूं स्त्रीपुत्रादिकसर्ववांधव परित्यागकरिदेवैहै॥याप्रकारकावचन जोपूर्व तिनबहिर्मुखपुरुषोंनैं कथनक ऱ्याथा ॥ सोतिनोंकाकहणाभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं यालोकविषे जितनेकीनिर्धनदरिद्रीपुरुषहैं ॥ तिनसर्वदरिद्रीपुरुषोंकूं स्त्रीपुत्रादिकबांधव परित्यागकरै हैं॥याप्रकारकानियम सर्वलोकोंविषे देखणेमेंआवतानहीं॥किंतु कोईकदुष्टस्वभाववाले स्त्रीपुत्रादिकबांधवही तानिर्धन पुरुषका परित्यागकरैहैं ॥ साधुस्वभाववालेस्त्रीपुत्रादिकबांधव तानिर्धनपुरुषका परित्यागकरैनहीं ॥ और हेशिष्य ॥ सर्वजीवोंकूं सुखकी इच्छारहैहै॥यातैंसर्वजगत् कामकरिकैव्याप्तहै याप्रकारकावचन जोपूर्वतिनबहिर्मुखपुरुषोंनैं कथनकऱ्याथा सोतिनोंकावचनभी मिथ्याहै काहेतैं यालोकविषे सर्वजीवोंकूं सुखकेप्राप्तिकीइच्छाहोवैहै॥यहवार्ता यद्यपि सत्यहै ॥ तथापि तासुखकीइच्छामात्रकरिकै तिनसर्वजीवों विषे कामीपणा सिद्धहोवैनहीं॥किंतु यालोकविषे जेपुरुष जिह्वाइंद्रियकेविषयविषेतथाउपस्थइंद्रियकेविषयविषे अत्यंतआसक्तिवालेहोवै हैं तिनपुरुषोंकूंही लोकविषेकामीकहैहैं ॥ सुखमात्रकीइच्छावालेपुरुषकूं कोई कामीकहतानहीं ॥ यातैं तासुखकीइच्छामात्रकरिकै सर्वजगत् विषे कामीपणासंभवैनहीं ॥ और हेशिष्य ॥ याजीवोंकेचित्तविषेउत्पन्नभया जोएकविषयकारागहै ॥ सोराग ताचित्तविषे दूसरेविषयके रागकूं उत्पन्नहोणेदेवैनहीं याप्रकारकावचन जोपूर्व तिनबहिर्मुखपुरुषोंनैं कथनकऱ्याथा ॥ सोतिनोंकाकहणा हमसिद्धांतियोंकूं प्रतिकूल नहीं है ॥ किंतु सोतिनोंकाकहणा हमारेकूं अनुकूलहै॥काहेतैं पूर्वलेकिसीपुण्यकर्मकेप्रभावतैं याअधिकारीपुरुषोंकेचित्तविषे जभी मोक्ष काराग उत्पन्नहोवै है ॥ तभीसोमोक्षकाराग ताचित्तविषे किसीभीविषयकेरागकूं उत्पन्नहोणेदेवैनहीं ॥ याकारणतैंहीं नचिकेतादिकम ज्ञानपुरुष तामोक्षकीइच्छाकालविषे किसीभीपदार्थकाग्रहण नहींकरतेभये हैं॥और हेशिष्य॥वेदोंकाअध्ययन तथापुत्रोंकीउत्पत्तितथा यज्ञादिककर्म यातीनोंकूंनकरिकै जोपुरुष मोक्षकीइच्छाकरैहै सोपुरुष अधोगतिकूंप्राप्तहोवैहै यहमनुभगवान्कावचन मोक्षकीनिंदाकरै है याप्रकारकावचन जोपूर्व तिनबहिर्मुखपुरुषोंनैं कथनकऱ्याथा ॥ सोतिनोंकाकहणाभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं वेदोंविषे तथास्मृतियोंविषे तथाइतिहासपुराणोंविषे जितनेकीनिंदावचनहोवै हैं ॥ तिननिंदावचनोंका किसीकीनिंदाविषे तात्पर्यहोवैनहीं॥किंतु तिननिंदावचनोंका

प्रसंगमेंप्राप्तअर्थकीस्तुतिविषेही तात्पर्यहोवेहै ॥ जैसे विष्णुपुराणविषे यहवचनकथनकऱ्याहै ॥तहांश्लोक॥ वासुदेवंपरित्यज्य यउपास्तेऽन्यदेवतं ॥ तृषितोजाह्नवीतीरे कूपंखनतिदुर्मतिः ॥ अर्थयह ॥ जोपुरुष विष्णुकापरित्यागकरिकै अन्यशिवादिकदेवतावोंकी उपासना करै है ॥ सोदुर्बुद्धिपुरुष तृषाकरिकैआतुरहुआ तातृषाकीनिवृत्तिकरणेवासतै श्रीगंगाजीकेतीरऊपर कूपकूंखोदै है ॥१॥ और शिवपुराण विषेभी याप्रकारकावचन कथनकऱ्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ महादेवंपरित्यज्य यउपास्तेऽन्यदेवतं ॥ सभूढोविषमश्नाति सुधांत्यक्त्वाक्षुधातुरः ॥ अर्थयह ॥ जोपुरुष महादेवकापरित्यागकरिकै अन्यविष्णुआदिकदेवतावोंकीउपासनाकरै है ॥ सोमूढबुद्धिपुरुष क्षुधाकरिकैआतुरहुआ ताक्षुधाकीनिवृत्तिवासतै अमृतकापरित्यागकरिकै विषकूंभक्षणकरै है ॥ १ ॥ यादोनोंप्रकारकेवचनोंविषे प्रथम ताविष्णुपुराणकेवचनका तिनशिवादिकदेवतावोंकीनिंदाविषे तात्पर्यनहीं है ॥ किंतु तावचनका विष्णुकी स्तुतिविषे तात्पर्य है ॥ तैसे ताशिवपुराणकेवचनकाभी तिनविष्णुआदिकदेवतावोंकीनिंदाविषेही तात्पर्यनहीं है॥किंतु तावचनका महादेवकीस्तुतिविषे तात्पर्य है॥ जोकदाचित् तिनदोनोंका शिवविष्णुआदिकदेवतावोंकीनिंदाविषेही तात्पर्यहोवै ॥ तौ किसीभीदेवताविषे पूज्यता सिद्धनहींहोवैगी ॥ तैसे तामनुभगवान्केवचनकाभी मोक्षकीनिंदाविषे तात्पर्यनहीं है ॥ किंतु अज्ञानीपुरुषोंकी कर्मोंविषेप्रवृत्तिकरावणेवासतै तामनुके वचनका वर्णआश्रमकेकर्मोंकीस्तुतिविषेतात्पर्य है ॥ जोकदाचित् तामनुभगवान्का मोक्षकीनिंदाविषेही तात्पर्यहोता॥तौ सोमनुभगवान् तिसीमनुस्मृतिकेषष्टेअध्यायविषे मोक्षकेधर्मोंका नहींकथनकरता ॥ और मनुस्मृतिकेषष्टेअध्यायविषे तामनुभगवान्नैं मोक्षकेधर्मोंका बिस्तारतैंनिरूपणकऱ्याहै॥यातैं यहजान्याजावैहै॥तामनुभगवान्केवचनका मोक्षकीनिंदाविषे तात्पर्यनहीं है॥किंतु कर्मोंकीस्थितिविषे तात्पर्य है ॥ किंवा ॥ सोबहिर्मुखवादी जोयाप्रकारकीशंकाकरै ॥ तामनुभगवान्का मोक्षकीनिंदाविषेही तात्पर्य है ॥ और तामनुस्मृतिकेषष्टेअध्यायविषे जोमनुभगवान्नैं मोक्षधर्मोंकाकथनकऱ्याहै।सोभ्रमादिकदोषकेवशतैं कथनकऱ्याहै॥सोयहशंकासंभवैनहीं काहेतैं साक्षात्श्रुतिभगवतीही तामनुभगवान्कूं सर्वज्ञकहैहै ऐसेसर्वज्ञमनुभगवान्विषे तेभ्रमादिकदोष संभवैनहीं॥तहांश्रुति॥यद्वैकिंचनम

नुरवदत्तद्भेषजम् ॥ अर्थयहमनुभगवान् जिसाजिसधर्मका कथनकरै है ॥ सोसोधर्म याजीवोंके कल्याणकाहेतुहै ॥ शंका ॥ मनुभगवान्कूं सोमोक्ष अंगीकारहै यहवार्त्ता यद्यपि सत्यहै॥ तथापि तामनुभगवान्कूं वेदोंकाअध्ययन पुत्रोंकीउत्पत्ति यज्ञादिककर्म यातीनोंतैंअनंतर ही सोमोक्ष अंगीकारहै ॥ यातीनोंतैंप्रथमही तामोक्षकाअंगीकारनहीं ॥ समाधान ॥ तामनुभगवान्केवचनका जोयुक्तितैंविचारकरिकै देखिये तौ तिनवेदअध्ययनादिकतीनोंतैंअनंतर तामोक्षकाअंगीकार सिद्धहोवैनहीं॥काहेतैं पूर्व मनुभगवान्केवचनविषे बहुतवेदोंकाअध्ययन तथाबहुतपुत्रोंकीउत्पत्ति तथाबहुतयज्ञोंकाकरणा कथनकरऱ्याहै॥तहां सो बहुत्वपणा तीनपदार्थोंविषे रहे है॥अथवा सोबहुत्वपणा चार पंच षट् इसतैंआदिलैके अनेकपदार्थोंविषे रहेहै ॥ तहां अनेकशतशाखावोंकेभेदकरिकै नानाविधकूंप्राप्तभये जेऋगादिकवेदहै ॥ तिनसर्व वेदोंकेअध्ययनकरणेविषे महान्आयुषवालापुरुषभी समर्थहोइसकैनहीं ॥ तौ इदानींकालकेअल्पआयुषवालेपुरुष तिनसर्व वेदोंकेअध्ययनकरणेविषे किसप्रकारसमर्थहोवैंगे ॥ किंतु नहींसमर्थहोवैंगे ॥ यातैं सर्व वेदोंकाअध्यनकरणा संभवैनहीं ॥ इसप्रकार तीनपुत्रोंकीउत्पत्तिकरणेविषे तथाअनेकपुत्रोंकीउत्पत्तिकरणेविषेभी यहजीव स्वतंत्र समर्थहोइसकैनहीं ॥ किंतु तिनबहुतपुत्रोंकीउत्पत्ति पूर्वलेपुण्यकर्मरूपअदृष्टकारणोंकेअधीनहोवै है ॥ तथा स्त्रीयुवाअवस्थादिकदृष्टकारणोंकेअधीनहोवै है ॥ जोकदाचित् तिनदृष्टअदृष्टकारणोंकीअपेक्षातैंविनाही यहपुरुष तिनपुत्रोंकीउत्पत्तिविषे स्वतंत्रकारणहोवै ॥तौ यालोकविषे पुत्रकीइच्छावाला कोईभीपुरुष पुत्रोंतैंरहित नहींहोणाचाहिये ॥ और यालोकविषे पुत्रोंकेप्राप्तिकीइच्छाकरतेहुएभी अनेकपुरुष पुत्रोंतैंरहित देखणेमेंआवै हैं॥ यातैं बहुतपुत्रोंकीउत्पत्तिकरणीभी संभवैनहीं ॥ इसप्रकार तीन यज्ञोंकेकरणेविषे तथाअनेकयज्ञोंकेकरणेविषेभी यहपुरुष स्वतंत्रहोइसकैनहीं ॥ किंतु स्त्रीपुत्रधनादिकअनेकपदार्थोंकरिकै तिनयज्ञोंकीसिद्धिहोवै है ॥ यातैं बहुतयज्ञोंका करणाभी संभवैनहीं ॥ और सोमनुभगवान्कावचन जोकदाचित् ताबहुतवेदोंकेअध्ययनरूप अशक्यअर्थकूंबोधनकरैगा॥तथा बहुतपुत्रोंकीउत्पत्तिरूप अशक्यअर्थकूं बोधनकरैगा॥तथा बहुतयज्ञोंकाअनुष्ठानरूप अशक्यअर्थ बोधनकरैगा।तौ सोमनुभगवान्कावचन अप्रमाणरूपहोवैगा॥काहेतैं जोअर्थ याजीवोंकेसुखकासाधनहोवैहै

तथा याजीवोंकेप्रयत्नकरिकै प्राप्तहोणयोग्यहोवै है ॥ तथा दूसरे प्रमाणकरिकैबाधित नहींहोवै है॥ताअर्थकेबोधनकरणेकरिकैहोशास्त्रकूं प्रमाणरूपताहोवै है ॥ यातैं तामनुभगवान्कैवचनका तिसवेदअध्ययनादिरूपअर्थविषे तात्पर्यनहीं है ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती ॥ तामनु स्मृतिकेवचनकरिकै तामनुभगवान्कूं तिनवेदअध्ययनादिकोंविषेअप्राप्तअर्थकेबोधनकरणेहारी अपूर्वविधि अंगीकारनहीं है॥किंतु यालो कविषे जेपुरुष आपणेवेदकीशाखाकूंअध्ययनकरै हैं ॥ तथा पुत्रादिकप्रजाकूंउत्पन्नकरै है ॥ तथा यज्ञादिककर्मकरहै हैं ॥ तिनपुरुषों विषेही सामोक्षकीइच्छादेखणेमैं आवै है॥ और जेपुरुष वेदअध्ययनादिकनहींकरै हैं॥तिनपुरुषोंविषे सामोक्षकीइच्छाभी देखणेमैंआवती नहीं ॥ याप्रकारकेअन्वयव्यतिरेकरिकै यालोकोंकूं तिनवेदअध्ययनादिकोंविषे मोक्षकेइच्छाकीकारणताप्रसिद्धहै ॥ तालोकप्रसिद्ध कारणताकूं सोमनुभगवान्कावचन कथनकरै है॥ यातैं सोमनुभगवान्कावचन अनुवादरूपहै॥ जैसे अग्निविषे हिमकेनिवृत्तिकीकारणता सर्वलोकोंकूंप्रसिद्धहै ॥तालोकप्रसिद्धअर्थकूंकथनकरणेहारा जो अग्निर्हिमस्यभेषजं यहवचन है ॥ सोयहवचन अनुवादरूपहै तैसे सोमनु भगवान्कावचनभी अनुवादरूपहै ॥ अपूर्वविधिरूपनहीं ॥समाधान॥ हेवादी॥ जिसअन्वयव्यतिरेकका किसीभीस्थलविषे व्यभिचारन हींहोवै है ॥ सोअन्वयव्यतिरेकही कारणताकीसिद्धिकरै है ॥ जैसे मृत्तिका कुलाल दंडादिकोंकेविद्यमानहुए घटरूपकार्यकीउत्पत्ति और मृत्तिकादिकोंकेअभावहुए ताघटरूपकार्यकीअनुमति याप्रकारके अन्वयव्यतिरेकका किसीभीस्थलविषे व्यभिचारहोवैनहीं ॥ याकारणतैं सोअन्वयव्यतिरेक मृत्तिकादिकोंविषे घटकेकारणताकूंसिद्धकरै है ॥ और जिसअन्वयव्यतिरेककाकिसीभीस्थलविषे व्यभिचारहोवै है ॥ सो अन्वयव्यतिरेक कारणताकीसिद्धिकरिसकैनहीं ॥ जैसे ताकुलालकेगृहविषेस्थितजोताकुलालकीस्त्री है तथारासभहै तिनदोनोंकेविद्यमानहुएभी ताघटरूपकार्यकीउत्पत्तिहोवै है ॥ और तिनदोनोंके नहींविद्यमानहुएभी ताघटरूपकार्य कीउत्पत्तिहोवै है ॥ यातैं ताकुलालकेस्त्रीका तथारासभका जो घटकेप्रति अन्वयव्यतिरेकहै सोव्यभिचारीहै ॥ ताव्यभिचारी अन्वयव्यतिरेककरिकै ताकुलालकीस्त्रीविषे तथारासभविषे घटकीकारणतासिद्धहोवैनहीं ॥ किंतु उलटा तिनोंविषे घटकेकारणताका

बाधहीहोवै है ॥ तैसे इहांप्रसंगविषे वेदअध्ययनादिकोंविषे मोक्षइच्छाकेकारणताकी सिद्धिकरणेवासतैं जो अन्वयव्यतिरेक तुमनें कथन कऱ्या है ॥ सो अन्वयव्यतिरेकभी व्यभिचारीहै ॥ काहेतैं यालोकविषे वेदकेअध्ययनकरणेहारे तथातीनपुत्रोंवाले तथातीनयज्ञोंवाले बहुतब्राह्मण देखणेमैं आवतैंहैं ॥ परंतु तिनब्राह्मणोंविषे मोक्षकी इच्छा देखणेमैंआवतीनहीं॥ उलटा बहुत स्थलविषेतौ तेवेदअध्ययनक रणेहारे तथाबहुतपुत्रोंवाले तथाबहुतयज्ञकरणेहारे ब्राह्मण संसारसुखोंविषेआसक्तहुए तामोक्षतैंबहिर्मुखहुएही देखणेमैं आवै हैं ॥ यातैं ताव्यभिचारीअन्वयव्यतिरेककरिकै तिनवेदअध्ययनादिकोंविषे मोक्षइच्छाकीकारणता सिद्धहोवैनहीं ॥ यातैं सोमनुभगवान्कावचन अनुवादरूपसंभवैनहीं ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती॥तामनुस्मृतिकेवचनकरिकै तामनुभगवान्नैं नियमविधि कथनकरीहै ॥ अथवा परिसंख्या विधि कथनकरीहै॥समाधान॥हेवादी॥तामनुभगवान्केवचनविषे नियमविधिरूपता तथापरिसंख्याविधिरूपताभी संभवैनहीं काहेतैं जिस स्थलविषे क्रमते दोपदार्थप्राप्तहोवैहैं तिसस्थलविषे जोवचन एकपदार्थकीनिवृत्तिकरिकै एकपदार्थकाविधानकरैहै तावचनकानाम नियम विधिहै ॥ जैसे यज्ञकीअग्निविषे तुषोंतैंरहितव्रीहिरूपअन्नकी आहुती दईजावै है ॥ तहां तिनव्रीहिरूपअन्नके तुषोंकीनिवृत्ति लोकविषे दोप्रकारकेउपायोंतैं होवै है॥तहां एकतौ नखोंकरिकैहोवैहै ॥ और दूसरा मुसलकरिकैकूटणेतैंहोवै है॥तिनदोनोंउपायोंविषे किसउपायक रिकै तिनव्रीहिकेतुषोंकीनिवृत्तिकरणी ॥ याप्रकारकीशंकाकेहुए श्रुतिनैं॥ व्रीहीनऽवहन्यात् ॥ यावचनकरिकै मुषलसैंव्रीहियोंकाकूटणा विधानकऱ्या ॥ और नखोंतैंतुषोंकीनिवृत्तिकरणेका निवारणकऱ्या ॥ याकारणतैं ॥ व्रीहीनऽवहन्यात्॥यहवचन नियमविधिरूपहै॥तैसे तामनुभगवान्केवचनकूं जोनियमविधिरूप अंगीकारकरिये॥तौएकपक्षविषेतौमोक्षकीइच्छा प्राप्तभई॥ और दूसरेपक्षविषे वेदोंकाअध्ययन पुत्रोंकीउत्पत्ति यज्ञोंकाअनुष्ठान यहतीनोंप्राप्तभये तहां वेदअध्ययनादिकतीनोंतैं पूर्वप्राप्तभईजामोक्षकीइच्छातामोक्षकीइच्छाकानिरोध करिकैयहअधिकारीपुरुष वेदअध्ययनादिकतीनोंकूंकरै याप्रकारका तामनुकेवचनकाअर्थ सिद्धहोवैगा॥सोनियमविधिरूपतावचनकाअर्थ तभीसंभवै॥ जभी तामोक्षकीइच्छाकीनिवृत्तिकरणेविषे यापुरुषकीस्वतंत्रताहोवै॥ परंतु ताइच्छाकेनिवृत्तकरणेविषे यापुरुषकीस्वतंत्रता

नहीं है ॥ यातैं मोक्षरूपसुखके सौंदर्यताज्ञानकरिकै याजीवोंविषे उत्पन्नभईजामोक्षकीइच्छाहै॥ ताइच्छाकोनिवृत्तकरणेविषे कोईभीजीव समर्थहोइसकैनहीं ॥ तैसे बहुतवेदोंकेअध्ययनकरणेविषे तथाबहुतपुत्रोंकीउत्पत्तिकरणेविषे तथाबहुतयज्ञोंकेअनुष्ठानकरणेविषेभी यहजीव स्वतंत्र समर्थहोइसकैनहीं ॥ यातैं तामनुभगवान्केवचनविषे नियमविधिरूपता संभवैनहीं ॥ तैसे तामनुभगवान्केवचनाविषे परिसंख्याविधिरूपताभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं जिसस्थलविषे एकहीकालमैं दोपदार्थ प्राप्तहोवैहैं ॥ तिसस्थलविषे जोवचन एकपदार्थके निवृत्तिकूंहीबोधनकरैहै ॥ सोवचन परिसंख्याविधिरूपहोवैहै ॥जैसे एकहीकालविषे रागकरिकै याजीवोंकूं प्राप्तभयाजो शशक शल्लकी गोधा खडगी कूर्म यापंचनखवालेपंचजीवोंकाभक्षण तथा मनुष्यवानरादिकपंचनखवालेजीवोंकाभक्षण तिनदोनोंविषे ॥ पंचपंचनखाभक्ष्याः॥यहश्रुतिवचन पंचनखोंवाले शशकादिकपंचजीवोंतैंभिन्न मनुष्यवानरादिकजीवोंकेभक्षणकीनिवृत्तिबोधनकरैहै यातैं पंचपंचनखाभक्ष्याः॥यहवचन परिसंख्याविधिरूपहै॥तैसे इहांप्रसंगविषे वेदोंकाअध्ययन पुत्रोंकीउत्पत्तियज्ञोंकाअनुष्ठानयहतीनोंतैं एककोटीहै और मोक्षकीइच्छा दूसरीकोटीहै ॥ तेदोनोंकोटी जभी यापुरुषोंविषे प्राप्तहोवैं॥तभी यापुरुषोंनै वेदअध्ययनादिकोंकूंहीकरणा॥याप्रकार तामनुभगवान्केवचनका विपरिणामकरिकै जभी तामोक्षकेइच्छाका निवारणकरिये ॥ तभीही सोमनुभगवान्कावचन परिसंख्याविधिरूप संभवै॥और तामनुभगवान्केवचनकूं परिसंख्याविधिरूपमानिकै जोमोक्षकेइच्छाका निवारणकरिये॥तौ तामोक्षकीप्राप्तिवासतै किसीभी पुरुषविषे परियत्न नहींहोणाचाहिये॥और मोक्षकेप्राप्तिवासतै परियत्न तथामोक्षकीइच्छा कितनेकीअधिकारीपुरुषोंविषे देखणेमैंआवै है तथा तामनुभगवान्नैंही मनुस्मृतिकेषष्टेअध्यायविषे मोक्षधर्मोंका कथनकऱ्याहै॥यातैं सोमनुभगवान्कावचन परिसंख्याविधिरूप संभवैनहीं ॥किंवा॥सोमनुभगवान्कावचन जोकदाचित् मोक्षकेइच्छाकीनिवृत्तिकरताहोवै॥तौ वेदोंकाअध्ययन पुत्रोंकीउत्पत्ति यज्ञोंकाअनुष्ठान यातीनोंकूंकरिकै यहअधिकारीपुरुषमोक्षकीइच्छाकरै याप्रकारकेवचननैंजोवेदअध्ययनादिकोंतैंअनंतर मोक्षकेइच्छाकाकथनकऱ्याहै सोअसंगतहोवैगा॥याकारणतैंभी सोमनुभगवान्कावचन परिसंख्याविधिरूपनहींहै॥किंवा॥वेदअध्ययनादिकोंतैंपूर्वजोपुरुष मोक्षकीइच्छा

करैहै॥सोपुरुष अधोगतिकूंप्राप्तहोवैहै॥याप्रकारका तामनुभगवान्केवचनका अर्थ सोपूर्वपादीनैं कथनकऱ्याथा ॥ सोअर्थप्रत्यक्षश्रुतिकरिकैबाधितहै ॥ काहेतैं श्रुतिभगवतीनै तौ मोक्षकीप्राप्तिवासतै ब्रह्मचर्यआश्रमतैंअनंतरभी संन्यासकाविधानकऱ्याहै ॥तहांश्रुति॥यदिवेतर थाब्रह्मचर्यादेवप्रव्रजेत् ॥ अर्थयह ॥ जिसपुरुषकूंविषयोंविषे उत्कटवैराग्यनहींहै ॥ सोपुरुषतौ ब्रह्मचर्यआश्रमतैं अनंतर गृहस्थआश्रमकूंग्रहणकरै औरतागृहस्थआश्रमतैंअनंतर वानप्रस्थआश्रमकूंग्रहणकरै ॥ औरतावानप्रस्थआश्रमतैंअनंतर चतुर्थअवस्थाविषेसंन्यासआश्रमकाग्रहणकरै॥ औरजिसपुरुषकूंविषयोंविषे उत्कटवैराग्यहै॥सोपुरुष तामोक्षकीप्राप्तिवासतै ब्रह्मचर्यआश्रमतैंअनंतरहीं संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरै ॥ १ ॥ इत्यादिकश्रुतिवचनोंकरिकै सोमनुकेवचनकाअर्थबाधितहै ॥ यातैं सोमनुभगवान्कावचन विधिरूपनहींहै ॥ किंतु अज्ञानीजनोंकीकर्मोंविषेप्रवृत्तिकरावणेवासतै तिनकर्मोंकीस्तुतीकरताहुआ सोमनुभगवान्कावचन अर्थवादरूपहै ॥शंका॥हेसिद्धांतियो सोमनुभगवान्कावचन तामोक्षइच्छाकोनिषेधकूंसूचनकरैनहीं ॥ किंतु सोमनुभगवान्कावचन तामोक्षइच्छाकेअभावका विधानकरैहै ॥ जैसे ॥ न कलंजं भक्षयेत् ॥ यहवचनप्राभाकरमीमांसकोंकेमतविषे कलंजभक्षणकेअभावकाविधानकरैहै॥ तैसेसोमनुभगवान्कावचनभी मोक्षइच्छाकेअभावकाहीविधानकरैहै॥विषययुक्तबाणकरिकैहननकऱ्याजोमृगहै॥तामृगकेमांसकानामकलंजहै॥समाधान॥हेवादी॥ मोक्षकीइच्छाकाजोअभावहै ॥ सोअभावविधानकरणेयोग्यहोवैनहीं ॥ काहेतैं ॥स्वर्गकामोयजेत॥ इत्यादिकवेदकेवचनयज्ञादिकभावपदार्थोंकाहीविधानकरैहै॥अभावकूंकोईभीवचन विधानकरैनहीं॥ औरजोवादी तामनुभगवान्केवचनकरिकै मोक्षइच्छाकेअभावकाविधान अंगीकारकरैहै ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ सोमनुभगवान्कावचन तामोक्षइच्छाकेप्रागभावका विधानकरैहै ॥ अथवा तामोक्षइच्छाकेअत्यंताभावकाविधानकरैहै ॥ अथवा तामोक्षइच्छाकेअन्योन्याभावका विधानकरैहै ॥ अथवा तामोक्षइच्छाकेप्रध्वंसाभावका विधानकरैहै ॥ तहाँसोमनुभगवान्कावचन तामोक्षइच्छाकेप्रागभावका तथाअत्यंताभावका तथाअन्योन्याभावकाविधानकरैहै ॥ यहतीनपक्षतौसंभवैनहीं॥काहेतैंजोपदार्थपूर्व किसीप्रमाणकरिकैसिद्धनहींहोवैहै ॥ तापदार्थकाहीशास्त्र विधानकरैहै॥ पूर्वसिद्धपदार्थका कोईभीशास्त्रविधान

करैनहीं॥ और नैयायिकवादियोंकेमतविषेप्रागभावतौ उत्पत्तितैंरहितअनादिहै ॥ तथा प्रतियोगीकीउत्पत्तितैंअनंतर सोप्रागभावनाशकूं प्राप्तहोवैहै ॥ यातैंताअनादिप्रागभावका विधानसंभवैनहीं॥ और तिनवादियोंकेमतविषे अत्यंताभावतथाअन्योन्याभाव यहदोनोंअभाव तौ उत्पत्तिनाश दोनोंतैंरहितहै॥ यातैं तिनोंकाभीविधानसंभवैनहीं ॥शंका॥हेसिद्धांती॥ ताप्रागभावकीयद्यपि उत्पत्तिसंभवैनहीं॥तथापि ताप्रागभावका नाशहोवैहै॥यातैं जैसे ॥ब्राह्मणोनहंतव्यः॥यहश्रुतिवचन ताब्रह्महत्याकेप्रागभावकेरक्षणकरनेकाविधानकरैहै॥ तैसेसोमनु भगवान्कावचनभी तामोक्षइच्छाकेप्रागभावकेरक्षणकरणेका विधानकरैहै ॥ समाधान ॥ हेवादी ॥ जैसे शास्त्रनैं ब्रह्महत्याकरणेका निषेधकऱ्याहै ॥ तैसेजोकोईशास्त्र तामोक्षइच्छाकानिषेधकरताहोवै॥ तौसोमनुभगवान्कावचन तामोक्षइच्छाकेप्रागभावकाविधानकरै॥ परंतु तामोक्षइच्छाकोनिषेधकरणेहारा कोईभीशास्त्रदेखीतानहीं ॥ किंतुउलटाशास्त्रतौ मोक्षकीइच्छावान्पुरुषकूंमहान्फलकीप्राप्तिकथन करैहै ॥ तहांश्रुति॥ क्षणमेकंकृतुशतस्य॥अर्थयह॥जोपुरुष मोक्षकेप्राप्तिकीइच्छाराखिकेएकक्षणमात्रभी आत्मविचारकरैहै॥तिसपुरुषकूं १००शतअश्वमेधयज्ञोंकाफलप्राप्तहोवैहै ॥ १ ॥ इसतैंआदिलैकेअनेकश्रुतिवचन तामोक्षइच्छाकेमहान्फलकाकथनकरैहैं ॥ यातैं ता मोक्षकीइच्छाकेप्रागभावकेरक्षणकरणेकाभीविधानसंभवैनहीं॥ औरसोमनुभगवान्कावचन तामोक्षइच्छाकेप्रध्वंसाभावका विधानकरैहै॥ यहचतुर्थपक्ष जोवादीअंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं यालोकविषे जोपदार्थ स्वतःसिद्धनहींहोवैहै ॥ तापदार्थकाही शास्त्रविधान करैहै ॥ और जोपदार्थ स्वतःहीसिद्धहोवैहै ॥ तापदार्थका शास्त्र विधानकरैनहीं ॥ जैसे यालोकविषे अन्नकेभक्षणतैं क्षुधाकीनिवृत्ति स्वतःहीसिद्धहै ॥ यातैं ताअन्नकेभक्षणकरिकैक्षुधाकेनिवृत्तिकरणेका कोईशास्त्रविधानकरैनहीं ॥ तैसेयहमोक्षकीइच्छाभी क्षणभंगुर है यातैं ताइच्छाकाप्रध्वंसाभावभी स्वतःहीसिद्धहै ॥ तास्वतःसिद्धइच्छाके प्रध्वंसाभावकूं जोकदाचित् सोमनुभगवान्कावचन विधान करैगा ॥ तौ सोमनुभगवान्कावचन अप्रमाणरूपहीहोवैगा ॥ किंवा ॥ सोमनुभगवान्कावचन जोकदाचित् तामोक्षइच्छाके प्रध्वंसाभावका विधानकरैगा ॥ तौ सोमनुभगवान्कावचन व्यर्थहोवैगा ॥ काहेतैं यालोकविषे जिसपुरुषका जिसवस्तु

विषे जबपर्यंत सौंदर्यताज्ञान बनारहैहै ॥ तिसपुरुषकी तिसवस्तुविषे तबपर्यंत एकइच्छाकेनाशहुएभी पुनःदूसरीइच्छा उत्पन्नहोवै है ॥ तैसे मोक्षरूपनित्यसुखकीसौंदर्यताभी यालोकविषे तथावेदविषे प्रसिद्धहीहै ॥ यातैं एकमोक्षइच्छाकेनाशहुएभी याजीवोंकूं तासौंदर्यताज्ञानकरिके पुनःदूसरीमोक्षइच्छाहोवैगी ॥ यातैं तामोक्षइच्छाकेप्रध्वंसाभावकेविधाननकरणेविषे तामनुभगवान्का तात्पर्यन हीं है॥किंतु विषयोंविषेआसक्तपुरुषोंका कर्मोंविषेअधिकारदेखिकै तामनुभगवान्नैं तिनविषयआसक्तपुरुषोंकूं कर्मोंविषेप्रवृत्तकरणेवासतै मोक्षकीनिंदाद्वारा तिनकर्मोंकीस्तुतिकरीहै ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती ॥ तामनुभगवान्केवचनका मोक्षइच्छाकेनिषेधविषे तात्पर्यनहीं है॥यह अर्थ तुमोनैंकिसप्रकारजान्याहै ॥ समाधान ॥ हेवादी तामनुभगवान्केवचनतैंही सोअर्थ हमोनैं निश्चयकऱ्याहै ॥काहेतैं तामनुस्मृतिके द्वादशेअध्यायविषे तामनुभगवान्नैं यहवचनकह्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ सर्वभूतेषुचात्मानं सर्वभूतानिचात्मनि॥पश्यन्नात्मतयाजीवः स्वारा ज्यमधिगच्छति ॥ अर्थयह ॥ जोअधिकारीपुरुष याआत्मादेवकूं सर्वभूतोंविषे कारणरूपतैंअनुगत देखै है ॥ तथा तिनसर्वभूतोंका याअ धिष्ठानआत्माविषे कल्पितदेखै है॥सोअधिकारीपुरुष ब्रह्मानंदरूपस्वाराज्यकूं आपणाआत्मारूपकरिकैप्राप्तहोवै है।१।याप्रकारकेवचनोंकूं कथनकरताहुआ सोसर्ववेदांतकेअर्थकूंजानणेहारा सर्वज्ञमनुभगवान्तामुमुक्षुजनोंकूंमोक्षकीइच्छातैंनिवारण किसप्रकारकरैगा॥किंतु॥नहीं निवारण करैगा यातैं मोक्षकीनिंदाविषे तामनुभगवान्का तात्पर्यनहींहै॥किन्तुकर्मोंकीस्तुतिविषे तामनुभगवान्कातात्पर्य है॥तामनुभग वान्केतात्पर्यकूंनजाणिकरिकैतेविषयासक्तपुरुष तामनुभगवान्केवचनकूं मोक्षकीनिंदाविषेजोडैहैं॥ताकरिकैतेबहिर्मुखपुरुष केवलआपणी मूर्खताकूंहीं बोधनकरैहैं॥किंवा॥यहपुरुष जभी सर्वविषयोंकेभोगकरिकै वैराग्यकूंप्राप्तहोवैहै॥तभीही यहपुरुष मोक्षकूंप्राप्तहोवैहै॥याप्रका रकावचन जोपूर्व तिनविषयासक्तपुरुषोंनैं कथनकऱ्याथा ॥ सोतिनोंकाकहणाकैसाहै ॥ जैसे सन्निपातरोगकेवशतैं यहपुरुष अनेकप्रका रकेशब्दोंका उच्चारणकरैहै ॥ तैसेकामरूपअग्निकेतापकरिकै उत्पन्नभई जा धातुवोंकी विषमता ताविषमतारूपदोषकेवशतैं सोति नोंकाकहणाहै ॥ यातैं सन्निपातरोगवालेपुरुषकेवचनकीन्याईं सोतिनोंकावचन बुद्धिमान्पुरुषोंकूंग्रहणकरणेयोग्यनहीं है ॥ किंवा ॥

सर्वविषयोंकेभोगतैंअनंतर तिनविषयोंविषेवैराग्यकरिकै याजीवोंकूं मोक्षकीप्राप्तिहोवैहै ॥ याप्रकारकाअर्थ जोअंगीकारकरिये ॥ तौ यालो
कविषे किसीभीजीवकूं तामोक्षकीप्राप्ति नहींहोणीचाहिये ॥ काहेतैं प्रथमतौ मनुष्यादिकजीवोंकी चौराशीलक्षयोनियां हैं॥ और तिनचौ
राशीलक्षयोनियोंविषेभी एकएकयोनिविषे अनंतव्यक्तियां हैं ॥ और तिनअनंतव्यक्तियोंविषेभी एकएकव्यक्तिविषे आपणीआपणी
रुचिकेभेदकरिकै अनेकविषयप्राप्तहैं॥ तिनसर्वविषयोंकी एकमनुष्यशरीरविषेप्राप्तिहोणी अत्यंतदुर्लभहै॥ यातैं मोक्षकेकथनकरणेहाराशा
स्त्रअप्रमाणरूपहोवैगा ॥ किंवा ॥ सर्वविषयोंकेभोगतैंअनंतर जोमोक्षकीप्राप्तिअंगीकारकरिये ॥ तौ नरकविषेभी अनेकप्रकारकेविषयहैं ॥
यातैं सोमोक्षकीइच्छावालापुरुष तिनविषयोंकेभोगवासतैं नरकविषेभीप्राप्तहोवैगा॥ और कंटकोंकेभक्षणतैंजोस्वादप्राप्तहोवैहै॥सोउष्ट्रजाति
विषेही प्राप्तहोवैहै॥ यातैं कंटकोंकेभक्षणजन्यस्वादकीप्राप्तिवासतैंसोमोक्षकीइच्छावालापुरुष उष्ट्रशरीरकूंभी प्राप्तहोवैगा॥इसप्रकारतिसतिस
जातिकेविषयभोगवासतैं सोमुमुक्षुजन तिसतिसजातिवालेशरीरकूंप्राप्तहोवैगा॥किंवा॥स्वर्गादिकलोकोंविषेस्थितजेदुर्लभविषयहैं॥जेविषय
अनेकयज्ञोंकरिकेभीप्राप्तहोइसकैनहीं ॥तिनसर्वविषयोंकूं कौनपुरुष प्राप्तहोइसकैगा॥किंतु तिनसर्वविषयोंकीप्राप्तिविषे कोईभीपुरुष समर्थ
नहींहै शंका॥हेसिद्धांती यहअधिकारीपुरुष जभीउपासनाकरिकैहिरण्यगर्भभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ तभीयहअधिकारीपुरुषकूं सर्वविषयभोगोंकी
प्राप्तिहोवै है ॥ तहां सोअधिकारीपुरुष आपणेतैंभिन्न किसीभीभोग्यपदार्थकूंदेखतानहीं॥ यातैं तिनसर्वविषयोंकेभोगअर्थहमअधिकारीज
न ताहिरण्यगर्भभावकीप्राप्तिवासतैंही प्रयत्नकरैंगे ॥ समाधान ॥ हेवादी ताहिरण्यगर्भभावकीप्राप्तिविषे याजीवोंकूं अनेकप्रकारकेविघ्न
होवै हैं ॥ यातैं नानाप्रकारकेउपायोंकरिकै ताहिरण्यगर्भभावकीप्राप्तिही प्रथम दुर्लभहै ॥ ऐसेदुर्लभहिरण्यगर्भभावकी प्रतीक्षाकरिकै
जोपुरुष याअधिकारीमनुष्यशरीरविषे मोक्षकेप्रयत्नतैंरहितहोवै है ॥ सोअधिकारीपुरुष सर्वबुद्धिमान्पुरुषोंकेउपहास्यका विषयहोवै है ॥
जैसे गृहकेसमीपस्थितमधुका परित्यागकरिकै जोमूढबुद्धिपुरुष तामधुकीप्राप्तिवासते पर्वतऊपरजावै है ॥ सोमूढबुद्धिपुरुष सर्व
लोकोंकेउपहास्यकाविषयहोवै है ॥ किंवा ॥जोपुरुष अहंगृहउपासनाकरिकै तात्रह्मलोककूंप्राप्तहोवै है॥तिसपुरुषकूं तहां मोक्षकीप्राप्तितौ

अवश्यकरिकैहोवैहै ॥ यातैं तामोक्षकेअधिकारीकावर्णनकरताहुआ यहमोक्षशास्त्र निष्प्रयोजनतारूपअप्रमाणताकूं प्राप्तहोवैगा ॥ और
मोक्षशास्त्रविषे अप्रामाणताकथनकरणी अत्यंतअनुचितहै॥ यातैं सर्वविषयोंकेभोगतैंअनंतरही मोक्षकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यहतिनवादियोंका
कहणा अत्यंतविरुद्धहै ॥ किंवा ॥ विषयोंकेभोगतैं कामकीशांतिहोवैहै यहजोपूर्व तिनवादियोंनैं कथनकऱ्याथा ॥ सोतिनोंकाकहणाभी
इतिहासपुराणादिकशास्त्रोंकेनजानणेकरिकैहै ॥ काहेतैं तिनशास्त्रोंविषेतौ यहकथनकऱ्याहै ॥ बहुतविषयोंकेभोगकरिकै यहकाम शांत
कूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु उलटा तिनविषयोंकेभोगतैं सोकाम पूर्वतैंभीअधिकवृद्धिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ जैसे यालोकविषे घृतकाष्ठोंकेपावणेक
रिकै यहअग्नि शांतिकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु उलटा तिनघृतकाष्ठोंकेपावणेकरिकै सोअग्नि पूर्वतैंभीअधिकवृद्धिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे बहुत
विषयोंकेभोगणेकरिकै यहकाम शांतिकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु उलटा तिनबहुतविषयोंकेभोगकरिकै सोकाम पूर्वतैंभीअधिकवृद्धिकूंप्राप्त
होवैहै ॥ किंवा ॥ यापृथ्वीविषे जितनेकीव्रीहियवादिकअन्नहैं ॥ तथा जितनेकीसुवर्णादिकधनहैं ॥ तथा जितनेकीगौअश्वादिकपशु हैं ॥
तेसंपूर्णअन्नादिकपदार्थ जोकदाचित् किसीकामनावालेएकपुरुषकूंभीप्राप्तहोवैं ॥ तौभी ताकामनावालेपुरुषकेतृप्तिकरणेविषे तेसंपूर्णअ
न्नादिकपदार्थ समर्थहोइसकैनहीं ॥ तौ अल्पपदार्थोंकरिकै याजीवोंकेकामकीनिवृत्ति किसप्रकारहोवैगी॥ किंतु नहींहोवैगी ॥ यातैं बहुत
विषयोंकाभोग यापुरुषोंकेवैराग्यकाकारणनहीं है ॥ किंतु उलटा सोबहुतविषयोंकाभोग यापुरुषोंकेरागकाहीकारणहै ॥ यातैं तिनविषया
सक्तपुरुषोंनैं जोपूर्वयहकह्याथा ॥ यहअधिकारीपुरुष प्रथमधर्मकूंकरैहै ॥ ताधर्म तैं धनादिरूपअर्थकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ताधनादिरूपअर्थतैं
विषयभोगरूपकामकूंप्राप्तहोवै है ॥ ताविषयभोगरूपकामतैंअनंतर वैराग्यकूंप्राप्तहोइकै आत्मज्ञानद्वारा मोक्षकूंप्राप्तहोवैहै ॥ सोयाप्रकार
कावचन तिनकामीपुरुषोंनैं किसीशास्त्रप्रमाणकेअनुसार नहींकथनकऱ्याहै॥ किंतु आपणेव्यामोहकेअनुसारही सोवचन तिनोंनैं कथन
कऱ्याहै ॥ यातैं तिनविषयआसक्तपुरुषोंका सोवचन बुद्धिमान्पुरुषोंनैं कदाचित्भी अंगीकारनहींकरणा ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ विषय
भोगकीप्राप्ति जोतारागकेनिवृत्तिकाकारणनहींहै॥तौतारागकेनिवृत्तिका दूसराकौनकारणहै॥समाधान॥हेशिष्य॥पुत्रस्त्रीधनादिकपदार्थों

विषे जोवारंवार दोषोंकादर्शनहै सोएकदोषदर्शनहीं यारागकेनिवृत्तिकाउपायहै ॥ तादोषदर्शनतैंविना दूसराकोईउपायतारागकेनिवृ
त्तिकाहैनहीं ॥ हेशिष्य ॥ याआत्मपुराणकेप्रथमअध्यायविषे वामदेवादिकअधिकारियोंकेसंवादविषे सोविषयोंकेदोषदर्शनकाप्रकार हम
तुमारेप्रति विस्तारतैंकथनकरिआयेहैं ॥ तथा याआत्मपुराणकेचतुर्थअध्यायविषेभी दृध्यङ्अथर्वणइंद्रकेसंवादविषे सोविषयोंकेदोषद
र्शनकाप्रकार हम तुमारेप्रति विस्तारतैंकथनकरिआये हैं ॥ यात पुनःइहांकहणेका यद्यपि जरूरनहीं है ॥ तथापि ताकेस्मरणकरावणे
वासतै पुनःसंक्षेपत तांविषयोंकेदोषदर्शनकाप्रकार हम तुमारेप्रति कथनकरते हैं ॥ तूं सावधानहोइकैश्रवणकर ॥ हेशिष्य ॥ यामनुष्य
लोकतैंलेके ब्रह्मलोकपर्यंत सर्वलोकोंविषेस्थित जितनेकीविषयहैं ॥ तेसंपूर्णविषय अनात्मारूपहैं॥ तथा नाशवानहैं ॥ तथा परिणामका
लविषे दुःखकेकारणहैं ॥ तथा पराधीनहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ यहपुरुष सर्वदाऐसीइच्छाकरै है॥ जोयहधनादिकपदार्थ हमारेसमीप सर्वदाब
नेरहैं ॥ कदाचित्भी इनधनादिकपदार्थोंकानाश नहींहोवै ॥ तौभी यहधनादिकपदार्थ नाशहोइजावैहैं ॥ यातैं यहजान्याजावै है ॥यहध
नादिकपदार्थ पराधीनहैं ॥ यापुरुषकेस्वाधीननहीं हैं ॥ और हेशिष्य ॥ ब्रह्मलोकविषेस्थित जो ब्रह्माहै ॥ तथा याभूमिलोकविषेस्थित
जोश्वानादिकपशुहैं ॥ तथा नरकविषेस्थित जेनीचजीवहैं ॥ तिनसंपूर्णजीवोंकूं स्त्रीआदिकविषयोंकेभोग समानहीप्राप्तहैं तिनविषयभो
गोंविषे किंचित्मात्रभी विलक्षणतानहा है ॥ और यहहमारेविषयभोग सर्वविषयभोगोंतैं उत्कृष्टहैं याप्रकारकीविलक्षणता जोलोकोंकूं
आपणेआपणेविषयभोगोंविषे प्रतीतहोवैहै ॥ सोकेवल अहंममअभिमानकेवशतैं प्रतीतहोवै है ॥ और हेशिष्य ॥ जैसेयाभूमिलोकविषे
स्थित श्वानकाशरीर आकाशादिकपंचभूतोंकरिकैरचितहै ॥ तैसे ब्रह्मलोकविषेस्थित ब्रह्माकाशरीरभी तिनपंचभूतोंकरिकैहीरचितहै ॥
और जैसे याभूमिलोकविषे श्वानका जन्महोवैहै तथामृत्युहोवैहै ॥ तैसे ब्रह्मलोकविषेभी ताब्रह्मका जन्महोवैहै तथामृत्युहोवै है ॥ और
जैसे याशरीरकेसंबंधतैं श्वानकूं दुःखकीप्राप्तिहोवैहै॥तैसे शरीरकेसंबंधतैं ताब्रह्माकूंभी दुःखकीप्राप्तिहोवैहै॥हेशिष्य ॥ यहसंपूर्णविषय
भोग याजीवोंकेदुःखकाहीकारणहै ॥ यहवार्त्ता केवलहम नहींकहते ॥ किंतु संपूर्णब्रह्मवेत्तापुरुषोंका यहहीअभिप्रायहै ॥ या कारणतैंही

याज्ञवल्क्यादिकब्रह्मवेत्तापुरुष तिनविषयोंविषे अनेकप्रकारकेदोषोंकाविचारकरिकै तिनसर्वविषयोंकापरित्यागकरते भयेहैं।यातैं हेशिष्य॥
सापुत्रादिकप्रजाकीउत्पत्ति रागकीउत्पत्तिद्वारा संसारकाहेतुहोणेतैं यद्यपि ताब्रह्मसाक्षात्कारकाहेतुनहीं है ॥ तथापिश्रुतिभगवतीनैं
जोब्रह्मसाक्षात्कारकेसत्यादिकसाधनोंविषे तापुत्रादिकप्रजाकेउत्पत्तिका कथनकऱ्याहै॥सो सकामपुरुषोंके स्वर्गादिकसुखवासतै कथनक
ऱ्याहै॥तात्पर्ययह॥जैसे पुत्रादिकप्रजाकीउत्पत्ति याजीवोंके संसारसंबंधीसुखकाकारणहोवैहै ॥ तसे सत्यादिकसाधनभी याअधिकारीपुरु
षोंके ब्रह्मसाक्षात्कारके हेतुहोवैहैं॥याप्रकार दृष्टांतकेबोधनकरणेवासतै ताश्रुतिनैं ज्ञानकेसत्यादिकसाधनोंविषे तापुत्रादिकप्रजाकेउत्पत्ति
का कथनकऱ्याहै॥किंवा॥यालोकविषे जोपदार्थ याजीवोंकूं रागकरिकैप्राप्तनहींहोवैहै॥तिसीपदार्थका शास्त्र विधानकरैहै॥और जोपदार्थ
याजीवोंकूं रागकरिकैप्राप्तहोवैहै॥तापदार्थका शास्त्र विधानकरैनहीं जैसेयालोकविषे भोजननिद्रादिकपदार्थ याजीवोंकूं रागकरिकैहीप्राप्त
हैं॥ यातैं तिनभोजननिद्रादिकपदार्थोंका शास्त्र विधानकरैनहीं॥ तैसे मनुष्य पशु पक्षी तैंआदिलैके सर्वजीवोंकूं पुत्रादिकप्रजाकीउत्पत्ति
रागकरिकैहीप्राप्तहै ॥ यातैं तारागप्राप्तपुत्रादिकोंकेउत्पत्तिकूं साश्रुतिभगवती विधानकरैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् याअधिकारीपुरुषोंके
प्रति मोक्षकीप्राप्तिवासतैश्रुतिनैं कथनकरेजेसत्यादिकधर्म हैं॥तिनसत्यादिकधर्मोंकेमध्यविषे रागकरिकैप्राप्त तथामोक्षविषेअनुपयोगी पुत्रा
दिकप्रजाकेउत्पत्तिकाकथनकरणा अत्यंतअसंगतहै॥ समाधान ॥हेशिष्य॥ मोक्षकीप्राप्तिवासतै सत्यादिकसाधनोंकाविधानकरणेहारीजा
श्रुतिहै ॥ ताश्रुतिविषेस्थित जोप्रजननशब्द है ॥ सोप्रजननशब्दभी सत्यादिकशब्दोंकीन्याईं आपणेअर्थकाविधानहीकरै है॥यहतुमारा
कहणा हमअंगीकारकरै हैं ॥ परंतुताप्रजननशब्दका पुत्रादिकप्रजाकीउत्पत्तिरूप अर्थनहीं है ॥ किंतु विद्याका अध्यापनही ताप्रजन
नशब्दकाअर्थ है ॥ काहेतैं यालोकविषे दोप्रकारकावंशहोवै है॥तहां एकतौ शिष्योंकेप्रति विद्याअध्यापनकरिकैवंशहोवै है॥और दूसरा
पुत्रादिकोंके जन्म करिकैवंशहोवै है॥यातैं यालोकप्रसिद्धितैं ताप्रजननशब्दकरिकै विद्याकाअध्यापनहीग्रहणकरणा॥शंका॥हेभगवन् ॥
सोप्रजनन शब्द जैसे पुत्रादिकप्रजाकेउत्पत्तिकाविधान नहींकरैहै॥तैसे सोप्रजननशब्द विद्याअध्यापनकाभी विधानकरैनहीं॥काहेतैं जोप

दार्थ रागकरिकै तथाप्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकै नहींप्राप्तहोवै है ॥ सोपदार्थही शास्त्रकरिकै विधानकरणेयोग्यहोवैहै॥ और जोपदार्थ पूर्व रागकरिकै तथाप्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकैप्राप्तहोवै है ॥ सोपदार्थ शास्त्रकरिकै विधानकरणेयोग्यहोवेनहीं ॥ जैसे क्षुधाकीनिवृत्तिवासतें अन्नादिकोंकाभक्षण रागकरिकै तथाप्रत्यक्षादिप्रमाणोंकरिकै प्राप्तहै।यातैं क्षुधाकेनिवृत्तिवासतै अन्नकेभक्षणका कोईशास्त्र विधानकरैनहीं तैसे यहविद्याकाअध्यापनभी जीविकाकेवासतै ब्राह्मणोंकूं रागकरिकैहीप्राप्तहै॥तथा॥याजनाध्यापनप्रतिग्रहैर्ब्राह्मणोधनमर्जयेत्॥अर्थयह॥ यज्ञकरावणा विद्यापढावणी प्रतिग्रहलेणा यातीनउपायोंकरिकै ब्राह्मण धनकूंसंपादनकरै ॥ यावचनकरिकैभी धनकीप्राप्तिवासतै सोविद्याकाअध्यापन पूर्वप्राप्तहीं है ॥ यातैं ताप्रजननशब्दकरिकै विद्याअध्यापनकाविधान संभवैनहीं॥समाधान॥ हेशिष्य॥यहतुमारी शंका तभीसंभवै ॥ जभी हम ताप्रजननशब्दकरिकै केवलविद्याअध्यापनकाहीग्रहणकरै ॥ परंतु ताप्रजननशब्दकरिकै हम केवलविद्या अध्यापनका ग्रहणकरतेनहीं ॥ काहेतैं अद्वितीयआत्माकेस्वरूपकूंबोधनकरणेहारा जोयहब्रह्मविद्याकाप्रकरण है ॥ ताप्रकरणविषे जैसे सत्यादिकसाधनोंका उपयोगहै॥तैसे ताविद्याअध्यापनका उपयोगहै ॥ तैसे ताविद्याअध्यापनका उपयोगहै नहीं॥किंतु ताअध्यापनफल भूत जोअद्वितीयब्रह्मविषे सर्ववेदांतशास्त्रकेतात्पर्यकानिश्चयरूपश्रवणहै॥ताश्रवणकाही उपयोगहै ॥ याकारणतैं सोप्रजननशब्द लक्षणावृत्तिकरिकै ताश्रवणकाही बोधनकरैहै।सोश्रवण रागकरिकै तथाप्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकै पूर्व प्राप्तहैनहीं।यातैं यापक्षविषे पूर्वउक्तदोष संभवैनहीं॥हेशिष्य॥पूर्वहमनैं प्रजननशब्दकरिकै पुत्रादिकप्रजाकीउत्पत्ति कथनकरीथी॥तापूर्वपक्षविषेतौ तिनपुत्रादिकोंकीउत्पत्तिविषे यौवनअवस्थाकी तथास्त्रीआदिकसाधनोंकी अवश्यकरिकैअपेक्षाहोवैहै।औरअभी ताप्रजननशब्दकरिकैहमनैं श्रवणकाकथनकऱ्याहै।यासिद्धां तपक्षविषे ताश्रवणकीउत्पत्तिविषे यौवनअवस्थाकीतथास्त्रीआदिकसाधनोंकी अपेक्षाहैनहीं।किंतु यापक्षविषेतौ ताश्रवणकीउत्पत्तिविषे या अधिकारीपुरुषोंकूं केवलसंन्यासआश्रमकीही अपेक्षाहै।तहांश्रुति।संन्यस्यश्रवणंकुर्यात्।अर्थयह।यहअधिकारीपुरुष संन्यासआश्रमकूंधारणकरिकैही श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुकेमुखतैं वेदांतशास्त्रकाश्रवणकरै॥इतनैंग्रंथकरिकै प्रजननरूपसप्तमसाधनका निरूपणकऱ्या॥अब आहित

अग्निहोत्र यज्ञ यातीनसाधनोंका फलसहित निरूपणकरै हैं॥हेशिष्य॥ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यातीनवर्णोंविषे जिसपुरुषनैं वेदकाअध्ययनकऱ्याहै॥तथा जोपुरुष स्त्रीवाला है॥तिसपुरुषकूंही आहितअग्निविषे तथाअग्निहोत्रविषे तथायज्ञविषे अधिकारहोवै है॥ वेदअध्ययनादिकोंतैंरहितपुरुषकूं तिनोंविषेअधिकारहोवैनहीं ॥यातैं तेतीनोंसाधन वेदअध्ययनकी तथास्त्रीआदिकोंकी अवश्यकरिकैअपेक्षाकरै हैं ॥ काहेतैं श्रुतियोंविषे तथा स्मृतियोंविषे याप्रकारकह्याहै॥जोब्राह्मण तथाक्षत्रिय तथावैश्य स्त्रीवालाहोवै॥तथा पुत्रवालाहोवै॥ तथाजिसकेकेश कृष्णवर्णवालेहोवैं ॥ तथा अंधत्ववधिरत्वादिकदोषोंतैंरहितहोवै ॥ तथा वेदकेकर्मकांडविषेकुशलहोवै॥तथाधनादिकसंपदावालाहोवै ॥ ऐसाब्राह्मण तथाक्षत्रिय वैश्य शास्त्रउक्तरीतिसैं दक्षिणाअग्नि गार्हपत्य आहवनीय सभ्य आवसथ्ययापंचअग्नियोंकूं आपणेगृहविषेस्थापन करैं॥अथवा दक्षिणाअग्नि गार्हपत्य आहवनीय यातीनअग्नियोंकूं स्थापनकरै॥कैसे हैं तेपंचअग्नि श्रुतिउक्तसर्वकर्मोंकीसिद्धिकरणेहारे हैं॥ याकारणतैं तिनअग्नियोंकूं शास्त्रविषे श्रौतअग्नियानामकरिकैकथनकरैहैं।हेशिष्य अथर्वणवेदकेअध्ययनकरणेहारे कोईकब्राह्मणतौ एकऋषिनामा एकअग्निकूंही श्रौतअग्निकहैहैं॥ ताएकऋषिनामाअग्निकाग्रहणतौ विवाहकालतैंलेकरिकैकथनकरैहैं॥ और हेशिष्य॥कोईकगृह्यसूत्रकारतौ याप्रकार कथनकरैहैं।जिसपुरुषकूं दक्षिणाअग्निआदिकश्रौतअग्नियोंकेग्रहणकरणेकासामर्थ्यनहींहोवै॥सोपुरुषएक औपासनानामास्मार्तअग्निकाग्रहणकरै परंतु अग्निआधानतैंविनागृहस्थनैं कदाचित्भीनहींरहणाइतनैंकरिकै आहितअग्नियोंकास्वरूपनिरूपणकऱ्या अबतिनअग्नियोंकाफल निरूपणकरैहैं॥हेशिष्य॥जेपुरुष तिनआहितअग्नियोंकरिकै केवलकर्मोंकूंहीकरैहैंतेपुरुष इसलोकविषेतौमहान्कीर्तिकूंप्राप्तहोवै हैं॥ और मरणतैं अनंतर स्वर्गलोककूंप्राप्तहोवै हैं॥और जेपुरुष तिनआहितअग्नियोंकरिकै उपासनासहितकर्मोंकूंकरै हैं ॥ तेपुरुषभी इसलोकविषेतौ महान्कीर्तिकूं प्राप्तहोवैहैं॥और मरणतैंअनंतर देवयानमार्गद्वारा ब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवै हैं॥अब अग्निहोत्ररूपनवमेसाधनका फल सहित निरूपण करैहैं॥हेशिष्य॥पूर्वउक्तआहितअग्नियोंविषे जोसायंकालमें तथाप्रातःकालमें आहुतिकापावणाहेयाका नाम अग्निहोत्रहै॥ताअग्निहोत्ररूपकर्मकूं यहगृहस्थपुरुषजबपर्यंतजीवेतबपर्यंतकरै॥याप्रकारकाविधानयद्यपिश्रुतिनैंकऱ्याहैतथापिताश्रुति

कायहअभिप्रायहै ॥संन्यासकाकारणभूत जोवैराग्यहै॥सोवैराग्य जबपर्यंत यापुरुषकूं नहींप्राप्तभयाहै॥ तबपर्यंत यहअधिकारीपुरुषताअ
ग्निहोत्रकूं अवश्यकरिकैकरै॥और याअधिकारीपुरुषकूं जभी तिनविषयोंविषेवैराग्यहोवै है॥तभी सोअधिकारीपुरुष ता अग्निहोत्रकापरि
त्यागकरिकै संन्यासआश्रमकाहीग्रहणकरै ॥ अब ताअग्निहोत्रकाफल निरूपणकरै हैं॥हेशिष्य॥गृहस्थपुरुषोंके गृहविषे कंडनी दलनी
चुल्ली पेषणी मार्जनी यहपंचजीवहिंसाकेस्थानरहे हैं ॥ तहां जिसविषे व्रीहियवादिकअन्न कूटेजावे हैं॥ऐसीजोउलूखलीहै ताकानाम कंड
नीहै ॥ औरशाकादिकवस्तुवोंके भेदनकरणेकाजोसाधनहै ताकानाम दलनीहै और अन्नके पकावणेका जो स्थानहै ताकानाम चुल्ली है
और अन्नके पीसणेकाजोसाधन है ताकानाम पेषणीहै ॥ और गृहकेशुद्धकरणेका जोसाधनहै ताकानाम मार्जनीहै ॥ यापांचोंकरिकै
जीवोंकीअवश्यहिंसाहोवै है।ताहिंसाकरिकैउत्पन्नभयेजेपापहैं॥तेपापकर्म ताअग्निहोत्रवालेगृहस्थकूंप्राप्तहोवैनहीं॥ किंवा॥ यहअग्निहोत्रीपु
रुष सायंकालविषे तथाप्रातःकालविषे जोअग्निविषे आहुतिपावैहै॥साआहुति ताअग्निद्वारा आदित्यकूंप्राप्तहोवैहै॥ताआहुतिविशिष्टआदि
त्यतैं जलकीवृष्टि उत्पन्नहोवै है॥और ताजलकीवृष्टितैं व्रीहियवादिकअन्न उत्पन्नहोवै हैं॥और ताअन्नतैं मनुष्यादिकप्रजा उत्पन्नहोवै हैं॥
यारीतिसैं सोअग्निहोत्रीपुरुषही सर्वजगत्काकारणहोवै है॥तथा सर्वजगत्का पालनकरै है॥ तात्पर्ययह॥ सर्वजगत्कीतृप्तिकरणेतैं जोपुण्य
उत्पन्नहोवै है।सोपुण्य ताअग्निहोत्रीपुरुषकूं नित्यहीप्राप्तहोवैहै॥किंवा।यालोकविषे जैसे क्षुधाकरिकैआतुरहुएबालक आपणीमाताकूं आश्र
यणकरै हैं ॥ तैसेस्वर्गविषेस्थित इंद्रादिकसर्वदेवता याअग्निहोत्रीपुरुषकूंही आश्रयणकरै हैं॥याकारणतैं सोअग्निहोत्रीपुरुष तिनइंद्रादिक
देवतावोंकूं माताकेसमानहैं॥किंवा॥ यहअग्निहोत्रीपुरुष इसलोकविषेभी महान्कीर्तिकूं प्राप्तहोवै है ॥ तथा धनादिकपदार्थोंकूंप्राप्तहोवै
है ॥ तथा दर्शपूर्णमासादिकयज्ञोंकेकरणेका अधिकारीहोवै है ॥ और सोअग्निहोत्रीपुरुष मरणतैंअनंतर स्वर्गलोककूंप्राप्तहोवै
है ॥ और सर्व देवता ताकूं नमस्कारकरै हैं ॥ और जोपुरुष उपासनासहित अग्निहोत्रकूंकरै है ॥ सो पुरुषता मरणतैंअनंतर देवयानमा
र्गद्वारा ब्रह्मलोककूंही प्राप्तहोवे है।अब यज्ञरूपदशमसाधनका फलसहित निरूपणकरैहैं।हेशिष्य॥पूर्वउक्तआहितअग्नियोंकरिकैसिद्धहोणे

हारे जेअश्वमेधादिककर्म हैं तिनोंकानाम यज्ञहै ॥ और दानकरणेकरिकै जिसफलकीप्राप्ति पूर्व कथनकरिआयेहैं ॥ तिसीफलकीप्राप्ति
यज्ञकरिकैहोवै है ॥ यातैं यज्ञकेफलका इहां विस्तारतैंनिरूपणकरतेनहीं॥ अब मानसरूप एकादशेसाधनका फलसहितनिरूपणकरैहैं॥
हेशिष्य धर्म सत्य तप दम शम दान प्रजनन आहितअग्नि अग्निहोत्र यज्ञ यहपूर्वकथनकरेजेदशसाधनहैं ॥ और आगे जिससंन्यासका
कथनकरैंगे॥ यहसंपूर्णसाधन एकमानससाधनतैंहीं उत्पन्नहोवैहैं ॥ तामानससाधनतैंविना तेधर्मादिकसाधन फलकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ इहां
धैर्ययुक्तमनकानाम मानससाधनहै ॥ हेशिष्य ॥ यालोकविषे जिसपुरुषकामन धैर्यकरिकैयुक्तहोवैहै ॥सोपुरुषही तिनधर्मादिकसाधनोंकूं
संपादनकरिसकैहै ॥ और जिसपुरुषकामन धैर्यतैंरहित अत्यंतदीनहोवैहै ॥ सोदीनपुरुष तिनधर्मादिकसाधनोंकूं संपादनकरिसकैनहीं॥
याप्रकारकेअन्वयव्यतिरेककरिकै यामानससाधनविषेही तिनधर्मादिकसाधनोंकीकारणतासिद्धहोवै है॥हेशिष्य ॥ यालोकविषे प्रवृत्तिरूप
तथानिवृत्तिरूप जितनेकीवैदिककर्म हैं तथा जितनेकलौकिककर्म हैं तेसंपूर्णकर्म यामनकेहीअधीनहैं ॥ मनतैंविना कोईभीकर्म सिद्धहो
इसकैनहीं ॥ याकारणतैंही श्रुतिनैं ताधैर्ययुक्तमनकूं एकादशवांसाधनरूपकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ हेशिष्य ॥ यहमानससाधनहीं सर्वसाध
नोंकामूलहै याअर्थविषे हिरण्यगर्भहीदृष्टांतहै ॥ काहेतैं सोहिरण्यगर्भभगवान् याधैर्ययुक्तमनकेप्रभावतैंही सृष्टिकेआदिकालविषे यासर्व
स्थूलजगत्कूंउत्पन्नकरताभयाहै ॥ तथा आपणेस्मरणमात्रकरिकै ॥ भक्तजनोंकेसर्वपापकर्मोंकानाशकरैहै॥तथा सर्वजगत्करिकै स्तुतिक
रनेयोग्यहै॥तथा सर्वजगत्करिकै पूजणेयोग्यहै॥हेशिष्य॥ताधैर्ययुक्तमनकेप्रभावतैं जैसे सोहिरण्यगर्भ सर्वतैंअधिकताकूंप्राप्तभयाहै ॥तैसे
दूसरेभीअनेकमुनिजन तथाअनेकदेवता तथाअनेकमनुष्यताधैर्ययुक्तमनकेप्रभावतैं श्रेष्ठताकूंप्राप्तहोतेभयेहैं॥याकारणतैंही श्रुतिभगवतीनैं
मोक्षकीइच्छावान्पुरुषोंकेप्रतितथास्वर्गकीइच्छावान्पुरुषोंकेप्रति तिनधर्मादिकसर्वसाधनोंतैं तामानससाधनकीश्रेष्ठता कथनकरीहैयातैं
याअधिकारीपुरुषनैं तामानससाधनकूं अवश्यकरिकैसंपादनकरणा ॥ अब संन्यासरूपद्वादशेसाधनकी सर्वसाधनोंतैंउत्कृष्टतावर्णनकरणे
वासतै प्रथम तासंन्यासकेभेदकानिरूपणकरैहैं।हेशिष्य॥सोसंन्यासआश्रम दोप्रकारकाहोवैहै।तहां एकतौ लिंगसंन्यासहोवैहै और दूसरा

अलिंगसंन्यासहोवैहै ॥ तहां दंडादिकचिह्नधारणपूर्वक जोसंन्यासहै॥ ताकानाम लिंगसंन्यासहै॥और दंडादिकचिह्नतैंरहित जोसंन्यासहै ताकानाम अलिंगसंन्यासहै तहां प्रथम अलिंगसंन्यासविषेतौ एकब्राह्मणकाही अधिकारहोवैहै ॥ क्षत्रियादिकोंका ताकेविषे अधिकारहै नहीं ॥ और दूसरे अलिंगसंन्यासविषेतौ क्षत्रिय वैश्य शूद्र स्त्री इत्यादिकसर्वोंकाअधिकारहै ॥ और तिनलिंगसंन्यासियोंके तथाअलिंग संन्यासियोंके एकदंडादिकचिह्नकूंछोडिकै दूसरे भिक्षाअटनादिकबाह्यधर्म तथा शम दम अहिंसादिक अंतरधर्म तुल्यहीहोवैहैं॥हेशिष्य सोप्रथम लिंगसंन्यासभी दोप्रकारकाहोवैहै॥तहां एकतौ त्रिदंडहोवैहै॥और दूसरा एकदंडहोवै है तहां जिससंन्यासविषे तीनदंडोंकाधारण होवै ॥ तासंन्यासकानाम त्रिदंडसंन्यासहै॥और जिससंन्यासविषे एकदंडकाधारणहोवै॥तासंन्यासकानाम एकदंडसंन्यासहै॥ हेशिष्य ॥ सोत्रिदंडसंन्यासभी दोप्रकारकाहोवैहै॥ तहां एकतौ कुटीचकनामा त्रिदंडसंन्यासहोवैहै॥और दूसरा बहूदकनामा त्रिदंडसंन्यासहोवैहै॥ हेशिष्य ॥ जैसे त्रिदंडसंन्यास दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तैसे सोएकदंडसंन्यासभी दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां एकतौ हंसनामा एकदंडसंन्यास होवै है॥ और दूसरा परमहंसनामा एकदंडसंन्यासहोवैहै॥अब प्रथम कुटीचकसंन्यासकेअधिकारीका तथाताकेधर्मोंका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥जोब्राह्मण पुत्रवालाहोवै ॥ तथा गृहवालाहोवै ॥तथा धनवान्होवै॥तथा स्त्रीतैंरहितहोवै ॥तथा जरा अवस्थाकरिकैयुक्तहोवै॥ तथा व्याधिकरिकैग्रस्तहोवै॥तथा पुत्रादिकोंविषे स्नेहवालाहोवै ॥ तथा भिक्षाभोजनकरणेविषे असमर्थहोवै ॥ तथा जिसकाशरीर क्लेश कूंनहींसम्हारिसकताहोवै ॥ऐसाब्राह्मण त्रिदंडसंन्यासकूंग्रहणकरै॥और आपणेगृहविषेही कुटुंबतैंपृथक् कुटीबांधिकै ताकेविषेनिवासकरै और आपणेपुत्रोंतैंही अन्नवस्त्रादिकलेवै॥और प्रणवादिकमंत्रोंकेजपतैंआदिलैके जितनेकी स्मृतियोंविषे कुटीचकसंन्यासीकेधर्म कथन करैहैं॥तिनसर्वधर्मोंकूं सावधानहोइकैकरै॥अब बहूदकसंन्यासके अधिकारीका तथाधर्मोंका निरूपणकरैहैं॥हेशिष्य॥जिसब्राह्मणकीस्त्री मृत्युहुईहोवै॥और पुनःस्त्रीकेसंपादनकरणेविषे जाकीइच्छानहींहोवै॥अथवा जिसब्राह्मणकी स्त्रीवृद्धअवस्थावालीहोवै॥तथा जिसब्राह्मणकी सर्वदा ब्रह्मचर्यधर्मविषेप्रीतिहोवै॥तथा संध्याउपासनादिककर्मोंविषे जाकीश्रद्धाहोवै तथा जराअवस्थाकरिकैयुक्तहोवै तथा पुत्रादिकबांधवों

विषे जिसका स्नेहनहींहोवै ॥ ऐसाब्राह्मण तावबहूदकसंन्यासकूं ग्रहणकरै ॥ और सोबहूदकसंन्यासी यापंचमात्रावोंकूं सर्वदाधारणकरै तहां एकतौ तीनदंड १ और दूसरा जलकेराखणेवासतै कमंडलु २ और तीसरा भिक्षाअन्नकेग्रहणकरणेवासतै वस्त्र ३ और चतुर्थ भिक्षाअन्नकेभोजनकरणेकापात्र ४ और पंचम जलकेशोधनकरणेकावस्त्र ५ यापंचमात्रावोंकूंधारणकरिकै सोबहूदकनामासंन्यासी कीट कीन्याईं शनैः शनैः पृथिवीऊपरविचरै ॥ और स्मृतियोंविषेजेबहूदकसंन्यासियोंकेधर्मकथनकरैहैं ॥ तिनसर्वधर्मोंकूंश्रद्धापूर्वककरै॥ अब हंससंन्यासके अधिकारीकातथाताकेधर्मोंका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ जोब्राह्मण विषयसुखोंविषेपरमवैराग्यकूंप्राप्तहोइकैभी कर्मोंविषे किंचित्मात्रश्रद्धावालाहोवै ॥ सोब्राह्मणहंससंन्याकूंग्रहणकरै ॥ औरजैसे सामवेदकेअध्ययनकरणेहाराब्रह्मचारी शिखातैंरहित यज्ञोप वीतकूंधारणकरैहै ॥ तैसे सोहंससंन्यासीभी शिखातैंरहित यज्ञोपवीतकूंधारणकरिकै तथा एकदंडकूंधारणकरिकै कीटकीन्याईं शनैः शनैः पृथिवीऊपरविचरै ॥ तथा प्रणवादिकमंत्रोंकेजपतैंआदिलैके जितनेकीहंससंन्यासियोंकेधर्म स्मृतियोंविषेकहे हैं ॥ तिनसर्वधर्मोंकूं श्रद्धापूर्वककरै ॥ अब परमहंससंन्याके अधिकारीका तथाताकेधर्मोंका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य जोब्राह्मण इसलोककेविषयसुखोंविषे तथास्वर्गादिकलोकोंकेविषयसुखोंविषे परमवैराग्यकूंप्राप्तहुआहोवै ॥ औरहृदयदेशविषेस्थितजो आनंदस्वरूपआत्माहै ताकेप्राप्तिकीजिस कूंनित्यहीइच्छाहोवै ॥ तथाकर्मोंकीवासनातैंरहितहोवै ॥ ऐसाब्राह्मणआपणेहस्तविषे वेणुकेएकदंडकूंधारणकरिकै परमहंससंन्यासकूंग्रह णकरै ॥ और आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासतै नित्यही वेदांतशास्त्रकाश्रवणकरै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार कुटीचक बहूदक हंस परमहंस यहचारिप्रकारकालिंगसंन्यास श्रुतिस्मृतियोंविषे कथनकऱ्याहै ॥ तिसचारिप्रकारकेसंन्यासविषेभी चतुर्थ परमहंससंन्यास सर्वतैंउत्कृष्ट है ॥ अबतासंन्यासआश्रमविषे सर्वधर्मोंतैंउत्कृष्टतास्पष्टकरणेवासतै प्रथमउत्कृष्टपदार्थोंकीपरंपरा निरूपणकरैहै ॥ हेशिष्य जिनदेहधारी जीवोंविषेप्राणोंकाश्वासप्रश्वासरूपव्यापारस्पष्टनहींहै ॥ ऐसेवृक्षादिकजीवोंतैं स्पष्टप्राणव्यापारवालेकटिादिकजंतु श्रेष्ठहैं ॥ और तिनस्पष्ट प्राणव्यापारवालेकीटादिकजंतुवोंतैंभी स्पष्टबुद्धिवालेसर्पादिकजीव श्रेष्ठ हैं ॥ और तिनस्पष्टबुद्धिवालेसर्पादिकजीवोंतैंभी चारिपा

दवालेअश्वादिकपशु श्रेष्ठ हैं ॥ और तिनचारपादवालेअश्वादिकपशुवोंतैंभी चारपादवालीगौवां श्रेष्ठ हैं ॥ और तिनचारपादवाली गौवोंतैंभी दोपादवालेजीव श्रेष्ठहैं ॥ और तिनदोपादवालेजीवोंतैंभी शूद्रमनुष्य श्रेष्ठहैं ॥ केसेतेशूद्र ॥ जन्मतैंआदिलैके मरणपर्यंतजिनों का एकहीवर्णआश्रमहोवैहै ॥ और तिनशूद्रोंतैंभी वैश्यश्रेष्ठहै ॥ और तिनवैश्योंतैंभी क्षत्रिय श्रेष्ठहैं ॥ और तिनक्षत्रियोंतैंभी ब्राह्मण श्रेष्ठहैं ॥ और यालोकविषे जैसे भूदेवब्राह्मण पूज्यहैं ॥ तैसे अग्निआदिकदेवताभी पूज्यहैं ॥ यातैं शास्त्रविषे तिनअग्निआदिकदेवतावोंकूं ब्राह्मणोंकेतुल्यही कथनकऱ्याहै ॥ और तिनजातिमात्रब्राह्मणोंतैंभी वेदपाठीब्राह्मणश्रेष्ठहैं ॥ और तिनवेदपाठीब्राह्मणोंतैंभी सामान्यतैंवे दकेअर्थकूंजानणेहारेब्राह्मण श्रेष्ठहैं ॥ और तिनसामान्यतैंवेदअर्थकेजानणेहारेब्राह्मणोंतैंभी संशयविपर्ययतैंरहित वेदकेअर्थकूंजानणेहारे ब्राह्मण श्रेष्ठ हैं ॥ और तिनसंशयविपर्ययतैंरहितब्राह्मणोंतैंभी आपणेवर्णआश्रमकेकर्मोंकूंकरणेहारे ब्राह्मण श्रेष्ठ हैं ॥ और ब्रह्मचर्य गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यास याचारआश्रमोंविषेभी प्रथम ब्रह्मचर्यआश्रमतैं गृहस्थआश्रम श्रेष्ठहै ॥ और तागृहस्थआश्रमतैंभी वानप्रस्थ आश्रम श्रेष्ठहैं ॥ और तावानप्रस्थआश्रमतैंभी संन्यासआश्रम श्रेष्ठ है ॥ और तासंन्यासआश्रमविषेभी प्रथम कुटीचकसंन्यासतैं बहूद कसंन्यास श्रेष्ठहै ॥ और ताबहूदकसंन्यासतैंभी हंससंन्यास श्रेष्ठहै ॥ और ताहंससंन्यासतैंभी परमहंससंन्यासश्रेष्ठहै ॥ हेशिष्य ॥याचार प्रकारकेसंन्यासियोंविषेभी जेचतुर्थ परमहंससंन्यासिहैं ॥ तेपरमहंससंन्यासीतौ ब्रह्मकेसाक्षात्कारवासतैंहीं तासंन्यासआश्रमकूं ग्रहण करैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवतीतिनपरमहंससंन्यासियोंकूं ब्रह्मवित् ब्रह्मनिष्ठ यानामकरिकैकथनकरै है॥ हेशिष्य ॥ याआनंदस्वरूप आत्माकूं स्थूल सूक्ष्मकारण यातीनशरीरोंतैं भिन्नकरिकै जानणेवासतैंही श्रुतिनैं यासंन्यासआश्रमका विधानकऱ्याहै ॥ और जोपुरुष तासंन्यास आश्रमकाधारणकरिकैभी ताआत्मविचारकूंनहींकरै हैं ॥ किंतु मोहकेवशहुआ जोपुरुष कर्मोंकूंहीकरै है ॥ सोसंन्यासी पतितहोवैहै ॥ हेशिष्य ॥ यहवार्ता वार्तिकग्रंथकेकर्त्ता सुरेश्वराचार्यनैंभीकहीहैं ॥ तहांश्लोक ॥ त्वंपदार्थविवेकाय संन्यासःसर्वकर्मणाम्॥ श्रुत्याविधीयतेयस्मात् तत्त्यागीपतितोभवेत्॥ अर्थयह ॥ श्रुतिभगवतीनैं त्वंपदार्थआत्माके विवेककरणेवासतैंहीं सर्वकर्मोंकासंन्यास

विधानकऱ्याहै ॥ यातैं जोपुरुष संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरिकै ताआत्मविचारकूंनहींकरैहै ॥ सोपुरुष पतितहोवैहै ॥ १ ॥ हेशिष्य ॥ जोपुरुष तासंन्यासआश्रमकूंग्रहणकरिकै निरंतर आत्माकाविचारकरैहै ॥ सोपुरुष ब्रह्मरूपहीहोवैहै ॥ तहां श्रुति ॥ ब्रह्मवेदब्रह्मैवभवति ॥ अर्थयह ॥ आत्मारूपब्रह्मकूंसाक्षात्कारकरिकै यहअधिकारीपुरुष ब्रह्मरूपहीहोवै है ॥ हे शिष्य ॥ यालोकविषेकार्यकारणरूपकरिकै तथास्थूलसूक्ष्मरूपकरिकै तथापरअपररूपकरिकै जितनेकीपदार्थ प्रसिद्धहैं ॥ तेसंपूर्णपदार्थ ब्रह्मरूपहीहैं ॥ तहांश्रुति ॥ सर्वंखल्विदं ब्रह्म ॥ अर्थयह ॥ यहसर्वजगत् ब्रह्मरूपहीहै ॥ ऐसे सर्वात्मारूपब्रह्मका जिनपुरुषोंकूं आपणाआत्मारूपकरिकैसाक्षात्कारहोवै है ॥ तेब्रह्म वेत्तापुरुषभी सर्वजगत्का आत्मारूपहीहै ॥ ऐसेब्रह्मवेत्तापुरुषोंतैं भूत भविष्यत् वर्त्तमान कोईभीपदार्थ उत्कृष्टनहीं है ॥ किंतु सोब्रह्मवेत्तापुरुषही सर्वतैंउत्कृष्टहै ॥ याकारणतैं सोब्रह्मवेत्तासंन्यासी सर्वजगत्तैंउत्कृष्टहै ॥ हेशिष्य ॥ जैसे कार्यकारणरूपसर्व जगत्कीअपेक्षाकरिकै सोब्रह्म परहै ॥ तैसे तापरब्रह्मकीप्राप्तिकरणेहारा यहसंन्यासभी तपादिकसर्वसाधनोंतैं परहै ॥ और तासंन्यासतैंभिन्न जितनेकीतपादिकसाधनहैं ॥ तेसंपूर्णसाधन तासंन्यासतैंनिकृष्टहैं ॥ यहसंन्यासही तिनसर्वसाधनोंतैं अधिकहै ॥ हेशिष्य ॥ तासंन्यासविषे ब्रह्मरूपताकेस्पष्टकरणेवासतै तथा सर्वजगत्कीकारणरूपताकेस्पष्टकरणेवासतै ते तित्तिरिनामाब्राह्मण याप्रका रकीयुक्ति कथनकरै हैं ॥ यालोकविषे जीवोंकूं ब्रह्मभावकीप्राप्तिकरणेहारा जोब्रह्मात्मसाक्षात्कारहै॥सोब्रह्मात्मसाक्षात्कार याअधिकारीपु रुषोंकूं संन्यासआश्रमकरिकैही प्राप्तहोवै है ॥ याकारणतैं यहसंन्यास कारणब्रह्मरूपहै ॥ जिसमूलकारणरूपब्रह्मतैं समष्टिसूक्ष्मभूतउपा धिवाला सूत्रआत्मा उत्पन्नहोवै है ॥ जासूत्रआत्माकूं शास्त्रविषे हिरण्यगर्भ ब्रह्मा यानामकरिकैकथनकरै हैं॥और ताहिरण्यगर्भरूपसूत्रआ त्मातैं समष्टिस्थूलउपाधिवाला प्रजापति उत्पन्नहोवै है॥जाप्रजापतिकूं श्रुतिभगवती विराट् संवत्सर आदित्य इत्यादिकनामोंकरिकैकथन करै है ॥ हेशिष्य ॥ याआदित्यमंडलविषे जो सुवर्णकेसमानवर्णवाला स्वयंज्योतिपुरुष स्थितहै ॥ तास्वयंज्योतिपुरुषविषेही यासर्वजगत् कीकारणता प्रत्यक्षप्रतीतहोवै है काहेतैं सोस्वयंज्योतिपुरुष आपणेशरीरतैंउत्पन्नहुईकिरणोंकरिकै यापृथ्वीविषेस्थितसर्वजलकूं

आकर्षणकरै है ॥ और ताआकर्षणकरेहुएजलकूं पुनःआपणीकिरणोंद्वारा मेघोंविषेस्थापनकरै है ॥ और तिनमेघोंद्वारा तिसजलकूं याभू
मिलोकविषे प्राप्तकरै है ॥ और ताजलतैं यापृथ्वीविषे वृक्षादिकस्थावरप्राणी उत्पन्नहोवै हैं ॥ तथा व्रीहियवादिकअनेकप्रकारकीओष
धियां तथावनस्पतियां उत्पन्नहोवै हैं ॥ और तिनस्थावररूपओषधिवनस्पतियोंतैं व्रीहियवादिअन्नउत्पन्नहोवै हैं ॥ और तिनव्री
हियवादिकअन्नोंतैं यामनुष्यादिकसर्वप्राणियोंकी उत्पत्तिहोवै है ॥ तथा तिनसर्वजीवोंकेप्राणोंकाधारणहोवै है ॥ यातैं सोआदित्य
मंडलविषेस्थित स्वयंज्योतिपुरुषही अन्नद्वारा यासर्वजगत्काकारणहै, अब याहीअर्थकेरूपष्टकरणेवासतै प्रथम ताव्रीहियवादिक
अन्नविषे परंपरासंबंधकरिकै स्वर्गादिकसुखकी तथामोक्षकी कारणता निरूपणकरै हैं ॥ हेशिष्य ॥ ताव्रीहियवादिकअन्नतैं उत्प
न्नभयजेप्राणहैं ॥ तिनप्राणोंतैं कर्मउपासनाकरणेकासामर्थ्यरूपबल उत्पन्नहोवै है ॥ और तावलतैं शुद्धकर्मरूपतप उत्पन्नहोवै है ॥
जिसतपकूं भृगुऋषिनैं वरुणपिताकेउपदेशतैं संपादनकऱ्याहै ॥ और ताशुद्धकर्मरूपतपतैं परलोकविषे आस्तिकबुद्धिरूपश्रद्धा
उत्पन्नहोवैहै ॥ और ताश्रद्धातैं शास्त्रकेअर्थधारणकरणेविषेसमर्थबुद्धिरूपमेधा उत्पन्नहोवैहै ॥ और तामेधातैं मनकेरोकणेविषेसमर्थ बुद्धि
कीवृत्तिरूपमनीषा उत्पन्नहोवैहै ॥ जिसमनीषाकरिकै रोक्याहुआयहमन सर्वलौकिकपदार्थोंकापरित्यागकरिकै केवल शास्त्रकेअर्थ
विषेही प्रवृत्तहोवैहै ॥ और तामनीषातैं शास्त्रअर्थकीवासनाकरिकैयुक्त शुद्धमन उत्पन्नहोवै है ॥ और ताशुद्धमनतैं आत्माकारवृत्तिरूप
शांति उत्पन्नहोवैहै॥ और ता शांतितैं आत्माकेआनंदादिकस्वरूपकूंनिर्णयकरणेद्वारा अंतःकरणकीवृत्तिविशेषरूपचित्त उत्पन्नहोवैहै ॥
और ता चित्ततैं गुरूउपदिष्टवेदवाक्योंकेअर्थकूंविषयकरणेहारीस्मृति उत्पन्नहोवै है ॥ और तास्मृतितैं शोधिततत्त्वपदकेअर्थ
काप्रकाशरूपस्मरउत्पन्नहोवैहै ॥ और तास्मरतैं ब्रह्मात्माकापरोक्षज्ञान उत्पन्नहोवै है॥और तापरोक्षज्ञानतैं मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकाअप
रोक्षज्ञान उत्पन्नहोवैहै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार सोब्रह्मरूपसंन्यास ताव्रीहियवादिकअन्नका कारणरूपभीहै तथाफलरूपभीहै ॥तथा आदि
त्यमंडलस्थपुरुषरूपकारिकैतो सोब्रह्मरूपसंन्यासताअन्नका कारणरूपहै॥और प्राणादिकपरंपराकरिकैतो सोब्रह्मरूपसंन्यास ताअन्नकाफल

रूपहै ॥ इसप्रकार ताव्रीहियवादिकअन्नकूं कारणरूपतैं तथाफलरूपतैं ताब्रह्मकेसंबंधवालाजानिकै जेअधिकारीपुरुष अतिथिकेप्रतिता
अन्नकादानकरै हैं॥तेअधिकारीपुरुष ताअन्नके पूर्वउक्तसर्वकारणोंका तथासर्वकार्योंका दानकरै हैं॥ शंका ॥ हेभगवन् कार्यकेदानकियेतैं
ताकार्यकेसर्वकारणोंकादान तथाकारणकेदानकियेतैं ताकारणकेसर्वकार्योंकादान संभवतानहीं ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ यालोकविषे
जोकोईपुरुष किसीब्राह्मणकेप्रति याप्रकारकादानकरै है॥ यहहमाराआम्रकावृक्ष जबपर्यंतर है॥ तबपर्यंत यावृक्षकेफल आपनैंग्रहणकरणे
यास्थलविषे कार्यरूपफलोंकेदानकियेतैं तिनफलोंकेकारणरूपवृक्षकाभीदानहोवैहै ॥ यातैं कार्यकेदान कियेतैं कारणकादान संभवै है ॥
और जोपुरुष ब्राह्मणकेप्रति गौदानदेवै है ॥ सोपुरुष ताकारणरूपगोदानकियेतैं तागौकेकार्यरूपदुग्धादिकोंकाभी दानकरै है॥ यातैं का
रणकेदानकियेतैं कार्यकादानभी संभवैहै ॥ तैसे अन्नकेदानकियेतैं ताअन्नके पूर्वउक्तसर्वकारणोंका तथा सर्वकार्योंका दान संभवै है ॥
और हेशिष्य ॥ पूर्वउक्तअन्नमयकोशतैं प्राणमयकोश उत्पन्नहोवैहै॥ और ताप्राणयमकोशतैं मनोमयकोश उत्पन्नहोवै है॥ और तामनो
मयकोशतैं विज्ञानमयकोश उत्पन्नहोवैहै ॥ और ताविज्ञानमयकोशतैं आनंदमयकोश उत्पन्नहोवैहै ॥ इसप्रकार पंचकोशरूपकारिकै यह
अन्नहीस्थितहोवैहै ॥ याकारणतैंभी यहअन्नही सर्वजगत्काकारणहै ॥ हेशिष्य ॥ श्रुतिविषे विज्ञानमयकोशतैं जोआनंदमयकोशकी
उत्पत्ति कथनकरीहै॥ताकायहअभिप्रायहै॥यहआनंदमयकोश पुच्छप्रतिष्ठाभूतशुद्धब्रह्मरूपकरिकै यद्यपिउत्पत्तिनाशतैंरहितहै ॥तथापि
प्रिय मोद प्रमोद इत्यादिकवृत्तिविशिष्टरूपकारिकै सोआनंदमयकोश उत्पत्तिनाशवालाहै ॥ यातैं ताप्रियादिकवृत्तिविशिष्टरूपकूंअंगी
कारकरिकै ताश्रुतिने विज्ञानमयकोशतैंआनंदमयकोशकीउत्पत्ति कथनकरीहै॥अब ताआनंदमयपुरुषविषे वास्तवतैं उत्पत्तिनाशकाअ
भाव स्पष्टकरणेवासतैं प्रथम ताआनंदमयपुरुषकेविभूतिका निरूपणकरै हैं॥हेशिष्य॥सोएकहीआनंदमयपुरुष भूमि अंतरिक्ष स्वर्ग पूर्वो
दिक्चारदिशा अग्निकोणादिकचारिउपदिशा या पंचरूपोंकारिकै पंच प्रकारका उत्पन्नहोवै है ॥ हेशिष्य॥ ताआनंदमयपुरुषके यहकेवल
पंचरूप नहीं हैं॥किंतु जैसे तंतुवोंकरिकै यहपट सर्वओरतैंओतप्रोतहोवै है॥तैसे यातीनलोकोंविषेभूत भविष्यत् वर्तमान यातीनकालोंविषे

स्थित जितनाकीस्थुलसूक्ष्मजगत्है ॥ सोसंपूर्णजगत् याआनंदस्वरूपआत्माकरिकेही व्याप्तहै॥ यातैं सोआनंदस्वरूपआत्माही सर्वजगत् रूप है ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्माही विचाररूपजिज्ञासाकरिकै प्राप्तहोणेयोग्यहै॥ और यहआनंदस्वरूपआत्माही फलरूपकरिकै कर्मोतैं उत्पन्नहोवै है ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्माही सुवर्णादिकसमीचीनवस्तुवोंविषे अंशरूपकरिकैस्थितहोवै है ॥ और यहआनंद स्वरूपआत्मा याअधिकारीपुरुषोंकूं श्रद्धाकरिकै तथासत्यकरिकै प्राप्तहोवैहै॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताआनंदस्वरूपआत्माकूं श्रद्धा सत्य यानामकरिकैकथनकरै है ॥ और याआनंदस्वरूपआत्मा स्वयंज्योतिरूपहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती याआनंदस्वरूपआत्माकूं महत्स्वत् यानामकरिकैकथनकरै है॥ और भृगुऋषीनैं वरुणपिताकेउपदेशतैं जिसविचाररूपतपकूं कऱ्याथा ॥तिसतपतैंभी यहआनंदस्व रूपआत्मा श्रेष्ठहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती याआनंदस्वरूपआत्माकूं तपसोवरिष्ठ यानामकरिकैकथनकरै है ॥ इतनैंकरिकै ताआनंद स्वरूपआत्माकामहिमा कथनकऱ्या ॥ अब ता आनंदस्वरूपआत्माकेज्ञानकाफल निरूपणकरै है॥ हेशिष्य ॥ ऐसेआनंदस्वरूपपरमा त्मादेवकूं जभी यहअधिकारीपुरुष आपणाआत्मारूपकरिकैसाक्षात्कारकरै है॥तभी यहअधिकारीपुरुष जीवतअवस्थाविषेतौ अविद्या दिकसर्वक्लेशोंतैंरहितहोवै है॥और याशरीरकेपरणतैंअनंतरपुनःमृत्युकूंप्राप्तहोवैनहीं॥हेशिष्य॥ जिसआत्मज्ञानकूंप्राप्तहोइकैयहअधिकारी पुरुष पुनःमृत्युकूंनहींप्राप्तहोवै है॥सोअज्ञानकेनाशकरणेहारा आत्मज्ञान याजीवोंकूं इसलोकविषे अथवाब्रह्मलोकविषे जोप्राप्तहोवै है॥ सो संन्यासके प्रभावतैंहीप्राप्तहोवैहै॥याकारणतैंब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुष तासंन्यासकूंपूर्वउक्तसत्यादिकसर्वसाधनोंतैं श्रेष्ठकहैं॥ अब संन्यासकरिकै प्राप्तहोणेयोग्य जो आत्माहै ताकेस्वरूपका निरूपणकरै हैं ॥ हेशिष्य ॥ जोस्वयंप्रकाश आनंदस्वरूपआत्मा संन्यासकरिकैप्राप्तहोवैहै सोआत्मादेव उत्पत्तिनाशतैंरहितहै ॥ यातैंसत्यरूपहै ॥ और सोआत्मादेव दुर्विज्ञेयहै यातैंसूक्ष्मरूपहै ॥ और सोआत्मादेव आकाशा दिकोंकाभीअधिष्ठानहै यातैं विभुरूपहै ॥ और सोआत्मादेव याशरीरकेअंतर प्राण अपानका नियंतारूपकरिकस्थितहै ॥ तथा प्राण अपान यादोनोंके व्यानरूपसंधिकूंकरताहुआ सोआत्मादेव परिच्छिन्नतारूप वामनसंज्ञाकूंप्राप्तहोवै है ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताआ

त्मादेवकूं प्राणसंधाता यानामकरिकैकथनकरै हैं ॥ पुनःसोआत्मादेव कैसाहै ॥ ब्रह्मरूपहै ॥ तथा सर्वजगत्का पालनकरणेहाराहै॥तथा सूर्यचंद्रमादिकोंकूं तेजकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ तथा ब्राह्मणादिकोंकूं वर्चसकीप्राप्तिकरणेहाराहै॥इहां जो ज्योतिपदार्थ दाहका तथाप्रका शका कारणहोवै है ॥ ताज्योतिपदार्थकानाम तेजहै ॥जैसे सूर्यचंद्रमादिकहैं ॥ और जो ज्योतिपदार्थ शरीरकेसौंदर्यताकाकारणहोवै है॥ ताज्योतिपदार्थकानाम वर्चसहै ॥ हेशिष्य ॥ यहआत्मादेव तिनब्राह्मणादिकोंकूं जो वर्चसकीप्राप्तिकरै है ॥ सोजठराग्निरूपकरिकैकरै है ॥ काहेतैं यहजीवोंकाजठराग्नि जभी अन्नकूंपचावै है ॥ तभीही रसादिकधातुद्वारा याशरीरोंविषे सौंदर्यताकाकारण वर्चसहोवै है ॥ जावर्चसकरिकै यहपुरुष रोगतैंरहितहोवै ॥ तथा सुंदरकांतिवालाहोवै है ॥ और हेशिष्य ॥ सुवर्णदर्पणादिकस्वच्छपदार्थोंविषे जोसूर्य केकिरणोंकेसंबंधकरिकै परप्रकाशज्योतिरूप उत्पन्नहोवै है ताकानाम द्युम्नहै ॥ ताद्युम्नकेदेणेहाराभी यहआत्मादेवही है ॥अथवा॥सूर्य चंद्रमाकाजोतेजहै ताकानाम द्युम्नहै ॥ और अग्निकाजोतेजहै ताकानाम वर्चसहै जोआनंदस्वरूपआत्मा तासूर्यचंद्रमाकूं तथाअग्निकूं तातेजकीप्राप्तिकरै है॥सोईहीआनंदस्वरूपआत्मा याअधिकारीपुरुषोंकूं संन्यासकरिकैप्राप्तहोणेयोग्यहै॥हेशिष्य॥अहिंसासत्यादिकपंच यम यासंन्यासके समीपरहैहैं॥याकारणतैं श्रुतिभगवती तासंन्यासकूं उपयाम यानामकरिकैकथनकरै है ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा ताउपयामरूपसंन्यासकरिकैही प्राप्तहोवैहै॥याकारणतैं श्रुतिभगवती याआनंदस्वरूपआत्माकूं उपयामगृहीत यानामकरिकैकथनकरै है॥ हेशिष्य॥यहआनंदस्वरूपआत्मा स्वप्रकाशहै॥याकारणतैं श्रुतिभगवती याआनंदस्वरूपआत्माकूं महया नामकरिकैकथनकरैहै॥और यहआनंदस्वरूपआत्मा सत्चित्आनंदस्वरूपहै।याकारणतैं श्रुतिभगवती याआत्मादेवकूंब्रह्म यानामकरिकैकथनकरैहै।हेशिष्य।जाबाल आदिकउपनिषदोंविषे जोसंन्यासग्रहणकरणेकाप्रकार निरूपणकऱ्याहै।तिसप्रकारसैं संन्यासआश्रमकाग्रहणकरिकै तथाजीवब्रह्मकेअभेद कूंबोधनकरणेहारा जोप्रणवमंत्रहै ताकूंभलीप्रकारजानिकरिकै तथाहंसादिकउपनिषदोंकरिकैकथनकऱ्याजोयोगहै तायोगकूंआश्रयणक रिकै यहअधिकारीपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतैं आपणेआत्माकूं ब्रह्मरूपकरिकैचिंतनकरै ।तांचिंतनकरिकै यहअधिकारीपुरुष ब्रह्मभावकूं

प्राप्तहोवैहै। अब कथनकरीहुई ब्रह्मविद्याका फलनिरूपणकरै हैं॥ हेशिष्य॥ तिन तित्तिरिनामाब्राह्मणोंनैंआपणेशिष्योंकेप्रति जायहब्रह्मविद्या कथनकरीहै॥ सायहब्रह्मविद्या कैसीहै॥ अज्ञानरूपमोहकेनाशकरणेहारीहै। और अग्निआदिकदेवताभी निधिकीन्याईं जिसब्रह्मविद्याका रक्षणकरैहैं॥ याकारणतैं साब्रह्मविद्या अग्निआदिकदेवतावोंकाभीगुह्यधनहै॥ ऐसीब्रह्मविद्याकूं जोअधिकारीपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं निश्चयकरैहै॥ सोअधिकारीपुरुषही ताअद्वितीयब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवैहै॥ यातैं जिसअधिकारीपुरुषकूं ताब्रह्मभावकेप्राप्तिकीइच्छाहोवै॥ सोअधिकारीपुरुष सर्वप्रकारतैं याब्रह्मविद्याका संपादनकरै॥ हेशिष्य॥ यहआत्मज्ञानरूप ब्रह्मविद्या आपणीसमीपताकरिकै याकार्यसहितअज्ञानकानाशकरै है॥ याकारणतैं यहउपनिषद्शब्द ताब्रह्मविद्याकाही वाचक है॥ और ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिकरणेहारा यहतैत्तिरीयकनामाग्रंथ है॥ याकारणतैं यातैत्तिरीयकनामाग्रंथकूंभी शास्त्रवेत्तापुरुष उपनिषद्नामकरिकैकथनकरै हैं॥ हे शिष्य॥ यजुर्वेदकेतित्तिरिनामाशाखाविषे तिनतित्तिरिनामाब्राह्मणोंनैं आपणेशिष्योंकेप्रति जा ब्रह्मविद्या कथनकरी है॥ सा संपूर्णब्रह्मविद्या हमनैं याआत्मपुराणकेदशमअध्यायविषे निरूपणकरी है॥ इसब्रह्मविद्यातैंअधिककोईब्रह्मविद्या ता तित्तिरिशाखाविषे है नहीं॥ हेशिष्य॥ यानारायणउपनिषद्केअंतविषे ताब्रह्मवेत्तापुरुषकेज्ञाननिष्ठारूपयज्ञके जो आत्मा यजमानहै श्रद्धा पत्नी है इत्यादि अंग निरूपणकरे हैं॥ सो आत्मसाक्षात्कारवासतैं नहीं कथनकरे हैं॥ किंतु मंदबुद्धिपुरुषोंके चित्तकीशुद्धिकरणेवासतैं उपासनाकाप्रकार कथनकऱ्या है॥ हे शिष्य॥ तित्तिरिनामाब्राह्मणोंनैं आपणेशिष्योंकेप्रति जाब्रह्मविद्याकथनकरीथी सासंपूर्णब्रह्मविद्या हमनैं तुमारेप्रति कथनकरी॥ अब जिसअर्थकेश्रवणकरणेकी तुमारेकूंइच्छाहोवै॥ सोहमारेप्रतिकहो॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचिते प्राकृतआत्मपुराणे तैत्तिरीयसारार्थप्रकाशो नाम दशमोऽध्यायः समाप्तः॥ १०॥ श्रीगुरुभ्योनमः॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः॥ श्रीशंकराचार्यभ्योनमः॥ छ॥ छ॥

इति श्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषा आत्मपुराणे दशमोऽध्यायः॥ १०॥

॥ अथ स्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषाआत्मपुराणे एकादशाध्यायप्रारंभः ॥

ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः॥ अथ एकादशाऽध्याय प्रारंभः ॥ पूर्वदशमअध्यायविषे यजुर्वेदके तैत्तिरीयकउपनिषद्का तथानारायणउपनिषद्का अर्थ निरूपणकऱ्या॥ अब याएकादशेअध्यायविषे जा बालउपनिषद् १ गर्भउपनिषद् २ अमृतनादउपनिषद् ३ हंसउपनिषद् ४ क्षुरिकाउपनिषद् ५ आरुणेयउपनिषद् ६ ब्रह्मउपनिषद् ७ परमहंसउपनिषद् ८ महत्उपनिषद् ९ आत्मप्रबोधउपनिषद् १० कैवल्यउपनिषद् ११ याएकादशउपनिषदोंका अर्थ निरूपण करै हैं॥तहां पूर्वदशमअध्यायविषे तित्तिरिनामाब्राह्मणोंके ब्रह्मविद्याकूं श्रवणकरिकै सोशिष्य परमआश्चर्यकूंप्राप्तहोताभया॥ और साधनों सहिततथाफलसहित परमहंससंन्यासकेपूछणेकीइच्छाकरताहुआ सोशिष्यआपणेगुरुकेप्रतियाप्रकारकावचनकहताभया॥ शिष्यउवाच॥ हेभगवन् ऐतरेयऋषिनैं तथाकौषीतकिऋषिनैं तथासूर्यभगवान्नैं तथाश्वेताश्वतरऋषिनैं तथा तित्तिरिऋषिनैंतथाकठऋषिनैं आपणेआपणे शिष्योंकेप्रति जाजाब्रह्मविद्याउपदेशकरीथी।सासंपूर्णब्रह्मविद्यापूर्वआपनैं हमारेप्रतिकथनकरी।कैसीहैसाब्रह्मविद्या।दुःखरूपीसमुद्रकेसुका वणेहारी है ॥ हेभगवन् याआत्मपुराणके प्रथमअध्यायविषे आपनैं ऋग्वेदकेऐतरेयउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ ताप्रथम अध्यायविषे सनकादिकऋषियोंके तथा वामदेवादिकअधिकारियोंके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी ॥ और याआत्मपुराणकेदूसरेअध्यायविषे तथातीसरेअध्यायविषे आपनैं किसीऋग्वेदके कौषीतकीउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा॥तहां द्वितीयअध्यायविषे आपनैं देवराजइंद्रके तथाप्रतर्दनराजाके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी ॥ और याआत्म पुराणकेतृतीयअध्यायविषे राजाअजातशत्रुके तथाबालाकिब्राह्मणके संवादकरिकै आपनैं नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी ॥ और याआत्मपुराणके चतुर्थ पंचम षष्ठ सप्तम याचारअध्यायोंविषे आपनैं यजुर्वेदकेबृहदारण्यकउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तहां याआत्मपुराणके चतुर्थअध्यायविषे दोपुरुषवंश एकस्त्रीवंश यातीनवंशोंविषेस्थितऋषियोंका परस्पर भेद तथाअभेद आपनैं कथनकऱ्याथा॥ तथाअश्विनीकुमारोंकेसाथ जोसर्वज्ञऋषिकासंवादहुआथा।सोभीआपनैंकथनकऱ्याथा॥ औरदध्यङ्ऋषिनैं जा ब्रह्मविद्या

देवराजइंद्रके प्रति तथाअश्विनीकुमारोंकेप्रति उपदेशकरीथी ॥ तात्रह्मविद्याभी आपनैं कथनकरीथी ॥ और तादध्यङ्ऋषिकामहान्ता तथाइंद्रकीदुरात्मताभी आपनैं कथनकरीथी ॥ तथा ब्रह्मविद्याकेलोभकरिकै गुरुकेमस्तककाछेदनरूप जोअश्विनीकुमारोंका अनुचितक र्मथा॥ सोभी आपनैं कथनकऱ्याथा॥ और याआत्मपुराणके पंचमअध्यायविषे जनकराजाकेयज्ञसभाविषे याज्ञवल्क्यमुनिके तथाआश्व लादिकब्राह्मणोंके परस्पर जल्परूपसंवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी ॥ तथाब्रह्मवेत्तायाज्ञवल्क्यमुनिकेशाप करिकै शाकल्यब्राह्मणकामृत्युभीआपनैं कथनकऱ्याथा ॥ और याआत्मपुराणकेषष्ठेअध्यायविषे याज्ञवल्क्यमुनिके तथाजनकराजाके दोवारसंवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी ॥ और याआत्मपुराणके सप्तमअध्यायविषे तिसीयाज्ञवल्क्यमुनिके तथामैत्रेयीस्त्रीके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी ॥ तथा ता याज्ञवल्क्यमुनिकेसंन्यासआश्रमकाभीआपनैं निरूपणकऱ्याथा ॥ और याआत्मपुराणकेअष्टमअध्यायविषे आपनैं तिसीयजुर्वेदके श्वेताश्वतरउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा॥ ता अष्टमअध्यायविषे श्वेताश्वतरऋषिके तथासंन्यासियोंके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी ॥ तथा सर्वजगत्के कारणका निरूपणकऱ्याथा ॥ और याआत्मपुराणकेनवमअध्यायविषे आपनैं तिसीयजुर्वेदके कठवल्लीउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्या था ॥ तानवमअध्यायविषे यमराजाके तथानचिकेताके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी ॥ और याआत्म पुराणके दशमअध्यायविषे आपनैं तिसीजुर्वेदके तैत्तिरीयकउपनिषदूका तथानारायणउपनिषद्का अर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ ता दशमअध्यायविषे अरुणऋषिके तथाभृगुऋषिके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी ॥ तथा वेननामा गंधर्वकाअनुभव कथनकऱ्याथा ॥ हेभगवन् तादशमअध्यायविषे आपनैं धर्मतैं आदिलैके संन्यासपर्यंत मोक्षकेसाधनोंकी परंपरा कथनकरीथी ॥ तहां अंत्यविषे कुटीचक बहूदक हंस परमहंस याचारप्रकारकेसंन्यासविषे सर्वसाधनोंतैंश्रेष्ठता कथनकरी थी ॥ तिनचारप्रकारकेसंन्यासविषेभी चतुर्थपरमहंससंन्यासकूंही सर्वतैंश्रेष्ठकह्याथा ॥ और हेभगवन् तादशमअध्यायकेअंताविषे

यहवार्ताभी आपनें कथनकरीथी॥जाबालादिकउपनिषदोंविषे कथनकऱ्याजोसंन्यासहै तासंन्यासकूंग्रहणकरिकै तथाहंसादिकउपनिषदों विषे कथन कऱ्या जो योग है तायोगकूंसंपादनकरिकै यहअधिकारीपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतैं आपणे आत्माकूं ब्रह्मरूपकरिकै निश्चयकरै ॥ यहसंपूर्णअर्थ आपनें तादृशमअध्यायकेअंतविषेकह्याथा ॥ हेभगवन् याकेविषे हमारी मुख्यउत्कटइच्छातो परमहंससं न्यासके स्वरूपजानणेविषेही है ॥ यातैं तापरमहंससंन्यासकेस्वरूपकूं मैं आपसे प्रथमपूछताहूं ॥ तिसतैंअनंतर जाबालादिकउपनिषदों विषे कथनकऱ्याजोंसंन्यासहै ॥ तथा हंसादिकउपनिषदोंविषेकथनकऱ्याजोयोगहै॥ तिनदोनोंकेस्वरूपकूंभी मैं आपसे पूछताहूं ॥यातैं हमारी उत्कटइच्छाकेअनुसार आप प्रथम परमहंससंन्यासकेस्वरूपकाही निरूपणकरो ॥ हेभगवन् याकेविषे हमारे इतनेप्रश्नहैं ॥ सोप रमहंससंन्यास किसअधिकारीपुरुषकूं करणेयोग्यहै ॥ १ ॥ तथा पूर्व किसमहात्माजनोंनें तापरमहंससंन्यासकूंग्रहणकऱ्याहै ॥ २ ॥ तथा यापरमहंससंन्यासकरिकै कौनवस्तु जानणेयोग्यहै ॥ ३ ॥ तथा यापरमहंससंन्यासके धर्मकौनहैं ॥ ४ ॥ तथा यापरमहंससंन्यासका फलकौनहै ॥ ५ ॥ यहसंपूर्णवार्त्ता आप विस्तारसैंकथनकरो॥इसप्रकार शिष्यकरिकैपूछाहुआ सोश्रीगुरु ताशिष्यकी तीक्ष्णबुद्धिदेखि करिकै बहुतप्रसन्नहोताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोश्रीगुरु ताशिष्यकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया॥ श्रीगुरुरुवाच॥हेशिष्य ॥ यहप रमहंससंन्यासका जोतुमनें प्रश्नकऱ्याहै ॥ ताप्रश्नकरिकै तुमनें वृद्धकुमारीवरन्यायकीरीतिसे जाबालादिकसर्वउपनिषदोंकेअर्थका प्रश्नक ऱ्याहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे वृद्धअवस्थाकूं प्राप्तहुईकोई कुमारी तपकरिकै इंद्रदेवताकूंप्रसन्नकरतीभई ॥ और सोइंद्रदेवताभी वरमाँग याप्रकरकावचन ताकुमारीकेप्रतिकहताभया ॥ आगैंतैंसावृद्धकुमारी आपणे मनविषेविचारकरिकैं याप्रकारकावर मांगतीभई ॥ हे इंद्र॥ हमारेपुत्र दधिकरिकैयुक्तओदनकूं सुवर्णकेपात्रोंविषे भोजनकरैं ॥ यहवर तुम हमारेकूंदेवो ॥ याएकहीवरकरिकै सावृद्धकुमारी देवराजइंद्र सैं आपणीयौवनअवस्था तथापति तथापुत्र तथागोवां तथासुवर्णादिकधन यहसंपूर्णपदार्थ लेतीभई॥याकानाम वृद्धकुमारीवरन्यायहै ॥तैसे तापएकपरमहंससंन्यासकेप्रश्नकरिकै तुमनें जाबालादिकसर्वउपनिषदोंकेअर्थका प्रश्नकऱ्या है ॥ काहेतैं जाबाल ब्रह्म आरुणेय परमहंस

॥ २ ॥

याचारउपनिषदोंविषेतौ तापरमहंससंन्यासकेही धर्म कथनकरे हैं ॥ और आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिविषेउपयोगी जो योग है ॥ सो योग हंसशुरिकादिकउपनिषदोंविषे कथनकऱ्याहै ॥ और तायोगकीप्राप्तिविषे उपयोगीजोवैराग्यहै ॥ सोवैराग्य गर्भउपनिषद्विषेकथनक ऱ्याहै ॥ यातैं तुमारे परमहंससंन्यासकेप्रश्नका जभीमैं उत्तरकहोंगा ॥ तभी तिनजाबालादिकउपनिषदोंकाअर्थभी अवश्यकरिकै कह्या जावैगा ॥अब तिनजाबालादिकउपनिषदोंविषे जिनऋषियोंनें तापरमहंससंन्यासकाप्रश्नकऱ्याहै॥ तथा जिनऋषियोंनें तिनप्रश्नोंकाउत्तर कह्याहै॥ तिनऋषियोंकेनामोंकानिरूपणकरैहैं॥हेशिष्य॥ जाबालउपनिषद्केचतुर्थखंडविषे जनकराजानैं याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति तापरमहं ससंन्यासकाप्रश्नकऱ्याहै ॥ और ताजाबालउपनिषद्के पंचमखंडविषे अत्रिऋषिनैं तायाज्ञवल्क्यमुनिके प्रति तापरमहंससंन्यासकाप्रश्न कऱ्याहै ॥ और आरुणेयउपनिषद्विषे आरुणऋषिनैं प्रजापतिकेप्रति तापरमहंससंन्यासकाप्रश्नकऱ्याहै ॥ और परमहंसउपनिषद्विषे नारदमुनिनैं ताप्रजापतिकेप्रति तापरमहंससंन्यासकाप्रश्नकऱ्याहै॥और जोपरमहंससंन्यास जाबालआदिकउपनिषदोंविषे कथनकऱ्याहै ॥ सोईहीपरमहंससंन्यास ब्रह्मउपनिषद्विषे किसीऋषिके प्रश्नउत्तरतैंविनाही वेदभगवान्नें आपही स्पष्टकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार जाबालादिकउपनिषदोंविषे जोपरमहंससंन्यास कथनकऱ्याहै ॥ सोईहीपरमहंससंन्यास तुमनें हमारेसैं पूछाहै ॥ यातैं तापरमहं ससंन्यासकास्वरूप हम तुमारेप्रति विस्तारतैं कथनकरतेहैं॥तूं आपणेमनकूंसावधानकरिकै श्रवणकर॥अब तापरमहंससंन्यासके साधनों केनिरूपणकरणेवासतैप्रथम जाबालउपनिषद्केपंचमखंडविषे कथनकरेजेविद्वत्संन्यासीहैं॥तिनोंकानिरूपणकरै हैं ॥हेशिष्य ॥ देवतावों कागुरुजोबृहस्पतिहै॥तावृहस्पतिकाभ्राताएकसंवर्त्तकनामाऋषिपूर्वहोताभयाहै॥जिससंवर्त्तककामहिमा महाभारतकेअश्वमेधपर्वविषेवर्णन कऱ्याहै॥सोसंवर्त्तकभीतापरमहंससंन्यासकूं ग्रहणकरताभयाहै॥और अरुणऋषिकापुत्र एकआरुणिनामाऋषि पूर्वहोताभयाहै॥जिसआरु णिऋषिकूं उद्दालक यानामकरिकैभी कथनकरै हैं॥जोउद्दालक सर्वशास्त्रोंविषेबुद्धिमान्हुआहै॥सोउद्दालकमुनिभी तापरमहंससंन्यासकूं ग्रहणकरताभयाहै॥और ताउद्दालकमुनिका एकश्वेतकेतुनामापुत्र पूर्वहोताभयाहै॥सोश्वेतकेतुभी तापरमहंससंन्यासकूं ग्रहणकरताभयाहै

और महादेवकाअंशअवतारएकदुर्वासाऋषि पूर्वहोताभयाहै॥जोदुर्वासाऋषि महाव्रतपरवीहै॥सोदुर्वासाऋषिभी तापरमहंससंन्यासकूं ग्रह
णकरताभयाहै॥और जैसे सनकादिकऋषि ब्रह्माके मानसपुत्रहैंतैसे ताब्रह्माकामानसपुत्र एकऋभुनामाऋषि पूर्वहोताभयाहै।सोऋभुनामा
ऋषिभी तापरमहंससंन्यासकूं ग्रहणकरताभयाहै और ताऋभुनामाऋषिकाशिष्य एकनिदाघनामाऋषि पूर्वहोताभयाहै॥जोनिदाघनामा
ऋषि ताऋभुकेउपदेशतैंपूर्व कर्मोविषे अत्यंतआसक्तहोताभयाहै॥सोनिदाघनामाऋषिभीतापरमहंससंन्यासकूं ग्रहणकरताभयाहै॥ और
एकजडभरत पूर्वहोताभयाहै ॥ जोजडभरत मृगशरीरतैंपूर्व राजाहोताभयाहै॥जिसराजाकेनाम करिकै यहभारतखंडकह्याजावै है ॥ सोज
डभरतभी तापरमहंससंन्यासकूं ग्रहणकरताभयाहै ॥और विष्णुकाअवतार एकदत्तात्रेयमुनि पूर्वहोताभयाहै॥सोदत्तात्रेयमुनिभी तापरम
हंससंन्यासकूं ग्रहणकरताभयाहै॥और रैवतनामाकोईब्राह्मण पूर्वहोताभयाहै॥सोरैवतनामाब्राह्मणभी तापरमहंससंन्यासकूंग्रहणकरताभया
है॥और एकभारद्वाजनामाऋषि पूर्वहोताभयाहै॥सोभारद्वाजनामाऋषिभी तापरमहंससंन्यासकूं ग्रहणकरताभयाहै ॥हेशिष्य॥संवर्त्तक१
उद्दालक २ श्वेतकेतु ३ दुर्वासा ४ ऋभु ५ निदाघ ६ जडभरत ७ दत्तात्रेय ८ रैवत९भारद्वाज१०इनदशोंतैं आदिलैके दूसरेभी शुकवा
मदेवादिकअनेकब्राह्मण तापरमहंससंन्यासकूं धारणकरतेभयेहैं ॥ जिनोंकीकथा पुराणादिकशास्त्रोंविषेप्रसिद्ध है ॥ ते संपूर्णपरमहंससंन्या
सी मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकेआत्मसाक्षात्कारकरिकै सर्वसंबंधनोंतैंरहितहोतेभयेहैं अब तिनविद्वत्संन्यासियोंकेअव्यक्तचिह्नका तथाअव्यक्त
आचारका निरूपणकरैहैं ॥ जिसचिह्नकूं तथाजिसआचारकूं लोक नहींजाणिसकै ताकानाम अव्यक्तहै ॥ हेशिष्य ॥ तेसंवर्त्तकादिकसं
न्यासी नियमकरिकै मुंडितभी नहींहोतेभयेहैं ॥ तथा नियमकरिकै जटाधारीभी नहींहोतेभयेहैं ॥ तथा नियमकरिकै एकदंडकूं अथ
वा तीनदंडकूंभी नहींधारणकरतेभयेहैं ॥ तथा नियमकरिकै श्वेतवस्त्रोंकूंभी नहींधारणकरतेभयेहैं ॥ तथा नियमकरिकै रक्तवस्त्रों
कूंभी नहींधारणकरतेभयेहैं ॥ हेशिष्य ॥ तिनब्रह्मवेत्तासंन्यासियोंका जैसे चिह्न अव्यक्तहोताभयाहै ॥ तैसे तिनोंकाआचारभी अव्य
क्तहीहोताभयाहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् सोअव्यक्तआचार किसप्रकारकाहोवै है ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ तेअव्यक्तआचारवाले

॥ ३ ॥

महात्मापुरुष याप्रकार लोकविषेविचरैहैं ॥ तिनमहात्मापुरुषोंकी मतिभी अव्यक्तहीहोवैहै ॥ और तिनमहात्मापुरुषोंकी आकृतिभी
अव्यक्तहीहोवैहै ॥ औरतिनमहात्मापुरुषोंका चिह्नभी अव्यक्तहीहोवैहै ॥ औरकभीतो तेमहात्मापुरुष सर्वपदार्थोंकीइच्छातैंरहितहोवैहैं॥
और कभी तेमहात्मापुरुषआसक्तपुरुषीन्याईं सर्वपदार्थोंकीइच्छाकरतेहुएप्रतीतहोवैहैं ॥ और कभीतो तेमहात्मापुरुष सर्वज्ञपुरुषकी
न्याईं सर्वअर्थकेज्ञाताप्रतीतहोवैहैं ॥ औरकभी तेमहात्मापुरुष अज्ञानीपुरुषकीन्याईं अज्ञाताप्रतीतहोवैहै॥ औरकभीतो तेमहात्मापुरुष
शास्त्रवेत्तापुरुषकीन्याईं पंडितप्रतीतहोवैहैं ॥ और कभी तेमहात्मापुरुष शास्त्ररहितपुरुषकीन्याईं मूढ प्रतीतहोवैहैं ॥ और कभीतोतेम
हात्मापुरुष बुद्धिमान्पुरुषकीन्याईं नानाप्रकारकीचेष्टाकरतेहुए प्रतीतहोवैहैं ॥ और कभी तेमहात्मापुरुषजडपुरुषकीन्याईं सर्वचेष्टातैं
रहितहुएप्रतीतहोवैहैं ॥ और कभीतो तेमहात्मापुरुष वाचालपुरुषकीन्याईं नानाप्रकारकेशब्दोंकूंउच्चारणकरतेहुए प्रतीतहोवैहैं ॥ और
कभी तेमहात्मापुरुष मूकपुरुषकीन्याईं मौनकूंधारणकरतेहुए प्रतीतहोवैहैं ॥ और कभीतो तेमहात्मापुरुष रागअंधपामरपुरुषकीन्याईं
अत्यंतरागवान्हुए प्रतीतहोवैहैं ॥ और कभी तेमहात्मापुरुष विरक्तपुरुषकीन्याईं सर्वरागतैंरहितहुए प्रतीतहोवैहैं ॥ और कभीतोतेमहा
त्मापुरुष श्रेष्ठपुरुषोंकीन्याईं शास्त्रविहितआचारकूंकरैहैं ॥ औरकभी तेमहात्मापुरुष अश्रेष्ठपुरुषोंकीन्याईं शास्त्रनिषिद्धआचारकूंकरैहैं ॥
हेशिष्य ॥ इसप्रकार तेपरमहंस संन्यासी अव्यक्तचिह्न तथा अव्यक्तआचारकूं धारणकरिकै यालोकविषे विचरतेभये हैं ॥ ऐसे
परमहंससंन्यासियोंकूंदोषिकरिकै यहश्रेष्ठपुरुषहै याप्रकारभी कोईलोक तिनोंकूं जाणसकतानहीं ॥ तथा यह अश्रेष्ठपुरुषहै याप्रकारभी
कोईलोक तिनोंकूंजाणसकतानहीं ॥ तथा यह बहुतशास्त्रपढ्याहै याप्रकारभी कोईलोक तिनोंकूं जाणसकतानहीं ॥ तथा यहशास्त्र
नहींपढ्याहै याप्रकारभी कोईलोक तिनोंकूंजाणसकतानहीं ॥ तथा यहश्रेष्ठआचारवालाहै याप्रकारभी कोईलोक तिनोंकूं जाणसकता
नहीं ॥ तथा यह अश्रेष्ठआचारवालाहै याप्रकारभीकोईलोक तिनोंकूंजाणसकतानहीं ॥ तथा यहब्राह्मणहै याप्रकारभी कोईलोकतिनोंकूं
जाणसकतानहीं ॥ तथा यह चांडालहै याप्रकारभी कोईलोकतिनोंकूं जाणसकतानहीं ॥ तथा यह संन्यासी है याप्रकारभी कोईलोक

तिनोंकूं जाणिसकतानहीं ॥ तथा यह गृहस्थहै याप्रकारभी कोईलोक तिनोंकूं जाणसकतानहीं ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार तिनब्रह्मवेत्ता संन्यासियोंकूं किसीवर्णकरिके तथाकिसीआश्रमकरिके कोईबुद्धिमानपुरुषभीजाणसकतानहीं॥ तौविचारतैंरहितमूढपुरुषतिनोंकूंकैसेजाण सकैंगे॥किंतुनहींजाणसकैंगे॥यहवार्ता स्मृतिविषेभीकथनकरीहै ॥तहांश्लोक॥ यंनसंतंनचासंतं नाऽश्नुतं नबहुश्रुतं ॥ नसुवृत्तं नदुर्वृत्तं वेद कश्चित्सब्राह्मणः ॥ अर्थयह ॥ यालोकविषेजिसविद्वान्पुरुषकूं श्रेष्ठअश्रेष्ठ मूर्ख पंडित शास्त्रविहितआचार शास्त्रनिषिद्धआचार इत्यादि करूपोंकरिके कोईभीमनुष्य नहीं जाणसकैहै ॥ सोविद्वान्पुरुषही ब्रह्मवेत्ताब्राह्मणहै ॥ हेशिष्य ॥ ऐसेब्रह्मवेत्तापरमहंससंन्यासियोंके आचारकूं कोईबुद्धिमान्पुरुषभी जाणसकतानहीं यहवार्ता दत्तात्रेयसंहिताविषे प्रसिद्धहै ॥ तहां यहप्रसंगहै ॥ एककालविषे दत्तात्रेयस्वामी नर्मदानदीकेजलविषेस्थितथा ॥ कैसा था सोदत्तात्रेय स्वामी॥ रक्तवर्णवालेवस्त्रोंकरिकैयुक्तथा ॥ तथा यौवनअवस्थाकरिकैयुक्तथा ॥ तथा सूर्यकेसमान जाकेशरीरकीकांतिथी ॥ तथाएकहस्तविषे जिसनैं मदिराकेपात्रकूंधारणकऱ्याहै ॥ और दूसरेहस्तविषे दंडकूंधारण कऱ्याहै ॥ और मदकरिघूर्णितहैंनेत्रजिसके ऐसीसुंदरस्त्री जाके वामभाग विषेस्थितथी ॥ तास्त्रीकेमुखकूं वारंवार नेत्रोंकरिकैदेखता हुआ सोदत्तात्रेयस्वामी तास्त्रीकेप्रति श्रुतिवचनोंकरिके अद्वितीयब्रह्मकाउपदेशकरताथा ॥ ऐसेव्यवहारकरिकैयुक्त तादत्तात्रेयस्वामीकूं सहस्रबाहुअर्जुन देखताभया॥और सोचक्रवर्तीराजासहस्रबाहु आपणेमनविषे बहुतविचारकरता भया॥परंतु तादत्तात्रेयस्वामीकूं सोसहस्र बाहु नहींजाणताभया ॥ शंका ॥ हे भगवन् तेदत्तात्रेयादिकमहात्मापुरुष ऐसेशास्त्रनिंदितआचारकूं किसवासतै धारणकरैहैं॥ समाधान हे शिष्य ॥ जिसअभिप्रायकरिके तेमहात्मापुरुष याप्रकारकेआचारकूंधारणकरैहैं ॥ ताअभिप्रायकूं तूं श्रवणकर शास्त्रविषे यहकह्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ अभिमानंसुरापानंगौरवंघोररौरवं॥प्रतिष्ठासूकरीविष्ठा त्रीणित्यक्त्वासुखीभवेत् ॥अर्थयह॥ अभिमानकूं मदिराकेसमानजा णिकरिके तथागौरवकूं घोररौरवनरककेसमानजाणिकरिके तथालोकप्रतिष्ठाकूं सूकरकीविष्ठासमानजाणिकरिके यहविद्वान्पुरुषतिनतीनों कापरित्यागकरिके सुखकूंप्राप्तहोवै॥१॥इत्यादिकशास्त्रोंविषे विद्वान्पुरुषकूं अभिमान गौरव लोकप्रतिष्ठायातीनोंकापरित्यागकह्याहै और

श्रेष्ठआचारविषेवर्त्तणेहारे विद्वान्पुरुषकी लोकविषे प्रतिष्ठा अवश्यकरिकैहोवैहै ॥ और ता प्रतिष्ठाकरिकै ता विद्वान्पुरुषकेसमीप बहुत लोकआवैहैं ॥ और ताबहुतलोकोंकेआवणेकरिके ताविद्वान्पुरुषकाभीचित्त बहिर्मुखहोवै है ॥ ताबहिर्मुखचित्तविषे जीवन्मुक्तिकासुख होवैनहीं ॥ हेशिष्य ॥ या प्रकारकाविचार आपणेमनविषेकरिके ते दत्तात्रेयादिकब्रह्मवेत्तापुरुष लोकप्रवृत्तिरूपविक्षेपकीनिवृत्तिकरणे वासतै ताविपरीतआचरणकूं ऊपरसैंधारणकरैहैं ॥ अथवा ॥ अधिकारीशिष्योंकेश्रद्धाकीपरीक्षाकरणेवासतै तेब्रह्मवेत्तापुरुष ताविपरीत आचरणकूं ऊपरसैंधारणकरे हैं ॥ अथवा ॥ ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिकरिके किंचित्मात्रभी दोषोंकास्पर्शहोवैनहीं याप्रकार ताब्रह्मविद्याकेफल काबोधनकरणेवासतै तेब्रह्मवेत्तापुरुष ताविपरीतआचरणकूं ऊपरसैंधारणकरैहैं ॥ परंतु मनकरिके तौ तेब्रह्मवेत्तापुरुष सर्वविकारोंतैंर हितहीहोवैहैं ॥ हेशिष्य ॥ तिन दत्तात्रेयादिकमहान्पुरुषोंकी जाऐसीसिद्धअवस्थाहैं ॥ सासिद्धअवस्था अस्मदादिकजीवोंकूं सहस्रजन्मों करिकैभी दुर्लभहै ॥ ऐसेदत्तात्रेयादिकमहान्पुरुषोंके पूर्वउक्तअभिप्रायकूंनजाणिकरिके जेअज्ञानीपुरुष तिनोंकेऊपरलेआचरणकूंग्रहण करिके यालोकविषे विचरैहैं ॥ तेअज्ञानीपुरुष नरककूंहीप्राप्तहोवैहैं ॥ तहांदृष्टांत ॥ जैसे महादेवनैं सर्वलोकोंकीरक्षाकरणेवासतै अपणे योगकेप्रभावतैं कऱ्याजोविषकापान ॥ ताकूंदेखकरिके जोयोगसाधनतैंरहितपुरुष ताविषकूंपानकरैहै ॥ सोमूढबुद्धिपुरुष मृत्युकूंहींप्राप्त होवैहै॥तैसे जोअज्ञानीपुरुष तिनदत्तात्रेयादिकोंकेऊपरलेआचारकूंग्रहणकरैहै॥सोअज्ञानीपुरुष नरककूंहीप्राप्तहोवैहै॥हेशिष्य॥ तेदत्तात्रया दिकपरमहंससंन्यासी हम ब्रह्मरूपहैं याप्रकारकेआत्मसाक्षात्कारकरिके ब्रह्मभावकूंप्राप्तहुएहैं ॥ याकारणतैं तेब्रह्मवेत्तापुरुष सर्वपुण्यपापक मौंकापरित्यागकरिके सर्वदा परमपदविषेहींस्थितहैं॥अब तिनब्रह्मवेत्तापुरुषोंविषे पुण्यपापकर्मकाअभाव निरूपणकरैहैं॥हेशिष्य॥ऐसेब्रह्म वेत्तापुरुषोंविषे जेभक्तजन प्रीतिकरैहैं ॥ तिनभक्तजनोंकेप्रतितौ तेब्रह्मवेत्तापुरुष आपणेसर्वपुण्यकर्म देवैहैं ॥ और तिनब्रह्मवेत्तापुरुषोंविषे जेदुष्टजन सर्वदाद्वेषकरैहैं ॥ तिनदुष्टपुरुषोंकेप्रतितौ तेब्रह्मवेत्तापुरुष आपणेसंपूर्णपापकर्म देवैहैं॥इसप्रकार सुखदुःखरूपफलसहित संपूर्णपु ण्यपापकर्मोंकूंदेकरिके तेब्रह्मवेत्तापुरुष तापुण्यपापकर्मकेसुखदुःखरूपफलतैंरहितहोवैहैं॥तहांश्रुति॥सुहृदःसाधुकृत्यं द्विषंतःपापकृत्यम्॥

अर्थयह ॥ तात्रह्मवेत्तापुरुषकेपुण्यकर्मतौ सेवाकरणेहारेभक्तजन लेजावेहैं ॥ और ता ब्रह्मवेत्तापुरुषकेपापकर्मतौ द्वेषकरणेहारेदुष्टजन लेजावे हैं ॥ यातैं सोब्रह्मवेत्तापुरुष सर्वदाअसंगरहेहैं ॥ अब तिनब्रह्मवेत्तासंन्यासियोंका उन्मत्तपुरुषकीन्याईं आचरण निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ तेब्रह्मवेत्तापरमहंससंन्यासी कभीतौ दिशारूपवस्त्रोंकूंहीं धारणकरैहैं ॥ और कभीतौ नानाप्रकारके दुकूलोंकूंधारणकरैहैं॥और कभीतौ तेब्रह्मवेत्तासंन्यासी विष्ठामूत्रकरिकैलिप्तरहे हैं ॥ और कभीतौ चंदनादिकसुगंधपदार्थोंकरिकैलिप्तरहेहैं ॥ और तेब्रह्मवेत्तापुरुष कभीतौ हँसे हैं ॥और कभी नानाप्रकारकागायनकरैहैं॥कभीतौ तेब्रह्मवेत्तापुरुषअश्वकीन्याईं शीघ्रगमनकरे हैं॥और कभीतौ तेब्रह्मवेत्ता पुरुष पिशाचोंकीन्याईं आपणेअंगोंका ताडनकरे हैं ॥ और कभीतौ तेब्रह्मवेत्तापुरुष बालकोंकेसाथ नानाप्रकारकीक्रीडाकरे हैं ॥ और कभीतौ तेब्रह्मवेत्तापुरुष सर्वइच्छावोंतैं रहितहोवैहैं॥और कभीतौ तेब्रह्मवेत्तापुरुष विनाहींकारणतैंरुदनकरे हैं॥और कभीतौ तेब्रह्मवेत्ता पुरुष दुष्टलोकोंकरिकै ताडनकरेहुए तथाबांधेहुएभी परमआनंदकूंप्राप्तहोइकै मेघोंकीन्याईं गर्जनाशब्दकूंकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार तेदत्तात्रेयादिकब्रह्मवेत्तासंन्यासी आपणेवास्तवस्वरूपविषे लोकोंकेव्यामोहकरणेवासतैं उन्मत्तपुरुषकीन्याईं विपरीतचेष्टाकूंकरतेभयेहैं ॥ परंतु तेब्रह्मवेत्तासंन्यासीवास्तवतैं उन्मत्तहैंनहीं॥किंतुवास्तवतैंतौ वेब्रह्मवेत्तासंन्यासी अहिंसासत्यअस्तेय ब्रह्मचर्य अपरिग्रह या पंचप्रका रकेयमकीही सर्वदारक्षाकरणेहारे हैं शंका हेभगवन् ब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुषका उन्मत्तपुरुषकीन्याईं आचरण किसीभीशास्त्रनैं विधा नकऱ्यानहीं ॥ यातैं ताउन्मत्तआचरणकूंधारणकरणायोग्यनहीं है ॥ समाधान ॥ हेशिष्य आपणेस्वरूपकेगुह्यराखणेवासतैं ब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुषोंका उन्मत्तपुरुषकीन्याईं आचरण योगशास्त्रविषेकथनकऱ्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ तथाचरेतवैयोगी सतां धर्ममदूषयन् ॥ जनायथाऽवमन्येरन् गच्छेयुर्नैवसंगतिं ॥ अर्थयह ॥ यहब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुष श्रेष्ठपुरुषोंकेधर्मकारक्षणकरताहुआ ऊपरसैं ऐसा आचरण राखे ॥ जिसआचरणकरिकै तात्रह्मवेत्तापुरुषका कोईलोक माननहींकरैं ॥ तथा संगनहींकरैं ॥ काहेतैं लोकोंकेमानकरिकै तथालोकोंके संगकरिकै ताविद्वान्पुरुषकाभीचित्त बहिर्मुखहोवैहै ॥ १ ॥ हेशिष्य ॥ इत्यादिकशास्त्रोंकेवचनोंकाविचारकरिकै तेब्रह्मवेत्तापुरुष ऊपरसैं ॥ ६ ॥

लोकोंकेदिखावणेवासतैं नानाप्रकारकाविपरीतआचरणकूंराखेहैं ॥ परंतु ते ब्रह्मवेत्तापुरुष आपणे शरीरमनवाणीकरिकै कदाचित्भी ताविपरीतआचरणकूंकरतेनहीं ॥ किंतु तेब्रह्मवेत्तापुरुष आपणे शरीरमनवाणीकरिकैतौ शास्त्रविहितधर्मकाहीपालनकरे हैं ॥ हेशिष्य॥ जैसे यालोकविषे प्रज्वलितमहान्अग्नि शुष्ककाष्ठोंकूं तथाआर्द्रकाष्ठोंकूं दग्धकरैहै ॥ तैसे तिनब्रह्मवेत्तापुरुषोंका ज्ञानरूपअग्निभी संपूर्ण शुभअशुभकर्मोंका नाशकरैहै ॥ यातैं तात्रह्मवेत्तापुरुषकूं किंचित्मात्रभी दोषकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ हेशिष्य ॥ जैसे यहलोकप्रसिद्धअग्नि विषादिकसर्ववस्तुवोंकाभक्षणकरैहै ॥ ताअग्निकूंदेखिकरिकै जोमूढबुद्धिपुरुष ताअग्निकीन्याईं विषादिकसर्ववस्तुवोंकेभक्षणविषे प्रवृत्त होवैहै ॥ सोमूढबुद्धिपुरुष शीघ्रही नाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे इदानींकालविषे आत्मसाक्षात्कारतैंरहित जो परमहंससंन्यासी तिन दत्तात्रेयादिकमहान्पुरुषोंके ऊपरिलेआचरणकूं धारणकरैहै ॥ सोपरमहंससंन्यासी दोनोंलोकोंतैंभ्रष्टहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ इसलोकविषे तौ अपमानजन्यदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और परलोकविषे नरकदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अबब्रह्मवेत्तापुरुषोंविषे शास्त्रकेविधिकाअभाव निरूपण करे हैं ॥ हेशिष्य ॥ ऐसेदत्तात्रेयादिकब्रह्मवेत्तापुरुषोंकूं जोयहफलरूपविद्वत्संन्यास प्राप्तभयाहै सो किसीशास्त्रकीविधिकरिकै प्राप्त नहीं भया ॥ किंतु स्वतःहीप्राप्तभयाहै॥यातैं तिनब्रह्मवेत्तापुरुषोंकूं तासंन्यासविषे कर्त्तव्यताबुद्धिहैनहीं ॥ और तिनब्रह्मवेत्तापुरुषोंकूं जैसे तासं न्यासविषे कर्त्तव्यताबुद्धिनहीं है॥तैसे बहिरंगसाधनोंविषे तथाअंतरंगसाधनोंविषेभीसाकर्तव्यताबुद्धिहैनहीं॥काहेतैं जबपर्यंत फलकीउत्प त्तिनहींहोवै है॥तबपर्यंतही बहिरंगअंतरंगसाधनोंकीअपेक्षाहोवै है॥फलकीउत्पत्तितैंअनंतर तिनसाधनोंकाप्रयोजनरहैनहीं॥याकारणतैंही यहवेदभगवान् तिनब्रह्मवेत्तापुरुषोंके प्रति प्रातःकाल मध्याह्नकालसायंकाल यातीनकालोंविषे स्नानकाभीविधानकरैनहीं ॥ काहेतैं ता त्रिकालस्नानकाफल जोअंतःकरणकीशुद्धिहै ॥ साशुद्धि तिनब्रह्मवेत्तापुरुषोंकूं पूर्वहीप्राप्तहै ॥ और सो वेदभगवान् तिनब्रह्मवेत्तापुरुषोंके प्रति समाधिकरणेकाभी विधानकरैनहीं॥काहेतैंसासमाधिभी तिनब्रह्मवेत्तापुरुषोंकूं स्वरूपकरिकै तथाफलकरिकै पूर्वहीसिद्धहै॥ अबतिन ब्रह्मवेत्तापुरुषोंविषे स्वरूपतैंसमाधिका निरूपणकरैहैं हेशिष्य॥तेब्रह्मवेत्तापुरुषजिसकालविषे पद्मादिकआसनकूंबांधिकरिकैबैठेहैं॥ तथा

जिसकालविषे आपणेहस्तपादादिकअंगोंकूंपसारेहैं ॥ तथा जिसकालविषे ताआसनतैंउठेहैंतथा जिसकालविषे भोजनकरे हैं॥तथा जिस कालविषे जलपानकरे हैं॥तथा जिसकालविषे पृथ्वीऊपरफिरे हैं॥तथा जिसकालविषे शयनकरे हैं॥ तिनसंपूर्णकालोंविषे तेब्रह्मवेत्तापुरुष समाधियुक्तहीरहे हैं॥हेशिष्य ॥ यहवार्त्ता पूर्व वृद्धपुरुषोंनैंभीकथनकरीहै॥तहांश्लोक॥देहाभिमानेगलिते विज्ञातेपरमात्मनि ॥यत्रयत्रमनो याति तत्रतत्रसमाधयः॥अर्थयह मैंअद्वितीयब्रह्मरूपहूं याप्रकारकेआत्मसाक्षात्कारकेप्राप्तहुएजभी याविद्वान्पुरुषका देहाभिमाननिवृत्त होवै है ॥ तभी याविद्वान्पुरुषकामन जिसजिसपदार्थविषेजावै है ॥ तहांतहां समाधियांही होवै हैं॥तात्पर्ययह ॥ ताविद्वान्पुरुषकामनस वैपदार्थोंविषे नामरूपअंशकाबाधकरिकै अस्तिभातिप्रियरूप अद्वितीयब्रह्मकूंहीदेखेहै ॥ १ ॥ हेशिष्य जैसे पंचवर्षपर्यंत बालक ऊपर शास्त्रकाविधि तथा निषेध होवैनहीं ॥ तैसे तिनब्रह्मवेत्तापुरुषोंऊपरभी शास्त्रकाविधि तथानिषेध होवैनहीं ॥ काहेतैं जिन पुरुषोंविषे भेददर्शनरूपअविद्या रहैहै ॥ तिनपुरुषोंऊपरिही शास्त्रकाविधि तथानिषेध होवै हैं ॥ साभेददर्शनरूपअविद्या तिनब्रह्म वेत्तापुरुषोंविषेहैनहीं॥यातैं तिनब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुषोंऊपरशास्त्रकाविधि तथानिषेध संभवैनहीं॥ अब तिनब्रह्मवेत्तापुरुषोंविषेभेददर्शनका अभाव निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ तेब्रह्मवेत्तापुरुष आपणेशरीरकूं तथाश्वानकेविष्ठाकूं विलक्षणदेखतेनहीं ॥ किंतु दोनोंकूंसमानही देखेहैं॥याकारणतैंही तेब्रह्मवेत्तापुरुष भक्तजनोंनैं शरीरमनवाणीकरिकै तथानानाप्रकारकेदुकूलोंकरिकै तथाचंदनादिकोंकेलेपकरिकै तथा सुगंधिवालेपुष्पोंकरिकै तथानानाप्रकारकेअन्नादिकपदार्थोंकरिकैपूजनकियेहुएभीकिंचित्मात्रभीहर्षकूंप्राप्तहोवैनहीं॥ हेशिष्य॥तेब्रह्मवेत्ता पुरुष याशरीरतैं आपणेकूंभिन्नकरिकैमानैहैं ॥ यातैं तेब्रह्मवेत्तापुरुष जैसे याशरीरकेपूजनादिकोंविषे हर्षकूंनहींप्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे याशरी रके छेदनविषे तथाभेदनविषे तथाबंधनविषे तथाताडनविषे तथानिरादरविषे तेब्रह्मवेत्तापुरुष किंचित्मात्रभी खेदकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ हेशिष्य ॥तेब्रह्मवेत्तापुरुष आपणेशरीरविषे तथाभक्तजनोंकेशरीरविषे तथादुष्टजनोंकेशरीरविषे एकआत्माकूंहीं अनुगतजानैहैं॥याकारण तैंही तिनअभेददर्शीब्रह्मवेत्तापुरुषोंका यालोकविषे कोईमित्रनहींहैकोईशत्रुनहींहै॥तथाकोईउदासीननहींहै।तथाकोईपदार्थ आपणापराया

नहींहै॥तथा तिनब्रह्मवेत्तापुरुषोंकूं कोईशीतउष्णनहींहै॥ तथा कोईक्षुधापिपासानहींहै॥ तथा कोईशोकमोहनहीं है ॥ तथा कोई जरा मरणनहीं है ॥तात्पर्ययह॥ तेब्रह्मवेत्तापुरुष शरीरादिकउपाधियोंके शीतउष्णादिकधर्मजानिकै आपणेवास्तवस्वरूपकूं सर्वदाअसंगजा नै हैं ॥ और हेशिष्य ॥ यालोकविषे जेपुरुष तातमबुद्धितैंरहितहैं ॥ तिनविषमदर्शीपुरुषोंकूं मानतौ सुखकीप्राप्तिकरैहै ॥ और अपमान दुःखकीप्राप्तिकरै है॥और तेब्रह्मवेत्तापुरुष सर्वत्र समबुद्धिवालेहैं॥यातैं तिनब्रह्मवेत्तापुरुषोंकूं सोमान सुखकीप्राप्तिकरैनहीं॥ तथा अपमान दुःखकीप्राप्तिकरैनहीं ॥हेशिष्य॥इसप्रकार सर्वत्रसमबुद्धिवाले तथाजीवन्मुक्तिअवस्थावाले तेसंवर्तकादिकविद्वत्संन्यासी पूर्वहोतेभये हैं ॥ तिनोंनैं यहज्ञाननिष्ठारूप परमहंससंन्यास पूर्व धारणकऱ्याहै ॥हेशिष्य॥वैराग्यतैंरहित जेबहिर्मुखपुरुषहैं॥ तेबहिर्मुखपुरुषतौ याप्रकारके वचन कथनकरै हैं ॥ सतयुगत्रेतायुगादिककालविषेही सा वर्णआश्रमकेधर्मोंकीव्यवस्थाथी ॥ इदानींकालविषे ऐसापरमहंससंन्यासियों काधर्म देखणेविषेआवतानहीं॥ ऐसेवचनकहणेहारेवैराग्यहीनपुरुषोंकेप्रतिवैराग्यवान्महात्मापुरुष तापरमहंससंन्यासकेधर्मोंकूं प्रत्यक्षकरि कैदिखावैहैं॥यातैं वैराग्यही तासंन्यासकाकारणहै ॥ इतनैंग्रंथकरिकै जाबालउपनिषद्विषे कथनकरेजे संवर्तकादिक परमहंससंन्यास हैं तिनोंका निरूपणकऱ्या ॥ अब तापरमहंससंन्यास के प्राप्तिका साधन जो वैराग्य है तावैराग्यकीप्राप्तिवासतै गर्भउपनिषद्केअर्थका निरूपणकरै हैं ॥ हेशिष्य ॥ गर्भउपनिषद्विषे कथनकरीजा याशरीरकीव्यवस्था है ॥ ताकेविचारकरिकैही याअधिकारीपुरुषोंकूं सोवैराग्य प्राप्तहोवै है ॥ याकारणतैं तागर्भउपनिषद्का अर्थ हम तुमारेप्रति कथनकरते हैं ॥ तू सावधानहोइकैश्रवणकर ॥ हेशिष्य ॥ ब्रह्माकेशरीरतैं आदिलैके श्वानकेशरीरपर्यंत जितनेकशरीर हैं ॥ तेसंपूर्णशरीर पंचभूतरूपहैं ॥ तथा तिनपंचभूतोंकाकार्य जेश्रोत्रादिक इंद्रियहैं तिनोंकाआश्रयरूपहैं ॥ यातैं तेसंपूर्णशरीर समानहीं हैं ॥ अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकैनिरूपणकरै हैं ॥ हेशिष्य॥ आकाश १ वायु २ तेज ३ जल ४ पृथिवी ५ यापंचोंकूं बुद्धिमान्पुरुष महाभूत यानामकरिकैकथनकरैहैं॥ और तेआकाशादिकपंचभूतही स्थूलसू क्ष्मरूपकरिकै वर्तमानहुए सर्वप्राणियोंके स्थूलसूक्ष्मशरीररूपहोवै हैं ॥ अब प्रथम तिनसूक्ष्मभूतोंतैं सूक्ष्मशरीरकीउत्पत्ति निरूपणकरै

हैं ॥ हेशिष्य ॥ ताआकाशकेसात्विकअंशतैं श्रोत्रइंद्रिय उत्पन्नहोवै है ॥१॥ और वायुकेसात्विकअंशतैं त्वक्इंद्रिय उत्पन्नहोवैहै॥२॥ और तेजकेसात्विकअंशतैं चक्षुइंद्रिय उत्पन्नहोवै ॥ ३ ॥ और जलकेसात्विकअंशतैं रसनइंद्रिय उत्पन्नहोवै है ॥ ४ ॥ और पृथिवीके सात्विकअंशतैं घ्राणइंद्रिय उत्पन्नहोवै है ॥५॥ यह श्रोत्रादिकपंचइंद्रिय शब्दादिकविषयोंकेज्ञानकाकारणहैं॥याकारणतैं शास्त्रवेत्तापुरुष तिनश्रोत्रादिकपंचइंद्रियोंकूं ज्ञानइंद्रिय यानामकरिकैकथनकरै हैं ॥ और हेशिष्य ॥ ताआकाशकेराजसअंशतैं वाक्इंद्रिय उत्पन्नहोवै है ॥ १ ॥ और वायुकेराजसअंशतैं पाणिइंद्रिय उत्पन्नहोवै है ॥ २ ॥ और तेजकेराजसअंशतैं पादइंद्रिय उत्पन्नहोवै है॥३॥और जलके राजसअंशतैं उपस्थइंद्रिय उत्पन्नहोवै हैं ॥४॥और पृथिवीकेराजसअंशतैं पायुइंद्रिय उत्पन्नहोवै है ॥ ५ ॥ यहवाकादिकपंचइंद्रिय शब्द उच्चारणादिकक्रियाकेकारणहोवै हैं ॥ याकारणतैं शास्त्रवेत्तापुरुष तिनवाकादिकपंचइंद्रियोंकूं कर्मइंद्रिय या नामकरिकै कथनकरैहैं ॥ और हेशिष्य ॥ तिन आकाशादिकपंचभूतोंके मिलेहुए सात्विक अंशतैं ज्ञानशक्तिवाला अंतःकरण उत्पन्नहोवै है ॥ और तिनआकाशादिकपंचभूतोंके मिलेहुएराजसअंशतैं क्रियाशक्तिवालाप्राण उत्पन्नहोवैहै ॥ सोप्राणभी प्राण १ अपान २ व्यान ३ उदान ४ समान ५ याभेदकरिकैपांचप्रकारकाहोवैहै ॥ अथवा नाग १ कूर्म २ कृकल ३ देवदत्त ४ धनंजय ५ यापांचोंकूंमिलाइकै सोप्राण दशप्रकारकाहोवै है ॥ और हेशिष्य ॥ सर्वदेहधारीजीवोंकेहृदयकमलविषेस्थित जोज्ञानशक्तिवालाअंतःकरणहै ॥ सोअंतःकरणभी मन १ बुद्धि २ चित्त ३ अहंकार ४ याप्रकारकेभेदकरिकै चारिप्रकारकाहोवैहै ॥ इसप्रकार पंचज्ञानइंद्रिय तथापंचकर्मइंद्रिय तथापंचप्राण तथाचतुष्टयअंतःकरण यासंपूर्णोंकेसमुदायकानाम सूक्ष्मशरीरहै ॥ याहीकूंलिंगशरीरभीकहैहैं ॥ हेशिष्य ॥ यहसूक्ष्मशरीर अपंचीकृत सूक्ष्मभूतोंका कार्य है॥तथा नेत्रादिकइंद्रियोंकाअविषयहै॥याकारणतैंशास्त्रवेत्तापुरुष ताशरीरकूं सूक्ष्मशरीर यानामकरिकैकथनकरै हैं ॥ और यहस्थूलशरीरतौ पंचीकृतस्थूलभूतोंका कार्य है तथा नेत्रादिकइंद्रियोंकाविषयहै॥याकारणतैं शास्त्रवेत्तापुरुष ताशरीरकूं स्थूलशरी रयानामकरिकैकथनकरै हैं ॥ इतनैंकरिकै स्थूलसूक्ष्मयादोशरीरोंका निरूपणकऱ्या ॥ अब अध्यात्म अधिदैव यादोप्रकारके भेदक रिकै तास्थूलसूक्ष्मशरीरकाचारिप्रकारकाभेद निरूपणकरै हैं ॥ हेशिष्य ॥ सोसूक्ष्मशरीरभी अध्यात्म अधिदैव भेदकरिकैदोप्रका

॥७॥

रकाहोवै है ॥ और सोस्थूलशरीरभी अध्यात्म अधिदैव भेदकरिकै दोप्रकारकाहोवै है ॥ तहां प्रथम तत्पदार्थरूपअधिदैवस्वरूपकूं तुं श्रवणकर ॥ तहांसमष्टिसूक्ष्मरूप हिरण्यगर्भ अधिदैवरूपसूक्ष्मशरीरहै॥ और समष्टिस्थूलरूपविराट् अधिदैवरूप स्थूलशरीरहै॥ कैसा है सोविराट्॥अतल १ वितल २ सुतल ३ तलातल ४ महातल ५ रसातल६पाताल७ यहनीचेकेसप्तलोकतौ ताविराट्भगवान्के दोपादहैं और ऊपरकेसप्तलोकोंविषे प्रथम भूलोकतौ ताविराट्भगवान्का जघनस्थानहै ॥ १ ॥ और अंतरिक्षलोकताविराट्भगवान्का नाभि स्थानहै ॥ २ ॥ और स्वर्गलोक ताविराट्भगवान्का हृदयस्थान है ॥ ३ ॥ और महरलोक ताविराट्भगवान्का गलतैंलेकेमुखपर्यंत स्थानहै ॥ ४ ॥ और जनलोक ताविराट्भगवान्का मुखतैंलैकेनेत्रपर्यंत स्थानहै ॥ ५ ॥ और तपलोक ताविराट्भगवान्का ललाटस्था नहै ॥ ६ ॥ और सत्यलोक ताविराट्भगवान्का शिरहै ॥ इसप्रकार सोविराट्भगवान्हीं तिनचतुर्दशलोकोंकास्थानहै ॥ इतनैंकरिकै तत्पदार्थरूप अधिदैवसूक्ष्मशरीरका तथाअधिदैवस्थूलशरीरका निरूपणकऱ्या ॥ अब त्वंपदार्थरूप अध्यात्मसूक्ष्मशरीरका तथाअध्या त्मस्थूलशरीरका निरूपणकरै हैं ॥ हेशिष्य॥ अहंममअभिमानका विषय जोव्यष्टिसूक्ष्मव्यक्ति है ताकानाम अध्यात्मसूक्ष्मशरीरहै॥ जा अध्यात्मसूक्ष्मशरीरकूं शास्त्रवेत्तापुरुष तैजस यानामकरिकैकथनकरै हैं ॥ और अहंममअभिमानकाविषय जोव्यक्तिहै ताकानाम अध्या त्मस्थूलशरीरहै॥जाअध्यात्मस्थूलशरीरकूं शास्त्रवेत्तापुरुष विश्व यानामकरिकैकथनकरैहैं॥ शंका॥हेभगवन् अन्यशास्त्रोंविषेतौ अध्यात्म अधिदैव अधिभूत यहतीनप्रकारकाविभाग कथनकऱ्याहै॥यातैंइहांअध्यात्म अधिदैव यहदोप्रकारकाविभागकथनकरणा असंगतहोवैगा समाधान ॥हेशिष्य॥ तेस्थूलसूक्ष्मशरीरही जिसकालविषे अध्यात्मअवस्थाकीन्याईं अपरोक्षरूपकरिकैप्रतीतहोवै हैं॥ तिसकालविषे ता स्थूलसूक्ष्मशरीरकूंही बुद्धिमानपुरुष अधिभूत यानामकरिकैकथनकरै हैं॥ यातैं तास्थूलसूक्ष्मशरीरविषेही तिनअधिभूतपदार्थोंका अंत रभावहै ॥ और तिनस्थूलसूक्ष्मशरीरोंका जोअध्यात्मरूपहै ॥ तथाअधिभूतरूपहै॥ तेदोनोंरूप मिलिकरिकै जभी व्यवहारके विषयहो वै हैं॥ तभीही यहस्थावर जंगम भेदहोवै है॥यातैं सोस्थावरजंगमभेदभी तास्थूलसूक्ष्मशरीरतैंभिन्ननहींहै॥ किंतु तेस्थावरजंगमशरीरभी

तास्थूलसूक्ष्मशरीरकेअंतरभूतहींहैं॥ तात्पर्ययह संपूर्णस्थावरजंगमशरीर आपणेआपणेअभिमानीजीवकीअपेक्षाकरिकैतौअध्यात्मभावकूं प्राप्तहोवै हैं ॥ और दूसरेद्रष्टापुरुषकीअपेक्षाकरिकै अधिभूतभावकूंप्राप्तहोवै हैं॥ जैसे चैत्रपुरुषकाशरीर ताचैत्रनामापुरुषकी अपेक्षाकरि कैतौ अध्यात्मरूपहै ॥ और दूसरेमैत्रनामापुरुषकीअपेक्षाकरिकै अधिभूतरूप है ॥ इसप्रकार सर्वशरीरींविषेजानिलेणा ॥ और हेशिष्यते व्यष्टिस्थूलशरीरभी जरायुज १ अंडज २ स्वेदज ३ उद्भिज्ज ४ याभेदकरिकै चारिप्रकारकेहोवैहैं॥ तहांमाताकेउदरविषे बालककूंआवरणकर णेहारा जो जरायुनामा चर्मविशेषहै ॥ ताजरायुचर्मतैं जिनशरीरोंकीउत्पत्तिहोवै है ॥ तिनशरीरोंकानाम जरायुज है ॥ जैसे मनुष्य गौ अश्व अजा आदिकशरीरहैं ॥ १ ॥ और अंडतैं जिनशरीरोंकीउत्पत्तिहोवैहै ॥तिनशरीरोंकानाम अंडजहै ॥जैसे पक्षी सर्प मत्स्य पिपी लिका आदिकशरीरहैं ॥ २ ॥ और शरीरादिकोंकेस्वेदरूपमलतैं जिनशरीरोंकीउत्पत्तिहोवै है ॥ तिनशरीरोंकानाम स्वेदजहै॥ जैसे मं त्कुणयूकादिकक्षुद्रशरीरहैं॥ ३ ॥ और जिनशरीरोंका बीजरूपकारण ऊर्ध्वआकार परिणामकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिनशरीरोंकानाम उद्भिज्ज है ॥ तेउद्भिज्जशरीरभी दोप्रकारकेहोवै हैं ॥ तहां एकतौ पापकर्मजन्यहोवै हैं ॥ और दूसरे पुण्यकर्मजन्यहोवै हैं तहां याभूमिलोकविषे स्थित जेवृक्षलतादिकहैं तथानरकविषेस्थित जेयमयातनाकेशरीरहैं॥तेदोनोंप्रकारकेशरीर पापकर्मजन्य उद्भिज्जशरीरहैं॥ और स्वर्गलो कविषेस्थित जेदेवताशरीरहैं ॥तेदेवताशरीर पुण्यकर्मजन्य उद्भिज्जशरीरहैं॥इतनैंकरिकै चारिप्रकारकेशरीरोंका निरूपणकऱ्या ॥ अब आकाशादिकपंचभूतोंकेव्यापारोंका निरूपणकरै हैं ॥ हेशिष्य ॥ तिनचारिप्रकारकेशरीरोंविषेभी अवकाशदेणा यह आकाशकाव्यापा रहै ॥ १ ॥ और पदार्थोंका परस्पर संयोगकरणा तथाविभागकरणा यह वायुकाव्यापारहै ॥ २ ॥ और अन्नादिकोंकूंपकावणा यह तेज काव्यापारहै ॥ ३ ॥ और वस्त्रादिकपदार्थोंकूंआर्द्रीभावकरणा यह जलकाव्यापारहै ॥ ४ ॥ और सर्वपदार्थोंकाधारणकरणा यह पृथिवी काव्यापारहै॥५॥और अब पंचज्ञानइंद्रियोंकेव्यापारकानिरूपणकरै हैं॥हेशिष्य॥शब्दकाग्रहणकरणा यह श्रोत्रइंद्रियकाव्यापारहै।१॥और स्पर्शकाग्रहणकहणा यह त्वक्इंद्रियकाव्यापारहै ॥ और रूपकाग्रहणकरणा यह चक्षुइंद्रियकाव्यापार है ॥ ३ ॥ और रसकाग्रहणकरणा

यह रसनइंद्रियकाव्यापारहै ॥ ४ ॥ और गंधकाग्रहणकरणा यह घ्राणइंद्रियकाव्यापारहै ॥ ५ ॥ अब पंचकर्मइंद्रियोंकेव्यापारकानिरूप णकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ वचनकाउच्चारणकरणा यह वाक्इंद्रियकाव्यापारहै ॥ १ ॥ और वस्तुकाग्रहणकरणा यह पाणिइंद्रियकाव्यापार है ॥ २ ॥ और गमनआगमनकरणा यह पादइंद्रियकाव्यापारहै ॥ ३ ॥ और पुत्रादिकप्रजाकेउत्पत्तिकाकारण जोविषयआनंदहै॥सोवि षयानंद उपस्थइंद्रियकाव्यापारहै ॥ ४ ॥ और मलकापरित्यागकरणा यह पायुइंद्रियकाव्यापारहै ॥ ५ ॥ अबप्राणोंकेव्यापारका निरूप णकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ मुखनासिकाद्वारा याशरीरतैंबाहरानिकसणा तथाशरीरकेभीतरजाणा यहप्राणकाव्यापारहै ॥ १ ॥ और मलादि कोंकूंनीचेलेजाणा यहअपानकाव्यापारहै ॥ २ ॥ और अन्नकेसूक्ष्मरसकूं सर्वनाडियोंविषे पहुँचावणा यहव्यानकाव्यापारहै ॥ ३ ॥ और अन्नादिकोंकूंऊर्ध्वलेजाणा यहउदानकाव्यापारहै ॥ ४ ॥ और भोजनकरेहुएअन्नकेपरिपक्वकरणेवासतै जठराग्निकूं प्रज्वलितकरणा यह समानकाव्यापारहै ॥ ५ ॥ और उद्गार नागकाव्यापारहै ॥ ६ और नेत्रोंकाउन्मीलन कूर्मकाव्यापारहै ॥ ७ ॥ और छिक्का कृकलका व्यापारहै ॥ ८ ॥ और विजृंभण देवदत्तकाव्यापारहै ॥ ९ ॥ और शरीरकाफुलावणा धनंजयकाव्यापारहै ॥ १० ॥ और शरीरका जीवन तथामरणकालविषे लोकांतरमेंउत्क्रमण यहदोनों सर्वप्राणोंका साधारणव्यापारहै ॥ अब चतुष्टयअंतःकरणकेव्यापारका निरू पणकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ संशयरूपमनन मनकाव्यापारहै ॥ १ ॥ और पदार्थकानिश्चयकरणा यहबुद्धिकाव्यापारहै ॥ २ ॥ और वस्तु कास्मरणरूपसामान्यज्ञान चित्तकाव्यापारहै ॥ ३ ॥ और अहंअभिमानकरणा यहअहंकारकाव्यापारहै ॥ ४ ॥ अब आकाशादिकपंच भूतोंकेस्वरूपलक्षणका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ अवकाशरूपछिद्र आकाशकास्वरूपलक्षणहै ॥ १ ॥ और चलायमानपणा वायुका स्वरूपलक्षणहै ॥ २ ॥ और उष्णपणा तथाप्रकाशपणा तेजकास्वरूपलक्षणहै ॥ ३ ॥ और द्रवीपणा तथास्नेहपणा जलका स्वरूपलक्षण है ॥ ४ ॥ और कठिनपणापृथ्वीकास्वरूपलक्षणहै ॥ अब आकादिकपंचभूतोंकें तटस्थलक्षणकानिरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ शब्दगुण आकाशकातटस्थलक्षणहै ॥ १ ॥ और शब्दस्पर्श यहदोनोंगुणवायुकातटस्थलक्षणहै ॥ २ ॥ और शब्द स्पर्श रूप यहतीनोंगुण तेज

क्रातटस्थलक्षण है ॥ ३ ॥ और शब्द स्पर्श रूप रस यह चारिगुण जलका तटस्थलक्षण है ॥ और शब्द स्पर्श रूप रस गंध यह पंचगुण पृथ्वीका तटस्थलक्षणहै ॥ ५ ॥ अब श्रोत्रादिकइंद्रियोंकेविषयका निरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ शब्दगुणवालाआकाशतो श्रोत्रइंद्रियका विषयहोवेहै ॥ १ ॥ और शब्द स्पर्श यादोनोंगुणोंवालावायु त्वक्इंद्रियका विषयहोवेहै ॥ २ ॥ और शब्द स्पर्श रूप यातीनगुणोंवालातेज चक्षुइंद्रियका विषयहोवेहै ॥ ३ ॥ और शब्द स्पर्श रूप रस याचारिगुणोंवालाजल रसन इंद्रियका विषयहोवे है ॥ ४ ॥ और शब्द स्पर्श रूप रस गंध यापंचगुणोंवालीपृथ्वी घ्राणइंद्रियका विषयहोवेहै ॥ ५ ॥ इहां आकाश जल पृथ्वी यातीनों विषे जो क्रमतैं श्रोत्र रसन घ्राण यातीनइंद्रियोंकीविषयता कथनकरीहै ॥ सोतिनआकाशादिकतीनोंविषे क्रमतैं शब्द रस गंध यातीनगुणोंका तादात्म्यसंबंध अंगीकारकरिकै कथनकऱ्याहै ॥ वास्तवतैंतो श्रोत्र रसन घ्राण यहतीनइंद्रिय क्रमतैं शब्द रस गंध या तीनगुणोंकूंहीं विषयकरे हैं ॥ तिनगुणोंकेआश्रयद्रव्यकूं विषयकरैनहीं ॥ और त्वक्चक्षु यहदोनोंइंद्रियतौं रूपस्पर्शादिकगुणोंकूं तथातिन रूपादिकगुणोंकेआश्रयद्रव्यकूं यादोनोंकूंविषयकरेहै ॥ और हेशिष्य ॥ जेआकाशादिकभूत नियमकरिकै श्रोत्रादिकइंद्रियोंकेविषयहोवे हैं ॥ तेहीआकाशादिकभूत नियमतैंविना वाकादिकइंद्रियोंकेभी विषयहोवैहै ॥ जैसे हस्तइंद्रियनियमकरिकै पृथ्वीकाहीग्रहणकरैनहीं ॥ किंतु सोहस्तइंद्रिय जलकाभीग्रहणकरैहै ॥ हेशिष्य ॥ पूर्वकथनकरेजे आकाशादिकपंचसूक्ष्मभूतहैं ॥ तथा तिनपंचभूतोंकाकार्यरूप जेइंद्रिय प्राण अंतःकरण आदिकहैं यहसंपूर्णव्यष्टिरूपकरिकैतौ अध्यात्मसूक्ष्मशरीरविषे वर्त्तैहैं ॥ और समष्टिरूपकरिकै अधिदैव सूक्ष्मशरीरविषे वर्त्तैहैं ॥ तेसंपूर्णपदार्थ अत्यंतसूक्ष्महैं ॥ याकारणतैंनेत्रादिकइंद्रियोंकरिकै तिनसूक्ष्मपदार्थोंकाज्ञानहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन्तिनआकाशादिकभूतोंकेसूक्ष्मताविषेकौनकारणहै ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ ताव्याष्टिसमष्टिरूपसूक्ष्मशरीरकेघटक जेआकाशादिकहैं ॥ तिनआकाशादिकोंविषेजोसूक्ष्मताहै ॥ तासूक्ष्मताविषे पंचीकरणकाअभावहीकारणहै ॥ शंकाहेभगवन् जापंचीकरणकेअभावकरिकैयाआकाशादिकभूतोंविषेसूक्ष्मरूपताहोवेहै ॥ औरजापंचीकरणकरिकैयाआकाशादिकभूतोंविषेस्थूलताप्राप्तहोवेहै ॥ तापंचीकरणकाक्यास्वरूप

हे ॥ समाधान ॥ हे शिष्य आकाश १ वायु २ तेज ३ जल ४ पृथिवी ५ या पंचभूतोंविषे एक एकभूतके पंच पंचविभागहोवेहैं ॥ तहां एकएकभूतके चारिचारिविभागतौ पृथक्होवेहैं ॥ और पंचमापंचमाविभाग पृथक्होवेहैं ॥ और ता एकएकभूतके पंचमे पंचमेविभाग केभी पुनः पंचपंचविभागहोवेहैं ॥ तिनपंचविभागोंविषे एकएकविभाग यथाक्रमतैं एकएकभूतके चारिचारिविभागोंविषे जाइकैमिलेहैं ॥ ताकरिकै एकएकभूतके२१एकविंशति एकविंशति विभागतौ आपणेआपणेहोवेहैं ॥ और चारिचारिविभाग दूसरेदूसरेभूतोंकेहोवेहैं ॥ जैसे एक आकाशकेपंचविभाग समानकरे ॥ तिनपंचविभागोंविषे चारिविभागतौ पृथक्राखे ॥ और पंचमाविभागपृथक्राख्या ॥ तापंचमेविभागकेभी पुनःपंचविभागकरेतिनपंचविभागोंतैं एकविभागतौ आकाशकेचारिविभागोंविषेमिलाया ॥ और दूसराविभाग वायुविषेमिलाया और तीसराविभागतेजविषेमिलाया और चतुर्थविभाग जलविषेमिलाया और पंचमाविभागपृथिवीविषेमिलाया ॥ याप्रकारकीरीति वायु आदिकोंविषेभी जाणिलेणी ॥ तात्पर्ययह ॥ आकाशकेपंचमेविभागके जेपंचविभागकरेहैं ॥ तिनपंचविभागोंतैं जोएकविभाग आकाशकूंप्राप्त भयाहै ॥ ताएकविभागकेसमान ताआकाशकेपूर्वलेचारिविभागोंके२० विंशतिविभागहोवेहैं ॥ याअभिप्रायकरिकैही तिनआकाशादिकोंके आपणेआपणे२१एकविंशति एकविंशति विभागकथनकरेहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् पंचीकरणकरिकै जोएकएकभूतविषेपंचभूतोंकाअंश अंगीकारकरोगे ॥ तौ एकहीआकाशविषे वायुपणा तथातेजपणा तथाजलपणा तथापृथिवीपणा प्रतीतहोणाचाहिये ॥ तैसे वायुआदिकोंविषेभी पांचोंभूत प्रतीतहोणेचाहिये ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ तापंचीकरणकेहुएभी तिनआकाशादिकभूतोंविषे आपणेआपणेतौ२१ एकविंशतिएक विंशति विभागहैं ॥ और वायुआदिकभूतोंका एकएकविभागहै ॥ याकारणतैं जैसे २१ एकविंशतितोलापरिमाणसुवर्णविषे एकतोलापरिमाण ताम्रादिकोंकेमिलेहुएभी तासुवर्णविषे ताम्रबुद्धीहोवैनहीं ॥ किंतु तासुवर्णविषे सुवर्णबुद्धिहीहोवेहै ॥ तैसेआपणेअंशकीअधिकताकरिकै तिन आकाशादिकोंविषेवायुआदिकोंकीप्रतीतिहोवैनहीं ॥ किंतु आकाशविषेतौ आकाशपणाहींप्रतीतहोवेहै ॥ औरवायुविषेवायुपणाहींप्रतीतहोवेहै ॥ ऐसे तेजादिकोंविषेभीतेजपणादिकहीप्रतीतहोवेहै ॥ हेशिष्य ॥ यहवार्त्ता ब्रह्मसूत्रोंविषे व्यासभगवान्नेभी कथनकरीहै ॥ तहां सूत्रं ॥ वैशे

ष्यानुतद्वादस्तद्वादः॥अर्थयह॥आकाशादिकपंचभूतोंका यद्यपिपंचीकरणकीरीतिसैं परस्पर विभाग मिल्याहुआहै॥तथापि तिनआकाशादिकभूतोंकाआपणाआपणाअंश अधिकहै ॥ याकारणतैं लोकविषे यहपृथिवीहै यहजलहै इत्यादिकभिन्नभिन्नव्यवहारहोवै है॥१॥ शंका हेभगवन् ॥ पंचीकरणवार्तिकग्रंथविषे आकाशादिकभूतोंविषे अर्द्धअर्द्धभागतौ आपणाआपणाकह्याहै ॥ और अर्द्धअर्द्धभाग दूसरे भूतोंकाकह्याहै॥और याग्रंथविषे आपनैं आकाशादिकभूतोंविषे २१ एकविंशतिविभागतौ आपणेआपणे कथनकरे ॥ और चारिविभाग अन्यभूतोंकेकथनकरे॥यातैं आपकेकहणेका तावार्तिकग्रंथकेसाथ विरोधहोवैहै॥समाधान॥हेशिष्य॥तावार्तिकग्रंथविषेभी अर्द्धशब्दकरिकै समानअर्द्धकानहीं कथनकऱ्याहै॥किंतु ताअर्द्धशब्दकरिकै चारिविभागकाविषमअर्द्धकथनकऱ्याहै॥यातैं तावार्तिकग्रंथका विरोधहोवैनहीं और हेशिष्य॥तावार्तिकग्रंथविषे अर्द्धशब्दकरिकै जोकदाचित् समानअर्द्धकाभी ग्रहणकारिये॥तौभीविरोधहोवैनहीं॥काहेतैं तावार्तिकग्रंथविषे जोपंचीकरणकीप्रक्रिया कथनकरीहै॥ताप्रक्रियातैं यहप्रक्रिया भिन्नहै ॥ तिनप्रक्रियावोंकेभेदहुएभी हमारेअद्वैतसिद्धान्तकीहानिहोवै नहीं॥उलटा सोप्रक्रियावोंकाभेद याजगत्विषेअनिर्वचनीयताकूंहीं बोधनकरै हैं॥हेशिष्य॥ऐसेपंचीकृतपंचभूतोंकाकार्य जोयहस्थूलशरीर है ॥ सोयहस्थूलशरीर आपणेविषे अनेकप्रकारकेरूपादिकगुणोंकूंधारणकरै हैं ॥ अब तिनगुणोंकानिरूपणकरैं हैं ॥ हेशिष्य॥ यास्थूलशरीरविषे शुक्ल १ रक्त २ कृष्ण ३ धूम्र ४ पीत ५ कपिल ६ पांडुर ७ यहसप्तप्रकारकेरूपरहे हैं ॥ इहां धूम्रकेरूपकानाम धूम्रहै ॥ और कपिलागौकेरूपकानाम कपिलहै॥और कपिल वर्णकरिकैमिल्याहुआजोशुक्लहै ताकानाम पांडुरहै॥और याशरीरविषे कोमल१ कठिन२ मध्यम ३ उष्ण ४ शीत ५ अनुष्णाशीत ६ यहषट्प्रकारकेस्पर्शरहेहैं॥इहां जोस्पर्श कोमलभीनहींहोवै तथाकठिनभीनहींहोवै तास्पर्शकानाम मध्यमहै ॥ और जोस्पर्शउष्णभीनहींहोवै तथाशीतभीनहींहोवै तास्पर्शकानाम अनुष्णाशीत है ॥ और याशरीरविषेसुगंध दुर्गंध येदोप्रकारकागंधरहे है ॥ तहां सुगंधतौ पुण्यवानयोगीपुरुषोंकूंहीं प्रत्यक्षहोवै है ॥ दूसरेजीवोंकूं सोसुगंध प्रतीतहोवैनहीं ॥ और मुखनासिकादिक अंगोंविषेस्थित जे दुर्गंध हैं ॥ तिनदुर्गंधोंकूंतौ सर्वजीव नित्यही अनुभव करै हैं ॥ और याशरीरविषे कटु १

तीक्ष्ण २ कषाय ३ क्षार ४ अम्ल ५ मधुर ६ यहषट्प्रकारकेरसरहेहैं ॥ और याशरीरविषे ध्वनिरूपशब्द तथावर्णरूपशब्द यहदोप्रकारकेशब्दरहेहैं ॥ तहां ध्वनिरूपशब्दतौ निषाद १ ऋषभ २ गांधार ३ षड्ज ४ मध्यम ५ धैवत ६ पंचम ७ याभेदकरिकैसप्तप्रकारकाहोवैहै ॥ हेशिष्य ॥ तिनध्वनिरूपसप्तस्वरोंकेजनावणेवासतै नारदमुनिनैं याप्रकारकेदृष्टांतकथनकरेहैं ॥ तहांश्लोक ॥ षड्जंरौतिमयूरस्तु गावोनर्दतिचर्षभं ॥ अजाविकोचगांधारं क्रौंचोनदतिमध्यमं ॥ १ ॥ पुष्पसाधारणेकाले कोकिलोरौतिपंचमं ॥ अश्वस्तुधैवतंरौति निषादंरौतिकुंजरः ॥ २ ॥ अर्थयह ॥ मयूरपक्षीतौ षड्जस्वरकाउच्चारणकरैहै ॥ १ ॥ और गौवां ऋषभस्वरकाउच्चारणकरैहैं ॥ २ ॥ और अजा अवि यहदोनों गांधारस्वरकाउच्चारणकरैहैं॥३॥ और क्रौंचपक्षी मध्यमस्वरकाउच्चारणकरैहै ॥ ४ ॥ और कोकिलपक्षी पंचमस्वरकाउच्चारणकरैहै ॥ ५ ॥ और अश्व धैवतस्वरकाउच्चारणकरै है ॥ ६ ॥ और कुंजर निषादस्वरकाउच्चारणकरैहै ॥ ७ ॥ तात्पर्ययह ॥ श्रीराग १ वसंत २ पंचम ३ भैरव ४ मेघनाद ५ नटनारायण ६ यहषट्प्रकारकेरागहोवै हैं ॥ तिनषट्रागोंविषे एकएकरागके यहनिषादादिक सप्तसप्तस्वरहोवैहैं ॥ तथा षट्षट्स्त्रियांहोवै हैं ॥ तहां गौडी १ कोलाहासी २ धाली ३ द्रविडी ४ मालवकौशिका ५ गंधारी ६ यहषट्रागिणी श्रीरागकीस्त्रियां हैं ॥१॥ और आदौली १ कौशिकी २ रामगरी ३ पुटमंजरी ४ गुंगरी ५ देशाख्या ६ यहषट्रागिणी वसंतरागकीस्त्रियां हैं ॥ २ ॥ और भैरवी २ गुर्जरी भाषा ३ वेलीवती ४ कर्णाटकी ५ रक्तसिंहा ६ यहषट्रागिणी पंचमरागकीस्त्रियां हैं॥ ३ ॥ और त्रिगुणा १ स्तंभतीर्था २ आभीरी ३ ककुभा ४ विराडी ५ सामेरी ६ यहषट्रागिणी भैरवरागकीस्त्रियां हैं ॥ ४ ॥ और बंगाला १ मधुरा २ कामदा ३ चोकमादिका ४ कंबुग्रीवा ५ देवाला ६ यहषट्रागिणी मेघनादरागकीस्त्रियां हैं ॥ ५ ॥ और त्रोटकी १ गांधारी २ शुद्धसुदगारी ३ इत्यादिकषट्रागिणी नटनारायणरागकीस्त्रियां हैं ॥६॥ याप्रकारकीछत्तीसरागिनी ३६ तथाषट्राग तथासप्तस्वर यहसंपूर्ण याशरीरविषेरहेहैं ॥ परंतु तेरागरागिणियोंसहितसप्तस्वर सर्वजीवोंकूंप्रत्यक्षहोवैनहीं ॥ किंतु जैसे याशरीरविषेस्थितउत्तमसुगंधकूं पुण्यवान्योगीपुरुषहीजानेहैं ॥ तैसे तिनसप्तस्वरोंकूंभी कोईपुण्यवान्पुरुषहीजानेहैं ॥ तिननिषादादिकस्वरोंकूंहीं योगीपुरुष अनाहद

शब्दआदिकरूपकरिकै अनुभवकरैहैं॥ औरगायनकरणेहारेपुरुषतौ तिनसप्तस्वरोंकूंआपणेमुखतैंप्रगटकरैहैं॥ हेशिष्य॥ जैसेतेष्वनिरूपशब्द अनेकप्रकारकहैं॥ तैसेयाशरीरविषे क ख ग इत्यादिकवर्णरूपशब्दभीअनेकप्रकारकरहै हैं॥ तेवर्णरूपशब्दभीयोगीपुरुषोंकूंतौ शरीरकेभीतर हीअनुभवहोवैहैं। और अन्यपुरुषोंकूंतौमुखविषेहीप्रसिद्धहोवैहैं॥ औरयाशरीरविषेरस १ रुधिर २ मांस ३ मेद ४ अस्थि ५ मज्जा ६ वीर्य ७ यहसप्तधातु रहैहैं॥ तिनसप्तधातुवोंकीउत्पत्तिअन्नजलतैंहींहोवैहैं॥ तहां यामनुष्यादिकजीवोंनैं आपणेउदरविषे पायाजोअन्नतथाजल ॥ सोअन्नजलपित्त केतेजतैं परिपक्वहोइकै चारिदिनकेपीछेप्रथम रसधातुरूपहोवैहै ॥ १ ॥ और सोरसधातुभी पित्तकेतेजतैंपरिपक्वहोइकै चारिदिनकेपीछे रुधिररूपहोवैहै ॥ २ ॥ और सोरुधिरभीतापित्तकेतेजतैं परिपक्वहोइकै चारिदिनकेपीछे मांसरूपहोवै है ॥ ३ ॥ और सोमांसभी पित्तकेतेजतैं परिपक्वहोइके चारिदिनकेपीछे मेदरूपहोवैहै ॥ ४ ॥ और सोमेदभी पित्तकेतेजतैं परिपक्वहोइकै चारिदिनकेपीछे अस्थि रूपहोवैहै ॥ ५ ॥ और तेअस्थिभी पित्तकेतेजतैं परिपक्वहोइकै चारिदिनकेपीछे मज्जारूपहोवैहैं ॥ ६ ॥ और सोमज्जाभी पित्तकेतेजतैं परिपक्वहोइकै चारिदिनकेपीछे वीर्यरूपहोवैहै ॥ ७ ॥ इसप्रकार वैद्यकशास्त्रोंविषे तिनसप्तधातुवोंकीउत्पत्ति कथनकरीहै ॥ और याशरी रविषे बत्तीस ३२ दंतरूपअस्थि रहैहैं ॥ और याशरीरविषे पादतैंलैकेमस्तकपर्यंत सप्तऊपरएकशत १०७ मर्मस्थानरहै हैं ॥ तेमर्म स्थानभी मांसमर्म १ शिरामर्म २ स्नायुमर्म ३ अस्थिमर्म ४ संधिमर्म ५ याभेदकरिकै पंचप्रकारकेहोवै हैं॥ तिनममोंविषे एकादश ११ मांसमर्महोवैहैं ॥ १ ॥ और एकतालीश ४१ शिरामर्महोवै हैं ॥ २ ॥ और सतावीश स्नायुमर्महोवैहैं ॥ ३ ॥ और अष्ट ८ अस्थिमर्म होवैहैं ॥ ४ ॥ और वीश २० संधिमर्महोवै हैं ॥ ५ ॥ तिनमर्मस्थानोंविषेभी कोइकमर्मस्थानतौ शस्त्रादिकोंकरिकैभेदनकूं प्राप्तहुए शीघ्रही याजीवोंकेमृत्युकाकारणहोवै हैं ॥ और कोईकमर्मस्थानतौ शस्त्रादिकोंकरिकैभेदनकूंप्राप्तहुए कालांतरविषे याजीवोंकेमृत्युका कारणहोवैहैं ॥ और कोईकमर्मस्थानतौ शस्त्रादिकोंकरिकैभेदनकूंप्राप्तहुए याजीवोंके असाध्यरोगोंकाकारणहोवैहैं ॥ तिनमर्मस्थानोंका विशेषकरिकैनिर्णय शुश्रुतादिकवैद्यकशास्त्रोंविषे कथनकऱ्याहै ॥ और याशरीरविषे अस्थियोंकीसंधियां एकशतअशी १८० रहैहैं ॥

॥ १२ ॥

और याशरीरविषे नवशत ९०० स्नायुरहैहैं ॥ और याशरीरविषे अष्टसहस्रकोटियां केशरोमरहैहैं ॥ और किसीशास्त्रविषेतौ तिनकेशरोमों कीसंख्या साढीतीनकोटिकथनकरीहै ॥ सो तिनकेशरोमोंकेरहणेकेस्थानजे रोमकूपहैं ॥ तिनोंकेसंख्याकूंलैकै कथनकरीहै ॥ और याश रीरकेमुखविषे जाजिह्वास्थितहै ॥ साजिह्वा द्वादशपल १२ परिमाणहोवैहै ॥ और याशरीरविषेरक्तवर्णवाला जो हृदय मध्यहै ॥ जिस हृदयमध्यकूं शास्त्रविषे हार्दपद्मकहैहैं ॥ सोहृदयमध्य अष्टपल ८ परिमानहोवैहै ॥ और याशरीरकेहृदयदेशविषे स्थित जो पित्तधातुहै॥ सोपित्तधातु एकप्रस्थपरिमाणहोवैहै ॥ इहां पलपरिमाणका तथाप्रस्थपरिमाणका यहस्वरूपहै ॥ पंचगुंजापरिमाणकानाम माष है॥ तिन षोडशमाषोंकानाम कर्ष है ॥ तिनचारिकर्षोंकानाम पलहै ॥ तिनचारिपलोंकानाम कुडवहै ॥ तिनचारिकुडवोंकानाम प्रस्थ है ॥ और याशरीरविषे विशेषकरिकैकंठदेशविषेस्थित जोकफधातुहै॥ सोकफधातु चारिप्रस्थपरिमाणहोवै है ॥ और वीर्यरूपसप्तमधातु यासर्व शरीरविषेस्थितहुआभी कंठ हृदय मूर्द्ध यातीनस्थानोंविषे विशेषकरिकैरहैहै ॥ सोवीर्य यासर्वशरीरविषे कुडवपरिमाणरहैहै ॥ और याशरीरविषे मेदधातु दोप्रस्थपरिमाणरहैहै ॥ और याशरीरविषे वास्तिनामास्थानविषेस्थित जो मूत्रहै ॥ तथा संग्रहणीनामास्थानविषे स्थित जोपुरीषहै ॥ तिनदोनोंकीतौ अधिकअन्यजलकेग्रहणतैं तौ वृद्धिहोवैहै॥ और न्यूनअन्नजलकेग्रहणतैं न्यूनताहोवैहै॥ यातैं तिनमूत्र पुरीषकेपरिमाणका कोईनियमनहींहै॥ हेशिष्य॥ यागर्भउपनिषद्काद्रष्टा जो पिप्पलादनामाऋषिहैतापिप्पलादनामाऋषिनैंतागर्भउपनिषद् विषे याशरीरके जिह्वादिकअंगोंकापरिमाण याप्रकारकाकथनकऱ्याहै और रसरुधिरादिकधातुवोंकातौजलकीनवअंजुलिआदिकपरिमाण याज्ञवल्क्यादिकऋषियोंनैं कथनकऱ्याहै ॥ अब यागर्भउपनिषद्विषे जेशरीरकेअवयव नहींकथनकरे हैं॥ तिनअवयवोंकूं दूसरेशास्त्रोंके प्रमाणतैं इहां निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ यालोकविषे सर्वजीवोंकाशरीर पादकेअग्रभागतैंलैकै केशपर्यंत आपणे आपणे ध्यियानवे अंगुल ९६ परिमाणदीर्घहोवैहै ॥ और याशरीरके दोनोंपासोंविषे धनुषकेआकार षोडश षोडश अस्थिरहैहैं ॥ और जैसे यालोकविषे पिप्पलादिकवृक्षकेएकमूलतैं प्रथम स्थूलस्कंधनिकसैहैं ॥ तिनस्थूलस्कंधोंतैं अनेकस्थूलशाखानिकसे हैं ॥ और तिनस्थूलशाखावोंतैं

अनेकसूक्ष्मशाखानिकसे हैं॥और तिनसूक्ष्मशाखावोंतैं अनेकअत्यंतसूक्ष्मशाखानिकसैहैं॥तैसे याहृदयदेशतैं प्रथम सुषुम्नानामानाडी निकसेहै ॥ तासुषुम्नातैं एकशत १०० नाडीनिकसे हैं॥ताएकशतनाडियोंविषेभी एकएकनाडीतैं एकएकशत १०० नाडियांनिकसैहैं॥ तिनएकशतनाडियोंविषेभीएकएकनाडीतैं बाहत्तरिसहस्र ७२००० नाडियांनिकसैहैं॥यहसंपूर्णनाडियांमिलिकै बहत्तरिकोटि दशसहस्र एकशत एक इतनीनाडियांहोवै हैं ॥ तेसंपूर्णनाडियां पादतैंलैकेमस्तकपर्यंत यासर्वशरीरकूंव्याप्तकरिकैरहे हैं ॥ याप्रकार प्रश्नउपनिषद् विषे नाडियोंकीसंख्या कथनकरी है ॥ और छियानवेअंगुल ९६ परिमाण जोयहशरीर है तिसशरीरतैं यहप्राणवायु नासिकाद्वारा द्वादशअंगुल १२ परिमाण बाहरजावै है॥याकारणतैं सोप्राणवायु अष्टोत्तरशतअंगुल १०८ परिमाणहोवै है॥और याशरीरविषे पादकेअग्र भागतैंलैके अठतालीशअंगुल ४८ ऊपर जोदेशहै ॥ अथवा केशकेअग्रभागतैंलैके अठतालीशअंगुल ४८ नीचेजोदेशहै ॥सोदेश याशरीरका मध्यदेशहै ॥ तामध्यदेशविषे तप्तसुवर्णकेसमानतेजवाला तथा चारिकोणवाला एक अग्निकास्थानरहे है॥सोअग्निरूपतेज नाडी मार्गद्वारा सर्वशरीरविषे व्याप्तहोइकैरहे है॥तथा मस्तकविषेस्थितचंद्रमंडलपर्यंत व्याप्तहोइकैरहे है ॥ यहवार्त्ता आगमशास्त्रविषे भगवान् महादेवनैंभी कथनकरी है ॥ तहां श्लोक ॥ सर्वेषामपिजंतूनां मूर्ध्नितिष्ठतिचंद्रमाः॥अधोभागेरविःप्रोक्तो मृत्युकालेविपर्ययात् ॥अर्थयह॥ सर्वजीवोंकेमूर्धस्थानविषेतौ चंद्रमारहे है ॥ और नीचेस्थानविषे सूर्यरहे है॥और याजीवोंकूं जभी मरणकाल प्राप्तहोवै है ॥तभीतौ चंद्रमा नीचेस्थानविषेआवै है ॥ और सूर्य मूर्धस्थानविषेजावै है ॥ हेशिष्य ॥ ताचारिकोणवालेकुंडविषेस्थित जोअग्निरूपतेजहै॥ सोअग्निरूपतेज याशरीरइंद्रियादिकसर्वसंघातकूं सामर्थ्यकीप्राप्तिकरै है ॥याकारणतैं शास्त्रवेत्तापुरुष ताअग्निरूपतेजकूं शक्ति यानामकरिकैकथनकरै हैं॥और सोअग्निरूपतेज अत्यंतसूक्ष्म है॥यातैं याजीवोंकरिकै जान्याजावैनहीं ॥और सोअग्निरूपतेजही आपणेउष्णतारूपकरिकै यासर्वप्राणियोंके जीवनकाकारण है ॥ ऐसेअग्निरूपतेजकास्थान एकअंगुलपरिमाणहोवै है ॥ और पायुस्थानतैंदोअंगुलऊपरदेशविषे तथाउपस्थस्थानतैंदोअंगुलनीचेदेशविषे सोअग्निकास्थानरहै है ॥ हेशिष्य ॥ सोएकअंगुलपरिमाण चारिकोणवाला अग्निकास्थान

जिसशरीरकेमध्यदेशविषेरहे है ॥ तामध्यदेशविषे नवअंगुलपरिमाण अवकाशरहे है ॥ ताकेविषे चारिअंगुलपरिमाणदीर्घ तथाचारिअंगुलपरिमाणचौडा एक कंदकेसमान मांसकापिंडरहे है ॥ तामांसपिंडरूपकंदतैं एक नाभिचक्ररूपकमलका नाल उत्पन्नहोवै है ॥ केसाहैसोनाल ॥ दंडकीन्याईं नवअंगुलपरिमाण दीर्घ है ॥तथारसादिकसप्तधातुवोंकरिकैवेष्टितहै॥ तथा याशरीरके सर्वअवयवोंकामूलरूपहै ॥ ऐसेनालकेमध्यविषे एकनाभिचक्ररहेहै ॥ केसाहैसो नाभिचक्र ॥ जैसे लोकप्रसिद्धरथकेचक्रकेआराहोवै हैं॥तैसे सोनाभिचक्रभी द्वादशअराकरिकैयुक्तहैं ॥ तथा याशरीरकरिकैवेष्टितहै ॥ हेशिष्य ॥ जैसे ऊर्णनाभीजंतु तंतुवोंविषे भ्रमणकरै है ॥ तैसे पुण्यपापकर्मरूपतंतुवोंकूंआश्रयणकरिकै यहजीवात्मा इसीनाभिचक्रविषे भ्रमणकरै है ॥ शंका ॥हेभगवन् ॥ पादतैंलैकेमस्तकपर्यंत ॥ सर्वशरीरविषे यहजीवात्मा व्याप्यकरिकैरहे है ॥ यातैं याजीवात्माकी एकनाभिचक्रविषेही स्थितिकहणी संभवैनहीं ॥समाधान॥ हेशिष्य॥यहजीवात्मा यद्यपि पादतैंलैकेमस्तकपर्यंत सर्वशरीरविषेस्थितहै ॥ तथापि नाभि हृदय कंठ चक्षु मूर्द्धा इत्यादिकस्थानोंविषे विशेषकरिकै ताजीवात्माकीअभिव्यक्तिहोवै है।याकारणतैं शास्त्रवेत्तापुरुष ताजीवात्माकीनाभिआदिकस्थानोंविषे स्थिति कथनकरैहैं।हेशिष्य॥तिनजीवकेस्थानोंविषेभीप्रथम चतुरकोणरूपकरिकै वर्णनकऱ्या जोआधारचक्रहै ॥ जाआधारचक्रकूं मूलचक्रभीकहै हैं॥ताआधारचक्रविषे यहप्राणसहितजीव सर्वदा निवासकरै है।हेशिष्य।ताआधारचक्रतैंऊपर तथानाभिचक्रतैंनीचे सर्पकीन्याईंवक्राआकार एककुंडलिनीनामाशक्तिरहे है ॥ साकुंडलिनीशक्ति कारणस्वरूपब्रह्मकी मूर्तिरूप है ॥ और भूमि १ जल २ अग्नि ३ वायु ४ आकाश ५ मन६ बुद्धि७अहंकार ८ यहअष्टप्रकारकीअपरप्रकृति जे गीताविषेकथनकरी हैं ॥ तिनोंकाभी यहकुंडलिनीनामाशक्तिहींकारणहै॥ और यहकुंडलिनीनामाशक्तिही प्राणवायुकरिकै ताडनकरीहुई सर्व शब्दोंकूंउत्पन्नकरै है॥और यहकुंडलिनीहीं प्राणोंके बाहरब्रह्मलोकजाणेविषे प्रतिबंधकहै ॥काहेतैं याजीवोंकेउदरविषे स्थित जो प्राणवायुहै॥सोप्राणवायुऊपरदशमद्वारविषेजाइके बाहरब्रह्मलोककेजाणेकाउद्यमकरैहे परंतुसोप्राणवायु ता दशमद्वारतैंबाहर निकसिसकैनहीं॥काहेतैं तादशमद्वारतैंबाहरनिकसणेकामार्ग सुषुम्नानाडीहै॥ तासुषुम्नानाडीकेमुखकूंयहकुंडलिनी

आपणेमुखसोंनिरोधनकरिकै आपणेस्थानविषे शयनकरै है ॥ याकारणतैं यहप्राणवायु तात्रह्मलोकविषेजाइसकेनहीं॥शंका॥हेभगवन् ॥ साकुंडलिनी कितकालविषे जाग्रतकूंप्राप्तहोइकै तासुषुम्नानाडीकेमुखका परित्यागकरै है ॥ समाधान ॥ हेशिष्य॥योगसमाधानकरिकै चलायमानकऱ्याजोप्राणवायुहै॥ताप्राणवायुकरिकै जभी साकुंडलिनी जाग्रतकूंप्राप्तहोवै है ॥ तभीसाकुंडलिनी हृदयआकाशकूंव्याप्तकरिकै स्फुरणहोवै है ॥तथा दशमद्वारपर्यंत जावैहै॥कैसीहैसाकुंडलिनी॥शेषनागकेसमान जाकीउज्ज्वलमूर्ति है॥हेशिष्य॥जिसकालविषे योगसमाधानकरिकैचलायाहुआ सोप्राणवायु अंतरअग्निसहित तासुषुम्नानाडीकेमुखरूपमार्गद्वारा ताशरीरकेमध्यविषेप्रवेशकरै है ॥ तिस कालविषे जाग्रतअवस्थाकूंप्राप्तहुई साकुंडलिनी तासुषुम्नानाडीकेमुखकूं निरोधनकरैनहीं॥अब आधारचक्रादिकोंविषे,प्राणोंकीस्थितिरूप जोप्रत्याहारहै ताकेनिरूपणकरणेवासतैं प्रथम ताकेउपयोगीनाडियोंकास्वरूप निरूपणकरै हैं॥ हेशिष्य॥याशरीरकेमध्यविषेस्थित जो मांसकापिंडरूपकंदहै॥ताकंदकेमध्यविषे एकसुषुम्नानामानाडीरहैहै।तासुषुम्नानाडीकेचारोंओरतैंदूसरी अनेकनाडियाँरहैहैं॥ तिनसर्वनाडियोंके मध्यविषे यहचतुर्दशनाडियांप्रधानहैं॥सुषुम्ना १ इडा२ पिंगला ३ सरस्वती ४ कुहू ५ वारणा६ यशस्विनी ७पूषा ८ पयस्विनी९ शंखिनी १०गांधारी ११हस्तिजिह्वा १२ विश्वोदरा १३अलंबुषा १४॥ और याचतुर्दशनाडियोंविषेभी सुषुम्ना१इडा२पिंगला३यहतीन नाडियां प्रधानहैं ॥ और यातीननाडियोंविषेभी एकसुषुम्नानाडी प्रधानहै॥ जासुषुम्ननाडी ब्रह्मलोककीप्राप्तद्वारा मुक्तिकामार्गहै॥तथा सर्वविश्वकूं धारणकरणेहारी है ॥ अब याचतुर्दशनाडियोंकेस्थानोंका निरूपणकरै हैं ॥ हेशिष्य ॥ तानाडीकंदकेमध्यदेशविषेतौ सा सुषुम्नानाडीस्थितहै ॥ और याशरीरके पृष्ठदेशकेमध्यविषेस्थित जोदीर्घअस्थिहै ॥ ताअस्थिरूपमार्गद्वारा सासुषुम्नानाडी मूर्द्धस्थानकूं प्राप्तहोवै है ॥ और तासुषुम्ना नाडीकेवामभागविषे इडानामानाडीस्थितहै॥और तासुषुम्नाकेदक्षिणभागविषे पिंगलानाडीस्थितहै॥और सुषुम्ना इडा पिंगला यातीननाडियोंकेअग्रभागविषे तथापृष्ठभागविषे एकएकनाडीरहै है॥ तहां सुषुम्नानाडीकेपृष्ठभागविषे तौ सरस्वती नाडीरहै ह॥और अग्रभावविषे कुहूनाडीरहै है॥और इडानामानाडीकेपृष्ठदेशविषेतौ गांधारीनाडीरहै हैं और अग्रभावविषे हस्तिजिह्वा

नाडीरहेहै ॥ और पिंगलानामानाडीके पृष्ठभागविषेतौ पूषानाडीरहेहै ॥ और अग्रभागविषे यशस्विनीनाडीरहे है॥हेशिष्य ॥ इसप्रकार तिननवनाडियोंकी तीनपंक्तिहोवै हैं ॥ तहां एकतौ अग्रभागविषेस्थित तीननाडियोंकीपंक्ति ॥ और दूसरी मध्यभागविषेस्थित तीननाडियोंकीपंक्ति ॥ और तीसरी पृष्ठभागविषेस्थित तीननाडियोंकीपंक्ति ॥ तहां सुषुम्नाकेवामभागकीतरफतैं तिननाडियोंकीगिनतीकरणेतैं यहक्रमसिद्धहोवै है ॥ हस्तिजिह्वा १ कुहू २ यशस्विनी ३ यहतीननाडियां अग्रभागकी प्रथमपंक्तिहैं ॥ और इडा १ सुषुम्ना २ पिंगला ३ यहतीननाडियां मध्यभागकी दूसरीपंक्तिहैं॥ और गांधारी १ सरस्वती २ पूषा ३ यहतीननाडियां पृष्ठदेशकी तीसरीपंक्तिहैं॥इतनैंकरिकै नवनाडियोंकेस्थानकहे ॥ अब बाकीके पंचनाडियोंकेस्थानोंका निरूपणकरै हैं॥ हेशिष्य ॥ प्रथमपंक्तिविषे हस्तिजिह्वा कुहू यादोनोंनाडियोंकेमध्यविषे विश्वोदरानामानाडी रहेहै ॥ और तिसीप्रथम पंक्तिविषे कुहू यशस्विनी यादोनोंनाडियोंकेमध्यविषे वारणानामानाडी रहेहै ॥ और तिननाडियोंकीतीसरीपंक्तिविषे गांधारी सरस्वती यादोनोंनाडियोंकेमध्यविषे पयस्विनीनामानाडी रहे है ॥ और तिसीतीसरीपंक्तिविषे सरस्वती पूषा यादोनोंनाडियोंकेमध्यविषे शंखिनीनामानाडी रहे है ॥ और अलंबुषानामाडी ताकंदकेनीचे रहेहै ॥ यातैं तिनचतुर्दशनाडियोंका यहक्रम सिद्धभया ॥ हस्तिजिह्वा १ विश्वोदरा २ कुहू ३ वारणा ४ यशस्विनी ५ यहपंचनाडियां प्रथम अग्रपंक्तिविषेस्थितहै ॥ और इडा १ सुषुम्ना २ पिंगला ३ यहतीननाडियां दूसरी मध्यपंक्तिविषेस्थितहैं ॥ और गांधारी १ पयस्विनी २ सरस्वती ३ शंखिनी ४ पूषा ५ यहपंचनाडियां तीसरी पृष्ठपंक्तिविषेस्थितहैं ॥ और एक अलंबुषानामानाडी ताकंदकेनीचेदेशविषेस्थितहै ॥ इतनैंकरिकै ताकंददेशविषे नाडियोंकीस्थिति निरूपणकरी ॥ अब तेसुषुम्नआदिकनाडियां ताकंदतैंनिकसिकै जिसजिसस्थानविषेजाइकै जितजितव्यापारकूंकरै हैं॥तिनस्थानोंका तथा तिनव्यापारोंका निरूपणकरै हैं।हेशिष्य॥ताकंदतैंनिकसिकै सासुषुम्नानामानाडीतौ मूर्द्धस्थानविषेजाइकै सर्वविश्वकाधारणरूपव्यापारकूं करैहै ॥ और इडा पिंगला यहदोनोंनाडियांतौ यथाक्रमतैं वामदक्षिणनासिकाविषेजाइकै गंधकाग्रहणरूपव्यापारकूं करैहैं।और गांधारीपूषा यहदोनोंनाडियांतौयथाक्रमतैं वामदक्षिणनेत्र

विषेजाइकै रूपकाग्रहणरूपव्यापारकूं करेहैं॥और शंखिनीयशस्विनीयहदोनोंनाडियांतौ यथाक्रमतैं वामदक्षिणकर्ण विषेजाइकै शब्दका ग्रहणरूपव्यापारकूंकरेहैं ॥ और सरस्वतीनाडीतौ रसनविषेजाइकै रसकाग्रहणरूपव्यापारकूं करे है ॥ और हस्तिजिह्वा पयस्विनीयह दोनोंनाडियांतौ यथाक्रमतैं वामदक्षिणपादकेअंगुष्ठविषेजाइकै गमनरूपव्यापारकूं करे है ॥ और अलंबुषानाडीतौ पायुस्थानविषेजाइकै मलादिकोंकापरित्यागरूपव्यापारकूं करेहै ॥ और कुहूनाडीतौ उपस्थस्थानविषेजाइकै विषयानंदरूपव्यापारकूं करे है ॥ और विश्वोदरा वारणा यहदोनोंनाडियांतौ यथाक्रमतैं वामदक्षिणहस्तविषेजाइकै वस्तुकाग्रहणरूपव्यापारकूं करे हैं ॥ हेशिष्य ॥ इनचतुर्दश नाडियोंतैंआदिलैके असंख्यातनाडियां याशरीरविषेस्थितहैं ॥ तिनसर्वनाडियोंविषे प्राणवायु भ्रमणकरे है ॥ यातैं प्राणोंकेगमनकी मार्गरूपता तिनसर्वनाडियोंका साधारणव्यापारहै ॥ इतनैकरिकै नाडियोंकेव्यापारकानिरूपणकऱ्या ॥ अब तिननाडियोंविषेविचरणेहारेप्राणोंके मुख्यमुख्यस्थानोंका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य जिसप्राणवायुके अपानादिकभेदहोवै हैं ॥ तथा जोप्राणवायु तानाडीकूं केनीचेरहैहै ॥ सोप्राणवायु मुख नासिका हृदय नाभि पादका अंगुष्ठ यास्थानोंविषेरहैहै॥ और याशरीरकेनाभिस्थानतैंलैके जंघापर्यंत देशविषे अपानवायु रहैहै ॥ तादेशविषेभी पायु उपस्थ यादोनोंस्थानोंविषे सोअपान विशेषकरिकैरहै है ॥ और दो श्रोत्र दो चक्षु दोहस्तपादोंकेगुल्फ पृष्ठदेशविषेस्थितदीर्घअस्थि कटि उर यास्थानोंविषे व्याननामावायु रहै है ॥ और याशरीरकेसर्वसंधियोंविषे तथादोहस्तपादोंविषे उदाननामावायु रहैहै ॥ और समाननामावायुतौ यासर्वशरीरकूंव्याप्यकरिकै रहै है ॥ और सो समानना मावायुही अंतरअग्निकेसहित भोजन करेहुएअन्नकेरसकूं सर्वशरीरविषेव्याप्तकरै है ॥ और सोसमानवायुही पूर्वउक्तसर्वनाडियों विषे विचरैहै और नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त, धनंजय, यहपंचवायुतौ यथाक्रमतैं त्वचा रुधिर मांस मेद अस्थि यापांचों विषेरहे हैं ॥ इतनैंकरिकै प्राणोंकेस्थानका निरूपणकऱ्या ॥ अब तिनप्राणोंकेव्यापारोंका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ याशरीरतैं मुखनासिकाद्वारा वायुकूंबाहरकरणा याकानाम श्वासहै ॥ औरबाहरलेवायुकूंतामुखनासिकाद्वाराशरीरकेभीतरलेआवणायाकानामप्रश्वासहैयहदोनोंप्राणका

व्यापारहैं ॥ और मलमूत्रादिकोंकापरित्यागकरणा यह अपानवायुकाव्यापारहै ॥ और बलकरिकैसिद्धहोणेहारे जेग्रहण त्याग चेष्टा आदिकहैं ॥ सो व्यानवायुकाव्यापारहै ॥ और याशरीरकेउत्थानादिक उदानवायुकाव्यापारहै ॥ और सर्वशरीरविषेव्यापक जोप्राणोंकाचलणाहै ॥ सो समानवायुकाव्यापारहै ॥ और उदगार हिडकी यह नागवायुकाव्यापारहै ॥ और नेत्रोंकानिमीलन तथा उन्मीलन यह कूर्मवायुकाव्यापारहै ॥ और छिक्का कृकलवायुकाव्यापारहै ॥ और विजृंभण देवदत्तवायुकाव्यापारहै ॥ और शरीरकासूजणा धनंजयवायुकाव्यापारहै ॥ इतनैंकरिकै प्राणोंकेव्यापारोंका निरूपणकऱ्या ॥ अब योगीपुरुषोंकूंकरणेयोग्य जोप्राणोंकानिरोधरूपप्रत्याहारहै ताप्रत्याहारविषेउपयोगी जेअष्टादशस्थान वशिष्टभगवान्नैं कथनकरे हैं तिनस्थानोंका निरूपणकरै हैं ॥ हेशिष्य ॥ पादकाअंगुष्ठ १ गुल्फ २ जंघोंकामध्य ३ चित्तिमूल ४ जानु ५ ऊरुकामध्य ६ पायुका मूल ७ शरीरकामध्य ८ उपस्थकामध्य ९ नाभि १० हृदय ११ कंठकूप १२ तालुकामूल १३ नासिकाकामूल १४ दोआक्षिका मध्य १५ दोभ्रूकामध्य १६ ललाट १७ मूर्द्धा १८ यहअष्टादशस्थान ताप्रत्याहारकहैं ॥ और पूर्वजो सप्तऊपरशत १०७ मर्मस्थानकहेथे ॥ तेममस्थान याअष्टादशस्थानोंकेसमीपवर्तिहीहैं ॥ याकारणतैं तेममस्थान याअष्टादशस्थानोंकेअंतरभूतही हैं ॥ इहां जंघोंकेपृष्ठदेशकामास जिसस्थानतैंलैके वृद्धिकूंप्राप्तहोवै है ॥ तास्थानकानाम चित्तिमूलहै ॥ और कंठविषेस्थितघंटिकाकेअधोदेशकानाम कंठकूपहै ॥ पूर्व पादकेअग्रभागतैंलैके केशकेअग्रभागपर्यंत छियानवेअंगुल ९६ शरीरकापरिमाण लोकदृष्टिकेअनुसार कथनकऱ्याथा॥अब वशिष्टभगवान्ने जिसप्रकार याशरीरकापरिमाण कथनकरचाहै ताका निरूपणकरै हैं ॥ हेशिष्य ॥ पादकेअंगुष्ठतैंलैके याशरीरका पृथक्परिमाणवर्णनकरणा संभवैनहीं ॥ किंतु अंगुष्ठतैंआदिलैके जितनैंकी यापादकेअवयवहैं ॥ तिनसंपूर्णोंका पादशब्दकरिकैहीग्रहणहोवै है ॥ यातैं पादतैंलैकेही याशरीरकापरिमाण वर्णनकरणा उचितहै॥तहां पादतैंलैके साढेचार अंगुलपरिमाणऊपरलेदेशविषे गुल्फ रहेहै ॥ और तागुल्फदेशतैंलैके दशअंगुलपरिमाणऊपरलेदेशविषे जंघोंकामध्यरहे है ॥ और ताजंघोंकेमध्यदेशतैंलैके एकादशअंगुलपरिमाणऊपरलेदेशविषे चित्तिमूल रहेहै ॥ और ताचित्तिमूलदेशतैंलैके दो

अंगुलपरिमाणऊपरलेदेशविषे जानु रहेहै ॥ और ताजानुदेशतैंलैके नवअंगुलपरिमाणऊपरलेदेशविषे ऊरुकामध्यरहेहै और ताऊरुकेमध्यदेशतैंलैके नवअंगुलपरिमाणऊपरलेदेशविषे पायुकामूल रहेहै ॥ और तापायुकेमूलदेशतैंलैके अढाईअंगुलपरिमाणऊपरलेदेशविषे शरीरकामध्य रहेहै और ताशरीरकेमध्यदेशतैंलैके अढाईअंगुलपरिमाणऊपरलेदेशविषे उपस्थ रहेहै ॥ और ताउपस्थदेशतैंलैके साढेदश अंगुलपरिमाणऊपरलेदेशविषे नाभिरहेहै ॥ और तानाभिदेशतैंलैके चतुर्दशअंगुलपरिमाणऊपरलेदेशविषे हृदयकामध्यरहेहै और हृदयकेमध्यदेशतैंलैकेषट्अंगुलपरिमाणऊपरलेदेशविषे कंठकूप रहेहै ॥ और ताकंठकूपदेशतैंलैके चारअंगुलपरिमाणऊपरलेदेशविषे जिह्वाकामूल रहेहै ॥ और ताजिह्वाकेमूलदेशतैंलैके चारअंगुलपरिमाणऊपरलेदेशविषे नासिकाकामूल रहेहै ॥ और तानासिकाकेमूलदेशतैंलैके अर्द्धअंगुलपरिमाणऊपरलेदेशविषे चक्षुकामध्य रहे है ॥ और ताचक्षुकेमध्यदेशतैंलैके अर्द्धअंगुलपरिमाणऊपरलेदेशविषे भ्रूकामध्य रहेहै ॥ और ताभ्रूकेमध्यदेशतैंलैके तीनअंगुलपरिमाणऊपरलेदेशविषे ललाट रहेहै ॥ और तालल्लाटदेशतैंलैके तीनअंगुलपरिमाणऊपरलेदेशविषे मूर्द्धस्थानरहेहै इसप्रकार पादतैंलैकेमूर्द्धस्थानपर्यंत यासर्वशरीरका छियानवेअंगुलपरिमाण वशिष्टभगवान्नैं कथनकऱ्याहै ॥ जिसशरीरकूं याजीवोंनैं अहंबुद्धिकरिकैग्रहणकऱ्याहै ॥ इतनैंग्रंथकरिकै याशरीरकावर्णनकऱ्या ॥ अब याशरीरके वर्णनका विवेकवैराग्यरूपफल निरूपणकरेहैं ॥ हे शिष्य पिप्पलादऋषिनैं गर्भउपनिषदविषे जिस शरीरकूं भूतभौतिकरूपरिकै वर्णनकऱ्या है ॥ सोयहशरीर इतनेअवयवोंकासमुदायरूपहै ॥ ते अवयव यह हैं ॥ आकाशादिकपंचमहाभूत तथा श्रोत्रादिकदशइंद्रिय तथा तिनइंद्रियोंके शब्दादिकदशविषय तथाअंतःकरणचतुष्टय तथादशप्राण तथात्वगादिकसप्तधातु तथाअसंख्यातनाडियां तथासप्त ऊपरएकशत मर्मस्थान तथापित्तादिकतीनदोष तथाकंठ तथाहृदयकमल तथाविष्ठामूत्र तथाअनंतकेशलोम इत्यादिक अवयवोंकेसमुदायकानामशरीरहै ॥ याप्रकारकेअवयवोंतैंभिन्नकरिकै याशरीरकाकिंचित्मात्रभी स्वरूपसिद्धहोइसकैनहीं॥ऐसे निषिद्धशरीरविषे याजीवोंकूं आत्मबुद्धिकरणी योग्य नहीं है ॥ काहेतैं जिनविष्ठामूत्रादिकमलिनवस्तुवोंकासमुदायरूप यह शरीर है ॥ तेविष्ठामूत्रादिक मलिनवस्तु नरकादिकस्थानोंविषेभीरहेहैं॥ यातैं यहअज्ञानीजीव जैसे याशरीरविषेआत्मबुद्धिकरेहैं॥ तैसे नरकादिकोंविषेस्थित तिनविष्ठामूत्रादिकपदार्थोंविषे आत्मबुद्धि किसवासतैंनहींकरते ॥ किंतु तिनोंविषेभी साआत्मबुद्धिकरीचाहिये और याशरीरतैंबाह्यस्थितजे विष्ठा मूत्र रुधिर मांस अस्थि आदिकमलिनपदार्थ हैं ॥ तिनपदार्थोंविषे जेसे कोईभीपुरुष आत्मबुद्धिकरतानहीं ॥ उलटा तिनविष्ठामूत्रादिकपदार्थोंके दर्शनतैं तथास्पर्शतैं लोक स्नानादिककरेहैं ॥ तैसे तिनविष्ठामूत्रादिकपदार्थोंकासमूहरूप जोयहशरीरहै ॥ ताशरीरविषेभी आत्मबुद्धिकरणीयोग्यनहीं है ॥ किंतु उलटा याशरीरतैं गिलानिकरणीयोग्यहै ॥ किंवा ॥ जैसे दूसरेकिसीपुरुषकेशरीरविषेस्थित जेकेशदंतादिकपदार्थ हैं ॥ तथा किसीमार्गविषेस्थितजेकेशदंतादिकपदार्थ हैं ॥ तिनकेशदंतादिकोंविषे जैसे याजीवोंकूं आत्मबुद्धिहोती नहीं ॥ तैसे तिनकेशदंतादिकपदार्थोंकेसमूहरूपयाशरीरविषेभी आत्मबुद्धिकरणी योग्यनहीं है ॥ किंवा मरणअवस्थाविषे तथामूर्छाअवस्थाविषे तथासुषुप्तिअवस्थाविषे किसीभीजीवकूं याशरीविषे आत्मबुद्धिहोवैनहीं ॥ यातैं जाग्रतअवस्थाविषे याजीवोंकूं याशरीरविषे जाआत्मबुद्धिहोवैहै ॥ साबुद्धि मिथ्याही है ॥ तात्पर्ययह ॥जोपदार्थ कदाचित्तो प्रतीतहोवैहै॥और कदाचित् नहींप्रतीतहोवैहै ॥ सोपदार्थ मिथ्याहीहोवैहै ॥ जैसे मृगतृष्णाकाजल कदाचित्तो प्रतीतहोवैहै ॥ और कदाचित् नहीं प्रतीतहोवैहै ॥ यातैं सो मृगतृष्णाकाजल मिथ्याही है ॥ तैसे याशरीरविषेआत्मबुद्धिभी कदाचित् प्रतीतहोवैहै ॥ यातैं साआत्मबुद्धिभी मिथ्याही है ॥ किंवा ॥ किसीव्याधिकरिकै अथवा शस्त्रकरिकै याशरीरविषे उत्पन्नभयाजोव्रण है ॥ जोव्रण दुर्गंधकरिकै तथाकृमिपूयकरिकै युक्त है ॥ ऐसे व्रणकूंदेखिकरिक सर्वजीवोंकूं आपणेमनविषे गिलानिहोवैहै ॥ परंतु तिनव्रणादिकविकारोंकाकारणजोयहशरीरहै ॥ ताशरीरविषे याजीवोंकूं गिलानिहोतीनहीं ॥ यह हमारेकूं बहुतआश्चर्यलागताहै ॥ किंतु तावणतैंभी याशरीरविषे अधिकागिलानिकरीचाहिये ॥ किंवा ॥ यालोकविषे जैसे प्रसिद्धअन्नकाविकार जोविष्ठाहै ॥ तथावमनहै तथादुर्गंधिवालाजोअन्नहै ॥ तिनविष्ठादिकोंकूंदेखिकै सर्वजीवोंकूं गिलानिहोवैहै ॥ तैसे यहशरीरभी ताअन्नकाहीविकारहै ॥ यातैं याशरीरविषे हमविवेकीपुरुषोंकूं गिलानिकैसवासतैनहींहोती ॥ किंतु जैसे

बाहरलेविष्ठादिकपदार्थोंविषे हमारेकूं गिलानिहोवेहै ॥ तैसे याशरीरविषेभी गिलानिहोणीचाहिये ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार यहअधिकारी पुरुष जभी याशरीरकेदोषोंकाविचारकरेहै ॥ तभीही याअधिकारीपुरुषकूं वैराग्यकीप्राप्तिहोवेहै ॥ यातैं याअधिकारीपुरुषनैं याशरीरविषे अवश्यकरिकै तिनदोषोंकाविचारकरणा ॥ अब दूसरीरीतिसेंभी ताशरीरकेवर्णनका वैराग्यरूपफलनिरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ तागर्भउपनिषद्विषेकथनकऱ्याजो याजीवोंकाजन्महै ॥ ताजन्मकूं यहअधिकारीपुरुष दुःखरूपकरिकैचिंतनकरै ॥ ताचिंतनकरिकैभी याजीवोंकूं अवश्यकरिकै वैराग्यकीप्राप्तिहोवेहै ॥ अब ताजन्मदुःखोंका निरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ पिताकेशुक्रतैं तथामाताकेशोणितैं जिनशरीरोंकीउत्पत्तिहोवेहै ॥ तिनशरीरोंकानाम योनिजशरीरहै ॥ ऐसेमनुष्यादिकयोनिजशरीरोंके जितनेकीपितामाताहैं ॥ तिन पितामातावोंकेशरीर रसरुधिरादिकसप्तधातुरूपहोवेहै ॥ तथा पितामाताके शुक्रशोणिततैंउत्पन्नहोवै हैं॥ यहवार्त्ता सर्वबुद्धिमान्पुरुषोंकूं संमतहै ॥ ऐसेंपितामाताकेशरीरतैं जेमनुष्यादिकशरीर उत्पन्नहोवेहैं॥ तेशरीरभी तिसीप्रकारकेहोवेहैं॥ हेशिष्य॥ पंचभूतोंतैंआदिलेकै केशलोमपर्यंत तिनसर्वअवयवोंकासमुदायरूप जोयहस्थूलदेह हमनैं तुमारेप्रति पूर्व वर्णनकऱ्याथा ॥ सोयहदेह क्षणक्षणविषे विशीरण भावकूंप्राप्तहोवेहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती यादेहकूं शरीर यानामकरिकैकथनकरेहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ यहशरीर किसकारणकरिकै क्षणक्षणविषे विशीरणभावकूंप्राप्तहोवेहै ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ याशरीरकेभीतर तीनअग्निरहैहैं ते तीनअग्निहीं याशरीरकेविशीरणभावका कारणहैं ॥ तहां एकतौ उदरविषेस्थित जठराग्निहै ॥ और दूसरा मनविषेस्थित जिज्ञासारूपअग्निहै ॥ और तीसरा श्रोत्रादिकइंद्रियोंविषेस्थित विषयोंकीलोलुपतारूपअग्निहै॥यातीनअग्नियोंकरिकै यहशरीरनिरंतर दाहकूंप्राप्तहोवेहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् जैसे यालोकप्रसिद्धअग्निके घृतकाष्ठादिकपदार्थ आहुतिहोवेहैं ॥ तैसे यातीनअग्नियोंके कौनपदार्थ आहुतिरूपहैं ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ लेह्य, पेय, चोष्य, भोज्य, यह चारिप्रकारकाअन्न ताजठराग्निकी आहुतिहै ॥ इहां मधुआदिकपदार्थोंकानाम लेह्यहै ॥ और दुग्धादिकपदार्थोंकानाम पेयहै ॥ और इक्षुआदिकपदार्थोंकानाम चोष्यहै ॥ और ओदनादिकपदार्थोंकानाम भोज्यहै ॥ और शास्त्रकेअनुसार जेउपासनादिकज्ञानहैं तथाशास्त्रतैंविरुद्ध जेलौकिकज्ञानहैं तथासुखदुःखरूपजोफलहै यहसंपूर्ण ताजिज्ञासारूपमानसअग्निका आहुतिहै॥और श्रोत्रादिकइंद्रियोंविषेस्थित जोविषयोंकीलोलुपतारूपअग्निहै॥ताअग्निकेतौ यथाक्रमतैं शब्दस्पर्शादिकविषयही आहुतिहैं ॥ ऐसेतीनअग्नियोंकरिकै यहदेह शीरणभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ याकारणतैं यादेहकूं शरीर यानामकरिकैकथनकरै है ॥ अब षष्ठेअध्यायविषे कथनकरीजापंचअग्निविद्याहै तापंचअविद्याकीरीतिसैं याजीवात्माका ताजठराग्निविषेप्रवेशकाप्रकार निरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ दुग्ध घृत सोम इत्यादिकपदार्थहैंप्रधानजिनोंविषे ऐसीजेआहुतिहैं ॥ तिनआहुतियोंकूं जभी यहकर्मीपुरुष श्रद्धापूर्वक तथाशास्त्रविधिपूर्वक आहवनीयादिकअग्नियोंविषेपावै है ॥ तभी तेआहुतियां सूक्ष्मअवस्थारूपपरिणामकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ और मरणतैंअनंतर सोकर्मीपुरुष ताआहुतियोंकेसूक्ष्मअवस्थारूपपरिणामकेसाथमिलिकै स्वर्गलोकरूपप्रथमअग्निकूंप्राप्तहोवै है॥तास्वर्गलोकविषे सुखरूपफलकेभोगकरिकै जभी ताकर्मीजीविके पुण्यकर्म क्षयहोवेहैं ॥ तभी सोकर्मीजीव तास्वर्गलोकतैं नीचेपतनहोइकेमेघरूपदूसरीअग्निकूंप्राप्तहोवै है॥ औरतिनमेघोंतैं वर्षाद्वारा याभूमिलोकविषेप्राप्तहोइकै सोकर्मीजीव व्रीहियवादिकअन्नभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ और ताजीवमिलितअन्नकूं जभी पुरुष तथा स्त्रियां आपणे क्षुधाकीनिवृत्तिकरणेवासतै भक्षण करै हैं ॥ तभी सोजीवमिलित अन्न तिनपुरुषस्त्रियोंके जठराग्निविषेप्राप्तहोवै है ॥ और सोजठराग्नि प्राणवायुकरिकैप्रेरणाकऱ्याहुआ ताअन्नके असार मध्यम सार यातीनविभागोंकूंकरै है ॥ तहां विष्ठामूत्ररूपअसारभागकूंतौ पायुइंद्रियद्वारा याशरीरतैं बाहरनिकासे है ॥ और ता अन्नकेमध्यमभागकूंतौ सो अग्नि रसादिकसप्तधातुरूपकरै है ॥ और ताअन्नकें सूक्ष्मसारभागकरिकैतौ मनप्राणइंद्रियोंकूं तृप्तकरै है ॥ इसप्रकार सोजठराग्नि ताअन्नकेतीनभागोंकूंकरै है ॥ अब ताअन्नकेमध्यमभागविषे रसादिकसप्तधातुरूपता निरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ सोजीवमिलितअन्नकामध्यमभाग ताजठराग्निकेतेजतैंपरिपक्वहोइकै प्रथम रसधातुरूपकूंप्राप्तहोवै है॥ और सोरसधातुअग्निकेतेजतैं परिपक्वहोइकै रुधिररूपहोवै है॥ और सोरुधिर अग्निकेतेजतैं घनीभूतहोइकैमांसरूपहोवै है॥और सोमांस अग्निकेतेजतैंपरिपक्वहोइकैमेदरूपहोवेहै॥ औरसोमेदअग्निकेतेजतैं कठिनहोइकै

अस्थिरूपहोवेहै ॥ और तेअस्थिअग्निकेतेजतैं द्रवीभूतहोइकैमज्जारूपहोवे है ॥ सामज्जा तिनअस्थियोंकेभीतरहीरहेहै ॥ तथायत्किंचित् द्रवीभूतघृतकेसमान जामज्जाका आकारहोवेहै औरसामज्जा अग्निकेतेजतैंपरिपक्वहोइकै वीर्यरूपहोवेहै।सोवीर्य पुरुषकेशरीरविषेतौ श्लेष्मके समानवर्णवालाहोवेहै॥और स्त्रीकेशरीरविषेतो सोवीर्य रुधिरकेसमानवर्णवालाहोवेहै॥तहां पुरुषकेवीर्यकूं तो शुक्रकहेहैं॥और स्त्रीकेवीर्यकूं शोणितकहेहैं॥तिनरसादिकधातुवोंकीउत्पत्ति चारिचारिदिनतैंपीछेहोवेहै यहप्रक्रिया इसीअध्यायविषे पूर्वकहिआयेहै॥हेशिष्य॥स्वर्ग नर क भूमि यातीनलोकोंविषेस्थित जितनेकीजीवहैं॥तेजीव पूर्व शरीरकेत्यागतैंअनंतर जभी मनुष्यादिकयोनिजशरीरोंकूंप्राप्तहोवे हैं॥तभी पूर्वउक्तरीतिसैंतेजीव रसादिकधातुद्वारा तापितामाताकेवीर्यविषे अवश्यकरिकैप्रवेशकरेहैंतिनजीवोंविषेभीकेईकजीवतौ महान्दुःखकरिकै मिलेहुए यत्किंचित्स्वर्गसुखकूंअनुभवकरिकै तास्वर्गतैं पतनहोइकै मेघोंकीवृष्टिद्वारा याभूमिलोककूंप्राप्तहोवे हैं॥और केइकजीवतौ भूमि विषे तथानरकविषेस्थितहुएही मरणतैंअनंतर तामेघोंकेवृष्टिद्वारा दूसरेदेशरूपभूमिकूंप्राप्तहोवे हैं॥इसप्रकार अन्नविषेप्रवेश सर्वजीवोंका समानहीं है ॥ इहां यद्यपि वृक्षादिकस्थावरजीव तथामत्कुणादिकस्वेदजजीव पूर्वशरीरकापरित्यागकरिकै तास्थावर स्वेदजशरीरकी प्राप्तिवासतै ताअन्नभावकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तथापि तेस्थावर स्वेदजजीव ताशरीरकापरित्यागकरिकै जभी किसीयोनिजशरीरकूंप्राप्त होवे हैं ॥ तभी तेस्थावरस्वेदजजीवभी अवश्य करिकै ताअन्नभावकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ याअभिप्रायकरिकैही श्रुतिविषे सर्वजीवोंकूंअन्न भावकीप्राप्तिकथनकरीहै ॥ अब पूर्वशरीरके त्यागतैंअनंतर यहजीव दुःखकाअनुभवकरिकैही या भूमिलोकविषेआवे है या पूर्वकहे अर्थकूं स्पष्टकरिकैनिरूपणकरेहैं ॥ हेशिष्य ॥ जैसे नरकविषे तथाभूमिलोकविषे तथामरणकालविषे यासर्वजीवोंकूं दुःखकीप्राप्ति प्रसिद्धहै ॥ तैसे तास्वर्गलोकविषेभी सादुःखकीप्राप्ति प्रसिद्धहै ॥ काहेतैं जिसअधिकारीशरीरकेकर्मोंकरिकै यहस्वर्गसुख प्राप्तहोवे है ॥ सोशरीर सर्वदा दुःखोंकरिकैहीव्याप्तहै ॥ अब तास्वर्गीपुरुषोंके दुःखोंकेस्पष्टकरणेवासतै तास्वर्गकेमार्गकानिरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ याभारतखंडविषे जोपुरुषअग्निहोत्रादिकइष्टकर्मोंकूंकरे है॥तथाजोपुरुष वापीकूपतडागादिकपूर्त्तकर्मोंकूंकरे है॥तथाजोपुरुषनानाप्रकारके

॥ १७॥

दानकूंकरे है ॥ तथा जोपुरुष कृच्छ्रचांद्रायणादिकतपकूंकरेहै॥सोपुरुष मरणतैंअनंतर तास्वर्गकेपितृयाणनामामार्गकूंप्राप्तहोवे है॥ तामा र्गविषेभी सोकर्मीपुरुष प्रथम धूमकूंप्राप्तहोवे है॥और ताधूमतैंअनंतर रात्रिकूंप्राप्तहोवे है॥और तारात्रितैंअनंतर कृष्णपक्षकूंप्राप्तहोवे है॥ और ताकृष्णपक्षतैंअनंतर षट्मासरूपदक्षिणायनकूंप्राप्तहोवेहै ॥ जोदक्षिणायन देवतावोंकारात्रिरूप है॥तादक्षिणायनतैंअनंतर सोकर्मी पुरुष पितरलोककूंप्राप्तहोवेहै॥और तापितरलोकतैंअनंतर सोकर्मीपुरुष चंद्रमाकूंप्राप्तहोवे है ॥ जिसचंद्रमाकूं इंद्रादिकदेवता कृष्णपक्ष विषेतौ भक्षणकरेहैं॥और शुक्लपक्षविषे वृद्धिकरे हैं॥इहां धूम रात्रि आदिकशब्दोंकरिकै तिनधूमरात्रिआदिकोंके अभिमानीदेवतावोंका ग्रहणकरणा ॥ हेशिष्य ॥ जैसे यालोकविषे सेवाकरणेहारेदास धनीपुरुषोंकेभोगकासाधनहोवे हैं॥यातैं तेधनीपुरुष तिनदासोंकूंभोगे हैं॥ तैसे ताचंद्रमाकेसाथ तादात्म्यभावकूंप्राप्तहुआ जोकर्मीपुरुष है॥ताकर्मीपुरुषकूं तेवसुरुद्रादिकदेवता आपणेभोगकासाधनकरे हैं॥ यातैं तेदेवता ताकर्मीपुरुषकूंभोगेहैं ॥ और जैसे यालोकविषे सोसेवाकरणेहारादास ताधनीपुरुषकीअधीनताकरिकै तथाभयकरिकै सर्वदादुः खकूंहीप्राप्तहोवे है ॥ तैसे तास्वर्गलोकविषे सोकर्मीपुरुषभी तिनदेवतावोंकीअधीनताकरिकै तथापुण्यकर्मोंकेनाशकीभीतिकरिकै सर्वदा दुःखकूंहीप्राप्तहोवे है ॥ और हेशिष्य ॥ जैसे यालोकविषे यहदेहधारीजीव स्त्रीआदिकोंकीअप्राप्तिकरिकै तथाराजादिकोंकेभयकरिके तथाप्रियपदार्थोंकेवियोगकरिकै परमदुःखकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ तैसे स्वर्गलोकविषेभी सोकर्मीपुरुष स्त्रीआदिकोंकी अप्राप्तिकरिकै तथादेत्यों केभयकरिकै तथाप्रियपदार्थोंकेवियोगकरिकै मरणतैंभीअधिकदुःखकूंप्राप्तहोवेहै ॥ इसतैंआदिलेकेअनेककोटिदुःख तास्वर्गविषेप्राप्तहोवे हैं ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार तास्वर्गलोकविषे अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंअनुभवकरिकै सोकर्मीपुरुष किसीकालपाइकै तास्वर्गतैंनीचेपतनहोवे है ॥ तिसतैंअनंतर सोकर्मीपुरुषमेघोंकीवृष्टिद्वारा याभूमिलोकविषे अन्नभावकूंप्राप्तहोइकै पिताकेजठराग्निविषेप्राप्तहोवे है ॥ ताजठरा ग्निविषे सोजीव अत्यंत तपायमानहोवे है॥अब ताजीवकूं पिताकेतापद्वारा तापकीप्राप्ति वर्णनकरे है॥हेशिष्य ताजीवमिलितअन्नकूं जभी यहपुरुष भक्षणकरेहै॥तभी यहयौवनअवस्थावालापुरुष कामरूपपिशाचकेवशकूंप्राप्तहोवेहै॥और ताकालविषे सोकामीपुरुष स्त्रीतैंविना

किंचित्मात्रभी सुखकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु तास्त्रीकास्मरणकरताहुआ सोकामीपुरुष सर्वदातपायमानहोवैहै ॥ और जैसे यालोकविषे विष्टामूत्रकेनिरोधकरणेतैंयापुरुषोंकूं दुःखकीप्राप्तिहोवैहै॥तिसतैंभीअधिकदुःखकीप्राप्ति तापुरुषकूं वीर्यकेनिरोधकरणेतैंहोवैहै॥ऐसेवीर्यविषेप्राप्तहुआ सोजीव पिताकीकामरूपअग्निकरिकै तथामाताकीकामरूपअग्निकरिकै तपायमानहुआ माताकेयोनियंत्रविषेप्राप्तहोवैहै॥जैसे यालोकविषे नलिकायंत्रविषेस्थित जेपुष्पहैं॥तिनपुष्पोंकारस अग्निकेसंबंधतैं तानलिकायंत्रतैंबाहरनिकसिकै दूसरेपात्रविषेपडेहै॥तैसेसो जीवमिलितवीर्यरूपरसभी कामरूपअग्निकेसंबंधतैं तापुरुषकेशरीरतैंबाहरनिकसिकै स्त्रीकीयोनिविषेप्राप्तहोवैहै।और तिसकालविषे सोवीर्यविषेस्थितजीव जिसप्रकारकीदीनदशाकूंप्राप्तहोवैहै॥तिसतैंभीअधिक तापिताकीदीनदशाकरै है ॥ और तिसकालविषे सोवीर्यविषेस्थितजीव जैसेपिताकूं दीनदशाकीप्राप्तिकरैहै॥तिसतैंभीअधिक आपणीमाताकूं दीनदशाकीप्राप्तिकरै है ॥ परंतु तिसकालविषे कामरूप पिशाचकरिकैमोहकूंप्राप्तहुईसास्त्री आपणेदीनदशाकूंजाणतीनहीं ॥ किंतु तिसकालविषे सास्त्री बहुतहर्षकूंप्राप्तहोइकै ताजीवमिलितवीर्यकूं आपणेयोनिमार्गद्वारा उदरविषेधारणकरै है॥तावीर्यकेधारणकरिकै सास्त्री पश्चात् दुःखकूंप्राप्तहोवैहै॥तहांदृष्टांत॥जैसे कोईमूढबालक विषवालेसर्पकूंसुंदरदेखिकै आपणेहस्तविषेग्रहणकरै है ॥ तासर्पकेग्रहणतैंअनंतर सोमूढबालक मृत्युदुःखकूंहीप्राप्तहोवै है ॥ और जैसेकोई मूढपुरुष चौरादिकउपद्रववालेमार्गविषेचाले है ॥ तामार्गके चलणेकरिकै सोमूढपुरुष मृत्युकूंहीप्राप्तहोवै है ॥ तैसे कामकरिकैमोहितहुई सास्त्री विषयभोगकेवासतै तापुरुषकेसमीपजावै है ॥ ताकरिकै सास्त्री परमदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥और जैसेकोईधूर्तपुरुष अन्यकिसीपुरुषके मृत्युकरणेवासतै याप्रकारकाउपायकरै है ॥ प्रथम तापुरुषकूं अतिस्नेहतैंआलिंगनकरैहै॥तिसतैंअनंतर सोधूर्तपुरुष आपणेस्नेहकेजनावणेवासतै किसीसोयेहुएसर्पकूं सुवर्णकेपात्रविषेपाइकै तासुवर्णकेपात्रकूं नानाप्रकारकेपुष्पोंसैंपूर्णकरिकै तथासुगंधिवालेचंदनादिकोंकालेपकरिकै तापुरुषकेहस्तविषेदेवैहै॥तासुवर्णकेपात्रकूंग्रहणकरिकै तापुरुषकामृत्युहीहोवै है॥ तैसेयहकामीपुरुषभी तावीर्यकूंनहींसहारताहुआ नानाप्रकारकेआलिंगनतैं तास्त्रीकूंमोहउत्पन्नकरिकै तावीर्यकूं तास्त्रीकेउदरविषेप्राप्तकरैहै॥और तावीर्यकूंधारणकरिकै सास्त्री परमदुःखकूं

प्राप्तहोवै है ॥ यातैं तादूर्त्तपुरुषकीन्याईं यहकामीपुरुषभी तास्त्रीका परमशत्रुहै॥ और जैसे यालोकविषे जेदुष्टपुरुष ब्राह्मणोंकेधनकूं छल करिकैहरणकरै हैं ॥ तिनदुष्टपुरुषोंकूं सोब्राह्मणोंकाधन यद्यपि तिसकालविषे तौ सुखकाहीकारणहोवै है॥ तथापि मरणतैंअनंतर तिनदुष्टपुरुषोंकूं सोब्राह्मणोंकाधन नरकादिकदुःखोंकीहीप्राप्तिकरै है ॥ तैसे सोपुरुषकावीर्यभी जिसकालविषे तास्त्रीकेउदरविषेप्रवेशकरै है ॥ तिसकालविषेतौ यद्यपि तास्त्रीकूंसुखकीप्राप्तिकरै है ॥ तथापि सोवीर्य जभीगर्भरूपहोइकै तास्त्रीकेउदरतैंबाहरनिकसैहै ॥ तभी तास्त्रीकूं मरणांतदुःखकीप्राप्तिकरै है ॥ और जैसे विषयकरिकैमिलाहुआ जोदुग्धहै॥ सोदुग्ध यद्यपि पीणेकालविषे यापुरुषोंकेसुखकाहेतुहोवै है ॥ तथापि तापीणतैंअनंतर सोदुग्ध तिनपुरुषोंकेमरणकाहीहेतुहोवै है ॥ तैसे यहवीर्यभी आपणेप्रवेशकालविषेतौ यद्यपि तास्त्रीकेसुखकाहेतुहोवै है ॥ तथापि आपणेनिकसणेकालविषे सोवीर्य तास्त्रीकेमरणकाहीहेतुहोवै है ॥ याकहणेतैंयहअर्थसिद्धभया ॥ जैसे मरणकासाधन जोविषहै ॥ तादिषकूं जोकोईदुष्टपुरुष अन्यप्राणीकेप्रतिदेवै है ॥ तादिषदेणेकरिकै जिसप्रकारकापाप तादुष्टपुरुषकूंहोवै है ॥ तिसीप्रकारकापाप ताकामीपुरुषकूं स्त्रीकेउदरविषेवीर्यकेपावणेतैंहोवै है॥ और यालोकविषे जीवोंकेबंधनकरणेकाजोस्थानहै तथाजीवोंकेहिंसाकरणेकाजोस्थानहै ॥ तास्थानकेबनावणेहारेपुरुषकूं जिसप्रकारकापापहोवै है॥तिसीप्रकारकापाप यापिताकूं पुत्रशरीरकेउत्पत्तिकरणेविषेहोवैहै ॥ काहेतैं जिसपुत्रशरीरकूं यहपिता उत्पन्नकरै है ॥ सोशरीर तापुत्रकूं अनेकप्रकारकेदुःखोंकीप्राप्तिकरैहै ॥जोकदाचित् सोपिता तास्त्रीकेउदरविषे वीर्यकीप्राप्तिनहींकरता ॥ तौ तापुत्रशरीरकीउत्पत्तिहोतीनहीं॥ यातैं अन्वयव्यतिरेककरिकै यहपिताही तापुत्रकेदुःखका तथास्त्रीकेदुःखका कारणहै ॥ शंका॥हेभगवन्॥ ऋग्वेदविषे हरिश्चंद्रकेउपाख्यानविषे अपुत्रस्यनलोकोऽस्ति॥ अर्थयह पुत्ररहितपुरुषकूं स्वर्गादिकलोकोंकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ इत्यादिकवचनोंकरिकै पुत्रकेउत्पत्तिकीस्तुतिकरीहै॥यातैं पुत्रकेउत्पत्तिकरणेहारेपिताकूं दोषकीप्राप्तिसंभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ताऋग्वेदकेवचननैं कोईपुत्रकेउत्पत्तिकीस्तुतिनहींकरी ॥ किंतु याअधिकारीपुरुषोंकूं तिनपुत्रोंतैं वैराग्यकीप्राप्तिकरावणेवासतै तावचननैं कामीपुरुषोंकेमिथ्याअभिप्रायका अनुवादकऱ्याहै ॥ काहेतैं तिसीऋग्वेदविषे ता वचनतैं

अनंतर याप्रकारकावचनकह्या है॥ मातरंचस्वसारंचतेयांति॥अर्थयह॥तेकामीपुरुष तामिथ्याअभिप्रायकरिकै पशुवोंकीन्याईं आपणेमा
ताकेसाथ तथाभगिनीकेसाथभी गमनकरै हैं ॥ याप्रकारकेवचननैं पुत्रोंकी उत्पत्तिकरणेहारेपुरुषोंविषे पशुवोंकेआचारकाप्रमाणदेकरिकै
याप्रकार तिनकामीपुरुषोंकेनिंदाकूंबोधनकऱ्याहै॥ हेकामीपुरुषो॥ यालोकविषे जेश्वानादिकपशु आपणीमाताकेसाथ तथाआपणीभगि
नीकेसाथभी विषयसंभोगकरै हैं॥तेश्वानादिकपशुभी अवश्यकरिकै पुत्रोंकूंउत्पन्नकरै हैं ॥ तिनश्वानादिकपशुवोंकेआचरणकूंअंगीकारक
रिकै जोतुमअधिकारीमनुष्यभी पुत्रोंकूंहीउत्पन्नकरोगे तौ ॥ आत्मावैपुत्रनामासि ॥ याश्रुतिनैं पिताकाही पुत्रनाम कथनकऱ्याहै ॥
यातैं सोतुमारापुत्रनाम तुमारेविषे श्वानादिकपशुवोंकीसमानताकूंबोधनकरताहुआ अत्यंतनिंदितनामहोवैगा॥और हेकामीपुरुषो ॥ आ
त्मावैजायतेपुत्रः ॥ याश्रुतिनैं पुत्रकूं पिताकाआत्मारूपकह्याहै ॥ यातैं यहपिता जैसे आपणीमाताकेउदरतैंनिकसेहै॥ तैसे पुत्ररूपहोइकै
आपणीस्त्रीकेउदरतैंभीनिकसेहै ॥ यातैं एकपुत्रकीउत्पत्तितैंअनंतर सास्त्री यापुरुषकीमाताहोवै है॥यातैं जैसे आपणीमाता कामभावना
करिकै स्पर्शकरणेयोग्यनहीं है॥तैसे एकपुत्रकीउत्पात्तितैंअनन्तर सास्त्रीभी कामभावनाकरिकै तुमारेकूं स्पर्शकरणेयोग्यनहीं है॥और हे
कामीपुरुषो॥तुमारेपुत्रभावकूंप्राप्तहोणेहारा जोजीवहै॥सोजीवपुण्यपापकर्मकेअधीनहै॥यातैं सोजीव परतंत्रहै ॥ ऐसापरतंत्रजीव यादुःख
रूपमाताकेउदरविषे जोप्रवेशकरै है॥याकेविषेकोई आश्चर्यनहीं है॥ परंतु तुमपुरुष स्वतंत्रहोइकैभी ऐसेदुःखरूपस्त्रीकेउदरविषे पुत्ररूपहो
इकै जोप्रवेशकरतेहो सोयह हमारेकूं बहुतआश्चर्यहोवै है॥ हेशिष्य॥ताहरिश्चंद्रकेउपाख्यानविषेस्थितवचनका याप्रकारकाहीतात्पर्यहै॥
कोईपुत्रोंकीस्तुतिविषे तावचनका तात्पर्यनहीं है॥किंवा॥तावचनकेबलतैं जोकदाचित् यापिताकूं पुत्रकरिकै लोककीप्राप्तिभी अंगीका
रकरिये ॥ तौभी इसमनुष्यलोककीहीप्राप्ति अंगीकारकरणीहोवैगी काहेतैं बृहदारण्यकउपनिषद्विषे ॥ पुत्रकरिकै पिताकूं यामनुष्यलो
ककेजयकीप्राप्तिही कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति॥पुत्रेणायंलोकजयः॥अर्थयह॥ पुत्रकरिकै यापिताकूं इसमनुष्यलोककाजयप्राप्तहोवै है॥१॥
परंतु तिनपुत्रोंकरिकै यापिताकूं मोक्षकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ और हेशिष्य जैसे यालोकविषे आपणेपुत्रकेसुखकीइच्छाकरणेहारी

॥ १९ ॥

जामाताहै॥ सामाता तापुत्रकेरोगकीनिवृत्तिकरणेवासतै तापुत्रकेप्रति कोईनिंबादिकटुऔषधि पानकरावैहै॥ आगेतैं सोबालक ता कटु
औषधिकूं पानकरतानहीं ॥ और कटुऔषधिकेपानकरैतैंविना तावालककारोग निवृत्तहोवैनहीं॥यातैं सामाता ताबालककेप्रति ता कटु
औषधिकेपानकरावणेवासतै याप्रकारकावचनकहे है ॥ हेपुत्र॥ जोतूं यहऔषधिपानकरैगा ॥ तौ मैं तुमारीजिह्वाविषे गुडदेवोंगी ॥ या
प्रकारके तामाताकेवचनकूंश्रवणकरिकै सोमूढबालक तागुडकेलोभकरिकै ताकटुऔषधिकूंपानकरैहै ॥ इहांतामाताका ओषधिपिवाइके
तापुत्रकेरोगकीनिवृत्तिकरणेविषे तात्पर्य है॥तारोगीपुत्रकेप्रति गुडदेणेविषे तामाताका तात्पर्यनहीं है॥याकानाम गुडजिह्वाकान्यायहै ॥
तागुडजिह्विकान्यायकरिकै तिन हरिश्चंद्रउपाख्यानकेवचनोंका याअधिकारीपुरुषोंकेनिवृत्तिविषेही तात्पर्य है॥ पुत्रादिकोंकीउत्पत्तिविषे
तिनवचनोंका तात्पर्यनहींहै ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकै निरूपणकरै हैं॥ हेशिष्य ॥ यासंपूर्णजीवोंकूं विषयोंकेरागतैं अंधहुआदेखिकै
माताकीन्याईं अत्यंतहितकारी साश्रुतिभगवती बहुतखेदकूंप्राप्तहोतीभई॥ और तिनजीवोंकूंविषयोंके रागतैं निवृत्तकरणेवासतै साश्रुति
भगवतीयाप्रकारकावचन कहतीभई ॥ हेपुत्र॥तपरूपधनकेनाशकरणेहारी जेयहस्त्रियां हैं॥तिनस्त्रियोंविषे तुम गमनमतकरो॥तिनस्त्रियों
केगमनतैं तुमारेकूं इसलोकविषे तथापरलोकविषे महानदुःखकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और तिनदुःखोंकेभोगणेवासतै तुमारेकूं अनेकप्रकार
केशरीरोंकीप्राप्तिहोवैगी ॥ कैसे हैं ते शरीर ॥ बंधनगृहकेसमानहैं ॥ और जैसे चक्षु आपणेविषे अत्यंतसूक्ष्मवस्तुकूंभी सहारसकतानहीं॥
तैंसे किंचित्मात्रविक्षेपकूंभी नहींसहारणेहारे जेविद्वान्पुरुषहैं ॥ तिनविद्वान्पुरुषोंकूं तेशरीर नरकतैंभीअधिकदुःखकीप्राप्तिकरणे
हारेहैं ॥ ऐसेदुःखरूपशरीरोंकूं तुम प्राप्तहोवोगे ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार साश्रुतिभगवती तिनअधिकारीपुरुषोंकेप्रति स्त्रियोंविषेरमणीक
बुद्धिरूपसंकल्पकेनिरोधकरणेका उपदेशकरतीभई ॥ और तासंकल्पकेनिरोधकरणेविषे जिनपुरुषोंकासामर्थ्यनहीं है ॥ तिनपुरुषोंकेप्रति
साश्रुतिभगवती याप्रकारकाउपदेशकरतीभई ॥ हेपुत्र ॥ तासंकल्पकेनिरोधकरणेविषे जोतुमारा सामर्थ्यनहींहोवै ॥ तौभी तुम काम
केवेगकानिरोधकरिकै ब्रह्मचर्यधर्मकूंपालनकरो॥ताब्रह्मचर्यधर्मकूं जभीतुम पालनकरोगे।तभी स्वर्गलोकविषे तथाब्रह्मलोकविषैंमै तुमारेताईं

ऐसेस्त्रियोंकीप्राप्तिकरौंगी ॥ जेस्त्रीयां यामनुष्यलोककीस्त्रियोंतैं रूपादिकगुणोंकरिकै कोटिगुणाअधिकहैं ॥ और ताब्रह्मलोकविषे ५०० पंचशतअपसरा पुष्पचंदनवस्त्रादिकपदार्थोंकूं आपणेहस्तविषेलैकै तुमारेलेणेवासतैं आवैंगी ॥ और जैसे यामनुष्यलोककीस्त्रियोंकूं पुरुषकेसंबंधतैं गर्भहोवैहै ॥ तैसे स्वर्गलोककीस्त्रियोंकूं तथाब्रह्मलोककीस्त्रियोंकूं पुरुषकेसंबंधतैं गर्भकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ यातैं तागर्भक रिकै तिनस्त्रियोंकूं तथातुमारेकूं किंचित्मात्रभीदुःखकीप्राप्तिहोवैगीनहीं ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार साश्रुतिभगवती याअधिकारीपुरुषोंके प्रति ब्रह्मचर्यधर्मकाउपदेशकरतीभई ॥ और जेपुरुष ताब्रह्मचर्यधर्मकेपालनकरणेविषेभी समर्थनहींहोतेभये ॥ तिनअधिकारीपुरुषोंके प्रति साश्रुतिभगवती याप्रकारकाउपदेशकरतीभई॥हेपुत्र ताब्रह्मचर्यधर्मकेपालनकरणेविषेभी जोतुमारा सामर्थ्यनहींहोवै ॥तौभी तुमोंनैं शरीरमनवाणीकरिकै परस्त्रीकागमन कदाचित्भी नहींकरणा ॥ काहेतैं जेपुरुष पर स्त्रीकागमनकरै हैं ॥ ते पुरुष इसलोकविषे तथा परलोकविषे परमभयकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ ऐसापरस्त्रीकागमन तुमोंनैं कदाचित्भीनहींकरणा ॥ किंतु कामकीनिवृत्तिकरणेवासतैं तुम आपणी स्त्रीकासंपादनकरिकै गृहस्थहोवो ॥ तागृहस्थआश्रमकूंधारणकरिकैभी तुम शास्त्रनिषिद्धकर्मोंविषे कालव्यतीत मतकरो ॥ किंतु यज्ञ दानादिकश्रेष्ठकर्मोंकूंकरो ॥ और हेपुत्र॥तिनआपणीस्त्रियोंविषेभी तुमोंनैं याप्रकारकानियमराखणा॥दिनविषे तिनस्त्रीयोंकेसाथ तुमोंनैं कदाचित्भी नहींगमनकरणा ॥ किंतु रात्रिकालविषेगमनकरणा॥तिनरात्रियोंविषेभी एकादशी द्वादशी अमावास्या पौर्णमासी संक्रांति व्यतिपात प्रदोष इत्यादिकजेपर्वरात्रिहैं॥तिनपर्वरात्रियोंविषे तुमोंनैं तिनआपणीस्त्रीयोंकेसाथ कदाचित्भी नहींगमनकरणा॥हेशिष्यइसप्र कार श्रुतिभगवतीकेउपदेशकूंश्रवणकरिकै जेअधिकारीपुरुष तिनपर्वरात्रियोंतैंभिन्नरात्रियोंविषे तिनस्त्रियोंविषेआसक्तहोवै हैं॥ तिनपुरुषों के आसक्तिकीनिवृत्तिकरणेवासतैं साश्रुतिभगवती तिनअधिकारीपुरुषोंकेप्रति याप्रकारकेनियमका उपदेशकरैहै॥हेपुत्र॥ तिनपर्वरात्रियों तैंभिन्नरात्रियोंविषेभी तुमोंनैं ऋतुकालतैंविना कदाचित्भी तिनस्त्रीयोंविषे गमननहींकरणा।किंतु ऋतुस्नातस्त्रियोंविषेहीतुमोंनैं शास्त्रउक्तसं स्कारोंकूंकरिकै गमनकरणा॥ऐसेनियमकूंधारणकरिकै जोतुम आपणीस्त्रियोंविषेगमनकरौगे॥तोतुमारेकूं शुभगुणवालेपुत्रोंकीप्राप्तिहोवैगी ॥ २० ॥

हेशिष्य इसप्रकार मूढपुरुषोंकी विषयोंविषेआसक्तिकेछुडावणेवासतैं साश्रुतिभगवती पुत्रकेजन्मकीस्तुतिकरैहै ॥ यातैं ताश्रुतिवचनका निवृत्ति विषेहीतात्पर्य है॥पुत्रकेजन्मविषे ताश्रुतिका तात्पर्यनहीं है॥शंका॥हेभगवन् ॥तिनश्रुतिवचनोंका पुत्रोंकीउत्पत्तिविषेही तात्पर्य क्योंनहींहोवैहै ॥समाधान ॥ हेशिष्य ॥ यालोकविषे जोपदार्थ याजीवोंकूं रागकरिकैप्राप्तनहींहोवै है॥तिसीपदार्थकूं शास्त्र विधानकरैहै॥ रागकरिकैप्राप्तवस्तुका शास्त्र विधानकरैनहीं ॥ याप्रकारकानियम सर्ववादीअंगीकारकरैहै॥और स्त्रियोंकेसंगतैंपुत्रोंकीउत्पत्ति तथास्त्रि योंकासंग यहदोनों शास्त्रतैंविनाहीं सर्वजीवोंकूं रागकरिकैहीप्राप्तहै ॥ काहेतैं यालोकविषे शास्त्रतैंरहित जेपशुपक्षीमत्स्यादिकजीवहैं ॥ तथा शास्त्रकेज्ञानतैंरहित जेमलेच्छादिकहैं ॥ तिनसंपूर्णोंकूं शास्त्रकेउपदेशतैंविनाहीं पुत्रोंकीउत्पत्ति तथास्त्रियोंकासंग रागकरिकैही प्राप्तहै ॥ यातैं तारागप्राप्तअर्थविषे ताश्रुतिका तात्पर्यसंभवैनहीं ॥ याकारणतैंहीं ताअर्थवेदकीश्रुतिनैं पुत्रोंकीउत्पत्तिकरणेहारेरागी पुरुषोंविषे पशुवोंकादृष्टांतदियाहै ॥ और याकारणतैंहीं ॥ पतिर्जायांप्रविशति यहश्रुति एकपुत्रकीउत्पत्तितैंअनंतर यापुरुषकूं पुनःस्त्री केसंबंधकानिषेधकरै है ॥ काहेतैं पुत्रकीउत्पत्तितैंपूर्व जास्त्री मातावाचकजायाशब्दकाअर्थनहीं है ॥ साईहीस्त्री पुत्रकीउत्पत्तितैंअनंतर ताजायाशब्दकाअर्थहोवै है यातैं याजीवोंकूंरागकरिकैप्राप्त जोपुत्रोंकीउत्पत्ति तथास्त्रीकासंबंध तिसकूं साश्रुतिविधानकरैनहीं ॥ किंतु यासंसारदुःखकीप्राप्तिकरणेहारा तथाआनंदस्वरूपआत्माकूंआवरणकरणेहारा जोरागरूपकामहै ॥ ताकामकेनिवृत्तिकूंहीं साश्रुति बोधन करैहै ॥शंका ॥ हेभगवन् साश्रुतिभगवती जोपुत्रकीउत्पत्तिकूं तथास्त्रीकेसंगकूं विधाननहींकरती॥तौ साश्रुति किसअर्थकूंविधानकरैहै॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ याजीवोंकेहृदयदेशविषेस्थित जोआनंदस्वरूपस्वयंज्योतिआत्माहै॥ सोआत्मादेव रागरहितपुरुषोंकूं ब्रह्मचर्यसा धनतैंहीं दीपककीन्याईं स्पष्टप्रतीतहोवैहै॥और सोब्रह्मचर्यधर्म याजीवोंकूं शास्त्रतैंविना रागकरिकैभीप्राप्तहैनहीं॥याकारणतैं साश्रुतिभग वती याअधिकारीपुरुषोंकेप्रति ताब्रह्मचर्यकाही विधानकरै है ॥ अब जिसप्रकारतैं साश्रुतिभगवती ब्रह्मचर्यधर्मकाउपदेशकरै है ताप्रकारकानिरूपणकरै हैं ॥ जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज यहचारिप्रकारकेजीव सर्वदा सुखकेप्राप्तिकीइच्छाकरै हैं ॥ और तासु

स्वकीप्राप्तिवासते यत्नभीकरे हैं ॥ परंतु तिनजीवोंकूं सुखकीप्राप्तिहोतीनहीं॥ ऐसेसुखतैंरहितजीवोंकूंदेखिकरिकै तिनोंकेदुःखकूंनहींसहार
तीहुई साश्रुतिभगवती अत्यंतखेदकूंप्राप्तहोतीभई ॥ और हितकारीमाताकीन्याईं आपणे कृपाजन्यदुःखजनावणेवासतै आपणेमस्तक अ० ११
कूंताडनकरतीहुई साश्रुतिभगवती ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यात्रैवर्णिकअधिकारीपुरुषोंकेप्रति याप्रकारकावचन कहतीभई ॥ हेअधिकारी
जनो ॥ जो तुमारेकूंसुखकेप्राप्तिकीइच्छाहोवै ॥ तौ तुम हमारेवचनविषेश्रद्धाराखिकै कामकापरित्यागरूपब्रह्मचर्यधर्मकूं संपादनकरो ॥
ताब्रह्मचर्यकरिकैही तुमारेकूं सुखकीप्राप्तिहोवैगी हेअधिकारीजनो॥तुम श्रोत्रादिकइंद्रियोंकरिकै तथाबुद्धिआदिकगुणोंकरिकै युक्तहो॥
तथा श्रवणमननादिकसाधनोंकेकरणेविषेसमर्थहो ॥ याकारणतैं हमारेउपदेशकेधारणकरणेविषे तुमारेकूंहीं अधिकार है ॥ तुमारेतैं
भिन्नजीवोंकूं हमारेउपदेशकाअधिकार है नहीं ॥ काहेतैं यालोकविषे जितनेकीवृक्षादिकस्थावरप्राणी हैं॥ तेवृक्षादिकप्राणी श्रोत्रादिक
इंद्रियोंतैं रहितहैं ॥ यातैं तेवृक्षादिकतौ हमारेउपदेशकेश्रवणकरणेविषेभी समर्थनहीं ॥ और यालोकविषे श्रोत्रादिकइंद्रियोंवाले जितने
कीगौअश्वादिकपशूहैं ॥ तेपशुतौ शास्त्रकेअर्थकूंनिश्चयकरणेहारीबुद्धितैंरहितहैं ॥ यातैं तिनपशुवोंकूंभी हमारेउपदेशकाअधिकार
हैनहीं ॥ और यालोकविषे जितनेंकीशूद्रजातिवालेमनुष्य हैं ॥ तिनशूद्रोंकूंतौ ॥ स्त्रीशूद्रौनाऽधीयाताम्॥ इत्यादिकवचनोंकरिकै वेदकेअ
ध्ययनकानिषेधकऱ्याहै ॥ यातैं तिनशूद्रोंकूंभी हमारेउपदेशकाअधिकार हैनहीं ॥ किंतु तुमत्रैवर्णिकअधिकारियोंकूंहीं हमारेउपदेशकाअ
धिकारहै ॥ यातैं तुमअधिकारीजन हमारेउपदेशकूंअंगीकारकरिकै ताकामकापरित्यागकरो ॥ और हेअधिकारीजनो ॥ यालोकविषे
जितनेकीजीव दुःखकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ सोकामकरिकैहीप्राप्तहोवैहैं॥ कामतैंविना किसीभीजीवकूं दुःखकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥यातैं अन्वयव्यतिरे
ककरिकै यहकामहीं जीवोंकेदुःखकारणहै ॥ ऐसेकामकेवशहोणा तुमअधिकारियोंकूं योग्यनहीं है ॥ अब तैत्तिरीयकउपनिषद्कीरीतिसैं
ताकामकेत्यागविषे सुखकीकारणता निरूपणकरैहैं॥हेअधिकारीजनो ॥ चक्रवर्तिराजा १ मनुष्यगंधर्व २देवगंधर्व ३पितर ४ आजानजदेव ५ ॥ २१ ।
कर्मदेव ६ वसुरुद्रादिकआधिकारकदेव ७ इंद्र ८ बृहस्पति ९ विराट् १० हिरण्यगर्भ ११ यापकादशौंविषे पूर्वपूर्वआनंदतैं उत्तरउत्तरका

आनंद १०० शतगुणाअधिक कथनकऱ्याहै ॥ तिनसर्वआनंदोंकूं कामदोषरहितानिष्कामपुरुष प्राप्तहोवैहै॥ और ताचक्रवर्तिराजातैंलेके
हिरण्यगर्भपर्यंत जितनेकीविषयजन्यआनंद कथनकरैहैं ॥ तेसंपूर्णआनंद जिसब्रह्मानंदरूपसमुद्रकेएकबिंदुमात्रहैं ॥ ताब्रह्मानंदकूंभी यह
निष्कामपुरुषही प्राप्तहोवैहै ॥ कामदोषवाले तेचक्रवर्तिराजादिक ताब्रह्मानंदकूं प्राप्तहोइसकैनहीं ॥ हेअधिकारीजनो ॥ ऐसेब्रह्मानंदकाजो
साक्षात्कारहै ॥ सोसाक्षात्कारही यामनुष्यशरीरकाफलहै ॥ यातैंयाअधिकारीमनुष्यकेशरीरविषे पुत्रएषणा लोकएषणा वित्तएषणा या
तीनप्रकारकीएषणावोंका परित्यागकरिकै तुमअधिकारीजन ताआनंदस्वरूपआत्माकेसाक्षात्कारकीइच्छाकरो ॥ और हेअधिकारी
जनो ॥ जोतुमताकामदोषकापरित्यागनहींकरोगे ॥ तौतुमारेकूं श्वानादिकपशुवोंकीन्याईं विषयभोगरूपपापकर्म अवश्यकरणाहोवैगा ॥
कैसाहैसोपापकर्म ॥ पूर्वउक्तरीतिसैं स्त्रियोंकेतथापुत्रोंके सर्वदादुःखकाहीकारणहै ॥ और हेअधिकारीजनो यालोकविषे जेश्वानादिकपशु
शास्त्रज्ञानतैंरहितहैं तेश्वानादिकपशुभी आपणीस्त्रीकेसंभोगतैं पुत्रोंकीउत्पत्तिकरैहैं ॥ तथा तिनस्त्रीपुत्रादिककुटुंबका भरणपोषणभी
करैहै ॥ तिनश्वानादिकपशुवोंकीन्याईं तुमअधिकारीमनुष्यभी जोकदाचित् स्त्रियोंकेसंभोगतैं पुत्रोंकीउत्पत्तिकरोगे ॥ तथा तिनस्त्री
पुत्रादिककुटुंबका पालनकरोगे ॥ तौ तुमअधिकारीमनुष्योंविषे तिनश्वानादिकपशुवोंतैं कौनअधिकता सिद्धहोवैगी ॥ किंतु तुमभी
तिनश्वानादिकपशुवोंकेतुल्यहीहोवोगे ॥ शंका ॥ हेभगवन् यद्यपि स्त्रियोंकेसंभोगकरणेविषे तथापुत्रोंकीउत्पत्तिकरणेविषे हमअधिकारी
जनोंकूं श्वानादिकपशुवोंकीसमानता प्राप्तहोवै है ॥ तथापि गृहस्थपुरुषोंकूं स्वस्त्रीकासंभोग तथापुत्रोंकीउत्पत्ति शास्त्रनैंविधान
करी है ॥ यातैं ताशास्त्रकीआज्ञामानिकै हमअधिकारीपुरुष आपणेविषे पशुवोंकीसमानताकूंभी अंगीकारकरे हैं ॥ समाधान ॥
हेअधिकारीजनो तिनशास्त्रकेवचनोंकातात्पर्य तुमानैं जान्यानहीं ॥ काहेतैं वेदविषे दोप्रकारकेविधिवचनहोवै हैं ॥ तहांएकतौ
नित्यविधिरूप वचनहोवैहैं ॥ और दूसरे काम्यविधिरूप वचनहोवैहै ॥ तहां जिसविधिवचनकेउल्लंघनकरणेतैं याअधिकारीपुरुषोंकूं
पापकीप्राप्तिहोवै है और ताकेकरणेतैंपुण्यकीप्राप्तिहोवैहै ॥ ताविधिवचनकानाम नित्यविधिवचनहै ॥ जैसे ॥ अहरहःसंध्यामुपासीत॥

इत्यादिकविधिवचन यात्रैवर्णिकअधिकारीपुरुषोंकेप्रतिदिनदिनविषे संध्यागायत्रिआदिकोंकेअनुष्ठानकाविधानकरेहैं ॥ तिनसंध्यागायत्री आदिकनित्यकर्मोंकेनहींकरणेतैं तिनअधिकारीपुरुषोंकूं पापकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और तिनोंकेकरणेतैं पुण्यकीप्राप्तिहोवैहै॥ यातैं तेवचननित्य विधिरूपहैं ॥ और जिनविधिवचनोंकेउल्लंघनकरणेतैं याअधिकारीपुरुषोंकूं पापकी प्राप्तिहोवैनहीं ॥ और तिनोंकेकरणेतैं किसीफलकी प्राप्तिहोवै ॥ ताविधिवचनकानाम काम्यविधिहै ॥जैसे॥ ज्योतिष्टोमेनस्वर्गकामोयजेत ॥ इत्यादिक विधिवचन स्वर्गादिकोंकीकामनावा लेपुरुषोंकेप्रति ज्योतिष्टोमादिकयज्ञोंका विधानकरै हैं ॥ तिनज्योतिष्टोमादिककाम्यकर्मोंके नहीं करणेतैं याअधिकारीपुरुषोंकूं पापकी प्राप्तिहोवैनहीं ॥ और तिनोंकेकरणेतैं याअधिकारीपुरुषोंकेप्रति स्वर्गादिकफलकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं तेवचन काम्यविधिरूपहै ॥ तैसे इहांप्रसंगविषे पुत्रोंकीउत्पत्तिआदिकोंकूंकथनकरणेहारे जेवेदकेवचनहैं ॥ तेवचन जोकदाचित् नित्यविधिरूपहोते ॥ तौ तानित्यविधिके नकरणेकरिकै याअधिकारीपुरुषोंकूंपापकीप्राप्तिहोती ॥ परंतु तेवचन नित्यविधिरूपहैनहीं ॥ किंतुतेवचन काम्यविधिरूपहैं ॥ यातैं ताकाम्य विधिकेनहींकरणेतैं निष्कामपुरुषोंकूंपापकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ जैसे॥इष्येनेनाऽभिचरन्यजेत ॥ यहकाम्यविधि शत्रुमारणेकीइच्छा वान्पुरुषकेप्रतिताश्येनयज्ञकेमारणेवासतै श्येननामायज्ञका विधानकरैहै ॥ ताश्येनयज्ञकेनहींकरणेतैं यापुरुषकूंपापकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ किंतु उलटा ताश्येनयज्ञकेकरणेतैंहीं यापुरुषकूं नरकादिकदुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तैसे पुत्रादिकोंकेउत्पत्तिकूंकथनकरणेहारे जेकाम्यविधि रूपवचनहैं ॥ तिनोंकेउल्लंघनकरणेतैं याअधिकारीपुरुषोंकूं पापकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ किंतु उलटातिनपुत्रादिकोंकेउत्पत्तिकरणेकरिकैही यापुरुषोंकूं अनेकप्रकारकेदुःखोंकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और हेअधिकारीजनो ॥ जैसे पुत्रकीउत्पत्तिकूंकथनकरणेहारे वेदकेवचन रागवानपुरुषोंकेप्रतिही ता पुत्रके उत्पत्तिकाविधानकरै है ॥ तैसे तापुत्रकीउत्पत्तिकरणेवासतै स्त्रीविवाहकूंकथनकरणेहारे जेवचनहैं तथाताऋतुस्नातस्त्री विषे गमनकालकेनियमकूंकथनकरणेहारे जे वचन हैं ॥ तेसंपूर्णकाम्यविधिरूपवचन रागवान्पुरुषकेप्रतिही तिस तिसअर्थकाविधानकरैहै ॥ यातैं रागरहितनिष्कामपुरुषोंकूं तिनवचनोंकेउल्लंघनकरणेतैं किंचित्मात्रभी दोषकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ उलटा

॥ २२ ॥

महान्फलकीप्राप्तिहोवै है ॥ और हेअधिकारीजनो ॥ यानामकरिकैअंधहुए यहपुरुष आपणीभगिनीआदिकोंविषेभी गमनकरै हैं ॥ जैसे कामकरिकैअंधहुए श्वानादिकपशु आपणेभगिनीआदिकोंविषेभी गमनकरैहैं ॥ यातैं यहकामही सर्वअनर्थोंकाकारणहै ॥ ऐसेकामकूं तुम अधिकारीजन सर्वप्रकारसैंपरित्यागकरौ ॥ हेअधिकारीजनों ॥ यहकामही जविोंके सर्वअनर्थकाकारणहै॥ यहवार्त्ता केवल हम नहींकहते किंतु ताकामविषे सर्वअनर्थकीकारणता यासर्वलोकोंकूंप्रसिद्धहै ॥ काहेतैं यालोकविषे जेपुरुष कामकरिकैअंधहोवै हैं ॥ तेकामीपुरुष किसकिसअनर्थकूंनहींकरैहैं ॥ किंतु तेकामीपुरुष सर्वअनर्थोंकूंकरै हैं॥ और याकामकरिकेहीअंधहुए तेकामीपुरुष आपणीस्त्रीकूंतो गर्भ रूपदुःखकीप्राप्तिकरै हैं ॥ और आपणेकूं पापरूपदुःखकीप्राप्तिकरै हैं ॥ और जीवात्मारूपपुत्रकूं शरीरकासंबंधरूपदुःखकीप्राप्तिकरै हैं॥ यातैं यहकामही तुमारे अनर्थकाकारणहै ॥ ऐसेकामकूं जभीतुम परित्यागकरोगे ॥ तभीही तुमारेकूं सुखकीप्राप्तिहोवेगी ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार साश्रुतिभगवती माताकीन्याईं कृपाकरिकै तिनअधिकारीपुरुषोंकेप्रति ब्रह्मचर्यधर्मकाउपदेशकरतीभई॥ यातैं संपूर्णश्रुतिवच नोंका साक्षात् अथवा परंपराकरिकै निवृत्तिविषेही तात्पर्यहै॥ पुत्रादिकोंकीउत्पत्तिविषे किसीभीश्रुतिका तात्पर्यनहीं है यहअर्थसिद्धभ या ॥ अब कामीपुरुषोंविषे पुत्रकेदेहरूपदुःखकीकारणता स्पष्टकरणेवासतै प्रथम तापुत्रकेशरीरकीउत्पत्तिकाप्रकार निरूपणकरै हैं ॥ हेशिष्य ॥ स्त्रीकेशोणितसाथ मिल्याहुआ यहपुरुषकावीर्यही तिनपुत्रोंकेशरीरकीउत्पत्तिकरै है ॥ जिनशरीरोंकरिकै तिनपुत्रोंकूं अनेक प्रकारकेदुःखोंकीप्राप्तिहोवै है॥ और जैसे रक्तकफयादोनोंकेसंयोगतैं एकविलक्षणहीवर्ण उत्पन्नहोवै है॥ तैसे ताशोणितवीर्यकेसंयोगतैंभी एकविलक्षणहीवर्ण उत्पन्नहोवै है ॥ ताशुक्रशोणितकेसंयोगतैंही यहजीवात्मा गर्भभावकीप्राप्तिद्वारा पुनःशरीरकूंप्राप्तहोवै है॥ हेशिष्य॥ पिताकेशरीरतैं तावीर्यकेनिकसणेकाप्रकार जिसरीतिसैं तागर्भउपनिषद्विषे कथनकऱ्याहै ॥ तारीतिकूं तूं श्रवणकर ॥ पूर्वउक्तरीतिसैं सोजीवमिलितअन्न युवानपुरुषकेशरीरविषेप्राप्तहोइकै रसरुधिरादिकधातुद्वारा वीर्यरूपसप्तमधातुभावकूंप्राप्तहोइकै पादतैंलैकेमस्त कपर्यंत यासर्वशरीरविषे व्याप्यकरिकैरहै है ॥ और जैसे अग्निकेसंबंधतैं पुष्पोंका रसनिकसै है ॥ तैसे स्त्रियोंके स्मरणादिकोंकरिकै

उत्पन्नभयाजोकामरूपअग्निहै॥ताकामरूपअग्निकेतापकरिकै यापुरुषकेसर्वअंगोतैं सोवीर्यरूपरस निकसेहै॥ और तिनसर्वअंगोतैंनिकसि
कै सोवीर्य प्रथम हृदयदेशविषेस्थितहोवैहै ॥ और जैसे महान्वायु वृक्षकूं चलायमानकरै है ॥ तैसे सोवीर्यभी ताहृदयकमलकूंचलायमा
नकरै है ॥ और ताहृदयकमलकेचलायमानहुए यहकामीपुरुष धैर्यतैंरहितहोवै हैं॥ याकारणतैंही सोकामीपुरुष तिसकालविषे स्त्रीजनों
केअधीनहोवै है ॥ तथा धैर्यवानपुरुषोंकेशोककाविषयहोवैहै॥ और ताहृदयकमलविषे वीर्यकेप्राप्तहुए ताकामीपुरुषकूं जिसप्रकारकादुः
खहोवै है ॥ तिसीप्रकारकादुःख तावीर्यविषेस्थितजीवकूंभीहोवै है ॥ और जैसे समुद्रविषेस्थितनौका जभी महान्वायुकरिकैचलायमान
होवै है तभी तानौकाविषेस्थितपुरुष महान्दुःखकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ तैसे ताहृदयकमलकेचलायमानताकरिकै सोजीवात्माभी महान्दुःख
कूंप्राप्तहोवै है ॥ इसप्रकार सोजीवात्मा ताहृदयदेशविषे अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंअनुभवकरिकै ताहृदयकमलतैंअनंतर नाडीरूपमार्गद्वारा
तापिताकेसर्वशरीरविषेप्राप्तहोवै है ॥ तहां तापिताकेशरीरविषेस्थितजे रसरुधिरादिकसप्तधातुहैं॥तिनधातुवोंविषेस्थितजोअग्निहै॥तिस
अग्निकूं सोजीवात्मा प्राप्तहोवैहै है॥तामहान्अग्निविषेप्राप्तहुआ यहजीवात्मादाहकूंप्राप्तहोइकै महान्दुःखकूंप्राप्तहोवैहै औरताअग्निकरिकै
याजीवात्माका मरणभीहोवैनहीं ॥ तथा ताअग्नितैंयाजीवात्माका बाहरभीनिकसणाहोवैनहीं ॥ इसप्रकार ताअग्निविषे बहुतकालपर्यंत
दुःखकाअनुभवकरिकै सोजीवात्मा ताअग्नितैंअनंतर पित्तभावकूंप्राप्तहोवैहै॥ केसाहैसोपित्त॥ अग्निकेसंबंधतैंद्रवीभूतहुएजेताम्रादिकधा
तुहैं तिनोंकेसमानहै ॥ तथा क्षार कटु रसकरिकैयुक्तहै ॥ ऐसेपित्तभावकूंप्राप्तहोइकै यहजीवात्मा नरकदुःखतैंभीअधिकदुःखकूंप्राप्तहोवै है
॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार पित्तविषे अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंअनुभवकरिकै सोजीवात्मा तापित्ततैंअनंतर वातभावकूंप्राप्तहोवै है॥ केसाहैसो
वात ॥ महान्वायुकेसमान वेगवालाहै ॥ और यालोकविषे किसीऊंचेपर्वतकोशिखरविषेस्थित जोकोईवस्त्रादिकोंतैंरहितपुरुषहै॥ सोपुरुष
तहां महान्वायुकरिकैकंपायमानकऱ्याहुआ जिसप्रकारकेदुःखकूंप्राप्तहोवै है॥तिसीप्रकारकेदुःखकूं यहजीवात्मा तावातविषेप्राप्तहोवै है॥
हेशिष्य ॥ इसप्रकार तावातविषे अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंअनुभवकरिकै सोजीवात्मा तावाततैंअनंतर पुनःहृदयकमलविषेप्राप्तहोवै है

॥२३॥

हे शिष्य ॥ सोहृदय दोप्रकारकाहोवै है ॥ एकतौ अस्थियोंकापंजररूपहृदयहोवै है ॥ जिसहृदयकूं लोकविषे उरस्थल वक्षस्थल
इत्यादिकनामकरिकैकथनकरै हैं ॥ और दूसरा ताअस्थिपंजरकेभीतर मांसमयकमलरूपहृदयहोवै है ॥ तामांसमयकमलकूंहीशास्त्र
विषे हृदयकमल हृदयपद्म इत्यादिकनामोंकरिकैकथनकरै हैं॥ऐसेहृदयकमलविषे सोजीवात्मा प्राप्तहोवैहै॥अब याहींअर्थकूं पुनःस्पष्टक
रिकैनिरूपणकरै हैं ॥ हेशिष्य ॥ अन्नकेसाथभक्षणकऱ्याहुआ सोजीवात्मा प्रथम तापिताके हृदयकमलकेसमीपजावै है ॥तिसतैंअनंतर
ताअन्नकेसाथमिल्याहुआसोजीवात्मा तापिताकीजठराग्निविषेप्राप्तहोवै है ॥ तिसतैंअनंतर सोजीवात्माताअन्नकेसूक्ष्मरसोंकेसाथमिलिकै
समानवायुकेबलतैं ऊपरगमनकरै है ॥ तिसतैंअनंतर सोजीवात्मा पित्तभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ तिसतैं अनंतर सोजीवात्मा वातभावकूं
प्राप्तहोवै है॥तिसतैंअनंतर सोजीवात्मा पुनःहृदयकमलकूंप्राप्तहोवै है॥इसप्रकार सोजीवात्मा तापिताकेशरीरविषे कंदुककीन्याईं भ्रमण
करै है॥हेशिष्य॥इसप्रकार तापिताकेशरीरविषे नीचेऊपरभ्रमणकरताहुआ सोजीवात्मा अनेकदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै॥तिसतैंअनंतर पुण्यपाप
कर्मोंकेवशतैं सोजीवात्मा वीर्यकेसाथमिलिकै तापिताकेशरीरतैं बाहरनिकसिकै माताकेउदरविषेप्राप्तहोवै है ॥ हेशिष्य ॥ याजीवा
त्माकूं दूसरेशरीरकीप्राप्तिवासतै याप्रकारकामार्ग प्रजापतिनैं उत्पन्नकऱ्याहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तामार्गकूं प्राजापत्ययानामक
रिकैकथनकरै है ॥ अब तीनमलोंकरिकै याशरीरकेउत्पत्तिकानिरूपणकरै हैं ॥हेशिष्य॥ यालोकविषे जितनेकीमनुष्यादिकयोनिजशरी
रहैं ॥ तिनशरीरोंके कार्मण मायीय आणव यहतीनप्रकारकेमल कारणहोवै हैं ॥ तहां पिताकेशुक्रकानाम कार्मणमल है ॥ और
माताकेशोणितकानाम मायीयमल है ॥ और तिसराजोआणवनामामल है ॥ ताके विषे यह तीनप्रकारके मत हैं ॥ तहां कोई
कशास्त्रवेत्तापुरुषतौ शुक्र शोणित यादोनोंमलोंके संधिकूं आणवमलकहे हैं ॥ कोईकशास्त्रवेत्तापुरुषतौ पुण्यपापरूपकर्म
कूंही आणव मलकहे हैं ॥ और कोईकविद्वान्पुरुषतौ शुक्र शोणित यादोनोंमलोंकीअवस्थाविशेषकूंही आणवमल कहे हैं ॥ तिनती
नोंमतौंविषे यहअंतकामतही समीचीनहै॥काहतैं शुक्र शोणित यादोनोंमलोंके योगतैंअनंतर तत्कालही एकविलक्षणवर्ण उत्पन्नहोवै है

ता विलक्षणवर्णका नाम आणवमलहै ॥ सोआणवनामातृतीयमल तिनदोमलोंतैंभिन्ननहीं हैं ॥ किंतु सोतृतीयमल तिनदोमलोंकेअंतर भूतही हैं ॥ हेशिष्य ॥ अविद्यादिकपंचक्लेशोंकरिकैयुक्त तथापुण्यपापकर्मोंकरिकैयुक्त तथापूर्ववासनावोंकरिकैयुक्त जोयहजीवात्माहै॥सो यहजीवात्मा यातीनमलोंकेसंबंधतैं जिसशरीरकूंप्राप्तहोवै है।सोशरीर तिनपितामाताकेसमानहीहोवै है।तिसपितामाताकेशरीरतैं सोशरीर विलक्षणहोवैनहीं ॥ अब पुरुष स्त्री नपुंसक यातीनशरीरोंकेउत्पत्तिकाप्रकार निरूपणकरैं हैं॥हेशिष्य॥पुरुषस्त्रीकेसंभोगकालविषे जभी पिताकाशुक्ररूपमल अधिकपतनहोवै है ॥ और माताकाशोणितरूपमल न्यूनपतनहोवै है ॥ तभी तिनदोनोंमलोंतैं पुरुषशरीरकीउत्पत्तिहोवै है॥और तासंभोगकालविषे जभी स्त्रीकाशोणितरूपमल अधिकपतनहोवै है॥ और पिताकाशुक्ररूपमल न्यूनपतनहोवै है॥तभी तिनदोनोंमलोंतैं स्त्रीशरीरकीउत्पत्तिहोवै है॥और तासंभोगकालविषे जभी पुरुषकाशुक्ररूपमल तथास्त्रीकाशोणितरूपमल समानहीपतन होवै है॥तभी तिनदोनोंमलोंतैंनपुंसकशरीरकीउत्पत्तिहोवै है॥अब सुंदरबालककेउत्पत्तिकाप्रकार तथा कुरूपबालककेउत्पत्तिकाप्रकार निरूपणकरै हैं ॥ हेशिष्य ॥ जिसकालविषे यहपुरुष तथास्त्री दोनों किसीचिंताकरिकैव्याकुलनहींहोवैहैं॥ किंतु स्वस्थचित्तवालेहोवै हैं॥ तिसकालविषे सोपुरुष तथास्त्री जभी शास्त्रकीरीतिप्रमाण संभोगकरैं हैं ॥ तभी तिनदोनोंके शुक्रशोणिततैं जोबालककउत्पन्नहोवै है ॥ सोबालक नेत्रादिकसर्वइंद्रियोंकरिकैसंपन्नहोवै है ॥ तथा अनेकशुभगुणोंकरिकैंसंपन्नहोवै है॥ तथा हस्तपादादिकसर्वअवयवोंकरिकैसुंदर होवै है ॥ और जभी यहपुरुष तथास्त्री दोनों किसीचिंताकरिकैव्याकुलहोवै हैं ॥ अथवा तिनदोनोंविषे एककामन व्याकुलहोवैहै॥तभी संभोगकालविषे तिनदोनोंकावीर्य सर्वअंगोंतैंनिकसेनहीं॥और जोकदाचित् सोशुक्रशोणितरूपवीर्य तिनदोनोंकेसर्वअंगोंतैंनिकसेभीहै ॥ तोभी सोवीर्य बाहरनिकसणेकालविषे निरुद्धहोइजावै है ॥ अथवा सोवीर्य कफादिकधातुवोंकरिकैमिलितहोवैहै॥ऐसेशुक्रशोणिततैं जो बालक उत्पन्नहोवैहै॥सोबालक सर्वअंगोंकरिकैसुंदरहोवैनहीं॥किंतु सोबालक खंजहोवै है॥अथवा सोबालक पंगुहोवैहै॥अथवा सोबालक हस्तपादकीअंगुलियोंतैं रहितहोवै है ॥ अथवा सोबालक न्यूनअंगुलियोंवालाहोवै है॥अथवा सोबालक अधिकअंगुलियोंवालाहोवै है ॥

अथवा सोबालक श्यामनखोंवालाहोवै है अथवा सोबालक एकपादएकहस्तवालाहोवै है ॥ अथवा लोबालक नेत्रादिकसर्वइंद्रियोंतैं रहितहोवै है॥ अथवा सोबालक किसीएकइंद्रियतैंरहितहोवै है॥अथवा सोबालक वामनहोवै है॥अथवा सोबालक कुब्जहोवै है॥ अथवा सोबालक अत्यंतदीर्घहोवै है॥ अथवा सोबालक अत्यंतभयवानहोवै है॥इसतैंआदिलैके अनेकप्रकारकीकुरूपतावाला सोबालक उत्पन्न होवै है ॥ अब एकहीकालविषे स्त्रीकेउदरविषे दोतीनबालकोंकेउत्पत्तिकाप्रकार निरूपणकरैं हैं॥ हेशिष्य॥तास्त्रीपुरुषकेसंभोगकालविषे जभी तापुरुषका तथास्त्रीका॥ अपानवायु किसीनिमित्तकरिकैक्षोभकूंप्राप्तहोवै है॥तभी सोअपानवायु तास्त्रीपुरुष संभोगशयविषेजाइकै तामिलेहुएशुक्रशोणितके जोकदाचित् दोविभागकरै है ॥ तौतास्त्रीकेउदरविषे॥दोबालकोंकीउत्पत्तिहोवै है॥और सोअपानवायु जाकदा चित् ताशुक्रशोणितकेतीनविभागकरैहै॥तौ तास्त्रीकेउदरविषे तीनबालकोंकीउत्पत्तिहोवै है॥ हेशिष्य॥इसप्रकार पुण्यपापकर्मोंकेवशतैं सोजीवात्मा तामाताकेउदरविषे अनेकप्रकारकेशरीरोंकूंप्राप्तहोवै है ॥ अब तामाताकेउदरविषे बालककेवृद्धिकाप्रकार निरूपणकरै हैं ॥ हेशिष्य ॥ तास्त्रीकेउदरविषे प्राप्तभयाजो पुरुषकाशुक्र है ॥ सोशुक्रतथास्त्रीकाशोणित यहदोनोंमल परस्परमिलिकै प्रथमरात्रिविषेतौ जलकेफेनकीन्याईं कलिलअवस्थाकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ ताकलिलअवस्थाकापरिमाण माताकेअंगुष्ठपरिमाणहोवै है॥और सप्तरात्रितैंअनंतर तेशुक्रशोणितदोनों ताफेनरूपकलिलअवस्थाकापरित्यागकरिकै बुद्बुदअवस्थाकूंप्राप्तहोवै हैं॥इहां यत्किंचित्द्रवीभूत तथाअंडेकीन्याईं वर्तुलाकार जोमांसविशेषहै ताकानाम बुद्बुदहै॥और एकपक्षतैंअनंतर सोबुद्बुदाकारमांस ताद्रवीभावताकापरित्यागकरिकै आपणेअग्नि वायुकेसंबंधतैं तथामाताकेअग्निवायुकेसंबंधतैं पिंडभावकूं प्राप्तहोवै है॥ तथा चारिकोणवालाहोवैहै॥इसप्रकार चारिकोणवालेपिंडभावकूं प्राप्तभयेजे तेशुक्रशोणितरूपदोमलहैं ॥ तेदोनोंमल ताचतुरकोणवालेपिंडतैं दोअंडकोशरूपकरिकै पृथक्भावकूंप्राप्तहोवै हैं॥ और तिस कालविषे अंतरप्राणवायुकरिकै ऊपरप्रेरणाकरेहुएजे तेदोनोंमलहैं॥ तिनदोनोंमलोंतैं प्रथम सुषुम्नानामानाडी उत्पन्नहोवैहै॥कैसीहैसासुषु म्नानाडी ॥ पूर्व नाडीकंदकेमध्यविषेस्थितरूपकरिकै वर्णनकरीहै॥तथा अयोगीपुरुषोंकूंदुर्लक्ष्यहै॥तथा वर्तुलाकारहै॥ तथा अत्यंतसर

लहै ॥ तथा नाभि हृदय गल तालु भ्रमध्य यापंचस्थानोंकेभेदतैं पंचपर्वा यानामकरिकैकथनकरी है ॥ तथा वृक्षकी न्याईं अधोमुख वालीहै ॥ ऐसी सुषुम्नानाडीकेदोनोंतरफ दूसरीदोनाडी उत्पन्नहोवै हैं ॥ तिनदोनों नाडियोंविषेभी जानाडी वामभागअंडकोशतैंउठिकै तासुषुम्नानाडीकेवामभागविषेसंबंधकूंप्राप्तहोवै है ॥ और तासुषुम्नाकेवामभागतैंउठिकै दक्षिणपार्श्वविषेस्थितछिद्ररूपमार्गद्वारा हृदय देशकूंप्राप्तहोवै है ॥ और ताहृदयदेशतैंउठिकै वामस्कंधके तथावामजत्रुके मध्यछिद्ररूपमार्गकरिकै वामनासिकाकूंप्राप्तहोवै है ॥ इसप्रकार धनुष्यकीन्याईंवक्रमार्गकरिकै तावामनासिकाविषेप्राप्तभईजानाडी है तानाडीकानाम इडाहै ॥ और जानाडी दाक्षिणभागके अंडकोशतैंउठिकै तासुषुम्नाकेदाक्षिणभागविषे संबंधकूंप्राप्तहोवै है ॥ और तासुषुम्नाकेदक्षिणभागतैं उठिकै वामपार्श्वविषेस्थितछिद्र रूपमार्गद्वारा हृदयदेशकूंप्राप्तहोवै है ॥ और ताहृदयदेशतैंउठिकै दक्षिणस्कंधके तथादक्षिणजत्रुके मध्यछिद्ररूपमार्गद्वारादक्षिणनासि काकूंप्राप्तहोवै है ॥ इसप्रकार धनुष्यकीन्याईंवक्रमार्गकरिकै तादक्षिणनासिकाविषेप्राप्तभईजानाडीहै तानाडीकानाम पिंगलाहै ॥ इहां गलकेनीचलीआस्थिकानाम जत्रुहै ॥ और ॥हेशिष्य॥ तिसकालविषे तागर्भकेनाभिस्थानतैं॥एकआप्यायनीनामानाडी उत्पन्नहोवै है ॥ ताआप्यायनीनाडीकूंहीं शास्त्रविषे शंखनी यानामकरिकैकथनकरै हैं ॥ साआप्यायनीनाडी तागर्भकेनाभिस्थानतैंनिकसिकै तामाताके हृदयदेशविषेसंबंधकूंप्राप्तहोवै है ॥ और जैसे यालोकविषे कूपादिकोंकाजल कुल्याद्वारा क्षेत्रविषेजाइकै व्रीहियवादिकोंकीवृद्धिकरै है तैसे तामातानैं भोजनकऱ्याजोअन्न तथा जल ॥ ताअन्नजलकासूक्ष्मरस ताआप्यायनीनाडीद्वारा तागर्भकेउदरविषेजाइकै तागर्भ कीवृद्धिकरै ॥ शंका॥हेभगवन्॥इडा पिंगला यहदोनोंनाडी अंडकोशतैंउठिकै वामदक्षिणनासिकाविषे जावै हैं यहजोपूर्व आपनैं कथन कऱ्याहै ॥ सो यद्यपि पुरुषशरीरोंविषेघटै है ॥ तथापि स्त्रीशरीरोंविषेघटैनहीं समाधान ॥ हे शिष्य ॥ तिननाडियोंकामूलग्रंथिरूप जे दोअंडकोशहैं॥तेदोअंडकोश पुरुषशरीरोंविषेतौ स्पष्टहीहोवै हैं॥और स्त्रीशरीरोंविषे अस्पष्टहोवै है॥ औरनपुंसकशरीरोंविषे यत्किंचित् स्पष्टहोवैहैं॥यातैं स्त्रीनपुंसकशरीरोंविषेभीतिननाडियोंकीउत्पत्ति संभवैहै ॥ इसप्रकारएकपक्षकेसमाप्त हुए तागर्भविषेनाडियोंकीउत्पत्तिहो ॥ २९ ॥

वैहै ॥ और एकमासकेव्यतीतहुए सोचारिकोणवाला गर्भरूपपिंड कठिनभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ और दोमासतैंअनंतर ताकठिनमांसके पिं डतैं प्रथम शिर उत्पन्नहोवैहै॥और तीनमासतैंअनंतर ताचारिकोणोंतैं यथाक्रमतैं दोहस्त दोपाद उत्पन्नहोवै हैं॥और चारिमासतैं अनं तर तिनहस्तपादोंविषे अंगुलियां उत्पन्नहोवैहैं॥तथा कटि उर उदरदोनोंपार्श्व कोईकअस्थियां इत्यादिकअवयव उत्पन्नहोवैहैं॥और पंचमा सतैंअनंतर तागर्भकेपृष्ठदेशविषेस्थितदीर्घअस्थि उत्पन्नहोवैहैऔर षष्ठमासतैंअनंतर तागर्भके मुखादिकनवद्वार तथा तिनद्वारोंविषेस्थि तवाकादिकइंद्रिय उत्पन्नहोवैहैं॥और सप्तममासतैंअनंतर तागर्भविषे प्राणोंकाव्यापार स्पष्टहोवैहै॥और अष्टममासविषे सोगर्भअंतरबाहर सर्वअंगोंकरिकैपूर्णहोवैहै परंतु ताअष्टममासविषे तागर्भविषे चैतन्यताप्रगटहोवैनहीं ॥ यातैं ताअष्टममासविषे सोगर्भ सुषुप्तपुरुषकीन्याईं स्थितहोवैहै॥और ताअष्टममासविषे वातपित्तादिकधातुवोंकीविषमतारूपदोषतैं रहितहुआ सोगर्भ जोकदाचित् तामाताकेउदरतैं बाहर निकसिकै जीवनकूंप्राप्तहोवैहै॥तौ सोगर्भ भोग मोक्ष दोनोंकेसंपादनकरणेविषेसमर्थहोवैहै॥तहांप्रणवादिकोंकीउपासनाकरिकैतौ ब्रह्मलोका दिरूपभोगकूं प्राप्तहोवैहै॥और आत्मसाक्षात्कारकरिकै मोक्षकूंप्राप्तहोवैहै॥याकहणेकरिकै यहअर्थ बोधनकऱ्याजिसबालककाअष्टममास विषेजन्महोवै है ॥ तिसबालककेजीवनविषे संशयहीहोवै है ॥ और ताअष्टममासकी जभी समाप्तिहोवै है ॥ और नवममासकाप्रवेशहोवै है ॥ तभीसोगर्भ सर्वज्ञहोवै है॥और जैसे यालोकविषे विवेकादिकसाधनचतुष्टयसंपन्न कोईअधिकारीपुरुष ब्रह्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिइच्छा करताहुआ विनयपूर्वक ब्रह्मवेत्तागुरुकेसमीप स्थितहोवैहैतैसे तानवममासविषे सोगर्भभी विनयपूर्वक तामाताकेउदरकेउदरविषेस्थितहोवैहै और तानवममासविषे सोबालक पूर्वअनेकजन्मोंकेपुण्यपापकर्मोंकूंस्मरणकरताहुआ आपणेकूंधिक्कारकरै है ॥हेशिष्य ता नवममासविषे सोबालक जिसप्रकार पूर्वलेजन्मोंकास्मरणकरिकै पश्चात्तापकरै है॥ सोप्रकार तूं श्रवणकर॥ यादुःखरूपसंसारसमुद्रविषे हमनैं पूर्व सुख दुःखकीप्राप्तिकरणेहारे असंख्यातशरीर धारणकरेहैं॥तिनशरीरोंविषेभी अनेकवारतौ मैं श्वानशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं॥और अनेकवार मैं सूकरशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं ॥ और अनेकवार मैं खर उष्ट्र शरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं ॥ और अनेकवार मैं गोजाशरीरोंकूं प्राप्त

होताभयाहूं॥ और अनेकवार मैं अजाशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं॥ और अनेकवार मैं मृगशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं ॥ और अनेकवारमैंप
क्षीशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं॥ और अनेकवार मैं गोधाशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं॥ औरअनेकवार मैं सर्पशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं और
अनेकवार मैं कीटादिकशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं ॥ और अनेकवार मैं प्रतिलोमशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं॥ और अनेकवार मैं अनुलो
मशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं ॥ इहां उत्तमजातिवालीमातायिषे नीचजातिवालेपुरुषतैं जोपुत्र उत्पन्नहोवैहै॥ताकानाम प्रतिलोमहै ॥ और
नीचजातिवालीमातायिषे उत्तमजातिवालेपुरुषतैं जोपुत्र उत्पन्नहोवै है ताकानाम अनुलोमहै ॥ और अनेकवार मैं चांडालादिकनीचश
रीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं ॥ और अनेकवारमैंब्राह्मणादिकऊंचशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं ॥ और अनेकवार मैं वृक्षादिकस्थावरशरीरोंकूं
प्राप्तहोताभयाहूं ॥ और अनेकवार मैं झषशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं ॥ और अनेकवार मैं एकपादवालेशरीरोंकूं प्राप्त होता भयाहूं ॥
और अनेकवार मैं दोपादवालेशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं ॥ और अनेकवार मैं तीनचारिपादोंवालेशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं ॥
और अनेकवारमैं पादतैंरहितशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं॥ और अनेकवारमैंअनेकपादोंवालेशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं॥ और अनेकवार मैं
हस्ततैंरहितशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं॥ और अनेकवारमैं एकहस्तवालेशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं॥ और अनेकवारमैं अनेकहस्तवालेशरी
रोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं॥ और अनेकवार मैं एकइंद्रियवालेशरीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं ॥ और अनेकवार मैं अनेकइंद्रियवालेशरीरोंकूं प्राप्त
होताभयाहूं॥ इसप्रकार ब्रह्मलोकविषे तथास्वर्गलोकविषे तथाअंतरिक्षलोकविषे तथापृथिवीलोकविषे तथानरकविषे मैं अनेकप्रकारकेश
रीरोंकूं प्राप्तहोताभयाहूं॥ और जैसे उदंबरकाफल मच्छराजीवोंकरिकै पूर्णहोवै है॥ तैसेयहब्रह्मांडरूपउदंबरकाफलभीमेरेशरीररूपमच्छरों
करिकै मानो पूर्णहोताभयाहै ॥ और जैसे वायुकरिकैचलायाहुआतृण निरंतर भ्रमणकरै है ॥ तैसे पुण्यपापकर्मोंकेवशतैं मैंदीनजीवभी
अनेकशरीरोंकूंग्रहणकरताहुआ तथाअनेकशरीरोंकापरित्यागकरताहुआ नरकविषे तथास्वर्गविषे तथाभूमिलोकविषे निरंतर भ्रमणकर
ताभयाहूं॥ और जैसे यालोकविषे कृषिकरणेहारेपुरुष रज्जुरूपपाशतैं वृषभादिकपशुवोंकूंबांधिकै आपणेकृषि आदिककार्योंविषे प्रवृत्तकरैहैं

तैसे मायारूपसूत्रतैंउत्पन्नभये जेपुण्यपापकर्मरूपपाश हैं ॥ तिनकर्मरूपपाशोंतैंबांधिकै मैं पशुजीवकूं स्त्रीपुत्रादिककुटुंबकेपालनकरणे
विषे कोईअंतर्यामीदेव प्रवृत्तकरताभया है ॥ परंतु ताअंतर्यामीदेवकूं मैंमूढबुद्धिजीव नहींजाणताभयाहूं ॥ और पूर्व हमारेकूंअनेकजाति
वालेशरीरोंकीप्राप्तिहोतीभईहै ॥ तिसतिसशरीरकेसमानजातिवाली जेअनेकमाताहैं ॥ तिनमातावोंकेस्तनोंतैं पूयकेसमान निकसेजेदुग्ध
हैं ॥ जेदुग्ध विचारवानपुरुषोंकूं परमदुःखरूप प्रतीतहोवै हैं ॥ ऐसेनिंदितदुग्धोंकूंभी मैंदुरात्माजीव अनेकवार पानकरताभयाहूं ॥
और तिसतिसजातिवालेशरीरोंकरिकै भक्षणकरणेयोग्य जेअनेकप्रकारकेआहारहैं ॥ जिनआहारोंकूंदेखिकै दूसरेजातिवालेशरीरोंकूं
महान्ग्लानिहोवैहै ॥ ऐसे निंदितआहारोंकूंभी मैं अनेकवार भोजनकरताभयाहूं॥ और पूर्वमैंजिसजिसशरीरकूं प्राप्तहोताभयाहूं ॥ तिस
तिसशरीरविषेहमारेकूं जन्मकीप्राप्ति तथामरणकीप्राप्ति अवश्यकरिकै होतीभई है ॥ और तिसतिसशरीरकेसंबंधी जे पिता माता पुत्र
स्त्री बांधव गृह आहार आदिकपदार्थके तिनपदार्थोंविषे हमारा अत्यंतरागहोताभया॥ और तिसतिसशरीरकेनाशहुएतैं अनंतर तिन पिता
मातादिकपदार्थोंकास्वरूप तथातिनोंकाराग नाशकूंप्राप्तहोताभया॥ और या भूमिविषे जितनेकीसूक्ष्मरजहैं॥ औरयाआकाशविषे जित
नैंकीतारागणहैं ॥ तिनोंतैंभीअधिकशरीर पूर्व हमारेकूंप्राप्तहोतेभयेहैं॥ तथा तितनेहींपितामाता हमारेहोतेभयेहैं ॥ और जैसे या लोक
विषे कोईमनुष्य एकवारपीसेहुएअन्नकूं पुनःपीसतानहीं ॥ तैसे एकवार जन्मकूंप्राप्तहुएजीवका पुनःजन्महोणा तथाएकवार मृत्युकूं प्राप्त
हुएजीवका पुनःमृत्युहोणा यद्यपि अयुक्त है ॥ तथापि ते जन्ममरण अनेक सहस्रवार हमारेकूंप्राप्तहोतेभयेहैं ॥ यहहमारेकूं बहुत आश्चर्य
होवैहै॥ और जैसे कूपादिकोंके ऊपर घटीयंत्र फिरेहै॥ तैसे प्रथमजन्मअवस्था तिसतैंअनंतर बाल्यअवस्था तिसतैंअनंतर यौवन अवस्था
तिसतैंअनंतर वृद्धअवस्था तिसतैंअनंतर मरणअवस्थातिसतैंअनंतर पुनःजन्मअवस्था या प्रकार जन्मादिकअवस्थावोंकाप्रवाहरूपघटी
यंत्र सर्वदा हमारेमस्तकऊपरफिरेहै ॥ ॥ और जैसे कोईदुष्टपुरुष इसलोककेसुखवासतै ब्रह्महत्याकरैहै॥ तिसपुरुषकूं साब्रह्महत्या इसलोक
विषे तथापरलोकविषे दुःखकीहीप्राप्तिकरैहै॥ तैसेमैंविचारहीन जिनकर्मोंकूं सुखकासाधनमानिकैकरताभयाहूं॥ तेसंपूर्णकर्महमारेकूं अनेक

प्रकारकेदुःखोंकीहीप्राप्तिकरतेभयेहैं काहेतैंतिनपुण्यपापकर्मोंकेकरणेविषे याजीवोंकूंइसलोकविषेतथापरलोकविषे दुःखकीहीप्राप्तिहोवेहै॥
तहां तेपुण्यपापकर्मजोकदाचित्अत्यंतउग्रहोवेहैं॥तौइसीजन्मविषे ताकर्त्तापुरुषकूं सुखदुःखरूपफलकीप्राप्तिकरेहैं ॥ और तेपुण्यपापकर्म
जोकदाचित् मंदहोवेहैं॥तौजन्मांतरविषे ताकर्त्तापुरुषकूं सुखदुःखरूपफलकीप्राप्तिकरेहैं॥और जोकोईपुरुष याप्रकारकावचनकहे हैं ॥ जो
पापकर्मतौ प्रथमआरंभकालविषे तथाभविष्यतकालविषे याजीवोंकूंदुःखकीहीप्राप्तिकरेहै ॥ और पुण्यकर्मतौ यद्यपि प्रथमआरंभकाल
विषे याजीवोंकूंदुःखकीप्राप्तिकरेहैं॥तथापि भविष्यतकालविषे दुःखकीप्राप्तिकरेनहीं॥किंतु तेपुण्यकर्म भविष्यतकालविषे याजीवोंकूं सुख
कीहीप्राप्तिकरेहै ॥ सोयहतिनोंकाकहणा संभवेनहीं ॥ काहेतैं तापुण्यकर्मकेसुखरूपफलकाजभी भोगकरिकैनाशहोवेहै ॥ तभी याजी
वोंकूंपरमदुःखकीप्राप्तिहोवेहै ॥ और तासुखकेविद्यमानकालविषेभी दूसरेपुरुषोंकेअधिकसुखकूंदेखिकै ईर्षाकीउत्पत्तिकरिकै याजीवोंकूं
परमदुःखकीप्राप्तिहोवेहै ॥ और तासुखकेअप्राप्तिकालविषे तासुखकीइच्छाकरिकै याजीवोंकूं परमदुःखकीप्राप्तिहोवेहै ॥ याप्रकार
तापुण्यजन्यविषयसुखविषे सर्वदा दुःखकीकारणताकूं मैंअनेकवार अनुभवकरिआयाहूं ॥ यातैं यहसंसार केवलदुःखकाहीसमुद्रहै ॥ ऐसे
दुःखरूपसंसारसमुद्रविषे निमग्नहुआ मैं अज्ञानीजीव तासंसारदुःखकेनिवृत्तिकाउपाय देखतानहीं ॥ जिसउपायकरिकै मैं यासंसारसमुद्रके
पारकूंप्राप्तहोवों ॥ किंवा याअनादिसंसारविषे यहविषयरूपजुवारी मैं मूढबुद्धिजीवकूं पूर्व अनेकशरीरोंविषे पराजयकरतेभयेहैं ॥ और
तिनविषयरूपजुवारियोंकेपराजयकरणेहारा यहअधिकारीमनुष्यशरीरहीहै ॥ तिनअधिकारीमनुष्यशरीरोंकूंप्राप्तहोइकैभी मैंमूढबुद्धिपुरुष
इंद्रियरूपपाशोंकानिरोधरूप जाकुशलताहै ताकुशलतातैंरहितहोताभया ॥ याकारणतैं मैं मूढबुद्धिजीव तिनविषयरूपजुवारियोंकूं
पराजयनहींकरताभया ॥ किंतु उलटा तेविषयरूपजुवारीही ताहमारेअधिकारीमनुष्यशरीरकूं पराजयकरतेभये ॥ और अभी जोकिसी
पुण्यकर्मकेप्रभावतैंमैंयामाताकेउदरतैंबाहरनिकसौंगा ॥ तौ पूर्वशरीरोंकीन्याईं अभीमैं प्रमादनहींकरौंगा ॥ किंतु जन्ममरणादिकदुःखों
केनाशकरणेहारा जोब्रह्मात्मज्ञानहै ॥ ताब्रह्मात्मज्ञानकूं मैंअष्टांगयोगादिकउपायोंकरिकै संपादनकरौंगा॥ और जोकदाचित् ताआत्मसा

क्षात्कारकेसंपादनकरणेविषे हमारा सामर्थ्यनहींहोवेगा ॥ तौभी पार्वतीकापतिजोमहादेवहै॥तथा लक्ष्मीकापतिजोविष्णुहै तिनदोनोंका
आराधन मैं निरंतरकरौंगा ॥ परंतु यामाताकेउदरतैंबाहरनिकसिकै पूर्वकीन्याईं स्त्रीपुत्रादिककुटुंबकेपालनकरणेविषे आपणेआयुषकूं
व्यर्थनहींकरौंगा ॥ काहेतैं पूर्वहमनैं जिनस्त्रीपुत्रादिकबांधवोंके पालन करणेवासतै अनेकप्रकारकेपुण्यपापकर्मकरेथे ॥ और मेरेप्रसादक
रिकैही जिनस्त्रीपुत्रादिकबांधवोंकूं इसलोकविषे तथापरकोविषे सुखकीप्राप्तिभईथी ॥ तेहमारेस्त्रीपुत्रादिकबांधव कैसेकृतघ्नथे ॥ जैसे कोई
पुरुष आपणेगृहतैंविष्ठाकूंनिकासिकै बाहरछोडिआवेहै ॥ तैसे तेहमारेस्त्रीपुत्रादिकबांधव मरणतैंअनंतर हमारेकूंआपणेगृहतैंबाहरनिका
सिकै स्मशानभूमिविषे एकलाछोडिकै आपणेगृहकूंजातेभये॥किंवा॥हमारेजीवितकालविषे जेस्त्रीपुत्रादिकबांधव हमारेपादोंऊपर आपणा
मस्तकराखिकै नमस्कारकरतेथे॥तेहीस्त्रीपुत्रादिकबांधवमरणतैंअनंतरहमारेस्पर्शकरिकै आपणेकूंअशुद्धमानतेभये॥और ताअशुद्धिकीनि
वृत्तिवासतै स्नानकरतेभये॥किंवा॥हमारेजीवितअवस्थाविषेजेस्त्रीपुत्रादिकबांधव हमारेशरीरऊपर चंदनादिकोंकालेपकरतेथे॥ तेहीस्त्रीपुत्रा
दिकबांधव मरणतैंअनंतर हमारेकूं महान्अग्निविषेपावतेभये॥किंवा ॥ जिनस्त्रीपुत्रादिकबांधवोंकेपालनकरणेवासतै मैं अनेकपापकर्मोंकूं
करताभयाथा ॥ तेस्त्रीपुत्रादिकबांधव तापापकर्मकेफलभोगणेवासतै किसीभीजन्मविषे हमारेसाथआयेनहीं ॥ किंतु तापापकर्मकेदुःखरू
पफलकूं मैं एकलाहीभोगताभया ॥ ऐसे आगमापायीकृतघ्नबांधवोंकेसाथ स्नेहकरणा हमारेकूं उचितनहीं है ॥ किंवा ॥ जैसे यालोकविषे
वेश्यास्त्री अंतरकेस्नेहतैंरहितहुईभी बाहरसैंनानाप्रकारकास्नेहदिखाइकै धनवान्पुरुषोंकूं मोहितकरेहै ॥ तैसे तेस्त्रीपुत्रादिकबांधवभी अंत
रकेस्नेहतैंरहितहुईभी बाहरसैंनानाप्रकारकास्नेहदिखाइकै आपणेस्वार्थकीसिद्धिकरणेवासतै मैंमूढबुद्धिपुरुषकूं मोहकीप्राप्तिकरतेभये ॥
और जैसेसावेश्यास्त्रीताधनीपुरुषकेसर्वधनकाहरणकरिकैनिर्धनतारूपआपदाकालविषे तापुरुषकापरित्यागकरिदेवेहै॥ तैसे तेस्त्रीपुत्रादिक
बांधवभी मरणरूपआपदाकालविषे हमारा परित्यागकरतेभये॥ और तिनस्त्रीपुत्रादिकबांधवोंके भरणपोषणकरणेवासतै जेजेपापकर्म हम
नेंकरेथे॥तिनपापकर्मोंकेदुःखरूपफलकूं मैं एकलाहीभोगताभया॥हेशिष्य॥इसप्रकार तानवममासविषे सोबालक माताकेउदरविषेस्थित

होइके पूर्वअनेकजन्मोंकास्मरणकरिकै पश्चात्तापकरेहै ॥ तिसतैंअनंतर माताकेउदरविषेस्थित प्रसूतिवायु तावाककामुख नीचेकरेहै ॥ और पादऊपरकरेहै॥और तिसकालविषे तावालकके वात पित्त कफ यहतीनधातु क्षोभकूंप्राप्तहोवैंहै ॥ ताधातुवोंकेक्षोभकरिकै बहुत दुःखकूंप्राप्तहुआ सोबालक ताकालविषे आपणेकूं तथाअन्यकिसीपदार्थकूं जाणतानहीं॥और छियानवे अंगुल ९६ परिमाण जोमाताका शरीरहै॥तामाताकेशरीरविषे चारिअंगुलपरिमाण योनिस्थानहै ॥ ऐसेसंकीर्णयोनियंत्रविषे प्रसूतिवायुकरिकै चलायाहुआ सोबालक प्राप्तहोवैहै ॥ और तामाताकेउदरविषे मूत्रकेरहणेका जोवस्तिनामास्थानहै ॥ तथा तामाताकेउदरविषे विष्ठाकेरहणेका जोसंग्रहणीनामा स्थानहै ॥ तेदोनोंस्थान प्रसूतिवायुकेचलणेतैं क्षोभकूंप्राप्तहोइकै तावालककेमस्तकऊपर विष्ठामूत्रकूंपावैहैं ॥ हेशिष्य ॥ जैसे यालोकविषे तीक्ष्णक्रकचकरिकै उदरकेछेदनकरणेतैं अस्मदादिकजीवोंकूं दुःखकीप्राप्तिहोवैहै॥तैसेहीदुःखकीप्राप्ति तागर्भकेत्यागकालविषे तागर्भिणीस्त्रीकूं तथाबालककूं होवैहै॥और जैसे किसीअल्पव्रणविषेस्थितहुआ कोईमहान्कीट आपणेकूं तथाताव्रणवालेपुरुषकूं परमदुःखकी प्राप्तिकरेहै ॥ तैसे तासंकीर्णयोनिद्वारविषेप्राप्तहुआ सोबालक आपणेकूं तथामाताकूं परमदुःखकीप्राप्तिकरेहै॥और जैसे कोईलोहेकातीक्ष्णशस्त्र अजादिकपशुवोंकेयोनिस्थानकूं विदारणकरेहै ॥ तैसे यहबालकभी तामाताकेयोनिस्थानकूं विदारणकरेहै ॥ और जैसे यालोकविषे राजादिकोंकेचोरीआदिकअपराधकरणेहाराजोपुरुषहै ॥ ताचोरपुरुषकूं ताराजाकेभृत्य दोक्रकचोंकेमध्यविषे प्राप्तकरैहैं ॥ तैसे सोप्रसूतिकालकावायु तावालककूं बलात्कारसैं तामाताकेयोनियंत्रविषेप्राप्तकरै है ॥ और ताप्रसूतिकालविषे जरायुनामापटतैंरहितहुआ सोकोमलबालक अग्निकेस्पर्शकीन्याईं तायोनियंत्रकेस्पर्शतैं दाहकूं प्राप्त होवैहै ॥ हे शिष्य ॥ इसप्रकार अनेकदुःखोंकूंअनुभवकरिकै सोबालक नवममासविषे अथवा दशममासविषे पूर्वलेपुण्यपापकर्मोंकेसुखदुःखरूपफलकेभोगणेवासतै तामाताकेयोनियंत्रतैंबाहरप्राप्तहोवैहै ॥ और जैसे किसीदुर्गंधव्रणतैंबाहरनिकसिकै कीट भूमिविषेपतनहोवैहै ॥ तैसे सो बालक ता माताकेयोनियंत्रतैंबाहरनिकसिकै भूमिविषेपतनहोवै है ॥ और अनेकतीक्ष्णकंटकोंके लागणे करिकै तथा लोहेकेक्रकचकरिकै अंगोंके छेदनहोणेतैं अस्मदादिकजीवोंकूं

जिसप्रकारकादुःख प्राप्तहोवै है॥तिसप्रिकारकादुःख तावालककूं तामाताकेयोनियंत्रतैंनिकसणेकरिकैहोवै है॥हेशिष्य॥इसप्रकार माताके प्रसूतिवायुकरिकैचलायाहुआ सोबालक तायोनियंत्रकेनिकसणेकालविषे अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंभोगकरिकै तथाआपणेमाताकूंभीअनेकप्रकारकेदुःखोंकीप्राप्तिकरिकै तासंकीर्णयोनियंत्रतैं बाहरभूमिविषेपतनहोवै है ॥ ताकालविषे मूर्च्छाअवस्थाकूंप्राप्तहोइकै सोबालक किंचित्मात्रभीजानतानहीं॥हेशिष्य॥तामूर्च्छाअवस्थातैंअनंतर यहवैष्णववायु आपणेसंबंधकरिकैं तावालकके पूर्वलेविचारका विस्मरण कराइदेवै है ॥ कैसाहैसोवायु तामाताकेउदरतैंबाहर सर्वत्रव्यापकहै ॥ और जीवोंकेव्यामोहद्वारा यासंसारचक्रकेनिर्वाहकरणेवासतैं विष्णुभगवान्नैं तावायुकूंउत्पन्नकऱ्याहै ॥ याकारणतैं शास्त्रवेत्तापुरुष ताबाह्यवायुकूं वैष्णववायु यानामकरिकैकथनकरै है ॥ हेशिष्य ॥ इसीवैष्णववायुकेभयतैं पूर्व व्यासभगवान्कापुत्र शुकदेवमुनिमाताकेउदरविषे योगकेबलतैं प्रसूतिवायुकूंजीतिकरिकै बहुतकालपर्यंत स्थितहोताभयाहै ॥ हेशिष्य जैसे यालोकविषे सर्वपुरुषोंकेअभिप्रायकूंजानणेहारा जोकोईबुद्धिमान्सर्वज्ञपुरुषहै ॥सोसर्वज्ञपुरुषभी पापी पुरुषोंकृतदुष्टमंत्र ओषधियोंकरिकै शीघ्रही मूढअवस्थाकूंप्राप्तहोवै है ॥ तैसे यावैष्णववायुकरिकैस्पर्शकऱ्याहुआ सर्वज्ञपुरुषभी मूढअवस्थाकूंप्राप्तहोवै है॥ हेशिष्य ॥याबालकनैं माताकेउदरविषेस्थितहोइकै नवममासविषे जिसमनकरिकै सोपूर्वउक्तविचारकऱ्याथा॥तिसमनकूं जभी यावैष्णववायुकास्पर्शहोताभया ॥ तभी सोमन पूर्वविचाररूपऋजुभावका परित्यागकरिकै श्वानकेपुच्छकीन्याईं वक्रभावकूं प्राप्तहोताभया ॥ और जैसे अग्निकरिकैदग्धहुएकाष्ठकेभ्रमावणेतैं अग्निकाभीभ्रमणहोवै है ॥ तैसे तावक्रमनकेतादात्म्यअध्यासतैं यहसाक्षीआत्माभी वक्रभावकूंप्राप्तहोताभया॥तिसतैंअनंतर अत्यंतदुःखीहुआ सोबालक पूर्वलेसर्वविचारकाविस्मरणकरिकै कोहंकोहं याप्रकारकाशब्दउच्चारणकरै है॥हेशिष्य॥इसप्रकार गर्भउपनिषद्विषे याजीवोंकेजन्मका कथनकऱ्याहै॥ताजन्मकेविचारकरिकै याअधिकारीपुरुषोंकूं वैराग्यकीप्राप्तिहोवै है ॥ यातैं वैराग्यकीप्राप्तिवासतैं याअधिकारीपुरुषोंनैं तागर्भउपनिषद्कीरीतिसैं आपणेजन्मकाविचार अवश्य करिकैकरणा॥और हेशिष्य॥जैसेताजन्मअवस्थाकेविचारकियेतैं याअधिकारीपुरुषोंकूंतावैराग्यकीप्राप्तिहोवैहै॥तैसे आपणेमरणअवस्था

केविचारकियेतैंभी याअधिकारीपुरुषोंकूं तावैराग्यकीप्राप्ति अवश्यकरिकैहोवै है ॥ यातै तावैराग्यकीप्राप्तिवासतै याअधिकारीपुरुषोंनैंअ
पणेमरणअवस्थाकूंभी अवश्यकरिकैजान्याचाहिये ॥ और ताआपणेमरणकाज्ञान याजीवोंकूं ॥ जातस्यहिध्रुवोमृत्युर्ध्रुवंजन्ममृतस्यच ॥
इत्यादिकशास्त्रकेवचनोंकरिकैभीहोवै है ॥ तथा यालोकविषे जिसाजिसप्राणीका जन्महोवै है ॥ तिसतिसप्राणीकामृत्युभी अवश्यकरिकै
होवै है॥जैसे हमास्मातापितादिकबांधवोंका जन्महुआथा॥यातैं तिनमातापितादिकबांधवोंका मृत्युभी अवश्यकरिकैहोताभया ॥ तैसे
हमाराभी जन्महुआहै ॥ यातैं हमाराभी मृत्यु अवश्यकरिकैहोवैगा॥याप्रकारकेअनुमानप्रमाणतैंभी याजीवोंकूं आपणेमृत्युकानिश्चयहोवै
है ॥परंतु सोहमारामृत्यु इतनैंदिनोंतैंपीछेहोवैगा॥याप्रकारकानिश्चय योगरहितपुरुषोंकूं होइसकैनहीं ॥ यातैं तामरणकालकेनिश्चयकराव
णेवासतै ऋग्वेदविषे कौषीताकिमुनिनैं अनेकप्रकारके मृत्युकेचिह्न कथनकरे हैं ॥ तथा वशिष्ठसंहिताविषे वशिष्ठभगवान्नैंभी तेमृत्युके
चिह्न कथनकरे हैं॥तिनमरणचिह्नोंकेज्ञानतैं याअधिकारीपुरुषोंकूं आपणेमरणकालकानिश्चयहोवै है ॥ ताकरिकै याअधिकारीपुरुषोंकूं
वैराग्यकीप्राप्तिहोवै है॥यातैं याअधिकारीपुरुषनैं तिनमरणकेचिह्नोंकूं अवश्यकरिकैजान्याचाहिये ॥ अब ऋग्वेदकेकौषीताकिशाखाविषे
जाग्रतअवस्थामैंदेखणेयोग्य जेमरणकेचिह्न कथनकरे हैं ॥ तिनचिह्नोंका निरूपणकरै हैं॥हेशिष्य॥यासूर्यमंडलविषे तथायापुरुषोंकेदक्षि
णनेत्रविषे एकहीअंतर्यामीपुरुष दोस्वरूपकरिकैस्थितहोवै है ॥ तिनदोनोंस्वरूपोंका नाडीरूपकरणद्वारा परस्परसंबंध श्रुतिविषेकथन
कऱ्याहै ॥ और यापुरुषकूं जभी मरणकाल समीपप्राप्तहोवै है॥ तभी तिनदोनोंस्वरूपोंका सोसंबंध निवृत्तहोइजावै है॥और जिसकाल
विषे तिनदोनोंस्वरूपोंकासंबंध निवृत्तहोवै है ॥ तिसकालविषे तासमीपमृत्युवालेपुरुषकूं सोसूर्यभगवान् पूर्वकीन्याईं प्रतीतहोवैनहीं ॥
किंतु तापुरुषकूं सोसूर्यभगवान् चंद्रमाकीन्याईं शीतलहुआ प्रतीतहोवै है ॥ अथवा तापुरुषकूं मध्याह्नकालविषेभी संध्याकालकीन्याईं
सोसूर्यभगवान् किरणोंतैंरहितहुआप्रतीतहोवै है ॥ अथवा तापुरुषकूं सोसूर्यभगवान् छिद्रवालाप्रतीतहोवै है ॥ अथवा मंजिष्ठकरिकै
रंजित जोरक्तवस्त्रहै तावस्त्रकेसमान रक्तवर्णवालेआकाशविषेस्थितहुआसोसूर्यभगवान् तापुरुषकूं प्रतीतहोवै है ॥ इसप्रकार तासू

र्यभगवानकूं विपरीतदेखणेहारापुरुष थोडेकालविषेही मृत्युकूंप्राप्तहोवै है और हेशिष्य ॥ जोपुरुष पूर्वादिकचारदिशावोंकूं तथाआग्ने
कोणादिकचारउपदिशावोंकूं तथाअंतरिक्षलोककूं तथातारागणकूं सर्वदा रक्तवर्णवालादेखेहै ॥ सोपुरुषभी थोडेकालविषेही मृत्यकूंप्राप्त
होवैहैं ॥ और जैसे मलकेपरित्यागकालविषे यापुरुषोंका पायुद्वार संकोचतैंरहितहोवै है ॥ तैसे जिसपुरुषका सोपायुद्वार सर्वदा संकोच
तैंरहितहोवै है ॥ सोपुरुषभी थोडेकालविषेहीमृत्युकूंप्राप्तहोवै है॥ और जैसे अंडोंकरिकैयुक्त काककेगृहविषे दुर्गंधहोवै है॥ तैसाहीदुर्गंध
जिसपुरुषकेमस्तकविषेहोवै है ॥ सोपुरुषभी थोडीकालविषेही मृत्युकूंप्राप्तहोवै है ॥ और जोपुरुष आपणीछायाविषे छिद्रदेखेहै॥सोपुरु
षभी थोडेकालविषेही मृत्युकूंप्राप्तहोवै है ॥ और दर्पणविषे तथाजलविषे स्थितजोआपणाप्रतिबिंबहै ॥ तथाभूमिविषेस्थित जाआपणी
छायाहै ॥ ताप्रतिबिंबविषे तथाछायाविषे जिसपुरुषकूं आपणेमस्तककासंशयहोवै है॥अथवा ॥तिनोंविषे आपणेमस्तककेअभावकाही
निश्चयहोवै है ॥ सोपुरुषभी थोडेकालविषेही मृत्युकूंप्राप्तहोवै है ॥ और जोपुरुष दूसरेपुरुषकेनेत्रकीकनीनिकाविषे आपणेप्रतिबिंबके
पादऊपरदेखे है और मस्तक नीचेदेखे है ॥ अथवा जोपुरुष दर्पणादिकोंविषेस्थित आपणेप्रतिबिंबविषे याप्रतिबिंबकामस्तक ऊपर है
अथवा नीचेहै याप्रकारकासंशयकरै है ॥ सोपुरुष भी थोडेकालविषेही मृत्युकूंप्राप्तहोवै है॥और अंगुलिकरिकै आपणेनेत्रोंकेपीडनकि
येतैं अस्मदादिकपुरुषोंकूं जोकिरणोंयुक्ततेजविशेष प्रतीतहोवैहै ॥ सोतेजविशेष जिसपुरुषकूं नेत्रकेपीडनकियेतैं नहींप्रतीतहोवैहै ॥
सोपुरुषभी थोडेकालविषेही मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै॥औरदोनोंअंगुलियोंकरिकै आपणेदोनोंकर्णोंकेनिरोधकरणेतैं हमजीवोंकूं जोप्राणोंकाध्वनि
रूपशब्द श्रवणकरणेविषेआवैहै ॥ ताआपणेप्राणोंकेशब्दकूं जोपुरुष नहींश्रवणकरै है॥ सोपुरुषभी थोडेकालविषेहीमृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥
और जोपुरुष मयूरकेकंठसमान अग्निकूंनीलवर्णवालादेखेहै॥ तथा जोपुरुष मेघोंतैंविनाही आकाशविषेविद्युत्कूंदेखे है ॥ तथा जोपुरुष
मेघोंकेविद्यमानहुएभी ताविद्युत्कूंदेखतानहीं॥सोपुरुषभी थोडेकालविषेही मृत्युकूँप्राप्तहोवै है ॥और जो पुरुष वर्षावालेमेघविषे सूर्यकेकि
रणोंकूंदेखेहै ॥ तथा जोपुरुष अग्नितैंरहितभूमिकूंभी अग्निकरिकैप्रज्वलितदेखे है॥सोपुरुषभी थोडेकालविषेही मृत्युकूंप्राप्तहोवै है ॥ इत

नैंकरिकै ऋग्वेदविषे कोषीतकिमुनिउक्त मृत्युचिह्नोंकानिरूपणकऱ्या ॥ अब वशिष्ठमुनिउक्त मृत्युचिह्नोंकानिरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ एकहीदिनविषे प्रातःकालविषे तथासंध्याकालविषे जोपुरुषआपणेमस्तकतैंनिकसेहुएधूमकूँदेखेहै॥सोपुरुषमहान्भयकूंप्राप्तहोवै है॥अथवा मरणकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जोपुरुष सायंकालविषे तथाप्रातःकालविषे पंचदिनपर्यंत तामस्तककेधूमकूँदेखेहै ॥ सोपुरुष तीनवर्षतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ और जोपुरुष तामस्तककेधूमकूं चारिदिनपर्यंत देखेहै ॥ सोपुरुष दोवर्ष तैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै॥ और जोपुरुष तामस्तककेधूमकूं तीनदिनपर्यंत देखेहै ॥ सोपुरुष एकवर्षतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवै है ॥ और जो पुरुष आपणेकर्णोंकूं दोनोंअंगुलियोंसैंनिरोधकरिकै ताकर्णोंकेअंतर प्राणोंकेध्वनिरूपशब्दकूं नहींश्रवणकरेहै ॥ सोपुरुषभी एकवर्षतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवै है ॥ और जिसपुरुषकाशरीर पूर्व कृशहोवै ॥ सोकृशशरीर किसीनिमित्ततैंविनाही स्थूलहोइजावै ॥ तथा जिसपुरुषकाशरीर पूर्व स्थूलहोवै ॥ सोस्थूलशरीर किसीनिमित्ततैंविनाही कृशहोइजावै ॥ सोपुरुषभी एकवर्षतैंअनंतर मृत्युकूँप्राप्तहोवैहै ॥ और जो पुरुष पूर्व क्रोधीस्वभाववालाहोवै है ॥ सोपुरुष अकस्मात्ततैं शांतस्वभाववालाहोइजावै ॥ अथवा जो पुरुष पूर्व शांतस्वभाववालाहोवै है ॥सो पुरुष अकस्मात्ततैं क्रोधीस्वभाववालाहोइजावै ॥ सोपुरुषभी एकवर्षतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवै है ॥ और जिसदिनविषे यापुरुषकूं विष्ठा मूत्र यादोनोंकापरित्याग एकहीकालविषेप्राप्तहोवै॥ अथवा जिसपुरुषकूं क्षुधा पिपासा यहदोनों एकहीकालविषेप्राप्तहोवै॥ और ताविष्ठा मूत्रकेपरित्यागकालविषे तथाक्षुधापिपासाकालविषे तापुरुषकूं व्यामोहकीभीप्राप्तिहोवै ॥सोपुरुष तिसदिनतैंलेके एकवर्षतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवै है ॥ और जो कोईपुरुष अकस्मात्ततैं किसीवृक्षकेअग्रभागविषे गंधर्वनगरकूंदेखेहै॥ अथवा जोकोईपुरुष आपणेशरीरकूं कृष्ण वर्णवाला तथापिंगलवर्णवाला देखेहै ॥ सोपुरुषभी एकवर्षतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवै है ॥ और गृध्र काक गोमायु सारस इत्यादिक जेमांसकेभक्षणकरणेहारेपक्षीहैं॥तथा खरउष्ट्रजेहैं॥तथा दांतोंतैंरहितजेवृश्चिकादिकजीवहैं॥तथा राक्षसभूतापिशाचजे हैं ॥ इसतैंआदिलैकेजितनेकीमांसकेभक्षणकरणेहारे दुष्टजीवहैं ॥ तिनगृध्रादिकदुष्टजीवोंविषे कोईएकजीव अथवा बहुतजीव मांसकेभक्षणकरणेवासतै जिसपुरुष

कीतरफ धावनकरे हैं ॥ सोपुरुषभी एकवर्षतैं अनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै॥इसप्रकार स्वप्नविषे जोपुरुष तिनगृध्रादिकोंकूंदेखे है ॥ सोपुरुष एकवर्षतैं अनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवै है ॥ और जिसपुरुषकेप्रति दूसरेलोक अरुंधतीतारा दिखावैं ॥ अथवा ध्रुवतारा दिखावैं॥अथवा पूर्ण चंद्रकेमध्यविषेस्थितश्यामता दिखावैं ॥ अथवा निर्मलआकाशविषे दक्षिणउत्तरदिशाविषेस्थित दीर्घमंदप्रभा दिखावैं ॥ और जो पुरुष तिनअरुंधतीआदिकोंकेदेखणेवासतै प्रयत्नकरताहुआभी तिनअरुंधतीआदिकोंकूंदेखतानहीं॥ सोपुरुषभी एकवर्षतैं अनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अथवा एकवर्षतैंपूर्वही मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै॥परंतु सोपुरुष जिसतिथिविषे तानिमित्तकूंदेखे है ॥ वर्षतैं अनंतर पुनःतातिथिकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ इतनैंकरिकै एकवर्षविषे मृत्युकीप्राप्तिकरणेहारे चिह्नोंका निरूपणकऱ्या ॥ अब षट्मासविषे मृत्युकेप्राप्तिकरणेहारेचिह्नोंका निरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ जोपुरुष आपणेश्यामवस्त्रकूं श्वेतदेखे है ॥ अथवा आपणेश्वेतवस्त्रकूंश्यामदेखे है ॥ सोपुरुष षट्मासतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जोपुरुष सूर्यकूं अथवा चंद्रमाकूं आकाशतैंनीचेपतनहुआदेखे है ॥ अथवा जोपुरुष भूमिविषे स्थितपदार्थकूं आकाशविषेस्थितहुआदेखे है ॥ अथवा आकाशविषेस्थितपदार्थकूं भूमिविषेस्थितहुआ देखेहै ॥ सोपुरुषभी षट्मासतैं अनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और रोगादिककारणोंतैंविनाही जिसपुरुषके ओष्ठ तथातालू शुष्कहोताजावैहै॥ अथवा जिसपुरुषकाशरीर चक्रकीन्याईं भ्रमणकरे है ॥ अथवा जोपुरुष पर्वतादिकस्थावरपदार्थोंकाभ्रमणदेखेहै ॥ तथा चलतेहुएपदार्थोंका स्थिरपणादेखे है॥सोपुरुषभी षट्मासतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवै है ॥ और जोपुरुष घंटाकेशब्दकूंनहींश्रवणकरेहै ॥ अथवा पंकवालीभूमिविषे तथारजवालीभूमिविषे जिसपुरुषकेपादकाचिह्न खंडितहोवैहै ॥ सोपुरुषभी षट्मासकेभीतरही मृत्युकूंप्राप्तहोवै है ॥ अब तीनमासविषेमृत्युकरणेहारेचिह्नोंका निरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ अंगुलिकरिकै नेत्रोंकेपीडनकियेतैं अस्मदादिकपुरुषोंकूं खद्योतकेसमान जेतेजकेसूक्ष्मकण प्रतीतहोवैहैं॥ते तेजकेसूक्ष्मकणजिसपुरुषकूं नेत्रोंकेपीडनकियेतैंविनाही प्रतीतहोवै हैं॥सोपुरुष तीनमासतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै॥अब एकमासविषेमरणकीप्राप्तिकरणेहारेचिह्नोंका निरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ जिसपुरुषकेनेत्रादिकइंद्रिय रूपादिकविषयोंकूं पूर्वकीन्याईं

यथार्थनहींग्रहणकरे हैं ॥ सोपुरुष एकमासतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जिनदेवतादिकोंकाशरीर हमजीवोंकूं प्रत्यक्षप्रतीतहोता नहीं ॥ ऐसेदेवतादिक जिसपुरुषकेश्रवणकरणेयोग्यवचनोंकूं कथनकरेहैं ॥ सोपुरुषभी एकमासतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवै है ॥ और जिस पुरुषकामस्तक अग्निकीज्वालावोंकरिकैयुक्तहोवैहै ॥ सोपुरुषभी एकमासतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवै है॥और जोपुरुष दिनविषे उल्कापा तकूंदेखे है ॥ अथवा जोपुरुष रात्रिविषे इंद्रधनुषकूंदेखे है ॥ अथवा जोपुरुष मेघरहितआकाशविषे विद्युत्कूंदेखे है ॥ अथवा जोपुरुष मेघवालेआकाशविषेभी तादिद्युत्कूंनहींदेखे है ॥ सोपुरुषभी एकमासतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवै है ॥ और जोपुरुष दर्पणादिकोंविषे आपणेप्रतिबिंबकूं नहींदेखे है ॥ अथवा जोपुरुष काककेमैथुनकूंदेखे है ॥ अथवा जोपुरुष हंसकेमैथुनकूंदेखे है ॥अथवा जोपुरुष मयूरके मैथुनकूंदेखे है सोपुरुषभी एकमासतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवै है ॥ और जोपुरुष रूक्षपदार्थोंकूं स्निग्ध देखे है ॥ अथवा जोपुरुष शीतलपदार्थोंकूं उष्णदेखे ॥ अथवा जोपुरुष उष्णपदार्थोंकूंशीतलदेखे है ॥ सोपुरुषभी एकमासतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवै है ॥ और स्नानकियेतैंअनंतर जिसपुरुषके दूसरेसर्वअंगतौ जलकरिकैआर्द्रहोवैं॥और हृदय पाद यहदोनोंअंग शीघ्रही शुष्कहोइजावैं ॥ सोपुरुषभी एकमासतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवै है ॥ अब अर्द्धमासविषेमृत्युकीप्राप्तिकरणेहारे चिह्नोंका निरूपणकरै हैं ॥ हेशिष्य ॥ जोपुरुष अकस्माततैं भूमिविषेछिद्रकूंदेखे है॥अथवा जोपुरुष ता भूमिकेछिद्रतैंउत्पन्नहुएशब्दोंकूंश्रवणकरैहै॥सोपुरुष अर्द्धमासतैंअनंतर मृत्युकूं प्राप्तहोवै है ॥ और जिसपुरुषकूं सूर्यकेकिरण शीतलप्रतीतहोवै हैं॥अथवा जिसपुरुषकूं चंद्रमाकेकिरण उष्णप्रतीतहोवै हैं॥अथवा जिस पुरुषकामुख रक्तकमलकीन्याईं रक्तवर्णवालाहोवै है ॥ अथवा जिसपुरुषकीजिह्वा प्रज्वलितअग्निकेसमानवर्णवालीहोवै है॥अथवा जिसपु रुषकेदोनोंकर्ण अश्वकेकर्णोंकी न्याईं स्तब्धहोवै हैं ॥ अथवा जिसपुरुषकेहृदयविषे तथा नाभिविषे तथातालुविषे कंपहोवै है ॥ सोपु रुषभी अर्द्धमासतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै॥अब सप्तदिनविषे मरणकीप्राप्तिकरणेहारेचिह्नोंका निरूपणकरै हैं॥हेशिष्य॥ जिसपुरुषकेशरी रविषे अकस्माततैं अग्निकीज्वाला प्रगटहोवै है॥सोपुरुष सप्तदिवसतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै॥और तारामंडलविषेस्थित जेसप्तऋषि हैं॥

तथा आदित्यतैंआदिलैकेकेतुपर्यंत जेनवग्रहहैं ॥ तिनोंकूं जोपुरुष नहींदेखेहै ॥ सोपुरुषभी सप्तदिवसतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवै है॥और जोपुरुष आपणेनासिकाकूं तथाजिह्वाकूं नहींदेखेहै ॥ अथवा जोपुरुष किसीकार्यकूंकरिकैं तिसीकालविषे ताकार्यकेविस्मृतिकूंप्राप्तहोवै है ॥ अथवा जिसपुरुषकेशरीरका पूर्वअर्द्धतौ उष्णरहेहै ॥ और अपरअर्द्ध शीतलरहेहै ॥ अथवा जिसपुरुषकेनेत्र अत्यंत विकासकरिकै मंडलाकारहोवैहैं ॥ अथवा जिसपुरुषकेदोनोंकर्ण शिथिलताकरिकै आपणेस्थानतैंच्युतहोवैहैं॥अथवा जिसपुरुषकीनासिका वक्रहोवै है॥ सोपुरुषभी सप्तदिवसतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अब एकदिवसविषे मृत्युकीप्राप्तिकरणेहारेचिह्नोंका निरूपणकरै हैं ॥ हेशिष्य ॥ दक्षिणविषेसूर्यकेस्थितहुए यापुरुषोंकीछाया नियमकरिकैं उत्तरदिशाविषेहीस्थितहोवै है॥तिसआपणीछायाकूं जोपुरुष दक्षिणदिशाकी तरफदेखेहै ॥ सोपुरुष उसीदिनविषे शस्त्रादिकोंकरिकै मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जिसपुरुषनैं आपणेभोजनकरणेवासतै अन्नकूंत्यागक र्याहै ॥ ताअन्नकूं कोईअपूर्वस्त्री भोजनकरतीहै ॥ याप्रकार जोपुरुषदेखेहै ॥ सोपुरुषभी तिसीदिनविषे मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥और वृषभ ऊपरआरूढहुआ अथवा महिषऊपरआरूढहुआ तथादंडजिसकेहस्तविषेहै ऐसाजोकोईभयानकपुरुषहै ॥ अथवा खुलेहुएहैंरक्तवर्णवाले केशजिसके तथा हस्तविषे पाशोंकूंग्रहणकर्याहैजिसनैं ऐसीजाकोईभयानकस्त्रीहै ॥ ताभयानकपुरुषकूं अथवा ताभयानक स्त्रीकूं जोपुरुष अन्नकेभोजनकालविषेदेखे है ॥ सोपुरुषभी तिसीदिनविषे मृत्युकूंप्राप्तहोवै है ॥ हे शिष्य ॥ इसप्रकार तीनवर्षके तथादो वर्षके तथाएकवर्षके तथाषट्मासके तथा एकमासके तथा एकपक्षके तथासप्तदिवसके तथा एकदिवसके जितनेकीमृत्युकेचिह्न पूर्व कथनकरे हैं ॥ तिनाचिह्नोंविषे किसीएकचिह्नकूं अथवा दोतीनाचिह्नकूं अथवा बहुतचिह्नोंकूं जोपुरुष जिसतिथिविषेतथाजिसदिनविषे देखे है ॥ सोपुरुष तिसतीनवर्षादिककालतैंअनंतर तिसतिथिकूं तथातिसदिनकूं पुनःप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु ता तीनवर्षादिककाल केभीतररही मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै॥इतनैंग्रंथकरिकैजाग्रतअवस्थाविषे मरणकेचिह्नोंकानिरूपणकऱ्या॥ अब वशिष्ठसंहिताविषेवसिष्ठभगवान्नैं स्वप्नअवस्थाविषे जेमरणकेचिह्न कथनकरेहैं तिनोंकानिरूपणकरैहैं॥हेशिष्य॥जोपुरुष स्वप्नविषे कृष्णदंतवालेपुरुषकूं देखे है अथवाकृष्ण

वर्णवालेपुरुषकूंदेखेहै ॥ सोस्वप्नद्रष्टापुरुष थोडेकालविषेही मृत्युकूंप्राप्तहोवेहै॥ और स्वप्नविषे जिसपुरुषकेशरीरकूं वराह तथा मर्कट भक्षणकरेहै ॥ अथवा ताशरीरकूं तेवराहमर्कट लेजावेहैं ॥ ऐसेस्वप्नकाद्रष्टापुरुष षट्मासतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवेहै ॥ और जो पुरुष स्वप्नविषे पीतवर्णवालेपदार्थोंकूंभोजनकरिकै तिनपदार्थोंकावमनकरेहै ॥ अथवा जोपुरुष स्वप्नविषे मधुयुक्तअन्नकूं भक्षणकरे है ॥ अथवा जोपुरुष स्वप्नविषे कमलकीकोमलजटाकूं भक्षणकरेहै॥सोस्वप्नद्रष्टापुरुषभी षट्मासतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवे है ॥ और जो पुरुष स्वप्नविषे श्वेतकमलकूं आपणेमस्तकविषे तथाकंठादिकोंविषे धारणकरे है ॥ अथवा जो पुरुष स्वप्नविषे गर्दभ वराह उष्ट्र करिकै युक्त रथविषे आरूढ होवेहै ॥ अथवा तिनगर्दभवराहउष्ट्रऊपरही आरूढहोवेहै ॥ सोस्वप्नद्रष्टापुरुषभी षट्मासतैं अनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवे है ॥ और जोपुरुष स्वप्नविषे कृष्णवर्णवालेवत्सकरिकैयुक्त कृष्णवर्णवालीगौकूं दक्षिणदिशाकीतरफजाताहुआ देखे है ॥ सो स्वप्नद्रष्टापुरुष भी षट्मासतैंअनंतर मृत्युकूं प्राप्तहोवे है ॥ और जो पुरुष स्वप्नविषे रक्तवर्णवालजपाकुसुमोंकीमालाकूं आपणेकंठविषेधारणकरिकै अथवा शेवालकीमालाकूंकंठविषेधारणकरिकै तथाआपणेशरीरऊपर तैलकामर्दनकरिकै अथवा नगनहोइकै एकलाही तादक्षिणदिशाकीतरफजावेहै ॥ सोस्वप्नद्रष्टापुरुषभी षट्मासतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवेहै ॥ और जोपुरुष स्वप्नविषे आपणेहस्तविषेस्थित गृध्रकाकादिकोंकरिकै भक्षणकूंप्राप्तहुआ तथाप्रसन्नतायुक्तहुआ तथारक्तवस्त्रोंकरिकैयुक्तहुआ तथारक्तगंधकरिकैयुक्तहुआ तथा तैलकरिकैयुक्तहुआ तथाक्षुधापिपासाकरिकैआतुरहुआ तथाश्वानादिककूरजीवोंतैंभयकूंप्राप्तहुआ शीघ्रही दक्षिणदिशाविषेगमनकरे है ॥ सोस्वप्नद्रष्टापुरुषभी षट्मासतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवेहै ॥ और जोपुरुष स्वप्नविषे कृकलासजीवकूं आपणावाहनहुआदेखेहै ॥ सोपुरुषभी षट्मासतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवेहै॥और जोपुरुष स्वप्नविषे लोहकेदंडकूंधारणकरणेहारे कृष्णवर्णवालेपुरुषकूं देखेहै॥सोस्वप्नद्रष्टापुरुष तीनदिवसतैंअनंतर मृत्युकूंप्राप्तहोवेहै॥और जिसपुरुषकूं स्वप्नविषे कृष्णवस्त्रोंकूंधारणकरणेहारी तथाकृष्णगंधकरिकैयुक्त कोईस्त्री स्नेहपूर्वक आलिंगनकरेहै ॥ सोस्वप्नद्रष्टापुरुष दशदिवसतैंपूर्वहीं मृत्युकूंप्राप्तहोवेहै ॥ अथवा सोपुरुष तिसीदिनविषे अरुणउदयकालविषे अथवा सूर्यउदयकालविषे

मृत्युकूंप्राप्तहोवे है॥ हेशिष्य ॥ यात्प्रकार मृत्युकेचिह्न जिसस्वप्नविषेप्रतीतहोवे हैं॥सोस्वप्नभी दोप्रकारकाहोवे है॥तहां एकस्वप्नतो पुण्यपापादिरूपअदृष्टसामग्रीकरिकैही जन्यहोवे है ॥ और दूसरास्वप्नतो वात पित्त कफ यातीनदोषोंकीविषमतारूप दृष्टसामग्रीकरिकै जन्यहोवे है ॥ तथा काम क्रोध लोभभय चिंतन इत्यादिकदृष्टसामग्रीकरिकै जन्यहोवे है॥तिनदोनोंप्रकारकेस्वप्नविषे जोस्वप्न तादृष्टसामग्री तैंविना केवलअदृष्टसामग्रीकरिकै जन्यहोवे है ॥ तास्वप्नविषेदेखेहुए तेपूर्वउक्तमृत्युकोचिह्न तास्वप्नद्रष्टापुरुषकूं अवश्यकरिकै तामृत्युरूप फलकीप्राप्तिकरे हैं ॥ और जोस्वप्न तादृष्टसामग्रीकरिकैजन्यहोवे है ॥ तास्वप्नविषेदेखेहुए तेपूर्वउक्तमृत्युकेचिह्न तास्वप्नद्रष्टापुरुषकूं तामृत्युरूपफलकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ किंतु सोस्वप्न निष्फलहीहोवे है ॥ और हेशिष्य॥ ता वातपित्तादिकदृष्टसामग्रीतैंविना केवलपुण्यपापादिरूपअदृष्टसामग्रीकरिकैजन्य जोस्वप्नहै ॥ सो स्वप्नभी रात्रिके चारप्रहरोंके भिन्नभिन्नफलकीहीप्राप्तिकरे है ॥ तहां यहस्वप्नद्रष्टापुरुष रात्रिकेप्रथमप्रहरविषे जिसस्वप्नकूंदेखे है ॥ सोस्वप्न तास्वप्नद्रष्टा पुरुषकूं एकवर्षतैंअनंतर ताफलकीप्राप्तिकरे है॥और यहस्वप्नद्रष्टापुरुष रात्रिकेद्वितीयप्रहरविषे जास्वप्नकूंदेखे है॥ सोस्वप्न तास्वप्नद्रष्टापुरुषकूं षट्मासतैंअनंतर ताफलकीप्राप्तिकरेहै॥और यहस्वप्नद्रष्टापुरुष रात्रिकेतृतीयप्रहरविषे जोस्वप्नकूंदेखे है ॥ सोस्वप्न तास्वप्नद्रष्टापुरुषकूं तीनमासतैंअनंतर ताफलकीप्राप्तिकरे है ॥और रात्रिकेचतुर्थप्रहरविषेभी दोदोघटिकाकेभेदतैं सोस्वप्नभिन्नभिन्नफलकीहीप्राप्तिकरेहै॥ तहां यहस्वप्नद्रष्टापुरुष रात्रिकेचतुर्थप्रहरकीप्रथमदोघटिकाविषे जिसस्वप्नकूंदेखेहै ॥ सोस्वप्न तास्वप्नद्रष्टापुरुषकूं एकमासतैंअनंतर ताफलकी प्राप्तिकरे है ॥ और यहस्वप्नद्रष्टापुरुष ताचतुर्थप्रहरकीदूसरीदोघटिकाविषे जिसस्वप्नकूंदेखे है ॥ सोस्वप्न तास्वप्नद्रष्टापुरुषकूं एकपक्षतैंअनंतर ताफलकीप्राप्तिकरे है ॥ और यहस्वप्नद्रष्टापुरुष ताचतुर्थप्रहरकी तीसरीदोघटिकाविषे जिसस्वप्नकूंदेखे है ॥ सोस्वप्न तास्वप्नद्रष्टापुरुषकूं दशदिनतैंअनंतर ताफलकीप्राप्तिकरे है॥ और यहस्वप्नद्रष्टापुरुष ताचतुर्थप्रहरकीचौथीदोघटिकाविषे जिसस्वप्नकूंदेखेहै ॥ सोस्वप्न तास्वप्नद्रष्टापुरुषकूं तिसीदिनविषे ताफलकी प्राप्तिकरे है॥ इसप्रकार यास्वप्नद्रष्टापुरुषोंकूं ताअदृष्टसामग्रीजन्यस्वप्नकाफल प्राप्तहोवे है॥और हेशिष्य जैसे वात पित्त कफ काम क्रोध

इत्यादिकदृष्टसामग्रीकरिकैजन्यजोस्वप्नहै सो निष्फलहोवै है ॥ तैसे जिसस्वप्नकेउत्तरकालविषे दूसरास्वप्न प्राप्तहोवै है ॥ सोप्रथमस्वप्नभी निष्फलहीहोवै है ॥ हेशिष्य इसप्रकार अनेकदोषोंकेवशतैं सोस्वप्न निष्फलभीहोवै है॥ यातैं यहहमारास्वप्न वातपित्तादिरूपदृष्टसामग्री करिकेजन्यहै अथवा पुण्यपापादिरूपअदृष्टसामग्रीकरिकैजन्यहै याप्रकारकेविचारकियेतैंविना सो स्वप्नतास्वप्नद्रष्टापुरुषकूं नियमकरिकै ताफलकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ किंतु ताविचारकियेतैंविना तास्वप्नकेफलविषे संशयहीरहै है ॥ और जाग्रतअवस्थाविषे जेपूर्व मरणकेचिह्न कथनकरेथे ॥ तेचिह्नतौ ताद्रष्टापुरुषकूं नियमकरिकै ताफलकीप्राप्तिकरै हैं ॥ यातैं ताजाग्रताचिह्नोंकेफलविषे संशयनहीं है ॥ याप्रकार कौषीतकिऋषिनैं तथावशिष्टभगवान्नैं जाग्रतविषे तथास्वप्नविषे मृत्युचिह्नोंकेफलकीव्यवस्था कथनकरीहै ॥ हेशिष्य॥यालोकविषे जो पुरुष विषयोंविषे अत्यंतआसक्तहै ॥ तिसपुरुषकूँभी पूर्वउक्तमृत्युचिह्नोंकेदर्शनतैं अवश्यकरिकै वैराग्यकीप्राप्तिहोवै है याकारणतैं कौषीतकिवशिष्टादिकऋषियोंनैं तिनमृत्युचिह्नोंका कथनकऱ्या है ॥ हेशिष्य ॥ जैसे गर्भउपनिषद्कोंविचारतैं तथामृत्युचिह्नोंकेदर्शनतैं यापुरुषोंकूंवैराग्यकीप्राप्तिहोवै है ॥ तैसे हंसादिकउपनिषदोंविषेकथनकऱ्याजोयोगहै ॥ तायोगकरिकैभी याअधिकारीपुरुषोंकूं परमवैराग्यकीप्राप्तिहोवै है॥यातैं तावैराग्यकीप्राप्तिवासतै याअधिकारीपुरुषनैं तायोगकूंभीअवश्यकरिकै संपादनकरणा॥अब तायोगकेनिरूपण करणेवासतै प्रथम तायोगकेअंगोंका कथनकरणेहारी जाअमृतनादनामाउपनिषद्है ताकेअर्थकानिरूपणकरै हैं ॥ तहां प्रथम योगकेअधिकारीका निरूपणकरै हैं ॥ हेशिष्य ॥ जोपुरुष ब्रह्मचर्यधर्मवालाहोवै है ॥ तथा जिसपुरुषनैं अंतरमनकूं तथाबाह्यइंद्रियोंकूं आपणेवशकऱ्याहोवै ॥ तथा जोपुरुष धैर्यवालाहोवै है ॥ तथा जिसपुरुषकी गुरुशास्त्रविषे श्रद्धाभक्तिहोवै है ॥ ऐसेगुणोंवालापुरुष तायोगकाअधिकारीहोवैहै॥ऐसाअधिकारीपुरुष प्रथम आपणेवर्णआश्रमकेअनुसार नित्यनैमित्तिककर्मोंकूंकरिकै किसीवनादिरूपएकांतदेशविषे कुटीबांधिकरिकै तहां योगाभ्यासकूंकरै ॥ कैसाहोवैसोदेश ॥ शीत आतप वायु इत्यादिकसर्वउपद्रवोंतैंरहितहोवै ॥ तथा मनकूं तथानेत्रोंकूं आनंदकीप्राप्तिकरणेहाराहोवै ॥ ऐसे एकांतदेशविषे यह अधिकारीपुरुष प्रथमदर्भोंकूंबिछावै ॥ *तिनदर्भोंके ऊपर मृगचर्मकूं बिछावै* ॥

तिसमृगचर्मकेऊपर व्याघ्रचर्मकूंबिछावै ॥ अथवा तामृगचर्मकेऊपरकिसी कोमलवस्त्रादिकोंकूंबिछावै ॥ जिसकरिकै तापुरुषकेशरीरविषे किंचित्मात्रभीपीडा नहीं होवैहै ॥ और सोआसन अत्यंतऊंचाभीनहींहोवै ॥ तथा अत्यंतनीचाभीनहींहोवै ॥ ऐसेआसनऊपर स्थितहोइकै यहअधिकारीपुरुष प्रथम आपणेशरीरके मध्यदेशकूं तथाग्रीवाकूं तथाशिरकूं दंडकीन्याईं सूधाराखै ॥ और यहअधिकारीपुरुष आपणेनासिकाकेअग्रभागविषेदृष्टिकूंराखिकै दूसरेकिसीदिशाकीतरफ दृष्टिकरैनहीं ॥ और यहअधिकारीपुरुष अहिंसा १ सत्य २ अस्तेय ३ ब्रह्मचर्य ४ अपरिग्रह ५ यापंचप्रकारकेयमोंकूं सर्वदासेवनकरै ॥ तथा शौच १ संतोष २ तप ३ स्वाध्याय ४ ईश्वरप्रणिधान ५ यापंचप्रकारकेनियमोंकूं सर्वदा सेवनकरै ॥ तिनयमानियमोंकाअर्थ अष्टमअध्यायविषे विस्तारतैंकहिआये है ॥ हेशिष्य ॥ तायोगकरणेविषे याअधिकारीपुरुषोंकूं अनेकप्रकारकेविघ्नोंकीप्राप्तिहोवै है ॥ यातैं तिन विघ्नोंकीनिवृत्तिकरणेवासतै यहअधिकारीपुरुष पूर्वउक्तआसनऊपरास्थितहोइकै आपणेचित्तकूंएकाग्रकरिकै रुद्रभगवान्काध्यानकरै ॥ तारुद्रभगवान्के ध्यानकरणेतैं याअधिकारीपुरुषके सर्वविघ्न निवृत्तहोवै हैं ॥ तिसतैंअनंतर यहअधिकारीपुरुष स्वस्तिक पदम भद्र यातीनआसनोंविषे किसीएकआसनकूंबांधिकरिकै तथाउत्तरदिशाकीतरफमुखकरिकै प्राणायामकूंकरै ॥ अब तिनआसनोंकेस्वरूपका निरूपणकरै हैं ॥ हे शिष्य ॥ वामजंघ ऊरु यादोनोंकेमध्यविषे दक्षिणपादके तलकूं राखिकै तथा दक्षिणजंघ ऊरु या दोनोंके मध्यविषे वामपादकेतलकूंराखिकै दंडकी न्याईं सरलस्थितहोणा याका नाम स्वस्तिकआसन है ॥ और आपणे वामऊरुऊपर दक्षिणपादकूंराखिकै ता दक्षिणपादकूं अंगुष्टकूं आपणेपृष्टदेशतैंपीछे दक्षिणहस्तकूंलेआइकै ग्रहणकरणा ॥ इसीप्रकार आपणेदक्षिणऊरुऊपर वामपादकूं राखिलै ता वामपादके अंगुष्टकूं आपणेपृष्टदेशतैंपीछे वामहस्तकूं लेआइकै ग्रहणकरना ॥ तथा आपणेशरीरकूं दंडकी न्याईं सरल राखणा याका नाम पदमआसन है ॥ और आपणेदोनोंपादोंकेतलोंकूं वृषणके नीचे एकठाकरिकैराखणा ॥ और तिनपादोंकेतलोंऊपर आपणे दोनोंहस्तोंकूं कच्छपक आकार एकठाकरिकैराखणा ॥ तथा आपणे शरीरकूं दंडकी न्याईं सरलराखणा ॥ याका नाम भद्र आसनहै

हेशिष्य ॥ स्वस्तिक पदम भद्र यातीनआसनोंविषे जिसआसनकेकरणेविषे यहपुरुष समर्थहोवे ॥ तिसआसनकूंबांधिकरिकैपहअधिकारी पुरुष तापाणायामकूंकरै ॥ अब तायोगके षट्अंतरंगसाधनोंका निरूपणकरै हैं ॥ हेशिष्य ॥ प्राणायाम १ प्रत्याहार २ तर्क ३ धारणा ४ ध्यान ५ समाधि ६ याषट्अंगोंवालायोगहोवेहै ॥ तहां प्रथम प्राणायामका फलसहितनिरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ जैसे अग्निकेसंबंधतैं लोहादिकधातुवोंकेमैलकीनिवृत्तिहोवेहै ॥ तैसे याप्राणायामतैंहीं अंतःकरणकेदोषोंकी तथानेत्रादिकइंद्रियोंकेदोषोंकी निवृत्तिहोवेहै ॥ हे शिष्य ॥ सोप्राणायामभी रेचक पूरक कुंभक याभेदकरिकै तीनप्रकारकाहोवेहै ॥ तातीनप्रकारकेप्राणायामविषेभी एकएकप्राणायाम केकरणेकालविषे यहअधिकारीपुरुष प्रणवसहितसप्तव्याहृतियोंयुक्त तथाशिरयुक्त गायत्रीमंत्रकूं तीनवारउच्चारणकरै ॥ और संन्यासियों नैंतौ तागायत्रीमंत्रकेतीनवारउच्चारणकरणेतैं जितनेकीअक्षरहोवैहैं ॥ तितनेही प्रणवोंकाउच्चारणकरणा इसप्रकार गायत्रीमंत्रकरिकै तथा प्रणवमंत्रकरिकै कन्याद्वआसोप्राणायाम यापुरुषके सर्वदोषोंकीनिवृत्तिकरै है ॥ अब रेचक पूरक कुंभक यातीनोंकेस्वरूपका निरूपणकरैहै ॥ हेशिष्य ॥ आपणेप्राणवायुकूं आधारचक्रतैं कुंडलिनीमार्गद्वारा ऊपरलैजाइकै ताप्राणवायुकूं नासिकाद्वारा निकासिकै शरीरतैंबाह्यआकाशविषेलयकरणा याकानाम रेचकहै ॥ और जैसे कमलकीनालद्वारा मुखकरिकै जलकाआकर्षण करीताहै ॥ तैसे शरीरतैंबाह्यस्थितवायुकूं नासिकाद्वारा शरीरकेभीतर आकर्षणकरणा याकानाम पूरकहै ॥ और जैसे तप्तपाषाण ऊपरपडाहुआजलकाबिंदु लयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे ताप्राणवायुकेबाहरगतिकूं तथाअंतरगतिकूं निरोधकरिकै शरीरके भीतरहीं लयकरणा याकानाम कुंभकहै ॥ १ ॥ अब प्रत्याहारकानिरूपणकरै हैं ॥ हेशिष्य ॥ शब्द स्पर्श रूप रस गंध यापंचविषयोंकूं क्रमतैंग्रहणकरणेहारे जे श्रोत्र त्वक् चक्षु रसन घ्राण यहपंचज्ञानइंद्रियहैं ॥ तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं आपणेआपणेविषयविषे यहमनहीं प्रवृत्तकरैहै ॥ ताचंचलमनकूं आत्मविचारकेबलतैं निरोधकरिकै जोश्रोत्रादिकइंद्रियोंका निरोधकरणाहै याकानाम प्रत्याहारहै ॥ तात्पर्य यह ॥ जैसे सूर्यकेकिरण सूर्यतैंभिन्ननहीं हैं ॥ तैसेयहसंपूर्णदृश्यप्रपंच चेतनआत्मातैं भिन्ननहींहै ॥ याप्रकारकीदृष्टिकरिकै जोमनसहित

॥ ३४ ॥

इंद्रियोंकानिरोधकरणाहै याकानाम प्रत्याहारहै॥यहप्रत्याहारकालक्षण याज्ञवल्क्यमुनिनैंभी कह्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ यद्यत्पश्यति तत्तत्वं पश्येदात्मानमात्मनि॥प्रत्याहारःसचप्रोक्तो योगविद्भिर्महात्मभिः ॥ अर्थयह ॥ यहयोगीपुरुष जिसजिसपदार्थकूंदेखे है॥ तिनसर्वपदार्थोंकूं आत्मरूपकरिकैदेखे ॥ योगवेत्तामहात्मापुरुषोंनैं याहीकानाम प्रत्याहारकह्याहै ॥ २॥ अब तर्ककानिरूपणकरै हैं॥हेशिष्य॥जे मत वेद तैंबाह्यहैं॥तिनमतोंकापरित्यागकरिकै सर्ववेदोंकेतात्पर्यका विषयरूपकरिकै जोअंतरआत्मवस्तुका चिंतनकरणाहै याकानाम तर्क है ॥ ॥३॥अब धारणाकानिरूपणकरै हैं॥हेशिष्य॥यालोकविषे जेपुरुष चौरकूंनहींदेखे हैं॥तिनपुरुषोंकूंहीं सोचौर अनर्थोंकीप्राप्तिकरै है॥तैसे जेपुरुष विचारदृष्टिकरिकै यामनकूंनहींदेखे हैं ॥ तिनविचारहीनपुरुषोंकूंहीं सोमनसंकल्प विकल्परूप अनर्थोंकीप्राप्तिकरै है ॥ याप्र कारकाविचारकरिकै यामनकूं अंतरआनंदस्वरूपआत्माविषेजोडिकरिकै जोसंकल्पविकल्पतैंरहितकरणाहै याकानाम धारणहै ॥ ४ ॥ अब ध्यानकानिरूपणकरैहैं॥हेशिष्य॥जिसआनंदस्वरूपआत्माविषे धारणाकरीहै॥तिसीआनंदस्वरूपआत्माविषे अनात्माकार विजातीय वृत्तियोंकेव्यवधानतैंरहित जो निरंतर तैलधाराकीन्याईं सजातीयवृत्तियोंकाप्रवाहकरणाहै याकानाम ध्यानहै ॥५ ॥अब समाधिकानिरू पणकरै हैं ॥ हेशिष्य ॥ जिसअवस्थाविषे अंतरआत्मास्वरूपआनंदकूंग्रहणकरिकै ध्याता ध्यान ध्येय इत्यादिकसर्वद्वैतप्रपंचकाअनाद रहोवै है ॥ ताअवस्थाकानाम समाधिहै ॥ यहसमाधिकास्वरूप गीताविषे भगवान्नैंभीकह्याहै॥तहां श्लोक ॥ यंलब्ध्वाचापरंलाभं मन्य तेनाधिकंततः ॥अर्थयह ॥ यहविद्वान्पुरुष जिसआत्मास्वरूपआनंदकूंप्राप्तहोइकै तिसतैंअधिक किसीदूसरेलाभकूंमानतानहीं ॥ ६ ॥ इतनैंकरिकै प्राणायामादिकषट्साधनोंकानिरूपणकऱ्या ॥ अब योगीपुरुषकूंपरित्यागकरणेयोग्यजेपदार्थ हैं तिनोंकानिरूपणकरै हैं ॥ हेशिष्य ॥ जैसे रोगीपुरुष तारोगकीनिवृत्तिवासतैं कुपथ्यवस्तुकापरित्यागकरै है ॥ तैसे यहयोगीपुरुष तायोगकीसिद्धिवासतैं भय क्रोध आलस्य यातीनोंकापरित्यागकरै॥तथाअत्यंतनिद्राकाभी परित्यागकरै ॥ तथा अत्यंतजागरणकाभी परित्यागकरै तथा अत्यंत आहारकाभी परित्यागकरै॥तथा अत्यंतनिराहारकाभी परित्यागकरै॥किंतु तिननिद्राआहारादिकोंकूं युक्तिसैंकरै॥अब प्राणायामकरणे

काप्रकार निरूपणकरे हैं॥हेशिष्य॥तापाणायामकरणेकाप्रकार वेदवेत्तापुरुषोंनें याप्रकार कथनकऱ्याहै ॥ यहयोगीपुरुष प्रथम आपणे दक्षिणनासिकाकूं हस्तकेअंगुष्ठसैंनिरोधकरिकै दूसरीवामनासिकाद्वारा बाह्यवायुकूंआकर्षणकरिकै अंतरधारणकरै ॥ पुनःतिसीवायुकूं तादाक्षिणनासिकाद्वारा शनैःशनैःकरिकै बाह्यपरित्यागकरै ॥ इसप्रकार वामनासिकाकूं अंगुष्ठसैंनिरुद्धकरिकै दक्षिणनासिकाद्वारा बाह्य वायुकूंआकर्षणकरिकैअंतरधारणकरै॥पुनःतिसीवायुकूं तावामनासिकाद्वारा शनैःशनैःकरिकै बाह्यपरित्यागकरै॥हेशिष्य॥ पूरक कुंभक रेचक यातीनप्रकारकेप्राणायामकूं यहयोगीपुरुष ॐकाररूपप्रणवमंत्रकरिकैकरै॥ताप्रणवमंत्रोंकीसंख्या मात्राकरिकैसिद्धहोवै है॥तहां यह अधिकारीपुरुष प्रथम एकमात्राकरिकै पूरककरै॥ और दोमात्राकरिकैरेचककरै॥और चारिमात्राकरिकै कुंभककरै ॥ इसप्रकार दोमात्रा तीन मात्रा चारिमात्रा पंचमात्रातैं आदिलैकैआगेआगेतिनपूरकादिकोंकूं शनैःशनैःकरिकै बढावताजावै ॥ तहांसर्वत्र पूरकतैंद्विगु णाअधिक रेचककरणा॥और रेचकतैंद्विगुणाअधिक कुंभककरणा॥इहां मात्रानाम कालपरिमाणकाहै तामात्रापरिमाणकाअर्थ शास्त्रोंविषे अनेकप्रकारका कथनकऱ्याहै॥तहांमार्कंडेयपुराणविषेतौ तामात्रा परिमाणका यहअर्थकथनकऱ्याहै व्यवधानतैंरहित द्वादशवार निमेषों केचलावणेविषेजितनाकाल व्यतीतहोवैहै ताकानाम मात्राहै ॥ अथवा व्यवधानतैंरहित द्वादशवार तालीबजावणेविषे जितनाकाल व्यती तहोवैहै ताकानाम मात्राहै॥अथवा व्यवधानतैंरहित द्वादशवार लघुअक्षरकेउच्चारणकरणेविषे जितनाकाल व्यतीतहोवै है ताकानाममा त्राहै ॥ और वशिष्ठसंहितायिषे वशिष्ठभगवान्नैंतौ यहकह्याहै॥पूरकादिकप्राणायामोंविषे जो षोडशादिकवार प्रणवमंत्रकी आवृत्तिकरणी है ॥ ताप्रणवमंत्रकेआवृत्तिकानाम मात्रा है ॥ और याज्ञवल्क्यमुनिनैंतौ यहकह्या है ॥ जितनैंकालविषे व्यवधानतैंरहित तीनवार छोटिकामुद्राकरिये अथवा तीनवार आपणेजानुऊपर हस्तकूंफेरिये अथवा तीनवार तालीबजाइये ताकानाम मात्राहै ॥ चुटकीबजावणेकानाम छोटिकामुद्राहै ॥ और मांडूक्यउपनिषद्विषे तथा प्रश्नउपनिषद्विषेप्रणवके अकार उकार मकार अर्द्धमात्रा याचारिअवयवोंकूंहीं मात्रारूपकरिकैकथनकऱ्याहै और नादबिंदुउपनिषद्विषेतौ तिनआकारादिकचारिमात्रावोंविषे एकएकमात्राकेउदात्त

अनुदात्त स्वरित यहतीनतीनअवयव कल्पनाकरिकै तीनमात्रावोंकेद्वादशभेदकथनकरेहैं॥इसप्रकार भिन्न भिन्नशास्त्रोंविषे तामात्राशब्दके अनेकप्रकारके अर्थ कथनकरे हैं ॥ तथापि याआत्मपुराणविषे व्यवधानतैंरहित तीनवार तालीबजावणेविषे जितनाकाल व्यतीतहोवै है ताकानाम मात्राहै ॥ हेशिष्य ॥ प्रणवमंत्रकाहैउच्चारणजिसविषे ऐसाजोयह पूरकादिरूपप्राणायामहै॥ताप्राणायामकूं जोयोगीपुरुष एकमा त्राकरिकै अनुष्ठानकरै है॥ तायोगीपुरुषकूं आकाशतत्त्वकाअधिपतिपणा प्राप्तहोवै है॥और दोमात्राकरिकै तायोगीपुरुषकूं वायुतत्त्वका अधिपतिपणा प्राप्तहोवै है ॥ और तीनमात्राकरिकै तायोगीपुरुषकूं अग्नितत्त्वकाअधिपतिपणा प्राप्तहोवै है ॥ और चारमात्राकरिकै तायोगीपुरुषकूं जलतत्त्वकाअधिपतिपणा प्राप्तहोवै है॥ और पंचमात्राकरिकै तायोगीपुरुषकूं पृथिवीतत्त्वकाअधिपतिपणा प्राप्तहोवै है॥ इसप्रकार ताप्राणायामकेअभ्यासकीदृढताकरिकै तिनयोगीपुरुषोंकूं आकाशादिकपंचभूतोंकाजयरूपफल प्राप्तहोवैहै ॥ और जिनपुरुषों का सो प्राणायामकाअभ्यास शिथिलहै ॥ तिनपुरुषोंकूं सोभूतोंकाजयरूपफल प्राप्तहोवैनहीं॥ और हेशिष्य पुनःसोयोगीपुरुष तिनप्रण वमात्रावोंविषे यथाक्रमतैं शब्दादिकपंचतन्मात्रावोंकाआरोपणकरिकै चिंतनकरै ॥ ताचिंतनकरिकै तायोगीपुरुषकूं निर्विशेषब्रह्मरूपक रिकैचिंतनकरणयोग्य जोअर्द्धमात्रारूपप्रणवहै ॥ ताके अभ्यासकीप्राप्तिहोवै है ॥ तिनशब्दादिकपंचतन्मात्रावोंकेध्यानकरणेका यहप्रकारहै ॥ तहां पृथिवीतत्त्वकीधारणाविषे चिंतनकाविषयहोणेतैं पार्थिवसंज्ञाकूंप्राप्तभयाजोप्रणव है ॥ ता पार्थिवनामाप्रणवकूं यहयोगीपुरुष शब्द स्पर्श रूप रस गंध यापंचतन्मात्रारूपकरिकैध्यानकरै ॥ और जलतत्त्वकीधारणाविषे चिंतनकाविषयहोणेतैं वारुणसंज्ञाकूंप्राप्तभयाजोप्रणवहै ॥ तावारुणनामाप्रणवकूं यहयोगीपुरुष शब्द स्पर्श रूप रस याचारितन्मात्रारूपकरिकैध्यान करै ॥ और अग्नितत्त्वकीधारणाविषे चिंतनका विषयहोणेतैं आग्नेयसंज्ञाकूंप्राप्तभयाजोप्रणवहै ॥ ता अग्नेयनामाप्रणवकूं यह यो गीपुरुष शब्द स्पर्श रूप यातीनमात्रारूपकरिकैध्यानकरै ॥ और वायुतत्त्वकीधारणाविषे चिंतनकाविषयहोणेतैं मारुतसंज्ञा कूंप्राप्तभयाजोप्रणवहै ॥ तामारुतनामाप्रणवकूं यहयोगीपुरुष शब्द स्पर्श यादोतन्मात्रारूपकरिकैध्यानकरै ॥ और आकाशत

त्वकीधारणाविषे आकाशसंज्ञाकूं प्राप्तभया जोप्रणवहै ॥ ताआकाशनामाप्रणवकूं यहयोगीपुरुष एकशब्दतन्मात्रारूपकरिकैध्यानकरै इस प्रकार अभ्यासकरिकै जभी या योगीपुरुषकाचित्त चंचलतातैंरहितहोइकै स्थिरहोवै ॥ तभी सोयोगीपुरुष ताअर्द्धमात्रारूपप्रणवकूं ब्रह्मरूपकरिकैचिंतनकरै ॥ हेशिष्य ॥ अथवा सोयोगीपुरुष आपणेचित्तकीनिश्चलताकरणेवासतै ताप्राणायामकालविषे आपणेआपणेव्यापारयुक्त प्राणअपानादिकोंकाध्यानकरै ॥ अब ताध्यानकेप्रकारका निरूपणकरै हैं हेशिष्य ॥ प्राण अपान व्यान उदान समान यापंचप्राणोंके जेजेआपणे असाधारणव्यापारहैं॥ तेअसाधारणव्यापार पूर्वगर्भउपनिषद्केअर्थनिरूपणविषे हम तुमारेप्रति विस्तारतैंकथनकरिआयेहैं ॥ यातैं तिनअसाधारणव्यापारोंका पुनःइहां कथनकरतेनहीं ॥ और तिनपंचप्राणोंका जोएकसाधारणव्यापारहै ॥ सोव्यापार हम तुमारेप्रतिकथनकरतेहैं॥ तूंश्रवणकर याशरीरविषे यद्यपि अनंतनाडियां रहेहैं॥तथापिएकसहस्रछत्तीसनाडियां१०३६प्रधान हैं ॥ तिनसर्वनाडियोंविषेविचरणेहारे जेयहपंचप्राणहैं तिनपंचप्राणोंका हंसमंत्ररूप एकहीव्यापारहै ॥ और हंसःयहमंत्र हकार मकार अकार सकार विसर्ग यापंचअवयवोंवालाहै ॥ और दूसरेशास्त्रोंविषे यद्यपि ताहंसमंत्रकीसंख्या एकविंशतिसहस्र षट्शत २१६०० कथनकरीहै ॥ तथापि उपाधिकृतभेदकूंअंगीकारकरिकै ताहंसमंत्रकीसंख्या एकलक्ष त्रयोदशसहस्र एकशत अशी ११३१८० इतनी संभवहोइसकै है ॥ काहेतैं प्राण अपान व्यान उदान समान यापंचप्राणोंविषे एकएकप्राणके एकविंशतिसहस्र षट्शत २६१०० हंसमंत्र व्यापाररूपहैं ॥ तिनहंसमंत्रोंकूंपंचगुणाकरणेतैं एकलक्ष अष्टसहस्र १०८००० संख्याहोवै है ॥ और एकसहस्र षट्त्रिंशत १०३६ नाडियोंविषेविचरणेहारेजे तेपंचप्राणहैं ॥ तिनपंचप्राणोंकीसंख्या जोनाडियोंकीसंख्याकरिकै पंचगुणीकरिये ॥ तौ पंचसहस्र एकशत अशी ५१८० इतनीसंख्या होवै है॥तिनदोनोंप्रकारकीसंख्याकूंमिलाइकै जोगणतीकरिये॥ तौ एकलक्ष्य त्रयोदशसहस्र एकशत अशी ११३१८०इतनीसंख्या सिद्धहोवै है॥इतनैंहंसमंत्र तिनपंचप्राणोंकाएकसाधारणव्यापारहै॥और हेशिष्य॥गुदातैंलैकै गलेपर्यंत जो अंतरछिद्रहै ॥ सोछिद्र तीसअंगुल ३० परिमाणवालाहोवैहै ॥ ताछिद्रविषेस्थितहोइकै तेप्राणादिकपंचवायु ताहंसमंत्रकाउच्चारणकरै

है ॥ यातैं तिनपंचप्राणोंविषेस्थित जोहंसमंत्ररूपएककार्यकीआरंभकताहै ॥ ताका सोतीसअंगुलपरिमाणवालाछिद्रही प्रयोजक है ॥ याकारणतैं सोहंसमंत्र तिनप्राण अपानादिकसर्ववायुवोंका साधारणव्यापारहै॥तिनवायुवोंविषेभी मुखनासिकाविषेविचरणेहारा जोवायुहै सोवायु ताहंसमंत्ररूपव्यापारविषे प्रधानकारणहै ॥ याकारणतैंहीं शास्त्रवेत्तापुरुष तावायुकूं प्राण यानामकरिकैकथनकरै हैं ॥ और दूसरेवायु ताहंसमंत्ररूपव्यापारविषे गौणकारणहैं॥याकारणतैं शास्त्रवेत्तापुरुष तिनवायुवोंकूं अपानव्यान आदिकनामोंकरिकैकथनकरै हैं॥ अब ध्यानकरणेवासतै तिनपंचप्राणोंके स्थानोंका तथारूपोंका वर्णन करै हैं ॥ हेशिष्य ॥ प्राण अपान समान उदान व्यान यापंचप्राणोंविषे प्रथम प्राणवायुतौ हृदयस्थानविषे रहै है ॥ और अपानवायु गुदास्थानविषेरहेहै॥ और समानवायु नाभिस्थानविषेरहे है॥और उदानवायु कंठस्थानविषेरहे है ॥ और व्यानवायु सर्वशरीरविषेरहे है ॥ हेशिष्य ॥ प्राणवायुतौ रक्तमणिकेसमान रक्तरूपवाला है ॥ और ताप्राणवायुकेअधीन जोअपानवायुहै ॥ सोअपानवायुतौ इंद्रगोपजंतुकेसमान अत्यन्तरक्तरूपवालाहै ॥और ताअपानकेअधीन जोसमानवायुहै॥सोसमानवायुतौ क्षीरकेसमान तथास्फटिकमणिकेसमान श्वेतवर्णवाला है और तासमानवायुकेअधीन जोउदानवायुहै॥सोउदानवायुतौ यत्किंचित्पांडुरवर्णवालाहै ॥ और ताउदानवायुकेअधीन जोव्यानवायुहै॥सोव्यानवायुतौ अग्निशिखाकेसमान वर्णवाला है ॥ इहां यद्यपि प्राणवायुविषे रक्तश्वेतादिकरूप संभवैनहीं॥तथापितिनश्वेतरक्तादिकरूपोंकूं तिनप्राणादिकोंविषेआरोपणकरिकै तिनप्राणोंका ध्यानकरणा याअर्थविषे ताश्रुतिकातात्पर्य है॥हेशिष्य॥ज्ञानशक्तिवालाजोमनहै।तथा क्रियाशक्तिवालाजोप्राणहै।यहदोनों एकठेही याशरीरविषेरहे हैं॥और एकठेही याशरीरतैंबाह्यजावैहैं॥एककूंछोडिकै दूसरारहैनहीं॥तहांश्रुति॥सहहिएतेसमुत्क्रामतःसहतिष्ठतः ॥अर्थयह॥ प्रज्ञारूपयहमन तथाप्राण दोनों याशरीरविषेएकठेहीरहैहैं।और मरणतैंअनंतर तेदोनों एकठेही परलोकविषेजावैहैं॥१।यहवार्ता याआत्मपुराणकेदूसरेअध्यायविषे विस्तारतैंकथनकरिआयेहैं॥यातैं यापुरुषोंकामन जिसजिसमूलआधारादिकस्थानोंविषे स्थितहोवैहै॥ तिसीतिसीस्थानविषे सोप्राणभी स्थितहोवैहै।इसप्रकार ताप्राणका मनकेसाथ एकठेरहणेकास्वभाव जाणिकरिकै यहयोगीपुरुषतिसमार्गकाध्यानकरै

जिसमार्गद्वारा याशरीरतैंबाह्यनिकसिकै ब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवै॥अब तामार्गकानिरूपणकरैहैं ॥हेशिष्य॥ याशरीरविषे मूलआधारतैंऊपर नाभिचक्रहै ॥ और तानाभिचक्रतैंऊपर हृदयकमलहै ॥ सोहृदयकमल सुषुम्नानाडीरूपमार्गकरिकै संबद्धहै ॥ यातैं सोहृदयकमल ताब्रह्मलोककाद्वाररूपहै॥और सासुषुम्नानाडी तायोगीपुरुषके प्राणका तथामनका मार्गरूपहै॥ऐसासुषुम्नानाडीरूपमार्ग दशमद्वारकूंप्राप्तहोवै है॥कैसाहैसोदशमद्वार॥सूर्यमंडलविषेस्थित तथामूर्द्धविषेस्थितचंद्रमंडलविषेस्थित जोबाह्यछिद्रहै॥तावाह्यछिद्रकेसाथ जिसदशमद्वारका अभेदहै॥हेशिष्य॥जिसयोगीपुरुषकूं तीव्रवैराग्यनहीं है॥सोयोगीपुरुषभी यासुषुम्नानाडीरूपमार्गद्वारा ताब्रह्मलोकविषेजाइकै तहां वैराग्य कूंप्राप्तहोइकै मोक्षकूंप्राप्तहोवैहै॥और जिसयोगीपुरुषकूंतीव्रवैराग्यहै॥सोयोगीपुरुषतौ तिसमार्गकेनिकसणेकालविषेही विदेहमोक्षकूंप्राप्त होवैहै॥और पूर्व हंसमंत्ररूपव्यापारयुक्तप्राणोंका जो ध्यानकथनकऱ्याथा ॥ ताध्यानकाभी यहहीफल है ॥ जो तासुषुम्नानाडीरूपमार्ग विषेप्रवेशकरिकै ब्रह्मलोककूं अथवा विदेहमोक्षकूंप्राप्तहोणा ॥ हेशिष्य ॥ यहयोगीपुरुष ताप्रणवमंत्रकरिकै जभी प्राणायामकरै ॥ तभी ताप्रणवके अकार उकार मकार अर्द्धमात्रा याचारिमात्रावोंका चिंतनकरै॥तथा तिनअकारादिकचारिमात्रावोंके जेयथाक्रमतैं वैश्वानर हिरण्यगर्भ ईश्वर तुरीय यहचारिअर्थ हैं॥ तिनोंकाभी चिंतनकरै ॥ हेशिष्य ॥ अथवा सोयोगीपुरुष ताप्रणवमंत्रका चिंतनकरै ॥ जैसे यालोकविषे यापुरुषोंकूं रथ मनवांछितग्रामकीप्राप्तिकरै है ॥ तैसे याअधिकारीपुरुषोंकूं यहप्रणवमंत्रभी मनवांछितलोककीप्राप्तिकरै है ॥ यातैं यहअधिकारीपुरुष ताप्रणवमंत्रकूं रथरूपकरिकैध्यानकरै ॥ और विष्णुरूपपरमात्मादेव अंतर्यामीरूपकरिकै ताप्रणव रूपरथकूंप्रेरणाकरणेहाराहै ॥ यातैं ताविष्णुरूपपरमात्मादेवकूं यहअधिकारीपुरुष ताप्रणवरूपरथका सारथिरूपकरिकैध्यानकरै ॥ और ताप्रणवरूपरथकरिकैसकामपुरुषोंकूंतौ हिरण्यगर्भरूपसगुणब्रह्मकीप्राप्तिहोवै है।और निष्कामपुरुषोंकूंनिर्गुणशुद्धब्रह्मकीप्राप्तिहोवै है॥ यातैं ताहिरण्यगर्भकूं तथाशुद्धब्रह्मकूं यहअधिकारीपुरुष ताप्रणवरूपरथका गंतव्यस्थानरूपकरिकै ध्यानकरै ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारके योगाभ्यासकरणेविषे याअधिकारीपुरुषकूं अनेकप्रकारकेविघ्न प्राप्तहोवै हैं ॥ यातैं तिनविघ्नोंकीनिवृत्तिकरणेवासतै यहअधिकारीपुरुष मैं

रुद्ररूपहूं याप्रकार अभेदरूपकरिकै तारुद्रभगवान्काध्यानकरै ॥ तारुद्रभगवान्केध्यानतैं सर्वविघ्नोंकीनिवृत्तिहोवै है॥हेशिष्य॥ताप्राणा यामकालविषे पादकेअंगुष्टकेअग्रभागतैंलैके जोप्राणोंका ऊपरआकर्षणकरणाहै ॥ सो अत्यंतकठिनहै॥यातैं ताप्राणोंकेआकर्षणकूं शास्त्र वेत्तापुरुष सूक्ष्म यानामकरिकैकथनकरै है ॥ और तिसअंगुष्टकीअपेक्षाकरिकै मूलआधारतैंलैके तिनप्राणोंका ऊपरआकर्षणकरणा सुग महै ॥ यातैं ताप्राणोंकेआकर्षणकूं शास्त्रवेत्तापुरुष स्थूल यानामकरिकैकथनकरै हैं॥और तिसमूलआधारकीअपेक्षाकरिकै नाभिचक्रतैं लैके तिनप्राणोंकाऊपरआकर्षणकरणा अत्यंतसुगमहै।यातैं ताप्राणोंकेआकर्षणकूं शास्त्रवेत्तापुरुष अतिस्थूल यानामकरिकैकथनकरैहैं ॥ इतनैंग्रंथकरिकै योगाभ्यासका निरूपणकऱ्या ॥ अब तायोगाभ्यासकेफलका निरूपणकरैहैं॥हेशिष्य पूर्वकहीरीतितैं जोपुरुष तायोगा भ्यासकूंकरै है ॥ तायोगीपुरुषकूं तीनमासतैंअनंतर दूरदेशविषेस्थित जेदिव्यविषयहैं तिनोंकाभिज्ञानहोवै है॥ और चारिमासतैंअनंतर सोयोगीपुरुष इंद्रादिकदेवतावोंकेदर्शनकरणेविषेभी समर्थहोवै है ॥ और पंचमासतैंअनंतर सोयोगीपुरुष संपूर्णविषयसुखोंकूंतुच्छजाणि कै तिनविषयसुखोंतैं वैराग्यकूंप्राप्तहोवै है ॥ और षष्ठेमासतैंअनंतर सोयोगीपुरुष तायोगकेप्रभावतैं शुद्धअंतःकरणवालाहोइकै तथासर्व कर्मोंकासंन्यासकरिकै आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासतै श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुकेसमीपजावै है ॥ तागुरुकेमुखतैं एकवारमहावाक्यकूंश्रवण करिकै संशयविपर्ययतैंरहित आत्मसाक्षात्कारकूं प्राप्तहोवै है ॥ और ताआत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिकरिकै सोयोगीपुरुष जीवत अवस्थाविषेही मोक्षकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अब ताजीवन्मुक्तपुरुषकेलक्षणोंका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ सोजीवन्मुक्तयोगीपुरुष सर्वपदार्थों विषे अधिष्ठानरूपकरिकैआत्माकूंहीदेखे है॥याकारणतैं सोजीवन्मुक्तपुरुष नेत्रादिकइंद्रियोंकरिकै रूपादिकविषयोंकूंदेखताहुआभी नहीं देखे है ॥ और आपणेशरीरकूंभी शुष्ककाष्ठकीन्याईंजाणिकै उपेक्षाकरै है ॥हेशिष्य ॥ ऐसे जीवन्मुक्तिरूपफलके प्राप्तहुएतैंअनंतर यह अधिकारीपुरुष तिनपूर्वउक्तसर्वउपायोंका परित्यागकरै ॥ काहेतैं यालोकविषे जितनैंकीउपायहोवै हैं ॥ तेसंपूर्णउपाय फलकीप्राप्तिवास तेहोवै हैं॥ ताफलकीप्राप्तितैं अनंतर तिनउपायोंका पुनःकछुप्रयोजनरहैनहीं॥यातैं जैसे मार्गविषेचलणेहारापुरुष नौकाऊपरबैठिकै जभी

नदीकेपारकूंप्राप्तहोवे है ॥ तभी तानौकाका परित्यागकरिदेवे है॥ तैसे यहअधिकारीपुरुषभी जभी ताजीवन्मुक्तिरूपफलकूंप्राप्तहोवेहै ॥ तभी तिनकेशुरूपसर्वउपायोंका परित्यागकरिदेवे है॥हेशिष्य ॥ इसप्रकार अमृतनादनामाउपनिषद्विषे जोयोगसाधनकानिरूपणकऱ्या है ॥ सोहमनैं तुमारेप्रति कथनकऱ्या अब हंसउपनिषद्विषे जिसप्रकार तायोगसाधनका निरूपणकऱ्याहै॥सो हम तुमारेप्रति कथनकरतेहैं ॥ तिसकूं तूं सावधानहोइकैश्रवणकर अब तायोगाभ्यासकीसिद्धिवासतै प्रथम षट्चक्रोंकानिरूपणकरै हैं॥हेशिष्य॥ याशरीरविषे पायुस्थानतैं लेके भ्रूकेमध्यस्थानपर्यंत आधारचक्र १ स्वाधिष्ठानचक्र २ मणिपूरकचक्र ३ अनाहतचक्र ४ विशुद्धचक्र ५ आज्ञाचक्र ६ यहषट्चक्ररहे हैं ॥ अब आधारचक्रकानिरूपणकरैं हैं ॥ हेशिष्य ॥ पायुस्थानतैंदोअंगुलऊपर आधारचक्ररहेहै ॥ जिसआधारचक्रकूं पूर्वगर्भउपनिषद्केअर्थनिरूपणविषे याशरीरका मध्यदेशरूपकरिकैवर्णनकऱ्याथा ॥ कैसा है सोआधारचक्र चारिदलवाला है तथा लाक्षारसकेसमानवर्णवालाहै ॥ और तिनचारिदलोंविषे प्रदक्षिणाक्रमकरिकैस्थितजे 'वं शं षं सं' यहचारिअक्षरहैं ॥ तिनचारिअक्षरोंकरिकै शोभायमानहै ॥ तथा कुंडलिनीरूपसर्पिणीकेपुच्छकरिकैयुक्तहै॥तथा मूपकहैवाहनजिसका ऐसाजोगणपतिदेवताहै तागणपतिदेवताकरिकैयुक्तहै ॥ १ ॥ अब स्वाधिष्ठानचक्रकानिरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ ताआधारचक्रतैंऊपर उपस्थकेमूलदेशविषे स्वाधिष्ठानचक्र करहेहै केसाहैसोस्वाधिष्ठानचक्र ॥ षट्दलवालाहै ॥ तथा सुवर्णकीन्याईंपीतवर्णवालाहै ॥ तथा अत्यंततेजस्वी है ॥ और तिनषट्दलोंविषे प्रदक्षिणाक्रमकरिकैस्थितजे यं रं लं वं भं मं यहषट्अक्षरहैं ॥ तिनषट्अक्षरोंकरिकै शोभायमानहै ॥ तथा प्रजापतिदेवताकरिकैयुक्तहै ॥ २ ॥ अब मणिपूरकचक्रका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ तास्वाधिष्ठानचक्रतैंऊपर नाभिस्थानविषे मणिपूरकचक्ररहेहै ॥ केसाहैसोमणिपूरकचक्र ॥ दशदलोंवालाहै ॥ तथाइंद्रनीलमणिकेसमान वर्णवालाहै ॥ तथा सूर्यचन्द्रमाकेतेजसमान जाकातेजहै ॥ और तिनदशदलोंविषे प्रदक्षिणाक्रमकरिकैस्थितजो डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं यहदशअक्षरहैं।तिनदशअक्षरोंकरिकै शोभायमानहै॥ तथा विष्णुदेवताकरिकैयुक्तहै॥३॥अब अनाहतचक्रका निरूपणकरैहैं॥हेशिष्य॥ तामणिपूरकचक्रतैंऊपर हृदयदेशविषे अनाहतचक्ररहेहै॥कैसाहैसोअ

नाहतचक्र॥गोकेक्षीरसमान श्वेतवर्णवालाहै॥तथा द्वादशदलोंवालाहै॥तथा मननेत्रोंकूं आनंदकीप्राप्तिकरणेहाराहै॥और तिनद्वादशदलोंविषे प्रदक्षिणाक्रमकरिकैस्थितजे कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं यहद्वादशअक्षरहैं ॥ तिनद्वादशअक्षरोंकरिकै शोभायमानहै ॥ तथा रुद्रदेवताकरिकैयुक्तहै ॥ ४ ॥ अब विशुद्धचक्रका निरूपणकरैं हैं ॥ हेशिष्य ॥ ताअनाहतचक्रतैंऊपर कंठदेशविषे विशुद्धचक्ररहे है ॥ कैसाहैसोविशुद्धचक्र॥विचित्रवर्णवाला है॥तथा षोडशदलोंवाला है॥ और तिनषोडशदलोंविषे प्रदक्षिणाक्रमकरिकैस्थितजे अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः यहषोडशस्वरहैं॥तिनषोडशस्वरोंकरिकै शोभायमानहै॥तथा जीवात्माकेरहणेकास्थानहै॥५॥ अब आज्ञाचक्रका निरूपणकरैं हैं ॥ हेशिष्य ॥ ताविशुद्धचक्रतैंऊपर दोनोंभ्रूकेमध्यविषे आज्ञाचक्ररहे है॥कैसाहैसोआज्ञाचक्र॥ यत्किंचितरक्तवर्णवाला है ॥ तथा दोदलोंवाला है॥ और सूर्यचंद्रमाकेसमानजे हं क्षं यहदोअक्षरहैं॥तेदोनोंअक्षर जिसकेदोनोंदलोंविषेस्थित हैं ॥ तथापरमात्मादेवकेरहणेकास्थानहै ॥ ६ ॥ हेशिष्य याशरीरविषे मस्तकविषे एकसहस्रदलोंवाला पदमरहे है ॥ कैसाहैसोपदम अमृतकीवर्षाकरणेहाराजोचंद्रमाहै ॥ सो चंद्रमा जापदमकेगर्भविषेरहे है ॥ तथातापदमकीकर्णिका दशमद्वारकूंप्राप्तभई हैं ॥ तथा तापदमकेअमृतकरिकैकरीहुईनृप्ति तिनषट्चक्रोंविषेरहे है ॥ तथा यजीवात्मा तापदमकाहंसहै ॥ अब ताजीवात्माविषे हंसरूप ताका निरूपणकरै हैं ॥ हेशिष्य ॥ यालोकविषे जोपक्षी जिसप्रकारकेशब्दकूंउच्चारणकरै है॥ तिसपक्षीका तिसशब्दकेअनुसारही नाम होवे है ॥ जैसे काका याप्रकारकेशब्दकूंउच्चारणकरणेहाराजोपक्षी है ॥ तापक्षीकूं काक यानामकरिकैकथनकरै हैं ॥ तैसे यहजीवात्माभी हृदयकालविषे तथाआधारचक्रादिकोंविषे प्राणसहित स्थितहोइकै रात्रिदिनविषे एकविंशतिसहस्र षट्शत २१६०० श्वासप्रश्वासोंकरिकै हंसःयामंत्रकाउच्चारणकरै है ॥ तहां हकारकरिकैतौ यहप्राणवायु मुखनासिकाद्वारा याशरीरतैं बाहरजावे है ॥ और सकारकरिकै यहप्राणवायु तिसीमुखनासिकाद्वारा पुनः ताशरीरविषे प्रवेशकरैहै॥याप्रकार प्राणोंकेश्वासप्रश्वासकरिकै यहजीवात्मा सर्वदा हंसमंत्रकाउच्चारणकरै है ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती याजीवात्माकूं हंस यानामकरिकै कथनकरै है ॥ अब घ्या

नकरेवासतै ताजीवरूपहंसकूं पक्षीरूपकरिकैवर्णनकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ यालोकविषे पक्षीविशेषकूं हंसकहे हैं॥ यातैं याजीवात्माविषे ताहं
त्रशब्दकूंअर्थवालाकरणेवासतैं ते वेदवेत्तापुरुष याजीवात्माकूं पक्षीरूपकरिकै वर्णनकरे हैं ॥ तहां भोक्तारूपअग्नि तथा भोग्यरूपसोम
यहदोनों ताजीवरूपहंसके दोनोंपक्षहैं ॥और ओंकाररूपप्रणवमंत्र ताजीवरूपहंसका शिरहै॥और मूलशक्तिका जोक्रियाशक्तिवाला परि
णामविशेष है ॥ सोपरिणामरूपबिंदु ताजीवरूपहंसका हृदयहै ॥ और जैसे महादेवकामुख सूर्य अग्नि सोम रूपतीननेत्रोंवाला है॥ तैसे
ताजीवरूपहंसकामुखभी सूर्य अग्नि सोम यातीननेत्रोंवालाहै ॥ और ताजीवरूपहंसका एकचरणतौ रुद्ररूपहै॥और दूसराचरण रुद्राणी
रूपहै ॥ और यहत्वंपदकाअर्थ जीवरूपहंसही तत्पदार्थपरब्रह्मरूपहै॥ तहां निरुपाधिकदृष्टिकरिकैतौ सोजीवरूपहंस निर्गुणब्रह्मरूपहै ॥
और सोपाधिकदृष्टिकरिकै सगुणब्रह्मरूपहै ॥ और सोसगुणब्रह्मभी वाम भागविषेतौ अग्निरूप है ॥ और दक्षिणभागविषे सोमरूपहै
पुनःकैसाहैसोजीवरूपहंस ॥ कोटिसूर्यकेसमान तेजवालाहै ॥ तथा नखतैंलैके शिखापर्यंत यासर्वशरीरविषेव्याप्यकरिकैरहे है॥हेशिष्य॥
यहजीवरूपहंस यद्यपि सर्वशरीरविषेरहे है ॥ तथापि हृदयकमलविषे विशेषकरिकैरहे है॥ ताहृदयकमलविषेभी अष्टदलोंकेभेदतैं ताजी
वरूपहंसकी अष्टप्रकारकीस्थितिहोवै है॥ताअष्टप्रकारकीस्थितिकेप्रभावतैंही जाग्रतस्वप्नविषे पुण्यबुद्धिआदिककार्योंकीउत्पत्तिहोवै है॥
अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकैनिरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ पूर्वादिकअष्टदिशावोंकीतरफ ताहृदयकमलके तथाक्रमतैं अष्टदलरहैं॥तहां
मनकरिकैयुक्त यहजीवरूपहंस जभी ताहृदयकमलके पूर्वदिशाकेदलऊपरस्थितहोवै है ॥ तभी याजीवोंकूं पुण्यकर्मकरणेकीबुद्धिहोवै
है ॥ और सोजीवरूपहंस जभीताहृदयकमलके अग्निकोणकेदलऊपरस्थितहोवै है॥तभी याजीवोंविषे निद्राआलस्यादिकविकार उत्पन्न
होवै हैं और सोजीवरूपहंस जभी ताहृदयकमलके दक्षिणदिशाकेदलऊपरस्थितहोवै है ॥ तभी याजीवोंविषे क्रोधादिकविकार उत्पन्न
होवै है॥ और सोजीवरूपहंस जभी ताहृदयकमलके नैर्ऋतकोणकेदलऊपरस्थितहोवै है॥ तभी याजीवोंविषे पापकर्मकरणेकीबुद्धि उत्प
न्नहोवै है॥और सोजीवरूपहंस जभी ताहृदयकमलके पश्चिमदिशाकेदलऊपरस्थितहोवै है॥ *तभी याजीवोंकूं नानाप्रकारकेव्यवहारकरणे*

*विषे प्रीतिउत्पन्नहोवैहै॥*और सोजीवरूपहंस जभी ताहृदयकमलकेवायुकोणकेदलऊपरस्थितहोवैहै॥ तभी याजीवोंकूं किसीदेशविषेगम
नकरणेकीप्रीति उत्पन्नहोवैहै ॥ और सोजीवरूपहंस जभी ताहृदयकमलके उत्तरदिशाकेदलऊपरस्थितहोवैहै ॥ तभी याजीवोंकूं स्त्रीके
संभोगविषेप्रीति उत्पन्नहोवैहै ॥ और सोजीवरूपहंस जभी ताहृदयकमलके ईशानकोणकेदलऊपरस्थित होवै है ॥ तभी याजी
वोंकी दानविषेप्रीति उत्पन्नहोवैहै ॥ और सोजीवरूपहंस जभी ताअष्टदलोंकेमध्यदेशविषेस्थितहोवैहै ॥ तभी जैसे लोकप्रसिद्धहंसपक्षी
मिलेहुएक्षीरनीरका विभागकरैहै ॥ तैसे यहजीवभी सत्यअसत्यवस्तुकाविचारकरिकै सर्वविषयसुखोंतैं वैराग्यकूंप्राप्तहोवै है ॥ और सोजी
वरूपहंस जभी ताहृदयकमलके केसरविषेस्थितहोवैहै ॥ तभी याजीवोंकूं जाग्रतअवस्थाकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और सोजीवरूपहंस जभी
ताहृदयकमलके कर्णिकाविषेस्थितहोवैहै ॥ तभी याजीवोंकूं स्वप्नअवस्थाकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और ताहृदयकमलकर्णिकाकेमध्यविषेस्थित
जोरक्तवर्णवाला रुधिरकापिंडविशेषहै ॥ ताकेविषे जभी सोजीवरूपहंस स्थितहोवैहै ॥ तभी याजीवोंकूं सुषुप्तिअवस्थाकीप्राप्तिहोवैहै ॥
और सोजीवरूपहंस जभी मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकीपूर्णदृष्टिकरिकै तापरिच्छिन्नहृदयकमलकेअभिमानकापरित्यागकरै है ॥ तभी
जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति यातीनअवस्थावोंकीअपेक्षाकरिकै जाकोईतुरीअवस्थाहै ॥ ताकूंप्राप्तहोवै है ॥अब तुरीयातीतनामा पंचमअवस्था
केनिरूपणकरणेवासतै प्रथम तातुरीअवस्थाविषे जाग्रतादिकतीनअवस्थावोंतैं श्रेष्ठताकानिरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ जाग्रतादिकती
नअवस्थावोंकीअपेक्षाकरिकै जातुरीयअवस्थाकथनकरीहै ॥ तातुरीयअवस्थाविषे आत्मारूपज्ञेयवस्तु ज्ञातारूपयोगीपुरुषतैं भिन्नहोइ
कैप्रतीतहोवैहै ॥ काहेतैं सोयोगीपुरुष तायोगाभ्यासकेबलतैं संप्रज्ञातसमाधिकूं तथाअसंप्रज्ञातसमाधिकूं प्राप्तहोवै है॥तहां जासमाधिवि
षे ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय तथा ध्याता ध्यान ध्येय याप्रकारकीत्रिपुटी प्रतीतहोवैहै ॥ तासमाधिकानाम संप्रज्ञातसमाधिहै ॥ और जासमाधि
विषे सात्रिपुटीनहींप्रतीतहोवैहै ॥ तासमाधिकानाम असंप्रज्ञातसमाधिहै॥ तहां जिसकालविषे तायोगीपुरुषकूं त्रिपुटीकेभानपूर्वक ब्रह्मा
कारवृत्तिहोवै है ॥ तिसकालविषे सोयोगीपुरुष तुरीयअवस्थावाला कह्याजावै है ॥ और जिसकालविषे सात्रिपुटी अद्वितीयब्रह्मरूप

नादविषे लयभावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तिसकालविषे सोयोगीपुरुष तुरीयातीतअवस्थावाला कह्याजावैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ ॐकाररूपप्रणवविषे अकार उकार मकार बिंदु नाद यहपंचअवयवहोवै हैं ॥ तहां अकार उकार मकार यहतीनअवयवतौ यथाक्रमतैं विश्व तैजस प्राज्ञ यातीनोंकेवाचकहोवै हैं ॥ और अर्द्धमात्रारूपजोबिंदुनादहै॥तेबिंदुनाद दोनों ब्रह्मकेवाचकहोवै हैं॥तिनदोनोंविषेभी बिंदुतौ सविशेषब्रह्मकावाचकहोवै है॥और नाद निर्विशेषब्रह्मकावाचकहोवै है ॥हेशिष्य॥ ऐसी तुरीयातीतअवस्था अनेकविरक्तपुरुषोंविषेभी किसीएकविरक्तपुरुषकूंही प्राप्तहोवैहै॥ सर्वकूंप्राप्तहोवैनहीं॥यातैं सातुरीयातीतअवस्था अत्यंतदुर्लभहै॥ यहवार्त्ता गीताविषेभीभगवान्नैंकथनकरीहै॥ तहां श्लोक॥मनुष्याणांसहस्रेषु कश्चिद्यतातिसिद्धये॥यततामपिसिद्धानां कश्चिन्मांवेत्तितत्वतः ॥ अर्थ यह ॥ अनेकसहस्रमनुष्योंविषे कोईएकमनुष्यही मेरीप्राप्तिवासतैं यत्नकरैहै ॥ और तिनयत्नकरणेहारेमनुष्योंविषेभी कोईएकमनुष्ययहीमैंअद्वितीयब्रह्मकूं वास्तवस्वरूपतैं जाणैहै ॥१॥अब तातुरीयातीतभावकीप्राप्तिवासतैं तायोगरूपउपायकानिरूपणकरैहैं।हेशिष्य।सोयोगीपुरुषपूर्वउक्तरीतिसे याशरीरविषे तिनषट् चक्रोंसहित ताजीवरूपहंसकेस्वरूपकूंजाणिकै प्रथम आपणेस्वरूपकाचिंतनकरै॥तिसतैं अनंतर ताअद्वितीयब्रह्मरूपनादका चिंतनकरै ॥ तहां आधारचक्रतैंलैके दशमद्वारपर्यंत व्यापकरूपकरिकै तथाअत्यंतश्वेतरूपकरिकै ताअद्वितीयब्रह्मका चिंतनकरै ॥ इसप्रकार ताअद्वितीयब्रह्मविषे मनकूंएकाग्रकरिकै सोयोगीपुरुष आपणे वायु उपस्थ यादोनोंद्वारोंकूं संकोचकरै ॥ तिसतैंअनंतर सोयोगीपुरुष आपणेपादकेअंगुष्ठकेअग्रभागतैंलैके प्राणवायुकूंऊपरआकर्षणकरिकै प्रथम आधारचक्रविषे स्थापनकरै ॥ ताआधारचक्रतैंअनंतर सोयोगीपुरुष ताप्राणवायुकूं शनैःशनैःकरिकै स्वाधिष्ठानचक्रविषे स्थापनकरै ॥ तिसस्वाधिष्ठानचक्रकेचारोंओरतैं ताप्राणवायुकूं तीन प्रदक्षिणाकरावै॥तास्वाधिष्ठानचक्रतैंअनंतर सोयोगीपुरुष ताप्राणवायुकूं मणिपूरकचक्रविषे स्थापनकरै॥तामणिपूरकचक्रतैंअनंतर सोयोगीपुरुष ताप्राणवायुकूं अनाहतचक्रविषे स्थापनकरै ॥ तिनअनाहतचक्रतैंअनंतर सोयोगीपुरुष ताप्राणवायुकूं विशुद्धचक्रविषे स्थापनकरै ॥ ताविशुद्धचक्रतैंअनंतर सोयोगीपुरुष ताप्राणवायुकूं आज्ञाचक्रविषे स्थापनकरै ॥ *ताआज्ञाचक्रतैंअनंतर सोयोगीपुरुष ता*

प्राणवायुकूं दशमद्वारविषेस्थापनकरै ॥ हेशिष्य॥ इसप्रकारसोयोगीपुरुष जभी योगाभ्यासकेबलतैं ताप्राणवायुकूंऊपरलेजावै हैं॥ तथा जीवरूपहंसकूंध्यातारूपकरिकै चिंतनकरैहै ॥ तथाब्रह्मरूपनादकूं ध्येयरूपकरिकैचिंतनकरैहैं ॥ तथाऋषि छंददेवता आदिकोंकरिकै युक्त जोहंसमंत्रहै ताहंसमंत्रका एककोटिसंख्यापरिमाण जपकरैहै ॥ तभी तायोगीपुरुषके शरीरकेअंतर योगफलकीसिद्धिविषे विश्वास करावणेहारे चिणिनाद १ चिणिचिणिनाद २ घंटानाद ३ शंखनाद ४ तंत्रीनाद ५ तालनाद ६ वेणुनाद ७ भेरीनाद ८ मृदंगनाद ९ मेघनाद १० यहदशप्रकारके नाद उत्पन्नहोवै हैं हेशिष्य ॥ तिनदशप्रकारकेनादोंविषेभी जोदशमामेघनादहै ॥ सोमेघनाद वारंवार अभ्यासकऱ्याहुआ तिनयोगीपुरुषोंकूं वैराग्यज्ञानादिकोंकीप्राप्तिकरै है याकारणतैं यहयोगीपुरुष तिननवनादोंका परित्यागकरिकै तामेघनादकाही निरंतर अभ्यासकरै ॥ तामेघनादकेअभ्यासकरिकै तिन योगीपुरुषोंका मन लयभावकूं प्राप्तहोवै है ॥ और तामनकेलयहुएतैंअनंतर पुण्य पाप संकल्प विकल्प इसतैंआदिलैके जितनैंकीमनकेधर्महैं तेसंपूर्णधर्म लयभावकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ तहां यहवस्तु हमारेकूंप्राप्तहोवै याप्रकारकीअभिलाषाकानाम ॥ संकल्पहै ॥ और संशयकानाम विकल्पहै ॥ हेशिष्य ॥ तेसंकल्पविकल्पादिकविक्षेपही आत्माकीअप्रतीतिविषेकारणथे ॥ तेसंकल्पविकल्पादिकविक्षेप जभी लयभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तभीयह आनंदस्वरूपआत्मा आपणेस्वप्रकाश चैतन्यरूपकरिकै सर्वदा तिनयोगीपुरुषोंकूं प्रत्यक्षहोवैहै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार हंसउपनिषदविषे योगकानिरूपणकऱ्याहै ॥ सोहमनैं तुमारेप्रतिकथनकऱ्या ॥ अब क्षुरिकाउपनिषदविषे जिसप्रकार तायोगकानिरूपणकऱ्या है ॥ सोहम तुमारेप्रति कथनकरतैहैं ॥ तूं सावधानहोइकैश्रवणकर ॥ तहां क्षुरिकानाम शस्त्रकाहै ॥ ताक्षुरिकाशस्त्रकीन्याईं संसाररूपबंधकूंछेदनकरणेहारीजाधारणाहै ॥ ताधारणाकूंकथनकरणेहारी यहउपनिषद्है ॥ यातैं याउपनिषदकूं वेदवेत्तापुरुष क्षुरिका यानाम करिकैकथनकरै हैं ॥ हेशिष्य ॥ यहयोगीपुरुषप्रथम अहिंसादिकपंचनियमोंकूंकरै ॥ तिसतैंअनंतर शौचादिकपंचनियमोंकूंकरै ॥ तिसतैं अनंतर शब्दादिकविक्षेपतैंरहित किसीएकांतदेशविषे प्रथमदर्भोंकूंबिछावै॥तिनदर्भोंऊपरमृगचर्मबिछावै॥ तामृगचर्मऊपर वस्त्रबिछावै॥

ऐसेआसनऊपर पद्मादिकआसनोंकूंबांधिकै सोयोगीपुरुष स्थितहोवै ॥ और जैसे कूर्मजंतु आपणेहस्तपादादिअंगोंका संकोचकरै है ॥ तैसे सोयोगीपुरुषमनसहितनेत्रादिकइंद्रियोंकूं आपणेआपणेविषयोंतैंनिवृत्तकरिकै हृदयकमलविषेएकाग्रकरै ॥ याकानाम प्रत्याहार है ॥ और तिसतैंअनंतरसोयोगीपुरुष द्वादशमात्रायुक्तप्रणवमंत्रकरिकै शनैःशनैःबाह्यवायुकरिकै आपणेशरीरकूंपूर्णकरै ॥ याकानाम पूरकहै ॥ और तिसतैंअनंतरसोयोगीपुरुष मुखनासिकादिकसर्वद्वारोंका निरोधकरिकै तथा हृदय मुख कटी ग्रीवा इत्यादिकसर्वअंगोंकूंसूधारा स्थिकै तिनअंगोंविषेभी हृदयकूं किंचित्ऊँचाराखिकै तालहृदयविषे ताप्राणवायुकूं धारणकरै ॥ याकानाम कुंभकहै ॥ तिसतैंअनंतर सोयोगीपुरुष ताप्राणवायुकूं नासिकादिकद्वारोंकरिकै शरीरतैंबाहरनिकासे ॥ याकानाम रेचक है ॥ इहां कुंभक दोप्रकारकाहोवै है ॥ एकतौ पूरकादिसापेक्षकुंभकहोवै हैं॥और दूसरापूरकादिनिरपेक्ष कुंभकहोवैहै॥ तहांपूरकादिसोपक्ष कुंभककापूर्व निरूपणकऱ्या॥ अब पूरकादिनिरपेक्षकुंभककेनिरूपणकरणेवास्तै प्रथमयाशरीरकेविशेषअंगोंविषे ताप्राणवायुकेनिरोधका निरूपणकरैहैं॥जिसनिरोधकूंयोगी याज्ञवल्क्यादिकोंनैं धारणा प्रत्याहार यानामकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ हेशिष्य ॥ यहयोगीपुरुष तिनपूरकादिकोंतैं विनाही ध्यानकेबलतैं ताप्राणवायुकूं प्रथमपादकेअंगुष्टविषेस्थिरकरिकै प्रणवमंत्ररूपमात्राओंका जपकरताहुआ याप्रकारकीधारणाओंकूंकरै॥ तहां वामदक्षिण पादकेदोगुल्फोंविषेजभी यहयोगीपुरुष ताप्राणवायुकास्थापनकरै ॥ तभी दोदोमात्राओंकाजपकरै ॥ और दोनोंजंघोंविषे ताप्राणवायुके स्थापनकरणेविषे तीनतीनमात्राओंकाजपकरै॥और दोनोंजानुविषे तथादोनोंऊरुविषे ताप्राणवायुकेस्थापनकरणेविषे दोदोमात्राओंका जपकरैऔरगुदा लिंग यादोनोंविषे ताप्राणवायुकेस्थापनकरणेविषेतीनतीनमात्राओंकाजपकरै ॥ और गुदा लिंग यादोनोंकेमध्यविषे ताप्राणवायुकेरहणेकास्थानरूप एककंद रहेहै ॥ कैसाहैसोकंद ॥ नाभिदेशकेसाथ जाकंदकासंबंधहै ॥ और सर्वमनुष्योंकेपृष्ठदेशविषे स्थितजोदीर्घअस्थिहै ॥ जादीर्घअस्थिरूपमार्गद्वारा सुषुम्नानाडी दशमद्वारकूंप्राप्तहोवै है ॥ तादीर्घअस्थिके समीपस्थितहै ॥ ऐसेकंद विषे सोयोगीपुरुष प्राणवायुरूपकरिकैप्राप्तहोवै है ॥ और ताकंदविषे पूर्वउक्तदशनाडियोंकरिकै वेष्टितहुई एकसुषुम्नानाडीरहे है ॥ और

ताकंदविषे पीतवर्णवाली तथारक्तवर्णवाली तथाकृष्णवर्णवाली तथाताम्रवर्णवाली तथालोहितवर्णवालीअत्यंतसूक्ष्म तथाअत्यंत लघुऐसीअनेकनाडियांरहे हैं॥ तिनसर्वनाडियोंकापरित्यागकरिकै सोयोगीपुरुष ताशुक्लवर्णवालीएकसुषुम्नानाडीकूंही आश्रयणकरै॥ औरजैसेऊर्णनाभिजंतु सर्वतंतुओंकेजालविषे जोतंतु आपणेकूंप्रियहोवैहै ता तंतुविषेही विचरेहै ॥ दूसरेअप्रियतंतुओंका परित्यागकरै है॥ तैसे तानाडीकंदविषेस्थितहुआ सोयोगीपुरुष दूसरेसर्वनाडियोंकापरित्यागकरिकै तासुषुम्नानाडीविषेही आपणेप्राणवायुका प्रवेशकरावै ॥ तिसनाडीकंदतैंअनंतर सोयोगीपुरुष हृदयकमलविषे प्राप्तहोवै है॥कैसाहैसोहृदयकमल रक्तपुष्पके समानवर्णवालाहै॥तथाजिसहृदयकमलकूं वेदांतशास्त्रविषे दहरपुंडरीक यानामकरिकैकथनकरै हैं ॥ तालहृदयकमलतैंअनंतर सो योगीपुरुष कंठविषेस्थित विशुद्धचक्रकूंप्राप्त होवै॥और ताशुद्धचक्रतैंअनंतर सोयोगीपुरुष आज्ञाचक्रकूंप्राप्तहोवै॥तिसआज्ञाचक्रतैंअनंतरसोयोगीपुरुष मूर्द्धविषेस्थित सहस्रदलवाले पद्मकूंप्राप्तहोवै है ॥ तामूर्द्धस्थानविषेस्थितहोइकै सोयोगीपुरुष आधारचक्रतैंलेके तासहस्रदलवालेपद्मपर्यंत तासुषुम्नानाडीका निरंतर ध्यानकरैहै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार तिनषट्चक्रोंकाभेदनकरिकै सोयोगीपुरुष मनरूपखड्गकरिकै देहाभिमानीपुरुषोंकूं बंधनकीप्राप्तिक रणेहारे जेमर्म हैं तिनोंकूंछेदनकरै ॥ कैसाहैसोमनरूपखड्ग ॥ प्राणरूपलोहमयहैशरीरजिसका ॥ तथा सगुणनिर्गुणब्रह्मकूंकथनकरणे हारीजात्रह्मविद्याहै ॥ तात्रह्मविद्यारूपशाणकेघर्षणकरिकै जोमन निर्मलभावकूंप्राप्तभयाहै ॥ ऐसेमनरूपखड्गकरिकै सोयोगीपुरुष तिनमर्मोंकाछेदनकरै॥अबयाहीअर्थकूं स्पष्टकरिकैनिरूपणकरै हैं॥ हेशिष्य॥सोनिर्मलमनहैतीक्ष्णधाराजिसकी ऐसाजो यहवशकऱ्याहुआप्राण वायुरूपखड्ग है ॥ ताप्राणवायुरूपखड्गकरिकै यहयोगीपुरुष आपणेपादतलकेऊपरस्थित अंगुष्टगुल्फादिकमर्मोंकूंछेदनकरै ॥ और योगसाधनतैंरहितपुरुषोंकरिकै इंद्रकेवज्रकीन्याईं दुर्भेद्य जेजंघोंविषेस्थितमर्म हैं ॥ तिनममोंकूं यहयोगीपुरुष ध्यानरूपबलयुक्त तामनरूपखड्गकरिकै छेदनकरै ॥ और ऊरुस्थानविषेस्थितजेमर्म हैं ॥ जिनममोंकेभेदनहुए याजीवोंकूंमृत्युकीप्राप्तिहोवै है ॥ तिनममोंकूंभी यहयोगीपुरुष प्रातःकाल मध्याह्नकाल सायंकाल रात्रिकाल याचारकालविषेकऱ्याजोअभ्यास ताअभ्यासवालेयोगतैं छेदनकरै

इसप्रकार गुदा शिश्न कंद नाभि हृदयकमल कंठ इत्यादिकस्थानोंविषेस्थित जितनेंकीमर्म हैं ॥ तिनसर्वममोंकूं यहयोगीपुरुष तायोग केवलतैंछेदनकरै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार तिनममोंकूंछेदनकरिकै सोयोगीपुरुष नाडियोंकूंभीछेदनकरै ॥ तहां याशरीरविषे एकशत एक नाडी १०१ प्रधानरहेहैं तिनप्रधाननाडियोंविषेभी एकएकनाडीकीशाखारूप बहत्तरबहत्तरसहस्र ७२००० नाडियांरहेहैं ॥ तिन सर्वना डियोंविषे एकसुषुम्नानाडीही प्रधानहै ॥ जासुषुम्नानाडी दशमद्वारविषेप्राप्तभई है॥ तासुषुम्नानाडीविषे आपणेप्राणोंकाप्रवेशकराइकै यह योगीपुरुष दूसरीसर्वनाडियोंकाछेदनकरै ॥ मैं इनममोंविषे तथानाडियोंविषे स्थितनहींहूं याप्रकारकाजोबाधनिश्चयहै सोइही तिनमर्मना डियोंकाछेदनहै ॥ हेशिष्य इसप्रकार जोयोगीपुरुष तायोगाभ्यासकेबलतैं तिनमर्मस्थानोंकूं तथासुषुम्नातैंभिन्ननाडियोंकूं छेदनकरिकै आपणेप्राणवायुकूं तासुषुम्नानाडीविषे प्रवेशकरावै है ॥ सोयोगीपुरुष इसजन्मविषे अथवा दूसरेजन्मविषे वैराग्यकूंप्राप्तहोइकै आत्म ज्ञानद्वारा मोक्षकूंप्राप्तहोवै है ॥ यातैं ज्ञानरूपअग्निकरिकैप्रकाशमान जोशुद्धमनरूपखड्गहै ॥ तामनरूपखड्गकरिकै यहयोगीपुरुष तिनसर्वनाडीरूपबंधनकाछेदनकरै ॥ हेशिष्य॥इसप्रकार योगाभ्यासकेबलतैं जिसयोगीपुरुषकाचित्त वैराग्यकूंप्राप्तभयाहै॥तथा जोयोगी पुरुष सर्वदा एकांतदेशविषे निवासकरै है ॥ तथाजोयोगी पुरुष सर्वसंगतैंरहितहै॥ तथा जोयोगीपुरुष तायोगकेसर्व अंगोंकूंजानणेहाराहै ऐसा योगीपुरुष पूर्वउक्तसाधनोंकीभी अपेक्षानहींकरताहुआ शनैःशनैःकरिकै मोक्षकूंप्राप्तहोवै है ॥ जैसे यालोकविषे पाशोंकरिकैबां ध्याहुआ कोईहंसपक्षी तिनपाशोंकूंछेदनकरिकै निःशंकहोइकै आकाशविषेउडेहै ॥ ताआकाशकेउडणेविषे ता हंसकूं दूसरेकिसीसाधन की अपेक्षाहोवैनहीं ॥ तैसे सोयोगीपुरुषभी तिननाडीरूपपाशोंकाछेदनकरिकै ब्रह्मलोकविषेजाइकै मोक्षकूंप्राप्तहोवै है ॥ अथवा जैसे अग्निआदिकविशेषतेज काष्ठादिकइंधनोंकूंदग्धकरिकै आपणेसामान्यतेजभावकूंप्राप्तहोवै है॥ तैसेसोयोगीपुरुषभी तायोगाभ्यासकेबलतैं सर्वकर्मोंकूंदग्धकरिकै इसीशरीरविषे ब्रह्मभावरूपमोक्षकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ प्राणायामकरिकैसूक्ष्मकऱ्याहुआ तथा प्रणवरूप मात्राहैंआधाराजिसका तथावैराग्यरूपशाणकरिकैघर्षणकऱ्याहुआ ऐसाजोमनरूपखड्गहै ॥ तामनरूपखड्गकरिकै यहयोगीपुरुष

तिननाडीरूपबंधनोंकाछेदनकरिकै मोक्षकूंप्राप्तहोवै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार ताक्षुरिकाउपनिषदविषे योगकानिरूपणकऱ्याहै ॥ सोसंपूर्ण हमनैं तुमारेप्रतिकथनकऱ्या ॥ इतनैंग्रंथकरिकै परवैराग्यकीप्राप्तिकरणेहारेयोगका निरूपणकऱ्या अब तापरमहंससंन्यासकेनिरूपणकर णेवास्तै प्रथम जाबालउपनिषद्केचतुर्थखंडविषेकथनकऱ्याजो तापरमहंससंन्यासकेग्रहणकरणेकाकाल तथातापरमहंससंन्यासकाअ धिकारी तिनदोनोंकानिरूपणकरै हैं॥तहांप्रथम कालकानिरूपणकरैहैं ॥हेशिष्य॥ यासर्वअधिकारीपुरुषोंकूं सर्वअवस्थाओंविषे तापरम हंससंन्यासकेग्रहणकरणेविषे यहवैराग्यही मुख्यकारणहै ॥ तावैराग्यतैंविना किसीभीअवस्थाविषे तापरमहंससंन्यासकाग्रहणहोवैनहीं ॥ याकारणतैं सोवैराग्यही तापरमहंससंन्यासकेग्रहणकरणेका काल है ॥ तहांश्रुति ॥ यदहरेवविरजेत्तदहरेवप्रव्रजेत् ॥ अर्थयह ॥ याअ धिकारीपुरुषकूं बाल्यअवस्थाविषे तथा युवाअवस्थाविषे तथावृद्धअवस्थाविषे जिसदिनविषे तथाजिसक्षणविषे तीव्रवैराग्यकीप्राप्तिहोवै ॥ सोअधिकारीपुरुष तिसीअवस्थाविषे तथातिसीदिनविषे तथातिसीक्षणविषे संपूर्णकर्मोंकापरित्यागकरिकै संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरै॥१॥ ता तीव्रवैराग्यतैंविना याअधिकारीपुरुषोंनैं बाल्यअवस्थाविषे तथायौवनअवस्थाविषे तथावृद्धअवस्थाविषे तापरमहंससंन्यासकेग्रहणकर णेका संकल्पमात्रभीनहींकरणा॥याकारणतैं वेदवेत्तापुरुषोंनैं तापरमहंससंन्यासकेग्रहणकरणेका वैराग्यहीकालकह्याहै॥ और तावैराग्यकी उत्पत्तिविषे पूर्व गर्भदुःखोंकाविचार तथामरणकालकाज्ञान तथायोगाभ्यास यहतीनकारण कथनकरिआये हैं ॥ और संपूर्णउपनिषदों विषे जा नानाप्रकारकीउपासना कथनकरी हैं॥तेउपासनाभी तावैराग्यकीउत्पत्तिविषेही कारणहैं॥शंका॥हेभगवन्॥ तेउपासना साक्षात् मुक्तिकेहीकारण किसवास्तैनहींहोवैं ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ तेउपासना विपरीतज्ञानरूपअध्यासकरिकैजन्यहोवैंहैं॥ यातैं तिनउपास नाओंविषे साक्षात्मुक्तिकीकारणतासंभवैनहीं॥जैसे नाम रूप क्रिया स्थान गुण यापांचोंतैंरहित जोअद्वितीयब्रह्महै॥ताअद्वितीयब्रह्मका उत् यहनामहै॥ तथा सुवर्णकीन्याईं रूपहै ॥ तथाऊर्ध्वलोकोंकापालन क्रियाहै॥तथा आदित्यमंडल स्थानहै॥तथा सर्वतैंश्रेष्ठपणा गुणहै॥ इसप्रकार तानिर्गुणब्रह्मविषे नामादिकोंकाआरोपणकरिकै सर्वत्र उपासनाहोवै है।यातैं तेसंपूर्णउपासना विपरीतज्ञानरूपअध्यासकरिकैजन्य

होवैहैं॥हेशिष्य॥तेउपासनाभी अनेकप्रकारकीहोवै हैं॥तहां उपनिषदोंविषे किसीस्थलविषेतौ साक्षात् ताब्रह्मकीहीउपासना कथनकरीहै॥ और किसीस्थलविषेतौ ताब्रह्मकेविभूतियोंकीउपासना कथनकरीहै॥तिनविभूतियोंविषेभी कोईक विभूतियांतौ कारणरूपहोवैहैं तथासम अ० ११
ष्टिरूपहोवै हैं तथाअधिदैवरूपहोवैहैं॥जैसे हिरण्यगर्भ विराट् आदित्य आदिकहैं॥और कोईक विभूतियांतौ कार्यरूपहोवै हैं तथाव्यष्टिरूप
होवै हैं तथाअध्यात्मरूपहोवै हैं॥जैसे मन प्राण वाकादिकहैं॥तिन कारणकार्यरूपविभूतियोंकीही ब्रह्मरूपकरिकैउपासना कथनकरी है॥
और किसीस्थलविषेतौ प्रणवादिकमंत्रोंका तथातिनमंत्रोंकेब्रह्मरूपअर्थकापररूपर तादात्म्यरूपकरिकै उपासनाकथनकरीहै।तेउपासनाभी
दोप्रकारकीहोवै हैं ॥ तहां एकउपासनाओंविषेतौ प्रणवादिकमंत्र प्रधानहोवै हैं॥और तिनमंत्रोंकाब्रह्मरूपअर्थ गौणहोवै है ॥ और दूसरी
उपासनाओंविषेतौ प्रणवादिकमंत्र गौणहोवैहैं ॥ और तिनमंत्रोंकाब्रह्मरूपअर्थ प्रधानहोवै है ॥ तहां अथर्वशिर योगशिखा पूर्वतापनीय
उत्तरतापनीय मांडूक्य आत्मबोध दोनोंनारायण अमृतनाद् अमृतबिंदु इत्यादिकउपनिषदोंविषेतौ प्रणवादिकमंत्रोंकी प्रधानरूपकरिकै
उपासना कथनकरी है ॥ और तिनोंकेअर्थकी गौणरूपकरिकै उपासना कथनकरी है॥और प्रश्न मुंडक बृहदारण्यक छांदोग्य कठवल्ली
इत्यादिकउपनिषदोंविषेतौ तिनप्रणवादिकमंत्रोंकेअर्थकी प्रधानरूपकरिकै उपासनाकथनकरी है ॥ और तिनप्रणवादिकमंत्रोंकी
गौणरूपकरिकै उपासनाकथनकरी है ॥ और रुद्राध्यायविषे तथामंडलब्राह्मणविषे तथापुरुषसूक्तविषेतौ स्तुति रहस्यनाम मंत्र
यातीनोंसहित ताब्रह्मकीउपासना कथनकरी हैं ॥ इसप्रकार जितनीकी चारवेदोंविषेउपनिषद् हैं ॥ तिनसर्वउपनिषदोंविषे याप्रकारकी
अनेकउपासना कथनकरी हैं ॥ तेसर्वउपासना वैराग्यकेहीकारण हैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ याअधिकारीपुरुषोंकेप्रति आपणाआत्मा
रूपकरिकै निर्गुणब्रह्मकेबोधकरावणेवासतै प्रवृत्तहुईयांजेसर्वउपनिषदहैं॥तिनउपनिषदोंविषेनानाप्रकारकीउपासनाओंकाकथनकरणा असं
गतहै ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ तेउपनिषद् यद्यपि निर्गुणब्रह्मकूंहीकथनकरै हैं॥तथापि सोनिर्गुणब्रह्म जिनपुरुषोंकेबुद्धिविषेनहींआवै है॥
तिनमंदबुद्धिपुरुषोंऊपर अनुग्रहकरकै तेउपनिषद् स्थूलअरुंधतीन्यायकूंअंगीकारकरिकैनानाप्रकारसैं ताब्रह्मकावर्णनकरिकै तिनमंदबुद्धि ॥ ४३ ॥

पुरुषोंकेचित्तविषे तानिर्गुणब्रह्मकाज्ञानकरावै हैं यातैं तिनउपनिषदोंविषे उपासनाओंकावर्णन असंगतनहीं है ॥शंका॥हेभगवन्॥सोब्रह्म
सर्वदा एकरसहै ॥ यातैं ताएकरसअद्वितीयब्रह्मका नानारूपकरिकैवर्णन संभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ सोअद्वितीयानिर्गुणब्रह्म
अधिष्ठानरूपकरिकै यासर्वजगत्काआत्मारूपहै॥ और जैसे रज्जुरूपअधिष्ठानका इदंअंश कल्पितसर्पादिकोंविषे अनुगतहोइकैप्रतीतहो
वै है ॥ तैसे सोअधिष्ठानरूपब्रह्मभी आपणेसत्यरूपकरिकै यासर्वजगत्विषे अनुगतहोइकैप्रतीतहोवै है॥ताकल्पितजगत्रूपउपाधिकेसं
बंधतैं तानिर्गुणब्रह्मकूंभी तेउपनिषद् नाम रूप क्रिया स्थान गुण यापंचरूपोंकारिकैविशिष्ट कथनकरै हैं॥ यातैं कल्पितउपाधियोंकेसंबं
धतैं ताअद्वितीयब्रह्मका नानारूपकरिकैवर्णन संभवहोइसकै है ॥ हेशिष्य ॥ नाम रूप क्रिया स्थान गुण यापांचोंकरिकैविशिष्ट जोसवि
शेषब्रह्महै ॥ तासविशेषब्रह्मकेबोधनकरणेविषे तिनउपनिषदोंकी जाप्रवृत्तिहोवैहै॥ साप्रवृत्ति दोप्रकारकीहोवै है॥तहां एकतौ तिननामरू
पादिकउपाधियोंके अनिषेधपूर्वक प्रवृत्तिहोवै है ॥ और दूसरी तिननामरूपादिकउपाधियोंके निषेधपूर्वक प्रवृत्तिहोवै है॥ तहां यहअधि
कारीपुरुष शुद्धअंतःकरणवालेहोइकै आपही तिननामरूपादिकउपाधियोंकापरित्यागकरिकै तानिर्गुणब्रह्मकूंजानैंगेयाप्रकारकेअभिप्राय
कूंमनविषेराखिकै जेउपनिषद् सविशेषब्रह्ममात्रकूंकथनकरिकै निर्विशेषब्रह्मकेकथनतैं उपरामताकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ तेउपनिषद् प्रथमप्रवृत्ति
करिकै तासविशेषब्रह्मकूंकथनकरै हैं॥ और यहअधिकारीपुरुष हमारेउपदेशतैंविना तानिर्विशेषब्रह्मकूं किसप्रकारजाणैंगे याप्रकारकेअभि
प्रायकूंमनविषेराखिकै तिनअधिकारीपुरुषोंऊपर अत्यंतकरुणाकरिकै जेउपनिषद् तिननामरूपादिकसर्वउपाधियोंकानिषेधकरिकैवांरवार
तानिर्विशेषब्रह्मकूंही कथनकरै हैं ॥ तेउपनिषद् तादूसरीप्रवृत्तिकरिकै ताब्रह्मकाकथनकरै हैं॥हेशिष्य॥तादूसरीप्रवृत्तिकूंअंगीकारकरिकै
निर्गुणब्रह्मकूंकथनकरणेहारी जेबृहदारण्यक आदिकउपनिषदूहैं ॥ तिनोंकाअर्थ हम तुमारेप्रति पूर्व कथनकरिआये हैं॥ और तिनबृहदा
रण्यकआदिकउपनिषदोंतैंभिन्न दूसरी जितनीकीउपनिषदू तानिर्विशेषब्रह्मकूंकथनकरै हैं॥तिनसर्वउपनिषदोंकाअर्थ आगे हम तुमारेप्रति
स्पष्टकरिकैकथनकरैंगे ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार नानाप्रकारकीउपासनाओंकरिकै जोअधिकारीपुरुष ताब्रह्मकाआराधनकरै है॥ सोअधि

कारीपुरुष थोडेहीकालविषे शुद्धअंतःकरणावालाहोइकै वैराग्यकूंप्राप्तहोवै है॥ यातैं जैसे गर्भदुःखोंकाविचार तथामरणकालकाज्ञान तथा अष्टांगयोग यहतीनों वैराग्यकेकारणहैं ॥ तैसे सापरमेश्वरकीउपासनाभी वैराग्यकाहीकारणहै ॥ शंका ॥हेभगवन् ॥ जिसअधिकारीपुरुषकूं तिनउपासनाओंकेकरणेविषे सामर्थ्यनहीं है ॥ सोअधिकारीपुरुष तावैराग्यकीप्राप्तिवासतै कौनउपायकरै॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ जिसअधिकारीपुरुषकूं तिनउपासनाओंकेकरणेविषेसामर्थ्यनहीं है ॥ सोअधिकारीपुरुष याप्रकारकाउपायकरे ॥ वेदोंकेकर्मकांडविषेकथनकऱ्येजे आपणेवर्णआश्रमकेकर्म हैं ॥ तिनकर्मोंकूं यहअधिकारीपुरुष श्रद्धाभक्तिपूर्वक निरंतरकरै ॥ परंतु तिनकर्मोंकेफलकीइच्छाकरै नहीं ॥ तानिष्कामकर्मोंकरिकैभी सोअधिकारीपुरुष बहुतकालकेपीछे अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा तावैराग्यकूंप्राप्तहोवैहै॥ यातैं तेनिष्कामकर्मभी वैराग्यकेहीकारणहैं ॥ और हेशिष्य॥ जोअधिकारीपुरुष तिननिष्कामकर्मोंकेकरणेविषेभी समर्थनहींहोवै ॥ सो अधिकारीपुरुष तावैराग्यकीप्राप्तिवासतै याप्रकारकाउपायकरै॥ तमेतंवेदानुवचनेनब्राह्मणाविविदिषंति यज्ञेनदानेनतपसाऽनाशकेन ॥ याश्रुतिनैं ब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिवासतै वेदोंकाअध्ययन यज्ञ दान तप अनशन यापांचधर्मोंकाविधानकऱ्या है ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै जोअधिकारीपुरुष तात्रह्मकेसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासतै तिनयज्ञदानादिककर्मोंकूंकरै है॥ सोअधिकारीपुरुषभी अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा तावैराग्यकूंहीप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं ब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिवासतै जेयज्ञदानादिककर्म हैं॥तेकर्मभी वैराग्यकेहीकारणहैं॥और हेशिष्य॥जोअधिकारीपुरुष तात्रह्मज्ञानकीप्राप्तिवासतै कर्मोंकेकरणेविषेभी समर्थनहींहोवै ॥ सोअधिकारीपुरुष तावैराग्यकीप्राप्तिवासतैं याप्रकारकाउपायकरै ॥ यत्करोषियदश्नासि यज्जुहोषिददासियत् ॥ यत्तपस्यसिकौंतेय तत्कुरुष्वमदर्पणम् ॥ याभगवत्गीताकेश्लोकविषे सर्वकर्मोंका परमेश्वरविषे अर्पण कथनकऱ्या है ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै जो अधिकारीपुरुष आपणे सर्वकर्मोंका परमेश्वरविषेअर्पणकरै है ॥ सो अधिकारीपुरुषभी अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा तावैराग्यकूंहीप्राप्तहोवै है ॥ यातैं ते परमेश्वरअर्पणकर्मभी वैराग्यकेहीकारण हैं ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार गर्भदुःखोंकाविचार १ तथामृत्युकालकाज्ञान २ तथाअष्टांगयोग ३ तथा उपासना ४ तथा निष्कामकर्म ५ तथा

ब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिअर्थकर्म ६ तथाईश्वरअर्पणकर्म ७ यासप्तप्रकारकेउपायोंकरिकैही याअधिकारीपुरुषोंकूं वैराग्यकीप्राप्तिहोवै है॥ तिनसप्तउपायोंविषे जिसउपायकेकरणेविषे याअधिकारीपुरुषकूं सामर्थ्यहोवै ॥ ताउपायकूंग्रहणकरिकै यहअधिकारीपुरुष तावैराग्यकूंउत्पन्नकरै ॥ तावैराग्यतैंअनंतर सोअधिकारीपुरुष तापरमहंससंन्यासकूंग्रहणकरै॥ यातैंयहअर्थासिद्धभया ॥ यामनुष्यलोकतैंलैके ब्रह्मलोकपर्यंत जितनैंकीविषयजन्यसुखहैं तथा स्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंतैंआदिलैके जितनेकी तिनविषयसुखोंकेसाधनहैं॥तिनसंपूर्णोंतैं जोवैराग्यहै॥सोतीव्रवैराग्यही यापरमहंससंन्यासकेग्रहणकरणेकाकालहै ॥ इतनैंकरिकै तासंन्यासग्रहणकरणेकेकालका निरूपणकऱ्या ॥ अब तासंन्यासकेअधिकारीका निरूपणकरै हैं॥हेशिष्य॥धनएषणा लोकएषणा पुत्रएषणा यहतीनप्रकारकीएषणा सर्वलोकोंविषेप्रसिद्धहैं ॥तहां धन दोप्रकारकाहोवै है ॥ एकतौ दैवधनहोवै है॥और दूसरा मानुष्यधनहोवै है ॥ तहां कर्मउपासनारूप दैवधनहै॥और सुवर्णादिकपदार्थ मनुष्यधनहै॥और स्वर्गलोक पितृलोक मनुष्यलोक इत्यादिकलोकहैं।एषणानामइच्छाकाहै। ऐसेतिनएषणाओंतैं जोपुरुष रहितहै॥ सोवैराग्यवान्पुरुषही यापरमहंससंन्यासका अधिकारीहै॥अबजावालउपनिषद्के चतुर्थखंडविषेस्थितवचनोंके अर्थका निरूपणकरै हैं ॥ हेशिष्य जिसअधिकारीपुरुषविषे तेतीनोंएषणा विद्यमानहैं ॥ सोअधिकारीपुरुष तापरमहंससंन्यासकूं ग्रहणकरैनहीं ॥ किंतु सोअधिकारीपुरुष प्रथमब्रह्मचर्यआश्रमकूंग्रहणकरै॥तात्रह्मचर्यआश्रमतैंअनंतर गृहस्थआश्रमकूंग्रहणकरै॥ तागृहस्थआश्रमतैंअनंतर वानप्रस्थआश्रमकूंग्रहण करै ॥ तावानप्रस्थआश्रम तैंअनंतर कुटीचक बहूदक हंस यातीनसंन्यासोंविषे किसीएक संन्यासकूं ग्रहणकरै ॥ परंतु सोतीनएषणावान्रागीपुरुष तापरमहंससंन्यासकेग्रहणकरणेका मनविषेसंकल्पभीनहींकरै ॥ काहेतैं जिसअधिकारी पुरुषकूंइसलोकके विषयसुखोंविषे तथापरलोककेविषय सुखोंविषे इच्छानहींहोवैहै॥सोपुरुषही तापरमहंससंन्यासकाअधिकारीहोवैहै॥ विषयसुखकीइच्छावान् पुरुष तापरमहंससंन्यासका अधिकारी होवैनहीं॥और हेशिष्य॥जोअधिकारीपुरुष मोक्षकीइच्छावाला है॥तथातीनएषणाओंतैंरहितहै ॥ सोवैराग्यवान् पुरुषतौ ब्रह्मचर्य आश्रमतैंअनंतरही तापरमहंससंन्यासकूं ग्रहणकरै ॥ अथवा गृहस्थ आश्रमतैंअनंतर तापरमहंससंन्यासकूंग्रहण

कर ॥ अथवा वानप्रस्थआश्रमतैंअनंतर तापरमहंससंन्यासकूंग्रहणकरै ॥ ताकेविषेकोईनियमहैनहीं परंतु तावैराग्यवान्पुरुषनैंभी ब्रह्मचर्य आश्रमतैंपूर्व तापरमहंससंन्यासकूंग्रहणकरणानहीं ॥ हेशिष्य॥ जिसअधिकारीपुरुषकूंतीव्रवैराग्यकीप्राप्तिभईहै॥ सोअधिकारीपुरुष आपणेवर्णआश्रमके धर्मोंकरिकैयुक्तहोवै ॥ तथा नेत्रादिकसर्वइंद्रियोंकरिकैसंपन्नहोवै ॥ अथवा सो अधिकारीपुरुष आपणेवर्णआश्रमके धर्मोंतैंरहितहोवै ॥ तथानेत्रादिकइंद्रियोंतैंरहितहोवै ॥ सर्वप्रकारसैं सोतीव्रवैराग्यवान्पुरुषहीयापरमहंससंन्यासका अधिकारीहै ॥ अब याही अर्थकूं स्पष्टकरिकैनिरूपण करै हैं ॥ हेशिष्य ॥ वेदविद्याकीप्राप्तिकरणेहारेजे ब्रह्मचारीके गुरुकुलवासादिकधर्महैं ॥ तिन धर्मोंवालेपुरुषकानाम व्रतीहै ॥ और तिनधर्मोंतैंरहितपुरुषकानाम अव्रती है ॥ और जोपुरुष गुरुकेसमीपनिवास करिकै समग्रएकवेदकूं अथवा दोवेदोंकूं अथवा चारवेदोंकूं अध्ययनकरिकै ताब्रह्मचर्य आश्रमकी समाप्तिकरैहै ॥ तापुरुषकानाम स्नातकहै और जोपुरुष ताएकवेदकेभी किसीएकअंशका अध्ययनकरैहै ॥ तापुरुषकानाम अस्नातकहै और जिसपुरुषनैं पूर्व श्रौत अग्निका अथवा स्मार्तअग्निका ग्रहण कऱ्याहोवै ॥ परंतु किसीस्त्रीमरणादिकानिमित्तकरिकै सोअग्नि जिसका नष्टहुआहोवै ॥ तापुरुषकानाम उत्सन्नअग्निकहै॥ औरजिस पुरुषनैं तास्त्रीमरणादिकनिमित्तकरिकै ताश्रौतस्मार्त्तअग्निका ग्रहणहीनहींकऱ्याहोवै ॥ तापुरुषकानाम अनग्निकहै ॥ अथवा॥ जोपुरुष तिनश्रौतस्मार्त्तअग्नियोंका अंगीकारहीनहींकरै है ॥ तापुरुषकानाम उत्सन्नाग्निक है ॥ और तिनश्रौतस्मार्त्तअग्नियोंके ग्रहणकरणेविषे उपयोगी जेधनादिकपदार्थ हैं ॥ तिनधनादिकोंकूंही जोपुरुष ग्रहणनहींकरै है ॥ तापुरुषकानाम अनग्निकहै ॥ हेशिष्य ॥ व्रती १ अव्रती २ स्नातक ३ अस्नातक ४ उत्सन्नाऽग्निक ५ अनग्निक ६ यहषट्प्रकारकेपुरुषोंविषे जिसपुरुषकूं जिसकालविषे ता तीव्रवैराग्यकी प्राप्तिहोवै ॥ सोपुरुष तिसीकालविषे तापरमहंससंन्यासकूंग्रहणकरै ॥ और कुटीचक बहूदक हंस यातीनप्रकारकेसंन्यासियोंकूंभी जोकदाचित् ता तीव्रवैराग्यकीप्राप्तिहोवै ॥ तौ तेकुटीचक बहूदक हंससंन्यासीभी तापरमहंससंन्यासकूंग्रहणकरै ॥ परंतु वैराग्यतैंविना किसीभी अधिकारीपुरुषनैं तापरमहंससंन्यासका ग्रहणकरणानहीं ॥ इतनैंकरिकैतापरमहंससंन्यासके अधिकारीकानिरूपणकऱ्या॥ अब

धर्मशास्त्रोंकेअनुसार तापरमहंससंन्यासकेग्रहणकरणेकीरीतिका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ जैसेविवाहादिकशुभकार्योंविषेनानाप्रकारके मंगलहोवै हैं॥ तैसे तासंन्यासग्रहणतैंपूर्वदिनविषे नानाप्रकारकेमंगलोंकरिकैयुक्तहुआ सोअधिकारीपुरुष प्रथम नांदीमुखश्राद्धकूंकरै ॥ और तानांदीमुखश्राद्धविषे सोसंन्यासकर्तापुरुष प्रथम वसु सत्य यानामवालेविश्वदेवताओंकापूजनकरै ॥ और तानांदीमुखश्राद्धके अंतर दैवश्राद्ध १ ऋषिश्राद्ध २ दिव्यश्राद्ध ३ मानुष्यश्राद्ध ४ भूतश्राद्ध ५ पितृश्राद्ध ६ मातृश्राद्ध ७ आत्मश्राद्ध ८ यहअष्टश्राद्धहोवै हैं ॥ और याअष्टश्राद्धोंकेआदिविषे नवमा वैश्वदेवश्राद्धहोवैहैं ॥ यहनवश्राद्ध तानांदीमुखश्राद्धकेअंतरहोवै हैं ॥ तिननवश्राद्धोंकूंकरै ॥ हेशिष्य ॥ कोईक शौनकादिकऋषितौ मातृश्राद्धतैं मातामहश्राद्धकूंभिन्नमानिकै तादशमेमातामहश्राद्धकाभी विधानकरैहै॥ औरकोईक आपस्तंबादिकऋषितौ तामातृश्राद्धतैं तामातामहश्राद्धका अभेदमानिकै तामातामहश्राद्धका भिन्नविधानकरैनहीं॥ यातैंतिनशौनकादिकऋषियोंकेमतविषेतौ तावैश्वदेवश्राद्धतैंउत्तरनवश्राद्धहोवैहैं॥ औरआपस्तंबादिकऋषियोंकेमतविषेतौ तावैश्वदेवश्राद्धतैंउत्तरअष्टश्राद्ध होवैहैं ॥ हेशिष्य ॥ मातृश्राद्ध मातामहश्राद्ध यादोनोंश्राद्धोंका परस्परभेद अथवा परस्परअभेद आपणेआपणेकुलकेआचारकरिकैही जान्याजावैहै ॥ हेशिष्य ॥ सोमातृश्राद्धतामातामहश्राद्धतैंभिन्नहै याभेदपक्षविषेभी अनेकऋषियोंकेमतभेदकरिकै तामातृश्राद्धविषेदेव ताओंकाभीभेदकथनकऱ्याहै ॥ तहांकोईकऋषितौ तामातृश्राद्धके मातापितामही प्रपितामही यहतीनदेवतामानैंहै॥ औरकोईकऋषितौ तामातृश्राद्धके मातामातामही प्रमातामहीयहतीनदेवतामानैंहैं ॥ औरतामातृश्राद्धतैंभिन्नजोमातामहश्राद्धहै ॥ तामातामहश्राद्धविषेतौ मातामहप्रमातामह वृद्धप्रमातामह यहतीनदेवतामाने हैं ॥ इसप्रकार मातृश्राद्धमातामहश्राद्ध यादोनोंश्राद्धोंकेभेदकूंअंगीकारकरिकै तेशौनकादिकऋषि तिनदोनोंश्राद्धोंकेदेवताओंकाभी भेदहीअंगीकारकरै हैं ॥ और हेशिष्य ॥ जिनआपस्तंबादिकऋषियोंकेमतविषे मातृश्राद्ध मातामहश्राद्ध यादोनोंश्राद्धोंका अभेदहीकथनकऱ्याहै ॥ तिनऋषियोंकेमतविषेभी आपणेआपणे कुलआचारकेभेदकरिकै तामातृश्राद्धकेदेवताओंका भेदहीकथनकऱ्याहै॥ तहांकोईकऋषितौतामातृश्राद्धकेमाता पितामहीप्रपितामही यहतीनदेवतामानैंहैं और

कोईकऋषितौतामातृश्राद्धकेमाता मातामहीप्रमातामही यहतीनदेवतामानेहै॥हेशिष्य॥इसप्रकार भिन्नभिन्नशास्त्रोंविषेतिनऋषियोंनेंता मातृश्राद्धकेदेवताओंका भेदकथनकऱ्याहै॥परंतुतिनदेवताओंकेपूजनकरणेविषे आपणेआपणेकुलकाआचारहीप्रमाणहै॥और जिसपुरुषकूं आपणेआपणेकुलकाआचार विस्मरणहोइगयाहोवै।तिसपुरुषनैंतौतामातृश्राद्धविषे मातापितामहीप्रपितामही यातीनदेवताओंकाहीपूजन करणा ॥ काहेतैंयालोकविषे बहुतविद्वान्पुरुषतौतामातृश्राद्धविषे मातापितामहीप्रपितामही यातीनदेवताओंकाहीपूजनकरैहैं ॥ यातैं तिनबहुतोंकेआचारकूंहीअंगीकारकरणा ॥इहांप्रसंगविषे पिताकेपिताकानामपितामहहै॥और तापितामहकेपिताकानामप्रपितामहहै ॥ और ताप्रपितामहकेपिताकानाम वृद्धप्रपितामहहै ॥ और पिताकेमाताकानाम पितामहीहै ॥ और पितामहकीमाताकानाम प्रपितामहीहै ॥ और ताप्रपितामहकीमाताकानाम वृद्धप्रपितामहीहै ॥ और माताकेपिताकानाममातामहहै ॥ औरतामातामहकेपिताकानाम प्रमातामहहै॥ और ताप्रमातामहकेपिताकानाम वृद्धप्रमातामहहै ॥ और माताकेमाताकानाममातामहीहै॥ औरतामातामहीकेपतिकी माताकानामप्रमातामहीहै॥औरताप्रमातामहीकेपतिकीमाताकानामवृद्धप्रमातामहीहै ॥ ऐसेआगेभीजानिसेणा॥इतनैंकरिकै मातृश्राद्ध मातामहश्राद्ध यादोनोंश्राद्धोंकेभेदका तथाअभेदका विचारकऱ्या अब पूर्वउक्तअष्टश्राद्धोंकेदेवताओंका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ ब्रह्मा विष्णु महेश्वर यहतीनों देवश्राद्धकेदेवता हैं ॥ १ ॥ और देवऋषि राजऋषि मनुष्यऋषि यहतीनों ऋषिश्राद्धकेदेवताहैं॥२॥ और वसु रुद्र आदित्य यहतीनों दिव्यश्राद्धकेदेवताहैं ॥ ३ ॥ और सनक सनंदन सनत्कुमार यह तीनों मानुष्यश्राद्धकेदेवताहैं ॥४॥ और पृथिवीआदिकपंचभूत नेत्रादिक दशइंद्रिय जरायुजादिकचारयोनियां यहतीनों भूतश्राद्धके देवता हैं ॥ ५ ॥ और पिता पितामह प्रपितामह यहतीनों पितृश्राद्धके देवताहैं ॥ ६ ॥ और माता पितामही प्रपितामही यहतीनों मातृश्राद्धके देवताहैं॥७॥और जिन पुरुषोंकेकुलआचारविषे तामातृश्राद्धतैंभिन्नहीमातामहश्राद्धहोवै तिनपुरुषोंनैंभी तामातामहश्राद्धकूं तामातृश्राद्धतैंपश्चात्हीकरणा तामा तृश्राद्धतैं पूर्वनहींकरणा तामातामहश्राद्धके मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामह यहतीनदेवता पूर्वकथनकरिआयेहैं॥ औरतामातृश्राद्धतैं

अनंतर अथवा मातामहश्राद्धतैंअनंतर सोसंन्यासकर्त्तापुरुष आपणाश्राद्धकरै ॥ याकानाम आत्मश्राद्धहै॥ ताआत्मश्राद्धके सोसंन्यास कर्त्तापुरुष पिता पितामह यहतीनदेवताहैं ॥ ८ ॥ इसप्रकार सोसंन्यासकर्त्तापुरुष तानांदीमुखश्राद्धविषे प्रथम वैश्वदेवश्राद्धकूंकरिकै तिसतैंअनंतर आपणेकुलआचारकेअनुसार अष्टश्राद्धोंकूं अथवा नवश्राद्धोंकूं श्रद्धापूर्वककरै॥हेशिष्य॥प्रथमवैश्वदेवश्राद्धकूंछोडिकैदेवश्रा द्धतैंआदिलेकै आत्मश्राद्धपर्यंत जेअष्टश्राद्धहैं॥अथवा नवश्राद्धहैं॥तिनश्राद्धोंविषेएकएकश्राद्धविषे तीनतीनदेवताहोवैहैं॥तिनदेवताओंविषे एकएकदेवताकेप्रति एकएकपिंड दियाजावैहै ॥ यातैं अष्टश्राद्धपक्षविषेतो तिनदेवताओंकीसंख्यापरिमाण तेसंपूर्णपिंड चतुर्विंशति २४ होवै हैं ॥ और नवश्राद्धपक्षविषेतौ तिनदेवताओंकीसंख्यापरिमाण तेसंपूर्णपिंड सप्तविंशति२७होवैहैं ॥ हेशिष्य ॥ सोसंन्यासकर्त्तापुरुष तिनपिंडोंविषे दधि लाजा अक्षत बदरीफल मधु दूर्वा कुंकुम इत्यादिकमंगलपदार्थोंकूंपावै ॥ तथातिनपिंडोंकेमध्यविषे मधुशर्करा दिक बहुतपावै ॥ और तानांदीमुखश्राद्धविषे करणेयोग्यजे वैश्वदेवादिकश्राद्धहैं॥ तिनश्राद्धोंविषे एकएकश्राद्ध विषे दोदो ब्राह्मणोंकूंभोज नकरावै ॥ यातैं सोसंन्यासकर्त्तापुरुष नवश्राद्धपक्षविषेतौ अष्टादश १८ ब्राह्मणोंकूंभोजनकरावै ॥ और दशश्राद्धपक्षविषेतौ विंशति २० ब्राह्मणोंकूंभोजनकरावै॥ तिनब्राह्मणोंतैं न्यूनअधिकब्राह्मणोंकूंभोजननहींकरावणा॥और सोसंन्यासकर्त्तापुरुष जोकदाचित् धनवान्होवै ॥ तौ तिनब्राह्मणोंकेप्रति दुकूलकंकणादिकभूषण छत्र उपानह इत्यादिकपदार्थ दक्षिणादेवै ॥ और सो संन्यासकर्त्तापुरुष जोकदाचित् अत्यंतधनवान्होवै ॥ तौ तिनब्राह्मणोंकेप्रति भूमिदानदेवै ॥ तथा गृहोंविषे अन्नवस्त्रादिकपदार्थराखिकै तेगृह दानदेवै ॥ जादानकरिकै तिनब्राह्मणोंकीदरिद्रता निवृत्तहोइजावै ॥ और सोसन्यासकर्त्तापुरुष जोकदाचित् निर्धनहोवै ॥ तौ यथाशक्तिपरिमाण तिनब्राह्मणोंकेताईं दक्षिणादेवै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार तापिंडदानतैंअनंतर तिनब्राह्मणकूंभोजनकराइकै तथा यथाशक्तिपरिमाण तिनब्राह्मणोंकेताईं दक्षिणादिकरिकै सोसंन्यासकर्त्तापुरुष तिनब्राह्मणोंकेउच्छिष्टअन्नकूंछोडिकै आपणेयथाशक्तिपरिमाण दूसरेदीनअनाथों केताईं नानाप्रकारकेअन्नकादानकरै ॥ तथा तिनदीनअनाथोंकेप्रति वस्त्रधनादिकपदार्थोंकादानकरै ॥ हेशिष्य इसप्रकार सोसंन्या

सकर्त्तापुरुष आपणे ऋषिप्रणीतसूत्रोंकेअनुसार पितृश्राद्धकीन्याईं तानांदीमुखश्राद्धकूंकर ॥ और तिसनांदीमुखश्राद्धकेदिनविषे पूर्वउक्त
दानादिकोंकूंकरिकै प्रसन्नताकूंप्राप्तहुआ सोसंन्यासकर्त्तापुरुष आपणेबांधवकेसाथ तथास्त्रीपुत्रादिकोंकेसाथ यथायोग्यसंभाषणकरै॥ और
कलदिनकेहोमवासतै यत्किंचित्द्रव्यकूंभिन्नराखिकै तथाकंथाकौपीनादिकवस्त्रोंकूंभिन्नराखिकै दूसरेसंपूर्णधनादिकपदार्थ आपणेपुत्रोंकेता
ईं विभागकरिकैदेवै॥ याप्रकारकेसर्वकार्यकूंकरिकै सोसंन्यासकर्त्तापुरुष आपणेबांधवोंकेसाथ एकपंक्तिविषेबैठिकै पुण्याहं याप्रकारकाव
चनउच्चारणकरिकै भोजनकूंकरै ॥ परंतु तिसदिनविषे तासंन्यासकर्त्तापुरुषकेचित्तविषे जोकोईविक्षेपनहींहोवै तौभोजनकरै ॥ और तिसदि
नविषे जोकदाचित तासंन्यासकर्त्तापुरुषकूं चित्तकीविक्षेपताकरिकै अन्नविषेरुचिनहींहोवै ॥तौ सोसंन्यासकर्त्तापुरुष ताश्राद्धकेशेषअन्नका
घ्राणसैं गंधग्रहणकरिकै तिसदिनविषें उपवासकूंहीकरै॥और सोसंन्यासकर्त्तापुरुष जोतिसदिनविषेभोजनकरैं॥तौ दूसरेदिनविषे उपवासकरै
हेशिष्य ॥ जिसदिनविषे पिंडदानकरणा ॥ तिसदिनविषे उपवासनहींकरणा ॥ किंतु दूसरेदिन उपवासकरणा यहपक्ष बहुतशास्त्रोंविषे
कथनकऱ्याहै ॥ यातैं यहपक्षमुख्यहै ॥ और जिसदिनविषे पिंडदानकरणा ॥ तिसदिनविषेउपवासकरणा॥यहपक्ष किसीशास्त्रविषेकथन
कऱ्याहै ॥ यातैं यहपक्ष गौणहै ॥ हेशिष्य ॥ तामुख्यपक्षपकूंअंगीकारकरिकै सोसंन्यासकर्त्तापुरुष तापिंडदानतैंदूसरेदिनविषे उपवास
करै॥और ताउपवासकेदिनविषे सोसंन्यासकर्त्तापुरुष आपणेकक्षोंकेबाल तथाउपस्थकेबाल तथाशिखाकेबाल यातीनोंबालोंकूंछोडिक
रिकै दूसरेसर्वशरीरकेकेशलोमोंका मुंडनकरावै ॥ और तामुंडनतैंअनंतर स्नानकरिकै दूसरेशुद्धवस्त्रकूंधारणकरै ॥ और होमवासतै
स्थापनकऱ्याजोद्रव्यहै ॥ तादृव्यकूंछोडिकै आपणेगृहविषेस्थितजे शालग्राम तथाकंबलादिकवस्त्र तथापुस्तक तथामृगचर्म इत्यादिक
पदार्थ हैं ॥ जेपदार्थ संन्यासियोंकूंभीग्रहणकरणेविषे निषिद्धनहींहोवै ऐसे शालग्रामादिकपदार्थोंकूंग्रहणकरिकै सोसंन्यासकर्त्तापुरुष
आपणेब्रह्मवेत्तागुरुकेआगे अर्पणकरै॥यद्यपि तेशालग्रामादिकपदार्थ तासंन्यासकर्त्तापुरुषकूंभी अपेक्षितहैं।तथापि सोब्रह्मवेत्तागुरु जोकदा
चित् तिनपदार्थोंकूंअंगीकारकरै॥तौ तेसंपूर्णपदार्थ तागुरुकेही अर्पणकरै॥हेशिष्यजोसंन्यासी आत्माकेउपदेशकरणेविषे अत्यंतकुशलहोवै

तथा ब्रह्मनिष्ठहोवै ॥ तथा शमदमादिकसर्वगुणोंकरिकेयुक्तहोवै ॥ ऐसेश्रोत्रियब्रह्मनिष्ठसंन्यासीकूं सोसंन्यासकर्त्तापुरुष बहुतकालसेंपरी
क्षाकरके गुरुधारणकरै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार सोसंन्यासकर्त्तापुरुष आपणेगुरुकेप्रति शालग्रामपुस्तकादिकपदार्थ अर्पणकरिकै तथा
आपणेशीतादिकोंकीनिवृत्तिवासतै कौपीनकंथादिकवस्त्रोंकूं पृथकूराखिकै ताकौपीनादिकवस्त्रोंकूं तथावेणुकेदंडकूं ताअग्निकुंडकेसमीप
स्थापनकरै ॥ कैसाहोवै सोवेणुकादंड ॥ जलकरिकैशुद्धकऱ्याहोवै ॥ तथा छिद्रतैंरहितहोवै ॥ तथा देखनेविषे सुंदरहोवै ॥ तथा तासं
न्यासकर्त्तापुरुषकेशरीरपरिमाण ऊँचाहोवै ॥ हेशिष्य ॥ सोसंन्यासकर्त्तापुरुष जिसदिनविषेहोमकरै ॥ तादिनकीरात्रिविषे जागरणकूं
करै ॥ तहां ताहोमकरणेवासतै तथारात्रिकेजागरणकरणेवासतै याप्रकारकादेश चाहिये॥कितौ महान्नदीकातीरहोवै॥ अथवा विष्णुआ
दिकदेवतावोंकामंदिरहोवै ॥ अथवा वनहोवै ॥ अथवा गोशालाहोवै ॥ अथवा मनुष्योंतैंरहित कोईएकांतगृहहोवै ॥ यास्थानोंविषे कि
सीएकस्थानविषे सोसंन्यासकर्त्तापुरुष होमकरै ॥ तथा रात्रिविषेजागरणकरै ॥ हेशिष्य ॥ ऐसेपवित्रएकांतदेशविषेजाइकै सोसंन्यासकर्त्ता
पुरुष आपणेआसनऊपरस्थितहोवै ॥ और आपणेदोनोंहस्तोंकूंजोडिकै तथामनसहितइंद्रियोंकूंनिरोधकरिकै सोसंन्यासकर्त्तापुषष प्रथम
ब्रह्म इंद्र सोम सूर्य आत्मा अंतरात्मा परमात्मा विज्ञानात्मा याअष्टरूपवालेपरमेश्वरका स्मरणकरै ॥ तथा प्रणवपूर्व ब्रह्मणेनमःइंद्रायन
मःसोमायनमः सूर्यायनमःआत्मनेनमःअंतरात्मनेनमः परमात्मनेनमः विज्ञानात्मनेनमः याअष्टमत्रोंका मानसजापकरै॥ तामानसजापका
स्वरूप व्यासभगवान्नैंयाप्रकार कह्याहै ॥ तहांश्लोक॥धियायदक्षरश्रेणिं वर्णस्वरविभूषितां ॥ उच्चरेदर्थसंस्मृत्या सउक्तोमानसोजपः ॥
अर्थयह ॥ ककारादिकवर्णोंकरिकै तथा उदात्तादिक स्वरोंकरिकै युक्त जोअक्षरोंकीपंक्तिहै ॥ ताअक्षरोंकीपंक्तिकूंयहजपकरतापुरुष
अर्थकीस्मृतिपूर्वक बुद्धिकरिकैहीउच्चारणकरै ॥ याकानाम मानसजपहै ॥ १ ॥ हेशिष्य ॥ तामानसजपतैंअनंतर सोसंन्यासकर्त्तापुरुष
एकमुष्टिपरिमाणसक्तुवोंकाभक्षणकरिकैं तीनवारआचमनकरै॥ तिसतैंअनंतरसोसंन्यासकर्त्तापुरुषआपणेहस्तकूंनाभिदेशविषेराखिकैप्रणव
पूर्वकआत्मनेस्वाहा अंतरात्मनेस्वाहा प्रजापतयेस्वाहायातीनमंत्रोंकाउच्चारणकरै॥तिसतैंअनंतरसोसंन्यासकर्त्तापुरुष पयदधि घृत याती

नपदार्थोंविषेएकएकपदार्थकूं तीनतीनवारभक्षणकरै ॥ औरपूर्वसकुचोंकेभक्षणविषेतथा पयदधिघृत यातीनोंकेभक्षणविषे तासंन्यासकर्त्ता पुरुषनैंप्रणवमंत्रकाहीउच्चारणकरणा ॥ औरतिसतैंअनंतर आचमनकरिकैसोसंन्यासकर्त्तापुरुष पूर्वादिशाकीतरफमुखकरिकै यथाशक्तिपरिमाण प्रणवमंत्रका तथागायत्रीमंत्रकाजपकरै ॥ तथाउपवासकरणेकासंकल्पकरै तिसतैंअनंतर सोसंन्यासकर्त्तापुरुष सर्ववेदोंकाआदिरूप जोप्रणवमंत्रहै ताकाउच्चारणकरै ॥ अथवाऋग्यजुषूसाम यातीनवेदोंकेआदिविषेस्थितजेयथाक्रमतैंअग्निमीलइति इषेत्वेति अग्नआयाहीति यहतीनमंत्रहैं तिनमंत्रोंका प्रणवपूर्वक उच्चारणकरै ॥ तिसतैंअनंतर सोसंन्यासकर्त्तापुरुष सावित्रीप्रवेशकेमंत्रकाउच्चारणकरै ॥ तहां प्रणवमंत्रपूर्वकजो भूः भुवः स्वः यहतीनव्याहृतियां हैं ॥ तातीनव्याहृतियोंविषे एकएकव्याहृतिकेउच्चारणपूर्वक ॥ सावित्रीप्रविशामि ॥ यावचनकूं दोदोवार उच्चारणकरै ॥ यारीतिसैं तौसावित्रीप्रवेशके षट्मंत्रसिद्धहोवै है ॥ तिनषट्मंत्रोंविषे यथाक्रमतैं त्रिपदा गायत्रीमंत्रकेपादोंका उच्चारणकरणा ॥ तहां प्रथममंत्रविषेतौ तागायत्रीमंत्रकेप्रथमपादका उच्चारणकरणा ॥ और दूसरेमंत्रविषे तागायत्रीमंत्रकेदूसरेपादकाउच्चारणकरणा ॥ और तीसरेमंत्रविषे तागायत्रीमंत्रकेतीसरेपादका उच्चारणकरणा ॥ और चतुर्थमंत्रविषे तागायत्रीमंत्रकेआदिकेदोपादोंका उच्चारणकरणा ॥ और पंचममंत्रविषे तागायत्रीमंत्रकेतीसरेपादका उच्चारणकरणा ॥ और षष्ठेमंत्रविषे तासमग्रगायत्रीमंत्रका उच्चारणकरणा ॥ तिनषट्मंत्रोंकेउच्चारणकाक्रमयहहै ॥ प्रथम प्रणवमंत्रकाउच्चारणकरणा तिसतैंउत्तर व्याहृतिका उच्चारणकरणा तिसतैंउत्तर सावित्रीप्रवेशवाक्यउच्चारणकरणा ॥ तिसतैंउत्तर गायत्रीकेपादकाउच्चारणकरणा ॥ यहसंपूर्णमिलिकै एकमंत्रहोवै है ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार सावित्रीप्रवेशकेषट्मंत्रोंकूंउच्चारणकरिकै तिसतैंअनंतर सोसंन्यासकर्त्तापुरुष ब्रह्मान्वाधाननामा कर्मकूंकरै ॥ ताकर्मकीयहरीतिहै ॥ सोसंन्यासकर्त्तापुरुष सूर्यकेअस्तहुएतैंपूर्व आपणेऋषिप्रणीतसूत्रोंकेअनुसार होमकरणेवासतै श्रौतअग्निकूं अथवा स्मार्त्तअग्निकूं अथवा किसीपवित्रस्थानाविषेस्थित लौकिकअग्निकूंलेआइकै कुंडविषे अथवा भूमिविषे स्थापनकरै॥ तिसतैं अनंतर सोसंन्यासकर्त्तापुरुष आपणेऋषिप्रणीतसूत्रोंकेअनुसार सायंकालविषे ता अग्निविषे अग्निहोत्रनामा होमकूंकरै ॥ तहां

आज्यभागपर्यंत सर्वअंगोंकूं विधिपूर्वकंकरिकै तिसतैंअनंतर प्रणवपूर्वक स्वाहामंत्रकरिकै तिसअग्निविषे आज्याहुतिकूंपावै ॥ और तिसी मंत्रकरिकै ताअग्निविषे पूर्णाहुतिकूंपावै ॥ याप्रकारकेकर्मकूं शास्त्रविषे ब्रह्मान्वाधान यानामकरिकैकथनकरै हैं ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार सोसंन्यासकर्त्तापुरुषताब्रह्मान्वाधानकर्मकूंकरिकै तिसतैंअनंतर सायंसंध्याकीउपासनाकरै॥ तिसतैंअनंतर ताअग्निकेउत्तरदिशाविषे दर्भोंकूं बिछाइकै तिसऊपरबैठे ॥ और गायत्रीमंत्रनै कथनकऱ्याजोब्रह्महै॥ ताब्रह्मकूंमनविषे स्मरणकर्त्ताहुआ सोसंन्यासकर्त्तापुरुष ता रात्रिविषे जागरणकरै ॥ हेशिष्य ॥ सोसंन्यासकर्त्तापुरुष तारात्रिविषे इष्टिकूंभीकरै ॥ तहां सोसंन्यासकर्त्तापुरुष जोकदाचित् गार्हपत्यादिकश्रौतअग्नियोंवालाहोवै ॥ तौ सोसंन्यासकर्त्तापुरुष तिनश्रौतअग्नियोंकरिकै प्रथम अग्निदेवतासंबंधी वैश्वानरीनामाइष्टिकूंकरै ॥ तिसतैं अनंतर राजाधिराजस्वराट् इत्यादिकगुणविशिष्टजोदेवताविशेषहै॥ तादेवतासंबंधी त्रैधातवीनामाइष्टिकूंकरै॥ और सोसंन्यासकर्त्ता पुरुष जोकदाचित् औपासननामास्मार्त्तअग्निवालाहोवै तौ सोसंन्यासकर्त्तापुरुष तास्मार्त्तअग्निकरिकै प्राजापत्यनामाइष्टिकूंकरै। और जिसपुरुष कापूर्वगृहस्थआश्रम नष्टहोइगयाहै॥ और उत्तरआश्रम जिसपुरुषनैं ग्रहणकऱ्यानहीं तापुरुषकानाम विधुरहै ॥ सोविधुरपुरुषभी विधुर अग्निकरिकै ताप्राजापत्यइष्टिकूंहीकरै॥ पृष्टोदिवी इत्यादिकमंत्रकरिकै उत्पन्नकऱ्याजोअग्नि है॥ताकानाम विधुरअग्नि है॥ और सोसंन्यासकर्तापुरुष जोब्रह्मचारीहोवै॥ अथवा वानप्रस्थहोवै ॥ तौ सोब्रह्मचारी तथावानप्रस्थतौ किसीपवित्रस्थानतैंअग्निकूंलेआइकै तालौकिकअग्निकरिकै ताप्राजापत्यइष्टिकूंकरै ॥ हेशिष्य ॥ कोईकऋषितौ याप्रकारकहे हैं ॥ आहिताग्निपुरुषोंकूं तथाअनाहिताग्निपुरुषोंकूं तथाअनग्निपुरुषोंकूं साप्राजापत्यनामाइष्टिहीकरणेयोग्यहै ॥ इहांश्रौतअग्निवालेपुरुषकानामआहिताग्निहै । और स्मार्त्तअग्निवालेपुरुषका नाम अनाहिताग्निहै और श्रौतस्मार्त्तअग्नितैंरहितविधुरादिकोंकानाम अनग्नि है ॥ और कोईकऋषितौ तीनोंकेप्रति प्राजापत्यइष्टिकूं विधानकरैनहीं ॥ किंतुपूर्वकहीरीतिसे अहितअग्निपुरुषकेप्रतितौ वैश्वानरीइष्टिका तथा त्रैधातवीइष्टिकाविधानकरै हैं॥ और अनाहिताऽग्निपुरुषोंकेप्रति तथाअनग्निपुरुषोंकेप्रति प्राजापत्यइष्टिकाविधानकरै हैं ॥ हेशिष्य॥ किसअधिकारीपुरुषनैं कौनइष्टिकरणी यहसंपूर्णव्यवस्था

हम आगेस्पष्टकरेंगे कहेंगे तीनतीनसौ हम तात्पर्यवस्थाकूंकथनकरतेनहीं ॥ किंतु अभी तासंन्यासकर्त्तापुरुषकूं तीसरेदिन विषे जो कार्य करणेयोग्यहै ॥ तिसकूंकहणा ॥ ऊर ॥ हेशिष्य ॥ सोसंन्यासकर्त्तापुरुष ब्राह्ममुहूर्त्तविषे तादर्भकेआसनतैंउठिकै जलकरिकै अथवा शन्नआप इत्यादिकमंत्रोंकरिकै अथवा भस्मकरिकै यथाशक्तिपरिमाण स्नानकरै ॥ तिसतैंअनंतर सोसंन्यासकर्त्तापुरुष ताआपणेअग्नि विषे चरुकूंपकावै ॥ तापक्वचरुकूं ताअग्नितैंउतारिकै तिसअग्निकेपूर्वादिशाविषे अथवा उत्तरदिशाविषे स्थापनकरै ॥ तिसतैंअनंतर ता पक्वओदनरूपचरुकूं घृतयुक्तकरिकै पश्चात् प्रणवपूर्वक भूरादिकतीनव्याहृतियोंकूंपठनकरै ॥ तथा सहस्रशीर्षा इत्यादिकषोडशऋचारूप पुरुषसूक्तकूंपठनकरै॥तथा प्रणवपूर्वक इंद्रायस्वाहा प्रजापतयेस्वाहा विश्वेभ्योदेवेभ्यःस्वाहा ब्रह्मणेस्वाहा याचारिमंत्रोंकाजपकरै तिसतैंअनंतर पुण्याहं याप्रकारकावचन उच्चारणकरै ॥ तिसतैंअनंतर सोसंन्यासकर्त्तापुरुष शुचिनामापात्रविषे संस्कृतघृतकूंग्रहण करिकै प्रणवपूर्वक अग्नयेस्वाहा यामंत्रकरिकै अग्निमुखनामाआहुतिकूं ताअग्निविषेपावै ॥ और भोजनकेआदिकालविषे करणेयोग्यजा प्राणअग्निहोत्रहै ॥ ताप्राणअग्निहोत्रविषे जैसे प्रणवपूर्वक प्राणायस्वाहा अपानायस्वाहा व्यानायस्वाहा उदानायस्वाहा समानाय स्वाहा यापंचमंत्रोंकरिकै पंचग्रासरूप पंचआहुति पाईजावै है ॥ तैसे तिनपंचमंत्रोंकरिकै ताअग्निविषे आहुतिकूंपावै ॥ तथा आपणे वेदकीशाखाविषे पठनकऱ्याजो सहस्रशीर्षापुरुष इत्यादिकपुरुषसूक्तहै ॥ तापुरुषसूक्तकेएकएकऋचाकापाठकरिकै ताअग्निविषे आहुतिकूंपावै ॥ हेशिष्य ॥ ताअग्निविषे आहुतिपावणेका यहक्रम है॥सोसंन्यासकर्त्तापुरुष प्रथम ताअग्निविषे काष्ठारूपसमिधकूंपावै॥तिसतैं अनंतर घृतकूंपावै ॥ तिसतैंअनंतर ओदनरूपचरुकूंपावै ॥ तिसतैंअनंतर सोसंन्यासकर्त्तापुरुष ताअग्निविषे प्रणवपूर्वक स्विष्टकृतेऽग्नये स्वाहा यामंत्रकरिकै घृतकीआहुतिकूंपावै॥तथा आपणेवेदकीशाखाकेअनुसार तापुरुषसूक्तकाजपकरै॥हेशिष्य॥इसप्रकार होमकूंकरिकै सोसंन्यासकर्त्तापुरुष ताहोमतैं अनंतर पुनःदूसरेविरजाहोमकूंकरै॥तहां तिसीअग्निविषे पूर्वकीन्याईं दूसराचरुपकाइकै ताचरुकूं घृतयुक्त करिकै पूर्णआहुतिपर्यंत ताविरजाहोमकूंकरै॥हेशिष्य॥ताविरजाहोमका यहक्रम शास्त्रविषेकथनकऱ्याहै ॥ सोसंन्यासकर्त्तापुरुषशास्त्रउक्त

मंत्रोंकरिकै ताअग्निविषे घृतयुक्तचरुकरिकै विरजाहोमकूंकरै॥तिसतैंअनंतर ताहोमतैंबाकीरहेहुए घृतयुक्तचरुकूं भक्षणकरै॥तिसतैंअनंतर आचमनकरिकै प्रणपूर्वकस्वाहामंत्रकरिकै ताअग्निविषे पूर्णआहुतिकूंकरै॥अब पूर्वकथनकरीहुईइष्टिकेनिर्णयकरणेवासतै प्रथम ताकेविषे तीनमतोंकानिरूपणकरै हैं॥ हेशिष्य ॥ कोईऋषितो याप्रकार कथनकरै हैं॥ वैश्वानरीइष्टितैंआदिलैकै जितनेकीइष्टिहै॥तेसंपूर्णईष्टियां श्रौतअग्निवालेपुरुषनेंही करणी ॥ स्मार्त्तअग्निवालेपुरुषनैं तथाअग्नितैं कोईभीइष्टि करणीनहीं ॥ १ ॥ और हेशिष्य ॥ दूसरेऋषितो याप्रकार कथनकरै हैं ॥ एकप्राजापत्यइष्टिकूंछोडिकै दूसरीइष्टितो ताश्रौतअग्निवालेपुरुषनैंहीकरणी ॥ और प्राजापत्यइष्टितो स्मार्त्तअग्निवालेपुरुनैंभी करणी ॥ और श्रौतस्मार्त्तअग्नितैंरहित अनग्निपुरुषनैंतो कोईभीइष्टि नहींकरणी ॥२॥और हेशिष्य ॥ तीसरेऋषितो याप्रकार कथनकरै हैं ॥ जैसे निषादस्थपतियाजयेत् ॥ याश्रुतिवचनकरिकै शास्त्रवेत्तापुरुषोंनैं वर्णसंकरजातिवालेनिषादकूंभी इष्टिकरणेकाअधिकार कल्पनाकऱ्या है ॥तैसे श्रौतस्मार्त्तअग्नितैंरहित जेविधुर ब्रह्मचारी वानप्रस्थ हैं॥तिनोंकूंभी ताप्राजापत्यइष्टिकाअधिकार संभवहोइसकैहै ॥ काहेतैं श्रुतियोंविषे तथास्मृतियोंविषे इष्टिपूर्वकही संन्यासकरणेकाविधानकऱ्या है ॥ यातैं विधुरादिकोंकूं संन्यासकाअधिकारमानिकै इष्टिकाअधिकारनहीं मानणा यहवार्त्ता संभवतीनहीं ॥ तहांश्रुति ॥ ब्राह्मीमिष्टिंनिर्वपेत्॥अर्थयह॥ यहअधिकारीपुरुष ब्रह्मदेवतावालीइष्टिकूंकरिकै संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरै॥ तहांस्मृति ॥ प्राजापत्यांनिरूप्येष्टिं सर्ववेदसदक्षिणाम् ॥ आत्मन्यऽग्नीन्समारोप्य ब्राह्मणःप्रव्रजेद्गृहात् ॥ अर्थयह ॥ यहअधिकारीब्राह्मण सर्वदक्षिणायुक्त प्राजापत्यइष्टिकूंकरिकै तथा आपणेउदरविषे सर्वअग्नियोंकूं समारोपणकरिकै आपणेगृहकापरित्यागकरिकै संन्यासआश्रमकूं धारणकरै ॥ १ ॥ इत्यादीकश्रुतिस्मृतियोंविषे इष्टिपूर्वकही संन्यासआश्रमकाविधानकऱ्याहै ॥ यातैं श्रौतस्मार्तअग्नितैंरहित विधुरादिकपुरुषनैंभी संन्यासतैंपूर्व लौकिकअग्निविषे ताप्राजापत्यइष्टिकूं अवश्यकरिकैकरणा॥३॥हेशिष्य॥ इसप्रकार ताइष्टिकेकरणे विषे ऋषियोंके तीनमतहैं॥तहां श्रौतअग्निविषेही साप्राजापत्यइष्टिहोवै है याअभिप्रायकरिकैतो प्रथममतकीप्रवृत्तिहोवै है॥और स्मार्त्तअग्निविषेभी साप्राजापत्यइष्टिहोवैहै याअभिप्रायक

रिकै दूसरेमतकीप्रवृत्तिहोवै है॥ और लौकिकअग्निविषेभी साप्राजापत्यइष्टिहोवैहै याअभिप्रायकरिकै तीसरेमतकीप्रवृत्तिहोवैहै ॥ हेशिष्य॥ यातीनोंपक्षोंविषे जासिद्धांतपक्ष जाबालादिकउपनिषदोंविषे कथनकऱ्याहै ॥ तासिद्धांतपक्षकूं तूं श्रवणकर॥ श्रौतअग्निवाला जोअग्निहोत्रीपुरुषहै ॥ सोअग्निहोत्रीपुरुष जोकदाचित् तापरमहंससंन्यासकूंग्रहणकरै ॥ तौ वैश्वानरीइष्टिकूं तथात्रैधातवीइष्टिकूंहीकरै॥ और सोअग्निहोत्रीपुरुष जोकदाचित् कुटीचक बहूदक हंस यातीनसंन्यासोंविषे किसीएकसंन्यासकूंग्रहणकरै ॥ तौ सोअग्निहोत्रीपुरुषभी ताप्राजापत्यइष्टिकूंहीकरै और श्रौतअग्नितैंरहितजोपुरुषहै ॥ ताकूं किसीभीइष्टिविषे अधिकारहैनहीं ॥ याप्रकारकासिद्धांतपक्ष तिनवेदवेत्ताऋषियोंनैं कथनकऱ्याहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया तापरमहंससंन्यासकेग्रहणकालविषे अग्निहोत्रीपुरुषनैंतौ वैश्वानरीइष्टिकूं तथात्रैधातवीइष्टिकूं अवश्यकरिकैकरणा ॥ याकेविषे किसीभीऋषिकाविवादहैनहीं ॥ और प्राजापत्यइष्टिविषे पूर्वउक्तरीतिसैं नानाप्रकारका विवाद देखणेविषेआवै है ॥ सो ताविवादकाभी यथायोग्यविकल्पकूंअंगीकारकरिकै बुद्धिमान्पुरुषोंनैं समाधानकरणा ॥ हेशिष्य॥ ताइष्टिकूंछोडिकै जेपूर्वअष्टश्राद्धकहेथे ॥ तथा होमकह्याथा ॥ तिनश्राद्धोंकेकरणेविषे तथाहोमकेकरणेविषे॥ किसीभीशास्त्रकारका विवादहै नहीं ॥ किंतु तासंन्यासग्रहणकालविषे सर्वअधिकारीपुरुषोंनैं तिनश्राद्धादिककर्मोंकूंकरणा॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार सोसंन्यासकर्त्तापुरुष श्रौतअग्निविषे अथवा स्मार्त्तअग्निविषे अथवा लौकिकअग्निविषे पूर्वउक्तसर्वकर्मोंकूंकरिकै तिसतैंअनंतर उत्तरनारायणीयउपनिषद्कैपाठकूंकरताहुआ आपणेगृहतैंनिकसिकै किसीजलकेस्थानऊपरजावै ॥ और तिसकालविषे सोसंन्यासकर्त्तापुरुष सर्वऊपर अनुग्रहरूपअमृतकीवृष्टिकूंकरै ॥सोअनुग्रहयहहै ॥ श्राद्धादिककर्मोंकूंकरावणेहारेजे ॥ ऋत्विक्ब्राह्मणहैं तिनब्राह्मणोंकेताईं गोदानदेवै ॥ तथा सुवर्णदानदेवै ॥ तथा चरुकाशेषअन्नदेवै ॥ तथा होमतैंशेषरह्याहुआघृतदेवै ॥ तथा दूसरेभीअन्नादिकपदार्थ यथाशक्तिपरिमाण दानकरै ॥ तिसतैंअनंतर सोसंन्यासकाकर्त्तापुरुष तिनऋत्विक्ब्राह्मणोंतैं तथाआपणेबंधुजनोंतैं आपणेअपराधकूंक्षमाकरावैतिसतैंअनंतरआपणेपुत्रस्त्रीआदिकबांधवोंकूं आशीर्वादादिकोंतैंप्रसन्नकरिकै बिदाकरै॥ और जैसे संन्यासग्रहणतैंउत्तरकालविषे तापुरुषनैं निःसंगहोणाहै ॥ तैसे

॥ ५० ॥

पूर्वहीं निःसंगहोवै॥ और तासंन्यासकर्त्तापुरुषकेआज्ञाकूंपाइकै तेस्त्रीपुत्रादिकबांधवभी तिसकालविषे प्रसन्नमनहुए आपणेआपणेगृहकूंचलेजावैं ॥ अथवा जैसे दूसरेउदासीनपुरुष कौतुकदेखणेवासतै तहांस्थितहोवैहैं ॥ तैसे तेस्त्रीपुत्रादिकबांधवभी स्नेहकापरित्यागकरिकै तहांही स्थितहोवैं ॥ हेशिष्य ॥ सोसंन्यासकर्त्तापुरुष जैसे प्रातःकालविषे नित्यहीहोमकरैहै ॥तैसे तापूर्वउक्तहोमदेशविषेताहोमकूंकरिकै ॥ समासिंचंतुमरुतःसमिंद्र ॥ इत्यादिकमंत्रकरिकै ताअग्निकाउपस्थानकरै॥ तिसतैंअनंतर ॥ यातेअग्नेयाज्ञियातनूः ॥ इत्यादिकमंत्रकूं अथवा ॥ अयंतेयोनिर्ऋत्वियो ॥ इत्यादिकमंत्रकूं तीनवारपठनकरिकै ताआपणेश्रौतस्मार्त्तअग्निकूं ताअग्निकेउष्णतापानपूर्वक आपणेउदरविषे समारोपणकरै ॥ हेशिष्य॥जिससंन्यासकर्त्तापुरुषकूं श्रौत स्मार्त्त लौकिक यातीनोंअग्नियोंविषे कोईभीअग्नि प्राप्तनहींहोवै॥सोपुरुष ताअग्निसाध्यहोमादिकसर्वकर्मोंकूं जलविषेहीकरै ॥ तथा भावनामयअग्निकाही आपणेउदरविषे ॥ समारोपणकरै ॥ हेशिष्य॥इसप्रकार तिनबाह्यअग्नियोंकूं आपणेउदरविषेसमारोपणकरिकै तहां भावनामयकुंडविषे तिनअग्नियोंकूंस्थापनकरिकै पूर्वउक्तसावित्रीप्रवेशकेमंत्रोंकूं पठनकरै ॥ तिसतैंअनंतर सोसंन्यासकर्त्तापुरुष ताजलकेसमीपजावै ॥ तहां नाभिपरिमाणजलविषेस्थितहोइकै संध्यागायत्रीकीउपासना करै ॥ तिसतैंअनंतर सोसंन्यासकर्त्तापुरुष पूर्वदिशाकीतरफमुखकरिकै तथा आपणेदोनोंभुजावोंकूंऊँचाकरिकै ॥ अहंवृक्षस्य॥ इसवचनतैंआदिलैके ॥ त्रिशंकोर्वेदानुवचनं ॥ इसवचनपर्यंत संपूर्णवचनोंकूं पठनकरै ॥ तथा॥ यश्छंदसां ॥ याशांतिमंत्रविषेस्थितजे नववाक्यहैं तिनोंकाजपकरै ॥ तिसतैंअनंतर ॥ पुत्रेषणायावित्तेषणाया ॥ इत्यादिकवचनकापाठकरै॥ तिसतैंअनंतर प्रणवपूर्वक भूरादिकतीनव्याहृतियोंविषे एकएकव्याहृतिकेउच्चारणपूर्वककमतैंमंद मध्यम उत्तम यातीनस्वरोंकरिकैप्रैषमंत्रकाउच्चारणकरै। अब प्रसंगतैंआतुरसंन्यासकानिरूपणकरै हैं ॥ हेशिष्य ॥ यह अष्टश्राद्धतैंआदिलैके जलविषेस्थितिपर्यंत जोसंन्यासकेसाधनोंकानिरूपणकऱ्याहै॥ सोस्वस्थशरीरवालेपुरुषकेवासतै कथनकऱ्याहै ॥ और जिसअधिकारीपुरुषकाशरीर रोगादिकोंकरिकैव्याकुलहोवै ॥ तिसआतुरपुरुषनैंतौ केवल प्रैषमंत्रकाहीउच्चारणकरणा॥तापैप्रैषमंत्रकेउच्चारणमात्रकरिकैही ताकासंन्यासिद्धहोवैहै॥ताआतुरसंन्यासविषे तिनश्राद्धादिकसाधनोंकेकरणेका

कछुजरूरनहींहै॥हेशिष्य॥यहअधिकारीपुरुष जोकदाचित् वाणीकरिकैभी ताप्रेषमंत्रकेउच्चारणकरणेविषे समर्थनहींहोवै॥ तौ सोअधिकारीपुरुष तामरणकालविषे मनकरिकैही ताप्रेषमंत्रकाउच्चारणकरै ॥तहांश्रुति॥यद्यातुरःस्यान्मनसावाचासंन्यसेत्॥अर्थयह॥यहअधिकारी पुरुष जभी अत्यंतआतुरहोवै ॥ तभी मनकरिके अथवा वाणीकरिके संन्यासकूंकरै ॥ १ ॥ यातैं आतुरपुरुषोंकूं तासंन्यासकेग्रहणविषे तिनश्राद्धादिककर्मोंकेकरणेका विधानहैनहीं ॥ किंतु वाणीकरिके अथवा मनकरिके उच्चारणकऱ्याजोप्रेषमंत्रहै ॥ ताप्रेषमंत्रकरिकैही तिनआतुरपुरुषोंकूं तासंन्यासकीप्राप्तिहोवैहै ॥ अब प्रसंगतैं तासंन्यासकेफलका निरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ तासंन्यासआश्रमकूं धारणकरिके जोअधिकारीपुरुष याशरीरकापरित्यागकरैहै ॥ सोअधिकारीपुरुष प्रतिबंधकेअभावहुए शीघ्रही ब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवै है ॥ और किसीप्रतिबंधके विद्यमानहुएतौ कालांतरविषे ताब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवै है ॥ हेशिष्य॥ यहसंन्यासकाफल कपिलादिकऋषियोंनैभी कथनकऱ्याहै ॥ तहां श्लोक ॥ संन्यस्तमितियोब्रूयात् प्राणैःकंठगतैरपि ॥ समूर्यमंडलंभित्त्वा ब्रह्मलोकेमहीयते ॥ अर्थयह ॥ मरणकालविषे कंठदेशविषेप्राणोंकेस्थितहुयेभी जोअधिकारीपुरुष ताप्रेषमंत्रकाउच्चारणकरिके संन्यासआश्रमकूंधारणकरै है ॥ सोपुरुष मरणतैंअनंतर सूर्यमंडलकूंभेदनकरिके ब्रह्मलोकविषेप्राप्तहोवै है ॥ १ ॥ और महाप्रलयकेप्राप्तहुए जभी ताब्रह्मकामरणहोवै है ॥ तभी सोसंन्यासकर्त्तापुरुष ताब्रह्माकेसाथ निर्गुणब्रह्मरूपमोक्षकूंप्राप्तहोवै है ॥ १ ॥ हेशिष्य ॥ तासंन्यासकाफल दक्षप्रजापतिनैभी कथनकऱ्याहै ॥ तहां श्लोक ॥ त्रिंशत्परांस्त्रिंशदवरां स्त्रिंशच्चपरतःपरान् ॥ सद्यःसंन्यासनोदेव नरकात्त्रायतेपितॄन् ॥ अर्थ यह ॥ यह संन्यासकर्त्तापुरुष आपणेसंन्यासआश्रमकेप्रभावतैं पूर्वव्यतीतहुए ९० नवे वंशपर्यंत सर्वपितरोंकूं नरकतैंउद्धारकरैहै ॥ १ ॥ हेशिष्य ॥ तासंन्यासकाफल जाबालउपनिषद्विषेभी कथनकऱ्याहै ॥ तहां श्रुति ॥ शतंकुलानांपुरतोबभूव तथाकुलानांत्रिशतंसमग्रम् ॥ एतेभवंतिसुकृतस्यलोके येषांकुलेसंन्यसतीहविप्रः ॥ अर्थयह ॥ जिसकुलविषे जोब्राह्मण तासंन्यासआश्रमकूंग्रहणकरै है ॥ ताकुलविषे पूर्वव्यतीतहुए एकशत १०० पुरुष तथाआगेहोणेहारे तीनशत ३०० पुरुष स्वर्गादिकउत्तमलोकविषेप्राप्तहोवैहैं ॥१॥ हेशिष्य ॥ संन्यास यानामविषे दोपदहै ॥ एकतौ सं यहपदहै ॥ और दूसरा न्यास यहपदहै ॥ तहां संपदकातौ सम्यक्रूपणाअर्थ है ॥ और

न्यासपदका त्यागअर्थ है तहां त्यागरूपन्यासविषे सोसम्यक्रूपणायहहै ॥ सर्वकालविषे तथासर्वदेशविषे सर्वपदार्थोंका शरीरमनवाणीकरिकैत्यागकरणा ॥ याप्रकारका संन्यासशब्दकाअर्थ मुख्यकरिकैतौ परमहंससंन्यासविषेहीघटैहै ॥ दूसरे कुटीचकादिकोंविषे सोसंन्यासशब्दकाअर्थगौणहै ॥ इतनैंकरिके तासंन्यासकाफल निरूपणकऱ्या ॥ अब ताआतुरसंन्यासकेप्रसंगतैंही तापरमहंससंन्यासीकेमरणतैं अनंतर ताकेपुत्रादिकबांधवोंनैं तथादूसरेभक्तजनोंनैं जोकार्यकरणेयोग्यहै ताका निरूपणकरै हैं ॥हेशिष्य॥ याब्राह्मणनैं परमहंससंन्यासकूंग्रहणकऱ्याहै॥याप्रकार लोकोंकरिकैजान्याहुआ सोपमरहंससंन्यासी जभी मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै॥तभी ताकेपुत्रादिकबांधवोंतैं आदिलेकेनगरकेराजापर्यंत तिनसर्वभक्तजनोंनैं तासंन्यासीकेशरीरके जेजेसंस्कारकरणेयोग्यहैं ते संपूर्णसंस्कार शौनकबौधायनादिकऋषियोंनैं धर्मशास्त्रोंविषेकथनकरे हैं ॥ तिनोंकूं तू श्रवणकर ॥ हेशिष्य ॥ सोपरमहंससंन्यासी जभी मृत्युकूंप्राप्तहोवै ॥ तभी तेअधिकारीजन तासंन्यासीकेशरीरकेलेजाणेवासतै किसीसुंदररथकूंत्यारकरैं॥अथवा किसी सुंदरविमानकूंत्यारकरैं ॥ अथवा किसीसुंदरपालकीकूंत्यारकरै॥ अथवा कोईसुंदरछिका त्यारकरै॥तेरथादिककैसेहोवैं॥विस्तारवालेहोवैं॥तथाअत्यन्त कोमलहोवैं तथा अत्यंतदृढहोवैं।और जैसेमहादेवके भक्तजनतथाविष्णुकेभक्तजन शिवरात्रिविषे तथाकृष्णजन्मअष्टमीविषे नानाप्रकारकेवादित्रबजावैं हैं तथा नृत्यकरैहैं॥तथा जयजयशब्द उच्चारणकरै हैं ॥ तथा वेदोंकेशब्दोंकाउच्चारणकरैहैं ॥ तैसे तेअधिकारीजनभी नृत्यकरै ॥ तथा नानाप्रकारकेवादित्रोंकूंबजावैं ॥ तथा वेदकेशब्दोंकाउच्चारणकरैं और जैसे वसंतमासकेहोलिकाविषे यहलोक नानाप्रकारकाउत्सवकरै हैं ॥ तैसे तेसर्वअधिकारीजन प्रथम स्नानकूंकरै ॥ तथा नानाप्रकारकेदुकूलादिकवस्त्रोंकूंधारणकरैं ॥ तथा आपणेशरीरविषे चंदनकूंलगावैं ॥ तथा आपणेमुखविषे तांबूलकूंपावैं ॥ तथा आपणेगलेविषे सुगंधिवालेपुष्पोंकीमालावोंकूंधारणकरै ॥ तथा हरिद्राकाचूर्ण दुग्ध फल सुगंधिवालेपुष्प इत्यादिक मंगलीकपदार्थोंकूं आपणेहस्तोंविषेधारणकरै ॥ और तिनअधिकारीजनोंकेपास जोबहुतधनकीसंपत्तिहोवै ॥ तौ जिसमार्गकरिके तासंन्यासीकेशरीरकूं बाहरलेजाणाहै॥तिसमार्गकूं तथागृहादिकोंकूं सर्वओरतैंमार्जनकरिके शुद्धकरावैं॥ तथा चंदनकर्पूरादिकोंके

जलकरिकै तिनमार्गादिकोंकूंसिंचनकरै ॥ और जैसे भक्तजन शिवविष्णुकीप्रतिमाकूं पंचामृतकरिकै स्नानकरावैहैं॥तैसे तेभक्तजनभी तासंन्यासीकेशरीरकूं पंचामृतकरिकै स्नानकरावै ॥ तथा श्रीगंगादिकपवित्रजलोंकरिकै स्नानकरावै॥ तथा चंदनादिकसुगंधकरिकैं तासंन्यासीकेशरीरकालेपकरै ॥ तथा तासंन्यासीकेशरीरकूं नानाप्रकारकेपुष्पोंकीमालाकरिकै शोभायमानकरै ॥ तथा ताशरीरकूं चंदन अगर कर्पूर इत्यादिकसुगंधपदार्थोंका वारंवार धूपदेवै ॥ तथा कर्पूरयुक्तआर्तिदीपकोंकरिकै वारंवार ताकीआर्तिकरै ॥ हेशिष्य ॥इसप्रकार तेअधिकारीजन तासंन्यासीकेशरीरकापूजनकरिकै ताविमानादिकोंविषेबैठावै॥और विष्णुआदिकदेवतावोंकीन्यांई तथामहाराजाकीन्यांई तासंन्यासीकेशरीरकूं तिसस्थानतैंउठाइकै वेदकेशब्दकूंउच्चारणकरतेहुए बाहरलेजावैं ॥ तहां वनविषे मलअस्थिआदिकोंतैंरहित जोकोईपिप्पलकावृक्षहै ॥ अथवा मनुष्योंतैंरहित जोकोईवनस्पतिहै ॥ अथवा विष्णुशिवादिदेवतावोंकाजोस्थानहै ॥ अथवा गौवोंकेरहणेकीजा गोशालाहै॥अथवा महानदीकाजोतीरहै॥अथवा दूसराभीजोकोईपवित्रस्थानहै॥इत्यादिकस्थानोंविषे किसीएकस्थानविषे तासंन्यासीकेशरीरकूंलेजाइकै ताशुभस्थानविषेतेअधिकारीजनकूपकीन्यांई वर्तुलाकार तथापुरुषपरिमाणनीचा एकखातकूंखोदैं॥और ताखातकेखोदणेहारेब्राह्मण वारंवारभूरादिकव्याहृतियोंकापाठकरैं॥और ताखातकूंखोदिकरिकै तेअधिकारीजन भूरादिकसप्तव्याहृतियोंकेपाठकरिकै ताखातकूं जलसैंप्रोक्षणकरैं ॥ तिसतैंअनंतर ताखातकेनीचेभूमिविषे प्रणवमंत्रकरिकै दर्भोंकाआसनबिछावैं ॥ और ताखातकेबाह्यदेशविषे तासंन्यासीकेशरीरकूंस्थापनकरिकै सावित्रीमंत्रकेपाठयुक्तस्नानकराइकै मृत्तिकादिकमलतैंरहितकरैं॥तिसतैंअनंतर तेअधिकारीपुरुष तासंन्यासीकेशरीरविषे विष्णुबुद्धिकरिकै पुरुषसूक्तमंत्रकेपाठपूर्वक स्नानकरावैं ॥ तथा पूर्वकीन्यांई सुगंधपुष्पोंकी मालावोंकरिकै शोभायमानकरैं ॥ तिसतैं अनंतर ॥ विष्णोर्हव्यंरक्षस्व ॥ यामंत्रकाउच्चारणकरिकै तासंन्यासीकेशरीरकूं ताखातविषे पूर्वदिशाकीतरफसुखकरिकै बैठावैं॥तिसतैंअनंतर तासंन्यासीकेदंडकूं तीनविभागकरिकै तासंन्यासीकेदक्षिणहस्तविषेदेवै। हेशिष्य।जोअधिकारीब्राह्मण आतुरसंन्यासकूंधारणकरिकै तिसीकालविषेमृत्युकूंप्राप्तभयाहै ॥ तिसब्राह्मणकूं यद्यपि पूर्व शास्त्रकीरीतिसैं दंडप्राप्तनहीं हैं ॥ तथापि

मरणतैंअनंतर ताआतुरसंन्यासीकेहस्तविषे कोईविद्वान्पुरुष ॥ इदंविष्णुर्विचक्रमे ॥ यामंत्रकरिकै दंडकूंदेवै॥ तिसदंडके तीनविभागकरिकै ताआतुरसंन्यासीकेदक्षिणहस्तविषेदेवैं ॥ तिसतैंअनंतर तेअधिकारीजन तासंन्यासीकेहृदयदेशविषे आपणा हस्तराखिकै ॥ हंसःशुचिषत् ॥ इत्यादिकमंत्रका जापकरैं ॥ तथा तासंन्यासीके भ्रूमध्यदेशविषे आपणाहस्तराखिकै पुरुषसूक्त मंत्रोंका जापकरैं ॥ तथा तासंन्यासीके मूर्द्धस्थानविषे आपणाहस्तराखिकै ॥ब्रह्मजज्ञानं॥इत्यादिकमंत्रकाजापकरैं॥तिसतैंअनंतर तेअधिकारीजन ॥ भूमिर्भूमिमगात्॥यामंत्रकाउच्चारणकरिकै तासंन्यासीकेमस्तककूंपाषाणसैंभेदनकरैं॥तिसतैंअनंतरतेअधिकारीजन ॥ प्रणवमंत्रकूं तथाभूरादिकव्याहृतियोंकूं वारंवार उच्चारणकरतेहुए ताखातकूं पाषाणोंकरिकै तथामृत्तिकाकरिकै दृढ पूरणकरै ॥जैसे तासंन्यासीकेशरीरकूं कोईश्वानशृगालादिकजंतु भक्षणनहींकरिजावैं तैसेताखातकूंदृढकरिकैपूरणकरैं॥ काहेतैं जिसदेशविषे तासंन्यासीकेशरीरकूं श्वानशृगालादिकजंतु भक्षणकरिजावैंहैं तिसदेशविषे दुर्भिक्षादिकउपद्रव प्राप्तहोवैंहै ॥ याप्रकार बौधायनऋषिनैं कथनकऱ्याहै ॥ यातैं तिनअधिकारीजनोंनैं तासंन्यासीकेशरीरकूं दृढकरिकैपूरणकरणा॥हेशिष्य॥तापरम हंससंन्यासीकेमरणतैंअनंतर जेजेसंस्कारहमनैं तुमारेप्रतिकथनकरे हैं तेसंपूर्णसंस्कार विधिपूर्वककरेहुए यद्यपि तामुक्तसंन्यासीकूं किसीपुण्यकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ तथा नहींकरेहुए तेसंस्कार तामुक्तसंन्यासीकूं किसीपापकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ तथापि जेअधिकारीपुरुष तासंन्यासीकेमरणतैं अनंतर तिनसंस्कारोंकूं विधिपूर्वककरैं हैं ॥ तिनअधिकारीपुरुषोंकूंतो पुण्यकीप्राप्तिहोवै है॥ और जेअधिकारीजन तिनसंस्कारोंकूंनहींकरैं हैं॥ तिनपुरुषोंकूं पापकीप्राप्तिहोवै है॥ हेशिष्य ॥ तेब्रह्मवेत्तापरमहंससंन्यासी यद्यपि याप्रकारकीइच्छाकरैंहैं॥मरणतैंअनंतर याहमारेशरीरकूं तुमोंनैं छेदनकरिकै श्वानशृगालादिकजंतुवोंकेताईं भक्षणकरणेवासतैंदेणा ॥ तथापि स्वर्गादिकसुखोंकीइच्छाकरतेहुएतेअधिकारीजन तासंन्यासीकेशरीरकूं श्वानशृगालादिकजंतुवोंकेताईं देणेकीइच्छाकरतेनहीं॥किंतु तेअधिकारीजन शास्त्रकेविधिपूर्वक ताशरीरकेसंस्कारकरैंहेशिष्य॥तासंन्यासीकेशरीरकूं ताभूमिविषेजोदृढकरिकैपूरणाहै॥सोतिनपूरणकरणेहारेब्राह्मणादिकचारिवर्णोंकूंहीसुखकाकारणहै॥यातैं तिनब्राह्मणादिकअधिकारीजनोंनैं तासंन्यासी

केशरीरकूंभलीप्रकारसेंपूरणकरणा॥ हेशिष्य॥ कुटीचक बहूदकहंसयातीनप्रकारकेसंन्यासियोंकूंशिखासूत्रविद्यमानहै॥ यातैंकितनैंकऋषियोंनैंतो तिनकुटीचकादिकसंन्यासियोंकेमरणतैंअनंतर तिनोंका अग्निविषेदाहकाविधानकऱ्याहै ॥ और कितनैंकऋषियोंनैं तिनकुटीचकादिकोंके पृथिवीविषे पूरणेका विधानकऱ्याहै॥ यातैं मरणतैंअनंतर तिनकुटीचकादिकसंन्यासियोंकूं याअधिकारीजनोंनैं अग्निविषे दाहकरणा अथवा पृथिवीविषेपूरणा॥ और तिनसर्वऋषियोंनैं यापरमहंससंन्यासीकेदाहकरणेका सर्वथानिषेधकऱ्याहै॥ यातैं याअधिकारी पुरुषोंने तापरमहंससंन्यासीकेशरीरकादह कदाचित्भीनहींकरणा ॥ यहवार्ता कपिलमुनिनैंभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ अनग्नेर्दहनं कार्यं पूर्वभिक्षोर्यथाविधि॥ विदुषस्तुनतत्कार्यमेकोद्दिष्टादिकर्हिचित्॥ अर्थयह॥ श्रौतस्मार्त्ताअग्नितैंरहित जोकुटीचकादिकतीनसंन्यासीहैं तिनोंका मरणतैंअनंतर अग्निविषेदाहकरणा॥ परंतु चतुर्थपरमहंससंन्यासीका अग्निविषेदाह कदाचित्भीनहींकरणा॥ १॥ हेशिष्य॥ देवता केप्रतिमाकीन्याईं भक्तजनोंकेताईं सर्वमनोरथोंकीप्राप्तिकरणेहारा जोयह परमहंससंन्यासीकाशरीरहै ॥ ताशरीरका जभी अग्निविषेदाह होवै है ॥ अथवा श्वानशृगालादिकोंकरिकेभक्षणहोवै है ॥ तभी तिनप्राणियोंकेसंपूर्णमनोरथ नाशकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ यातैं या अधिकारीजनोंनैं तापरमहंससंन्यासीयोंकेशरीरकूं अग्निविषेदाहकरणानहीं ॥ किंतु पूर्वउक्तरीतिसैं ताशरीरकूं पृथिवीविषेदृढकरिकै पूरणा ॥ हेशिष्य॥ इसप्रकार तापरमहंससंन्यासीकेशरीरकूं तापृथिवीविषेपूरिकै तिसतैंअनंतर तेअधिकारीजन॥ अग्नेनाऽग्निःसमिध्यते॥ इत्यादिकमंत्रका पाठकरैं ॥ तथा ॥ सूर्यातेइत्यादिकमंत्रकापाठकरैं ॥ हेशिष्य ॥ जैसे विवाहादिकउत्सवविषे यहलोक प्रसन्नहोवै हैं तैसे प्रसन्नमुखहोइकै तथासर्व शोकक्लेशों तैं रहितहोइकै तेसंपूर्णअधिकारीजन तापृथ्वीविषे पूरणकरेहुएसंन्यासीकेशरीरकूं यथाशक्ति प्रदक्षिणाकरैं ॥ तथा नमस्कारकरैं ॥ और तापृथिवीकेऊपर देवालयकूंकरैं ॥ अथवा वटपिप्पलादिकपवित्रवृक्षकूंस्थापनकरैं ॥ और तादेवालयविषे विष्णुकीप्रतिमाकूंस्थापनकरैं॥ अथवा महादेवकेलिंगकूंस्थापनकरैं॥ अथवा सूर्य गणपति देवी आदिकोंकीप्रतिमाकूंस्थापनकरैं ॥ ताप्रतिमाकीतिनअधिकारीजनोंनैं सर्वदापूजाकरणी॥ हेशिष्य॥ याअर्थविषे हम बहुतक्याकहैं ॥ परंतु याअधिकारीपुरुषोंने

ऐसाकोईउपायकरणा॥ जाकरिकै बहुतादिनोंकेपीछेभीतास्थानविषे किसीमलअस्थिआदिकअशुचिपदार्थोंका संबंधनहींहोवै ॥ ऐसेउपायकीअवश्यकर्त्तव्यताकेप्राप्तहुएभी जेअधिकारीजन तास्थानविषे देवालयकास्थापनकरै हैं ॥ तेअधिकारीजन बहुतबुद्धिमान्जानणे ॥ जैसे आपणेआम्रकेवृक्षोंविषे जल अवश्यपावणाहै॥ परंतु जेपुरुष ताआम्रवृक्षोंविषे जलकूंपावतेहुए ताजलकूं पितरोंकेअर्पणकरै हैं॥ तेपुरुष अत्यंतबुद्धिमान्होवै हैं॥ तैसे तास्थानविषे देवालयकूंकरणेहारेपुरुषभी अत्यंतबुद्धिमान्जानणे॥ हेशिष्य॥ जैसे दूसरेमृतकशरीरकेदर्शनकरणेकरिकै तथास्पर्शकरणेकरिकै यापुरुषोंकूं आपणेशरीरविषे अशुचित्वबुद्धिहोवै है॥ तैसेतापरमहंससंन्यासीके मृतकशरीरके दर्शनकरणे तैं तथास्पर्शकरणेतैं याअधिकारीपुरुषोंनैं आपणेविषे अशुचित्वबुद्धि कदाचित्भीनहींकरणी॥ किंतु विष्णुकीप्रतिमाकेदर्शनकरणेतैं तथा स्पर्शकरणेतैं जैसे भक्तजनोंकूं आपणेशरीरविषे शुचित्वबुद्धिहोवै है॥ तैसे याअधिकारीपुरुषोंनैंभी तामृतकसंन्यासीकेदर्शनतैं तथास्पर्श तैं आपणेविषेशुचित्वबुद्धिकरणी॥ और जिसनदीआदिकोंकेजलकरिकै तामृतकसंन्यासीकूंस्नानकराया है ॥ सोनदीआदिकोंकाजलभी तीर्थरूपहोवै है॥ यातैं तानदीआदिकोंकेजलविषे तिनअधिकारीजनोंनैं तीर्थबुद्धिकरिकैस्नानकरणा॥ परंतु आपणेविषेअशुचित्वबुद्धिकरिकै तिनअधिकारीजनोंनैं स्ताननहींकरणा॥ और तिनअधिकारीजनोंकूं जोकदाचित् स्नानकरणेकीइच्छानहींहोवै॥ तो नहींस्नानकरैं॥ तास्नान विषे तिनपुरुषोंकीइच्छाहीकारणहै॥ कोईअशुचिपणा कारणनहींहै॥ काहेतैं तापरमहंससंन्यासीकाशरीर मरणतैंपूर्वतो साक्षात्विष्णुरूप है॥ और मरणतैंअनंतर ताविष्णुकीप्रतिमाकेतुल्यहै॥ हेशिष्य॥ यहवार्त्ताअत्रिऋषिनैंभी कथनकरीहै॥ तहांश्लोक॥ द्वेरूपेवासुदेवस्य चलंचाचलमेवच॥ चलंसंन्यासिनांरूपमचलंप्रतिमादिकम्॥ १॥ देवताप्रतिमांदृष्ट्वा यतिंदृष्ट्वेवंडिनं॥ प्रणिपातमकुर्वाणो नरकंरौरवंव्रजेत्॥ २॥ अर्थ यह ॥ वासुदेवविष्णुके दो रूपहोवै हैं ॥ एकतो चलरूपहोवै है ॥ और दूसरे अचलरूपहोवै है॥ तहां यहपरमहंससंन्यासीतो ताविष्णुका चलरूपहै॥ और शालग्रामादिकप्रतिमा ताविष्णुका अचलरूपहै॥ १॥ तहां जोपुरुष ताविष्णुकेशालग्रामादिकप्रतिमावोंकूंदेखिकरिकै ताप्रतिमाकूंनमस्कारनहींकरैहैं॥ तथादंडीपरमहंससंन्यासीकूंदेखिकरिकै ताकूंनमस्कार नहींकरैहै॥ सोपुरुष रौरवनरककूंप्राप्तहोवैहै॥ २॥ हेशिष्य॥

यहवार्त्ता महाभारतविषे व्यासभगवान्नेंभीकहीहै॥तहांश्लोक॥दुर्वृत्तोवा सुवृत्तोवा मूर्खःपंडितएवचा ॥ काषायदंडमात्रेण यतिःपूज्योद्वि
जैःसदा ॥ अर्थयह ॥ सोपरमहंससंन्यासी अश्रेष्ठआचारवालाहोवै ॥ अथवा श्रेष्ठआचारवाला होवै॥अथवा मूर्खहोवै अथवा पंडितहोवै॥
परंतु जोसंन्यासी काषायवस्त्रोंकरिके तथादंडकरिके युक्तहोवै ॥ तासंन्यासीकूं ब्राह्मणादिकोंनें विष्णुरूपकरिके पूजनकरणा॥हेशिष्य॥
यहवार्त्ता ॥ अपमानेकृतेतेषां देवाःसर्वेऽपकारिताः॥इत्यादिकवचनोंकरिके नारदमुनिनेंभी कथनकरी है॥तिनवचनोंकायहअभिप्रायहै॥
ब्रह्मा विष्णु रुद्र इंद्र लोकपाल वसुआदिकदेवगण यहसंपूर्णदेवता तापरमहंससंन्यासीकेशरीरविषेरहे हैं ॥ यातैं जेअधिकारीपुरुष
श्रद्धाभक्तिपूर्वक तापरमहंससंन्यासीका पूजनकरै हैं ॥ तेअधिकारीपुरुष तिनब्रह्मादिकसर्वदेवतावोंका पूजनकरै हैं ॥ और जेपुरुष तापर
महंससंन्यासीका निरादरकरै हैं ॥ तेपुरुष तिनब्रह्मादिकसर्वदेवतावोंका निरादरकरै हैं ॥ यातैं याअधिकारीपुरुषोंनें तापरमहंससंन्यासी
का कदाचित्भी निरादरकरणानहीं ॥ और हेशिष्य ॥ जैसे विष्णुभगवान् आपणेशालग्रामादिकप्रतिमावोंविषे सर्वदा स्थितरहे हैं ॥
तैसे सोविष्णुभगवान् तापरमहंससंन्यासीकेशरीरविषेभी सर्वदास्थितहोवै है ॥ यातैं सोपरमहंससंन्यासी जिसजिससंस्थानविषेस्थि
तहोवैहै॥तिससंस्थानविषे साक्षात् सोविष्णुभगवान्ही स्थितहोवै है॥यातैं याअधिकारीजनोंनें तापरमहंससंन्यासीका अवश्यकरिके
पूजनकरणा ॥ और हेशिष्य ॥ यालोकविषे जेपुरुष तापरमहंससंन्यासीकीस्तुतिकरै हैं अथवा निंदाकरै हैं अथवा अन्नवस्त्रादिकदेवै हैं॥
तिनसंपूर्णपदार्थोंकूं सोसंन्यासी विष्णुभगवान्केताईं अर्पणकरैहै ॥ सोविष्णुभगवान् आपही तिनदेणेहारेपुरुषोंकूं यथायोग्य सुखदुःखरू
पफलकीप्राप्तिकरै है ॥ हेशिष्य ॥ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र यहचारिवर्णवालेपुरुष जोकदाचित् तासंन्यासीकूं आपणेधर्मतैंभ्रष्टहुआभीदे
खैं ॥ तौभी तिनचारिवर्णवालेपुरुषोंनें तासंन्यासीकूं किसीदंडदेणेकासंकल्प करणानहीं ॥ काहेतैं तिनसंन्यासियोंकेशिक्षाकरणेहारे
तीनहोवै हैं ॥ तहां एकतौ गुरु शिक्षाकरणेहाराहोवै है॥और दूसरा राजा शिक्षाकरणेहाराहोवै है॥और तीसरा यम शिक्षाकरणेहारा
होवै है ॥ तहां जिनसंन्यासियोंकूं आपणेधर्मविषे संशयहोवै है ॥ तिनसंन्यासियोंकूंतौ आपणागुरुही शिक्षाकरै है ॥ यहवार्त्ता जमदग्नि

॥ ६४ ॥

नामाऋषिनेंभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ अथवायद्गुरुर्ब्रूयात्तत्कार्यमविशंकया ॥ नित्यहेऽनुग्रहेचापि गुरुःसर्वत्रकारणम् ॥अर्थयह ॥
यासंन्यासीकेप्रति जोवचन आपणागुरु कथनकरै ॥ तावचनकूं सोसंन्यासी संशयतैंरहितहोइकै अंगीकारकरै ॥ काहेतैं तासंन्यासीके
नित्यहकरणेविषे तथाअनुग्रहकरणेविषे सर्वत्र सोगुरुही कारणहै ॥ १ ॥ और यालोकविषे जेसंन्यासी मद्यपान स्त्रीगमन आदिकपाप
कर्मोंकूं प्रसिद्धहीकरै हैं ॥ तिनदुराचारीसंन्यासियोंकूं यहराजा शिक्षाकरै है ॥ यहवार्ता दक्षप्रजापतिनेंभीकथनकरीहै॥तहांश्लोक॥पारि
व्राज्यंगृहीत्वातु यःस्वधर्मेनतिष्ठति ॥ श्वपदेनांकयित्वातं राजाशीघ्रंप्रवासयेत् ॥ अर्थयह ॥ जोब्राह्मण तापरमहंससंन्यासकूंग्रहणकरिके
आपणेधर्मविषे स्थितनहींहोवै है ॥ किंतु मद्यपान स्त्रीगमन आदिकपापकर्मोंकूंहीकरै है॥ तादुराचारीसंन्यासीकूं यहराजा मस्तकविषे
श्वानकेपादकाचिह्नकरिके आपणेदेशतैंबाहरनिकासिदेवै ॥ १ ॥ और जेसंन्यासी राजदिकोंतैंगुह्य होइकै तिनपापकर्मोंकूंकरै हैं ॥ तिन
दुराचारीसंन्यासियोंकूं यमराजा शिक्षाकरै है ॥ हेशिष्य॥ गुरु राजा यम यातीनोंतैंभिन्न दूसराकोईपुरुष तिनसंन्यासियोंकूं शिक्षाकरणे
हाराहैनहीं॥याप्रकारकी शास्त्रकेमर्यादाकूंजाणिकरिके याअधिकारीपुरुषोंनें आपणेधर्मकीवृद्धिकरणेवासतै तथास्वर्गादिकसुखोंकीप्राप्ति
वासतै तासंन्यासीकूं शरीरमनवाणीकरिके सुखकीहीप्राप्तिकरणी॥ताकरिके तिनअधिकारीजनोंकूं सर्वमनवांछितपदार्थोंकीप्राप्तिहोवैहै॥
हेशिष्य ॥ यापरमहंससंन्यासीकाशरीर अग्निविषे दाहकरनेयोग्यनहीं है ॥ यातैं जैसे अन्यपुरुषोंकेमरणतैं अनंतर अशौचादिकहोवै हैं॥
तैसे तापरमहंससंन्यासीकेमरणतैंअनंतर अशौचहोवैनहीं ॥ तथा तिलांजलिदानभीहोवैनहीं ॥ तथा घृतकापानकरणाभी होवैनहीं ॥
तथा अग्निकातपनकरणाभी होवैनहीं॥ तथा निंबकेपत्रोंकाभक्षणभी होवैनहीं॥हेशिष्य॥जेअधिकारीपुरुष श्रद्धाभक्तिपूर्वक तापरमहंस
संन्यासीकेशरीरकूं उठाइलैजावै हैं॥तिनअधिकारीपुरुषोंकूं एकएकपादकेउठावणेकरिके अश्वमेधयज्ञकाफल प्राप्तहोवै है॥ और विष्णुभ
गवान्की शालग्रामादिकप्रतिमावोंके दर्शनकरणेतैं तथास्पर्शकरणतैं भक्तजनोंकूं जिसप्रकारकाफल प्राप्तहोवैहै॥तैसाहीफल तिनअधिका
रीजनोंकूं तामृतकसंन्यासीके दर्शनकरणेतैं तथास्पर्शकरणेतैं होवैहै॥हेशिष्य॥जेपुरुष मनकरिके अथवा वाणीकरिके प्रेषमंत्रकाउच्चारण

करिके तापरमहंससंन्यासकूंप्राप्तहुएहैं ॥ तिनपरमहंससंन्यासियोंकेशरीरकूं याअधिकारीजनोंनैं अग्निविषेदाह कदाचित्भीनहींकरणा ॥ किंतु पूर्वउक्तरीतिसैं तासंन्यासीकेशरीरकूं पृथ्वीविषेही पूरणकरणा ॥ तथा तिनपरमहंससंन्यासियोंकेमरणतैंअनंतर अशौच तिलांजलि आदिककर्मभीनहींकरणे ॥ हेशिष्य ॥ जेअधिकारीजन तापरमहंससंन्यासीकेशरीरकूं उठाइलेचलैं हैं ॥ तथा जेपुरुष तिनोंकेसाथचलैं हैं ॥ तथा जेपुरुष तिनकूंखोदैंहैं ॥ तथा जेपुरुष तासंन्यासीकेशरीरकूं तागर्तविषे पूरणकरैं हैं ॥ तेसंपूर्णअधिकारीजन सर्वदा शुद्धहीरहे हैं ॥ हेशिष्य ॥ मरणतैंअनंतर तिनपरमहंससंन्यासियोंविषे यद्यपि अग्निदाहादिकसंस्कार तथापिंडोदकक्रिया होवैनहीं ॥ तथापि तापरमहंससंन्यासीकेमरणतैंअनंतर एकादशदिनविषे तासंन्यासीकेपूर्वगृहस्थआश्रमकेपुत्र पार्वणनामाश्राद्धकूंकरैं॥तहां जैसेविवाहादिककालविषे उत्सवहोवै है ॥ तैसे उत्सवपूर्वक तेपुत्र तापएकादशदिनविषे विष्णुकेनामउच्चारणपूर्वक ताआपणेपिताकानामउच्चारणक रिके शास्त्रविधिपूर्वक तापार्वणश्राद्धकूंकरै ॥ और तिनपुत्रोंतैंभिन्न जेदूसरेअधिकारीजनहैं ॥ तिनोंनैंतौ विष्णुकीप्रसन्नतावासतै द्वादश दिनविषे केवल नारायणबलिहीकरणा पार्वणश्राद्धकरणानहीं ॥ और तासंन्यासीकेपुत्रोंनैंतौ एकादशदिनविषे पार्वणश्राद्धकरणा॥और द्वादशदिनविषे नारायणबलिकरणा ॥ अब बौधायनऋषिउक्तरीतिसैं तानारायणबलिकास्वरूप वर्णनकरै हैं॥हेशिष्य ॥ ताद्वादशदिन विषे तेअधिकारीजन याप्रकारसैं तानारायणबलिकूंकरैं ॥ प्रथमतौ षोडशउपचारोंकरिकै विष्णुकीमहापूजाकरैं ॥ तेषोडशउपचार यहहैं ॥ आवाहन १ आसन २ पाद्य ३ अर्घ्य ४ आचमनीय ५ स्नान ६ वस्त्र ७ उपवीत ८ गंध ९ पुष्प १० धूप ११ दीप १२ अन्न १३ नमस्कार १४ प्रदक्षिणा १५ विसर्जन १६ ॥ तामहापूजातैंअनंतर ताविष्णुदेवकेताईं पायसरूपनैवेद्य अर्पणकरैं ॥ तिसतैंअनंतर तापायसकूं प्रणवपूर्वक भूरादिकतीनव्याहृतियोंकाउच्चारणकरिकै अग्निविषेहोमकरैं॥ इसप्रकार होमकरिकै संस्कारकूंप्राप्तभयाजोविष्णु कानैवेद्यरूपपायसहै॥ तापायसकूं सर्वब्राह्मणोंकेताईंदेवैं॥और तिनअधिकारीजनोंनैं तानारायणबलिविषे त्रयोदशपुरुषोंकूं प्रधानकरिकै पूजणा॥तापूजणेकायहक्रमहै॥तानारायणबलिकर्त्तापुरुषनैं द्वादशसंन्यासियोंकूं निमंत्रणदेकरिकै आपणेगृहविषेलेआवणा॥और जोकदा

चित् द्वादशसंन्यासी नहींप्राप्तहोवैहैं ॥ तौ श्रेष्ठआचारविषे वर्त्तणेहारे गृहस्थब्राह्मणोंकूं निमंत्रणदेकरिकै आपणेगृहविषेलेआवणा॥ और केशवायनमः ॥ इत्यादिकद्वादशमंत्रोंकरिकै तिनद्वादशसंन्यासियोंका अथवा श्रेष्ठब्राह्मणोंका गंधपुष्पादिकोंकरिकै पूजनकरणा॥ तिस तैंअनंतर प्रीतिपूर्वक तिनोंकूं भोजनकराणा ॥ तहां तेद्वादश जेसंन्यासीहोवैं ॥ तौ तिनसंन्यासियोंकेताईं नानाप्रकारकेवस्त्रदेणे ॥ और तेद्वादश जोगृहस्थब्राणहोवैं ॥ तौ तिनब्राह्मणोंकेताईं दक्षिणासहित वस्त्रदेणे ॥ हेशिष्य ॥ जोकदाचित् तिनद्वादशसंन्यासियोंकी प्राप्तीनहींहोवै ॥ तौभी तात्रयोदशसंख्याकेपूर्णकरणेवासतै तथापूजाकरणेवासतै एकविद्वान्संन्यासीकूंतौ अवश्यकरिकै लेआवणा ॥ और तात्रयोदशसंन्यासीकीतौ पुरुषसूक्तविषेस्थित षोडशऋचारूपमंत्रोंकरिकै तिनषोडशउपचारोंकरिकैपूजाकरणी ॥ औरजोकदाचित् सोएकपरमहंससंन्यासीभी नहींप्राप्तहोवै ॥ तौ तिसत्रयोदशस्थानविषेकिसीविद्वान्धर्मात्माब्राह्मणकूंस्थापनकरिकै ताके विषे विष्णुबुद्धिकरिकै तिनषोडशऋचारूपमंत्रोंकरिकै ताषोडशउपचारोंकरिकै पूजनकरणा ॥ और जिसस्थानविषे त्रयोदशसंन्यासी अथवात्रयोदशब्राह्मण भोजनकरैं हैं ॥ तिसस्थानके समीपदेशविषे दर्भोंकूंबिछाइके जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज याचारिभूतप्राणियोंकेताईं नानाप्रकारकेमधुरअन्नकाबलिदेणा।तहां तिनचारिभूतप्राणियोंविषे एकएकभूतप्राणीकानामउच्चारणकरिकैयथाक्रमतैं प्रणवपूर्वक॥भूःस्वाहा भुवःस्वाहा स्वःस्वाहा भूर्भुवःस्वःस्वाहा॥याचारिमंत्रोंकरिकै बलिदानदेणा॥ हेशिष्यतानारायणबलिकर्त्तापुरुषकेगृहविषे जोकदाचित् धनसंपत्ति नहींहोवै॥तौ अन्नवस्त्रमात्रकीप्राप्तिकरिकै संतोषकूंप्राप्तहोणेहारेजेसंन्यासीहैं॥ तिनत्रयोदशसंन्यासियोंकूंहीं तहां भोजनकरावणा॥ और तानारायणबलिकर्त्तापुरुषकेगृहविषे जोकदाचित् धनसंपत्ति बहुतहोवै ॥ तौ वस्त्रभूषणादिकपदार्थोंकेग्रहणकरणे योग्य जोश्रेष्ठब्राह्मणहैं॥तिनब्राह्मणोंकूंहीं तहां भोजनकरावणा॥परन्तु ताधनीपुरुषनैंभी एकसंन्यासीकूंतौ अवश्यकरिकै भोजनकरावणा हेशिष्य॥दानादिककर्मोंकाविधानकरणेहारा जोशास्त्रहै॥सोशास्त्र ताकर्मकर्त्तापुरुषकीशक्तिकेअनुसारही तिनकर्मोंका विधानकरैहैयातैं तानारायणबलिविषे पूर्वकथनकरेजेपक्ष तिनपक्षोंविषे एकपक्षकानियमहम कथनकरतेनहींकिंतु तानारायणबलिकर्त्तापुरुषकूं जैसीशक्ति

होवै ॥ ताशक्तिपरिमाण तिनत्रयोदशसंन्यासियोंकूं अथवा त्रयोदशब्राह्मणोंकूं भोजनकराइकै वस्त्रादिकपदार्थ दानदेणे ॥तिसतैं अनंतर यथाशक्तिपरिमाण दूसरेअनेकब्राह्मणोंकूं नानाप्रकारकेमधुरअन्नोंका भोजनकरावणा॥तथा तिनब्राह्मणोंकेप्रति यथाशक्तिपरिमाण दक्षिणादेणी ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार जेअधिकारीजन तासंन्यासीकेमरणतैंअनंतर नारायणबलिकूंकरै हैं ॥ तेअधिकारीजन इसलोकविषेतौ मनवांछितपदार्थोंकूंप्राप्तहोवै है॥और मरणतैंअनंतर तेअधिकारीजन आपणेसर्वपितरोंसहित विष्णुलोककूंप्राप्तहोवैहैं॥यातैं याअधिकारी जनोंनैं तासंन्यासीकेमरणतैंअनंतर तानारायणबलिकूं अवश्यकरिकैकरणा॥हेशिष्य ॥ इसप्रकार आतुरसंन्यासकेप्रसंगतैं तापरमहंससंन्यासीकेमरणतैंउत्तर जोकार्य करणेयोग्यहोवे है ॥ सौ हमनैं तुमारेप्रति कथनकऱ्या॥अब पूर्वलेप्रसंगकूं तूं श्रवणकर॥हेशिष्य ॥तीनदंडोंकूंधारणकरणेहारा तथाशिखायज्ञोपवीतकूंधारणकरणेहारा तथाआपणेपुत्रकेगृहविषेभिक्षाकरणेहारा जोकुटीचकसंन्यासी है ॥ और तीनदंडोंकूंधारणकरणेहारा तथाशिखायज्ञोपवीतकूंधारणकरणेहारा तथासप्तगृहोंतैं भिक्षामांगिकैभोजनकरणेहारा तथा देशोंविषे विचरणेहारा जोबहूदकसंन्यासीहै॥और एकदंडकूंधारणकरणेहारातथाशिखारहितयज्ञोपवीतकूंधारणकरणेहारा तथाएकवार अन्नकेअष्ट ग्रासोंकूंभोजनकरणेहारा जोहंससंन्यासीहै ॥ ते कुटीचक बहूदक हंस संन्यासीभी जो कदाचित् तीव्रवैराग्यकीप्राप्तिकरिकै तापरमहंस संन्यासकेग्रहणकरणेकीइच्छाकरैं ॥तौ तिनकुटीचकादिक संन्यासियोंनैं तेअष्टश्राद्ध तथाहोमादिकर्म करणेनहीं॥किंतु जैसे आतुरपुरुष केवलप्रेषमंत्रकाउच्चारणकरिकैही तापरमहंससंन्यासकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तसे तेकुटीचकादिकसंन्यासीभी ताप्रेषमंत्रकाउच्चारणकरिकैही ता परमहंससंन्यासकूंधारणकरैं ॥ अब तिनकुटीचकादिकसंन्यासियोंकूं ताप्रेषमंत्रकेउच्चारणकरणेकीविधिका निरूपणकरैहै॥ हेशिष्य ॥ ते कुटीचकादिकसंन्यासी प्रथमआपणेहस्तकीअंजलिकूंजलसैंपूर्णकरिकै भूरादिकतीनव्याहृतियोंविषेएकएकऋचाहृतिकूं प्रणवपूर्वकउच्चारण करिकै अभयं यापदतैंलैके स्वाहा यापदपर्यंत समग्रमंत्रकूं मंद मध्यम उत्तम यातीनस्वरोंकरिकै उच्चारणकरै॥ और आपणेयज्ञोपवीतकूं उतारिकै तथाआपणेशिखाकूंहस्तसैंतोडिकै तिनदोनोंकूं आपणेहस्तकीअंजलिविषेस्थितकरिकैप्रणवपूर्वक ॥ भूस्वाहा ॥ यामंत्रकरिकै

ताशिखायज्ञोपवीतकूं जलविषेपरित्यागकरैं॥अथवा भूमिविषेपरित्यागकरैं ॥तहांश्रुति॥उपवीतं भूमौवाऽप्सुवाविमृजेत् ॥ अर्थयह ॥ सो संन्यासकर्त्तापुरुष आपणेयज्ञोपवीतकूं तथाशिखाकूं पूर्वउक्तमंत्रकरिकै भूमिविषेपरित्यागकरै॥अथवा जलविषे परित्यागकरै॥ १ ॥ तिस तैंअनंतर सोसंन्यातकर्त्तापुरुष विरक्तहोइकै तथानग्नहोइकै उत्तरदिशाकीतरफ अथवा पूर्वदिशाकीतरफजावै ॥ और तासंन्यासकर्त्तापुरुषकूं जोकदाचित् आत्माकेजानणेकीइच्छाहोवै॥तौश्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुकूंआश्रयणकरै। हेशिष्य। कुटीचक बहूदक हंस यहतीनप्रकारके संन्यासी दंड १कमंडलु २ शिक्य ३ भिक्षापात्र ४ पवित्र ५यापंचमुद्रावोंकूं सर्वदाधारणकरै हैं॥ जिनपात्रविषे भिक्षाअन्न माँगिलेआइये तापात्रकानाम शिक्यहै॥और जलकेशोधनकरणेवासतै जोएकवितस्तिपरिमाणवस्त्रहै ताकानाम पवित्रहै॥तापरमहंससंन्यासकेग्रहणकाल विषे तिनकमंडलुआदिकचारमुद्रावोंसहित एकदंडकूंतौ हंससंन्यासी परित्यागकरै ॥ और तिनचारमुद्रावोंसहित तीनदंडोंकूं कुटीचक बहूदकसंन्यासी परित्यागकरैं॥हेशिष्यकुटीचकबहूदक हंस यातीनप्रकारकेसंन्यासतैंउत्तर तापरमहंससंन्यासकेग्रहणकरणेविषे जोशिखायज्ञोपवीतादिकोंकेत्यागकरणेकीविधि हमनैं तुमारेप्रति कथनकरीहै॥तिसीप्रकारकीविधि ब्रह्मचर्य गृहस्थ वानप्रस्थ यातीनआश्रमोंतैंउत्तर तापरमहंससंन्यासकेग्रहणकरणेविषेभी जानिलेणी॥हेशिष्य॥हंससंन्यासीकूंयद्यपि शिखाहोवैनहीं।तथापि यज्ञोपवीतताहंससंन्यासीकूंहोवै है॥यातैं॥सोहंससंन्यासी तापरमहंससंन्यासकेग्रहणकालविषे तायज्ञोपवीतकूं पूर्वउक्तमंत्रकरिकै जलविषे अथवा पृथिवीविषे परित्यागकरै॥ तथा पूर्वआश्रमविषेग्रहणकरेजे दंड कमंडलुआदिकहैं ॥ तिनोंकाभी परित्यागकरै ॥ इतनैंकरिकै ब्राह्मणोंके संन्यासग्रहणकरणेकाप्रकार वर्णनकऱ्या ॥ अब क्षत्रिय वैश्यके संन्यासग्रहणकरणेकाप्रकार जो जाबालादिकउपनिषदोंविषेकथनकऱ्याहै ताका निरूपणकरै हैं ॥ हेशिष्य पूर्वलेकिसीपुण्यकर्मकेप्रभावतैं जिसक्षत्रियकूं तथाजिसवैश्यकूं तीव्रवैराग्यकीप्राप्तिहोवै ॥ सोक्षत्रिय तथावैश्य जोकदाचित् संन्यासआश्रमकेधारणकरणेकीइच्छाकरै ॥ तौ सोक्षत्रिय तथावैश्य पूर्वउक्तरीतिसैं अष्टश्राद्धहोमादिकसर्वकर्मोंकूंकरिकै शिखासहितयज्ञोपवीतकूं जलविषे अथवा भूमिविषे परित्यागकरै ॥ तिसतैंअनंतर नग्नहोइकै उत्तरदिशाविषे अथवा पूर्वदिशाविषे चल्या

जावै॥परंतु जैसेब्राह्मणसंन्यासी ताउत्तरदिशातौंफिरआइकैं दंडादिकचिह्नोंकूंधारणकरै है ॥ तैसे सोक्षत्रियवैश्यसंन्यासी तिसदंडादिक चिह्नकूंधारणकरैनहीं॥और सोक्षत्रियवैश्यसंन्यासी जड उन्मत्त पिशाचकीन्याईं नग्नहोइकैविचरै ॥ और अंतरसैं विद्वान्हुआभी बाहर सैं अविद्वान्कीन्याईं प्रतीतहोवै ॥ हेशिष्य॥यद्यपि तापरमहंससंन्यासविषे आपणेस्वरूपकेछपावणेवासतै नानाप्रकारकेचिह्नोंकाधारण करणा संभवै है ॥ तथापि विष्णुसंबंधी जोदंडरूपचिह्नहै ॥ तावैष्णवदंडरूपचिह्नकेधारणकरणेविषे एकब्राह्मणकूंही अधिकारहै॥क्षत्रिय वैश्यकूं तादंडकेग्रहणकरणेका अधिकारहैनहीं॥तहांषट्ग्रंथिवालेदंडकानाम सुदर्शनहै ॥ और अष्टग्रंथिवालेदंडकानाम वासुदेवहै ॥ या कारणतैं तादंडकूं वैष्णवदंड यानामकरिकैकथनकरैहैं ॥हेशिष्य॥ सोक्षत्रियसंन्यासी तथावैश्यसंन्यासी पूर्वउक्तरीतिसैं शिखायज्ञोपवी तका परित्यागकरिकै तथानग्नहोइकै पुनरावृत्तितैंरहितहुआ उत्तरदिशाविषे अथवा पूर्वदिशाविषे चल्याजावै ॥ यहजोपूर्व हमनैं तुमारे प्रति कथनकऱ्याहै॥याकेविषे यहकारणहै संन्यासकर्त्ताब्राह्मण जभीशिखायज्ञोपवीतकापरित्यागकरिकै तथानग्नहोइकै ताउत्तरदिशाकी तरफ जावैहै ॥ तभी पूर्वउक्तश्राद्धादिककर्मोंकूंकरावणेहाराआचार्यब्राह्मण तासंन्यासकर्त्ताब्राह्मणकेसमीपजाइकै दंडवत्प्रणामकरै है ॥ तथा प्रार्थनाकरिकै कौपीनादिकवस्त्र पहिरावैहै ॥ तथा तासंन्यासीकूं ताउत्तरदिशातैंफिराइकै ब्रह्मवेत्तासंन्यासीगुरुकेसमीप लेआवैहै॥सा आचार्यब्राह्मणकी दंडवत्प्रणामपूर्वक प्रार्थना ताक्षत्रियवैश्यके आगे संभवैनहीं॥और आचार्यब्राह्मणकीप्रार्थनातैं विना सोसंन्यासकर्त्ता पुरुष कौपीनादिकवस्त्रोंकूं धारणकरैनहीं ॥ तथा ताउत्तरदिशातैंपीछेभी फिरैनहीं ॥ याकारणतैं तिनक्षत्रियवैश्यसंन्यासियोंकूं ताउ त्तरादिकदिशातैं पीछेफिरणा तथा कौपीनादिकवस्त्रोंकूंधारणकरणा तथादंडरूपचिह्नकूंधारणकरणा यहतीनोंसंभवैनहीं॥यातैं जैसे ऋष भदेवनैं तथापंचपांडवोंनैं वीरमार्गकरिकैआपणेशरीरका परित्यागकऱ्याहै ॥ तैसे सोक्षत्रियतथावैश्यभी तासंन्यासआश्रमकूंग्रहणकरिकै तावीरमार्गकरिकै आपणेशरीरका परित्यागकरै ॥ हेशिष्य ॥ सिंहादिकोंकेशब्दतैं तथाजलअग्निआदिकोंतैं तथाव्याघ्रादिकजीवोंतैं भयतैं रहितहोइकै शरीरकेनाशपर्यंत जोभूमिविषेविचरणाहै याकानाम वीरमार्ग है ॥ हेशिष्य ॥ तेब्रह्मवेत्ता क्षत्रियसंन्यासी तथावैश्य

संन्यासीआपणेस्थूलशरीरकूं दुःखरूपजाणिकै किसीजलविषेपाइकैनाशकरैं ॥ अथवाकिसीअग्निविषेपाइकैनाशकरैं ॥ अथवा अन्नजलका परित्यागकरिकै नाशकरैं ॥ अथवा किसीएकदिशाविषे निरंतर गमनकरिकैनाशकरैं ॥ इतनैंकरिकै क्षत्रियवैश्यके संन्यासकाप्रकार वर्णनकऱ्या ॥ अब शूद्र स्त्री आदिकोंकेसंन्यासकाप्रकार वर्णनकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ यालोकविषेजिनशूद्रोंकूं तथाजिनस्त्रीयोंकूं तथाजिन वर्णसंकरोंकूंपूर्वलोकिसीपुण्यकर्मकेप्रभावतैं जभी यासंसारतैंतीव्रवैराग्यकीप्राप्तिहोवै ॥ तभी तेशूद्रादिकपूर्वउक्तअष्टश्राद्धोंतैं आदिलैके प्रेषमंत्रपर्यंत कर्मोंकूं कदाचितभी नहींकरै ॥ किंतु तेशूद्रादिक आपणेमनविषे तासंन्यासकासंकल्पकरिकै ताक्षत्रियवैश्यसंन्यासी कीन्याईं तावीरमार्गकरिकै आपणेशरीरका परित्यागकरैं ॥ यावीरसंन्यासविषे सर्वकाआधिकारहै ॥ यावीरसंन्यासकूंही अलिंगसंन्यास कहैहैं ॥ इतनैंकरिकै क्षत्रियवैश्यशूद्रस्त्री आदिकोंकेसंन्यासका वर्णनकऱ्या ॥ अब पुनःपूर्वलेप्रसंगकानिरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ जभी सोब्राह्मणसंन्यासी शिखायज्ञोपवीतकापरित्यागकरिकै तथानगनहोइकै उत्तरदिशाकीतरफजावै है ॥ तभी सोश्राद्धादिककर्मोंकैकरावणे हारा आचार्यब्राह्मण ताकेसमीपजाइकै ताब्राह्मणसंन्यासीकेताईं दंडवत्प्रणामकरैहै ॥ तथा आपणेदोनोंहस्तोंकूं तासंन्यासीकेदोनों पादऊपरराखिकैसोआचार्यब्राह्मण तासंन्यासीकेप्रति याप्रकारकीप्रार्थनाकरैहै ॥ हेब्राह्मण ॥ यालोकविषे जोब्राह्मण वेदवेत्ताहोवै है ॥ ताब्राह्मणकेशरीरविषे संपूर्णदेवता निवासकरैहै ॥ याकारणतैं सोवेदवेत्ताब्राह्मण ईश्वररूपहै ॥ ऐसावेदवेत्ताब्राह्मण तूभी है ॥ यातैं याउत्तमब्राह्मणशरीरकूं व्यर्थहीपरित्यागकरणा तुमारेकूं उचितनहीं है ॥ और हे ब्राह्मण ॥ जे अधिकारीजन तुमारेदर्शनकरिकै तथातु मारेवचनोंकेश्रवणकरिकै कृतार्थहोवैंगे ॥ तिनअधिकारीजनोंकाही यहतुमाराशरीर है॥तुमारा यहशरीरनहीं है ॥ यातैं जैसे यालोकविषे बुद्धिमान्पुरुष परायेपदार्थकानाश करैनहीं॥तैसे तेबुद्धिमान्पुरुषकूंभीयापरायेशरीरकानाशकरणाउचितनहींहै किंतुयादुर्लभअधिकारी शरीरकूंपाइकै तुम ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं वेदांतशास्त्रकाश्रवणकरिकै तथामननानिदिध्यासनकरिकै आत्मसाक्षात्कारकूंसंपादनकरो ताआ त्मसाक्षात्कारकीप्राप्तितैंअनंतर जोतुमारीइच्छाहोवैसोकरो॥हेब्राह्मणजिसब्रह्मवेत्तागुरुकी तुमनैं बहुतकालपर्यंतसेवाकरीहै॥तातुमारेगुरुनैं

हमारेप्रति यहआज्ञाकरीहै ॥ जो याहमारेशिष्यकूं अनेकउपायोंकरिकैभी पीछेफिराइलैआवो ॥ यातैं आत्मज्ञानकीप्राप्तिवासतै तुम आपणेगुरुकीआज्ञाकूंहीं पालनकरो ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारसोआचार्यब्राह्मण जभीतासंन्यासीकेप्रति नानाप्रकारकीप्रार्थनाकरै ॥ तथा इहांखडेरहोइहांखडेरहोयाप्रकारकावचनउच्चारणकरै॥तभीसोसंन्यासीताआचार्यब्राह्मणकीप्रार्थनाकूंअंगीकारकरिकैतहांस्थितहोवै।तिसतैं अनंतर सोआचार्यब्राह्मण तासंन्यासीकेताईं वेणुकादंडहस्तविषेदेवै ॥ तथाकटिविषेबांधणेवासतै सूत्रकादोरादेवै ॥ तथा कौपीनादिक काषायवस्त्रदेवै ॥ तहां सोसंन्यासी ॥ इंद्रस्यवज्रोसि ॥ इत्यादिकमंत्रकरिकैतौ ता दंडकूंग्रहणकरै ॥ और प्रणवमंत्रकरिकै तिनकौपीनादिकवस्त्रोंकूंग्रहणकरै ॥ इसप्रकार ताआचार्यब्राह्मणकीप्रार्थनातैं दंडकमंडलुवस्त्रादिकोंकूंग्रहणकरिकै सोसंन्यासी ताउत्तरदिशातैंफिर आइकै आपणेब्रह्मवेत्तासंन्यासीगुरुकूं दंडवत्प्रणामकरै ॥ और ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिवासतै ताब्रह्मवेत्तागुरुकी शरीरमनवाणीकरिकै सेवाकरै ॥ इतनैंग्रंथकरिकै श्रुतिस्मृतिकेअनुसार तापरमहंससंन्यासकेग्रहणकरणेकाप्रकार निरूपणकऱ्या॥ अबजाबालादिकउपनिषदों विषे कथनकरेजे परमहंससंन्यासियोंकेधर्महैं तिनधर्मोंकानिरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ सोपरमहंससंन्यासी तावेणुकेदंडकूंधारणकरै ॥ तथा शिखायज्ञोपवीततैंरहितहोवै ॥ तथा प्रसन्नमुखहोवै ॥ और सोपरमहंससंन्यासी दोकौपीनोंकूंग्रहणकरै ॥ तथा शीतकीनिवृत्ति वासतै एककंथाकूंग्रहणकरै ॥ और सोसंन्यासी जभी ग्रामविषे भिक्षामांगणेवासतैजावै ॥ तभी ताकौपीनकेऊपरबांधणेवासतै कटि वस्त्रराखै ॥ सोकटिवस्त्र जीर्णहोवै ॥ अथवा नवीनहोवै ॥ और शौचादिककियाकेकरणेवासतै सोसंन्यासी आपणेहस्तविषे तुंबिका पात्रराखै ॥ अथवा काष्ठकापात्रराखै ॥ अथवा वेणुकापात्रराखै ॥ अथवा मृत्तिकाकापात्रराखै ॥ याचारप्रकारकेपात्रोंविषे जोपात्र प्राप्त होवै तापात्रकूंराखै ॥ और सोपरमहंससंन्यासी प्रयोजनतैंविना आपणेहस्तपादादिकअंगोंकूं चलायमानकरैनहीं ॥ और सोसंन्यासी वाक्भेदादिकोंविषेभी चपलहोवैनहीं॥तावाक्भेदकायहस्वरूपहै॥तिसीअर्थकेजनावणेवासतैकिसीपुरुषनैं जोवचनकह्या॥तावचनकूंकिसी दूसरेअर्थविषेजोडिकै तापुरुषकूंदोषदेणा याकानामवाक्भेदहै ॥ जैसे किसीपुरुषनैं यहदेवदत्तनामापुरुष नवकंबलवालाहै याप्रकारका

वचनकह्या॥तावचनाविषेस्थितजो नव यहशब्दहै तानवशब्दकेदोअर्थहोवै हैं॥एकतौ नवीन यहअर्थहोवै हे॥ और दूसरा नवत्वसंख्यावालो यहअर्थहोवै है॥तहां तावचनकहणेहारेपुरुषकातौ यहदेवदत्त नवीनकंबलवालाहै याप्रथमअर्थविषेही तात्पर्य है॥परन्तु तानवशब्दका नवत्वसंख्यावालेविषे तात्पर्यकल्पनाकरिकै तावचनकहणेहारेपुरुषकेप्रति याप्रकारकादोषदेणा॥ जोयादरिद्रीदेवदत्तकूं एककंबलकीप्राप्ति होणीभीदुर्लभहै ॥ तौ यादेवदत्तकेपास नवकंबल कहांसेहोवैगे ॥ याकानाम वाक्भेद है ॥ यावाक्भेदकूंहीं नेयायिक छलयानामकरिकैकथनकरै हैं ॥ याप्रकारकेवाक्भेदविषेभी सोसंन्यासी चपलहोवैनहीं॥और सोसंन्यासी जभी किसीमार्गविषेचालै ॥ तभी आपणेशरीरतैंआगे चारिहस्तपरिमाणभूमिकूंदेखताजावै॥जिसकरिकै कोईजंतु पादकेनीचेनहींआइजावै ॥ और आपणेआसनविषेस्थितहुआ सोसंन्यासी आपणेनासिकाकेअग्रभागकूंदेखतारहै ॥ अथवा वेदांतकेपुस्तककूंदेखतारहै ॥ जाकरिकै चित्त बहिर्मुखनहींहोवै ॥ और सोपरमहंससंन्यासी इतनैंस्थानोंविषे निवासकरै ॥ तहां सोपरमहंससंन्यासी किसीशून्यगृहविषे निवासकरै ॥अथवा किसीदेवताकेमंदिरविषे निवासकरै ॥अथवा किसीपृथिवीकीगर्त्तोविषे निवासकरै॥अथवा किसीपलालादिकतृणोंकेसमुदायविषे निवासकरै॥अथवा किसीवृक्षकेमूल विषे निवासकरो॥ अथवा जिसस्थानविषे कुलाल मृत्तिकाकेपात्र बणावै है॥ताकुलालकीशालाविषे निवासकरै॥अथवा अग्निहोत्रीब्राह्मणके अग्निकीशालाविषे निवासकरै ॥अथवा किसीनदीकेपुलविषेनिवासकरै ॥ अथवा किसीपर्वतकीगुफाविषे निवासकरै॥अथवा किसी वृक्षकेकोटरविषे निवासकरै॥ अथवा किसीसमानभूमिविषेनिवासकरै॥अथवा किसीबगीचेविषेनिवासकरै॥ इत्यादिकएकांतस्थानोंविषे निवासकरिकै सोपरमहंससंन्यासी सर्वदाआपणेशरीरकूं तथाअंतःकरणकूं शुद्धराखै॥और सोसंन्यासी भिक्षामांगणेवासतैग्रामविषेजावै ॥ तहांआपणेस्थानतैंनिकसिकै ताग्रामविषे प्रदक्षिणाक्रमकरिकै जेगृहआवैं॥तिनगृहोंतैं भिक्षाअन्नकूंग्रहणकरै ॥ और सो संन्यासी आपणे उदरकूंहीं पात्रकरिकै अथवा आपणेहस्तोंकूंहीं पात्रकरिकै ताभिक्षाअन्नकूंग्रहणकरै॥इहां जोसंन्यासी आपणेहस्तविषे भिक्षाअन्नकूंग्रहण करता नहीं ॥ किंतु दूसराकोईभक्तजन ताकेमुखविषेअन्नदेवै है ॥ तासंन्यासीका उदरहीपात्रहै ॥ और जोसंन्यासी आपणेहस्तविषे

भिक्षाअन्नग्रहणकरिकै भोजनकरै है॥तासंन्यासीका हस्तहीपात्रहै॥और जोसंन्यासी आपणेउदरकूं तथाहस्तोंकूं पात्रकरणेविषेसमर्थनहीं होवै ॥ सो संन्यासी किसीवस्त्रादिकोंकूं पात्रकरिकै ताकेविषे भिक्षाअन्नकूंग्रहणकरै॥ और ताभिक्षाअन्नकूं औषधिकीन्याईं ग्रहणकरै ॥ तात्पर्ययह जैसे रोगीपुरुष आपणेरोगकीनिवृत्तिवासतै औषधिकूंभक्षणकरै है ॥ कोईस्वादकेवासतै औषधिकाभक्षणकरैनहीं ॥ तैसे सो संन्यासीभी केवल क्षुधाकीनिवृत्तिवासतै ताभिक्षाअन्नकूंभक्षणकरै ॥ किसीस्वादवासतै अथवा शरीरकेपुष्टकरणेवासतै ताभिक्षाअन्नकूं भोजनकरैनहीं ॥ तहांश्रुति ॥ औषधवदशनमाचरेत्॥ और सोपरमहंससंन्यासी किसीपदार्थकी निंदाभीनहींकरै ॥तथा किसीपदार्थकी स्तुतिभीनहींकरै ॥ और भिक्षाअन्नकेप्राप्तहुए अथवा नहींप्राप्तहुए सोसंन्यासी एकरसरहै॥ और आदरपूर्वक नानाप्रकारकेरसयुक्त भिक्षा अन्नकूंप्राप्तहोइकै सोसंन्यासी प्रसन्ननहींहोवै॥ और निरादरपूर्वक रसादिकगुणोंतैंरहित भिक्षाअन्नकूंप्राप्तहोइकै सो संन्यासी ग्लानिकूंनहीं प्राप्तहोवै ॥ तथा सुख दुःख शीत उष्ण इत्यादिकद्वंद्वधर्मोंविषे समानरहै ॥ तथा उपकारकरणेहारेभक्तजनोंविषे तथा अपकारकरणेहारे दुष्टजनोंविषे समानरहै ॥ और सोपरमहंससंन्यासी इतनैंपरिमाणअन्नकाभोजनकरै ॥ जिसकरिकै यहशरीर अत्यंतस्थूलभीनहींहोवै ॥ तथा अत्यंतकृशभीनहींहोवै॥और सोपरमहंससंन्यासी दोमासतैंअनंतरदोऋतुकीसंधिविषे पूर्णमासीकेदिनविषे केशश्मश्रुनखोंका मुंडन करावे ॥परंतु कक्षविषेस्थितबालोंका तथाउपस्थविषेस्थितबालोंका मुंडनकरावैनहीं॥और वर्षाकालविषे सोसंन्यासी केशोंकामुंडनक रावे अथवा नहींकरावे ॥ यहदोनोंपक्ष शास्त्रविषेकहे है॥ और सोपरमहंससंन्यासी आषाढमासकीपौर्णमासीविषे व्यासपूजाकूंकरै ॥ ताव्यासपूजाविषे व्यासपंचक १ कृष्णपंचक २ आचार्यपंचक ३ गुरुपंचक ४ आत्मपंचक ५ यापंचपंचकोंकीपूजाकरै ॥ तहां पूर्वादिक चारिदिशावोंविषे यथाक्रमतैंस्थितजे वैशंपायन सुमंत जैमिनि पैल यहचारिहैं ॥ तिनचारोंकेमध्यविषेस्थितजो व्यासभगवान्है ॥ यापांचोंकानाम व्यासपंचकहै ॥ १ ॥ और पूर्वादिकचारिदिशावोंविषे यथाक्रमतैंस्थितजे वासुदेव संकर्षण प्रद्युम्न अनिरुद्ध यहचारिहैं ॥ तिनचारोंकेमध्यविषेस्थितजो कृष्णभगवान्है ॥ यापांचोंकानाम कृष्णपंचकहै ॥ २ ॥ और पूर्वादिकचारि

दिशावोंविषे यथाक्रमतैंस्थितजे विश्वरूप पद्मनाभ हस्तामलक तोटक यहचारि हैं ॥ तिनचारोंकेमध्यविषे स्थितजो शंकराचार्य है ॥ यापांचोंकानाम आचार्यपंचकहै ॥ ३ ॥ और पूर्वादिकचारिदिशावोंविषे यथाक्रमतैं स्थितजे परमगुरु परमेष्ठिगुरु गोविंदपाद गोडपाद यहचारि हैं ॥ तिनचारोंकेमध्यविषेस्थितजो आपणागुरुहै ॥ तिनपांचोंकानाम गुरुपंचकहै ॥ ४ ॥ और पूर्वादिकचारिदि शावोंविषे यथाक्रमतैंस्थितजे अंतरात्मा ज्ञानात्मा परात्मा आनंदात्मा यहचारिहैं ॥ तिनचारोंकेमध्यविषेस्थितजो आत्मा है ॥ या पांचोंकानाम आत्मपंचकहै ॥ ५ ॥ हेशिष्य ॥ सोपरमहंससंन्यासी तापूजामंडलविषे याप्रकार तिनपंचकोंकास्थापनकरिकै तिनोंका पूजनकरे॥तहां तापूजामंडलकेमध्यविषेतो कृष्णपंचककास्थापनकरै॥और ताकृष्ण पंचककी पूर्वदिशाविषे आत्मपंचककूं स्थापनकरै ॥ और ताकृष्णपंचककी दक्षिणदिशाविषे आचार्यपंचककूं स्थापनकरै ॥ और ताकृष्णपंचककी पश्चिमदिशाविषे गुरुपंचककूं स्थाप नकरै ॥ और ताकृष्णपंचककी उत्तरदिशाविषे व्यासपंचककूं स्थापन करै ॥ औरताकृष्णपंचकके पूर्वदक्षिणदिशाकेमध्यविषे स्थित जोअग्निकोणहै ॥ ताअग्निकोणविषे गणपतिकास्थापनकरै ॥ और दक्षिणपश्चिमदिशाकेमध्यविषेस्थित जोनैर्ऋतकोणहै ॥ तानैर्ऋत कोणविषे दुर्गादेवीकूं स्थापनकरै॥ और पश्चिमउत्तरदिशाके मध्यविषेस्थित जोवायुकोणहै॥ तावायुकोणविषे सरस्वतीकूं स्थापनकरै ॥ और उत्तरपूर्वदिशाकेमध्यविषेस्थित जोईशानकोणहै ॥ ताईशानकोणविषे क्षेत्रपालकूं स्थापनकरै ॥ और ताकृष्णपंचककेसर्वओरतैं सनंदन सनक सनत्कुमार सनत्सुजात याचारोंकूं स्थापनकरै ॥ और ताकृष्णपंचककेअग्रभागविषे नरनारायण यादोनोंकूं स्थापन करै ॥ और ताकृष्णपंचककेपृष्ठदेशविषे ब्रह्मा विष्णु महेश्वर यातीनोंकूं स्थापनकरै ॥ और तानरनारायणकेअग्रभागविषे नारदमुनिकूं स्थापनकरै ॥ इसप्रकार दूसरे भी मुनियोंकूं तथादिक्पालादिकोंकूं यथायोग्य आपणेआपणेस्थानोंविषे स्थापनकरै ॥ तिनसंपूर्णोंविषे कृष्णभगवान्कातो मूलमंत्रकरिकैपूजनकरै ॥ और दूसरेकातो प्रणवपूर्वक ॥ गुरवेनमः आत्मनेनमः॥ इत्यादिकनाममंत्रोंकरिकै पूजन करै है॥हेशिष्य इसप्रकार आषाढमासकीपौर्णमासीविषे व्यासादिकसर्वदेवतावोंकापूजनकरिकै सोपरमहंससंन्यासी तास्थानविषे दोमास

रहणेकासंकल्पकरिकै अथवा चारिमासरहणेकासंकल्पकरिकै तहां निवासकरै ॥ हेशिष्य ॥ सोपरमहंससंन्यासी ताचातुर्मासविषेजोएक स्थानविषेनिवासकरैहै ॥ताकेविषे यहकारणहै॥ताचातुर्मासकालविषे यहभूमि अनेककोटिस्थावरजंगमजीवोंकरिकै पूर्णरहै है॥ताचातुर्मासविषे चलणेकरिकै तिनजीवोंकीहिंसा अवश्यकरिकैहोवैहै ॥ यातैं तिनजीवोंकीरक्षाकरणेवासतै तथाशास्त्रकेआज्ञाकूंपालनकरणेवासते सोसंन्यासी तावर्षाकालविषे एकस्थानविषेहीनिवासकरैहै॥अब तासंन्यासीविषे यमनियमादिकसाधनोंकानिरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ सोपरमहंससंन्यासी स्थावरजंगमशरीरोंविषे किसीभीशरीरकी हिंसाकरैनहीं ॥ तथा असत्यवचनकूंभी उच्चारणकरैनहीं ॥ तथा किसी जीवके तृणकोभीचोरी करैनहीं ॥ तथास्त्रियोंविषे विषयभोगकीइच्छा करैनहीं॥ तथा विषयभोगकेसाधनोंकूंभी एकठाकरैनहीं ॥ तथाकिसीदंभयुक्तचेष्टाकूंभी करैनहीं ॥तथा किसीव्यर्थवचनकूंभी उच्चारणकरैनहीं॥और सोपरमहंससंन्यासी सर्वदा ,महादेवविष्णुकेस्मरणकीर्त्तनादिकोंकूंकरै ॥ तथा प्रातःकालादिकोंविषे प्राणायामकूंकरै॥तथा निरंतर वेदांतशास्त्रकाविचारकरै तथा त्रिकालस्नानकरै॥ तथा आपणागुरु जिसप्रकारकीआज्ञाकरै ॥ तिसप्रकार गुरुकीभक्तिकरै ॥ और वर्षाकालतैंभिन्नकालविषे एकस्थानविषेनहींरहै ॥ और तावर्षाकालविषेभी जिसदेशविषेरहै ॥ तिसकेपदार्थोंविषे रागद्वेषतैंरहितहोवे ॥ तथा प्रियपदार्थोंकीप्राप्तितैं हर्षकूंनहींप्राप्तहोवै ॥ तथा अप्रियपदार्थोंकीप्राप्तितैं द्वेषकूंनहींप्राप्तहोवै ॥ और शत्रुमित्रविषे तथामानअपमानविषे समानरहै ॥ तथा सर्वभूतप्राणियोंकूं आपणेआत्माकीन्याईंजाणिकै शरीरमनवाणीकरिकैतिनभूत प्राणियोंकूं सुखकीहीप्राप्तिकरै ॥ किसीभीप्राणीकूं दुःखकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ और सुवर्णादिकपदार्थोंकूं तथासुंदरस्त्रियोंकूं काकविष्ठाकेसमान तुच्छजाणिकै दूरसैं तिनोंकापरित्यागकरै ॥ तथा तिनोंका मनविषे स्मरणभीनहींकरै ॥ और सोसंन्यासी सर्वदा आपणेमनकेप्रति याप्रकारकाबोध करै॥हेमन॥जिसशरीरविषे तूतादात्म्यअभिमानकरैहै ॥ सोशरीरकेसाहै॥पितामाताकेशुक्रशोणितरूपमलतैं उत्पन्नभयाहै॥ तथा विष्ठामूत्रादिकमलोंकेरहणेकास्थानहै ॥ तथासर्वअवस्थावोंविषे कामक्रोधादिकअनेकरोगों करिकै ग्रस्तहै ॥ तथा नाशवान्है ॥ ऐसेनिंदितशरीरविषे तादात्म्यअभिमानकरणा तुमारेकूं उचितनहींहै ॥ और

हेशिष्य॥सोपरमहंससंन्यासी मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकेअभेदज्ञानकीप्राप्तिवासते ताब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं वेदांतवचनोंका श्रवणकरिकै तिनवचनोंकेअर्थका मननकरै॥तथा निदिध्यासनकरै ॥ और तासंन्यासीकूं जबपर्यंत ताआत्मसाक्षात्कारकीप्राप्ति नहींहोवै॥तबपर्यंत सोसंन्यासी आपणेअंतःकरणकीशुद्धिवासते यथाशक्तिपरिमाण प्रणवमंत्रकाजपकरै ॥ तथा हंसमंत्रकाजपकरै॥तथा दूसरेभीमंत्रकाजपकरै ॥ परंतु मुख्यकरिकैतौ प्रणवमंत्रका तथाहंसमंत्रकाही जपकरै ॥ और सोसंन्यासी अश्वादिकोंऊपरआरूढहोवैनहीं॥ तथा धनादिकपदार्थोंकूं इकट्ठाकरैनहीं ॥ किंतु जिनअन्नवस्त्रादिकपदार्थोंतैं विना याशरीरकापरित्यागहोइजाताहोवै ॥ तिनअन्नवस्त्रादिकपदार्थोंकूंग्रहणकरै ॥ शरीरकेनिर्वाहतैंअधिकपदार्थोंका ग्रहणकरैनहीं ॥ अब परमहंसउपनिषदविषे तापरमहंससंन्यासीके जेधर्म कथनकरे हैं तिनधर्मोंका निरूपणकरे हैं ॥हेशिष्य॥ प्रातःकाल मध्याह्नकाल सायंकाल यातीनसंध्यावोंविषे जैसे ब्राह्मणादिक संध्याकर्मकूं अवश्यकरिकैकरे हैं ॥ तैसे सोसंन्यासीभी तातीनसंध्यावोंविषे तासंध्याकर्मकूं अवश्यकरिकैकरै ॥ तहां गुरुकेउपदेशतैं जीवब्रह्मकेअभेदकूं निश्चयकरिकै मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारका जोनिरंतरचिंतनकरणाहै ॥ यहही तासंन्यासीका संध्याकर्महै ॥ और किसीजीवविषे विद्यमानजेकामक्रोधादिकदोषहैं तिनदोषोंका विनाही प्रसंगतैं कथनकरणा याकानामनिंदाहै ॥ अथवा जिसजीवविषे तेकामक्रोधादिकदोषहैंनहीं ॥ परंतु तेकामक्रोधादिकदोष ताजीवविषेआरोपणकरिकै तिनदोषोंकाकथनकरणा याकानाम निंदाहै ॥ ऐसीकिसीनिंदाकूंभी सोसंन्यासी करैनहीं॥और मैं विद्यादिकगुणोंकरिकै सर्वतेअधिकहूं याप्रकारकी जोआपणेविषे सर्वतैंअधिकताबुद्धिहै याकानाम गर्वहै ॥ ऐसेगर्वकूंभी सोसंन्यासीकरै नहीं॥और यापुरुषका किसीभीप्रकारकरिकै लोकविषेअपमानहोवै याप्रकार दूसरेकीअधिकताकूंनहींसहनकरणा याकानाम मत्सरहै ॥ ऐसेमत्सरकूंभी सोसंन्यासी करैनहीं ॥ और आपणेशरीरमनवाणीकरिकै कन्याजोकोईशुभकर्महै॥ताआपणेशुभकर्मकूं आपणीमहानता जनावणेवासतै दूसरेलोकोंकेआगे प्रगटकरणा याकानाम दंभहै ॥ ऐसेदंभकूंभी सोसंन्यासी करैनहीं॥और श्रुतिविरुद्धकुतर्कोंकरिकै किसीदूसरेवादीकेपक्षकासंडनकरणा याकानाम दर्प है ॥ ऐसेदर्पकूंभी सोसंन्यासीकरैनहीं ॥ और सोसंन्यासी सुखविषे तथासुखके

साधनोंविषे राग नहींकरे ॥ और दुःखविषे तथादुःखकेसाधनोंविषे द्वेषनहींकरे ॥ और सोसंन्यासी स्वप्नविषेभी स्त्रीकेसंभोगकीइच्छा करैनहीं ॥ और आपणे शरीरमनवाणीकरिके किसीभीकालविषे भूतप्राणियोंकाद्रोह करैनहीं॥ और दैवयोगतैं प्राप्तहुए सुवर्णादिकपदार्थों कूं ग्रहणकरैनहीं ॥ तथा अनात्मारूपदेहादिकोंविषे आत्मबुद्धि करैनहीं॥ और क्षुद्रचित्तवालेजीवोंविषेस्थित जेविद्याअभिमानादिकधर्म हैं ॥ तिनोंकूंदेखिके तासंन्यासीनै क्षमातैंरहितनहींहोणा ॥ किंतु तिनोंऊपरभी क्षमाधारणी ॥ और सोसंन्यासी याआपणे शरीरविषे अहंअभिमान नहींकरे॥ तथा शरीरकेसंबंधी वस्त्रादिकपदार्थोंविषे ममअभिमान नहींकरै॥ हेशिष्य॥ जिससंन्यासीकूं आपणेमोक्षकीइच्छा होवै ॥ सोसंन्यासी मिथ्यावचनकूं वाणीकरिके तथामनकरिके कदाचित्भी नहींउच्चारणकरै॥ और जिसचेष्टाकरिके यहलोक बहुतप्रसन्न होवैं॥ तथाआपणेविषेप्रीतिकरैं॥ ऐसीचेष्टाकूं सोसंन्यासी कदाचितभी नहींकरै॥ और सोसंन्यासी याआपणे शरीरकूं सर्वदा विष्ठा मूत्र मृत ककेसमानदेखै ॥ और सोपरमहंससंन्यासी स्तुतितैंभीरहितहोवै॥ तथा नमस्कारतैंभीरहितहोवै॥ तथा स्वधाकारतैंभी रहितहोवै ॥ तथा नियमकरिके एकस्थानविषे रहैनहीं ॥ किंतु आपणीइच्छापूर्वकविचरे ॥ और सोसंन्यासी आत्मातैंविना किसीकाभी पूजनकरैनहीं ॥ तथा दूसरेजीवोंकूं किसीशुभकर्मतैं निवृत्तकरैनहीं॥ और आत्मातैंभिन्न अर्थकूंकथनकरणेहारेजेमंत्र हैं तिनमंत्रोंका सोसंन्यासी जपकरैनहीं तथा आत्मातैंभिन्नपदार्थोंकेध्यानकूं तथा उपासनाकूं करैनहीं॥ किंतुसर्वदा आत्माकाही ध्यान उपासनाकरै॥ हेशिष्य॥ सोपरमहंससंन्यासी यासर्वजगत्कूं आपणाआत्मारूपकरिकेदेखे है ॥ याकारणतैं तापरमहंससंन्यासीकूं यालोकविषे यहकर्म हमारेकूं अवश्यकरणेयोग्यहै याप्रकारकीबुद्धिकरिके कोईकर्म करणेयोग्यनहींरहे है ॥ और यहकर्म हमारेकूं नहींकरणेयोग्य है याप्रकारकीबुद्धिकरिके कोईकर्म परित्यागकरणेयोग्यनहीं हैं ॥ किंतु सोविद्वान्संन्यासी बालककीन्याईं ग्रहणत्यागतैंरहितहोइकैविचरे है ॥ और तापरमहंससंन्यासीकूं आत्मातैंभिन्नरूपकरिके याजगत्कूंविषयकरणेहाराज्ञान होवैनहीं ॥ तथा आत्मातैंभिन्नरूपकरिके याजगत्कूंविषयकरणेहाराज्ञानभी होवैनहीं ॥ और तासंन्यासीकूं कोईइच्छाकरिविषयप्रयोजनभी होवैनहीं ॥ तथा मैं तूं

जगत् इत्यादिकभीहोवैनहीं ॥ हेशिष्य ॥ जोअद्वितीयआनंदस्वरूपब्रह्म सर्वजगत्काआत्मारूपहै ॥ तथा आश्रयरहितहै॥ ताआनंदस्वरूपब्रह्मविषेही तासंन्यासीकीसर्वदा स्थितिरहे है ॥ तात्पर्यय इ ॥ मठादिकसर्वपदार्थोंविषे ममत्वकापरित्यागकरिके सोसंन्यासी ताअद्वितीयब्रह्मविषेही सर्वदा स्थितिकरै ॥ और सोपरमहंससंन्यासी रागपूर्वक सुवर्णादिकपदार्थोंकूंदेखैनहीं॥ तथा तिनसुवर्णादिकोंका रागपूर्वक स्पर्शनहींकरै ॥ तथा तिनसुवर्णादिकपदार्थोंका संग्रहनहींकरै काहेतैं यहसुवर्णादिक हमारेकूं प्राप्तहोवैं याप्रकारकेरागकरिके जोसंन्यासी तासुवर्णादिकपदार्थोंकूंदेखे है ॥ सोसंन्यासी ब्राह्मणीस्त्रीविषे शूद्र पुरुषतैंउत्पन्नहुए पुत्रकेसमानहोवै है ॥ और जोसंन्यासी तारागपूर्वक तिनसुवर्णादिकोंका स्पर्शकरै है ॥ सोसंन्यासी शूद्राणीस्त्रीविषे निषादपुरुषतैंउत्पन्नहुए पुत्रकेसमानहोवै है ॥ और जोसंन्यासी तिनसुवर्णादिकोंका संग्रहकरै है॥ सोसंन्यासी आत्महत्याराहोवै है॥ और यहआत्मादेव सर्वजगत्रूपहै ॥ यातैं याआत्माकेहनन कियेतैं तासर्वजगत्काहननहोवै है ॥ और सोपरमहंससंन्यासी विवेक वैराग्य शम दम इत्यादिकसाधनोंयुक्तहोइकै आपणेयज्ञोपवीतके स्थानविषे आत्मज्ञानरूपयज्ञोपवीतकूंधारणकरै ॥ तथा शिखाकेस्थानविषेभी ताआत्मज्ञानरूपशिखाकूंधारणकरै ॥ काहेतैं ब्रह्मउपनिषद्विषे तथा परमहंसउपनिषद्विषे तथा आरुणिकउपनिषद्विषे ताआत्मज्ञानरूपयज्ञोपवीताशिखाकाधारणकरणा विधानकऱ्याहै ॥ तहां प्रथम ब्रह्मउपनिषद्केवचनोंकाअर्थ निरूपणकरै हैं ॥ हेशिष्य ॥ जैसे यालोकविषे ब्राह्मणादिकोंकेगलेविषेस्थित जोतीनदोरवाला यज्ञोपवीतहै ॥ तायज्ञोपवीतका एकएकदोरतीनतीनतंतुवोंकाहोवै है ॥ यातैं सोयज्ञोपवीत नवतंतुरूपहोवै है ॥ तैसे तात्रह्मवेत्तासंन्यासीके हृदयदेशविषेस्थितजेनवतत्त्वहैं ॥ तेनवतत्त्वहीं तासंन्यासीका यज्ञोपवीतहैं ॥ तेनवतत्त्व यह हैं ॥ ईश्वर१ हिरण्यगर्भ २ विराट् ३ विश्व ४ तैजस ५ प्राज्ञ ६ प्राण ७ अपान ८ व्यान ९ ॥ हेशिष्य॥ जैसे नवतंतुरूपसूत्रतैंउत्पन्नभया जोउपवीतहै॥ सोउपवीत यज्ञादिककर्मोंका साधनरूपहै॥ याकारणतैंताउपवीतकूं शास्त्रवेत्तापुरुष यज्ञोपवीतयानामकरिकैकथनकरैहै। तैसेतिननवतत्त्वोंकोविचारकरिके प्रगटभयाजो अखंडचैतन्यहै॥ सोचैतन्य ज्ञानरूपयज्ञका अंगरूपहै॥ यातैं ताचैतन्यकूं शास्त्रवेत्तापुरुष यज्ञोपवीत यानामकरिकैकथनकरैहैं॥

और ॥ यज्ञोपवीतंपरमंपवित्रं ॥ यहमंत्रभी मुख्यवृत्तिकरिकै ताचैतन्यरूपयज्ञोपवीतकूंही कथनकरै है ॥ काहेतैं परमपवित्ररूपता ताचै
तन्यतैंविना दूसरेकिसीअनात्मपदार्थविषे संभवैनहीं ॥ किंतु सोचैतन्यही परमपवित्ररूपहै ॥ ऐसेचैतन्यरूपयज्ञोपवीतकूं आपणेहृदयदे
शविषेजाणिकै यहविद्वान्पुरुष शास्त्रकीरीतिसैं ताबाहरलेयज्ञोपवीतशिखाका परित्यागकरै ॥ तथा संपूर्णदृश्यप्रपंचकूं मिथ्याजा
णिकै परित्यागकरै॥और आकाशादिकसर्वप्रपंचका अधिष्ठानरूप जोअक्षरपरब्रह्महै॥ तापरब्रह्मकूंही सोविद्वान्पुरुष सूत्ररूपकरिकैनिश्च
यकरै ॥ काहेतैं जैसे लोकप्रसिद्धतंतु आपणेविषेस्थितपटकूं प्रकाशकरै है॥ याकारणतैं तिनतंतुवोंकू सूत्र यानामकरिकैकथनकरैहैं॥तैसे
सोपरब्रह्मभी आपणेविषेस्थित जगत्रूपपटकूं प्रकाशकरै है॥यातैं तापरब्रह्मकूं शास्त्रवेत्तापुरुष सूत्र यानामकरिकैकथनकरैहैं॥हेशिष्य ॥
जिसविद्वान्पुरुषनैं ऐसेपरब्रह्मरूपसूत्रकूं आपणाआत्मारूपकरिकै जान्याहै॥सोविद्वान्पुरुषही सर्ववेदोंकेअर्थकूं जानणेहाराहै॥हेशिष्य॥
जैसे सूत्रकेआधार सर्वमणियांरहै है ॥ तैसे जिसचैतन्यरूपब्रह्मविषे यहसंपूर्णदृश्यप्रपंचस्थितहै ॥ ताचैतन्यरूपसूत्रकूंही यहविद्वान्पुरुष
धारणकरै ॥ हेशिष्य ॥ जोपुरुष अष्टांगयोगकूंजाणैहै ॥ तथा नित्यअनित्यवस्तुकेविवेकवालाहै ॥ सोपुरुषही ताचैतन्यरूपसूत्रकेधारणे
विषे समर्थहोवै है ॥ तिनसाधनोंतैं हीनपुरुष ताचैतन्यरूपसूत्रकेधारणकरणेविषे समर्थहोवैनहीं ॥ हेशिष्य ॥ जीवब्रह्मकेअभेदकूंजानणे
हारा जोविद्वान्पुरुष बाह्यसूत्रकापरित्यागकरिकै ताचैतन्यब्रह्मरूपसूत्रकूं धारणकरै है॥ सोविद्वान्पुरुषही चेतनहै ॥ ताब्रह्मवेत्ताविद्वान्
तैंभिन्न दूसरेपुरुष यद्यपि शास्त्रोंकेजानणेहारेभी हैं ॥ तथापि तेपुरुष पाषाणादिकोंकीन्याईं जडही हैं ॥ हेशिष्य ॥ ऐसेचैतन्यरूप
सूत्रकूं जिसविद्वान्पुरुषनैं धारणकऱ्याहै ॥ सोविद्वान्पुरुष किसीभीकालविषे उच्छिष्टहोवैनहीं ॥ तथा अशुचिभीहोवैनहीं ॥हेशिष्य ॥
जिनविद्वान्पुरुषोंकेहृदयदेशविषे सोचैतन्यब्रह्मरूपसूत्र प्रकाशमानहोवै है ॥ तिनविद्वान्पुरुषोंकूं सोआत्मज्ञानही प्रधानकर्म है ॥ और
तिनविद्वान्पुरुषोंकूं कायिक मानस वाचनिक यातीनप्रकारकेपापकर्मोंतैं शुद्धकरणेहाराभी सोज्ञानही है ॥ तहांस्मृति ॥ नहिज्ञाने

नसदृशंपवित्रमिहविद्यते ॥ अर्थयह ॥ यालोकविषे आत्मज्ञानकेसमान दूसराकोईपदार्थ पवित्रहैनहीं ॥ हेशिष्य ॥ जैसे अग्निकीज्वाला

रूपशिखा ताअग्नितैंभिन्ननहींहै ॥ तैसे जिसविद्वान्पुरुषकी नित्यविज्ञानरूपशिखा आपणेस्वरूपतैंभिन्ननहीं है ॥ ताविद्वान्पुरुषकूंही
वेदवेत्तापुरुष शिखी यानामकरिकैकथनकरैहैं ॥ प्रसिद्धकेशोंकूं मस्तकविषेधारणकरणेहारेपुरुषोंकूं शिखी यानामकरिकैकथनकरैनहीं ॥
काहेतैं प्रसिद्धकेशोंकूंतो शूद्रस्त्रीआदिकभी धारणकरैहैं ॥ परंतु तिनशूद्रादिकोंकूं शिखी यानामकरिकैकथनकरैनहीं ॥ शंका ॥ हेभग
वन्॥ जभी सोज्ञानरूपयज्ञोपवीत तथाज्ञानरूपशिखाही सर्वतैं श्रेष्ठहै॥तभी यासर्ववेत्राह्मणादिकोंनैं॥ताबाह्ययज्ञोपवीताशिखाका परित्या
गकऱ्याचाहिये ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ वेदभगवान्नैं कथनकरैजेअग्निहोत्रादिककर्म हैं॥ तिनअग्निहोत्रादिककर्मोंविषे जिनब्राह्मणादि
कोंकाअधिकारहै॥तिनब्राह्मणादिकोंनैंतो तिनकर्मोंकीसिद्धिकरणेवासतै ताबाह्ययज्ञोपवीतकूं तथाशिखाकूं अवश्यकरिकैधारणकरणा॥
और जेशुद्धचित्तवालेविद्वान्पुरुष तिनकर्मोंकेअधिकारीनहींहैं।तिनविद्वान्पुरुषोंनैंतो अंतर ज्ञानरूपयज्ञोपवीताशिखाकूंही धारणकरणा॥
हेशिष्य ॥ केईकब्रह्मवेत्तापुरुष याप्रकारकेवचन कहैहैं ॥ सर्वकाअधिष्ठान अद्वितीयब्रह्मरूप मैंहूं याप्रकारकेज्ञानरूपयज्ञोपवीतकूं
तथाताज्ञानरूपशिखाकूं जिसपुरुषनैं धारणकऱ्याहै तिनब्रह्मवेत्तापुरुषविषेही संपूर्णब्राह्मणपणाहै ॥ और जोपुरुष ताआत्मज्ञानरूप
यज्ञोपवीताशिखातैंरहितहै ॥ किंतु बाहरलेसूत्ररूपयज्ञोपवीतकूं तथाकेशरूपशिखाकूं धारणकरणेहाराहै ॥ तापुरुषविषे सोब्राह्मणपणा
मुख्यनहींहै ॥ किंतु ताकेविषे सोब्राह्मणपणा गौणहै ॥ काहेतैं वज्रसूचिनामा उपनिषद्विषे ब्रह्मवेत्तापुरुषकूंही ब्राह्मणकह्याहै ॥
तहांश्लोक ॥ जन्मनाजायतेशूद्रो व्रतबंधाद्द्विजःस्मृतः ॥ वेदाऽभ्यासाद्भवेद्विप्रो ब्रह्मजानातिब्राह्मणः ॥ अर्थयह ॥ यहदेहधारीजीव
जन्मकरिकै शूद्रसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और यज्ञोपवीतसंस्कारकरिकै द्विजसंज्ञाकूंप्राप्तहोवै है॥ और वेदकेअध्ययनकरिकै विप्रसंज्ञाकूंप्राप्त
होवैहै ॥ और ब्रह्मकेज्ञानकरिकै ब्राह्मणसंज्ञाकूंप्राप्तहोवै है ॥ १ ॥ यातैं सोब्रह्मवेत्तापुरुषही ब्राह्मणशब्दकामुख्यअर्थ है ॥ और सोब्रह्म
वेत्तापुरुषही यज्ञादिककर्मरूपहै॥तथा यज्ञादिककर्मोंकाकर्त्तारूपहै॥हेशिष्य॥जैसे ताआत्मज्ञानरूपयज्ञोपवीताशिखातैं विना यापुरुष
विषेमुख्ययज्ञोपवीतपणातथाशिखीपणासंभवैनहीं।तैसेताआत्मज्ञानरूपदंडकीप्राप्तितैंविनाकेवलकाष्ठकेदंडधारणकरणेकरिकै यासंन्यासी

विषे दंडीपणा सिद्धहोवैनहीं ॥ काहेतैं तापरमहंससंन्यासीकेधर्मोंकूंकथनकरणेहारीजापरमहंसउपनिषद्हे ॥ तापरमहंसउपनिषद्विषे याप्रकार कथनकऱ्याहे ॥ ज्ञानदंडोधृतोयेन एकदंडीसउच्यते॥ काष्टदंडोधृतोयेन सर्वाशीज्ञानवर्जितः॥सयातिनरकान्घोरान्महारौरवसंज्ञकान्॥अर्थयहजिससंन्यासीनैं आत्मज्ञानरूपदंडकूं धारणकऱ्याहे॥सोसंन्यासीही एकदंडी कह्याजावै ॥और जिससंन्यासीनैं केवलकाष्ठकेदंडकूंधारणकऱ्याहे॥और आत्मज्ञानरूपदंडतैंरहितहै॥ तथा विषयोंविषैंआसक्तहै॥सोविषयासक्तअज्ञानीसंन्यासी याशरीरकापरित्यागकरिकै रौरवादिकमहान्घोरनरकोंकूं प्राप्तहोवैहै॥ १ ॥यातैं यापरमहंससंन्यासीनैं श्रवणमननादिकसाधनोंकरिकै ताआत्मज्ञानकूं अवश्यकरिकै संपादनकरणा ॥ जिसजीवब्रह्मकेअभेदज्ञानकरिकै यासंन्यासीकूं पुनः भेदबुद्धि उत्पन्नहोवैनहीं ॥ हेशिष्य॥यद्यपि याजीवात्माविषे ब्रह्मरूपता हमने तुमारेप्रति अनेकवार कथनकरीहै॥तथापि ताअर्थकीदृढताकरावणेवासतैं पुनः हमतुमारेप्रति कथनकरैहैं॥जिसब्रह्मात्मज्ञानकीप्राप्तितैं यहअधिकारीपुरुष कृतार्थहोवै है ॥ हेशिष्य ॥ सोपरमहंससंन्यासी आपणेमनविषे सर्वदा याप्रकारकाविचारकरै ॥ जैसे मध्याह्नकालकासूर्य अंधकारतैंरहितहै ॥ तैसे जोअद्वितीयब्रह्म आपणेस्वयंज्योतिरूपकरिकै सर्वदा अविद्यातैंरहितहै ॥सोआनंदस्वरूप अद्वितीयब्रह्म याजीवात्माविषे सर्वदा अभेदरूपकरिकैहीस्थितहोवैहै ॥ तटस्थरूपकरिकैस्थितहोवैनहीं ॥ कैसाहैसोब्रह्म ॥ सर्वभेदतैंरहितहै यातैं अद्वितीयरूपहै॥और सोब्रह्म अद्वितीयरूपहै यातैं जन्ममरणादिकसर्वविकारोंतैंरहितहै। और सोअद्वितीयब्रह्म आकाशकीन्याईं सर्वत्रव्यापकहै ॥ यातैं सर्वक्रियातैंरहित निश्चलरूपहै ॥ और ॥ जोअद्वितीयब्रह्म अविद्यादिकविकारोंतैंरहितहै॥सोअद्वितीयब्रह्म हमारे आत्मातैंभिन्न नहींहै ॥ किंतु सोअद्वितीयब्रह्म हमारा आत्मारूपही है ॥ जोकदाचित् ताआत्मारूपब्रह्मतैं मैं भिन्नहोवोंगा ॥ तो घटादिकोंकीन्याईं हमारेविषेभी अनात्मरूपता प्राप्तहोवैगी ॥ यातैं मैं ताअद्वितीयब्रह्मतैं भिन्ननहींहूं ॥और यहआत्मास्वरूपब्रह्मही हमारा सर्वतैंउत्कृष्टप्रियस्थानहै ॥ तहां श्रुति ॥ सभूमाकस्मिन्प्रतिष्ठितःस्वेमहिम्नि॥अर्थयह॥सोव्यापकआत्मादेव किसविषेस्थितहै ॥याप्रकारकीजिज्ञासाकेहुए सोव्यापकआत्मा आपणेस्वप्रकाशरूपमहिमाविषेहीस्थितहै।यहउत्तरश्रुतिनैं कह्याहै॥ १ ॥और सोअद्वितीयब्रह्मकेवल

हमाराहीआत्मारूपनहींहै ॥किंतु सोअद्वितीयब्रह्मयासर्वजगत्काआत्मास्वरूपहै॥यातैंसोज्ञानस्वरूपब्रह्महीहमारीशिखाहै ॥ तथासोज्ञानस्वरूपब्रह्महीहमारायज्ञोपवीतहै ॥ तथासोज्ञानस्वरूपब्रह्मही हमारादंडहै ॥ काहेतैंयालोकविषे राजादिकपुरुष जिसउपायकरिकैशत्रुआदिकोंकूंआपणेवशकरैहै॥ताउपायकानामदंडहै॥ सोयाप्रकारकादंडशब्दकाअर्थ मुख्यवृत्तिकरिकैताज्ञानस्वरूपब्रह्मविषेहीघटैहै ॥ काहेतैं यहज्ञानस्वरूपब्रह्महीमहावाक्यजन्यअंतःकरणकीवृत्तिविषेआरूढहोइकै कार्यसहितअज्ञानरूपशत्रुकीनिवृत्तिकरैहै॥ यातैं यहज्ञानस्वरूपब्रह्महीं तादंडशब्दकामुख्यअर्थहै ॥ और हमारेहस्तविषेस्थितजोयहकाष्टकादंडहै ॥ सोकेवलमनकेवशकरणेका स्मरणकरावैहै ॥ यातैं यहकाष्टकादंड तादंडशब्दकामुख्यअर्थनहींहै ॥ किंतुगौणअर्थहै ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै सोपरमहंससंन्यासी जभी याआनंदस्वरूपआत्माविषेस्थितहोवैहै ॥ तभीसोपरमहंससंन्यासी सर्वकर्मोंकेअधिकारतैंरहितहोइकै ताअद्वितीयब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपकरिकैदेखैहै ॥ हेशिष्य ॥ जिसअद्वितीयब्रह्मकूं यहविद्वान्पुरुष आपणाआत्मारूपकरिकैअपरोक्षदेखैहै ॥ सोब्रह्मसर्वजगत्विषेव्यापकहैतथा निरतिशयआनंदरूपताकरिकै सर्वतैंउत्कृष्टपदहै ॥ और जैसेयाजीवोंकेप्रत्यक्षज्ञानका आविषयहुआभीयहचक्षुइंद्रियःघटादिकपदार्थोंकूंप्रकाशकरैहै ॥ तैसेअज्ञानीजीवोंकूंहृदयदेशविषेस्थितहुआभी सोस्वप्रकाशब्रह्म बुद्धिआदिकसर्वपदार्थोंकूंप्रकाशकरैहै ॥ इतनैं करिकैपरमहंसउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ अब त्वंपदार्थजीवकाशोधनकरिकै ताजीवकूंब्रह्मरूपकरिकैकथनकरणेहारी जाब्रह्मउपनिषद्है ताकेअर्थकानिरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ यात्वंपदार्थजीवात्माकेस्पष्टकरणेवासतैं ताब्रह्मउपनिषद्विषे जेचारिअवस्थाकथनकरीहैं तिनोंकूंतूंश्रवणकर ॥ हेशिष्य ॥ यहआनंदस्वरूपस्वयंज्योतिआत्मा यद्यपि वास्तवतैंतौ सर्वअवस्थावोंतैंरहितहैं ॥ तथापि मायाकेवशतैं यहआत्मादेव जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति तुरीय याचारअवस्थावोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिनजाग्रदादिकचारिअवस्थावोंके यथाक्रमतैं नाभिकंठहृदय मूर्द्धा यहचारस्थानहैं ॥ हेशिष्य ॥ यहअंतःकरणविशिष्टजीवात्मा जभी नाभितैं लैकेनेत्रपर्यंतदेशविषे विशेषकरिकैस्थितहोवैहै ॥ तभी यहजीवात्मा विश्वसंज्ञाकूंप्राप्तकरणेहारी जाग्रत्अवस्थाकूंप्राप्तहोवै है ॥ और यहजीवात्मा जभी कंठदेशविषे विशेषकरिकै

स्थितहोवैहै तभी तैजससंज्ञाकूंप्राप्तकरणेहारी स्वप्नावस्थाकूंप्राप्तहोवै है ॥ और यहजीवात्माजभी हृदयकमलविषे विशेषकरिकैस्थितहोवै है ॥ तभीप्राज्ञसंज्ञाकूंप्राप्तकरणेहारी सुषुप्तिअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और यहजीवात्माजभी समाधिकेप्रभावतैं मूर्द्धास्थानविषेस्थितहोवै है तभीशुद्धआत्मरूपताकूंप्राप्तकरणेहारी तुरीयअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अबतिनचारअवस्थावोंके देवताओंकानिरूपणकरैहै॥हेशिष्य ॥ ताजाग्रत्अवस्थाका विराट्देवताहै ॥ और स्वप्नअवस्थाका हिरण्यगर्भ देवताहै ॥ और सुषुप्तिअवस्थाका रुद्रदेवताहै ॥ और तुरीय अवस्थाका परमात्मादेवताहै ॥ हेशिष्य ॥ तातुरीयअवस्थाकादेवतारूप जोपरमात्मादेवहै ॥ सोपरमात्मादेव मायारूपउपाधिकेसंबंध करिकै तोसर्वजगत्रूपहोवैहै ॥ और वास्तवतैंसोपरमात्मादेव कार्यकारणभावतैंरहितहै ॥ तथामनवाणीकाअविषयहै॥तथास्वयंज्योति आनंदस्वरूपहै ॥ औरजिसपरमात्मादेवविषे यहकर्मकाफलरूपशब्दादिकविषय आपणेविषयस्वभावकापरित्यागकरिदेवैहै ॥ हेशिष्य ॥ ता तुरीयरूपपरमात्मादेवविषे जैसे तेशब्दादिकविषय आपणेस्वभावकापरित्यागकरैहैं ॥ तैसे तापरमात्मादेवविषे देव वेद यज्ञ माता पिता स्तुषा इत्यादिक ममअध्यासकेविषयपदार्थभी आपणेस्वभावकापरित्यागकरिदेवै हैं॥ और अहंअध्यासकेविषयजे ब्राह्मणत्व क्षत्रियत्व वैश्यत्व शूद्रत्व चांडालत्व पुल्कसत्व इत्यादिकजातियां हैं ॥ तेजातियांभी तिसपरमात्मादेवविषे वास्तवतैंहैंनहीं इहां ब्राह्मणी स्त्रीविषे शूद्रपुरुषतैंउत्पन्नभयाजोपुत्रहै ताकानाम चांडालहै ॥ और क्षत्रियाणीस्त्रीविषे शूद्रपुरुषतैंउत्पन्नभयाजोपुत्रहै ताकानाम पुल्कसहै ॥ और तापरमात्मादेवविषे ब्रह्मचर्यगृहस्थ वानप्रस्थसंन्यास यहचारिआश्रमभी हैंनहीं ॥ और उत्तम मध्यम कानिष्ठ यहतीन प्रकारकेजेकर्मकेकर्त्ता हैं॥ तथा इसलोकविषे तथापरलोकविषे सुखदुःखरूपफलकी प्राप्तिकरणेहारेजेनानाप्रकारकेसाधनहैं॥ तथाइसलोक विषे तथापरलोकविषे प्राप्तहोणेहारे जेसुखदुःखरूपफलहै ॥ इसतैंआदिलैके जितनाकीयहसंसारहै ॥ सोसंसारभी तापरमात्मादेव विषे वास्तवतैंहैं नहीं ॥ ऐसा कार्यसहितअज्ञानतैंरहित अद्वितीयब्रह्म शुद्धचित्तवालेअधिकारीजनोंकूं आपणेस्वयंज्योतिरूपकरिकै प्रतीतहोवैहै ॥ और सोपरमात्मादेव इंद्रादिकसर्वदेवतावोंकूं आपणीआज्ञाविषे चलावणेहाराहै॥यातैं ऋषि पितर देवता इत्यादिक महा

पुरुषभी तापरमात्मादेवके नियमकरणेविषे समर्थहोवैनहीं ॥ हेशिष्य ॥ ऐसेपरमात्मादेवकूं जेअधिकारीपुरुष आपणाआत्मारूपकरिके जाने हैं॥ तेअधिकारीपुरुष अनाथपुरुषकीन्याईं तिनऋषिदेवतावोंके किंकरभावकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ हेशिष्य ॥ ताअद्वितीयपरपात्माविषे ईश जीव जगत् इत्यादिकद्वैतभाव हमजीवोंनैंही कल्पनाकऱ्याहै॥वास्तवतैं तापरमात्मादेवविषे सो द्वैतप्रपंच हैनहीं॥जैसे वास्तवतैं अंध कारतैंरहितसूर्यविषे घूकादिकपक्षी अंधकार कल्पनाकरैं हैं ॥ तैसे यहजीव ताअद्वितीयब्रह्मविषे जगत्कीकल्पनाकरैं हैं ॥हेशिष्य॥ जैसे अग्नि संपूर्णकाष्ठोंविषे गुह्यहोइकेरहे है ॥ तैसे यालोकविषे कार्यकारणरूपकरिकैप्रसिद्धजे जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज यहचारप्रकारके भूतप्राणी हैं॥ तिनसर्वभूतप्राणियोंविषे सोस्वयंज्योतिएकपरमात्मादेव गुह्यहोइकैरह्याहै॥और सोपरमात्मादेव आकाशकीन्याईं सर्वव्या पकहै॥तथा स्थूल सूक्ष्म कारण यातीनशरीरोंविषे साक्षीरूपकरिकैस्थितहै॥तथा राजाकीन्याईं सर्वभूतोंकूंआपणेवशकरिकै तिनभूतोंविषे निवासकरै है॥और जैसे यालोकविषे मध्यस्थपुरुष विवादकर्त्तापुरुषोंकेव्यापारोंकूं साक्षीरूपहोइकैदेखे है ॥ तैसे सोपरमात्मादेवभी साक्षी रूपहोइके तिनभूतोंकेव्यापारोंकूंदेखे है॥ और सोपरमात्मादेव सर्वजडपदार्थोंतैं विलक्षणहै॥ यातैं चिद्घनरूपहै ॥ तथा अद्वितीयरूपहै तथा निर्गुणरूपहै ॥ तहांश्रुति ॥ साक्षीचेताकेवलोनिर्गुणश्च॥हेशिष्य॥याश्रुतिविषेस्थित जोचेताशब्दहै ॥ ताचेताशब्दकाअर्थ यद्यपि कोईकभेदवादी चैतन्यगुणवाला माने हैं॥ तथापि सोपरमात्मादेव ज्ञानादिकगुणोंवालाहोवैनहीं॥ काहेतैं जोकदाचित् तापरमात्मा देव विषे ज्ञानादिकगुण अंगीकारकरिये॥तो तिसीश्रुतिविषे निर्गुणशब्दकरिकै तापरमात्मादेवकूं ज्ञानादिकसर्वगुणोंतैंरहितकह्याहै॥ सोअसं गतहोवैगा॥और तिसीश्रुतिविषेस्थित जोकेवलशब्दहै।ताकेवलशब्दकरिकैतापरमात्मादेवकूं अद्वितीयरूपकह्याहै।ऐसेअद्वितीयनिर्गुणपर मात्माविषे तिनज्ञानादिकोंका गुणगुणीभाव संभवैनहीं॥यातैं सोचेताशब्द चैतन्यस्वरूपआत्माकूंहीकथनकरै है।हेशिष्य।सोपरमात्मादेव मायाकेसंबंधतैं आपणेस्वरूपकूंहीं याजगत्रूपकरै है।यातैं सोकारणरूपपरमात्मादेवही यासर्वजगत्कास्वामी है।तथा सर्वजगत्कूं आपणी आज्ञाविषेचलावणेहाराहै।हेशिष्य।जैसे सर्वकाष्ठोंविषे गुह्यहोइकैरह्याजोअग्निहै सोअग्नि तिनकाष्ठोंकेमथनरूपउपायतैंही प्रगटहोवै है॥तैसे

ब्रह्मवेत्तापुरुषोनैं ताआद्वितीयआत्माकेसाक्षात्कारवासतै याप्रकारकाउपाय कथनकऱ्याहै॥यह अधिकारीपुरुष आपणेशरीरकूं अथवा बुद्धिकूं नीचेकीअरणिरूपकरिकै चिंतनकरै ॥ और अकार उकार मकार अर्द्धमात्रा याचारमात्रावोंकरिकै यथाक्रमतैं विश्व तैजस प्राज्ञ तुरीय याचारअवस्थावालेआत्माकूं कथनकरणेहारा जोॐकारहै ॥ ता ॐकारकूं ऊपरिलीअरणिरूपकरकैचिंतनकरै ॥ और जैसे यालोक विषे काष्ठरूपदोनोंअरणियोंकेमथनकरणेतैं॥अग्नि प्रगटहोवै है॥तैसे शरीरबुद्धि तथा ॐकार यादोनोंअरणियोंकेमथनकरणेतैं आत्मसाक्षात्काररूपअग्नि प्रगटहोवै है॥जोआत्मज्ञानरूपअग्नि कार्यसहितअज्ञानकूंनाशकरै है॥हेशिष्य॥यहअधिकारीपुरुष प्रथम विश्व तैजस प्राज्ञ तुरीय याचारोंकूं यथाक्रमतैं विराट् हिरण्यगर्भ ईश्वर परमात्मा याचारोंतैं अभिन्नरूपकरिकैचिंतनकरै ॥ तिसतैंअनंतर तिनविश्वादिक चारोंकूं यथाक्रमतैं अकार उकार मकार अर्द्धमात्रा याॐकारकीचारमात्रावोंतैं अभिन्नरूपकरिकै चिंतनकरै ॥ याप्रकारका जोनिरंतर ध्यानकरणाहै ॥ सोध्यानहीं तिनदोनोंअरणियोंका मथनहै ॥ हेशिष्य ॥ यहआनंदस्वरूपआत्मा यद्यपि काष्ठोंविषेअग्निकीन्याईं यासंघातविषेगुह्यहोइकैरह्याहै ॥ तथापि ताध्यानरूपमथनतैं यह आत्मादेव शीघ्रहीं प्रगटहोवै है ॥ याअर्थविषे तुमनैं किंचित्मात्रभी संशयनहींकरणा ॥ हेशिष्य ॥ जैसे तिलोंविषेगुह्यहोइकै रह्याजोतैलहै॥ सोतैल यंत्रविषेपीडनरूपउपायतैं याजीवोंकूंप्राप्तहोवै है ॥ और जैसे दुग्धविषे गुह्यहोइकैरह्याजोघृतहै ॥ सोघृत विलोडन रूपउपायतैं याजीवोंकूं प्राप्तहोवै है॥ तैसे यावुद्धिआदिकसंघातविषे गुह्यहोइकै रह्याजोआत्मादेवहै॥सोआत्मादेव याजीवोंकूं ताध्यानरूपउपायकरिकै तथा तप सत्य विवेक आदिकउपायोंकरिकैप्राप्तहोवै है ॥ और हे शिष्य यह आनंदस्वरूपआत्मा यद्यपि वास्तवतैं जीवईश्वरभावतैंरहितहै॥तथापि अविद्याकेसंबंधतैं जीवभावकूंप्राप्तहोइकै यहआत्मादेव जाग्रत्स्वप्नादिकसंसारविषे भ्रमणकरै है॥और यहअधिकारीपुरुष जभी गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं ताआत्मादेवकूं साक्षात्कारकरै है ॥ तभी सोआत्मादेव ताकल्पितजीवभावकापरित्यागकरिकै अद्वितीयब्रह्मरूपहोवै है॥हेशिष्य॥जैसे यालोकविषे ऊर्णनाभिजंतु तंतुवोंकूं उत्पन्न करै है तथालयकरै है ॥ तैसे यहजीवात्माभी जाग्रत्स्वप्नविषे अनेकप्रकारकेपदार्थोंकूंउत्पन्नकरै है तथालयकरै है ॥ और यह जीवात्मा

॥ ६९ ॥

जभी गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं आपणेहृदयदेशविषेस्थित आनंदस्वरूपआत्माकूं साक्षात्कारकरै है ॥तभीहीं यहजीवात्मा आपणेजीवत्वभावकापरित्यागकरिकै ब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ हेशिष्य॥ जिसस्वयंज्योतिआत्माकूं यहमनसहितवाकादिकइंद्रिय विषयकरिसकतेनहीं ॥ और जिसस्वयंज्योतिआत्माकेज्ञानतैं याजीवोंकूं आनंदस्वरूपता प्रगटहोवै है॥ ऐसेस्वयंज्योतिआत्माकूं साक्षात्कारकरिकैहीं यहविवेकीपुरुष मोक्षकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ और हेशिष्य ॥ जैसे क्षीरविषे घृत व्याप्यकरिकैरहेहै ॥ तैसे यहआत्मादेवयासर्वजगत्विषे व्याप्यकरिकै रहे है॥ और कर्मउपासनाकाफलरूप जोयहसंपूर्णसंसारहै॥तासंसारकाभी यहआत्मादेवहीकारणहै॥ ऐतेआत्मादेवकूं जोअधिकारीपुरुष मनकानिग्रहकरिकै साक्षात्कारकरै है ॥ सोअधिकारीपुरुषहीं मोक्षकूंप्राप्तहोवै है॥ तामनकेनिग्रहतैंविना अनेककोटिजन्मोंकरिकैभी यह जीव ताआत्माकूंजाणिसकतानहीं॥ यातैं मोक्षकीइच्छावान्पुरुषनैं सोमनकानिग्रह अवश्यकरिकैकरणा ॥ इतनैंकरिकै ब्रह्मउपनिषद्का अर्थ निरूपणकऱ्या ॥ अब याहीअर्थविषेप्रमाणरूपकरिकै ब्रह्मबिंदुउपनिषद्काअर्थ निरूपणकरै हैं ॥ हेशिष्य ॥ याअधिकारीपुरुषोंकूं मनकेनिग्रहकरणेतैंहीं मोक्षकीप्राप्तिहोवै है ॥ यहवार्ता ब्रह्मबिंदुउपनिषद्विषेभी कथनकरी है॥ ताकूं तू श्रवणकर॥हेशिष्य॥याजीवोंका मन दोप्रकारकाहोवै है ॥ एकतौ शुद्धमनहोवै है ॥ और दूसरा अशुद्धमनहोवै है ॥ तहां जिसमनविषे विषयोंकारागहोवै है ॥ सो अशुद्धमनहोवै है ॥ और जोमन निष्कामकर्मउपासनाकरिकै विषयोंकेरागतैंरहितहुआहै सो शुद्धमनहै ॥ हेशिष्य ॥ यहदोप्रकारकामनहीं यामनुष्योंके बंधका तथामोक्षका कारणहोवै है॥ तहां विषयोंविषेआसक्त जोअशुद्धमनहै सोअशुद्धमनतौ यामनुष्योंकेबंधका कारण होवै है ॥ और विषयोंकीआसक्तितैंरहित जोशुद्धमनहै ॥ सोशुद्धमनतौ यामनुष्योंकेमोक्षका कारणहोवै है॥यातैं मोक्षकीइच्छावान् अधिकारीपुरुषोंनैं तामनकूं अवश्यकरिकै विषयोंतैंरहितकरणा ॥ और हेशिष्य ॥ सर्वविषयोंकीआसक्तितैंरहित सोशुद्धमन जभी हृदयदेशविषे निरोधकूंप्राप्तहोइकै जीवब्रह्मकेअभेदकूं निश्चयकरै है ॥ तभी याअधिकारीपुरुषकूंमोक्षरूपफलकीप्राप्तिविषे किंचित्मात्रभी विलंबहोवैनहीं॥किंतु जैसे भोजनकेसमानकालविषेहीं तृप्तिकीप्राप्तिहोवै है॥तैसे याअधिकारी पुरुषकूं तिसीआत्मज्ञानकीप्राप्तिकालविषेही

मोक्षकीप्राप्तिहोवै है ॥ और हेशिष्य ॥ जैसे स्वप्नअवस्थाविषे यहमन आपणेस्वरूपकेज्ञानकरिकै मिथ्याद्वैतप्रपंचकेआकारकूंप्राप्तहोइकै नानाप्रकारकेविकारोंकूंप्राप्तहोवै है। तैसे जाग्रत्अवस्थाविषेभी सोमन ताअज्ञानकरिकैमिथ्याद्वैतप्रपंचकेआकारकूंप्राप्तहोइकै नानाप्रकारकेविकारोंकूंप्राप्तहोवै है॥ हेशिष्य॥ जैसे स्वप्नअवस्थाविषे अज्ञानकरिकै द्वैतप्रपंचकेआकारकूंप्राप्तहुआभी सोमन वास्तवतैं अधिष्ठानचैतन्यरूपकरिकै द्वैतभावतैंरहितहै ॥ तैसे जाग्रत्अवस्थाविषेभी सोमन वास्तवतैं अधिष्ठानचेतनरूपकरिकै ताद्वैतभावतैंरहितही है ॥हेशिष्य॥ याअधिकारीपुरुषकामन जभी अधिष्ठानआत्माकेसाक्षात्कारकरिकै द्वैतप्रपंचाकारवृत्तियोंका परित्यागकरै है॥तभी सोअधिकारीपुरुष द्वैतप्रपंचकाअग्रहणरूप अमनसभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जिसकालविषे सोमन अमनसभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ तिसकालविषे याआत्माका किसप्रकारकास्वरूप बाकीरहै है ॥समाधान॥हेशिष्य॥ जिसकालविषे सोभ्रमसिद्धमन ताअमनसभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ तिसकालविषे वेदवेत्तापुरुष ताआत्मादेवका याप्रकारकास्वरूपकथनकरै हैं ॥ ताकालविषे याआत्मादेवकूं एकब्रह्मही जानणेयोग्यहोवै है॥याकारणतैं यहआत्मादेव सर्वकल्पनातैंरहितहोवै है॥और सोआत्मादेव नित्यहोणतैं जन्मादिकसर्वविकारोंतैंरहितहोवै है ॥और ताजन्मतैंरहितज्ञानकरिकैजन्मतैंरहितवस्तुकाही बोधहोवै है॥दूसरेअनात्मपदार्थोंकाबोधहोवैनहीं॥याकारणतैं सोआत्मादेव ज्ञेयवस्तुतैंअभिन्नस्वप्रकाशज्ञानरूपहोवैहै॥हेशिष्य॥कोई भ्रांतपुरुषतो याप्रकार कथनकरै हैं॥यहमन जिसप्रकार सुषुप्तिअवस्थाविषेलयहोवैहै॥तिसीप्रकारयहमन जभी लयभावकूंप्राप्तहोवै है॥तभीहीं अमनसभावकीप्राप्तिहोवै है॥सोयहतिनोंकाकहणा संभवैनहीं॥काहेतैं सुषुप्तिअवस्थाविषे जोमनकालयहै तथासमाधिअवस्थाविषे जोमनकानिरोधहै यादोनोंविषे महान्विशेषता प्रतीतहोवै है॥अब ताविशेषताकानिरूपण करै हैं ॥ हेशिष्य ॥ जोमन विषयोंतैंनिग्रहकूंप्राप्तहुआहै॥तथा जोमन सर्वकल्पनातैंरहितहुआहै ॥ तथा जोमन महावाक्यजन्यविद्याकरिकै संस्कृतहुआहै ॥ ऐसेशुद्धमनकी जाग्रतअवस्थाविषे जो ब्रह्माकारतारूप अवस्थाहोवै है ॥ ताअवस्थातैं सुषुप्तिअवस्थाविषे तामनकी विलक्षणहीं अवस्थाहोवै है ॥ काहेतैं सुषुप्तिअवस्थाविषेतो सोमन आपणे कारण अज्ञानविषे सूक्ष्मरूपहोइकै स्थित

होवै है॥और समाधिअवस्थाविषेतो सोमन कारणअज्ञानविषेलयभावकूंप्राप्तहोवैनहीं॥किंतु तासमाधिअवस्थाविषे सोमन अधिष्ठानब्रह्मविषे बोधकूंप्राप्तहोवै है ॥ अब सुषुप्ति समाधि यादोनोंविषे दूसरीविशेषताभी निरूपणकरै हैं ॥ हेशिष्य॥ तासमाधिअवस्थाविषे ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय इत्यादिकभेदतैंरहितहुआ सोनिरुद्धमन अद्वितीयब्रह्मरूपहीहोवै है॥कैसाहैसोअद्वितीयब्रह्म द्वैतभावतैं रहितहोणतैं निर्भय है ॥ तथा स्वप्रकाशज्ञानस्वरूपहै ॥ तथा सर्वत्रव्यापकहै ॥ तथा जन्मादिकविकारोंतैं रहितहै ॥ तथा अज्ञानरूपनिद्रातैंरहितहै॥तथा अहं मम इत्यादिकसर्वअध्यासोंतैं रहितहै ॥ तथा नामरूपादिकधर्मोंतैंरहितहोणतैं नेत्रादिकसर्वइंद्रियोंका अविषयहै ॥ और जिसब्रह्मकेज्ञानतैं एकवार नाशकूंप्राप्तहुईअविद्या पुनःउत्पन्नहोवैनहीं ॥ याकारणतैं सोब्रह्म एकवारहीं आविर्भूतहोवै है तथा सोब्रह्म चैतन्यमात्रस्वरूपहै ॥ ऐसे अद्वितीयब्रह्माकारताकूं सोमन समाधिअवस्थाविषे प्राप्तहोवै है॥ और सुषुप्तिअवस्थाविषेतो सोमन अविद्याविशिष्टचेतनविषे लयभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ ताअद्वितीयब्रह्मकेआकारताकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं सुषुप्तिअवस्थातैं तासमाधिविषे महान्विशेषताहै ॥ अब तासमाधिकीदुर्लभता निरूपणकरै हैं॥ हेशिष्य॥ पूर्वलेअनेकपुण्यकर्मोंकेप्रभावतैं जभी याअधिकारीपुरुषका मन ताअमनसभावकूंप्राप्तहोवै है॥तभी यहअधिकारीपुरुष तानिर्विकल्पसमाधिकूं प्राप्तहोवै है॥कैसाहैसोनिर्विकल्पसमाधि॥ वाक्इंद्रियकाविषय जेसर्वशब्दहैं तिनों तैंरहितहै॥तथा अंतःकरणकी चिंतादिकसर्ववृत्तियोंतैं रहितहै॥हेशिष्य॥ ऐसेनिर्विकल्पसमाधिविषे सर्व द्वैतकाअभावहोवै है ॥ यातैं तासमाधिविषेस्थितहुआ यहविद्वान्पुरुष किसीपदार्थका ग्रहण अथवा त्याग करैनहीं॥तथा किसीविषयकीचिंताभीकरैनहीं ॥ हेशिष्य ॥ याअधिकारीपुरुषकामन जभी अद्वितीयआत्माकूंनिश्चयकरिकै सर्वविक्षेपोंतैंरहितनिश्चलताकूं प्राप्तहोवै है ॥ तथा अद्वितीय आत्मारूपहोवैहै॥तथा सर्वसंकल्पविकल्पोंतैंरहितहोवैहै॥तथासमताभावकूंप्राप्तहोवैहै॥तभीहीयाअधिकारीपुरुषकूं निर्विकल्पसमाधिकी प्राप्तिहोवै है॥हेशिष्य॥ऐसेनिर्विकल्पसमाधिकूं यद्यपि वेदांतशास्त्रकेवचन कथनकरै हैं॥तथापि ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतैंही याअधिकारीपुरुषकूं तासमाधिकीप्राप्तिहोवैनहीं॥गुरुकेउपदेशतैंविना तासमाधिकीप्राप्तिहोवै है॥हेशिष्य॥यहनिर्विकल्पसमाधिज्ञाताज्ञानज्ञेय ध्याता

ध्यान ध्येय इत्यादिकसर्वसंबंधतैंरहितहै॥याकारणतैं विद्वान्पुरुष यासमाधिकूं अस्पर्शयोग यानामकरिकैकथनकरै हैं ॥ ऐसेनिर्विकल्प समाधिकूं वेदांतविचारतैंरहितयोगीपुरुष देखिसकतेनहीं॥काहेतैं जैसे भयतैंरहित जोएकांतस्थानहै॥ताएकांतस्थानविषे भयकीकारण ताका आरोपणकरिकै मूढबालक तास्थानतैंभयकूंप्राप्तहोवै हैं॥तैसे सर्वभयतैंरहित तानिर्विकल्पसमाधिविषे भयकीकारणताकाआरोप णकरिकै तेवेदांतविचारतैंरहितयोगीपुरुष तानिर्विकल्पसमाधितैं भयकूंप्राप्तहोवै हैं॥और हेशिष्य ॥ जैसे जन्मतैंअंधपुरुष प्रसिद्धरूपकूं भीदेखतेनहीं॥तैसे तेवेदांतविचारतैंरहितयोगीपुरुष अंतरआत्माकेअज्ञानतैं ताअमनसभावरूपसमाधिकूं सुषुप्तिकेतुल्य कथनकरै हैं॥ हे शिष्य ॥ तिन वेदांतविचारतैंरहित योगीपुरुषोंकूं जो तानिर्विकल्पसमाधितैंभयहोवै है ॥ ताभयविषे एकतौ आत्माकेस्वरूपकाअज्ञान ही कारणहै॥और दूसरा शास्त्रविरुद्ध नानाप्रकारकेकुतर्क कारणहैं॥अब तिनकुतर्कोंका निरूपणकरै हैं तहां प्रथम सांख्यशास्त्रकेअनुसा री योगीपुरुषोंकेकुतर्कोंका निरूपणकरै हैं॥सर्वभेदतैंरहित एकअद्वितीयआत्माही सर्वशरीरोंविषेव्यापकहै॥तथा सोअद्वितीयआत्मा सत् चित्आनंदस्वरूपहै ॥ याप्रकारका आत्माकास्वरूप वेदान्तशास्त्र विषे कथनकऱ्याहै सो संभवैनहीं॥काहेतैं यासर्वभूतप्राणियोंविषे जो एकहीआत्माहोवै ॥ तौ यालोकविषे एकजीवकेसुखीहुए सर्वजीव सुखीहोणेचाहिये॥तथा एकजीवकेदुःखीहुए सर्वजीव दुःखीहुएचाहिये॥ और ऐसीवार्त्ता यालोकविषे देखणमैं आवती नहीं किंतु यालोकविषे कोईजीवतौ सुखी है और कोईजीव दुःखी है ॥ तथा कोईजीवतौ जन्मताहै और कोईजीव मरताहै ॥ याप्रकारकीव्यवस्था देखणमैंआवै है ॥ यातैं यहजान्याजावै है ॥ यासर्वशरीरोंविषे आ त्मा एक नहीं है॥ किंतु एकएकशरीरविषे एकएकआत्माहै है॥ तेशरीर अनंतहैं॥यातैं तेआत्माभी अनंत हैं ॥ तिनअनेकआत्मावोंकूं भोगमोक्षकीप्राप्तिकरणेहारी एकप्रकृति अंगीकारकरीचाहिये ॥ साएकप्रकृति यद्यपि संसारदशाविषे महत्तत्वआदिकअनेकरूपोंकरिके स्थितहै।तथापि साप्रकृति मोक्षअवस्थाविषे यापुरुषके अदर्शनभावकूंप्राप्तहोवैहै।अथवा साप्रकृति संसारदशाविषे बंधरूपअनुलोमपरिणा मकूंप्राप्तहुईभी मोक्षकालविषे मुक्तिरूपप्रतिलोमपरिणामकूंप्राप्तहोवैहै॥अथवा साप्रकृति आपणेस्वरूपतैं यापुरुषकूं बंधकीप्राप्तिकरैनहीं॥

किंतु साप्रकृति मनरूपकरिकै यापुरुषकूं बंधकीप्रतिकरैहै ॥ यातैं मुक्तिअवस्थाविषे कृतार्थहुआसोमनहीं आपणेकारणविषेलय रूपता कूंप्राप्तहोवै है॥ यहतीनप्रकारकीरीतिही संभवहोइसकैहै॥और वेदांतियोंनैं तामनका अद्वितीयब्रह्मविषे तादात्म्यरूप जो लयमान्याहैसो संभवतानहीं ॥ काहेतैं यालोकविषे कार्यका आपणेकारणविषेही लयहोवै है ॥ अकारणविषे लयहोवैनहीं॥ जैसे घटरूपकार्यका मृत्तिका रूपकारणविषेही लयहोवैहै ॥ तंतुआदिकअकारणोंविषे लयहोवैनहीं॥और निर्विकारअद्वितीयब्रह्मविषे तामनकीकारणतासंभवैनहीं ॥ यातैं ताअद्वितीयब्रह्मविषे तामनकालय संभवैनहीं ॥ हेशिष्य ॥ इसतैंआदिलेके अनेकप्रकारकीकुतर्कोंकरिकै तेवेदांतविचारतैंरहित योगीपुरुष तानिर्विकल्पसमाधितैं भयकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ तथा श्रुतिविद्वान्पुरुषोंकेअनुभवकरिकैसिद्ध जोपूर्वउक्त अमनसभावहै ॥ ताका परित्यागकरिकै ताअमनसभावकूं सुषुप्तिकेतुल्यमाने हैं ॥ याकारणतैं तेयोगीपुरुष आपणेआनंदस्वरूपआत्माकूं प्राप्तहोइसकै नहीं ॥ हेशिष्य ॥ ते वेदांतविचारतैंरहितरहित योगीपुरुष यद्यपि वृक्षकीन्याईं ज्ञानतैंरहित हैं ॥ तथापि आपणेकूंपंडितमानैहैं॥औरतेयोगीपुरुष यद्यपि पाषाणकीन्याईं निश्चलहैं॥ तथापि भस्त्राकीन्याईं व्यर्थहींश्वासोंकूं उठावै हैं॥ तहां बाहरलेवायुकरिकै पूर्णकऱ्याजो अन्नादिकोंका चर्महै जिसचर्मकेवायुकरिकै लोहारपुरुष अग्निकूंप्रज्वलितकरै हैं॥ ताचर्मकानाम भस्त्राहै ॥ हेशिष्य ॥ जैसे जन्मतैंअंधपुरुष आपणेहस्त विषेस्थितनिधिकूंभी देखतेनहीं ॥तैसे ते वेदांतविचारतैंरहित योगीपुरुष आपणेहृदयदेशविषेस्थित आनंदस्वरूपआत्माकूंभीदेखिसक तेनहीं ॥ इतनैंकरिकै सांख्यशास्त्रवालेपुरुषोंके कुतर्कोंका निरूपणकऱ्या॥ अब नैयायिकआदिकोंकेकुतर्कोंका संक्षेपतैंनिरूपणकरै हैं ॥ बुद्धिआदिकोंकासाक्षीरूप तथासर्वउपाधियोंतैंरहित ऐसाजोआनंदस्वरूपस्वयंज्योतिआत्माहै ॥ताआत्मादेवकूंकेईकनैयायिकवादीस्वभा वतैं ज्ञानतैंरहितजडमाने हैं॥ और केईकशून्यवादी माध्यमिकतौ सुख ज्ञान यादोनोंकूं अत्यंतअसत्यमाने हैं ॥ तहां नैयायिकोंकमतवि षेतौ जिसकालविषे आत्माकेसाथ मनका संयोगसंबंधहोवै है ॥ तिसीकालविषे ताआत्माविषे ज्ञान सुख आदिकगुण उत्पन्नहोवै हैं॥और जिसकालविषे ताआत्माकेसाथ मनका संयोगसंबंधनहींहोवैहै॥तिसकालविषेतेज्ञानसुखादिकगुण आत्माविषे उत्पन्नहोवैनहीं॥और माध्य

मिकोंकेमतविषेतो तेज्ञानसुखादिक अत्यंत असत्यहीहोवेहै ॥ और तिननैयायिकोंकेमतविषे सोआत्मा मोक्षकालविषेही तामनकेसंबंधतैंरहितहोवेहै ॥ जीवतअवस्थाविषेहोवैनहीं ॥ यातैं तेवादी जीवतअवस्थाविषे ताअमनसभावकूं अंगीकारकरैनहीं ॥ किंतु मोक्षकालविषेहीं ताअमनसभाकूं अंगीकारकरैहै ॥ याकारणतैं तेभ्रांतवादी तानिर्विकल्पसमाधितैं सर्वदा भयकूंही प्राप्तहोवैहै ॥ हेशिष्य ॥ ऐसे शास्त्रविरुद्धकुतर्कोंकापरित्यागकरिकै जेअधिकारीपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुवेदांतशास्त्रके संप्रदायकेअनुसार तामनकानिग्रहकरैहैं ॥ तेअधिकारीपुरुष आत्मसाक्षात्कारकूंप्राप्तहोइकै मोक्षरूपनित्यसुखकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ तथा सर्वभयतैंरहितहोवेहैं ॥ तथा जन्ममरणादिकसर्वदुःखोंतैं रहितहोवेहैं॥यातैं जिनअधिकारीपुरुषोंकूं मोक्षकेप्राप्तिकीइच्छाहोवै ॥ तिनअधिकारीपुरुषोंनैं प्रथम आपणेमनकूंहींजयकरणा ॥शंका ॥ हेभगवन् ॥ सोमन अत्यंतप्रबलहै ॥यातैं तामनकेजयकरणेविषे कोईभीपुरुष समर्थनहींहै ॥ समाधान ॥ हे शिष्य ॥ तामनकेजयकरणेविषे जो किसीजीवका सामर्थ्यनहीं होता ॥ तो श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्र तामनकेजयकरणेका विधाननहींकरता ॥ काहेतैं जिसकर्मकेकरणेविषे या अधिकारीपुरुषोंका सामर्थ्यहोवेहै ॥ तिसीकर्मकेकरणेका सोशास्त्र विधानकरैहै ॥ और जिसकर्मकेकरणेविषे यापुरुषोंका सामर्थ्यनहींहोवेहै ॥ ताकर्मके करणेका सोशास्त्र विधानकरैनहीं ॥ जैसे अग्निहोत्रादिककर्मोंकेकरणेविषे याअधिकारीपुरुषोंकासामर्थ्यहै ॥ यातैं सोशास्त्र तिनअग्निहोत्रादिककर्मोंका विधानकरैहै ॥ और अग्निकेभक्षणकरणेविषे तथासमुद्रकेउल्लंघनकरणेविषे यापुरुषोंका सामर्थ्यहैनहीं ॥ यातैं ताअग्निकेभक्षणकरणेका तथासमुद्रकेउल्लंघनकरणेका कोईभीशास्त्र विधानकरैनहीं ॥ और तामनकेजयकरणेकातो वारंवार सोशास्त्र विधानकरैहै ॥ तथा सोमनकाजयकरणा अनेकविद्वान्पुरुषोंकैं अनुभवकरिकैभीसिद्धहै ॥ यातैं गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं तामनका जय अवश्यकरिकैसिद्धहोवेहै ॥ हे शिष्य ॥ तामनकोनिग्रहकरणेविषे याअधिकारीपुरुषका उद्वेगतैंरहित दृढउत्साहहीं कारणहै ॥ जैसे पूर्व किसीटिटिभपक्षीनैं दृढउत्साहकरिकैं जलकेएकबिंदुकूंग्रहणकरणेहारी आपणीचंचुसैं समुद्रकूं जलसैंरहितकऱ्याहै॥ तैसे याअधिकारीपुरुषनैभी उद्वेगतैंरहितहोइकै तथादृढउत्साहकरिकै तामनकानिग्रहकरणा ॥ हेशिष्य ॥ लोकपरंपराकरिकैप्राप्त जो

टिटिभपक्षीकावृत्तांतहै ॥ताकूं तूं श्रवणकर ॥ समुद्रकेजलकीलहरियोंकरिकैयुक्त जोसमुद्रकातीरहै ॥ तासमुद्रकेतीरविषे एकटिटिभपक्षी आपणेअंडोंकूंराखताभया ॥ और तिसकालविषे यद्यपि टिटिभीस्त्री तांटिटिभपक्षीकूं बहुतवार निवारणकरतीभई ॥ तथापि सोटिटिभपक्षी आपणेअहंकारकरिकैं तास्त्रीकेवचनकूंनहींमानताभया॥तथा समुद्रकूं तुच्छमानिकै तासमुद्रकेतीरविषेही आपणेअंडोंकूंराखताभया और सोटिटिभपक्षी आपणीस्त्रीकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेटिटिभी तूं यासमुद्रतैंभयमतकर ॥ जोकदाचित् यहसमुद्र आपणेगर्वकरिकै हमारेअंडोंकाहरणकरैगा ॥ तो यामदकरिकैमत्तसमुद्रकूं मैं अभी जलतैंरहितकरोंगा॥हेटिटिभी मेरेकोपकरिकैउत्पन्नभयाजोभय ताभयकरिकै तेजतैंरहितहुएयासमुद्रकूं तूं देख॥हेशिष्य इसप्रकार तांटिटिभपतिकेगर्वयुक्तवचनोंकूंश्रवणकरिकै सोटिटिभीस्त्री तापतिकेप्रति याप्रकारवचन कहतीभई ॥ हेपति ॥ मैं समुद्रकूंजलतैंरहितकरोंगा याप्रकारकावचन जो तूं कथनकरताहै ॥ सोयह वार्त्ता अत्यन्तदुर्घटहै॥काहेतैं यासमुद्रकाबल कहांहै ॥ और तुमारावलकहांहै ऐसे महान्समुद्रकेसुकावणेविषे तुमारा सामर्थ्य हैनहीं॥हे शिष्य ॥ इसप्रकार बहुतवारकाहिकै सोटिटिभीस्त्री पुनःकहणेतैंउपरामहोतीभई ॥ और सोटिटिभपक्षीभीतास्त्रीकेप्रतितूंसमुद्रतैंभयमतकर याप्रकारकावचन वारम्वार कहिकै तासमुद्रकेतीरविषे आपणेअंडोंकूंराखताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोटिटिभपक्षी आपणीस्त्रीकूंसाथ लैकै कहीं आहारकेवासतै जाताभया ॥ हेशिष्य ॥ तांटिटिभपक्षीनैं आपणीस्त्रीप्रति जेजेवचनकहेथे॥तिनसंपूर्णवचनोंकूं सोसमुद्र श्रवणकरताभया ॥ और तास्त्रीसहितटिटिभपक्षीकेगयेतैंअनंतर सोसमुद्र आपणेमहान्पणेकूंस्मरणकरिकै तथातांटिटिभपक्षीकेअल्पपणेकूं स्मरणकरिकैमंदमंदहसताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोसमुद्रपर्वतकेसमानऊंचीजलकीलहरीकूंपसारिकै तांटिटिभपक्षीकेअंडोंकूंहरणकरताभया॥औरतिनअंडोंकूंग्रहणकरिकैसोसमुद्रपरमेश्वरकूंसर्वजगत्केभयकाकारणमानताहुआआपणेमनविषेयाप्रकारकाविचारकरताभयायाळोकविषेजितनेकीस्थावरजंगमजीवहैं तेसंपूर्णजीवपरमेश्वरकीविभूतियांहैयातैंकिसीजीवकीशक्तिस्वरूपकारिकैतथादेशकारिकैतथाकालकारिकै तथानिमित्तकारिकैजानीजातीनहीं॥काहेतैंसर्वशक्तियोंकाआश्रयजोपरमेश्वरकीमायाहै॥सोमायादुर्घटअर्थकूंभीसिद्धकरिदेवैहै॥याकारणतैं

हीं शास्त्रवेत्तापुरुषोंनैं अघटितघटनापटीयसीमाया यहमायाकास्वरूप कथनकऱ्याहै ॥ और यहटिटिभपक्षीभी तापरमेश्वरकीविभूतिरूप है॥ यातैं यातिटिभपक्षीका कौनदेशहै तथाकौनकालहै तथाकौनमित्रहै तथाकौनशक्तिहै यहवार्त्ता सर्वज्ञपरमेश्वरतैंविनाहमजीव जानि सकतेनहीं ॥ यातैं इसटिटिभपक्षीकेअंडोंकूं मैं नाशनहींकरौं॥ किंतु किसीगुह्यस्थानविषे मैं इनअंडोंकूंराखिछोडौं ॥हेशिष्य॥इसप्रकार काविचारआपणेमनविषेकरिकै सोसमुद्र तिनअंडोंकूं किसीगुह्यस्थानविषेराखताभया॥और महान्गर्जनारूपशब्दोंकूंकरताहुआसोसमुद्र पूर्वकीन्याईं निर्भयास्थितहोताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोटिटिभपक्षी आपणेउदरकीपूर्णताकरिकै तातिटिभीस्त्रीसहितातासमुद्रकेतीरऊप रिआवताभया॥और तहां आपणेपुत्रोंकेअंडोंकूंनदेखिकरिकै सोटिटिभपक्षी आपणेनेत्रोंकूंरक्तकरताभया॥तथा क्रोधकरिकैमूर्छितहोता भया ॥ और यहसमुद्र हमारेअंडोंकूंलेगयाहै याप्रकारकाअनुमानकरिकै सोटिटिभपक्षी तासमुद्रकेमुकावणेकानिश्चयकरताभया ॥तिस कालविषे सातिटिभीस्त्री आपणेपतिकेअभिप्रायकूंजानिकैतापतिकेहितवासतै याप्रकारकेनीतियुक्तवचनोंकूं कहतीभई ॥टिटिभीउवाच॥ हेपति॥सर्वनदियोंकापति जोयह समुद्रहै॥ताकाबल अत्यंत महान्है ॥ और तुमाराबल अत्यंतअल्पहै ॥ऐसेमहान्बलवालेसमुद्रकेसाथ जोतू वैरकरताहै सो नीतिशास्त्रतैं विरुद्धकरताहै ॥ काहेतैं तानीतिशास्त्रविषे यहकह्याहै ॥ जैसे मैत्री तथाविवाह यहदोनोंसमानपुरुषों केहीहोवै हैं ॥न्यूनअधिकपुरुषोंका परस्पर मैत्री तथा विवाह होवैनहीं॥तैसे परस्पर वैरभी समानबलवालेपुरुषोंकाहीहोवै है॥न्यूनअधि कबलवालेपुरुषोंका परस्पर वैर संभवैनहीं ॥ औरयासमुद्रकेबलसमान तुम्हाराबल हमारेकूंदेखणेविषेआवतानहीं ॥यातैंयासमुद्रकेसाथ वैरकरणा तुमारेकूं उचितनहीं है ॥ और हेपति यालोकविषे देशबल १ कालबल २ मित्रबल ३ धनबल ४ शारीरबल ५ कुल बल ६ यहषट्प्रकारका बलहोवै है सोषट्प्रकारकाबल यासमुद्रविषेतौ देखणेमैंआवै है ॥ परंतु तुमारेविषे सोषट्प्रकारकाबल हमारेकूं देखणेविषेआवतानहीं ॥ काहेतैं शिरतैंलैकेपुच्छपर्यंत तुमारेशरीरकीदीर्घतातौ षोडशअंगुलपरिमाणहै और तुमारेदोनोंपक्ष द्वादशअं गुलपरिमाणदीर्घहैं॥यातैंवामपक्षकेअग्रभागतैंलैकेदक्षिणपक्षकेअग्रभागपर्यंतयहतुमाराशरीर एकहस्तपरिमाण चौडाहै॥ और आम्रफलके

वृंतसमान तुमारेदोनोंपादहैं॥और कुशाकेअग्रभागकेसमान तुमाराचुंचै॥औरजीर्णवस्त्रकेसमान अत्यंतशिथिल तुमारेदोनोंपक्षहैं ॥ इसतैं अधिकदेश तुमारा अंतरनहींहै तथाबाहरनहीं है ॥ यातैं देशबलभी तुमारेविषेनहीं है ॥और हेपति हमपक्षीआदिकनीचजातियोंविषेज न्मतैंलैकेनाशपर्यंत यहकाल एकरूपहीरहैहै॥देव दैत्य मनुष्य इत्यादिकउत्तमजातियोंविषेही सोकाल उत्कृष्टता तथानिकृष्टता प्राप्तकरै हैं॥यातैं कालबलभी तुमारेविषेनहीं है॥और हेपति॥पुत्रोंकेवियोगकरिकै दीनभावकूंप्राप्तभई जोंमैंस्त्रीहूँ ता स्त्रीतैंविना तुमारा दूसराकोई मित्रहैनहीं॥यातैं मित्रबलभी तुमारेविषेनहीं है॥और हेपति॥यालोकविषे जोधनवान्पुरुषहै॥ताधनीपुरुषके धनकेप्राप्तिकीआशाकरिकै अमित्रपुरुषभी मित्रभावकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ सोधन तुमारेपासहैनहीं ॥यातैं धनबलभी तुमारेविषेनहीं है ॥ और हेपति ॥ किसीबलवान् पुरुषनैं आकाशविषेचलायाजोबाणाहै ॥ सोबाण जितनैंपर्यंत जाइकै नीचे पतनहोवैहै ॥ तितनैंपर्यंत उडनेविषेभीतुमारासामर्थ्यहैंनहिं यातैं शरीरबलभी तुमारेविषेनहीं है ॥ और हेपति ॥ तुमारा जन्म टिटिभपक्षीकेकुलविषेहुआहै ॥ सोटिटिभपक्षी सर्वपक्षियोंविषे निकृष्टहोवै है ॥ यातैं कुलबलभी तुमारेविषेनहीं है ॥ इतनैं करिकै टिटिभपक्षीविषे तापट्प्रकारकेबलकाअभाव निरूपण कऱ्या ॥ अब समुद्रविषे तापट्प्रकारके बलकीविद्यमानता निरूपणकरैहैं ॥ हेपति ॥ यहसमुद्र ओरलेकिनारेविषेतौ एकलक्षयोजन परिमाण विस्तारवालाहै ॥ और पारलेकिनारेविषे दोलक्षयोजनपरिमाण विस्तारवालाहै ॥ और नीचेपृथिवीविषेतौ यासमुद्रका पातालपर्यंत विस्तारहै ॥ और जैसे तलावकाजल कुल्याद्वारा सर्वक्षेत्रभूमिकूंव्याप्यकरिकैस्थितहोवै है ॥ तैसे यह समुद्रभी प्रलय कालविषे तीनलोकोंकूंव्याप्यकरिकैस्थितहोवैहै ॥ यातैं यहसमुद्र देशबलवालाहै ॥ और हेपति ॥ यासमुद्रादिकमहान्पुरुषोंकेयह काल सर्वदाअनुकूलरहैहै॥यातैं यहसमुद्र कालबलवालाभी है॥और हेपति॥याभूमिविषे जितनैंकीजातिकेप्राणीरहैहैंतितनैंहीजातिकेरत्न यासमुद्रविषेरहैहैं ॥यातैं यहसमुद्र धनबलवालाभी है ॥ और हेपति यहसमुद्र इंद्रादिकदेवतावोंकूं तथामुनिलोगोंकूं तथामनुष्योंकूं अनेक प्रकारकेरत्नोंकीप्राप्तिकरै है ॥ यातैं तेसंपूर्णइंद्रादिकदेवता यासमुद्रकोमित्रहैं ॥ यातैं यहसमुद्र मित्रबलवालाभीहै ॥ और हेपति ॥

यहसमुद्र साक्षात् महेश्वरतैंउत्पन्नभयाहै ॥यातैं यहसमुद्र कुछबलवालाभीहै ॥ और हेपति ॥ अनेकशतयोजनहैविस्ताराजिनोंकाऐसेजे मैनाकादिपर्वततथे ॥ तेपर्वत इंद्रतैंभयकूंप्राप्तहोइकै यासमुद्रकैं शरणकूंप्राप्तहोतेभये ॥ तिनपर्वतोंकूं यहसमुद्र आपणेजलविषेंस्थितकरिकै पालनकरताभयाहै ॥ यातैं यहसमुद्र शरीरबलवालाभीहै ॥ हेपति ॥इसप्रकार आपणेबलकूं तथायासमुद्रकेबलकूं तूं भलीप्रकार विचारकरिकैदेख ॥ आपणे नाशकरणेवासतैं तूं यासमुद्रसैं व्यर्थविरोध मतकर ॥ हेपति तुमनैं आपणीमूर्खताकरिकैप्रथमतो हमारेकूं पुत्रोंतैंरहितकऱ्या है ॥ अभी आपणेनाशकरिकै हमारेकूं विधवाभावकीप्राप्ति मतकर ॥हेशिष्य॥इसतैंआदिलेकै अनेकप्रकारकेवचन जभी तांटिटिभीस्त्रीनैं आपणेपतिकेप्रति कहे ॥ तभीसोटिटिभपक्षी तास्त्रीकेवचनोंकूंश्रवणकरिकै तास्त्रीकेप्रति याप्रकारकेवचन कहताभया ॥ टिटिभउवाच ॥ हेस्त्री ॥ यालोकविषे संपदाकालविषेतौ आपणेस्वार्थवासतै कोटिसहस्र मित्रहोवैहैं ॥ परंतु आपदाकालविषे कोई मित्रहोतानहीं ॥ और जो आपदाकालविषे मित्रहोवैहै ॥ सोईही मित्रकह्याजावैहै ॥ और हेस्त्री ॥ जोदेहधारीजीव आपदाकालविषे जिसपुरुषका परित्यागकरिदेवै॥सा देहधारीजीव तिसपुरुषकाशत्रुहीहोवैहै॥सो आपणीस्त्रीहोवै अथवा आपणापुत्रहोवै अथवा आपणाभ्राताहोवै ॥ ताकूं शत्रुहीजानणा॥और हेस्त्री ॥या लोकविषे जोदेहधारीजीव जिसपुरुषके पुण्यपापरूपकर्मोंविषेतथासुखदुःखरूपभोगविषे अनुसारीवर्तैहैं ॥ सोदेहधारीजीवही तिसपुरुषका मित्रकह्याजावैहै ॥ और हेस्त्री ॥ यालोकविषे जिसपुरुषनैं जिसबुद्धिमान् मनुष्यकूं आपणेआत्माकीन्याईं विश्वासकापात्रकरिकै मान्याहै ॥ सोबुद्धिमान्मनुष्यतिसपुरुषकूं जभी आपदाकालविषे चित्तकेउत्साहकूंनष्टकरणेहारेवचन कहैहै ॥ तभी सोबुद्धिमान्मनुष्य तापुरुषका शत्रुहीजानणा ॥ और हेस्त्री ॥ यालोकविषे जोपुरुष केवल आपणेयोगक्षेमकीहीइच्छाकरै है आपणेमित्रके योगक्षेमकीइच्छाकरतानहीं ॥ ऐसेकपटीमित्रकूं यहबुद्धिमान्पुरुष प्रथमही नाशकरै ॥ तिसतैंअनंतर आपणेसाक्षात्शत्रुकूंनाशकरै ॥ याप्रकारकेवचन नीतिशास्त्रविषे बुद्धिमान्पुरुषोंनैं कथनकरैहैं ॥ हेस्त्री ॥ यद्यपि पूर्व तूं हमारेकूं मित्ररूपहोइकैप्रतीतहोतीथी॥तथापि याआपदाकालविषे तुमनैं हमारेप्रति उत्साहकेनाशकरणेहारे कठोरवचन कहेहैं॥यातैं अभी

॥ ७० ॥

हमारेकूं तूं शत्रुरूपहोइकैप्रतीतहोतीहै ॥ और जोदेहधारीजीव अंतरविषेतौ शत्रुपणाराखेहै ॥ और बाहरसैं मित्रपणादिखावै है ॥ ऐसे कपटीमित्रकेमारणेविषे यद्यपि नीतिशास्त्रनैं दोष कह्यानहीं ॥ तथापि मैं तुम्हारेकूं मारतानहीं॥ काहेतैं शास्त्रविषे दोप्रकारकेवचनहोवैहैं ॥ तहां एकतो सामान्यवचनहोवैहै ॥ और दूसरे विशेषवचनहोवै हैं ॥जैसे या अधिकारी पुरुषनैं किसीभीजीवकीहिंसा नहींकरणीयह सामान्यवचनहै ॥ और याअधिकारीपुरुषनैं यज्ञविषे पशुकीहिंसाकरणी यहविशेषवचनहै ॥ तहां सामान्यवचनतैं विशेषवचन बलवान् होवैहै ॥ तैसे यापुरुषनैं कपटीमित्रकूंमारणा यहसामान्यवचनहै ॥ और स्त्रीबालककूं नहींमारणा यहविशेषवचनहै ॥ सोयहविशेषवचन तासामान्यवचनतैं बलवान्है ॥ याप्रकारकी शास्त्रकीव्यवस्थाकूंविचारिकै मैं तुमारेकूंमारतानहीं॥और हेस्त्री तुमारेनमारणेविषे एकदूसराभीकारणहै जिसपुरुषकेसाथ जोपुरुष प्रीतिपूर्वक सप्तवचन उच्चारणकरैहै ॥ अथवा भूमिविषे सप्तपाद एकठेउठावैहै ॥ सोपुरुष ताका मित्रहोवैहै ॥याप्रकारका मित्रकालक्षण कोईक बुद्धिमान्पुरुष कथनकरै हैं॥ सोयहमित्रकालक्षण तुमारेविषेभीघटैहै ॥काहेतैं मैंने तुमारेसाथ स्वस्थचित्तहोइकै बहुतकालपर्यंत निवासकऱ्याहै ॥ यातैं तुमारेकूं मृत्युरूप शरीरकादंड मैं करतानहीं ॥ और पूर्वउक्तशत्रुकेलक्षणभी तुमारेविषेघटैहैं यातैं हेदुष्टस्त्री तूं हमारेसमीपतैं कहांअन्यत्र चलीजाउ यहकठोरवचनरूप धिक्कूदंड मैं तुमारेकूंकरताहूं ॥ हेस्त्री म एकलाही आपणेबलकरिकै यासमुद्रकूंसुकावोंगा ॥ आपणेदोनोंपक्षोंकरिकै तथाआपणेचंचुकरिकै यासमुद्रकेजलकूंग्रहणकरिकै बाह्यभूमिविषेजाइकै पावैगा ॥ याप्रकार थोडेहीकालविषे यासमुद्रकूं अंधकूपकीन्याईं जलतैंरहितकरोंगा ॥ हेशिष्य ॥इसप्रकारकेवचनता स्त्रीकेप्रातिकाहिकै सोटिटिभपक्षी क्रोधवान्होइकैआकाशविषेउडताभया ॥और सोटिटिभपक्षी तिसीप्रकार तासमुद्रकेसुकावणेवासतैंप्रवृत्तहोताभया ॥तिसतैं अनंतर सापतित्रतातिटिटिभीस्त्रीभी तापतिका समुद्रकेसुकावणेकादृढनिश्चयदेखिकै तापतितैं आपणाअपराधक्षमा करावतीभई ॥ और तिसीप्रकार सातिटिभीस्त्रीभी तासमुद्रकेसुकावणेवासतैं प्रवृत्तहोतीभई॥हेशिष्य ॥इसप्रकार सोटिटिभपक्षीतथातिटिभीस्त्री दोनों उद्वेगतैंरहितहोइकै रात्रिदिनविषे निरंतर तासमुद्रकेसुकावणेविषे प्रयत्नकरतेभये॥ और तेस्त्रीपुरुषदोनोंपक्षी आपणेदोनों

पक्षोंकरिकै तथाआपणेचंचुकरिकै तासमुद्रकेजलकूंग्रहणकरिकै बाहरभूमीमांवषआइक ताजलकूंपावैं ॥ यद्यपि तेदोनोंपक्षी समुद्रके जलकूंग्रहणकरिकै जभी आकाशविषेउडैं तभी तिनोंकेवेगतैंउत्पन्नभयाजोपवनहै ॥ तापवनकरिकै सोजल मार्गविषेहीसूकिजावै॥तथापि तेपक्षीताप्रयत्नतैं उपरामहोवैंनहीं॥किंतु वारंवार ताजलकूंग्रहणकरिकै बाहरभूमिविषेजाइकैपावैं॥हेशिष्य॥इसप्रकार तिटिटिभीकूं समुद्रके सुकावणेविषें प्रवृत्तहुआदेखिकै दूसरेअनेकटिटिभपक्षी तहांआवतेभये ॥ और तेदूसरेटिटिभपक्षी तिनोंकेवृत्तांतकूंजाणिकै तिनदोनोंकूंतासमुद्रसुकावणेकेउद्यमतैं निवृत्तकरणेवासते अनेकप्रकारकेवचनकहतेभये ॥ परंतु तेदोनोंस्त्रीपुरुष तिनदूसरेटिटिभपक्षियोंके वचनोंकूं नहींमानतेभये॥और तेदोनोंस्त्रीपुरुष तिनसर्वटिटिभपक्षियोंकेप्रति याप्रकारकावचन कहतेभये॥हेटिटिभपक्षियो ॥ जोतुम हमारेसाथ मित्रताराखतेहो तौ हमारेन्याईं तुमभी यासमुद्रकेसुकावणेविषे प्रयत्नकरो ॥ और जोतुम हमारेसाथ मित्रतानहींराखतेहो तौ तुम आपणेगृहोंकूंचलेजावो ॥ हमतौ यासमुद्रकूं अवश्यकरिकैसुकावैंगे ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार तिनदोनोंस्त्रीपुरुषकेवचनोंकूं श्रवणकरिकै तेसंपूर्णटिटिभपक्षी तिनदोनोंकीन्याईं तासमुद्रकेसुकावणेविषे उद्यमकरतेभये॥ और तिनसर्वटिटिभपक्षियोंकूं समुद्रकेसुकावणेविषे प्रवृत्तहुआदेखिकै दूसरेभी अनेकजातिवालेपक्षी तहांआवतेभये ॥ तेसंपूर्णपक्षीभी तिनटिटिभपक्षियोंकीन्याईं तासमुद्रकेसुकावणेविषे उद्यमकरतेभये ॥हेशिष्य॥ इसप्रकार तिनसर्वपक्षियोंकेप्रवृत्तहुएतैंअनंतर आपणीइच्छाकरिकै तीनलोकोंविषेविचरणेहारा नारद मुनि किसीदैवयोगतैं तहांआवताभया॥और सोनारदमुनि तिनसर्वपक्षियोंकेवृत्तांतकूंजाणिकै तिनपक्षियोंकूं तासमुद्रकेसुकावणैंतैंनिवृत्त करणेवासतै अनेकप्रकारकेवचन कहताभया ॥ परंतु दुःखकरिकैआतुरहुएतेपक्षी तानारदमुनिकेवचनकूं अंगीकार नहींकरतेभये॥तिसतैं अनंतर सोनारदमुनि तिनपक्षियोंके दृढनिश्चयकूंदेखिकै कृपाकरिकैयुक्तहुआ तिनपक्षियोंके याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेसर्वपक्षियो।विष्णुभगवान्का वाहन जो गरुडपक्षीहै॥सोगरुडपक्षी तुमसर्वपक्षियोंकाराजाहै.यातैं तुमसर्वपक्षी तागरुडकेसमीपजाइकै इहांलेआवो ॥ तौतुमाराकार्यसिद्धहोवैगा।हेशिष्य।याप्रकारकेतानारदमुनिकेवचनोंकूंश्रवणकरिकै तेसंपूर्णपक्षी गरुडकेसमीपजाइकै आपणावृत्तांतकाहिकै

तागरुडकूं तहांलैआवतैंभये ॥ तहां गरुडकूंआयाहुआदेखिकै सोसमुद्र भयकरिकै विह्वलताकूं प्राप्तहोताभया ॥ और जिनअंडोंकूं सोसमुद्र पूर्व लैगयाथा ॥ तेसंपूर्णअंडे तिटिटिभपक्षीकेताईं देताभया॥ हेशिष्य॥ यातिटिभपक्षीकेदृष्टांतकहणेका यहअभिप्रायहै ॥ जैसे सोटिटिभपक्षी आपणेदृढपुरुषार्थकरिकै तासमुद्रकूंजयकरताभयाहै॥तैसे यहअधिकारीपुरुषभी आपणेदृढपुरुषार्थकरिकै यामनकूंजयकरै ॥ हेशिष्य॥जैसे तिटिटिभपक्षीनैं जभी तासमुद्रकेसुकावणेका दृढनिश्चयकऱ्याथा॥ तभीही तिटिटिभपक्षीकी गरुडभगवान्नैं आइकै सहायताकरीथी॥तैसे यहअधिकारीपुरुषभी जभी तामनकेजीतणेका दृढनिश्चयकरै है ॥ तभी याअधिकारीपुरुषकी संपूर्णदेवता सहायता करै हैं॥शंका॥हेभगवन्॥सोगरुड पक्षित्वरूपकरिकै तिटिटिभपक्षीका सजातीयथा॥ यातैं टिटिभपक्षीकीसहायताकरणी यद्यपि गरुड पक्षीविषेतौ संभवै है॥तथापि तेदेवता हममनुष्योंकेसजातीयहैंनहीं ॥ यातैं तिनदेवतावोंविषे हममनुष्योंकीसहायताकरणी संभवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ समानजातिवालेही सहायताकरै हैं ॥ याप्रकारकानियम संभवैनहीं ॥ किंतु किसीस्थलविषे विजातीयपुरुषभी सहायताकरै हैं॥ जैसे सीताकेवियोगजन्यदुःखकीनिवृत्तिकरणेवासतै रावणकेसाथ युद्धरूपकार्यविषे प्रवृत्तभयेजोश्रीरामचंद्र हैं ॥ ताश्रीरामचंद्रकीसहायता विजातीयवानरोंनैं करी है॥ तैसे दृढनिश्चयपूर्वक तथाश्रद्धाभक्तिपूर्वक किसीशुभकर्मविषे प्रवृत्तभया जोअधिकारीपुरुषहै॥ताअधिकारीपुरुषकीसहायता सर्वदेवताकरै हैं॥हेशिष्य ॥ उद्यम साहस धैर्य बल बुद्धि पराक्रम यह षट्गुण जिसपुरुषविषे विद्यमानहोवै हैं॥तिसपुरुषकूं कोईभीपदार्थ दुर्लभनहीं है ॥ किंतु सोपुरुष सर्वपदार्थोंकूंप्राप्तहोइसकैहैं ॥ तहां पुरुषार्थकानाम उद्यमहै ॥ और इंद्रियोंकाजयरूप जोदमहै ताकानाम साहसहै॥और अनेकविघ्नोंकेप्राप्तहुएभी चित्तविषे उद्वेगनहींहोणा याकानाम धैर्यहै॥और दृष्टसाधनोंकीसंपत्तिहोणी याकानाम बलहै॥और नानाप्रकारकीचातुर्यताहोणी याकानाम बुद्धिहै॥और शरीरकेबलकानाम पराक्रमहै॥हेशिष्य॥यहअधिकारीपुरुष तापराक्रमकूंतौ सिंहतैंसीखै॥काहेतैं जैसे सिंह आपणेसन्मुखभूमिविषे पादकूंराखे है॥ तहां अनेकशस्त्रोंकेप्रहारहुएभी सोसिंह तापादकूं पीछेउठावतानहीं॥तैसे यहअधिकारी पुरुषभी आरंभकरेहुए किसीमहान्शुभकार्यकूं अथवा किसीअल्पशुभ

कार्यकूं परित्यागकरैनहीं ॥ किंतु ताकार्यकीसमाप्तिहीकरै ॥ हेशिष्य ॥ अंगीकारकरेहुए किसीकार्यकूं परित्यागनहींकरणा याअर्थविषे बहुतम हात्मापुरुष दृष्टांतरूपहैं ॥ जैसे अंगीकारकरैहुएकालकूटविषकूं महादेव परित्यागकरतानहीं ॥ और जैसे अंगीकारकरेहुए वडवाग्निकूं समुद्र परित्यागकरतानहीं ॥ और जैसे अंगीकारकरैहुए पृथिवीकेभारकूं कूर्म परित्यागकरतानहीं ॥ तैसे यहअधिकारीपुरुषभी आरंभकरे हुए शुभकार्यकूं परित्यागकरैनहीं ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै जोअधिकारीपुरुष तामनकेनिग्रहकरणेविषे प्रवृत्तहोवै है ॥ और मर णांतसंकटकेप्राप्तहुएभी तिसउद्यमतैं निवृत्तहोतानहीं ॥ सोअधिकारीपुरुष अवश्यकरिकै तामनकाजय करै है ॥ हेशिष्य ॥ रजोगुणकाकार्यजो इच्छारूपकामहै ॥ तथा सत्त्वगुणकाकार्य जोविषयसुखकाअनुभवरूपभोगहै ॥ ताकामभोगविषे तत्परहुआ जोयहमनहै ॥ तथा तामसनिद्रारूप लयविषे जाग्रत्स्वप्नकेविक्षेपतैंरहितहुआ जोयहमनहै ॥ तामनकूंयहअधिकारीपुरुष किसीउपायकरिकै निग्रहकरै ॥ हेशिष्य ॥ जैसे सोकाम भोग याअधिकारीपुरुषोंके अनर्थकाकारणहै ॥ तैसे सर्वदोषोंकाभी सोनिद्रारूपलयभीअनर्थकाहीकारणहै ॥ यातैं यहअधिकारीपुरुष ता निद्रारूपलयतैंभी यामनकूंनिवृत्तकरै ॥ अब तामनकोनिग्रहकरणेकाउपाय वर्णनकरैं हैं ॥ हेशिष्य ॥ यामनकेनिग्रहकरणेवासतै दोउपाय शा स्त्रविषेकथनकरे हैं ॥ एकतौ वैराग्यरूपउपायहै ॥ और दूसरा अभ्यासरूपउपायहै ॥ तहांयहसंपूर्ण द्वैतप्रपंच याजीवोंकूं अनेकप्रकारकेदुः खोंकीप्राप्तिकरै हैं ॥ यातैं यहसंपूर्णजगत् दुःखरूपही है ॥ अथवा यहसंपूर्णजगत् याजीवोंके ब्रह्मानंदकूंआच्छादनकरणेहाराहै ॥ यातैं दुःखरू पही है ॥ इसप्रकार गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं यासर्वजगत्कूंदुःखरूपजाणिकै किसीपदार्थकेप्राप्तिकीइच्छानहींकरणी याकानाम वैराग्यहै ॥ और यहसंपूर्णजगत् ब्रह्मरूपही है ॥ ब्रह्मतैंभिन्न याजगत्का कोईवास्तवस्वरूपहैनहीं ॥ जैसे मृत्तिकातैंभिन्न कोईघटका वास्तवस्वरूपनहीं है याप्रकार वारंवार आपणेमनविषेचिंतनकरणा याकानाम अभ्यासहै ॥ ऐसे वैराग्यअभ्यासउपायकरिकैही यामनकानिग्रहहोवै है ॥ यह वार्त्ता गीताविषे भगवाननैंभीकही है ॥ तहां श्लोक ॥ असंशयंमहाबाहो मनोदुर्निग्रहंचलम् । अभ्यासेनतुकौंतेय वैराग्येणचगृह्यते । अर्थयह ॥ हेअर्ज्जुन तुमनैं जोपूर्व मनकीदुर्निग्रहता कही है ॥ सोवार्त्ता यद्यपि सत्यहै ॥ तथापि अभ्यासकरिकै तथावैराग्यकरिकै

तामनकानिग्रह होइसकैहै ॥ १ ॥ हेशिष्य ॥ मनकानिरोधरूपजोयोगहै ॥ तायोगविषे याचित्तकी लय विक्षेप कषाय यहतीनअवस्था विरोधीहोवै हैं ॥ तिनतीनोंअवस्थावोंकूं यहअधिकारीपुरुष ताअभ्यासवैराग्यरूपदोउपायोंकरिकैनाशकरै ॥ तहां यहचित्त जभी तानि द्रारूपलयविषे प्रवर्त्तमानहोवै ॥ तभी यहअधिकारीपुरुष ताचित्तकूं आत्माचिंतनरूपअभ्यासविषेजोडे ॥ और यहचित्त जभी ताकामभो गविषे तत्परतारूपविक्षेपअवस्थाकूंप्राप्तहोवै ॥ तभी यहअधिकारीपुरुष तिनविषयभोगोंविषे अनेकप्रकारके दोषोंकाचिंतनरूप वैराग्य करिकै तिनविषयभोगोंतैं चित्तकूंनिवृत्तकरै ॥ और रागादिकोंकेसंस्कारकरिकै याचित्तविषे जोआत्मअनात्मआकारवृत्तितैंरहिततारूप स्तब्धअवस्था है याकानामकषायहै ॥ ताकषायदोषयुक्ताचित्तकूंदेखिकै यहअधिकारीपुरुष तावैराग्यअभ्यासरूपउपायकरिकै ताकषायदो षकीनिवृत्तिकरै ॥ इसप्रकार उपायकरिकै याअधिकारीपुरुषकाचित्त जभी ब्रह्माकारताकूं प्राप्तहोवै ॥ तभी यहअधिकारीपुरुष ताचित्त कूं ब्रह्माकारअवस्थातैं चलायमानकरैनहीं ॥ किंतु ताब्रह्माकारअवस्थाका परिपालनकरै ॥ हेशिष्य ॥ तासमाधिकालविषे सत्त्वगुणकी अधिकतातैं उत्पन्नभयाजोसुखविशेषहै ॥ तासुखविषेभी यहअधिकारीपुरुष आसक्तिकरैनहीं ॥ किंतु विचारकरिकै तासुखतैंभीनिःसंग होवै ॥ और ब्रह्माकारताकूंप्राप्तहोइकैभी यहचित्त जभी बाह्यजावै ॥ तभी यहअधिकारीपुरुष प्रयत्नकरिकै ताचित्तकूं पुनःब्रह्माकारकरै ॥ हेशिष्य ॥ जिसकालविषे यहचित्त लय विक्षेप कषाय यातीनोंदोषोंतैं रहितहोवै है ॥ तथा चलनतैंरहितहोवै है ॥ तथा सर्वदृश्यपदार्थों केसंबंधतैंरहितहोवै है ॥ तिसकालविषेही सोचित्त ब्रह्मभावकूंप्राप्तहुआजानणा ॥ हेशिष्य ॥ सर्वविक्षेपतैंरहितहुआ सोचित्त जिसब्रह्मभाव कूंप्राप्तहोवै है ॥ सोब्रह्मकैसाहै ॥ शुद्धहै तथासर्वअनर्थोंतैंरहितहै ॥ तथा नित्यमुक्तहै ॥ तथा वाकादिकसर्वइंद्रियोंकाअविषयहै ॥ तथा भूमाआनंदरूपहै ॥ हेशिष्य ॥ जबपर्यंत साक्षीआत्माविषे यामनका बाधरूपलयनहींहोवै ॥ तबपर्यंत याअधिकारीपुरुषनैं तामनकूं अव श्यकरिकैनिरोधकरणा ॥ तानिरोधकरेहुएमनकूं जोब्रह्मभावकीप्राप्तिहोवै है ॥ यहही तामनकाबाधहै ॥ हेशिष्य ॥ यहब्रह्माकारतारूप जोमनकानिरोधहै ॥ सोनिरोधहीवेदांतवाक्योंकेविचाररूपसांख्यकाफलहै ॥ तथासोनिरोधहीयोगकाफलहै ॥ यामनकेनिरोधतैंअधिकदूसरा

कोइ फलतासांख्ययोगकाहैनहीं अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकै निरूपणकरै हैं हेशिष्य जो अधिकारीपुरुष यामनकेनिग्रहकूंनकरिकै तथा तामनकेनिग्रहकूंप्रतिपादनकरणेहारे अध्यात्मशास्त्रका नअध्यपनकरिकै दुसरेअनेकशास्त्रोंका अभ्यासकरै है ॥ सोपुरुष बहुतवाचालहो वै है ॥ तथा व्यवहारविषेकुशलहोवै है ॥ तथा बहुतबोलणेकरिकै तापुरुषके उरकंठादिकसूकतेजावै हैं ॥ इसतैंपरेदूसराकोईफल तिसपुरुषकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ और जोअधिकारीपुरुष यामनकेनिग्रहकूं प्राप्तहोवै है सोअधिकारीपुरुष थोडेग्रंथकेपठनकरिकैभी परमपुरुषार्थकूं प्राप्तहोवै है ॥हेशिष्य॥ यामनकोनिग्रहकूंछोडिकै तथामनकेनिग्रहकूंप्रतिपादनकरणेहारे वेदांतशास्त्रकूंछोडिकै जोपुरुष दूसरेन्यायमीमांसादिकअनेकशास्त्रोंकूं अध्ययन करै है ॥तथा अध्ययनकरावै है तिसपुरुषकूंतेन्यायमीमांसादिकअनेकशास्त्र किंचित्मात्रभी शांतिकी प्राप्तिकरतेनहीं ॥ उलटा तेअनात्मशास्त्र तापुरुषकूं अहंकारकीहीप्राप्तिकरै हैं॥यातैं याअधिकारीपुरुषनैं तामनकेनिग्रहकूं अवश्यकरिके संपादनकरणा ॥ मनकेनिग्रहकियेतैंविना यहजीव जिसजिसकर्मकूंकरै है ॥ सोकर्म ताजीवकूं फलकीप्राप्तिकरैनहीं॥ तहां श्लोक ॥ दानमिज्यातपःशौचं तीर्थंवेदाः श्रुतंतथा॥अशांतमनसः पुंसः सर्वमेतन्निरर्थकम्॥अर्थयह॥जिसपुरुषकामन विषयवासनाकापरित्यागकरिकै शांतिकूंनहींप्राप्तभया ॥ तिसपुरुषके दान यज्ञ तप शौच तीर्थ वेद श्रवण इत्यादिकसर्वकर्म निष्फलहीहोवै हैं ॥ जैसे हस्तीकास्नान निष्फलहै ॥ १ ॥ हेशिष्य ॥ इसलोकविषेप्राप्तहोणेयोग्य जितनैंकीशुभफलहैं ॥ तथा परलोकविषेप्राप्तहोणेयोग्य जितनेकीशुभफल हैं तेसंपूर्णशुभफल यापुरुषकूं मनकेनिरोधकरणेतैंहीं प्राप्तहोवै हैं॥मनकेनिरोधकियेतैंविना किसीफलकीप्राप्तिहोवैनहीं । हे शिष्य ! यहमोक्षकीइच्छावान्अधिकारीपुरुष जभी तामनकानिरोधकरै है॥तभी यहअधिकारीपुरुष सुखेनहीं तात्रह्मकूं आपणाआत्मारूपकरिकैप्राप्तहोवै है॥कैसाहैसोब्रह्म॥मनकरिकैभी चिंतनकऱ्याजातानहीं।यातैं श्रुतिभगवती तात्रह्मकूं अचिंत्य यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ और जैसेयहमन शब्दादिकविषयोंकूं बाह्यरूपकरिकैचिंतनकरै है ॥तैसे यहमन तात्रह्मकूं बाह्यरूपकरिकै चिंतनकरिसकैनहीं॥किंतु यहशुद्धमन तात्रह्मकूं सर्वतैंअंतररूपकरिकै चिंतनकरै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तात्रह्मकूं चिंत्य यानामकरिकैकथनकरै है ॥ हेशिष्य ॥ एकहीब्रह्मकूं जो

श्रुतिनैं मनकरिकैअचिंत्यकह्याहै तथामनकरिकैचिंत्यकह्याहै ताकायहअभिप्रायहै ॥ यासंसारकेविषयसुखोंविषे आसक्त जोमन है ॥ ताअशुद्धमनकरिकै यहअविवेकीजीव तात्रह्मकाचिंतनकरिसकैनहीं ॥ यातैं श्रुतिनैं तात्रह्मकूं अचिंत्यकह्याहै ॥ और विषयवासनातैंरहित जोशुद्धमनहै ताकरिकै सोब्रह्मचिंतनकऱ्याजावैहै।यातैं तुममुमुक्षुजननैं विषयोंकाचिंतन नहींकरणा याप्रकार तिनमुमुक्षुजनोंकेउपदेशकरणेवासतै ताश्रुतिनैं ब्रह्मकूंचिंत्यकह्याहै॥हेशिष्य॥जैसे यालोकविषे जीवोंकूं आपणेशत्रुमित्रादिकोंविषे पक्षपातहोवैहै।तैसे तात्रह्मकूं किसीभीपदार्थविषे पक्षपातनहींहै॥किंतु सोब्रह्म सर्वजगत्विषे समानव्यापकहै।तहां श्रुति॥समःमुषिणा समोमशकेन समोनागेन॥अर्थयह मुषि मशक आदिकअल्पशरीरोंविषेतथाहस्ती आदिकमहान्शरीरोंविषे सोब्रह्म समान हींहै।१।हेशिष्य ।शब्दादिकविषयोंकेसाथजोयामनकासंबंधहै ॥ सोविषयोंकासंबंधहीं यामनकूं ब्रह्मतैंभिन्न करणेहाराहै ॥ और यहमन जभी ताविषयोंके संबंधकापरित्यागकरिकै निरंतर आत्माकाचिंतनकरैहै॥तभी यहमन ब्रह्मभावकूंहींप्राप्तहोवैहै।हेशिष्य।यहअधिकारीपुरुष तामनकोनिरोधकरिकै जिसब्रह्मकूंजानेहै सोब्रह्मकैसाहै॥परमपदरूपहै॥तथा निरवयवहै॥तथा सर्वविकल्पतैंरहितहै ॥तथा कार्यसहित अज्ञानतैंरहितहै ॥ तथा देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहितहै ॥तथा हेतुदृष्टांततैंरहितहै॥तथा प्रमाणजन्यज्ञानकाअविषयहै ॥तथा ग्रहणत्यागतैंरहितहै ॥तथा जिसब्रह्मकेज्ञानतैं बुद्धिमान्पुरुष मुक्तिकूंप्राप्तहोवैहैं॥ऐसेअद्वितीयब्रह्मकूं जोअधिकारीपुरुष मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकार आपणाआत्मारूपकरिकैजानै है॥सोअधिकारीपुरुष ताब्रह्मभावकूंहीं प्राप्तहोवैहै ॥ हेशिष्य॥ऐसेब्रह्मात्माकेज्ञानकरिकै जिसविद्वान्पुरुषका मन ताअधिष्ठानब्रह्मविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहै॥ऐसेविद्वान्योगीपुरुषकूं यह आत्मादेखयाप्रकार सर्वधर्मोंतैंरहितहुआप्रतीतहोवैहै॥याअद्वितीयआत्मादेवविषे वास्तवतैं याजगत्का निरोधभीनहींहै॥तथा याजगत्की उत्पत्तिभीनहींहै॥तथा बद्धभीनहींहैं॥तथा साधकभीनहींहै तथा मुमुक्षुभीनहींहै॥तथा मुक्तभीनहीं है॥ यहही सर्वशास्त्रका वास्तवअर्थ है॥इहां नाशकानाम निरोधहै॥और कर्तृत्वभोक्तृत्वादिरूपसंसारवालेकानाम बद्धहै ॥ और यज्ञादिक बहिरंगसाधनोंके करणेहारे पुरुषकानाम साधकहै॥और शमदमादिकअंतरंगसाधनोंयुक्तपुरुषकानाम मुमुक्षुहै।और ज्ञानवान्पुरुषकानाम

मुक्तहै॥हेशिष्य ॥ऐसे सर्वधर्मोतैंरहितअद्वितीयआत्माकूं सोईपुरुष साक्षात्कारकरेहै॥जोपुरुषआपणेस्वरूपकूं जाग्रतादिकतीनअवस्था वोंतैं भिन्नकरिकेजानेहै ॥ ऐसाविद्वान्पुरुष पुनः जन्ममरणादिकोंकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ शंका॥ हेभगवन्॥यहआत्मादेव जोएकअद्वितीयरू पहोवै ॥ तौ याआत्माविषे यहनानाप्रकारभेद किसवासतैप्रतीतहोवैहै॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ जैसे आकाशविषेस्थितचंद्रमाविषे यद्य पि वास्तवतैं भेदनहींहै॥तथापि जलपात्ररूपउपाधिकेएकहुए सोचंद्रमा एकप्रकारकाप्रतीतहोवैहै ॥ और ताजलपात्ररूपउपाधियोंकेअने कहुए सोचंद्रमाभी अनेकप्रकारकाप्रतीतहोवैहै ॥ तैसे या आत्मादेवविषे यद्यपि वास्तवतैंनानापणानहीं है ॥ तथापि यहआत्मादेव कारणअज्ञानरूप एकउपाधिविषेस्थितहोइकै एकप्रकारकाप्रतीतहोवैहै ॥ और कार्यरूप अनेकउपाधियोंविषेस्थितहोइकै अनेक प्रकारकाप्रतीतहोवैहै॥वास्तवतैंतौ यहआत्मादेव एकता अनेकता इत्यादिकसर्वधर्मोतैंरहितहै॥हेशिष्य ॥इसप्रकार जोअधिकारीपुरुष गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं यासर्वभूतप्राणियोंविषे एकअद्वितीयआत्माकूंहीं व्यापक जाणेहै ॥ सोअधिकारीपुरुष जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति यातीन अवस्थावोंविषेभी एकहीआत्माकूंनिश्चयकरेहै ॥ और यहएकअद्वितीयआत्मा जैसे जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति यातीनअवस्थावोंतैंरहितहै ॥ तैसे ताअद्वितीयआत्माकूंजानणेद्वाराविद्वान्पुरुषभी तिनजाग्रतादिकतीनअवस्थावोंतैंरहितहोवैहै ॥ हेशिष्य ॥ यहअधिकारीपुरुष जभी गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं तासर्वभेदतैंरहित एकअद्वितीयआत्माकूं जानैहै ॥तभी उपाधिकेयोगतैं याजीवात्माविषे प्रतीतभयाजोनाना पणाहै ॥ तानानापणेकूं सोअधिकारीपुरुष युक्तिकरिकैनिवृत्त करेहै ॥ सायुक्तियहहै ॥ जैसे याघटका एकदेशतैंदूसरेदेशविषेगमनहुएभी ताघटविषेस्थितआकाशका तहां गमनहोवैनहीं। तैसे यास्थूलसूक्ष्मशरीरका एकदेशतैंदूसरेदेशविषेगमनहुएभी ताशरीरविषेस्थितजीवा त्माका तहाँ गमनहोवैनहीं॥हेशिष्य॥जैसे घट जडहै ॥ यातैं आपणेजन्ममरणादिकविकारोंकूंजाणतानहीं॥तैसे यहशरीरभीजडहै॥यातैं आपणेजन्ममरणादिकविकारोंकूंजाणतानहीं॥यातैं घटकीतथायाशरीरकी यद्यपि समानतासंभवैहैतथापि घटाकाशकी तथाजीवत्माकी समानता संभवैनहीं॥काहेतैं सोघटाकाशतौ जडहै।यातैं सोघटाकाश ताघटकेजन्ममरणादिकविकारोंकूंजाणतानहीं।और याशरीरविषे

स्थितजो जीवात्माहै॥सोजीवात्मा चेतनरूपहै॥यातैं याशरीरकेजन्ममरणादिकसर्वविकारोंकूंसाक्षीरूपकरिकैदेखेहै॥ इसप्रकार यह जीवा त्मा यद्यपि ताघटाकाशतैंविलक्षणहै॥तथापि जैसे घटाकाशविषे ताघटरूपउपाधिके गमन आगमनादिकधर्म स्पर्शकरतेनहीं॥तैसे याजी वात्माविषेभी याशरीररूपउपाधिके जन्ममरणादिकधर्म स्पर्शकरतेनहीं॥इतनेंअंशकूंग्रहणकरिकै ताघटाकाशकादृष्टांत दियाहै॥ अबता जीवका निर्विकारब्रह्मकेसाथ अभेदनिरूपणकरेहैं ॥ हेशिष्य॥यहजीव आत्मादेवतैंभिन्नहीं है ॥ काहेतैं जोवादी याजीवकूं आत्मादेवतैं भिन्नमानैं ॥ तावादीसे यहपूछाचाहिये॥सोजीव एकहै अथवा अनेकहै॥तहां सोजीव एकहै यहप्रथमपक्ष जो वादी अंगीकारकरै सोसंभ वैनहीं॥काहेतैं॥एकोदेवः सर्वभूतेषुगूढः॥इत्यादिकश्रुतियोंनैं याआत्मादेवकूंहीं एककह्याहै ॥ यातैं ताएकआत्मदेवतैं सोएकजीव किसप्र कार भिन्नहोवैगा॥ किंतु भिन्ननहींहोवैगा॥और तेजीव अनेकहैं यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै॥तापक्षविषेभी तिनअनेकजीवोंका आ त्मातैंभेद सिद्धहोवैनहीं ॥ काहेतैं आत्मानाम आपणेस्वरूपकाहै ॥ताआत्मास्वरूपतैं जभीतेजीव भिन्नहोवैंगे॥तभी तिनजीवोंकूं वंध्या पुत्रकीन्याईं निःस्वरूपताप्राप्तहोवैगी॥यातैं तेअनेकजीवभी आत्मातैंभिन्ननहीं हैं॥शंका ॥हेभगवन्॥अनेकजीवोंकेसाथ जोआत्माकाअ भेदहोवैगा ॥तोआत्माविषेभी अनेकरूपताप्राप्तहोवैगी ॥ यातैं आत्माअद्वितीयरूपहै यासिद्धांतकीहानिहोवैगी॥ समाधान॥हेशिष्य ॥ जैसे नैयायिकोंकेमतविषे घटत्वजाति अनेकघटव्यक्तियों विषे रहेहै ॥ तहांतिनघटव्यक्तियोंकेभेदहुएभी ताघटत्वजातिकाभेदहोवै नहीं तैसे यहआत्मादेवभी सर्वजीवोंविषेअनुगतहोइकैरहे हैयातैं तिनजीवोंकेभेदहुएभी ताआत्मादेवका भेदहोवैनहीं॥और हेशिष्य॥वास्तवतैं विचारकरिकैदेखियेतौ तिनजीवोंकाभी भेदसंभवैनहीं॥काहेतैं अज्ञानविशिष्टचेतनकानामजीवहै ॥ अथवा अंतःकरणविशिष्टचेतनका नाम जीवहै॥ ताजीवविषे जोचेतनअंशहै॥ सोतौ सर्वत्रएकहीहै॥ याते ताचेतनअंशविषेतौ भेदसंभवैनहीं ॥ परिशेषतैं अंतःकरणादिक उपाधियोंकाहीभेदअंगीकारकरणाहोवैगा ॥ और तिनअंतःकरणादिकउपाधियोंतैंभी जभी अधिष्ठानरूपसतअंशकूंभिन्नकरिये ॥ तभी तिनकल्पितउपाधियोंकाभी भेदसंभवैनहीं ॥ यातैं यहजीव अद्वितीयआत्मास्वरूपहीहै॥हेशिष्य ॥याजीवकूं जोआत्मातैंअभिन्न नहीं

मानिये तौ श्रुतिनैं याजीवात्माविषे जोघटाकाशकादृष्टांतदियाहै सोअसंगतहोवैगा ॥ काहेतैं स्थूलसूक्ष्म कारण रूपयासंघातविषे यहजी वतौ घटाकाशकीन्याईं है ॥ और आत्मादेव महाकाशकीन्याईं है ॥ तहांघटरूपउपाधिकेभेदकापरित्यागकरिकैजैसे ताघटाकाशका महाकाशतैंभेदनहीं है ॥ तैसे यासंघातरूपउपाधिकापरित्यागकरिकै याजीवकाभी ताआत्मादेवतैंभेदनहीं है॥हेशिष्य॥यहघटाकाशरू पदृष्टांत केवल जीवआत्माकेअभेदकूंसिद्धकरतानहीं ॥ किंतु सोघटाकाशरूपदृष्टांत दूसरेभीअनेकअर्थोंकूंसिद्धकरै है ॥ तिनअर्थोंकूं तुं श्रवणकर ॥ हेशिष्य ॥ जैसे घटरूपउपाधिकेनिवृत्तहुएतैंअनंतर सोघटाकाश महाकाशविषे अभेदभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ तैसे अंतः करणादिकउपाधियोंके निवृत्तहुएतैं अनंतर यहजीवभी ताव्यापकआत्मादेवविषे अभेदभावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और हेशिष्य जिसकालवि षे सोएकघटाकाशधूलिधूमादिकोंकरिकै युक्तहोवैहै॥तिसकालविषेदूसरेघटाकाशतिनधूलिधूमादिकोंकरिकैयुक्तहोवैनहीं ॥तैसे जिसकाल विषे यहएकजीव सुखदुःखकूंप्राप्तहोवैहै॥तिसकालविषे दूसरेजीव सुखदुःखकूंप्राप्तहोवैनहीं॥तात्पर्ययह॥तेसुखदुःखादिकधर्मकेवलअंतःकर णादिकउपाधियोंविषेहीं हैं॥तेअंतःकरणादिकउपाधियां सर्वशरीरोंविषे भिन्नभिन्नहीं हैं॥यातैं एकजीवकेसुखीदुःखीहुएभीतेसर्वजीव सुखी दुःखीहोवैनहीं॥ और हेशिष्य ॥जैसे ताघटाकाशविषे वर्तुल दीर्घ इत्यादिकरूपोंकाभीभेदहै॥तथा जलकाआनयन धारणनिवास इत्या दिककार्योंकाभीभेदहै॥तथा घटाकाश मठाकाश इत्यादिकनामोंकाभीभेदहै॥इसप्रकार नाम रूप कार्य यातीनोंकेभेदहुएभी आकाश काभेदहोवैनहीं ॥ तैसे अंतःकरणादिकउपाधियोंकेयोगतैं तिनजीवोंकेभेदहुएभी आत्मादेवकाभेदहोवैनहीं ॥ औरहेशिष्य ॥ जैसेनिर्वि कार तथा निरवयव जोमहाकाशहै तामहाकाशका सोघटाकाश विकाररूपनहीं है॥तथा अवयवरूपनहीं है॥तैसे सर्वविकारोंतैं रहित तथानिरवयव जोआत्मादेवहै ताआत्मादेवका यहजीव विकाररूपनहीं है ॥ तथा अवयवरूपनहीं है ॥ और हेशिष्य ॥ जैसे वास्तवतैं सर्वमलतैंरहित जोमहाकाशहै ॥ सोमहाकाश मूढबालकोंकूं मलिनप्रतीतहोवै है ॥ तैसे वास्तवतैंसर्वबंधतैंरहित जोयहआत्मादेवहै सोआत्मादेव अविवेकीमूढपुरुषोंकूं बंधवालाप्रतीतहोवै है ॥ और हेशिष्य ॥ जैसे घटादिकउपाधियोंके जन्म मरण गमन आगमन

हुएभी तिनघटादिकउपाधियोंविषेस्थित आकाश तिनजन्मादिकविकारोंकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे याशरीरादिकउपाधियोंके जन्म मरण गमन आगमन हुएभी तिनशरीरादिकउपाधियोंविषेस्थित यहआत्मादेव तिनजन्मादिकविकारोंकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और हेशिष्य जैसे स्वप्नविषेप्रतीतभयाजोजीव है ॥ तथा ऐंद्रजालिकपुरुषोंनैं आपणीमायाकेप्रभावतैं दिखाया जोकोईजीवहै ॥सोमिथ्याजीव यद्यपि भ्रान्त पुरुषोंकीदृष्टिकरिकै जन्ममरणादिकविकारोंकूंप्राप्तहुआ प्रतीतहोवैहै॥तथापि सोजीव वास्तवतैं जन्ममरणादिकविकारोंतैंरहितहै ॥ तैसे भ्रान्त पुरुषोंकीदृष्टिकरिकै यद्यपि यहजीव जन्ममरणादिकविकारोंकूंप्राप्तहुआ प्रतीतहोवै है ॥ तथापि वास्तवतैं यहजीव जन्ममरणा दिकविकारोंतैंरहित है॥यातैं कोईभीजीव तिनजन्ममरणादिकविकारोंकूंप्राप्तहोतानहीं॥किंन्तु यह चित्तही आप जन्ममरणादिकविकारों कूंप्राप्तहोइकै तिनआपणेजन्ममरणादिकविकारोंकूं याजीवात्माविषे प्रतीतकरावै है॥हेशिष्य॥इसप्रकार यह सर्वजीव वास्तवतैंतौ सर्वदा तिनजन्ममरणादिकविकारोंतैंरहित है ॥ तथापि जन्ममरणादिक विकारवालेचित्तकेयोगतैं यहजीव जन्ममरणादिकविकारोंवाले हुए प्रतीतहोवै है ॥ अब याहीअर्थकूं अलातकेदृष्टांतकरिकै स्पष्टकरै हैं ॥ हेशिष्य ॥ अग्निकरिकैप्रज्वलित जोकोईक काष्ठविशेष है ता कानाम अलात है ताअलातका जोभ्रमणरूपव्यापार है ॥ सोभ्रमणरूपव्यापार कभीतौ दंडकीन्याईं सरलप्रतीत होवै है ॥ और कभीतौ चक्रकीन्याईं वर्तुलाकार प्रतीत होवै है ॥ तैसे मायाविशिष्टपरमात्मा देवतैं उत्थानरूप जोमनकास्पंद है ॥ सोमनका स्पंदभी ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय इत्यादिकत्रिपुटीरूपकरिकैप्रतीतहोवै हैं ॥ और हेशिष्य जैसे ताभ्रमणरूपस्पंदतैंरहितहुआ सोअलात ताकल्पित दंडचक्राकाररूपोंतैंरहित होवै है ॥ तथा तिनकल्पितरूपोंकरिकै जन्मतैंरहित होवै है ॥ तैसे तास्पंदतैंरहितहुआयहचि त्तभीताकल्पितत्रिपुटीरूपतैंरहित होवै है तथा तिनकल्पितरूपोंकरिकै जन्मतैंभीरहितहोवै है॥किंतु सोशांतचित्त तिसकालविषे चेतन रूपहीहोवैहै॥और हेशिष्य॥ताअलातकेभ्रमणरूपस्पंदकालविषे जेदंडचक्रादिकआकारप्रतीतहोवैं हैं॥तेदंडचक्रादिकआकार किसीदूसरे स्थानतैंचलिकै ताअलातविषे उत्पन्नहोतेनहीं॥तथा ताअलातके भ्रमणकाअभावरूपनिस्पंदकालविषेतेदंडचक्रादिकआकारताअलाततैं

निकसिकै किसीदूसरेस्थानविषेभीजातनहा॥तथा तेदंडचक्रादिकआकार ताअलातविषेभीप्रवेशकरतेनहीं॥काहेतैं तिनदंडचक्रादिकआकारोंका ताअलातविषेआवणा तथा ताअलाततैंबाहरजाणा तथा ताअलातविषेप्रवेशकरणा प्रत्यक्षदेखितानहीं॥और तेदंडचक्रादिकआकार कोईवस्तुहैनहीं याकारणतैंभी तिनोंका आवणाजाणासंभवैनहीं ॥ यातैं ताअलातविषे तेदंडचक्रादिकआकार रज्जुसर्पकीन्याईं मिथ्याही है ॥ तैसे यामनकेस्पंदहुए जे ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय इत्यादिकआकार प्रतीतहोवैं हैं ॥ तेआकार किसीदूसरेपदार्थतैंचलिआइकै तामनविषे उत्पन्नहोवैनहीं तथा तामनकेनिस्पंदहुए तेआकार तामनतैंनिकसिकै किसीदूसरेस्थानविषेभीजातेनहीं॥तथा तेआकार तिस मनविषे भीप्रवेशकरतेनहीं॥यातैं ते ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय इत्यादिकमनकेआकारभी रज्जुसर्पकीन्याईं मिथ्यानहीं है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ तेआकार जोमिथ्याहोवैं ॥ तौ हमजीवोंकूं तेआकार किसवासतैंप्रतीतहोवै हैं ॥समाधान ॥हेशिष्य ॥ जैसे यामनुष्योंविषे शृंग यद्यपि वास्तवतै है नहीं ॥ तथापि यामनुष्यविषेशृंग है याशब्दरूपदोषकेप्रभावतैं तामनुष्यविषेभी शृंग प्रतीतहोवैहै॥और जैसे आकाशविषे गंधर्वनगर यद्यपि वास्तवतैंहैनहीं।तथापि मायारूपदोषकेबलतैं ताआकाशविषे गंधर्वनगर प्रतीतहोवैहै।तैसे याआत्मदेवविषे यहद्वैतप्रपंच यद्यपि वास्तवतैंहैनहीं ॥ तथापि शब्दकेबलतैं तथामायाकेबलतैं याआत्माविषे यहद्वैतप्रपंच प्रतीतहोवैहै॥यातैं नरशृंगकीन्याईं तथा गंधर्वनगरकीन्याईं यहसंपूर्णजगत् असत्यहै ॥शंका॥ हेभगवन्॥ जिसमायाकेबलतैं तथाशब्दकेबलतैं यहजगत् प्रतीतहोवैहै॥ तिसमाया विषे तथातिसशब्दविषे सोअसत्यपणा किसप्रकार सिद्धहोवैगा॥समाधान ॥हेशिष्य॥ जैसे नरशृंगहै याशब्दमात्रकरिकैही तानरशृंगकी सिद्धिहोवैहै ॥ किसीप्रमाणकरिकै तानरशृंगकीसिद्धिहोवैनहीं॥ तैसे माया अज्ञान अविद्या प्रकृति इत्यादिकशब्दोंकेबलतैंही तामा याकीसिद्धि है ॥ किसीप्रमाणकेबलतैं तामायाकीसिद्धि है नहीं ॥ यातैं सामायाभी तानरशृंगकीन्याईं असत्यहीं है ॥ तैसे शब्दकीभी शब्दकरिकैहीसिद्धि है ॥ यातैं सोशब्दभी असत्यहीहै ॥तहांश्रुति॥ वाचारंभणंविकारोनामधेयंमृत्तिकेत्येवसत्यम्॥अर्थयह ॥ मृत्तिकाके विवर्त्तरूप जितनेकीघटशरावादिकविकार हैं ॥ तेविकार केवल घटशराव इत्यादिकनाममात्रही हैं ॥ तानामतैं विना तिनविकारोंविषे

हीहै ॥ और तिनघटशरावादिकविकारोंकाउपादानकारणजामृत्तिकाहै ॥ सामृत्तिकाहीसत्यहै ॥१॥ तैसेमनवाणीकाआविषयजोआत्माहै सोआत्माहीसत्यहै ॥ ताआत्मातैं भिन्न यहसंपूर्णजगत् मिथ्याहीहै ॥ और हेशिष्य ॥ शब्दमात्रहै स्वरूपजिसका ऐसाजोयहजगत्रूप विकारहै ॥ तथा ताजगत्रूपविकारका कारणरूप जोयहमायाहै ॥ तिनदोनोंकरिकैआवृतहुआ यहजीवात्माआपणेवास्तवस्वरूपकूंजा णिसकतानहीं ॥ किंतुयहजीवात्मापरिच्छिन्नरूपकरिकैप्रतीतहोवैहै ॥ जैसेजलकेमध्यविषेस्थितहुआमहान्घटभीअल्परूपकरिकैप्रतीत होवैहै ॥ तैसेतामायाजगत्करिकैआवृतहुआयहमहान्आत्माभी परिच्छिन्नरूपकरिकैप्रतीतहोवैहै ॥ औरजभीआत्मसाक्षात्कारकरिकै ताकार्यसहितमायाकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तभीयहजीवात्माआपणेव्यापकअद्वितीयस्वरूपकूंप्राप्तहोवैहै॥और हेशिष्य॥ अकार उकार मकार यातीनमात्रावालेप्रणवविषे यथाक्रमतैं समष्टिस्थूलसूक्ष्मकारण यातीनउपाधिवालाब्रह्म तादात्म्यसंबंधकरिकैरहैहै ॥ तासोपाधिकब्रह्मका प्रणवकीमात्राओंसहितजभीयहअधिकारीपुरुषलयचिंतनकरैहै ॥ तभीनाशतैंरहिततुरीयब्रह्महीबाकीरहैहै ॥ सोतुरीयब्रह्महीसर्वभेदतैंरहि तएकअद्वितीयरूपहै ॥ यातैंजिसअधिकारीपुरुषकूं ताअद्वितीयब्रह्मकेजानणेकीइच्छाहोवै॥सोअधिकारीपुरुष प्रथम ताप्रणवमंत्रकूंब्रह्मरू पकरिकैचिंतनकरै ॥ अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकैनिरूपणकरैहै ॥ हेशिष्य ॥ याअधिकारीपुरुषनैं गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं दोब्रह्मकूंअवश्य करिकैजानणा॥तहांएकतौप्रणवरूपशब्दब्रह्मकूंजानणा॥औरदूसरा निर्विशेषशुद्धब्रह्मकूंजानणा॥तिनदोनोंब्रह्मविषेभी याअधिकारीपुरुषनैं प्रथमप्रणवरूपशब्दब्रह्मकूंहीनिश्चयकरणा ॥ ताशब्दब्रह्मकूंयहअधिकारीपुरुषजभी भलीप्रकारकरिकैनिश्चयकरैहै ॥ तभी यह अधि कारीपुरुष सुखपूर्वकही तानिर्विशेषब्रह्मकूंसाक्षात्कारकरै है ॥ हेशिष्य ॥ याअधिकारीपुरुषकूंजबपर्यंत तानिर्विशेषब्रह्मका साक्षात्कार नहींप्राप्तहोवै तबपर्यंतही यहअधिकारीपुरुष ताशब्दब्रह्मकाचिंतनकरे ॥ तानिर्विशेषब्रह्मकेसाक्षात्कारहुएतैंअनंतर यहअधिकारीपुरुष ताशब्दब्रह्मका परित्यागकरिदेवै ॥ तथासर्वशब्दरूपप्रपंचका परित्यागकरिदेवै ॥ जैसे व्रीहिरूपधान्यकेप्राप्तिकीइच्छावान्पुरुष तिनधा न्योंकूंप्राप्तहोइकैताकेपलालका परित्यागकरिदेवैहै ॥ हेशिष्य ॥ यालोकविषे शुक्ल नील पीत रक्त इत्यादिकभिन्नभिन्नवर्णोंवालीजेअनेक

गोवां हैं ॥ तिनसर्वगोवोंकादुग्ध एकशुक्लवर्णवालाहीहोवेहै ॥ तैसे यानानाप्रकारकेशरीरोंविषे यहज्ञानस्वरूपआत्मा एकरूपहीहोवेहै ॥ हेशिष्य इसप्रकार यहआत्मादेव यद्यपिसर्वशरीरोंविषे समानव्यापकहै ॥ तथापि यहआत्मादेवअशुद्धमनकरिकैजान्याजावैनहीं ॥ यातैं जिसअधिकारीपुरुषकूं मोक्षकेप्राप्तिकीइच्छाहोवै॥ताअधिकारीपुरुषनैं श्रवणादिकसाधनयुक्त शुद्धमनकरिकैंही याआत्मादेवकूंजानणा ॥ हेशिष्य ॥ तामनकीशुद्धिकरणेवासतैं श्रुतिभगवतीनैं याप्रकारकाध्यानकथनकऱ्याहै ॥ जैसे यालोकविषे दधिविषे तीर्चकाघ्टरूप मंथाकूंपाइकै तामंथाकेसाथ दीर्घरज्जुकूंबांधिकै तादधिकूंमंथनकरैहैं ॥ तामंथनकरिकै तिसदधितैंमाखणकूंनिकासेहैं॥तैसेयहअधिकारी पुरुषयासर्वभूतभौतिकजगत्कूं दधिरूपकरिकैचिंतनकरै ॥ और यामनकूं मंथारूपकरिकैचिंतनकरै ॥ और मैंत्रह्मरूपहूं याप्रकारकेअभेद ज्ञानकूंतारज्जुरूपकरिकैचिंतनकरै ॥ और आनंदस्वरूपपरमात्मादेवकूं माखणरूपकरिकैचिंतनकरै ॥ और गुरुशास्त्रकेउपदेशकरिकै याआत्मादेवका जोसंसारसमुद्रतैं मोक्षरूपउद्धारकरणाहै ॥ सोईहीयापरमात्मादेवरूपमाखणका याजगत्रूपदधितैंउद्धारहै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार यहअधिकारीपुरुष याजगत्रूपदधितैं ताअद्वितीयत्रह्मरूपमाखणकूंउद्धारकरिकै ताअद्वितीयत्रह्मकूं आपणाआत्मारूपकरिकै साक्षात्कारकरै ॥ ताब्रह्मात्माकेसाक्षात्कारकरिकैयहअधिकारीपुरुष सर्वशोकतैंरहितहोवैहै ॥हेशिष्य ॥ जिसअद्वितीयत्रह्मकेज्ञानतैंयह विद्वान्पुरुष सर्वशोकतैंरहितहोवैहै ॥ ताब्रह्मविषेही यहसंपूर्णजगत्निवासकरैहै ॥ अथवा सोब्रह्मही यासर्वजगत्विषेनिवासकरैहै ॥ याका रणतैं वेदवेत्तापुरुषताअद्वितीयत्रह्मकूं वासुदेव यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ तथातेवेदवेत्तापुरुष तावासुदेवरूपत्रह्मकूं आपणाआत्मारूप कारिकैजानैहैं ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारमनकोनिग्रहपूर्वक जोत्रह्मकावास्तवस्वरूपत्रह्मबिंदुउपनिषद्विषेकथनकऱ्याहै ॥ सोहमनैंतुम्हारेप्रति कथनकऱ्या ॥ अबनारायणीयउपनिषद्विषेतथामहोपनिषद्विषे तथाआत्मप्रबोधउपनिषद्विषे जोसंक्षेपतैं ताब्रह्मकास्वरूपकथनकऱ्याहै सोहमतुम्हारेप्रतिकथनकरतेहैं ॥तूसावधानहोइकैश्रवणकर॥ तहांप्रथमनारायणीयउपनिषद्काअर्थनिरूपणकरैहै॥हेशिष्य॥यहपरमात्मा देवआपणेअस्तिभातिप्रियरूपकरिकै यासर्वजगतकूंपूर्णकरैहैं ॥ याकारणतैंश्रुतिभगवती यापरमात्मादेवकूंपुरुष यानामकरिकैकथन

करैहै॥अथवा यहपरमात्मादेव यासर्वशरीररूपपुरविषे अंतर्यामीरूपकरिकैनिवासकरैहै॥याकारणतैं श्रुतिभगवती यापरमात्मादेवकूं पुरुष यानामकरिकैकथनकरैहै॥और हेशिष्य ॥ यहविराट्रूपपरमात्मादेव प्रलयकालविषे यासंपूर्णलोकोंकूंआपणेउदरविषेग्रहणकरिकै क्षीर समुद्रविषे शेषनागकीशय्याऊपर बालककीन्याईं शयनकरैहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं नारायण यानामकरिकैक थनकरैहै ॥ अथवा जैसे माताकेगर्भरूपशय्याविषे बालक शयनकरैहै ॥ तैसे व्यष्टिसूक्ष्मउपाधिवाले तैजसनामाजीवरूपप्रतिबिंबोंका बिंबरूप यहहिरण्यगर्भभगवान् यामायारूपशय्याविषेस्थितहोवैहै॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं नारायण यानामकरि कैकथनकरैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ परमात्मारूपनरकासंबंधीजामायाहै॥तामायाकानाम नारहै॥सोमायारूप नार तापरमात्मादेवकास्थान है ॥ यातैं तापरमात्मादेवकूं नारायणकहे हैं॥ अथवा जीवरूपनरोंका जोसमूहहै ताकानाम नारहै॥ ताजीवोंकेसमूहरूपनारकूं जिसबिंब भूतपरमात्मादेवतैं आपणेस्वरूपकालाभहोवै है ॥ यातैं तापरमात्मोदवकूं नारायणकहे हैं॥और हेशिष्य ॥ जैसे बालक कंदुककूंदूरदेश विषेफेंकेहैं॥तैसे सर्वदोषतैंरहित यहपरमात्मादेव कार्यकारणअविद्यारूपकंदुककूं दूरदेशविषेफेंकेहै॥याकारणतैंश्रुतिभगवती तापरमात्मा देवकूं नारायण यानामकरिकैकथनकरैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ यासंसाररूपचक्रके जेराग्रद्वेषादिकअराहैं॥तेअरा यापरमात्मादेवविषेहैनहीं॥ यातैं तापरमात्मादेवकूं नारायणकहे हैं ॥ अथवा याजीवरूपनरोंकी ताअंतर्यामीदेवतैंही प्रवृत्तिहोवै है ॥ यातैं ताअंतर्यामीदेवकूं नारा यणकहे हैं ॥ अथवा तुरीयशुद्धरूपकरिकैजानेहुए तापरमात्मादेवतैंही याजीवोंकेअविद्याकीनिवृत्तिहोवै है ॥ यातैं तापरमात्मादेवकूं नारायणकहे हैं॥ अथवा तावदरिकाआश्रमवासीगुरुमूर्तितैंही याजीवोंकेअविद्याकीनिवृत्तिहोवै है यातैं तागुरुमूर्तिपरमात्मादेवकूं नारा यणकहे हैं ॥ दूसरेनारायणशब्दके अर्थ दशमअध्यायविषे निरूपणकरिआये हैं ॥ सोतहांतैंजानिलेणें ॥ हेशिष्य॥ ऐसानारायणदेव या जगत्कीउत्पत्तितैंपूर्व एकअद्वितीयरूपहोताभया ॥ सोनारायणदेव जीवोंकेपुण्यपापकर्मोंकरिकैप्रेरणाकऱ्याहुआ सृष्टिकेआदिकालविषे मैं जगत्कूंउत्पन्नकरौं याप्रकारकीइच्छाकरताभया ॥ ताइच्छातैंअनंतर सोनारायणदेव सर्वजगत्कूंउत्पन्नकरताभया ॥ नानाप्रकारकी

सामर्थ्यकरिकैयुक्तजो ब्रह्मा इंद्र आदित्य रुद्र वसु विश्वेदेव साध्य इत्यादिकदेवताहैं ॥ तिनसर्वदेवताओंकूं सोनारायणदेव उत्पन्नकरताभ
या ॥ हेशिष्य ॥ ब्रह्मादिकदेवतावोंतैंआदिलैके जितनाकी यहस्थावरजंगमजगत्है ॥ सोसंपूर्णजगत् तानारायणदेवतैंही उत्पन्नहोवै है ॥
तथा सोसंपूर्णजगत् तानारायणदेवविषेही स्थितहै तथा प्रलयकालविषे सोसंपूर्णजगत् तानारायणदेवविषेही लयकूंप्राप्तहोवै है॥हेशिष्य॥
जैसे घटकी उत्पत्ति स्थिति लय मृत्तिकाविषेही होवै है ॥ यातैं सो घट मृत्तिकातैं भिन्ननहीं है ॥ तैसे याजगत्की उत्पत्ति स्थिति लय
तानारायणदेवविषेहीहोवै ॥ यातैं यहजगत् तानारायणदेवतैंभिन्ननहीं है ॥ किंतु ब्रह्मा विष्णु रुद्र इंद्र आदित्य अश्विनीकुमार इसतैं
आदिलैकेजितनैंकीदेवताहैं ॥ तेसंपूर्णदेवता तानारायणरूपही हैं॥तथा पूर्वादिकदशोंदिशातथाआकाशादिकपंचमहाभूत तथास्थावर
जंगमशरीर इसतैंआदिलैके जितनाकी भूतभविष्यत्वर्त्तमानकालविषेस्थितजगत्है॥तथा जितनाकी स्थूलसूक्ष्मजगत्है॥तथा जितनाकी
प्रत्यक्षपरोक्षजगत्है ॥ सोसंपूर्णजगत् तानारायणरूपही है ॥ हेशिष्य ॥ जिसनारायणदेवकास्वरूप यहसंपूर्णजगत्है ॥ सोनारायणदेव
नाशतैंरहित नित्यस्वरूपहै ॥ तथा प्राण श्रद्धा आकाश वायु तेज जल पृथ्वी इंद्रिय मन अन्न वीर्य तप मंत्र कर्म लोक नाम यषोऽशक
लावोंतैंरहितहै॥ तथा सोनारायणदेव याजगत्रूपविकल्पतैंरहितहै ॥ तथाकारणअज्ञानरूपअंजनतैंरहितहै ॥ और सर्वशुद्धितैंरहित जो
यहजडमायाहै ॥ ताजडमायातैंभी यहनारायणदेव सर्वदारहितहै ॥ तथा तामायाकृतसर्वभेदतैंरहितहै॥ हेशिष्य ॥ ऐसे नित्यशुद्धनारा
यणदेवतैंभिन्न कोईपदार्थ पूर्वहुआनहीं और अभीहैनहीं और आगेहोवैगानहीं ॥ किंतु यह सर्वजगत् तानारायणदेवरूपहीं है॥हेशिष्य॥
जोअधिकारीपुरुष मैं ब्रह्मरूपहूं याप्रकारकीशुद्धबुद्धिकूंसारथिकरिकै तथा श्रवणादिकसाधनयुक्त शुद्धमनरूपरज्जुकूं तावुद्धिरूपसार
थिकेवशकरिकै जीत्येहुए इंद्रियरूपअश्वोंकरिकैयुक्त याशरीररूपरथविषेस्थितहोवै है ॥सोअधिकारीपुरुष ब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपमोक्षकूंप्रा
तहोवै है॥हेशिष्य॥इसप्रकार तानारायणदेवकूं याजीवका आत्मारूपकरिकै प्रतिपादनकरणेहारी जोयह नारायणीयनामा उपनिषद्है॥ता
उपनिषद्कूंजोअधिकारीपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैंअर्थसहितजानै है ॥ सोअधिकारीपुरुषयाजीवतअवस्थाविषेतौ सर्वआपदाओंतैं रहित

होइकै मनवांछितभोगोंकूंप्राप्तहोवै है ॥ और मरणतैंअनंतर सोअधिकारीपुरुष ब्रह्मलोकविषेजाइकै तहां मोक्षकूंप्राप्तहोवै है ॥ यातैं या
अधिकारीपुरुषनैं तानारायणीयउपनिषद्केअर्थका अवश्यकरिकैविचारकरणा॥हेशिष्य॥ऐसेनारायणदेवकास्मरणकरावणेहाराजो॥ओंन
मोनारायणाय ॥ यहअष्टअक्षरोंवालामंत्रहै ॥ सोअष्टाक्षरमंत्र जापकरणेहारेसर्वजीवोंकूं मनवांछितपदार्थोंकीप्राप्ति करणेहाराहै ॥यातैं ब्रा
ह्मण क्षत्रिय वैश्य यातीनवर्णवालेपुरुषोंनैंतौ प्रणवपूर्वक तामंत्रकाजपकरणा॥और स्त्रियोंनैं तथाशूद्रपुरुषोंनैंतौ प्रणवकूंछोडिकै तामंत्रका
जपकरणा ॥ हेशिष्य ॥ याअधिकारीपुरुषकूं साक्षात्नारायणकेज्ञानतैं जिसप्रकारकाफल प्राप्तहोवैहै॥तिसी प्रकारकाफल याअधिकारी
पुरुषकूं ताअष्टाक्षरमंत्रकेज्ञानतैंहोवैहै॥यातैं यहअष्टाक्षरमंत्र तानारायणदेवकेसमानहै ॥और हेशिष्य ॥ जैसे याअधिकारीपुरुषोंकूं प्रणव
मंत्र तानारायणदेवकेप्राप्तिका उपायहै॥तैसे यहअष्टाक्षरमंत्रभी तानारायणकेप्राप्तिका उपायहै॥यातैं यहअष्टाक्षरमंत्र ताप्रणवमंत्रकेसमा
नहै ॥ हेशिष्य ॥ जेपापात्माशूद्रपुरुष तथास्त्रियां श्रद्धापूर्वक तथाअर्थज्ञानपूर्वक यामंत्रकाजपकरैहैं॥तेशूद्रपुरुष तथास्त्रियांभी सर्वपापों
तैंरहितहोइकै तानारायणदेवकूं आपणाआत्मारूपकरिकै साक्षात्कारकरैहैं।तात्पर्ययह।पापात्माशूद्रपुरुष तथास्त्रियांभी जभी यामंत्रकेज
पतैं तानारायणदेवकूं आपणाआत्मारूपजाणिकै मोक्षकूंप्राप्तहोवैहैं॥तभी सर्वपापोंतैंरहित ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यहत्रैवर्णिकअधिकारीपुरुष
ताअष्टाक्षरमंत्रकेजपतैं तानारायणदेवकूं आपणाआत्मारूपजाणिकै मोक्षकूंप्राप्तहोवैहैं॥याकेविषेक्याकहणाहै ॥ यातैं सर्वमुमुक्षुजनोंनैं ता
अष्टाक्षरमंत्रकाजप अवश्यकरिकैकरणा ॥ हेशिष्य ॥ तानारायणीयउपनिषद्विषे जाब्रह्मविद्या कथनकरी है ॥ सासंपूर्णब्रह्मविद्या हमनैं
तुम्हारेप्रति कथनकरी॥अब महोपनिषद्विषे जाब्रह्मविद्या कथनकरीहै।साब्रह्मविद्या हम तुम्हारेप्रति कथनकरतेहैं॥ तूं सावधानहोइकैश्रव
णकर॥हेशिष्य॥प्राचीनवृत्तांतकूंजानणेहारे वेदवेत्ताऋषि याप्रकारकेवचन कहतेभयेहैं॥याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्व एकनारायणदेवही स्थि
तहोताभया॥तासृष्टितैंपूर्वकालविषे ब्रह्मादिकदेवताभी नहींहोतेभये॥तथा आकाशादिकपंचमहाभूतभी नहींहोतेभये॥तथा तिनपंचभूतों
काकार्यरूप यह स्थावरजंगमशरीरभी नहींहोतेभये।तथा पृथिवीस्वर्गतैं आदिलैके यहसर्वकार्यप्रपंचभी नहींहोताभया॥इसप्रकार सर्वद्वैत

प्रपंचतैंरहित एकाकीस्थितहुआ सोनारायणदेव ताकालविषे किंचित्मात्रभी क्रीडानहींकरताभया॥तिसतैंअनंतर सोनारायणदेव क्रीडा करणेवासतै दूसरेपदार्थकाध्यानकरताभया॥ताध्यानतैंअनंतर तानारायणदेवका मायारूपस्त्रीकेसाथ संबंधहोताभया॥तामायारूपस्त्रीके संबंधतैं तानारायणदेवकूं त्रयोदशपुत्रउत्पन्नहोतेभये॥तथाबहुतपुरुषोंकेप्राप्तिकीइच्छाकरणेहारी एक व्यभिचारिणीकन्या उत्पन्नहोतीभई तिसतैंअनंतर साकन्या आपणेकूं अधिदैव अध्यात्म अधिभूत यातीनरूपकरतीभई ॥ तथा तेत्रयोदशपुत्रभी आपणेकूं अधिदैव अध्यात्म अधिभूत यातीनरूपकरतेभये॥तहां समष्टिशरीरकेघटकपदार्थोंकानाम अधिदैवहै॥और व्यष्टिशरीरकेघटकपदार्थोंकानाम अध्यात्म है॥और इदंरूपकरिकै दृश्यमानपदार्थोंकानाम अधिभूतहै॥जैसे सूर्यादिकदेवता अधिदैवरूप हैं ॥ और नेत्रादिकइंद्रिय अध्यात्मरूपहैं॥ और रूपादिकविषय अधिभूतरूपहैं ॥हेशिष्य॥वास्तवतैंएकअद्वितीयरूपसोनारायणदेव आपणेवास्तवस्वरूपकेअविवेकतैं ताबहुतरूप वालीपुत्रीकेसाथ तथाबहुतरूपवाले तिनत्रयोदशपुत्रोंकेसाथ तादात्म्यअध्यासकरिकै आपणेकूंभी बहुतरूप माननताभया ॥ हेशिष्य ॥ सृष्टिकेआदिकालविषे सोनारायणदेव प्रथम तिसपुत्रीसहितत्रयोदशपुत्रोंकेकारणोंकूंउत्पन्नकरताभया॥तिसतैंअनंतर तिनकारणोंतैं तापुत्रीसहितत्रयोदशपुत्रोंकूं उत्पन्नकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर क्रियाशक्तिकूं उत्पन्नकरताभया॥कैसीहै साक्रियाशक्ति॥पूर्वउत्पन्नहुएपदार्थों विषे कितनैंकपदार्थोंकातो कार्यरूपहै॥और कितनेकपदार्थोंकीस्थितिका कारणरूपहै ॥शंका॥ हेभगवन्॥तिसपुत्रीसहितत्रयोदशपुत्रों के कौनकारणहैं ॥ तथा तापुत्रीसहितत्रयोदशपुत्र कौनहैं ॥ तथा साक्रियाशक्ति कौनहैं॥यहसंपूर्णवार्त्ता आप निर्णयकरिकैकहो॥समाधान ॥ हेशिष्य ॥ आकाश वायु तेज जल पृथिवी यहंपंचभूत तिसपुत्रीसहितत्रयोदशपुत्रोंका कारणरूपहैं॥तेआकाशादिकपंचभूतभी स्थूल सूक्ष्म या भेदकरिकै दोप्रकारकेहोवै हैं ॥ तहां पंचीकृतपंचमहाभूतोंकानाम स्थूलहै ॥ और पंचीकरणतैंरहित शब्द स्पर्श रूप रस गंध यापंचतन्मात्राओंकानाम सूक्ष्महै ॥ तिनपंचभूतरूपकारणोंकूंदोप्रकारकाहाणे तैं तिनोंकाकार्यभी स्थूल सूक्ष्म भेदकरिकै दोप्रकारकाहीहोवै है ॥ हेशिष्य ॥ प्राणवायुकानाम क्रियाशक्ति है सोक्रियाशक्तिरूपप्राण तिनआकाशादिकपंचभूतोंकातो कार्यरूप

॥ ७९

है ॥ और तापुत्रीसहितत्रयोदशपुत्रोंकेस्थितिका कारणरूपहै ॥ हेशिष्य ॥अहंकार मन चित्त श्रोत्र त्वक् चक्षु रसना घ्राण वाक् पाणि पाद उपस्थ पायु यहत्रयोदशपुत्रहैं ॥ और बुद्धिरूपपुत्रीहै ॥ यहसंपूर्ण तानारायणदेवतैंउत्पन्नहुएहैं ॥ यातैं यहअर्थसिद्ध भया ॥ पंचतन्मात्रा पंचमहाभूत एकप्राण अहंकारादिकत्रयोदशपुत्र एकबुद्धिरूपीपुत्री ॥यहसंपूर्णमिलिकै पंचविंशति २५तत्त्वहोवै हैं॥ तापंचविंशतितत्त्वोंके हिरण्यगर्भादिकतो अधिदैवरूपहैं ॥ और यहस्थावरजंगमशरीर अधिभूतरूपहैं॥याकेविषेभीइतनीविशेषताहै॥अधिभूतरूपकरिकैकथनकऱ्येजेशरीरहैं॥तिनशरीरोंविषे जिसजिसशरीरविषे जिसजिसजीवकीअहंबुद्धिहै ॥सोसोशरीर तिसतिसजीवकेप्रतितो अध्यात्मरूपहै ॥ और तिसजीवतैंभिन्नदूसरेजीवोंकूं सोशरीर इदंरूपकरिकैप्रतीत होवैहै॥यातैं तिनदूसरेजीवोंकीअपेक्षाकरिकै सोशरीर अधिभूतरूपहै ॥ जैसे देवदत्तपुरुषकाशरीर तादेवदत्तपुरुषकीअपेक्षाकरिकै तो अध्यात्मरूपहै ॥और दूसरेयज्ञदत्तपुरुषकीअपेक्षाकरिकै अधिभूतरूपहै ॥याप्रकारकीरीति सर्वत्र जानिलेणी॥हेशिष्य॥सर्वभूतप्राणियोंके उत्पत्तिस्थितिलयकूंकरणेहारा जोयहकालहै ॥ताकालकूंभी सोनारायणदेवही उत्पन्नकरताभयाहै॥इसप्रकार आकाशादिकसर्वजगत्कूंउत्पन्नकरिकै सोनारायणदेव सूत्रआत्मारूपकरिकै सर्वदेवतावोंकूं उत्पन्नकरताभया ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार सर्वजगत्कूंउत्पन्नकरणेहारा सोनारायणदेव किसीअनिर्वचनीयनिमित्तकरिकै आपणेविषेक्रोधकूंप्रगटकरताभया ॥ ताक्रोधकरिकै कुटिलहुई जाभृकुटीहै ॥ ताभृकुटीयुक्तआपणेललाटदेशतैं सोनारायणदेव रुद्रभगवान्कूंउत्पन्नकरताभया॥ अब ध्यानकेवासतै तारुद्रभगवान्कास्वरूप वर्णनकरैहैं॥ हेशिष्य॥ सोरुद्रभगवान्कैसाहै ॥ जारुद्रभगवान्का नीलकंठहै॥तथा जारुद्रके लोहितअंगहैं।तथा जारुद्रके सूर्य चंद्रमा अग्नि यहतीननेत्रहैं॥तथा जिसरुद्रभगवान्नैं त्रिशूलकूंधारणकऱ्याहै ॥ तथा अनेकबलकरिकैसिद्धहोणेहारेजेदुर्घटकर्महैं॥तिनदुर्घटकर्मोंकूंजिसरुद्रभगवान्नैंधारणकऱ्याहै॥तथा जिसरुद्रभगवान्केसमान दूसरा कोईहैनहीं॥और जोरुद्रभगवान् तानारायणदेवतैंअभिन्नहै।याकारणतैं सोरुद्रभगवान् संपूर्णऐश्वर्यकाआधारहै।तथा संपूर्णधर्मकाआधारहै॥ तथा संपूर्णयशकाआधारहै।तथासंपूर्णश्रीकाआधारहै।तथा संपूर्णज्ञानकाआधारहै।तथासंपूर्णवैराग्यकाआधारहैतथासंपूर्णसत्यकाआधारहै

तथा ब्रह्मचर्यकाआधारहै॥तथा ज्ञानकाआधारहै॥तथा इंद्रियोंकेनिग्रहरूपतपकाआधारहै।तथा संपूर्णवेदशास्त्रोंकाआधारहै॥ऐसेसर्वगुणों केआधाररूप तारुद्रभगवान्तैंही याइंद्रादिकदेवतावोंकूं ऐश्वर्यादिकसर्वगुण प्राप्तहोवे हैं ॥ और यहरुद्रभगवान्ही तिनसर्वदेवतावोंकूं तथासर्वमुनियोंकूं तथासर्वमनुष्योंकूं नानाप्रकारकेविद्याकीप्राप्तिविषे गुरुरूपहैं।और जैसे तूलकीराशि अग्निकेसंबंधकूंप्राप्तहोइकै शीघ्रही नाशकूंप्राप्तहोवेहै ॥ तैसे प्रलयकालविषे यहतीनलोकरूपतूल तारुद्ररूपअग्निकूंप्राप्तहोइकै शीघ्रही नाशकूंप्राप्तहोवेहै ॥ ऐसारुद्रभगवान् तानारायणदेवकेललाटतैं उत्पन्नहोताभया ॥ और सोसर्वजगत्काद्रष्टारूप नारायणदेव पुनःध्यानरूपतपकूंकरताभया ॥ ताध्यानरूपतप करिकै श्रमकूंप्राप्तहुए तानारायणदेवकेललाटतैं स्वेदकेबिंदु पतनहोतेभये॥ कैसे हैं तेस्वेदकेबिंदु ॥यासर्वब्रह्मांडकेतथाब्राह्मांड वर्त्तीसर्व लोकोंके उत्पन्नकरणेविषेसमर्थहैं ॥ जिनजलकेबिंदुवोंकूं शास्त्रविषे नारा यानामकरिकैकथनकरे हैं ॥ तिनस्वेदरूपजलोंविषे सोनारायण देव आपणेतेजरूपवीर्यकूंपावताभया ॥ कैसाहैसोतेजरूपवीर्य ॥ सुवर्णकेसमानवर्णवालाहै ॥ तथा अत्यंतमनोरमहै ॥ तथा कोटिसूर्यके समान तेजवालाहै ॥ ऐसातेजरूपवीर्य तिनजलोंविषेप्राप्तहोइकै अंडकेआकार परिणामकूंप्राप्तहोताभया ॥ और ताअंडकेमध्यविषे ना भिकमलतैं चतुर्मुखब्रह्मा उत्पन्नहोताभया ॥ अब ध्यानकरणे वासतै ताब्रह्माकेस्वरूपकावर्णनकरेहैं॥ हेशिष्य ॥सोब्रह्माकैसाहै ॥ सर्वभूत प्राणियोंका आदिरूपहै ॥ तथा जिनब्रह्माके पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण याचारिमुखोंतैं यथाक्रमतैं गायत्री त्रिष्टुप् जगती अनुष्टुप् यहचा रिप्रकारकेछंद उत्पन्नहोवे हैं ॥ तथा भूःभुवः स्वःमहः यहचारिव्याहृतियां उत्पन्नहोवे हैं ॥ तथा ऋग् यजुष् साम अथर्वण यहचारिवेद उत्पन्नहोवे हैं ॥ इसतैंआदिलैके यहसंपूर्णस्थावरजंगमजगत् ताब्रह्मातैंही उत्पन्नहोताभयाहै ॥ ऐसाचतुर्मुखब्रह्माभी तानारायणदेवतैंही उत्पन्नहोताभयाहै ॥ हेशिष्य ॥इसप्रकार सोएकअद्वितीयनारायणदेव आपणीमायाशक्तिकरिकै यद्यपिनानाभावकूंप्राप्तहोवे है॥तथापि सोनारायणदेव वास्तवतैं नानारूपहैनहीं किंतु वास्तवतैंतो सोनारायणदेव सर्वभेदतैंरहित एकअद्वितीयरूपही है ॥ हेशिष्य॥ याप्रकार केविचारकरिकैभी जभीयहअधिकारीपुरुष तानारायणदेवकूं नहींजानिसकै॥तभीयहअधिकारीपुरुषतानारायणदेवकेध्यानकूंकरै ॥सोध्या

नकरणेकाप्रकार याआत्मपुराणकेदशमअध्यायविषे नारायणउपनिषद्केअर्थ निरूपणविषे विस्तारतैंकथनकरिआयेहैं ॥ ताध्यानरूपयोग करिकै यहअधिकारीपुरुष तानारायणदेवकूंसाक्षात्कारकरै ॥ हेशिष्य जो अधिकारीपुरुष श्रद्धाभक्तिपूर्वक यामहोपनिषद्नामाग्रंथका विचारकरै है ॥ सोअधिकारीपुरुष पूर्व अश्रोत्रीहुआभी श्रोत्रीभावकूंप्राप्तहोवे है॥इसतैंआदिलैके अनेकप्रकारकामाहात्म्ययाउपनिषद्का वर्णनकऱ्याहै॥जभी यामहोपनिषदकेविचारतैंही महान्फलहोवे है॥तभी याउपनिषद्केविचारतैं उत्पन्नभयाजोआत्माकासाक्षात्कारहै ॥ जिसआत्मसाक्षात्कारकरिकै यहकार्यसहितमाया नाशकूंप्राप्तहोवे है ॥ताआत्मसाक्षात्कारका महान्माहात्म्यहै याकेविषेक्याकहणाहै ॥ हेशिष्य॥इसप्रकार तामहोपनिषद्विषे जाब्रह्मविद्या कथनकरीहै॥ तासंपूर्णब्रह्मविद्या हमनैं तुम्हारेप्रति कथनकरी ॥अब आत्मप्रबोधना माउपनिषद्विषे जाब्रह्मविद्या निरूपणकरीहै ॥ साब्रह्मविद्या हम तुम्हारेप्रति कथनकरते हैं ॥ तू सावधानहोइकैश्रवणकर ॥ हेशिष्य ॥ ताआत्मप्रबोधनामाउपनिषद्विषे प्रथम आत्मसाक्षात्काररूपफलकीप्राप्तिवासते दोप्रकारकेउपाय कथनकरे हैं ॥ तहां एकतौ प्रणवमंत्र रूपउपायहै ॥ और दूसरा अष्टाक्षरमंत्ररूपउपायहै ॥ तहां जिसअद्वितीयआनंदस्वरूपआत्माकावाचक प्रणवमंत्रहै ॥तिसीआनंदस्वरूप आत्माकावाचक अष्टाक्षरमंत्रभीहै तहां मंत्ररूपवाचकका तथाआत्मारूपवाच्यका श्रुतिनैं अभेदरूपकरिकै ध्यानकथनकऱ्याहै ॥ यातैं याअधिकारीपुरुषनैंभी तावाच्यवाचकका अभेदहीचिंतनकरणा ॥तहां अकार उकार मकार यातीनवर्णोंकासमुदायरूपजो ओंकारहै ॥ ताओंकारकानाम प्रणवमंत्रहै ॥ और ताप्रणवसहितजो॥नमोनारायणाय ॥ यहमंत्रहै ॥ ताकानाम अष्टाक्षरमंत्रहै ॥ यहदोनोंमंत्र याअ धिकारी पुरुषोंकूं मनवांच्छितफलकीप्राप्तिकरणेहारे हैं ॥ हेशिष्य ॥ जोअधिकारीपुरुष यादोनोंमंत्रोंकाजपकरै है ॥ तथा जोअधिकारी पुरुष यादोनोंमंत्रोंकरिकै देवताओंकापूजनकरै है ॥तथा जोअधिकारीपुरुष यादोनोंमंत्रोंके अकारादिकमात्रावोंकेसाथ विश्वादिकपादों काअभेदचिंतनरूपउपासनाकरै है॥ताअधिकारीपुरुषोंकूं संशयविपर्ययतैंरहित ब्रह्मकानिश्चयहोवे है। तिसतैंअनंतरताअद्वितीयब्रह्मकूंआप णाआत्मारूपजाणिकरिकै सोअधिकारीपुरुष याजन्ममरणरूपसंसारबंधनतैं मुक्तहोवे है ॥ हेशिष्य ॥ यादोनोंमंत्रोंका वाच्यअर्थरूपजो

ब्रह्महै॥ तात्रह्मकाजोवास्तव निर्गुणस्वरूपहै॥ जोनिर्गुणस्वरूप याकार्यसहितअविद्याकाध्वंसरूपमोक्षका अधिष्ठानहै ॥ तथा अद्वितीयरूपहै ऐसेनिर्गुणब्रह्मकूं जबपर्यंत यहअधिकारीपुरुष आपणाआत्मारूपकरिकै साक्षात्कारनहींकरै ॥ तबपर्यंत यहअधिकारीपुरुष ताब्रह्मके सगुणरूपकाध्यानकरै॥ तासगुणब्रह्मकेध्यानकरिकै याअधिकारीपुरुषकूं सुखैनहीं तानिर्गुणब्रह्मकासाक्षात्कारहोवै है ॥ हेशिष्य॥ यद्यपि श्रुतिस्मृतिआदिकशास्त्रोंविषे तासगुणब्रह्मकास्वरूप ब्रह्मा विष्णु रुद्र सूर्य इत्यादिकभेदकरिकै अनेकप्रकारकावर्णन कऱ्याहै॥ तथापि नारदादिकमुनियोंनैं अत्यंतआदरपूर्वक जिसगुणस्वरूपकाकथनकऱ्याहै ॥ ताकूं तूं श्रवणकर ॥ हेशिष्य ॥ जैसे काष्ठरूपअरणि अग्निकूं प्रगटकरै है ॥ तैसे यापृथ्वीविषे सर्वब्राह्मणोंकीरक्षाकरणेवासतै ॥ तथातपादिकधर्मोंकीरक्षाकरणेवासतै जोपरमात्मादेवज्योति देवकीवसुदेवतैं आपणेकूंकृष्णरूपकरिकैप्रगटकरताभयाहै ॥ जिसकृष्णभगवान्केताईं अंगिरसगोत्रवाला घोरनामाब्राह्मण संपूर्णविद्या देताभयाहै तथा जिसकृष्णभगवान्नैं अर्जुनकेप्रति तथायशोदामाताकेप्रति आपणाविश्वरूपदिखायाहै ॥ सोकृष्णभगवान्ही सर्व तैं श्रेष्ठहै ॥ और सोकृष्णभगवान् आपणेस्मरणमात्रकरिकै याजीवोंकेसर्वपापकर्मोंकूंहरण करै हैं ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताकृष्णभगवान्कूं हरि य नामकरिकैकथनकरै है ॥ हेशिष्य ॥ भारतादिकग्रंथोंविषे वेदव्यासनैंभी इसीकृष्णभगवान्काप्रभाव वर्णनकऱ्याहै ॥ तथा भागवतपुराणविषे शुकदेवमुनिनैंभी इसीकृष्णभगवान्काप्रभाव वर्णनकऱ्याहै॥ तथा दूसरेपुराणोंविषे तथाआगमोंविषे नारदादिकमुनियोंनैंभी इसीकृष्णभगवान्काप्रभाव वर्णनकऱ्याहै ॥ यातैं यहकृष्णभगवान् सर्वतैंश्रेष्ठहै ॥ हेशिष्य ॥ यद्यपि इंद्रादिकसर्वदेवता याकृष्णभगवान्केहीरूपहैं ॥ तथापि तेसर्वदेवता याकृष्णभगवान्रूपबिंबके प्रतिबिंबरूपहैं ॥ यातैं जैसे यालोकविषे दर्पणादिकउपाधियोंकेनीलपीतादिकधर्म प्रतिबिंबविषेही प्रतीतहोवै हैं मुखरूपबिंबविषे प्रतीतहोवैनहीं तैसे यामायारूपउपाधिके कामक्रोधादिकधर्म तिनदेवतारूपप्रतिबिंबोंविषेही प्रतीतहोवै हैं ॥ ताकृष्णभगवान्रूपबिंबविषे तेधर्म प्रतीतहोवैनहीं ॥ याकारणतैंही किसीदेवताविषेतौ कामकीअधिकताहै॥ और किसीदेवताविषे क्रोधकीअधिकताहै॥ और किसीदेवताविषे लोभकीअधिकताहै और किसीदेवताविषेतौ अहंकारादिकदूषणरहे हैं ॥

और याकृष्णभगवान्विषे तेकामक्रोधादिकदूषण तीनकालमैंनहीं है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ताकृष्णभगवान्विषे तेकामक्रोधादिकदूषण नहीं हैं ॥ यहवार्त्ता कैसीजानीजावे ॥ समाधान ॥हेशिष्य॥ सोकृष्णभगवान् अर्जुनका सारथिहुआहै॥ यातैं यहजान्याजावे है ॥ ताकृष्णभगवान्विषे अहंकारनहींहैं॥ औरसोकृष्णभगवान् दुर्योधनराजाकापरित्यागकरिकैपांडवोंकेपक्षविषेहुवाहै॥ यातैं यहजान्याजावैहै॥ ताकृष्णभगवान्विषे लोभभीनहीं है और सोकृष्णभगवान् आपणेबलभद्रभ्राताके अनेककठोरवचनोंकूं सहनकरताभयाहै ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ताकृष्णभगवान्विषे क्रोधभीनहीं है ॥ और कामकाअवतारजोप्रद्युम्न है ॥ ताका सोकृष्णभगवान् साक्षात्पिताही है॥ पुत्रकाबल पिता ऊपरचलैनहीं ॥ यातैं यहजान्याजावे है ताकृष्णभगवान्विषे कामभीनहीं है ॥ और सोकृष्णभगवान् स्कंदकेशक्तिकूं आपणेवामहस्ततैंउठाइकैं तास्कंदके ब्रह्मण्यताकेगर्वकूं निवृत्तकरताभया है ॥ यातैं सोकृष्णभगवान् तीनलोकोंविषे ब्रह्मण्य यासंज्ञाकूंप्राप्तहोताभयाहै ॥ यहवार्त्ता महाभारतविषे स्कंदोपाख्यानविषे विस्तारतैं कथनकरी है ॥ तात्पर्ययह॥ जोपरमात्मादेव सत्यरूपतपकेरक्षणकरणेवासतै देवकीकेपुत्रभावकूंप्राप्तभयाहै ॥ तथा जोपरमात्मादेव वेदोंकेरक्षाकरणेवासतै हयग्रीवादिकरूपोंकूंधारणकरिकै मधुआदिकदैत्योंकूं हननकरताभयाहै॥ तथा जोपरमात्मादेव महादेवकीपूजाविषे आपणेप्रतिज्ञाकेसत्यकरणेवासतैंएककमलकेस्थानविषेआपणेनेत्रकूंचढावताभयाहै ॥ तथा जोपरमात्मादेव विष्णुरूपकरिकै आपणेवक्षस्थलविषे भृगुऋषिकेपादकेचिह्नकूंधारणकरताभया है ॥ ऐसेपरमात्मादेवकृष्णभगवान्तैंविना दूसरा कोनब्रह्मण्य है किंतु एककृष्णभगवान्हीब्रह्मण्य है ॥ सर्वतैंउत्कृष्टकानाम ब्रह्मण्य है ॥ हेशिष्य ॥ सोकृष्णभगवान् रूप लावण्य सौभाग्य इत्यादिकगुणोंकेहरणेकास्थान है॥ याकारणतैं ताकृष्णभगवान्केशरीरविषे विश्वकर्माकीचातुर्यताभी प्रवृत्तहोइसकैनहीं ॥ इहां मुक्ताकेसमान जोअंगोंकीकांतिहै ताकानाम लावण्य है ॥ और मनोहरताकानाम सौभाग्यहै॥ हेशिष्य ॥ तिसकृष्णभगवान्विषेजिनजीवोंकाचित्त कामादिकबुद्धिकरिकैभी संलग्नभया है ॥ तेजीवभी दिवलोककूंप्राप्तहोतेभये हैं ॥ तहां व्रजभूमिकीगोपियांतौताकृष्णभगवान्विषेकामभावनाकरिकै तादिवलोककूंप्राप्तभयाहै ॥ और कंसराजा ताकृष्णभगवान्कीभयतैंतादिवलोककूंप्राप्त

होताभयाहै॥और शिशुपालादिकराजा ताकृष्णभगवान्केद्वेषतैं तादिवलोककूंप्राप्तहोतेभये हैं॥ और यादवताकृष्णविषे बाधबुद्धिकरिके तादिवलोककूंप्राप्तहोतेभयेहैं॥और अर्जुनादिकपांडव तथाद्रौपदी ताकृष्णभगवान्विषे स्नेहकरिकैतादिवलोककूंप्राप्तहोतेभये हैं॥औरनारदादिकमुनि ताकृष्णभगवान्कीभक्तिकरिकै तादिवलोककूंप्राप्तहोतेभयेहैं॥इसतैंआदिलैके अनेकजीव ताकृष्णभगवान्के ध्यानतैं तादिवलोककूंप्राप्तभये हैं ॥ इहां श्रुतिस्मृतियोंविषे ब्रह्मलोकनामकरिकैप्रसिद्ध जोवैकुंठ है ॥ तावैकुंठकानाम दिवलोक हैं ॥ जिस ब्रह्मलोकविषे ब्रह्माकेसाथ परब्रह्मभावकूंप्राप्तहोइकै संन्यासी ताब्रह्मलोकतैं पुनःसंसारविषे प्राप्तहोतेनहीं ॥ ऐसेब्रह्मलोकरूपवैकुंठविषे तेकृष्णकेभक्त प्राप्तहोवै हैं ॥ अब ध्यानकरणेवासतै ताकृष्णभगवान्कास्वरूप वर्णनकरै है ॥हेशिष्य ॥ सोकृष्णभगवान् द्वारकापुरीकेविषे तथामथुरापुरीविषे निवासकरै है ॥ तथा गोपबालकतारूपकरिकै सोकृष्णभगवान् गोकुलादिकस्थानोंविषे निवासकरे है ॥ और जलयुक्तमेघका जैसाश्यामवर्णहोवै है ॥ तैसाहीश्यामवर्ण जिसकृष्णभगवान्का है ॥ तथा सोकृष्णभगवान् अत्यंतशोभायमानहै॥ और सोकृष्णभगवान् इंद्रनीलमणिकेसमान वर्णवाला है ॥ तथा जिसकृष्णभगवान्कीशोभा कोटिसूर्यकेसमान है ॥ और जिस कृष्णभगवान्कीदोनोंभुजा जानुपर्यंतदीर्घ हैं ॥ और जिसकृष्णभगवान्कीग्रीवा शंखकीन्याईं तीनरेखावाली है ॥ और जिस कृष्णभगवान्काहनु महान् है ॥ तथा जिसकृष्णभगवान्केगंडस्थल ऊँचे हैं ॥ तथा जिसकृष्णभगवान्केनेत्र कर्णपर्यंतविस्तारवाले हैं॥और जिसकृष्णभगगान्कीनासिका ऊँची हैं॥तथातीक्ष्ण हैं॥तथा जिसकृष्णभगवान्केओष्ठ रक्तवर्णवाले हैं तथामंदमंदहास्ययुक्त हैं ॥ और जिसकृष्णभगवान्केललाट तथादोनोंकपोल तथादोनोंकर्ण अत्यंतशोभायमान हैं ॥ तथा जिसकृष्णभगवान्केकेश अत्यंतनीलवर्णवाले हैं ॥. और जिसकृष्णभगवान्नैं आपणेनखदंतोंकीप्रभाकरिकै चंद्रमाकीप्रभाकूंभी जीतलिया है ॥ और जिसकृष्णभगवान्कावक्षस्थल विशालहै तथा ऊँचाहै तथा भृगुब्राह्मणकेपादकोचिह्नकरिकैशोभायमानहै और जिसकृष्णभगवान्केदोनों हस्त तथादोनोंपाद मंडलाकारहैं तथाऊँचेहैं ॥ऐसेहस्तपादरूपकमलोंकरिकै शोभायमानहै॥ औरजिसकृष्णभगवान्के गुल्फ जानु अंश

जावोंकीसंधि इत्यादिकस्थान अत्यंतपुष्टहैं ॥ और जिसकृष्णभगवान्काउदरकृशहै ॥ तथाजिसकृष्णभगवान्केहस्तपादादिक अंगपुष्ट हैं ॥ तथा जिसकृष्णभगवान्केअंगोंकीरचना वज्रकेसमानसघनहै ॥ तथाजोकृष्णभगवान् षोडशवर्षकीअवस्थावालाहै ॥ तथाजोकृष्णभगवान् पीनउन्नतजघनस्थानोंकरिकैशोभायमानहै ॥ और जैसेवृक्ष शाखावोंकरिकैशोभायमानहोवैहै ॥ तैसेदोहस्तोंविषेतथादोपादोंविषे स्थितजेवर्तुलाकार तथादीर्घअंगुलिहैं ॥ तिनअंगुलियोंकरिकै जोकृष्णभगवान् शोभायमानहै ॥ तथा जोकृष्णभगवान् चारिभुजावोंकरिकै शोभायमानहै ॥ तथा जिसकृष्णभगवान्काशरीर महान्है ॥ तथा जिसकृष्णभगवान्नैं रेशमकेपीतांबरकूं धारणकऱ्याहै ॥ तथा जोकृष्णभगवान् कटीदेशविषेस्थितकांचीभूषणके घंटिकावोंकेमधुरशब्दकरिकै शोभायमानहै ॥ औरअनेकप्रकारकेरत्नोंकरिकै जडितकंकण जिसकृष्णभगवान्केहस्तोंविषेहैं ॥ तथाअनेकरत्नोंकरिकैजडितअंगद जिसकृष्णभगवान्कीभुजावोंविषेहैं॥तथाअनेकरत्नोंकरिकैजडितनूपुर जिसकृष्णभगवान्केपादोंविषेहैं ॥ तथाअनेकरत्नोंकरिकैजडित जेअंगुलिभूषणहैं ॥ तेभूषणजिसकृष्णभगवान्केहस्तपादकीअंगुलियोंविषे विराजमानहै ॥ और ग्रीवाविषेस्थितभूषणसहितकौस्तुभमणिकूं जिसकृष्णभगवान्नैंकंठविषेधारणकऱ्याहै ॥और मुक्तावोंकेहारकूं तथापत्रपुष्पमय वनमालाकूंजिसकृष्णभगवान्नैं वक्षस्थलविषेधारणकऱ्याहै ॥ तथाआपणेदोनोंकर्णोंविषे जिसकृष्णभगवान्नैंमकराकार कुंडलोंकूंधारणकऱ्याहै ॥ औरमयूरकेपक्षोंकरिकैयुक्तजोसुवर्णरत्नमयमुकुटहै ॥ तामुकुटकूं जिसकृष्णभगवान्नैं आपणेमस्तकविषेधारणकऱ्याहै॥तथाजिसकृष्णभगवान्नैंआपणेललाटविषे केशरकेतिलककूं धारणकऱ्याहै ॥ औरअनेकप्रकारकेरत्नोंकरिकै जडिततथाअनेकप्रकारकेपुष्पोंकरिकैयुक्त जासुवर्णमयविचित्ररक्षाहै ॥ तारक्षाकूंजिसकृष्णभगवान्नैं आपणेमूर्द्धविषेधारणकऱ्याहै ॥तहां जिसकरिकैमस्तककेकेशबांधीतेहैं ताकूंरक्षाकहैहैं॥ औरजोकृष्णभगवान् तीनलोकवर्तीस्त्रियोंकेमनकूं तथानेत्रोंकूं आनंदकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ और जोकृष्णभगवान्आपणेचारिहस्तोंविषे प्रदक्षिणाक्रमतैं शंखगदापद्मचक्र याचारोंकूंधारणकरेहै ॥तहांदक्षिणभागकेनीचलेहस्तविषेतोशंखकूंधारणकरै है ॥ और तादक्षिणभागकेऊपरलेहस्तविषे गदाकूंधारणकरेहै ॥ और वामभागकेऊपरलेहस्तविषे पद्मकूं

धारणकरेहै ॥ और तावामभागकेनीचलेहस्तविषे चक्रकूंधारणकरेहै ॥ और जाकृष्णभगवान् गौवां पृथ्वी ब्राह्मण इनसर्वकेपीडाकूं नाशकरणेहाराहै ॥ औरदैत्योंकेसमान यज्ञादिकधर्मोंका तथादेवताओंका द्रोहकरणेहारेजेअधर्मीराजहैं ॥ तिनराजोंकूं जोकृष्णभगवान् सर्वदादुःखकीप्राप्तिकरेहै ॥ और यापृथिवीविषे जिसजिसकालमें धर्मकालोपहोइजावेहै ॥ तथाअधर्मकीवृद्धिहोवेहै ॥ तिसतिसकालविषे यहदेवकीकापुत्रकृष्णभगवान् धर्मात्मापुरुषोंकीरक्षाकरणेवासते तथादुष्टजनोंकेनाशकरणेवासतेयापृथिवीविषे अवतारकूंधारणकरेहै॥ यह वार्त्ताश्रीगीताविषे कृष्णभगवान्नेंआपहीकहीहै॥तहांश्लोक॥परित्राणायसाधूनांविनाशायचदुष्कृताम्॥ धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामियुगे युगे॥अर्थयह॥धर्मात्मापुरुषोंकेरक्षाकरणेवासतेतथापापात्माजीवोंकेनाशकरणेवासतें मैंकृष्णभगवान्युगयुगविषेअवतारकूंधारणकरोहूं।१। और यहकृष्णभगवान्हीसाक्षात् नारायणरूपहै ॥ तथा सर्वदेवतावोंका आत्मारूपहै ॥ और सोप्रणवमंत्र तथाअष्टाक्षरमंत्रभी याकृष्ण भगवान्केस्वरूपकूंही प्रतिपादनकरेहै ॥ यातैंयहकृष्णभगवान् सर्वगुणरूपोंतैंश्रेष्ठहै ॥ हेशिष्य ॥ याअधिकारीपुरुषकूं जबपर्यंत तानिर्गुणब्रह्मकासाक्षात्कारनहींहोवे॥तबपर्यंत यहअधिकारीपुरुष पूर्वउक्तवस्त्रभूषणादिकोंसहित ताकृष्णभगवान्काध्यानकरे॥हेशिष्य ॥ हृदयकमलविषेस्थित तथासूर्यमंडलविषेस्थित तथागोकुलादिकस्थानोंविषे स्थित तथापूर्वउक्तलीलादिकगुणोंकरिकेयुक्त जोकृष्णभगवान्है॥सोकृष्णभगवान् जभी याअधिकारीपुरुषकेचित्तविषे प्रयत्नतैंविनाही सर्वदा प्रतीतहोवेहै ।तभी जैसे दीपकघटादिकपदार्थोंकेप्रकाशकाहेतुहोवेहै।तैसे सोकृष्णभगवान्भी आपणेनिर्गुणस्वरूपके साक्षात्कारविषे हेतुहोवेहै ॥हेशिष्य॥ यहअधिकारीपुरुष ताकृष्णभगवान्के ध्यानतैं शुद्धअंतःकरणवालाहोइकै जिसनिर्गुणब्रह्मकूंआपणाआत्मारूपकरिकै साक्षात्कारकरेहै।सोनिर्गुणब्रह्मकैसाहै । सर्वभूतोंकेअंतरस्थितहै।तथा सर्वजगत्काकारणहै॥तथा उत्पत्तिनाशतैंरहितहै।तथा सर्वशोकमोहादिकोंतैं रहितहै।ऐसेब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपजाणिकै यह विद्वान्पुरुषभी तिसीप्रकारकाहोवेहै।यातैं श्रीकृष्णभगवान्कैध्यानकरणेहारा योगीपुरुष पुनःसंसारदुःखोंकूं नहींप्राप्तहोवेहै॥यहजोवचन श्रुतिविषेकथनकऱ्याहै सोयथार्थहीहै।हेशिष्य।याअधिकारीपुरुषनैं जबपर्यंत ताकृष्णभगवान्केध्यानकरिकै तानिर्गुणब्रह्मकूंआपणाआत्मा

रूपकरिकैनहींजान्याहै ॥ तबपर्यंतही याअधिकारीपुरुषकूं यहद्वैतप्रपंच प्रतीतहोवे है॥और यहअधिकारीपुरुष जभी ताकृष्णभगवान्के ध्यानतैं तानिर्गुणब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपकरिकैजाणेहै॥ तभी याअधिकारीपुरुषकूं सोद्वैतप्रपंच प्रतीतहोवैनहीं ॥किंतु जैसे रज्जुकेज्ञानतैंअनंतर काल्पितसर्प रज्जुरूपहीहोवे है ॥ तैसे ताअद्वितीयब्रह्मकेज्ञानतैंअनंतर यहद्वैतप्रपंचभी अद्वितीयब्रह्मरूपहीहोवे है॥अब भेददर्शनविषे अनर्थकीकारणता दिखावे हैं ॥ हेशिष्य॥ ऐसेअद्वितीयानिर्गुणब्रह्मविषे जोपुरुष भेदकूंदेखे है ॥ सोभेददर्शीपुरुष अनेकवार संसारकूंप्राप्तहोवे है ॥ तथा अनेकवार जन्ममरणादिकदुःखोंकूंप्राप्तहोवे है ॥हेशिष्य॥ जैसे निर्गुणब्रह्मविषे सोभेदवास्तववर्तैनहीं है ॥ तैसे मायाविशिष्टसगुणब्रह्मविषेभी सोभेद वास्तववर्तैनहीं है॥ काहेतैं जैसे मृत्तिकाकेकार्य घटशरावादिकतामृत्तिकारूपकारणतैं भिन्ननहीं हैं॥ तैसे ताब्रह्मकाकार्यरूपयहजगत्भी ताब्रह्मरूपकारणतैंभिन्ननहीं है॥ यातैं सगुणब्रह्मविषे तथानिर्गुणब्रह्मविषे सोभेद वास्तववर्तै है नहीं ॥ ऐसेअद्वितीयब्रह्मविषे जोपुरुष भेदकूंदेखे है॥सोभेददर्शीपुरुष अत्यन्तदारुणदुःखकूंप्राप्तहोवे है॥यहजोश्रुतिनैंकह्याहै॥सोयथार्थकह्याहै ॥ हेशिष्य ॥ विपरीतदर्शीपुरुषकूं अनर्थकीप्राप्तिहोवे है यहवार्ता केवलश्रुतिप्रमाणतैंही सिद्धनहीं है ॥ किंतु यहवार्ता सर्वलोकोंकेअनुभव करिकेभीसिद्ध है ॥ काहेतैंयालोकविषे जोभ्रांतपुरुषविषकूं अमृतजाणिकै ताविषकूंभक्षणकरे है ॥ सोविपरीतदर्शीपुरुष मृत्युकूंहीप्राप्तहोवे है॥और जोभ्रांतपुरुष अग्निकूं जलरूपजाणिकै ताअग्निविषेप्रवेशकरे है॥ सोविपरीतदर्शीपुरुष दाहकूंही प्राप्तहोवे है॥और जैसे विषविषे अमृतबुद्धिकरणी तथाअग्निविषे जलबुद्धिकरणी यहदोनों विपरीतदृष्टिहैं ॥ तैसे सर्वद्वैततैंरहितअद्वितीयब्रह्मविषे द्वैतबुद्धिकरणी यहभी विपरीतदृष्टिही है॥ ऐसेद्वैतदर्शनरूप विपरीतदृष्टि तैं यापुरुषकूं जोवारम्वार जन्ममृत्युकीप्राप्तिहोवे है ॥ सोकोई अनुचितवार्त्तानहीं है ॥ काहेतैं यालोकविषे यहजीव जैसा जैसाबीज बोवे हैं ॥ तैसेंही फलकूंप्राप्तहोवे हैं॥ जैसे नीमकेबीजबोयेतैं नीमकेफलोंकूंहीप्राप्तहोवे हैं ॥ आम्रफलोंकूंप्राप्तहोवैनहीं॥तैसे अद्वितीयआत्माविषेभेददृष्टिकरिकै सोपुरुष वारम्वार जन्ममृत्युकूंहीप्राप्तहोवे है।मोक्षकूंप्राप्तहोवैनहीं।तात्पर्ययह॥गौणआत्मामिथ्याआत्मासुख्यआत्मा यहतीनप्रकारकाआत्माहोवे है।तहां पुत्रादिकपदार्थगौणआत्माहै॥ और शरीर मिथ्याआत्मा

है॥और साक्षीकूटस्थ मुख्यआत्माहै॥तहां जोकोईपुरुष किसीजीवकेपुत्ररूपगौणआत्माकाहननकरे है ॥ अथवा किसीजीवकेशरीर रूप मिथ्याआत्माकहननकरे है॥ तिसहननकरणेहारेपुरुषकूं राजादिक महान्ताडनाकरे हैं॥ जभी गौणआत्माके तथामिथ्याआत्माके हननकरणेहारापुरुषभी राजादिकोंकेताडनाकूंप्राप्तहोवे है ॥ तभी साक्षीकूटस्थरूपमुख्यआत्माकूं भेददृष्टिरूपशस्त्रकरिकेहननकरणेहारा पुरुष वारम्वार जन्ममृत्युकूंप्राप्तहोवे है याकेविषे क्याकहणाहै ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभीकही है॥तहां श्लोक॥ अन्यथासंतमात्मानम न्यथायोऽभिमन्यते॥ किंतेननकृतंपापं चौरेणात्मापहारिणा॥अर्थयह॥अद्वितीय सत् चित् आनंद व्यापक आत्माकूं जोपुरुषद्वैत असत् जड दुःख परिच्छिन्न रूपकरिकेमाने है ॥ सोपुरुष आपणेआत्माकाही हननकरणेहाराहै॥ऐसे आत्महत्यारेचोरपुरुषनैं यालोकविषेकोन पापनहींकरे॥किंतुसंपूर्णपापकर्म तापुरुषनैंकरे ॥१॥ यातैंयाअधिकारीपुरुषोंनैं ताअद्वितीयआत्माविषे कदाचित्भी भेददृष्टिनहींकरणी हेशिष्य॥याजीवोंकेहृदयकमलविषेविराजमान सर्वभेदतैंरहिततथासर्वबुद्धिकाप्रकाशक तथासर्वजगत्काआधाररूपतथासूर्यादिकसर्वप्रका शोंकाकारण ऐसाजो आनंदस्वरूपअद्वितीयकृष्णभगवान्है॥ताकृष्णभगवान्कूं जोअधिकारीपुरुष मैंकृष्णरूपहूं याप्रकारआपणाआत्मा रूपकरिकेजाने है॥सोअधिकारीपुरुष किंचित्मात्रभी संसारदुःखकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं ऐसेजीवब्रह्मकेअभेदज्ञानकूं याअधिकारीपुरुष नैं अवश्यकरिकै संपादनकरणा ॥हेशिष्य॥ याआत्मपुराणकेप्रथमअध्यायविषे ऐतरेयउपनिषद्केअर्थनिरूपणविषे जोआत्मा प्रज्ञारूप करिकेकथनकऱ्याथा॥सोईहीआत्मा याऐतरेयशाखाविषेस्थितआत्मप्रबोधनामाउपनिषद्विषे प्रज्ञानेत्र यानामकरिकेकथनकऱ्याहै॥जैसे याजीवोंकेनेत्र बाह्यसर्वव्यवहारकीसिद्धिकरे हैंतैसे याआत्मादेवका ज्ञानरूपप्रज्ञानेत्रभी सर्वव्यवहारोंकीसिद्धिकरेहै।यातैं याआत्मादेवकूं श्रुतिभगवती प्रज्ञानेत्र यानामकरिकेकथनकरे है ॥ हेशिष्य ॥ जाचैतन्यरूपप्रज्ञा यासर्वजगत्काआधारहै॥तथा जिसप्रज्ञाविषे यासर्वज गत्कीस्थितिरूप प्रतिष्ठाहै ॥ तात्वंपदार्थरूपप्रज्ञाकूं ॥ प्रज्ञानमानंदंब्रह्म॥इत्यादिकमहावाक्य ब्रह्मरूपकरिकेकथनकरे हैं॥हेशिष्य॥ता प्रज्ञाप्रतिष्ठारूपब्रह्मकूं यहअधिकारीपुरुषभीआपणाआत्मारूपकरिकै साक्षात्कारकरेहै॥तभी देहादिकअनात्मपदार्थोंविषेआत्मबुद्धिरूप

अविद्याकापरित्यागकरिकै यहअधिकारीपुरुष ताब्रह्मभावकूंहीप्राप्तहोवैहै॥हेशिष्य॥इसप्रकार ताअद्वितीयआत्माकेविचार करणेहारापु रुष जोकदाचित् विषयोंविषेरागवान्होवैहै ॥ तौ तिसपुरुषकूं तारागरूपप्रतिबंधकेवशतैं यद्यपि इसजन्मविषे ताआत्मसाक्षात्कारकीप्रा प्तिहोवैनहीं ॥ तथापि सोरागवान्पुरुष ब्रह्मलोकविषेजाइकै तहां नानाप्रकारकेदिव्यभोगोंकूंभोगिकै ताब्रह्माकेसाथ परब्रह्मभावकूंप्राप्तहो वैहै ॥ और सोअधिकारीपुरुष जोविषयरागतैंरहितहोवैहै॥ तौ इसीजन्मविषे ताब्रह्मकूंप्राप्तहोवैहै ॥यातैं याअधिकारीपुरुषनैं ताविषयराग कापरित्यागकरिकै ताआत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवास्तै दृढप्रयत्नकरणा॥हेशिष्य॥जिसअद्वितीयब्रह्मविषे स्वप्रकाशप्रज्ञारूपज्योति तथा निरतिशयआनंद स्वरूपभूतहोइकै सर्वदा स्थितहोवैहै॥ताअद्वितीयब्रह्मकी प्राप्तिवास्तै यहअधिकारीपुरुष ताकृष्णभगवान्की याप्रकार प्रार्थनाकरे ॥ हे वासुदेवस्वरूपकूंधारणकरणेहारा कृष्णभगवान् ॥ हे देवकीमाताकेनेत्रोंकूं आनंदकीप्राप्तिकरणेहारा कृष्णभगवान् ॥ हे वसुदेवकेपुत्रकृष्णभगवान् ॥ मैं अधिकारीजन तुम्हारेशरणकूंप्राप्तभयाहूं ॥ यातैं मैं अधिकारीजनकूं आपणेवास्तवनिर्गुणस्वरूपकी प्राप्तिकरो ॥हेशिष्य॥ इसप्रकार यहअधिकारीपुरुष जभीताकृष्णभगवान्कीप्रार्थनाकरेहै ॥ तभी याअधिकारीपुरुषकेताईं सोकृष्णभग वान् वेदांतकेअर्थधारणकरणेविषेसमर्थ बुद्धिरूपमेधाकी प्राप्तिकरेहै ॥ ताशुद्धबुद्धिकरिकै याअधिकारीपुरुषकूं गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं मैं ब्रह्मरूपहूं याप्रकारकेआत्मज्ञानकीप्राप्तिहोवैहै॥ताआत्मज्ञानकेप्रभावतैं याअधिकारीपुरुषके जन्ममरणादिकसर्वदुःख निवृत्तहोवैहैं॥यातैं याअधिकारीपुरुषनैं ताकृष्णभगवान्की प्रार्थना तथा ध्यान अवश्यकरिकैकरणा ॥हेशिष्य॥ इसप्रकार आत्मप्रबोधनामाउपनिषद्विषे जाब्रह्मविद्या कथनकरी है ॥ सासंपूर्णब्रह्मविद्या हमनैं तुम्हारेप्रति कथनकरी॥अब कैवल्यउपनिषद्विषे जाब्रह्मविद्या कथनकरीहै ॥सा ब्रह्मविद्या हम तुम्हारेप्रति कथनकरते हैं ॥ तूं सावधानहोइकैश्रवणकर ॥ हेशिष्य पूर्व ऋग्वेदकाआचार्य एक आश्वलायननामाऋषि होताभयाहै ॥ सोआश्वलायननामाऋषि एककालविषे ब्रह्मविद्याकेप्राप्तिकीइच्छाकरिकै ब्रह्माजीकेसमीप जाताभया,॥ताब्रह्माकेसमीपजा इकै सोआश्वलायननामाऋषि याप्रकारकाप्रश्न करताभया ॥ आश्वलायनउवाच ॥ हेभगवन् ॥ जाब्रह्मविद्यासर्वविद्याओंतैंश्रेष्ठ

है तथा शमदमादिकसाधनोंयुक्त विद्वान्पुरुष आपणेहृदयकमलविषे जिसब्रह्मविद्याकूं सर्वदा सेवनकरे हैं ॥ तथा जाब्रह्मविद्या विषयास
क्तअनधिकारीपुरुषोंकेताईं नहींदेणेयोग्यहै ॥ तथा जिसब्रह्मविद्याकेप्रभावतैं यहविद्वान्पुरुष सर्वपापोंकापरित्यागकरिकै परब्रह्मभावकूं
प्राप्तहोवै हैं॥ऐसीब्रह्मविद्याकूं आप भलीप्रकारजाणतेहो ॥ यातैं साब्रह्मविद्या हमारेताईं आपकृपाकरिकै उपदेशकरो ॥ हेशिष्य ॥ इस
प्रकार जभी ताआश्वलायनऋषिनैं ब्रह्माकेप्रति प्रश्नकऱ्या ॥ तभी सोब्रह्मा ताअश्वलायनऋषिकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥
ब्रह्मउवाच ॥ हेआश्वलायन ॥ जिसअधिकारीपुरुषकी गुरुशास्त्रकेवचनोंविषे आस्तिक्यबुद्धिरूपश्रद्धा है ॥ तथाजिसअधिकारीपुरुषकी
ब्रह्मउपदेष्टागुरुविषे परमभक्ति है ॥ तथा जोअधिकारीपुरुष ब्रह्माकारवृत्तिरूपध्यानकरिकैयुक्त है॥सोअधिकारीपुरुषही ब्रह्मज्ञानकूंप्राप्तहो
वै है ॥ श्रद्धा भक्ति ध्यान यातीनोंतैंरहितपुरुषकूं साब्रह्मज्ञानकी प्राप्तिहोवैनहीं ॥ यातैं अन्वयव्यतिरेककरिकै श्रद्धा भक्ति ध्यान यहतीं
नोंही ताब्रह्मज्ञानकेसाधन हैं ॥ हेआश्वलायन ॥ जैसे श्रद्धा भक्ति ध्यान यहतीनों ब्रह्मज्ञानकेसाधन हैं ॥ तैसे संन्यासआश्रमभी ता
ब्रह्मज्ञानकासाधनहै ॥ काहेतैं याअधिकारीपुरुषोंकूं अग्निहोत्रादिक श्रौतस्मार्त्तकर्मोंकरिकैभी ताब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिहोवैनहीं॥ तथा याअ
धिकारीपुरुषोंकूं पुत्रपोत्रादिकप्रजाकरिकैभी ताब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥तथा याअधिकारीपुरुषोंकूं कर्मउपासनारूपदेवधनकरिकै त
थासुवर्णादिरूपमानुषधनकरिकैभी ताब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥किंतु एकत्यागरूपसंन्यासआश्रमकरिकैही याअधिकारीपुरुषोंकूं ताब्र
ह्मज्ञानकीप्राप्तिहोवैहै॥हेआश्वलायन ॥ कर्म प्रजा धन यातीनोंकरिकै जोकदाचित् सोब्रह्मज्ञान उत्पन्नभीहोवैहै॥तौभी सोब्रह्मज्ञान परो
क्षहीहोवैहै॥अपरोक्षहोवैनहीं ॥ केवलसंन्यासआश्रमकरिकैही याअधिकारीपुरुषोंकूं ताअपरोक्षज्ञानकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तहांश्रुति ॥ नक
र्मणा नप्रजया धनेन त्यागेनैके अमृतत्वमानशुः ॥ अर्थयह ॥ कर्मोंकरिकै तथापुत्रादिकप्रजाकरिकै तथासुवर्णादिकधनकरिकै अमृ
तभावकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ किंतु पूर्वविद्वान्पुरुष कर्म प्रजा धन यातीनोंकेत्यागरूपसंन्यासकरिकैही ताअमृतभावकूंप्राप्तहोतेभये हैं
॥ १ ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकैनिरूपणकरै हैं॥ हेआश्वलायन ॥यहआनंदस्वरूपब्रह्म स्वर्गलोकतैंपरहुआभी अमृतरूपहै ॥तथासो

ब्रह्म सर्वजीवोंकेहृदयरूपगुहाविषेस्थितहै ॥ यातैं स्वयंप्रकाशरूपहै॥ऐसे स्वप्रकाशनित्यअपरोक्षब्रह्मका जोपरोक्षरूपकरिकैज्ञानहै ॥सो
ज्ञान भ्रांतिरूपहै ॥ताभ्रांतिज्ञानतैं मोक्षकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ किंतु अपरोक्षब्रह्मज्ञानतैंही मोक्षकीप्राप्तिहोवै है ॥ऐसेब्रह्मकेअपरोक्षज्ञानकूं
सर्वप्रतिबंधतैंरहित संन्यासीही प्राप्तहोवै हैं ॥ इतरपुरुष ताअपरोक्षज्ञानकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ हेआश्वलायन॥ जेसंन्यासी ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुख
तैं वेदांतवचनोंका श्रवणकरिकै तिनवचनोंका अद्वितीयब्रह्मविषे तात्पर्यनिश्चयकरैहैं ॥ तथा जेसंन्यासी ताश्रवणकरेहुएअर्थका वारंवार
मननकरैहैं तथा तामननकऱ्येहुएब्रह्मविषे निरंतर चित्तकेवृत्तियोंकाप्रवाहरूप निदिध्यासनकरै हैं ॥ तिनसंन्यासियोंकूं जोकदाचित् ब्रह्म
लोककेप्राप्तिकीइच्छारूप प्रतिबंधहोवै है ॥ तौ तेसंन्यासी इसशरीरविषे ताब्रह्मज्ञानकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु तेसंन्यासी याशरीरकापरि
त्यागकरिकै ताब्रह्मलोकविषेजाइकै ताब्रह्मज्ञानकूंप्राप्तहोवै हैं॥ और जिनसंन्यासियोंकूं ताब्रह्मलोककेप्राप्तिकीइच्छानहीं है॥ तेसंन्यासीतौ
इसीजन्मविषे ताब्रह्मज्ञानकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ और हेआश्वलायन॥तेसंन्यासी जभी ब्रह्मलोकविषेजावैहैं ॥ तभी तिनसंन्यासियोंकूं तिसीजा
णेकालविषेही ताब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिहोवैनहीं॥ किंतु जभी ताहिरण्यगर्भरूपब्रह्माके आयुषकीसमाप्तिहोवै है॥तभीहीतेसंन्यासी ब्रह्माकेसाथ
परब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ यातैं ताब्रह्मलोककेप्राप्तिकीइच्छाकापरित्यागकरिकै यहअधिकारीपुरुष ताब्रह्मभावकीप्राप्तिवासते याप्रका
रकायोगकरै ॥ तहां यहअधिकारीपुरुष किसीएकांतनिर्मलदेशविषे प्रथमदर्भोंकूंबिछावै ॥ तिनदर्भोंऊपर मृगचर्मबिछावै ॥ तामृगचर्म
ऊपर वस्त्रबिछावै ऐसेआसनऊपर पद्मादिकआसनकूंबांधिकरिकैस्थितहोवै॥ और शास्त्रकीरीतिसैं अंतरशौचकूं तथाबाह्यशौचकूंकरिकै
तथाश्रमतैंरहितहोइकै सोयोगीपुरुष आपणेमस्तककूं तथाग्रीवाकूं तथा शरीरकूं दंडकीन्याईं सूधाराखै ॥ इसप्रकार आसनकूंदृढकरिकै
सोयोगीपुरुष नेत्रादिकबाह्यइंद्रियोंका तथामनरूपअंतरइंद्रियका निरोधकरै ॥ तथा आपणे गुरुकूं श्रद्धाभक्तिपूर्वक नमस्कारकरै ॥
तिसतेअनंतर सोयोगीपुरुष पंचछिद्रयुक्तहृदयकमलकाध्यानकरै ॥ कैसाहैसोहृदयकमल ॥ सूर्य चंद्रमा अग्नि यातीनोंकरिकैयुक्तहै
तथा रागद्वेषादिकराजसधर्मोंतैंरहितहै॥तथा मोहादिकतामसधर्मोंतैंरहितहै ॥ ऐसे हृदयकमलकाध्यानकरिकै सोयोगीपुरुष ताहृदय

कमलविषे निराकारब्रह्मकाध्यानकरे ॥ कैसाहैसोनिराकारब्रह्म ॥ सर्वदुःखोंतैंरहितहै ॥ तथा अद्वितीयआनंदस्वरूपहै॥तथा मनवाणीक रिकेअचिंत्यहै ॥ तथा शब्दस्पर्शादिकगुणोंतैंरहितहै ॥ तथा जन्मतैंरहितहै ॥ तथा शिवरूपहै ॥ तथा मायातैंरहितहै ॥ तथा देशका लवस्तुपरिच्छेदतैंरहितहै ॥ तथा श्वासोंकीन्याईं विनाहीप्रयत्नतैं चारवेदोंकूंउत्पन्नकरणेहाराहै ॥ तथा जन्ममरणादिकविकारोंतैंरहितहै॥ तथा एकअद्वितीयरूपहै ॥ तथा स्वयंज्योतिरूपहै ॥ तथा सर्वशक्तिसंपन्नहै ॥ तथा रूपादिकगुणोंतैंरहितहै ॥ तथा आश्चर्यकरणेहाराहै इसप्रकार तानिर्गुणब्रह्मकाध्यान सोयोगीपुरुषकरै॥ तानिर्गुणब्रह्मकेध्यानतैं तायोगीपुरुषकूं सुखनहीं तानिर्गुणब्रह्मकासाक्षात्कारहोवै है ॥ और हेआश्वलायन ॥ जिसअधिकारीपुरुषकाचित्त तानिर्गुणब्रह्मकेध्यानकरणेविषे समर्थनहींहोवै ॥ सोअधिकारीपुरुष ताहृदयकमल विषे याप्रकार सगुणब्रह्मकाध्यानकरै ॥ केनउपनिषद्विषे जाउमानामादेवी ब्रह्मविद्यारूपकरिकै वर्णनकरी है॥सारूपयौवनअवस्थासंपन्न उमादेवीजिसपरमेश्वरकी स्त्रीरूपकरिकैस्थितहै ॥ कैसीहैसाब्रह्मविद्यारूपउमादेवी ॥ यालोकविषे नानाप्रकारकेजातिवाली जेस्त्रियां हैं ॥ तिनसर्वस्त्रीरूपप्रतिबिंबोंका जाउमादेवीबिंबरूपहै॥तथा जाउमादेवी सर्वशक्तिरूपहै॥तथा जाउमादेवी महदादिकसर्वतत्वरूपहै॥ और जिसउमादेवीकेअनुग्रहकरिकै इंद्रादिकदेवता तथामनुष्यादिकजीव स्वर्गादिकोंकूंप्राप्तहोवै हैं॥तथा मोक्षकूंप्राप्तहोवै हैं॥तथा इसलोकविषे नानाप्रकारकेसुखोंकूंप्राप्तहोवै हैं॥और जगत्कीउत्पत्तिरूप जोब्रह्माकाकर्म है॥तथाजगत्कीस्थितिरूप जोविष्णुकाकर्म है॥तथा जगत्का संहाररूप जोरुद्रकाकर्म है॥तथा इंद्रादिकदेवताओंका जोनानाप्रकारका ऐश्वर्य है॥तेसंपूर्ण जगत्केउत्पत्तिस्थितिआदिककर्म जिसउमा देवीकेकृपाकटाक्षोंतैं उत्पन्नहोवै हैं ॥ और जिसउमादेवीके क्रूरकटाक्षोंतैं तिनसंपूर्णोंकानाशहोवै है ॥ और जिसउमादेवीकेदोनोंस्तन पीनउन्नतहैं ॥ तथा जिसउमादेवीके जघनस्थान विशालहैं ॥ तथा जिसउमादेवीकामुख चंद्रमाकेसमानहै ॥ तथा जिसउमादेवीके दोनोंनेत्र मीनकेसमानचंचलहैं ॥ तथा जिसउमादेवीकेकेश भ्रमरकेसमान श्याम हैं ॥ तथा जिसउमादेवीकेसर्वअंग सुंदर हैं ॥ तथा जाउमादेवी महादेवकेधैर्यकूं हरणेहारी है ॥ और जाउमादेवी विचित्रकांचीसूत्रकरिकै शोभायमान है ॥ तथा जा

उमादेवीनानाप्रकारकेरत्नोंकरिकैजडितकंकण अंगद नूपुरकरिकैशोभायमानहै।तथाजाउमादेवी मुक्तादिकरत्नोंकरिकैजडितहारोंकरिकै तथाकंठकेभूषणोंकरिकै शोभायमानहै ॥ तथा जाउमादेवी नानाप्रकारकेरत्नोंकरिकैजडित विचित्रमुकुटकरिकै तथाकुंडलादिकभूषणों करिकै शोभायमान है ॥ तथा जिसउमादेवीकास्वरूप उपमानतैंरहित है ॥ तथा जाउमादेवी भूषणोंकूंभीभूषितकरणेहारी है ॥ तथा जाउमादेवी सर्वजगत्काकारणरूपकरिकै अनादीहुईभी षोडशवर्षकी अवस्थावाली है॥ऐसीउमादेवीकेसहितविराजमान तथाताउ मादेवीकापति जोश्रीमहादेवहैं॥सोमहादेवकैसेहैं।ताउमादेवीतैंभी अधिकगुणवालेहैं॥तथा जोमहादेव ब्रह्मादिकसर्वदेवतावोंकाप्रभुहै।तथा जोमहादेव नानाप्रकारकेभूषणोंकरिकै शोभायमान है॥तथा जोमहादेव व्याघ्रकेचर्मरूपीवस्त्रोंकूं धारणकरणेहारा है॥अथवा दिशारूपी वस्त्रोंकूंधारणकरणेहारा है ॥ तथा जिसमहादेवकेसर्वअंग भस्मकरिकैयुक्त हैं ॥ तथा जोमहादेव ब्रह्माकेमस्तकोंकीमालाकरिकै शोभा यमानहै॥तथा जिसमहादेवकाललाटस्थल द्वितीयाकेचंद्रमाकरिकै शोभायमानहै॥ तथाजिसमहादेवनै आपणीजटाओंविषे श्रीगंगाजीकूं धारणकऱ्याहै।तथा जिसमहादेवकामुख मंदमंदहास्यकरिकै युक्तहै तथा जिस महादेवकाशरीर गोकेक्षीरसमान उज्ज्वलहै॥ तथाजिसमहादे वकाशरीर कोटिकंदर्पकेसमान सुंदर है॥तथा जिसमहादेवकेशरीरकीप्रभा कोटिसूर्यकेसमान है॥ तथा जोमहादेव यासर्वजगत्के उत्पत्ति स्थितिलयका कारण है तथा जोमहादेव आप उत्पत्ति स्थिति लयतैं रहित हैं॥तथा जिसमहादेवका मुखरूपकमल पूर्णिमाकेचंद्रसमान सुंदर है ॥ तथा जिसमहादेवके सूर्य चंद्रमा अग्नि यह तीनोंनेत्र अत्यंत तेजस्वी हैं ॥ तथा जिसमहादेवके सर्वअंग सुंदर है ॥ तथा जिस महादेवकीग्रीवाशंखकीन्याईं तीनरेखावोंकरिकै युक्त है ॥ तथा जोमहादेव आपणी शोभाकरिकै जीवोंकेमनकूंहरणेहारा है ॥ तथाजिसमहादेवकी दोनोंभुजा जानुपर्यंत दीर्घ हैं ॥ तथा जिस महादेवका शेषनाग यज्ञोपवीतरूप है ॥ तथा जोमहादेव पद्म आसनकूंबांधिकै तथानासिकाकेअग्रभागविषे दृष्टिदेकै स्थितहै ॥ और जिसमहादेवकी ईशान तत्पुरुष अघोर सद्योजात वामदेव यह पंचमूर्तिहैं॥तथा जोमहादेव तिनपंचमूर्तिकरिकै यथाक्रमतैं याजगत्की उत्पत्ति स्थिति संहार प्रवेश अनुग्रह यापंचकार्योंकीसिद्धिकरेहै॥

तथा जोमहादेव सनकादिकमुनियोंकाभी गुरूरूपहै॥तथा जोमहादेव स्वयंज्योतिस्वरूपहै॥तथा अद्वितीयआनंदस्वरूपहै॥ और समष्टि स्थूलप्रपंचकूं उत्पन्नकरणेहारा तथादेवतामनुष्यादिकोंकूं आपणीआज्ञाविषेचलावणेहारा जोहिरण्यगर्भभगवान्है ॥ सोहिरण्यगर्भभगवान्भी जिसमहादेवतैं उत्पन्नभयाहै ॥ तथा जोमहादेव यासर्वविश्वकाईश्वरहै ॥ तथा जोमहादेव आपणेस्मरणमात्रकरिकै भक्तजनोंके सर्व पापोंकूंनाशकरणेहाराहै ॥ ऐसे उमादेवीसहित नीलकंठमहादेवका सोयोगीपुरुष ताआपणेहृदयकमलविषे ध्यानकरै ॥ अथवा सोयोगी पुरुष ताउमादेवीसहित महादेवका सूर्यमंडलविषेध्यानकरै ॥ अथवा सोयोगी पुरुष तामहादेवका अग्निविषेध्यान करै ॥ अथवा सोयोगीपुरुष तामहादेवका चंद्रमंडलविषेध्यानकरै ॥ अथवा सोयोगीपुरुष तामहादेवका कैलासादिकपर्वतोंविषे ध्यानकरै ॥ हेआश्वलायन॥ इसप्रकार ताउमादेवीसहित महादेवरूपसगुणब्रह्मकेध्यानकरिकै जभी तायोगीपुरुषकामन स्थिरस्ताकूंप्राप्तहोवै है ॥ तभी सोयोगीपुरुष सुखैनहीं तानिर्गुणब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपकरिकै साक्षात्कारकरै है ॥ कैसाहैसोनिर्गुणब्रह्म मायाशक्तिकूंअंगीकार करिकै यासर्वजगत्काकारणहै ॥ तथा मनवाणीका अविषयहै ॥ तथा अज्ञानरूपतमतैंपरहै॥ तथा ताअज्ञानरूपतमतैंरहितहै ॥ तथा बुद्धिआदिकसर्वप्रपंचकासाक्षीरूपहै ॥ तथा बुद्धिआदिकोंतैंरहितहै ॥ ऐसेअद्वितीयानिर्गुणब्रह्मकूं सोयोगी पुरुष आपणाआत्मारूपक रिकैजाने है ॥ अब तानिर्गुणब्रह्मविषे अद्वितीयरूपता स्पष्टकरिकैनिरूपणकरै हैं ॥ हेआश्वलायन ॥ जिसब्रह्मकूं उमादेवीसहित सगुण रूपकरिकैवर्णनकऱ्याहै ॥ सोसगुणब्रह्म निर्गुणब्रह्मतैंभिन्ननहीं है ॥ किंतु उपाधिकेपरित्यागकियतैं सोसगुणब्रह्मही निर्गुणब्रह्मरूप है ॥ ऐसेअद्वितीयब्रह्मतैंभिन्न दूसराकोईपदार्थ है नहीं ॥ किंतु ब्रह्माविष्णु रुद्र इंद्रादिकदेवता अग्नि सूर्य चंद्रमा काल एकादशइंद्रिय चतुर्दश अंतःकरण पंचप्राण आकाशादिक पंचभूत पूर्वादिकदशदिशा जरायुजादिकचारभूतप्राणी ब्रह्मांड विराट् हिरण्यगर्भ जीव ईश्वर माया तामायाकाकार्यरूप स्थूल सूक्ष्म जगत् भूतपदार्थ भविष्यत्पदार्थ वर्त्तमानपदार्थ इसतैंआदिलैके जितनाकीयहजगतहै ॥ सोसंपूर्णजगत् ताब्रह्मरूपही है॥ताब्रह्मतैंभिन्न कोईभीपदार्थनहीं है॥तहांश्रुति॥सर्वंखल्विदंब्रह्म॥ अर्थयह॥ यहसंपूर्णजगत् ब्रह्मरूपही है॥ हेआश्वलायन ॥

जैसे स्वप्नअवस्थाविषे एकहीस्वप्नद्रष्टापुरुष नानाभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे सोएकहीपरमात्मादेव मायाकेसंबंधतैं नानाजगत्रूपकरिकै स्थितहोवैहै ॥ और जैसे वास्तवतैं गंधर्वनगरतैंरहितजोआकाशहै ॥ ताआकाशविषे सोगंधर्वनगर उत्पत्ति स्थिति लयकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तैसे वास्तवतैं सर्वद्वैतप्रपंचतैंरहित जोयह आनंदस्वरूपआत्माहै ॥ ताआत्मादेवविषे यहद्वैतप्रपंच उत्पत्ति स्थिति लयकूं प्राप्तहोवैहै ॥ हेआश्वलायन ! ऐसे अद्वितीयपरमात्मादेवकेज्ञानतैंविना दूसराकोई मुक्तिकेप्राप्तिकामार्ग अभीहैनहीं॥ और पूर्वहुआनहीं ॥ और आगे होवैगानहीं ॥ किंतु मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकाआत्मज्ञानहीं तामुक्तिकेप्राप्तिकामार्गहै ॥ तहांश्रुति॥नान्यःपंथाविद्यतेऽयनाय॥अर्थयह ॥ मोक्षकीप्राप्तिवासतै आत्मज्ञानतैंविना दूसराकोई मार्ग है नहीं ॥ किंतु मैंब्रह्मरूपहूं यह आत्मज्ञानहीं तामोक्षकेप्राप्तिकामार्गहै ॥ १ ॥ हेआश्वलायन ॥जोअधिकारीपुरुष आपणेआनंदस्वरूपआत्माकूं सर्वभूतोंविषे व्यापकदेखेहै ॥ तथा तिनसर्वभूतोंकूं याआत्मादेवविषे कल्पितरूपकरिकैदेखे है ॥ सोअधिकारीपुरुषही ताब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ऐसेआत्मज्ञानतैंविना दूसरेकिसीउपायकरिकै ताब्रह्मभाव कीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ यातैं याअधिकारीपुरुषनैं ताआत्मज्ञानकूं अवश्यकरिकैसंपादनकरणा ॥ और हेआश्वलायन ॥ यापूर्वकहीरीतिसैं जोअधिकारीपुरुष ताआत्मदेवकेज्ञानणेविषेसमर्थनहींहोवै ॥ सोअधिकारीपुरुष प्रथम याप्रकारकाध्यानकरै ॥ जैसे यहलोक एककाष्ठ रूपअरणिकूंनीचेराखिकै तथाएककाष्ठरूपअरणिकूंऊपरराखिकै तथा तिनदोनोंअरणियोंकेमध्यविषे एकदीर्घकाष्ठरूपमंथा राखिकैतथातामंथाकेसाथ रज्जुबांधिकै तारज्जुकूं वारंवारआकर्षणकरिकै अग्निकूंप्रगटकरै हैं।तैसे यहअधिकारीपुरुष आपणेशरीरकूं नीचे की अरणिरूपकरिकै ध्यानकरै॥और अकार उकार मकार यातीनमात्रावालेप्रणवकूं ऊपरकीअरणिरूपकरिकैध्यानकरै ॥ और मंथनकूं मंथारूपकरिकै ध्यानकरै ॥ और ताध्यानरूपक्रियाकूं रज्जुरूपकरिकैध्यानकरै ॥ इसप्रकारचिंतनकरिकै सोअधिकारीपुरुष निरंतर ताध्यानकी आवृत्तिरूपमंथनकूंकरै इसप्रकार मंथनकरिकै याअधिकारीपुरुषकूं याशरीरविषे अद्वितीयआत्मारूपअग्नि प्रगटहोवैहै ॥सो अद्वितीयआत्मरूपअग्निएकवारप्रगटहुआभीकामक्रोधादिकसर्वपाशोंकूंदग्धकरै है॥ तिनकामादिकसर्वपाशोंकेदग्धहुएतैंअनंतरयहअधि

कारीपुरुष ताअद्वितीयब्रह्मरूपकरिकेस्थितहोवेहै॥हेआश्वलायन॥जोजीवमैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकेज्ञानरूपअग्निकरिकेकामादिकसर्वपाशों कूं दाहकरेहै ॥ सोत्वंपदार्थरूपजीव तत्पदार्थरूपब्रह्मतैंभिन्ननहीं है ॥ किंतु सोजीव केवलब्रह्मरूपहीहै॥ शंका ॥हेभगवन् ॥ यहजीव जो ब्रह्मरूपहीहै ॥ तो याजीवकूं जन्ममरणरूपसंसारकीप्राप्ति किसवासतेहोवेहै ॥ समाधान ॥ हेआश्वलायन ॥ चेतनकेआश्रितरहणेहारी तथाचेतनकूंविषयकरणेहारी जाअविद्यारूपमायाहै ॥ तामायाकरिकेआवृतहुआ यहब्रह्मही जीवरूपहोवेहै ॥ यातैं ताअज्ञानकरिकेही यहजीव संसारकूंप्राप्तहोवेहै ॥ और तिसीमायाकरिकेआवृतहुआ सोपरमात्मादेव नानाउपाधियोंविषेनिवासकरेहै॥तथापुरुषसंज्ञाकूंप्राप्त होवेहै ॥ औरहेआश्वलायन ॥ तामायाकेसंबंधकरिकेही यहआत्मादेवजीवभावकूंप्राप्तहोइकै नानाप्रकारकेपुण्यपापकर्मोंकूंकरेहै॥ तथा तिनपुण्यपापकर्मोंकेसुखदुःखरूपफलकूंभोगे है ॥ और तिसमायाकरिकेयुक्तहुआ यहआत्मादेव जाग्रत्अवस्थाविषे तथास्वप्न अवस्थाविषे नानाप्रकारकेशरीरोंकूं ग्रहणकरेहै ॥ और सोआत्मादेव वास्तवतैं जन्यभोगोंकीतृप्तितैं रहितहुआभी तामायाके संबंधतैं तिससजातिवालेशरीरोंविषेस्थित अनेकभोगोंकरिकै तृप्तिकूंप्राप्तहोवेहै ॥ और सोइहीआत्मादेव मूर्च्छाकेसमान सुषुप्ति अवस्थाकूंप्राप्तहोइकै तहां विक्षेपरूपप्रतिबंधतैंरहितहोइकै आत्मास्वरूपआनंदकूं भोक्ताहुआभी जिसमायाकेसंबंधतैं ताआत्मास्वरूप आनंदकूंजाणतानहीं ॥ और जैसे यालोकविषे किसीमंत्रऔषधादिकों करिकै मूढअवस्थाकूंप्राप्तहुआ यहपुरुष आपणेब्राह्मणत्व क्षत्रि यत्व आदिकस्वरूपोंकूंजाणतानहीं॥तैसेयासंसारविषे मायाकरिकै मूढअवस्थाकूंप्राप्तहुआ यहजीवात्मा आपणेवास्तवस्वरूपकूं जाणता नहीं ॥ और जैसे यालोकविषे स्वभावतैं चोरीआदिकदोषोंतैंरहितहुआभी कोईधर्मात्मापुरुष जभी चौरादिकदुष्टपुरुषोंकेसंगकूंप्राप्त होवेहै ॥ तभीसोधर्मात्मापुरुषभी बंधनकूंप्राप्तहोवेहै ॥ तैसे वास्तवतैं जन्ममरणादिकसंसारतैंरहितहुआभी यहजीवात्मा जभी तामाया केसंगकूंप्राप्तहोवे है ॥ तभी यहजीवात्मा जन्ममरणादिकसंसारकूंप्राप्तहुएकीन्याईं प्रतीतहोवेहै ॥ और जैसे वास्तवतैं रूप रहितआकाशविषे यह पुरुष मोहके वशतैं नीलरूपकूं देखे है ॥ तैसे वास्तवतैं मायारहित आत्माविषे सा मायाभी माया

॥ ८८ ॥

कारिकेही प्रतीतहोवे है॥यातैं जैसे याअद्वितीयआत्माविषे यहजगत् मायाकरिकेकल्पितहोणेतैं मिथ्याही है ॥ तैसे सामायाभी माया कारिकेकल्पितहोणेतैं मिथ्याहीहै॥यद्यपि आपणीसिद्धिविषे आपणीअपेक्षाहुए आत्माश्रयदोषकीप्राप्तिहोवे है॥तथापि दुर्घटकार्योंकेकर णेकरिकै अघटितघटनापटीयसी यानामकूंप्राप्तहुई तामायाविषे सोआत्माश्रयदोष संभवैनहीं ॥ और हेआश्वलायन ॥ जैसे सर्व शास्त्रोंकेजानणेहारा विद्वान्पुरुषभी स्वप्नअवस्थाविषे निद्रादोषकरिकै नानाप्रकारकेमोहकूंप्राप्तहोवे है ॥ तैसे वास्तवतैं सर्वमोहतैंरहित हुआभी यहआत्मादेव तामायारूपदोषकरिकै यासंसारविषे नानाप्रकारके मोहकूंप्राप्तहोवे है ॥ और जैसे निद्राविषे सोयाहुआयह पुरुष तानिद्राकेनाशपर्यंत तास्वप्नदुःखोंकूं प्राप्तहोवे है ॥ तैसे यहजीवात्माभी तामायारूप निद्राकेनाशपर्यंत यासंसारस्वप्नकेअनेकदुः खोंकूंप्राप्तहोवे है ॥ और जैसे तास्वप्न अवस्थाविषे सिंहसर्पादिकोंकूंदेखिकै दुःखकरिकैरुदन करताहुआ तथाहिडकीशब्दकेसमान भयानकशब्दोंकूंकरताहुआ जोस्वप्नद्रष्टापुरुष है ॥ तास्वप्नद्रष्टापुरुषकूं कोईदयालुपुरुष भेरीआदिकोंकेऊँचेशब्दकरिकै जाग्रतकरे है ॥ तैसे मायारूपी निद्राविषे यासंसाररूपस्वप्नकरिकैपीडित तथातीनतापकरिकैयुक्त जोयहजीवात्मा है ॥ ताजीवात्माकूं यहब्रह्मवेत्ता दयालुगुरु महावाक्यरूपभेरीके शब्दकरिकै तामायारूप निद्रातैंजाग्रतकरे है ॥ और जैसे जाग्रतअवस्थाकूंप्राप्तहुआ सोस्वप्नद्रष्टापुरुष पुनः तास्वप्नसंबंधीदुःखोंकूंप्राप्तहोवैनहीं॥तैसे ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशकरिकै अविद्यारूपनिद्रातैं ब्रह्मज्ञानरूपजाग्रतअवस्थाकूंप्राप्तहुआ यह अधिकारीपुरुष पुनः यासंसाररूपस्वप्नकेदुःखकूंप्राप्तहोवैनहीं॥ हेआश्वलायन ॥ ऐसेब्रह्मज्ञानकीप्राप्ति याजीवोंकूं अनेकजन्मोंकेपुण्यकर्म करिकेहोवे है॥ यातैं साब्रह्मज्ञानरूपतुरीय अवस्था अत्यंत दुर्लभ है ॥ किसीभाग्यवान्पुरुषकूंही प्राप्तहोवे है ॥ शंका ॥ हेभग वन् ॥ तुरीयनाम चतुर्थका है ॥ सो तीनकी अपेक्षाकरिकै तुरीयहोवे है ॥ यातैं इहांप्रसंगविषे ब्रह्मज्ञानरूप तुरीयअवस्थाकूं किस तीन अवस्थावोंकी अपेक्षाकरिकै तुरीयरूपता है ॥ समाधान ॥ हेआश्वलायन ॥ जाग्रत्रूपस्थूलअवस्था तथास्वप्नरूपसूक्ष्म अवस्था तथासुषुप्तिरूप कारणअवस्था यहतीनोंअवस्था याजीवात्माके क्रीडाकरणेकास्थान है॥यातैं तिनतीनोंअवस्थावोंकूं पुर कहे

है ॥ तेतीनोंअवस्थारूपपुर तात्रह्मज्ञानरूप तुरीयअवस्थाकीप्राप्तिहुएभी नाशकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ तात्रह्मज्ञानतैंविना दूसरेकिसी उपायकरिके नाशहोवैनहीं ॥ यातैं तिनकल्पिततीनअवस्थावोंकीअपेक्षाकरिके तात्रह्मज्ञानरूपअवस्थाविषे तुरीयरूपता संभवहोइसकै है॥ और हेआश्वलायन ॥ जबपर्यंत याजीवात्माकूं तात्रह्मज्ञानरूपतुरीयअवस्थाकीप्राप्ति नहींहोवे है॥ तबपर्यंत यहजीवात्मा पूर्वलेपुण्यपापकर्मोंकेअनुसार वारंवार मृत्युकूंप्राप्तहोइकै वारंवार स्थूलशरीरोंकूंग्रहणकरे है ॥ तथा वारंवार तिनस्थूलशरीरोंका परित्यागकरे है ॥ और यहजीवात्मा जन्मकूंप्राप्तहोइकै बाल्यअवस्थाकूंप्राप्तहोवेहै॥ और तावाल्यअवस्थातैंअनंतर यौवनअवस्थाकूंप्राप्तहोवे है॥ और तायौवन अवस्थातैंअनंतर वृद्धअवस्थाकूंप्राप्तहोवे है॥ और तावृद्धअवस्थातैंअनंतर मरणअवस्थाकूंप्राप्तहोवे है ॥ और तामरणअवस्थातैंअनंतर पुनःजन्मकूंप्राप्तहोवे है ॥ इसप्रकार पुण्यपापकर्मकेवशतैं यहजीवात्मा घटीयंत्रकीन्याईं यासंसारविषे भ्रमणकरे है ॥ यहही ताजीवात्माकी तिनस्थूलादिकतीनपुरोंविषे क्रीडा है ॥ हेआश्वलायन ॥ याजीवात्माकूं जबपर्यंत मैं ब्रह्मरूपहूं याप्रकारकेआत्मज्ञानकी प्राप्तिनहींभई ॥ तबपर्यंतही यहजीवात्मा तापुण्यपापकर्मकेअनुसार अनेकप्रकारके ऊंचनीचशरीरोंकूं प्राप्तहोवे हैं ॥ और तिनपुण्यपापरूप प्रारब्धकर्मके अनुसार मरणकूं प्राप्तहोवे है ॥ ताआत्मज्ञानकी प्राप्तितैंअनंतर यहजीवात्मा पुनःजन्ममरणकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ और हेआश्वलायन ॥ यहजीव गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं जिसआत्माके तुरीयरूपकूंजानिकै जन्ममरणतैंरहितहोवे है ॥ सोआत्माका तुरीय स्वरूपकैसा है ॥ यासर्वजगत्का आधाररूप है ॥ तथा केवलश्रुतिकरिकै प्रतिपादनकरणेयोग्य है ॥ तथा स्वयंज्योतिआनंदस्वरूप है तथा यासर्वजगत्का कारण है ॥ तथा वास्तवतैं कार्यकारण भावतैंरहित है ॥ ऐसे तुरीयपरमात्मादेवतैंही यहप्राण उत्पन्नहोवे है ॥ तथा मन उत्पन्नहोवे है ॥ तथा वाकादिकइंद्रिय उत्पन्नहोवे है ॥ तथा आकाश वायु तेज जल पृथिवी यहपंचभूत उत्पन्नहोवे हैं ॥ ऐसे तुरीयपरमात्मा देवकास्वरूप ब्रह्मवेत्ता महात्मागुरु अधिकारीशिष्योंके प्रतियाप्रकार आत्मारूपकरिकै उपदेशकरे हैं ॥ ॥ ८९ ॥ हेशिष्य॥जो परब्रह्म सर्वकाआत्मारूपहै॥तथा सर्वविश्वकाआधारहै ॥ तथा तीनपरिच्छेदोंतैं रहितहै ॥ *तथा सूक्ष्मपदार्थतैं भी अत्यंत*

सूक्ष्महै ॥ तथा उत्पत्तिनाशतैंरहितहै ॥ सोअद्वितीयब्रह्मही तुमारास्वरूपहै ॥ और जोतुमारास्वरूपहै॥सोईही ताअद्वितीयब्रह्मकास्वरूपहै इसप्रकार तेब्रह्मवेत्तागुरु तिनअधिकारीशिष्योंकेप्रति जीवब्रह्मकेअभेदकाउपदेशकरे हैं ॥ हेआश्वलायन ॥ जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति यातीनअवस्थारूपप्रपंचकूं जोसाक्षीचैतन्य प्रकाशकरे है ॥ सोसाक्षीचैतन्य और जोब्रह्महै सो मैंहूं ॥ याप्रकार जोअधिकारीपुरुष जीवब्रह्मकेअभेदकूंनिश्चयकरे है ॥ सोअधिकारीपुरुष कार्यसहितअविद्यारूपसर्वबंधोंतैंरहितहोवे है ॥ और हेआश्वलायन ॥ जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति यातीनोंअवस्थाविषे यथाक्रमतैं स्थूल सूक्ष्म आनंद यहतीनप्रकारके भोग्यरहे हैं ॥ तथा विश्व तैजस प्राज्ञ यहतीन प्रकारके भोक्तारहे हैं ॥ तथा ताभोग्यपदार्थकूंविषयकरणेहारी अंतःकरणकी अथवा अज्ञानकी वृत्तिरूपभोगरहे हैं ॥ तिन भोग्य भोक्ता भोगकूं मैंशुद्धआत्मा साक्षीरूपकरिकैप्रकाशकरोंहूं ॥ यातैं मैंचैतन्यस्वरूपशुद्धआत्मा तिनभोग्यादिकतीनोंतैं विलक्षणहूं ॥ तथा सर्वदा तुरीयशिवरूपहूं ॥ तात्पर्यय ॥ विशिष्टस्वरूप यद्यपि शुद्धस्वरूपतैंभिन्ननहीं ॥ तथापि शुद्धस्वरूप विशिष्टस्वरूपतैंभिन्नहोवैनहीं यहशास्त्रकारोंकासिद्धांत है ॥ जैसे घटत्वादिकधर्मविशिष्टमृत्तिका यद्यपि शुद्धमृत्तिकातैंभिन्ननहीं है॥तथापि शुद्धमृत्तिका तावटत्वादिकधर्मविशिष्टमृत्तिकातैंभिन्नहै ॥ तैसे विश्व तैजस प्राज्ञ आदिकविशिष्टस्वरूप यद्यपि शुद्धचैतनतैंभिन्ननहीं हैं ॥ तथापि सोशुद्धचेतन तिनविशिष्टस्वरूपोंतैं भिन्नहै ॥ काहेतैं मोक्षअवस्थाविषे तिनविशिष्टस्वरूपोंकेबाधहुएभी सोशुद्धचेतन स्वरूपरहे हैं ॥ याअभिप्रायकरिकैही ॥ त्रिषुधामसुयद्भोग्यं भोक्ताभोगश्चयद्भवेत् ॥ तेभ्योविलक्षणःसाक्षी चिन्मात्रोहंसदाशिवः ॥ याश्रुतिनैं तिनविशिष्टस्वरूपोंतैं शुद्धचैतन्यकूंविलक्षणकह्याहै ॥ हेआश्वलायन ॥ इसप्रकार ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं आत्माकेवास्तवस्वरूपकूंश्रवणकरिकै यहअधिकारीपुरुष याप्रकार ताआत्माकेस्वरूपकामननकरे ॥ यहसंपूर्णजगत् मैंआत्माविषेही उत्पन्नभयाहै ॥ तथा मैंआत्माविषेही स्थितहै ॥ तथा मैंआत्माविषेही लयभावकूंप्राप्तहोवे है ॥यातैं सर्वभेदतैंरहित अद्वितीयब्रह्म मैंहूं॥ मेरेतैं भिन्न ब्रह्मनहीं है ॥ याकारणतैं सर्ववेदकीश्रुतियां मेरेकूं विश्वरूप कहे हैं ॥ तथा पुराणपुरुष कहे हैं ॥ तथा सर्वतेजोंकानिधि कहे हैं ॥

तथा संपूर्णज्ञानकर्मइंद्रियोंतैंरहित कहे हैं ॥तथा प्राणबुद्धिआदिकोंतैंरहित कहे हैं ॥ तथा भगवान्परमेश्वर कहे हैं॥ तथा सर्वज्ञ कहेहैं तथा सर्वद्वैततैंरहितअद्वितीय कहेहैं ॥ तथा मनवाणीकाअविषय कहेहैं ॥ तथा सर्ववेदोंकरिकेवेद्य कहेहैं ॥ तथा॥ सर्ववेदांतकेअर्थका प्रकाशक कहेहैं ॥ तथा सर्वविद्याकागुरु कहेहैं ॥ तथा देव कहेहैं ॥तथा सर्वप्रपंचतैंरहित कहेहैं ॥ काहेतैं जैसे निर्मलआकाशविषे गंधर्वनगर कल्पितहोवै है ॥ तैसे आनंदस्वरूप मैंअद्वितीयआत्माविषे यहमायासहित संपूर्णभूतभौतिकजगत् कल्पितहै॥ और कल्पितवस्तुतैं अधिष्ठानकाभेदहोवैनहीं ॥ यातैं याकल्पितजगत्करिकै मेरेस्वरूपविषे तीनकालमें भेदनहीं है ॥ हेआश्वलायन ॥याप्रकार आत्माकाविचारकरिकै यहअधिकारीपुरुष जिसशुद्धब्रह्मकूंप्राप्तहोवै है ॥ सोशुद्धब्रह्मकैसाहै ॥ अद्वितीयआनंदस्वरूपहै ॥ तथा सर्वबुद्धियोंविषेस्थितहै ॥ तथा ॥ सर्वबुद्धियोंकासाक्षी है ॥ तथा उत्पत्तिनाशतैंरहितहै ॥ तथा स्थूलसूक्ष्मजमत्तैंरहितहै॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार सोब्रह्मा आश्वलायनऋषिकेप्रति सगुणनिर्गुण ब्रह्मकेध्यानपूर्वक आत्मज्ञानकाउपदेशकरताभयाहै ॥ यातैं याअधिकारीपुरुषोंनैंभी ताआत्मज्ञानकी प्राप्तिवासतै निर्गुणब्रह्मकाध्यान अथवासगुणब्रह्मकाध्यान अवश्यकरिकैकरणा ॥हेशिष्य॥यह अधिकारीपुरुषजभी अंतःकरणकीमलिनतादोषकरिकै पूर्वउक्तसगुणब्रह्मकूं तथानिर्गुणब्रह्मकूं साक्षात्कारकरणेविषेसमर्थनहींहोवै॥ तभी सोअधिकारीपुरुष ताआत्मज्ञानकीप्राप्तिवासतै शीघ्रही संन्यासकूंकरैनहीं ॥ किंतु सोअधिकारीपुरुष प्रथम अंतःकरणके शुद्धिकाउपायकरै ॥ तहां अंतकरणकीशुद्धिके जितनेकीशास्त्रविषे साधनकहे हैं ॥ तिनसर्वसाधनोंविषे नमस्ते इत्यादिकरुद्राध्यायकेपाठकेसमान दूसरा कोईसाधनहैनहीं ॥ किंतु सोरुद्राध्यायकापाठही सर्वपापोंकेनिवृत्तिकरणेहाराहै यातैं यहअधिकारी पुरुष आपणेअंतःकरणकी शुद्धिवासतै श्रद्धाभक्तिपूर्वक निरंतर तारुद्रध्यायकाजपकरै ॥ तारुद्राध्यायकेजपकरिकै याअधिकारीपुरुषकूंनभी अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा वैराग्यकीप्राप्तिहोवै ॥ अथवा पूर्वउक्तगर्भदुःखोंकेविचारतैं तथामरणकालकेज्ञानतैं तथाअष्टांगयोगतैं तथाउपासनादिकोंतैं वैराग्यकीप्राप्तिहोवै तभी यहअधिकारीपुरुष तासंन्यासआश्रमकूं ग्रहणकरै ॥ हेशिष्य ॥ तासंन्यासकेग्रहण

कियेदुएभी याअधिकारीपुरुषकूं जबपर्यंत ताआत्मसाक्षात्कारकीप्राप्ति नहींहोवै॥तबपर्यंत यहअधिकारीपुरुष तारुद्राध्यायकेजपपूर्वक उमादेवीसहितमहादेवकेध्यानकूं अवश्यकरिकैकरै ॥ तामहादेवकेध्यानतैं याअधिकारीपुरुषकूं आत्मज्ञानकीप्राप्तिद्वारा मोक्षकीप्राप्ति अवश्यकरिकेहोवैहै ॥ तहांश्रुति ॥ उमासहायंपरमेश्वरंप्रभुं त्रिलोचनंनीलकंठंप्रशांतम् ॥ ध्यात्वामुनिर्गच्छतिभूतयोनिं समस्तसाक्षिंतम सःपरस्तात् ॥ अर्थयह ॥ उमादेवीसहितविराजमान. तथापरमेश्वर तथासर्वकाप्रभु तथातीननेत्रवाला तथाअत्यंतशांतस्वरूप तथानीलकंठ ऐसेमहादेवकाध्यानकरिकै यहअधिकारीपुरुष अद्वितीयब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ कैसाहैसोब्रह्म ॥ सर्वभूतभौतिकजगत्काकारणहै॥ तथा सर्वजगत्कासाक्षी है ॥ तथा अज्ञानरूपतमतैंपरहै ॥ १ ॥ हेशिष्य ॥ यहअधिकारीपुरुष तासंन्यासआश्रमकूंधारणकरिकै श्रद्धापूर्वक निरंतर ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं वेदांतशास्त्रकाश्रवणकरै ॥ तथा मनननिदिध्यासनकूंकरै ॥ तथा ब्रह्मवेत्तागुरुकीभक्तिकूंकरै ॥ तावेदांतश्रवणादिकोंकरिकै तासंन्यासीकूं ब्रह्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिहोवै है ॥ जोब्रह्मज्ञान पूर्वहम ब्रह्मउपनिषदादिकोंविषेकथनकरिआये हैं यातैं यासंन्यासियोंनैं निरंतर वेदांतशास्त्रकाही चिंतनकरणा ॥ तहांश्लोक ॥ आमृतेरामृतेःकालं नयेद्वेदांतचिंतया ॥ द्यात्रावसरंकिंचित् कामादीनांमनागपि ॥ अर्थयह ॥ संन्यासआश्रमकूंधारणकरिकै यहअधिकारीपुरुष सुषुप्तितैंलैकैमरणपर्यंत निरंतर वेदांतशास्त्रकोंचिंतनकरिकैही कालकूंव्यतीतकरै ॥ तावेदांतचिंतनकरिकै सोसंन्यासीआपणेचित्तविषे कामक्रोधादिकविकारोंकूं किंचित्मात्रभी अवसरनहींदेवै ॥ १ ॥ इसप्रकार निरंतर वेदांतचिंतनकरणेहारेसंन्यासीकूं शीघ्रही आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिहोवै है ॥ हेशिष्य ॥ ऐसे परमहंससंन्यासकरिकै याअधिकारीपुरुषकूं आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिहोवै है ॥ याअर्थविषे सर्वज्ञश्वेतकेतुही दृष्टांतहै ॥ काहेतैं सर्वसंन्यासियोंविषेश्रेष्ठ सोश्वेतकेतुनामासंन्यासी पूर्व छांदोग्यउपनिषदूकेषष्ठेअध्यायके श्रवणमननादिकोंकरिकै तथापूर्वउक्तवैराग्यादिकसाधनोंकरिकै आत्माकेवास्तवस्वरूपकूंजाणताभयाहै ॥ यातैं इदानींकालके परमहंससंन्यासियोंनैंभी श्रवणादिकउपायोंकरिकै ताआत्मज्ञानकूं अवश्यकरिकैसंपादनकरणा ॥ काहेतैं यापरमहंससंन्यासियोंका सोआत्मज्ञानकीनिष्ठारूपआ

आचारही मुख्यहै ॥ ताज्ञाननिष्ठारूपआचारतौंविरुद्धदूसरेसर्वआचारगौणहैं॥ यातैं यापरमहंससंन्यासियोंनैं दूसरेसर्वआचारोंकापरित्याग करिकै केवल ताज्ञाननिष्ठारूपआचारकूंही संपादनकरणा ॥ हेशिष्य ॥ जोतुमनैं पूर्व परमहंससंन्यासविषे प्रश्नकऱ्याथा ॥ सोइमनैं तुम्हारेप्रति तापरमहंससंन्यासकास्वरूप तथाताकेअधिकारीकास्वरूप तथाताकेवैराग्यादिकसाधनोंकास्वरूप तथाताकेग्रहणकरणेकी रीति विस्तारतैंकथनकरी ॥ अब जिसअर्थकेश्रवणकरणेकी तुम्हारेकूंइच्छाहोवै ॥ सो तुम हमारेसैंपूछो ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्रीस्वामीउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचिते प्राकृतात्मपुराणे गर्भाद्युपनिषत्सारार्थप्रकाशोनाम एकादशोऽध्यायः समाप्तः ॥ ११ ॥

इति श्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषा आत्मपुराणे एकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

॥ अथ स्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषाआत्मपुराणे द्वादशाध्यायप्रारंभः ॥

ॐ श्रीगणेशायनमः॥श्रीगुरुभ्योनमः॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः॥अथद्वादशाऽध्यायप्रारंभः ॥ पूर्वएका दशेअध्यायविषे जाबालउपनिषद् गर्भउपनिषद् अमृतनादउपनिषद् हंसउपनिषद् क्षुरिकाउपनिषद् आरुणेयउपनिषद् ब्रह्मउपनिषद् परम हंसउपनिषद् महत्उपनिषद् आत्मप्रबोधउपनिषद् कैवल्यउपनिषद् षोडशादशउपनिषदोंकाअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ अब द्वादशेअध्या यविषे सामवेदकेछांदोग्यउपनिषद्काअर्थ निरूपणकरे हैं ॥ तहां पूर्वेअध्यायोंविषे नानाप्रकारकीविचित्रकथावोंकूंश्रवणकरिकै प्रसन्नताकूं प्राप्तहुआ सोश्रद्धावान्शिष्य श्वेतकेतुकीकथाकेश्रवणकरणेवासतै पुनः आपणेगुरुकेप्रति याप्रकारकाप्रश्नकरताभया ॥शिष्यउवाच॥ हे भगवन्॥ पूर्वै ऐतरेयऋषिनैं तथाकौषीतकिऋषिनैं तथासूर्यभगवान्नैं तथाश्वेताश्वतरऋषिनैं तथाकठऋषिने तथातित्तिरिऋषिनैं तथा जाबालादिकऋषियोंनैं आपणेआपणेशिष्योंकेप्रति जाजात्रह्मविद्या कथनकरीथी॥तथा ताब्रह्मविद्याके जितनैंकी वैराग्य योग उपासना संन्यास आदिकसाधन कथनकरे थे॥तिनसर्वसाधनोंसहित सासंपूर्णब्रह्मविद्या हमनैंआपकेमुखतैं श्रवणकरी॥तथा ताब्रह्मविद्याकेप्रसंगतैं नानाप्रकारकेविचित्रआख्यानभी हमनैं आपकेमुखतैंश्रवणकरे ॥ हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणकेप्रथमअध्यायविषे आपनैं ऋग्वेदके ऐतरेयउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा॥ ताप्रथमअध्यायविषेयहवार्त्ता आपनैं कथनकरीथी॥प्रजाकूंदुःखीदेखिकरिकै करुणाकरिकैयु क्तहुए सनकादिकमुनि ताअधिकारीप्रजाकेहितवासतै ब्रह्मात्मज्ञानकाउपदेशकरतेभये ॥ तथा तिनअधिकारीपुरुषोंविषे कोईवामदेवना माअधिकारी मृत्युकूंप्राप्तहोइकै माताकेगर्भविषे स्थितहोइकै तिनविचारवान्अधिकारीपुरुषोंकेहितवासतै ब्रह्मात्मज्ञानकाउपदेशकरताभ या जिसउपदेशकेविचारकरणेतैंयाअधिकारीपुरुषोंकूं करामलककीन्याईं देहादिकजडसंघाततैंविलक्षणसाक्षीआत्माका ब्रह्मरूपकरिकैज्ञान होवे है ॥ तथा जिसउपदेशकेश्रवणमननकियेतैं विषयासक्तकामीपुरुषोंकूंभी आपणेशरीरविषे तथास्त्रीपुत्रादिकोंकेशरीरविषे तीव्रवैराग्य उत्पन्नहोवे है॥यहसंपूर्णवार्त्ता ताप्रथमअध्यायविषेकथनकरीथी॥और हेभगवन्॥याआत्मपुराणके द्वितीयअध्यायविषे तथातृतीयअध्या यविषे आपनैं तिसीऋग्वेदके कौषीतकिउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तहां द्वितीयअध्यायविषेतौ आपनैं यह वार्त्ता कथनकरी

थी ॥ इंद्रकेसाथयुद्धकरणेकीइच्छाकरिकै दिवोदासराजाकापुत्र प्रतर्दनराजा स्वर्गलोकविषेजाताभया ॥ तहां सोप्रतर्दनराजा युद्धकरि कै इंद्रकूंजीततताभया॥और ताप्रतर्दनराजाकेपुरुषार्थकूंदेखिकरिकै प्रसन्नहुआ सोइंद्र ताप्रतर्दनराजाकेताईं वरदेवताभया॥ जिसवरकीप्रा प्ति यादेहधारीजीवोंकूं अत्यंतदुर्लभहै ॥ यहसंपूर्णवार्त्ता आपनैं ताद्वितीयअध्यायविषे कथनकरीथी॥और हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणके तृतीयअध्यायविषे आपनैं यहवार्त्ता कथनकरीथी।बालाकिब्राह्मण संपूर्णदेशोंकेविद्वानोंकूंजीतकरिकै श्रीकाशीविषे अजातशत्रुराजाके समीपजाताभया।तहां राजाकेकठोरवचनोंकूंश्रवणकरिकै अभिमानतैंरहितहुआसोबालाकिब्राह्मण तिसीअजातशत्रुराजातैंब्रह्मविद्याकाउप देशलेताभया॥यहसंपूर्णवार्त्ता आपनैं तातृतीयअध्यायविषेकथनकरीथी॥और हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणके चतुर्थ पंचम षष्ठ सप्तम या चारिअध्यायोंविषे आपनैं यजुर्वेदकेबृहदारण्यकउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तहां चतुर्थ अध्यायविषेतौ आपनैं यहवार्त्ता कथन करीथी॥दोपुरुषवंश एकस्त्रीवंश यातीनवंशोंविषेस्थितऋषियोंका परस्परभेदभीसंभवै है ॥ तथापरस्परअभेदभीसंभवै है।और दध्यङ् अथर्वणऋषि इंद्रकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरताभया ॥ताब्रह्मविद्याकूंश्रवणकरिकै क्रोधवान् हुआसोइंद्र तादध्यङ्ऋषिकेप्रति पुनः ता ब्रह्मविद्याकेनहींउपदेशकरणेकीआज्ञाकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोदध्यङ्अथर्वण आपणेवचनकेसत्यकरणेवासतै सोब्रह्मविद्या अश्विनी कुमारोंकेप्रति उपदेशकरताभया।ताकरिकैक्रोधवान्हुआ सोइंद्र तादध्यङ्ऋषिकेमस्तककूंछेदनकरताभया । औरते अश्विनीकुमारभी ब्रह्मविद्याकेलोभकरिकै आपणेगुरुकेमस्तककूंकाटिकै अश्वकीग्रीवाऊपरराखतेभये॥और अश्वकेमस्तककूंकाटिकै तादध्यङ्गुरुकेग्रीवाऊप रराखतेभये॥यहसंपूर्णवार्त्ता आपनैं ताचतुर्थअध्यायविषेकथनकरीथी ॥ और हेभगवन् याआत्मपुराणके पंचमअध्यायविषे आपनैं जनक राजाकेयज्ञसभाविषे आश्वलादिकब्राह्मणोंकेसाथ याज्ञवल्क्यमुनिकेजल्पकथाका निरूपणकऱ्याथा ॥तथा तायाज्ञवल्क्यमुनिकेशापकरि के ज्ञाकल्यकामृत्युकथनकऱ्याथा॥तहां ॥ परस्पर जीतणेकीइच्छाकरिकै जोशास्त्रकेअर्थकाविचारकरणाहै ताकानाम जल्पकथाहै॥और हेभगवन्॥याआत्मपुराणकेषष्ठेअध्यायविषे आपनैं तिसीयाज्ञवल्क्यमुनिकी जनकराजाकेसाथ दोवार वादकथानिरूपणकरीथी। तहां तत्त्व

जानणेकीइच्छाकारिके जोपरस्पर शास्त्रकेअर्थकाविचारकरणाहै ताकानाम वादकथाहै॥ और हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणकेसप्तमअध्याय विषे आपनें तायाज्ञवल्क्यमुनिके तथामैत्रेयीस्त्रीके संवादकरिके नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी।तथा याज्ञवल्क्यमुनिके संन्यास आश्रमका निरूपणकऱ्याथा॥और हेभगवन्॥याआत्मपुराणके अष्टमअध्यायविषे आपनैं तिसीयजुर्वेदके श्वेताश्वतर नामाउपनिषद्का अर्थ निरूपणकऱ्याथा॥ताअष्टमअध्यायविषे श्वेताश्वतरमुनिका तथासंन्यासियोंका तथापूर्व वेदवेत्ताब्राह्मणोंका परस्पर याजगत्केकारणोंविषेविचार निरूपणकऱ्याथा॥और हेभगवन्॥याआत्मपुराणकेनवमअध्यायविषे आपनैं तिसीयजुर्वेदके कठवल्लीउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा॥तानवमअध्यायविषे यमराजाका तथानचिकेताका नानाप्रकारकेवरोंयुक्तआख्यान निरूपणकऱ्याथा॥और हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणके दशमअध्यायविषे आपनैं तिसीयजुर्वेदके तैत्तिरीयकउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा।तादृशमअध्यायविषे यहवार्त्ता आपनैं निरूपणकरीथी ॥ वैशंपायनगुरुकीआज्ञाकूंमानिके याज्ञवल्क्यमुनिनैं वमनकरेजेयजुर्वेदकेमंत्र॥ तिनमंत्रोंकूं ब्राह्मण तित्तिरीपक्षीकारूपधारणकरिके भक्षणकरतेभये॥याकारणतैं तिनमंत्रोंविषे कृष्णयजुषूरूपता प्राप्तहोतीभई ॥और ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिवासतै भृगुऋषि वरुण पिताकेसमीप पंचवार जाताभया॥और वेननामागंधर्वनैं जिसप्रकार आपणेआत्माकाअनुभव कथनकऱ्याथा॥ सोभी आपनैं निरूपणकऱ्याथा ॥ तथा सत्यादिकसाधनोंकाकथनकरिके तिनसर्वसाधनों तैं संन्यासरूपसाधनकूंउत्कृष्टरूपकरिकेवर्णनकऱ्याथा ॥ तथा तासंन्यासकी ब्रह्मरूपकरिकेस्तुतिकरीथी ॥ यहसंपूर्णवार्त्ता तादृशमअध्यायविषे निरूपणकरीथी ॥ औरहेभगवन्॥याआत्मपुराणकेषोडशअध्यायविषे आपनैं जाबालादिकषोडशउपनिषदोंकाअर्थ निरूपणकऱ्याथा तहां जाबालउपनिषद्विषे तथापरमहंसउपनिषद्विषे तथाआरुणिउपनिषद्विषे जिससंन्यासका कथनकऱ्याथा ॥ सोसंन्यास वेदकेशाखावोंकेभेदहुएभी भिन्नहोवैनहीं ॥ किंतु तिनसर्व उपनिषदोंविषे सोषकहीसंन्यासकथनकऱ्याहै ॥ यहवार्त्ता आपनैं ताएकादशेअध्यायविषे निरूपणकरीथी ॥ तथा तासंन्यासकी प्राप्तिविषे उपयोगीजोवैराग्यहै ॥ तावैराग्यकीप्राप्तिवासतै आपनै मरणकेअनेकनिमित्तोंसहित नानाप्रकारकेयोगका कथनकऱ्याथा ॥ तथा

गर्भउपनिषद्विषे तायोगकेउपयोगी अनेकपदार्थोंका निरूपणकरिके ताप्रसंगकरिके वसिष्ठमुनियुक्त अद्भुतयोगका वर्णनकऱ्याथा और अमृतनादउपनिषद्विषे तथाहंसउपनिषद्विषे तथाक्षुरिकाउपनिषद्विषे वेदकीशाखावोंकेभेदकरिके जोजोयोगानिरूपणकऱ्याहै ॥ सोयोगभी आपनैं भिन्नभिन्नकारिकैनिरूपणकऱ्याथा ॥ और ब्रह्मउपनिषद् अमृतबिंदुउपनिषद् नारायणीयउपनिषद् महोपनिषद् आत्मप्रबोधउपनिषद् कैवल्यउपनिषद् याषट्उपनिषदोंविषे जाजाब्रह्मविद्या कथनकरीहै ॥ सासंपूर्णविद्याभी आपनैं कथनकरीथी ॥ तथा तापरमहंससंन्यासविषेस्थित संवर्त्तकादिकसंन्यासी सर्वलोकोंतैंविलक्षणआचारवालेहुएवर्तैहैं ॥ यहवार्त्ताभी आपनैं कथनकरीथी ॥ और तापरमहंससंन्यासकेग्रहणकरणेका वैराग्यहीकालहै यहवार्त्ताभी आपनैंकथनकरीथी ॥ और गर्भदुःखोंतैंआदिलैके नानाप्रकारके उपायोंकरिके वैराग्यकूंप्राप्तहुएजेपुरुषहैं ॥ तेपुरुषही यापरमहंससंन्यासकेअधिकारीहैं ॥ यहवार्त्ताभी आपनैं कथनकरीथी ॥ तथा तासंन्यासग्रहणकरणेकीरीति तथातासंन्यासीकेमरणतैंअनंतरसंस्कार तथातासंन्यासीकाभेश तथातासंन्यासीकाआचार यहसंपूर्णवार्त्ता आपनैं विस्तारतैं कथनकरीथी ॥ हेभगवन् ॥ ताएकादशेअध्यायके अंतविषे आपनैंश्वेतकेतुकावर्णनकऱ्याथा ॥ जोश्वेतकेतु ब्रह्मज्ञान तैंपूर्वभीसर्वज्ञथा ॥ हेभगवन् ॥ यहश्वेतकेतुकीवार्ताबहुतआश्चर्यकाकारणहै ॥ यातैं यावार्त्ताकेश्रवणकरणेकी हमारेकूं बहुतअभिलाषा है ॥ हेभगवन् आपनैंपूर्व ताएकादशेअध्यायकेआदिविषे सर्वलोकोंतैंविलक्षणआचारवाले संवर्त्तकादिकसंन्यासी कथनकरथे ॥ तिन संन्यासियोंविषे श्वेतकेतुकाभीकथनकऱ्याथा ॥ ताएकादशेअध्यायकेअंतविषे पुनः तिसीश्वेतकेतुकाकथन आपनैं किसवासतैंकऱ्याहै॥ हेभगवन् ॥ सोसर्वज्ञश्वेतकेतु किसदोषकरिके अज्ञातकूं प्राप्तहोताभया ॥तथाकिसमहात्मानैं ताश्वेतकेतुकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकऱ्याथा ॥ तथा सात्रह्मविद्या किसप्रकारकीथी यहसंपूर्णवार्त्ता आप कृपाकरिके मैंश्रद्धावान्शिष्यकेप्रति कथनकरो ॥ इसप्रकार बुद्धिमान्शिष्यकरिकेपूछाहुआ सोश्रीगुरु ताश्रद्धावान्शिष्यकेप्रति छांदोग्यउपनिषद्विषे कथनकरीहुईकथाकूं कहताभया ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य ॥ पूर्व एकश्वेतकेतुनामा ऋषिकाबालक होताभया है ॥ ताश्वेतकेतुबालकविषे मातापिताका बहुतस्नेहहो

ताभया ॥ तामातापिताकेस्नेहकरिकै सोश्वेतकेतु आशिक्षितदुष्टवृषभकेतुल्यहोताभया ॥ तथा ताश्वेतकेतुकी सर्वदाक्रीडाकरणेविषेही प्रीतिहोतीभई॥याकारणतैं सोश्वेतकेतु उपनयनसंस्कारतैंरहित द्वादशवर्षकाहोताभया॥और बालकोंकीक्रीडाविषे अत्यन्त प्रीतिमान् हुआ सोश्वेतकेतु कभीतो भोजनकूंकरताभया ॥ और कभीतो भोजनकूंभी नहींकरताभया॥और सोश्वेतकेतु दूसरेबालकोंकूं तथास्त्रियोंकूं तथाब्राह्मणोंकूं तथागौआदिकपशुवोंकूं कठोरवचनोंतैं निरादरकरिकै तथादंडादिकोंतैंताडनकरिकै शीघ्रही आपणेगृहविषे भागिजाताभया॥इसप्रकार बाल्यअवस्थाविषे सोश्वेतकेतु अशिक्षितदुष्टवृषभकीन्याईं सर्वजीवोंकूं दुःखकीही प्राप्तिकरताभया॥और सोश्वेतकेतु किसीकालविषे विनयपूर्वक आपणेआरुणिपिताकेसमीपजाताभया॥और सोआरुणिऋषि ताश्वेतकेतुपुत्रकेउन्मत्तदशाकूंदेखिकै आपणेचिन्ताविषे किंचित्मात्र क्लेशकूंप्राप्तहोइकै तापुत्रकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया॥आरुणिरुवाच॥हेपुत्र॥अविवेकहैकारणजिसका ऐसाजोस्नेहहै ॥ तास्नेहकेवशहोइकै मैंपितानैं तथामातानैं तुमारेकूंशिक्षाकरीनहीं ॥ किंतु तास्नेहकेवशतैं हमोंनैं सर्वदा तुमारालालनकर्याहै॥याकारणतैं तूं ऐसीउन्मत्तदशाकूंप्राप्तभयाहै॥हेपुत्र॥पुत्र शिष्य स्त्री यातीनोंकेलालनाकियेतैं तिनपुत्रादिकोंविषे बहुतदोष प्राप्तहोवे है ॥ और तिनपुत्रादिकोंकेताडनकियेतैं तिनपुत्रादिकोंविषे बहुतगुण उत्पन्नहोवे हैं ॥ यहवार्त्ता जोनीतिशास्त्रवालोंने कथनकरी है॥सो मिथ्यानहीं है ॥ किंतु सावार्त्ता यथार्थ है ॥हेपुत्र तानीतिशास्त्रविषे याप्रकारकेवचनकहेहैं॥जेमातापिता स्नेहकेवशहोइकै पुत्रकूंशिक्षान हींकरेहैं ॥ किंतु सर्वदा तापुत्रकालालनकरेहैं ॥ तेमातापिता तापुत्रकेशत्रुहीजानणे॥काहेतैं तामातापिताकेलालनतैं तिसपुत्रविषे उत्पन्नभयेजेदोष तिनदोषोंकरिकै सोपुत्र इसलोकविषेभी दुःखकूंहींप्राप्तहोवेहै॥और मरणतैंअनंतर नरककूंप्राप्तहोवे है ॥ यातैं मातापितानैं पुत्रकूं सर्वदा शिक्षाहीकरणी॥तहां तीनवर्षपर्यंत तापुत्रकूं मातानैं शिक्षाकरणी ॥ और गर्भाधानतैंलेके अथवा जन्मतैंलेके अष्टवर्षपर्यंत तापुत्रकूं पितानैं शिक्षाकरणी ॥ और ताअष्टवर्षतैं लेके षोडशवर्षपर्यंत तापुत्रकूं आचार्यगुरुनैं शिक्षाकरणी॥तापोडशवर्षतैंअनंतर तापुत्रतैं सर्व शिक्षावोंकीनिवृत्तिहोवेहै॥और जोकदाचित् तापोडशवर्षतैंअनंतरभी तापुत्रविषे तथाशिष्यविषे शिक्षाकरणेकीयोग्यताहोवे॥

तो सोपिता अथवा आचार्य तापुत्रकेप्रति तथाशिष्यकेप्रति ताडनाकरिकै शिक्षानहींकरे ॥ किंतु मित्रकीन्याईं वाणीकरिकै शिक्षा करे ॥ याप्रकारकीरीति तानीतिशास्त्रविषेकथनकरीहै ॥ यातैं पितामाताने पुत्रकूं अवश्यकरिकै शिक्षाकरणी ॥ हे पुत्र ॥ जोमूढबुद्धि पुत्रआपणेमाताकेशिक्षाकूं तथापिताकेशिक्षाकूं तथाआचार्यकेशिक्षाकूं ग्रहणनहींकरेहै ॥ सोमूढबुद्धिपुरुषयौवनअवस्थाकेप्राप्तहुए परम क्लेशकूंप्राप्तहोवेहै ॥ तहां सोमूढबुद्धिपुरुषइसलोकविषेतौ राजादिकोंतैं भयकूंप्राप्तहोवेहै ॥ और परलोकविषे यमराजातैं भयकूंप्राप्तहोवे है ॥ हेपुत्र ॥ यालोकविषे पुत्रकूं मातापितानैंतथाआचार्यनैं अवश्यकरिकैशिक्षाकरीचाहिये ॥ जोकदाचित्तापुत्रऊपरकोईदूसरापुरुष शिक्षाकरणेवालाहोवैभी तौभी तापुत्रकूं मातापितानैं तथाआचार्यनैं अवश्यकरिकै शिक्षाकरणी ॥ और तुम्हारीमातानैंतथामौपितानैं तुम्हारेकूं क्षिक्षाकरीनहीं ॥ याकारणतैं तूंब्रह्मचर्यतैं रहितहुआ द्वादशवर्षकाहुआहै ॥ और किसीअनाचारीनिकृष्टब्राह्मणकीन्याईं तूं हमारेकुलविषे नहींउत्पन्नहुएकीन्याईं प्रतीतहोताहै ॥ हेपुत्र ॥ नीतिशास्त्रकेमर्यादाकापरित्यागकरिकै हमनैं स्नेहकेवशतैं इतनैंकाल पर्यंत तुम्हारालालनकर्याहै ॥ यातैंमैंपिता तुम्हारेउपनयनसंस्कारकूंकरिकै तुम्हारेकूंशिक्षाकरों ॥ यहवार्त्ता अत्यंतदुर्घटहै ॥ और स्नेहयुक्तमैंपिताविषे तुम्हारीभीश्रद्धाहोवैगीनहीं ॥ औरश्रद्धातैंविना विद्याकाउपदेशकरणा भस्मविषेआहुतिकीन्याईंव्यर्थहोवैहै ॥ यातैं तूं किसीदूसरेआचार्यगुरुकेसमीपजाइकैताआचार्यकेउपदेशतैं विद्याअध्ययनादिक ब्रह्मचारीकेधर्मोंकूंसंपादनकर ॥ हेपुत्र ॥ जोतूं ब्रह्मचर्य आश्रमकूंधारणकरिकै वेदविद्याकाअध्ययन नहींकरैगा ॥ तौ इसलोकविषे नरकदुःखतैंभीअधिकदुःखकेदेणेहारी तुम्हारी अपकीर्ति होवैगी ॥ और तुम्हाराहमारेकुलविषेजन्महुआहै ॥ यातैंतुम्हारीअपकीर्तिकरिकै हमारीतथाहमारेवृद्धपुरुषोंकीभी अपकीर्तिहोवैगी ॥ औरश्रेष्ठपुरुषोंकीजा अपकीर्तिहै ॥ सामरणतैंभीअधिकहै ॥ यातैंहेपुत्र ॥ तूंकिसीवेदवेत्तागुरुकेसमीपजाइकैवेदविद्याकाअध्ययनकर॥ हे शिष्य ॥ इसप्रकारकेवचन जभी ताआरुणिपितानैं ताश्वेतकेतुपुत्रकेप्रति कथनकरे ॥ तभी सोश्वेतकेतु तापिताकेवचनोंकूंश्रवणकरिकै विचारकूंप्राप्तहोताभया॥ औरतापिताकीआज्ञालैकै सोश्वेतकेतुआपणेगृहकापरित्यागकरिकै किसीअन्यदेशविषेजाताभया॥तहांजाइकै

सोश्वेतकेतुकिसीवेदवेत्ता ब्राह्मणोंकूंगुरुधारणकरिकै व्याकरणादिकषट्अंगोंसहित चारिवेदोंका अध्ययनकरताभया ॥ तथाउपनिषद् रूपवेदांतभागकूंछोडिकै सोश्वेतकेतुतिनसर्ववेदोंकेअर्थकाभी विचारकरताभया ॥ इसप्रकार अर्थसहितचारिवेदोंकाअध्ययनकरिकै सो श्वेतकेतुतिनगुरुवोंतैंआज्ञालैके आपणेगृहकेप्रति आवताभया ॥ औरमार्गविषेआवताहुआ सोश्वेतकेतुआपणेमनविषे याप्रकारकाविचार करताभया॥सर्ववेदोंकेपाठकूंतथासर्व वेदोंकेअर्थकूंहमनैं भलीप्रकारअध्ययनकऱ्याहै ॥ यातैंमैंश्वेतकेतु अत्यंतबुद्धिमानहूं॥औरजैसाहमारे कूंवेदोंकापाठ तथाअर्थआवैहै ॥ तैसाहमारेपिताकूंभीआवतानहीं॥काहेतैं जोकदाचित्हमारापिता तिनवेदोंकेपाठकूंतथाअर्थकूंजाणता होता ॥तौमैंप्रियपुत्रकूं दूसरेब्राह्मणोंकेसमीपकिसवासतैंभेजता ॥ औरसोहमारापिता विद्याअध्ययनकरणेवासतैं हमारेकूंदूसरेब्राह्मणोंके पासभेजताभयाहै ॥ यातैंयहजान्याजावैहै ॥ हमारेपिताकूंयथार्थवेदविद्याआवतीनहीं ॥ किंवा ॥ जिसगुरुवोंकेसमीप हमनैंवेदविद्या काअध्यायनकऱ्याहै ॥ तेगुरुभीहमारीतीक्ष्णबुद्धिकूंदेखिकै आपणेपुत्रोंतैंभी अधिकस्नेहहमारेविषेकरतेभयेहैं॥जो मैं अधिकबुद्धिमाननहीं होता ॥ तौतेहमारेगुरुहमारेऊपर अधिकस्नेहनहींकरते ॥ याकारणतैंभीमैंपितातैंअधिकबुद्धिमान्हूं ॥ किंवा ॥ तेहमारेगुरु किसीप्रसंग पाइकेस्नेहपूर्वक अनेकशपथोंकूंकरिकै हमारेप्रतियाप्रकारकावचन कहतेभयेहैं हेश्वेतकेतु जितनीकीवेदविद्या हमारेकूंआवतीथी सासंपूर्ण वेदविद्या हमोंने तुम्हारेप्रतिउपदेशकरीहै॥इसतैंअधिककोईविद्या हमारेपासहैनहीं ॥ ऐसेगुरुवोंकेवचनोंतैंभीयहजान्याजावैहै ॥ जोमैं श्वेतकेतु ताआरुणिपितातैं अधिकविद्यावालाहूं ॥ किंवा ॥ पुत्र पितातैंभीअधिकबुद्धिमान्होवैहै ॥ यावार्त्ताविषे कोईआश्चर्यनहींहै ॥ काहेतैं जैसेपूर्वबृहस्पतितथाताबृहस्पतिका अजनामापुत्र आपणेपितातैंभी अधिकविद्यावान्हुआहै ॥ जाअजकूं शास्त्रविषे शंयु यानाम करिकैभी कथनकरैहै ॥ सोअजशुक्रतैंमृत्युसंजीवनीविद्याकूंपढिकै बृहस्पतिआदिकसर्वदेवतावोंकूंसाविद्या पढावताभयाहै ॥ यहवार्त्ता वेदकेशतपथब्राह्मणविषे तथामनुस्मृतिविषे प्रसिद्धहै ॥ तैसेमैंश्वेतकेतुभी आपणेपितातैंअधिकविद्यावान्हुवाहूं ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार ॥ ४ ॥
काचिंतनकरिकै सोश्वेतकेतु महान्गर्वकूंप्राप्तहोताभया ॥ और तागर्वदोषकरिकै उत्पन्नभयाजोमोहहै ॥ तामोहकरिकै सोश्वेतकेतु

आपणेगृहविषेजाइकै आपणेपिताकेपादोंऊपर नमस्कार नहींकरताभया ॥ किंतु स्तंभकीन्याईं नम्रभावतैंरहितहोइकै ऊंचेआसनऊपर स्थितहोताभया ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार ताश्वेतकेतुपुत्रकूं नम्रतातैंरहितदेखिकैभी सोआरुणिपिता तापुत्रऊपर क्रोधनहींकरताभया ॥ किंतु कृपाकरिकैयुक्तहुआ सोआरुणिपिता ताश्वेतकेतुपुत्रकोहितवासतैं याप्रकारकावचन तापुत्रकेप्रति कहताभया ॥ आरुणिरुवाच ॥ हेश्वेतकेतु ॥ जिसअतिशयताकेअभिमानकरिकै तूंस्थाणुकीन्याईं नम्रतातैंरहितहुआहै ॥ तथा जिसअतिशयताकेअभिमानकरिकै तूं आपणेकूं षट्अंगोंसहितचारवेदोंकावेत्ता मानताहै ॥ तथा जिसअतिशयताकेअभिमानकरिकै तूं आपणेकूंसर्वविद्वानोंतैं अधिकमान ताहै ॥ साअतिशयता तुमारेविषेकौनहै ॥ यहवार्त्ता तूं हमारेप्रतिकहु ॥ हेश्वेतकेतु ॥ तुमनैं आपणेगुरुकेप्रति कभी यहप्रश्नकऱ्याहै ॥ जो जिसएकवस्तुकेश्रवणकरिकै संपूर्णअश्रुतपदार्थोंकाभीविज्ञानश्रवणहोवै है॥तथाजिसएकवस्तुकेमननकरिकै संपूर्णअमननकरेहुएपदार्थों काभीमननहोवै है॥तथा जिसएकवस्तुकेविज्ञानकरिकै संपूर्णअविज्ञातपदार्थोंकाभीविज्ञानहोवै है॥ऐसावस्तु तुमनैं कभी आपणेगुरुवोंतैं पूछ्याहै॥जोतूं तावस्तुकूंजाणताहोवै ॥ तौहमारेप्रति कथनकर॥हेशिष्य॥ इसप्रकारकावचन जभी ताआरुणिपितानैं श्वेतकेतुपुत्रकेप्रति कह्या ॥ तभी सोश्वेतकेतु तावस्तुकूंनजानताहुआ तागर्वतैं रहितहोताभया ॥ और पिताकेवचनकूंश्रवणकरिकै परमआश्चर्यकूंप्राप्त हुआ सोश्वेतकेतु श्रद्धाभक्तिपूर्वक तापिताकूंनमस्कारकरिकै याप्रकारकावचन कहताभया ॥ श्वेतकेतुरुवाच ॥ हेभगवन् ॥ जिस एकवस्तुके श्रवणकरिकै तथामननकरिकै तथाविज्ञानकरिकै सर्वपदार्थोंका श्रवण मनन विज्ञान होवै है ॥ ताएकवस्तुकूं मैं जाणतानहीं ॥ यातैं आप कृपाकरिकै तावस्तुकाउपदेश हमारेप्रति करो ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार जभी ताश्वेतकेतुनैं आरुणिपिताके प्रति प्रश्नकऱ्या ॥ तभी सोआरुणिपिता ताश्वेतकेतुपुत्रकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ आरुणिरुवाच ॥ हेश्वेतकेतु ॥ ताए कवस्तुकेजानणेवासतैं तूं प्रथम तीनदृष्टांतोंकरिकै यासर्वजगत्कूं तेज जल पृथिवी यातीनभूतरूपकरिकै निश्चयकर ॥ तिसतैंअनंतर तिसीतीनदृष्टांतोंकरिकै तेज जल पृथिवी यातीनोंकाकारण जोपरमात्मादेवहै तापरमात्मारूपकरिकै तासर्वजगत्कूं निश्चयकर ॥

अब तिन तीनदृष्टांतोंका निरूपणकरे हैं॥हेश्वेतकेतु॥ जैसेयालोकविषे पृथिवीरूपमृत्तिकापिंडकेज्ञानहुएतैंअनंतर तामृत्तिकाकेकार्यरूप घटशरावादिकसर्वपदार्थोंका ज्ञानहोवै है ॥ १ ॥ और जैसे तेजरूप सुवर्णपिंडकेज्ञानहुएतैंअनंतर तासुवर्णकेकार्यरूप कटककुंडलादिक सर्वपदार्थोंकाज्ञानहोवै है ॥२॥ और जैसे नखनिकृंतनादिकपिंडविषेस्थित जोलोहहै ॥ तालोहपिंडकेज्ञानहुएतैं अनंतर तालोहकेकार्य रूप खड्गादिकसर्वपदार्थोंका ज्ञानहोवै है ॥ तात्पर्ययह ॥ जोपुरुष एकवार तामृत्तिकाकेघटरूपकार्यविषे यहमृत्तिकाही है याप्रकारका निश्चयकरै है॥सोपुरुष ताघटतैंभिन्न दूसरेमृत्तिकाकेकार्योंकूंदेखिकै यहमृत्तिकाहै॥अथवानहीं है याप्रकारकेसंशयकूं प्राप्तहोवैनहीं॥ किंतु तिनसर्वकार्योंकूं मृत्तिकारूपकरिकेहीदेखे है यहरीति सुवर्णपिंडविषे तथालोहपिंडविषेभी जानिलेणी।तैसे तेज जल पृथिवी यातीनभूतोंका कारण जोपरमात्मादेवहैतापरमात्मादेवकेज्ञानहुएतैंअनंतर याजीवोंकूं तेजजलपृथिवीरूप यासर्वजगत्काज्ञानहोवै है॥शंका॥हेभगवन् ॥ मृत्तिकाकापिंड पृथिवीरूपहै यातैंतापृथिवीभूतविषे तामृत्तिकापिंडकादृष्टांत संभवै है॥तैसे सुवर्णपिंडभी तेजरूपहै॥ यातैं तातेजभूतविषे सुवर्णपिंडकादृष्टांतभी संभवैहै॥तथापि नखनिकृंतनरूपलोहपिंड जलरूपहैनहीं॥यातैं ताजलभूतविषे तालोहपिंडकादृष्टांत संभवतानहीं॥ समाधान ॥हेश्वेतकेतु॥ यद्यपि द्रवीभूतजलकेसंबंधतैंही पृथिवीआदिकोंतैं नानाप्रकारकेकार्य उत्पन्नहोवै हैं ॥ जलकेसंबंधतैं विना तिन पृथिवीआदिकोंतैं कोईभीकार्य उत्पन्नहोवैनहीं॥यातैं अन्वयव्यतिरेककरिकै तिनजलोंविषे कारणताप्रसिद्ध है ॥ तथापि पृथिवीआदिकों केसंबंधतैंरहित केवल जलपिंडविषे कोईकारणता लोकविषेप्रसिद्धहैनहीं ॥ याकारणतैं यालोकोंकेबुद्धिकूंअंगीकारकरिकै ताश्रुतिभगवतीनैं हिमकरकादिरूपजलकेसमान निर्मलतारूपकरिकैप्रसिद्ध जोनखनिकृंतनादिरूपलोहहै तालोहकूं तीसरादृष्टांतरूपकरिकैकथन कऱ्याहै॥ यातैं ताजलभूतविषे तालोहपिंडकादृष्टांत संभवै है॥ अब एककारणवस्तुकेज्ञानतैं सर्वकार्योंकाज्ञानहोवै है यानियमविषे गौण रूपतामानणेहारे जेभेदवादी हैं ॥ तिनभेदवादियोंकेमतकेखंडनकरणेवासतै प्रथम तिनभेदवादियोंकेमतका निरूपणकरै हैं ॥ हेश्वेतकेतु ॥ एककारणरूप परमात्माकेज्ञानतैं याकार्यरूपसर्वजगत्काज्ञानहोवै है ॥ याश्रुतिअर्थविषे कोईकभेदवादीपुरुष स्थालीपुलाक

न्यायकूंअंगीकारकरिकै गौणरूपतामाने हैं॥तिनभेदवादियोंका यहअभिप्रायहै॥जिसपात्रविषे तंडुलपकाते हैं तापात्रकानाम स्थालीहै॥ और तिनतंडुलोंकानाम पुलाकहै ॥ तहां तिनतंडुलोंकूंपकावणेहारेपुरुष अग्निऊपर जलयुक्तस्थालीपात्रकूंराखिकै तापात्रविषे तंडुलोंकूं पावैहैं ॥ तिसतैंअनंतर तेपाचकपुरुष यहतंडुल गलिगयेहैं ॥ अथवा काचेहैं ॥याप्रकारकीपरीक्षाकरणेवासतै तिनतंडुलोंविषे एकतंडुल कादाणा बाहरनिकासिकैदेखेहैं ॥ जोतौ सोएकतंडुलकादाणा पकिगयाहोवैहै॥तौ तिनसर्वतंडुलोंकूं पकाहुआजाणेहैं॥ और सोएकतंडुल कादाणा जोकाचाहोवैहै ॥ तौ तिनसर्वतंडुलोंकूंकाचाजाणेहैं ॥याकानाम स्थालीपुलाकन्यायहै ॥ तास्थालीपुलाककीन्यांईहीं तेभेदवादीपुरुष ताएकआत्माकेज्ञानतैं सर्वजगत्काज्ञान कथनकरैहैं ॥ ऐसेभेदवादीपुरुषोंतैं अद्वैतब्रह्मवादीपुरुषोंनैं यहपूछाचाहिये ॥हेवादी ॥ एकपरमात्माकेज्ञानतैं सर्वजगत्केज्ञानकूंकथनकरणेहारीश्रुतिविषे जोतुमनैं यह स्थालीपुलाकन्याय कल्पनाकऱ्याहै ॥ सोआपणीबुद्धिकरिकै कल्पनाकऱ्याहै ॥ अथवा श्रुतिप्रमाणजन्यबुद्धिकरिकै कल्पनाकऱ्याहै ॥ अथवा वृद्धपुरुषोंकीपरंपरारूपसंप्रदायकेबलतैं कल्पना कऱ्याहै॥तहां ताश्रुतिकेअर्थविषे आपणीबुद्धिकरिकै सोन्याय हमोंनैं कल्पनाकऱ्याहै यहप्रथमपक्ष जोतुम अंगीकारकरो सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं श्रुतिप्रमाणतैंरहित केवलपुरुषकीबुद्धितौ बहुतस्थानोंविषे आपणेअर्थतैं व्यभिचारीही देखीहै ॥जैसे रज्जुविषेसर्पबुद्धि तथाशुक्तिविषेरजतबुद्धि आपणे सर्परजतरूपअर्थतैं व्यभिचारीहीहोवैहै॥याकारणतैंहीं वेदवेत्तापुरुष केवलपुरुषबुद्धिकूंकिसीअर्थकीसिद्धिविषे प्रमाणरूपतामानतेनहीं॥किंवा ॥ यालोकविषे सर्वतार्किकोंविषेमुख्यजे कपिल बुद्ध कणाद गौतम आदिकमहान्पुरुषहैं॥तेकपिलादिकभी श्रुतिप्रमाणतैंविरुद्ध जिस जिसआपणीबुद्धिकरिकै जिसजिसअर्थकीसिद्धिकरै हैं ॥ सा सा तिनोंकीबुद्धि तिसतिसअर्थविषे अप्रमाणहीं होवैहै ॥ तिनबुद्धियोंकीअप्रमाणताविषे यहकारणहै ॥ तेकपिलादिकमुनि श्रुतिप्रमाणतैंविरुद्ध केवलआपणीबुद्धिकरिकै जगत्केकारणकूं तथाआत्माकेस्वरूपकूं तथाबंधमोक्षकूं भिन्नभिन्नहीं कथनकरै हैं ॥ याकारणतैं तिनोंकीयुक्तियां परस्परही खंडितहोइजावैहैं ॥जैसे यालोकविषे परस्परविरुद्धअर्थकूंजनावणेहारियां जेलोकोंकीबुद्धियांहैं ॥ तिनबुद्धियोंविषे किसीएकबुद्धिकूंभी प्रमाणतासिद्धहोवैनहीं॥

॥ ६ ॥

तैसे परस्परविरुद्धअर्थकूंविषयकरणेहारियां जेतिनकपिलादिकोंकीबुद्धियांहैं ॥तिनबुद्धियोंविषे किसीएकबुद्धिकूंभी प्रमाणरूपता संभवै नहीं॥जभी कपिलादिकमहान्पुरुषोंकेबुद्धियोंविषेभी स्वतंत्र प्रमाणरूपता सिद्धनहींभई॥तभी इतरजीवोंकेबुद्धियोंविषे स्वतंत्र प्रमाणरूपता नहीं है याकेविषेक्याकहणाहै ॥ यातैं श्रुतिप्रमाणतैंरहित केवलपुरुषकीबुद्धिविषे प्रमाणरूपता संभवैनहीं यहअर्थसिद्धभया॥और ताश्रुतिअर्थविषे श्रुतिप्रमाणजन्यबुद्धिकेबलतैं हम तास्थालीपुलाकन्यायकीकल्पना करतेहैं यहदूसरा पक्ष जोवादीअंगीकारकरै॥सोभी संभवैनहीं॥काहेतैं श्रुतिप्रमाणविषे अविश्वासकरणेहारे जोतुम भेदवादीहो ॥ तिनतुमारेकूं ताश्रुतिप्रमाणजन्यबुद्धिकरिकै तामनवांछित अर्थभीसिद्धिहोणीअत्यंत दुर्घटहै॥और ताश्रुतिअर्थविषे संप्रदायकेबलतैं हम तान्यायकीकल्पनाकरैहैं यहतीसरापक्ष जोवादी अंगीकार करै ॥ सोभी संभवैनहीं ॥काहेतैं कपिल बुद्ध गौतम कणाद इत्यादिक महान्पुरुषोंकेशिष्योंनै आपणेगुरुसंप्रदायकूंअंगीकारकरिकैभी श्रुतिअर्थकेनिर्णयकरणेविषे किसीनिमित्तकूं पायानहीं ॥ यातैं यहजान्याजावैहै॥आपणेवृद्धोंकीसंप्रदायकेअंगीकारकरणेतैं भी पुरुषकी बुद्धिही अंगीकारकरीजावै है ॥ तापुरुषकीबुद्धितैं भिन्न दूसराकोईप्रमाण अंगीकारकऱ्याजावैनहीं ॥ काहेतैं तेकपिलादिक सांप्रदायिक पुरुष जोकदाचित् ताश्रुतिअर्थविषे उपयोगी किसीप्रमाणकूंप्राप्तहोतेतौ तेसांप्रदायिकपुरुष ताश्रुतिअर्थविषे परस्पर विवादनहींकरते ॥ और श्रुतिअर्थविषे तिनोंका परस्परविवाद प्रत्यक्षदेखणेविषेआवताहै ॥ एककेयुक्तियोंकूं दूसरा खंडनकरिदेवै है ॥ तादूसरेकेयुक्तियोंकूं तीसराखंडनकरिदेवैहै ॥ यातैं संप्रदायकेअंगीकारकिये तैं भी पुरुषकीबुद्धिही अंगीकारकरीजावैहै ॥ और पुरुषकीबुद्धिविषे पूर्व प्रथमपक्षविषे दोषोंकाकथनकरिआये हैं ॥ तेसंपूर्णदूषण यातृतीयपक्षविषेभी प्राप्तहोवै हैं ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती ॥ तासंप्रदायकरिकै जोहम वृद्धपुरुषोंकीपरंपराकूं अंगीकारकरैं ॥ तौ प्रथमपक्षकी तथातृतीयपक्षकी समानताप्राप्तहोवै ॥ परंतु तासंप्रदायपदकरिकै हम तावृद्धपुरुषोंकी परंपराकूं अंगीकारकरतेनहीं ॥ किंतु तासंप्रदायकरिकै हम लक्षणावृत्तितैं न्यायकाअंगीकारकरै हैं तान्यायकूंश्रुति अर्थकेनिर्णयकरणेविषे सावधानता सर्ववादियोंकूंसंमतहै ॥ यातैं तातृतीयपक्षका प्रथमपक्षविषेअंतर्भाव संभवैनहीं॥समाधान॥ हेवादी

संप्रदायशब्दकरिकै जिसन्यायका तुमनैं अंगीकारकऱ्या है ॥ तान्यायका क्या स्वरूपहै ॥ यहतुमारेकूं कह्याचाहिये ॥ तात्पर्ययह जैसे जहांजहां धूमरहे है ॥ तहांतहां अग्निरहे है ॥ याप्रकार धूमअग्निका बहुतवार सहचारदेखिकै उत्पन्नभईजा धूमअग्निकाव्याप्य है याप्रकारकीबुद्धि है ताकानाम न्याय है॥ अथवा अग्निकेअभाववालेपर्वतविषेभी धूम रहे है यावादीकेशंकाकीनिवृत्तिकरणेवासतै उत्पन्न भया जो जोधूम अग्निकेअभाववालेविषेरहैगा तौ सोधूम अग्निकरिकैजन्यनहींहोवैगा यहतर्क है॥ ता तर्कनाम न्यायहै ॥ तहां वारम्वार सहचारदर्शनतैंजन्यबुद्धिकानाम न्याय है यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं यापक्षविषेभी पुरुषकीबुद्धितैंभिन्न कोईन्यायकास्वरूपसिद्धहोवैनहीं ॥ किंतु तापुरुषकीबुद्धिकूंहीं न्यायरूपतासिद्धहोवै है ॥ यातैं यान्यायरूपसंप्रदायपक्षकाभी ताप्रथमप क्षतैंभेद सिद्धहोवैनहीं ॥ किंवा वारम्वार सहचारदर्शनतैंजन्यबुद्धिकूंजोप्रमाणरूपमानिये॥तौजहांजहां पृथिवीत्वधर्मरहे है॥तहांतहां लोह लेख्यत्वधर्मरहे है ॥ याप्रकारकेवारम्वारसहचारदर्शनतैं उत्पन्नभईजा पृथिवीत्वधर्म लोहलेख्यत्वधर्मकाव्याप्यहै याप्रकारकीबुद्धिहै साबु द्धिभी प्रमाणरूपहोणीचाहिये ॥ और तावुद्धिविषे प्रमाणरूपताहैनहीं ॥ काहेतैं वज्रमणिविषे पृथिवीत्वधर्मतौरहेहै ॥ परंतु लोहलेख्य त्वधर्म तहां रहतानहीं ॥ और तर्ककानाम न्याय है यहअद्वितीयपक्षजोवादी अंगीकारकरै ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ तान्यायविषे तर्करूपता किसप्रकार है ॥ तहां सोवादी जोयहकहै ॥ जैसे न्याय प्रमाणऊपरअनुग्रहकरै है ॥ तैसे सोतर्कभी प्रमाणऊपरअनुग्रहकरै है याकारणतैं सोन्याय तर्करूपहै ॥ याप्रकारकहणेहारेवादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ सोतर्करूपन्याय ताप्रमाणऊपर किसप्रकारकाउपकार करै है ॥ यहतुमारेकूंकह्याचाहिये॥ तात्पर्ययह ॥ सोतर्करूपन्याय ताप्रमाणविषे प्रमाणताकीसिद्धिरूप उपकारकरै है॥अथवा सोतर्करू पन्यायताप्रमाणऊपर ताप्रमाणके विरोधीकीनिवृत्तिरूप उपकारकरै है ॥ अथवा सोतर्करूपन्याय ताप्रमाणऊपर प्रमाणताकीअभिव्य क्तिरूप उपकारकरै है ॥ तहां सोतर्करूपन्याय ताप्रमाणऊपर प्रमाणताकीसिद्धिरूप उपकारकरै है ॥ यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं ताप्रमाणविषे विषयोंकी प्रकाशकतारूप जाप्रमाणता है ॥ ताप्रमाणकूं कोईशास्त्रवाले तौ स्व

तोग्राह्यमाने हैं ॥ और कोईकशास्त्रवालेतौ परतोग्राह्यमाने हैं ॥तहां ताप्रमाणताधर्मकेआश्रयकूं जितनीकीसामग्रीग्रहणकरे है॥तितनी हीसामग्री ताप्रमाणताधर्मकूंभीग्रहणकरे याकानाम स्वतोग्राह्यता है॥और ताप्रमाणताधर्मकेआश्रयकूं जितनीकीसामग्रीग्रहणकरे है ॥ तितनीसामग्री ताप्रमाणताधर्मकूं नहींग्रहणकरे याकानाम परतोग्राह्यताहै ॥तहां वेदांतमतविषे तथामीमांसामतविषेतौ स्वतोग्राह्यताहै और नैयायिकोंकेमतविषे परतोग्राह्यताहै ॥ तहां स्वतोग्राह्यतापक्षविषेतौ ताप्रमाणतारूपकीसिद्धि सोप्रमाण आपहीकरे है ॥ताप्रमाणताकेसिद्धिविषे ताप्रमाणकूं दूसरेकिसीकीअपेक्षाहोवैनहीं ॥जैसे दीपक घटादिकविषयोंकेप्रकाशकरणेविषे दूसरेकिसीप्रकाशकीअपेक्षा करतानहीं ॥ तैसे सोप्रमाणभी विषयोंकीप्रकाशकतारूप प्रमाणताविषे दूसरेकिसीकीअपेक्षाकरतानहीं॥जोकदाचित् सोप्रमाण विषयों केप्रकाशकरणेविषे किसीदूसरेकीअपेक्षाकरेगा॥तौ ताप्रमाणविषे अप्रमाणरूपताही प्राप्तहोवेगी॥यातैं सोप्रमाण आपणेसमानविषयक तर्ककी अपेक्षाकरैनहीं॥और सोतर्क जोकदाचित ताप्रमाणकेविषयोंतैंभिन्नपदार्थोंकूंविषयकरताहोवे ॥तौभी तातर्कका प्रमाणऊपरउप कार संभवैनहीं ॥ काहेतैं ॥ ताप्रमाणविषे विषयोंकीप्रकाशतारूप जाप्रमाणता है ॥ साप्रमाणता तातर्ककीप्रवृत्तितैंपूर्वहीसिद्धहै॥तापू र्वसिद्धप्रमाणताकीसिद्धिवासतै ताप्रमाणकूं तातर्ककीअपेक्षा संभवैनहीं॥किंवा अप्रमाणरूपजोतर्कहै तातर्कका प्रमाणकेविषयविषेप्रवेश भ्रमणकरिकैभीहोइसकैनहीं॥काहेतैं यालोकविषे प्रमाण तथाअप्रमाण यहदोनों आपणेस्वरूपकेभेदकरिकै तथाआश्रयकेभेदकरिकै तथा विषयकेभेदकरिकै परस्पर विलक्षणहीहोवैहै॥किंचित्मात्रभीतिनोंविषे सादृश्यताहोवैनहीं॥और लोकविषेसमानस्वभाववालेपदार्थोंकाही परस्परउपकार्यउपकारकभाव देख्याहै ॥ विरुद्धस्वभाववालेपदार्थोंका परस्पर उपकार्यउपकारकभाव कहांदेख्यानहीं ॥ याकारणतैंभी ताप्रमाणऊपर ताअप्रमाण रूपतर्कका उपकारसंभवैनहीं ॥ और सोवादीजोयहदूसरापक्ष अंगीकारकरे ॥ जैसे यालोकविषे याजीवोंके आनिष्टकेकारण विषादिकपदार्थ प्रसिद्ध हैं ॥ तैसे तिनविषादिकोंकी निवृत्तिरूपउपकारके औषधिमंत्रादिक कारणभी प्रसिद्ध हैं ॥ तैसे इहां प्रसंगविषे सोतर्क ताप्रमाणऊपर ताप्रमाणके विरोधीकी निवृत्तिरूप उपकार करे है ॥ सोयहदूसरापक्षभी संभवैनहीं ॥

काहेतैं जैसे यालोकविषे सो विरोधीकीनिवृत्तिरूपउपकार प्रसिद्धहै ॥ तैसे इहांप्रसंगविषे सोविरोधीकीनिवृत्तिरूपउपकार संभवतानहीं ॥ काहेतैं प्रमाण तथाताकाविरोधीअप्रमाण यहदोनों जोकदाचित् एकदेशविषेही इकट्ठेरहतेहोवैं ॥ तौ सोतर्क ताअप्रमाणकीनिवृत्तिरूप उपकार ताप्रमाणऊपरकरे॥परंतु सोप्रमाण तथाअप्रमाण यहदोनों एकदेशविषे इकट्ठेरहतेनहीं॥और एकदेशविषे तथाएककालविषे रह णेहारेपदार्थोंकाही परस्परविरोधहोवै है ॥ भिन्नदेशकालविषे रहणेहारेपदार्थोंका परस्परविरोध कहांदेख्यानहीं॥जैसे मक्षिकारूपग्रासकूं ग्रसताहुआजोमंडूकहै तामंडूककूं दूसरासर्प ग्रसेहै ॥ तैसे प्रमाण अप्रमाण यादोनों विषे एककूंग्रसणेहारा कोईदूसराप्रसिद्धहैनहीं ॥ जि सविरोधीकीनिवृत्तिरूपउपकार सोतर्क प्रमाणऊपरकरे ॥ किंवा ॥ जिस स्थलविषे समानबलवाले दोप्रमाणोंकी एकविषयविषेप्रवृत्तिहो वैहै॥तिसस्थलविषेही बुद्धिमान्पुरुष तिनदोनोंप्रमाणोंका परस्परविरोध अंगीकार करे हैं॥ सोइहांप्रसंगविषेहैनहीं काहे तैं प्रमाणकीतो सत्यवस्तुविषे प्रवृत्तिहोवैहै ॥ और अप्रमाणकी असत्यवस्तुविषे प्रवृत्तिहोवै है॥ और जैसे ताप्रमाणके तथाअप्रमाणके विषयकाभेदहै ॥ तैसे ताप्रमाणके तथाअप्रमाणके धर्मोंकाभी भेदहै ॥ तहां प्रमाणत्वधर्मतो केवलप्रमाणविषेहीरहेहै ॥ अप्रमाणविषेरहैनहीं ॥ तैसे अप्रमाणत्वधर्मभी केवलअप्रमाणविषेहीरहेहै॥ प्रमाणविषेरहैनहीं॥इसप्रकार भिन्नभिन्नअर्थकूंविषयकरणेहारे तिनप्रमाणअप्रमाणविषे पर स्पर विरोधीपणासंभवैनहीं ॥ किंवा ॥ जोवादी प्रमाणकेविरोधीकीनिवृत्तिरूप तर्ककाउपकार ताप्रमाणऊपर अंगीकारकरे है ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ सो तुम्हारातर्क ताप्रमाणकेविरोधीकूं अप्रमाणरूपजाणिकै निवृत्तकरे है ॥ अथवा सोतर्क ताप्रमाणकेविरो धीकूं प्रमाणरूपजाणिकै निवृत्तकरे है ॥ तहांसोतर्क ताप्रमाणकेविरोधीकूं अप्रमाणरूपजाणिकै निवृत्तकरे है यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरे ॥ सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं यालोकविषे जैसे कोई पुरुष पीसेहुएअन्नकूं पुनः पीसतानहीं ॥ तथा मरेहुएशरीरकूं पुनःमारता नहीं ॥तैसे ताप्रमाणकेविरोधीकूं अप्रमाणरूपकरिकैजाणताहुआ सोतर्क ताप्रमाणकेविरोधीकीनिवृत्तिकरणेविषे प्रवृत्तहोवैगानहीं ॥जैसे रज्जुकेसर्पकूंमिथ्याजाणताहुआ यहपुरुष तामिथ्यासर्पकेनिवृत्तकरणेविषे प्रवृत्तहोवैनहीं ॥ और सोतर्क ताप्रमाणकेविरोधीकूं प्रमाणरूप

जाणिकै निवृत्तकरै है यहदूसरापक्ष जोवादीअंगीकारकरै ॥ सोभी संभवैनहीं॥ काहेतैं ताप्रमाणकेविरोधीविषे प्रमाणरूपताकूं विषयकरणेहारा जोतर्कहै ॥ तातर्ककरिकै ताप्रमाणकेविरोधीकीनिवृत्तिसंभवैनहीं ॥ जोकदाचित् सोतर्क ताप्रमाणकेविरोधीकूंप्रमाणरूपजाणिकैभी ताकीनिवृत्तिकरैगा ॥ तौ सोतर्क कदाचित् ताप्रमाणकूंभीनिवृत्तकरैगा॥यद्यपि श्रुतिअनुकूलतर्ककरिकै ताप्रमाणकेविरोधीकीनिवृत्ति संभवैहै॥तथापि श्रुतिप्रमाणतैंविना केवलदुराग्रहतैंअर्थकीसिद्धिकरणेहारे जोतुमवादीहो॥ तिनतुमवादियोंकूं ताशुष्कतर्ककेबलतैं तावांछितअर्थकीसिद्धिहोणी अत्यंतदुर्घटहै।इतनैंकरिकै ताप्रमाणविषेस्वतःप्रमाणताकाअंगीकारकरिकैताप्रमाणऊपर तर्ककेउपकारका अभाव वर्णनकऱ्या ॥ अब ताप्रमाणविषे परतःप्रमाणताकाअंगीकारकरिकै ताप्रमाणऊपर तर्ककेउपकारकाअभाव वर्णन करै हैं।हेवादी। ताप्रमाणविषे जोकदाचित् परतः प्रमाणताभीमानिये॥तौभी ताप्रमाणऊपर तातर्ककाकौनउपकारहै॥सोतर्ककाउपकार तुमनैं कह्या चाहिये॥तात्पर्ययह॥तातर्ककाताप्रमाणऊपर विषयोंकाप्रकाशरूपउपकारतौ संभवैनहीं॥काहेतैं सोविषयकाप्रकाशतौ ताप्रमाणकरिकैहीसिद्धिहै॥तैसे तातर्ककाप्रमाणऊपर प्रमाताकेअसंभावनाकीनिवृत्तिरूपउपकारभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं ताप्रमातानिष्ठअसंभावना पूर्वलेपापकर्मोंकरिकैजन्यहोवै है ॥ यातैं तिनपापकर्मोंकेविरोधी पुण्यकर्मोंकरिकैही ताअसंभावनाकीनिवृत्ति संभवैहै॥ तर्ककरिकै ताअसंभावनाकीनिवृत्तिसंभवैनहीं॥ किंवा॥तातर्ककरिकै जोकदाचित् प्रमाताकेअसंभावनाकीनिवृत्तिभी अंगीकारकरिये॥ तौभी तातर्ककाताप्रमाताऊपरही उपकार सिद्धहोवैगा ॥ ताप्रमातातैंभिन्न ताप्रमाणऊपर तातर्ककाउपकार सिद्धहोवैगानहीं ॥ किंवा ॥ विषयकेप्रकाशकरणेविषेसमर्थ जोप्रमाणहै ॥ ताअप्रमाणविषेतौ सहस्रतर्कोंकरिकैभी प्रमाणरूपतासिद्धहोइसकैनहीं ॥ और विषयकेप्रकाशकरणेविषेसमर्थ जोप्रमाणहै ॥ ताप्रमाणविषे साप्रमाणरूपता तातर्ककीप्रवृत्तितैंपूर्वहींसिद्धहै ॥ यातैं तापूर्वसिद्धप्रमाणताकीभी किसी तर्ककरिकैसिद्धिसंभवैनहीं ॥ और सोतर्क ताप्रमाणऊपर प्रमाणत्वधर्मकीअभिव्यक्तिरूप उपकारकरै है ॥ यहतीसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ सोतर्क अप्रमाणरूपहै ॥ अथवा सोतर्क प्रमाणरूपहै ॥ तहां

सोतर्क अप्रमाणरूप है॥यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं॥काहेतैं यालोकविषे जोजोपदार्थ अप्रमाज्ञानकाविषयहोवै है॥ सोसोपदार्थ मिथ्याहीहोवै है ॥ जैसे अप्रमाज्ञानकेविषय शुक्तिरजतादिक मिथ्याहीहोवै हैं ॥ तैसे सोअप्रमाणरूपतर्कभी जिसप्रमाणके प्रमाणत्वधर्मकीअभिव्यक्तिकरैगा ॥ सोप्रमाणभी मिथ्याहीहोवैगा॥यातैं ताअप्रमाणरूपतर्ककरिकै ताप्रमाणताकीअभिव्यक्तिसंभवैनहीं और सोतर्क प्रमाणरूपहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं॥काहेतैं तातर्कविषे किसीभीवादीनैं प्रमाणरूपतामानीनहीं किंतु सर्ववादी तातर्कविषे अप्रमाणरूपताहीमानैं हैं ॥ यातैं तातर्कविषे प्रमाणरूपतामानणेविषे आपणेसिद्धांतकीहानिरूप अपसिद्धांतदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ किंवा ॥ ताप्रमाणके प्रमाणरूपताकी अभिव्यक्तिकरणेहाराजोतर्क है ॥ तातर्ककूं जोप्रमाणरूपमानोगे तौ तातर्ककेप्रमाणताकीअभिव्यक्तिकरणेहारा कोईदूसरातर्कअंगीकारकरणाहोवैगा॥और तादूसरेतर्ककेप्रमाणताकीअभिव्यक्तिकरणेहारा कोईतीसरातर्क अंगीकारकरणाहोवैगा ॥ इसप्रकार परम्परा तर्कोंकीधारामानणेविषे अनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ किंवा ॥ जोवादी तातर्ककूंप्रमाणरूपमाने है ॥ तावादीसैंयहपूछाचाहिये ॥ सोतर्क स्वतन्त्रप्रमाणहै ॥ अथवा सोतर्क प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकेअंतर्भूतहुआ प्रमाणहै ॥ तहां सोतर्क स्वतन्त्रप्रमाणहै ॥ यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं तातर्कविषे स्वतन्त्रप्रमाणता किसीभीवादीनैं अंगीकारकरीनहीं॥और सोतर्क प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकेअंतर्भूतहुआ प्रमाणहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं ताप्रमाणरूपतर्कका प्रत्यक्षप्रमाणविषेतौ अंतर्भावसंभवतानहीं ॥ यातैं तातर्ककाका अनुमानादिकप्रमाणोंविषेही अंतर्भावकहणाहोवैगा ॥ सोतिनअनुमानादिकप्रमाणोंविषेभी इसप्रमाणविषे तातर्ककाअंतर्भावहै यहनियमकऱ्याजावैनहीं ॥ काहेतैं तिनअनुमानादिकोंके प्रमाणरूपताविषे सर्ववादियोंकी एकसंमतिहैनहीं॥किंतु तिनप्रमाणोंविषे नानाप्रकारकाविवाद देखणेमैंआवै है ॥ तहां चार्वाकतौ एकप्रत्यक्षप्रमाणहीमानै हैं ॥ और वैशेषिक बौद्ध आर्हत यहतीनोंतो प्रत्यक्ष अनुमान यहदोप्रमाणमानै हैं ॥ और सांख्यशास्त्रवालेतौ प्रत्यक्ष अनुमान शब्द यहतीनप्रमाणमानै हैं ॥ और नैयायिकोंकेएकदेशीतौ प्रत्यक्ष अनुमान उपमान

यहइतीनप्रमाणमाणमानेहैं ॥ और नैयायिकतो प्रत्यक्ष अनुमान उपमान शब्द यहचारिप्रमाणमाने हैं ॥ और प्रभाकरतो प्रत्यक्षअनुमान उपमान शब्द अर्थापत्ति यहपंचप्रमाणमाने हैं ॥ और भट्ट वेदांत यहदोनोंतो प्रत्यक्ष अनुमान उपमान शब्द अर्थापत्ति अनुपलब्धि यहषट्प्रमाणमाने हैं ॥ और पौराणिकतो प्रत्यक्ष अनुमान उपमान शब्द अर्थापत्ति अनुपलब्धि संभव ऐतिह्य यहअष्टप्रमाणमाने हैं॥ और तंत्रशास्त्रवालेतो प्रत्यक्ष अनुमान उपमान शब्द अर्थापत्ति अनुपलब्धि संभव ऐतिह्य चेष्टा यहनवप्रमाणमाने हैं ॥ इसप्रकार तेवादी भिन्नभिन्नप्रमाणोंकूं अंगीकारकरे हैं॥तिनसर्वप्रमाणोंविषे तातर्कहूरूपन्यायका किसप्रमाणविषेअंतर्भावहै यहतुमारेकूं कह्याचाहिये शंका॥हेसिद्धांती॥ जोप्रमाण आपणेविषयतैंव्यभिचारी नहींहोवै है॥सोईही प्रमाणहोवै है ॥ और जोआपणेविषयतैंव्यभिचारीहोवै है सो प्रमाणहोवैनहीं ॥ याप्रकारके प्रमाणलक्षणकेविचारकियेतैं पूर्व यद्यपि सोतर्क किसीप्रमाणकेअंतर्भूतहोइसके है ॥ तथापि ताप्रमाणलक्षणकेविचारकियेतैंपश्चात् सोतर्क अप्रमाणताकूंप्राप्तहोवै है ॥ यातैं पूर्वउक्त विनिगमनाविरहदोषकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेवादी॥इसप्रकार पूर्वउक्तप्रमाणकेलक्षणकरिकै तिनप्रमाणोंकेविचारकियेतैं जोकदाचित् तिनप्रत्यक्षादिकषट्प्रमाणोंविषे आपणेआपणे अर्थतैं अव्यभिचारितारूप प्रमाणता होवै ॥ तौभी सोन्यायरूपतर्क किसप्रमाणकेअंतर्भूतहोवै है ॥ यहपूर्वउक्त विनिगमनाविरहरूप दोषतुमारेमतविषे बलात्कारसैंप्राप्तहोवै है॥ काहेतैं भट्टपादादिक विद्वान्पुरुषोंनैं तिनप्रत्यक्षादिकषट्प्रमाणोंकूं आपणेआपणेविषयविषे नियमतैं प्रमाणता सिद्धकरी है ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती नानाप्रमाणरूप जोअनुमान प्रमाण है ॥ ताअनुमानप्रमाणकेअंतर्भूत सोन्याय रूपतर्क है ॥ याकारणतैं सोन्यायरूपतर्क तिनप्रत्यक्षादिक सर्वप्रमाणोंकेअंतर्भूतहै ॥ याप्रकारमानणेविषे सोपूर्वउक्तविनिगमनाविरहरूपदोष प्राप्तहोवैनहीं॥तहां अनुमानप्रमाणकूं सर्वप्रमाणरूपता याप्रकारहै॥प्रतिज्ञा १ हेतु २ उदाहरण ३ उपनय४निगमन ५ यापंचवाक्य रूपअवयवोंका समुदायरूप परार्थअनुमानहोवै है ॥ जैसे प्रसिद्धअनुमानविषे ॥ पर्वतोवह्निमान् ॥ अर्थयह यहपर्वत वह्निवालाहै यह प्रतिज्ञाअवयवहै ॥ १ ॥ धूमवत्त्वात् ॥ अर्थयह धूमवालाहोणेतैं यहहेतुअवयवहै ॥ २ ॥ योयोधूमवान् ससवह्निमान् यथा महान्

॥ ९ ॥

सः ॥ अर्थयह जोजो धूमवालाहोवै है सोसोवह्निवालाहोवै है जैसे रसोईकरणेकास्थानहै ॥ यहउदाहरणअवयवहै ॥ ३ ॥ तथाचायं ॥ अर्थयह यहपर्वतभी तामहानसकीन्याईं वह्निव्याप्यधूमवालाहै यह उपनयअवयवहै ॥ ४ ॥ तस्मात्तथा अर्थयह वह्निव्याप्यधूमवालाहोणेतैं यहपर्वतभी तामहानसकीन्याईं वह्निवालाहै यहनिगमनअवयवहै ॥ ५ ॥ तहां प्रथम प्रतिज्ञाअवयवतो आगमप्रमाणरूपहै ॥ और दूसरा हेतुअवयव अनुमानप्रमाणरूपहै ॥ और तीसरा उदाहरणअवयव प्रत्यक्षप्रमाणरूपहै ॥ और चतुर्थ उपनयअवयव उपमानप्रमाणरूपहै ॥ और तस्मात् याअंशकरिकै पूर्वउक्तसर्वप्रमाणोंकासंग्रहकरणेहारा जोनिगमनअवयवहै सोसर्वप्रमाणरूपहै ॥ इसरीतिसैं सोअनुमानप्रमाण सर्वप्रमाणरूपहै ॥ ताअनुमानप्रमाणकेअंतर्भूतहुआ सोन्यायरूपतर्कभी सर्वप्रमाणरूपहै ॥ यातैं सोपूर्वउक्तविनिगमनाविरहरूपदोष हमारेमतविषे प्राप्तहोवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेवादी यहतुमारावचन असंख्यातदूषणोंकरिकैयुक्तहै ॥ काहेतैं तिनदूषणोंकूंकहणेहारा जोमैंवक्ताहूं ॥ तथातिनदूषणोंकूंश्रवणकरणेहारा जोतूं श्रोताहै ॥ तिनहमदोनोंका जोकदाचित् ब्रह्माकेसमान महान्आयुषहोवै तौ हम तिनसर्वदूषणोंकेकहणेविषे समर्थहोवै ॥ तथा तूं तिनसर्वदूषणोंकेश्रवणकरणेविषे समर्थ होवै ॥ परंतु ताब्रह्माकेसमानआयुष हमारा तुमारा है नहीं ॥ यातैं तेसंपूर्णदूषण यद्यपि हमारेसैं कहे जातेनहीं ॥ और तुमारेसैं श्रवणकरेजातेनहीं तथापि तान्यायरूपतर्कविषे अभिनिवेशवालाजोतूंवादीहै ॥ तिसतुमारेप्रति मैं सिद्धांती संक्षेपतैं तिनदूषणोंकीरीतिमात्र कथनकरताहूं तूं सावधानहोइकै श्रवणकर ॥ हेवादी ॥ जिनप्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकूं तुमनैं अनुमानप्रमाणके अंतर्भूतमान्याहै ॥ तेप्रत्यक्षादिकसर्वप्रमाण एकहीकार्यकूंकरे हैं॥ अथवा तेप्रत्यक्षादिकसर्वप्रमाण भिन्नभिन्न अनेककार्योंकूंकरे हैं ॥तहां तेप्रत्यक्षादिकप्रमाण अनेककार्योंकूं करेहैं यहदूसरापक्ष जो वादी अंगीकारकरे ॥ सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं जिसअनुमानप्रमाणकूं तुमनैं प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंका समुदायरूपमान्या॥ताअनुमानप्रमाणविषेस्थितहुएभीतेप्रत्यक्षादिकप्रमाण आपणेअनेककार्योंकाकर्तृत्व रूपस्वभावकूं परित्यागकरैगेनहीं॥ किंतु तेप्रत्यक्षादिकप्रमाण ताअनुमानविषेस्थितहुएभी आपणे आपणेकार्यकूं अवश्यकरैगे ॥ यातैं

तिनप्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकूं एकअनुमानप्रमाणकेअंतर्भूतमानणा अत्यंतविरुद्धहै ॥ और तेप्रत्यक्षादिकसर्वप्रमाणएककार्यकूंकरै है ॥ यहप्रथमपक्ष जोवादीअंगीकारकरै ॥ सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं तेप्रत्यक्षादिकसर्वप्रमाण एकहीकार्यकूंकरै हैं ॥ याप्रकारका जोनियम अंगीकारकरिये ॥ तौ अनुमानतैंभिन्न तिनप्रत्यक्षादिकप्रमाणोंविषे स्वतंत्र प्रमाणतानहींहोणीचाहिये ॥ और सोवादी जोकदाचित् याअर्थविषे इष्टापत्तिकरै ॥ सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं तिनप्रत्यक्षादिकसर्वप्रमाणोंविषे अनुमानप्रमाणकीअपेक्षाकरिकै तभी प्रमाणताासिद्धहोवै ॥ जभीतिनप्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकूं आपणेआपणेविषयविषे स्वतंत्रप्रमाणता नहींदेखणैमैंआवै ॥ सोऐसाहैनहीं ॥ किंतुतिनप्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकूंआपणेआपणेविषयविषे स्वतंत्रप्रमाणता सर्वबुद्धिमान्पुरुषोंकूंअनुभवसिद्धहै॥यातैंतिनप्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकाअनुमानविषेअंतर्भावसंभवैनहीं ॥ किंवा ॥ पूर्वउक्तप्रतिज्ञादिकपंचअवयवोंविषे दूसरेहेतुरूपअवयवकूं तावादीनैंअनुमानरूप अंगीकारकऱ्याहै ॥ ताहेतुरूपअनुमानविषे प्रत्यक्षादिकसर्वप्रमाणरूपता अंगीकारकरणी अत्यंतविरुद्धहै ॥ काहेतैं ताहेतुरूपअवयवविषे तिनप्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकाअंतर्भाव देखणेविषेआवतानहीं ॥ औरसोवादीजोकदाचित् ताहेतुअवयवविषे तिनप्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकाअध्याहारकरिकैताहेतुरूपअनुमानकूं सर्वप्रमाणरूपताअंगीकारकरै ॥ तोपंचमीविभक्तिजिसकेअंतविषेहोवै ऐसाजोलिंगकाबोधकवचनहै ताकानाम हेतुहै ॥ यालक्षणनैंबोधनकरी जाताहेतुविषेसाधनरूपताहै ॥ सासाधनरूपताका अभावहोवैगा ॥ किंवा ॥ पूर्वउक्त प्रतिज्ञादिकपंचअवयवोंविषेवाक्यरूपतातुल्यहीहै ॥ तावाक्यरूपताकेसमानहुएभी एकप्रतिज्ञावाक्यविषेही आगमप्रमाणरूपता अंगीकारकरणीदूसरेवाक्योंविषे आगमप्रमाणरूपतानहींअंगीकारकरणी यहवादीकाकहनाभी युक्तितैंरहितहै ॥ किंवा ताप्रतिज्ञाअवयवकूं आगमप्रमाणरूपता जोवादीने अंगीकारकरीहै ॥ सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं सोप्रतिज्ञावचनतौ संदिग्धअर्थकूंकथनकरैहै ॥ और सोआगमप्रमाणतौ संदिग्धअर्थकूं कथनकरैनहीं ॥ किंतु सोआगमप्रमाण निश्चितअर्थकूंहीकथनकरै है ॥ जोकदाचित् सोआगमप्रमाण संदिग्धअर्थकूंभी कथनकरैगा ॥ तो आपणीआगमरूपतातैंही रहितहोवैगा ॥ यहवार्त्ता तुमवादियोंकेमतविषेभीसिद्धहै ॥ ऐसे परस्पर विरुद्धअर्थकूंकथन

करणेहारे प्रतिज्ञानका तथाआगमका अभेदमानणा अत्यंतविरुद्धहै॥और उपनयवाक्यविषेस्थित जोतथाशब्दहै॥ तथा निगमनवाक्यविषेस्थितजो तस्मात् शब्दहै ॥ तेदोनोंशब्द पक्षविषे व्याप्तिमानहेतुकेसंबंधमात्रकूंहीबोधनकरै हैं ॥ सादृश्यादिकोंकूंकथनकरैनहीं॥ यातैं ताउपनयवाक्यकूं उपमानप्रमाणरूपता संभवैनहीं ॥ तथा निगमनवाक्यकूं पूर्वउक्तसर्वप्रमाणरूपता संभवैनहीं ॥ और तर्ककेजीवनका औषधिरूपजोव्याप्तिहै ॥ साव्याप्ति केवलकल्पनारूपही है ॥ यातैं ताकल्पनारूपव्याप्तिकूंकथनकरणेहारे उदाहरणवाक्यविषे प्रत्यक्षप्रमाणरूपतासंभवैनहीं ॥ इसतैंआदिलैके अनेकप्रकारकेदूषण तावादीकेकहणेविषे प्राप्तहोवै हैं॥ यातैं आगमप्रमाणरूपकार्यकीउपेक्षाकरिकै केवल कल्पनाजन्यतर्कविषे जोतावादीका अत्यंतआदरहै ॥ सोईही तावादीके विचाररूपदृष्टिकीमंदताकूं स्पष्टकरै हैं ॥शंका॥ हेसिद्धांती ॥ तान्यायरूपतर्ककरिकै जोकदाचित् किसीअर्थकीसिद्धिनहींहोतीहोवै ॥ तो॥ मंतव्यः ॥ इत्यादिकश्रुतियोंनैं विचाररूपतर्ककाविधान किसवासतैंकऱ्याहै ॥ समाधान हेवादी ॥ यद्यपि यहन्यायरूपतर्कवृद्धआचार्योंनैं विचाररूपमननविषे उपयोगीकह्या है ॥ तथापि सोतर्क श्रुतिप्रमाणकीसहायतातैंविना स्वतंत्र किसीअर्थकेनिश्चयकरावणेविषे समर्थहोवैनहीं ॥ किंतु सोतर्क श्रुतिप्रमाणकीसहायताकूं अंगीकारकरिकैही किसीअर्थकानिश्चयकरावै है ॥ यातैं आचार्योंनैं ॥ मंतव्यः॥ इत्यादिकवचनोंविषे जोतर्ककाअंगीकारकऱ्याहै॥सोश्रुतिअनुकूलतर्ककाही अंगीकारकऱ्याहै।श्रुतिप्रतिकूलशुष्कतर्कका ग्रहणनहींकऱ्याहै।यातैं यहअर्थसिद्धभया।साश्रुतिस्थालीपुलाकन्याय करिकैही एकआत्माकेज्ञानतैं सर्वजगत्काज्ञान कथनकरै है ॥ याप्रकारकेअर्थकीकल्पनाविषे ताकल्पनाकरणेहारेपुरुषकीबुद्धि हेतुहै ॥ अथवा श्रुतिप्रमाणजन्यबुद्धिहेतुहै ॥ अथवा उपदेशकरणेहारेगुरुवोंकी परंपरारूपसंप्रदायकीअनुकूलता हेतुहै ॥ यापूर्वउक्ततीनपक्षोंविषे प्रथमपक्षविषे तथातृतीयपक्षविषेतौ पूर्वअनेकप्रकारकेदूषण कथनकरिआये हैं ॥ यातैं तेदोनोंपक्षतौ संभवैनहीं॥परिशेषतैं श्रुतिप्रमाणजन्यबुद्धि हेतुहै यहदूसरामध्यमकापक्षही अंगीकारकरणाहोवैगा॥साश्रुतिप्रमाणजन्यबुद्धितौ तावादीकेइष्टअर्थकीसिद्धिकरैनहीं॥शंका॥ हेसिद्धांती ॥ साश्रुतिप्रमाणजन्यबुद्धिहीतातर्कतैंविना किसप्रकार उत्पन्नहोवैगी ॥समाधान॥ हेवादी॥ व्याकरणादिकलौकिकउपायोंतैं

पदोंकेअर्थकूंजानिकरिकै तथाउपक्रम उपसंहारादिकषट्लिंगोंतैं वाक्योंकेअर्थकूंजाणिकरिकै तिनशुष्कतर्कोंतैं विनाही याअधिकारी पुरुषकूं साश्रुतिप्रमाणजन्यबुद्धि प्राप्तहोइसकेहै॥यातै ताश्रुतिप्रमाणजन्यबुद्धिविषे तिनशुष्कतर्कोंकीअपेक्षाहैनहीं॥तैसे इहांप्रसंगविषेभी तास्थालीपुलाकन्यायकी उपेक्षाकरिकैही साश्रुतिभगवती मृदर्पिंड लोहमणि नखनिकृंतन यातीनपदोंतैं उपादानकारणकास्वरूपकथनकरिकै ताउपादानकारणकेसाथ तिनोंकेकार्योंका अभेदकथनकरै है॥यातैं एकपरमात्मादेवकेज्ञानतैं यासर्वजगत्केज्ञानकूंकथनकरणेहारी साश्रुति तास्थालीपुलाककीन्याईं संभावनामात्ररूप सर्वजगत्केज्ञानकूं कथनकरै नहीं ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती॥तास्थालीपुलाकन्यायकूं अंगीकारकरिकै जो ताश्रुतिकीप्रवृत्ति नहींहोवै है ॥ तौ किसन्यायकूंअंगीकारकरिकै ताश्रुतिकी प्रवृत्तिहोवै है ॥ समाधान॥ हेवादी॥ विवर्त्तवादविषेस्थित जेरज्जुसर्पादिकन्यायहैं ॥ तिनोंकूंअंगीकारकरिकैही ताश्रुतिकीप्रवृत्तिहोवै है॥ जैसे अधिष्ठानरूपरज्जुकेवास्तवस्वरूपकेज्ञानतैं तारज्जुविषेकल्पितसर्पदंड जलधारा मालाइत्यादिकसर्वोंका वास्तवतैंज्ञानहोवै है।तैसेयाअधिष्ठानआत्माकेज्ञानतैं ताआत्माविषेकल्पित सर्वजगत्काज्ञानहोवै है।हेशिष्य।यापूर्वउक्तसर्वअभिप्रायकूंमनविषेराखिकै सोआरुणिपिताताश्वेतकेतुपुत्रकेप्रतिमृत्तिकासुवर्ण लोहयातीनदृष्टांतोंकरिकै यासर्वजगत्केकारणरूपब्रह्मका उपदेशकरताभया॥हेशिष्य।सोआरुणिपिताता श्वेतकेतुपुत्रकेप्रति सर्वस्थलविषे कारणतैंभिन्नरूपकरिकै जोकार्यकाअसत्यपणाहै सोईही ताकारणकेअद्वितीयपणेकूंसिद्धकरै है याअर्थकेस्पष्टकरणेवासतै याप्रकारकीयुक्ति कथनकरताभया ॥ हेश्वेतकेतु॥ यहघटशरावादिककार्य केवल वाणीमात्रकरिकैही प्रतीतहोवै हैं॥ तावाणीतैंविना वास्तवतैं प्रतीतहोवै नहीं ॥ याकारणतैं तेघटशरावादिककार्य घट शराव याप्रकारकेनाममात्रही हैं ॥ तिननामोंतैंभिन्न तिनघटशरावादिककार्योंका कोईवास्तवस्वरूपहैनहीं।और तेघटशरावादिककार्य मृत्तिकामात्रही हैं ॥ तायातैं मृत्तिकानैंघटशरावादिककार्योंकाआरंभकरीताहै यहभीकह्याजावैनहीं॥काहेतैं सामृत्तिका मृत्तिकाकाआरंभकरैनहीं।कार्यकारणकेभेदकूं अंगीकारकरिकैही सोआरंभहोवैहै॥ जैसे नैयायिक कपालरूपकारणतैंभिन्नघटकूं तिनकपालोंकरिकैआरब्ध अंगीकारकरै हैं॥यातैं यहअर्थसिद्धभया॥ तिनघटशरावादिककार्योंविषे जोमृत्तिका

दिककारणोंतैं भेदप्रतीतहोवै है ॥ सोभेद वास्तवतैं हैनहीं॥किंतु घट शराव इत्यादिकनामविशिष्ट तिनघटादिककार्योंविषे सोमृत्तिकाकाभेद प्रतीतहोवै है ॥ और विशिष्टपदार्थविषे प्रतीतभयाजोधर्म है ॥ सोधर्म जोकदाचित् विशेष्यपदार्थविषे नहींसंभवै है॥ तौसोधर्म केवलविशेषणविषेही प्राप्तहोवै है ॥ यहसर्वशास्त्रकारोंका नियमहै॥तैसे इहां घट शराव इत्यादिकनामविशिष्ट घटशरावादिककार्योंविषे प्रतीतभयाजो मृत्तिकारूपकारणकाभेदहै ॥ सोभेद घटशरावादिरूपविशेष्यपदार्थोंविषेतौ संभवतानहीं ॥ यातैं परिशेषतैं सोमृत्तिकाकाभेद घट शराव इत्यादिकनामरूपविशेषणोंविषेही प्राप्तहोवैगा॥यहरीति सर्वकार्यकारणभावस्थलविषे जानिलेणी ॥ अब याहीअर्थकूं दृष्टांतकरिकैस्पष्टकरै हैं ॥ हेश्वेतकेतु ॥ जैसेयालोकविषे पटभावकूंप्राप्तहुएजेतंतुहैं तिनतंतुवोंकूं तापटतैंभिन्नकरिकै तापटरूपकार्यकूं कौनबुद्धिमान्पुरुष देखिसकैगा ॥ किंतु नहींदेखिसकैगा ॥ तैसे घटादिककार्यभावकूंप्राप्तहुए जेमृत्तिकादिककारणहैं॥ तिनमृत्तिकादिककारणोंकूं तिनघटादिककार्योंतैंभिन्नकरिकै तिनघटादिककार्योंकूं कौनबुद्धिमान्पुरुष देखिसकैगा किंतु कोईनहीं देखिसकैगा॥यातैं हेश्वेतकेतु॥यालोकविषे जेमृत्तिकादिकारण हैं ॥ तेकारणही सत्यहैं॥और घटशरावादिककार्यतौ केवलनाममात्रतैंप्रतीतहोवै हैं ॥ यातैं तेघटशरावादिककार्य मिथ्याही हैं ॥ हेश्वेतकेतु ॥ जैसे रज्जुविषे सर्पदंडादिक मिथ्याहीप्रतीतहोवै हैं॥तथा जैसे आकाशविषे गंधर्वनगर मिथ्याहीप्रतीतहोवै है ॥ तैसे मृत्तिकादिककारणोंविषे घटशरावादिककार्यभी मिथ्याहीप्रतीतहोवै हैं॥अब याहीविवर्त्तवादकेस्पष्टकरणेवासतै परिणामवादकासंडनकरै है ॥ हेश्वेतकेतु ॥ जैसे यालोकविषे गोआदिकोंकाक्षीर दधिरूपपरिणामकूंप्राप्तहोवै है॥तैसे यहमृत्तिकासुवर्णादिककारण घट शराव भूषणादिरूपपरिणामकूंप्राप्तहोवैनहीं॥काहेतैं तेमृत्तिकादिककारण जोकदाचित् घटशरावादिरूपपरिणामकूंप्राप्तहोतेहोवैं॥तौ जैसे दधिरूपपरिणामकूंप्राप्तहुआ सोक्षीर नाशकूंप्राप्तहोवै है॥तैसे तेमृत्तिकादिककारणभी नाशकूंप्राप्तहोवैंगे॥और घटादिककार्यभावकूंप्राप्तहुए मृत्तिकादिककारणोंकानाश देखणेविषेआवतानहीं।यातैं तेघटशरावादिककार्य तिनमृत्तिकादिककारणोंके परिणामरूपनहीं हैं॥शंका॥हेभगवन्॥दधिभावकूंप्राप्तहुआक्षीर नाशकूंप्राप्तहोवै है॥और घटशरावादिकभावकूंप्राप्तहुईमृत्तिका नाशकूंनहींप्राप्त

होवै है ॥ यहवार्त्ता कैसेजानीजावै ॥ समाधान ॥ हेश्वेतकेतु ॥ जैसे घटशरावादिकभावकूंप्राप्तहुईभी सामृत्तिका पूर्वकीन्याईं मृत्तिकारूपकरिकैहींप्रतीतहोवै है॥ तैसे दधिभावकूंप्राप्तहुआ सोक्षीर पूर्वकीन्याईं क्षीररूपहोइकै प्रतीतहोवैनहीं॥यातैं यहजान्याजावै है॥ सोक्षीर दधिभावकालविषे नाशकूंप्राप्तहोवै है ॥ और सामृत्तिका घटभावकालविषे नाशकूंप्राप्तहोवैनहीं॥ याकारणतैंही॥ वाचारंभणंविकारोनामधेयंमृत्तिकेत्येवसत्यं॥साश्रुतिविषे मृत्तिकारूपकारणकूंसत्यकह्याहै॥और हेश्वेतकेतु॥ जोपरिणामीकारणहोवै है ॥ सो उपादानकारण होवैनहीं ॥ किंतु निमित्तकारणहीहोवै है ॥ काहेतैं जोकारण आपणेकार्यविषे अनुगतहोवै है॥सोकारणही ताकार्यका उपादानकारणहोवै है ॥ याप्रकारका उपादानकारणकालक्षण शास्त्रकारोंनैं कथनकऱ्याहै॥सोलक्षण परिणामीकारणविषे घटतानहीं ॥ यातैं सोक्षीर तादधिरूपकार्यकाउपादानकारणनहींहै।किंतु सोक्षीर तादधिका निमित्तकारणहै॥शंका॥हेभगवन्॥यालोकविषे जोजोभावकार्य उत्पन्नहोवै है सोसो उपादान निमित्त यादोकारणोंकरिकैजन्यहोवै है ॥ और सोदधिभी भावकार्य है ॥ यातैं तादधिरूपकार्यका ताक्षीरतैंभिन्न कोई उपादानकारणकह्याचाहिये ॥ सोउपादानकारणकौनहै ॥ समाधान ॥ हेश्वेतकेतु ॥ तेज जल पृथिवी यातीनभूतोंके जेकोईकअवयवहैं ॥ तेअवयवही गोआदिकोंनैं भक्षणकरेहुए घासादिकोंविषेस्थितहोइकै ताक्षीरकेउपादानकारणहोवै हैं ॥ तथा दधि तक्र घृत इत्यादिक कार्योंके उपादानकारणहोवै हैं॥ काहेतैं ते तेजादिकतीनभूतोंकेअवयवही यथाक्रमतैं लोहित शुक्ल कृष्ण यातीनरूपोंकरिकै सर्वत्रप्रतीत होवै हैं ॥ हेश्वेतकेतु ॥ जैसे विशेषआकारवालाजोमृत्तिकाकापिंडहै॥सोमृत्तिकाकापिंड घटरूपकार्यकीउत्पत्तिकालविषे ताघटरूपकार्य विषे अनुगतहोइकैप्रतीतहोवैनहीं ॥ याकारणतैं सोमृत्तिकाकापिंड ताघटरूपकार्यकीउत्पात्तिविषे उपादानकारणनहीं है॥ किंतु निमित्त कारणहै ॥ तैसे सोक्षीरभी तादधिरूपकार्यकीउत्पत्तिकालविषे तादधिरूपकार्यविषे अनुगतहोइकैप्रतीतहोतानहीं॥यातैं सोक्षीर तादधिरूपकार्यका उपादानकारण नहीं है किंतु निमित्तकारणहै ॥और हेश्वेतकेतु॥ जैसे चूर्णपिंडादिकविशेषआकारतैंरहित जोशुद्धमृत्तिकाहै॥ साशुद्धमृत्तिका तिनघटशरावादिकसर्वकार्योंविषेअनुगतहोइकैप्रतीतहोवैहै ॥ यातैंसाशुद्धमृत्तिकातिनघटशरावादिककार्योंका उपादान

कारणहै ॥ तैसे घासादिकोंविषे अवयवरूपकरिकैस्थित जे तेज जल पृथिवी यहतीनभूतहैं॥ते तीनभूतही यासर्वकार्योंविषे अनुगतहोइकै प्रतीतहोवैहैं॥ यातैं तेजादिकतीनभूतही तिनदधिआदिककार्योंकेउपादानकारणहैं॥ यातैं यहअर्थासिद्धभया ॥ जो वस्तु परिणामीहोवैहै ॥ सोवस्तु क्षीरकीन्याईं उपादानकारणहोवैनहीं ॥और जोवस्तु परिणामीनहींहोवै है॥सोवस्तुही उपादानकारणहोवैहै॥ यातैं श्रुतिविषे लोहमणिपदकरिकै कथनकऱ्या जोसुवर्णहै ॥ तथा नखनिकृंतनपदकरिकै कथनकऱ्या जोलोहहै॥तासुवर्णलोहकूं परिणामित्वरूपकरिकै दृष्टांतरूपता ताश्रुतिनैंनहींकथनकरी किंतु तासुवर्णलोहकूं विवर्त्तउपादानत्वरूपकरिकैदृष्टांतरूपता श्रुतिनैं कथनकरी है काहेतैं तेसुवर्णादिक जोकदाचित् भूषणादिककार्योंके परिणामीकारणहोवैं ॥ तौ जैसेदधिरूपकार्यकेउत्पत्तिकालविषे सोदुग्धरूपपरिणामी कारण प्रतीतहोवैनहीं ॥ तैसे कुंडलकंकणादिककार्योंकीउत्पत्तिकालविषे तेसुवर्णादिककारणभी नहींप्रतीतहोणेचाहिये॥और कुंडलादिककार्योंकीउत्पत्तिकालविषे तेसुवर्णादिककारण सर्वलोकोंकूंप्रतीतहोवै हैं ॥याकारणतैं तेसुवर्णादिक तिनकुंडलादिककार्योंके परिणामीकारणनहीं हैं ॥ किंतु विवर्त्तउपादानकारणहैं ॥इतनैंकरिकै कारणविषे सत्यरूपता निरूपणकरी॥अब तिसीकारणविषे अद्वितीयरूपताकेस्पष्टकरणेवासतै प्रथम कारण कार्य दोनोंके भेदाभेदपक्षका तथाकेवलभेदपक्षका खंडनकरैं हैं ॥ हेशिष्य ॥ सांख्यशास्त्रवाले तथाभट्टपादादिकमीमांसक उपादानकारणका तथाकार्यका परस्पर भेदाभेदमानैंहैं।और नैयायिकवादीतौताउपादानकारणका तथाकार्यका केवलभेदही मानैंहैं ॥ सोतिनदोनोंका मत अयुक्तहै॥काहेतैं यालोकविषे जिन जिनपदार्थोंका परस्पर भेदहोवै है ॥ तेतेपदार्थ परस्पर भिन्नभिन्नदेशविषेहीवर्तैंहैं ॥ जैसे गौ अश्व यादोनोंकापरस्परभेदहै ॥यातैं सोगौ तथाअश्व परस्पर भिन्नभिन्नदेशविषेहीवर्तैंहैं॥और तंतु पटविषे तथामृत्तिकाघटविषे सोभिन्नभिन्नदेशविषेवृत्तिपणा हैनहीं ॥ यातैं तिनोंविषे परस्परभेदभी संभवैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे अग्निरूपव्यापककेअभावहुए धूमरूपव्याप्यकाभीअभावहोवैहै॥ तैसे भिन्नदेशवृत्तित्वरूपव्यापककेअभावहुए भेदरूपव्याप्यकाभीअभावहोवैहै॥याकहणेकरिकै यहअनुमानसिद्धभया ॥ मृत्तिका घट यहदोनों परस्पर अभिन्नहैं ॥ भिन्नदेशवृत्तित्वकेअभाववालेहोणेतैं ॥ जे

परस्पर अभिन्ननहींहोवै हैं ॥ ते भिन्नदेशवृत्तित्वकेअभाववालेभी नहींहोवै हैं जैसे गौ अश्व यहदोनों हैं ॥ याअनुमानकरिकै ताकारणक
र्यका अभेदहीसिद्धहोवै है ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती ॥ पटादिककार्यतैं तंतुआदिकदेशविषेरहे हैं ॥ और तेतंतुआदिककारण भूतलादिकदेशवि
षेरहेहैं ॥ यातैं ताउपादानकारणका तथाकार्यका भिन्नभिन्नहींदेशहै ॥ यातैं सोतुमाराहेतु पक्षविषेअवृत्तिहोणेतैं स्वरूपासिद्धनामाहेत्वाभाव
है ॥ तास्वरूपासिद्धहेतुतैं ताकारणकार्यकाअभेद सिद्धहोइसकैनहीं ॥ समाधान ॥ हेवादी ॥ ताकारणकार्यका जोतुमनैं भिन्नभिन्नदेशक
थनकऱ्याहै ॥ सोकेवल आपणीकल्पनामात्रकरिकै कथनकऱ्याहै ॥ वास्तवतैं तिनोंका भिन्न भिन्नअधिकरणनहीं है ॥ काहेतैं भूतलादिकों
विषे घटपटादिकपदार्थोंकेवृत्तिपणेकूं अनुभवकरणेहारे जेलोकहैं ॥ तिनलोकोंनैं सोकार्यकारणका भिन्न भिन्नअधिकरण अनुभवकरीतानहीं
यातैं सोकार्यकारणकाभेदपक्ष संभवैनहीं ॥ और भेद अभेद यहदोनों परस्पर विरुद्ध हैं ॥ जहां भेदरहेहै तहां अभेद रहेनहीं ॥ और
जहां अभेद रहेहै तहांभेद रहेनहीं ॥ यातैं सोभेदाभेदपक्षभी संभवैनहीं ॥ यातैं ताकारणकार्यका केवलअभेदपक्षही सर्ववादियोंकूं अंगीकार
कऱ्याचाहिये ॥ जैसे रज्जुविषेकल्पित जेसर्पदंडादिकहैं ॥ तेसर्पादिक रज्जुरूपकारणतैं भिन्नहोइकैप्रतीतहोवैनहीं ॥ यातैं तेसर्पादिक
रज्जुतैंअभिन्नहैं ॥ तैसे यहघटादिककार्यभी मृत्तिकादिककारणों तैं भिन्नहोइकै प्रतीतहोवैनहीं ॥ यातैं यहघटादिककार्यभी तिनमृत्तिका
दिककारणों तैं अभिन्नहैं ॥ और जैसे तारज्जुकेवास्तवस्वरूपकेज्ञानहुए तेसर्पादिक प्रतीतहोवैनहीं ॥ तैसे तिनमृत्तिकादिककारणोंकेवा
स्तवस्वरूपकेज्ञानहुए तेघटादिककार्यभी प्रतीतहोवैनहीं ॥ इसप्रकार कारणकीअद्वितीयरूपता सर्वविद्वान्पुरुषोंकूं अनुभवकरिकै
सिद्धहै ॥ किंवा ॥ यालोकोंकूं घटादिककार्योंविषे जोभेदभ्रमहोवै है ॥ सोभेदभ्रम अपरोक्षरूप है ॥ यातैं ताअपरोक्षभ्रमकीनि
वृत्ति ताकारणकेपरोक्षज्ञानतैंहोवैनहीं ॥ किंतु ताकारणकेअपरोक्षज्ञानकरिकैही ताभेदभ्रमकीनिवृत्तिहोवै है ॥ जैसे पूर्वादिकदिशा
वोंविषे जोपश्चिमादिकदिशावोंकाभ्रमहै ॥ सोभ्रम अपरोक्षरूपहै ॥ यातैं तिनपूर्वादिकदिशावोंकेपरोक्षज्ञानहुएभी ताभ्रमकीनिवृत्तिहोवै
नहीं ॥ किंतु तिनपूर्वादिकदिशावोंकेअपरोक्षज्ञानतैंहीं ताभ्रमकीनिवृत्तिहोवै है ॥ तैसे कारणकेअपरोक्षज्ञानतैंहीं ताकार्यकेभेदभ्रमकी

निवृत्तिहोवै है ॥ और हेश्वेतकेतु ॥ जैसे घटशरावादिकपदार्थ परस्परभेदवालेहोणेतैं कार्यरूपहैं ॥ और कार्यरूपहोणेतैं तेघटशरावादिकप
दार्थ पृथिवी जल तेज रूपकारणतैं भिन्नसत्तावालेनहीं हैं ॥ तैसे तेपृथिवीजलतेजभी परस्परभेदवालेहोणेतैं कार्यरूपहीहैं ॥ और कार्यरूप
होणेतैं तेपृथिवीआदिक तापरमात्मारूपकारणतैं भिन्नसत्तावाले नहीं हैं ॥ तात्पर्ययह ॥ यहअधिकारीपुरुषप्रथम पृथिवी जल तेज यातीनभू
तरूपकारणोंविषे घटादिककार्योंकेभेदकेअभावकूंनिश्चयकरिकै तिसतैंअनंतर तिसीदृष्टांतकरिकै तापृथिवीजलतेजरूपकार्यकेभेदकेअभा
वकूं परमात्मारूपकारणविषे निश्चयकरै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ घटादिकपदार्थ भेदवाले हैं यातैं कार्यरूपहैं ॥ यहजोआपनैं भेदरूपहेतुतैं
कार्यरूपता सिद्धकरीहै ॥ सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं जोहेतु आपणेसाध्यपदार्थकूं छोडिकै अन्यत्र नहींरहे है ॥ ताहेतुतैंही तासाध्यपदार्थकी
सिद्धिहोवै है ॥ और जोहेतु आपणे साध्यकूंछोडिकै अन्यत्रभी रहे है ॥ सोहेतु व्यभिचारीहोवै है ॥ ताव्यभिचारीहेतुतैं साध्य
कीसिद्धिहोवैनहीं ॥ और सोभेदरूपहेतुभी कार्यत्वकेअभाववालेआत्माविषेरहेहै ॥ यातैं सोभेदरूपहेतुभी व्यभिचारीहै ॥ ताभेदरूपहेतुतैं का
र्यपणेकीसिद्धिहोवै नहीं ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ जडताधर्मविशिष्टजोभेदहै ॥ सोभेदरूपहेतुहीकार्यपणेकीसिद्धिकरै है ॥ सोजडताविशिष्टभेद
आत्माविषे है नहीं ॥ यातैं ताआत्माविषे कार्यरूपता सिद्धहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ सोजडताविशिष्टभेद अविद्याविषेभीरहेहै ॥ परंतु
सिद्धांतविषे ताअविद्याकूं कार्यरूप अंगीकारकऱ्यानहीं ॥ किंतु सिद्धांतविषे ताअविद्याकूंअनादिमान्याहै ॥ यातैं सोजडताविशिष्टभेदरू
पहेतुभी व्यभिचारी है ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ताअविद्याविषे यद्यपि उत्पत्तिरूपकार्यतारहेनहीं तथापिअधिष्ठानविषेकल्पितत्वरूपका
र्यता ताअविद्याविषेभीरहे है ॥ यातैं सोजडताविशिष्टभेदरूपहेतु व्यभिचारीनहीं है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ताआत्माविषे ताजडताविशिष्टभे
दरूपहेतुकेअभावहुएभी सोकार्यपणा किसवासतैंनहींहोवै ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ ताआत्माविषे जडताविशिष्टभेदरूपहेतुकेअभावहुए
भी जोवादी कार्यरूपता अंगीकारकरै है ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ ताआत्माविषेस्थित जोकार्यता है ॥ सोकार्यता कारणतैंरहितहै ॥
अथवा साकार्यता कारण सहित है ॥ तहां ताकार्यता कारणतैं रहित है यहप्रथमपक्ष जोवादीअंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतै

जैसे आत्माविषेस्थितकार्यता कारणतैंरहितहै॥तैसे घटपटादिकजगत्विषेस्थितकार्यताभी कारणतैंरहितहोणीचाहिये।और सोवादी जो याअर्थविषे इष्टापत्तिकरै सोसंभवैनहीं॥काहेतैं घटपटादिककार्योंविषे मृत्तिकातंतुआदिकोंकूं कारणता सर्वलोकोंकूं अनुभवकरिकैसिद्ध है ॥ और याआत्मपुराणकेअष्टमअध्यायविषे कारणतैंविनाही कार्यकीउत्पत्तिविषे अनेकप्रकारकेदूषण कथनकरिआये हैं॥यातैं कारण तैंविना कार्यकीउत्पत्तिसंभवैनहीं ॥ और साआत्माविषेस्थितकार्यता कारणसहितहै॥यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये॥सोआत्माकाकारण असत्यरूपहै अथवा सत्यरूपहै॥तहां सोआत्माकाकारण असत्यरूपहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगी कारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं यालोकविषे सत्यरूपकरिकैप्रसिद्ध जेघटपटादिककार्य हैं ॥ तेसत्यकार्य मृत्तिकातंतुआदिकसत्यकार णोंतैंही उत्पन्नहोवै हैं॥असत्यतैं सत्यकीउत्पत्ति कहांभीदेखणेविषेआवतीनहीं ॥ और यहआत्मादेवभी सर्वलोकोंकेअनुभवकरिकै तथा श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रकरिकै सत्यरूपतैंहीप्रतीतहोवैहै॥ यातैं तासत्यआत्माकी असत्यकारणतैंउत्पत्ति संभवैनहीं ॥ जोकदाचित् ताआ त्माकी असत्यकारणतैं उत्पत्तिहोवैगी॥तौ सोआत्माभी ताकारणकीन्याईं असत्यरूपहीहोवैगा॥सो आत्माकूंअसत्यकहणा अत्यंतविरु द्ध है॥किंवा आत्माकाकारण असत्यरूप है यावचनविषेस्थितजोअसत्यशब्दहै॥ ताअसत्यशब्दकाअर्थ सत्यवस्तुकाअभाव प्रतीतहोवै है॥और यालोकविषे जोजोअभावहोवै है॥सो आपणेज्ञानविषे प्रतियोगीकीअपेक्षा अवश्यकरै है॥प्रतियोगीकेज्ञानतैं विना अभावकाज्ञा नहोवैनहीं ॥ यातैं सोसत्यकाअभावरूपअसत्यभी आपणीसिद्धिविषे सत्यरूपप्रतियोगीकीअपेक्षा अवश्यकरिकैकरैगा ॥ यातैं तासत्यव स्तुविषेही आत्माकीकारणता संभवहोइसकेहै ॥ तासत्यवस्तुकेअभावविषे आत्माकीकारणतामानणी निष्फलहै ॥ किंवा यालोकविषे कोईभीअभाव किसीभीकार्यकेप्रति कारणहोइसकैनहीं॥यहवार्त्ता पूर्वअष्टमअध्यायविषे कारणोंकेविचारप्रसंगमैं विस्तारतैंकथनकरिआ येहैं॥यातैं ताआत्माकाकारण असत्य है यहप्रथमपक्ष संभवैनहीं॥और ताआत्माकाकारण सत्य है यहदूसरापक्ष जोवादीअंगीकारकरै॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ सोआत्माका सत्यकारण परिच्छिन्न है॥अथवा अपरिच्छिन्नहै॥तहां सोआत्माका सत्यकारण परिच्छिन्न है

यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं यालोकविषे जोजोपदार्थ परिच्छिन्नहोवैहै॥ सोसोपदार्थ जडहीहोवैहै ॥ और जोजोपदार्थ जडहोवै है ॥ सोसोपदार्थ कार्यरूपहीहोवै है ॥ और जोजोपदार्थ कार्यरूपहोवै है ॥ सोसोपदार्थ आपणीउत्पत्तिविषे दूसरे कारणोंकीअपेक्षा अवश्यकरै है॥जैसे घटादिकपदार्थ परिच्छिन्नहोणेतैं जडहैं॥ और जडहोणेतैं कार्यरूपहैं॥और कार्यरूपहोणेतैं कारण कीअपेक्षावालेहैं॥तैसे सोआत्माका सत्यकारणभी परिच्छिन्नहोणेतैं जडरूपहोवैगा।और जडरूपहोणेतैं कार्यरूपहोवैगा॥ और कार्यरू पहोणेतैं आपणीउत्पत्तिविषे किसीदूसरेकारणकीअपेक्षा अवश्यकरैगा॥ आगेतैं सोकारणभी आपणीउत्पत्तिविषे किसीदूसरेकारणकीअ पेक्षाकरैगा॥सोदूसराकारण किसीतीसरेकारणकीअपेक्षाकरैगा॥इस प्रकार कारणोंकीपरम्परामानणेविषे अनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवैगी॥ ताअनवस्थादोषकोनिवारणकरणेवासतैं सोआत्माका सत्यकारण चेतनरूपहैतथाअपरिच्छिन्नरूपहै॥यहदूसरापक्षही तावादीनैं अंगीकार करणाहोवैगा ॥ याकेविषेभी यहविचारकर्त्याचाहिये ॥ सोआत्माका सत्तारूपकारण आत्मातैंभिन्नहै॥अथवा आत्मातैंअभिन्नहै॥ तहां सोसत्तारूपकारण आत्मातैंभिन्नहै यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै॥ सोसंभवैनहीं ॥ काहेतै यालोकविषे जोजोपदार्थ आत्मातैंभिन्न होवै है ॥ सोसोपदार्थ अनात्मारूपहीहोवैहै ॥ जैसे गृहादिकपदार्थ आत्मातैंभिन्नहोणेतैं अनात्मारूपहैं॥ और यालोकविषे जोजोपदार्थ अनात्मरूपहोवै है॥सोसोपदार्थ भोक्ताआत्माके सुखकासाधनहोवै है॥जैसे गृहशय्याआदिकपदार्थ अनात्मरूपहोणेतैं भोक्ताआत्माके सुखकेसाधनहैं ॥ और यालोकविषे जोजोपदार्थ भोक्ताआत्माकेसुखकासाधनहोवै है ॥ सोसोपदार्थ जडहोवै है ॥ जैसे भोक्ताआत्माके सुखके साधनहोणेतैं तेगृहादिकपदार्थ जडरूपहैं ॥ और यालोकविषे जोजोपदार्थ जडहोवै है ॥ सोसोपदार्थ कार्यरूपहोवै है ॥ जैसे जड रूपहोणेतैं तेगृहादिक कार्यरूपहैं ॥ और यालोकविषे जोजोपदार्थ कार्यरूपहोवै है ॥ सोसोपदार्थ किसीकारणकरिकैजन्यहोवै है जैसे कार्यरूपहोणेतैं तेगृहादिकपदार्थ मृत्तिकादिककारणोंकरिकैजन्यहैं ॥ तैसे सोआत्माकासत्तारूपकारणभी आत्मातैंभिन्नहो णेतैं पूर्वउक्तपरम्पराकरिकै कार्यरूपभी अवश्यहोवैगा ॥ और कार्यरूपहोणेतैं किसीदूसरेकारणकरिकैजन्यभी अवश्यहोवैगा ॥

आगतैं सोदूसराकारणभी किसीतीसरेकारणकरिकेजन्यहोवैगा ॥ इसप्रकार कारणोंकीपरम्परामानणेविषे पुनःपूर्वकीन्याईं अनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवैगी॥ ताअनवस्थादोषकीनिवृत्तिवासतें ताआत्माके सत्तारूपकारणकूं तावादीनैं आत्मारूपमान्याचाहिये॥तथा चेतनरूपमान्याचाहिये ॥ तथा आनंदरूपमान्याचाहिये ॥ तथा सर्वभेदतैंरहित अपरिच्छिन्न मान्याचाहिये॥तथा कारणतैंरहितमान्याचाहिये॥ ऐसे आत्मारूपसत्ताकूं जभी तावादीनैं आत्माकाकारणमान्या॥तभी ताआत्मारूपसत्तारूपकारणतैंभिन्न दूसरेकिसीकार्यविषेतो आत्मरूपतासंभवैनहीं ॥ यातैं तावादीनैं जोआत्माका सत्तारूपकारणमान्याहै॥ तासत्तारूपकारणकूंहीं हमवेदांती आत्मारूपमाने हैं॥यातैं यहअर्थसिद्धभया॥यहआत्मादेव किसीकारणकरिकै उत्पन्नहोवैनहीं॥याकारणतैंहीं वेदकीश्रुतियां ता आत्मादेवकूं अजकहैंहैं।तथा नित्य कहे हैं॥तथा अग्निआदिकसर्वकारणोंकाभीकारणकहे हैं ॥ तथा स्वयंज्योतिरूपकहे हैं ॥ तथा सर्वभेदतैंरहितकहे हैं ॥ ऐसे आत्मादेवकूंहीं यहछांदोग्यउपनिषदकीश्रुति सत्शब्दकरिकैकथनकरै है ॥ हेश्वेतकेतु ॥ साश्रुति तासत्शब्दकरिकै याआत्मादेवके केवल सत्यरूपताकूंकथनकरैनहीं ॥ किंतु साश्रुति तासत्शब्दकरिकै याआत्माके चेतनरूपताकूं तथाआनंदरूपताकूंभी कथनकरै है॥काहेतैं सत् चित् आनंद आत्मा याचारिपदार्थोंका जोकदाचित् परस्परभेद अंगीकारकरिये।तो ताभेदरूपवस्तुपरिच्छेदरूपहेतुतैं तिनसत्यादिकचारोंविषे घटादिकोंकीन्याईं जडतासिद्धहोवैगी॥ और ताजडतारूपहेतुतैं तिनसत्यादिकोंविषे घटादिकोंकीन्याईं कार्यरूपता सिद्धहोवैगी औरताकार्यतारूपहेतुतैं तिनसत्यादिकोंविषे घटादिकोंकीन्याईं कारणकीअपेक्षासिद्धहोवैगी॥औरतिनसत्यादिकोंकेकारणकूंभीआपणी उत्पत्तिविषे किसीदूसरेकारणकीअपेक्षाहोवैगी।और तादूसरेकारणकूंभीआपणीउत्पत्तिविषे किसीतीसरेकारणकीअपेक्षाहोवैगीइसप्रकार कारणोंकीपरम्परामानणेविषे पूर्वकीन्याईं अनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवैगी।यातैं सत् चित् आनंद आत्मा याचारोंविषे किंचित्मात्रभी भेद संभवैनहीं ॥किंतु सत् चित् आनंद आत्मा याचारोंशब्द एकहीअर्थकेवाचकहैं॥ शंका॥ हेभगवन् ॥ सत् चित् आनंद आत्मा यहचारोंशब्द जोएकहीअर्थकेवाचकहोवैंगे॥ तो पुनरुक्तिदोषकीप्राप्तिहोवैगी॥समाधान॥ हेश्वेतकेतु ॥ याआत्मादेवविषे भ्रांतिकरिकैप्राप्तभया

जोअसत्यपणाहै॥ ताअसत्पणेकूं सत्शब्द निवृत्तकरै है॥ और ताआत्माविषे भ्रांतिकरिकैप्राप्तभया जोजडपणाहै॥ ताजडपणेकूं चित् शब्द निवृत्तकरै है ॥ और ताआत्माविषे भ्रांतिकरिकैप्राप्तभया जोदुःखपणा है ॥ तादुःखपणेकूं आनंदशब्द निवृत्तकरै है ॥ और ताआत्माविषे भ्रांतिकरिकैप्राप्तभया जोपरिच्छिन्नपणाहै॥तापरिच्छिन्नपणेकूंआत्मशब्द निवृत्तकरैहै॥इसप्रकार असत्जडदुःखपरिच्छिन्नतारूपकीनिवृत्तिकरिकै तेसत्यादिकशब्द पूर्वअज्ञातआत्माकेस्वरूपकूं कथनकरैहैं॥यातैं तिनसत्यादिकशब्दोंविषे पुनरुक्तिदोषकीप्राप्तिहोवैनहीं। यातैं यहअर्थसिद्धभया॥जैसे आकाशतैं गंधर्वनगर उत्पन्नहोवै है।तैसे सत्यस्वरूपआत्मादेवतैं यहतेज जल पृथिवी रूपसर्वजगत् उत्पन्नहोवैहै ॥ अब ताआत्मादेवविषे विवर्त्तउपादानरूपताकरिकै परमसत्यरूपताकूं अनेकयुक्तियोंसैं निरूपणकरै हैं ॥ हेश्वेतकेतु॥जैसे घटशरावादिककार्योंविषे मृत्तिकारूपकारण सर्वदा अनुगतहुआ प्रतीतहोवैहै॥तैसे आत्मारूपसत्ताभी याजगत्विषे सर्वपदार्थोंविषेअनुगतहुई प्रतीतहोवैहै॥शंका॥हेभगवन्॥जैसे रज्जुरूपअधिष्ठानकेज्ञानहुएतैंअनंतर सर्वरूपअध्यासकी निवृत्तिहोइजावै है॥ तैसे ताअधिष्ठानरूपसत्ताकेज्ञानहुएतैंअनंतर यासंसाररूपअध्यासकी निवृत्तिहोणीचाहिये॥ और ताअधिष्ठानरूपसत्ताके ज्ञानहुएभी यासंसाररूपअध्यासकीनिवृत्ति देखणेविषेआवतीनहीं ॥ समाधान ॥ हेश्वेतकेतु ॥ जैसे यद्यपि मूढबालकोंकूं मनुष्यरूपकरिकैतो महाराजाज्ञात है ॥ तथापि तिनमूढबालकोंकूं पितादिकवृद्धपुरुषोंकेउपदेशतैंविना सोमहाराजा राजारूपकरिकैज्ञातहोवैनहीं।किंतु तिनपितादिकवृद्धपुरुषोंकेउपदेशकरिकैही तेबालक ताराजाकूं महाराजारूपकरिकैजानैंहैं।तैसे साआत्मारूपसत्ता सर्वत्रभास्यमानहुईभी यापुरुषोंकूं ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतैंविना सासत्ता आपणाआत्मारूपकरिकैप्रतीतहोवैनहीं।और जबपर्यंत याअधिकारीपुरुषकूं तातत्पदार्थरूपसत्ताका आपणा आत्मारूपकरिकैज्ञाननहींहोवैहै ॥ तबपर्यंत अज्ञानरूपमायाकीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ औरजबपर्यंत ताअज्ञानरूपमायाकीनिवृत्तिनहींभई तबपर्यंत तामायाका कार्यरूपयहजगत्भी निवृत्तहोवैनहीं ॥ औरयहअधिकारीपुरुष जभीतागुरुशास्त्रकेउपदेशतैं तापरमात्मारूपसत्ताकूं आपणाआत्मारूपकरिकैदेखैहै ॥ तभी याअधिकारीपुरुषके ताअज्ञानरूपमायाकी निवृत्तिहोइजावैहै॥ तामायारूपकारणकेनिवृत्तहुएतैं

अनंतर यह अधिकारीपुरुष ताजग्रत्रूपअध्यासकूं कदाचित्भी देखतानहीं॥जैसे दोषरहितआकाशविषे गंधर्वनगर कदाचित्भीप्रतीतहो वैनहीं ॥ तैसे तामायारूपदोषरहित आत्मादेवविषे यहजगत् कदाचित्भी प्रतीतहोवैनहीं॥हेश्वेतकेतु ॥ जैसे ताआकाशके अज्ञानतैंहीं सोगंधर्वनगर उत्पन्नहोवै है ॥ तैसे याआत्मादेवकेअज्ञानतैंहीं यहसर्वजगत् उत्पन्नहोवै है ॥ और जैसे ताआकाश विषे सोगंधर्वनगर वास्तवतैंतो तीनकालविषेहैनहीं ॥ किंतु ताआकाशविषे सोगंधर्वनगर केवलनाममात्रतैंप्रतीतहोवैहै॥तैसे याआनंदस्वरूपआत्मादेवविषे भी याजगत् वास्तवतैं तीनकालमैं हैंनहीं ॥ किंतु याआत्मादेवविषे यहजगत् केवल नाममात्रतैं प्रतीतहोवैहै ॥ यातैं यहजगत्भी तागंधर्वनगरकीन्याईं मिथ्याही है ॥ और हेश्वेतकेतु ॥ ताआकाशविषे तीनकालमेंअसत्यहुआभी सोगंधर्वनगर जैसे मायाकेवशतैं किसीदोषदर्शीपुरुषकूं मध्यकालविषे प्रतीतहोवै है ॥ तैसे याआनंदस्वरूपआत्माविषे तीनकालमेंअसत्यरूपहुआभी यहजगत् मायाकेवशतैं किसीदोषदर्शीपुरुषकूं मध्यकालविषे प्रतीतहोवै है॥याकारणतैं भी यहजगत् मिथ्याही है॥और हेश्वेतकेतु॥जैसे तामायाकरिकेमोहित पुरुषोंनैं ताआकाशविषे सोगंधर्वनगर देख्याहुआभी तामायादोषतैंरहितपुरुष ताआकाशविषे तागंधर्वनगरकूंदेखतेनहीं ॥तैसे मायादोषवालेअज्ञानीपुरुषोंनैं याआनंदस्वरूपआत्माविषे यहजगत् देख्याहुआभी तामायादोषतैंरहितविद्वान्पुरुष ताआत्मादेवविषे याजगत्कूंदेखतेनहीं॥ याकारणतैंहीं तेअज्ञानीजीवतौबंधकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ और ते विद्वान्पुरुष मोक्षकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ और हेश्वेतकेतु ॥ जैसे स्वप्नअवस्थाविषे यहएकहीस्वप्नद्रष्टापुरुष अनेकरूपोंकूंधारणकरिकै किसीरूपकरिकैतौ बंधकूंप्राप्तहोवै है ॥ और किसीरूपकरिकै मोक्षकूं प्राप्तहोवै है॥ तैसे यहएकहीआत्मादेव अविद्याकेसंबंधतैं अनेकरूपोंकूंधारणकरिकै किसीरूपकरिकैतौ बंधकूंप्राप्तहोवै है ॥ और किसीरूपकरिकै मोक्षकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और हेश्वेतकेतु ॥ जैसे तास्वप्नअवस्थामें तास्वप्नद्रष्टापुरुषविषे सोबंधमोक्ष वास्तवतैंहैनहीं ॥ तैसे याजाग्रत्अवस्थामैं याआत्मादेवविषे सोबंधमोक्ष वास्तवतैंहैनहीं ॥ हेश्वेतकेतु ॥ जोआत्मादेव तावंधमोक्षादिकसर्वजगत्कूं सर्वदा साक्षीरूपकरिकैदेखेहै सोआत्मादेवही परमसत्यरूपहै ॥ ताआत्मादेवतैंभिन्न यहसर्वदृश्यप्रपंच मिथ्याहीहै ॥ हेश्वेतकेतु ॥ यालोक ॥ १६ ॥

विषेजोसर्वजगत्काद्रष्टासाक्षीहै ॥ सोद्रष्टासाक्षीहीसर्वजगत्काकारणहोणेतैं परमसत्यरूप है॥औरयालोकविषे जेजेदृश्यपदार्थ हैं॥ तेदृश्यपदार्थ कार्यरूपहाणेतैं तथानाममात्रहोणेतैं असत्यहीहै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार तापरमात्मारूपकारणविषेही परमसत्यरूपताअंगीकारकरिकै सोआरुणिपिता ताश्वेतकेतुपुत्रकेप्रति मृत्तिका सुवर्ण लोह यातीनोंविषे आपणेआपणे कार्यकीअपेक्षाकरिकै सत्यरूपता कहताभयाहै ॥ तथा घट भूषण खड्ग इत्यादिककार्योंविषे असत्यरूपता कहताभयाहै ॥ हेश्वेतकेतु ॥ जैसे मृत्तिका सुवर्ण लोह यह तीनों आपणेआपणे घट भूषण खड्ग इत्यादिककार्योंकीअपेक्षाकरिकै सत्यरूपहैं ॥ तैसे यहपरमात्मादेवभी पृथ्वी जल तेज रूपसर्वजगत्की अपेक्षाकरिकै परमसत्यरूपहै ॥ याकारणतैंश्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं सत्यकासत्ययानामकरिकैकथनकरै है ॥ ऐसापरमात्मादेव तुमारेकूंभी अवश्यकरिकैजानणेयोग्यथा ॥ जिसपरमात्मादेवकेजान्येहुए यालोकविषे कोईभीपदार्थ जानणेयोग्यरहतानहीं ॥ परंतु ऐसा परमात्मादेव तुमनैंप्रमादकेवशतैं आपणेगुरुवोंसैं पूछानहीं ॥ यातैंहेश्वेतकेतु ॥ तापरमात्मादेवकेजानणेवासतै तूंअभीपुनः तिनगुरुवोंके समीपजाइकैप्रश्नकर ॥ तिनगुरुवोंकेउपदेशतैं तापरमात्मादेवकेस्वरूपकूं जानिकै तूंपुनः शीघ्रहीहमारेपासआव ॥ हेशिष्य ताआरुणिपितानैं जभी इसप्रकारकावचन ताश्वेतकेतुकेप्रति कह्या ॥ तभीसोश्वेतकेतु ताआरुणिपिताकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ श्वेतकेतुरुवाच ॥ हेपिता ॥ जिसपरमात्मादेवकेज्ञानतैं यासर्वजगत्काज्ञानहोवैहै ॥ तापरमात्मादेवकेस्वरूपकूं तेहमारेगुरुजाणतेनहींथे॥ काहेतैंजोकदाचित् तेहमारेगुरुतापरमात्मादेवकूंजाणतेहोते तौ हमारेविषेअत्यंतस्नेहवालेतेहमारेगुरु मैं श्रद्धावान्शिष्यकेताईंतापरमात्मादेवकाउपदेश अवश्यकरिकैकरते ॥ परंतुताएरमात्मादेवकाउपदेश तिनगुरुवोंनें हमारेप्रति कभीभीनहींकऱ्या ॥ यातैं यहजान्याजावै है ॥ तेहमारेगुरु तापरमात्मादेवकेस्वरूपकूंजाणतेनहीं ॥ हेपिता ॥ तेहमारेगुरु मैंश्वेतकेतुशिष्यकूं आपणेपुत्रोंतैंभीप्रियजाणतेथे॥ यातैं तिनहमारेगुरुवोंनैं हमारेसैंकोईभीविद्या गुह्यराखीनहीं ॥ किंतुजितनीकीविद्यातेहमारेगुरुजानतेथे ॥ सासंपूर्णविद्या तिनगुरुवोंनेहमारेप्रति उपदेशकरीहै ॥ यातैं पुनः तिनगुरुवोंकेसमीपजाणेविषे हमारा कोईप्रयोजन सिद्धहोवैगानहीं ॥ हेपिता ॥ तिनगुरुवोंकेआज्ञाकूंपाइकै

मैंश्वेतकेतु समावर्त्तननामासंस्कारकूंप्राप्तहोइकै आपणेगृहविषेआयाहूं ॥ यातैं अविश्वासीपुरुषकीन्यांई पुनः तिनगुरुवोंकेसमीपजाइकै प्रश्नकरणा हमारेकूंउचितनहींहै ॥ यातैं हेभगवन् ॥ जिसपरमात्मादेवकेज्ञानतैं सर्वज्ञातअज्ञातपदार्थोंकाज्ञानहोवैहै ॥ तिसपरमात्मादेव केबोधकरणेवासतै आपहीहमारेप्रतिउपदेशकरो ॥ आपपितातैंछोडिकै मैंदूसरेकिसीगुरुकेसमीपजातानहीं ॥ हेशिष्य इसप्रकारका वचनजभी ताश्वेतकेतुनैं आपणेआरुणिपिताकेप्रतिकह्या ॥ तभीसर्वविद्वानोंविषेश्रेष्ठसोआरुणिऋषि ताश्वेतकेतुपुत्रकेवचनकूंअंगीकारक रिकै ताश्वेतकेतुपुत्रकेप्रति याप्रकारकावचनकहताभया॥आरुणिरुवाच॥हेचंद्रमाकीन्यांई प्रियदर्शनश्वेतकेतुपुत्र जोपरमात्मादेवकास्वरू पश्रुतिनैंकथनकऱ्याहै ॥ तथाजोपरमात्मादेवकास्वरूप तुमनैंहमारेसैंपूछ्याहै ॥ सोपरमात्मादेवकास्वरूपमैंतुमारेप्रति उपदेशकरताहूं ॥ तूंगर्वकापरित्यागकरिकै तथामनकूंसावधानकरिकैश्रवणकर॥अबजिसपरमात्मादेवकेज्ञानतैं यासर्वजगतकाज्ञानहोवैहै तापरमात्मादेवविषे अद्वितीयरूपताका निरूपणकरैहै ॥हेश्वेतकेतु॥ जोयहनामरूपक्रियास्वरूप जगत्देखणेविषेआवैहै ॥कैसाहैयहजगत् ॥ यथाक्रमतैंस्थूल सूक्ष्मकेवाचक जेसत्असत् यहदोशब्दहैं ॥ तासत्असत्शब्दकरिकै कथनकरणेयोग्यहै ॥ तथातिससत्असत्शब्दतैं उत्पन्नभईजा स्थूलसूक्ष्मविषयकबुद्धिहै ताबुद्धिकाविषयहै ॥ तथा तासत्असत्शब्दबुद्धिकरिकैयुक्तहै ॥ ऐसा यहदृश्यमानजगत् आपणीउत्पत्तितैं पूर्व सत्तामात्रहोताभया ॥ तथा सत् असत् याप्रकारकेशब्दज्ञानतैंरहितहोताभया ॥ ताकालविषे यहसर्वजगत् तासत्तातैंभिन्ननहीं होताभया ॥ हेश्वेतकेतु ॥ जैसे नैयायिकवादी घटपटादिकपदार्थोंविषे एकसत्तानाम जातिअंगीकारकरैहैं ॥ तैसे तुमनैं यासत्ता शब्दकरिकै सासत्तानामाजडजाति अंगीकारनहींकरणी ॥ किंतु जोहमनैं पूर्वतुमारेप्रति चिदानंदरूपसत्ताकथनकरीथी ॥ साचेतन रूपसत्ताहीतुमनैं यासत्ताशब्दकरिकै ग्रहणकरणी ॥ काहेतैं तासत्ताशब्दकरिकै जोकदाचित् जातिरूपजडसत्ताकूंग्रहणकरिये ॥ तौ यालोकविषे जोजोपदार्थजडहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ भेदरूपवस्तुपरिच्छेदवालाहोवैहै ॥ और जोजोपदार्थ भेदरूपवस्तुपरिच्छेदवालाहोवै है ॥ सोसोपदार्थकार्यरूपहोवैहै ॥जैसेघटादिकजडपदार्थ भेदवालेहोणेतैंकार्यरूपहैं ॥ तैसेसाजडसत्ताभी भेदरूपवस्तुपरिच्छेदवालेहोणे

तैंकार्यरूपहोवैगी॥ताकार्यरूपसत्ताविषे सर्वजगत्कीकारणतासंभवैनहीं॥यातैं इहां सर्वजगत्काकारणरूपकरिकैकथनकरीजासत्ताहै॥ सो कारणरूपसत्ता ताजातिरूपजडसत्तातैंविलक्षणही तुमनैंजानणी॥हेश्वेतकेतु जैसे सूर्यकेउदयतैंपूर्वसर्वओरतैं अंधकाररहै है ॥ तैसे याजग त्कीउत्पत्तितैंपूर्व यहसत्ताहीबाकीरहैहै॥और याहीकारणरूपसत्ताकूं मायारूपउपाधिकेसंबंधतैं श्रुतिभगवती अव्याकृतनामकरिकैकथन करै है ॥ हेश्वेतकेतु॥ याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्व जोसत्तावस्तु कारणरूपहोइकैस्थितहोवै है॥ तथा जासत्तारूपकारणकूं श्रुतिनैं अव्याकृत नामकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ सोसत्तारूपकारणवस्तु निर्गुणब्रह्मरूपही है ॥ जिसनिर्गुणब्रह्मविषे ॥ यतोवाचोनिवर्त्तंते अप्राप्यमनसासह ॥ इत्यादिकश्रुतियोंनैं विद्वान्पुरुषकेभी मनसहितवाणीकीनिवृत्ति कथनकरी है॥ तथा जिसनिर्गुणब्रह्मविषे यहदेशकाल तथास्थूलसूक्ष्मप दार्थ पूर्वकाल विषेहुएनहीं॥ तथा अभीवर्त्तमानकालविषेहैनहीं ॥ तथा आगेभविष्यत्कालविषे होवैंगेनहीं ॥ ऐसेनिर्गुणब्रह्मविषे जा सदेवसोम्येदमग्रआसीत् ॥ याश्रुतिनैं आसीत्पदकरिकै पूर्वअतीतकालका कथनकऱ्याहै ॥ सोभी कालकीवासनायुक्तशिष्यकीबुद्धिकी अनुसार कथनकऱ्याहै ॥ वास्तवतैं सोअतीतकालभी ताब्रह्मविषेनहीं है॥अब तानिर्गुणब्रह्मविषे स्वगतभेद सजातीयभेद विजातीयभेद यातीनभेदोंकाअभाव निरूपणकरै हैं ॥ हेश्वेतकेतु ॥ जैसे यालोकविषे एकहीवृक्ष आपणे पत्र पुष्प फल शाखा स्कंध इत्यादिकअवयवों केभेदकरिकै स्वगतभेदवालाहोवै है ॥ तैसे यहपरमात्मादेव निरवयवहोणेतैं तास्वगतभेदवालाहैनहीं ॥ और जैसे यालोकविषे गोअश्वा दिक आपणेसमानजातिवालेदूसरेगोअश्वादिकोंतैं सजातीयभेदवालेहोवै हैं॥तैसे यहपरमात्मादेव तासजातीयभेदवालाभीहैनहीं ॥ और जैसे यालोकविषे तेगोअश्वादिक आपणेतैंविरुद्धजातिवालेमहिषादिकोंतैं विजातीयभेदवालेहोवै हैं ॥ तैसे यहपरमात्मादेव ताविजातीय भेदवालाभीहैनहीं ॥ हेश्वेतकेतु॥ यहपरमात्मादेव सजातीय विजातीय स्वगत यातीनभेदोंतैंरहितहै॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष यापरमा त्मादेवकूं सत्तारूपकहे हैं इतनैंकरिकै॥एकमेवाद्वितीयं ॥ याश्रुतिविषेस्थित एकशब्दकरिकै तापरमात्मादेवविषे सजातीयभेदकाअभाव दिखाया ॥ और ताश्रुतिविषेस्थित एवशब्दकरिकै स्वगतभेदकाअभाव दिखाया॥ और ताश्रुतिविषेस्थित अद्वितीयशब्दकरिकै विजा

तीयभेदकाअभाव दिखाया॥ शंका॥हेभगवन् ॥ याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्व यद्यपि ताब्रह्मविषे यहकार्यजगत्हैनहीं ॥ तथापि ताकालविषे माया विद्यमान है॥यातैं तामायाकरिकैही ब्रह्मविषे सद्वितीयपणा सिद्धहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेश्वेतकेतु॥तानिर्गुणब्रह्मविषे जगत्केकार णताकीसिद्धिकरणेहारी सामाया यद्यपि द्वितीयरूपकरिकैसंभावनाहोवै है॥तथापि ताब्रह्मविषे सामाया वास्तवतैं हैनहीं॥किंतु तामाया करिकैमोहितअज्ञानीजीवही तामायाकूंब्रह्मविषेदेखै हैं॥यातैं सामाया ताब्रह्मविषे मायाकरिकैहीसिद्धहै॥जैसे हममनुष्योंकूं प्रत्यक्षप्रमाण करिकैसिद्धजोदिनहै॥तादिनकूं उलूकपक्षी रात्रिमानैहैं॥ तहां दिनकेरात्रिरूपताविषे ताउलूकपक्षीका आपणाअनुभवही प्रमाणहै॥ताके विषे दूसराकोईप्रमाणहैनहीं॥तैसे तामायाविषेभी तिनअज्ञानीपुरुषोंकाअनुभवही प्रमाणहै॥दूसरा कोईप्रमाण तामायाविषेहैनहीं ॥ यातैं सामाया मायाकरिकैहीसिद्धहै॥हेश्वेतकेतु॥जैसे वास्तवतैंअंधकारतैंरहित जोसूर्यभगवान्है॥सोसूर्यभगवान् जभी सुमेरुपर्वतकेपृष्ठदेशविषे जावै हैं॥तभी रात्रिविषे मूढपुरुषतासूर्यविषे अंधकार कल्पनाकरैहैं॥तैसे वास्तवतैं मायातैंरहितजोपरमात्मादेवहै तापरमात्मादेवविषे मूढज्ञानीपुरुष मायाकल्पनाकरै हैं ॥ और हेश्वेतकेतु ॥ जैसे नेत्रोंकरिकैदेखेहुएसूर्यभगवान्केउदयहुएतैंअनंतर यापुरुषोंकूं सोअंधकार दिखाईदेवैनहीं॥तैसे ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशजन्य आत्मसाक्षात्कारकेउदयहुएतैंअनंतर याविद्वान्पुरुषोंकूं सामाया दिखाईदेवैनहीं ॥ और जैसे यासूर्यभगवान्कूं सोअंधकार तीनकालविषेस्पर्शकरैनहीं॥ तैसे याआत्मादेवकूंभीसोमाया तीनकालविषे स्पर्शकरैनहीं ॥ और हे श्वेतकेतु ॥ जैसे अंधकार अथवा मेघादिक याद्रष्टापुरुषोंकेनेत्रोंकूंआच्छादनकरिकैही आकाशविषेस्थितसूर्यडमंडलकूं आच्छादनकरै हैं॥तैसे यहअज्ञानरूपमायाभी अज्ञानीपुरुषोंकेबुद्धिकूंआच्छादनकरिकैही तापरमात्मादेवकूंआच्छादनकरै है॥यातैंयहअर्थ सिद्धभया॥ तापरमात्मादेवविषे यहमायावास्तवतैं हैनहीं॥तथा तामायाकास्थूलसूक्ष्मकार्यभी वास्तवतैं हैनहीं ॥ यातैं याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्वसो सत्परमात्मादेवहीस्थितहोताभया॥तापरमात्मादेवतैंभिन्नयहस्थूलसूक्ष्मजगत्तथाताकाकारणमायानहींहोतेभये ॥ इतनेकरिकैता सत् परमात्मारूपकारणविषेअद्वितीयरूपतासिद्धकरी ॥ अव तद्धैकआहुरसदेवेदमग्रआसीदेकमेवाद्वितीयंतस्मादसतःसज्जायत ॥ याश्रुतिने ॥ १८ ॥

खंडनकरणेवासतैं कथनकऱ्याजो असत्कारणवादियोंकामत तामतका निरूपणकरै हैं ॥ हेश्वेतकेतु॥इसप्रकार सर्वभेदतैंरहित सत्तारूप कारणकेसिद्धहुएभीकेईकब्रह्मबोधतैंरहितपंडितजन तासत्तारूपकारणकेस्थानविषे असत्ताकूंअंगीकारकरिकै ताअसत्ताकूंहींयाजगत्काका रणमानैहैं ॥ और परमात्मारूपसत्ताकूं याजगत्काकारणमानणेहारे जेहमवेदांती हैं ॥ तिनवेदांतियोंकेमतविषे तेअसत्कारणवादीपुरुष याप्रकारकेदोष कथनकरैहैं ॥ तुमवेदांतियोंनैं सर्वजगत्का उपादानकारणरूपकरिकै अंगीकारकरीजा सत्ताहै ॥ सासत्ता सत्रूपहै ॥ अ थवा असत्रूपहै ॥ तहांसासत्ता सत्रूपहै यहप्रथमपक्षं जोवेदांतीअंगीकारकरै॥तावेदांतीसैं यहपूछाचाहिये ॥तासत्ताविषे जौसत्रूपता है ॥ सासत्रूपता आपणेस्वरूपतैंसिद्धहै॥अथवा सासत्रूपता किसीधर्मरूपदूसरीसत्ताकरिकैसिद्धहै ॥ तहां तासत्ताविषे सासत्रूपता स्वरूपतैंहीसिद्धहै यहप्रथमपक्ष जोवेदांतीअंगीकारकरै ॥ तौ तासत्ताविषेअसत्तातैंविलक्षणता सिद्धनहींहोवैगी ॥ काहेतैं जैसे तासत्ता विषे स्वरूपतैं सत्रूपताहै ॥ तैसे ताअसत्ताविषेभी स्वरूपतैंसत्रूपतासंभवहोइसकैहै ॥ ताकेनिवृत्तकरनेविषे कोईभीवादी समर्थहोइ सकैनहीं ॥ और सोवेदांती जोयहकहै ॥ तासत्ताविषेतौ अस्ति याप्रकारकीविधिमुखप्रतीतिकीविषयतारहे है ॥ और असत्ताविषे साविधिमुखप्रतीतिकीविषयतारहतीनहीं ॥यातैं साविधिमुखप्रतीतिकीविषयताही तासत्ताविषे ताअसत्तातैं विलक्षणताहै॥सोयहताकाकहणा भी संभवैनहीं ॥ काहेतैं तासत्ताविषेही साविधिमुखप्रतीतिकीविषयतारहे है॥असत्ताविषेरहैनहीं॥यहवार्त्ता जोवेदांतीनैंअंगीकारकरीहै ॥ सोकेवल आपणेकुलधर्मकीन्याईं आपणेवृद्धपुरुषोंकेसंकेतमात्रतैंहीसिद्धहै ॥ कोईवस्तुकेस्वभावकेअनुसारनहींहै ॥ यातैं सोतिनोंकेवृद्धपु रुषोंकासंकेत ताअसत्ताविषे विधिमुखप्रतीतिकीविषयतामानणेविषे प्रतिबंध करिसकैनहीं॥एकअधिकरणवृत्तिपदार्थोंकाही परस्पर प्रति बध्यप्रतिबंधकभावहोवै है॥यातैं तासत्ताकीन्याईं ताअसत्ताविषेभी साविधिमुखप्रतीतिकीविषयता संभवै है॥किंवा ॥याजगत्कीउत्पत्ति कालविषे यद्यपि तासत्ताविषे विधिमुखप्रीतिकीविषयता संभवहोइसकैहै ॥तथापि याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्वकालविषे तासत्ताविषे साविधि मुखप्रतीतिकीविषयता संभवतीनहीं॥काहेतैं चिदाभासयुक्तअंतःकरणकीवृत्तिकानाम प्रतीतिहै॥साप्रतीति चिदाभासयुक्तअंतःकरणरूप

प्रमाताकेआश्रितरहे है ॥ सोप्रमाता याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्वकालविषेहैनहीं॥ताप्रमाताकेअभावहुए ताकालविषे प्रतीतिभीसंभवैनहीं ॥ यातैं ताजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्वकालविषे आपहीअविद्यमानहुई साविधिमुखप्रतीति तासत्ताकीसिद्धि किसप्रकारकरैगी।किंतु नहींसिद्धकरैगी और तासत्ताविषे सत्यरूपता किसीदूसरीसत्ताकरिकैसिद्धहै यहदूसरापक्ष जोवेदांतीअंगीकारकरै॥तौ तादूसरीसत्ताविषे सत्यरूपताके सिद्धकरणेवासतैं कोईतीसरीसत्ता कल्पनाकरणीहोवैगी॥और तातीसरीसत्ताविषे सत्यरूपताकेसिद्धकरणेवासतैं कोईचतुर्थसत्ता कल्पनाकरणीहोवैगी ॥ इसप्रकार पूर्वपूर्वसत्ताविषे सत्यरूपताकेसिद्धकरणेवासतैं कल्पनाकरी जेउत्तरउत्तरसत्ताहैं ॥ तेसर्वसत्तानियतसंख्यातैंरहित असंख्यातहैं॥ अथवा तेसत्ता नियतसंख्यावालीहैं॥तहां तेसत्ता असंख्यातहैं यहप्रथमपक्ष जोवादी अंगीकारकरै॥सोसंभवैनहीं॥ काहेतैं ते असंख्यातसर्वसत्ता क्रमकरिकै अथवा एककालविषे किसीभीजीवकूं प्रतीतहोवैनहीं॥यातैं तिनअसंख्यातसर्वसत्तावोंविषे कोईएकसत्ता हीसिद्धहोवैगी॥सर्वसत्ता सिद्धहोवैनहीं ॥ और तेसत्ता नियतसंख्यावालीहैंयहदूसरापक्ष जोवेदांतीअंगीकारकरै॥सोभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं तिनसर्वसत्तावोंविषे जोअंतकीसत्ताहै॥साअंतकीसत्ता ताअसत्तातैंविलक्षण सिद्धनहींहोवैगी॥किंतु साअंतकीसत्ता ताअसत्ताकेसमानहींहोवैगी॥और ताअंतकीसत्ताविषे दूसरीसत्तातैंविनाही जोसत्यरूपताव्यवहारकीसिद्धिमानोगे॥ तौ ताअंतकीसत्तातैंपूर्वसत्तावोंविषेभी उत्तरउत्तरसत्तातैंविनाही सत्यरूपताव्यवहार सिद्धिहोइसकेगा।यातैं ताअंत्यसत्तातैंपूर्वपूर्वसत्तावोंकीकल्पना व्यर्थहोवैगी।किंवा तिनवेदांतियोंनैं सर्वजगत्का उपादानकारणरूप जासत्ताअंगीकारकरीहै।सासत्ता निर्विकारस्वभाववालीहोणेतैं एकरूपहै॥अथवा परिणामीस्वभाववालीहोणेतैं अनेकरूपहै॥तहां सासत्ता एकरूपहै यहप्रथमपक्ष जोवेदांतीअंगीकारकरै॥तौताएकरूपसत्ताविषे ताअसत्तातैं कोनविलक्षणता सिद्ध होवैगी ॥ किंतु सासत्ताभीताअसत्ताकेही तुल्यहोवैगी ॥ और सासत्ता अनेकरूपहै यहदूसरापक्ष जोवेदांतीअंगीकारकरै॥तौ तासत्ताविषे घटादिकपदार्थोंकीतुल्यता प्राप्तहोवैगी ॥ किंवा याअंत्यपक्षविषे घटादिकपदार्थोंकेतुल्यताकूंप्राप्तभई जासत्ताहै ॥ तासत्ताकी जोकदाचित् याजगत्तैंपूर्व स्थितिअंगीकारकरोगे ॥ तौ ताकालविषे घटादिकपदार्थोंनैं कौनअपराधकऱ्या है ॥ किंतु यह

घटादिकपदार्थभी तासत्ताकीन्याईं याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्वं अवश्यकरिकैरहैंगे॥ यातैं तापूर्वंकालकी तथाइदानींकालकी परस्पर विशेष ता सिद्धनहींहोवैगी ॥यातैं तासत्ताविषे अनेकरूपताभी संभवैनहीं॥ इसतैंआदिलैकेअनेकप्रकारकेदूषण तासत्ताविषेप्राप्त होवै हैं॥यातैं सासत्ता याजगत्काकारणनहीं है ॥ किंतु असत्ताही याजगत्काकारणहै॥इतनैंकरिकैतिनअसत्कारणवादियोंकामत निरूपणकऱ्या ॥ अब तिनअसत्कारणवादियोंकेमतका खंडनकरैं हैं।हेश्वेतकेतु।इसप्रकार असत्कारणकीसिद्धिकरणेवासतैं तेमंदबुद्धिवादी अनेकप्रकारकी कुतर्क कथनकरैहैं॥और तेवादी वास्तवतैंपंडितपणैंतैंरहितहुएभी आपणेकूं मिथ्याहीपंडितमानैहैं॥ऐसेवादियोंकेप्रति यहपूछाचाहिये ॥ सृष्टिकेआदिकालविषे ताअसत्कारणतैं जोयहजगत्रूपकार्य उत्पन्नहोवै है ॥ सोकार्यसत्रूपहोवैहै॥ अथवा सोकार्य असत्रूपहोवैहै ॥ तहां सोकार्यसत्रूपहोवैहै यहप्रथमपक्ष जोवादीअंगीकारकरै सोसंभवैनहीं।काहेतैं जैसे सृष्टिकेआदिकालविषे असत्कारणतैंसत्कार्यकी उत्पत्तिहोवैहै ॥ तैसे इदानींकालविषेभी असत्कारणतैंसत्कार्यकीउत्पत्ति किसवासतैंनहींहोती॥किंतु होणीचाहिये॥ और सृष्टिकेआदिकालविषेतौ ताअसत्कारणतैं सत्कार्यकीउत्पत्ति होवैहै ॥ और इदानींकालविषे असत्कारणतैं सत्कार्यकीउत्पत्तिहोतीनहीं॥ याअर्थकीसिद्धिकरणेहारी कोईयुक्ति तावादीनैं कहीचाहिये ॥ और सोकार्य असत्रूपहै यहदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ सोभीसंभवैनहीं॥काहेतैं असत्कारणतैं असत्कार्यकीउत्पत्ति तीनकालविषेभीहोवैनहीं॥जैसे असत्वंध्यापुत्ररूपकारणतैं असत्नरश्रृंगरूपकार्यकी उत्पत्ति कदाचित्भीहोवैनहीं ॥ जोकदाचित् असत्कारणतैं असत्कार्यकीउत्पत्तिहोतीहोवै ॥ तौ असत्वंध्यापुत्रतैं असत्नरश्रृंगकी भी उत्पत्तिहोणीचाहिये ॥ यातैं जैसे असत्वस्तुविषे कारणरूपतानहींसंभवैहै ॥ तैसे असत्वस्तुविषे कार्यरूपताभीसंभवैनहीं ॥ यातैं तिनसर्ववादियोंनैं ताकार्यकूं सत्यरूपहीमान्याचाहिये ॥ तासत्कार्यकी असत्कारणतैंउत्पत्ति कदाचित्भीसंभवैनहीं ॥ यातैं तासत्कार्यका कारणभी सत्यहीमान्याचाहिये ॥यातैं ताअसत्कारणवादीनैं पूर्व जेजेविकल्पकरेथे ॥ तेसंपूर्णविकल्प व्यर्थहीं हैं अब तावादीनैं पूर्व विकल्पकरिकै जेजेदूषणकथनकरेथे तिनदूषणोंकीनिवृत्तिकरैहैं॥किंवा॥साकारणरूपसत्ता आपणेस्वरूपतैंहीं सत्यरूपताकूं

प्राप्तहोवेहै ॥ यापक्षकेअंगीकारकियेहुए हमसिद्धांतियोंकूं कौनदोषकीप्राप्तिहोवेहै ॥ शंका॥हेसिद्धांती जैसे सासत्ता आपणेस्वरूपतैंहीं सत्यरूपताकूंप्राप्तहोवेहै॥ तैसे साअसत्ताभी आपणेस्वरूपतैंहीं सत्यरूपताकूंप्राप्तहोवेगी ॥याप्रकारका प्रतिबंदीरूपदूषण तुमारेमतविषे प्राप्तहोवेहै ॥समाधान॥हेवादी तर्कविषेकुशलजेबुद्धिमान्पुरुषहैं ॥ तेबुद्धिमान्पुरुष दूसरेप्रतिवादीकेप्रति सोप्रतिबंदीरूपदूषण देतेनहीं किंतु तर्कविषेअकुशलपुरुषही सोप्रतिबंदीरूपदूषण देवेहैं॥ किंवा॥तासत्ताविषे जोस्वरूपतैंसत्यरूपताअंगीकारकरोगे ॥तो असत्ताविषे भी स्वरूपतैंसत्यरूपताहोणीचाहिये ॥ यहजोवादीनैं दूषणकथनकऱ्याहै ॥ सोदूषण व्याप्तितैंरहितहै ॥ काहेतैं जहांजहां स्वरूपहोवै है तहांतहां सत्यरूपताहोवेहै याप्रकारकीव्याप्तिसंभवेनहीं ॥ जो याप्रकारकीव्याप्ति अंगीकारकरिये ॥ तो स्वरूपतैं अग्निविषे उष्णतारहे है ॥ यातैं स्वरूपतैं जलविषेभी उष्णताहोणीचाहिये ॥ और जैसे पार्थिवहोणेतैं घट जलकेआनयनरूपक्रियाकूं सिद्धकरैहै तैसे पार्थिव होणेतैं लोष्टभी ताजलकेआनयनरूपक्रियाकूं किसवास्तेनहींसिद्धकरता॥इसतैंआदिलैके अनेकप्रकारकेदूषण तिसवादीकेमतविषे प्राप्त होवै हैं तिनसर्वदूषणोंकेकथनकरणेतैं तावादीकाउपहास तथाकथनकरणेहारेपुरुषकेकंठतालूआदिकोंकाशोषण यहदोनोंदोष प्राप्तहो वैहैं ॥ तिनदोनोंदोषों तैं अधिककोईफलहोवैनहीं ॥ किंवा ॥ तावादीकेकहणेतैंहीं साहमारीसत्तासिद्धहोवै है॥काहेतैं असत्तातैंजोभिन्न होवै ताकानाम सत्ताहै॥और सत्तातैं जोभिन्नहोवै ताकानाम असत्ताहै ॥ याप्रकार सत्ताअसत्ताशब्दकाअर्थ तावादीनैंहीं अंगीकारक ऱ्याहै॥जोकदाचित् सोवादी सत्ताकूंअंगीकार नहींकरैगा ॥तो तासत्ताकेभेदवाली असत्ताही सिद्धनहींहोवैगी ॥यातैंअसत्ताकीसिद्धिवास ते तावादीनैंभी सत्ताकूंअवश्यअंगीकारकऱ्याचाहिये।किंवा।तासत्ताकेस्थानविषे तावादीनैं अंगीकारकरीजाअसत्ताहै।ताअसत्तारूपकार णकूं आपणेस्वरूपकेबलतैं जोवादीनैं सत्यरूपताकथनकरीहै ॥सो हमसत्कारणवादियोंकूं कोईअनिष्टनहीं है ॥किंतु सोहमारेकूंभी इष्टहै काहेतैं सर्वपदार्थोंका अत्माहीं वास्तवस्वरूपहै।ताआत्माकीसत्यरूपता हमारेकूंइष्टहै॥किंवा ॥अस्ति याप्रकारकीविधिमुखप्रतीतिकाजो विषयहोवे ताकानाम सत्ताहै ॥याप्रकारकेसत्ताकेलक्षणविषे जोवादीनैं कुलधर्मकीसमानता कथनकरीथी ॥ सोदूषण तावादीकेमतविषे ॥ २० ॥

भीप्राप्तहोवैहै॥काहेतं नास्ति याप्रकारकीनिषेधमुखप्रतीतिकाजोविषयहोवै ताकानामअसत्ताहै॥यहजोवादीनैं ताअसत्ताकालक्षणकऱ्या है ॥ तालक्षणविषेभी केवल आपणे कुलकीपरम्पराही अंगीकारकरणीहोवैगी ॥ शंका॥ हेसिद्धांती॥ जोकदाचित् तासत्ताकी तथाअस त्ताकी आपणे कुलधर्मकीन्याईं सिद्धिमानोगे ॥ तो तिनदोनोंकाभेद सिद्धनहींहोवैगा॥समाधान॥ हेवादी॥तासत्ताविषे तथाअसत्ताविषे एकरूपताकेप्राप्तहुएभी तिनदोनोंकामहान्भेदहै॥काहेतैं सत्तातो भावरूपहै॥और असत्ता अभावरूपहै ॥ याप्रकार तिनोंकाभेद सर्व लोकोंकेअनुभवकरिकेसिद्धहै॥यातैं तिनदोनोंकीएकरूपतासिद्धहोवैनहीं ॥ इतनैंकरिके लोकदृष्टिकूंअंगीकारकरिके तावादीकेशंकाका समाधानकऱ्या॥अब आपणेसिद्धांतकूंअंगीकारकरिके तावादीकेशंकाकासमाधानकरैहैं॥हेवादी॥अस्ति याप्रकारकेविधिमुखप्रतीति का जोविषयहोवै है ताकानाम सत्ता है॥यहसत्ताकालक्षण जोतुमनैं पूर्वखंडनकऱ्याथा॥सोहमारेकूंभी अंगीकार है॥काहेतैं हमारेसिद्धांतविषे अद्वितीयब्रह्मकानामसत्ताहै॥ताअद्वितीयब्रह्मरूपसत्ताविषे विधिमुखप्रतीतिकीविषयतारूपलक्षण संभवतानहीं॥किंतु ताब्रह्मरूपसत्ताका मनवाणीकीअविषयतारूपही लक्षणहै ॥ अथवा सर्वलक्षणोंतैंरहितपणाहींलक्षणहै ॥ शंका ॥ हेसिद्धांती ॥ जैसे सत्ता मनवाणीकाअवि षय है ॥ तथा सर्वलक्षणोंतैंरहितहै तैसे वंध्यापुत्रादिकअसत्पदार्थभी मनवाणीकेअविषयहै ॥ तथा सर्वलक्षणोंतैंरहितहैं ॥ यातैं तिनअ सत्पदार्थोंविषेभी तासत्ताकेलक्षणकी अतिव्याप्तिहोवैगी ॥ समाधान ॥ हेवादी ॥ प्रतियोगी अनुयोगी रूपदोसत्यपदार्थोंकरिकेही अभावका निरूपणहोवै है ॥ यहसर्वशास्त्रोंका सिद्धांत है ॥ यातैं तिनअसत्पदार्थोंविषे मनवाणीकी विषयताकाअभाव तथा सर्वल क्षणोंका अभावसंभवेनहीं ॥ यातैं यहअर्थ सिद्धभया ॥ यालोकविषे जेमूढबुद्धिपुरुष सूर्य भगवान्विषे धूलिपावै हैं ॥ तेमूढबु द्धिपुरुषही ताधूलिकरिकेव्याप्तहोवै हैं ॥ सूर्यभगवान्कूं ताधूलिकासंबंधहोवैनहीं ॥ तैसे वेदविषे कथनकऱ्याजो सत्तारूप कारण है ॥ तासत्तारूपसूर्यविषे जेमूढबुद्धिवादी कुतर्करूपीधूलिपावै हैं ॥ तेमूढबुद्धिपुरुष ताकुतर्करूपीधूलिकरिके आपहीपराजयकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ तासत्तारूपसूर्यकूं ताकुतर्करूपीधूलिका स्पर्शहोवैनहीं ॥ यातैं हेश्वेतकेतु असत्ताहीं याजगत्काकारणहै॥याप्रकारकेतिनवादियोंकेवचन

मिथ्याहीहै॥यातैं मोक्षकीइच्छावान्पुरुषोंनैं तिनताकिंकोंकेवचन कदाचित्भी नहीं अंगीकारकरणे॥किंतु वेदविषेकथनकऱ्याजोसत्तारूपकारण है ॥ ता सत्तारूपकारणकूं यामुमुक्षुजनोंनैं अंगीकारकरणा ॥ काहेतैं यालोकविषे असत्कारणतैं सत्कार्यकीउत्पत्तिदेखणेविषे आवतीनहीं॥यातैं याजगत्रूपसत्कार्यका कारणभी सत्यरूपही मान्याचाहिये॥ और यालोकविषे जैसे मृत्तिका सुवर्ण लोह रूपकारण केज्ञानतैं घट भूषण खड्ग आदिकसर्व कार्योंकाज्ञानहोवै है ॥ तैसे तासत्तारूपकारणकेज्ञानतैं यासर्वजगत्रूपकार्यका ज्ञानहोवै है ॥ यातैं सर्वज्ञतारूपफलकी प्राप्तिवासतै याअधिकारीपुरुषनैं तासत्तारूपकारणकूं अवश्यकरिकैजानणा॥अब तासत्तारूपकारणविषे अद्वितीयरूपताकेस्पष्टकरणेवासतै प्रथम याजगत्केउत्पत्तिकाप्रकार वर्णनकरै हैं॥ हेश्वेतकेतु ॥ पूर्वहमनैंअद्वितीयरूपकरिकै कथनकऱ्याजो सत्तारूपब्रह्महै ॥ सोसत्ब्रह्म जिसप्रकार यासर्वजगत्कूं उत्पन्नकरताभया है॥ताप्रकारकूं तू श्रवणकर ॥ सर्वभेदतैंरहित तथावास्तवतैं मायाकेसंबंधतैंरहित ऐसाजोसत्ब्रह्महै॥सोसत्ब्रह्म कल्पितमायाकेसंबंधकूंपाइकै सृष्टिकेआदिकालविषे याप्रकारका चिंतनकरताभया॥ मैंपरमात्मादेव आपही बहुतरूपकरिकैउत्पन्नहोवौं॥तामेरेजन्मकरिकैही सावहुतरूपतासिद्धहोवैगी॥मेरेजन्मतैंविना सावहुतरूपता कदाचित्भी नहींहोवैगी॥इसप्रकारकाचिंतनकरिकै सोपरमात्मादेव यथाक्रमतैं आकाशादिकपंचभूतोंकूंरचताभया॥ हेश्वेतकेतु ॥ सोपरमात्मादेव केवल आकाशादिकभूतोंकीउत्पत्तितैंपूर्वहीं ताचिंतनकूंहींकरताभयाहै॥किंतु एकएकभूतकीउत्पत्तितैंपूर्वभी ताचिंतनकूंकरताभया है ॥शंका॥ हेभगवन्॥ तैत्तिरीयकउपनिषद्विषे आकाश वायु तेज जल पृथिवी यापंचभूतोंकी उत्पत्ति कथनकरीहै॥और याछांदोग्यउपनिषदविषे तेज जल पृथिवी यातीनभूतोंकीही उत्पत्तिकथनकरीहै॥यातैं तिनदोनोंउपनिषदोंका परस्पर विरोधप्राप्तहोवैगा॥समाधान॥हेश्वेतकेतु॥तेज जल पृथिवी यातीनभूतोंकेउत्पत्तिकूंकथनकरणेहारी याछांदोग्यश्रुतिका यहअभिप्रायहै॥अल्पबुद्धिवालेपुरुषोंकूंपंचीकरणकीप्रक्रियाजानणीअत्यन्तकठिनहैयातैंतापंचीकारणविषेउपयोगीजोआकाशवायुहै।तादोनोंकेउत्पत्तिकीउपेक्षाकरिकैताश्रुतिभगवतीनैंस्थूलबुद्धिवालेपुरुषोंऊपरअनुग्रहकरिकै तेज जल पृथिवी यातीनभूतोंकात्रिवृत्करणकथनकऱ्याहै।याकारणतैं ताछांदोग्यश्रुतिनैं

तेजजल पृथ्वीयातिनभूतोंकीही उत्पत्तिकथनकरीहै।परंतु वास्तवतैंताछांदोग्यश्रुतिकाभी पंचीकरणविषेहीतात्पर्य है। तापंचीकरणकेनिषेधविषेतात्पर्यनहीं है॥यातैं तैत्तिरीयकश्रुतिका तथाछंदोग्यश्रुतिका परस्पर विरोधसंभवैनहीं॥अब तेजादिकतीनभूतोंके उत्पत्तिकाक्रम कथनकरै हैं॥हेश्वेतकेतु॥सोसतब्रह्म प्रथम तेजकूंउत्पन्नकरताभया॥तातेजतैंअनंतर जलोंकूंउत्पन्नकरताभया ॥ ताजलोंतैंअनंतर पृथ्वीकूंउत्पन्नकरताभया ॥जापृथ्वीकूं श्रुतिविषे अन्नशब्दकरिकैकथनकऱ्याहै॥ इसप्रकार तेज जल पृथ्वी यातीनभूतोंकूंउत्पन्नकरिकै सोकारणब्रह्म तिनभूतोंकेसाथ तादात्म्यभावकूंप्राप्तहोताभया॥हेश्वेतकेतु॥जैसे सृष्टिकेआदिकालविषे तेज जल पृथ्वी यातीनभूतोंविषे प्रथम तेज जलका कारणहोवै है॥और सोजल पृथ्वीकारणहोवै है॥तैसे इदानींकालविषेभी देखणेमैंआवै है ॥ काहेतैं इदानींकालविषेभी जभी अत्यंत तपत पडेहै ॥ तभी ता तपततैं जलकीवृष्टिहोवै है॥और ताजलकी वृष्टितैं अन्नहोवै है॥यहवार्त्ता सर्वलोकोंकूं अनुभवसिद्धहै ॥ हेश्वेतकेतु॥तेज जल पृथ्वी यहतीनभूतही यासर्वजगत्केकारणहैं ॥ यातैं ताकारणकेस्वभावकूंअनुसारकरिकैही शास्त्रवेत्तापुरुषोंनैं यासर्वदेहधारीजीवोंके तीनप्रकारकेकारण कथनकरे हैं ॥ तहां जरायुजनामा जीवोंकीजाति प्रथम देहधारीजीवोंकाबीजहै ॥ काहेतैं गर्भकूंवेष्टनकरणेहारा जोजरायुनामाचर्महै ॥ सोजरायु जठराग्निकेतेजकरिकैजन्यहोवै है ॥ याकारणतैं सोजरायु तैजसपदार्थ है ॥ तिसतैंअनंतर दोप्रकारकेस्वेदज उत्पन्नहोवै हैं ॥ तहां एकतौ मशकादिरूपस्वेदज उद्भिज्जरूपहोवै हैं॥ और दूसरे यूकादिरूपस्वेदज अंडजरूप होवै हैं॥यातैं एकहीस्वेदजका जलीयउद्भिज्जरूपकरिकै तथापार्थिवअंडजरूपकरिकै संग्रह संभवहोइसकैहै ॥ यातैं जरायुज उद्भिज्ज अंडज यहतीनहीं सर्वदेहधारीजीवोंकेबीजरूपहैं ॥शंका॥हेभगवन्॥ब्रह्मसूत्रोंकेतृतीयअध्यायकेप्रथमपादविषे व्यासभगवान्ने स्वेदजका उद्भिज्जविषेही अंतर्भावकथनकऱ्याहै॥ और इहांआपने तास्वेदजका उद्भिज्ज अंडज यादोनोंविषेअंतर्भाव कथनकऱ्या॥यातैं तासूत्रके साथ तुम्हारेवचनका विरोधहोवैगा॥समाधान ॥ हेशिष्य॥ताव्यासभगवान्का यहअभिप्रायहै ॥ जैसे यहप्रसिद्धवृक्षादिक भूमिकूंऊर्ध्वभेदनकरिकैउत्पन्नहोवै है ॥ तैसे मशकादिरूपउद्भिज्ज तथायूकादिरूपअंडज यहदोप्रकारकेस्वेदजभी आपणेउपादानकारणरूपजलोंकूं

ऊर्ध्वभेदनकरिकेही उत्पन्नहोवे हैं। यातैं मशकादिकउद्भिज्जोंकीन्याईं यूकादिकअंडजोंविषेभी सोउद्भिज्जशब्दकाअर्थघटेहै ॥ याप्रकारके अर्थकेजनावणेवासतैंहीं ताव्यासभगवान्नैं उद्भिज्जविषे तास्वेदजकाअंतर्भाव कथनकऱ्याहै॥परंतु ताअंडजविषे तास्वेदजकाअंतर्भावनहीं है॥याअर्थकेबोधनकरणेविषेताव्यासभगवान्का तात्पर्यनहींहै॥किंवा॥ ऐतरेयउपनिषद्विषे जरायुज अंडज उद्भिज्ज यातीनोंकीअपेक्षा करिकै कथनकऱ्याजो चतुर्थस्वेदजहै॥तास्वेदजका असत्यपणानहीं है॥किंतु जरायुजादिकतीनोंकीन्याईं सोस्वेदजभी विद्यमानहै। याप्रकार तास्वेदजकेअसत्यपणेकीनिवृत्तिकरणेविषे ताव्यासभगवान्कातात्पर्य है॥उद्भिज्जविषेही तास्वेदजकाअंतर्भावहै याअर्थकिये तासर्वज्ञव्यासभगवान्कातात्पर्यनहीं है॥किंतु ताव्यासभगवान्का यहतात्पर्य है॥पक्षीसर्पयूकादिकजीव अंडजहैं॥और वृक्षमशकादिकशरीर उद्भिज्जहैं॥तिनदोनोंतैंभिन्न सर्वजीव जरायुजहैं॥ हेश्वेतकेतु॥जैसे यालोकप्रसिद्ध शरीरादिकअध्यात्मकार्योंकेकारणोंविषे जरायुज उद्भिज्ज अंडज यातीनभेदकरिकै तीनरूपतारहे है॥तैसे यासर्वजगत्केकारणोंविषेभी तेज जल पृथ्वी यातीनभेदकरिकै तीनरूपतारहैहै।शंका॥ हेभगवन् ॥ याप्रकार तेजादिककारणोंकेज्ञानतैं या अधिकारीपुरुषकूं किसफलकीप्राप्तिहोवे है ॥ समाधान॥ हेश्वेतकेतु ॥ जैसे तेज जल पृथ्वी यहतीनकारण आपणेआपणेकार्यविषे अनुगतरूपहोइकैरहैं॥तैसे तेज जल पृथ्वी यातीनोंविषे सोपरमात्मादेव आपणेसत्तारूपतैं अनुगतहोइकैरहेहै ॥ ऐसा सर्वजगत्काकारणरूप परमात्मादेवही हमअधिकारीजनोंकूं जानणेयोग्यहै ॥ याप्रकार तापरमात्मारूपकारणविषे जोयाअधिकारीपुरुषोंकेबुद्धिकीस्थितिहै ॥ साबुद्धिकीस्थितिही ताकारणकेविचारकाफलहै ॥ अब तापरमात्मादेवरूप परमकारणका तिनतेजादिकभूतोंविषेअनुगतपणा स्पष्टकरिकैनिरूपणकरैहैं ॥ हेश्वेतकेतु ॥ जैसे घटशरावादिककार्योंविषे मृत्तिका कारणरूपकरिकैप्रवेशकरेहै ॥ तैसे तेज जल पृथ्वी यातीनोंविषे सोपरमात्मादेव पूर्व कारणरूपकरिकैप्रवेशकरताभयाहै ॥ काहेतैं तापरमात्मादेवका असाधारणधर्मरूपईक्षण॥तत्तेजऐक्षत ॥ इत्यादिकश्रुतियेनैं प्रतिपादनकऱ्याहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे सृष्टिकेआदिकाल विषे सोसत्परमात्मादेव मैंबहुतरूपहोइकैउत्पन्नहोवौं याप्रकारकाविचारकरिकै बहुतरूपहोताभयाहै ॥ तैसे तेज तथाजल यहदोनोंभी

तात्रिचारकूंकरिकै बहुतरूपहोतेभयेहैं ॥ तहां जडतेजविषे तथाजडजलविषे चेतनकेप्रवेशतैंविना सोविचारसंभवतानहीं यातैं यह जान्याजावेहै ॥ सोचेतनपरमात्मादेवही तातेजजलविषेप्रवेशकरिकै तात्रिचारकूंकरताभयाहै॥शंका॥ हेभगवन्॥सोपरमात्मादेव तिनतेजादिकोंविषे जोकदाचित्पूर्वहीं अनुगतहुआहोवे ॥ तौश्रुतिनैं तापरमात्मादेवका पुनःजीवरूपकारिकैप्रवेश किसवासतैंकथनकऱ्याहै । समाधान ॥ हेश्वेतकेतु यद्यपि यहसतपरमात्मादेव कारणरूपकरिकैतौ तिनतेजादिकोंविषे पूर्वहीं प्रविष्टहुआहै ॥ तथापि सोपरमात्मादेव जीवरूपकरिकै तिनतेजादिकोंविषे पूर्वप्रविष्टहुआनहीं ॥ काहेतैं जो प्राणोंकूंधारणकरे है ताकानाम जीवहै ॥ तेप्राणधारणादिकजीवकेधर्मतिसकालविषेहैंनहीं ॥ हेश्वेतकेतु ॥ जोचेतन प्राण अपान व्यान उदान समान यापंचप्राणोंकूंधारणकरैहै ॥ तथा वारंवार जन्ममरणकीप्राप्तिरूप संसारकूंप्राप्तहोवेहै ॥ तथाशुभअशुभफलकूंप्राप्तहोवेहै ॥ तथाबंधकीनिवृत्तिरूपमोक्षकूंप्राप्तहोवेहै ॥ ताचेतनका नामजीवहै ॥ हेश्वेतकेतु ॥ यासर्वदेहधारीजीवोंका आपणेआपणेअंगुष्ठपरिमाण हृदयकमलहोवेहै ॥ तात्हृदयकमलविषे ज्ञानशक्तिवाला अंतःकरण सर्वदारहेहै ॥ ताअंतःकरणकेसाथ जोचेतन तादात्म्यअध्यासकूंप्राप्तहोवेहै ॥ ताअंतःकरणउपहितचेतनकानाम जीवहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जोअंतःकरणकूंही जीवकाउपाधिरूपअंगीकारकरोगे ॥ तौसुषुप्तिअवस्थाविषे ताअंतःकरणकानाशहोइजावेहै ॥ यातैं ताजीवकाभी तहांनाशहोणाचाहिये ॥ औरसुषुप्तिविषे ताजीवकानाशसिद्धांतमेंअंगीकारहैनहीं ॥ समाधान ॥हेश्वेतकेतु॥ सुषुप्तिअवस्थाविषेभी ताअंतःकरणका सर्वथानाशहोवैनहीं ॥ किंतुतासुषुप्तिअवस्थाविषेभी सोअंतःकरण संस्कारभूतसूक्ष्मवासनारूपकरिकै बन्यारहेहै ॥ काहेतैं तासुषुप्तितैंपूर्वकालविषे जिसप्रकारकाअंतःकरण प्रतीतहोवेहै ॥ तिसीप्रकारकाअंतःकरण तासुषुप्तितैंउत्तरजाग्रत्कालविषेभीप्रतीतहोवेहै ॥ जोकदाचित्सोअंतःकरण तासुषुप्तिअवस्थाविषे सर्वथानाशकूंप्राप्तहुआहोवै॥ तौपूर्वदिनकेअंतःकरणतैंउत्तरदिनकाअंतःकरण विलक्षण प्रतीतहोणाचाहिये ॥ औरसोअंतःकरणविलक्षण प्रतीतहोतानहीं ॥ यातैंयहजान्याजावेहै ॥ सोअंतःकरण सुषुप्तिअवस्थाविषे नाशकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ अंतःकरणकूंतथाअंतःकरणकेवासनावोंकूं जोकदाचित् ताजीवात्माका

उपाधिरूपअंगीकारकरोगे तौतेअंतःकरणतथावासनाअनेकहैं॥यातैंतेजीवभीअनेकहोवैंगे॥और॥अजोह्येकोजुषमाणोनुशेते । इत्यादिक श्रुतियोंविषेएकहीजीवकह्याहै तिनश्रुतियोंकाविरोधहोवैगा ॥समाधान॥ हेश्वेतकेतु ॥ तामायाविशिष्टपरमात्मादेवरूपकारणविषेयाअंतः करणवासनाविशिष्टजीवका तादात्म्यसंबंधशास्त्रवेत्तापुरुषोंनें कथनकऱ्याहै ॥ याकारणतैंही अंतःकरणादिरूपकार्यकेसाथताजीवात्माका तादात्म्यअध्यास विनाहीप्रयत्नतैं प्राप्तहोवैहै ॥ जोकदाचित् ताअंतःकरणकेकारणकेसाथ याजीवात्माका तादात्म्यसंबंधनहींहोवै तौ ताअंतःकरणकेउदयकालविषेही ताजीवात्माकाजोअंतःकरणकेसाथ तादात्म्यअध्यासहोवैहै॥सोनहींहोणाचाहिये॥हेश्वेतकेतु॥ताअंतःक रणकीउत्पत्तिहुए तथानाशहुएभीयाजीवात्माका उत्पत्तिनाशहोवैनहीं॥किंतुसोजीवात्मा सर्वदाएकरूपहीहै ॥ हेश्वेतकेतु ॥यद्यपि भिन्न भिन्नअंतःकरणोंविषेस्थितहोइकै सोजीवात्माभिन्नभिन्नरूपकरिकै प्रतीतहोवै है॥तथापिसोजीवात्मा तिनअंतःकरणोंकेकारणभूतअज्ञान केसाथभीतादात्म्यसंबंधकूंप्राप्तहोवैहै॥सोअंतःकरणकीवासनावोंकाआधारभूतअज्ञान एकहीहै ॥ औरआत्मज्ञानतैंविना ताअज्ञानका नाशभीहोवैनहीं ॥ ऐसेअज्ञानरूपउपाधिकूंग्रहणकरिकैही शास्त्रवेत्तापुरुषताजीवात्माकूंएककहैहैं ॥तथानित्यकहैहै॥ और हेश्वेतकेतु ॥ जाग्रत्स्वप्नसुषुप्ति यातीनअवस्थावोंका निमित्तकारणभूत जेसंस्काररूप कर्मवासनाहैं ॥ तथावृत्तिज्ञानरूपअंतःकरणका निमित्त कारणभूत जे संस्काररूप ज्ञानवासनाहैं ॥ तिनसर्ववासनावोंकाआश्रय अज्ञान है ॥ ताअज्ञानरूपआश्रयकेनाशकरिकै जभी तिनसर्व वासनावोंकानाशहोवै है॥ तभी यहजीवात्मा मोक्षकूंप्राप्तहोवै है॥अब अन्वयव्यतिरेककरिकै तावासनावोंके नाशविषे मोक्षकीकारणता निरूपणकरैहैं ॥ हेश्वेतकेतु जैसे याभूमिविषेस्थित जितनेकीवृक्षहैं ॥ तिनवृक्षोंविषे जिसवृक्षका मूलबीज नाशहोवै है सोवृक्षही नाशकूं प्राप्तहोवै है ॥ दूसरेवृक्ष नाशकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे यामायाविषेस्थित जितनेंकीजीवहैं ॥ तिनजीवोंविषे जिसजीवकेअंतःकरणकी वासनावोंकानाशहोवै है ॥ सोजीवही मोक्षकूंप्राप्तहोवै है॥और जिनजीवोंकेअंतःकरणकीवासनावोंकानाश नहींहुआहै॥ तेजीव तामोक्ष कूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु तेजीव बंधकूंहीप्राप्तहोवै हैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् पूर्वआपनें एकहीजीवकथनकऱ्याथा॥और अभीआपनैं नाना

जीव कथनकरे॥यातैं पूर्वउत्तरवचनोंका विरोधप्राप्तहोवैगा.॥समाधान ॥ हेश्वेतकेतु ॥ जैसे स्वप्नअवस्थाविषे यहएकही स्वप्नद्रष्टा पुरुष अज्ञानकेवशतैं अनेकरूपोंकूंधारणकरिकै किसीरूपकरिकैतौ बंधकूंप्राप्तहोवै है॥तथा किसीरूपकरिकै मोक्षकूंप्राप्तहोवै है॥तैसे यहएकही जीवात्मा मायाकेवशतैं अनेकरूपोंकूंधारणकरिकै किसीरूपकरिकैतौ बंधकूंप्राप्तहोवै है॥और किसीरूपकरिकै मोक्षकूंप्राप्तहोवै हैं॥और जैसे तास्वप्नकेनिवृत्तहुएतैं अनंतर तेस्वप्नकेबंधमोक्ष तास्वप्नद्रष्टापुरुषोंकूंप्राप्तहोवैनहीं॥ तैसे याआनंदस्वरूपआत्माके साक्षात्कारहुएतैं अनंतर सोबंधमोक्ष प्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया॥ जीवोंका परस्परभेद तथातिनजीवोंका परमात्माकेसाथ भेद जोप्रतीतहोवै है॥सोकेवल उपाधिकेसंबंधतैं प्रतीतहोवै है॥वास्तवतैंतौ यहजीवात्मा अद्वितीयब्रह्म रूपही है॥शंका॥ हेभगवन् ॥ यहपरमात्मादेवही याजगत्विषे प्रवेशकरै है यहजोवार्ता पूर्वआपनैंकथनकरीथी॥सोसंभवतीनहीं॥ काहेतैं यालोकविषे परिच्छिन्नवस्तुकाही प्रवेशदेखणेमें आवै है॥व्यापकवस्तुकाप्रवेश देखणेविषेआवतानहीं॥समाधान॥ हेश्वेतकेतु॥जैसे सर्प आपणेबिलविषेप्रवेशकरै है ॥ तैसे यहपरमात्मा देव जगत्विषेप्रवेशकरैनहीं॥ किंतु जैसे सर्वत्रव्यापकहुआभी यह आकाश घटादिकउपाधियोंविषे प्रवेशकरै है॥तैसे सर्वत्रव्यापकहुआभी यहपरमात्मादेव तिनतेजादिकभूतोंविषेप्रवेशकरै है॥और हेश्वेतकेतु॥ जैसे सुषुप्तिअवस्थाकूंप्राप्तहुआयहपुरुष सामान्यरूपतैं यद्यपि या शरीरविषेप्रविष्टहुआहै॥तथापि विशेषरूपतैं प्रविष्टहुआनहीं॥ और सोईहीपुरुष पुनः जाग्रत्अवस्थाविषे विशेषरूपकरिकैवाशरीरविषे प्रवेशकरै है॥तैसे तेज जल पृथिवी यातीन भूतोंविषे सोपरमात्मादेव यद्यपि सामान्यरूपकरिकै पूर्वही प्रविष्टहुआहै॥तथापि विशेषरूप करिकै पूर्व प्रविष्टहुआनहीं॥और सोईही परमात्मादेव पुनः तिनतेजादिकोंविषे जीवात्मारूपविशेषस्वरूपकरिकै प्रवेशकरै है॥और सोप रमात्मादेव ताविशेषरूपकरिकै प्रवेशकरणेवासतै याप्रकारकाविचार करताभया॥आपणेआपणेकार्यविषे प्रविष्टहुए जेयह तेजजलपृथिवी रूपतीनभूतहैं॥तिनोंविषे मैंपरमात्मादेव आपणेजीवरूपतैंप्रवेशकरिकै नामरूप यादोंनोंकूं विविधप्रकारकाकरौं॥ तथा तानामरूपकूंरूप ष्टकरौं ॥ और तानामरूपकेविविधप्रकारकरणेविषे तथारूपष्टकरणेविषे याप्रकारकाउपाय हमारेकूंप्रतीतहोवै है॥तेजजल पृथिवी यह जे

तीनभूतरूपदेवताहैं ॥ तिनोंविषेप्रवेशकरिकै मैंपरमात्मादेव तिसएकएकभूतकूं नवनवप्रकारकाकरौं ॥ तिनभूतोंकूं नवनवप्रकारकरणे तैंहीं यहनामरूपदोनों स्पष्टभावकूंप्राप्तहोवैंगे ॥ तिसतैंहीं यहसर्वजगत् उत्पन्नहोवैगा॥इसप्रकारकाविचारकरिकै सोपरमात्मादेव तिसी प्रकार करताभया॥तात्पर्ययह॥तेज जल पृथिवीयातीनभूतोंविषे एकएकभूतके तीनतीनविभाग समानकरे॥तहांतिनतीनोंभूतोंकेदोदो विभागतौ पृथक्पृथक्राखे॥और तिनभूतोंके तीसरे तीसरेविभागकें पुनःतीनतीनविभागकरे॥ तिनतीनोंविभागोंविषे एकएकविभागकूं यथाक्रमतैं तिनतीनभूतोंकेदोदोविभागोंविषेमिलाया।इसप्रकार तेजादिकभूतोंके आपणेआपणेतौसप्तसप्तविभागहोवै हैं॥और दूसरेभूतोंके दोदोविभागहोवै हैं॥याहीप्रक्रियाकूं छांदोग्यश्रुतिविषे त्रिवृत्करण यानामकरिकैकथनकऱ्याहै॥ हेशिष्य॥इसप्रकार सोआरुणिपिता ता श्वेतकेतुपुत्रकेप्रतिअध्यारोपभूत त्रिवृत्करणरूपसृष्टिकाकथनकरिकै यहकार्यजगत् कारणमात्ररूपहै याप्रकारकेअपवादकेकहणेवासतै अग्नि आदित्य चंद्रमा विद्युत् यह चारदृष्टांत कथनकरताभया ॥ हेश्वेतकेतु अग्नि आदित्य चंद्रमा विद्युत् याचारोंविषे जोरक्तरूप प्रतीतहोवै है॥सोरक्तरूप तासप्तभागवालेतेजकाहीजानणा ॥ और तिनअग्निआदिकचारोंविषे जोशुक्लरूप प्रतीतहोवै है सोशुक्लरूपता जलकेअष्टमभागका जानणा॥और तिनअग्निआदिकचारोंविषे जोकृष्णरूप प्रतीतहोवै है॥सोकृष्णरूप पृथिवीकेनवमभागकाजानणा ॥ इसप्रकारतेअग्निआदिकचारों तेज जल पृथिवी यहतीनभूतरूपही हैं॥हेश्वेतकेतु ॥ जैसे रक्तरूपवालाजोतेजहै तथाशुक्लरूपवालाजोजलहै तथाकृष्णरूपवालीजापृथ्वी है ॥ यातीनोंकारणकूं जभी तिनअग्निआदिककार्योंतैंभिन्नकरिये ॥ तभी तेअग्निआदिककार्य प्रती तहोवैंनहीं ॥ याकारणतैं तेअग्निआदिककार्य मिथ्याही है ॥ तैसे जलरूपजेनदीआदिकहैं ॥ तथा पृथ्वीरूपजेपर्वतादिकहैं ॥ तेभी पूर्वकहीरीतिसैं तेज जल पृथ्वी यातीनभूतोंकेहीकार्य हैं ॥ तिनतेजादिककारणोंकूं जभीतिननदीपर्वतादिककार्योंतैं पृथक्करिये॥ तभी तेनदीपर्वतादिककार्य प्रतीतहोवैंनहीं यातैं तेनदीपर्वतादिकपदार्थभी मिथ्याही हैं॥ काहेतैं तेअग्निआदिकविकार केवलवाणीमात्र करिकेहीसिद्धहैं ॥ वास्तवतैं तेअग्निआदिकविकार हैंनहीं ॥ यातैं तेज जल पृथिवी यातीनकारणोंतैंभिन्नकरेहुए तेअग्निआदिक

॥ २४ ॥

विकार मिथ्याहीहोवै हैं॥यातैं तिनअग्निआदिकविकारोंकेकारणरूपजे तेजादिकतीनभूतहैं तेतीनभूत तिनविकारोंकीअपेक्षाकरिकैसत्यरूपहैं ॥ हेश्वेतकेतु ॥ जैसे अग्निआदिकविकार कार्यरूपहोणेतैं मिथ्याहैं ॥ तैसे तेज जल पृथिवी यहतीनभूतभी कार्यरूपहोणेतैं मिथ्याही हैं ॥ तिनमिथ्यातेजादिकभूतोंका जोपरमात्मादेवरूपकारणहै॥सोपरमात्मादेवही सत्यहै ॥ तापरमात्मादेवतैंभिन्न यहसर्वजगत् मिथ्याहीं है ॥ तासत्यपरमात्मादेवकेज्ञानतैंहीं यासर्वजगत्काज्ञानहोवै है ॥ अब याहीअर्थविषे विद्वान्पुरुषोंकाअनुभव निरूपणकरे हैं ॥ हे श्वेतकेतु ॥ इसप्रकार कारणकेसत्यरूपताकूंजाणिकै परमहर्षकूंप्राप्तहुए केईकविद्वान्ब्राह्मण परस्परमिलिकै पूर्व याप्रकारकेवचन कहते भयेहैं ॥ हमविद्वान्ब्राह्मणोंके विद्यारूपकुलविषे जितनेकीपुरुष उत्पन्नहोवैंगे ॥तिनोंविषे कोईभीपुरुष किसीअज्ञातवस्तुका कथनकरेगा नहीं ॥ किंतु सोपुरुष कारणकेसत्यरूपताकूं तथाकार्यकेमिथ्यारूपताकूं जाणिकरिकै ज्ञातवस्तुकाही कथनकरेगा॥काहेतैं यालोकविषे आपणेकारणतैं सोकार्य किंचित्मात्रभीभिन्नहोवैनहीं ॥ यातैं ताकारणकेज्ञानतैं तेसर्वपुरुष सर्वज्ञताकूंप्राप्तहोवैंगे ॥ हेश्वेतकेतु ॥ तिन विद्वान्पुरुषोंका जोयाप्रकारकाकहणाहै ॥ सोअसंगतनहीं है किंतु यथार्थही है॥काहेतैं यासर्वजगत्काकारणरूपजे तेज जल पृथिवी यह तीनभूतहैं ॥ तिनभूतोंकूंभी तेविद्वान्पुरुष भलीप्रकार जाणतेभये हैं ॥ और तिनतेजादिकतीनभूतोंकाकारणरूप जोसतपरमात्मादेव है तापरमात्मादेवकूंभी तेविद्वान्पुरुष भलीप्रकार जाणतेभये हैं॥ऐसेविद्वान्पुरुषोंकूं यासर्वजगत्काज्ञानहोणाकोईदुर्लभनहीं हैं इतनेंकरिकै अग्निआदिकबाह्यप्रपंचविषे तेजादिकतीनभूतोंकीकार्यता निरूपणकरी॥अब यास्थूलसूक्ष्मशरीरविषे तिनतेजादिकभूतोंकीकार्यता निरूपणकरेहैं।हेशिष्य।इसप्रकार सोउद्दालकनामाआरुणिपिता ताश्वेतकेतुपुत्रकेप्रति याबाह्यप्रपंचविषे भौतिकपणा कथनकरिकै मनप्राणादिकअंतरप्रपंचविषेतिनतेजादिकभूतोंकीकार्यतातथातिनभूतोंद्वारात्रह्मकीकार्यताकहणेकीइच्छाकरताहुआयाप्रकारकावचनकहताभया॥हेश्वेतकेतु॥यालोकविषे अन्नजलकूं भक्षणकरणेहारेजितनेंकीदेहधारीजीवहैं॥तेदेहधारीजीवजिसत्रिवृतरूपअन्नकूंभक्षणकरे हैं॥तथाजिसत्रिवृतरूपजलकूंपानकरे हैं।सोअन्नतथाजल जठराग्निकेसंबंधकरिकै पृथिवी जल तेजयातीनरूपकरिकैतीनप्रकारकाहोवै है।हेश्वेतकेतु।इस

प्रकार तीनविभागोंकूंप्राप्तहुआजो अन्नजलहै॥ताअन्नजलकाजोतेजसभागहै।सोतेजसभागभी सूक्ष्म मध्यम स्थूल याभेदकरिकैतीनप्रकार काहोवै है॥तहां सूक्ष्मतेजसभागतौ वाक्रूपकरिकैपरिणामकूंप्राप्तहोवै है॥ और मध्यमतेजसभाग मज्जारूपकरिकैपरिणामकूंप्राप्तहोवै है॥ और स्थूलतेजसभाग अस्थिरूपकरिकैपरिणामकूंप्राप्तहोवैहै॥तैसे सोजलीयभागभी सूक्ष्म मध्यम स्थूल यातीनरूपकरि तीनप्रकारका होवै है॥तहां सूक्ष्मजलकाभागतौ प्राणरूपकरिकैपरिणामकूंप्राप्तहोवै है।और मध्यमजलकाभाग रक्तरूपकरिकैपरिणामकूंप्राप्तहोवै है॥ओ रस्थूलजलकाभाग मूत्ररूपकरिकैपरिणामकूंप्राप्तहोवै है॥इसप्रकार सोपृथिवीकाभागभी सूक्ष्म मध्यम स्थूल यातीनभेदकरिकैतीनप्रका रकाहोवै है ॥ तहां सूक्ष्मपार्थिवभागतौ मनरूपकरिकैपरिणामकूंप्राप्तहोवै है॥ और मध्यमपार्थिवभाग मांसरूपकरिकैपरिणामकूंप्राप्तहोवै है ॥ और स्थूलपार्थिवभाग पुरीषरूपकरिकै परिणामकूंप्राप्तहोवै है ॥ हेशिष्य ॥ वाक् तेजकाकार्य है ॥ और प्राण जलकाकार्य है ॥ और मन पृथिवीरूपअन्नकाकार्य है॥याप्रकारके अर्थकूंश्रवणकरिकै सोश्वेतकेतु आपणेपिताकेप्रति याप्रकारकाप्रश्नकरताभया ॥ श्वेत केतुरुवाच ॥ हेपिता ॥ अन्नजलादिरूपकूंप्राप्तभयेजे तेज जल पृथिवी यहतीनभूतहैं॥तेअत्यन्तस्थूलहैं ॥ और वाक् प्राण मन यहतीनों अत्यन्तसूक्ष्म हैं ॥ ऐसे तेजादिकस्थूलभूतोंतैं वाकादिकसूक्ष्मोंकीउत्पत्तिसंभवैनहीं॥काहेतैं यालोकविषे समानस्वभाववाले तंतुपटादि कोंकाही परस्पर कार्यकारणभाव देखणेविषेआवै है ॥ विलक्षणस्वभाववालेपदार्थोंका परस्पर कार्यकारणभाव देखणेविषेआवतानहीं ॥ यातैं हेभगवन् तापूर्वकहेअर्थकूं आपहमारेप्रति पुनः किसीयुक्तिकरिकैकथनकरौ॥जाकरिकै ताअर्थका हमारेकूं वास्तवरूपतैंज्ञानहोवै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार जभी ताश्वेतकेतुनैं आपणेआरुणिपिताकेप्रति प्रश्नकऱ्या॥तभी सोआरुणिपिता ताश्वेतकेतुपुत्रकेप्रति याप्रका रकावचनकहताभया ॥ आरुणिरुवाच ॥ हेश्वेतकेतु ॥ स्थूलतैंसूक्ष्मकीउत्पत्तिविषे तूंदृष्टांतकूंश्रवणकर ॥ जैसे यालोकविषे घनीभावक रिकैस्थूलताकूंप्राप्तभयाजोदधिहै॥तास्थूलदधिविषे यद्यपि मंथनकरणेतैंपूर्व तक्र फेन घृत यहतीनरूपप्रतीतहोवैंनहीं॥तथापि मंथनक रिके सास्थूलदधि तक्र फेन घृत यातीनसूक्ष्मरूपकरिकैपरिणामकूंप्राप्तहोवै है ॥ तैसे अन्नजलभावकूंप्राप्तहुए तेज जल पृथिवी यहतीन

॥ २६ ॥

स्थूलभूतभी वाक् प्राण मन यातीनसूक्ष्मरूपकरिकै परिणामकूंप्राप्तहोवै हैं॥और हेश्वेतकेतु जैसे मथनकरेहुए दधिका जोसूक्ष्मअंशहै ॥ सोघृतरूपकरिकैऊर्ध्वदेशकूं प्राप्तहोवै हैं ॥ तैसे अन्नजलरूपकरिकै जठराग्निविषेस्थित जे तेज जल पृथिवी हैं ॥ तिनतीनोंतैं यथाक्रमतैं वाक् प्राण मन यातीनोंकाउपादानकारणरूप सूक्ष्मअंशभी ऊर्ध्वदेशकूंप्राप्तहोवै है॥इसप्रकार तेज जल पृथिवी यातीनस्थूलभूतोंतैंयथा क्रमतैं वाक् प्राण मन यहतीनोंसूक्ष्म उत्पन्नहोवै हैं ॥हेशिष्य॥इसप्रकार जभी ताआरुणिपितानैं ताश्वेतकेतुपुत्रकेप्रति उत्तरकह्या॥तभी सोश्वेतकेतु ताअरुणिपिताकेप्रति पुनः याप्रकारकाप्रश्न करताभया ॥ श्वेतकेतुरुवाच ॥ हेपिता पूर्वआपनैं वाक्विषे जोतेजरूपता कथ नकरी सोयद्यपि संभवै है ॥ काहेतैं यालोकविषे जैसे जलकरिकै तेजकापराभव देखणेमैंआवै है ॥तैसे याशरीरविषे जलरूपकफधातुकी वृद्धिकरिकै जभी तेजकापराभवहोवै है॥तभी सर्वदेहधारीजीवोंका सोवाक् शिथिलताकूंप्राप्तहोवै है ॥और ताकफधातुकेवृद्धिकेअभावहुए सोवाक् स्पष्टप्रतीतहोवै है॥याप्रकारकेअन्वयव्यतिरेककरिकै तावाक्विषे तेजकीकार्यता निश्चयहोइसकैहै॥तथापि प्राणविषे जलकीकार्य ता तथामनविषे पृथिवीरूपअन्नकीकार्यता किसप्रकार निश्चयकरीजावै॥तावाककीन्याईं याप्राणमनविषे कोईअन्वयव्यतिरेक देखणेमैंआ वतानहीं ॥हेशिष्य॥इसप्रकार जभी ताश्वेतकेतुनैं उद्दालकपिताकेप्रतिप्रश्नकऱ्या॥तभी सोउद्दालकपिता ताश्वेतकेतुपुत्रकेप्रति ताप्राण मनविषेभी सोअन्वयव्यतिरेक दिखावताहुआ याप्रकारकावचन कहताभया ॥ आरुणिरुवाच ॥ हेश्वेतकेतु ॥ श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रिय तथावाकादिकपंचकर्मइंद्रिय तथाआकाशादिकपंचभूत एकप्राण यापोडशतत्वोंकासमुदाय तत्तलोहपिंडकीन्याईं चेतनकेतादात्म्यसंबंध करिकैयुक्तहुआ पुरुषनामकरिकैकह्याजावै है॥और चंद्रमाहेदेवताजिसका ऐसाजोमनहै॥सोमनहैप्रधानजिसविषे ऐसाजोसोपुरुषहै॥ताम नोमयपुरुषकी वेदवेत्तापुरुषोंनैं षोडशकला कथनकरी हैं ॥इहां दिनदिनविषेभोजनकऱ्याजोअन्नहै॥ ताअन्नतैंउत्पन्नभईयांजे मनकेवृत्ति योंकाउपादानकारणरूप शक्तियांविशेषहैं ॥ तिनशक्तियोंकानाम कलाहै ॥ तहां एकएकदिनविषे ताअन्नकेभक्षणकियेतैं तामनविषे एकएककलाउत्पन्नहोवै है॥इसप्रकार षोडशदिनपर्यंत ताअन्नकेभक्षणकरणेतैं तामनोमयपुरुषविषे षोडशकला उत्पन्नहोवै हैं ॥ और जो

पुरुष अन्नकूंभक्षणनहींकरेहै ॥ तिसपुरुषकी एकएकदिनविषे एकएककला नाशकूंप्राप्तहोतीजावै है॥ षोडशदिनपर्यंत ताअन्नकेनहींभक्षणकियेतैं तेसर्वकला नाशकूंप्राप्तहोवै हैं॥याअर्थविषे तुमनैं किंचित्मात्रभी संशयनहींकरणा ॥ परंतु यहसर्ववार्त्ता रोगरहितपुरुषविषेहीघटे है॥रोगीपुरुषविषेतो वातपित्तादिकदोषकीहीं साशक्तिहोवैहै॥हेश्वेतकेतु॥ यहप्राण जलतैंविना एकदिनमात्रभी याशरीरविषे स्थितहोइसकेनहीं॥और ताप्राणकेगयेहुएतैंअनंतर सोअन्वयव्यतिरेक जान्याजावैनहीं॥यातैंताअन्वयव्यतिरेककेज्ञानविषेउपयोगी जो है॥ ताप्राणीकीरक्षाकरणेवासतै तूं जलकूंतो आपणीइच्छापूर्वक पानकर॥परंतु अन्नकूं पंचदशदिनपर्यंत तूं भक्षणमतकर।ताअन्नकेनहींभक्षणकियेतैं तूं आपही ताअन्वयव्यतिरेककूंनिश्चयकरैगा॥ हेशिष्य ॥इसप्रकारकावचन जभी ताआरुणिपितानैं श्वेतकेतुपुत्रकेप्रतिकह्या॥ तभीसोश्वेतकेतु तापिताकेआज्ञाकूंमानिकै पंचदशदिनपर्यंत अन्नकूंनहींभक्षणकरताभया॥तापंचदशदिनतैंअनंतर सोश्वेतकेतु पुनःताआरुणिपिताकेसमीपजाइकै स्थितहोताभया ॥ और क्षुधाकरिकैक्षीणहुआहैमनजिसका ऐसाजोश्वेतकेतुहै॥ताश्वेतकेतुकूं आपणेसमीपआयाहुआदेखिकै सोआरुणिपिता ताश्वेतकेतुपुत्रकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया॥हेपुत्र जोतुमनैं पूर्व ऋग् यजुष् साम यातीनवेदोंके पाठका तथाअर्थका अध्ययनकऱ्याहै ॥तिनअर्थसहितवेदोंकूं हमारेसमीप कथनकरो॥हेशिष्य॥इसप्रकारकावचन जभी ताआरुणिपितानैंश्वेतकेतुकेप्रतिकह्या ॥ तभी सोश्वेतकेतु पूर्वअध्ययनकरेहुएवेदोंकाचिंतनकरताहुआभी ताकालविषे किंचित्मात्रभी तिनवेदोंकास्मरणनहीं करताभया ॥ जैसे दुर्बुद्धिपुरुष किसीभीअर्थकूं स्मरणकारीसकतानहीं॥तैसे सोश्वेतकेतुभी तापूर्वअध्ययनकरेहुएअर्थकूं किंचित्मात्रभी स्मरणनहींकरताभया तिसतैंअनंतर ग्लानिकारिकैयुक्तहुआ सोश्वेतकेतु आपणेआरुणिपिताकेप्रति याप्रकारकावचनकहताभया॥हेपिता पूर्वहमनैं जिनऋगादिकवेदोंका अर्थसहितअध्ययनकऱ्याथा ॥ तेऋगादिकवेद अभी हमारेकूं प्रतीतहोतेनहीं ॥ किंतु जैसेकिसीपुरुषनैं बहुतकाल पर्यंत आराधनकऱ्याजोमंत्रहै ॥ सोमंत्र तापुरुषकेभाग्यकेक्षयहुए निष्फलहीहोवै है ॥ तैसे हमनैं पूर्व जितनाकीवेदोंका अध्ययनकऱ्याथा ।। सोसंपूर्णअध्ययन हमारा निष्फलहोताभयाहै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकावचन जभी ताश्वेतकेतुनैंकह्या ॥ तभी

॥ २६ ॥

सोआरुणिपिता ताक्षुधावान्श्वेतकेतुकेप्रति याप्रकारकावचनकहताभया ॥ हेश्वेतकेतु ॥ तूअभी अन्नकूंभक्षणकर॥ताअन्नकेभक्षणकियेतैंअनंतर तू तिनसर्व वेदोंकेअर्थकूं पूर्वकीन्याईं जाणैगा॥हेश्वेतकेतु॥जैसे महान्प्रज्वलितअग्निके जभी काष्ठादिकइंधनोंकानाशहोवै है ॥ तभी अग्निके खद्योतजंतुकेसमान कोईकअंगारकण बाकीरहेहैं॥ताखद्योतकेसमानअग्निकेअंगारकरणोंकरिकै पूर्वप्रज्वलितअग्निकीन्याईं महान्काष्ठोंकादाहरूपकार्य उत्पन्नहोवैनहीं॥तैसे पंचदशद्दिनपर्यंत अन्नकेनहींभोजनकरणेकरिकै तातुम्हारेमनकी पंचदशकलातो नाशहोइगईयाहैं॥बाकी एककलारहीहै॥याकारणतैं सोतुम्हारामन किंचित्मात्रभीअर्थकेजानणेविषे तथा स्मरणकरणेविषे समर्थहोतानहीं॥यातैं तूअभी अन्नकेभोजनतैं आपणेमनके कलावोंकीवृद्धिकरिकै पुनः हमारेसमीपआव॥हेशिष्य॥इसप्रकारकेपिताकेवचनकूंअंगीकारकरिकै सोश्वेतकेतु अन्नकूंभोजनकरिकै पुनः आपणेपिताकेसमीपजाताभया॥ताश्वेतकेतुपुत्रकूंदेखिकै सोआरुणिपिता ताश्वेतकेतुपुत्रतैं पुनःपूर्व अध्ययनकऱ्येहुएवेदोंकाअर्थ पूछताभया॥तिसतैं अनंतर सोश्वेतकेतु ताआरुणिपिताकेप्रति सोसर्व वेदोंकाअर्थ कथनकरताभया॥ हेशिष्य॥इसप्रकार सोआरुणिपिता ताश्वेतकेतुपुत्रकेप्रति अन्नकेअभावहुए मनकाभी अभावहोवैहै याप्रकारकेव्यतिरेककूंअग्निकेदृष्टांततैंकथनकरिकै तिसतैंअनंतर अन्नकेविद्यमानहुए मनकीभीविद्यमानताहोवै है याप्रकारकेअन्वयकूं तिसीअग्निकेदृष्टांततैं कथनकरताहुआयाप्रकारकावचन कहताभया॥हेश्वेतकेतु॥जैसे सोखद्योतकेसमानसूक्ष्मअंगार सूक्ष्मशुष्कतृणोंकेपावणेकरिकै शनैःशनैःवृद्धिकूंप्राप्तहोइकै महान्शुष्ककाष्ठोंकूं तथामहान्आर्द्रकाष्ठोंकूंभी दाहकरिसकैहैं॥तैसे आहारकेग्रहणतैंपूर्व जोतुम्हारामनएककलामात्रबाकीरह्याथा॥सोईहीतुमारा मन अभीआहारकेग्रहणकरणेतैं पुनःसर्वज्ञताकूं प्राप्तहुआहै॥याप्रकारकेअन्वयव्यतिरेककरिकै तुमनैंभी आपणेमनविषे अन्नमयता निश्चयकरीहै॥हेश्वेतकेतु॥जैसेवाकविषे तथामनविषे अन्वयव्यतिरेककरिकै तुमनैं तेजोमयता तथाअन्नमयता निश्चयकरीहै॥तैसे प्राणविषेभी तुमनैं जलमयता निश्चयकरणी॥काहेतैं जैसे अन्नतैंविना मनकाक्षयहोवै है॥तैसे जलतैंविना प्राणकाभीक्षयहोवै है ॥ इतनैंग्रंथकरिकै सर्वजगत्काकारणरूप जो अद्वितीयब्रह्म है ॥ ताअद्वितीयब्रह्मरूप तत्पदार्थकाशोधन निरूपणकऱ्या ॥ अब ता तत्पदार्थविषे प्रत्यक्आत्मा

रूप त्वंपदार्थरूपता निरूपणकरेहैं॥तहां त्वंपदार्थरूपआत्माविषे साप्रत्यक्षरूपता तीनप्रकारकी वेदांतशास्त्रोंकेविषेकथनकरीहै॥तहांएक तो अंतःकरणादिकोंविषेस्थित चिदाभासकीबिंबरूपताकरिके प्रत्यक्षरूपताकहीहै॥और दूसरा शरीरकीअधिष्ठानतारूपकरिके प्रत्यक्ष रूपता कथनकरी है ॥ और तीसरा इंद्रियोंकीअधिष्ठानरूपकरिके प्रत्यक्षरूपता कथनकरी हे ॥ तहां प्रथमप्रत्यक्षरूपताकूं याछांदोग्यश्रुतिविषे शकुनिपक्षीकेदृष्टांतकरिकेकथनकऱ्याहै॥ताका अभीनिरूपणकरेहैं॥ हेशिष्य॥पूर्वकहीरीतिसैं वाक् प्राण मन आदिकोंकेउपादानकारणरूपअद्वितीयब्रह्मकूंनिश्चयकऱ्याहै जिसनैं ऐसाजोश्वेतकेतुहै।ताश्वेतकेतुपुत्रकेप्रति सोउद्दालकनामाआरुणिपितात्वंपदार्थआत्माकेशोधनकरणेवासतैं पुनः याप्रकारकावचन कहताभया।हेश्वेतकेतु॥पूर्वहमनैंतुमारेप्रति जोमन अन्नमयरूपकरिकैकथनकऱ्याहै।तिसमनकाही यहतेजजलपृथिवीरूपसर्वजगत् विलासहै।तिसमनकेविद्यमानहुएही यहपुरुष वारंवार अध्यासरूपमोहकूंप्राप्तहोवैहै।जोकदाचित् यहमन नहींहोवै ॥ तो तामनविषेप्रतिबिंबरूप मोहकूंभी यहजीव प्राप्तहोवैनहीं ॥ ताप्रतिबिंबरूपमोहकेअभावहुए याजीवात्माकूं रागद्वेषादिकविकारभीप्राप्तहोवैनहीं ॥ तिनरागद्वेषादिकविकारोंकेअभावहुए यहजीवात्मा पुनःसंसारकूंप्राप्तहोवैनहीं॥यातैं यहचिदाभासयुक्तमनहीं यासर्वजगत्कानिर्वाह करणेहाराहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ यामनकूंभी उपादानकारणतारूपकरिकै आपणेवशविषेस्थापनकरणेहारा कोनवस्तुहै ॥समाधान॥ हेश्वेतकेतु कारणरूपजोप्रथमशरीरहै सोकारणशरीरही यामनकूंभी आपणेवशकरणेहाराहै॥अब याहीअर्थकेस्पष्टकरणेवासतै प्रथम तीनप्रकारकेशरीरोंका निरूपणकरे हैं स्थूलशरीर सूक्ष्मशरीर कारणशरीर यहतीनप्रकारके शरीरहोवै हैं ॥ तहां प्रथम कारण शरीरका निरूपणकरे हैं ॥ सर्वदेहधारी जीवोंका जोअज्ञान है ॥ ताअज्ञानकानाम कारण शरीर है ॥ सोअज्ञान एकहोणेतैं सर्व देहधारीजीवोंकूं साधारण है ॥ तथा सर्वदुःखोंकाकारण है॥ याकारणतैं सोअज्ञानरूपकारणशरीर स्थूलसूक्ष्म शरीरोंकी अपेक्षाकरिकै उत्कृष्टहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ ताअज्ञानरूपकारणशरीरविषे कोनप्रमाणहै ॥ समाधान॥ हेश्वेतकेतु ॥ यहसर्व देहधारी जीव सुषुप्तितैं उठिकै याप्रकारकास्मरणकरेहैं ॥ जोहम सुखीसोतेभये तथाकिंचित्मात्रभीनहींजाणतेभये यासर्वलोकोंकेस्मरणतैं यह

॥ २७ ॥

जान्याजावैहै ॥ जोयहजीव सुषुप्तिअवस्थाविषेजाइकै तहां सर्वदुःखोंतैंरहितआनंदकूंअनुभवकरहै॥तथा अज्ञानकूंअनुभवकरे हैं ॥ ताअनुभवजन्यसंस्कारोंतैंहीं याजाग्रत्अवस्थाविषे ताआनंदकी तथाअज्ञानकी स्मृतिहोवैहै॥यातैं याजीवोंकेजाग्रत्अवस्थाकेस्मरणरूपहेतुतैं अनुमानकऱ्याजोसुषुप्तिकाअनुभवहै॥ ताजीवोंके अनुभवकरिकैही सोअज्ञानरूपकारणशरीर सिद्धहोवैहै॥ अब सूक्ष्म शरीरका निरूपणकरे हैं।हेश्वेतकेतु।ताकारणअज्ञानविशिष्टआत्मादेवतै आकाशादिकपंचसूक्ष्मभूत तथामनइंद्रियादिकभौतिकपदार्थ उत्पन्नहोवैहैं॥ तिनसमष्टिसूक्ष्मपदार्थोंकाअभिमानीजोहिरण्यगर्भ है ॥ताहिरण्यगर्भकूं शास्त्रवेत्तापुरुष अधिदैवयानामकरिकैकथनकरे हैं॥और मनहेप्रधानजिसविषे ऐसाजोव्यष्टिसूक्ष्मकाअभिमानी तैजसहै ॥ तातैजसकूं शास्त्रवेत्तापुरुष अध्यात्म यानामकरिकै कथनकरेहैं॥अब स्थूलशरीरकावर्णनकरे हैं ॥ हेश्वेतकेतु॥तिनसूक्ष्मभूतोंतैं यहस्थूलभूत उत्पन्नहोवैहै ॥तथा स्थूलशरीरादिकभौतिकपदार्थ उत्पन्नहोवैहैं॥तिनसमष्टिस्थूलभूतभौतिकपदार्थोंकेअभिमानीदेवताकूं शास्त्रवेत्तापुरुष विराट् यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ और व्यष्टिस्थूलकेअभिमानीकूं शास्त्रवेत्तापुरुष विश्व यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ तहांविराट्तो अधिदैवरूपहै ॥ और विश्व अध्यात्मरूपहै॥अब जाग्रतादिकतीनअवस्थावोंकेआश्रयका निरूपणकरेहैं ॥ हेश्वेतकेतु यासर्वदेहधारीजीवोंकूं भिन्नभिन्नरूपकरिकै जोआपणाआपणास्थूलशरीर प्रतीतहोवैहै सोयहस्थूलशरीरतो जाग्रत्अवस्थाका स्थानहोवैहै॥और सूक्ष्मशरीर स्वप्नअवस्थाका स्थानहोवैहै और तास्वप्नअवस्थाकाआश्रयरूप जोअंतःकरणहै ॥ ताअंतःकरणकी दोअवस्थाहोवैहैं ॥ एकतो स्वरूपतैंअभिव्यक्तिरूपअवस्थाहोवैहै ॥ और दूसरी संस्काररूप तैंस्थितिरूपअवस्थाहोवैहै ॥ताअंतःकरणकीदोअवस्थावोंकेभेदकरिकै सास्वप्नअवस्थाभी दोप्रकारकीहोवै है॥तहां एकतो सस्वप्नअवस्थाहोवैहै ॥ और दूसरी स्वप्नरहितअवस्थाहोवैहै ॥ तहां प्रसिद्धस्वप्नअवस्थाकूं सस्वप्नअवस्थाकहेहैं॥ और प्रसिद्धसुषुप्तिअवस्थाकूं स्वप्नरहितअवस्थाकहे हैं ॥ जिससुषुप्तिअवस्थाविषे सर्वदुःखोंकालयहोवैहै ॥ काहेतैं तासुषुप्तिअवस्थाविषे यहप्रतिबिंबरूपजीव आपणे बिंबरूपपरमात्मादेवविषे लयभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ कैसाहैसोपरमात्मादेव ॥ परमआनंदस्वरूपहै ॥ तथा सर्वभेदतैंरहितहै ॥ याकारण

तैंही सोपरमात्मादेव क्षुधा पिपासा हर्ष शोक जन्म मरण याषट्ऊर्मियोंतैंरहितहै ॥ ऐसेपरमात्मादेवविषे लयभावकूंप्राप्तहोइकै यहजी वभी सर्वदुःखोंतैंसहितहोवैहै ॥ तात्पर्ययह॥जैसे दर्पणरूपउपाधिकेलयहुए तादर्पणविषेस्थितप्रतिबिंब आपणेवास्तवस्वरूप बिंबविषेलय होवैहै ॥ तैसेसुषुप्तिअवस्थाविषे तामनरूपउपाधिकेलयहुए तामनविषेस्थितप्रतिबिंबरूपजीव आपणेवास्तवस्वरूपपरमात्मादेवरूपबिंब विषे लयभावकूंप्राप्तहोवै है॥हेश्वेतकेतु ॥कोईक बुद्धिमानपुरुष लौकिकदृष्टिकूंअंगीकारकरिकै याअवस्थाकूं स्वपिति यानामकरिकैकथन करैहैं ॥ और कोईक विद्वान्पुरुषतौ याप्रकारकावचनकहैहैं ॥ यहस्वपितिनाम ताअवस्थाकावाचकनहींहै ॥ किंतु सोस्वापितिनाम तापरमात्मादेवकाहींवाचकहै ॥ काहेतैं सुषुप्तिअवस्थाविषे यहजीवात्मा जिसआपणेवास्तवस्वरूप परमात्मादेवकूंप्राप्तहोवै है॥ तिसपर मात्मादेवकूं श्रुतिभगवती स्वमपीत यानामकरिकैकथनकरै है ॥और श्रेष्ठपुरुषोंकीन्याईं इंद्रादिकदेवतावोंकूं परोक्षनामहीं प्रियहोवै है ॥ याकारणतैं तेपरोक्षप्रियदेवता तापरमात्मादेवकूं स्वमपीत यासाक्षात्नामकरिकैकथनकरैनहीं॥ किंतु स्वपिति यापरोक्षनामकरिकैकथ नकरैहैं॥हेश्वेतकेतु॥जैसे जाग्रत्अवस्था तथास्वप्नअवस्था यामनकाही परिणामरूपहोवै है।तैसे सासुषुप्तिअवस्थाभी यामनकाही परिणा मरूपहोवै है॥काहेतैं जाग्रत्अवस्थाविषे तथास्वप्नअवस्थाविषे जोमन पूर्वादिकदशोंदिशाविषे भ्रमणकरै है॥सोईहीमन ताभ्रमणकेपरिश्र मकरिकेयुक्तहुआ लयरूपसुषुप्तिअवस्थाकूंप्राप्तहोवै है ॥ जैसे यालोकविषे किसीपुरुषनैं पंजरविषे दृढसूत्रकरिकैबांध्याहुआजोशकुनि पक्षीहै ॥ सोशकुनिपक्षी आहारकीकामनाकरिकै तापंजरकेअंतरदेशविषेही आपणेपक्षोंकूंचलायमानकरिकैउडेहै ॥ ताकरिकै सोशकुनिपक्षी आहारकूंप्राप्तहोइकै अथवा नहींप्राप्तहोइकै जभी परिश्रमकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभी सोशकुनिपक्षी तापंजरकेमध्यदेशविषे आपणेबैठणेकेस्थानकूंप्राप्तहोइकै पूर्वभ्रमणकालकेदुःखतैंरहितहोइकै तथानिश्चलहोइकै लीनहुएपुरुषकीन्याईं तद्वांस्थितहोवैहै ॥ तैसे यहमनभी पुण्यपापकर्मरूपसूत्रकरिकै याशरीररूपपंजरविषे हृदयविषेबांध्याहुआहै ॥ तथा रागरूपक्षुधाकरिकै उत्पन्नभयेजे अध्यात्म अधिदैव अधिभूत यहतीनप्रकारकेदुःखहैं ॥ तिनदुःखोंकरिकैतपायमानहैं॥ऐसामनरूपशकुनिपक्षी विषयसुखोंकीप्राप्तिवासतैं

॥ २८ ॥

जाग्रत्अवस्थाविषे तथास्वप्नअवस्थाविषे सर्वदा भ्रमणकरैहै ॥ ताभ्रमणकरिकै जभी सोमन अत्यन्तपरिश्रमकूं प्राप्तहोवै है॥ तथा ता जाग्रत्स्वप्नकेभोगदेणेहारेकर्मोंका जभीक्षयहोवैहै॥ तभी सोमनतापरिश्रमकीनिवृत्तिकरणेवासतैं तात्हृदयदेशविषे सुषुप्तिकूंप्राप्तहोवै है ॥ हेश्वेतकेतु ॥ तासुषुप्तिअवस्थाविषे कारणअज्ञानउपहित जोआनंदस्वरूप परमात्मादेवहै ॥ सोपरमात्मादेवहीताइंद्रियोंसहितमनके लयकास्थानहै ॥ ताअज्ञानउपहित परमात्मादेवतैंभिन्न दूसराकोईपदार्थ तामनकेलयकास्थाननहीं है ॥ यातैंयहमन ताअज्ञानउप हितपरमात्मादेवकूंछोडिकै दूसरेकिसीवस्तुकूं आश्रयणकरतानहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ तासुषुप्तिअवस्थाविषे सोमनतौकारणअज्ञानविषेलय होवैहै ॥ और तामनविषे स्थितप्रतिबिंबतौ परमात्मारूपबिंबविषेलयहोवैहै ॥ हेश्वेतकेतु ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषेयहमन ताअज्ञानउपहि तपरमात्मादेवतैंविना दूसरेपदार्थकूं आश्रयकरैनहीं॥ याअर्थीविषे यहहेतुहै ॥ आनंदस्वरूपआत्मातैंभिन्न जितनैंकीस्थूलसूक्ष्मपदार्थ हैं॥ तेसंपूर्णपदार्थ मनकरिकैकल्पितहोणेतैं यामनकाहीकार्यरूपहैं ॥ और यालोकविषे जोजोकार्यहोवै है ॥ सोसोकारणतैंपश्चात्भावीहीं होवैहै॥ जैसे घटपटादिककार्य मृत्तिकातंतुआदिककारणोंतैंपश्चात्भावीहैं ॥ तैसे यहस्थूलसूक्ष्मपदार्थभी तामनरूपकारणतैंपश्चात्भावी हीहै ॥ ऐसेकार्यरूपपदार्थ तामनरूपकारणका किसप्रकारआश्रयहोवैंगे किंतुनहींहोवैंगे ॥ हेश्वेतकेतु ॥ सोप्रतिबिंबसहितमनसुषुप्तिअ वस्थाविषे जिसपरमात्मादेवविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ सोपरमात्मादेवहीं पूर्वउक्त तेज जल पृथिवी यातीनोंकाकारणहै ॥ तथा तिसी सत्परमात्मादेवविषे तुमनैंसर्वातर्यामीपणाजानणा ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ परमात्मादेवकीप्राप्तिकरिकै याजीवोंके संसारबंधकीनिवृत्ति होवैहै ॥ यहवेदांतशास्त्रकासिद्धांतहै ॥ यातैंतासुषुप्तिअवस्थाविषे तापरमात्मादेवकीप्राप्तिहुएभी याजीवोंकूं पुनःसंसारकीप्राप्तिकिसवा सतैहोवैहै ॥ समाधान ॥ हेश्वेतकेतु ॥ यद्यपि तासुषुप्तिअवस्थाविषे याजीवोंकूं परमात्मादेवकीप्राप्तिहोवै है ॥ तथापि तासुषुप्ति अवस्थाविषे तथामुक्तिअवस्थाविषे इतनीविशेषताहै ॥ यासुषुप्तिअवस्थाविषे कारणअज्ञानविषेलयभावकूंप्राप्तहुआभी यहमन सूक्ष्मसंस्काररूपकरिकै बाकीरहैहै ॥ याकारणतैंहीं सो मन जाग्रत्स्वप्नअवस्थाविषे पुनः उत्पन्नहोवैहै ॥ और मुक्तिअवस्थाविषे

तौअधिष्ठानआत्माविषे लयभावकूंप्राप्तहुआसोमन पुनःउत्पन्नहोवेनहीं ॥ काहेतैं तामुक्तिअवस्थाविषे आत्मज्ञानरूपअग्निकरिकैतामन केसंस्कारोंकाआश्रयरूपअज्ञान नाशकूंप्राप्तहोवेहै ॥ याप्रकारकाभेद तामुक्तिअवस्थाविषे तासुषुप्तिअवस्थाविषे विद्यमानहै ॥ यातैं सुषुप्तिअवस्थाविषे तापरमात्मादेवकीप्राप्तिहुएभी पुनःसंसारकीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ हेश्वेतकेतु॥ यहआत्मादेव यद्यपिसर्वत्रएकहीहै॥तथापि यासर्वजीवोंका सोमनएकनहींहै ॥ किंतुतेमनअनेकहैं ॥ और सुखदुःख बंधमोक्ष इत्यादिकसर्वधर्म मनकेहीहोवैहै ॥ यातैं यालोकविषे कोईसुखीहै कोईदुःखीहै ॥ कोईबद्धहै कोईमुक्तहै इत्यादिकसर्वव्यवस्थाबनिसकेहैं ॥ इतनैंकरिकै मनविषेस्थितजोचिदाभासहै ताचिदा भासकाबिंबरूपकरिकै ताआत्माविषे प्रत्यक्रूपतानिरूपणकरी ॥ अबशरीरकाअधिष्ठानत्वरूपकरिकै ताआत्माविषे प्रत्यक्रूपताका निरूपणकरैहैं॥ इहांसर्वतैंअंतरपणेकानाम प्रत्यक्रूपताहै॥ हेश्वेतकेतु॥मुक्तिकीअपेक्षाकरिकैकिंचित्न्यूनतावाली जासुषुप्तिअवस्थाहम नैंतुमारेप्रतिकथनकरीहै॥सासुषुप्तिअवस्था जैसेवासनारूपमनद्वारा आनंदस्वरूपआत्माकेसंबंधवालीहै॥ तथाबिंबप्रतिबिंबकेएकताज्ञा नरूपफलवालीहै॥तैसेदूसरीस्वप्नजाग्रत्रूपअवस्थाभी तामनद्वाराआत्माकेसंबंधवालीहै ॥ तथाबिंबप्रतिबिंबकेएकताज्ञानरूपफलवाली है॥हेश्वेतकेतु वास्तवतैं सर्वनामरूपतैंरहितहुआभी यहआत्मादेव तिसस्थूलशरीरकेअभिमानवालीजाग्रत्अवस्थाविषे तथासूक्ष्मशरीरके अभिमानवालीस्वप्नअवस्थाविषे अशनायाउदन्या यादोनोंनामोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ जैसेसुषुप्तिअवस्थाविषे सोआत्मादेव स्वपिति यानामकूं प्राप्तहोवैहै॥हेश्वेतकेतु ॥ अशनायाउदन्या यहदोनोंनाम जोआत्माविषेप्रवृत्तहोवैहैं ॥ सोप्राणरूपउपाधिकूंलेकरिकैही प्रवृत्तहोवैहैं ॥ काहेतैं याआनंदस्वरूपआत्माविषे साक्षात्क्षुधाभीनहींहै ॥ तथा पिपासाभीनहींहै ॥ किंतुतेक्षुधापिपासा साक्षात्तोप्राणविषेहीरहेहै ॥ और यहप्राण सर्वशरीरविषेव्यापकहै ॥ यातैंयहप्राण सर्वजीवोंकेउदरविषेस्थितअन्नजलकूंनाडीद्वारा सर्वअंगोंविषेलेजावैहै ॥ याकारण तेअशनाया उदन्या यहदोनोंनाम मुख्यवृत्तिकरिकै ताप्राणविषेहीघटैहैं ॥ और ताप्राणकेसाथ आत्मादेवका तादात्म्यसंबंधहै ॥ यातैं ताप्राणद्वारा तेदोनोंनाम आत्माकेभीहोवै हैं ॥ हेश्वेतकेतु ॥ अशनाया उदन्या यहदोनोंनाम यद्यपि आत्माकीअपेक्षाकरिकैतौ

॥ २९ ॥

प्राणविषेहीमुख्यहैं ॥ तथापि जलतेज यादोनोंकीअपेक्षाकरिकै तेदोनोंनाम ताप्राणविषेभी मुख्यनहीं है ॥ किंतु जलतेजविषेही तेदोनों नाम मुख्यहैं ॥ काहेतैं भोजनकऱ्येहुएअन्नकूंतौ यहजलही द्रवीभावकरिकै लेजावै है ॥ याकारणतैं तिनजलोंकूं अशनाया यानामकरिकै कथनकरै हैं ॥ और पानकरेहुएजलकूं यहशोषणकरणेहारातेज लेजावै है ॥ याकारणतैं तातेजकूं उदन्या यानामकरिकैकथनकरै हैं ॥ जैसे यालोकविषे जेपुरुष गौंवोंकूंलेजावै हैं ॥ तिनपुरुषोंकूं गोनाया यानामकरिकैकथनकरै हैं ॥ और जेपुरुष अश्वोंकूंलेजावै हैं॥तिनपुरु षोंकूं अश्वनाया यानामकरिकैकथनकरै हैं॥तैसे यहजलभी द्रावकस्वभाववालेहोणेतैं भक्षणकरेहुएअन्नकूंलेजावै हैं॥ यातैं तिनजलोंकूं श्रु तिभगवती अशनाया यानामकरिकैकथनकरै है॥और यहतेज शोषणस्वभाववालाहोणेतैं पानकरेहुएजलकूंलेजावै है ॥ याकारणतैं श्रुति भगवती ता तेजकूं उदन्या यानामकरिकैकथनकरै है ॥ और याआनंदस्वरूपआत्मादेवका ताजलकेसाथ तथातेजकेसाथ तादात्म्य अध्यासहै॥याकारणतैं ताजलतेजद्वारा सोआत्मादेवभी तिनदोनोंनामोंकरिकैकथनकऱ्याजावै है॥अब तासत्परमात्मादेवविषे सर्वतैंअनं तररूपता बोधनकरणेवासतै प्रथम कार्यकारणोंके परंपराकावर्णनकरै हैं ॥ हेश्वेतकेतु तूं प्रथम यास्थूलशरीरकूंकार्यरूपकरिकैजाण ॥ तिसतैंअनंतर तूं अन्नकूं कार्यरूपकरिकैजाण॥तिसतैंअनंतर तूं पृथिवीकूं कार्यरूपकरिकैजाण ॥ तिसतैंअनंतर तूं जलकूं कार्यरूपकरिकै जाण ॥ तिसतैंअनंतर तूं तेजकूं कार्यरूपकरिकैजाण ॥ हेश्वेतकेतु॥ शरीर १ अन्न २ पृथिवी ३ जल ४ तेज ५ यापंचकार्योंविषे जोपंच मातेजरूपकार्य है॥तातेजरूपकार्यकातौ पूर्वउक्तसत्वस्तुही मूलकारणहै ॥ और सोतेज जलकामूलकारणहै ॥ और सोजल पृथिवीका मूलकारणहै ॥ और सापृथिवी अन्नकामूलकारणहै॥और जलतेजकरिकै परिणामकूंप्राप्तकऱ्याहुआ सोअन्न याशरीरकामूलकारणहै ॥ और हेश्वेतकेतु॥जैसे लोकप्रसिद्धवृक्षोंका एकमूलहोवै है॥और दूसरा अंकुरहोवै है॥तैसे श्रुतिभगवतीनैं शुंगपदकरिकै यहशरीरादिकवि कारतौं अंकुररूपकरिकैकथनकरै हैं॥और अन्नतैंलेकै सत्यवस्तुपर्यंतपदार्थ मूलरूपकरिकैकथनकरै हैं ॥ यातैंजैसे अंकुररूपलिंगकरिकै मूलकाअनुमानहोवै है॥तैसे याशरीररूपकार्यकरिकै तूं अन्नरूपमूलकारणकूंनिश्चयकर॥ तथा ताअन्नरूपकार्यकरिकै तूं पृथिवीरूपमूल

कारणकूंनिश्चयकर॥तथा तापृथिवीरूपकार्यकरिकै तूं जलरूपमूलकारणकूंनिश्चयकर॥ तथा ताजलरूपकार्यकरिकै तूं तेजरूपमूलकार णकूंनिश्चयकर॥तथा तातेजरूपकार्यकरिकै तूं तापरमात्मारूपमूलकारणकूंनिश्चयकर ॥हेश्वेतकेतु॥ सोपरमात्मारूपसत्वस्तुही यासर्व भूतभौतिकजगत्केउत्पत्तिकाकारणहै॥याकारणतैं श्रुतिभगवती तासत्वस्तुकूं मूल यानामकरिकैकथनकरै है॥और सोसत्वस्तुही यास र्वजगत्केस्थितिकाकारणहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तासत्वस्तुकूं आयतन यानामकरिकैकथनकरै है ॥ और सोसत्वस्तुही यास र्वजगत्केलयकाकारणहै॥याकारणतैं श्रुतिभगवती तासत्वस्तुकूं प्रतिष्ठा यानामकरिकैकथनकरै है॥और वास्तवतैंतो सोसत्वस्तु मूल आयतन प्रतिष्ठा यातीनोंतैंरहितहै॥हेश्वेतकेतु॥ इसप्रकार जाग्रत्अवस्थाविषे तथास्वप्नअवस्थाविषे क्षुधापिपासाकरिकैआतुर जोप्राणा दिकउपाधिवालाजीवहै ॥ सोजीव पुण्यपापकर्मकेअनुसार सर्वदासुखदुःखकाहीअनुभवकरै है ॥ इतनैंकरिकै याशरीरकाअधिष्ठानत्वरू पकरिकै याआत्मादेवविषे प्रत्यक्रूरूपतानिरूपणकरी ॥ ताकरिकै त्वंपदार्थकाशोधन सिद्धभया ॥ अब मरणकालविषे इंद्रियोंकीअ धिष्ठानतारूपकरिकै ताआत्मादेवविषे प्रत्यक्रूरूपतावर्णनकरतेहुए ता तत् त्वं पदार्थका अभेदवर्णनकरै हैं॥तहां॥तत्त्वमसिश्वेतकेतो ॥ यहमहावाक्य नववार उद्दालकनैं श्वेतकेतुकेप्रति उपदेशकऱ्याहै ॥ ताकेविषे प्रथमवाक्यकेअर्थका निरूपणकरै हैं॥ हेश्वेतकेतु जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति यापूर्वउक्ततीनअवस्थावोंविषे विचरणेहारा यहजीवात्मा अज्ञानकेवशतैं अनेकशरीरोंकूंग्रहणकरै है ॥ तथा अनेकशरीरों कापरित्यागकरै है ॥ शंका ॥हेभगवन् ॥ यहजीवात्मा किसप्रकार तिनशरीरोंकापरित्यागकरै है॥समाधान॥हेश्वेतकेतु॥ यहजीव जिस कालविषे मरणअवस्थाकेसमीपप्राप्तहोवै है॥तिसकालविषे यहजीव आपणेपूर्वलेपापकर्मोंकास्मरणकरिकै पश्चात्तापकरै है तथातापुरुषकूं पुत्रादिकबांधव कठिनभूमिविषेशयनकरावै हैं॥तथा सर्वबांधव तापुरुषकूं चारोंओरतैंवेष्टनकरिकैस्थितहोवैहैं॥तथा सोपुरुष हिडकीकरि कैतथाऊंचेश्वासोंकरिकैयुक्तहोवै है॥तथा तापुरुषके दोनोंनेत्र ऊपरआकाशकीतरफखुलिजावैहैं ॥ तथा तापुरुषकामुख लालाकारिकैयुक्त होवै है॥ऐसीमरणअवस्थाकूंप्राप्तहुएपुरुषका जोनेत्रादिकइंद्रियोंसहित वाक्इंद्रियहै तावाक्इंद्रियकी आपणेकार्यकरणेकीसामर्थ्यरूपवृत्ति

तापुरुषकेमनविषे लयभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ और तामनकी आपणेकार्यकरणेकीसामर्थ्यरूपवृत्ति क्रियारूपप्राणकी वृत्तिविषेलयभावकूंप्रा प्तहोवै है ॥ और साप्राणकीवृत्ति सूक्ष्मपंचभूतोंयुक्तजीवात्माविषे लयभावकूंप्राप्तहोवै है॥औरसो पंचभूतोंसहितजीवात्मा सुषुप्तिकीन्याईं संस्कारस्वरूपबाकीरह्याहुआ मायाउपहित आनंदस्वरूपआत्माविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेश्वेतकेतु ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे तथामरण अवस्थाविषे केवल संस्कारमात्ररूपबंधवाला जोयहजीवात्माहै ॥ ताजीवात्माका जोसत्वस्तु लयकास्थानहै ॥ तथा जोसत्वस्तु जीव रूपकरिकै यासंघातविषेप्रविष्टहुआहै ॥ तथा जोसत्वस्तु पूर्व तेजादिकभूतोंका कारणरूपकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ सोसतवस्तुही तुमा राआत्माहै ॥ हेश्वेतकेतु ॥ जोसत्वस्तु तुमारा आत्माहै ॥सोसत्वस्तु कैसाहै॥ सूक्ष्मपदार्थोंतैंभी अत्यन्तसूक्ष्महै ॥ तथा कालआका शादिकमहान्पदार्थोंतैंभी अत्यन्तमहान्है ॥ और जैसे रज्जुविषेकल्पितजे सर्प दंड जलधारा आदिकहैं॥तेकल्पितसर्पादिक रज्जुमात्र रूपही हैं ॥ तैसे तेजजलपृथिवीरूप यासर्वजगत्का सोसत्वस्तुही वास्तवस्वरूपहै ॥हेश्वेतकेतु॥ऐसासर्वजगत्काअधिष्ठानरूपपरमात्मा देव तुमारेस्वरूपतैंभिन्ननहीं है ॥ किंतु सोपरमात्मादेव तूंहै ॥ देहादिकसंघातरूप तूनहीं है ॥ हेश्वेतकेतु॥ जोआत्मादेव बुद्धिआदिकों कासाक्षीरूपकरिकै सर्वत्र प्रतीतहोवै है ॥ तथा जोआत्मादेव अद्वितीयरूपहोणेतैं परम आनंद स्वरूपहै ॥ तथा जोआत्मादेव सर्वजड पदार्थोंकाप्रकाशकहोणेतैं स्वयंज्योतिस्वरूपहै॥ऐसा आत्मादेवही तुमारावास्तवस्वरूपहै॥यातैं तूंकर्तानहीं है॥तथा भोक्तानहीं है तथा प्रमातानहीं है॥हेश्वेतकेतु॥तैंप्रियपुत्रकेताईं जोहमनैं यहहितकाउपदेशकऱ्याहै।सोउपदेशतुमारेगर्वदोषकीनिवृत्तिकरणेहाराहै।याकारणतैं ताउपदेशकूं हमनैं आदेश शब्दकरिकैकथनकऱ्याहै।दुष्टपुरुषोंकेप्रति जोराजादिकशासनाकरै हैं ताशासनाकानाम आदेशहै॥हेश्वेतकेतु जिससर्वांतर्यामीआत्मादेवकाउपदेश हमनैंतुमारेप्रतिकऱ्याहै।तापरमात्मादेवके श्रवणतैं तथामननतैं तथाविज्ञानतैंसर्वअश्रुतपदार्थोंकाभी श्रवणहोवै है॥तथा मननकेअविषयपदार्थोंकाभी मननहोवै है॥तथा अविज्ञातपदार्थोंकाभी विज्ञानहोवै है॥हेशिष्य॥इसप्रकार जभी ताउ द्दालकपितानैं ताश्वेतकेतुपुत्रकेप्रतिजीवब्रह्मकेअभेदकाउपदेशकऱ्या॥तभी सोश्वेतकेतुसंशययुक्तहोइकै पुनःताउद्दालकपिताकेप्रति अष्ट

प्रश्नकरताभया।और सोउद्दालकपिताभीताश्वेतकेतुपुत्रके संशयकीनिवृत्तिकरणेवासतै तिनअष्टप्रश्नोंके यथाक्रमतैं अष्टउत्तरकरताभया॥ शंका ॥हेभगवन्॥ ताउद्दालकमुनिनैं ताश्वेतकेतुपुत्रकेप्रति॥तत्त्वमसिश्वेतकेतो ॥याप्रथममहावाक्यकाउपदेशकरिकै जीवब्रह्मकाअभेद निश्चयकराया ॥ तामहावाक्यकेअर्थकूंजाणिकारिकैभी ताश्वेतकेतुकूं पुनःसंशय किसवासतैहोताभया॥समाधान॥हेशिष्य ॥महावाक्य कूंश्रवणकरिकैभी ताश्वेतकेतुकूं जोअष्टवार संशयहुआहै ॥ ताअष्टप्रकारकेसंशयोंविषे ताश्वेतकेतुके यहअष्टप्रकारकेकुतर्कही कारणहैं ॥ जिनअष्टकुतर्कोंकूं सोउद्दालकमुनि अष्टवारमहावाक्यकेउपदेशतैं निवृत्तकरताभयाहै ॥ अब ताश्वेतकेतुकेप्रश्नरूपअष्टकुतर्कोंकानिरूपण करै हैं॥ अथप्रथमप्रश्ननिरूपणं॥हेभगवन्॥पूर्वआपनैं सुषुप्तिअवस्थाविषे तथामरणअवस्थाविषे सर्वजीवोंकूं सत्वस्तुकीप्राप्तिकथनकरी॥ याकेविषे हमारेकूं यहसंशयहोवै है । जोकदाचित् सुषुप्तिअवस्थाविषे तथामरणअवस्थाविषे यासर्वजीवोंकूंतासत्वस्तुकीप्राप्तिहोतीहोवैं ॥ तौते सर्वजीव तहां सत्वस्तुकूं हम प्राप्तहुए हैं याप्रकार तासत्वस्तुकूं किस वासतैनहीं जाणते ॥ और ते सर्वजीव तहां स त्वस्तुकूंजाणतेनहीं ॥ यातैं तासत्वस्तुकेप्राप्तहुएभी जो सत्वस्तुकाअज्ञानहोवै है ॥ याकेविषे आपनैं कोईदृष्टांतकह्याचाहिये॥जिसदृ ष्टांतकरिकै ताहमारेसंशयकीनिवृत्तिहोवै है ॥१॥अथ द्वितीयप्रश्ननिरूपणम् ॥हेभगवन्॥ तासुषुप्तिअवस्थाविषे तथामरणअवस्थाविषे वाकादिकसर्वइंद्रियोंकेलयहुएभी अविद्यारूपमाया तहां विद्यमानहै॥यातैं जैसे यालोकविषे आपणेगृहतैंबाहरआयेहुएपुरुषकूं मैं आपणे गृहतैंआयाहूं याप्रकारकाअनुभवहोवै है॥तैसे तासुषुप्तिअवस्थाविषे यहजीव तासत्वस्तुकूंप्राप्तहोइकै जभी जाग्रतअवस्थाकूंप्राप्तहोवै है तभी याजीवोंकूं हमसत्वस्तुतैंआये हैं याप्रकारकाअनुभव किसवासतैनहींहोता ॥ याहमारेशंकाकीनिवृत्तिकरणेवासतैभी आपनैं कोई दृष्टांतकह्याचाहिये॥२॥अथतृतीयप्रश्ननिरूपणम्॥हेभगवन्॥जैसे संपूर्णनदियां समुद्रविषे लयभावकूंप्राप्तहोवै हैं॥तैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे तथामरणअवस्थाविषे याजीवोंका सत्वस्तुविषेलयहोवै है ॥ याप्रकार नदियोंकेदृष्टांतकरिकै जोयाजीवोंका तासत्वस्तुविषेलय अंगीकारकरोगे ॥ तौ जैसे समुद्रविषे लयभावकूंप्राप्तहुईनदियोंका पुनः तासमुद्रतैंउद्भवहोतानहीं ॥ किंतु तेनदियां तासमुद्रकूं

प्राप्तहोइकै नाशकूँहीप्राप्तहोवै है।तैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे तथामरणअवस्थाविषे यहजीवभीतासत्वस्तुकूंप्राप्तहोइकै नाशकूंहीप्राप्तहोवैंगे॥ तिनजीवोंकेनाशहुए तासत्ब्रह्मकीप्राप्ति किसकूंहोवैगी ॥ याहमारीशंकाकेनिवृत्तकरणेवासतैभी आपनैं कोईदृष्टांतकह्याचाहिये ॥ ३ ॥ अथ चतुर्थप्रश्ननिरूपणं ॥ हेभगवन् ॥ यहआत्मादेव अत्यंतसूक्ष्महै ॥यातैं यहसूक्ष्मआत्मादेव यास्थूलजगत्काआधार किसप्रकारहोवै गा ॥ याहमारीशंकाकेनिवृत्तकरणेवासतैभी आपणे कोइदृष्टांतकह्याचाहिये ॥ ४ ॥ अथ पंचमप्रश्ननिरूपणं ॥ हेभगवन्॥याअधिकारी पुरुषोंकूं यहआत्मादेव श्रद्धाकरिकेही प्राप्तहोवै है ॥ योंप्रकारकावचन आपने कथनकऱ्याहै ॥ साश्रद्धा अनुभवकरेहुएपदार्थविषेहीहो वै है ॥ और जिसपदार्थका कदाचित्भी अनुभवनहींभया ॥ तिनपदार्थविषे शब्दभीप्रवेशकरिसकैनहीं ॥ तौ तिसपदार्थविषे साश्रद्धा किसप्रकारहोवैगी ॥ याहमारीशंकाकेनिवृत्तकरणेवासतैभी आपनैंकोईदृष्टांतकह्याचाहिये ॥ ५ ॥ अथ षष्ठप्रश्ननिरूपणं॥हेभगवन्॥या लोकविषे जोवस्तुकास्वरूप इंद्रियोंकरिकैग्रहणकरणेयोग्यहोवै है ॥ सोइहीवस्तुकास्वरूप किसीइंद्रियकरिकैग्रहणकऱ्याजावैहै ॥ जैसे नेत्रादिकइंद्रियोंकाअविषयहुआभीरस रसनइंद्रियकरिकैग्रहणकऱ्याजावै है ॥ और यहआत्मादेवतौ किसीभीइंद्रियकरिकैग्रहणकऱ्याजावै नहीं॥ऐसाइंद्रियोंकाअविषयआत्मा किसउपायकरिकैजान्याजावै है ॥ याहमारीशंकाकेनिवृत्तकरणेवासतैभी आपनैं कोईदृष्टांतकह्याचा हिये ॥ ६ ॥ अथ सप्तमप्रश्ननिरूपणं॥हेभगवन् ॥ जैसे मरणकालविषे अज्ञानीजीवोंकेइंद्रियादिक सूक्ष्मरूपकरिकैस्थितहोवै हैं ॥ तैसे तामरणकालविषे जोकदाचित् विद्वान्पुरुषकेभीइंद्रियादिक सूक्ष्मरूपकरिकैरहतेहोवैं ॥ तौ जैसे मरणतैंअनंतर तिनअज्ञानीजीवोंका पुनःजन्महोवै है ॥ तैसे ताविद्वान्पुरुषकाभी पुनः जन्म किसवासतैनहींहोता ॥ याहमारीशंकाकेनिवृत्तकरणेवासतैभी आपनैं कोई दृष्टांतकह्याचाहिये ॥ ७ ॥ अथ अष्टमप्रश्ननिरूपणं ॥ हेभगवन् ॥ जैसे मरणअवस्थाविषे तिनविद्वान्पुरुषोंकेवाकादिक निरवशेषलयकूं प्राप्तहोवै हैं ॥ तैसे अज्ञानीपुरुषोंकेभी तेवाकादिक निरवशेषलयकूं किसवासतैनहींप्राप्तहोते ॥ याहमारीशंकाकेनिवृत्तकरणेवासतैभी आपनैं कोईदृष्टांतकह्याचाहिये ॥ ८ ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार सोश्वेतकेतु ताउद्दालकपिताकेप्रति आपणेसंशयकेजनावणेहारे अष्टप्रश्न

करताभया ॥ आगेतैं सोउद्दालकमुनिभी ताश्वेतकेतुकेप्रति यथाक्रमतैं तिनअष्टप्रश्नोंकाउत्तरकहताभया॥तहां अब प्रथमप्रश्नकाउत्तर निरूपणकरेहैं ॥ हेश्वेतकेतु ॥ जैसे यालोकविषे मधुकरजंतु आपणेअपूपाकारगृहविषे नानाप्रकारकेवृक्षोंकेरसकूंलेजाइकै तारसकूं मधुरूपकरिकै परिणामकूंप्राप्तकरेहै॥ तेमधुभावकूंप्राप्तहुए नानावृक्षोंकेरस मैं आम्रवृक्षकारस नहींहूं॥ याप्रकार आपणेकूं जाणतेनहीं ॥ तैसे यासुषुप्तिअवस्थाविषे तथामरणअवस्थाविषे तेनानाजातिवालेजीव तासत्वस्तुकूं प्राप्तहोइकै तासत्वस्तुकेसाथ एकताभावकूंप्राप्तहुएभी आपणेआत्माकूं विशेषरूपकरिकै जाणतेनहीं॥इहां यहतात्पर्यहै॥मधुरूपदृष्टांतविषे जोआपणेस्वरूपकाअविवेकहै सो आपणेजडस्वभावतैंहीहै।और दार्ष्टांतिकजीवविषे जोआपणेस्वरूपकाअविवेकहै।सो आपणे स्वभावतैंनहीं है॥किंतु अविद्याकृतआवरणकरिकै सोअविवेककरयाहुआहै ॥ अथवा तामधुरूपदृष्टान्तविषे तिनरसोंतैंभिन्नप्रमातापुरुषविषेस्थित जोअविवेकहैताअविवेककातिन रसोंविषेआरोपणहोवै है॥और दार्ष्टांतिकविषेतौ अज्ञानकरिकैआवृतजीवोंविषेही सोअविवेकमुख्यहै ॥ याप्रकार तादृष्टांतदार्ष्टांतिकविषे विशेषताकेहुएभी ताविशेषताकापरित्यागकरिकै केवलअज्ञानकीसमानतामात्र तिनदोनोंविषेग्रहणकरीहै।शंका।हेभगवन्॥ तासुषुप्तिअवस्थाविषे यहजीव जोकदाचित् तासत्वस्तुकेसाथएकताकूं प्राप्तहोतेहोवैं तौ तासुषुप्तितैंउठेहुएतिनजीवोंकूं पुनः तिसजातिवालेशरीरकी प्राप्ति नहींहोणीचाहिये॥समाधान।हेश्वेतकेतु।व्याघ्रसर्पादिकजे तामसजातिवालेजीवहैं॥तथा राजादिकजे राजसजातिवालेजीवहैं।तथाब्राह्मणादिकजे सात्विकजातिवालेजीवहैं॥तेसंपूर्णजीव जिसजिसशरीरवालेहुएजासुषुप्तिविषे सत्वस्तुकूंप्राप्तहोवैंहैं ॥ तेसंपूर्णजीव तासुषुप्तितैं उठिकै तिसीतिसीशरीरकूंप्राप्तहोवै हैं॥ तिसतैंविलक्षणशरीरकूंप्राप्तहोवैंनहीं।काहेतैं जैसे वर्षाकालकेनिवृत्तहुएतैअनंतर सर्वमंडूक मृत्तिकाभावकूंप्राप्तहोवै हैं॥परंतु तिनमंडूकोंकेसूक्ष्मअवयवरूपसंस्कार तापृथ्वीविषेरहे हैं ॥जभी पुनःवर्षाकालहोवै है तभीतेमंडूक तिनसंस्कारों केवशतैं पुनः तिसीतिसीशरीरकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तिसतैंविलक्षणशरीरकूं प्राप्तहोवैंनहीं ॥ तैसे तासुषुप्तिअवस्थाविषे तिनसर्वजीवोंके लयहुएभी तिनजीवोंके वासनारूपसूक्ष्मसंस्कार तहांरहेहैं तिनसंस्कारोंकेवशतैंही तेजीव सुषुप्तितैंउठिकै तिसीतिसीशरीरकूंप्राप्तहोवै

हैं ॥ १ ॥ अब दूसरेप्रश्नकाउत्तरकहेहैं ॥हेश्वेतकेतु ॥ जैसे यहगंगादिकनदियां आपणेनामरूपकापरित्यागकरिकै समुद्रभावकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ और तेनदियां पुनःमेघोंद्वारा वृष्टिरूपकरिकै तासमुद्रतैंबाहरआइकैभी हमनदियां समुद्रतैं आई हैं याप्रकार तेनदियां जाणती नहीं ॥ तैसे यहजीव तासुषुप्तिअवस्थाविषे तासत्ब्रह्मकूंप्राप्तहोइकैभी तासुषुप्तितैंउठिकै हम सत्ब्रह्मतैं आये हैं याप्रकार जाणतेनहीं ॥ काहे तैं तासतब्रह्मकी प्राप्तिकालविषे जिसमूलाज्ञाननें तासत्ब्रह्मकेभानका प्रतिबंधकरयाथा ॥ सोमूलाज्ञान याजाग्रतअवस्थाविषेभी विद्यमान है॥ताअज्ञानकरिकै मोहितहुएजीव तासत्ब्रह्मकूंजाणिसकतेनहीं ॥ २ ॥ अब तृतीयप्रश्नकाउत्तर निरूपणकरै है हेश्वेतकेतु॥ यहजीव जिसजातीवालेहुए तासुषुप्ति अवस्थाविषे जासत्वस्तुकूंप्राप्तहोवै है ॥ तासतवस्तुतैंआइकै यहजीव तिसीजातिवालेहोवै हैं ॥ तिसतैंभिन्नजातिवालेहोवैनहीं ॥ काहेतैं जोजोजीव तासुषुप्तिअवस्थाविषे सत्वस्तुकेसाथ अभेदभावकूंप्राप्तहुएथे ॥ तिनजीवोंका जो कदाचित् उत्थाननहींहोताहोवै ॥ तौ सुषुप्तिविषे तासत्वस्तुविषेलयमात्रकरिकैही दिनदिनविषे तिनजीवोंकेदेहकापातहोणाचाहिये ॥ और ऐसादेखणेविषे आवतानहीं ॥ यातैं जेजीव तासुषुप्तिअवस्थाकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ तेजीवही तासुषुप्तितैंउठे हैं ॥ किंवा याजीवकानाश किसीभीपुरुषनैं देख्यानहीं ॥ किंतु जिसजिसपदार्थकूं यहजीव परित्यागकरे है ॥ तिसीतिसीपदार्थकानाश देखणेविषेआवेहै ॥ जैसे वृक्षविषेस्थितजोजीवहै॥सोजीव तावृक्षकीशाखाओंविषे जिसजिसशाखाकापरित्यागकरेहै ॥ तिसतिसशाखाका शोषणहोइजावै है ॥ ता जीवतैंरहितहुई कोईभीशाखा जीवनकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जसे ता वृक्षविषेस्थितजीव जिसशाखाकापरित्यागकरे है ॥ ताशाखाविषे जोकदाचित् दूसराकोईजीव प्रवेशकरै है ॥ तौ सा शाखा सूखतीनहीं॥तैसे सुषुप्तिअवस्थाविषे यहजीव तासत्ब्रह्मकूंप्राप्त होइकै यद्यपि मुक्तहोइजावै है ॥ तथापि कोईदूसराजीव याशरीरविषेप्रवेशकरिकै याशरीरकूंउठावै है ॥ याकारणतैं दिनदिनविषे याशरीरकापातहोवैनहीं ॥ समाधान ॥ हेश्वेतकेतु ॥ तावृक्षकेशाखाकीन्याई जोकदाचित् सुषुप्तिकालविषे याशरीरविषे दूसराकोईजीव प्रवेशकरिकै याशरीरकूंउठावताहोवै तौ यालोकविषे किसीभीशरीरकानाश नहींहोणाचाहिये ॥ काहेतैं जोदूसराजीव सुषुप्तितैंअनं

तर याशरीरविषेप्रवेशकरिकै याशरीरकूंउठावै है ॥ सोदूसराजीव मरणतैंअनंतरभी याशरीरविषेप्रवेशकरिकै याशरीरकूंउठावैगा ॥ यातैं यालोकविषे किसीभीशरीरकानाश नहींहोवैगा ॥ सोऐसा देखणेविषेआवतानहीं॥यातैं जोजीव तासुषुप्तिअवस्थाकूंप्राप्तहोवै है॥सोईही जीव तासुषुप्तितैंउठेहै॥कोईदूसराजीव उठेनहीं ॥ हेश्वेतकेतु ॥ जैसे जोजीव सुषुप्तिअवस्थाकूंप्राप्तहोवै है॥सोईही जीव तासुषुप्तितैंउठे है तैसे जोजीव मरणअवस्थाविषे तासत्ब्रह्मकूंप्राप्तहोवै है ॥ सोईहीजीवतामरणअवस्थातैंअनंतर पुण्यपापकर्मोकेवशतैं दूसरेशरीरकूंप्राप्तहोवैहै॥ताजीवतैंभिन्नकोईदूसराजीव तादूसरेशरीरकूंप्राप्तहोवैनहीं॥इसप्रकार ताजीवरूपअधिकारीकूं नित्यहोणेतैं मोक्षशास्त्रकीभी व्यर्थताहोवैनहीं ॥ तथा कृतनाश अकृताभ्यागम रूपदोषकीभी प्राप्तिहोवैनहीं॥३॥अब चतुर्थप्रश्नकाउत्तर निरूपणकरै है ॥ हेश्वेतकेतु॥ जैसे यालोकविषे अत्यंतसूक्ष्म जोवटकाबीजहै॥सोवटकाबीज महान्वटकेवृक्षकाआधारहोवैहै॥काहेतैं सोवटकावृक्ष आपणीउत्पत्तितैंपूर्व जोकदाचित् तावटकेबीजविषे अत्यंतअसत्होवै ॥ तौ अत्यंतअसत्पदार्थकी कदाचित्भी उत्पत्तिहोतीनहीं॥जैसे अत्यंतअसत्वंध्यापुत्रकीकदाचित्भी उत्पत्तिहोतीनहीं ॥ यातैं सोमहान्वृक्ष आपणीउत्पत्तितैंपूर्व तावीजविषेरहेहै॥ परंतु ताबीजदशाविषे सोवटकावृक्ष ताबीजविषे स्कंध शाखा पत्र इत्यादिकभेदकरिकैप्रतीतहोवैनहीं॥तैसे याजगत्केसूक्ष्मसंस्कारोंयुक्तजामायाहै॥ तामायाउपहित यहआत्मादेव सूक्ष्महुआभी याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्व यासर्वजगत्काआधारहोवैहै॥परंतु याजयत्कीउत्पत्तितैंपूर्वकालविषे सोआत्मादेव विद्यमानहै याप्रकारकानिश्चयशास्त्रदृष्टितैंरहितपुरुषोंकूंहोवैनहीं॥किंतु॥सदेवसोम्येदमग्रआसीत्॥इत्यादिकशास्त्ररूपीचक्षुवालेविद्वान्पुरुषोंकूंही सो निश्चयहोवैहै॥४॥अब पंचमप्रश्नकेउत्तरकानिरूपणकरैहैं॥हेश्वेतकेतु॥यासर्वजगत्काउपादानकारणरूपजोआत्मादेवहै॥सोआत्मादेवयद्यपि प्रत्यक्षादिकलौकिकप्रमाणोंकरिकैजान्याजावैनहीं॥तथापि यहआत्मादेव गुरुशास्त्रकेवचनोंविषेविश्वासरूपश्रद्धाकरिकै जान्याजावै है॥ जैसे जलविषेस्थितजोलवणहै॥सोलवण यद्यपि चक्षुआदिकइंद्रियोंकरिकैजान्याजावैनहीं॥तथापि रसनइंद्रियकरिकै सोलवण जान्याजावै ह ॥ तैसे यहआत्मादेव यद्यपि यासर्वजडप्रपंचविषे विद्यमान है ॥ तथापि गुरुशास्त्रके वचनोंविषे विश्वासरूपश्रद्धातैंरहितपुरुष या

॥ ३३ ॥

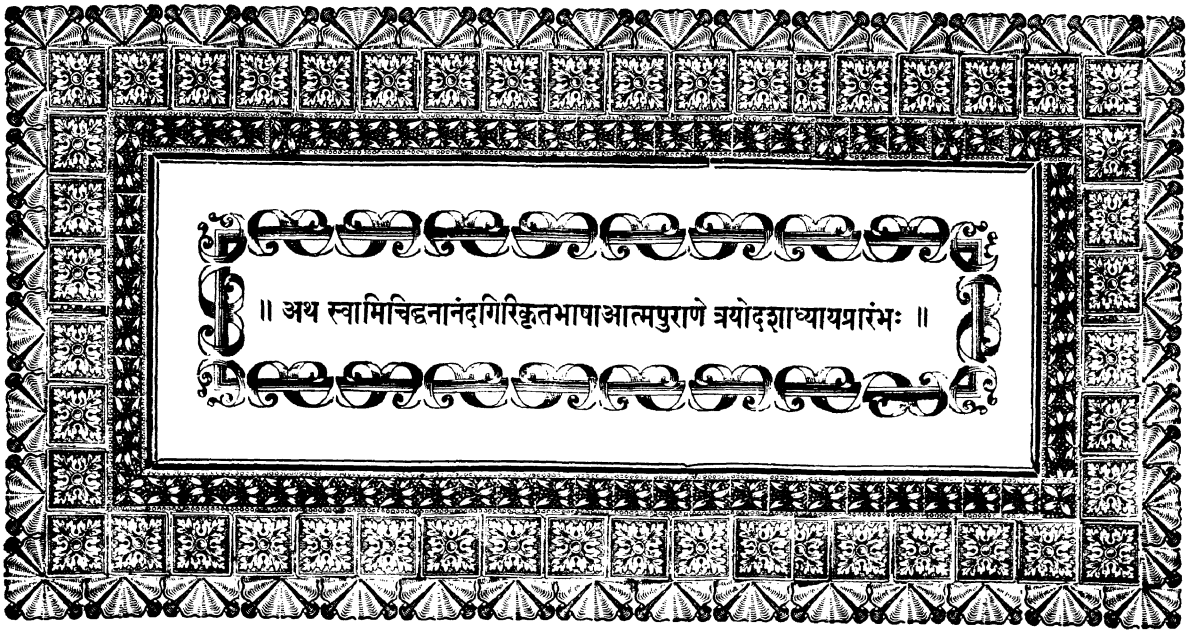
आत्मादेवकूंजाणिसकतेनहीं॥किंतु गुरुशास्त्रकेवचनोंविषे श्रद्धावान्पुरुषही ॥ तत्त्वंपदार्थकाशोधनकरिकै याआनंदस्वरूपचैतन्यआत्माकूं साक्षात्कारकरै हैं ॥ ५ ॥ अब षष्ठप्रश्नकाउत्तर निरूपणकरै हैं॥ हेश्वेतकेतु॥ यद्यपि यालोकप्रसिद्धइंद्रियादिकउपायोंकरिकै याआत्मादेवकासाक्षात्कारहोवैनहीं ॥ तथापि ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशरूपअपूर्वउपायतैं याआत्मादेवकासाक्षात्कार होवै है॥ जैसे गांधारदेशविषेरहणेहारेकिसीपुरुषकूं कोईचोरपुरुष महान्वनविषेलेआइके तापुरुषकेदोनोंनेत्रोंकूंबांधिकै तावनविषेछोडतेभये॥ और सोपुरुष पुनः आपणेगांधारदेशकेप्राप्तिकीइच्छाकरताहुआ अत्यन्तदुःखकूंप्राप्तहोताभया॥और तामहान्वनविषेदुःखकूंप्राप्तहुआसोपुरुष इसमहान्वनविषे मेरेकूं चोर गांधारदेशतैं लेआयेहैं याप्रकारकेआपणेवृत्तांतकूं ऊंचे स्वरतैंपुकारताभया ॥ ऐसेमहान्वनविषेपुकारतेहुएपुरुषकेसमीपकोईमार्गविषेचलणेहारा दयालुपुरुष आवताभया ॥ सोदयालुपुरुष तापुरुषकूं वनविषे दुःखीदेखिकरिकै तापुरुषकेदोनोंनेत्रोंकूंखोलताभया ॥ और तापुरुषकेप्रति सोदयालुपुरुष याप्रकारकावचनकहताभया॥ हेपुरुषइसदिशाविषेस्थितगांधारदेशतैं तूं आयाहै॥ यातैं तूं इसीदिशाविषे सुखपूर्वकचल्याजाव ॥ इसप्रकार तादयालुपुरुषकेवचनोंकूंश्रवणकरिकै परमहर्षकूंप्राप्तहुआसोपुरुष तादयालुपुरुषकेवचनविषेविश्वासराखिकै तादिशाविषेचलताहुआ शनैःशनैःकरिकै ताआपणेगांधारदेशकूंप्राप्तहोवै है ॥इसप्रकार यहबुद्धिमान्अधिकारीपुरुष भी ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतैं आपणेआत्मारूपदेशकूंप्राप्तहोवै है॥ तात्पर्ययह याअधिकारीपुरुषकूं कामक्रोधादिकचोरोंनैं आपणेआत्मारूपदेशतैंलेआइके संसाररूपवनविषेप्राप्तकऱ्याहै॥ तथा तिनकामक्रोधादिकचोरोंनैं यापुरुषकेसाक्षीरूपनेत्रोंका अज्ञानरूपीदृढबंधनकऱ्या है ॥ ताकरिकै यहजीव यासंसाररूपवनविषे सर्वदाभ्रमणकरताहुआ परमदुःखकूंप्राप्तहोवै है ॥ ऐसेसंसाररूपवनविषे ब्रह्मवेत्तागुरुरूपदयालुपुरुष जभी महावाक्यरूपआपणेहस्तकरिकै याअधिकारीपुरुषकेसाक्षीरूपनेत्रका अज्ञानरूपीबंधन खोलै है॥ तभी अज्ञानरूपआवरणतैंरहितहुआ यहअधिकारीपुरुष आपणेअद्वितीयआत्मारूपदेशकूंप्राप्तहोवै है॥और ताब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतैं तिनकामक्रोधादिकचोरोंकूं यासंसाररूपवनकेप्राप्तिकाहेतुरूपजाणिकैसोअधिकारीपुरुषपुनःकभीभीतिनकामक्रोधादिकचोरोंकेवशहोवैनहीं॥ यातैंब्रह्मवेत्तागुरु

काउपदेशही याआनंदस्वरूपआत्माकेप्राप्तिकाउपायहै ॥६॥ अब सप्तमप्रश्नकाउत्तर निरूपणकरै हैं॥हेश्वेतकेतु॥मरणकालविषे वाका दिकइंद्रियोंका मनादिकोंविषे स्वरूपतैंलयहोवैनहीं॥किंतु आपणेवृत्तिरूपकारिकैलयहोवै है ॥ संस्काररूपकारिकै तिनवाकादिकोंकास्व रूप तामरणकालविषेभीबन्यारहै है ॥यहवार्त्ताजो हमनैं पूर्वतुमारेप्रतिकथनकरीथी॥ सोअज्ञानीपुरुषोंकेमरणकेअभिप्रायतैं कथनकरी थी॥और विद्वान्पुरुषोंकेतो ब्रह्मज्ञानकेप्रभावतैं तामरणकालविषे आपणेआपणेव्यापारसहित सर्ववाकादिकप्रपंचस्वरूपतैंहींलयभावकूं प्राप्तहोवै है॥याकारणतैं सोविद्वानपुरुष अज्ञानीजीवोंकीन्याईं पुनःशरीरकूंप्राप्तहोवैनहीं॥हेश्वेतकेतु॥विद्वानपुरुषकेमरणविषे तथाअज्ञा नीपुरुषकेमरणविषे यहजोहमनैं विशेषताकहीहै ॥सोशास्त्रदृष्टिकूंअंगीकारकरिकैकहीहै॥ और लोकदृष्टिकरिकैतो विद्वानपुरुषोंकामरण तथाअज्ञानीपुरुषोंकामरण तुल्यही है ॥काहेतैं यहअज्ञानीपुरुष जभी मरणकेसमीप प्राप्तहोवै है॥तभी तापुरुषकूं आपणे मातापितादि कबांधव चारोंओरतैंवेष्टनकरिकै रुदनकरै हैं।और तेबांधव तामरणहारेपुरुषकेप्रति याप्रकारकेवचनकहेहैं।हे पुत्र प्राणकेसमानप्रिय मैंमा ताकूं तू जानताहै हेभ्राता प्राणोंकेसमानप्रिय मैंभ्राताकूं तूं जानताहै॥इत्यादिकबांधवोंकेवचन सोपुरुष तबपर्यंतश्रवणकरैहै ॥जबपर्यंत ता पुरुषकेवाकादिकइंद्रिय लयभावकूंनहींप्राप्तभये।तिनवाकादिकइंद्रियोंकेलयहुएतैंअनंतर सोपुरुष किसीभीवस्तुकूंजाणतानहीं॥इसप्रकार सोविद्वानपुरुषभी जभी मरणकेसमीपकालकूंप्राप्तहोवै है॥तभी तिनवाकादिकइंद्रियोंकेलयपर्यंततो तिनबांधवोंके नानाप्रकारकेवचनोंकूं श्रवणकरैहै॥और तिनवाकादिकइंद्रियोंके लयहुएतैंअनंतर सोविद्वानपुरुषभी किसीवस्तुकूंजाणिसकतानहीं ॥इसप्रकार लोकदृष्टिकरिकै ताविद्वानकेमरणविषे तथाअविद्वानके मरणविषे समानताहुएभी यहमहान्विशेषताहै जो विद्वानपुरुषतो पुनः जन्मकूंप्राप्तहोवैनहीं॥और अज्ञानीपुरुष पुनःजन्मकूंप्राप्तहोवैहै॥७॥अबअष्टमप्रश्नकाउत्तर निरूपणकरै हैं॥ हेश्वेतकेतु॥विद्वानपुरुषकेतथाअविद्वानपुरुषकेमरणअव स्थाकेसमानहुएभी यहविद्वानपुरुषतोमरणतैंअनंतर पुनःजन्मकूंप्राप्तहोवैनहीं।और अविद्वानपुरुष मरणतैंअनंतर पुनःजन्मकूंप्राप्तहोवैहै ॥ याप्रकारकीविशेषताविषे यहहेतुहै ॥ सोविद्वानपुरुषतोसत्यस्वरूपआत्मादेवकूंहींजानेहै॥औरअविद्वानपुरुषतोमिथ्यारूपतीनशरीरोंकूंहीं,

आत्मारूपकरिकैजानेहै ॥ याकारणतैंहीं सोविद्वानपुरुषतो सत्यआत्मादेवकेसाक्षात्कारकरिकै मायारूपपाशतैंरहितहुआमरणकालविषे वाकादिकइंद्रियोंकेलयतैंअनंतर पुनः जन्मकूंप्राप्तहोवैनहीं॥और सोअविद्वान्पुरुषतो मिथ्यातीनशरीरोंकूं आत्मारूपकरिकैजाणताहुआ तामरणकालविषे वाकादिकइंद्रियोंकेलयतैंअनंतर संस्कारोंकेवशतैं पुनः शरीरकूंप्राप्तहोवै है॥ हेश्वेतकेतु ॥ यालोकविषेभी जिसपुरु षका सत्यविषेअभिप्रायहोवैहै ॥ सोपुरुष जोकदाचित् किसीमिथ्याकलंककूंभीप्राप्तहोवै है॥ तोभी सोसत्यवादीपुरुष तामिथ्याकलंकतैं मुक्तहीहोवैहै ॥ और जिसपुरुषका मिथ्याविषेअभिप्रायहोवैहै ॥ सोमिथ्यावादीपुरुष दुःखकूंहींप्राप्तहोवैहै ॥ जैसे यालोकविषे एकचोर पुरुषथा ॥ और दूसरा साधुपुरुषथा ॥ तिनदोनोंपुरुषोंकूं राजाकेभृत्योंनैं बलात्कारसें ग्रहणकऱ्या ॥ और यहदोनोंपुरुषचोरहैं यातैं दंडदेणेकूंयोग्यहैं ॥ याप्रकारतेराजाकेभृत्य निश्चयकरतेभये ॥ और तेभृत्य तिनदोनोंपुरुषोंकूं राजाकीसभाविषेलेजातेभये॥तासभाविषे जाईकै सोचोरपुरुष मैंचोरनहींहूं याप्रकारपुकारताभया ॥ और सोसाधुपुरुषभी मैंचोरनहींहूं याप्रकार पुकारताभया ॥ तिनदोनों केवचनकूंश्रवणकरिकै तिनराजाकेप्रधानभृत्योंकूंयाप्रकारकासंशयहोताभया॥ जोइनदोनोंविषेकौनचोरहै॥ कौनसाधुहै तासंशयकेनिवृत्त करणेवासतै तेराजाकेभृत्य अग्निविषेलोहकेपरशुकूंतपाइकै तिनदोनोंकेहस्तोंविषेदेतेभये ॥ तहांजोसत्यवादीसाधुपुरुषथा ॥ सो तातप्त परशुकरिकै दाहकूंनहींप्राप्तहोताभया ॥ औरजोमिथ्यावादीचोरथा ॥ सोतातप्तपरशुकरिकै दाहकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिनदोनोंविषे ता तप्तपरशुकेग्रहणतैं ताचोरपुरुषकेहस्तोंकूं नहींदग्धहुआदेखिकै तेराजाकेभृत्य तासाधुपुरुषकूंसत्यवादीजाणिकै छोडिदेतेभये ॥ और ता तप्तपरशुकेग्रहणतैं ताचोरपुरुषकेहस्तोंकूंदग्धहुआदेखिकैतेराजाकेभृत्य ताचोरपुरुषकूं मिथ्यावादीजाणिकै ताकूंबंधनगृहविषेप्राप्तकरते भये॥तथा ताडनाकरतेभये॥इसप्रकारविद्वान्पुरुषकेतथाअविद्वान्पुरुषके मरणकेसमानहुएभी सत्यआत्माकूंजानणेहाराजोविद्वानपुरुष है ॥ ताविद्वानपुरुषकेवाकादिकइंद्रियतो तामरणकालविषेस्वरूपतैंहींलयभावकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ याकारणतैंसोसत्यात्मवादीविद्वानपुरुषतो पुनःजन्मादिकदुःखोंकूंप्राप्तहोवैनहीं॥ और मिथ्यादेहादिकोंकूंहीं आत्मारूपजानणेहारा जोअविद्वानपुरुषहै ॥ ताअविद्वानपुरुषकेवाका

दिकइंद्रियं तामरणकालविषे स्वरूपतैंलयभावकूंप्राप्तहोवैंनहीं ॥ किंतुसंस्काररूपहोइकैरहे हैं॥ याकारणतैं सोमिथ्यावादीअविद्वान्पुरुष वारंवार जन्मादिकदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥हेशिष्य॥ इसप्रकारसोउद्दालकपिता ताश्वेतकेतुपुत्रकेप्रति ॥ तत्त्वमसिश्वेतकेतो ॥ याप्रकारका महावाक्य नववार उपदेशकरताभया ॥ तापिताकेउपदेशकूंश्रवणकरिकै संशयतैंरहितहुआ सोश्वेतकेतु तानवमेवचनविषे प्रथमवचन विषेकथनकरेहुएआत्माकेवास्तवस्वरूपकूं साक्षात्कारकरताभया ॥हेशिष्य ॥ इसप्रकार पिताकेउपदेशतैं आत्मज्ञानकूंप्राप्तहोइकै सो महान्तेजवालाश्वेतकेतु किंचित्कालपर्यंत आपणेगृहविषे निवासकरताभया॥ तिसतैंअनंतर सोश्वेतकेतुपरमवैराग्यकूंप्राप्तहोइकै आपणे उद्दालकपिताकीन्याईं परमहंससंन्यासकूंग्रहणकरताभया ॥ हेशिष्य ॥ सोउद्दालकमुनि ताश्वेतकेतुपुत्रकूं अत्यंतबुद्धिमानजाणिकै ताश्वेत केतुपुत्रकेप्रतिताआत्मारूपसत्ताविषे सुखरूपतानहींउपदेशकरताभया ॥ काहेतैंजोसूक्ष्मबुद्धिवालापुरुषहोवैहै सोनहींकहेहुएअर्थकूंभी आपहीजानिलेवैहै औरताश्वेतकेतुनैं ताउद्दालकपिताकेप्रति यहकारणरूपसत्ता सुखरूपहैअथवासुखरूपनहींहै याप्रकारकाप्रश्नभी नहींकऱ्याथा ॥ याकारणतैंभीसोउद्दालकमुनि ताश्वेतकेतुकेतुपुत्रकेप्रति ताआत्मारूपसत्ताविषे सुखरूपतानहींकथनकरताभया ॥ औरपूर्व नारदमुनिकेप्रश्नकरिकै संतोषकूंप्राप्तभयाजोभगवान्सनत्कुमारहै ॥ सोभगवान्सनत्कुमारतौं तानारदमुनिकेताईं विनाहीपूछैतैं ताआत्मा रूपसत्ताकीसुखरूपताकथनकरताभयाहै ॥हेशिष्य॥ पूर्वजोतुमनैंश्वेतकेतुकेअज्ञानकाकारणपूछाथा सोहमनैंतुमारेप्रति कथनकऱ्या ॥ तथा ताश्वेतकेतुकूंपुनः उद्दालकपिताकेउपदेशकरिकै जिसप्रकार आत्मज्ञानकीप्राप्तिभईथी ॥ सोभीहमनैंतुमारेप्रतिकथनकऱ्या ॥ अब जिसअर्थकेश्रवणकरणेकीतुमारेकूंइच्छाहोवै सोहमारेसैंपूछो ॥ इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीस्वामीउद्धवानंदगिरिपूज्य पादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचिते प्राकृतआत्मपुराणे छांदोग्यसारार्थप्रकाशे आरुणिश्वेतकेतुसंवादोनाम द्वादशोऽध्यायः समाप्तः ॥ १२ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ इति द्वादशोऽध्यायःसमाप्तः ॥



ॐश्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः॥श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथ त्रयोदशाध्यायप्रारंभः ॥ पूर्वे अ० १३
द्वादशेअध्यायविषे सामवेदकेछांदोग्यउपनिषद्केषष्ठेअध्यायकाअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ अब यात्रयोदशेअध्यायविषे तिसीछांदोग्यउप
निषद्के सप्तमेअध्यायकाअर्थ निरूपणकरै हैं ॥ इसप्रकार सोशिष्य गुरुकेमुखतैं आपणेआत्माकीब्रह्मरूपताकूंश्रवणकरिकै पुनःप्रश्नकर
णेकीकामनाकरताहुआ याप्रकारकावचनकहताभया ॥शिष्यउवाच॥ हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणकेप्रथमअध्यायविषे आपनैं ऋग्वेदके
ऐतरेयउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ ताप्रथमअध्यायविषे सनकादिकमुनिवामदेवादिकअधिकारीपुरुषोंकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदे
शकरतेभये॥तथा वामदेवमुनि माताकेगर्भविषेस्थितहोइकै तिनअधिकारीजनोंकेप्रति आपणासर्वात्मभाव कथनकरताभया॥इसतैंआ
दिलैकै अनेकप्रकारकीवार्त्ता आपनैं ताप्रथमअध्यायविषेकथनकरीथी।और हेभगवन्। याआत्मपुराणकेद्वितीयअध्यायविषे तथातृतीयअ
ध्यायविषे आपनैं तिसीऋग्वेदके कौषीताकिउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा॥तहां याआत्मपुराणकेद्वितीयअध्यायविषेतौ देवराजइंद्र
प्रतर्दनराजाकेप्रति प्राणप्रज्ञारूपकरिकै आत्माकाउपदेशकरताभया।और याआत्मपुराणकेतृतीयअध्यायविषे अजातशत्रुराजा बालाकि
ब्राह्मणकेप्रति तिनप्राणादिकोंतैंभिन्नकरिकै आत्माकाउपदेशकरताभया।औरहेभगवन्।याआत्मपुराणके चतुर्थपंचम षष्ठसप्तम याचारअ
ध्यायोंविषे आपणैंयजुर्वेदकेबृहदारण्यकउपनिषद्काअर्थनिरूपणकऱ्याथा ॥ तहांचतुर्थअध्यायविषेतौ दोपुरुषवंशएकस्त्रीवंश यातीनवंशों
विषेस्थितऋषियोंका परस्परभेदतथापरस्परअभेद वर्णनकऱ्याथा ॥ औरदध्यङ्अथर्वण देवराजइंद्रकेप्रतिब्रह्मविद्याउपदेशकरताभया ॥
ताब्रह्मविद्याकूंश्रवणकरिकै सोइंद्र उलटा तादध्यङ्ऋषिऊपर क्रोधवानहोइकै ताब्रह्मविद्याकेनहींउपदेशकरणेकीआज्ञाकरताभया ॥
और सोदध्यङ्ऋषि आपणेप्रतिज्ञाकेसत्यकरणेवासतै साब्रह्मविद्या अश्विनीकुमारोंकेप्रति उपदेशकरताभया॥तिसतैंअनंतर सोइंद्र ताद
ध्यङ्ऋषिकामस्तक छेदनकरताभया ॥ और तेअश्विनीकुमार ब्रह्मविद्याके लोभकरिकै आपणे गुरुकेमस्तककूं काटिकै अश्वकीग्रीवा ॥ १ ॥
ऊपर राखतेभये ॥ और अश्वकामस्तक काटिकै आपणे गुरुकीग्रीवाऊपर राखतेभये ॥ इसतैं आदिलैकै अनेकप्रकारकीवार्त्ता

आपनैं ताचतुर्थअध्यायविषेकथनकरीथी ॥ और हेभगवन्॥याआत्मपुराणकेपंचमअध्यायविषे आपनैं यहवार्त्ताकथनकरीथी॥जो जनक
राजाकेयज्ञसभाविषे आश्वलादिकब्राह्मण याज्ञवल्क्यमुनिकेजीतणेकीइच्छाकरिकै तायाज्ञवल्क्यमुनिकेसाथ अनेकप्रकारकाविवादकर
तेभये ॥ तथा तासभाविषे याज्ञवल्क्यमुनिकेशापकरिकै शाकल्यब्राह्मणकामृत्युहोताभया॥और हेभगवन्॥ याआत्मपुराणकेषष्ठेअध्या
यविषे आपनैं यहवार्त्ता कहीथी॥सोयाज्ञवल्क्यमुनि ताजनकराजाकेप्रति दोवार ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरिकै ताजनकराजाकूं कृतकृत्यभा
वकीप्राप्तिकरताभया॥और हेभगवन् याआत्मपुराणकेसप्तमआध्ययविषे आपनैं यहवार्त्ता कथनकरीथी॥सोयाज्ञवल्क्यमुनि आपणेमैत्रेयी
स्त्रीकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरिकै तामैत्रेयीकूं कृतकृत्यभावकीप्राप्तिकरताभया॥तिसतैंअनंतर सोयाज्ञवल्क्यमुनि संन्यासआश्रमकूं
ग्रहणकरताभया ॥ औरहेभगवन्॥याआत्मपुराणकेअष्टमअध्यायविषे आपनैं तिसीयजुर्वेदके श्वेताश्वतरउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्या
था ताअष्टमअध्यायविषे आपनैं यहवार्त्ताकथनकरीथी ॥ संपूर्णसंन्यासी याजगत्केकारणविषे विवादकरिकै श्वेताश्वतरमुनिके आश्रम
विषे जातेभये॥ तिनसंन्यासियोंकेप्रति सोश्वेताश्वतरमुनि पूर्ववेदवेत्ताब्राह्मणोंकाआख्यानकहिकै याजगत्केकारणकानिश्चयकरावताभया
और हेभगवन्॥याआत्मपुराणकेनवमअध्यायविषे आपनैं तिसीयजुर्वेदके कठवल्लीउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तानवमअध्या
यविषे आपनैं यहवार्त्ताकथनकरीथी ॥ पिताकेसत्यवचनकरणेवासतै नचिकेता यमराजाकेलोकविषेजाताभया ॥ तानचिकेताकेधैर्यकूंदे
खिकैप्रसन्नहुआसोयमराजा तानचिकेताकेप्रति संपूर्णब्रह्मविद्या उपदेशकरताभया ॥ और हे भगवन् ॥ याआत्मपुराणके दशमे
अध्यायविषे आपनैं तिसीयजुर्वेदके तैत्तिरीयकउपनिषद्का तथानारायणीयउपनिषद्का अर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तादशम
अध्यायविषे आपनैं यहवार्त्ता कथनकरीथी भृगुऋषि आपणेवरुणपिताकेसमीपजाइकै ब्रह्मविद्याकीप्रार्थना करताभया ॥
और सोवरुणपिता कथनकरी ताभृगुपुत्रके प्रति साब्रह्मविद्या उपदेश करताभया ॥ और वेननामा गंधर्व आपणेसर्वात्मभावका
अनुभवकहताभया ॥ तथा सत्यादिकसर्वसाधनोंविषे संन्यासआश्रमकीअधिकता वर्णनकरीथी ॥ और हेभगवन् याआत्मपुराणके

एकादशअध्यायविषे आपनैं जाबालादिकएकादशउपनिषदोंकाअर्थ निरूपणकऱ्याथा।ताएकादशअध्यायविषे आपनैं यहवार्त्ता कथनक
रीथी ॥ तापरमहंससंन्यासकूं पूर्व संवर्त्तकादिकमहात्मापुरुष ग्रहणकरतेभये हैं ॥ और तापरमहंससंन्यासकेग्रहणविषे वैराग्यहीकालहै॥
तावैराग्यकीउत्पत्तिविषे गर्भउपनिषद्काविचार तथामरणकेचिह्नोंकाज्ञान तथाअष्टांगयोग इत्यादिकउपायकारणहैं॥ और तापरमहंससं
न्यासविषे वैराग्यवान्पुरुषही अधिकारी है॥और तापरमहंससंन्यासीको शिखासूत्रादिकोंतैंरहितपणा बाह्यआचारहै॥ और अहिंसादिक
धर्म अंतरआचारहै॥और तापरमहंससंन्यासीकामुख्यधर्मतौ आत्मज्ञानही है॥सोआत्मज्ञानतौ ब्रह्मउपनिषदादिकोंविषे आपनैं कथनक
ऱ्याथा॥और हेभगवन्॥याआत्मपुराणकेद्वादशअध्यायविषे आपनैं सामवेदकेछांदोग्यउपनिषद्केषष्ठअध्यायकोअर्थ निरूपणकऱ्याथा॥
ताद्वादशेअध्यायविषे आपनैं यहवार्त्ता कथनकरीथी॥उद्दालकमुनि श्वेतकेतुपुत्रकेसंशयकीनिवृत्तिकरणेवासतैं॥तत्त्वमसिश्वेतकेतो॥याम
हावाक्यका नववार उपदेशकरताभया ॥ ताउपदेशकूंश्रवणकरिकै॥सोश्वेतकेतु संशयतैंरहित आत्मज्ञानकूंप्राप्तहोताभया॥हेभगवन् ॥
ताद्वादशेअध्यायकेअंतविषे आपनैंयहकह्याथा ॥ जो उद्दालकमुनि श्वेतकेतुपुत्रकूंबुद्धिमान्जानिकै ताश्वेतकेतुपुत्रकेप्रति विनापूछैंतैं
आत्माकीसुखरूपता नहींकथनकरताभया॥और पूर्व सनत्कुमारतौ नारदमुनिकेप्रति विनाहीपूछैंतैं साआत्माकीसुखरूपताकथनकरता
भयाहै ॥ हेभगवन्॥ तासनत्कुमारनैं नारदमुनिकेप्रति जात्रह्मविद्या उपदेशकरीथी ॥ सात्रह्मविद्या मैं आपकेमुखतैंश्रवणकरणेकीइच्छा
करताहूं ॥ आप कृपाकरिकै सात्रह्मविद्या हमारेप्रति उपदेशकरो ॥ इसप्रकार ताश्रद्धावान्शिष्यकरिकैपूछाहुआ सोश्रीगुरुताशिष्यके
प्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ श्रीगुरुरुवाच॥ हेशिष्य॥पूर्वएककालविषे संसारकेतापकरिकैतप्तहुआ नारदमुनि एकांतदेशविषे
स्थितसनत्कुमारोंकेसमीपजाइकै याप्रकारकावचन कहताभया ॥ नारदउवाच ॥ हेभगवन् जोब्रह्म यासर्वजगत्का अधिष्ठान है ॥ तथा
जोब्रह्म सर्वतैंउत्कृष्टहै ॥ तथा जिसब्रह्मकेज्ञानतैं विद्वान्पुरुष कर्तृत्वभोक्तृत्वादिकअध्यासरूपसर्वशोकोंकूंतरे हैं॥तात्रह्मकेस्वरूपकूं आप
भलीप्रकारसैंजाणतेहो ॥ यातैं हेभगवन् ॥ जोब्रह्मज्ञान सर्वशोकोंकेनिवृत्तिकाकारणहै ॥ सोब्रह्मज्ञानमैंशिष्यकेप्रति आप कृपाकरिकै

॥ २ ॥

उपदेशकरो ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकावचन जभी तानारदमुनिनैं भगवान्सनत्कुमारकेप्रति कह्या॥तभी सोभगवान्सनत्कुमार मंदमंद
हंसताहुआ तानारदकेअज्ञानकीनिवृत्तिकरणेवासतैं याप्रकारकावचन कहताभया ॥ सनत्कुमारउवाच ॥ हेनारद ॥ तू सर्व लोकोंविषे
सर्वज्ञतारूपकरिकैप्रसिद्धहै ॥ यातैं तुम्हारेकूं जितनीकीविद्या आवतीहै॥सासंपूर्णविद्या तुम हमारेप्रतिकहो॥ तातुम्हारीसर्वविद्याकूंश्रवण
करिकै पश्चात् हम तुम्हारेप्रति ब्रह्मज्ञानकाउपदेशकरेंगे ॥हेशिष्य॥ इसप्रकारकावचन जभी तिससनत्कुमारनैं नारदमुनिकेप्रति कह्या ॥
तभी सोनारदमुनि तासनत्कुमारकेप्रति दंडवत्प्रणामकरिकै आपणीसर्वविद्या कहताभया॥नारदउवाच॥हेभगवन्॥मंत्र ब्राह्मण या दो
रूपकरिकै दोदोप्रकारताकूंप्राप्तहुएजे ऋग् यजुष् साम अथर्वण यह चारिवेद हैं ॥ तिनचारिवेदोंकूंभी मैं आपणेब्रह्मापिताकेप्रसादतैं
भलीप्रकार जानताहूं ॥ और हेभगवन्॥ तिनचारिवेदोंविषे जेवचन पूर्वब्राह्मणादिकोंकेकथाप्रसंगकूं प्रतिपादनकरेहैं॥तिनवचनोंकानाम
इतिहासहै।तिनइतिहासोंकूंभी मैं भलीप्रकारसैंजाणताहूं॥और हेभगवन्॥तिनवेदोंविषे जेवचन याजगत्केउत्पत्तिस्थितिआदिकोंका कथ
नकरेहैं।तिनवचनोंकानाम पुराणहै।तिनपुराणोंकूंभी मैं भलीप्रकारजानताहूं॥और हेभगवन् ॥यहशब्दसाधुहै यहशब्दअसाधुहै याप्रकारके
ज्ञानकाहेतुजोव्याकरणहै ॥ जाव्याकरणकूं श्रुतिनैं वेदानांवेद यानामकरिकैकथनकऱ्याहै॥ताव्याकरणकूंभी मैं भलीप्रकार जानताहूं ॥
और हेभगवन्॥श्राद्धादिककर्मोंकेरीतिकूं कथनकरणेहाराजोपित्र्यनामाशास्त्रहै॥ताशास्त्रकूंभी मैं भलीप्रकार जानताहूं॥और हेभगवन् ॥
सहस्रलक्षादिकसंख्याकेस्वरूपका निर्णयकरणेहारा जोगणितशास्त्रहै॥जागणितशास्त्रकूं श्रुतिनैं राशि यानामकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ताग
णितशास्त्रकूंभी मैं भलीप्रकार जानताहूं ॥ और हेभगवन् ॥ जीवोंकेउत्पातादिकोंकेस्वरूपकानिर्णयकरणेहाराजोशास्त्रहै ॥जाशास्त्रकूं
देव याशब्दकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ ताशास्त्रकूंभी मैं भलीप्रकार जानताहूं ॥ और हेभगवन् ॥ जिसशास्त्रकरिकै भूमिविषेदाबेहुए
धनका ज्ञानहोवैहै ॥ जाशास्त्रकूं निधि याशब्दकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ ताशास्त्रकूंभी मैं भलीप्रकार जानताहूं ॥ और हेभगवन् ॥ तर्क
हैप्रधानजिसविषे ऐसाजो अक्षपादप्रणीतन्यायशास्त्र है ॥ तान्यायशास्त्रकूंभी मैं भलीप्रकार जानताहूं ॥ तथा वेदविषेस्थित जोप्रश्न

उत्तरभागहै॥ताकूंभीमैंभलीप्रकारजानताहूं॥जिसन्यायशास्त्रकूं तथा प्रश्नउत्तररूपवेदकेभागकूं श्रुतिविषे वाकोवाक्य यानामकरिकैकथन कऱ्याहै ॥ और हेभगवन् ॥ अनेकप्रकारकेव्यवहारोंकेनियमकूं कथनकरणेहाराजो नीतिशास्त्रहै॥जिसनीतिशास्त्रकूं श्रुतिविषे एकायन यानामकरिकैकथनकऱ्या है ॥ तानीतिशास्त्रकूंभी मैं भलीप्रकारजानताहूं ॥और हेभगवन्॥वेदकाअंगरूप जोनिरुक्तशास्त्रहै ॥ तानिरुक्तशास्त्रके जितनेभागविषे सर्वदेवतावोंकूं सर्वात्मरूपकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ तानिरुक्तकेभागकानाम देवविद्याहै ॥ तादेवविद्याकूंभी मैं भलीप्रकारजानताहूं ॥ और हेभगवन् ॥ तादेवविद्यारूपनिरुक्तभागकूंछोडिकै बाकीरह्याजोनिरुक्तशास्त्रहै॥ तथा शिक्षा कल्पहै ॥ यह तीनों वेदकेअंगहोणेतैं वेदकेउपकारकहैं ॥ यातैं निरुक्त शिक्षा कल्प यातीनोंकूं देवविद्या यानामकरिकैकथनकरै हैं॥ तादेवविद्याकूंभी मैं भली प्रकारजानताहूं ॥ और हेभगवन् ॥ यहआयुर्वेद तथा सुश्रुतादिकवैद्यककेग्रंथ सर्वभूतप्राणियोंकेरोगकीनिवृत्तिकरिकै सर्वभूत प्राणियोंऊपर उपकारकरे हैं ॥ यातैं सुश्रुतादिकग्रंथसहित ताआयुर्वेदकूं भूतविद्या यानामकरिकैकथनकरै हैं ॥ ताआयुर्वेदरूपभूतविद्या कूंभी मैं भलीप्रकारजानताहूं ॥ तथा शांतिपुष्टिआदिकफलोंकीप्राप्तिकरणेहारे जेनानाप्रकारकेमंत्रहैं॥तिनमंत्रोंकूंभी मैं भलीप्रकारजा नताहूं।और हेभगवन्।अस्त्रविद्यासहितजोधनुर्विद्याहै।ताधनुर्विद्याकानाम क्षत्रविद्याहै॥ताक्षत्रविद्याकूंभी मैं भलीप्रकारजानताहूं।और हेभ गवन्॥राहुकेतुआदिकग्रहोंकेस्थितिआदिकोंकूंप्रतिपादनकरणेहारा जोज्योतिषशास्त्रहै॥ताज्योतिषशास्त्रकानाम नक्षत्रविद्याहै॥तानक्षत्र विद्याकूंभीमैंभलीप्रकारजानताहूं।और हेभगवन्।सर्पोंविषेजेदेवशरीरहैं। तिनोंकेवशकरणेकासाधनजागारुडविद्याहै।तागारुडविद्याकानाम सर्पदेवविद्याहै॥तासर्पदेवविद्याकूंभी मैं भलीप्रकारजानताहूं।और हेभगवन्।सर्वलोकोंकेमनकूंरंजनकरणेहारा तथागीतादिकोंकूंप्रतिपादन करणेहारा जोगांधर्वशास्त्रहै॥तागांधर्वशास्त्रकानाम जनविद्याहै॥ताजनविद्याकूंभी मैं भलीप्रकारजानताहूं॥हेभगवन्॥इसप्रकार ऋग्वेदतैं आदिलैके गांधर्वशास्त्रपर्यंत सर्वविद्याओंकूं मैं भलीप्रकारजानताहूं।परन्तु तिनवेदोंकेतात्पर्यकाविषयरूप जोआपणेमोक्षकासाधनहै।तामो क्षकेसाधनकूं मैं जानतानहीं ॥ हेभगवन् ॥ यद्यपि तिनवेदोंकेअर्थकूं सामान्यतैं मैं जानताहूं ॥ तथापि तिनवेदोंकेतात्पर्यकाविषय

॥ ३ ॥

भूत जोअद्वितीयआत्माहै ॥ तिसआत्मादेवकूं मैं जाणतानहीं ॥ यातैं मैं केवलवेदमंत्रोंकेपाठकूंजाननेहाराहूं ॥ तिनमंत्रोंकेअर्थकूं मैं जा नतानहीं ॥ हेभगवन् ॥ पूर्व आपसरीखेमहात्मापुरुषोंकेमुखतैं हमनैं याप्रकारकावचन श्रवणकऱ्याहै॥जो आत्माकूंजाननेहारापुरुष मूल कारणसहितसर्वशोकोंकूं तरेहै ॥ हेभगवन् ॥ जैसे यालोकविषे तीनकोणवालेअग्निकेकुंडविषे एतनभयाजोकोईपंगुपुरुषहै॥तापंगुपुरुषकूं महान्शोककीप्राप्तिहोवै है॥तैसे अध्यात्मदुःख अधिदैवदुःखअधिभूतदुःख यातीनदुःखोंकरिकै हमारेकूं सर्वदाशोककीप्राप्तिहोवैहै।हेदीन दयालुसनत्कुमार ॥ जैसे कोईपतिव्रतास्त्री छोटेबालकोंवालीहोवै ॥ अथवा पुत्रोंतैंरहितहोवै॥तथा यौवनअवस्थावालीहोवै॥तथा धनतैं रहितहोवै ॥ तथा बांधवोंतैंरहितहोवै॥ऐसीपतिव्रतास्त्रीका जभी तायौवनअवस्थाविषेही पतिमृत्युहोइजावै है तभी सास्त्री हादैव हमारी कौनगतिहोवैगी याप्रकार निरंतर आपणाशोककरै है॥तैसे मैंनारदभी हादैव मेरीकौनगतिहोवैगी याप्रकार निरंतर आपणाशोककरतहूं तथा अध्यात्म आधिदैव अधिभूत यातीनतापोंकेवशकूंप्राप्तहुआहूं॥तथा विचारहीनपुरुषोंकरिकैदुस्तर जोयहशोकरूपीसमुद्रहै॥ ताशो करूपीसमुद्रविषे मैं सर्वदाडूबाहूं॥तथा ताअगाधशोकरूपीसमुद्रकेपारलेकिनारेकेप्राप्तिकी मैं सर्वदाइच्छाकरताहूं॥ ऐसेमैंदीनकूंआपकृपाकरिकै याशोकरूपीसमुद्रतैं पारकरो॥हेशिष्य॥इसप्रकार तानारदमुनिके दीनतापूर्वकवचनोंकूंश्रवणकरिकै सोभगवान्सनत्कुमारता नारदकेप्रति स्थूलाऽरुंधतीन्यायकरिकै आत्माकेवास्तवस्वरूपकेबोधनकरणेवासतै यापप्रकारकावचन कहताभया॥सनत्कुमारउवाच॥हे नारद पूर्वउक्तजितनेकीशास्त्रोंकूं तूं अध्ययनकरिकैजाणताभयाहै ॥ तेसंपूर्णशास्त्र शब्दरूपही हैं॥ काहेतैं यासंपूर्णप्रपंचका एकदेशरूप जितनेकीवस्तुहैं ॥ तिनसर्ववस्तुवोंकूं यहवाकादिकइंद्रिय नामत्वरूपकरिकैही कथनकरै हैं॥ जोकदाचित् यालोकविषे सोशब्दरूपनाम नहींहोवै ॥ तौ कोईभीपुरुष किसीभीवस्तुकेकहणेविषे समर्थनहींहोवैगा॥ नामकरिकैही सर्ववस्तुवोंकाव्यवहारहोवै है ॥ यातैं यहनाम सर्ववस्तुरूपहै ॥ ऐसेसर्ववस्तुरूपनामकूं तूं ब्रह्मरूपकरिकैचिंतनकर॥ हेनारद ॥ तुम्हाराचित्त द्वैतवासनावोंकरिकैकुंठितहोइगयाहै।जभी तूं तापूर्वअभ्यासकरेहुएनामविषे ब्रह्मभावना करैगा ॥ तभी सो तुम्हाराचित्त साक्षात्ब्रह्मकेजाननेविषेयोग्य होवैगा॥ हेनारद ॥यालोक

विषे जोपुरुष संपूर्णशब्दरूपनामोंकूं ब्रह्मरूपकरिकैउपासनाकरै है ॥ तिसपुरुषकूं नामकरिकैसंबद्धसर्वजगत्विषे स्वतंत्रतारूपफलकीप्राप्तिहोवै है॥जैसे महाराजाकूं आपणेदेशविषेस्वतंत्रताहोवै है ॥ हेशिष्य॥ इसप्रकार जभी तासनत्कुमारभगवान्नैं नारदकेप्रति शब्दरूपनामकी ब्रह्मरूपकरिकैउपासना कथनकरी॥ तभी सोनारदमुनि ताभगवान्सनत्कुमारकेप्रति याप्रकारकाप्रश्नकरताभया॥हेभगवन् या शब्दरूपनामविषे ब्रह्मदृष्टिमात्रकरिकै ताशोककीनिवृत्तिहोवैनहीं॥यातैं जोवस्तु तानामतैंभीअधिकहोवै॥सोवस्तु हमारेप्रति कथनकरो इसप्रकार तानारदकरिकैपूछाहुआ सोभगवान्सनत्कुमार तानारदकेप्रति पूर्वपूर्वकीअपेक्षाकरिकै उत्तरउत्तरविषेअधिकतानिरूपणकरताहुआ वाक्इंद्रियतैंलैके आशापर्यंत त्रयोदशतत्त्वोंका वर्णनकरताभया॥तथा तिनत्रयोदशतत्त्वोंविषे एकएकतत्त्वकी ब्रह्मरूपकरिकैउपासना कथनकरताभया ॥ तथा जैसेनामकूंब्रह्मरूपकरिकैउपासनाकरणेहारेपुरुषकूं तानामकरिकैसंबद्धसर्वजगत्विषे स्वतंत्रतारूपफल प्राप्त होवै है।तैसे तिनवाकादिकोंकूं ब्रह्मरूपकरिकैउपासनाकरणेहारेपुरुषोंकूंतिनवाकादिकोंकरिकैसंबद्धसर्वजगत्विषे स्वतंत्रतारूपफलप्राप्तहोवै है ॥ याप्रकार तिनवाकादिकोंकेउपासनावोंकाफलभी वर्णनकरताभया ॥अब तिनवाकादिकत्रयोदशतत्वोंकेस्वरूपका वर्णनकरैहैं॥ हेनारद ॥ यहशब्दरूपनाम वाक्इंद्रियतैंउत्पन्नहोवै है॥यातैं ताशब्दरूपकार्यतैं सोवाक्रूपकारण अधिकहै॥ १ ॥ और तावक्इंद्रियकूं आपणेकार्यविषे यहइच्छारूपमनहीं प्रेरणाकरै है ॥ यातैं तावाक्इंद्रियतैं सोइच्छारूपमन अधिकहै ॥२॥ और यहकार्य हमारेकूंकरणे योग्यहै अथवा नहींकरणेयोग्यहै॥याप्रकार कर्त्तव्य अकर्त्तव्यरूप दोनोंकोटियोंकूं भिन्नभिन्नरूपकरिकै विषयकरणेहारी जासंकल्परूपअंतःकरणकीवृत्तिहै ॥ सासंकल्परूपवृत्तिही ताइच्छारूपमनकूंउत्पन्नकरै है॥यातैं ताइच्छारूपमनतैं सोसंकल्प अधिकहै॥३ ॥और यहअनुसंधानरूपचित्त जभी सुखसाधनतारूपकरिकै तथादुःखसाधनतारूपकरिकै पूर्वअनुभवकरेहुएपदार्थोंकीसादृश्यता सन्मुखदेशवृत्तिपदार्थोंविषेविषयकरै है ॥ तभीही सोकर्तव्यअकर्त्तव्यविषयसंकल्पहोवै है यातैं सोअनुसंधानरूपचित्त तासंकल्पतैंअधिकहै ॥ ४ ॥ और वृत्तिज्ञानोंकाप्रवाहरूपजाचिंताहै॥ सोचिंतारूपध्यान पूर्वसंस्कारोंकेउद्बोधद्वारा तास्मृतिरूपअनुसंधानकाजनकहै ॥ यातैं सोचिंतारूप

ध्यान ताअनुसंधानरूपचित्ततैंअधिकहै ॥ ५ ॥ और यालोकविषे जिसवस्तुकूं उपेक्षाज्ञानतैंभिन्नविशेषज्ञान विषयकरै है तिसीवस्तुका ध्यानकऱ्याजावै है ॥ यातैं सोविशेषज्ञानरूपविज्ञान ताध्यानतैंअधिकहै ॥६॥ और अन्नकेभक्षणकरिकैउत्पन्नभयाजो अवयवोंकीवृद्धिरूपबलहै ॥ जिसबलतैं सर्वशत्रु भयकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ ऐसेबलयुक्तमनकरिकैही सोविज्ञानसिद्धहोवै है ॥ यातैं सोबल ताविज्ञानतैंअधिकहै ॥ ७ ॥ और सोबल भूमिरूपअन्नतैंउत्पन्नहोवै है ॥ यातैं सोभूमिरूपअन्न तावलतैंअधिकहै ॥ ८ ॥ और सोभूमिरूपअन्न वृष्टिरूपजलोंतैंउत्पन्नहोवै हैं ॥ यातैं तेजल ताभूमिरूप अन्नतैंअधिक हैं ॥ ९ ॥ और यालोकविषे जभी उष्णतारूपतेजकीअधिकताहोवै है ॥ तभीही साजलकीवृष्टिहोवै है ॥ यातैं सोतेज तिनजलोंतैंअधिकहै ॥१०॥ और यहआकाश तातेजकाआधाररूपहै॥यातैं यहआकाश तातेजतैंअधिकहै ॥११॥ इहां यद्यपि तातेजतैंवायुविषेअधिकताकहणीयोग्यथी॥तथापि जैसेउष्णतारूपतेज जलकेवृष्टिकाकारणहोवै है तैसे यहबाह्यवायुभी ताजलकेवृष्टिकाकारणहै ॥ यातैं तावायुका तेजविषेअंतर्भावमानिकै तावाय्युक्ततेजतैं आकाशकूंअधिककह्या है ॥ और सुषुप्तिकेअंतविषे जोपूर्वदृष्टआकाशकास्मरणहोवै है ॥ सोस्मरणहीं ताआकाशकेउत्पत्तिकाकारणहै ॥ जैसे पूर्वअनुभवकरेहुएघटकास्मरणहीं उत्तरघटकेउत्पत्तिकाकारणहोवै है ॥ पूर्वघटकेस्मरणतैंविना उत्तरघटकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ यातैं सोस्मरणरूपकारण ताआकाशरूपकार्यतैं अधिकहै॥१२॥और यहकार्य इसीप्रकारहोवैगा याप्रकारकीजाआशाहै॥साआशाही तास्मरणकाकारणहोवै है॥ताआकाशतैंरहितनिष्कामपुरुषकूं तास्मरणकरणेविषे किंचित्मात्रभी प्रयोजनहोवैनहीं॥यातैं साआशा तास्मरणतैंअधिकहै।१३।हेशिष्य। इसप्रकार सोभगवान्सनत्कुमार तानारदमुनिकेप्रति वाक्१मन२संकल्प३चित्त ४ ध्यान५विज्ञान६बल७अन्न ८ जल९तेज १० आकाश ११ स्मरण १२आशा१३ यात्रयोदशतत्वोंविषे पूर्वपूर्वतत्त्वकीअपेक्षाकरिकै उत्तरउत्तरतत्त्वविषेअधिकताकथनकरिकै तिनवाकादिकतत्वोंकीअधिकताविषे याप्रकारकीयुक्ति कथनकरताभया।अब प्रथमनामतैं वाक्कीअधिकताविषे युक्तिका निरूपणकरै हैं॥हेनारद ॥ जोतुमनें पूर्व ऋग्वेदतैंआदिलैकेगांधर्वशास्त्रपर्यंत संपूर्णशब्दरूपशास्त्र कथनकरे हैं ॥ तेसंपूर्णशब्दरूपशास्त्रलोकोंनैं वाक्इंद्रियकरिकैहीजानीते

हैं॥तथा तिनऋग्वेदादिकोंकेअर्थ तथास्वर्गादिकलोक तथाआकाशादिकपंचभूत तथाइंद्रादिकदेवता तथाअसुरादिक तथामनुष्यादिक जंगमजीव तथावृक्षादिकस्थावरजीव इसतैंआदिलेकेजेअनेककोटिपदार्थ हैं ॥ तेसंपूर्णपदार्थ यालोकोंनैं वाक्इंद्रियकरिकेही जानीते हैं ॥ तथा धर्म सत्य साधु हृदयज्ञ अधर्म असत्य असाधु अहृदयज्ञ यहअष्टपदार्थभी लोकोंनैं वाक्इंद्रियकरिकेही जानीते हैं ॥ वाक्इंद्रियतैं विना याअष्टपदार्थोंकेज्ञानविषे कोईभीसमर्थहोइसकेनहीं ॥ तहां सुखकेकारणनाम धर्म है ॥ और जिस पदार्थका जैसास्वरूप अनुभ वकऱ्याहोवै ॥ तिसपदार्थका तैसाहीस्वरूप कथनकरणा याकानाम सत्य है ॥ और दूसरे प्राणियोंऊपर उपकरणेहाराजो वचन है ॥ तावचनकानाम साधु है ॥ और शीघ्रही लोकोंकेमनकीप्रसन्नताकरणेहाराजोवचन है ॥ तावचनका हृदयज्ञहै॥और ताधर्मतैं विपरीत कानाम अधर्म है॥और तासत्यतैंविपरीतकानाम असत्य है॥और तासाधुतेंविपरीतकानाम असाधुहै॥और ताहृदयज्ञतैंविपरीतकाना म अहृदयज्ञ है ॥ इसप्रकार सावाक्इंद्रियही शब्दरूपनामोंके तथासर्वपदार्थोंके व्यवहारकाकारणहै यातैं सवाक्इंद्रिय तानामतैंअधिक हेयाकारणतैंही सवाक्इंद्रिय पूर्वउक्तनामकीन्याईं ब्रह्मरूपकरिकै उपासनाकरणेयोग्यहै॥और तानामकीउपासनाका जोसर्वत्रस्वर्तत्रतारू पफल पूर्वकथनकऱ्याथा ॥ सोईहीफल यावाक्इंद्रियके उपासनाकाभीहोवै है ॥१॥ अब तावाक्तैं मनकीअधिकताविषे युक्तिकावर्णन करै हैं ॥ हेनारद ॥ जैसे दोबदरीफलोंकूं अथवा दोआमलफलोंकूं यहहस्तरूपमुष्टि आपणेविषे अंतर्भावकरे है ॥ तैसे पूर्वकथनकरेहुए शब्दरूपनामकूं तथावाक्इंद्रियकूं यहमनही आपणेविषे अंतर्भावकरै है ॥ काहेतैं यामनके अभावहुए सोशब्दरूपनाम तथावाक्इंद्रिय प्रतीतहोवैनहीं॥यामनकेविद्यमानहुएही तेवाकादिक प्रतीतहोवै है ॥ और यहपुरुष तामनकेविचारकरिकेही वेदोंकेअध्ययनकूंकरै है ॥ तथा यज्ञादिककर्मोंकाअनुष्ठानकरै है॥तथा इसलोककेफलकी तथापरलोककेफलकी अभिलाषाकरै है॥तथा ताफलकीप्राप्तिकरणेहारे साधनोंकीअभिलाषाकरे है॥और यहशरीर तथावाकादिकइंद्रिय तथानानाप्रकारकालौकिकसुख यहसंपूर्ण तामनकेविद्यमानहुएही वि द्यमानहोवै हैं।तथा मनकेअविद्यमानहुए अविद्यमानहोवैहैं ॥यातैं तेशरीरइंद्रियादिकसंपूर्ण मनरूपहीहैं॥याकारणतैं यहमन तावाक्इंद्रिय ॥ ६ ॥

तैंअधिकहै॥ऐसेमनकूं तू ब्रह्मरूपकरिकैउपासनाकर ॥ २॥ अब तामनतैं संकल्पकीअधिकताविषे युक्तिकानिरूपणकरै हैं॥हेनारद॥जो पुरुष पूर्वउक्तसंकल्पकरिकेयुक्तहोवै है॥सोसंकल्पवान्पुरुषही तासर्वमानसव्यापारोंकूंकरै है ॥ तामानसव्यापारतैंअनंतर सोपुरुष वाक्इं द्रियकेव्यापारकूंकरै है ॥ तावाक्इंद्रियकेव्यापारतैंअनंतर तानामरूप शब्दकेव्यापारकूंकरैहै ॥ शब्दकेव्यापार विषे संपूर्णवेदादिकोंके शब्दोंकासमूह अंतर्भावहोवैहै ॥ और ताशब्दोंकेसमूहविषे सुखकीप्राप्तिकरणेहारेसर्वकर्म स्थितहोवै हैं ॥ इसप्रकारकीपरंपराकरिकै सो संकल्पही तिनसर्वकर्मोंकाकारण सिद्धहोवै हैं।काहेतैं तिनयज्ञादिककर्मोंकी उत्पत्तिकरणेविषे तथास्थितिकरणेविषे तथासंहारकरणेविषे यहसंकल्पही कुशलहै॥और स्वर्गादिकलोक तथापृथ्वीआदिकभूत जिसचराचरविश्वकूंउत्पन्नकरै हैं ॥ साविश्वकीउत्पत्ति संकल्परूपनि मित्तकेविद्यमानहुएही होवैहै ॥ संकल्पतैंविना याजगत्कीउत्पत्तिहोवैनहीं॥काहेतैं लोकोंके तथाभूतोंके संकल्पकरिकैतो वृष्टिउत्पन्नहो वैहै॥और तावृष्टिकेसंकल्पकरिके अन्नउत्पन्नहोवै है ॥ और ताअन्नकेसंकल्पकरिके याभूतोंकेइंद्रियसहितप्राण उत्पन्नहोवै हैं ॥ और तिनप्राणोंकेसंकल्पकरिके मंत्रउत्पन्नहोवै हैं॥ और तिनमंत्रोंकेसंकल्पकरिके कर्मउत्पन्नहोवै हैं और तिनकर्मोंकेसंकल्पकरिके धर्मरूपअ पूर्व उत्पन्नहोवैहै॥ और ताधर्मरूपअपूर्वकेसंकल्पकरिकै स्वर्गादिकफल प्राप्तहोवै हैं॥इहां लोक भूत वृष्टि अन्न प्राण मंत्र कर्म अपूर्व या शब्दोंकरिकै तिनलोकादिकोंके अभिमानीदेवतावोंका ग्रहणकरणा॥तिनचेतनदेवतावोंतैंविना जडलोकादिकोंविषे सोसंकल्पसंभवैनहीं इसरीतिसैं यहसंकल्पही सर्वजगत्काकारणहै॥यातैं सोसंकल्प तामनतैंअधिकहै ॥ ऐसे संकल्पकूं जो पुरुष ब्रह्मरूपकरिकैउपासना करै है ॥ सोपुरुष सर्वदुःखोंतैं रहित तथानाशतैंरहित तथाअतिशयतातैंरहित ऐसेलोकोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और सोउपासकपुरुष आपभी सर्व दुःखोंतैं रहितहोवैहै।तथानाशतैंरहितहोवैहै।तथा अतिशयतातैंरहितहोवैहै।३।अबतासंकल्पतैं सामान्यज्ञानरूपचित्तकीअधिकता विषेयु क्तिकावर्णनकरैहैं।हेनारद।यासर्वजगत्काकारणरूपकरिकै कथनकऱ्याजोसंकल्पहै।सोसंकल्पभी तभीहोवैहै॥जभीसोपूर्वउक्तसामान्यज्ञान रूपचित्तहोवैहै।ताचित्ततैंविना सोसंकल्पहोवैनहीं॥याप्रकारकेअन्वयव्यतिरेककरिकै यहचित्तही तासंकल्पकाकारणसिद्धहोवैहै ॥ और या

चित्तकीअधिकता लोकविषेभीप्रसिद्धहै॥काहेतैं यालोकविषे सर्वज्ञपुरुषभी जभी अनुसंधानरूपचित्ततैंरहितहोवैहै॥तभी ताचित्तरहित पुरुषकूं पुत्रादिकसर्वबांधव याप्रकारकेवचनोंकूंकहतेहुए अनादरकीप्राप्तिकरै हैं॥जोकदाचित् यहपुरुष सर्वज्ञहोवै ॥ तौ अनुसंधानरूपचित्ततैंरहितहुआ किसवासतैंप्रतीतहोताहै॥और यहपुरुषतौ पाषाणादिकजडपदार्थोंकीन्याईं अनुसंधानरूपचित्ततैंरहितहुआ प्रतीतहोवै है यातैं यहपुरुष सर्वज्ञनहीं है।इसप्रकार सोचित्तरहितपुरुष सर्वदा निरादरकूंहींप्राप्तहोवैहै ॥ और यालोकविषे जोपुरुष ताअनुसंधानरूपचित्तवालाहोवैहै।तिसपुरुषकूं संपूर्णलोक साक्षीपणेविषे ग्रहणकरैहैं।तथा ताचित्तवालेपुरुषकेमुखतैंयहसंपूर्णजन लौकिकवचनोंकूं तथावैदिक वचनोंकूं श्रद्धापूर्वक श्रवणकरै हैं॥तथा ताचित्तवालेपुरुषनैं विधानकरेजे गुरुत्व उत्तमवर्णत्व आदिकधर्म हैं ॥ तिनधर्मोंकूंभी यहलोक श्रद्धापूर्वक अंगीकारकरैहैं ॥ याकारणतैं यहअनुसंधानरूपचित्त तासंकल्पतैंअधिकहै ॥ ऐसेचित्तकूं जोपुरुष ब्रह्मरूपकरिकैउपासनाकरै है ॥ तापुरुषकूं तासंकल्पकीउपासनातैंभी अधिकफलकीप्राप्तिहोवैहै॥४॥अब ताचित्ततैं ध्यानकीअधिकताविषे युक्तिकावर्णनकरै हैं ॥ हेनारद ॥ स्वर्गलोक अंतरिक्षलोक भूमिलोक यहतीनोंलोक तथाआकाशादिकपंचभूत तथाहिमालयादिकपर्वत तथादेवतावोंके समान शमदमादिकसाधनसंपन्नमनुष्य यहसंपूर्ण निश्चलतारूपकरिकैस्थितहुए ध्यानकरतापुरुषकीन्याईं प्रतीतहोवै हैं॥ याकारणतैं सो ध्यान अत्यंतश्रेष्ठहै॥और यालोकविषे जेपुरुष आपणेशमदमादिकगुणोंकरिकै यासर्वमनुष्योंविषेपूज्यताकूंप्राप्तहुएहैं ॥तेपुरुष ताध्यानके यत्किंचित्तफलकूंप्राप्तहुएकीन्याईं जानणे।ताध्यानतैंविना इसजन्मविषे तथाजन्मांतरविषे सोमहानतारूपफल प्राप्तहोवैनहीं॥और यालोक विषे जेपुरुष सर्वदा परायेदूषणोंकाहीकथनकरतेरहतेहैं।तथा सर्वदा निंदाकरतेरहतेहैं॥तथा अन्यपुरुषोंके अपकारविषे तथाकलहविषे जे पुरुष सर्वदा उद्यमवालेहोवै हैं।तेपुरुष सर्वमनुष्योंविषे अधमजानणे।ऐसेअधमपुरुष ताध्यानकेअभावतैं सर्वदाविक्षेपयुक्तचित्तवालेहोवै हैं ॥ ऐसेचित्तकेविक्षेपकूं तेध्यानवालेमहान्पुरुष प्राप्तहोवैंनहीं। किंतु तेध्यानवालेमहान्पुरुष ताध्यानकेप्रभावतैं सर्वदा मान्यहोवै हैंयाकारणतैं सोध्यान ताचित्ततैंअधिकहै॥ऐसेध्यानकूं जोपुरुष ब्रह्मरूपकरिकैउपासनाकरैहै। सोपुरुष ताचित्तकीउपासनातैंभी अधिकफलकूंप्राप्तहोवै

है ॥ ५ ॥ अबताध्यानतैं विज्ञानकीअधिकताविषे युक्तिकावर्णनकरैहै ॥ हेनारद ॥ ऋग्वेदतैंआदिलैके अथर्ववेदयज्ञपर्यंत जितनाकीवाकू इंद्रियकाविषयपूर्वकथनकऱ्याथा ॥ तिनसंपूर्णपदार्थोंकूंतथातिसतैंभीअधिकपदार्थोंकूं यहपुरुष ताविज्ञानकरिकैजानैहै॥काहेतैंभक्षणकरणेयोग्यजोनानाप्रकारकाअन्नहै ॥ ताअन्नविषेस्थितजे मधुर अम्ल लवण कटु कषाय तिक्त यहषट्प्रकारकेरसहैं॥तिनषट्ररसोंकूंभीयहपुरुष ताविज्ञानतैंहीजानैहै ॥तथाइसलोककेतथापरलोकके सर्वव्यवहारोंकूंभीयहपुरुष ताविज्ञानतैंहीजानैहै॥ याकारणतैं सोविज्ञान ताध्यानतैं अधिकहैं ॥ऐसेविज्ञानकूंजोअधिकारीपुरुष ब्रह्मरूपकरिकैउपासनाकरैहैं ॥ सोअधिकारीपुरुषशास्त्रकेअर्थकूं विषयकरणेहाराजोविज्ञानहै ताव्यवहारविषेकुशलतारूपजोज्ञानहै तिसज्ञानविज्ञानकरिकैसंपन्नलोकोंकूं प्राप्तहोवैहै ॥ ६ ॥ अब ताविज्ञानतैं बलकीअधिकताविषे युक्तिकावर्णनकरैहै॥हेनारद॥यालोकविषेएकहीबलवानपुरुष आपणेबलकरिकैताविज्ञानयुक्तएकशतपुरुषोंकूं कंपायमानकरैहै ॥ और सो बलवानपुरुषहीयापृथ्वीकूं धारणकरणेहाराभूपतिहोवैहै ॥ और सोबलवानपुरुषही प्रथमतौउद्यमवालाहोवैहै ॥ ताउद्यमतैंअनंतर सो बलवानपुरुष गुरुआदिकोंकेसेवाकरणेविषैसमर्थहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर तागुरुकीसेवाविषेप्रीतिमानहुआसोपुरुष तिनगुरुआदिकोंकेसमीपगमनकरैहैं ॥ तिसतैंअनंतर तागुरुकेसमीपनिवासकरणेविषेप्रीतिमानहुआ सोद्रष्टाहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतरसोपुरुष श्रोताहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर सोपुरुष मंताहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर सोपुरुषबोद्धाहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर सोपुरुष कर्त्ताहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर सोपुरुष विज्ञाताहोवैहै ॥ इहांउपदेशकरणेहारे पुरुषोंके परीक्षारूपदर्शनकेकरणेहारे पुरुषकानामद्रष्टा है ॥ और तिनगुरुवोंनैं कथनकऱ्या जोअर्थहै ताअर्थकूंश्रवणकरणेहारेपुरुषकानामश्रोताहै ॥ औरताश्रवणकरेहुएअर्थकूं युक्तियोंसैं चिंतनकरणेहारेपुरुषकानाममंताहै॥और यहअर्थइसीप्रकारहै॥याप्रकारकेनिश्चयकरणेहारेपुरुषकानामबोद्धाहै॥और तानिश्चयकरेहुएविहितअर्थके अनुष्ठानकरणेहारेपुरुषकानाम कर्त्ताहै॥ और तिनविहितकर्मोंकेफलकूं साक्षात्कारकरणेहारेपुरुषकानामविज्ञाताहै ॥इसप्रकारकेसाधनोंकीपरम्परा यापुरुषकूंबलकरिकै हीप्राप्तहोवैहै ॥याकारणतैं सोबल ताविज्ञानतैंश्रेष्ठहै ॥ किंवा ॥ स्वर्गलोक अंतरिक्षलोक भूमिलोक यहतीनलोक तथाआकाशादिकपंच

भूततथाहिमालयादिकपर्वत तथाइंद्रादिकदेवता तथामनुष्यादिकजंगमप्राणी तथावृक्षादिकस्थावरप्राणीयहसंपूर्णबलकूंआश्रयणकरिकै हींस्थिहोवेहै ॥ बलतैंविना किसीकीभीस्थितिहोवैनहीं ॥ याकारणतैंभीसोबल ताविज्ञानतैंश्रेष्ठहै ॥ ऐसेबलकूंजोअधिकारीपुरुष ब्रह्म रूपकरिकैउपासनाकरेहै ॥ तापुरुषकूं तावलयुक्तसर्वलोकोंकीप्राप्तिहोवेहै ॥ ७ ॥ अबताबलतैं अन्नकीअधिकताविषे युक्तिकावर्णनकरे हैं ॥ हेनारद ॥ यालोकविषेजोकोईबलवान्पुरुषभी जभीदशरात्रिपर्यंत अन्नकूंभोजननहींकरेहै ॥ तभी सोबलवानपुरुषभी नानाप्रकार केविक्षेपकूंप्राप्तहोवेहै॥तथासोपुरुष नेत्रादिकइंद्रियोंकेव्यापारोंतैं तथामनकेव्यापारोंतैं रहितहोवेहै ॥ याकारणतैं सोपुरुषजीवताहुआभी मरेकेतुल्यहोवेहै ॥ अथवासाक्षात्मृत्युकूंहींप्राप्तहोवेहै ॥ और सोईहीपुरुष जभीपुनः अन्नकूंभक्षणकरिकैबलवानहोवै है ॥ तभीसोपुरुष मनसहितसर्वइंद्रियोंकेव्यापारोंकूंहींप्राप्तहोवेहै ॥ याकारणतैं सोअन्न ताबलतैंअधिकहै ॥ ऐसेअन्नकूं जोपुरुष ब्रह्मरूपकरिकै उपासना करेहै ॥ सोपुरुष नानाप्रकारकेअन्नपानयुक्तलोकोंकूंप्राप्तहोवेहै ॥ ८ ॥ अबताअन्नतैं जलोंकीअधिकताविषे युक्तिकावर्णनकरे है ॥ हेनारद॥जिसकालविषे यहवृष्टिरूपजल उत्पन्नहोवेहै ॥ तिसकालविषे सोअन्नउत्पन्नहोवेहै॥तावृष्टिरूपजलकेअभावहुए ताअन्नकीउत्पत्ति होवैनहीं ॥ और ताअन्नकेअभावहुए याजीवोंकेप्राण शीघ्रहीनाशकूंप्राप्तहोवेहै ॥ और ताअन्नकेविद्यमानहुए तेप्राण वृद्धिकूंप्राप्तहोवेहै ॥ याकारणतैं तेजल अन्नतैंअधिकहै॥किंवा॥ स्वर्ग भूमि पाताल यहतीनलोकजहैं ॥तथातिनलोकोंविषेस्थित जितनेंकीस्थावरजंगमप्राणी हैं ॥ तेसंपूर्ण अन्नभावकूंप्राप्तहुएजलरूपहीहैं ॥ तिनजलोंतैंभिन्न कोईभीपदार्थनहींहै ॥याकारणतैंभीतेजलअन्नतैंअधिकहै ॥ ऐसेजलोंकूं जोअधिकारीपुरुष ब्रह्मरूपकरिकैउपासनाकरेहै ॥ सोअधिकारीपुरुष सर्वकामनाकेविषयपदार्थोंकूंप्राप्तहोवेहै ॥ तथासर्वदातृप्तिकूंप्राप्त होवेहै ॥ ९ ॥ अबतिनजलोंतैं तेजकीअधिकताविषे युक्तिकावर्णनकरेहैं॥हेनारद॥ यहतेजप्रथम आपणेउष्णताकूंदिखाइकैतथाविद्युत्कूं तथापूर्वदिशाकेवायुकूं उत्पन्नकरिकै पश्चात्जलकीवृष्टिकरेहै ॥ याकारणतैंसोतेज जलतैंअधिकहै ॥ किंवा ॥ यालोकविषेजोपुरुषतेज करिकैयुक्तहोवेहै ॥ सोतेजस्वीपुरुष आपणेश्रीमत्त्वरूपकरिकै प्रकाशमानहोवेहै ॥ तथातमदोषतैंरहितहोवेहै ॥ याकारणतैंभीसोतेज

॥ ७ ॥

तिनजलोंतैंअधिकहै ॥ ऐसेतेजकूं जोपुरुष ब्रह्मरूपकरिकैउपासनाकरै है ॥ तापुरुषकूं महान्फलकीप्राप्तिहोवै है ॥ १० ॥ अब तातेजतैं आकाशकीअधिकताविषे युक्तिकावर्णनकरे हैं हेनारद ॥ तेजवायुतैंआदिलैके जितनाकीयहनानाप्रकारकाजगत्है॥सोसंपूर्णजगत् याआ काशविषेही स्थितहोवै है ॥ याकारणतैं तावायुसहिततेजतैं सोआकाशअधिकहै ॥किंवा॥ यहदेहधारीजीव याआकाशकूंआश्रयणकरि केही वाकादिकइंद्रियोंकेव्यापारोंकूं करै है ॥ तथा पुण्यपापकर्मके सुखदुःखरूपफलकूंप्राप्तहोवै है ॥ तथा तिससुखदुःखरूपफलकेसाध नोंकूंप्राप्तहोवै है ॥ ताआकाशतैंविना किसीभीकार्यकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ याकारणतैंभी सोआकाश तातेजतैंअधिकहै ॥ ऐसेआकाशकूं जोपुरुष ब्रह्मरूपकरिकैउपासनाकरै है ॥ सोपुरुष विस्तारप्रकाशकरिकैयुक्तकीर्त्तिमान्लोकोंकूंप्राप्तहोवै है ॥ ११ ॥ अब ताआकाशतैं स्मरणकीअधिकताविषे युक्तिकानिरूपणकरे हैं ॥ हेनारद ॥ यालोकविषे यहदेहधारीजीव पूर्वअनुभवकरेहुए आकाशादिकजगत्के स्मरणतैंहीं उत्तर उत्तर ताआकाशादिकजगत्कीकल्पनाकरे हैं ॥ तथा यह देहधारी जीव स्मरणतैं वाकादिकइंद्रियोंकेव्यापारोंकाआ रंभकरे हैं ॥ तथा तास्मरणतैंहीं यहजीव पुण्यपापकर्मकेसुखदुःखरूपफलकूं प्राप्तहोवै है ॥ तथा तासुखदुःखकेसाधनोंकूं प्राप्तहोवै हैं ॥ स्मरणतैंविना किसीभीकार्यकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ याकारणतैं सोस्मरण ताआकाशतैंअधिकहै ॥ ऐसेस्मरणकूं जोपुरुष ब्रह्मरूपकरिकै उपासनाकरे है ॥ सोपुरुष तास्मरणकेविषयभूतसर्वपदार्थोंविषे स्वतंत्रतारूपफलकूं प्राप्तहोवै है ॥१२॥ अब तास्मरणतैं कामनारूपआ शाकीअधिकताविषे युक्तिकावर्णनकरै हैं ॥ हेनारद ॥ यालोकविषे जोपुरुष कामनारूपआशाकरिकैयुक्तहोवै है ॥ सोआशावान पुरुषही तास्मरणकरिकै सर्वपुण्यपापकर्मोंकूंकरे है॥ तथा पुण्यपापकर्मोंके सुखदुःखरूपफलकेभोगवासतैं दोनोंलोकोंविषेभ्रमणकरे है ॥ और जोपुरुष ताआशातैंरहितहोवै है ॥ सोनिष्कामपुरुष तास्मरणकूंभीकैरनहीं॥तथा दूसरेकिसीव्यापारकूंभीकैरनहीं॥ याकारणतैंसा आशा तास्मरणतैंअधिकहै॥ऐसीआशाकूं जोपुरुष ब्रह्मरूपकरिकैउपासनाकरे है॥सोपुरुष सर्वमनवांछितपदार्थोंकूंप्राप्तहोवै है॥तथासत्य संकल्पहोवै है ॥१३॥हेशिष्य ॥ इसप्रकारसोनारदमुनि ताभगवान्सनत्कुमारकेप्रति नामतैंकोनअधिकहै इत्यादिकत्रयोदशप्रश्नकरता

भया॥ और सोभगवान्सनत्कुमारभी तानारदकेप्रति नामतैंवाकूअधिकहै इत्यादिकत्रयोदशउत्तर कथनकरताभया ॥ तथा सोभगवान् सनत्कुमार तानारदकेचित्तविषेलोभउत्पन्नकरणेवासतै तिनवाकादिकोंकेउपासनाजन्यफलोंकूंभी तहांतहां कथनकरताभया ॥ तिसतैं अनंतर सोबुद्धिमाननारदमुनि तासनत्कुमारकेप्रति पुनःयाप्रकारकाप्रश्न करताभया॥ हेभगवन् ताकामनारूपआशातैं कौनअधिकहै॥ इसप्रकार तानारदकरिकैपूछाहुआ सोसनत्कुमार याप्रकारकावचनकहताभया ॥ हेनारद॥ यासर्वजीवोंनैं आत्मारूपकरिकैनिश्चयकऱ्या जोप्राणहै ॥ सोप्राण ताआशातैंअधिकहै ॥ अब ताप्राणोंकीअधिकताविषे युक्तिकावर्णनकरै हैं ॥हेनारद ॥ जैसे रथकेचक्रकेजेअराहैं॥ तेअरा ताचक्रकेनाभिकेआश्रितरहै हैं ॥ तैसे यहसंपूर्णविश्व प्राणोंकेआश्रितरहे हैं॥काहेतैं यहप्राणही सर्वकारकरूपहै ॥ जैसे देवदत्तना मापुरुष अश्वकरिकै ग्रामकूं गमनकरे है॥ यास्थलविषे गमनक्रियाकाकर्त्ताजोदेवदत्तहै॥ तथा तागमनक्रियाकाकारणरूपजोअश्वहै॥तथा तागमनाक्रियाकाकर्मरूपजोग्रामहै ॥ यहतीनोंप्राणरूपही हैं॥तथा यहपुरुष सुपात्रब्राह्मणकेताईंगौ देवै है॥ यास्थलविषेभी दानरूपक्रिया काकर्त्तारूपजोपुरुषहै॥तथा तादानरूपक्रियाका संप्रदानरूपजोब्राह्मणहै तथा तादानरूपक्रियाका कर्मरूपजोगौ है॥यहसंपूर्णताप्राणरूप हैहैंतथा पिता माता आचार्य ब्राह्मण भ्राता स्वसास्नुषा जाया पुत्र इसतैंआदिलैके जितनेकीदेहधारीजीवहैं॥तेसंपूर्णजीव प्राणरूपही हैं॥ ताप्राणतैं भिन्न यालोकविषे किंचित्मात्रभीनहीं है॥ अब याहीअर्थकूंलोकप्रसिद्धअन्वयव्यतिरेककरिकैदृढकरे हैं॥हेनारद॥ यालोकविषे जभीकोईपुरुष ताप्राणकेविद्यमानहुए आपणेपितामातादिकोंकेशरीरकूं वाणीमात्रकरिकैभी तिरस्कारकरै है॥तभी तातिरस्कारकरणेहारे पुरुषकेप्रति दूसरेबुद्धिमानपुरुष याप्रकारकेवचनकहे हैं॥जिनपितामातादिकमहान्पुरुषोंका तूं वाणीकरिकैतिरस्कारै है ॥ तिनमहान् पुरुषोंका तुमनैं वधकऱ्याहै ॥ काहेतैं उत्तमपुरुषोंका जोवाणीकरिकैनिरादरकरणा है ॥ सोनिरादरही तिनउत्तमपुरुषोंका विना शस्त्रतैं वध है ॥ यातैं तूं पितृहा है ॥ तथा मातृहाहै ॥ इत्यादिकवचन तेलोक तापुरुषकेप्रति कथनकरे हैं ॥ और तिनपितामाता दिकोंकेशरीरतैं प्राणोंके निर्गमनहुएतैं अनंतर यहपुरुष जभी तिनपितामातादिकोंके शरीरकूं महान्अग्निविषे तीक्ष्णकाष्ठसे

वारंवार वेधनकरिकै दग्धकरै है ॥ तभी तादाहकरणेहारेपुरुषकूं यह लोक पुण्यकर्त्ता कहे हैं तथा पिता मातादिकोंका भक्तकहे हैं॥या प्रकारकाअन्वयव्यतिरेक यासर्वलोकविषे प्रसिद्धहै ॥ ताअन्वयव्यतिरेककरिकै यहप्राणही तापितामातादिरूपसिद्धहोवै है ॥ हेनारद ॥ बाह्यचक्षुआदिकइंद्रियोंकरिकै जितनाकीव्यवहारहोवैहै॥तथा अंतरमनबुद्धिआदिकोंकरिकै जितनाकीव्यवहारहोवै है।तासर्वव्यवहारकाल विषे जोपुरुष याप्राणकूंही सर्वकारकरूपदेखे है॥सोपुरुषही अतिवादीहोवै है॥काहेतैं सोपुरुष प्राणकूंही सर्वतैंअधिककहेहै ॥तात्पर्ययह॥ यालोकविषे जोपुरुष किसीदूसरेपुरुषकेप्रति मैं तुमारापिताहूं याप्रकारकावचन जभीकहेहै ॥ तभी तापुरुषकेप्रति तू मर्यादाकाअतिक्र मणकरिकै किसवासतैं यहवचनकहताहै याप्रकारकाउपालंभ लोक देवैं हैं ॥ परंतु सोपुरुष मैं तुमारापिताहूं याप्रकारकेवचनमात्रकहणे करिकै मुख्यअतिवादीहोवैनहीं ॥ किंतु सोपुरुष गौणअतिवादीहोवै है ॥काहेतैं तापितातैंभिन्न आचार्यादिकबहुतपदार्थ बाकीरहतेहैं ॥ तिनोंकूं तिसपुरुषनैं आत्मारूपजान्यानहीं ॥ और जोपुरुष पितामातादिकसर्वपदार्थरूपप्राण मैं हूं याप्रकारकावचनकहे है॥ सोपुरुषही मुख्यअतिवादी कह्याजावैहै ॥हेनारद॥ ताप्राणात्मवादीपुरुषकेप्रति जोकदाचित् कोइकपुरुष तू किसप्रकारअतिवादी है याप्रकारकाप्र श्नकरै ॥ तौभी सोप्राणात्मवादीपुरुष मैंअतिवादीनहींहूं याप्रकारकावचन कदाचित्भी नहींकथनकरै ॥ किंतु सोप्राणात्मवादीपुरुष मैं अतिवादीहूं याप्रकारकावचन निःशंकहोइकैकथनकरै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार जभी तासनत्कुमारभगवान्नैं नारदकेप्रति प्राणोंकीअ धिकताकथनकरी ॥तभी सोनारदमुनि ताप्राणतैंपरेतत्वकेपूछणेविषे असमर्थहुआ तूष्णीभावकूंप्राप्तहोइकै पुनः प्रश्नकरणेतैंउपरामहोता भया ॥ काहेतैं यालोकविषे जिसपुरुषकूं जिसपदार्थका सामान्यरूपतैंज्ञानहोवै है ॥सोपुरुषही तिसपदार्थकेविशेषरूपजानणेवासतै प्रश्न करेहै ॥ तासामान्यज्ञानतैंविना विशेषरूपकाप्रश्नहोवैनहीं ॥ जैसे यहपुरुषब्राह्मण है याप्रकारकेसामान्यज्ञानहुएतैंअनंतरही यहपुरुष कौनब्राह्मणहै याप्रकारका विशेषप्रश्नहोवै है ॥ सामान्यज्ञानतैंविना विशेषरूपकाप्रश्नहोवैनहीं ॥ सोइहांप्रसंगविषे प्राणोंतैंपरेजोतत्त्व है ॥ सोतत्त्व मनका तथावचनोंका तथाप्रत्यक्षादिकप्रमाणोंका अविषयहै ॥ यातैं ताप्राणतैंपरेतत्त्वकूं सोनारद नहींजानताभया ॥ या

कारणतैंही सोनारद तातत्त्वकाप्रश्न नहींकरताभया॥शंका॥हेभगवन्॥सोनारदतासनत्कुमारकेप्रति ताप्राणकेउपासनाकाफल किसवास तैनहींपूछताभया ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ तासनत्कुमारभगवान्नैं तानारदकेप्रति तू प्राणोंकीब्रह्मरूपकरिकै उपासनाकर याप्र कारकावचन जो पूर्व कथनकऱ्याहोता ॥ तौ सोनारद ताप्राणोंकेउपासनाकाफल पूछता परंतु सोवचन तासनत्कुमारनैं कथननहीं कऱ्याथा ॥ यातैं सोनारद ताउपासनाकेफलकाप्रश्न नहींकरताभया ॥ हेशिष्य इसप्रकार तानारदमुनिकूं तृष्णीहुआदेखिकै सोभग वान्सनत्कुमार कृपाकरिकैयुक्तहुआ तानारदमुनिकेप्रति आपही ताप्राणतैंपरेतत्त्वकाउपदेशकरताभया ॥ सनत्कुमारउवाच ॥ हेनारद प्राणकेज्ञानतैंही सोअतिवादीपणाहोवै है यहतुमनैं निश्चयकरनानहीं ॥ काहेतैं ताप्राणतैंपरे जोकोईअधिकवस्तुनहींहोता ॥ तौ ताप्रा णकेज्ञानतैं अतिवादीपणा सिद्धहोता ॥ परंतु ताप्राणतैंभी सत्यवस्तुअधिकहै ॥ यातैं ताप्राणकेज्ञानतैं अतिवादीपणाहोवैनहीं॥किंतु जोपुरुष निरंतर तासत्यवस्तुकाही कथनकरेहै ॥ तिसीपुरुषकूं तुमनैं मुख्यअतिवादी जानणा॥ हेशिष्य ॥ सत्यवस्तुकेकथनकरणेहारा पुरुषही मुख्यअतिवादीहोवै है याप्रकारकेवचनकरणेहारे तासनत्कुमारका यहतात्पर्य है ॥ जोपरब्रह्म पूर्वअध्यायविषे याजगत्काकारण रूपकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ और जोपरब्रह्म याअध्यायविषेआगे सुखरूपकरिकैवर्णनकरणाहै ॥ तथा जोपरब्रह्म नामतैंलैकै प्राणपर्यंत सर्व विश्वरूपकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ सोपरब्रह्मही तासत्यशब्दकाअर्थहै॥ याप्रकारकेअभिप्रायकूंमनविषेराखिकै सोभगवान्सनत्कुमार ताना रदकेप्रति पुनःयाप्रकारकावचनकहताभया ॥ हेनारद ॥ ताप्राणतैंपरे जोसत्यवस्तुहै ॥ सोसत्यवस्तुही तुमारेकूं जानणेयोग्यहै ॥ ता सत्यवस्तुकेविचारतैंविना तुमनैं आपकूं कृतकृत्यमानिकै स्थितहोणानहीं ॥हेशिष्य॥ इसप्रकारकावचन जभी तासनत्कुमारनैं नारदमु निकेप्रति कथनकऱ्या।तभी सोनारदमुनि तासनत्कुमारकेप्रति पूर्वकीन्याईं याप्रकारकाप्रश्न करताभया।हेभगवन् तासत्यवस्तुकेजानणे कीमैं इच्छाकरताहूं॥आपकृपाकरिकै हमारेप्रति तासत्यवस्तुकाउपदेशकरो॥हेशिष्य॥जैसेसोसनत्कुमारभगवान् तानारदमुनिकेप्रतितास त्यवस्तुकेजिज्ञासाकाजनकवचन कहताभया॥तैसे विज्ञान१मनन२श्रद्धा३निष्ठा४कृति५सुख६यापट्पदार्थोंकीजिज्ञासाकूंउत्पन्नकरणेहारे

॥ ९ ॥

षट्वचनोंकूं कथनकरताभया ॥ तिनषट्वचनोंकूंश्रवणकरिकै सोनारदमुनिभी तासनत्कुमारकेप्रति षट्वार प्रश्नकरताभया ॥तात्पर्ययह हेभगवन् मैं तासत्यवस्तुकेजानणेकीइच्छाकरताहूं इसप्रकारकाप्रथमप्रश्नकरिकै तिसतैंअनंतर मैं विज्ञानकेजानणेकीइच्छाकरताहूं इत्या दिकषट्प्रश्नकरताभया ॥ इहां आनंदस्वरूपसत्यवस्तुतौ उपेयहै॥और दूसरेविज्ञानादिकषट्पदार्थतौ उपायरूपहैं ॥ तथा पूर्वपूर्ववस्तुके प्राप्तिकासाधनरूपहैं ॥ तहां उपायकरिकैप्राप्तहोणेयोग्यवस्तुकूं उपेयकहे हैं ॥ याप्रकारकीविशेषताकेहुए तिनोंविषे पुनरुक्तिदोषकी प्राप्तिहोवैनहीं ॥ याकेविषेभी यहविशेषताजाननी ॥ कामनाकीविषयतारूपकरिकै तासुखविषे उपायरूपताहै॥और स्वभावसिद्धसत्यरू पकरिकै तासुखविषे उपेयरूपताहै ॥ अब तिनविज्ञानादिकषट्पदार्थोंकास्वरूप तथा उत्तरउत्तरपदार्थविषे पूर्वपूर्वपदार्थकेप्राप्तिकीसाधन ता निरूपणकरे हैं ॥ हेनारद ॥ जोपुरुष तासत्यस्वरूपब्रह्मकूं प्रत्यक्षजानताहै ॥ सोपुरुषही तासत्यवस्तुका स्पष्टकरिकैकथनकरेहै॥ता सत्यवस्तुकेज्ञानतैंरहितपुरुष तासत्यवस्तुका कथनकरिसकैनहीं ॥ यातैं यहजान्यजावै है ॥ तासत्यवस्तुकेकथनविषे तासत्यवस्तुकाप्र त्यक्षप्रमाणरूपविज्ञानहीकारणहै ॥ १ ॥ और हेनारद नानाप्रकारकीयुक्तियोंकरिकै तासत्यवस्तुकाचिंतनरूपजोमननहै ॥ तामननक रिकै जभी तासत्यवस्तुरूपप्रमेयके असंभावनाकीनिवृत्तिहोवै है ॥ तभीही तासत्यवस्तुकाविज्ञानहोवै है॥तामननतैंविना सोसत्यवस्तु काविज्ञान होवैनहीं ॥ यातैंयहजान्याजावै है ॥ सोमनन ताविज्ञानकाकारणहै ॥ २ ॥ और हेनारद ॥गुरुशास्त्रकेउपदेशविषेविश्वासरूप जाश्रद्धाहै ॥ ताश्रद्धावालापुरुषही तामननकरणेविषेप्रवृत्तहोवै है॥ताश्रद्धातैंरहितनास्तिकपुरुष तामननविषे प्रवृत्तहोवैनहीं॥यातैंयहजा न्याजावैहै॥साश्रद्धा तामननकाकारणहै।३।और हेनारद॥यहवेदांतशास्त्र जीवब्रह्मकेअभेदकूंकथनकरे है अथवाभेदकूंकथनकरेहैयाप्रकार कीजाप्रमाणगतअसंभावनाहै ताअसंभावनाकूंनिवृत्तकरणेहारीतथाअद्वितीयब्रह्मविषे तिनवेदांतोंकेतात्पर्यकूंनिश्चयकरावणेहारीजेयुक्तियां हैं॥तिनयुक्तियोंकेचिंतनकानाम निष्ठाहै ॥ ऐसीनिष्ठावालापुरुषही ताश्रद्धावालाहोवै है ॥तानिष्ठातैंरहितपुरुषकूं साश्रद्धाहोवैनहीं ॥यातैं यहजान्याजावै है ॥ सानिष्ठा ताश्रद्धाकाकारणहै ॥ ४ ॥ और हेनारद ॥ यज्ञादिकजेबहिरंगसाधनहैं ॥तथा शमदमादिक जेअंतरंगसाध

नहैं॥तिनदोनोंप्रकारकेसाधनोंकाजोअनुष्ठानहै ताअनुष्ठानकानामकृतिहै।जोपुरुष याप्रकारकीकृतिकरिकेयुक्तहोवैहै॥सोपुरुषहीअंतःकरणकीशुद्धि तथाएकाग्रता करिकेयुक्तहुआ तानिष्ठावालाहोवै है॥ताकृतिनैंविना सानिष्ठाहोवैनहीं ॥ यातैं यहजान्याजावै है॥साकृति तानिष्ठाकाकारणहै ॥९ ॥ और हेनारद ॥ यालोकविषे जोपुरुष सुखरूपपुरुषार्थकेप्राप्तिकीइच्छाकरै है॥सोपुरुषही तिनबहिरंगअंतरंगसाधनोंकूं करैहै ॥सुखकीइच्छातैंविना कोईभीपुरुष तिनसाधनोंविषेप्रवृत्तहोवैनहीं ॥ यद्यपि दुःखकेअभावकीइच्छाकरिकैभी यालोकोंकी तिनसाधनोंविषेप्रवृत्तिहोवै है ॥तथापि सोदुःखाभाव स्वतःपुरुषार्थरूपनहीं है॥किंतु सोदुःखाभाव सुखकेअभिव्यक्तिकासाधनरूपहोणेतैं याजीवोंकेइच्छाकाविषयहोवै है ॥ यातैं यहजान्याजावै हे॥सोसुख ताकृतिकाकारणहै॥६॥हेशिष्य॥इसप्रकार तासनत्कुमारभगवान् केवचनोंकूंश्रवणकरिकै सांसारिकसुखतैंविरक्तहुआ सोनारदमुनि तासांसारिकसुखकूं दुःखपक्षविषेपावताहुआ मुख्यसुखकीजिज्ञासा प्रगट करताभया ॥ नारदउवाच॥हेभगवन् ॥ हमारेकूंमोक्षकीप्राप्तिहोवै याप्रकारकीकामना जिसपुरुषकेचित्तविषेहै॥तिसपुरुषनैं तासुखकावास्तवस्वरूप अवश्यकरिकैजानणेयोग्यहै॥ हेभगवन् ॥ जिससुखकेज्ञानतैंमोक्षकीप्राप्तिहोवै है॥ सोसुख यासंसारविषेप्रसिद्धहैनहीं॥काहेतैं यासंसारविषे याजीवोंकूं विषयोंतैं जोसुखप्राप्तहोवै है॥सोविषयजन्यसुखरूपनहीं है॥किंतु सोविषयजन्यसुख दुःखरूपहीहै॥काहेतैं यालोकविषे जिसवस्तुका जोस्वभावहोवै है ॥तिसवस्तुका सोस्वभाव कदाचित्भी अन्यथाहोवैनहीं ॥ जैसे अग्निकाउष्णस्वभाव किसीकाल विषेभी अन्यथाहोवैनहीं॥तैसे यहविषयजन्यसुखभी जोसुखरूपहोवै ॥तौ यहविषयजन्यसुख किसीकालमेंभी दुःखरूपनहींहोणाचाहिये। सोऐसादेखणेविषेआवतानहीं ॥ किंतु यहविषयजन्यसुख आपणीअप्राप्तिकालविषेभी याजीवोंकूं दुःखकीहीप्राप्तिकरै है॥ और आपणेवियोगकालविषेभी याजीवोंकूं दुःखकीहीप्राप्तिकरै है॥इसप्रकार आदिअंतविषे दुःखकीप्राप्तिकरणेहारा यहविषयसुख मध्यकालविषेयाजीवोंकूं सुखरूप किसप्रकारहोवैगा ॥ किंतु आदिअंतकीन्याईं मध्यकालविषेभी सोविषयजन्यसुख दुःखरूपहीहै॥ हेभगवन् ॥ ऐसेदुःखरूपविषयसुखविषे जोजीवोंकूं सुखरूपताप्रतीतहोवै है ॥ सोकेवल अज्ञानकेवशतैं प्रतीतहोवै है ॥ जैसे यालोकविषे शस्त्रकाप्रहार यद्यपि

॥ १० ॥

दुःखरूपहै ॥ तथापि परिपक्वव्रणविषे सोशस्त्रकाप्रहार सुखरूपहोइकैप्रतीतहोवै है ॥ तैसे यहविषयजन्यसुख यद्यपि वास्तवतैं दुःखरूपहीं है ॥ तथापि ताअज्ञानकेवशतैं यहविषयसुख याजीवोंकूं सुखरूपहोइकैप्रतीतहोवैहै॥यातैं हेभगवन् जोवास्तवसुखहै सोहमारेप्रति कथनकरो॥हेशिष्य॥इसप्रकार जभी तानारदमुनिनैं तासनत्कुमारभगवान्केप्रति सुखकास्वरूपपूछा॥तभी सोसनत्कुमारभगवान् तानारदकेप्रति तावास्तवसुखकास्वरूप कथनकरताभया॥सनत्कुमारउवाच॥हेनारद॥देशपरिच्छेद कालपरिच्छेद वस्तुपरिच्छेद यातीनपरिच्छेदोंतैंरहित जोव्यापकवस्तुहै ॥ तावस्तुकूंही विद्वान्पुरुष सुखरूपकहैं॥हेनारद तिनसर्वपरिच्छेदोंतैंरहितहोणेतैं जिसवस्तुकूं श्रुतिनै भूमा याशब्दकरिकैकथनकऱ्याहै॥ ताभूमावस्तुकूंही तूं सुखरूपकरिकैजान ॥ ताभूमातैंभिन्न सर्वपदार्थ दुःखरूपही हे ॥ हेनारद ॥ जो तुमारेकूं तावास्तवसुखकेस्वरूपानिर्णयकरणेकीइच्छाहोवै ॥ तौ तूं ताभूमापदार्थकेजानणेकीइच्छाकर॥हेशिष्य ॥ इसप्रकारके तासनत्कुमारभगवान्केवचनोंकूंश्रवणकरिकै सोनारदमुनि तासनत्कुमारकेप्रति ताभूमापदार्थकाप्रश्नकरताभया ॥ तानारदकेप्रश्नकूंश्रवणकरिकै सोभगवान्सनत्कुमार तानारदकेप्रति याप्रकार ताभूमाकास्वरूप कथनकरताभया ॥ सनत्कुमारउवाच ॥ हेनारद ॥ जिसतत्त्वविषेस्थितहुआ यहविद्वान्पुरुष आपणेतैंभिन्नरूपकरिकै किसीभीपदार्थकूं नेत्रइंद्रियकरिकैदेखतानहीं॥तथा श्रोत्रइंद्रियकरिकैश्रवणकरतानहीं ॥ तथा मनकरिकैजाणतानहीं ॥ सोतत्वही भूमाशब्दकाअर्थ है ॥ तथा सुखशब्दकाअर्थ है ॥ और हेनारद ॥ जिसपदार्थकेबुद्धिविषे आरूढहुए यहपुरुष आपणेआत्मातैंभिन्नपदार्थोंकूं नेत्रइंद्रियकरिकैदेखे है ॥तथा श्रोत्रइंद्रियकरिकैश्रवणकरे है॥ तथा मनकरिकैजाने है॥ सोपदार्थ अल्पहोवैहै॥तथा दुःखरूपहोवैहै ॥ तहांश्रुति ॥ द्वितीयाद्वैभयंभवति॥ अर्थयह॥ आत्मातैंद्वितीयवस्तुतैंभयकीप्राप्तिहोवै है ॥हे नारद॥जोहमनैं तुम्हारेप्रति सुखरूपभूमा कथनकऱ्याहै॥सोसुखरूपभूमातौ मरणादिकसर्वविकारोंतैंरहितहै॥यातैं सोभूमा अमृतरूपहै॥ और ताभूमातैंभिन्न जितनैंकीअल्पपदार्थ हैं॥तेअल्पपदार्थतौ तिनमरणादिकसर्वविकारोंवालेहैं॥यातैं तेपदार्थ मर्त्यरूप हैं॥हेनारद॥ऐसे सुखरूपभूमाकूं जभी यहअधिकारीपुरुष गुरुशास्त्रकेउपदेशतैंजानैहै॥तभीही यहअधिकारीपुरुष मुख्यअतिवादीहोवैहै ॥ ताभूमातैंभिन्न

प्राणादिकोंकेज्ञानतैं यहपुरुष मुख्यअतिवादीहोवैनहीं ॥ यातैं तासुख्यअतिवादीपणेकीप्राप्तिवासतै याअधिकारीपुरुषोंनैं तासुखरूप भूमाकूंअवश्यकरिकैजानणा ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार जभी तासनत्कुमार भगवान्नैं नारदकेप्रति भूमाकाउपदेशकऱ्या॥तभी सोनारद आपणेमनविषे याप्रकारकाविचारकरताभया॥यासनत्कुमारभगवान्नैं जोहमारेप्रति सुखरूपभूमाकाउपदेशकऱ्याहै ॥ताभूमाका कोईआधारहै अथवा सोभूमा निराधारहै ॥ तहां ताभूमाका जोकोईआधारमानिये तौ सोभूमाभी घटादिकपदार्थोंकीन्याईं परिच्छिन्नहोवैगा ॥ और ताभूमाकूं जोनिराधारमानिये॥तौ सोनिराधारभूमा हमारेबुद्धिविषे किसप्रकारकाआरूढहोवैगा ॥याप्रकारकीचिंताकरिकैयुक्तहुआ सोनारद तासनत्कुमारकेप्रति याप्रकारकाप्रश्नकरताभया॥ हेभगवन्॥ सोसुखरूपभूमा किसआधारविषेस्थितिकूंप्राप्तहोवै है ॥ सोभूमा काआधार हमारेप्रति कथनकरो ॥हेशिष्य॥ इसप्रकार तानारदकेप्रश्नकूंश्रवणकरिकै सोभगवान्सनत्कुमार तानारदकेप्रति याप्रकारका वचनकहताभया ॥ सनत्कुमारउवाच ॥ हेनारद ॥ ताभूमाका जोतू आधार पूछताहै ॥ सो व्यवहारमात्रविषेउपयोगीआधार पूछताहै॥ अथवा वास्तवआधारपूछताहै ॥ तहां प्रथमपक्षकूं जोतू अंगीकारकरै ॥ तौ मायातैं आदिलैकेयइसर्वप्रपंच ताभूमाकीविभूतिहै ॥ ताविभूतिरूपमहिमाविषेही सोभुमास्थितहोवै है ॥ यातैं सोविभूतिरूपमहिमाही ताभूमाकाआधारहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ यालोकविषे विभूतिरूपमहिमाका तथा तामहिमावालेका परस्पर भेदही देख्याहै॥यातैं ताविभूतिरूपमहिमातैं भिन्नहुआसोभूमा घटादिकोंकीन्याईं वस्तुपरिच्छेदवालाहोवैगा ॥ समाधान ॥ हे नारद ॥ जैसे यालोकविषे देवदत्तनामापुरुषकी गौ अश्व हस्ति हिरण्य दास भार्या क्षेत्र गृह इत्यादिकजाविभूति है ॥ साविभूतिरूपमहिमा तादेवदत्तपुरुषतैं भिन्नहुईप्रतीतहोवै है ॥ और सोदेवदत्तपुरुष ताभिन्नविभूतिआश्रित हुआप्रतीतहोवै है ॥ तैसे इहां यहमायासहित प्रपंचरूपमहिमा तासुखरूपभूमातैं भिन्ननहीं है ॥ किंतु सोमहिमा ताभूमातैं अभिन्नही है॥यातैं ताभूमाविषे भेदरूप वस्तुपरिच्छेदकी प्राप्तिहोवैनहीं ॥शंका॥ हेभगवन् ॥ जोकदाचित् सोमहिमा ताभूमातैंअभिन्नहोवैगा ॥ तौ तामहिमाका तथाभूमाका परस्पर आधार आधेयभाव नहींहोवैगा ॥ काहेतैं यालोकविषे परस्पर भिन्नपदार्थों

॥११॥

काही परस्पर आधारआधेयभावहोवैहै ॥ समाधान ॥ हेनारद ॥ जैसे ॥ स्वयंदासास्तपस्विनः॥अर्थयह॥ तपस्वीपुरुष आपही आपणेदासहैं ॥ यास्थलविषे एकहीतपस्वियोंविषे स्वामीदासभावहोवै है ॥ तैसे तासुखरूपभूमाका सर्वपरिच्छेदतैंरहितजोआपणास्वरूपहै सोआपणास्वरूपही ताभूमाकामहिमाहै ॥तास्वरूपभूतमहिमाविषे सोभूमा व्यवहारदृष्टिकरिकै स्थितहोवैहै ॥ और ताभूमाका कोईवास्तवआधारहै यहदूसरापक्ष जोतूं अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं॥काहेतैं पूर्वउक्तआपणेमहिमा स्वरूपतैंभिन्नपदार्थोंविषेतौ सोभूमा कदाचित्भीरहैनहीं ॥ और आपणेस्वरूपभूतमहिमाविषे जोताभूमाकीस्थिति कथनकरीहै॥सोभी व्यवहारदृष्टिकूंलैकैकथनकरीहै ॥ ताव्यवहारदृष्टिकेपरित्यागकियैतैं सोभूमा आधारतैंरहित निराधारकह्याजावैहै ॥ अब सोनिराधारभूमा किसप्रकार बुद्धिविषे आरूढहोवैगा ऐसीनारदकीशंकाकेनिवृत्तकरणेवासतै प्रथम ताभूमाकूं तत्पदार्थरूपकरिकैवर्णनकरै हैं ॥ हेनारद यहतत्पदार्थरूपभूमाही दशोंदिशाविषेस्थितहै ॥ तथा तीनकालोंविषेस्थितहै ॥ और जैसे निर्मलआकाश विषे गंधर्वनगरकल्पितहोवै है॥तैसे सर्वभेदतैंरहितयाभूमाविषे यहदेशकालतैंआदिलैके सर्वस्थूलसूक्ष्मपदार्थ कल्पितहैं ॥ और कल्पितवस्तु अधिष्ठानतैंभिन्नहोवैनहीं ॥ याकारणतैं सोभूमाही यासर्वजगत्रूपहै ॥ इसप्रकार यासर्वजगत्काअधिष्ठानरूपकरिकै ताभूमाकूं तूं प्रथम आपणीबुद्धिविषेआरूढकर॥ तिसतैंअनंतर ताभूमाकीतटस्थरूपताकेनिवृत्तकरणेवासतै सोसर्वत्रव्यापकभूमा अहंअस्मि याप्रकार ताभूमाकूं तूं आपणाआत्मारूपकरिकैजान॥शंका॥हे भगवन्॥परिच्छिन्नअहंकारविशिष्टकावाचक जोअहंशब्दहै॥ताअहंशब्दका व्यापकभूमाविषे प्रयोगकरणा संभवैनहीं।समाधान।हेनारद। यद्यपि अहं याशब्दतैंअहंकारकीप्रतीतिहोवैहै ॥ तथापि ताअहंकारकी ताभूमाविषे सादृश्यताहै॥ तासादृश्यताकूंग्रहणकरिकै सोअहं शब्द गौणीलक्षणाकरिकै ताभूमाकाहीबोधनकरेहै ॥ अब ताअहंकारकी तथाभूमाआत्माकी सादृश्यता निरूपणकरै हैं ॥ हेनारद ॥ पूर्वादिकदशोंदिशाविषे तथा भूत भविष्यत् वर्त्तमान यातीनकालोंविषे स्थित जितनेकीदेहधारीजीवहैं।तेसंपूर्णजीव प्रथम अहं याप्रकारकाअनुभवकरतेहुएही पश्चात् वचनउच्चारणादिकव्यवहारोंकूंकरे हैं ॥ ता अहंअनुभवतैंविना कोईभीव्यवहार सिद्धहोवैनहीं ॥ यातैं यह

जान्याजावेहै॥यहअहंकारही याजीवोंकेसर्वव्यवहारोंकाकारणहै॥ऐसासर्वव्यवहारोंकाकारणभूत अहंकार जैसे सर्वदिशाओंकूं तथासर्वभूत प्राणियोंकूं व्याप्यकरिकैस्थितहुआहै॥तैसे ताअहंकारकाआश्रयरूपकरिकै यहजीवात्माभी तिनसर्वदिशाओंकूं तथासर्वभूतप्राणियोंकूं व्याप्यकरिकैस्थितहुआहै ॥ याप्रकार अहंकारकी तथाभूमाआत्माकी सर्वत्रव्यापकतारूप सादृश्यताहै ॥ तासादृश्यताकूंअंगीकारकरिकै सोअहंशब्द लक्षणावृत्तिकरिकै सर्वउपाधितैंरहितकूटस्थआत्माकूंहीबोधनकरे है ॥ तिसीकूटस्थआत्माका तत्पदार्थरूपभूमाके साथ अभेद तत्वमसिआदिकमहावाक्योंनैं प्रतिपादनकरीताहै॥अब ताअभेदज्ञानका जीवन्मुक्तिरूपफल निरूपणकरे हैं॥हेनारद॥ जैसे यालोकविषे यहअज्ञानीपुरुष नेत्रादिकइंद्रियोंकरिकै तथामनकरिकै सर्वव्यवहारोंकूंकरतेहुएभी आपणेमनुष्यपणेकूंविस्मरणकरतेनहीं किंतु आपणेमनुष्यपणेकूं संशयविपर्ययतैंरहितहोइकै सर्वदा अनुभवकरे हैं ॥ तैसे जोपुरुष गुरुशास्त्रके उपदेशतैं तिनअहंकारादिक उपाधियोंकाविस्मरणकरिकै मैंआत्मा भूमारूपहूं याप्रकारके संशयविपर्ययतैंरहितज्ञानकूंप्राप्तहोवै है॥सोविद्वान्पुरुष वेदांतशास्त्रके चिंतनकालविषे आनंदस्वरूपआत्माविषेही क्रीडाकरताहुआ स्थितहोवै है॥जैसे बालक बालकोंकेसमुदायविषे क्रीडाकरताहुआ स्थितहोवै है।और सो विद्वान्पुरुष स्नानभोजनादिककालविषेभी ताआनंदस्वरूपआत्माविषेही चित्तकीशक्तिरूपरतिकूंधारणकरताहुआ स्थितहोवै है ॥ जैसे कामीपुरुष विदेशविषेस्थितहुआभी चित्तकी शक्तिरूपरतिकूं सर्वदा आपणीस्त्रीविषेहीराखेहै ।इतनैंकरिकै यहअर्थबोधनकऱ्या जीवन्मुक्तपुरुषकी दोप्रकारकीदशाहोवैहै ॥ एकतौ समाधिदशाहोवैहै॥और दूसरी तासमाधितैंउत्थानदशाहोवै है ॥ तहां तासमाधितैं उत्थानदशाभी दोप्रकारकीहोवैहै ॥ एकतौ वेदांतशास्त्रकाचिंतनरूप उत्थानदशाहोवै है ॥ और दूसरीस्नानभोजनादिकव्यवहाररूप उत्थानदशाहोवैहै॥ तहां वेदांतशास्त्रका चिंतनरूप प्रथमउत्थानदशाविषे सोविद्वानपुरुष जोआत्माकाचिंतनकरेहै ॥ ताआत्माचिंतनकूं श्रुतिनैं क्रीडाशब्दकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ और स्नानभोजनादिकव्यवहाररूप दूसरीउत्थानदशाविषे सोविद्वान्पुरुष जोआत्माकाचिंतन करेहै ॥ ताआत्मचिंतनकूं श्रुतिनैं रतिशब्दकरिकैकथनकऱ्याहै और जैसे साव्युत्थानदशा दोप्रकारकीहोवै है तैसे सासमाधि

॥ १२

दशाभी दोप्रकारकीहोवै है ॥ एकतौ सविकल्पसमाधि होवै है ॥ और दूसरानिर्विकल्पसमाधिहोवै है ॥ तहां सविकल्पसमाधिविषे सोविद्वान् जो आत्माकाचिंतनकरे हैं ॥ ताआत्माचिंनतकूं श्रुतिनैं मिथुन याशब्दकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ और निर्विकल्पसमाधिविषे सोविद्वान्पुरुष जोआत्माकाचिंतनकरे है ॥ ताआत्मचिंतनकूं श्रुतिनैं आनंद याशब्दकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ तहां क्रीडारति यादोनों शब्दोंकाअर्थ पूर्वनिरूपणकऱ्या ॥ अब मिथुन आनंद यादोनोंशब्दोंकाअर्थ निरूपणकरे हैं ॥ हेनारद ॥ जैसे यालोकविषे गृहकेसर्व व्यवहारोंकापरित्यागकरिकै एकांतदेशविषे स्थितहुए जेस्त्रीपुरुष हैं ॥ तिनस्त्रीपुरुषदोनोंका जोपरस्परमिथुनीभावहै ॥ सोमिथुनीभाव तिनदोनोंके परस्पर विषयानंदकाहेतुहोवै है ॥ तैसे याविद्वान्पुरुषका ध्याताध्येयभावकरिकै जोआत्माविषे मिथुनीभावहै ॥ सोमिथुनीभावही याविद्वान्पुरुषकूं सविकल्पसमाधिकालविषे आनंदकाहेतुहोवै है।और हेनारदजैसेयालोकविषे गांधर्वादिकविषयोंकीप्राप्तितैंअनंतर परीक्षकपुरुषोंकूं जोताकेआनंदरूपफलकाअनुभवहोवै है॥सोआनंदकाअनुभवनिर्विकल्पहीहोवै है ॥ तैसे याविद्वान्पुरुषकूं निर्विकल्प समाधिकालविषे जोनिरतिशयआनंदकाअनुभवहोवै है ॥ सोआनंदकाअनुभवभी ध्याता ध्यान ध्येय इत्यादिकत्रिपुटीरूपविकल्पतैंरहितहीहोवै है ॥ हेनारद ॥ ताविद्वान्पुरुषकूं जोआत्माविषेहीआनंदहोवै है ॥ याकेविषे यहकारणहै ॥ अद्वितीयआत्माकूं साक्षात्अनुभव करताहुआ सोविद्वान्पुरुष जन्ममरणादिकसर्वदुःखोंकीनिवृत्तिविषे किसीदूसरेकीअपेक्षाकरतानहीं॥ याकारणतैं सोविद्वान्पुरुष विराट् भगवान्कीन्याईं स्वराट् यासंज्ञाकूंप्राप्तहोवै है॥और सोविद्वान्पुरुषही ब्रह्मरूपहोणेतैं सर्वजीवोंकाआत्मारूप है॥ याकारणतैं सोविद्वान् पुरुष संपूर्णश्रेष्ठलोकोंविषे कामचारहोवै है॥ इहां प्रतिबंधतैंरहित तिनसर्वलोकोंकेप्राप्तिकानाम कामचारहै॥ इतनैंकरिकै ताभूमाआत्माकेज्ञानकाफल निरूपणकऱ्या॥अब ताज्ञानतैंरहितपुरुषोंकूं अनर्थकेप्राप्तिकावर्णनकरे हैं॥हेनारद॥जेमूढपुरुष ताभूमाकूं आपणाआत्मारूपकरिकैनहींजाने हैं॥ किंतु मोहकेवशतैं ताभूमाकूं आपणेआत्मातौंभिन्नकरिकैजाने हैं॥तेमूढपुरुष सर्वदा पराधीनताकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ तथा नाशवान्लोकोंकूंप्राप्तहोवै हैं॥तथा स्वतंत्रतातैंरहितहोवै हैं॥तथा वारम्वार जन्ममरणादिकदुःखोंकूंप्राप्तहोवै हैं॥ अब तिनाविद्वान्

पुरुषोंकूं जगत्काकर्त्ताईश्वररूपकरिकेवर्णनकरे हैं ॥ हेनारद ॥ जोपुरुष पूर्वउक्तप्रकारसैं ता तत्वपदार्थरूपभूमाकूं आपणाआत्मारूपकरि कैजाने है ॥ तावित्रान्पुरुषतैंही नामतैंआदिलैकेप्राणपर्यंत पूर्वउक्तपंचदशतत्त्व उत्पन्नहोवे हैं ॥ जैसे रज्जुतैं सर्प उत्पन्नहोवे है॥ तैसे ता विद्वान्पुरुषतैंही नामादिकउत्पन्नहोवे हैं ॥ और यज्ञादिककर्मोंसहित तथास्वर्गादिकफलोंसहित जेमंत्रब्राह्मणरूप ऋगादिकचारवेदहैं ॥ तेचारवेदभी तात्रिद्वान्पुरुषतैंही उत्पन्नहोवे हैं ॥ हेनारद ॥ याकेविषे हम बहुतक्याकहैं यहजितनाकीस्थूलसूक्ष्मजगत्है॥सोसंपूर्णजगत् तात्रिद्वान्पुरुषतैंही उत्पन्नहोवे है ॥ हेनारद ॥ जिनपुरुषोंकूं ताभूमाआत्माकासाक्षात्कारहोवे है॥तिनपुरुषोंके तेसंपूर्णजन्ममरणादिक दुःख निवृत्तहोवे हैं ॥ यहजो हमनैं तुम्हारेप्रति आत्मज्ञानकाफल कथनकऱ्याहै॥ताकेविषे वेदवेत्तापुरुष याप्रकारकामंत्ररूपश्लोक कथन करे हैं ॥ नपश्योमृत्युंपश्यंति नरोगंनोनदुःखतां॥सर्वंहपश्यःपश्यति सर्वमाप्नोतिसर्वशः॥अब याश्लोककाअर्थ निरूपणकरे हैं ॥हेनारद॥ यहजीवात्मा आपणेज्ञानके बलतैं शुभअशुभरूपसर्वसंसारकूं तथामोक्षकूं देखे है॥याकारणतैं श्रुतिभगवती याजीवात्माकूं पश्य यानामक रिकेकथनकरे है ॥ और मृत्युनाम मरणकाहै॥तामृत्युशब्दकरिकैज्वरादिकरोगोंतैंविना जितनैंकीयाशरीरकेजन्मादिकधर्म हैं तिनसर्व धर्मोंकाग्रहणकरणा ॥ और उदरविषे जठराग्निकरिकैपरिपक्वकऱ्याहुआजोअन्नकारसहै ॥ तारसकीन्यूनअधिकतातैं उत्पन्नभयेजेज्वरा दिकव्याधिहैं ॥ तिनज्वरादिकोंकानाम रोगहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्॥ तामंत्ररूपश्लोकविषेस्थितमृत्युशब्दकरिकै जैसे जन्मादिकविकारों काग्रहणहोवे है ॥ तैसे तामृत्युशब्दकरिकै ज्वरादिकरोगोंकाभी ग्रहणहोइसकेहै ॥ यातैं श्रुतिविषे ज्वरादिकरोगोंका पृथक्ग्रहणकरणा असंगतहै॥समाधान॥हेशिष्य॥जैसे याजीवोंकामरण अल्पकालपर्यंत स्थायीरहे है॥तैसे याजीवोंकेजन्मादिकभी अल्पकालपर्यंत स्थायी रहे हैं॥यातैं अल्पकालस्थायीतारूप सामान्यधर्मकूं अंगीकारकरिकै सोमृत्युशब्द तिनजन्मादिकोंकाभी बोधनकरे है ॥ और ज्वरादि कोंविषे सोअल्पकालपर्यंतस्थायीपणाहैनहीं॥किंतु तिनज्वरादिकोंविषे चिरकालपर्यंत स्थायीपणाहै॥यातैं श्रुतिविषे तामृत्युशब्दकरिकै तिनज्वरादिकोंकाग्रहणकऱ्यानहीं ॥ किंतु तामृत्युशब्दतैंभिन्न रोगशब्दकरिकै तिनज्वरादिकोंकाग्रहणकऱ्याहै ॥ और जरायुज अंडज

स्वेदज उद्भिज याचारिप्रकारकेभूतप्राणियोंकीजेनानाप्रकारकीविलक्षणबुद्धियांहैं॥तिनबुद्धियोंविषे प्रतिबिंबितत्वरूपकरिकैनानाप्रकारके भेदवालेजेजीवहैं ॥ तिनजीवोंका जोजन्मादिकअनेकधर्मवालेशरीरकेसाथ अहंममअध्यासरूपसंबंधहै ताकानाम दुःखहै॥ऐसे मरणादिक विकारोंकूं तथाज्वरादिकरोगोंकूं तथाअहंममअध्यासरूपदुःखकूं सोपश्यनामाजीव देखतानहीं ॥ हेनारद॥ सोपश्यनामाविद्वान्जीव तिन मृत्युआदिकोंकूंजोनहींदेखेहै॥याकेंविषेयहकारणहै ॥ स्थूलसूक्ष्मरूपकरिकैप्रसिद्ध जितनाकी यहद्वैतप्रपंचहै॥सोसंपूर्ण द्वैतप्रपंच आत्मा विषेकल्पितहै ॥ ताकल्पितप्रपंचकी तबपर्यंत स्थितिहोवेहै ॥ जबपर्यंत ताप्रपंचविषे कल्पितरूपताकूंविषयकरणेहाराज्ञान नहींउत्पन्नभ या॥ताज्ञानकेउत्पन्नहुएतैंअनंतर ताकल्पितप्रपंचका पुनःदर्शनहोवेनहीं॥इसप्रकार यासर्वद्वैतप्रपंचकूं अधिष्ठानआत्माविषे कल्पितरूप करिकेदेखणेहारा सोविद्वान्पुरुष तिनमरणादिकविकारोंकूंदेखतानहीं॥औरयाभूमाआत्माकेज्ञानतैंअनंतरयहसंपूर्णजगत् ताभूमात्माविषे अनन्यभावकूंप्राप्तहोवे है सोअनन्यभावही याजीवात्माकूं यासर्वजगत्कीप्राप्तिहै।काहेतैं सर्ववेदोंकेतात्पर्यकाविषय जोयहभूमाआत्माहै ॥ ताभूमाआत्माविषेही यहसंपूर्ण यज्ञलोकादिरूपवेदकाअर्थ अंतर्भूतहै॥ताभूमा आत्मातैंभिन्न कोईवेदकाअर्थहैनहीं ॥ यातैं ताभूमाआ त्माकेज्ञानतैं यहजीवात्मा तिनसर्वपदार्थोंकूंप्राप्तहोवे है यहवार्त्ता संभवहोइसकेहै॥अब तात्रिद्वान्पुरुषविषे उपाधिकेयोगतैं नानारूपता का निरूपणकरे हैं ॥ हेनारद ॥ मैं भूमारूपहूं याप्रकारकेज्ञानयुक्त सोविद्वान्पुरुष आपणेवास्तवभूमारूपकरिकैएकहुआभी आपणी मायाकरिकै नानारूपहोवे है ॥ तहां सोविद्वान्पुरुष आत्मा माया तामायाकाकार्य यातीनरूपोंकूं ग्रहणकरिकैतो तीनप्रकारका होवे है ॥ और सोविद्वान्पुरुष आकाश वायु तेज जल पृथ्वी यापंचभूतोंकूंग्रहणकरिकै अथवा श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रियोंकूंग्रहणकरिकै पंचप्रकारकाहोवे है ॥ और सोविद्वान्पुरुष भूरादिकसप्तलोकोंकूंग्रहणकरिकै सप्तप्रकारकाहोवे है ॥ और सोविद्वान्पुरुष आदित्य चंद्रमा मंगल बुध बृहस्पति शुक्र शनि राहु केतु यानवग्रहोंकूंग्रहणकरिकै नवप्रकारकाहोवे है ॥ और पंचज्ञानइंद्रिय पंचकर्मइंद्रिय एक मन याएकादशइंद्रियोंकूंग्रहणकरिकै सोविद्वान्पुरुष एकादशप्रकारकाहोवे है ॥ और तिनएकादशइंद्रियोंविषे एकएकइंद्रियके दशदश

प्रकारकीवृत्तियोंकूं अंगीकारकरिकै सोविद्वान्पुरुष एकशतदश ११० प्रकारकाहोवै है ॥ और दिनरात्रिविषे एकविंशतिसहस्र षट्शत २१६०० श्वासप्रश्वासचालेहैं॥तिनश्वासप्रश्वासरूपहंसमंत्रोंकेभेदकूंग्रहणकरिकै सोविद्वान्पुरुष एकविंशतिसहस्रषट्शत प्रकारकाहोवेहै ॥ इसप्रकार सोब्रह्मरूपविद्वान्पुरुष वास्तवतैंएकअद्वितीयरूपहुआभी उपाधिकेभेदकूंअंगीकारकरिकै नानाप्रकारकाहोवै है॥ अब ताआत्मज्ञानके आहारशुद्धिआदिकसाधनोंका निरूपणकरेहैं॥हेनारद॥जेपुरुष बाह्यतौ सर्वदा पुण्यकर्मोंकाअनुष्ठानकरे हैं ॥ परंतु जिनोंके मनविषे सर्वदा पापवासनारहेहै॥ऐसे पुरुषोंकूं शतकोटिजन्मोंकरिकैभी यहसर्वात्मज्ञान अत्यंतदुर्लभ है ॥ जभी अंतरपापवासनायुक्त पुण्यवान्पुरुषोंकूंभी यहआत्मज्ञान दुर्लभहुआ ॥ तभीबाह्यअंतर सर्वदा पापकर्मोंकेआचरणकरणेहारेपुरुषोंकूं यहआत्मज्ञान दुर्लभ है याकेविषेक्याकहणाहै ॥ यातैंजिसअधिकारीपुरुषकूं ताआत्मसाक्षात्कारकी इच्छाहोवैहै ॥ तिसअधिकारीपुरुषनै प्रथमआपणेचित्तकूं शुद्धकरणा॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ साचित्तशुद्धिकिसप्रकारसेहोवैहै॥ समाधान ॥ हेनारद ॥ आपणेआपणेवर्णआश्रमकेअनुसारप्राप्तभये जेअन्नपानादिकविषयहैं ॥ तिनविषयोंकेग्रहणकानामआहारहै ॥ सोआहारजिसपुरुषका रागद्वेषतैंरहितबुद्धिकरिकै पापतैंरहितशुद्धहुआ है ॥ तिसीपुरुषकाचित्तशुद्धहोवैहै ॥ ताआहारकीशुद्धितैंविना चित्तकीशुद्धिहोवैनहीं ॥ हेनारद ॥ जैसेआहारशुद्धिवालेपुरुषकी पापकर्मोंविषेप्रीतिहोवैनहीं ॥ तैसे जोपुरुष बीज योनि व्यवहार यातीनोंकेशुद्धिवालाहोवैहै ॥ तिसपुरुषकी आपदाकालविषेभी पापकर्मविषे प्रीतिहोवैनहीं ॥इहांपितृकुलकानामबीजहै॥ औरमातृकुलकानामयोनिहै॥ औरपदार्थोंकेग्रहणत्यागकानामव्यवहारहै॥हेनारद॥इसप्रकार आहार व्यवहार बीज योनि याचारोंकीशुद्धिकरिकै जिसपुरुषकाचित्तशुद्धहुआहै ॥ तिसपुरुषकीकदाचित्भीपापकर्मविषेप्रीतिहोतीनहीं औरपापकर्महीं चित्तकेएकाग्रताकाप्रतिबंधकहोवैहैं॥जभीतिनआहारादिकोंकीशुद्धिकरिकै यहपुरुषतिनपापकर्मोंतैंरहितहोवैहै ॥ तभी याअधिकारीपुरुषकाचितएकाग्रताकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ऐसेशुद्धचित्तवालापुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतैंशीघ्रही आपणेभूमास्वरूपआत्माकूं साक्षात्कारकरेहै॥जैसेभिल्लपुरुषोंकरिकैपालनकऱ्याहुआ कोईक्षत्रियराजाकापुत्रकिसीमहात्मापुरुषकेमुखतैंतूक्षत्रियराजाकापुत्रहै याप्रका

॥ १४ ॥

रकवचनकूंश्रवणकरिकै शीघ्रही आपणेक्षत्रियस्वरूपकूंस्मरणकरे है ॥तैसे तूब्रह्मरूपहै याप्रकारकेब्रह्मवेत्तागुरुकेवचनकूंश्रवणकरिकै सोशुद्धचित्तवालापुरुष शीघ्रही आपणेब्रह्मरूपकूंस्मरणकरेहै॥हेनारद॥जोकोईपुरुष पूर्वलेपुण्यकर्मकेप्रभावतैं ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशकरिकै याभूमाआत्माकेस्मृतिकूंप्राप्तहोवै है ॥सोपुरुष ताआत्मज्ञानरूपखड्गकरिकै कामक्रोधादिकग्रंथियोंकूं शीघ्रही छेदनकरेहै॥ताआत्मज्ञानतैं विना तेकामक्रोधादिकग्रंथियां कदाचित्भी निवृत्तहोवैंनहीं ॥ यातैं याअधिकारीपुरुषनैं ताकामक्रोधादिकबंधकनिवृत्तकरणेवासतेताभूमाआत्माकेज्ञानकूं अवश्यकरिकैसंपादनकरणा।अब तानारदमुनिविषे ब्रह्मविद्याकेअधिकारीकेविशेषणोंकानिरूपणकरेहैं।हेशिष्या!सोनारदमुनि पूर्वउक्तआहारादिकोंकीशुद्धिकरिकै शुद्धचित्तवालाहोताभया॥ताचित्तशुद्धितैंअनंतर सोनारदमुनि कामक्रोधादिकोंतैंरहितहोताभया॥हेशिष्य॥हरीतकीआदिकोंतैंउत्पन्नभयाजोरसहै।जिसरसकेसंबंधतैं वस्त्रादिकोंविषे कुसंभादिकोंकारंग अत्यंतदृढहोवैहै॥ताहरीतकीआदिकोंकेरसकूं बुद्धिमानपुरुष कषाय याशब्दकरिकैकथनकरे हैं ॥ ताकषायरसकीन्याईं यहकामक्रोधादिकविकारभी याचित्तरूपवस्त्रकूं रंजितकरे हैं ॥ याकारणतैं तिनकामक्रोधादिकोंकूंभी शास्त्रवेत्तापुरुष कषाय याशब्दकरिकैकथनकरे हैं॥और जैसे वस्त्रविषेस्थिततताकषायरसकी क्षारादिकोंकरिकैनिवृत्तिहोवैहै ॥ तैसे तिनकामक्रोधादिककषायोंकीभी ब्रह्मचर्यादिकसाधनोंकरिकैनिवृत्तिहोवैहै॥औरसोनारदमुनि तिनब्रह्मचर्यादिकसाधनोंकरिकैसंपन्नथा॥ तथा यासंसारसमुद्रतैंवैराग्यवान्था॥याकारणतैं श्रुतिभगवतीनैं तानारदमुनिकूं मृदितकषाय यानामकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ ऐसेमृदितकषायनारदमुनिकेताईं सोभगवान्सनत्कुमार मूलअज्ञानरूपतमका भूमारूपपरपार दिखावताभया॥जैसे यालोकविषे यहपुरुष आपणेशत्रुकेप्रति दुःख दिखावै है॥ तैसे तानारदमुनिकेप्रति सोभगवान्सनत्कुमारभूमाआत्मा दिखावताभया ॥ जिसभूमाआत्माकेदर्शनकरिकै यहअधिकारीपुरुष पुनः संसाररूपशोककूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ हेशिष्य॥जोसनत्कुमारभगवान् तानारदमुनिकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरताभयाहै ॥ सोसनत्कुमारभगवान् दूसरेजन्मविषे स्वामिकार्तिकेयअवतारकूंधारणकरताभयाहै ॥ हेशिष्य ॥याअर्थविषे इतिहासकूंजानणेहारेब्राह्मण याप्रकारकीकथा कहतेभयेहैं ॥ तिसकथाकूं तूं श्रवणकर ॥ किसी

कालविषे किसीनिमित्तपाइके सर्वमुनिजन श्रीकाशीजीविषेजातेभये॥ तहां तेमुनिजन प्रातःकालविषे स्नानादिकानित्यकर्मोंकूंकरिके श्री गंगाजीकेतीरविषेस्थितहोतेभये ॥ और तेसर्वमुनिजन आपणीआपणीबुद्धिकरिके परब्रह्मकाचिंतनकरतेभये ॥ तिसकालविषे भवानीदेवीसहित श्रीमहादेव तहांआवताभया ॥ तिसकालविषे यद्यपि सोमहादेव आपणेस्वयंज्योतिआनंदस्वरूपकरिके तिनमु निलोकोंकेध्यानकाविषयथा ॥ तथापि सोमहादेव कृपाकरिके तिनमुनिलोकोंके मांसमयनेत्रोंकाविषयहोताभया ॥ ताभवानीस हितमहादेवकूंदेखिके तेसर्वमुनिजन आपणेआपणेआसनतैंउठतेभये ॥ तथा अत्यंतहर्षकूंप्राप्तहोतेभये ॥ जैसे प्राणोंकेप्रवेशतैं यहशरीर उठ है ॥ तथा हर्षकूंप्राप्तहोवै है ॥ तैसे तेमुनीश्वर महादेवकूं देखिकेउठतेभये ॥ तथा हर्षकूंप्राप्तहोतेभये ॥ तिनसर्वमुनियोंविषे एकसनत्कुमारभगवान् आपणेआसनतैं नहींउठताभया काहेतैं सोसनत्कुमारभगवान् सर्वकालविषे एकअद्वितीय आत्माकूंही अंतरबाह्यसर्वत्र परिपूर्णदेखेहै ॥ और तिसकालविषेतो सोसनत्कुमारभगवान् विशेषकरिकेसमाधिविषेस्थितथा ॥ याकारणतैं सोसनत्कुमार महादेवकूंदेखिके अभ्युत्थान नहींकरताभया ॥ और तासनत्कुमारतैंविना दूसरेमुनिजनतो तामहादेवकूंदेखिके अभ्युत्थान करतेभये ॥ तथा ताभवानीसहितमहादेवकूं प्रणामकरतेभये ॥ और तिनमुनिजनोंविषे कितनेकीमुनिजनतो वेदकेपाठा दिकोंकरिके तामहादेवकीस्तुतिकरतेभये ॥ और कितनेंकीमुनिजनतो आपणेनवीनस्तोत्रबनाइके तिनस्तोत्रोंकरिके तामहादेवकीस्तु तिकरतेभये॥ और कितनेकीमुनिजनतो प्राचीनपुरुषोंकरिकेकरेहुएस्तोत्रोंकरिके तामहादेवकीस्तुतिकरतेभये ॥ इसप्रकार सर्वमुनिजन ताभवानीसहितमहादेवकीप्रसन्नताकरिके आपणेआपणेआसनऊपर स्थितहोतेभये ॥ इसप्रकार तामुनिजनोंकीश्रद्धाभक्तिकूंदेखिकरि के अत्यंतप्रसन्नहुआ सोमहादेव तिनसर्वमुनिजनोंकूं मनवांछितवरोंकीप्राप्तिकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोभवानीसहितमहादेव तिस स्थानतैंजाणेकीइच्छाकरताहुआ तहां सर्वमुनिजनोंकूं जहांतहां देखतेभये ॥ तासमाजविषे सनत्कुमारकूं ध्यानविषेस्थितहुआदे खिके सोभगवान्महादेव परमहर्षकूंप्राप्तहोताभया ॥ परंतु तासनत्कुमारकूंदेखिके साभवानी हर्षकूंनहींप्राप्तहोतीभई ॥ किंतु

॥ १६ ॥

सा भवानी आपणेमनविषे याप्रकारकाविचारकरिके आपणेस्त्रीस्वभावतैं परमक्रोधकूंप्राप्तहोतीभई ॥ अब ताभवानीकेविचारकावर्णन करे हैं ॥ यहभगवान्महादेव अनादिपुरुषहै ॥ और यहमहादेव सर्वदा योगीजनोंकेहृदयविषेस्थितहै ॥ तथा अष्टांगयोगकरिकेयुक्तपुरुषों करिके यहमहादेव सर्वदा ध्यानकरणेयोग्यहै ॥ तथा यहमहादेवही सर्वविद्यावोंका परमगुरुरूपहै और जैसे यालोकविषे राजादिकपुरुषोंके गर्भदासपुरुष किंकरहोवै हैं ॥ तैसे ब्रह्मा विष्णु इंद्र सर्वलोकपाल इसतैंआदिलेकेजितनेकीदेवताहैं॥तेसर्वदेवता यामहादेवकेही गर्भदास किंकरहैं ॥ इहां धनकरिकेमोललीनीजोदासी है॥तादासीविषेउत्पन्नहुएपुत्रोंकानाम गर्भदासहै॥ तैसे यामहादेवनैं सत्तास्फूर्तिरूपधनदेके मायारूपदासीकूं आपणेवशकऱ्याहै ॥ तामायारूपदासीतैंहीं तिनब्रह्मादिकदेवतावोंकीउत्पत्तिहोवै है ॥ यातैं तेब्रह्मादिकदेवता या महादेवके गर्भदासहैं ॥ और यहमहादेवही महदादिकतत्त्वोंका तथास्थावरजंगमभूतोंका जनक है॥तथा तिनमहदादिकोंकापालनकरणे हाराहै ॥ तथा तिनमहदादिकोंका संहारकरणेहाराहै॥और यहमहादेवकेसमान पूर्व कोईहुआनहीं ॥ और आगेकोईहोवैगानहीं ॥ और अभीकोई हैनहीं॥जभी यामहादेवके समानभीकोईनहींभया॥तभी यामहादेवतैंअधिक कौनहोवैगा ॥ किंतु यामहादेवतैं कोईभीअधिक नहीं है ॥ और यामहादेवनैं कामदेवकूंनाशकऱ्याहै ॥ यातैं यहमहादेवही ब्रह्मचर्यधर्मवालाहै॥ऐसेजगत्गुरुमहादेवकूं मैंस्त्रीसहितदेखिके यहसनत्कुमार स्त्रीकेअधीन मानताभयाहै ॥ और यहसनत्कुमार आपणेकूंब्रह्मचारिमानिके महान्गर्वयुक्तहुआ है॥याकारणतैंही यहसन त्कुमार श्रीमहादेवकूंदेखिके अभ्युत्थान तथानमस्कार नहींकरताभयाहै॥यातैं याअभिमानीसनत्कुमारकेप्रति मैं कोईदारुणशापदेवों ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार साभवानी देवीतासनत्कुमारकेप्रति शापदेणेका निश्चयकरिके पुनः साभवानी यासनत्कुमारकेप्रति मैं कौनशापदेवों याप्रकारकाविचारकरतीभई तहां यालोकविषे महान्दुःखकीप्राप्तिकरणेहारेजेस्थानहैं ॥ तिनस्थानोंविषेनिवासकरणेहारे यद्यपि अनेकजीव हैं ॥ तथापि तिनसर्व जीवोंविषे अश्वोंकीसेवातैं आपणीजीवनकरणेहारेपुरुष मुख्य हैं ॥ काहेतैं दुर्गंधकरिकेयुक्त जाअश्वोंकी शालाहै ॥ तादुर्गंध शालाविषे तिनपुरुषोंका सर्वदा निवासरहेहै ॥ तथा बहुतसेवाकरणेतैंभी तिनोंकूं अल्पधनकीप्राप्तिहो

वह॥यातं अश्वोंकीसेवाकरणेहारेमनुष्य सर्वमनुष्योंतैं नीचहैं ॥ ऐसे अश्वोंकीसेवाकरणेहारेपुरुषोंकुलविषे यासनत्कुमारकाजन्महोवे ॥ हेशिष्य॥इसप्रकारकाविचारकरिकै साभवानी तासनत्कुमारकेप्रति याप्रकारकाशापदेतीभई॥हेसनत्कुमार तुमनैं हमारे महादेवभर्त्ताका अपमानकऱ्याहै॥यातैं अश्वोंकीसेवाकरणेहारेपुरुषोंककुलविषे तुमाराजन्महोवैगा ॥ हेशिष्य ॥ जिसकालविषे साभवानीदेवीतासनत्कुमारकेप्रति याप्रकारकाशापदेतीभई ॥ तिसकालविषे सोमहादेव ताभवानीकेप्रति ताशापदेणेतैं बहुतनिवारणकरताभया॥तथापि क्रोधके वशहुई साभवानी तामहादेवकेवचनकूंभी नहींअंगीकारकरतीभई ॥हेशिष्य॥ ताभवानीकेशापतैं अनंतर सोसनत्कुमार तापूर्वशरीरका परित्यागकरिकै अश्वोंकेसेवाकरणेहारेशरीरकूंप्राप्तहोताभया॥ताशरीरविषेभी सोसनत्कुमार परमआनंदकूंप्राप्तहोताभया॥काहेतैं पूर्वब्राह्मणशरीरविषे स्नानादिकनित्यनैमित्तिककर्मोंककरणेकरिकै जेक्लेशहोतेथे॥तेसर्वक्लेश याअश्वसेवकशरीरविषे निवृत्तहोतेभये॥और अश्वोंकेभक्षणकरणेयोग्यजेचणकादिकअन्नहैं॥तिनोंकूंभक्षणकरिकै सोसनत्कुमार अत्यंतस्थूलशरीरवालाहोताभया॥और सोसनत्कुमार ताअश्वसेवकशरीरविषे अत्यंतआलसीहोताभया॥यातैं ताकेसंबंधियोंनैंतासनत्कुमारकूं अत्यंतआलसीदेखिकैदूसरेकिसीकार्यविषयलगायानहींकिंतु ताअश्वशालाकेद्वारमात्रकीरक्षाकरणेवासतै तासनत्कुमारकूं ताअश्वशालाकेऊपरबैठावतेभये ॥ और सोसनत्कुमार तिनोंकेआज्ञाकूंमानिकै ताअश्वशालाकेद्वारऊपररात्रिदिनविषे सुखपूर्वक स्थितहोताभया ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार किसीकालकेव्यतीतहुएतैंअनंतर तामहादेवसहित साभवानीदेवी ताअश्वशालाकेसमीप आवतीभई ॥ और साभवानीदेवी तासनत्कुमारकूं तिसनीचशरीरविषे परमआनंदकूंप्राप्तहुआदेखिकै प्रसन्नहोतीभई ॥ तिसतैंअनंतर साभवानीदेवी तासनत्कुमारकेप्रति याप्रकारकावचन कहतीभई हेसनत्कुमार मै तुमारेऊपरप्रसन्नभईहूं ॥ यातैं जोतुमारेकूंइच्छाहोवै ॥ सोहमारेसैंवरमांग ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकावचन जभी ताभवानीदेवीनैंकह्या॥तभी सोसनत्कुमार ताभवानीदेवीकेप्रति याप्रकारकावचनकहताभया॥ हेदेवी आपनैं कृपाकारिकै हमारेताईं जोयहशरीरदियाहै ॥ सोयहशरीर यद्यपि पूर्वब्राह्मण शरीरतैंश्रेष्ठ है ॥ तथापि याशरीरविषे विष्ठामूत्रादिकोंकेपरित्यागकरणेवासतै उठिकैदूरजाणेकरिकै

॥ १६ ॥

हमारेकूं बहुतक्लेशहोवै है॥यातैं आप कृपाकरिकै हमारे प्रति ऐसेशरीरकीप्राप्तिकरो॥जिसशरीरविषे जोकदाचित् मैंबैठाहुआभी विष्ठामूत्रकापरित्यागकरो॥तोभी सोविष्ठामूत्र हमारेशरीरतैं दूरजाइकैपडे ॥ ताविष्ठामूत्रका हमारेशरीरकेसाथ स्पर्शहोवैनहीं ॥ ऐसेशरीरकीप्राप्तिरूपवर हमारेप्रतिदेवो ॥ हेशिष्य ॥ तासनत्कुमारनैं जभी ताभवानीदेवीसैं याप्रकारकावर मांग्या ॥ तभी साभवानीदेवी पुनः क्रोधवानहोइकै याप्रकारकाशापदेतीभई ॥ हेसनत्कुमार उष्ट्रशरीरविषे तेविष्ठामूत्रादिकमल शरीरतैंदूरजाइकैपडे हैं ॥यातैं तूं ताउष्ट्रशरीरकूंप्राप्तहोवैगा॥हेशिष्य ॥इसप्रकार ताभवानीकेशापतैं अनंतर सोसनत्कुमार ताअश्वसेवक शरीरकापरित्यागकारिकै राजाकेगृहविषे उष्ट्रशरीरकूंप्राप्तहोताभया ॥ तहां उष्ट्रोंकेशिक्षाकरणेहारेपुरुषोंनैं ताउष्ट्रकूं बहुतप्रकारकीशिक्षाकरी ॥ परंतु सोउष्ट्र किंचित्मात्रभी तिनपुरुषोंकीशिक्षाकूं नहींमानताभया॥ तिसतैंअनंतर तेउष्ट्रोंकेशिक्षाकरणेहारेपुरुष ताउष्ट्रकूंअत्यंतआलसीजानिकै वनविषेपरित्यागकरतेभये ॥ तावनविषेप्राप्तहुआसोउष्ट्र परमसुखकूंप्राप्तहोताभया ॥ काहेतैं तावनविषे सोउष्ट्र करीरादिकबहुतकंटकोंकूं भक्षणकरताभया तथा श्रीगंगाजीकेमधुरजलकूंपानकरताभया॥ और बैठाहुआही सोउष्ट्र मलमूत्रकापरित्यागकरताभया ॥याकारणतैं सोसनत्कुमारमुनि ताउष्ट्रशरीरविषे परमआनंदकूंप्राप्तहोताभया॥किंवा॥सृष्टिकेआदिकालविषे ब्रह्मानै जितनैंकीपशुशरीरोंकूं उत्पन्नकऱ्याथा ॥ तिनसर्वशरीरोंविषे याउष्ट्रशरीरकूंसुखरूपजानिकै सोब्रह्मा याउष्ट्रशरीरकूं सर्वतैंप्रथम उत्पन्नकरताभयाहै यातैं यहउष्ट्रशरीर सर्वपशुशरीरोंतैंश्रेष्ठहै ॥ याप्रकार ताउष्ट्रशरीरविषे सर्वशरीरोंतैं श्रेष्ठताकाविचारकरिकैभी सोसनत्कुमारमुनि ताउष्ट्रशरीरविषे परमआनंदकूंप्राप्तहोताभया ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार कितनेककालकेव्यतीतहुएतैंअनंतर तामहादेवसहित साभवानीदेवी तावनविषेआवतीभई ॥ और तासनत्कुमारकूं ताउष्ट्रशरीरविषेभी परमआनंदकूंप्राप्तहुआदेखिकै साभवानी तासनत्कुमारकेप्रति याप्रकारकावचनकहतीभई॥हेसनत्कुमार ॥ मैंतुम्हारेऊपरप्रसन्नभईहूं।यातैं जोतुम्हारेकूंइच्छाहोवै सोहमारेसैंवरमांग।हेशिष्य ॥इसप्रकारके ताभवानीकेवचनकूंश्रवणकरिकै सोसनत्कुमार ताभवानीकेप्रति याप्रकारकावचनकहताभया॥हेदेवी॥आपनैं कृपाकारिकै हमारेताईं जोयहउष्ट्रकाशरीरदियाहै ॥इसतैंपरे कोईअधिकवर

मैं देखतानहीं॥याउष्ट्रशरीरविषेही मैं कृतकृत्यहूं ॥ हेदेवी ॥ याउष्ट्रशरीरविषे हमारेकूं वेदोंतैं तथालोकोंतैं भयकीप्राप्ति तथालज्जाकी प्राप्ति होतीनहीं ॥ और याउष्ट्रशरीरविषे जोकदाचित् मैंबैठाहुआभी विष्टामूत्रकापरित्यागकरताहूं॥तौभी तेविष्टामूत्र हमारेशरीरकूंस्पर्शकरतेनहीं ॥ किंतु तेविष्टामूत्र याहमारेशरीरतैं दूरजाइकेपडे हैं ॥ हेदेवी ॥ मैंने याउष्ट्रशरीरविषे परमसुखकाअनुभवकऱ्याहै ॥ यातैं जोकदाचित् परमेश्वर हमारेकूं आगेशरीरोंकीप्राप्तिकरै ॥ तौ याउष्ट्रशरीरोंकीही वारंवार प्राप्तिकरै ॥ ऐसीप्रार्थना मैं परमेश्वरकेआगेकरताहूं ॥ हेदेवी ॥ याअनादिसंसारविषे मैंनेपूर्व अनेकप्रकारकेऊंचनीचशरीरोंका अनुभवकऱ्याहै ॥ परंतु याउष्ट्रशरीरकेसमान सुखका हेतु याब्रह्मांडविषेकोईभीशरीर हमनैं देख्यानहीं॥यातैं इसउष्ट्रशरीरतैंपरे किसीभी वरकी म इच्छाकरतानहीं ॥हेशिष्य ॥ इसप्रकारकेवचनजभी तासनत्कुमारन ताभवानीकेप्रतिकहे॥तभी साभवानी तासनत्कुमारकू निष्कामदेखिकै महादेवकेसाथ विचारकरिकै याप्रकारकावचनकहतीभई॥हेसनत्कुमारमुनि सर्वकामनावोंतैं रहितहोणेतैं जोतूं हमारेसैंवरनहींमांगता ॥ तौ तूं हमारेप्रति मनवांछितवरदेहु ॥ हेशिष्य॥इसप्रकारके ताभवानीकेवचनकूं श्रवणकरिकै सोसनत्कुमार ताभवानीकेवचनकूं अंगीकारकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर साभवानी तूंहमारापुत्रहोहु याप्रकारकावर मांगतीभई॥तावरकूंदेकै सोसनत्कुमार ताभवानीदेवीका स्कंदनामापुत्रहोताभया॥ तिसीस्कंदकूं शास्त्रवेत्तापुरुष स्वामिकार्तिकेय यानामकरिकैकथनकरेहैं॥जो कामकूं आपणेवशकरै ताकूंस्कंदकहेहैं॥सोसनत्कुमार तास्कंदनामाअवतारविषेभी पूर्वकीनाईं ब्रह्मचर्यधर्मविषेही स्थितहोताभया ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार पूर्व सनत्कुमारभगवान्नैं नारदमुनिकेप्रति जोसुखरूपभूमाकाउपदेशकऱ्याहै ॥ सोसंपूर्णउपदेश हमनैं तुमारेप्रति कथनकऱ्या॥हेशिष्य ॥जैसे आरुणिऋषि श्वेतकेतुपुत्रकेप्रति याआत्मादेवका सत्यरूपकरिकैउपदेशकरताभयाहै॥और जैसे सनत्कुमारभगवान् नारदमुनिकेप्रति याआत्मादेवका आनंदरूपकरिकैउपदेकरताभयाहै।तैसे ब्रह्मा इंद्रकेप्रति तथाविरोचनकेप्रति याआत्मादेवका जाग्रतादिकतीनअवस्थावोंतैं रहितरूपकरिकै उपदेशकरताभयाहै ॥परंतु तिनदोनोंविषे देवराजइंद्रतौशुद्धआहारवालाथा तथा शुद्धचित्तवालाथा तथापूर्वउक्तस्मृतिवालाथा तथाकामक्रोधादिकग्रंथियोंकेपरित्याग ॥१७॥

करणेविषे यत्नवालाथा॥यातैं सोइंद्र ताब्रह्माकेउपदेशतैं जाग्रतादिकतीनअवस्थावोंतैं भिन्नकरिकै ताआत्माकूं साक्षात्कारकरताभया और विरोचन तिनआहारशुद्धिआदिकोंतैंरहितथा ॥ यातैं सोविरोचन जाग्रतादिकतीनअवस्थावोंतैंभिन्नकरिकै ताआत्माकूं नहींजानताभया ॥ किंतु सोविरोचन यास्थूलशरीरकूंही आत्माजानताभया ॥ हेशिष्य ॥ याग्रयोदशेअध्यायकेआदिविषे जो तुमनैं आत्माकीसुखरूपतापूछीथी ॥ सोहमनैं तुमारेप्रति विस्तारतैंकथनकरी ॥ अब जिसअर्थकेश्रवणकरणेकी तुमारेकूं इच्छाहोवै ॥ सोहमारेसैंपूछ ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य स्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचिते प्राकृताऽऽत्मपुराणे छांदोग्यसारार्थप्रकाशे सनत्कुमारनारदसंवादो नाम त्रयोदशोऽध्यायःसमाप्तः ॥ १३ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥

इति श्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषा आत्मपुराणे त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

इति श्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषाआत्मपुराणेत्रयदशोऽध्यायःसमाप्तः॥

॥ अथ स्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषाआत्मपुराणे चतुर्दशाध्यायप्रारंभः ॥

ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथ चतुर्दशाऽध्यायप्रारंभः ॥ पूर्वत्रयोदशेअध्यायविषे सामवेदकेछांदोग्यउपनिषद्के सप्तमअध्यायकाअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ अब याचतुर्दशेअध्यायविषे तिसीछांदोग्य उपनिषद्केअष्टमअध्यायकाअर्थ निरूपणकरेहैं ॥ तहांपूर्वत्रयोदशेअध्यायविषे ताभूमाआत्माकीसुखरूपताकूंश्रवणकरिकै परमआनंदकूं प्राप्तहुआ सोशिष्य ॥ पुनः जाग्रतादिकतीनअवस्थावोंतैंभिन्नरूपकरिकै ताभूमाआत्माकेश्रवणकरणेकीइच्छाकरताहुआआपणेगुरुके प्रतियाप्रकारकावचनकहताभया ॥ शिष्यउवाच ॥ हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणके प्रथमअध्यायविषे आपनैंऋग्वेदके ऐतरेयउपनिषद् काअर्थनिरूपणकऱ्याथा ॥ ताप्रथमअध्यायविषे सनकादिकमुनियोंके तथावामदेवादिकअधिकारीजनोंकेसंवादकरिकै आपनैंनानाप्र कारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी ॥ औरहेभगवन्याआत्मपुराणके द्वितीयअध्यायविषेतथातृतीयअध्यायविषे आपनैंतिसीऋग्वेदके कौषी तकीउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तहां याआत्मपुराणकेद्वितीयअध्यायविषे देवराजइंद्रके तथाप्रतर्दनराजाकेसंवादकरिकै आ पनैंनानाप्रकारकीब्रह्मविद्याकथनकरीथी॥औरयाआत्मपुराणकेतृतीयअध्यायविषे राजाअजातशत्रुकेतथाबालाकीब्राह्मणकेसंवादकरि कैआपनैंनानाप्रकारकीब्रह्मविद्याकथनकरीथी॥ औरहेभगवन्॥ याआत्मपुराणके चतुर्थपंचम षष्ठ सप्तम याचारिअध्यायोंविषे आपनैंयजु र्वेदकेबृहदारण्यकउपनिषद्काअर्थनिरूपणकऱ्याथा ॥ तहांयाआत्मपुराणकेचतुर्थअध्यायविषे आपनैंप्रथमएकस्त्रीवंश दोपुरुषवंशयहतीन प्रकारकाऋषियोंकावंशकथनकऱ्याथा ॥ और दध्यङ्अथर्वणऋषिनैं जात्रह्मविद्यादेवराजइंद्रकेप्रति तथाआश्विनीकुमारोंकेप्रतिउपदेश करीथी॥ साब्रह्मविद्याभीआपनैंकथनकरीथी॥ तथातादृध्यङ्ऋषिका देवराजइंद्रतैंमरणभी आपनैंकथनकऱ्याथा ॥ तथातादृध्यङ्ऋषिके क्षमादिकगुणोंकाभीआपनैंकथनकऱ्याथा।इसतैंआदिलैंकैअनेकप्रकारकीवार्त्तांताचतुर्थअध्यायविषेआपनैंकथनकरीथी॥ और हेभगवन्॥ याआत्मपुराणकेपंचमेअध्यायविषे जनकराजाकीयज्ञसभाविषे याज्ञवल्क्यमुनिकेतथाआश्वलादिकब्राह्मणोंके संवादकरिकै आपनैंनाना प्रकारकीब्रह्मविद्याकथनकरीथी ॥तथायाज्ञवल्क्यमुनिकेशापकरिकै शाकल्यब्राह्मणकामृत्युकथनकऱ्याथा॥ और हेभगवन् याआत्मपुरा

णकेषष्ठअध्यायविषे याज्ञवल्क्यमुनिके तथाजनकराजाके दोवारसंवादकरिकै आपणे नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी ॥ जात्रह्मवि द्या सूर्यभगवान् याज्ञवल्क्यमुनिकेप्रति देताभयाहै ॥ और हेभगवन् याआत्मपुराणकेसप्तमअध्यायविषे याज्ञवल्क्यमुनिके तथा मैत्रेयी स्त्रीके संवादकरिकै आपनैं नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी ॥ तथा याज्ञवल्क्यमुनिकेसंन्यासआश्रमका कथनकऱ्याथा॥ और हेभ गवन् याआत्मपुराणके अष्टमेअध्यायविषे आपनैं तिसीयजुर्वेदके श्वेताश्वतरउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ ताअष्टमअध्यायविषे श्वेताश्वतरमुनिके तथासंन्यासियोंके संवादकरिकै आपनैं याजगत्केकारणका निरूपणकऱ्याथा ॥ और हेभगवन् याआत्मपुराण केनवमअध्यायविषे आपनैंतिसीयजुर्वेदके कठवल्लीउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तानवमअध्यायविषे आपनैं यहवार्त्ता कथन करीथी ॥ नचिकेता पिताकेवचनकूंसत्यकरणेवासतैं यमलोकविषेजाताभया तहां सोनाचिकेता तायमराजातैं पिताकीप्रसन्नता अग्नि विद्या आत्मज्ञान यहतीनवरलेताभया॥ तावरकेप्रभावतैं सोनचिकेता तायमराजाकेमुखतैं वैराग्यादिकसाधनोंसहित आत्मज्ञानकूंश्रवण करताभया ॥ और हेभगवन्॥ याआत्मपुराणकदशमेअध्यायविषे आपनैं तिसीयजुर्वेदके तैत्तिरीयकउपनिषद्का तथानारायणीयउपनि षद्का अर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तादशमेअध्यायविषे आपनैं वरुणपिताके तथाभृगुपुत्रके संवादकरिकै ब्रह्मकास्वरूपलक्षण तथा तटस्थ लक्षण निरूपणकऱ्याथा ॥ तथा अन्नमयादिकपंचकोशोंतैंभिन्नकरिकै तात्रह्मकास्वरूप वर्णनकऱ्याथा ॥ तथा वेननामागंधर्वका सर्वात्म भावरूपअनुभव आपनैं कथनकऱ्याथा॥तथा सत्यादिकसाधनोंकानिरूपणकरिकै तिनसर्वसाधनोंतैं संन्यासआश्रमकीअधिकता वर्णन करीथी।और हेभगवन्।याआत्मपुराणकेएकादशेअध्यायविषेआपनैं जाबालादिकएकादशउपनिषदोंकाअर्थनिरूपणकऱ्याथा।ताएकादशे अध्यायविषेआपनैं यहवार्त्ता कथनकरीथी॥पूर्वसंवर्त्तकादिकमहान्पुरुष तापरमहंससंन्यासकूंधारणकरतेभये हैं॥और तापरमहंससंन्यासके प्राप्तिकाएकवैराग्यहीकारणहै॥ और तावैराग्यकीप्राप्ति गर्भदुःखोंकेविचारतैंहोवै है॥तथा मरणकेअज्ञानतैंहोवै है॥तथा अष्टांगयोगतैंहोवैहै॥ और सोवैराग्यवान्पुरुषही तासंन्यासकाअधिकारी है ॥ और तापरमहंससंन्यासीका बाह्यअंतरभेदकरिकै दोप्रकारकाआचारहोवै है ॥

तहां दंडकमंडलुभिक्षाआदिक बाह्यआचारहोवै है॥ और शमदमादिक अंतरआचारहोवै है॥ तहां मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकेअभेदज्ञानका तो सोशमदमादिरूपअंतरआचारही मुख्यकारणहै ॥ सोब्रह्मज्ञानभी आपनैं ब्रह्मउपनिषदादिकोंविषेकथनकऱ्याथा॥इत्यादिकसर्ववार्त्ता आपनैं ताएकादशेअध्यायविषेवर्णनकरीथी ॥ और हेभगवन् याआत्मपुराणकेद्वादशेअध्यायविषे आपनैंसामवेदकेछांदोग्यउपनिषद् काअर्थ निरूपणकऱ्याथा॥ताद्वादशेअध्यायविषे उद्दालकमुनिके तथाश्वेतकेतुके संवादकरिकै आपनैं नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरी थी॥और हेभगवन्॥याआत्मपुराणके त्रयोदशेअध्यायविषे आपनैं तिसीछांदोग्यउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तात्रयोदशेअध्यायविषे आपनैं सनत्कुमारके तथानारदके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी॥हेभगवन् तात्रयोदशेअध्यायविषे आपनैं यहवार्त्ता कथनकरीथी ॥ प्रजापतिब्रह्मा इंद्रकेप्रति तथाविरोचनकेप्रति तीनअवस्थातैंरहितभूमाआत्माका उपदेशकरताभया॥तिनदोनोंविषे इंद्रतौ ताभूमाआत्माकूं जानताभया॥और विरोचन ताभूमाआत्माकूं नहींजानताभया हेभगवन्॥याप्रकारकेविचित्रआख्यानकूं मैं आपकेमुखतैंश्रवणकरणेकीइच्छाकरताहूं॥आप कृपाकरिकै हमारेप्रति सोसर्ववृत्तांत कथनकरो ॥ इसप्रकार ताश्रद्धावानशिष्यकरिकै पूछाहुआ सोश्रीगुरु ताशिष्यकेप्रति छांदोग्यउपनिषद्के अष्टमअध्यायविषेकथनकरीहुईकथाकूं कहताभया॥श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य॥ जोब्रह्मा इंद्रकेप्रति तथाविरोचनकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरताभयाहै॥ सोब्रह्मा सर्वदा जिसब्रह्मलोकविषे निवासकरे है॥ सोब्रह्मलोककैसाहै॥अत्यंतविस्तारवालाहै ॥ तथा सर्वदुःखोंकूंनाशकरणेहाराहै॥तथा जोब्रह्मलोक शुद्धअंतःकरणेवालेसंन्यासियोंकूं अर्चिरादिकमार्गकरिकै प्राप्तहोणेयोग्यहै ॥ तथाभृगुआदिकप्रजापतियोंके जेमहरादिकलोकहैं ॥ तिनसर्वलोकोंतैं सोब्रह्मलोक ऊपरस्थित है॥और ताब्रह्मलोकविषे ऐरंमदीयनामा एकमहान्सरोवरहै॥सोसरोवर अनेकप्रकारकेकमलोंकरिकैशोभायमान है ॥ तथा तीनतापोंकीनिवृत्तिकरणेहाराहै॥तथा उपासनाकेबलतैं अल्पफलकेदेणेहारेपुण्यपापकर्मोंकेक्षयहुएतैंअनंतर याउपासकपुरुषोंकूं तासरोवरकीप्राप्तिहोवै है ॥ ॥ २ ॥ और सोसरोवर इरानामाअन्नकारसरूपहै ॥ तथा मदकाहेतुहै याकारणतैंशास्त्रवेत्तापुरुष तासरोवरकूं ऐरंमदीय यानामकरिकैकथनकरै हैं ॥ और जिसब्रह्मलोकविषे अश्वत्थवृक्षकेआकार एकसोमसवननामा कल्पद्रुमरहैहै॥सोकल्पवृक्ष माताकीनाईं सर्वभूतप्राणियोंकूं मनवांछितपदार्थोंकीप्राप्तिकरे है ॥ तावृक्षतैं सर्वदा अमृतस्रवैहै ॥याकारणतैं शास्त्रवेत्तापुरुष तावृक्षकूं सोमसवन यानामकरिकैकथनकरै हैं ॥ और जिसब्रह्मलोकविषे एक अरनामा तलावरहैहै ॥ और दूसरा एयनामा तलावरहैहै॥कैसेहैंतेदोनोंतलाव॥समुद्रकेतुल्य विस्तारवालेहैं ॥ तथा दुग्ध दधि घृत यातीनोंकरिकैपूर्ण हैं ॥ और जैसे राजाकेभृत्य राजाकेपुत्रकूं आदरपूर्वक राजदरबारविषेलेजावै हैं॥तैसे विद्युतलोकविषेप्राप्तहुए उपासकपुरुषकूं अमानवपुरुष ताविद्युत्लोकतैं जिसब्रह्मलोकविषेलेजावै हैं॥और जिसब्रह्मलोकविषेप्राप्तहुएउपासकपुरुषकेप्रति ब्रह्माकरिकैप्रेरणाकरीहुई पंच शत ५०० अप्सरा सन्मुखआवै हैं॥कैसीहैंतेअप्सरा॥ सूर्यकेसमान तेजवाली हैं ॥ तथा षोडशवर्षकीअवस्थावालीहैं ॥ तथा रूपयौवनकरिकैसंपन्नहैं ॥ तथा तुर्यादिकवादित्रोंके मधुरशब्दकरिकैशोभायमानहैं॥तथा ताउपासकपुरुषकेदेखणेकीहैउत्कंठाजिनोंकूं ॥ तथा ताउपासकपुरुषकेशरीरकूं ब्रह्माकेसमान अलंकारोंकरिकै शोभायमानकरणेहारी हैं ॥ जिनअप्सरावोंकूं श्रुतिविषे अंबा अंबायवीय यादोनामोंकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ ऐसीपंचशतअप्सरा ताउपासकपुरुषकेसमीपआवै है ॥ तिनपंचशतअप्सरावोंविषेभी एकशत १०० अप्सरातौ ताउपासकपुरुषकेपहरावणेवास्तै नानाप्रकारकेसुगंधीवालेपुष्पोंकीमालावोंकूं आपणेहस्तविषेलेआवै हैं ॥ और एकशत १०० अप्सरातौ ताउपासकपुरुषकेलगावणेवास्तै नानाप्रकारकेअंजनोंकूं आपणेहस्तविषेलेआवै हैं॥और एकशत १०० अप्सरातौ ताउपासकपुरुषकेलगावणेवास्तै नानाप्रकारकेचूर्णोंकूं आपणेहस्तविषेलेआवै हैं ॥ और एकशत १०० अप्सरातौ ताउपासकपुरुषकेपहरावणेवास्तै नानाप्रकारकेवस्त्रोंकूं आपणेहस्तविषेलेआवै हैं ॥ और एकशत १०० अप्सरातौ ताउपासकपुरुषकेपहरावणेवास्तै नानाप्रकारकेभूषणोंकूं आपणेहस्तविषेलेआवै हैं ॥ इहां शरीरकेचाकचिक्यकाहेतु जेसुगंधिवालेतेलादिकहैंतिनोंकानाम अंजनहै ॥ और शरीरकेमर्दनकरणेयोग्य जेसुगंधिवाले केईकपदार्थ हैं तिनोंकानाम चूर्ण है ॥ इत्यादिकअनेकपदार्थोंकूं आपणेहस्तविषेलैके तेअप्सरा ताउपासकपुरुषकेसमीपआवै हैं ॥ और जिसब्रह्मलोकविषे एकआरनामाहृदरहैहै ॥ तथा

एकदुस्तरविरजानामा नदीरहेहै ॥ ताआरनामाह्रदके तथाविरजानामानदीके मध्यविषे येष्टिहनामा मुहूर्तोंकेअभिमानीदेवतारहेहैं॥ तिन देवतावोंकूं सोउपासकपुरुष आपणेविवेकयुक्तमनकरिकै दूरभगाइदेवै हैं ॥ और तात्रह्मलोकविषे यहउपासकपुरुष जभी ताह्रदनदीकूंत रिके इत्यनामावृक्षकेसमीपजावेहै ॥ तभी ताउपासकपुरुषकूं ब्रह्माकेग्रहणकरणेयोग्य दिव्यगंध प्राप्तहोवै है ॥ और तात्रह्मलोकविषे यह उपासकपुरुष जभी शालजन्यनामा संस्थानकूंप्राप्तहोवै है ॥ तभी ताउपासकपुरुषकूं ब्रह्माकेग्रहणकरणेयोग्य दिव्यरस प्राप्तहोवै हैं॥और तात्रह्मलोकविषे यहउपासकपुरुष जभी अपराजितनामा आयतनकेसमीपजावै है ॥ तभी ताउपासकपुरुषकूं नानाप्रकारकेदिव्यरूप प्राप्तहोवै हैं ॥ तथा ताउपासकपुरुषविषे ब्रह्माकातेज प्रवेशकरे है ॥ और तिसत्रह्मलोकविषे महान्तेजवाले इंद्र तथाप्रजापति यहदोनों द्वारपालहैं॥तेदोनोंद्वारपाल ताउपासकपुरुषकूं ब्रह्माकेतेजयुक्तदेखिके भययुक्तपुरुषकीन्याईं शीघ्रही भीतरजाणेकेमार्गकीप्राप्तिकरे हैं ॥ और तात्रह्मलोकविषे एकहिरण्यमयनामा ब्रह्माकाप्रासादहै ॥कैसाहैसोप्रासाद॥महान्विस्तारवालाहै॥तथा अनेकप्रकारकेरत्नोंकरिकै जडितहै ॥ तथा सभास्थानकरिकैयुक्तहै ॥ और तात्रह्माकेप्रासादविषे विचक्षणानामा बुद्धिरूपवेदिकाहै ॥ कैसीहैसाबुद्धिरूपवेदिका ॥ सर्वशुभलक्षणोंकरिकैसंपन्नहै॥तथा सर्वजगत्काकारणहै ॥ और ताप्रज्ञारूपवेदिकाविषे एक अमितौजसनामा प्राणरूपपर्यंकस्थितहै ॥ जिसप्राणकूं बाजसनेयशाखावालेब्राह्मण उद्गातारूपकरिकैउपासनाकरे हैं ॥ और छांदोग्यशाखावालेब्राह्मण ताप्राणकूं उद्गीथरूपक रिकैं उपासनाकरे हैं ॥ कैसाहैसोप्राणरूपपर्यंक ॥ जिसपर्यंकके पूर्वदिशाकीतरफकेदोपादतोभूतभविष्यत्जगत्रूपहैं॥और लक्ष्मी पृथ्वी यहदोनों तापर्यंकके पश्चिमदिशाकी तरफकेदोपाद हैं ॥ और बृहत्साम रथंतरसाम यहदोप्रकारकासामवेद तापर्यंकके दक्षिण उत्तरदिशाकेतरफकी दीर्घकाष्ठमयदोपटिकाहैं॥और भद्रसाम तथायज्ञायज्ञीयसाम यहदोप्रकारकासामवेद तापर्यंकके पूर्वपश्चिमदिशाके तरफकी अल्पकाष्ठमयदोपटिकाहैं ॥ और मंत्ररूपऋग्वेद तथामंत्ररूपसामवेद यहदोनों तापर्यंकके पूर्वपश्चिमदिशाकेतरफकी दीर्घ सूत्रमयपटियां हैं ॥ और मंत्ररूपयजुर्वेद तापर्यंकके दक्षिणउत्तरदिशाकेतरफकी अल्पसूत्रमयपटियां हैं ॥ जिनसूत्रमयपटियोंकूं ॥ ३ ॥

लोकविषे नवारकहे है ॥ और जिसपर्यंकका चंद्रमाकीकिरणमय उपस्तरणहै ॥ जिसउपस्तरणकूं लोकविषे गादलाकहे हैं ॥और उद्गी थनामासामवेद ताउपस्तरणकेऊपरबिछावणेयोग्य श्वेतवस्त्ररूपहै ॥ और लक्ष्मी तापर्यंककासिराणाहै ॥ ऐसेप्राणरूपपर्यंकविषे जोब्रह्मा सर्वदा विराजमानहै ॥ कैसाहैसोहिरण्यगर्भरूपब्रह्मा ॥ जगत्रूपपटकरिकैआवृतहै ॥ तथा जाहिरण्यगर्भकाशरीर पृथिवीआदिकपं चभूतोंकरिकैपुष्टहुआहै ॥ तथा जोहिरण्यगर्भ सर्वजीवोंकासमष्टिरूपहै॥ और श्रुतिविषे अंबया याशब्दकरिकैकथनकरीजे उपासनारूप नदियां हैं ॥तिननदियोंकेनीरकूं जोब्रह्मा सर्वदा पानकरेहै ॥ और ताब्रह्माकी दोप्रियस्त्री हैं ॥ तहांएकतौ प्रतिरूपानामाप्रियाहै॥कैसीहै साप्रतिरूपानामाप्रिया ॥ समष्टिरूपतेजकेपुंजकूं आपणे अभिमानकाविषयकरिके विराजमानहै ॥ तथा सर्वचक्षुइंद्रियोंका उपादानका रणरूपहै और ताब्रह्माकी दूसरीप्रिया मानसीनामाहै ॥ जामानसीप्रिया सरस्वतीरूपकरिकैप्रसिद्धहै ॥ ऐसीदोपत्नियोंसहित सोब्रह्मा तासभाविषेस्थितहोवेहै ॥ कैसाहैसोब्रह्मा ॥ इंद्रादिकसर्व देवतावोंकादेवताहै ॥ और सर्वब्रह्मांडविषे व्याप्तहैं विभूतियांजिनोंकी ऐसेजे इंद्रादिकदेवताहैं ॥ तिनसर्व देवतावोंकरिकै जोब्रह्मा उपासनाकरणेयोग्यहै ॥ऐसाप्रजापतिब्रह्मा सर्वभूतोंकेहितकीइच्छाकरताहुआ तिनस र्वभूतोंकूंसुखकीप्राप्तिकरणेवासतै किसीप्रसंगपाइकैतासभाविषे याप्रकारकावचनकहताभया ॥ जोवस्तुअत्यंतदुर्लक्ष्यत्वरूपकरिकैकथ नकऱ्याहै ॥ तथा जोवस्तु भूमारूपकरिकैवर्णनकऱ्याहै ॥ तथा जोवस्तु सर्वदेहधारीजीवोंकूं प्रत्यक्षरूपकरिकैप्रसिद्धहै ॥ सोवस्तु सर्वअ नात्मपदार्थोंतैं निरतिशयप्रीतिकाविषयहै ॥ याकारणतैं तावस्तुकूं आत्मा याशब्दकरिकैकथनकरेहै॥तथा ताआत्मवस्तुकूं अहंकारा दिकोंतैंपरे कथनकरे हैं॥ और अनित्यफलकीप्राप्तिकरणेहाराजोकर्म है॥ताकर्मकानाम पाप्माहै॥तापाप्मानामा कर्मोंकाआश्रयभूतजो यहस्थूलसूक्ष्मशरीरहै ॥ तिनदोनोंशरीरोंकेसंगतैं सोआत्मादेव रहितहै ॥ याकारणतैं ताआत्मादेवकूं अपहतपाप्मा यानामकरिकैकथन करेहै॥और सोआत्मादेव जरा मरण शोक मोह क्षुधा पिपासा याषट्ऊर्मियोंतैंरहितहै ॥काहेतैं जरा मरण जन्म इत्यादिक यास्थूलशरी रकेधर्म हैं॥ और शोक मोह राग इत्यादिक मनकेधर्म हैं ॥और क्षुधा पिपासा यहदोनों प्राणकेधर्म हैं॥तिनजरामरणादिकधर्मोंविषेकोई

भी आत्माकाधर्मनहीं है ॥ याकारणतैं ताआत्मादेवकूं श्रुतिभगवती विजर विमृत्यु विशोक विजिघत्स अपिपास इत्यादिकनामोंकरिकैकथनकरेहै॥और ताआत्मादेवका इच्छारूपकाम सत्यहै ॥ तथा ज्ञानरूपसंकल्पसत्यहै॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताआत्मादेवकूं सत्यकाम सत्यसंकल्प यानामकरिकैकथनकरे है॥काहेतैं देह मन प्राण यातीनोंकेअध्यासरूपसंबंधतैं याआत्मादेवकूं जन्ममरणादिकसंसारकीप्राप्तिहोवेहै॥तासंसारकालविषे यहआत्मादेव जितनीकीइच्छारूपकामनाकरेहै॥तथा जितनैंकीज्ञानरूपसंकल्पकरे है॥तेसंपूर्णकामना तथासंकल्प बाधितअर्थविषयकहोणेतैं मिथ्याहीहोवै हैं ॥ और आत्मज्ञानकरिकै जभी तिनदेहमनप्राणादिकोंकाबाधहोवेहै॥तभी तेइच्छासंकल्पादिक प्रथमतौ उत्पन्नहीनहींहोवै हैं॥और ताज्ञानअवस्थाविषे जोकदाचित् बाधितानुवृत्तिकरिकै तेइच्छादिक उत्पन्नभी होवै हैं॥तौभी तेइच्छादिक मिथ्याहोवैनहीं ॥काहेतैं ताज्ञानकालविषे सोविद्वान्पुरुष ताइच्छासंकल्पादिकसर्वजगत्कूं आत्ममात्ररूपकरिकैहीअनुसंधानकरे है।अधिष्ठानआत्मातैंभिन्नरूपकरिकै तिनइच्छादिकोंकूंदेखेनहीं।और तेइच्छासंकल्पादिक आपणीउत्पत्तितैंपूर्वभी सत्मात्ररूपही हैं॥याकारणतैं ताआत्मादेवके इच्छासंकल्पादिकसत्यरूपहैं॥ और सोआत्मादेव यासंसारकेसर्वपदार्थोंतैंरहितहै॥तथाबुद्धिआदिकोंतैंविलक्षणहै॥ऐसाआत्मादेव याअधिकारीपुरुषोंकूं अवश्यजानणेयोग्यहै।ताआत्माकेजानणेकायहप्रकारहै।यहअधिकारीपुरुष प्रथम ब्रह्मचर्यादिकसाधनसंपन्नहोइकै ब्रह्मवेत्तागुरुकेसमीपजावै॥ तिसतैंअनंतर प्रमाणगतअसंभावनाकीनिवृत्तिकरणेवासतै सोअधिकारीपुरुषताब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं वेदांतवचनोंकूंश्रवणकरै॥तिसतैंअनंतर प्रमेयगतअसंभावनाकीनिवृत्तिकरणेवासतै यहअधिकारीपुरुष तिनवेदांतवचनोंकेअर्थकामननकरै ॥ तिसतैंअनंतर विपरीतभावनाकीनिवृत्तिकरणेवासतै यहअधिकारीपुरुष तामननकरेहुएअर्थविषे चित्तकेवृत्तियोंकाप्रवाहरूप निदिध्यासनकूंकरै ॥ इहांवेदांतशास्त्र जीवब्रह्मकेअभेदकाप्रतिपादकहै अथवा भेदकाप्रतिपादकहै याप्रकारकेसंशयकानाम प्रमाणगतअसंभावनाहै।और यहप्रत्यक्आत्मा ब्रह्मतैंअभिन्नहै अथवा भिन्नहै इत्यादिकसंशयोंकानाम प्रमेयगतअसंभावनाहैऔर परिपूर्णआत्माकूंपरिच्छिन्नजानणा इत्यादिकोंकानाम विपरीतभावनाहै ॥ इसप्रकार जोअधिकारीपुरुष श्रवणादिकसाधनोंकरिकै

॥ ४ ॥

तिसआत्मादेवकूंसाक्षात्कारकरेहै॥सोविद्वान्पुरुष सर्वात्मभावकीप्राप्तिकरिकै सर्वभेदतैंरहितहुआ भूरादिकसर्वलोकोंकूंप्राप्तहोवेहै॥तथा तिनभूरादिकलोकोंविषेवर्त्तमान सर्वभोगोंकूंप्राप्तहोवै है॥काहेतैं सोविद्वान्पुरुष तिनसर्वलोकोंकूं तथातिनसर्वभोग्यपदार्थोंकूं आपणाआत्मारूपकरिकैजाने है॥यासर्वात्मज्ञानही तिनसर्वपदार्थोंकीप्राप्ति है॥हेशिष्य॥इसप्रकारकावचन जभी ताप्रजापतिब्रह्मानैं सभाविषेस्थितहोइकै कथनकऱ्या॥तभी ताब्रह्माकेवचनकूं देवता तथा असुर दोनों श्रवणकरतेभये ॥शंका॥हेभगवन्॥ आपणेआपणेलोकविषेस्थितजेदेवताहैं तथाअसुरहैं ॥ तेदेवता तथा असुर ताब्रह्माकेवचनकूं किसप्रकार श्रवणकरतेभये ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ताब्रह्माकीसभाविषेताब्रह्माके वामभागकीतरफ तथादक्षिणभागकीतरफ अनेकसहस्रदेवता तथाअसुर रहे हैं ॥तहां असुर देवतावोंतैंज्येष्ठहैं॥यातैं तेअसुर ताब्रह्माकेदक्षिणहस्तकीतरफरहे हैं ॥ और देवता तिनअसुरोंतैंकनिष्ठहैं॥यातैं तेदेवता ताब्रह्माके वामहस्तकीतरफरहे हैं॥तहांश्रुति॥ द्वयाहवैप्राजापत्याज्यायांसोऽसुराः कनीयांसोदेवाः॥अर्थयह॥असुर तथादेवता दोनों प्रजापतितैंउन्पन्नहुएहैं॥तिनोंविषे असुरतौ ज्येष्ठहैं ॥ और देवता कनिष्ठहैं ॥ १ ॥ केसे हैं तेदेवता तथा असुर॥अत्यंततेजवालेब्रह्माविषे जिनोंकेनेत्रोंकीदृष्टिलागी है॥तथा परस्परविरोधकरिकैयुक्तहैं ॥ याकारणतैं ताब्रह्माकीसभाविषे तेदेवतातौ असुरोंकूंनहींदेखते ॥ और तेअसुर देवतावोंकूंनहीं देखते॥हेशिष्य॥इसप्रकार जभी ताब्रह्माकी सभाविषे ताब्रह्माकेमुखतैं मोक्षकेसाधनकूंप्रकाशकरणेहारेवचन निकसै ॥ तभीतिनब्रह्माकेवचनोंकूं तेसभावासीदेवता तथाअसुर श्रवणकरतेभये॥ तिसतैंअनंतर तेदेवतातौतीनलोकवर्तिंसर्वदेवताओंकेप्रति सावार्त्ता कहतेभये॥ और तेअसुरतौ तीनलोकवर्त्तिंसर्व असुरोंकेप्रति सावार्त्ता कहतेभये ॥ तहां सर्व देवताओंकाराजाइंद्र तावार्त्ताकूंश्रवणकरिकै आपणे सर्वदेवताओंकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेदेवताओ ॥ ब्रह्माकेमुखतैं जोयहवार्त्ता निकसी है ॥ तावार्त्ताकूं हमारेशत्रुअसुर जैसे नहींजानिसकै ॥ ऐसाकोईप्रयत्न तुमोनैं करणा ॥ इसप्रकार सोसर्वअसुरोंका राजाविरोचनभी तावार्त्ताकूंश्रवणकरिकै आपणेसर्वअसुरोंकेप्रति याप्रकारकावचनकहताभया ॥ हेसर्वअसुरो ॥ ब्रह्माकेमुखतैं जोयहवार्त्ता निकसी है ॥ तावार्त्ताकूं हमारेशत्रुदेवता जैसे नहींजानिसकै ॥ ऐसा

कोईप्रयत्न तुम्हनैंकरणा ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार सोइंद्र तथाविरोचन आपणेआपणेअनुचरोंकेप्रति तावार्त्ताकेप्रगटकरणेका निवारणकर तेभय ॥ तिसतैंअनंतर देवराजइंद्रता आपणेदेवताओंकेसाथ तथाविरोचन आपणेअसुरोंकेसाथ याप्रकारकामंत्र करताभया॥हेबुद्धिमान् अनुचरो ॥ जिसआत्माकेज्ञानतैं हम विनाहीप्रयत्नतैं सर्वलोकोंकूंप्राप्तहोवैं॥तथा तिनसर्वलोकवर्तिभोग्यपदार्थोंकूंप्राप्तहोवैं॥ऐसाआत्मा काज्ञान हमारेकूं अवश्यकरिकै संपादनकरणेयोग्य है ॥ परन्तु आत्मज्ञानकीप्राप्तिवासतैं जोकदाचित् हमसर्व आपणेलोककापरित्याग करिकै ताब्रह्माकेसभाविषेजावैंगे॥तोहमारेछिद्रोंकूंसर्वदादेखणेहारे जोहमारेशत्रुहैं॥तेहमारेशत्रु याहमारेत्रिलोकीकेराज्यकूं आइकैआपणेव शकरिलेवैंगे ॥ यातैं जैसे कोईपुरुष आपणेमूलधनकीवृद्धिकरणेवासतैं किसीव्यापारविषेप्रवृत्तहोवै ॥ और ताव्यापारविषे तापुरुषका सोमूलधनभीनष्टहोजावै ॥ तैसे याप्रकारकान्याय हमारेविषेभीप्राप्तहोवैगा ॥ यातैं आपणेराजकापरित्यागकरिकै हमसर्वोंकूं ब्रह्मलोक विषे जाणायोग्यनहीं है॥ किंतु हमसर्वोंविषे कोईएक बुद्धिमान्पुरुष ताब्रह्मलोकविषेजावै ॥ जोबुद्धिमान्पुरुष ताब्रह्मातैं आत्मज्ञानकाउ पदेशलैके हमसर्वोंकेप्रति गुरुरूपहोइकै ताआत्मज्ञानकाउपदेशकरै॥हेशिष्य ॥ इसप्रकार तेदेवता तथाअसुर आपणेआपणेविषे परस्पर मंत्रकरिकै तिनदेवताओंविषेतौ देवराजइंद्र निकसताभया ॥ और तिनअसुरोंविषे विरोचनराजा निकसताभया ॥ सोदेवराजइंद्र तथा विरोचनराजा दोनों कैसे हैं ॥ बलबुद्धिआदिकगुणोंकरिकैयुक्तहैं ॥ तथाधैर्यवान् हैं ॥ तथा सर्वलोकविषेयशवाले हैं ॥ तथा दोनों ब्रह्मविद्याकेप्राप्तिकी इच्छावाले हैं ॥ तथा दोनों अत्यन्त अभिमानयुक्त हैं ॥ तथा तेदोनों परस्पर जीतणेकीइच्छावाले हैं ॥ ऐसे इंद्र तथा विरोचन दोनों समिदादिकपदार्थोंकूं हस्तविषेग्रहणकरिकै एकहीकालविषे घटकुटीप्रभातन्यायकीरीतिसैं ताब्रह्मकेसमीपजातेभये॥ ताघटकुटीप्रभातन्यायका यहअर्थ है ॥ नदीकेतीरविषे स्थितजाकुटी है ॥ जिसकुटीविषेस्थितहोइकै राजाकेभृत्य लोकोंतैं अन्नादिक पदार्थोंका महसूलल्लेवै हैं ॥ ताकुटीनाम घटकुटी है॥ ताघटकुटीविषेस्थित राजाकेभृत्योंकेप्रति महसूलदियेतैंविनाही आपणेदेशविषे जाणेकी इच्छाकरतेहुए कोईकवणिक्पुरुष ताकुटीकेमार्गका परित्यागकरिकै किसीदूसरेमार्गविषे रात्रिकूंचलतेभये ॥ तिनवणिक्

पुरुषोंकूं दैवयोगतैं तामार्गकाविभ्रमहोइकै तिसीघटकुटीकेसमीपआइकै प्रभातहोताभया॥ याकानाम घटकुटीप्रभातन्यायहै॥ताघटकुटी प्रभातन्यायकीरीतिसैं सोदेवराजइंद्र तथाअसुरोंकाराजाविरोचन दोनों एकहीकालविषे ताब्रह्माकेसमीपआवतेभये॥ और यहवार्त्ताहमारे शत्रु नहींजानैं याप्रकारकीजाइच्छा तिनोंनैं करीथी।सातिनोंकीइच्छा पूर्णनहींहोतीभई।हेशिष्य।सोइंद्र तथाविरोचन दोनों आपणेआपणे कार्यकीसिद्धिकरणेविषे अत्यंतबुद्धिमान्थे ॥ यातैं अंतरविषेपरस्परशत्रुभावराखतेहुएभी बाहरसैं आपणेभ्राताकीन्याईं परस्परस्नेहकरते भये ॥ और तेइंद्रविरोचनदोनों ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिवासतैं ताब्रह्माकेपादोंऊपर दंडवत्प्रणामकरिकै ताब्रह्माकेप्रति ताब्रह्मविद्याकाप्रश्न करतेभये ॥ और सर्वभूतप्राणियोंतैं पूर्वउत्पन्नभयेजेमनुआदिकहैं।तिमनुआदिकोंतैं भीपूर्वउत्पन्नभया जोचतुर्मुखब्रह्माहै॥सोब्रह्मा तिन दोनोंकेअंतरकेसर्वआभिप्रायकूंजानिकै तिनदोनोंकेगर्वादिकदोषोंकीनिवृत्तिकरणेवासतैं बत्तीस ३२ वर्षपर्यंत किसीकार्यांतरविषे संलग्नपु रुषकीन्याईं स्थितहोताभया॥ और सोब्रह्मा तिनदोनोंकेवचनोंकूंश्रवणकरताहुआभी नहींश्रवणकरतेकीन्याईं स्थितहोताभया ॥ हेशि ष्य ॥ इसप्रकार ताब्रह्मानैंकन्याजो उपेक्षारूपनिरादर तानिरादरकूंप्राप्तहुए तथासर्वभोगोंतैंरहितहुए तेइंद्रविरोचनदोनों ताब्रह्माकेसमीप स्थितहोतेभए ॥ जैसे यालोकविषे महाराजाकेस्नेहकापात्रभूत जोकोईपुरुषहै॥तिसपुरुषके किसीमहान्अपराधकूंदेखिकै जभी सोमहा राजा तापुरुषकीउपेक्षाकरिदेवै है ॥तभी सोदोषवान्पुरुष ताउपेक्षारूपनिरादरकूंप्राप्तहुआ तथासर्वभोगोंतैंरहितहुआ तथाताराजाकेमुख कूंसर्वदादेखताहुआ महान्ग्लानिपूर्वक ताराजाकेसमीपनिवासकरैहै ॥ तिसीप्रकार तेइंद्रविरोचनदोनों ताब्रह्माकेसमीप निवासकरते भये॥हेशिष्य॥सायंकालविषे तथाप्रातःकालविषे करणेयोग्यजेभोजनादिकहैं ॥ तेभोजनादिककियाभी तिनदोनोंकी नियमपूर्वक नहीं होतीभई ॥ जभी भोजनादिकभी तिनदोनोंकूं नियमपूर्वक नहींप्राप्तहोतेभये ॥ तभी स्त्रीसंभोगादिकोंकेप्राप्तिकीक्याआशाहै ॥ हेशिष्य॥इसप्रकार तेइंद्रविरोचनदोनों बत्तीसवर्षपर्यंत ब्रह्मचर्यधर्मकूंपालनकरतेभये ॥ तथा यहब्रह्माकभीहमारेऊपरअनुग्रहकरैगा याप्र कारकीइच्छाकरिकै सर्वदा ताब्रह्माकेमुखकीतरफदेखतेभये।तिनबत्तीसवर्षोंकेव्यतीतहुएतेअनंतर सोब्रह्मा तिनदोनोंकेमुखकीतरफदेखना

भया॥तथा सोब्रह्मा तिनदोनोंकेप्रति याप्रकारकावचनकहताभया ॥ हेइंद्र हेविरोचन तुम्हारेभोगणेयोग्य जेस्वर्गादिकलोकोंकेस्थूल भोगहैं,तिनस्थूलभोगोंतैंरहिततथामहानदुःखकरिकेप्राप्तहोणेयोग्यजोयहब्रह्मलोकहै।ताब्रह्मलोकविषेमहानदुःखपूर्वकआइकै तुमदोनोंकिस प्रयोजनवासतै निवासकरतेभयेहो ॥हेशिष्य॥इसप्रकार जभी ताप्रजापतिनैं इंद्रविरोचनसैंपूछातभी सोइंद्रविरोचनदोनों । यआत्माऽपहत पाप्मा ॥ इत्यादिकपूर्वउक्तब्रह्माकेवचनकापाठकरिकै ताब्रह्माकेप्रति याप्रकारकावचन कहतेभये ॥ हेभगवन् ॥ याअधिकारिपुरुषोंकूं आत्माकेज्ञानतैं सर्वलोकोंकी तथातिनसर्वलोकवर्तिभोग्यपदार्थोंकी प्राप्तिहोवै है ॥ याप्रकारकावचन पूर्वआपनैं सभाविषेकह्याथा ॥ ताआपकेवचनकूं श्रवणकरिकै तिसआत्माज्ञानकेप्राप्तिकीइच्छाकरतेहुए हमदोनों आपकेसमीप बत्तीसवर्षपर्यंत निवासकरतेभये हैं ॥ यातैं आप कृपाकरिकै हमारेप्रति ताअत्मज्ञानकाउपदेशकरो ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकावचन जभी ताइंद्रविरोचननैं ब्रह्माके प्रतिकह्या।तभी मंदमंदहंसताहुआ सोप्रजापति तिनदोनोंकेप्रति प्रथमजाग्रत अवस्थाकेसाक्षीआत्माका चक्षुविषेस्थितरूपकरिकै उपदेश करताभया ॥ ब्रह्माउवाच॥हेइंद्र हेविरोचन ॥ याअधिकारीपुरुषोंनैं शास्त्रसंस्कारयुक्तबुद्धिकरिकै चक्षुविषे जोपुरुषदेखताहै ॥ सो चक्षु स्थपुरुषही आत्माहै॥तथा सोचक्षुस्थपुरुषही अपहतपाप्माविजर विमृत्यु विशोक विजिघत्स अपिपास सत्यकाम सत्यसंकल्प इत्या दिस्वरूपहै॥तथा सोचक्षुस्थपुरुषही भयतैंरहितनिर्गुणब्रह्मरूपहै॥हेशिष्य॥जैसे गुड यद्यपि स्वभावतैंमधुरहीहोवैहै ॥ तथापि जिनपुरु षोंकेरसनविषेपित्तदोषहोवैहै ॥ तेपुरुष तामधुरगुडकूंभी कटुरूपकरिकैग्रहणकरैहैं॥तैसे सोप्रजापतिकावचन यद्यपि आत्माकेवास्तवस्व रूपकाप्रतिपादकहै ॥ तथापि आपणैविषयसंस्काररूपदोषकेवशतैं तेइंद्रविरोचनदोनों ताब्रह्माकेवचनका कोईदूसराअर्थकल्पनाकरिकै ताब्रह्माकेप्रति याप्रकारकावचन कहतेभये ॥ हेभगवन्॥याशरीरकाप्रतिबिंबरूपजोछायाहै॥ साछायाही ताचक्षुविषेदेखणेमैंआवै है ॥ यातैंआपनैंताचक्षुविषेस्थितछायाकूंहीआत्मारूपकरिकैकथनकऱ्याहै । ताछायाआत्माकास्वरूपहमआपणीबुद्धिकेबलतैंताचक्षुतैं भिन्न स्थल विषेभीजानतेहैं।काहेतैं जैसे चक्षुविषे सोछायारूपआत्मा प्रतीतहोवैहै ॥ तैसेस्वच्छदर्पणविषे तथास्वच्छजलविषे तथास्वच्छखड्ग

विषेभीसोछायारूपआत्माप्रतीतहोवैहै ॥ हेभगवन् ॥ पूर्वआपनैयहवचनकह्याथा ॥ दक्षिणचक्षुविषेजोपुरुषदेखणैमैंआवै है ॥ सोपुरुषही आत्माहै ॥ सोयहआपकावचन द्रष्टापुरुषकेअभिप्रायकरिकैसंभवैनहीं ॥ काहेतैं यालोकविषे जिसपुरुषकूं आपणीछायाकेदेखणेकीइच्छा होवैहै ॥ सोपुरुषदर्पणादिकोंतैंविना केवलआपणीचक्षुविषे आपणीछायाकूंदेखिसकतानहीं ॥ किंतुसोपुरुष दर्पणादिकोंविषेही आपणी छायाकूंदेखिसकैहै ॥ यातैंहमोनैंकथनकरेजे दर्पण जल खड्ग आदिकोंविषेस्थितछायारूपआत्माहै ॥ तथाआपनैंकथनकऱ्याजो चक्षु विषेस्थितछायाआत्माहै ॥ तिनसर्वछायाआत्मावोंविषे कौनछायाआत्माग्रहणकरणा ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकावचन जभीताइंद्रविरो चननै आपनैंपंडितपणेकेअभिमानकरिकै ताप्रजापतिकेप्रतिकथनकऱ्या ॥ तभी सोप्रजापति तिनदोनोंकेभ्रांतिकूंजानताहुआभी तिनों केभ्रांतिकीउपेक्षाकरिकै आपणेयथार्थअनुभवकेअनुसार तिनदोनोंकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेइंद्रविरोचन ॥ सोआनंद स्वरूपआत्मा तिनदर्पणादिकसर्वउपाधियोंविषे साक्षीरूपकरिकैप्रतीतहोवै है ॥ यातै सोआनंदस्वरूपआत्मातिनदर्पणादिकसर्वउपाधियों विषे विद्यमानहै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारसोब्रह्मा ताइंद्रविरोचनकेप्रति आत्माकाउपदेशकरिकै आपणेमनविषेयाप्रकारकाविचारकरता भया ॥ याइंद्रविरोचनकेप्रति हमनैं आनंदस्वरूपस्फुरणकाही आत्मारूपकरिकैउपदेशकऱ्याथा ॥ परंतु याइंद्रविरोचनकूंआपणेबुद्धिके दोषतैं जैसेप्रथमहमारेउपदेशतैं आत्माकाबोधनहींभयाथा॥तैसेयादूसरीवारउपदेशतैंभी इन्होंकूंताआत्माकाबोधहुआनहीं॥ किंतु हमारे दोनोंउपदेशतैं इन्होंनैंछायाकूंहीं आत्माजान्याहै ॥ याप्रकारका आपणेमनविषेविचारकरिकै सोब्रह्मा तिनदोनोंकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेइंद्रविरोचन जलकरिकैपूर्णजोयहशरावनामा मृत्तिकाकापात्रहै ॥ ताशरावविषे तुमदोनों आपणेआत्माकूंजाइकैदेखो ॥ ताशरावविषेजिसवस्तुकूं तुमदेखो ॥ सोवस्तु तुमपुनःहमारेप्रतिआइकैकथनकरो ॥ हेशिष्य ॥ ताब्रह्मानैं इंद्रविरोचनकेप्रति जोयाप्रकारकावचन कथनकऱ्याहै ॥ तावचनकहणेविषे ताब्रह्माकायहअभिप्रायहै ॥ दर्पणजलादिकउपाधियोंविषेस्थितजोछायाहै ॥ साछायानित्यहैनहीं॥किंतुतिनदर्पणादिकउपाधियोंकेभेदकरिकैसाछाया परिणामीहै ॥ यातैं घटपटादिकपदार्थोंकीन्याईंताछायाविषेअना

त्मरूपता स्पष्टहीहै ॥ और सोस्फुरणरूपसाक्षी अंतरबाहरसर्वत्रपरिपूर्णहै ॥ यातैंसोस्फुरणरूपसाक्षीही आत्मारूपहै ॥ याप्रकारसाक्षी आत्माविषे तथाछायाविषे महान्विशेषताहै ॥ ताविशेषताकूं यहदोनोंनहींग्रहणकरतेभयेहैं ॥ काहेतैं यादोनोंकूंआपणेपंडितपणेका बहुतअभिमानहै ॥तथापरस्परद्वेषकरिकैइनदोनोंकाचित्त मलिनहुआहै ॥याकारणतैंयहदोनों हमारेउपदेशतैं तास्फुरणरूपसाक्षीआत्मा कूंनहींजानतेभयेहैं ॥ किंतुउलटा छायाकूंहीआत्मामानिकै यहदोनोंदर्पणादिकोंविषेस्थित छायाआत्मावोंविषे कौनछायाआत्मा ग्रहण करणा याप्रकारकेसंशयकूंप्राप्तहुएहैं ॥ जोमैं इनदोनोंकेप्रतियाप्रकारकावचनकहोंगा ॥ हमनैंतुम्हारेप्रतिजोआत्माकास्वरूप उपदेशक च्याहै ॥ ताहमारेउपदेशकूंतुमोनैं यथार्थग्रहणनहींकऱ्या ॥ किंतुताहमारेउपदेशकूं तुमोनैंविपरीतग्रहणकऱ्याहै ॥ याप्रकारकावचनजोमैं इनदोनोंकेप्रतिकहोंगा ॥तोइनदोनोंकामानभंगहावैगा॥ तामानकेभंगहुए इनदोनोंकूंमहान्लज्जाकीप्राप्तिहोवैगी ॥तालज्जाकरिकैइन्होंकी बुद्धि कुंठितहोइजावैगी ॥ ताकुंठितबुद्धिकरिकै इन्होंकूंहमारेवचनकाअर्थ किंचित्मात्रभीनहींप्रतीतहोवैगा ॥ यातैंतुमोनैं हमारेउपदेशकूं विपरीतग्रहणकऱ्याहै याप्रकार इन्होंकीभ्रांतिकूंप्रगटकरिकै पुनःइन्होंकेप्रतिआत्माकाउपदेशकरणा हमारेकूंयोग्यनहींहै॥ किंतु इनदोनों अभिमानियोंकेप्रति मैंकिसी उपायकरिकै ताआत्माकाबोधकरौं ॥ काहेतैं शास्त्रविषे याप्रकारकानियमकह्याहै ॥ जिसप्रकारकी शिष्यकीबुद्धिहोवै ॥ तिसीप्रकारकेबुद्धिकूंग्रहणकरिकैयहगुरु ताशिष्यकेप्रतिबोधकरै ॥ शिष्यकेबुद्धिकीउपेक्षाकरिकै यहगुरु ताशिष्य केप्रतिबोधकरैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ उत्तम मध्यम मंद याप्रकारकेभेदकरिकै शिष्य तीनप्रकारकेहोवैहै ॥ तहां जिसशिष्यविषे सत्त्वगुणतौ अधिकहोवैहै ॥ और रजो तमोगुण अल्पहोवैहै ॥ सोशिष्य उत्तमकह्याजावैहै ॥ और जिसशिष्यविषे रजोगुणअधिक होवैहै ॥ और सत्वगुण तमोगुण अल्पहोवैहै ॥ सोशिष्यमध्यमकह्याजावैहै ॥ और जिसशिष्यविषे तमोगुणअधिकहोवैहै ॥ और सत्त्व गुण तथारजोगुण अल्पहोवैहै ॥ सोशिष्यमंदकह्याजावै और उत्तम मध्यम मंद यहतीनप्रकारकोशिष्यभी बुद्धिकीतीक्ष्णताकरिकै तथाबुद्धिकीमध्यमताकरिकैतथाबुद्धिकीमृदुताकरिकै तीनतीनप्रकारकेहोवैहैं॥तिनशिष्योंविषे॥जितजितशिष्यकी जैसीजैसीबुद्धिहोवै ॥

तितातितातिशिष्यके तैसीतैसीबुद्धिकूंग्रहणकरिकैही यागुरुनैं बोधकरणा ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकेअभिप्रायकूंमनविषेराखिकै सोप्रजापति ताइंद्रविरोचनकेप्रति दर्पण जल चक्षु आदिकसर्वउपाधियोंविषे सोआत्माव्यापकहै याप्रकारकाउत्तरकहताभया॥हमनैंतुम्हारेप्रति प्रत्यक् वस्तुकाउपदेशकऱ्याहै ताकूंनजाणिकै तुम अनात्मछायाकूं किसवासतैंआत्मामानतेहो याप्रकारकाउत्तर सोब्रह्मा तिन्होंकेप्रति नहीं कहताभया ॥ और तिसीअभिप्रायकूं अंगीकारकरिकै सोप्रजापति तिनदोनोंकेप्रति तुमदोनों जलकरिकैपूर्णशरावविषे आपणेकूंदेखो याप्रकारकाउपदेशकरताभया॥ हेशिष्य ॥ताब्रह्माकेउपदेशकूंअंगीकारकरिकै तेइंद्रविरोचनदोनों तहांतैंजाइकै शरावविषेआपणेकूंदेखते भये ॥ ताशरावविषेआपणेकूंदेखिकै तेदोनों पुनः ताप्रजापतिकेसमीपजातेभये ॥ तिनदोनोंकूंआयादुआदेखिकै सोप्रजापति तिनदोनों केप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेइंद्रविरोचन ॥ तुमदोनोंनैं याजलयुक्तशरावविषे आपणेप्रतिबिंबकेदेखणेकरिकै किसतत्त्वकूं निश्चयकऱ्याहै॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकावचन जभी ताप्रजापतिनैं ताइंद्रविरोचनकेप्रतिकह्या॥तभी जैसे मूढबालक आपणेअभिप्रायकूं पिताकेआगे कथनकरै है॥तैसे तेइंद्रविरोचनदोनों ताप्रजापतिकेआगे याप्रकारकाआपणाअभिप्रायकथनकरतेभये॥हेभगवन्॥पादतैंलैकै मस्तकपर्यंत नखकेशादिकोंकरिकैयुक्त जोयहहमाराशरीरहै ॥ ताशरीररूपआत्माकूंही हमदोनों याशरावविषेदेखतेभये हैं ॥ हेशिष्य इसप्रकारकावचन जभी ताइंद्रविरोचननैं प्रजापतिकेप्रतिकथनकऱ्या ॥ तभी सोप्रजापति तिनोंकेभ्रांतियुक्तवचनकूंश्रवणकरिकै आपणे उपदेशकरणेकेप्रयत्नकूं निष्फलमानिकै बहुतखेदकूंप्राप्तहोताभया॥तिसतैंअनंतर पुनः तिनदोनोंकेबोधकरणेवासतैं सोप्रजापति आपणे चित्तविषे याप्रकारकाविचार करताभया ॥ याइंद्रविरोचनकेबुद्धिकूंमोहकीप्राप्तिकरणेहारा कोईविचित्रदोषहै॥जिसदोषकेबलतैं यहइंद्रवि रोचन हमारेउपदेशकूं विपरीतहीग्रहणकरे है॥काहेतैं प्रथम हमनैं इन्होंकेप्रति सूक्ष्मरीतिकरिकै चक्षुविषेआत्माकाउपदेशकऱ्याथा॥ता उपदेशतैंयहदोनों छायाकूंही आत्मामानतेभये॥तिसतैंअनंतर हमनैं इनदोनोंकेप्रति मध्यमरीतिकरिकै दर्पणजलादिकसर्वउपाधियोंविषे ताआत्माकाउपदेशकऱ्या ॥ ताउपदेशतैंभी यहदोनों ताछायाकूंहीआत्मामानतेभये ॥ तिसतैंअनंतर हमनैं इनदोनोंकेप्रति मृदुरीति

कारिकै शरावविषेदेखणेकाउपदेशकऱ्या ताउपदेशतैं यहदोनों यास्थूलशरीरकूंही आत्मामानतेभये ॥ परंतु तुमदोनोंयाजलकेशरावविषे आपणेकूंदेखो यातीसरीवारकेउपदेशकरिकै इन्होंकूं पूर्वलेदोवारकेउपदेशतैं इतनाविशेषबोधहुआहै॥ पूर्वइन्होंनैं दर्पणादिकउपाधियोंविषे स्थित आपणीछायाकूंही आत्मामान्याथा॥ और अभी शरावकेदेखणेकरिकै यहदोनों ताछायाकापरित्यागकरिकै यास्थूलशरीरकूंही आत्मामानतेभये हैं॥और इनदोनोंनैं जोछायाआत्माकापरित्यागकऱ्याहै॥सो याप्रकारकेविचारकरिकैकऱ्याहै ॥ भेदतैंरहित जोयहद्रष्टा पुरुषकाशरीर है॥सोशरीरही दूसरेपुरुषोंकेचक्षुविषे तथादर्पणविषे तथाजलादिकोंविषे प्रतीतहोवै है॥ यातैं ताद्रष्टापुरुषकेशरीरविषे भेद नहीं है ॥ और चक्षु दर्पण जल खड्ग इत्यादिकउपाधियोंविषे जाप्रतिबिंबरूपछाया प्रतीतहोवै है ॥ साछायातौ परिमाणकेभेदकरिकै तथारूपादिकगुणोंकेभेदकरिकै भेदवालीहीहोवै है ॥ याकारणतैं साछायाआत्मानहींहै॥ किंतु तिनदर्पणादिकउपाधियोंविषे भेदतैंरहित जोयहस्थूलशरीरहै ॥ सोयहशरीरही आत्माहै ॥याप्रकारकाविचारकरिकै इनदोनोंनैं ताछायाकेआत्मरूपताकापरित्यागकऱ्याहै॥यातैं जैसे छायाविषे नानारूपताकूंदेखिकै यादोनोंनैं ताछायाकेआत्मरूपताकापरित्यागकऱ्याहै ॥ तैसे यहदोनों याशरीरविषेभी नानापणेकूं देखिकै याशरीरकेआत्मत्वबुद्धिकापरित्यागकरो॥ऐसाकोईउपाय मैं करों ॥ सोउपाय हमारेकूंयहप्रतीतहोवैहै ॥ यहइंद्रविरोचनदोनों पूर्व जलशरावविषे जिसशरीरकूंदेखतेभये हैं॥सोइन्होंकाशरीर नखकेशादिकोंकरिकैयुक्तथा ॥ तथा मलिनथा ॥ तथा मलिनवस्त्रोंवालाथा॥ अभी इन्होंकेशरीरकूं नखकेशादिकोंतैंरहितकराइकै तथास्नानकराइकै पुनः ताजलशरावकेदेखणेका उपदेशकरों॥ताआपणेशरीरकूं पूर्वले शरीरतैं विलक्षणदेखिकै यहदोनों ताछायाकीन्याईं याशरीरविषेभी आत्मत्वबुद्धिकापरित्यागकरैंगे॥हेशिष्य॥इसप्रकारकाविचारकरिकै सोभगवान्प्रजापति ताइंद्रविरोचनकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेइंद्र हेविरोचन ॥ तुमदोनों आपणेनखकेशोंकामुंडनक राइकै तथास्नानकरिकै तथासुंदरवस्त्रोंकूंपहरिकै तथाश्रेष्ठअलंकारोंकूंधारणकरिकै पुनः ताजलशरावविषे आपणेआत्माकूंदेखो ॥ ताजल शरावविषे जिसवस्तुकूं तुमदेखो॥सोवस्तु आइकैहमारेआगेकथनकरो॥हेशिष्य॥इसप्रकारकावचन जभी ताप्रजापतिनैं ताइंद्रविरोचनके

प्रतिकथनकऱ्या॥तभी सोइंद्रविरोचन ताब्रह्माकेवचनकूंअंगीकारकरिकै आपणेनखकेशोंकामुंडनकराइकै तथावस्त्रभूषणादिकोंकूंधारणक रिकै पुनः ताजलशरावविषे आपणेआत्माकूंदेखतेभये ॥ तादेखणेकरिकै तेदोनों पुनःभी याशरीरविषेही दृढआत्मरूपताग्रहणकरिकै ताप्रजापतिकेसमीपआइकै याप्रकारकावचन कहतेभये ॥ हेभगवन् ॥ हमदोनोंकूं जैसे यास्थूलशरीरविषेही आत्मरूपतासिद्धहोवै ॥ तैसेहमोनैं याजलशरावविषे आपणेआत्माकूंदेख्याहै ॥ यातैं यास्थूलशरीरहीआत्माहै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकावचन जभी ताइंद्रविषे इंद्रविरोचननेंताप्रजापतिकेप्रतिकह्या॥तभीसोप्रजापतिपुनःभीतिनोंकेभ्रांतिकीदृढतादेखिकै आपणेमनविषे याप्रकारकाविचारकरताभया अल्पबुद्धिवाले जेयहहमारेदोनोंशिष्यहैं ॥ तिनदोनोंकेप्रति हमनैं अन्वयव्यतिरेककरिकै आत्माकेबोधकरणेकाप्रारम्भकऱ्याथा ॥ तहां सर्वपदार्थोंविषे जोआत्माकाअनुगतपणाहै ताकानाम अन्वयहै ॥ और दृश्यपदार्थोंविषे जोआगमापायीरूपताहै ताकानाम व्यतिरेकहै॥ और तुमदोनों आपणेकूंयाजलशरावविषेदेखो यहजोउपदेश हमनैं इनोंकेप्रतिकऱ्याथा ॥ ताउपदेशकरिकैभी हमनैं याशरीरकेनखके शादिकधर्मोंकी आगमापायीतादिखाइकै याशरीरतैं भिन्नकरिकैही आत्माकानिरूपणकऱ्याथा ॥ याशरीरकी आत्मरूपताविषे कोईहमारातात्पर्यथानहीं ॥ परन्तु यादोनोंनैं आपणेबुद्धिकेदोषतैं याशरीरतैं भिन्नरूपकरिकै ताआत्माकूंजान्यानहीं ॥ किंतु उलटा यास्थूलशरीरकूंही इन्होंनैं आत्मारूपकरिकैजान्याहै ॥ यातैं इनदोनोंके भ्रांतिकीनिवृत्तिकरणेवासतै हमारेकूं कोईउपायकऱ्याचाहिये ॥ सोउपाय हमारेकूं यहप्रतीतहोवैहै॥यालोकविषे यादेहरूपआत्माविषे जोजोचंदनलेपादिकसंस्कारकरीते हैं॥तेसर्वसंस्कार छायारूपआत्मा विषेप्रतीतहोवै हैं॥ताशरीरकेसंस्कारोंतैंविनाताछायाआत्माविषे स्वभावतैंकिंचित्मात्रभीसंस्कारहोवैनहीं॥ यातैं चंदनलेपादिरूपवास्तव संस्कारोंकाआश्रयणहोणेतैं याशरीरही आत्माहै।और यहछाया आरोपितधर्मोंकाआश्रयहोणेतैं आत्मारूपनहीं है॥किंवा ॥सुखकाअनुभ वरूपजोफलहै॥सोफलभीयाजीवोंकूं याशरीरकेविद्यमानहुएही होवै है ॥ ताछायाकेविद्यमानहुए सोसुखरूपफल किसीकूंभीप्राप्तहोवैनहीं॥ याकारणतैंभी यहशरीरहीआत्माहै ॥ याप्रकार याशरीरकेउत्कृष्टताकूंविषयकरणेहारीबुद्धिकूंअंगीकारकरिकै इनदोनोंनैं याशरीरविषेही

आत्मरूपताहढकरीहै।यातैंइनोंकेबुद्धिकूंअंगीकारकरिकेही मैंइनोंकीशरीरविषेआत्मत्वबुद्धिछुडाइके स्फुरणरूपमुख्यआत्माविषेइनोंकेबु
द्धिकूंजोडौं ॥ सोमुख्यआत्माविषेबुद्धिकेजोडणेकाप्रकार यहहै जिसस्थूलशरीरकूं इनोंनैं आत्मामान्याहै॥सोस्थूलशरीरकेसाहै॥ स्वभा
वतैंजन्ममरणादिकविकारोंवाला देखणेमैंआवै है ॥ तथा शत्रुवोंतैंभयकूंप्राप्तहुआ देखणेमैंआवै है॥तथा परिच्छिन्नदेखणेमैंआवै है॥ ऐसेअ
नित्यशरीरविषे अमरत्वादिकधर्म जिसस्फुरणकेतादात्म्यसंबंधकरिकेप्रतीतहोवै है॥तास्फुरणकूंभी इनदोनोंनैं हमारेसर्वउपदेशोंविषेदेख्या
है ॥ काहेतैं जिसशरीरकूं इनोंनैं आत्मामान्याहै ॥ तिनशरीरादिकसर्वपदार्थोंविषे यहआत्मा आध्यासिकसंबंधकरिकेअनुगतहै॥तास्फु
रणरूपआत्मातैंविना कोईभीपदार्थ प्रतीतहोवैनहीं॥यातैं जैसे याशरीरविषेस्थितधर्मोंकाछायाविषेअसंभवदेखिकै इनोंनैं ताछायाकाप
रित्यागकरिकै याशरीरकूंही आत्मामान्याहै॥तैसे यास्थूलशरीरविषेभी नहींसंभवहोणेहारे जेअमरत्वादिक स्फुरणकेधर्म हैं तिनधर्मोंका
मैं कथनकरौं जिनधर्मोंकूंदेखिकै यहदोनों आपही याशरीरविषेआत्मत्वबुद्धिकापरित्यागकरैं ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकाविचारकरिकै
सोप्रजापति ताइंद्रविरोचनकेप्रति याप्रकारकावचनकहताभया ॥ हेइंद्रविरोचन ॥ यहस्फुरणरूपआत्मा मरणतैंरहितहै ॥ तथा भयतैंर
हितहै ॥ तथा देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहितहै॥ तथा ब्रह्मरूपहै॥ऐसेआत्मादेवकेस्फुरणस्वरूपकूं तुमोंनैं हमारेसर्वउपदेशोंविषे सामान्य
रूपतैंअनुभवकऱ्याहै ॥हेशिष्य ॥ इसप्रकारकावचन जभी ताप्रजापतिनैं ताइंद्रविरोचनकेप्रतिकह्या॥ तभी सोइंद्रविरोचन ताउपदेशक
रिकैभी पुनः ताशरीरविषेही आत्मरूपतानिश्चयकरतेभये॥और ताप्रजापतिनैं जोआत्माकेअमरत्वअभयत्वादिकधर्म कथनकरेथे॥तेअ
मरत्वादिकधर्मभी यास्थूलशरीरविषेही अंगीकारकरतेभये॥हेशिष्य॥यास्थूलशरीरविषे यद्यपि अमरत्वअभयत्वादिकधर्म संभवतेनहीं ॥
तथापि जिसअभिप्रायकरिकै ताइंद्रविरोचननैं यास्थूलशरीरविषे तेअमरत्वअभयत्वादिकधर्म अंगीकारकरे हैं।ताअभिप्रायकूं तूं श्रवणकर
यालोकविषे जरारोगादिकोंकीनिवृत्तिकरणेहारे जेरसायनरूपऔषधहैं ॥ तथा नानाप्रकारकेमंत्रकल्पादिकउपायहैं॥ तेसंपूर्णरसायनादिक
उपाय याशरीरकूं जरामरणादिकोंतैंरहितकरेहैं ॥ यातैं तिनरसायनादिकउपायोंकरिकै यास्थूलशरीरविषेभी अमरपणासंभवहोइसकेहै ॥

यातैं यास्थूलशरीरकेअमरकरणेवासतै हमोंनैं तेरसायनमंत्रकल्पादिकउपाय अवश्यकऱ्येचाहिये ॥ और जभी याहमारेशरीरविषे तिन
रसायनादिकोंकरिकै अमरपणा सिद्धहोवैगा॥तभी याशरीरविषे अभयपणाभी विनाहींयत्नतैंसिद्धहोवैगा॥काहेतैं यालोकविषे जेजीव मर
णवालेहैं ॥ तिनजीवोंकूंही आपणेमरणकेकारणोंतैंभयकीप्राप्तिहोवै है॥और जोपुरुषअमरहै॥सोपुरुष आपणेशत्रुआदिकोंतैं कदाचित्भी
भयकूंप्राप्तनहींहोता ॥ और यहशरीर जभीअभयहोवै है॥तभी याशरीरविषे ब्रह्मरूपताभी संभवहोइसकैहै॥ काहेतैं व्याकरणकीरीतिसे
ब्रह्मशब्दकाअर्थ वृद्धिवालाहै ॥ और संकोचकेअभावकानाम वृद्धिहै ॥ तासंकोचकीप्राप्ति याजीवोंकूं भयकरिकैहोवै है ॥ भयतैं
रहितपुरुषकूं किसीतैंभीसंकोचहोवैनहीं ॥ अथवा नानाप्रकारकेरूपोंकेधारणकरणेकाजोसामर्थ्यहै ताकानाम वृद्धिहै ॥ याप्रकारकीवृद्धि
भी याशरीरविषे संभवहोइसकैहै ॥ काहेतैं यहपुरुष योगकेबलतैं तथादिव्यऔषधिसेवनकेबलतैं मृग अश्व हस्ती महिष इत्यादिक
शरीरोंकेधारणकरणेविषेसमर्थहोइसकेहै ॥ तथा पर्वतकेसमानआकारके धारणकरणेविषेभी समर्थहोइसकैहै ॥ तथा साक्षात् पर्वतरूपके
धारकरणेविषेभी समर्थहोइसकेहै॥याकारणतैं याशरीरविषेही साब्रह्मरूपतासंभवैहै ॥ किंवा ॥ उपदेशकेप्रारंभकालविषे जोब्रह्माने आ
त्माके अपहतपाप्मा विजर विमृत्यु विशोक विजिघत्स सत्यकाम सत्यसंकल्प इत्यादिकलक्षणकथनकऱ्येथे॥तेसर्वलक्षण योगादिकउपा
योंतैं याशरीरविषेसंभवहोइसकेहै ॥ काहेतैं यहशरीररूपआत्मा तिनरसादिकोंकरिकै जभी जरामरणतैंरहितहोवै है ॥ तभी शोकतैंभीर
हितहोवै है ॥ काहेत यालोकविषे जरामरणादिकविकारोंवालेजीवही सर्वदाशोककूंप्राप्तहोवै है ॥ और मंत्रऔषधादिकोंकेबलतैंयहशरीर
क्षुधापिपासादिकोंतैंभीरहितहोवै है ॥ इसप्रकार जोअधिकारीपुरुष आपणेशरीरकूं रसायनमंत्रादिकउपायोंकरिकै अमरअभया
दिरूपकरै है ॥ सोअधिकारीपुरुष आपणबलकेप्रभावतैं भूरादिकसर्वलोकोंकूं तथा तिनलोकवर्तिसर्वभोग्यपदार्थोंकूं प्राप्तहोवै है ॥ या
अर्थविषे किंचित्मात्रभी संशयनहीं है किंवा याप्रजापतिनैं जोपूर्व हमारेप्रति चक्षुविषे तथाजलशरावविषे आपणीछायादेखणेका
उपदेशकऱ्याथा।ताउपदेशकरिकैभीयाप्रजापतिनैं ताछायाकेदृष्टांतकरिकै याशरीररूपआत्माकूंही जरा मरण पाप शोक भय इत्यादिक

विकारोंतैंरहितकह्याथा॥तात्रह्माकेकहणेकायहअभिप्रायथा॥जैसे यहछाया शस्त्रोंकरिकै तथाअग्निआदिकोंकरिकै नाशकूंप्राप्तहोवैनहीं॥ तथा याछायाकूं पाप शोक भय इत्यादिकविकारभी प्राप्तहोवैनहीं।तैसे यास्थूलशरीरविषेभी जैसेतेमरण पाप शोक भय आदिकविकार नहींप्राप्तहोवैं ॥ ऐसाकोईउपाय याअधिकारीपुरुषोंनैं करणा॥किंवा॥जैसे प्रातःकालविषे तथासायंकालविषे यहछाया वृद्धिकूंप्राप्तहोवै है॥तैसे यहशरीरभी उपायोंतैंवृद्धिकूंप्राप्तहोवै है॥याकारणतैंभी यहशरीरहीआत्माहै॥किंवा॥ जैसे स्वभावतैंनाशतैंरहितहुईभीयहछाया कारणकेनाशतैं नाशकूंप्राप्तहोवै है तैसे स्वभावतैंनाशतैंरहितहुआभीयहशरीर कारणकेनाशतैं नाशकूंप्राप्तहोवै है ॥ किंवाजैसे ताम्र तिबिंबरूपछायाका यहशरीररूपआत्माही कारणहै॥तैसे याशरीररूपआत्माकाभी त्वगादिकसप्तधातुहींकारणहैं।तभी शस्त्रप्रहारादिक बाह्यनिमित्तोंकरिकैतथारोगादिकअंतरनिमित्तोंकरिकै वात पित्त कफ यह तीनदोष क्षोभकूंप्राप्तहोवै हैं॥ तभी तेत्वगादिकसप्तधातुभी क्षोभकूंप्राप्तहोइकै याशरीरकानाशकरेहैं॥ यातैं जैसे याशरीररूपबिंबकीस्थिरताकरिकै प्रतिबिंबरूपछायाकीस्थिरताहोवैहै॥ तैसे यह अधिकारीपुरुष जभीमंत्रऔषधादिकोंकेसेवनतैं शस्त्रअग्निआदिकबाह्यनिमित्तोंकूं तथारोगादिकअंतरनिमित्तोंकूं नहीं उत्पन्नहोणेदेवैहै॥ तभीयाअधिकारीपुरुषके वात पित्त कफ यह तीनदोष क्षोभकूं प्राप्तहोवैनहीं॥तिनदोषोंकेक्षोभतैंविना तेत्वगादिकसप्तधातुभी क्षोभकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और जभी तेत्वगादिकसप्तधातु क्षोभकूंनहींप्राप्तहोवै हैं ॥ तभी यहशरीर दाहछेदनादिकोंकरिकै कदाचित्भी नाशहोवै नहीं ॥ किंवा ॥ योग मंत्र रसायनादिकऔषध इत्यादिकउपायोंकरिकै सिद्धिकूंप्राप्तहुआशरीरहै ॥ सोशरीर अग्निविषेतौ जल कीन्याईं शीतलरहे है ॥ और जलविषे सोशरीर पाषाणकीन्याईं रहे है ॥ और पृथिवीविषे सोशरीर पृथिवीकेसमानरहे है ॥ अथवा जलकेसमानरहेहै और वायुविषे सोशरीर वायुकेसमानरहेहै ॥ और आकाशविषे सोशरीर आकाशकीन्याईंहोवै है॥किंवा॥योगाभ्यास कालविषेयहपुरुष जभी पृथ्वीआदिकपंचभूतोंकीधारणाकरेहै ॥ तभी यापुरुषकाशरीर तापृथ्वीआदिकपंचभूतोंकेसादृश्यताकूंप्राप्त होवै है ॥ याकारणतैं सोशरीर शस्त्रादिकोंकरिकैभी भेदनकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और जैसे बाणादिकोंकरिकैभेदनकूंप्राप्तहुआभीजल

॥ १० ॥

पुनः पूर्वकीन्याईंस्थितहोवै है ॥ तैसे तायोगसिद्धपुरुषकाशरीर बाणादिकोंकरिकैभेदकूंप्राप्तहुआभी पुनःपूर्वकीन्याईं स्थितहोवै है॥या तैं मंत्रऔषध योग आदिकउपायोंकरिकै यास्थूलशरीरविषेभी अजरत्व अमरत्व अभयत्व आदिकधर्मसंभवहोइसकै है॥हेशिष्य॥ याप्र कारकाविचार आपणेमनविषेकरिकै कुबुद्धिकूंप्राप्तहुए तथाअर्थशास्त्रके तथाकामशास्त्रके संस्कारोंकरिकै दूषितहैचित्तजिनोंका ऐसेइंद्र विरोचनदोनों यास्थूलशरीरकूंही आत्मामानतेभये ॥ और तात्रह्माकेउपदेशतैं याशरीरकूंआत्माजानिकै तेइंद्रविरोनदोनों आपणेमन विषे बहुतप्रसन्नहोतेभये ॥ तथा आपणेकूं कृतकृत्यमानतेभये ॥ तिसतैंअनंतर तेइंद्रविरोचनदोनों साप्रजापतिकूंनमस्कारकरिकै तात्रह्म लोकोंतैं आपणेलोकविषेजातेभये ॥ और तिसकालविषे सोप्रजापति मौनकूंधारण करिकैस्थितथा॥याकारणतैं सोत्रह्मा तिनोंकेप्रति जा णेवासतै तथारहणेवासतै किंचित्मात्रभी वचन नहींकहताभया ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार जभी तेइंद्रविरोचन यास्थूलशरीरकूंआत्मामा निकै तात्रह्मलोकतैं आपणे गृहकूंजातेभये ॥ तभी सोत्रह्मा तिनदोनोंकूंजाताहुआदेखिकै आपणेमनविषे याप्रकारकावचनकहताभया ॥ यहदेवतावोंकापतिइंद्र तथाअसुरोंका पतिविरोचन दोनों आपणेकूंपंडितमानते हैं ॥ तथालोकविषेभी यहइंद्रविरोचन महाबल बुद्धिवाले हैं याप्रकारप्रसिद्ध हैं ॥ तथा इनदोनोंकी परस्पर बहुतस्पर्द्धा है॥ तथा पर्वतकेसमानइनोंकूं अभिमान है ॥ याकारणतैं इनदोनोंनैं हमारेप्रति पुनःप्रश्नकऱ्यानहीं॥किंतु याशरीरकूंही आत्मामानिकै यहदोनों हमारेकूंनमस्कारकरिकै शीघ्रही आपणेलोकविषे जातेभये हैं ॥ जोमैं अभी किसीआपणेअनुचरकूं भेजिकै तुमदोनोंकूं आत्माकायथार्थबोधनहींभया यातैं तुम आपणेलोकविषेमतजावो याप्रकारकावचनकहिकै इनोंकूंजाणेतैं निवारणकरौंगा ॥ तौ राजसप्रकृतिवाले यहइंद्रविरोचनदोनों आपणेअभिमानके नाशहुएतैं क्रोधवान्होइकै आपणेजीवनविषेभी आशातैंरहितहोवैंगे ॥ काहेतैं मानकेभंगकरणेहाराजोवचन है ॥ ताअल्पवचनके श्रवणकरिकै भी यहदोनों क्रोधरूपशत्रुके वशकूंप्राप्तहुए हमारेकूंदेखणेविषे आवै हैं ॥ ऐसेइंद्रविरोचनकूं जोमैं मानभंगकरिकै क्रोधवान्करौंगा ॥ तौ क्रोधकूं प्राप्तहुए यहदोनों महायुद्धकरेंगे ॥ कैसे हैं यहदोनों ॥ देवतावोंकी तथाअसुरोंकी जेठी हैं ॥ तिनस्त्रियोंकेपतियों

कूंनाशकरिकै तिनस्त्रियोंकूं विधवाभावकीप्राप्तिकरणेहारेहैं॥तथा मांसकेभक्षणकरणेहारे जेगृध्रादिकजीवहैं तिनोंकूंआनंदकीप्राप्तिकरणेहारे हैं॥तथा साधुस्वभाववालेपुरुषोंकूं भयकीप्राप्तिकरणेहारे हैं॥ऐसेइंद्रविरोचनदोनों क्रोधकूंप्राप्तहोइकै हस्ती अश्व रथ पदाति याचतुरंगसे नाकूंनाशकरणेहारीयुद्धकूंकरैंगे॥ यातैं इनदोनोंकेआत्मज्ञानकेप्रसंगविषे किसीनिमित्ततैंविना अकस्मात्ततैंही सर्वभूतोंकानाश होवैगा॥ सोसर्वभूतोंकानाश मतहोवै॥ याकारणतैं इनदोनोंकूं जाणतैं निवारणकरणा योग्यनहीं हैं॥ शंका॥ हेभगवन्॥ युद्धकेभयतैं ताब्रह्मा तिसइंद्रविरोचनकूं जाणतैं निवारणकऱ्यानहीं॥ यहवार्त्ता ब्रह्मानैं श्रेष्टनहींकरी॥ काहेतैं यादेहकूंआत्माजानिकै तेइंद्रविरोचन जभी आपणेआपणेलोकविषे जावैंगे॥ तभी सर्वजीवोंकेप्रति यादेहात्मवादकाउपदेश करैंगे॥ तादेहात्मवादकूंनिश्चयकरिकै तेसर्वजीव अन र्थकूंप्राप्तहोवैंगे॥समाधान॥हेशिष्य॥तादेहात्मवादतैं सर्वलोकोंकूंनिवृत्तिकरणेवासतै सोप्रजापति तादेहात्मवादियोंकेप्रति याप्रकारका शापदेताभया॥ जिनदेवतावोंकेप्रति तथाजिनअसुरोंकेप्रति तथा जिनमनुष्योंकेप्रति यहइंद्रविरोचन साक्षात्गुरुरूपहोइकै तथापरम्परा गुरुरूपहोइकै यादेहात्मवादकाउपदेशकरैंगे॥ तेसर्वइनोंके शिष्य इसजन्मविषे तथाभावीजन्मविषे श्रेयकेमार्गतैंभ्रष्टहोवैंगे॥ काहेतैं ते मूढपुरुष यादेहकूंहीआत्मामानिकै तादेहकेरक्षण करणेवासतै नानाप्रकारकेउपायकरैंगे॥ तेसर्वउपाय जभी निष्फलहोवैंगे॥ तभी ते मूढपुरुष महानदुःखकूंप्राप्तहोवैंगे॥काहेतैं जैसे ओदनादिरूपपक्वअन्न अथवा खेतिरूपपक्वअन्न नानाप्रकारकेउपायोंकरिकैभी नाशतैंर हितहुआ स्थितहोवैनहीं॥किंतु॥सोपक्वअन्न अवश्यकरिकैनाशकूंप्राप्तहोवै है॥तैसे यहस्थूलदेहभी नानाप्रकारकेउपायोंकरिकैभी नाशतैं रहितहुआ स्थितहोवैनहीं॥ किंतु यहदेह अवश्यकरिकैनाशकूंप्राप्तहोवै है॥ किंवा॥ जिसकालविषे सर्वभूतप्राणियोंकूंधारणकरणेहारी तथामहानृपर्वतोंकरिकैयुक्त यहपृथ्वीभी नाशकूंप्राप्तहोवैगी॥ तथा जलकरिकैपूर्णसप्तसमुद्रभी सूकिजावैंगे॥ तथा तेज वायु आकाश यहतीनोंभी नाशकूंप्राप्तहोवैंगे॥तिसकालविषे जलकेफेनबुदबुदकेसमान यहशरीर किसप्रकारास्थितहोवैंगे॥किंतु तिसकालविषे यहशरी रनहींस्थितहोवैंगे॥ किंवा॥ज्वरादिकव्याधिरूपशत्रु तथामृत्युरूपशत्रु जिसदेहकेअन्नजलकेसाथमिलेहुएरहे हैं॥ तथा रक्तवर्णवालेअंगार ॥ ११

रूपअग्निकेसमान क्षुधारूपदाह जिसदेहकेउदरविषे सर्वदारहे है॥तथा जिसदेहकेबाह्यदेशविषेभी सर्ववृश्चिकादिकभूतरूपदाह सर्वदारहे है॥तथा जिसदेहके शस्त्रअस्त्ररूपमृत्यु बाह्यविचरणेहारेहैं॥और जैसे कदलीवृक्षकास्तंभ त्वचामात्रहोणेतैं निःसारहोवै है॥ तैसे विचा रकियतैंयहदेहभी निःसारहीहोवै है॥ऐसायहस्थूलदेह किसप्रकारअमरहोवैगा॥किंतु यादेहविषे किसीप्रकारकरिकैभी अमररूपतासंभ वैनहीं॥किंवा॥ सर्वजीवोंकायहस्थूलदेह पुण्यपापकर्मरूपनिमित्तकारणतैं उत्पन्नहोवै है॥तथा पृथ्वीआदिकपंचभूतरूपउपादानकारणतैं उत्पन्नहोवै है॥जभी तिनकर्मोंका तथापृथ्वीआदिकभूतोंकाभी नाशहोवैगा।तभी यहदेह किसप्रकार स्थितहोवैगा॥किंतु नहींस्थितहोवै गा॥किंवा॥यादेहका कारणरूपजोकर्महै॥सोकर्म यद्यपि एकशतवर्ष १०० आयुष यामनुष्योंकूंदेवै है।तथापि ताशतवर्षतैं अनंतर सोक र्म अधिकआयुष देवैनहीं॥काहेतैं जगत्केकर्त्ताईश्वरनैं सृष्टिकेआदिकालविषे जैसीजैसीव्यवस्थाकरीहै।तिसीतिसीप्रकार तेकर्मादिक फल कूंदेवैहैं॥यातैं एकशतवर्षतैंउत्तर यादेहविषे सोअमरपणा किसप्रकारहोवैगा॥किंतु नहींहोवैगा॥किंवा।वैद्यकशास्त्रविषे ऋषिलोकोंनैं जेर सायनादिकऔषध कथनकरे हैं।सोकेवल यादेहकेरोगादिकोंकीनिवृत्तिवासतैकथनकरेहैं।यादेहकेअमरकरणेवासतै नहींकथनकरे हैं॥तथा योगाभ्यासकालविषे धारणकरिकैवशकरजे पृथ्वीआदिकपंचभूतहैं॥ तेपंचभूतभी तायोगीपुरुषके बलकीवृद्धिकरणेवासतैंहीहोवै हैं॥ तायोगीपुरुषकेअमरकरणेवासतैहोवैनहीं॥जोकदाचित् रसायनादिकऔषधोंकरिकै तथा पंचभूतोंकीधारणाकरिकै यहदेह अमरहोताहो वै॥ तो जिनपुरुषोंनैं तेरसायनादिकऔषध प्रवृत्तकरे हैं तथा सापंचभूतोंकीधारणाप्रवृत्तकरी है॥तेपुरुष मृत्युकूंनहींप्राप्तहोणेचाहिये॥ और तेरसायनादिकऔषध प्रवृत्तकरणेहारेपुरुषभी मृत्युकूंप्राप्तहोतेभये हैं॥ यातैं तिनरसायनादिकोंविषे यादेहकेअमरकरणेकासामर्थ्य संभवैनहीं॥किंवा॥ यालोकविषे जोजोपदार्थ जन्मवालाहोवै है॥ तिसतिसपदार्थकानाश अवश्यकरिकैहोवै है॥ जैसे घटपटादिक पदार्थ जन्मवालेहैं॥ यातैं तिनोंकानाशभी अवश्यकरिकैहोवै है॥ तसे यहदेहभी जन्मवाला है॥ यातैं यादेहका नाशभीअवश्य करिकैहोवैगा॥ किंवा॥ यहसर्वमनुष्योंकेशरीर पंचवर्षपर्यंततो बाल्यअवस्थावालेहोवै हैं॥ तिसतैंअनंतर षोडशवर्षपर्यंत कुमार

अवस्थावालेहोवे हैं ॥ तिसतैंअनंतर षष्टिवर्षपर्यंत यौवनअवस्थावालेहोवे हैं॥तिसतैंअनंतर वृद्धअवस्थावालेहोवे हैं ॥ इसप्रकार सर्वदेह धारीजीवोंकूं आपणेआपणेदेहकानाश अनुभवकरिकैसिद्धहै ॥ ऐसानाशवान्देह किसप्रकारसैंनित्यहोवैगा॥किंवा॥याजीवोंकामरण या देहकेसाथही उत्पन्नहोवै है॥तादेहकेविद्यमानहुए तामरणकोनिवृत्तकरणेका कोईभीउपायनहींहै ॥ यहवार्त्ता पुराणविषे व्यासभगवान् नैंभीकहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ मृत्युर्जन्मवतांवीर देहेनसहजायते ॥ अद्यवाऽब्दशतांतेवा मृत्युर्वैप्राणिनांध्रुवः ॥ अर्थयह ॥ हेवीर जन्मवाले प्राणियोंकामृत्यु देहकेसाथहीउत्पन्नहोवै है॥सोमृत्यु आजदिनविषेहोवै ॥ अथवा शतवर्षतैंअनंतरहोवै ॥ परंतु जन्मवालेप्राणियोंका मृत्युअवश्यकरिकैहोणाहै ॥ १ ॥ किंवा तामृत्युकोनिवृत्तकरणेका यहएकउपायहै॥ जोपुनः यादेहकाग्रहणनहींहोणा॥याउपायकूंछोडिके दूसराकोई मृत्युकोनिवृत्तकरणेकाउपाय तीनलोकविषेहैनहीं ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभीकहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ मृत्योर्बिभेषिकिंमूढ भीतंमुंचतिकिंयमः । अजातंनैवगृह्णाति कुरुयत्नमजन्मनि॥ अर्थयह ॥ हेमूढ मृत्युतैं तूं क्योंभयकरताहै॥ तुम्हारेकूंभययुक्तदेखिकै क्या यमराजाछोडिदेवैगा ॥ किंतु नहींछोडेगा ॥ जिसपुरुषकाजन्मनहींहोता॥तिसपुरुषकूं सोयमराजा ग्रहणकरतानहीं ॥ यातैं जोतुमारेकूं यमराजातैंछूटणेकीइच्छाहोवै तोजन्मतैंरहितकरणेहारे आत्मज्ञानविषे तूं प्रयत्नकर ॥ १ ॥ ऐसा जन्ममरणकीनिवृत्तिकरणेहारा आत्म ज्ञान यादेहात्मवादियोंकूं अत्यंतदुर्लभहै॥काहेतैं जोयहस्थूलदेह मरणतैंअनंतर श्वानादिकोंकरिकैभक्षणकऱ्याहुआतो विष्ठारूपहोवै है ॥ तथा अग्निविषेदग्धकऱ्याहुआ भस्मरूपहोवै है॥तथा पृथ्वीविषेपूरणकऱ्याहुआ मृत्तिकारूपहोवैहै।ऐसेनाशवान्देहकूं जिनोंनैं आत्मारू पमान्याहै॥ऐसेदेहात्मवादीपुरुष ताआत्मज्ञानकीप्राप्तिवासतै मनकरिकैभी प्रयत्ननहींकरैंगे ॥ किंवा ॥ सर्वदेहात्मवादियोंकागुरुरूप जोयहप्रह्लादकापुत्रविरोचनहै तथादेवराजइंद्रहै तिनदोनोंकादेहभी मरणतैंअनंतर विष्ठाभस्मपृथ्वीरूपअवश्यहोवैगा ॥जभी तिनदोनोंका देहभी याप्रकारकीगतिकूंप्राप्तहोवैगा॥तभी इतरजीवोंकेदेहोंकीक्यावार्त्ता है॥किंवा॥तेमूढचुरुष यादेहकूंहीआत्मामानिकै विवेकसंतोषा दिकगुणोंतैंरहितहोइकै केवलपापकर्मोंकूंही करैंगे ॥ तिनपापकर्मोंकरिकै तेदेहात्मवादीपुरुष परलोकविषे किंचित्मात्रभी सुखकूंनहीं

॥ १२ ॥

प्राप्तहोवैगा ॥ किंतुकेवलदुःखकूंहींप्राप्तहोवैंगे ॥ जिनदुःखोंकूंवाणीकरिकैकहणेविषेभीकोईसमर्थनहींहै ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ याइंद्र करिकैतथाविरोचनकरिकै उपदेशकऱ्याजोदेहात्मवादहै ॥ सोदेहात्मवाद ॥ जिसाजिसजीवकीबुद्धिविषेप्रवेशकरैगा ॥ तेसर्वजीवदोनोंलोक विषे दुःखकूंहींप्राप्तहोवैंगे ॥ यातैंयहदेहात्मवाद महामोहमयहै हेशिष्य इसप्रकार देहात्मवादकरिकैलोकोंकूं अनर्थकीप्राप्तिरूपफलका चिंतनकरिकैभी सोप्रजापतियुद्धकेभयतैं तिनदोनोंकेप्रति किंचित्मात्रभीवचन नहींकहताभया ॥ किंतु सोप्रजापतिमौनकूंधारणकरिकै स्थितहोताभया ॥ तिसतैंअनंतर तेइंद्रविरोचनदोनों आपणेआपणेलोकविषेजातेभये ॥ अबतिनदोनोंविषे प्रथमविरोचनकावृत्तांतानिरू पणकरैहैं ॥ हेशिष्य ॥ देहरूपआत्माकूंजानिकै अत्यंतप्रसन्नहुआ सोविरोचनताब्रह्मलोकतैं शीघ्रहीआपणेअसुरोंकीसभाविषेआवता भया ॥ कैसेहैंतेअसुर ॥ स्वभावतैंहीतामसीहैं ॥ तथारजोगुणकरिकैआवृत हैं ॥ तथा सत्वगुणकेलेशमात्रतैंभीरहितहैं ॥ तथा सर्वदा विचारतैंरहितहै ॥ ऐसेअसुरोंकीसभाविषे सोविरोचन आवृताभया॥ तासभाविषे असुरोंकरिकैबहुतसन्मानकऱ्याहुआ ॥ सोसूर्यकेसमान तेजस्वीविरोचन ऊंचेआसनऊपरस्थितहोताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोमूढात्माविरोचन ताब्रह्मलोकविषे महान्कष्टकरिकैजिसदेहात्मज्ञान कूंग्रहणकऱ्याथा ॥ सोदेहात्मज्ञान तिनसर्वअसुरोंकेप्रति उपदेशकरताभया ॥ तेअसुरताउपदेशतैंपूर्वभी अनेकप्रकारकीकुतर्कोंकरिकै यादेहकूंहीं आत्मामानतथे ॥ तिसीदेहात्मवादकूं गुरुसंप्रदायतैंजानिकै अत्यंतदृढनिश्चयकरतेभये॥हेशिष्य॥इसप्रकार सोविरोचन तिन सर्वअसुरोंकेप्रति ताप्रजापतिकासर्वउपदेशश्रवणकराइकै पुनःयाप्रकारकावचनकहताभया ॥ हेअसुरो ॥ तुमोनैं यादेहरूपआत्माकाही सर्वदापूजनकरणा ॥ यादेहरूपआत्मातैंभिन्न जितनैंकीअग्निब्राह्मणादिकहैं तिनोंकातुमोनैं कदाचित्भीपूजननहींकरणा ॥ काहेतैं याश रीरतैंभिन्न जितनेकीअग्निब्राह्मणादिकहैं ॥ तेसर्वयादेहऊपर उपकारकरैहैं ॥ याकारणतैं तेसर्व यादेहरूपआत्माकेशेषभूतहै ॥ यहदेहरूप आत्माहीं तिनसर्वोंकाशेषीरूपहै ॥ ऐसेदेहरूपआत्माका जोसर्वतैंउत्कृष्टरूपकरिकैज्ञानहै ॥ सोज्ञानहींताआत्माकापूजनहै ॥ और हे असुरो ॥ जिसअधिकारीपुरुषकूं दोनोंलोकोंकेसुखकेप्राप्तिकीइच्छाहोवै ॥ सोपुरुषआपणेगुरुकीन्याईं यादेहरूपआत्माकाहीनानाप्रकार

केदुकूलोंकरिकेपूजनकरे तथासुवर्णकरिकेजडित नानाप्रकारकेरत्नोंकरिकेपूजनकरे ॥ तथाहस्तियोंकेमस्तककेतींनिकसेजेमोतीहैं ॥ तिन मोतियोंकेगुच्छोंकरिके तादेहरूपआत्माका पूजनकरे ॥ तथासूर्यकेसमानतेजवाले नानाप्रकारकेअलंकारहैं ॥ तिनअलंकारोंकरिके ताकापूजनकरे ॥ और कोमलस्पर्शवाले तथासुंदररूपवाले तथासुगंधिवाले ऐसेजेविचित्रमालारूपपुष्पहैं ॥ तिनपुष्पोंकरिके तादेह रूपआत्माका पूजनकरे ॥ औरकर्पूरादिकोंकरिकेयुक्त तथाशीतलजलकरिकेयुक्त जोचंदनहै ॥ ताचंदनकरिकेताकापूजनकरे ॥ तथा शय्या आसन अन्न पान इत्यादिकपदार्थोंकरिके तादेहरूपआत्माकापूजनकरे ॥ इसप्रकार जोपुरुष अनेकप्रकारकेपदार्थोंकरिके श्रद्धाभक्तिपूर्वक यादेहरूपआत्माकापूजनकरेहै ॥ सोपुरुष दोनोंलोकविषैंसुखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं सुखकीइच्छावान्पुरुषनैं यादेह रूपआत्माका अवश्यकरिकेपूजनकरणा ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ प्रत्यक्षनाशवान्जोयहदेहहै ॥ ताकेपूजनकरणेकरिके किसफलकी प्राप्तिहोवैगी किंतुनहींहोवैगी ॥ समाधान ॥ हेअसुरो ॥ रसायनादिकउपायोंकरिकेसिद्धिकूंप्राप्तभयाजोयहदेहहै ॥ तादेहरूप आत्माका कदाचित्भी मरणहोवैनहीं ॥ और जोदेह रसायनादिकउपायोंकरिकेसिद्धिकूंनहींप्राप्तभयाहै ॥ तादेहकीमरणअवस्था यद्यपि विचारहीनमूढपुरुषोंनैंमानीहै ॥ तथापि विवेकीपुरुषोंनैं यहदेह मरणकूंप्राप्तहुआहै याप्रकारकीमरणबुद्धिकरिके तादेहकूं अग्निविषेदाहकरणानहीं ॥ काहेतें जैसेसंग्रामशालाविषे शस्त्रअस्त्रोंकेप्रहारकरिकेपीडितहुआकोईशूरवीर किंचितकालपर्यंत तारथ विषे सर्वचेष्टातैंरहित मूर्छितहुआ शयनकरेहै ॥ तैसेयहदेहभी रसायनादिक सिद्धियोंकेअप्राप्तहुए किंचित्कालपर्यंत मरेहुए कीन्याईं मूर्च्छाकूंप्राप्तहुआशयनकरेहै ॥ परंतु सोदेह मृत्युकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं यादेहरूपआत्माकेबांधवोंनै मरणकीशंकाकरिके तादेहकूं अग्निविषेदाहकरणानहीं ॥ किंतुतिनबांधवोंनैं प्रथमतो तादेहकूंश्रेष्ठजलोंकरिकेस्नानकरावणा ॥ तथा तादेहकूं सुगंधि वालेपुष्पचंदनादिकोंकरिके शोभायमानकरणा ॥ तथा तादेहकूं नानाप्रकारकेवस्त्रोंकरिके तथानानाप्रकारकेमालावोंकरिके शोभा यमानकरणा ॥ तथा तिनबंधुजनोंनैं तादेहकूं विमानऊपरबैठाइके नानाप्रकारकेवादित्रोंकेशब्दसहित बाहरलेजाणा ॥ तथा भक्षणकरणेयोग्य जेभक्ष भोज्य लेह्य चोष्य यहचारिप्रकारकेअन्नहैं ॥ तिनअन्नोंकूंबाहरलेजाणा ॥ तथा सुगंधिवालेशीतल

॥ १३ ॥

जलकरिकेपूर्ण कलशोंकूंबाहरलेजाणा ॥ तहांजाइकै तादेहकेनिवासकरणेयोग्य भूमिविषे खातरूपगृहकरणा ॥ खातरूपगृहकूं सर्व ओरतैंशुद्धकरणा ॥ तथा तागृहविषे कोमलआसनविछावणा ॥ ताखातरूपगृहविषे तामृतकदेहकूंराखणा ॥ और तादेहकेदोनोंतरफते भक्षणकरणेयोग्य भक्षभोज्यादिकपदार्थ राखणे ॥ तथा तेजलकेकलश राखणे ॥ जैसे महाराजाकेभृत्य तामहाराजाकेवासतैं नानाप्रकार की सामग्री त्यारकरिकेरक्खे हैं॥तैसे तिनबंधुजनोंनैं तामृतकदेहकेसमीप नानाप्रकारकेभोग्यपदार्थत्यारकरिकैराखणे ॥ और तिनबांध वोंनैं ताभूमिविषे इसप्रकारकागृह बनावना॥जिसकरिकै यादेहरूपआत्माकरिके सादीर्घनिद्राविषे स्थिति नाशकूंनहींप्राप्तहोवे॥और तिन बांधवोंनैं ताभूमिगृहकेऊपर एकमंडपरूपवेदिकाकरणी॥जिसकरिकै ताभूमिगृहकाचिरकालपर्यंतभी नाशनहींहोवे॥तथा तागृहविषे वृष्टि काजल प्रवेशनहींकरे ॥ तथा ग्रीष्मऋतुकातापभी तागृहविषेप्रवेशनहींकरे ॥ तथा मांसकूंभक्षणकरणेहारे जंतुकादिकजीवभी तागृहवि षेप्रवेशनहींकरैं ॥ ऐसीवेदिका ताभूमिगृहकेऊपरबनावणी ॥ इसप्रकार तेबांधव जभी भलीप्रकारसैंरक्षणकरे हैं॥ तभी सोदेहरूपआत्मा महाराजाकीन्याईं सुखपूर्वक बहुतकालपर्यंत शयनकरेहै ॥हेअसुरो॥ जबपर्यंत सोदेहात्मवादकेप्रवृत्तकरणेहाराब्रह्मा तिनआपणेशिष्योंकूं देखणेवासतैंनहींआवै है॥तबपर्यंत सोदेहसुखपूर्वक तहांशयनकरै है ॥ और जभी सोभगवन्ब्रह्मा कृपाकरिके आपणेदेहात्मवादीशिष्यों केदेखणेवासतैं आवैगा ॥ तभी वायुनैं सर्वत्रव्यापककर्याजो तात्रह्माकेदेहकासुगंध है॥ तासुगंधकरिकै तेसर्व देह तादीर्घनिद्रातैंउठैंगे ॥ जैसे शस्त्र अस्त्रोंकेप्रहारकरिकै मूर्छाकूंप्राप्तहुआकोईशूरवीर किसीवायुकेस्पर्शतैं शीघ्रहीतामूर्छातैंउठे है ॥ तामूर्च्छातैंउठिकै सोशूरवीर पुरुष पूर्वलेसंस्कारोंकेवशतैं पुनः आपणेशत्रुवोंकूंनाशकरे है ॥ तैसे रसायनादिकउपायोंकायत्नकरतेहुए यहपुरुष जभी तादीर्घ निद्राविषेसोइजावै है ॥ तभी तात्रह्माकेसुगंधकरिकै तेपुरुष तादीर्घनिद्रातैंउठिकै पूर्वसंस्कारोंकेवशतैं पुनः तिनरसायनादिकोंकीप्राप्ति वासतैं प्रयत्नकरे हैं॥हेअसुरो ॥ इसप्रकार प्रयत्नकरतेहुए यहदेह किसीकालपाइकै तिनरसायनादिकोंकूंप्राप्तहोइकै अवश्यकरिकैअमर होवैंगे ॥ ताअमरपणेकूंप्राप्तिहुए तिनयोगीपुरुषोंकेदेह कदाचित्भीनाशकूंप्राप्तहोवै नहीं॥यातैं हेअसुरो॥यादेहरूपआत्माकेअमरकरणे

वासतै तुमसर्व दैत्य रसायनादिकोंकूंसिद्धकरो॥ तथा योगपरायणहोवो॥ तथा दयातैंरहितहोइकै आपणेशत्रुदेवतावोंकूंनाशकरो॥ओर हेअसुरो॥याअविवेकीलोकोंकरिकैपूजणयोग्यजे ब्राह्मण गौवां देवता साधु इत्यादिकहैं॥तिनब्राह्मणादिकोंकाशरीर इतरशरीरोंतैं विलक्षणप्रतीतहोवैनहीं ॥ किंतु समानहींप्रतीतहोवै ॥ काहेतैं दोपादवालेजेब्राह्मणादिकहैं ॥ तिनब्राह्मणादिकोंविषे दोपादवालेशूद्रादिकोंतैं किंचित्मात्रभीविलक्षणतानहीं है ॥ किंतु तेदोनों समानहीं हैं तथा चारिपादवालीजेगौवां हैं॥ तिनगौवोंविषे चारिपादवालेअश्वादिकोंतैं किंचित्मात्रभीविलक्षणतानहीं है ॥ किंतु तेदोनों समानहीं हैं॥ ऐसेसमानरूपभाववालेशरीरोंविषे यहब्राह्मणादिक पूज्यहैं यहशूद्रादिक अपूज्यहैं याप्रकारकीविषमताकल्पनाकरणी अयोग्यहै ॥ और हे असुरो॥जैसे तिन ब्राह्मणादिकोंकेशरीरविषे विशेषतानहीं हैं ॥ तैसे तिनशरीरोंकेकारणोंविषेभी विशेषतानहीं है॥काहेतैं जैसे तिनब्राह्मणादिकोंकाशरीर कामयुक्तपितामाताके शुक्रशोणिततैंउत्पन्नहोवै है॥ तैसे इतरशूद्रादिकोंकेशरीरभी ताकामयुक्तपितामाताके शुक्रशोणिततैंउत्पन्नहोवै है।यातैं कारणकीविशेषताकरिकैभी तिनब्राह्मणादिकोंविषे विशेषतासंभवैनहीं॥और हेअसुरो॥जोतुम यहकहो॥सर्वजगत्काकर्त्ता जोईश्वरहै ताईश्वरका ब्राह्मणादिकोंविषेही पक्षपातहै॥याकारणतैं तिनब्राह्मणादिकोंविषे सर्वतैंअधिकता है।सोयहतुमारा कहणाभी संभवैनहीं॥काहेतैं शास्त्रवालेपुरुषोंनैं जोईश्वरकालक्षण कथनकऱ्या है॥सोलक्षण याकामविषेहीघटेहै॥यातैं कामतैंभिन्न दूसराकोईईश्वरहैनहीं॥अब सोईश्वरकालक्षण कामविषेदिखावैहै॥हेअसुरो।यहकामही सर्वजीवोंकीजननी है।तथा यहकामही सर्वजीवोंकापिताहै॥तथा यहकामही विप्रहै॥तथा यहकामहीगौहै॥तथा यहकामही देवताहै॥तथा यहकामहीसाधुहै॥तथा यहकामही भ्रातादिकबंधुरूपहै॥तथा यहकामही दातारूपहै॥तथा यहकामही बलात्कारसैं तथाआपणीइच्छा करिकै वस्तुकेग्रहणकरणेही प्रतिग्रहीतारूपहै॥ याकारणतैं यहकामही सर्वजगत्काकारणहै ॥ ताकामतैंविना दूसराकोईजगत्काकारण हैनहीं॥और हेअसुरो॥जैसे पृथ्वीविषेस्थितसर्व जल अंशरूपहै॥ तिनअंशरूपजलोंकीअपेक्षाकरिकै समुद्र अंशरूपहै ॥ याकारणतैं सो समुद्र तिनअंशरूपसर्वजलोंतैं श्रेष्ठहै॥तैसे यालोकविषे यादेहतैंभिन्नपदार्थोंकूंविषयकरणेहारे जितनेकीकामहैं ॥ तिनसर्वकामोंतैं यहदेह ॥ १२ ॥

विषयककामही श्रेष्ठहै ॥ काहेतैं यात्रब्रह्मांडविषे जितनैंकदेवतामुनीश्वरहैं ॥ तथा जितनैंकहमदैत्यहैं ॥ तथा तीनकालोंविषेवर्त्तमान जितनैंकमनुष्यादिकप्राणी हैं ॥ तेसंपूर्णहम तिसतिसभोग्यपदार्थोंकीकामनाकरिकैही आपणेआपणेदेहकेव्यापारकूंकरै हैं ॥कामनातैंविना कोईभीप्राणीकिसीव्यापारविषेप्रवृत्तहोवैनहीं ॥ यातैं यहजान्याजावै है ॥ यादेहतैंभिन्न सर्वभोग्यपदार्थविषयकजितनैंककामहैं तेसर्व कामभी आपणेदेहवासतैंही हैं ॥ यातैं तिनकामोंतैं तथातिनकामोंकेविषयसर्वभोग्यपदार्थोंतैं यहदेहही अत्यंतश्रेष्ठहैं॥ यातैं हेअसुरो ॥ याआस्तिकलोकोंकरिकैरक्षणकरणेयोग्य जेब्राह्मणहैं ॥ तथा गौ देवता साधु आदिकहैं॥ तिनसर्वोंतैं यहआपणादेहश्रेष्ठहै ॥ तथा तेसर्व यादेहकेऊपरउपकारकरणेहारे हैं ॥ यातैं तुमनैं याआपणेदेहकूंही ब्राह्मण गौ देवता साधु रूपजानिकै सर्वदारक्षणकरणा ॥ और हेअसुरो ॥ यालोकविषे जोकर्म सुखकीप्राप्तिकरैहै ॥ ताकर्मकूं पुण्यकहैहैं ॥ और जोकर्म दुःखकीप्राप्तिकरैहै ॥ ताकर्मकूं पापकहैहैं ॥ और पशुआदिकोंकीहिंसा ॥ तथापरस्त्रीगमन तथापरद्रव्यकाहरण इत्यादिककर्म याजीवोंकूं प्रसिद्धसुखकीहीप्राप्तिकरै हैं॥ यातैं तेहिंसादिक कर्महीं पुण्यकर्म हैं ॥और प्रातःकालस्नान तथाअग्निहोत्र तथाचांद्रायणादिकव्रत इत्यादिककर्मतो याजीवोंकूं प्रसिद्धदुःखकीहीप्राप्तिकरै हैं ॥यातैं तेप्रातःकालस्नानादिककर्म पापकर्म हैं ॥ऐसेपापकर्मोंकूं तुमनैं कदाचित्भीनहींकरणा ॥ किंतु हिंसादिकपुण्यकर्मोंकूंहींकरणा और हेअसुरो ॥ यादेहरूपआत्माके जोअनुकूलवर्त्तै है ॥ तिसीकूं तुमनैं देवताजाणना ॥ तथा तिसीकूं तुमनैं साधुजानणा ॥ और यादेहरूपआत्माके जोप्रतिकूलवर्त्तै हैं तिसीकूं तुमनैं असुरजानणा ॥ ऐसेदेहकेप्रतिकूलवर्त्तणेहारेअसुरोंकूंतुमनैं अवश्यकरिकैमारणा ॥ हेअसुरो ॥जोकदाचित् आपणेपितादिकभी यादेहरूपआत्माके प्रतिकूलवर्त्ततेहोवैं॥ तो तिनपितादिकोंकूंभी तुमनैं नाशकरणा॥काहेतैं यालोकविषेभी पिता माता भगिनी भ्राता स्नुषा जाया पुत्र इत्यादिकसंबंधियोंविषे जोकोईसंबंधी आपणेप्रतिकूलहोवै है।तिससंबधीकूंको ईभीपुरुष आपणामित्रमानतानहीं॥किंतु॥तिसकूं सर्वपुरुष आपणाशत्रुहीमानते हैं॥यातैं यादेहरूपआत्माके जोप्रतिकूलहोवै॥तिसकूंतु मनैंअवश्यकरिकैमारणा॥इतनैंकरिकै ताविरोचननैंसर्वअसुरोंकेप्रति आपणेमतकाकथनकऱ्या॥अबवैदिकमतविषे दोषकानिरूपणकरै हैं

हेअसुरो॥ब्राह्मणादिकोंकेमारणेविषेपापहोवै है॥तथा परस्त्रीकेसंभोगकरणेविषे पापहोवै है॥ तथा परधनकेहरणकरणेविषे पापहोवै है॥या
प्रकारकेवचन जोवैदिकपुरुषोंनैं कथनकरे हैं ॥ तेसर्ववचन मिथ्याहैं ॥ काहेतैं जिसकर्मकरिकै यापुरुषकूं दुःखरूपफलकीप्राप्तिहोवै है॥
ताकर्मकानाम पापकर्म है॥सोयहपापकर्मकालक्षण तिनब्राह्मणवधादिककर्मोंविषेघटतानहीं ॥काहेतैं आपणेविरोधीब्राह्मणादिकोंकेहिंसा
तैं अनंतर यापुरुषोंकूं सुखकीहीप्राप्तिहोवै है ॥तथा परस्त्रीकेसंभोगतैं तथापरधनकेहरणतैंभी यापुरुषोंकूं सुखकीहीप्राप्तिहोवैहै॥दुःखकी
प्राप्तिहोवैनहीं ॥ यातैं तेहिंसादिक पापकर्मनहीं हैं ॥ किंतु पुण्यकर्म हैं ॥ और हेअसुरो ॥ तेवैदिकपुरुष जोयाप्रकारकावचनकहेहैं॥ते
हिंसादिककर्म यद्यपि वर्त्तमानकालविषेतौ सुखकीहीप्राप्तिकरै हैं॥तथापि तेहिंसादिककर्म कालांतरविषे यापुरुषकूं दुःखरूपफलकीप्रा
प्तिकरेंगे ॥ सोयहभीतिनोंकाकहणा संभवैनहीं ॥ काहेतैं कार्यकीउत्पत्तितैं अव्यवहितपूर्वक्षणविषे जोपदार्थरहे है॥सोपदार्थ ताकार्यकी
उत्पत्तिविषे कारणहोवै है ॥ जैसे मृत्तिकाकुलालादिक घटरूपकार्यकीउत्पत्तितैं अव्यवहितपूर्वक्षणविषेरहे हैं ॥ यातैं तेमृत्तिकाकुला
लादिक ताघटरूपकार्यकीउत्पत्तिविषे कारणहोवै हैं ॥याप्रकारका कारणकालक्षण तिनहिंसादिककर्मोंविषेघटतानहीं॥काहेतैं तेहिंसादि
ककर्म तीनचारक्षणमात्र स्थितरहेहैं ॥तिसतैंअधिककालपर्यंत तेहिंसादिककर्म रहैंनहीं॥यातैं भावीकालविषेउत्पन्नहोणेहारेदुःखपर्यंत ते
हिंसादिककर्म रहैनहीं ॥ और पूर्वनष्टहुएकर्मोंकूंभी जोभावीदुःखकाकारणमानिये॥तौपूर्वनष्टहुआकुलालभी भावीघटकाकारणहोणाचा
हिये॥और पूर्वनष्टहुआकुलाल जैसे भावीघटकाकारणनहींहोवै है ।तैसे तेनष्टहुएहिंसादिककर्मभी ताभावीदुःखकेकारणहोइसकैनहीं।और
हेअसुरो॥तेवैदिकपुरुष जोयाप्रकारकावचनकहे हैं॥तेहिंसादिककर्म यद्यपि तिसीकालविषेनष्टहोइजावै हैं॥ तथापि तिनहिंसादिककर्मोंतैं
एकपापरूपअदृष्ट उत्पन्नहोवैहै॥सोपापरूपअदृष्ट ताभावीदुःखपर्यंतरहेहै ॥ यातैं तापापरूपअदृष्टतैंही सोभावीदुःख उत्पन्नहोवै है ॥ सो
यहतिनोंकाकहणाभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं जिसस्थलविषे दृष्टकारणनहींसंभवैहै॥ तिसस्थलविषेही अदृष्टकारणकी कल्पनाकरीजावैहै॥
दृष्टकारणकेसंभवहुए अदृष्टकारणकीकल्पनाहोवैनहीं ॥ और ताभावीदुःखकीउत्पत्तितो कुपथ्यसेवनादिकदृष्टकारणोंतेंही संभवहो

इसकै है॥यातैं पापरूपअदृष्टकारणतैं ताभावीदुःखकीउत्पत्तिमानणी निष्फलहै ॥ और हेअसुरो ॥ अहिंसा सत्य ब्रह्मचर्य इत्यादिकजेत
पहैं ॥ तथा यज्ञदानादिकजेकर्म हैं ॥ तेसर्व याजीवोंकूं क्लेशकीहीप्राप्तिकरणेहारे हैं॥यातैं तिनतपयज्ञदानादिकसर्वकर्मोंकूं पापरूपजानि
के तुमनैं परित्यागकरणा ॥ हेअसुरो ॥ तिन तपयज्ञादिककर्मोंविषे केवलहमही पापरूपतानहींकथनकरते ॥ किंतु तिनवैदिकपुरुषोंके
वचनतैंही तिनतपयज्ञादिककर्मोंविषे पापरूपतासिद्धहोवैहै॥ काहेतैं तिनवैदिकपुरुषोंनैं तापुण्यपापकर्मोंका याप्रकारकालक्षणकथनकऱ्या
है ॥ जिसकर्मतैं याजीवोंकूं सुखरूपफलकीप्राप्तिहोवै है ॥ ताकर्मकान्याय पुण्यहै और जिसकर्मतैं याजीवोंकूं दुःखरूपफलकीप्राप्तिहोवै
है ॥ तिसकर्मकानाम पाप है ॥ सोयहपापकालक्षण तपयज्ञादिककर्मोंविषेहीघटहै॥और सोपुण्यकर्मकालक्षणहिंसापरस्त्रीगमनादिककर्मो
विषेहीघटहै ॥ यातैं तिनतपयज्ञादिककर्मोंकापरित्यागकरिकै तुमसर्वअसुर हिंसापरस्त्रीगमनादिकपुण्यकर्मोंकूंकरो ॥ और हेअसुरो ॥
सृष्टिकेआदिकालविषे परंपराउपदेशरूप वेदोंकासंप्रदाय दोप्रकारकाप्रवृत्तहुआहै॥तहां हिंसादिककर्मोंकेकरणेकरिकै हमारेकूं महान् अन
र्थकीप्राप्तिहोवैगी याप्रकारकीभयकरिकै दूषितहैचित्तजिनोंका ऐसेजेभीरुपुरुषहैं ॥ तिनभीरुपुरुषोंविषेतौ याप्रकारकासंप्रदायप्रवृत्तहुआ
है ॥ शीघ्रही सुखकीप्राप्तिकरणेहारे जेहिंसादिककर्म हैं ॥ तेहिंसादिककर्मतौ पापरूपहैं॥और शीघ्रही दुःखकीप्राप्तिकरणेहारे जेतपयज्ञा
दिककर्म हैं ॥ तेतपयज्ञादिक पुण्यकर्मरूपहैं ॥ याप्रकारकासंप्रदाय तिनभीरुपुरुषोंविषेप्रवृत्तहुआहै॥ और ताभयदोषतैंरहित जेवीरपुरु
षहैं ॥ तिनवीरपुरुषोंविषे याप्रकारकासंप्रदाय प्रवृत्तहुआहै ॥ शीघ्रही दुःखकीप्राप्तिकरणेहारे जे तपयज्ञादिककर्म हैं ॥ तेतपयज्ञादिकक
र्मतौ पापकर्म हैं ॥ और शीघ्रही सुखकीप्राप्तिकरणेहारेजे हिंसादिककर्म हैं ॥ तेहिंसादिककर्म पुण्यकर्मरूपहैं ॥ याप्रकारकासंप्रदाय
वीरपुरुषोंविषेप्रवृत्तहुआ है ॥ इसप्रकार सृष्टिकेआदिकालविषे भीरुपुरुष तथावीरपुरुष यादोप्रकारकेअधिकारियोंकेभेदतैं सोवेदकासं
प्रदायभी दोप्रकारकाप्रवृत्तहोताभया है ॥ हेअसुरो॥ तासृष्टिकेआदिकालतैंलेके अबपर्यंत सोभीरुपुरुषोंकासंप्रदाय तथावीरपुरुषोंकासं
प्रदायविद्यमान है ॥ तहां सोभीरुपुरुषोंकासंप्रदायतौ इनब्राह्मणोंविषे तथादेवताओंविषे वर्त्तमान है ॥ और दूसरावीरपुरुषोंकासंप्रदाय

तो एकहमारेविषेहो वर्त्तमानहै ॥ दूसरेकिसीविषे है नहीं ॥ हेअसुरो ॥ यावीरसंप्रदायकूं एकतोब्राह्माजानताहै॥और दूसरा मैंजानताहूं॥ हमदोनोंतैंविना दूसराकोईपुरुष यावीरसंप्रदायकूं जानतानहीं ॥ काहेतैं हमदोनों तैंभिन्न दूसरेजितनेकीब्राह्मणदेवतादिकहै ॥ तेसर्व अज्ञा नकरिकै तथादुष्टसंगकरिकै तथाअसामर्थ्यकरिकै दूषितहैं याकारणतैं तेब्राह्मणदेवतादिक यावीरसंप्रदायकूंग्रहणकरसकतेनहीं ॥ उलटा तेब्राह्मणादिक मोहकेवशतैं यावीरसंप्रदायकीनिंदाकरेहैं ॥ हेअसुरो ॥ ऐसाउत्तमवीरसंप्रदाय तुम्हारेकूं पूर्वलेकिसीपुण्यकर्मकेप्रभावतैं हमारेउपदेशतैं प्राप्तभयाहै॥हेअसुरो॥सर्वलोकोंकूंसुखकीप्राप्तिकरणेहारा तथाहिंसादिकपुण्यकर्मोंकाकारण जोयहवीरसंप्रदायहै॥तावीरसं प्रदायकूं तुमसर्वअसुर आपणेभुजावोंकेबलतैं यातीनलोकोंविषे प्रवृत्तकरो ॥ हेअसुरो ॥ यावीरसंप्रदायकीप्रवृत्ति तभी होवैगी ॥ जभी तुम यावीरसंप्रदायकेविरोधीपुरुषोंका हननकरोगे ॥ तिनविरोधीपुरुषोंकेहननतैंविना यावीरसंप्रदायकीप्रवृत्ति होवैगीनहीं॥ हेअसुरो ॥ यज्ञादिककर्मोंविषेप्रीतिवाले तथाब्रह्मचर्यादिकसाधनोंकरिकैसंपन्न जेब्राह्मण हैं॥ तेब्राह्मणभी यावीरसंप्रदायकेविरोधी हैं ॥ और स्वभाव तैंहमारेशत्रुजेदेवताहैं ॥ तेदेवताभी यावीरसंप्रदायकेविरोधी हैं॥ और हमारेशत्रुवोंकेपक्षविषेस्थित तथासर्वदा हमारीनिंदाकरणेहारे दूसरे भीअनेकदुर्बलप्राणी यावीरसंप्रदायकेविरोधी हैं॥औरहेअसुरो॥तेब्राह्मणदेवता केवल यावीरसंप्रदायकेविरोधी हैं॥किंतु तेब्राह्मणदेवता हमअसुरोंकेभीविरोधी हैं ॥ तथा तेब्राह्मणदेवता वेदकेअर्थकूंभीअन्यथाकरणेहारे हैं ॥ ऐसेपापात्माब्राह्मणदेवताओंकूं तुमजाइकैहनन करो ॥ हेअसुरो याप्रकारके हमारे उपदेशकूं अंगीकारकरिकै जभीतुम दयातैंरहितहोइकै तिनब्राह्मणदेवतावोंकाहननकरोगे ॥ तभी तुमारेकूं इसलोकविषेभी सुखकीप्राप्तिहोवैगी ॥ तथा परलोकविषेभी सुखकीप्राप्तिहोवैगी ॥ हेशिष्य इसप्रकार जभी ताविरोचनराजानें सर्वअसुरोंके प्रति उपदेशकऱ्या॥तभी तेअसुर तिसीप्रकार सर्वजगत्कूं दुःखकीप्राप्तिकरतेभये॥ कैसेथेतेअसुर॥ताउपदेशतैं पूर्वभी स्व भावतैंहीपापात्माथे ॥ तथा दयातैंरहितथे ॥ तथा क्रूरकर्मोंकूंकरणेहारेथे ॥हेशिष्य॥ ब्राह्मणादिकोंकेसाथ विरोधकरणा॥तथा जीवतअ वस्थाविषे सर्वदा यास्थूलदेहकाहीपोषणकरणा ॥ तथा मरणतैंअनंतर यादेहकूं नानाप्रकारकेअलंकारोंकरिकै शोभायमानकरणा॥तथा

सर्वदा हिंसादिकर्मकरणे ॥ याप्रकारकाजोअसुरोंकासंप्रदायहै॥सोसंप्रदाय अबपर्यंत नष्टनहीं भया ॥ किंतु सोसंप्रदाय इदानीं कालवि षेभी बहुतलोकोंविषे देखणेमैं आवैहै॥हेशिष्य॥ सोअसुरोंकासंप्रदाय इदानींकालविषेभी बहुतमनुष्योंविषेवर्तैहै॥ या अर्थविषे महात्मा पुरुषोंकेवचनभी प्रमाणहैं ॥ काहेतैं यालोकविषे जोपुरुष मोक्षकीइच्छातैंरहितहोवैहै ॥ तथा हिंसादिकपापकर्मोंविषेप्रीतिवालाहोवैहै ॥ तथा शास्त्रतैंविपरीतआचरणकरणेहाराहोवैहै।ऐसेनास्तिकपुरुषकूंदेखिकै महात्माआस्तिकब्राह्मण याप्रकारकावचनकहेहैं॥असुरोंकूंप्रिय जे हिंसादिकपापकर्म हैं ॥ तिनपापकर्मोंकूं यहपुरुष सर्वदाकरेहैं ॥ याकारणतैं यहपुरुष असुरोंकीसंप्रदायविषेहै॥ जोकदाचित् यहपु रुष असुरोंकीसंप्रदायविषे नहींवर्त्ततोहोवै॥ तो यहपुरुष नास्तिकपणेकरिकै यज्ञादिककर्मोंतैंविमुख किसवासतैंहोता ॥ किंवा ॥ यहपु रुष मरणतैं अनंतर तामृतकदेहकूं नानाप्रकारकेअन्नादिकपदार्थोंकरिकै तथानानाप्रकारकेवस्त्रभूषणादिकोंकरिकै शोभायमानकरेहैं॥या तैंयहअन्याजावैहै ॥ यहपुरुष आपणेवास्तवस्वरूपकेअज्ञानरूपमायाकरिकै मूढभावकूंप्राप्तहुएहैं ॥किंवा॥मरणतैंअनंतर यामृतकदेहके पूजनकियेतैं तादेहात्माकूं परलोककाजयरूपफल प्राप्तहोवै है ॥ याप्रकारकेवचन जोयहमूढपुरुष कथनकरे हैं ॥ सोतिनोंकेवचनोंतैं यहजान्याजावैहै॥जो तिनमंदबुद्धिपुरुषोंविषे कोईआश्चर्यरूप मूर्खताकामाहात्म्य विद्यमानहै॥जिसमूर्खताकेमाहात्म्यकरिकै यहमूढपुरुष प्रथमतो यास्थूलदेहकूंही आत्मामानेहै।और दूसरा तादेहरूपआत्माकेमरणतैंअनंतर तामृतकदेहकेअलंकारकरणेतैं तादेहरूपआत्माकूं परलोकविषे श्रेष्ठफलकीप्राप्तिमानेहैं ॥हेशिष्य॥ विचारकरिकैदेखियेतो तिनदेहात्मवादियोंकेमतविषे लेशमात्रभीयुक्तिसंभवैनहीं ॥ का हेतैं मरणतैंअनंतर पृथ्वीविषेपूरणकऱ्याहुआ यहस्थूलदेह पृथिवीरूपहीहोइजावैहैं ॥ ऐसेदेहका पुनः उत्थान किसप्रकारहोवैगा ॥ किंतु नहींहोवैगा ॥ और हेशिष्य ॥ ताआपणेमतकीसिद्धिकरणेवासतै ॥ तेदेहात्मवादी जोयाप्रकारकीयुक्तिकथनकरे हैं ॥ जैसे जलकेतलावविषेस्थित जेमंडूकहैं ॥ तेमंडूक ताजलकेसूकणेअनंतर मृत्तिकाविषेलयहोइजावैहैं ॥ जभी वर्षाकरिकै सोतलाव जलसैं पूर्णहोवैहै ॥ तभी तेसर्वमंडूक पुनःजीवनकूंप्राप्तहोइकैउठेहैं ॥ तैसेमरणतैंअनंतर यापृथ्वीविषे लयभावकूंप्राप्तहुएभी तेदेह

ताब्रह्माकेसुगंधकारिकै पुनःजीवनकूंप्राप्तहोइकैउठैंगे॥सोयहतिनोंकादृष्टांतभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं ताजलकेमूकणतैंअनंतर तेमंडूकसर्वप्र
कारसैं नाशकूंप्राप्तहोवैनहीं॥किंतु सर्वअंगोंकारिकैसंपन्नहुए तेमंडूक जलकेवियोगतैंमूर्च्छाभावकूंप्राप्तहुए तामृत्तिकाविषेरहैंहैं॥जभी वर्षाके
जलका तिनोंकेसाथ संबंधहोवैहै तभी तेमंडूक पुनः जीवनकूंप्राप्तहोइकै उठैंहैं॥और जिनमंडूकोंकेअवयवोंकूं काकादिक पक्षी भक्षणक
रिगयेहैं ॥ तेमंडूक तावर्षाजलकेसंबंधकारिकै कदाचित्भीउठतेनहीं॥तैसे यहदेहभी तापृथ्वीविषे बहुतकालतैंपीछे सर्वप्रकारसैंनाशहोइ
जावैहैं ॥तानष्टएहुशरीरका पुनःउत्थानमानणा अत्यंतविरुद्धहै॥किंवा॥प्रजापतिकेशरीरकूंरूपर्शकरिकैचलायमानभयाजोवायुहै ॥ तावा
युकेसंबंधकेप्रभावतैं पृथ्वीविषेलयहुएदेहभी पुनःउत्थानकूंप्राप्तहोवै हैं।याप्रकारकावचन जोतादेहात्मवादीविरोचननैं कथनकऱ्याहै॥सोता
काकहणा उष्ट्रलगुडन्यायकरिकैतविरोचनकीयुक्तिसैंही खंडनहोइसकै है॥इहां लकडियोंकेभारयुक्तजोउष्ट्रहै ॥ ताउष्ट्रकूं तिसलकडियोंके
भारतैं एकलकडीनिकासिकैमारणा याकानाम उष्ट्रलगुडन्यायहै ॥तैसे तादेहात्मवादीविरोचननैं वैदिकपुरुषोंकेखंडनकरणेवासतै जोयह
युक्तिकहीथी ॥जबपर्यंत दृष्टवस्तुकासंभवहोइसकै तबपर्यंत अदृष्टवस्तुकीकल्पनाकरणीअयोग्यहै ॥ यातैं भावीदुःखविषे पापरूपअदृष्ट
कारणनहीं है ॥किंतु कुपथ्यसेवनादिक दृष्टनिमित्तही तादुःखविषेकारणहैं॥सोयहअदृष्टअर्थकीकल्पनारूपदूषण तविरोचनकेमतविषेही
प्राप्तहोवैहै॥काहेतैं पृथ्वीविषे लयहुएशरीरोंका प्राजापत्यवायुके संबंधतैंउत्थानमाननाभी अदृष्टकल्पनाही है ॥ नष्टहुएदेहका पुनःउत्था
न कहांदेखणेमैंआवतानहीं॥किंवा।तादेहात्मवादीविरोचननैं जोवैदिकपुरुषोंकेसंप्रदायकूं भीरुपुरुषोंकीसंप्रदायकह्याथा।सोतिसकाकहणा
भी केवलअज्ञानतैंही है।काहेतैं यालोकविषे नारदमुनिभृगुऋषि देवराजइंद्र स्वायंभुवमनु इसतैंआदिलैके जेमहान्पराक्रमवालेतथामहानबु
द्धिवाले पुरुषहुएहैं।तेसर्वमहान्पुरुष किसप्रकार भीरुकहेजावैंगे।किंतु तिननारदादिकमहान्पुरुषोंकूं भीरुकहणा अत्यंतअनुचितहै॥यातैं
दैत्योंकीसभाविषेस्थितहोइकै सोविरोचन आत्मज्ञानतैंरहितमूढअसुरोंकेप्रति जेजेवचन कहताभयाहै।तेसर्ववचन मिथ्याहीकहताभयाहै॥ ॥ १७ ॥
यातैं ताविरोचनकूं आस्तिकपुरुषोंनैं कामकरिकैमोहितचित्तवालाजानणा॥ऐसेसर्वप्रमाणतैंविरुद्ध विरोचनकेमतकूं उन्मत्तपुरुषकेवचनोंके

समानजानिकै आस्तिकपुरुषोंनैं सर्वथापरित्यागकरणा ॥ हेशिष्य ॥ जोकामातुरपुरुष नरकरूपग्रामकेमार्गविषेस्थितहोइकै ताअसुर
मतकूं अंगीकारकरिकै पूर्वउक्तकुतर्कोंकरिकै हिंसादिपापकर्मोंकूं पुण्यरूपजानिकैकरेहै ॥ सोपापात्मापुरुष इसलोकविषे तौ महान्अकी
र्तिकूंप्राप्तहोवैहै॥और परलोकविषे निवृत्तिकेउपायतैंरहित महान्दुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ याप्रकारकेवचन श्रीगीतादिकशास्त्रोंविषे श्रीकृष्ण
भगवानादिकश्रेष्ठपुरुषोंनैं कथनकरे हैं ॥ यातैं जिनपुरुषोंकूं सुखकेप्राप्तिकीइच्छाहोवै ॥ तिनअधिकारीपुरुषोंनैं जबपर्यंत कंठविषेप्राण
स्थितहोवै तबपर्यंत याविरोचनकेसंप्रदायविषे कदाचित्भीप्रवेशनहींकरणा ॥ किंतु याविरोचनकेसंप्रदायका तिनआस्तिकपुरुषोंनैं दूर
सैंपरित्यागकरणा ॥ इतनैंग्रंथकरिकै विरोचनकावृत्तांत कथन कऱ्या॥अब ताइंद्रकावृत्तांत निरूपणकरैहैं॥हेशिष्य॥ताब्रह्मलोकतैं जभी
तेइंद्रविरोचनदोनों आपणेआपणेलोकविषेचलेथे ॥ तभी अर्द्धमार्गविषे सोदेवराजइंद्र ताविरोचनकूंतामसीदेखिकै शनैःशनैःचलनेकेमिस
करिकै ताविरोचनकापरित्यागकरताभया ॥ ताविरोचनकापरित्यागकरिकैतथाआपणीदेवसभाकूंनप्राप्तहोइकै सोदेवराजइंद्र तामार्गविषे
किसीएकांतदेशविषेस्थितहोताभया ॥ तहांस्थितहोइकै सोसात्विकस्वभाववालाइंद्र आपणेमनविषेविचारकरिकै पूर्वग्रहणकरेहुएआत्मा
विषे याप्रकारकेदोष देखताभया ॥ तात्पर्यंयह ॥ जैसे बृहदारण्यकउपनिषद्विषे देवता मनुष्य असुर यहतीनों प्रजापतिसैं आपणेश्रेय
कासाधनपूछतेभये॥तिनोंकेप्रश्नकूंश्रवणकरिकै सोप्रजापति दकारअक्षरकूंउच्चारणकरताभया ॥तादकारअक्षरकूंश्रवणकरिकै आपणेआप
णेभावनाकेअनुसार देवतातौ इंद्रियोंकेनिग्रहरूपदमकूंही श्रेयकासाधनरूपकरिकैग्रहणकरतेभये ॥ और मनुष्यतौ गौसुवर्णादिकपदार्थों
केदानकूंही श्रेयकासाधनरूपकरिकैग्रहणकरतेभये ॥ और असुरतौ दयाकूंही श्रेयकासाधनरूपकरिकैग्रहणकरतेभये ॥ तैसे प्रजापतिनैं
ताइंद्रविरोचनदोनोंकेप्रति॥यएषोऽक्षिणिपुरुषोदृश्यतएषआत्मा ॥ याप्रकारकावचन समानकह्याथा॥ तावचनकूंश्रवणकरिकै सोविरोचन
तौ तावचनकीलक्षणाकरिकै छायाकेसदृशदेहकूंही आत्मामानताभयाथा ॥ और सोइंद्रतौ ताब्रह्माकेयथाश्रुतवचनतैं छायाकूंही आत्मा
मानताभयाथा ॥ याकारणतैं सोदेवराजइंद्र ताछायाआत्माविषे याप्रकारकेदोषोंकाविचारकरताभया ॥ याछायाकेस्वरूपकीसिद्धिकर

णेहारा जोयहदेहहै॥तादेहविषे जन्ममरणतैंआदिलेके अनेकप्रकारकेविकार प्रतीतहोवै हैं तिनजन्ममरणादिकविकारोंकेविद्यमानहुए यह देह अमृतत्व अभयत्व आदिकधर्मोंवाला किसप्रकारहोवैगा ॥ किंतु नहींहोवैगा ॥ यातैं जैसे जन्ममरणादिक विकारोंवाले घटादिपदार्थ आत्मानहीं हैं ॥ तैसे यहदेहभी आत्मानहीं है ॥ जभी यादेहविषेभीआत्मारूपतासिद्धनहींभई॥तभी तादिंबरूपदेहकेअधीन चक्षुदर्पणादिकोंविषेस्थितछायाविषेसाआत्मरूपता किसप्रकारसंभवैगी ॥ किंतु नहींसंभवैगी॥ काहेतैं ताप्रजापतिनैं आत्माकूं अमृत अभय ब्रह्मरूपकह्याथा ॥ तेअमृतत्वादिकधर्म याछायाविषेसंभवतेनहीं ॥ यातैं यहछाया आत्मारूपनहीं है ॥ किंवा ॥ याप्रतिबिंबरूपछायाविषे यद्यपि बिंबकीअपेक्षातैंविना स्वभावतैं मरण तथाभय देखतानहीं॥ यातैं याछायाआत्माविषेअमरत्व तथाअभयत्व संभवैहै ॥ तथाप्रातःकालविषे तथासंध्याकालविषे याछायाकीवृद्धिभीदेखणेविषेआवैहै ॥ यातैं याछायाविषे ब्रह्मरूपताभीसंभवैहै॥ तथापि यास्थूलदेहकी न्याईं यहछायाआत्माभी परित्यागकरणेयोग्यहै ॥ काहेतैं यहछाया सर्वदा यास्थूलदेहकेगुणोंकूं तथादोषोंकूं आपणेविषेधारणकरैहै॥तहां यहबिंबरूपदेह जभी वस्त्र भूषण छत्र इत्यादिकअलंकारोंकरिकैयुक्तहोवैहै॥तभी सोछायाआत्माभी तिसी प्रकारकेअलंकारोंवालाहुआ प्रतीतहोवैहै॥और यादेहकेअन्धहुए सोछायाआत्माभी अन्धहुआप्रतीतहोवैहै ॥ और यादेहकेश्लेष्मयुक्तहुए सोछायाआत्माभी श्लेष्मयुक्तहुआप्रतीतहोवैहै॥और यादेहकेहस्तपादादिकअंगोंतैंरहितहुए सोछायाआत्माभी हस्तपादादिकअंगोंतैंरहितहुआप्रतीतहोवैहै ॥ इस प्रकार यादिंबरूपदेहकेअनुसार प्रतीतहोणेहारा जोयहछायाआत्माहै ॥ सो छायाआत्मा स्वभावतैं जडहै॥तथा नाशवान् है ॥ तथा भोगोंकेभोगणेकीयोग्यतातैंरहितहै ॥ याकारणतैं याछायाआत्माविषे भोक्तापणासंभवैनहीं ॥ और ब्रह्मानैं आत्माकेज्ञानतैं सर्वलोकवर्त्तिभोगोंकीप्राप्तिकथनकरीथी ॥ सो याजडछायारूपआत्माकेज्ञानतैं सर्वभोगोंकीप्राप्तिरूपफलकूं मैं देखतानहीं ॥ यातैं यहछाया आत्मानहीं है ॥ किंतु याछायातैंभिन्नही कोईआत्माहै ॥ किंवा यादिंबरूपदेहका जभी नाशहोवैहै ॥ तभी याछायाकाभीनाशहोवै है ॥ यातैं पुण्यपापकर्मोंके सुखदुःखरूपफलकेभोगणेवासतै ॥ छायाआत्माकातो परलोकविषे गमनसंभवैनहीं ॥ किंतु तापरलो

कविषे सुखदुःखरूपफलकेभोगणेवासतै याछायातैंभिन्नहीकोईआत्मा अंगीकार करणाहोवैगा ॥ अन्यथाकऱ्येहुए कर्मोंकाफलकेभोगतैंविनाहीनाशरूप कृतनाशदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ याकारणतैंभी यह छाया आत्मानहीं है ॥ किंतु छायातै तथायादेहतैं भिन्नहीकोईआत्माहोवैगा ॥ ताछाया देहतैंभिन्न आत्माकूं मैं पुनःताब्रह्माकेसमीपजाइकैपुछों ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकाविचार आपणेमनविषेकरिकै सोसात्त्विकस्वभाववाला देवराजइंद्र ताआत्माकेजानणेकी इच्छाकरताहुआ समिदादिकपदार्थोंकूंआपणेहस्ताविजेग्रहणकरिकै विनयपूर्वकपुनः ताप्रजापतिगुरुकेसमीपजाताभया ॥ और तादेवराजइंद्रकूं पुनःआयाहुआदेखिकै मंदमंदहँसताहुआ सोप्रजापति तादेवराजइंद्रकेप्रति याप्रकारकावचनकहताभया ॥ हेइंद्र ॥ तूं विरोचनकेसहित प्रसन्नमनहुआ यात्रह्मलोकतैंगयाथा ॥ अभी किसप्रयोजनवासतैं तूं पुनः इहां आयाहै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकावचन जभी ताप्रजाप्रतिनैं इंद्रकेप्रतिकह्या ॥ तभी ताइंद्रनैं छायाविषे तथादेहविषे जितनैंकीपूर्वदोष निश्चय कऱ्येथे ॥ तिनसर्वदोषोंकूं सोइंद्र ताप्रजापतिकेप्रति कथनकरताभया ॥ ताइंद्रकेवचनोंकूंश्रवणकरिकै सोप्रजापति ताइंद्रकेप्रति याप्रकारकावचनकहताभया ॥ हेइंद्र ॥ यहस्थूलदेह तथाछाया यहदोनोंजडहैं ॥ यातैंतिनोंविषे भोक्तापणासंभवतानहीं ॥ याप्रकारकावचन जोतुमनैंकह्याहै ॥ सोयथार्थकह्याहै॥ परंतु जिसआत्माकेअविज्ञानतैं तुमनैं अनुक्तउपालंभकेसमान यहपरिश्रमकऱ्याहै ॥ सोदेहछायातैंभिन्नआत्मा पुनःमैंतुम्हारेप्रति उपदेशकरताहूं ॥ जोआत्माविरोचनकेसहित तुम्हारेताईंहमनैं पूर्वभीउपदेशकऱ्याथा ॥ सोइहीआत्मामैंपुनःतुम्हारेप्रतिउपदेशकरताहूं ॥ इहांकथनकऱ्येहुएवचनकेयथार्थअर्थकूंनजाणिकै तथातावचनकाविपरीतअर्थ ग्रहणकरिकै तावचनकहणेहारेपुरुषकूं जोउपालंभदेणाहै याकानाम अनुक्तउपालंभहै ॥ सोइहांप्रसंगविषे ॥ यएषोऽक्षिणिपुरुषोदृश्यतएषआत्मा ॥ यावचनकरिकै ताप्रजापतिनैं इंद्रकेप्रति यादेहछायातैंविलक्षण साक्षीआत्माकाहीबोधनकऱ्याथा ॥ ताब्रह्माकेवचनके यथार्थअर्थकूंनजाणिकरिकै तथातावचनका छायादेहरूपविपरीतअर्थकल्पनाकरिकै ताइन्द्रनैं जो ब्रह्माकेप्रति उपालंभदियाहै ॥ सोभी अनुक्तउपालंभहीहै ॥ प्रजापतिरुवाच ॥ हेइंद्र पूर्वजोतुमनैं बत्तीसवर्षपर्यंत ब्रह्मचर्यकऱ्याथा ॥ सो

हमारेवचनतैं संकल्पपूर्वकनहींकऱ्याथा ॥ किंतुविनाहीसंकल्पतैंकऱ्याथा यातैं आपणेचित्तकीशुद्धिवासतैं तूंपुनः बत्तीसवर्षपर्यंत ताम्र
ह्मचर्यकूंकर ॥ तिसतैंअनंतरमैंतुम्हारेप्रतिताआत्माकाउपदेशकरोंगा ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकावचनजभीताप्रजापतिनैंइंद्रकेप्रतिकह्या ॥
तभीसोइंद्र ताब्रह्माकेआज्ञाकूंमानिकैपुनःबत्तीसवर्षपर्यंत ब्रह्मचर्यकूंकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोइंद्र ताप्रजापतिकेसमीपजाताभया॥
ताइंद्रकूंआयाहुआदेखिकै सोप्रजापतिताइंद्रकेप्रति स्वप्नअवस्थाकासाक्षीरूपकरिकै ताआत्माकाउपदेशकरताभया ॥ हेइंद्र॥ पूर्वहमनैं
चक्षुविषेतथाजलशरावविषे जिसपुरुषकाउपदेशकऱ्याथा ॥ सोइहीपुरुषस्वप्नअवस्थाविषे आपणेविभूतिरूप नानाप्रकारकेविषयोंकूंसाक्षी
रूपकरिकैअनुभवकरताहुआस्थितहुआहै ॥ तिसीपुरुषकूंतूआत्मारूपकरिकैजान ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकावचनजभी ताप्रजापतिनैं
इंद्रकेप्रतिकह्या ॥ तभीसोइंद्र ताब्रह्माकेवचनतैंअंतःकरणादिकाविशिष्ट तैजसनामाजीवकूं आत्माजानिकै बहुतप्रसन्नहोताभया ॥ और
सोइंद्रपूर्वकीन्याईं ताप्रजापतिकूंनमस्कारकरिकै पुनःआपणेलोककूंजाताभया ॥ तहांअर्द्धमार्गविषेजाईकै किसीएकांतदेशविषेस्थितहोइ
कैसोइंद्र पुनःआपणेमनविषेविचारकरताभया ॥ ताविचारकरिकैसोइंद्र तास्वप्नद्रष्टापुरुषविषेभी याप्रकारकेदोषोंकूंदेखताभया ॥ जैसे
छायाआत्मा यास्थूलदेहकेगुणदोषोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे यहस्वप्नद्रष्टापुरुष यद्यपियास्थूलदेहकेगुणदोषोंकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तथापियास्वप्न
द्रष्टापुरुषविषे याप्रकारकेमहान्दोष हमारेकूंप्रतीतहोवैहै ॥ स्वप्नअवस्थाविषे यास्वप्नद्रष्टापुरुषकूं कोईकशत्रुपुरुषहननकरैहैं ॥ और
जैसेजाग्रत्अवस्थाविषे कोईप्रमत्तहस्तीक्रोधवान्होइकै आपणेसुंडकूंऊपरउठाइकै मूढबालकोंकूंभयकीप्राप्तिकरैहै ॥ तैसे स्वप्नअवस्था
विषे तास्वप्नद्रष्टापुरुषकूं वृक व्याघ्र सर्प आदिकजीवभयकीप्राप्तिकरैहैं ॥ और तास्वप्नविषे सोस्वप्नद्रष्टापुरुष आपणेशुद्दर्दोंकेवियोगकूंदेखि
कैपरमदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथारुदनकरैहै ॥ इसतैंआदिलेकेअनेकप्रकारकेदोष तास्वप्नद्रष्टापुरुषविषे देखणेमैंआवैहैं ॥ और प्रजापतिनैं
हमारेप्रतिआत्मा अमृत अभय ब्रह्मरूपहै याप्रकारकाआत्माकालक्षणकथनकऱ्याथा सोयाप्रकारकालक्षणयास्वप्नद्रष्टापुरुषविषेघटतानहीं ॥ १९ ॥
यातैंयहस्वप्नद्रष्टापुरुषआत्मानहींहै ॥ किंतु यास्वप्नद्रष्टापुरुषतैंभिन्नहीकोईआत्माहोवैगा ॥ ताआत्माकेजानणेवासतै मैं इंद्र पुनः ता

प्रजापतिकेसमीपजावों ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकाविचारकरिकै सोइंद्र पुनःताप्रजापतिकेसमीपजाताभया ॥ ताइंद्रकूं पुनःआयांहुआदे
खिकै सोप्रजापति ताइंद्रकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया॥ हेइंद्र पूर्वतूं आत्माकाउपदेशश्रवणकरिकै प्रसन्नमनहुआ आपणेलोकोंकूं
गयाथा॥अभीपुनःकिसप्रयोजनवासतै तूं इहांआयाहै॥ हेशिष्य॥याप्रकारकावचन जभी ताप्रजापतिनैं इंद्रकेप्रतिकह्या ॥ तभी ताइंद्रनैं
मार्गविषे जितनेकीदोष तास्वप्नद्रष्टापुरुषविषेदेखेथे ॥ तिनसर्वदोषोंकूं सोइंद्र ताप्रजापतिकेआगे कहताभया॥ताइंद्रकेवचनकूंश्रवणकरिकै
सोप्रजापति ताइंद्रकेप्रति पुनःबत्तीसवर्षपर्यंत ब्रह्मचर्यकरणेकीआज्ञाकरताभया ॥ ताप्रजापतिगुरुकेआज्ञाकूंमानिकै सोदेवराजइंद्र पुनः
बत्तीस वर्षपर्यंत ब्रह्मचर्यकूंकरताभया॥तिसतैंअनंतर सोइंद्र पुनःताप्रजापतिकेसमीपजाइकै ताआत्माकाप्रश्नकरताभया॥ताइंद्रकेप्रश्नकूं
श्रवणकरिकै सोप्रजापति पुनः सुषुप्तिअवस्थाकासाक्षीरूपकरिकै ताआत्माकाउपदेशकरताभया ॥ प्रजापतिरुवाच॥हेइंद्र ॥ जिसकाल
विषे यहपुरुष सर्वविशेषज्ञानोंतैंरहितहुआ शयनकरे है ॥ तिसकालविषे सोपुरुष जिसहार्दाकाशरूप ब्रह्मलोकविषे एकताभावकूंप्राप्तहो
इकै सर्वदुःखोंतैंरहितहोवै है॥तथा सर्वइंद्रियोंतैंरहित होवै है ॥ तथा जिसहार्दाकाशरूपब्रह्मलोकविषे प्राप्तहुआभीयहपुरुष ताहार्दाकाश
कूंनजानिकरिकै पुनःपुनः बाहरआवै है ॥ सोमायामात्रउपाधिवाला ॥ हार्दाकाशरूपब्रह्मलोकही अमृतअभयब्रह्मरूपहोणेतैं तुमारा
आत्माहै॥यहहीआत्मा हमनैं पूर्वभीतुम्हारेप्रति उपदेशकऱ्याथा ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारकावचन जभी ताप्रजापतिनैं देवराजइंद्रके प्रति
कह्या ॥ तभी सोइंद्र ताब्रह्माकेवचनतैं अज्ञानविशिष्टप्राज्ञनामाजीवकूं आत्माजानिकै बहुतप्रसन्नहोताभया॥और पूर्वकीन्याईं ताप्रजाप
तिकूंनमस्कारकरिकै सोइंद्र पुनः आपणेलोककूंजाताभया ॥ तहां अर्द्धमार्गविषेजाइकै सोइंद्र पुनः किसीएकांतदेशविषेस्थितहोइकैआ
पणेमनविषे विचारकरताभया ॥ ताविचारकरिकै सोइंद्र तासुषुप्तिप्राज्ञनामाआत्माविषेभी याप्रकारकेदोषोंकूं देखताभया॥यहसुषुप्तिअ
वस्थाविषेस्थित प्राज्ञनामापुरुष यद्यपि स्वप्नद्रष्टापुरुषकीन्याईं भयादिकोंकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तथापि यहप्राज्ञनामापुरुष मैं इसप्रकारका
हूं याप्रकार आपणेकूंभीजानतानहीं ॥ और हमारेतैंभिन्नयहपुरुष इसप्रकारकाहै या प्रकार दूसरेकूंभीजानतानहीं ॥ जैसे यालोकविषे

मादिरादिकोंकेपानकरिकैमूढहुआपुरुष आपणेकूं तथापरकूं जानतानहीं ॥ तैसे तासुषुप्तिविषे सोप्राज्ञनामापुरुषभी आपणेकूं तथापरकूं जानतानहीं ॥ किंतु तासुषुप्तिविषे विद्यमानहुआभी सोप्राज्ञनामापुरुष नाशहुएकीन्याईं स्थितहोवे है॥ यातैं ताप्रजापतिनैं जोआत्मा अमृतअभयब्रह्मरूपतालक्षण कह्याथा ॥ सोलक्षण याप्राज्ञनामापुरुषविषेघटतानहीं ॥ यातैं तालक्षणवाला याप्राज्ञनामापुरुषतैं भिन्नही कोई आत्माहोवैगा ॥ ताआत्माकोनिश्चयकरणेवास्तै मैंइंद्र पुनः ताप्रजापतिकेसमीपजावौं ॥ हेशिष्य ॥ याप्राकारका मनविषेविचार करिकै सोइंद्र पुनः ताप्रजापतिकेसमीपजाताभया ॥ ताइंद्रकूंआयाहुआदेखिकै सोप्रजापति ताइंद्रकेप्रति याप्रकारकावचन कहता भया ॥ हेइंद्र ॥ पूर्वहमारेउपदेशतैं तूं आत्माकूंजानिकै प्रसन्नमनहुआ आपणेलोककूंगयाथा ॥ अभी पुनः तूं किसप्रयोजनवास्तैं इहां आयाहै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकावचन जभी ताप्रजापतिनैं इंद्रकेप्रतिकह्या ॥ तभी ताइंद्रनैं मार्गविषेजितनैंकीदोष ताप्राज्ञ नामापुरुषविषे देखेथे ॥ तिनसर्वदोषोंकूं सोइंद्र ताप्रजापतिके आगे कहताभया ॥ ताइंद्रकेवचनकूंश्रवणकरिकै सोप्रजापति ताइंद्रके प्रति पुनः ब्रह्मचर्यकरणेकी आज्ञाकरताभया ॥ परंतु याचतुर्थवारमैं सोप्रजापति ताइंद्रकेप्रति पंचवर्षपर्यंत ब्रह्मचर्यकरणेकीआज्ञा करताभया ॥ हेशिष्य ॥ सो देवराजइंद्र प्रथमतौ ताप्रजापतिके वचनतैंविनाही बत्तीसवर्षपर्यंत ब्रह्मचर्यकरताभया ॥ तिसतैं अनंतर दूसरीबार तथा तीसरी बार सोइंद्र प्रजापतिकेवचनतैं बत्तीसबत्तीसवर्षपर्यंत ताब्रह्मचर्यकूंकरताभया ॥ और चतुर्थवारतौ सोइंद्र ता प्रजापतिकेवचनतैं पंचवर्षपर्यंत ताब्रह्मचर्यकूंकरताभया ॥ इस प्रकार चारोंवारामिलिकै एकशतएकवर्ष १०१ पर्यंत सोइंद्र ताप्रजाप तिकेआगे ब्रह्मचर्यकूंकरताभया ॥ अब ताब्रह्मचर्यकेमाहात्म्यकावर्णनकरे हैं ॥हेशिष्य॥ यालोकविषे जोजोपदार्थ अत्यंतदुर्लभहोवे हैं॥ तिनदुर्लभ पदार्थोंकूंभी यहपुरुष ताब्रह्मचर्यकरिकैहीप्राप्तहोवे है ॥ काहेतैं वेदवेत्तापुरुष याब्रह्मचर्यकूंहीं सर्वयज्ञादिरूपकरिकैकथनकरे हैं ॥ हे शिष्य ॥ यालोकविषे जोकोईपुरुष याआनंदस्वरूपआत्माकूंजाने है ॥ सोपुरुष याब्रह्मचर्यतैंही ताआत्माकूंजाने है ॥ ता ब्रह्म चर्यतैंविना ताआत्माकाज्ञानहोवैनहीं ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष ताब्रह्मचर्यकूं यज्ञ यानामकरिकैकथनकरे हैं ॥ और हेशिष्य ॥ दर्श

पौर्णमासादिककर्म या अधिकारीपुरुषोंकूं स्वर्गादिकइष्टपदार्थोंकीप्राप्तिकरेहै ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष तिनदर्शपौर्णमासकर्मोंकूं इष्ट यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ सोइष्टकर्मरूपभी यहब्रह्मचर्यहीहै ॥ काहेतैं सर्वपदार्थोंकीअपेक्षाकरिकै अत्यंतप्रियरूपताकरिकै इष्टशब्दका मुख्यअर्थ जोआत्माहै ॥ ताइष्टआत्माकूं यहअधिकारीपुरुष ताब्रह्मचर्यकरिकैहीजानेहै ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष ताब्रह्मचर्यकूं इष्ट या नामकरिकैकथनकरेहैं ॥ हेशिष्य ॥ यद्यपि कोशादिकलौकिकप्रमाणोंकेवलतैं यज्ञशब्दकेअर्थका तथाइष्टशब्दकेअर्थका भेदसिद्धहोवैन हीं॥किंतु तेदोनोंशब्द एकहीअर्थकेवाचकहैं॥तथापि मीमांसकोंनैं तिनदोनोंका याप्रकारसेभेद कथन कऱ्याहै॥सोमपशुआदिकपदार्थों करिकैसिद्धहोणेहारेजे ज्योतिष्टोमादिककर्महैं ॥ तिनज्योतिष्टोमादिकोंकानाम यज्ञहै॥ और पशुआदिकोंतैंविना केवल औषधादिकपदा र्थोंकरिकैसिद्धहोणेहारेजे दर्शपौर्णमासादिककर्महैं ॥ तिनदर्शादिककर्मोंकानाम इष्टहै ॥ और हेशिष्य ॥नानापुरुषोंने मिलिकैकऱ्याजो यागविशेषहै ॥ तायागविशेषकानाम सत्रायणहै ॥ सोसत्रायणरूपभी यहब्रह्मचर्यहीहै॥काहेतैं यहअधिकारीपुरुष आपणेसत्यस्वरूपआ त्माकूं याब्रह्मचर्यकरिकैही जन्ममरणरूपसंसारतैंरक्षाकरेहै ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष ताब्रह्मचर्यकूं सत्रायण यानामकरिकैकथनकरेहै ॥ और हेशिष्य॥मननशीलपुरुषकाजोभावहोवै ताकानाम मौनहै॥ तामौनशब्दकाप्रसिद्धअर्थतौ वाणीकानिरोधरूपतपहै अथवा संन्यास आश्रमहै ॥ सोमौनशब्दभी याब्रह्मचर्यकाहीवाचकहै ॥काहेतैं सर्वअधिकारीपुरुष याब्रह्मचर्यकेप्रभावतैंहीं आत्माकेमननकरणेविषेसमर्थ होवैहैं ॥ ताब्रह्मचर्यतैंविना कोटिजन्मोंकरिकैभी ताआत्माकामननहोवैनहीं॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष ताब्रह्मचर्यकूं मौन यानामकरिकै कथनकरेहैं ॥ और हेशिष्य ॥ लोकप्रसिद्धउपवासपरायणताकावाचक जोअनाशकायनपदहै ॥ सोअनाशकायनपदभी याब्रह्मचर्यकाही वाचकहै॥काहेतैं याब्रह्मचर्यकरिकै प्राप्तहुआजोआत्माहै ॥सोआत्मा कार्यसहितअज्ञानरूपप्रतिबंधकेदाहहुये कदाचित्भी नाशकूंप्राप्त होवैनहीं॥याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष ताब्रह्मचर्यकूं अनाशकायन यानामकरिकैकथनकरेहैं॥और हेशिष्य॥लोकप्रसिद्ध वनवासकावाचकजो अरण्यायनशब्दहै सोअरण्यायनशब्दभी याब्रह्मचर्यकाहीवाचकहै काहेतैं समुद्रकेसमानविस्तारवालेजेअरण्यनामादोहदहैं तिनदोहदोंक

रिकै युक्तजोब्रह्मलोकहै॥तात्रह्मलोककूंभी यहअधिकारीपुरुष तात्रह्मचर्यकरिकैहीप्राप्तहोवैहै ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष तात्रह्मचर्यकूं अरण्यायन यानामकरिकैकथनकरेहैं॥हेशिष्य॥ यात्रह्मचर्यकेप्रभावतैंही यहपुरुष प्रतिबंधतैंरहितहुआ आपणीइच्छापूर्वक सर्वलोकोंविषेविचरेहै ॥ जैसे नारदमुनि ब्रह्मचर्यकेप्रभावतैं आपणीइच्छापूर्वक सर्वलोकोंविषेविचरताभयाहै ॥ और हे शिष्य॥यात्रह्मचर्यकरिकैसंपन्नहुए यहब्राह्मणादिकअधिकारीजन ऋगादिकवेदोंकाअध्ययनकरिकै क्षीर मधु घृतदधि अमृत सोमरस इत्यादिकपदार्थोंकरिकै अग्निआदिकदेवतावोंकीतृप्तिकरेहैं॥तिनअग्निआदिकदेवतावोंकेप्रसादतैं तेअधिकारीपुरुष आपभी तिनक्षीरादिकपदार्थोंकूं आपणीइच्छापूर्वपानकरेहैं हेशिष्य॥सर्वलोकोंविषेस्वतंत्रविचरणा तथाक्षीरादिकपदार्थोंकापानकरणा यहजोशास्त्रविषे ब्रह्मचर्यकाफलकथनकऱ्याहै॥ सोअवांतरफल कथनकऱ्याहै ॥ तात्रह्मचर्यकामुख्यफलतौयहहै ॥ जो तेत्रह्मचर्यवालेअधिकारीपुरुष ताआनंदस्वरूपआत्माकूंजानिकै यामृत्युदुःखरूप संसारकूंतरेहैं ॥ हेशिष्य ॥तुमारेप्रति हम बहुतक्याकहैं ॥ यालोकविषे जितनैंकीसाधनविद्यमानहैं ॥ तेसर्वसाधन यात्रह्मचर्यविषेही अंतर्भूतहैं जैसे हस्तीकेपादविषे सर्वपादोंकाअंतर्भावहोवैहै ॥ तैसे यात्रह्मचर्यविषेही सर्वसाधनोंकाअंतर्भावहोवैहै ॥ तात्रह्मचर्यतैंअधिक कोईभीसाधननहींहै॥और हेशिष्य॥याअधिकारीपुरुषोंकीशुद्धिकरणेहारा जोशौचहै॥तथा याअधिकारीपुरुषकूं स्वर्गादिकसुखोंकीप्राप्ति करणेहाराजोतपहै ॥ ताशौचरूप तथा तपरूपभी यहब्रह्मचर्यही है ॥ ऐसेब्रह्मचर्यकरिकैस्थित जेब्राह्मणहैं॥ते बहुतब्राह्मण दिवलोककूंप्राप्तहोतेभयेहैं ॥ हेशिष्य ॥ ते ब्रह्मचर्यसंपन्नपुरुष केवलदिवलोककूंप्राप्तनहींहोवैहैं ॥ किंतु तेत्रह्मचर्यवालेपुरुष देवयानमार्गद्वारा ब्रह्मलोककूंभी प्राप्तहोवैहैं ॥ कैसाहै सोदेवयानमार्ग ॥ पुनरावृत्तितैंरहितहै ॥ तथा जैसे कर्मकांडकेउपदेशकरणेहारे अठासीसहस्रमुनि ८८००० दक्षिणमार्गविषेस्थितहोवै हैं ॥ तैसे उपासनाकांडकेउपदेशकरणेहारे अठासीसहस्रमुनि तादेवयानमार्गविषेस्थितहोवैहैं॥ऐसेदेवयानमार्ग द्वारा तेत्रह्मचर्यवालेपुरुष तात्रह्मलोककूंप्राप्तहोवैहैं ॥हेशिष्य॥ यालोकविषे जेपुरुष दूसरेसर्वसाधनोंकरिकैसंपन्नभीहैं॥तथाविद्याविषेभीकुशलहैं ॥ परंतु एकत्रह्मचर्यसाधनतैंरहितहैं ॥ तेपुरुष मोक्षकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु तेविषयासक्तपुरुष जन्ममरणरूपक्लेशकूंहीप्राप्त ॥ २१ ॥

होवै हैं॥याअर्थविषे सौभरिआदिककोटिपुरुष दृष्टांतरूपहैं ॥हेशिष्य॥ जैसे समुद्रकेतरणेविषे एकनौकाहीसाधनहै ॥ तैसे याजन्ममरणरूपसंसारकेतरणेविषे यात्रह्मचर्यहीसाधनहै॥ हेशिष्य ॥यहब्रह्मचर्य केवलदुःखकीहींनिवृत्तिनहींकरे है ॥ किंतु तात्रह्मचर्यकरिकै यहपुरुष स्वर्गकूंभीप्राप्तहोवै हैं॥तथा मोक्षकूंभीप्राप्तहोवैहैं ॥ तथा दीर्घआयुषकूंभीप्राप्तहोवै हैं॥तथा इसलोकविषे महान्सुखकूं तथामहान्यशकूं प्राप्तहोवै हैं ॥ तथा तेत्रह्मचर्ययुक्तपुरुष सर्वरोगोंतैंरहितहोवैहैं ३ तथा सुंदरकांतिवालेहोवैहैं॥तथा सर्वदुःखोंतैंरहितहोवै हैं॥तथा सर्वपापतैंरहितहोवै हैं॥इसतैंआदिलेके अनेकप्रकारकामाहात्य तात्रह्मचर्यका शास्त्रोंविषेकथनकऱ्याहै॥हेशिष्य॥जोपुरुष याप्रकारकेमाहात्म्यकूं जानिकेभी तात्रह्मचर्यकेस्थिरकरणेविषे समर्थनहींहोवै ॥ सोपुरुष याप्रकारकाविचारकरिकै तात्रह्मचर्यकूंस्थिरकरे॥ आपणीमाताकेशरीरविषे तथा आपणीस्त्रीकेशरीरविषे कौनविशेषताहै ॥ जिसविशेषताकूंदेखिकै यहपुरुष तात्रह्मचर्य तैं भ्रष्टहोवैहै ॥ किंतु तिनदोनोंकेशरीरविषे किंचित्मात्रभी विशेषतानहीं है॥सर्वस्त्रीयोंका पांचभौतिकशरीर समानहीं है॥यातैं सर्वस्त्रीयोंकूं आपणीमाताकेसमानजानिकै यहपुरुष तात्रह्मचर्यकीरक्षाकरै ॥ किंवा ॥ मूत्रकापात्र तथा अपानवायुकरिकैदूषित जास्त्रीकीयोनिहै॥तायोनिविषेगमनकरणेहारेपुरुषकूं कौनसुखकीप्राप्तिहोवै है॥ किंतु किंचित्मात्रभी सुखकीप्राप्तिहोवैनहीं॥उलटा जैसे शरीरकेकंडूयनकरिकै हस्तोंकूं दुःखकीहीप्राप्तिहोवैहै तैसे तिनकामीपुरुषोंकूं ताविषयभोगतैं केवलदुःखकीहीप्राप्तिहोवै है ॥हेशिष्य ॥ याप्रकारकाविचारकरतेहुएभी यापुरुषकूं जभी किसीपूर्वलेपापकर्मकेवशतैं तास्त्रीके त्यागकरणेकीबुद्धि नहींहोवै ॥ तभी यहअधिकारीपुरुष तिसत्यागबुद्धिकेप्राप्तिवासतै अंतर्यामीपरमेश्वरके आगे याप्रकारकीप्रार्थनाकरै ॥ हेअंतर्यामीईश्वर॥सर्वब्राह्मणक्षत्रियादिकोंका आत्मारूपजोब्रह्महै॥तात्रह्मभावकेप्राप्तिकी मैं सर्वदा इच्छा करताहूं ॥ याकारणतैंहीं मैं सत्मार्गविषेस्थितिरूपचर्याकी अभिलाषावालाहूं॥जोकदाचित् मेरेकूं ब्रह्मभावकीइच्छानहींहोती ॥ तौमैं सत्मार्गविषेस्थितिकीअभिलाषा किसवासतैंकरता ॥ और मेरेकूं सर्वदा ब्रह्मभावकेप्राप्तिकीइच्छारहे है ॥ सात्रह्मभावकीप्राप्ति ब्रह्मचर्यतैंविनाहोवैनहीं ॥ यातैं हमारे ऊपर आप यह अनुग्रहकरो ॥ जोमैं पुनःयास्त्रीकी योनिविषेगमननहींकरौं ॥ जायोनि हमनें भा

ताकेउदरतैंनिकसणेकालविषे अनेकवार अनुभवकरीहै॥ कैसीहै यहस्त्रीकीयोनि ॥ सर्वदामूत्रकरिकैगीलीरहेहै तथा बहुतलोमकरिकैयुक्त है ॥ तथा यापुरुषोंके बल विवेक वैराग्य आदिकगुणोंकूंनष्टकरणेहारी है ॥ तथा पक्कव्रणकेसमान रक्तवर्णवाली है॥तथा अत्यंतदुर्गंधवाली है ॥ तथा सर्वजन्मोंविषेदुःखकीप्रातिकरणेहारी है॥ ऐसीनिंदितस्त्रीकीयोनिविषे जैसे पुनः हमारागमननहींहोवै॥ऐसीआपकृपाकरो॥ हेशिष्य ॥ यहअधिकारीपुरुष जभी तापरमेश्वरकेआगे इसप्रकारकी प्रार्थनाकरे है॥तभी सोपरमेश्वर ताअधिकारीपुरुषकूं तिनास्त्रियोंकेमैथुनविषे वैराग्यकीप्राप्तिकरे है ॥ जावैराग्यकरिकै यहअधिकारीपुरुष तामैथुनविषेप्रवृत्त होवैनहीं ॥ हेशिष्य ॥ केवलस्त्रीकेसंभोगका नाम मैथुननहीं है॥किंतु तासंभोगकेसाधनरूपजे स्मरण १ कीर्त्तन २ केलि ३ प्रक्षेण ४ गुह्यभाषण ५ संकल्प ६ अध्यवसाय ७ यहसतहैं ॥ तिनोंकूंभी शास्त्रविषेमैथुनकहेहैं॥तहां स्त्रियोंका मनविषेचिंतनकरणा याकानाम स्मरणहै॥और तिनस्त्रियोंकेसौंदर्यादिकगुणोंका मुखतैंकथनकरणा याकानाम कीर्त्तनहै ॥ और तिनस्त्रियोंके साथ जुवादिककीडाकरणी तथापरिहासकरणा याकानाम केलिहै ॥ और रागपूर्वक वारंवार तिनास्त्रियोंकूंदेखणा याकानाम प्रेक्षण है ॥ और एकांतदेश विषे तिनास्त्रियोंकेसाथ संभाषणकरणा याकानाम गुह्यभाषण है॥अथवा तिनास्त्रियोंकेगुह्यअंगोंका कथनकरणा याकानाम गुह्यभाषणहै॥और तिनास्त्रियोंविषे रमणीकबुद्धिकरणी याकानाम संकल्प है।और यास्त्रीकेसाथ मैं अवश्य संभोगकरौंगा याप्रकारकेनिश्चयकानाम अध्यवसायहैयहअष्टप्रकारकामैथुनही तिनास्त्रियोंविषेप्रीतिकाहेतु है ता अष्टप्रकारकेमैथुनकेत्यागकियेहुए यापुरुष कीतिनस्त्रियोंविषेप्रीतिहोवैनहीं ॥ और ताअष्टप्रकारकेमैथुनकेपरित्यागकानाम ब्रह्मचर्य है॥हेशिष्य॥इसप्रकारकेब्रह्मचर्यकरिकैयुक्तजोपुरुषहै॥सोपुरुष विनाहींयत्नतैं सर्वदुःखोंतैंरहित आनंदस्वरूपस्वयंज्योतिआत्माकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं सर्वमुमुक्षुजनोंनै ताब्रह्मचर्यधर्मकूं अवश्यकरिकैसंपादनकरणा ॥ और जोपुरुष विषयोंविषेआसक्तिकरिकै ताब्रह्मचर्यका परित्यागकरेहै ॥ सोपुरुष नानाप्रकारकेयोनियोंकूं अवश्यकरिकैप्राप्तहोवै है॥काहेतैं ब्रह्मचर्यतैंरहितविषयासक्तपुरुषकूं अत्यंतसमीप हृदयदेशविषेस्थितआत्मा कदाचित्भी प्रतीतहोतानहीं ॥ किंतु ताविषयासक्त पुरुषकेचित्तविषे विष्ठामूत्रादिकमलोंकासमूहरूपस्त्रीही

॥ २२ ॥

सर्वदा प्रतीतहोवै है॥ और निरंतर तास्त्रीकेध्यानतैं उत्पन्नभयेजेसंस्कार तिनसंस्कारोंकेबलतैं सोविषयासक्तपुरुष स्वप्नमनोरथादिकोंविषे भी तास्त्रीकूंहीदेखेहै ॥ इसप्रकार सर्वदा तास्त्रीकूंदेखताहुआ तथातास्त्रीकाध्यानकरताहुआ सोविषयासक्तपुरुष मरणतैंअनंतर इसलोकविषे अथवा परलोकविषे तिसस्त्रीकेउदरविषे जन्मकूंप्राप्तहोवै है॥ अथवा तास्त्रीकेसजातीयकिसीदूसरीस्त्रीकेउदरविषेजन्मकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अथवा किसीविजातीय पशुआदिकस्त्रीकेउदरविषे जन्मकूंप्राप्तहोवै है॥ ताजन्मतैंअनंतर सोपुरुषपूर्वलेसंस्कारोंकेवशतैं पुनःतिनस्त्रियोंकूं देखेहै ॥तथा तिनस्त्रियोंका सर्वदा ध्यानकरेहै ॥ तिसतैंअनंतर मरणकूंप्राप्तहोइकै सोविषयासक्तपुरुष पुनःतिनस्त्रियोंकेउदरविषे जन्मकूंप्राप्तहोवै है ॥ ताजन्मतैंअनंतर पूर्वलेसंस्कारोंकेवशतैं पुनःतिनस्त्रियोंविषे आसक्तहोवै है॥ इसप्रकार ब्रह्मचर्यतैंरहितहुआ सोविषयासक्तपुरुष आपणेआनंदस्वरूपआत्माकूंनजाणिकरिकै वारम्वार जन्ममरणरूपसंसारकूंप्राप्तहोवै है ॥हेशिष्य॥ इसप्रकार अन्वयव्यतिरेककरिकै याब्रह्मचर्यकूंही ब्रह्मविद्याकेप्राप्तिकीकारणता है ॥ याकारणतैंही सोप्रजापति ताइंद्रकेप्रति आत्मज्ञानकीप्राप्तिवासतै तीनवार बत्तीसबतीसवर्षपर्यंत ब्रह्मचर्यकरणेकीआज्ञाकरताभया ॥ और चतुर्थवार सोप्रजापति ताइंद्रकेचित्तकूंशुद्धहुआदेखिकै तथाअल्पदोषयुक्तदेखिकै ताअल्पदोषकीनिवृत्तिकरणेवासतै पंचवर्षपर्यंत ताब्रह्मचर्यकरणेकीआज्ञाकरताभया ॥ ताब्रह्माकेआज्ञाकूंमानिकै सोइंद्र पंचवर्षपर्यंत ताब्रह्मचर्यकूंकरिकै पुनः ताप्रजापतिकेसमीप आवताभया ॥ ताइंद्रकूंआयाहुआदेखिकै सोप्रजापति ताइंद्रकेप्रति याप्रकार तुरीयआत्माकाउपदेशकरताभया ॥ प्रजापतिरुवाच॥ हेइंद्र स्थूल सूक्ष्म कारण यातीनशरीरोंतैंविलक्षण जोआनंदस्वरूपआत्माहै ॥ सोआनंदस्वरूपआत्मा हमनैं तुमारेप्रति पूर्वही चक्षुआदिकस्थानोंविषे उपदेशकऱ्याथा ॥ परंतु आपणेअज्ञानकेवशतैं तूं ताआत्माकूं अन्यथाहीग्रहणकरताभया ॥ अब तीनशरीरोंतैंभिन्नरूपकरिकै ताआत्माकेबोधकरणेवासतै प्रथम धर्मोंसहिततीनशरीरोंकावर्णनकरेहै हेइंद्र ॥ जिसशरीरविशिष्टआत्माकूं तुमनैं ग्रहणकऱ्याहै ॥ सोआत्माकाउपाधिरूपशरीर स्थूल सूक्ष्म कारण याभेदकरिकैतीनप्रकारकाहोवै है।सोतीनप्रकारकाशरीर केवलअज्ञानकरिकैहीसिद्धहै।ताअज्ञानकेअभावहुए कार्यकारणरूपकरिकै तिनशरीरोंकीसिद्धिहोवैनहीं

हेइंद्र ॥ तेतीनोंशरीर अविद्याकरिकेकल्पितहैं ॥ यातैं मरणवत्ताधर्म तिनोंविषे यद्यपि समानहीं है ॥ तथापि यहस्थूलशरीरसर्वदा ता
मरणवत्ताधर्मवालाहै ॥ काहेतैं जैसे सर्प आपणाभक्ष्यरूपकरिकै मंडूककूंग्रहणकरेहै ॥ तैसे प्रमादरूपमृत्युनैं आपणाभक्ष्यरूपकरिकै
सर्वदा यास्थूलशरीरकूं ग्रहणकऱ्याहै॥ ऐसे यास्थूलशरीरविषे अजरत्व अमरत्व अभयत्व आदिकआत्माकालक्षण संभवतानहीं॥ यातैं
यहस्थूलशरीर आत्मानहीं है ॥ किंतु यास्थूलशरीरतैंविलक्षणहीआत्माहै ॥ और हेइंद्र ॥ जैसे यहस्थूलशरीर आत्मानहीं है ॥ तैसे
सोसूक्ष्मशरीरभी आत्मानहीं है॥काहेतैं जैसे अनुकूलरूप प्रियता तथाप्रतिकूलरूपअप्रियता यहदोनोंधर्म यास्थूलशरीरविषेरहैं॥तैसे
तासूक्ष्मशरीरविषेभी तेप्रियअप्रियताधर्मरहैं॥और आत्मा तिनप्रियअप्रियतादिकधर्मोंतैंरहितहै॥ यातैं यासूक्ष्मशरीरविषेभी आत्मरू
पतासंभवैनहीं ॥ किंतु यासूक्ष्मशरीरतैंभी आत्माविलक्षणहै ॥ और हेइंद्र जैसे यहस्थूससूक्ष्मशरीर आत्मानहींहै ॥ तैसे तीसरा अज्ञा
नरूपकारणशरीरभी आत्मानहींहै॥काहेतैं तासुषुप्तिकेकारणशरीरविषे यद्यपि तासुषुप्तिकालविषे दुःखनहीं है ॥ तथापिताअज्ञानरूप
कारणशरीरविषे भावीउत्पन्नहोणेद्वारेसर्वदुःख बीजरूपहोइकैरहैंहैं।यातैं सर्वदुःखोंकाबीजरूपहोणेतैं सोअज्ञानरूपकारणशरीरभी आत्मा
होइसकैनहीं ॥ किंतु ताकारणशरीरतैंभी आत्माविलक्षणहै॥हेइंद्र॥स्थूल सूक्ष्म कारण यातीनशरीरोंतैं तथातिनशरीरोंकेप्रियअप्रिय
तादिकधर्मोंतैं रहितजोयहआत्माहै ॥ सोयहआत्मादेव जैसे दुःखतैंरहितहै॥तैसे विषयजन्यसुखतैंभीरहितहै॥ काहेतैं विषयजन्यसुखभी
दुःखकेसमानहीहोवे है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जोकदाचित् आत्माविषे सुखदुःखनहींहोवे ॥ तो मैं सुखीहूं मैं दुःखीहूं याप्रतीतितैं
आत्मामैं सुखदुःख किसकारणतैंभासताहै ॥ समाधान ॥ हेइंद्र याआनंदस्वरूपआत्माविषे जोप्रीतिकरणेहारासुखप्रतीतहोवे है ॥ तथा
अप्रीतिकरणेहारादुःखप्रतीतहोवे है ॥ सोकेवल शरीरकेतादात्म्यअध्यासतैंप्रतीतहोवे है ॥ ताशरीरकेतादात्म्यअध्यासतैंविना आत्मा
विषे सोसुखदुःखप्रतीतहोवैनहीं जोशरीरकेतादात्म्यअध्यासतैंविनाभी आत्माविषे सोसुखदुःख प्रतीतहोता तो समाधिअवस्थाविषेभी
विद्वान्पुरुषोंकूं सोसुखदुःख प्रतीतहोणाचाहिये ॥ और समाधिअवस्थाविषे सोसुखदुःख प्रतीतहोवैनहीं ॥ यातैं यहजान्याजावे है ॥

शरीरकेतादात्म्यअध्यासतैंही आत्माविषे सोसुखदुःख प्रतीतहोवे है ॥ अब याहीअर्थकूंदृष्टांतकरिकैस्पष्टकरे हैं ॥ हेइंद्र ॥ यालोकविषे
वायुअग्निआदिकजेभूतहैं ॥ तथा विद्युत्मेघादिक जेभौतिकपदार्थ हैं ॥ यहसंपूर्ण घनीभावअवयवोंवालेदेहतैंरहितहैं ॥ याकारणतैं यह
वायुआदिक ताप्रियअप्रियतैंभीरहितहैं ॥ काहेतैं जैसे हममनुष्यादिकोंकादेह सर्वलोकोंकूं प्रतीतहोवे है ॥ तैसे तिनवायुमेघादिकोंका
घनीभूतदेह किसीपुरुषनैं किसीदेशविषेदेख्यानहीं ॥ किंतु जीवोंकेपुण्यपापरूपअदृष्टादिककारणोंकेवशतैं अकस्मात्तैंप्रगटहोइके
तेमेघादिक वृष्टिआदिककार्योंकूंकरेहैं ॥ यातैं यहशरीरकासंबंधही सुखदुःखकाकारणहै ॥ और हेइंद्र ॥ जैसे तेवायुमेघादिककार्य
आपणेअद्वितीयब्रह्मरूपकारणकूंप्राप्तहोइकै सर्वभेदतैंरहितअद्वितीयरूपकरिकैस्थितहोवे हैं ॥ तैसे सोसुषुप्तिविषेस्थित प्राज्ञनामाजीवा
त्माभी तिनशरीरोंकेअभिमानकापरित्यागकरिकै हार्दाकाशरूपस्वयंज्योतिब्रह्मकूंप्राप्तहोइकै आपणेवास्तवअद्वितीयरूपकरिकै स्थित
होवे है ॥ हेइंद्र ॥ वायुआदिकभूतपदार्थ तथाविद्युदादिकभौतिकपदार्थ ताब्रह्मतैंहीउत्पन्नहोवे हैं ॥ और कार्यकाआपणेउपादान
कारणविषेही लयहोवे है ॥ याकारणतैं लयकालविषे तेवायुविद्युदादिककार्य ताब्रह्मरूपकारणकूंहीप्राप्तहोवे हैं ॥ दूसरेकिसीपदा
र्थकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ काहेतैं सर्वजगतकूंसत्तास्फूर्त्तिदेणेहारा जोब्रह्मरूपआत्माहै ॥ ताआत्मातैं जोजोपदार्थ रहितहोवैगा ॥ सोसोपदा
र्थ शशशृंगकीन्याईं निःस्वरूपहीहोवैगा ॥ ऐसे निःस्वरूपपदार्थविषे तिनवायुविद्युदादिकपदार्थोंकालयसंभवैनहीं ॥ हेइंद्र ॥ जैसे
तिनवायुआदिककार्योंका चैतन्यआत्माविषेलयहोवे है॥ तैसे याघटादिककार्योंकाभी केवलमृत्तिकादिकोंविषेलयहोवैनहीं ॥किंतु तिनमृ
त्तिकादिकउपहित चैतन्यआत्माविषेही तिनघटादिककार्योंकालयहोवे है ॥ किंवा ॥ जैसे ताम्रधातुकूं पूर्वरक्तरूपकेविद्यमानहुए सुवर्ण
भावकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ तथा सर्वथानष्टहुएताम्रधातुकूंभी सुवर्णभावकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ किंतु पूर्वरूपकेत्यागतैंअनंतर विद्यमानताषधा
तुकूंही सुवर्णभावकीप्राप्तिहोवे है॥तैसे यहघटादिकपदार्थ आपणेआत्मास्वरूपतैंभिन्न केवलघटादिस्वरूपकरिकैतो कदाचित्भी कारण
विषेलयहोवैनहीं ॥ काहेतैं आत्मास्वरूपतैंभिन्नहुए तेघटादिककार्य आपही शशशृंगादिकोंकीन्याईं निःस्वरूपताकूंप्राप्तहोवैंगे ॥ और

निःस्वरूपशशशृंगादिकोंका किसीपदार्थविषेलय देखणेविषेआवतानहीं ॥ तैसे अनात्मारूपपटविषे अनात्मारूपपटकालयभी देखणेविषेआवतानहीं ॥ यातैं घटादिककार्योंका मृत्तिकादिकजडपदार्थविषेलयहोवैनहीं ॥ किंतु मृत्तिकाउपहितचेततनविषेही तेघटादिककार्य आपणेनामरूपकापरित्यागकरिकैलयहोवै है ॥ हेइंद्र ॥ जभी घटादिकजडपदार्थभी आपणेलयकालविषे चेतनब्रह्मभावकूंहीप्राप्तहोवैहैं॥ तभी सर्वदा तिसब्रह्मकेसाथ अभेदभावकूंप्राप्तहुआ जोयहचेतनजीवात्माहै॥सोचेतनजीवात्मा आपणेलयकालविषे चेतनब्रह्मभावकूंप्राप्त होवै है याकेविषेक्याकहणाहै ॥शंका ॥हेभगवन् ॥ याजीवात्माका जोसर्वदा ब्रह्मकेसाथअभेदहोवै तौ याजीवात्माकूं संसारदशातैं मोक्ष दशाविषे कौनविशेषता प्राप्तहोवै है ॥ समाधान॥हेइंद्र ॥ यात्वंपदार्थरूपजीवात्माविषे मैंकर्त्ताहूं मैंभोक्ताहूं याप्रकारके जेकर्तृत्वभोक्तृत्व आदिकधर्म प्रतीतहोवै हैं ॥ तेकर्तृत्वभोक्तृत्वादिकरूप अविद्याकरिकैकल्पितहोणतैं मिथ्याहीहैं॥ और ताजीवात्माका स्वयंप्रकाशता तथाअद्वितीयआनंदरूपता वास्तवस्वरूपहै ॥और ताजीवात्माका जोवास्तवस्वरूपहै ॥सोईहीवास्तवस्वरूप तत्पदार्थरूपब्रह्मकाभीहै यातैं वास्तवस्वरूपकरिकै तेजीवब्रह्मदोनों अभिन्नहैं॥ और संसारदशाविषे जो ताजीवब्रह्मकाभेद प्रतीतहोवै है॥ताभेदभ्रमकाहेतु स्थूल सूक्ष्मशरीरसहितकारणअज्ञानहीं है ॥ ताअज्ञानरूपकारणकेनिवृत्तहुएतैंअनंतर सोकल्पितभेदभी निवृत्तहोइजावै है ॥हेइंद्र ॥ मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकेअभेदज्ञानकरिकै जभी ताअज्ञानकीनिवृत्तिहोवै है।तभी तेकर्तृत्वभोक्तृत्वादिककल्पितरूपभी आपही निवृत्तहोइजावैहैं॥ यहही तासंसारदशातैं मोक्षदशाविषेविशेषताहै ॥ हेइंद्र॥ जैसे रज्जुरूपअधिष्ठानकेज्ञानकरिकै जभी तारज्जुविषयकअज्ञानकीनिवृत्तिहोवैहै !! तभी सोकल्पितसर्प तथातासर्पके भयउत्पादकत्व मोहउत्पादकत्व आदिकधर्म आपहीनिवृत्तहोइजावै हैं ॥ तैसे अधिष्ठानब्रह्मकेज्ञानतैं जभी ताब्रह्मविषयकअज्ञानकी निवृत्तिहोवै है॥ तभी तेकर्तृत्वभोक्तृत्वादिकधर्म आपहीनिवृत्तहोइजावै हैं॥और हेइंद्र ॥जैसे घटरूपउपाधिनिवृत्तहुए सोघटाकाश आपणेमहाकाशरूपकरिकै स्थितहोवै है ॥ तैसे स्थूल सूक्ष्म कारण यातीनशरीरोंतैं तथातिनोंकेकर्तृत्वभोक्तृत्वादिकधर्मोंतैं रहितहुआयहजीवात्मा आपणेपरिपूर्णब्रह्मरूपकरिकै स्थितहोवै है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ विद्युदादिकजडपदा॥ २४ ॥

र्थोंकूं तथाजीवात्माचेतनकूं लयकालविषे जोसमानही ब्रह्मभावकीप्राप्तिहोतीहोवै।तो श्रुतिविषे जीवात्माकूं ब्रह्मभावकीप्राप्तिविषे जोविद्युतादिकोंकादृष्टांतदियाहै सो असंगतहोवैगा॥काहेतैं किंचित्मात्रविलक्षणताकूंअंगीकारकरिकैंही उपमानउपमेयभावहोवै है ॥ यातैं तिनोंविषे किंचित्मात्र विलक्षणताकहीचाहिये॥समाधान॥हेशिष्य।यद्यपि श्रुतिनैं लयअवस्थाविषे जैसे जीवात्माकूं परब्रह्मभावकीप्राप्तिकथन करी है॥तैसे विद्युतादिकजडपदार्थोंकूंभी परब्रह्मभावकीप्राप्तिकथनकरी है॥ तथापि तादृष्टांतदार्ष्टांतिकविषे कार्यअकार्यरूपकरिकै विलक्षणता प्रसिद्धही है॥तहां विद्युतादिरूपदृष्टांतविषेतौ कार्यत्वधर्मरहे है ॥ और जीवात्मारूपदार्ष्टांतिकविषे सोकार्यत्वधर्मरहैनहीं ॥ किंतु अकार्यत्वधर्म रहे है॥यातैं दृष्टांतदार्ष्टांतिकदोनोंकीविलक्षणता संभवहोइसके है।शंका।हेभगवन्॥तिनविद्युतादिकोंकीन्याईं ताजीवात्माविषेभीकार्यरूपताकिसवासतैंनहींहोवै॥समाधान।हेशिष्य।तिनमेघविद्युतादिकोंकीन्याईं याजीवात्माविषेभीजोकार्यरूपताअंगीकारकरिये॥ तौ जोजोपदार्थ कार्यरूपहोवै है॥सोसोपदार्थ नाशवान्होवै है ॥ जस यहदेहादिक कार्यरूपहैं यातैंनाशवान्भी हैं॥ तैसे कार्यरूपहोणतैं ताजीवात्माकाभी अवश्यकरिकैनाशहोवैगा ॥ यातैं आत्मा अजर अमर अभय ब्रह्मरूपहै याप्रकारआत्माकेस्वरूपकूंकथनकरणेहारा सोप्रजापति मिथ्यावादीहोवैगा ॥ किंवा ॥ पूर्व तीनवार आत्माविषे विनाशतारूपदोषकूंदेखिकै सोइंद्र ताप्रजापतिकेसमीपआवताभयाथा ॥ जोकदाचित् अभी चतुर्थवारभी ताइंद्रकूंअविनाशीआत्माकालाभ नहींहोता ॥ तौ ताइंद्रकाआवणाही व्यर्थहोता ॥और पूर्वकीन्याईं ताआत्माविषेभी विनाशीपणादेखिकै सोइंद्र पुनःभी ताप्रजापतिकेसमीपआवता॥किंवा ॥याजीवात्माका जोनाशअंगीकारकरिये तौ ताप्रजापतिनैं इंद्रकेप्रति स्वयंज्योतिब्रह्मकीप्राप्तिपूर्वक आपणेपरिपूर्णरूपकरिकैस्थितिरूप जोफलकथनकऱ्याथा ॥ सोभी असंगत होवैगा॥काहेतैं तानष्टहुएजीवकूं सामान्यतैंकिसीपदार्थकीभीप्राप्तिसंभवैनहीं ॥ जभी नष्टहुएजीवकूं सामान्यतैं किसीवस्तुकीभीप्राप्ति नहींभई ॥ तभी तानष्टहुएजीवकूं ताप्राप्तिपूर्वक स्वरूपकरिकै स्थिति किसप्रकारहोवैगी॥ किंतु नहींहोवैगी ॥इत्यादिकअनेकप्रकारके दोष प्राप्तहोवैंगे॥यातैं ताजीवात्माविषे कार्यरूपतासंभवैनहीं॥किंवा॥ वास्तवतैंविचारकरिकैदेखियेतौ तावायुमेघविद्युतादिकदृष्टांतविषे

तथाजीवात्मारूपदार्ष्टांतिकविषे साकार्यअकार्यतारूपविलक्षणता अपेक्षितहैनहीं ॥ व्यक्तियोंकेभेदमात्रकरिकैभी तिनोंविषेदृष्टांतरूपता संभवहोइसकेहै ॥ याअभिप्रायकरिकै तावायुमेघविद्युतादिकदृष्टांतविषेभी वास्तवतैंकार्यरूपताकाखंडनकरे हैं ॥हेशिष्य॥ तावायुमेघादिकदृष्टांतविषे जोकदाचित् नैयायिकोंकेमतकीन्याईं वास्तवतैं कार्यरूपताहोवै तो तानाशवान्वायुआदिकदृष्टांतविषे श्रुतिनैं समानधर्मरूपकरिकैकथनकरेजे समुत्थान प्राप्ति स्वरूपावास्थिति यहतीनधर्म तेनहींसंभवैं ॥ परंतु तिनवायुआदिकोंविषे कारणतैंपृथक्सत्तारूप वास्तवकार्यताहैनहीं ॥ किंतु कारणही कार्यरूपकरिकैस्थितहोवै है॥सोकार्य कारणतैंभिन्नरूपकरिकै सत्नहीं है॥काहेतैं ताकारणतैंभिन्न हुआ सोकार्य मिथ्याहीहोवै है।जोकदाचित् नैयायिकोंकेमतकीन्याईं सोकार्य आपणेकारणतैंपृथक्रूपकरिकै स्थितहोवै तो सोकार्य आपणविनाशकरिकैअसत्ताकूंभीप्राप्तहोवै।ताकरिकै पूर्वउक्तसर्वदोष प्राप्तहोवै।परंतुताकार्यकूं हम कारणतैंपृथक्सत्तावाला अंगीकारकरतेनहीं। यातैं यापक्षविषे सोपूर्वउक्तदोष प्राप्तहोवैनहीं।शंका ।हेभगवन् ॥वायुमेघादिरूपदृष्टांतविषेस्थितकार्यपणेकूं जोमिथ्यामानोगे॥तोदार्ष्टांतिक रूपजीवविषेभी सोमिथ्यापणासिद्धहोवैगा ।समाधान।हेशिष्य।जैसे दृष्टांतविषेस्थितकार्यरूपता मिथ्याहै तैसेसोजीवपणाभी मिथ्याहोवैगा याग्रकारकीतुल्यताविषे जोतुम्हारा आग्रहहोवै ॥ तौ यहवार्त्ता हमारेकूंअनिष्टनहीं है॥काहेतैं ताजीवपणेकूं हमभी मिथ्यामानते हैं॥ या कारणतैंही ॥ मायाभासेन जीवेशौकरोति ॥ याश्रुतिनैं जीवईश्वरकीस्थिति मायाकेअधीनकथनकरी है ॥ जैसे घटरूपउपाधिकेनाश हुए घटाकाशपणा मिथ्याहीहोवै है ॥ तैसे तीनशरीरोंकेविवेककियेतैं सोजीवपणाभी मिथ्याहीहोवै है ॥ और जैसे घटाकाशरूपसंघातविषे विशेष्यरूपकरिकैस्थित जोआकाश है ॥ सोआकाश सत्यरूपहै ॥ तैसे जीवरूपसंघातविषे विशेष्यरूपकरिकैस्थित जो आनंदस्वरूपआत्माहै॥ सोआनंदस्वरूपआत्माभी सत्यरूपहै ॥यातैं वायुमेघादिकदृष्टांतविषे तथाजीवरूपदार्ष्टांतिक स्थित जोनामरूप लक्षणमायाकाअंशहै।।तामायाकेअंशविषे जोकोईवादी मिथ्यापणाकथनकरे ॥ तौ ताकेंविषे सोमिथ्यापणा निःशंकहोवै ॥ तामा याकेनामरूपअंशकूं हमभी सत्यकहतेनहीं॥किंतु जोपरमात्मादेव अस्ति भाति प्रिय रूपकरिकै सर्ववस्तुवोंविषेअनुगतहै।।तापरमात्मा

देवकूंही हम सत्यकहेहैं ॥ और स्थूल सूक्ष्म कारण यातीनशरीरोंकरिकैविशिष्टजोजीवहै ॥ सोजीवतौ ताआनंदस्वरूपआत्माकेसत्ताकूं अंगीकारकरिकैही सत्यरूपहोवै है ॥ स्वभावतैं ताजीवविषेभी सत्यरूपताहोवैनहीं ॥ इसप्रकार वायुमेघादिकभी तापरमात्मादेवकीसत्ता कूंअंगीकारकरिकैही सत्यरूपप्रतीतहोवैहैं ॥ स्वभावतैं तिनोंविषेभी सत्यरूपतानहीं ॥ इतनीअंशकीसमानताकूंअंगीकारकरिकैही तिन वायुमेघादिकोंविषे उपमानरूपता कथनकरीहै ॥ और जीवात्माविषे उपमेयरूपता कथनकरी है ॥ परंतु तिसवायुमेघादिकदृष्टांतविषे स्थितजाकार्यताहै ॥ ताकार्यताअंशविषे ताजीवात्माकूं तादृष्टांतकीसमानतानहीं है ॥ जोकदाचित् तिनवायुमेघादिकोंकीन्याईं ताजीवविषेभी कार्यरूपताहोवै ॥ तौ जोजोपदार्थ उत्पत्तिमान्होवै है ॥ सोसोपदार्थ नाशवान्होवैहै ॥ जैसे घटादिकपदार्थ उत्पत्ति मान्होणेतैं नाशवान्हैं ॥ तैसे कार्यरूपहोणेतैं सोजीवात्माभी नाशवान्होवैगा ॥ ताजीवात्माकेनाशहुए करेहुएकर्मोंकाफलभोगतैंविना शरूपकृतनाशदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ तथा न करेहुएकर्मोंकेफलकीप्राप्तिरूपअकृताऽभ्यागमरूपदोषकीप्राप्तिहोवैगी और ऐसेनाशवान् आत्माकेउपदेशकरणेकारिकै ताप्रजापतिकूंभी मिथ्यावादीपणासिद्धहोवैगा ॥शंका॥हेभगवन्॥ जैसे वायुमेघादिकोंविषेकार्यरूपताहै ॥ तैसे घटादिकपदार्थोंविषेभीकार्यरूपताहै ॥ यातैं प्रसिद्धघटादिकपदार्थोंकूंछोडिकै ताप्रजापतिनैं वायुमेघादिकोंकादृष्टांत किसवासतेदि याहै ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ सोप्रजापतिवायुमेघादिकोंकूं जोदृष्टांतरूपकरिकैकथनकरताभयाहै ॥ ताप्रजापतिकेवचनका कार्यरूपता केबोधनकरणेविषे तात्पर्यनहीं है ॥ किंतु प्रियअप्रियतातैंरहितकरणेहारा जोअशरीरभावहै ॥ ताअशरीरभावकेबोधनकरणेविषे ताप्रजा पतिकेवचनका तात्पर्य है॥और घटादिकपदार्थोंकी वायुमेघादिकोंकीन्याईं शरीरतैंरहितहोइकैस्थिति संभवैनहीं॥याकारणतैं ताप्रजाप तिनैं तिनघटादिकोंकादृष्टांतदियानहीं ॥ हेशिष्य ॥ ताप्रजापतिका यहअभिप्रायहै ॥ जैसे घनीभूतअवयवोंवालेशरीरतैंरहितहुए तेवायु मेघादिक प्रियअप्रियभावकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे यहजीवात्माभी तीनशरीरोंतैंरहितहुआ ताप्रियअप्रियभावकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और जैसे प्रलयकालकेप्राप्तहुए तेशरीरतैंरहितवायुआदिक परमज्योतिरूप कारणकूंप्राप्तहोइकै आपणेपरिपूर्णस्वरूपकरिकैस्थितहुए पुनःकल्पा

चित्भी संसारसंबंधीदुःखकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे शरीरकेअभिमानतैंरहित यहजीवात्माभी परमज्योतिरूपपरमात्मादेवकूंप्राप्तहोइकै आपणेपरिपूर्णरूपकरिकैस्थितहुआ पुनःकदाचित्भी संसारसंबंधीदुःखकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ हेशिष्य ॥ तापरमात्मारूप ज्योतिविषे जोपरमज्योतिरूपताकथनकरीहै ॥ सोस्वप्रकाशतारूपकरिकैकथनकरीहै काहेतैं तास्वयंज्योतिपरमात्मादेवतैंभिन्न जितनेक सूर्यचंद्रमाअग्निआदि कज्योतिहैं ॥ तेसूर्यादिकज्योति आपणीसिद्धिवासतै आपणेतैंभिन्न ज्ञानरूपज्योतिकीअपेक्षाकरे हैं॥यातैं तिनसूर्यादिकोंविषे परमज्योतिरूपता संभवैनहीं ॥ और सोज्ञानरूप परमात्मादेव आपणीसिद्धिवासतै किसीदूसरेज्ञानकीअपेक्षा करतानहीं ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं परमज्योति यानामकरिकैकथनकरेहै ॥ किंवा ॥ सोआत्मास्वरूपज्ञान जोकदाचित् आपणीसिद्धिवासतै किसीदूसरेज्ञाताकीअपेक्षाकरेगा।तौ आत्माश्रय अन्योन्याश्रयचक्रिका अनवस्था याचारिदोषोंकीप्राप्तिहोवैगी।काहेतैं ज्ञानवालेकूंज्ञाताकहैहैं॥ सोआत्मास्वरूपज्ञान आपणीसिद्धिवासतै जिसज्ञाताकी अपेक्षाकरेहै ॥ सोज्ञाता ताप्रथमज्ञानकरिकैज्ञानवालाहुआ ताप्रथमज्ञानकीसिद्धिकरेहै ॥ अथवा किसीदूसरेज्ञानकरिकैज्ञानवालाहुआ सोज्ञाता ताप्रथमज्ञानकीसिद्धिकरे है ॥ तहां प्रथमपक्षकेअंगीकार करणेविषेतौ आपणीसिद्धिविषे आपणीअपेक्षारूप आत्माश्रयदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और जोदूसरापक्ष अंगीकारकरिये ॥ ताकेविषे भी यहविचारकऱ्याचाहिये ॥ सोज्ञाता तादूसरेज्ञानकीजोसिद्धिकरेहै सो तिसीदूसरेज्ञानकरिकैज्ञानवालाहुआ तादूसरेज्ञानकीसिद्धिकरेहै ॥ अथवा प्रथमज्ञानकरिकैज्ञानवालाहुआ सोज्ञाता तादूसरेज्ञानकीसिद्धिकरेहै॥अथवा किसीतीसरेज्ञानकरिकैज्ञानवालाहुआ सोज्ञाता तादूसरेज्ञानकीसिद्धिकरेहै ॥ तहां प्रथमपक्षकेअंगीकारकियेहुए पुनःपूर्वकीन्याईं आत्माश्रयदोषकीप्राप्तिहोवैगी॥और दूसरेपक्षके अंगीकारकियेहुए अन्योऽन्याश्रयदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ काहेतैं प्रथमज्ञानकूं आपणीसिद्धिविषेतौ दूसरेज्ञानकीअपेक्षा ॥ और तादूसरे ज्ञानकूं आपणीसिद्धिविषे ताप्रथमज्ञानकीअपेक्षा ॥ याप्रकारकाअन्योन्याश्रयदोष प्राप्तिहोवैगा॥और जोतीसरापक्ष अंगीकारकरिये ॥ ताकेविषेभी यहविचारकऱ्याचाहिये॥सोज्ञाता तातीसरेज्ञानकीजोसिद्धिकरेहै॥ सो तिसीतीसरेज्ञानकरिकैज्ञानवालाहुआ तातीसरेज्ञान

कीसिद्धिकरेहै अथवा दूसरेज्ञानकरिकैज्ञानवालाहुआ सोज्ञाताातातीसरेज्ञानकीसिद्धिकरेहैअथवाप्रथमज्ञानकरिकैज्ञानवालाहुआसोज्ञाता तातीसरेज्ञानकीसिद्धिकरे है ॥ अथवा किसीचतुर्थज्ञानकरिकैज्ञानवालाहुआ सोज्ञाता तातीसरेज्ञानकीसिद्धिकरेहै॥ तहां प्रथमपक्षकेअंगीकारकियेहुएतौ पुनःपूर्वकीन्याईं आत्माश्रयदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और दूसरेपक्षकेअंगीकारकियेहुए पूर्वकीन्याईं पुनः अन्योन्याश्रयदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और तीसरेपक्षकेअंगीकारकियेहुए चक्रिकादोषकीप्राप्तिहोवैगी॥ काहेतैं प्रथमज्ञानकूं आपणीसिद्धिविषे दूसरेज्ञानकीअपेक्षा ॥ और तादूसरेज्ञानकूंआपणीसिद्धिविषे तीसरेज्ञानकीअपेक्षा ॥ और तातीसरेज्ञानकूं आपणीसिद्धिविषे पुनःप्रथमज्ञानकीअपेक्षा ॥ याप्रकारचक्रकीन्याईंभ्रमणरूप चक्रिकादोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और किसीचतुर्थज्ञानकरिकैज्ञानवालाहुआ सोज्ञाता तातीसरेज्ञानकीसिद्धिकरे है ॥ यहचतुर्थपक्षजोअंगीकारकरिये ॥ तौ सोचतुर्थज्ञान आपणीसिद्धिवासतै किसीपंचमज्ञानकीअपेक्षाकरेगा ॥ और सोपंचमज्ञानभी आपणीसिद्धिवासतैं किसीषष्टेज्ञानकीअपेक्षाकरेगा ॥ याप्रकार उत्तरउत्तर ज्ञानोंकीधारामानणेविषे अनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ यातैं सोआत्मास्वरूपज्ञान आपणीसिद्धिविषे किसीदूसरेज्ञाताकीअपेक्षाकरैनहीं ॥ किंतु सोआत्मास्वरूपज्ञान स्वप्रकाशरूपहै ॥ याकारणतैं ताज्ञानरूपस्वयंज्योतिआत्माकूं श्रुतिभगवती परंज्योति यानामकरिकैकथनकरे है ॥ ऐसेपरंज्योतिरूप परमात्मादेवकूंप्राप्तहोइकै यहजीवात्मा आपणेपरिपूर्णअद्वितीयस्वरूपकरिकैस्थितहोवै है ॥ शंका ॥ हेभगवन् याजीवात्माकूं तापरमज्योतिकीजाप्राप्तिहै ॥ साप्राप्तिही आपणेस्वरूपकरिकैस्थितिरूपहै ॥ यातैं संपत्ति याशब्दकरिकै ताप्राप्तिकूंकथनकरणेहारी तथा स्वरूपाभिनिष्पत्ति याशब्दकरिकै तास्थितिकूंकथनकरणेहारीजा परंज्योतिरूपसंपद्यस्वेनरूपेणाभिनिष्पद्यते ॥ यहश्रुतिहै ॥ ताश्रुतिविषे पुनरुक्तिदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ महावाक्यतैंउत्पन्नभयाजो मैं ब्रह्मरूपहूं याप्रकारकी ज्ञानहै ॥ ताज्ञानकानाम संपत्तिहै ॥ और ताजीवब्रह्मकेअभेदज्ञानतैंउत्पन्नभयाजो सर्वद्वैततैंरहितताऱूपफलहै ॥ ताफलकानाम स्वरूपाभिनिष्पत्तिहै ॥ यातैं ताश्रुतिविषे पुनरुक्तिदोषकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ प्रजापतिरुवाच ॥ हेइंद्र ॥ ताअद्वितीयभावरूपफलकीप्राप्ति

कालविषे जो ताजीवब्रह्मकाअभेदस्वरूपहोवै है॥सोअभेदस्वरूप सर्वकार्यकारणरूपप्रपंचतैं श्रेष्ठहै ॥तथा सर्वउपाधियोंविषेपरिपूर्ण है ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताजीवब्रह्मकेअभेदस्वरूपकूं उत्तमपुरुष यानामकरिकेकथनकरे है ॥ ताअभेदस्वरूपतैंपरेदूसराकोईपदार्थ उत्तमपुरुषरूपनहीं है ॥ अब जीवन्मुक्तपुरुषोंकेस्थितिकाप्रकार वर्णनकरे हैं ॥ हेइंद्र ॥ महावाक्यतैं जीवब्रह्मकेअभेदकूंजानणेहारा जोउत्तमपुरुषहै ॥ सोउत्तमपुरुष आपणेप्रारब्धकर्मकीसमाप्तिपर्यंत जिसप्रकार निवासकरे है ॥ ताप्रकारकूं तूं श्रवणकर ॥ तहां निर्विकल्पसमाधिविषेस्थितहुआ सोजीवन्मुक्तपुरुष सर्वप्रकारसैं अद्वितीयब्रह्मकूंहीदेखेहै॥ ताअद्वितीयब्रह्मतैंविना किसीभीअनात्मपदार्थकूंदेखता नहीं ॥ और तासमाधितैंव्युत्थानदशाविषेतो॥सोजीवन्मुक्तपुरुष सर्वजगत्कूंआपणाआत्मारूपदेखताहुआ सर्वलोकोंविषे आपणीइच्छापूर्वक स्वतंत्रविचरेहै ॥ जैसे महाराज स्वतंत्रहोइकै आपणेदेशविषेविचरेहै॥ तैसे सोजीवन्मुक्तपुरुषभी स्वतंत्रहोइकैविचरे है॥और हेइंद्र॥ सोसर्वात्मारूपविद्वान्पुरुष सर्वप्राणिरूपकरिकै भक्ष्यअभक्ष्यपदार्थोंकूंभोजनकरे है ॥ तथा बालकोंकेसमान नानाप्रकारकीक्रीडाकरे है॥तथा महान्पुरुषोंकरिकै आदरकूंप्राप्तहोवै है॥तथा सोविद्वान्पुरुष इंद्रादिरूपकरिकै देवांगनावोंकेसाथ रमणकरेहै ॥ तथा नानाप्रकारकेरथादिकवाहनोंविषेआरूढहोवै है॥तथा अनेकसखियोंकेसाथ रमणकरे है॥तथा आपणेबंधुजनोंकेसाथ विराजमानहोवै है॥इसप्रकार अनेकव्यवहारोंकूंकरताहुआभी सोविद्वान्पुरुष तिनव्यवहारोंसहित याआपणेदेहकूं कदाचित्भी स्मरणकरतानहीं॥ जैसे सुषुप्तपुरुष तासुषुप्तिकालविषे आपणेदेहादिकोंका स्मरणकरतानहीं ॥शंका ॥ हेभगवन् ॥ देहादिकसर्वपदार्थोंकूंविस्मरणकरताहुआ सोविद्वान्पुरुष मंदबुद्धिकह्याजावेगा ॥समाधान॥ हेइंद्र जैसे कोईपुरुष उन्मत्तदशाकूंप्राप्तहोइके ताउन्मत्तदशाविषे नानाप्रकारकेविपरीतव्यवहारोंकूंकरे है॥जभी तापुरुषकी साउन्मत्तदशानिवृत्तहोवै है॥तभी सोपुरुष ताउन्मत्तदशाकेसर्वव्यवहारोंकूं विस्मरणकरताहुआभी मंदबुद्धिकह्याजावैनहीं॥ तैसे सोविद्वान्पुरुषभी आविद्यकव्यवहारोंकूंविस्मरणकरताहुआभी मंदबुद्धिकह्याजावैनहीं॥उलटा आविद्यकव्यवहारोंकेस्मरणतैंही मंदबुद्धिकह्याजावे है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ ताविद्वान्पुरुषकूं जोकदाचित् देहादिकसर्वपदार्थोंकाविस्मरणहोताहोवै ॥ तो ता

॥ २७ ॥

विद्वान्पुरुषकेशरीरकीस्थिति किसप्रकारहोवैगी ॥ समाधान ॥ हेइंद्र ॥ जैसे सुषुप्तपुरुषकूं तासुषुप्तिकालविषे यद्यपि आपणेशरीरकेरक्षणकरणेकीचिंतानहीं है ॥ तथापि तासुषुप्तपुरुषकेशरीरकी यहप्राण रक्षाकरेहै ॥ तैसे तामुक्तपुरुषकेशरीरकीभी सोप्राणहीरक्षाकरे है ॥ और हेइंद्र ॥ जैसे रथऊपर सारथिपुरुषकेसोयेहुएभी तारथविषेजुडेहुए शिक्षितअश्व तारथकूं पूर्वकीन्याईं नियमपूर्वक लेजावे हैं ॥ तैसे याविद्वान्पुरुषकेउपरामहुएभी याविद्वान्पुरुषकेदेहकूं तेप्राण पूर्वकीन्याईं नियमपूर्वक चलावे हैं ॥ और हेइंद्र ॥ जैसे महाराजाकेसोयेहुएभी तामहाराजाकेमंत्री पूर्वकीन्याईं ताराज्यकारक्षणकरे हैं ॥ तैसे तामुक्तपुरुषकेउपरामहुएभी तामुक्तपुरुषकेदेहका तेप्राण रक्षणकरे हैं ॥ हेइंद्र ॥ जैसे तामुक्तपुरुषकेदेहकेरक्षाकाहेतु तेप्राणहोवै हैं ॥ तैसे तामुक्तपुरुषकेभोगकाहेतु मनसहितश्रोत्रादिकइंद्रियहोवै हैं ॥ अब विषयभोगकालविषे अज्ञानीजीवोंतैं ताविद्वान्पुरुषविषे विशेषताकावर्णनकरे हैं ॥ हेइंद्र ॥ जैसे मूढबालक अथवा कोईउन्मत्तपुरुष श्रोत्रादिकएकादशइंद्रियोंकरिकै शब्दादिकअनेकविषयोंकूंग्रहणकरताहुआभी पश्चात् तिनविषयोंकास्मरणकरतानहीं ॥ तैसे सोजीवन्मुक्तपुरुषभी श्रोत्रादिकएकादशइंद्रियोंकरिकै शब्दादिकविषयोंकूंग्रहणकरताहुआभी आपणेआत्मातैंभिन्न किसीभीपदार्थकूंजाणतानहीं ॥हेइंद्र ॥ शब्दादिकविषयोंविषे आसक्तितैंरहितहुआभी यहविद्वान्पुरुष ब्रह्मलोकादिकलोकोंविषेवर्तमानभोगोंकूं सूर्यादिकदेवतावोंकरिकैप्रेरणाकरेहुएनेत्रादिकइंद्रियोंकरिकै ग्रहणकरे है ॥ आपणीआसक्तिपूर्वक तिनविषयोंकूंग्रहणकरेनहीं ॥ याकारणतैं सोविद्वान्पुरुष सर्वःदुखोंतैं रहितहोवै है ॥ अब ताविद्वान्पुरुषविषे ब्रह्मरूपताकेस्पष्टकरणेवासतै प्रथम सर्वदेवतावोंकरिकैउपास्यतारूपब्रह्मकाधर्म ताविद्वान्विषेनिरूपणकरेहैं ॥ हेइंद्र जिसब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुषकूं हमनैं उत्तमपुरुष यानामकरिकैकथनकऱ्या है॥ तासर्वात्मारूपविद्वान्पुरुषकूं शमदमादिकसाधनोंयुक्तदेवता जबपर्यंत आपणाआत्मारूपकरिकैसाक्षात्कारनहींकरे है॥तबपर्यंत तेदेवता ताविद्वान्पुरुषकूं नानाप्रकारकेसविशेषरूपोंकरिकै उपासनाकरे हैं॥तासर्वात्मारूपविद्वान्पुरुषकीउपासनाकरिकैही तिनदेवतावोंकूंसर्वलोकविषे तथासर्वभोगोंविषे स्वतंत्रताहोवेहै॥हेइंद्र जैसे तेदेवतातासर्वात्मारूपविद्वान्पुरुषकीउपासनाकरिकै सर्वलोकवर्तिभोगोंकूं प्राप्तहोवे हैं।तैसेइहांनीकालविषेभी जोविद्वान्

पुरुष तासर्वात्मारूपविद्वान्पुरुषकूं आपणाआत्मारूपजानिकै उपासनाकरै है ॥ सोअधिकारीपुरुषभी सर्वलोकवर्तिभोगपदार्थोंकूंप्राप्तहो वै है ॥ याअर्थविषे तुमनैं किंचित्मात्रभी संशयनहींकरणा ॥ हेइंद्र ॥ सर्वजगत्का अधिष्ठानरूपकरिकै जोतत्पदार्थ रूपपरमात्मादेव हमनैं तुमारेप्रति कथनकऱ्या है ॥ सोपरमात्मादेवही सर्वभूतप्राणियोंके हृदयाकाशविषे त्वंपदार्थजीवरूप करिकैस्थितहोवै है ॥ तथा संघातरूप उपाधिकेसंबंधतैं शबलसंज्ञाकूं प्राप्तहोवै है॥ऐसेआनंदस्वरूपपरमात्मादेवकूं जोअधिकारीपुरुष आपणाआत्मारूपकरिकै सा क्षात्कारकरै है ॥ सोविद्वान्पुरुष महान्पापोंकरिकैभी लिपायमानहोवैनहीं ॥हेइंद्र॥ ताविद्वान्पुरुषकूं पापकर्म नहीं स्पर्शकरे हैं॥याके विषे यहकारण है ॥ जिसविद्वान्पुरुषकूं सर्वकालविषे परमार्थसत्यसाक्षीही हमाराआत्मा है याप्रकार आपणेतैंरहितआत्माकाज्ञानहुआ है ॥ सोविद्वान्पुरुष किसप्रकार पापकर्मोंकूंकरेगा ॥ किंतु नहींकरेगा ॥ काहेतैं पापकर्मोंविषेप्रवृत्तिकाहेतुभूत जोद्वैतदर्शन है ॥ सो द्वैतदर्शन ताविद्वान्पुरुषका निवृत्तहोइगया है ॥ हेइंद्र ॥ जोविद्वान्पुरुष सर्वदा सुखरूपआत्माकूंही प्रियजानै है ॥ ताआत्मातैंभिन्न विषयसुखकूं प्रियजानतानहीं ॥ ऐसाविद्वान्पुरुष ताविषयसुखकीप्राप्तिवासतै किसप्रकार पापकर्मोंकूंकरैगा॥किंतु नहीं करैगा॥ हेइंद्र ॥ जन्ममरणादिकविकारोंकूंभी अन्यहीप्राप्तहोवै है ॥ मैंसाक्षीआत्मा जन्ममरणादिकविकारोंकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ तथा शुभअशुभकर्मोंके सुखदुःखरूपफलकूंभी अन्यहींभोगेहै॥मैंसाक्षीआत्मा ताफलकाभोक्तानहीं॥याप्रकार सर्वदा आपणेकूंअसंगजानताहुआ सोविद्वान्पुरुष जभी पुण्यकर्मोंकाकर्त्ताभी आपणेकूंमानतानहीं ॥ तभी सोविद्वान्पुरुष पापकर्मोंकूंनहींकरेहै याकेविषेक्याकहणाहै॥शंका॥हेभगवन्॥ व्यवहारविषेस्थितहुए ताविद्वान्पुरुषका ऐसामहिमा किसप्रकारहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेइंद्र ॥ जोविद्वान्पुरुष सर्वभूतप्राणियोंकाआं त्मारूप है ॥ तथा सर्वभूतप्राणियोंकूंअभिन्नकरिकै देखे है ॥ ऐसेब्रह्मवेत्तापुरुषके निष्ठारूपमार्गविषे अनेकबुद्धिमान्पुरुषभी मोहकूं प्राप्तहोवै है॥और जेदेवता ताविद्वान्पुरुषकेनिष्ठारूपमार्गकेप्राप्तिकीइच्छाकरै हैं ॥ तेदेवता धन्यहैं ॥ हेइंद्र ॥ सर्वपुण्यपापकर्मोंतैं रहित जो ब्रह्मवेत्ता पुरुषोत्तम है ॥ ताब्रह्मवेत्ता पुरुषकूं यहपुण्यवान् है अथवा यहपापी है याप्रकार कोईपुरुष जानिसकतानहीं ॥ हेइंद्र ॥

इसप्रकार जोअधिकारीपुरुष पूर्वलेपुण्यकर्मकेप्रभावतैं ताआनंदस्वरूपअद्वितीयब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपकरिकै साक्षात्कारकरे हैं ॥ सोविद्वान्पुरुष अवश्यकरिकै मोक्षकूंप्राप्तहोवैहै ॥ याअर्थविषे तुमनैंकिंचित्मात्रभी संशयनहींकरणा ॥ हेशिष्य इसप्रकार सोसर्वज्ञ प्रजापतिदेवराजइंद्रकेप्रति तीनअवस्थावोंतैंरहितभूमात्रह्मका आपणाआत्मारूपकरिकै उपदेशकरताभया ॥ कैसाहैसोभूमात्रह्म ॥ सर्वभूतप्राणियोंका हृदयाकाशरूपहै ॥ तथा आपणीसत्तास्फूर्तिदेकरिकै नामरूपात्मकसर्वजगत्कानिर्वाहकरणेहाराहै ॥ तथा सर्वदा तानामरूपात्मकजगत्तैंपरहै॥तथा तानामरूपात्मकजगत्केसंबंधतैंरहितहै॥ऐसेभूमात्रह्मकूंसोइंद्रआपणाआत्मारूपकरिकैजानताभया॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार गुरुशिष्यकीपरम्परारूपविद्याकासंप्रदाय दोप्रकारकाप्रवृत्तहोताभया ॥ तहां एकसंप्रदायतौ देवराजइंद्रतैंलैके प्रवृत्तहोताभया ॥ और दूसरासंप्रदायतौ स्वायंभूमनुतैंआदिलैके प्रवृत्तहोताभया ॥ काहेतैं ताप्रजापतिनै जैसे देवराजइंद्रकेप्रति साविद्या उपदेशकरीथी ॥ तैसे तास्वयंभूमनुकेप्रतिभी साविद्याउपदेशकरीथी ॥ तहां सोमनुभगवान् भूमिलोकविषे आदिगुरुहोइके अधिकारीपुरुषोंकेप्रति साब्रह्मविद्याकहताभया ॥ और ताब्रह्मविद्याविषेअधिकारकीसिद्धिकरणेहारी जाअंतःकरणकीशुद्धिहै ॥ ताअंतःकरणकी शुद्धितैंरहित ब्राह्मणक्षत्रियवैश्योंकूं देखिकै सो मनुभगवान् तिनोंकेप्रति याप्रकारका उपदेशकरताभया ॥ हेत्रैवर्णिकपुरुषो ॥ तुम्हारेकूं जबपर्यंत अंतःकरणकीशुद्धिपूर्वक आत्माकाज्ञाननहींहोवै ॥ तबपर्यंत तुम चारआश्रमोंविषे किसीआश्रम कूंधारणकरिकै आपणेआपणेयज्ञादिककर्मोंकूं सावधानहोइकैकरो ॥ और तिननिष्कामकर्मोंकरिकै अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा जभी तुमारेकूं वैराग्यकीप्राप्तिहोवै ॥ तभीहीतुमोंनैं आत्मसाक्षात्कारवासतै परमहंससंन्यासकूंग्रहणकरणा ॥ तावैराग्यतैंविना तुम्होंनैंतापर महंससंन्यासकूंग्रहणकरणानहीं ॥ हेशिष्य॥इसप्रकारसोमनुभगवान् अधिकारीजनोंकेप्रति यथाअधिकार विद्याकाउपदेशकरताभया ॥ और सोदेवराजइंद्रभी ताप्रजापतितैं तादुर्लभब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोइके साब्रह्मविद्या अग्निवायुआदिकदेवताओंकेप्रति कथनकरताभया ॥ और ताउमारूपब्रह्मविद्याकेअनुग्रहतैं तेअग्निवायुआदिकदेवताभी तातीनअवस्थातैंरहित भूमात्रह्मकूं आपणाआत्मारूपकरिकैसाक्षा

त्कारकरतेभये ॥ हेशिष्य ॥ तेदेवतासात्विकस्वभाववालेथे ॥ यातैं तिनदवताओंविषे परमेश्वरका महान्पक्षपातथा ॥ याकारण तैंही तेइंद्रादिकदेवता ताब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपकरिकै साक्षात्कारकरतेभये ॥ हेशिष्य ॥ याअध्यायकेआदिविषे जोतुमतैं जाग्रतादिकतीनअवस्थाओंतैंरहित भूमाआत्माकास्वरूपपूछाथा ॥ सोसंपूर्णहमनें तुमारेप्रति विस्तारतैंकथनकऱ्या ॥ अब जिसअर्थके श्रवणकरणेकीतुम्हारेकूंइच्छाहोवै ॥ सोअर्थ तूंहमारेसैंपूछ ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य स्वामीउद्धवानंदगिरिपूज्यपाद शिष्येण स्वामीचिद्घनानंदगिरिणा विरचिते प्राकृतआत्मपुराणे छांदोग्यसारार्थप्रकाशे प्रजापतिइंद्रविरोचनसंवादोनाम चतुर्दशोऽध्यायः समाप्तः ॥ १४ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ ॥ ॥ ॥

इति श्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषा आत्मपुराणे चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

॥ अथ स्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषाआत्मपुराणे पञ्चदशाध्यायप्रारंभः ॥

ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथ पंचदशाध्यायप्रारंभः ॥ पूर्वचतुर्दशेअध्यायविषे सामवेदकेछांदोग्यउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ अब यापंचदशेअध्यायविषे तिसीसामवेदकेकेनउपनिद्का अर्थनिरूपणकरेहैं ॥ तहां पूर्वचतुर्दशेअध्यायकेअंतविषे अग्निवायुआदिकदेवताओंकूं ब्रह्मविद्याकेअनुग्रहतैं ब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिकथनकरी थी ॥ ताकूंश्रवणकरिकै सोशिष्यताअर्थकेपूछणेकीइच्छाकरताहुआ ॥ आपणेगुरुकेप्रति याप्रकारकावचनकहताभया॥शिष्यउवाच॥हे भगवन् ॥ याआत्मपुराणकेप्रथमअध्यायविषे आपनैं ऋग्वेदकेऐतरेयउपनिषद्काअर्थनिरूपणकऱ्याथा ॥ ताप्रथमअध्यायविषे सनका दिकमुनियोंके तथावामदेवादिकअधिकारीप्रजाके संवादकरिकैनानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैंकथनकरीथी ॥ तथा गर्भविषेस्थितवाम देवका सर्वात्मभावरूपअनुभवकथनकऱ्याथा ॥ तथावामदेवादिकसर्वअधिकारियोंके ज्ञानवैराग्यादिकसाधनकरथे ॥ और हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणकेद्वितीयअध्यायविषे तथातृतीयअध्यायविषे आपनैंतिसीऋग्वेदके कौषीतकीउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा॥तहां॥ द्वितीयअध्यायविषे देवराजइंद्रकेतथाप्रतर्दनराजाके संवादकरिकैआपनै प्राणप्रज्ञास्वरूपआत्माका कथनकऱ्याथा ॥ और याआत्मपुरा णकेतृतीयअध्यायविषे राजाअजातशत्रुकेतथाबालाकिब्राह्मणकेसंवादकरिकै आपनैंतिसीआत्माकूंप्राणादिकोंतैंभिन्नकरिकै कथनकऱ्या था ॥ और हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणके चतुर्थ पंचम षष्ठ सप्तम याचारअध्यायोंविषे आपनैंयजुर्वेदकेबृहदारण्यकउपनिषद्काअर्थनिरू पणकऱ्याथा ॥ तहांचतुर्थअध्यायविषेतौ आपनैं दोपुरुषवंश एकस्त्रीवंश यातीनवंशोंविषेस्थितऋषियोंका परस्परभेद तथाअभेद वर्णन कऱ्याथा ॥ तहांदध्यङ्अथर्वणऋषिदेवराजइंद्रकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरताभया॥ताब्रह्मविद्याकूंश्रतवणकरिकै क्रोधवान्हुआसोइंद्र तादध्यङ्ऋषिकूं पुनःताब्रह्मविद्याकेउपदेशकरणेतैं निवारणकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोदध्यङ्ऋषिआपणेवचनकेसत्यकरणेवाससै अश्विनीकुमारोंकेप्रतिसाब्रह्मविद्याउपदेशकरताभया । ताकरिकैक्रोधवान्हुआसोइंद्र तादध्यङ्ऋषिकामस्तकछेदनकरताभया॥इत्यादिक सर्ववार्त्तोताचतुर्थअध्यायविषेआपनैंकथनकरीथी ॥ औरहेभगवन् ॥ याआत्मपुराणकेपंचमअध्यायविषे आपनैंयहवार्त्ताकथनकरीथी ॥

जनकराजाकेयज्ञसभाविषे याज्ञवल्क्यमुनि आश्वलायनादिकसर्वब्राह्मणोंकूंजीततभया ॥ तहांयाज्ञवल्क्यमुनिकेशापकरिकैशाकल्यब्राह्म णका मृत्युहोताभया॥और हेभववन् ॥ याआत्मपुराणकेषष्ठेअध्यायविषे आपनैं याज्ञवल्क्यमुनिके तथाजनकराजाके दोवारसंवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी॥और हेभगवन् याआत्मपुराणकेसप्तमअध्यायविषे याज्ञवल्क्यमुनिके तथा मैत्रेयीस्त्रीके संवादकरि कै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी।तथाताज्ञवल्क्यमुनिकेसंन्यासआश्रमका निरूपणकऱ्याथा॥औरहेभगवन्॥याआत्म पुराणकेअष्टमअध्यायविषे आपनैं तिसीयजुर्वेदके श्वेताश्वतरनामाउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा॥ताअष्टमअध्यायविषे श्वेताश्वतरऋ षिके तथासंन्यासियोंके संवादकरिकै आपनैं याजगत्केकारणोंकाविचार निरूपणकऱ्याथा॥और हेभगवन्॥याआत्मपुराणकेनवमअध्या यविषे आपनैं तिसीयजुर्वेदकेकठवल्लीउपनिषद्काअर्थनिरूपणकऱ्याथा ॥ तानवमअध्यायविषे यमराजाके तथानचिकेताके संवादकरिकै आपनैं नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी॥और हेभगवन्॥ याआत्मपुराणकेदशमेअध्यायविषे आपनैं तिसीयजुर्वेदके तैत्तिरीयकउप निषद्का तथानारायणीयउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तादशमअध्यायविषे वरुणपिताके तथाभृगुपुत्रके संवादकरिकै पंचको शोंकाविचार कथनकऱ्याथा॥तथा वेननामागंधर्वकाअनुभव कथनकऱ्याथा तथा सत्यादिकसर्वसाधनोंतैं संन्यासआश्रमकीअधिकताक थनकरीथी॥औरहेभगवन् ॥ याआत्मपुराणके एकादशेअध्यायविषे आपनैं जावालादिकएकादशउपनिषदोंकाअर्थ निरूपणकऱ्याथा॥ ताएकादशेअध्यायविषे आपनैं यहवार्त्ता कथनकरीथी ॥ संवर्त्तकादिकमहान्पुरुष तापरमहंससंन्यासकूं धारणकरतेभये हैं॥और तापर महंससंन्यासकेग्रहणकरणेका वैराग्यहीकालहै ॥ तथा यमनियमादिकसाधानोंवालेविरक्तपुरुषही तासंन्यासकेअधिकारी हैं॥ तथा तासं न्यासीका दंड कमंडलु काषायवस्त्र इत्यादिकबाह्यवेषहै ॥ तथा भिक्षाअटन एकांतवास वेदांतचिंतन इत्यादिक आचारहै ॥ इत्यादिक सर्ववार्त्ता ताएकादशेअध्यायविषे आपनैं कथनकरीथी॥ और हेभगवन् याआत्मपुराणके द्वादश त्रयोदश चतुर्दश यातीनअध्यायोंविषे आपनैं सामवेदकेछांदोग्यउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा॥तहां द्वादशेअध्यायविषेउद्दालकमुनिके तथाश्वेतकेतुके संवादकरिकै आपनैं

नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी॥ औरयाआत्मपुराणकेत्रयोदशेअध्यायविषे भगवान्सनत्कुमारके तथानारदमुनिके संवादकरिकै आपनैं नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी॥औरयाआत्मपुराणकेचतुर्दशेअध्यायविषे आपनैं प्रजापतिके तथा इंद्रविरोचनके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी॥हेभगवन्॥ताचतुर्दशेअध्यायकेअंतविषे आपनैं यहवार्त्ता कथनकरीथी ॥ तिनदेवताओंके मध्यविषे इंद्र अग्नि वायु आदिकदेवताओंकूं ब्रह्मविद्यारूपउमादेवीकेअनुग्रहतैं विशेषकरिकै ब्रह्मकाज्ञानहोताभया ॥ याआपकेकहणेतैं हमारेकूंऐसाप्रतीतहोवै है ॥ याप्रसंगविषे कोईआश्चर्यरूपवार्त्ता होवैगी ॥ यावार्त्ताकेश्रवणकरणेकी मैं इच्छाकरताहूं॥ आप कृपाकरिकै साआश्चर्यरूपवार्त्ता हमारेप्रति कथनकरो॥इसप्रकार शिष्यकरिकैपूछाहुआ सोश्रीगुरु ताश्रद्धावान्शिष्यकेप्रति केनउपनिषद्विषेस्थितकथाका उपदेशकरताभया ॥ कैसीहैसाकथा ॥ अधिकारीपुरुषोंकूं ब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिकरणेहारी है॥श्रीगुरुउवाच॥हेशिष्य॥ तेशुद्धअंतःकरणवाले अग्निवायुआदिकदेवता तादेवराजइंद्रतैं ब्रह्मविद्याकूंपाइकै तासभाविषेस्थितइंद्रकेसमीपजाइकै याप्रकारकामनन करतेभये॥ देवताउवाच॥हेदेवराजइंद्र ॥ श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रियोंकूं तथावाकादिकपंचकर्मइंद्रियोंकूं तथामनकूं तथाप्राणोंकूं आपणेआपणेकार्य करणेविषे कौनप्रेरणाकरताहै॥हेभगवन् तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं आपणेआपणेकार्यविषे यहजीवही प्रेरणाकरे है ॥ याप्रकारकावचन जो आपकह्यो ॥ सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं यहजीव आपणेमनविषे याप्रकारकासंकल्पकरे है॥जो इसइंद्रियकरिकै मैं याव्यापारकूं कदाचित्भी नहींकरौंगा ॥ याप्रकारकेसंकल्पकूंकरिकैभी यहजीव तिसीव्यापारकूंकरे है ॥ जैसे भूतकेआवेशकरिकैयुक्तहुआ यहपुरुष आपणेप्रतिकूलव्यापारोंकूंभीकरे है॥ तैसे यहजीवभीताव्यापारकेनकरणेकीइच्छाकरताहुआभी अवश्यकरिकैताव्यापारकूंकरे है॥यातैं यहजान्याजावै है ॥ यहजीव स्वतंत्र नहीं है ॥ किंतु परतंत्रहै ॥ ऐसेपरतंत्रजीवोंविषे तिनइंद्रियोंकीप्रेरकतासंभवैनहीं॥ और हेभगवन्॥ सुषुप्तसारथिरथाश्वन्यायकरिकै जैसे जीवन्मुक्तपुरुषकेश्रोत्रादिकइंद्रिय स्वतंत्रहोइकै आपणेआपणेव्यापारोंकूं करे हैं ॥ तैसे सर्वप्राणियोंकेश्रोत्रादिक इंद्रिय स्वतंत्रहोइकै आपणेआपणेव्यापारोंकूंकरे हैं याप्रकारकावचन जोआपकह्यो ॥ सोभी संभवैनहीं॥काहेतैं यालोकविषेबहुतजनतो जिसवस्तुविषे आपणीअनुकूलताकाविचारकरे हैं ॥ तावस्तुविषेतो प्रवृत्तहोवै हैं ॥ और जिसवस्तुविषे आपणीप्रतिकूलताकाविचारकरे हैं ॥ तिसवस्तुतैं निवृत्तहोवै हैं ॥ सोअनुकूलताकाविचार तथाप्रतिकूलताकाविचार जडइंद्रियोंविषे संभवैनहीं॥किंतु चेतनविषेही सो विचारसंभवैहै ॥ और मुक्तपुरुषोंकेइंद्रियोंकेव्यापारविषेभी चक्रभ्रमिन्यायकरिकै व्यवहितचेतनकेव्यापारकाही अनुमानकऱ्याजावै है ॥ यातैं तिनपरतंत्रइंद्रियोंकेप्रेरणाकरणेहारा कोईचेतन अंगीकारकऱ्याचाहिये ॥ और हेभगवन् ॥ यहश्रोत्रादिकइंद्रियहीचेतनहैं याप्रकारकावचन जोआपकह्यो ॥सोभी संभवैनहीं॥ काहेतैं जोश्रोत्रादिकइंद्रियोंकूंही चेतनरूपमानिये॥तो एकही शरीरविषे अनेकचेतनआत्मा होवैंगे ॥ तेअनेकचेतनआत्माभी भिन्नभिन्नमतवालेहोवैंगे ॥ यातैं जैसे एकग्रामविषेरहणेहारे भिन्नभिन्नमतवाले अनेकप्रधानपुरुष ताग्रामकाही नाशकरे हैं ॥ तैसे भिन्नभिन्नमतवाले तेअनेकचेतनभी याशरीरकाही नाशकरैंगे॥यातैं तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंविषे साचेतनरूपतासंभवैनहीं ॥ और हेभगवन् ॥ पुण्यपापकर्महीं याश्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं आपणेआपणेव्यापारविषे प्रवृत्तकरे हैं ॥ याप्रकारकावचन जो आपकह्यो॥सोभीसंभवैनहीं॥काहेतैं जैसे तेश्रोत्रादिकइंद्रिय जडहोणेतैंस्वतंत्रनहीं हैं॥तैसेतेपुण्यपापरूपकर्मभी जडहोणेतैं स्वतंत्रनहीं हैं॥ यातैं तिनकर्मोंविषेभी तिनइंद्रियोंकीप्रवर्तकता संभवैनहीं ॥ हेभगवन् ॥ यालोकविषे सर्वप्राणीआपणीअनुकूलताकाविचारकरिकैतो प्रवृत्तहोवै हैं॥और आपणीप्रतिकूलताकाविचारकरिकैनिवृत्तहोवै हैं॥ताअनुकूलताप्रतिकूलताकेविचारतैंविना किसीभीप्राणीकी प्रवृत्तिनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ सोअनुकूलताप्रतिकूलताकाविचार यादेहइंद्रियादिकजडसंघातविषे संभवतानहीं॥ यातैं यहजान्याजावै है॥तादेहइंद्रियादिकजडसंघातकूं आपणेआपणेकार्यविषेप्रवृत्तकरणेहारा कोईतासंघाततैंभिन्न चेतनहोवैगा॥सोकौनचेतनहै यहआप कृपाकरिकैकहो ॥ हेशिष्य॥इसप्रकारकाप्रश्न जभी तिनअग्निआदिकदेवताओंनैं तादेवराजइंद्रकेप्रतिकऱ्या॥तभी सोइंद्र तिनदेवतावोंकेप्रति याप्रकारकाउत्तरकहताभया।इंद्रउवाच।हेदेवतावो।जोआत्मादेव श्रोत्रादिकसर्वइंद्रियोंकाभी इंद्रियरूपहै॥तथाजोआत्मादेवमनकाभीमनरूपहै ॥ तथाजोआत्मादेव प्राणकाभी प्राणरूपहै॥तथाजिसआत्मादेवकूं ब्रह्मानैं जाग्रतादिकतीनअवस्थावोंतैं रहितकह्याथा॥सोआत्मादेवही आपणी

समीपतामात्रकरिकै सर्वदेहधारीजीवोंका तथाश्रोत्रादिसर्वइंद्रियोंका प्रेरकहै ॥ हेदेवताओ ॥ जोआत्मादेव श्रोत्रादिकइंद्रियोंका तथामनका प्रेरकहै ॥ सोईहीआत्मादेव प्राणोंकाभीप्रेरकहै ॥ काहेतैं यालोकविषे कोईभीदेहधारीजीव प्राणकरिकै तथाअपानकरिकै जीवता नहीं ॥ किंतु जिसआत्मादेवकेआश्रित यहप्राणअपानरहे हैं॥ ताआत्मादेवरूपप्राणकरिकैही यहसर्वप्राणीजीवनकूं प्राप्तहोवे हैं॥यातैं ताआत्मादेवकूं श्रुतिभगवतीनैं प्राणोंकाभीप्राणकह्याहै ॥ और यहश्रोत्रादिकइंद्रिय तथामन ताआत्मादेवकीसत्तास्फूर्तिकूंपाइकैही आपणे आपणे कार्यकरणेविषेसमर्थहोवे हैं ॥ याकारणतैं ताआत्मादेवकूं श्रुतिभगवतीनै इंद्रियोंकाभीइंद्रियकह्याहै ॥तथा मनकाभीमनकह्याहै हेदेवताओ इसप्रकार जेअधिकारीपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं ताइंद्रियादिकोंकेप्रवर्त्तकआत्मादेवकूं श्रवणकरिकै पश्चात् शुद्धमनकरिकै ताआत्मादेवकाविचारकरे हैं ॥तेअधिकारीपुरुषही जाग्रतादिकतीनअवस्थारूपबंधतैंमुक्तहोइकै ताअंतर्यामीअद्वितीयआत्माकूंनिश्चयकरे हैं॥हेदेवताओ॥ऐसेइंद्रियादिकोंकेप्रवर्त्तकआत्माकेज्ञानतैंही यहविद्वान्पुरुष जन्ममरणादिकविकारोंकीनिवृत्तिपूर्वक ब्रह्मभावकी प्राप्तिरूपअमृतकूंप्राप्तहोवे है ॥ ताब्रह्मभावकूंप्राप्तहोइकै यहविद्वान्पुरुष पुनः जन्ममरणरूपसंसारकूंप्राप्तहोवेनहीं॥हेदेवताओ॥जिसआनंदस्वरूपआत्मादेवविषे मनसहितसर्वइंद्रिय प्रवृत्तहोइसकतेनहीं॥ऐसे आनंदस्वरूपआत्मादेवकूं मैंइंद्र भलीप्रकारजानताभीहूं॥तथापि लोकप्रसिद्ध सामान्यरूपकरिकै तथा विशेषरूपकरिकै ताआत्मादेवकेकथनकरणेकूं मैं जानतानहीं॥हेदेवताओ॥लोकवासनाकरिकेयुक्त जेतुमदेवताहो तिनतुम्हारेकूं ताआत्मादेवका सामान्यरूपकरिकै तथाविशेषरूपकरिकै उपदेश अपेक्षितहै और सोआत्मादेव सामान्यविशेषभावतैंरहितहै ॥ तथा मनसहित सर्वइंद्रियोंका अविषयहै॥ऐसेआत्मादेवका साक्षात्उपदेश मैं तुम्हारेप्रति किसप्रकारकरिसकौंगा॥ किंतु ताआत्मादेवकेसाक्षात्उपदेशकरणेविषे हमारा सामर्थ्यनहीं है।यातैं निषेधमुखकरिकै ताआत्माकाउपदेश मैं तुम्हारे प्रति करताहूं॥ तुम सावधानहोइकैश्रवणकरो ॥ हेदेवताओ ॥ जोआत्मादेव तुम्होंनै हमारेसैंपूछाहै ॥ तथा जिसआत्मादेवकेप्रतिपादनकरणेका हमनैं उद्यमकऱ्याहै ॥ सोआत्मादेव विदितपदार्थोंतैंभी भिन्नहै ॥ तथा अविदितपदार्थोंतैंभी भिन्नहै ॥ हेदेवताओ ॥ यालोकविषे जे

॥ २ ॥

पदार्थ पृथ्वीत्वादिकसामान्यरूपकरिकै तथाघटत्वादिकविशेषरूपकरिकै जानेजावे हैं ॥ तेसर्वपदार्थ विदितकहेजावे हैं ॥ तेसर्वविदितपदार्थ घटादिकोंकीन्याईं अनात्मारूपहोणेतैं त्यागकरणेयोग्यहैं ॥ और हेदेवताओ॥जेपदार्थ याजीवोंकूं कदाचित्भी प्रतीतहोतेनहीं॥ तिनपदार्थोंकूं अविदितकहे हैं॥ ते अविदितपदार्थभी वंध्यापुत्रकीन्याईं अत्यंतअसत्होणेतैं अनात्मारूपही हैं॥यातैं तेअविदितपदार्थभी परित्यागकरणेयोग्यहैं ॥हेदेवताओ इसप्रकार विदितअविदित पदार्थोंतैंभिन्न आत्माकेस्वरूपकूं हम पूर्वआचार्योंकेमुखतैं श्रवणकरतेभयेहैं ॥ हेदेवताओ ॥ तिनपूर्वआचार्योंनैं हमारेप्रति जिसप्रकार आत्माकाउपदेशकऱ्याहै ॥ ताप्रकारकूं तुमश्रवणकरो ॥ जोप्रत्यक्चेतन श्रोत्रादिकज्ञानइंद्रियोंकरिकै तथावाकादिककर्मइंद्रियोंकरिकैभी जान्याजावैनहीं ॥ तथा मनकरिकैभीजान्याजातानहीं ॥तथा सर्वदेवता हैंविभूतिजिसकी ऐसाजोक्रियाशक्तिप्रधानप्राणहै ॥ ताप्राणकरिकैभी जान्याजातानहीं॥और जोप्रत्यक्चेतन आपणेसाक्षीस्वरूपकरिकै तिनसर्वइंद्रियोंकूंजानेहै॥ तथा तामनकूंजानेहै ॥तथा ताप्राणकूंजानेहै ॥तथा तिनइंद्रियमनप्राणकेव्यापारोंकूंजाने है॥तथा जोप्रत्यक्चेतन आपणीसमीपतामात्रकरिकै तिनइंद्रियादिकोंकूं आपणै आपणेव्यापारोंविषे प्रवृत्तकरे है॥तिसीप्रत्यक्चेतनकूं तुमदेवता ब्रह्मरूपकरिकैजानों ॥ और जिसवस्तुकूं तुमदेवता पराक्रूपकरिकैउपासनाकरतेहो॥ सोपराक्वस्तु ब्रह्मरूपनहीं है॥ हेदेवतावो॥हमदेवता दिनदिनप्रति ताआत्मादेवकेस्वरूपकीउपासनाकरेहैं ॥यातैं सोआत्माकास्वरूप हमदेवताओंकूं सुखेनहीं जानणेयोग्यहै॥याप्रकार जोतुम आपणेचित्तविषे मानतेहोवो ॥ सोऐसातुम्हनैं मानणानहीं॥काहेतैं जिसआत्माके दहराकाशनामारूपकूं तुमदेवता उपासनाकरतेहो ॥ सोदहराकाशरूप केवल ध्यानकरणेयोग्यहै ॥ कोईजानणेयोग्यनहीं है ॥ ऐसेदहराकाशनामा ध्येयरूपकूं जोतुमदेवता ज्ञेयरूपकरिकैमानतेहो यहबहुतआश्चर्य है ॥ हेदेवतावो ॥ अधिकारीपुरुषोंकरिकैजानणेयोग्य जोआत्माकास्वरूपहै॥ सोआत्माकास्वरूपतौ त्वं अहं इदं इत्यादिकसर्वशब्दोंतैं रहितहै ॥ ऐसेबुद्धिआदिकोंकेसाक्षीआत्माकेप्राप्तिवासतै तुमसर्वदेवता परस्परमिलिकैविचारकरो॥ हेदेवताओ ॥ श्रुतिकेयथार्थतात्पर्यकूंजानणेहारेजेविद्वान्पुरुषहैं ॥तेविद्वान्पुरुषतौताआत्मादेवकूं अविज्ञेय विज्ञेय सुविज्ञेय दुर्विज्ञेय याचारनामोंकरिकै

कथनकरे हैं ॥ हेदेवताओ॥यालोकविषे जितनैंकी देहाभिमानीजीवहैं ॥तेदेहाभिमानीजीव ताआत्मादेवकूं सत्चित्आनंदस्वरूपकरिकै कदाचित्भी जानिसकतेनहीं ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष ताआत्मादेवकूं अविज्ञेय यानामकरिकैकथनकरे हैं ॥और यालोकविषे सर्वदेहधारीजीव ताआत्मादेवकूं अहंअस्मि याप्रकार आत्मारूपकरिकैजाने हैं॥याकारणतैं तेवेदवेत्तापुरुष ताआत्मादेवकूं विज्ञेय यानामकरिकैकथनकरे हैं ॥ और यहअधिकारीपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुके उपदेशतैं ताआत्मादेवकूं अद्वितीयब्रह्मरूपकरिकैजाने हैं ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष ताआत्मादेवकूं सुविज्ञेय यानामकरिकैकथनकरे हैं और श्रुतिप्रतिकूलतर्कहैं प्रधानजिनोंविषे ऐसेशास्त्रोंकरिकै सोआत्मादेव कदाचित्भी जान्याजावैनहीं॥याकारणतैं तेवेदवेत्तापुरुष ताआत्मादेवकूं दुर्विज्ञेय यानामकरिकै कथनकरेहैं॥अब याहीअर्थकूं पुनःस्पष्ट करिकैनिरूपणकरे हैं ॥ हेदेवतावो ॥ यहसत्चित्आनंदस्वरूप स्वयंज्योतिआत्मा यद्यपि सर्वप्राणियोंकेहृदयकमलविषे विराजमानहै॥ तथा सुषुप्तिअवस्थाविषे सर्वजीवोंकूंप्राप्तहोवै है॥तथापि संसारकेक्लेशोंकरिकैतप्तहुए तथापरमेश्वरकीमायाकरिकैमोहितहुए यहजीवताआत्मादेवकूंजानिसकतेनहीं॥जैसे जन्मअंधपुरुष आपणेहस्तविषेस्थितनिधिकूंभी जानिसकतेनहीं॥तैसे यहअज्ञानीजीव ताआत्मादेवकूंजानिसकतेनहीं ॥ उलटा यहजीव ताआत्मादेवतैंभिन्न अनात्मपदार्थोंकूंही सर्वदादेखैहै ॥ ताअनात्मपदार्थोंकेदर्शनतैं याजीवोंकूं वारंवार जन्ममरणकीही प्राप्तिहोवै है ॥ और हेदेवताओ ॥ यहआत्मादेव अहंअस्मि याप्रकारकेशब्दका तथा ताशब्दजन्यज्ञानका विषयहुआ प्रतीतहोवै है ॥ याकारणतैं यहआत्मादेव सर्वप्राणियोंकूं विदितहै॥ किंवा यहआत्मादेव केवल अहंअस्मि याप्रकारकीप्रतीतिकरिकैविदितनहीं है॥किंतु जाग्रतविषे तथास्वप्नविषे अस्तिभातिप्रिय इत्यादिकप्रतीतियोंकरिकैभी विदितहोवै है ॥अस्तिभातिप्रिय इत्यादिक अंशोंकेपरित्यागकियेहुए घटादिकपदार्थोंका किंचित्मात्रभी व्यवहारहोवैनहीं ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष याआत्मादेवकूं विज्ञेय यानामकरिकैकथनकरे हैं ॥ और हेदेवताओ यहअधिकारीपुरुष पूर्वलेअनेकजन्मोंकेपुण्यकर्मोंकरिकै तथाब्रह्मचर्यादिकसाधनोंकरिकै जभी ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतैं आपणेआत्माकूं ब्रह्मरूपकरिकैसाक्षात्कारकरे हैं ॥ तभी यहअधिकारीपुरुष आपणेहृदयकमलविषे ॥ २ ॥

स्थित स्वयंज्योतिआनंदस्वरूपआत्माकूं सुखेनहीं प्राप्तहोवै है ॥ याकारणतैं तेवेदवेत्तापुरुष याआत्मादेवकूं सुविज्ञेय यानामकरिकैकथनकरे हैं और हेदेवतावो ॥ जिसद्रव्यविषे ज्ञानसुखादिकगुण समवायसंबंधकरिकैरहे हैं ॥ ताद्रव्यकानाम आत्माहै ॥ याप्रकारके नैयायिकोंकेतर्ककूंअंगीकारकरिकै यहपुरुष जभी ताआत्माकेनिश्चयकरणेविषेप्रवृत्तहोवै है ॥ तभी ताआत्माविषे ज्ञानरूपताकूं तथाआनंदरूपताकूं सिद्धकरणेहारे जेश्रुतिअनुकूलतर्क हैं तिनतर्कोंकूंदेखिकै सोपुरुष आत्मा ज्ञान सुखादिकगुणोंवाला है अथवा ज्ञानसुखादिस्वरूप है याप्रकारकेसंशयकूंप्राप्तहोवै है ॥ ऐसेसंशययुक्तपुरुषकूं यहआत्मादेव अत्यंतदुर्विज्ञेय है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ महान्बुद्धिवाले जेलौकिकपुरुषहैं तथा शास्त्रवेत्तापुरुषहैं ॥ तेबुद्धिमान्पुरुष ताब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतैंविनाहीं ॥ आपणीबुद्धिकेबलतैं ताआत्मादेवकूं किसवासतैंनहींजानते ॥ समाधान ॥ हेदेवतावो॥ यहअधिकारीपुरुषता ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतैंविना केवलआपणीबुद्धिकेबलतैं ताआत्मादेवकूं कदाचित्भीनहीं जानिसकते ॥ जोकदाचित् यहअधिकारीपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतैंविना केवलआपणीबुद्धिकेबलतैं ताआत्मादेवकूं जानैंगेभी ॥ तौभी वास्तवस्वरूपकरिकै ताआत्माकूं जानैंगेनहीं ॥ किंतु लोकप्रसिद्धिविशेषरूपकरिकै अथवा सामान्यरूपकरिकैही ताआत्माकूंजानैंगे ॥ हेदेवतावो ॥ यहआत्मादेव सर्वविशेषोंतैंरहित निर्विशेषरूप है ॥ यातैं जोपुरुष तानिर्विशेष आत्माकूं विशेषरूप करिकैजाने है ॥ सोभ्रांतपुरुष ताआत्माके स्वरूपकूं जानतानहीं जैसे सर्पभावतैंरहितरज्जुकूं सर्परूपकरिकै देखणेहारापुरुष तारज्जुकेस्वरूपकूं जाणतानहीं ॥ तैसे निर्विशेष आत्माकूं सविशेषरूपकरिकै देखणेहारापुरुषभी ताआत्माकेस्वरूपकूं जाणतानहीं ॥ और हेदेवतावो ॥ यहआत्मादेव विशेषरूपकी अपेक्षाकरणेहारे सामान्यरूपतैंभी रहित है॥ यातैं तासामान्य भावतैंरहितआत्मादेवकूं जोपुरुष सामान्यरूप करिकैजाने है ॥ सोभ्रांतपुरुषभी ताआत्माके स्वरूपकूंजानतानहीं ॥ यातैं ब्रह्मवेत्ता गुरुकेउपदेशतैंविना याअधिकारी पुरुषोंकूं ताआत्माका यथार्थज्ञान कदाचित्भी होवैनहीं ॥ और हेदेवतावो ॥ यहअधिकारीपुरुष जभी ब्रह्मवेत्तागुरुके मुखतैं ताआत्माका श्रवणकरे है॥तभी ताआत्माकेयथार्थस्वरूपकूं अवश्यकरिकैनिश्चयकरे है ॥ सोआत्माकायथार्थस्वरूप श्रुतिनैं

सामान्यविशेषभावतैंरहित कथनकऱ्याहै॥तहांश्रुति॥यस्यामतंतस्यमतं मतंयस्यनवेदसः॥अविज्ञातंविजानतां विज्ञातमविजानतां॥अब याश्रुतिकेअर्थका विस्तारतैंनिरूपणकरेहैं ॥ हेदेवतावो ॥ जिसपुरुषकेसिद्धांतविषे यहआत्मारूपब्रह्म माता मान मेय यात्रिपुटीगोचरज्ञा नकाविषयहै ॥ सोपुरुष ताब्रह्मकेअद्वितीयस्वभावतैंविपरीत त्रिपुटीरूपभेदकूंदेखेहै॥यातैं सोभेददर्शीपुरुष ताब्रह्मकूं जानतानहीं॥इतनैं करिकै ॥ मतंयस्यनवेदसः ॥ याश्रुतिकेदूसरेपादकाअर्थ निरूपणकऱ्या॥ अब ॥ यस्यामतंतस्यमतं॥याश्रुतिकेप्रथमपादकाअर्थनिरूप णकरेहैं ॥ हेदेवतावो ॥ जेअधिकारीपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं तात्रिपुटीरूपद्वैततैंरहितअद्वितीयब्रह्मकूं साक्षात्कारकरिकै मैंने अद्वितीय ब्रह्मजान्याहैयाप्रकारकासिद्धांतकरेहै ॥ सोविद्वान्पुरुष ताब्रह्मके अद्वितीयरूपवास्तवस्वरूपकूं हीजानेहै ॥ यातैं तिसविद्वान्पुरुषकूं सो अद्वितीयब्रह्म ज्ञातहीहोवै है ॥शंका॥ हेभगवन् ॥ आपनैं ताब्रह्मज्ञानकेअप्रमाणताविषे भेदकीविषयतारूप हेतुकह्या॥ और ताब्रह्मज्ञान केप्रमाणताविषे भेदकीअविषयतारूप हेतुकह्या॥सो संभवतानहीं॥समाधान॥हेदेवतावो॥ताब्रह्मज्ञानके प्रमाणताविषे तथा अप्रमाणताविषे जोहमनैं दोप्रकारकेहेतुकहेहैं॥तेदोनोंहेतु ताश्रुतिनैंही कथनकरे हैं॥तहां अविज्ञातंविजानतां॥याश्रुतिकेतीसरेपादकरिकै ताब्रह्मज्ञानकेअ प्रमात्वकाहेतु वर्णनकरेहैं॥हेदेवतावो॥जेपुरुष मायाकरिकैमोहितहुए प्रमाता प्रमाण प्रमेय इत्यादिरूपकरिकै ताअद्वितीयब्रह्मकूं नानाविध मानेहैं॥ऐसेभेददर्शीपुरुषोंकूं सोअद्वितीयब्रह्म सर्वदा अज्ञातहीरहे है॥काहेतैं सर्वदा अभिन्नस्वभाववालासोब्रह्म कदाचित्भीभेदवालाहो वैनहीं ॥ ऐसेअद्वितीयब्रह्मविषे भेदकूंविषयकरणेहारा जोतिनभेदवादियोंकाज्ञानहै ॥ सोज्ञान अप्रमारूपही है ॥ अब ॥ विज्ञातमविजा नतां॥याश्रुतिकेचतुर्थ पादकरिकै ताब्रह्मज्ञानकेप्रमात्वकाहेतु निरूपणकरे हैं ॥हेदेवतावो॥ जेअधिकारीपुरुष ताआनंदस्वरूपअद्वितीयनिर्गुणब्रह्मकूं ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय इत्यादिरूपकरिकै नानाविधनहींजानेहैं ॥ तिनअभेददर्शी विद्वान्पुरुषोंकूं सोअद्वितीयब्रह्म सर्वदा विज्ञातही है ॥ ऐसेविद्वान्पुरुषोंका सोब्रह्मज्ञानभी प्रमारूपही है ॥१॥ हेदेवतावो॥ जोअधिकारीपुरुष मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकेबोधक रिकै क्षणक्षणविषे आपणेआत्मस्वरूपकाचिंतनकरेहै॥ऐसेमहात्मापुरुषकूं आपणेआत्माकास्वरूप ज्ञातहीहै ॥ काहेतैं मैंब्रह्मरूपहूं याप्र ॥ ६ ॥

कारकेअभेदज्ञानतैंहीं सर्वअधिकारीपुरुष ताआनंदस्वरूपआत्माकूंप्राप्तहोवै हैं।ताअभेदज्ञानतैंविना किसीउपायकरिकैभीताआत्मादेव कीप्राप्तिहोवैनहीं॥कैसाहैसोआनंदस्वरूपआत्मा॥जन्ममरणादिकविकारोंतैंरहितहै॥ याकारणतैंहीं ताआत्मादेवकूं वेदवेत्तापुरुष अमृत यानामकरिकैकथनकरेहैं॥अब ताआत्मज्ञानकरिकै अमृतभावकीप्राप्तिविषे युक्तिकावर्णनकरे हैं ॥ हेदेवतावो ॥ जेअधिकारीपुरुष ब्रह्म चर्यादिकसाधनोंकरिकैसंपन्नहैं ॥ तथा कृपणतादिकदोषों तैंरहितहैं तेअधिकारीपुरुषही ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतैं शुद्धमनकरिकै ब्रह्मवि द्यारूपवीर्यकूं प्राप्तहोवै हैं ॥ ताब्रह्मविद्यारूपवीर्यकरिकैही तेअधिकारीपुरुष ताआत्मानंदरूपअमृतकूंप्राप्तहोवै हैं॥तामोक्षरूपअमृतभा वकूंप्राप्तहोइकै यहअधिकारीपुरुष पुनः मरणकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और हेदेवतावो ॥यहअधिकारीपुरुष जभी इसअधिकारीशरीरविषे आप णेहितकाविचारकरिकै ब्रह्मचर्यादिकसाधनोंकूंकरेहै॥तभीयहअधिकारीपुरुष थोडेप्रयत्नकरिकैही आत्मानंदरूपमहत्फलकूंप्राप्तहोवैहै ॥ जिसआनंदरूपमहत्फलकेप्राप्तहुए यहजीवात्मा आनंदकासमुद्ररूपहोवै है।औरमायातथामायाकेकार्यसर्वदुःखरूपफेनबुद्बुदादिकोंतैंरहित होवै है॥और याआत्मानंदरूपफलतैंपरे कोईभीपदार्थ याजीवोंकेप्रार्थनाकाविषयनहींहोवैहै॥ और याआत्मानंदरूपफलतैंपरे दूसराकोई लाभ यालोकविषेहैनहीं॥ऐसेआत्मास्वरूपआनंदकीप्राप्तिवासतै याअधिकारीपुरुषोंनैं अवश्यकरिकैप्रयत्नकरणा॥हेदेवतावो॥याअधिका रीशरीरकूंपाइकै यहपुरुष जभी परमेश्वरकीमायाकरिकैमोहितहुआ तथामूढपुरुषोंकरिकैसेवितविषयोंविषेआसक्तहुआ ताआनंदस्वरूप आत्माकूंनहींजानेहै॥तभी यहकामक्रोधादिकजुवारी यापुरुषकी महान्हानिकरेहै ॥ जिसहानिकरिकै यहपुरुष वारंवार जन्ममरणादिक दुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै।कैसेहैंतेकामक्रोधादिकजुवारी।बहुतधूर्त्त हैं।तथा विषयरूपभूमिविषेइंद्रियरूप पाशकोंकेचलावणेविषेअत्यंतकुशलहैं॥ तथा नानाप्रकारकेरूपग्रहणकरणेविषेसमर्थ हैं॥तथा अनेकजन्मोंविषे यापुरुषकापराजयकरिआये हैं॥हेदेवतावो॥ ऐसेकामक्रोधादिकजु वारियोंकरिकै पराजयकूंप्राप्तहुआ यहपुरुष निंदाकापात्रहोणेतैं जीवताहुआही मृतककेसमानहोवैहै ॥ तथा नानाप्रकारकेशरीरोंकेयह णकरिकै वारंवार जन्ममरणादिकदुःखोंकूंप्राप्तहोवै है ॥तथा आशारूपीअनेकपाशोंकरिकैबांध्याहुआ तथा क्रोधलोभादिकोंकेवशहुआ

सोअज्ञानीपुरुष कालकर्मकेवशतैं अनेकप्रकारकेऊंचनीचशरीरोंविषे प्राप्तहोवैहै॥ तिनअनेकशरीरोंविषे नानाप्रकारकेदुःखोंकूंअनुभवकरताहुआ यहअज्ञानीजीव नष्टहुएजैसाहोवे है ॥ यातैं धैर्यवान्पुरुषनैं तिनजन्ममरणादिकदुःखोंकीनिवृत्तिवासतैं याअधिकारीशरीरविषे ताआनंदस्वरूपआत्माकूंअवश्यकरिकैजानणा ॥हदवतावो॥ सोमोक्षरूपफलसहितआत्मज्ञान याअधिकारीशरीरविषेदुर्लभहै ॥ याप्रकारकीशंकाकरिकै तुमोनैं प्रयत्नतैंशिथिलहोणानहीं।काहेतैं सोफलसहितआत्मज्ञान याअधिकारीशरीरविषेहीप्राप्तहोवैहै।यहवार्त्ता सर्वविद्वानपुरुषोंकेअनुभवकरिकैसिद्धहै।काहेतैं पूर्वजेअधिकारीपुरुषयाअधिकारीशरीरविषेस्थितहोइकै ब्रह्मचर्यादिकसाधनोंकूंकरतेभये हैं ॥ तथापरमधैर्यकरिकैयुक्तहुएहैं॥तेअधिकारीपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतैं आकाशकीन्याईं सर्वत्रव्यापकस्वयंज्योति आनंदस्वरूप निर्गुण अद्वितीयब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपजानिकै जीवतअवस्थाविषे अथवा मरणअवस्थाविषे अमृतभावकूंप्राप्तहोतेभयेहैं ॥ ताअमृतभावकूंप्राप्तहोइकै तेविद्वान्पुरुष पुनः जन्ममरणादिकविकारोंतैं रहितहोतेभये हैं ॥ यातैं आत्मज्ञानकरिकै अमृतभावकीप्राप्तिरूपफल तिनसर्वविद्वानपुरुषोंकेअनुभवकरिकैसिद्धहै ॥हदेवतावो॥ सर्वभूतप्राणियोंविषेस्थित जोपरमात्मादेवहै ॥ सोपरमात्मादेव वास्तवतैंएकही है॥परंतु देहादिकउपाधियोंकेभेदतैं सोपरमात्मादेव नानारूपहोइकैप्रतीतहोवैहै॥ जैसे वास्तवतैंएकहुआभीचंद्रमा जलपात्रोंकेभेदकरिकै बहुतरूपहोइकैप्रतीतहोवैहै॥तैसे सोएकपरमात्मादेवभी उपाधिकेभेदतैं बहुतरूपहुआ प्रतीतहोवे है ॥ ऐसेसर्वत्रव्यापकपरमात्मादेवकूं जेअधिकारीपुरुष आपणाआत्मारूपकरिकैजानहैंतेअधिकारीपुरुष तिनपूर्वविद्वानपुरुषोंकीन्याईं सर्वलोकोंकूं तथासर्वभोग्यपदार्थोंकूं आपणाआत्मारूपकरिकैप्राप्तहोवै हैं॥याप्रकारकेफलविषे तुमोनैं किंचित्मात्रभी संशयनहींकरणा॥हदेवतावो॥ जैसे मृष्टअन्नकेभोजनका मुख्यफलतौ क्षुधाकीनिवृत्तिही है॥और पुष्टि ताभोजनका नांतरीयकफलहै॥तैसे ताब्रह्मज्ञानका मुख्यफलतौ अमृतभावकीप्राप्तिही है ॥ और शत्रुवोंकाजयआदिक ताब्रह्मज्ञानका नांतरीयकफलहै ॥ इहांमुख्यफलकीप्राप्तिकरणेहारेप्रयत्नतैंहीं जिसफलकीसिद्धिहोवै है ताका नाम नांतरीयकफलहै॥हेशिष्य॥इसप्रकार तेअग्निवायुआदिकदेवता ताइंद्रकेमुखतैं ब्रह्मविद्याकूंश्रवणकरिकै ब्रह्मभावकूंप्राप्तहोतेभये ॥ ॥ ६ ॥

और ताब्रह्मविद्याकेप्रभावतैं तेअग्निवायुआदिकदेवता सर्वलोकोंकूंप्राप्तहोतेभये ॥ तथासर्वकामोंकूंप्राप्तहोतेभये॥तथासर्वशत्रुवोंतैंजयकूं प्राप्तहोतेभये ॥ तथासर्वदुःखोंतैंरहितहोतेभये ॥ इसप्रकार ब्रह्मविद्याकेफलकूंप्राप्तहोइकै स्वर्गभोगोंविषेस्थितहुएभी तेदेवता सर्वदा ब्रह्मकोचिंतनपरायणहोतेभये ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार आत्मसाक्षात्कारकेप्रभावतैं ब्रह्मरूपताकूंप्राप्तहुएजेतेइंद्रादिकदेवताहैं ॥ तिनदेवतावोंकीसमीपतातैं सर्वअसुरक्षयकूंप्राप्तहोतेभये :: जैसेअग्निकीसमीपतातैं पतंग नाशकूंप्राप्तहोवैहै तैसे तिनब्रह्मवेत्तादेवतावोंकीसमीपतातैं तेअसुरक्षयकूंप्राप्तहोतेभये ॥ हेशिष्य ॥ जैसेअग्निकरिकैतप्तहुआ लोहकापिंड शुष्कआर्द्रतृणोंकूंदाहकरेहै ॥ तैसेब्रह्मरूपअग्निकरिकै प्रकाशमानहुए तेदेवता तिनअसुरोंकूंदग्धकरतेभये ॥ हेशिष्य ॥ जैसेसोलोहकापिंड जोतृणोंकूंदाहकरेहै ॥ सोअग्निकेसामर्थ्यतैंहींदाहकरेहै ॥ स्वभावतैंतालोहकेपिंडविषे दाहकरणेकासामर्थ्यहैनहीं ॥ तैसेतेइंद्रादिकदेवता जोतिनअसुरोंकूंदाहकरतेभये ॥ सोब्रह्मरूप अग्निकेसामर्थ्यतैंही दाहकरतेभये ॥ स्वभावतैंतिनदेवतावोंविषे असुरोंकेदाहकरणेकासामर्थ्यथानहीं ॥ हेशिष्य ॥ तैसे सामुद्रिकशास्त्रविषेकथनकरेजे श्रेष्टलक्षणहैं ॥ तिनश्रेष्टलक्षणोंकेबलतैंहीं याजीवोंकूं धनादिकपदार्थोंकीप्राप्तिहोवैहै तिनधनादिकपदार्थोंकीप्राप्तिविषे आपणेप्रयत्नसाध्यताकाअभिमानकरणाव्यर्थहीहै ॥ तैसेताब्रह्मकेबलतैंही तिनदेवतावोंकाविजयहोताभया ॥ शंका॥ हेभगवन् ॥ जोकदाचित् सोब्रह्महीआपणेबलतैं देवतावोंकेजयकाकारणहोवैगा ॥ तथाअसुरोंकेपराजयकाकारणहोवैगा तौ ताब्रह्मविषे अस्मदादिकजीवोंकीन्याईं विषमतादोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ समाधान ॥ हेशिष्य ॥ जैसे सर्वप्रकाशमानहुआभी यहसूर्यभगवान् अत्यन्तनिर्मलसूर्यकांतमणिविषे विशेषकरिकैप्रतिबिंबभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसेसर्वत्रव्यापकहुआभी सोब्रह्मसत्त्वगुणप्रधानदेवतावोंविषेविशेषकरिकैसंबंधकूं प्राप्तहोवैहै ॥याकारणतैं तेदेवताविशेषतेजवालेहोतेभयेहैं ॥ और हेशिष्य ॥ जैसे यालोकविषेपुत्तलियोंकूंनृत्यकरावणेहारा सूत्रधारपुरुष सूत्रोंकरिकैकाष्टकीपुत्तलियोंकूंचलायमानकरताहुआ तिनपुत्तलियोंविषे किसीपुत्तलियोंकूंतौ जयकीप्राप्तिकरेहै॥औरकिसीपुत्तलियोंकूं पराजयकीप्राप्तिकरेहै ॥ तैसेयाजगत्रूपीलीलाकरणेविषेप्रवृत्तहुआजो परमात्मादेवरूपसूत्रधारहै॥ तिसपरमात्मादेवनैं यादेवताअसुररूप

पुत्तलियोंविषे किसीनकिसीपुत्तलियोंकाजयतोअवश्यकरिकैकरणाहै ॥ यातैं अशोकवानिकान्यायकरिकै सोपरमात्मादेवतिनदेवतावोंका हीजयकरताभया ॥ यातैं ताईश्वरविषे पक्षपातदोषकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ अशोकवानिकान्यायका यह अर्थ है ॥ जैसे रावणनैंसीताकूं किसीस्थानविषेअवश्यराखणाथा ॥ दैवयोगतैं सोरावण तासीताकूं अशोकवनविषेहीराखताभया ॥ औरहेशिष्य ॥ जैसेकीडाकरताहुआ बालक ताक्रीडाकेसाधनरूपपदार्थोंविषे कितनैंकपदार्थोंविषेतौ इनपदार्थोंकीउत्कृष्टताकेहुए हमारीहीउत्कृष्टताहोवै है याप्रकारकाअभिमानकरेहै ॥ और कितनेकपदार्थोंविषे सोबालक ताअभिमानकूंनहींकरेहै ॥ तैसे सोपरमात्मादेवभी तिनदेवतावोंविषेही सोअभिमान करताभया ॥ यातैंताबालककीन्याईं ताईश्वरविषे विषमतादोषकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ हेशिष्य ॥ ऐसेब्रह्मकीविभूतिरूपमाहिमाकरिकैतेइंद्रादिकदेवतायुद्धविषे तिनबलवान्असुरोंकूंजीततेभये ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारतेब्रह्मवेत्तादेवताभी किसीकालपाइकैपरमेश्वरकीमायाकरिकै मोहितहोतेभये ॥ तथा विषयभोगोंविषेआसक्तहोतेभये ॥ ताकरिकैतेइंद्रादिकदेवता ताब्रह्मकेप्रभावतैंहीं हमारा असुरोंतैंजयहुआहै ॥ याप्रकारके ताब्रह्मकेउपकारकाविस्मरणकरतेभये ॥ किंतुउलटा तेइंद्रअग्निवायुआदिकदेवता हमाराआपणेबलकेप्रभावतैंजयहुआहै याप्रकारकानिश्चयकरतेभये ॥ हेशिष्य ॥ जैसेयालोकविषे महान्दुःखकूंप्राप्तहुए कोईमनुष्य देवतामुनियोंकेअनुग्रहतैं तादुःखतैंनिवृत्त होइकैभी पुनःधनादिकोंकेमदकरिकैदूषितहुए तेमनुष्यतिनदेवतामुनिआदिकोंका विस्मरणकरिदेवे हैं ॥ तैसे यहदेवताभीताब्रह्मकेअनुग्रहतैंपूर्व अनेकवार दैत्योंकरिकैपराजयकूंप्राप्तहुएथे ॥ तिसतैंअनंतर ताब्रह्मकेअनुग्रहकरिकै तेदेवतातिनअसुरोंकूंजीततेभये ॥ तिसतैं अनंतररजोगुणकरिकैयुक्तहुए तेदेवताताआपणेजयकेकारणरूपब्रह्मकूं विस्मरणकरतेभये ॥ किंतुआपणेबलकेप्रभावतैंहींतिनअसुरोंतैंजयकूं मानतेभये ॥ हेशिष्य ॥ जैसे यालोकविषे छलयुक्तजुवाविषेतत्पर जेकोईवंचकपुरुषहैं ॥ तेवंचकपुरुष आपणेऊपरउपकारकरणेहारेपुरुषका भीविस्मरणकरिदेवैहैं ॥ तैसेतापरब्रह्मकेअनुग्रहतैं कृतार्थभावकूंप्राप्तहुए यहइंद्रादिकदेवताभीताउपकारकरणेहारेपरमेश्वरका विस्मरणकर तेभये ॥ याकारणतैंतेदेवता कृतघ्नपुरुषकेसमानताकूंप्राप्तहोतेभये ॥ हेशिष्य ॥ तिनइंद्रादिकदेवतावोंकूंरजोगुणकेप्रभावतैं महान्अभिमान

॥ ७ ॥

होताभया ॥ जिसअभिमानकरिकै यहजीव सर्वदा विनाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अब तिनदेवतावोंकेअभिमानकानिरूपणकरेहैं ॥ हमदेवताहीमनकानिग्रहरूपशमवाले हैं ॥ तथा हमदेवताही इंद्रियोंकानिग्रहरूपदमवाले हैं ॥ तथा हमदेवताही महान्कुलतैंउत्पन्नहुएहैं ॥ तथा हमदेवताही सुंदररूपयौवनकरिकैयुक्तहैं ॥ तथा हमदेवताही विद्याविनयकरिकैयुक्तहैं ॥ तथा हमदेवताही महान्कीर्तिवालेहैं ॥ तथा हमदेवताही महान्भाग्यवाले हैं ॥ तथाहमदेवताही नानाप्रकारकेभोग्यपदार्थोंवालेहैं ॥ तथा हमदेवताहीआपणीशक्तिकरिकै तीनलोकोंकापालनकरे हैं ॥ ऐसे हमदेवतावोंकेबलकेआगे इनअसुरोंकेबलकी क्यागिणती है ॥ किंतु हमारेबलके इनअसुरोंकाबल अत्यंततुच्छहै ॥ कैसे हैं तेअसुर ॥ अंजनकेपर्वतसमान कालेवर्णवाले हैं ॥ तथा काल अंतक यम यातीनोंकेसमान हैं ॥ इहांदिनमासादिकसमयकाअभिमानी जोदेवताहै ताकानाम कालहै ॥ और जगत्केसंहारकरणेहारेमृत्युकानाम अंतकहै ॥ और धर्मराजाकानाम यमहै ॥ पुनःकैसेहैंतेअसुर ॥ अत्यंतमायावी हैं तथा युद्धविषे अत्यंतकुशलहैं ॥ तथा अत्यंत पराक्रमवाले हैं ॥ तथा अधिकबलवीर्यवाले हैं ॥ तथा यात्रिलोकीकेग्रसनकरणेविषे समर्थ हैं ऐसेसर्वअसुरोंविषे एकअसुरकेसाथभी हमदेवतावोंतैंविनादूसराकोईपुरुष युद्धकरणेविषे समर्थनहीं है ॥ ऐसेअसुरोंकूं हमदेवता आपणेबलकेप्रभावतैं जीततेभये हैं ॥ यातैं हमारेसमान दूसराकोनहै ॥ इतनैंकरिकै सर्वदेवतावोंकासाधारणअभिमान निरूपणकऱ्या ॥ अब देवराजइंद्रका विशेषकरिकैअभिमान निरूपणकरे हैं वज्रहैहस्तविषेजिसके ऐसाजो मैं इंद्रहूं ॥ सो मैं इंद्र आपणेबलतैं यावज्र करिकै महान्ऊंचेपर्वतोंकूंभी चूर्णकरिदेवोंहूं ॥ कैसा है यह हमारावज्र ॥ एकशतग्रंथिहैं जिसविषे ॥ तथा एकशततीक्ष्णधाराहैं जिस विषे ॥ तथा जोवज्र चलायाहुआ कदाचित्भी निष्फलहोतानहीं ॥ ऐसेवज्रवालामैं इंद्र सर्वतैं अधिकबलवान्हूं ॥ अब वायुदेवताके अभिमानकानिरूपणकरे हैं ॥ मैंवायुदेवता यासर्वजगत्कूं आपणीकुक्षिविषेपाइकै तृणतूलकीन्याईं याब्रह्मांडगोलकतैं बाह्यदेशविषे लेजाणेमेंसमर्थहूं ॥ यातैं मैंवायुदेवताकेसमान दूसराकोईबलवान्हैनहीं ॥ अब अग्निदेवताकेअभिमानकावर्णनकरे हैं ॥ शुष्कआर्द्ररूप जितनाकी यहघनीभूतसर्वजगत्है ॥ तासर्वजगत्कूं मैं अग्निदेवता तूलकीन्याईं शीघ्रहीभस्मकरिदेवों ॥ यातैं हमारेसमान दूसराकोईबलवान्हैनहीं ॥

हेशिष्य ॥ इसप्रकार दूसरेवरुणादिकदेवताभी आपणेआपणेबलकूंप्रकटकरिकै महान्गर्वकूंप्राप्तहोतेभये ॥ कैसाहै ॥ सोतिनोंकागर्व ॥ रजोगुणकरिकै जिसगर्वकीउत्पत्तिहै ॥ तथा पापकेप्रतिकाकारणहै ॥ तथा पराक्रमकानाशकरणेहाराहै॥ तथा कीर्तिकानाशकरणेहारा है ऐसेअनिष्टकीप्राप्तिकरणेहारे देवतावोंकेगर्वकूंदेखिकै सोपरब्रह्म पिताकीन्याईं तिनदेवतावोंकेहितकीइच्छा करताहुआ याप्रकारकाचिंत नकरताभया ॥ यहइंद्रादिकदेवता मैंपरब्रह्मकेअनुग्रहतैंही सर्वलक्षणोंकरिकैयुक्तहुएहैं ॥ तथा हमारे अनुग्रहतैंहीं इनदेवतावोंका जयहोता भयाहै॥ और इसवर्त्तमानकालविषेभी यहदेवताहमारेअनुग्रहतैंहीं महान्पराक्रमवालेहैं ॥ ऐसेयहदेवता मैंपरब्रह्मकीमायाकरिकैमोहितहुए कृतघ्नपुरुषोंकीन्याईं उपकारकरणेहारेमैंपरब्रह्मकूंही विस्मरणकरतेभये हैं ॥ यातैं यहदेवताअत्यंतमूढबालकहैं ॥ अब ताकृतघ्नतादोषकी निवृत्तिवासतै प्रथम ताकृतघ्नतादोषका अनर्थरूपफल वर्णनकरे हैं॥ यालोकविषे जोपुरुष जिसपुरुषकेअनुग्रहतैं उत्कृष्टताकूंप्राप्तहोवै है॥ सोपुरुष जोकदाचित् मोहकेवशतैं ताउपकारकर्त्तापुरुषका विस्मरणकरै है ॥ सोकृतघ्नपुरुष शतअयुतजन्मपर्यंत महानदुःखोंकूंप्राप्तहोवै है ॥ किंवा॥ जोमूढपुरुष आपणेउपकारकर्त्तापुरुषकूं मानतानहीं ॥ सोमूढपुरुष ताकृतघ्नतादोषतैं कोटिकल्पपर्यंत विष्ठाविषेकृमिशरी रकूंप्राप्तहोवै है ॥ किंवा जोपुरुष किसीपुरुषकेकन्येहुएअल्पउपकारकूंभीनहींमानता ॥ सोपुरुष कृतघ्नकह्याजावै है ॥ सोकृतघ्नपुरुष यालोकविषे ब्रह्महत्याकरतैंभी अधिकपापी है॥ काहेतैं ताब्रह्महत्याकेनिवृत्तकरणेवासतै मनुआदिकवेदवेत्तापुरुषोंनैं प्रायश्चित्तकाविधानक न्याहै ॥ और याकृतघ्नतादोषकीनिवृत्तिवासतै तिनमनुआदिकोंनैं कोईप्रायश्चित्तकाविधानकऱ्यानहीं॥ यातैं यहजान्याजावै है॥ताकृत घ्नतादोषकीनिवृत्तिकरणेहारा कोईप्रायश्चित्तहैनहीं ॥ और ब्रह्महत्याकीनिवृत्तिकरणेवासतैतौ मनुआदिकोंनैं प्रायश्चित्तकाविधानकऱ्या है यातैं यहकृतघ्नतादोष ताब्रह्महत्यातैंभी अधिकदुःखकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ किंवा ॥ यादेवताओंविषे केवल एककृतघ्नतादोषनहीं है ॥ किंतु आपणी स्तुतिकरिकै तथादूसरेप्राणियोंकीनिंदाकरिकै इनदेवताओंविषे आत्मघातीपणा तथाविश्वघातीपणा यहदोनोंदोषभी विद्यमानहैं ॥ काहेतैं यालोकविषे जोभेददर्शीपुरुष गर्वकरिकैयुक्तहुआ आपणेकर्मकी मनकरिकैभीस्तुतिकरे है ॥ तथा दूसरेपुरु

॥ ८ ॥

षोंकेकर्मकीनिंदाकरे है॥ सोअविवेकीपुरुष ताभेददृष्टिकरिकै आपणेकूं तथापरकूं हननकरे है ॥ काहेतैं शास्त्रवेत्तापुरुषोंनैं भेददृष्टिपूर्वक आपणीस्तुतिकरणेविषे आत्महत्याकीप्राप्तिकथनकरी है ॥ तथा परकीनिंदाविषे परहत्याकीप्राप्तिकथनकरीहै ॥ किंवा ॥ जोपुरुष आ पणीस्तुतिकरिकै आत्माकाहननकरे है ॥ सोपुरुष यालोकविषे अत्यंतपापात्माजानणा ॥ और जैसे कृतघ्नतादोषकेनिवृत्तकरणेवासतै शास्त्रविषे कोईप्रायश्चित्त नहींकथनकऱ्या ॥ तैसे ताआत्महत्याकेनिवृत्तकरणेवासतैभी शास्त्रविषे कोईप्रायश्चित्त कथनकऱ्यानहीं ॥ यातैं साआत्महत्याभी ताकृतघ्नताकेसमानही है ॥ किंवा यहदेवता सर्वदा आपणीतौस्तुतिकरते हैं ॥ तथा आपणेतैंभिन्नसर्वलोकोंकी निंदाकरते हैं ॥ यातैं इनदेवतावोंकूं दिनदिनविषे आत्महत्याकीप्राप्तिहोवै है ॥ तथा सर्वविश्वकेहत्याकीप्राप्तिहोवै है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ ऐसेआत्महत्यादिकअनर्थरूपकर्मोंविषे यहजीव किसवासतै प्रवृत्तहोवै है ॥ समाधान ॥ मैंपरमात्मादेवकीमायाकरिकैमो हितहुए तथाकालपाशकेवशकूंप्राप्तहुए यहअज्ञानीजीव आपणेअल्पकार्यकीसिद्धिवासतैभी ताआत्महत्याकूं तथाकृतघ्नताकूं तथाविश्वहत्याकूं करे हैं ॥ याकेविषे कोईआश्चर्यरूपतानहीं है ॥ किंवा ॥ कृतघ्नतादिकपापकर्मोंविषे प्रीतिवाले जेयहदेवताहैं॥ तेदेवता यद्यपि असुरोंकीन्याईं दंडकरणेयोग्यहैं ॥ तथापि इनदेवतावोंकूं असुरोंकीन्याईं दंडदेणा हमारेकूंउचितनहीं है ॥ काहेतैं यालोकविषे जिसपुरु षनैं आपणेहस्तोंकरिकै विषकावृक्षभीलगायाहै ॥ तथा अत्यंतप्रयत्नतैं ताविषकेवृक्षकापालनकऱ्याहै॥ तिसपुरुषकूं आपणेहस्तोंकरिकै सोविषकावृक्षभी छेदनकरणेयोग्यनहीं है ॥ जभीपालनकऱ्याहुआ विषकावृक्षभी छेदनकरणेयोग्यनहींभया ॥ तभी यहश्रेष्ठदेवता किस प्रकार दंडदेणेयोग्यहोवैंगे ॥ किंतु यहदेवता दंडदेणेयोग्यनहीं हैं ॥ किंवा ॥ पापकर्मकेआचरणकरणेहारेपुरुषोंकेप्रति दंडकरणेवासतै यह पुरुष आप पाप आचरणवालानहींहोवै ॥ किंतु जिसउपायकरिकै आपणेकूंपापकीप्राप्तिनहींहोवै ॥ ऐसेउपायकरिकै यहपुरुष तिनपापा त्मापुरुषोंकूंशिक्षाकरे ॥ काहेतैं जोपुरुष पापकर्मोंकेकरणेकीइच्छाकरे है ॥ सोपुरुषतौ आपही तापापकर्मकरिकैहननहुआहै ॥ऐसेपापा त्मापुरुषकूं जोकोईसाधुस्वभाववालापुरुष किसीक्रूरकर्मकरिकैशिक्षाकरे है ॥ तिससाधुपुरुषकूं दोप्रकारकेदोषकीप्राप्तिहोवै है ॥ तहां

एकतौ आपणेसाधुस्वभावकापरित्यागहोवै है ॥ और दूसरा पिष्टपेषणकीन्याईं मरेहुएकापुनःमारणारूपदोष प्राप्तहोवै है ॥ किंवा ॥ यह सर्वदेवता मैंपरमात्मादेवकेपुत्रहैं ॥ तिनदेवतावोंकूं मैंने भलीप्रकारसैंपालनकऱ्याहै ॥ तथा इनदेवतावोंकूं मैंने असुरोंतैं जयकीप्राप्तिकरी है ॥ ऐसेदेवतावोंकाहननकरणा बिलाडीकेकर्मकीन्याईं पापरूपही है ॥ यातैं आत्महत्या कृतघ्नता विश्वहत्या यातीनदोषोंकीप्राप्तिकरणे हारा जोइनदेवतावोंकागर्व है ॥ तागर्वदोषकूं मैंपरमात्मादेव किसीअन्यउपायकरिकैनिवृत्तकरों ॥ जिसगर्वकीनिवृत्तिकरिकै इनदेवतावों काकल्याणहोवै ॥ याप्रकारकाविचार सोपरमात्मादेव करताभया ॥ हेशिष्य ॥ जैसे अर्जुनकेप्रति कृष्णभगवान्नैं उपदेशकऱ्याजोगीता शास्त्र ॥ तागीताशास्त्रकूं सोअर्जुन किसीकालपाइकै भोगोंकीआसक्तिकरिकै विस्मरणकरताभया ॥ ताअर्जुनकेविस्मृतिकूं सोकृष्णभ गवान् पुनःअनुगीताकेउपदेशकरिकै निवृत्तकरताभया ॥ तैसे सोपरमात्मादेवभी तिनदेवतावोंकूं पुनःआपणेस्वरूपकीस्मृतिकरावणेवा सते तथातिनोंकेअभिमानकीनिवृत्तिकरणेवासते सोपूर्वउक्तविचारकरिकै एकअद्भुतयक्षकास्वरूपधारणकरिकै तिनदेवतावोंकेनेत्रोंकाविषयहोताभया ॥ कैसाहैसोयक्ष ॥ असंख्यातहैंमस्तकजिसके ॥ तथा असंख्यातहैंनेत्रादिककइंद्रियजिसके ॥ तथा सर्वजातिवालेजीवोंकेजेमुखहैं तिनसर्वमुखोंकरिकैयुक्तहै ॥ तथा जिसयक्षविषे सर्वभूतभौतिकपदार्थ विद्यमानहैं ॥ तथा सर्वआयुधोंकूंधारणकरणेहाराहै ॥ तथा सर्व मालावोंकूंधारणकरणेहाराहै तथा सर्ववस्त्रादिकोंकूंधारणकरणेहाराहै ॥ तथा स्त्री पुरुष नपुंसक यातीनोंचिह्नोंकूंधारणकरणेहाराहै ॥ ऐसे अद्भुतरूपवालेयक्षकूंदेखिकै तेसर्वसभावासीदेवता आश्चर्यकूंप्राप्तहोतेभये ॥ तथा यहकौनहै २ याप्रकारकेवचन परस्परकहतेभये ॥ हेशिष्य ॥ जेबुद्धिमान्देवता अन्यपुरुषोंके आकारकूंदेखिकै तथाअवयवोंकीक्रियाकूंदेखिकै तथागतिकूंदेखिकै तथाचेष्टाकूंदेखिकै तथाशब्दकूंश्रवण करिकै तथामुखनेत्रोंके अन्यथाभावकूंदेखिकै तिनपुरुषोंकेमनकेवृत्तांतकूंजाने हैं ॥ ऐसेबुद्धिमानदेवताभी तायक्षकेस्वरूपकूंदेखिकैनिश्चयकूं नहींप्राप्तहोतेभये ॥ हेशिष्य ॥ ऐसेअद्भुतयक्षकूंदेखिकै विस्मयकूंप्राप्तहुआहै मनजिनोंका तथाउत्फुल्लहुएहैंनेत्रकमलजिन्होंके तथारोमांचस्व डेहुएहैं जिन्होंके ऐसेतेदेवता यहकौनहै यहकौनहै याप्रकारकावचनहीवारंवारकहतेभये ॥ हेशिष्य ॥ जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज

॥ ९ ॥

याचारिप्रकारकेशरीरोंकेलक्षणकरिकैयुक्त जोयक्षहै ॥ जिसयक्षकेस्वरूपकूं पूर्वकिसीनैंभी अनुभवकऱ्यानहीं ॥ ऐसेअपूर्वयक्षकेदर्शनतैंति नदेवतावोंकीसभाविषे महान्क्षोभहोताभया ॥ हेशिष्य ऐसेयक्षकेस्वरूपकूंदेखिकै भयकरिकैयुक्तहुआहै हृदयजिन्होंका तथाविस्मरणहुआहै आपणाप्रभावजिन्होंकूं ऐसेतेदेवता तायक्षकेसमीपजाणेविषे समर्थनहींहोतेभये ॥ तिसतैंअनंतर तेइंद्रादिकसर्वदेवता अग्निदेवताकूंआज्ञाक रतेभये ॥ हेअग्निदेवता तूं यायक्षकेसमीपजाइकै यहनिश्चयकर ॥ जोयहयक्ष कौनहै ॥ हमदेवतावोंकेअनुकूलहै ॥ अथवा हमदेवतावोंकेप्रति कूलहै ॥ कैसाहैसोअग्निदेवता ॥ तथा सर्वदेवतावोंतैंकनिष्ठहै ॥ सर्वदेवतावोंतैंप्रथमपूज्यहै ॥ तथा सर्वतेजोंकासमुदायरूपहै ॥ तहांश्रुति ॥ अग्निरवमोदेवानांविष्णुःपरमोदेवता ॥ अर्थयह ॥ अग्निदेवता सर्वदेवतावोंतैंकनिष्ठहै ॥ और विष्णुदेवता सर्वदेवतावोंतैं श्रेष्ठहै ॥ १ ॥ ऐसाअग्निदेवता तिनसर्वदेवतावोंकेआज्ञाकूंमानिकै निःशंकहोइकै तायक्षकेसमीपजाताभया ॥ ताअग्निदेवतासैं सोयक्ष तूंकोनहै याप्रकार पूछताभया ॥ तायक्षकेवचनकूंश्रवणकरिकै सोअग्निदेवता निःशंकहोइकै मैंजातवेदानामकरिकैप्रतिद्ध अग्निदेवताहुं याप्रकारकावचन तायक्षकेप्रति कहताभया ॥ इहां ॥ जातंवेदोधनंयस्मात्सजातवेदाः ॥ याप्रकारकीव्युत्पत्तिकरिकैतौ सोजातवेदाशब्द धनकेदाताकावा चकहै ॥ और जातेजातेविद्यते सजातवेदा याप्रकारकीव्युत्पत्तिकरिकै सोजातवेदाशब्द व्यापककावाचकहै ॥ इसप्रकारकावचन जभी ताजातवेदानामाअग्निनैं तायक्षकेप्रतिकह्या ॥ तभी सोयक्ष ताअग्निकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेजातवेदानामअग्नि तुम्हारे विषेकितनाबलहै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकावचन तभी तायक्षनैं अग्निदेवताकेप्रतिकह्या ॥ तभी सोअग्निदेवता तायक्षकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेयक्ष ॥ यहजितनाकीमूर्तिमानविश्वहै ॥ तासर्वविश्वकूं मैंअग्निदेवता एकक्षणविषेदाहकरिदेवों ॥ इतना सामर्थ्य हमारेविषेहै ॥ इसप्रकारकावचन जभी ताअग्निदेवतानैं तायक्षकेप्रतिकह्या ॥ तभी सोयक्ष मंदमंदहँसताहुआ ताअग्निदेवताकेआगे एकशुष्कतृणकूंराखिकै ताअग्निकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेअग्निदेवता तुम्हारेविषे जोइतनासामर्थ्य है ॥ तौ याशुष्कतृणकूंतूं भस्मकर ॥ याप्रकारके तायक्षकेवचनकूंश्रवणकरिकै सोअग्निदेवता आपणेसर्ववेगकरिकै तथासर्वप्रयत्नकरिकैतातृणकेदग्धकरणेकाउद्यम

करताभया॥परंतु सोअग्निदेवता तातृणकूंदग्धनहींकरिसकताभया॥हेशिष्य॥ इसप्रकार जभी ताअग्निदेवतानैं तातृणकादाहनहींभया॥ तभी सो अग्निदेवता तागर्वतैंरहितहोताभया॥ तथा लज्जावान्होताभया।और देवताओंकीसभाविषेआइकै सोअग्निदेवता तिनसर्वदेवता ओंकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया॥हेदेवताओ॥जिसयक्षनैं हमारेसर्वबलकूंनाशकऱ्याहै।तिसयक्षकूं मैंअग्नि जानिसकतानहीं।जोयह यक्ष हमदेवताओंकेअनुकूलहै ॥ अथवा हमदेवताओंकेप्रतिकूलहै ॥ यातैं तायक्षकेस्वरूपनिर्णयकणेवासतै तुमदेवतै किसीदूसरेदेवताकूं भेजो । हेशिष्य।इसप्रकार ताअग्निदेवताकेवचनकूंश्रवणकरिकै तेइंद्रादिकदेवता वायुदेवताकूं तायक्षकेसमीपभेजतेभये।तिनसर्वदेव ताओंकीआज्ञाकोमानिकै सोवायुदेवता तायक्षकेसमीपजाताभया॥तावायुदेवताकूंआयाहुआदेखिकै सोयक्ष तावायुदेवताकेप्रतितूकौनहै याप्रकार पूछताभया॥तायक्षकेवचनकूंश्रवणकरिकै सोवायुदेवता तायक्षकेप्रति मातरिश्वनामाकरिकैप्रसिद्ध मैं वायुदेवताहूं याप्रकारका वचन कहताभया ॥ तावायुदेवताकेवचनकूंश्रवणकरिकै सोयक्ष तावायुदेवताकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया॥ हेवायुदेवता॥तुमारे विषे कितनाबलहै॥ इसप्रकार तायक्षकेवचनकूंश्रवणकरिकै सोवायुदेवता निःशंकहोइकै तायक्षकेप्रति आपणाबल कहताभया॥हेयक्ष॥ जैसे बालक आपणेमुखकरिकै सूक्ष्मतृणकूंलेजावै है ॥तैसे मैंवायुदेवता यासर्वविश्वकूं आपणीकुक्षिविषेपाइकै याब्रह्मांडगोलकतैंबाह्यदेश विषे लेजाणेमैंसमर्थ हूं॥इतनासामर्थ्य हमारेविषेहै॥हेशिष्य॥इसप्रकारकावचन जभी तावायुनैं यक्षकेप्रति कह्या॥ तभी सोयक्ष पूर्वअग्नि कीन्याईं तावायुकेआगेभी एकशुष्कतृणराखिकै तावायुकेप्रतियाप्रकारकावचन कहताभया॥हेवायुदेवता ॥जो तुमारेविषेइतनाबलहै ॥ तौ याशुष्कतृणकूं तूं लेजाव ॥ इसप्रकार तायक्षकेवचनकूंश्रवणकरिकै सोवायुदेवता आपणेसर्ववेगकरिकै तातृणकेउडावणेका उद्यमकरताभया ॥ परंतुसोवायु तातृणकूं किंचित्मात्रभीचलायमाननहींकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर अग्निदेवताकीन्याईं गर्वतैंरहित होइकै तिनदेवतावोंकीसभाविषे जताभया॥ और सोवायुदेवता तिनसर्व देवतावोंकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेदेवतावो ॥ यहयक्ष हमदेवतावोंकेअनुकूलहै अथवा हमदेवतावोंकेप्रतिकूलहै याप्रकारकेनिश्चयकरणेविषे मैं समर्थनहींहूं ॥ यातैं तुम दूसरे

किसीदेवताकूंभेजिकै यावार्त्ताकानिश्चयकरो ॥हेशिष्य ॥ इसप्रकारकावचन जभी तावायुदेवतानैं सर्वदेवतावोंकेप्रतिकह्या॥तभीतेसर्वस भावासीदेवता देवराजइंद्रकेप्रतिकहतेभये॥हेदेवराजइंद्र॥यहयक्ष हमदेवतावोंकेअनुकूलहै अथवा प्रतिकूल है यावार्त्ताकूं आपही जाइकैनि श्चयकरो ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार सर्वदेवतावोंकेवचनकूंश्रवणकरिकै सोदेवराजइंद्र जैसेपूर्व अग्नि वायु तायक्षकेसमीपगयेथे॥तैसे तायक्षके समीपजाताभया ॥ ताइंद्रकूं समीपआयाहुआदेखिकै सोयक्ष ताइंद्रकेविशेषअभिमानकीनिवृत्तिकरणेवासतै तहां अंतर्धानहोताभया ॥ तायक्षकूंअंतर्धानहुआदेखिकै सो देवराजइंद्र चारोंदिशाविषे तायक्षकूंदेखताहुआ तिसीस्थानविषे स्थितहोताभया ॥ और तायक्षकेदेख णेकीउत्कटइच्छाकरिकै निवृत्तहुएहंगर्वादिकदोषजिसके ऐसासोदेवराजइंद्र तायक्षकेअंतर्धान देशविषे किसीअपूर्वस्त्रीकूंदेखताभया ॥ कैसीहै स्त्री ॥ हिमालयपर्वतकीपुत्रीहै ॥ तथा सर्वकल्याणगुणोंकरिकै तथा श्रेष्ठ लक्षणोंकरिकै शोभायमानहै॥तथा आपणीकांतिक रिकैशोभायमान है ॥ तथा उपमातैंरहितशरीरकूंधारणकरणेहारी है ॥ तथा देवराजइंद्रऊपर माताकीन्याईं तथाभगिनीकीन्याईं कृपा रूपीस्नेहकरणेहारीहै ॥ तथा जिसउमाभवानीदेवीकूं शास्त्रवेत्तापुरुष ब्रह्मविद्या यानामकरिकैकथनकरै हैं॥पुनःकैसीहैसाउमादेवी॥जिस उमादेवीकेअनुग्रहतैं तीनलोकविषेस्थितपुरुष अद्भुतसौंदर्यताकूंप्राप्तहोवै है ॥ तथा मनवांछितसंपदावोंकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ और जिसउमा देवीकेअनुग्रहतैं ब्रह्मचारीपुरुष अखंडितब्रह्मचर्यकूंप्राप्तहोवै है ॥ तथा चारिवेदोंकूंप्राप्तहोवै है॥और जिसउमादेवीकेअनुग्रहतैं गृहस्थपुरुष दोनोंलोकविषेसुखकीप्राप्तिकरणेहारेगृहस्थपणेकूंप्राप्तहोवै हैं॥और जिसउमादेवीकेअनुग्रहतैं वनविषेरहणेहारेवानप्रस्थ तपकूंप्राप्तहोवै हैं॥ और जिसउमादेवीकेअनुग्रहतैं संन्यासी स्वधर्मकूंप्राप्तहोवै हैं॥जिसस्वधर्मकरिकै तेसंन्यासी ब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवै हैं ॥ और जाब्रह्मविद्या रूपउमादेवी माताकीन्याईं कृपाकरिकै परमहंस संन्यासियोंकूं आपणेब्रह्मविद्यास्वरूपकी प्राप्तिकरै है ॥ जिसब्रह्मविद्याके दर्शनतैं तिनपरमहंससंन्यासियोंके अविद्यारूपबंधनगृह नाशकूं प्राप्तहोवै है ॥ तथा कामक्रोधादिरूपशृंखला नाशकूंप्राप्तहोवै है ॥और जाउमा देवी श्रीमहादेवकेमुखकी सौंदर्यताकूंदेखिकै आपणीसौंदर्यताकरिकै सर्वजीवोंकेमनकूं मोहितकरतीहुई स्थितहोवै है ॥ और जिसउमा

देवीकेशरीरकीप्रभा कोटिसूर्यके समानहै ॥ तथा जिसउमादेवीकीशीतलता कोटिचंद्रमाकेसमानहै ॥ और जाउमादेवी आपणेशरीरकी लावण्यताकरिकै कोटिकामदेवताकेसमानहै ॥ और जाउमादेवी नानाप्रकारकीऐश्वर्यताकरिकै कोटिलक्ष्मीकेसमानहै॥ और किसीप्रसिद्धदेशविषे अथवा किसीअप्रसिद्धदेशविषे स्थितहुए यहदेहधारीजीव जिसजिससामर्थ्यकूंप्राप्तहोवै हैं॥सो याउमादेवीकेअनुग्रहतैंही तिस तिससामर्थ्यकूंप्राप्तहोवै हैं॥और जाउमादेवी भक्तजनोंकेदुःखकीनिवृत्तिकरणेवासतै शांतस्वरूपहुईभी इतरअभक्तजनोंकेप्रति आपणेते जकीअतिशयताकरिकै दुर्विज्ञेयताकूंप्राप्तहोवै है॥याकारणतैंही ताइंद्रकेगर्वकीनिवृत्तिकरणेवा सतै साउमादेवी आपणेदर्शनतैं ताइंद्रकेस हस्रनेत्रोंविषेस्थिततेजकूं हरणकरतीभई॥और जाउमादेवी देवराजइंद्रनैं यात्रीलोकीविषे पूर्वकभीदेखीनहीं॥तथा जाउमादेवी दिव्यगंधकूं तथादिव्यमालावोंकूं तथादिव्यवस्त्रोंकूं धारणकरणेहारीहै ॥ तथा जाउमादेवी आपणेदर्शनतैं सर्वप्राणियोंकेनेत्रोंकूं तथामनकूं आनंदकी प्राप्तिकरणेहारी है ॥ तथा सर्वभूषणोंकरिकैयुक्तहै॥तथा मंदमंदहास्यपूर्वक वचनोंकूंउच्चारण करणेहारी है॥और जाउमादेवी ब्रह्मविद्यारूप करिकै सर्वदा उपनिषदोंविषेरहे है ॥ तथा ब्रह्मचर्यादिकसाधनसंपन्न परमहंससंन्यासियोंकेमनविषेरहे है ॥ और कामदेवकूंनष्टकरणेहारा तथायक्षरूपकूंधारणकरणेहारा जोपरब्रह्मरूप त्रिलोचनमहादेवहै ॥ तामहादेवरूपभर्त्ताकेवामभागविषे जाउमादेवी सर्वदास्थित है॥ऐसी उमादेवीकूं तहांस्थितहुआदेखिकै सोदेवराजइंद्र ताउमादेवीसैं याप्रकारपूछताभया॥हेदेवीमाता यास्थानविषे जोयक्ष पूर्वप्रादुर्भावहोइकै अंतर्धानहोताभया ॥ सोयक्ष कौनथा ॥ तायक्षकेस्वरूपकूं जोतूं जाननीहोवै ॥ तौकृपाकरिकै हमारेप्रतिकथनकर॥हेशिष्य॥याप्रकार कावचन जभी ताइंद्रनैं ताउमादेवीकेप्रतिकह्या॥तभी साउमादेवी ताइंद्रकेप्रति ताब्रह्मरूपमहादेवकेवास्तवस्वरूपका कथनकरतीभई॥ तथा जिसप्रयोजनवासतै सोपरब्रह्मरूपमहादेवयक्षकास्वरूपधारणकरिकै तहांआयाथा॥सोसंपूर्णप्रयोजन तिनदेवतावोंकेप्रतिकथनकरती भई ॥ हेशिष्य ॥ ताउमादेवीकेवचनकूंश्रवणकरिकै सोदेवराजइंद्र तागर्वतैं रहितहोताभया ॥ तथा पूर्व विस्मरणकरेहुए तामहादे वकेब्रह्मभावरूप वास्तवस्वरूपकूं पुनःस्मरण कहताभया ॥ तथा सोइंद्र तापरब्रह्मकूंही आपणे जयकाकारण मानताभया ॥ हेशिष्य ॥ ११ ॥

इसप्रकार सा जन्ममरणरूपसंसारकेनाशकरणेहारी भवानीदेवी ताइंद्रकेप्रति सर्वब्रह्मविद्याकाउपदेशकरिकै तिसीआकाशविषेअंतर्धान होतीभई ॥ तिसतैंअनंतर सोदेवराजइंद्र ताआकाशविषेअंतर्धानहुए महादेवभवानिकूं नमस्कारकरिकै देवतावोंकीसभाविषेआवता भया ॥ तासभाविषेआइकै सोदेवराजइंद्र तिनसर्वदेवतावोंके प्रति सोयक्षउमादेवीकावृत्तांत कथनकरताभया ॥ तावृत्तांतकूंश्रवणकरिकै तेअग्निवायुआदिकसर्वदेवता तिनगर्वादिकदोषोंतैं रहितहोतेभये ॥ हेशिष्य ॥ तेइंद्रादिकदेवता सात्विकीहैं॥ यातैं तेदेवता स्वभावतैं तिनगर्वक्रोधादिकदोषोंतैंरहितहैं ॥ तथाप्रमादतैंरहितहैं ॥ तथापरीक्षाकरिकैसर्वकार्योंकूंकरणेहारे हैं ॥ तथाआपणेहितअहितकूंजानणे हारे हैं ॥ ऐसेदेवताभी किसीकालपाइकै परमेश्वरकीमायाकरिकै तथारजोगुणकरिकैमोहकूंप्राप्तहोतेभये ॥ ऐसेदेवतावोंकेप्रति साब्रह्मवि द्यारूपउमादेवीब्रह्मविद्याकाउपदेशकरिकैपुनःपूर्वकीन्याईं सावधानकरतीभई।हेशिष्य। ताब्रह्मविद्याकेअनुग्रहकरिकै तेइंद्रादिकदेवता ता परब्रह्मकूंहीं यासर्वजगत्काउपादानकारणतथा निमित्तकारणजानतेभये ॥हेशिष्य ॥ जोपरब्रह्मदूसरेदेवतावोंकूंतथामनुष्यादिकोंकूंअत्यंत दुर्लभहै ॥ तायक्षरूपपरब्रह्मकूं सोइंद्रदेवता तथाअग्निवायुदेवता अत्यंतसमीपतारूपकरिकै प्राप्तहोतेभये ॥ याकारणतैं सोइंद्रदेवता तथाअग्निवायुदेवता दूसरेसर्वदेवतावोंतैं अधिकहैं ॥ और इंद्र अग्नि वायु यातीनोंविषेभी सोइंद्रदेवता अधिकहै ॥ काहेतैं सोदेवराजइंद्र साक्षात् ताउमादेवीकेमुखतैंहीं तापरब्रह्मकेवास्तवस्वरूपकूंसाक्षात्कारकरताभयाहै॥याकारणतैं सोइंद्र तिनसर्वदेवतावोंतैंश्रेष्ठहै॥हेशिष्य जिसपरब्रह्मकूं सोअग्निवायुदेवता प्राप्तहोताभया ॥ तथा जिसपरब्रह्मकूं सोइंद्रदेवता निश्चयकरताभया ॥ तापरब्रह्मकूं वेदवेत्ताब्राह्मण अधिदैव अध्यात्म यादोनोंरूपकरिकै उपासनाकरेहैं ॥ अब तापरब्रह्मके अधिदैवरूपकावर्णनकरे हैं ॥ हेशिष्य जोहिरण्यगर्भभगवान् विराट्भगवान्काभीजनकहै ॥ तथा जिसहिरण्यगर्भभगवान्का यहसंपूर्णविश्व शरीरहै ॥ तिसहिरण्यगर्भभगवान्के समष्टिरूपदेहकेअं तर जोविद्युत्केप्रकाशसमानतत्त्वहै॥तथा चेतनरूपहोणेतैंताजडविद्युततैंविलक्षणहै ॥ तथाआपणीसमीपतामात्रकरिकै सर्वप्राणियोंकेइं द्रियोंकातथामनकाप्रेरकहै॥सोतत्त्वहीतापरब्रह्मकाअधिदैवरूपहै॥अब तापरब्रह्मकेअध्यात्मरूपकावर्णनकरेहैं॥हेशिष्य॥जैसे तापरब्रह्मका

अधिदैवरूप श्रुतिविषेकथनकऱ्याहै ॥ तैसे तापरब्रह्मका अध्यात्मरूपभीकथनकऱ्याहै ॥ तहां जोतत्त्व यादेहधारीजीवोंके प्रत्येकशरीरविषेस्थितहोइकै तासंघातविषेस्थितबुद्धिकेजाग्रतादिकअवस्थावोंकूं साक्षीरूपकरिकैप्रकाशकरेहै॥सोसाक्षीस्वरूपतत्त्वतापरब्रह्मका अध्यात्मस्वरूपहै ॥ हेशिष्य ॥ सोसाक्षीस्वरूपतत्त्व यासंसाररूपवनविषेप्रविष्टहुआ सर्वांतर्यामीपरब्रह्मरूपहीहै ॥ तथा सोसाक्षीस्वरूप तत्त्व सर्वजनोंकेनिरतिशयप्रीतिकाविषयहोणतैं तिनसर्वजनोंकूं भजनीयहै॥याकारणतैं ताप्रत्यक्साक्षीआत्माकूं वेदवेत्तापुरुष वनं यानामकरिकैकथनकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ जेपुरुष वनं यानामकरिकै तापरमात्मादेवकीउपासनाक रैं ॥ तिनपुरुषोंकूं सर्वजन आराधनाकरणे वासतैइच्छाकरेहैं अब ताब्रह्मविद्याकेसाधनोंकावर्णनकरेहैं ॥ हेशिष्य ॥ जाब्रह्मविद्या हमनैं तुमारेप्रति पूर्वकथनकरीहै ॥ साब्रह्मविद्या साधनोंतैंविनाप्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं संक्षेपतैं ताब्रह्मविद्याकेसाधनोंकूं हम तुमारेप्रतिकथनकरते हैं ॥ तिनसाधनोंकूं तूं सावधानहोइकै श्रवणकर ॥ हेशिष्य ॥ सर्व देहधारीजीवोंकेप्रति आपणेआपणे वर्णआश्रमके अनुसार जेवेदभगवान्नैं नित्यनैमित्तिककर्म विधान करे हैं॥तेकर्मभी निष्कामकरेहुए अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा ताब्रह्मविद्याकेसाधनहैं॥ तथा कृच्छ्रचांद्रायणादिकृतभी ताब्रह्मविद्याकेसाधनहैं ॥ तथा शमदमादिकभी ताब्रह्मविद्याकेसाधनहैं॥तथा वेदविषेकथनकरीजे नानाप्रकारकीउपासनाहैं ॥तेउपासनाभी चित्तकोविक्षेपकीनिवृत्तिद्वारा ताब्रह्मविद्याकेसाधनहैं तथा याश्रुतिविषेकथनकरी जावेदवाणीरूपधेनुकीउपासनाहै ॥ साउपासनाभी आत्मज्ञानार्थी पुरुषनैं अवश्यकरिकैकरणी॥तहांतावाक्रूपधेनुके ऋग्यजुषूसाम अथर्वण यहचारिवेदतौ चारिपादरूपहैं ॥ औरतिनवेदोंकेजेशिक्षादिकअंगहैं॥तेशिक्षादिकअंगतावाक्रूपधेनुके शिरादिकअवयवरूपहैं ॥ तथास्वाहाकार वषट्कारहंतकारस्वधाकार यहचारोंमंत्र तावाक् रूपधेनुकेचारिस्तनहैं ॥ औरश्रुतिविषेसत्यशब्दकरिकैकथनकऱ्याजोब्रह्महै ॥ सोब्रह्मयावाक्रूपधेनुकाभूमिरूपआधारहै॥ और मनकी वृत्तिरूपजोबोधहै ॥ सोबोधतावाक्रूपधेनुकावत्सहै ॥ हेशिष्य॥ इसप्रकारकीरीतिसैं जोपुरुषतावाक्रूपधेनुकीउपासनाकरेहै॥सोपुरुष ॥ १२ ॥ चित्तकीशुद्धिद्वारा ताआत्मज्ञानकूंहींप्राप्तहोवैहै ॥ ताआत्मज्ञानकीप्राप्तिकरिकै सोविद्वान्पुरुष अद्वितीयआनंदस्वरूपब्रह्मविषेस्थितिकूं

प्राप्तहोवै है ॥ जिसआनंदस्वरूपब्रह्मविषेस्थितहुआ सोविद्वान्पुरुष पुनःजन्ममरणरूपसंसारविषेप्राप्तहोवैनहीं ॥ हेशिष्य ॥ पूर्वचतुर्दश अध्यायविषे जोइंद्र प्रजापतिकाशिष्यरूपकरिकैवर्णनकऱ्याथा ॥ सोइंद्र ब्रह्मविद्याकेअनुग्रहतैं ताअद्वितीयब्रह्मकूं आपणाआत्मारूप करिकैजानताभया ॥ हेशिष्य ॥ जैसे ताप्रजापतिका देवराजइंद्र शिष्यहोताभयाहै ॥ तैसे ताप्रजापतिका एकअथर्वानामाज्येष्ठपुत्रभी शिष्यहोताभयाहै ॥ जिसअथर्वानामाब्रह्माकेपुत्रतैंप्रवृत्तहुईसंप्रदायतैं साब्रह्मविद्या बहुतविस्तारकूंप्राप्तहोतीभई ॥ हेशिष्य ॥ ब्रह्मविद्या रूपउमादेवीकेअनुग्रहतैं तेइंद्रादिकदेवता किसप्रकारब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोतेभये ॥ यहजोप्रश्न पूर्वतुमनैंकऱ्याथा ॥ सोताब्रह्मविद्याकेप्रसंगतैं सर्ववार्त्ता हमनैं तुमारेप्रति कथनकरी ॥ अब जिसअर्थकेश्रवणकरणेकी तुमारेकूं इच्छाहोवै ॥ सोअर्थ तूं हमारेसैंपूछ ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य स्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचिते प्राकृतआत्मपुराणे तलवकारोपनिषत्सारार्थप्रकाशोनाम पंचदशोऽध्यायःसमाप्तः ॥ १५ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥

इति श्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषा आत्मपुराणे पञ्चदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

इति श्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषाआत्मपुराणेपञ्चदशोऽध्यायःसमाप्तः॥

॥ अथ स्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषाआत्मपुराणे षोडशाध्यायप्रारंभः ॥

ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथषोडशाऽध्यायप्रारम्भः ॥ याआत्मपुराणके प्रथम द्वितीय तृतीय यातीनअध्यायोंविषे ऋग्वेदकेउपनिषदोंकाअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ औरयाआत्मपुराणकेचतुर्थ पंचम षष्ठ सप्तम अष्टम नवम दशम यासप्तअध्यायोंविषे यजुर्वेदकेउपनिषदोंकाअर्थ निरूपण कऱ्या ॥ और याआत्मपुराणकेएकादश अध्यायविषे ऋगादिकसर्ववेदोंकेउपनिषदोंकाअर्थनिरूपणकऱ्या ॥ औरयाआत्मपुराणके द्वादश त्रयोदश चतुर्दश पंचदश याचारिअध्यायोंविषे सामवेदकेउपनिषदोंकाअर्थनिरूपणकऱ्या ॥ अबयाआत्मपुराणके षोडश सप्तदश अष्टादश यातीनअध्यायोंविषे अथर्वणवेदकेउपनिषदोंकाअर्थनिरूपणकरेहैं ॥ तहांयाषोडशअध्यायविषे ताअथर्वणवेदके मुंडकउपनिषद्काअर्थनिरूपणकरे हैं ॥ तहांपूर्वअध्यायविषेब्रह्मविद्यायुक्त अत्यन्तसुंदरकथाकूं श्रवणकरिकै सोशिष्यबहुतप्रसन्नहोताभया ॥ औरअथर्वाऋषिउक्तब्रह्मविद्याकेपूछणेवासतै सोशिष्यआपणे गुरुकेप्रतियाप्रकारकावचनकहताभया ॥ शिष्यउवाच ॥ हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणकेप्रथमअध्यायविषे आपनैंऋग्वेदकेऐतरेयउपनिषद्का अर्थनिरूपणकऱ्याथा ॥ ताप्रथमअध्यायविषे आपनैंसनकादिकमुनियोंके तथावामदेवादिकअधिकारीप्रजाके संवादकरिकैवैराग्यादिक साधनोंयुक्त नानाप्रकारकीब्रह्मविद्याकथनकरीथी ॥ तथामाताकेउदरविषेस्थित वामदेवकासर्वात्मभावरूपअनुभवकथनकऱ्याथा ॥ और हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणकेद्वितीयअध्यायीविषेतथातृतीयअध्यायीविषे आपनैंतिसीऋग्वेदके कौषीतकिउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्या था ॥ तहांद्वितीयअध्यायविषे देवराजइंद्रकेतथाप्रतर्दनराजाके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैंकथनकरीथी ॥ और तृतीय अध्यायविषे राजाअजातशत्रुके तथाबालाकिब्राह्मणकें संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैंकथनकरीथी ॥ और हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणके चतुर्थ पंचम षष्ठ सप्तम याचारिअध्यायोंविषे आपनैंयजुर्वेदकेबृहदारण्यकउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तहां चतुर्थअध्यायविषे आपनै दोपुरुषवंश एकस्त्रीवंश यातीनवंशोंविषेस्थितऋषियोंका परस्परभेद तथाअभेद कथनकऱ्याथा ॥ तथा दध्यङ्अथर्वणऋषि गुरुरूपहोइकै अश्विनीकुमारोंकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरताभया ॥ ताब्रह्मविद्याके उपदेशकरणेतैं सोदध्यङ्

॥ १ ॥

अथर्वणऋषि देवराजइंद्रतैं महान्दुःखकूंप्राप्तहोताभया ॥ इत्यादिकसर्ववार्त्ता आपनैं ताचतुर्थअध्यायविषेकथनकरीथी ॥ और हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणके पंचमअध्यायविषे आपणैं यहवार्त्ता कथनकरीथी ॥ सर्वशास्त्रोंकावेत्ता याज्ञवल्क्यमुनि जनकराजाकेयज्ञसभाविषे जाइकै जल्पकथाकरिकै आश्वलादिकसर्वब्राह्मणोंकूं जीतताभया ॥ तथा तायाज्ञवल्क्यमुनिकेशापतैं शाकल्यब्राह्मणकामृत्युहोताभया ॥ इहां जीतणेकीइच्छाकरिकै जोशास्त्रकेअर्थकाविचारकरणाहै ताकानाम जल्पकथाहै ॥ और हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणकेषष्ठअध्यायविषे आपनैं यहवार्त्ता कथनकरीथी ॥ अत्यंतदुस्तर संसारसमुद्रविषे डूब्याहुआ तथातासंसारसमुद्रतैंपारहोणेकीइच्छाकरताहुआ जोराजाजनक कथा ॥ ताराजाजनककूं सोयाज्ञवल्क्यमुनि दोवारब्रह्मविद्याकाउपदेशकरिकै तासंसारसमुद्रतैं पारकरताभया ॥ और हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणकेसप्तमअध्यायविषे आपनैं यहवार्त्ता कथनकरीथी ॥ सोयाज्ञवल्क्यमुनि चतुर्थअवस्थाविषे आपणेमैत्रेयीस्त्रीकेप्रति ब्रह्मविद्याका उपदेशकरिकै यासंसारसमुद्रतैंपारकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोयाज्ञवल्क्यमुनि संन्यासआश्रमकूंधारणकरताभया और हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणकेअष्टमअध्यायविषे आपनैं तिसीयजुर्वेदके श्वेताश्वतरउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ ताअष्टमअध्यायविषे श्वेताश्वतरऋषिके तथासंन्यासियोंके संवादकरिकै आपनैं याजगत्केकारणोंकाविचारकऱ्याथा ॥ और हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणकेनवमअध्यायविषे आपनैं तिसीयजुर्वेदके कठवल्लीउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तानवमअध्यायविषे यमराजाके तथानचिकेताके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी ॥ और हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणकेदशमअध्यायविषे आपनैं तिसीयजुर्वेदके तैत्तिरीयउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तथा नारायणीयउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तादशमअध्यायविषे वरुणपिताके तथाभृगुपुत्रके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी ॥ तथा वेननामागंधर्वका सर्वात्मभावरूपअनुभव कथनकऱ्याथा ॥ तथा आत्मज्ञानकीप्राप्तिवासतै सत्यतैंआदिलैकेसंन्यासपर्यंत साधनोंकाकथनकऱ्याथा ॥ तथा तिनसत्यादिकसर्वसाधनोंतैं संन्यासआश्रमकीअधिकता कथनकरीथी ॥ और हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणकेएकादशअध्यायविषे आपनैं जाबालादिकएकादशउप

निषदोंकाअर्थ निरूपणकऱ्याथा॥ताएकादशअध्यायविषे आपनें यहवार्त्ता कथनकरीथी॥ तापरमहंससंन्यासकूं पूर्व संवर्त्तकादिकमहान् पुरुष धारणकरतेभये हैं ॥ और तापरमहंससंन्यासकीप्राप्तिविषे वैराग्यहीकारणहै ॥ और तावैराग्यकीप्राप्तिविषे गर्भदुःखोंकाविचार कारणहै ॥ तथा मरणकेचिह्नोंकाज्ञान कारणहै ॥ तथा अष्टांगयोग कारणहै ॥ और तापरमहंससंन्यासविषे विरक्तपुरुषही अधिकारी है॥और तापरमहंससंन्यासीका शिखासूत्रादिकोंतैं रहितपणावेषहै ॥ तथा तापरमहंससंन्यासीका ब्रह्मज्ञानरूपमुख्यआचारहै ॥ इत्यादिकसर्ववार्त्ता ताएकादशेअध्यायविषे आपनें कथनकरीथी॥और हेभगवन्॥याआत्मपुराणके द्वादशत्रयोदश चतुर्दश यातीनअध्यायों विषे आपनें सामवेदकेछांदोग्यउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तहां द्वादशेअध्यायविषे आपनें उद्दालकपिताके तथाश्वेतकेतुपुत्रके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्याकथनकरीथी ॥ जेउद्दालकतथाश्वेतकेतुजाबालउपनिषद्विषेसर्वसंन्यासियोंविषे मुख्यकरिकैकथनकरे हैं।और हेभगवन्।याआत्मपुराणकेत्रयोदशेअध्यायविषे आपनेंभगवान्सनत्कुमारके तथानारदमुनिके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्याकथनकरीथी।और हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणके चतुर्दशेअध्यायविषे आपनें प्रजापतिब्रह्माके तथाइंद्रविरोचनके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी॥ और हेभगवन् याआत्मपुराणकेपंचदशेअध्याय विषे आपनें सामवेदकेतलवकारशाखाविषेस्थित केन उपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा॥तापंचदशेअध्यायविषे देवराजइंद्रकूं ब्रह्मविद्याकेअनुग्रहतैं ब्रह्मज्ञानकीप्राप्ति आपनें कथनकरीथी ॥ इत्यादिकसर्ववार्त्ता आपनें मैंश्रद्धावान्शिष्यकेप्रति कथनकरीथी ॥.हेभगवन् तापंचदशेअध्यायकेअंतविषे आपनें यहवार्त्ता कथनकरी थी ॥ जैसे ताप्रजापतिब्रह्मका देवराजइंद्र शिष्यहोताभयाहै ॥ तैसे तात्रह्मका अथर्वानामाज्येष्ठपुत्रभी शिष्यहोताभयाहै ॥ हेभगवन् ॥ सोब्रह्मा ताअथर्वानामा पुत्रकेप्रति जाब्रह्मविद्या उपदेशकरताभयाहै ॥ तात्रह्मविद्याकेश्रवणकरणेकी मैं इच्छाकरताहूं ॥ और सोअथ र्वानामामुनि तात्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोइकै कौनशिष्योंकेप्रति सात्रह्मविद्या उपदेशकरताभया ॥ यहसंपूर्णवार्त्ता आप कृपाकरिकै हमा रेप्रतिकथनकरो ॥ इसप्रकार ताश्रद्धावान् शिष्यकरिकैपूछाहुआ सोश्रीगुरु ताशिष्यकेप्रति मुंडकउपनिषद्विषे कथनकरी हुई ॥ २ ॥

कथाकूं कथनकरताभया कैसीहैसाकथा ॥ श्रोतापुरुषोंके मनकूं तथाश्रोत्रइंद्रियकूं सुखकीप्राप्तिकरणेहारीहै ॥ तथा अद्वितीयब्रह्मकेस्व रूपकूं कथनकरणेहारीहै ॥ अब हिरण्यगर्भभगवान्कीप्रथमताकेस्पष्टकरणेवास्ते प्रथम मनुभगवान्उक्तसृष्टिक्रमकूंआश्रयणकरिकै तासृ ष्टिकालकेपूर्वअवस्थाका वर्णनकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ यहसंपूर्णकार्यजगत् आपणीउत्पत्तितैंपूर्व तमरूपहोताभया॥कैसाहैसोतम॥प्रत्यक्ष प्रमाणकेअयोग्यहै ॥ तथा कार्यरूपहेतुतैं अनुमानकरणेअयोग्यहै॥तथा कुतर्कोंकेअयोग्यहै॥तथा शब्दकरिकैभीकथनकऱ्याजावैनहीं॥ तथा सुषुप्तपुरुषकीन्याईं कार्यकेआरंभकरणेविषे असमर्थ है ॥ ऐसातम याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्वहोताभया ॥ इहां तमकेसमानआवर णकरणेहारा जो अव्याकृत माया अविद्याइत्यादिकशब्दोंकावाच्य अर्थरूपज्ञानहै ॥ ताअज्ञानउपहितसत्यवस्तुकानाम तमहै ॥ अब याहीअर्थविषे ॥ नासदासीन्नोसदासीत्तदानींकिंत्वऽभूत्तमः ॥ याश्रुतिकाअर्थप्रमाणरूपकरिकैवर्णनकरे हैं ॥हेशिष्य॥यालोकविषे असत् शब्दकरिकैकथनकरणेयोग्य जोअभावहै सोअभावभी याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्वनहींहोताभया ॥ और यालोकविषे सत्शब्दकरिकैकथन करणेयोग्य जोभावपदार्थ है।सोभावपदार्थभी याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्व नहीं होताभया।और यालोकविषे तेजकाविरोधीरूपकरिकैप्रसिद्ध जोअंधकारहै ॥ सोअंधकारभी याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्वनहींहोताभया॥और यहआकाशादिकपंचभूतभी याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्व नहीं होतेभये।और याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्व यहदिनरात्रिभी नहीं होताभया।और प्रातःकाल तथासायंकाल यहदोनोंप्रकारकीसंध्याभी याजग त्कीउत्पत्तितैंपूर्व नहींहोतीभई।और तिनदोनोंप्रकारकीसंध्याके चिह्नरूप जेसूर्यचंद्रमादिकतेजहैं तेसूर्यादिकतेजभी याजगत्कीउत्पत्तितैं पूर्वनहींहोतेभये॥किंतु प्रसिद्धतमकीन्याईं आत्माकेस्वरूपकूंआच्छादनकरणेहारा कारणतत्त्वही याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्वहोताभया॥ जो कारणतत्त्व मृत्युरूपकरिकैभीज्ञातनहीं है ॥ तथा अमृतरूपकरिकैभीज्ञातनहीं है ॥इहां संहारकरणेहारेकानाम मृत्यु है ॥ और वृद्धि काकारणरूपजो आहुतिकापरिणामहै॥ताकानाम अमृतहै॥तेमृत्युअमृतदोनों द्वैतदशाविषेरहैंहैं।अद्वैतदशाविषेरहैंनहीं।पुनःकैसाहैसोका रणतत्त्व याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्वकालविषेअस्पष्टनामरूपवालाहोइकैरहैहै॥याकारणतैं वेदांतशास्त्रविषे ताकारणतत्त्वकूं अव्याकृत यानाम

करिकेकथनकरे हैं ॥ और सोअव्याकृतनामातत्त्वही यासर्वजगत्केनामरूपकाकारणहै॥ तथा सोअव्याकृत आप कारणकीअपेक्षातैंरहि तहै ॥ तथा एकअद्वितीयरूपहै ॥ तथा केवलश्रुतिवाक्यकरिकेगम्यहै ॥ तथा सर्वलक्षणोंतैं रहितहै ॥ और यालोकविषे वास्तव तथा विद्यमान पदार्थही कारणहोवे है ॥ अवास्तव तथा अविद्यमान पदार्थ कारणहोवैनहीं॥ और सोअव्याकृतनामातत्त्वतो वास्तवतैंअवि द्यमानहुआभी याजगत्काकारणहोवे है॥ और यालोकविषे अनादिभावरूपपदार्थोंकूं अविनाशीपणाहींप्रसिद्धहै॥ जैसे आत्मा अनादिभा वरूपहोणेतैं अविनाशीहै॥ और यहअव्याकृतनामातत्त्वतो अनादिभावरूपहुआभी आत्मज्ञानतैंनाशकूं प्राप्तहोवै है॥ और यहअव्याकृत नामातत्त्व जडरूपहोणेतैं परतंत्रहुआभी अक्रियअसंगआत्माके संगकर्मादिकोंकाकारणहोवै है॥ इसतैंआदिलैके अनिर्वचनीयताकेदोषक अनेकप्रकारकेदुर्घटलक्षणोंकरिकैयुक्तहै॥ ऐसेशुद्धब्रह्मकेप्रतिबिंबयुक्तअव्याकृतनामाकारणतैं हिरण्यगर्भभगवान् उत्पन्नहोताभया ॥ कै साहैसोहिरण्यगर्भ ॥ सर्वव्यष्टिजीवोंकाईश्वरहै ॥ तथा समष्टिअभिमानिरूपताकरिकै जोहिरण्यगर्भ जीवघन यानामकरिकैकह्याजावै है॥ एकअंतःकरण पंचज्ञानइंद्रिय पंचकर्मइंद्रिय एकप्राण पंचसूक्ष्मभूत यासप्तदशतत्त्वोंकेसमुदायरूपशरीरविषे सोहिरण्यगर्भरूपआत्मा निवासकरे है ॥ ताहिरण्यगर्भभगवान्तैं आकाशादिकपंचस्थूलभूत उत्पन्नहोतेभये॥ तिनस्थूलभूतोंविषेअभिमानकरिकै सोहिरण्यगर्भ भगवान् विराट्संज्ञाकूंप्राप्तहोताभयातिसतैंअनंतर तिनस्थूलभूतोंविषेनिवासकरताहुआ सोहिरण्यगर्भभगवान् आपणेनिवासकरणेवास्ते ब्रह्मांडरूपगोलककेउत्पन्नकरणेकीइच्छाकरताभया॥ ताहिरण्यगर्भभगवान्केसत्यसंकल्पकेवशतैंतेआकाशादिकपंचभूत जलऊपरस्थित सुवर्णमयअंडरूपकरिकै परिणामकूंप्राप्तहोतेभये ॥ कैसाहैसोअंड॥ कोटिसूर्यकेसमान जाअंडकीप्रभाहै ॥ तथा जिसअंडविषे भूरादिक सप्तलोककल्पितहैं॥ तथा पातालादिकलोककल्पितहैं ॥ तथा संवत्सरादिरूपकाल कल्पितहै॥ और तिसब्रह्मांडकेअंतरस्थित जोभूमि रूपपद्महै ॥ ताभूमिरूपपद्मका कर्णिकारूपजोमेरुहै॥ तामेरुतैं जोहिरण्यगर्भभगवान् चतुर्मुखब्रह्मारूपकरिकै प्रगटहोताभया॥ कैसाहैसोच तुर्मुखब्रह्मा॥ इंद्रादिकसर्वदेवतावोंतैंप्रथमहै॥ तथा इंद्रादिकसर्वदेवतावोंकरिकैपूज्यहै॥ तथा यासंपूर्णजगत्काकर्त्ता है ॥ तथा यासर्वजगत्का

पालनकरणेहाराहै ॥ तथा यासर्वजगत्कासंहारकरणेहाराहै ॥ ऐसेब्रह्माका अथर्वानामा एकज्येष्ठपुत्र होताभया तिसअथर्वानामा ज्येष्ठपुत्रकेताईं यहवक्ष्यमाणब्रह्मविद्या देताभया ॥ कैसीहैयहब्रह्मविद्या ॥ मूलाज्ञानकानाशकरणेहारीहै ॥ याकारणतैं यहब्रह्मविद्या सर्व विद्यावोंकाआधारभूतहै ऐसीब्रह्मविद्याकेप्राप्तहुए इतरविद्यावोंकीअपेक्षाहोवैनहीं ॥ काहेतैं यात्रब्रह्मविद्यातैं इतर जितनीकीविद्याहैं ॥ तेविद्या किंचित्किंचित्अर्थका प्रकाशकरहैं॥ और यहब्रह्मविद्यातो सर्वअर्थकाप्रकाशकरहै ॥ यातैं तेसर्वविद्या फलरूपकरिकै यात्रब्रह्मवि द्याविषेही अंतर्भूतहोवै हैं ॥ जैसे तृप्तिरूपफलकीसिद्धिविषे सर्वग्रासोंकारस अंतर्भूतहोवै है ॥ तैसे यात्रब्रह्मविद्याविषेही इतरसर्वविद्या अंतर्भूतहोवै हैं ऐसीब्रह्मविद्या सोब्रह्मा ताअथर्वानामाशिष्यकेप्रति देताभया और ताअथर्वानामाऋषिका आंगिरनामाऋषि शिष्यहोता भया ॥ और ताआंगिरनामाऋषिका भारद्वाजनामाऋषि शिष्यहोताभया ॥ जिसभारद्वाजकूं लोकविषे सत्यवह यानामकरिकैभी कथ नकरे हैं॥ और तिसभारद्वाजनामाऋषिका अंगिरसनामाऋषि शिष्यहोताभया॥ और ताअंगिरसनामाऋषिका शौनकनामाऋषि शिष्य होताभया॥ जोशौनकऋषि बहुतअन्नदानादिकोंकरिकै महान्गृहस्थपणेकूंप्राप्तहोताभया॥ तिसशौनकनामाऋषिके सर्वद्विज शिष्य होते भये॥ हेशिष्य॥ यामुंडकउपनिषद्विषे जात्रब्रह्मविद्या कथनकरीहै॥ सात्रब्रह्मविद्या प्रथमतो ब्रह्मानैं अथर्वानामापुत्रकेप्रति कथनकरीहै॥ ताअ र्वानामाऋषिकेमुखकूंप्राप्तहोइकै जात्रब्रह्मविद्यापूर्वउक्तरीतिसैं बहुतशिष्यपरंपराकूंप्राप्तहोतीभई है ॥ सात्रब्रह्मविद्या मैं तुमारेप्रति कथनकर ताहूं ॥ तूं सावधानहोइकैश्रवणकर॥ अब अंगिरसऋषिके तथाशौनकऋषिके संवादकरिकै तात्रब्रह्मविद्याकावर्णनकरे हैं॥ हेशिष्य॥ पूर्वएक कालविषे अंगिरसनामाऋषि प्रातःकालविषे स्नानादिकनित्यकर्मोंकूंकरिकै किसीएकांतदेशविषेस्थितहोताभया॥ कैसाथासो अंगिरसना माऋषि॥ सर्ववेदोंकावेत्ताथा ॥ तथा तिनवेदोंकरिकैप्रतिपादित अद्वितीयब्रह्मकूं जानणेहाराथा॥ तथा सर्वइच्छातैंरहितनिष्कामथा॥ ऐसे श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठ अंगिरसनामाऋषिकूंदेखिकै सोशौनकऋषि समिदादिकपदार्थोंकूंहस्तविषेग्रहणकरिकै विधिपूर्वक ता अंगिरसऋषिके समीपजाइकै याप्रकारकाप्रश्न करताभया ॥ शौनकउवाच ॥ हे भगवन् अंगिरस ॥ किसएकवस्तुकेज्ञानतैं यासर्वजगत्काज्ञानहोवैहै ॥

जिसएकवस्तुकेज्ञानतैं यासर्वजगत्काज्ञानहोवै है ॥ सोएकवस्तु आप कृपाकरिकैहमारेप्रति कथनकरो ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकाप्रश्न जभी ताशौनकऋषिनैं ताअंगिराऋषिकेप्रतिकऱ्या ॥ तभी सोअंगिरानामाऋषि ताशौनककेप्रति याप्रकारकाउत्तर कहताभया ॥ अंगिराउवाच ॥ हेशौनक ॥ अद्वितीयब्रह्मरूपएकआत्मवस्तुकेज्ञानहुएही यासर्वजगत्काज्ञानहोवै है ॥ हेशौनक ॥ तापरब्रह्मकीप्राप्ति वासते ब्रह्मबिंदुउपनिषदादिकोंविषे शाब्दब्रह्मकाज्ञानहीं श्रेष्ठउपायकथनकऱ्याहै ॥ तहां शिक्षादिकषट्अंगोंसहितजेचारिवेद हैं ॥ तेचारिवेदहैंशरीर जिसब्रह्मका ॥ ताब्रह्मकानाम शाब्दब्रह्महै ॥ ऐसेशाब्दब्रह्मविषे जोपुरुष कुशलहै ॥ सोपुरुषही तापरब्रह्मकूंप्राप्तहो वैहै ॥ याकारणतैं मुमुक्षुजननैं दोप्रकारकीविद्याकूं अवश्यकरिकैसंपादनकरणा ॥ तिनदोनोंविद्यावोंविषे एकविद्यातौ साधन रूपहोणेतैं अपरानामाहै ॥ और दूसरीविद्या फलरूपहोणेतैं परानामाहै ॥ तहां अपरा परा यादोनोंविद्यावोंविषे प्रथम अपराविद्याकूं तूं श्रवणकर ॥ हेशौनक॥ शिक्षादिकषट्अंगोंसहित जे ऋग् यजुष् साम अथर्वण यहचारिवेदहैं॥तेचारिवेदहैं विषय जिसविद्याके ताविद्याकानाम अपराविद्याहै॥याअपराविद्याकारिकैही सापराविद्या प्राप्तहोवैहै॥जाविद्या अद्वितीयब्रह्मकूंविषयकरे है ॥ ताब्रह्मविद्याका नाम पराविद्याहै ॥ और जिसब्रह्मकूं सापराविद्याकथनकरे है॥ तिसब्रह्मकूं श्रुतिविषे अक्षर यानामकरिकैकथनकऱ्याहै॥ ताअक्षरस्वरूपब्रह्मका वेदवेत्तापुरुषोंनैं याप्रकारकालक्षण कथनकऱ्याहै सोअक्षरब्रह्म मनसहितपंचज्ञानइंद्रियोंतैं तथापंचकर्मइंद्रियोंतैं रहितहै ॥ तथा पंचप्राणोंतैं भीरहितहै॥तथा आकाशादिकपंचभूतोंतैंभीरहितहै॥तथा शब्द स्पर्श रूप रस गंध यापंचज्ञानइंद्रियोंकेविषयोंतैंभीरहित है ॥तथा वचन आदान गमन विसर्ग आनंद यापंचकर्मइंद्रियोंकेव्यापारोंतैंभीरहितहै ॥ याकारणतैं सोअक्षरब्रह्म नेत्रादिकज्ञानइंद्रियोंकरिकैभी देख्याजावैनहीं॥तथा वाकादिककर्मइंद्रियोंकरिकैभी ग्रहणकऱ्याजावैनहीं॥और सोअक्षरब्रह्म नाम रूप क्रिया यातीनोंतैंरहित है॥तथा जन्मादिकविकारोंतैंरहितहै॥याकारणतैं सोअक्षरब्रह्म कुलरूपगोत्रतैंभीरहितहै ॥ तथाब्राह्मणत्वक्षत्रियत्वादिरूपवर्णोंतैंभीरहितहै और सोअक्षरब्रह्म आकाशकीन्याईं सर्वत्रव्यापकहै ॥ यातैं देशकृतपरिच्छेदतैं रहितहै ॥ और सोअक्षरब्रह्म साधनहीनपुरुषोंकूं दुर्वि

॥ २ ॥

ज्ञेयहै यातैं सूक्ष्महै॥और सोअक्षरब्रह्म उत्पत्तिनाशतैंरहितहै॥यातैं कालकृतपरिच्छेदतैंरहितहै॥और सोअक्षरब्रह्म मायाकेवशतैं यासर्व जगत्काकारणरूपहुआभी वास्तवतैं तासर्वजगत्रूपद्वैततैंरहितहै॥याकारणतैं सोअक्षरब्रह्म वस्तुपरिच्छेदतैं रहितहै।और जिसअक्षरब्रह्मकूं ब्रह्मचर्यादिकसाधनसंपन्नपुरुषही आपणेचित्तविषे देखे हैं॥साधनहीनपुरुष देखिसकैनहीं॥ऐसे अक्षरब्रह्मकूंही तुमनैं आपणाआत्मारूपकरिकैजानणा ॥ ताअक्षरब्रह्मतैंभिन्नकुलवर्णादिकोंकूं तुमनैं आपणाआत्मारूपकरिकैजानणानहीं॥ताअक्षरब्रह्मकेज्ञानतैंही यासर्वजगत्का ज्ञानहोवै है ॥ अब ताअक्षरब्रह्मकेज्ञानतैं यासर्वजगत्केज्ञानकीसिद्धिकरणेवासते ताअक्षरब्रह्मविषे याजगत्कीकारणताकूं तीनदृष्टांतों करिकैसिद्धकरे हैं ॥ हे शौनक ॥ यहअक्षरब्रह्मही यासर्वजगत्केउत्पत्तिस्थितिलयका अभिन्ननिमित्त उपादानकारणहै॥ याअर्थविषे वेदवेत्तापुरुषऊर्णनाभिजंतुकादृष्टांत कथनकरे हैं ॥ जैसे ऊर्णनाभिजंतु आपणेतैंभिन्नदूसरेकारणकी अपेक्षातैंविनाहीं तंतुवोंकीउत्पत्तिस्थितिलयकरे है ॥ तैसेयहअक्षरब्रह्मभी आपणेतैंभिन्नदूसरे कारणकीअपेक्षातैंविनाहीं यासर्वजगत्कीउत्पत्तिस्थितिलयकरे है ॥ यातैं जैसे ऊर्णनाभिजंतु तिनतंतुवोंका उपादानकारण तथानिमित्तकारण दोनों है ॥ तैसे सो अक्षरब्रह्मभी यासर्वजगत्का उपादानकारण तथानिमित्तकारण दोनों है ॥ और हेशौनक ॥ याजगत्विषे कोईसुखीहै कोईदुःखीहै कोईधनीहै कोईनिर्धनहै इत्यादिकअनेकप्रकारकीविलक्षणता प्रतीतहोवै है ॥ ऐसे विलक्षणजगत्का जोएकअक्षरब्रह्म कर्त्तामानिये ॥तौ ताअक्षरब्रह्मविषे विषमतादोषकी तथानिर्दयतादोषकी प्राप्तिहोवैगी याप्रकारकीशंकाकेनिवृत्तकरणेवासते तेवेदवेत्तापुरुष भूमिकादृष्टांत कथनकरे हैं॥जैसे अनेकप्रकारकेस्थावरजंगमरूपशरीर एकहीभूमितैं उत्पन्नहोवैहैं ॥तैसे एकही अक्षरब्रह्मतैं यहनानाप्रकारकाजगत् उत्पन्नहोवै है॥ तात्पर्ययह ॥जैसेएकहीभूमितैं बीजोंकीविलक्षणताकरिकै नानाप्रकारकेस्थावरजंगमशरीर उत्पन्नहोवै हैं॥ तैसे एकहीअक्षरब्रह्मतैं जीवोंकेपुण्यपापरूपकर्मोंकी तथासंस्कारोंकी विलक्षणताकरिकै नानाप्रकारकाजगत् उत्पन्नहोवै है।यातैं ताअक्षरब्रह्मविषे विषमता निर्दयता यादोनोंदोषोंकीप्राप्तिहोवैनहीं॥और हेशौनक॥ यालोकविषे समानस्वभाववाले मृत्तिकाघटादिकपदार्थोंकाही परस्पर कारणकार्यभावदेख्या है ॥ विलक्षणपदार्थोंका परस्पर कारणकार्य

भाव कहांदेख्यानहीं ॥ यातैं चेतनब्रह्मतैं जडजगत्कीउत्पत्ति संभवैनहीं॥याप्रकारकीशंकाकेनिवृत्तिकरणेवास्ते तेवेदवेत्तापुरुष यापुरुष काटृष्टांत कथनकरे हैं जैसे जीवंतअवस्थाविषे चेतनरूपकरिकैप्रसिद्ध जोयहपुरुषहै ॥ ताचेतनपुरुषतैं नखकेशलोमादिक अचेतनकार्य उत्पन्नहोवै है ॥ तैसे ताचेतनरूपअक्षरब्रह्मतैं यहजडजगत् उत्पन्नहोवै है॥यातैं सर्वथा समानस्वभाववालेपदार्थोंकाही परस्पर कार्यकारणभावकहोवै है यात्रकारकानियम सर्वत्रसंभवैनहीं ॥ हेशौनक ॥ ताअक्षरब्रह्मतैं याजगत्का जन्म स्थिति लय यहतीनोंहोवै हैं ॥ तिन जन्मादिकतीनोंविषे प्रथम याजगत्के जन्मकाप्रकार तेविद्वान्पुरुष इसरीतिसे कथनकरेहैं ॥ सोअक्षरब्रह्म याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्व ताउत्पन्नकरणयोग्यजगत्कूं विषयकरणेहारेज्ञानरूपतपकूं करताभया ॥ कैसाहैसोजगत् ॥ वेदकरिकैप्रसिद्धहैंनानाप्रकारकेनामरूपजिसके ॥ ऐसेजगत्विषयकज्ञानरूप तपतैंअनंतर सोअक्षरब्रह्म याजगत्के उत्पत्तिकी अनुकूलता रूपस्थूलताकूं प्राप्तहोताभया ॥ जैसे जलकरिकैगीलीहुई पृथिवीविषेप्राप्तहुआबीज स्थूलताकूंप्राप्तहोवै है॥ तैसे सोअक्षरब्रह्म भी तास्थूलताकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसतैंअनंतर ताज्ञानरूपतपकरिकै तास्थूलताकूं प्राप्तहुए अक्षरब्रह्मतैं यथाक्रमतैं आकाशादिकपंचभूत उत्पन्नहोतेभये ॥ तिनपंचभूतोंतैं यहसंपूर्णजगत् उत्पन्नहोताभया ॥ तिनपंचभूतोंकूं श्रुतिविषेअन्न शब्दकारक कथनकऱ्याहै ॥अथवा॥अन्नशब्दकरिकै इहां अव्याकृतकाग्रहणकरणा ॥ सोनामरूपात्मकजगत्काआरंभकरणेहारा अव्याकृतरूपअज्ञान यद्यपि सिद्धांतमनविषेअनादिहै॥तथापि याजगत्कीउत्पत्तिकालविषे प्रधानताकी प्राप्तिरूपजन्मकूंप्राप्तहोवै है॥ताचेतनकेप्रतिबिंबयुक्त अव्याकृतरूपअन्नतैं मनप्राणादिकसमष्टिसूक्ष्मशरीरवाला हिरण्यगर्भ उत्पन्नहोताभया ॥ जिसहिरण्यगर्भकूं बृहदारण्यउपनिषद्विषे मृत्यु यानामकरिकै कथनकऱ्याहै ॥ तिसहिरण्यगर्भतैं समष्टिस्थूलभूतरूपशरीरवालाविराट् उत्पन्नहोताभया ॥ जिसविराट्कूंश्रुतिविषे सत्यशब्दकरिकैकथनकऱ्या है॥ताविराट्कीउत्पत्तितैंअनंतर ताविराट् विषेस्थित भूरादिकसप्तलोकउत्पन्नहोतेभये॥तिसतैंअनंतर तिनलोकोंविषेरहणेहारेजनहैंअधिकारीजिनोंके ऐसेवेदउक्तसर्वकर्म उत्पन्नहोतेभये॥तिनवेदउक्तकर्मोंतैं स्वर्गादिकरूपफलउत्पन्नहोताभया॥सोकर्मोंकाफल याजीवोंकूं अवश्यकरिकैप्राप्तहोवैहै॥यातैंताकर्मकेफलकूंश्रुति ॥ ६ ॥

भगवती अमृत यानामकरिकैकथनकरे है ॥ इतनैंकरिकै विषयसहितपराविद्याका संक्षेपतैंनिरूपणकऱ्या ॥ अब वैराग्यकीप्राप्तिवास्ते ताविषयसहितअपराविद्याका निरूपणकरे हैं॥ हे शौनक ॥ यहअक्षरब्रह्म सामान्यतैं सर्वजगत्कूं जानेहै॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष ताअक्षरब्रह्मकूं सर्वज्ञ यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ और सोअक्षरब्रह्म विशेषरूपकरिकैभी यासर्वजगत्कूंजाने है ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष याअक्षरब्रह्मकूं सर्ववित् यानामकरिकैकथनकरे हैं॥ऐसेसर्वज्ञसर्ववित्अक्षरब्रह्मतैं समष्टिसूक्ष्मकाअभिमानीहिरण्यगर्भउत्पन्नहोताभया ॥ ताहिरण्यगर्भतैं समष्टिस्थूलकाअभिमानीविराट् उत्पन्नहोताभया॥हेशौनक॥ताहिरण्यगर्भकाशरीररूप जितनाकीसूक्ष्मसमष्टिविश्वहै ॥ तथा ताविराट्काशरीररूप जितनाकीस्थूलसमष्टिविश्वहै ॥ सोसर्वविश्व तिनवेदवेत्तापुरुषोंनैं कर्मकाफलरूपकरिकैवर्णनकऱ्याहै ॥ और सोकर्मकाफल कर्मतैंअनंतर याजीवोंकूं अवश्यकरिकैप्राप्तहोवै है ॥ याकारणतैं श्रुतिविषे ताकर्मकेफलकूं सत्यशब्दकरिकैकथनकऱ्या है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ सोहिरण्यगर्भादिकोंकाऐश्वर्य किसकर्मकाफलहै ॥ समाधान ॥ हेशौनक ॥ अधिकारीपुरुषोंकेप्रति वेदभगवान्नैं विधानकरेजे दर्शपौर्णमासादिकयज्ञोंसहित अग्निहोत्रादिककर्म हैं॥जे अग्निहोत्रादिककर्म दधि घृत यजमान मंत्र देश काल इत्यादिकपदार्थोंकेभेदकरिकै नानाप्रकारकहैं॥ऐसेअग्निहोत्रादिककर्मोंकरिकै याअधिकारीपुरुषोंकूं ताऐश्वर्यरूपफलकीप्राप्तिहोवै है ॥ हेशौनक ॥ जेअधिकारी पुरुष वेदविहितअग्निहोत्रादिक कर्मोंकूंनहींकरे हैं ॥ तथा वेदनिषिद्धहिंसादिककर्मोंकूंकरे हैं ॥ तथानेत्रादिकइंद्रियोंकेरूपादिकविषयोंविषे अत्यंतआसक्तहैं॥तेपुरुष अधोगतिकूंप्राप्तहोवैहैं॥और जेअधिकारीपुरुष वेदविहितअग्निहोत्रादिककर्मोंकूंकरे हैं॥ तथा वेदनिषिद्धहिंसादिककर्मोंकापरित्यागकरेहैं ॥ तथा इंद्रियोंकेविषयोंविषेआसक्तितैंरहितहैं ॥ तेअधिकारीपुरुष स्वर्गादिकउत्तमलोकोंविषे देवताशरीरकूंप्राप्तहोवै है ॥ हेशौनक ॥ तेअग्निहोत्रादिककर्मकेवल स्वर्गादिकसुखोंकेही कारणनहींहोवै हैं॥किंतुनिष्कामकरेहुए तेअग्निहोत्रादिककर्म अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा आत्मज्ञानकेभीहेतुहोवै हैं॥काहेतैं तेअग्निहोत्रादिककर्मसकाम निष्कामभेदकरिकैदोप्रकारकेहोवैहैं ॥ तहां स्वर्गादिकसुखोंकीप्राप्तिकरणेहारे अग्निहोत्रादिककर्मोंकानाम सकामकर्म है ॥ और अंतःकरणकीशुद्धिकरणेहारे

अग्निहोत्रादिककर्मोंकानाम निष्कामकर्महै ॥ तहां प्रथम सकामकर्मोंकातो स्वर्गादिरूपफल हमनैं तुम्हारेप्रतिकथनकऱ्या ॥ अब अंतः करणकीशुद्धिवासतै करेहुएनिष्कामकर्मोंका वैराग्यरूपफलकूं तूंश्रवणकर ॥ हेशौनक ॥ स्थूल सूक्ष्म कारण यातीनशरीरों तैं रहितजो मोक्षहै॥तामोक्षकूंभी सोकर्मीपुरुष प्राप्तहोवैहै याप्रकारकीआज्ञा तुमनैं कदाचित्भी नहींकरणी ॥ काहेतैं जोजोफल कर्मकरिकैजन्य होवैहै ॥ सोसोफल अनित्यहीहोवैहै ॥ जैसे स्वर्गादिरूपफलकर्मकरिकैजन्यहै ॥ यातैं अनित्यहीहै ॥ तैसे सो मोक्षभी जोकर्मकरिकै जन्यहोवैगा ॥ तौसोमोक्षभी अनित्यहीहोवैगा और वेदवेत्तापुरुष मोक्षकूंअनित्यमानैंनहीं॥ किंतु सर्व विद्वान्पुरुष तामोक्षकूंनित्यमाने हैं ॥ यातैंतामोक्षविषे कर्मकीफलरूपतासंभवैनहीं ॥और हेशौनक ॥ ज्योतिष्टोमनामायज्ञतैंआदिलैके जितनैंकी अग्निहोत्रादिककर्म हैं॥तेसर्वकर्म याअधिकारीपुरुषकूं यासंसाररूपसमुद्रके मोक्षरूपपरंपराकीप्राप्तिकरणेविषे समर्थहोवैंनहीं ॥ तहांदृष्टांत ॥ जैसे महान्स मुद्रकेजलविषे तृणकाष्ठादिकोंकरिकैरचेहुए जेतरणकेसाधनरूपपुलहैं ॥ तेपुल केवल मत्स्यादिक जीवोंकेमारणेवासतैंही उपयोगविषे आवैहैं॥तासमुद्रकेपारकरणेविषेतेपुल समर्थहोवैंनहीं॥काहेतैं तेपुलअत्यंतअल्पहैं॥तथादृढतातैंरहितहैं ॥ तथासमुद्रकीलहरियोंकरिकैव्या कुलहैं ॥ तथासमुद्रकेजलविषे डूबेहुएकीन्याईंस्थितहैं ॥ तथासमुद्रकेजलकरिकैपूर्णहुए तेपुलअत्यंतकंपायमान हैं ॥ याकारणतैंहीं तेपुल आपणेआश्रितपुरुषोंकूं सर्वदाभयकीप्राप्तिकरणेहारेहैं॥ऐसेतेपुल यापुरुषोंकूंतासमुद्रतैंपारकरणेविषेसमर्थहोवैनहीं॥ तैसे यासंसाररूपमहा न्समुद्रविषे तेअग्निहोत्रादिककर्मरूपपुलस्थितहैं॥ कैसेहैंतेकर्मरूपपुल ॥ यासंसारसमुद्रके कामक्रोधादिरूपलहरियोंकरिकै सर्वदाकंपाय मानहैं ॥ तथाअल्पविघ्नकरिकैभी तेकर्म नष्टहोइजावैहैं ॥ यातैं तेकर्मरूपपुलदृढतातैंरहित हैं ॥ ऐसेकर्मरूपपुलोंकूंपरमेश्वरनैं यासंसार समुद्रविषेस्थित स्वर्गादिकसुखरूपमत्स्योंकीप्राप्तिवासतेहीं रचाहै ॥ यासंसारसमुद्रतैंपारकरणेवासतै तिनकर्मरूपपुलोंकूंरचानहीं ॥ शंका हेभगवन् ॥ जैसे यालोकप्रसिद्धसमुद्रविषेस्थितपुलोंकेचलावणेहारे धीवरपुरुषहोवै हैं ॥ तैसे यासंसारसमुद्रविषेस्थित अग्निहोत्रा दिककर्मरूपपुलोंकेचलावणेहारे धीवरपुरुषोंकेसमान कोनहैं ॥ समाधान ॥ हेशौनक ॥ अध्वर्युतैंआदिलैके षोडशऋत्विज एक

यजमान एकतायजमानकीस्त्री यहअष्टादश १८ तिनअग्निहोत्रादिककर्मरूपपुलोंकेचलावणेहारेहैं ॥ यज्ञादिककर्मोंकेकरावणेहारेब्राह्मणों कानाम ऋत्विजहै ॥ तिनषोडशऋत्विजोंकेयहनामहैं ॥ तहां यजुर्वेदकेजानणेहारे अध्वर्यु प्रतिपस्थाता नेष्टा नेता यहचारिऋत्विजहो वैहैं ॥ और ऋग्वेदकेजानणेहारेहोता मैत्रावरुण अच्छावाक ग्रावस्तुत यहचारिऋत्विजहोवै हे ॥ और सामवेदकेजानणेहारे उद्गाता प्रस्तोता प्रतिहर्त्ता सुब्रह्मण्य यहचारिऋत्विजहोवैहैं ॥और ऋग् यजुष् साम यातीनवेदोंकेजानणेहारे ब्रह्म ब्राह्मणाच्छंदसी अग्नीध्रपोता यहचारिऋत्विजहोवैहै॥ तेसर्वमिलिकैषोडशऋत्विजहोवैहै॥तिनषोडशऋत्विजोंतैंविना तथायजमानतैंविनातथायजमानकीस्त्रीतैंविना तेअग्निहोत्रादिककर्मासिद्धहोवैनहीं ॥ यातैंतेअष्टादश तिनकर्मरूपपुलोंकेचलावणेहारे धीवरहैं ॥ और हेशौनक ॥ यासंसारसमुद्रविषे स्थित जेकर्मरूपअल्पपुलहैं ॥ तिनकर्मरूपपुलोंविषे श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुरूपधीवरहैनहीं ॥ तथाब्रह्मचर्यादिकसाधनरूप अनुकूलवायुभीहै नहीं ॥ और तेकर्मरूपपुल आपतो स्वभावतैं क्षणक्षणविषेनाशवान्हैं ॥ तथा दृढतातैं रहितहैं ॥ ऐसेकर्मरूपपुलोंकूंआश्रयणकरिकै कोनबुद्धिमान्पुरुष निःशंकहोइकै यासंसाररूपसमुद्रविषेप्रवेशकरैगा ॥ किंतु यासंसारसमुद्रकेतरणेवासतै कोईभीबुद्धिमान्पुरुष तिन कर्मरूपपुलोंकूंआश्रयणकरतानहीं ॥ विचारहीनमूढपुरुषही तिनकर्मरूपपुलोंकूं आश्रयणकरैहैं ॥ यातैंजिसअधिकारीपुरुषकूं मोक्षरूप नित्यसुखकेप्राप्तिकीइच्छाहोवै ॥ तिसमुमुक्षुजननैं यासंसारसमुद्रकेतरणेवासतै तिनकर्मरूपपुलोंकूं कदाचित्भी आश्रयकरणानहीं ॥ और हे शौनक ॥ यासंसारसमुद्रविषेस्थित स्वर्गसुखादिरूपमत्स्योंकीप्राप्तिकरणेहारे ये यह अग्निहोत्रादिककर्मरूपपुलहैं ॥ तिनकर्मरूप पुलोंकूंआश्रयणकरिकै जेमूढकर्मीपुरुष आपणेकूंकृतकृत्यमानिकै स्थिहोवै हैं ॥ तेकर्मीपुरुष कदाचित्भी यासंसारसमुद्रतैंपारहोतेनहीं॥ किंतु उलटा तेकर्मीपुरुष कामक्रोधादिकलहरियोंकरिकै याकर्मरूपपुलोंके चलायमानहुए यासंसारसमुद्रकेजन्ममरणरूपजलविषेही वारं वारडूबैहैं ॥ कदाचित्भी सुखकूंप्राप्तहोवै नहीं ॥ और हे शौनक ॥ अविद्यारूपजलहैजिसविषे ऐसाजोयहसंसाररूपसमुद्रहै॥ तासंसार समुद्रविषे यहकर्मीपुरुष लोकप्रसिद्धधीवरपुरुषोंकीन्याईं आपणेकूं तथाअन्यजीवोंकूं क्लेशकीप्राप्तिकरतेहुए स्थितहैं ॥ कैसेहैं तेकर्मीपुरुष

आपणेकूं तथाआपणेशिष्योंकूं अनर्थकीप्राप्तिकरणेहारेहैं ॥ याकारणतैं तेकर्मीपुरुष दुर्बुद्धिहैं ॥ ऐसीदुर्बुद्धिवालेहुएभी तेकर्मीपुरुष आपणेकूंपंडितमानेहैं ॥ तथा अनेकप्रकारकेरोगादिकअनर्थोंकरिकै विक्षेपकूंप्राप्तहुए तेकर्मीपुरुषमायारचितमोहरूपगर्त्तविषेवारंवारपत नहोवेहैं ॥ पुनःकैसेहैंतेकर्मीजन ॥ अनित्यसुखकीप्राप्तिकरणेहारेकर्मोंकूंही मोक्षकासाधनमानेहैं ॥ याकारणतैं तेकर्मीपुरुष अत्यंतमूढ बुद्धिहैं॥और तेकर्मीपुरुष आपणेविवेकतैंरहितहैं ॥ और तिनकर्मीपुरुषोंके गुरुभी विवेकतैंरहितहैं याकारणतैंतिनकर्मीपुरुषोंकूं करणे योग्यअर्थकानिर्णय आपणेगुरुतैंभीहोवैनहीं ॥ जैसे आपणेविवेकतैंरहित कोईअंधपुरुष किसीदूसरेअविवेकीअंधपुरुषकेपीछेचलेहुए वारंवार गर्त्तविषेपडेहैं ॥ तैसे आपणेविवेकतैंरहिततथास्वर्गसुखकेप्राप्तिकीइच्छाकरणेहारे यहकर्मीपुरुषभीविवेकहीनकर्मीगुरुकेपीछेचले हुए मायारूपनीरयुक्तसंसारसमुद्रविषे महान्दुःखकूंप्राप्तहोवेहैं॥ औरजैसे भूतकेआवेशकरिकैआतुरहुआ यहपुरुषआपणेदुःखकूंतथातादुः खकीनिवृत्तिकेउपायकूं जानतानहीं॥तैसे कामक्रोधादिरूपपिशाचके आवेशकरिकैआतुरहुएतेकर्मीपुरुषभी आपणेदुःखकूंतथातादुःख कीनिवृत्तिकेउपायकूं जानिसकतेनहीं॥किंतुउल्टा तेअल्पबुद्धिवालेकर्मीपुरुष इनअग्निहोत्रादिक कर्मोंकरिकैहमकृतार्थहुएहैंइसतैंपरेको ईहमारेकूंकर्त्तव्यनहींस्या याप्रकारमानिकैपिशाचोंकीन्याईनृत्यकरेहैंतथाहँसेहैं॥और तेकर्मीपुरुषकामरूपपिशाचकेवशहुएतथापरमेश्वर कीमायाकरिकैमोहितहुए यापांचभौतिकशरीरविषेही परमसुखबुद्धिकरेहैं ॥ और ताकामरूपपिशाचकेवशहुए तेकर्मीपुरुष सर्वदा याप्रकारकाचिंतनकरेहैं ॥ यहशत्रु हमनैं आपणेबलतैं हननकऱ्याहै ॥ और यहशत्रु पुनःउत्थितहुआहै ॥ इसशत्रुकूंभी मैं आपणे बलतैं हननकरोंगा ॥ और यहहमारामित्र महान्बलवान्हुआहै यातैंहमारेकूं अभीकिसीतैंभयनहींहै ॥ इसतैंआदिलैके अनेकप्रकारकी चिंताकरिके व्याप्तहुआहैचित्तजिन्होंका॥तथा प्रमादरूपग्रहकेवशकूंप्राप्तहुआहै चित्तजिन्होंका ॥ ऐसेतेकर्मीपुरुष आपणेहृदयदेशविषे स्थित आनंदस्वरूपआत्माकेजाननेविषे समर्थहोइसकैनहीं ॥ याकारणतैं तेकर्मीपुरुष वारंवार जन्ममरणकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और हेशौनक ॥ जेपुरुष याआनंदस्वरूपआत्माकाविस्मरणकरिकैतथा यहअग्निहोत्रादिककर्मही हमारेश्रेयकासाधनहैं याप्रकारकानिश्चयकरिके

यासंसारकेसुखोंविषेआसक्तहोवैहैं ॥ तेकर्मीपुरुष स्वर्गविषे तिनपुण्यकर्मोंकेफलकूंभोगिकै किसीकालपाइकै तास्वर्गलोकतैं शोकयुक्त हुए नीचेपतनहोवैहैं ॥ हेशौनक ॥ जैसेयालोकविषे पुत्रादिककुटंबकरिकैयुक्त जेधनवान्पुरुषहैं ॥ तेधनवान्पुरुष आपणेमृत्युकालविषे जिसप्रकारकेदुःखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसीप्रकारकेदुःखकूंतेकर्मीपुरुष स्वर्गतैंनीचेपतनकालविषेप्राप्तहोवै हैं ॥ औरजैसेयालोकविषेमहान्सुख वालाजोकोईराजाहै॥ताराजाकूंआपणेमरणकालविषेजिसप्रकारकादुःखहोवैहै॥तिसीप्रकारकादुःख तिनकर्मीपुरुषोंकूंस्वर्गतैंनीचेपतनकाल विषेप्राप्तहोवैहै ॥ यद्यपि मरणकालविषे सर्वदेहधारीजीवोंकूं दुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तथापि धनवान्पुरुषोंकूं तथाराजावोंकूंबहुतभोगोंकी आसक्तीकरिके तामरणकालविषे दूसरेजीवोंतैंअधिकदुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ याकारणतैं तास्वर्गतैंनीचेपतनजन्यदुःखविषे धनीपुरुषोंका तथाराजाकादृष्टांतदियाहै ॥ और हेशौनक ॥ तिनकर्मीपुरुषोंकूं केवल स्वर्गतैंनीचेपतनकालविषेही दुःखनहींहोवैहै ॥ किंतु तास्वर्ग विषेभी तिनकर्मीपुरुषोंकूं इंद्रादिकदेवतावोंकीपरतंत्रताकरिके महान्दुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तथा अधिकभोगोंकीअप्राप्तिकरिकैभीमहान् दुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और जैसे यालोकविषेधनीपुरुषोंकूं धनकेनाशतैं महान् दुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तैसेस्वर्गादिकलोकोंविषे तिनकर्मी पुरुषोंकूं पुण्यकर्मोंकेनाशतैं महान्दुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ इसप्रकार तिनकर्मीपुरुषोंकूं तिनकर्मोंके अनुष्ठानकालविषेभी दुःखकीही प्राप्तिहोवैहै ॥ तथा तिनकर्मोंकेफलकीप्राप्तिकालविषेभी दुःखकीहीप्राप्तिहोवै है ॥ तथा तिनस्वर्गसुखादिरूपफलकेनाशतैंअनंतर तिनकर्मी पुरुषोंकूं पुनःजन्मकरिकैदुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं आदिकालविषे तथा मध्यकालविषे तथा अंतकालविषे यहकर्म दुःखकेहीकारणहैं ॥ हे शौनक ॥ स्वर्गकूंप्राप्तहोइकै पुनःभूमिलोकविषेजन्मकूंप्राप्तहोणेहारा यहकर्मीपुरुष कोनशरीरकूंप्राप्तहोवैगा ॥ किसीउत्तमशरीरकूंप्राप्तहोवैगा ॥ अथवा किसीमध्यमशरीरकूंप्राप्तहोवैगा ॥ अथवा किसीअधमशरीरकूंप्राप्तहोवैगा ॥ अथवा किसी नारकीयशरीरकूंप्राप्तहोवैगा ॥ याप्रकार तापुरुषकेकर्मकेफलकूंसर्वज्ञईश्वरतैंविना कोनपुरुष जानिसकैगा किंतु सर्वज्ञईश्वरतैंविना ताकर्मकेफलकूं कोईभीपुरुष जानिसकतानहीं ॥ हेशौनक ॥ अग्निहोत्रादिकइष्टकर्मोंकूंकरणेहारे तथा वापीकूपतडागादिरूप पूर्त

कर्मोंकूंकरणेहारे जेकर्मीपुरुषहैं ॥ तिनकर्मीपुरुषोंकूं स्वर्गकीप्राप्तिकरणेहारा यहदक्षिणमार्ग हमनैं तुमारेप्रति कथनकऱ्या ॥ अब देव याननामा उत्तरमार्गविषेगमनकरणेहारेपुरुषोंकीगतिकूं तूं श्रवणकर ॥ हेशौनक जैसे स्वर्गकीप्राप्तिकरणेहारा सोदक्षिणमार्ग यासंसारके अंतरास्थितहै ॥ तैसे ब्रह्मलोककीप्राप्तिकरणेहारा यहदेवयाननामा उत्तरमार्गभी यासंसारकेही अंतर्भूत हैं ॥ परंतु सोदेवयाननामामार्ग यासंसारसमुद्रकेपरपारकेसमीपस्थितहै ॥ याकारणतैंसोदेवयाननामामार्ग बहुतजनोंकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु किसीवैराग्यवान्पुरुषोंकूं हीं प्राप्तहोवैहै ॥ अब याहीअर्थकूंस्पष्टकरिकैनिरूपणकरैहै ॥ हेशौनक ॥ जेअधिकारीपुरुष हम आपणेवीर्यकूंपरित्यागनहींकरैंगे ॥ या प्रकारकादृढसंकल्पकरिकै याशरीरकरिकै स्त्रीकेसाथ संभोगनहींकरै हैं ॥ ऐसेनैष्ठिक ब्रह्मचारी ताउत्तरमार्गद्वारा ताब्रह्मलोकविषेजावैहैं॥ तथा दहरादिकउपासनाकरणेहारेपुरुषभी ताउत्तरमार्गद्वारा ताब्रह्मलोकविषेजावैहै ॥ तथास्वर्गादिकपंचअग्नियोंकीउपासनाकरणेहारे कोईकगृहस्थपुरुषभी ताउत्तरमार्गद्वारातात्रह्मलोकविषेजावैहैं ॥ तेत्रह्मचर्यादिकसाधन अत्यंतकठिनहैं ॥ यातैंसोदेवयानमार्गकिसीपु रुषकूंही प्राप्तहोवैहैं सर्वकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ हेशौनक ॥ ताउत्तरमार्गकरिकैप्राप्तहोणेयोग्य जोब्रह्मलोकहै ॥ ताब्रह्मलोकविषेभीसर्वपुरुषोंकूं आत्मज्ञानकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ किंतु ताब्रह्मलोकविषे जिनअधिकारीपुरुषोंकूं दैवयोगतैं ताआत्मज्ञानकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तेअधि कारीपुरुषही ताहिरण्यगर्भतैं परे वर्त्तमान अद्वितीयब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपकरिकैप्राप्तहोवै हैं ॥ जैसे याभूमिलोकविषेस्थितअधि कारीजन ताआत्मज्ञानकरिकै अद्वितीयब्रह्मकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तैसेब्रह्मलोकविषेस्थित अधिकारीजनभी ताआत्मज्ञानकरिकैही अद्वितीय ब्रह्मकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं याभूमिलोकविषे तथाब्रह्मलोकविषे आत्मज्ञानकरिकै मोक्षकीप्राप्तिसमानहीहै ॥ और जिनअधिकारीपुरुषोंकूं ताब्रह्मलोकविषे ताआत्मज्ञानकीप्राप्तिनहींहोवैहै॥तेअधिकारीपुरुष ताब्रह्मलोकतैंभी पुनःयामनुष्यलोककूंप्राप्तहोवैहै॥ परंतुतेअधिकारी पुरुषइसमन्वंतरविषे अथवाइसकल्पविषे ताब्रह्मलोकतैं यामनुष्यलोककूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु दूसरेमन्वंतरविषे अथवा दूसरेकल्पविषेया मनुष्यलोककूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैंजैसे सोदक्षिणमार्गपुनरावृत्तिकरिकैयुक्तहै॥ तैसेयहदेवयानमार्गभी पुनरावृत्तिकरिकैयुक्तहै॥ यातैंयामुमुक्षु

जनोंनैं तादक्षिणमार्गकीन्याईं यहउत्तरमार्गभी परित्यागकरणेयोग्यहै॥ हेशौनक॥उपासनादिकसाधनोंकरिकैयुक्त जेनैष्ठिक ब्रह्मचारी हैं ॥ तथागृहस्थहैं तथावानप्रस्थहैं तथासंन्यासी हैं॥तिनसर्वअधिकारीपुरुषोंकूं ब्रह्मलोकविषे अथवा स्वर्गलोकविषे अथवाभूमिलोकविषे अथ वा पातालविषे अथवा नरकविषे सोब्रह्मात्मज्ञानही मुक्तिकाकारणहै॥ताब्रह्मज्ञानतैंविना किसीभीलोकविषे मोक्षकी प्राप्तिहोवैनहीं॥याअ र्थविषे तुमनैं किंचित्मात्रभी संशयनहींकरणा॥और हेशौनक॥जैसेब्रह्मज्ञानतैंविना किसीभीलोकविषे मोक्षकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ तैसे यह शरीर किसीभीलोकविषे सुखकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ किंतु यहशरीर भूमिलोकतैंलैकैब्रह्मलोकपर्यंत सर्वलोकोंविषे दुःखकीहीप्राप्तिकरे है ॥ और ताशरीरकासंबंध जैसे याभूमिलोकविषे है॥तैसे ताशरीरकासंबंध ब्रह्मलोकविषेभी रहे है॥यातैं सोब्रह्मलोकभी पूर्वउक्तरीतिसैं स्वर्ग लोककीन्याईं दुःखकाहीकारणहै ॥ यातैं विद्वान्पुरुषोंनैं ताब्रह्मलोककूंभी नरककीन्याईं दुःखकाहीकारणजानणा ॥ हेशौनक॥ यद्यपि मनुष्य देवता पशु इत्यादिकभेदकरिकै याशरीरोंकीविलक्षणताप्रतीतहोवै है॥तथापि ताशरीरजन्यदुःखरूपफल सर्वत्रसमानही है ॥जैसे महाराजाकेनिवासवासतैंरचाजो कोईसप्तमहलोंवालाऊंचागृहहै॥तागृहकेऊपरास्थितपुरुषकूं तथाभूमिविषेस्थितपुरुषकूं ज्वरादिकव्याधियों जन्यदुःखरूपफल समानहीहोवै है ॥ तैसे स्वर्गादिकलोकोंविषेस्थितदेवतावोंकूं तथाभूमिविषेस्थितमनुष्यादिकोंकूं याशरीरकेसंबंधतैं दुःखरूपफल समानहीहोवै है ॥ तादुःखरूप फलविषे किंचित्मात्रभी न्यूनअधिकतानहीं है ॥ और हेशौनक॥जैसे यालोकविषे एक सुवर्णमयशृंखलाहोवै है ॥ और दूसरीलोहमयशृंखलाहोवै है ॥ तिनदोनोंप्रकारकीशृंखलावोंविषे यापुरुषोंकेबंधनकीकारणता समान हीहोवै है ॥ तैसे कोईदेवताशरीरहैं कोईमनुष्यशरीरहै॥तिनदोनोंप्रकारकेशरीरोंविषे याजीवोंकेदुःखकीकारणता समानहीं है ॥ और हे शौनक ॥ सर्वतैंउत्तम जोहिरण्यगर्भकाशरीरहै ॥ तथा सर्वतैंनिकृष्टजोश्वानकाशरीरहै ॥ तिनदोनोंशरीरोंविषे अविद्याकीकार्यता तथा पंचभौतिकपणा समानही है ॥ यातैं विचारकियेतैं तिनदोनोंशरीरोंका किंचित्मात्रभी भेदसिद्धहोवैनहीं ॥ और जैसे तिनदोनोंशरीर काभेद सिद्धहोवैनहीं ॥ तैसे तिनदोनोंशरीरोंकेअभिमानाजीवोंकाभी भेदसिद्धहोवैनहीं॥ हेशौनक॥ जिसजिसजीवनैं जिसजिसशरीरकूं

ग्रहणकऱ्याहे॥तिसतिसजीवकूं सोसोशरीर सर्वतैंअधिकहुआ प्रतीतहोवे है ॥ ताआपणेशरीरतैंभिन्नदूसरेसर्वशरीर ताजीवकूं निकृष्टप्रतीत होवे हैं ॥ यातैं अभिमानकृतउत्कृष्टताभी ब्रह्मातैंआदिलेकेश्वानपर्यंत सर्वशरीरोंविषेसमानहै॥हेशौनक॥जिसशरीरविषे याजीवोंनैं अधिकतामानी है सोयहशरीर कैसाहै ॥ आधिव्याधिजन्यसर्वदुःखोंकाकारणहै ॥ तथा सर्वदादुर्गंधकरिकैयुक्तहै॥ तथा सर्वदा अशुचिरहै है॥ ऐसामलिनशरीरभी याजीवोंकूं जिसदेवकेप्रभावतैं दुःखकाकारणरूपकरिकै प्रतीतहोतानहीं ॥ तथा दुर्गंधअशुचिरूपकरिकै प्रतीत होतानहीं॥सोजीवोंकाविचित्रदेव बुद्धिमान्पुरुषोंकूं शोचकरणेयोग्यहै ॥ हेशौनक ॥ यहशरीर यद्यपि दुर्गंधादिकअनेकदोषोंकरिकै युक्त है ॥ तथापि कर्म काम अविद्या यातीनोंकेप्रभावतैं याजीवोंकूं तेशरीरकेदुर्गंधादिकदोष प्रतीतहोतेनहीं ॥ किंतु उलटा याजीवोंकूं सोशरीर अमृतकेसमान प्रियप्रतीतहोवे है ॥ इहां प्रारब्धकर्मकेफलकानाम कर्म है॥और रागकानाम कामहै॥ और अध्यासकानाम अविद्या है ॥ हेशौनक ॥ जिस कर्म कामअविद्याकेबलतैं यहमलिनशरीरभी अमृतकेसमानप्रतीतहोवे है ॥ तिसकर्मकूंभी धिक्कारहै ॥ तथा तिसकामकूंभी धिक्कारहै॥तथा तिसअविद्याकूंभी धिक्कारहै॥जिस अध्यासरूपअविद्याकरिकैमोहकूंप्राप्तहुआ यहजीव आपणेमुखविषेस्थितलालावोंकूंपानकरताहुआभी ग्लानिकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ हेशौनक ॥ जे विष्टा मूत्र रुधिर कफ आदिकपदार्थ वैतरणीआदिकनरकोंविषे विद्यमानहैं॥तेविष्टामूत्रादिकपदार्थही यादेहविषे विद्यमानहैं॥नरककेपदार्थोंविषे तथायाशरीरकेपदार्थोंविषे किंचित्मात्रभीभेदनहीं है ॥ तथापि याजीवोंकूं पापादिकदोषोंकेवशतैं तेमिलनपदार्थभी सौंदर्यतारूपकरिकैप्रतीतहोवे हैं॥ यातैं याजीवोंकेपापादिकदोषोंका बहुत आश्चर्यरूपमहिमाहै॥ हेशौनक ॥ इसप्रकार यहअधिकारीपुरुष ब्रह्मलोकतैंआदिलेके यामनुष्यलोकपर्यंत सर्वलोकोंकूं अनर्थरूपजानिकै तिनसर्वलोकोंतैं वैराग्यकूं प्राप्तहोवे ॥ तहांश्रुति ॥ परीक्ष्यलोकान्कर्मचितान् ब्राह्मणोनिर्वेदमायात् ॥ अर्थयह ॥ यहअधिकारीपुरुष पूर्वउक्तरीतिसे कर्मरचितसर्वलोकोंकूं अनित्यतादिकदोषोंवालाजानिकै तिनलोकोंतैं वैराग्यकूंप्राप्तहोवे ॥१॥ हेशौनक ॥ याअधिकारी पुरुषोंकूं केवल पूर्वउक्तदोषोंकाविचारकरिकै यहलोक परित्यागकरणेयोग्यनहींहै॥ किंतु कर्मजन्यहोणेतैं अनित्यतादोषकरिकैभीतेलोक

परित्यागकरणेयोग्यहै॥काहेतैं भूमि अंतरिक्ष स्वर्ग यातीनलोकोंकेअंतर्गत जितनैंकीलोकहैं ॥ तेलोकतौ याजीवोंकूं यज्ञादिरूपशारीरककर्मोंकरिकैप्राप्तहोवेहैं॥और तिन तीनलोकोंतैंबाह्यजेब्रह्मलोकादिकहैं॥तेब्रह्मलोकादिकतौ याजीवोंकूं उपासनारूपमानसकर्मकरिकै प्राप्तहोवेहैं॥याप्रकारकानियम किसीकालविषेभी अन्यथाहोवैनहीं॥यातैं यहसंपूर्णलोक कर्मजन्यहैं॥और यालोकविषे जोजोपदार्थ कर्मजन्यहोवेहै सोसोपदार्थ अनित्यहीहोवेहै जैसे घटादिकपदार्थ कर्मजन्यहोणेतैं अनित्यहैं ॥ तैसे कर्मजन्यहोणेतैं तेस्वर्गादिकलोकभी अनित्यहीहोवैंगे ॥ और यालोकविषे जोजोपदार्थ अनित्यहोवेहै॥सोसोपदार्थ आपणेवियोगकालविषे याजीवोंकूं दुःखकीप्राप्ति अवश्यकरे हैं ॥ जैसे धनादिकपदार्थ अनित्यहोणेतैं आपणेवियोगकालविषे याजीवोंकूं अवश्यकरिकैदुःखकीप्राप्तिकरैहैं ॥ तैसे अनित्यहोणेतैं तेस्वर्गादिकलोकभी याजीवोंकूं अवश्यकरिकैदुःखकीप्राप्तिकरैंगे ॥ याकारणतैंभी याअधिकारीपुरुषोंकूं तेस्वर्गादिकलोक परित्यागकरणे योग्यहैं ॥ हेशौनक ॥ जैसे स्वर्गादिकलोक कर्मजन्यहैं ॥ तैसे यहमोक्ष कर्मजन्यनहीं है काहेतैं स्वर्गादिकलोकोंकीन्याईं जोकदाचित् सोमोक्षभी कर्मजन्यहोवैगा ॥ तौ सोमोक्षभी तिनस्वर्गादिकलोकोंकीन्याईं अनित्यहीहोवैगा॥और जोकदाचित् तामोक्षकूंभी अनित्यमानिये तौ मोक्षकीप्राप्तिवासते अधिकारीपुरुषोंकाप्रयत्नही व्यर्थहोवैगी ॥किंवा॥ तामोक्षकूंभी जोकदाचित् कर्मजन्यमानिये तौ तामोक्षविषे स्वर्गकीअपेक्षाकरिकै विशेषतानहींहोवैगी।किंतु तामोक्षकूंभी स्वर्गविशेषरूपता प्राप्तहोवैगी।काहेतैं जैसे विश्वजित्नामायज्ञकरिकै प्राप्तहोणेहारा जोस्वर्ग है ॥ तथा ज्योतिष्टोमनामायज्ञकरिकै प्राप्तहोणेहारा जोस्वर्ग है ॥ तिनदोनोंप्रकारकेस्वर्गोंविषे यद्यपि यत्किंचित् अवांतरविशेषताहै ॥ तथापि स्वर्गत्वरूपकरिकै तथाअनित्यरूपकरिकै तिनदोनोंस्वर्गोंविषे किंचित्मात्रभी विषमतानहीं है ॥ किंतु दोनों समानहीं हैं ॥ तैसे कर्मजन्यस्वर्गविषे तथाकर्मजन्यमोक्षविषे यत्किंचित् अवांतरविशेषताकेहुएभी स्वर्गत्वरूपकरिकै तथा आनित्यत्व रूपकरिकै तिनदोनोंविषे समानताहीहोवैगी ॥ किंवा स्वर्गादिकोंकीन्याईं तामोक्षकूंभी जो अनित्यमानिये तौ ॥ नसपुनरावर्त्तते ॥ यहश्रुतिवचन मुक्तपुरुषोंके पुनरावृत्तिकेअभावकूंकथनकरणेहारा व्यर्थहोवैगा॥तथासर्वशास्त्रोंकेआचार्योंकी जोमोक्षकीनित्यता

विषेप्रसिद्धिहै ॥ साप्रसिद्धिभी व्यर्थहोवैगी ॥ याकारणतैंभी तामोक्षविषे अनित्यतासंभवैनहीं ॥ किंवा ॥ नान्यःपंथाविद्यतेऽयनाय ॥ अर्थयह ॥ मोक्षकीप्राप्तिवासतै आत्मज्ञानतैंविना दूसराकोईमार्गहैनहीं ॥ किंतु एकआत्मज्ञानहीं तामोक्षकेप्राप्तिकामार्ग है ॥ १ ॥ ब्रह्मवेदब्रह्मवैभवति ॥ अर्थयह ॥ यहअधिकारी पुरुष अद्वितीयब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपजानिकै ताब्रह्मरूपहीहोवै है ॥ २ ॥ यहदोनोंश्रुति एक आत्मज्ञानकरिकेही तामोक्षकेप्राप्तिकाकथनकरे हैं ॥ जोकदाचित् तामोक्षकूंभी स्वर्गादिकोंकीन्याईकर्मजन्यमानिये ॥ तो तेदोनोंश्रुति व्यर्थहोवैंगी ॥ और श्रुतिकीव्यर्थता किसीभीआस्तिकवादीकूं अंगीकारहैनहीं ॥ याकारणतैंभी तामोक्षविषे कर्मजन्यतासंभवैनहीं ॥ अब याहीअर्थकूंयुक्तिकरिकेनिरूपणकरे हैं ॥ हेशोनक ॥ अविद्यारूपआवरणतैंरहित जो आनंदस्वरूपब्रह्महै ॥ ताब्रह्मकूंहीं वेदवेत्तापुरुष मोक्ष यानामकरिकेकथनकरेहैं ॥ और जिसअविद्यारूपआवरणतैंरहितहुआब्रह्म मोक्षस्वरूपहोवै है ॥ जिसअविद्याकूं तेविद्वान्पुरुष माया अज्ञान अव्याकृत शक्ति इत्यादिकनामोंकरिकेकथनकरे हैं ॥ ऐसे अज्ञानकी निवृत्ति केवलज्ञानकरिकेहीहोवै है ॥ काहेतैं यालोकविषे जिसवस्तु विषयकअज्ञानहोवै है ॥ तिसवस्तुविषयकज्ञानतैंहीं ताअज्ञानकी निवृत्तिहोवै है ॥ दूसरेकिसीकर्मादिकउपायोंकरिकै ताअज्ञानकीनिवृत्ति होवैनहीं ॥ जैसे रज्जुविषेकल्पितसर्पकाकारणरूप जोअज्ञानहै ॥ सो अज्ञान रज्जुविषयकहोवै है ॥ तारज्जुविषयकअज्ञानकीनिवृत्ति तारज्जु विषयकज्ञानतैंहींहोवै है ॥ दूसरेकिसीकर्मादिकउपायोंकरिकै तारज्जुविषयकअज्ञानकीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ और तारज्जुविषयकज्ञानकरिकै जभी तारज्जुविषयकअज्ञानकीनिवृत्तिहोवै है ॥ तभी ताअज्ञानकाकार्यरूपसर्प आपही निवृत्तहोइजावै है ॥ यहवार्त्ता सर्वलोकोंकूं अनुभवसिद्धहै ॥ तैसे यासंसारकाकारणरूपजोअज्ञानहै ॥ सोअज्ञानभी ब्रह्मात्मविषयकहोवै है ॥ यातैं ताब्रह्मात्मविषयकज्ञानकरिकैही ताअज्ञानकीनिवृत्तिहोवै है ॥ ताब्रह्मात्मज्ञानतैंविना दूसरेकर्मउपासनादिकउपायोंतैं ताअज्ञानकीनिवृत्ति संभवैनहीं ॥ और ताब्रह्मात्मज्ञानकरिकै जभी ताअज्ञानकीनिवृत्तिहोवै है ॥ तभी ताअज्ञानजन्यदुःखोंकीनिवृत्ति आपहीहोइजावै है ॥ किंवा ॥ जेवादी तासंसारसंबंधीदुःखोंकूं अज्ञानजन्यनहींमानेहैं ॥ किंतु नैयायिकोंकेमतकीन्याईं आत्मारूपसमवायिकारणादिकोंसहित तादुःखकूं सत्यमाने हैं ॥ तिनवादियों

केमतविषे सोदुःख आत्माकीन्याईं सर्वदा विद्यमानहोवैगा ॥ यातैं तादुःखकीनिवृत्तिरूपमोक्षकीप्राप्तिवासतैं सर्वअधिकारीजनोंकाप्रयत्न व्यर्थहोवैगा ॥ और सोवादी जोकदाचित् घटादिकपदार्थोंकीन्याईं तादुःखकूंसत्यमानिकैभी अनित्यमानैं ॥ तोभी तादुःखकीनिवृत्तिरूप मोक्षकीप्राप्तिवासतै तिनअधिकारीपुरुषोंकाप्रयत्न व्यर्थहोवैगा ॥ काहेतैं यालोकविषे जोजोभावपदार्थ अनित्यहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ किसी कालपाइकै आपही नाशहोइजावै है ॥ जैसे कुशूलविषेस्थितधान्य किसीकालपाइकै आपहीनाशहोइजावैहै ॥ तैसे सोअनित्यदुःखभीकिसीकालपाइकै आपहीनाशहोइजावैगा ॥ ताअनित्यदुःखकीनिवृत्तिकरणेवासतै प्रयत्नकरणा व्यर्थहीहै ॥ किंवा ॥ जेनैयायिक तादुःखकूं अविद्याजन्य नहींमाने हैं ॥ किंतु आत्मजन्यमाने हैं तिननैयायिकोंकेमतविषे तादुःखका अत्यंतनाश संभवैनहीं ॥ काहेतैं तिननैयायिकोंनै तादुःखकेसमवायिकारणआत्माकूं नित्यमान्याहै ॥ यातैं एकदुःखकेनाशहुएभी तानित्यआत्मातैं पुनःदुःखकीउत्पत्तिहोवैगी ॥ कारणकेविद्यमानहुए कार्यकेउत्पत्तिकूं कोइभी निवारणकरिसकैनहीं ॥ किंवा तादुःखकाकारणरूप जोयहद्वैतप्रपंचहै ॥ सोद्वैतप्रपंच जोकदाचित् सत्यहोवै ॥ तो साक्षात्ईश्वरभी तादुःखकेनिवृत्तकरणेविषे समर्थनहींहोवैगा ॥ काहेतैं सोईश्वर जोकदाचित् सत्यवस्तुकीभीनिवृत्तिकरताहोवै ॥ तो तुमवादियोंकेमतविषे सत्यरूपकरिकैप्रसिद्ध जोयहजगतहै तासत्यजगत्कासंहारकरिकै सोईश्वर पुनःताजगत्कीउत्पत्तिहीनहींकरैगा ॥ सो ऐसादेखणेविषेआवतानहीं ॥ यातैं तासत्यद्वैतविषे दुःखकीकारणतासंभवैनहीं ॥ किंतु आत्माकेअज्ञानतैंही तादुःखकी उत्पत्तिहोवै है ॥ जभी आत्मज्ञानकरिकै ताअज्ञानकीनिवृत्तिहोवै है ॥ तभी सोदुःख पुनः कदाचित्भी उत्पन्नहोवैनहीं ॥ यहउपनिषदोंकामतही युक्तिमान्है ॥ तहां दृष्टांत ॥ जैसे रज्जुकेअज्ञानकरिकै उत्पन्नभयाजो सर्पादिदर्शनजन्य भयकंपादिरूपदुःखहै ॥ सोदुःख तारज्जुकेअज्ञानकेनिवृत्तहुए पुनः उत्पन्नहोवैनहीं ॥ तैसे आत्माकेअज्ञानतैंउत्पन्नभयाजो यहसंसारकादुःखहै ॥ सोदुःख ताआत्माकेअज्ञानकेनिवृत्तहुएपुनःउत्पन्नहोवैनहीं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ अनर्थकीनिवृत्तिपूर्वक ब्रह्मानंदकीप्राप्तिरूप जोमोक्षहै ॥ सोमोक्ष केवलआत्मज्ञानकरिकैहीहोवै है ॥ कर्मउपासनाकरिकै तामोक्षकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ तहांश्रुति ॥ नास्त्यऽकृतःकृतेन ॥ अर्थयह ॥ कार्यभावतैंरहितजो

नित्यमोक्षहै ॥ सोमोक्ष कर्मउपासनाकरिकै प्राप्तहोवैनहीं॥किंतु एकआत्मज्ञानकरिकेही सोमोक्ष प्राप्तहोवैहै॥अब ताब्रह्मात्मज्ञानकेप्राप्तिकाप्रकार वर्णनकरे हैं॥ हेशौनक ॥ ब्रह्मरूपआत्माकाज्ञान याअधिकारीपुरुषोंकूं ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतेंहीहोवैहै॥काहेतें सर्वअर्थकूं प्रकाशकरणेहारीश्रुतिभगवतीही साक्षात् याअर्थकूंकथनकरेहै॥तहांश्रुति॥ तद्विज्ञानार्थंसगुरुमेवाभिगच्छेत्समित्पाणिः श्रोत्रियंब्रह्मनिष्ठं॥ अर्थयह ॥ विवेकादिकसाधनचतुष्टयसंपन्न यहअधिकारीपुरुष समिदादिकपदार्थोंकूंहस्तविषेग्रहणकरिकै ताब्रह्मात्मज्ञानकीप्राप्तिवास्तै श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुकेसमीपजावै॥१॥इहां जोगुरु शास्त्रउक्तअनेकप्रकारकीयुक्तियोंकरिकै शिष्यकेसंशयकीनिवृत्तिकरणविषेसमर्थहोवै॥ तागुरुकानाम श्रोत्रियहै ॥ और जिसगुरुकी ब्रह्मविषेनिष्ठाहोवै॥तागुरुकानाम ब्रह्मनिष्ठहै ॥ऐसेश्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुके विधिवत्शरणकूंप्राप्तभयाजो श्रद्धावान्शिष्यहै ॥ ताशिष्यकेप्रति सोश्रीगुरु सर्वदुःखोंकेनाशकरणेहारी ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरे ॥ जिसब्रह्मविद्याकरिकै सोब्रह्मचर्यसत्यादिकसाधनसंपन्न अधिकारीपुरुष ताअक्षरब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपकरिकैनिश्चयकरै॥ अब पूर्वसंक्षेपकरिकैकथनकरीहुई परविद्याका विस्तारतैंनिरूपणकरेहैं ॥हेशौनक॥सोविरक्तमुमुक्षुजन ताश्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुकेमुखतैं जिसब्रह्मकूं सत्यरूपकरिकैजानेहै ॥ तथा ताब्रह्मतैंभिन्न सर्वजगत्कूं असत्यरूपकरिकैजानेहै ॥ तासत्यब्रह्मतैंही यहसंपूर्णविश्व उत्पन्नहोवै है ॥ तथा तासत्यब्रह्मविषेही यहसर्वजगत् स्थितहोवै है ॥ तथा तासत्यब्रह्मविषेही यहसर्वजगत् लयकूंप्राप्तहोवै है ॥ अब ताजगत्कीउत्पत्तिविषेदृष्टांतकहे हैं ॥ हेशौनक॥जैसेमहान्प्रज्वलितअग्नितैंप्रकाशतारूपकरिकै ताअग्निकेसमानरूपवालेविस्फुलिंग उत्पन्नहोवै हैं ॥तथा ताअग्नितैंमलिनतारूपकरिकै विरुद्धधर्मवालेधूम उत्पन्नहोवै हैं ॥ तैसे ताअक्षरब्रह्मतैं समानरूपवालेचेतनपदार्थ तथाविरुद्धरूपवालेजडपदार्थ उत्पन्नहोवै हैं ॥ हेशौनक ॥ जिसपरब्रह्मतैं यहजडचेतनरूपजगत् उत्पन्नहोवै है ॥ सोपरब्रह्मकैसाहै ॥ स्वयंप्रकाशरूपकरिकै यासर्वजगततैंविलक्षणहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरब्रह्मकूं दिव्य यानामकरिकैकथनकरे है ॥ और सोपरब्रह्म आकाशकीन्याईं सर्वत्रव्यापक है ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरब्रह्मकूं अमूर्त्त यानामकरिकैकथनकरे है ॥ और सोपरब्रह्म सर्वदेहादिकउपाधियोंविषे बाह्यअंतर

परिपूर्ण है ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरब्रह्मकूं पुरुष यानामकरिकैकथनकरे है॥और सोपरब्रह्म यास्थूलशरीरतैंरहितहै॥याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरब्रह्मकूं अज यानामकरिकैकथनकरे है॥और सोपरब्रह्म सूक्ष्मशरीरतैंभीरहितहै॥याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरब्रह्मकूं अप्राण अमनाः यानामकरिकैकथनकरे है ॥ और सोपरब्रह्म मायारूपकारणशरीरतैंभीरहित है ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरब्रह्मकूं शुभ्र यानामकरिकैकथनकरे है ॥ और आकाशादिकजगत्रूपकार्यकीअपेक्षाकरिकै सामाया चिरकालपर्यंतरहे है ॥ याकारणतैं तामायाकूं अक्षरकहे हैं ॥ और आपणेकार्यरूपजगत्कीअपेक्षाकरिकै साकारणरूपमाया परभीहै॥ऐसे पररूपअक्षरमायातैंभी सोपरब्रह्मपरहै॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरब्रह्मकूं अक्षरात्परतः परः यानामकरिकैकथनकरे है॥इतनैंकरिकै तापरमात्मादेवकास्वरूप वर्णनकऱ्या ॥ अब तापरमात्मादेवकेअद्वितीयरूपताकीसिद्धिकरणेवास्तै तापरमात्मादेवतैंयासर्वजगत्केउत्पत्तिका कथनकरे हैं ॥हेशौनक॥ इसीमायाउपहितपरमात्मादेवतैं प्राण तथामन उत्पन्नहोवै है ॥ और तिसीपरमात्मादेवतैं श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रिय तथावाकादिकपंचकर्मइंद्रिय उत्पन्नहोवै हैं ॥ और तिसीपरमात्मादेवतैं आकाश वायु अग्नि जल पृथ्वी यहपंचभूत उत्पन्नहोवै हैं ॥ इतनैंकरिकै सूक्ष्मसप्तदशतत्त्वरूपहिरण्यगर्भकी उत्पत्ति कथनकरी ॥ अब स्थूलविराट्कीउत्पत्ति कथनकरे हैं ॥ हेशौनक ॥ तिसपरमात्मादेवका जोस्थूलविराट् स्वरूप है ॥ ताविराट्स्वरूपकूं वेदवेत्तापुरुष याप्रकार वर्णनकरे हैं ॥ यहस्वर्गलोक जिसविराट्भगवान्का शिररूप है ॥ और यहसूर्य चंद्रमा जिसविराट्भगवान्के दोनोंनेत्ररूप हैं ॥ और यहपूर्वादिकदशोंदिशा जिसविराट्भगवान्के श्रोत्ररूपहै ॥ और यहऋगादिकचारिवेद जिसविराट्भगवान्का वाकइंद्रियरूप हैं ॥ और यहबाह्यवायु जिसविराट्भगवान्का प्राणरूप है ॥ और यहसंपूर्णजगत् जिसविराट्भगवान्का हृदयरूप है ॥ और यहसंपूर्णपृथ्वी जिसविराट् भगवान्का पादरूप है ॥ याप्रकारकेशरीरवाला तथासर्वव्यष्टि भूतोंका आत्मारूप जोपरमेश्वरका स्वरूप है ॥ तास्वरूपकूं वेदवेत्तापुरुष विराट् यानामकरिकैकथनकरे हैं॥अब याविराट्भगवान्तैं लोकोंकेवृद्धिकरणेहारेपंचअग्नियोंकीउत्पत्ति कथनकरे हैं ॥ हेशौनक॥ ताविराट् स्वरूपतैं यहप्रसिद्ध अग्नि तथाआधिदैवरूप स्वर्गलोकरूपअग्नि

उत्पन्नहोताभया ॥ कैसा है सोआग्नि अहवनीयगार्हपत्यादिरूपकरिके तथास्वर्गादिफलरूपकरिके अग्निहोत्रादिकसर्व कर्मोंकेप्रवृत्तिका कारण है ॥ और ताअग्निकेआदित्यरूप समिधतैंआदिलेके ज्वाला धूम विस्फुलिंग अंगार इत्यादिकसर्वपदार्थ उत्पन्नहोतेभये ॥ तिन स्वर्गादिकपंचअग्नियोंके समिधादिकपदार्थ याआत्मपुराणकेषष्ठेअध्यायविषे विस्तारतैंकथनकरिआये हैं तेसर्वजानिलेणे॥और तास्वर्ग रूपअग्नितैंअनंतरचंद्रनामासोम उत्पन्नहोताभया ॥ कैसा है सोसोम ॥ सूर्यभगवान्तैं उत्पन्नहुई तथाकलारूपकरिकैपरिणामकूंप्राप्तहुई जेअग्निहोत्रकी आहुतियां हैं तिनआहुतियोंकरिकै वृद्धिकूंप्राप्तहुआहै शरीरजिसका ॥ याकारणतैं सोसोमरूपचंद्र अग्निहोत्रादिककर्मोंकूं करणेहारेकर्मी पुरुषोंकूंही प्राप्तहोवै है ॥ ऐसेद्रवीभावकूंप्राप्तहुएसोमतैं पर्जन्यनामादूसराअग्नि उत्पन्नहोताभया ॥ तामेघरूपपर्जन्यतैं वृष्टिद्वारा पृथ्वीरूपतीसरेअग्नितैं व्रीहियवादिकसर्व ओषधिउत्पन्नहोतेभये ॥और पुरुषरूपचतुर्थअग्निविषे अन्नरूपकरिकैप्राप्तहुएजे तेव्रीहियवादिक ओषधि हैं ॥ तिनओषधियों तैं तापुरुषविषे वीर्यरूपरेत उत्पन्नहोताभया ॥ और सोवीर्यरूपरेत योषित्रूपपंचमअग्निविषे प्राप्तहोइकै गर्भरूपकरिकैप्रादुर्भावहोवै है॥जिसगर्भरूपकूंप्राप्तहुएवीर्यतैं पुत्रादिरूपअनेकप्रकारकीप्रजा उत्पन्नहोवै है॥ जिसपुत्रादिरूपप्रजाकरिके लौकिकवैदिकसर्व व्यवहारोंकीसिद्धिहोवै है ॥ हेशौनक ॥ जिसपरमात्मादेवतैं सोपूर्वउक्तविराट् उत्पन्नहोवै है ॥तिसी परमात्मादेवतैं श्वासप्रश्वासोंकीन्याईं विनाहींप्रयत्नतैं यह ऋगादिकवेद उत्पन्नहोतेभये हैं ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष तिनऋगादिक वेदोंकूं अपरब्रह्म यानामकरिकै कथनकरे हैं॥और तिसीपरमात्मादेवतैं दर्शपौर्णमासादिकयज्ञ उत्पन्नहोतेभये हैं॥तथा ज्योतिष्टोमादिक ऋतु उत्पन्नहोतेभये हैं॥तथा तिसीपरमात्मादेवतैं तिनयज्ञादिककर्मोंकेसिद्धकरणेहारे वसंतादिकऋतु उत्पन्नहोतेभये हैं ॥ तथा गोसुवर्णादिरूपदक्षिणा उत्पन्नहोतीभई हैं ॥ तथा कर्मकर्त्तापुरुषकेनानाप्रकारकेनियमरूपदीक्षा उत्पन्नहोतीभई हैं ॥ तथा संवत्सरादिरूपकाल उत्पन्नहोताभयाहै॥तथा स्वर्गादिकफलकेप्राप्तिकीकामनावाला अधिकारीयजमानउत्पन्नहोताभयाहै ॥तथालताविशेषकारसरूप सोमद्रव्य उत्पन्नहोताभयाहै॥ तथा स्वर्गलोककेशरीरकाआरम्भकरणेहारा सोमरूपफल उत्पन्नहोताभयाहै॥तथा स्वर्गादिकलोकसहित सूर्यभ

गवान् उत्पन्नहोताभयाहै॥इसतैंआदिलेके सर्वस्थूलसूक्ष्मपदार्थ तापरमात्मादेवतैंहीं उत्पन्नहोतेभयेहैं॥हेशौनक॥ तिसपरमात्मादेवतैंहीं वसुआदिकदेवता उत्पन्नहोतेभयेहैं ॥ तथा साध्यनामादेवता उत्पन्नहोतेभये हैं ॥ तथा मनुष्य पशु पक्षीउत्पन्नहोतेभयेहैं ॥ तथा प्राण अपान समान व्यान उदान यहपंचप्रकारकेप्राण उत्पन्नहोतेभयेहैं ॥ तथा व्रीहियवादिकअन्न उत्पन्नहोतेभये हैं ॥ तथा कृच्छ्रचांद्रयणादिकतप उत्पन्नहोतेभयेहैं ॥ तथा आस्तिकतारूपश्रद्धा उत्पन्नहोतेभईहै ॥तथा अवश्यभावीकर्मकाफलरूपसत्य उत्पन्नहोताभयाहै ॥ तथा यथार्थभाषणरूपसत्य उत्पन्नहोताभयाहै ॥ तथा उपस्थइंद्रियकासंयमरूपब्रह्मचर्य उत्पन्नहोताभयाहै ॥ तथा वेदविहितकर्मरूप विधि उत्पन्नहोताभयाहै ॥ और तिसीपरमात्मादेवतैं सप्तप्राण तथासप्तअर्चिष तथासप्तसमिध तथासप्तहोम तथासप्तलोक यहसं पूर्ण उत्पन्नहोतेभये हैं ॥ तहां मस्तकविषेस्थितजे दोश्रोत्र दोचक्षु दोघ्राण एकवाक् यहसप्तइंद्रियहैं तिनोंकानाम प्राणहै ॥ औरतिनप्राणोंतैं उत्पन्नभईजे सप्तप्रकारकीवृत्तियां हैं ॥तिनवृत्तियोंकानामअर्चिषहै ॥ और तिनसप्तप्राणोंकेजेविषयहैं ॥ तिनविषयोंकानाम समिधहै ॥ और तिनविषयोंका तिनप्राणोंविषेलयचैतनरूपजेउपासनाहैं ॥ तिनउपासनावोंकानाम होमहै ॥ और तिनप्राणोंकेरहणेकास्थानरूप जेगोलकहैं ॥ तिनगोलकोंकानामलोकहै ॥ यहसंपूर्ण सप्तसप्तपदार्थ तापरमात्मादेवतैंहीं उत्पन्नहोतेभयेहैं ॥ और तिसपरमात्मादेवतैंहीं यहसप्तसमुद्र उत्पन्नहोतेभयेहैं ॥ तथा हिमाचलादिकपर्वत उत्पन्नहोतेभयेहैं॥तथा श्रीगंगादिकनदियाउत्पन्नहोतीभईहैं॥ तथा वृक्षादिक स्थावरशरीर उत्पन्नहोतेभयेहैं ॥ तथामनुष्यादिकजंगमशरीर उत्पन्नहोतेभयेहैं ॥ इसतैंआदिलेके भूतभविष्यतवर्त्तमानकालविषेस्थित जितनाकीजगत्है॥सोसर्वजगत्तापरमात्मादेवतैंहीं उत्पन्नहोताभयाहै ॥ इतनैंकारिकै तापरमात्मादेवतैंजगत्कीउत्पत्तिरूपअध्यारोपका वर्णनकऱ्या॥अब जगत्काअपवादकरिकै तापरमात्मादेवविषे अद्वितीयशुद्धरूपताकावर्णनकरेहैं ॥हेशौनक॥ जोपरमात्मादेव यासर्वजगत्कूं उत्पन्नकरताभयाहै॥तिसपरमात्मादेवतैंयहजगत् भिन्ननहींहै॥ किंतु यहसर्वजगत्तापरमात्मादेवरूपही है ॥ कैसाहैयहजगत् तप कर्म वेद यातीनस्वरूपहै ॥ इहां उपासनाकेफलकानाम तपहै ॥ और यागादिककर्मोंकेफलकानाम कर्महै ॥ और तिनदोनोंकेप्रकाश

करणेहारे अपौरुषेयवचनोंकानाम वेदहै॥सोयह तपकर्मादिरूपसर्वजगत् अमृतब्रह्मस्वरूपही है॥ तापरब्रह्मतैंभिन्न किंचित्मात्रभीहैनहीं ॥ याकारणतैं सोपरमात्मादेव एकअद्वितीयस्वरूपहै॥हेशौनक ॥ इसप्रकार सर्वत्रव्यापक तथासर्वकाआत्मारूप तथाउत्पत्तिनाशतैं रहित तथासर्वभूतप्राणियोंकेहृदयकमलविषेनिवासकरणेहारा जोपरमात्मादेवहै ॥ तापरमात्मादेवकूं जोअधिकारीपुरुष आपणाआत्मारूपकरिकैजानहै ॥ सोअधिकारीपुरुष मैंअज्ञानीहूं याप्रकारकीअविद्याग्रंथितैंरहितहोवै हैं ॥ यातैं याअधिकारीपुरुषोंनैं तापरमात्मादेवकूं अवश्यकरिकैजानणा ॥ अब पूर्वउक्तउपदेशकरिकै जिसअधिकारीपुरुषकूं ताअक्षरब्रह्मकाबोधनहींहोवै ॥ तिसअधिकारीपुरुषकेप्रति दूसरीरीतिसैं साधनोंसहित ताअक्षरब्रह्मकेबोधकावर्णनकरे हैं ॥ हेशौनक ॥ जोअक्षरब्रह्म स्वप्रकाशतारूपकरिकै सर्वदा आविर्भूतहै ॥ तथा बुद्धिरूपगुहाविषेस्थितहोणतैं जोअक्षरब्रह्म अत्यंतसमीपहै ॥ तथाजोअक्षरब्रह्म सर्वतैं उत्कृष्टहै ॥ तथा जो अक्षरब्रह्म याअधिकारीशरीरविषेही प्राप्तहोवै हैं ॥ और जैसे रथकेचक्रविषेस्थितअरोंका नाभिअधिष्ठानहोवै है ॥ तैसे जोअक्षरब्रह्म प्राणोंका तथाइंद्रियोंका अधिष्ठानरूपहै॥तथा जो अक्षरब्रह्म आपणीसमीपतामात्रकरिकै तिनप्राणइंद्रियोंकेसर्वव्यापारोंकाकारणरूपहै॥ तथा सनातनहै ॥ तथा बुद्धिआदिकउपाधियोंतैंपरहै ॥ ऐसाअक्षरब्रह्महीं याअधिकारीपुरुषोंनैं आपणाआत्मारूपकरिकैजानणेयोग्यहै ॥ पुनःकैसाहैसोअक्षरब्रह्म ॥ मायाकेसंबंधतैं स्थूलसूक्ष्मरूपताकूंप्राप्तहुआभी वास्तवतैं तास्थूलसूक्ष्मरूभावतैंरहितहै ॥ तथा जोअक्षरब्रह्म विवेकीपुरुषोंकरिकै प्रार्थनाकरणेयोग्यहै ॥ तथा जोअक्षरब्रह्म सर्वदेहधारीजीवोंकूं अत्यंतप्रियहै ॥ और जोअक्षरब्रह्म आपणेस्वयंज्योतिप्रकाशकरिकै प्रकाशमानहै ॥ और जोअक्षरब्रह्म दुर्लक्ष्यपदार्थोंतैं भी अत्यंतदुर्लक्ष्यहै॥और जिसअक्षरब्रह्मविषे इंद्रादिकलोकपालोंसहित यहसर्वलोकास्थितहैं॥हेशौनक॥पूर्वजो तुमनैंपूछाथा॥किसवस्तुकेज्ञानतैं यासर्वजगत्काज्ञानहोवै है॥सोवस्तु यहअक्षरब्रह्महीं है ॥ याअक्षरब्रह्मकेज्ञानतैंही सर्वजगत्काज्ञानहोवै है ॥ इसीअक्षरब्रह्मकूं वेदवेत्तापुरुष प्राणइंद्रियरूपकरिकैकथनकरे है ॥ तथा इसीअक्षरब्रह्मकूं स्वर्गरूपकरिकै तथा मोक्षरूपकरिकै कथनकरे हैं ॥ अब ताआत्मज्ञानकीप्राप्तिवासतै ध्यानरूपउपायका वर्णनकरेहैं॥हेशौनक ॥

जैसेयालोकविषे कोईशूरवीरपुरुष आपणेधनुषतैं बाणकूंचलाइकै किसीलक्ष्यवस्तुकूंवेधनकरेहै ॥ तैसे जोअधिकारीपुरुष धैर्यकरिकै युक्तहै ॥ तथा आत्माकोविवेककरिकैयुक्तहै ॥ तथाकामक्रोधादिकशत्रुवोंकूं सर्वदाभयकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ ऐसेअधिकारीपुरुषनैं पूर्व उक्तअक्षरब्रह्मकूं लक्ष्यरूपकरिकैवेधनकरणा ॥ हेशौनक ॥ महावाक्यरूपवेदांतहैंउदरविषेजिसके ऐसाजोओंकाररूपप्रणवमंत्रहै ॥ सोप्रणवमंत्रतोधनुष्यरूपहै ॥ और ध्यानकर्त्तापुरुषका जोशोधितकूटस्थआत्माहै ॥ सोआत्मा बाणरूपहै ॥ और मैंत्रब्रह्मरूपहूं ॥ याप्रकार जोमहावाक्यकेअर्थकाचिंतनहै ॥ सोंचिंतन ताप्रणवरूपधनुषका आकर्षणरूपहै ॥ और शुद्धब्रह्मलक्ष्यस्वरूपहै ॥ जिसशुद्धब्रह्मरूपलक्ष्यविषेप्राप्तहुआ यहकूटस्थआत्मारूपबाण तालक्ष्यस्वरूपहीहोवैहै ॥ हेशौनक ॥ जिसअक्षरब्रह्मविषेभूमिलोक अंतरिक्षलोकस्वर्गलोक यहतीनोंलोकास्थितहैं ॥ तथाजिसअक्षरब्रह्मविषेयहआकाशादिकपंचभूतास्थितहैं॥ तथाजिसअक्षरब्रह्मविषेमनप्राणइंद्रिय आदिकभौतिक पदार्थास्थितहैं ॥ तथाजिसअक्षरब्रह्मविषे यहऋगादिकवेदस्थितहै ॥ जिनवेदोंकूंविद्वान्पुरुष शब्दब्रह्मयानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ ऐसा सर्वजगत्काअधिष्ठानरूपअक्षरब्रह्महीं याअधिकारीपुरुषोंकूंजानणेयोग्यहै ॥ तिसअधिष्ठानब्रह्मतैंभिन्न अनात्मपदार्थ याअधिकारीपुरुषोंकूंजानणेयोग्यनहींहै ॥ हेशौनक ॥ जैसेयाअधिकारीपुरुषकूं ताअक्षरब्रह्मतैंभिन्नअनात्मपदार्थ परित्यागकरणेयोग्यहैं ॥ तैसे ताअक्षरब्रह्मतैंभिन्न अनात्मपदार्थोंकूंप्रतिपादनकरणेहारेवचनभी परित्यागकरणेयोग्यहैं ॥ काहेतैंतेअनात्मपदार्थोंकूंप्रतिपादनकरणेहारेवचन केवलवाक् तालु कंठ इत्यादिकस्थानोंकूं परिश्रमकीहीप्राप्तिकरणेहारेहैं ॥ तिसपरिश्रमतैंभिन्न दूसराकोईफल तिनवचनोंकाहैनहीं ॥ यातैं जिसअधिकारीपुरुषकूं मोक्षकेप्राप्तिकीइच्छाहोवै ॥ तिसअधिकारीपुरुषनैं एकवेदांतवचनोंतैंविना दूसरेअनात्मवस्तुकेप्रतिपादकवचनोंकूं कदाचित्भीनहींउच्चारणकरणा ॥ तथा तिनअनात्मवस्तुकेप्रतिपादकवचनोंकाश्रवणभीनहींकरणा ॥ काहेतैं एकवेदांतवचनोंकूं छोडिकैदूसरेजितनैंकीवचनहैं ॥ तेसर्ववचन अनात्मरूपदृश्यतकेहीप्रतिपादकहैं ॥ यातैंतेवचन याअधिकारीपुरुषकूं मोक्षरूपअमृतकीप्राप्तिकरेनहीं ॥ किंतु तिनअनात्मवस्तुकेप्रतिपादकवचनोंविषे कोईवचनतो यापुरुषकूंधर्मकीप्राप्तिकरेहै ॥ और कोईवचनतो धनादिरूप

अर्थकीप्राप्तिकरेहै ॥ और कोईवचनतौ विषयसुखरूपकामकीप्राप्तिकरेहैं ॥ और कोईवचनतौकेवलदुःखकीप्राप्तिकरे हैं ॥ याचारौंतैं भिन्न दूसराकोईफल तिनवचनोंकाहोवैनहीं ॥ हेशौनक ॥ धर्म अर्थ काम यहतीनों यद्यपिविचारहीनपुरुषोंकूं सुखरूपहोइकैप्रतीतहोवै हैं ॥ तथापि विचारकरिकैदेखियेतौ तेधर्मअर्थकाम आपणीअप्राप्तिकालविषे तथाआपणीप्राप्तिकालविषे तथा आपणेवियोगकालविषे याजीवोंकूंकेवल दुःखकीहीप्राप्तिकरेहैं ॥ यातैंतिनधर्मादिकोंकूंप्रतिपादनकरणेहारेवचनभी केवलदुःखकेहीकारणहैं ॥ याकारणतैंविद्वान् पुरुष तिनदुःखकीहीप्राप्तिकरणेहारेवचनोंकूं कदाचित्भीउच्चारणकरतेनहीं॥ और तिनविद्वान्पुरुषोंकेसमीप जोकोईदूसरेपुरुषभी तिनअ नात्मवचनोंकाउच्चारणकरैहैं ॥ तिनपुरुषोंकूंभी तेविद्वान्पुरुषतिनअनात्मवचनोंकेउच्चारणकरणैतैं निवारणकरे हैं ॥ यहश्रेष्ठपुरुषोंका आचार प्रसिद्धहै॥ तिनश्रेष्ठपुरुषोंकेआचाररूपप्रमाणतैंभीतिनअनात्मवचनोंकेउच्चारणका निषेधहीप्राप्तहोवैहै॥ हेशौनक ॥ केवलतिनश्रेष्ठ पुरुषोंकेआचाररूपप्रमाणतैं तिनअनात्मवचनोंकानिषेधप्राप्तनहींहै ॥ किंतुसाक्षात् श्रुतिभगवतीही तिनअनात्मवचनोंकानिषेधकरे है॥ तहांश्रुति ॥ तमेवैकंजानथआत्मानमन्यावाचोविमुंचथ ॥ अर्थयह ॥ हेअधिकारीपुरुषो वेदांतवचनोंकरिकै तिसएकअद्वितीयआत्माकूं हींजानो ॥ तथा तिनवेदांतवचनोंतैंभिन्न अनात्मवस्तुकूंप्रतिपादनकरणेहारेवचनोंका परित्यागकरो ॥ १॥ कैसे हैं तेअनात्मवचन ॥ मृतकपुरुषोंकेवृत्तांतकथनकीन्याईं निष्फलहैं ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभीकथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ काकस्यकतिवादंतामेषस्यांडंकियत्पलम् ॥ गर्दभेकतिरोमाणित्येषामूर्खविचारणा ॥ अर्थयह ॥ काककेकितनेदंतहोवैहै ॥ और मेषकाअंड कितनैंपलपरिमाण होवैहै ॥ और गर्दभविषे कितनैंरोमहोवै हैं ॥ याप्रकारकाविचार मूर्खपुरुषहीकरेहैं ॥ १ ॥ सोतिनमूर्खपुरुषोंकाविचार जैसे निष्फलहो वैहै ॥ तैसेअनात्मवचनोंकाउच्चारणकरणाभीनिष्फलहीहोवैहै ॥ अबपूर्वकथनकरेहुएअर्थकूंपुनःस्पष्टकरिकैकथनकरे हैं॥ हेशौनक॥ धनादि रूपअर्थकीप्राप्तिकरणेहारेजेवचनहै ॥ तथाविषयभोगरूपकामकीप्राप्तिकरणेहारेजेवचनहैं ॥ तेदोनोंप्रकारकेवचनयाजीवोंकूं दुःखकीप्राप्ति करैहैं॥ काहेतैंसोअर्थतथाकामदोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकअर्थकामतौशास्त्रतैंअविरुद्धहोवैहै ॥ औरदूसराअर्थकामशास्त्रतैंविरुद्धहोवै है॥ तहां ॥ १२ ॥

शास्त्रतैंअविरुद्धजेअर्थकामहैं॥ तेअर्थकामतौ आपणीअप्राप्तिकालविषे इच्छाकीउत्पत्तिद्वारा याजीवोंकूं दुःखकीप्राप्तिकरैहैं॥ और आपणी प्राप्तिकालविषे रक्षाकरणेकीचिंताद्वारा याजीवोंकूं दुःखकीप्राप्तिकरे हैं॥ और आपणेनाशकालविषे वियोगद्वारा याजीवोंकूं दुःखकीप्राप्तिकरे हैं॥ इसप्रकार तीनकालोंविषे तेअर्थकाम याजीवोंकूं दुःखकीप्राप्तिकरे हैं॥ यातैं तिनअर्थकामोंकूंप्रतिपादनकरणेहारेवचनभी याजीवोंकेदुः खकाहीकारणहैं॥ और दूसरेजे शास्त्रतैंविरुद्धअर्थकामहैं॥ तेअर्थकामभीपूर्वकीन्याईं आपणे अप्राप्तिकालविषे तथा आपणेप्राप्तिकालविषे तथाआपणेनाशकालविषे याजीवोंकूं दुःखकीहीप्राप्तिकरे हैं॥ हेशौनक॥ इसप्रकार शास्त्रविहित अर्थकामविषे तथाशास्त्रनिषिद्धअर्थकामविषे दुःखकीकारणताकेसमानहुएभी ॥ तिनदोनोंविषेइतनीविशेषताभी है ॥ शास्त्रविहित अर्थकामतौ इसलोकविषे निंदाद्वारा दुःखकी प्राप्तिकरैनहीं॥ औरपरलोकविषे नरककीप्राप्तिद्वारा दुःखकीप्राप्तिकरेनहीं॥ और शास्त्रकरिकैनिषिद्धअर्थकामतौ याजीवोंकूं इसलोकविषेतौ निंदादिकोंकरिकै दुःखकीप्राप्तिकरे है॥ और परलोकविषे नरकादिकोंकरिकै दुःखकीप्राप्तिकरे है॥ यातैं तिनशास्त्रविरुद्धअर्थकामकूंप्रति पादनकरणेहारेवचनभी याजीवोंकूं दुःखकेहीकारणहैं ॥ ऐसे दुःखकेदेणेहारेवचनोंकूं कौनबुद्धिमान्पुरुष उच्चारणकरैगा ॥ किंतु नहीं उच्चारणकरैगा ॥ हेशौनक ॥ जैसेअर्थकामकूं प्रतिपादनकरणेहारेवचन याजीवोंके दुःखकेहीकारणहैं॥ तैसे धर्मकेप्रतिपादकवचनभी या पुरुषोंके दुःखकेहीकारणहैं ॥ काहेतैं अग्निहोत्रादिककर्मौतैं उत्पन्नभयाजोधर्म है॥ तादृधर्मकरिकै याजीवोंकूं जिनस्वर्गादिकसुखोंकीप्राप्ति होवै है ॥ तेस्वर्गादिकसुख अनित्यहैं तथासातिशयतादोषवाले हैं ॥ यातैं आपणेवियोगकालविषे तथाआपणेवर्त्तमानकालविषे तेस्वर्गा दिकसुख याजीवोंकूं दुःखकीप्राप्तिकरे हैं ॥ यातैं ताअनित्यफलवाले धर्मकूंप्रतिपादनकरणेहारेवचनभी याजीवोंकूं दुःखकीहीप्राप्ति करे हैं ॥ यातैं यह अर्थ सिद्धभया ॥ धर्मकीप्राप्तिकरणेहारे तथाअर्थकीप्राप्तिकरणेहारे तथाकामकीप्राप्तिकरणेहारे जितनेंकीवचनहैं ॥ तेसर्ववचन पूर्वउक्तरीतिसैं याजीवोंकूं दुःखकीहीप्राप्तिकरणेहारे हैं ॥ यातैं मुमुक्षुजनोंनैं तिनअनात्मवचनोंकाउच्चारण कदाचित्भीनहीं करणा ॥ किंतु जिनवेदांतवचनोंकरिकै याअधिकारीपुरुषकूं मोक्षरूपअमृतकीप्राप्तिहोवै है ॥ तिनवेदांतवचनोंकाही याअधिकारीपुरुषनैं

सर्वदा अभ्यासकरणा॥यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभी कथनकरीहै तहांश्लोक ॥ आमृत्तेरामृतेःकालं नयेद्वेदांतचिंतया॥दद्यान्नावसरंकिंचित् कामादीनांमनागपि ॥अर्थयह॥ यहअधिकारीपुरुष प्रातःकालतैलेके सुषुप्तिपर्यंत तथाविद्याप्राप्तिकालतैलेके मरणपर्यंत वेदांतशास्त्रके चिंतनकरिकेही कालकूंवितीतकरे ॥ तावेदांतविचारकरिकै कामादिकविकारोंकूं किंचित्कालपर्यंतभी चित्तविषे अवसरनहीं देवै ॥१॥ हेशौनक ॥ जैसे यालोकविषे सेतुरूपमार्गकरिकेही नदीआदिकोंकेपारकीप्राप्तिहोवै है ॥ तैसे आत्मज्ञानरूपसेतुकरिकेहीयासंसारसमुद्रके मोक्षरूपपरंपराकीप्राप्तिहोवै है ॥ याकारणतैं यहआनंदस्वरूपआत्मा मोक्षरूपअमृतकीप्राप्तिवासतै सेतुकीन्याईं स्थितहै ॥ तिसआ त्माकेस्वरूपभूतआनंदकूंग्रहणकरिकेही यहविद्वान्पुरुष सर्वभयतैंरहितहोवै है ॥ तहांश्रुति ॥ आनंदंब्रह्मणोविद्वान्बिभेतिकुतश्चनेति ॥ अर्थयह ॥ यहअधिकारीपुरुष अद्वितीयब्रह्मकेस्वरूपभूतआनंदकूंजानिकै किसीतैंभीभयकूंप्राप्तहोतानहीं ॥१॥ हेशौनक॥ यहआनंदस्व रूपआत्मा सर्वप्राणियोंकेहृदयाकाशविषेविराजमानहै॥याकारणतैं श्रुतिभगवती ताआत्मादेवकूं दहराकाश यानामकरिकैकथनकरे है॥ और जैसे रथचक्रकेनाभिविषे अरा स्थितहोवै हैं ॥ ताहृदयकमलविषे हितानामा शतसहस्रनाडियां स्थितहैं ॥ ऐसेहृदयकमलके अंतर सोआनंदस्वरूपआत्मा सर्वदा विचरे है॥कैसाहैसोआत्मादेव॥ वास्तवतैं जन्मतैंरहितहुआभी शरीरादिकउपाधियोंकेजन्मतैं जन्म वालेकीन्याईं प्रतीतहोवै है ॥ जैसे घटरूपउपाधिकेजन्मतैं आकाश जायमानहुआप्रतीतहोवै है ॥ हेशौनक ॥ याप्रकार आत्माकेउप देशकरिकेभी जोअधिकारीपुरुष किसीपापकर्मरूपप्रतिबंधकेवशतैं मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकार ता आत्माकेज्ञानणेविषेसमर्थनहींहोवै है॥ सो अधिकारीपुरुष ताआनंदस्वरूपआत्माकूं प्रणवमंत्रकरिकैचिंतनकरे॥हेशौनक॥ इसप्रकार जो अधिकारीपुरुष ताआनंदस्वरूपआत्माकूं प्रणवमंत्रकरिकै चिंतनकरे है ॥ सोअधिकारीपुरुष ताध्यानरूपदीपककेबलतैं प्रतिबंधकपापरूपअंधकारतैं रहितहोइकै ताब्रह्मज्ञान कूंप्राप्तहोवै ॥ ताब्रह्मज्ञानकरिकै सोविद्वान्पुरुष याअविद्यारूपसमुद्रके मोक्षरूपपरंपराकूंप्राप्तहोवै है ॥हेशौनक॥ जैसे ताआत्माकेध्यान करिकैप्रतिबंधकपापकीनिवृत्तिहोवै है तैसे ब्रह्मवेत्तागुरुकेआशीर्वादकरिकै तथापुनःपुनःउपदेशकरिकेभी तिनपापकर्मरूपप्रतिबंधकों

॥ १६ ॥

कीनिवृत्तिहोवै है ॥ याकारणतैंही महात्मादयालुगुरु आपणेशिष्योंकेप्रति हेशिष्यो तुमारेकूं आत्मज्ञानकीप्राप्तिविषे सर्वविघ्नोंकीनिवृत्ति होवै याप्रकारकाआशीर्वाददैके वारंवार आत्माकाउपदेशकरे हैं॥ यातैं याअधिकारीपुरुषोंनैं आत्मज्ञानकीप्राप्तिवासते ब्रह्मवेत्तागुरुकीप्र सन्नता अवश्यकरिकैसंपादनकरणी ॥ अब तापरमात्मादेवकेस्वरूपकावर्णनकरे हैं ॥हेशौनक॥ जोपरमात्मादेव यासर्वजगत्कूं सामान्य रूपकरिकै तथाविशेषरूपकरिकै जाने है ॥ और जिसपरमात्मादेवकी यहजगत्कीउत्पत्तिस्थितिलयरूपविभूति सर्व लोकविषेप्रसिद्धहै सोपरमात्मादेव याब्रह्मपुरविषेस्थितदिव्यव्योमविषेस्थितहै॥हेशौनक॥जैसे उत्पन्नहुआघट आकाशकरिकैपूर्णहोवै है॥तैसे उत्पन्नहुआ यह शरीर ब्रह्मकरिकैपूर्णहोवै है॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती याशरीरकूं ब्रह्मपुर यानामकरिकैकथनकरे है ॥ताब्रह्मपुरविषेस्थित जोदिव्यव्योमहै सोदिव्यव्योम स्वयंप्रकाशआत्मारूपही है ॥ तिसदिव्यव्योमकूं श्रुतिविषे दहराकाश यानामकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ ऐसेआपणेस्वरूप विषेहीसोपरमात्मादेवस्थितहै ॥ तहांश्रुति ॥ स भूमाकुत्रप्रतिष्ठितःस्वेमहिम्नि ॥अर्थयह॥ सोभूमाआत्मा किसविषेस्थितहै याप्रकारकी जिज्ञासाकेहुएसोभूमाआत्मा आपणेस्वरूपभूतमहिमाविषेस्थितहै यहउत्तर श्रुतिनैं कथनकऱ्याहै॥अब अज्ञातआत्माका तथा ज्ञातआत्मा कास्वभावकवर्णनकरे हैं ॥हेशौनक॥ जिसकालविषे यहआनंदस्वरूपआत्मा अज्ञातरहे है॥ तिसकालविषे यहआत्मादेव मनकेतादात्म्यअ ध्यासतैं मनोमयसंज्ञाकूंप्राप्तहुआ प्राणोंकूं तथादेहकूं तथाइंद्रियोंकूं आपणेआपणेव्यापारोंविषेप्रवृत्तकरे है॥तथा जबपर्यंत ब्रह्मात्मज्ञानकी प्राप्तिनहींहोवै है ॥ तबपर्यंत सोमनोमयआत्मा सर्वजगत्केबीजभूतमूलाज्ञान विषे तादात्म्यअध्यासकरिकैस्थितहोवै है ॥और जिसका लविषेब्रह्मचर्यादिकसाधनसंपन्न अधिकारीजन याआत्मादेवके वास्तवस्वरूपकूं जाने हैं॥ तिसकालविषे तेअधिकारीजन याआत्मादेवकूं परमानंदस्वरूपकरिकैदेखे हैं ॥ तथा जन्ममरणतैंआदिलैकेजितनैंकीसंसारसंबंधीधर्म है ॥ तिनसर्वधर्मोंतैंरहित देखे हैं ॥ तथा ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय इत्यादिकत्रिपुटीरूपद्वैततैंरहित देखे हैं ॥ अब ताआत्मज्ञानकेफलकावर्णनकरे हैं ॥ हेशौनक ॥ जोअधिकारीपुरुष तापरमात्मकूं आपणाआत्मारूपकरिकैजाने है ॥ तिसअधिकारीपुरुषकूं याप्रकारकेफलकीप्राप्ति श्रुतिनैं कथनकरी है ॥ तहांश्रुति ॥

भिद्यतेहृदयग्रंथि श्छिद्यंतेसर्वसंशयाः॥ क्षीयंतेचास्यकर्माणि तस्मिन्दृष्टेपरावरे ॥अर्थयह ॥ कामक्रोधादिकोंकाकारणरूप जोआत्मअ
नात्माकाअध्यासहै ॥ जोअध्यास याजीवोंकूं सर्वदुःखोंकीप्राप्तिकरे है ॥ ताअध्यासकानाम हृदयग्रंथिहै ॥ और त्वंपदार्थजीवविषे संसा
रीपणा तथाअल्पज्ञता देखिकै और तत्पदार्थब्रह्मविषे असंसारीपणा तथासर्वज्ञता देखिकै यहजीव ब्रह्मरूपहै अथवाब्रह्मतैंभिन्नहै इत्या
दिक जे आत्माविषयकअसंभावनाहैं ॥ तिनोंकानाम संशयहै ॥ और जिनपुण्यपापकर्मोनैं यहशरीरदिया है ॥ तिनप्रारब्धकर्मोकूंछो
डिकै ॥ जितनैंकीसंचितक्रियमाणरूप पुण्यपापकर्म हैं ॥ जिनपुण्यपापकर्मोंकरिकै यहजीव अनेकशरीरोंकूंप्राप्तहोवै है॥ तिनसंचिताक्रि
यमाणकर्मोंकानाम कर्म है ॥ तेसर्वकर्म तथातेसर्वहृदयग्रंथि तथातेसर्वसंशय सर्वात्मारूपब्रह्मकेसाक्षात्कारहुए निवृत्तहोइजावै हैं ॥ १ ॥
हेशौनक।जिसआत्मसाक्षात्कारकरिकै संशयकर्मादिकोंकीनिवृत्तिहोवैहै।तिसीआत्मसाक्षात्कारकूं विद्वान्पुरुष श्रवणादिकसाधनोंकाफल
रूपकहे हैं॥जिसआत्मासाक्षात्कारकेहुए यहसर्वदुःखकेकरणेहारीअविद्या निवृत्तहोइजावै है॥हेशौनक॥जिसआत्माकेसाक्षात्कारतैं यहकार्य
सहितअविद्यानिवृत्तहोवैहै॥सोआत्मादेव कैसाहै॥अन्नमय प्राणमय मनोमय विज्ञानमय आनंदमय यापंचकोशोंविषे जोअंत्यकाआनंदमय
कोशहै ॥ ताआनंदमयकोशविषे पुच्छप्रतिष्ठाभूतब्रह्मरूपकरिकैस्थितहै॥और सोआत्मादेव आवरणकरणेहारी मायारूपरजतैंरहितहै ॥
याकारणतैं श्रुतिभगवती ताआत्मादेवकूं विरज यानामकरिकैकथनकरे है ॥ और सोपरमात्मादेव तामायाकेकार्यरूपकलावोंतैंरहितहै॥
याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं निष्कल यानामकरिकैकथनकरे है ॥ और सोपरमात्मादेव स्वप्रकाशरूपहै ॥ तथा लोकप्र
सिद्धसूर्यचंद्रमादिकज्योतियोंकाभी प्रकाशकरणेहाराहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं ज्योतिषांज्योति यानामकरिकैक
थनकरे है ॥ और सोपरमात्मादेव अद्वितीयतारूपकरिकै परमआनंदस्वरूपहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती तापरमात्मादेवकूं शुभ्र याना
मकरिकैकथनकरे है ॥ अब ताआत्मादेवविषे स्वप्रकाशताकावर्णनकरे हैं ॥ हेशौनक ॥ शास्त्रवेत्ताविद्वान्पुरुष ताआत्मादेवविषे याप्र
कार स्वप्रकाशता वर्णनकरे हैं ॥ यालोकविषेप्रसिद्ध जे सूर्य चंद्रमा तारागण विद्युत् अग्नि यहबाह्यतेजसपदार्थ हैं ॥ तथा अंतर

स्थितजे मनबुद्धिआदिकतेजसपदार्थ हैं ॥ तिनतेजसपदार्थोंकरिकैसहकृतहुआ जोतत्व स्फुरणहोवैनहीं ॥ किंतु जोतत्व तिनतेजसपदा
र्थोंकीसहायतातैंविना स्वतःहीस्फुरणहोवैहै ॥ तथा जिसतत्वकेप्रकाशकूंअनुसरणकरिकैही यहजडचेतनरूपसर्वजगत् प्रकाशमानहो
वैहै ॥ तिसआत्मातत्वकूं विद्वान्पुरुष स्वप्रकाशकहैहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जैसे यालोकविषे ॥ तातंगच्छंतमनुगच्छतिपुत्रः ॥ अर्थ
यह ॥ गमनकरतेहुएपिताकूं अनुसरणकरिकैपश्चात् पुत्र गमनकरेहै ॥ यावाक्यतैं पिताकीगमनरूपक्रियातैं पुत्रकीगमनरूपक्रिया भिन्न
प्रतीतहोवैहै ॥ तैसे ॥ तमेवभातमनुभातिसर्वं ॥ याश्रुतिवचनतैंभी ताआत्माकेप्रकाशतैं याजगत्काप्रकाश भिन्नहीसिद्धहोवैगा॥समा
धान ॥ हेशौनक॥जैसे पिताकीगमनरूपक्रियातैं पुत्रकीगमनरूपक्रिया भिन्नहोवैहै॥तैसे आत्माकेप्रकाशतैं याजगत्काप्रकाशभिन्नहोवै
है ॥ याअर्थविषे ताश्रुतिका तात्पर्यनहीं है ॥ किंतु ताश्रुतिका यहतात्पर्य है ॥ जैसे तपाहुआलोह अग्निकरिकैप्रकाशितहुआही प्रका
शमानहोवैहै ॥ ताअग्नितैंविना स्वतःप्रकाशमानहोवैनहीं ॥ तैसे तापरमात्मादेवकेप्रकाशकरिकै भासमानहुआयहजगत् प्रकाशमानहो
वे है ॥ताआत्मादेवकेप्रकाशतैंविना स्वतः सोजगत् ॥प्रकाशमानहोवैनहीं इसप्रकार आपणेप्रकाशकरिकै सर्वजगत्कूंप्रकाशमानकरणे
हारा जोआनंदस्वरूपआत्माहै॥ताआत्मादेवकूं विद्वान्पुरुष स्वप्रकाश यानामकरिकैकथनकरेहैं॥यहहीस्वप्रकाशआत्मा सूर्यादिकबाह्य
ज्योतियोंका तथाबुद्धिआदिकअंतर्ज्योतियोंका प्रकाशकहै ॥अब तास्वप्रकाशआत्माकी सर्वात्मरूपतावर्णनकरेहैं॥हेशौनक॥सोस्वप्र
काशज्योतिब्रह्म पूर्व पश्चिम दक्षिण उत्तर अधःऊर्ध्वं इत्यादिकसर्वदिशावोंविषेव्याप्तहै ॥ तथा सोब्रह्मही पूर्वादिकदिशासहित सर्वविश्वरू
पहै ॥ तथा सोपरब्रह्मही भूतभविष्यतवर्त्तमान यातीनकालरूपहै ॥तथा सोपरब्रह्मही स्थूलसूक्ष्मकारणात्मकसर्वजगत्रूपहै ॥ तापरब्रह्म
तैंभिन्न किंचित्मात्रभीवस्तुनहीं है ॥अब जीवब्रह्मकाअभेदरूपमहावाक्यार्थकेनिरूपणकरणेवासतै प्रथम तत्त्वंपदार्थोंकाशोधन निरू
पणकरेहैं॥हेशौनक ॥ यहअधिकारीपुरुष जभी तिनश्रुतिवचनोंतैं तामहावाक्यार्थरूप ब्रह्मात्माकूंनहींजानिसकै ॥तभी ताअधिकारीशि
ष्यकेप्रति सोब्रह्मवेत्तागुरु याप्रकार तत्त्वंपदार्थकाकथनकरै॥शरीररूपअश्वत्थकेवृक्षविषे जीवईश्वररूपदोपक्षीरहैहैं॥कैसेहैंतेदोनोंपक्षी ॥

सर्वदा एकट्ठेरहेहैं ॥ तथा सत्चित्आनंदरूपताकरिकै समानस्वभाववाले हैं ॥ तथा याशरीररूपवृक्षकेसाथ तादात्म्यभावकूंप्राप्तहुएहैं॥ तिनदोनोंपक्षियोंविषे एकपक्षीतौ याशरीररूपवृक्षकेपुण्यपापकर्मरूपपुष्पोंतैं उत्पन्नहुए सुखदुःखरूपफलकूंभोगताहुआ जीवसंज्ञाकूंप्राप्त होवे है ॥ सोभोक्ताजीव त्वंशब्दकाअर्थरूपहै ॥ और दूसरापक्षीतौ तासुखदुःखरूपकर्मकेफलकूंनहींभोगताहुआ केवल ताकर्मकेफलकूं प्रकाशहीकरेहै ॥ याकारणतैं सोअभोक्तापक्षी ईश्वरसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ सोसर्वत्रव्यापकअद्वितीयईश्वर तत्पदकाअर्थरूपहै॥ हेशौनक ॥ जिसशरीररूपवृक्षविषे सो ईश्वररूपपक्षी निवासकरेहै ॥ तिसीशरीररूपवृक्षविषे यहजीवरूपपक्षीभी निवासकरेहै ॥ परंतु यहजीवरूप पक्षी आपणेकूं पुण्यपापकर्मोंकाकर्तामानिकै तथातिनपुण्यपापकर्मोंके फलकाभोक्तामानिकै दीनताकूंप्राप्तहुआ सर्वदा शोककूंप्राप्तहो वैहै ॥ और सो ईश्वररूपपक्षी ताकर्तृत्वभोक्तृत्वधर्म नहीं है ॥ तैसे तात्वंपदार्थजीवविषेभी वाकूंप्राप्तहोवैनहीं॥ हेशौनक॥जैसे ता तत्पदार्थरूपपरमात्मादेवविषे कर्तृत्वभोक्तृत्वधर्म नहीं है॥ तैसे तात्वंपदार्थजीवविषेभी वास्तवतैं कर्तृत्वभोक्तृत्वधर्म नहीं है ॥ किंतु अंतःकरणादिकउपाधियोंकेसंबंधतैंही याजीवविषे सोकर्तृत्वभोक्तृत्वधर्म प्रतीतहोवै है।यातैं जिसकालविषे यहत्वंपदार्थरूपजीवात्मा ता तत्पदार्थरूपईश्वरकूं आपणाआत्मारूपकरिकैदेखेहै ॥तिसकालविषे यहजीवात्मा ता परमात्मादेवकेअद्वितीयतारूपमहिमाकूंप्राप्तहोवे है॥ कैसा हेसोतत्पदार्थरूपपरमात्मादेव ॥वास्तवतैं यात्वंपदार्थजीवतैंअभिन्नहुआभी उपाधिकेसंबंधतैं भिन्नहोइकैप्रतीतहोवैहै॥ तथा आनंदकासमुद्रहै ॥ याकारणतैंही सोपरमात्मादेव याजीवोंके परमप्रेमकाविषयहै ॥ ऐसेपरमात्मादेवके अद्वितीयतारूपमहिमाकूंप्राप्तहोइकै यहजीवात्मा सर्वदुःखतैंरहितहोवै है॥हे शौनक ॥ यहत्वंपदार्थरूपजीवात्मा जिसकालविषे तातत्पदार्थरूपस्वयंज्योतिपरमात्मादेवकूं आपणा आत्मारूपकरिकैदेखेहै॥तिसकालविषे यहजीवात्मा नामरूपतैंरहितहुआ तथाविद्वान्भावकूंप्राप्तहुआ तापरमात्मादेवकेअद्वितीयभावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ हेशौनक॥यहपरमात्मादेव प्राणउपहितहिरण्यगर्भद्वारा सर्वव्यष्टिभूतोंविषेव्यापकहै॥तथा जीव ईश्वर जगत् इत्यादिकभेदविशिष्टतारूपकरिकै कल्पितहुएकीन्याईं प्रतीतहोवै है॥ ऐसेशुद्धपरमात्मादेवकूं यहअधिकारीपुरुष जभी आपणाआत्मारूपकरिकैजानेहै॥ ॥ १७ ॥

तभीयहअधिकारीपुरुष अतिवादी यासंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै॥ हेशौनक ॥ताविद्वान्पुरुषविषे जोअतिवादीपणाहै॥ताअतिवादीपणेका यहस्वरूप वेदवेत्तापुरुष कथनकरे हैं ॥ जैसे बालक नानाप्रकारकीक्रीडाकरे है॥तैसे यहविद्वान्पुरुष ताअद्वितीयआत्माविषे सर्वदा क्रीडाकरेहै ॥ और जैसे युवानपुरुष आपणीयुवानस्त्रीविषेही रतिकरे है ॥ तैसे यहविद्वान्पुरुष ताअद्वितीयआत्माविषेही रतिकरे है॥और जैसे यज्ञकर्त्तापुरुष नानाप्रकारकीक्रियाकरे है ॥ तैसे याविद्वान्पुरुषकी नानाप्रकारकीक्रियाभी ताअद्वितीयआत्माविषेहीहोवै है॥इसप्रकार जोविद्वान्पुरुष सर्वदा आत्माकाहीचिंतनकरे है॥तिसविद्वान्पुरुषकूं वेदवेत्तापुरुष अतिवादीयानामकरिकैकथनकरे हैं॥सोअतिवादीविद्वान् सर्वब्रह्मवेत्तापुरुषोंविषेश्रेष्ठ है॥ अब जिसब्रह्मविद्याकरिकै सोअतिवादीपणा प्राप्तहोवै है॥ताब्रह्मविद्याकेसाधनोंकानिरूपणकरे हैं॥हे शौनक ॥ सत्य तप ब्रह्मचर्य यातीनसाधनोंसहित जोपूर्वउक्त तत्त्वंपदार्थकाशोधन है ॥तातत्त्वंपदार्थकेशोधनरूपज्ञानकरिकैही याअधिकारीपुरुषोंकूं सोमहावाक्यका अर्थरूपआत्मादेव प्राप्तहोवै है ॥ जिसआत्मादेवकूं कामक्रोधादिकदोषोंतैं रहितसंन्यासी सर्वदा आपणेचित्तविषेदेखे है ॥ तात्पर्य यह ॥ जैसे सत्यादिकसाधनोंसहित तत्त्वंपदार्थकाशोधन ताआत्मज्ञानविषेकारण है ॥ तैसे सोसंन्यासभी ताआत्मज्ञानविषे कारणहै ॥ इहां मिथ्यावचनके परित्यागकरणेकानाम सत्य है॥और मनसहितश्रोत्रादिकइंद्रियोंकीएकाग्रताका नाम तप है ॥ और उपस्थइंद्रियके संयमकानाम ब्रह्मचर्य है ॥ अब तासत्यकी उत्कृष्टता वर्णनकरे हैं ॥ हेशौनक ॥ सोमिथ्या वचनकापरित्यागरूपजोसत्यहै ॥ सोसत्य ताब्रह्मज्ञानकाकारणहोणेतैं सर्वसाधनोंतैंउत्कृष्टहै ॥ यातैं सोसत्य इसभूमिलोककेसुखकाभीकारण है ॥ तथा स्वर्गलोकके सुखकाभी कारणहै ॥ तथा ब्रह्मलोकके सुखकाभीकारणहै ॥ याकेविषेकोईआश्चर्यनहीं है॥अब ताआत्माकेदुर्विज्ञेयताका निरूपणकरे हैं ॥ हेशौनक ॥ जोसत्यब्रह्म याअधिकारी पुरुषोंकूं महावाक्यजन्यज्ञान करिकै प्राप्तहोवे है ॥ सो सत्यब्रह्म आकाशादिक महान्पदार्थोंकाभी आधाररूप है ॥ यातैं सोसत्यब्रह्म महान्पदार्थोंतैंभी अत्यंतमहान्है ॥ और सोपरब्रह्म परमाणुआदिकसूक्ष्मपदार्थोंकेभी अतंरव्यापकहै ॥ यातैं सोपरब्रह्म सूक्ष्मपदार्थोंतैंभी अत्यंतसूक्ष्म है ॥ और सोपरब्रह्म स्वप्रकाशतारूप

करिके सर्वलोकोंतैंविलक्षणहै ॥ याकारणतैं सोपरब्रह्म दिव्यरूपहै ॥ और सोपरब्रह्म मनकरिकेभीचिंतनकऱ्याजावैनहीं॥याकारणतैं सोप
रब्रह्म अचिंत्यरूपहै ॥ और सोपरब्रह्म बहिर्मुखपुरुषोंकूं अत्यंतदुर्विज्ञेयहै ॥यातैं सोपरब्रह्म दूरपदार्थोंतैंभी अत्यंतदूरहै ॥ और सोपरब्रह्म
साधनसंपन्नअंतर्मुखपुरुषोंकूं अत्यंतसुलभहै ॥ यातैं सोपरब्रह्म अत्यंतसमीपपदार्थोंतैंभी अत्यंतसमीप है ॥ और तिसब्रह्मविषे मनस
हितनेत्रादिकइंद्रिय प्रकाशकरिसकतेनहीं ॥ यातैं सोपरब्रह्म सत्चित्रूपकरिकेसर्वत्रभासमानहुआभी प्रत्यक्अद्वितीयरूपकरिकै लोक
विषे प्रतीतहोवैनहीं ॥ और सोपरब्रह्म सर्वजीवोंकेबुद्धिरूपगुहाविषेस्थितहै ॥ तथा सर्वपदार्थोंका प्रकाशकहै ॥ ऐसापरब्रह्म एकमहावा
क्यजन्यब्रह्मात्मज्ञानतैंविना दूसरेकिसीउपायकरिके प्राप्तहोवैनहीं॥किंतु एकमहावाक्यजन्यब्रह्मात्मज्ञानकरिकैही याअधिकारीपुरुषोंकूं
आपणाआत्मारूपकरिकैप्राप्तहोवै है ॥ केसाहैसोपरमात्मादेव ॥ सर्वइंद्रियोंकूं धारणकरणेहाराजोप्राण है॥सोप्राण चित्तकेसहित जिसप
रमात्मादेवविषेस्थितहै ॥ ऐसासर्वप्राणइंद्रियादिकोंकूं आपणेआपणेकार्यविषे प्रेरणाकरणेहारा सोपरमात्मादेव यादेहधारीजीवोंकूं जानणे
विषेसुगमनहीं है ॥ किंतु अत्यंतदुर्लभहै ॥हेशौनक॥ यहआत्मादेव यद्यपि दुर्लभहै॥तथापि ताआत्मादेवकेप्राप्तिका एकउपाय शास्त्र
वेत्तापुरुषोंनैं कथनकऱ्याहै ॥ सोउपाययहहै ॥ जिसअधिकारीपुरुषका चित्त रागद्वेषादिकदोषोंतैंरहितहै॥तथा वेदांतशास्त्रकेसंस्कारोंक
रिकेयुक्तहै ॥ ऐसेशुद्धचित्तकरिकै यहश्रवणादिकसाधनसंपन्नअधिकारीपुरुष याआनंदस्वरूपआत्माकूं साक्षात्कारकरैहै ॥ तहांश्रुति ॥
एषोऽणुरात्माचेतसावेदितव्यः ॥ अर्थयह ॥ यहदुर्विज्ञेयआत्मा शुद्धचित्तकरिकैजानणेयोग्यहै ॥ हेशौनक ॥ जोशुद्धचित्तवालापुरुष आ
पणेआत्माकूं ब्रह्मरूपकरिके साक्षात्कारकरे है ॥ सोविद्वान्पुरुष ब्रह्मरूपहीहोवै है ॥ यातैं सोब्रह्मरूपविद्वान्पुरुष यासर्वजगत्कीउत्पत्ति
स्थितिलयकरणेविषेभी समर्थहोवै है॥और सोब्रह्मरूपविद्वान्पुरुषही यासर्वजीवोंकेप्रति पुण्यपापकर्मके सुखदुःखरूपफलकादेणेहाराहै॥
तथा याजीवोंकूं प्राप्तहोणेहारेजितनैंकीभोगहैं॥तेसर्वभोग ताविद्वान्पुरुषकीआज्ञाकरिकैही वर्त्तते हैं॥तथा याजीवोंकेसर्वप्राणबुद्धिइंद्रिया
दिकभी ताविद्वान्पुरुषकी आज्ञाकरिकैही वर्त्तते हैं ॥ और सोब्रह्मरूपविद्वान्पुरुष याजीवोंकूं शापदेणेविषे तथाअनुग्रहणकरणेविषेभी

सर्वदा समर्थ है ॥ ऐसेब्रह्मवेत्तापुरुषके पूजनअर्चनकरणेतैं यहपुरुषपुण्यवान्होइकेसुखकूंप्राप्तहोवैहै ॥ औरताब्रह्मवेत्ताकीअवज्ञाकरिके
पापवान्हुएयहपुरुषसर्वदा दुःखकूंप्राप्तहोवै है ॥ यातैंजिसपुरुषकूं पुत्रधनादिकपदार्थरूपऐश्वर्यकेप्राप्तिकीभीइच्छाहोवै ॥ सोसकामपुरुष
भी ताब्रह्मवेत्तापुरुषका सर्वदापूजनअर्चनकरे ॥ ताब्रह्मवेत्तापुरुषकीअवज्ञाकूं यहबुद्धिमान्पुरुष मनकरिकैभीनहींकरै ॥ तथा स्वप्न
विषेभी ताअवज्ञाकूंनहींकरै ॥ ऐसेश्रद्धावान्पुरुषकूं मनवांछितपदार्थोंकीप्राप्तिहोवै है ॥ तहांश्रुति ॥ आत्मज्ञंह्यऽर्चयेद्भूतिकामः ॥ अर्थ
यह ॥ धनादिकऐश्वर्यताकीकामनावालापुरुष ब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुषका पूजनअर्चनकरै॥ तापूजनअर्चनकरिके तिसपुरुषकूं सर्वमनवांछित
पदार्थोंकीप्राप्तिहोवै है ॥ हेशौनक ॥ जेविवेकीपुरुष निष्कामहोइकै ताब्रह्मवेत्तापुरुषकासेवनकरे हैं ॥ तेविवेकीपुरुष सर्वदुःखोंतैंरहितपर
ब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवै हैं॥काहेतैं सोब्रह्मवेत्तापुरुष याशरीरविषेस्थितहुआभी ताआनंदस्वरूपब्रह्मकूंहीं साक्षात् आत्मारूपकरिकैजाने है ॥
तथा तापरब्रह्मकीही अभेदरूपकरिकैउपासनाकरे है ॥ तथा तापरब्रह्मविषेही अभेदरूपकरिकेस्थितहोवै है॥ ऐसेब्रह्मरूपब्रह्मवेत्तापुरुषकी
जेअधिकारीजन श्रद्धापूर्वक भक्तिकरे हैं ॥ तेभक्तजनभी ताब्रह्मवेत्तापुरुषकेअनुग्रहतैं ब्रह्मवेत्ताहोइकै तिसब्रह्मवेत्तापुरुषके समानताकूं
प्राप्तहोवै हैं ॥ यातैंताब्रह्मभावरूपमोक्षकीप्राप्तिवासतै यहअधिकारीपुरुषोंनैं निष्कामहोइकै ताब्रह्मवेत्तापुरुषकासेवनकरणा॥ अब सकाम
ताकीनिंदाकरिके निष्कामताकीश्रेष्ठता वर्णनकरे हैं ॥ हेशौनक॥ जेसकामपुरुष स्त्रीपुत्रधनादिकविषयोंकेप्राप्तिकीकामनाकरे हैं ॥ ते
सकामपुरुष नानाप्रकारकेशरीरोंकूंग्रहणकरिके तिसतिसशरीरविषे अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ यातैं यहजान्याजावै है॥ तेकाम
नाहीं सर्वदुःखोंकाकारणहैं ॥ हेशौनक॥जेविवेकीपुरुष तिनसर्वकामनावोंकापरित्यागकरिके ब्रह्मात्मज्ञानकूंप्राप्तहोवैहैं॥ तेनिष्कामपुरुष
इसलोकविषे तथापरलोकविषे किंचित्मात्रभी दुःखकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं यहनिष्कामताही सर्वसुखकेप्राप्तिकाकारण है॥ ऐसीनिष्का
मताकूं याअधिकारीपुरुषनैं अवश्यकरिकैसंपादनकरणा॥अब ताआत्मज्ञानकेप्राप्तिकाप्रधानसाधन निरूपणकरैहैं ॥हेशौनक॥यहआनं
दस्वरूपआत्मादेवयाअधिकारीपुरुषोंकूं ब्रह्मवेत्तागुरुकेअनुग्रहतैंविना केवल वेदोंकेअध्यापनकरावणेकरिकैभी प्राप्तहोवैनहीं॥ तथा तिनवे

दोंके अध्ययनकारिकेभी प्राप्तहोवेनहीं ॥ तथा तीक्ष्णबुद्धिकारिकेभी प्राप्तहोवेनहीं ॥ किंतु केवल ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतैंहीं सोआत्मादेव याअधिकारीपुरुषोंकूं प्राप्तहोवै है ॥ हेशौनक ॥ ब्रह्मात्मज्ञानकारिकै ब्रह्मरूपताकूंप्राप्तभयाजोगुरुहै ॥ सोब्रह्मवेत्तागुरु जिसाशिष्यऊपर अनुग्रहकरे है ॥ तिसाशिष्यऊपर सोपरब्रह्मभी अनुग्रहकरे है ॥ इहां ताशिष्यकेचित्तविषे आपणेअद्वितीयस्वरूपकाप्रादुर्भावकरणा यहही तापरब्रह्मकाअनुग्रहहै ॥ यातैं याअधिकारीपुरुषनैं ताब्रह्मात्मज्ञानकीप्राप्तिवास्तै ताब्रह्मवेत्तागुरुकेअनुग्रहकूंअवश्यकरिकैसंपादनकरणा ॥ तहांश्रुति ॥ नायमात्माप्रवचनेनलभ्यो नमेधयानबहुनाश्रुतेन ॥ यमेवैषवृणुतेतेनलभ्यस्तस्यैषआत्मावृणुतेतनस्वां ॥ याश्रुतिका यहपूर्वउक्तअर्थहीजामिलेणा ॥ अब ताआत्मज्ञानकीप्राप्तिविषे सहकारीसाधनोंका निरूपणकरे हैं ॥ हेशौनक ॥ कामक्रोधादिकशत्रुवोंकरिकै नहींदबायाहुआजो मनइंद्रियादिकोंकाधैर्यहै ॥ ताधैर्यकानाम बलहै ॥ ताबलतैंरहितपुरुषकूंभी यहआत्मादेव प्राप्तहोइसकैनहीं ॥ किंतु ताबलवान्पुरुषकूंहीं यहआत्मादेव प्राप्तहोवै है ॥ हेशौनक ॥ ताधैर्यरूपबलतैंरहितपुरुषोंकूं केवल आत्माकेप्राप्तिकाअभाव नहींहोवै है॥ किंतु तेधैर्यरूपबलतैंरहितपुरुष इसलोकविषे तथापरलोकविषे दुःखकूंहीं प्राप्तहोवै हैं ॥ यातैं याअधिकारीपुरुषोंनैं ताधैर्यरूपबलकूंभी अवश्यकरिकैसंपादनकरणा ॥हेशौनक॥ जैसे ताबलकेअभावतैंयहआत्मादेव प्राप्तहोवैनहीं तैसे प्रमादतैंभी यहआत्मादेव प्राप्तहोवैनहीं॥ तथा किसीआश्रमतैंरहितपाखंडरूपतपतैंभी यहआत्मादेव प्राप्तहोवैनहीं ॥ इहां विषयोंकेसमीपप्राप्तहुए जोधैर्यकानाशहोइजाणाहै याकानाम प्रमादहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ याअधिकारीपुरुषोंकूं अप्रमादयुक्तधैर्यतैं तथास्वाश्रमधर्मसहकृततपतैं ब्रह्मात्मज्ञानकी प्राप्तिहोवै है॥ताब्रह्मात्मज्ञानकरिकै याअधिकारीपुरुषोंकूं आनंदस्वरूपआत्माकीप्राप्तिहोवै है॥अब ताब्रह्मात्मज्ञानकै जीवन्मुक्तिआदिक फलोंकीव्यवस्थाका निरूपणकरेहैं॥हेशौनक ॥ पूर्व जेजेमहात्मामुनिजन याआनंदस्वरूपप्रत्यक्आत्माकूं साक्षात्कारकरिकै ताआत्मा स्वरूपआनंदविषे मग्नहोतेभये हैं॥तेमुनिजनताआत्मज्ञानकालविषेही ब्रह्मभावकूंप्राप्तहोतेभये हैं॥ताब्रह्मभावकूंप्राप्तहोइकैतेमुनिजन पुनः यासंसारविषेप्राप्तहोवैनहीं॥और जिसपरमहंससंन्यासियोंकूं ब्रह्मलोककेप्राप्तिकीइच्छारूप प्रतिबंधकेवशतैं इसजन्मविषे ताब्रह्मसाक्षात्का

रकीप्राप्ति नहींहोवैहै ॥ तिनसंन्यासियोंकूंभी ब्रह्मलोकविषेजाइकै सोब्रह्मज्ञान अवश्यकरिकै प्राप्तहोवैहै ॥ हेशौनक ॥ जिनसंन्यासियोंनैं इसजन्मविषे महावाक्यरूपवेदांतवचनोंकेअर्थका भलीप्रकारसोंविचारकऱ्याहै ॥ तथा जिनसंन्यासियोंकाअंतःकरण रागद्वेषादिक दोषोंतैंरहितहोइकैशुद्धहुआहै ॥ ऐसेसंन्यासीही ताब्रह्मलोककूंप्राप्तहोइकै ताहिरण्यगर्भरूपब्रह्माकेमरणकालविषे ताब्रह्माकीन्याईंअद्वितीयब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ हेशौनक ॥ इसलोकविषे अथवा ब्रह्मलोकविषे अथवा किसीअन्यलोकविषे यहब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुष जभी प्रारब्धकर्मकूंभोगिकै विदेहमोक्षकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभी याविद्वान्पुरुषके देवदत्तादिकनामोंकूंछोडिकै दूसरेप्राणादिकपंचदशकला आपणेआपणेकारणोंविषेलयकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तेपंचदशकलायहहैं ॥ श्लोक ॥ प्राणाश्रद्धाखादिभूत पंचकंचेंद्रियंमनः ॥ अन्नंवीर्यंतपोमंत्राः कर्मलोकाश्चताः कलाः ॥ अर्थयह ॥ प्राण १ श्रद्धा २ आकाश ३ वायु ४ तेज ५ जल ६ पृथिवी ७ वाकादिकइंद्रिय ८ मन ९ अन्न१० वीर्य ११ तप १२ मंत्र १३ कर्म १४ लोक १५ यहपंचदशकलाहोवैहैं ॥ १ ॥ और ताब्रह्मवेत्तापुरुषकेजेअध्यात्मरूपवाकादिकइंद्रियोंकेअग्निआदिकदेवताहैं ॥ तेअग्निआदिकदेवता आपणेआपणेअधिदैवरूपकूंप्राप्तहोवैहै ॥ औरताब्रह्मवेत्तापुरुषकेशरीराविषेस्थित जो बुद्धिविशिष्टविज्ञानमयजीवहै ॥ सोविज्ञानमयजीवशुद्धपरमात्मादेवाविषेलयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार सर्वकार्यकारणरूपउपाधिकेलयहुएतैंअनंतर सोविद्वान्पुरुष एकअद्वितीयब्रह्मरूपकरिकैस्थितहोवैहै ॥ हेशौनक ॥ जैसे यालोकविषे पूर्वादिकसर्वदिशावोंविषे सहस्रनदियांविद्यमानहै ॥ तेसर्वनदियां समुद्रकूंप्राप्तहोइकै आपणेनामरूपकापरित्यागकरिदेवैहै ॥ तैसे यहविज्ञानमयपुरुषभी आपणेनामरूपकापरित्यागकरिकै ताअद्वितीयब्रह्मविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहै॥हेशौनक॥ जैसे ताब्रह्मवेत्तापुरुषके प्राणादिकपंचदशकलावोंकालयहोवैहै ॥ तैसे तानामरूपषोडशवींकलाकाभीलयहोवैं है ॥ तथापिश्रुतिविषेजो नामकूंछोडिकैप्राणादिकपंचदशकलावोंकालयकथनकऱ्याहै ॥ ताकायहअभिप्रायहै ॥ यद्यपिशुकनामदेवादिकमहान्पुरुष पूर्वमुक्तहोइगयेहैं ॥ तथापि तिनमुक्तपुरुषोंके शुकनामदेवादिकनामोंकूं अबपर्यंत लोकवाणीकारिकैउच्चारणकरेहैं ॥ यातैंतेशुकनामदेवादिकनाम नाशकूंनहींप्राप्तहोवैहैं ॥ याप्रकारकी जालोकोंकीबुद्धि

है ॥ तालौकिकबुद्धिकूंअनुसरणकरिकै ताश्रुतिनैं प्राणादिकपंचदशकलावोंकाहीं लयकथनकऱ्याहै ॥ नामकालय कथनकऱ्यानहीं ॥ और हेशौनक ॥ जैसेपूर्वलेब्रह्मवेत्तापुरुष ताब्रह्मज्ञानकेबलतैं ताअद्वितीयब्रह्मभावकूंप्राप्तहोतेभये हैं ॥ तैसे इदानींकालविषेभीजेअधिकारीपुरुष गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं ताब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपकरिकैसाक्षात्कारकरे है॥ तेअधिकारीपुरुषभीताब्रह्मज्ञानकेप्रभावतैं ताअद्वितीयब्रह्मभावकूंहीं प्राप्तहोवै हैं ॥ हेशौनक ॥ जिसपुरुषनैंताअद्वितीयब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपकरिकैजान्याहै ॥ तिसब्रह्मवेत्तापुरुषके विद्यामयवंशविषेस्थित जेशिष्यप्रशिष्यादिकहैं तथाजन्ममयवंश विषेस्थितजेपुत्रपौत्रादिकहैं ॥ तेशिष्यादिक तथापुत्रादिक ब्रह्मज्ञानतैंरहितहोतेनहीं ॥ किंतुतेसर्व ब्रह्मज्ञाननिष्ठावालेहीहोवै हैं॥ तहांश्रुति ॥ नाऽस्याऽब्रह्मवित्कुलेभवति॥अर्थयह॥ याब्रह्मवेत्ताविद्वानपुरुषकेकुलविषेकोईपुत्र अथवाकोईशिष्यब्रह्मज्ञानतैंरहितहोवैनहीं ॥ किंतुतेसर्वब्रह्मवेत्ताहीहोवै हैं॥ हेशौनक ॥ यहब्रह्मवेत्तापुरुषताब्रह्मज्ञानकेप्रभावतैं कारणअज्ञानसहित सर्वपापकर्मोंकूंनाशकरिकै कामक्रोधादिकसर्वदोषोंतैंरहितहुआ तथासर्वशोकोंतैंरहितहुआ ताआनंदस्वरूपअद्वितीयब्रह्मकूंअभेदरूपकरिकैप्राप्तहोवैहै॥अबयाअपूर्वउक्तब्रह्मविद्याकेअधिकारीकानिरूपणकरे है ॥हेशौनक॥जायहब्रह्मविद्याहमनैं तुमारेप्रतिउपदेशकरीहै ॥ सायहब्रह्मविद्या तुमनैंजिसीकिसीअनधिकारीपुरुषकेप्रतिकथनकरणीनहीं ॥ किंतु शांतिआदिकगुणोंकरिकै युक्तअधिकारीपुरुषोंकेप्रतिही यहब्रह्मविद्यातुमनैं उपदेशकरणी ॥ हेशौनक ॥ जिनपुरुषोंनैं विधिपूर्वक वेदोंकाअध्ययनकऱ्याहै ॥ तथा तिनवेदउक्तकर्मोंकेअनुष्ठानकरिकै जिनपुरुषोंकाचित्त शुद्धहुआहै ॥ तथा जिनपुरुषोंनैं एकर्षिनामाअग्निकाआराधनकऱ्याहै ॥ तथा जिनपुरुषोंनैं ब्रह्मचर्यआश्रमविषे आपणेशिरऊपर अग्निकाधारणरूपव्रतकऱ्याहै ॥ तथाजेपुरुष शमदमादिकसाधनोंकरिकैयुक्तहैं ॥ तथाब्रह्मविद्याकेउपदेशकरणेहारेगुरुविषे जिनपुरुषोंकीअत्यन्तश्रद्धाभक्तिहै ॥ ऐसेगुणोंवालेअधिकारीपुरुषोंकेप्रतिही तुमनैंयहब्रह्मविद्याकथनकरणी॥ कैसीहैयहब्रह्मविद्या॥सर्वदाश्रेष्ठपुरुषोंकरिकै सेवनकरणेयोग्यहै ॥तथाअत्यंतदुर्लभहै॥श्रीगुरुरुवाच॥हेशिष्य ॥ जाब्रह्मविद्या तुमनैं हमारेसैंपूछीथी ॥ तथा जाब्रह्मविद्या हमनैंतुमारेप्रति कथनकरीहै ॥ साब्रह्मविद्या पूर्व ताअंगिराऋषिकूं परंपराकरिकै ब्रह्मातैं

प्राप्तहोतीभई है॥तिसीब्रह्मविद्याकूं सोअंगिराऋषि शौनकऋषिकेप्रति कथनकरताभयाहै॥और जैसे सोअंगिरानामाऋषि शौनकनामाऋषिकेप्रति साब्रह्मविद्या कथनकरताभयाहै॥तैसे पिप्पलादनामामुनिभी संसारदुःखकरिकैपीडितसुकेशादिकषट्शिष्योंकेप्रति यहब्रह्मविद्या कथनकरताभयाहै ॥ केसीहैसाब्रह्मविद्या ॥ षट्प्रश्नउत्तरोंकरिकै अत्यंतस्पष्टकरीहुई है॥हेशिष्य॥ यापोडशेअध्यायकेआदिविषे जाअथर्वामुनिउक्तब्रह्मविद्या तुमनैं हमारेसैंपूछीथी ॥ सासर्वब्रह्मविद्या हमनैं तुमारेप्रति कथनकरी है ॥ अब जिसअर्थकेश्रवणकरणेकी तुमारेकूंइच्छाहोवै ॥ ॥ सोअर्थ तूं हमारेसैंपूछ ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्रजकाचार्यश्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचिते प्राकृतआत्मपुराणे मुंडकोपनिषत्सारार्थप्रकाशे अंगिरःशौनकसंवादोनाम षोडशोध्यायःसमाप्तः ॥ ॥ १६ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥

इति श्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषा आत्मपुराणे षोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥

इति श्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषाआत्मपुराणेषोडशोऽध्यायःसमाप्तः ॥

॥ अथ स्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषाआत्मपुराणे सप्तदशाध्यायप्रारंभः ॥

ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथ सप्तदशाऽध्यायप्रारंभः ॥ पूर्वषोडशअध्यायविषे अथर्वणवेदके मुंडकउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ अब यासप्तदशेअध्यायविषे तिसीअथर्वणवेदके प्रश्नउपनिषद्काअर्थ निरूपणकरे हैं ॥ तहां पूर्वषोडशेअध्यायविषे अथर्वामुनिउक्तब्रह्मविद्याकूं श्रवणकरिके परमाआनंदकूं प्राप्तहुआ सोश्रद्धावान् शिष्य पुनः तागुरुकेमुखतैं पिप्पलादऋषिउक्तब्रह्मविद्याकेश्रवणकरणेकीइच्छाकरताहुआ ताश्रीगुरुकेप्रति याप्रकारकावचनकहताभया ॥ शिष्यउवाच ॥ हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणकेप्रथमअध्यायविषे आपनैं ऋग्वेदकेऐतरेयउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ ताप्रथमअध्यायविषे सनकादिकमुनियोंके तथासात्विकीप्रजाकेसंवादकरिकै वैराग्यादिकसाधनोंसहित नानाप्रकारकीब्रह्मविद्याआपनैंकथनकरीथी॥ तथा माताकेउदरविषेस्थित वामदेवऋषिका सर्वात्मभावरूपअनुभव कथनकऱ्याथा ॥ और हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणके द्वितीयअध्यायविषे तथातृतीयअध्यायविषे आपनैं तिसी ऋग्वेदके कौषीतकीउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा॥तहां याआत्मपुराणकेद्वितीयअध्यायविषे देवराजइंद्रके तथाप्रतर्दनराजाके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरी ॥ और याआत्मपुराणके तृतीयअध्यायविषे राजाअजातशत्रुके तथाबालाकिब्राह्मणके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी ॥ और हेभगवन्॥याआत्मपुराणके चतुर्थ पंचम षष्ठ सप्तम याचारअध्यायोंविषे आपनैं यजुर्वेदके बृहदारण्यकउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा॥तहांयाआत्मपुराणके चतुर्थअध्यायविषे आपनैं दोपुरुषवंश एकस्त्रीवंश यातीनवंशोंविषे स्थितिऋषियोंका परस्परभेद तथाअभेद कथनकऱ्याथा॥तथा दध्यङ्अथर्वणऋषिनैं जाब्रह्मविद्या देवराजइंद्रकेप्रति तथाअश्विनीकुमारोंकेप्रति कथनकरीथी॥साब्रह्मविद्याभी आपनैं कथनकरीथी ॥ तथा तिनअश्विनीकुमारोंकेप्रति ब्रह्मविद्याकेउपदेशकरणेकरिकै सोदध्यङ्अथर्वणऋषि जिसप्रकार ताइंद्रतैं क्लेशकूंप्राप्तहुआथा॥सासर्ववार्त्ता आपनैंकथनकरीथी॥और हेभगवन्॥याआत्मपुराणके पंचमअध्यायविषे आपनैं यहवार्त्ता कथनकरीथी॥जनकराजा केयज्ञसभाविषे याज्ञवल्क्यमुनिरूपसूर्य आश्वलादिकब्राह्मणरूपनिशाचरोंकूंजीतकरिकै शाकल्यब्राह्मणरूपअंधकारकूंनिवृत्तकरताभया॥ ॥ १ ॥

और हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणकेषष्ठेअध्यायविषे आपनैं यहवार्त्ता कथनकरी थी॥जैसे सूर्यभगवान् आपणेकिरणोंकरिकै अंधकारकी निवृत्तिकरिकै लोकोंकूं रूपादिकपदार्थ दिखावै हैं ॥ तैसे सोयाज्ञवल्क्यमुनिरूपसूर्यभी आपणेउपदेशरूपकिरणोंकरिकै जनकराजाकेअज्ञानरूपअंधकारकीनिवृत्तिकरिकै ताजनकराजाकूं अद्वितीयब्रह्म दिखावताभया ॥ और हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणकेसप्तमेअध्यायविषे आपनैं यहवार्त्ता कथनकरीथी॥ सोयाज्ञवल्क्यमुनिरूपसूर्य आपणेउपदेशरूपकिरणोंकरिकै मैत्रेयीस्त्रीके अज्ञानरूपअंधकारकीनिवृत्तिकरिकै तामैत्रेयीस्त्रीकेप्रतिअद्वितीयब्रह्म दिखावताभया तिसतैंअनंतर सोयाज्ञवल्क्यमुनि संन्यासआश्रमकूं ग्रहणकरताभया॥और हेभगवन् याआत्मपुराणकेअष्टमअध्यायविषे आपनैं तिसीयजुर्वेदके श्वेताश्वतरउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ ताअष्टमअध्यायविषे श्वेताश्वतरमुनिके तथासंन्यासियोंके संवादकरिकै आपनैं याजगत्केकारणोंकानिरूपणकऱ्याथा॥ और हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणके नवमअध्यायविषे आपनैं तिसीयजुर्वेदकेकठवल्लीउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तानवमअध्यायविषे यमराजाके तथानचिकेताके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी॥और हेभगवन्॥ याआत्मपुराणकेदशमअध्यायविषे आपनैं तिसीयजुर्वेदके तैत्तिरीयउपनिषद्का तथानारायणीउपनिषद्का अर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तादशमअध्यायविषे वरुणपिताके तथाभृगुपुत्रके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी ॥ तथा वेननामागंधर्वका सर्वात्मभावरूपअनुभव कथनकऱ्याथा॥तथा सत्यादिकसर्वसाधनोंतैं संन्यासआश्रमकीअधिकता कथनकरीथी ॥ और हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणके एकादशेअध्यायविषे आपनैं जाबालादिकएकादशउपनिषदोंकाअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ ताएकादशेअध्यायविषे आपनैं यहवार्त्ता कथनकरीथी ॥ तापरमहंससंन्यासकूं संवर्त्तकादिकमहान् पुरुष धारणकरतेभये हैं ॥ और तासंन्यासकेप्राप्तिका वैराग्यही काल है ॥ और गर्भदुःखोंकाविचार तथामृत्युचिह्नोंकाज्ञान तथा अष्टांगयोग इत्यादिकउपाय तावैराग्यकेकारणहैं ॥ और तासंन्यासविषे विरक्तपुरुषोंकाही अधिकारहै ॥ और दंड कमंडलु काषाय वस्त्र इत्यादिकोंकाधारणकरणा तासंन्यासीका बाह्यवेशहै ॥ तथा तिनसंन्यासियोंका ब्रह्मचर्यादिरूप आचारहै॥ इत्यादिकसर्ववार्त्ता ता

एकादशेअध्यायविषे कथनकरीथी॥और हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणके द्वादश त्रयोदश चतुर्दश यातीनअध्यायोंविषे आपनैं सामवेद केछांदोग्यउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा॥ तहां याआत्मपुराणके द्वादशेअध्यायविषे उद्दालकपिताके तथाश्वेतकेतु पुत्रके संवादक रिके नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी ॥ और याआत्मपुराणकेत्रयोदशेअध्यायविषे सनत्कुमारोंके तथानारदमुनिके संवाद करिके नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी॥और याआत्मपुराणके चतुर्दशेअध्यायविषे प्रजापतिके तथाइंद्रविरोचनके संवादक रिके नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी॥ और हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणकेपंचदशे अध्यायविषे आपनैं तिसीसामवेदकेकेन उपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा॥तापंचदशेअध्यायविषे देवराजइंद्रकूं ब्रह्मविद्यारूपउमादेवीकेप्रसादतैं दृढआत्मज्ञानकीप्राप्ति आपनैं कथनकरीथी और हेभगवन्॥याआत्मपुराणके षोडशेअध्यायविषे आपनैं अथर्वणवेदके मुंडकउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा॥ ता षोडशेअध्यायविषे अंगिरामुनिके तथाशौनकऋषिके संवादकरिके नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी॥हेभगवन्॥ ताषोडशे अध्यायकेअंतविषे आपनैं यहवार्त्ता कथनकरीथी ॥ जैसे अंगिरानामामुनि शौनकऋषिकेप्रति साब्रह्मविद्या उपदेशकरताभयाहै ॥ तैसे षट्प्रश्नउत्तरोंकरिकेयुक्त साब्रह्मविद्या पिप्पलादमुनि सुकेशादिकषट्ऋषियोंकेप्रति कथनकरताहै ॥ हेभगवन् ॥ जाब्रह्मविद्या सोपिप्प लादनामामुनि सुकेशादिकषट्ऋषियोंकेप्रति उपदेशकरताभयाहै ॥ ताब्रह्मविद्याकेश्रवणकरणेकी मैंइच्छाकरताहूं ॥ आप कृपाकरिकै साब्रह्मविद्या हमारेप्रति कथनकरो॥इसप्रकार शिष्यकरिकैपूछाहुआ सोश्रीगुरु अथर्वणवेदकेशौनकीयशाखाविषेस्थित जाप्रश्नउपनिषद् है ॥ ताप्रश्नउपनिषद्विषेकथनकरीहुईकथा ताशिष्यकेप्रति कथनकरताभया ॥श्रीगुरुरुवाच॥ हेशिष्य पूर्वकिसीकालविषे तथाकिसी देशविषे किसीनिमित्तपाइकै षट्मुनि एकठेहोतेभये ॥ कैसेथेतेमुनि ॥ परस्पर अत्यन्तस्नेहवालेथे ॥ तथा प्रातःसंध्यादिकनित्यकर्मो विषे प्रीतिमानथे॥ अब तिनमुनियोंकेनामोंकावर्णनकरे हैं॥हेशिष्य॥एकतौ गोत्रकरिकैभारद्वाजसंज्ञावाला सुकेशानामाऋषिथा॥१॥ ॥ २ ॥
और दूसरा शिबिनामाऋषिकेकुलविषेउत्पत्तिकरिके शैव्यसंज्ञाकूंप्राप्तहुआ सत्यकामनामाऋषिथा ॥ २ ॥ और तीसरा गोत्रक

रिकैगार्ग्यसंज्ञावाला सौर्यायणिऋषिथा।३।और चतुर्थ कोशलऋषिकेकुलविषेउत्पत्तिकरिकैकौशल्यसंज्ञाकूंप्राप्तहुआ आश्वलाययननामाऋ षिथा ॥ ४ ॥ और पंचमा विदर्भऋषिकेकुलविषे उत्पत्तिकरिके वैदर्भिसंज्ञाकूंप्राप्तहुआ भार्गवनामाऋषिथा ॥ ५॥ और षष्ठा कबंधऋषि केकुलविषेउत्पत्तिकरिके कात्यायनसंज्ञाकूंप्राप्तहुआ कबंधीनामाऋषिथा ॥ ६ ॥ यहषट्ऋषि व्याकरणादिकषट्अंगोंसहितचारवेदोंकूंअ ध्ययनकरिके तिनवेदउक्तनित्यनैमित्तिककर्मोंकूं तथासगुणब्रह्मकेउपासनावोंकूं करतेभये ॥ तिसतैंअनंतर ताकर्मउपासनाकेप्रभावतैं शुद्धहुआहैअंतःकरणजिनोंका ऐसेतेषट्ऋषि निर्गुणब्रह्मकेजाननेकीइच्छाकरतेभये ॥ तिसतैंअनंतर तेषट्ऋषि परस्परमिलिकै याप्रकार काविचार करतेभये॥जोविद्वान्पुरुष विद्यादिकगुणोंकरिकैहमारेतैंअधिकहोवै ॥ तथा श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठहोवै॥सोविद्वान्पुरुषही हमारेप्रति निर्गुणब्रह्मकाउपदेशकरैगा ॥ परंतु ऐसाश्रोत्रियब्रह्मनिष्ठविद्वान्पुरुष कौनहै॥जिसकेहम शरणकूंप्राप्तहोवैं ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकीचिं ताकरिकैयुक्तजे तेषट्ऋषिहैं॥तिनऋषियोंऊपरअनुग्रहकरिके भगवान्पिप्पलादमुनि आपणीइच्छापूर्वकविचरताहुआ तास्थानविषेआ वताभया ॥ तापिप्पलादमुनिकूं दूरतैंआवताहुआदेखिकै प्रसन्नमनहुए तेषट्ऋषि परस्पर याप्रकारकेवचनकहतेभये ॥ यहजोपिप्पला दमुनिआवताहै ॥ सो हमारेसर्वप्रश्नोंकाउत्तरकहैगा ॥ और सोपिप्पलादमुनि जभी तिनषट्ऋषियोंकेसमीपगया॥तभी तेषट्ऋषि आप णेआपणेआसनतैंउठतेभये ॥ तथा यथायोग्य तापिप्पलादमुनिका पूजनअर्चनकरतेभये ॥ तिसतैंअनंतर तेषट्ऋषि तापिप्पलादमुनि केप्रति दंडवत्प्रणामकरिकै तथाआपणेदोनोंहस्तोंकूंजोडिकै तथाशास्त्रकीविधिपूर्वक समिदादिकपदार्थोंकूं हस्तविषेधारणकरिकै याप्रकारकावचनकहतेभये ॥ हेभगवन् ॥ यासंसारकेजन्ममरणरूपदुःखोंतैंभयकूंप्राप्तहोइकै हमसर्व आपकेशरणकूंप्राप्तहुए हैं ॥ आप कृपाकरिकै हमारेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरो ॥ जिसब्रह्मविद्याकरिकै हमारे सर्वदुःखोंकीनिवृत्तिहोवै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकी प्रार्थना जभी तिनषट्ऋषियोंने तापिप्पलादमुनिकेप्रतिकरी ॥ तभी सोपिप्पलादमुनि तिनषट्ऋषियोंके प्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेऋषियो ॥ जोशिष्य विवेकादिकसाधनोंकरिकैसंपन्नभीहोवै तथागुरुशास्त्रविषेश्रद्धावान्भीहोवै ॥ परंतु सोशिष्य

एकवर्षपर्यंत जिसगुरुकेसमीपनहींरह्याहोवै ॥ तिसशिष्यकेप्रति सोगुरु ब्रह्मविद्याकाउपदेश करेनहीं ॥ किंतु ता साधनसंपन्न श्रद्धावानशिष्यकीभी एकवर्षपर्यंत परीक्षाकरिकै तिसतैंअनंतर सोगुरु ताशिष्यकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरै यहशास्त्रकीमर्यादाहै ॥ ताशास्त्रकेमर्यादाकूं तुमभी जानतेहीहो ॥ यातैं तुमसर्वऋषि यद्यपि स्वभावतैंही तपस्वीहो ॥ तथा सर्वदा ब्रह्मचर्यादिकसाधनोंकरिकैयुक्तहो ॥ याकारणतैं तुमसर्व ब्रह्मविद्याकेअधिकारीहो ॥ तथापि ताशास्त्रके मर्यादाकेपालनकरणेवासतै तुमसर्व एकवर्षपर्यंत ब्रह्मचर्यकूंधारणकरिकै हमारेसमीप निवासकरो ॥ तावर्षकालपर्यंतनिवासकरणेतैंअनंतर जबपर्यंत तुमारेकूं तानिर्गुणब्रह्मकासाक्षात्कार नहींहोवैगा॥तबपर्यंत तुमारेसर्वप्रश्नोंकेउत्तरकूं मैं भलीप्रकारसैंकथनकरोंगा ॥ यहहमारावचन जोतुमारेकूंअंगीकारहोवै ॥ तो तुमसर्व तिसीप्रकारकरो ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकावचन जभी तापिप्पलादमुनिनैं तिनसर्वऋषियोंकेप्रतिकह्या ॥ तभी तेसर्वऋषि श्रद्धाभक्तिपूर्वक एकवर्षपर्यंत ताब्रह्मचर्यकूंकरतेभये ॥ ताएकवर्षकेव्यतीतहुएतैंअनंतर प्रथम कबंधीनामाकात्यायनऋषि तापिप्पलादमुनिकेसमीप जाइकै दंडवत्प्रणामकरिकै याप्रकारकाप्रश्न करताभया ॥ तहां पूर्वमुंडकउपनिषद्विषे परा अपरा यहदोप्रकारकीविद्या कथनकरीथी ॥ तहांकर्म उपासना याभेदकरिकैदोप्रकारकीजाअपराविद्याहै॥ ताअपराविद्याकेफलकानिर्णयकरणेवासतै सोकबंधीनामा कात्यायनऋषि प्रथम याजगत्केउत्पत्तिकाप्रश्न करताभया॥ कात्यायनउवाच ॥हेभगवन्॥ यहसंपूर्णप्रजा किसकारणतैं जन्मकूंप्राप्तहोवै है॥ सोप्रजाकेउत्पत्तिकाकारण हमारेप्रति कथनकरो॥हेशिष्य॥इसप्रकार जभी ताकात्यायननैं पिप्पलादमुनिकेप्रति प्रश्नकऱ्या॥तभी सोपिप्पलादमुनि ताकात्यायनकेप्रति प्रजापतिनामाविराट्तैंउत्पन्नहुईसृष्टिका कथनकरताभया॥यद्यपि तापिप्पलादमुनिकूं मायाविशिष्टपरमेश्वरतैंउत्पन्न हुई आकाशादिकपंचभूतरूप तथाहिरण्यगर्भादिरूप महासृष्टिही कथनकरणेयोग्यथी॥तथापि याकात्यायननैं पूर्वशास्त्रतैंही सामहासृष्टि भलीप्रकारसैंजानीहै याप्रकारकाविचारकरिकै सोपिप्पलादमुनि ताईश्वरसंबंधीमहासृष्टिकीउपेक्षाकरिकै ताविराट्भगवान्तैं उत्पन्नहुईसृष्टिकाकथनकरताभया॥पिप्पलादमुनिरुवाच॥हेकात्यायन॥पूर्व याजगत्केवृद्धिकरणेकीइच्छाकरताहुआ सोप्रजापतिरूपविराट्भगवान्

यहअग्निसोमदोनों परस्परमिलिकै नानाप्रकारकीसृष्टिकरणेविषेसमर्थ हैं याप्रकारकाविचारकरिकै भोक्तारूपअग्निकूं तथाभोग्यरूपसोमकूं उत्पन्नकरताभया ॥ अब तिनदोनोंविषे प्रथम भोक्तारूपअग्निकी सर्वात्मरूपता वर्णनकरे हैं॥ हेकात्यायन॥सोभोक्तारूपअग्नि अध्यात्म अधिदैवरूपकरिकै दोप्रकारकाहोवै है॥ तहां यासंघातविषेस्थितजोप्राणहै ॥ सोप्राण अध्यात्मअग्निरूपहै ॥ ताप्राणरूपअध्यात्मअग्निविषे यासंघातकावशकरणारूपभोक्तापणा स्पष्टही है ॥ और आदित्यरूपअधिदैवहै ॥ कैसाहैसोआदित्यरूपअग्नि ॥ आपणेउदयअस्तभावकरिकै पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण इत्यादिकसर्वदिशावोंका विभागकरणेहाराहै ॥ तथा सर्वप्रकाश्यवस्तुवोंका भोक्तापुरुषहै ॥ तथा सर्वविश्वकाआत्मारूपहोणेतैं सर्वविश्वरूपहै॥ तथा तप्तसुवर्णकेसमान जिसआदित्यकीप्रभाहै ॥तथा जिसआदित्यतैं सर्ववस्तुविषयकज्ञानरूपधन उत्पन्नहुआहै ॥ तथा जोआदिरूपअग्नि आपणेसहस्रकिरणोंकरिकै प्रगटज्योतिरूपहै ॥ तथा जोआदित्य यासर्वजीवोंकाबाह्यप्राणहै ॥ तथा जोआदित्य अनेकव्यष्टिरूपोंकरिकैवर्त्तमानहै ॥ अब ताप्राणरूपअग्निविषे संवत्सररूपकालरूपकरिकै यासृष्टिकाकर्त्तापणा बोधनकरणेवासतै प्रथम उत्तरायणादिककालविषे ताप्राणरूपअग्निकीअवयवरूपता वर्णनकरे हैं॥हेकात्यायन॥ द्वादशमासकाजोसंवत्सरहै ॥ तासंवत्सरका षट्मासरूपजोउत्तरायणहै ॥ सोउत्तरायणभी ताप्राणअग्निरूपहीहै ॥ याकारणतैंही ताउत्तरायणमार्गकरिकै ब्रह्मचर्यादिकसाधनसंपन्न उपासकपुरुष याआदित्यमंडलकूंभेदनकरिकै ऊपरजावै है ॥ हेकात्यायन ॥ यहअधिकारीउपासकपुरुष यासूर्यमंडलकूंभेदनकरिकै जिसपरोक्षस्थानकूंप्राप्तहोवै हैं॥सोस्थान समष्टिप्राणरूपहिरण्यगर्भकेनिवासकास्थानहै ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष तास्थानकूं प्राणायतन यानामकरिकैकथनकरे हैं॥और सोस्थान मृत्युभयतैंरहितहै ॥याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष तास्थानकूं अमृत अभय यादोनोंनामकरिकैकथनकरे हैं।और सोस्थान हिरण्यगर्भरूपब्रह्माकेरहणेकालोकहै।यातैं तास्थानकूं ब्रह्मलोक यानामकरिकैकथनकरे हैं। सोब्रह्मलोकरूपस्थान यासूर्यमंडलतैंभी परेवर्त्तमानहै ॥ हेकात्यायन॥जिनअधिकारीपुरुषोंनैं तासगुणब्रह्मकीअभेदरूपकरिकैउपासनाकरीहै॥ तथा जेअधिकारीपुरुषब्रह्मचर्यधर्मकरिकैयुक्तहैं ॥ ऐसेअहंग्रहउपासनावालेपुरुष ताउत्तरायणमार्गद्वारा ताब्रह्मलोकविषेप्राप्तहोइकै

पुनःयासंसारमंडलविषेआवतेनहीं ॥ किंतु ताब्रह्मलोकविषेही मोक्षकूंप्राप्तहोवे हैं॥हेकात्यायन॥जैसे सोषट्मासरूपउत्तरायण उपासकपुरुषोंकूं सूर्यमंडलकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ यातैं वेदवेत्तापुरुषोंनैं ताउत्तरायणकूं प्राणअग्निरूपकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ तैसे तापट्मासरूप उत्तरायणकेघटक जेशुक्लपक्षहैं ॥ तथा तिनशुक्लपक्षोंकेघटक जेदिनहैं ॥तिनशुक्लपक्षोंकूं तथातिनदिवसोंकूंभी तेवेदवेत्तापुरुष ताप्राणअग्निरूपकरिकैकथनकरे हैं ॥ काहेतैं जैसे सोषट्मासरूपउत्तरायण तादेवयानमार्गका घटकहै ॥ तैसे यहशुक्लपक्ष तथादिवसभी तादेवयानमार्गकेघटकहैं॥यातैं तिनोंविषेभी प्राणअग्निरूपतासंभवै है॥इतनैंकरिकै ताभोक्तारूपअग्निके आदित्यादिकरूपोंकावर्णनकऱ्या॥अब ताभोग्यरूपसोमकेरूपोंकावर्णनकरे हैं ॥ हेकात्यायन॥यहचंद्रमा भोग्यअमृतादिरूपहोणेतैं सोमरूपहै॥और यहषट्मासरूपदक्षिणायन कर्मीपुरुषोंकूं ताचंद्रमारूपसोमकीप्राप्तिकरे है ॥ यातैं वेदवेत्तापुरुष तादक्षिणायनकूंभी सोम यानामकरिकैकथनकरे हैं॥जिसदक्षिणायनकरिकै अग्निहोत्रादिककर्मोंकूंकरणेहारे श्रद्धावान्कर्मीपुरुष ताचंद्रमालोककूंप्राप्तहोवै हैं ॥हेकात्यायन॥जैसे सोषट्मासरूपदक्षिणायन सोमरूपहै तैसे तादक्षिणायनकेघटक जेकृष्णपक्षहैं तथारात्रिहैं ॥ तेकृष्णपक्ष तथारात्रिभी तासोमरूपही हैं ॥ जिनरात्रियोंविषे आपणी स्त्रीकेसाथ संभोगकरणेहारे गृहस्थपुरुषोंकेब्रह्मचर्यकाभंगहोवेनहीं ॥ इतनैंकहणेकरिकै यहअर्थकथनकऱ्या॥ यहदिवस प्राणात्मकअग्निरूपहैं ॥ यातैं तादिवसविषे आपणीस्त्रीकेसाथ संभोगकरणेहारेपुरुषोंके केवल ब्रह्मचर्यधर्मकीहानिनहींहोवे है॥किंतु तिनपुरुषोंके प्राणोंकीभीहानिहोवे है ॥ तहांश्रुति ॥ प्राणंवाएतेप्रस्कंदंति येदिवारत्यासंयुज्यंते ब्रह्मचर्यमेवतद्यद्रात्रौरत्यासंयुज्यंते ॥ अर्थयह॥ जेगृहस्थपुरुष दिनविषेस्त्रीसंभोगकरे हैं॥ तेपुरुष आपणेप्राणोंकूंहीनष्टकरे हैं ॥ और जेगृहस्थपुरुष रात्रिविषे स्त्रीसंभोगकरे हैं ॥ तेपुरुष ब्रह्मचर्यधर्मकूंहीपालनकरे हैं॥१ ॥ हेकात्यायन ॥ उत्तरायन शुक्लपक्ष दिवस यातीनस्वरूपजोअग्निहै ॥ तथा दक्षिणायन कृष्णपक्ष रात्रि यातीनस्वरूपजोसोमहै ॥ तिसअग्निसोमदोनोंकाजो परस्परमिथुनीभावहै ॥ ताकानाम संवत्सरहै ॥ सो संवत्सर प्रजापतिरूपहै ॥ केसा हैसोसंवत्सररूपप्रजापति ॥ वसंतादिकषट्ऋतुरूपपादोंकरिकैयुक्तहै ॥ तथा मार्गशीर्षादिकद्वादशमासोंकरिकैयुक्तहै ॥ तथा

जोसंवत्सररूपप्रजापति षट्ऋतुरूपअरोंकरिकैयुक्त शिशुमारनामाचक्रविषे सूर्यरूपकरिकैस्थितहै ॥ तथा स्वर्गलोककेऊपरस्थित है ॥ तथा वर्षायुक्तमेघोंकाकारणरूपहोणेतैं यासर्वजगत्कापितारूपहै॥काहेतैं सूर्य चन्द्र उत्तरायण दक्षिणायन इत्यादिकरूपकरिकै अग्निसोमरूपजोयहप्रजापतिहै ॥ ताप्रजापतितैं वृष्टिद्वारा व्रीहियवादिरूपनानाप्रकारकाअन्न उत्पन्नहोवे है॥और सोव्रीहियवादिरूपअन्न क्षुधातुर पुरुषोंकेजठराग्निविषेप्राप्तहोइकै जभी परिपक्वहोवे है ॥ तभी ताअन्नतैं वीर्यरूपरेत उत्पन्नहोवे है ॥ तावीर्यतैं यहनानाप्रकारकीप्रजा उत्पन्नहोवे है ॥ इसप्रकार ताअग्निसोमद्वारा सोप्रजापतिही याजगत्काकारणहै ॥१॥ इतनैंकरिकै याप्रथमप्रश्नविषे उपासनाकरणेयोग्य प्राणके सूर्यादिरूपकरिकैअधिदैवप्रभावका वर्णनकऱ्या॥अब ताप्राणके अध्यात्मप्रभावकोनिर्णयकरणेवासते द्वितीयप्रश्नउत्तरकानिरूपण करे हैं ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकेउत्तरकूंश्रवणकरिकै जभी सोकात्यायनऋषि तूष्णीहोताभया ॥ तभी सोवैदर्भिनामा भार्गवऋषि तापिप्पलादमुनिकेप्रति याप्रकारकाप्रश्न करताभया ॥ भार्गवउवाच ॥ हेभगवन् ॥ याअध्यात्मसंघातरूपजगत्कूं धारणकरणेहारे कितनैं देवताहैं ॥ और तिनदेवतावोंविषेभी प्रकाशकरणेहारे कितनैंदेवता हैं ॥ और तिनसर्वदेवतावोंविषेभी कीर्तिअतिशयतादिकगुणोंवाला सर्वश्रेष्ठदेवता कौनहै ॥ यातीनोंप्रश्नोंकाउत्तर आपकृपाकरिकै हमारेप्रति कथनकरो॥हेशिष्य॥ इसप्रकार जभी ताभार्गवनैं तापिप्पलादमुनिकेप्रति प्रश्नकऱ्या ॥ तभी सोपिप्पलादमुनि ताभार्गवकेप्रति याप्रकारकाउत्तर कहताभया॥ पिप्पलादउवाच ॥ हेभार्गव ॥ आकाशादिकपंचभूत श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रियवाकादिकपंचकर्मइंद्रिय एकमनएकप्राणयहसत्तदशदेवताही यासर्वशरीरोंकेधारणकरणेहारेहैं॥ और तिनसत्तदशदेवतावोंविषेभी श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रिय एकमन यहषट्देवता रूपादिकपदार्थोंकूं प्रकाशकरणेहारे हैं ॥ और याशरीरविषे प्राण अपान व्यान समान यापंचवृत्तिरूपकरिकैस्थितजोप्राण है ॥ सोप्राण तिनसर्वदेवताओंतैंश्रेष्ठ है ॥ काहेतैं दूसरेश्रोत्रनेत्रादिकइंद्रियोंकेनष्टहुएभी बधिरअंधादिरूपकरिकैयाशरीरकीस्थिति देखणेविषेआवे है ॥ परन्तु याप्राणकेनिकसणेतैंअनंतर याशरीरकी स्थितिदेखणेविषे आवतीनहीं ॥ यातैं यहप्राणदेवता तिनसर्वदेवतावोंतैंश्रेष्ठहै॥अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिकैनिरूपणकरे हैं ॥ हेभार्गव ॥

जैसे यालोकविषे मधुमक्षिकावोंविषे मधुकरराजनामा प्रधानमक्षिकाहोवे है ॥ तेमधुकरराजनामा प्रधानमक्षिका जभी तामधुदेशविषे स्थितहोवे हैं॥तभी दूसरीसर्वमक्षिका तामधुदेशविषेस्थितहोवे हैं॥और जभीतेमधुकरराजनामाप्रधानमक्षिका तामधुदेशतैंचलीजावे हैं॥ तभी तेदूसरीसर्वमक्षिकाभी तामधुदेशतैंचलीजावे हैं ॥ यहवार्त्ता सर्वलोकविषेप्रसिद्धहै॥तैसे याशरीरविषे जबपर्यंत यहप्राण स्थितहोवे है ॥ तबपर्यंत यहवाकादिकसर्वइंद्रिय स्थितहोवे हैं ॥ और यहप्राण जभी याशरीरतैंबाह्यनिकसिजावे है॥तभी तेवाकादिकसर्वइंद्रियभी याशरीरतैं बाह्यनिकासिजावे हैं ॥ यातैं याशरीरविषे प्राणोंकेविद्यमान्हुए दूसरेचक्षुआदिकइंद्रियोंकेअभावहुएभी यासंघातकाजीवनरूप जोअन्वयहै ॥ तथा याप्राणोंके उत्क्रमणहुए तिनचक्षुआदिकइंद्रियोंकीव्याकुलतारूपजोव्यतिरेकहै ॥ ताअन्वयव्यतिरेकारिकै याप्राणों विषेही सर्वकीविधारकतारूपश्रेष्ठता निश्चयहोवे है ॥ ताप्राणोंकीश्रेष्ठताकूंदेखिकरिकै तेचक्षुआदिकइंद्रियोंकेअभिमानीदेवता याप्रकार ताप्राणकीस्तुतिकरतेभये ॥हेप्राणदेवता॥ अग्नि सूर्य पर्जन्य विद्युत् वायु इंद्र आकाशादिकपंचभूत सोम सत् असत् अमृत ऋगादिक चारिवेद इसतैंआदिलैकेजितनाकी नामरूपक्रियास्वरूपविश्वहै॥ सोसर्वविश्वस्वरूप तूंही है ॥ इहां पर्जन्यशब्दकरिकै वर्षावालेमेघोंका ग्रहणकरणा ॥ और सोशब्दकरिकै भोग्यपदार्थोंकाग्रहणकरणा ॥ और सत्शब्दकरिकै मूर्त्तपदार्थोंकाग्रहणकरणा॥और असत्शब्दक रिकै अमूर्त्तपदार्थोंकाग्रहणकरणा ॥ और अमृतशब्दकरिकै देवतावोंकेभोग्यपदार्थोंकाग्रहणकरणा॥ओरहे प्राणदेवता॥जैसे रथचक्रकेना भिविषे अरा स्थितहोवे हैं ॥ तैसे यहसंपूर्णविश्व तुमारेविषेही स्थितहै ॥ याकारणतैं तूंप्राणदेवता सर्वविश्वकाआत्मारूपहै ॥ और हेप्रा णदेवता॥यालोकविषे जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज याचारिप्रकारकेप्राणीरूपकरिकैभी तूंही उत्पन्नहोवे है ॥ तथा विराट्हिरण्यगर्भ रूपकरिकैभी तूंही उत्पन्नहोवे है॥तुमारेतैंविना दूसराकोईश्रेष्ठहैनहीं ॥और हेप्राणदेवता॥ यालोकविषे ऐश्वर्यतावाले जितनैंकप्राणी हैं॥ जैसे देवतावोंविषे अग्निहै ॥ और पितरोंविषे नांदीमुखहै ॥ और ऋषियोंविषे सत्यपरायण आंगिरस अथर्व आदिकहैं॥ जेऐश्वर्यवालेअग्नि आदिक देवतावोंकेप्रसन्न करणेहारे स्वाहाशब्द करिकैयुक्त हैं ॥ तथा पितरोंकेप्रसन्नकरणेहारे स्वधाशब्द करिकैयुक्त हैं ॥ तेसर्व

अग्निआदिक तुम्हारेहीस्वरूपहैं॥ और हेप्राणदेवता तुम्हारीमूर्तिंही चक्षुआदिकसर्वइंद्रियोंविषे बलकूंधारणकरिकैस्थितहुई है॥ता आप णेमूर्तिकूं तूसर्वदा अनुकूलपरिणामवालाकर ॥ हमसंपूर्णतुम्हारेहीकिंकरहैं ॥ यातैं हमारेअपराधकूंक्षमाकरिकैआप इसशरीरतैंबाह्य कदाचित्भी उत्क्रमणनहींकरो ॥ और हेप्राणदेवता ॥ स्वर्ग अंतरिक्ष भूमियातीनलोकविषेस्थित जितनैंकभूतभौतिकपदार्थहैं ॥ ते संपूर्णपदार्थ तुम्हारेहीवशवर्त्तिहैं ॥ऐसेतुम्हारेस्वरूपकूंजानणेहारेहम हैं॥ तिनहमपुत्रोंका आप माताकीन्याईं रक्षणकरो ॥ तथाहमारे ताईं चारिवेदरूप ब्राह्मणोंकेधनकीप्राप्तिकरो ॥ तथा सुवर्णादिरूप क्षत्रियोंके धनकीप्राप्तिकरो ॥ तथा हमारेताईंसद्बुद्धिकीप्राप्तिकरो ॥ इसप्रकार तेसर्वइंद्रियोंकेदेवता ताप्राणदेवताकीस्तुतिकरतेभये ॥ यातैं यहप्राणही तिनसर्वदेवताओंतैंश्रेष्ठहै ॥ २ ॥ इतनैंकरिकैद्वितीय प्रश्नकाउत्तर निरूपणकऱ्या ॥ अब तृतीयप्रश्नकाउत्तर निरूपणकरेहैं ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारसोवैदभिनामा भार्गवऋषि प्राणोंकीश्रेष्ठ ताकूंनिश्चयकरिकै तृष्णीभावकूंप्राप्तहोताभया॥तिसतैंअनंतर सोआश्वलाययननामाकौशल्यऋषि ताप्राणकेउत्पत्तिस्थितिआदिकोंकोनिर्ण यकरणेवासतै तांपिप्पलादमुनिकेप्रति याप्रकारकेषट्प्रश्नकरताभया ॥ आश्वलायनउवाच ॥ हेभगवन्पिप्पलादमुनि ॥ याप्राणकीकिस वस्तुतैं उत्पत्तिहोवेहै ॥ १ ॥ और किसनिमित्तकरिकैयाप्राणका सर्वशरीरोंकेसाथसंबंधहोवेहै ॥ २ ॥ और यहप्राण आपणेकूंभिन्न भिन्नकरिकै किसप्रकार याशरीरोंविषेस्थितहोवेहै ॥ ३ ॥ और यहप्राण याशरीरतैंबाह्य किसद्वारकरिकै तथाकिसवृत्तिविशेषकरिकै तथाकिसनिमित्तकरिकै उत्क्रमणकरेहै ॥ ४ ॥ और यहप्राण बाह्यअधिभूतअधिदैवरूपसर्वजगत्कूं किसप्रकारधारणकरेहै ॥ ५ ॥ और यहप्राण अंतर अध्यात्मजगत्कूं किसप्रकार धारणकरेहै ॥ ६ ॥ याषट्प्रश्नोंकरिकैयुक्त याहमारेप्रश्नका आप कृपाकरिकै उत्तरकहो ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकाप्रश्न जभी ताआश्वलाययननैं पिप्पलादमुनिकेप्रतिकऱ्या तभीसोपिप्पलादमुनि ताआश्वलायनके प्रति याप्रकारकावचनकहताभया ॥ पिप्पलादमुनिउवाच ॥ हेआश्वलायन ॥ तुमनैंयहअत्यंतसूक्ष्मप्रश्नकरेहैं ॥ यातैंयासर्वमुनियोंके समाजविषे तूब्रह्मिष्ठहैं ॥ जोपुरुषअतिशयकरिकै ब्रह्मपरायणहोवेहैं ॥ ताकानामब्रह्मिष्ठहै ॥ ऐसेब्रह्मिष्ठतैंउत्तमअधिकारीकेप्रतिमैं तिनसर्व

प्रश्नोंकाउत्तर कथनकरताहूं ॥ तूं सावधानहोइकैश्रवणकर ॥ अब याप्राणकीकिसवस्तुतैंउत्पत्तिहोवै है॥ याप्रथमप्रश्नकाउत्तरानिरूपणकरे हैं ॥ हेआश्वलायन ॥ जैसेयास्थूलदेहतैं दर्पणादिकोंकीसमीपतारूपनिमित्तकरिकै प्रतिबिंबरूपछाया उत्पन्नहोवेहै ॥ तैसे परमार्थसत्य स्वरूपआत्मारूपबिंबतैं यहजीवभूतप्राणरूपप्रतिबिंबउत्पन्नहोवेहै॥ इतनैंकरिकैयहअर्थबोधनकऱ्या॥जैसेदर्पणादिकोंविषेस्थितप्रतिबिंब की मुखादिरूपबिंबतैंभिन्नसत्ताहोवैनहीं॥ यातैंसोप्रतिबिंब तावबिंबमात्रकेहीआश्रितहै॥ तैसेयहप्राणभीताआत्ममात्रकेहीआश्रितहै१॥ अब किसनिमित्तकरिकैयाप्राणका तिनसर्वशरीरोंकेसाथसंबंधहोवैहै याद्वितीयप्रश्नकाउत्तर निरूपणकरे हैं॥ हेआश्वलायन॥यहजीवरूप प्राण तिसतिसशरीरकेसाथ जोसंबंधकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तासंबंधविषे याविज्ञानरूपकरिकैकऱ्येहुएपुण्यपापकर्महीं निमित्तकारणहैं ॥ तामन कृतकर्मोंकरिकैहीयहजीवरूपप्राण तिसतिसशरीरकूंप्राप्तहोवैहै॥काहेतैंआत्माकेप्रतिबिंबकूंग्रहणकरिकै चेतनभावकूंप्राप्तभयाजोमनहै ॥ सो चिदाभासयुक्तमन यासंसारविषे जिसपुण्यपापकर्मोंकूंकरेहै ॥ सोईहीमन तिसपुण्यपापकर्मोंकेफलकूंभोगेहै ॥ यातैंयहमनही कर्त्ता भोक्ताहै जिसमनकाकार्यरूप जोमानसकर्महै ॥ तिसमानस कर्मोंकरिकैही यहजीवरूपप्राण तिसातिसशरीरविषे प्राप्तहोवै है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ दूसरेशास्त्रोंविषेतो शरीरकृतकर्म तथावाणीकृतकर्म तथामनकृतकर्म यातीनप्रकारकेपुण्यपापकर्मोंविषेही या जन्ममरणरूपसंसारकीनिमित्तकारणता कथनकरीहै ॥ और इहां आपनैं केवलमानसकर्मोंकूंही यासंसारकीकारणताकथनकरी है ॥ यातैं तिनदूसरेशास्त्रोंकेसाथ आपके वचनकाविरोधहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेआश्वलायन ॥ यहवाकादिकइंद्रिय तथायहशरीर तामन तैंविना स्वतंत्रहोइकै किसीकार्यकरणेविषेसमर्थहोइसकैनहीं ॥ किंतु तामनकूंआश्रयणकरिकैही तेवाकादिकइंद्रिय तथाशरीर किसी शुभअशुभकर्मकरणेविषे समर्थहोवै हैं॥यातै ताशरीरकृतकर्मोंविषे तथावाणीकृतकर्मोंविषेभी तामनकीहीप्रधानताहै ॥ ताप्रधानताकूं अंगीकारकरिकै हमनैंकेवलमानसकर्मोंकूंही यासंसारकीकारणता कथनकरीहै ॥ अब तामनकीप्रधानता निरूपणकरे हैं ॥ हेआश्वलाय न ॥ तामनकीसहायतातैंविना केवलयाशरीरकरिकै तथावाकादिकइंद्रियोंकरिकै जोजोकर्महोवै है ॥ तिसकर्मविषेपुण्यरूपताअथवापा

॥ ६ ॥

परूपता किसीभीशास्त्रविषे कथनकरीनहीं॥शंका॥हेभगवन्॥ मनकेव्यापारतैंविना केवल शरीरइंद्रियादिकोंकरिकै कऱ्येहुएकर्मविषे जो पुण्यपापरूपतानहींहोतीहोवै॥ तो धर्मशास्त्रविषे जोमनकेविज्ञानरूपव्यापारतैंविना केवलशरीरइंद्रियादिकोंकरिकैकऱ्येहुए ब्रह्महत्यादिक पापकर्मोंकोनिवृत्तकरणेवासते एकगुणाप्रायश्चित्त विधानकऱ्याहै ॥ और तामनकेविज्ञानरूपव्यापारपूर्वक कऱ्येहुएब्रह्महत्यादिकपापक र्मोंकेनिवृत्तकरणेवासते त्रिगुणाप्रायश्चित्त विधानकऱ्याहै सोधर्मशास्त्र असंगतहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेआश्वलायन ॥ यद्यपि धर्मशास्त्र विषे अबुद्धिपूर्वककऱ्येहुएपापकर्मोंके निवृत्तकरणेवासते प्रायश्चित्तकाविधानकऱ्याहै ॥ तथापि सोप्रायश्चित्त तामानसव्यापारकेयोगतैंही कऱ्याजावै है॥तामानसव्यापारतैंविना सोप्रायश्चित्त कऱ्याजावैनहीं ॥ काहेतैं जिसपुरुषनैं आपणीबुद्धिपूर्वक पापकर्मनहींकऱ्या ॥ सोपु रुष जभी मैंनेअबुद्धिपूर्वकपापकर्मकऱ्याहै याप्रकारका आपणेमनकरिकैविचारकरे है ॥ तभीही सोपुरुष ताप्रायश्चित्तकरणेकाअधिकारी होवै है॥तामानसविचारतैंविना सोपुरुष ताप्रायश्चित्तकाअधिकारीहोवैनहीं ॥ यातैं तामनकेविज्ञानरूपव्यापारतैंही सोअबुद्धिपूर्वकपा पोंका प्रायश्चित्तहोवै हैं॥मनकेव्यापारतैंविना सोप्रायश्चित्तहोवैनहीं॥ यातैंअबुद्धिपूर्वककऱ्येहुएकर्मविषे मनकेयोगतैंहीं पुण्यरूपता अथवा पापरूपताप्राप्तहोवै है ॥ तामनकेयोगतैंविना ताकर्मविषे पुण्यपापरूपता प्राप्तहोवैनहीं॥किंवा ॥ तिनपुण्यपापकर्मोंकाकर्त्तापणा तथाभो क्तापणा शुद्धआत्माविषे है॥अथवा देहइंद्रियादिकोंविषे है॥अथवा मनविषे है॥यहविचारकऱ्याचाहिये॥ तहां शुद्धआत्मातो असंगनिर्विका रहै॥यातैं ताशुद्धआत्माविषेतो सोकर्त्तापणा तथाभोक्तापणा संभवैनहीं॥और यहदेहइंद्रियादिकतो जडहैं तथापरतंत्रहैं ॥ यातैं तिनदेह इंद्रियादिकोंविषेभी सोकर्त्ताभोक्तापणा संभवैनहीं॥किंतु परिशेषतैं सोकर्त्ताभोक्तापणा तथापुण्यपापकर्म तामनविषेही स्थितहैं ॥ यातैं यहचिदाभासयुक्तमनहीं तिनपुण्यपापकर्मोंकूंकरे है॥तामनकृतपुण्यपापकर्मोंकरिकैही यहदेहइंद्रियादिकसंघात उत्पन्नहोवै है॥ तथा ताम नकृतपुण्यपापकर्मोंकेवशतेही यहजीवरूपप्राण तिसातिसशरीरकेसाथ संबंधकूंप्राप्तहोवै है ॥२ ॥ अब सोप्राण आपणेकूंभिन्नभिन्नरूपक रिकै याशरीरोंविषे किसप्रकारास्थितहोवै है यातृतीयप्रश्नकाउत्तर निरूपणकरे हैं॥हेआश्वलायन ॥ जस यालोकविषे महाराजा आपणेमं

त्रियोंकूं आपणेआपणेकार्यांविषेप्रेरणाकरे है॥तैसे याशरीरविषेस्थितहुआ यहक्रियाशक्तिवालाप्राणभी आपणेकूं प्राण अपान समान व्यान उदान यापंचप्रकारकाकरिके नेत्रादिकसर्वइंद्रियोंकूं आपणेआपणेव्यापारविषे प्रेरणाकरे है॥ अब तिनपंचप्राणोंकेस्थानका तथाकार्यका वर्णनकरे हैं ॥ हेआश्वलायन॥तिनपंचप्राणोंविषे जोप्रथम प्रधानप्राणहै॥सोप्राणतो शिरविषेस्थितजे दोनासिका दोश्रोत्र दोनेत्र एकमुख यहसप्तछिद्रहैं तिनसप्तछिद्रोंविषेस्थितहै ॥ तथा मुखनासिकाद्वारा बाह्यगमनागमनकरे है ॥ और दूसराजोअपानहै॥सोअपानतो पायु उपस्थ यादोनोंविषेस्थितहै॥तथा विष्ठामूत्रकेविभागकूंकरे है॥और तीसराजोसमाननामाप्राणहै॥सोसमानतो भोजनकरेहुएअन्नकूं तथा पानकरेहुएजलकूं समानकरे है॥यातैं सर्वशरीरविषे व्यापकहुआभीसोसमान पूर्वउक्तसप्तछिद्रोंके तथाआधारचक्रके मध्यदेशविषे विशेष रूपकरिकैरहे है॥अब व्याननामाप्राणकेआश्रयकहणेवासतै प्रथमनाडियोंकीपरमसंख्या कथनकरे हैं॥हेआश्वलायन॥यादेहधारीजीवोंके हृदयदेशविषे बहत्तरिकोटि दशसहस्र एकशत एक ७२००१०१ इतनीनाडियांरहे हैं॥ जैसे यालोकविषेप्रसिद्धपिप्पलादिकवृक्षोंका एकमूलहोवे है ॥ तामूलतैं स्कंधनिकसे हैं ॥ तास्कंधोंतैं स्थूलशाखा निकसे हैं॥तिनस्थूलशाखोंतैं दूसरीसूक्ष्मशाखा निकसे हैं॥ तिन सूक्ष्मशाखावोंतैंभी दूसरीअत्यंतसूक्ष्मशाखा निकसे हैं॥तैसे तिनसर्वनाडियोंविषे जोसुषुम्नानामानाडी है॥सासुषुम्नानाडीतौं वृक्षकेमूल समान मुख्यहै॥और तासुषुम्नारूपमूलकीस्कंधरूपदूसरीदशनाडीहोवै हैं॥ और तिनस्कंधरूपदशनाडियोंविषे एकएकनाडीकीस्थूलशा खारूप दूसरीनवनवनाडीहोवैहै॥तहांएकसुषुम्नानाडीकूंछोडिके दूसरीदशस्कंधरूपनाडीतथातिनोंकीस्थूलशाखारूपनब्बेनाडी९० यहसर्व मिलिके एकशत१००नाडीहोवै है॥तिनएकशतनाडियोंविषे एकएकनाडीकी सूक्ष्मशाखारूप दूसरीएकएकशत१००नाडीहोवे हैं॥तेसू क्ष्मशाखारूपनाडियां मिलिके १०००० दशसहस्रहोवे हैं ॥ और तिनसूक्ष्मशाखारूपदशसहस्रनाडियोंविषे एकएकनाडीकी अत्यंत सूक्ष्मशाखारूप दूसरी बहत्तरिबहत्तरिसहस्र ७२००० नाडीहोवे हैं॥तेअत्यंतसूक्ष्मशाखारूपसर्वनाडियां मिलिके बहत्तरिकोटिहोवे हैं॥ इसप्रकार बहत्तरिकोटि दशसहस्र एकशत एक इतनीसर्वनाडीहोवे हैं ॥ तहां एकसुषुम्नानाडीकूंछोडिके दूसरीनाडियोंविषे सो

व्याननामाप्राण वर्तेहै।तिसीव्यानकूंश्रुतिविषे प्राणअपानकीसंधिरूपकरिकैवर्णनकऱ्याहै।तथा बलवान्कर्मोंका साधकरूपकरिके कथनक ऱ्याहै॥और तासुषुम्नानाडीकरिकैतो उदाननामाप्राणही विचरेहै॥कैसाहैसोउदाननामाप्राण सर्वदा ऊर्ध्वगमनकरणेकाहेस्वभावजिसका३ इतनेकरिके यहप्राण याशरीरतैंबाह्यकिसद्वारकरिके तथाकिसवृत्तिविशेषकरिके तथाकिसनिमित्तकरिकैउत्क्रमणकरेहै यातीनविकल्पोंक रिकैयुक्त चतुर्थप्रश्नविषे प्रथमदोविकल्पोंकासमाधान कथनकऱ्या।काहेतैं यहप्राण सुषुम्नानाडीरूपद्वारकरिके तथाउदानवृत्तिरूपकरिकैया शरीरतैं बाह्यउत्क्रमणकरेहै॥यावचनतैं तिनदोनोंविकल्पोंकाउत्तर सिद्धहोवै है॥अब किसनिमित्तकरिकैयहप्राण शरीरतैंउत्क्रमणकरेहै यातृतीयविकल्पकासमाधान वर्णनकरे हैं॥हेआश्वलायन॥मरणकालविषे जिनजीवोंके अग्निहोत्रादिकपुण्यकर्म फलदेणेवासतै सन्मुखहोवे हैं ॥ तिनजीवोंकूंतो यहउदाननामाप्राण स्वर्गादिकलोकोंकीप्राप्ति करे है ॥ और तामरणकालविषे जिनजीवोंके पापकर्म फलदेणेवा सतै सन्मुखहोवे हैं ॥ तिनजीवोंकूं सोउदाननामाप्राण नरकादिकोंकीप्राप्तिकरेहै ॥ और तामरणकालविषे जिनजीवोंके पुण्यपापरूपदो नोंकर्म फलदेणेवासतै सन्मुखहोवे हैं ॥ तिनजीवोंकूं सोउदाननामाप्राण मनुष्यलोककीप्राप्तिकरे है ॥ और तामरणकालविषे जिनपु रुषोंकूं तिनस्वर्गादिकलोकोंकीप्राप्तिकरणेहारे पुण्यपापकर्मरूपप्रतिबंधक नहींहोवे हैं ॥ तिनपुरुषोंकूंतो सोउदान तासुषुम्नानाडीद्वारा ब्रह्मलोककीहीप्राप्तिकरेहै ॥ और जिनपुरुषोंके आत्मसाक्षात्कारकरिके पुण्यपापरूपसर्वकर्म निवृत्तहुएहैं ॥ तिनविद्वान्पुरुषोंका सोउदा ननामाप्राण शरीरतैंबाह्य उत्क्रमण करतानहीं ॥ यातैं अन्वयव्यतिरेककरिके यापुण्यपापकर्मोंविषेही ताप्राणकेउत्क्रमणकीनिमित्त कारणता सिद्धहोवेहै ॥ इतनैंकरिके चतुर्थप्रश्नउत्तरकानिरूपणकऱ्या॥४॥अब यहप्राण बाह्यअधिभूतअधिदैवप्रपंचकूं किसप्रकार धार णकरेहै॥तथा अंतर अध्यात्मरूपजगत्कूं किसप्रकारधारणकरेहै॥यापंचमषष्ठदोनोंप्रश्नोंकाउत्तर निरूपणकरे हैं ॥ हेआश्वलायन ॥ यह प्राण बाह्यआदित्यपृथ्वीआदिकरूपोंकरिके याअधिभूतअधिदैवरूपसर्वजगत्कूंधारणकरेहै ॥ और यहप्राण प्राण अपान समान व्यान उदान यापंचमुख्यस्वरूपोंकरिके तथाचक्षुआदिकगौणस्वरूपोंकरिके अंतरअध्यात्मजगत्कूंधारणकरे है ॥ अब याहीअर्थकेस्पष्टकरणे

वासतें पंचप्राणोंके क्रमतैं बाह्यरूपोंकानिरूपणकरे हैं ॥ हेआश्वलायन॥चक्षु तथाआदित्य यहदोनों प्राणस्वरूपहैं॥यातैं तिनदोनोंकाप रस्परभेदनहीं है ॥ किंतु तिनदोनोंका अभेदही है ॥ यातैं ताप्राणवायुका बाह्यरूपआदित्यहै॥और यापृथ्वीदेवताकरिकेही अपानवा युकाआकर्षणहोवैहै॥यातैं ताअपानका सापृथ्वी बाह्यरूपहै ॥ और जैसे यहसमान शरीरकेमध्यदेशविषेरहे है॥ तैसे भूमिलोकके तथा स्वर्गलोकके मध्यदेशविषे यहआकाशरहेहै॥यातैं तासमानका सोस्वर्गपृथ्वीकेमध्यवर्तिआकाश बाह्यरूपहै ॥ और जैसे व्यान सर्वना डियोंविषेव्यापकहै ॥ तैसे यहबाह्यवायुभी व्यापकहै ॥ यातैं ताव्यानका यहवायु बाह्यरूपहै ॥ और जैसे याउदानका ऊर्ध्वगमनकर णेकास्वभावहै ॥ तैसे अग्निरूपतेजकाभी ऊर्ध्वगमनकरणेकास्वभावहै ॥ यातैं ताउदानका यहतेज बाह्यरूपहै ॥हेआश्वलायन॥ याश रीरविषेस्थित जोअंतःकरणकीवृत्तिरूप तथाउष्णतारूपतेजहै ॥ सोतेज जिसकालविषे शांतहोइजावै है ॥ तिसकालविषे यहजीव ऊर्ध्वश्वासरूपप्राणवृत्तिवालाहोवै है॥ सोप्राण यद्यपि आपोमयःप्राणः याश्रुतिविष जलमयरूपकरिकेकथनकऱ्याहै ॥ तथापि मरणका लविषे सोप्राण तेजोरूपउदानवृत्तिकरिकेयुक्तहुआ ताजीवकूं लोकांतरविषेलेजावै है॥ तात्पर्ययह॥पूर्वउक्ततेजतैंविना याशरीरविषे ताउ दानकीस्थितिहोवैनहीं ॥ याकारणतैंभी सोतेज उदानरूपहीं है ॥ हेआश्वलायन॥ मरणकालविषे जोजीव कर्मकेवशतैं भावीप्राप्तहोणेहा रेशरीरकेज्ञानजन्यसंस्कारोंवालाहै॥तथा जोजीव इंद्रियमनप्राणोंकेसाथ तादात्म्यसंबंधकूंप्राप्तहुआहै॥ऐसेजीवकूंहीं सोक्रियाशक्तिप्राण लोकांतरविषेलेजावै है॥अब यापूर्वउक्तविद्याका फल वर्णनकरेहैं॥हेआश्वलायन॥जोप्राण पूर्वउक्तरीतिसैं परमात्मादेवतैं उत्पन्नभयाहै ॥ तथा जोप्राण पुण्यपापकर्मोंकेवशतैं अनेकशरीरोंकेसाथ संबंधकूंप्राप्तहोवै हैं।तथा जोप्राण नाडीआदिकअनेकस्थानोंविषेरहेहै।तथा जोप्रा णसर्वकाप्रेरकहै ॥ तथाजोप्राण अध्यात्मअधिदैवरूपहै॥सोप्राण मैंहूं॥याप्रकार जोअधिकारीपुरुष ताप्राणकीअभेदउपासनाकरेहै॥तिस अधिकारी पुरुषका शिष्यप्रशिष्यादिकोंकीपरंपरारूपविद्यावंश तथापुत्रपौत्रादिकोंकीपरंपरारूपजन्मवंश कदाचित्भी नष्टहोवैनहीं ॥ किंतुताउपासकपुरुषका सोदोनोंप्रकारकावंश सर्वदाबन्यारहेहै ॥ हेआश्वलायन ॥ ताप्राणोंकेउपासकपुरुषकूं केवल सोवंशकीवृद्धिरूप

॥ ८ ॥

फल नहींहोवै है ॥ किंतु तिनउपासकपुरुषोंकूं अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा आत्मसाक्षात्कारकीभीप्राप्तिहोवै है ॥ ताआत्मसाक्षात्कारकरि के तेउपासकपुरुष मोक्षरूपअमृतकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ तामोक्षरूपअमृतकूंप्राप्तहोइकैं तेउपासकपुरुष पुनःयासंसारदुःखकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं अंतःकरणकीशुद्धिवास्ते याअधिकारीपुरुषोंनैं साप्राणकीउपासना अवश्यकरिकैकरणी ॥ ३ ॥ इहां पूर्व प्रसंगविषे कात्यायन भा र्गव आश्वलायन यातीनऋषियोंके तीनप्रश्नउत्तरोंकरिकै सगुणविद्याकाविषय निरूपणकऱ्या ॥ अब निर्गुणविद्याकेविषयकानिश्चयकरणे वास्ते चतुर्थप्रश्नउत्तरकानिरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार तापिप्पलादमुनिकेवचनकूंश्रवणकरिकै सोआश्वलायनऋषि तूष्णीभा वकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसतैंअनंतर गार्ग्यनामा सौर्यायणिऋषि तापिप्पलादमुनिकेप्रति यहपंचप्रकारकाप्रश्नकरताभया ॥ गार्ग्यउवाच॥ हेपिप्पलादमुनि॥ याशरीरविषे आपणेआपणेव्यापारकीउपरामतारूपशयनकूं कौन प्राप्तहोवै हैं ॥ इहां याप्रथमप्रश्नका जाग्रतआवस्था केआश्रयकानिर्णय प्रयोजनहै ॥ काहेतैं जिसकेव्यापारकीउपरामताकरिकै जाग्रतकीनिवृत्तिरूपशयन होवैगा ॥ तिसीकूंहीं जाग्रतकीआ श्रयता अर्थतैं सिद्धहोवैगी ॥१॥ और हेभगवन् ॥ याशरीरविषे सर्वदा आपणेआपणेव्यापारविषेस्थितहुए कौन जाग्रतकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ याद्वितीयप्रश्नका याशरीरकेरक्षाकरणहारेकानिर्णय प्रयोजनहै ॥ काहेतैं जो सर्वदासावधानहोवै है ॥ तिसीविषेही रक्षकपणा संभवैहै ॥ असावधानविषे रक्षकपणासंभवैनहीं ॥ २ ॥ और हेभगवन् ॥ यासंघातविषे नानाप्रकारकेस्वप्नोंकूं कौनदेखेहै ॥ यातृतीयप्रश्नका स्वप्न अवस्थाकेआश्रयकानिर्णयही फलहै ॥ काहेतैं जोवस्तु स्वप्नअवस्थाविषे सावधानरहैगा ॥ तिसवस्तुविषेही स्वप्नकीआश्रयतासंभवैहै ॥ ३ ॥ और हेभगवन् ॥ यासंघातविषे सुषुप्तिकेसुखकूं कौनभोगे है ॥याचतुर्थप्रश्नका सुषुप्तिअवस्थाकेआश्रयकानिर्णयहीफलहै ॥ काहेतैं जोवस्तु सुषुप्तिकालकेसुखकूं भोगैगा ॥ तिसवस्तुविषेही सुषुप्तिअवस्थाकीआश्रयता संभवैहै ॥ ४ ॥ और हेभगवन्॥तासुषुप्ति अवस्थाविषे यहसंपूर्णप्राणादिक किसआधारविषेस्थितहोवै हैं॥यापंचमप्रश्नका तुरीयअक्षरआत्माकानिर्णयहीप्रयोजनहै॥५॥हेशिष्य ॥ इसप्रकार जभी तागार्ग्यऋषिनै तापिप्पलादमुनिकेप्रति पंचप्रश्नकरे॥तभी सोपिप्पलादमुनि तागार्ग्यकेप्रति यथाक्रमतैं तिनपंचप्रश्नोंका

उत्तर कहताभया ॥ पिप्पलादमुनिरुवाच ॥ हेगार्ग्य ॥ स्वप्नअवस्थाविषे यहचक्षुआदिकपंचज्ञानइंद्रिय तथावाकादिकपंचकर्मइंद्रिय मनकेसाथ तादात्म्यभावकूंप्राप्तहोइकै आपणेआपणेव्यापारतैंनिवृत्तिरूपशयनकूं प्राप्तहोवै हैं॥और सुषुप्तिअवस्थाविषेतौ तेचक्षुआदिक दशइंद्रिय मनकेसहितही ताशयनकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ यातैं सोचक्षुआदिकइंद्रियविशिष्टमनहीं याजाग्रतअवस्थाकाआश्रयहै ॥ १ ॥ अब द्वितीयप्रश्नकाउत्तर निरूपणकरे हैं ॥ हेगार्ग्य ॥सुषुप्तिअवस्थाविषे मनसहितइंद्रियोंकेलयहुएभी प्राण अपान व्यान समान उदान यहपंचप्रकारकाप्राण जठराग्निसहित आपणेआपणेव्यापारविषेस्थितिरूपजाग्रतकूं प्राप्तहोवै हैं ॥ याकारणतैंहीं तासुषुप्तिविषे याजीवोंकेउदर विषेस्थितअन्नकापरिपाकहोवै है ॥ यातैं जठराग्निसहित तेपंचप्राणहीं याशरीरकारक्षणकरणेहारे हैं॥ २ ॥इहां सुषुप्तिअवस्थाविषेस्थित विद्वान्पुरुषकूं श्रुतिनैं अग्निहोत्रकीप्राप्तिकथनकरीहै ताकानिरूपणकरे हैं॥ हेगार्ग्य॥जैसे प्रसिद्धअग्निहोत्रीपुरुषोंका गार्हपत्यनामाअग्नि सर्वदास्थिररहे है॥ और आहवनीयनामाअग्नितौ होमकरणेवासतैं तागार्हपत्यअग्नितैंउठाइकै प्रज्वलितकऱ्याजावै है॥तैसे इहां प्रसंगविषे अंतःप्रवेशकरणेहारेअपानवायुतैं बाह्यगमनकरणेहाराप्राणवायु उठायाजावै है।याप्रकारकीसमानताकूंग्रहणकरिकै श्रुतिभगवती ताविद्वान् पुरुषकेप्राणकूंतौ आवहनीयअग्निरूपकहेहै ॥ और ताअपानकूं गार्हपत्यअग्निरूपकहेहै ॥और ताविद्वान्पुरुषका व्याननामावायु अन्वाहार्यपचनरूपहै ॥ इहां ओदनविशेषकानाम अन्वाहार्य है ॥ सोअन्वाहार्यरूपओदन जिसअग्निविषेपकायाजावैहै ॥ ताअग्निकानाम अन्वाहार्यपचनहै ॥ याअन्वाहार्यपचनकूंहीं वेदवेत्तापुरुष दक्षिणअग्निकहे हैं ॥ तादक्षिणअग्निरूप सोव्याननामावायुहै ॥ काहेतैं जैसे प्रसिद्धअग्निहोत्रकीशालाविषे सोदक्षिणअग्नि दक्षिणदिशाकेकुंडविषेस्थितहोवै है ॥ तैसे यहव्याननामावायुभी हृदयकेपंचाछिद्रोंविषे दक्षिणछिद्रविषेस्थितहोवै है ॥ याप्रकारकीसमानताकूंअंगीकारकरिकै श्रुतिनैं ताव्यानकूं दक्षिणअग्निरूपकह्याहै॥और ताविद्वान्पुरुष का समाननामावायुतौ तिनगार्हपत्यादिकअग्नियोंविषेपक्षपाततैंरहितहोतारूपहै॥जैसे प्रसिद्धअग्निहोत्रविषे जभी यजमान किसीदूसरेकार्यविषेसंलग्नहोवै है ॥ तभी तायजमानकाप्रतिनिधिरूपकारिकै शिष्यादिकहोताहोवै हैं ॥ तैसे याविद्वान्पुरुषकेप्राणरूपअग्निहोत्र

विषे सोसमाननामावायुहीहोतारूपहै॥काहेतैं यहसमाननामावायु उच्छ्वासनिःश्वासरूपदोनोंआहुतियोंकूं न्यूनअधिकभावतैंरहितसमानता कूंप्राप्तकरे है॥और यहउदाननामावायुतौ ताविद्वान्पुरुषके प्राणअग्निहोत्रका फलरूपहै ॥ काहेतैं याप्रसिद्धअग्निहोत्रविषेभी यजमानपुरुषकूं ताउदाननामावायुकेउत्क्रमणकरिकैही स्वर्गादिकफलकीप्राप्तिहोवै है ॥ याकारणतैं सोउदाननामावायु ताविद्वान्पुरुषकेअग्निहोत्र काफलरूपहै ॥ और याविद्वान्पुरुषकेप्राणअग्निहोत्रविषे ताविद्वान्पुरुषकामन यजमानरूपहै ॥ और जैसे बाह्यअग्निहोत्रविषे प्रसिद्धगार्हपत्यादिकअग्नियां तायजमानपुरुषकूं स्वर्गरूपफलकीप्राप्तिकरे हैं॥तैसे यहप्राणरूपअग्नियांभी तामानरूपयजमानकूं सुषुप्तिअवस्थाविषे हृदयकमलविषेस्थित ब्रह्मानंदरूपस्वर्गकीप्राप्तिकरे है ॥ इसप्रकार ताब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुषका सर्वदा अग्निहोत्रहोवै है॥अब तृतीयचतुर्थप्रश्नकाउत्तर निरूपणकरे हैं ॥ हेगार्ग्य ॥ जोमन स्वप्नअवस्थाविषेभीजागे है ॥ तथाजोमन सुषुप्तिअवस्थाविषे ताविद्वान्पुरुषके प्राण अग्निहोत्रका यजमानरूपहै ॥ सोईहीमन चेतनकेप्रतिबिंबकूंग्रहणकरिकै प्रकाशमानहुआ नानाप्रकारकेस्वप्नोंकूंदेखे है॥ याकारणतैं सो चिदाभासयुक्तमनही तास्वप्नअवस्थाकाआश्रयहै ॥३॥ और हेगार्ग्य ॥ सोमनही तासुषुप्तिकेसुखकूंप्राप्तहोवै है ॥ काहेतैं तासुषुप्ति अवस्थाविषे जैसे यहसंसार यद्यपि स्पष्टरूपकरिकैप्रतीतहोवैनहीं॥तथापि तासुषुप्तिविषे यहसंसार सूक्ष्मबीजरूपकारिकैरहे है ॥ तैसे तासुषुप्तिविषे यहमन यद्यपि स्पष्टरूपकरिकैप्रतीतहोवैनहीं ॥ तथापि सोमन तासुषुप्तिविषे सूक्ष्मबीजरूपकरिकैरहे है॥ यातैं तासूक्ष्मबीजरूपकारिकैस्थितहुआ यहमनहीतासुषुप्तिकाआश्रयहै॥४॥अब पंचमप्रश्नकाउत्तर निरूपणकरे हैं॥हेगार्ग्य॥जोचेतनस्वरूपआत्मा तामनविषे प्रतिबिंबरूपकरिकैस्थितहैं॥ताचेतनआत्माविषेही यहप्राणादिकसर्वजगत् स्थितहै॥जैसे यालोकविषे सायंकालविषे अनेकदिशावोंतैंआये हुए अनेकपक्षी किसीमहान्वृक्षविषेस्थितहोवै हैं॥ तैसे पृथ्वीआदिकपंचभूत तथातिनपृथ्वीआदिकभूतोंकेगंधादिगुण तथाचक्षुआदिकदशइंद्रिय तथाचारप्रकारकाअंतःकरण तथापंचप्रकारकाप्राण यहसंपूर्णपदार्थ ताचेतनआत्माविषेहीस्थितहैं॥हेगार्ग्य॥ताचेतनआत्माविषे केवल यहजडप्रपंचही स्थितनहीं है॥किंतु इंद्रियअंतःकरणप्राणादिकोंकेव्यापारविशिष्टरूपकरिकै यहजीवभी ताशुद्धआत्माविषेही

स्थितहै॥यातैंसोआत्मादेवही सर्वकाआधारहै॥हेगार्ग्य सोयहआत्मादेवचक्षुआदिकइंद्रियोंकेसाथमिलिकैदर्शनादिकअनेकव्यापारोंकूंकरे है॥यातैं सोआत्मादेव द्रष्टा स्प्रष्टा श्रोताइत्यादिकगुणोंवालाहोइकै जीवसंज्ञाकूंप्राप्तहुआभी वास्तवतैंपरमात्मारूपहीहै॥ताजीवपरमात्मा विषे किंचित्मात्रभीभेदनहीं है॥अब याकथनकरीहुईनिर्गुणविद्याके फलकानिरूपणकरे हैं॥हेगार्ग्य ॥ जोआत्मादेव सर्वव्यापकहुआभी शुद्धमनविषे विशेषकरिकेअभिव्यक्तहोवै है॥तथा जोआत्मादेव सर्वजगत्काअधिष्ठानरूपहै॥तथा जोआत्मादेव स्थूल सूक्ष्म कारण यातीनशरीरों तैंरहितहै॥तथा जोआत्मादेव स्वप्रकाशअक्षरआनंदस्वरूपहै॥ऐसेआत्मादेवकूं जोअधिकारीपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतैं साक्षात्कारकरे है॥ सोअधिकारीपुरुष यासर्वजगत्कूंसामान्यरूपकरिकै तथाविशेषरूपकरिकै साक्षात्कारकरे है ॥ तथा यासंसारकेजन्ममरणादिकसर्वतापोंतैं मुक्तहोवै है॥ हेगार्ग्य॥ जिसअक्षरपरमात्मादेवविषे यहजीव स्थितहै ॥ तथा जिसअक्षरविषे ताजीवकेउपाधिरूपप्राणइंद्रियादिकस्थितहैं ॥ताअक्षरपरमात्मादेवकूं जोअधिकारीपुरुष आपणाआत्मारूपकरिकैसाक्षात्कारकरे है ॥ सोअधिकारीपुरुष सर्वज्ञहुआ ब्रह्मभावरूपपरमपदकूंप्राप्तहोवे है ॥ ५ ॥ इतनैंकरिकै चतुर्थप्रश्नउत्तरकानिरूपणकऱ्या ॥ अब ताअक्षरआत्माकेएकवारउपदेशतैं जोअधिकारीपुरुष ताअक्षरआत्माकेजानणेविषे समर्थनहींहोवै है॥ताअधिकारीपुरुषकेप्रति प्रणवकीउपासनाविधानकरणेवासतै पंचमप्रश्नउत्तरकानिरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार जभी तापिप्पलादमुनिनैं गार्ग्यऋषिकैप्रति उत्तरकह्या तभी सोगार्ग्यऋषि तूष्णीभावकूं प्राप्तहोताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोसत्यकामनामा शैल्यऋषि तापिप्पलादमुनिकेप्रति याप्रकारकाप्रश्न करताभया ॥ सत्यकामउवाच ॥ हेभगवन् पिप्पलादमुनि ॥ जोअधिकारीपुरुष आपणेमरणपर्यंत ॐकाररूपप्रणवकाध्यानकरे है ॥ सोअधिकारीपुरुष भूमिअदिकलोकोंविषे किसलोककूंप्राप्तहोवै है ॥ याहमारेप्रश्नकाउत्तर आप कृपाकरिकैकथनकरो ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकाप्रश्न जभी तासत्यकामनैं तापिप्पलादमुनिकेप्रति कऱ्या ॥ ॥ तभी सोपिप्पलादमुनि तासत्यकामकेप्रति याप्रकारकाउत्तर कहताभया पिप्पलादमुनिरुवाच ॥ हेसत्यकाम ॥ जिसवर्णकूं वेदवेत्तापुरुष ॐकार यानामकरिकैकथनकरे हैं ॥ सो ॐकार अक्षरस्वरूपपरब्रह्मका

॥ १० ॥

नामहै ॥ तथा प्राणस्वरूपअपरब्रह्मकाभी नामहै ॥ केसाहैसोॐकार ॥ तापरब्रह्मकेसाथ तथाअपरब्रह्मकेसाथ अभिन्नहै ॥ काहेतैं वाच्यअर्थका तथावाचकनामका वेदवेत्तापुरुषोंनैं अभेदहीकथनकऱ्याहै ॥ अथवा देवताप्रतिमाकीन्याईं सोॐकार तापरअपरब्रह्मकाप्रतीकरूपहै ॥ याकारणतैं सोॐकार तापरअपरब्रह्मतैंअभिन्नहै ॥ अन्यविषेअन्यदृष्टिकाजोआलंबनहोवै है ताकानाम प्रतीकहै ॥ जैसे शालग्रामविषे जोविष्णुदृष्टिहै तादृष्टिकाआलंबन शालग्रामहै ॥ यातैं सोशालग्राम ताविष्णुकाप्रतीकरूपहै ॥ तैसे सोॐकारभी तापरअपरब्रह्मका प्रतीकरूपहै ॥ हेसत्यकाम ॥ जोअधिकारीपुरुष याॐकाररूपप्रणवकूं परब्रह्मरूपकरिकै चिंतनकरे है ॥ सोअधिकारीपुरुष ताध्यानकेप्रभावतैं तापरब्रह्मकूंही प्राप्तहोवै है॥और जोअधिकारीपुरुष ताप्रणवकूं अपरब्रह्मरूपकरिकै चिंतनकरे है॥सोअधिकारीपुरुष ताध्यानकेप्रभावतैं ताअपरब्रह्मकूंहीं प्राप्तहोवै है॥ हेसत्यकाम ॥ ताफलकेभेदविषे केवल पुरुषकीकामनाकाभेद कारणनहीं है ॥ किंतु ताप्रणवकेमात्रावोंकाभेदभी ताफलकेभेदविषेकारणहै ॥ काहेतैं ताप्रणवमंत्रविषे अकार उकार मकार अर्द्धमात्रा यहसाढेतीनमात्रारहे हैं॥तहां जोपुरुष प्रथम अकारमात्राकूं ऋग्वेदरूपकरिकैचिंतनकरे है ॥ तिसउपासकपुरुषकूं ताऋग्वेदकेअभिमानीदेवता याभूमिलोककीप्राप्तिकरे है॥और जोपुरुष अकार उकार यादोनोंमात्राओंकूंयजुर्वेदरूपकरिकै चिंतनकरे है ॥ तिसउपासकपुरुषकूं तायजुर्वेदकेअभिमानीदेवता स्वर्गलोककीप्राप्तकरे हैं॥और जोपुरुष अकार उकार मकार यातीनोंमात्रावोंकूं सामवेदरूपकरिकैचिंतनकरे है॥तिसउपासकपुरुषकूं तासामवेदकेअभिमानीदेवता ब्रह्मलोककीप्राप्तिकरे हैं।जात्रह्मलोकविषेप्राप्तहुआ सोउपासकपुरुष पुनःभूमिलोकविषेआवैनहीं। याकारणतैं यामुमुक्षुजनोंनैं तातीनमात्रावालेप्रणवकाही ध्यानकरणा॥एकमात्राका अथवादोमात्राका ध्यानकरणानहीं ॥ काहेतैं याप्रणवकीजेअकारउकार रूपदोमात्राहैं ॥ तेदोनोंमात्रा याउपासकपुरुषकूं पुनरावृत्तियुक्त भूमिस्वर्गलोककेसुखकीही प्राप्तिकरे हैं ॥ पुनरावृत्तितैंरहितसुखकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ और सोतीनमात्रायुक्तप्रणवतो याउपासकपुरुषोंकूं पुनरावृत्तितैंरहितब्रह्मलोककीप्राप्तिकरे है ॥ यातैं याअधिकारीपुरुषनैं तातीनमात्रावोंयुक्तप्रणवकाही ध्यानकरणा ॥ हेसत्यकाम ॥ जैसे एकअकारमात्राप्रधानप्रणवका चिंतनकर

णेहारापुरुष याभूमिलोककूंप्राप्तहोवै है॥ और अकार उकार यादोमात्राप्रधानप्रणवका चिंतनकरणेहारापुरुष स्वर्गलोककूंप्राप्तहोवै है ॥ और अकार उकार मकार यातीनमात्राप्रधानप्रणवकाचिंतनकरणेहारापुरुष ब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवै है ॥ तैसे जोपुरुष अर्द्धमात्राप्रधान प्रणवका चिंतनकरे है ॥ सोपुरुष अद्वितीयब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवै है ॥ इसप्रकार याअधिकारीपुरुषोंकूं ताॐकाररूपप्रणवतैंही सर्वभोग्यपदार्थोंकी तथामोक्षकी प्राप्तिहोवै है ॥ यातैं यहप्रणवमंत्र सर्वमंत्रोंतैंश्रेष्ठहै ॥ ५ ॥ इतनैंकरिकै पंचमप्रश्नउत्तरकानिरूपणकऱ्या ॥ अब चतुर्थप्रश्नविषेकथनकरेहुए अक्षरपरमात्मादेवविषे प्रत्यक्रूरूपतानिश्चयकरावणेवासतै षष्ठप्रश्नउत्तरकानिरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार जभी तापिप्पलादमुनिनैं तासत्यकामकेप्रति उत्तरकह्या ॥ तभी सोसत्यकामनामाऋषि तूष्णीभावकूंप्राप्तहोताभया ॥ तिसतैं अनंतर सुकेशनामाभारद्वाजऋषि तापिप्पलादमुनिसैं प्रत्यक्आत्मास्वरूपपूछताभया ॥ सुकेशाउवाच ॥ हेभगवन्पिप्पलादमुनि ॥ वेदवेत्तापुरुषोंनैं जोषोडशकलावोंवालापुरुष कथनकऱ्याहै ॥ तापुरुषकेनिर्णयकरणेवासतै मैं बहुतवार विचारकरताभयाहूं ॥ परंतु तापुरुषकें स्वरूपकूं मैंअबपर्यंत निश्चयनहींकरताभयाहूं ॥ हेभगवन् ॥ पूर्व किसीकालविषे कोशलदेशकाअधिपति हिरण्यनाभनामाराजा हमारेसमीप आवताभया ॥ और सोहिरण्यनाभनामाराजा बहुतविनयपूर्वक तापोडशकलावालेपुरुषकास्वरूप हमारेसैं पूछताभया ॥ ताराजाकेप्रश्नकूं श्रवणकरिकै मैं ताहिरण्यनाभनामाराजाकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेराजन् ॥ जोषोडशकलावालापुरुष तुमनैं हमारेसैंपूछाहै ॥ तापोडशकलावालेपुरुषकूं मैंजानतानहीं ॥ हेराजन् ॥ यालोकविषे जोपुरुष मोहकेवशतैं मिथ्यावचनकूंउच्चारणकरे हैं ॥ सोमिथ्यावादीपुरुषरूप वृक्ष दोनोंलोककेसुखरूपफलकूंनप्राप्तहोइकै भाग्यरूपमूलसहित नाशकूंप्राप्तहोवै है ॥ याप्रकार तामिथ्यावचनके महानदुःखरूपफलकूंजानताहुआमैं स्वप्नविषेभी तामिथ्यावचनकूंकहतानहीं ॥ तौ जाग्रत्अवस्थाविषे तामिथ्यावचनकूं मैंकैसेकहूंगा ॥ यातैं यासुकेशानामाऋषिनैं तापोडशकलावालेपुरुषकूंजानिकरिकैभी हमारेप्रति नहींकथनकऱ्या ॥ याप्रकारकीशंका तुमनैं आपणेमनविषे कदाचित्भी नहींकरणी ॥ हेभगवन् पिप्पलादमुनि ॥ याप्रकारकावचन जभी हमनैं ताहिरण्यनाभराजाकेप्रतिकह्या ॥ तभीसोहिरण्यनाभराजा तूष्णीभावकूंप्राप्त होइकै आपणेदेशकूंजाताभया ॥ तिसदिनतैंलैकै हमारेचित्तविषे तापोडशकलावालेपुरुषकेजानणेकीबहुतउत्कटइच्छालगिरहीहै ॥ आप कृपाकरिकै तापोडशकलावालेपुरुषकास्वरूप हमारेप्रति कथनकरो ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार जभी तासुकेशानामाऋषिनैं तापिप्पलादमुनिके प्रति प्रश्नकऱ्या ॥ तभी सोपिप्पलादमुनि तासुकेशाऋषिकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ पिप्पलादमुनिरुवाच ॥ हेसुकेशा ॥ जोतुमनैं षोडशकलावालापुरुष पूछाहै ॥ सोपुरुष कोईदूरास्थितनहींहै ॥ किंतु जिसपुरुषविषे तेषोडशकलारहेहैं ॥ सोपुरुष यातुमारेशरीरविषेहीप्रत्यक् आत्मारूपकरिकैस्थितहै कैसाहैसोपुरुष ॥ तासर्वजगत्रूपषोडशकलाओंकाअधिष्ठानहोणेतैं यासर्वजगत्कानियंताहै ॥ अब तापरमात्मादेवरूपपुरुषकी अद्वितीयरूपतास्पष्टकरणेवासतै तापरमात्मादेवतैं तिनषोडशकलाओंकीउत्पत्ति कथनकरे हैं ॥ हेसुकेशा ॥ जोपरमात्मादेव प्रत्यक्रूरूपकरिकै याशरीरविषेस्थितहै ॥ सोईहीपरमात्मादेव याजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्व जरायुचर्मकीन्याईं बंधनकरणेहारीउपाधिकेकरणेकी इच्छाकरताहुआ याप्रकारकाविचारकरताभया ॥ मैंपरमात्मादेव याशरीरविषेस्थितहुआभी सर्वत्रव्यापकहूं तथा विक्रियातैंरहितहूं ॥ ऐसा मैंपरमात्मादेव उत्क्रमण गमन आगमन इत्यादिकगुणोंवालेसंसारकूं किसउपाधिकरिकैप्राप्तहोवोंगा ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै सोपरमात्मादेव प्रथम प्राण अपान समान व्यान उदान यापंचवृत्तिवाले प्राणरूपकलाकूं उत्पन्नकरताभया ॥ कैसाहैसोप्राण ॥ याशरीरतैं उत्क्रमणका तथापरलोकविषे गमनका तथापरलोकतैंआगमनका कारण है ॥ १ ॥ तिसप्राणतैंअनंतर सोपरमात्मादेव श्रद्धारूपदूसरीकलाकूं उत्पन्न करताभया ॥ इहां शुभकर्मोंविषेप्रवृत्तकरणेहारीआस्तिक्यबुद्धिकानाम श्रद्धाहै ॥ २ ॥ तिसश्रद्धातैंअनंतर सोपरमात्मादेव कर्मोंकेकरणेका तथातिनकर्मोंकेफलभोगका आधाररूपजे आकाश वायु तेज जल पृथ्वी यहपंचभूतहैं ॥ तिनपंचभूतरूप पंचकलाओंकूं उत्पन्नकरताभया ॥ ३ ॥ तिनपंचभूतोंतैंअनंतर सोपरमात्मादेव ज्ञानकासाधनरूपजेश्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रियहैं ॥ तथाकर्मकासाधनरूपजे वाकादिकपंचकर्मइंद्रियहैं ॥ तादृशइंद्रियरूपअष्टमीकलाकूंउत्पन्नकरताभया ॥ ८ ॥ तिसतैंअनंतर सोपरमात्मादेव तिन इंद्रियोंकूं प्रवृत्तकरणेहारेमनरूपनवमीकलाकूं उत्पन्नकरताभया ॥ ९ ॥ तिसतैंअनंतर सोपरमात्मादेव तामनकीस्थितिकरणेहारे अन्नरूप

दशमीकलाकूं उत्पन्नकरताभया ॥ १० ॥ तिसतैंअनंतर सोपरमात्मादेव वीर्यरूपएकादशीकलाकूं उत्पन्नकरताभया॥ इहां ताअन्नकरिके जन्य जोसामर्थ्य है ताकानाम वीर्य है॥ ११॥ तिसतैंअनंतर सोपरमात्मादेव तावीर्य तैं जन्य जोशुद्धिकरणेहारातपहै तातपरूपद्वादशीक लाकूं उत्पन्नकरताभया ॥ १२ ॥ तिसतैंअनंतर सोपरमात्मादेव मंत्ररूपत्रयोदशीकलाकूं उत्पन्नकरताभया ॥ इहां वेदोंकेअध्ययनकाना ममंत्रहै॥ १३॥ तिसतैंअनंतर सोपरमात्मादेव लौकिकवैदिककर्मरूपचतुर्दशीकलाकूं उत्पन्नकरताभया॥ १४॥ इहां मंत्रशब्दकीजोवेदकेअ ध्ययनविषेलक्षणाकरीहै ताकायहकारणहै॥ यद्यपि मंत्ररूप तथाब्राह्मणरूपजेवेदहैं॥ तेवेद साक्षात्प्राणतैंहीप्रगटहुएहैं॥ तहांश्रुति॥ अस्यमह तोभूतस्यनिःश्वसितमेतद्यद्ऋग्वेदोयजुर्वेदःसामवेदोऽथर्वांगिरसइति ॥ अर्थयह ॥ इसमहान्परमात्मादेवकेही ऋगू यजुष् साम अथर्वण यह चारिवेद श्वासरूपहैं॥ १॥ याश्रुतिनैं साक्षात् प्राणोंतैं तिनवेदोंकाप्रगटहोणा कथनकऱ्याहै ॥ यातैं सामर्थ्यरूपवीर्यतैं तिनवेदोंकीउत्पत्ति हुईनहीं।तथापिअन्नहैआदिकारणजिसका ऐसाजोसामर्थ्यरूपवीर्यहै तथातपहै॥ तावीर्यकरिके तथातपकरिके तेवेद अध्ययनादिरूपविस्ता रकूंप्राप्तहोवै हैं॥ यातैं तेवेद अध्ययनद्वाराही तिनवीर्यादिकोंतैंप्रगटहोवै हैं॥ साक्षात्प्रगटहोवैनहीं ॥ यातैं तामंत्रपदकी वेदकेअध्ययनविषे लक्षणाकरणीयुक्तहै ॥ और तिनकर्मोंतैंअनंतर सोपरमात्मादेव लोकरूपपंचदशीकलाकूं उत्पन्नकरताभया ॥ इहांतिनकर्मोंतैंउत्पन्नभया जोसुखदुःखरूपफलहै ताकानाम लोकहै ॥ १५ ॥ तिसतैंअनंतर सोपरमात्मादेव नामरूपषोडशीकलाकूं उत्पन्नकरताभया ॥ इहां श्र रीरावच्छिन्नचेतनकेवाचकजे देवदत्त यज्ञदत्त इत्यादिकशब्दहैं तिनोंकूंनामकहेहैं ॥ जोषोडशीकलारूपनाम मुक्तपुरुषोंकाभी निवृत्तहोवै नहीं ॥ किंतु सोनामप्रलयकालपर्यंत स्थिररहेहै ॥ याकारणतैंही श्रुतिविषे तानामकूं अनंत यानामकरिकेकथनकऱ्या है ॥ १६ ॥ यहषोडशकला तापरमात्मादेवतैं उत्पन्नहोवै हैं॥ तहांश्रुति॥ सप्राणमसृजतप्राणाच्छ्रद्धां खंवायुर्ज्योतिरापःपृथ्वींद्रियंमनोऽन्नमन्नाद्वीर्यंतपोमं त्राःकर्मलोकालोकेषुचनामच ॥ १ ॥ याश्रुतिका यहपूर्वउक्तअर्थही जानिलेणा ॥ हेसुकेशा ॥ जिसपुरुषकूं आत्माकासाक्षात्कार हुआहै तामुक्तपुरुषकीदृष्टिकरिकैतौ यहप्राणादिकषोडशकला आपणेअधिष्ठाननिर्गुणपुरुषकूंप्राप्तहोइकै अदर्शनभावकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ ॥ १२ ॥

जैसे यालोकविषे श्रीगंगायमुनादिकनदियां जबपर्यंत समुद्रकूंप्राप्तनहींभई ॥ तबपर्यंत तेनदियां आपणेआपणे भिन्नभिन्ननमरू पकूंधार णकरे हैं ॥ और तेनदियां जभी तासमुद्रकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ तभी तेनदियां आपणेभिन्नभिन्ननामोंकूं तथाभिन्नभिन्नरूपोंकूं परित्यागकरिके तासमुद्रकेनामरूपकूंहीं धारणकरेहैं ॥ तैसे तामुक्तपुरुषके यहप्राणादिकषोडशकला जबपर्यंत तानिर्गुणपुरुषकूंनहींप्राप्तभई ॥ तबपर्यंत हीं आपणेआपणेभिन्नभिन्ननामरूपकूंधारणकरे हैं॥ और तेप्राणादिकषोडशकला जभी तानिर्गुणपुरुषकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ तभी तेप्राणादिक कला आपणे भिन्नभिन्ननामरूपकापरित्यागकरिके तानिर्गुणपुरुषकेनामरूपकूंहीं धारणकरे हैं ॥ हेसुकेशा ॥ जिसपुरुषविषे यहप्राणादि कषोडशकला लयभावकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ सोपुरुषकेसाहै ॥ वास्तवतैं नामरूपतैंरहितहै ॥ तथा निरवयवहै ॥ तथा आनंदस्वरूपहै॥ तथा स्वयंज्योतिअमृतस्वरूपहै ॥ और जैसे रथचक्रकेनाभिविषे अरास्थितहोवै हैं ॥ तैसे जिसपुरुषविषे यहप्राणादिकषोडशकलास्थितहोवै हैं ॥ हेसुकेशा ॥ ऐसेपरमात्मादेवकूं जोपुरुष आपणाआत्मारूपकरिकेसाक्षात्कारकरे है ॥ तिसपुरुषकूं याशरीरकेनाशतैंअनंतर पुनः प्रमादरूपमृत्युतैंभयकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ यातैं याअधिकारीपुरुषोंनैं तात्ब्रह्मात्मज्ञानकूं अवश्यकरिकेसंपादनकरणा ॥ ६ ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार सोपिप्पलादमुनि तासुकेशानामाभारद्वाजऋषिकेप्रति आत्माकाउपदेशकरिके पुनः तिनसर्वऋषियोंकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ पिप्पलादमुनिरुवाच ॥ हेसुकेशादिकसर्वब्राह्मणो ॥ यहजोअद्वितीयब्रह्मस्वरूप हमनैं तुम्हारेप्रति उपदेशकऱ्याहै ॥ इतनाहीं मैंजानताहूं ॥ इसतैंपरेकोईवस्तु मैं जानतानहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ जोब्रह्मस्वरूप हमनैं तुम्हारेप्रति उपदेशकऱ्याहै ॥ तिसतैंपरेदूसराकोईवस्तुउपदेशकरणेयोग्यनहीं है॥ यातैंताअद्वितीयब्रह्मकूं तुमसर्व आपणाआत्मारूपकरिकै निश्चयकरो॥ हेशिष्य॥ इसप्र कार जभी तापिप्पलादमुनिनैंतिनसुकेशादिकषट्ऋषियोंकेप्रति ब्रह्मविद्याका उपदेशकऱ्या।तभीतेसर्वऋषितापिप्पलादमुनिका देवताकी न्याईं अर्चनपूजनकरतेभये॥ और तेसर्वऋषि तापिप्पलादमुनिकेप्रति याप्रकारकेवचनकहतेभये॥ हेभगवन्॥ आपनैं कृपाकरिकै हमारे सर्व संशयोंकूंछेदनकऱ्याहै॥ और हमारेकूं मायातैंपर निर्गुणब्रह्मकासाक्षात्कारकराइकैआपनैंकृतार्थकऱ्याहै॥ हेभगवन् ॥ आपकेउपदेशकरिके

ब्राह्मणभावकूंप्राप्तहुए हमसर्व आजदिनविषे आपतैं ब्रह्मवित्त्वरूपकरिकैउत्पन्नहुएहैं॥काहेतैं॥ब्रह्मजानातिब्राह्मणः ॥ इत्यादिकश्रुतियोंविषे ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिकरिकैही मुख्यब्राह्मणभावकीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ यातैं आपही हमारेपिताहो॥ तथा आपहीहमारीमाताहो॥आपतैं विना दूसराकोई हमारापितामातानहीं है॥काहेतैं यहलोकप्रसिद्धपितामातातौ याशरीररूपमिथ्याआत्माकीही उत्पत्तिकरेहैं ॥जाशरीर केसंबंधतैं हमजीवोंकूं अनेकप्रकारकेदुःखोंकीप्राप्तिहोवेहै ॥ यहवार्त्ता मनुभगवान्नेंभी कहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ उत्पादकब्रह्मदात्रोर्ग रीयान्ब्रह्मदः पिता ॥ ब्रह्मजन्महिविप्रस्य प्रेत्यचेहचशाश्वतम्॥ अर्थयह ॥ यास्थूलशरीरकीउत्पत्तिकरणेहाराजोपिताहै ॥ तथा ब्रह्मभाव कीप्राप्तिकरणेहाराजोगुरुहै ॥ तिनदोनोंविषे ब्रह्मभावकीप्राप्तिकरणेहारा गुरुरूपपिता अत्यंतश्रेष्ठहै ॥ काहेतैं याअधिकारीपुरुषका तात्र ह्मउपदेष्टागुरुतैं जोब्रह्मवित्त्वरूपकारिकैजन्महै ॥ सोब्रह्मवित्त्वरूपजन्य याजीवतअवस्थाविषे तथामरणतैंअनंतर सर्वकालविषे नित्यहै ॥ तात्रह्मवित्त्वरूपजन्मका कदाचित्भीनाशहोवैनहीं ॥ १ ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभीकहीहै ॥ तहां श्लोक ॥ शरीरमेतौकुरुतः पिता माताचभारत ॥ आचार्यदत्तायाजातिः सानित्यासाजरामरा ॥अर्थयह॥हेभारत॥ यहलोकप्रसिद्धपितामाता जिसशरीरकूं उत्पन्नकरेहैं॥ सोशरीरतौ जरामरणकरिकैयुक्तहै ॥ और यहब्रह्मवेत्तागुरु याअधिकारीपुरुषोंकेप्रति जितब्रह्मवित्त्वरूपजातिकीप्राप्तिकरेहै ॥सात्रह्मवित्त्व रूपजाति नित्यहै तथाअजरअमरहै ॥ यातैं यहब्रह्मविद्याकाउपदेशकरणेहारागुरु यालोकप्रसिद्धपितामातातैं अत्यंतश्रेष्ठहै ॥१ ॥हेभग वन् ॥ कामक्रोधादिकमगरोंकरिकैयुक्त जोयहअविद्यारूप दुस्तरसमुद्रहै ॥ताअविद्यारूपसमुद्रतैं आपनैं ब्रह्मविद्यारूपमहान्नौकाकरिकै हमारेकूं पारकऱ्याहै ॥ याआपकेमहान्उपकारकीनिवृत्तिकरणेवासतै हम तीनलोकविषे कोईपदार्थदेखतेनहीं॥ जोपदार्थ आपकेताईंदेक रिकै हम आपकेऋणतैंमुक्तहोवैं॥यातैं आपब्रह्मवेत्तागुरुवोंकेप्रसन्नकरणेवासतै हमारा सर्वदानमस्कारहोवे॥ताहमारेनमस्कारमात्रकूं अंगी कारकरिकैही आप प्रसन्नहोवो॥हेशिष्य॥ याप्रकारकेवचन जभी तिनसुकेशादिषट्ऋषियोंनैं तापिप्पलादमुनिकेप्रति कथनकरे ॥ तभी सोपिप्पलादमुनि प्रसन्नहोइकै आशीर्वादपूर्वक तिनऋषियोंकूंबिदाकरताभया ॥ तथा सोपिप्पलादमुनि आपभी तास्थानतैं सुखपूर्वक

जाताभया ॥ हेशिष्य ॥ मोक्षकीप्राप्तिकरणेहाराजोयहआत्मज्ञान है सोआत्मज्ञान महान्ब्रह्मवेत्तागुरुवोंकरिकैउपदेशकऱ्या हुआभी शुद्धचित्तवालेअधिकारीपुरुषोंकूंहीं प्राप्तहोवै है ॥ अशुद्धचित्तवालेपुरुषोंकूं सोआत्मज्ञान प्राप्तहोवैनहीं ॥ और साचित्तकी शुद्धि उपासनाकरिकै प्राप्तहोवै है ॥ उपासनातौंविना साचित्तकीशुद्धिहोवैनहीं ॥ जैसे पूर्व नृसिंहभगवान्कीउपासनाकरिकै शुद्ध हुआहै चित्तजिनोंका ऐसेदेवता प्रजापतिरूपगुरुकेउपदेशतैं तात्रह्मात्मज्ञानकूं प्राप्तहोतेभये हैं ॥ हेशिष्य यासप्तदशेअध्यायकेआ दिविषे जोतुमनैं पिप्पलादमुनिउक्तब्रह्मविद्या हमारेसैंपूछीथी ॥ सोसंपूर्णब्रह्मविद्या हमनैं तुमारेप्रति कथनकरी ॥ अब जिस अर्थके श्रवणकरणेकी तुमारेकूं इच्छाहोवै ॥ सोअर्थ तूं हमारेसैंपूछ ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्य पादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचिते प्राकृताऽऽत्मपुराणे प्रश्नोपनिषत्सारार्थप्रकाशे पिप्पलादसुकेशादिकसंवादो नाम सप्तदशोऽध्यायःसमाप्तः ॥ १७ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ ॥ ॥

इति श्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषा आत्मपुराणे सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥

इति श्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषाआत्मपुराणे सप्तदशोऽध्यायःसमाप्तः॥

॥ अथ स्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषाआत्मपुराणे अष्टादशोऽध्यायप्रारंभः ॥

ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथअष्टादशाऽध्यायप्रारंभः ॥ पूर्वसप्तदशेअध्यायविषेअथर्वणवेदकेप्रश्नउपनिषद्काअर्थनिरूपणकऱ्या ॥ अबयाअष्टादशअध्यायविषेतिसीअथर्वणवेदकेनृसिंहपूर्वोत्तरतापनीयउपनिषद्का तथाईशावास्यउपनिषद्काअर्थनिरूपणकरे हैं ॥ तहांपूर्वअध्यायोंविषे नानाप्रकारकीब्रह्मविद्याकूंश्रवणकरिकै तृप्तिकूंप्राप्त हुआभीसोशिष्य पूर्वसप्तदशेअध्यायकेअंतविषे नृसिंहभगवान्केउपासकदेवतावोंकेवृत्तांतकूं श्रवणकरिकैपुनःप्रश्नकरणेकीइच्छाकरता भया ॥ औरब्रह्मविद्याकूंश्रवणकरिकै अत्यंतहर्षकूंप्राप्तहुआहैमनजिसका तथाचित्तकीप्रसन्नताकरिकैविकासितहुआहैमुखरूपकमलजिसका ऐसासोशिष्य ताआपणेगुरुकेप्रति याप्रकारकावचनकहताभया ॥ शिष्यउवाच ॥ हेभगवन् ॥ पूर्वआपनैंहमारेप्रति ऐतरेयादिक अनेकमुनियोंकरिकैकथनकरीहुई तथाइंद्रआदित्यादिकअनेकदेवतावोंकरिकैकथनकरीहुई नानाप्रकारकीब्रह्मविद्याकथनकरीथी ॥ ता ब्रह्मविद्याकेश्रवणकरिकैहमारा घोरसंसारकीप्राप्तिकरणेहारा आवरणरूपअज्ञाननिवृत्तहोताभयाहै ॥ याकारणतैंहीं हमारेकूंस्वयंज्योति आत्माहीसर्वदाप्रतीतहोवैहै ॥ जैसे विषयासक्तकामीपुरुषकूं आपणेहृदयविषे सर्वदा कामिनीहीप्रतीतहोवै है ॥ तैसे हमारेकूंआपणेहृदयविषेसोआनंदस्वरूपआत्माही सर्वदाप्रतीतहोवैहै ॥ हेभगवन् ॥ आपकेउपदेशतैं आत्माकेवास्तवस्वरूपकूंजानिकै मैं अभीकृतकृत्य भावकूंप्राप्तहुआहूं ॥ यातैं ताआत्माकेस्वरूपविषेहमारेकूं किंचित्मात्रभी संशयरह्यानहीं ॥ यातैं ताआत्माकोनिर्णयकरणेविषे हमारेकूं अभी किंचित्मात्रभी पूछणेयोग्यरह्यानहीं ॥ तथापिजैसे पितामाता बालककालालनकरे हैं ॥ तैसे आपनैंभी हमारालालनकऱ्याहै ॥ तहां हमनैं वारंवारकरेजेप्रश्नहैंतिनप्रश्नोंका क्षोभतैंरहितहोइकै जोआपनैं उत्तरकह्याहै यहही आपनैं हमारालालनकऱ्याहै ॥ यातैं ताबालभावकूंअंगीकारकरिकै हमारेकूं किसीअर्थकेजानणेकीइच्छारूप एककौतूहलहै ॥ सोआपकृपाकरिकै हमारेप्रति कथनकरो ॥ अबसोशिष्य तालालनरूपताकरिकै पूर्वश्रवणकरीहुई सर्वकथाकूं वर्णनकरेहै ॥ हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणके प्रथमअध्यायविषे आपनैं ऋग्वेदके ऐतरेयउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ ताप्रथमअध्यायविषे आपनैं ऐतरेयमुनिउक्तआत्मज्ञान कथनकऱ्याथा ॥ १ ॥

जो आत्मज्ञान सप्तकादिकमुनियोंके तथावामदेवादिकप्रजाके संवादकरिकैयुक्त है ॥ तथा जोआत्मज्ञान द्विजोंकूं अत्यन्तदुर्लभहै ॥ काहेतैं तिनसर्वद्विजोंविषे जेअधिकारीपुरुष ताआत्मज्ञानकूं श्रवणकरिकैजीवे हैं ॥ तेहमारेसरीखेभाग्यवान्श्रोता यालोकविषे विरलेही हैं ॥ तथा ताआत्मज्ञानकेकथनकरणेहारे आपसरीखेभाग्यवान्वक्तापुरुषभी दुर्लभही हैं ॥ ऐसादुर्लभआत्मज्ञान आपनैं हमारेप्रति कथन कऱ्याथा ॥ और हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणके द्वितीयअध्यायविषे तथातृतीयअध्यायविषे आपनैं तिसीऋग्वेदके कौषीतकिउपनिषद्का अर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तादोनोंअध्यायोंविषे आपनैं कौषीतकिमुनिउक्तज्ञान कथनकऱ्याथा ॥ जोकौषीतकिमुनिउक्तज्ञान इदानींकाल विषे लुप्तसंप्रदायहुआ वर्त्तमानहै ॥ काहेतैं सोकौषीतकिमुनिउक्तज्ञान इदानींकालविषे किसीविरक्तपुरुषोंविषेही विद्यमान है ॥ परन्तु अमुकदेशविषे ताकौषीतकिशास्त्राकेअध्ययनकरणेहारे ब्राह्मण विद्यमानहैं ॥ याप्रकारतैं ताज्ञानकीप्रसिद्धहैनहीं ॥ ताकौषीतकिमुनिउक्तविज्ञानविषे देवराजइंद्रके तथाप्रतर्दनराजाके संवादकरिकै आपनैं नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी ॥ तथा राजाअजातशत्रुके तथा बालाकिब्राह्मणके संवादकरिकै आपनैं नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी ॥ जोअजातशत्रुबालाकिकासंवाद आश्चर्यका कारण है ॥ तथा श्रोतापुरुषोंकेबुद्धिकी वृद्धिकरणेहारा है ॥ और हेभगवन् याआत्मपुराणके चतुर्थ पंचम षष्ठ सप्तम याचारिअध्यायोंविषे आपनैं यजुर्वेदके बृहदारण्यकउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तहांयाज्ञवल्क्यमुनिस्वकृत याज्ञवल्क्यस्मृतिनामाग्रंथविषे संन्यासियोंकेप्रति याप्रकारकाउपदेश करताभयाहै ॥ हेसंन्यासियो ॥ जाबृहदारण्यकउपनिषदमैंयाज्ञवल्क्यमूर्यभगवान्तैं अध्ययनकरताभयाहूं ॥ साबृहदारण्यकउपनिषद्भी यामुमुक्षुजनोंनैं अवश्यकरिकै अर्थसहित जानणेयोग्य है ॥ कैसाहैसोबृहदारण्यकउक्तविज्ञान ॥ मधुकांड याज्ञवल्क्यकांड खिलकांड यातीनकांडोंकरिकै प्रकाशितहै ॥ तथा दोपुरुषवंश एकस्त्रीवंश यातीनवंशोंकूं कथनकरणेहाराहै ॥ तथा मधुब्राह्मणविषे प्रधानताकरिकै परिअवसानकूं प्राप्तहुआ है ॥ ऐसाविज्ञान उपसनाभागकूंछोडिकै आपनैं कथनकऱ्याथा ॥ हेभगवन् ॥ जिसबृहदारण्यकउपनिषद्केविज्ञानविषे मधुकांडविषेस्थितसर्वमंत्रोंकेअर्थकीप्रगटताकरिकै तासर्वमधुकांडका महान्अर्थ आपनैं प्रगटकऱ्याथा ॥ तामधुकांडके

मंत्रोंकेअर्थविषेही खिलकांडकेअर्थकाअंतर्भावकरिकै आपनैंकथनकऱ्याथातामधुकांडविषेआपनैंदध्यङ्अथवर्णके तथाआश्विनीकुमारोंके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या कथनकरीथी॥और तिनअश्विनीकुमारोंकेप्रति ब्रह्मविद्याकेउपदेशकरणेकरिकै जिसप्रकार देवराज इंद्रनैं तादध्यङ्मुनिकेमस्तककाछेदनकऱ्याथा ॥ तथा तिनअश्विनीकुमारोंनैं जिसप्रकार तादध्यङ्मुनिका जीवनकऱ्याथा ॥ सासंपूर्ण वार्त्ता आपनैं तांचनुर्थअध्यायविषे कथनकरीथी ॥ और हेभगवन् पंचम षष्ठ यादोअध्यायरूप जोयाज्ञवल्क्यकांड है॥तायाज्ञवल्क्यकांडविषे यथाक्रमतैं प्रवृत्तभईजा जल्पकथा वादकथा यहदोप्रकारकीकथाहै॥जाकथा श्रद्धावान्पुरुषोंकूं ब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिकरणेहारी है॥सादोप्रकारकीकथाभी आपनैं अध्यायोंकेभेदकरिकैकथनकरीथी॥तहां याआत्मपुराणकेपंचमअध्यायविषे जनकराजाकेयज्ञसभाविषेस्थित आश्वलादिकब्राह्मणोंके तथागार्गीके हृदयविषेस्थितजेसंशयथे॥जेसंशय तर्करूपबलतैं तिनोंनैं प्रगटकरेथे॥तिनसर्वसंशयोंकूं सोयाज्ञवल्क्यमुनि जल्पकथाकरिकै भेदनकरताभया॥और सोयाज्ञवल्क्यमुनि शाकल्यब्राह्मणकेतौ शरीरसहिततिनसंशयोंकूं भेदनकरताभया॥ इहां परस्परजीतणेकीइच्छाकरिकै जोशास्त्रकेअर्थकाविचारकरणाहै ताकानाम जल्पकथाहै ॥ और हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणकेषष्ठेअध्यायविषे आपनैं यहवार्त्ताकथनकरीथी ॥ मिथिलापुरीकानाथ राजाजनक यासंसाररूपवनतैंभयकूंप्राप्तहोताभया॥ताजनकराजाकूं सोयाज्ञवल्क्यमुनि वादकथाकरिकै तासंसारवनतैं बाह्यकरताभया॥और हेभगवन् याआत्मपुराणकेसप्तमअध्यायविषे आपनैं यहवार्त्ता कथनकरीथी।सोयाज्ञवल्क्यमुनि आपणीमैत्रेयीस्त्रीकूं तावादकथाकरिकै तासंसाररूपवनतैंबाह्यकरताभया॥तिसतैंअनंतर सोयाज्ञवल्क्यमुनि संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरताभया।इहां तत्त्ववस्तुकेनिर्णयकरणेवासतैं जोगुरुशिष्यकासंवादहै ताकानाम वादकथाहै॥और हेभगवन्॥ याआत्मपुराणकेअष्टमअध्यायविषे आपनैं तिसीयजुर्वेदके श्वेताश्वतरउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ ताअष्टमअध्यायविषे श्वेताश्वतरमुनिके तथासंन्यासियोंके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्याआपनैंकथनकरीथी।औरहेभगवन्॥याआत्मपुराणकेनवमअध्यायविषे आपनैं तिसीयजुर्वेदके कठवल्लीउपनिषद्काअर्थनिरूपणकऱ्याथा ॥ तानवमअध्यायविषेयमराजाके तथानचिकेताके संवादकरिकै नाना

॥ २ ॥

प्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैंकथनकरीथी ॥ औरहेभगवन् ॥ याआत्मपुराणकेदशमअध्यायविषे आपनैंतिसीयजुर्वेदकेतैत्तिरीयकउपनिषद्काअर्थ तथानारायणीयउपनिषद्काअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ तादशमअध्यायविषे वरुणपिताके तथाभृगुपुत्रकेसंवादकरिकैनानाप्रकारकी ब्रह्मविद्याआपनैंकथनकरीथी ॥ तथा वेननामागंधर्वका सर्वात्मभावरूपअनुभव कथनकऱ्याथा ॥ तथा सत्यादिकसर्वसाधनोंविषे संन्यासआश्रमकीअधिकता कथनकरीथी ॥और हेभगवन् याआत्मपुराणके एकादशेअध्यायविषे आपनैंजाबालादिकएकादशउपनिषदोंकाअर्थ निरूपणकऱ्याथा ॥ ताएकादशेअध्यायविषे आपनैं यहवार्त्ताकथनकरीथी ॥ जाबालादिकउपनिषदोंविषेकथनकऱ्याजो परमहंससंन्यासहै ॥ तापरमहंससंन्यासकूं पूर्वसंवर्त्तकादिकमहान्पुरुष ग्रहणकरतेभयेहैं ॥ औरतापरमहंससंन्यासविषेवैराग्यहीकारणहै ॥ सोवैराग्य गर्भदुःखोंकेविचारकरिकै तथामृत्युचिन्होंकेज्ञानकरिकै तथाअष्टांगयोगकरिकै प्राप्तहोवै है ॥ और तापरमहंससंन्यासविषे विरक्तपुरुषोंकाहीअधिकारहै ॥ और तिनपरमहंससंन्यासियोंका शिखायज्ञोपवीतकेत्यागपूर्वक एकदंडकाधारणरूपबाह्यवेषहै ॥ तथा तिनसंन्यासियोंका ब्रह्मचर्यादिकधर्मोंकापालनरूप आचारहै ॥ तथाआत्मज्ञानरूपमुख्यआचारहै ॥ इत्यादिकसर्ववार्त्ता आपनैं ताएकादशेअध्यायविषे कथनकरीथी ॥ औरहेभगवन् याआत्मपुराणके द्वादश त्रयोदश चतुर्दश यातीनअध्यायोंविषे आपनैं सामवेदकेछांदोग्यउपनिषद्काअर्थनिरूपणकऱ्याथा ॥ तहांद्वादशेअध्यायविषेउद्दालकमुनिके तथाश्वेतकेतुके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैंकथनकरीथी ॥ औरयाआत्मपुराणकेत्रयोदशेअध्यायविषे भगवान्सनत्कुमारकेतथानारदमुनिके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्याआपनैंकथनकरीथी ॥ और याआत्मपुराणकेचतुर्दशेअध्यायविषे प्रजापतिकेतथाइंद्रविरोचनके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्याआपनैंकथनकरीथी ॥ औरहेभगवन् ॥ याआत्मपुराणकेपंचदशेअध्यायविषेआपनैं तिसीसामवेदके केनउपनिषद्काअर्थनिरूपणकऱ्याथा ॥ तापंचदशेअध्यायविषेब्रह्मविद्यारूपउमादेवीकेअनुग्रहतैं सोदेवराजइंद्र यक्षरूपब्रह्मकूंदेखताभया यहवार्त्ता आपनैं कथनकरीथी ॥ और हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणकेषोडशेअध्यायविषेआपनैं अथर्ववेदके मुंडकउपनिषद्काअर्थनिरूपणकऱ्याथा ॥ तासोडशे

अध्यायविषे जात्रह्मविद्या ब्रह्मानैंअथर्वामुनिकेप्रति उपदेशकरीथी ॥ सात्रह्मविद्या अंगिरामुनिकेतथाशौनकमुनिके संवादकरिकेआपनैं कथनकरीथी और हेभगवन् ॥ याआत्मपुराणकेसप्तदशअध्यायविषे आपनैंतिसीअथर्वणवेदके प्रश्नउपनिषद्काअर्थनिरूपणकऱ्याथा ॥ तासप्तदशेअध्यायविषे पिप्पलादमुनिके तथासुकेशादिकषट्मुनियोंके संवादकरिकै नानाप्रकारकीब्रह्मविद्या आपनैं कथनकरीथी ॥ हेभगवन् ॥ इसप्रकार पूर्वजोजोअर्थ हमनैंआपसैंपूछाथा ॥ सोसर्वअर्थ आपनैंहमारेप्रति कथनकऱ्याथा ॥ यातैंअभीभी मैं बालक आपसैंकिंचित् अर्थकेपूछणेकीइच्छाकरताहूं ॥ आप कृपाकरिकै ताहमारे प्रश्नकाउत्तरकहो ॥ हेभगवन् ॥ यहजोप्रश्न मैं आपकेआगे करताहूं ॥ सोअंधरज्जुन्यायकीरीतिसैं पूर्वउक्तआपकेअर्थकाविस्मरणकरिकै करतानहीं ॥ किंतु आपकेकहेहुएसर्वअर्थकूं मनविषेस्मरणकरिकैही सोप्रश्नमैंआपकेआगेकरताहूं ॥ यातैं हमारेप्रश्नकाउत्तर आपकूंअवश्यकह्याचाहिये ॥ सोहमाराप्रश्नयहहै ॥ हेभगवन् ॥ पूर्वसप्तदशेअध्यायकेअंतविषे आपनैंयहवार्त्ताकथनकरीथी ॥ नृसिंहभगवान्कीउपासनाकरिकै शुद्धभयाहै अंतःकरणजिनोंका ऐसेदेवता प्रजापतिरूपब्रह्माकेउपदेशतैंब्रह्मात्मज्ञानकूंप्राप्तहोतेभयेहैं ॥ हेभगवन् ॥ ताब्रह्मात्मज्ञानकेश्रवणकरणेकी मैं इच्छाकरताहूं ॥ आपकृपाकरिकैसोब्रह्मात्मज्ञान हमारेप्रतिकथनकरो ॥ इसप्रकार शिष्यकरिकैपूछाहुआसोश्रीगुरु अथर्वणवेदविषेस्थित नृसिंहभगवान्कीकथा ताशिष्यकेप्रतिकथनकरताभया ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हेशिष्य ॥ पूर्वजोहमनैं नृसिंहभगवान्केउपासकदेवता कथनकरेथे ॥ तेचक्षुआदिकोंके अधिष्ठाता सूर्यादिकदेवताहींहैं ॥ अबतानृसिंहभगवान्केस्वरूपकावर्णनकरेहै ॥ हेशिष्य ॥ जोमनुष्यरूपहोवैतथासिंहरूपहावैताकानाम नृसिंहहै ॥ ऐसानृसिंहभगवान्हींयाअधिकारीपुरुषोंकूंउपासनाकरणेयोग्यहै ॥ कैसाहैसोनृसिंहभगवान् ॥ क्रोधवान्होइकैसर्वप्राणियोंकेसंहारकूं करेहै ॥ याकारणतैंसोनृसिंहभगवान्हीरुद्ररूपहै ॥ औरसोनृसिंहभगवान्हींयासर्वजगत्कूंउत्पन्नकरेहै ॥ यातैंसोनृसिंहभगवान्हींब्रह्मारूप है ॥ और सोनृसिंहभगवान्हीं यासर्वजगत्कापालनकरेहै ॥ यातैंसोनृसिंहभगवान्हीं विष्णुरूपहै ॥ तहांश्रुति ॥ सब्रह्मासशिवःसहरिः ॥ और अथर्वणशिरनामाउपनिषद्विषे कथनकऱ्याजोरुद्रभगवान्है ॥ सोरुद्रभगवान्भी यानृसिंहभगवान्काहीस्वरूपहै ॥ कैसाहै ॥ ३ ॥

सोरुद्रभगवान् ॥ शरणागतजीवोंका पालनकरणेहाराहै ॥ तथा जोरुद्रभगवान् केलासरूपस्वर्गकूं अथवा सत्त्ववृत्तिरूपस्वर्गकूं प्राप्तहुए तथा तूकोनहै यापप्रकारपूछतेहुए सर्वदेवताओंकागुरुरूपहै ॥ तथा जोरुद्रभगवान् तिनदेवताओंकेप्रति आपणेसर्वव्यापिस्वरूपकाउपदेशकरिकै तथासर्वतैं अनंतरआपणेप्रत्यक्षभावकूं बोधकरिकै तिनदेखतेहुएदेवताओंकाअनादरकरिकै आपणेशरीरकूं अंतर्धानकरताभया ॥ और जिसउमापतिभगवान्के ब्रह्माविष्णुआदिकसर्वदेवता विभूतिरूपहैं ॥ और जिसउमासहितरुद्रभगवान्रूपआत्माकूंदेखिकै प्रसन्नमनहुए तेसर्वदेवता सर्वलोकोंऊपरअनुग्रहकरिकै आपणेसमीपस्थित अधिकारीजनोंकेप्रति याप्रकारकेवचन कहतेभये ॥ हेअधिकारीजनों ॥ हमदेवता उमादेवीसहितमहादेवरूपीअमृतकूं आपणेनेत्ररूपीपात्रकरिकै पानकरतेभये हैं ॥ यातैं हमदेवता महान्भाग्यवाले हैं ॥ तथा मरणतैंरहितअमृतहुएहैं ॥ और हमदेवता श्रद्धाभक्तिपूर्वक तारुद्रभगवान्काही आराधनकरतेभये हैं ॥ याकारणतैंही हमदेवता तापरमज्योतिआनंदस्वरूप अद्वितीयरुद्रभगवान्कूं आपणाआत्मारूपकरिकैप्राप्तहोतेभये हैं ॥ तारुद्रभगवान्कीप्राप्तिकरिकै हमदेवता जन्ममरणादिकसर्वदुःखोंतैंरहितहोतेभये हैं ॥ यातैं अभीहमदेवता आपणेइंद्रादिकदेवतास्वरूपकूं आपणाआत्मारूपकरिकै कदाचित्भीनहींजानैंगे ॥ किंतु सोउमापतिरुद्रभगवान्ही हमाराआत्माहै ॥ किंवा कामदेवकूं नष्टकरणेहाराजो उमापतिरुद्रभगवान्है ॥ ताउमापतिरुद्रभगवान्कूं हमदेवता आपणाआत्मारूपकरिकै जानतेभये हैं ॥ यातैं हमदेवताओंकूं सोकामरूपशत्रु तथाक्रोधादिकशत्रु अभी किंचित्मात्रभी अनर्थकीप्राप्तिकरिसकैंगेनहीं ॥ कैसाहैसोकामरूपशत्रु ॥ जैसे यालोकविषे कपटीजुवारी यत्किंचित्धनादिरूपपुण्यकूं मध्यविषेराखिकै लोकोंकेसर्वधनादिकपदार्थोंकूं हरणकरिलेवे हैं ॥ तैसे यहकाम भी अत्यंततुच्छनारीशरीररूपपण्यकरिकै यासर्वलोकोंके धर्मादिरूपसर्वधनकूंहरण करिलेवे हैं ॥ यातैं यहकाम अत्यंतधूर्त है ॥ किंवा ॥ सर्वदेवताओंकाआत्मारूप जोरुद्रभगवान्है ॥ सोरुद्रभगवान् हमदेवताओंकेहृदय विषे सर्वदानिवासकरे है ॥ याकारणतैं तेसर्वदेवताभी हमारेहृदयविषेनिवासकरे हैं ॥ और सोरुद्रभगवान् हमजीवोंके प्राणअपानदोनोंके मध्यविषे स्थितहोइकै तिनप्राणअपानदोनोंकूं आपणेआपणेकार्यविषे प्रवृत्तकरे है ॥ और स्थूल सूक्ष्म कारण यातीनवाच्यअर्थोंकेसाथ

तादात्म्यभावकूं प्राप्तभयाजो अकार उकार मकार यातीनमात्राओंवाला ॐकाररूपप्रणवहै ॥ ताप्रणवतैंभी जोरुद्रभगवान् तुरीयरूपकरिकै परेवर्त्तमानहै ॥ और मनहैप्रधानजिसविषे ऐसाजो प्राणइंद्रियादिकोंकासमुदायरूप सूक्ष्मलिंगशरीरहै॥तालिंगशरीरकूंभी सोरुद्रभगवान्ही साक्षीरूपकरिकैप्रकाशकरे है ॥केसाहैसोलिंगशरीर॥ जैसे यहलोकप्रसिद्धपट नानाप्रकारकेचित्रोंकाआधाररूपहोवेहै॥तैसे जो सूक्ष्मलिंगशरीररूपपट यास्थूलजगत्रूपचित्रोंकाआधाररूपहै ॥ तथा जिससूक्ष्मलिंगशरीरविषे तिसतिसअर्थकूंविषयकरणेहारी यह क्षुधातृषाकामक्रोधादिकोंकीसूक्ष्मअवस्थारूप अनेककोटिवासना रहैहैं ॥ जिनवासनाओंकरिकै यहसंपूर्णसंसार प्रवर्त्तमानहोवे है॥ऐसे लिंगशरीरकूंभी सोरुद्रभगवान्ही प्रकाशकरे है ॥ और अकार उकार मकार अर्द्धमात्रा यासाढेतीनमात्रावालेप्रणवमंत्रकेसाथ तादात्म्य भावकूं प्राप्तभयाजो रुद्रभगवान्है ॥ तारुद्रभगवान्के यहअष्टादशनाम वेदवेत्तापुरुषोंनैं कथनकरे हैं॥ॐकार १ प्रणव २ सर्वव्यापी ३ अनंत ४ तारक ५ सूक्ष्म ६ शुक्ल ७ वैद्युत ८ परब्रह्म ९ एक १० एकोरुद्र ११ ईशान १२ भगवान् १३ महेश्वर १४ महादेव १५ विष्णु १६ ब्रह्मा १७ प्रजापति १८ यहअष्टादशनामहैं॥अब यथाक्रमतैं तिनअष्टादशनामोंकाअर्थ निरूपणकरे हैं॥उच्चारणकऱ्याहुआ यहरुद्ररूपप्रणव यालोकोंकेप्राणोंकूं शिररूपऊर्ध्वस्थानविषे प्राप्तकरे है॥अथवा उत्कृष्टलोकविषेप्राप्तकरे है॥याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष ता प्रणवरूपरुद्रभगवान्कूं ॐकारयानाम करिकैकथनकरेहैं॥ १॥और सोरुद्रभगवान् आपणेब्राह्मणादिकभक्तजनोंकूं ऋगादिकचारिवेदरूप शब्दब्रह्मकीप्राप्तिकरेहै॥अथवा भूमिलोकतैंआदिलैके ब्रह्मलोकपर्यंत सर्वलोकोंविषेविद्यमान जेनानाप्रकारकेआनंदहैं तिनसर्वआनंदोंकी प्राप्तिकरे है ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष तारुद्रभगवान्कूं प्रणव यानामकरिकैकथनकरे हैं॥अथवा भक्तजनोंके दुःखसहित पापादिकसर्व विकारोंकाजो आत्यंतिकलयहै ॥ सोआत्यंतिकलय तारुद्रभगवान्तैंहीहोवै है ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष तारुद्रभगवान्कूं प्रणव यानामकरिकैकथनकरे है ॥ २ ॥ और जैसे पीसेहुएतिलोंकेपिंडकूं तथाघनीभूतदधिपिंडकूं तैलघृतादिरूपस्नेह आपणेस्वरूपकरिकै अंतरबाह्यव्याप्तकरे है ॥ तैसे सोरुद्रभगवान्भी आपणेअस्तिभातिप्रियरूपकरिकै यासर्वजगत्कूं अंतरबाह्यव्याप्तकरे है ॥ याकारणतैं ॥ ४ ॥

वेदवेत्तापुरुष तारुद्रभगवान्कूं सर्वव्यापी यानामकरिकैकथनकरे हैं ॥३॥ और सोरुद्रभगवान् देशकृतपरिच्छेद कालकृतपरिच्छेद वस्तुकृतपरिच्छेद यातीनपरिच्छेदोंतैंरहितहै ॥तथा याअधिकारीपुरुषोंकूं आपणेहृदयविषे उपासनातैंप्रतीतहोवै है॥याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष तारुद्रभगवान्कूं अनंत यानामकरिकैकथनकरे हैं ॥ ४ ॥ और सोरुद्रभगवान् आपणेभक्तजनोंकूं ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरिकै यादुःखरूपसंसारसमुद्रतैं पारकरे है ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष.तारुद्रभगवान्कूं तारक यानामकरिकैकथनकरे हैं ॥ ५ ॥और सोरुद्रभगवान् या सर्वशरीरोंविषे अत्यंतसूक्ष्मजीवरूपकरिकै स्थितहोवै है॥याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष तारुद्रभगवान्कूं सूक्ष्म यानामकरिकैकथनकरे हैं ॥ तहां एककेशकेअग्रभागकाजोशततमाभागहै ताशततमेभागकाभीजो शततमाभागहै ॥ताभागकीन्याईं सोरुद्रभगवान् जीवरूपकरिकै सूक्ष्महै ॥ तासूक्ष्मताभी अंतःकरणादिकउपाधियोंकेसंबंधतैंहै वास्तवतैंनहीं॥वास्तवतैंतो सोरुद्रभगवान् आकाशादिकमहान्पदार्थोतैं भीमहान्है ॥ तहां श्रुति ॥ महतोमहीयान्॥ अथवा योगीपुरुषोंका जोपरशरीरविषेप्रवेशहोवै है॥ताप्रवेशकाकारण तिनयोगीपुरुषोंका प्राणहै ॥ सोयोगीपुरुषोंकाप्राण तापरशरीरविषेस्थितनाडीआदिक सर्वसूक्ष्म अंगोंविषेप्रवेशकरे है॥यातैं सोप्राण अत्यंतसूक्ष्महै ॥ताप्राणतैंभी यहरुद्रभगवान् अत्यंतसूक्ष्महै ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष तारुद्रभगवान्कूं सूक्ष्म यानामकरिकैकथनकरे हैं ॥ ६ ॥ और यहरुद्रभगवान् आपणेभक्तजनोंके अविद्या अस्मिता राग द्वेष अभिनिवेश यापंचक्लेशोंकी आत्यंतिकनिवृत्तिकरे है ॥याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष तारुद्रभगवान्कूं शुक्ल यानामकरिकैकथनकरे हैं ॥७ ॥और यहरुद्रभगवान् निर्गुणसाक्षीरूपकरिकै यासंघातकेअंतरप्रकाशकरेहै ॥ और सूर्यादिकसगुणरूपकरिकै बाह्यप्रकाशकरे है ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष तारुद्रभगवान्कूं वैद्युत यानामकरिकैकथनकरे हैं॥८॥और यह रुद्रभगवान् याआकाशादिकसर्वजगत्तैं महान्है॥तथा आपणीसत्तास्फूर्तिदेकरिकै यासर्वजगत्केवृद्धिकाकारणहै॥याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष तारुद्रभगवान्कूं परब्रह्म यानामकरिकैकथनकरे हैं ॥ ९॥और यहरुद्रभगवान् यासर्वजगत्कीउत्पत्तिस्थितिलयकरणेहाराहै ॥ यातैं यहरुद्रभगवान्ही यासर्वजगत्रूपकरिकैस्थितहोवै है॥सोजगत्काकारणरूपरुद्रभगवान् अज्ञानकेवशतैं कल्पितभेदवालाप्रतीतहुआभी

वास्तवतैं सर्वभेदतैंरहितहै ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष तारुद्रभगवान्कूं एक यानामकरिकैकथनकरे हैं ॥ १० ॥ और यहरुद्रभगवान् सर्वभेदतैंरहित अद्वितीयरूपहै तथा आपणीमायाशक्तिकरिकै यासर्वजगत्का पालनकरे है॥ तथा आपणेभक्तजनोंकूं तुरीयपदकीप्राप्ति करिकै सर्वदुःखोंकीनिवृत्तिकरे है ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष तारुद्रभगवान्कूं एकोरुद्र यानामकरिकैकथनकरे हैं॥११॥और जैसे पट कदाचित् संकोचवालाहुआ स्थितहोवै है॥और कदाचित् सोपट विकासवालाहुआ स्थितहोवै है॥तैसे यहरुद्रभगवान्भी याजगत्कैप्रल यकालविषेतो संकोचवालाहुआ स्थितहोवै है और याजगत्कीउत्पत्तिकालविषे विकासवालाहुआ स्थितहोवै है॥ तथा यासर्वजगत्का पालनकरेहै ॥ तथा सोरुद्रभगवान् यासर्वजीवोंकेबुद्धियोंकाकारणरूपहै ॥ तथातिनबुद्धिआदिकोंके रागद्वेषादिकसर्वधर्मोतैंरहितहै ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष तारुद्रभगवान्कूं ईशान यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ यहरुद्रभगवान्ही यासर्वजगत्का अभिन्न निमित्तउपादानकारणहै ॥ तथा बुद्धिआदिकसर्वजगत्तैंअंतरहै॥तथा विषमतादिकदोषोंतैंरहितहै ॥याकारणतैं सोईशानशब्द मुख्यता करिकै यारुद्रभगवान्विषेही घटे है॥और॥अनीशयाशोचतिमुह्यमानः॥इत्यादिकश्रुतियोंविषे जीवोंकूंपरतंत्रकह्याहै॥यातैं तिनजीवोंविषे सोईशानशब्द मुख्यनहोंहै किंतु गौणहै॥और सोरुद्रभगवान् यासर्वजगत्कूं आपणेआपणेकार्यविषेप्रवृत्तकरेहै॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष याप्रकारसैं तारुद्रभगवान्कीस्तुतिकरेहै ॥ यहरुद्रभगवान् असुरोंकेसाथयुद्धकरणेकालविषे अनेकगुणोंकरिकैयुक्तहोवैहै॥ यातैंयहरुद्रभ गवान्ही महान्शूरवीरहै ॥ अथवा यहरुद्रभगवान् आपणेआत्मसाक्षात्काररूपबलकरिकै कामक्रोधादिकअंतरशत्रुवोंकूं भक्षण करेहै॥याकारणतैंभी यहरुद्रभगवान्ही महान्शूरवीरहै॥और यहरुद्रभगवान् कामरूपस्मरकेदेहकूं दग्धकरताभयाहै ॥याकारणतैं यारुद्र भगवान्कूं स्मरदेहघक्ष्यनामकरिकैकथनकरेहैं ॥ हेरुद्रभगवान् हमअधिकारीजन आपकीस्तुतिरूपवचनोंकरिकै सर्वदा आपका आरा धनकरेहैं॥कैसे होआप ॥ यासर्वजीवोंकेहृदयकमलविषे सर्वदा निवासकरणेहारेहो ॥तथा आपकूं आपणीस्तुतिही प्रीतिकाहेतुहै॥और हेरुद्रभगवान् ॥ जैसे घटकीन्याईविशालहै दुग्धकेरहणेकास्थानरूपऊधम् जिन्होंका ऐसीजेनवीनप्रसूतहुईगोवां हैं ॥ जिनगौओंका ॥ ६ ॥

दुग्धदुह्यानहीं ॥ ऐसीगोवां हुंकाररूपस्नेहशब्दोंकरिकै आपणेवत्सोंकूंबुलावे हैं ॥ तैसे परमानंदरूपदुग्धकरिकैयुक्त जेआपकीस्तुतिरूप गोवां हैं ॥ तेआपकीस्तुतिरूपगोवां ताआनंदरूपदुग्धकीप्राप्तिकरणेवासतै हमभक्तजनरूपवत्सोंकूं प्रेमकरिकैआपहीबुलावे हैं ॥ हमवा त्सोंकेप्रयत्नकीअपेक्षाकरतीनहीं ॥ जिसकारणतैं तेआपकीस्तुतिरूपगोवां हमभक्तजनरूपवत्सोंके सर्वदुःखोंकूंनाशकरणेहारी हैं ॥ इस प्रकार तेवेदवेत्तापुरुष ताईशाननामारुद्रभगवान्की सर्वदा स्तुतिकरे हैं ॥ १२ ॥ और यहरुद्रभगवान् संपूर्णऐश्वर्य १ संपूर्णधर्म २ सं पूर्णयश ३ संपूर्णश्री ४ संपूर्णज्ञान ५ संपूर्णवैराग्य ६ याषट्भगोंकाआश्रय है ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष तारुद्रभगवान्कूं भगवान् या नामकरिकैकथनकरे हैं ॥ १३ ॥ और यालोकविषेजितनेंकराजादिकहैं ॥ तेराजादिकपुरुष यत्किंचित्देशविषे स्थितप्राणीरूपभूतोंकेई श्वरहोवे हैं ॥ तथा तिनप्राणियोंतैं भिन्नस्थितहोवे हैं और यहरुद्रभगवान्तो आकाशादिकपंचमहाभूतोंकाभीईश्वर है॥तथा तिनआका शादिकभूतोंके उत्पत्तिस्थितिलयकाकारणहोणेतैं तिनआकाशादिकभूतोंका अभिन्ननिमित्तउपादानकारणहै याकारणतैं वेदवेत्तापुरुषता रुद्रभगवान्कूं महेश्वर यानामकरिकैकथनकरेहैं॥ १४॥और जोआनंदस्वरूपआत्मा सर्वतैंमहान्है॥तथा स्वप्रकाशअद्वितीयरूपहै॥तथा सत्चित्आनंदस्वरूपहै॥तथा सर्वभेदतैंरहितहै॥ऐसेमहान्आत्मादेवकूं यहब्रह्मविद्यारूपउमाकापतिरुद्रभगवान् सर्वदा आपणाआत्मारू पकरिकैदेखेहै ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष तारुद्रभगवान्कूं महादेव यानामकरिकैकथनकरे हैं ॥१५॥ और यासर्वजगत्कूं सत्तास्फूर्तिदे णेहारा जोयहरुद्रभगवान् है॥ सोरुद्रभगवान् यासर्वजगत्विषे सत्तादिरूपकरिकैप्रवेशकरे है॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष तारुद्रभगवान्कूं विष्णु यानामकरिकैकथनकरे हैं ॥ अथवा तारुद्रभगवान्विषे योगीपुरुष अभेदरूपकरिकै प्रवेशकरे हैं॥याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष तारुद्र भगवान्कूं विष्णु यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ और सोरुद्रभगवान् सर्वत्रव्यापकतारूपब्रह्मत्वकरिकै सर्वतैंअधिकहै ॥ तथा सर्वप्रकाशका नियंता है ॥ याकारणतैं तारुद्रभगवान्कूं नृसिंहपूर्वतापनीयविषे महाविष्णु यानामकरिकैकथनकऱ्याहै॥तहां पूर्वतापनीयविषे ॥ उग्रंवी रंमहाविष्णुं ज्वलंतंसर्वतोमुखं॥नृसिंहंभीषणंभद्रं मृत्युमृत्युंनमाम्यहं ॥ याएकादशपदोंवालेमंत्रविषे तामहाविष्णुरूप नृसिंहभगवान्काही

प्रतिपादनकऱ्याहै॥केसाहैसोमंत्र॥बत्तीसअक्षरोंवालाजोअनुष्टुप्छंदहै ताअनुष्टुप्छंदवालाहै॥ तथा जिसमंत्रकास्वरविशेषरूप सामकरिकै उच्चारणहोवै है ॥ पुनःकेसाहैसोमंत्र ॥ प्रणवादिकअंगमंत्रोंकरिकैयुक्त है ॥ तथा चारिपादोंकरिकैयुक्त है॥ ऐसेमंत्रकरिकैकथनकऱ्याजोनृसिंहभगवान् है ॥ सोनृसिंहभगवान् याअधिकारीपुरुषोंकूं अवश्यकरिकैउपासनाकरणेयोग्य है ॥ हेशिष्य ॥ यहप्रणवरूप तथारुद्ररूप नृसिंहभगवान् केवल तामंत्रकाअर्थरूपकरिकै उपासनाकरणेयोग्यनहींहै॥किंतु महाचक्रकानाभिरूपकरिकैभी उपासनाकरणेयोग्यहै॥ता महाचक्रकास्वरूप आचार्योंनैं याप्रकारसैं वर्णनकऱ्या है ॥ प्रथम ॐकाररूप प्रणवकूं लिखणा तिसप्रणवतैंबाह्यदेशविषे सुदर्शनमंत्रके षट्अक्षरोंकरिकैयुक्त षट्कोणवाला कमललिखणा ॥ तिसतैंबाह्यदेशविषे अष्टाक्षरमंत्रकेअष्टअक्षरोंकरिकैयुक्त अष्टकोणवालाकमललिखणा ॥ तिसतैंबाह्यदेशविषे द्वादशअक्षर मंत्रकेद्वादशवर्णोंकरिकैयुक्त द्वादशकोणवालाकमललिखणा ॥ तिसतैंबाह्यदेशविषे मातृकादिकषोडशस्वरों करिकैयुक्त षोडशकोणवाला कमललिखणा ॥ तिसतैंबाह्यदेशविषे पूर्वउक्तअनुष्टुप्छंदकेबत्तीस अक्षरोंकरिकैयुक्त बत्तीसकोणवाला कमललिखणा॥तिसतैंअनंतर मायाबीजकरिकै तथाभूवलयकरिकै तथामातृकावर्णोंकरिकै ताचक्रकूं बाह्यतैं वेष्टनकरणा॥तथा षट्कोणतैंआदिलेकै षोडशकोणपर्यंत एकएककोणरूपदलकूं बिंदुसहितईकारणकरिकैवेष्टनकरणा ॥ याकानाम नृसिंहाख्य महाचक्रहै ॥ तहां श्लोक ॥ षट्कोणस्थसुदर्शनंनवसुदलप्रोल्लासिताष्टाक्षरं बाह्येद्वादशवर्णपत्रकमलंततषोडशार्णच्छदम् द्वात्रिंशन्मनुवर्णपत्र कमलंवृत्तोल्लसन्मातृकं मध्यस्थध्रुवमुर्विबीजवलयंचक्रंनृसिंहाह्वयं॥१॥याश्लोककाअर्थ यहपूर्वउक्तहीजानिलेणा॥ऐसेमहाचक्रविषे रथचक्रकेनाभिकीन्याईंस्थित जोप्रणवरूपनृसिंहभगवान्है॥तानृसिंहभगवान्कीउपासना याअधिकारीपुरुषोंकूं अवश्यकरणेयोग्यहै॥हेशिष्य॥ इसप्रकार तापूर्वउक्तमंत्रकाअर्थरूप तथामहाचक्रकानाभिरूप तथाक्षीरसमुद्रविषेविष्णुरूपकरिकैस्थित तथासर्वप्राणियोंकेहृदयादिकों विषेस्थित जोनृसिंहभगवान्है ॥ तानृसिंहभगवान्कीउपासनाकूं जेअधिकारीपुरुष निरंतरकरे हैं॥तेअधिकारीपुरुष यामहान्संसारसमुद्रकूं गोकेपदकीन्याईं अल्पजानिकै तरिजावै हैं ॥ यातैं याअधिकारीपुरुषोंनैं तानृसिंहभगवान्कीउपासना अवश्यकरिकैकरणी॥१६॥

और यासृष्टिकूंउत्पन्नकरणेहारा जोचतुर्मुखोंवालाभगवान्है॥ताचतुर्मुखभगवान्कूं वेदवेत्तापुरुष ब्रह्मा यानामकरिकैकथनकरे हैं ॥१७॥ और सोब्रह्माही समष्टिसूक्ष्मरूपकरिकै व्यष्टिस्थूलशरीरोंकूंउत्पन्नकरे हैं ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष ताब्रह्माकूं प्रजापतियानामकरिकैकथनकरे हैं ॥ १८ ॥ केसाहैसोब्रह्मा सुवर्णमयजोयहब्रह्मांडगोलकहै॥ताब्रह्मांडरूपगोलकविषेस्थित जोयहभूमिरूपकमलहै॥जिसभूमिरूपकमलका यहमेरुपर्वत कर्णिकारूपहै॥ताकेविषे तथासत्यलोकविषे जोब्रह्मादेवतावोंकेउपकारकरणेवासतैंस्थितहै ॥ सोब्रह्माप्रजापतिभी तारुद्ररूपनृसिंहभगवान्कीहीस्वरूपहै ॥ इतनैंग्रंथकरिकै ॐकारादिकअष्टादशनामोंकेनिरूपणप्रसंगकरिकै नृसिंहपूर्वतापनीयविषेकथनकरीजा प्रणवहैगौणजिसविषे तथा पूर्वउक्तअनुष्टुप्छंदरूपमंत्रहैप्रधानजिसविषे ऐसीसगुणविद्या तासगुणविद्याकास्वरूप निरूपणकऱ्या ॥ अब पूर्वउक्तअनुष्टुप्छंदरूपमंत्रहैगौणजिसविषे तथाप्रणवहैप्रधानजिसविषे ऐसीसगुणविद्याकेस्वरूपकूंकथनकरणेहारी तथाकेवलप्रणवहैप्रधानजिसविषे ऐसीसगुणविद्याकेस्वरूपकूंकथनकरणेहारी तथातुरीयप्रणवहैप्रधानजिसविषे ऐसेनिर्गुणविद्याकेस्वरूपकूंकथनकरणेहारीजो नृसिंहउत्तरतापनीयहै॥ताकेअर्थकानिरूपणकरणेवासतैंप्रथम तानृसिंहभगवान्केउपासकेदेवतावोंकीजिज्ञासाकावर्णनकरे हैं ॥हेशिष्य ॥ पूर्वएककालविषे अग्निआदिकसर्वदेवता ताप्रजापतिकेसमीपजातभये।कैसाहैसोप्रजापति॥ आपणीमानसीनामाप्रियाकेसाहित अमितौजसनामा पर्यंकविषेस्थितहै॥तथा सर्वतैं उत्कृष्टशोभावालाहै ॥ तथाजिसप्रजापतिकूं वेदवेत्तापुरुष ब्रह्मायानामकरिकैकथनकरे हैं॥ऐसेप्रजापतिकेसमीप तेअग्निआदिकदेवता जातेभये ॥ कैसेहैंतेअग्निआदिकदेवता ॥ ताप्रजापतिके समष्टिस्थूलरूपविराट्शरीरविषेस्थितहैं॥ तथा ताअनुष्टुप्छंदरूपमंत्रकीविद्याविषे ताप्रजापतिके शिष्यतारूपकरिकै कुशल हैं ॥ तथा प्रणवहैप्रधानजिसविषे ऐसीजा ब्रह्मात्मभावकूंबोधनकरणेहारी विद्याहै॥ताविद्याकेप्राप्तिकीहैइच्छाजिन्होंकूं॥तथापूर्वउक्तविद्याकरिकै शुद्धभयाहै मनजिन्होंका॥ ऐसेते अग्निआदिकदेवता ताप्रजापतिकेप्रति दंडवत्प्रणामकरिकै तथाआपणेदोनोंहस्तजोडिकै याप्रकारकावचनकहतेभये॥देवताउवाच॥ हेभगवन् ॥ पूर्व आपनैं हमारेप्रति सर्वमंत्रोंविषेराजारूप जोअनुष्टुप्छंदरूपमंत्र प्रणवादिकअंगमंत्रोंसहित तथाबीजसहित तथाशक्तिसहित तथासामउपा

सनासहित तथामहाचक्रसहित कथनकऱ्याथा॥केसाहैसोमंत्रराज॥मृत्युभयकीनिवृत्तिकरणेहाराहै ॥ तामंत्रराजकेनिरूपणविषे आपनैं संक्षेपतैं चारिपादोंवाला प्रणवमंत्रभीकथनकऱ्याथा॥केसाहैसोप्रणव ॥ आपणेचारिपादोंकावाच्यरूपजो चारिप्रकारकाआत्माहै ताआत्माकेसाथ अभिन्नहै ॥ हेभगवन् ॥ यासंसाररूपअग्निकरिकेसंतप्तजेहमदेवताहैं ॥ तिनहमदेवतावोंकेताईं आप कृपाकरिकै ताप्रणवका उपदेशकरो ॥ तथा ताप्रणवकरिकेप्रतिपादित जोअत्यन्तदुर्विज्ञेयआत्माहै॥ताआत्माका उपदेशकरो ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकाप्रश्न जभी तिनअग्निआदिकदेवतावोंनैं प्रजापतिकेप्रतिकऱ्या॥तभी सोप्रजापति तिनदेवतावोंकेप्रति याप्रकारकाउपदेशकरताभया ॥ प्रजापतिरुवाच ॥ हेदेवतावो ॥ तुमोंनैं पूर्व जिसमंत्रराजकीउपासनाकरीहै ॥ सोमंत्रराजचारिपादोंवालाहै॥यातैं तामंत्रकेचारिविभागकरिकै तिनचारिविभागोंकूं यथाक्रमतैं प्रणवमंत्रकेचारिमात्रावोंविषे मिलावणा॥तिसतैंअनंतर जोनृसिंहभगवान् पूर्वतापनीयकेमंत्रराजविषेस्थित एकादशपदोंका सविशेषअर्थरूपकरिकै कथनकऱ्याथा ॥ तिसनृसिंहभगवान्कूं सर्वपदार्थोंतैंरहित तुरीयलक्ष्यस्वरूजानिकै यथाक्रमतैं ताप्रणवमंत्रकेचारिमात्रावोंकावाच्यार्थरूप तथातामंत्रराजकेचारिपादोंकावाच्यार्थरूप जेआत्माकेकल्पितचारिपादहैं तिनचारिपादोंकेसाथ तालक्ष्यकाअभेदचिंतनकरै॥तथा यहअधिकारीपुरुष तानृसिंहभगवान्के ब्रह्मा विष्णु रुद्र सर्वेश्वर यहचारिरूपकल्पनाकरिकै यथाक्रमतैं नाभि हृदय भ्रूमध्य दशमद्वार याचारिस्थानोंविषे तानृसिंहभगवान्का तिनमंत्रोंकारिकैपूजनकरै॥हेदेवतावो ॥ ताॐकाररूपप्रणवकी अकार उकार मकार नाद याचारिमात्राहोवै हैं ॥ तिन अकारादिकचारिमात्रावोंविषे एकएकमात्रा स्थूलसूक्ष्मादिकभेदकरिकै चारिचारिप्रकारकीहोवै है ॥ तहां तिनअकारादिकवर्णोंकी वैखरीनामास्थूलअवस्थातो वाक्विषेरहै है ॥ और तिनअकारादिकवर्णोंकी दूसरी मध्यमानामासूक्ष्मअवस्था हृदयदेशाविषेरहैहै ॥ और तिनअकारादिकवर्णोंकी तीसरी पश्यंतीनामाबीजअवस्था कुंडलिनीविषेरहै है ॥ और तिनअकारादिकवर्णोंकी चतुर्थपरानामअवस्थातो साक्षीरूपकरिकैसर्वत्रव्यापकहै ॥ इसप्रकार अकारादिकचारिमात्रावोंकूं चारिचारिप्रकारकाहोणेतैं तिनमात्रावोंकासमुदायरूपप्रणव षोडशअवयवोंवालासिद्धहोवै है ॥ अथवा ते ॥ ७ ॥

अकारादिकचारिमात्रा प्लुत दीर्घ ह्रस्व साक्षी याचारिभेदकरिकैचारिचारिप्रकारकीहोवैहै ॥ यातैंतिनसर्वमात्रावोंकासमुदायरूपप्रणव षोडशअवयवोंवालाकह्याजावैहै ॥ अब आत्माकेषोडशभेदोंकावर्णनकरै हैं ॥ हेदेवतावो ॥ जैसे ताप्रणवके अकार उकार मकार नाद यहचारिपादहोवैहै ॥ तैसे ताप्रणवकेवाच्यअर्थरूपआत्माकेभी चारिपादहोवैहैं ॥ तहां व्यष्टिस्थूलशरीररूपउपाधिवाला जोविश्वहै ॥ सोविश्व याआत्मादेवकाप्रथमपादहै ॥ और व्यष्टिसूक्ष्मशरीररूपउपाधिवाला जोतैजसहै ॥ सोतैजस याआत्मादेवका द्वितीयपादहै ॥ और व्यष्टिकारणशरीररूपउपाधिवाला जोप्राज्ञहै ॥ सोप्राज्ञ याआत्मादेवका तृतीयपादहै ॥ और तिनतीनोंकूं प्रकाशकरणेहारा जो साक्षीरूपतुरीयहै ॥ सोतुरीय याआत्मादेवका चतुर्थपादहै ॥ यहचारोंपाद यथाक्रमतैं ताप्रणवमंत्रकेअकारादिकचारिमात्रावोंका अर्थरूपहैं ॥ तेचारोंपाद अध्यात्मरूपहैं ॥ और हेदेवतावो ॥ ताआत्मादेवके जैसे विश्वादिकचारि अध्यात्मपादहैं ॥ तैसे ताआत्मादेवकेचारिआधिदैवपादभीहैं ॥ तहां समष्टिस्थूलशरीररूपउपाधिवाला जोविराट्है ॥ सोविराट्प्रथमपादहै ॥ औरसमष्टिसूक्ष्मशरीररूपउपाधिवाला जोहिरण्यगर्भहै ॥ सोहिरण्यगर्भ द्वितीयपादहै ॥ और समष्टिकारणशरीररूपउपाधिवाला जोईश्वरहै ॥ सोईश्वर तृतीयपादहै ॥ और तिनसर्वोंकूंप्रकाशकरणेहारा परमात्मादेव चतुर्थपादहै ॥ यहचारों ताआत्मादेवके आधिदैवपादहैं ॥ हेदेवतावो ॥ जैसे ताप्रणवकीअकारादिकचारिमात्रा चारिचारिप्रकारकीहोवैहै ॥ तैसे याआत्मादेवके विराटादिकचारिआधिदैवरूपोंतैंअभिन्न जेविश्वादिकचारिपादहैं ॥ तेविश्वादिकचारिपादभीतीव्र मध्यम मंद तुरीय याचारिभेदकरिकै चारिचारिप्रकारकेहोवै हैं ॥ तहां जाग्रतरूपविश्वका जोस्वरूप नेत्रादिकइंद्रियोंकरिकै रूपादिकविषयोंकूंग्रहणकरैहै ॥ सोस्वरूप ताविश्वका तीव्रनामा प्रथमपादहै ॥ और ताविश्वका जोस्वरूप मनोरथकूंकरैहै ॥ सोस्वरूप ताविश्वका मध्यमनामा द्वितीयपादहै ॥ और ताविश्वका जोस्वरूप मोहकरिकैतृष्णीभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ सोस्वरूप ताविश्वका मंदनामा तृतीयपादहै ॥ और ताविश्वका जोसर्वउपाधितैंरहितनिर्विशेषतुरीयस्वरूपहै ॥ सोनिर्विशेषस्वरूप ताविश्वका चतुर्थपादहै ॥ इसप्रकार स्वप्नप्रकाद्रष्टातेजसभी चारिप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां स्वप्नअवस्थाविषे जो

तेजसकास्वरूप सत्यमंत्रादिकोकूंग्रहणकरेहैं ॥ सोस्वरूपतातैजसका तीव्रनामाप्रथमपादहै ॥ और तातैजसका जोस्वरूप स्वप्नकूंस्वरूप करिकेहीजानेहै ॥ सोस्वरूप तातैजसका मध्यमनामा द्वितीयपादहै ॥ और तातैजसका जोस्वरूप तास्वप्नविषेमोहकरिकै मूढभावकूं प्राप्तहोवेहै ॥ सोस्वरूपतातैजसका मंदनामातृतीयपादहै ॥ और तातैजसका जोस्वरूपनिर्विशेषतुरीयरूपहै ॥ सोनिर्विशेषतुरीयस्वरूपतातैजसका चतुर्थपादहै ॥ इसप्रकार सुषुप्तिअवस्थावाला प्राज्ञभीचारिप्रकारकाहोवेहै ॥ तहां सात्विकवृत्तिहैप्रधानजिसविषे ऐसाजोप्राज्ञकास्वरूपहै ॥ सोस्वरूपताप्राज्ञका तीव्रनामा प्रथमपादहै ॥ और राजसवृत्तिहै प्रधानजिसविषे ऐसाजोताप्राज्ञकास्वरूप है ॥ सोस्वरूप ताप्राज्ञका मध्यमनामा द्वितीयपादहै ॥ और तामसवृत्तिहैप्रधानजिसविषे ऐसाजोताप्राज्ञकास्वरूपहै ॥ सोस्वरूप ताप्राज्ञका मंदनामा तृतीयपादहै ॥ और ताप्राज्ञका जोस्वरूप निर्विशेषतुरीयरूपहै ॥ सोनिर्विशेषस्वरूप ताप्राज्ञका चतुर्थपादहै ॥ और पूर्व प्रणवमंत्रकीजोनादनामा चतुर्थमात्राकथनकरीथी ॥ तानादमात्राकी बीज बिंदु शक्ति शांत यहचारिअवस्था कथनकरीहैं ॥ तिन चारोंकेयथाक्रमतैं ओत अनुज्ञाता अनुज्ञा अविकल्प यहतुरीयआत्माकेचारिपादअर्थरूपहै ॥ अबतिनओतादिकचारिपादोंकूं तीव्रादिरूपकरिकेवर्णनकरेहैं ॥ तहां जैसे अंगारोंविषे अग्नि अनुगतहोइकैरहेहै ॥ तैसे जोआत्मादेव सर्वस्थूलसूक्ष्मकारणशरीरोंविषे साक्षीरूपकरिकेअनुगतहै ॥ तथा सर्वजीवोंकाआत्मारूपहै ॥ तथा जिसआत्मादेवकरिकै यहसर्वप्रपंच आपणेआपणेरूपकरिकै जान्याजावेहै ॥ ताअंतर्यामीआत्मादेवकानाम ओतहै॥सोओतनामाआत्मा तातुरीयआत्माका तीव्रनामाप्रथमपादहै॥और जोआत्मादेव ध्याता ध्यान ध्येय ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय इत्यादिकजगतकूंआपणीसत्तास्फूर्तितैंरहितदेखिकै तथाहमारीसत्तास्फूर्ति याजगतकूंप्राप्तहोवै याप्रकारकाविचार करिकै आपणीसत्तास्फूर्ति ताजगत्विषेप्राप्तकरेहैं ॥ ताआत्मादेवकानाम अनुज्ञाता है सोअनुज्ञातानामाआत्मा तिसतुरीयआत्मा देवका मध्यमनामा द्वितीयपादहै ॥ और जोआत्मादेव कल्पितजगत्तैं आपणीसत्तास्फूर्तिकूंआकर्षणकरिकै ताकल्पितजगत्कूंत्यकरिकै केवलआपणेअद्वितीयरूपकूंजाणेहै॥ताआत्माकूंअनुज्ञा यानामकरिकैकथनकरेहैं॥सोअनुज्ञानामाआत्मा तिसतुरीयआत्मादेवका

॥ ८ ॥

मंदनामा तृतीयपादहै ॥ और जिसआत्मादेवकेस्वरूपविषे याकल्पितद्वैतप्रपंचकी स्मृतिभीनहींहोवै है ॥ तथा जोआत्माकास्वरूप योगीपुरुषोंकूं अनेकजन्मोंकेपुण्यकर्मोंकरिकै प्राप्तहोवै है ॥ ताआत्माकेस्वरूपकानाम अविकल्पहै ॥ सोअविकल्पस्वरूपतिसतुरीयआत्माका चतुर्थपादहै॥ हेदेवतावो ॥ सोअविकल्पनामा तुरीयआनंदस्वरूप तिनचारोंअवस्थावोंविषे अधिष्ठानतारूपकरिकेअनुगतहुआ प्रतीतहोवै है ॥ और तिसीअविकल्पनामातुरीयआत्माकीसत्तास्फूर्तितैं यहपूर्व उक्तषोडशप्रकारकाआत्माकास्वरूप प्रतीतहोवै है॥तहां यद्यपि आत्माकेतुरीयस्वरूपविषेकल्पितरूपतासंभवैनहीं॥तथापि तातुरीयआत्माविषे जोतुरीयतारूपधर्म है ॥ सोतुरीयताधर्म आपणेतैंभिन्न तीनवस्तुवोंकीअपेक्षाकरे है॥तिनकीअपेक्षाकरिकैही तुरीयकह्याजावै है॥ यातैं सोतुरीयताधर्मभी कल्पितहै॥परंतुतातुरीयताधर्मकाआश्रयरूपआत्मा कल्पितनहीं है॥हेदेवतावो॥जैसे निर्मलआकाशविषे गंधर्वनगर प्रतीतहोवै है॥ यातैं सोगंधर्वनगर कल्पितकह्याजावै है॥तैसे ताअविकल्परूपशुद्धआत्माविषे यहसर्वजगत् प्रतीतहोवै है॥ यातैं यहजगत्भी कल्पितकह्याजावै है ॥ और यहअविकल्पआत्मादेव सर्वभयतैंरहितहै ॥ तथा जन्मादिकसर्वविकारोंतैं रहितहै ॥ तथा यहआत्मादेव परमाणुआदिकसूक्ष्मपदार्थोंतैंभी अत्यंतसूक्ष्महै ॥ और आकाशादिकमहान्पदार्थोंतैंभी अत्यंतमहान्है ॥ ऐसेआत्माकेसाक्षात्कारतैंही मोक्षकीप्राप्तिहोवै है ॥ अब ताआत्मज्ञानकेअधिकारीकावर्णनकरे हैं॥हेदेवतावो ॥ याअविकल्पनामाआनंदस्वरूपआत्माकेजानणेकीइच्छाकरतेहुए यहब्राह्मणादिकअधिकारीपुरुष वेदविहितअग्निहोत्रादिककर्मोंकूंकरे हैं॥तथा हिंसादिकनिषिद्धकर्मोंका परित्यागकरे हैं॥तथा तेअधिकारीपुरुष सत्य तप दया दान ब्रह्मचर्य अहिंसा इत्यादिकशुभकर्मोंकूंकरे हैं।इतनैंकरिकै मंद मध्यम यादोप्रकारकेअधिकारीकावर्णनकऱ्या।अब उत्तमअधिकारीकावर्णनकरेहैं॥हेदेवतावो॥याअविकल्पस्वरूपआत्माकेजानणेकीइच्छाकरतेहुए कोईकब्राह्मण पुत्रएषणा वित्तएषणा लोकएषणा यातीनप्रकारकेएषणावोंकापरित्यागकरिकै तथापरमहंससंन्यासकेग्रहणपूर्वक सर्वकर्मोंकापरित्यागकरिकै केवल भिक्षावृत्तिकूंधारणकरे हैं ॥ ऐसेउत्तमअधिकारीपुरुषयाआनंदस्वरूपआत्माकूंसाक्षात्कारकरिकै अंतरतैंसर्वज्ञहुएभीबाह्यतैं अंधमूकपुरुषकीन्याईं यापृथ्वीविषेविचरे हैं ॥ याकारणतैंही

कोंकीविषयता अवश्यकरिकैहोवै है ॥ तिनबाह्यअंतरइंद्रियोंकीविषयतातैंविना केवलवाणीकीविषयतासंभवैनहीं॥ यातैं तिनइंद्रियोंकी विषयतातौ व्यापकहै ॥ और वाणीकीविषयताव्याप्यहै और जहांव्यापककाअभावहोवै है ॥ तहां व्याप्यकाभीअभावहीहोवै है ॥ जैसे अग्निरूपव्यापकके अभावहुए धूमरूपव्याप्यकाभीअभावहीहोवै है॥तैसे इहांप्रसंगविषे सर्वअवस्थाओंविषेअनुगत जोअद्वितीयब्रह्मरूपआ त्माहै॥ताआत्मादेवविषे तेनेत्रादिकइंद्रिय तथामनबुद्धि प्रवृत्तहोइसकैनहीं॥यातैं ताआत्मादेवविषे वाणीकीविषयताभीसंभवैनहीं।किंवा। याअधिष्ठानआत्माकरिक प्रेरणाकरेहुए ॥ तेनेत्रादिकइंद्रिय तथामनबुद्धिशरीरादिक आपणेआपणेकार्यविषे प्रवृत्तहोवै हैं ॥ परंतु ते मनसहितनेत्रादिकइंद्रिय आपणेप्रवर्त्तकआत्माविषे प्रवृत्तहोवैनहीं ॥तात्पर्ययह॥आपणीसमीपतामात्रकरिकै सर्वव्यवहारोंकीसिद्धिकर्त्ता जो आत्मा है ता कर्ता आत्मविषे जोमनसहितइंद्रियोंकीविषयतारूपकर्मतामानिये तौ एकहीआत्माविषे कर्तापणा तथाकर्मपणाप्राप्तहोवै गा सोअत्यंत विरुद्धहै । याकारणतैंभी ताआत्माविषे तामनसहितइंद्रियोंकीविषयता संभवैनहीं।किंवा।यहवाक्यइंद्रियतौ केवलशब्दोंकूंही विषय करेहै अर्थकूंविषयकरेनहीं ॥और तेशब्द तिनपदार्थोंकूंविषयकरेहैं ॥जेपदार्थ नेत्रादिकबाह्यइंद्रियोंकेविषयहोवै हैं अथवा मनबु द्धिरूपअंतःकरणकेविषयहोवै हैं ॥ सर्वपदार्थोंकूं तेशब्द विषयकरेनहीं ॥ और तेनेत्रादिकइंद्रियभी तिनपदार्थोंकूंविषयकरेहैं॥ जिनपदा र्थोंविषे अनात्मताधर्म रहेहै ॥ तथारूपस्पर्शादिकगुणरहेहैं ॥ सोअनात्मताधर्म तथारूपस्पर्शादिकधर्म आत्माविषेहैंनहीं ॥ यातैं ताआ त्मादेवविषे तिनइंद्रियोंकीविषयताभी संभवैनहीं ॥ और इंद्रियोंकीविषयताकेअभावहुए ताआत्मादेवविषे शब्दकीविषयताभीसंभवै नहीं ॥ तात्पर्ययह ॥नेत्रादिकइंद्रियतौ नियमकरिकैरूपस्पर्शादिकधर्मोंकूं तथारूपस्पर्शादिकधर्मवालेपदार्थोंकूंही विषयकरेहैं॥औरमन रूपअंतरइंद्रियतौ नियमकरिकै सुखदुःखादिकधर्मोंकूं तथासुखदुःखादिकधर्मवालेपदार्थकूंही विषयकरे है।तेरूपस्पर्शादिकगुणतथासुखदुः खादिकधर्मआत्माविषेहैंनहीं ॥ यातैं ताआत्मादेवविषे तिनइंद्रियोंकीप्रवृत्तिसंभवैनहीं॥ किंवा ॥ अहंसुखी अहंदुःखी याप्रतीतिकरिकै यद्यपि सुखदुःख आत्माविषेप्रतीतहोवै है॥तथापि सोसुखदुःख ताआत्माविषे वास्तवतैंहैनहीं॥किंतु जैसे रज्जुविषे सर्पकल्पितहोवैहै ॥

तैंसे सोसुखदुःखभी आत्माविषेकल्पितहै॥और कल्पितवस्तुकाज्ञान किसीइंद्रियकरिकैहोवैनहीं॥किंतु साक्षीआत्माकरिकैही ताकल्पि तवस्तुकाज्ञान होवै है ॥ यातैं सोकल्पितसुखदुःखभी आत्माविषे मनकीविषयताकूंसिद्धकरिसकैनहीं॥अब ताआत्माविषे इंद्रियोंकीअ विषयता सिद्धकरणेवासतै प्रथम अधिष्ठानत्व सिद्धकरेहैं॥ हेदेवतावो ॥कल्पितपदार्थोंकाउपादानकारणरूपजोअज्ञानहै ॥ ताअज्ञानका जोविषयहोवै ताकानाम अधिष्ठानहै ॥ सोअधिष्ठान सर्वकल्पितपदार्थोंकाएकहीहोवै है॥जैसे एकहीरज्जुरूपअधिष्ठानविषे कल्पितजे सर्प दंड जलधारा भूमिलय इत्यादिकपदार्थ हैं ॥ तिनसर्वकल्पितपदार्थोंका एकहीरज्जु अधिष्ठानहोवै है॥तैसे सर्वकल्पितपदार्थोंका एकही अधिष्ठानहोवै है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ कल्पितरजतादिकोंकेअधिष्ठानरूप जेशुक्तिआदिकहैं॥तिनशुक्तिआदिकोंतैं कल्पितसर्पादिकों केअधिष्ठानरूपरज्जुआदिकोंका भेदहीदेखणेविषेआवै है॥यातैं सर्वकल्पितपदार्थोंका एकही अधिष्ठानहोवै है यहवार्त्ता संभवैनहीं॥समा धान ॥हेदेवतावो॥ यद्यपि अविचारकालविषे कल्पितसर्पादिकोंका तथा कल्पितरजतादिकोंका भिन्नभिन्नही अधिष्ठानप्रतीतहोवैहै ॥ तथापि विचारकरिकैदेखियेतौ तिनरज्जुआदिकोंकूं कल्पितसर्पादिकोंकीअधिष्ठानता संभवैनहीं ॥ किंतु तिनरज्जुशुक्ति आदिकोंविषे अनुगत जोसामान्यचैतन्यहै ॥ ताचेतनविषेही तिनकल्पितसर्पादिकोंकीअधिष्ठानतासंभवै है ॥ काहेतैं कल्पितवस्तुकाउपादानकारण जोअज्ञानहै ताअज्ञानकाजोविषयहोवै है ताकानाम अधिष्ठानहै ॥ सोअज्ञान स्वभावतैं आवृतरज्जुआदिकजडपदार्थोंकूंविषयकरैनहीं॥ किंतु तिनरज्जुआदिकोंविषेअनुगत जोचेतनहै ॥ ताचेतनकूंही सोअज्ञान विषयकरे है ॥ यातैं सोचेतनही तिनकल्पितपदार्थोंका अधि ष्ठानहै ॥ सोचेतनरूपअधिष्ठान सर्वत्रएकही है ॥ अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरणेवासतै प्रथम स्थूलारुंधतीन्यायकरिकै इदंतारूपसामान्य अंशविषे अधिष्ठानरूपता निरूपणकरे हैं॥हेदेवतावो॥भ्रमकालविषे जोवस्तुजिसकल्पितपदार्थकेसाथ तादात्म्यसंबंधकरिकैप्रतीतहोवैहै॥ सोवस्तुही ताकल्पितपदार्थकाअधिष्ठानहोवै है॥तिसवस्तुतैंभिन्न दूसराकोईवस्तु ताकल्पितपदार्थकाआधिष्ठानहोवैनहीं॥यहअधिष्ठानका लक्षण रज्जुशुक्तिआदिकोंविषेसंभवतानहीं॥किंतुतिनरज्जुशुक्तिआदिकोंविषेअनुगतजोइदंतारूपसामान्यअंशहै॥ताइदंताविषेही सोआधि

ष्ठानकालक्षणसंभवे है॥ काहेतैं ताभ्रमकालविषे रज्जुःसर्पःशुक्तीरजतं याप्रकारकीप्रतीतिहोवैनहीं॥ किंतुताभ्रमकालविषेसर्वप्राणियोंकूं अयं सर्पःइदंरजतंयाप्रकारकीहीप्रतीतिहोवैहै॥ यातैंकल्पितसर्पादिकोंकेसाथतादात्म्यसंबंधकरिकैप्रतीतहोणेहारीजोइदंतारूपसामान्यअंशहै। सोइदंताअंशही तिनसर्पादिकोंकाअधिष्ठानहै॥ शंका॥ हेभगवन्॥ बाधसामानाधिकरण्य १ अध्याससामानाधिकरण्य २ विशेषणसामानाधिकरण्य ३ ऐक्यसामानाधिकरण्य ४ यहचारप्रकारकासामानाधिकरण्य शास्त्रोंविषेकथनकऱ्याहै ॥ तहां स्थाणुविषेचोरभ्रमकेउत्तरकालविषे तथारज्जुविषे सर्पभ्रमकेउत्तरकाल विषे तास्थाणुरज्जुकेज्ञानहुएतैंअनंतर जो चोरोऽयंस्थाणुः सर्पोऽयंरज्जुः याप्रकारकीप्रतीतिहोवै है ॥ ताकानाम बाधसामनाधिकरण्यहै॥ और अयंसर्पः इदंरजतं याकानाम अध्याससामानाधिकरण्यहै॥ और नीलोघटःयाकानाम विशेषणसामानाधिकरण्यहै॥ और सोयंदेवदत्तःयाकानाम ऐक्यसामानाधिकरण्यहै॥ तहां जैसे अध्याससामानाधिकरण्यविषेइदंताअंशका ताकल्पितसर्पकेसाथ तादात्म्यसंबंध प्रतीतहोवै है ॥ तैसे बाधसामानाधिकरण्यविषे रज्जुकाभी तासर्पकेसाथ तादात्म्यसंबंध प्रतीतहोवै है॥ यातैं ताइदंताविषे कल्पितसर्पादिकोंकीअधिष्ठानतासंभवैनहीं॥ समाधान ॥ हेदेवतावो॥ताबाधसामानाधिकरण्यविषे यद्यपिरज्जु आदिकोंकासर्पादिकोंकेसाथ तादात्म्यप्रतीतहोवै है ॥ तथापि ताबाधसामनाधिकरण्यकालविषे तेकल्पितसर्पादिक तहां हैंनहीं॥ यातैं ताबाधकाल विषे शास्त्रवेत्तापुरुषोंकूं जो सर्पोऽयंरज्जुः याप्रकारकाज्ञानहोवै है ॥ सोज्ञान वंध्यापुत्रविषयकज्ञानकीन्याईं विकल्पमात्रही है ॥ ताविकल्प ज्ञानकरिकै तिनरज्जुआदिकोंविषे सर्पादिकोंकीअधिष्ठानता सिद्धहोवैनहीं ॥ जोकदाचित् विकल्पज्ञानतैंभी वस्तुकी सिद्धिहोतीहोवै।तोवंध्यापुत्रहै याप्रकारकेविकल्पज्ञानतैं वंध्यापुत्रकीभीसिद्धिहोणीचाहिये।यातैं इदंतारूपसामान्यअंशही सर्पादिकसर्वक ल्पितपदार्थोंकाअधिष्ठानहै ॥ इतनैंकरिकै इदंताविषे अधिष्ठानरूपतासिद्धकरी ॥ अब ताइंदताविषे ब्रह्मरूपतासिद्धकरणेवासतै प्रथम ताइदंताविषे भेदतैंरहितपणा निरूपणकरै हैं ॥ हेदेवतावो ॥ इदंतारूपसामान्यअंशविषे जोहमारेकूंभेदप्रतीतहोवै है ॥ सोभेद केवल शब्दमात्रकरिकैही प्रतीतहोवै है ॥ वास्तवतैं ताइदंतारूप अर्थविषे किंचित्मात्रभी भेदनहीं है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ तिनशब्दोंके

॥ ११ ॥

भेदतैंहीं अर्थकाभेद किसवास्तेनहींहोवै ॥ समाधान ॥ हेदेवतावो ॥ यालोकविषे शब्दोंकेभेददुएभी अर्थकीएकताहीदेखीहै॥ जैसे एकही देवदत्तनामापुरुषकूं कोईपुरुष अयंदेवदत्तः याशब्दकरिकैकथनकरेहै ॥ और कोईकपुरुष तादेवदत्तकूं त्वं याशब्दकरिकै कथनकरे है ॥ और कोईकपुरुष स्नेहकरिकै देवदत्तोऽहमेव याप्रकारकेशब्दकरिकैकथनकरे हैं और कोईकपुरुषतौ यहदेवदत्त मेरासर्वबांधवहै याप्रकारकेशब्दकरिकैकथनकरे है ॥ इसप्रकार एकहीदेवदत्तपुरुष अनेकवक्तापुरुषोंकरिकैउच्चारणकरेहुएअनेकशब्दोंकूंप्राप्तहोवै है ॥ परंतु तिनशब्दोंकेभेदकरिकै तादेवदत्तनामापुरुषकाभेदहोवैनहीं ॥ तैसे ताइदंताकेवाचकशब्दोंकेभेददुएभी ताइदंतारूपसामान्य अर्थविषे भेदसिद्धहोवैनहीं ॥ किंवा ॥ यालोकविषे जितनैंकीपदार्थ हैं ॥ तिनसर्वपदार्थोंविषे एकत्व स्वभावतैंहीं सिद्धहै ॥ तास्वभाव सिद्धएकत्वकेविद्यमानहुये तापदार्थविषे तिनशब्दोंकेभेदकरिकै सोनानात्व कदाचित्भीनहींरहैगा ॥ जोकदाचित् तास्वभावसिद्धएकपदार्थविषेभी शब्दोंकेभेदतैं नानापणाप्रतीतहोवैगा ॥ तौभी सोनानापणा गंधर्वनगरकीन्याईं मिथ्याहीहोवैगा॥ तामिथ्यानानापणेकरिकै वा स्तवएकताकीहानिहोवैनहीं ॥ किंवा ॥ यालोकविषे प्रमाणकरिकै ही वस्तुकीसिद्धिहोवै है॥ प्रमाणतैंविना वस्तुकीसिद्धहोवैनहीं॥ यातैं सोइदंतारूपअर्थकाभेद किसप्रमाणकरिकैसिद्धहोवै है यहविचारकऱ्याचाहिये ॥ तहां भेदरूपराजाका मुख्ययोद्धाजोशब्दथा सोशब्दतौ याइदंतारूपअर्थतैं पराजयकूंप्राप्तहोताभया है ॥ काहेतैं ताइदंताअर्थविषे स्वभावतैंरह्याजोअभेदहै ॥ ताअभेदकरिकै भेदकीनिवृत्तिहोइगई है ॥ याकारणतैं ताभेदरूपराजाकेअनुसारकरिकै ताअर्थविषेप्रवेशकरणेकीइच्छाकरणेहाराजोशब्दहै ॥ सोशब्दभी ताअर्थविषेप्रवेशकरिसकैनहीं ॥ किंतु सोशब्द कल्पितभेदमात्रकूंअंगीकारकरिकैही संतोषकूंप्राप्तहोवै है ॥ सत्यभेदकीअपेक्षाकरैनहीं ॥ किंवा ॥ जैसे सोशब्द ताइदंतारूपअर्थके भेदकूंग्रहणनहींकरेहै ॥ तैसे यहचक्षुआदिकइंद्रियभी ताभेदकूंग्रहणनहींकरे हैं ॥ किंतु ते चक्षुआदिक इंद्रिय वस्तुकेस्वरूपमात्रकूंग्रहणकरिकैही कृतकृत्यहोवै हैं ॥ जैसे दोषयुक्तचक्षु शुक्तिविषे यहरजतहै याप्रकार रजतमात्रकाग्रहणकरिकै हीं कृतकृत्यहोवै हैं ॥ शुक्तिविषे तारजतकेभेदकूंग्रहणकरेनहीं ॥ जोकदाचित् सोदुष्टचक्षु ताभेदकूंभी ग्रहणकरताहोवै ॥ तौ भ्रममात्र

काहोंलोपहोवैगा ॥किंवा॥ याचक्षुआदिकइंद्रियों तैं जभी स्वप्रकेइंद्रियोंकीन्याईं साइदंताभीसिद्धनहींभई ॥ तभी तिनचक्षुआदिकइंद्रियोंतैं ताइदंताकाभेद किसप्रकार सिद्धहोवैगा ॥ किंतु नहींसिद्धहोवैगा॥काहेत तीनकालविषे जाकाबाधनहींहोवैहै ऐसीजोसत्ताहै ॥ सासत्ताही इदंतारूपहै ॥ याकारणतैंही यालोकविषे इदंसत् इदंसत् याप्रकारकीप्रतीतिहोवै है॥ताप्रतीतितैं इदंशब्दकेअर्थका तथासत्शब्दकेअर्थका अभेदहीसिद्धहोवै है ॥यातैं तासत्तारूपइदंताकूं तथाताकेभेदकूं यहचक्षुआदिकइंद्रिय ग्रहणकरिसकै नहीं ॥ किंवा ॥ पूर्वउक्तयुक्तियोंतैं जभी ताइदंताविषेभी भेदसिद्धनहींभया ॥ तभी जिसपरमात्मादेवका सोइदंताभीविशेषरूपहै ॥ऐसाजोसर्वत्रअनुगतपरमात्मादेवहै ॥तिसपरमात्मादेवविषे सोभेद किसप्रमाणकरिकैसिद्धहोवैगा॥ किंतु तापरमात्मादेवविषे किसीभीप्रमाणकरिकै ताभेदकी सिद्धिहोवै नहीं॥अब ताइदंतारूपसत्ताकेभानविषे दूसरेकीअनपेक्षाबोधनकरणेवासतै प्रथम तासत्ताका स्फुरणतैंअभेदसिद्धकरैहैं ॥ तहां दृष्टिसृष्टिसिद्धांतविषे अभासमानपदार्थकी सत्ताहोवैनहीं॥किंतु भासमानपदार्थकीही सत्ताहोवै है॥याकारणतैं सासत्ता तास्फुरणतैंभिन्ननहीं है॥ किंतु सासत्ता स्फुरणरूपही है ॥ और सोस्फुरण स्वप्रकाशहीहोवै है॥यहवार्त्ता पूर्वअनेकवार कथनकरिआयेहैं॥यातैं तास्वप्रकाशस्फुरणतैंअभिन्नहुई सासत्ताभी स्वप्रकाशहीसिद्धहोवैहै॥अब तास्फुरणकेस्वप्रकाशताविषे किंचित्युक्तिकाभीवर्णनकरैहैं॥ हेदेवतावो॥यालोकविषे जोजोवस्तु चैतन्यतातैंरहित अचैतन्यस्वरूपहै॥सोसोअचैतन्यवस्तु चैतन्यकरिकैहीं सिद्धहोवै है ॥ याअर्थविषे किसीभीवादीका विवादहैनहीं॥किंतुयहअर्थ सर्ववादियोंकूंसंमतहै॥जोकदाचित् सोचैतन्यभीतिसचैतन्यकरिकैही प्रतीतहोवैहै याप्रकारअंगीकारकरिये॥ तोयाकेविषे यहविचारकऱ्याचाहिये॥जिसचैतन्यकी चैतन्यकरिकैप्रतीतिहोवैहै।सोप्रतीतिकाविषयरूपचैतन्य स्फुरणतैंविलक्षणहैअथवा सोचैतन्य स्फुरणरूपहै॥तहां जोवादी प्रथमपक्ष अंगीकारकरै सोसंभवैनहीं ॥ काहेतैं स्फुरणतैंविलक्षणवस्तुविषे चैतन्यरूपताप्रमाणकैविषे किंचित्मात्रभीप्रमाणनहींहै॥तथा ताकेमानणेका कोईप्रयोजनभीहैनहीं॥काहेतैं तास्फुरणरूपचैतन्यकूंप्रकाशकरणेहाराजोचैतन्यहै ॥ ताचैतन्यकरिकैही सर्वकानिर्वाहहोइसकेहै ॥ तास्फुरणरूपचैतन्यकाअंगीकारकरणा व्यर्थही है॥ और सोचैतन्य स्फुरणरूपहै यहदूसरा

पक्ष जोवादी अंगीकारकरै सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं ताचैतन्यकूं जोवादी स्फुरणरूपअंगीकारकरैगा ॥ तो स्फुरणरूपचैतन्यसर्ववृद्धिवृत्तियोंकासाक्षीरूपआत्माहीं सिद्धहोवैगा ॥ तास्फुरणरूपसाक्षीकूं आपणेप्रकाशविषे दूसरेकिसीकीअपेक्षासंभवैनहीं ॥ जोकदाचित् तास्फुरणरूपचैतन्यकूं आपणेप्रकाशविषे किसीदूसरेकीअपेक्षाहोवैगी ॥ तौतास्फुरणरूपचैतन्यविषे घटादिकोंकीन्याईं अनात्मरूपता प्राप्तहोवैगी ॥ यातैं सोस्फुरणरूपचैतन्यआत्मा स्वप्रकाशरूपहै ॥ इतनैंकरिकैताआत्मादेवकीसत्चित्रूपता निरूपणकरी ॥ अब ताआत्मादेवविषे आनंदरूपता निरूपणकरैहैं ॥ हेदेवतावो ॥ जोहमनैंसत्चित्स्वरूपआत्मा तुमारेप्रति कथनकऱ्याहै ॥ सोआत्मादेव यादेहधारीजीवोंकूंसर्वपदार्थोंतैं अत्यंतप्रियरूपहै ॥ यातैं सोआत्मादेव परमआनंदस्वरूपहै ॥ काहेतैंयालोकविषे याजविनैं आपणाआत्मारूपकरिकैअंगीकारकऱ्याजोयहशरीरहै ॥ ताशरीररूपआत्माकेनाशकाप्रसंग जभी आइकैप्राप्तहोवैहै ॥ तथाकिसीविषयसुखकेनाशकाप्रसंग जभीआइकैप्राप्तहोवैहै ॥ तभीयहबुद्धिमान्पुरुष ताशरीररूपआत्माकीरक्षाकरणेवासतै ताविषयजन्यसुखकाहीपरित्यागकरै है ॥ और यालोकविषे अधिकसुखवासतैंहीं अल्पसुखकापरित्याग देखणेविषेआवै है ॥ अल्पसुखवासतै अधिकसुखकापरित्यागकरणा कहांभीदेखणेविषेआवतानहीं ॥ यातैंयासर्वलोकोंकेव्यवहारतैंभी ताविषयसुखतैं तथाताविषयसुखकेसाधनोंतैं आत्माविषेही परमानंदरूपता सिद्धहोवैहै ॥ हेदेवतावो ॥ यापूर्वउक्तअभिप्रायकूंबोधनकरणेंहारा जोविद्वान्पुरुषोंकामौनहै ॥ तामौनकरिकैही तेब्रह्मवेत्तापुरुष आपणेशिष्योंकेप्रति तासत्चितआनंदस्वरूपआत्माका उपदेशकरतेभये हैं ॥ और जेअल्पबुद्धिवालेशिष्य ताब्रह्मवेत्तागुरुके मौनरूपउपदेशकरिकै तासत्चित्आनंदस्वरूपआत्माकूं नहींजानिसकै हैं॥तिनाशिष्योंकेप्रति सोब्रह्मवेत्तागुरु कृपाकरिकै ताअद्वितीयआत्माविषे किंचित्धर्मोंकाआरोपणकरिकैयाप्रकारकाउपदेशकरै ॥ तहां यालोकविषे जोवस्तु वचनकरिकैरूपष्टकह्याजावै है ॥ तावस्तुकूं विद्वान्पुरुष सत् यानामकरिकैकथनकरै हैं॥और जोवस्तु केवल मनकरिकैही चिंतनकऱ्याजावैहै।तावस्तुकूं विद्वान्पुरुष असत् यानामकरिकैकथनकरै हैं॥और याआत्मादेवकास्वरूपतौ सत् असत् यादोनोंतैं रहितहै॥ऐसेआत्मादेवविषे सोब्रह्मवेत्तागुरु सत् असत् रूपदोधर्मोंकूं

आरोपणकारिकै ताशिष्यकेप्रतियाप्रकारकाउपदेशकरै ॥ हेशिष्य ॥ अनुभवकारिकैसिद्ध जोसत्चित्आनंदस्वरूपआत्माहै॥सोसर्वक्लेशों तैंरहितआत्मादेवतूंहै ॥ तहां सोमंदबुद्धिशिष्य तासत्का क्यास्वरूपहैं याप्रकारकाजोप्रश्नकरै ॥ तौ सोब्रह्मवेत्तापुरुष ताशिष्यकेप्रति याप्रकारकावचनकहै ॥ जोवस्तुसर्वपदार्थोंविषे इदंइदं याप्रकारतैंप्रतीतिहोवैहै ॥ तावस्तुकूंहीं तूंसत्रूपकरिकैजान ॥ तहां पूर्वस्थूलारुंधतीन्यायकरिकै ताइदंताविषेकथनकरीजाआत्मता ताआत्मताकूं अभी मुख्यआत्माविषेप्राप्तकरैहैं ॥ हेशिष्य जिस मन वाणीकेआविषय रूपस्फुरणविषेसापूर्वउक्तइदंताभीकल्पितहै ॥ सोस्फुरणहींइमनैंतुमारेप्रति सत्यानामकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ तिसीस्फुरणकूंविद्वान्पुरुष अनुभूतियानामकरिकैकथनकरैहैं ॥ औरहेशिष्य ॥ यहसत्रूपअनुभूतिकिसविषेस्थितहैं॥याप्रकारकाप्रश्नजोतूंहमारेप्रतिकरै॥तौहमतुमारेप्रतितास्थानसहितअनुभूतिकेस्वरूपका कथनकरैहैं ॥ताकूंतूंश्रवणकर ॥हेशिष्य ॥ सर्वजीवोंकेबुद्धिविषेप्रतिबिंबभावकूंप्राप्तहुईतथासर्वविषयोंविषे इयंचित् इयंचित् याप्रकारसैंअनुगतप्रतीतहुई जाप्रसिद्धचित्है॥ताचित्कानामअनुभूतिहै ॥ जिसाचित्केस्वरूपविषे सापूर्वउक्तइदंताभीबाधितहोवैहै ॥ यातैंसाबुद्धिही ताअनुभूतिकेउपलब्धिकास्थानहै॥हेदेवतावो॥इसप्रकारजभी तेश्रद्धावान्शिष्य तिनब्रह्मवेत्तागुरुवोंकेप्रति आत्माकास्वरूपपूछैहैं ॥ तभीतेब्रह्मवेत्तागुरु तिनाशिष्योंकेप्रति ताअद्वितीयआत्माविषे वाकादिकइंद्रियोंकेयोग्य सत्तादिकधर्मोंकाआरोपणकरिकै ताआत्मादेवकाउपदेशकरैहैं ॥ हेदेवतावो ॥ वास्तवतैंमनवाणीकाअविषयजोआत्माहै ॥ ताआत्मादेवविषे जामनवाणीकीप्रवृत्तिहोवैहै ॥ साप्रवृत्ति अध्यासतैंविनाहोवैनहीं ॥ किंतु अध्यासकूंअंगीकारकरिकैही सामनवाणीकीप्रवृत्तिहोवै है ॥ यातैं पूर्वजोहमनैं तुमारेप्रति सत्चित्आनंदस्वरूपआत्माका कथनकऱ्याहै ॥ सोआत्माकास्वरूप ताअध्यासतैंविना वाणीकरिकै कथनकऱ्याजावैनहीं ॥ तथामनकरिकैभी जान्याजावैनहीं ॥ अबयाहीअर्थकूं कैमुत्यकऱ्यायकरिकैस्पष्टकरैहैं॥ हेदेवतावो ॥ यालोकविषे जीवोंकूं सुखदुःखकीप्राप्तिकरणेहारे जितनैंकीभावपदार्थहैं ॥ तेभावपदार्थ आपणेसहकारीसाधनोंसहित क्षणक्षणविषे परिणामकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ ऐसेपदार्थोंकूंभी कोईपुरुष वर्णनकरिसकतानहीं ॥ जैसे मोती दुग्ध चंद्र कुंदपुष्प याचारोंकेरूपविषे श्वेततागुणधर्मकेसमानहुएभीतिन ॥ १३ ॥

चारोंरूपोंविषे जोअवांतरविशेषताहै ॥ ताविशेषताकेकहणेकूं कोईभीपुरुष समर्थहोइसकैनहीं॥जभी नेत्रादिकइंद्रियोंकरिकै प्रत्यक्षग्रहणयोग्य यहभावपदार्थभी वाणीकरिकैनहींकहेजावै हैं ॥ तभी सर्वइंद्रियोंकाअविषयआत्मा तावाणीकरिकैनहींकह्याजावै है याकेविषेक्याकहणाहै॥किंवा॥विषयइंद्रियोंकेसंबंधतैंउत्पन्नभयाजोसुखहै सोविषयसुखही मनकाविषयहोवै है॥और जोआत्मास्वरूपसुख याअधिकारीपुरुषोंकूं तपादिकअनेकउपायोंकरिकैप्राप्तहोवै है ॥ सोआत्मास्वरूपसुख तामनकीविषयताकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ जभी ताआत्मस्वरूपसुखविषे मनकीभीप्रवृत्तिनहींभई ॥ तभी तास्वरूपसुखविषे वाणीकीप्रवृत्तिनहींहोवै है याकेविषेक्याकहणाहै ॥ किंवा जोविषयजन्यसुख याजीवोंकूं मनकरिकैप्रतीतहोवै है ॥ सोविषयसुखभी आपणेअनुभवकरिकैही जान्याजावै है ॥ परंतु सोआपणाविषयसुख दूसरेपुरुषकेप्रति वाणीकरिकैकह्याजावैनहीं ॥ जभी सोआपणाविषयसुखभी दूसरेकेप्रति वाणीकरिकैनहींकह्याजावै है तभी मनवाणीकाअविषयजोस्वरूपसुखहै ॥ तास्वरूपसुखकूं जानतेहुएभीब्रह्मवेत्तागुरु आपणेशिष्योंकेप्रति तास्वरूपसुखकूं वाणीकरिकैनहींकहिसकैहैं याकेविषेक्याकहणाहै ॥ हेदेवतावो ॥ इसप्रकार सोआत्मादेव साक्षात्वाणीकरिकैकह्याजावैनहीं ॥ यातैं तेब्रह्मवेत्तागुरु ताआनंदस्वरूपआत्माविषे भावअभावरूपधर्मोंकूंआरोपणकरिकैही आपणेशिष्योंकेप्रति ताआत्मादेवकाउपदेशकरै हैं ॥ तहां सत्यत्व चेतनत्व आनंदत्व इत्यादिकधर्मतो भावरूपहैं ॥ और अस्थूल अनणु अह्रस्व अदीर्घ इत्यादिकधर्म अभावरूपहैं॥हेदेवतावो॥इसप्रकार तात्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं आत्माकास्वरूपश्रवणकरिकै तेश्रद्धावान्शिष्य जभी ताआत्माकामननिदिध्यासनकरै हैं ॥ तभीही तेशिष्य आपणेअनुभवकरिकै ताभावअभावधर्मोंतैंरहित शुद्धआत्माकूं साक्षात्कारकरै है ॥ अब याहीअर्थकेस्पष्टकरणेवासतै सर्वजीवोंकेआत्माविषे निष्प्रपंचतारूपब्रह्मका धर्म निरूपणकरैं हैं ॥ हेदेवताओ॥यासर्वदेहधारीजीवोंकाजोआत्माहै॥ सोआत्मादेव सर्वदा याप्रपंचतैंरहितहै॥शंका ॥हेभगवन् याजाग्रतादिरूपप्रपंचकोविद्यमानहुए ताआत्मादेवविषे सानिष्प्रपंचरूपता किसप्रकार संभवैगी ॥ समाधान॥ हेदेवतावो ॥ यहजाग्रतादिरूपसर्वप्रपंच रज्जुसर्पकीन्याईं मिथ्याही है ॥ यातैं सोमिथ्याप्रपंच ताआत्मादेवकेवास्तवनिष्प्रपंचताकूं निवृत्तकरिसकैनहीं॥अब ताजगत्के

मिथ्यात्वसिद्धकरणेवासतैं दृष्टिसृष्टिवादकीरीतिसैं ताजगत्केउत्पत्तिलयका निरूपणकरे हैं ॥ हेदेवतावो ॥ यहआत्मादेव जभी जाग्रत अवस्थाकूंप्राप्तहोवे है ॥ तभी यहआत्मादेव याजाग्रतअवस्थाकूं उत्पन्नकरे है ॥ तथा यास्थूलशरीरकूं उत्पन्नकरे है॥ तथा यास्थूलशरीरतैंभिन्न बाह्यघटादिकपदार्थोंकूंउत्पन्नकरे है॥ और यहआत्मादेव जभी स्वप्नअवस्थाकूंप्राप्तहोवे है ॥ तभी यहआत्मादेव तासूक्ष्मशरीरकूं उत्पन्नकरे है ॥ तथा तासूक्ष्मशरीरतैंभिन्न बाह्यवर्तमानरथादिकपदार्थोंकूं उत्पन्नकरे है॥और यहआत्मादेव तास्वप्नअवस्थाकापरित्यागकरिके जभी ताजाग्रतविषेआवे है॥तभी तिनस्वप्नकेपदार्थोंकूंदेखतानहीं॥यातैं यहआत्मादेव तास्वप्नप्रपंचकूं जाग्रतविषे संहारकरे है॥और यहआत्मादेव जभी ताजाग्रतअवस्थाकापरित्यागकरिके स्वप्नअवस्थाविषेआवे है॥तभी तिनजाग्रतकेपदार्थोंकूंदेखतानहीं ॥ यातैं यहआत्मादेव ताजाग्रतप्रपंचकूं तास्वप्नविषे संहारकरे है॥और यहआत्मादेव जभी ताजाग्रतस्वप्नदोनोंकापरित्यागकरिके सुषुप्तिविषेजावे है॥तभीयहआत्मादेव ताजाग्रतस्वप्न दोनोंप्रकारकेप्रपंचकूंदेखतानहीं॥यातैं यहआत्मादेवतासुषुप्तिविषे तादोनोंप्रकारकेप्रपंचका संहारकरे है॥और यहआत्मादेव जभी समाधिअवस्थाकूंप्राप्तहोवे है॥तभी तासुषुप्तिअवस्थाके तमरूपअज्ञानकूंभी देखतानहीं॥यातैं यह आत्मादेव तासमाधिविषे ताअज्ञानकाभी संहारकरे है।केसाहैसोतमरूपअज्ञान।जिसतमरूपअज्ञानकरिकैमोहितहुआ यहजीवात्मा आपणेस्वरूपानंदकूंभीजानतानहीं ॥ तथा तासर्वद्वैतप्रपंचकेसंहारका जोसाक्षीरूपज्ञानहै तासाक्षीरूपज्ञानकूंभी जानतानहीं ॥ हेदेवतावो ॥ तुरीयरूपशुद्धआत्माविषे ताअज्ञानकालयरूपजानिवृत्तिहै॥ ताअज्ञानकीनिवृत्तिकरणेविषे यहअधिकारीपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकीकृपाकरिकैहीसमर्थहोवे है॥तागुरुकीकृपातैंविना ईश्वरभी ताअज्ञानकेनिवृत्तकरणेविषे समर्थहोवैनहीं॥तौ अन्यजीवोंकीक्यावार्त्ता है॥ हेदेवतावो ॥ हिरण्यगर्भादिकजेईश्वरहैं॥तिनईश्वरोंकूं जोआत्मज्ञानकीप्राप्तिहोवे है॥सोभी गुरुतैंविना स्वतंत्रहोवैनहीं॥किंतु वेदभगवान्रूपगुरुकेवचनोंकेस्मरणतैंही तिनहिरण्यगर्भादिकोंकूं आत्मज्ञानकीप्राप्तिहोवे ॥ यातैं ताअज्ञानकेनिवृत्तकरणेहारेआत्मज्ञानका ब्रह्मवेत्तागुरुही कारणहै ॥ तागुरुतैंविना किसीकूंभी ज्ञानकी प्राप्तिहोवे नहीं ॥ हे देवतावो ॥ जैसे हिरण्यगर्भादिकईश्वरोंकूं स्मरणकरे हुए वेद

॥ १४ ॥

रूपगुरुतैं आत्मज्ञानहोवेहै॥तैसे इदानींकालकेपुरुषोंकूं तास्मरणकरेहुएवेदरूपगुरुतैं आत्मज्ञानहोतानहीं ॥ याकेविषे ईश्वरपणेका अभाव कारणनहीं है ॥ किंतु चितकेशुद्धिकाअभावही कारणहै ॥ काहेतैं इसलोकविषेभी जोकोईपुरुष ताहिरण्यगर्भकीन्याईं शुद्धचित्तवालाहोवे ॥ तौ यापुरुषकूंभी ताहिरण्यगर्भकीन्याईं ताआत्मज्ञानकीप्राप्तिहोवे ॥ परंतु ताहिरण्यगर्भकीन्याईं चित्तकीशुद्धिहोणी अत्यंतदुर्लभहै ॥ याकारणतैं इदानींकालकेपुरुषोंकूं ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतैंही आत्मज्ञानहोवे ॥ और इदानींकालकेपुरुषोंकेअज्ञानकी निवृत्ति ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतैंहीहोवे है याएकवार्त्ताकूंछोडिके दूसरी याजगत्केउत्पत्तिलयकीकारणता जैसे ताहिरण्यगर्भविषे है ॥ तैसे याजीवात्माविषेभी पूर्वउक्तदृष्टिसृष्टिवादकीरीतिसैं साजगत्केउत्पत्तिलयकीकारणताहै ॥ यातैं यहजीवात्मापुरुष परमेश्वररूपही है ॥ और हेदेवतावो ॥ याजगत्कीउत्पत्तिस्थितिलयकरणेविषे ईश्वरही स्वतंत्रकारणहै ॥ दूसराकोईकारणनहीं है ॥ याप्रकारकेवचन जोवेदांतशास्त्रविषे कथनकरे हैं ॥ तेवचनभी मिथ्यानहीं हैं ॥ किंतु तेवचनभी यथार्थही हैं ॥परंतु तिनवचनोंका यहअभिप्रायहै॥सोईश्वरही हमसर्वजीवोंकाआत्माहै॥ताईश्वरतैंभिन्न कोईआत्माहैनहीं॥तहांश्रुति॥नान्योतोऽस्तिद्रष्टा ॥अर्थयह॥तापरमात्मादेवतैंभिन्न दूसराकोई द्रष्टाहैनहीं ॥ याअभिप्रायकरिकेही तिनश्रुतियोंविषे ईश्वरकूंजगत्काकारणकह्याहै॥अब ताआत्माकीएकताकावर्णनकरे हैं॥हेदेवतावो॥ जैसे एकहीईश्वर रावणकेशत्रुभावकूंअंगीकारकरिके श्रीरामचंद्र कह्याजावेहै ॥ और कंसकेशत्रुभावकूंअंगीकारकरिके श्रीकृष्ण कह्याजावे है ॥ तैसे एकहीपरमात्मादेव व्यष्टिअज्ञानरूपउपाधियोंकेसंबंधतैं जीवकह्याजावे है ॥और समष्टिअज्ञानरूपउपाधिकेसंबंधतैं ईश्वरकह्याजावे है ॥ और हेदेवतावो ॥ जैसे एकहीईश्वरविषे कर्मकेभेदकरिके ईश्वर अनीश्वर यहदोनोंप्रकारकाव्यवहारहोवे है ॥जैसे दशरथकापुत्र श्रीरामचंद्र रावणकेमारणेविषेसमर्थहै ॥ यातैं सोरामचंद्र ईश्वरकह्याजावे है ॥ और क्षीरसमुद्रविषे शेषनागऊपरशयनकरणेहारा विष्णुभगवान् ताराक्षणकेहननकरणेविषे असमर्थ है ॥ यातैं सोविष्णुभगवान् अनीशकह्याजावेहै ॥ तैसे यहएकहीपरमात्मादेव समष्टिव्यष्टिउपाधिकेयोगतैं ईश अनीश कह्याजावे है ॥ और हेदेवतावो ॥ जैसे रामचंद्रअवतारके रावणवधादिरूपकार्यकूंनहींकरताहुआभी सोशेष

शायीविष्णुभगवान् आपणेविचित्रकार्योंकीअपेक्षाकरिकै ईश्वरहीकह्याजावै है ॥ तैसे यहव्याष्टिअभिमानीजीवभी आपणे आपणेविचित्र कार्योंकीअपेक्षाकरिकै ईश्वररूपही है अब याजीवोंविषेईश्वररूपताकेस्पष्टकरणेवासतै प्रथम याजीवोंविषे विचित्रशक्तिकानिरूपणकरे हैं॥ हेदेवतावो ॥ यालोकविषे जितनेंकदेहधारीजीव हैं तेसर्वजीव एकदूसरेकीअपेक्षाकरिकै विचित्रशक्तिवालेप्रतीतहोवै हैं यातैं यासर्वजीवोंके आपणेआपणेकार्यभी आश्चर्यकेहीकारणहैं ॥ जैसेयालोकविषे स्पष्टवचनकेउच्चारणकरणेकीशक्ति केवल मनुष्योंविषेहीरहे है ॥ दूसरेपशुआदिकोंविषे साशक्तिरहेनहीं ॥ और आकाशविषेगमनकरणेकीशक्ति केवल पक्षियोंविषेरहे है ॥ मनुष्यादिकोंविषे साशक्तिरहे नहीं ॥ और पृथ्वीकेअल्पछिद्रविषेभीप्रवेशकरणेकीशक्ति केवल सर्पोंविषेहीरहे है ॥ दूसरेमनुष्यादिकोंविषेसाशक्तिरहेनहीं ॥ और निश्चलताकरिकै स्थितहोणेकीशक्ति केवल वृक्षोंविषेहीरहे है ॥ दूसरेमनुष्यादिकोंविषे साशक्तिरहेनहीं ॥ और सर्वजीवोंकेदेखतेहुए अंतर्धान होणेकीशक्ति केवल देवतादिकोंविषेहीरहेहै मनुष्यादिकोंविषे साशक्तिरहेनहीं॥इसप्रकार दूसरेभी जातिगोत्रकुलादिकोंकेभेदकरिकै भिन्न ताकूंप्राप्तहुए अनेकप्रकारकेजीव नानाप्रकारकीशक्तियोंकरिकैयुक्तहैं॥जिनजीवोंकेकार्यकूं दूसरेजीव करिसकतेनहीं ॥जैसे यामनुष्योंविषे कोईकमनुष्यतौमहान्शूरवीरहैं और कोईमनुष्यतौ सर्वमनुष्योंकूंआपणी आज्ञाविषेचलावणेहारेराजेहैं॥और कोईकमनुष्यतौ सर्वमंत्रोंकूं जानणेहारेहैं॥और कोईकब्राह्मणादिकमनुष्यतौ सर्ववेदोंकूंजानणेहारेहैं॥और कोईकमनुष्यतौशास्त्रोंकेकर्ता हैं॥और कोईकमनुष्यतौ तिन शास्त्रोंके यथार्थ अर्थकूंकहणेहारेहैं॥और कोईकमनुष्यतौ तिनवेदशास्त्रोंकेअर्थका अनुष्ठानकरणेहारेहैं ॥ औरकोईकमनुष्यतौ गंधर्वनाट कादिकउपविद्याविषे कुशलहैं॥और कोईकमनुष्यतौ कामक्रोधादिरूपआसुरीसंपदावालेहैं ॥और कोईकमनुष्यतौ शांतिदांतिआदिकदैवीसंपदावालेहैं॥इसप्रकार सापरमेश्वरकीशक्ति तिसतिसउपाधिविषे विचित्रभावकूंप्राप्तहोतीभई हैं ॥और सोईहीईश्वरकीशक्ति वरशापके देणेविषेसमर्थ ऋषियोंकेशरीरोंविषेरहेहै ॥तथा सोईहीईश्वरकीशक्ति स्त्रीपुरुषादिकोंकेशरीरविषेरहेहै ॥ तथा सोईहीईश्वरकीशक्ति सर्वइंद्रियोंविषेरहे है ॥ काहेतैं याशरीरविषेस्थितजे नासिका कर्ण मुख उपस्थ पायु इत्यादिकछिद्रहैं ॥ तेनासिकादिकछिद्र बाह्यतैंतौ समानही

प्रतीतहोवै हैं॥परंतु तिननासिकादिकछिद्रोंविषे अंतर विशेषताकोसिद्धकरणेहारी कोईशक्तिहै॥जिसशक्तिकेबलतैं तिननासिकादिकोंका गंधग्रहणादिरूपकार्य परस्परविलक्षणहीहोवै है॥एकइंद्रियकेकार्यकूं दूसराइंद्रिय करिसकतानहीं ॥ यातैं यहअर्थ सिद्धभया ॥ यालोकविषेजितनेंकीपदार्थ हैं॥तेसर्वपदार्थ अचिंत्यशक्तिवाले हैं ॥ याकारणतैंही तेपदार्थ अनिर्वचनीयस्वभाववाले हैं ॥ तथा विचित्रशक्तिवालेएकईश्वरकेआश्रित हैं॥यातैं सोएकहीआनंदस्वरूपपरमात्मादेव शरीरादिकउपाधियोंकेभेदकरिकै ईश जीव पुरुष स्त्री विप्र पंडित मूर्ख गो वृक्ष पक्षी चारिपादवाला दोपादवाला पादोंतैंरहित तीनपादोंवाला अनेकपादोंवाला इत्यादिकनामोंकूं प्राप्तहोवै हे।हेदेवताओ॥इसप्रकार अविचारकालविषे देहादिकउपाधियोंकेसंबंधतैं तेसर्वनाम तापरमात्मादेवकेहोवै हैं।और विचारकालविषेतौ पुरुष स्त्री हस्ती अश्व वृक्ष सर्प वृषभ इत्यादिकसर्वनाम यास्थूलशरीरकेहीसिद्धहोवै हैं॥ताशरीरकेसाक्षीआत्माका कोईभीनामहोवैनहीं॥हेदेवताओ॥वास्तवतैंतौ सो आनंदस्वरूपआत्मा स्वयंज्योतिरूप है ॥ तथा सर्वभेदतैंरहित है ॥ तथा कल्पितभेदकरिकै सत्यज्ञानादिकगुणोंवालाहुआभी वास्तवतैंनिर्गुणस्वरूपहै ॥ तथा सर्वउपाधियोंतैंरहितहै॥ऐसाआत्मादेव अनादिमायाकेसंबंधकरिकै नानाप्रकारकेकार्योंकूंकरेहै॥तथा ताकार्यसहितअनादिमायाविषे स्थितहोइकै सोपरमात्मादेव जीवईश्वरादिकभेदवालाहुआ प्रतीतहोवै है ॥ जैसे एकही आकाश घटमठादिरूप उपाधियोंकेभेदकूं ग्रहणकरिकै महाकाश घटाकाश मठाकाश इत्यादिकभेदकूं प्राप्तहोवै है ॥ तैसे एकहीआत्मादेव अज्ञानादिकउपाधियोंकूंअंगीकारकरिकै जीवईश्वरादिक भेदकूंप्राप्तहोवै है ॥ और हेदेवताओ ॥ जैसे आकाशविषे मायाकरिकैकल्पितजोगंधर्वनगर है ॥ सोकल्पित गंधर्वनगर ताआकाशविषे नानाप्रकारके मिथ्याभेदकूं उत्पन्नकरे है ॥ तैसे याआनंदस्वरूप आत्माविषे मायाकरिकैकल्पित जोयहनाना प्रकारकाद्वैत प्रपंचहै ॥ सोद्वैतप्रपंच ताआत्मादेवविषे नानाप्रकारकेमिथ्याभेदकूं उत्पन्नकरे है ॥ और हेदेवताओ ॥ जैसे कुशूलादिकोंका धारणरूप जोगृहाकाशकाकार्य है ताकार्यकूं सोघटाकाश करिसकैनहीं ॥ तैसे ईश्वरके कार्यकूं यहजीव करिसकैनहीं ॥ और हेदेवताओ ॥ जैसे घटाकाश गृहाकाश यादोनोंकाभेद ताघट गृहरूपदोनोंउपाधियोंकरिकैही

है ॥ वास्तवतैं ताआकाशकाभेदहैनहीं ॥ तैसे याजीवईश्वरदोनोंकाभेदभी अंतःकरनअज्ञानरूपदोनोंउपाधियोंकरिकैहीहै ॥ वास्तवतैं ताजीवईश्वरकाभेदहैनहीं ॥ और हेदेवताओ ॥ जैसे सोगृहाकाशघटाकाशकाभेद नाममात्रही है॥ तैसे सोजीव ईश्वरकाभेदभी नाममात्रहीहै वास्तवतैं हैनहीं ॥ यातैं सर्वभेदतैंरहित सोएकपरमात्मादेवही यासर्वशरीरोंविषेस्थितहै ॥ ताईश्वररूपताकूंग्रहणकरिकै यहसर्वजीव तिसतिसमनुष्यादिकशरीररूपउपाधियोंविषेस्थितहुएभी दृष्टिसृष्टिवादकीरीतिसैं आपणेदर्शनतैंतो याजगत्कीउत्पत्तिकरे है ॥ और अदर्शनतैं याजगत्कालयकरेहै॥ सादृष्टिसृष्टिवादकीरीति याआत्मपुराणकेद्वितीयअध्यायविषे विस्तारतैंनिरूपणकरिआये हैं॥ शंका॥ हे भगवन् शारीरकमीमांसाकेचतुर्थअध्यायकेचतुर्थपादविषे॥ जगद् व्यापारवर्ज्यं ॥ यासूत्रविषे व्यासभगवान्नैं सगुणब्रह्मकी अहंग्रहउपास नाकरणेहारेपुरुषोंकूं एकजगत्कीउत्पत्तिआदिकव्यापारकूंछोडिकै दूसरेसर्व ऐश्वर्यकीप्राप्तिकथनकरी है॥ और इहांआपनैं सर्वजीवोंकूं या जगत्केउत्पत्तिकीकारणता कथनकरीहै॥ यातैं ताव्यासभगवान्केवचनसैं आपकेवचनकाविरोधहोवैगा॥ समाधान॥ हेदेवताओ॥ सोव्यास भगवान् तासूत्ररूपवचनकरिकै उपासनारूपयोगकेफलकानियमकथनकरताभयाहै॥ परंतु तिसतिसउपाधिविषेप्रविष्टईश्वरविषेस्थित जा जगत्केउत्पत्तिआदिकोंकीशक्तिहै॥ ताशक्तिकेनियमकूं सोव्यासभगवान्कावचन कथनकरतानहीं॥ तात्पर्ययह॥ यहअधिकारीपुरुष जभी ताअहंग्रहउपासनारूपयोगकेफलकूंप्राप्तहोवै है ॥ तभी तेउपासकपुरुष याजगत्केउत्पत्तिआदिकव्यापारकूंछोडिकै दूसरेसर्व ऐश्वर्यकूंप्राप्त होवै हैं॥ याप्रकार ताउपासनाकेफलकीपरिच्छिन्नताकूं सोवचन कथनकरेहै॥ यहहीतावचनकातात्पर्य है॥ और जैसे शरीरादिकसर्वउपाधि योंविषेस्थितईश्वर याजगत्कीउत्पत्तिकरणेविषेप्रवृत्तहुआ विशेषरूपकरिकै तथासामान्यरूपकरिकै याजगत्कीउत्पत्तिआदिकोंकूंकरे है ॥ तैसेजीवभावकीप्राप्तिकरणेहारे अंतःकरणादिकउपाधियोंविषेस्थितहुएभी यहपुरुष वामदेवकीन्याईं मैंही सर्वरूपहूं याप्रकारकी शास्त्रजन्यब्रह्मदृष्टिकरिकैयुक्तहुए याजगत्कूं सामान्यविशेषरूपकरिकै उत्पन्नकरे हैं ॥ तात्पर्ययह ॥ कर्मउपासनाकेजेफल हैं ॥ तिनफ लोंकातोसृष्टिकेआदिकालविषे ईश्वरनैं नियमकरिरक्खाहै॥ यातैं कर्तृत्वअभिमानपूर्वक तिनकर्मउपासनाओंकूंकरणेहारेपुरुष नियमपूर्वक

तितनैंहींफलकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ तिसतैंअधिकफलकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और जभी तेअधिकारीपुरुष सर्वत्रपरिपूर्णब्रह्मदृष्टिकरिकैतापरिच्छि न्नपणेकेअभिमानकापरित्यागकरे हैं॥ तभी तिनविद्वान्पुरुषोंकाभेद निवृत्तहोइजावै है ॥ यातैं ताकालविषे जोईश्वरकाकर्म है ॥ सोईही कर्म तिनविद्वान्पुरुषोंकाहै॥ और सोईश्वरतो व्यष्टिशरीरविषेस्थितहोईकैभी समष्टिउपाधिकेकार्यकरणेकूं समर्थहोवै है ॥ जैसे सोपरमेश्वर विश्वामित्रकेशरीरविषेस्थितहोइकै त्रिशंकुकेहितवास्ते ,दूसरेस्वर्गकूंरचताभयाहै ॥ यहवार्त्ता रामायणादिकोंविषेप्रसिद्धहै ॥ यातैं यहजा ग्रतप्रपंचादिकोंकीसृष्टिभी ताईश्वरकाहीकर्म है ॥ याअर्थकूं कोईभीवादी निवारणकरिसकैनहीं ॥ अथवा ॥ जगद्व्यापारवर्ज्यं ॥ यासूत्र का यहअभिप्रायहै ॥ तिनयोगीपुरुषोंका ब्रह्मविद्याकेबलतैं ताईश्वरकेसाथ अभेदहुएभी तिनयोगीपुरुषों तैं सोईश्वर अधिकहै ॥ काहेतैं यहईश्वरतो सर्वदा याजगत्काकर्त्ता है ॥ और तिनयोगीपुरुषोंविषे ताब्रह्मविद्यातैंपूर्व सोसर्वजगत्काकर्त्तापणाथानहीं ॥ यातैं तेयोगीपुरुष सर्वदा यासर्वजगत्केकर्त्तानहीं हैं ॥ याप्रकार तापरमेश्वरकीअधिकताकाकारण तासूत्रविषे व्यासभगवान्नैं कथनकऱ्याहै ॥ परन्तु ता सूत्रकरिकै व्यासभगवान्नैं योगीआदिकजीवोंके आपणेआपणेईश्वरताकूंनिवारणकऱ्यानहीं ॥ जोकदाचित् सोसूत्र समष्टिउपाधिवाले ईश्वरकेअधिकताकूं तथाव्यष्टिउपाधिवालेजीवोंकेअनीश्वरताकूं कथनकरैगा॥ तो तासूत्रविषे वाक्यभेदरूपदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ यातैं सो सूत्र केवल ताईश्वरकेअधिकताकूंहीं कथनकरे है॥ किंवा यादेहधारीजीवोंविषे कितनैंकजीवतो बहुत पदार्थोंकेउत्पत्तिसंहारकूंकरतेहुए प्रती तहोवैं हैं ॥ और कितनैंकजीवतो अल्पपदार्थोंकेउत्पत्तिसंहारकूंकरतेहुए प्रतीतहोवै हैं ॥ सोउत्पत्तिसंहारकीकारणतारूपधर्म केवल तिन जीवोंका नहीं है ॥ किंतु सोउत्पत्तिसंहारकीकारणतारूपधर्म ईश्वरकाभी है॥ जैसे चक्रवर्तिमहाराजाका॥ जिसप्रकारका प्रजाकापालन रूपव्यापारहोवै हैं ॥ तिसीप्रकारकाव्यापार ताचक्रवर्तिराजाकेअधीन दूसरेमंडलेश्वरराजाओंकाभीहोवै है ॥ और तिसीप्रकारकाव्यापार एकएकग्रामकीरक्षाकरणेहारेप्रधानपुरुषोंकाभीहोवै है ॥ और तिसीप्रकारकाव्यापार दूसरेभृत्योंकाभीहोवै है ॥ तहां जैसे मंडलेश्वरराजाओंतैंआदिलेकेभृत्यपुरुषोंपर्यंत सर्वोंविषेजोप्रभुपणारहे है ॥ तासर्वोंकेप्रभुपणेविषे ताचक्रवर्तिराजाकाप्रभुपणा अनुगत होइकैरहे है

तैसे यासर्वजीवोंकेकर्त्तापणेविषे तापरमेश्वरकाकर्त्तापणा अनुगतहोइकैरहे है ॥ तहां प्रथम मायाविशिष्टईश्वरतौ चक्रवर्त्तिराजाकेसमा नहै ॥ और ताईश्वरका साक्षात्कार्यरूप जोसमष्टिसूक्ष्मउपाधिवाला हिरण्यगर्भभगवान्है ॥ सोहिरण्यगर्भभगवान् तामंडलेश्वररा जाकेसमानहै ॥ और ताहिरण्यगर्भकाकार्यरूप जोसमष्टिस्थूलउपाधिवाला विराट्भगवान्है ॥ सोविराट्भगवान् एकग्रामकेअधिपतिकेस मानहै ॥ और ताविराट्भगवान्काकार्यरूप जोयहस्थावरजंगमरूप व्यष्टिप्राणीहैं ॥ तेव्यष्टिप्राणी तिनभृत्योंकेसमानहैं॥तिनहिरण्यगर्भा दिकसर्वोंकेकर्त्तापणेविषे सोईश्वरकाकर्त्तापणा अनुगतहोइकैरहेहै ॥ और जोयह अंतःकरणादिकउपाधिवालेजीव अज्ञानकेबलतैं आपणे स्वरूपभूतईश्वरतैंभी भेदकूंप्राप्तहुएहैं ॥ तिनजीवोंका यहजाग्रतादिकतीनअवस्थाही कार्यरूपहैं ॥ इसप्रकार साक्षात् अथवा परंपराक रिके सोईश्वरही सर्वजगत्काकारणहै॥हेदेवतावो ॥ यहजीवात्मा जिसाजिसअवस्थाकूंदेखे है॥तिसीतिसीअवस्थाकूं उत्पन्नकरे है ॥ और यहजीवात्मा जिसाजिसअवस्थाकूंनहींदेखे है ॥ तिसातिसअवस्थाकूं आपणेविषेलयकरे है ॥ यादृष्टिसृष्टिवादकीरीतिसैं यहजीवात्माही तिनजाग्रतादिकअवस्थावोंकेउत्पत्तिलयकाकारणहै॥ और हेदेवतावो ॥ यद्यपि यहस्थूलशरीर पिताके शुक्रशोणिततैं उत्पन्नहोवै है ॥ और यहसूक्ष्मशरीर पंचभूतोंद्वारा मायाविशिष्टईश्वरतैं उत्पन्नहोवै है॥ यहवार्त्ता लोकविषे तथाशास्त्रविषे प्रसिद्धहै ॥ तथापि साप्रक्रिया मंदबुद्धिपुरुषोंकेबोधवासतैं शास्त्रनैं कथनकरीहै॥उत्तमअधिकारीपुरुषकेप्रतितौ यहदृष्टिसृष्टिप्रक्रियाही मोक्षकेप्राप्तिकाद्वारहै॥ तादृष्टि सृष्टिप्रक्रियारूपमोक्षकेद्वारकूं वेदांतोंविषे गुह्यकरिकैराख्याहै ॥ यातैं यहस्थूलशरीरादिकपदार्थ आपणेदर्शनकालविषेतौ उत्पन्नहोवै है॥ और आपणे अदर्शनकालविषे लयभावकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ यहश्रुतिअनुभवकरिकैसिद्ध दृष्टिसृष्टिप्रक्रियाही बुद्धिमान्पुरुषोंनैं अंगीकारक रणेयोग्यहै ॥ शंका ॥ हे भगवन् ॥ जोकदाचित् दर्शनअदर्शनतैं याशरीरादिकोंका उत्पत्तिलयहोताहोवै ॥ तौ याजीवोंकूं सोउत्प त्तिलय किसवासतेनहींप्रतीतहोता ॥ समाधान ॥ हेदेवतावो ॥ यहशरीरादिकपदार्थ दर्शनअदर्शनकालविषे पूर्वशरीरादिकोंकेसमानआ कारवालेही उत्पन्नहोवै है ॥ यातैं यहपुरुष तिनशरीरादिकोंकेउत्पत्तिनाशकूं जानिसकतेनहीं ॥ अब याहीअर्थकूं स्पष्टकरिके

निरूपणकरे हैं॥हेदेवतावो॥ वास्तवतैंजन्ममरणतैंरहितजोयहआत्मादेवहै॥ताआत्मादेवकायास्थूलशरीरकेसाथजोतादात्म्यअध्यासरूप अभिमानहै ॥ सोअभिमानहीयाआत्मादेवकाजन्महै॥ औरताशरीरकेअभिमानकीनिवृत्तिही ताआत्मादेवकामरणहै॥औरयाशरीरादि कदृश्यपदार्थोंकातौदर्शनहीजन्महै ॥ औरअदर्शनहींमरणहै ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ यहजीवात्मायासंसारदशाविषे जिसजिसपदार्थ कूंदेखेहै ॥ तिसतिसपदार्थकूंतादर्शनकालविषे उत्पन्नकरेहैं ॥ और यहजीवात्मा जिसाजिसपदार्थोंकूंनहींदेखेहै ॥ तिसतिसपदार्थका ता अदर्शनकालविषे संहारकरेहै ॥ इसप्रकार दृष्टिसृष्टिवादकीरीतिसैं यहजीवात्मा जाग्रतादिकतीनअवस्थाओंविषे शरीरादिकपदार्थोंका उत्पत्तिसंहारकरतेहुएभीआपणेकूंईश्वररूपकरिकैजानतेनहीं ॥ याकारणतैंही जीवसंज्ञाकूंप्राप्तहोवै है ॥ और जभीयाअधिकारीजीवोंका जाग्रतादिकतीनअवस्थाओंकाकारणरूपअज्ञान गुरुकीकृपाकरिकैप्राप्तहुएआत्मज्ञानकरिके नाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभी यहअधिकारी जीव तीनअवस्थाओंतैंरहित तुरीयरूपपरमपदकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं याअधिकारीपुरुषनैं ताआत्मज्ञानकूं अवश्यकरिकैसंपादनकरणा ॥ अब पूर्वउक्तप्रणवमंत्रकरिकैजानणेयोग्य शुद्धआत्माजिसप्रकार गुरुओंनैं शिष्यकेप्रतिउपदेशकरीताहै तथा ताशिष्यनैं जिसप्रकार सो आत्माजानीताहै ॥ ताप्रकारकानिरूपणकरेहैं ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार अग्निआदिकदेवता ताप्रजापतिकेमुखतैंशमदमादिकउपायोंसहित ताप्रणवरूपआत्माका श्रवणकरिके पुनःकेवलशुद्धआत्माकेपूछणेकीइच्छाकरतेहुए ताब्रह्माकेप्रति याप्रकारकावचन कहतेभये ॥ देव ताउवाच ॥ हेभगवन् ॥ पूर्वआपनैं हमारेप्रतिप्रणवरूपआत्मा उपायरूपकरिकैकथनकऱ्याथा ॥ अब ताप्रणवरूपउपायकरिकै प्राप्तहोणे योग्यजोनिर्विशेषशुद्धआत्माहै ॥ सोशुद्धआत्माहमारेप्रति उपदेशकरो॥हेशिष्यइसप्रकारकाप्रश्न जभीतिनदेवतावोंनैं ताप्रजापतिकेप्रति कऱ्या ॥ तभी सोप्रजापति तिनदेवताओंकेप्रति याप्रकारकाउत्तरकहताभया ॥ प्रजापतिरुवाच॥ हेदेवताओ॥मनवाणीकाअविषय जो शुद्धआत्माहै ॥ ताशुद्धआत्मादेवके साक्षात्उपदेशकरणेविषे कोईभीसमर्थनहींहै ॥ यातैंताआत्मादेवविषे नानाप्रकारकेधर्मोंकाआरोप णकरिके मैंतुम्हारेप्रतिकथनकरताहूं॥तुमसावधानहोइकेश्रवणकरो ॥ काहेतैंचित्तकीशुद्धितैंअनंतरसोशुद्धआत्मादेव तुम्हारेताईअवश्य

करिकेउपदेशकरणेयोग्यहै॥हेदेवताओ॥पूर्वहमनैं तुम्हारेताईंजोसत्‌चित्‌आनंदस्वरूप नृसिंहपरमात्मादेवतत्त्वमसियावाक्यविषेस्थिततत्‌ पदार्थरूपकरिकेकथनकऱ्याथा ॥ सोईहीपरमात्मादेवयात्वंपदार्थजीवकेसाथ एकताकूंप्राप्तहुआ आपणीसमीपतामात्रकरिकै सर्वबुद्धि आदिकोंकाद्रष्टारूपहै ॥ तथावास्तवतैं तिनबुद्धिआदिकोंकेसंबंधतैंरहितहै ॥ और हेदेवताओ ॥ यासंघातविषे याजीवोंकामन जभी शुभअशुभकर्मकूंकरेहै ॥ तभीसोद्रष्टाआत्मादेव ताकर्मविषेअनुमतीकूंकरेहै ॥ प्रवृत्तहुएकूं निवृत्तनहींकरणा याकानाम अनुमतिहै ॥ काहेतैं सोआत्मादेव पंगुपुरुषकीन्याईंसामर्थ्यतैंरहितहोणेतैं उदासीनहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ सोआत्मादेव तामनकीप्रवृत्तिविषे जो अनुमतिकरैगा ॥ तो सोआत्मादेवविकारवान्‌होवैगा॥समाधान॥हेदेवताओ॥सोआत्मादेवचेतन्यस्वरूपहै॥ तथासर्वविकारोंतैंरहितहै ॥ तथासुखदुःखादिकोंतैंरहितहै ॥ तथामनबुद्धिआदिकोंकासाक्षीरूपहै॥ तथासत्‌चित्‌आनंदस्वरूपहै ॥तथासर्वजगत्‌विषेएकरूपहै ॥ और यहसंपूर्णद्वैतप्रपंच याआत्मादेवविषेवास्तवतैं हैनहीं॥किंतु यहसर्वद्वैतप्रपंच ताअद्वितीयआत्माविषे मायाकरिकेकल्पितहै ॥ याकारणतैं ही याअद्वितीयआत्मातैंभिन्नकरिकै याद्वैतप्रपंचकीसत्तासिद्धहोवैनहीं ॥ हेदेवताओ ॥ जिसमायानैंयापरमात्मादेवविषे यहजगत्‌कल्पना कऱ्याहै ॥ तामायाकायहस्वरूप वेदवेत्तापुरुषोंनैंकथनकऱ्याहै ॥ जाआपतो प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकैप्रतीतहोवैनहीं ॥ और जिसका कार्यप्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकैप्रतीतहोवै ॥ ताकूंदुर्घटमाया यानामकरिकैकथनकरेहै ॥ हेदेवताओ ॥ सामायाआपतो सत्‌रूपहैनहीं॥ तोतामायाका यहजगत्‌रूपकार्य किसप्रकारसत्‌होवैगा ॥ किंतुतामायाकीन्याईं यहजगत्‌भी असत्‌रूपही है ॥ परंतु यहजगत्‌तादुर्घट मायाकेप्रभावतैं सत्‌रूपकरिकैप्रतीतहोवैहै ॥ यातैं अद्वितीयआत्माविषे यहजगत्‌ मिथ्याहीहै वास्तवतैं हैनहीं ॥ हेदेवतावो ॥ जैसे आकाशविषे जोगंधर्वनगर प्रतीतहोवैहै ॥ सोविचारतैंविनाहीप्रतीतहोवै है ॥ विचारकियेतैंसोगंधर्वनगर प्रतीतहोवैनहीं ॥ तैसे या अद्वितीयआत्माविषे जोद्वैतप्रपंचप्रतीतहोवैहै ॥ सोभी विचारतैंविनाही प्रतीतहोवै है॥ विचारकियेतैं याअद्वितीयआत्माविषे किंचित्‌ मात्रभी जगत्‌नहींहै॥हेदेवतावो॥ यासर्वजीवोंकेजाग्रतादिकतीनअवस्थावोंविषेअनुगत जोयहआत्मादेवहै ॥सोआत्मादेवसत्‌चित्‌आनंद

॥ १८ ॥

स्वरूपहै ॥ यातैं यहत्वंपदार्थरूपआत्मादेव तत्पदार्थपरब्रह्मरूपही है॥हेदेवताओ॥जैसे सुषुप्तिअवस्थाविषेस्थित प्राज्ञनामाजीव किंचित्‌ मात्रभी दुःखकूंजानतानहीं ॥ तैसे यहआनंदस्वरूपआत्मादेव सर्वकालविषे किंचित्‌मात्रभी दुःखकूंजानतानहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ यहआत्मादेव जोकदाचित्‌ सर्वदुःखोंतैंरहितहोवै ॥ तो याजीवोंकूंअहंदुःखी याप्रकार दुःखकीप्रतीति किसवासतैंहोवै है ॥ समाधान ॥ हेदेवतावो ॥ सर्वदुःखोंतैंरहित जोपरब्रह्महै ॥ तापरब्रह्मकेसाथ याआत्मादेवका वास्तवतैंअभेदहै ॥ यातैं याआत्मादेवविषेभी वास्तवतैं दुःखहैनहीं ॥ ऐसेदुःखरहितआत्मादेवविषे जोदुःख प्रतीतहोवै है॥ सोअविद्याकरिकैहीप्रतीतहोवै है॥वास्तवतैं याआत्मादेवविषे सोदुःख हैनहीं ॥ अब याहीअर्थकेस्पष्टकरणेवासतै ताअविद्याकास्वरूप वर्णनकरे हैं ॥ हेदेवतावो ॥ गुरुशास्त्रकेउपदेशतैंउत्पन्नभयाजो मैंब्रह्म रूपहूं याप्रकारकाज्ञानहै ॥ ताअभेदज्ञानकूं विद्वान्‌पुरुष विद्या यानामकरिकैकथनकरे हैं ॥ ताविद्याकेसाथ जा विरोधवालीहोवै॥तथा सर्वजीवोंकेदुःखकाकारणहोवै ॥ ताकूं वेदवेत्तापुरुष अविद्या यानामकरिकैकथनकरे हैं ॥ कैसीहै साअविद्या ॥ मैं याशरीरविषेहींस्थितहूं सर्वत्रव्यापकनहींहूं इसप्रकारतैं यासर्वदेहधारीजीवोंकेअनुभवकरिकैसिद्धहै ॥ तथा उत्पत्तितैंरहितहै ॥ तथा सत्‌असत्‌रूपकरिकै कथन करीजावैनहीं ॥ तथा संसारतैंरहितआत्माविषेभी संसारकीकारणता सिद्धकरणेहारी है॥याकारणतैंहीं विद्वान्‌पुरुष याअविद्याकूं दुर्घट यानामकरिकैकथनकरे हैं ॥ हेदेवतावो ॥ सादुर्घट अविद्या जडहोणेतैं यद्यपि आत्मातैंभिन्न है ॥ तथापि साअविद्या आत्मातैंभिन्नहुई प्रतीतहोवैनहीं॥किंतु अधिष्ठानआत्माकेआश्रितहुईही साअविद्या प्रतीतहोवै है॥यातैं साअविद्या वास्तवतैंअस्वतंत्रहुईभी शत्रुकीन्याईं याआत्मादेवकूं अनेकप्रकारकेदुःखोंकीप्राप्तिकरै है ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष ताअविद्याकूं स्वतंत्रकहे हैं ॥ हेदेवतावो॥यहस्वयंज्योति आनंदस्वरूपनिर्गुणआत्मादेव वास्तवतैंअद्वितीयरूपहुआभी याअविद्याकरिकै भेदवालाहुआप्रतीतहोवै है ॥ जिसभेददृष्टिकरिकै यहजीव अनेकप्रकारकैंदुःखोंकूंप्राप्तहोवै है ॥ यातैं ताभेददृष्टिद्वारा यहअविद्याही सर्वदुःखोंकाकारणहै ॥ और हेदेवतावो ॥ ज्ञातसुख विषेही सर्वजीवोंकीप्रीतिहोवै है ॥ अज्ञातसुखविषे किसीभीजीवकीप्रीतिहोवैनहीं ॥ यहवार्त्ता सर्वलोकविषेप्रसिद्ध है ॥ और यासर्व

जीवोंकी आपणेआत्माविषेप्रीति देखणेविषेआवे है ॥ यातैं यहअन्याजावे है ॥ यहसर्वजीव आपणेआनंदस्वरूपआत्माकूंजानतेही हैं ॥ तथापि ताअविद्याकरिकेआवृतहुए यहजीव ताआत्मास्वरूपआनंदकूं विशेषरूपकरिकेनानतेनहीं॥याकारणतैंहीं यहजीव ताआनंदस्वरूपआत्मातैंभिन्न अल्पविषयोंविषे सुखबुद्धिकरिके सर्वदा दुःखकूंहीं प्राप्तहोवे हैं॥यातैं आनंदस्वरूपआत्माकेआवरणद्वारा यहअविद्याही जीवोंकेदुःखकाकारणहै ॥ और हेदेवतावो ॥ जाग्रतअवस्थाविषे तथास्वप्नअवस्थाविषे यहजीव जोआपणेआनंदस्वरूपआत्माकूंनहीं जाने हैं ॥ सोभ्रमरूपकार्यविद्याकेबलतैंहीं नहीं जानैं है॥और सुषुप्तिअवस्थाविषे यहजीव जो ताआनंदस्वरूपआत्माकूंनहींजाने है ॥ सो अज्ञानरूपकारणअविद्याकेबलतैंनहींजाने हैं ॥ यातैं कार्यकारणरूपकरिके यहअविद्याही सर्वजीवोंकूंमोहकीप्राप्तिकरणेहारी है ॥ और हेदेवतावो ॥ तासुषुप्तिअवस्थाविषे चैतन्यस्वरूपआत्माविषे जोअज्ञताप्रतीतहोवै है ॥ ताअज्ञताविषे आत्माकेचैतन्यस्वरूपकानाश कारणनहीं है ॥ किंतु सर्वद्वैतप्रपंचकाअभावही ताअज्ञताविषेकारणहै ॥ सोआत्माकाचैतन्यस्वरूप तासुषुप्तिविषेभी विद्यमानहै॥तहां श्रुति ॥ नाहिद्रष्टुर्दृष्टेर्विपरिलोपोविद्यतेअविनाशित्वात् ॥ अर्थयह॥द्रष्टाआत्माका स्वरूपभूत जाचैतन्यदृष्टिहै॥साचैतन्यरूपदृष्टि नाशतैं रहितहै ॥ यातैं ताचैतन्यरूपदृष्टिका किसीअवस्थाविषेभी अभावहोवैनहीं॥हेदेवतावो ॥तासुषुप्तिअवस्थाविषे जोकदाचित् ताआत्मा देवके चैतन्यस्वरूपकानाशहोताहोवै ॥ तौ सुषुप्तिअवस्थाविषे यहआत्मादेव तमरूपअज्ञानकूंभी नहींजानैगा ॥ और तासुषुप्तिअव स्थाविषे यहआत्मादेव तातमरूपअज्ञानकूंतो अवश्यकरिकेजाने है॥काहेतैं सुषुप्तितैंउठ्याहुआयहजीव मैंकिंचित्मात्रभीनहींजानताभया याप्रकारकास्मरणकरे है॥सोजाग्रतकास्मरण अज्ञानकूंहीविषयकरे है॥और पूर्वअनुभवकरेहुएवस्तुकाही स्मरणहोवे है ॥ यातैं याआत्म देवनेंतासुषुप्तिविषेअज्ञानकूंअवश्यकरिकेअनुभवकऱ्याहै ॥ जिसअनुभवजन्यसंस्कारतैंजाग्रतअवस्थाविषेताअज्ञानकास्मरणकरे है ॥ यातैं तासुषुप्तिविषे याआत्मादेवकीचैतन्यस्वरूपता नाशहोवैनहीं॥अब ताअज्ञानकीतुच्छरूपता निरूपणकरे हैं॥ हेदेवतावो॥इसप्रकार सुषुप्तिविषे अनुभवकाविषयरूपकरिकेसिद्धकऱ्याजो आत्मातैंभिन्नजडरूपअज्ञानहै ॥सोतमरूपअज्ञान प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिके ग्रहण

॥ १९ ॥

होवैनहीं ॥ याकारणतैं विद्वान्पुरुष ताअज्ञानकूं तुच्छकहेहैं ॥ हेदेवतावो ॥ यालोकविषे जोपदार्थ तीनकालोंविषेसत्तातैंरहितहोवै हैं ॥ तथा स्वरूपतैंरहितहोवै है ॥ तथा नाममात्रकरिके जाकीप्रतीतिहोवै है ॥ तापदार्थकूं लोकविषे तुच्छकहेहैं॥जैसे वंध्यापुत्रनरशृंगादिक पदार्थ तीनकालविषे सत्तातैंरहितहैं ॥तथा स्वरूपतैंरहितहैं॥ तथा वंध्यापुत्र नरशृंग इत्यादिकनाममात्रकरिके तिनोंकीप्रतीतिहोवै है॥ यातैं तावंध्यापुत्रकूं तथानरशृंगकूं लोकविषे तुच्छकहे हैं ॥ तैसे यहअज्ञानभी तीनकालविषेसत्तातैंरहितहै ॥ तथा स्वरूपतैंरहितहै ॥ तथा अज्ञान अविद्या माया इत्यादिकनाममात्रकरिकैं ताकीप्रतीतिहोवै है॥यातैं ताअज्ञानकूं विद्वान् पुरुष तुच्छकहेहैं॥हेदेवतावो॥ऐसा तुच्छहुआभी यहअज्ञान यासर्वसंसारकाकारणहोवै है ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष ताअज्ञानकूं दुर्घट यानामकरिकैकथनकरे हैं ॥ और हेदेवतावो ॥ यहअज्ञान यद्यपि वंध्यापुत्रकीन्याईं तुच्छरूपहै ॥ तथापि सोअज्ञान भावरूपकरिकैप्रतीतहोणेहारेयाजगत्काकारणरू पहै ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष ताअज्ञानकूं भावरूपकहेहैं ॥ हेदेवतावो ॥ तुच्छरूपता तथाभावरूपता यहदोनोंधर्म परस्परविरोधी होणेतैं एकवस्तुविषेरहैंनहीं॥याप्रकारकेअनुपपत्तिकाविचारकरिके तेविद्वान्पुरुष ताअज्ञानकूं अनिर्वचनीय यानामकरिकैकथनकरे हैं ॥ और हेदेवतावो ॥ यहअज्ञान ताचैतन्यस्वरूपआत्मातैंभिन्नहै॥तथा याजडजगत्काकारणरूपहै ॥तथा ताचेतनआत्माकूं आवरणकरणे हाराहै॥याकारणतैं तेविद्वान्पुरुष ताअज्ञानकूं जडकहे हैं॥और हेदेवतावो॥जैसे घटादिकपदार्थ आपणी उत्पत्तितैंपूर्व मृत्तिकादिकोंविषे स्थितप्रागभावकेप्रतियोगित्वरूपअंतवालेहोवै हैं ॥ तैसे यहअज्ञान ताकालिकपरिच्छेदरूपअंतवालाहैनहीं॥याकारणतैं विद्वान्पुरुषया अज्ञानकूं अनंतर यानामकरिकैकथनकरेहैं॥हेदेवतावो॥तैसे घटादिकपदार्थोंके मृत्तिकादिक कारणहोवैहैं॥तैसे याअज्ञानकाभीजोकोईका रण अंगीकारकरिये॥तौ ताअज्ञानकेकारणकाभी कोईदूसराकारणहै अथवानहीं है॥तहां जोप्रथमपक्ष अंगीकारकरिये॥तौ तादूसरेका रणकाभी कोईतीसरा कारणहोवैगा।तीसरेकाचतुर्थहोवैगा इसप्रकार कारणोंकीपरंपरामानणेविषे अनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवैगी।और ताअ ज्ञानके कारणका कोईदूसराकारणनहीं है ॥ यहदूसरापक्ष जोअंगीकारकरिये ॥ तौ ताअज्ञानकेकारणकरिकैही सर्वव्यवहारकीसिद्धिहोइ

सकेहै॥ताप्रथमअज्ञानविषे व्यर्थताप्राप्तहोवैगी॥यातैं ताअज्ञानकी किसीकारणतैंउत्पत्तिहोवैनहीं यहहीअंगीकारकरणाउचितहै॥याअभिप्रायकरिकैहीं तेविद्वान्पुरुष याअज्ञानकूं अनंतकहेहैं ॥ अथवा ॥ याप्रपंचकेअंतकूं कोईभीपुरुष जानिसकता नहीं ॥ याकारणतैं यहप्रपंच अनंतहै ॥ सोअनंतप्रपंच किसीपरिच्छिन्नकारणतैं उत्पन्नहोइसकैनहीं॥किंतु सोअनंतप्रपंच ताअज्ञानरूपकारणतैंही उत्पन्नहोवै है॥याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष ताअज्ञानकूं अनंत यानामकरिकैकथनकरे हैं ॥ अथवा ॥ यहअज्ञानब्रह्मज्ञानतैंविना दूसरेसहस्रकारणोंकरिकैभी नाशरूपअंतकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ याकारणतैं विद्वान्पुरुष ताअज्ञानकूं अनंत यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ और हेदेवतावो ॥ वास्तवतैं सर्वमोहतैंरहित जोस्वयंज्योतिआनंदस्वरूपअद्वितीयआत्माहै ॥ ताआत्मादेवकूंभीयहअज्ञान आवृतकरिलेवै है॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष ताअज्ञानकूं मोहरूप यानामकरिकैकथनकरेहैं और हेदेवतावो ॥ यह अज्ञानरूपअविद्या तास्वयंज्योतिआत्माविषे पूर्वकभीहुईनहीं ॥ और आगेकभीहोवैगीनहीं॥और अभीभीहैनहीं॥इसप्रकार आत्माकेस्वरूपतैं नित्यनिवृत्तहुईभीयहअविद्या आपणेआश्रित्यशक्तिरूपबलतैं तास्वयंज्योतिआत्मादेवकूं नानाप्रकारकेमोहकी प्राप्तिकरे है ॥ अब ताअविद्याकृतमोहकास्वरूप वर्णनकरे हैं ॥ हेदेवतावो॥आकाशादिकपंचभूतोंकाकार्यरूप जोयहस्थूलशरीरहै तथासूक्ष्मशरीरहै॥तादोनोंप्रकारकेशरीरोंविषे यह आनंदस्वरूपआत्माअहंबुद्धिकूं तथाममबुद्धिकूंकरेहै ॥ तहां यहआत्मादेव जिसभूतोंकेकार्यकूं प्रत्यक्षआत्मारूपकरिकैमानेहै॥तिसभूतोंकेकार्यविषेतौं अहंबुद्धिकरे है॥ और यहआत्मादेव जिसभूतोंकेकार्यकूं आपणेआत्मातैंबाह्यकरिकैमानेहै॥तिसभूतोंकेकार्यविषे ममबुद्धिकरेहै॥ और वास्तवतैं सर्वद्वैतप्रपंचतैंरहितहुआभी यहआनंदस्वरूपनिर्गुणआत्मादेव ताअविद्यारूपमायाकरिकैमोहितहुआ तिनशरीरादिकोंकेपरिच्छिन्नत्वादिकधर्मोंकूं आपणेविषेमाने है॥इसतैंआदिलैके अनेकप्रकारकेमोहकूं यहआत्मादेव प्राप्तहोवेहै॥हेदेवतावो॥इसप्रकार आत्माकेमोहका कारणरूपकरिकै तथातुच्छजडरूपकरिकै तथायासर्वजगतकाकारणरूपकरिकै तथाअनादिअनंतरूपकरिकै पूर्वकथनकऱ्याजोमायारूपअज्ञानहै॥सोअज्ञान सिद्धत्वधर्मकरिकैविशिष्टहुआ प्रतीतहोवैहै॥याकारणतैं विद्वान्पुरुष ताअज्ञानका सत्त्वरूप कथनकरेहैं ॥ और सो

अज्ञानअसिद्धत्वरूपकरिकैविशिष्टहुआ प्रतीतहोवै है॥याकारणतैं विद्वान्पुरुष ताअज्ञानकाअसत्त्वरूपकथनकरेहैं॥अबताअज्ञानकेसिद्धत्वअसिद्धत्वरूपका निरूपणकरे हैं ॥ हेदेवतावो ॥ इंद्रियादिकोंकीविषयताकानाम सिद्धत्वहै॥ सोसिद्धत्व कार्यरूपकरिकै ताअज्ञानविषेभीरहे है ॥ याकारणतैं ताअज्ञानकूं सिद्धकहे हैं॥और स्वरूपतैं ताअज्ञानविषे इंद्रियादिकोंकीविषयताहैनहीं॥याकारणतैं ताअज्ञानकूं असिद्धकहे हैं ॥ अथवा ॥ यहअज्ञान मैंअज्ञानीहूं याप्रकारकेसर्वजीवोंकेअनुभवकाविषयहोवै है ॥याकारणतैं ताअज्ञानकूं सिद्धकहे हैं॥ और विचारकरिकै ताअज्ञानकीनिवृत्तिहोइजावै है॥ याकारणतैं ताअज्ञानकूं असिद्धकहे हैं ॥ अथवा यालोकविषे स्वतंत्रपुरुषकूं सिद्धकहेहैं ॥ और परतंत्रपुरुषकूं असिद्धकहे हैं ॥ सास्वतंत्रता तथापरतंत्रता याकारणरूपअज्ञानविषेभीरहे है ॥ याकारणतैं याअज्ञानकूं सिद्धासिद्ध यादोनोंनामकरिकैकथनकरे हैं॥अब ताअज्ञानकेस्वतंत्रताका निरूपणकरे हैं॥हेदेवतावो॥ वेदवेत्तापुरुषोंनैं याअज्ञानकी याप्रकारतैं स्वतंत्रताकथनकरी है ॥ यहअज्ञानस्वरूपतैं जडतुच्छरूपहुआभी अनादिअनंतरूपकरिकैप्रसिद्धहै ॥तथा यहअज्ञान वास्तवतैंमोहतैंरहितअद्वितीयआत्माकूंभी मोहकीप्राप्तिकरे है ॥ याकारणतैं यहअज्ञान स्वतंत्रकह्याजावै है॥ अथवा जैसे मध्याह्नकेपूर्यविषे अंधकार कीस्थितिहोणी अत्यंतदुर्घटहै॥तैसे स्वयंज्योतिआनंदस्वरूपआत्माविषे दुःखकेकरणेहारेअज्ञानकीस्थितिहोणीभी अत्यंतदुर्घटहै॥तोभी यहअज्ञान आपणेबलतैं तास्वयंज्योतिआनंदस्वरूपआत्माविषेही स्थितहोवै है ॥याकारणतैं विद्वान्पुरुष ताअज्ञानकूं स्वतंत्रकहे हैं ॥ अथवा यहमायारूपअज्ञान तास्वयंज्योतिआत्मादेवकेही आश्रितरहे है॥यातैं यहअज्ञान ताआत्मादेवकेअधीनहै॥ और यहअज्ञानजिस आत्मादेवकेअधीनरहे है॥तिसीआत्मादेवकूंआपणेवशकरे है॥याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष याअज्ञानकूं स्वतंत्रकहे हैं अब ताअज्ञानरूपअविद्याविषे परतंत्रताकानिरूपणकरेहैं॥हेदेवतावो॥यहअज्ञानरूपअविद्या आपणेआश्रयकी तथाविषयकी अपेक्षाकरिकैही सिद्धहोवैहै ॥ आश्रयविषयकीअपेक्षातैंविना ताअविद्याकीसिद्धिहोवैनहीं॥याकारणतैंविद्वान्पुरुष ताअविद्याकूं परतंत्रकहे हैं॥शंका॥हेभगवन्॥ताअविद्याकास्वरूपही ताअविद्याकेआश्रयभावकूं तथाविषयभावकूं प्राप्तहोवैगा ॥ यातैं ताअविद्याकूं दूसरेआश्रयविषयकीअपेक्षा संभवैनहीं

समाधान। हेदेवतावो। जैसे यालोकप्रसिद्धअंधकारकाअंधकार विषयहोवैनहीं। किंतु ताअंधकारतैंभिन्न गृहादिकपदार्थही ताअंधकारकाविषयहोवे हैं॥ तैसे ताअविद्याकाभी अविद्या विषयहोवैनहीं। किंतु ताअविद्यातैंभिन्न चेतनआत्माही ताअविद्याकाविषयहोवेहै॥ काहेतैंजोपदार्थ जिसपदार्थविषे किसीअतिशयतारूपफलकीउत्पत्तिकरे है ॥ सोअतिशयतारूपफलकाआश्रयपदार्थही ताफलकर्त्तापदार्थकाविषय होवे है ॥ सोअतिशयतारूपफलकीउत्पत्ति आपणेतैंभिन्नपदार्थविषेही करीजावे है ॥ आपणेविषे आपही ताअतिशयतारूपफलकीउत्पत्तिकरणेविषे कोईभीसमर्थहोवैनहीं॥ यातैं ताअविद्याकी अविद्याविषेविषयता संभवैनहीं॥ और मैंअज्ञानीहूं मैंदुःखीहूं याप्रकारकेअनुभवकरिकैसिद्ध जोआवरणविक्षेपरूपफलकूं साअविद्या आनंदस्वरूपआत्माविषेही उत्पन्नकरेहै ॥ यातैं ताअविद्याका सोआत्मादेवही विषयहै॥ हेदेवतावो ॥ जैसे ताअविद्याका अविद्याविषयनहीं है ॥ तैसे ताअविद्याका अविद्या आश्रयभीनहीं है॥ जैसे यालोकप्रसिद्धअंधकारकाअंधकार आश्रयनहींहै। किंतु ताअंधकारतैंभिन्न गृहादिकपदार्थही ताअंधकारका आश्रयहै॥ तैसेताअविद्याकाभी ताअविद्यातैंभिन्नआत्मादेवही आश्रयहै॥ काहेतैं यालोकविषे जोपदार्थ जिसपदार्थतैंभिन्नहोवै है। तथा जिसपदार्थतैंअधिकहोवे है॥ सोपदार्थही तिसपदार्थका आश्रयहोवे है॥ सोअविद्याविषे अविद्यातैंभिन्नरूपतातथाअधिकरूपता संभवैनहीं ॥ यातैं साअविद्याही अविद्याकाआश्रायहोइसकैनहीं। और यहचैतन्यस्वरूपआत्मादेवतो ताअविद्यातैंभिन्नभीहै॥ तथा ताअविद्यातैंअधिकभीहै। यातैं सोचैतन्य स्वरूपआत्मादेवही ताअविद्याकाआश्रयहै ॥ जैसे शुक्तिविषयकअज्ञान रजतभ्रमवालेपुरुषविषेहीरहेहै ॥ तैसे साअविद्या आत्माविषेही रहे है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जैसे ताशुक्तिविषयकअज्ञानका आश्रयतोभ्रांतपुरुषहै॥ और शुक्ति ताअज्ञानकाविषयहै ॥ तैसे ताअज्ञान रूपअविद्याकाभी आश्रय तथाविषय भिन्नहीहोवैगा ॥ समाधान ॥ हेदेवतावो॥ यद्यपि ताशुक्तिकेअज्ञानरूपदृष्टांतविषे ताअज्ञानकेपुरुष रूपआश्रयतैं शुक्तिरूपविषय भिन्नप्रतीतहोवै है ॥ तथापि वास्तवतैंविचारकरिकैदेखियेतो ताअज्ञानकाभी शुक्तिविषयनहीं है ॥ किंतु ताशुक्तिकेअंतररह्याहुआ शुक्तिअवच्छिन्नचेतनआत्माही ताअज्ञानकाविषयहै॥ काहेतैं शुक्तिआदिकजडपदार्थतो स्वभावतैंहीआवृत हैं

॥ २१ ॥

तिनजडपदार्थोंविषे अज्ञानकृतआवरण संभवैनहीं ॥ यातैं परिशेषतैं सोअज्ञान पूर्वइदंतारूपकरिकैकथनकरेहुए शुक्तिअवच्छिन्न चेतनकूंही विषयकरे है ॥ इहां ताचेतनआत्माकेस्वरूपकूंआवरणकरणा यहही ताचेतनआत्माविषे अज्ञानकीविषयता है॥ शंका॥ हेभगवन् सोअज्ञान जोकदाचित् चेतनकूंहीं विषयकरताहोवै ॥ तो शुक्तिविषे ताअज्ञानकीविषयता नहींप्रतीतहोणीचाहिये ॥ समाधान ॥ हेदेवतावो ॥ पूर्वइदंतारूपकरिकैवर्णनकऱ्याजो स्फुरणरूपसामान्यचैतन्यहै ॥ तासामान्यचैतन्यविषे यहशुक्तिअवच्छिन्नविशेषचैतन्य तादात्म्यसंबंधकरिकैरहे है ॥ ताशुक्तिअवच्छिन्नविशेषचैतन्यकूं यहकल्पितरजतकाउपादानकारणरूपअज्ञान आवृतकरे है ॥ सामान्यचैतन्यकूं सोअज्ञान आवृतकरैनहीं ॥ यातैं सोअज्ञान अवच्छेदकतारूपकरिकै ताशुक्तिकूंभी विषयकरे है॥ याप्रकारकेअभिप्रायकरिकैही शुक्तिविषयकअज्ञानहै ॥ याप्रकारकाव्यवहारहोवे है ॥ हेदेवतावो॥ बाह्यशुक्तिआदिकपदार्थोंविषेस्थित जोस्फुरणरूपचेतनहै॥ सोचेतन अंतरआत्मातैंभिन्ननहीं है ॥ किंतु तास्फुरणरूपचेतनकूं वेदवेत्तापुरुष अंतरआत्मास्वरूपही कथनकरे हैं ॥ यातैं शुक्तिआदिकदृष्टांतोविषेभी सोअंतरआत्माही ताअज्ञानकाविषयहै ॥ हेदेवतावो॥ सोअज्ञान आत्माकेआश्रितरहे है॥ याअर्थविषेतो किसीभीवादीका विवादहैनहीं॥ किंतु सर्ववादीता अज्ञानकूं आत्माकेहीआश्रितमाने हैं॥ और अज्ञानकेविषयविषेतो वादियोंका परस्पर विवाददेखणेविषेआवे है ॥ कोईकवादी अनात्मपदार्थोंकूंभी ताअज्ञानकाविषयमानैं हैं ॥ सोतिनवादीयोंकेभ्रमकी पूर्वउक्तयुक्तियोंकरिकैनिवृत्तिकरी ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ वास्तवतैंअविद्यातैंरहित जोसत्चित्आनंदस्वरूपआत्माहै॥ सोआत्मादेवही ताअविद्याकाआश्रयहै तथाविषयहै ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभीकथनकरीहै। तहांश्लोक। आश्रयत्वविषयत्वभागिनी निर्विभागचितिरेवकेवला॥ पूर्वसिद्धतमसोहिपश्चिमो नाश्रयोभवतिनापिगोचरः। अर्थयह। जीवईशादिकभेदतैंरहित जोअद्वितीयचेतनहै॥ सोअद्वितीयचेतनही याअनादिअज्ञानका आश्रयहै तथाविषयहै ॥ ताचेतनवस्तुतैंभिन्न दूसरेसर्वपदार्थ ताअज्ञानकेकार्य है ॥ यातैं तेअनात्मपदार्थ ताअनादिअज्ञानका आश्रयरूप तथाविषयरूप होइसकैनहीं॥ १॥ इसप्रकार आश्रयतारूपकरिकै तथाविषयता रूपकरिकै यहअविद्या ताआनंदस्वरूपआत्माकेसाथ संबंधकूंप्राप्तहुई है॥

याकारणतैं यहअविद्या परतंत्रहीहै ॥ और हेदेवताओ ॥ जैसे आश्रयविषयकीअपेक्षा ताअविद्याविषे परतंत्रतासिद्धकरेहै ॥ तैसे जडता धर्मभी ताअविद्याविषे परतंत्रताहीसिद्धकरे है ॥ काहेतैं यालोकविषे जडतारूपकरिकैप्रसिद्ध जेरथादिकपदार्थ हैं ॥ तेरथादिकपदार्थ अश्ववृषभादिकचेतनपदार्थोंतैं विना स्वतंत्र प्रवृत्तहोवैनहीं ॥ किंतु अश्ववृषभादिकचेतनपदार्थोंकेसंबंधतैंही ॥ तिनरथादिकोंविषे क्रिया होवैहै ॥ यातैं यहजान्याजावै है यालोकविषे जितनेकजडपदार्थहोवै हैं ॥ तेसर्वजडपदार्थ अस्वतंत्रही होवै हैं ॥ और यहअज्ञानरूपअविद्याभी तिनरथादिकोंकीन्याईं जडरूपहै॥यातैं यहअविद्याभी परतंत्रही है ॥ याकहणेकरिकै यहअनुमान बोधनकऱ्या॥अविद्या परतंत्रहोणेकूंयोग्यहै जडहोणेतैं रथादिकोंकीन्याईं॥हेदेवताओ॥इसप्रकार याअविद्याविषे परतंत्रता सिद्धहोवै है॥ और यालोकविषे जोपदार्थ अस्वतंत्रहोवै है॥तापदार्थकूं असिद्धकहे हैं यातैं अस्वतंत्रहोणेतैं यहअविद्याभी असिद्धहीहै॥ और यालोकविषे जोपदार्थ असिद्धहोवैहै॥ सोपदार्थ असत्हीहोवै है॥जैसे शशशृंगवंध्यापुत्रादिक असिद्धहोणेतैं असत्हैं॥तैसे असिद्धहोणेतैं यहअविद्याभी असत्यहीहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जोयहअविद्या अस्वतंत्रत्व असिद्धत्व असत्व इत्यादिकधर्मोंवालीहोवै ॥ तो पूर्वआपनैं याअविद्याविषे स्वतंत्रत्व सिद्धत्व सत्त्व इत्यादिकधर्म किसवासतेकथनकरेथे॥समाधान॥हेदेवताओ जिसअभिप्रायकरिकै हमनैं ताअविद्याविषे स्वतंत्रतादिकधर्म कथन करे हैं ॥ ताअभिप्रायकूं तुम श्रवणकरो॥यालोकविषे जोजोपदार्थ असत्होवै है॥सोसोपदार्थ किसीकार्यकाआरंभकरतानहीं॥जैसे असत्यवंध्यापुत्र किसीकार्यकाआरंभकरैनहीं ॥ यातैं असत्त्वधर्मतो व्याप्य हैं और कार्यका अनारंभकत्वधर्म व्यापक हैं ॥ और जहांव्यापककाअभावहोवै है ॥ तहां ताकेव्याप्यकाभी अभावहीहोवै है ॥ जैसे महान्जलविषे अग्निरूपव्यापककाअभावहोवै हैं ॥ यातैं ताजलविषे ताके धूमरूप व्याप्यकाभी अभावहोवै है ॥ तैसे इहांप्रसंगविषे सर्वजगत्का आरंभकरणेहारी तथाअसंगनिर्गुणआत्माहेवकूंभी मोहकीप्राप्तिकरणेहारी जाअविद्या है॥ताअविद्याविषे सोकार्यकाअनारंभकत्वरूपव्यापकधर्म रहतानहीं॥यातैं ताका व्याप्यरूप असत्त्व धर्मभी ताअविद्याविषेरहै नहीं ॥ यातैं याअविद्याकूं पूर्वहमनैं सत्य यानामकरिकैकथनकऱ्याथा॥ और सोअसत्त्वधर्म असिद्धत्वधर्मका

व्यापकहै ॥ जभी ताअविद्याविषे असत्त्वरूपव्यापकधर्मकाअभावहुआ ॥ तभी ताअविद्याविषे असिद्धत्वरूपव्याप्यधर्मकाभीअभाव होहोवैगा ॥ याकारणतैं पूर्वहमनैं ताअविद्याकूं सिद्ध यानामकरिकैकथनकऱ्याथा ॥ और सोसिद्धत्वधर्म अस्वतंत्रत्वधर्मकाव्यापकहै ॥ जभी ताअविद्याविषे असिद्धत्वरूपव्यापकधर्मकाअभावहुआ॥ तभी ताअविद्याविषे अस्वतंत्रत्वरूपव्याप्यधर्मकाभी अभावहीहोवैगा॥ यातैं पूर्वहमनैं ताअविद्याकूं स्वतंत्र यानामकरिकैकथनकऱ्याथा॥याप्रकार ताअविद्याविषे सत्त्व असत्त्व सिद्धत्व असिद्धत्व स्वतंत्रता अस्वतंत्रता इत्यादिकसर्वधर्म संभवहोइसकेहैं॥याकारणतैंही वेदवेत्तापुरुष ताअविद्याकूं अनिर्वचनीय दुर्घट इत्यादिकनामोंकरिकैकथनकरे हैं ॥ अब साअविद्या याआत्मादेवविषे जिसव्यामोहकूंकरेहै ताव्यामोहकानिरूपणकरेहैं॥हेदेवतावो ॥ याजीवोंविषे मैं अज्ञानीहूं मैं दुःखीहूं याप्रकारकाजोबोधहोवै है सोबोध सर्वदा होवैनहीं॥किंतु कदाचित्हीहोवैहै॥और यालोकविषे जो जोपदार्थ कदाचित्होवै है॥सोसोपदार्थ कार्यरूपहीहोवै है॥जैसे घटादिकपदार्थकादाचित्कहोणेतैं कार्यरूपहैं॥तैसे सोबोधभीकादाचित् कहोणेतैं कार्यरूपहीहोवैगा॥और यालोकविषे जोजोपदार्थ कार्यरूपहोवैहै॥सोसोपदार्थ किसीकारणकरिकैही जन्यहोवैहै ॥कारणतैंविना कार्यकीउत्पत्तिहोवैनहीं॥ जैसेघटादिकपदार्थ कार्यरूपहोणेतैं मृत्तिकादिककारणोंकरिकैजन्यहैं॥तैसे सोबोधभी कार्यरूपहोणेतैं किसीकारणकरिकै अवश्यजन्यहोवैगा॥ ओरअहंअज्ञःअहंदुःखी याप्रकारकेविपरीतबोधका अविद्यातैंविना दूसराकोईकारण संभवतानहीं ॥ किंतु साअघटितघटनापटीयसीनामा अविद्याही ताबोधकाकारण संभवै है ॥ काहेतैं वास्तवतैं स्वयंप्रकाश जोआनंदस्वरूपआत्माहै ॥ ताआत्मादेवविषे मैं अज्ञानीहूं मैं दुःखीहूं याप्रकारकाविपरीतबोधकदाचित्भीसंभवतानहीं ॥ यातैं परिशेषतैं ताबोधकाकारणरूप यहअविद्याही कल्पनाकरीजावै है॥ हेदेवतावो ॥ जैसे लोकविषे आदरकूंप्राप्तहुआनीचपुरुष ताआदरकरणेहारेपुरुषके मस्तकऊपरचढिजावै है ॥ तैसे कल्पनाकरीहुई सानीचअविद्याभी आपणेआश्रयरूपआत्माका तिरस्कारकरिकै आपही विलासकूंप्राप्तहोवै है ॥ और ताअविद्याकरिकै तिरस्कारकूं प्राप्तहुआ जो सर्वजगत्काअधिष्ठान चेतनदेवहै ॥ ताचेतनदेवका सर्वतैंअंतर आनंदस्वरूपआत्मा ताअविद्याकेप्रभावतैं असत्कैसमान

होवैहै॥ हेदेवतावो॥ अनेकप्रकारकेविलासोंकरिकैयुक्त जायहमायारूपअविद्याहै॥ ताअविद्याका कूटस्थआत्माहैनहीं याप्रकारकाअसत्त्वापादनरूपप्रथमविलासकथनकऱ्याहै ॥ जिसविलासकरिकै यहआत्मादेव आपणेस्वयंज्योतिआनंदस्वरूपकूंभी विस्मरणकरताभयाहै ॥ हेदेवतावो ॥ इसप्रकार यहआत्मादेवताअसत्त्वापादनरूप अविद्याकेविलासकूंदेखिकैदूसरेभी अनेकप्रकारकेविक्षेपरूपविलासोंकूंदेखैहै तिनविक्षेपरूपविलासोंकूं तुम श्रवणकरो ॥ मैंजन्म्याहूं मैंबालकहूं मैंयुवाहूं मैंवृद्धहूं मैंमरोंगा मैंसुखीहूं मैंदुःखीहूं मैंस्वर्गीहूं मैंनरकीहूं मै स्त्रीहूं मैंपुरुषहूं मैंनपुंसकहूं मैंपापीहूं मैंधर्मीहूं इसतैंआदिलैकै अनेकप्रकारकेअहंअभिमानरूपदुःखोंकूं यहजीवात्मादेखे है॥ तथा ताजन्मादिकोंकेअहंअभिमानकरिकैयुक्तहुआ यहजीवात्मा पश्चात् ममत्वअभिमानकारिकैयुक्तहोवै है ॥ तामममत्वअभिमानकेवशतैं यहजीवात्मा यहहमारापिताहै यहमेरीमाताहै यहमेरापुत्रहै यहमेरीस्त्री है यहमेरेबांधवहैं यहमेराधनहै यहमेरागृहहै इसतैंआदिलैके नानाप्रकारके ताअविद्याकेविलासोंकूंदेखे है॥ जेअविद्याकेविलास यासंसारकेस्थितिकेकारणरूपहैं॥ ऐसेअविद्याकेविलासोंकीप्राप्तितैंअनंतर देहरूपबंधनगृहकूंप्राप्तहुआ तथाकामक्रोधादिकशृंखलावोंकरिकैबांध्याहुआ तथामैंसर्वदाहोवोंमेराअभाव कदाचित्भीनहींहोवै याप्रकारकीप्रार्थनाकरिकै आपणेशरीरकारक्षणकरताहुआ यहमूढजीव अनेकजन्मोंकूंप्राप्तहोवै है॥ तिनअनेकजन्मोंविषेभी यहमूढजीव तास्वयंज्योतिआनंदस्वरूप अद्वितीयआत्माकूं नहींदेखताहुआ तथा अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंदेखताहुआ निरंतर यासंसारविषेभ्रमणकरैहै ताकरिकै विद्यमानहुआभी यहजीवात्मा असत्यकेसमानहो वै है ॥ याकारणतैं यहमायारूपअविद्या अत्यंतविचित्रहै ॥ तथा अत्यंतदुर्घटहै ॥ तथा सर्वजीवोंकूं दुःखकीप्राप्तिकरणेहारी है॥ तथा यासंसाररूपविषकेवृक्षकीजननीहै॥ तथा विचारहीनमनुष्योंकरिकै दुर्विज्ञेय है॥ ऐसीअविद्याकेप्रभावतैं यह जीवात्मा मैंअज्ञानीहूं मैंदुःखीहूं मैंब्राह्मणहूं मैंमहान्कुलवालाहूं इत्यादिकविपरीतज्ञानोंकरिकैयुक्तहुआ यासंसारसमुद्रविषे वारंवार डूबे है॥ अब वटबीजादिकोंकीन्याईं याअविद्याकीव्यवस्थाकहणेवासते प्रथम याअविद्याविषे यासंसारवृक्षकीबीजरूपता तथापरिणामस्वभावता वर्णनकरे हैं ॥ हेदेवतावो ॥ साअविद्या यासंसारवृक्षकाबीजरूपहै ॥ तथा ज्ञानकर्मके जेसंस्काररूपवासनाहैं ॥ ताअनेककोटि

वासनारूपगर्भकरिकैयुक्तहै॥ तथा पटकीन्याईं संकोचविकासस्वभाववाली है॥ तहांसुषुप्ति मूर्च्छा मरण महाप्रलय इत्यादिककालोंविषेतो यहअविद्या संकोचभावकूंप्राप्तहोवै है॥ और तिनसुषुप्तिआदिककालोंतैंभिन्न जाग्रतादिककालोंविषे साअविद्या विकासभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ हेदेवतावो॥ यहजीवात्मापुरुष नानाप्रकारकेशरीरोंविषे जाग्रतअवस्थाविषे तथा स्वप्नअवस्थाविषे परतंत्रहुआ ताअविद्याकोंविकासभावोंकरिकै अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंप्राप्तहोवै है ॥ यातैं सोअविद्याकाविकासभाव याजीवोंकेदुःखकाही कारण है॥ और हेदेवतावो ॥ तिनजाग्रतादिकअवस्थावोंविषेभोगदेणेहारेकर्मोंका जभीक्षयहोवै है॥ तभी यहअविद्या तासंकोचभावकूंप्राप्तहोवै है॥ तासुषुप्तिआदिकसंकोचकालंविषे यहजीवात्मा जाग्रतादिकअवस्थावोंकेपरिश्रमकापरित्यागकरिकै तहां शयनकरे है ॥ जैसे आकाशविषे उडणेकरिकै परिश्रमकूं प्राप्तहुआपक्षी तापरिश्रमकापरित्यागकरिकै आपणेगृहविषे शयनकरे है ॥ तैसे यहजीवात्मा जाग्रतादिकोंकेविक्षेपकापरित्यागकरिकै तासुषुप्तिआदिकोंविषे शयनकरे हैं ॥ ताकालविषे यहजीवात्मा यद्यपि दुःखकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तथापि भावीदुःखोंकाबीजरूपजाअविद्या है॥ साअविद्या तासुषुप्तिआदिककालोंविषेभी विद्यमानहै॥ यातैं ताअविद्याकेसंबंधतैं यहजीवात्मा तहांभी दुःखीहीकह्याजावै है॥ इसप्रकार संकोच विकास यादोनोंस्वभावोंकरिकै यहअविद्याही संसारकाकारणहोवै है॥ जाअविद्या अहंअज्ञः याप्रकारके सर्वजीवोंकेअनुभवकरिकै सिद्धहै ॥ तथा अत्यंतदुर्घटहै ॥ हेदेवतावो ॥ पूर्वउक्तनानाप्रकारकेविलासोंकरिकैयुक्त जायहमिथ्याअविद्याहै ॥ साअविद्या जैसे याजीवोंकेसंसारकाकारणहै ॥ तैसे गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं जान्याहुआ यहआत्मादेव याजीवोंकेमोक्षकाकारणहै ॥ और जैसे तासंसारदशाविषे याजीवोंकूं ताआनंदस्वरूपआत्माकीअप्रतीतिहोवै है अथवा विपरीतप्रतीतिहोवै है ॥ तैसे मोक्षदशाविषे विद्वानपुरुषोंकूं ताअविद्याकीअप्रतीतिहोवै है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ एकहीसाअविद्या अनेकजीवोंकेव्यवहारकूं किसप्रकारसिद्धकरैगी ॥ समाधान ॥ हेदेवतावो ॥ सामायारूपअविद्या वास्तवतैंएकरूपहुईभी वटबीजकीन्याईं नानारूपहोइकैप्रतीतहोवै है ॥ अब तावटबीजकेदृष्टांतका स्पष्टकरिकै निरूपणकरे हैं ॥ हेदेवताओ॥ जैसे वटबीजोंविषेअनुगत जोजातिरूपसामान्यहै ॥ सोजातिरूपसामान्यही तिनवटवृक्षोंकाकारण

होवे है ॥ और तेवटबीजरूपव्यक्तियांतो नाशवान्हूणेतैं सर्वत्रअनुगतहैनहीं ॥ यातैं तेबीजव्यक्तियां सर्वत्र कारणताकेयोग्यहोवैनहीं ॥ तैसे घटापटादिकसर्वकार्योंके प्रसिद्धकारणरूप जेमृत्तिकातंतुआदिकहैं ॥ तिनसर्वकारणोंविषेअनुगत जोसामान्यहै ॥ तासामान्यकूंही वेदवेत्तापुरुष अविद्या माया अज्ञान शक्ति इत्यादिकनामोंकरिकैकथनकरेहैं॥साअविद्यारूपमायाही तिनसर्वकार्योंकाकारणरूपहै॥ और जैसे वटबीजरूपव्यक्तियोंकेनाशहुएभी तिनसर्वबीजोंविषेअनुगत सोजातिरूपसामान्य नाशकूंप्राप्तहोवैनहीं॥तैसे सुषुप्तिआदिकअवस्थावोंविषे सर्वकार्योंकेनाशहुएभी तिनोंकाकारणरूप सामान्यमाया नाशकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और जैसे सोवटबीजोंविषेस्थित जातिरूपसामान्य तिसतिसवटवृक्षोंकेकारणीभूतबीजव्यक्तियोंकेविशेषताकूं अंगीकारकरिकै भिन्नभिन्नकार्यकूंकरे है ॥ तैसे यहअविद्यारूपमायाभी तिसतिसकार्यकेसूक्ष्मअवस्थारूपसंस्कारोंकूंअंगीकारकरिकै नानाप्रकारके जगत्काकारणरूपहोवे है॥और जैसे तिनवटबीजोंविषेस्थित सामान्यरूपजातिकेनहींनाशहुएभी तिसतिसवटवृक्षकीउत्पत्तितैं अनंतर तिसतिसबीजव्यक्तियोंका नाशहोइजावे है ॥ तैसे तामायाके नहींनाशहुएभी तिसतिसकार्यकीउत्पत्तितैंअनंतर तिसतिससंस्कारोंकानाशहोइजावे है ॥ और जैसे एकहीवटकाबीज वटवृक्षरूपपरिणामकूंप्राप्तहोइकै फलोंकूंप्राप्तहोवे है ॥ ताफलीभूतवटवृक्षतैं वसंतऋतुविषे अनेककोटिरूपकरिकैउत्पन्नहोवे हैं ॥ तिनसर्वबीजव्यक्तियों विषे पुनःएकएकबीजव्यक्ति तावटवृक्षकीउत्पत्तिद्वारा अनेककोटिरूपकरिकैउत्पन्नहोवे हैं ॥ तैसे यहसामान्यरूपमायाभी आपणेसंस्कार रूपव्यक्तियोंकरिकै अनेकप्रकारकीउत्पत्तिहोवे है ॥ काहेतैं तामायातैं एककार्यकेउत्पन्नहुएतैंअनंतर तिसकार्यतैं पुनः नानाप्रकारके कार्य उत्पन्नहोवे हैं ॥ तिनअनेककार्योंविषे पुनः एकएकव्यक्ति अनेकरूपहोइकै उत्पन्नहोवे है ॥ इसप्रकार यासंसारविषे अनंतररूपता सिद्धहोवे है हेदेवताओ ॥ तासामान्यरूपमायाके विशेषव्यक्तिरूपसंस्कार यद्यपि अनंतहैं ॥ तथापि वेदवेत्तापुरुषोंनैं संक्षेपतैं तेसंस्कार चारिप्रकारकेकथनकरे हैं॥काहेतैं तिनसंस्कारोंकाकार्य देह इंद्रिय क्रिया भोग याभेदकरिकै चारिप्रकारकाहोवे है ॥ यातैं तेसंस्कारभी चारिप्रकारकेहीहोवे हैं॥ हेदेवताओ॥जैसे बीजतैंअंकुरहोवे है॥और ताअंकुरतैं पुनःबीजहोवे है॥ताबीजतैंपुनःअंकुरहोवेहै ॥ इसप्रकार

तावीजका तथाअंकुरका निरंतर प्रवाह चल्याजावेहै ॥ तैसे याअनादिसंसारविषे तिनसंस्कारोंतैं देहादिकहोवे हैं॥ओरतिनदेहादिकोंतैं पुनःसंस्कारहोवेहै॥तिनसंस्कारोंतैं पुनःदेहादिकहोवे हैं इसप्रकार तिनसंस्कारोंका तथादेहादिकोंका निरंतर प्रवाहचल्याजावे है॥तिनसंस्कारोंविषे तथादेहादिकोंविषे कोईभीव्यक्ति स्थिररहैनहीं।अब तिनदेहादिकचारिप्रकारकेकार्योंका तीनतीनप्रकारकाभेद वर्णनकरेहैं हेदेवतावो । नानाप्रकारकेअवांतरभेदकरिकैयुक्तजे जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज यहचारिप्रकारकेप्राणी हैं ॥ तिनचारि प्रकारकेप्राणियों विषेस्थितजे देह इंद्रिय क्रिया भोग यहचारिप्रकारकेकार्यहैं॥तेचारिप्रकारकेकार्य उत्तम अधम मध्यम याभेदकरिकै तीन तीनप्रकारकेहोवेहै ॥ तहां यालोकविषे तिससजातिवालेजीवअनंतहैं ॥ यातैं तिनसर्वजीवोंविषे ते उत्तमादिकरूप कथनकरेजावैनहीं ॥ यातैं सर्ववर्णोंतैंश्रेष्ठ जात्राह्मणजाति है ॥ तात्राह्मणजातिविषे तेउत्तमादिकभाव निरूपणकरे हैं ॥ हेदेवतावो ॥ यहब्राह्मणत्वजातिवाले भूदेवरूपब्राह्मण याभूमिलोकविषे उत्पन्नहुए हैं तथासुखदुःखदोनोंकूंभोगेहैं॥यातैं यहब्राह्मणत्वजातिवालेशरीरभी पुण्यपापदोनोंकरिकैरचितहैं॥ तिनब्राह्मणशरीरोंविषे जाउत्तमता है ॥ साउत्तमता अनेकप्रकारकेनिमित्ततैं होवे है ॥ तहां पिता माता आचार्य यातीनोंके कुल विद्या तप आदिकोंकीउत्कृष्टतातैंभी पुत्रादिकोंविषे साउत्तमता प्राप्तहोवेहै॥तथा पितामाताकाअंशरूपजोवीर्य है ॥ तिनदोनोंवियोंका अवस्थाविशेषकरिकैजोपरिपाकहै॥तिसतैंभी तापुत्रविषे उत्तमताप्राप्तहोवेहै॥तथा तापुत्रका दशमासरूपकालकेपूर्णहुएतैंअनंतर जोमाताकेउदरतैं बाह्यनिकसणाहै।तिसतैंभी तापुत्रविषे उत्तमताहोवेहै।तथा सुंदरगोररूप लावण्य सदाचार श्रेष्ठलक्षण इत्यादिकगुणोंकरिकैभी शरीरविषे उत्तमताहोवेहै॥इसतैंआदिलेकै अनेकप्रकारकेनिमित्तोंकरिकै साउत्तमताहोवे है।अब इंद्रियोंकीउत्तमताका वर्णनकरे हैं॥ हेदेवतावो॥जैसे देहकीउत्तमता अनेकनिमित्तोंकरिकैहोवे है॥तैसे नेत्रादिकइंद्रियोंकीउत्तमताभी अनेकनिमित्तोंतैंहोवे है॥तहांरूपादिकविषयोंकेग्रहणकरणेविषेजास्फुटताहै॥तिसतैंभी तिननेत्रादिकइंद्रियोंविषे उत्तमताहोवेहै॥तथा सुंदररचनाविशेषतैंभी तिनइंद्रियोंकी उत्तमताहोवेहै ॥ तंथा विस्तारादिरूपपरिमाणतैंभी तिनइंद्रियोंविषे उत्तमताहोवेहै ॥ अब क्रियाकीउत्तमता वर्णनकरे हैं ॥ हेदेवतावो ॥

क्रियारूपजेकर्म हैं ॥ तिनकर्मोंविषे श्रद्धाभक्तिपूर्वक देवताध्यानादिरूपप्रज्ञाकरिकै उत्तमताप्राप्तहोवे है ॥तथा शास्त्रविहितदानादिकोंके करणेतैं तथाशास्त्रनिषिद्धहिंसादिकोंकेपरित्यागतैंभी तिनकर्मोंविषे उत्तमताप्राप्तहोवेहै ।अब भोगोंकेउत्तमता कथनकरैंहै॥हेदेवतावो॥ पितामातादिकोंकेविद्यमानतातैंभी यापुरुषोंकेभोगोंविषे उत्तमताप्राप्तहोवै है॥तथा आपणेबांधवोंकेसुशीलस्वभावतैं तथाआपणेसुशील स्वभावतैंभी तिनभोगोंविषे उत्तमताहोवेहै ॥ तथा नानाप्रकारकेविद्यावोंकीप्राप्तितैंभी तिनभोगोंविषे उत्तमताहोवे है ॥तथा तिनविद्या वोंकेबलतैं तिनबांधवोंकेशरीरमनविषे तथाआपणेशरीरमनविषे भयाजोपीडाकाअभाव तापीडाकेअभावतैंभी तिनभोगोंविषे उत्तमता होवै है ॥ तथा पूर्वलेअनेकपुण्यकर्मोंतैं तथाआपणीबुद्धिकीकुशलतातैंभी तिनभोगोंविषे उत्तमताहोवै है ॥ हेदेवतावो ॥ कोईकशास्त्र वेत्तापुरुषतो आचार्य पिता माता इसतैंआदिलेकेसर्वबांधवोंकूं याजीवोंकेभोगकाकारणमाने हैं ॥ और कोईकश्रेष्ठबुद्धिवालेविद्वान्पुरु षतो श्रुतिप्रमाणकेअनुसार स्त्री पुरुष यादोनोंकूंहीं परस्परभोगकाकारणमाने हैं ॥ आचार्यादिकोंकूं भोगकाकारण माननेंनहीं ॥ काहेतैं बृहदारण्यकउपनिषद्विषे याज्ञवल्क्यमुनि आपणीमैत्रेयीस्त्रीकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया है ॥ नवाअरेपत्युःकामाय पतिःप्रियोभवति आत्मनस्तुकामायपतिःप्रियोभवतिनवाअरेजायायैकामायजायाप्रियाभवति आत्मनस्तुकामायजायाप्रियाभवति॥याश्रु तिवचनकरिकै सोयाज्ञवल्क्यमुनि स्त्रीपुरुषदोनोंविषेभ्रांतिकरिकैप्राप्तहुईभोगसाधनताकूंहीं निवारणकरताभयाहै ॥पितामातादिकोंविषे भोगसाधनताका निवारणकऱ्यानहीं।यातैंस्त्रीपुरुषदोनोंविषेही परस्परभोगकीहेतुताहै ॥अथवा॥एकशरीरविषेभोगसंभवैनहीं।यातैंतेदोनों शरीर अपेक्षितहैं।याअर्थविषेही तिनशास्त्रवेत्तापुरुषोंकातात्पर्यहै॥अथवा॥कोईकशास्त्रवेत्तापुरुषतोयाप्रकार कथनकरे हैं।शिष्यादिकोंके पुण्यरूपअदृष्टकरिकैही तेआचार्यादिकउत्पन्नहोवै हैं॥और जोपदार्थ जिसजीवकेपुण्यपापरूपअदृष्टतैंउत्पन्नहोवै है॥सोपदार्थ तिसजीवकें सुखदुःखरूप भोगकाहेतुहोवेहै ॥ यातैं तेआचार्यादिकभी तिनशिष्यादिकोंकेभोगकाहेतुहै ॥ और कोईकशास्त्रवेत्तापुरुषतो यहकहे हैं॥ गुरुशिष्यदोनोंका तथापितापुत्रादिकदोनोंका परस्पर उपकार्योपकारकभाव देखणेविषेआवताहै ॥ यातैं तेदोनोंभी परस्परभोगकें

हेतुहैं॥और वास्तवतैंविचारकरिकैदेखियेतो आचार्य माता पिता इत्यादिकबांधवभी याजीवोंकेभोगकाहीहेतुहैं यहमत किसीस्थूलदृष्टि वालोंकाहै ॥ सूक्ष्मबुद्धिवालेपुरुषतो तिनआचार्यादिकोंकूं याजीवोंके साक्षात्भोगकाहेतुमानेंनहीं ॥ किंतु तिनआचार्यादिकोंकूं धर्मअर्थ दोनोंकाहेतुमाने हैं ॥ काहेतैं तेआचार्यादिक याशिष्यादिकोंकेप्रति श्रेष्ठविद्याकाउपदेशकरिकै धर्मकीप्राप्तिकरे हैं॥ तथा कर्मउपासना रूपदैवधनकीप्राप्तिकरे हैं ॥ तथा ताविद्याद्वारा सुवर्णादिरूपलौकिकधनकीप्राप्तिकरे हैं ॥ तिनधनादिकोंकरिकैयाजीवोंकूं भोगकीप्राप्ति होवे है ॥ इतनेंकरिकै देह इंद्रिय क्रिया भोग याचारोंविषेउत्तमताकावर्णनकऱ्या ॥ अब तिनदेहादिकचारोंविषे मध्यमताका तथाअधम ताकावर्णनकरे हैं ॥ हेदेवतावो ॥ पूर्व देह इंद्रिय क्रिया भोग याचारोंकेउत्तमताविषे जेहेतुकथनकरेथे ॥ तिनहेतुवोंविषे जभी कोईकहेतु वोंकाअभावहोवे है ॥ तभी तिनदेहादिकचारोंविषे मध्यमता प्राप्तहोवे है ॥ और तिनपूर्वउक्तसर्वहेतुवोंका जभी अभावहोवे है ॥ तभी तिनदेहादिकचारोंविषे अधमता प्राप्तहोवेहै।इसप्रकार देह इंद्रिय क्रिया भोग यहचारो उत्तम मध्यम अधम याभेदकरिकै तीनतीनप्रकारके होवे हैं॥और तिनदेहादिकचारोंविषेस्थितजे उत्तमत्व मध्यमत्व अधमत्व यहतीन हैं॥ तिनउत्तमत्वादिकतीनोंविषे एकएककूं जभी पुनः उत्तमत्व मध्यमत्व अधमत्व यातीनोंकेसाथजोडिये॥तभी तिनोंकेनवभेद सिद्धहोवे हैं ॥ तेनवभेदयह हैं ॥ उत्तमउत्तम १ उत्तममध्यम २ उत्तमअधम ३ मध्यमउत्तम ४ मध्यममध्यम ५ मध्यमअधम ६ अधमउत्तम ७ अधममध्यम ८ अधमअधम ९ और तिननवोंविषेभी एकएककूं जभी मृदुत्व मध्यत्व उत्कटत्व यातीनोंकेसाथजोडिये॥ तभी तिनोंके सप्तविंशतिभेद २७ सिद्धहोवे हैं ॥ जैसे उत्तम उत्तममृदु उत्तमउत्तममध्य उत्तमउत्तमउत्कट इसप्रकार दूसरेउत्तममध्यनादिकअष्टोंविषेभी तीनतीनभेदजानिलेणे ॥ और तिनसप्तविंशतिपदार्थों विषेभी एकपदार्थकूं जभी पुनःमृदुमध्यउत्कट यातीनोंकेसाथजोडिये॥तभी तिनोंकेएकाशीभेद८१ सिद्धहोवे हैं ॥ जैसे उत्तमउत्तममृदु मृदु उत्तमउत्तममृदुमध्यउत्तमउत्तममृदुउत्कट॥इसप्रकारदूसरेछब्बीसपदार्थोंकेभी तीनतीनभेदजानिलेणे॥और तिनएकाशी८१भेदोंविषे भी जभी एकएककूं कर्मद्वारा कृतत्व कारितत्व अनुमोदितत्व यातीनधर्मोंकेसाथजोडिये ॥ तभी तिनोंके दोशतत्रितालीसभेद २४३

सिद्धहोवे हैं ॥ इसतैंआदिलेकै तिनदेहादिकोंकेअनंतभेदसिद्धहोवे हैं ॥ तेभेद अत्यन्तसूक्ष्महैं ॥ यातैं किसीतैं वर्णनकरेजावैनहीं ॥ अब देह इंद्रिय क्रिया भोग इनचारोंका तथातिनोंकेसंस्कारोंका परस्पर बीजअंकुरकीन्याईं कार्यकारणभावनिरूपण करणेवासते प्रथम यादेहकी प्रधानता, निरूपणकरे हैं ॥ हेदेवतावो ॥ यादेहोंकेसंस्कारोंतैं पुनःदेहउत्पन्नहोवे है ॥ और तिनदेहोंतैं पुनः देहादिकचारोंके जनक संस्कार उत्पन्नहोवे हैं ॥ यातैं यादेहतैंहीं तेसर्वइंद्रियादिक प्रगटहोवे हैं ॥ हेदेवतावो ॥यादेहतैंहीं तेइंद्रियक्रियाभोग प्रगटहोवे हैं ॥ याअर्थविषेभी वेदवेत्तापुरुष याप्रकारकीयुक्तिकथनकरे हैं ॥ जोपुरुष प्रथम देहकरिकैयुक्तहोवै है ॥ सोदेहीपुरुषही वशकरेहुएइंद्रियों सहित यागादिककर्मोंकाकर्त्ताहोवैहै॥तथा तिनकर्मोंकेफलकाभोक्ताहोवै है॥देहतैंविना तिनकर्मोंकाकर्त्तापणातथाभोक्तापणासंभवैनहीं ॥ और तादेहीभावतैंअनंतर पुनः देहीभावकेप्राप्तकरणेहारे संस्कार उत्पन्नहोवे हैं तिनसंस्कारोंतैं पुनः देहादिकहोवे हैं ॥ इसप्रकार यह देहहीसर्वकाकारण है ॥ हेदेवतावो ॥ जैसे यहदेह सर्वका कारण है ॥ तैसे यहइंद्रिय तथाभोगभी कर्मादिद्वारा सर्वसंघातकाकारण है ॥ तहां नेत्रादिकइंद्रियोंकेरूपादिकविषयोंविषे लंपटजेपुरुष हैं ॥ तिनपुरुषोंका कोईभीकर्म संपूर्णहोवे नहीं ॥ यातैं विषयोंतैं निरोधकरेहुए इंद्रियोंविषेही कर्मद्वारा सर्वसंघातकीकारणताहोवे है॥बहिर्मुखइंद्रियोंविषे साकारणताहोवैनहीं॥अब कर्मोंतैं सर्वकासंभव कथनकरे हैं ॥ हेदेवतावो ॥ पुण्यपापरूपकर्मकरिकै युक्तजोपुरुषहै ॥ सोपुरुषही तिनइंद्रियोंकरिकैयुक्तहोवे है ॥ तथा देहकरिकैयुक्तहोवे है ॥ तथा नानाप्रकारके भोगोंकूंप्राप्तहोवे है तापुण्यपापकर्मतैं विना यहपुरुष किसीभीपदार्थकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं तिनपुण्यपापकर्मोंतैंहीं तिनदेहादिक सर्वोंकासंभवहोवे है ॥ अब भोगों तैं सर्वकासंभव निरूपणकरे हैं ॥ हेदेवतावो ॥ यालोकविषे जोपुरुष भोगीहोवे है ॥ सोभोगी पुरुषही कर्मोंककरणेविषे समर्थहोवे है ॥ तथा वशवार्तैं इंद्रियोंसहित होवे है ॥ काहेतैं यालोकविषे सर्वप्रकारकेभोगोंके तथाभोग्य पदार्थोंके अनुभव हुएतैंअनंतरही कर्मोंकेअनुष्ठानकी वृद्धि देखणेविषे आवे है ॥ ताभोगोंके तथाभोग्य पदार्थोंके अनुभवतैंविना कर्मोंके अनुष्ठानकीवृद्धि होवैनहीं ॥ काहे तैं यालोकविषे जोपुरुष जिसविषयकूं प्राप्तहोवे है ॥ सोपुरुष पुनः

तिसीविषयकीइच्छाकरे है ॥ ताइच्छाकीउत्पत्तितैंअनंतर सोपुरुष तिसीविषयकेप्राप्तिवासते कर्मोंकूं करे है ॥ जैसे यामनुष्योंनें स्वर्गकी देवांगना अनुभवकरीनहीं ॥ किंतु यामनुष्यलोककीस्त्रियां अनुभवकरीयां हैं ॥ यातैं यामनुष्योंकूं तिनदेवांगनावोंविषे इच्छाहोवैनहीं ॥ किंतु यामनुष्यलोककीस्त्रियोंविषेही इच्छाहोवे है॥तथा श्वानोंनें यहमनुष्यस्त्रियां अनुभवकरीयांनहीं॥किंतु श्वानिणीस्त्रीयां अनुभवकरीयां हैं ॥ यातैं तिनश्वानोंकूं यामनुष्यस्त्रीयोंविषे इच्छाहोवैनहीं॥किंतु तिनश्वानिणीस्त्रीयोंविषेही इच्छाहोवे है॥तथा स्वर्गवासीदेवतावोंनें यामनुष्यलोककीस्त्रीयां तथाअन्नपानादिकभोग्यपदार्थ अनुभवकरेनहीं ॥ किंतु स्वर्गलोककीस्त्रीयां तथा स्वर्गलोककेभोग्यपदार्थ अनुभवकरेहैं ॥यातैं तिनदेवतावोंकूं यामनुष्यलोककीस्त्रीयोंविषे तथाअन्नपानादिकभोग्यपदार्थोंविषे इच्छाहोवैनहीं ॥ किंतु तिनस्वर्गकीस्त्रीयोंविषे तथाअन्नपानादिकभोग्यपदार्थोंविषेही इच्छाहोवैहै।यातैं अन्वयव्यतिरेककरिकै यहभोगोंकाअनुभवहीतिनभोगोंकीप्राप्तिकरणेहारे कर्मोंकेवृद्धिकाकारणहै॥ और यहजीव जिनजिनभोगोंकूंअनुभवकरे है ॥ तिनभोगोंविषे वैराग्यकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु दिनदिनविषे यह जीव तिनभोगोंविषेकुशलहोताजावे है ॥ यहवार्त्ता योगभाष्यविषेभी कही है ॥योगाभ्यासमनुविवर्द्धतेकामःकौशलानिचेंद्रियाणां॥ अर्थ यह॥भोगोंकेअनुभवतैंअनंतर दिनदिनविषेकामना वृद्धिकूंप्राप्तहोतीजावैहैं॥ तथा तिनभोगोंविषे इंद्रियोंकीकुशलताभी वृद्धिकूंप्राप्तहोती जावे है॥१॥हेदेवतावो॥अनेकभोगोंकेप्राप्तहुएभी कामना वृद्धिकूंहीप्राप्तहोवे हैं॥याअर्थविषे कामीपुरुष तथाबलवान्पुरुष तथाधनीपुरुषही दृष्टांतरूपहैं ॥ काहेतैं यालोकविषे तेकामीबलवान्धनीपुरुष अनेकप्रकारकेभोगोंकूंप्राप्तहोइकै तिनभोगोंविषेकुशलहुए पुनः पुनः तिनभोगोंकीइच्छाकरतेहुए प्रतीतहोवे हैं॥ यातैं यहजान्याजावे है॥बहुतभोगोंकेप्राप्तहुए कामनाकीवृद्धिहीहोवे है॥ जैसे घृतकाष्ठादिकों केपावणेकरिकै अग्निकीवृद्धिहीहोवे है ॥ हेदेवतावो ॥ जैसे अनुभवकरेहुएयहभोग स्वविषयकइच्छाकीउत्पत्तिद्वारा यादेहइंद्रियकर्मादि रूपसंसारकाकारणहोवे हैं।तैसे अनुभवकूंप्राप्तहुए यहदेहइंद्रियकर्मभी स्वविषयकइच्छाकीउत्पत्तिद्वारा यासंसारकेहीकारणहोवैहैं॥ काहेतैं यहजीवात्मां इच्छासंस्कारोंकरिकैयुक्त जिसजिसदेहादिकोंकूं रागपूर्वक सेवनकरे है ॥ सोजीवात्मा ताइच्छासंस्कारोंकेवशतैं तिसीतिसी

जातिवालेदेहादिकोंकूं अनेकवार प्राप्तहोवे है॥हेदेवतावो॥इसप्रकारदेह इंद्रिय क्रिया भोग यहचारो अनुभव इच्छासंस्कार यातीनोंकरि केहीप्राप्तहोवे है ॥ यातैं तेदेहादिक जन्मजन्मविषेवृद्धिकूंप्राप्तहुएभी यादेहतैंउत्तर पुनःयहहीदेहप्राप्तहोवे है याप्रकारकेनियमकाविषयहोवे नहीं ॥ काहेतैं तिनदेहादिकोंकाकारणरूपजे अनुभवइच्छासंस्कारहैं ॥ तिनोंका कोईनियमहैनहीं॥तो तिनोंकेदेहादिककार्योंकानियम किसप्रकारहोवैगा ॥ किंतु सोनियमसंभवैनहीं ॥ और यहजीवात्मा इच्छासंस्कारोंकेवशतैं पुनःतिसीजातिवालेदेहकूंप्राप्तहोवे है ॥ याकरणेकातो यहअभिप्रायहै याअनादिसंसारविषे याजीवनें पूर्वअनेकजातिवालेशरीरोंकाअनुभवकऱ्याहै ॥ तहां मरणकालविषे याजीवकूं पुण्यपापकर्मकेवशतैं जिसजिसजातिवालेशरीरकेंसंस्कार उद्बुद्धहोवैहैं ॥ मरणतैंउत्तर तिसीतिसीशरीरकूं यहजीव प्राप्तहोवे है ॥ यह वार्त्ता याआत्मपुराणकेषष्ठेअध्यायविषे विस्तारतैंनिरूपणकरिआये हैं ॥ हेदेवतावो ॥ इंद्रिय क्रिया भोग यातीनोंकरिकेयुक्तजे जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज यहचारप्रकारकेदेहहैं॥तेदेहतो वटवृक्षकेसमानहैं।और संस्कार वटबीजकेसमानहैं॥और तिनसर्वसंस्कारोंविषेस्थित जो सामान्यहै ॥ तासामान्यकूं वेदवेत्तापुरुष माया यानामकरिकेकथनकरे हैं ॥ कैसीहैसामाया ॥ सर्वजगत्काकारणरूपहै ॥ तथा अनादिहै ॥ और हेदेवतावो ॥ जैसे तिनवटबीजोंविषे तथाअंकुरोंविषे अनुगतजोसामान्यहै॥सोसामान्य नाशतैंरहितहै ॥याकारणतैंही सोसामान्य कारणरूपहै और तासामान्यका विशेषरूपजेबीजअंकुरहैं।तेबीजअंकुर तासामान्यरूपकारणतैंभिन्नहैंनहीं ॥यातैं सोसामान्य अद्वितीयरूपहै और परस्परकारणकार्यरूपकरिकेप्रसिद्धे जेबीजअंकुरहैं तेबीजअंकुरदोनों नाशवान्हैं।तैसे कार्यकारणरूपकरिकेप्रसिद्धजे संस्कारदेहहैं ॥ तिनदोनोंकेनाशहुएभी सामाया नाशकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और हेदेवतावो ॥जैसे तावटबीजतैं वटवृक्ष उत्पन्नहोवे है॥और तावटवृक्षतैं पुनः बीजउत्पन्नहोवे है ॥ और तिसबीजतैं पुनः वटवृक्ष उत्पन्नहोवे है ॥ इसप्रकार प्रवाहरूपकरिके तिनदोनोंका परस्परकार्यकारणभावहोवे है ॥ तैसे संस्कारों तैंदेहहो वैहै ॥ तादेहतैं पुनःसंस्कारउत्पन्नहोवे हैं ॥ तिनसंस्कारोंतैं पुनःदेहहोवे है ॥ इसप्रकार प्रवाहरूपकरिके तिनदोनोंका परस्पर कार्यकारणभावहोवे है ॥ और हेदेवतावो ॥ जैसे कारणकार्यरूपकरिकेप्रसिद्धजे वट

बीज तथावृक्ष यहदोनों हैं ॥ तिनदोनोंविषे पृथ्वीकेअवयव अनुगतहोवे हैं ॥ और तिनअवयवोंविषे पृथ्वी अनुगतहोवे है ॥ सापृथ्वी वट बीजके तथावटवृक्षके नाशहुएभी प्रलयअग्नितैंविना नाशकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे यादेहादिकोंविषे तथातिनदेहादिकोंके कारणभूतसंस्कारादिकोंविषे अनुगतजामायाहै ॥ सामाया तिनदेहादिकोंकेनाशहुएभी ब्रह्मज्ञानरूपकालाग्नितैंविना नाशकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हे भगवन् ॥ जोमायाही सर्वकार्यकरणेविषेसमर्थहोवे तोब्रह्मकूं किसवासतैंअंगीकारकरणा ॥ याशंकाकीनिवृत्तिकरणेवासतैं मायाकास्वरूप तथाब्रह्मकास्वरूप भिन्नभिन्नकरिकेनिरूपणकरेहैं ॥हेदेवताओ ॥ सर्वकार्योंविषे तथासर्वकारणोंविषे अनुगतजोपरिणामभागहै ॥ तापरिणामभागकूं वेदवेत्तापुरुष माया यानामकरिकेकथनकरेहैं ॥ और तिनकार्यकारणदोनोंका तथातिनदोनोंविषेअनुगतपरिणामभागका प्रकाशकरणेहारा जोस्फुरणरूपसत्वस्तुहै ॥ तास्फुरणरूपसत्वस्तुकूं वेदवेत्तापुरुष ब्रह्म आत्मा यानामकरिकेकथनकरेहैं॥हेदेवताओ ॥ यालोकविषे जितनेंकीस्थूलसूक्ष्मपदार्थ हैं तिनसर्वपदार्थोंविषे परिणामरूपकरिकेतो मायाकाअनुगतपणा देखणेविषेआवे है ॥ और सत्तारूपकरिके ब्रह्मकाअनुगतपणा देखणेविषेआवे है ॥ यातैं सामाया तथाब्रह्म दोनोंजगत्केउपादानकारणहैं ॥ ब्रह्मतो विवर्त्त उपादानकारणहै ॥ और माया परिणामीउपादानकारणहै अब माया ब्रह्म यादोनोंविषे स्पष्टकरिके याजगत्कीकारणताका निरूपण करे हैं हेदेवताओ ॥ सर्वदाएकरूपसत्ताही जोकदाचित् यासर्वकार्योंविषे अनुगतहुईदिखाईदेवै ॥ तो मायाकूं कारणरूपतानहींसिद्ध होवे ॥ परंतु याजगत्विषे केवलएकसत्ताकाहीअनुगतपणा दिखाई देतानहीं ॥ किंतु सापरिणामरूपमायाभी अनुगतहुईप्रतीत होवे है ॥ और जोकदाचित् सापरिणामरूपमायाही केवल याजगत्विषेअनुगतहुईप्रतीतहोवे ॥ तो तासत्तारूपब्रह्मकूं कारणता नहींसिद्धहोवे ॥ परंतु सापरिणामरूपमायाभी केवल अनुगतहुईप्रतीतहोवैनहीं ॥ किंतु सोब्रह्मभी आपणेसत्तारूपकरिके सर्वत्रअनुगत हुआप्रतीतहोवे है ॥ यातैं सोसत्तारूपब्रह्म तथामाया दोनोंही जगत्काकारणहैं ॥ तापरिणामसामान्यरूपमायाका तथास्फुरणरूपसत् ब्रह्मका परस्परभेद विद्वान्पुरुषोंनैं कथनकऱ्याहै॥यातैं याजगत्कीकारणताविषे तामायाकीन्याईं ब्रह्मकूंभी अवश्यअंगीकारकऱ्याचाहिये

अब जडविकारोंका ताकारणरूपमायाकेस्वरूपतें अभेद निरूपणकरेहैं ॥ हेदेवताओ ॥ जैसे सर्ववटबीजोंविषेअनुगत जोसामान्य है ॥ सोसामान्य सर्ववीजोंविषे अनुगतसत्तारूपब्रह्मकाशक्तिरूपहुआ आपणेस्वरूपतेंअभिन्न नानाप्रकारकेवटवृक्षोंकूंउत्पन्नकरे है ॥ तैसे ब्रह्मकीशक्तिरूप सापरिणामरूपमायाभी देहादिरूपअनेकविश्वकूंउत्पन्नकरेहै ॥ केसाहैसोविश्व ॥ ताकारणरूपमायातेंअभिन्नहै ॥ तथा बीजअंकुरकीन्याईं परस्पर कार्यकारणरूप है अबपरस्पर व्याप्यव्यापकरूपकरिकै स्थित जेमायाकेतीनस्वरूपहैं तिनोंकानिरूपणकरे हैं हेदेवताओ ॥ जैसे एकएकवटवृक्षविषेअनुगत कार्यशक्तिनामासामान्य भिन्नहै ॥ और एकएकवटबीजविषे अनुगत कारणशक्तिनामा सामान्य भिन्नहै ॥ और वटवृक्ष तथावटबीज यादोनोंविषे समानरूपकरिकैअनुगत जोपृथ्वीरूपसामान्यहै ॥ सो तृतीयसामान्यहै ॥ तहां जैसे वटवृक्ष तथावटबीज यहदोनों परस्पर कारणरूपहैं ॥ तैसे तिनदोनोंविषेअनुगतजो तीसरापृथ्वीरूपसामान्यहै ॥ सोपृथ्वीरूप सामान्यभी तिनदोनोंकाकारणरूपहै ॥ यातें सोतीसरासामान्य व्यर्थनहीं है ॥ यातें यहअर्थसिद्धभया ॥ जैसे सोपृथ्वीरूपसामान्य वट बीजोंकेसंबंधकरिकै॥तथावटवृक्षोंकेसंबंधकरिकैतो दोप्रकारकाहुआस्थितहोवैहै ॥ और बटबीजवटवृक्षयादोनोंविषे अनुगतरूपताकरिकै सोसामान्य एकरूपहुआ स्थितहोवैहै ॥ तैसे सामायारूपशक्तिभी कार्यकेसंबंधकरिकै तथाकारणकेसंबंधकरिकै तो दोप्रकारकीहुई स्थितहोवै हैं ॥ और सर्वकार्य तथासर्वकारण यादोनोंविषेअनुगतहुईसामायाशक्ति एकरूपहुई स्थितहोवै हैं ॥ हेदेवताओ ॥ यहमाया यद्यपि व्यापकरूपकरिकैएकहीहै ॥ तथापि यहमाया कार्यविषे तथाकारणविषे व्याप्तहोइकैस्थितहोवै है याकारणतें सामाया भिन्न हुए कीन्याईं स्थितहोवै है ॥ तहां साएकहीमाया कार्यावच्छिन्नशक्तिरूपकरिकैतो जीवकेभेदकाकारणहै ॥ और कारणावच्छिन्नशक्तिरूप करिकै ईश्वरकेभेदकाकारणहै ॥ हेदेवताओ ॥ जैसे एकहीभूमि घटरूपकूं तथागृहरूपकूं प्राप्तहोइकै घटाकाशगृहाकाश यादोनोंकेभेदका हेतुहोवैहै ॥ तैसे यहएकहीमाया आपणेकार्यकारणदोनोंरूपकरिकै जीवईश्वरदोनोंकेभेदकाकारणहोवै है ॥ और हेदेवताओ ॥ जैसे सापकहीं भूमि इलाधात्री कुः पृथ्वी धरणी क्षमा इत्यादिकअनेकनामोंकूंप्राप्तहोवै है ॥ तैसे सापरिणामरूपएकहीमाया शक्ति दुर्भणा अविद्या

तम मोह अज्ञान भ्रांति विपर्यय सनातनी इत्यादिकअनेकनामोंकूंप्राप्तहोवै है॥अब तामायाकेचित्रत्वादिकविशेषणोंका निरूपणकरेहैं ॥ हेदेवतावो ॥ साजीवईश्वरकेभेदकरणेहारी परिणामसामान्यरूपमाया अत्यंतअद्भुतशरीरवालीहै॥ तथा नानाप्रकारकेसंस्काररूपाचित्रों करिकैयुक्तहै ॥ और जैसे रजकपुरुष वस्त्रोंकूं नानाप्रकारकेनीलपीतादिकचित्रोंकरिकैयुक्तकरे है ॥ तैसेयहमायाभी याविचित्रप्रपंचकूं आपणेसंस्काररूपचित्रोंकरिकैउत्पन्नकरे है ॥अब तामायाकीदृढता वर्णनकरे हैं ॥ हेदेवतावो ॥ यहमाया आत्मज्ञानतेंविना नाशतेंर हितहोणेतें दृढकहीजावै है ॥ काहेतें सर्वजगत्तेंउत्कृष्टजोईश्वरहै सोईश्वरभीयामायाकूं नाशकरिसकैनहीं ॥ जिसवासतेंसोईश्वर यामाया कृतबलकरिकैयुक्तहुआही याजगत्कीउत्पत्तिस्थितिलयकरणेकीसामर्थ्यरूपईश्वरताकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तामायातेंविना सोईश्वरपणा सिद्ध होवैनहीं ॥ ऐसीउपकारकरणेहारीमायाकूं सोईश्वर किसप्रकारनाशकरैगा ॥ किंतु सोईश्वर तामायाकूंनाशकरैनहीं ॥ हेदेवतावो ॥ यालोकविषे जेशास्त्रवेत्तापुरुषहैं॥तेशास्त्रवेत्तापुरुष यद्यपि यामायाकूंअनर्थकाकारणजानिकै नाशकरणेविषे समर्थ हैं॥ तथापि यामायाने आपणेप्रभावतें तिनशास्त्रवेत्तारूपोंकेबुद्धिकूं स्त्रीपुत्रधनादिकविषयोंविषे तत्परकरिराख्याहै॥ यातें तेशास्त्रवेत्तापुरुषभी यामायाकूंनाशक रिसकतेनहीं ॥ अब याहीअर्थकेस्पष्टकरणेवासतें यामायाकूंमहाअटवीरूपकरिकैवर्णनकरेहैं ॥ महान्वनकानाम महाअटवीहै ॥ हेदेव तावो॥यहमायारूपमहाअटवी नानाप्रकारकेचिदाभासरूपजीवोंकरिकैव्याप्तहै ॥ तथा पंचमहाभूतरूपवृक्षोंकरिकैपरिपूर्णहै॥तथा विषयों विषेरागरूपजेस्नेहहै ॥तिनस्नेहरूपमूलोंकरिकैयुक्तहै ॥ तथा नानाप्रकारकेदुःखरूपफलोंकरिकैयुक्त है ॥ तथा पुत्रस्त्रीआदिरूपपुष्पोंकरि कैयुक्तहै ॥ तथा मातापितादिरूपपल्लवोंकरिकैयुक्तहै॥तथा बांधवरूपीशाखावोंकरिकैयुक्तहै॥तथा मेरेकूंयहपुत्रप्राप्तहोवैगा याप्रकारकी दीर्घआशारूपवीजोंकरिकैयुक्तहै॥तथा मृत्युरूपदावाग्निकरिकैयुक्तहै ॥ और तामायारूपमहाअटवीकूंनाशकरणेहारी जाशमदमादिरूप विवेकराजाकीसेनाहै ॥ ताशमदमादिरूपसेनाकूंभक्षणकरणेहारीजा कामक्रोधादिरूप महामोहराजाकीसेनाहै॥ तिनकामक्रोधादिरूपसिं होंकरिकैपूर्ण है॥तथा दुर्जनपुरुषरूपीसर्पकंटकोंकरिकैयुक्तहै ॥ तथा नारीरूपपिशाचोंकरिकैयुक्तहै ॥ तथा जन्ममरणादिकवृश्चिकों

करिकेयुक्तहै ॥ ऐसीमायारूपमहाअटवीकूं ज्ञात्रवेत्तापुरुष ध्यानयोगादिकउपायोंकरिकै नाशकरणेविषेसमर्थहैं॥तथापि यामायारूपअट वीनैं तेज्ञात्रवेत्तापुरुष स्त्रीपुत्रादिकोंकेदीनताकूंप्राप्तकरे हैं ॥ यातैं तेज्ञात्रवेत्तापुरुषभी यामायारूपमहाअटवीकूं नाशकरणेविषेसमर्थहो तेनहीं ॥ हेदेवतावो ॥ भद्र मंद्र मृग याभेदकरिकै तीनप्रकारकेहस्तीहोवै हैं ॥ तिनतीनोंप्रकारकेहस्तियोंविषे भद्रजातिवालाहस्ती महाबलवान्होवै है ॥ तथा श्रेष्ठलक्षणोंकरिकैयुक्तहोवै है ॥ तथा सर्वतैंनिर्भयहोवै है॥ सोभद्रजातिवालाहस्ती जैसे महान्वनकेनाशकर णेविषेसमर्थहोवे है ॥ तैसे यहब्रह्मवेत्तारूपभद्रहस्तीभी यामायारूपमहाअटवीकेनाशकरणेविषे समर्थहोवै है ॥ परन्तु ऐसाब्रह्मवेत्तापुरुष यालोकविषे कोईविरलाहीहोवै है ॥ याकारणतैं ज्ञात्रवेत्तापुरुष यामायाकूं दृढा यानामकरिकैकथनकरे हैं॥अब तामायाके बहुअंकुरत्व गुणाभिन्नत्व सर्वत्रब्रह्मादिव्याप्तत्व यातीनधर्मोंकानिरूपणकरे हैं ॥ हेदेवतावो ॥ नानाप्रकारकेभावीशरीरोंकीप्राप्तिकरणेहारियां जेमरण कालकीअनेकवासनाहैं॥तावासनारूपअंकुरोंकरिकै सामायारूपअटवीयुक्तहै॥तथा सत्व रज तम यात्रिगुणात्मकपदार्थोंकरिकै नानाप्रका रकीहुई स्थितहै ॥ हेदेवतावो ॥ जैसे यालोकप्रसिद्धमहान्वनविषे केईकमहान्वृक्षहोवै हैं ॥ तैसे यामायारूपमहाअटवीविषे ब्रह्मा विष्णु शिव यहतीन महान्वृक्षस्थितहैं ॥ केसेहैंतेवृक्ष ॥ सर्वत्रव्यापकहैं ॥तथा अनेकप्रकारकेफलोंकीप्राप्तिकरिकै यासर्वजीवोंकूं आनंदकीप्रा प्तिकरणेहारे हैं ॥ और यामायामहाअटवीतैंबाह्यनिकसणेविषे समर्थ जोविद्वान्रूपभद्रहस्तीहै॥ सोब्रह्मवेत्तारूपभद्रहस्ती जोकदाचित् कामक्रोधदिरूपसिंहों तैं तथामृत्युरूपदावाग्नितैं भयभीतहुआभागे ॥ तो सोब्रह्मवेत्तारूपभद्रहस्ती ब्रह्मा विष्णु शिव यातीनवृक्षोंविषे किसीएकवृक्षकूंआश्रयणकरै॥तहां तिनब्रह्मादिकदेवतावोंकीजोउपासनाकरणीहै यहही तिनोंकाआश्रयणकरणाहै॥तिनब्रह्मादिकवृक्षोंके आश्रयणकरणेकेप्रभावतैं यहविद्वान्पुरुष तिनकामक्रोधादिजन्यसर्वतापोंतैं रहितहोवैहै॥हेदेवतावो॥अद्वितीयरूपजेयब्रह्मादिकतीनवृक्ष हैं॥तिनब्रह्मादिकतीनवृक्षोंविषे यहकामक्रोधादिकसिंह तथामृत्युरूपदावाग्नितथादेहाभिमानीदुर्जनमनुष्ययहसर्व प्रवेशकरणेविषेसमर्थहो वैनहीं॥काहेतैंदेशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहितजोतिनब्रह्मादिकदेवतावोंकास्वरूपहै ॥ तापरिपूर्णस्वरूपतैंयहपरिच्छिन्नकामक्रोधादिकसर्वदा

भयकूंहीप्राप्तहोवैहैं ॥ याकारणतैं तिनब्रह्मादिकवृक्षोंकेसमीपजाइसकैनहीं ॥ हेदेवतावो जैसे लोकप्रसिद्धवृक्षोंऊपरलताहोवैहैं ॥ तैसे ब्रह्मारूपवृक्षविषेतो सरस्वतीरूपलताहै ॥ और विष्णुरूपवृक्षविषे लक्ष्मीरूपलताहै ॥ और शिवरूपवृक्षविषे भवानीरूपलताहै ॥ और ब्रह्मारूपवृक्षतो सुवर्णकेसमानवर्णवालाहै ॥ और विष्णुरूपवृक्षतमालकीन्याईं श्यामवर्णवालाहै ॥ और शिवरूपवृक्ष क्षीरकेसमानशुक्ल वर्णवालाहै तेब्रह्मादिकतीनोंवृक्ष देखणेहारेपुरुषोंकेमनकूं तथानेत्रोंकूंआनंदकीप्राप्तिकरणेहारे हैं ॥ और ताब्रह्मारूपवृक्षकीलतारूपसर स्वतीतो श्वेतवर्णवालीहै ॥ औरविष्णुरूपवृक्षकीलतारूपलक्ष्मीपीतवर्णवालीहै ॥ औरशिवरूपवृक्षकीलतारूपभवानीश्यामवर्णवालीहै॥ और हेदेवतावो ॥ ब्रह्मा विष्णु शिव यहतीनवृक्ष तथा सरस्वती लक्ष्मी भवानी यहतीनलता निर्विशेषरूपकरिकैतो सर्ववर्णोंतैंरहितहैं॥ और सर्वविश्वरूपहोणेतैंसर्ववर्णवालेभी हैं॥ औरदंभयुक्तपुरुषोंकेप्रतितोफलतैंरहितहैं॥और शरणागतभक्तजनोंकेप्रति नानाप्रकारकेफलों सहितहैं ॥ और अनादिहोणेतैंतो बीजतैंरहितहैं॥और मंत्ररूपबीजवालेहोणेतैं सबीजहैं॥ तथा आदिअंततैंरहितहैं ॥ तथासर्वप्रपंचका बीजरूपहैं ॥ तथा नित्यहैं ॥ पुनः केसेहैंतेब्रह्मादिकवृक्ष ॥ आपणेआश्रितभक्तजनोंके संसारतापकीनिवृत्तकरणेहारे हैं ॥ तथा मन वांछितरूपोंकूंधारणकरणेहारे हैं ॥ तथा महान्पदार्थोंकी गिणतीविषे अत्यन्तमहान्हैं ॥ तथा सूक्ष्मपदार्थोंकीगिणतीविषे अत्यन्त सूक्ष्महैं ॥ हेदेवताओ ॥ यद्यपि यहअविद्यारूपमहाअटवी याजीवोंकूं महान्दुःखोंकीप्राप्तिकरेहै ॥ तथापि जिसब्रह्मवेत्तारूपभद्रहस्तीनैं याब्रह्मादिरूपवृक्षोंकेछायाकूंआश्रयणकऱ्या है ॥ ताब्रह्मवेत्तापुरुषकूं साअविद्यारूपमहाअटवी दुःखकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ हेदेवताओ ॥ यहलताओंसहितब्रह्मादिकवृक्ष आपणेचैतन्यरूपप्रकाशकरिकै प्रकाशमानहुए सर्वजगत्कूंप्रकाशकरे हैं ॥ यातैं तिनस्वयंप्रकाशरूप वृक्षोंकेशरणकूंप्राप्तहुआ यहपुरुषअज्ञानरूपअंधकारतैंरहितहोवै है॥ हेदेवताओ ॥ यहब्रह्मादिकतीनवृक्ष स्वभावतैंतो स्वप्रकाशरूपहैं॥ तथा आनंदस्वरूपहैं ॥ परंतु पुरुषोंकीभावनाकेअनुसार जंगमरूपहोवैहैं ॥ तथा स्थावररूपहोवै हैं ॥ और धर्म अर्थ काम मोक्ष याचारप्रकारकेपुरुषार्थोंकेप्राप्तिकीइच्छाकरिकै आराधनकरणेहारेजेभक्तजनहैं ॥ तिनभक्तजनोंकेप्रति ताचारप्रकारकेपुरुषार्थोंकीप्राप्ति

करणेहारेहैं ॥ हेदेवताओ॥ यात्रब्रह्मादिकतीनवृक्षोंकूंतथासरस्वतीआदिकतीनलताओंकूं जोपुरुषश्रद्धाभक्तिपूर्वकआश्रयणकरेहै॥ सोपुरुष कदाचित्भीदुःखकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष तिनब्रह्मादिकतीनवृक्षोंकूं कल्पवृक्षयानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ औरतिनसरस्वतीआदिकतीनलतावोंकूं कल्पलतायानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ यातैंहेदेवताओ ॥ यामायारूपमहाअटवीविषेहैउत्पत्तिजिसकी तथा ब्रह्मज्ञानरूपहैशुंडजिसकी ऐसाजो यहब्रह्मवेत्तारूपभद्रहस्तीहै॥ सोब्रह्मवेत्तारूपभद्रहस्ती यात्रेहरूपीदृढमूलवालीअविद्यारूपमहाअटवीकूं अवश्यककरिकैनाशकरे॥ औरसोब्रह्मवेत्तारूपभद्रहस्ती जबपर्यंतआपणेब्रह्मज्ञानरूपशुंडकूंबालभावकरिकै तथाकामक्रोधादिरूपसिंहकृत उपद्रवकरिकैदुर्बलदेखे॥ तबपर्यंतसोब्रह्मवेत्तारूपहस्ती यात्रब्रह्मादिकतीनवृक्षोंकूंआश्रयणकरिकैस्थितहोवे ॥ तिनब्रह्मादिकवृक्षोंका कदाचितभीपरित्यागनहींकरे॥ हेदेवताओ ॥यामायारूपमहाअटवीविषे यहब्रह्माविष्णुशिवरूपतीनवृक्ष यासर्वविश्वकूंव्याप्तकरिकैरहेहैं॥ और तिनोंकेस्वभावकाभी सर्वत्रअनुगतपणाप्रतीतहोवैहै ॥ याकारणतैंहीयहसर्वजगत् अधिदैव अध्यात्म अधिभूत यातीनरूपकरिकैउत्पन्न हुआहै ॥ तहां सर्वजगत्विषेजोब्रह्मापणाहै सोब्रह्माकास्वभावहै ॥ औरपालकत्वधर्मविष्णुकास्वभावहै॥ और संहारकर्तृत्वरुद्रकास्वभाव है ॥ हेदेवताओ जामाया ब्रह्मा विष्णु रुद्र यातीनोंकेसंबंधकरिकै तथा सत्व रज तम यातीनगुणोंकरिकैतीनप्रकारकीहोवैहै ॥तामायाके संबंधकरिकैयहआत्मादेवभी कर्त्ता पालक संहरता यातीनरूपोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा जाग्रतादिकतीनअवस्थारूपसंसारविषेअहंममअभिमानकूंकरेहै ॥ और सोआत्मादेवही समष्टिस्थूलउपाधिकेसंबंधतैं विराट्संज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और समष्टिसूक्ष्मउपाधिकेसंबंधतैंसोआत्मादेव हिरण्यगर्भसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और समष्टिकारणउपाधिकेसंबंधतैं सोआत्मादेव ईश्वरसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अब हिरण्यगर्भभगवान् विषे जीवरूपता तथाईश्वररूपता सिद्धकरणेवासतै ताहिरण्यगर्भकूं अध्यात्म अधिदैवरूपकरिकैवर्णनकरे हैं॥ हेदेवताओ॥ जिसहिरण्यगर्भभगवान्के विश्व तैजस प्राज्ञ अध्यात्मयहतीनभेदहैं ॥ सोहिरण्यगर्भभगवान्ही समष्टिजाग्रत्विषेस्थितहुआ अधिदैवरूपविराट् कह्याजावैहै॥ और व्यष्टिस्थूलशरीरोंकेअभिमानकरिकै सोहिरण्यगर्भभगवान् विश्वसंज्ञाकूंप्राप्तहोवै है ॥ और विविधप्रकारतैंविराजमान ॥ ३० ॥

होणेतैं विराट्संज्ञाकूंप्राप्तहोवै है॥ और समष्टिसूक्ष्मविषे अहंअभिमानकरताहुआ सोआत्मादेव हिरण्यगर्भसंज्ञाकूंप्राप्तहोवै है ॥ और तेजो प्रधानव्यष्टिसूक्ष्मशरीरकेअभिमानतैं सोआत्मादेव तैजससंज्ञाकूंप्राप्तहोवै है॥ और केवलअज्ञानविषे अहंअभिमानकरताहुआ सोआत्मादेव निर्विशेषसाक्षीरूपज्ञानवालाहोणेतैं प्राज्ञसंज्ञाकूंप्राप्तहोवै है ॥ तथा सर्वविश्वकाकारणहोणेतैं ईश्वरसंज्ञाकूंप्राप्तहोवै है ॥ हेदेवतावो ॥ जोआत्मादेव अधिदैवमर्यादाविषे हिरण्यगर्भ यानामकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ सोहिरण्यगर्भरूपआत्मादेव यासर्वजगत्विषे अहंअभिमानकूंप्राप्तहोवै है॥ और जोकारणउपाधिवाला आत्मादेव अधिदैवईश्वररूपकरिकै कथनकऱ्याहै ॥ सोईंहीआत्मादेव यासर्वजगत्कूं आपणी आपणी मर्यादाविषेस्थापनकरे है ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष ताआत्मादेवकूंनियंता अंतर्यामी यानामकरिकैकथनकरे हैं ॥ हेदेवतावो ॥ जैसे कारणउपाधिवालाईश्वर अध्यात्म अधिदैव अधिभूत यातीनरूपकरिकैस्थितहोवै है ॥ तैसे यहकार्यउपाधिवाला हिरण्यगर्भनामाजीवभी सर्वत्रव्यापकहोणेतैं अध्यात्म अधिदैव अधिभूत यातीनरूपकरिकैस्थितहोवै है ॥ और जैसे सोईश्वर स्वयंज्योतिआनंदस्वरूपहै ॥ तथा सर्वत्रव्यापकहै ॥ तैसे यहहिरण्यगर्भभी स्वयंज्योतिआनंदस्वरूपहै ॥ तथा सर्वत्रव्यापकहै॥ यातैं यहहिरण्यगर्भ ताईश्वररूपही है ॥ यद्यपि यहहिरण्यगर्भ क्रियाशक्तिरूपप्राणवालाहै ॥ तथा ज्ञानशक्तिरूपबुद्धिवालाहै ॥ ईश्वर ताप्राणबुद्धिरूपउपाधिवालाहैनहीं ॥ यातैं तिनदोनोंकीविलक्षणताभी संभवै है ॥ तथापि यहहिरण्यगर्भभगवान् स्वतःसिद्धज्ञानकरिकै आपणेस्वरूपकूं सर्वउपाधियोंतैंरहित निर्विशेषस्वरूपहीमानेहै॥ यातैं याहिरण्यगर्भविषे ईश्वररूपता संभवहोइसकैहै ॥ हेदेवतावो ॥ जोचेतन मायारूपउपाधिकेसंबंधतैं ईश्वरसंज्ञाकूंप्राप्तहोवै है॥ सोईश्वररूपचेतनही ज्ञानशक्तिरूप तथाक्रियाशक्तिरूप उपाधिवालाहुआ हिरण्यगर्भकह्याजावै है॥ जिसहिरण्यगर्भविषे मायाकरिकैकऱ्याहुआ अनेकप्रकारकाविक्षेप प्रतीतहोवै है ॥ याकारणतैंभी सोहिरण्यगर्भ ईश्वररूपही है॥ अब दोनोंउपाधियोंके अभेदद्वाराभी तिनदोनोंकाअभेद निरूपणकरे हैं ॥ हेदेवतावो ॥ सामायाही आत्माकूंआवरणकरतीहुई अविद्याकहीजावै है॥ जिसअविद्यारूपमायातैं ज्ञान क्रिया दोनोंकीउत्पत्तिहोवै है ॥ तिनदोनोंकीउत्पत्तिकरिकै यासर्वजगत्कीउत्पत्तिहोवै है ॥ काहेतैं पंचभूतोंसहित

प्राणबुद्धिआदिकजितनेकीपदार्थ विश्वशब्दकरिकेकथनकरेजावे हैं ॥ तेसर्वपदार्थ ज्ञानक्रियाशक्तिरूपही हैं ॥ ज्ञानकूं अथवा क्रियाकूं नहींउत्पन्नकरताहुआ कोईभीपदार्थ देखणेविषेआवतानहीं ॥ और सर्वपरिणामोंविषेअनुगतजोसामान्यहै ॥ तासामान्यकूं पूर्व अविद्या यानामकरिकेकथनकरिआये हैं॥सामायारूपअविद्याही ईश्वरकीउपाधिहै॥और तासामान्यरूपमायाकाकार्यरूप जोज्ञानाक्रियाहै॥ ताज्ञानक्रियाविषेअनुगतजोकार्यशक्तिहै ॥ साकार्यशक्ति हिरण्यगर्भकीउपाधिहै ॥ और यालोकविषे मृत्तिकादिककारणोंका तथाघटादिक कार्योंका अभेदहीदेखणेविषेआवे है ॥ यातैं तामायारूपईश्वरकेउपाधिका तथाकार्यशक्तिरूपहिरण्यगर्भकेउपाधिका अभेदही सिद्धहोवे है ॥ तिनउपाधियोंकेअभेदहुए ताईश्वरहिरण्यगर्भकाभी अभेदहीसिद्धहोवे है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ यापूर्वउक्तरीतिसैं हिरण्यगर्भकी परमात्माकेसाथ एकतासिद्धहुएभी व्यष्टिजीवोंकी तापरमात्माकेसाथ एकता किसप्रकारासिद्धहोवेगी॥समाधान ॥हेदेवतावो॥ताहिरण्यगर्भकाउपाधिरूप जोसमष्टिलिंगशरीरहै ॥ तालिंगशरीरकेतुल्यहै रूपजिसका तथा नानासंस्कारोंकाआश्रयहोणेतैं विचित्रहैरूपजिसका तथामायातैं है उत्पत्तिजिसकी ऐसाजो अनेकप्रकारकालिंगशरीरहै ॥ सोलिंगशरीर याव्यष्टिजीवोंका उपाधिरूपहै॥और जैसे वटवृक्षोंविषेस्थित तथावटबीजोंविषेस्थितजो जनकतारूपसामान्यहै ॥ सोजनकतारूपसामान्य एकएकव्यक्तिविषे परिपूर्णतारूपकरिकैवर्तै है ॥ तैसे यहअविद्यारूपमायाभी हिरण्यगर्भके समष्टिसूक्ष्मउपाधिविषे तथाजीवोंके ज्ञानक्रियाशक्तिरूपव्यष्टिउपाधिविषे परिपूर्णतारूपकरिकै वर्तै है॥जैसे मृत्तिका आपणे घटशरावादिकसर्वकार्योंविषे अनुगतहोइकैरहे है॥ तैसे यहईश्वरकीउपाधिरूपमायाभी अधिदैवअधिभूतरूपबाह्यप्रपंचविषे तथाअध्यात्मरूपअंतरप्रपंचविषे अनुगतहोइकैरहे है ॥ याकहणेतैंयहअर्थसिद्धभया ॥ व्यष्टिसमष्टिरूपसर्वउपाधियोंका सर्वशक्तिसंपन्नमायाकेसाथतादात्म्यसंबंधहै ॥ यातैं तेसर्वउपाधियां सर्वरूपहैं ॥ यातैं जैसे उपाधियोंकेअभेदद्वारा ताहिरण्यगर्भका परमात्माकेसाथअभेदहै ॥ तैसे तिनव्यष्टिजीवोंकाभी तापरमात्माकेसाथ अभेदही है ॥ तात्पर्ययह ॥ अविद्यारूपउपाधिविषे तथाउपहित चेतनआत्माविषे जभी भेदसिद्धनहींभया ॥ तभी व्यष्टिजीवोंविषे तथा ताजीवकीकार्यरूपउपाधिविषे सोभेद किसानिमित्तकरिकैसिद्ध

होवेगा॥ किंतु किसीभीनिमित्तकरिकै सोभेद संभवैनहीं॥शंका॥हेभगवन्॥ जोव्यष्टिसमष्टिका अभेदहीहोवै॥तो व्यष्टिविषे परिच्छिन्नतैं किसवासतैंप्रतीतहोवै है ॥ समाधान ॥ हेदेवतावो ॥ जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति यातीनअवस्थावोंकूंप्राप्तहोणेहारेजे जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज यहचारिप्रकारकेजीवहैं॥ तेसर्वजीव वास्तवतैं हिरण्यगर्भरूपईश्वरकेतुल्यरूपवालेहुए यद्यपि महान्पदार्थोंतैंभी अत्यंतमहान्हैं ॥ तथापि परिच्छिन्नबुद्धिआदिकोंकेयोगतैं तेजीव परिच्छिन्नहुएकीन्याईं प्रतीतहोवैहैं॥ जैसे वास्तवतैंपरिपूर्णहुआभीआकाश घटमठादिक उपाधियोंकेसंबंधतैं घटाकाश मठाकाश इत्यादिकपरिच्छिन्नरूपकरिकैप्रतीतहोवै है ॥ हेदेवतावो ॥ जोसत्चित्आनंदस्वरूपआत्मा हमनैं पूर्व तुमारेप्रति कथनकऱ्याथा ॥ सोईही आत्मादेव हिरण्यगर्भरूपहोइकैस्थूलविराट्कूंउत्पन्नकरे है ॥ तथा अग्निआदिकदेवतावों सहित वाकादिकइंद्रियोंकूंउत्पन्नकरे है ॥ तथा आकाशादिकपंचभूतोंकूंउत्पन्नकरे है ॥ तथाअन्नमयादिकपंचकोशोंकूंउत्पन्नकरे है ॥ इसप्रकार सर्वजगत्कूंउत्पन्नकरिकै सोआत्मादेवही जीवरूपकरिकै याजगत्विषेप्रवेशकरताभयाहै ॥ ताप्रवेशतैंअनंतर तिनदेहादिकोंविषे अहंममअभिधानरूपकंचुककरिकै युक्तहुआ सोस्वयंज्योतिआनंदस्वरूपआत्मा वास्तवतैंसर्वज्ञहुआभी मूढकीन्याईं स्थितहोताभया ॥ तिसतैंअनंतर स्थूलादिकतीनशरीरोंविषे वर्त्तमानजे नानाप्रकारकेव्यवहारहैं ॥ तिनव्यवहारोंकूं साक्षीरूपकरिकैदेखताहुआभी तिनव्यवहारोंकूं आपणेआत्माविषेमाने है ॥हेदेवतावो ॥ वास्तवतैं जीवईश्वरादिकभेदतैंरहित जोआत्मादेवहै॥ताआत्मादेवविषे जोयहजीवईश्वरादिकभेद प्रतीतहोवै है॥ताभेदविषे यहमायाहीकारणहै ॥ कैसीहैसामाया॥ चेतनकेअधीनहै॥तथा अनादिहै॥तथा अधिष्ठानकीसत्तातैंभिन्नसत्तातैंरहितहै॥तथा वास्तवतैं तुच्छरूपहै।ऐसीमिथ्याभूतमायाकरिकै प्रतीतभयाजोजीवईश्वरादिकभेदहै॥ सोभेदप्रपंचभी मिथ्याही है ॥ अब प्रपंचकेमिथ्यात्ववर्णनकरिकै आत्माविषेसिद्धभयेजे अद्वितीयत्वादिकलक्षण तिनोंकावर्णनकरे हैं॥ हेदेवतावो ॥ सोभेद यातुच्छरूपमायाकाकार्य है॥यातैं याआत्मादेवविषे सोकिंचित्मात्रभीभेदहैनहीं॥याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष याआत्मादेवकूं अद्वितीय यानामकरिकैकथनकरे हैं॥हेदेवतावो ॥जैसे स्वप्नअवस्थाविषे स्वप्नद्रष्टापुरुषनैं देख्याजो जीवईश्वरादिरूपअनेकप्रकारका

भेदहे ॥ ताकल्पितभेदकरिकै तासत्यप्रद्रष्टापुरुषका किंचित्मात्रभीभेदहोवैनहीं ॥ तैसे मायाकल्पितभेदकरिकै ताअद्वितीयआत्मा विषे किंचित्मात्रभी द्वैतभावकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ हेदेवतावो ॥ याआत्माके जेसत्चित्आनंदस्वरूपहैं ॥तिनसत्यादिकस्वरूपोंकातो पर स्पर भेदसंभवैनहीं ॥ तथा पूर्वउक्तरीतिसैं कल्पितप्रपंचकाभी ताआत्माविषे भेदसंभवैनहीं ॥ याकारणतैं सोआत्मादेव अद्वितीयरूपहे ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मा अद्वितीयरूपहे ॥ याकारणतैं यहआत्मादेव सत्यरूपहे ॥ और हेदेवतावो ॥ किसीभीवादीनैं सत्ता कानाश अंगीकारकऱ्यानहीं ॥ किंतु सर्ववादी तासत्ताकूं नाशतैंरहितमाने हैं ॥ और जेनास्तिकवादी सत्पदार्थकूं क्षणिकमाने हैं ॥ तेनास्तिकवादीभी तासत्ताकेआश्रयरूपपदार्थोंकूंहीं क्षणिकमाने हैं ॥ तिनसर्वपदार्थोंविषे अनुगतसत्ताकूं क्षणिकमानैंनहीं ॥ यातैं नाशकेकारणोंतैंरहित तासत्तारूपआत्मादेवकूं वेदवेत्तापुरुष नित्य यानामकरिकैकथनकरेहैं॥और हेदेवतावो ॥यालोकविषे जोजोपदार्थ जडतारूपकरिकै अशुद्धहोवैहे ॥ सोसोपदार्थही नाशकूंप्राप्तहोवैहे॥जैसे घटादिकजडपदार्थ अशुद्धहोणेतैं नाशकूंप्राप्तहोवै है ॥ और यहआत्मादेवता तिनजडघटादिकोंतैंविलक्षणचेतनरूपहे॥यातैं यहआत्मादेव नाशकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष याआत्मादेवकूं शुद्ध यानामकरिकैकथनकरे हैं ॥ और हेदेवतावो यहआनंदस्वरूपआत्मा आपणेस्वयंप्रकाशरूपकरिकै सर्वदा आपणे स्वरूपकूंअनुभवकरे हे ॥ यातैं यहआत्मादेव जडअशुद्धरूप जगत्तैं विलक्षण है ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष याआत्मादेवकूं बुद्ध यानामकरिकैकथनकरे हैं॥और हेदेवतावो॥यालोकविषे जोजोपदार्थ मिथ्यारूपहोवैहे॥सोसोपदार्थ आनंदतैंभिन्नहीहोवैहे॥जैसे मिथ्यारूपशुक्तिरजत आनंदतेभिन्नहे॥और यहआत्मादेवतो स्वयंज्योतिरूपहोणेतैं तिनमिथ्यापदार्थोंतैंविलक्षण आनंदस्वरूपहे॥याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष याआत्मादेवकूं सत्य यानामकरिकैकथनकरेहैं॥और हेदेवतावो॥यालोकविषे जोजोपदार्थ सत्यहोवै है॥सोसत्यपदार्थ आपणेविषेकल्पितमिथ्यापदार्थोंकरिकै बंधायमानहोवैनहीं॥जैसे एकहीरज्जुविषे दोषयुक्तअनेकद्रष्टापुरुषोंनैं कल्पनाकरेजेअनेकसर्प हैं ॥ तिन अनेकमिथ्यासर्पोंकरिकै सासत्यरज्जु बंधायमानहोवैनहीं॥तैसे सोसत्यआत्माभी आपणेविषेकल्पितमिथ्याजगत्करिकै बंधायमानहोवै

॥ ३२ ॥

नहीं ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष तासत्यआत्माकूं मुक्त यानामकरिकैकथनकरे हैं ॥ और हेदेवतावो॥ उत्पन्नहुएबंधका नोकारणहोवैहे ताकूं अंजनकहे हैं ॥ जैसे सर्पकेबंधनकाकारणहोणेतैं रज्जु अंजनरूपहे॥ और याआत्मादेवविषे कदाचित्भी बंधहुआनहीं॥यातैं याआत्मादेवविषे ताबंधकेनिवृत्तकरणेहारेसाधनोंका किंचित्मात्रभीउपयोगहैनहीं ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष यानित्यमुक्तआत्मादेवकूं निरंजन यानामकरिकैकथनकरे हैं ॥ और हेदेवतावो ॥ यालोकविषे जोजोपदार्थ कार्यरूपहोवै हे ॥ सोसोपदार्थ परिच्छिन्नहोवैहे॥जैसे घटादिकपदार्थ कार्यरूपहोणे तैं परिच्छिन्नहैं ॥ और यहआत्मादेव कार्यरूपहैनहीं ॥ यातैं याआत्मादेवविषे परिच्छिन्नरूपताभी संभवै नहीं ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष याआत्मादेवकूं विभु यानामकरिकैकथनकरे हैं ॥और हेदेवतावो॥ यालोकविषे जोजोपदार्थ अधिष्ठान होवै है ॥ सोसोपदार्थ आरोपितपदार्थोंतैं उत्कृष्टहीहो वै है ॥ जैसे रज्जुशुक्तिआदिकअधिष्ठानआरोपितसर्परजतादिकोंतैं उत्कृष्टहैं ॥ और यहआनंदस्वरूपअद्वितीयआत्माभी यासर्वजगत्काअधिष्ठानरूपहे॥यातैं यहआत्मादेव ताआरोपितजगत्तैं उत्कृष्टहे॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष याआत्मादेवकूंपर यानामकरिकैकथनकरे है॥और हेदेवतावो जैसे बाह्यघटादिकपदार्थोंकीअपेक्षाकरिकै नेत्र अंतर हैं॥तैसे बुद्धिआदिकदृश्यपदार्थोंकीअपेक्षाकरिकै यहद्रष्टाआत्मा सर्व तैंअंतरहे॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष याआत्मादेवकूं प्रत्यक् यानामकरिकै कथनकरे है ॥और हेदेवतावो ॥जैसे नीलपीतादिकअनेकवर्णोंवालीगोवोंकाक्षीर मधुरतारूपकरिकै एकरसहोवै है॥तैसेयहआत्मादेवभी सत्चित्आनंदस्वरूपकरिकै सर्वत्र परिपूर्ण है॥तथा तेसत्चित्आनंदरूपभी परस्परभेदतैंरहितहैं॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष याआत्मादेवकूं एकरसयानामकरिकैकथनकरेहे ॥ हेदेवतावो ॥ यहआनंदस्वरूपआत्मादेव स्फुरणरूपहे॥ यातैं पूर्वउक्त अद्वितीय यानामतैंआदि लेके एकरस यानामपर्यंत सर्वनामोंकरिकै सोआत्मादेवही जान्याजावै है ॥ तथा दृश्यपदार्थोंकूंविषयकरणेहारे जेस्फुरणरूपबोधहे ॥ तिनबोधोंकरिकैभी सोआत्मादेवही जान्याजावै है॥ तथा प्रत्यक्षादिकसर्वप्रमाणोंकरिकैभी सोआत्मादेवही जान्याजावै है॥ अब याही अर्थकूं स्पष्टकरिकै निरूपणकरे हैं ॥ हेदेवतावो ॥ प्रमाज्ञानका नोकारणहोवै है ॥ तिसीकूंहीं सर्ववादीप्रमाणकहे हैं ॥ और

बहुतशास्त्रवालेतो ताप्रमाज्ञानकूं स्फुरणरूपमाने है ॥ और कोईशास्त्रवालतो तास्फुरणकाअभिव्यंजक जाअंतःकरणकीवृत्तिहै ॥ तावृत्तिकूंही प्रमाज्ञानमानेहै॥तादोनोंप्रकारसे तिनप्रमाणोंका स्फुरणकेसाथसंबंध अवश्यकरिकेहोवेहै।और सर्वकालविषेवर्तमानजोस्फुरणहै सोस्फुरणही सत्तारूपहै॥यहवार्त्ता पूर्वकथनकरिआयेहैं।यातैं सर्वबोधोंविषे सत्तारूपकरिकेभासमान जोस्फुरणहै।सोस्फुरणही आवरणकी निवृत्तिकरणेहारीवृत्तियोंकाविषयहै ॥ काहेतैं ॥सत्तामात्रंसर्वं॥याश्रुतिनैं तासत्तारूपस्फुरणतैंभिन्नसर्ववस्तुवोंकाअभाव कथनकऱ्याहै ॥ यातैं तासत्तारूपस्फुरणतेभिन्न घटपटादिकपदार्थोंविषे किसीभीज्ञानकूं नियमकरिकेप्रमाणरूपता अथवा अप्रमाणरूपता कहीजावे नहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ अयंघटः॥ याप्रकारकाजोघटविषयकज्ञानहै।सोज्ञान सर्वघटव्यक्तियोंकूंतो विषयकरेनहीं॥किंतु किसीकघटविशेषकूंनहींविषयकरताहुआ किसीकघटविशेषकूंविषयकरेहै ॥ यातैं ताघटज्ञानविषे अर्थबोधकत्व तथाअर्थअबोधकत्व यहदोनोंधर्मरहे हैं ॥ तहां अर्थबोधकत्वधर्मतो प्रमाणरूपताका साधकहै।और अर्थअबोधकत्वधर्म अप्रमाणरूपताका साधकहै।तेदोनोंधर्म परस्परविरोधी हैं यातैं तिनज्ञानोंविषे नियमकरिकै प्रमाणरूपताका अथवा अप्रमाणरूपताका निश्चयहोणेदेवैनहीं ॥ यातैं जैसे मीमांसकोंकेमतविषे परस्परव्यभिचारी घटादिकव्यक्तियां घटादिकशब्दोंकावाच्यअर्थ होवैनहीं ॥ किंतु तिनघटादिकसर्वव्यक्तियोंविषेअनुगत जेघटत्वादिक जातियहैं ॥ तेघटत्वादिकजातियांही तिनघटादिकपदोंकावाच्यार्थ हैं ॥ तैसे सिद्धांतविषे श्रीपरस्परव्यभिचारीघटादिकव्यक्तियां तिनज्ञानोंकाविषयनहीं हैं ॥ किंतु सर्वत्रअनुगतसत्तारूपस्फुरणहीतिनज्ञानोंकाविषयहै ॥ किंवा ॥ जेप्रत्यक्षादिकप्रमाण जिसअर्थविषयक निश्चयरूपज्ञानकूं उत्पन्नकरे हैं॥ तिसीअर्थविषे तिनप्रत्यक्षादिकोंकीप्रमाणरूपता सर्ववादियोंनैं अंगीकारकरीहै ॥ और घटोअस्ति पटोअस्ति इत्यादिकसर्वज्ञानोंविषे घटपटादिउपलक्षितसत्ताही प्रतीतहोवै है ॥ यातैं सर्वलोकोंके प्रमारूपकरिकै तथाअप्रमारूपकरिकै प्रसिद्ध जितनैंकीज्ञानहैं ॥ तेसर्वज्ञान तासत्तामात्रकूंहीविषयकरेहैं ॥ यातैं तिनसर्वबोधोंकूं तास्फुरणरूपसत्ताविषेही प्रमाणरूपताहै यहवार्त्ता वार्तिककार सुरेश्वराचार्यनेभीकथनकरी है तहांश्लोक॥ ततोऽनुभवएवैको विषयोऽज्ञातलक्षणः॥ अक्षादीनांस्वविषये ॥ ३३ ॥

यत्रतेषांप्रमाणता ॥ अर्थयह ॥स्फुरणरूपसत्ताही अज्ञानकाआश्रयविषयहोणे तैं प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकाविषयहै ॥ जिसवासते तास्फुरणरूपसत्ताकेबोधनकरिकैही तिनप्रत्यक्षादिकोंकूं प्रणताकीप्राप्तिहोवै है॥ अनात्मपदार्थोंकेबोधनकरिकै तिनप्रत्यक्षादिकोंकूंप्रमाणताप्राप्त होवैनहीं ॥ १ ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ घटोअस्ति याज्ञानविषे जैसे सत्ताप्रतीतहोवै है॥ तैसे ताघटकेअसत्ताकाअभावकी प्रतीतहोवै है॥ यातैं सोअसत्ताकाअभावही सर्वप्राणकाविषय किसवासतैंनहींहोवै ॥ समाधान ॥ हे देवतावो ॥ जेअज्ञानविषे असत्ताकेनिवृत्तिकूंबोधन करेहैं ॥ तेज्ञानभी अंतविषेजाइकै तासत्वस्तुविषेहींसंबंधकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ तासत्वस्तुतैं विना दूसराकोईपदार्थ तिनज्ञानोंकाआश्रयहोइ सकैनहीं किंतु सोसत्वस्तुही तिनज्ञानोंकाआश्रय है ॥ तात्पर्ययह ॥ सत्अधिष्ठानतैं विना भ्रमहोवैनहीं ॥ और भ्रमकरिकैप्राप्तपदार्थ काही निषेधहोवै है॥ यहशास्त्रवेत्तापुरुषोंका सिद्धांत है ॥ तासिद्धांतकूंअंगीकारकरिकै किसीसत्अधिष्ठानविषेताअसत्ताका आरोपणकरिकैनिषेधकरणाहोवैगा ॥ यातैं ताअसत्ताकीनिवृत्तितैंअनंतर तासत्अधिष्ठानकीस्फूर्तिकूं कौन निवारणकरैगा॥किंतु ताअसत्ताकीनिवृत्तितैंअनंतर तासत्अधिष्ठानकीस्फूर्तिं अवश्यकरिकैहोवैगी ॥ अब सर्वज्ञानोंका सत्वस्तुविषेपरिअवसान स्पष्टकरणेवासते सर्वत्र आधारकीअपेक्षाका वर्णनकरे हैं॥हेदेवतावो॥असत्ताकूंप्रतिपादनकरणेहारा जो वंध्यापुत्रोनास्ति यहवचनहै॥ तावचनविषेही प्रथम यहविचार कऱ्याचाहिये।वंध्यापुत्रोनास्तियावचनविषेआधारकावाचकजोकुत्र याप्रकारकाशब्दहैताकुत्रशब्दकीअपेक्षाहै।अथवानहीं है तहांदूसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरे॥सोसंभवतानहीं॥काहेतैं ताक्वचनविषे आधारवाचकपदकीअपेक्षा हमसर्वलोकोंकूं अत्यंतस्पष्टप्रतीतहोवैहै॥तासर्व अनुभवसिद्धअर्थकेनहीं अंगीकारकरणेविषे तावादीका केवलहठमात्रही है ॥ और वंध्यापुत्रोनास्ति यावचनविषे आधारकेवाचककुत्रशब्दकीअपेक्षाहै यहग्रंथमपक्ष जोवादीअंगीकारकरे तो परिशेषतैं तासत्ताकीहीसिद्धिहोवै है।काहेतैं॥वंध्यापुत्रोनास्ति यावचनकूंअपेक्षितजो आधारकावाचक कुत्रशब्दहै ॥ ताकुत्रशब्दका लोकविषेअप्रसिद्धहोणेतैं जोअद्भुतअर्थ प्रतीतहोवै है॥सोअर्थ परिशेषतैं सत्तारूपही है ॥ केसीहैसासत्ता ॥ सर्वपदार्थोंकूं आपणेविषे आश्रयदेणेहारी है ॥ तात्पर्ययह ॥ भूतलेघटोअस्ति इत्यादिकस्थलोंविषे जहां लोकप्रसिद्ध

भूतलादिक घटादिकोंकाआधाररूपकरिकेप्रतीतहोवेहे ॥ तहांतो तिनभूतलादिकोंकाआधाररूपकरिके तासत्ताकीप्रतीतहोवे है॥ओर जहां वंध्यापुत्रोनास्ति इत्यादिकस्थलोंविषे कोईलोकप्रसिद्धआधारसंभवेनहीं ॥ तहांतो साक्षात् सत्ताकीहीआधाररूपकरिकेप्रतीतिहो वेहे॥यातें यहअर्थसिद्धभया ॥ घटोअस्ति पटोअस्ति इसतैंआदिलेकैजितनैंकीज्ञानहैं॥ तेसर्वज्ञान सत्वस्तुविषेस्थितिकूंप्राप्तहुएही प्रमा णरूपहोवे हैं ॥ और सासत्वस्तु आत्मास्वरूपही है॥यहवार्त्ता पूर्वकथनकरिआये हैं ॥ यातें तेसर्वज्ञान आत्माविषेही प्रमाणरूपहैं॥ हेदे वतावो ॥ यादेहतैंआदिलेके जितनाकीभूतभौतिकरूप द्वैतप्रपंच है॥सोद्वैतप्रपंच जिससत्तारूपअधिष्ठानविषे कल्पितहै॥ सोसत्तारूपअ धिष्ठानहीं परमार्थतैं सत्यरूपहै ॥ और सोसत्तारूपअधिष्ठान सर्वभेदतैंरहितहोणेतैं ब्रह्मआत्मारूपहै॥ तथा सत्चित्आनंदस्वरूप है ॥ यहवार्त्ता हम पूर्व तुमारेप्रति कथनकरिआये हैं ॥ हेदेवतावो॥ जोपुरुष तासत्ता सामान्यदृष्टिकूंअंगीकारकरिके स्थितहोवे है॥ताविद्वान् पुरुषकूं याद्वैतप्रपंचकाअनुभवहोवैनहीं ॥ यातें सोसर्वकाअधिष्ठानरूप सत्ब्रह्म अद्वितीयरूपहीसिद्धहोवे है ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ याप्रत्यक्षसिद्धद्वैतप्रपंचकेविरोधहोणेतैं ताअद्वैतकीसिद्धि किसप्रकारहोवेगी।समाधान।हेदेवतावो।एकदेशविषे तथाएककालविषे वर्त्तमान पदार्थोंकाही परस्परविरोधहोवेहे॥भिन्नदेशविषे तथाभिन्नकालविषे वर्त्तमानपदार्थोंका परस्पर विरोधसंभवैनहीं॥ सोइहांप्रसंगविषे अद्वैत कीप्रतीति तथाद्वैतकीप्रतीति यहदोनों एकदेशविषे तथाएककालविषेवर्त्तैनहीं ॥ किंतु तेदोनों भिन्नभिन्नदेशकालविषे वर्त्तें हैं ॥ यातें तिनदोनोंका परस्परविरोधसंभवैनहीं ॥ हेदेवतावो ॥ जिनअज्ञानीपुरुषोंकूं अद्वैतकाअनुभवनहीं है ॥ तिनअज्ञानीपुरुषोंनैं देख्याजो द्वैतप्रपंचहै ॥ सोद्वैतप्रपंच ताअद्वितीयरूपअधिकरणविषे कदाचित्भी संबंधकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और जिनविद्वान्पुरुषोंकूं ताअद्वितीयव स्तुकाअनुभवहै ॥ तिनविद्वान्पुरुषोंकेमतविषेभी ताअद्वितीयवस्तुरूपअधिकरणविषे यहद्वैतप्रपंच कदाचित्भीसंबंधकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ यातें भिन्नदेशकालवृत्तिहोणेतैं ताअद्वैतकेसाथ याद्वैतकाविरोधसंभवैनहीं ॥ यातें पूर्वकथनकऱ्याजो अद्वैतविषेद्वैतप्रपंचकाअभाव सोसं भवहोइसकै हे ॥ हेदेवतावो ॥ जो कदाचित् किसीअज्ञानीपुरुषोंकूं याद्वैतप्रपंचकाअनुभवहोवे हे ॥ तौ निःशंकहोवे है॥ताभ्रांतपुरुषोंके

॥ ३४ ॥

अनुभवसिद्धद्वैतप्रपंचकरिकै हमविद्वान्पुरुषोंकेअनुभवसिद्धअद्वैतकी किंचित्मात्रभीहानिहोवैनहीं ॥ काहेतैं सोमिथ्याद्वैत अधिष्ठानव स्तुकूंस्पर्शकरतानहीं ॥ तथा सोद्वैतप्रपंच अविचारकरिकेही प्रतीतहोवेहे ॥ विचारकूंसहारिसकैनहीं ॥ यातेंसोद्वैतप्रपंचमायामय है ॥ मायामयहोणेतैंहीं सोद्वैतप्रपंच अद्वितीयअधिष्ठानविषेकल्पितहै ॥ ताकल्पितद्वैतकरिकै वास्तवअद्वैतकीहानिहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ ताकल्पितद्वैतप्रपंचकरिकैतो अद्वैतकीहानि मतहोवे तथापि ताकल्पितद्वैतकेअभावकरिके ताअद्वैतकीहानिहोवैगी ॥ समाधान॥हेदेवतावो ॥जैसे कल्पितद्वैतप्रपंच ताअद्वितीयकीहानिकरैनहीं॥तैसेताकल्पितद्वैतकाअभावभीताअद्वितीयकीहानिकरैनहीं॥ काहेतैं वेदांतसिद्धांतविषे कल्पितवस्तुकाअभाव अधिष्ठानस्वरूपहीहोवे हे अधिष्ठानतैं भिन्नहोवैनहीं ॥ जैसे कल्पितसर्पकाअभाव रज्जुरूपअधिष्ठानस्वरूपहीहोवे है॥तैसे याआकाशादिककल्पितप्रपंचकाअभावभी अधिष्ठानस्वरूपहीहोवे है॥ओर याकल्पितप्रपंचका तथाताप्रपंचकेअभावका अद्वितीयआत्माहीं अधिष्ठानहै।यातें सोकल्पितद्वैतप्रपंचकाअभाव आपणेस्वरूपभूतअद्वितीयआत्माकीहानि करिसकैनहीं ॥ हेदेवतावो ॥ याशुद्धआत्मादेवविषे यहद्वैतप्रपंच पूर्वकभीहुआनहीं॥ओर आगेकभीहोवैगानहीं ॥ओर अभीभीहैनहीं ॥ याकारणतें वेदवेत्तापुरुष याआत्मादेवकूं अद्वैत यानामकरिकैकथनकरे हैं॥हेदेवतावो॥जैसे आकाशविषे गंधर्वनगर कल्पितहोवेहे ॥तैसे याआनंदस्वरूपआत्माविषेयहद्वैतप्रपंच कल्पितहै॥यातैंताकल्पितद्वैतकरिकैआत्माकेअद्वितीयरूपताकीहानिहोवैनहीं॥शंका॥हेभगवन् याकल्पितप्रपंचकरिके ताआत्मादेवविषे द्वैतमतहोवे ॥तथापि यासर्वप्रपंचकाकारणरूपजोमायाहै तामायाकरिके ताआत्मादेवविषे द्वैत भावकीप्राप्तिहोवेगी ॥ समाधान ॥ हेदेवतावो ॥ यहआनंदस्वरूपआत्मा सर्व द्वैततैंरहितहै॥तथा बुद्धिआदिकसर्वजगत्कासाक्षीरूपहै॥ तथा जन्ममरणादिकसर्वविकारों तैंरहितहै॥तथा सूर्यभगवान्कीन्याईं प्रकाशमानहै॥ऐसेआत्मादेवविषे सूर्यविषेअंधकारकीन्याईं यहतम रूपअविद्या संभवतीनहीं॥किंतु तास्वयंज्योतिरूपआत्माकेप्रभावतैं यहअविद्यारूपमाया आपहीनिवृत्तहोइजावे है॥यातें तास्वयंज्योति आत्माविषे जोमायाकीस्थितिहोवेहै॥सास्थितिमायादृष्टिकरिकैही है॥ वास्तवदृष्टिकरिकैतामायाकीस्थितिहोवैनहीं।हेदेवतावो।जैसेप्रका

शमानसूर्यविषे घूकादिकोंनैं कल्पनाकऱ्याजोअंधकाररूपतमहै॥सोतम ताघूकादिकल्पिततमकेबलतैंहीं सिद्धहोवै है॥सूर्यतेजकारिकै ता तमकी सिद्धिहीवैनहीं ॥ जिसवासतै तेजका तथातमका परस्पर अत्यन्तविरोधहै ॥तैसे अद्वितीयस्वयंज्योतिआत्माविषे अज्ञानीपुरुषोंनैं कल्पनाकरीजाअविद्यारूपमायाहै॥साअविद्यारूपमायाभीतामायाकारिकैही सिद्धहोवै है ॥ किसीप्रमाणकारिकै तामायाकीसिद्धिहोवैनहीं हेदेवतावो॥वास्तवतैं कार्यसहितमायातैंरहित जोआनंदस्वरूपआत्माहै ॥ ताआत्मादेवविषे जैसे यहमायाकाकार्यरूपप्रपंच कल्पितहै ॥ तैसे साजडमायाभी कल्पितहै॥तापरमात्मादेवतैं यहकार्यसहितमायाभिन्नसत्तावालीनहीं है॥इतनैंकरिकैसर्वद्वैतप्रपंचविषे कल्पितरूपता निरूपणकरी॥अबयोऽयंचोरःसस्थाणुरेव॥याप्रकारबाधसमानाधिकरण्यकारिकै यासर्वजगत्विषेपरमेश्वरदृष्टिकानिरूपणकरे हैं॥हेदेवतावो पूर्वहमनैं तुमारेप्रति जोस्वयंज्योतिपरमात्मादेव सत्चित्आनंदस्वरूपकारिकैकथनकऱ्याहै ॥ सोपरमात्मादेवही तामायासहितयासर्व विश्वरूपहै॥तथा ब्रह्मा विष्णु शिव इंद्र इसतैआदिलैकै जितनाकीयहस्थावरजंगमरूपजगत्है॥तासर्वजगत्रूपभी सोपरमात्मादेवही है॥ हेदेवतावो ॥ ऐसा सर्वात्मारूपपरमात्मादेव यादेहधारीजीवोंकूं यद्यपि नित्यहीप्राप्तहै ॥ तथापि मायाकेबलतैं याजीवोंकूं सोपरमात्मादेव अप्राप्तहुएकीन्याईं स्थितहै कैसाहैसोपरमात्मादेव ॥ सर्वजगत्काअधिष्ठानरूपहै ॥ तथा तीनकालोंविषेसत्यरूपहै ॥ तथा नाशतैंरहित है ॥ तथा स्वप्रकाशसुखस्वरूपहुआभी दुःखरूपदेहादिकोंकेअध्यासतै अन्यथाहोइकैप्रतीतहोवै है॥अब सर्वत्रआत्मदृष्टिविषे ताआत्मादेव केप्राप्तिकाउपायरूपता बोधनकरणेवासतैं याप्रपंचविषेभी सत्यरूपतासिद्धकरैहैं ॥ हेदेवतावो ॥ पूर्वहमनैं तुमारेप्रति जोयहमायासहित सर्वप्रपंच कल्पितरूपकारिकैवर्णनकऱ्याहै॥सोयहप्रपंचभी वंध्यापुत्रकीन्याईं अत्यन्तअसत्रूपनहीं है ॥ काहेतैं याप्रपंचकूं जोकदाचित् वंध्यापुत्रकीन्याईं अत्यन्तअसत्मानिये तो ताप्रपंचका सोअसत्तारूपधर्मभी किसप्रकारहोवैगा ॥ जिसवासतै सोअसत्तारूपधर्मभी किसीधर्मीकेआश्रितहीरहैहै ॥ धर्मी तैंविना धर्मकीस्थितिसंभवैनहीं ॥ शंका हेभगवन् ॥ इसप्रकार जगत्की सत्यरूपताकेअंगीकाराकै येहुएभी वंध्यापुत्रनरशृंगादिकअसत्यपदार्थोंविषे साआत्मदृष्टिकरणी संभवैनहीं ॥ यातैं सर्वत्रआत्मदृष्टिकरणी अत्यन्तदुर्घट है ॥

समाधान ॥ हेदेवतावो ॥ असत्पदकाअर्थरूपकारिकैप्रसिद्धजेवस्तुहैं ॥ तिनोंविषेभीशास्त्रवेत्तापुरुषोंनैं सत्रूपताहीकथनकरीहै ॥ जैसे अनश्वरापदविषेस्थितजो अन्यहपदहै ॥ सोअन्पदअश्वकेअभावकूंकथनकरैनहीं ॥ किंतुजोभावरूपवस्तु अश्वतैंभिन्नहोवै है ॥ तथा ताअश्वकेसदृशहोवैहै ॥ ताभावरूपवस्तुकूंही सोअनश्वपदकथनकरैहै ॥ तैसेनानाप्रकारकेकार्यकरणेविषेसमर्थजे प्रसिद्धसत्पदार्थ हैं ॥ तिनसत्पदार्थोंतैं कार्यकरणेविषेअसमर्थतारूपकारिकैविलक्षण जेसूक्ष्मपदार्थहैं ॥ तिनसूक्ष्मपदार्थोंकूंहीवेदवेत्तापुरुष असत् यानामकारि कैकथनकरैहैं ॥ और आत्माकीसत्ताकूंअंगीकारकरिकैसत्यरूपतातो तिनसत्असत्रूपसर्वपदार्थोंविषेसमानहीहै ॥ यहवार्त्ता याआत्म पुराणकेप्रथमअध्यायायविषे कथनकरिआयेहै ॥ यातैंआत्माकीसत्ताकूंअंगीकारकरिकै यासर्वजगत्कूंसत्रूपमानणेविषे किंचित्भीहा निहोवैनहीं ॥ हेदेवतावो ॥ यहकार्यप्रपंचसहितमाया ताआनंदस्वरूपआत्माविषेकल्पितहै ॥ यातैंयहकार्यप्रपंचसाहितजडमायावास्तवतैं ताआत्मादेवकास्वरूपनहींहै ॥ काहेतैंयहकार्यप्रपंचसाहितमाया आपणीसत्तातैंरहितहै ॥ किंतुजैसे कोईनिर्धनपुरुष दूसरेधनीपुरुषोंतैं भूषणादिकपदार्थमाँगिकै आपणेगृहकीशोभाकरै है॥ तैसेयहकार्यप्रपंचसहितमायाभी अधिष्ठानआत्माकीसत्ताकूंअंगीकारकरिकैसत्रूप हुईप्रतीतहोवैहै ॥ शंका हेभगवन् ॥ महकार्यप्रपंचसहितमाया जोआत्माकावास्तवस्वरूपनहींहोवै ॥ तोताआत्मादेवका कोनवास्तव स्वरूपहै ॥ समाधान ॥ हेदेवतावो सत्चित्आनंदस्वरूप तथासर्वकासाक्षीरूपतथास्वयंज्योतिरूप जोआत्मादेवकास्वरूपपूर्वहमकथन करिआयेहैं ॥ सोईहीताआत्मादेवकावास्तवस्वरूपहै ॥ हेदेवतावो॥ सोआत्मादेवकास्वरूपसर्वदानित्यहै॥यातैंआपणीसिद्धिविषे किसी दूसरेकीअपेक्षाकरैनहीं ॥ औरतानित्यआत्मातैंभिन्न जितनाकीयहसर्वजगत्है ॥ सोसर्वजगत्जडहोणेतैं आपणीसिद्धिविषे परकीअपेक्षा वालाहै ॥ याकारणतैं यहसर्वजगत्अनित्यहै॥ ऐसेअनित्यजगत्विषे नित्यरूपताकीसंभावनाभी होवैनहीं॥यातैं कोनानित्यहै याप्रकारका जो मंदबुद्धिपुरुषोंकाप्रश्नहै सोव्यर्थहीहै ॥ हेदेवतावो ॥ ताचेतनआत्माकेबलतैंही याजडप्रपंचकीसिद्धिहोवैहै ॥ ताचेतनआत्माते विना स्वभावतैं याजडप्रपंचकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ याकारणतैंयाजडप्रपंचविषे साअनित्यरूपता स्पष्टहीप्रतीतहोवै है ॥ यातैं यहजगत्

नित्यहे अथवा अनित्यहे याप्रकारकासंशयतुमोनैं कदाचित्भीनहींकरणा ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ यहसर्वजगत् किसप्रकार ताआत्मा कारिकेसिद्धहोवैहे ॥ समाधान ॥हेदेवतावो॥ जन्ममरणादिकसर्वविकारोंतैंरहित तथाअविद्यारूपमायातैंरहितजोबुद्धिकासाक्षीरूपआत्मा देवहे ॥ सोआत्मादेवबुद्धीसाक्षात् अथवा बुद्धिवृत्तिद्वारा सर्वजगत्काप्रकाशकरेहे ॥ तहां बाह्यपदार्थोंकूंतो सोआत्मादेव चिदाभासयुक्त बुद्धिवृत्तिद्वारा प्रकाशकरेहे ॥ और अंतरअज्ञानादिकपदार्थोंकूंतो सोआत्मादेव साक्षात्ही प्रकाशकरेहे ॥ तथा सोआत्मादेव सर्वसंग तैंरहितहे ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष याआत्मादेवकूं नित्य सिद्ध यानामकरिकैकथनकरे हैं॥ हेदेवतावो ॥ हमनैंतुम्हारेप्रतिजोयहआत्मा देवउपदेशकऱ्याहे ॥ सोआत्मादेव तुमोनैं निश्चयकऱ्याहे ॥ अथवानहींकऱ्याहे ॥ यहवार्त्ता हमारेप्रति तुमकथनकरो ॥ हेशिष्य इस प्रकारकावचन जभीताप्रजापतिनैंतिनदेवतावोंकेप्रतिकह्या॥ तभीतेदेवता पूर्वउपदेशतैंचिदाभासकूंआत्मारूपमानिकै ताप्रजापतिकेप्रति याप्रकारकावचन कहतेभये ॥ देवताबोले ॥ हेभगवन् ॥ पूर्वउपदेशविषे आपनैंहमारेप्रति लौकिकव्यवहारोंतैंरहित तथामनवाणीका अविषय तथाबुद्धिउपाधिवाला तथाअल्पपरिमाणवाला ऐसाआत्मादेवकथनकऱ्याथा॥ हेशिष्य ॥इसप्रकारकेतिनदेवतावोंकेवचनकूंश्रव णकरिकैसोप्रजापति तिनदेवतावोंकेभ्रांतिकीनिवृत्तिकरणेवासतै ताचिदाभासविषेनहींसंभवहोणेहारेधर्मोंकरिकै ताआत्माकास्वरूप वर्ण नकरताभया ॥ प्रजापतिरुवाच ॥ हेदेवतावो ॥ पूर्वहमनैंतुम्हारेप्रति अल्पपरिमाणवालेआत्माका उपदेशनहींकऱ्याथा ॥ किंतुयासर्वज गत्कासाक्षीरूपकरिकैताआत्माकाउपदेशकऱ्याथा ॥ कैसाहैसोसाक्षीआत्मादेव नानाप्रकारकेविषयोंकरिकैकरीजाविशेषताहे तादिशे षतातैंरहितहैस्वरूपजिसका ॥ तथातुम्हारेतैंआदिलैकैंजितनेकप्रमाताहैं तिनप्रमातावोंकेसाथ अधिष्ठानतारूपकरिकै तादात्म्यसंबंध वालाहे ॥ तथासुखदुःखादिकसर्वधर्मोंतैंरहितहे ॥ तथाअद्वितीयरूपहे ॥ तथासर्वतैंउत्कृष्टहे तथासर्वसंघातोंकापालकहे ॥तथासर्वज्ञहे॥ तथा सर्वभेदतैंरहितहोणेतैं अनंतहे ॥ तहां ताआत्मादेवविषे जासर्वज्ञताहे सासर्वज्ञता कादाचित्कज्ञानकरिकैनहीं हे ॥ किंतु तीनकालविषेवर्त्तमान स्वप्रकाशचैतन्यरूपकरिकैही सासर्वज्ञताहे ॥ हेदेवतावो ॥ इत्यादिक आत्माकेवास्तवस्वरूपतैं जो ता

॥ ३६ ॥

आत्माविषे विपरीतरूपताप्रतीतहोवै हे॥ ताकेविषे यामायाकाकल्पितसंबंधही कारणहे॥यातैं याब्रह्मरूपआत्माका जोपूर्वस्वरूप वर्णन कऱ्याहे ॥ सोस्वरूपहीयथार्थ हे ॥ हेदेवतावो ॥ जोआत्मादेव हमनैं तुम्हारेप्रति वर्णनकऱ्याहे॥ तथा जोआत्मादेव हमनैं पूर्वतुम्हारेतैं पूछाया ॥ ताआत्मादेवतैंभिन्न किंचित्मात्रभी पदार्थ हैनहीं ॥ यातैं सोआत्मादेव तुमदेवतावोंका स्वरूपही है॥हेशिष्य॥ इसप्रकार सो प्रजापति तिनदेवतावोंकेप्रति आत्माकाउपदेशकरिकै तिनदेवतावोंकेप्रति याप्रकारपूछताभया॥हेदेवतावो॥ याहमारेउपदेशतैं तुमोनैं स्वप्रकाशरूपअद्वितीयआत्मा देख्याहे अथवा नहींदेख्याहे ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारके ताप्रजापतिकेवचनकूंश्रवणकरिकै तेदेवता द्वैतके अनुभवतैं ताआत्माकीस्वप्रकाशतावि‌षे असंभावनाकरतेहुए ताप्रजापतिकेप्रति याप्रकारकावचन कहतेभये॥ देवताबोले ॥हेभगवन्॥ ताआत्मादेवकीस्वप्रकाशताही किसप्रकारसंभवै है ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार तिनदेवताओंकरिकैपूछाहुआ सोप्रजापति तिनदेवताओंके प्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ प्रजापतिरुवाच॥हेदेवताओ ॥ यामायाकेस्वरूपकूंप्रकाशकरणेहारा जोआत्मादेवहे ॥ताआत्मा देवविषे यहमाया स्थितहोवैनहीं॥जोकदाचित् यहमाया ताआत्मादेवविषेस्थितहोवैगी॥तो यहमाया ताआत्मादेवकरिकै प्रकाशितनहीं होवैगी जैसेचक्षुविषेस्थितअंजन ताचक्षुकरिकैप्रकाशितहोवैनहीं।यातैं यामायाकेअभावहोणेतैं याआत्मादेवविषे तामायाकृतद्वैततो संभवै नहीं॥और ताआत्मादेवतैंविना दूसराकोईप्रकाशकरणेहाराहैनहीं॥यातैं परिशेषतैं याआनंदस्वरूपआत्माविषेही स्वयंज्योतिरूपता सिद्ध होवै हे ॥ हेदेवताओ ॥ इसप्रकार ताआत्मादेवकीस्वप्रकाशताकेबोधनकरणेवासतैंही श्रुतिविषे अद्वितीयरूपता कथनकरी है ॥ ता अद्वितीयरूपताकेकथनकरिकैही याआत्मादेवविषे मायारहितत्व तथास्वयंप्रकाशत्व सिद्धहोवै है॥ हेदेवताओ जिसआत्मज्ञानदशाविषे यहद्वैतप्रपंच किंचित्मात्रभीनहींरहे है॥तिसआत्मज्ञानदशाविषे तुम्हाराही सर्वभेदतैंरहितस्वयंज्योतिआनंदस्वरूप वाकीरहे है।हेशिष्य॥ इसप्रकार जभी ताप्रजापतिनैं तिनदेवताओंकेप्रति आत्माकीअद्वितीयस्वप्रकाशरूपता कथनकरी ॥ तभी तेदेवता आपणेमनविषे या प्रकारकाविचार करतेभये ॥ जोकदाचित् यहआत्मादेव अद्वितीयरूपहोवै तो संगादिकदोषोंकरिकैदुष्ट जोयहकार्यप्रपंचसहितमायाहे

तामायाकाभी ताआत्माकेस्वप्रकाशस्वरूपविषेही प्रवेशहोवैगा ॥ तासंगवान्मायाकेप्रवेशतैं सोआत्मादेवभी संगवान्होवैगा॥ तासंग वान्आत्माविषें स्वप्रकाशतासंभवैनहीं याप्रकारकाविचारकरिकै तेदेवता ताप्रजापतिकेप्रति पुनः याप्रकारकाप्रश्न करतेभये ॥ देवता बोले॥हेभगवन्-याजडप्रपंचकेतादात्म्यसंबंधरूपसंगकरिकैयुक्तहुआ तथाहमद्रष्टापुरुषोंकेदृश्यभावकूंप्राप्तहुआ तथामायारूपउपाधिके संबंधतैं ईश्वरसंज्ञाकूंप्राप्तहुआ जोयहआत्मादेवहै॥ताआत्मादेवविषे असंगता तथास्वप्रकाशता संभवैनहीं ॥हेशिष्य॥ इसप्रकारकाप्रश्न जभी तिनदेवतावोंनैं ताप्रजापतिकेप्रतिकऱ्या ॥ तभी सोप्रजापति तिनदेवतावोंकेप्रति याप्रकारकाउत्तर कहताभया॥प्रजापतिरुवाच॥ हेदेवताओ ॥ तुम्हारेकूं जोआत्मा द्वैतसहितप्रतीतहोवै है॥ सोकेवल अविद्यारूपमायाकेप्रभावतैंहीं प्रतीतहोवै है॥वास्तवतैं ताआत्मा देवविषे सोद्वैतहैनहीं ॥ ऐसेअद्वितीयआत्माविषे जोद्वैतकादर्शनहै ॥ यहही मूढताकाचिह्नहै ॥ हेदेवताओ॥जोकदाचित् तुम्हारेस्वरूप विषे वास्तवतैं कोईभेदसंभवै तो द्रष्टाआत्माके तथादृश्यप्रपंचके तादात्म्यसंबंधतैं तास्वरूपविषे संग तथापरप्रकाशता संभवै ॥ परंतु तुम्हारेवास्तवस्वरूपविषे किंचित्मात्रभीभेदहै नहीं॥किंतु तुमही सर्वद्वैतभावतैंरहित शुद्धआत्मास्वरूपहो ॥ तुम्हारेस्वरूपतैं भिन्न किंचित्मात्रभी यहद्वैतप्रपंचनहीं है ॥ याकारणतैं तुम स्वप्रकाशस्वरूपहो॥ ऐसेतुम्हारेअद्वितीयआत्मास्वरूपविषे सोसंग तथापर प्रकाशता किसप्रकारहोवैगा ॥ यातेसोतुम्हाराअसंगआत्मा स्वप्रकाशरूपहै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकावचन जभी ताप्रजापतिने तिन देवताओंकेप्रति कह्या ॥ तभी तेदेवता ताप्रजापतिकेप्रति याप्रकारकावचन कहतेभये ॥ देवताबोले ॥हेभगवन्॥ हमदेवता जैसे घटा दिकबाह्यपदार्थोंकूं संवित्रूपज्ञानका विषयरूपकरिकैजानैं हैं ॥ तैसे प्रपंचभावकूंप्राप्तहुएआपणेआत्माकूंभी हम तासंवित्रूपज्ञानका विषयरूपकरिकैजानते हैं ॥ यातैं हमारेविषे जोआपनैं स्वप्रकाशरूपताकथनकरी है सो संभवैनहीं ॥ हेभगवन् ॥ यहसर्वजगत्हैशरीर जिसका ऐसाजो ईश्वरहै ॥ सोईश्वरभी हमारेतैंभिन्ननहीं है ॥ किंतु सोईश्वर हमाराहीस्वरूपहै याकारणतैं हम अद्वितीयस्वरूपहैं ॥ ॥ ३७ ॥
और अद्वितीयरूपहोणेतैंही हम असंगरूपहैं॥ऐसेअद्वितीयअसंगरूपहुएभी हमदेवता सर्वप्रपंचरूपआपणेआत्माकूं तासंवित्रूपज्ञानका

विषयरूपकरिकैजाने हैं ॥ यातैं अद्वितीयभावकेहुएभी विषयविषयीभावरूपभेदकी निवृत्तिहोवैनहीं॥हेशिष्य इसप्रकार जभीतिनदेवता वोंनैं ताप्रजापतिकेप्रति प्रश्नकऱ्या ॥ तभी सोप्रजापति तिनदेवतावोंकेप्रति याप्रकारकाउत्तर कहताभया ॥ प्रजापतिरुवाच ॥ हेदेवतावो॥जितनैंकालपर्यंत ताआत्माकीअद्वितीयरूपता नहींप्रतीतहोवैहै॥ तितनैंकालपर्यंतही कार्यसहितमायाकीस्थितिकरिकै याद्वैतकीप्रतीतिहोवैहै ॥ और जिसकालविषे ताकार्यसहितमायाकूंनाशकरणेहारा अद्वितीयरूपताकाबोधउत्पन्नहोवै है॥तिसकालविषे तुमारे अद्वितीयस्वरूपविषे तासंवित्रूपज्ञानकीविषयता संभवैनहीं॥हेशिष्य॥इसप्रकारके ताप्रजापतिकेवचनकूंश्रवणकरिकै तेदेवता ताप्रजाप तिकेप्रति पुनःयाप्रकारकावचन कहतेभये ॥ देवताउवाच ॥ हेभगवन् ॥ यहअद्वितीयआत्मा तासंवित्रूपज्ञानकाविषयहै याअर्थकी दृढताकरावणेहारीयुक्तिकूंतौ हम जानतेनहीं ॥ परंतु अबपर्यंतभी हमदेवता ताप्रपंचरूपआत्माकूं तासंवित्रूपज्ञानकाविषयरूपकरिकै हीजानते हैं ॥ स्वप्रकाशरूपताकरिकै ताआत्माकूं हम जानतेनहीं॥यातैं शास्त्रकेउपदेशका तथाहमारेअनुभवका महान्विरोधहोवैहै ॥ ताविरोधकीनिवृत्तिकरणेहारेआपही हमारा प्रमाणरूपहो ॥ जोअर्थ आप कथनकरोगे॥तिसीअर्थकूं हम निश्चयकरैंगे ॥ हेशिष्य ॥इसप्र कारकावचन जभी तिनदेवतावोंनैं ताप्रजापतिकेप्रति कह्या॥तभी सोप्रजापति तिनदेवतावोंकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥प्रजा पतिरुवाच॥हेदेवतावो॥तुमदेवता सर्वशास्त्रोंविषे अत्यंतकुशलहो॥तथा अत्यंतबुद्धिमान्हो॥ऐसेतुमबुद्धिमान् देवतावोंकूंभी जभी ताआ त्माकीविषयतायाविषे कोईयुक्ति नहींप्रतीतहोती॥तभी दूसराकौनपुरुष ताअर्थविषेयुक्तिकहैगा॥किंतु ताआत्माकेविषयताकूंसिद्धकरणेहारी कोईभीयुक्तिहैनहीं॥यातैं ताआत्मादेवविषे अद्वितीयरूपताकारिकै जोस्वप्रकाशरूपता पूर्वसिद्धकरीहै ॥ तास्वप्रकाशरूपताकूंहीतुमनि श्चयकरो ॥ जोकदाचित् तास्वप्रकाशआत्माकूं तुमविषयतारूपकरिकैजानोगे॥तौतुमारेविषे अनात्मज्ञत्वकीप्राप्तिहोवैगी ॥हेदेवतावो॥ जोकदाचित् आत्माका तथासंवित्रूपज्ञानका परस्पर वास्तवभेदहोता ॥ तौ तिनदोनोंके विषय विषयीभावविषे तुमारेकूं कोईयुक्ति स्फुरणहोती ॥ परंतु तास्वयंज्योतिअद्वितीयआनंदस्वरूपआत्मादेवविषे तासंवित्रूपज्ञानकाभेदहैनहीं॥ किंतु सोसंवित्रूपज्ञान आत्मा

स्वरूपही है॥याकारणतैं तिनदोनोंके विषयविषयीभावविषे तुमारेकूं कोईयुक्ति स्फुरणहुईनहीं॥ यातैं तास्वयंज्योतिअद्वितीयआत्माविषे तादिविषयताकाअभावही है॥हेदेवतावो॥जिसद्वैतप्रतीतिकेप्रथमक्षणविषे तथासमाधिकालविषे यहआत्मादेव अहं अस्मि याप्रकार प्रत्यक् रूपकरिकेप्रतीतहोवे है॥ तिसकालविषे यास्वयंज्योतिअद्वितीयआत्माविषे सोविषयविषयीभावरूपभेद किंचित्मात्रभीप्रतीतहोवैनहीं ॥ जोकदाचित् सोभेद याआत्मादेवविषे वास्तवतैंहोता तौ समाधिकालविषेभी सोभेदप्रतीतहोता॥शंका ॥ हेभगवन् ॥ व्यवहारकेबलतैं याआत्मादेवविषे सोभेद सिद्धहोवेगा ॥ समाधान ॥ हेदेवतावो ॥ ताव्यवहारकेकारणरूप जोमनवाणीहै ॥ तामनवाणीतैंभी यहआत्मादेवपरहै ॥ तथा तामनवाणीकाविषयरूपजोभेदहै ॥ तासर्वभेदतैं यहआत्मादेव रहितहै॥याकारणतैं यहस्वयंज्योतिआत्मादेव किसीभी व्यवहारकाविषयहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन्॥ ऐसेमनवाणीकेअविषयआत्मादेवका उपदेशहीनहींसंभवेगा ॥समाधान ॥ हेदेवतावो ॥ सोस्वयंज्योतिअद्वितीयआत्मा मनवाणीकाअविषयहै॥याकारणतैंही ब्रह्मवेत्तागुरु आपणेशिष्योंकेप्रति मौनरूपतैंही याआत्मादेवकाउपदेशकरेहै ॥ हेदेवतावो ॥ सत्शब्दकाअर्थरूपजो स्थूलप्रपंचहै॥तथा असत्शब्दकाअर्थरूपजो सूक्ष्मप्रपंचहै॥तास्थूलसूक्ष्मप्रपंचविषेही वाणीकी तथा मनकी प्रवृत्तिहोवे है ॥ और यहआत्मादेव तास्थूलसूक्ष्मजगत्तैंरहितहै ॥ यातैं याआत्मादेवविषे सामनवाणीकीप्रवृत्ति संभवैनहीं ॥ अब कारणादिकतीनअवस्थावोंतैं आत्माकीभिन्नरूपतास्पष्टकरणेवासतै प्रथम अधिदेवादिरूपकरिके तिनअवस्थावों विषे व्यवहारकीविषयताका निरूपणकरे हैं ॥ हेदेवतावो ॥ यहकारणशरीररूपअविद्या स्वभावतैंतुच्छरूपहुईभी याजगत्तरूपकार्यकूं उत्पन्नकरतीहुई सत्यकीन्याईं प्रतीतहोवैहै॥और साअविद्या आपणीसत्तातैंरहितहुईभी ताआत्माकूंआश्रयणकरिके सत्ताकूंप्राप्तहोवे है॥ तासत्ताकूंप्राप्तहोइके साअविद्या नानाप्रकारकेकार्योंकूंकरेहै॥याकारणतैंही साअविद्या नानाप्रकारकेव्यवहारोंकेयोग्यहोवैहै॥और ताअविद्याविषेप्रतिबिंबभावकूंप्राप्तहुआ चेतनआत्मा ईश्वर यानामकरिकेकह्याजावे है ॥ सोईहीईश्वरआत्मा जभी आपणेसंकल्पकरिके प्राण बुद्धिआदिकउपाधियोंवालाहोवे है ॥ तभी जीव यानामकरिकेकह्याजावे है ॥ तहां प्रथमकार्यरूपकरिकेप्रसिद्ध जोसमष्टिसूक्ष्मकाअभि

॥ ३८ ॥

मानी हिरण्यगर्भनामाजीव है ॥ सोहिरण्यगर्भनामाजीव स्वतःसिद्धज्ञानवालाहै ॥ तथा अनंतशक्तिवालाहै ॥ यातैं सोहिरण्यगर्भनामा जीवही ईश्वर यानामकरिकेकह्याजावे है॥तथा सोहिरण्यगर्भभगवान्ही समष्टिस्थूलउपाधिवालाहुआ विराट् यानामकरिकेकह्याजावेहै ॥ हेदेवतावो ॥ ऐसे समष्टिरूप कारण सूक्ष्म स्थूल यातीनउपाधियोंकेसंबंधतैं सोआत्मादेव ईश्वर हिरण्यगर्भ विराट् यातीननामोंकरिकेकह्याजावे है॥ तैसे व्यष्टिरूप कारण सूक्ष्म स्थूल यातीनउपाधियोंकेसंबंधतैं सोआत्मादेव प्राज्ञ तैजस विश्व यातीननामोंकरिकेकह्याजावे है॥ तैसे व्यष्टिरूप कारण सूक्ष्म स्थूल यातीनउपाधियोंकेसंबंधतैं सोआत्मादेव प्राज्ञ तैजस विश्व यातीननामोंकरिकेकह्याजावे है॥ याकारणतैं है ॥ हेदेवतावो ॥ इसप्रकार सोचेतनआत्मादेवही सुषुप्तिआदिकअवस्थावोंकूं प्राप्तहुआ जीव यानामकरिकेकह्याजावे है ॥ याकारणतैं ईश्वर हिरण्यगर्भादिकसर्वशब्द तापक्षचेतनआत्माविषेही वर्तेहै ॥ हेदेवतावो ॥ इसप्रकार सर्वव्यवहारोंकीसिद्धिकरणेहारी जेतीनअव स्थाहैं॥तिनतीनोंअवस्थाओं तैंरहित तथामनवाणीकाअविषय जोस्वयंज्योतिआनंदस्वरूपआत्माहै॥ सोआत्मादेव तुरीय यानामकरिके कह्याजावेहै ॥ हेदेवतावो ॥ ताआत्मादेवविषे जोतुरीयरूपकरिकेव्यवहारहोवे है ॥ सोव्यवहारभी तीनअस्थावोंकरिकेनिरूपित कल्पितभेदकीअपेक्षाकरिकेहीहोवे है ॥ स्वभावतैं ताआत्मादेवविषे सोतुरीयव्यवहारभी संभवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ सोआत्मा देव जोकिसीभी व्यवहारकाविषयनहींहोवे है ॥ तौ आपनैं हमारेप्रति ताआत्माकाउपदेशही किसप्रकारकऱ्याहै ॥ समाधान ॥ हे देवतावो मनवाणीकाअविय जो आत्मादेव है ॥ ताआत्मादेवविषे तुरीयत्वधर्मकी न्याईं कोईक धर्मोंकाआरोपणकरिकेही हमनैं तुमारेप्रति ताआत्मादेवकाउपदेशकऱ्याहै ॥ तिनधर्मोंकेआरोपणतैंविना केवलनिर्गुणआत्माकेउपदेशकरणेविषे हमभी समर्थनहीं हैं ॥ हेशिष्य निनदेवतावोंकेप्रति याप्रकार आत्माकाउपदेशकरिके सोप्रजापति तिनदेवतावोंकेप्रति पुनः याप्रकारका वचनकहताभया ॥ हेदेवतावो जिसआत्माका हमनैं तुमारेप्रति उपदेशकऱ्याहै ॥ सोआत्मा तुमने जान्याहै अथवा नहींजान्या है ॥ हेशिष्य ॥ याप्रकारके ताप्रजापतिकेवचनकूंश्रवणकरिके तेदेवता ताप्रजापतिकेप्रति याप्रकारकावचन कहतेभये ॥ हे भगवन् ॥ हमाशिष्योंतैं आत्माकास्वरूपपूछणेहारेजो आपगुरुहो ॥ ताआपगुरुवोंकेप्रति ताआत्माकास्वरूप यद्यपि हमारेकूं

अवश्यकरिकैकहणेयोग्यहै ॥ तथापि ताआत्मादेवविषे ज्ञातत्व तथाअज्ञातत्व यहदोनोंधर्म संभवतेनहीं॥यातैं तिनदोनोंधर्मोंविषे किस धर्मविशिष्टआत्माकूं हम आपकेप्रति कथनकरें ॥ हेभगवन् आपनैं हमारेप्रति जिसआत्मादेवकाउपदेशकऱ्याहै॥ सोआत्मादेव ज्ञानके विषयरूपविदितपदार्थों तैं तथाज्ञानकेअविषयरूपअविदितपदार्थोंतैं अत्यंतविलक्षणहै ॥ यातैं ताआत्माकास्वरूप हम याप्रकारसैंकथ नकरै हैं ॥ सोआत्मादेव ज्ञातहुआभी अविषयहोणेतैं अज्ञातकीन्याईं वर्तै है ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार जभी तिनदेवतावोंनैं त्वंपदार्थरूप करिकै ताआत्मादेवके यथार्थस्वरूपकूंजान्या॥तभी सोप्रजापति तिनदेवतावोंकेप्रति तिसीत्वंपदार्थरूपआत्माका तत्पदार्थरूपकरिकै उपदेशकरताभया ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ सोप्रजापति तिनदेवतावोंकेप्रति पूर्वअनेकवार ताआत्माकाउपदेशकरिआयाहै ॥ यातैं पुनःपुनः तिसीआत्माकेउपदेशकरणेविषे ताप्रजापतिकूं पुनरुक्तिदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ समाधान ॥ हेशिष्य यहआत्मादेव अत्यंतदु र्विज्ञेयहै॥यातैं शिष्योंकेप्रति आत्माकाउपदेशकरणेविषेप्रवृत्तहुए जेब्रह्मवेत्तागुरुहैं तेब्रह्मवेत्तागुरु जभी तिनशिष्योंकेप्रति ताआत्मादेवका वारंवार उपदेशकरे हैं ॥ तभी ताउपदेशकरिकै तिनशिष्योंके विपरीतभावनारूप तथादुर्वासनारूप प्रतिबंधककीनिवृत्तिहोवै है ॥ ताप्रतिबंधककीनिवृत्तितैं अनंतर तिनशिष्योंकूं दृढआत्मज्ञानकीप्राप्तिहोवै है ॥ यातैं ताआत्मादेवके पुनःपुनः उपदेशकरणेविषे पुनरुक्तिदोषकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ फलतैंरहित सुविज्ञेयवस्तुके पुनः पुनः उपदेशकरणेविषेही सोपुनरुक्तिदोष प्राप्तहोवै है॥याप्रकारकेफ लकूंविचारकरिकै सोप्रजापति तिनदेवतावोंकेप्रति पुनः पुनः ताआत्मादेवकाउपदेशकरताभया है ॥और जैसे पुनः पुनः आत्माकाउप देश तिनदुर्वासनावोंकेनिवृत्तिकाकारणहोवै है ॥ तैसे चारिपादोंवालेप्रणवकरिकै ताआत्माकाचिंतनभी तिनदुर्वासनावोंकेनिवृत्तिकाकारण होवै है ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै सोप्रजापति तिनदेवतावोंकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ प्रजापतिरुवाच ॥ हेदेवतावो॥ अकार उकार मकार अर्द्धमात्रा याचारिपादोंवालेप्रणवविषे विश्व तैजस प्राज्ञ तुरीय याअध्यात्मरूपचारिपादोंकरिकै अथवा विराट् हिरण्यगर्भ ईश्वर परमात्मा याअधिदैवरूप चारिपादोंकरिकै तादात्म्यभावकूंप्राप्तहुआ जोआत्मादेव है ऐसेप्रणव

॥ ३९ ॥

रूपआत्मादेवका जभी तुमध्यानकरोगे तभी तुमारी कोईभीदुर्वासना रहैगीनहीं ॥ किंतु तेसर्वदुर्वासना नाशकूंप्राप्तहोवैगी ॥ हेदेव तावो ॥ ताआत्मज्ञानकरिकै जभी तुमारी दुर्वासना नाशकूं प्राप्तहोवैगी ॥ तभीही तुम ब्रह्मभावकूं प्राप्तहोवोगे ॥ ताब्रह्मभावकीप्राप्ति करिकै तुमारेकूं पुनःसंसारकेदुःखोंकीप्राप्तिहोवैगीनहीं ॥ हेदेवतावो ॥ जिसआत्मादेवकूं तुम अहंशब्दकरिकैकथनकरोहो ॥ सोत्वंपदार्थ रूपआत्मा तत्पदार्थब्रह्मरूपही है ॥ और जोतत्पदार्थरूपब्रह्म है ॥ सोसत्यब्रह्म त्वंपदार्थरूपआत्मातैं भिन्ननहीं है ॥ किंतु सोतत्पदा र्थरूपब्रह्म त्वंपदार्थरूपआत्मातैं अभिन्नहीहै ॥ इसप्रकार तत्पदार्थरूपब्रह्मकूं तथात्वंपदार्थरूपआत्माकूं परस्पर अभिन्नरूपकरिकै तुम जानो ॥ ताजीवब्रह्मकेअभेदविषे तुमोंनैं किंचित्मात्रभीसंशय करणानहीं ॥ हेदेवतावो ॥ जोप्रणवरूप तथासत्यब्रह्मरूप आत्मा हमनैं तुमारेप्रति महावाक्यका अर्थरूपकरिकै वर्णनकऱ्या है ॥ ताब्रह्मरूप आत्माकूं सूक्ष्मबुद्धिवाले पुरुषही आपणाआत्मा रूपकरिकै जाने हैं ॥ स्थूलबुद्धिवालेपुरुष ताआत्मादेवकूं जानिसकतेनहीं ॥ कैसा है सोआत्मादेव॥ आकाशादिकपंचभूतोंके यथाक्रमतैं जे शब्द स्पर्श रूप रस गंध यहपंचगुणहै ॥ तिनपंचगुणोंतैंरहित है॥और श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रियोंके तथावाकादिकपंचकर्मइंद्रियोंके जेशब्दादि कविषयहैं तथानानाप्रकारकेव्यापारहैं ॥ तिनसर्वोंतैंरहितहै॥तथा मनबुद्धिप्राणआदिकोंकेव्यापारोंतैंरहितहै॥तथा इंद्रिय मन बुद्धि प्राण पंचमहाभूत भौतिकपदार्थ माया इत्यादिकसर्वोंतैं रहित है॥तथा सर्वधर्मोंतैंरहितहै ॥ हेदेवतावो ॥ तुमारेप्रति जोहमनैं यहसत्चित्आ नंदस्वरूपआत्मा पूर्वउपदेशकऱ्याहै ॥ सोआत्मादेव यद्यपि स्वप्रकाशहै ॥ तथापि सोआत्मादेव उपनिषद्रूपवेदांतोंविषेही प्रतिपादन कऱ्याजावे है ॥ याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष याआत्मादेवकूं औपनिषद यानामकरिकैकथनकरे हैं ॥ और यहआनंदस्वरूपआत्मादेव स्वप्रकाशरूपहै॥ यातैं वेदवेत्तापुरुष याआत्मादेवकूं सुविभात यानामकरिकैकथनकरे हैं ॥ और यहआत्मादेव ब्रह्मज्ञानतैं एकवारही आवरणतैंरहितहुआ प्रतीतहोवै है॥पुनः ताअज्ञानरूपआवरणकीउत्पत्तिहोवैनहीं॥याकारणतैं वेदवेत्तापुरुष याआत्मादेवकूं सकृद्विभात यानामकरिकै कथनकरे हैं ॥ और यहआत्मादेव अंतःकरणकीवृत्तिरूपज्ञानोंविषे प्रतिबिंबरूपकरिकै पुनःपुनःप्रतीतहोवै है ॥ याकार

णतैं वेदवेत्तापुरुष याआत्मादेवकूं सर्वतः पुरतोविभात यानामकरिकेकथनकरे हैं ॥ हेदेवतावो ॥ इत्यादिकसर्वगुणोंकरिकेयुक्त जोअद्वितीयआत्माहै ॥ ताअद्वितीयआत्माकूं तुमदेवता तत्त्वंपदार्थका परस्परअभेदकरिकेसाक्षात्कारकरो ॥ हेशिष्य ॥ सोप्रजापतिभगवान् तिनदेवतावोंकेप्रति याप्रकार आत्माकाउपदेशकरिके तिनदेवतावोंसैं पुनःयाप्रकारकापूछताभया॥हेदेवतावो॥हमोनैं तुमारेप्रति जोआत्मा उपदेशकऱ्याहै ॥ सोआत्मादेव तुमोनैं साक्षात्कारकऱ्याहै अथवा नहींकऱ्याहै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकार जभी ताप्रजापतिनैं तिनदेवतावोंसैंपूछा ॥ तभीतेदेवता पूर्वकीन्याई पुनः विदितअविदितपदार्थोंतैंविलक्षणरूपकरिके ताआत्माकास्वरूप कथनकरतेभये ॥ तिनदेवतावोंकेवचनकूंश्रवणकरिके सोप्रजापति तिनदेवतावोंकेबुद्धिकीपरीक्षाकरणेवासतै तिनदेवतावोंसैं याप्रकार पूछताभया ॥ हेदेवतावो॥पूर्वहमनैं तुमारेप्रति आनंदस्वरूपआत्माकास्वरूपभूत जाअनुभूति उपदेशकरीहै ॥ तास्वप्रकाशरूपअनुभूति किसआधारविषे स्थितहोवै है ॥ सोआधार तुम हमारेप्रतिकहो ॥ हेशिष्य ॥ इमप्रकार जभी ताप्रजापतिनैं तिनदेवतावोंसैंपूछा॥तभी तेदेवता ताप्रजापतिकेप्रति याप्रकारकाउत्तर देतेभये ॥ हेभगवन् ॥ पूर्वआपनैं हमारेप्रति आधारतैंरहितआत्माकाउपदेशकऱ्याथा ॥ अभी तिसअनुभूतिरूपआत्माकाआधार हमारेसैं आप किसवासतैपूछतेहो ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकावचन जभी तिनदेवतावोंनैं ताप्रजापतिकेप्रति कथनकऱ्या तभी सोप्रजापति पुनः तिनदेवतावोंकीपरीक्षाकरणेवासतै याप्रकार तिनदेवतावोंसैंपूछताभया॥हेदेवतावो॥पूर्वहमनैं तुमारेप्रति जोस्वयंज्योतिआनंदस्वरूपअद्वितीयआत्मा उपदेशकऱ्याहै।ताज्ञातहुएआत्मादेवकरिके याअधिकारीपुरुषोंकूं कौनफलकीप्राप्तिहोवै है ॥हेशिष्य॥ इसप्रकार जभी ताप्रजापतिनैं तिनदेवतावोंसैंपूछा तभी तेदेवता ताप्रजापतिगुरुकेप्रति याप्रकारका उत्तरकहतेभये ॥ हेभगवन् ॥ सो ज्ञातआत्मा आपहीफलरूपहै॥तिसज्ञातआत्माका दूसराकोईफलहैनहीं ॥ जैसे यालोकविषे फलअवस्थाकूंप्राप्तहुएजेआम्रादिकवृक्षहैं॥तिनकेफलीभूतआम्रादिकवृक्षोंतैं दूसराकोईफल उत्पन्नहुआदेखणेविषेआवतानहीं किंतु अंकुरवृक्षादिकअवस्थावालेआम्रादिकवृक्षोंतैंही फलकीउत्पत्तिहोवै है ॥ तैसे तापफलरूपज्ञातआत्मातैं दूसराकोईफल उत्पन्नहोवैनहीं ॥ किंतु सोज्ञातआत्मा आपहीफल

रूपहै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकेतिनदेवतावोंकेवचनकूंश्रवणकरिकेसोप्रजापति पुनःतिनदेवतावोंकेज्ञानकीपरीक्षाकरणेवासतैयाप्रकारका वचन तिनदेवतावोंकेप्रतिकहताभया ॥ हेदेवतावो ॥ अत्यन्तआश्चर्यरूपजामायाहै ॥ तामायाकूंभीब्रह्मरूपताकरिकेतुमसत्तादेणेहारेहो॥ याकारणतैं तुमदेवताअत्यन्तआश्चर्यरूपहो ॥ हेशिष्य॥ इसप्रकारकावचन जभीताप्रजापतिनैंतिनदेवतावोंकेप्रतिकह्या ॥ तभीतेदेवता प्रजापतिकेप्रति याप्रकारकावचन कहतेभये ॥ हे भगवन् ॥ यालोकविषे जितनैंकीपदार्थ हैं ॥ तेसर्वपदार्थ ब्रह्मरूपकरिके ताआश्चर्य रूपमायाकूं सत्ताकीप्राप्तिकरणेहारे हैं ॥ यातैं तेसर्वपदार्थ आश्चर्यरूपहैं॥ केवलहमदेवतावोंविषेही नियमकरिके साआश्चर्यरूपताकहणी संभवैनहीं॥हेशिष्य॥इसप्रकारके तिनदेवतावोंकेवचनकूंश्रवणकरिके सोप्रजापति तिनदेवताओंकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेदेवतावो ॥ घट्यादिकदृश्यपदार्थोंकूंभी ब्रह्मरूपताकरिके जभी तुमोनैं आश्चर्यरूपकरिकैजान्या॥तभी सोआश्चर्यरूपवालाब्रह्म तिनघट्यादिकपदार्थोंकीन्याई इदंतारूपकरिकेभी तुमोनैं जान्याहै यहअर्थतुमारेकहणेतैंसिद्धहोवै है ॥ यातैं ताॐकाररूपप्रणवकेअनुसंधानपूर्वक सोप्रत्यकूंआत्मादेव हमोनैं जान्याहै याप्रकारकावचन तुम किसवासतेनहींकहते ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकेताप्रजापतिकेवचनकूं श्रवणकरिके तेदेवता ताप्रजापतिकेप्रति याप्रकारकावचन कहतेभये ॥ हेभगवन्॥सर्वत्रव्यापक जोएकअद्वितीयआत्माहै॥सोआत्मादेव किसीइंद्रियादिकोंकाविषयहैनहीं ॥ यातैं सोआत्माहेय ज्ञातभीकह्याजावैनहीं ॥और यहआत्मादेव अस्तिरूपकरिके सर्वत्रप्रतीतहोवैहै॥यातैं सोआत्मादेव अज्ञातभीकह्याजावैनहीं ॥ और ज्ञातत्व अज्ञातत्व यहदोनोंधर्म परस्परविरोधीहोणेतैं एकअधिकरणविषेरहैनहीं ॥ यातैं यहआत्मादेव ज्ञातत्व अज्ञातत्व यादोनोंधर्मोंकाभी कह्याजावैनहीं॥यातैं हमदेवता ज्ञातरूपकरिके तथाअज्ञातरूपकरिके तथादोनों रूपोंकरिके ताआत्मादेवकेकहणेविषे किसप्रकार समर्थहोवैंगे ॥ याकारणतैंही वाघसामानाधिकरण्यकरिके सर्वपदार्थोंविषे हमोनैं ब्रह्मरूपता कथनकरी है ॥ ताकरिके याआत्मादेवकेप्रत्यक्षरूपताकीहानिहोवैनहीं॥हेशिष्य॥ इसप्रकारके तिनदेवतावोंकेवचनकूंश्रवणकरिके सोप्रजापतितिनदेवतावोंकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ हेदेवतावो ॥ जोतुमारेकूं इसप्रकार आत्माकास्वरूपनिश्चयहुआ

है ॥ तौ तुमदेवता यहआत्मादेव हमारेकूं आपणेअनुभवकरिकैसिद्धहै याप्रकारकावचन हमारेप्रतिकहो ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारके ता
ब्रह्माकेवचनकूंश्रवणकरिकै तेदेवता ताप्रजापतिकेप्रति याप्रकारकावचनकहतेभये ॥ हेभगवन् ॥ आपगुरुवोंकीकृपातैंहमदेवता ताआत्म
दस्वरूपअद्वितीयआत्माकूं प्रत्यक्करूपकरिकैजानते हैं ॥ विषयविषयीभावरूपभेदकरिकै ताआत्मादेवकूं हमजानतेनहीं ॥ यातैं ता
आत्मादेवविषे विषयतारूपकीप्राप्तिकरणेहारेजेविशेषणहैं ॥ताआत्माकेंविशेषणोंकेकहणेविषे हमदेवताकिसप्रकार समर्थहोंवेगे ॥ किंतु
नहींसमर्थहोवेगे ॥ हेसर्वलोकोंकेपितामह प्रजापतिगुरु॥आपगुरुवोंकेताईं हमदेवतावोंका वारम्वार नमस्कारहोवै ॥ हेभगवन् ॥ सर्व
जगत्केईश्वरआप सर्वज्ञहुएभी अज्ञानीकेसमानहोइकै जोहमारेसैं वारम्वार पूछतेहो॥सोकेवल हमारेज्ञानकीपरीक्षाकरणेवासतै पूछतेहो ॥
दूसराकोईपूछणेकाकारणनहीं है ॥ हेभगवन् ॥ आपनैं ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरिकै हमारेकूं कृतार्थकऱ्याहै ॥ यातैं अभीआप हमारीपरी
क्षामतकरो ॥ हेभगवन् ॥ सत्चित्आनंदस्वरूपआत्माकीप्राप्तिकरणेहारेजोआपहो ॥ तिसआपकेताईं हमारा वारम्वार नमस्कारहोवै॥
हेभगवन् ॥ हमाशिष्योंऊपर आपगुरु सर्वदाप्रसन्नहोवो ॥ आपकीप्रसन्नताकरिकैही हमारेकूं दुर्लभआत्मादेवकीप्राप्तिहुई है ॥हेशिष्य ॥
इसप्रकार जभी तिनदेवतावोंनैं आपणेकृतकृत्यभावकेबोधकवचनकहे॥तभी तिनदेवतावोंकेवचनोंकूंश्रवणकरिकैभी सोप्रजापति तिन
देवतावोंकेज्ञानकीदृढताकरणेवास्तै तिनदेवतावोंकीपरीक्षाकरताहुआ पुनः याप्रकारकावच कहताभया॥हेदेवतावों ॥ तुमनैं हमारेप्रति
वारम्वार नमस्कारकऱ्याहै॥तथा प्रार्थनाकरीहै तानमस्कारकरिकै तथाप्रार्थनाकरिकै तुमारेऊपर हमारीवहुतप्रसन्नताहुईहै॥यातैं हमारे
प्रति पुनःपुनः प्रश्नकरणेविषे तुमानैं किंचितमात्रभीभयकरणानहीं ॥ हे देवतावो जोतुमारेहृदयविषे किंचितमात्रभीसंशयहोवै ॥ तौ
तुम हमारेसैंप्रश्नकरो ॥ तातुमारेसर्वसंशयकूं हम छेदनकरेंगे ॥ याअर्थविषे तुमानैं किंचितमात्रभी संशयकरणानहीं ॥ हेशिष्य ॥
इसप्रकारकावचन जभी ताप्रजापतिनैं तिनदेवतावोंके प्रति कह्या ॥तभी तेदेवता ताप्रजापतिगुरुकेप्रति याप्रकारकावचन कहतेभये ॥
हे भगवन् ॥ सर्वकालविषे सिद्धहै स्वरूपजिसका ऐसाजोआत्मादेव है ॥ ताआत्मादेवकेवर्णनकेप्रसंगविषे साध्यतारूपकरिकै ॥ ४१ ॥

तासिद्धआत्मातैंविलक्षणजो अनुज्ञानीध्वं याप्रकारकीअनुज्ञा आपनैंकथनकरीहै ॥ साअनुज्ञा हमारेकूंअसंगतप्रतीतहोवैहै ॥ याकारण
तैंही हमदेवतावोंकूंतापूर्वउक्तअर्थविषे संशयहोवैहै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकावचनजभीतिनदेवतावोंनैं ताप्रजापतिकेप्रतिकह्या ॥ तभी
सोप्रजापति तिनदेवतावोंकेप्रति याप्रकारकावचनकहताभया ॥ हेदेवतावो ॥ तानित्यसिद्धआत्मादेवकेवर्णनकेप्रसंगविषेहमनैं तुमारे
प्रति साध्यरूपअनुज्ञाकथननहींकरी ॥ किंतु अद्वैतआत्मारूपअनुज्ञाही हमनैंतुमारेप्रतिकथनकरीहै काहेतैं द्वैतप्रपंचकेविस्मरणकरणे
वासतैं शक्तिरूपप्रणवकीअवस्थाकावाच्यार्थभूत अनुज्ञारूपआत्माही याअधिकारीपुरुषोंकूं चिंतनकरणेयोग्यहै ॥ याप्रकारकाअर्थ
हमनैंतुमारेप्रतिकथनकऱ्याहै ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारकावचनजभी ताप्रजापतिनैं तिनदेवतावोंकेप्रतिकह्या ॥ तभी तेदेवता दूसरेकिसी
प्रकारतैं ताप्रजापतिगुरुकेउपकारकीनिवृत्तिनहींदेखतेहुए पूर्वकीन्याईं नमस्कारकरिकै ताप्रजापतिकेप्रति आपणाआत्माही अर्पणकरते
भये ॥ तथाहेभगवन् ॥ हमारेऊपरप्रसन्नहोवो याप्रकारकेवचनोंकूंकहतेभये ॥ हेशिष्य ॥ इसप्रकारपूर्व सोप्रजापतिनामात्रब्रह्मातिनदेवता
वोंकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरताभयाहै ॥ जिसब्रह्मविद्याविषैतैंज्ञानवान्शिष्यकूंभी उत्कटजिज्ञासाहोतीभई है॥हेशिष्य॥यासंसाररूप
शूलका मूलरूपजोअज्ञानहै ॥ ताअज्ञानकूंनाशकरणेहारा यहआत्मज्ञान हमनैंतुमारेप्रतिकथनकऱ्याहै ॥ जोआत्मज्ञानतैंश्रद्धावान्
शिष्यनैं याअष्टादशेअध्यायकेआदिविषे हमारेसैंपूंछाथा ॥ अबपूर्वग्रंथविषेविस्तारतैंकथनकऱ्याजोअर्थ ताअर्थकूंसंक्षेपतैंकथनकरे हैं ॥
हेशिष्य ॥ हमनैंतुमारेप्रति पूर्वग्रंथविषे जोअर्थविस्तारतैंकथनकऱ्याहै ॥ तिसीअर्थकूं तूंअभी संक्षेपतैंश्रवणकर ॥ अहंअज्ञःयाप्रकारके
अनुभवकाविषय जाअज्ञानरूपमायाहै ॥ ताअज्ञानरूपमायाकूं वेदवेत्तापुरुष कारणशरीर यानामकरिकैकथनकरे हैं ॥ ताकारणशरीररूप
मायातैंसूक्ष्मशरीर स्थूलशरीरयाभेदकरिकै दोप्रकारकादृश्यप्रपंचउत्पन्नहोवैहै ॥ कैसाहैसोदृश्यप्रपंच ॥ भूतभौतिकरूपहै॥तथाअधिदैव
अध्यात्मअधिभूतस्वरूपहै ॥ तहांजाग्रत्प्रपंचकानामस्थूलहै ॥ औरस्वप्नप्रपंचकानामसूक्ष्महै ॥ औरमायारूपअविद्याकानामसुषुप्तिहै॥
ते स्थूल सूक्ष्म कारण यहतीनोंशरीर याअधिकारीपुरुषोंनैं परित्यागकरणेयोग्यहै ॥ हेशिष्य ॥ स्थूल सूक्ष्म कारण यातीनोंतैं परेजो

वस्तुहै ॥ तावस्तुकूं वेदवेत्तापुरुष तुरीययानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ सोतुरीयभी ओत अनुज्ञाता अनुज्ञा आविकल्प याभेदकरिकैचारप्रका
रकाहोवेहै ॥ हेशिष्य ॥ अधिदैवरूपसाक्षीआत्माकी यहओतादिकचारअवस्थाहैं ॥ तिनओतादिकअवस्थावोंकीप्राप्तिविषे स्थूलसूक्ष्म
कारण यातीनशरीरोंकाअभिमानप्रतिबंधकहै॥तादेहाभिमानकीनिवृत्तिहुए यहविद्वान्पुरुष समाधितैंव्युत्थानकालविषेबाह्यअंतरविश्वकूं
ब्रह्मरूपकरिकैअनुभवकरेहै ॥ तिसव्युत्थानकालविषे तासर्वविश्वकूंप्रकाशकरणेहाराजोचैतन्यहै ॥ ताचैतन्यकूं वेदवेत्तापुरुष ओत याना
मकरिकैकथनकरेहैं ॥ और ध्याता ध्यान ध्येय यात्रिपुटिकरिकैयुक्त जोसविकल्पसमाधिहै॥तासविकल्पसमाधिविषेस्थितहुआ यहविद्वान्
पुरुषयासर्वविश्वकूं ब्रह्मरूपकरिकैदेखेहै ॥ तिससविकल्पसमाधिकालविषे जोचैतन्ययासर्वविश्वकूं सत्ताकीप्राप्तिकरे है ॥ ताचैतन्यकूं
वेदवेत्तापुरुष अनुज्ञाता यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ और जिसनिर्विकल्पसमाधिविषे स्थितहुआ यहविद्वान्पुरुष ध्याता ध्यान ध्येय
इत्यादिकसर्वत्रिपुटीकापरित्यागकरिकै सर्वजगत्केसत्ताकूंआकर्षणकरणेहारे जिसचैतन्यरूपआत्माकूं अनुभवकरे है ॥ ताचैतन्य
स्वरूपआत्माकूं वेदवेत्तापुरुष अनुज्ञा यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ और जिसकालविषे ब्रह्मज्ञानरूपअग्निकरिकै यासंसारदुःखरूपशूलका
मूलभूतअज्ञान नाशकूंप्राप्तहोवेहै ॥ तथामनवाणीकाअविषयरूप जोस्वयंज्योतिआनंदस्वरूपअद्वितीयआत्माहै ॥ ताअद्वितीयआत्माकूं
यहविद्वान्पुरुष अविषयतारूपकरिकैदेखताहुआभी विषयतारूपकरिकैदेखतानहीं ॥ तथा यहमैंहूं यहदूसराहै इत्यादिकभेदकूंदेखता
नहीं ॥ तथा ताभेदकेअभावकूंभीदेखतानहीं ॥ तथा मैंजीवताहूं मैंमऱ्याहूं इत्यादिक विशेषोंकूंभी देखतानहीं ॥ तिसकालविषेस्थित
चैतन्यस्वरूपआत्माकूं वेदवेत्तापुरुष अविकल्प यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ हेशिष्य ॥ जैसे जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति यहतीनोंअवस्था भेद
दोषकरिकैयुक्तहैं॥यातैं याअधिकारीपुरुषकूं तेजाग्रतादिकअवस्था परित्यागकरणेयोग्यहैं ॥तैसे यातुरीयआत्माकेओतअनुज्ञाताअनुज्ञा
यहतीनरूपभी ताभेदरूपदोषकरिकैयुक्तहैं ॥ यातैंयाअधिकारीपुरुषकूं तेओतादिकतीनरूपभी परित्यागकरणेयोग्यहैं ॥ और तातुरीय
आत्माका जोचतुर्थ अविकल्पस्वरूपहै ॥ सोअविकल्पस्वरूप मनवाणीका अविषयहै ॥ तथा द्वैतप्रपंचतैं रहित आनंद

॥ ४२ ॥

स्वरूपहै॥तथा याशरीररूपद्वारवतीपुरीविषेस्थितहै ॥तथा सर्वआश्रयों तैंरहितहै ॥ तथा सर्वभेदतैंरहितहै॥ तथा मायातैंरहितस्वयंज्यो
तिरूपहै॥ तथा सर्वप्राणियोंकेहृदयकमलविषे सर्वदा साक्षीरूपकरिकैभासमानहै ॥ ऐसेअविकल्पस्वरूपआत्मादेवकूं यहअधिकारीपुरुष
घटादिकदृश्यपदार्थोंकीन्याईं इदंतारूपकरिकैनहींदेखताहुआ अहंअस्मि याप्रकार प्रत्यक्षरूपकरिकैदेखे ॥ यहही परमफलरूपज्ञानका
स्वरूपहै ॥ और याअविकल्परूपआत्माकाज्ञानहीं याशास्त्रकाप्रयोजन है ॥ अब याहीअर्थकेस्पष्टकरणेवासतै प्रथम ताअविकल्पआ
त्माकेज्ञानविषे असंभावनाकूं दृष्टांतकरिकै निवृत्तकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ जैसे आकाशविषे गंधर्वनगर कल्पितहोवे है ॥ तैसे याआनंदस्व
रूपआत्माविषे यहमायादिकद्वैतप्रपंचभी कल्पितहै ॥ और हेशिष्य ॥ जैसे निरवयव आकाशका कल्पितजोकोईएकदेशहै ॥ ताएक
देशविषे आकाशकेवास्तवस्वरूपकेअज्ञानतैं सागंधर्वनगरकीकल्पना होवे है ॥ तैसे वास्तवतैंनिरवयवआत्माका कल्पितजोकोईएकदे
शहै ॥ ताएकदेशविषे ताआत्माकेवास्तवस्वरूपकेअज्ञानतैं सामायादिकप्रपंचकीकल्पना होवे है ॥ और हेशिष्य ॥ जैसे ताआकाशके
वास्तवस्वरूपकेज्ञानतैं सोगंधर्वनगर लयभावकूंप्राप्तहोवेहै॥ तैसेताआत्माकेवास्तवस्वरूकेज्ञानतैं यहदृश्यप्रपंचलयभावकूंप्राप्तहोवे हैं ॥
और हेशिष्य॥जैसे ताआकाशकेज्ञानतैं केवलगंधर्वनगरकीहीनिवृत्तिहोवैनहीं॥किंतुतागंधर्वनगरकाकारणरूपजोअज्ञानहैताअज्ञानकीभी
निवृत्तिहोवेहै ॥ तैसे याआनंदस्वरूपआत्माकेज्ञानतैं केवल याकार्यप्रपंचकीही निवृत्तिहोवैनहीं ॥ किंतु याकार्यप्रपंचकाकारणरूपजोअ
ज्ञानहै ताअज्ञानकीभी निवृत्तिहोवे है॥ और हेशिष्य॥अपरोक्षभ्रमकीनिवृत्तिकरणेवासतै अधिष्ठानकाअपरोक्षज्ञानहीं अपेक्षितहोवेहै॥
परोक्षज्ञानकरिकै अपरोक्षभ्रमकीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ जस पूर्वादिकदिशावोंविषे जोपश्चिमादिकदिशावोंकाभ्रमहोवेहै ॥ ताअपरोक्षभ्रमकी
पूर्वादिकदिशावोंकेपरोक्षज्ञानतैं निवृत्तिहोवैनहीं ॥ किंतु तिनपूर्वादिकदिशावोंकेअपरोक्षज्ञानतैंही ताअपरोक्षभ्रमकीनिवृत्तिहोवेहै ॥ तैसे
याआत्मादेवकेपरोक्षज्ञानतैं याअपरोक्षरूपसंसारभ्रमकीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ किंतु याआत्मादेवकेअपरोक्षज्ञानतैंही यासंसारभ्रमकीनिवृत्ति
होवे है ॥ और हेशिष्य ॥ जैसे एकहीस्वप्नद्रष्टापुरुष निद्रादोषकेवशतैं अनेकप्रकारकाहुआ प्रतीतहोवे है ॥ तैसे यहएकही

आत्मादेव आपणेस्वरूपकेअज्ञानतैं अनेकप्रकारकाहुआ प्रतीतहोवै है॥ शंका॥हेभगवन् जैसे मध्याह्नकेसूर्यविषे अंधकारकीस्थिति संभवैनहीं ॥ तैसे भासमानस्वयंज्योतिआत्माविषे याअज्ञानकीस्थिति संभवैनहीं ॥ समाधान ॥हेशिष्य॥ यहमाया अत्यंतदुर्घटहै ॥ तथा दुस्तरहै ॥ तथा याजीवोंकूं अत्यंतदुःखकीप्राप्तिकरणेहारी है ॥ तथा यासंसाररूपशूलकीजननी है ऐसीमायाकूं शास्त्रवेत्तापुरुष अघटितघटनापटीयसी यानामकरिकैकथनकरै हैं ॥ ताआपणेस्वभावकेबलतैंही यहमाया तास्वयंज्योतिआत्माविषेस्थितहोवै है ॥ हेशिष्य ॥ जैसे यालोकविषे वृश्चिकी आपणेगर्भतैंनाशकूंप्राप्तहोवै है ॥ तैसे सर्वभेदतैंरहितयाआनंदस्वरूपआत्माकूंविषयकरणेहारा जोमहावाक्यजन्य अंतःकरणकीवृत्तिरूपज्ञान है ॥ ताज्ञानरूपगर्भतैंही यहमायारूपवृश्चिकी नाशकूंप्राप्तहोवै है ॥ हेशिष्य ॥ यहअविद्यारूप माया आनंदस्वरूपसाक्षीआत्मातैं कदाचित्भी भयकूंप्राप्तहोतीनहीं ॥ किंतु महावाक्यतैंउत्पन्नभई जाअंतःकरणकीवृत्तिहै ॥ तावृत्तिविषेस्थित तासाक्षीआत्माकेप्रतिबिंबतैंही यहमाया सर्वदा भयकूंप्राप्तहोवै है॥तात्पर्ययह॥जैसे काष्ठोंकूंप्रकाशकरणेहाराभी अग्नि कुठारादिरूपलोहविषेस्थितहोइकै तिनकाष्ठोंकूंभेदनकरै है॥तैसे यहआत्मादेव आपणेसाक्षीरूपकरिकै तामायाकासाधकहुआभी महावाक्यजन्यअंतःकरणकीवृत्तिविषेस्थितहोइकै तामायाकाबाधकहोवै है॥याकारणतैंही वेदवेत्तापुरुषोंनैं याअनादिमायाकेनाशकरणेवासतै एक महावाक्यजन्यआत्मज्ञानरूपउपायही कथनकऱ्याहै॥ताआत्मज्ञानतैंविना दूसराकोईउपायहैनहीं॥हेशिष्य॥ जैसे यालोकविषे मनुष्योंकै शरीरविषेप्रवेशकरिकै अनेकप्रकारके दुःखोंकीप्राप्तिकरणेहारा जोकोईपिशाचहै॥सोपिशाच किसीमहान्मंत्रकरिकैही निवृत्तहोवैहै॥तैसे याजीवोंकूं जन्ममरणादिक अनेकदुःखोंकीप्राप्तिकरणेहारी जामायारूपपिशाचीहै॥सामायारूपपिशाचीब्रह्मात्मज्ञानरूपमहामंत्रकरिकैही नाशकूंप्राप्तहोवै है ॥ ताआत्मज्ञानतैंविना दूसरेकिसीउपायकरिकै यहमायारूपपिशाची नाशकूंप्राप्तहोवैनहीं॥ यातैं सोमुमुक्षुजन शांति आदिकगुणोंकरिकैयुक्तहै ॥ तथा चित्तकीएकाग्रताकरिकैयुक्तहै ॥ तथातामायारूपपिशाचीतैं भयकूंप्राहुआहै ॥ सोमुमुक्षुजन ब्रह्मवेत्तागुरुकेसमीपजाइकै याआत्मज्ञानरूपमंत्रकूंसंपादनकरै ॥ यहआत्मज्ञानही यावेदांतशास्त्रकाप्रयोजनहै ॥ हेशिष्य ॥ यामुमुक्षुजनोंनैं

॥ ४३ ॥

यहआत्मज्ञानही अवश्यकरिकै संपादनकरणेयोग्यहै ॥ याआत्मज्ञानतैंभिन्नउपायोंकेकरणेविषे यापुरुषोंकूं पुनःपुनःसंसारकीहीप्राप्तिहोवै है ॥ यातैं याआत्मज्ञानतैंभिन्न कोईभीउपाय याअधिकारीपुरुषोंकूंकरणेयोग्यनहीं है॥ अब श्रीशंकरानंदमुनि आपणेशिष्यकेताईं याब्रह्मविद्याकेउपदेशकीपरिपूर्णता निरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्य॥ऋग् यजुष् साम अथर्वण याचारिवेदोंविषेप्रसिद्धजेऐतरेयादिकउपनिषद्रूपवेदांतहैं ॥ तिनउपनिषद्रूपवेदांतोंविषे जोवेदांतभाग केवल उपासनावोंकूंही प्रतिपादनकरै है ॥ तावेदांतभागकूंछोडिकै दूसरेसर्वउपनिषद्रूपवेदांतोंकाअर्थरूप ब्रह्मात्मज्ञान हमनैं तुमारेप्रति कथनकऱ्याहै ॥ कैसाहैसोज्ञान ॥ सर्वदोषोंतैं रहित शुद्धब्रह्मात्मविषयकहोणेतैं सर्वदादृढहै ॥ ऐसेब्रह्मात्मज्ञानकीपरिपूर्णताहुएतैंअनंतर हमारेकूं तुमारेप्रति पूर्वकीन्याईं तूं अभी किसअर्थकेश्रवणकरणेकीइच्छाकरताहै याप्रकारकाप्रश्नकरणा उचितनहीं है॥तथा ताआत्मज्ञानकेवासतै अभी हमारेकूं दूसराकछुकहणेयोग्यभीनहीं है ॥इसप्रकार उपासनाभागतैंरहित सर्ववेदांतोंकरिकैप्रतिपादित निर्गुणआत्माकेज्ञानकूं गुरुकेमुखतैंश्रवणकरिकै सोश्रद्धावान्शिष्य कृतकृत्यभावकूंप्राप्तहोताभया॥ तथा आपणेगुरुकेताईं दंडवत्प्रणामकरताभया ॥ तथा आपणेगुरुकीस्तुतिकरताभया॥ इसप्रकार आपणेगुरुकापूजनकरिकै परमआनंदकूंप्राप्तहुआ सोशिष्य तागुरुउपदिष्टआत्मज्ञानकूं आपणेशिष्योंकेप्रति उपदेशकरताभया ॥ जिनाशिष्योंकरिकैविस्तारकूंप्राप्तहुआ सोआत्मज्ञान अभीकलिकालविषेभी याअधिकारीपुरुषोंकूं प्राप्तहोवै है ॥ काहेतैं पूर्वऐतरेयादिकउपनिषदोंविषे जाजाब्रह्मविद्या कथनकरी है ॥ सा सर्वब्रह्मविद्याही याआत्मपुराणरूपकरिकै परिणामकूंप्राप्तहुई है ॥ यातैं यहआत्मपुराणग्रंथ साक्षात्वेदकेतुल्यहै ॥ तथा यासंसाररूपशूलका मूलकारण जो मायारूपअज्ञानहै ॥ ताकार्यसहितअज्ञानका नाशकरणेहाराहै ॥ यातैं मुमुक्षुजनोंनैं याआत्मपुराणग्रंथकूं अवश्यकरिकैविचारणा ॥ अब याआत्मपुराणविषे प्रसिद्धपुराणोंकेलक्षण घटावे हैं ॥ याआत्मपुराणविषे याजगत्के उत्पत्तिका तथास्थितिका तथा संहारका वर्णनकऱ्याहै॥तथा याआत्मपुराणविषे आकाशादिभूतोंका तथाविराटादिकभौतिकोंका वंशभी वर्णनकऱ्याहै ॥ तथा याआत्मपुराणविषे स्वायंभुवमनुकी उत्पत्तिआदिकोंकाभी वर्णनकऱ्याहै ॥तास्वायंभुवमनुकेकथनकरिकै ताकेविभूतिरूप

दूसरेमनुवोंकाभी अर्थतैंहीकथनसिद्धहोवै है॥ और याआत्मपुराणविषे आकाशादिकभूतोंके तथातिनभूतोंकेकार्यरूपइंद्रियादिकोंके तथा मनुवंशविषेस्थितप्रतर्दनादिकराजोंके अनेकप्रकारकेव्यापार कथनकरेहैं॥ और याआत्मपुराणविषे वेदरूपमूलप्रमाणतैंरहित किंचित्मात्रभीअर्थ कथनकऱ्यानहीं ॥ किंतु जो अर्थ ब्रह्मसूत्रोंविषे तथाताकेभाष्यविषे तथाभगवत्गीतादिकस्मृतियोंविषे कथनकऱ्याहै॥सोईही अर्थ याआत्मपुराणविषे कथनकऱ्याहै ॥ और तिनब्रह्मसूत्रादिकोंविषे वेदमूलकता सर्वविद्वान्पुरुषोंकूंसंमतहै॥यातैंवेदकेअर्थका विस्तारतैंप्रतिपादकत्वरूप पुराणधर्मतो याआत्मपुराणविषे अत्यंतस्पष्टही है॥ अब जिससंस्कृतआत्मपुराणका यहप्राकृतभाषाआत्मपुराणहु आहै ॥ तासंस्कृतआत्मपुराणके उत्पत्तिकादेश वर्णनकरे हैं॥दक्षिणदेशविषेस्थितजा कावेरीनामाएकपवित्रनदी है॥ताकावेरीनदीकेतीरविषेनिवासकरिकै श्रीशंकरानंदमुनि केवलअनुग्रहकरिकै आपणेश्रद्धवान्शिष्यकेप्रति यहआत्मपुराणनामाग्रंथ कथनकरताभयाहै ॥ अब याग्रंथके आत्मपुराणनामराख्णेका प्रयोजन वर्णनकरे हैं॥सर्वपुराणइतिहासादिकोंविषे अनात्मपदार्थोंकूंप्रतिपादनकरणेहारी जेराजादिकोंकीनानाप्रकारकीकथाहैं ॥ तिनकथावोंकूंश्रवणकरिकै तिनअनात्मकथावोंतैंविरक्तहुआ तथायासंसाररूपशूलकरिकैसंतप्तहुआ सोशिष्य यापुराणकेआरंभविषे आपणेगुरुवोंसे तामूलसहितसंसारशूलकेनाशकरणेहारा आत्मज्ञानहीपूछताभयाहै॥ अनात्मपदार्थोंकूंप्रतिपादनकरणेहारी कोईराजादिकोंकीकथा पूछीनहीं ॥ यातैं याआत्मपुराणविषे कोईभीअनात्मकथा कथनकरीनहीं ॥ किंतु आरंभतैंलेकेसमाप्तिपर्यंत आत्मज्ञानका तथाताआत्मज्ञानकेवैराग्यादिकसाधनोंकाही यापुराणविषेप्रतिपादनकऱ्याहै ॥याकारणतैं याग्रंथका आत्मपुराण यहनाम राख्याहै॥और ताशंकरानंदमुनिकेशिष्यकीन्याईं जोपुरुष अनात्मकथावोंकेरोगतैंरहितहै॥ तथा यासंसारशूलकरिकैसंतप्तहुआहै॥तथा विषयसुखोंतैंविरक्तहै॥सोपुरुषही याआत्मपुराणग्रंथका अधिकारी है ॥शंका॥इसप्रकारकाअधिकारीपुरुष साक्षात्उपनिषद्रूपवेदांतोंतैंहीआत्मज्ञानकूंसंपादनकरेगा ॥ यातैं यहआत्मपुराणनामाग्रंथ व्यर्थही है ॥समाधान ॥ असंभावनादिकदोषोंकरिकैयुक्तजेपुरुषहैं॥ तिनपुरुषोंका साक्षात्वेदकेअर्थविषे प्रवेशहोइसकैनहीं॥ किंतु असंभावनादिकदोषोंतैंरहितपुरुषोंकाही तासाक्षात्वेदकेअर्थविषे

॥ ४४ ॥

प्रवेशहोवै है ॥ यातैं तेअसंभावनादिकदोष तावेदअर्थकेनिश्चयकरणेविषेप्रतिबंधक हैं ॥ ताअसंभावनादिकदोषोंकीनिवृत्तिकरणेवासतेताशंकरानंदमुनिनैं यहआत्मपुराणनामाग्रंथ कथनकऱ्याहै ॥ सोयहआत्मपुराण सर्वउपनिषद्रूपवेदांतोंकेसारअर्थका प्रतिपादनकरणेहाराहै ॥ यातैं याआत्मपुराणग्रंथतैंअधिक आत्माकेप्रतिपादनकरणेहारा दूसराकोईग्रंथहैनहीं॥सोयहआत्मपुराणनामाग्रंथ यद्यपि पूर्वउक्तमुख्यअधिकारीवासतैंहीं प्रवृत्तभयाहै ॥ तथापि याग्रंथविषेइतनासामर्थ्यहै ॥ जोबहिर्मुख तथारागवान्पुरुषभी श्रद्धापूर्वक याआत्मपुराणग्रंथका निरंतरश्रवणकरेहै ॥ सोबहिर्मुखरागीपुरुषभी ताश्रवणकेप्रभावतैं अंतर्मुखहोइकै तथा वैराग्यवान्होइकै ताआत्मज्ञानकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं मोक्षकीइच्छावान्पुरुषोंनैं अवश्यकरिकै याआत्मपुराणग्रंथकाविचारकरणा तथाश्रवणकरणा ॥ और श्रद्धावान्शिष्यकेप्रति उपदेशकरणेहारे जोश्रीशंकरानंदगुरु हैं ॥ तेशंकरानंदस्वामी शंकरमहादेवकूं सर्वदा आपणाआत्मारूपकरिकैदेखे हैं ॥ यातैं ताशंकरानंदगुरुकेशरीरविषेस्थितहोइके सोसाक्षात् शंकरमहादेवही याआत्मपुराणग्रंथकाकर्त्ता है ॥ कैसाहैसोश्रीशंकर ॥ जिसकेवाणीविषे नित्यही सरस्वतीनिवासकरे है ॥ और सोशंकरही ब्रह्माविष्णुरूपहै॥तथा इंद्रादिकसर्वदेवतारूपहै ॥ यातैं जोपुरुष याआत्मपुराणग्रंथकूं श्रद्धाभक्तिपूर्वक ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं श्रवणकरेहै तथा विचारकरे है ॥ सोपुरुष अर्थकेधारणकरणेहारीबुद्धिकूंप्राप्तहोवै है ॥ तथा आत्मज्ञानकूंप्राप्तहोवैहै॥याप्रकारके प्रत्यक्षफलविषे किसीनैंभी संशयकरणानहीं॥अब याआत्मपुराणग्रंथके विषय संबंध यादोनोंअनुबंधोंकेनिरूपणकेमिषकरिकै याग्रंथकीसमाप्तिविषे मंगलाचरणकूंकरताहुआ ग्रंथकार ईशावास्यउपनिषद्केअर्थकानिरूपणकरे हैं॥ ईशावास्यउपनिषद्करिकैप्रतिपादनकऱ्याजो परमात्मादेवहै॥जिसपरमात्मादेवरूप यहस्थावरजंगमरूपसर्वजगत्है ॥ ऐसासर्वजगत्रूप परमात्मादेवही आत्मपुराणग्रंथविषे प्रतिपादनकऱ्याहै ॥ इसप्रकार सर्वजगत्कूंईश्वररूपदेखिकै वेदवेत्तापुरुष आपणेशिष्योंकेप्रति याप्रकारकाउपदेश करतेभये हैं ॥ हेशिष्यो ॥ यहस्थावरजंगमरूपसर्वजगत् अभिन्ननिमित्तउपादानकारणरूपईश्वरनैं व्याप्तकऱ्या है॥अब याही अर्थकूं अनेकदृष्टांतोंकरिकैनिरूपणकरे हैं॥जैसेउपादानकारणरूपमृत्तिकानैं यहघटशरावादिककार्य व्याप्तकरे हैं॥तैसे उपादानकारणरूप

ईश्वरनैं यहसर्वजगत् व्याप्तकऱ्याहै ॥ और जेसे राजानैं दृष्टिद्वारा आपणेसर्वनगरादिक व्याप्तकरे हैं ॥ तेसे निमित्तकारणरूपईश्वरनैं यह सर्वजगत् व्याप्तकऱ्याहै ॥ और जेसे यामनुष्योंकाशरीर बाह्यतैं वस्त्रोंनैं व्याप्तकऱ्याहै॥तेसे यहसर्वजगत् विभुईश्वरनैंव्याप्तकऱ्याहै॥ और जेसे सुगंधिवालेपुष्प आपणेसुगंधिवालेसूक्ष्मअवयवोंकरिके शीतलजलकूंव्याप्तकरतेहुए ताजलविषे रमणीकता प्राप्तकरे हैं ॥ तेसे यहईश्वरभी आपणीसत्तास्फूर्तिकरिके यासर्वजगत्कूंव्याप्तकरताहुआ याजगत्विषे रमणीकता प्राप्तकरे है॥ और जेसे प्रवृतिकाकारणरूप वासनावोंनैं याजीवोंकामन व्याप्तकऱ्याहै ॥ तेसे अंतर्यामीईश्वरनैं यहसर्वजगत् व्याप्तकऱ्याहै ॥ यातैं आपणे तथापराये जितनैंकीस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थ हैं॥तेसर्वपदार्थ यापूर्ववउक्तरीतिसैं ईश्वररूपही हैं ताईश्वरतैंभिन्नसत्तावाला कोईभीपदार्थनहीं है॥यातैं तेसर्वपदार्थ ईश्वरकेही हैं॥ याजीवोंकाकोईभीपदार्थनहीं है॥ जेसे गंधर्वनगर आकाशरूपहोणतैं ताआकाशकाही है॥ तेसे यहसर्वजगत्भी ईश्वररूपहोणतैं ताईश्वरकाहीहै॥और जेसे राजादिकमहान्पुरुषोंविषे तथातिनोंकेधनादिकपदार्थोंविषे बुद्धिमान्पुरुष स्वत्वदृष्टिकरैनहीं॥आपणीइच्छापूर्वक जोतिनपदार्थोंका ग्रहणत्यागकरणाहै यहही तिनपदार्थोंविषेस्वत्वदृष्टिहै ॥ तेसे तास्वत्वदृष्टितैंरहितहुआ ॥ यहपुरुष यहस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थ ईश्वररूपही हैं या प्रकार तिनसर्वपदार्थोंकूं ईश्वररूपजानिके अथवा यहसर्वपदार्थ ताईश्वरकेही हैं याप्रकार तिनसर्वपदार्थोंकूं ईश्वराजानिके तिनस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंकेकामनाका परित्यागकरै॥तहां यहसर्वजगत् ईश्वररूपहै याप्रथमदृष्टिविषेतौ तासर्वप्रपंचकेबाधकरिके तास्वत्वदृष्टिकेपरित्यागहुए परिशेषतैं निर्गुणब्रह्मकाज्ञानरूपफल सिद्धहोवै है ॥ और यहसर्वजगत् ईश्वरका है यादूसरीदृष्टिविषे तौ सगुणब्रह्मकाज्ञानरूपफल सिद्धहोवै है ॥ अब याहीअर्थकेस्पष्टकरणेवासतै दोदृष्टांत कथनकरेहैं ॥ जेसे मिथ्यागंधर्वनगरविषे स्वत्वकीआशा यापुरुषोंकूंदुःखकीहीप्राप्तिकरेहै ॥ और जेसे महाराजाकेस्त्रीआदिकपदार्थोंविषे स्वत्वकीआशा यापुरुषोंकूं दुःखकीही प्राप्तिकरेहै ॥ तेसे आपणेमानेहुएस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंकीआशाभीयापुरुषोंकूं दुःखकीहीप्राप्तिकरेहै ॥यातैं याअधिकारीपुरुषोंनैं सर्वका मनावोंकापरित्यागकरिके सर्वकाअधिष्ठानरूपईश्वरही आपणाआत्मारूपकरिके देखणा ॥ अथवा सर्वजगत्काप्रेरकरूपकरिके ता

॥ ४९ ॥

ईश्वरकाआराधनकरणा ॥हेशिष्यो॥चित्तशुद्धिकेअभावहुए जोकदाचित् तुमारेकूं तासगुणब्रह्मज्ञानविषे तथानिर्गुणब्रह्मज्ञानविषे अधिकारनहींहोवै ॥ तौभी तुम यहस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थ ईश्वरकेही हैं हमारेनहीं हैं याप्रकारजानिके कर्मोंकेफलरूपलोकोंकापरित्यागकरो ॥ तिसतैंअनंतर आपणेवर्णआश्रमकेअनुसार तुम शरीरमनवाणीकरिके निष्कामकर्मोंकूंकरो ॥इसप्रकार जभी तुम निष्कामकर्मोंकूंकरोगे तभी इसजन्मविषे अथवा दूसरेजन्मविषे तुमाराअंतःकरण शुद्धहोवैगा ॥ ताअंतःकरणकीशुद्धितैंअनंतर तुमारेकूं ब्रह्मज्ञानकीप्राप्ति होवैगी ॥ ताब्रह्मज्ञानकेप्रभावतैं तुमारेजन्ममरणादिकसर्वदुःखोंकीनिवृत्तिहोवैगी ॥ अब याहीअर्थकेस्पष्टकरणेवासतै तीनमार्गोंकानिरूपणकरे हैं ॥ हेशिष्यो ॥ स्वर्गब्रह्मलोकरूपजोअभ्युदयहै ॥ तथा मोक्षरूपजोनिःश्रेयसहै ॥ ताअभ्युदयनिःश्रेयसकीप्राप्तिकरणेहारे तीनप्रकारकेमार्गहोवै हैं ॥ तहां अग्निहोत्रादिरूपइष्टकर्मोंकूं तथावापीकूपतडागादिरूप पूर्त्तकर्मोंकूं करणेहारेजेपुरुषहैं ॥ तिनकर्मीपुरुषोंकूं स्वर्गरूपअभ्युदयकीप्राप्तिकरणेहारा पितृयाणनामा दक्षिणमार्ग है ॥ और अहंग्रहादिकउपासनावोंकूंकरणेहारेजेपुरुषहै ॥ तिनउपासकपुरुषोंकूं ब्रह्मलोकरूपअभ्युदयकीप्राप्तिकरणेहारा देवयाननामा उत्तरमार्ग है ॥ और श्रवणादिकसाधनोंकरिकैसंपन्नजेनिष्कामपुरुषहैं ॥ तिननिष्कामपुरुषोंकूं मोक्षरूपनिःश्रेयसकीप्राप्तिकरणेहारा ब्रह्मज्ञानरूपमार्ग है॥यातीनमार्गोंतैंभिन्न दूसराकोईभीमार्ग याजीवोंकूं सुखकीप्राप्तिकरणेहारानहीं है॥हेशिष्यो॥पितृयाण देवयान ब्रह्मज्ञान यातीनमार्गोंकापरित्यागकरिके जेपुरुष केवलपापकर्मोंकूंहीकरे हैं॥ तेअल्पबुद्धिवालेपुरुष सर्वदा दुखोंकूंहीप्राप्तहोवै हैं ॥ अब तिनतीनोंमार्गोंविषेभी तीसरेब्रह्मज्ञानरूपमार्गकीश्रेष्टता वर्णनकरे हैं ॥ हेशिष्य ॥ ब्रह्मलोकविषे तथास्वर्गलोकविषे स्थित जेदेवताहैं ॥तिनदेवतावोंविषेभी जेदेवता ब्रह्मज्ञानतैंरहितहैं ॥ तिनअज्ञानीदेवतावोंकूंभी वास्तवतैं किंचित्मात्रभीसुखहोवैनहीं ॥ काहेतैं महान्पुरुषोंकाजो तिरस्कारकरणाहै॥ सोतिरस्कारही तिनमहान्पुरुषोंकाहननहै ॥ यहवार्त्ता सर्वलोकविषेप्रसिद्धहै ॥ और जेपुरुष सर्वतैंमहान्आत्मादेवकूंनहींजानेहैं ॥ तेअज्ञानीपुरुष ताआत्मादेवका तिरस्कारूपहननकरतेहुए आत्महत्यारेकहेजावै हैं ॥ तिनआत्महत्यारेपुरुषोंकूं श्रुतिनैं संसाररूपदुःखकीप्राप्तिही कथनकरी है ॥ तहां श्रुति ॥

असुर्यानामतेलोका अंधेनतमसावृताः ॥ तांस्तेप्रेत्याभिगच्छंति येकेचात्महनोजनाः ॥ अर्थयह ॥ जेपुरुष आपणेआत्माविषेहीं भलीप्र
कारसैं रमणकरे हैं ॥ तिनपुरुषोंकानाम सुरहै ॥ ऐसेआत्मारामं विद्वान्पुरुषहैं ॥ तिनविद्वान्पुरुषोंतैंभिन्न अज्ञानीपुरुषोंकानाम असु
रहै ॥ तिनअसुरपुरुषोंकूं प्राप्तहोणेयोग्यजे शुभअशुभकर्मजन्यलोकहैं ॥ तिनलोकोंकानाम असुर्य है ॥ तेअसुर्यनामालोक आत्माकूं
आवरणकरणेहारेअज्ञानरूप अंधतमकरिकैव्याप्तहैं ॥ ऐसेअसुर्यलोकोंकूं तेआत्महत्यारेपुरुष मरणतैंअनंतर प्राप्तहोवे हैं ॥१॥ अब जिस
आत्माकेज्ञानतैं तिनअसुर्यलोकोंकीप्राप्ति नहींहोवे है ॥ ताआत्माकास्वरूप वर्णनकरे हैं ॥ हेशिष्यो ॥ तिनअसुरपुरुषोंकरिकैअज्ञात
यहआत्माकास्वरूप अत्यंतआश्चर्यरूपहै ॥ काहेतैं यहआत्मादेव आप क्रियातैंरहितहुआभी मनतैंभीअधिकवेगवालाहै॥तात्पर्ययह ॥
जिसजिसपदार्थकूं यहमन आपणेसंकल्पद्वारा प्राप्तहोवे है॥ तिसतिसपदार्थविषे यहआत्मादेव तामनकेगमनतैंपूर्वहीपरिपूर्ण है ॥और यह
आत्मादेव नेत्रादिकइंद्रियोंकरिकैअगम्यहुआभीब्रह्मज्ञानकरिकैगम्यहोवेहै।और यहआत्मादेव आप पर्वतकीन्याईंनिश्चलहुआभीशीघ्रगमन
करणेहारेवायुआदिकोंकूंभी उल्लंघनकरिकैआगेजावेहै ॥ और तिसअंतर्यामीआत्मादेवकरिकैप्रेरितहुआही यहसूत्रात्मारूपवायु सर्व
शरीरोंविषे अग्निहोत्रादिककर्मोंकैकरणेविषे समर्थहोवे है। जिन मेघादिभावकूंप्राप्तहुई अग्निहोत्रकीआहुतियोंरूपकरिकै यहअनेककर्मोंका
फलरूपविश्व उत्पन्नहोवे है॥ और ॥ सोआत्मादेव वास्तवतैंसर्वक्रियातैंरहितहुआभी सर्वक्रियावालाहोवे है॥और सोआत्मादेव अज्ञानी
पुरुषोंकूं अत्यंतदूरहुआभी विद्वान्पुरुषोंकूं अत्यंतसमीपहै ॥ तथा यहआत्मादेव यादृश्यप्रपंचके अंतरबाह्य परिपूर्ण है ॥ अब वर्णनकरे
हुएआत्माकेज्ञानकाफल निरूपणकरेहैं ॥ हेशिष्यो ॥ जेविवेकीपुरुष याजीवतअवस्थाविषे ब्रह्मातैंआदिलैके पिपीलिकापर्यंत सर्वशरीरों
कूं आपणेआत्मास्वरूपविषे कल्पितरूपकरिकैदेखेहैं ॥ तथा तिनसर्वशरीरोंविषे आपणेआत्माकूं अनुगतरूपकरिकैदेखेहैं ॥ तेविवेकी
पुरुष किंचिन्मात्रभी दुःखकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ हे शिष्य ॥ जिसविद्वान्पुरुषकूं आत्मज्ञानकेप्रभावतैं यहसर्वभूतप्राणी आत्मभावकूंप्राप्त
हुएहैं॥तथा जिसविद्वान्पुरुषनैं अधिष्ठानआत्माकेएकत्वस्वभावकूं गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं साक्षात्कारकऱ्याहै ॥ ऐसेविद्वान्पुरुषकूं आवरण

रूपमोहकीभीप्राप्तिहोवेनहीं॥तथा विक्षेपरूपशोककीभी प्राप्तिहोवेनहीं ॥हेशिष्यो॥ जोअधिकारीपुरुष स्वयंप्रकाशआनंदस्वरूपईश्वरकूं
आपणैंतैंअभिन्नरूपकरिकैसाक्षात्कारकरे है ॥ सोपुरुष सर्वत्रव्यापकआत्माकूंही देखे है ॥ कैसाहैसोआत्मादेव ॥ स्थूलसूक्ष्म कारण या
तीनशरीरों तैंरहित है ॥ तथा निर्गुणनिरवयवहै॥ऐसेआत्मादेवकूं ईश्वररूपकरिकैजानणेहारा जोविद्वान्पुरुष है॥ सोविद्वान्पुरुषही सोपा
धिकदृष्टिकरिकै आराधनकरणेयोग्यईश्वररूपभीहोवे है ॥ कैसा है सोईश्वर ॥ संकोचतैंरहितदर्शनस्वभाववाला है॥तथा सर्वमनकेप्रवृत्ति
योंकेजानणेहारासर्वज्ञहै ॥ तथा अज्ञानादिकशत्रुवोंका तिरस्कारकरणेहाराहै॥तथा सर्वकारणोंतैं रहितहोणेतैं स्वयंभुरूपहै ॥ तथा लोक
प्रसिद्धसर्वकारणोंकाभीकारणहै ॥ हेशिष्यो ॥ ऐसेआत्मादेवके साक्षात्कारकीप्राप्तिविषे चित्तकीशुद्धिद्वारा उपासनासहितकर्मभी उपाय
रूपहै ॥ ताकर्मकूं वेदवेत्तापुरुष असंभूति अविद्या यादोनामोंकरिकैकथनकरे हैं ॥ और ताउपासनाकूं वेदवेत्तापुरुष संभूति विद्या या
दोनामोंकरिकैकथनकरे हैं ॥ तेदोनों अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा तथाएकाग्रताद्वारा आत्मज्ञानकाकारण हैं ॥ अब कर्म उपासना यादोनों
केसमुच्चयविधानकरणेवासते प्रथम उपासनातैंरहित केवलकर्मोंकीनिंदाकरे हैं ॥ हेशिष्यो ॥ जेपुरुष केवलकर्मोंकूंहींकरेहैं ॥ तेपुरुष तिन
कर्मोंकेप्रभावकरिकै स्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंविषे परमआसक्तिकूं प्राप्तहोवे हैं॥ तथा स्वर्गादिकअनित्यलोकोंकूं प्राप्तहोवे हैं ॥ तथा नाना
प्रकारकेरागद्वेषकरिकैयुक्तहोवे हैं ॥ इसप्रकार संसारकेसुखविषेआसक्तहुए तेकर्मीपुरुष वारम्वार जन्ममृत्युकूं प्राप्तहोवे हैं ॥ अब कर्मोंतैं
रहित केवलउपासनाकीनिंदाकरे हैं हेशिष्यो ॥ जेपुरुष केवलउपासनाविषेही प्रीतिवालेहोवे हैं ॥ ते उपासकपुरुष ताउपासनाकेऐश्वर्य
तारूपफलविषे आसक्तहुए तिनकर्मीपुरुषों तैं भी अधिकदारुणतमकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ काहेतैं जेपुरुष वेदविहितकर्मोंकापरित्यागकरिकै
केवलउपासनाविषे तत्परहोवे हैं॥तिनकेवलउपासकपुरुषोंविषे दोअनर्थकेहेतुहोवे हैं॥तहां एकतौ विहितकर्मोंकात्याग ॥ और दूसरा ना
नाप्रकारकेऐश्वर्यविषेआसक्ति॥तिनदोनोंदोषोंतैं तेउपासकपुरुषतिनकर्मीपुरुषोंतैं भीअधिकदुःखकूंप्राप्तहोवे हैं॥ यातैंयाअधिकारीपुरुषोंनैं
वेदविहितकर्मोंसहितउपासनाकाहीअनुष्ठानकरणा॥केवलकर्मोंका तथाकेवलउपासनाका अनुष्ठानकरणानहीं॥हेशिष्यो॥ इसप्रकार कर्म

उपासना यादोनोंकरिकेयुक्त जोतत्वज्ञानार्थीपुरुषहै ॥ सोअधिकारीपुरुष चित्तकूंएकाग्रकरिकै ॥ हिरण्मयेनपात्रेण ॥ इत्यादिकमंत्रकरि कै याआदित्यभगवान्की पुनःपुनः प्रार्थनाकरे ॥ कैसाहैसोआदित्यभगवान् ॥ याअधिकारीपुरुषोंकूं ब्रह्मलोककीप्राप्तिद्वारा क्रममुक्तिकी प्राप्तिवासतै आपणेमंडलविषे छिद्ररूपमार्गकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥हेशिष्यो॥ जोकर्मउपासनावालापुरुष हिरण्मयेनपात्रेण॥यामंत्रकरिकै तासूर्यभगवान्कीप्रार्थनाकरे है॥ताअधिकारीपुरुषकूं याप्रकारकीशुभबुद्धिप्राप्तहोवै है॥जोआदित्यमंडलविषेस्थित स्वयंज्योतिपुरुषहै ॥ सोस्वयंज्योतिपुरुषही हमारा वास्तवस्वरूप है ॥ यह देहइंद्रियादिरूपसंघातमेरावास्तवस्वरूपनहीं है ॥ काहेतैं यादेहादिरूपसंघात आकाशादिक पंचभूतोंकाकार्यरूप है ॥ तथा मरणतैंअनंतर भस्मादिरूपपरिणामकूं प्राप्तहोवै है ॥ ऐसायहसंघात प्रणवपदकेवाच्यअर्थ रूपआत्माकूं जानणेहारैमैं विद्वान्पुरुषकास्वरूप किसप्रकारहोवैगा॥ किंतु यहसंघात हमारास्वरूपनहीं है ॥ हेशिष्यो ॥ इसप्रकार कर्म उपासनाकरिकेयुक्त तथा यासंघातविषे वैराग्यवान् जोअधिकारीपुरुष है ॥ सोअधिकारीपुरुष आपणेमनकेप्रति याप्रकारकावचनकहै॥ हेमन पूर्व जिसदेशविषे तथाजिसकालविषे जिसजिसपदार्थकूं तू प्राप्तहोताभयाहै॥तिसतिसपदार्थकूं तू संकल्पसहितकर्मोंकरिकैहीप्राप्त होताभयाहै।संकल्पसहितकर्मोंतैंविना किंचित्मात्रपदार्थकीभीप्राप्तिहोवैनहीं इसप्रकारका तासंकल्पका तथाकर्मकामाहात्म्य तुमनैं अभी किसवास्तै विस्मरणकऱ्या है ॥ किंतु इसकालविषे तुम्हारेकूं तासंकल्पका माहात्म्य विस्मरणकरणेयोग्यनहीं है ॥ यातैं वेदविहित कर्म तथाउपासनारूपसंकल्प यादोनोंके माहात्म्यकूं अभीस्मरणकरिकै तूं ताकर्म संकल्पविषे तत्परहो ॥हेशिष्यो॥ इसप्रकार मनकेआ गेप्रार्थनाकरताहुआ यहअधिकारीपुरुष जभी हिरण्मयेनपात्रेण॥यावैदिक मंत्रकरिकै तथालौकिकस्तोत्रोंकरिकै ताआदित्यभगवान्की प्रार्थनाकरे है ॥ तथा अग्निदेवकी प्रार्थनाकरे है ॥ तभी यहअधिकारीपुरुष सर्वपापोंतैं रहितहोइकै क्रमतैं ब्रह्मभावकूं प्राप्तहोवै है ॥ अब ताअग्निदेवताके प्रार्थनाकानिरूपण करे हैं ॥ हेअग्निदेवता ॥ आप हमारेकूं सर्वदुःखों तैंरहित तथाप्रकाशमान ऐसेदेवयानमार्ग करिकै ब्रह्मलोककी प्राप्तिकरो ॥ तथा पापकीप्राप्तिकरणेहारे हमारेकामक्रोधादिकसर्वशत्रुवोंकूं नाशकरो॥ओर आपअग्निदेवता हमरे

जीवोंकेचित्तकेवृत्तांतकूं जानणेहारेहो ॥ यातैंतेहमारेकामक्रोधादिकसर्वशत्रुतुमारेकूं अज्ञातनहींहै ॥ किंतु तेसर्वशत्रुआपकूं ज्ञातहैं ॥ इसप्रकार हमअधिकारीजनोंके कामक्रोधादिकसर्वशत्रुवोंकूंनाशकरणेहारे तथाहमअधिकारीजनोंकूं ब्रह्मलोककीप्राप्तिकरणेहारे जोआप अग्निदेवताहो ॥ ताआपकेउपकारकोनिवृत्तकरणेविषे हमसमर्थनहींहै ॥ यातैं हमअधिकारीजनोंका आपकेताईं वारंवार नमस्कार होवै ॥ अब सूर्यभगवान्केप्रार्थनाकूंकथनकरणेहाराजो ॥ हिरण्मयेनपात्रेण ॥ इत्यादिकमंत्रहै तामंत्रकाअर्थनिरूपणकरैहैं ॥ हेशिष्यो॥ यहअधिकारीपुरुष याप्रकार तासूर्यभगवान्कीप्रार्थनाकरे ॥ हेभगवन् ॥ तप्तसुवर्णकेसमान अत्यंतप्रकाशमान जोयह आवरणकरने हारेपात्रकेसमान तेजोमंडलहै ॥ तातेजोमंडलरूप हिरण्मयपात्रकरिकै आदित्यमंडलविषेस्थित आपब्रह्मका उपासकपुरुषोंकेप्राप्तिका द्वारभूत छिद्ररूपमुख आवृतहोइरह्याहै ॥ हेसर्वजगत्केपोषणकरणेहारेसूर्यभगवान् ॥ सत्यपरायणतारूपधर्मवालेहमअधिकारीजनोंकूं आपणादर्शनदेकै यासंसारतैंरक्षाकरणेवासतै ताआपणेमुखकेआवरणकूं निवृत्तकरो ॥ हेभगवन् ॥ स्मरणमात्रकरिकै सर्वअनर्थोंकूं नष्टकरणेहारा जोआपकावास्तवस्वरूपहै ॥ ताआपकेवास्तवस्वरूपकूं जिसप्रकारमैंअधिकारीजन साक्षात्कारकरों ॥ तिसप्रकार आप हमारेऊपर अनुग्रहकरो ॥ याप्रकारसैं ताआदित्यभगवान्कीप्रार्थना यहअधिकारीपुरुषकरे ॥ इसप्रकार तेवेदवेत्तापुरुष जिसपरमात्मा देवकीप्राप्तिवासतै आपणेशिष्योंकेप्रति नानाप्रकारकीविद्या उपदेशकरैहैं सोपरमात्मादेवही याआत्मपुराणग्रंथविषे सर्वत्रप्रतिपादन कऱ्याहै ॥ तापरमात्मादेवतैंभिन्नकिसीभीअनात्मपदार्थका याआत्मपुराणग्रंथविषेप्रतिपादनकऱ्यानहीं ॥ यातैंजोअधिकारीपुरुषब्रह्मवेत्ता गुरुतैं याआत्मपुराणग्रंथकापठनकरैहै ॥ तथाजोअधिकारीपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैंयाआत्मपुराणग्रंथकाश्रवणकरैहै ॥ तथाजोअधि कारीपुरुष दूसरेमुमुक्षुजनोंकेप्रति याआत्मपुराणग्रंथकाकथनकरैहै ॥ तथाजोअधिकारीपुरुष याआत्मपुराणग्रंथकेअर्थकूं निरंतर चिंतन करैहै ॥ तेसर्वअधिकारीजनतापरमात्मादेवकूं आपणाआत्मारूपजानिकैकार्यसहितअज्ञानकीनिवृत्तिपूर्वक ब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपमोक्षकूं प्राप्तहोवैहैं॥ यातैंमोक्षकीइच्छावान्पुरुषोंनैंश्रद्धाभक्तिपूर्वक याआत्मपुराणग्रंथकाअवश्यकरिकैविचारकरणा ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राज

काचार्य श्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचित्घनानंदगिरिणा विरचिते प्राकृताऽऽत्मपुराणे नृसिंहपूर्वोत्तरतापनीयेशावा
स्यसारार्थप्रकाशे प्रजापतिदेवतासंवादो नाम अष्टादशोऽध्यायःसमाप्तः ॥ १८ ॥ समाप्तश्चायमात्मपुराणनामाग्रंथः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः॥
श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ श्रीशंकरानंदमुनिभ्योनमः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

इदं पुस्तकं कल्याणनगर्यां वैश्यवंशावतंस श्रीकृष्णदासात्मजेन गङ्गाविष्णुश्रेष्ठिना
स्वकीये "लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" यन्त्रालयेऽङ्कयित्वा प्रकाशितम् ॥
सवंत् १९८३, शके १८४८.

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
" लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर " स्टीम् प्रेस.
कल्याण–मुंबई.

खेमराज श्रीकृष्णदास,
" श्रीवेङ्कटेश्वर " स्टीम् प्रेस.
खेतवाडी–मुंबई.

विक्रयपुस्तकोंकी संक्षिप्त–सूची।

वेदांतग्रन्थाः।

नाम.	की. रु. आ.
शारीरक (शांकरभाष्य) रत्नप्रभाटीका व्यासाधिकारणमाला और भक्तिसूत्र सभाष्य अक्षरबडा	.... १२–०
ब्रह्मसूत्र (शारीरक) भाषाटीका	.... १–८
वेदांतसार संस्कृतमूल और संस्कृतटीका तथा भाषाटीकासहित	.... १–०
पंचदशीसटीक	.... २–८
पंचदशी पं० मिहिरचंद्रकृत अत्युत्तम भाषाटीकासहित	.... ४–०
पंचदशी भाषा–आत्मस्वरूपजीकृत	.... ४–०
गीता चिद्घनानंदस्वामिकृत गूढार्थदीपिकामूल अन्वय पदच्छेदके सहित भाषाटीका....	.... ८–०
गीता आनंदगिरिकृतभाषाटीका	.... ३–०

नाम.	की. रु. आ.
श्रीमद्भगवद्गीता सान्वयब्रजभाषा दोहासहित	.... १–८
गीतामृततरंगिणी भाषाटीका (रघुनाथप्रसादकृत) अक्षरबडा	.... १–४
गीतामृततरंगिणी भाषाटीका पाकिटबुक	.... ०–१४
श्रीरामगीता मूल	.... ०–२
श्रीरामगीता भाषाटीका–पदप्रकाशिका अनुवादसमुच्चय और विषमपदीके सहित	.... ०–१०
श्रीमद्भगवद्गीता पंचरत्नअक्षरमोटागुटकारेशमी	... १–८
" पंचरत्नअक्षरबडा खुलापत्रा छोटीसंची	.... १–८
" पंचरत्न अक्षरबडा लंबीसंची खुला	.... ३–०
" पंचरत्न भाषाटीका	.... ३–०
गीता श्रीधरीटीका सहित	.... १–०
गीता बडे अक्षरकी १६ पेजी गुटिका	.... १–०
गीता बडेअक्षरकी खुली १२ पेजी	.... १–०

नाम.	की.	रु.	आ.
गीता गुटका विष्णुसहस्रनाम सहित	....	....	०–८
गीतापंचरत्न और एकादशरत्न	....	....	१–४
" पंचरत्न द्वादशरत्न	....	....	१–०
गीतापंचरत्न नवरत्न पाकिट बुक्	....	....	०–१२
गीता गुटका पाकिट बुक्	....	....	०–८
अष्टावक्रगीता अत्युत्तम सान्वय भाषाटीका	....	....	१–०
शिवगीता भाषाटीकासहित	....	....	१०–
गणेशगीता भाषाटीकासहित	....	....	०–८
गीतापंचदश भाषाटीका-[काश्यपगीता, शौनक गीता, अष्टावक्रगीता, नहुषगीता, सरस्वतीगीता, युधिष्ठिरगीता, बकगीता, धर्मव्याधगीता, श्रीकृष्णगीतादि]	....	....	०–१२
पाण्डवगीता भाषाटीकासह	....	....	०–३
तथा मूल ४ रत्न बडा अक्षर	....	....	०–२
अपरोक्षानुभूति संस्कृतटीका भाषाटीकासहित		....	०–१२

नाम.	की.	रु.	आ.
आत्मबोध भाषाटीका	....	....	०–६
तत्त्वबोध भाषाटीका	....	....	०–८
वेदांतग्रंथपंचकम् (वाक्यप्रदीपःवाक्यसुधारसः हस्तामलकः निर्वाणपंचकं मनीषापंचकं)		....	०–८
वेदस्तुतीभाषाटीकासह	....	....	०–८
गीतारामानुजभाष्य	....	....	२–०
वेदांत डिम्डिम्	....	....	०–२
वैराग्यभास्कर भाषाटीका	....	....	०–१२
सिद्धांतचंद्रिका सटीक (वेदांत)	....	....	०–८
हरिमीडेस्तोत्रसटीक	....	....	०–१४
द्वादशमहावाक्यविवरण	....	....	०–४
त्रोटक सटीक	....	....	०–१०
वेदांतरामायण भाषाटीकासह	....	....	१–८
वेदान्तसंज्ञा भाषाटीका	....	....	०–१०
शांडिल्यसूत्र सभाष्य (भक्तिमीमांसा)		....	०–८

नाम.	की.	रु.	आ.
प्रश्नोत्तरमुक्तावली भाषाटीका (वेदान्त)		....	०–३
जीवन्मुक्तगीता भाषाटीका	....	....	०–१
भक्तिमीमांसा-शांडिल्यऋषिप्रणीताआचार्य स्वप्रेश्वरविरचितेन भाष्येन संयुता			
❀❀योगवासिष्ठ सटीक संस्कृत ...	....	....	२०–०

वेदान्त भाषा ।

योगवासिष्ठ बडा भाषा संपूर्ण ...	....	....	१५–०
योगवासिष्ठगुटकावैराग्य मोक्ष प्रकरण वेदांत उत्तम कागज अक्षर बडा	....	....	१–४
वासिष्ठसार भाषा वेदांत ६ प्रकरण	....	....	२–८
विचारसागर सटीक निश्चलदासजीकृत		....	२–०
एकादशस्कंध भाषा चतुरदासकृत और नानक विलास	....	....	१–०
अमृतधारा वेदांत	....	....	०–१२
संतोषसुरतरु वेदांत	....	....	०–६

नाम.	की.	रु.	आ.
संतप्रभाव वेदांत	....	....	०–६
विचारमालासटीकपंचीकरणसहित	....	....	१–०
अभिलाषसागर भाषा (वेदांत)	....	....	२–०
अध्यात्मप्रकाश भाषा (वेदान्त)	....	....	०–३
विज्ञानगीता कविकेशवदासकृत	....	....	०–१२
सुंदरविलास (ज्ञानसमुद्र, ज्ञानविलास, सुन्दरग्रंथकादि सहित) साटिप्पण...	....	....	१–८
प्रत्येकानुभव शतक भाषा (वेदान्तका ग्रंथहै)	...		०–४
पक्षपातरहित अनुभवप्रकाश-वेदांत वर्णन (कामलीवालेबाबाकी बनाईहुई)		....	५–०
मुक्तिकोपनिषद् भाषाटीका	....	....	०–५
कैवल्योपनिषद्	....	....	०–१
मोक्षगीता बडी (सवालक्ष) रामनाम		....	१–४
वृत्तिप्रभाकर स्वामीनिश्चलदासकृत (वेदान्तका ग्रंथ शुद्धकर नया छपाहै)	....	....	३–८

नाम.	की. रु. आ.
आनन्दामृतवर्षिणी वेदान्त (आनन्दगिरिजी-प्रणीत-गीताकेकठिनस्थलोंकाभावप्रतिपादन है)	.... १-०
दशोपनिषद्भाषा-स्वामि अच्युतानंदकृत	.... २-८
तत्त्वानुसंधानभाषा	.... ३-८
धर्मशास्त्र ग्रंथाः ।	
मनुस्मृति सटीक कुल्लूकभट्टकृत संस्कृत टीका सहित जिल्दबंधी	.... ३-०
मनुस्मृति सान्वय भाषाटीका ग्लेज	.... ३-८
तथा रफू	.... ३-०
व्रतराजअतिउत्तमटिप्पणीसहितजिस्मेंवर्षभरकी सबतिथियोंकेव्रतउद्यापननिर्णयकथाहै	.... ६-०

नाम.	की. रु. आ.
व्रतराजटिप्पणीसहित रफू....	.... ५-०
निर्णयामृत(अनेक प्राचीन ग्रंथोंसे शुद्ध हुवाहै)....	.... २-०
याज्ञवल्यस्मृति मिताक्षरा पं० मिहिरचंद कृत पद, योजना, भावार्थ और तात्पर्यार्थ और टिप्पणी तथा भाषाटीकासहित अत्युत्तम	.... ६-०
धर्मसिंधु ❀	.... ३-०
निर्णयसिंधु टिप्पणीसहित अत्युत्तम	.... ३-८
तथा रफू कागज	.... ३-०
अष्टादशस्मृति उत्तम शुद्ध मोटा टैप	.... २-०
विवादार्णवसेतु(धर्मशास्त्र व न्याय राजनीति)....	.... २-८
बृहत्पाराशरीस्मृति. (धर्मशास्त्र)	.... १-८
पाराशरीस्मृति उत्तरखंड	.... ०-४

संपूर्ण पुस्तकोंका बडासूचीपत्र अलग है आधे आनेका टिकिट भजनस बिनादाम भेजा जाताहै ।

पुस्तकें मिलनेका ठिकाना-

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास, "लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" छापखाना, कल्याण-बम्बई.

अत्रेयमभ्यर्थना ।

मुद्रणालयेऽस्माकं वेद-वेदान्त-धर्मशास्त्र-प्रयोग-योग-सांख्य-ज्योतिष-पुराणेतिहास-वैद्यक-मंत्र-तंत्र-स्तोत्र-कोश-काव्य-चंपू नाटकालंकार-संगीत-नीतिकथाग्रन्थाः, बहवः स्त्रीणां चोपयुक्ता ग्रन्थाः, बृहज्ज्योतिषार्णवनामकं बहुविधचित्रचित्रितोऽयमपूर्वग्रन्थः संस्कृत-भाषया, हिन्दीमाराठ्यन्यतमाभाषा ग्रन्था-स्तत्तच्छास्त्राद्यर्थानुसारकाः, चित्राणि, पुस्तकमुद्रणोपयोगिन्यो यावत्य स्सामग्र्यः, स्वस्वलौकिकव्यवहारोपयोगिचित्रविचित्रतालिखितपत्रवत्पुस्तकानि च सुद्रयित्वा प्रकाश्यन्ते सुलभेन मूल्येन विक्रयाय । येषां यत्राभिरुचिस्तत्तत्पुस्तकाद्युपलब्धये एवं नव्यतया स्वस्वपुस्तकानि सुमुद्रयिष्यामि सुलभयोग्यमौल्येन सीमकाक्षरैः स्वच्छोत्तमपत्रेषु सुद्रितत्पुस्तकानां स्वस्वसमयानुसारेणोपलब्धये च पत्रिकाद्वारा तैः प्रेरणीयोऽस्मि ॥

गंगाविष्णु-श्रीकृष्णदासः-" लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर " स्टीम्-मुद्रणालयाध्यक्षः, कल्याण-मुंबईस्थः ।

آخری درج شدہ تاریخ پر یہ کتاب مستعار
لی گئی تھی مقررہ مدت سے زیادہ رکھنے کی
صورت میں ایک آنہ یومیہ دیرانہ لیا جائے گا۔

